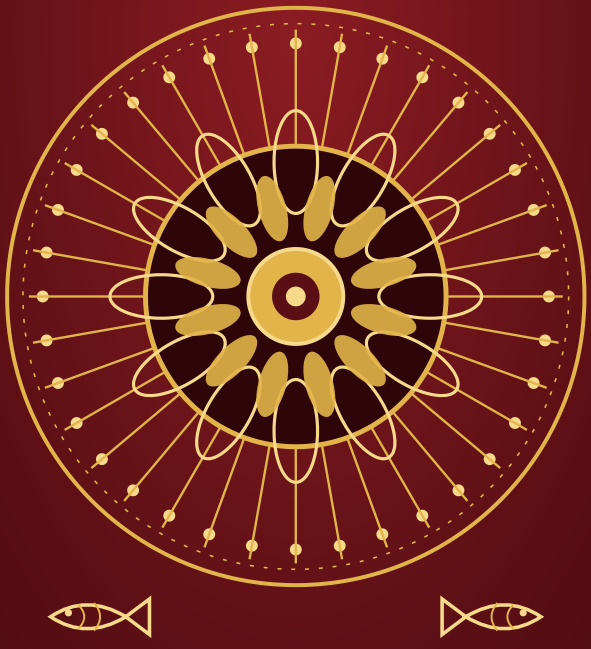
प्रबन्ध · निबन्ध समालोचना

सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन

भाग-२



गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X · © २०२६

प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना

(भाग-२)

प्रबन्ध ·निबन्ध ·समालोचना

सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन

(भाग-२)

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X · www.videha.co.in

प्रकाशनाधिकार

© Gajendra Thakur & Preeti Thakur, 2026

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · ISSN 2229-547X

www.videha.co.in

प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना [सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन] (भाग-२) — गजेन्द्र ठाकुर

अनुक्रमणिका

आलेखसभकेँ विषयगत खण्डमे व्यवस्थित कएल गेल अछि; मूल आलेखक भाषा, उद्धरण, तालिका आ प्रमाण-सामग्री यथावत् राखल गेल अछि।

प्रथम खण्ड · आलोचना-सिद्धान्त आ समालोचनाक परिप्रेक्ष्य

१ प्रबन्ध ·निबन्ध ·समालोचना : समेकित आलोचनात्मक अनुशीलन 8

२ समप्रमाण–समानान्तर कथा-आख्यानशास्त्र 183

३ रमानन्द झा ‘रमण’ : कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा 214

४ अखियासल : विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद 252

५ हिआओल : बहुपद्धतीय आलोचनात्मक आस्वाद 399

६ अंगिका साहित्य केरौं इतिहास 523

७ नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल 629

८ अनुवादक 671

द्वितीय खण्ड · कथा, लघुकथा आ कथा-समालोचना

९ शुभ कथा संसार 707

१० कथा-त्रिधारा : खण्ड १ 709

११ कथा-त्रिधारा : खण्ड २ 742

१२ कथा-त्रिधारा : खण्ड ३ 781

१३ कथा-शतत्रयी : खण्ड १ 811

१४ कथा-शतत्रयी : खण्ड २ 841

१५ कथा-शतत्रयी : खण्ड ३ 878

१६ स्मृतिक दोसर दिस 909

१७ इजोत : जनम-जनमक कथा 951

१८ पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल 990

१९ गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा 1019

तृतीय खण्ड · उपन्यास आ विस्तृत आख्यानक अध्ययन

२० पाँच प्रतिशत अन्हार....1064
२१ कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक : बहुस्तरीय महाकथा....1107
२२ पातक भीतर लिखल नाँव....1137
२३ सातम साक्षी....1156
२४ जल-पाँजि....1183
२५ कूट नाम : तरहड़िमे गोहि....1216
२६ बिज्जी : गोहि सभक बीच....1241
२७ सहस्रबाढ़नि....1333
२८ सहस्रशीर्षा....1368
२९ गोहि सभक बीच जलसमाधि....1395
३० गोहि सभक बीच जलसमाधि : किशोर संस्करण....1444
३१ गोहि सभक बीच जलसमाधि : बाल संस्करण....1495

चतुर्थ खण्ड · नाटक, रंगमंच आ नाट्यालोचना

३२ निनाद : मैथिली नाट्यालोचनाक पुनरावलोकन....1520
३३ रंग-संगम....1562
३४ रंग-संगम : खण्ड २....1591

पञ्चम खण्ड · काव्य, गजल आ बाल-किशोर साहित्य

३५ बाल गोपाल....1622
३६ स्वप्न मे मिज्झर होइत....1718
३७ नव पाँखि....1765
३८ ३७ टा मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास....1788
३९ दीवान-ए-विदेह : खण्ड १....1804
४० दीवान-ए-विदेह : खण्ड २....1889
४१ अकुलाइत सुर....2022

षष्ठ खण्ड · पञ्जी, दर्शन, भाषा आ समानान्तर इतिहास

४२ डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड १.....2116
४३ डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड २.....2148
४४ डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड ३.....2187
४५ डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड ४.....2215
४६ डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड ५.....2255
४७ डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड ६.....2282
४८ गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन : खण्ड १.....2306
४९ गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन : खण्ड २.....2472
५० मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास : खण्ड १.....2537
५१ मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास : खण्ड २.....2633
५२ विदेह समानान्तर इतिहास : मिथिला आ मैथिली साहित्य.....2669

प्रथम खण्ड

आलोचना-सिद्धान्त आ समालोचनाक परिप्रेक्ष्य

आलेख ०१ · आलोचना-सिद्धान्त आ समालोचनाक परिप्रेक्ष्य

प्रबन्ध • निबन्ध • समालोचना : समेकित आलोचनात्मक अनुशीलन

सारांश

ई समीक्षा मूल ग्रन्थक सम्पूर्ण संरचनाकेँ आधार बनबैत अछि। ग्रन्थ दू पैघ खण्डमे विभक्त अछि—प्रथम खण्ड “सिद्धान्त” अन्तर्गत ५६ अध्याय/निबन्ध आ द्वितीय खण्ड “अनुप्रयुक्त अध्ययन” अन्तर्गत १११ आलोचनात्मक प्रविष्टि; कुल १६७ प्रविष्टि।

बीजशब्द

प्रबन्ध ·निबन्ध ·समालोचना :समेकित आलोचनात्मक अनुशीलन ·आलोचना-पद्धति ·भारतीय काव्यशास्त्र ·मैथिली समालोचना ·विदेह समानान्तर दृष्टि

प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना

सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन

विस्तृत साहित्यिक समीक्षा आ गहन शोध

मूल ग्रन्थ: गजेन्द्र ठाकुर

मूल पाठक १६७/१६७ अध्याय/प्रविष्टिक समेकित आलोचनात्मक अनुशीलन

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · ISSN 2229-547X · २०२६

१. भूमिका आ समीक्षा-पद्धति

ई समीक्षा मूल ग्रन्थक सम्पूर्ण संरचनाकेँ आधार बनबैत अछि। ग्रन्थ दू पैघ खण्डमे विभक्त अछि—प्रथम खण्ड “सिद्धान्त” अन्तर्गत ५६ अध्याय/निबन्ध आ द्वितीय खण्ड “अनुप्रयुक्त अध्ययन” अन्तर्गत १११ आलोचनात्मक प्रविष्टि; कुल १६७ प्रविष्टि। एहि समीक्षा-पाठमे सभ १६७ प्रविष्टिक पृथक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ कोनो अध्याय शीर्षक-मात्र रूपेँ सूचीबद्ध भऽ छोड़ल नहि जाए।

पद्धति तीन स्तरक अछि। पहिल, मूल ग्रन्थक शीर्षक, सारांश, बीजशब्द, तर्क-रेखा आ उपलब्ध निष्कर्षक आधारपर आन्तरिक पाठालोचन। दोसर, कृति/विधाक अनुरूप भारतीय काव्यशास्त्र—रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य, नाटचशास्त्र—आ आधुनिक कथाविज्ञान, प्रदर्शन-अध्ययन, अनुवाद-अध्ययन, बाल-साहित्य, दलित/नारी/क्वीर विमर्श, मौखिकता, डिजिटल मानविकी आ नव्य-न्यायक तुलनात्मक उपकरण। तेसर, तिरहुता, डिजिटल भाषा-संरक्षण, दलित साहित्य, आधुनिक भारतीय क्वीर कैनन, बाल-साहित्य, मौखिक साहित्य, अनुवाद आ गङ्गेशक नव्य-न्याय सम्बन्धी चयनित बाह्य प्रामाणिक शोधसँ सत्यापन/तुलना।

महत्त्वपूर्ण सावधानी: ग्रन्थमे जतय व्यक्ति, संस्था, पुरस्कार, साहित्यिक चोरी, जातीय पक्षपात वा इतिहास-सम्बन्धी विवादास्पद आरोप/दावा अछि, एहि समीक्षा ओकरा “मूल ग्रन्थक दावा” रूपेँ पढ़ैत अछि। स्वतंत्र दस्तावेजी प्रमाण बिना कोनो आरोपकेँ स्थापित तथ्य मानल नहि गेल अछि। तहिना “दू विद्यापति”, विशिष्ट आदित्व-दावा, लिपि-उद्भवक अत्यन्त प्राचीन सूत्र वा संस्थागत निर्णयक कारण सम्बन्धी प्रस्तावसभकेँ शोध-परिकल्पना मानि अधिक बाह्य सत्यापनक आवश्यकता बताओल गेल अछि।

समीक्षाक विन्यास

ग्रन्थक समग्र साहित्यिक स्थापत्य

मुख्य वैचारिक आ पद्धतिगत उपलब्धि

बाह्य शोधक आलोकमे आठ प्रमुख क्षेत्रक पुनर्मूल्याङ्कन

प्रथम खण्डक ५६/५६ अध्यायक पृथक समीक्षा

द्वितीय खण्डक १११/१११ अध्यायक पृथक समीक्षा

समेकित सीमा, सम्पादकीय सुधार आ भविष्यक शोध-कार्यसूची

सन्दर्भ-सूची आ अध्याय-आवरण जाँच

२. ग्रन्थक समग्र साहित्यिक स्थापत्य

“प्रबन्ध ·निबन्ध ·समालोचना” पारम्परिक अर्थमे केवल आलोचना-संग्रह नहि अछि। ई समीक्षाशास्त्र, छन्द, कथा-विधा, नाटक, अनुवाद,

स्त्री/क्वीर/दलित विमर्श, भाषा-विज्ञान, तिरहुता, शब्दावली, डिजिटल मैथिली, लोक-साहित्य, इतिहास, दर्शन, संस्थागत सार्वजनिकता आ लेखक-कृति समीक्षा —सभकेँ एक विशाल बौद्धिक अभिलेखमे समेटैत अछि। एहि बहु-विषयक फैलावक कारण ग्रन्थक सबसँ पैघ शक्ति “मैथिलीमे ज्ञानक विभिन्न अनुशासन लेल आलोचनात्मक शब्दावली बनायब” अछि; मुदा एहि फैलावक कारणेँ कखनो-कखनो साहित्यिक समीक्षा, सामाजिक टिप्पणी, व्यक्तिगत संस्मरण, पत्रकारिता, दस्तावेजीकरण आ शास्त्रीय विवेचनक सीमा एक-दोसरामे घुलि जाइत अछि।

प्रथम खण्डक आधारभूत प्रयत्न मैथिली लेल अपन आलोचनात्मक उपकरणक निर्माण अछि। विहनि कथा, लघुकथा, उपन्यास, बाल-साहित्य, अनुवाद, पद्य, नाटक, हाइकू, कुण्डलिया, नारी-केंद्रित समीक्षा, दलित सौन्दर्यशास्त्र, व्याकरण, तिरहुता आ डिजिटल माध्यम पर पृथक-पृथक प्रतिमान बनेबाक इच्छा देखाइत अछि। एहि ठाम लेखक केवल पश्चिमी सिद्धान्त आयात नहि करैत छथि; रस-ध्वनि-वक्रोक्ति, लोकपरम्परा आ नव्य-न्यायकेँ आधुनिक विमर्शक संग राखैत छथि। ई “समानान्तर” शब्दक वास्तविक आलोचनात्मक अर्थ बनेबाक दिशा अछि।

द्वितीय खण्ड एहि सैद्धान्तिक घोषणाक परीक्षा अछि। लोकगाथा, पञ्जी, बाढ़ि-पलायन, कथा-उपन्यास, बाल-कृति, कविता, गजल, रामायण, नाटक, विशेषांक, साहित्यिक संस्था, दलित अनुवाद, शब्दकोश, गङ्गेश-उदयन-वाचस्पति, संस्मरण आ समकालीन लेखक—एहि विविध corpus पर सिद्धान्त लागू होइत अछि। सफल अध्याय ओ सभ अछि जतय पाठ-साक्ष्य, ऐतिहासिक सन्दर्भ आ विधागत कसौटी एक-दोसराकेँ पुष्ट करैत अछि; कमजोर अध्याय ओ सभ अछि जतय तर्क व्यक्तिकेन्द्रित विवाद, सामान्यीकरण वा पर्याप्त स्रोत-विवरणक अभावमे अधिक घोषणात्मक भऽ जाइत अछि।

ग्रन्थक “समानान्तर साहित्य” अवधारणा चारि रूपमे उभरैत अछि: (१) मुख्यधारा बाहरक लेखक/लोक-कलाकारक पुनर्पाठ, (२) डिजिटल प्रकाशनद्वारा प्रवेशक लोकतंत्रीकरण, (३) जाति-लिंग-क्षेत्रीय असमानताक आलोचना, आ (४) स्थापित साहित्येतिहासक समानांतर अभिलेख। एहि परियोजनाक ऐतिहासिक

मूल्य बहुत पैघ अछि; तथापि प्रतिकैनन बनबैत काल अपन चयन-मानदण्ड, स्रोत, विरोधी मत आ सम्पादकीय हितकेँ पारदर्शी बनायब आवश्यक अछि, नहि तँ वैकल्पिक कैनन सेहो नव केन्द्रीयता बना सकैत अछि।

३. समेकित गहन साहित्यिक समीक्षा

३.१ मैथिली-केंद्रित समीक्षाशास्त्रक निर्माण

ग्रन्थक आरम्भिक अध्याय एक मूल प्रश्न उठबैत अछि—मैथिली साहित्यक समीक्षा केवल बाह्य सिद्धान्तक अनुप्रयोग रहत कि मैथिली काव्य-गद्य-नाटक-लोकपरम्परासँ अपन कसौटी सेहो निर्मित करत? एहि प्रश्नक उत्तर ग्रन्थ विधागत समीक्षाशास्त्र, लोकस्मृति, छन्द, भाषिक रजिस्टर आ नव्य-न्यायक माध्यमसँ देबाक चेष्टा करैत अछि। आलोचनाक ई स्थानीयकरण संकीर्ण प्रादेशिकता नहि, बल्कि विश्व-सिद्धान्तक संग बराबरीक संवाद बनि सकैत अछि।

सबसे उपयोगी दिशा ई अछि जे लेखक “एक सिद्धान्त—सभ कृति” पद्धतिक विरोधमे कृति-अनुकूल बहु-दृष्टि अपनबैत छथि। मुदा बहु-दृष्टि तखनहि फलदायी होइत अछि जखन प्रत्येक सिद्धान्त स्पष्ट प्रश्न पुछैत अछि। केवल मार्क्सवाद, संरचनावाद, विखण्डन, जादू-वास्तविकता, रस, ध्वनि आदि नाम एकत्र कएलासँ आलोचना गहन नहि होइत अछि; प्रत्येक अवधारणाक पाठ-साक्ष्य आ सीमाकेँ अलग देखाएब आवश्यक अछि।

३.२ कथा-विधा, सूक्ष्मकथा आ उपन्यास

विहनि कथा, लघुकथा आ उपन्यासक पृथक समीक्षाशास्त्र बनेबाक प्रयास ग्रन्थक मौलिक उपलब्धिमे अछि। आकारकेँ केवल शब्द-संख्या नहि मानि कथात्मक दबाव, संकेत, चरित्र-विकास, समय आ पाठकीय पूर्तिक सम्बन्धमे सोचल गेल अछि। अनुप्रयुक्त खण्डमे “प्रतीक”, “सझिया रोपनि”, “कथा-समय”, “मुजरिम”, “दीयरि”, “चमेली रानी”, “माहुर”, “गुलो” आदि पर ई दृष्टि विभिन्न स्तरपर लागू होइत अछि।

भविष्यक संस्करणमे आधुनिक narratology—फोकलाइजेशन, कथावाचकक विश्वसनीयता, क्रम/अवधि/आवृत्ति, मुक्त अप्रत्यक्ष कथन, कथात्मक अन्तराल

—कैँ मैथिली उदाहरणसँ परिभाषित कएल जाए तँ ई खण्ड शोधार्थी लेल पाठ्यपुस्तक-समान उपयोगी भऽ सकैत अछि।

३.३ कविता, छन्द आ रूपात्मक प्रयोग

पैटर्न कविता, आकार-कविता, हाइकू, क्षणिका, दोहा, रोला, कुण्डलिया, गजल, गीत आ लोक-छन्दपर अध्यायसभ मैथिली काव्यालोचनाकेँ रूप-सजग बनबैत अछि। लालदासक “मिथिला रामायण”मे छन्दोभङ्गक खोज फिलोलॉजिकल अनुशासनक उदाहरण अछि, जखन “बूच जी” पर बहुविध सिद्धान्त-प्रयोग आधुनिक पाठालोचनक प्रयोगशीलता देखबैत अछि।

एहि क्षेत्रक मुख्य सुधार—प्रत्येक छन्द लेल परिभाषा, मात्रा/वर्ण गणना, पाठ-संस्करण, दोष/परिवर्तनक तालिका आ पर्याप्त उदाहरण। “पहिल बेर” वा “पहिल कवि” सन दावामे प्रकाशित/अप्रकाशित पुरान corpusक खोज अनिवार्य अछि।

३.४ नाटक आ रंगमंच

नाट्य-समीक्षाक क्षेत्रमे ग्रन्थ सबसँ अधिक सुसंगत अछि। लिखित पाठ, मंचनीयता, अभिनेता, लोकनाट्य, दर्शक, दृश्य-संरचना, नांदी-सूत्रधार, गीत-संगीत, ब्रेख्तीय दूरी, आधुनिक एबसर्ड/उत्तर-आधुनिक नाटक आ मिथकीय पुनर्लेखन—ई सभ एकहि आलोचनात्मक क्षितिजमे आबैत अछि। “सातो नाटकक सीमा, कमी आ वैचारिक तनाव” सन आत्म-आलोचनात्मक अध्याय विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ओ प्रशंसात्मक समीक्षा सँ आगे बढ़ि संरचनात्मक कमी, पात्र-विकास, पितृसत्ता आ मंचीय बाधाकेँ सेहो चिन्हैत अछि।

रंगमंचक अगिला शोधमे प्रदर्शन-दस्तावेज अनिवार्य अछि: एकहि नाटकक भिन्न निर्देशक/समूहक मंचन, दर्शक-प्रतिक्रिया, ध्वनि-प्रकाश, अभिनेता-दर्शक, दृश्य-परिवर्तन आ स्थानीय मंच-संरचनाक तुलना। केवल पाठक आधारपर “मंचनीय/अमंचनीय” निष्कर्ष अधूरा रहि सकैत अछि।

३.५ लोक-साहित्य, फील्डवर्क आ स्मृति

लोरिक, कुसमा-सलहेस, सीत-बसंत, पञ्जी, कृषि-मत्स्य शब्दावली, मिथिलाक बाढ़ि आ पलायन आदि सामग्री ग्रन्थकेँ लोक-अभिलेख बनबैत अछि। लोककथा/लोकगाथाकेँ स्थिर पाठ नहि मानि प्रदर्शन, स्मृति, समुदाय आ समयसँ बदलैत रूप मानब आधुनिक मौखिकता-अध्ययनसँ संगत अछि। Jack Goody सेहो मौखिक साहित्यक अर्थ बुझबाक लेल recitation-context आ audienceक महत्त्व पर जोर दैत छथि।

फील्डवर्क-आधारित अध्यायसभक स्थायी अकादमिक मूल्य बढ़एबाक लेल informant metadata, मूल ऑडियो/वीडियो, तिथि-स्थान, भाषा-रूप, कथनक संस्करण, सहमति आ संकलन-पद्धति देब जरूरी अछि। एहि सँ लोक-साहित्य “लेखकक स्मृति” मात्र नहि रहि पुनःपरीक्षण योग्य शोध-सामग्री बनत।

३.६ नारी, क्वीर आ दलित विमर्श

नारी-केंद्रित समीक्षाशास्त्र, “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम”, दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र, भारतीय दलित साहित्यक मैथिली अनुवाद, आम्बेडकर-विमर्श आ विभिन्न नाटक/कथामे वंचित पात्रक पुनर्पाठ ग्रन्थक नैतिक केन्द्र बनबैत अछि। एहि अध्यायसभमे साहित्यिक सौन्दर्यकेँ सामाजिक न्यायक विरोधी नहि, बल्कि आवाज, देह, भाषिक गरिमा, प्रतिरोध आ आत्मनिर्णयक रूप-संरचनासँ जोड़ल गेल अछि।

आधुनिक भारतीय क्वीर कैनन पर Oxford Handbookक शोध देखबैत अछि जे queer writing केँ “निश” सँ साहित्यिक केन्द्र दिस पुनर्स्थापित करबाक प्रक्रिया चलि रहल अछि। दलित आलोचना पर Laura Brueckक अध्ययन “Dalit consciousness” केँ पृथक साहित्यिक पहचान/कैननक निर्माणसँ जोड़ैत अछि। मूल ग्रन्थक दिशा एहि वैश्विक/भारतीय विमर्शसँ संगति रखैत अछि; मुदा मैथिली-विशेष अनुभव लेल स्थानीय queer/dalit लेखकक स्वकीय सिद्धान्त, मौखिक इतिहास आ पाठकीय अध्ययन आर जोड़ल जाए।

३.७ अनुवाद आ विश्व-साहित्य

मैथिली लेल अनुवाद सिद्धान्त आ तेरह संस्कृत कृतिक तुलनात्मक अध्ययन ग्रन्थक महत्त्वपूर्ण विश्व-साहित्यिक आयाम अछि। संस्कृत

नाटक/कथा/दर्शनकेँ मैथिलीमे आनब केवल भाषिक सेवा नहि; ई कैननक पुनर्वितरण, स्थानीय रंगमंचक सामग्री, पारिभाषिक शब्द-सृजन आ पाठकीय अधिकारक परियोजना अछि।

Anthony Pym साहित्यिक अनुवादक चर्चा मे घरेलूकरण/विरूपीकरण सन द्वैतक उपयोगिता संग ओकर सीमा देखबैत छथि; Alexander Bubb एशियाई क्लासिक्सक भिन्न अनुवादमे अनुवादकक सांस्कृतिक-राजनीतिक प्राथमिकतासँ भिन्न परिणाम देखबैत छथि। एहि आलोकमे मैथिली अनुवाद अध्यायसभ स्रोत-पाठ, संस्करण, छन्द, सांस्कृतिक पद, अनुवादकक हस्तक्षेप आ मंचीयता लेल एक पारदर्शी “translation commentary” जोड़ि सकैत अछि।

३.८ बाल-साहित्यक स्वतन्त्र सौन्दर्यशास्त्र

बाल-साहित्य अध्यायसभ मनोरंजन, ज्ञान, विज्ञान-बोध, पर्यावरण, अन्धविश्वास-विरोध, आयु-उपयुक्तता आ बाल-एजेंसीक प्रश्न उठबैत अछि। ई दिशा उपदेशप्रधान बाल-पाठसँ आगे बढ़ैत अछि। Kimberley Reynolds बाल-साहित्यक अध्ययनमे इतिहास, नैतिक बहस, विधा, पाठकीयता आ बदलैत मीडिया सभकेँ महत्त्वपूर्ण मानैत छथि; मूल ग्रन्थक transmedia/डिजिटल रुचि एहि आधुनिक दृष्टिसँ मेल खाइत अछि।

बाल-साहित्यक आलोचना लेल मात्र “नीक संदेश” पर्याप्त नहि। बाल-मनक बिम्ब, हास्य, आश्चर्य, कथा-गति, ध्वनि, चित्र, भयक स्तर, पुनर्पाठनीयता, भाषा-कठिनता आ वास्तविक बाल-पाठक प्रतिक्रिया—ई सभ मूल्यांकनक अंग बनब जरूरी अछि।

३.९ भाषा-विज्ञान, तिरहुता, शब्दकोश आ डिजिटल मैथिली

व्याकरण, भारोपीय भाषा-परिवार, सुरजापुरी-राजबंशी, कृषि-मत्स्य शब्दावली, पञ्जी-शब्दावली, जयकान्त मिश्रक शब्दकोश, तिरहुता, मैथिली विकीपीडिया आ भाषा-प्रौद्योगिकी अध्यायसभ साहित्यक आधारभूत भाषिक अवसंरचनाकेँ आलोचनाक भाग बनबैत अछि। ई दृष्टि विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, कारण अल्पसंसाधित भाषामे साहित्यिक भविष्य फॉन्ट, कीबोर्ड, यूनिकोड, कॉर्पस, शब्दकोश, OCR, TTS/STT, खोजयोग्यता आ स्थायी अभिलेखसँ जुड़ल अछि।

Unicode Standard तिरहुताकेँ मैथिलीक पारम्परिक लेखन-प्रणाली, ब्राह्मी-आधारित गौड़ी परम्परासँ विकसित आ चौदहम शताब्दी धरि पृथक रूप ग्रहण कएल लिपि बतबैत अछि। ई बाह्य मानक-स्रोत ग्रन्थक तिरहुता-संरक्षण आग्रहकेँ बल दैत अछि; मुदा बहुत प्राचीन उत्पत्ति सम्बन्धी व्यापक दावासभ लेल अतिरिक्त अभिलेखीय/लिपिवैज्ञानिक प्रमाण आवश्यक अछि। UNESCOक २०२४ डिजिटल भाषा-संरक्षण विमर्श सेहो स्पष्ट करैत अछि जे केवल Unicode पर्याप्त नहि—फॉन्ट, इनपुट, प्लेटफॉर्म, डेटा आ डिजिटल पारिस्थितिकी चाही। मूल ग्रन्थक डिजिटल मैथिली परियोजना एहि आधुनिक नीतिगत दिशा सँ उल्लेखनीय रूपेँ संगत अछि।

३.९.१ मैथिली भाषा, लिपि एवं साहित्य: गहन भाषावैज्ञानिक, ऐतिहासिक आ डिजिटल विमर्श

मैथिली भाषा भारोपीय भाषा परिवारक भारतीय-आर्य (Indo-Aryan) शाखाक एकटा प्राचीन, समृद्ध आ व्याकरणिक दृष्टि सँ अत्यंत विशिष्ट भाषा थिक। भारतक उत्तरी आ पूर्वी बिहार तथा नेपालक तराई (मधेश) क्षेत्रमे मुख्य रूप सँ प्रयुक्त ई भाषा अपन ऐतिहासिक सातत्य, समृद्ध गद्य-पद्य परंपरा, आ अद्वितीय भाषावैज्ञानिक संरचनाक लेल संपूर्ण विश्वक भाषाविद सभक ध्यान आकृष्ट करैत रहल अछि। प्रस्तुत शोध प्रतिवेदन मैथिलीक उद्भव आ ऐतिहासिक विकास, स्वनिम-व्यवस्था आ रूप-ध्वनिविज्ञान, विशिष्ट बहु-अन्वयी क्रिया-संरचना, तिरहुता (मिथिलाक्षर) लिपिक पुरातात्विक आ यूनिकोड मानकीकरण, मध्यकालीन गद्य सँ ल'क'समकालीन अंतर्विभागीय साहित्य, तथा आधुनिक प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) आ मशीन अनुवादक स्थितिक विशद एवं गहन विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि।

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान, उत्पत्ति आ उपबोलीक वर्गीकरण

मैथिलीक भाषावैज्ञानिक उद्भव प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (OIA) सँ मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (MIA) केर प्राकृत आ अपभ्रंश सोपानक माध्यम सँ भेल अछि। उन्नीसवीं शताब्दीक पाश्चात्य प्राच्यविद सभक मध्य मैथिलीक वर्गीकरणकेँ ल'क'अनेक भ्रांति छल। जॉन बीम्स (John Beames) एकरा बंगला भाषाक उपबोली मानलनि, तँ ए. एफ. आर. हॉर्नले (A. F. R.

Hoernle) एकरा पूर्वी हिंदीक संवर्गमे स्थान देलनि। जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपन आरंभिक अध्ययनमे मैथिली, मगही आ भोजपुरीकें एक संग 'बिहारी' वर्गमे समाहित कएलनि, मुदा बादक विस्तृत भाषावैज्ञानिक सर्वेक्षणमे मैथिलीक स्वतंत्र व्याकरणिक अस्तित्वकें रेखांकित कएलनि।

डॉ. सुभद्र झा अपन मानक शोध-ग्रंथ The Formation of the Maithili Language (१९५८) मे तुलनात्मक एवं ऐतिहासिक भाषाविज्ञानक आधार पर ई सिद्ध कएलनि जे मैथिली मागधी अपभ्रंश सँ उद्भूत एकटा स्वतंत्र भाषा थिक, जे संरचनात्मक दृष्टि सँ हिंदी आ बंगला दुनू सँ सर्वथा भिन्न अछि। मैथिलीक क्रियापदक रूप-रचना आ जटिल अन्वय प्रणाली एकरा अन्य भारतीय आर्यभाषा सँ पृथक करैत अछि। चर्यापदक भाषा आ विद्यापतिक पदावलीक भाषाई रूपक संबंधमे सुभद्र झा आ सुनीति कुमार चटर्जीक बीच दीर्घ विमर्श रहल, जाहिमे मैथिलीक प्राचीनतम रूपक ठोस साक्ष्य सुरक्षित भेटैत अछि।

विकासात्मक सोपान	ऐतिहासिक कालखंड	प्रमुख भाषावैज्ञानिक एवं संरचनात्मक लक्षण	प्रतिनिधि पाठ / पुरातात्विक साक्ष्य
प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (OIA)	ई.पू. १५०० – ई.पू. ५००	संश्लेषणात्मक पद-संरचना, त्रिलिंग व्यवस्था, त्रि-वचन, जटिल कारक विभक्ति	वैदिक संहिता आ पाणिनीय संस्कृत व्याकरण
मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (MIA)	ई.पू. ५०० – ई. १०००	प्राकृत आ मागधी अपभ्रंश, संयुक्त व्यंजनक समीभवन, विभक्तिक सरलीकरण	प्राकृत शिलालेख, अपभ्रंश साहित्य
आदि मैथिली (Proto-Maithili)	ई. १००० – ई. १३५०	स्वतंत्र पद-संरचना, सर्वनामक नवीन रूप, प्रारंभिक क्रिया-अन्वय	चर्यागीति, वर्ण-रत्नाकर (ज्योतिरीश्वर ठाकुर)
मध्य मैथिली (Middle Maithili)	ई. १३५० – ई. १८००	आदरार्थकताक विकास, ब्रजबुलीक	विद्यापति पदावली,

		साहित्यिक प्रयोग, तिरहुता लिप्यांकन	गोविंददास, मध्यकालीन नाटक
आधुनिक मैथिली (Modern Maithili)	ई. १८०० सँ निरंतर	विश्लेषणात्मक वाक्य-संरचना, ४४ स्वनिम, जटिल बहु-अन्वय आ डिजिटल प्रयुक्ति	आधुनिक साहित्य, विकीपीडिया, NMT

सुभद्र झा मैथिलीक सातटा प्रमुख उपबोलीक वर्गीकरण प्रस्तुत कएलनि, जाहिमे केंद्रीय/मानक मैथिली (मधुबनी आ राजविराजक मानक स्वरूप), दक्षिणी, पूर्वी, छिकाछिकी, पश्चिमी, जोलहा आ केंद्रीय आंचलिक रूप सम्मिलित अछि। ई क्षेत्रीय आ सामाजिक विविधता मैथिलीक सूक्ष्म ध्वनि-रचना आ रूप-संरचनात्मक समृद्धिक परिचायक थिक।

स्वनिम-व्यवस्था, ध्वनिविज्ञान आ रूप-ध्वन्यात्मक नियम (Morphophonemics)

प्रो. रामावतार यादवक A Reference Grammar of Maithili (१९९६) केर अनुसार आधुनिक मैथिलीमे कुल ४४ खंडीय स्वनिम (segmental phonemes) अछि, जाहिमे २७ व्यंजन, ८ मौखिक स्वर आ ९ संयुक्त स्वर (diphthongs) सम्मिलित अछि। मैथिलीमे सभ स्वर अंतर्निहित रूप सँ अनुनासिक भ' सकैत अछि, जाहिसँ स्वनिमिक स्तर पर स्वरक संख्या द्विगुणित भ' जाइत अछि।

मैथिलीक व्यंजन व्यवस्थाक मुख्य वैशिष्ट्य स्पर्श आ स्पर्श-संघर्षी व्यंजनमे घोषत्व (voicing) आ महाप्राणत्व (aspiration) केर चतुष्कोणीय विरोध (four-way contrast) थिक। हैस्किन्स लैबोरेटरीज (Haskins Laboratories, New Haven) मे कएल गेल फाइबरऑप्टिक आ ध्वनिक (acoustic) विश्लेषण सँ ई प्रमाणित भेल जे मैथिलीमे महाप्राणत्व मात्र उपध्वन्यात्मक (allophonic) नहि, वरन्पूर्णतः स्वनिमिक (phonemic) अछि।

वर्ग	ओष्ठ्य (Bilabial)	दंत्य (Dental)	मूर्धन्य (Retroflex)	तालव्य (Palatal)	कंठ्य (Velar)	काकल्य (Glottal)

अघोष अल्पप्राण	p (प)	t (त)	ʈ (ट)	tɕ / c (च)	k (क)	-
अघोष महाप्राण	pʰ (फ)	tʰ (थ)	ʈʰ (ठ)	tɕʰ / cʰ (छ)	kʰ (ख)	-
घोष अल्पप्राण	b (ब)	d (द)	ɖ (ड)	dʑ / ɟ (ज)	g (ग)	-
घोष महाप्राण	bʱ (भ)	dʱ (ध)	ɖʱ (ढ)	dʑʱ / ɟʱ (झ)	gʱ (घ)	-
नासिक्य	m (म)	n (न)	(ɳ) (ण)	-	ŋ (ङ)	-
पार्श्विक / लुंठित	-	l (ल), r (र)	ɽ (ड़), ɽʱ (ढ़)	-	-	-
संघर्षी	-	s (स)	-	(ʃ) (श)	-	h (ह)

रूप-ध्वनिविज्ञान (Morphophonemics) केर स्तर पर मैथिलीमे प्रत्यय संकलनक उपरांत धातु आ मूल पदमे अत्यंत सुव्यवस्थित ध्वन्यात्मक परिवर्तन घटित होइत अछि। उदाहरणार्थ, अपूर्णकालिक (imperfective) प्रत्यय /-ait/ जुड़लाक काल अ-कारांत धातुमे श्वा (schwa) लोप भ' जाइत अछि, जेना /kha-ait/ सँ खाइत [khait], /ja-ait/ सँ जाइत [jait], आ /ho-ait/ सँ होइत [hoit] बनि जाइत अछि। तहिना स्त्रीप्रत्यय /-ni/ आ /-ain/ क योग सँ उपधा स्वरमे ह्रस्वीकरण देखल जाइत अछि, जेना बाघ सँ बघिन आ बाभन सँ बभिन, मुदा सामाजिक-जातीय प्रत्यय /-ia/ जुड़ला पर केर दीर्घीकरण अनिवार्य रूप सँ होइत अछि, जेना दुसाध सँ दुसधिनिया आ मार सँ मरबा।

क्रिया-संरचना, आदरार्थी कोटि आ बहु-अन्वय (Multiple Agreement) व्यवस्था

मैथिली व्याकरणक सर्वाधिक विलक्षण पक्ष एकर क्रिया-अन्वय (verbal agreement) प्रणाली थिक। अधिकांश भारोपीय भाषा सभमे क्रिया केवल कर्ता (subject) केर लिंग, वचन आ पुरुष सँ अन्वित होइत अछि, मुदा मैथिलीमे क्रिया एकाधिक तर्क (arguments) जेना कर्ता, कर्म (object), संबंधकारक (possessor) आ वाक्य-बाह्य संबोध्य/श्रोता (allocutive referent) सँ एक संग अन्वित होइत अछि।

मैथिलीक अन्वय-प्रणालीक मुख्य भाषावैज्ञानिक तत्व निम्नलिखित रूपेँ विश्लेषित कएल जा सकैत अछि:

मैथिलीमे प्राचीन संस्कृतक व्याकरणिक लिंग आ वचन-व्यवस्थाक पूर्ण ह्रास भ' चुकल अछि, आ ओकर स्थान आदरार्थकता (honorificity) ल' लेने अछि। द्वितीय आ तृतीय पुरुषमे आदरक स्पष्ट त्रि-स्तरीय वर्गीकरण अछि—उच्च आदरार्थी (High Honorific - H), मध्यम आदरार्थी (Mid-Honorific - MH), आ अनादरार्थी/साधारण (Non-Honorific - NH)।

दरभंगा एवं केंद्रीय मानक मैथिलीमे क्रियापद कर्ता आ कर्म दुनूक पुरुष एवं आदर-मूल्यकेँ एकहि संयुक्त प्रत्यय (portmanteau morpheme) मे समाहित करैत अछि। उदाहरणार्थ, वाक्य "हम तोरा देखलिअह" (I saw you [MH]) मे धातु देख- संग प्रयुक्त -लिअह प्रत्यय एकहि काल प्रथम पुरुष कर्ता (१) आ द्वितीय पुरुष मध्यम आदरार्थी कर्म (२MH) केर संयुक्त बोध करबैत अछि।

वाक्यमे कर्मक अनुपस्थितियोमे क्रिया निष्पादित भेलाक काल संबोध्य श्रोताक सामाजिक स्थितिक आधार पर क्रियापद परिवर्तित भ' जाइत अछि, जकरा संबोध्य अन्वय (Allocutive Agreement) कहल जाइत अछि। यदि श्रोता उच्च आदरणीय होथि तँ क्रियामे -ऐन्ह वा -थि आ अनादरार्थी भेला पर -औक प्रत्यय लगैत अछि।

कर्ता (Subject)	**कर्म / संबोध्य (Object/Addressee)**	**क्रिया-मूल (Root)**	**काल/ प्रत्यय (TAM)**	**संयुक्त क्रियापद (Finite Verb)**	**अर्थ / वाक्य रचना**
१ (हम - 1st Person)	३NH (ओकरा)	देख- (dekh-)	-ल- + -अक (-l-ak)	**देखलिऐक**	हम ओकरा देखलिऐक (I saw him [NH])
१ (हम - 1st Person)	३H (हुनका)	देख- (dekh-)	-ल- + -इन्ह (-l-inh)	**देखलियन्हि**	हम हुनका देखलियन्हि (I saw him [H])
२H (अहाँ	३NH (ओकरा)	देख-	-ल- + -अहुन	**देखलहुँ** /	अहाँ

- 2nd Hon)		(dekh-)	(-l-ahun)	**देखलियैक**	ओकरा देखलहुँ (You [H] saw him [NH])
३H (ओ - 3rd Hon)	१ (हमरा)	देख- (dekh-)	-ल- + -थि (-l-thi)	**देखलनि**	ओ हमरा देखलनि (He [H] saw me)
३NH (ओ - 3rd Non-Hon)	३NH (ओकरा)	मार- (mar-)	-ल- + -कैक (-l-kaik)	**मारलकैक**	ओ ओकरा मारलकैक (He [NH] beat him [NH])

उत्पादक वाक्यविन्यास (Generative Syntax) केर दृष्टि सँ, मैथिलीक आदरार्थी अन्वयक व्याख्या बाह्य संदर्भ वाक्यांश (Context Phrase / cP) केर आधार पर कएल जाइत अछि। पोर्टनर, पाक आ जानुतिनी (2019) तथा चंद्रा, कुमारी आ पाक (2021) केर सिद्धांतानुसार, वाक-संरचनाक वाम परिधि (Left Periphery) मे अवस्थित c-शीर्ष (c-head) वक्ता आ श्रोताक सामाजिक स्थिति (status feature) कें बांधैत अछि, जाहिसँ क्रियापद पर संबोध्य अन्वय प्रत्यक्षीकृत होइत अछि। ग्रेगरी स्टंप आ रामावतार यादव (1988) एकरा 'नियंत्रण अन्वय सिद्धांत' (Control Agreement Principle) केर तहत व्याख्यायित कएलनि, जतय कार्यात्मक प्रमुखता (functional prominence) आ विपर्यासित केंद्रण (contrastive focus) अन्वयक मुख्य नियंत्रक तत्व बनैत अछि।

लिपि-परंपरा: तिरहुता (मिथिलाक्षर), कैथी आ देवनागरी

मैथिलीक मौलिक आ ऐतिहासिक लिपि तिरहुता (जकरा मिथिलाक्षर वा वैदेही लिपि सेहो कहल जाइत अछि) थिक। ई लिपि ब्राह्मी लिपि सँ विकसित भ' पूर्वी भारतीय गौड़ी/प्रोटो-मैथिली-बंगाली शाखा सँ १०वीं शताब्दी धरि अपन स्वतंत्र स्वरूप ग्रहण क' लेलक।

तिरहुता लिपिक प्राचीनता आ ऐतिहासिक विकासक साक्ष्य अनेक पुरातात्विक अभिलेखमे सुरक्षित अछि। बांका जिलाक बौंसीमे स्थित मंदार पर्वत पर राजा आदित्यसेन केर ७वीं शताब्दीक शिलालेख सँ ल'क' ९५० ईस्वीक सहोदरा पाषाण शिलालेख धरि एकर प्रारंभिक रूप दृष्टव्य अछि। कर्णाट वंशीय शासक सभक राजधानी सिमरौनगढ़ सँ प्राप्त १२वीं शताब्दीक शिलालेख आ १४३५ ईस्वीक ओइनवार वंशीय राजा नरसिंह देवक कंदहा सूर्य मंदिर शिलालेख तिरहुता लिपिक परिपक्व ऐतिहासिक स्वरूपकें प्रमाणित करैत अछि।

लिपि	लिपि-परिवार	ऐतिहासिक प्रयोग क्षेत्र	प्रमुख संरचनात्मक वैशिष्ट्य
तिरहुता (मिथिलाक्षर)	ब्राह्मी गौड़ी तिरहुता	धार्मिक अनुष्ठान, पंजी-प्रबंध, साहित्यिक पाण्डुलिपि, वैवाहिक पाता	विशिष्ट 'आंजी' मांगलिक चिह्न (ꣽ), शिरोरेखा, जटिल संयुक्ताक्षर
कैथी	ब्राह्मी मध्य देशीय	राजस्व, न्यायालय, प्रशासनिक अभिलेख, व्यापारिक बहीखाता	त्वरित लेखन हेतु शिरोरेखा-विहीन स्वरूप, वक्राकार संरचना
देवनागरी	ब्राह्मी उत्तरी नागरी	आधुनिक मुद्रण, पाठ्यपुस्तक, समकालीन साहित्य, सरकारी कामकाज	मानकीकृत वर्णमाला, मुद्रण सुलभता, अंतर-क्षेत्रीय संप्रेषण

तिरहुता लिपिमे १४ स्वरवर्ण (स्वर वर्ण), ३३ मूल व्यंजन वर्ण (व्यञ्जन वर्ण), १७ स्वर मात्रा चिह्न आ विशिष्ट दशमलव संख्यांक (०-९: ० सँ ९) विद्यमान अछि। मुद्रण तकनीकक अभाव आ बीसवीं शताब्दीमे देवनागरीक सर्वव्यापक प्रसारक कारणेँ तिरहुताक दैनिक प्रयोग सीमित भ' गेल, यद्यपि सांस्कृतिक कर्मकांड, विवाहक पाता (पत्र) आ पंजी-प्रबंधमे एकर जीवंतता अखनो सुरक्षित अछि।

साहित्यिक परंपरा, ज्ञानशास्त्रीय इतिहास आ समकालीन विमर्श

मैथिली साहित्यक ऐतिहासिक विकास प्राचीन ज्ञानमीमांसा, मध्यकालीन गीति-काव्य आ आधुनिक सामाजिक यथार्थवादक एकटा सुदृढ़ शृंखला प्रस्तुत करैत अछि। आदि कालमे चर्यापदक रहस्यवादी गीति सँ आरंभ भ' ई परंपरा १३२४ ईस्वीमे कर्णाटकालीन विद्वान कविशेखर ज्योतिरीश्वर ठाकुर रचित वर्ण-रत्नाकर धरि पहुँचैत अछि। वर्ण-रत्नाकर आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक प्राचीनतम उपलब्ध गद्य-ग्रंथ थिक, जे नगर, नायिका, आस्थान, ऋतु, प्रयाण, भट्टादि आ श्मशान नामक सातटा कल्लोल (तरंग) मे मध्यकालीन भारतक भूगोल, संस्कृति, कला, संगीत आ सिद्ध परंपरा (जाहिमे ८४ सिद्धक अंतर्गत ७६ नाम उपलब्ध अछि) केर विश्वकोशीय आलेख प्रस्तुत करैत अछि।

चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दीमे महाकवि विद्यापति ठाकुर राधा-कृष्णक प्रेम, नचारी (शिव-भक्ति) आ व्यावहारिक गीति-काव्य द्वारा मैथिलीकेँ अखिल भारतीय प्रतिष्ठा देलनि। विद्यापतिक काव्य-प्रतिभाक प्रभाव संपूर्ण पूर्वी भारत —बंगाल, असम आ ओड़िशा धरि विस्तृत भेल, जाहिसँ एकटा विशिष्ट साहित्यिक भाषा ब्रजबुली केर जन्म भेल, जाहिमे चंडीदास सँ ल'क'रवींद्रनाथ ठाकुर धरि शताब्दियों पर्यन्त रचना कएलनि।

आधुनिक कालमे मैथिली साहित्य सामाजिक असमानता, जातिगत दमन आ अंतर्विभागीय (intersectional) उत्पीड़नकेँ यथार्थवादी धरातल पर स्वर देलक अछि। मैथिली ग्रामीण पृष्ठभूमिमे रचित कथा सभ भौतिक स्थान, आर्थिक विषमता आ लिंग तथा जातिक दोबड़-उत्पीड़न (double oppression) केर सूक्ष्म आ काव्यात्मक चित्रण प्रस्तुत करैत अछि। गंगेश उपाध्यायक वास्तविक पंजी अभिलेख पर आधारित गजेंद्र ठाकुरक कथा 'शब्दशास्त्रम्' (अंग्रेजी अनुवाद: The Science of Words, साहित्य अकादेमी, २०१४) मिथिलाक पारंपरिक ज्ञान-संरचना आ सामाजिक स्तरीकरणक द्वंद्वकेँ विमर्शक केंद्रमे अनलक।

समकालीन विमर्शमे ईएफएलयू (EFLU) हैदराबाद सँ शोधरत दृष्टिबाधित एवं वंचित वर्गक रचनाकार डॉ. फणिजाक साहित्य लिंग, जाति आ दिव्यांगता (disability) क चौबटिया पर प्रतिरोधक स्वर मुखरित करैत अछि। ओ 'उन्माद' (madness) केँ कोनो चिकित्सीय कमीक स्थान पर व्यवस्था-विरोधी विद्रोही

प्रतिरोधक रूपमे विश्लेषित कएलनि। वाचिक साहित्यमे दादी-नानीक मौखिक बाल-कथा, बिहुला-विषहरा आ मधुश्रावणीक पावनि-कथाक समृद्ध परंपरा रहितो आधुनिक बाल-साहित्यमे अनुवादक कृत्रिमताक स्थान पर लिली रे सदृश रचनाकार मौलिक यथार्थवादी प्रयोग सँ नूतन दिशा देलनि।

डिजिटल मैथिली, यूनिकोड मानकीकरण आ प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP)

इक्कीसवीं शताब्दीक सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति मैथिली भाषाक दस्तावेजीकरण आ संप्रेषणकें अभूतपूर्व संबल प्रदान कएलक अछि। डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्रमे मैथिलीक प्रवेश सँ प्राचीन पांडुलिपिक संरक्षण आ आधुनिक कम्प्यूटेशनल उपयोगिता दुनू सुनिश्चित भेल अछि।

डिजिटल आयाम	आरंभ वर्ष	मुख्य योगदानकर्ता / संस्था	तकनीकी विवरण एवं महत्व
तिरहुता यूनिकोड मानकीकरण	२०१४ (Unicode 7.0)	अंशुमन पाण्डेय, गजेंद्र ठाकुर (विदेह)	ब्लॉक कोड: U+11480 सँ U+114DF; कुल ९६ संप्रतीक (वर्ण, मात्रा, अंक)
मैथिली विकीपीडिया	२०१४	राजेश रंजन, आमिर अहारोनी, रुना भट्टाचार्य, मुजम्मिल	मुक्त ज्ञानकोश, मानक मैथिली गद्यक डिजिटल संग्रह
संवैधानिक मान्यता (अष्टम अनुसूची)	२००३	मैथिली आंदोलन, भारत सरकार	९२म संविधान संशोधन द्वारा राष्ट्रीय भाषाक रूपमे मान्यता
गूगल अनुवाद (Google Translate)	मई २०२२	गूगल (Google & Alphabet)	न्यून-संसाधन हेतु एकल-भाषी न्यूरल मशीन अनुवाद (NMT) मॉडल
माइक्रोसॉफ्ट अनुवादक	मई २०२३	माइक्रोसॉफ्ट इंडिया (Microsoft)	बहुभाषी न्यूरल क्लाउड अनुवाद अवसंरचना

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालयक शोधकर्ता अंशुमन पाण्डेय द्वारा ३० सितंबर २००९ मे प्रस्तावित आ २०११ मे संशोधित प्रारूप (L2/11-175R) केर आधार पर जून २०१४ मे यूनिकोड कंसोर्टियम (Unicode Standard Version 7.0) द्वारा तिरहुता लिपिकें U+11480–U+114DF ब्लॉकमे आधिकारिक रूप सँ स्थान देल गेल। एहि ब्लॉकमे मांगलिक आंजी चिह्न (𑒿: U+11480), स्वर एवं व्यंजन वर्ण (U+11481–U+114AF), निर्भर मात्रा चिह्न (U+114B0–U+114BE), तथा तिरहुता दशमलव अंक ०-९ (𑓐-𑓙: U+114D0–U+114D9) समाहित अछि, जाहिसँ ऐतिहासिक अभिलेखक डिजिटल मुद्रण आ फॉन्ट विकासक मार्ग प्रशस्त भेल।

प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) केर क्षेत्रमे, मई २०२२ मे गूगल द्वारा मैथिलीकें गूगल अनुवादमे सम्मिलित कएल गेल। न्यून-संसाधन भाषा (low-resource language) भेलाक कारणेँ समानांतर पाठ (parallel corpora) केर अभावक समाधान हेतु गूगल 'मोनोलिंगुअल मशीन लर्निंग एप्रोच' केर उपयोग कएलक, जतय मॉडल बिना प्रत्यक्ष द्विभाषी अनुवाद देखने अनुवादक क्षमता विकसित करैत अछि। तथापि, मैथिलीक बहु-अन्वयी क्रिया-संरचना आ आदरार्थी कोटिक जटिलताक कारणेँ स्वचालित अनुवादमे अखनो संदर्भ-दोष देखल जाइत अछि, जकरा दूर करबा लेल गहन भाषावैज्ञानिक वृक्ष-बैंक (Treebanks) आ गुणवत्तापूर्ण समानांतर कॉर्पोराक निर्माण अनिवार्य अछि।

निष्कर्ष

मैथिली भाषाक समग्र विकास-यात्रा मागधी अपभ्रंशक ऐतिहासिक गर्भ सँ ल'क'आधुनिक यूनिकोड आ न्यूरल मशीन अनुवाद धरि एकटा निरंतर गतिशील ज्ञान-परंपराक प्रकटीकरण थिक। भाषावैज्ञानिक दृष्टि सँ, मैथिलीक ४४ स्वनिम, जटिल रूप-ध्वनिविज्ञान, आ विशिष्ट 'बहु-अन्वय' एवं 'संबोधक अन्वय' (allocutive agreement) विश्व-भाषाविज्ञान लेल एकटा अद्वितीय प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि।

साहित्यिक स्तर पर वर्ण-रत्नाकरक मध्यकालीन ज्ञानकोशीय गद्य सँ ल'क'समकालीन दलित, शोषित आ अंतर्विभागीय प्रतिरोधक स्वर मैथिलीक वैचारिक समृद्धिकें दर्शाबैत अछि। डिजिटल युगमे तिरहुताक यूनिकोड मानकीकरण (U+11480–U+114DF) आ मशीन अनुवादक विस्तार भाषाक

वैश्विक प्रतिष्ठाकेँ सुदृढ़ कएलक अछि। भविष्यक भाषावैज्ञानिक शोधमे मैथिलीक आदरार्थी वाक्य-संरचनाक कम्प्यूटेशनल मॉडलिंग, तिरहुता लिपिक ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन (OCR) तकनीक, आ बृहद भाषिक कॉर्पोराक संवर्धन सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यभार सिद्ध होएत।

३.१० नव्य-न्याय, दर्शन आ साहित्य

गङ्गेश, तत्त्वचिन्तामणि, उदयनाचार्य, आत्मतत्त्वविवेक, न्यायकुसुमाञ्जलि आ भामती सम्बन्धी अध्याय ग्रन्थक ज्ञानमीमांसात्मक विस्तार देखबैत अछि। साहित्यिक आलोचनामे प्रमा, अनुमान, अभाव, शब्द-प्रमाण, पक्षता आ व्याप्ति सन उपकरण आनलासँ “पात्र की जानैत अछि?”, “दावा कोन प्रमाणपर टिकल अछि?”, “अनुपस्थिति आ अज्ञानमे की अन्तर?” सन सूक्ष्म प्रश्न उठैत अछि।

Stanford Encyclopedia of Philosophy गङ्गेशकेँ चौदहम शताब्दीक प्रमुख न्याय-दार्शनिक आ Tattvacintāmaṇikĕ नव्य-न्यायक निर्णायक ग्रन्थ मानैत अछि, संगहि “पुरान/नव न्याय”क कठोर विच्छेदकेँ सरल नहि मानबाक चेतावनी दैत अछि। अतः मूल ग्रन्थमे नव्य-न्यायक साहित्यिक उपयोग एक समृद्ध मौलिक दिशा अछि, मुदा दार्शनिक इतिहासक दावासभमे विशेषज्ञ स्रोतक अनुशासन आवश्यक अछि।

३.११ साहित्यिक संस्था, पुरस्कार आ सार्वजनिकता

साहित्य अकादेमी, परामर्शदात्री समिति, पुरस्कार, विशेषांक, छद्म समीक्षा, साहित्यिक चोरी आ संस्थागत वर्चस्व सम्बन्धी अध्याय साहित्यक “संस्था-शास्त्र” सामने आनैत अछि। साहित्य केवल कृति नहि; पुरस्कार, सम्पादक, समिति, पत्रिका, प्रकाशक, नेटवर्क आ प्रतिष्ठा सेहो कैनन बनबैत अछि—ई बात ग्रन्थ ठीक पकड़ैत अछि।

मुदा एहि अध्यायसभमे सबसँ कठोर अकादमिक अनुशासन अपेक्षित अछि। आरोप, व्यंग्य आ व्यक्तिगत भाषा साक्ष्यक स्थान नहि लऽ सकैत अछि। प्रत्येक विवाद लेल मूल दस्तावेज, प्रकाशन-तिथि, तुलनात्मक पाठ, निर्णय-नियम, सम्बन्धित पक्षक उत्तर आ स्वतंत्र सत्यापन देल जाए; नहि तँ वैध संस्थागत आलोचना व्यक्तिगत विवाद बुझा सकैत अछि।

३.१२ सम्पादकीय शैली आ ग्रन्थक पठनीयता

१६६२ पृष्ठक विशालता अपनेमे अभिलेखीय उपलब्धि अछि, मुदा पुनरावृत्ति, एकहि विषयक अनेक संस्करण, अति-विस्तृत उद्धरण, व्यक्तिगत टिप्पणी, अचानक विषय-परिवर्तन आ किछु नोट-जकाँ अध्याय पाठकीय नेविगेशन कठिन करैत अछि। “जयकान्त मिश्र”, “माटिक बासन”, “शरदिन्दु चौधरी”, “केदारनाथ चौधरी” आदि विषयक पुनरागमन उपयोगी हो सकैत अछि, जँ प्रत्येक पुनरावृत्तिक उद्देश्य स्पष्ट हो—पहिल परिचय, दोसर विस्तृत समीक्षा, तेसर पुनर्पाठ इत्यादि।

एक आधुनिक scholarly edition लेल प्रत्येक अध्यायमे एकरूप चारि भाग उपयोगी होयत: “सारांश”, “मुख्य तर्क”, “पाठ-साक्ष्य/पद्धति”, “निष्कर्ष आ सीमा”; अन्तमे निश्चित bibliography। विवादित अध्यायमे “दावा/प्रमाण/स्थिति” बाक्स, फील्डवर्कमे metadata, आ डिजिटल अध्यायमे version-date देल जाए। एहि सँ ग्रन्थक बौद्धिक ऊर्जा बिना सामग्री घटौने बहुत अधिक पठनीय आ उद्धरणयोग्य बनत।

४. बाह्य प्रामाणिक शोधक आलोकमे तुलनात्मक निष्कर्ष

क्षेत्र	बाह्य स्रोत	मुख्य शोध-संकेत	मूल ग्रन्थ लेल अर्थ
तिरहुता	Unicode Standard 16.0	तिरहुता मैथिलीक पारम्परिक लिपि; गौड़ी/प्रोटो-बंगाली परम्परासँ विकास; चौदहम शताब्दी धरि पृथकता।	लिपि-संरक्षण सम्बन्धी मूल ग्रन्थक दिशा पुष्ट; अति-प्राचीन वंशावलीक दावासभ लेल आर लिपिवैज्ञानिक प्रमाण चाही।
डिजिटल भाषा-संरक्षण	UNESCO, 2024	लिपि/भाषाक डिजिटल अस्तित्व लेल encodingक संग platforms, fonts, input आ data ecosystem	Unicode, font, Wikipedia, OCR/TTS/STT आ डिजिटल प्रकाशनकेँ एक पारिस्थितिकी मानबाक मूल

		महत्त्वपूर्ण।	ग्रन्थक दृष्टि दूरदर्शी।
मौखिक साहित्य	Jack Goody, Cambridge	recitation-context आ audience बिना oral literatureक अर्थ अधूरा; लेखनक आगमनसँ विधा बदलैत अछि।	लोकगाथा/ खिस्सा अध्यायमे प्रदर्शन-सन्दर्भ आ field metadata आर व्यवस्थित होए।
दलित आलोचना	Laura R. Brueck, Cambridge	Dalit consciousness पृथक साहित्यिक पहचान आ आलोचनात्मक सीमा निर्मित करैत अछि।	दलित समीक्षाशास्त्रक स्वायत्तता पर मूल ग्रन्थक जोर तुलनात्मक रूपेँ उचित; समुदाय-आधारित आत्म-प्रतिनिधित्व आर बढ़े।
भारतीय क्वीर कैनन	R. Raj Rao, Oxford Handbook	बहुभाषी queer writing आधुनिक भारतीय कैननक केन्द्र दिस बढ़ि रहल अछि; queer aestheticsक प्रश्न महत्त्वपूर्ण।	मैथिली queer/feminist framework समयोचित; स्थानीय corpus आ intersectionality आर गहन होए।
साहित्यिक अनुवाद	Anthony Pym; Alexander Bubb, Oxford	domestication/ foreignization उपयोगी मुदा सीमित द्वैत; अनुवादकक सांस्कृतिक प्राथमिकता पाठ बदलैत अछि।	मैथिली अनुवाद सिद्धान्तमे स्रोत-लक्ष्य समानान्तर पाठ आ अनुवादक-निर्णयक पारदर्शिता जोड़ल जाए।

बाल-साहित्य	Kimberley Reynolds, Oxford	बाल-साहित्य विधा, इतिहास, नैतिकता, आयु, मीडिया आ पाठकीयता सभक अध्ययन मांगैत अछि।	मूल ग्रन्थक विज्ञान/पर्यावरण/बाल-एजेंसी दिशा मजबूत; empirical child-reader response जोड़ल जाए।
नव्य-न्याय	Stanford Encyclopedia of Philosophy	गङ्गेश आ Tattvacintāmaṇi नव्य-न्यायक केन्द्रीय बिन्दु; परम्परामे निरन्तरता सेहो महत्त्वपूर्ण।	नव्य-न्यायकेँ साहित्यिक प्रमाण-विश्लेषणमे लगेनाइ मौलिक; दार्शनिक इतिहासमे अधिक स्रोत-अनुशासन आवश्यक।

५. प्रथम खण्ड — सिद्धान्त: ५६/५६ अध्यायक पृथक समीक्षा

१. प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना

मूल प्रतिपाद्य — मैथिली लेल समीक्षाशास्त्रक सिद्धांत-कला आ साहित्य लेल कोनो सैद्धांतिक प्रयोजन हेबाक चाही? साहित्यक विभिन्न विधा जेना पद्य, प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प, उपन्यास, पत्रात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्ताज, नाटक आ एकांकी मनोरंजनक लेल सुनल-सुनाओल-पढ़ल जाइत अछि वा मंचित कएल जाइत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। व्यक्तिगत स्मृतिमे वर्ग, परिवार, भाषा आ सामाजिक समयक छाप खोजबाक पद्धति संस्मरणकेँ निजी गपसँ सार्वजनिक इतिहासक स्तर पर लैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। स्मृति आ तथ्यक अन्तर, आत्मकथात्मक संधि, समय-दूरी, अभिलेखीय प्रमाण आ कथात्मक चयनक प्रभाव स्पष्ट कएल जाए।

२. मैथिलीमे पैटर्न कविता आ आकार-कविता

मूल प्रतिपाद्य — मैथिली मे पहिल बेर १. पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता आ २. शेप वा कंक्रीट (आकार) कविता पाँतिक छन्दमे लिखल कविता भेल पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता। ई भेल कोनो बेर-बेर पुनरावृत्ति हुअयबला पद्य रचना।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

३. नव्य-न्यायक दृष्टि: प्रमा, अभाव आ प्रामाण्य

मूल प्रतिपाद्य — एहि संग्रहमे ज्ञान-मीमांसाक अनेक सूत्र नाटकीय रूपमे विद्यमान अछि, जकर पाठ नव्य-न्यायक उपकरणसँ कएल जा सकैत अछि। ‘चालिस चोर’ मे गोनूक प्रत्येक विजय अनुमान आ युक्तिक-अर्थात् ‘प्रमा’ क-विजय थिक; बल बनाम बुद्धिक द्वन्द्वमे नाटक प्रमाण-व्यापारकेँ सर्वोपरि घोषित करैत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि। भारतीय ज्ञानमीमांसा—विशेषतः न्याय/नव्य-न्याय—केँ साहित्यिक अर्थनिर्माण, प्रमाण, अनुमान आ पाठकीय विश्वाससँ जोड़बाक प्रयास मौलिक अन्तरविषयी संभावना खोलैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए, तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए। दार्शनिक पारिभाषिक शब्दक मूल संस्कृत परिभाषा, मान्य टीका, आधुनिक शोध-व्याख्या आ साहित्यिक अनुप्रयोगक चारि अलग स्तर स्पष्ट रखल जाए।

४. गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र

मूल प्रतिपाद्य — गद्यक विभिन्न विधा जेना प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प, उपन्यास, पत्रात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्ताज आदिक मध्य कथा-गल्प, आख्यान आ उपन्यास अनुभव मिश्रित कल्पनापर विशेष रूपसँ आधारित अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। व्यक्तिगत स्मृतिमे वर्ग, परिवार, भाषा आ सामाजिक समयक छाप खोजबाक पद्धति संस्मरणकेँ निजी गपसँ सार्वजनिक इतिहासक स्तर पर लैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए, तँ तर्कक

परीक्षणीयता बढ़त। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। स्मृति आ तथ्यक अन्तर, आत्मकथात्मक संधि, समय-दूरी, अभिलेखीय प्रमाण आ कथात्मक चयनक प्रभाव स्पष्ट कएल जाए।

५. गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र

मूल प्रतिपाद्य — मैथिलीमे दीर्घ कथा कैँ सेहो कखनो-काल उपन्यास कहल जाइए। दीर्घ कथा मे जीवनक किछु पक्ष क विस्तार सँ चर्चा होइत अछि मुदा लघुकथामे से पलखति लेखककेँ नै भेटैत छै। मुदा विहनि कथा सँ बेशी पलखति तँ एतऽ रहिते छै।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

६. गद्य साहित्य मध्य उपन्यासक स्थान आ उपन्यासक समीक्षाशास्त्र

मूल प्रतिपाद्य — उपन्यासक आरम्भ: वाणभट्टक कादम्बरी राजा शूद्रकक विदिशानगरीक वर्णनसँ प्रारम्भ होइत अछि। एकटा चाण्डाल अतीव सुन्दरी कन्या वैशम्पायन नाम्ना ज्ञानी सुग्गाकेँ लेने दरबार अबैत अछि आ प्रारम्भ होइत अछि सुग्गाक खिस्सा।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे

कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

७. शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र

मूल प्रतिपाद्य — बाल साहित्यमे मोटामोटी एक बर्ख सँ कम उमेरक बच्चा सँ लऽ कऽ अ ट्टार ह बर्खक किशोर धरि क उपयोगक साहित्य सम्मिलित अछि। मानसिक रूपसँ आस्ते-आस्ते सीखए बला बच्चा लेल ई वर्गीकरण क ने दोसर तरहेँ हएत, जेना जे सामान्य छह बर्खक बच्चा लेल बाल साहित्य मानल जाइए से हुनका लोकनि लेल दस बर्खक आयु मे प्रयुक्त भऽ...

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। बाल-पाठककेँ निष्क्रिय नैतिक-शिक्षार्थी नहि मानि जिज्ञासु, सक्रिय आ विविध आयुवर्गक पाठक रूपेँ सोचबाक दिशा आधुनिक बाल-साहित्य अध्ययनसँ संवाद करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। आयुवर्ग, शब्द-स्तर, चित्र-पाठ सम्बन्ध, बाल-पाठक प्रतिक्रिया, हास्य, भय, विज्ञान-बोध आ लिंग/जाति प्रतिनिधित्वक पृथक कसौटी बनाओल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

८. मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त आ अनूदित साहित्यक समीक्षाशास्त्र

मूल प्रतिपाद्य — गुणाढ्यक पैशाची भाषाक वृहत्कथा क क्षेमेन्द्रक कथा मं ज री वा सोमदेवक कथासरित्सागर क अनुवाद होएबाक कथा कथा कहबाक शैली सेहो भऽ सकैए मुदा ई अनुवाद क कथाक प्रारम्भ तँ क हिते अछि। अनुवादक इतिहास बड्डु पुरान छै।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। अनुवादकेँ केवल शब्द-प्रतिस्थापन नहि, बल्कि अर्थ, छन्द, सांस्कृतिक स्मृति, रंगमंचीयता आ पाठकीय पुनर्जन्मक प्रक्रिया रूपेँ देखल गेल अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। स्रोत-पाठ/लक्ष्य-पाठक समानान्तर उद्धरण, अनुवाद-निर्णयक सूची, घरेलूकरण-विरूपीकरण आ अनुवादक-दृश्यताक तुलनात्मक परीक्षण जोड़ल जाए। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

९. पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र

मूल प्रतिपाद्य — साहित्यक दू विधा अछि गद्य आ पद्य। छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथाओगद्यथीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए। हरिमोहनझा“अकविताक प्रति: कविताक उक्ति” लिखै छथि आ गोपाल जी झा“गोपेश” “हे कविकोकिल आजुक युगमे अहाँ जे होइतहुँ” मेकहैछथि--अपनहि लिखित हुँ अपनहि बुझितहुँ-आ से कहि अपन अपन मत स्पष्ट करै छथि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक

भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

१०. नाटच साहित्य, समानान्तर मैथिली नाटक आ रंगमंच; आ नाटच साहित्यक समीक्षाशास्त्र

मूल प्रतिपाद्य — रामखेलावन मण्डलगाम-कटघटरा, प्रखण्ड–शिवाजीनगर, जिला-समस्तीपुर, हिनके संग बिन्देश्वर मण्डल सेहो छलाह। उठैत मैथिली कोरस आ माँ गै माँ तूँ हमरा बंदूक मंगा दे किहमतँमाँसिपाहीहेबै-एखनो लोककेँ मेा न छन्हि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

११. मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका

मूल प्रतिपाद्य — हैकू सौंदर्य आ भावक जापानी काव्य विधा अछि, आ जापानमे एकरा काव्य-विधाक रूप देलन्हि कवि मात्सुओ बासो १६४४-१६९४। एकर रचनाक लेल परम अनुभूति आवश्यक अछि। बाशो कहने छथि, जे जे क्यो जीवनमे ३ सँ ५ टा हैकूक रचना कएलन्हि से छथि हैकू कवि आ जे दस टा हैकूक रचना कएने छथि से छथि महाकवि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

१२. दोहा/रोला/कुण्डलिया

मूल प्रतिपाद्य — कुण्डलीछत्ता घुरछा पल्लौसँ, भेल दिने अन्हार। दिन बितलापर घर घुरी, काल भेल विकराल॥काल भेल विकराल, पोरे-पोर सिहरैए। सुनत केओ सवाल, बोल बगहा लगबैए। ऐरावत बेहाल, बोल कतऽ भेल निपत्ता। घुरियाए बनि काल, पैसि बिच घोरन छत्ता।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक

छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

१३. मैथिली गद्य आ पद्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र

मूल प्रतिपाद्य — जहिया प्रेस आएल छल त ओकरा बुर्जुआ वर्गक होएबाक विशेषण भेटल रहय, उपन्यास सेहो प्रेस अएलापर आयल से ओहो बुर्जुआ साहित्य रहय मुदा आस्ते-आस्ते ओ धारणा खत्म भेल| अंतर्जालक साहित्य सेहो प्रिंट साहित्यक पूरक रहबे करत| जे लोक कम्प्यूटर स्क्रीनपर नै देखताह त प्रिंट कय देखताह| आ प्रिंट ओन डीमांडक सुविधा सेहो पोथी डाट काम आ आन साइट/ प्रकाशक दय रहल छथि| मैथिली लेल अंतर्जाल द्वारा प्रकाशनक नियमितता, वितरणक समस्याक समाप्ति, शून्य लागत आ...

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

१४. मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच

मूल प्रतिपाद्य — नाट्य शास्त्रमे वर्णन अछि जे नाटकक उत्पत्ति इन्द्रक ध्वजा उत्सवसँ भेल। मैथिली नाटक आ रंगमंचक इतिहास ज्योतिरीश्वरक धूर्त समागम आ अंकिया नाटसँ प्रारम्भ होइत अछि। कोलकातामे १८५० ई. क

आसपास आधुनिक रंगमंच- ब्रिटिश क्लबमे शुरू भेल, मुदा बाहरी लोकक प्रवेश ओतए नै छल।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

१५. मैथिली नाट्य-समीक्षाक आधार: पाठ, मंचनीयता आ तुलनात्मक पद्धति

मूल प्रतिपाद्य — ई अध्याय नाटककेँ मात्र लिखित पाठ नहि, अपितु अभिनय, दर्शक, मंच-संरचना, लोक-स्मृति आ प्रस्तुति-व्यवहारक संयुक्त कला मानि समीक्षा-पद्धतिक आधार स्पष्ट करैत अछि। संग्रहक समीक्षा-प्रयोगसँ भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य रंगचिन्तन, चीनी सौन्दर्यदृष्टि आ इजरायली प्रदर्शन-अध्ययनक तुलनात्मक उपयोगक एक कार्यकारी रूप उभरैत अछि; उद्देश्य कोनो बाहरी सिद्धान्त थोपब नहि, अपितु नाट्य-पाठमे सक्रिय अर्थ-स्तरकेँ विभिन्न आलोचनात्मक कोणसँ खोलब अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत

अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

१६. कुणालक नाट्य-शिल्प: लोकनाट्य, शास्त्र आ आधुनिकता

मूल प्रतिपाद्य — कुणालक रंगमंचीय भाषाक सभसँ बड़का विशेषता थिक तीन परम्पराक सायास संश्लेषण। एक दिस ओ शास्त्रीय संस्कृत-नाट्यक उपकरण-पूर्वरंग, सूत्रधार-नटी, नांदी-सदृश वंदना-अपनबैत छथि; दोसर दिस मिथिलाक लोक-रंगमंचक (‘नाच’) तत्त्व-समाजी (कोरस), विदूषक ‘विपटा’, सूग्गा-कथावाचक, समवेत गायन-नृत्य, दर्शककेँ सोझ सम्बोधन आ रिक्त/स्तरित मंच-केँ...

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु,

जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

१७. लालदासक मिथिला रामायणमे कुण्डलिया आ छन्द-विवेचन

मूल प्रतिपाद्य — लालदासक मिथिला रामायण मे कुण्डलिया आ सम्पादक वा प्रूफरीडरक अज्ञानतावश ओइमे छन्दोभङ्ग लालदासक रामायण चौपाइसँ सृजित अछि। बुझू जे ९५ प्रतिशत भाग चौपाइ, आ फेर बाँचल भागमे रूपमाला छन्द आ गीतिका।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

१८. भाषा, छन्द आ काव्य-सौन्दर्य: रस, ध्वनि आ वक्रोक्ति

मूल प्रतिपाद्य — ई अध्याय कुणालक नाटकमे लोक-मुहावरा, तत्सम-प्रधान पौराणिक भाषा, गीत, विद्यापति-पद, श्लेष, ध्वनि आ वक्रोक्तिक नाटकीय भूमिकाक विवेचन करैत अछि। भाषा एतय सजावट नहि, पात्र, परिवेश, स्मृति आ भाव-स्तर निर्मित करबाक सक्रिय रंगमंचीय साधन अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि। कैननक स्थापित कालक्रमपर पुनर्विचार करबाक साहस साहित्येतिहासक जीवित प्रकृतिक संकेत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए। दू विद्यापति वा कालक्रम-पुनर्निर्धारण सन परिणामकारी प्रस्ताव लेल हस्तलिपि-वंश, कोलोफोन, लिपिविज्ञान, अभिलेख, उद्धरण-परम्परा आ स्वतंत्र विशेषज्ञ-सहमति अत्यन्त आवश्यक अछि; समीक्षा एहि दावाकेँ अभी शोध-प्रस्तावक रूपमे देखैत अछि।

१९. वैचारिक धरातल: समानांतर साहित्य-दृष्टि आ रंगमंच

मूल प्रतिपाद्य — ई अध्याय कुणालक नाट्य-कर्ममे लोक-कलाकार, वंचित समुदाय, स्त्री-कर्तृत्व आ सांस्कृतिक समन्वयक उपस्थितिकेँ समानांतर साहित्य-दृष्टिसँ देखैत अछि। नाट्य-संसारक वैचारिकता नारेक रूपमे नहि, कथा, पात्र, लोक-रूप आ मंच-व्यवहारक भीतर सक्रिय सामाजिक पुनर्पाठक रूपमे प्रकट होइत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

२०. मैथिली लेल एकटा नारी केन्द्रित समीक्षाशास्त्र [क्वीर-फेमिनिज्म सहित] [सन्दर्भ- कामिनीक "खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" आ शान्ति लक्ष्मी चौधरीक"लेस्बियन कॉन्टिन्युअम"]

मूल प्रतिपाद्य — मैथिली लेल एकटा नारी केन्द्रित समीक्षाशास्त्र [क्वीर-फेमिनिज्म सहित] [सन्दर्भ- कामिनीक“खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री” आशान्ति लक्ष्मी चौधरीक"लेस्बियन कॉन्टिन्युअम"] १. खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री: कामिनीक काव्य-संग्रहक समीक्षा२. शान्ति लक्ष्मी चौधरीक "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम": समीक्षा आ कामिनीसँ तुलनात्मक विश्लेषण

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। स्त्री-कर्तृत्व, देह-स्वायत्तता, इच्छाक अधिकार आ पितृसत्तात्मक पाठक पुनर्व्याख्या एहि अध्यायक केन्द्रीय आलोचनात्मक उपलब्धि अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। क्वीर/नारीवादी अध्ययनमे जाति, वर्ग, भाषा, ग्रामीणता आ पीढ़ीक अन्तर्सम्बन्ध जोड़ि intersectional पद्धति अपनाएब उपयोगी होयत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

२१. मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र- २

मूल प्रतिपाद्य — मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र मैथिलीमे अनूदित गुजराती, ओड़िया आ तेलुगु दलित साहित्यक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली भाषाक साहित्य समानान्तर धाराक अनुवादसँ पुष्ट भेल अछि आ एहि मे मौलिक संरचनात्मक परिवर्तन आयल, कारण मूल धाराक मैथिलीक लिखित साहित्य एकटा खास सामाजिक-धार्मिक रूढिवादितासँ परिभाषित रहल,

जाहिमे भक्ति, दरबारी विलासिता आ अलंकृत अभिव्यक्तिकेँ प्राथमिकता देल गेल आ उपेक्षित वर्गक यथार्थकेँ कात राखल गेल।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। अनुवादकेँ केवल शब्द-प्रतिस्थापन नहि, बल्कि अर्थ, छन्द, सांस्कृतिक स्मृति, रंगमंचीयता आ पाठकीय पुनर्जन्मक प्रक्रिया रूपेँ देखल गेल अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। स्रोत-पाठ/लक्ष्य-पाठक समानान्तर उद्धरण, अनुवाद-निर्णयक सूची, घरेलूकरण-विरूपीकरण आ अनुवादक-दृश्यताक तुलनात्मक परीक्षण जोड़ल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

२२. मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र

मूल प्रतिपाद्य — मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र मैथिलीमे अनूदित गुजराती, ओड़िया आ तेलुगु दलित साहित्यक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली भाषाक साहित्य समानान्तर धाराक अनुवादसँ पुष्ट भेल अछि आ एहि मे मौलिक संरचनात्मक परिवर्तन आयल, कारण मूल धाराक मैथिलीक लिखित साहित्य एकटा खास सामाजिक-धार्मिक रूढ़िवादितासँ परिभाषित रहल, जाहिमे भक्ति, दरबारी विलासिता आ अलंकृत अभिव्यक्तिकेँ प्राथमिकता देल गेल आ उपेक्षित वर्गक यथार्थकेँ कात राखल गेल।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। दलित-अनुभवकेँ केवल करुणाक विषय नहि, बल्कि प्रतिरोध, आत्म-सम्मान, भाषिक अधिकार आ पृथक सौन्दर्यबोधक

स्रोत रूपेँ पढ़बाक आग्रह महत्त्वपूर्ण अछि। अनुवादकेँ केवल शब्द-प्रतिस्थापन नहि, बल्कि अर्थ, छन्द, सांस्कृतिक स्मृति, रंगमंचीयता आ पाठकीय पुनर्जन्मक प्रक्रिया रूपेँ देखल गेल अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। एहि क्षेत्रमे लेखकक सामाजिक अवस्थिति, आत्मकथात्मक साक्ष्य, समुदाय-आधारित पाठकीय प्रतिक्रिया आ दलित आलोचकक स्वकीय सिद्धान्तकेँ बराबर स्थान देब आवश्यक अछि। स्रोत-पाठ/लक्ष्य-पाठक समानान्तर उद्धरण, अनुवाद-निर्णयक सूची, घरेलूकरण-विरूपीकरण आ अनुवादक-दृश्यताक तुलनात्मक परीक्षण जोड़ल जाए।

२३. मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान

मूल प्रतिपाद्य — मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान (ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाकेँ संग लऽ कऽ)- गजेन्द्र ठाकुर] एकीकृत विस्तृत समालोचनात्मक शोध-समीक्षा व्याकरण · रचना · भाषा-विज्ञान · भारतीय · पाश्चात्य · इस्रायली · चीनी · तिब्बती · जापानी · विदेह समानान्तर दृष्टि मूल ग्रन्थ: गजेन्द्र ठाकुर · सम्पादक: विदेह · ISSN 2229-547X

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। कॉर्पस, ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत

काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

२४. तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास

मूल प्रतिपाद्य — (विद्यार्थी लोकनि लेल निर्देश: अनुलग्नकमे देल ब्राह्मीसँ तिरहुता धरिक विकासक सभ अक्षरक प्रैक्टिस करबाक आवश्यकता नहि अछि। एक वा दू अक्षरक अभ्यास पर्याप्त अछि। अनुलग्नक-५ पर ध्यान देब बेशी जरूरी...

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि। डिजिटल माध्यमकेँ मैथिली साहित्यक बाहरी साधन नहि, बल्कि लिपि-संरक्षण, प्रकाशन, खोज, अभिलेखन आ वैश्विक पाठकीयताक संरचनात्मक आधार मानल गेल अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए। तकनीकी अध्यायसभमे संस्करण-वर्ष, सॉफ्टवेयर/मानकक स्थिति, स्थायी लिंक, डेटा-संग्रह, अभिगम्यता, गोपनीयता आ डिजिटल-संरक्षण नीति नियमित रूपेँ अद्यतन होएब चाही।

२५. कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित)

मूल प्रतिपाद्य — छोट माँछक लेल जाल- भौरी जालक प्रयोग होइत अछि। भिरखा- हाथसँ उठा कए फेंकल जाइत अछि। एहिमे सूत आ लोहाक गोली प्रयोग होइत अछि, २५-२५ ग्रामक लोहाक गोली लगभग २-१/२ सँ ५ किलो धरि प्रयोगमे आनल जाइत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। कॉर्पस, ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त।

२६. शब्द-प्रमाण, ज्ञान-तत्त्वमीमांसा आ भाषा-विज्ञान

मूल प्रतिपाद्य — वैय्याकरणाचार्य, शब्द प्रमाण (न्याय): ज्ञान आ तत्त्व मीमांसा: भाषाविद् रामावतार यादव वैय्याकरणाचार्य लोकनिक मत अछि जे शब्द-ब्रह्मण वा स्फोट अन्तिम सत्य अछि आ ऐ विश्वक निर्माणक कारण सेहो शब्द-ब्रह्मण अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि। भारतीय ज्ञानमीमांसा—विशेषत: न्याय/नव्य-न्याय—केँ साहित्यिक अर्थनिर्माण, प्रमाण, अनुमान आ पाठकीय विश्वाससँ जोड़बाक प्रयास मौलिक अन्तरविषयी संभावना खोलैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। कॉर्पस, ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त। दार्शनिक पारिभाषिक शब्दक मूल

संस्कृत परिभाषा, मान्य टीका, आधुनिक शोध-व्याख्या आ साहित्यिक अनुप्रयोगक चारि अलग स्तर स्पष्ट रखल जाए।

२७. मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता-कैथी आ डिजिटल मैथिली

मूल प्रतिपाद्य — मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय/ विकीपीडिया (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी (इस्रायल), रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिलक योगदान (फेसबुक आ ई-मेल पत्राचार) तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय विकीपीडिया (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आमिर…

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। डिजिटल माध्यमकेँ मैथिली साहित्यक बाहरी साधन नहि, बल्कि लिपि-संरक्षण, प्रकाशन, खोज, अभिलेखन आ वैश्विक पाठकीयताक संरचनात्मक आधार मानल गेल अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। तकनीकी अध्यायसभमे संस्करण-वर्ष, सॉफ्टवेयर/मानकक स्थिति, स्थायी लिंक, डेटा-संग्रह, अभिगम्यता, गोपनीयता आ डिजिटल-संरक्षण नीति नियमित रूपेँ अद्यतन होएब चाही।

२८. रचना लिखबासँ पहिने…

मूल प्रतिपाद्य — छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए। मुदा एहिसँ ई नहि बुझबाक चाही जे आजुक नव कविता गद्य कोटिक अछि कारण वेदक सावित्री-गायत्री मंत्र सेहो शिथिल/ उदार नियमक कारण, सावित्री मंत्र गायत्री छंद, मे परिगणित होइत अछि तकर चरचा नीचाँ जा कए होएत - जेना यदि अक्षर पूरा नहि भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादकेँ बढ़ा लेल जाइत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

२९. मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी

मूल प्रतिपाद्य — मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी मैथिली बाबूकेँ अपन ऐ राजनैतिक जमीनक अनुभव ओइ दलमे रहितो नै भेल हेतन्हि, जकरा कहियो ओ रामक संग पटेने रहथि। दलमे एकटा प्रभावी नेता कहै जाइबला बाबूकेँ कहियो पिछड़ल वर्गक नेताक रूपमे प्रस्तुत नै कएल गेल।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। कॉर्पस, ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त।

३०. साहित्यमे लोक-तत्व: गाथा/नृत्य/नाटक

मूल प्रतिपाद्य — मोहनजोदड़ो सभ्यतासँ प्राप्त कांस्य प्रतिमा नृत्यक मुद्राक संकेत दैत अछि, वर्तमान कथक नृत्यक ठाठ मुद्रा सदृश, दहिन हाथ ४५ डिग्रीक कोण बनेने आ वाम हाथ वाम छाबापर, संगहि वाम पएर किछु मोड़ने।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए, तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

३१. हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली

मूल प्रतिपाद्य — हिन्दी जै हिसाबे अपन भूगोल बढेलक अछि ओइ हिसाबे ओकर शब्दावली नै बढ़ल छैक, से हिन्दीसँ डरबाक कोनो प्रश्ने नै। हिन्दीक साम्राज्यवाद अंग्रीजीक साम्राज्यवादक स्थान लऽ लेने अछि आ से सभ हिन्दी दिवसपर छोट भाषाकेँ गिरबाक ओकर प्रवृत्तिपर बहस नै रोकल जा सकत।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए, तँ तर्कक

परीक्षणीयता बढ़त। कॉर्पस, ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त।

३२. भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान

मूल प्रतिपाद्य — भाषाक पारिवारिक वर्गीकरण ऐतिहासिक आधारपर होइत अछि, जाहिमे भाषाक इतिहास, एक भाषाक दोसर भाषासँ उत्पत्ति, भाषाक आकृति-प्रकृति माने रचनात्मकताक संग अर्थ-तत्त्वपर सेहो ध्यान देल जाइत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। कॉर्पस, ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त।

३३. अभिनय पाठशाला

मूल प्रतिपाद्य — [अभिनय पाठशाला (रंगमंच आ फिल्म लेल)- विदेह नाट्य (आ फिल्म) उत्सव २०१२ क पूर्वपीठिका] (ऐ आलेखक आधार हमर तीन मासमे देल ४० टा संस्कृतमे अनूदित व्याख्यान अछि जे हम श्री अरविन्द आश्रममे ओड़ीसाक प्राइमरी स्कूल लेल चयनित शिक्षक-शिक्षिका प्रशिक्षुकेँ देने रही।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला

मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

३४. मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ

मूल प्रतिपाद्य — रामखेलावन मंडार-गाम कटघरा, प्रखण्ड-शिवाजीनगर, जिला समस्तीपुर। हिनके संग बिन्देश्वर मंडल सेहो छलाह। उठैत मैथिली कोरस आ -माँ गै माँ तूँ हमरा बंदूक मँगा दे कि हम तँ माँ सिपाही हेबै- एखनो लोककेँ मोन छन्हि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि,

रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

३५. विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव

मूल प्रतिपाद्य — विदेशी पूँजीक भारतमे सोझ निवेश दोसर देशक फर्मसँ मिलि कऽ वा ओकर सम्पत्ति वा ओकर स्टॉक कीनि कऽ होइत अछि। ओ ऐ लेल स्वॉट अनेलिसिस करै छथि आ अपन प्रवेशक लेल अपन कम दाममे उत्पादन आ सेहो तीव्र गतिसँ कएक तरहक उपाय द्वारा करबाक क्षमताकेँ देखैत करै छथि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। कॉर्पस, ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त।

३६. जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष

मूल प्रतिपाद्य — मैथिलीक पुरोधा जयकान्त मिश्र (१९२२-२००९) क ३ फरबरी २००९ केँ सात बजे साँझमे निधन भऽ गेलन्हि। मैथिली साहित्यक एकटा बड़ पैघ विद्वान डॉ. जयकांत मिश्र १९८२ ई. मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी आ आधुनिक यूरोपियन भाषा विभागक प्रोफेसर आ हेड पद सँ सेवा निवृत्त भेल छलाह।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। कॉर्पस, ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त।

३७. पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक शब्दावली

मूल प्रतिपाद्य — पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक शब्दावलीक विवरण 11000 पंजी तालपत्रक जे. पी. जी. इमेजक अंवेषणक बाद संकलित कएल गेल अछि जे नीचाँ वर्णित...

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए। कॉर्पस, ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त।

३८. मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव

मूल प्रतिपाद्य — उपन्यासक आरम्भ: वाणभट्टक कादम्बरी राजा शूद्रकक विदिशानगरीक वर्णनसँ प्रारम्भ होइत अछि। एकटा चाण्डाल अतीव सुन्दरी कन्या वैशम्पायन नाम्ना ज्ञानी सुग्गाकेँ लेने दरबार अबैत अछि आ प्रारम्भ होइत अछि सुग्गाक खिस्सा।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

३९. शब्द-विचार: सिद्ध सरहपाद, तिब्बती लिपि, कम्प्यूटर आ मैथिली

मूल प्रतिपाद्य — देवनागरीक अतिरिक्त समस्त उत्तर भारतीय भाषा नेपाल आ दक्षिणमे (तमिलकेँ छोड़ि) सभ भाषा वर्णमालाक रूपमे स्वर आ कचटतप आ य, र ल व, श, स, ह केर वर्णमालाक उपयोग करैत अछि। ग्वाङ केर हेतु संस्कृतमे दोसर वर्ण छैक (छान्दोग्य एकर उच्चारण नहि करैत छथि मुदा वाजसनेयी खूब करैत छथि-जेना छान्दोग्य कहताह सभूमि तँ वाजसनेयी कहताह सभूमीग्वंङ), ई ह्रस्व दीर्घ दुनू होइत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। कॉर्पस, ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त।

४०. कथा वाचन-लेखन पाठशाला (बाल कथाक विशेष सन्दर्भमे)

मूल प्रतिपाद्य — मैथिलीमे कथा वाचन, विशेष कऽ नेना भुटका लेल बाल कथा वाचनक परम्परा बड्ड पुरान रहल अछि। लोक गाथाक रातिक राति, दिनक दिन प्रदर्शन, बाल सुलभ मोन लेल ओकर छोट वर्जनक गद्य- पद्य मिश्रित एक आ बेशी राति चलैबला दादी- नानीक कथा; दादी- नानी आ बाबा-बाबूक सुनाएल आन लोककथा एकर विभिन्न रूप अछि जे मिथिलाक बालक-बालिकाक मोन मोहने अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

४१. पाठक हमर पोथी किए पढ़थि

मूल प्रतिपाद्य — पहिल गप जे रचना सुनने छिऐ नीक छै मुदा पोथी भेटत केना? पहिने नेपाल पठेलापर डाकखर्च भारते जकाँ रहै आब तँ पोथी/ पत्रिकासँ महग डाकखर्च से आब नेपाल पोथी नै जाइए। हम न्यू जर्सीमे रहै छी, मधुबनी-दरभङ्गामे मैथिली पोथी-पत्रिका भेटिते नै अछि तँ यूगाण्डा, यू. एस. ए. आ ऑस्ट्रेलियामे कतऽ भेटत।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त।

४२. वजन प्रबन्धन: एकटा व्यक्तिगत प्रयोग आ अनुभव

मूल प्रतिपाद्य — ई कथा २००० ई. मे शुरू होइत अछि, ओइ सालक उत्तरार्धमे, जखन हम १०० किलोक नै ७८-८० किलोक छलौं। फेर हम एक सालसँ बेसी छुट्टीपर छलौं, एकटा संदिग्ध-स्थितिक सड़क-दुर्घटनाक बाद, जखन सरकारी काजसँ घुरैत काल नव-सहस्राब्दी शुरू हेबासँ पहिने ओइ दुर्घटनामे हमर "जांघक-हड्डी" दू भाग मे टूटि गेल।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि। ई अध्याय साहित्यिक संग्रहमे आत्मानुभव-आधारित प्रयोगात्मक गद्यक उदाहरण अछि; आत्म-निरीक्षण आ दैनिक अनुशासन एकरा संस्मरणात्मक मूल्य दैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए। स्वास्थ्यसम्बन्धी व्यक्तिगत अनुभवकेँ सामान्य चिकित्सकीय निष्कर्षक रूपमे प्रस्तुत नहि कएल जाए; साहित्यिक मूल्यांकन आ वैद्यकीय दावाकेँ स्पष्ट रूपेँ पृथक राखब उचित अछि।

४३. एनी एर्नौ आ कपिलेश्वर राउतक कथा-संसार

मूल प्रतिपाद्य — ८२ बर्खक एनी एर्नौ कैं ऐ बेरुका साहित्यक नोबेल पुरस्कार देबाक घोषणा स्वेडिश एकेडमी केलक। स्वेडिश एकेडमी ओइसँ पहिने रवीन्द्रनाथ ठाकुरकैं एकटा ट्वीटमे मोन पाड़लक। "तितली मास नै, पल गानैत अछि, से ओकरा लग समये समय छै।" एनी एर्नौ पहिने आत्मकथात्मक उपन्यास लिखलन्हि मुदा शीघ्रे ओ मात्र आ मात्र संस्मरण लिखय लगलीह।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकैं मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि। व्यक्तिगत स्मृतिमे वर्ग, परिवार, भाषा आ सामाजिक समयक छाप खोजबाक पद्धति संस्मरणकैं निजी गपसँ सार्वजनिक इतिहासक स्तर पर लैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए, तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकैं तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए। स्मृति आ तथ्यक अन्तर, आत्मकथात्मक संधि, समय-दूरी, अभिलेखीय प्रमाण आ कथात्मक चयनक प्रभाव स्पष्ट कएल जाए।

४४. शरदिन्दु चौधरी विशेषांक आ समानान्तर साहित्य-विमर्श

मूल प्रतिपाद्य — ई अंक शरदिन्दु चौधरी पर विशेषांक अछि। साहित्य अकादेमी, ललित कला अकादेमी आ संगीत नाटक-अकादेमीक सम्मान/पुरस्कारसँ बेशी महत्वपूर्ण विदेहक जीवित रचनाकार/कलाकर्मी पर विशेषांक भऽ गेल अछि, से उद्गार पाठक लोकनि सोशल मीडियापर व्यक्त केलन्हि अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकैं मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक

आलोचना लेल उपयोगी अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

४५. प्रेमलता मिश्र ‘प्रेम’ विशेषांक आ समानान्तर साहित्य-विमर्श

मूल प्रतिपाद्य — ई अंक प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' पर विशेषांक अछि। ऐ विषयपर सम्पादकीय कने नम्हर भऽ गेलै तेँ अलगसँ ओकरा देल जा रहल अछि। साहित्य अकादेमी, ललित कला अकादेमी आ संगीत नाटक-अकादेमीक सम्मान/ पुरस्कारसँ बेशी महत्वपूर्ण विदेहक विशेषांक भऽ गेल अछि से उद्गार पाठक लोकनि सोशल मीडियापर व्यक्त केलन्हि अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ

सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

४६. मैथिली साहित्यक अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्तुति आ समानान्तर साहित्य-विमर्श

मूल प्रतिपाद्य — Diorama International Film Festival 30 नवम्बर सँ 04 दिसम्बर धरि आयोजित होमयवला अछि। स्थान: Instituto Cervantes, Hanuman Mandir Road, Connaught Place, New Delhi। https://www.diorama.in/ https://watch.diorama.in/story-market/ https://watch.diorama.in/story/the-science-of-words/ DIORAMA 2022 PRESENTS शीर्षक: The Science Of Words—लेखक द्वारा स्वयं अंग्रेजीमे अनूदित तीनटा मैथिली कथा।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

४७. लोक-संस्कृति, साहित्य, कृति-समीक्षा आ समानान्तर दृष्टि

मूल प्रतिपाद्य — ऋगवेदक पुरोहित होता, सामवेदक उद्गातृ, यजुर्वेदक अध्वार्यु आ अथर्ववेदक ब्राह्मण; आ तकर सहयोगी पुरोहित सभ, पूरा-पूरी सत्रह तरहक पुरोहित वैदिक कालमे रहथि। आ आब एक्केटा ब्राह्मण पुरोहित केना भऽ गेल?

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

४८. साहित्य अकादेमी आ मैथिली साहित्यिक संस्था: एकटा विमर्श

मूल प्रतिपाद्य — साहित्य अकादेमी, दिल्लीक मैथिली लिटरेरी एसोसियेशन पूर्ण रूपसँ गुप्त प्रक्रियाक तहत साहित्य अकादेमी मैथिलीक दूटा एसोसियेशन (साहित्य अकादेमीक शब्दावलीमे तथाकथित मैथिली लिटरेरी एसोसियेशन) केँ अपन लिस्टसँ हटा देलक आ तीन टा गएर लिटरेरी एसोशियेशन आर जोड़ि देलक।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। कॉर्पस, ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए।

४९. मैथिलीमे समानान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन

मूल प्रतिपाद्य — मैथिलीमे समान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन The Bride: हरिमोहन झा (1908–1984) क मैथिली कालजयी कृति ‘कन्यादान’ क ललित कुमारक अंग्रेजी अनुवाद (Assistant Professor, Department of English, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi), Harper Perennial, Harper Collins Publishers।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। अनुवादकेँ केवल शब्द-प्रतिस्थापन नहि, बल्कि अर्थ, छन्द, सांस्कृतिक स्मृति, रंगमंचीयता आ पाठकीय पुनर्जन्मक प्रक्रिया रूपेँ देखल गेल अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। स्रोत-पाठ/लक्ष्य-पाठक समानान्तर उद्धरण, अनुवाद-निर्णयक सूची, घरेलूकरण-विरूपीकरण आ अनुवादक-दृश्यताक तुलनात्मक परीक्षण जोड़ल जाए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

५०. मैथिली साहित्यिक संस्था, साहित्य अकादेमी आ धूर्त्तसमागमक पुनर्पाठ

मूल प्रतिपाद्य — मैथिलीक सात टा गएर लिटरेरी एसोसियेशनकेँ मान्यता दऽ कऽ साहित्य अकादेमी जे मूलधाराक मैथिलीक भुसाथरि बैसेबाक काज केलकै से आब सत्य भऽ रहल अछि। प्रेम मोहन मिश्रक परामर्शदातृ समितिमे विदेह द्वारा बैन कएल कथित चोर साहित्यकारक अतिरिक्त आर बहुतो तरहक भूप रहथि जे आब अशोक अविचलक परामर्शदातृ समितिमे छथि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

५१. साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार (मैथिली) २०२२ प्रसंग आ साहित्यिक विमर्श

मूल प्रतिपाद्य — साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार (मैथिली) २०२२ प्रसंग तीन टा जूरी रहथि डॉ सविता झा सोनी, डॉ मित्रनाथ झा आ श्रीमती नीरजा रेणु। पहिने अहाँकेँ बता दी जे साहित्य अकादेमी मात्र ब्राह्मणवादी सभकेँ अनुवाद असाइनमेण्ट दै छै, समानान्तर धाराक लेखकक हककेँ मारिकेँ।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक

भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। अनुवादकेँ केवल शब्द-प्रतिस्थापन नहि, बल्कि अर्थ, छन्द, सांस्कृतिक स्मृति, रंगमंचीयता आ पाठकीय पुनर्जन्मक प्रक्रिया रूपेँ देखल गेल अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। स्रोत-पाठ/लक्ष्य-पाठक समानान्तर उद्धरण, अनुवाद-निर्णयक सूची, घरेलूकरण-विरूपीकरण आ अनुवादक-दृश्यताक तुलनात्मक परीक्षण जोड़ल जाए। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए।

५२. साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समिति (२०२३–२०२८) प्रसंग

मूल प्रतिपाद्य — दिल्ली साहित्य अकादमीक प्रख्यात मैथिली विभाग परामर्शदात्री समिति (२०२३-२०२८) १० मे ६ ब्राह्मण +१ नव-ब्राह्मणवादी आ समानान्तर धाराक एक्कोटा गएर-सवर्ण लेखक नै छथि, जे गत १५ बर्ख स८ सीमित आर्थिक संसाधनक अछैत मैथिली लेल जान-प्राण अरोपने छथि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए।

५३. मिथिला स्टूडेन्ट यूनियन विशेषांक: संस्था, आन्दोलन आ आलोचना

मूल प्रतिपाद्य — मैथिली आ मिथिला लेल अस्सी-अस्सी हाथक कथित साहित्यकार आ कथित लिटेरेरी एसोसियेशन (साहित्य अकादेमी पोषित) आ अन्तर्राष्ट्रिय स्तरक कथित मिथिलावादी स्वघोषित नेता आ संस्थाक अछैत मिथिला स्टूडेण्ट यूनियनपर विशेषांक निकालबाक निर्णय भेल, तकर उद्देश्य छल ई चिन्हित केनाइ जे किछु काज रेकॉर्ड बनेबाले होइ छै आ किछु काज काज होइ छै।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

५४. भाषा आ प्रौद्योगिकी (संगणक, छायांकन, कुँजी पटल/टंकणक तकनीक), अन्तर्जालपर मैथिली आ विश्वव्यापी अन्तर्जालपर लेखन आ ई-प्रकाशन

मूल प्रतिपाद्य — गूगल आ वर्डप्रेस द्वारा जालवृत्त खोलबाक लेल बहुत रास बनल बनाएल परिकल्पित नमूना स्थल निर्माण लेल उपलब्ध अछि आ ओतए लेखन, संदेश आ टिप्पणीक लेल असीमित दत्तांशनिधि उपलब्ध अछि, जतए जालोद्वहन मँगनीमे देल जा रहल अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। डिजिटल माध्यमकेँ मैथिली साहित्यक बाहरी साधन नहि, बल्कि लिपि-संरक्षण, प्रकाशन, खोज, अभिलेखन आ वैश्विक पाठकीयताक संरचनात्मक आधार मानल गेल अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। तकनीकी अध्यायसभमे संस्करण-वर्ष, सॉफ्टवेयर/मानकक स्थिति, स्थायी लिंक, डेटा-संग्रह, अभिगम्यता, गोपनीयता आ डिजिटल-संरक्षण नीति नियमित रूपेँ अद्यतन होएब चाही।

५५. अन्तर्जाल आ मैथिली

मूल प्रतिपाद्य — इंटरनेट पर ई-प्रकाशित करबाक उद्देश्य एकटा फॉरमक स्थापना होएबाक चाही जाहिमे लेखक आ पाठकक बीच एकटा एहन माध्यम होअए जे कतहुसँ चौबीसो घंटा आ सातो दिन उपलब्ध होअए। जाहिमे प्रकाशनक नियमितता होअए आ जाहिसँ वितरणक समस्या आ भौगोलिक दूरीक अंत भऽ जाय।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। डिजिटल माध्यमकेँ मैथिली साहित्यक बाहरी साधन नहि, बल्कि लिपि-संरक्षण, प्रकाशन, खोज, अभिलेखन आ वैश्विक पाठकीयताक संरचनात्मक आधार मानल गेल अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। तकनीकी अध्यायसभमे संस्करण-वर्ष, सॉफ्टवेयर/मानकक स्थिति, स्थायी लिंक, डेटा-संग्रह, अभिगम्यता, गोपनीयता आ डिजिटल-संरक्षण नीति नियमित रूपेँ अद्यतन होएब चाही।

५६. आत्म-छवि, भाषा-प्रौद्योगिकी आ समावेशी संचार

मूल प्रतिपाद्य — एकटा अपन छवि बनाउ, जकरासँ नीक लोक प्रेम करैए आ जे योग्य अछि कर्मठ अछि। मुदा जेना जेना अहाँ आगाँ बढ़ब, समय बीतत हमरा सभमेसँ बहुतक अपन मोनक छवि दूषित हेबऽ लागै छन्हि आ से होइए ओइ गप सभपर ध्यान देलासँ जे दोसर हमरा विषयमे की सोचैए वा बाजैए।

साहित्यिक मूल्यांकन — एहि लेखनक महत्त्व ई अछि जे सिद्धान्त, इतिहास, भाषा, संस्था आ रचनात्मक व्यवहारकेँ मैथिली-केंद्रित आलोचनात्मक भाषामे राखबाक प्रयत्न करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि। डिजिटल माध्यमकेँ मैथिली साहित्यक बाहरी साधन नहि, बल्कि लिपि-संरक्षण, प्रकाशन, खोज, अभिलेखन आ वैश्विक पाठकीयताक संरचनात्मक आधार मानल गेल अछि।

शोध-संकेत — अगिला संस्करणमे परिभाषा, मूल पाठक उद्धरण, पृष्ठ-संकेत आ स्रोत-सूचीक बीच अधिक नियमित सम्बन्ध स्थापित कएल जाए तँ तर्कक परीक्षणीयता बढ़त। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए। तकनीकी अध्यायसभमे संस्करण-वर्ष, सॉफ्टवेयर/मानकक स्थिति, स्थायी लिंक, डेटा-संग्रह, अभिगम्यता, गोपनीयता आ डिजिटल-संरक्षण नीति नियमित रूपेँ अद्यतन होएब चाही।

६. द्वितीय खण्ड — अनुप्रयुक्त अध्ययन: १११/१११ अध्यायक पृथक समीक्षा

१. मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन केर संदर्भमे

मूल प्रतिपाद्य — एहि प्रबन्धमे मायानन्दजीक स्त्रीधन, पुरोहित, मंत्र-पुत्र आ प्रथमं शैलपुत्री च- एहि चारि पोथीक जे कथा-विधान आ साहित्यिक विवेचन छल तकरा यथा संभव नजि छुअल गेल आ मात्र इतिहास-बोधक सन्दर्भमे विवेचना अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। स्त्री-

कर्तृत्व, देह-स्वायत्तता, इच्छाक अधिकार आ पितृसत्तात्मक पाठक पुनर्व्याख्या एहि अध्यायक केन्द्रीय आलोचनात्मक उपलब्धि अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। क्वीर/नारीवादी अध्ययनमे जाति, वर्ग, भाषा, ग्रामीणता आ पीढ़ीक अन्तर्सम्बन्ध जोड़ि intersectional पद्धति अपनाएब उपयोगी होयत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

२. मिथिलाक बाढ़ि

मूल प्रतिपाद्य — मिथिलाक धरती बाढ़िक विभीषिकासँ जुझैत रहल अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका क्षेत्र तँ बिन बाढ़िक, बरखाक समयमये डूमल रहैत अछि। पहिने ओ क्षेत्र पूर्ण रूपसँ उपजाऊ छल, मुदा भारतमे तटबन्धक अनियन्त्रित निर्माणक संग पानिक जमाव ओतए शुरू भए गेल।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

३. लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति

मूल प्रतिपाद्य — लोरिक गाथामे नहि तँ कोनो इतिहास प्रसिद्ध राजाक नाम आ नहिये लोरिकक जन्म आकि विवाहक तिथिक चरचा अछि। भाषाक स्वरूप मौखिक रहबाक कारणसँ गतिशील अछि। काल निर्धारण सेहो अनुमानपर आधारित अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

४. मिथिलाक खोज

मूल प्रतिपाद्य — ई आलेख हमर दशकसँ ऊपरक मिथिलाक यात्राक उपरान्तक सूत्र-वृत्तान्त अछि आ एहिमे एहि सभ स्थानक स्थानीय निवासी आ गाइड सभक अकथनीय योगदान छन्हि। कखनो कालतँ भाड़ाक गाड़ीक ड्राइवर लोकनि सेहो नीक गाइड सिद्ध भेलाह।—गजेन्द्र ठाकुर १. गौरी-शंकर स्थान- मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीच ई स्थान गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्त्ति आ एहि पर मिथिलाक्षरमे लिखल पालवंशीय अभिलेखक कारणसँ विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। बाल-पाठककेँ निष्क्रिय नैतिक-शिक्षार्थी नहि मानि जिज्ञासु, सक्रिय आ विविध आयुवर्गक पाठक रूपेँ सोचबाक दिशा आधुनिक बाल-साहित्य अध्ययनसँ संवाद करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। आयुवर्ग, शब्द-स्तर, चित्र-पाठ सम्बन्ध, बाल-पाठक प्रतिक्रिया, हास्य, भय, विज्ञान-बोध आ लिंग/जाति प्रतिनिधित्वक पृथक कसौटी बनाओल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

५. दूषण पंजी

मूल प्रतिपाद्य — दूषण पंजीक स्कैन कएल सिंगल पी. डी. एफ.। पंजीक हमर पोथीमे ओना तँ ११००० तालपत्रक जे. पी. जी. इमेज क डी. वी. डी. सेहो अलगसँ किनबाक व्यवस्था रहै आ ओइ डी. वी. डी. कैं कबिलपुरक सगर राति दीप जरएमे हम बाँटनहियो रही, मुदा ओइमे जे दूषण पंजी रहै तकर कारण कतेक पंचैती भेल, कतेक गोटे सोझाँ आ फोनपर गारि पढ़लन्हि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकैं वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकैं साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

६. मिथिला आ संस्कृत

मूल प्रतिपाद्य — मिथिला आऽ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता मिथिला आऽ संस्कृतक संबंध बड्ड पुरान अछि। षड् दर्शनमे चारि दर्शनक प्रारंभ एतयसँ भेल।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत।

७. मिथिलासँ पलायन

मूल प्रतिपाद्य — मिथिलामे बाहरी लोकक आगमन आ मिथिलासँ दूर देशमे पलायन, ई दुनू घटना निरंतर होइत रहल अछि। मुदा आइ कालिक पलायन एहि अर्थें विकट रूप लऽ लेने अछि कारण विगत तीस सालक अवधिमे भेल पलायन मिथिला गामकेँ खाली कऽ देलक।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

८. मिथिलाक पञ्जी–प्रबन्ध वंश, विवाह, दूषण, सामाजिक स्मृति आ आधुनिक पुनर्पाठ

मूल प्रतिपाद्य — वंश, विवाह, दूषण, सामाजिक स्मृति आ आधुनिक पुनर्पाठ ४५० ई. सँ २००९ ई. धरि कहल गेल वंश-स्मृति, प्राचीन पञ्जी, नगराम, दूषण-पञ्जी आ जीनोम-मानचित्रणपर समेकित अध्ययन एकभाषी मैथिली ·

सुपरस्क्रिप्ट-विहीन · स्रोत-विरोध स्पष्ट · विस्तृत बिबलियोग्राफी · २०/२० स्रोत-कवरेज ऑडिट

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

९. “कुसमा-सलहेस”: लोकमहागाथा, प्रतिरोध आ प्रेमक रंगदृष्टि

मूल प्रतिपाद्य — शीर्षक-नाटक “कुसमा-सलहेस” क ई विवेचन सलहेस-नाच, लोकमहागाथा, वंचित समुदायक सांस्कृतिक स्मृति, नायिका कुसमाक आत्मनिर्णय, राजनीतिक प्रतिरोध, बहुरसात्मकता आ प्रेमक व्यापक मानवीय अर्थकेँ केन्द्रमे रखैत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही। फील्डवर्कमे

कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

१०. ‘अखियासल’: भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ समान्तर इतिहास-दृष्टि

मूल प्रतिपाद्य — 'अखियासल': भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद प्रस्तावना: कृति, कृतिकार आ समीक्षाक प्रस्थान-बिन्दु डा॰ रमानन्द झा 'रमण'क 'अखियासल' मैथिली साहित्यक इतिहास, कथा-विकास, आरम्भिक उपन्यास, विस्मृत साहित्यसेवी, राष्ट्रीय चेतना, गीत-काव्य, पत्रकारिता, स्तम्भ-लेखन आ आधुनिक कथाक सामाजिक सरोकारक पुनर्मूल्याङ्कन करयवला आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

११. ‘हिआओल’: भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ समान्तर इतिहास-दृष्टि

मूल प्रतिपाद्य — ‘हिआओल’: भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद (डा. रमानन्द झा ‘रमण’, मैथिली आलोचना, अखियासल प्रकाशन, लालगंज, सरिसब-पाही, मधुबनी, २०१२) ‘अखियासल’, ‘बेसाहल’ आ ‘भजारल’ क अनन्तर डा. रमानन्द झा’ रमण’ क ई चारिम आलोचना-संग्रह’ हिआओल’ (२०१२) मैथिली आलोचनाक ओहि विरल परम्पराक कड़ी थिक जाहिमे आलोचना गुटबन्दीक चपेटसँ मुक्त भऽ पाठ, पत्र-पत्रिका आ अभिलेखकेँ प्रमाण मानि...

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। भारतीय ज्ञानमीमांसा—विशेषतः न्याय/नव्य-न्याय—केँ साहित्यिक अर्थनिर्माण, प्रमाण, अनुमान आ पाठकीय विश्वाससँ जोड़बाक प्रयास मौलिक अन्तरविषयी संभावना खोलैत अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। दार्शनिक पारिभाषिक शब्दक मूल संस्कृत परिभाषा, मान्य टीका, आधुनिक शोध-व्याख्या आ साहित्यिक अनुप्रयोगक चारि अलग स्तर स्पष्ट रखल जाए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

१२. केदारनाथ चौधरीक उपन्यास “चमेली रानी” आ "माहुर"

मूल प्रतिपाद्य — केदारनाथ चौधरी जीक पहिल उपन्यास चमेली रानी २००४ ई. मे आएल। एहि उपन्यासक अन्त एहि तरहेँ आकर्षक रूपेँ भेल जे एकर दोसर भागक प्रबल माँग भेल आ लेखककेँ एकर दोसर भाग माहुर लिखए पड़लन्हि। धीरेन्द्रनाथ मिश्र चमेली रानीक समीक्षा करैत विद्यापति टाइम्समे लिखने रहथि- “...जेना हास्य-सम्राट हरिमोहन बाबूकेँ “कन्यादान” क पश्चात्

“द्विरागमन” लिखए पड़लनि तहिना “चमेलीरानी” क दोसर भाग उपन्यासकारकेँ लिखए पड़तन्हि”।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। कैननक स्थापित कालक्रमपर पुनर्विचार करबाक साहस साहित्येतिहासक जीवित प्रकृतिक संकेत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। दू विद्यापति वा कालक्रम-पुनर्निर्धारण सन परिणामकारी प्रस्ताव लेल हस्तलिपि-वंश, कोलोफोन, लिपिविज्ञान, अभिलेख, उद्धरण-परम्परा आ स्वतंत्र विशेषज्ञ-सहमति अत्यन्त आवश्यक अछि; समीक्षा एहि दावाकेँ अभी शोध-प्रस्तावक रूपमे देखैत अछि।

१३. बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा

मूल प्रतिपाद्य — सुभाषचन्द्र यादवजीक “बनैत बिगड़ैत” कथा-संग्रहक सभ कथामे सँ अधिकांशमे ई भेटत जे कथा खिस्सासँ बेशी एकटा थीम लए आगाँ बढ़ल अछि आ अपन काज खतम करितहि अन्त प्राप्त कएने अछि। बलचनमाक भाषा ओहि उपन्यासक मुख्य पात्रक आत्मकथात्मक भाषा अछि मुदा एतए ई भाषा कथाकारक अपन छन्हि आ ताहि अर्थेँ ई एकटा विशिष्ट स्वरूप लैत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। व्यक्तिगत

स्मृतिमे वर्ग, परिवार, भाषा आ सामाजिक समयक छाप खोजबाक पद्धति संस्मरणकेँ निजी गपसँ सार्वजनिक इतिहासक स्तर पर लैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। स्मृति आ तथ्यक अन्तर, आत्मकथात्मक संधि, समय-दूरी, अभिलेखीय प्रमाण आ कथात्मक चयनक प्रभाव स्पष्ट कएल जाए।

१४. राजदेव मण्डलक अम्बरा

मूल प्रतिपाद्य — संस्कृतसन भाषाक प्रचार-प्रसार लेल कएल जा रहल प्रयासक अंतर्गत सम्भाषण-शिविरमे सरल संस्कृतक प्रयोग होइत अछि। कथा-उपन्यासक आधुनिक भाषा सभसँ संस्कृतमे अनुवाद होइत अछि मुदा कविता ओहि प्रक्रियामे बारल रहैत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

१५. मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह “प्रतीक”

मूल प्रतिपाद्य — मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह “प्रतीक” विहनि कथाक प्रतीकात्मकताक प्रतीक बनि गेल अछि। बिरारसँ विहनि उपारि धान आ मेरचाइ रोपबाक प्रक्रिया ऐ संग्रहक सभ कथा सभमे देखमामे आओत। तँ ई छिटुआ नै रोपुआ धानक खेती बनि गेल अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

१६. सुजीतक “जिद्दी”

मूल प्रतिपाद्य — सुजीतक नव कथा संग्रह सम्वेदनामे गहींरधरि उतरल अछि। आदर्श कथामे कथाकार सुजीत महिला सूत्रधार बनल छथि, शैलीक भिन्नताक संग घर बलासँ पहिने नहाएल छी तऽ बाल्टिन माँजि दिय नहि तऽ घर बलाके उमेर घटैत छैक।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। बाल-पाठककेँ निष्क्रिय नैतिक-शिक्षार्थी नहि मानि जिज्ञासु, सक्रिय आ विविध आयुवर्गक पाठक रूपेँ सोचबाक दिशा आधुनिक बाल-साहित्य अध्ययनसँ संवाद करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित

बनत। आयुवर्ग, शब्द-स्तर, चित्र-पाठ सम्बन्ध, बाल-पाठक प्रतिक्रिया, हास्य, भय, विज्ञान-बोध आ लिंग/जाति प्रतिनिधित्वक पृथक कसौटी बनाओल जाए। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

१७. रमेश नारायणक “पाथरक नाव” आ विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”

मूल प्रतिपाद्य — मैथिली कथा संग्रह सभमे १. रमेश नारायणक “पाथरक नाव” २. विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)” ई दुनू कथा संग्रह अपन किछु खास विशिष्टताक कारण विशेष स्थान रखैत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

१८. मैथिलीक किछु नव पोथी

मूल प्रतिपाद्य — शम्भुदास- जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल लोकक मोनमे पैसै छथि, बरहम बाबाक मोनमे पैसै छथि। आ तँ ने बरहम बाबा आ लोक दुनूक मोन हरखित छै, से भाँज ओ लगा लै छथि। शम्भुआकेँ शम्भु बनैत ओ देखै छथि आ फेर दरबारी दास (शम्भुदास) बनैत सेहो।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण

ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

१९. सगर राति दीप जरय कथाक कथा

मूल प्रतिपाद्य — सगर राति दीप जरयक इतिहास जे रमण द्वारा परसल जा रहल अछि, ओइमे एकर प्रारम्भ केना भेलसँ ल' कऽ अखन धरिक इतिहास मे बहुत रास विसंगति अछि। एकर प्रारम्भ केना भेलसँ ल' कऽ अखन धरिक इतिहासमे बहुत गोटेक योगदान बढ़ा कऽ, बहुत गोटेक घंटा कऽ, बहुत गोटेक परिवर्तित कऽ कऽ प्रस्तुत काल गेल तँ बहुत गोटे निपत्ता कऽ जेल गेला।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए।

२०. डॉ. अमरेन्द्रक ‘अंगिका बाल-साहित्य’

मूल प्रतिपाद्य — डॉ. अमरेन्द्रक ‘अंगिका बाल-साहित्य’- लोकस्मृतिसँ आधुनिक बाल-सृजन धरि: चतुर्आयामी समग्र समीक्षा (मैथिली–ठेठी-अंगिका समानान्तर अनुशीलन) लोकस्मृतिसँ आधुनिक बाल-सृजन धरि: चतुर्आयामी समग्र समीक्षा समीक्ष्य पोथी: अंगिका बाल-साहित्य · लेखक: डॉ. अमरेन्द्र · समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली/मुजफ्फरपुर · प्रथम संस्करण: २०२२

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। बाल-पाठककेँ निष्क्रिय नैतिक-शिक्षार्थी नहि मानि जिज्ञासु, सक्रिय आ विविध आयुवर्गक पाठक रूपेँ सोचबाक दिशा आधुनिक बाल-साहित्य अध्ययनसँ संवाद करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। आयुवर्ग, शब्द-स्तर, चित्र-पाठ सम्बन्ध, बाल-पाठक प्रतिक्रिया, हास्य, भय, विज्ञान-बोध आ लिंग/जाति प्रतिनिधित्वक पृथक कसौटी बनाओल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

२१. मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र

मूल प्रतिपाद्य — गजेन्द्र ठाकुरक सैंतीस बाल-उपन्यासक विस्तृत समालोचना (भारतीय आ पाश्चात्य बाल-साहित्य aसमीक्षाशास्त्रक आलोकमे) भूमिका: बाल-साहित्यक समीक्षा-दृष्टि आ ई सैंतीस पोथी

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक

साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

२२. तेरहटा अनूदित पोथीक तुलनात्मक अध्ययन [संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर] — भारतीय आ पाश्चात्य सिद्धान्तक आलोकमे

मूल प्रतिपाद्य — समग्र सिंहावलोकन-चतुर्भाणी, दामक प्रहसनम्, हास्यार्णव, आगमडम्बरम्, कादम्बरी, भल्लट-क्षेमेन्द्र-नीलकण्ठक व्यंग्य-त्रयी, पलाण्डुमण्डन, उत्तररामचरितम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्, मृच्छकटिकम्, भगवदज्जुकम् आ मत्तविलास तेरहटा अनूदित पोथीक तुलनात्मक अध्ययन [संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर] समग्र सिंहावलोकन-चतुर्भाणी, दामक प्रहसनम्, हास्यार्णव, आगमडम्बरम्, कादम्बरी, भल्लट-क्षेमेन्द्र-नीलकण्ठक व्यंग्य-त्रयी,...

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। अनुवादकेँ केवल शब्द-प्रतिस्थापन नहि, बल्कि अर्थ, छन्द, सांस्कृतिक स्मृति, रंगमंचीयता आ पाठकीय पुनर्जन्मक प्रक्रिया रूपेँ देखल गेल अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। स्रोत-पाठ/लक्ष्य-पाठक समानान्तर उद्धरण, अनुवाद-निर्णयक सूची, घरेलूकरण-विरूपीकरण आ अनुवादक-दृश्यताक तुलनात्मक परीक्षण जोड़ल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

२३. जगदानन्द झा 'मनु'क बालकथा "माटिक बासन"

मूल प्रतिपाद्य — माटिक बासन विदेह मे ई-प्रकाशित भेल आ संकलित भेल विदेह: सदेह ३२ (पृ. २-५) मे जे उपलब्ध अछि विदेह पेटारमे ऐ लिंकपर http://videha.co.in/new_page_89.htm जगदानन्द झा 'मनु', ग्राम पोस्ट - हरिपुर डीहटोल, मधुबनी केदार प्रसाद गामक एकटा कुशल कुम्हार।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

२४. पाठक हमर पोथी किए पढ़थि

मूल प्रतिपाद्य — पहिल गप जे रचना सुनने छिऐ नीक छै मुदा पोथी भेटत केना? पहिने नेपाल पठेलापर डाकखर्च भारते जकाँ रहै आब तँ पोथी/ पत्रिकासँ महग डाकखर्च से आब नेपाल पोथी नै जाइए। हम न्यू जर्सीमे रहै छी, मधुबनी-दरभङ्गामे मैथिली पोथी-पत्रिका भेटिते नै अछि तँ यूगाण्डा, यू. एस. ए. आ ऑस्ट्रेलियामे कतऽ भेटत।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत।

२५. सझिया रोपनि (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सझिया संग्रहक समीक्षा

मूल प्रतिपाद्य — सझिया-साझ बीहनि कथा संग्रह माने ४३ टा बीहनि कथा लेखक माने १. घनश्याम घनेरो, २. मुन्नाजी, ३. नारायणजी, ४. प्रमोद कुमार झा 'गोकुल ', ५. डा. प्रमोद कुमार, ६. मुन्नी कामत, ७. अमरेश कुमार लाभ, ८. विद्या चन्द्र झा 'बमबम', ९. सत्येन्द्र कर्ण, १०. विन्देश्वर ठाकुर, ११. आभा झा, १२. शिव कुमार, १३. प्रियंवदा, १४. महाकान्त प्रसाद, १५. प्रभाष अकिंचन, १६. आशीष अनचिन्हार, १७. पूनम झा, १८. शुभ्रा संतोष, १९. जवाहर लाल कश्यप, २०. सुभाष कुमार...

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-

संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

२६. जगदानन्द झा ‘मनु’ क ‘माटिक बासन’ आ आलोचनात्मक टिप्पणी

मूल प्रतिपाद्य — लेखकक आमंत्रित रचना आ ओइपर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज- जगदानन्द झा 'मनु'क बालकथा "माटिक बासन" आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी माटिक बासन विदेह मे ई-प्रकाशित भेल आ संकलित भेल विदेह: सदेह ३२ (पृ. २-५) मे जे उपलब्ध अछि विदेह पेटारमे ऐ लिंकपर http://videha.co.in/new_page_89.htm जगदानन्द झा 'मनु', ग्राम पोस्ट - हरिपुर डीहटोल, मधुबनी केदार प्रसाद गामक एकटा कुशल कुम्हार।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

२७. कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला: कृतित्वक परिचय

मूल प्रतिपाद्य — कृष्ण कुमार कश्यप- जन्म १५ सितम्बर १९४९ ई.। पिता-कवि-उपन्यासकार स्व. इन्द्रनारायण लाल "सँवलिया"। जनबरी १९६५ ई. मे नेना सभ लेल "नाइट स्कूल", १९८१ ई. मे "कला आधारित जीवन आ शिक्षण

पद्धति"क प्रवर्तन आ तकर कार्यान्वयन लेल शिवा कश्यप आ शशिबालाक सहयोगसँ "भारती विकास संस्था"क स्थापना।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए।

२८. पं. बाल गोविन्द’ आर्य’

मूल प्रतिपाद्य — पं. बाल गोविन्द’ आर्य’ क वर्ण प्रकरण भाष्य-भूमिका दिल्लीमे मैलोरंगक एकटा सेमीनारमे स्व. मोहन भारद्वाज मूल धाराक व्याकरणाचार्यकेँ सम्बोधित कऽ कहने रहथि- 'मैथिलीमे एकटा व्याकरण किए नै अछि?

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। बाल-पाठककेँ निष्क्रिय नैतिक-शिक्षार्थी नहि मानि जिज्ञासु, सक्रिय आ विविध आयुवर्गक पाठक रूपेँ सोचबाक दिशा आधुनिक बाल-साहित्य अध्ययनसँ संवाद

करैत अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। आयुवर्ग, शब्द-स्तर, चित्र-पाठ सम्बन्ध, बाल-पाठक प्रतिक्रिया, हास्य, भय, विज्ञान-बोध आ लिंग/जाति प्रतिनिधित्वक पृथक कसौटी बनाओल जाए। कॉर्पस, ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त।

२९. संरचनात्मक अस्थिरता आ अर्थक लीला: रमेशक ‘कथा-समय’ क आलोचना

मूल प्रतिपाद्य — संरचनात्मक अस्थिरता आ अर्थक लीला: रमेशक मैथिली कथा-संग्रह 'कथा-समय' क एकटा आलोचना मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक विमर्श परंपरागत रूप सँ भावुक आंचलिकता आ यथार्थवादक बीच डोलैत रहल अछि, मुदा समकालीन समय मे पाठ (text) कें भाषाई आ वैचारिक द्वंद्वक रूप मे देखबाक आवश्यकता अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

३०. उमेश पासवानक ‘मुजरिम’: कथा-संग्रहक आलोचनात्मक पाठ

मूल प्रतिपाद्य — ‘सुनन्दा’ कथा शिक्षित युवती सुनन्दा आ ओकर पिता रमण मास्टरक माध्यमसँ समाजक संकीर्ण सोचकेँ उजागर करैत अछि। सड़कक

कात पर भेटल परित्यक्त नवजात शिशुकेँ सुनन्दा दयावश घर लऽ अबैत अछि, मुदा गाम ओकरा चरित्रहीन ठहरबैत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। बाल-पाठककेँ निष्क्रिय नैतिक-शिक्षार्थी नहि मानि जिज्ञासु, सक्रिय आ विविध आयुवर्गक पाठक रूपेँ सोचबाक दिशा आधुनिक बाल-साहित्य अध्ययनसँ संवाद करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। आयुवर्ग, शब्द-स्तर, चित्र-पाठ सम्बन्ध, बाल-पाठक प्रतिक्रिया, हास्य, भय, विज्ञान-बोध आ लिंग/जाति प्रतिनिधित्वक पृथक कसौटी बनाओल जाए। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

३१. ‘दीयरि’: रा. ना. सुधाकरक कथा-संग्रहक समग्र साहित्यिक मूल्यांकन

मूल प्रतिपाद्य — रा. ना. सुधाकरक मैथिली कथा-संग्रहक बहुआयामी समीक्षा रामनारायण सुधाकर (रा. ना. सुधाकर) लिखित "दीयरि" (मैथिली कथा-संग्रह) नेपालक विराटनगर केन्द्रित मैथिली साहित्यक एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए।

३२. परमेश्वर कापड़िक कथा-खिस्साक आलोचनात्मक समीक्षा

मूल प्रतिपाद्य — भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र • नव्य-न्याय (गंगेश उपाध्याय) • विदेह समानान्तर इतिहास परमेश्वर कापड़ि- जनकपुरधाम निवासी, मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार- मुख्यतः नाटककारक रूपमे जानल जाइत छथि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। भारतीय ज्ञानमीमांसा—विशेषतः न्याय/नव्य-न्याय—केँ साहित्यिक अर्थनिर्माण, प्रमाण, अनुमान आ पाठकीय विश्वाससँ जोड़बाक प्रयास मौलिक अन्तरविषयी संभावना खोलैत अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। दार्शनिक पारिभाषिक शब्दक मूल संस्कृत परिभाषा, मान्य टीका, आधुनिक शोध-व्याख्या आ साहित्यिक अनुप्रयोगक चारि अलग स्तर स्पष्ट रखल जाए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

३३. केदारनाथ चौधरी विशेषांक: कथा, व्यक्तित्व आ कृतित्व

मूल प्रतिपाद्य — केदारनाथ चौधरी विशेषांक सम्पादकीय- गजेन्द्र ठाकुर नाइट ड्यूटीमे छलौं, दू बजे राति मे हमर फोन टनटना उठल। हमर गप हमर कलीग, जे तमिल भाषी रहथि, सुनि रहल छली। फोन खतम भेलापर हिन्दीमे पुछलन्हि: "कोन भाषामे अहाँ एक घण्टा गप कऽ रहल छलौं, बड्ड मीठ भाषा अछि"।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

३४. केदारनाथ चौधरी: हुनकर आ हुनकर उपन्यासक पुनर्पाठ

मूल प्रतिपाद्य — केदार नाथ चौधरी- हुनकर आ हुनकर उपन्यासक पुनर्पाठ मैट्रिकक परीक्षामे फेल भेलाक बाद सुगम स्थल एकमी पुलसँ बागमतीक प्रचण्ड वेगमे कूदि प्राणत्याग करबाक निर्णयमे शुद्ध देसी घीमे छानल जिलेबी-कचौड़ीक सुगन्धो व्यवधान नै दऽ सकल हँ मुदा ई निर्णय भेल जे आत्महत्यासँ पहिने एक तोड़ जिलेबी-कचौड़ी खा लेल जाय।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण

ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

३५. साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रसंग: युवा आ बाल पुरस्कार २०२२

मूल प्रतिपाद्य — साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रसंग (युवा आ बाल पुरस्कार २०२२)- मैथिली लेल विवादक अन्तक कोनो सम्भावना नै देखबामे आबि रहल अछि। "अंततः"(मुन्नी कामतक कविता संग्रह) अंतिम रेस धरि पहुँचल- ओतऽ हारि गेल वा हरा देल गेल।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए।

३६. विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)

मूल प्रतिपाद्य — पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२) जन्म स्थान- ग्राम-रुद्रपुर, थाना-अंधरा-ठाढ़ी, जिला-मधुबनी. मूल-पगुल्बार राजे गोत्र-शाण्डिल्य। वंशावली- जीवन चौधरी (जन्म स्थान-पंचोभ-दरिभङ्गा), १८०१ ई. मे रुद्रपुर आगमन।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत।

३७. विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर

मूल प्रतिपाद्य — भोजपुरीक साहित्य मैथिलीसँ कम समृद्ध अछि मुदा से अछि मात्र परिमाणमे, गुणवत्ताक दृष्टिमे ई कतेक क्षेत्रमे आगाँ अछि। भोजपुरीक भिखाड़ी ठाकुरक बिदेसियाक सन्दर्भमे हम ई कहि रहल छी। भिखाड़ी ठाकुर कलकत्तामे प्रवासी रहथि, घुरि कय अएलाह आ भोजपुर क्षेत्रमे अपन कष्टक वर्णन जाहि मर्मस्पर्शी रूपसँ गामे-गामे घुमि कए आ गाबि कए सुनओलन्हि से बनल बिदेसिया नाटक।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि। कैननक स्थापित कालक्रमपर पुनर्विचार करबाक साहस साहित्येतिहासक जीवित प्रकृतिक संकेत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए। दू विद्यापति वा कालक्रम-पुनर्निर्धारण सन परिणामकारी प्रस्ताव लेल

हस्तलिपि-वंश, कोलोफोन, लिपिविज्ञान, अभिलेख, उद्धरण-परम्परा आ स्वतंत्र विशेषज्ञ-सहमति अत्यन्त आवश्यक अछि; समीक्षा एहि दावाकेँ अभी शोध-प्रस्तावक रूपमे देखैत अछि।

३८. विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण

मूल प्रतिपाद्य — विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठक्कुर विद्यापति कृता लिखल अछि/ आ ओ विद्यापति ब्राह्मण छथि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि। कैननक स्थापित कालक्रमपर पुनर्विचार करबाक साहस साहित्येतिहासक जीवित प्रकृतिक संकेत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए। दू विद्यापति वा कालक्रम-पुनर्निर्धारण सन परिणामकारी प्रस्ताव लेल हस्तलिपि-वंश, कोलोफोन, लिपिविज्ञान, अभिलेख, उद्धरण-परम्परा आ स्वतंत्र विशेषज्ञ-सहमति अत्यन्त आवश्यक अछि; समीक्षा एहि दावाकेँ अभी शोध-प्रस्तावक रूपमे देखैत अछि।

३९. मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’ क गीत आ झारू — “हमरा बिनु जगत सुन्ना छै”

मूल प्रतिपाद्य — मैथिलीक भिखारी ठाकुर “रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"” दइ छथि माटि आ कहै छथि “हमरा बिनु जगत सुन्ना छै”। मैथिली साहित्य वा कोनो भाषाक साहित्यमे झारू नामक काव्य विधा सुनने रहिऐ? रामदेव प्रसाद मण्डल “झारूदार” जीक झारूकेँ छोड़ि क?

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

४०. रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह “रथक चक्का उलटि चलै बाट”

मूल प्रतिपाद्य — “रथक चक्का उलटि चलै बाट” ई रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रहक नाम अछि। खाँटी शब्दावलीक प्रयोग आ ओइ माध्यमसँ तीन पाँतिक हाइकू/ शेनर्यू आ पाँच पाँतिक टनकामे हिनकर प्रकृति-प्रेमक माध्यमसँ भावोद्‌गारमे एतेक रास तथ्य सोझाँ अनैए, एतेक रास समस्या आ समाधान तकैए जे पढ़निहार बाजि सकैए, हँ ई हम किए नै सोचि सकलौं, मुदा आब सोचि सकब।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही। कॉर्पस,

ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त।

४१. उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/टनका आ गजलक संग्रह

मूल प्रतिपाद्य — उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह थिक। मैथिलीक नव तुर मात्र उमेरकेँ प्रतिष्ठा नै देबऽ चाहैए, जँ ओ उमेर अग्रगामी नै होथि। आ से हेबाको चाही, काजक सम्मान छै उमेरक आ पुरानक नै।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

४२. उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”

मूल प्रतिपाद्य — कविकेँ युवापर भरोस छन्हि, आ तेँ युवाकेँ सम्बोधितो करै छथि आ ओकर आह्वानो करै छथि, जेना “हम युवा” कवितामे - जाति-धर्म/ मजहब केर नामपर/ षडयंत्र रचैए कियो/ हमर देशकेँ/ भीतर आबि कऽ/ आतंकवादक/ गाछ रोपैए कियो आ तकर सम्बन्ध हुनकर “जीतक झण्डा” कवितामे भेटत जेना: - जरै जाउ/ वतन केर दुश्मन/ आगि सुनगाएल करू।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। दलित-अनुभवकेँ केवल करुणाक विषय नहि, बल्कि प्रतिरोध, आत्म-सम्मान, भाषिक

अधिकार आ पृथक सौन्दर्यबोधक स्रोत रूपेँ पढ़बाक आग्रह महत्त्वपूर्ण अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। एहि क्षेत्रमे लेखकक सामाजिक अवस्थिति, आत्मकथात्मक साक्ष्य, समुदाय-आधारित पाठकीय प्रतिक्रिया आ दलित आलोचकक स्वकीय सिद्धान्तकेँ बराबर स्थान देब आवश्यक अछि। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

४३. रामलोचन शरणक मैथिली रामचरितमानस

मूल प्रतिपाद्य — महाकाव्य वा गीत प्रबन्ध: महाकाव्यक वर्णन जे ई कतेक सर्गमे हुअए, एकर नायक केहन प्रकृतिक हुअए आ ओ उच्च कुल उत्पन्न हुअए आदि आब बुद्धिविलास मात्र कहल जाएत। जेना गद्यमे कथा होइत अछि आ विस्तारक अनुसार लघुकथा, कथा आ उपन्यासमे विभक्त कएल जाइत अछि तइ सन्दर्भमे उपन्यास (वा बीच-बीचमे नाटकक्क) पद्य रूपान्तरण महाकाव्य कहल जाएत।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

४४. बूच जीक कविताक बहुविध आलोचनात्मक अध्ययन

मूल प्रतिपाद्य — बूच जीक कविता जेठी करेह कवितामे कवि कहै छथि जे ई भोरमे उधिआइ अछि, बर्खा हेठ भेलोपर उपलाइत अछि। ओकर खतराक बिन्दु बड्डु ऊपर छै तखन ओ किए अकुलाइत अछि। आ आखिरीमे कहै छथि जे बान्ह तोड़ि ई प्रलय मचाओत से बुझाइत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

४५. विदेह: लोगो:: विद्यापति: उगना: मिथिला: मैथिली

मूल प्रतिपाद्य — महाभारतमे उल्लेख अछि, जे इन्द्र-ध्वजा गाढ़ नील रंगक होइत छल। रामक ध्वजा लाल-गेरुआ रंगक छलन्हि आ’ एहि पर कुलदेवता सूर्यक चित्र अंकित छल। महाभारतमे अर्जुनक ध्वजा पर वानरराजक चित्र छल।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कैननक स्थापित कालक्रमपर पुनर्विचार करबाक साहस साहित्येतिहासक जीवित प्रकृतिक संकेत अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। दू विद्यापति वा कालक्रम-पुनर्निर्धारण सन परिणामकारी प्रस्ताव लेल हस्तलिपि-वंश, कोलोफोन, लिपिविज्ञान, अभिलेख, उद्धरण-परम्परा आ स्वतंत्र विशेषज्ञ-सहमति अत्यन्त आवश्यक अछि; समीक्षा एहि दावाकेँ अभी शोध-प्रस्तावक रूपमे देखैत अछि। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

४६. ‘बज्जिका गीत-संगीत’: समेकित द्विभाषिक बहुआयामी साहित्यिक समीक्षा

मूल प्रतिपाद्य — डॉ. रामेश्वर प्रसादक कृतिक मैथिली–बज्जिका समानान्तर अनुशीलन समीक्ष्यकृति: ‘बज्जिका गीत-संगीत’ · किशोर प्रकाशन, मुजफ्फरपुर · प्रथम संस्करण, २००० विदेह अपन आरम्भहिसँ ओहि साहित्यिक न्यायक पक्षधर रहल अछि, जे स्थापित-संस्थागत आलोचना-परम्परासँ छूटल, हाशिया पर ठेलल आ अनसुनल स्वर सभकेँ केन्द्रमे अनैत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत,

सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

४७. लालदासक मिथिला रामायण मे कुण्डलिया आ सम्पादक बा प्रूफरीडरक अज्ञानतावश ओइमे छन्दोभङ्ग

मूल प्रतिपाद्य — बुझू जे ९५ प्रतिशत भाग चौपाइ, आ फेर बाँचल भागमे रूपमाला छन्द आ गीतिका। मुदा हम एतऽ कुण्डलियाक चर्चा कऽ रहल छी, जे बहुत कम मात्रामे अछि मुदा हमरा ओ बहुत प्रभावित करैत अछि। कुण्डलियाक प्रकृति रुबाइसँ मिलैत अछि आ जँ अहाँ ओमर खय्यामक रुबाइ पढ़ब तँ कुण्डलियासँ प्रेम करऽ लागब।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

४८. मैथिली मे पहिल बेर १. पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता आ २. शेप बा कंक्रीट (आकार) कविता

मूल प्रतिपाद्य — पाँतिक छन्दमे लिखल कविता भेल पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता। ई भेल कोनो बेर-बेर पुनरावृत्ति हुअयबला पद्य रचना। ऐ मे ध्वनिक पुनरावृत्ति आवश्यक नै अछि, खाली पाँतिक लम्बाइक पुनरावृत्ति होइत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द,

बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

४९. समानान्तर परम्पराक गोलगला बला ज्योतिरीश्वर पूर्व पदावलीबला महाकवि विद्यापति आ ज्योतिरीश्वरक बादबला पागबला संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुर:

मूल प्रतिपाद्य — विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठक्कुर विद्यापति कृता लिखल अछि/ आ ओ विद्यापति ब्राह्मण छथि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि। कैननक स्थापित कालक्रमपर पुनर्विचार करबाक साहस साहित्येतिहासक जीवित प्रकृतिक संकेत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए। दू विद्यापति वा कालक्रम-पुनर्निर्धारण सन परिणामकारी प्रस्ताव लेल हस्तलिपि-वंश, कोलोफोन, लिपिविज्ञान, अभिलेख, उद्धरण-परम्परा आ स्वतंत्र विशेषज्ञ-सहमति अत्यन्त आवश्यक अछि; समीक्षा एहि दावाकेँ अभी शोध-प्रस्तावक रूपमे देखैत अछि।

५०. कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार ओम प्रकाश झा)

मूल प्रतिपाद्य — भदवारिमे मेघ लाधल रहै छै, विदागरी-तिदागरी नै होइ छै मुदा पनिऔरा फड़ै छै। भदवरिया लाधल छै, बितरोचारक कोनो खगता नै। मुदा जँ कोनो बहर दिस झोंकान भऽ जाए तँ कोनो हर्ज नै।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

५१. गजलकार मुन्ना जी बीहनि कथाकार मुन्नाजी

मूल प्रतिपाद्य — “माँझ आंगनमे कतिआएल छी” मुन्नाजीक रुबाइ आ गजल संग्रहक नाम अछि। की कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि ई आकि गजलक स्वभाव अछि ई? नहिये ई कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि नहिये ई गजलक स्वभाव अछि, ई एकटा यथार्थ अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

५२. कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक

मूल प्रतिपाद्य — ओना तँ अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि (हुनकर फेसबुक प्रोफाइलक यएह नाम छन्हि) मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८६ केर जनवरी मासमे।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।
फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

५३. बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन

मूल प्रतिपाद्य — बूच जीक कविता जेठी करेह कवितामे कवि कहै छथि जे ई भोरमे उधिआइ अछि, बर्खा हेठ भेलोपर उपलाइत अछि। ओकर खतराक बिन्दु बड्डु ऊपर छै तखन ओ किए अकुलाइत अछि। आ आखिरीमे कहै छथि जे बान्ह तोड़ि ई प्रलय मचाओत से बुझाइत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। स्त्री-कर्तृत्व, देह-स्वायत्तता, इच्छाक अधिकार आ पितृसत्तात्मक पाठक पुनर्व्याख्या एहि अध्यायक केन्द्रीय आलोचनात्मक उपलब्धि अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। क्वीर/नारीवादी अध्ययनमे जाति, वर्ग, भाषा, ग्रामीणता आ पीढ़ीक अन्तर्सम्बन्ध जोड़ि intersectional पद्धति अपनाएब उपयोगी होयत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

५४. नचिकेताक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश

मूल प्रतिपाद्य — नाटकक कथानक: प्रथम कल्लोल: ई नाटक ज्योतिरीश्वरक परम्परामे कल्लोलमे (हुनकर वर्ण रत्नाकर कल्लोलमे विभक्त अछि जे नाटक नहि छी, धूर्त-समागम जे ज्योतिरीश्वर लिखित नाटक अछि- अंकमे विभक्त अछि) विभाजित अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-

संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

५५. चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक “वेटिंग फॉर गोडो”, हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक “द बर्थडे पार्टी”, बादल सरकारक बांग्ला नाटक “एवम् इन्द्रजीत” आ उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’ क मैथिली नाटक “नो एण्ट्री: मा प्रविश”

मूल प्रतिपाद्य — [नो एण्ट्री: मा प्रविश २००८ ई. मे छपल आ साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल एकर चयन २०१०, २०११ बा २०१२ मे नै भऽ सकलै। आब ई पोथी मैथिली साहित्य लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल उपलब्ध नै रहत।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए।

५६. छुतहर/छुतहर घैल/छुतहा घैल

मूल प्रतिपाद्य — छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैलछुतहा घैल महेन्द्र मलंगियाक नवीन नाटकक नाम छन्हि। ऐ छोटसन नाटकक भूमिका ओ दस पन्नामे लिखने छथि। हुनका कष्ट छन्हि जे रमानन्द झा “रमण” हुनका सुझाव देलखिन्ह जे “छुतहर घैल” कँ मात्र “छुतहर” कहल जाइ छै।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। नाटककँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए।

५७. चारिटा अंग्रेजी नाटक — डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ

मूल प्रतिपाद्य — एहि निबन्धक आधार अछि परशुराम झाक “डाइमेन्शन्स ऑफ पीस इन इंग्लिश ड्रामा- स्टडीज इन डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन अगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल एण्ड स्ट्राइफ”। परशुराम झा १९३८- गाम- मेंहथ (मधुबनी), कृति- डाइमेन्शन्स ऑफ पीस इन इन्गलिश ड्रामा, क्रिश्चियन पोएटिक ड्रामा।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। नाटककँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित

बनत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए।

५८. नचिकेताक “मध्यमपुरुष एकवचन”

मूल प्रतिपाद्य — गद्यसँ पद्य एहि अर्थे फराक होइत अछि जे एहिमे बिम्बक माध्यमसँ कम शब्दमे बेशी गप कहल जएबाक गुंजाएश रहैत अछि। तेँ पद्यकेँ समयाभावमे शुरू कएल गद्यक विकल्पक रूपमे देखब सम्भव नहि, ओना तेहनो उदाहरण भेटत।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

५९. नाट्य-नवग्रह

मूल प्रतिपाद्य — कमलाक भगता·दानवीर दधीची·अपाला आत्रेयी·भऽ जाएब छू·जलोदीप सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) | ISSN 2229-547X १. कमलाक भगता: निशान, परम्परा आअन्धानुकरणक हास्य-शल्यक्रिया

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। नाटककेँ

लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

६०. मुन्नी कामतक’ जिन्दगीक मोल’ आ’ चुक्का’

मूल प्रतिपाद्य — लेखकक आमंत्रित रचना आ ओइपर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज- मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी "जिन्दगीक मोल" विदेहमे ई-प्रकाशित भेल आ संकलित भेल विदेह: सदेह १३ (पृ. ४१२-४२०) मे, जे उपलब्ध अछि विदेह पेटारमे ऐ लिंकपर।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक

वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

६१. “कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक”: संग्रहक परिचय, स्थापत्य आ सर्वेक्षण

मूल प्रतिपाद्य — मैथिली रंगमंचक सुदीर्घ इतिहासमे नाटचकार, निर्देशक आ कवि कुणाल (मूल नाम: शिव नारायण झा, जन्म १९५१, पालीमोहन, मधुबनी) एकटा युगप्रवर्तक आ प्रस्थानबिन्दु थिकाह। मैथिली नाटच जगत जखन अपन संक्रमणकाल आ संकटपूर्ण क्षण सँ गुजरी रहल छल, तखन कुणालजीक रंगमंचीय आगमन संकटमोचकक रूपमे भेल।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। दलित-अनुभवकेँ केवल करुणाक विषय नहि, बल्कि प्रतिरोध, आत्म-सम्मान, भाषिक अधिकार आ पृथक सौन्दर्यबोधक स्रोत रूपेँ पढ़बाक आग्रह महत्त्वपूर्ण अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। एहि क्षेत्रमे लेखकक सामाजिक अवस्थिति, आत्मकथात्मक साक्ष्य, समुदाय-आधारित पाठकीय प्रतिक्रिया आ दलित आलोचकक स्वकीय सिद्धान्तकेँ बराबर स्थान देब आवश्यक अछि। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए।

६२. “चालिस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा”: बहु-दृष्टि नाटच-समीक्षा

मूल प्रतिपाद्य — कुणालक प्रथम नाटकक ई समीक्षा कथा-संरचना, हास्य, बुद्धि, भाँट-परम्परा, मेटाथिएटर, लोकधर्मी रंगशिल्प आ कलाकारक अर्थनीतिकेँ एकसंग पढ़ैत अछि। भारतीय रस-वक्रोक्ति, पाश्चात्य विरचन-प्रभाव आ कार्निवालेस्क, चीनी संरचना-आधारित सौन्दर्यदृष्टि तथा इजरायली प्रतिमात्मक प्रदर्शन-विचारक तुलनात्मक प्रयोग द्वारा नाटकक बहुस्तरीय अर्थ उद्घाटित कएल गेल अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

६३. “बिदापत”: लोकनाट्य, इतिहास, स्मृति आ काव्यक रंगमंच

मूल प्रतिपाद्य — “बिदापत” क ई समीक्षा विद्यापति-काव्य, लोकनाट्य-शिल्प, इतिहास-स्मृति, लखिमाक नायिका-कर्तृत्व, अन्तर्नाट्य आ काव्यक चिरजीविताकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। भारतीय रस-ध्वनि, ऐतिहासिक नाट्य-दृष्टि, स्मृति-अध्ययन, ब्रेख्तीय आत्म-दूरी तथा चीनी आ इजरायली तुलनात्मक सूत्रक माध्यमसँ नाटकक संरचना आ सांस्कृतिक अर्थक परीक्षण कएल गेल अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि। कैननक स्थापित कालक्रमपर पुनर्विचार करबाक साहस साहित्येतिहासक जीवित प्रकृतिक संकेत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए। दू विद्यापति वा कालक्रम-पुनर्निर्धारण सन परिणामकारी प्रस्ताव लेल हस्तलिपि-वंश, कोलोफोन, लिपिविज्ञान, अभिलेख, उद्धरण-परम्परा आ स्वतंत्र विशेषज्ञ-सहमति अत्यन्त आवश्यक अछि; समीक्षा एहि दावाकेँ अभी शोध-प्रस्तावक रूपमे देखैत अछि।

६४. सातो नाटकक सीमा, कमी आ वैचारिक तनाव

मूल प्रतिपाद्य — आलोचना मात्र प्रशंसात्मक मूल्यांकन नहि; तेँ एहि अध्यायमे सातो नाटकक संरचनात्मक असमानता, पात्र-विकास, मेटाथिएटरक पुनरावृत्ति, उद्घोषक-निर्भरता, स्त्री-कर्तृत्व आ पितृसत्तात्मक अनुमोदनक तनाव, दैवी हस्तक्षेप, शीर्षक-रचना, मंच-निर्देश आ नाटकीय अर्थव्यवस्थाक प्रश्नक परीक्षण कएल गेल अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। स्त्री-कर्तृत्व, देह-स्वायत्तता, इच्छाक अधिकार आ पितृसत्तात्मक पाठक पुनर्व्याख्या एहि अध्यायक केन्द्रीय आलोचनात्मक उपलब्धि अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। क्वीर/नारीवादी अध्ययनमे जाति, वर्ग, भाषा, ग्रामीणता आ पीढ़ीक अन्तर्सम्बन्ध जोड़ि intersectional पद्धति अपनाएब उपयोगी होयत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए।

६५. समग्र निष्कर्ष: कुणालक नाटच-संसारक वैचारिक एकता

मूल प्रतिपाद्य — अंतिम अध्याय संग्रहक लोकनाटच-त्रयी आ प्रेम-चतुष्टयकेँ बुद्धि, काव्य-चिरजीविता, अभय, विश्वास, आत्मनिर्णय आ प्रेमक क्रमिक वैचारिक विकास रूपमे समेटैत अछि। लोकस्रोतक प्रति निष्ठा, शास्त्र-लोक-आधुनिकताक संश्लेषण, सामाजिक संवेदनशीलता आ मंचनीय व्यावहारिकता कुणालक नाटच-कर्मक साझा आधार रूपमे उभरैत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

६६. महेन्द्र मलंगियाक छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल

मूल प्रतिपाद्य — छुतहा घैल महेन्द्र मलंगियाक नवीन नाटकक नाम छन्हि। ऐ छोटसन नाटकक भूमिका ओ दस पन्नामे लिखने छथि। हुनका कष्ट छन्हि जे रमानन्द झा “रमण” हुनका सुझाव देलखिन्ह जे “छुतहर घैल” कैं मात्र “छुतहर” कहल जाइ छै।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकैं वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। नाटककैं लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए।

६७. डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१–१९५६)

मूल प्रतिपाद्य — ओइ गामसँ रामजी सपकाळक एकटा परिवार छल, भारतीय सेनामे एकटा स्कूलमे ओ हेडमास्टर रहथि। गौरांगी नीलाक्षी आ भीमा हुनकर पत्नी छलखिन्ह। हुनकर चौदहम सन्तान १४ अप्रैल १८९१ ई. कैं भीमाक कोखिसँ भेल आ तकर नाम भीम राखल गेल, तखन रामजी महूमे पदस्थापित…

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकैं वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। दलित-अनुभवकैं केवल करुणाक विषय नहि, बल्कि प्रतिरोध, आत्म-सम्मान, भाषिक अधिकार आ पृथक सौन्दर्यबोधक स्रोत रूपेँ पढ़बाक आग्रह महत्त्वपूर्ण अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। एहि क्षेत्रमे लेखकक सामाजिक अवस्थिति, आत्मकथात्मक साक्ष्य,

समुदाय-आधारित पाठकीय प्रतिक्रिया आ दलित आलोचकक स्वकीय सिद्धान्तकेँ बराबर स्थान देब आवश्यक अछि।

६८. विदेह · समानान्तर साहित्य आन्दोलन

मूल प्रतिपाद्य — गोहि सभक बीच जलसमाधि[गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली कादम्बरी, खण्ड०-१–२, खण्ड०अध्याय(-१००) सँ अध्याय (-१); खण्ड १अध्याय ० सँ अध्याय १००; आखण्ड २अध्याय १०१ सँ अध्याय २००] कथासार आ समीक्षात्मक मूल्याङ्कन: भारतीय आ पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आलोकमे तीन खण्ड · अध्याय –१०० सँ २०० · कुल ३०१ अध्याय भाग-एक — खण्ड-० (पूर्व-कथाकाल) साहित्यिक समीक्षा

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

६९. राम भरोस कापड़ि ‘भ्रमर’ विशेषांक: साहित्यिक आ संस्थागत विमर्श

मूल प्रतिपाद्य — राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे किछु गोटेकेँ हुनका मधेस आन्दोलनसँ जुड़लासँ दिक्कत छन्हि, से ओ रचना नै देता, से नेपालो दिसमे छथि आ भारतो दिस। मुदा समानान्तर धाराकेँ तकर आदति छै। राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' सर्वहारा वर्गकेँ गरिमा देलन्हि, जखन महेन्द्र मलंगिया आ

जातिवादी रंगमंच शोलकन आ राड़ युक्त शब्दावली अपन स्लैपस्टिक ह्यूमर बला नाटक मे दऽ रहल छल, तखन भ्रमर जी ई केलन्हि, से आर महत्वपूर्ण छल।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

७०. दलित विमर्श आ डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)

मूल प्रतिपाद्य — ओइ गामसँ रामजी सपकाळक एकटा परिवार छल, भारतीय सेनामे एकटा स्कूलमे ओ हेडमास्टर रहथि। गौरांगी नीलाक्षी आ भीमा हुनकर पत्नी छलखिन्ह। हुनकर चौदहम सन्तान १४ अप्रैल १८९१ ई. कैँ भीमाक कोखिसँ भेल आ तकर नाम भीम राखल गेल, तखन रामजी महूमे पदस्थापित…

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। दलित-अनुभवकेँ केवल करुणाक विषय नहि, बल्कि प्रतिरोध, आत्म-सम्मान, भाषिक अधिकार आ पृथक सौन्दर्यबोधक स्रोत रूपेँ पढ़बाक आग्रह महत्त्वपूर्ण अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। एहि क्षेत्रमे लेखकक सामाजिक अवस्थिति, आत्मकथात्मक साक्ष्य, समुदाय-आधारित पाठकीय प्रतिक्रिया आ दलित आलोचकक स्वकीय सिद्धान्तकेँ बराबर स्थान देब आवश्यक अछि।

७१. मैथिलीमे छद्म समीक्षाक कमलानन्द झा प्रसंग

मूल प्रतिपाद्य — कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) क शीर्षक भ्रामक अछि। ई हुनकर किछु सवर्ण उपन्यासकारपर किछु सिण्डिकेटेड कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी हार्डबाउण्डमे लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जतऽ ई सड़ि जायत, अमेजनसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ऐमे पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए।

७२. बहस-पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक

मूल प्रतिपाद्य — विदेह-सदेह २ (२००९-१०) सँ पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि आ साइबर अपराधक पापक घैलक महा-विस्फोट भेल अछि। ई पैघ श्रेय पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरकेँ जाइत छनि। हुनकर अपराध पकड़बाक चेतना केर जतेक प्रशंसा कयल जाय, कम होयत।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

७३. अन्तर्जाल अपराध आ तकरा पकड़बाक विधि

मूल प्रतिपाद्य — मैथिलीक दन्द-फन्द बला सभक प्रवेश अन्तर्जालपर शुरू भऽ गेल अछि। ई लोकनि पहिने पत्र आ एस. एम. एस. द्वारा ब्लैकमेलमे लागल छलाह। आब ई-पत्रक प्रयोग साधारण संगणक ज्ञानबला सेहो कऽ सकै छथि, से एहि प्रवृत्तिमे वृद्धि आएल...

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि। डिजिटल माध्यमकेँ मैथिली

साहित्यक बाहरी साधन नहि, बल्कि लिपि-संरक्षण, प्रकाशन, खोज, अभिलेखन आ वैश्विक पाठकीयताक संरचनात्मक आधार मानल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए। तकनीकी अध्यायसभमे संस्करण-वर्ष, सॉफ्टवेयर/मानकक स्थिति, स्थायी लिंक, डेटा-संग्रह, अभिगम्यता, गोपनीयता आ डिजिटल-संरक्षण नीति नियमित रूपेँ अद्यतन होएब चाही।

७४. इन्फॉरमेशन सोसाइटी, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान

मूल प्रतिपाद्य — इन्फॉरमेशन सोसाइटी किंवा सूचना-आधारित-समाज एकटा ओहेन समाज अछि जाहिमे सूचनाक निर्माण, वितरण, प्रसार, उपयोग, एकीकरण आ संशोधन, ई सभ एकटा महत्त्वपूर्ण आर्थिक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक क्रिया होइत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि। डिजिटल माध्यमकेँ मैथिली साहित्यक बाहरी साधन नहि, बल्कि लिपि-संरक्षण, प्रकाशन, खोज, अभिलेखन आ वैश्विक पाठकीयताक संरचनात्मक आधार मानल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए। तकनीकी अध्यायसभमे संस्करण-वर्ष, सॉफ्टवेयर/मानकक स्थिति,

स्थायी लिंक, डेटा-संग्रह, अभिगम्यता, गोपनीयता आ डिजिटल-संरक्षण नीति नियमित रूपेँ अद्यतन होएब चाही।

७५. भारतीय दलित साहित्य: मैथिली अनुवाद, समीक्षा आ सौन्दर्यशास्त्र

मूल प्रतिपाद्य — काव्य • कथा • अनुवाद • समीक्षा-सिद्धान्त • रस-दृष्टि • समानान्तर साहित्यिक परम्परा बोयी भीमन्ना (१९२०–२००१) तेलुगु दलित साहित्यक एकटा स्तम्भ छलाह। हुनकर कविता मात्र व्यक्तिगत पीड़ाक अभिव्यक्ति नहि, बल्कि एकटा सामूहिक ऐतिहासिक चेतनाक दस्तावेज थिक।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

७६. जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष

मूल प्रतिपाद्य — मैथिलीक पुरोधा जयकान्त मिश्र (१९२२-२००९) क ३ फरबरी २००९ केँ सात बजे साँझमे निधन भऽ गेलन्हि। मैथिली साहित्यक एकटा बड़ पैघ विद्वान डॉ. जयकांत मिश्र १९८२ ई. मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी आ आधुनिक यूरोपियन भाषा विभागक प्रोफेसर आ हेड पद सँ सेवा निवृत्त भेल छलाह।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। कॉर्पस, ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त।

७७. गङ्गेश उपाध्याय

मूल प्रतिपाद्य — गङ्गेश उपाध्याय जीवन, तर्कशास्त्र, तत्त्वचिन्तामणि आ नव्य-न्याय परम्परामे विरासत जीवन, तर्कशास्त्र, तत्त्वचिन्तामणि आ नव्य-न्याय परम्परामे विरासत मिथिलाक भूमि एशियामे संस्कृत बौद्धिक संस्कृतिक सबसँ निरन्तर उत्पादक केन्द्रसभमे सँ एक रहल अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। भारतीय ज्ञानमीमांसा—विशेषतः न्याय/नव्य-न्याय—केँ साहित्यिक अर्थनिर्माण, प्रमाण, अनुमान आ पाठकीय विश्वाससँ जोड़बाक प्रयास मौलिक अन्तरविषयी संभावना खोलैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। दार्शनिक पारिभाषिक शब्दक मूल संस्कृत परिभाषा, मान्य टीका, आधुनिक शोध-व्याख्या आ साहित्यिक अनुप्रयोगक चारि अलग स्तर स्पष्ट रखल जाए।

७८. भामती (चतुःसूत्री): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

मूल प्रतिपाद्य — भामती (वाचस्पति)/ आत्मतत्त्वविवेक (उदयन)/ न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयन)/तत्त्वचिन्तामणि (गंगेश)/(मैथिली अनुवाद): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन [मूल संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद: गजेन्द्र...

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। अनुवादकेँ केवल शब्द-प्रतिस्थापन नहि, बल्कि अर्थ, छन्द, सांस्कृतिक स्मृति, रंगमंचीयता आ पाठकीय पुनर्जन्मक प्रक्रिया रूपेँ देखल गेल अछि। भारतीय ज्ञानमीमांसा —विशेषत: न्याय/नव्य-न्याय—केँ साहित्यिक अर्थनिर्माण, प्रमाण, अनुमान आ पाठकीय विश्वाससँ जोड़बाक प्रयास मौलिक अन्तरविषयी संभावना खोलैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। स्रोत-पाठ/लक्ष्य-पाठक समानान्तर उद्धरण, अनुवाद-निर्णयक सूची, घरेलूकरण-विरूपीकरण आ अनुवादक-दृश्यताक तुलनात्मक परीक्षण जोड़ल जाए। दार्शनिक पारिभाषिक शब्दक मूल संस्कृत परिभाषा, मान्य टीका, आधुनिक शोध-व्याख्या आ साहित्यिक अनुप्रयोगक चारि अलग स्तर स्पष्ट रखल जाए।

७९. आत्मतत्त्वविवेक: एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

मूल प्रतिपाद्य — दार्शनिक पृष्ठभूमि, भारतीय-पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, अनुवाद-मीमांसा, भाषिक उपलब्धि आ सम्पादकीय परीक्षण उदयनाचार्यक «आत्मतत्त्वविवेक» — जकरा परम्परामे «बौद्धधिक्कार» वा «बौद्धाधिकार» नामसँ सेहो अभिहित कएल जाइत अछि — न्याय-वैशेषिक दर्शनक ओहि महत्त्वपूर्ण वाद-ग्रन्थसभमेसँ अछि जतय बौद्ध आ नैयायिक शास्त्रार्थ अत्यन्त सघन तार्किक रूप ग्रहण करैत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण

ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। अनुवादकेँ केवल शब्द-प्रतिस्थापन नहि, बल्कि अर्थ, छन्द, सांस्कृतिक स्मृति, रंगमंचीयता आ पाठकीय पुनर्जन्मक प्रक्रिया रूपेँ देखल गेल अछि। भारतीय ज्ञानमीमांसा —विशेषतः न्याय/नव्य-न्याय—केँ साहित्यिक अर्थनिर्माण, प्रमाण, अनुमान आ पाठकीय विश्वाससँ जोड़बाक प्रयास मौलिक अन्तरविषयी संभावना खोलैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। स्रोत-पाठ/लक्ष्य-पाठक समानान्तर उद्धरण, अनुवाद-निर्णयक सूची, घरेलूकरण-विरूपीकरण आ अनुवादक-दृश्यताक तुलनात्मक परीक्षण जोड़ल जाए। दार्शनिक पारिभाषिक शब्दक मूल संस्कृत परिभाषा, मान्य टीका, आधुनिक शोध-व्याख्या आ साहित्यिक अनुप्रयोगक चारि अलग स्तर स्पष्ट रखल जाए।

८०. न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयनाचार्यक मैथिली अनुवाद): एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

मूल प्रतिपाद्य — भारतीय आ पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, दर्शन आ अनुवाद-विज्ञानक आलोकमे — मूल संस्कृत: उदयनाचार्य; मैथिली अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर; प्रकाशक: विदेह, ISSN 2229-547X ई एकीकृत समीक्षा सम्पूर्ण ग्रन्थक आरम्भिक प्रकाशन-सामग्री, अनुक्रम, अध्याय १ सँ अध्याय १२ धरि सभ आलोचनात्मक-अनुसन्धानात्मक खण्ड, पाँचू फूलक गुच्छमे देल पूर्ण मैथिली अनुवाद, परिशिष्ट, सन्दर्भ-ग्रन्थसूची, तथा ग्रन्थक उत्तरार्धमे देल अङ्ग्रेजी समानान्तर खण्ड—सभकेँ एकहि…

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। भारतीय ज्ञानमीमांसा—विशेषतः न्याय/नव्य-न्याय—केँ साहित्यिक अर्थनिर्माण, प्रमाण, अनुमान आ पाठकीय विश्वाससँ जोड़बाक प्रयास मौलिक अन्तरविषयी संभावना खोलैत अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ

प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। दार्शनिक पारिभाषिक शब्दक मूल संस्कृत परिभाषा, मान्य टीका, आधुनिक शोध-व्याख्या आ साहित्यिक अनुप्रयोगक चारि अलग स्तर स्पष्ट रखल जाए। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

८१. तत्त्वचिन्तामणि (मैथिली अनुवाद): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

मूल प्रतिपाद्य — प्रस्तुत अध्ययन गङ्गेशोपाध्याय-प्रणीत तत्त्वचिन्तामणिक मैथिली अनुवादित आ विस्तृत संस्करणक कृतिसार तथा आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करैत अछि। ई ग्रन्थ परम्परागत अर्थमे उपन्यास वा काव्यकृति नहि, अपितु भारतीय ज्ञानमीमांसा, तर्कशास्त्र, भाषादर्शन आ सत्तामीमांसाक महत्त्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रन्थ थिक।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। भारतीय ज्ञानमीमांसा—विशेषत: न्याय/नव्य-न्याय—केँ साहित्यिक अर्थनिर्माण, प्रमाण, अनुमान आ पाठकीय विश्वाससँ जोड़बाक प्रयास मौलिक अन्तरविषयी संभावना खोलैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। दार्शनिक पारिभाषिक शब्दक मूल संस्कृत परिभाषा, मान्य टीका,

आधुनिक शोध-व्याख्या आ साहित्यिक अनुप्रयोगक चारि अलग स्तर स्पष्ट रखल जाए।

८२. फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत

मूल प्रतिपाद्य — गजेन्द्र ठाकुर (गाम, मेंहथ, भाया-झंझारपुर, जिला-मधुबनी) विशेष सहयोग श्री केशव महतो (बहादुरगंज, जिला किशनगंज, बिहार) एहि क्षेत्रकार्यक सूचक श्री केशव महतो सीत बसंतक फील्डवर्कमे विशेष सहयोगक कारण एहि प्रबन्धक सह-लेखक छथि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

८३. मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कतिआएल छी”

मूल प्रतिपाद्य — “माँझ आंगनमे कतिआएल छी” मुन्नाजीक रुबाइ आ गजल संग्रहक नाम अछि। की कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि ई आकि गजलक स्वभाव अछि ई? नहिये ई कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि नहिये ई गजलक स्वभाव अछि, ई एकटा यथार्थ अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण

ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

८४. विनीत ठाकुरक “बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”

मूल प्रतिपाद्य — बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज- एहि नामसँ १० टा गीतक संग्रह लए श्री बिनीत ठाकुर- शिक्षक, प्रगति आदर्श ई. स्कूल, लगनखेल, ललितपुर प्रस्तुत भेल छथि। ई एहि सालक दोसर पोथी छी जे देवनागरीक संग मिथिलाक्षरमे सेहो आयल अछि, आऽ एकरा हम अंशुमन पाण्डेयकेँ पठा देलियन्हि, यूनीकोडक मैपिंगक लेल, कारण विनीतजी हमरा एहि पोथीकेँ ई-मेलसँ पठेबाक अनुमति देने छथि, ताहि लेल हुनका धन्यवाद।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि। डिजिटल माध्यमकेँ मैथिली साहित्यक बाहरी साधन नहि, बल्कि लिपि-संरक्षण, प्रकाशन, खोज, अभिलेखन आ वैश्विक पाठकीयताक संरचनात्मक आधार मानल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए। तकनीकी अध्यायसभमे संस्करण-वर्ष, सॉफ्टवेयर/मानकक स्थिति, स्थायी लिंक, डेटा-संग्रह, अभिगम्यता, गोपनीयता आ डिजिटल-संरक्षण नीति नियमित रूपेँ अद्यतन होएब चाही।

८५. संतोष कुमार मिश्र — “एना किए..?” आ “पोसपुत”

मूल प्रतिपाद्य — संतोषजीक “एना किए..?” पद्य संग्रह मैथिली पद्यक भविष्यक प्रति आश्वस्ति दैत अछि। एहिमे युवा कविक २४ गोट पद्यक संग्रह अछि। संतोषजीक कविता एना किए मे स्त्रीक समस्या तँ काल्पनीक सत्यमे जीवनक दर्शनक द्वन्द सोझाँ अनैत छथि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। स्त्री-कर्तृत्व, देह-स्वायत्तता, इच्छाक अधिकार आ पितृसत्तात्मक पाठक पुनर्व्याख्या एहि अध्यायक केन्द्रीय आलोचनात्मक उपलब्धि अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। क्वीर/नारीवादी अध्ययनमे जाति, वर्ग, भाषा, ग्रामीणता आ पीढ़ीक अन्तर्सम्बन्ध जोड़ि intersectional पद्धति अपनाएब उपयोगी होयत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

८६. दूर्वाक्षत

मूल प्रतिपाद्य — दूर्वाक्षत यजुर्वेदक अध्याय २२ मंत्र २२ केँ विश्वक पहिल राष्ट्रभक्ति गीत होएबाक गौरव प्राप्त छै। मुदा मिथिलामे दूभि-अक्षत छीटि क ऽ ऐ मंत्रकेँ दूर्वाक्षत मंत्र बना देल गेल। बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लि. दूर्वाक्षत नामसँ नवम वर्गक किताब छपने अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

८७. स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”

मूल प्रतिपाद्य — स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८): स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” केर जन्म १९११ ई. मे अपन मामागाम सतलखामे भेलन्हि जे हुनकर पैतृक गाम तरौनीक लगेमे अछि। यात्री जी अपन गामक संस्कृत पाठशालामे पढ़ए लगलाह, फेर वाराणसी आ कलकत्ता सेहो गेलाह आ संस्कृतमे “साहित्य आचार्य” क उपाधि प्राप्त केलन्हि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत।

८८. स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८–१९८४)

मूल प्रतिपाद्य — स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४) जन्म १८ सितम्बर १९०८ ई. ग्राम+पो.- कुमर बाजितपुर, जिला- वैशाली, बिहार, भारत। पिता- स्वर्गीय पं. जनार्दन झा “जनसीदन” मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दीक लब्धप्रतिष्ठ द्विवेदीयुगीन कवि-साहित्यकार।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत।

८९. जगदीश प्रसाद मण्डल

मूल प्रतिपाद्य — १९४२-४३ क बंगालक अकालक विषयमे अमर्त्य सेन लिखै छथि जे एहि अकालमे बंगालमे लाखक लाख लोक मुइलाह (फेमीन इन्क्वायरी कमीशनक अनुसार १५ लाख) मुदा अमर्त्यक एकोटा सर-सम्बन्धीक मृत्यु ओहिमे नहि भेल।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

९०. प्रेमशंकर सिंह

मूल प्रतिपाद्य — मैथिली भाषा साहित्य: बीसम शताब्दी - प्रेमशंकर सिंहजीक एहि निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना संग्रहमे मैथिली साहित्यक २०म शताब्दी आ एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक विभिन्न प्रिय-अप्रिय पक्षपर चर्चा भेल अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत।

९१. अन्हारक विरोधमे “हाथी चलए बजार” — अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन

मूल प्रतिपाद्य — अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन: अरविन्द ठाकुर (१९५४-) आ देवशंकर नवीन (१९६२-) दू टा एहन कथाकार छथि जे कनियाँ काकी आ बुच्ची दाइसँ हटि कऽ मैथिली कथा लिखै छथि, मुदा कम लिखै छथि, अरविन्द ठाकुर तँ बहुते कम, कारण एकहके टाक कथा संग्रह आइ-धरि आएल छन्हि, अन्हारक विरोधमे- अरविन्द ठाकुरक आ हाथी चलए बजार - देवशंकर नवीनक।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए।

९२. मैथिलक वर्तमान समस्या

मूल प्रतिपाद्य — सर्वहारा मैथिल संस्कृति एकटा विप्लवक दौरसँ चलि रहल अछि। माइग्रेशन एकटा नीक गप होइत अछि मुदा जाहि संस्कृतिमे एक पीढ़ीमे गामक गाम सुन्न भऽ गेल ओहिमे माइग्रेशन एकटा अभिशाप बनि आएल अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। दलित-

अनुभवकेँ केवल करुणाक विषय नहि, बल्कि प्रतिरोध, आत्म-सम्मान, भाषिक अधिकार आ पृथक सौन्दर्यबोधक स्रोत रूपेँ पढ़बाक आग्रह महत्त्वपूर्ण अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। एहि क्षेत्रमे लेखकक सामाजिक अवस्थिति, आत्मकथात्मक साक्ष्य, समुदाय-आधारित पाठकीय प्रतिक्रिया आ दलित आलोचकक स्वकीय सिद्धान्तकेँ बराबर स्थान देब आवश्यक अछि।

९३. विदेह सम्पादकीयसँ

मूल प्रतिपाद्य — मोबाइल पर जखन हम मैथिली में गप करै छी तँ हमर सहकर्मी गौरी भोला कहै छथि – “बड़ मीठ भाषा अछि।” गायत्री श्यंकट कहै छथि – “अहाँक भाषा मैथिली अछि आ हम सभ अपन बेटीक नाम मैथिली राखै छी।” ऐ मिठासक भितुरका खटास हम हुनका बुझा नै पबै छियैह।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

९४. गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका http://www.videha.co.in/ ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।

मूल प्रतिपाद्य — मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठक्कुर विद्यापति कृता लिखल अछि/आ ओ विद्यापति ब्राह्मण छथि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कैननक स्थापित कालक्रमपर पुनर्विचार करबाक साहस साहित्येतिहासक जीवित प्रकृतिक संकेत अछि। विशेषांक, ई-पत्रिका आ समानान्तर प्रकाशनकेँ प्रतिकैनन, अभिलेख आ नव लेखकक सार्वजनिक मंच रूपेँ चिन्हित करब ग्रन्थक विशिष्ट योगदान अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। दू विद्यापति वा कालक्रम-पुनर्निर्धारण सन परिणामकारी प्रस्ताव लेल हस्तलिपि-वंश, कोलोफोन, लिपिविज्ञान, अभिलेख, उद्धरण-परम्परा आ स्वतंत्र विशेषज्ञ-सहमति अत्यन्त आवश्यक अछि; समीक्षा एहि दावाकेँ अभी शोध-प्रस्तावक रूपमे देखैत अछि। स्वकीय आन्दोलनक इतिहास लिखैत काल बाह्य स्रोत, विरोधी मत, सम्पादकीय चयन-नीति आ असफलता/सीमाक दस्तावेज सेहो समान रूपेँ जोड़ल जाए तँ आत्म-इतिहास अधिक विश्वसनीय बनत।

९५. “प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!”: स्त्री-कर्तृत्व आ आत्मबल

मूल प्रतिपाद्य — प्रेम-चतुष्टयक प्रथम नाटिका ‘प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!’ कुणालक नाट्य-लेखनमे एक नवीन मोड़ थिक। लोकनाट्य-त्रयीक बहु-पात्रीय, गीत-नृत्य-बहुल विस्तारसँ एकदम भिन्न—ई नाटिका मितव्ययी, तीक्ष्ण आ विचार-केन्द्रित अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

९६. केदारनाथ चौधरीक समीक्षा

मूल प्रतिपाद्य — नाइट ड्यूटीमे छलौं, दू बजे राति मे हमर फोन टनटना उठल। हमर गप हमर कलीग, जे तमिल भाषी रहथि, सुनि रहल छली। "कोन भाषामे अहाँ एक घण्टा गप कऽ रहल छलौं, बड्ड मीठ भाषा अछि"।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। केदारनाथ चौधरी सम्बन्धी सामग्रीमे जीवनी, कथा/उपन्यास, भाषिक स्मृति आ निजी पाठकीय अनुभव एक संग अबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। किछु अंश नोट/संकलन रूपमे रहि गेल बुझाइत अछि; कृति-दर-कृति शीर्षक, प्रकाशन-विवरण, कथासार, पाठ-साक्ष्य आ निष्कर्षक एकरूप ढाँचा आवश्यक अछि।

९७. “विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह”: विश्वास, पहचान आ रूपान्तरण

मूल प्रतिपाद्य — सुकन्या-च्यवन आख्यानक ई समीक्षा विश्वास, दृष्टि, पहचान, रूप-आत्मा, दाम्पत्य निष्ठा आ नैतिक कर्तृत्वक प्रश्नकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। भारतीय दर्शन, अभिज्ञान, मनोवैज्ञानिक पहचान, हृदय-दृष्टि, रूपान्तरण आ यहूदी-इजरायली आत्मीयताक तुलनात्मक सूत्र नाटकक अर्थ-संरचनाकेँ विस्तारित करैत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। स्त्री-कर्तृत्व, देह-स्वायत्तता, इच्छाक अधिकार आ पितृसत्तात्मक पाठक पुनर्व्याख्या एहि अध्यायक केन्द्रीय आलोचनात्मक उपलब्धि अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। क्वीर/नारीवादी अध्ययनमे जाति, वर्ग, भाषा, ग्रामीणता आ पीढ़ीक अन्तर्सम्बन्ध जोड़ि intersectional पद्धति अपनाएब उपयोगी होयत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए।

९८. केदार नाथ चौधरीक- अबारा नहितन

मूल प्रतिपाद्य — केदार नाथ चौधरी-हुनकर आ हुनकर उपन्यासक पुनर्पाठ मैट्रिकक परीक्षामे फेल भेलाक बाद सुगम स्थल एकमी पुलसँ बागमतीक प्रचण्ड वेगमे कूदि प्राणत्याग करबाक निर्णयमे शुद्ध देसी घीमे छानल जिलेबी-कचौड़ीक सुगन्धो व्यवधान नै दऽ सकल हँ मुदा ई निर्णय भेल जे आत्महत्यासँ पहिने एक तोड़ जिलेबी-कचौड़ी खा लेल जाय।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। केदारनाथ चौधरी सम्बन्धी सामग्रीमे जीवनी, कथा/उपन्यास, भाषिक स्मृति आ निजी पाठकीय अनुभव एक संग अबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित

बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। किछु अंश नोट/संकलन रूपमे रहि गेल बुझाइत अछि; कृति-दर-कृति शीर्षक, प्रकाशन-विवरण, कथासार, पाठ-साक्ष्य आ निष्कर्षक एकरूप ढाँचा आवश्यक अछि।

९९. “प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार”: कला, स्वाधीनता आ प्रेम

मूल प्रतिपाद्य — श्वेता आ अतिरथक द्वन्द्वकेँ केन्द्रमे रखैत ई अध्याय कला, प्रेम, स्वाधीनता, विरक्ति, प्रकृति, परिवर्तन आ कलाकार-दर्शक सम्बन्धक विश्लेषण करैत अछि। भारतीय रस-ध्वनि, इब्सेन-सार्त्र-कामू-फ्रॉमक आधुनिक विचार, दाओवादी प्रकृति-दृष्टि आ इजरायली रंग-विमर्शक माध्यमसँ नाटकक मौलिक कल्पना आ संरचनात्मक तनाव दुनू पर विचार कएल गेल अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। स्त्री-कर्तृत्व, देह-स्वायत्तता, इच्छाक अधिकार आ पितृसत्तात्मक पाठक पुनर्व्याख्या एहि अध्यायक केन्द्रीय आलोचनात्मक उपलब्धि अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। क्वीर/नारीवादी अध्ययनमे जाति, वर्ग, भाषा, ग्रामीणता आ पीढ़ीक अन्तर्सम्बन्ध जोड़ि intersectional पद्धति अपनाएब उपयोगी होयत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए।

१००. “प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र”: ज्ञान, परीक्षा आ प्रेम

मूल प्रतिपाद्य — सुप्रभा-अष्टावक्रक नाट्यक ई समीक्षा शारीरिकता आ ज्ञान, प्रेमक परीक्षा, पितृ-श्राप, शास्त्रार्थ, रूपान्तरण, निष्ठा आ उर्वशी-

अस्वीकारक अर्थकेँ बहु-दृष्टि पद्धतिसँ पढ़ैत अछि। भारतीय पौराणिक पुनर्पाठ, अर्थ-खोज, प्रश्नोत्तर-दर्शन, प्रदर्शन-प्रतिमा आ आशा-संवेदनाक माध्यमसँ अंतिम नाटककेँ समग्र संग्रहक वैचारिक परिणति रूपमे देखल गेल अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। स्त्री-कर्तृत्व, देह-स्वायत्तता, इच्छाक अधिकार आ पितृसत्तात्मक पाठक पुनर्व्याख्या एहि अध्यायक केन्द्रीय आलोचनात्मक उपलब्धि अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। क्वीर/नारीवादी अध्ययनमे जाति, वर्ग, भाषा, ग्रामीणता आ पीढ़ीक अन्तर्सम्बन्ध जोड़ि intersectional पद्धति अपनाएब उपयोगी होयत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए।

१०१. प्रेमलता मिश्र ‘प्रेम’ क बहन्ने

मूल प्रतिपाद्य — पटनामे स्कूलक संगी सभ मैथिली भाषीकेँ सांस्कृतिक रूपमे श्रेष्ठ हएब मानि गेल छल। मिथिला चित्रकला वा सिक्की-मौनीक कारण नै। हम पुछने रहियै- "से की भेलौ अनचोक्के?" ओ मगही भाषी छल, उत्तर देलक- "पटनामे तोरा सभक कार्यक्रम गेल रही, कुमारि, बियाहल महिला सभ मंचपर सांस्कृतिक कार्यक्रम आ नाटकमे भाग लऽ रहल छली।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए।

१०२. शेखर प्रसंग, ओ दिन ओ पल आ एहो छली सिनेह

मूल प्रतिपाद्य — शेखर-प्रसंग 'सुधांशु शेखर चौधरी' पर हुनकर शोधक आधारपर रचित पोथी अछि। 'ओ दिन ओ पल' आत्मकथा होइत-होइत बचि गेल अछि आ ई अछि संस्मरण संग्रह। 'एगो छली सिनेह' अछि कथा-संग्रह जकर किछु कथा हमरा आश्चर्यचकित...

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। कथात्मक साहित्यक मूल्यांकनमे कथानकक संग सामाजिक परिवेश, पात्रक एजेंसी, भाषिक स्तर आ विधागत आकारक प्रश्न उठाओल गेल अछि। व्यक्तिगत स्मृतिमे वर्ग, परिवार, भाषा आ सामाजिक समयक छाप खोजबाक पद्धति संस्मरणकेँ निजी गपसँ सार्वजनिक इतिहासक स्तर पर लैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फोकलाइजेशन, कथावाचक, समय-विन्यास, अविश्वसनीय कथन, संवाद-संरचना, पाठकीय प्रतिक्रिया आ अन्तर्पाठीयताक उपकरण व्यवस्थित रूपेँ लागू कएल जाए। स्मृति आ तथ्यक अन्तर, आत्मकथात्मक संधि, समय-दूरी, अभिलेखीय प्रमाण आ कथात्मक चयनक प्रभाव स्पष्ट कएल जाए।

१०३. शरदिन्दु चौधरीक समीक्षा

मूल प्रतिपाद्य — शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य [बात-बातपर बात (I-IV)] "बात-बातपर बात खण्ड-१"; "मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२)"; "हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३)" आ "साक्षात् (बात-बातपर बात-४) ई चारिटा पुस्तिका शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक

निबन्धक संग्रह छन्हि, पहिल २०१९मे दोसर २०२०मे आ तेसर आ चारिम २०२१मे प्रकाशित भेल।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि। व्यक्तिगत स्मृतिमे वर्ग, परिवार, भाषा आ सामाजिक समयक छाप खोजबाक पद्धति संस्मरणकेँ निजी गपसँ सार्वजनिक इतिहासक स्तर पर लैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए। स्मृति आ तथ्यक अन्तर, आत्मकथात्मक संधि, समय-दूरी, अभिलेखीय प्रमाण आ कथात्मक चयनक प्रभाव स्पष्ट कएल जाए।

१०४. नचिकेताक समीक्षा

मूल प्रतिपाद्य — गद्यसँ पद्य एहि अर्थे फराक होइत अछि जे एहिमे बिम्बक माध्यमसँ कम शब्दमे बेशी गप कहल जएबाक गुंजाएश रहैत अछि। तेँ पद्यकेँ समयाभावमे शुरू कएल गद्यक विकल्पक रूपमे देखब सम्भव नहि, ओना तेहनो उदाहरण भेटत।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित

बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

१०५. शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य

मूल प्रतिपाद्य — शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य [बात-बातपर बात (I-IV)] "बात-बातपर बात खण्ड-१"; "मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२)"; "हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३)" आ "साक्षात् (बात-बातपर बात-४) ई चारिटा पुस्तिका शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक निबन्धक संग्रह छन्हि, पहिल २०१९मे दोसर २०२०मे आ तेसर आ चारिम २०२१मे प्रकाशित भेल।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि। व्यक्तिगत स्मृतिमे वर्ग, परिवार, भाषा आ सामाजिक समयक छाप खोजबाक पद्धति संस्मरणकेँ निजी गपसँ सार्वजनिक इतिहासक स्तर पर लैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए। स्मृति आ तथ्यक अन्तर, आत्मकथात्मक संधि, समय-दूरी, अभिलेखीय प्रमाण आ कथात्मक चयनक प्रभाव स्पष्ट कएल जाए।

१०६. राम भरोस कापड़ि ‘भ्रमर’ पर एकटा समग्र दृष्टि

मूल प्रतिपाद्य — राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' सर्वहारा वर्गकेँ गरिमा देलन्हि, जखन महेन्द्र मलंगिया आ जातिवादी रंगमंच शोलकन आ राड़ युक्त शब्दावली अपन स्लैपस्टिक ह्यूमर बला नाटक मे दऽ रहल छल, तखन भ्रमर जी ई केलन्हि, से आर महत्वपूर्ण छल।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। नाटककेँ लिखित पाठसँ आगाँ मंच, अभिनेता, दर्शक, दृश्य-संरचना, लोक-प्रदर्शन आ ध्वनि-देहक समेकित कला मानल गेल अछि—ई ग्रन्थक सबलतम पद्धतिगत रेखामे एक अछि। भाषा-विज्ञान, शब्द-संग्रह आ साहित्यकेँ एकहि सांस्कृतिक पारिस्थितिकीमे देखबाक दृष्टि ग्रन्थकेँ बहुविषयी बनबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। मंचन-इतिहास, निर्देशकक नोट, दर्शक-प्रतिक्रिया, प्रदर्शनक वीडियो/फोटो आ विभिन्न प्रस्तुति-वाचनक तुलनात्मक अभिलेख जोड़ल जाए। कॉर्पस, ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, रूप-विश्लेषण, नमूना-आकार, भौगोलिक वितरण आ पुनरुत्पाद्य डेटा-पद्धति जोड़ल जाए तँ भाषावैज्ञानिक दावाक वैज्ञानिकता बढ़त।

१०७. नरेन्द्र झा: काव्य आ साहित्यिक मूल्यांकन

मूल प्रतिपाद्य — दुनूक दल-बलमे द्वन्द्व बजरि गेल॥ कखनो ओ अपन कच (केश) बान्है छथि, कखनो फलका (बिथार) दइ छथि। कखनो अपन अंगकेँ झाँपै छथि, कखनो उघारि दइ छथि॥ थीर नयन आब अथिर भऽ गेलन्हि। उरोजक उदय-स्थल ललौन भऽ गेल छन्हि॥ चरण चपल छन्हि; आ चित्त चंचल सन भान भऽ रहल अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित

बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

१०८. रमानन्द झा ‘रमण’: कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा

मूल प्रतिपाद्य — रमानन्द झा 'रमण': कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा — एक संपादकीय पुनरवलोकन जे व्यक्ति एहि ग्रन्थक गुण बुझबाक योग्य नहि, ओकर प्रशंसासँ हम प्रसन्न नहि होयब। अन्हरा सभक झुंड जँ कोनो चित्रक प्रशंसा करए, तँ चित्रकारक गौरव कोना बढ़त?

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए।

१०९. स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८)

मूल प्रतिपाद्य — जन्म १८ सितम्बर १९०८ ई. ग्राम+पो.- कुमर बाजितपुर, जिला- वैशाली, बिहार, भारत। पिता- स्वर्गीय पं. जनार्दन झा “जनसीदन” मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दीक लब्धप्रतिष्ठ द्विवेदीयुगीन कवि-साहित्यकार।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत।

११०. सुभाष चन्द्र यादवक समस्त साहित्यक समीक्षा आ मैथिली समीक्षाक कमलानन्द झा प्रसंग

मूल प्रतिपाद्य — एहि विस्तृत अध्यायमे सुभाष चन्द्र यादवक समस्त मैथिली साहित्यक क्रमिक समीक्षा कएल गेल अछि। ‘घरदेखिया’ सँ ‘गुलो’ धरि कथा, उपन्यास, भाषा, लोकजीवन, सामाजिक संरचना आ लेखकक रचनात्मक विकासक परीक्षणक संग मैथिली समीक्षाक प्रवृत्ति आ कमलानन्द झा सम्बन्धी आलोचनात्मक प्रसंग जोड़ल गेल अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। लोक-स्मृति आ क्षेत्रीय अनुभवकेँ साहित्यिक इतिहासक वैध स्रोत मानबाक आग्रह मुख्यधाराक मुद्रित-कैननक सीमा तोड़ैत अछि। साहित्यिक संस्था, पुरस्कार, प्रतिष्ठा आ समीक्षकीय सत्ता पर प्रश्न उठाएब मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक लोकतान्त्रिक आलोचना लेल उपयोगी अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। फील्डवर्कमे कथनकर्ता, स्थान, तिथि, आयु, जातीय/व्यावसायिक पृष्ठभूमि, रिकॉर्डिङ पद्धति, सहमति आ संस्करण-अन्तरक मेटाडाटा अनिवार्य कएल जाए। मुदा व्यक्तिविशेष सम्बन्धी आरोप वा विवादकेँ तथ्य मानबाक बदला दस्तावेज, तिथि, मूल प्रकाशन, प्रत्युत्तर आ स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापित करब आवश्यक अछि; भाषा सेहो व्यक्तिकेन्द्रित आक्षेपसँ बचि मुद्दा-केंद्रित रहए।

१११. गोपाल झा ‘अभिषेक’ क ‘आउ स्वप्न साझी करी’: साहित्यिक अनुशीलन

मूल प्रतिपाद्य — मैथिली साहित्यक समकालीन परिदृश्यमे गोपाल झा 'अभिषेक' एकटा एहन सशक्त आ प्रखर हस्ताक्षरक रूपमे उभरल छथि,

जिनका रचनामे गामक माटिक सोंधगर गंधक संग-संग वैश्विक चेतनाक प्रखर स्वर सुनाइत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन — अनुप्रयुक्त खण्डमे लेखक सिद्धान्तकेँ वास्तविक कृति, लेखक, लोक-स्मृति वा सांस्कृतिक प्रसंगपर आजमबैत छथि; एहि कारण ई अध्याय मैथिली आलोचनाक प्रयोगशाला जकाँ काज करैत अछि। छन्द, बिम्ब, लय, ध्वनि, रूपक आ भाषिक संक्षेपक प्रति सजगता अध्यायकेँ केवल विषयगत टिप्पणीसँ ऊपर उठबैत अछि।

शोध-संकेत — आगू पाठालोचनमे समान कसौटी, स्पष्ट पाठ-साक्ष्य, संस्करण-विवरण आ वैकल्पिक व्याख्याक समावेशसँ निष्कर्ष आर संतुलित बनत। प्रतिनिधि कविताक पंक्ति-दर-पंक्ति पाठ, मात्रिक/वर्णिक छन्द-तालिका, बिम्ब-संजाल आ ध्वनि-पुनरावृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण आर चाही।

६.१ अध्याय-क्रमिक समग्र पुनर्पाठ

गजेन्द्र ठाकुर समग्र: प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना — एकटा विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

भूमिका: समीक्षाक उद्देश्य, पद्धति आ परिधि

गजेन्द्र ठाकुरक “प्रबन्ध ·निबन्ध ·समालोचना — सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन” शीर्षक ई समग्र-ग्रन्थ मैथिली साहित्यिक समालोचनाक इतिहासमे अपन ढंगक एकटा अद्वितीय उपक्रम अछि। लगभग सोलह सय पृष्ठक ई विशाल कृति दुइ खण्डमे विभाजित अछि — प्रथम खण्ड (सिद्धान्त, भाग क आ भाग ख अन्तर्गत ५६ अध्याय) आ द्वितीय खण्ड (अनुप्रयुक्त अध्ययन, भाग ग अन्तर्गत १११ अध्याय)। एहि तरहेँ कुल १६७ अध्यायमे विभक्त ई ग्रन्थ मैथिली साहित्यक सैद्धान्तिक समीक्षाशास्त्रसँ लऽ कऽ व्यक्तिगत कृति आ लेखकक अनुप्रयुक्त समालोचना धरि पसरल अछि।

एहि समीक्षामे प्रत्येक अध्यायकेँ क्रमश: देखल गेल अछि, किएक तँ लेखकक स्वयंक “शून्य-भ्रम” (zero-hallucination) नीतिक अनुरूप समीक्षकक कर्तव्य होइत छैक जे कोनो कृतिक मूल्यांकन ओकर वास्तविक विषय-वस्तुक आधारपर हो, न कि अनुमान वा सामान्यीकरणपर। समीक्षाक चारि आयामी पद्धति — भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-

सिद्धान्त, नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा, आ विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि — जे स्वयं लेखक अपन कृतिमे प्रयोग करैत छथि, तकरे एहि समीक्षामे सेहो यथासम्भव अपनाओल गेल अछि, जाहिसँ समीक्षा मूल कृतिक अन्तर्निहित मानदण्डसँ संगति राखय।

निम्नलिखित पृष्ठ सभमे ग्रन्थक मूल क्रमानुसार दुनू खण्डक सभटा अध्यायपर विचार कएल गेल अछि, कोनो अध्याय नै छोड़ल गेल अछि।

प्रथम खण्ड — सिद्धान्त

भाग क — सैद्धान्तिक प्रबन्ध

समीक्षा-पद्धति आ सैद्धान्तिक आधार

१. प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना। ई प्रारम्भिक अध्याय ग्रन्थक सम्पूर्ण उपक्रमक भूमिका थिक। लेखक प्रश्न उठबैत छथि जे साहित्यक विभिन्न गद्य-विधा (प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा, उपन्यास, यात्रा-वृत्तान्त, रिपोर्ताज, नाटक) लेल कोनो साझा सैद्धान्तिक आधार आवश्यक अछि वा नहि, आ स्मृति-आधारित प्राचीन पाठ-परम्परा (पदपाठ, क्रमपाठ, घनपाठ) सँ लऽ कऽ आधुनिक समालोचना-सिद्धान्त धरिक यात्रा देखबैत छथि। ई अध्याय एकटा “मेटा-समालोचना” थिक, अर्थात् समालोचनाक स्वयंक समालोचना - जे सम्पूर्ण ग्रन्थक वैचारिक आधारशिला बनैत अछि। शैली दार्शनिक-ऐतिहासिक अछि, उदाहरण वैदिकसँ आधुनिक धरि पसरल अछि, जे लेखकक अन्तर्विषयी (interdisciplinary) दृष्टिक परिचायक अछि।

२. मैथिलीमे पैटर्न कविता आ आकार-कविता। ई अध्याय मैथिली कविताक क्षेत्रमे एकटा प्रयोगधर्मी हस्तक्षेप थिक। लेखक दाबी करैत छथि जे “पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता” आ “शेप वा कंक्रीट (आकार) कविता” मैथिलीमे पहिल बेर एहि संग्रहद्वारे आनल गेल। पैटर्न कविताक परिभाषा (पाँतिक लम्बाइक पुनरावृत्ति, ध्वनिक पुनरावृत्ति आवश्यक नहि) आ आकार-कविताक दृश्यात्मक रूप-रचना (चित्रक जकाँ शब्द-विन्यास) दुनूक उदाहरणसहित प्रस्तुति भेल अछि। ई अध्याय पाश्चात्य “कंक्रीट पोएट्री” आन्दोलनसँ तुलनीय एकटा नव

प्रयोगक मैथिली संस्करण थिक, जे भाषाक दृश्यात्मक सम्भावनाकेँ अन्वेषण करैत अछि।

३. नव्य-न्यायक दृष्टि: प्रमा, अभाव आ प्रामाण्य। ई अध्याय लेखकक अपन विशेषज्ञताक क्षेत्र - नव्य-न्याय दर्शन - केँ नाट्य-आलोचनासँ जोड़बाक एकटा साहसिक प्रयोग थिक। "चालिस चोर" नाटकमे गोनूक विजयकेँ 'प्रमा' (सम्यक् ज्ञान) क विजयक रूपमे, आ "सुकन्या" क संवाद ("आँखि मुनला पर वृक्ष नहि देखायत, मुदा सभ किछु उपस्थित अछि") केँ अनुपलब्धि आ अभावक भेदक नाट्य-रूपान्तरणक रूपमे पढ़ल गेल अछि। ई नव्य-न्यायक ज्ञानमीमांसीय उपकरण (प्रमा, अनुमान, अभाव, अनुपलब्धि) केँ साहित्यिक पाठमे प्रयोग करबाक एकटा मौलिक पद्धतिगत योगदान थिक, जे लेखकक "नव्य-न्याय समीक्षाशास्त्र" क आधारशिला बनैत अछि।

विधागत समीक्षाशास्त्र

४. गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र। विहनि कथा (अत्यन्त लघु कथा-रूप) क विधागत स्थिति निर्धारण एहि अध्यायक केन्द्रीय विषय अछि। लेखक विहनि कथाकेँ "पहिने कथा फेर विहनि कथा" कहि एकर मूल कथा-तत्त्वसँ सम्बद्धताकेँ रेखांकित करैत छथि, आ गद्य-विधाक व्यापक वर्गीकरण (प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प, उपन्यास आदि) क सन्दर्भमे एकर स्थान निर्धारित करैत छथि। समीक्षाशास्त्रीय दृष्टिसँ ई अध्याय एकटा नव आ उदीयमान विधाक लेल आलोचनात्मक मानदण्ड गढ़बाक प्रयास थिक, जे मैथिली साहित्यमे विहनि कथाक अपेक्षाकृत नव प्रचलनकेँ देखैत महत्त्वपूर्ण अछि।

५. गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र। दीर्घकथा (उपन्यास), लघुकथा आ विहनि कथाक बीचक विधागत सीमांकन एतय स्पष्ट कएल गेल अछि - लघुकथाकेँ लेखक "विहनि कथासँ बेशी पलखति" वला रूपमे चिन्हित करैत छथि। मिथिलाक पारम्परिक ग्रामीण परिवेशसँ आगू बढ़ि प्रवासी मैथिलक संघर्ष धरि विस्तृत विषय-वस्तुक विविधता एहिठाम रेखांकित भेल अछि, जे समकालीन मैथिली लघुकथाक भौगोलिक आ सामाजिक विस्तारकेँ प्रमाणित करैत अछि। "बुच्ची दाइ आ

कनियाँ काकी” सन पुरान बिम्बसँ आगू बढ़ि नव समस्याक चित्रणपर बल देल गेल अछि।

६. गद्य साहित्य मध्य उपन्यासक स्थान आ उपन्यासक समीक्षाशास्त्र। उपन्यास-विधाक ऐतिहासिक उत्पत्ति (वाणभट्टक “कादम्बरी”, राजा शूद्रकक विदिशानगरी-वर्णन) सँ प्रारम्भ कऽ लेखक एकर “बुर्जुआ” उत्पत्तिक पाश्चात्य समालोचनात्मक अवधारणाकेँ सेहो स्वीकार करैत छथि, अछैत विधाक जटिलता आ ओहिमे प्रतिभाक परीक्षणपर बल दैत छथि। संस्कृत “कादम्बरी” सँ मराठीमे उपन्यासक नामकरण धरिक भाषिक-सांस्कृतिक कड़ी देखाओल गेल अछि, जे तुलनात्मक भारतीय साहित्य-इतिहासक प्रति लेखकक सजगताकेँ प्रमाणित करैत अछि।

७. शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र। ई अध्याय बाल-साहित्यक उमेर-आधारित वर्गीकरण (एक बर्खसँ अठारह बर्ख धरि) प्रस्तुत करैत, एकर जड़िकेँ अत्यन्त प्राचीन - सरस्वती नदी, जल-प्रलय, मनु-महामत्स्यक कथा, आ मध्य-पूर्वी गिल्गमेश-महाकाव्य - धरि लऽ जाइत अछि। तुलनात्मक पुराणकथाक ई विस्तार (ऋग्वेद, अवेस्ता आ गिल्गमेशक सन्दर्भ) देखबैत अछि जे लेखक बाल-साहित्यकेँ मात्र मनोरंजन नहि, अपितु मानवताक सामूहिक स्मृतिक आदिम रूपमे देखैत छथि - जे एकटा गहन आ महत्त्वाकांक्षी सैद्धान्तिक ढाँचा थिक।

८. मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त आ अनूदित साहित्यक समीक्षाशास्त्र। अनुवाद-सिद्धान्तक ऐतिहासिक अन्वेषण गुणाढ्यक पैशाची “वृहत्कथा” सँ लऽ कऽ अशोकक बहुभाषिक शिलालेख धरि पसरल अछि। लेखक भाष्य-परम्परा (मूल भाषामे टीका) सँ अनुवाद-परम्परा (अन्य भाषामे रूपान्तरण) क संक्रमणकेँ ऐतिहासिक दृष्टिसँ अन्वेषित करैत छथि। ई अध्याय आगाँ चलि कऽ (अध्याय ७८-८१ मे) लेखकक स्वयंक संस्कृत नव्य-न्याय ग्रन्थक मैथिली अनुवाद-कार्यक सैद्धान्तिक भूमिका बनि जाइत अछि, जे ग्रन्थक आन्तरिक संगतिक एकटा उदाहरण थिक।

काव्य, छन्द, नाटक आ रंगमंच

९. पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र। ग्रन्थक सभसँ विस्तृत अध्याय (लगभग ३००० शब्द) मे गद्य-पद्यक मौलिक भेद, छन्दक परिभाषा ("आनन्द प्रदान करएवला रचना"), आ आधुनिक कविता तथा वैदिक छन्द (गायत्री) क बीचक निरन्तरताकेँ स्थापित कएल गेल अछि। हरिमोहन झाक "अकविताक प्रति: कविताक उक्ति" आ गोपाल जी झा "गोपेश" क उद्धरणसँ समकालीन कविता-विमर्शमे लेखककेँ जोड़ल गेल अछि। ई अध्याय मैथिली पद्य-समीक्षाशास्त्रक एकटा व्यापक आधार-ग्रन्थ जकाँ काज करैत अछि, जतय छन्द-शास्त्रीय सूक्ष्मता (यय-वक संयुक्ताक्षरक विभाजन) आ आधुनिक कविताक वाद-विवाद एकठाम गुँथल अछि।

१०. नाटच साहित्य, समानान्तर मैथिली नाटक आ रंगमंच; आ नाटच साहित्यक समीक्षाशास्त्र। ई विशालतम अध्याय (लगभग ८० पृष्ठ) मिथिलाक ग्रामीण नाटच-मण्डलीक विस्तृत मौखिक-इतिहास प्रस्तुत करैत अछि - रामखेलावन मण्डल, बिन्देश्वर मण्डल सन लोक-कलाकार, रेशमा-चूहड़, शीत-वसन्त, अल्हाऊदल सन पद्य-नाटिका, आ "पिआ देसाँतर" (मैथिली बिदेसिया) क क्षेत्रीय प्रसारकेँ ग्राम आ प्रखण्डक नामसहित दस्तावेजीकृत कएल गेल अछि। ई अध्याय शुद्ध सिद्धान्त नहि, अपितु फील्ड-आधारित मौखिक इतिहास-लेखनक एकटा दुर्लभ उदाहरण थिक, जे लुप्तप्राय लोक-नाटच-परम्पराकेँ अभिलेखबद्ध करबाक समानान्तर साहित्य आन्दोलनक प्रतिबद्धताकेँ प्रमाणित करैत अछि।

११. मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका। जापानी हाइकू-परम्पराक मूल स्रोत (मात्सुओ बाशो, १६४४-१६९४) सँ प्रारम्भ कऽ मैथिलीमे एकर अनुकूलनक समीक्षा भेल अछि। बाशोक प्रसिद्ध कथन (जे जीवनमे दस हाइकू रचनेवला महाकवि थिक) उद्धृत कऽ लेखक हाइकूक तीव्र सान्द्रताक माँगकेँ रेखांकित करैत छथि। ई लघु किन्तु महत्त्वपूर्ण अध्याय मैथिली क्षणिका-विधाकेँ विश्व-काव्य-परम्पराक सन्दर्भमे राखबाक प्रयास थिक।

१२. दोहा/रोला/कुण्डलिया। छन्दशास्त्रीय दृष्टिसँ अत्यन्त सूक्ष्म अध्याय, जतय दोहाक मात्रा-विधान (१३-११-१३-११) आ कुण्डलियाक जटिल संरचना (दोहा+रोलाक संयोजन) क तकनीकी विवेचन स्वरचित उदाहरण ("कुण्डली

छत्ता घुरछा पल्लौसँ...") सहित देल गेल अछि। लेखक कुण्डलियाक तुलना ओमर खय्यामक रुबाइसँ करैत छथि, जे सांस्कृतिक-सीमा-पार तुलनात्मक छन्दशास्त्रक एकटा रोचक उदाहरण थिक।

१३. मैथिली गद्य आ पद्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र। डिजिटल क्रान्तिक सन्दर्भमे मैथिली साहित्यक भविष्यपर केन्द्रित ई अध्याय प्रेस आगमनकालीन उपन्यासक "बुर्जुआ साहित्य" कहबएबला ऐतिहासिक पूर्वाग्रहसँ अन्तर्जाल-साहित्यक समकालीन स्थितिक तुलना करैत अछि। अन्तर्जालकेँ मैथिली लेल "वरदान" कहल गेल अछि, किएक तँ ई प्रकाशनक नियमितता, वितरण-समस्याक समाप्ति आ भौगोलिक दूरीक अन्तकेँ सम्भव बनबैत अछि - जे विदेह ई-पत्रिकाक स्वयंक अस्तित्व-तर्क सेहो थिक।

१४. मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच। भरतक नाट्यशास्त्रमे वर्णित नाटकक दैवी उत्पत्ति (इन्द्रध्वजा उत्सव) सँ ज्योतिरीश्वरक "धूर्त समागम" आ अंकिया नाट धरि, आ फेर १८५० ई.क आसपास कोलकाताक औपनिवेशिक रंगमंच (ब्रिटिश क्लब, जतय स्थानीय लोकक प्रवेश वर्जित छल) धरिक ऐतिहासिक यात्रा एतय प्रस्तुत भेल अछि। ई अध्याय मैथिली नाट्य-परम्पराक शास्त्रीय, लोक आ औपनिवेशिक स्रोतक त्रिवेणीकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१५. मैथिली नाट्य-समीक्षाक आधार: पाठ, मंचनीयता आ तुलनात्मक पद्धति। ई सैद्धान्तिक अध्याय नाटककेँ "मात्र लिखित पाठ नहि, अपितु अभिनय, दर्शक, मंच-संरचना, लोक-स्मृति आ प्रस्तुति-व्यवहारक संयुक्त कला" क रूपमे परिभाषित करैत, भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य रंगचिन्तन, चीनी सौन्दर्यदृष्टि आ इजरायली प्रदर्शन-अध्ययनक तुलनात्मक प्रयोगक एकटा कार्यकारी ढाँचा प्रस्तुत करैत अछि। "कुसमा-सलहेस" नाटक-संग्रहक समीक्षाक भूमिकाक रूपमे ई अध्याय आगामी अध्याय (१६-१९) क पद्धतिगत आधार बनैत अछि - एकटा उदाहरण जे कोना लेखक बाहरी सिद्धान्त थोपब नहि, अपितु पाठमे अन्तर्निहित अर्थ-स्तर खोलबाक प्रयास करैत छथि।

१६. कुणालक नाट्य-शिल्प: लोकनाट्य, शास्त्र आ आधुनिकता। कुणालक नाट्य-संग्रहक विस्तृत समीक्षाक ई प्रथम खण्ड तीन परम्पराक "सायास

संश्लेषण” कैं चिन्हित करैत अछि - शास्त्रीय संस्कृत-नाट्यक उपकरण (पूर्वरंग, सूत्रधार-नटी, नान्दी), मिथिलाक लोक-रंगमंच (‘नाच’) क तत्त्व (समाजी/कोरस, विदूषक ‘विपटा’, सूग्गा-कथावाचक), आ आधुनिक रंगमंचक आत्म-सन्दर्भिता (ब्रेख्तक अलगाव-सिद्धान्तक इशारासहित)। ई विश्लेषण नाट्य-समीक्षाक बहु-स्तरीय पद्धतिक व्यावहारिक प्रयोग थिक।

१७. लालदासक मिथिला रामायणमे कुण्डलिया आ छन्द-विवेचन। प्राचीन मैथिली रामायणकार लालदासक कृतिक छन्द-विश्लेषण, जतय ९५ प्रतिशत चौपाइक बीच बिखरल कुण्डलियाक अंशकैं विशेष रुचिसँ देखल गेल अछि। लेखक एतय एकटा महत्त्वपूर्ण टेक्स्ट-क्रिटिकल दाबी करैत छथि - जे सम्पादक वा प्रूफरीडरक अज्ञानताक कारण मूल छन्द-विधानमे “छन्दोभंग” भऽ गेल अछि, जे पाठ-सम्पादनक सतर्कताक आवश्यकतापर बल दैत अछि।

१८. भाषा, छन्द आ काव्य-सौन्दर्य: रस, ध्वनि आ वक्रोक्ति। भारतीय काव्यशास्त्रक तीन प्रमुख सिद्धान्त (रस, ध्वनि, वक्रोक्ति) क कुणालक नाटकपर व्यावहारिक प्रयोग एहि अध्यायक विशेषता अछि। भाषाक बहुस्तरीयता उल्लेखनीय अछि - लोकनाट्य-त्रयीमे ठेठ ग्रामीण मुहावरा आ गीत-शैली, प्रेम-चतुष्टयमे तत्सम-प्रधान परिनिष्ठित मैथिली। कुन्तकक वक्रोक्ति-सिद्धान्तक प्रयोगसँ शब्द-वक्रताक उदाहरण (“सरदारीक मुरेठा”) देखाओल गेल अछि, जे भाषाकैं “सजावट नहि, सक्रिय रंगमंचीय साधन” सिद्ध करबाक प्रयास थिक।

१९. वैचारिक धरातल: समानांतर साहित्य-दृष्टि आ रंगमंच। कुणालक नाट्य-कर्मकैं विदेह समानान्तर साहित्य-आन्दोलनक दृष्टिकोणसँ पढ़ल गेल अछि - लोक-कलाकार, वंचित समुदाय, स्त्री-कर्तृत्व आ सांस्कृतिक समन्वयक उपस्थितिकैं केन्द्रमे राखि। “कुसमा-सलहेस” क दुसाध (दलित) लोक-देवता-नायककैं साहित्येतिहासक केन्द्रमे आनब एकटा वैचारिक हस्तक्षेप कहल गेल अछि, जे अभिजन-केन्द्रित संस्थागत साहित्येतिहासक विपरीत सबाल्टर्न स्वरकैं प्राथमिकता दैत अछि।

समाज, अस्मिता आ सांस्कृतिक समीक्षा

२०. मैथिली लेल एकटा नारी केन्द्रित समीक्षाशास्त्र [क्वीर-फेमिनिज्म सहित]। ग्रन्थक सभसँ विस्तृत अध्यायमध्ये एक (लगभग ५० पृष्ठ), जे दू

भागमे विभक्त अछि - कामिनीक काव्य-संग्रह “खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री” (२०१७) क समीक्षा, आ शान्ति लक्ष्मी चौधरीक “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम” क तुलनात्मक विश्लेषण। कामिनीक शीर्षक-कविताक उद्धृत पाँतिमे स्त्री-देह, कोखि आ ममताक व्यापारीकरणक करुण चित्रण देखल गेल अछि, जकर विखंडन (fragmentation) कैँ लेखक सामाजिक आ मनोवैज्ञानिक दुनू स्तरपर पढ़ैत छथि। “नोर” कवितामे आँसूकैँ विद्रोहक प्रतीकक रूपमे व्याख्यायित कएल गेल अछि। एहि अध्यायक महत्त्व ई अछि जे लेखक मैथिली समीक्षाशास्त्रमे क्वीर-फेमिनिस्ट दृष्टिकोणकैँ - जे एहि भाषामे बहुत कम प्रयुक्त भेल अछि - सैद्धान्तिक वैधता प्रदान करैत छथि, आ एड्रिएन रिचक “लेस्बियन कॉन्टिन्युअम” सन पाश्चात्य सैद्धान्तिक अवधारणाकैँ मैथिली कविताक पाठसँ जोड़बाक साहस देखबैत छथि।

२१. मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र-२। गुजराती, ओड़िया आ तेलुगु दलित साहित्यक मैथिली अनुवादक परिप्रेक्ष्यमे ई अध्याय मैथिली साहित्यक “समानान्तर धारा” क सैद्धान्तिक आधार प्रस्तुत करैत अछि। लेखक स्पष्ट रूपसँ चिन्हित करैत छथि जे मुख्यधारा मैथिली साहित्य भक्ति, दरबारी विलासिता आ अलंकृत अभिव्यक्तिसँ परिभाषित रहल, जाहिमे उपेक्षित वर्गक यथार्थ कात राखल गेल; आ राजा सलहेस, दीना-भदरी सन दलित लोकनायकक गाथा मौखिक परम्परामे रहितहुँ लिखित साहित्यमे ब्राह्मणवादी वर्चस्वक कारण स्थान नहि पाबि सकल। ई एकटा तीक्ष्ण सामाजिक-साहित्यिक आलोचना थिक, जे अनुवाद-कर्मकैँ सामाजिक न्यायक उपकरणक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

२२. मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र। पूर्ववर्ती अध्यायक विस्तार आ पूरक स्वरूपमे ई अध्याय ओहि सैद्धान्तिक ढाँचाकैँ आर स्पष्ट करैत अछि, जे मैथिली भाषाक साहित्यमे समानान्तर धाराक अनुवाद-कर्मद्वारा भेल संरचनात्मक परिवर्तनकैँ केन्द्रमे राखैत अछि। दुनू अध्याय संगहि पढ़लासँ लेखकक दलित-साहित्य-विमर्शक सम्पूर्ण सैद्धान्तिक ढाँचा स्पष्ट होइत अछि, जे आगाँ चलि कऽ अध्याय ७५ मे भारतीय दलित साहित्यक विस्तृत अनुप्रयुक्त अध्ययनक रूपमे विस्तार पबैत अछि।

भाषा-विज्ञान, व्याकरण, लिपि आ शब्दावली

२३. मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान। ई अध्याय एकटा अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी सन्दर्भ-ग्रन्थक (ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाकेँ संगे लऽ कऽ, अध्याय १-९२६ तक विस्तृत) समेकित समीक्षा थिक, जकरा लेखक भारतीय, पाश्चात्य, इस्रायली, चीनी, तिब्बती आ जापानी - छहो परम्पराक तुलनात्मक भाषा-सिद्धान्तक आलोकमे जाँचि अपन "विदेह समानान्तर दृष्टि" प्रस्तुत करैत छथि। चारि खण्डमे विभक्त (ठेठी-अंगिका, बज्जिका, मैथिली व्याकरण, आ भाषा-विज्ञान) ई कृति मैथिली आ ओकर सहवर्ती बोलीक व्याकरणिक अध्ययनक एकटा विश्वजनीन तुलनात्मक ढाँचा प्रस्तुत करबाक प्रयास थिक, जे परम्परागत भारतीय व्याकरण-अध्ययनसँ आगू बढ़ि टाइपोलॉजिकल भाषाविज्ञान धरि पसरल अछि।

२४. तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास। साढ़े आठ हजार शब्दक ई विस्तृत आलेख ब्राह्मीसँ तिरहुता लिपि धरिक ऐतिहासिक विकासकेँ शिलालेखीय प्रमाणसहित अभिलेखित करैत अछि। लेखक स्वयं छात्र-शिक्षणक दृष्टिकोणसँ पाठकक लेल मार्गदर्शन दैत छथि (अनुलग्नक-५ केँ प्राथमिकता देब), जे एकर शैक्षणिक उपयोगिताकेँ प्रमाणित करैत अछि। ब्यूलर, कनिंघम सन पाश्चात्य पुरालिपिशास्त्रीक सन्दर्भसहित ई अध्याय मिथिलाक्षरक (तिरहुता) उत्पत्तिक विषयमे एकटा प्रामाणिक शैक्षणिक स्रोत बनैत अछि।

२५. कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित)। मिथिलाक पारम्परिक मत्स्य-पालन तकनीक (भौरी जाल, भिरखा, लोहाक गोली, वंशी) क फील्ड-आधारित शब्दावली-संकलन थिक ई अध्याय। ई शुद्ध साहित्यिक समीक्षा नहि, अपितु भाषा-दस्तावेजीकरणक (linguistic documentation) एकटा नमूना थिक, जे लुप्तप्राय व्यावसायिक शब्दावलीकेँ संरक्षित करबाक भाषावैज्ञानिक महत्त्वकेँ प्रमाणित करैत अछि।

२६. शब्द-प्रमाण, ज्ञान-तत्त्वमीमांसा आ भाषा-विज्ञान। भाषाविद् रामावतार यादवक सन्दर्भसहित वैयाकरणाचार्य-परम्पराक शब्द-ब्रह्मन् (स्फोट) सिद्धान्तक दार्शनिक विवेचन एहि अध्यायक केन्द्रमे अछि - जे शब्दकेँ अनादि-अनन्त, सर्वव्यापी आ आत्म-मुक्तिक साधन मानैत अछि। ई अध्याय लेखकक नव्य-न्याय-आधारित ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोणकेँ भाषाविज्ञानसँ जोड़बाक एकटा आर

उदाहरण थिक, जे शब्द-प्रमाण (शाब्दिक ज्ञान) क सैद्धान्तिक महत्त्वकेँ रेखांकित करैत अछि।

२७. मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता-कैथी आ डिजिटल मैथिली। मैथिली भाषाक डिजिटल आधारभूत संरचना निर्माणक इतिहास - यूनीकोड फॉन्ट (अंशुमन पाण्डेय), मैथिली विकीपीडिया (राजेश रंजन), आ इस्रायली भाषाविद् आमिर अहारोनी धरिक अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगसहित - एतय दस्तावेजीकृत भेल अछि। गूगल ट्रांसलेट, ट्विटर आ अमेजन अलेक्सामे मैथिलीक समावेशनक उल्लेख भाषाक डिजिटल भविष्यक प्रति लेखकक ठोस प्रतिबद्धताकेँ देखबैत अछि, जे लेखकक स्वयंक “भाषा-निखार” आ “साइट-ऑडिटर” सन डिजिटल परियोजनासँ सेहो सङ्गति राखैत अछि।

भाग ख — निबन्ध

२८. रचना लिखबासँ पहिने... ई अध्याय गद्य-पद्यक मौलिक भेद (छन्दोबद्ध बनाम अछन्दोबद्ध) सँ प्रारम्भ भऽ वैदिक छन्द (सावित्री-गायत्री मंत्र) क शिथिल नियमकेँ उदाहृत करैत अछि, जे देखबैत अछि जे आधुनिक “गद्य-कविता” कोनो नव परिघटना नहि, अपितु वैदिक कालसँ चलल आबैत छन्द-शिथिलताक निरन्तरता थिक। ई एकटा उपयोगी परिचयात्मक निबन्ध थिक, जे नव लेखकक लेल छन्द-शास्त्रक बुनियादी समझ प्रदान करैत अछि।

२९. मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी। भाषिक-राजनीतिक सीमा-क्षेत्रक (किशनगंज आदि) भाषिक परिघटनाक विश्लेषण, जतय राजनैतिक जमीनक अनुभव आ सामाजिक पहचानक जटिलताकेँ सुरजापुरी बोलीक उदाहरणसहित देखाओल गेल अछि। ई अध्याय भाषिक सीमान्त-क्षेत्रमे राजनीति आ भाषाक अन्तर्संबंधकेँ उजागर करैत अछि, जे समाजभाषाविज्ञानक दृष्टिसँ रोचक अछि।

३०. साहित्यमे लोक-तत्व: गाथा/नृत्य/नाटक। मोहनजोदड़ोक कांस्य-नर्तकी-प्रतिमासँ लऽ कऽ ऋग्वेदक शांखायन ब्राह्मण धरिक विस्तृत ऐतिहासिक अन्वेषणसँ गीत-वाद्य-नृत्यक त्रयीक प्राचीनताकेँ स्थापित कएल गेल अछि। कथक नृत्यक ठाठ-मुद्रासँ सिन्धुघाटी सभ्यताक नृत्य-मुद्राक तुलना विशेष

रूपसँ उल्लेखनीय अछि, जे भारतीय नृत्य-परम्पराक चारि हजार बर्खसँ बेशीक निरन्तरताक दाबी करैत अछि।

३१. हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली। हिन्दी आ मैथिलीक साहित्यिक शब्दावलीक तुलनात्मक अध्ययन, जे दुनू भाषाक साझा संस्कृतमूलक शब्द-सम्पदा आ ओकर पृथक् विकास-पथकेँ रेखांकित करैत अछि -मैथिली भाषिक स्वायत्ततासँ जुड़ल एकटा सतत विमर्शक हिस्सा।

३२. भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान। मैथिलीक ऐतिहासिक-भाषावैज्ञानिक वर्गीकरण भारोपीय (इण्डो-यूरोपीय) भाषा-परिवारक अन्तर्गत, आगाँ अध्याय ३२ मे संस्कृत-प्राकृत-अवहट्ठ-मैथिलीक क्रमिक विकासक विस्तृत विवेचनक भूमिकाक रूपमे। ई अध्याय तुलनात्मक भाषाविज्ञानक दृष्टिसँ मैथिलीक ऐतिहासिक स्थिति स्थापित करैत अछि।

३३. अभिनय पाठशाला। अभिनय-शिक्षणक व्यावहारिक निर्देशिका, जे रंगमंच-प्रशिक्षणक आधारभूत सिद्धान्तकेँ मैथिली नाट्य-अभ्यासीक लेल प्रस्तुत करैत अछि - लेखकक सैद्धान्तिक नाट्य-समीक्षाकेँ व्यावहारिक शिक्षण-सामग्रीमे रूपान्तरित करबाक प्रयास।

३४. मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ। नाटक आ फिल्म-विधाक बीचक अन्तर्संबंध आ मैथिली सिनेमाक समानान्तर विकासक विवेचन, जे रंगमंच-समीक्षाकेँ दृश्य-माध्यमक व्यापक सन्दर्भमे राखैत अछि।

३५. विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव। भूमण्डलीकरण आ विदेशी पूँजी-निवेशक भाषिक परिणामक विश्लेषण, जे मैथिली सन क्षेत्रीय भाषापर आर्थिक वैश्वीकरणक प्रभावकेँ समालोचनात्मक दृष्टिसँ देखैत अछि।

३६. जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष। मैथिली कोशकार जयकान्त मिश्रक शब्दकोश-कार्यक फील्डवर्क-आधारित समीक्षा, जे आगाँ अध्याय ७६ मे विस्तृत रूपमे पुनः लेल गेल अछि - मैथिली कोशविज्ञानक इतिहासमे मिश्रक योगदानकेँ चिन्हित करैत।

३७. पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक शब्दावली। मिथिला पञ्जी (वंशावली-अभिलेख) क विशिष्ट शब्दावलीक संकलन, जे पञ्जी-अध्ययनक (आगाँ अध्याय ६४ मे विस्तृत) पूर्वाधार बनैत अछि।

३८. मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव। औपनिवेशिक आ उत्तर-औपनिवेशिक कालमे अंग्रेजी उपन्यास-परम्पराक मैथिली उपन्यासपर प्रभावक विवेचन, जे तुलनात्मक साहित्यक पद्धतिसँ मैथिली गद्य-विधाक विकासकेँ बुझबाक प्रयास थिक।

३९. शब्द-विचार: सिद्ध सरहपाद, तिब्बती लिपि, कम्प्यूटर आ मैथिली। एकटा असाधारण अन्तर्विषयी अध्याय, जे बौद्ध सिद्ध सरहपादसँ लऽ कऽ तिब्बती लिपि आ आधुनिक कम्प्यूटर-प्रौद्योगिकी धरि मैथिलीक शब्द-विचारकेँ जोड़ैत अछि - ऐतिहासिक भाषाविज्ञान आ डिजिटल भविष्यक बीचक अद्भुत सेतु।

४०. कथा वाचन-लेखन पाठशाला (बाल कथाक विशेष सन्दर्भमे)। बाल-कथा-लेखनक शिक्षण-पद्धति, जे अध्याय ७ (बाल साहित्य समीक्षाशास्त्र) क व्यावहारिक विस्तार थिक - सिद्धान्तसँ शिक्षण-अभ्यास धरिक सेतु।

४१. पाठक हमर पोथी किए पढ़थि। एकटा व्यक्तिगत-आत्मकथात्मक निबन्ध, जतय लेखक अन्तर्जालक माध्यमसँ भौगोलिक सीमाक समाप्तिकेँ अपन रचना-प्रसारक केन्द्रीय रणनीतिक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि - न्यू जर्सीसँ मधुबनी-दरभंगा धरि मैथिली पोथीक अनुपलब्धताक निजी अनुभवसँ। ई अध्याय लेखकक अपन समग्र रचना-सूची (मूल पद्य-गद्य, अनूदित कृति) क सूचीकरण सेहो प्रस्तुत करैत अछि, जे आत्म-दस्तावेजीकरणक एकटा उदाहरण थिक।

४२. वजन प्रबन्धन: एकटा व्यक्तिगत प्रयोग आ अनुभव। एकटा असाधारण रूपसँ व्यक्तिगत, आत्मकथात्मक अध्याय, जतय लेखक २००० ई.क सड़क-दुर्घटना (जाँघक हड्डी टूटब) आ ओकर बाद वजन-प्रबन्धनक निजी संघर्षकेँ वर्णन करैत छथि। साहित्यिक समालोचनाक बीच ई आत्मकथात्मक हस्तक्षेप ग्रन्थक शैलीगत विविधता आ लेखकक आत्म-प्रकटीकरणक साहसकेँ देखबैत अछि, यद्यपि ई विशुद्ध साहित्यिक समीक्षाशास्त्रसँ बाहर जाइत अछि।

४३. एनी एर्नौ आ कपिलेश्वर राउतक कथा-संसार। फ्रान्सिसी नोबेल-विजेता एनी एर्नौ (२०२२ साहित्य नोबेल) क आत्मकथात्मक-संस्मरणात्मक शैलीक संगे उड़िया कथाकार कपिलेश्वर राउतक तुलना, जे विश्व-साहित्य आ

मैथिली/भारतीय क्षेत्रीय साहित्यक बीच सेतु बनबैत अछि। ई अध्याय समकालीन वैश्विक साहित्यिक विमर्शमे लेखकक सक्रिय सहभागिताकेँ प्रमाणित करैत अछि।

४४. शरदिन्दु चौधरी विशेषांक आ समानान्तर साहित्य-विमर्श। विदेह पत्रिकाक शरदिन्दु चौधरी-विशेषांकक सम्पादकीय विवरण, जे संस्थागत पुरस्कार (साहित्य अकादेमी आदि) क तुलनामे “विदेह” द्वारा जीवित रचनाकारपर विशेषांक निकालबाक कार्यकेँ बेशी महत्त्वपूर्ण मानैत अछि - समानान्तर साहित्य आन्दोलनक संस्थागत आलोचनाक एकटा उदाहरण।

४५. प्रेमलता मिश्र ‘प्रेम’ विशेषांक आ समानान्तर साहित्य-विमर्श। पूर्ववत् शैलीमे मैथिली लेखिका प्रेमलता मिश्र ‘प्रेम’ पर केन्द्रित विशेषांकक सम्पादकीय दस्तावेजीकरण, जे विदेह पत्रिकाक सम्पादकीय नीतिक निरन्तरताकेँ देखबैत अछि।

४६. मैथिली साहित्यक अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्तुति आ समानान्तर साहित्य-विमर्श। दिल्लीक Diorama International Film Festival मे मैथिली कथाक अंग्रेजी अनुवाद (“The Science of Words”) क प्रस्तुतिक विवरण, जे मैथिली साहित्यक अन्तर्राष्ट्रीय मंचपर पहुँचबाक ठोस प्रयासकेँ दस्तावेजीकृत करैत अछि।

४७. लोक-संस्कृति, साहित्य, कृति-समीक्षा आ समानान्तर दृष्टि। वैदिक पुरोहित-वर्गीकरण (सत्रह प्रकारक पुरोहित) सँ लऽ कऽ आधुनिक एकल ब्राह्मण-पुरोहित-परम्परा धरिक ऐतिहासिक ह्रासकेँ देखबैत, ई सम्पादकीय-निबन्ध जातीय-सामाजिक संरचनाक ऐतिहासिक जटिलताकेँ उजागर करैत अछि - ओड़िसाक ‘होता’ उपाधि आ अन्तर्जातीय विवाह-वर्जनाक उदाहरणसहित।

४८-५३. साहित्यिक-संस्थागत विमर्शक शृंखला। ई छह अध्याय (साहित्य अकादेमी विमर्श, विदेह आन्दोलन, अनुवाद पुरस्कार २०२२, परामर्शदात्री समिति २०२३-२८, मिथिला स्टूडेण्ट यूनियन विशेषांक) एकटा सतत् तीक्ष्ण संस्थागत आलोचना बनबैत अछि, जतय लेखक साहित्य अकादेमीक मैथिली-सम्बन्धी निर्णयक (“गएर-लिटरेरी एसोसियेशनकेँ मान्यता”, “६ ब्राह्मण+१ नव-

ब्राह्मणवादी” परामर्शदात्री समिति) कटु समालोचना करैत छथि। ई अध्याय-शृंखला विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलनक मूल वैचारिक प्रेरणाकेँ - अर्थात् संस्थागत, जातिगत रूपसँ पूर्वाग्रहग्रस्त साहित्यिक सत्ता-संरचनाक विरुद्ध - स्पष्ट रूपसँ प्रकट करैत अछि। शैली पत्रकारीय-सम्पादकीय अछि, तथ्य आ नाम-सहित प्रत्यक्ष आरोप लगाओल गेल अछि, जे एकरा शुद्ध साहित्यिक समीक्षासँ आगू बढ़ि सामाजिक-राजनीतिक हस्तक्षेपक कोटिमे राखैत अछि। हरिमोहन झाक ‘कन्यादान’ क अंग्रेजी अनुवाद (“The Bride”, हार्पर कॉलिन्स) क उल्लेख (अध्याय ४९) मैथिली साहित्यक अनुवाद-कर्मक अन्तर्राष्ट्रीय सफलताक सकारात्मक उदाहरण थिक।

५४. भाषा आ प्रौद्योगिकी (संगणक, छायांकन, कुँजी पटल/टंकणक तकनीक), अन्तर्जालपर मैथिली आ विश्वव्यापी अन्तर्जालपर लेखन आ ई-प्रकाशन। मैथिली टंकण-तकनीक, यूनिकोड आ ई-प्रकाशन-अवसंरचनाक विस्तृत तकनीकी-भाषिक विवेचन, जे अध्याय २७ (डिजिटल मैथिली) सँ जुड़ल अछि आ लेखकक स्वयंक डिजिटल-अवसंरचना-निर्माणक कार्यक सैद्धान्तिक आधार प्रस्तुत करैत अछि।

५५. अन्तर्जाल आ मैथिली। अध्याय १३ आ ५४ क विषयक निरन्तरतामे अन्तर्जालक मैथिली भाषाक पुनरुज्जीवन आ प्रसारमे भूमिकाक पुनः विवेचन, जे लेखकक बारम्बार आवृत्त केन्द्रीय विषय - डिजिटल माध्यमद्वारा भाषिक अल्पसंख्यक-समस्याक समाधान - केँ पुनः बल दैत अछि।

५६. आत्म-छवि, भाषा-प्रौद्योगिकी आ समावेशी संचार। प्रथम खण्डक अन्तिम अध्याय एकटा चिन्तनशील सम्पादकीय-निबन्ध थिक, जे आत्म-छविक निर्माण आ दोसराक राय पर निर्भरताक बीचक द्वन्द्वपर केन्द्रित अछि। सुभाष चन्द्र यादव सन “जिनगी भरि अङनाइ” वला साहित्यकारक उदाहरणसँ लेखक पुरस्कार आ सफलताक परिभाषापर प्रश्न उठबैत छथि, जे प्रथम खण्डक सैद्धान्तिक-आत्मचिन्तनात्मक यात्राक एकटा उपयुक्त समापन-बिन्दु थिक।

द्वितीय खण्ड — अनुप्रयुक्त अध्ययन

भाग ग — अनुप्रयुक्त समालोचना

द्वितीय खण्डमे लेखक प्रथम खण्डक सैद्धान्तिक ढाँचाकेँ ठोस कृति, लेखक आ सांस्कृतिक विषयपर लागू करैत छथि। ई खण्ड १११ अध्यायमे विभक्त अछि (मूल ग्रन्थमे स्वतंत्र क्रमांकनसहित), जाहिमे व्यक्तिगत कृति-समीक्षा, लेखक-प्रोफाइल, नाटच-विश्लेषण, पञ्जी-अध्ययन, आ लेखकक अपन नव्य-न्याय-अनुवाद-कार्यक समालोचनात्मक मूल्यांकन सम्मिलित अछि।

१. मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध - प्रथमं शैलपुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन केर संदर्भमे। द्वितीय खण्डक प्रथम अध्याय मायानन्द मिश्रक ऐतिहासिक चेतनाक विश्लेषणसँ प्रारम्भ होइत अछि, जतय पुरोहित-परम्परा आ स्त्री-धनक कानूनी-सामाजिक प्रश्नकेँ साहित्यिक पाठमे खोजल गेल अछि। ई अध्याय अनुप्रयुक्त समालोचनाक शैलीक एकटा प्रतिनिधि उदाहरण थिक, जे ऐतिहासिक-कानूनी दृष्टिकोणसँ साहित्यक पाठ करैत अछि।

२. मिथिलाक बाढ़ि। कोसी नदीक बान्ह आ मिथिलाक बाढ़ि-आपदाक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विश्लेषण, जे मिथिलाक भौगोलिक यथार्थ (नदी-प्रबन्धन, बाढ़िक सामाजिक प्रभाव) केँ साहित्यिक-सांस्कृतिक अध्ययनमे समाहित करैत अछि।

३. लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति। मिथिला-अंचलक लोकमहागाथा "लोरिक" क फील्डवर्क-आधारित सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण, जे मौखिक परम्पराक साहित्यिक-मानवशास्त्रीय अध्ययनक एकटा उदाहरण थिक - अध्याय ६५ (कुसमा-सलहेस) क लोकगाथा-अध्ययन-पद्धतिसँ संगति राखैत।

४. मिथिलाक खोज। मिथिलाक भौगोलिक-ऐतिहासिक सीमांकन आ पहचानक खोजपर केन्द्रित अध्याय, जे मिथिला-क्षेत्रक स्थान-निर्धारणक ऐतिहासिक स्रोत-आधारित अन्वेषण प्रस्तुत करैत अछि।

५. दूषण पंजी। मिथिला पञ्जी-परम्पराक "दूषण" (सामाजिक कलंक/दोष-अभिलेख) पक्षक विशेष अध्ययन, जे आगाँ अध्याय ८ (मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्ध) क विस्तृत विवेचनक पूर्वाधार थिक।

६. मिथिला आ संस्कृत। मिथिलाक संस्कृत-विद्या-परम्परा (संस्कृत विश्वविद्यालयक सन्दर्भसहित) क ऐतिहासिक महत्त्वक विवेचन, जे मिथिलाकेँ

भारतीय संस्कृत-शिक्षाक एकटा प्राचीन केन्द्रक रूपमे स्थापित करैत अछि - लेखकक स्वयंक संस्कृत-नव्य-न्याय अनुवाद-कार्यक पृष्ठभूमिक रूपमे सेहो पठनीय।

७. मिथिलासँ पलायन। आर्थिक कारणसँ मैथिलक बृहत् प्रवासन-परिघटनाक विश्लेषण, जे अध्याय ३५ (विदेशी पूँजी निवेश) आ अध्याय ५ (लघुकथाक प्रवासी-विषय) सँ जुड़ल एकटा सतत सामाजिक-आर्थिक चिन्ताकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि।

८. मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्ध वंश, विवाह, दूषण, सामाजिक स्मृति आ आधुनिक पुनर्पाठ। ई अध्याय द्वितीय खण्डक सभसँ महत्त्वाकांक्षी शोध-कृतिमध्ये एक थिक (४५० ई.सँ २००९ ई. धरि विस्तृत)। लेखक मिथिला पञ्जी-प्रबन्धकेँ "मानव डेटाबेस", "सामाजिक तकनीक", "वंश-स्मृति", "विवाह-अधिकारक न्यायिक उपकरण", आ "जीनोम-मानचित्रण" - एहि पाँचो दृष्टिसँ एकसंग जाँचैत छथि, जे परम्परागत वंशावली-अध्ययनसँ आधुनिक जीनोमिक्स धरिक फलक जोड़बाक एकटा असाधारण अन्तर्विषयी उपक्रम थिक। "२०/२० स्रोत-कवरेज ऑडिट" सन पद्धतिगत कठोरताक दाबी लेखकक शून्य-भ्रम नीतिक ठोस प्रमाण थिक।

९. "कुसमा-सलहेस": लोकमहागाथा, प्रतिरोध आ प्रेमक रंगदृष्टि। द्वितीय खण्डक नाट्य-समालोचनाक धारा एतय स प्रारम्भ होइत अछि - कुणालक लगभग ७० पृष्ठक विशालतम नाटक "कुसमा-सलहेस" क विस्तृत समीक्षा, जे दुसाध समुदायक लोकदेवता राजा सलहेसक महागाथा आ "सलहेस नाच" रंगमंच-परम्परापर आधारित अछि। नायिका कुसमाक आत्मनिर्णय, राजनीतिक प्रतिरोध आ बहुरसात्मकताकेँ केन्द्रमे राखि लेखक एकरा सबाल्टर्न-चेतना आ महाकाव्यात्मक विस्तारक तुलनात्मक ढाँचामे पढ़ैत छथि - ई विश्लेषण अध्याय १५-१९ क सैद्धान्तिक ढाँचाक प्रत्यक्ष अनुप्रयोग थिक।

१०. 'अखियासल': भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ समान्तर इतिहास-दृष्टि। डा. रमानन्द झा 'रमण'क आलोचना-संग्रह "अखियासल" क विस्तृत समीक्षा, जे मैथिली साहित्यक इतिहास, कथा-विकास, आरम्भिक उपन्यास आ विस्मृत साहित्यसेवीक पुनर्मूल्यांकन करैत

अछि। ई समीक्षा-दर-समीक्षाक शैली - अर्थात् एकटा आलोचकक आलोचनाक समीक्षा - ग्रन्थक “समालोचनाक समालोचना” वाला प्रारम्भिक उद्देश्यक (अध्याय १) व्यावहारिक निर्वाहन थिक।

११. ‘हिआओल’: भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ समान्तर इतिहास-दृष्टि। रमानन्द झा ‘रमण’क चारिम आलोचना-संग्रह “हिआओल” (२०१२) क समीक्षा, जतय लेखक शीर्षकक अर्थ (“थाहल, अन्दाजल”) कें क्षेमेन्द्रक औचित्य-सिद्धान्तसँ जोड़ि, गुटबन्दी-मुक्त, पाठ-प्रमाण-आधारित आलोचना-परम्पराक प्रशंसा करैत छथि। ई अध्याय (अध्याय १० सहित) रमणक चारू आलोचना-ग्रन्थ (’अखियासल’, ‘बेसाहल’, ‘भजारल’, ‘हिआओल’) क सन्दर्भ-शृंखला प्रस्तुत करैत अछि।

१२. केदारनाथ चौधरीक उपन्यास “चमेली रानी” आ “माहुर”। केदारनाथ चौधरी - जे ग्रन्थमे बारम्बार लौटैत एकटा केन्द्रीय व्यक्तित्व छथि (अध्याय ३३, ३४, ९६, ९८ सेहो हुनकहि पर) - क दू उपन्यासक समीक्षा, जे हुनकर उपन्यास-कलाक प्रारम्भिक मूल्यांकन थिक।

१३. बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा। सुभाष चन्द्र यादव - जे अध्याय ५६ आ ११० मे सेहो केन्द्रीय विषय छथि - क कथा-संग्रहक समीक्षा, जे यादवक साहित्यिक संघर्ष आ योगदानक निरन्तर पुनरावलोकनक एकटा कड़ी थिक।

१४. राजदेव मण्डलक अम्बरा। राजदेव मण्डल (जे अध्याय ५२ मे “जूरी बाड़ने” प्रसंगमे सेहो उल्लिखित छथि) क काव्य-कृति “अम्बरा” क समीक्षा।

१५. मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह “प्रतीक”। मुन्नाजी (एकटा बहुधा उल्लिखित लेखक, अध्याय ५१, ८३ आदिमे सेहो) क विहनि कथा-संग्रहक समीक्षा, जे अध्याय ४ (विहनि कथा समीक्षाशास्त्र) क सैद्धान्तिक ढाँचाक व्यावहारिक अनुप्रयोग थिक।

१६. सुजीतक “जिद्दी”। सुजीतक कथाक समीक्षा, जतय महिला आ नृत्यक विषय-वस्तुक विशेष चर्चा भेल अछि।

१७. रमेश नारायणक "पाथरक नाव" आ विनोद बिहारी वर्माक "बलानक बोनिहार ओ पल्लवी"। दू लेखकक कथा-संग्रहक संयुक्त समीक्षा, जे मैथिली कथा-साहित्यक विविधताकेँ प्रदर्शित करैत अछि।

१८. मैथिलीक किछु नव पोथी। जगदीश प्रसाद मण्डल (जे अध्याय ८९, १०९ मे सेहो केन्द्रीय छथि) सहित समकालीन मैथिली पोथीक संक्षिप्त समीक्षा-संकलन।

१९. सगर राति दीप जरय कथाक कथा। प्रसिद्ध मैथिली उपन्यास "सगर राति दीप जरय" (ललित/भवानंदन झाक कृति मानल जाइत, यद्यपि एतय लेखक-नाम स्पष्ट नहि) क समीक्षात्मक विवेचन।

२०. डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य'। ई अध्याय एकटा "चतुर्आयामी समग्र समीक्षा" क दाबी करैत अछि, जे मैथिली-ठेठी-अंगिका समानान्तर अनुशीलनक रूपमे डॉ. अमरेन्द्रक "अंगिका बाल-साहित्य" (२०२२) क समीक्षा करैत अछि। लेखक एकरा मात्र सूची-संकलन नहि, अपितु अंगिका-भाषी समाजमे बालकक साहित्यसँ प्रथम परिचयक प्रक्रियाक अन्वेषण मानैत छथि - लोकस्मृतिसँ आधुनिक मुद्रित बाल-साहित्य धरिक निरन्तरताक खोज।

२१. मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र। एकटा उल्लेखनीय आत्म-समीक्षात्मक अध्याय, जतय लेखक अपने रचित सैंतीस टा मैथिली बाल-उपन्यासक विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत करैत छथि - वर्णमाला-शिक्षण, पशु-कथा, चातुर्य-कथा, परीकथा, मिथिलाक वीर-लोकगाथा, प्रेम-गाथा, भक्ति-गाथा आ लोकनाट्य धरि पसरल एकटा सुनियोजित बाल-वाङ्मय-स्थापत्य। लेखक स्वयं स्वीकार करैत छथि जे ई समीक्षा "फुटकर नहि" थिक, अपितु "एक्कहि पोखरिक घाट सभ" जकाँ अन्तर्सम्बद्ध अछि - जे आत्म-समालोचनाक एकटा दुर्लभ आ साहसिक उदाहरण थिक।

२२. तेरहटा अनूदित पोथीक तुलनात्मक अध्ययन [संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर]। लेखकक स्वयंक संस्कृत-मैथिली अनुवाद-कार्यक (चतुर्भाणी, दामक प्रहसनम्, हास्यार्णव, आगमडम्बरम्, कादम्बरी, भल्लट-क्षेमेन्द्र-नीलकण्ठ व्यंग्य-त्रयी, पलाण्डुमण्डन, उत्तररामचरितम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्,

मुद्राराक्षसम्, मृच्छकटिकम्, भगवदज्जुकम् आ मत्तविलास) तुलनात्मक समीक्षा, भारतीय आ पाश्चात्य सिद्धान्तक आलोकमे। ई अध्याय अध्याय ८ (अनुवाद सिद्धान्त) क व्यावहारिक निर्वाहन थिक, आ लेखकक संस्कृत-प्राकृत नाटच-प्रहसन-परम्पराक गहन ज्ञानकेँ प्रमाणित करैत अछि।

२३. जगदानन्द झा 'मनु'क बालकथा "माटिक बासन"। कुम्हार-परम्परा आ मूर्तिकलापर आधारित बालकथाक समीक्षा, जकरा लेखक "बाल मनोविज्ञानपर आधारित मैथिलीक पहिल रचना" कहि एकर ऐतिहासिक महत्त्व रेखांकित करैत छथि।

२४. पाठक हमर पोथी किए पढ़थि। अध्याय ४१ क पुनरावृत्ति/विस्तार, जतय लेखक अपन सम्पूर्ण कृतित्व (कविता, गजल, कथा, उपन्यास, नाटक) क पाठकीय ग्रहणक प्रश्नकेँ पुनः उठबैत छथि।

२५. सञ्जिया रोपनि (संपादक डा. प्रमोद कुमार) - ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सञ्जिया संग्रहक समीक्षा। ई अध्याय एकटा असाधारण सामूहिक साहित्यिक उपक्रमक (४३ लेखकक साझा विहनि-कथा-संग्रह) समीक्षा थिक, जे समकालीन मैथिली विहनि-कथा-लेखनक व्यापक परिदृश्यकेँ एकठाम प्रस्तुत करैत अछि - घनश्याम घनेरोसँ लऽ कऽ कल्पना कुमारी धरि दर्जनों नव आ स्थापित लेखकक नामसहित।

२६. जगदानन्द झा 'मनु' क 'माटिक बासन' आ आलोचनात्मक टिप्पणी। अध्याय २३ क पूरक, "आमंत्रित रचना आ आमंत्रित समीक्षक"क शृंखलाक अन्तर्गत - एकटा दिलचस्प सम्पादकीय प्रयोग जतय रचनाकार आ समीक्षक दुनूकेँ मंच देल गेल अछि।

२७. कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला: कृतित्वक परिचय। कृष्ण कुमार कश्यप (१९४९-२०२०) आ शशिबालाक "भारती विकास संस्था" (कला-आधारित जीवन आ शिक्षण पद्धति) क संस्थापक-कार्यक जीवनी-परक परिचय, जे साहित्येतर सामाजिक-शैक्षणिक योगदानकेँ सेहो समग्र-कृतित्वक हिस्सा मानबाक लेखकीय दृष्टिकोणकेँ देखबैत अछि।

२८. पं. बाल गोविन्द 'आर्य'। मैथिली व्याकरणक स्वतंत्र अस्तित्वक प्रश्नपर आधारित - "मैथिलीमे एकटा व्याकरण किए नहि अछि?" वला मार्मिक प्रश्नसँ

प्रारम्भ भऽ बाल गोविन्द आर्यक “वर्ण प्रकरण” क समीक्षा, जे हिन्दी-संस्कृत व्याकरणपर निर्भरताक विरुद्ध देशज मैथिली व्याकरणक आवश्यकतापर बल दैत अछि।

२९. संरचनात्मक अस्थिरता आ अर्थक लीला: रमेशक ‘कथा-समय’ क आलोचना। रमेशक “कथा-समय” (समानान्तर १९९७ आ समाङ १९९१ क समेकित संस्करण) क उत्तर-आधुनिक भाषिक-वैचारिक विश्लेषण, जे परंपरागत भावुक आंचलिकता आ यथार्थवादसँ आगू बढ़ि पाठकेँ “भाषाई आ वैचारिक द्वंद्व” क रूपमे पढ़बाक समकालीन आलोचनात्मक पद्धति अपनबैत अछि - ई अध्याय ग्रन्थक सैद्धान्तिक परिष्कारक एकटा उत्कृष्ट उदाहरण थिक।

३०. उमेश पासवानक ‘मुजरिम’: कथा-संग्रहक आलोचनात्मक पाठ। “सुनन्दा” कथाक विस्तृत विश्लेषण (परित्यक्त शिशुकेँ अपनेबाक कारण चरित्रहीन ठहरायल जाइत युवती, आ अन्ततः प्रतिष्ठित घरक बेटीक रहस्योद्घाटन) सामाजिक पाखण्डक तीक्ष्ण आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। ई कथाक चयन आ विश्लेषण दलित-लेखक उमेश पासवानक (अध्याय ४२ मे सेहो उल्लिखित) सामाजिक-आलोचनात्मक दृष्टिकोणकेँ प्रमाणित करैत अछि।

३१. ‘दीयरि’: रा. ना. सुधाकरक कथा-संग्रहक समग्र साहित्यिक मूल्यांकन। नेपालक विराटनगर-केन्द्रित मैथिली साहित्यक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज “दीयरि” (नेपाल विद्यापीठ मैथिली पाण्डुलिपि पुरस्कार-२०६५ सँ सम्मानित) क बहुआयामी समीक्षा। लगभग साठि बर्खसँ लिखैत रहितहुँ प्रचार-प्रसारक अभावमे उपेक्षित रहल एहि नेपाली-मैथिली लेखकक कृतिकेँ पहिचान देब लेखकक भौगोलिक रूपसँ व्यापक (भारत-नेपाल सीमा-पार) मैथिली साहित्य-दृष्टिक प्रमाण थिक।

३२. परमेश्वर कापड़िक कथा-खिस्साक आलोचनात्मक समीक्षा। जनकपुरधाम (नेपाल) निवासी, मुख्यतः नाटककारक रूपमे प्रसिद्ध परमेश्वर कापड़िक अल्पचर्चित कथा-संसारक समीक्षा, जकरा लेखक भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र, नव्य-न्याय (गंगेश उपाध्याय) आ विदेह समानान्तर इतिहास - तीनू पद्धतिसँ जाँचैत छथि। कापड़िक कथा-संसारकेँ चारि धारामे

(शुद्ध लोककथा सहित) वर्गीकृत कएल गेल अछि, जे लेखकक व्यवस्थित वर्गीकरण-पद्धतिक एकटा आर उदाहरण थिक।

३३. केदारनाथ चौधरी विशेषांक: कथा, व्यक्तित्व आ कृतित्व। एकटा व्यक्तिगत आ भावप्रवण सम्पादकीय-संस्मरणसँ प्रारम्भ (रातिक डचूटीमे तमिल-भाषी सहकर्मीक मैथिलीक मिठासपर टिप्पणी) होइत, ई विशेषांक केदारनाथ चौधरीक कथा-साहित्यक व्यापक संकलन प्रस्तुत करैत अछि - ग्रन्थमे बारम्बार लौटैत एहि केन्द्रीय व्यक्तित्वक सभसँ विस्तृत उपचार।

३४. केदारनाथ चौधरी: हुनकर आ हुनकर उपन्यासक पुनर्पाठ। एकटा जीवन्त, विनोदपूर्ण शैलीमे (मैट्रिक फेल भेलाक बाद आत्महत्याक निर्णय, मुदा जिलेबी-कचौड़ीक सुगन्धक बाधा) आरम्भ होइत ई अध्याय चौधरीक उपन्यासक पुनर्पाठ प्रस्तुत करैत अछि, जे लेखकक कथा-कहबाक क्षमता आ आलोचनात्मक गम्भीरताक दुर्लभ संयोजन देखबैत अछि।

३५. साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रसंग: युवा आ बाल पुरस्कार २०२२। मुन्नी कामतक कविता-संग्रह “अंततः” क पुरस्कार-रेसमे हारबाक प्रसंगसँ प्रारम्भ, ई अध्याय पुनः साहित्य अकादेमीक पुरस्कार-प्रक्रियाक आलोचना करैत अछि - लेखकक स्त्री-लेखनक (“असली नारी-”) पक्षधरताक संकेतसहित।

३६. विस्मृत कवि - पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)। एकटा “विस्मृत” (उपेक्षित) कविक पुनर्आविष्कार, जे लेखकक साहित्येतिहासक हाशियापर पड़ल आवाजकेँ केन्द्रमे आनबाक निरन्तर उपक्रमक (जेना अध्याय १०८ मे रमानन्द झा 'रमण'क “सीमा-रेखा” क चर्चा) एकटा आर उदाहरण थिक।

३७. विद्यापतिक बिदेसिया - पिआ देसाँतर। मैथिलीक आदिकवि विद्यापतिक कृतिक “बिदेसिया” शैलीसँ सम्बद्धताक विवेचन, जे अध्याय १० मे उल्लिखित “पिआ देसाँतर” (मैथिली बिदेसिया) नाट्य-परम्पराक ऐतिहासिक स्रोत-अन्वेषण थिक।

३८. विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण। विद्यापतिक जीवन-कृतित्वक विषयमे प्रचलित भ्रान्ति आ कुप्रचारक खण्डन, जे मैथिली अध्येताक लेल एकटा सुधारात्मक (revisionist) शैक्षणिक हस्तक्षेप थिक।

३९. मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' क गीत आ झारू। भोजपुरीक भिखारी ठाकुरसँ तुलनीय एकटा उपेक्षित मैथिली जनकविक पुनर्आविष्कार, जिनकर "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै" गीत-परम्पराक विवेचन कएल गेल अछि - अध्याय २१ (दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र) क सैद्धान्तिक प्रतिबद्धताक व्यावहारिक निर्वाहन।

४०. रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"। बहु-विध पद्य-रूप (कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू, टनका) क एकटा संग्रहक समीक्षा, जे अध्याय ११ (हाइकू) आ अध्याय २ (पैटर्न कविता) क विधागत रुचिसँ सङ्गति राखैत अछि।

४१. उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/टनका आ गजलक संग्रह। एकटा आर बहु-विध पद्य-संग्रहक समीक्षा, जे मैथिली कविताक समकालीन प्रयोगधर्मिताकेँ प्रदर्शित करैत अछि।

४२. उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"। अध्याय ३० मे पासवानक कथाक समीक्षाक बाद, एतय हुनकर काव्य-कृतिक समीक्षा - एकटा लेखकक बहु-विधागत रचनाशीलताक समग्र मूल्यांकनक दृष्टान्त।

४३. रामलोचन शरणक मैथिली रामचरितमानस। तुलसीदासक रामचरितमानसक मैथिली रूपान्तरणक समीक्षा, जे भक्ति-काव्य परम्पराक मैथिली अनुकूलनकेँ जाँचैत अछि।

४४. बूच जीक कविताक बहुविध आलोचनात्मक अध्ययन। "बूच जी" क कविताक एकटा प्रारम्भिक बहुविध समीक्षा, जकर विस्तृत रूप आगाँ अध्याय ५३ मे (मार्क्सवाद, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिकतावाद, नारीवाद आ विखण्डनवाद - छहो पाश्चात्य पद्धतिक संगे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रसँ) विस्तार पबैत अछि।

४५. विदेह: लोगो:: विद्यापति: उगना: मिथिला: मैथिली। एकटा प्रतीकात्मक-संरचनावादी शीर्षकसहित (गणितीय अनुपातक शैलीमे) विदेह

पत्रिकाक लोगो आ विद्यापति-उगना-मिथिला-मैथिलीक सांकेतिक सम्बन्धक विवेचन, जे पत्रिकाक स्वयंक प्रतीक-व्यवस्थाक सैद्धान्तिक व्याख्या थिक।

४६. 'बज्जिका गीत-संगीत': समेकित द्विभाषिक बहुआयामी साहित्यिक समीक्षा। डॉ. रामेश्वर प्रसादक कृति "बज्जिका गीत-संगीत" (किशोर प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, २०००) क समीक्षा, जतय लेखक एकटा हार्दिक स्वीकृति दैत छथि - मैथिली पत्रिकामे बज्जिका गीत-संग्रहक समीक्षा "कोनो विजातीय काज नहि, अपितु सहोदर लोक-वाणी-प्रति स्वाभाविक सौहार्द" थिक, किएक तँ मैथिली स्वयं हिन्दी-पट्टीक भीतर अपन स्वतंत्र अस्मिताक लेल संघर्ष कएने अछि। ई कथन भाषिक-सहानुभूतिक एकजुटताक (linguistic solidarity) एकटा मार्मिक उदाहरण थिक, जे अध्याय २३ (ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाकेँ मैथिली-व्याकरण-अध्ययनमे सम्मिलित करब) सँ सैद्धान्तिक रूपसँ जुड़ल अछि।

४७. लालदासक मिथिला रामायण मे कुण्डलिया आ सम्पादक बा प्रूफरीडरक अज्ञानतावश ओइमे छन्दोभङ्ग। अध्याय १७ क विस्तृत आ पाठालोचनात्मक (textual-critical) संस्करण, जतय दोहा-रोला-कुण्डलियाक विस्तृत उदाहरण (मैथिली अकादेमी संस्करणसहित) संगे रामायणक छन्द-पाठमे भेल त्रुटिक विशिष्ट पहिचान कएल गेल अछि। ई अध्याय लेखकक "शून्य-भ्रम" पाठालोचनात्मक पद्धतिक (textual criticism) सभसँ प्रत्यक्ष प्रदर्शन थिक।

४८. मैथिली मे पहिल बेर १. पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता आ २. शेप बा कंक्रीट (आकार) कविता। अध्याय २ क विस्तृत संस्करण, संगहि "जाइत जाइत" शीर्षक उदाहरण-कविता पूर्ण रूपसँ उद्धृत, जे पैटर्न-कविताक संरचनागत सिद्धान्तकेँ व्यावहारिक रूपसँ प्रदर्शित करैत अछि।

४९. समानान्तर परम्पराक गोलगला बला ज्योतिरीश्वर पूर्व पदावलीबला महाकवि विद्यापति आ ज्योतिरीश्वरक बादबला पागबला संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुर:। एकटा तीक्ष्ण साहित्येतिहासिक हस्तक्षेप, जतय लेखक दावी करैत छथि जे बंगालक विद्वान (राजकृष्ण मुखोपाध्याय, नगेन्द्रनाथ गुप्त) द्वारा विद्यापति आ गोविन्ददासकेँ "मिथिलाक भाषाक कवि" घोषित करबापर बंगालमे विरोध भेल छल, बादमे स्वीकृति भेटल। लेखक

“बिदापत नाच” क माध्यमसँ आठ सए बर्खसँ गएर-ब्राह्मण समुदाय द्वारा विद्यापतिकेँ जीवित राखबाक तथ्यकेँ रेखांकित करैत, विद्यापतिक “ब्राह्मणीकरण”क सामाजिक-राजनीतिक प्रक्रियापर प्रश्न उठबैत छथि - ई अध्याय समानान्तर साहित्य-दृष्टिक एकटा सभसँ साहसिक साहित्येतिहासिक पुनर्पाठ थिक।

५०. कियो बूझि नै सकल हमरा - (गजलकार ओम प्रकाश झा)। मैथिली गजलकार ओम प्रकाश झाक कृतित्वक समीक्षा, जिनका लेखक “बहरमे कहल गजल सभक संकलन” मे सर्वश्रेष्ठ घोषित करैत छथि। उद्धृत शेर (“करेजासँ शोणित बहाबैत रहलौं...”) क माध्यमसँ विरह आ प्रेमक गजल-परम्पराक मैथिली अनुकूलनकेँ प्रशंसित कएल गेल अछि।

५१. गजलकार मुन्ना जी बीहनि कथाकार मुन्नाजी। मुन्नाजीक रुबाइ-गजल संग्रह “माँझ आंगनमे कतिआएल छी” क समीक्षा, जतय लेखक शीर्षकक व्याख्या करैत कबीरक उलटबासी-परम्परासँ भेद स्पष्ट करैत छथि, आ मुन्नाजीक बहुविधागत प्रतिभा (गजलकार आ विहनि-कथाकार दुनू रूपमे) केँ रेखांकित करैत छथि।

५२. कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक। अशोकक बहुविधागत रचनात्मक यात्रा - १९८६ क कविता-संग्रह “चक्रव्यूह” सँ लऽ कऽ सम्मिलित कथा-संग्रह “त्रिकोण” (शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक संग) धरि - क कालानुक्रमिक दस्तावेजीकरण, जे मैथिली साहित्यक १९८० दशकीय सामूहिक रचनात्मक वातावरणकेँ देखबैत अछि।

५३. बूच जीक कविताक - मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन। ग्रन्थक सैद्धान्तिक बहुलताक सभसँ उत्कृष्ट प्रदर्शन। “जेठी करेह” कविताक एकल पाठकेँ लेखक क्रमशः छह पाश्चात्य समालोचना-पद्धति (मार्क्सवाद, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिकतावाद, नारीवाद, विखण्डनवाद) आ भारतीय सौन्दर्यशास्त्र (स्फोट-सिद्धान्तसहित) सँ क्रमिक रूपसँ पढ़ैत छथि - करेहक “उधिआयब” आ “बान्ह तोड़ब” क बिम्बकेँ प्रत्येक

पद्धतिमे भिन्न-भिन्न अर्थ भेटैत अछि। ई अध्याय समग्र ग्रन्थक बहु-पद्धतिगत समालोचना-दर्शनक सभसँ स्पष्ट पद्धतिगत घोषणा-पत्र (manifesto) थिक।

५४. नचिकेताक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश। उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क नाटकक समीक्षा, जे आगाँ अध्याय ५५ मे उत्तर-आधुनिक विश्व-नाट्यक संगे तुलनात्मक अध्ययनक भूमिका बनैत अछि।

५५. चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: बैकेट, पिंटर, बादल सरकार आ नचिकेता। एकटा असाधारण तुलनात्मक विश्व-रंगमंच अध्याय, जतय सैमुअल बैकेटक "वेटिंग फॉर गोडो" (फ्रेंच), हैरोल्ड पिंटरक "द बर्थडे पार्टी" (अंग्रेजी), बादल सरकारक "एवम् इन्द्रजीत" (बांग्ला), आ नचिकेताक "नो एण्ट्री: मा प्रविश" (मैथिली) - चारि भाषाक उत्तर-आधुनिक नाटककेँ एकसंग तुलनात्मक ढाँचामे राखल गेल अछि। ई अध्याय मैथिली नाट्य-समीक्षाकेँ विश्व-रंगमंचक बराबरीक मंचपर राखबाक लेखकक महत्त्वाकांक्षाक सभसँ स्पष्ट उदाहरण थिक।

५६. छुतहर/छुतहर घैल/छुतहा घैल। महेन्द्र मलंगियाजीक कृतिक (आगाँ अध्याय ६६ मे पुन: विस्तृत) फील्डवर्क-आधारित लोकसांस्कृतिक विवेचन।

५७. चारिटा अंग्रेजी नाटक - डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ। मार्लो, मिल्टन, टी.एस. एलियट आ गॉल्सवर्दीक चारि अंग्रेजी नाटकक तुलनात्मक अध्ययन, जे लेखकक पाश्चात्य नाट्य-परम्पराक गहन ज्ञान आ मैथिली नाट्य-समीक्षामे एकर तुलनात्मक प्रयोगकेँ प्रमाणित करैत अछि।

५८. नचिकेताक "मध्यमपुरुष एकवचन"। नचिकेताक एकटा आर नाटकक समीक्षा, जे लेखकक नचिकेताक सम्पूर्ण नाट्य-कृतित्व (अध्याय ५४, ५५ सेहो) क क्रमबद्ध अध्ययनक हिस्सा थिक।

५९. नाट्य-नवग्रह। लेखकक स्वयंक नअ मैथिली नाटक (कमलाक भगता, दानवीर दधीची, अपाला आत्रेयी, भऽ जाएब छू, जलोदीप, संकर्षण, गंगा ब्रिज, मचण्ड, उल्कामुख) क आत्म-समीक्षा। लेखक स्पष्ट करैत छथि जे पहिल पाँच बाल-नाटक आ शेष चारि प्रौढ़-दर्शकक लेल छथि, मुदा "ई विभाजन प्रशासनिक मात्र" थिक - सभटा मिलि कऽ एकटा अखण्ड रंग-चिन्तन बनबैत

अछि, जकर एक छोरपर कमलाक भगताक सरल सूत्र (“पूछू, बुझू, फेर करू”) आ दोसर छोरपर उल्कामुखक गूढ़ दार्शनिक सूत्र (“अपूर्ण पाठक विस्मरण नहि भऽ सकैए, विस्मरण होइए मात्र पूर्ण पाठ”) अछि। ई आत्म-समीक्षा अध्याय २१ (बाल-उपन्यास समीक्षाशास्त्र) क शैलीगत जोड़ीदार थिक।

६०. मुन्नी कामतक ‘जिन्दगीक मोल’ आ ‘चुक्का’। “आमंत्रित रचना आ आमंत्रित समीक्षक” शृंखलाक अन्तर्गत मुन्नी कामतक एकांकी “जिन्दगीक मोल” क पूर्ण पुनर्पाठसहित समीक्षा, जे प्रवासी मजदूरीक सामाजिक यथार्थकेँ नाटच-रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

६१. “कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक”: संग्रहक परिचय, स्थापत्य आ सर्वेक्षण। कुणाल (मूल नाम शिव नारायण झा, जन्म १९५१, पालीमोहन, मधुबनी) क समग्र नाटच-संग्रहक भूमिका-रूप परिचय, जे कुणालकेँ मैथिली रंगमंचक “युगप्रवर्तक आ प्रस्थानबिन्दु” घोषित करैत, हुनकर साढ़े चारि दशकक रंग-यात्रा आ तीन दशकक नाटच-लेखनकेँ सन्दर्भित करैत अछि - ई अध्याय (१६-१९ आ ६१-६५ क) कुणाल-केन्द्रित समीक्षा-शृंखलाक संगठनात्मक भूमिका थिक।

६२. “चालिस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा”: बहु-दृष्टि नाटच-समीक्षा। कुणालक प्रथम नाटकक विस्तृत समीक्षा, जे भारतीय रस-वक्रोक्ति, पाश्चात्य विरचन-प्रभाव आ कार्निवालेस्क सिद्धान्त, चीनी संरचना-सौन्दर्यदृष्टि आ इजरायली प्रतिमात्मक प्रदर्शन-विचार - चारू पद्धतिक एकसंग प्रयोगसँ पढ़ल गेल अछि। नाटकक मेटाथिएट्रिकल आरम्भ (तीन “भाँट” द्वारा आत्म-सन्दर्भी विलाप) क विश्लेषण विशेष रूपसँ सूक्ष्म अछि, जे अध्याय ३ (नव्य-न्यायक दृष्टि) मे उल्लिखित गोनूक “प्रमा-विजय” वाला विश्लेषणक विस्तार थिक।

६३. “बिदापत”: लोकनाटच, इतिहास, स्मृति आ काव्यक रंगमंच। ई अध्याय एकटा महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक-पाठालोचनात्मक भेद स्थापित करैत अछि - ज्योतिरीश्वर-पूर्व मैथिली पदावलीकार विद्यापति आ शिवसिंह-युगक संस्कृत-अवहट्ठ लेखक “विद्यापति ठक्कुर” दू भिन्न ऐतिहासिक व्यक्ति/परम्परा छथि, जिनका “बिदापत” नाटक एकटा नाटकीय पात्र-विश्वमे समेटैत अछि।

ई भेद अध्याय ४९ मे उठाओल गेल विद्यापतिक “ब्राह्मणीकरण”क बहसक सैद्धान्तिक आधार थिक, आ ब्रेख्तीय आत्म-दूरी सिद्धान्तक प्रयोगसहित रंगमंचीय अर्थ-संरचनाक विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि।

६४. सातो नाटकक सीमा, कमी आ वैचारिक तनाव। ई अध्याय समालोचनात्मक निष्पक्षताक एकटा उत्कृष्ट उदाहरण थिक - लेखक स्पष्ट घोषणा करैत छथि जे “आलोचना मात्र प्रशंसात्मक मूल्यांकन नहि”, आ कुणालक सम्पूर्ण संग्रहक संरचनात्मक असमानता, मेटाथिएटरक पुनरावृत्ति, उद्घोषक-निर्भरता आ स्त्री-कर्तृत्व बनाम पितृसत्तात्मक अनुमोदनक तनावकेँ स्पष्ट रूपसँ चिन्हित करैत छथि। ई अध्याय ग्रन्थक “शून्य-भ्रम” नीतिक सभसँ ठोस प्रमाणमध्ये एक थिक - लेखक अपन प्रिय विषय (कुणालक नाट्य-कर्म) क सीमाकेँ सेहो निर्भीक रूपसँ चिन्हित करैत छथि।

६५. समग्र निष्कर्ष: कुणालक नाट्य-संसारक वैचारिक एकता। कुणाल-केन्द्रित समीक्षा-शृंखलाक (अध्याय ९, १६-१९, ६१-६५) समापन, जतय लेखक लोकनाट्य-त्रयी आ प्रेम-चतुष्टयकेँ बुद्धि, काव्य-चिरजीविता, अभय-स्वातंत्र्य आ प्रेमक क्रमिक वैचारिक विकासक रूपमे संश्लेषित करैत छथि - “कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक”केँ लोकनाट्य आ आधुनिक रंगमंचक बीचक सेतुक रूपमे अन्तिम रूपसँ स्थापित करैत।

६६. महेन्द्र मलंगियाक छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल। महेन्द्र मलंगियाक नाटक “छुतहा घैल” क विस्तृत समीक्षा, जतय एकटा रोचक अन्तर-लेखकीय प्रसंग उजागर होइत अछि - रमानन्द झा 'रमण'क सुझाव जे शीर्षककेँ “छुतहर घैल” सँ “छुतहर” मात्र कहल जाइ। लेखक यात्रीजीक विलाप-कविता (“काते रहै छी जनु घैल छुतहर...”) सँ नाटकक कबूतरी देवी पात्रक तुलना करैत, पाणिनीक दश-लकार-सिद्धान्त धरिक भाषाशास्त्रीय सन्दर्भ आनैत छथि - ई अध्याय अन्तर-पाठीयता (intertextuality) आ भाषाशास्त्रक असाधारण संयोजन देखबैत अछि।

६७. डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)। आम्बेडकरक जीवन-वृत्तक विस्तृत जीवनी-परक अध्याय, जे रत्नागिरी लग अम्बावडे गामसँ भीमक जन्म (१४ अप्रैल १८९१), मातृ-वियोग आ प्रारम्भिक शिक्षाक विवरणसहित प्रस्तुत

भेल अछि। ई अध्याय दलित-विमर्शक (अध्याय २१, २२, ७०, ७५) सैद्धान्तिक-ऐतिहासिक आधार-स्तम्भ थिक।

६८. विदेह · समानान्तर साहित्य आन्दोलन [गोहि सभक बीच जलसमाधि]। लेखकक स्वयंक मैथिली कादम्बरी (उपन्यास) “गोहि सभक बीच जलसमाधि” (खण्ड ०-१-२, अध्याय -१०० सँ २०० धरि) क कथासार आ समालोचनात्मक मूल्यांकन। “गढ़ नारिकेल” गामक कथा, जकर पोखरिमे देह डुबैत अछि आ पातपर नाम बचैत अछि - ई प्रतीकात्मक शीर्षकक व्याख्यासहित लेखक खण्ड-० (जड़ि दिस घुरब) आ खण्ड १-२ (भविष्य दिस प्रवाह) क संरचनात्मक विपरीत दिशाकेँ स्पष्ट करैत छथि - आत्म-समीक्षाक एकटा आर साहसिक उदाहरण।

६९. राम भरोस कापड़ि ‘भ्रमर’ विशेषांक: साहित्यिक आ संस्थागत विमर्श। नेपाल-भारत सीमा-पार मधेस आन्दोलनसँ जुड़ल विवादक बावजूद कापड़ि ’भ्रमर’क विशेषांकपर लेखकक टिप्पणी उल्लेखनीय अछि - “भ्रमर जी सर्वहारा वर्गकेँ गरिमा देलन्हि, जखन महेन्द्र मलंगिया आ जातिवादी रंगमंच स्लैपस्टिक ह्यूमर बला नाटकमे दऽ रहल छल”, जे लेखकक स्पष्ट वैचारिक पक्षधरताकेँ प्रमाणित करैत अछि।

७०. दलित विमर्श आ डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)। अध्याय ६७ क विस्तार, जे आम्बेडकरक जीवनकेँ दलित-विमर्शक व्यापक सैद्धान्तिक ढाँचामे राखैत अछि - अध्याय २१, २२ आ ७५ सँ जुड़ल एकटा सतत वैचारिक श्रृंखला।

७१. मैथिलीमे छद्म समीक्षाक कमलानन्द झा प्रसंग। ग्रन्थक सभसँ तीक्ष्ण साहित्यिक विवाद-अध्यायमध्ये एक। लेखक कमलानन्द झाक पोथी “मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल” (२०२१) क सीधा आलोचना करैत छथि - “शीर्षक भ्रामक अछि”, “सवर्ण उपन्यासकारपर सिण्डिकेटेड कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह”। विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि जे लेखक दाबी करैत छथि जे झा गएर-सवर्ण लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास ‘गुलो’ केँ “बिनु पढ़ने” खारिज केलन्हि - ई तीक्ष्ण, नामसहित आरोप-आधारित समीक्षा-

शैली विदेहक समानान्तर साहित्य आन्दोलनक जातिगत-संस्थागत आलोचनाक सभसँ प्रत्यक्ष प्रमाण थिक।

७२. बहस-पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक। एकटा साहित्यिक चौर्य-विवादक विस्तृत दस्तावेजीकरण, जतय लेखक स्वयंकेँ "अपराध पकड़बाक चेतना"क श्रेय दैत छथि। ई अध्याय समालोचकक भूमिकाकेँ मात्र सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्यांकनसँ आगू बढ़ि साहित्यिक नैतिकताक रक्षकक भूमिका धरि विस्तारित करैत अछि।

७३. अन्तर्जाल अपराध आ तकरा पकड़बाक विधि। अध्याय ७२ क तकनीकी विस्तार, जे साइबर-अपराध पहिचानक पद्धतिकेँ भाषा-प्रौद्योगिकीक दृष्टिसँ विवेचित करैत अछि।

७४. इन्फॉरमेशन सोसाइटी, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान। डिजिटल-सूचना-समाजक अधिकार-आधारित विश्लेषण, जे मानवाधिकारक सार्वभौम घोषणा आ भारतीय संविधानक प्रकाशमे सूचनाक स्वतंत्रताक प्रश्नकेँ उठबैत अछि।

७५. भारतीय दलित साहित्य: मैथिली अनुवाद, समीक्षा आ सौन्दर्यशास्त्र। ग्रन्थक सभसँ विस्तृत अध्यायमध्ये एक (लगभग १०,००० शब्द), जे तेलुगु दलित कवि बोयी भीमन्ना (१९२०-२००१) क कविताक विस्तृत विश्लेषणसँ प्रारम्भ होइत अछि। "गुडिसेलु कालिपोतुन्नायी" आ "ना वारसत्वपु हक्कुलु" कविताक प्रश्न-उत्तर संरचना ("ई केकर खोपड़ी?") क सूक्ष्म विश्लेषण, धार्मिक हिंसाक चक्रव्यूह आ पौराणिक इतिहासक पुनर्पाठक द्वंद्वकेँ उजागर करैत अछि। ई अध्याय अध्याय २१-२२ क सैद्धान्तिक ढाँचाक सभसँ विस्तृत अनुप्रयुक्त निर्वाहन थिक, जे गुजराती-ओड़िया-तेलुगु दलित साहित्यक मैथिली अनुवाद-समीक्षाक व्यापक फलक प्रस्तुत करैत अछि।

७६. जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष। मैथिलीक पुरोधा-विद्वान जयकान्त मिश्र (१९२२-२००९, इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी विभागक भूतपूर्व प्रोफेसर) क निधनक (३ फरबरी २००९) श्रद्धांजलिसहित हुनकर शब्दकोश-कार्यक विस्तृत मूल्यांकन। ई अध्याय (अध्याय ३६ क विस्तार) मैथिली कोशविज्ञानक इतिहासमे मिश्रक अवदानकेँ स्थायी रूपसँ अभिलेखित करैत अछि।

७७. गङ्गेश उपाध्याय। नव्य-न्यायक प्रवर्तक गङ्गेश उपाध्यायक जीवन-वृत्त, पञ्जी-साक्ष्य आ "तत्त्वचिन्तामणि"क चारि प्रमाण-खण्ड (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द) क समेकित विवेचन। व्याप्ति, कारकवाद आ अवच्छेदक-आधारित नव्य-न्याय-भाषाक तकनीकी विश्लेषण संगहि विश्व-दर्शनक तुलनात्मक सन्दर्भ आ मिथिलाक "समानान्तर बौद्धिक इतिहास"क परिप्रेक्ष्य - ई अध्याय लेखकक नव्य-न्याय-विशेषज्ञताक (साढ़े सात हजार शब्दक) सभसँ प्रामाणिक प्रस्तुति थिक, जे अध्याय ३ क सैद्धान्तिक बीजकेँ पूर्ण विकसित रूप दैत अछि।

७८. भामती (चतुःसूत्री): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन। वाचस्पति मिश्रक "भामती" (शंकराचार्यक शारीरक भाष्यपर टीका, अद्वैत वेदान्तक भामती-प्रस्थानक आधारग्रन्थ) क संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद (लेखक स्वयं) आ ओकर समालोचनात्मक मूल्यांकन। नवम शताब्दीक मिथिलाक "सर्वतन्त्रस्वतन्त्र" दार्शनिक वाचस्पति मिश्रक कृतिकेँ मैथिलीमे उपलब्ध करेब - जे सहस्राधिक वर्षसँ संस्कृत वाङ्मयक परिधिमे सीमित रहल - लेखकक अनुवाद-कर्मक सभसँ महत्त्वाकांक्षी उपलब्धिमध्ये एक थिक।

७९. आत्मतत्त्वविवेक: एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन। उदयनाचार्यक "आत्मतत्त्वविवेक" (परम्परामे "बौद्धधिक्कार" नामसँ सेहो अभिहित) - न्याय-वैशेषिक आ बौद्ध दर्शनक बीच सघन शास्त्रार्थक ग्रन्थ - क मैथिली अनुवाद आ समालोचना। लेखक एहि पूर्वपक्ष-उत्तरपक्षात्मक शास्त्रीय गद्यकेँ साहित्यिक आलोचनाक उपकरणसँ पढ़बाक एकटा असाधारण प्रयोग करैत छथि, जे दर्शनशास्त्र आ साहित्यशास्त्रक सीमाकेँ धुँधलाबैत अछि।

८०. न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयनाचार्यक मैथिली अनुवाद): एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन। उदयनाचार्यक "न्यायकुसुमाञ्जलि" (ईश्वर-सिद्धिक न्याय-ग्रन्थ, "पाँच फूलक गुच्छ"क रूपमे संरचित) क सम्पूर्ण मैथिली अनुवाद, अध्याय १-१२, परिशिष्ट आ अंग्रेजी समानान्तर खण्ड सहितक एकीकृत समीक्षा। ई अध्याय अनुवाद-विज्ञान आ दर्शनक तुलनात्मक अध्ययनक एकटा प्रामाणिक नमूना थिक।

८१. तत्त्वचिन्तामणि (मैथिली अनुवाद): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन। गंगेशोपाध्याय-प्रणीत "तत्त्वचिन्तामणि" - नव्य-न्यायक मूल ग्रन्थ, जे परम्परागत अर्थमे उपन्यास वा काव्यकृति नहि, अपितु भारतीय ज्ञानमीमांसा-तर्कशास्त्रक शास्त्रीय ग्रन्थ थिक - क मैथिली अनुवाद आ समालोचना। लेखक स्पष्ट करैत छथि जे एकर पूर्वपक्ष-उत्तरपक्षात्मक रचना, तर्कक "नाटकीय गति" आ अवधारणाक क्रमिक परिष्कार एकरा साहित्यिक आलोचनाक अनेक उपकरणसँ पढ़बाक अवसर दैत अछि - ई अध्याय (७७-८१) मिलिकऽ लेखकक नव्य-न्याय-अनुवाद-परियोजनाक चतुष्टय बनबैत अछि (भामती, आत्मतत्त्वविवेक, न्यायकुसुमाञ्जलि, तत्त्वचिन्तामणि), जे ग्रन्थक सभसँ गहन शास्त्रीय उपलब्धि थिक।

८२. फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत। लोकप्रिय बालकथा "सीत-बसंत"क फील्डवर्क-आधारित संकलन आ विवेचन, जे अध्याय २५ (कृषि-मत्स्य शब्दावली) क शैलीगत जोड़ीदार थिक।

८३. मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"। अध्याय ५१ क पुनरावृत्ति/विस्तार, मुन्नाजीक गजल-रुबाइ संग्रहक काव्य-समीक्षा।

८४. विनीत ठाकुरक "बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज"। विनीत ठाकुरक काव्य-कृतिक समीक्षा, जे मातृ-ऋणक भावनात्मक विषयवस्तुकेँ केन्द्रमे राखैत अछि।

८५. संतोष कुमार मिश्र - "एना किए..?" आ "पोसपुत"। संतोष कुमार मिश्रक दू कथाक संयुक्त समीक्षा।

८६. दूर्वाक्षत। जमीन्दारी-प्रथाक मंत्र आ सामाजिक वर्ग-संरचनासँ जुड़ल भाषावैज्ञानिक-सांस्कृतिक विवेचन।

८७. स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र "यात्री"। मैथिली-हिन्दी उभयभाषी साहित्यकार "यात्री" (आगाँ अध्याय १०९ मे विस्तृत जीवनी) क समीक्षात्मक परिचय।

८८. स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४)। मैथिलीक महानतम हास्य-व्यंग्य उपन्यासकार हरिमोहन झा (जिनकर "कन्यादान" क अंग्रेजी अनुवाद अध्याय

४९ मे उल्लिखित) क काव्य-समीक्षात्मक परिचय, जिनकर विस्तृत जीवनी अध्याय १०९ मे देल गेल अछि।

८९. जगदीश प्रसाद मण्डल। ग्रन्थमे बारम्बार उल्लिखित (अध्याय १८, १०९) जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक व्यक्तित्वक समीक्षा।

९०. प्रेमशंकर सिंह। अध्याय १०९ मे विस्तृत रूपसँ पुनः लेल गेल एहि मैथिली साहित्यकारक प्रारम्भिक परिचय।

९१. अन्हारक विरोधमे "हाथी चलए बजार" - अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन। दू लेखकक सम्मिलित कथा-कृतिक समीक्षा, जे सामाजिक अन्याय-विरोधी विषय-वस्तुकेँ केन्द्रमे राखैत अछि।

९२. मैथिलक वर्तमान समस्या। मैथिल समुदायक समकालीन समस्या (बाढ़ि, बान्ह, प्रवासन) क सामाजिक-भाषावैज्ञानिक विश्लेषण, जे अध्याय २, ५८ आदि विषयसँ जुड़ल एकटा सतत सामाजिक चिन्ता थिक।

९३. विदेह सम्पादकीयसँ। विदेह पत्रिकाक विभिन्न सम्पादकीयक संकलन, जे पत्रिकाक सम्पादकीय दृष्टिकोणक निरन्तरताकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि।

९४. गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिकाक सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि। लेखकक स्वयंक संक्षिप्त परिचय-अध्याय, जे विद्यापति-सम्बन्धी बहस (अध्याय ४९, ६३) क पुनरावृत्तिसहित लेखकक सम्पादकीय भूमिकाकेँ स्थापित करैत अछि।

९५. "प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!": स्त्री-कर्तृत्व आ आत्मबल। कुणालक प्रेम-चतुष्टयक प्रथम नाटिका - लोकनाट्य-त्रयीक बहु-पात्रीय, गीत-नृत्य-बहुल विस्तारसँ भिन्न, "मितव्ययी, तीक्ष्ण आ विचार-केन्द्रित" शैलीक विश्लेषण, त्रिस्तरीय मंच आ चारि पात्र (बहु-भूमिका-निर्वाहसहित) क संरचनागत सूक्ष्मताक विवेचनसहित। ई अध्याय (९५, ९७, ९९, १०० मिलिकऽ) प्रेम-चतुष्टयक चारि नाटिकाक क्रमबद्ध समीक्षा-शृंखला थिक।

९६. केदारनाथ चौधरीक समीक्षा। केदारनाथ चौधरी-विशेषांकक विस्तृत कथा-संकलनसहित समीक्षा, जतय डॉ. कल्पना मणिकान्त मिश्रक "मातृभाषा" कथाक विशेष उल्लेख अछि, जे मुम्बईमे मैथिली-भाषी पहचानक अनुभवकेँ केन्द्रमे राखैत अछि।

९७. “विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह”: विश्वास, पहचान आ रूपान्तरण। प्रेम-चतुष्टयक द्वितीय नाटिका, महाभारतक शान्तिपर्वक सुकन्या-च्यवन-आख्यानपर आधारित, जकरा कुणाल “नवीन नारीवादी-दार्शनिक दृष्टि”सँ पुनर्लेखन करैत छथि। भारतीय दर्शन, मनोवैज्ञानिक पहचान-सिद्धान्त आ यहूदी-इजरायली आत्मीयताक तुलनात्मक सूत्रसँ विश्वास, अभिज्ञान आ हृदय-दृष्टिक प्रश्नकेँ विश्लेषित कएल गेल अछि - अध्याय ३ (नव्य-न्यायक अभाव-सिद्धान्त) सँ जुड़ल एकटा दार्शनिक निरन्तरता।

९८. केदार नाथ चौधरीक- अबारा नहितन। केदारनाथ चौधरीक उपन्यासक अध्याय-विन्यास आ फिल्मीयताक विस्तृत विश्लेषण, जतय शैलेन्द्र मोहन झा (गोनू झाक गामक निवासी) सन सहयोगी-आवाजक उद्धरण सेहो सम्मिलित अछि - सामूहिक स्मृति-निर्माणक एकटा उदाहरण।

९९. “प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार”: कला, स्वाधीनता आ प्रेम। प्रेम-चतुष्टयक तृतीय, आ “सर्वाधिक मौलिक आ वैचारिक रूपसँ साहसिक” नाटिका, जकर कथा-वस्तु कोनो पौराणिक स्रोतसँ नहि, अपितु कुणालक स्वतंत्र कल्पनासँ आएल अछि। राजनर्तकी श्वेता आ राजा अतिरथक द्वन्द्वकेँ इब्सेन-सार्त्र-कामू-फ्रॉमक आधुनिक विचार, दाओवादी प्रकृति-दृष्टि आ इजरायली रंग-विमर्शसँ पढ़ल गेल अछि - ई अध्याय ग्रन्थक सभसँ व्यापक तुलनात्मक-दार्शनिक फलक (पूर्व आ पश्चिम, प्राचीन आ आधुनिक) प्रस्तुत करैत अछि।

१००. “प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र”: ज्ञान, परीक्षा आ प्रेम। प्रेम-चतुष्टयक अन्तिम नाटिका, चौदह दृश्य आ पाँच स्थल (आश्रम, मिथिला-नगर, जनक-दरबार, स्वर्ग, वन) मे विस्तृत महाकाव्यात्मक रचना। सुप्रभा-अष्टावक्रक कथाकेँ शारीरिकता-ज्ञान द्वन्द्व, पितृ-श्राप, शास्त्रार्थ आ उर्वशी-अस्वीकारक बहु-दृष्टि पद्धतिसँ पढ़ल गेल अछि, आ एकरा “समग्र संग्रहक वैचारिक परिणति” घोषित कएल गेल अछि - ई अध्याय कुणाल-केन्द्रित समीक्षा-शृंखलाक (अध्याय १, १६-१९, ६१-६५, ९५-१०० मिलाकऽ लगभग बीस अध्याय) समापन-बिन्दु थिक।

१०१. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' क बहन्ने। एकटा व्यक्तिगत संस्मरणसँ प्रारम्भ (पटनाक स्कूली संगीक मैथिली-सांस्कृतिक श्रेष्ठताक धारणा, मगही-भाषी मित्रक टिप्पणी) होइत, ई अध्याय प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क साहित्यिक व्यक्तित्वक समीक्षा प्रस्तुत करैत अछि।

१०२. शेखर प्रसंग, ओ दिन ओ पल आ एहो छली सिनेह। सुधांशु शेखर चौधरीपर शोध-आधारित तीन पोथी (व्यक्तित्व-कृतित्व, संस्मरण, हिन्दी रचना) क समेकित समीक्षा - चारि-अध्यायी संरचना (व्यक्तित्व, कृति-विवेचन, हिन्दी-रचना, उपसंहार) क विस्तृत विवरणसहित।

१०३. शरदिन्दु चौधरीक समीक्षा। शरदिन्दु चौधरीक चारि-खण्डीय संस्मरण-शृंखला "बात-बातपर बात" (२०१९-२०२१) आ हास्य-व्यंग्य-संग्रह "जँ हम जनितहुँ" (२००२) क समीक्षा। लेखक तीक्ष्ण टिप्पणी करैत छथि जे ई पोथी "पुरस्कार-लोलुप मूल-धाराक साहित्यकार"क आलोचनासँ भरल अछि, मुदा "शुद्ध संस्मरणक पोथी नहि" - ई अध्याय १०५ सँ पूरक-सम्बन्ध राखैत अछि।

१०४. नचिकेताक समीक्षा। गद्य-पद्यक भेदक पुनर्विवेचन ("पद्यमे बिम्बक माध्यमसँ कम शब्दमे बेशी गप कहबाक गुंजाएश"), नचिकेताक "मध्यमपुरुष एकवचन"क सन्दर्भमे - अध्याय ९ क सैद्धान्तिक विवेचनक व्यावहारिक विस्तार।

१०५. शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य। अध्याय १०३ क विस्तृत संस्करण, "बात-बातपर बात" चतुष्टयक गहन विश्लेषणसहित।

१०६. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' पर एकटा समग्र दृष्टि। अध्याय ६९ क विस्तार, जतय लेखक एकटा महत्त्वपूर्ण समालोचनात्मक प्रश्न उठबैत छथि - "जँ नाटक पढ़बामे उद्वेलित नहि करत तँ निर्देशक ओकर मंचनक निर्णय कोना लेत?" महेन्द्र मलंगियाजीक "ओकर आंगनक बारहमासा"मे निम्न वर्गकेँ "राड़" कहबाक जातिवादी भाषा-प्रयोगक तीक्ष्ण आलोचनासहित।

१०७. नरेन्द्र झा: काव्य आ साहित्यिक मूल्यांकन। विद्यापतिक प्रसिद्ध पद ("सैसव जौवन दरसन भेल...") क उद्धरणसहित नरेन्द्र झाक काव्य-मूल्यांकन, जे शृंगार-रसक क्लासिकल विद्यापति-परम्पराक निरन्तरताकेँ देखबैत अछि।

१०८. रमानन्द झा 'रमण': कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा। एकटा उल्लेखनीय आत्म-आलोचनात्मक सम्पादकीय, जतय लेखक उदयनाचार्यक आत्मतत्त्वविवेकसँ उद्धृत करैत छथि - "जे व्यक्ति एहि ग्रन्थक गुण बुझबाक योग्य नहि, ओकर प्रशंसासँ हम प्रसन्न नहि होयब... लोक एहि ग्रन्थक दोष देखबैत मात्र एकर आलोचना करथि।" ई उद्धरण लेखकक समग्र समालोचनात्मक दर्शनक (प्रशंसासँ अधिक रचनात्मक आलोचनाक मूल्य) एकटा सारगर्भित सूत्र-वाक्य थिक, जे अध्याय १०, ११ (रमणक चारि आलोचना-ग्रन्थ) क श्रृंखलाक समापन-टिप्पणी थिक।

१०९. स्व. श्री हरिमोहन झा, जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र "यात्री" (१९११-१९९८)। चारि प्रमुख मैथिली साहित्यकारक संयुक्त, विस्तृत जीवनी-परक समीक्षा। हरिमोहन झा (जन्म १८ सितम्बर १९०८, वैशाली जिला, दर्शनशास्त्रमे स्वर्णपदक-प्राप्त एम.ए., पटना कॉलेजमे प्राध्यापक) क जीवन-वृत्तसहित - ई अध्याय अध्याय ८८, ८९, ९० आ ८७ मे बिखरल परिचयक समेकित, तुलनात्मक पुनर्पाठ थिक।

११०. सुभाष चन्द्र यादवक समस्त साहित्यक समीक्षा आ मैथिली समीक्षाक कमलानन्द झा प्रसंग। द्वितीय खण्डक अन्तिम-पूर्व अध्याय, अत्यन्त विस्तृत (लगभग ३५०० शब्द)। सुभाष चन्द्र यादव (जन्म ५ मार्च १९४८, सुपौल) क सम्पूर्ण साहित्यिक यात्रा - "घरदेखिया" (१९८३) सँ "बनैत बिगड़ैत" (२००८-०९) आ "गुलो" (२०१४-१५) धरि - क्रमबद्ध रूपसँ समीक्षित अछि। ई अध्याय अध्याय ७१ (कमलानन्द झाक "बिनु पढ़ने" समीक्षाक आरोप) आ अध्याय १३ (यादवक कथा-संग्रह) सँ जुड़ल एकटा दीर्घकालिक साहित्यिक-न्यायिक उपक्रम थिक - लेखक एतय यादवक सम्पूर्ण कृतित्वक विस्तृत, विधिवत् समीक्षा प्रस्तुत कऽ कमलानन्द झाक कथित उपेक्षाक "सुधार" करैत छथि, जे समालोचनाकेँ सामाजिक न्यायक उपकरण बनेबाक लेखकक प्रतिबद्धताक सभसँ ठोस उदाहरण थिक।

१११. गोपाल झा 'अभिषेक' क 'आउ स्वप्न साझी करी': साहित्यिक अनुशीलन। ग्रन्थक अन्तिम अध्याय। गोपाल झा 'अभिषेक' (जन्म १५ अप्रैल १९६६, बिस्फी प्रखण्ड, मधुबनी) क काव्य-संग्रह "आउ स्वप्न साझी करी"

(२०२१, अनुप्रास प्रकाशन) क समीक्षा, जकरा लेखक “मैथिली काव्य-परम्परामे मीलक पत्थर” घोषित करैत छथि - “गामक माटिक सोंधगर गंधक संग-संग वैश्विक चेतनाक प्रखर स्वर”। ई कविता-संग्रहकेँ समयक विसंगति, मानवीय पीड़ा, राजनैतिक पाखण्ड आ भविष्यक स्वप्नक “प्रामाणिक दस्तावेज” कहल गेल अछि - एकटा समकालीन, उदीयमान कविपर समीक्षा-केन्द्रित ई समापन ग्रन्थक अग्रगामी (forward-looking) चरित्रकेँ रेखांकित करैत अछि, जे भूत आ वर्तमानक संगे मैथिली साहित्यक भविष्य दिस सेहो दृष्टिपात करैत अछि।

समग्र मूल्यांकन आ निष्कर्ष

ग्रन्थक सामर्थ्य

पद्धतिगत बहुलता आ अन्तर्विषयकता। “प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना” क सभसँ पैघ उपलब्धि एकर पद्धतिगत साहस थिक। लेखक भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र, नव्य-न्यायक ज्ञानमीमांसा, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त (मार्क्सवादसँ विखण्डनवाद धरि), आ “विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि” - चारू पद्धतिकेँ एकसंग, बिनु कोनो एककेँ अन्तिम सत्य मानने, प्रयोग करैत छथि। अध्याय ५३ (बूच जीक कविता) आ अध्याय ६२ (चालिस चोर) एहि बहु-पद्धतिगत समालोचनाक सभसँ परिष्कृत उदाहरण थिक, जतय एकहि पाठकेँ छह-सात भिन्न सैद्धान्तिक चश्माँसँ देखल गेल अछि।

संस्कृत-मैथिली अनुवाद-परियोजना। अध्याय ७७-८१ (गंगेश उपाध्याय, भामती, आत्मतत्त्वविवेक, न्यायकुसुमाञ्जलि, तत्त्वचिन्तामणि) आ अध्याय ७८ (तेरहटा संस्कृत नाट्य-प्रहसनक अनुवाद) मिलिकऽ लेखकक नव्य-न्याय आ संस्कृत साहित्यक मैथिली अनुवाद-कार्यक एकटा ठोस, सुसंगत सैद्धान्तिक भित्ति निर्मित करैत अछि - ई सम्भवतः ग्रन्थक सभसँ स्थायी विद्वत्तापूर्ण योगदान थिक।

समानान्तर आ सबाल्टर्न दृष्टि। दलित-साहित्य (अध्याय २१, २२, ६७, ७०, ७५), नारी-केन्द्रित समीक्षा (अध्याय २०, ९५, ९७), आ उपेक्षित लोकनायक-लोककलाकार (अध्याय १०, ३९, ६५, ६८) क प्रति लेखकक सतत प्रतिबद्धता

ग्रन्थकेँ मात्र एकटा शैक्षणिक उपक्रमसँ आगू बढ़ि एकटा वैचारिक हस्तक्षेप बनबैत अछि।

पाठालोचनात्मक कठोरता। अध्याय १७, ४७ (लालदासक रामायणक छन्दोभंग), आ अध्याय ६४ (पञ्जी-प्रबन्धक “२०/२० स्रोत-कवरेज ऑडिट”) देखबैत अछि जे लेखक शून्य-भ्रम नीतिकेँ मात्र दाबीक रूपमे नहि, अपितु ठोस पाठालोचनात्मक अभ्यासक रूपमे लागू करैत छथि।

सीमा आ प्रश्न

विधागत सीमाक धुँधलापन। अध्याय ४२ (वजन-प्रबन्धन), अध्याय ४८-५३ (संस्थागत विवाद), आ अध्याय ७१-७२ (साहित्यिक विवाद) सन अध्याय शुद्ध साहित्यिक समालोचनाक परिधिसँ बाहर जाइत छथि - आत्मकथा, पत्रकारिता आ व्यक्तिगत विवादक क्षेत्रमे। ई ग्रन्थक शीर्षक (“प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना”) क व्यापक अर्थमे न्यायोचित अछि, मुदा एकटा एकल समालोचनात्मक स्वरक अपेक्षा रखनिहार पाठकक लेल ई शैलीगत विविधता कखनो-कखनो असंगत लागि सकैत अछि।

संस्थागत आलोचनाक तीक्ष्णता। अध्याय ४८-५३, ७१ आ ११० मे साहित्य अकादेमी आ प्रतिस्पर्धी समालोचक (कमलानन्द झा) पर लगाओल गेल नामसहित, प्रत्यक्ष आरोप-आधारित आलोचना समालोचनात्मक साहसक प्रमाण त अछि, मुदा ई एकतरफा दृष्टिकोण प्रस्तुत करैत अछि - पाठकसँ अपेक्षा रहत जे ओ एहि विवादक दोसर पक्षकेँ सेहो स्वतंत्र स्रोतसँ जाँचथि, किएक तँ प्रस्तुत ग्रन्थ स्वयं एहि विवादमे एकटा पक्षकार अछि।

अध्यायक असमान गहराई। ११ आ १२ (हाइकू, दोहा) सन कतेको लघु अध्याय, आ ३२, ३६ सन औपचारिक-टेम्पलेट-शैलीक अमूर्त सार-संक्षेप, ग्रन्थक कतेको मुख्य अध्याय (जेना अध्याय २०, ६४, ७५) क गहराईसँ मेल नहि खाइत अछि - ई असमानता एकटा १६०० पृष्ठक बृहत् संकलनमे स्वाभाविक अछि, मुदा भविष्यक संस्करणमे लघु अध्यायक विस्तारसँ ग्रन्थक समग्र सन्तुलन बेसी सुदृढ़ भऽ सकैत अछि।

समापन टिप्पणी

“प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना” गजेन्द्र ठाकुरक चार दशकसँ बेशीक साहित्यिक-विद्वत्तापूर्ण यात्राक एकटा समग्र दस्तावेज थिक। ई मात्र मैथिली साहित्यक समीक्षा नहि, अपितु मैथिली भाषा, समाज, दर्शन आ सांस्कृतिक इतिहासक एकटा विश्वकोशीय पुनर्पाठ थिक, जे नव्य-न्यायक शास्त्रीय गहराईसँ लऽ कऽ अन्तर्जाल-युगक डिजिटल भाषा-प्रौद्योगिकी धरि, आ मिथिलाक लोकगाथासँ लऽ कऽ विश्व-रंगमंचक उत्तर-आधुनिक नाटक धरि पसरल अछि। एकर सभसँ पैघ योगदान अध्याय ५३ मे उद्धृत उदयनाचार्यक ओहि वचनमे संक्षेपित भऽ सकैत अछि, जकरा लेखक स्वयं अपन समालोचनात्मक दर्शनक रूपमे अपनबैत छथि: प्रशंसासँ बेशी, दोष-दर्शन आ सुधारक भावनासँ कएल गेल आलोचना ग्रन्थक सच्चा सम्मान थिक। एहि भावनासँ प्रेरित भऽ प्रस्तुत समीक्षा ग्रन्थक सभटा १६७ अध्यायकेँ - बिनु कोनो छोड़ने - एकठाम अनबाक प्रयास कएलक अछि।

७. ग्रन्थक प्रमुख उपलब्धि

मैथिलीमे विधा-विशेष समीक्षाशास्त्र बनयबाक सतत प्रयास—विहनि कथा, लघुकथा, उपन्यास, बाल-साहित्य, अनुवाद, नाटक, पद्य, हाइकू, छन्द।

भारतीय काव्यशास्त्र, नव्य-न्याय, आधुनिक पाश्चात्य सिद्धान्त आ स्थानीय लोक-स्मृतिक समांतर उपयोग।

मुख्यधारा बाहरक लेखक, लोककलाकार, दलित/वंचित स्वर, स्त्री आ क्वीर अनुभव, नेपाल-भारतक मिथिला, विशेषांक आ डिजिटल प्रकाशनक विस्तृत अभिलेखन।

तिरहुता, Unicode, विकीपीडिया, ई-प्रकाशन, भाषा-प्रौद्योगिकी, शब्दकोश आ field lexicon केँ साहित्यिक पारिस्थितिकीमे सम्मिलित करब।

नाटककेँ मंचीय कला मानि पाठ, अभिनेता, दर्शक, लोकनाट्य, शास्त्रीय उपकरण आ आधुनिक रंगदर्शनक संयुक्त समीक्षा।

अपन प्रिय/समानान्तर corpusक सीमा सेहो चिन्हित करबाक आत्म-आलोचनात्मक साहस—विशेषतः नाट्य अध्यायसभमे।

विशाल स्रोत-संग्रह: लेख, समीक्षा, सम्पादकीय, अनुवाद, इतिहास, दर्शन, विशेषांक, लोकसामग्री आ डिजिटल दस्तावेजकेँ एक संग्रहमे उपलब्ध करब।

८. प्रमुख सीमा आ सम्पादकीय सुधार

पुनरावृत्ति: एकहि लेखक/विषयक सामग्री अनेक अध्यायमे दोहराइत अछि। सामग्री हटेनाइ आवश्यक नहि; मुदा “प्रथम परिचय/विस्तृत समीक्षा/पुनर्पाठ” जकाँ स्पष्ट सम्पादकीय सम्बन्ध जोड़ल जाए।

दावा आ प्रमाणक दूरी: ऐतिहासिक “पहिल”, “आदिकवि”, “दू विद्यापति”, संस्थागत पक्षपात वा साहित्यिक चोरी सन दावामे प्राथमिक स्रोत आ स्वतंत्र सत्यापन अनिवार्य।

व्यक्तिकेन्द्रित भाषा: किछु संस्थागत/समीक्षकीय बहसमे तीक्ष्ण व्यक्तिगत विशेषण तर्कक अकादमिक शक्ति घटबैत अछि। तथ्य, पद्धति आ दस्तावेजपर केन्द्रित भाषा अधिक प्रभावी होयत।

सिद्धान्त-संग्रहण: अनेक दृष्टि एकसाथ जोड़बाक बदला प्रत्येक अध्यायमे २–४ मुख्य अवधारणा चुनि तकर प्रश्न, पाठ-साक्ष्य आ सीमा स्पष्ट कएल जाए।

फील्डवर्क metadataक कमी: लोकगाथा, शब्दावली, खिस्सा, पञ्जी सामग्री लेल कथनकर्ता/स्थान/तिथि/रिकॉर्डिङ/संस्करण विवरण जरूरी।

डिजिटल अध्यायक समय-संवेदी प्रकृति: सॉफ्टवेयर/प्लेटफॉर्म सूचना शीघ्र पुरान होइत अछि; प्रत्येक संस्करणमे “अद्यतन तिथि” आ स्थायी archive link देल जाए।

किछु अध्याय नोट-संग्रह जकाँ: विशेषत: कृति-सूची/जीवनीक किछु अंशमे एकरूप प्रस्तावना–पाठ-साक्ष्य–मूल्यांकन–निष्कर्ष ढाँचा आवश्यक।

स्वास्थ्य वा तकनीकी-अपराध सन अलाहित्यिक विषय: ऐतिहासिक/आत्मकथात्मक दस्तावेज रूपेँ राखल जा सकैत अछि, मुदा साहित्यिक ग्रन्थमे तकर स्थान आ विशेषज्ञ सीमा स्पष्ट कएल जाए।

९. भविष्यक शोध-कार्यसूची

१. मैथिली विहनि कथा लेल ५००–१००० पाठक annotated corpus आ विधागत मापदण्ड।

२. मैथिली बाल-साहित्यक आयु-आधारित वास्तविक पाठक-अध्ययन; ग्रामीण/शहरी, लिंग, जाति, भाषा-रूपक तुलना।

३. तिरहुता manuscript stemma, dated samples, Unicode rendering, OCR benchmark आ डिजिटल paleography corpus।

४. मैथिली नाट्य प्रदर्शन-अभिलेख: script + video + director note + audience response + stage design।

५. मिथिलाक लोकगाथा लेल multi-version audio archive—लोरिक, सलहेस, सीत-बसंत आदि।

६. पञ्जी/दूषण सामग्रीक ethical digital humanities edition—privacy, genealogy, metadata आ searchable transcription।

७. मैथिली दलित लेखनक स्वकीय आलोचनात्मक शब्दावली आ oral-history project।

८. मैथिली queer writing/स्मृति/पत्रिका/नाटकक annotated bibliography आ सुरक्षित archive।

९. संस्कृतसँ मैथिली अनुवादक parallel corpus: source line, Maithili line, छन्द, cultural term, translator note।

१०. मैथिली शब्दकोश इतिहास: Jayakanta Mishra सहित प्रमुख lexicographic projectsक तुलनात्मक database।

११. “समानान्तर साहित्य आन्दोलन”क बाह्य-स्वतंत्र इतिहास—विदेहक अभिलेख संग समकालीन पत्रिका, लेखक-साक्षात्कार आ आलोचकक असहमति।

१२. “दू विद्यापति” पर manuscript, palaeography, colophon, citation history आ chronology-आधारित पृथक monograph-level परीक्षण।

१३. मैथिली digital public sphereक २०००–२०२६ इतिहास: websites, blogs, Unicode, social media, Wikipedia, e-books, audio-video।

१४. नव्य-न्याय आ साहित्यिक hermeneutics: प्रमा/अभाव/अनुमान/शब्द-प्रमाणक कथानक-विश्लेषणपर पद्धतिगत ग्रन्थ।

१५. मैथिली कविता लेल छन्द/ध्वनि computational corpus—मात्रा, तुक, आवृत्ति, बिम्ब-संजाल आ शैलीमिति।

१६. विशेषांक संस्कृति आ canon formation: लेखक-विशेषांक केना प्रतिष्ठा, पुनर्पाठ आ digital memory बनबैत अछि।

१७. संस्थागत पुरस्कार/समिति अध्ययन लेल सार्वजनिक दस्तावेज-आधारित network analysis, व्यक्तिगत आरोपसँ पृथक।

१८. मैथिली–बज्जिका–अंगिका–सुरजापुरी–राजबंशी comparative corpus; phonology, morphology, syntax आ mutual intelligibility।

१९. मैथिली बाल/लोक सामग्रीक transmedia रूप—पाठ, चित्र, ऑडियो, नाटक, animation, e-learning—क प्रभाव अध्ययन।

२०. ग्रन्थक अगिला critical edition: स्थायी chapter ID, DOI/URL, bibliography normalization, index of names/works/theories आ cross-references।

१०. समग्र निष्कर्ष

ई ग्रन्थक साहित्यिक महत्त्व ओकर विशालता मात्र नहि, बल्कि “मैथिलीमे आलोचनात्मक ज्ञानक सम्पूर्ण पारिस्थितिकी” बनेबाक महत्त्वाकांक्षामे अछि। एकहि संग्रहमे काव्यशास्त्र, कथाशास्त्र, नाट्य, लोक, अनुवाद, दलित-नारी-क्वीर विमर्श, भाषाविज्ञान, लिपि, डिजिटलता, दर्शन आ संस्थागत इतिहासक सह-अस्तित्व मैथिली आलोचनाकेँ संकीर्ण “कृति-प्रशंसा” सँ बहुत आगाँ लऽ जाइत अछि।

ग्रन्थक सबल भाग ओ अछि जतय लेखकक प्रत्यक्ष corpus-ज्ञान, लोक/डिजिटल अभिलेख, विधागत संवेदना आ पाठक प्रति जवाबदेही एक संग अबैत अछि। सबसँ कमजोर भाग ओ अछि जतय वैध असहमति व्यक्तिगत तीक्ष्णतामे बदलि जाइत अछि, वा परिणामकारी ऐतिहासिक दावा पर्याप्त

बाह्य प्रमाण बिना निर्णायक रूप लैत अछि। एहि भेदकेँ सम्पादकीय रूपेँ स्पष्ट कएल जाए तँ कृति अधिक स्थायी अकादमिक प्रमाणिकता प्राप्त करत।

१६७ अध्यायक संयुक्त अध्ययनसँ एकटा बात स्पष्ट होइत अछि: लेखकक मूल परियोजना “केन्द्र बदलनाइ” अछि—मुद्रित प्रतिष्ठानसँ डिजिटल सार्वजनिकता दिस, स्थापित कैननसँ लोक/हाशिया दिस, केवल पश्चिमी सिद्धान्तसँ भारतीय-स्थानीय बौद्धिक परम्परा दिस, आ प्रशंसात्मक समीक्षा सँ तर्क-आधारित बहस दिस। एहि परियोजनाक पूर्ण सफलता लेल आब अगिला चरण “स्रोत-अनुशासन, संस्करण-अनुशासन, field metadata, empirical reader study आ सभ पक्षक सत्यापन” थिक।

एहि सुधारसभक संग “प्रबन्ध ·निबन्ध ·समालोचना” मैथिली साहित्य-अध्ययनक एकटा महत्त्वपूर्ण reference corpus, आलोचनात्मक इतिहास आ भविष्यक शोध-नक्शा—तीनू रूपमे उपयोगी भऽ सकैत अछि।

११. ग्रन्थसूची / Bibliography

तीनू आलेखमे प्रयुक्त वा उल्लेखित प्रमुख ग्रन्थ, शोध-लेख, मानक संस्करण आ डिजिटल स्रोतकेँ विषयानुसार समेकित कऽ नीचाँ देल गेल अछि। शरीर-पाठसँ सुपरस्क्रिप्ट/सन्दर्भ-संख्या हटाओल गेल अछि।

क. भारतीय काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र आ दर्शन

Ānandavardhana. Dhvanyāloka. विभिन्न समीक्षित संस्कृत संस्करण।

Bharata. Nāṭyaśāstra. विभिन्न समीक्षित संस्कृत संस्करण।

Gaṅgeśa Upādhyāya. Tattvacintāmaṇi. विभिन्न समीक्षित संस्कृत संस्करण।

Kuntaka. Vakroktijīvita. विभिन्न समीक्षित संस्कृत संस्करण।

Mammaṭa. Kāvyaprakāśa. विभिन्न समीक्षित संस्कृत संस्करण।

Udayanācārya. Ātmatattvaviveka. विभिन्न समीक्षित संस्कृत संस्करण।

Udayanācārya. Nyāyakusumāñjali. विभिन्न समीक्षित संस्कृत संस्करण।

Vācaspatimiśra. Bhāmatī. विभिन्न समीक्षित संस्कृत संस्करण।

ख. मैथिली भाषा, व्याकरण, अन्वय, लिपि आ इतिहास

Bickel, Balthasar, Walter Bisang, and Yogendra P. Yadava. “Face vs. Empathy: The Social Foundation of Maithili Verb Agreement.” Linguistics 37(3), 1999, pp. 481–518.

Jha, Subhadra. The Formation of the Maithili Language. London: Luzac & Co., 1958.

Kumari, Preeti. “Portmanteau Honorificity Agreement in Maithili.” Proceedings of the 11th Formal Approaches to South Asian Languages (FASAL-11), 2022.

Portner, Paul, Miok Pak, and Raffaella Zanuttini. “The Speaker-Addressee Relation at the Syntax-Semantics Interface.” Language 95(1), 2019, pp. 1–36. DOI: 10.1353/lan.2019.0008.

Stump, Gregory T., and Ramawatar Yadav. “Maithili Verb Agreement and the Control Agreement Principle.” Proceedings of the Chicago Linguistic Society 24(2), 1988, pp. 304–321.

Yadav, Ramawatar. A Reference Grammar of Maithili. Trends in Linguistics: Documentation 11. Berlin/New York: Mouton de Gruyter, 1996. DOI: 10.1515/9783110811698.

Yadava, Yogendra P., Oliver Bond, Irina Nikolaeva, and Sandy Ritchie. “The Syntax of Possessor Prominence in Maithili.” In András Bárány, Oliver Bond, and Irina Nikolaeva (eds.), Prominent Internal Possessors. Oxford: Oxford University Press, 2019, pp. 39–79.

Jyotirīśvara Ṭhākura. Varṇa-ratnākara. उपलब्ध मानक/समीक्षित संस्करण तथा डिजिटल प्रतियाँ।

ग. आधुनिक साहित्य-सिद्धान्त, अनुवाद, मौखिकता आ अस्मिता-विमर्श

Aristotle. Poetics. विभिन्न मानक अंग्रेजी अनुवाद/संस्करण।

Bakhtin, Mikhail. The Dialogic Imagination. Austin: University of Texas Press, 1981.

Brueck, Laura R. “Marking the Boundaries of a New Literary Identity: The Assertion of ‘Dalit Consciousness’ in Dalit Literary Criticism.” In Religion and Identity in South Asia and Beyond. Anthem Press, 2011/2012.

Bubb, Alexander. Asian Classics on the Victorian Bookshelf: Flights of Translation. Oxford: Oxford University Press, 2023.

Genette, Gérard. Narrative Discourse: An Essay in Method. Ithaca: Cornell University Press, 1980.

Goody, Jack. “Oral ‘Literature’.” In Myth, Ritual and the Oral. Cambridge: Cambridge University Press, 2012.

Limbale, Sharankumar. Towards an Aesthetic of Dalit Literature. Translated by Alok Mukherjee. New Delhi: Orient Longman, 2004.

Phillips, Stephen. “Gaṅgeśa.” Stanford Encyclopedia of Philosophy. First published 2020; substantive revision 2024.

Pym, Anthony. “Literary Translation.” Oxford Research Encyclopedia of Literature. 2020. DOI: 10.1093/acrefore/9780190201098.013.1107.

Rao, R. Raj. “Toward a Canon of Modern Indian Queer Literature.” In The Oxford Handbook of Modern Indian Literatures. Oxford University Press, 2023.

Reynolds, Kimberley. Children’s Literature: A Very Short Introduction. Oxford: Oxford University Press, 2011.

Venuti, Lawrence. The Translator’s Invisibility: A History of Translation. Routledge, विभिन्न संस्करण।

घ. तिरहुता, यूनिकोड, डिजिटल भाषा-संरक्षण आ सहायक ऑनलाइन स्रोत

Pandey, Anshuman. Proposal to Encode the Tirhuta Script in ISO/IEC 10646. Unicode document L2/11-175R, 2011.

The Unicode Consortium. “Tirhuta: U+11480–U+114DF.” The Unicode Standard, Version 16.0, Chapter 15.11, 2024. https://www.unicode.org/versions/Unicode16.0.0/core-spec/chapter-15/

UNESCO. “Digital Preservation of Indigenous Languages: At the Intersection of Technology and Culture.” 17 April 2024.

University of Surrey. Database of Prominent Internal Possessors: “Maithili.” https://pips.surrey.ac.uk/maithili/

Google / Business Today. रिपोर्ट: Google Translate मे मैथिली सहित नव भारतीय भाषाक समावेश, 12 May 2022.

Centre for Endangered Languages (CFEL). “Maithili” language profile. https://cfelvb.in/language_data_new.php?lang=11

Internet Archive. Jyotirīśvara Ṭhākura, Varṇa-ratnākara — डिजिटल प्रति. https://archive.org/details/varna-ratnakara

Saujanya Books. Subhadra Jha, The Formation of the Maithili Language — bibliographic record. https://saujanyabooks.com/details.aspx?id=123

ResearchGate. Ramawatar Yadav, A Reference Grammar of Maithili — bibliographic/full-text record.

https://www.researchgate.net/publication/332862371_A_Reference_Grammar_of_Maithili

Google Books. Ramawatar Yadav, A Reference Grammar of Maithili — bibliographic record.
https://books.google.com/books/about/A_Reference_Grammar_of_Maithili.html?id=hqcyg_gKhP8C

आलेख ०२ · आलोचना-सिद्धान्त आ समालोचनाक परिप्रेक्ष्य

समप्रमाण–समानान्तर कथा-आख्यानशास्त्र

सारांश

मैथिली कथा-साहित्यक सम्यक् समीक्षाक लेल मात्र कथासार, पात्रक गुण-दोष अथवा सामाजिक सन्देश पर्याप्त नहि। कथा केहन घटनासंसार रचैत अछि; कथन ओहि संसारकेँ कोना क्रमबद्ध, सीमित, विस्तारपूर्वक वा विखण्डित करैत अछि; शब्दसँ व्यक्त अर्थक अतिरिक्त कोन ध्वनि, रस आ अर्थान्तर उठैत अछि; आ उपन्यासक ऐतिहासिक-सामाजिक दाबी कोन स्रोतपर टिकैत अछि—ई प्रश्न अलग-अलग अछि, मुदा एक-दोसरसँ सम्बद्ध। एहि आलेखमे ‘समप्रमाण–समानान्तर कथा-आख्यानशास्त्र’ नामक एकटा प्रस्तावित मैथिली समीक्षा-पद्धति विकसित कएल गेल अछि। एकर तीनटा आधार अछि: भारतीय काव्यशास्त्रक कलात्मक-अनुभूतिपरक विवेचन; गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्यायसँ प्रेरित अवधारणात्मक शुद्धि, प्रमाण-भेद आ अनुमान-परीक्षण; आ विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक बहुस्रोत, बहुस्वर, मौन-विवेचन आ समान आलोचनात्मक कसौटी। आधुनिक आख्यानशास्त्रक कथा–कथन, काल-क्रम, अवधि, आवृत्ति, दृष्टिबिन्दु, कथावाचक, कथनस्तर, घटनात्मकता, चरित्र-संजाल, स्थान, भाषा, विधागत मिश्रण, पाठक आ माध्यम-सरणि एहि त्रिवेणीमे कार्यकारी उपकरण बनैत अछि। पद्धति साहित्यिक कल्पनाकेँ ऐतिहासिक दस्तावेज नहि मानैत; एतय आन्तरिक कथा-सत्य, पाठीय प्रमाण आ बाह्य ऐतिहासिक सत्य अलग जाँच-क्षेत्र अछि। आलेखमे विश्लेषण-सूत्र, कार्यप्रवाह, अध्यायवार प्रपत्र, घटना-पञ्जी, प्रतिवाद-परीक्षण, काल्पनिक दृष्टान्त आ शब्दावली देल गेल अछि। एकर उद्देश्य कोनो एकमात्र अन्तिम निर्णय आरोपित करब नहि, अपितु जाँचयोग्य, पुनर्परीक्षणीय, कलात्मक रूपसँ संवेदनशील आ सामाजिक रूपसँ उत्तरदायी समीक्षा सम्भव करब अछि।

बीजशब्द

समप्रमाण–समानान्तर कथा-आख्यानशास्त्र · आलोचना-पद्धति · भारतीय काव्यशास्त्र · मैथिली समालोचना · विदेह समानान्तर दृष्टि

गजेन्द्र ठाकुर

मैथिलीक कथा-आख्यानशास्त्र [समप्रमाण–समानान्तर कथा-आख्यानशास्त्र] भारतीय काव्यशास्त्र, नव्य-न्यायक प्रमाण-विवेचन आ विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिपर आधारित मैथिलीक एकटा समन्वित समीक्षा-पद्धति- मौलिक अवधारणात्मक शोध-आलेख • समीक्षा-सूत्र • प्रयोग-विधान

आख्यानक रचना । अर्थक प्रमाण । इतिहासक बहुस्वर

विषय-अनुक्रम

सारांश आ बीजशब्द

१. प्रस्तावना : कथाक समीक्षा सँ आख्यानक परीक्षण धरि

२. परिभाषा, क्षेत्र आ मूल प्रतिज्ञा

३. भारतीय काव्यशास्त्रसँ प्राप्त कलात्मक परीक्षण

४. नव्य-न्याय प्रेरित प्रमाण-विवेचन

५. विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक समीक्षात्मक रूपान्तरण

६. कथा-आख्यानशास्त्रक पूर्ण विश्लेषण-क्षेत्र

७. त्रिस्तरीय परीक्षण आ समन्वित समीक्षात्मक सूत्र

८. व्यावहारिक कार्य-विधान : सोलह चरण

९. प्रमाण-नियम : समीक्षक लेल बारह सूत्र

१०. स्वनिर्मित दृष्टान्तपर प्रयोग

११. दीर्घ उपन्यासक अध्यायवार आ समग्र परीक्षण

१२. समीक्षात्मक निर्णय : मापन, सीमा आ पुनर्परीक्षा

१३. निष्कर्ष : समीक्षा एकटा जाँचयोग्य आ संवेदनशील शास्त्र

परिशिष्ट क : अध्यायवार समीक्षा-प्रपत्र

परिशिष्ट ख : निर्णायक अनुसन्धान-प्रश्न

परिशिष्ट ग : मूल शब्दावली

आधारग्रन्थ आ सन्दर्भ-सूची

नेविगेशनक लेल वर्डमे शीर्षक-शैली आ Navigation Pane प्रयोग करू।

सारांश

मैथिली कथा-साहित्यक सम्यक् समीक्षाक लेल मात्र कथासार, पात्रक गुण-दोष अथवा सामाजिक सन्देश पर्याप्त नहि। कथा केहन घटनासंसार रचैत अछि; कथन ओहि संसारकेँ कोना क्रमबद्ध, सीमित, विस्तारपूर्वक वा विखण्डित करैत अछि; शब्दसँ व्यक्त अर्थक अतिरिक्त कोन ध्वनि, रस आ अर्थान्तर उठैत अछि; आ उपन्यासक ऐतिहासिक-सामाजिक दाबी कोन स्रोतपर टिकैत अछि—ई प्रश्न अलग-अलग अछि, मुदा एक-दोसरसँ सम्बद्ध। एहि आलेखमे ‘समप्रमाण–समानान्तर कथा-आख्यानशास्त्र’ नामक एकटा प्रस्तावित मैथिली समीक्षा-पद्धति विकसित कएल गेल अछि। एकर तीनटा आधार अछि: भारतीय काव्यशास्त्रक कलात्मक-अनुभूतिपरक विवेचन; गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्यायसँ प्रेरित अवधारणात्मक शुद्धि, प्रमाण-भेद आ अनुमान-परीक्षण; आ विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक बहुस्रोत, बहुस्वर, मौन-विवेचन आ समान आलोचनात्मक कसौटी। आधुनिक आख्यानशास्त्रक कथा–कथन, काल-क्रम, अवधि, आवृत्ति, दृष्टिबिन्दु, कथावाचक, कथनस्तर, घटनात्मकता, चरित्र-संजाल, स्थान, भाषा, विधागत मिश्रण, पाठक आ माध्यम-सरणि एहि त्रिवेणीमे कार्यकारी उपकरण बनैत अछि। पद्धति साहित्यिक कल्पनाकेँ ऐतिहासिक दस्तावेज नहि मानैत; एतय आन्तरिक कथा-सत्य, पाठीय प्रमाण आ बाह्य ऐतिहासिक सत्य अलग जाँच-क्षेत्र अछि। आलेखमे विश्लेषण-सूत्र, कार्यप्रवाह, अध्यायवार प्रपत्र, घटना-पञ्जी, प्रतिवाद-परीक्षण, काल्पनिक दृष्टान्त आ शब्दावली देल गेल अछि। एकर उद्देश्य कोनो एकमात्र अन्तिम निर्णय आरोपित करब नहि, अपितु जाँचयोग्य, पुनर्परीक्षणीय, कलात्मक रूपसँ संवेदनशील आ सामाजिक रूपसँ उत्तरदायी समीक्षा सम्भव करब अछि।

बीजशब्द: कथा-आख्यानशास्त्र; मैथिली; रस; ध्वनि; वक्रोक्ति; औचित्य; नव्य-न्याय; प्रमाण; व्याप्ति; अवच्छेदक; विदेह; समानान्तर इतिहास; कथनकाल; दृष्टिबिन्दु; बहुस्वर।

१. प्रस्तावना : कथाक समीक्षा सँ आख्यानक परीक्षण धरि

मैथिलीमे कथा, उपन्यास, लोकगाथा, आख्यानात्मक कविता, आत्मवृत्त आ मौखिक कथनक सुदीर्घ परम्परा अछि। मुदा कोनो उपन्यासक समीक्षा जँ 'विषय उत्तम अछि', 'चरित्र प्रभावशाली अछि' वा 'लेखक समाजक यथार्थ देखौलनि' एतबे कहि रुकि जाइत अछि, तँ पाठककेँ ओ नहि बुझा पबैत अछि जे कृतिक प्रभाव कोन शिल्पगत क्रियासँ बनल, कोन घटनासँ पाठकीय अपेक्षा बदलल, आ कोन कथन-चयन अन्य सम्भावनाकेँ अदृश्य कऽ देलक। ई कमी पूरा करबाक लेल केवल यूरोपीय आख्यानशास्त्रक शब्द-सूची अनुवाद करब सेहो पर्याप्त नहि।

एहि प्रस्तावक आरम्भिक मान्यता अछि जे साहित्यिक कथा एकहि समयमे निर्मित संसार, कहल गेल विन्यास, अनुभूतिमूलक रचना आ समाजमे उपलब्ध पाठीय हस्तक्षेप अछि। एहि चारूकेँ विश्लेषणक अलग प्रवेशद्वार देब आवश्यक अछि। एकटा पात्रक कथन साहित्यिक रूपेँ अत्यन्त विश्वसनीय लगि सकैत अछि, मुदा ओकर कथित इतिहास वास्तविक इतिहासक प्रमाण नहि बनि जाइत। ओहिना अभिलेखमे नहि भेटल आवाज कथामे सुन्ना पड़ि सकैत अछि, मुदा केवल अभावक आधारपर लेखकक मंशा वा वास्तविक घटनाक अनुमान निश्चित नहि कएल जा सकैत।

ई पद्धति किछु स्थापित शास्त्रक 'मिश्रण' मात्र नहि; एकरा बीचक सम्भावित टकरावकेँ नियमबद्ध करब एकर मूल काम अछि। रसक प्रश्न पूछैत अछि—अनुभूति कोना सधल? आख्यानशास्त्र पूछैत अछि—सूचना केकर दृष्टिसँ आ केहन क्रममे देल गेल? नव्य-न्याय प्रेरित समीक्षा पूछैत अछि—एहि निष्कर्षक आधार की, आ कोन शर्तमे निष्कर्ष चुकि सकैत अछि? समानान्तर इतिहास पूछैत अछि—ककर आवाज संग्रहित अछि, ककर नहि, आ स्रोत-संरक्षणक असमानता निष्कर्षकेँ कोना प्रभावित करैत अछि?

'समप्रमाण' शब्द एतय ई नैतिक-शोधगत आग्रह जनबैत अछि जे अधिकारसम्पन्न, उपेक्षित, कथाकार-प्रिय आ आलोचक-प्रिय सभ दाबीपर स्पष्ट तथा समान रूपसँ विवेचित प्रमाण-नियम लागू हो। 'समानान्तर' शब्दक अर्थ कोनो केन्द्रीय सूचीमे हाशियाक नाम जोड़ि देब मात्र नहि; कथा-निर्माण, सामाजिक कारण, दृष्टिबिन्दु आ अभिलेख-वितरणक समानकालिक अनेक

धाराकेँ परस्पर प्रभावक संग पढ़ब अछि। प्रस्तुत नाम एकटा नूतन पद्धतिक प्रस्ताव अछि, प्राचीन आचार्य द्वारा प्रतिपादित स्थापित सम्प्रदायक नाम नहि।

२. परिभाषा, क्षेत्र आ मूल प्रतिज्ञा

२.१ कथा, कथन आ आख्यान

‘कथा’ सँ आशय कल्पित अथवा कथित जगतमे घटित अवस्था, घटना, अभिकर्ता आ कारण-परिणामक सम्भावित क्रमसँ अछि। ‘कथन’ ओ प्रक्रिया अछि जाहिसँ कोनो वाचक, माध्यम वा पाठ ई सामग्री ककरो समक्ष राखैत अछि। ‘आख्यान’ ओ समग्र गढ़न अछि जाहिमे सामग्री, चयन, क्रम, दृष्टिबिन्दु, भाषा, मौन, पाठकीय अनुमान आ सांस्कृतिक संकेत एकठाम कार्य करैत अछि। एहि तीनूकेँ अलग चिन्हलासँ ‘की भेल?’ आ ‘कोना कहल गेल?’ केँ गड्डमड्ड होयबासँ बचाओल जा सकैत अछि।

कथाक कालक्रम ‘पहिने बाँध बनल, तकर बाद बाढ़ि आएल, अन्तमे पलायन भेल’ भऽ सकैत अछि; कथन एहीमे सँ पलायनसँ आरम्भ कऽ पाछाँ बाँधक इतिहासक स्मृति खोलि सकैत अछि। घटनाक कालक्रम आ कथनक क्रमक बीच अन्तर अर्थक सक्रिय स्रोत अछि; एकरा केवल ‘रोचक ढङ्ग’ कहि छोड़ब अनुचित।

२.२ चार तरहक सत्य-दाबी

पहिल, पाठीय तथ्य: मुद्रित पाठमे कोन शब्द, घटना, सन्दर्भ वा कथन उपस्थित अछि, जे पृष्ठ वा अनुच्छेदसँ देखाओल जा सकैत अछि। दोसर, कथाजगतक तथ्य: कृतिक भीतर कोन घटना घटित मानल गेल, जकर निर्णय वाचकक विश्वसनीयता आ पाठकक उपलब्ध सूचनापर निर्भर भऽ सकैत अछि। तेसर, व्याख्यात्मक दाबी: प्रतीक, निहित अर्थ, चरित्र-प्रेरणा वा रसक आलोचनात्मक अनुमान, जकर एकाधिक समुचित पठन सम्भव अछि। चारिम, बाह्य ऐतिहासिक दाबी: कृतिक बाहरक घटना, तिथि, संस्था, सामाजिक आँकड़ा अथवा दस्तावेजक सम्बन्धमे कथन; एकरा स्वतन्त्र स्रोत आ स्रोत-परीक्षण चाही।

उपन्यासमे ‘एक सय पोखरि सुखा गेल’ कहल गेल अछि, ई पाठीय तथ्य भऽ सकैत अछि। कथाक भीतर सचमुच एतेक पोखरि सुखा गेल कि कथावाचक

अतिशयोक्ति कएलक, ई आन्तरिक विश्वसनीयताक प्रश्न अछि। वास्तविक क्षेत्रमे ओहि वर्ष सचमुच एतेक पोखरि सुखायल छल कि नहि, ई बाह्य स्रोतपर निर्भर अछि। चारू स्तरक अलग निष्कर्ष आ अलग अनिश्चितता-चिह्न राखल जाए।

२.३ पद्धतिक सात प्रतिज्ञा

एक: कलात्मक अर्थक मूल्याङ्कन बिना कथन-विधानक परीक्षण अधूरा अछि। दू: पाठीय साक्ष्य देखौने बिना व्याख्या निर्णायक नहि। तीन: भाव-अनुभवकेँ यान्त्रिक गिनतीमे नहि समेटल जाए। चारि: आन्तरिक कथा-सत्य आ बाह्य इतिहासक सत्य अलग अछि। पाँच: बहुवचन, मौन आ सामाजिक स्थानक अन्वेषण सघन पाठपठनसँ जुड़ल रहय। छओ: प्रत्येक अनुमानक सीमा, प्रतिदृष्टान्त आ सम्भावित उपाधि लिखल जाए। सात: आलोचक अपन दृष्टि, चयन, प्रमाण-स्रोत आ संशोधनक सम्भावना प्रकट करय।

३. भारतीय काव्यशास्त्रसँ प्राप्त कलात्मक परीक्षण

३.१ रस : भावक विन्यास, नहि केवल भावनाम

भरतमुनिक रस-सिद्धान्तक उपयोग कथाक संवेदनात्मक संगठन जाँचबाक लेल होयत। विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव आ स्थायीभावक परस्पर सम्बन्धसँ रस-निष्पत्ति सम्बन्धी प्रश्न उठायल जाए। कथा दु:खक वर्णन करैत अछि, एतबासँ करुण रसक सिद्धि स्वत: नहि; पाठककेँ चरित्रक अवस्था, दृश्य-विन्यास, लय, विराम, प्रतीक्षा आ अनुभूतिक रूपान्तरण कोना उपलब्ध होइत अछि, तकर जाँच आवश्यक अछि।

रसकेँ एकटा तय ‘सही’ पाठकीय अनुभव मानि आदेश देब अनुचित। पाठकक भाषा-परिचय, जातीय-सामाजिक स्थिति, स्मृति, उम्र आ संवेदनशीलता अनुभव बदलि सकैत अछि। एतेक भिन्नताक बीच आलोचक एतबे प्रमाणित कऽ सकैत अछि जे पाठ कोन भाव-सम्भावना सक्रिय करैत अछि, कोन दृश्य वा वाक्य ओकर आधार अछि, आ अन्य पठनक सम्भावना कोन अछि।

३.२ ध्वनि : कहलग बातक पाछाँक संगति

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्त पाठमे प्रत्यक्ष अभिधेय अर्थसँ अलग संकेतित अर्थक अन्वेषण करबाक विधि दैत अछि। उदाहरणार्थ, सूखल घाटपर ‘जल-करक रसीद’ झुलैत अछि—ई दृश्य प्रशासनिक कागज मात्र नहि, श्रम आ अधिकारक विडम्बनाकेँ संकेत करि सकैत अछि। मुदा एहन ध्वनि प्रस्तावित करैत आलोचक पाठक अन्य प्रसंग, आवृत्त छवि आ विरोधी संकेत देखौक; केवल अपन इच्छित राजनीति आरोपित नहि करय।

ध्वनि आ नव्य-न्यायक अनुमान एक नहि। ध्वनि सौन्दर्यात्मक-सांकेतिक सम्भावना खोलि सकैत अछि; ऐतिहासिक निष्कर्ष लेल अतिरिक्त दस्तावेज जरूरी। ‘ई दृश्य शोषणक ध्वनि उत्पन्न करैत अछि’ आ ‘अमुक वर्ष अमुक राजस्व-विभाग शोषण कएलक’—दुनू वाक्यक प्रमाणभार भिन्न अछि।

३.३ वक्रोक्ति, रीति, गुण आ अलङ्कार

कुन्तकक वक्रोक्ति-दृष्टि शब्द, वाक्य, प्रसंग, कथानक आ समग्र प्रबन्धक असाधारण वक्र विन्यास पर विचारक आधार दैत अछि। पात्रक अप्रत्याशित प्रत्युत्तर, वर्णनमे उलट क्रम, कथावाचकक व्यंग्यात्मक दूरी, वाक्यक लम्बाइ अथवा सन्नाटा—सभ वक्रोक्ति-सदृश प्रभाव पैदा कऽ सकैत अछि, मुदा सभ विचित्रता कलात्मक सफलता नहि। रीतिक परीक्षणमे ठेठी, बोली, शास्त्रीय पदावली, लोक-लय, भाषिक स्तर-भेद आ प्रसंगानुकूल टोन देखल जाए। गुण-अलङ्कारक विवेचन घटनाक गति वा भाव-सम्प्रेषणसँ जोड़ल जाए; केवल उपमा-रूपक गनब उद्देश्य नहि।

३.४ औचित्य आ अनौचित्यक द्वैध

क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचार पात्र, भाषा, देशकाल, उद्देश्य, रस आ दृश्य-विन्यासक परस्पर अनुरूपताक प्रश्न उठबैत अछि। मुदा आधुनिक उपन्यास जानि-बूझि असंगति, व्यतिक्रम, व्यंग्य आ प्रतिरोधक लेल औचित्य भङ्ग कऽ सकैत अछि। अतः पद्धतिमे दू प्रश्न रहत: (क) कोन व्यवस्था आन्तरिक नियमक अनुकूल अछि? (ख) कोन नियम-भङ्ग सचेत शिल्पगत प्रयोजन पूरा करैत अछि? वर्ग, जाति अथवा लिङ्गक रूढ़ मर्यादाकेँ ‘औचित्य’ नाम दऽ आलोचना परम्परावादी आदेशमे नहि बदलल जाए।

३.५ सहृदय, साधारणीकरण आ विरोधी पाठक

सहृदयताक अर्थ आलोचकक पूर्वनिर्धारित सहमति नहि, वरन् पाठकक संवेद्य-रचनात्मक स्थितिमे प्रवेश करबाक आलोचनात्मक क्षमता अछि। क्रूरताक दृश्य पढ़ैत पीड़ित, अपराधी आ दर्शक पात्रक पृथक् दृष्टि बनि सकैत अछि। साधारणीकरणक चर्चा व्यक्तिक विशिष्ट ऐतिहासिक अनुभवकेँ पोंछि सार्वभौम बनौने बिना हो। पीड़ितक आवाजक अनोखापन आ सामूहिक बोध—दुनू सँग-सँग देखल जाए।

४. नव्य-न्याय प्रेरित प्रमाण-विवेचन

४.१ प्रेरणा आ सीमा

गंगेश उपाध्यायक ‘तत्त्वचिन्तामणि’ प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द—चारि प्रमाणपर विचार करैत अछि। एहि आलेखमे ओहि परम्पराक अवधारणात्मक अनुशासनसँ समीक्षा-प्रक्रिया प्रेरित अछि; साहित्यिक आलोचनाकेँ तत्त्वचिन्तामणिक शाब्दिक नव्य-न्याय सिद्धान्तक समान घोषित नहि कएल जा रहल अछि। साहित्यिक व्याख्या सदा प्रमेय-सिद्धि जकाँ निर्णायक नहि; से भिन्नता सुरक्षात्मक नियम अछि।

४.२ पक्ष, साध्य, हेतु आ दृष्टान्त

आलोचक पहिने पक्ष निश्चित करय: सम्पूर्ण उपन्यास, अमुक अध्याय, अमुक कथानक-वृत्त अथवा अमुक कथन-खण्ड? तकर बाद साध्य—की सिद्ध करबाक अछि? ‘अध्याय १२ मे कथावाचक अविश्वसनीय बनैत अछि’ एकटा जाँचयोग्य साध्य अछि। हेतु—एकहि घटनाक दू परस्पर विरोधी बयान, वाचकक स्वार्थ, बादक पाठीय संशोधन आदि। दृष्टान्त—समान रचना-उपायवला दोसर प्रसंग। स्पष्ट पक्ष बिना ‘ई उपन्यास निरन्तर स्त्री-विरोधी अछि’ सन व्यापक निष्कर्ष अशुद्ध भऽ सकैत अछि।

४.३ व्याप्ति, उपाधि आ हेत्वाभास

समालोचक ‘जतय पहिल पुरुषक कथन अछि, ओतय वाचक अविश्वसनीय अछि’ एहन व्याप्ति नहि बनाउ; एकरा असंख्य प्रतिदृष्टान्त भेटत। अधिक सावधान रूप: ‘जतय कथावाचकक महत्त्वपूर्ण दाबी पाठककेँ उपलब्ध विश्वसनीय पाठीय प्रमाणसँ व्यवस्थित रूपेँ टकराइत अछि, ओतय

अविश्वसनीयताक पठन सम्भव होइत अछि।' तखनो पाठकक ज्ञानक सीमा, स्वप्न, व्यंग्य, अनुवाद वा कालक्रमक फेर—ई सम्भावित उपाधि जाँचल जाए।

नव्य-न्याय परम्परासँ प्रेरित समीक्षा 'हेतुसिद्धि'क प्रश्न पूछय: संकेत सचमुच पाठमे अछि? सव्यभिचार: ई संकेत अन्य स्थितिमे सेहो भेटैत अछि? विरुद्ध: प्रमाण उल्टा साध्यक समर्थन करैत अछि? असिद्ध: आधार कल्पित तँ नहि? बाधित: बादक स्पष्ट सूचना पहिल निष्कर्षकेँ खण्डित तँ नहि करैत? एहि जाँचक उद्देश्य प्रभावशाली शब्दावली नहि, तर्कक दोष खोलब अछि।

४.४ अवच्छेदक : दाबीक सीमा स्पष्ट करब

'अवच्छेदक' एतय विश्लेषणक सीमा-निर्धारणक अनुशासन रूपेँ उपयुक्त अछि। 'सम्पूर्ण ग्रन्थमे लोकभाषा अनुपस्थित अछि' कहबाक पहिने 'लोकभाषा'क परिभाषा, कथकक बोली आ चरित्रक संवादक भेद, पाण्डुलिपि अथवा संस्करण, नमूना आ अध्याय-सीमा स्पष्ट करब जरूरी। 'एहि दस अध्यायक कथावाचकीय विवरणमे' कहलासँ दाबी सीमित आ जाँचयोग्य बनैत अछि।

अवच्छिन्न विषय, सम्बन्ध आ गुणसँ सम्बन्धित जटिल नव्य-न्याय पदावलीकेँ अनावश्यक रूपसँ कथा-शास्त्रपर आरोपित नहि कएल जाए। मूल नियम सरल अछि: ककर बारेमे, कोन गुणक, केहन सम्बन्धमे, कोन समय-सीमामे दाबी कएल जा रहल अछि?

४.५ चारि प्रमाणक समीक्षात्मक पुनर्विन्यास

प्रत्यक्ष-सदृश पाठनिरीक्षण: शब्द, क्रम, शीर्षक, कथोपकथन, पाण्डुलिपिक पाठभेदक देखादेखी जाँच। ई मूल नव्य-न्यायक प्रत्यक्षक शाब्दिक समतुल्य नहि; आलोचनामे प्राथमिक दृश्य-पाठीय अवलोकनक नाम अछि। अनुमान: पाठसाक्ष्यसँ कथन-कौशल, चरित्र-प्रेरणा वा निहित विचारक सम्भाव्य निष्कर्ष। उपमान: अन्य रचना, लोककथा, इतिहास-परम्परा वा महाकाव्यसँ सावधान साम्य, जतय समानताक संग अन्तर सेहो लिखल जाए। शब्द: लेखकक प्रस्तावना, पत्र, साक्षात्कार, ऐतिहासिक वचन आ प्रकाशित स्रोतक मूल्याङ्कन; वक्ताक विश्वसनीयता, सन्दर्भ आ स्वार्थक स्वतन्त्र परीक्षण जरूरी।

कृतिक भीतर पात्रक संवाद स्वयं वास्तविक इतिहासक 'शब्दप्रमाण' नहि, यद्यपि कथाजगतमे ओ कथित साक्ष्य भऽ सकैत अछि। लेखकक आत्मकथन सेहो अपन मंशाक साक्ष्य हो सकैत अछि, पाठक सम्भावित अर्थक अन्तिम निर्णायक नहि। आलोचककेँ जतय पर्याप्त प्रमाण नहि भेटैत अछि, ओतय 'अज्ञात', 'सम्भावित', 'विवादित', 'असमर्थित' सन स्पष्ट निर्णयसूचक शब्द प्रयोग करय।

४.६ पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष आ संशोधनीय निष्कर्ष

प्रत्येक महत्त्वपूर्ण व्याख्याक संग एकटा सक्षम पूर्वपक्ष लिखल जाए: एहीदृश्यकेँ अन्य समीक्षक कोना पढ़ि सकैत छथि? उत्तरपक्षमे ओहि वैकल्पिक पठनक वास्तविक प्रमाण जाँचल जाए। अन्तमे बचल निष्कर्षक भरोसा-स्तर लिखल जाए; 'निःसन्देह' केवल तेँ, जखन प्रमाणक प्रकार ओकर अनुमति दैत हो। आलोचकक प्रिय मूल्य-स्थिति हेतु-सिद्धिक विकल्प नहि।

५. विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक समीक्षात्मक रूपान्तरण

५.१ स्रोत-विस्तार आ स्रोतक अन्तर

विदेहक 'समानान्तर इतिहास-दृष्टि'मे राजकीय दस्तावेजक संग निजी पत्र, गीत, पञ्जी, नक्शा, स्त्रीक घरेलू लेखन, स्थानीय साक्ष्य आ मौखिक स्मृति लेल स्थान अछि; तथापि सभपर स्रोत-प्रकृति, तिथि, उद्देश्य आ सीमाक प्रश्न उठैत अछि। कथा-आख्यानशास्त्रमे एकर अर्थ—उपन्यास जकरा बोलबाक अवसर दैत अछि, आ जकर चिह्न सेहो पूर्ण रूपेँ उपस्थित नहि, ओकर ऐतिहासिक-सामाजिक स्थान जाँचल जाए; मुदा दस्तावेजक साक्ष्य आ कथाक कल्पनाकेँ एक नहि मानल जाए।

५.२ बहुस्वर, बहुकाल आ बहुक्षेत्र

समानान्तरताक अर्थ एकहि कथामे राज्य, खेतिहर, माछमार, स्त्री, प्रवासी, शिशु, वंचित जाति, भाषिक सीमाक्षेत्र आ सीमा-पार समाजक स्वरक उपस्थिति-सूची मात्र नहि अछि। विवेचन पूछत जे निर्णय के लैत अछि; श्रम ककरा करबाक पड़ैत अछि; परिणामक भार ककरा ऊपर पड़ैत अछि; ककर बोली वर्णनमे मानक कहल जाइत अछि; ककर अनुभव 'लोक' बनि जड़ित करि देल

जाइत अछि। इतिहासक समय, ऋतु-चक्र, स्मृति, पीढ़ी-समय, नदी-समय आ विस्थापन-समय अलग देखल जाए।

५.३ मौन : प्रमाणक अभाव आ कथात्मक कार्य

कोनो पात्रक अनुपस्थिति तीन सम्भावनासँ जुड़ल हो सकैत अछि: लेखकक चयन, कथावाचकक सीमित ज्ञान, वा कथासंसारक सत्ता-संरचना। केवल एकटा कारण चुनब अनुचित। ‘मौन’क दोसर स्तर अछि—उपन्यास स्वयं जे बात अनकहल राखैत अछि, आ पाठक जे अनुमान करैत अछि। तेसर स्तर—वास्तविक अभिलेखमे अनुपस्थिति। ई तीनू मौन मिश्रित नहि हो। समानान्तर इतिहासक महत्त्वपूर्ण कसौटी अछि जे शून्य स्थान कल्पनासँ भरल नहि जाए।

५.४ अभिलेख-निर्माण, संरक्षण आ डिजिटल पाठ

आलोचक संस्करण, प्रकाशन-वर्ष, लेखकक संशोधन, लिपि-बदलाव, मुद्रण-दोष, डिजिटीकृत पाठक त्रुटि, मौखिक रूपान्तर आ अनुवादक भूमिका जाँचय। मैथिलीक तिरहुता, देवनागरी आ आन लिपि-परम्पराक सामग्रीक अनुपलब्धता साहित्यिक अनुपस्थितिक ठोस प्रमाण नहि। एकटा ऑनलाइन प्रति कएक साइटपर मिलबाक अर्थ स्वतन्त्र तीन स्रोत नहि; सम्भव अछि सभ एकहि स्कैनसँ बनल हो।

५.५ इतिहासक नैतिकता आ आलोचकक स्व-परीक्षण

मुख्यधाराक प्रतिष्ठित लेखकक दाबी केवल प्रतिष्ठाक कारण सत्य नहि। हाशियाक कथाक दाबी केवल उपेक्षाक कारण सत्य नहि। आलोचक जँ सामाजिक प्रतिनिधित्वक कमी देखैत छथि तँ ओहि मूल्याङ्कनक प्रमाण पाठमे खोजथि। कोनो समूहक पात्र मात्र अत्याचार-सूची बनि रहि गेल कि ओकर अपन इच्छा, चेष्टा, विडम्बना आ दृष्टि अछि—ई जाँच अधिक महत्त्वपूर्ण। इतिहासक अन्याय चिन्हबाक लेल साहित्यिक रचनात्मकताकेँ मेटायब नहि।

६. कथा-आख्यानशास्त्रक पूर्ण विश्लेषण-क्षेत्र

६.१ कथासंसार, अवस्था आ घटनात्मकता

पहिल अवस्थामे पात्र, स्थान, सम्बन्ध, संसाधन, सत्ता आ सम्भावित संकटक नक्शा बनाओल जाए। घटना केवल ‘किछु भेल’ नहि; अवस्था बदलल कि

नहि? परिवर्तनक प्रासंगिकता, अनपेक्षितता, परिणाम, अपरिवर्तनीयता आ पुनरावृत्तिहीनता जाँचल जाए। छोट घटना—मछरी मारबाक घाटपर रोक—सम्पूर्ण ग्राम-संरचना बदलि सकैत अछि; विशाल युद्ध वर्णनात्मक स्तरपर लम्बा होइतो चरित्र-सम्बन्ध नहि बदलैत। घटना-संख्या आ घटनात्मक महत्त्व दू अलग माप अछि।

६.२ कथाक्रम आ कथनक्रम

सम्भव भेला पर स्वतन्त्र क्रमरेखा बनाउ: कथाजगतमे घटना कोन क्रममे भेल, आ पाठककेँ कोन क्रममे कहल गेल। पूर्वस्मृति, भविष्य-सूचना, एकहि घटनाक फेरबयान, विलम्बित उद्घाटन, काल-विसंगति, प्रच्छन्न क्रमभङ्ग चिन्हू। कथा-भङ्गक प्रभाव देखू—रहस्य, व्यंग्य, शोक, दोषारोपण वा इतिहासक पुनर्लेखन। प्रत्येक पूर्वस्मृति ‘फ्लैशबैक’ कहि छोड़बाक बदला ओकर कारण आ परिणाम लिखू।

६.३ अवधि, गति आ विराम

कथाजगतक एक दिन लेल सौ पृष्ठ, आ दू दशक लेल दू वाक्य—ई अनुपात अर्थपूर्ण अछि। दृश्य, सार, विस्तार, वर्णनात्मक विराम, घटना-लोप आ कथात्मक त्वरा अलग चिन्हू। घनत्वक मूल्याङ्कनमे शब्दक संख्या, निर्णायक परिवर्तन, कारण-जाल, चरित्र-रूपान्तरण आ भावात्मक गहराइ अलग-अलग दर्ज हो। अधिक शब्द = अधिक घटना; अधिक घटना = अधिक श्रेष्ठता—दुनू भ्रान्ति अछि।

६.४ आवृत्ति आ स्मृतिक पुनरागमन

एक बेर भेल घटनाक एक बेर कथन, एक बेर भेल घटनाक बारम्बार कथन, बारम्बार भेल घटनाक संक्षिप्त सामूहिक कथन—ई तीन प्रवृत्ति पहचानू। एकहि बाढ़िक स्मृति मजदूर, अधिकारी आ बालिका अलग ढङ्गेँ सुनबैत छथि तँ समान घटना बहुवचन दृष्टिक प्रमाण बनैत अछि। किन्तु एकहि वाक्यक निरर्थक प्रतिलिपि शिल्पगत आवृत्ति नहि; ओकर भेद निर्धारित करबाक प्रयोजन चाही।

६.५ कथावाचक, कथनस्तर आ विश्वसनीयता

के बोलैत अछि? बाह्य कथावाचक, भीतरक पात्र, पत्रक लेखक, स्वप्नक स्वर, लोकगीतक सामूहिक वाणी—सभक स्तर अलग लिखू। 'लेखक' आ 'कथावाचक' एक नहि। कथावाचक स्वयं घटनामे अछि कि बाहर? ओ कखन कथन करैत अछि—घटनासँ पहिने, संग-संग वा बादमे? ओकर ज्ञानक विस्तार की? अविश्वसनीयता साबित करबाक लेल कथनक विरोध, दृष्टि-सीमा, स्वार्थ वा पाठीय सुधार आवश्यक; पहिल-पुरुषक प्रयोग मात्र पर्याप्त नहि।

६.६ दृष्टिबिन्दु आ ज्ञान-वितरण

प्रश्न 'के देखैत अछि?'क संग 'के बुझैत अछि?', 'कोन सूचना ककरा भेटैत अछि?' सेहो जोड़ू। एकहि घटनाक अभिजात पात्रक नजरिया, मल्लाहक देहगत अनुभव आ शिशुक आंशिक ज्ञानसँ देखब भिन्न अछि। आन्तरिक, बाह्य, परिवर्ती, सामूहिक वा अप्रमाणित दृष्टिबिन्दु स्थितिक नक्शा बनाउ। कथावाचक जे जानैत अछि आ पात्र जे जानैत अछि, एहि असमानतासँ विडम्बना, रहस्य आ सहानुभूति बनैत अछि।

६.७ पात्र : नामसूची नहि, क्रिया-संजाल

पात्रक सामाजिक नाम, वंश वा जाति गनबाक अतिरिक्त ओकर लक्ष्य, बाधा, निर्णय, कार्यक्षमता, विरोधाभास, बदलैत सम्बन्ध आ कथा-समयमे परिवर्तन चिन्हू। सहायक पात्र केवल मुख्य पात्रक विकासक औजार तँ नहि? स्त्रीक श्रम नाटकीय संकटमे मात्र दृश्य बनैत अछि कि निर्णय-स्थलमे सेहो? जिनगीक जटिलताकेँ एकटा नैतिक गुणमे बदलि देब पात्र-निर्माणक कमजोरी भऽ सकैत अछि। चरित्रक मौन, कर्म आ अप्रकट इच्छा तखनहि चिन्हू जखन पाठक आधार भेटैत हो।

६.८ कारण, संयोग, संघर्ष आ समाधान

प्रत्येक निर्णायक घटनाक कारण-शृंखला दर्ज करब, मुदा कारणक एकता जबरदस्ती नहि आरोपित करब। प्राकृतिक आपदा, शासन, श्रम-विभाजन, पारिवारिक निर्णय, संयोग आ स्मृति परस्पर क्रियाशील हो सकैत अछि। संघर्षक समाधान प्रत्यक्ष, आंशिक, प्रतिकूल, विलम्बित अथवा अनिर्णीत भऽ

सकैत अछि। अनिर्णय स्वतः रचनात्मक दोष नहि; ई कलात्मक प्रश्नक खुलल रहबाक युक्ति सेहो हो सकैत अछि।

६.९ स्थान, नदी, पर्यावरण आ वस्तु-संसार

गाम, पोखरि, घर, श्मशान, खेत, सड़क, सीमा आ शहर केवल सजावट नहि। स्थान पात्रक पहुँच, श्रम, भय, जातीय विभाजन आ अधिकार बदलैत अछि। नदीक जल, गाद, बाढ़ि, मत्स्यजीवन, जलकर, सिंचाइ आ निष्कासनक व्यवस्था एकहि संग भूगोल आ समाज अछि। ‘नदी स्वयं कथावाचक अछि’ सन प्रतीकात्मक दाबी करबाक पहिने देखू पाठ नदीकेँ केहन भाषिक अभिकर्तृत्व दैत अछि। भौगोलिक तथ्य चाही तँ स्वतन्त्र नक्शा अथवा पर्यावरण-अध्ययन जुटाउ।

६.१० संवाद, भाषिक स्तर आ व्याकरणगत दृष्टि

संवादमे ककरा पूरा वाक्य भेटैत अछि, ककरा केवल उद्धरण? मानक मैथिली, ठेठी, अंगिका, बज्जिका, नेपाल-क्षेत्रीय रूप, पारिभाषिक भाषा वा अन्य भाषाक मिश्रण पात्रक वर्ग-स्थान, सम्बन्ध आ शक्ति देखबैत अछि कि रूढ़ि पक्का करैत अछि? बोलचालक रूपकेँ 'त्रुटि' मानबाक पहिने लेखकक शिल्प, पात्रक स्वर आ संस्करण-सन्दर्भ जाँचू। भाषिक भिन्नता मात्र रङ्ग-विविधता नहि; कथा-विभाजनक साधन भऽ सकैत अछि।

६.११ चेतना, स्वप्न, स्मृति आ अन्तःसंवाद

प्रत्यक्ष कथोपकथन, अप्रत्यक्ष कथन, मुक्त अप्रत्यक्ष कथन, मनोप्रवाह, स्मृतिखण्ड आ स्वप्नक कथात्मक अधिकार अलग करब। स्वप्नमे घटित दृश्यकेँ बिना आधार वास्तविक कथाघटना मानब, अथवा सचेत काल-विसंगतिकेँ लेखकक भूल कहब—दुनू चूक अछि। पात्र जे विचारैत अछि ओहि विचारक सत्य-मूल्य आ कथा जे पुष्ट करैत अछि तकर बीच दूरी राखू।

६.१२ प्रतीक, मिथक, आन्तर्पाठ आ पुनर्रचना

रामायण, महाभारत, भामती, न्याय-परम्परा, लोकदेवता, गाथा, मुहावरा, लोकनाट्य आ दार्शनिक पद—कथा एहि सबसँ संवाद करि सकैत अछि। आन्तर्पाठक परीक्षणमे नामक उपस्थिति मात्र नहि; रूपान्तरणक दिशा, मूल सन्दर्भसँ भिन्नता, वर्तमान प्रसंगमे कार्य आ पाठक लेल उपलब्ध संकेत देखल

जाए। जँ पात्रक नाम 'द्रौपदी' अछि, तँ एतबासँ सम्पूर्ण महाभारत-रूपक सिद्ध नहि; निर्णायक समानान्तर प्रसंग चाही।

६.१३ अद्‌भुत, असम्भव आ जादुई यथार्थ

कथा-जगतक नियम पहिने पहचानू। मृतक बोलैत अछि, नदी स्मृति राखैत अछि, समय चक्रीय भऽ जाइत अछि—ई लेखकक असंगतिक प्रमाण अवश्य नहि; ई कृतिक विकल्पी जगत-नियम हो सकैत अछि। अद्‌भुत रस, अलौकिक लोकविश्वास, अविश्वसनीय कथावाचक, स्वप्न, रूपक आ जादुई यथार्थकेँ एक श्रेणीमे नहि राखब। जाँचू कि असम्भव घटना पात्रक व्यवहार आ सामाजिक संरचनामे कोन परिवर्तन करैत अछि।

६.१४ संरचना, उपकथा आ दीर्घ-आख्यान

महाउपन्यासमे कथावृत्त, उपवृत्त, समय-खंड, पीढ़ी, स्थान आ पात्रसमूहक मानचित्र बनाओल जाए। अध्यायक संख्या साहित्यिक एकताक प्रमाण नहि। उपकथा मुख्य द्वन्द्वसँ कोन बिन्दुपर मिलैत अछि, दोसर उपकथासँ संवाद करैत अछि कि केवल समानान्तर बढ़ैत रहैत अछि? पुनरागमन, परिवर्तनशील आवर्तन, चरमबिन्दु, द्वितीय चरमबिन्दु, लम्बा उपसंहार आ अपूर्ण वृत्त सभ जाँचू।

६.१५ लय, बिम्ब, ध्वनि-संरचना आ पाठकीय अपेक्षा

वाक्यक साँस, कथोपकथनक लय, वर्णनक गति, ध्वन्यात्मक पुनरावर्तन, मौन, अध्यायान्तक विराम आ शीर्षकक अपेक्षाक संगति जाँचल जाए। संक्षिप्त दृश्य विस्तृत भाव पैदा कऽ सकैत अछि; बड़ वर्णन पाठकीय प्रतिरोध सेहो उत्पन्न कऽ सकैत अछि। पाठकीय प्रभावक दाबी प्रमाणित करबाक लेल विशिष्ट भाषिक उपकरण दिखाउ, नहि तँ 'सभी पाठक रोइत छथि' सन सार्वभौम वाक्यसँ बचू।

६.१६ पाठक, विधा, संस्करण आ माध्यम

कृति मौखिक पाठ, छपल पोथी, ई-पाठ, श्रव्यपुस्तक, अनुवाद अथवा किशोर-संस्करणमे बदलि सकैत अछि। प्रत्येक माध्यमक ग्रहण-शर्त भिन्न: पृष्ठ-विभाजन, उच्चारण, आवाज, चित्र, अध्याय-संख्या आ पाठकक पहुँच। अनुवादमे कथात्मक दृष्टिबिन्दु, स्थानीय सम्बोधन, रसक संकेत आ भाषिक सामाजिक

अन्तर केहन रूपेँ पहुँचल? विभिन्न संस्करणक तुलनामे मूल पाठक आधार स्पष्ट राखू।

६.१७ सामाजिक शक्ति आ प्रतिरोधक आख्यान

जाति, वर्ग, लिङ्ग, पेशा, धर्म, देह, अपाङ्गता, उम्र, परिवार, प्रवासन आ डिजिटल पहुँचक भेदकेँ मात्र विषय-सूची नहि, कथात्मक क्रिया रूपेँ पढ़ू। ककर इच्छा कथानककेँ आगाँ बढ़बैत अछि? ककर श्रम दृश्य होइत अछि? ककरा निष्पत्ति तय करबाक अवसर अछि? कथाकारक सामाजिक पक्षधरता महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि, मुदा कलात्मक न्याय, घटना-कारण आ पात्रक जटिलताक परीक्षण ओकर विकल्प नहि।

६.१८ पीड़ा, हिंसा आ प्रस्तुति-नैतिकता

बलात्कार, जातीय अपमान, आत्महत्या, बालपीड़ा, विस्थापन, हिंसा वा मृत्यु वर्णित हो तँ दृश्यक कार्य, पीड़ितक स्वतन्त्रता, पाठकीय संवेदनात्मक भार आ सनसनीक जोखिम देखू। केवल अधिक वीभत्स विवरणकेँ ‘निर्भीक यथार्थवाद’ घोषित नहि कएल जाए। आलोचक सम्भव भेला पर पीड़ितकेँ फेर वस्तु बनबयबाक बदला ओकर दृष्टि, परिणाम आ पुनर्गठन देखय। अशोभनीय दृश्यक साहित्यिक आवश्यकता आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व अलग प्रश्न अछि।

७. त्रिस्तरीय परीक्षण आ समन्वित समीक्षात्मक सूत्र

सारणी १ : त्रिसूत्री पद्धतिक प्रश्न आ साक्ष्य

विवेचन-आधार	प्रमुख प्रश्न	अनुमत साक्ष्य	मुख्य सावधानी
काव्यशास्त्र	कथा कोना रस, ध्वनि आ वक्रता रचैत अछि?	भाषा, दृश्य, प्रतीक, लय, पाठकक सम्भावित अनुभव	मात्र एक भाव पाठकपर बाध्य नहि करू।
नव्य-न्याय प्रेरणा	दाबीक पक्ष, हेतु, सीमा आ प्रतिवाद की अछि?	पाठ-पता, पाठभेद, प्रतिदृष्टान्त, स्वतंत्र सन्दर्भ	साहित्यिक अनुमानकेँ गणितीय सिद्धि नहि मानू।

विवेचन-आधार	प्रमुख प्रश्न	अनुमत साक्ष्य	मुख्य सावधानी
समानान्तर इतिहास	ककर आवाज, अभिलेख, श्रम आ मौन निर्णायक अछि?	पाठीय दृष्टि-संजाल, स्रोतक उत्पत्ति, सामाजिक सन्दर्भ	अनुपस्थितिक रिक्ति कल्पनासँ नहि भरू।

एकटा दृश्य अथवा अध्याय जाँचैत समीक्षक पहिने रचना-परीक्षा करय: घटना, वाचक, दृष्टिबिन्दु, काल, भाषा, प्रतीक, रस, ध्वनि, औचित्य आ पाठकीय गतिशीलता। तकर बाद प्रमाण-परीक्षा: कहलग निष्कर्षक पाठीय आधार, दाबीक सीमा, विरोधी प्रमाण, ऐतिहासिक सन्दर्भक स्रोत आ अनिश्चितता। अन्तमे समानान्तर-परीक्षा: केन्द्र/हाशिया, स्वर/मौन, अभिलेख/स्मृति, क्षेत्र/सीमा, श्रम/सत्ता, वर्ग/जाति/लिङ्गक परस्पर सम्बन्ध। तीनू चरणक परिणाम अलग लिखि तकर बाद संयोजित निर्णय दिअ।

प्रस्तावित समीक्षासूत्र: सम्यक् आख्यान-मूल्याङ्कन = पाठीय रचना-विवेचन + प्रमाण-सीमित निष्कर्ष + बहुस्रोत सामाजिक-ऐतिहासिक परीक्षण + प्रतिपक्ष-सहिष्णु पुनर्विचार। ई अंकगणितीय समीकरण नहि; कार्य-विभाजनक बोधक सूत्र अछि। एकर घटक परस्पर शर्तक रूपमे काज करैत अछि, मुदा कोनो एक घटक दोसरक स्थान नहि लैत अछि। विशेषत: सामाजिक प्रतिनिधित्वक उच्च मूल्याङ्कन खराब शिल्पकेँ स्वत: उत्कृष्ट नहि बनबैत, आ उत्कृष्ट शिल्प ऐतिहासिक गलत दाबीकेँ तथ्य नहि बनबैत।

प्रत्येक निर्णायक वाक्यक पाछाँ एकटा ‘समीक्षा-लेखा’ राखल जाए: निष्कर्ष / पाठ-पता / प्रमाणक प्रकार / वैकल्पिक पठन / विरोधी साक्ष्य / भरोसा-स्तर। एकरा बिना समीक्षा प्रभावशाली भाषण बनि सकैत अछि, शोध नहि।

८. व्यावहारिक कार्य-विधान : सोलह चरण

सारणी २ : आख्यान-विवेचनक मुख्य आयाम

आयाम	निर्णायक प्रश्न	परीक्षण-सामग्री
कथासंसार	प्रारम्भिक अवस्था आ नियमन	पाठमे उपलब्ध जगत-सूचना

आयाम	निर्णायक प्रश्न	परीक्षण-सामग्री
घटनात्मकता	कोन परिवर्तन निर्णायक अछि?	पूर्व/उत्तर अवस्था, परिणाम
क्रम	कथा-काल आ कथन-कालक अन्तर	घटनाक दू क्रमरेखा
अवधि	कोन प्रसंग विस्तृत अथवा संक्षिप्त?	शब्द/समयक अनुपात
आवृत्ति	एक घटना कतेक बेर कथित?	पुनर्कथन-स्थल
कथावाचक	के बोलैत, के विश्वासयोग्य?	वाचकक बयान आ विरोध
दृष्टिबिन्दु	ककरा कतेक जानकारी अछि?	ज्ञानक वितरण
कथनस्तर	कथाक भीतर दोसर कथा कोना?	पत्र, स्वप्न, लोकगाथा
पात्र-संजाल	के निर्णय लैत, के फल भोगैत?	लक्ष्य, कर्म, सम्बन्ध
संघर्ष-कारण	घटनाक एक वा बहु कारण?	कारण-परिणाम शृंखला
भाषा-संवाद	कोन स्वरक कोन भाषा?	वाक्य, बोली, मौन
रस-ध्वनि	अनुभूति आ निहित अर्थ कोना?	दृश्य, पुनरावृत्त बिम्ब
वक्रोक्ति-औचित्य	विन्यास आ नियमभङ्गक प्रयोजन?	भाषिक/कथात्मक विरूपण
स्थान-पर्यावरण	स्थान कारणात्मक अछि कि सजावट?	आगमन, संसाधन, भूगोल
आन्तर्पाठ	मिथक/शास्त्रक कोन पुनर्पाठ?	सम्बद्ध पाठ-विन्यास
अद्भुत-स्वप्न	असम्भव घटना कोन नियमपर?	कथाजगतक सुसंगति

आयाम	निर्णायक प्रश्न	परीक्षण-सामग्री
समाज-इतिहास	ककर अभिलेख आ मौन?	स्रोत, स्थान, परिप्रेक्ष्य
पाठक-माध्यम	रूपान्तरमे अर्थक की परिवर्तन?	पाठभेद, श्रव्य/अनुवाद

चरण १—पाठ-स्थिरीकरण: कोन संस्करण, प्रकाशक, वर्ष, अध्यायक्रम, भाषा आ पृष्ठ-विभाजन आधार, से लिखू; संशोधित संस्करण हो तँ भेद बचाउ।

चरण २—समग्र प्रारम्भिक पठन: कथासार आ पूर्वनिर्णय थोपने बिना मुख्य तनाव, विधागत संकेत, भाषा, आरम्भक युक्ति, अन्तक प्रकृति चिन्हू।

चरण ३—मूल-गणना: अध्याय, खण्ड, शब्द, पात्र, स्थान, संवाद-अनुपात, ऐतिहासिक सन्दर्भ, स्मृतिखण्ड जँ मापब योग्य हो तँ युक्तिपूर्वक गनू। कम्प्यूटर गणना आ मानवीय सत्यापनक अन्तर स्पष्ट करू।

चरण ४—घटना-पञ्जी: प्रत्येक अध्यायमे अवस्था-परिवर्तन, कारण, निर्णायकता, पुनरागमन आ परिणामक अलग पंक्ति तैयार करू।

चरण ५—द्विकाल-नक्शा: कथा-काल आ कथन-काल अलग; स्मृति, भविष्यसूचना, विराम, संक्षेप, आवृत्ति चिह्नित।

चरण ६—वाचक-दृष्टि मानचित्र: के बोललक, कोन स्तरसँ, के देखलक, कोन सूचना गुप्त रहल, कखन उद्घाटित भेल।

चरण ७—चरित्र-संजाल: लक्ष्य, निर्णय, सम्बन्ध, सामाजिक स्थिति, कार्यक्षमता आ परिवर्तनक मानचित्र।

चरण ८—रस-ध्वनि-वक्रोक्ति परीक्षण: मुख्य दृश्यक भाषिक आधार, भावक प्रक्रिया, संकेतित अर्थ आ सचेत औचित्यभङ्ग चिन्हू।

चरण ९—स्थान-पर्यावरण परीक्षण: स्थानक कारणात्मक भूमिका, संसाधनक बँटवारा, मौसम, पशु-पक्षी, नदी, कृषि, शहर, प्रवासन।

चरण १०—समानान्तर स्वर-परीक्षण: केन्द्रीय कथाक निर्णयक परिणाम किन-किन समूहपर पड़ल, ककर आवाज नदारद, ककर शब्द ककरा माध्यमसँ सुनाइत अछि।

चरण ११—दाबी-वर्गीकरण: प्रत्येक निर्णायक निष्कर्षकेँ पाठीय, कथाजगत, व्याख्यात्मक अथवा बाह्य-ऐतिहासिक चिह्न देब।

चरण १२—प्रमाण-परीक्षण: पृष्ठ-सन्दर्भ, सन्देह, प्रतिदृष्टान्त, उपाधि, बाह्य स्रोत, सन्दर्भक दिनाङ्क आ विश्वसनीयता।

चरण १३—पूर्वपक्ष: कम सँ कम एकटा मजबूत वैकल्पिक व्याख्या लिखू; ओकरा पुआल-प्रतिद्वन्द्वी नहि बनाउ।

चरण १४—काण्ड/खण्ड-समेकन: अध्यायवार निष्कर्षक संग बहुवृत्तीय परिवर्तन, शिखर, अनसुलझल प्रश्न आ अधूरापन देखू।

चरण १५—समग्र मूल्याङ्कन: शिल्प, रस, अर्थ, सामाजिक जटिलता, इतिहास-संवाद, पाठकीय प्रभाव आ सीमा अलग शीर्षकमे रखू; सर्वस्वीकृत अङ्क देबाक आग्रह नहि।

चरण १६—लेखापरीक्षा आ संशोधन: गलती, मापन-सीमा, स्रोत-अभाव, वैकल्पिक पठन आ संशोधनक तिथि दर्ज करू।

९. प्रमाण-नियम : समीक्षक लेल बारह सूत्र

सूत्र १—पाठप्राधान्य: जे दाबी पाठक भीतरक अछि, ओकर पहिल साक्ष्य पाठक स्पष्ट भागमे खोजू।

सूत्र २—स्तरभेद: कथावाचकक कथन, पात्रक विश्वास, लेखकक मन्तव्य आ इतिहासक सत्यकेँ अलग राखू।

सूत्र ३—सीमानिर्देश: साध्यक क्षेत्र, अध्याय, संस्करण, पात्रसमूह आ समय-सीमा निर्दिष्ट करू।

सूत्र ४—हेतुशुद्धि: आलोचक जे कारण देत, ओकर पाठीय उपस्थिति जाँचू।

सूत्र ५—व्याप्तिसंयम: एक-दू उदाहरणसँ सार्वभौम साहित्यिक नियम नहि बनाउ।

सूत्र ६—प्रतिदृष्टान्तग्रहण: विपरीत प्रसंगकेँ छिपायब नहि; ओकरा सिद्धान्त-संशोधनक अवसर मानू।

सूत्र ७—उपाधिविचार: स्वप्न, व्यंग्य, स्थानीय बोली, मिथकीय जगत, अविश्वसनीय वाचक सन विशेष शर्त जाँचू।

सूत्र ८—रसस्वातन्त्र्य: भाव-प्रभावक बहुलता स्वीकारू; पाठकक अनुभूति आँकड़ा बनि बाध्य नहि हो।

सूत्र ९—मौनसावधानी: मौनकेँ प्रश्न मानू, अज्ञात घटनाक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि।

सूत्र १०—समप्रमाणता: राजकीय, लोक, प्रतिष्ठित, दलित, स्त्री, लेखक वा आलोचक—सभ पक्षक दाबी जाँचू।

सूत्र ११—बहुकारणता: एकहि घटना सामाजिक, पारिस्थितिक, मनोवैज्ञानिक आ शिल्पगत अनेक कारणसँ बनि सकैत अछि।

सूत्र १२—संशोधनशीलता: नूतन पाठभेद, दस्तावेज वा सशक्त प्रतिपक्ष भेटला पर निष्कर्ष बदलब समीक्षा-बल अछि, पराजय नहि।

१०. स्वनिर्मित दृष्टान्तपर प्रयोग

१०.१ दृष्टान्त—घाट आ रसीद

निम्न दृश्य केवल एहि आलेख लेल रचल गेल काल्पनिक उदाहरण अछि; एकरा कोनो प्रकाशित उपन्यासक उद्धरण नहि मानल जाए: ‘पोखरि सूखि गेल छल। तखनो घाटपर जल-करक रसीद हवा मे फड़फड़ा रहल छल। कमली रसीद उठौलक, मुदा ओहिपर लिखल नाम ओकर नहि छल। ओ कहलक—पानिक दाम देलहुँ, आब माटिक दाम के देत?’

कथा-परीक्षण: प्रारम्भिक अवस्था—जलसम्पदा लुप्त; घटना—कमलीक रसीद देखब आ प्रश्न उठायब; परिवर्तन—मूक आर्थिक अन्याय सार्वजनिक वाणीमे बदलैत अछि। कथन-परीक्षण: संक्षिप्त वर्णन, वस्तु-संकेत आ अन्तिम प्रश्न कथनक गति बदलैत अछि। रस-ध्वनि: सूखल पोखरि आ जीवित रसीदक विरोधसँ करुणा आ व्यंग्यक सम्भावना; ‘माटिक दाम’ श्रम, अधिकार आ पारिस्थितिक क्षतिक ध्वनि। नव्य-न्याय प्रेरित प्रमाण: ‘नाम ओकर नहि छल’ पाठीय तथ्य अछि; ‘रसीद जाली छल’ अनुमान अछि, जकर लेल अतिरिक्त पाठसाक्ष्य चाही। समानान्तर परीक्षण: रसीद लिखबाक अधिकार केकरा, जल-करक भार ककरा, स्त्रीक आवाज की बदलैत अछि? बाह्य ऐतिहासिक कर-प्रणालीबारे एको निष्कर्ष एहि काल्पनिक दृश्यसँ नहि निकालल जाए।

१०.२ प्रतिपक्ष : की ई मात्र प्रतीक अछि?

पूर्वपक्ष कहि सकैत अछि जे 'सूखल पोखरि' सामाजिक न्यायक प्रतीक नहि; ई केवल दृश्य-सज्जा अछि। उत्तरपक्ष निर्णायक घोषित करबाक बदला जाँचत —अन्य अध्यायमे रसीद, जल, कर, स्त्री-श्रम, भूमि वा अधिकार पुनः अबैत अछि कि नहि? जँ नहि, प्रतीकात्मक व्याख्या सम्भाव्य, मुदा सीमित। जँ अनेक सुसंगत घटना-परिणाम एहि संकेतकेँ विकसित करैत अछि, तखन प्रस्ताव मजबूत होइत अछि। एहि तरहेँ काव्यशास्त्रक ध्वनि आ नव्य-न्याय-प्रेरित संशय एक-दोसरकेँ फलदायी बनबैत अछि।

११. दीर्घ उपन्यासक अध्यायवार आ समग्र परीक्षण

बहु-लाख शब्दक उपन्यासक परीक्षणमे प्रत्येक अध्यायक सभ घटना, मूल वाक्य आ व्याख्या बेतरतीब जोड़ि देलासँ समीक्षा स्वयं अवाच्य भऽ जाइत अछि। अतेव 'लघु-पञ्जी → वृत्त-संश्लेषण → खण्ड-संश्लेषण → समग्र वाद'क चारि स्तर अपनाउ। अध्याय-पञ्जीमे १५०–३०० शब्दक तथ्य-सार पर्याप्त भऽ सकैत अछि, मुदा घटनात्मक अथवा शिल्पगत रूपसँ निर्णायक अध्याय लेल ५००–१००० शब्दक विवेचन उचित। ई मात्र कार्य-सुझाव अछि; मूल पाठक वास्तविक जटिलताक अनुसार सीमा बदलबाक चाही।

अध्यायवार समीक्षा 'सारांश' नहि: प्रत्येक अध्यायक उद्देश्य, पूर्ववर्ती अवस्थासँ अन्तर, कथन-कौशल, प्रमुख प्रमाण, रस-ध्वनि, सामाजिक स्थान, प्रतिवाद आ अगिला अध्यायसँ सम्बन्ध लिखल जाए। समग्र समीक्षा अध्यायवार टिप्पणीक जोड़ मात्र नहि; कथावृत्तक परस्पर सम्बन्ध, आवर्तनक विकास, आ कथाक दीर्घकालिक नैतिक-कलात्मक नतीजा अलग स्थापित करैत अछि।

शब्द-संख्या, अध्याय-संख्या, चरित्र-संख्या वा घटनात्मक घनत्व मापैत गणनाविधि स्पष्ट हो। 'शब्द'क अर्थ खाली स्थानपर आधारित गणना, संयुक्त-रूप सामान्यीकरण अथवा सम्पादकीय साफ-सफाइक बादक गणना? शीर्षक, अनुक्रमणिका, पाद-टिप्पणी आ परिशिष्ट गनल गेल कि नहि? कम्प्यूटर-पाठ उपलब्ध नहि तँ अनुमानित संख्या 'अनुमान' कहल जाए।

घटनात्मक घनत्वक लेल एकटा निदानात्मक अनुपात ‘निर्णायक अवस्था-परिवर्तन / १०,००० शब्द’ उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा ई गुणात्मक श्रेष्ठताक क्रम नहि। ई अनुपात संग घटनाक परिणाम, चरित्र-अधिकार, नाटकीय विराम आ रसपरिवर्तन अवश्य पढ़ू। एकटा सूक्ष्म निर्णायक घटना दस आडम्बरपूर्ण दृश्यसँ अधिक प्रभावकारी भऽ सकैत अछि।

१२. समीक्षात्मक निर्णय : मापन, सीमा आ पुनर्परीक्षा

सारणी ३ : चारि प्रकारक दाबी आ हुनकर प्रमाण

दाबीक प्रकार	उदाहरण	जाँचक तरीका
पाठीय	पात्र अमुक वाक्य कहलक।	अध्याय/अनुच्छेद/संस्करण मिलाउ।
कथाजगत	बाँध वास्तवमे टूटल कि वाचकक भ्रम छल।	कथनक स्तर आ आगाँक पुष्टिकरण।
व्याख्यात्मक	रसीद श्रम-शोषणक ध्वनि अछि।	बिम्ब-संगति, वैकल्पिक पठन।
बाह्य ऐतिहासिक	निर्दिष्ट वर्षमे वास्तविक जल-कर लगल छल।	स्वतन्त्र अभिलेख, तिथि, स्रोत-आलोचना।

सारणीमे अङ्क रखबाक हो तँ प्रत्येक मानदण्डकेँ ० सँ ४ धरि पाठसमर्थन-स्तर दियौ, कलात्मक महत्ता नहि: ०—कोनो साक्ष्य नहि; १—अल्प/विवादित; २—किछु उदाहरण; ३—अनेक सुसंगत उदाहरण; ४—व्यापक साक्ष्य आ प्रतिपक्ष-परीक्षण। ‘लागू नहि’ आ ‘अज्ञात’ स्वतन्त्र कोटि रहय; शून्य अंक नहि। जँ अंक भारित कएल जाए तँ भार पहिने प्रकाशित हो, पाछाँ इच्छित निष्कर्ष लेल बदलल नहि जाए।

अन्तिम निर्णय चारि पृथक् खण्डमे लिखू: (क) कलात्मक सिद्धि आ कमी; (ख) आख्यान-संगठनक शक्ति आ तनाव; (ग) सामाजिक-ऐतिहासिक कल्पनाक जटिलता, स्रोत-संगति आ सीमा; (घ) कृतिक नूतन योगदान आ भविष्यमे अध्ययनक विषय। ‘महानतम’, ‘पूर्णत: विफल’, ‘सम्पूर्ण समाजक यथार्थ’ सन

सर्वग्रासी निर्णय लेल असाधारण तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक; अन्यथा सटीक सीमित निर्णय श्रेष्ठ।

पद्धतिक अपन सीमा सेहो अछि। काव्यक अनुभवक सभ स्तर फॉर्ममे नहि समा सकैत। नव्य-न्यायक प्रमाण-भाषा रचनात्मक अनिश्चितताकेँ मिटाबै लगल तँ ओकर उपयोग रोकल जाए। समानान्तर इतिहासकेँ यान्त्रिक ‘प्रतिनिधित्व-अङ्क’ बनाओल गेल तँ पात्रक कलात्मक स्वतन्त्रता समाप्त होएत। अन्य परम्परा—लोक-आख्यान, स्त्रीवादी, दलित, उपनिवेशोत्तर, पर्यावरणीय, संज्ञानात्मक आ अद्भुत-आख्यानशास्त्र—आवश्यकतानुसार संवादक रूपमे जुड़ि सकैत अछि, मुदा एकमात्र विचारधारा कथाक सभ अर्थकेँ नियंत्रित नहि करय।

१३. निष्कर्ष : समीक्षा एकटा जाँचयोग्य आ संवेदनशील शास्त्र

समप्रमाण–समानान्तर कथा-आख्यानशास्त्र मैथिली कथा-विवेचनक एकटा प्रस्तावित शोध-विधि अछि। ई कथासंसारकेँ कथन-विन्याससँ, कलात्मक अनुभूतिकेँ प्रमाणक अनुशासनसँ, आ साहित्यक केन्द्रकेँ ओकर अदृश्य अथवा कम सुनल स्वरसभसँ जोड़ैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्र रचनाक रस-ध्वनि-वक्रता खोलैत अछि; नव्य-न्याय प्रेरित विवेचन अनुमानक सीमा, प्रतिपक्ष आ त्रुटि चिन्हैत अछि; विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टि अभिलेखक असमानता, मौन आ बहुस्रोत समाजक प्रति समीक्षाकेँ उत्तरदायी बनबैत अछि।

एहि तीनू आधारक बीच उत्कृष्टता केवल ‘संगति’ नहि, सर्जनात्मक तनाव अछि: रस जखन निहित अर्थक सम्भावना खोलय, प्रमाण-परीक्षा ओकरा ऐतिहासिक तथ्य बनि भागबाकसँ रोकय; प्रमाण जखन संकुचित क्षेत्रमे समेटय, समानान्तर दृष्टि ओकर अज्ञात बहिर्क्षेत्र देखौक; इतिहास जखन सामाजिक आवाज जोड़य, आख्यानशास्त्र पूछय जे ओ आवाज रचनाक संरचना बदलैत अछि कि केवल नामावली बढ़बैत अछि।

अन्तिम सूत्र एतबे: कथा पढ़ू, कथन जाँचू, रस-ध्वनि सुनू, प्रमाणक सीमा मानू, मौनक कारण खोजू, प्रतिपक्ष सुनू, आ निष्कर्ष पुनः जाँचबाक द्वार खुलल राखू। एहि अनुशासनमे मैथिली कथा-साहित्यक विस्तृत, अध्यायवार, तर्कसंगत आ कलात्मक रूपेँ समुचित समीक्षा सम्भव अछि।

परिशिष्ट क : अध्यायवार समीक्षा-प्रपत्र

प्रत्येक प्रविष्टिमे मूल पोथीक अध्याय-संख्या आ शीर्षक जसक तस लिखू; समीक्षकक बनाओल शीर्षक अलग चिह्नित हो।

पहिचान: पोथी, संस्करण, खण्ड, अध्याय, पृष्ठ-सीमा, शब्द-संख्या, पाठक अवस्था।

अवस्था आ घटना: आरम्भिक अवस्था, निर्णायक घटना, अवस्था-परिवर्तन, परिणाम, अनसुलझल प्रश्न।

कथन: कथा-काल, कथन-क्रम, अवधि, आवृत्ति, वाचक, स्तर, दृष्टिबिन्दु, रहस्य।

रचना: चरित्र-संजाल, संवाद, भाषा, स्थान, बिम्ब, रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य अथवा सचेत भङ्ग।

समानान्तरता: सत्ता, श्रम, लिङ्ग, जाति, वर्ग, क्षेत्र, पर्यावरण, मौन, वंचित अभिकर्ता, भाषा-भेद।

प्रमाण: पाठीय उद्धरण वा स्थान-सूचक, दाबीक प्रकार, हेतु, सम्भावित उपाधि, वैकल्पिक पठन, भरोसा-स्तर।

सम्बन्ध: पछिला अध्यायसँ कारण-संलग्नता, आगाँक पूर्वसूचना, उपकथा-संयोग, आवर्तनक रूपान्तरण।

निष्कर्ष: कलात्मक उपलब्धि; सीमित आलोचना; अनिर्णीत प्रश्न; समग्र थीसिसमे योगदान।

परिशिष्ट ख : निर्णायक अनुसन्धान-प्रश्न

१. उपन्यासक आरम्भ पाठकसँ कोन ज्ञान लुकबैत अछि, आ कोन अपेक्षा स्थापित करैत अछि?

२. कथाजगतक घटना-क्रम आ कथनक प्रस्तुति-क्रम कतय अलग अछि?

३. कोन घटनाक उल्लेख बारम्बार होइत अछि, आ प्रत्येक पुनर्कथनमे की बदलैत अछि?

४. कोन दृश्य अनेक पृष्ठ लैत अछि, मुदा कथाक समय अल्प अछि? ओकर प्रयोजन की?

५. घटनात्मक निर्णायकता शब्द-संख्यासँ कोना अलग अछि?

६. कथावाचकक ज्ञानक सीमा कतय पाठककेँ स्पष्ट होइत अछि?

७. कथावाचक आ पात्रक आवाज केहन भाषिक संकेतसँ अलग होइत अछि?

८. कोन पात्रक निर्णयक परिणाम दोसर, कम दृश्य पात्रपर पड़ैत अछि?

९. कथाक केन्द्र बदलला पर समाजक कारण-शृंखला कोना बदलैत अछि?

१०. कोन संघर्ष अन्तमे नहि सुलझैत, आ ई अनिर्णय रचनात्मक अछि कि अनवधान?

११. जाति, वर्ग, लिङ्ग आ पेशा कोना कथानक-निर्णयमे प्रवेश करैत अछि?

१२. लोकभाषा चरित्रक स्वायत्तता देत कि ओकरा रूपक बनबैत अछि?

१३. रसक प्रभाव कोन दृश्य-विन्यास, लय आ संकेतसँ सम्भव होइत अछि?

१४. ध्वनिक दाबी लेल पाठक भीतर दोसर कोन आधार भेटैत अछि?

१५. औचित्यक भङ्ग जानि-बूझि कएल शिल्प अछि कि पात्र-रचनाक असंगति?

१६. मिथकीय नामक पाछाँ वास्तविक रचनात्मक पुनर्गठन अछि कि केवल संकेत?

१७. प्राकृतिक दृश्य संघर्षक कारण बनैत अछि कि पृष्ठभूमि रहैत अछि?

१८. स्वप्न, स्मृति आ काल्पनिक घटना केहन संकेतसँ अलग पहिचानल जाए?

१९. कोन वचन पाठीय तथ्य अछि, कोन पात्रक विश्वास, कोन आलोचकक अनुमान?

२०. ऐतिहासिक दाबी लेल स्वतन्त्र स्रोत उपलब्ध अछि कि नहि?

२१. मौनक कारणक तीन अलग सम्भावना की-की अछि?

२२. सामाजिक केन्द्रक अतिरिक्त ककर अनुभव कथाक संरचना बदलैत अछि?

२३. अनुवाद अथवा श्रव्यरूपमे दृष्टिबिन्दु वा भाषिक अन्तर बदलैत अछि?

२४. समीक्षकक प्रमुख दाबीक विरुद्ध सभसँ प्रबल साक्ष्य की अछि?

२५. कृतिक अन्त आरम्भिक प्रश्नकेँ सुलझबैत, बदलैत कि जटिल बनबैत अछि?

२६. लेखकक प्रस्तावना आ मुख्य पाठ एक-दोसरसँ कतय सहमत अथवा असहमत अछि?

२७. एकटा उपकथा हटा देल जाए तँ सम्पूर्ण संरचना कतबा बदलैत?

२८. पाठकक सहानुभूति कखन एक पात्रसँ दोसर पर सरकैत अछि?

२९. कोन निष्कर्ष उच्च विश्वास, कोन केवल सम्भावना आ कोन अज्ञात अछि?

३०. समग्र मूल्याङ्कनमे कृति कोन नूतन आख्यान-प्रयोग सिद्ध करैत अछि?

परिशिष्ट ग : मूल शब्दावली

कथा: घटनासंसारक पुनर्निर्मेय अनुक्रम।

कथन: कथा व्यक्त करबाक भाषिक वा माध्यमगत क्रिया।

आख्यान: कथा, कथन आ ग्रहणक संगठित रचना।

कथाजगत: कृतिक भीतरक सम्भावित विश्व आ ओकर नियम।

कथनकाल: कथन करबाक समय वा पाठमे समयक वितरण।

कथाकाल: कथाजगतमे घटनाक समय।

दृष्टिबिन्दु: जानकारी, अनुभव आ निरीक्षणक स्थान।

कथावाचक: कथा कहबाक पाठीय अभिकर्ता; लेखकसँ भिन्न।

घटनात्मकता: अवस्था-परिवर्तनक कथात्मक महत्त्व।

कथनस्तर: मूल कथन आ अन्तःस्थ कथाक पदानुक्रम।

रस: रचनाक भाव-संगठनसँ सम्भावित आस्वाद।

ध्वनि: प्रत्यक्ष शब्दार्थसँ अतिरिक्त संकेतित अर्थ।

वक्रोक्ति: कलात्मक वक्र अथवा अप्रत्याशित भाषिक-विन्यास।

रीति: शैलीगत गठन आ शब्द-चयनक प्रवृत्ति।

औचित्य: प्रसंग, पात्र, भाषा आ कलात्मक लक्ष्यक अनुरूपता।

पक्ष: समीक्षा-विचारक निर्दिष्ट विषय।

साध्य: स्थापित करबाक प्रस्तावित गुण अथवा निष्कर्ष।

हेतु: निष्कर्षक पक्षमे देल कारण अथवा संकेत।

व्याप्ति: अनुमानकेँ सम्भव करएवला सामान्य सम्बन्ध; साहित्यिक प्रसंगमे सावधानी अपेक्षित।

उपाधि: सामान्य अनुमानकेँ सीमित करएवला विशेष शर्त।

अवच्छेदक: दाबीक अर्थ-सीमा निर्धारित करबाक सूक्ष्म भेदक।

पूर्वपक्ष: प्रतिद्वन्द्वी व्याख्याक सक्षम प्रस्तुति।

उत्तरपक्ष: प्रमाणक संग आलोचनात्मक प्रत्युत्तर।

पाठीय तथ्य: पाठमे प्रत्यक्ष उपलब्ध सामग्री।

कथाजगतक तथ्य: रचनाक भीतर स्थापित अथवा विवादित घटना।

व्याख्यात्मक दाबी: पाठसँ प्रेरित, प्रतिवादयोग्य अर्थ-प्रस्ताव।

बाह्य इतिहास-दाबी: कृतिक बाहरक संसारबारे सत्यापनीय कथन।

समानान्तर दृष्टि: विविध स्रोत, शक्ति-स्थान, समय आ स्वरक परस्पर-परीक्षण।

मौन-विवेचन: अनुपस्थित आवाज अथवा साक्ष्यक कारणपर अनुसन्धान।

समप्रमाणता: सभ दाबीक लेल स्पष्ट, असमान स्रोतस्थितिक प्रति सजग, समान विवेचन-निष्ठा।

आधारग्रन्थ आ सन्दर्भ-सूची

भारतीय काव्यशास्त्र आ नव्य-न्याय : मूल ग्रन्थ

१. भरतमुनि। नाटचशास्त्र। विशेषतः रस आ भाव-सम्बन्धी अध्याय; संस्करणभेद अनुसार अध्याय-पृष्ठ पृथक् देखू।

२. भामह। काव्यालङ्कार।

३. दण्डी। काव्यादर्श।

४. वामन। काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति।

५. आनन्दवर्धन। ध्वन्यालोक।

६. अभिनवगुप्त। अभिनवभारती; ध्वन्यालोकलोचन।

७. कुन्तक। वक्रोक्तिजीवित।

८. क्षेमेन्द्र। औचित्यविचारचर्चा।

९. मम्मट। काव्यप्रकाश।

१०. राजशेखर। काव्यमीमांसा।

११. विश्वनाथ कविराज। साहित्यदर्पण।

१२. गंगेश उपाध्याय। तत्त्वचिन्तामणि; प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द खण्ड।

१३. उदयनाचार्य। न्याय-कुसुमाञ्जलि।

आधुनिक आख्यानशास्त्र आ विवेचन

१४. Gérard Genette. Narrative Discourse: An Essay in Method. Cornell University Press, 1980.

१५. Seymour Chatman. Story and Discourse: Narrative Structure in Fiction and Film. Cornell University Press, 1978.

१६. Mieke Bal. Narratology: Introduction to the Theory of Narrative. University of Toronto Press; विभिन्न संस्करण।

१७. Mikhail Bakhtin. The Dialogic Imagination: Four Essays. University of Texas Press, 1981.

१८. Wayne C. Booth. The Rhetoric of Fiction. University of Chicago Press, 1961.

१९. Monika Fludernik. Towards a ‘Natural’ Narratology. Routledge, 1996.

२०. David Herman. Basic Elements of Narrative. Wiley-Blackwell, 2009.

२१. Susan S. Lanser. Fictions of Authority: Women Writers and Narrative Voice. Cornell University Press, 1992.

२२. Paul Ricoeur. Time and Narrative. University of Chicago Press; तीन खण्ड, 1984–1988.

२३. Manfred Jahn. Narratology 3.01: A Guide to the Theory of Narrative. University of Cologne, 2026 (ऑनलाइन शैक्षणिक मार्गदर्शिका)।

समानान्तर इतिहास, ज्ञानमीमांसा आ ऑनलाइन शैक्षणिक सन्दर्भ

२४. गजेन्द्र ठाकुर। ‘समानान्तर इतिहास-दृष्टि’। समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय ७०; विदेह डिजिटल अनुसन्धान संस्करण, २०२६। https://videha-ejournal.github.io/mithila-vajji-anga/research-articles/parallel-philosophy/volume-1/mai/chapter-070/

२५. Gajendra Thakur. ‘The Parallel View of History: Genealogy, Archive and…’. Parallel Philosophy, Volume II, Chapter 95; Videha Research Article Edition, 2026. https://videha-ejournal.github.io/mithila-vajji-anga/research-articles/parallel-philosophy/volume-2/en/chapter-095/

२६. ‘Gaṅgeśa’. Stanford Encyclopedia of Philosophy, संशोधित २०२४। https://plato.stanford.edu/entries/gangesa/

२७. ‘Analytic Philosophy in Early Modern India’. Stanford Encyclopedia of Philosophy; नव्य-न्यायक व्याप्ति-विवेचन। https://plato.stanford.edu/entries/early-modern-india/

२८. ‘Introduction to Indian Poetics’. INFLIBNET, Indian Literary Criticism and Theory. https://ebooks.inflibnet.ac.in/engp11/chapter/introduction-to-indian-poetics/

२९. Manfred Jahn. ‘Focalization’. The Cambridge Companion to Narrative. Cambridge University Press, 2007. https://doi.org/10.1017/CCOL0521856965.007

३०. Marie-Laure Ryan. ‘Space’. The Living Handbook of Narratology, University of Hamburg. https://www-archiv.fdm.uni-hamburg.de/lhn/node/55.html

३१. ‘Narrativity’ तथा ‘Event and Eventfulness’. The Living Handbook of Narratology, University of Hamburg. https://www-archiv.fdm.uni-hamburg.de/lhn/node/27.html

३२. विदेह। ‘A Parallel History of Mithila & Maithili Literature’—समग्र सूची आ अनुसन्धान-सामग्री। https://videha-ejournal.github.io/videha/gajenthakur.htm

[ऑनलाइन सन्दर्भ १ नवम्बर २०२६ धरि जाँचल गेल।]

आलेख ०३ · आलोचना-सिद्धान्त आ समालोचनाक परिप्रेक्ष्य

रमानन्द झा ‘रमण’ : कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा

सारांश

जे आदमी एहि ग्रन्थ के गुन बुझै लायक नै छै, ओकर प्रशंसा सें हम खुश नै होब। अन्हरा सिनी के झुंड जों कोय चित्र के प्रशंसा करै, तें चित्रकार के गौरव कइसे बढ़तै?

बीजशब्द

रमानन्द झा ‘रमण’ : कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा · आलोचना-पद्धति · भारतीय काव्यशास्त्र · मैथिली समालोचना · विदेह समानान्तर दृष्टि

रमानन्द झा 'रमण' : कृतित्व आरो ओकर सीमा-रेखा — एगो संपादकीय पुनरवलोकन

रमानन्द झा 'रमण' : कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा — एकगो संपादकीय पुनरवलोकन

रमानन्द झा 'रमण' : कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा — एक संपादकीय पुनरवलोकन

जे आदमी एहि ग्रन्थ के गुन बुझै लायक नै छै, ओकर प्रशंसा सें हम खुश नै होब। अन्हरा सिनी के झुंड जों कोय चित्र के प्रशंसा करै, तें चित्रकार के गौरव कइसे बढ़तै? लोग एहि ग्रन्थ के दोष देखाबै भर आलोचना करै। ज्ञानी लोग अनजान में कैलों अपन तथ्यगत भूल दिसाय ध्यान खींचलों जाए सें निस्चय खुश होय छै। — [आत्मतत्त्वविवेक ग्रन्थ के आलोचना सम्बन्धी अन्तिम वचन — उदयनाचार्य]

जे व्यक्ति ई ग्रन्थ के गुण समझे के लायक न हय, ओकर प्रशंसा से हम प्रसन्न न होयब। अन्हरा सब के झुंड अगर कोनो चित्र के प्रशंसा करय, त चित्रकार के गौरव कोना बढ़त? लोक ई ग्रन्थ के दोष देखाबै मात्र एकर आलोचना करथिन। ज्ञानी लोक अनजान में कैल अपन तथ्यगत भूल ओर

ध्यान आकृष्ट कैल जाए से निश्चिते प्रसन्न होय हथिन। - [आत्मतत्त्वविवेक ग्रन्थ के आलोचना सम्बन्धी अन्तिम वचन - उदयनाचार्य]

जे व्यक्ति एहि ग्रन्थक गुण बुझबाक योग्य नहि, ओकर प्रशंसासँ हम प्रसन्न नहि होयब। अन्हरा सभक झुंड जँ कोनो चित्रक प्रशंसा करए, तँ चित्रकारक गौरव कोना बढ़त? लोक एहि ग्रन्थक दोष देखबैत मात्र एकर आलोचना करथि। ज्ञानी लोक अनजानमे कएल अपन तथ्यगत भूल दिस ध्यान आकृष्ट कएल जाएबासँ निश्चय प्रसन्न होइत छथि।- [आत्मतत्त्वविवेक ग्रन्थक आलोचनासम्बन्धी अन्तिम वचन- उदयनाचार्य]

एहि विशेषांक लेली आएल सतरहो रचना — परिचय वाला आलेख सें लैकें दू गो लम्बा पुस्तक-समीक्षा ('अखियासल' आरो 'हिआओल' पर), साक्षात्कार, संस्मरण आरो मूल्यांकन वाला निबन्ध तक — एक ठाम राखी कें पढ़ला के बाद एगो बात साफ होय छै : रमण जी के मैथिली साहित्य में जे स्थान छै, से बिन-विवाद छै; मतरकि एहि विशेषांक के सार्थकता तबेंही पूरा होतै जबें प्रशंसा के संग-संग ऊ सीमा भी चिन्हलों जाय, जे योगदानकर्ता सिनी अपने, आरो रमण जी के अपन आलोचना-पद्धति के भीतरे सें, बार-बार रेखांकित करैछै। नीचे वहै सब्भे सीमा के चार खण्ड में एक ठाम रखलों जाय छै — पहिलों, समालोचना-पद्धति के सीमा (मुख्य रूप सें 'अखियासल' पर आएल समीक्षा सें); दोसरका, 'हिआओल' पर आएल अध्यायवार समीक्षा सें; तेसरका, व्यक्तित्व-कृतित्व आरो संस्थागत मूल्यांकन सें जुड़लों सीमा; आरो चौथका, संपादकीय-शैली आरो पाठक के असहमति सें जुड़लों बिन्दु।

ई विशेषांक खातिर आएल सतरहो रचना — परिचयात्मक आलेख से लेके दूगो दीर्घ पुस्तक-समीक्षा ('अखियासल' आ 'हिआओल' पर), साक्षात्कार, संस्मरण आ मूल्यांकनपरक निबन्ध तक — एकठाम रखके पढ़ला बाद एकगो बात साफ होय हय : रमण जी के मैथिली साहित्य में जे स्थान हय, ओ निर्विवाद हय, मुदा ई विशेषांक के सार्थकता तबे पूरा होयत जब प्रशंसा के संगे-संग ओ सीमा भी चिन्हित होय जे खुद योगदानकर्ता सब, आ रमण जी के अपन आलोचना-पद्धति के भीतरे से, बेर-बेर रेखांकित करत रहल हथिन। नीचे ओ सब सीमा के चार खण्ड में बाँटके एकठाम रखल जा रहल हय — पहिल,

समालोचना-पद्धति के सीमा (मुख्यतः 'अखियासल' पर आएल समीक्षा से); दोसर, 'हिआओल' पर आएल अध्यायवार समीक्षा से; तेसर, व्यक्तित्व-कृतित्व आ संस्थागत मूल्यांकन से जुड़ल सीमा; आ चारिम, संपादकीय-शैलीगत आ पाठकीय असहमति से जुड़ल बिन्दु।

एहि विशेषांकक लेल आएल सतरहो रचना — परिचयात्मक आलेखसँ लऽ कऽ दूटा दीर्घ पुस्तक-समीक्षा (अखियासल आ हिआओल पर), साक्षात्कार, संस्मरण, आ मूल्यांकनपरक निबन्ध धरि — एकठाम राखि पढ़ला उत्तर एकटा बात स्पष्ट होइत अछि : रमण जीक मैथिली साहित्यमे जे स्थान अछि, से निर्विवाद अछि, मुदा एहि विशेषांकक सार्थकता तखनहि पूर्ण होएत जखन प्रशंसाक संग-संग ओ सीमा सेहो चिह्नित होअए जे स्वयं योगदानकर्ता सभ, आ रमण जीक अपने आलोचना-पद्धतिक भीतरहि सँ, बेर-बेर रेखांकित होइत रहल अछि। नीचाँ ओहि सभटा सीमाकेँ चारि खण्डमे बाँटि एकठाम राखि रहल छी — पहिल, समालोचना-पद्धतिक सीमा (मुख्यतः 'अखियासल' पर आएल समीक्षासँ); दोसर, 'हिआओल' पर आएल अध्यायवार समीक्षासँ; तेसर, व्यक्तित्व-कृतित्व आ संस्थागत मूल्यांकनसँ जुड़ल सीमा; आ चारिम, संपादकीय-शैलीगत आ पाठकीय असहमतिसँ जुड़ल बिन्दु।

पहिलों खण्ड : 'अखियासल' आरो समालोचना-पद्धति के मौलिक सीमा

पहिल खण्ड : 'अखियासल' आ समालोचना-पद्धति के मौलिक सीमा

पहिल खण्ड : 'अखियासल' आ समालोचना-पद्धतिक मौलिक सीमा

'अखियासल' (1995) पर आएल विस्तृत समीक्षा (रचना ४) एहि सतरहो में सबसें बेसी सुघरल ढाँचा वाला आरो कड़ा समीक्षा छै। एहि समीक्षा के पछिलका हिस्सा पूरा तौर पर 'अखियासल' के सीमा, कमजोरी आरो पद्धति-संकट के समर्पित छै, आरो ओहिजा आठ गो "सीमा" सिलसिलेवार गिनलों गेलै छै।

'अखियासल' (1995) पर आएल विस्तृत समीक्षा (रचना ४) ई सतरहो में सबसे बेसी संरचित आ निर्मम हय। ई समीक्षा के उत्तरार्ध पूरा तरह से

'अखियासल' के सीमा, दुर्बलता आ पद्धतिगत संकट के समर्पित हय, आ उहाँ आठगो "सीमा" क्रमबद्ध रूप से गिनल गेल हय।

'अखियासल' (1995) पर आएल विस्तृत समीक्षा (रचना ४) एहि सतरहोमेसँ सभसँ बेसी संरचित आ निर्मम अछि। एहि समीक्षाक उत्तरार्ध पूर्णतः 'अखियासल'क सीमा, दुर्बलता आ पद्धतिगत संकटकेँ समर्पित अछि, आ ओतय आठ गोट "सीमा" क्रमबद्ध रूपसँ गनल गेल अछि।

(क) पाठ बिना समीक्षा

(क) पाठ बिना समीक्षा

(क) पाठ बिना समीक्षा

सबसें गंभीर सीमा ई छै कि लगभग हरेक सुरुआती निबन्ध में समीक्षक अपने मूल रचना के 'अनुपलब्धता' मानी लैछै। 'चन्द्रप्रभा' के परसंग में अपने लिखलों गेलै छै — "चन्द्रप्रभा के अध्ययन-विश्लेषण बढ़िया ढंग सें नै होय सकलै, एकर मुख्य कारण छै अनुपलब्धता"; त्रिलोचन झा के परसंग में — "बहुत कम सामग्री उपलब्ध छै"; यदुवर के परसंग में — "यदुवर के परसंग में अखनी तक बहुत कम सोध भेलै छै"; बिसरल जनार्दन झा के परसंग में — "पत्र-पत्रिका में जे रचना छपलों होतै, अब सबके लेली सहज उपलब्ध नै छै।" एहिजा एगो गहरा विरोधाभास उभरैछै — जों मूल कृति समीक्षक के अपने नै मिललों छेलै, तें ओकर सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्यांकन कोन आधार पर सम्भव भेलै? बहुतो ठाम समीक्षा असल में दोसरका स्रोत पर — जयकान्त मिश्र के मैथिली साहित्य-इतिहास, करुणाकान्त झा के सोध-प्रबन्ध, दोसरका समीक्षक के उद्धरण पर — टिक जाय छै। पाठ-केन्द्रित समीक्षा के नजर सें ई एगो मौलिक कमजोरी छै — पाठ बिना समीक्षा।

सबसे गम्भीर सीमा ई हय कि लगभग हरेक प्रारम्भिक निबन्ध में समीक्षक खुद मूल रचना के 'अनुपलब्धता' स्वीकार करै हथिन। 'चन्द्रप्रभा' के प्रसंग में खुद लिखल गेल हय — "चन्द्रप्रभा के अध्ययन-विश्लेषण नीक से न कैल जा सकल हय, एकर प्रमुख कारण हय अनुपलब्धता"; त्रिलोचन झा के प्रसंग में — "बड़ कम सामग्री उपलब्ध हय"; यदुवर के प्रसंग में — "यदुवर के प्रसंग में

अद्यावधि बड़ कम अनुसन्धान भेल हय"; बिसरल जनार्दन झा के प्रसंग में — "पत्र-पत्रिका में जे रचना प्रकाशित भेल होयत, अब सर्वसुलभ न हय।" इहाँ एकगो गहन विरोधाभास पैदा होय हय — अगर मूल कृति समीक्षक के खुद उपलब्ध न हल, त ओकर सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन कोन आधार पर सम्भव भेल? बहुत ठाम समीक्षा असल में द्वितीयक स्रोत पर — जयकान्त मिश्र के मैथिली साहित्येतिहास, करुणाकान्त झा के शोध-प्रबन्ध, आन समीक्षक के उद्धरण पर — आश्रित हो जाय हय। पाठ-केन्द्रित समीक्षा के दृष्टि से ई एकगो मौलिक दुर्बलता हय — पाठ बिना समीक्षा।

सभसँ गम्भीर सीमा ई जे लगभग प्रत्येक प्रारम्भिक निबन्धमे समीक्षक स्वयं मूल रचनाक 'अनुपलब्धता'केँ स्वीकार करैत छथि। 'चन्द्रप्रभा'क प्रसंगमे स्वयं लिखल गेल अछि — "चन्द्रप्रभाक अध्ययन-विश्लेषण नीक जकाँ नहि कएल जा सकल अछि, एकर प्रमुख कारण थिक अनुपलब्धता"; त्रिलोचन झाक प्रसंगमे — "बड़ कम सामग्री उपलब्ध अछि"; यदुवरक प्रसंगमे — "यदुवरक प्रसंग अद्यावधि बड़ कम अनुसन्धान भेल अछि"; बिसरल जनार्दन झाक प्रसंगमे — "पत्र-पत्रिकोमे जे रचना प्रकाशित भेल होएत, आब सर्वसुलभ नहि अछि।" एतय एक गहन विरोधाभास उत्पन्न होइत अछि — जँ मूल कृति समीक्षककेँ स्वयं उपलब्ध नहि छल, तँ ओकर सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन कोन आधारपर सम्भव भेल? बहुत ठाम समीक्षा वस्तुतः द्वितीयक स्रोतपर — जयकान्त मिश्रक मैथिली साहित्येतिहास, करुणाकान्त झाक शोध-प्रबन्ध, अन्य समीक्षकक उद्धरणपर — आश्रित भऽ जाइत अछि। पाठ-केन्द्रित समीक्षाक दृष्टिसँ ई एक मौलिक दुर्बलता थिक — पाठ बिना समीक्षा।

(ख) मूल्य-मानदण्ड के अस्थिरता आरो भीतरी अन्तर्विरोध

(ख) मूल्य-मानदण्ड के अस्थिरता आ आन्तरिक अन्तर्विरोध

(ख) मूल्य-मानदण्डक अस्थिरता आ आन्तरिक अन्तर्विरोध

रमानन्द झा एगो निबन्ध में जे गुन के सबसें ऊँचा मानैछै, दोसरका में ओकरे उलटा बात के प्रशंसा करैछै। गंगानन्द सिंह, 'चन्द्रग्रहण' के नारी-पात्र, ललित आरो धीरेन्द्र के विवेचन में समसामयिक यथार्थ-बोध, परिवेश सें जुड़ाव आरो युग-जीवन के झलक के सबसें ऊँचा मूल्य मानलों गेलै छै; मतरकि व्यास के

कथा के ठीक एहि कारणें प्रशंसित कैलों गेलै कि ऊ समसामयिक जिनगी सें खास प्रभावित नै होय छै आरो बदललों युग-जीवन के बिगाड़ सें अप्रभावित रहैछै। ई सोझा आत्मविरोध छै — यथार्थ सें जुड़ाव कभी गुन, कभी ओकर अभाव गुन। ओइसने, हरिमोहन झा के हास्य के "विचार के उन्मेष नै करब" के कारणें कम मूल्य देलों गेलै, मतरकि मधुप के गीत के "तुरते हृदय-प्रभाव" आरो आनन्द के कारणें ऊँचा मूल्य देलों गेलै — जबकि गीत भी अकसर वैचारिक मन्थन पर नै, बल्कि भाव के तुरत असर पर टिकैछै। 'कोबर-गीत' जइसन अपने-सें-विरोधी, प्रयोजन सें प्रेरित रचना के "व्यक्ति सें बड़का समाज" के तर्क सें ठीक ठहरायलों गेलै, मतरकि क्षेमेन्द्र के औचित्य-विचार के नजर सें आत्मा के प्रतिकूल रचना भाव-औचित्य के मूल भंग छै — समीक्षक एहिजा सैद्धान्तिक साफगोई नै दै पाबैछै। ई अस्थिरता एहि कारणें छै कि रमानन्द झा कोय एगो घोषित सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता नै अपनाबैछै — ऊ परसंग के हिसाब सें कभी प्रभाववादी, कभी समाजशास्त्रीय, कभी जीवनीमूलक, कभी रूपवादी नजर अपनाबैछै। ई पद्धति वाला सार-संग्रहवाद एक ओर लचक दैछै, तें दोसर ओर मूल्यांकन के अनुमान सें बाहर आरो बेमेल बना दैछै।

रमानन्द झा एक निबन्ध में जे गुण के सर्वोच्च मानै हथिन, दोसर में ओकरे विपरीत के प्रशंसित करै हथिन। गंगानन्द सिंह, 'चन्द्रग्रहण' के नारी-पात्र, ललित आ धीरेन्द्र के विवेचन में समसामयिक यथार्थ-संवेदना, परिवेश-सम्पृक्ति आ युग-जीवन के प्रतिबिम्बन के सर्वोच्च मूल्य मानल गेल हय; मुदा व्यास के कथा के ठीक एही कारण से प्रशंसित कैल गेल कि ओ समसामयिक जीवन से विशेष प्रभावित न होय हय आ बदलल युग-जीवन के विकृति से अप्रभावित रहै हय। ई प्रत्यक्ष आत्मविरोध हय — यथार्थ-सम्पृक्ति कखनियो गुण, कखनियो ओकर अभाव गुण। तहिने, हरिमोहन झा के हास्य के "विचार के उन्मेष न करब" के कारण कम मूल्य देल गेल, मुदा मधुप के गीत के "तत्काल हृदय-प्रभाव" आ आनन्द के कारण ऊँच मूल्य देल गेल — जबकि गीत भी प्रायः वैचारिक मन्थन न, बल्कि भाव-तात्कालिकता पर आश्रित होय हय। 'कोबर-गीत' जइसन आत्म-विरोधी, प्रयोजन-प्रेरित रचना के "व्यक्ति से बड़ समाज" के तर्क से उचित ठहरावल गेल, मुदा क्षेमेन्द्र के औचित्य-विचार के दृष्टि से आत्मा के प्रतिकूल रचना भाव-औचित्य के मूल-भङ्ग हय — समीक्षक

इहाँ सैद्धान्तिक स्पष्टता दे न पावै हथिन। ई अस्थिरता एही कारण से हय कि रमानन्द झा कोनो एक घोषित सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता न अपनावै हथिन — ओ प्रसंग अनुसार कखनियो प्रभाववादी, कखनियो समाजशास्त्रीय, कखनियो जीवनीमूलक, कखनियो रूपवादी दृष्टि अपनावै हथिन। ई पद्धतिगत सारसंग्रहवाद एक ओर लचीलापन दे हय, त दोसर ओर मूल्याङ्कन के अप्रत्याशित आ असंगत बना दे हय।

रमानन्द झा एक निबन्धमे जाहि गुणकेँ सर्वोच्च मानैत छथि, दोसरमे ओकरे विपरीतकेँ प्रशंसित करैत छथि। गंगानन्द सिंह, 'चन्द्रग्रहण'क नारी-पात्र, ललित आ धीरेन्द्रक विवेचनमे समसामयिक यथार्थ-संवेदना, परिवेश-सम्पृक्ति आ युग-जीवनक प्रतिबिम्बनकेँ सर्वोच्च मूल्य मानल गेल अछि; किन्तु व्यासक कथाकेँ ठीक एहि कारणें प्रशंसित कएल गेल जे ओ समसामयिक जीवनसँ विशेष प्रभावित नहि होइत अछि आ परिवर्तित युग-जीवनक विकृतिसँ अप्रभावित रहैत अछि। ई प्रत्यक्ष आत्मविरोध थिक — यथार्थ-सम्पृक्ति कखनहु गुण, कखनहु ओकर अभाव गुण। तहिना, हरिमोहन झाक हास्यकेँ "विचारक उन्मेष नहि करब"क कारणें न्यून मूल्य देल गेल, किन्तु मधुपक गीतकेँ "तत्काल हृदय-प्रभाव" आ आनन्दक कारणें उच्च मूल्य देल गेल — जखन कि गीत सेहो प्रायः वैचारिक मन्थन नहि, अपितु भाव-तात्कालिकतापर आश्रित होइत अछि। 'कोबर-गीत' सन आत्म-विरोधी, प्रयोजन-प्रेरित रचनाकेँ "व्यक्तिसँ पैघ समाज"क तर्कसँ उचित ठहराओल गेल, किन्तु क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचारक दृष्टिसँ आत्माक प्रतिकूल रचना भाव-औचित्यक मूल-भङ्ग थिक — समीक्षक एतय सैद्धान्तिक स्पष्टता प्रदान नहि कऽ पबैत छथि। ई अस्थिरता एहि कारणें अछि जे रमानन्द झा कोनो एक घोषित सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता नहि अपनबैत छथि — ओ प्रसंगानुसार कखनहु प्रभाववादी, कखनहु समाजशास्त्रीय, कखनहु जीवनीमूलक, कखनहु रूपवादी दृष्टि अपनबैत छथि। ई पद्धतिगत सारसंग्रहवाद एक दिस लचीलापन दैत अछि, तँ दोसर दिस मूल्याङ्कनकेँ अप्रत्याशित आ असंगत बना दैत अछि।

(ग) सैद्धान्तिक सबदावली के अनुपस्थिति

(ग) सैद्धान्तिक शब्दावली के अनुपस्थिति

(ग) सैद्धान्तिक शब्दावलीक अनुपस्थिति

हालाँकि रमानन्द झा के समीक्षा में रस, ध्वनि, व्यञ्जना, औचित्य आदि भारतीय काव्यशास्त्र के धारणा भीतर छिपलों रूप सें मौजूद छै, तइयो ऊ एहि शास्त्रीय प्रतिमान के कहीं साफ सैद्धान्तिक औजार के रूप में परयोग नै करैछै। "व्यञ्जित", "सम्प्रेषण", "भावाश्रित" जइसन सबद तें आबैछै, मतरकि आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, कुन्तक, क्षेमेन्द्र, भट्टनायक आदि आचार्य के नाम आरो हुनकर सिद्धान्त के सिलसिलेवार परयोग नै मिलैछै। पाश्चात्य सिद्धान्त के भी कहीं नामोल्लेख चाहे सोची-विचारी के परयोग नै मिलैछै। एहिसें एगो दुहरा हालत उभरैछै — एक ओर ई सैद्धान्तिक हलकापन समीक्षा के सहज पढ़ै लायक आरो पत्रकारीय-सुलभ बनाबैछै, मतरकि दोसर ओर अकादमिक गहराई के कमी पैदा करैछै। समीक्षा वर्णन वाला आरो मूल्यांकन वाला तें छै, मतरकि सैद्धान्तिक-विश्लेषण वाला कम छै।

यद्यपि रमानन्द झा के समीक्षा में रस, ध्वनि, व्यञ्जना, औचित्य आदि भारतीय काव्यशास्त्रीय अवधारणा अन्तर्निहित रूप में मौजूद हय, तबो ओ ई शास्त्रीय प्रतिमान के कहीं सुस्पष्ट सैद्धान्तिक उपकरण के रूप में प्रयोग न करै हथिन। "व्यञ्जित", "सम्प्रेषण", "भावाश्रित" जइसन शब्द त आवै हय, मुदा आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, कुन्तक, क्षेमेन्द्र, भट्टनायक आदि आचार्य के नाम आ हुनकर सिद्धान्त के व्यवस्थित अनुप्रयोग अनुपस्थित हय। पाश्चात्य सिद्धान्त के भी कहीं नामोल्लेख अथवा सुविचारित प्रयोग न भेटै हय। एही से एकगो द्वैध स्थिति पैदा होय हय — एक ओर ई सैद्धान्तिक लाघव समीक्षा के सुपाठ्य आ पत्रकारीय-सुलभ बनावै हय, मुदा दोसर ओर अकादमिक गहनता के अभाव पैदा करै हय। समीक्षा विवरणात्मक आ मूल्याङ्कनात्मक त हय, मुदा सैद्धान्तिक-विश्लेषणात्मक कम हय।

यद्यपि रमानन्द झाक समीक्षामे रस, ध्वनि, व्यञ्जना, औचित्य आदि भारतीय काव्यशास्त्रीय अवधारणा अन्तर्निहित रूपेँ विद्यमान अछि, तथापि ओ एहि शास्त्रीय प्रतिमानकेँ कतहु सुस्पष्ट सैद्धान्तिक उपकरणक रूपमे प्रयोग नहि करैत छथि। "व्यञ्जित", "सम्प्रेषण", "भावाश्रित" सन शब्द तँ अबैत अछि, मुदा आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, कुन्तक, क्षेमेन्द्र, भट्टनायक आदि आचार्यक नाम आ हुनक सिद्धान्तक व्यवस्थित अनुप्रयोग अनुपस्थित अछि। पाश्चात्य

सिद्धान्तक सेहो कतहु नामोल्लेख अथवा सुविचारित प्रयोग नहि भेटैत अछि। एहिसँ एक द्वैध स्थिति उत्पन्न होइत अछि — एक दिस ई सैद्धान्तिक लाघव समीक्षाकेँ सुपाठ्य आ पत्रकारीय-सुलभ बनबैत अछि, मुदा दोसर दिस अकादमिक गहनताक अभाव उत्पन्न करैत अछि। समीक्षा विवरणात्मक आ मूल्याङ्कनात्मक तँ अछि, मुदा सैद्धान्तिक-विश्लेषणात्मक कम अछि।

(घ) नजरिया के संकीर्णता — पुरुष-केन्द्रिकता आरो वर्ण-केन्द्रिकता

(घ) परिप्रेक्ष्य के संकीर्णता — पुरुष-केन्द्रिकता आ वर्ण-केन्द्रिकता

(घ) परिप्रेक्ष्यक संकीर्णता — पुरुष-केन्द्रिकता आ वर्ण-केन्द्रिकता

पचीस निबन्ध में चौबीस पुरुष-रचनाकार पर छै; खाली एगो — हरिलता — स्त्री-रचनाकार पर। ओकरा में भी हरिलता के विवेचन मुख्य रूप सें वैष्णव भक्ति तक सीमित रही जाय छै, ओकर समाजी-आलोचनात्मक सम्भावना — बाल-विवाह, विधवापन आरो स्त्री-शिक्षा के मनाही के खिलाफ चोरी-छिपे अक्षर सीखै के संघर्ष — अनदेखा रही जाय छै। स्त्री अकसर पात्र चाहे प्रेरणा के रूप में मौजूद छै, अलग लेखिका, सम्पादिका आरो आलोचक के रूप में कम। ओइसने विवेचित लगभग सब रचनाकार एगो खास सामाजिक स्तर सें आबै छै — मिथिला के दलित, अति-पिछड़ा, अल्पसंख्यक आरो लोक-परम्परा के बेनाम रचनहार एहि समान्तर इतिहास सें अकसर गायब रही जाय छै।

पचीस निबन्ध में चौबीस पुरुष-रचनाकार के समर्पित हय; मात्र एक — हरिलता — स्त्री-रचनाकार के। ओहू में हरिलता के विवेचन मुख्यतः वैष्णव भक्ति तक सीमित रह जाय हय, ओकर सामाजिक-आलोचनात्मक सम्भावना — बाल-विवाह, वैधव्य आ स्त्री-शिक्षा के निषेध के विरुद्ध चोरा के अक्षर सीखे के संघर्ष — अनदेखा हो जाय हय। स्त्री अधिकतर पात्र अथवा प्रेरणा के रूप में उपस्थित हय, स्वतन्त्र लेखिका, सम्पादिका आ आलोचक के रूप में कम। ओहिने विवेचित प्रायः समस्त रचनाकार एक विशिष्ट सामाजिक स्तर से आवै हथिन — मिथिला के दलित, अतिपिछड़ा, अल्पसंख्यक आ लोक-परम्परा के अनाम रचयिता ई समान्तर इतिहास से प्रायः अनुपस्थित रह जाय हथिन।

पचीस निबन्धमे चौबीस पुरुष-रचनाकारकेँ समर्पित अछि; मात्र एक — हरिलता — स्त्री-रचनाकारकेँ। ओहूमे हरिलताक विवेचन मुख्यतः वैष्णव भक्ति

धरि सीमित रहि जाइत अछि, ओकर सामाजिक-आलोचनात्मक सम्भावना — बाल-विवाह, वैधव्य आ स्त्री-शिक्षाक निषेधक विरुद्ध चोरा कऽ अक्षर सीखबाक संघर्ष — अनदेखा भऽ जाइत अछि। स्त्री अधिकतर पात्र अथवा प्रेरणाक रूपमे उपस्थित छथि, स्वतन्त्र लेखिका, सम्पादिका आ आलोचकक रूपमे कम। ओहिना विवेचित प्रायः समस्त रचनाकार एक विशिष्ट सामाजिक स्तरसँ अबैत छथि — मिथिलाक दलित, अतिपिछड़ा, अल्पसंख्यक आ लोक-परम्पराक अनाम रचयिता एहि समान्तर इतिहाससँ प्रायः अनुपस्थित रहि जाइत छथि।

(ङ) संकलन के असंगति आरो पाठ-परमाणिकता के सवाल

(ङ) संकलनात्मक असंगति आ पाठ-प्रामाणिकता के प्रश्न

(ङ) संकलनात्मक असंगति आ पाठ-प्रामाणिकताक प्रश्न

ई पचीस निबन्ध सन् 1972 सें 1989 तक अलग-अलग पत्र-पत्रिका में, अलग-अलग मौका पर, अलग-अलग पाठक-वर्ग के ध्यान में राखी कें, स्वतंत्र रूप सें लिखलों गेलों छेलै। एकरा एक ठाम राखी कें 'ग्रन्थ' बना देला सें एगो भीतरी असंगति उभरैछै — कहीं व्यक्तित्व-प्रधान, कहीं कृति-प्रधान, कहीं विधा-प्रधान, कहीं प्रवृत्ति-प्रधान समीक्षा। कोय एके-जइसन सैद्धान्तिक ढाँचा सब निबन्ध के नै बान्हैछै, आरो एगो सिलसिलेवार बनलों ग्रन्थ में जे भूमिका, पद्धति-कथन आरो उपसंहार चाही, से एकरा में नै छै। संगही, कृति में उद्धृत पद्यांश आरो गद्यांश के पाठ-परमाणिकता भी संदेह वाला बनी जाय छै, कैलेकि समीक्षक अपने मानैछै कि बहुतो रचना पत्र-पत्रिका में छितराइलों आरो अनुपलब्ध छै; तें उद्धृत अंस के मूल पाठ सें तुलना-जाँच अकसर असम्भव छेलै। "प्रथम" आरो "मौलिक" जइसन पद लेली जे कड़ा पाठालोचन, पाण्डुलिपि-अध्ययन आरो प्रकाशन-इतिहास जरूरी छै, से एहि सुरुआती कृति में अधूरा रही जाय छै।

ई पचीस निबन्ध सन् 1972 से 1989 तक अलग-अलग पत्र-पत्रिका में, अलग-अलग अवसर पर, अलग-अलग पाठक-वर्ग के ध्यान में रखके, स्वतन्त्र रूप में लिखल गेल हल। एकरा एकठाम रखके 'ग्रन्थ' बना देला से एकगो अन्तर्निहित असंगति पैदा होय हय — कहीं व्यक्तित्व-प्रधान, कहीं कृति-प्रधान, कहीं विधा-प्रधान, कहीं प्रवृत्ति-प्रधान समीक्षा। कोनो एकसमान सैद्धान्तिक ढाँचा समस्त

निबन्ध के न बाँधै हय, आ एक सुनियोजित ग्रन्थ में जे भूमिका, पद्धति-कथन आ उपसंहार अपेक्षित होय हय, ओ ई में अनुपस्थित हय। साथे, कृति में उद्धृत पद्यांश आ गद्यांश के पाठ-प्रामाणिकता भी सन्दिग्ध रह जाय हय, काहे कि खुद समीक्षक स्वीकार करै हथिन कि बहुतो रचना पत्र-पत्रिका में छितरायल आ अनुपलब्ध हय, एही से उद्धृत अंश के मूल पाठ से तुलना-सत्यापन प्रायः असम्भव हल। "प्रथम" आ "मौलिक" जइसन पद खातिर जे कठोर पाठालोचन, पाण्डुलिपि-अध्ययन आ प्रकाशन-इतिहास जरूरी हय, ओ ई आरम्भिक कृति में अविकसित रह जाय हय।

ई पचीस निबन्ध सन् 1972 सँ 1989 धरि विभिन्न पत्र-पत्रिकामे विभिन्न अवसरपर, विभिन्न पाठक-वर्गकेँ ध्यानमे राखि, स्वतन्त्र रूपेँ लिखल गेल छल। एकरा एकठाम राखि 'ग्रन्थ' बना देलासँ एक अन्तर्निहित असंगति उत्पन्न होइत अछि — कतहु व्यक्तित्व-प्रधान, कतहु कृति-प्रधान, कतहु विधा-प्रधान, कतहु प्रवृत्ति-प्रधान समीक्षा। कोनो एकसमान सैद्धान्तिक ढाँचा समस्त निबन्धकेँ नहि बान्हैत अछि, आ एक सुनियोजित ग्रन्थमे जे भूमिका, पद्धति-कथन आ उपसंहार अपेक्षित होइत अछि, से एहिमे अनुपस्थित अछि। संगहि, कृतिमे उद्धृत पद्यांश आ गद्यांशक पाठ-प्रामाणिकता सेहो सन्दिग्ध रहि जाइत अछि, किएक तँ स्वयं समीक्षक स्वीकार करैत छथि जे बहुतो रचना पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल आ अनुपलब्ध अछि, तेँ उद्धृत अंशक मूल पाठसँ तुलना-सत्यापन प्रायः असम्भव छल। "प्रथम" आ "मौलिक" सन पद लेल जे कठोर पाठालोचन, पाण्डुलिपि-अध्ययन आ प्रकाशन-इतिहास आवश्यक अछि, से एहि आरम्भिक कृतिमे अविकसित रहि जाइत अछि।

(च) समान्तर इतिहास-प्रतिमान के अधूरा सैद्धान्तिकीकरण

(च) समान्तर इतिहास-प्रतिमान के अपूर्ण सैद्धान्तिकीकरण

(च) समान्तर इतिहास-प्रतिमानक अपूर्ण सैद्धान्तिकीकरण

आखिर में, सबसें मौलिक सीमा ई छै कि रमानन्द झा समान्तर इतिहास के धारणा के व्यवहार में तें जीबैछै, मतरकि ओकरा सिद्धान्त के रूप में साफ-साफ नै रखैछै। "दू कोटि के साहित्यकार" के सिद्धान्त एकर सबसें नजदीक छै,

मतरकि ऊ मुख्यधारा के कैनन — जयकान्त मिश्र के इतिहास — के विकल्प चाहे विरोध नै, बल्कि ओकर पूरक बनी कें रही जाय छै। समीक्षक बार-बार जयकान्त मिश्र के परमाणिक आधार मानी कें हुनकरे सूचना पर टिकैछै, जबकि समान्तर इतिहास के असली जिम्मेवारी मुख्यधारा के कैनन के आधार-मान्यता के अपने सवाल के घेरे में लाना छै।

अन्ततः, सबसे मौलिक सीमा ई हय कि रमानन्द झा समान्तर इतिहास के अवधारणा के व्यवहार में त जीयै हथिन, मुदा ओकरा सिद्धान्त के रूप में साफ-साफ प्रतिपादित न करै हथिन। "दू कोटि के साहित्यकार" के सिद्धान्त एकर सबसे नजदीक हय, मुदा ओ मुख्यधारा के कैनन — जयकान्त मिश्र के इतिहास — के विकल्प अथवा विरोध न, बल्कि ओकर पूरक बनके रह जाय हय। समीक्षक बेर-बेर जयकान्त मिश्र के प्रामाणिक आधार मानके हुनकरे सूचना पर आश्रित रहै हथिन, जबकि समान्तर इतिहास के असली दायित्व मुख्यधारा के कैनन के आधार-मान्यता के खुद प्रश्नाङ्कित करब हय।

अन्ततः, सर्वाधिक मौलिक सीमा ई जे रमानन्द झा समान्तर इतिहासक अवधारणाकेँ व्यवहारमे तँ जीबैत छथि, मुदा ओकरा सिद्धान्तक रूपमे स्पष्टतः प्रतिपादित नहि करैत छथि। "दू कोटिक साहित्यकार"क सिद्धान्त एकर सर्वाधिक निकट थिक, मुदा ओ मुख्यधाराक कैननक — जयकान्त मिश्रक इतिहासक — विकल्प अथवा विरोध नहि, अपितु ओकर पूरक बनि रहि जाइत अछि। समीक्षक बेर-बेर जयकान्त मिश्रकेँ प्रामाणिक आधार मानि हुनकहि सूचनापर आश्रित रहैत छथि, जखन कि समान्तर इतिहासक असली दायित्व मुख्यधाराक कैननक आधार-मान्यताकेँ स्वयं प्रश्नाङ्कित करब थिक।

दोसरका खण्ड : 'हिआओल' पर आएल अध्यायवार समीक्षा सें उठलों सीमा

दोसर खण्ड : 'हिआओल' पर आएल अध्यायवार समीक्षा से उठल सीमा

दोसर खण्ड : 'हिआओल' पर आएल अध्यायवार समीक्षासँ उठल सीमा

'हिआओल' (2012) पर आएल समीक्षा (रचना १६) एहि विशेषांक के सबसें लम्बा आरो पद्धति वाला रचना छै, जेमें भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आरो विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि — तीनू कसौटी पर

सतरहो अध्याय के अलग-अलग परखलों गेलै छै। एहिजा भी हरेक अध्याय के उपलब्धि के संग-संग ओकर सीमा गिनायलों गेलै छै, जेकर कुछ मुख्य बिन्दु एहिजा रखलों जाय छै।

'हिआओल' (2012) पर आएल समीक्षा (रचना १६) ई विशेषांक के सबसे दीर्घ आ पद्धतिगत रचना हय, जे में भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि — तीनो कसौटी पर सत्रहो अध्याय के अलग-अलग परखल गेल हय। इहाँ भी हरेक अध्याय के उपलब्धि के संगे-संग ओकर सीमा गिनावल गेल हय, जेकर किछु मुख्य बिन्दु इहाँ रखल जाय हय।

'हिआओल' (2012) पर आएल समीक्षा (रचना १६) एहि विशेषांकक सभसँ दीर्घ आ पद्धतिगत रचना अछि, जाहिमे भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि — तीनू कसौटीपर सत्रहो अध्यायकेँ अलग-अलग परखल गेल अछि। एतय सेहो प्रत्येक अध्यायक उपलब्धिक संग-संग ओकर सीमा गनाओल गेल अछि, जकर किछु मुख्य बिन्दु एतय राखल जाइत अछि।

मैथिली भाषा के अध्ययन सें जुड़लों सीमा

मैथिली भाषा के अध्ययन से जुड़ल सीमा

मैथिली भाषाक अध्ययनसँ जुड़ल सीमा

सुरुआती अध्याय मुख्य रूप सें पच्छिमी विद्वान — कोलब्रुक, बीम्स, हार्नले, ग्रियर्सन — के सबूत पर ठाढ़ छै; दीनबन्धु झा सें पहिलका देसज व्याकरण-चेतना अकसर अनछुआ रही गेलै। नतीजा में जे औपनिवेशिक ज्ञानमीमांसा के आलोचना निबन्ध करैछै, ओकरे स्रोत-सामग्री पर ऊ अपने टिक जाय छै — ई उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श के पुरनका जानल-पहिचानल आत्म-विरोध छै। मानक मैथिली तय करै में दोसर उपभाषा-रूप के समाजी अधिकार के सवाल — मानक कोन शक्ति-संरचना सें बनैछै — बिन-जबाब रही जाय छै।

उद्घाटक अध्याय मुख्यतः पश्चिमी विद्वान् — कोलब्रुक, बीम्स, हार्नले, ग्रियर्सन — के साक्ष्य पर ठाढ़ हय; दीनबन्धु झा से पहिने के देशी वैयाकरण-चेतना प्रायः अस्पर्शित रह गेल। फलतः जे औपनिवेशिक ज्ञान-मीमांसा के

आलोचना निबन्ध करै हय, ओकरे स्रोत-सामग्री पर ओ खुद आश्रित हो जाय हय — ई उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श के चिर-परिचित आत्म-विरोध हय। मानक मैथिली के निर्धारण में आन उपभाषा-रूप के सामाजिक अधिकार के प्रश्न — मानक कोन शक्ति-संरचना से बनै हय — अनुत्तरित रह जाय हय।

उद्घाटक अध्याय मुख्यतः पश्चिमी विद्वान् — कोलब्रुक, बीम्स, हार्नले, ग्रियर्सन — क साक्ष्यपर ठाढ़ अछि; दीनबन्धु झासँ पूर्वक देशी वैयाकरण-चेतना प्रायः अस्पर्शित रहि गेल। फलतः जाहि औपनिवेशिक ज्ञान-मीमांसाक आलोचना निबन्ध करैत अछि, तकरहि स्रोत-सामग्रीपर ओ स्वयं आश्रित भऽ जाइत अछि — ई उत्तर-औपनिवेशिक विमर्शक चिर-परिचित आत्म-विरोध थिक। मानक मैथिलीक निर्धारणमे अन्य उपभाषा-रूपक सामाजिक अधिकारक प्रश्न — मानक कोन शक्ति-संरचनासँ बनैत अछि — अनुत्तरित रहि जाइत अछि।

रमानाथ झा आरो किरणजी वाला अध्याय के सीमा

रमानाथ झा आ किरणजी सम्बन्धी अध्याय के सीमा

रमानाथ झा आ किरणजी सम्बन्धी अध्यायक सीमा

संग्रह के सबसें लम्बा अध्याय (रमानाथ झा आरो मिथिला भाषा) बनावट के नजर सें ढीला छै — प्रत्यालोचना, जीवनी, भाषा-प्राचीनता, लिपि-विमर्श, मानकीकरण आरो भाषा-प्रबन्धन — छह अलग निबन्ध के सामग्री एके छतरी में अटकायलों गेलै छै। संतुलन के घोषित परन के बादो सुर कइ ठाम आलोचनात्मक जीवन-विवेचन सें बेसी बचाव वाला श्रद्धांजलि बनी जाय छै — किरणजी के मत-खण्डन के "आवेगात्मक" कहल गेलै, मतरकि विरोधी पक्ष लेली लेखक के अपन सबदावली भी आवेग सें बिलकुल मुक्त नै छै। 'प्रत्यालोचक किरणजी' अध्याय में भी विरोधाभास देखाबै में उद्धरण के चुनाव एकतरफा छै — किरणजी के जे ठाम अपने-सुधार चाहे मत-सुधार भेलों हो, से खोजलों नै गेलै; चालीस बरिस के लेखन में मत के फरक विकास भी होय सकैछै, खाली विरोधाभास नै।

संग्रह के सबसे दीर्घ अध्याय (रमानाथ झा आ मिथिला भाषा) संरचना के दृष्टि से शिथिल हय — प्रत्यालोचना, जीवनी, भाषा-प्राचीनता, लिपि-विमर्श,

मानकीकरण आ भाषा-प्रबन्धन, छह स्वतन्त्र निबन्ध के सामग्री एके छत्र में अटकावल गेल हय। सन्तुलन के घोषित प्रतिज्ञा के बादो स्वर कतोक ठाम आलोचनात्मक जीवन-विवेचन से जादे प्रतिरक्षात्मक श्रद्धाञ्जलि बन जाय हय — किरणजी के मत-खण्डन के "आवेगात्मक" कहल गेल, मुदा विरोधी पक्ष खातिर प्रयुक्त लेखक के अपन शब्दावली भी आवेग से पूरा मुक्त न हय। 'प्रत्यालोचक किरणजी' अध्याय में भी विरोधाभास-प्रदर्शन में उद्धरण-चयन एकतरफा हय — किरणजी के जे ठाम सब में आत्म-संशोधन वा मत-परिमार्जन भेल हो, ओ खोजल न गेल; चालीस बरिस के लेखन में मत-भिन्नता विकास भी हो सकै हय, खाली विरोधाभास न।

संग्रहक सभसँ दीर्घ अध्याय (रमानाथ झा आ मिथिला भाषा) संरचनाक दृष्टिएँ शिथिल अछि — प्रत्यालोचना, जीवनी, भाषा-प्राचीनता, लिपि-विमर्श, मानकीकरण आ भाषा-प्रबन्धन, छह स्वतन्त्र निबन्धक सामग्री एकहि छत्रमे अटकाओल गेल अछि। सन्तुलनक घोषित प्रतिज्ञाक बादो स्वर कतोक स्थानपर आलोचनात्मक जीवन-विवेचनसँ अधिक प्रतिरक्षात्मक श्रद्धाञ्जलि बनि जाइत अछि — किरणजीक मत-खण्डनकेँ "आवेगात्मक" कहल गेल, मुदा विरोधी पक्ष लेल प्रयुक्त लेखकक अपन शब्दावली सेहो आवेगसँ सर्वथा मुक्त नहि। 'प्रत्यालोचक किरणजी' अध्यायमे सेहो विरोधाभास-प्रदर्शनमे उद्धरण-चयन एकतरफा अछि — किरणजीक जाहि स्थल सभमे आत्म-संशोधन वा मत-परिमार्जन भेल हो, से खोजल नहि गेल; चालीस वर्षक लेखनमे मत-भिन्नता विकास सेहो भऽ सकैत अछि, केवल विरोधाभास नहि।

'कन्यादान'-पाठ आरो यात्री-भाषा वाला अध्याय के सीमा

'कन्यादान'-पाठ आ यात्री-भाषा सम्बन्धी अध्याय के सीमा

'कन्यादान'-पाठ आ यात्री-भाषा सम्बन्धी अध्यायक सीमा

'उपेक्षित के आँखि सें कन्यादान पढ़लों जाय' — जे नारीवादी पुनर्पाठ के नजर सें संग्रह के सबसें चुनौती वाला अध्याय मानलों गेलै — ओकरा में भी सवाल के सिलसिला के बिन-जबाबी एगो सीमा छै। "एकर जिम्मेवार के?" बार-बार पूछलों गेलै, मतरकि लेखक अपन फैसला सबूत के संग नै देलकै — उपेक्षित के आँखि सें पढ़ै के जे परन छेलै, से आखिर में सवालिया मुद्रा में रुकी

गेलै। 'कन्यादान' के हास्य-रस वाला पक्ष — जे कृति के लोकप्रियता के मूल आधार छै — के रस-शास्त्र वाला जाँच नै भेलै, आरो कइ ठाम पुनर्पाठ इलजाम-पत्र बनी जाय छै। ओइसने, यात्री के भाषा वाला अध्याय में चारू शैली-विज्ञान के औजार पच्छिमी स्रोत सें आनलों गेलै छै, आरो भारतीय काव्यशास्त्र सें मेल बैठाबै खाली संकेत तक रही गेलै — कुन्तक के छह वक्रता-भेद सें चयन-विचलन के सिलसिलेवार मिलान भेलों रहितै तें पूरब-पच्छिम के सेतु पूरा बनितै; ई मौका छूटी गेलै।

'उपेक्षित के आँखि से कन्यादान पढ़ल जाय' — जे नारीवादी पुनर्पाठ के दृष्टि से संग्रह के सबसे चुनौतीपूर्ण अध्याय मानल गेल — ओहू में प्रश्न-शृंखला के अनुत्तरता एकगो सीमा हय। "एकर उत्तरदायी के?" बेर-बेर पूछल गेल, मुदा लेखक अपन निर्णय सप्रमाण न देलथिन — उपेक्षित के आँखि से पढ़े के जे प्रतिज्ञा हल, ओ अन्त में प्रश्नवाचक मुद्रा में स्थगित हो गेल। कन्यादान के हास्य-रस के पक्ष — जे कृति के लोकप्रियता के मूलाधार हय — के रस-शास्त्रीय परीक्षा न भेल, आ कतोक ठाम पुनर्पाठ अभियोग-पत्र बन जाय हय। तहिने, यात्री के भाषा सम्बन्धी अध्याय में चारो शैलीविज्ञानिक उपकरण पश्चिमी स्रोत से आनल गेल हय, आ भारतीय काव्यशास्त्र से संगति-स्थापन संकेत-मात्र रह गेल — कुन्तक के छह वक्रता-भेद से चयन-विचलन के व्यवस्थित मिलान भेल रहितय त पूर्व-पश्चिम-सेतु पूरा बनितय, ओ अवसर छूट गेल।

'उपेक्षितक आँखिसँ कन्यादान पढ़ल जाए' — जे नारीवादी पुनर्पाठक दृष्टिसँ संग्रहक सभसँ चुनौतीपूर्ण अध्याय मानल गेल — ओहूमे प्रश्न-शृंखलाक अनुत्तरता एक सीमा थिक। "एकर उत्तरदायी के?" बेर-बेर पूछल गेल, मुदा लेखक अपन निर्णय सप्रमाण नहि देलनि — उपेक्षिताक आँखिसँ पढ़बाक जे प्रतिज्ञा छल, से अन्ततः प्रश्नवाचक मुद्रामे स्थगित भऽ गेल। कन्यादानक हास्य-रसक पक्ष — जे कृतिक लोकप्रियताक मूलाधार थिक — क रस-शास्त्रीय परीक्षा नहि भेल, आ कतोक स्थानपर पुनर्पाठ अभियोग-पत्र बनि जाइत अछि। तहिना, यात्रीक भाषासम्बन्धी अध्यायमे चारू शैलीविज्ञानिक उपकरण पश्चिमी स्रोतसँ आनल गेल अछि, आ भारतीय काव्यशास्त्रसँ संगति-स्थापन

संकेत-मात्र रहि गेल — कुन्तकक छह वक्रता-भेदसँ चयन-विचलनक व्यवस्थित मिलान भेल रहितैक तँ पूर्व-पश्चिम-सेतु पूर्ण बनितैक, से अवसर छूटि गेल।

अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह आरो मनमोहन झा वाला सीमा

अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह आ मनमोहन झा सम्बन्धी सीमा

अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह आ मनमोहन झा सम्बन्धी सीमा

लक्ष्मीपति सिंह पर लिखलों अध्याय में लेखक अपने मानैछै कि छितराइलों कविता में सें "कुछे झोड़ी" सकलै — ई इमानदार मान्यता सराहै लायक छै, मतरकि एकर नतीजा ई छै कि निष्कर्ष सिनी सीमित नमूना पर ठाढ छै आरो सामान्यीकरण के वैधता संदेह वाला रहैछै। कुछ परकृति-परतीक के सोझा राजनीतिक रूपक मानलों गेलै छै, मतरकि परतीक के ई अरथ कविता के भीतरी बनावट आरो दोसर कविता के सबूत सें सब ठाम पक्का नै। मनमोहन झा वाला अध्याय संग्रह के सबसें छोटका अध्याय छै, आरो ओकर छोटकाइये ओकर मुख्य सीमा छै — "अनालोचित पक्ष" के घोषणा भेलै, मतरकि विश्लेषण कथा-सार के दरजा पर रही गेलै; निधन के दसम दिन लिखलों होय के कारणें श्रद्धांजलि के भावुक सुर आलोचना के तटस्थता पर भारी छै।

लक्ष्मीपति सिंह पर लिखल अध्याय में लेखक खुद स्वीकार करै हथिन कि छितरायल कविता में से "किछु मात्रे झोड़ि" सकलथिन — ई ईमानदार स्वीकारोक्ति प्रशंसनीय हय, मुदा एकर परिणाम ई हय कि निष्कर्ष सब सीमित नमूना पर ठाढ़ हय आ सामान्यीकरण के वैधता संदिग्ध रहै हय। कतोक प्राकृतिक प्रतीक के प्रत्यक्ष राजनीतिक रूपक मानल गेल हय, मुदा प्रतीक के ई अर्थ कविता के आन्तरिक संरचना आ आन कविता के साक्ष्य से सब ठाम पुष्ट न हय। मनमोहन झा सम्बन्धी अध्याय संग्रह के लघुतम अध्याय हय, आ एकर लघुते एकर मुख्य सीमा हय — "अनालोचित पक्ष" के घोषणा भेल, मुदा विश्लेषण कथा-सार के स्तर पर रह गेल; निधन के दसम दिन लिखल जाए के कारण श्रद्धांजलि के आर्द्र स्वर आलोचना के तटस्थता पर भारी हय।

लक्ष्मीपति सिंह पर लिखल अध्यायमे लेखक स्वयं स्वीकारैत छथि जे छिड़िआएल कवितामेसँ "किछु मात्रे झोड़ि" सकलाह — ई ईमानदार स्वीकारोक्ति प्रशंसनीय अछि, मुदा एकर परिणाम ई जे निष्कर्ष सभ सीमित नमूनापर ठाढ़ अछि आ सामान्यीकरणक वैधता संदिग्ध रहैत अछि। कतोक

प्राकृतिक प्रतीककेँ प्रत्यक्ष राजनीतिक रूपक मानल गेल अछि, मुदा प्रतीकक ई अर्थ कविताक आन्तरिक संरचना आ अन्य कविताक साक्ष्यसँ सभठाम पुष्ट नहि। मनमोहन झा सम्बन्धी अध्याय संग्रहक लघुतम अध्याय थिक, आ एकर लघुते एकर मुख्य सीमा थिक — "अनालोचित पक्ष"क घोषणा भेल, मुदा विश्लेषण कथा-सारक स्तरपर रहि गेल; निधनक दसम दिन लिखल गेलाक कारण श्रद्धांजलिक आर्द्र स्वर आलोचनाक तटस्थतापर भारी अछि।

कुल मिला कें, 'हिआओल' के समीक्षक अपने आखिर में लिखैछै — "समान्तर धारा के पूरा पद्धति ओहिजा पहुँचैछै जहाँ हाशिया के सुर अपने बोलै — 'हिआओल' में हाशिया लेली बोललों गेलै छै, हाशिया के बोलाबै कम गेलै छै।" ई एगो वाक्य पूरा संग्रह के सीमा के संछेप में समेटी दैछै।

समग्र रूप में, 'हिआओल' के समीक्षक खुद अन्त में लिखै हथिन — "समानान्तर धारा के पूर्ण पद्धति उहाँ पहुँचै हय जहाँ हाशिया के स्वर अपने बाजय — 'हिआओल' में हाशिया खातिर बाजल गेल हय, हाशिया के बजावल कम गेल हय।" ई एकगो वाक्य समस्त संग्रह के सीमा के संक्षेप में समेट दे हय।

समग्रतामे, 'हिआओल'क समीक्षक स्वयं अन्तमे लिखैत छथि — "समानान्तर धाराक पूर्ण पद्धति ओतऽ पहुँचैत अछि जतऽ हाशियाक स्वर अपने बाजए — 'हिआओल'मे हाशिया लेल बाजल गेल अछि, हाशियाकेँ बजाओल कम गेल अछि।" ई एकटा वाक्य समस्त संग्रहक सीमाकेँ संक्षेपमे समेटि दैत अछि।

तेसरका खण्ड : व्यक्तित्व-कृतित्व आरो संस्थागत मूल्यांकन सें जुड़लों सीमा

तेसर खण्ड : व्यक्तित्व-कृतित्व आ संस्थागत मूल्यांकन से जुड़ल सीमा

तेसर खण्ड : व्यक्तित्व-कृतित्व आ संस्थागत मूल्यांकनसँ जुड़ल सीमा

समर्पण आरो परिणाम के बीच के खाधि

समर्पण आ परिणाम के बीच के खाधि

समर्पण आ परिणामक बीचक खाधि

प्रवीण कुमार झा के आलेख (रचना १५) एहि विशेषांक के सबसें बेबाक सुर छै। लम्बा प्रशंसा के बाद "मतरकि मतरकि मतरकि!" कही कें ऊ साफ लिखैछै — "एगो होय छै योगदान आरो दोसरका होय छै बड़का योगदान।" चेतना समिति आरो मैथिली लेखक संघ जइसन संस्था में एतना दिन तक जरूरी पद पर, बड़ा बौद्धिक क्षमता के संग रहते भी, मैथिली के संविधान के अष्टम अनुसूची में रखै के संघर्ष में रमण जी के कोय निर्णायक भूमिका सोझे साफ नै दिखैछै; चेतना समिति जइसन संगठन में रहते भी मैथिली-शिक्षा के क्षेत्र में कोय एहन बड़का परिणाम सोझे नै दिखैछै, जेकरा हुनकर नेतृत्व के सीधा नतीजा कहल जा सकै। लेखक साफ करैछै कि सवाल समर्पण पर नै, बल्कि वहै समर्पण के नतीजा पर छै — कोय कतेक समय देलकै आरो कतेक मेहनत कैलकै, ई एगो पक्ष छै; मतरकि वहै मेहनत सें भाषा, शिक्षा, साहित्यकार आरो समाज के की ठोस उपलब्धि मिललै, ई दोसरका आरो बेसी जरूरी पक्ष छै। एहि आलेख में चेतना समिति के संग रहते पुस्तक-साहित्य के बढ़ावा आरो संस्थागत गतिविधि के लैकें रमण जी के कार्यकाल सें जुड़लों कुछ विवाद-इलजाम, आरो सरकार-सत्ता-प्रतिष्ठान के संग संघर्ष के बदला कूटनीतिक बातचीत के बेसी महत्त्व दै के आलोचना भी चर्चा में रहै के उल्लेख छै — हालाँकि लेखक अपने ई भी जोड़ैछै कि एहि इलजाम के आखिरी सच मानै सें पहिले अलग जाँच जरूरी छै।

प्रवीण कुमार झा के आलेख (रचना १५) ई विशेषांक के सबसे बेबाक स्वर हय। दीर्घ प्रशंसा के बाद "मुदा मुदा मुदा!" कहके ओ साफ लिखै हथिन — "एक होय हय योगदान आ दोसर होय हय वृहद योगदान।" चेतना समिति आ मैथिली लेखक संघ जइसन संस्था में एतना दिन तक महत्त्वपूर्ण पद पर, व्यापक बौद्धिक क्षमता के संग रहितो, मैथिली के संविधान के अष्टम अनुसूची में रखे के संघर्ष में रमण जी के कोनो निर्णायक भूमिका साफ रूप में सोझा न आवै हय; चेतना समिति जइसन संगठन में रहितो मैथिली-शिक्षा के क्षेत्र में भी कोनो एहन बड़ परिणाम सोझा न आवै हय, जेकरा हुनकर नेतृत्व के प्रत्यक्ष परिणाम कहल जा सकय। लेखक साफ करै हथिन कि प्रश्न समर्पण पर न, बल्कि ओ समर्पण के परिणाम पर हय — केओ केतना समय देलथिन आ केतना मेहनत कैलथिन, ई एकगो पक्ष हय, मुदा ओ मेहनत से भाषा, शिक्षा,

साहित्यकार आ समाज के की ठोस उपलब्धि भेटल, ई दोसर आ बेसी महत्त्वपूर्ण पक्ष हय। ई आलेख में चेतना समिति के संग रहके पुस्तक-साहित्य के संवर्धन आ संस्थागत गतिविधि के लेके रमण जी के कार्यकाल से सम्बन्धित किछु विवाद-आरोप, आ सरकार-सत्ताप्रतिष्ठान के संग संघर्ष के बदला कूटनीतिक संवाद के बेसी महत्त्व देवे के आलोचना भी चर्चा में रहल हय — यद्यपि लेखक खुद ई भी जोड़ै हथिन कि ई आरोप के अन्तिम सत्य माने से पहिने स्वतंत्र जाँच जरूरी हय।

प्रवीण कुमार झाक आलेख (रचना १५) एहि विशेषांकक सभसँ बेबाक स्वर अछि। दीर्घ प्रशंसाक बाद "मुदा मुदा मुदा!" कहि ओ स्पष्ट लिखैत छथि — "एक होइत अछि योगदान आ दोसर होइत अछि वृहद योगदान।" चेतना समिति आ मैथिली लेखक संघ जेहन संस्थामे एतेक दिन धरि महत्त्वपूर्ण पदपर, व्यापक बौद्धिक क्षमताक संग रहितहुँ, मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम अनुसूचीमे राखबाक संघर्षमे रमण जीक कोनो निर्णायक भूमिका स्पष्ट रूपेँ सोझाँ नहि अबैत अछि; चेतना समिति सन संगठनमे रहितहुँ मैथिली-शिक्षाक क्षेत्रमे सेहो कोनो एहन पैघ परिणाम सोझाँ नहि अबैत अछि, जकरा हुनकर नेतृत्वक प्रत्यक्ष परिणाम कहल जा सकय। लेखक स्पष्ट करैत छथि जे प्रश्न समर्पणपर नहि, अपितु ओहि समर्पणक परिणामपर अछि — केओ कतेक समय देलनि आ कतेक मेहनत कएलनि, ई एकटा पक्ष अछि, मुदा ओहि मेहनतसँ भाषा, शिक्षा, साहित्यकार आ समाजकेँ की ठोस उपलब्धि भेटल, ई दोसर आ बेसी महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि। एहि आलेखमे चेतना समितिक संग रहैत पुस्तक-साहित्यक संवर्धन आ संस्थागत गतिविधिकेँ लऽ कऽ रमण जीक कार्यकालसँ संबंधित किछु विवाद-आरोप, आ सरकार-सत्ताप्रतिष्ठानक संग संघर्षक बदला कूटनीतिक संवादकेँ बेसी महत्त्व देबाक आलोचना सेहो चर्चामे रहलाक उल्लेख अछि — यद्यपि लेखक स्वयं ई सेहो जोड़ैत छथि जे एहि आरोपकेँ अंतिम सत्य मानबासँ पहिने स्वतंत्र जाँच आवश्यक अछि।

मौनता के व्यंग्य

मौनता के व्यंग्य

मौनताक व्यंग्य

डा. धनाकर ठाकुर के आलेख (रचना ११) शैली में व्यंग्य-परधान छै, मतरकि ओकर भीतर एगो तेज संकेत छिपलों छै। रमण जी के चेतना समिति के "गुरु

द्रोणाचार्य" कही कें लेखक मिथिला राज्य के सवाल पर चेतना समिति — आरो तें रमण जी — के मौनता के द्रोणाचार्य के वहै परसंग सें तुलना करैछै, जहाँ गुरु आँखी मूनी के रही गेलै। "मिथिला राज्य के बात तें चेतना समिति लेली साँढ़ के लाल कपड़ा" — ई पाँति साफ कहैछै कि संस्था आरो ओकर मुख्य साहित्यिक खम्भा राजनीतिक रूप सें संवेदनशील सवाल पर चुप रहै के पहिलौती दैछै।

डा. धनाकर ठाकुर के आलेख (रचना ११) शैली में व्यंग्य-प्रधान हय, मुदा ओकर भीतर एकगो तीक्ष्ण संकेत छिपल हय। रमण जी के चेतना समिति के "गुरु द्रोणाचार्य" कहके, लेखक मिथिला राज्य के प्रश्न पर चेतना समिति — आ एही से रमण जी — के मौनता के द्रोणाचार्य के ओ प्रसंग से तुलना करै हथिन जहाँ गुरु आँखि मुनके रह गेलथिन। "मिथिला राज्य के बात त चेतना समिति खातिर सांढ़ के लाल कपड़ा" — ई पंक्ति साफ कहै हय कि संस्था आ ओकर प्रमुख साहित्यिक स्तम्भ राजनीतिक रूप से संवेदनशील प्रश्न पर मौन रहे के प्राथमिकता दे हथिन।

डा. धनाकर ठाकुरक आलेख (रचना ११) शैलीमे व्यंग्य-प्रधान अछि, मुदा ओकर भीतर एकटा तीक्ष्ण संकेत छिपल अछि। रमण जीकेँ चेतना समितिक "गुरु द्रोणाचार्य" कहि, लेखक मिथिला राज्यक प्रश्नपर चेतना समितिक — आ तेँ रमण जीक — मौनताकेँ द्रोणाचार्यक ओहि प्रसंगसँ तुलित करैत छथि जतय गुरु आँखि मुनने रहि गेला। "मिथिला राज्यक बात त चेतना समिति लेल सांढ़क लाल कपड़ा" — ई पंक्ति स्पष्ट कहैत अछि जे संस्था आ ओकर प्रमुख साहित्यिक स्तम्भ राजनीतिक रूपेँ संवेदनशील प्रश्नपर मौन रहबाकेँ प्राथमिकता दैत छथि।

निष्पक्षता के सवाल आरो पंजीकरण के अधूरापन

निष्पक्षता के प्रश्न आ पंजीकरण के अपूर्णता

निष्पक्षताक प्रश्न आ पंजीकरणक अपूर्णता

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र के आलेख (रचना १२) में उद्धृत राजलीन ठाकुर के मत साफ छै — "रमण जी हुनकर प्रिय आदमी आरो बढ़िया समीक्षक दुन्नु, मतरकि एगो दोष ई कि ऊ आन लोग के तुलना में सीमित समाज के काम के बेसी उघार करैछै, ओहिजा ऊ निष्पक्ष नै रही पाबैछै।" नबोनारायण मिश्र के

संस्मरण वाला आलेख (रचना १३) में भी साहित्यकार-पंजीकरण के जे सूची देलों गेलै, ओकरा में बाबूसाहेब चौधरी जइसन आन्दोलनकारी-नाटककार के नाम सामिल नै होय के दिसाय संकेत छै, जे रमण जी के पंजीकरण-काम के चयनात्मकता पर एगो मौन सवाल-चिन्ह छै।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र के आलेख (रचना १२) में उद्धृत राजलीन ठाकुर के मन्तव्य साफ हय — "रमण जी हुनकर प्रिय लोक आ नीक समीक्षक दुनो, मुदा एकगो दोष कि ओ आन लोक के अपेक्षा सीमित समाज के कार्य के बेसी उजागर करै हथिन, ओ ठाम ओ निरपेक्ष न रहि पावै हथिन।" नबोनारायण मिश्र के संस्मरणपरक आलेख (रचना १३) में भी साहित्यकार-पंजीकरण के जे सूची देल गेल हय, ओ में बाबूसाहेब चौधरी जइसन आन्दोलनकारी-नाटककार के नाम शामिल न होए के ओर संकेत हय, जे रमण जी के पंजीकरण-कार्य के चयनात्मकता पर एकगो मौन प्रश्नचिह्न हय।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक आलेख (रचना १२) मे उद्धृत राजलीन ठाकुरक मन्तव्य स्पष्ट अछि — "रमण जी हुनक प्रिय लोक आ नीक समीक्षक दुनू, मुदा एकटा दोष जे ओ आन लोकक अपेक्षा सीमित समाजक कार्यकेँ बेसी उजागर करैत छथि, ताहि ठाम ओ निरपेक्ष नहि रहि पबैत छथि।" नबोनारायण मिश्रक संस्मरणपरक आलेख (रचना १३) मे सेहो साहित्यकार-पंजीकरणक जे सूची देल गेल अछि, ओहिमे बाबूसाहेब चौधरी सन आन्दोलनकारी-नाटककारक नाम सम्मिलित नहि होएबाक ओर संकेत अछि, जे रमण जीक पंजीकरण-कार्यक चयनात्मकतापर एकटा मौन प्रश्नचिह्न थिक।

चौथका खण्ड : संपादकीय-शैली के सीमा आरो पाठक के असहमति

चारिम खण्ड : संपादकीय-शैलीगत सीमा आ पाठकीय असहमति

चारिम खण्ड : संपादकीय-शैलीगत सीमा आ पाठकीय असहमति

पद्धति के अनुशासनहीनता के स्वीकृति

पद्धतिगत अनुशासनहीनता के स्वीकृति

पद्धतिगत अनुशासनहीनताक स्वीकृति

कुमार राहुल के आलेख (रचना ६) एहि दिसाय सबसें सोझा छै। "हम हुनकर सीमा तें रेखांकित करी सकै छी" कही कें ऊ साफ लिखैछै कि रमण जी के समालोचना में विद्वान आलोचक कोय बान्हलों-छेकलों नियम के पालन करै नै दिखैछै, बल्कि कोय एके तत्त्व सें परभावित होय कें अपन फैसला दै दैछै। कुछ ठाम टिपाउट जइसन रमण जी कोय रचना चाहे रचनाकार पर कम सबद में काम चला लैछै आरो अपन बात बेसी लिखैछै। हडसन के ऊ मत उद्धृत करै — कि आलोचना के काम खाली कृति के ठीक-बेठीक देखब नै, बल्कि तय मानदंड स्थापित करब छै — लेखक ई मानी लैछै कि रमण जी के कइ गो आलेख एहि सैद्धान्तिक कसौटी पर पूरा नै उतरैछै।

कुमार राहुल के आलेख (रचना ६) ई दिशा में सबसे प्रत्यक्ष हय। "हम हुनकर सीमा के त रेखांकित कर सकै हिअइ" कहके ओ साफ लिखै हथिन कि रमण जी समालोचना में विद्वान आलोचक के कोनो बान्हल-छेकल नियम के पालन करै न देखाय हथिन, बल्कि कोनो एकेगो तत्त्व से प्रभावित होके अपन निर्णय दे दे हथिन। किछु ठाम टिपाउट जइसन रमण जी कोनो रचना अथवा रचनाकार पर कम शब्द में काज चला ले हथिन आ अपन बात बेसी लिखै हथिन। हडसन के ओ मत उद्धृत करै — कि आलोचना के काज मात्र कृति के उचित-अनुचित देखब न, बल्कि निश्चित मानदंड स्थापित करब हय — लेखक ई स्वीकार करै हथिन कि रमण जी के कतोक आलेख ई सैद्धान्तिक कसौटी पर पूरा न उतरै हय।

कुमार राहुलक आलेख (रचना ६) एहि दिशामे सभसँ प्रत्यक्ष अछि। "हम हुनकर सीमाकें तं रेखांकित कए सकैत छी" कहि ओ स्पष्ट लिखैत छथि जे रमण जी समालोचनामे विद्वान आलोचक कोनो बान्हल-छेकल नियमक पालन करैत नहि देखाइत छथि, बल्कि कोनो एके टा तत्त्वसँ प्रभावित भऽ अपन निर्णय दऽ दैत छथि। किछु ठाम टिपाउट जेकाँ रमण जी कोनो रचना अथवा रचनाकारपर कम शब्दमे काज चला लेल करैत छथि आ अपन बात बेसी लिखैत छथि। हडसनक ओ मत उद्धृत करैत — जे आलोचनाक काज मात्र कृतिक उचित-अनुचित देखब नहि, बल्कि निश्चित मानदंड स्थापित करब थिक — लेखक ई स्वीकार करैत छथि जे रमण जीक कतोक आलेख एहि सैद्धान्तिक कसौटीपर पूर्ण नहि उतरैत अछि।

सम्पादकीय काम के असमानता

सम्पादकीय कार्य के असमानता

सम्पादकीय कार्यक असमानता

प्रदीप बिहारी के आलेख (रचना १४) एक ठाम साफ कहैछै कि 'घर-बाहर' पत्रिका के सम्पादन में ऊ हुनर नै झलकैछै, जे रमण जी के विवेचनात्मक-सोध वाला पोथी में दिखैछै। भूमिका आरो संपादकीय लेखन में — "कोय लेखक के एहि दुन्नु लेखन में कतेक निखरल होय के चाही, से रमण जी बेसी ठाम दिखैछै, सब ठाम नै। कुछ ठाम एकभगहा भेलै छै।" एहि संग ई बात के भी उल्लेख छै कि हुनकर साहित्यिक सेवा लेली हुनका प्रशंसा जेतना होय छै, आलोचना आरो खिधांस भी ओतने होय छै; मतरकि एहिपर ऊ कतेक गंभीरता सें विचार करैछै, से हुनकर चेहरा के भाव सें बुझलों नै जा सकैछै।

प्रदीप बिहारी के आलेख (रचना १४) एक ठाम साफ कहै हय कि 'घर-बाहर' पत्रिका के सम्पादन में ओ कौशल न झलकै हय, जे रमण जी के विवेचनात्मक-अनुसंधानात्मक पोथी में देखाय हय। भूमिका आ संपादकीय लेखन में "कोनो लेखक के ई दुनो लेखन में केतना बेरायल होमक चाही, ओ रमण जी बेसी ठाम देखाय हथिन, सब ठाम न। किछु ठाम एकभगाह भेल हथिन।" संगे एहो बात के उल्लेख हय कि हुनकर साहित्यिक सेवा खातिर हुनका प्रशंसा जेतना होय हय, आलोचना आ खिधांस भी होय हय, मुदा ई पर ओ केतना गंभीरतापूर्वक विचार करै हथिन, ओ हुनकर चेहरा के भाव से बुझल न जा सकै हय।

प्रदीप बिहारीक आलेख (रचना १४) एक ठाम स्पष्ट कहैत अछि जे 'घर-बाहर' पत्रिकाक सम्पादनमे ओ कौशल नहि झलकैत अछि, जे रमण जीक विवेचनात्मक-अनुसंधानात्मक पोथीमे देखाइत अछि। भूमिका आ संपादकीय लेखनमे "कोनो लेखककेँ एहि दुनूक लेखनमे कतेक बेराएल होमक चाही, से रमण जी बेसी ठाम देखाइत छथि, सभ ठाम नहि। किछु ठाम एकभगाह भेलाह अछि।" एहि संग एहू बातक उल्लेख अछि जे हिनक साहित्यिक सेवा लेल हिनका प्रशंसा जतेक होइत छनि, आलोचना आ खिधांस सेहो होइत छनि, मुदा एहिपर ओ कतेक गंभीरतापूर्वक विचार करैत छथि, से हिनका चेहराक भावसँ बुझल नहि जा सकैछ।

तथ्यगत आरो व्याख्या वाला असहमति

तथ्यगत आ व्याख्यागत असहमति

तथ्यगत आ व्याख्यागत असहमति

कीर्तिनाथ झा के 'विवर्त'-समीक्षा (रचना १०) में एक ठाम साफ असहमति दर्ज छै — जबें रमण जी मैथिली पत्र-पत्रिका के आजादी-आन्दोलन के प्रति "पूरा संवेदनशील आरो जिम्मेवार" कहैछै, तबें समीक्षक टिप्पणी करैछै — "मतरकि, ई विचार एहि विषय पर सबके मानलों छै कि नै, कहब कठिन।" अजित कुमार झा के आलेख (रचना ५) में 'कन्यादान' पर रमण जी के पुनर्पाठ सें आरो साफ असहमति व्यक्त छै — समीक्षक के तर्क एकतरफा बुझाबैछै, आरो रमण जी के हाथें हरिमोहन झा के पाठक के जे तीन सरेनी कैलों गेलै, ओकरा में एगो चौथका वर्ग (जे रमण जी के अपन साहित्य के मिथिला-संस्कृति पर चोट बुझैछै) के चर्चा नै भेलै — "रमण जी अपन आलेख में चौथका सरेनी के चर्चा नै कैलकै छै।" हितनाथ झा के आलेख (रचना १७) में भी एगो साफ असहमति छै — रमण जी अपन बीज-भाषण संग्रह के प्रस्तावना में साहित्यिक राजनीति पर जे चोट कैलों छै, ओकरा लेली समीक्षक लिखैछै — "ई मंच छेलै आरो ई जइसन किसिम के पोथी छै, ओकरा लेली हमरा बुझै में ठीक नै... परहार सें पहिले सुधार के भी गुंजाइस होय के चाही।"

कीर्तिनाथ झा के 'विवर्त'-समीक्षा (रचना १०) में एक ठाम साफ असहमति दर्ज हय — जब रमण जी मैथिली पत्र-पत्रिका के स्वाधीनता-आन्दोलन के प्रति "पूर्ण संवेदनशील आ उत्तरदायित्वपूर्ण" कहै हथिन, तब समीक्षक टिप्पणी करै हथिन — "मुदा, ई विचार ई विषय पर सर्वसम्मत हय वा न, कहब कठिन।" अजित कुमार झा के आलेख (रचना ५) में 'कन्यादान' पर रमण जी के पुनर्पाठ से आओर साफ असहमति व्यक्त हय — समीक्षक के तर्क एकाङ्गी बुझाबै हय, आ रमण जी द्वारा हरिमोहन झा के पाठक के जे तीन श्रेणी कैल गेल, ओ में एक चतुर्थ वर्ग (जे रमण जी के अपन साहित्य के मिथिला-संस्कृति पर आघात बुझै हथिन) के चर्चा न भेल — "रमण जी अपन आलेख में चारिम श्रेणी के चर्चा न कैलथिन हय।" हितनाथ झा के आलेख (रचना १७) में भी एक साफ असहमति हय — रमण जी अपन बीज-भाषण संग्रह के प्रस्तावना में साहित्यिक राजनीति पर जे चोट कैल हथिन, ओकरा खातिर समीक्षक लिखै हथिन — "ई मंच हल

आ ई जे तरह के पोथी हय, ओ खातिर हमरा जनैत उपयुक्त न... प्रहार से पहिने सुधार के भी गुंजाइस होवे के चाही।"

कीर्तिनाथ झाक 'विवर्त'-समीक्षा (रचना १०) मे एक ठाम स्पष्ट असहमति दर्ज अछि — जखन रमण जी मैथिली पत्र-पत्रिकाकेँ स्वाधीनता-आन्दोलनक प्रति "पूर्ण संवेदनशील आ उत्तरदायित्वपूर्ण" कहैत छथि, तखन समीक्षक टिप्पणी करैत छथि — "मुदा, ई विचार एहि विषयपर सर्वसम्मत थिक वा नहि, कहब कठिन।" अजित कुमार झाक आलेख (रचना ५) मे 'कन्यादान' पर रमण जीक पुनर्पाठसँ आरो स्पष्ट असहमति व्यक्त अछि — समीक्षकक तर्क एकाङ्गी बुझबैत, आ रमण जी द्वारा हरिमोहन झाक पाठकक जे तीन श्रेणी कएल गेल, ओहिमे एक चतुर्थ वर्गक (जे रमण जीक अपन साहित्यकेँ मिथिला-संस्कृतिपर आघात बुझैत छथि) चर्चा नहि भेल — "रमण जी अपन आलेखमे चारिम श्रेणीक चर्चा नहि केलनि अछि।" हितनाथ झाक आलेख (रचना १७) मे सेहो एक स्पष्ट असहमति अछि — रमण जी अपन बीज-भाषण संग्रहक प्रस्तावनामे साहित्यिक राजनीतिपर जे चोट कएने छथि, तकरा लेल समीक्षक लिखैत छथि — "ई मंच छल आ ई जाहि तरहक पोथी अछि, ओहि लेल हमरा जनैत उपयुक्त नहि... प्रहारसँ पहिने सुधारक सेहो गुंजाइस होयबाक चाही।"

उपसंहार

उपसंहार

उपसंहार

एहि सब्भे सीमा के एक ठाम राखै के बाद एगो साझा सूत्र साफ होय छै। रमण जी के काम मात्रा के हिसाब सें बहुत बड़का, अभिलेख के नजर सें अनमोल, आरो मातृभाषा-परेम सें प्रेरित छै — एहिपर विशेषांक के कोय योगदानकर्ता सवाल नै उठाबैछै। मतरकि जबें वहै काम के सैद्धान्तिक अनुशासन, स्रोत-परमाणिकता, पूरा निष्पक्षता आरो संस्थागत नतीजा के कड़ा कसौटी पर कसलों जाय छै, तबें ऊ बहुत गुंजाइस छोड़ी दैछै — पाठ बिना समीक्षा के जोखिम, मूल्य-मानदण्ड के अस्थिरता, आत्मीयता सें उपजल प्रशंसा के अधिकता, हाशिया के कम मौजूदगी, संस्थागत चुप्पी, आरो चुनिंदा

निष्पक्षता — ई सब्भे बिन्दु आगू के सोध के नेवता छै, सजा नै। 'हिआओल' के समीक्षक अपने जे कहलकै, से पूरा विशेषांक पर भी लागू होय छै — "एकर खूबी ओहिजा छै जहाँ लेखक अभिलेख खोजैछै, चलन वाला भूल सुधारैछै, बिसरल लेखक के फेर हाजिर करैछै... एकर सीमा ओहिजा छै जहाँ अनुमान परमाण के जगह लैछै, जीवनी कृति के विश्लेषण पर भारी पड़ैछै।" रमण जी के अपने सबद में कही तें — "वादे वादे जायते तत्त्वबोधः" — एहि विवाद आरो परतिवाद सें उपजैवाला तत्त्व-बोधे एहि विशेषांक के असल उपलब्धि छै।

ई सब सीमा के एकठाम रखला बाद एकगो साझा सूत्र साफ होय हय। रमण जी के कार्य मात्रात्मक रूप से विपुल, अभिलेखीय दृष्टि से अमूल्य, आ मातृभाषा-प्रेम से प्रेरित हय — ई पर विशेषांक के कोनो योगदानकर्ता प्रश्न न उठावै हथिन। मुदा जब ओ कार्य के सैद्धान्तिक अनुशासन, स्रोत-प्रामाणिकता, पूर्ण निष्पक्षता आ संस्थागत परिणाम के कठोर कसौटी पर कसल जाय हय, तब ओ पर्याप्त गुंजाइस छोड़ दे हय — पाठ बिना समीक्षा के जोखिम, मूल्य-मानदण्ड के अस्थिरता, आत्मीयता-जनित प्रशंसा के अतिरेक, हाशिया के अल्प उपस्थिति, संस्थागत मौनता आ चयनात्मक निष्पक्षता — ई सब बिन्दु आगामी अनुसन्धान के निमन्त्रण हय, दण्ड न। 'हिआओल' के समीक्षक खुद जे कहलथिन, ओ ई समस्त विशेषांक पर भी लागू होय हय — "एकर श्रेष्ठता उहाँ हय जहाँ लेखक अभिलेख खोजै हथिन, प्रचलित भूल सुधारै हथिन, विस्मृत लेखक के फेर उपस्थित करै हथिन... एकर सीमा उहाँ हय जहाँ अनुमान प्रमाण के स्थान ले हय, जीवनी कृति के विश्लेषण पर भारी पड़ै हय।" रमण जी के अपने शब्द में कही त — "वादे वादे जायते तत्त्वबोधः" — ई विवाद आ प्रतिवाद से होए वाला तत्त्व-बोधे ई विशेषांक के असली उपलब्धि हय।

एहि सभटा सीमाकेँ एकठाम राखला उत्तर एकटा साझा सूत्र स्पष्ट होइत अछि। रमण जीक कार्य मात्रात्मक रूपेँ विपुल, अभिलेखीय दृष्टिसँ अमूल्य, आ मातृभाषा-प्रेमसँ प्रेरित अछि — एहिपर विशेषांकक कोनो योगदानकर्ता प्रश्न नहि उठबैत छथि। मुदा जखन ओहि कार्यकेँ सैद्धान्तिक अनुशासन, स्रोत-प्रामाणिकता, पूर्ण निष्पक्षता आ संस्थागत परिणामक कठोर कसौटीपर कसल जाइत अछि, तखन ओ पर्याप्त गुंजाइश छोड़ि दैत अछि — पाठ बिना

समीक्षाक जोखिम, मूल्य-मानदण्डक अस्थिरता, आत्मीयता-जनित प्रशंसाक अतिरेक, हाशियाक अल्प उपस्थिति, संस्थागत मौनता, आ चयनात्मक निष्पक्षता — ई सभटा बिन्दु आगामी अनुसन्धानक निमन्त्रण थिक, दण्ड नहि। 'हिआओल'क समीक्षक स्वयं जे कहलनि, से एहि समस्त विशेषांकपर सेहो लागू होइत अछि — "एकर श्रेष्ठता ओतए अछि जतए लेखक अभिलेख खोजैत छथि, प्रचलित भूल सुधारैत छथि, विस्मृत लेखककेँ पुनः उपस्थित करैत छथि... एकर सीमा ओतए अछि जतए अनुमान प्रमाणक स्थान लैत अछि, जीवनी कृतिक विश्लेषणपर भारी पड़ैत अछि।" रमण जीक अपने शब्दमे कही तँ — "वादे वादे जायते तत्त्वबोधः" — एहि विवाद आ प्रतिवादसँ होइत तत्त्व-बोधे एहि विशेषांकक असली उपलब्धि थिक।

रमानन्द झा 'रमण' : कृतित्व के सीमा-रेखा पर एगो संपादकीय नजर

रमानन्द झा 'रमण' : कृतित्व के सीमा-रेखा पर एकगो संपादकीय दृष्टि

रमानन्द झा 'रमण' : कृतित्वक सीमा-रेखा पर एक संपादकीय दृष्टि

रमण जी के मैथिली साहित्य में जे स्थान छै, से एहि सतरहो रचना सें बिन-विवाद बुझाय पड़ैछै — मतरकि एहि विशेषांक के सार्थकता तबेंही पूरा होतै जबें प्रशंसा के संग-संग ऊ सीमा भी चिन्हलों जाय, जे योगदानकर्ता सिनी (आरो रमण जी के अपन आलोचना-पद्धति) रेखांकित करैछै।

रमण जी के मैथिली साहित्य में जे स्थान हय, ओ ई सतरहो रचना से निर्विवाद बुझाय हय — मुदा ई विशेषांक के सार्थकता तबे पूरा होयत जब प्रशंसा के संगे-संग ओ सीमा भी चिन्हित होय जे खुद योगदानकर्ता सब (आ रमण जी के अपन आलोचना-पद्धति) रेखांकित करै हथिन।

रमण जीक मैथिली साहित्यमे जे स्थान अछि, से एहि सतरहो रचनासँ निर्विवाद बूझि पड़ैत अछि — मुदा एहि विशेषांकक सार्थकता तखनहि पूर्ण होएत जखन प्रशंसाक संग-संग ओ सीमा सेहो चिह्नित होअए जे स्वयं योगदानकर्ता सभ (आ रमण जीक अपन आलोचना-पद्धति) रेखांकित करैत अछि।

१. आलोचना-पद्धति के सबसें मौलिक सीमा — पाठ बिना समीक्षा

१. आलोचना-पद्धति के सबसे मौलिक सीमा — पाठ बिना समीक्षा

१. आलोचना-पद्धतिक सबसँ मौलिक सीमा — पाठ बिना समीक्षा

'अखियासल' पर आएल विस्तृत समीक्षा में (रचना ४) ई तथ्य साफ उघरल छै कि रमण जी अकसर जे रचना के आलोचित करैछै, ओकर मूल पाठ हुनका लग उपलब्धे नै रहैछै — 'चन्द्रप्रभा', त्रिलोचन झा, यदुवर, बिसरल जनार्दन झा — सब ठाम समीक्षक अपने 'अनुपलब्धता' मानी लैछै। जबें मूल कृतिए समीक्षक के मिललै नै, तें ओकर सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्यांकन कोन आधार पर सम्भव, ई सवाल बिन-जबाब रही जाय छै। बहुतो ठाम समीक्षा जयकान्त मिश्र के इतिहास चाहे दोसरका द्वितीयक स्रोत पर टिक जाय छै।

'अखियासल' पर आएल विस्तृत समीक्षा में (रचना ४) ई तथ्य साफ उजागर भेल हय कि रमण जी प्रायः जे रचना के आलोचित करै हथिन, ओकर मूल पाठ हुनका लग उपलब्धे न रहै हय — 'चन्द्रप्रभा', त्रिलोचन झा, यदुवर, बिसरल जनार्दन झा — सब ठाम समीक्षक खुद 'अनुपलब्धता' स्वीकार करै हथिन। जब मूल कृतिए समीक्षक के भेटले न, त ओकर सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन कोन आधार पर सम्भव, ई प्रश्न अनुत्तरित रह जाय हय। बहुतो ठाम समीक्षा जयकान्त मिश्र के इतिहास वा आन द्वितीयक स्रोत पर आश्रित हो जाय हय।

'अखियासल' पर आएल विस्तृत समीक्षामे (रचना ४) ई तथ्य साफ उजागर भेल अछि जे रमण जी प्रायः जाहि रचनाकेँ आलोचित करैत छथि, ओकर मूल पाठ हुनका लग उपलब्धे नहि रहैत छनि — 'चन्द्रप्रभा', त्रिलोचन झा, यदुवर, बिसरल जनार्दन झा — सभठाम समीक्षक स्वयं 'अनुपलब्धता' स्वीकारैत छथि। जखन मूल कृतिए समीक्षककेँ भेटले नहि, तँ ओकर सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन कोन आधार पर सम्भव, ई प्रश्न अनुत्तरित रहि जाइत अछि। बहुतो ठाम समीक्षा जयकान्त मिश्रक इतिहास वा अन्य द्वितीयक स्रोत पर आश्रित भऽ जाइत अछि।

२. मूल्य-मानदण्ड के अस्थिरता

२. मूल्य-मानदण्ड के अस्थिरता

२. मूल्य-मानदण्डक अस्थिरता

एहि दुन्नु पोथी के समीक्षा में (रचना ४ आरो १६) बार-बार देखायलों गेलै छै कि रमण जी एगो निबन्ध में जे गुन के सबसें ऊँचा मानैछै, दोसरका में ओकरे उलटा बात के प्रशंसा करैछै — जइसन गंगानन्द सिंह, 'चन्द्रग्रहण' आदि में समसामयिक यथार्थ सें जुड़ाव के गुन मानब, मतरकि व्यास के कथा के ठीक ओही कारणें प्रशंसा करब कि ऊ समसामयिक यथार्थ सें अप्रभावित रहलों। एहि तरह के आत्मविरोध देखाबैछै कि कोय एगो घोषित सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता नै छै — समीक्षा कभी प्रभाववादी, कभी समाजशास्त्रीय, कभी जीवनीमूलक होय जाय छै।

ई दुनो पोथी के समीक्षा में (रचना ४ आ १६) बेर-बेर देखावल गेल हय कि रमण जी एक निबन्ध में जे गुण के सर्वोच्च मानै हथिन, दोसर में ओकरे विपरीत के प्रशंसित करै हथिन — जइसन गंगानन्द सिंह, चन्द्रग्रहण आदि में समसामयिक यथार्थ-सम्पृक्ति के गुण मानब, मुदा व्यास के कथा के ठीक ओही कारण से प्रशंसा करब कि ओ समसामयिक यथार्थ से अप्रभावित रहल। ई तरह के आत्मविरोध देखाबै हय कि कोनो एकगो घोषित सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता न हय — समीक्षा कखनियो प्रभाववादी, कखनियो समाजशास्त्रीय, कखनियो जीवनीमूलक हो जाय हय।

एहि दुनू पोथीक समीक्षामे (रचना ४ आ १६) बेर-बेर देखाओल गेल अछि जे रमण जी एक निबन्धमे जाहि गुणकेँ सर्वोच्च मानैत छथि, दोसरमे ओकरे विपरीतकेँ प्रशंसित करैत छथि — जेना गंगानन्द सिंह, चन्द्रग्रहण आदिमे समसामयिक यथार्थ-सम्पृक्तिकेँ गुण मानब, मुदा व्यासक कथाकेँ ठीक ओही कारणें प्रशंसा करब जे ओ समसामयिक यथार्थसँ अप्रभावित रहल। एहि तरहक आत्मविरोध ई देखबैत अछि जे कोनो एकटा घोषित सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता नहि अछि — समीक्षा कखनहु प्रभाववादी, कखनहु समाजशास्त्रीय, कखनहु जीवनीमूलक भऽ जाइत अछि।

३. आत्मीयता आरो आलोचनात्मक दूरी के अभाव

३. आत्मीयता आ आलोचनात्मक दूरी के अभाव

३. आत्मीयता आ आलोचनात्मक दूरीक अभाव

लक्ष्मीपति सिंह, मोहन, राजेश्वर झा जइसन अध्याय में व्यक्तिगत स्नेह समीक्षा के संस्मरणात्मक श्रद्धांजलि के रूप दै दैछै, जेसें वस्तुनिष्ठता पर असर पड़ैछै। एकर ठीक उलटा हरिमोहन झा पर जे आलोचनात्मक साहस देखायलों गेलै, से पूरा संग्रह में एके जइसन नै छै।

लक्ष्मीपति सिंह, मोहन, राजेश्वर झा जइसन अध्याय में व्यक्तिगत स्नेह समीक्षा के संस्मरणात्मक श्रद्धांजलि के रूप दे दे हय, जे से वस्तुनिष्ठता प्रभावित होय हय। एकर ठीक उलट हरिमोहन झा पर जे आलोचनात्मक साहस देखावल गेल, ओ समस्त संग्रह में समान रूप से न हय।

लक्ष्मीपति सिंह, मोहन, राजेश्वर झा सन अध्यायमे व्यक्तिगत स्नेह समीक्षाकेँ संस्मरणात्मक श्रद्धांजलिक रूप दऽ दैत अछि, जाहिसँ वस्तुनिष्ठता प्रभावित होइत अछि। एकर ठीक उलट हरिमोहन झा पर जे आलोचनात्मक साहस देखाओल गेल, से समस्त संग्रहमे समान रूपेँ नहि अछि।

४. सैद्धान्तिक सबदावली के अनुपस्थिति

४. सैद्धान्तिक शब्दावली के अनुपस्थिति

४. सैद्धान्तिक शब्दावलीक अनुपस्थिति

रस, ध्वनि, व्यञ्जना आदि भारतीय काव्यशास्त्रीय तत्त्व भीतर छिपलों रूप सें तें छै, मतरकि आनन्दवर्धन, कुन्तक, क्षेमेन्द्र आदि के सिलसिलेवार सैद्धान्तिक परयोग नै मिलैछै। पाश्चात्य सिद्धान्त के भी सोची-विचारी के परयोग नै छै। ई समीक्षा के सहज पढ़ै लायक तें बनाबैछै, मतरकि अकादमिक गहराई के कमी पैदा करैछै।

रस, ध्वनि, व्यञ्जना आदि भारतीय काव्यशास्त्रीय तत्त्व अन्तर्निहित रूप में त हय, मुदा आनन्दवर्धन, कुन्तक, क्षेमेन्द्र आदि के व्यवस्थित सैद्धान्तिक प्रयोग न भेटै हय। पाश्चात्य सिद्धान्त के भी सुविचारित प्रयोग न हय। ई समीक्षा के सुपाठ्य त बनावै हय, मुदा अकादमिक गहनता के अभाव पैदा करै हय।

रस, ध्वनि, व्यञ्जना आदि भारतीय काव्यशास्त्रीय तत्त्व अन्तर्निहित रूपेँ तँ अछि, मुदा आनन्दवर्धन, कुन्तक, क्षेमेन्द्र आदिक व्यवस्थित सैद्धान्तिक प्रयोग नहि भेटैत अछि। पाश्चात्य सिद्धान्तक सेहो सुविचारित प्रयोग नहि। ई

समीक्षाकेँ सुपाठ्य तँ बनबैत अछि, मुदा अकादमिक गहनताक अभाव उत्पन्न करैत अछि।

५. नजरिया के संकीर्णता — स्त्री आरो हाशिया के कम उपस्थिति

५. परिप्रेक्ष्य के संकीर्णता — स्त्री आ हाशिया के अल्प उपस्थिति

५. परिप्रेक्ष्यक संकीर्णता — स्त्री आ हाशियाक अल्प उपस्थिति

'अखियासल' के पचीस में चौबीस पुरुष-रचनाकार, खाली एगो स्त्री (हरिलता) — ओकरा में भी विवेचन वैष्णव भक्ति तक सीमित। मिथिला के दलित, अति-पिछड़ा आरो मौखिक-परम्परा के बेनाम रचनहार एहि समान्तर इतिहास सें अकसर गायब रही जाय छै। कुमार राहुल के आलेख (रचना ६) में भी ई कहल गेलै कि रमण जी कोय बान्हलों सैद्धान्तिक नियम के पालन करै नै दिखैछै, बल्कि एके तत्त्व सें परभावित होय कें अपन फैसला दै दैछै, आरो कुछ ठाम टिपाउट जइसन कम सबद में रचनाकार के काम चला लैछै आरो अपन बात बेसी लिखैछै।

'अखियासल' के पचीस में चौबीस पुरुष-रचनाकार, मात्र एक स्त्री (हरिलता) — ओहू में विवेचन वैष्णव भक्ति तक सीमित। मिथिला के दलित, अतिपिछड़ा आ मौखिक-परम्परा के अनाम रचयिता ई समान्तर इतिहास से प्रायः अनुपस्थित रह जाय हथिन। कुमार राहुल के आलेख (रचना ६) में भी ई कहल गेल कि रमण जी कोनो बान्हल सैद्धान्तिक नियम के पालन करै न देखाय हथिन, बल्कि एके तत्त्व से प्रभावित होके अपन निर्णय दे दे हथिन, आ किछु ठाम टिपाउट जइसन कम शब्द में रचनाकार के काज चला ले हथिन आ अपन बात बेसी लिख दे हथिन।

'अखियासल'क पचीसमे चौबीस पुरुष-रचनाकार, मात्र एक स्त्री (हरिलता) — ओहूमे विवेचन वैष्णव भक्ति धरि सीमित। मिथिलाक दलित, अतिपिछड़ा आ मौखिक-परम्पराक अनाम रचयिता एहि समान्तर इतिहाससँ प्रायः अनुपस्थित रहि जाइत छथि। कुमार राहुलक आलेख (रचना ६) मे सेहो ई कहल गेल जे रमण जी कोनो बान्हल सैद्धान्तिक नियमक पालन करैत नहि देखाइत छथि, बल्कि एकहि तत्त्वसँ प्रभावित भऽ अपन निर्णय दऽ दैत छथि, आ किछु ठाम

टिपाउट जेकाँ कम शब्दमे रचनाकारक काज चला लैत छथि आ अपन बात बेसी लीखि दैत छथि।

६. संकलन के असंगति

६. संकलनात्मक असंगति

६. संकलनात्मक असंगति

पचीसो निबन्ध अलग-अलग समय में, अलग-अलग पत्रिका लेली स्वतंत्र रूप सें लिखलों गेलों छेलै — एक ठाम राखी कें 'ग्रन्थ' बना देला सें कोय एके-जइसन सैद्धान्तिक ढाँचा नै बचल। भूमिका, पद्धति-कथन आरो उपसंहार के अभाव एहि जोड़ा-जाड़ी परकृति के उघारी दैछै — ई बात 'हिआओल' पर भी लागू होय छै, जहाँ एक-एक अध्याय के विस्तार, पद्धति आरो गहराई असमान छै।

पचीसो निबन्ध अलग-अलग काल में, अलग-अलग पत्रिका खातिर स्वतंत्र रूप में लिखल गेल हल — एकठाम रखके 'ग्रन्थ' बना देला से कोनो एकसमान सैद्धान्तिक ढाँचा न बचल। भूमिका, पद्धति-कथन आ उपसंहार के अभाव ई जोड़ा-जाड़ी प्रकृति के उघार दे हय — ई बात 'हिआओल' पर भी लागू होय हय, जहाँ एक-एक अध्याय के विस्तार, पद्धति आ गहराई असमान हय।

पचीसो निबन्ध विभिन्न कालमे, विभिन्न पत्रिकाक लेल स्वतंत्र रूपेँ लिखल गेल छल — एकठाम राखि 'ग्रन्थ' बना देलासँ कोनो एकसमान सैद्धान्तिक ढाँचा नहि बचल। भूमिका, पद्धति-कथन आ उपसंहारक अभाव एहि जोड़ा-जाड़ी प्रकृतिकेँ उघारि दैत अछि — ई बात 'हिआओल' पर सेहो लागू होइत अछि, जतय एक-एक अध्यायक विस्तार, पद्धति आ गहराइ असमान अछि।

७. व्यक्तिगत समर्पण आरो संस्थागत परिणाम के बीच के खाधि

७. व्यक्तिगत समर्पण आ संस्थागत परिणाम के बीच के खाधि

७. व्यक्तिगत समर्पण आ संस्थागत परिणामक बीचक खाधि

प्रवीण कुमार झा के आलेख (रचना १५) एहि विशेषांक के सबसें बेबाक सुर छै। "मतरकि मतरकि मतरकि!" कही कें ऊ साफ लिखैछै कि चेतना समिति

आरो मैथिली लेखक संघ जइसन संस्था में एतना दिन तक जरूरी पद पर रहते भी, मैथिली के संविधान के अष्टम अनुसूची में रखै के संघर्ष में आरो मैथिली-शिक्षा के क्षेत्र में रमण जी के कोय निर्णायक, ठोस नतीजा साफ-साफ सोझे नै दिखैछै — सवाल समर्पण पर नै, नतीजा पर छै। एहि आलेख में चेतना समिति के कार्यकाल सें जुड़लों कुछ विवाद-इलजाम आरो सत्ता-प्रतिष्ठान के संग कूटनीतिक सम्बन्ध के पहिलौती दै के आलोचना भी चर्चा में रहै के उल्लेख छै। डा. धनाकर ठाकुर के व्यंग्य-परधान आलेख (रचना ११) एहि दिसाय के आरो तेज करै, मिथिला राज्य के सवाल पर रमण जी आरो चेतना समिति के मौनता के द्रोणाचार्य के 'आँखी मूनी के रहब' सें तुलना करैछै।

प्रवीण कुमार झा के आलेख (रचना १५) ई विशेषांक के सबसे बेबाक स्वर हय। "मुदा मुदा मुदा!" कहके ओ साफ लिखै हथिन कि चेतना समिति आ मैथिली लेखक संघ जइसन संस्था में एतना दिन तक महत्त्वपूर्ण पद पर रहितो मैथिली के संविधान के अष्टम अनुसूची में रखे के संघर्ष में, मैथिली-शिक्षा के क्षेत्र में रमण जी के कोनो निर्णायक, ठोस परिणाम साफ रूप में सोझा न आवै हय — समर्पण पर प्रश्न न, परिणाम पर प्रश्न। ई आलेख में चेतना समिति के कार्यकाल से जुड़ल किछु विवाद-आरोप आ सत्ता-प्रतिष्ठान के संग कूटनीतिक सम्बन्ध के प्राथमिकता देवे के आलोचना भी चर्चा में रहल हय। डा. धनाकर ठाकुर के व्यंग्य-प्रधान आलेख (रचना ११) ई दिशा के आओर तीक्ष्ण करै मिथिला राज्य के प्रश्न पर रमण जी आ चेतना समिति के मौनता के द्रोणाचार्य के 'आँखि मुनके रहब' से तुलना करै हय।

प्रवीण कुमार झाक आलेख (रचना १५) एहि विशेषांकक सभसँ बेबाक स्वर अछि। "मुदा मुदा मुदा!" कहि ओ स्पष्ट लिखैत छथि जे चेतना समिति आ मैथिली लेखक संघ जेहन संस्थामे एतेक दिन धरि महत्त्वपूर्ण पदपर रहितहुँ मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम अनुसूचीमे राखबाक संघर्षमे, मैथिली-शिक्षाक क्षेत्रमे रमण जीक कोनो निर्णायक, ठोस परिणाम स्पष्ट रूपेँ सोझाँ नहि अबैत अछि — समर्पण पर प्रश्न नहि, परिणाम पर प्रश्न। एहि आलेखमे चेतना समितिक कार्यकालसँ जुड़ल किछु विवाद-आरोप आ सत्ता-प्रतिष्ठानक संग कूटनीतिक सम्बन्धकेँ प्राथमिकता देबाक आलोचना सेहो चर्चामे रहलाक उल्लेख अछि। डा. धनाकर ठाकुरक व्यंग्य-प्रधान आलेख (रचना ११) एहि

दिशाकेँ आरो तीक्ष्ण करैत मिथिला राज्यक प्रश्न पर रमण जी आ चेतना समितिक मौनताकेँ द्रोणाचार्यक 'आँखि मुनने रहब' सँ तुलना करैत अछि।

८. निष्पक्षता के सवाल

८. निष्पक्षता के प्रश्न

८. निष्पक्षताक प्रश्न

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र के आलेख (रचना १२) में उद्धृत राजलीन ठाकुर के मत साफ छै — "रमण जी हुनकर प्रिय आदमी आरो बढ़िया समीक्षक दुन्नु, मतरकि एगो दोष ई कि ऊ आन लोग के तुलना में सीमित समाज के काम के बेसी उघार करैछै, ओहिजा ऊ निष्पक्ष नै रही पाबैछै।" नबोनारायण मिश्र के आलेख (रचना १३) में भी साहित्यकार-पंजीकरण के सूची सें बाबूसाहेब चौधरी जइसन आन्दोलनकारी-नाटककार के अनुपस्थिति दिसाय संकेत छै।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र के आलेख (रचना १२) में उद्धृत राजलीन ठाकुर के मन्तव्य साफ हय — "रमण जी हुनकर प्रिय लोक आ नीक समीक्षक दुनो, मुदा एकगो दोष कि ओ आन लोक के अपेक्षा सीमित समाज के कार्य के बेसी उजागर करै हथिन, ओ ठाम ओ निरपेक्ष न रहि पावै हथिन।" नबोनारायण मिश्र के आलेख (रचना १३) में भी साहित्यकार-पंजीकरण के सूची से बाबूसाहेब चौधरी जइसन आन्दोलनकारी-नाटककार के अनुपस्थिति के ओर संकेत हय।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक आलेख (रचना १२) मे उद्धृत राजलीन ठाकुरक मन्तव्य स्पष्ट अछि — "रमण जी हुनक प्रिय लोक आ नीक समीक्षक दुनू, मुदा एकटा दोष जे ओ आन लोकक अपेक्षा सीमित समाजक कार्यकेँ बेसी उजागर करैत छथि, ताहि ठाम ओ निरपेक्ष नहि रहि पबैत छथि।" नबोनारायण मिश्रक आलेख (रचना १३) मे सेहो साहित्यकार-पंजीकरणक सूचीसँ बाबूसाहेब चौधरी सन आन्दोलनकारी-नाटककारक अनुपस्थितिक ओर संकेत अछि।

९. संपादकीय काम के असमानता

९. संपादकीय काज के असमानता

९. संपादकीय काजक असमानता

प्रदीप बिहारी के आलेख (रचना १४) एक ठाम साफ कहैछै कि 'घर-बाहर' पत्रिका के सम्पादन में ऊ हुनर नै झलकैछै, जे विवेचनात्मक-सोध वाला पोथी में दिखैछै — भूमिका आरो संपादकीय लेखन में जेतना वैचारिक तेजी चाही, से सब ठाम एके जइसन नै। कीर्तिनाथ झा के 'विवर्त'-समीक्षा (रचना १०) में भी एक ठाम असहमति दर्ज छै — "ई विचार सबके मानलों छै कि नै, कहब कठिन" — जबें रमण जी मैथिली पत्र-पत्रिका के आजादी-आन्दोलन के प्रति "पूरा संवेदनशील आरो जिम्मेवार" कहैछै।

प्रदीप बिहारी के आलेख (रचना १४) एक ठाम साफ कहै हय कि 'घर-बाहर' पत्रिका के सम्पादन में ओ कौशल न झलकै हय जे विवेचनात्मक-अनुसंधानात्मक पोथी में देखाय हय — भूमिका आ संपादकीय लेखन में जेतना वैचारिक त्वरा चाही, ओ सब ठाम समान न। कीर्तिनाथ झा के 'विवर्त'-समीक्षा (रचना १०) में भी एक ठाम असहमति दर्ज हय — "ई विचार सर्वसम्मत हय वा न, कहब कठिन" — जब रमण जी मैथिली पत्र-पत्रिका के स्वाधीनता-आन्दोलन के प्रति "पूर्ण संवेदनशील आ उत्तरदायित्वपूर्ण" कहै हथिन।

प्रदीप बिहारीक आलेख (रचना १४) एक ठाम स्पष्ट कहैत अछि जे 'घर-बाहर' पत्रिकाक सम्पादनमे ओ कौशल नहि झलकैत जे विवेचनात्मक-अनुसंधानात्मक पोथीमे देखाइत अछि — भूमिका आ संपादकीय लेखनमे जतेक वैचारिक त्वरा चाही, से सभठाम समान नहि। कीर्तिनाथ झाक 'विवर्त'-समीक्षा (रचना १०) मे सेहो एक ठाम असहमति दर्ज अछि — "ई विचार सर्वसम्मत थिक वा नहि, कहब कठिन" — जखन रमण जी मैथिली पत्र-पत्रिकाकेँ स्वाधीनता-आन्दोलनक प्रति "पूर्ण संवेदनशील आ उत्तरदायित्वपूर्ण" कहैत छथि।

१०. पाठक के असहमति

१०. पाठकीय असहमति

१०. पाठकीय असहमति

अजित कुमार झा के आलेख (रचना ५) में 'कन्यादान' पर रमण जी के पुनर्पाठ सें साफ असहमति व्यक्त छै — समीक्षक के तर्क एकतरफा बुझाबैछै,

आरो रमण जी के हाथें हरिमोहन झा के पाठक के जे तीन सरेनी कैलों गेलै, ओकरा में एगो चौथका वर्ग (जे रमण जी के अपन साहित्य के मिथिला-संस्कृति पर चोट बुझैछै) के चर्चा नै भेलै।

अजित कुमार झा के आलेख (रचना ५) में 'कन्यादान' पर रमण जी के पुनर्पाठ से साफ असहमति व्यक्त हय — समीक्षक के तर्क एकाङ्गी बुझाबै हय, आ रमण जी द्वारा हरिमोहन झा के पाठक के जे तीन श्रेणी कैल गेल, ओ में एक चतुर्थ वर्ग (जे रमण जी के अपन साहित्य के मिथिला-संस्कृति पर आघात बुझै हथिन) के चर्चा न भेल।

अजित कुमार झाक आलेख (रचना ५) मे 'कन्यादान' पर रमण जीक पुनर्पाठसँ स्पष्ट असहमति व्यक्त अछि — समीक्षकक तर्क एकाङ्गी बुझबैत, आ रमण जी द्वारा हरिमोहन झाक पाठकक जे तीन श्रेणी कएल गेल, ओहिमे एक चतुर्थ वर्गक (जे रमण जीक अपन साहित्यकेँ मिथिला-संस्कृति पर आघात बुझैत छथि) चर्चा नहि भेल।

संगति — ई सब्भे सीमा एगो साझा सूत्र सें बान्हलों छै : रमण जी के काम मात्रा के हिसाब सें बहुत बड़का, अभिलेख के नजर सें अनमोल, आरो मातृभाषा-परेम सें प्रेरित छै; मतरकि सैद्धान्तिक अनुशासन, स्रोत-परमाणिकता, पूरा निष्पक्षता आरो संस्थागत नतीजा के स्तर पर ऊ आगू बढ़ै के गुंजाइस छोड़ी दैछै — जेकरा हुनकरे सबद में कही तें "वादे वादे जायते तत्त्वबोधः"।

संगति — ई सब सीमा एकगो साझा सूत्र से बान्हल हय : रमण जी के कार्य मात्रात्मक रूप से विपुल, अभिलेखीय दृष्टि से अमूल्य, आ मातृभाषा-प्रेम से प्रेरित हय, मुदा सैद्धान्तिक अनुशासन, स्रोत-प्रामाणिकता, पूर्ण निष्पक्षता आ संस्थागत परिणाम के स्तर पर ओ आगू बढ़े के गुंजाइस छोड़ दे हय — जेकरा खुद हुनकरे शब्द में कही त "वादे वादे जायते तत्त्वबोधः"।

संगति — ई सभटा सीमा एक साझा सूत्रसँ बान्हल अछि : रमण जीक कार्य मात्रात्मक रूपेँ विपुल, अभिलेखीय दृष्टिसँ अमूल्य, आ मातृभाषा-प्रेमसँ प्रेरित अछि, मुदा सैद्धान्तिक अनुशासन, स्रोत-प्रामाणिकता, पूर्ण निष्पक्षता आ

संस्थागत परिणामक स्तर पर ओ आगू बढ़बाक गुंजाइश छोड़ि दैत अछि — जकरा स्वयं हुनकहि शब्दमे कही तँ "वादे वादे जायते तत्त्वबोधः"।

आलेख ०४ · आलोचना-सिद्धान्त आ समालोचनाक परिप्रेक्ष्य

अखियासल : विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद

सारांश

डा॰ रमानन्द झा 'रमण' के 'अखियासल' मैथिली साहित्य के इतिहास, कथा-विकास, सुरुआती उपन्यास, बिसरल साहित्यसेवी, राष्ट्रीय चेतना, गीत-काव्य, पत्रकारिता, स्तम्भ-लेखन आरो आधुनिक कथा के सामाजिक सरोकार के पुनर्मूल्याङ्कन करैवाला आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह छै। ई संग्रह भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर सें सन् १९९५ ई॰ में छपलै आरो एकरा में पचीस गो स्वतन्त्र आलोचनात्मक निबन्ध संकलित छै।

बीजशब्द

अखियासल : विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद · आलोचना-पद्धति · भारतीय काव्यशास्त्र · मैथिली समालोचना · विदेह समानान्तर दृष्टि

'अखियासल': भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आरो विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद

'अखियासल': भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि से विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद

'अखियासल' : भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद

-गजेन्द्र ठाकुर

-गजेन्द्र ठाकुर

-गजेन्द्र ठाकुर

प्रस्तावना: कृति, कृतिकार आरो समीक्षा के सुरू-बिन्दु

प्रस्तावना: कृति, कृतिकार आ समीक्षा के प्रस्थान-बिन्दु

प्रस्तावना : कृति, कृतिकार आ समीक्षाक प्रस्थान-बिन्दु

डा॰ रमानन्द झा 'रमण' के 'अखियासल' मैथिली साहित्य के इतिहास, कथा-विकास, सुरुआती उपन्यास, बिसरल साहित्यसेवी, राष्ट्रीय चेतना, गीत-काव्य, पत्रकारिता, स्तम्भ-लेखन आरो आधुनिक कथा के सामाजिक सरोकार के पुनर्मूल्याङ्कन करैवाला आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह छै। ई संग्रह भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर सें सन् १९९५ ई॰ में छपलै आरो एकरा में पचीस गो स्वतन्त्र आलोचनात्मक निबन्ध संकलित छै। ई सब्भे निबन्ध के मूल परकाशन-स्रोत 'मिथिला मिहिर', 'मिथिलामोद', 'भाखा', 'मैथिली अकादमी पत्रिका', 'बसात', 'हालचाल', 'मैथिली प्रकाश' जइसन पत्र-पत्रिका आरो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन के स्मारिका छै। तात्पर्य ई जे ई कोय एकहि बेर योजनाबद्ध रूप में लिखल गेलै ग्रन्थ नै, बल्कि सन् १९७२ सें लऽ कऽ १९८९ धरि के लगभग दू दशक के पत्रकारीय-आलोचनात्मक श्रम के संचयन छै। ई संकलनात्मक स्वरूप के ध्यान में रखने बिना एकर समुचित मूल्याङ्कन सम्भव नै।

डा॰ रमानन्द झा 'रमण' के 'अखियासल' मैथिली साहित्य के इतिहास, कथा-विकास, आरम्भिक उपन्यास, विस्मृत साहित्यसेवी, राष्ट्रीय चेतना, गीत-काव्य, पत्रकारिता, स्तम्भ-लेखन आ आधुनिक कथा के सामाजिक सरोकार के पुनर्मूल्याङ्कन करयवला आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह हय। ई संग्रह भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर से सन् १९९५ ई॰ में प्रकाशित भेल आ एमें पचीसगो स्वतन्त्र आलोचनात्मक निबन्ध संकलित हय। ई सब निबन्ध के मूल प्रकाशन-स्रोत 'मिथिला मिहिर', 'मिथिलामोद', 'भाखा', 'मैथिली अकादमी पत्रिका', 'बसात', 'हालचाल', 'मैथिली प्रकाश' जइसन पत्र-पत्रिका आ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन के स्मारिका हय। तात्पर्य ई जे ई कोनो एके बेर योजनाबद्ध रूप में लिखल गेल ग्रन्थ न, बल्कि सन् १९७२ से लेके १९८९ तक लगभग दू दशक के पत्रकारीय-आलोचनात्मक श्रम के संचयन हय। ई संकलनात्मक स्वरूप के ध्यान में रखने बिना एकर उचित मूल्याङ्कन सम्भव न।

डा॰ रमानन्द झा 'रमण'क 'अखियासल' मैथिली साहित्यक इतिहास, कथा-विकास, आरम्भिक उपन्यास, विस्मृत साहित्यसेवी, राष्ट्रीय चेतना, गीत-काव्य, पत्रकारिता, स्तम्भ-लेखन आ आधुनिक कथाक सामाजिक सरोकारक

पुनर्मूल्याङ्कन करयवला आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह अछि। ई संग्रह भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर सँ सन् १९९५ ई॰ मे प्रकाशित भेल आ एहिमे पचीस टा स्वतन्त्र आलोचनात्मक निबन्ध संकलित अछि। एहि सभ निबन्धक मूल प्रकाशन-स्रोत 'मिथिला मिहिर', 'मिथिलामोद', 'भाखा', 'मैथिली अकादमी पत्रिका', 'बसात', 'हालचाल', 'मैथिली प्रकाश' सन पत्र-पत्रिका आ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलनक स्मारिका थिक। तात्पर्य ई जे ई कोनो एकहि बेर योजनाबद्ध रूपेँ लिखल गेल ग्रन्थ नहि, अपितु सन् १९७२ सँ लऽ कऽ १९८९ धरिक लगभग दू दशकक पत्रकारीय-आलोचनात्मक श्रमक संचयन थिक। एहि संकलनात्मक स्वरूपकेँ ध्यानमे रखने बिना एकर समुचित मूल्याङ्कन सम्भव नहि।

पोथी के सुरुआत पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर आरो 'चन्द्रप्रभा' के मैथिली के सुरुआती कथाकारिता आरो कथा-संग्रह के परम्परा में प्रतिष्ठित करै के प्रयास सें होय छै आरो अंत आधुनिकतम कथाकार प्रभास कुमार चौधरीपर — यानी मैथिली के पहिलों कथाकार सें लऽ कऽ समकालीन कथाकार तक, अकसर दुइ शताब्दी के फैलाव ई पचीस निबन्ध में समाहित छै। ई दीर्घ पटल के कारणें 'अखियासल' खाली समीक्षा नै, बल्कि एक प्रकार के समान्तर साहित्येतिहास के नींव-प्रस्तर बनी जाय छै — आरो इहे ओकर सबसें बड़का मौलिकता आरो सबसें बड़का सीमा दुनू के स्रोत छै।

पोथी के आरम्भ पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा' के मैथिली के आरम्भिक कथाकारिता आ कथा-संग्रह के परम्परा में प्रतिष्ठित करे के प्रयास से होय हय आ समापन आधुनिकतम कथाकार प्रभास कुमार चौधरी पर — अर्थात् मैथिली के पहिल कथाकार से लेके समकालीन कथाकार तक, प्रायः दुइ शताब्दी के विस्तार ई पचीस निबन्ध में समाहित हय। ई दीर्घ पटल के कारणेँ 'अखियासल' खाली समीक्षा न, बल्कि एक प्रकार के समान्तर साहित्येतिहास के आधारशिला-प्रस्तर बन जाय हय — आ इहे ओकर सबसे बड़ मौलिकता आ सबसे बड़ सीमा दुनू के स्रोत हय।

पोथीक आरम्भ पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा'केँ मैथिलीक आरम्भिक कथाकारिता आ कथा-संग्रहक परम्परामे प्रतिष्ठित करबाक प्रयाससँ होइत अछि आ समापन आधुनिकतम कथाकार प्रभास कुमार चौधरीपर — अर्थात्

मैथिलीक पहिल कथाकारसँ लऽ कऽ समकालीन कथाकार धरि, प्रायः दुइ शताब्दीक विस्तार एहि पचीस निबन्धमे समाहित अछि। एहि दीर्घ पटलक कारणेँ 'अखियासल' मात्र समीक्षा नहि, अपितु एक प्रकारक समान्तर साहित्येतिहासक आधारशिला-प्रस्तर बनि जाइत अछि — आ इएह ओकर सभसँ पैघ मौलिकता तथा सभसँ पैघ सीमा दुनूक स्रोत थिक।

ई पोथी साहित्य के स्थापित शिखर-पुरुष सब्भे के प्रशस्ति खाली नै करै छै। एकर मूल प्रश्न छै — मैथिली साहित्य के इतिहास में के स्मरणीय बनाओल गेलै, के बिसरल भेलै, कोन रचना 'प्रथम' कहल गेलै, कोन पाण्डुलिपि पाठक तक नै पहुँचल, आरो साहित्यिक मान्यता निर्माण में संस्था, पत्रिका, सम्पादक, प्रकाशक, प्रवासी केन्द्र आरो सामाजिक सत्ता कइसन भूमिका निभाबै रहलै। कृति के केन्द्रीय अभिप्राय साफ छै — मैथिली गद्य आरो पद्य के ओहि प्रारम्भिक आरो उपेक्षित रचनाकार सिनी के प्रकाश में अनब, जिनका मुख्यधारा के साहित्येतिहास बिसरि गेलै अथवा जिनका सम्बंधी सामग्री 'अनुपलब्ध' रहि गेलै।

ई पोथी साहित्य के स्थापित शिखर-पुरुष सब के प्रशस्ति खाली न करै हय। एकर मूल प्रश्न हय — मैथिली साहित्य के इतिहास में के स्मरणीय बनावल गेल, के विस्मृत भेल, कोन रचना 'प्रथम' कहल गेल, कोन पाण्डुलिपि पाठक तक न पहुँचल, आ साहित्यिक मान्यता निर्माण में संस्था, पत्रिका, सम्पादक, प्रकाशक, प्रवासी केन्द्र आ सामाजिक सत्ता केहन भूमिका निभावै रहल। कृति के केन्द्रीय अभिप्राय साफ हय — मैथिली गद्य आ पद्य के ओ प्रारम्भिक आ उपेक्षित रचनाकार लोक के प्रकाश में अनब, जिनका मुख्यधारा के साहित्येतिहास बिसर गेल वा जिनका सम्बन्धी सामग्री 'अनुपलब्ध' रह गेल।

ई पोथी साहित्यक स्थापित शिखर-पुरुष सभक प्रशस्ति मात्र नहि करैत अछि। एकर मूल प्रश्न अछि — मैथिली साहित्यक इतिहासमे के स्मरणीय बनाओल गेल, के विस्मृत भेल, कोन रचना 'प्रथम' कहल गेल, कोन पाण्डुलिपि पाठक धरि नहि पहुँचल, आ साहित्यिक मान्यता निर्माणमे संस्था, पत्रिका, सम्पादक, प्रकाशक, प्रवासी केन्द्र आ सामाजिक सत्ता केहन भूमिका निभबैत रहल। कृतिक केन्द्रीय अभिप्राय स्पष्ट अछि — मैथिली गद्य आ पद्यक ओहि प्रारम्भिक तथा उपेक्षित रचनाकार लोकनिकेँ प्रकाशमे अनब, जिनका

मुख्यधाराक साहित्येतिहास बिसरि गेल अथवा जिनका सम्बन्धी सामग्री 'अनुपलब्ध' रहि गेल।

'अखियासल' के पचीस अध्याय एकरेखीय इतिहास के बदला कई समान्तर धारा के उघार करै छै —

'अखियासल' के पचीस अध्याय एकरेखीय इतिहास के बदला अनेक समान्तर धारा के उद्घाटन करै हय —

'अखियासल'क पचीस अध्याय एकरेखीय इतिहासक बदला अनेक समान्तर धाराक उद्घाटन करैत अछि —

मैथिली के सुरुआती कथा आरो उपन्यास के खोज,

मैथिली के आरम्भिक कथा आ उपन्यास के खोज,

मैथिलीक आरम्भिक कथा आ उपन्यासक खोज,

बिसरल रचनाकार के पुनर्प्रतिष्ठा,

विस्मृत रचनाकार के पुनर्प्रतिष्ठा,

विस्मृत रचनाकारक पुनर्प्रतिष्ठा,

स्वतन्त्रता-सङ्ग्राम आरो मातृभाषा-जागरण,

स्वतन्त्रता-सङ्ग्राम आ मातृभाषा-जागरण,

स्वतन्त्रता-सङ्ग्राम आ मातृभाषा-जागरण,

कथा, गीत, गप्प, स्तम्भ आरो पत्रकारिता के विधागत विवेचन,

कथा, गीत, गप्प, स्तम्भ आ पत्रकारिता के विधागत विवेचन,

कथा, गीत, गप्प, स्तम्भ आ पत्रकारिताक विधागत विवेचन,

नारी, गरीब, किसान, बेरोजगार युवक आरो शोषित वर्ग के अनुभव,

नारी, गरीब, किसान, बेरोजगार युवक आ शोषित वर्ग के अनुभव,

नारी, गरीब, किसान, बेरोजगार युवक आ शोषित वर्गक अनुभव,

स्वतन्त्रता के बाद के राजनीतिक विडम्बना,

स्वतन्त्रता के बाद के राजनीतिक विडम्बना,

स्वतन्त्रताक बादक राजनीतिक विडम्बना,

सामाजिक संक्रमण, अस्तित्व-संकट आरो नैतिक अवमूल्यन।

सामाजिक संक्रमण, अस्तित्व-संकट आ नैतिक अवमूल्यन।

सामाजिक संक्रमण, अस्तित्व-संकट आ नैतिक अवमूल्यन।

ई अर्थ में 'अखियासल' आलोचना खाली नै, मैथिली साहित्य के अभिलेखीय फेर-उभार आरो समान्तर इतिहास-लेखन के जरूरी उपक्रम छै।

ई अर्थ में 'अखियासल' आलोचना खाली न, मैथिली साहित्य के अभिलेखीय पुनरुद्धार आ समान्तर इतिहास-लेखन के महत्त्वपूर्ण उपक्रम हय।

एहि अर्थमे 'अखियासल' आलोचना मात्र नहि, मैथिली साहित्यक अभिलेखीय पुनरुद्धार आ समान्तर इतिहास-लेखनक महत्त्वपूर्ण उपक्रम अछि।

परस्तुत मूल्याङ्कन में तीन दृष्टि-प्रतिमान के एकसाथ परयोग कैल गेलै — (क) भारतीय काव्यशास्त्रीय प्रतिमान (रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य, रीति, अलङ्कार, साधारणीकरण, लोकमङ्गल); (ख) पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त (ऐतिहासिकतावाद आरो नव-ऐतिहासिकतावाद, मार्क्सवादी समाजशास्त्रीय समीक्षा, रूपवाद, नारीवादी विमर्श, उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श, अस्तित्ववादी-मनोविश्लेषणवादी दृष्टि, पाठक-प्रतिक्रिया सिद्धान्त, विखण्डनवाद के हाशिया-फेर-उभार आरो कैनन के राजनीति); आरो (ग) विदेह समान्तर साहित्य-आन्दोलन के समान्तर इतिहास-प्रतिमान आरो गङ्गेश उपाध्याय-मूल के नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा, जे मुख्यधारा के कैनन-निर्माण के खिलाफ लुप्तप्राय, हाशियाकृत आरो अभिलेखहीन रचनाकार के पुनःस्थापना के अपन घोषित लक्ष्य मानै छै, आरो जे नव्य-न्याय के 'हेत्वाभास' आरो 'शब्द-प्रमाण' के उपयोग कऽ साहित्य में निहित वैचारिक छल के अनावृत करै छै। ई तेसरका प्रतिमान के दृष्टि सें 'अखियासल' एक अग्रगामी पूर्व-रूप (प्रोटो-पाठ) छै — कैलेकि रमानन्द झा जे काज १९७० सें ८० दशक में व्यक्तिगत श्रम सें केने छेलै, विदेह-आन्दोलन ओकरे संस्थागत, अभिलेखीय आरो जनतान्त्रिक फैलाव दै छै।

प्रस्तुत मूल्याङ्कन में तीन दृष्टि-प्रतिमान के एकसाथ प्रयोग कैल गेल हय — (क) भारतीय काव्यशास्त्रीय प्रतिमान (रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य, रीति, अलङ्कार, साधारणीकरण, लोकमङ्गल); (ख) पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त (ऐतिहासिकतावाद आ नव-ऐतिहासिकतावाद, मार्क्सवादी समाजशास्त्रीय समीक्षा, रूपवाद, नारीवादी विमर्श, उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श, अस्तित्ववादी-मनोविश्लेषणवादी दृष्टि, पाठक-प्रतिक्रिया सिद्धान्त, विखण्डनवाद के हाशिया-पुनरुद्धार आ कैनन के राजनीति); आ (ग) विदेह समान्तर साहित्य-आन्दोलन के समान्तर इतिहास-प्रतिमान आ गङ्गेश उपाध्याय-मूलक नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा, जे मुख्यधारा के कैनन-निर्माण के विरुद्ध लुप्तप्राय, हाशियाकृत आ अभिलेखहीन रचनाकार के पुनःस्थापना के अपन घोषित लक्ष्य मानै हय, आ जे नव्य-न्याय के 'हेत्वाभास' आ 'शब्द-प्रमाण' के उपयोग के साहित्य में निहित वैचारिक छल के अनावृत करै हय। ई तेसर प्रतिमान के दृष्टि से 'अखियासल' एक अग्रगामी पूर्व-रूप (प्रोटो-पाठ) हय — काहे कि रमानन्द झा जे काज १९७० से ८० दशक में व्यक्तिगत श्रम से कैलथिन, विदेह-आन्दोलन ओकरे संस्थागत, अभिलेखीय आ जनतान्त्रिक विस्तार दे हय।

प्रस्तुत मूल्याङ्कनमे तीन दृष्टि-प्रतिमानक एकसाथ प्रयोग कएल गेल अछि — (क) भारतीय काव्यशास्त्रीय प्रतिमान (रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य, रीति, अलङ्कार, साधारणीकरण, लोकमङ्गल); (ख) पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त (ऐतिहासिकतावाद आ नव-ऐतिहासिकतावाद, मार्क्सवादी समाजशास्त्रीय समीक्षा, रूपवाद, नारीवादी विमर्श, उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श, अस्तित्ववादी-मनोविश्लेषणवादी दृष्टि, पाठक-प्रतिक्रिया सिद्धान्त, विखण्डनवादक हाशिया-पुनरुद्धार आ कैननक राजनीति); आ (ग) विदेह समान्तर साहित्य-आन्दोलनक समान्तर इतिहास-प्रतिमान तथा गङ्गेश उपाध्याय-मूलक नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा, जे मुख्यधाराक कैनन-निर्माणक विरुद्ध लुप्तप्राय, हाशियाकृत आ अभिलेखहीन रचनाकारक पुनःस्थापनाकेँ अपन घोषित लक्ष्य मानैत अछि, आ जे नव्य-न्यायक 'हेत्वाभास' आ 'शब्द-प्रमाण'क उपयोग कऽ साहित्यमे निहित वैचारिक छलकेँ अनावृत करैत अछि। एहि तेसर प्रतिमानक दृष्टिसँ 'अखियासल' एक अग्रगामी पूर्व-रूप (प्रोटो-पाठ) थिक — किएक तँ रमानन्द

झा जे काज १९७० सँ ८० दशकमे व्यक्तिगत श्रमसँ केने छलाह, विदेह-आन्दोलन ओकरे संस्थागत, अभिलेखीय आ जनतान्त्रिक विस्तार दैत अछि।

ई समीक्षा के बनावट दू भाग में विभक्त छै। पूर्वार्ध में प्रत्येक अध्याय के विशिष्ट गुण, उपलब्धि आरो सैद्धान्तिक महत्त्व के विवेचन छै; उत्तरार्ध पूर्णतः सीमा, कमजोरी आरो पद्धतिगत संकट के समर्पित छै।

ई समीक्षा के संरचना दू भाग में विभक्त हय। पूर्वार्ध में हरेक अध्याय के विशिष्ट गुण, उपलब्धि आ सैद्धान्तिक महत्त्व के विवेचन हय; उत्तरार्ध पूरा तरह से सीमा, दुर्बलता आ पद्धतिगत संकट के समर्पित हय।

एहि समीक्षाक संरचना दू भागमे विभक्त अछि। पूर्वार्धमे प्रत्येक अध्यायक विशिष्ट गुण, उपलब्धि आ सैद्धान्तिक महत्त्वक विवेचन अछि; उत्तरार्ध पूर्णतः सीमा, दुर्बलता आ पद्धतिगत संकटकेँ समर्पित अछि।

आलोचनात्मक प्रतिमान

आलोचनात्मक प्रतिमान

आलोचनात्मक प्रतिमान

भारतीय साहित्यशास्त्रीय दृष्टि

भारतीय साहित्यशास्त्रीय दृष्टि

भारतीय साहित्यशास्त्रीय दृष्टि

रस — पोथी के विभिन्न अध्याय में करुण, वीर, हास्य, शृङ्गार, भक्ति आरो रौद्र रस के विवेचन भेटै छै। 'रामेश्वर' के भूख आरो पारिवारिक विघटन करुण रस उपजाबै छै; द्विजवर के राष्ट्रीय कविता वीर आरो रौद्र रस जगाबै छै; हरिमोहन झा के गप्प हास्य-व्यङ्ग्य के भूमि रचै छै; हरिलता के भजन भक्ति आरो मधुर रस के धारा बहाबै छै; आरसी आरो मोहन के गीत शृङ्गार, परकृति आरो भावमाधुर्य के अनुभव दै छै।

रस — पोथी के विभिन्न अध्याय में करुण, वीर, हास्य, शृंगार, भक्ति आ रौद्र रस के विवेचन भेटै हय। 'रामेश्वर' के भूख आ पारिवारिक विघटन करुण रस पैदा करै हय; द्विजवर के राष्ट्रीय कविता वीर आ रौद्र रस जगावै हय; हरिमोहन झा के गप्प हास्य-व्यङ्ग्य के भूमि रचै हय; हरिलता के भजन भक्ति आ मधुर

रस के धारा बहावै हय; आरसी आ मोहन के गीत शृंगार, प्रकृति आ भावमाधुर्य के अनुभव दे हय।

रस — पोथीक विभिन्न अध्यायमे करुण, वीर, हास्य, शृङ्गार, भक्ति आ रौद्र रसक विवेचन भेटैत अछि। 'रामेश्वर'क भूख आ पारिवारिक विघटन करुण रस उत्पन्न करैत अछि; द्विजवरक राष्ट्रीय कविता वीर आ रौद्र रस जगबैत अछि; हरिमोहन झाक गप्प हास्य-व्यङ्ग्यक भूमि रचैत अछि; हरिलताक भजन भक्ति आ मधुर रसक धारा बहबैत अछि; आरसी आ मोहनक गीत शृङ्गार, प्रकृति आ भावमाधुर्यक अनुभव दैत अछि।

ध्वनि — कई रचना के प्रत्यक्ष कथा पाछाँ अप्रत्यक्ष सामाजिक अरथ छै। भूख केवल भोजन के कमी नै, आर्थिक संरचना के अन्याय छै। विवाह केवल घरेलू संस्कार नै, स्त्री के सामाजिक स्थिति आरो जातिगत प्रतिष्ठा के क्षेत्र छै। भाषा केवल सम्प्रेषण के साधन नै, सांस्कृतिक स्वाधीनता के प्रतीक छै।

ध्वनि — अनेक रचना के प्रत्यक्ष कथा पाछाँ अप्रत्यक्ष सामाजिक अर्थ हय। भूख खाली भोजन के अभाव न, आर्थिक संरचना के अन्याय हय। विवाह खाली घरेलू संस्कार न, स्त्री के सामाजिक स्थिति आ जातिगत प्रतिष्ठा के क्षेत्र हय। भाषा खाली सम्प्रेषण के साधन न, सांस्कृतिक स्वाधीनता के प्रतीक हय।

ध्वनि — अनेक रचनाक प्रत्यक्ष कथा पाछाँ अप्रत्यक्ष सामाजिक अर्थ अछि। भूख केवल भोजनक अभाव नहि, आर्थिक संरचनाक अन्याय अछि। विवाह केवल घरेलू संस्कार नहि, स्त्रीक सामाजिक स्थिति आ जातिगत प्रतिष्ठाक क्षेत्र अछि। भाषा केवल सम्प्रेषणक साधन नहि, सांस्कृतिक स्वाधीनताक प्रतीक अछि।

वक्रोक्ति — यात्री के स्तम्भ, हरिमोहन झा के गप्प, श्यामानन्द झा के व्यङ्ग्य, ललित आरो धीरेन्द्र के कथा आरो आरसी के राजनीतिक कविता वक्र कथन, विडम्बना, व्यङ्ग्य आरो प्रतीक के माध्यम सें अपन अरथ उपजाबै छै।

वक्रोक्ति — यात्री के स्तम्भ, हरिमोहन झा के गप्प, श्यामानन्द झा के व्यङ्ग्य, ललित आ धीरेन्द्र के कथा आ आरसी के राजनीतिक कविता वक्र कथन, विडम्बना, व्यङ्ग्य आ प्रतीक के माध्यम से अपन अर्थ पैदा करै हय।

वक्रोक्ति — यात्रीक स्तम्भ, हरिमोहन झाक गप्प, श्यामानन्द झाक व्यङ्ग्य, ललित आ धीरेन्द्रक कथा तथा आरसीक राजनीतिक कविता वक्र कथन, विडम्बना, व्यङ्ग्य आ प्रतीकक माध्यमसँ अपन अर्थ उत्पन्न करैत अछि।

औचित्य — रमणजी बेर-बेर ई प्रश्न उठाबै छै जे रचना के विषय, पात्र, भाषा, शैली, काल आरो विधा के बीच औचित्य छै कि नै। कथा के उपन्यास, गप्प के कथा, अनुवाद के मौलिक कृति अथवा प्रभाव के अनुवाद कहब उचित छै कि नै — ई सब्भे औचित्य के प्रश्न छै।

औचित्य — रमणजी बेर-बेर ई प्रश्न उठावै हथिन कि रचना के विषय, पात्र, भाषा, शैली, काल आ विधा के बीच औचित्य हय कि न। कथा के उपन्यास, गप्प के कथा, अनुवाद के मौलिक कृति वा प्रभाव के अनुवाद कहब उचित हय कि न — ई सब औचित्य के प्रश्न हय।

औचित्य — रमणजी बेर-बेर ई प्रश्न उठबैत छथि जे रचनाक विषय, पात्र, भाषा, शैली, काल आ विधाक बीच औचित्य अछि कि नहि। कथाकेँ उपन्यास, गप्पकेँ कथा, अनुवादकेँ मौलिक कृति अथवा प्रभावकेँ अनुवाद कहब उचित अछि कि नहि — ई सभ औचित्यक प्रश्न अछि।

साधारणीकरण — एक व्यक्ति के भूख, बेरोजगारी, विवाह-दुःख अथवा सांस्कृतिक क्षोभ तखन साहित्यिक मूल्य ग्रहण करै छै जखन ऊ पूरा समुदाय अथवा युग के अनुभव बनी जाय छै। धीरेन्द्र के कथा-विवेचन में लेखक साफ करै छै जे वैयक्तिक अनुभव सामाजिक मन के अभिव्यक्ति बनलापर साहित्य सामाजिक सन्दर्भ ग्रहण करै छै।

साधारणीकरण — एक व्यक्ति के भूख, बेरोजगारी, विवाह-दुःख वा सांस्कृतिक क्षोभ तब साहित्यिक मूल्य ग्रहण करै हय जब ओ पूरा समुदाय वा युग के अनुभव बन जाय हय। धीरेन्द्र के कथा-विवेचन में लेखक साफ करै हथिन कि वैयक्तिक अनुभव सामाजिक मन के अभिव्यक्ति बनला पर साहित्य सामाजिक सन्दर्भ ग्रहण करै हय।

साधारणीकरण — एक व्यक्तिक भूख, बेरोजगारी, विवाह-दुःख अथवा सांस्कृतिक क्षोभ तखन साहित्यिक मूल्य ग्रहण करैत अछि जखन ओ सम्पूर्ण समुदाय अथवा युगक अनुभव बनि जाइत अछि। धीरेन्द्रक कथा-विवेचनमे

लेखक स्पष्ट करैत छथि जे वैयक्तिक अनुभव सामाजिक मनक अभिव्यक्ति बनलापर साहित्य सामाजिक सन्दर्भ ग्रहण करैत अछि।

लोकमङ्गल — अखियासल के आलोचना साहित्य के समाज सें पृथक नै मानै छै। मातृभाषा-सेवा, स्त्रीशिक्षा, जातिविरोध, श्रम के प्रतिष्ठा, गरीब के अधिकार आरो राष्ट्रीय स्वाधीनता साहित्यिक मूल्याङ्कन के जरूरी आधार बनै छै।

लोकमङ्गल — अखियासल के आलोचना साहित्य के समाज से पृथक न मानै हय। मातृभाषा-सेवा, स्त्रीशिक्षा, जातिविरोध, श्रम के प्रतिष्ठा, गरीब के अधिकार आ राष्ट्रीय स्वाधीनता साहित्यिक मूल्याङ्कन के महत्त्वपूर्ण आधार बनै हय।

लोकमङ्गल — अखियासलक आलोचना साहित्यकेँ समाजसँ पृथक नहि मानैत अछि। मातृभाषा-सेवा, स्त्रीशिक्षा, जातिविरोध, श्रमक प्रतिष्ठा, गरीबक अधिकार आ राष्ट्रीय स्वाधीनता साहित्यिक मूल्याङ्कनक महत्त्वपूर्ण आधार बनैत अछि।

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त के आधार

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त के आधार

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आधार

रूपवादी दृष्टि — कथानक, चरित्र-निर्माण, संवाद, वातावरण, कथा-गति, प्रतीक, पुनरावृत्ति, गीतात्मकता आरो विधागत संरचना के परीक्षण रूपवादी नजर सें कएल जा सकै छै।

रूपवादी दृष्टि — कथानक, चरित्र-निर्माण, संवाद, वातावरण, कथा-गति, प्रतीक, पुनरावृत्ति, गीतात्मकता आ विधागत संरचना के परीक्षण रूपवादी दृष्टि से कैल जा सकै हय।

रूपवादी दृष्टि — कथानक, चरित्र-निर्माण, संवाद, वातावरण, कथा-गति, प्रतीक, पुनरावृत्ति, गीतात्मकता आ विधागत संरचनाक परीक्षण रूपवादी दृष्टिसँ कएल जा सकैत अछि।

नव-इतिहासवादी दृष्टि — प्रत्येक रचना के ओकर समय के सत्ता, संस्था, भाषा-राजनीति, स्वतन्त्रता-आन्दोलन, सामाजिक सुधार, सामन्तवाद आरो आर्थिक परिवर्तन सें जोड़ि कऽ पढ़ल गेलै।

नव-इतिहासवादी दृष्टि — हरेक रचना के ओकर समय के सत्ता, संस्था, भाषा-राजनीति, स्वतन्त्रता-आन्दोलन, सामाजिक सुधार, सामन्तवाद आ आर्थिक परिवर्तन से जोड़के पढ़ल गेल हय।

नव-इतिहासवादी दृष्टि — प्रत्येक रचनाकेँ ओकर समयक सत्ता, संस्था, भाषा-राजनीति, स्वतन्त्रता-आन्दोलन, सामाजिक सुधार, सामन्तवाद आ आर्थिक परिवर्तनसँ जोड़िकऽ पढ़ल गेल अछि।

मार्क्सवादी दृष्टि — भूख, निर्धनता, श्रम, सामन्ती शोषण, पुलिस-प्रशासन, पूँजी, चुनाव, बेरोजगारी आरो वर्ग-बँटवारा कई अध्याय के मूल प्रश्न छै।

मार्क्सवादी दृष्टि — भूख, निर्धनता, श्रम, सामन्ती शोषण, पुलिस-प्रशासन, पूँजी, चुनाव, बेरोजगारी आ वर्ग-विभाजन अनेक अध्याय के मूल प्रश्न हय।

मार्क्सवादी दृष्टि — भूख, निर्धनता, श्रम, सामन्ती शोषण, पुलिस-प्रशासन, पूँजी, चुनाव, बेरोजगारी आ वर्ग-विभाजन अनेक अध्यायक मूल प्रश्न अछि।

नारीवादी दृष्टि — 'निर्दयी सासु', 'सुमति', 'चन्द्रग्रहण', हरिलता के भजन, कुमार गंगानन्द सिंह के कथा आरो ललित के कथा-विवेचन स्त्री के शिक्षा, विवाह, देह, इच्छा, घरेलू श्रम, विधवापन आरो सामाजिक नियन्त्रण के प्रश्न उठाबै छै।

नारीवादी दृष्टि — 'निर्दयी सासु', 'सुमति', 'चन्द्रग्रहण', हरिलता के भजन, कुमार गंगानन्द सिंह के कथा आ ललित के कथा-विवेचन स्त्री के शिक्षा, विवाह, देह, इच्छा, घरेलू श्रम, विधवापन आ सामाजिक नियन्त्रण के प्रश्न उठावै हय।

नारीवादी दृष्टि — 'निर्दयी सासु', 'सुमति', 'चन्द्रग्रहण', हरिलताक भजन, कुमार गंगानन्द सिंहक कथा आ ललितक कथा-विवेचन स्त्रीक शिक्षा, विवाह, देह, इच्छा, घरेलू श्रम, विधवापन आ सामाजिक नियन्त्रणक प्रश्न उठबैत अछि।

उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि — मैथिलीपर हिन्दी आरो अङ्ग्रेजी के दबाव, मातृभाषा के उपेक्षा, देवनागरी के प्रसार के राजनीति, स्थानीय भाषा-साहित्य

के अधिकार आरो राष्ट्रीयता के भीतर भाषिक बहुलता — ई सब्भे उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श के विषय छै।

उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि — मैथिली पर हिन्दी आ अंग्रेजी के दबाव, मातृभाषा के उपेक्षा, देवनागरी के प्रसार के राजनीति, स्थानीय भाषा-साहित्य के अधिकार आ राष्ट्रीयता के भीतर भाषिक बहुलता — ई सब उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श के विषय हय।

उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि — मैथिलीपर हिन्दी आ अङ्ग्रेजीक दबाव, मातृभाषाक उपेक्षा, देवनागरीक प्रसारक राजनीति, स्थानीय भाषा-साहित्यक अधिकार आ राष्ट्रीयताक भीतर भाषिक बहुलता — ई सभ उत्तर-औपनिवेशिक विमर्शक विषय अछि।

अस्तित्ववादी आरो मनोविश्लेषणवादी दृष्टि — ललित आरो धीरेन्द्र के कथा-विवेचन में निरर्थकता, एकाकीपन, बेरोजगारी, दायित्व के असह्य भार, यौनिक इच्छा, आत्मपरायापन आरो सामाजिक असंगति के विश्लेषण भेटै छै।

अस्तित्ववादी आ मनोविश्लेषणवादी दृष्टि — ललित आ धीरेन्द्र के कथा-विवेचन में निरर्थकता, एकाकीपन, बेरोजगारी, दायित्व के असह्य भार, यौनिक इच्छा, आत्मपरायापन आ सामाजिक असंगति के विश्लेषण भेटै हय।

अस्तित्ववादी आ मनोविश्लेषणवादी दृष्टि — ललित आ धीरेन्द्रक कथा-विवेचनमे निरर्थकता, एकाकीपन, बेरोजगारी, दायित्वक असह्य भार, यौनिक इच्छा, आत्मपरायापन आ सामाजिक असंगतिक विश्लेषण भेटैत अछि।

पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टि — हरिमोहन झा के गप्प आरो यात्री के स्तम्भ-लेखन के अध्याय पाठक-समुदाय, पत्रिका के संवादात्मकता, हास्य के लोकप्रियता आरो पाठकीय रुचि के निर्माणपर ध्यान दै छै।

पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टि — हरिमोहन झा के गप्प आ यात्री के स्तम्भ-लेखन के अध्याय पाठक-समुदाय, पत्रिका के संवादात्मकता, हास्य के लोकप्रियता आ पाठकीय रुचि के निर्माण पर ध्यान दे हय।

पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टि — हरिमोहन झाक गप्प आ यात्रीक स्तम्भ-लेखनक अध्याय पाठक-समुदाय, पत्रिकाक संवादात्मकता, हास्यक लोकप्रियता आ पाठकीय रुचिक निर्माणपर ध्यान दैत अछि।

विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि आरो नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा

विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि आ नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा

विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि आ नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा

विदेह समान्तर इतिहास के मूल धारणा छै जे साहित्यिक इतिहास केवल राजकीय मान्यता, पुरस्कार, विश्वविद्यालय आरो प्रसिद्ध लेखक के इतिहास नै होय छै। ओहि इतिहास में निम्न सब्भे के समान अधिकार छै —

विदेह समान्तर इतिहास के मूल धारणा हय कि साहित्यिक इतिहास खाली राजकीय मान्यता, पुरस्कार, विश्वविद्यालय आ प्रसिद्ध लेखक के इतिहास न होय हय। ओ इतिहास में निम्न सब के समान अधिकार हय —

विदेह समान्तर इतिहासक मूल धारणा अछि जे साहित्यिक इतिहास केवल राजकीय मान्यता, पुरस्कार, विश्वविद्यालय आ प्रसिद्ध लेखकक इतिहास नहि होइत अछि। ओहि इतिहासमे निम्न सभक समान अधिकार अछि —

दुर्लभ पाण्डुलिपि,

दुर्लभ पाण्डुलिपि,

दुर्लभ पाण्डुलिपि,

अप्रसारित पोथी,

अप्रसारित पोथी,

अप्रसारित पोथी,

स्थानीय पत्र-पत्रिका,

स्थानीय पत्र-पत्रिका,

स्थानीय पत्र-पत्रिका,

ग्रामीण रचनाकार,

ग्रामीण रचनाकार,

ग्रामीण रचनाकार,

मातृभाषा-सेवी,

मातृभाषा-सेवी,

मातृभाषा-सेवी,

बिसरल सम्पादक,

विस्मृत सम्पादक,

विस्मृत सम्पादक,

आर्थिक कमी में लिखै कवि,

आर्थिक अभाव में लिखै कवि,

आर्थिक अभावमे लिखैत कवि,

स्त्री-पात्र के मौन,

स्त्री-पात्र के मौन,

स्त्री-पात्रक मौन,

किसान आरो मजदूर के पीड़ा,

किसान आ मजदूर के पीड़ा,

किसान आ मजदूरक पीड़ा,

भाषिक पराधीनता,

भाषिक पराधीनता,

भाषिक पराधीनता,

मिथिला आरो प्रवास के सांस्कृतिक सम्बंध।

मिथिला आ प्रवास के सांस्कृतिक सम्बन्ध।

मिथिला आ प्रवासक सांस्कृतिक सम्बन्ध।

मैथिली साहित्य के इतिहास सदिखन एगो वैचारिक संघर्ष के क्षेत्र रहलै। एक ओर 'मुख्यधाराक परम्परा' छै, जे शास्त्रीय सन्तुलन, संस्थागत मान्यता, ब्राह्मणवादी आभिजात्य आरो अतीत के परिमार्जित कऽ परस्तुत करबापर केन्द्रित रहलै, तें दोसरका ओर 'विदेह समान्तर परम्परा' छै, जे जनमानस के

धड़कै हृदय, शोषित-वञ्चित के प्रतिरोध आरो यथार्थवादी चित्रण सें जुड़ल छै। नव्य-न्याय के 'शब्द-प्रमाण' सिद्धान्त के अनुसार सत्य ओहिजा खण्डित होय छै जहाँ प्रमाण के दबा देल जाय छै — जइसन दूषण पञ्जी के छुपायब; आरो 'हेत्वाभास'-विवेचन सें साहित्य में निहित तार्किक दोष आरो वैचारिक छेलै अनावृत होय छै। 'अखियासल' के परधान उपलब्धि ई छै जे ऊ मैथिली साहित्य के मुख्य सड़क के बगल में दबाओल कई पदचिह्न के फेर दृश्य बनाबै छै।

मैथिली साहित्य के इतिहास सदिखन एकगो वैचारिक संघर्ष के क्षेत्र रहल हय। एक ओर 'मुख्यधारा के परम्परा' हय, जे शास्त्रीय सन्तुलन, संस्थागत मान्यता, ब्राह्मणवादी आभिजात्य आ अतीत के परिमार्जित के प्रस्तुत करबा पर केन्द्रित रहल हय, त दोसर ओर 'विदेह समान्तर परम्परा' हय, जे जनमानस के धड़कै हृदय, शोषित-वञ्चित के प्रतिरोध आ यथार्थवादी चित्रण से जुड़ल हय। नव्य-न्याय के 'शब्द-प्रमाण' सिद्धान्त के अनुसार सत्य उहाँ खण्डित होय हय जहाँ प्रमाण के दबा देल जाय हय — जइसन दूषण पञ्जी के छुपायब; आ 'हेत्वाभास'-विवेचन से साहित्य में निहित तार्किक दोष आ वैचारिक छल अनावृत होय हय। 'अखियासल' के प्रधान उपलब्धि ई हय कि ओ मैथिली साहित्य के मुख्य सड़क के बगल में दबाओल अनेक पदचिह्न के फेर दृश्य बनावै हय।

मैथिली साहित्यक इतिहास सदिखन एकटा वैचारिक संघर्षक क्षेत्र रहल अछि। एक दिस 'मुख्यधाराक परम्परा' अछि, जे शास्त्रीय सन्तुलन, संस्थागत मान्यता, ब्राह्मणवादी आभिजात्य आ अतीतकेँ परिमार्जित कऽ प्रस्तुत करबापर केन्द्रित रहल अछि, तँ दोसर दिस 'विदेह समान्तर परम्परा' अछि, जे जनमानसक धड़कैत हृदय, शोषित-वञ्चितक प्रतिरोध आ यथार्थवादी चित्रणसँ जुड़ल अछि। नव्य-न्यायक 'शब्द-प्रमाण' सिद्धान्तक अनुसार सत्य ओतय खण्डित होइछ जतय प्रमाणकेँ दबा देल जाइछ — जेना दूषण पञ्जीक छुपायब; आ 'हेत्वाभास'-विवेचनसँ साहित्यमे निहित तार्किक दोष आ वैचारिक छल अनावृत होइत अछि। 'अखियासल'क प्रधान उपलब्धि ई अछि जे ओ मैथिली साहित्यक मुख्य सड़कक बगलमे दबाओल अनेक पदचिह्नकेँ पुनः दृश्य बनबैत अछि।

पूर्वार्ध: अध्यायवार उपलब्धि आरो आलोचनात्मक आस्वाद

पूर्वार्ध: अध्यायवार उपलब्धि आ आलोचनात्मक आस्वाद

पूर्वार्ध : अध्यायवार उपलब्धि आ आलोचनात्मक आस्वाद

१. मैथिली के पहिलों कथाकार पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर आरो 'चन्द्रप्रभा'

१. मैथिली के पहिल कथाकार पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा'

१. मैथिलीक पहिल कथाकार पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा'

संग्रह के पहिलों निबन्ध एक तरहें समस्त कृति के बीजाध्याय छै। ई अध्याय मैथिली कथा-साहित्य के सुरुआत-बिन्दु सम्बंधी प्रचलित धारणा के संशोधित करै छै। रमानन्द झा एहिठाम 'प्रथम' के खोज के आलोचनात्मक कर्म के रूप में प्रतिष्ठित करै छै — "कथा विकासक मार्ग पर सर्वप्रथम कोन मैथिली सेवी अग्रसर भेलाह, तकर अनुसंधान।" ई घोषणा-वाक्य पूरा संग्रह के पद्धतिगत घोषणापत्र छै।

संग्रह के प्रथम निबन्ध एक प्रकार से समस्त कृति के बीजाध्याय हय। ई अध्याय मैथिली कथा-साहित्य के आरम्भ-बिन्दु सम्बन्धी प्रचलित धारणा के संशोधित करै हय। रमानन्द झा इहाँ 'प्रथम' के अन्वेषण के आलोचनात्मक कर्म के रूप में प्रतिष्ठित करै हथिन — "कथा विकास के मार्ग पर सबसे पहिने कोन मैथिली सेवी अग्रसर भेलथिन, ओकर अनुसंधान।" ई घोषणा-वाक्य पूरा संग्रह के पद्धतिगत घोषणापत्र हय।

संग्रहक प्रथम निबन्ध एक प्रकारेँ समस्त कृतिक बीजाध्याय थिक। ई अध्याय मैथिली कथा-साहित्यक आरम्भ-बिन्दु सम्बन्धी प्रचलित धारणाकेँ संशोधित करैत अछि। रमानन्द झा एहिठाम 'प्रथम'क अन्वेषणकेँ आलोचनात्मक कर्मक रूपमे प्रतिष्ठित करैत छथि — "कथा विकासक मार्ग पर सर्वप्रथम कोन मैथिली सेवी अग्रसर भेलाह, तकर अनुसंधान।" ई घोषणा-वाक्य पूर्ण संग्रहक पद्धतिगत घोषणापत्र थिक।

पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर के जन्म १७५० ई॰ में खण्डवलाकुल में भेलै छेलै; ऊ सर्वसीमा निवासी पं॰ महेश्वर ठाकुर के पुत्र छेलै आरो हुनकर निधन १८२२ ई॰ में भेलै। हुनकर ग्रन्थसभ में 'मिथिला तीर्थप्रकाश', 'नारी धर्मप्रकाश', 'शूद्र

विवाह पद्धति', 'वैतरणीदानम्', 'शुद्ध निर्णय' आरो 'शिवपूजा प्रदीपिका' प्रमुख छै। हुनका मैथिली के पहिलों कथाकार आरो 'चन्द्रप्रभा' के पहिलों कथाकृति सिद्ध करै के हेतु समीक्षक वंशावली, तिथि, गुरु-शिष्य-परम्परा आरो खण्डनात्मक परमाण — जयकान्त मिश्र के 'चन्द्रभागा' नामकरण के भ्रम-निवारण — सब्भे के सहारा लै छै। 'चन्द्रभागा' के बदला 'चन्द्रप्रभा' नाम के ई शुद्धिकरण आलोचना के अभिलेखीय सावधानी देखाबै छै।

पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर के जन्म १७५० ई॰ में खण्डवलाकुल में भेल हल; ओ सर्वसीमा निवासी पं॰ महेश्वर ठाकुर के पुत्र हलथिन आ हुनकर निधन १८२२ ई॰ में भेल। हुनकर ग्रन्थ सब में 'मिथिला तीर्थप्रकाश', 'नारी धर्मप्रकाश', 'शूद्र विवाह पद्धति', 'वैतरणीदानम्', 'शुद्ध निर्णय' आ 'शिवपूजा प्रदीपिका' प्रमुख हय। हुनका मैथिली के पहिल कथाकार आ 'चन्द्रप्रभा' के पहिल कथाकृति सिद्ध करे के हेतु समीक्षक वंशावली, तिथि, गुरु-शिष्य-परम्परा आ खण्डनात्मक प्रमाण — जयकान्त मिश्र के 'चन्द्रभागा' नामकरण के भ्रम-निवारण — सब के सहारा ले हथिन। 'चन्द्रभागा' के बदला 'चन्द्रप्रभा' नाम के ई शुद्धिकरण आलोचना के अभिलेखीय सावधानी देखाबै हय।

पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुरक जन्म १७५० ई॰ मे खण्डवलाकुलमे भेल छल; ओ सर्वसीमा निवासी पं॰ महेश्वर ठाकुरक पुत्र छलाह आ हुनक निधन १८२२ ई॰ मे भेल। हुनक ग्रन्थसभमे 'मिथिला तीर्थप्रकाश', 'नारी धर्मप्रकाश', 'शूद्र विवाह पद्धति', 'वैतरणीदानम्', 'शुद्ध निर्णय' आ 'शिवपूजा प्रदीपिका' प्रमुख अछि। हुनका मैथिलीक पहिल कथाकार आ 'चन्द्रप्रभा'कैं पहिल कथाकृति सिद्ध करबाक हेतु समीक्षक वंशावली, तिथि, गुरु-शिष्य-परम्परा आ खण्डनात्मक प्रमाण — जयकान्त मिश्रक 'चन्द्रभागा' नामकरणक भ्रम-निवारण — सभक सहारा लैत छथि। 'चन्द्रभागा'क बदला 'चन्द्रप्रभा' नामक ई शुद्धिकरण आलोचनाक अभिलेखीय सावधानी देखबैत अछि।

लेखक 'चन्द्रप्रभा' के उन्नैसम शताब्दी के मैथिली गद्य के नमूना आरो सुरुआती कथा-संग्रह के रूप में स्थापित करै छै। पाण्डुलिपि जीर्ण छेलै, कृति के किछुए अंश उपलब्ध रहलै आरो एकर परकाशन लेखक के निधन के बहुत वर्ष बाद सन् १९३९ में भेलै। 'चन्द्रप्रभा' के बनावट गुरु-शिष्य संवाद आरो एक कथा

सें दोसरका कथा निकलै के पद्धतिपर आधारित छै; एकरा में गुरु-शिष्या संवाद के माध्यम सें नीतिवचन के समर्थन कैल गेलै, जाहि में प्राचीन गद्य-शैली के उत्कृष्ट निदर्शन भेटैछ। ई नजर सें एकर सम्बंध पञ्चतन्त्र, विद्यापति के 'पुरुष-परीक्षा' आरो संस्कृत के आख्यान-उपाख्यान-परम्परा सें जुड़ै छै — ई शुद्ध शास्त्रीय परम्परा-अन्वितिक दृष्टि छै। कथा सब्भे शिक्षाप्रद, घटनाप्रधान आरो नैतिक निष्कर्षवाली छै।

लेखक 'चन्द्रप्रभा' के उन्नैसम शताब्दी के मैथिली गद्य के नमूना आ आरम्भिक कथा-संग्रह के रूप में स्थापित करै हथिन। पाण्डुलिपि जीर्ण हल, कृति के किछुए अंश उपलब्ध रहल आ एकर प्रकाशन लेखक के निधन के बहुत वर्ष बाद सन् १९३९ में भेल। 'चन्द्रप्रभा' के संरचना गुरु-शिष्य संवाद आ एक कथा से दोसर कथा निकले के पद्धति पर आधारित हय; एमें गुरु-शिष्या संवाद के माध्यम से नीतिवचन के समर्थन कैल गेल हय, जे में प्राचीन गद्य-शैली के उत्कृष्ट निदर्शन भेटै हय। ई दृष्टि से एकर सम्बन्ध पञ्चतन्त्र, विद्यापति के 'पुरुष-परीक्षा' आ संस्कृत के आख्यान-उपाख्यान-परम्परा से जुड़ै हय — ई शुद्ध शास्त्रीय परम्परा-अन्विति के दृष्टि हय। कथा सब शिक्षाप्रद, घटनाप्रधान आ नैतिक निष्कर्षवाली हय।

लेखक 'चन्द्रप्रभा'केँ उन्नैसम शताब्दीक मैथिली गद्यक नमूना तथा आरम्भिक कथा-संग्रहक रूपमे स्थापित करैत छथि। पाण्डुलिपि जीर्ण छल, कृतिक किछुए अंश उपलब्ध रहल आ एकर प्रकाशन लेखकक निधनक बहुत वर्ष बाद सन् १९३९ मे भेल। 'चन्द्रप्रभा'क संरचना गुरु-शिष्य संवाद आ एक कथासँ दोसर कथा निकलबाक पद्धतिपर आधारित अछि; एहिमे गुरु-शिष्या संवादक माध्यमसँ नीतिवचनक समर्थन कएल गेल अछि, जाहिमे प्राचीन गद्य-शैलीक उत्कृष्ट निदर्शन भेटैछ। एहि दृष्टिसँ एकर सम्बन्ध पञ्चतन्त्र, विद्यापतिक 'पुरुष-परीक्षा' आ संस्कृतक आख्यान-उपाख्यान-परम्परासँ जुड़ैत अछि — ई शुद्ध शास्त्रीय परम्परा-अन्वितिक दृष्टि थिक। कथा सभ शिक्षाप्रद, घटनाप्रधान आ नैतिक निष्कर्षवाली अछि।

भारतीय औचित्य के नजर सें एकर महत्त्व कथानक के जटिलता में नै, सुरुआती मैथिली गद्य के ऐतिहासिक भूमिका में छै। पाश्चात्य नजर सें ई

उद्‌गम-खोज छै, जे ऐतिहासिकतावादी समीक्षा के केन्द्रीय प्रवृत्ति छी। विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें ई अध्याय सबसें जरूरी छै — कैलेकि 'चन्द्रप्रभा' के "अनुपलब्धता"के समीक्षक अपने रेखांकित करै छै, आरो दुर्लभ पाण्डुलिपि, सम्पादक आरो प्रकाशक के श्रम के साहित्यिक इतिहास के अङ्ग बनावै छै। हाशियाकृत, अभिलेखहीन, लुप्त-पाठक पुनःस्थापना — इहे समान्तर इतिहास के मूल-मन्त्र छै, आरो रमानन्द झा एकर पहिलों घोष एहिजा करै छै।

भारतीय औचित्य-दृष्टि से एकर महत्त्व कथानक के जटिलता में न, आरम्भिक मैथिली गद्य के ऐतिहासिक भूमिका में हय। पाश्चात्य दृष्टि से ई उद्‌गम-अन्वेषण हय, जे ऐतिहासिकतावादी समीक्षा के केन्द्रीय प्रवृत्ति छी। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि से ई अध्याय सबसे महत्त्वपूर्ण हय — काहे कि 'चन्द्रप्रभा' के "अनुपलब्धता" के समीक्षक खुद रेखाङ्कित करै हथिन, आ दुर्लभ पाण्डुलिपि, सम्पादक आ प्रकाशक के श्रम के साहित्यिक इतिहास के अंग बनावै हथिन। हाशियाकृत, अभिलेखहीन, लुप्त-पाठक पुनःस्थापना — इहे समान्तर इतिहास के मूल-मन्त्र हय, आ रमानन्द झा एकर पहिल घोष इहाँ करै हथिन।

भारतीय औचित्य-दृष्टिसँ एकर महत्त्व कथानकक जटिलतामे नहि, आरम्भिक मैथिली गद्यक ऐतिहासिक भूमिकामे अछि। पाश्चात्य दृष्टिसँ ई उद्‌गम-अन्वेषण थिक, जे ऐतिहासिकतावादी समीक्षाक केन्द्रीय प्रवृत्ति छी। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ ई अध्याय सभसँ महत्त्वपूर्ण अछि — किएक तँ 'चन्द्रप्रभा'क "अनुपलब्धता"केँ समीक्षक स्वयं रेखाङ्कित करैत छथि, आ दुर्लभ पाण्डुलिपि, सम्पादक आ प्रकाशकक श्रमकेँ साहित्यिक इतिहासक अङ्ग बनबैत छथि। हाशियाकृत, अभिलेखहीन, लुप्त-पाठक पुनःस्थापना — इएह समान्तर इतिहासक मूल-मन्त्र थिक, आ रमानन्द झा एकर पहिल घोष एतय करैत छथि।

२. मैथिली के पहिलों उपन्यासकार पं॰ जीवछ मिश्र आरो 'रामेश्वर'

२. मैथिली के प्रथम उपन्यासकार पं॰ जीवछ मिश्र आ 'रामेश्वर'

२. मैथिलीक प्रथम उपन्यासकार पं॰ जीवछ मिश्र आ 'रामेश्वर'

लेखक 'रामेश्वर' के सन् १९१६ में मिथिला प्रिंटिंग वर्क्स, मधुबनी सें प्रकाशित मैथिली के पहिलों मौलिक उपन्यास मानै छै। पं॰ जीवछ मिश्र के जन्म १८६३ ई॰ में भेलै छेलै; पिता के असामयिक निधन के कारणें हुनकर शिक्षा बाधित भेलै, तइयो ऊ संस्कृत, मैथिली, हिन्दी आरो उर्दू के गहन अध्ययन कैलकै। हुनकर जिनगी, साहित्यिक प्रेरणा आरो मातृभाषा के प्रति प्रतिबद्धता के फैलाव सें परस्तुत कैल गेलै — हिन्दी-विस्तारवाद के खिलाफ प्रतिरोध आरो 'मैथिल महासभा' के वंशानुगत नेतृत्व के विरोध, ई सब्भे असल में औपनिवेशिक-कालीन भाषिक अस्मिता-संघर्ष के जीवन्त दस्तावेज छै।

लेखक 'रामेश्वर' के सन् १९१६ में मिथिला प्रिंटिंग वर्क्स, मधुबनी से प्रकाशित मैथिली के प्रथम मौलिक उपन्यास मानै हथिन। पं॰ जीवछ मिश्र के जन्म १८६३ ई॰ में भेल हल; पिता के असामयिक निधन के कारणँ हुनकर शिक्षा बाधित भेल, तबो ओ संस्कृत, मैथिली, हिन्दी आ उर्दू के गहन अध्ययन कैलथिन। हुनकर जीवन, साहित्यिक प्रेरणा आ मातृभाषा के प्रति प्रतिबद्धता के विस्तार से प्रस्तुत कैल गेल हय — हिन्दी-विस्तारवाद के विरुद्ध प्रतिरोध आ 'मैथिल महासभा' के वंशानुगत नेतृत्व के विरोध, ई सब असल में औपनिवेशिक-कालीन भाषिक अस्मिता-संघर्ष के जीवन्त दस्तावेज हय।

लेखक 'रामेश्वर'कँ सन् १९१६ मे मिथिला प्रिंटिंग वर्क्स, मधुबनी सँ प्रकाशित मैथिलीक प्रथम मौलिक उपन्यास मानैत छथि। पं॰ जीवछ मिश्रक जन्म १८६३ ई॰ मे भेल छल; पिताक असामयिक निधनक कारणँ हुनक शिक्षा बाधित भेल, तथापि ओ संस्कृत, मैथिली, हिन्दी आ उर्दूक गहन अध्ययन कएलनि। हुनक जीवन, साहित्यिक प्रेरणा आ मातृभाषाक प्रति प्रतिबद्धताकँ विस्तारसँ प्रस्तुत कएल गेल अछि — हिन्दी-विस्तारवादक विरुद्ध प्रतिरोध आ 'मैथिल महासभा'क वंशानुगत नेतृत्वक विरोध, ई सभटा वस्तुतः औपनिवेशिक-कालीन भाषिक अस्मिता-संघर्षक जीवन्त दस्तावेज थिक।

उपन्यास के केन्द्र में भूख, श्राद्ध के आडम्बर, ऋण, पुलिस-प्रशासन के अत्याचार, झूठ अभियोग, कारावास, पारिवारिक विघटन आरो अपराध के सामाजिक उत्पत्ति छै। रामेश्वर अपन पिता के श्राद्ध के लेली कर्ज लै छै, घर-घराड़ी बेचयपर विवश होय छै, आरो आखिर में पुलिस के प्रताड़ना सें क्षुब्ध भऽ

डकै बनि जाय छै; ओकर पत्नी पार्वती कमला में कूदि आत्महत्या के कोसिस करै छै। रामेश्वर जन्मजात अपराधी नै; आर्थिक विवशता, सामन्ती सत्ता आरो प्रशासनिक छेलै हुनका अपराध के बाटपर ढकेलै छै। मार्क्सवादी नजर सें रामेश्वर के अपराध वास्तव में वर्गीय शोषण के परिणाम छै। करुण रस के निर्माण उपन्यास के सुरुआती दृश्य सें होय छै — श्राद्ध के बाद फेकल भोजनपर कुकुर सब्भे टूटि पड़ै छै आरो भूखल बुतरू दूर सें देखै रहै छै। लेखक के अनुसार संवाद सोझ आरो स्वाभाविक छै आरो वातावरण-निर्माण प्रभावकारी।

उपन्यास के केन्द्र में भूख, श्राद्ध के आडम्बर, ऋण, पुलिस-प्रशासन के अत्याचार, झूठ अभियोग, कारावास, पारिवारिक विघटन आ अपराध के सामाजिक उत्पत्ति हय। रामेश्वर अपन पिता के श्राद्ध के खातिर कर्ज ले हय, घर-घराड़ी बेचय पर विवश होय हय, आ अन्त में पुलिस के प्रताड़ना से क्षुब्ध होके डकैत बन जाय हय; ओकर पत्नी पार्वती कमला में कूदके आत्महत्या के प्रयास करै हय। रामेश्वर जन्मजात अपराधी न; आर्थिक विवशता, सामन्ती सत्ता आ प्रशासनिक छल हुनका अपराध के बाट पर धकेलै हय। मार्क्सवादी दृष्टि से रामेश्वर के अपराध वास्तव में वर्गीय शोषण के परिणाम हय। करुण रस के निर्माण उपन्यास के आरम्भिक दृश्य से होय हय — श्राद्ध के बाद फेकल भोजन पर कुकुर सब टूट पड़ै हय आ भूखल बालक दूर से देखै रहै हय। लेखक के अनुसार संवाद सरल आ स्वाभाविक हय आ वातावरण-निर्माण प्रभावकारी।

उपन्यासक केन्द्रमे भूख, श्राद्धक आडम्बर, ऋण, पुलिस-प्रशासनक अत्याचार, झूठ अभियोग, कारावास, पारिवारिक विघटन आ अपराधक सामाजिक उत्पत्ति अछि। रामेश्वर अपन पिताक श्राद्धक लेल कर्ज लैत अछि, घर-घराड़ी बेचयपर विवश होइत अछि, आ अन्ततः पुलिसक प्रताड़नासँ क्षुब्ध भऽ डकैत बनि जाइछ; ओकर पत्नी पार्वती कमलामे कूदि आत्महत्याक प्रयास करैत अछि। रामेश्वर जन्मजात अपराधी नहि; आर्थिक विवशता, सामन्ती सत्ता आ प्रशासनिक छल हुनका अपराधक बाटपर धकेलैत अछि। मार्क्सवादी दृष्टिसँ रामेश्वरक अपराध वास्तवमे वर्गीय शोषणक परिणाम अछि। करुण रसक निर्माण उपन्यासक आरम्भिक दृश्यसँ होइत अछि — श्राद्धक बाद फेकल भोजनपर कुकुर सभ टूटि पड़ैत अछि आ भूखल बालक दूरसँ देखैत रहैत

अछि। लेखकक अनुसार संवाद सरल आ स्वाभाविक अछि तथा वातावरण-निर्माण प्रभावकारी।

मार्क्सवादी-नवऐतिहासिकतावादी दृष्टि सें ई निबन्ध कृति के सर्वश्रेष्ठ अध्याय-मध्ये एक छै। समीक्षक 'रामेश्वर' के खाली सौन्दर्यशास्त्रीय वस्तु नै, बल्कि सत्ता-बनावट — राज दरभंगा, मैथिल महासभा, हिन्दी साहित्य परिषद — के खिलाफ ठाढ़ भेलै प्रतिरोधी पाठक रूप में व्याख्या करै छै। जीवछ मिश्र के निर्भीकता आरो 'मठाधीशक षडचन्त्रक भण्डाफोड़' — ई नव-ऐतिहासिकतावाद के शक्ति-प्रवचन-विश्लेषण सें अद्‌भुत रूप में मेल खाइत छै। विदेह समान्तर इतिहास के दृष्टि सें 'रामेश्वर' राजदरबार के नै, भूखल ग्रामीण परिवार के इतिहास लिखै छै — यथार्थवाद के ई विदारक प्रस्तुति मैथिली गद्य के स्वर्ण-शिखर छै।

मार्क्सवादी-नवऐतिहासिकतावादी दृष्टि से ई निबन्ध कृति के सर्वश्रेष्ठ अध्याय-मध्ये एक हय। समीक्षक 'रामेश्वर' के खाली सौन्दर्यशास्त्रीय वस्तु न, बल्कि सत्ता-संरचना — राज दरभंगा, मैथिल महासभा, हिन्दी साहित्य परिषद — के विरुद्ध ठाढ़ भेल प्रतिरोधी पाठक रूप में व्याख्यायित करै हथिन। जीवछ मिश्र के निर्भीकता आ 'मठाधीश के षडचन्त्र के भण्डाफोड़' — ई नव-ऐतिहासिकतावाद के शक्ति-प्रवचन-विश्लेषण से अद्‌भुत रूप में मेल खाय हय। विदेह समान्तर इतिहास के दृष्टि से 'रामेश्वर' राजदरबार के न, भूखल ग्रामीण परिवार के इतिहास लिखै हय — यथार्थवाद के ई विदारक प्रस्तुति मैथिली गद्य के स्वर्ण-शिखर हय।

मार्क्सवादी-नवऐतिहासिकतावादी दृष्टिसँ ई निबन्ध कृतिक सर्वश्रेष्ठ अध्याय-मध्ये एक थिक। समीक्षक 'रामेश्वर'केँ मात्र सौन्दर्यशास्त्रीय वस्तु नहि, अपितु सत्ता-संरचना — राज दरभंगा, मैथिल महासभा, हिन्दी साहित्य परिषद — क विरुद्ध ठाढ़ भेल प्रतिरोधी पाठक रूपमे व्याख्यायित करैत छथि। जीवछ मिश्रक निर्भीकता आ 'मठाधीशक षडचन्त्रक भण्डाफोड़' — ई नव-ऐतिहासिकतावादक शक्ति-प्रवचन-विश्लेषणसँ अद्‌भुत रूपेँ मेल खाइत अछि। विदेह समान्तर इतिहासक दृष्टिसँ 'रामेश्वर' राजदरबारक नहि, भूखल ग्रामीण परिवारक इतिहास लिखैत अछि — यथार्थवादक ई विदारक प्रस्तुति मैथिली गद्यक स्वर्ण-शिखर थिक।

३. रासबिहारी लाल दास आरो उपन्यास 'सुमति'

३. रासबिहारी लाल दास आ उपन्यास 'सुमति'

३. रासबिहारी लाल दास आ उपन्यास 'सुमति'

'सुमति' (१९१८ ई॰) मैथिली में आधुनिक उपन्यास के विधा स्थापित करै के सुरुआती कोसिस छै। लेखक रासबिहारी लाल दास के साहित्यिक कमी-बोध, 'मिथिला दर्पण' सें सम्बंध आरो मातृभाषा में उपन्यास दै के संकल्प के रेखांकित करै छै। समाज में व्याप्त अपव्यय, दहेज आरो प्रदर्शनकारी प्रवृत्ति के कारणें परिवार के कोना पतन होय छै, आरो एक सुशिक्षिता नारी सुमति कोना अपन बुद्धि सें खसै घर के सम्हारै छै, ई ई उपन्यास के मूल स्वर छै। सहेलोला बाबू आरो मनोरथ लाभ के बीच सिद्धान्त-विवाह के प्रसङ्ग, कर्ज लऽ कऽ बरियाती के स्वागत, आरो आखिर में पूरा सम्पत्ति के विनाश के जे सजीव चित्रण छै, ऊ सामाजिक यथार्थवाद के प्रखर उदाहरण छै। सुमति सासुर अबितहि अपन गहना बेचि परिवार के ऋणमुक्त करै छै आरो समाज के लेली एगो आदर्श स्थापित करै छै।

'सुमति' (१९१८ ई॰) मैथिली में आधुनिक उपन्यास के विधा स्थापित करे के आरम्भिक प्रयास हय। लेखक रासबिहारी लाल दास के साहित्यिक अभाव-बोध, 'मिथिला दर्पण' से सम्बन्ध आ मातृभाषा में उपन्यास देवे के संकल्प के रेखाङ्कित करै हथिन। समाज में व्याप्त अपव्यय, दहेज आ प्रदर्शनकारी प्रवृत्ति के कारणेँ परिवार के कोना पतन होय हय, आ एक सुशिक्षिता नारी सुमति कोना अपन बुद्धि से खसै घर के सम्हारै हय, ई ई उपन्यास के मूल स्वर हय। सहेलोला बाबू आ मनोरथ लाभ के बीच सिद्धान्त-विवाह के प्रसङ्ग, कर्ज लेके बरियाती के स्वागत, आ अन्त में पूरा सम्पत्ति के विनाश के जे सजीव चित्रण हय, ओ सामाजिक यथार्थवाद के प्रखर उदाहरण हय। सुमति सासुर अबितहि अपन गहना बेचि परिवार के ऋणमुक्त करै हय आ समाज के खातिर एकगो आदर्श स्थापित करै हय।

'सुमति' (१९१८ ई॰) मैथिलीमे आधुनिक उपन्यासक विधा स्थापित करबाक आरम्भिक प्रयास अछि। लेखक रासबिहारी लाल दासक साहित्यिक अभाव-बोध, 'मिथिला दर्पण'सँ सम्बन्ध आ मातृभाषामे उपन्यास देबाक संकल्पकेँ

रेखाङ्कित करैत छथि। समाजमे व्याप्त अपव्यय, दहेज आ प्रदर्शनकारी प्रवृत्तिक कारणेँ परिवारक कोना पतन होइछ, आ एक सुशिक्षिता नारी सुमति कोना अपन बुद्धिसँ खसैत घरकेँ सम्हारैत अछि, ई एहि उपन्यासक मूल स्वर थिक। सहेलोला बाबू आ मनोरथ लाभक बीच सिद्धान्त-विवाहक प्रसङ्ग, कर्ज लऽ कऽ बरियातीक स्वागत, आ अन्ततः सम्पूर्ण सम्पत्तिक विनाशक जे सजीव चित्रण अछि, ओ सामाजिक यथार्थवादक प्रखर उदाहरण थिक। सुमति सासुर अबितहि अपन गहना बेचि परिवारकेँ ऋणमुक्त करैत अछि आ समाजक लेल एकटा आदर्श स्थापित करैत अछि।

अध्याय पूर्ववर्ती इतिहासकार के मत के सेहो समाहित करै छै। जयकान्त मिश्र कथानक-विन्यास, चरित्र-निर्माण आरो कथन-कौशल के अपरिपक्व मानै छै, मतरकि विषय के मैथिली उपन्यास लेली उपयुक्त स्वीकारै छै; राधाकृष्ण चौधरी एकरा आधुनिक मैथिली उपन्यास-लेखन के पहिलों सफल कोसिस कहै छै। ई निबन्ध के एगो खास शक्ति अन्तर्पाठीयता के सूक्ष्म बोध में छै — 'सुमति' में हिन्दी कविता के प्रयोग के जीवछ मिश्र 'मैथिली भाषा आ कविक अक्षमताक द्योतक' मानने रहलै, आरो रमानन्द झा ई समकालीन आलोचनात्मक संवाद के उघारै छै। इहे आलोचना-क-आलोचना ई निबन्ध के सैद्धान्तिक गहराइ दै छै। भारतीय औचित्य-सिद्धान्त के दृष्टि सें हिन्दी-पद्य के मैथिली-गद्य में परयोग भाषा-औचित्य-भङ्ग छै — रमानन्द झा ई दोष के 'शैलीजन्य शिथिलता' कहि मानी लै छै, तइयो सामाजिक जागरण के युग-स्वर के परधान मानि कृति के जरूरी घोषित करै छै। ई मूल्याङ्कन-सन्तुलन — दोष-स्वीकृति संग-संग ऐतिहासिक-सामाजिक महत्त्व के रक्षा — समीक्षक के परिपक्वता के परिचायक छै।

अध्याय पूर्ववर्ती इतिहासकार के मत के भी समाहित करै हय। जयकान्त मिश्र कथानक-विन्यास, चरित्र-निर्माण आ कथन-कौशल के अपरिपक्व मानै हथिन, मुदा विषय के मैथिली उपन्यास खातिर उपयुक्त स्वीकारै हथिन; राधाकृष्ण चौधरी एकरा आधुनिक मैथिली उपन्यास-लेखन के पहिल सफल प्रयास कहै हथिन। ई निबन्ध के एकगो विशेष शक्ति अन्तर्पाठीयता के सूक्ष्म बोध में हय — 'सुमति'में हिन्दी कविता के प्रयोग के जीवछ मिश्र 'मैथिली भाषा आ कवि के अक्षमता के द्योतक' मानने रहथिन, आ रमानन्द झा ई

समकालीन आलोचनात्मक संवाद के उद्घाटित करै हथिन। इहे आलोचना-के-आलोचना ई निबन्ध के सैद्धान्तिक गहराइ दे हय। भारतीय औचित्य-सिद्धान्त के दृष्टि से हिन्दी-पद्य के मैथिली-गद्य में प्रयोग भाषा-औचित्य-भङ्ग हय — रमानन्द झा ई दोष के 'शैलीजन्य शिथिलता' कहके स्वीकार करै हथिन, तबो सामाजिक जागरण के युग-स्वर के प्रधान मानके कृति के महत्त्वपूर्ण घोषित करै हथिन। ई मूल्याङ्कन-सन्तुलन — दोष-स्वीकृति साथे ऐतिहासिक-सामाजिक महत्त्व के रक्षा — समीक्षक के परिपक्वता के परिचायक हय।

अध्याय पूर्ववर्ती इतिहासकारक मतकेँ सेहो समाहित करैत अछि। जयकान्त मिश्र कथानक-विन्यास, चरित्र-निर्माण आ कथन-कौशलकेँ अपरिपक्व मानैत छथि, मुदा विषयकेँ मैथिली उपन्यास लेल उपयुक्त स्वीकारैत छथि; राधाकृष्ण चौधरी एकरा आधुनिक मैथिली उपन्यास-लेखनक पहिल सफल प्रयास कहैत छथि। एहि निबन्धक एकटा विशेष शक्ति अन्तर्पाठीयताक सूक्ष्म बोधमे अछि — 'सुमति'मे हिन्दी कविताक प्रयोगकेँ जीवछ मिश्र 'मैथिली भाषा आ कविक अक्षमताक द्योतक' मानने रहथि, आ रमानन्द झा एहि समकालीन आलोचनात्मक संवादकेँ उद्घाटित करैत छथि। इएह आलोचना-क-आलोचना एहि निबन्धकेँ सैद्धान्तिक गहराइ दैत अछि। भारतीय औचित्य-सिद्धान्तक दृष्टिसँ हिन्दी-पद्यक मैथिली-गद्यमे प्रयोग भाषा-औचित्य-भङ्ग थिक — रमानन्द झा एहि दोषकेँ 'शैलीजन्य शिथिलता' कहि स्वीकार करैत छथि, तथापि सामाजिक जागरणक युग-स्वरकेँ प्रधान मानि कृतिकेँ महत्त्वपूर्ण घोषित करैत छथि। ई मूल्याङ्कन-सन्तुलन — दोष-स्वीकृति संगहि ऐतिहासिक-सामाजिक महत्त्वक रक्षा — समीक्षकक परिपक्वताक परिचायक थिक।

औचित्य के नजर सें अध्याय ऐतिहासिक महत्त्व आरो कलात्मक सिद्धि बीच भेद करै छै। कोय कृति 'प्रथम' भऽ सकै छै, मतरकि केवल पहिलों होय के कारण कलात्मक रूप सें पूरा नै बनी जाय छै। विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें 'सुमति' विधागत संक्रमण के दस्तावेज छै — नीति-आख्यान सें आधुनिक सामाजिक उपन्यास तक बढ़ै मैथिली गद्य के अस्थिर, मतरकि जरूरी डेग।

औचित्य-दृष्टि से अध्याय ऐतिहासिक महत्त्व आ कलात्मक सिद्धि बीच भेद करै हय। कोनो कृति 'प्रथम' हो सकै हय, मुदा खाली प्रथम होय के कारण

कलात्मक रूप से पूर्ण न बन जाय हय। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि से 'सुमति' विधागत संक्रमण के दस्तावेज हय — नीति-आख्यान से आधुनिक सामाजिक उपन्यास तक बढ़ै मैथिली गद्य के अस्थिर, मुदा महत्त्वपूर्ण डेग।

औचित्य-दृष्टिसँ अध्याय ऐतिहासिक महत्त्व आ कलात्मक सिद्धि बीच भेद करैत अछि। कोनो कृति 'प्रथम' भऽ सकैत अछि, मुदा केवल प्रथम होयबाक कारण कलात्मक रूपसँ पूर्ण नहि बनि जाइत अछि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ 'सुमति' विधागत संक्रमणक दस्तावेज अछि — नीति-आख्यानसँ आधुनिक सामाजिक उपन्यास धरि बढ़ैत मैथिली गद्यक अस्थिर, मुदा महत्त्वपूर्ण डेग।

४. जनार्दन झा 'जनसीदन' आरो 'निर्दयी सासु'

४. जनार्दन झा 'जनसीदन' आ 'निर्दयी सासु'

४. जनार्दन झा 'जनसीदन' आ 'निर्दयी सासु'

ई अध्याय विवाह-व्यवस्था, घटक, कन्यापक्ष, सासु-पुतोहु सम्बंध आरो घरेलू स्त्री-उत्पीड़न के कथा-विवेचन के केन्द्र में आनै छै। जनसीदन (१८७२–१९५१) के 'निर्दयी सासु' सन् १९१४ ई॰ में 'मिथिला मिहिर' में धारावाहिक रूप में छपलै; एकर कथावस्तु सामाजिक घटनापर आधारित छै आरो चित्रण एतेक स्वाभाविक छै जे घटना पाठक के सोझाँ घटै प्रतीत होय छै। एकरा में सासु अनूपरानी आरो ननदि के अत्याचार सहै मूक नारी शारदा के कारुणिक चित्रण भेलै, जे ओहि समय के समाज में स्त्री-शिक्षा के विरोध आरो पितृसत्तात्मक क्रूरता के प्रमाणित करै छै। ज्योतिषी चिन्तामणि झा द्वारा शारदा के शिक्षित करब आरो परिपाटी-विरोधी कन्यादान, आरो अनूपरानी द्वारा ओकर विरोध — असल में प्राचीन आरो नवीन जिनगी-मूल्य के द्वन्द्व छै, जकरा समीक्षक 'प्रखर सामाजिक चेतनाक प्रतिफल' कहै छै।

ई अध्याय विवाह-व्यवस्था, घटक, कन्यापक्ष, सासु-पुतोहु सम्बन्ध आ घरेलू स्त्री-उत्पीड़न के कथा-विवेचन के केन्द्र में आनै हय। जनसीदन (१८७२–१९५१) के 'निर्दयी सासु' सन् १९१४ ई॰ में 'मिथिला मिहिर' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित भेल; एकर कथावस्तु सामाजिक घटना पर आधारित हय आ चित्रण एतना स्वाभाविक हय कि घटना पाठक के सोझा घटै प्रतीत होय हय। एमें

सासु अनूपरानी आ ननदि के अत्याचार सहै मूक नारी शारदा के कारुणिक चित्रण भेल हय, जे तत्कालीन समाज में स्त्री-शिक्षा के विरोध आ पितृसत्तात्मक क्रूरता के प्रमाणित करै हय। ज्योतिषी चिन्तामणि झा द्वारा शारदा के शिक्षित करब आ परिपाटी-विरोधी कन्यादान, आ अनूपरानी द्वारा ओकर विरोध — असल में प्राचीन आ नवीन जीवन-मूल्य के द्वन्द्व हय, जकरा समीक्षक 'प्रखर सामाजिक चेतना के प्रतिफल' कहै हथिन।

ई अध्याय विवाह-व्यवस्था, घटक, कन्यापक्ष, सासु-पुतोहु सम्बन्ध आ घरेलू स्त्री-उत्पीड़नकेँ कथा-विवेचनक केन्द्रमे आनैत अछि। जनसीदन (१८७२–१९५१)क 'निर्दयी सासु' सन् १९१४ ई॰ मे 'मिथिला मिहिर'मे धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित भेल; एकर कथावस्तु सामाजिक घटनापर आधारित अछि आ चित्रण एतेक स्वाभाविक अछि जे घटना पाठकक सोझाँ घटैत प्रतीत होइत अछि। एहिमे सासु अनूपरानी आ ननदिक अत्याचार सहैत मूक नारी शारदाक कारुणिक चित्रण भेल अछि, जे तत्कालीन समाजमे स्त्री-शिक्षाक विरोध आ पितृसत्तात्मक क्रूरताकेँ प्रमाणित करैत अछि। ज्योतिषी चिन्तामणि झा द्वारा शारदाकेँ शिक्षित करब आ परिपाटी-विरोधी कन्यादान, तथा अनूपरानी द्वारा ओकर विरोध — वस्तुतः प्राचीन आ नवीन जीवन-मूल्यक द्वन्द्व थिक, जकरा समीक्षक 'प्रखर सामाजिक चेतनाक प्रतिफल' कहैत छथि।

जनसीदन के 'शशिकला', 'कलियुगी संन्यासी' आदि के विवेचन में समीक्षक विधा-विवाद के — हरिमोहन झा 'निर्दयी सासु' के 'प्रहसन' कहलकै, आन 'उपन्यास' — सुन्नर ढंगेँ परस्तुत करै छै। मुख्य उपलब्धि ई जे रमानन्द झा जनसीदन के व्यक्तित्व के प्रखरता-सम्बंधी अपन प्रारम्भिक सन्देह के उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण सें अपने संशोधित करै छै — सामाजिक-सुधारवादी चेतना के आलोक में व्यक्तित्व प्रखर भेटै छै। ई आत्म-संशोधनकारी आलोचना-पद्धति कृति के बौद्धिक ईमानदारी के परमाण छै।

जनसीदन के 'शशिकला', 'कलियुगी संन्यासी' आदि के विवेचन में समीक्षक विधा-विवाद के — हरिमोहन झा 'निर्दयी सासु' के 'प्रहसन' कहलथिन, आन 'उपन्यास' — सुन्दर ढंगेँ प्रस्तुत करै हथिन। मुख्य उपलब्धि ई जे रमानन्द झा जनसीदन के व्यक्तित्व के प्रखरता-सम्बन्धी अपन प्रारम्भिक सन्देह के उपलब्ध

साहित्य के विश्लेषण से खुद संशोधित करै हथिन — सामाजिक-सुधारवादी चेतना के आलोक में व्यक्तित्व प्रखर भेटै छनि। ई आत्म-संशोधनकारी आलोचना-पद्धति कृति के बौद्धिक ईमानदारी के प्रमाण हय।

जनसीदनक 'शशिकला', 'कलियुगी संन्यासी' आदिक विवेचनमे समीक्षक विधा-विवादकेँ — हरिमोहन झा 'निर्दयी सासु'केँ 'प्रहसन' कहलनि, आन 'उपन्यास' — सुन्दर ढंगेँ प्रस्तुत करैत छथि। मुख्य उपलब्धि ई जे रमानन्द झा जनसीदनक व्यक्तित्वक प्रखरता-सम्बन्धी अपन प्रारम्भिक सन्देहकेँ उपलब्ध साहित्यक विश्लेषणसँ स्वयं संशोधित करैत छथि — सामाजिक-सुधारवादी चेतनाक आलोकमे व्यक्तित्व प्रखर भेटैत छनि। ई आत्म-संशोधनकारी आलोचना-पद्धति कृतिक बौद्धिक ईमानदारीक प्रमाण थिक।

नारीवादी नजर सें कथा घरेलू सत्ता के जटिल रूप उघारै छै। स्त्री केवल पुरुषद्वारा नै, पितृसत्तात्मक संस्कार ग्रहण कएने दोसरका स्त्रीद्वारा सेहो प्रताड़ित होय छै; सासु अपने व्यवस्था के उत्पाद होइतहुँ पुतोहुपर व्यवस्था के प्रतिनिधि बनि जाय छै। करुण रस के स्रोत नवविवाहिता के असहायता छै। ध्वनि-सिद्धान्त सें देखलापर विवाह के उत्सव के पाछाँ कन्या के आर्थिक मूल्याङ्कन, परिवार के प्रतिष्ठा आरो पितृसत्तात्मक नियन्त्रण के कठोर इतिहास सुनाय छै। मार्क्सवादी नजर सें 'मिथिलाक समाजकेँ कोला-कोलामे बाँटि शोषण करैत' व्यवस्था के खिलाफ शंखनाद के रूप में एकर पाठ वर्ग-चेतना आरो सामाजिक अन्तर्विरोध के साहित्यिक अभिव्यक्ति के उत्तम उदाहरण छै।

नारीवादी दृष्टि से कथा घरेलू सत्ता के जटिल रूप उद्घाटित करै हय। स्त्री खाली पुरुषद्वारा न, पितृसत्तात्मक संस्कार ग्रहण कइले दोसर स्त्रीद्वारा भी प्रताड़ित होय हय; सासु खुद व्यवस्था के उत्पाद रहितो पुतोहु पर व्यवस्था के प्रतिनिधि बन जाय हथिन। करुण रस के स्रोत नवविवाहिता के असहायता हय। ध्वनि-सिद्धान्त से देखे पर विवाह के उत्सव के पाछाँ कन्या के आर्थिक मूल्याङ्कन, परिवार के प्रतिष्ठा आ पितृसत्तात्मक नियन्त्रण के कठोर इतिहास सुनाय हय। मार्क्सवादी दृष्टि से 'मिथिला के समाज के कोला-कोला में बाँटके शोषण करै' व्यवस्था के विरुद्ध शंखनाद के रूप में एकर पाठ वर्ग-चेतना आ सामाजिक अन्तर्विरोध के साहित्यिक अभिव्यक्ति के उत्तम उदाहरण हय।

नारीवादी दृष्टिसँ कथा घरेलू सत्ताक जटिल रूप उद्घाटित करैत अछि। स्त्री केवल पुरुषद्वारा नहि, पितृसत्तात्मक संस्कार ग्रहण कएने दोसर स्त्रीद्वारा सेहो प्रताड़ित होइत अछि; सासु स्वयं व्यवस्थाक उत्पाद होइतहुँ पुतोहुपर व्यवस्थाक प्रतिनिधि बनि जाइत छथि। करुण रसक स्रोत नवविवाहिताक असहायता अछि। ध्वनि-सिद्धान्तसँ देखलापर विवाहक उत्सवक पाछाँ कन्याक आर्थिक मूल्याङ्कन, परिवारक प्रतिष्ठा आ पितृसत्तात्मक नियन्त्रणक कठोर इतिहास सुनाइत अछि। मार्क्सवादी दृष्टिसँ 'मिथिलाक समाजकेँ कोला-कोलामे बाँटि शोषण करैत' व्यवस्थाक विरुद्ध शंखनादक रूपमे एकर पाठ वर्ग-चेतना आ सामाजिक अन्तर्विरोधक साहित्यिक अभिव्यक्तिक उत्तम उदाहरण थिक।

५. पं॰ जनार्दन झा — एक बिसरल साहित्यसेवी

५. पं॰ जनार्दन झा — एक बिसरल साहित्यसेवी

५. पं॰ जनार्दन झा — एक बिसरल साहित्यसेवी

ई नान्हकी मतरकि सैद्धान्तिक दृष्टि सें सबसें बेसी जरूरी निबन्ध में रमानन्द झा अपन समस्त आलोचनात्मक परियोजना के सैद्धान्तिक आधार परस्तुत करै छै — 'दू कोटिक साहित्यकार' के सिद्धान्त। पहिलों कोटि के (विद्यापति जइसन) रचनाकार ततेक व्यापक होय छै जे दोसरका कोटि के रचनाकार के आच्छादित कऽ दै छै, आरो कालान्तर में लोक हुनका बिसरि जाय छै। गङ्गा-कोशीक विशाल जल आरो गाम-गाम के जोड़निहार छोट धार के स्थानीय महत्त्व के रूपक ई सिद्धान्त के अविस्मरणीय बनाबै छै — इतिहास के वास्तविक नदी में केवल विशाल प्रवाह नै, छोट-छोट धार सेहो जल दै छै, आरो पं॰ जनार्दन झा ओहि अदृश्य धारा के प्रतिनिधि छै।

ई लघु मुदा सैद्धान्तिक दृष्टि से सबसे बेसी महत्त्वपूर्ण निबन्ध में रमानन्द झा अपन समस्त आलोचनात्मक परियोजना के सैद्धान्तिक आधार प्रस्तुत करै हथिन — 'दू कोटि के साहित्यकार' के सिद्धान्त। पहिल कोटि के (विद्यापति जइसन) रचनाकार एतना व्यापक होय हथिन कि दोसर कोटि के रचनाकार के आच्छादित कर दे हथिन, आ कालान्तर में लोक हुनका बिसर जाय हय। गङ्गा-कोशी के विशाल जल आ गाम-गाम के जोड़निहार छोट धार के स्थानीय महत्त्व के रूपक ई सिद्धान्त के अविस्मरणीय बनावै हय — इतिहास

के वास्तविक नदी में खाली विशाल प्रवाह न, छोट-छोट धार भी जल दे हय, आ पं॰ जनार्दन झा ओ अदृश्य धारा के प्रतिनिधि हथिन।

एहि लघु किन्तु सैद्धान्तिक दृष्टिसँ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण निबन्धमे रमानन्द झा अपन समस्त आलोचनात्मक परियोजनाक सैद्धान्तिक आधार प्रस्तुत करैत छथि — 'दू कोटिक साहित्यकार'क सिद्धान्त। पहिल कोटिक (विद्यापति सन) रचनाकार ततेक व्यापक होइत छथि जे दोसर कोटिक रचनाकारकेँ आच्छादित कऽ दैत छथि, आ कालान्तरमे लोक हुनका बिसरि जाइत अछि। गङ्गा-कोशीक विशाल जल आ गाम-गामकेँ जोड़निहार छोट धारक स्थानीय महत्त्वक रूपक एहि सिद्धान्तकेँ अविस्मरणीय बनबैत अछि — इतिहासक वास्तविक नदीमे केवल विशाल प्रवाह नहि, छोट-छोट धार सेहो जल दैत अछि, आ पं॰ जनार्दन झा ओहि अदृश्य धाराक प्रतिनिधि छथि।

लेखक के तर्क छै जे साहित्य के मुख्य धारा केवल प्रसिद्ध लेखक सें नै, कई स्थानीय आरो 'दोसरा पाँति' के साहित्यसेवी के निरन्तर श्रम सें बनै छै। पं॰ जनार्दन झा के रचना दुर्लभ भेला कारण हुनकर नाम इतिहास सें लगभग लुप्त भऽ गेलै। 'जानकी परिणय' जइसन खण्डकाव्य में अकाल, जनकपुर, सीताजन्म, धनुषभङ्ग आरो विवाह-संस्कार के चित्रण छै; भाषिक सरलता, मौलिकता आरो सांस्कृतिक विवरण एकरा साहित्येतिहास के उपयोगी सामग्री बनाबै छै।

लेखक के तर्क हय कि साहित्य के मुख्य धारा खाली प्रसिद्ध लेखक से न, अनेक स्थानीय आ 'दोसरा पाँति' के साहित्यसेवी के निरन्तर श्रम से बनै हय। पं॰ जनार्दन झा के रचना दुर्लभ भेला कारण हुनकर नाम इतिहास से लगभग लुप्त हो गेल। 'जानकी परिणय' जइसन खण्डकाव्य में अकाल, जनकपुर, सीताजन्म, धनुषभङ्ग आ विवाह-संस्कार के चित्रण हय; भाषिक सरलता, मौलिकता आ सांस्कृतिक विवरण एकरा साहित्येतिहास के उपयोगी सामग्री बनावै हय।

लेखकक तर्क अछि जे साहित्यक मुख्य धारा केवल प्रसिद्ध लेखकसँ नहि, अनेक स्थानीय आ 'दोसरा पाँति'क साहित्यसेवीक निरन्तर श्रमसँ बनैत अछि। पं॰ जनार्दन झाक रचना दुर्लभ भेला कारण हुनकर नाम इतिहाससँ लगभग लुप्त भऽ गेल। 'जानकी परिणय' सन खण्डकाव्यमे अकाल, जनकपुर, सीताजन्म, धनुषभङ्ग आ विवाह-संस्कारक चित्रण अछि; भाषिक सरलता,

मौलिकता आ सांस्कृतिक विवरण एकरा साहित्येतिहासक उपयोगी सामग्री बनबैत अछि।

ई सिद्धान्त पाश्चात्य कैनन-निर्माण आरो साहित्यिक-आर्थिकीक सिद्धान्त सें आश्चर्यजनक रूप में साम्य रखै छै। रमानन्द झा जे कहै छै — प्रकाशन के कमी, अनियतकालीन पत्रिका आरो सर्वसुलभता के कमी बहुत रचनाकार के प्रकाश सें वञ्चित कऽ देलकै — ई विदेह समान्तर इतिहास-प्रतिमान के केन्द्रीय अभिकल्पना छै। सत्य कहल जाए तें ई पूरा निबन्ध विदेह-आन्दोलन के पूर्व-घोषणापत्र छै।

ई सिद्धान्त पाश्चात्य कैनन-निर्माण आ साहित्यिक-आर्थिकी के सिद्धान्त से आश्चर्यजनक रूप में साम्य रखै हय। रमानन्द झा जे कहै हथिन — प्रकाशन के अभाव, अनियतकालीन पत्रिका आ सर्वसुलभता के अभाव बहुतो रचनाकार के प्रकाश से वञ्चित कर देलक — ई विदेह समान्तर इतिहास-प्रतिमान के केन्द्रीय अभिकल्पना हय। सत्य कहल जाय त ई पूरा निबन्ध विदेह-आन्दोलन के पूर्व-घोषणापत्र हय।

ई सिद्धान्त पाश्चात्य कैनन-निर्माण आ साहित्यिक-आर्थिकीक सिद्धान्तसँ आश्चर्यजनक रूपेँ साम्य रखैत अछि। रमानन्द झा जे कहैत छथि — प्रकाशनक अभाव, अनियतकालीन पत्रिका आ सर्वसुलभताक अभाव बहुतो रचनाकारकेँ प्रकाशसँ वञ्चित कऽ देलक — ई विदेह समान्तर इतिहास-प्रतिमानक केन्द्रीय अभिकल्पना थिक। सत्य कहल जाए तँ ई पूरा निबन्ध विदेह-आन्दोलनक पूर्व-घोषणापत्र थिक।

६. पं॰ त्रिलोचन झा, बेतिया — बिसरल मातृभाषानुरागी

६. पं॰ त्रिलोचन झा, बेतिया — बिसरल मातृभाषानुरागी

६. पं॰ त्रिलोचन झा, बेतिया — बिसरल मातृभाषानुरागी

त्रिलोचन झा (१८७८–१९३८ ई॰) अनुवाद के, कवि, कथाकार-आख्यानलेखक, जीवनीकार, निबन्धकार, सामाजिक कार्यकर्ता आरो संस्थापक व्यक्तित्व के रूप में परस्तुत छै। हुनका में अपूर्व संगठन-शक्ति छेलै; 'सुबोधिनी सभा' आरो मैथिली-आन्दोलन के संगठनात्मक इतिहास के ई निबन्ध उघारै छै। ऊ मातृभूमि-वन्दना आरो अतीत-गानक माध्यम सें सुप्त मैथिल समाज के

जगाबय चाहलनि — "चण्डि तोहर मिथीला देश" जकाँ हुनकर पङ्क्तिसभ जनमानस में ऊर्जा के सञ्चार कैलकै। ऊ 'श्रीमद्भगवद्गीतादर्श' नाम सें गीताक मैथिली पद्यानुवाद सेहो कैलकै, जे हुनकर प्रखर गवेषणात्मक दृष्टि के परिचायक छै।

त्रिलोचन झा (१८७८–१९३८ ई॰) अनुवादक, कवि, कथाकार-आख्यानलेखक, जीवनीकार, निबन्धकार, सामाजिक कार्यकर्ता आ संस्थापक व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत हथिन। हुनका में अपूर्व संगठन-शक्ति हल; 'सुबोधिनी सभा' आ मैथिली-आन्दोलन के संगठनात्मक इतिहास के ई निबन्ध उद्घाटित करै हय। ओ मातृभूमि-वन्दना आ अतीत-गान के माध्यम से सुप्त मैथिल समाज के जगावे चाहलथिन — "चण्डि तोहर मिथीला देश" जइसन हुनकर पङ्क्ति सब जनमानस में ऊर्जा के सञ्चार कैलक। ओ 'श्रीमद्भगवद्गीतादर्श' नाम से गीता के मैथिली पद्यानुवाद भी कैलथिन, जे हुनकर प्रखर गवेषणात्मक दृष्टि के परिचायक हय।

त्रिलोचन झा (१८७८–१९३८ ई॰) अनुवादक, कवि, कथाकार-आख्यानलेखक, जीवनीकार, निबन्धकार, सामाजिक कार्यकर्ता आ संस्थापक व्यक्तित्वक रूपमे प्रस्तुत छथि। हुनकामे अपूर्व संगठन-शक्ति छल; 'सुबोधिनी सभा' आ मैथिली-आन्दोलनक संगठनात्मक इतिहासकेँ ई निबन्ध उद्घाटित करैत अछि। ओ मातृभूमि-वन्दना आ अतीत-गानक माध्यमसँ सुप्त मैथिल समाजकेँ जगाबय चाहलनि — "चण्डि तोहर मिथीला देश" जकाँ हुनक पङ्क्तिसभ जनमानसमे ऊर्जाक सञ्चार कएलक। ओ 'श्रीमद्भगवद्गीतादर्श' नामसँ गीताक मैथिली पद्यानुवाद सेहो कएलनि, जे हुनक प्रखर गवेषणात्मक दृष्टिक परिचायक अछि।

हुनकर लेख विभिन्न पत्र-पत्रिका में बिखरल रहने पूरा मूल्याङ्कन कठिन भेलै — 'बड़ कम सामग्री उपलब्ध अछि', ई समीक्षक अपने बेर-बेर मानी लै छै — मतरकि उपलब्ध सामग्री मातृभाषा आरो साहित्य के प्रति गाढ़ अनुराग प्रमाणित करै छै। हुनकर दृष्टि में भाषा आरो साहित्य समाज के प्रगति के आधार छेलै। ऊ मैथिल समाज के आलस्य, आत्मकेन्द्रितता आरो सांस्कृतिक उदासीनता के ललकारै छेलै आरो मिथिला के प्रतिष्ठा फेर प्राप्त करै के मिल-

जुल के दायित्व के बोध करबै छेलै। उत्तर-औपनिवेशिक नजर सें मातृभाषा-सेवा राजनीतिक स्वाधीनता के फैलाव छै — भाषा-विहीन स्वराज अधूरा स्वराज छै। एहिठाम सामग्री के कमी के स्वीकृति में समान्तर इतिहास-लेखन के मूल संकट — अभिलेख-दारिद्र्य — प्रत्यक्ष होय छै।

हुनकर लेख विभिन्न पत्र-पत्रिका में बिखरल रहने समग्र मूल्याङ्कन कठिन भेल — 'बड़ कम सामग्री उपलब्ध हय', ई समीक्षक खुद बेर-बेर स्वीकार करै हथिन — मुदा उपलब्ध सामग्री मातृभाषा आ साहित्य के प्रति गाढ़ अनुराग प्रमाणित करै हय। हुनकर दृष्टि में भाषा आ साहित्य समाज के प्रगति के आधार हल। ओ मैथिल समाज के आलस्य, आत्मकेन्द्रितता आ सांस्कृतिक उदासीनता के ललकारै हलथिन आ मिथिला के प्रतिष्ठा फेर प्राप्त करे के सामूहिक दायित्व के बोध करावै हलथिन। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि से मातृभाषा-सेवा राजनीतिक स्वाधीनता के विस्तार हय — भाषा-विहीन स्वराज अधूरा स्वराज हय। इहाँ सामग्री के अभाव के स्वीकृति में समान्तर इतिहास-लेखन के मूल संकट — अभिलेख-दारिद्र्य — प्रत्यक्ष होय हय।

हुनकर लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकामे बिखरल रहने समग्र मूल्याङ्कन कठिन भेल — 'बड़ कम सामग्री उपलब्ध अछि', ई समीक्षक स्वयं बेर-बेर स्वीकार करैत छथि — मुदा उपलब्ध सामग्री मातृभाषा आ साहित्यक प्रति गाढ़ अनुराग प्रमाणित करैत अछि। हुनकर दृष्टिमे भाषा आ साहित्य समाजक प्रगतिक आधार छल। ओ मैथिल समाजक आलस्य, आत्मकेन्द्रितता आ सांस्कृतिक उदासीनताकेँ ललकारैत छलाह तथा मिथिलाक प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करबाक सामूहिक दायित्वक बोध करबैत छलाह। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ मातृभाषा-सेवा राजनीतिक स्वाधीनताक विस्तार अछि — भाषा-विहीन स्वराज अधूरा स्वराज अछि। एहिठाम सामग्रीक अभावक स्वीकृतिमे समान्तर इतिहास-लेखनक मूल संकट — अभिलेख-दारिद्र्य — प्रत्यक्ष होइत अछि।

७. राष्ट्रीय चेतना के पुरोधा कवि यदुनाथ झा 'यदुवर'

७. राष्ट्रीय चेतना के पुरोधा कवि यदुनाथ झा 'यदुवर'

७. राष्ट्रीय चेतनाक पुरोधा कवि यदुनाथ झा 'यदुवर'

यदुवर (१८८८–१९३५ ई॰) 'मिथिला गीताञ्जलि' (१९२३) के माध्यम सें राष्ट्रीय स्वाधीनता-संग्रामक चेतना के मैथिली काव्य में स्थापित कैलकै। हुनकर कविता मिथिला, मैथिली आरो भारतीय राष्ट्रीयता के संयुक्त स्वर छै। ऊ पुरान परम्परा के तोड़ि राष्ट्रीय कार्य के सूत्रपात कैलकै आरो संगीत के रागपाश सें मैथिली कविता के सर्वप्रथम मुक्त कैलकै। हुनकर 'मैथिली साहित्य दिग्दर्शन' मैथिली के पहिलों अनुसन्धानपरक निबन्ध मानल जाय छै, जाहि में ऊ साहित्य के पूरा लेखा-जोखा परस्तुत कैलकै छै।

यदुवर (१८८८–१९३५ ई॰) 'मिथिला गीताञ्जलि' (१९२३) के माध्यम से राष्ट्रीय स्वाधीनता-संग्राम के चेतना के मैथिली काव्य में स्थापित कैलथिन। हुनकर कविता मिथिला, मैथिली आ भारतीय राष्ट्रीयता के संयुक्त स्वर हय। ओ पुरान परम्परा के तोड़ि राष्ट्रीय कार्य के सूत्रपात कैलथिन आ संगीत के रागपाश से मैथिली कविता के सबसे पहिने मुक्त कैलथिन। हुनकर 'मैथिली साहित्य दिग्दर्शन' मैथिली के प्रथम अनुसन्धानपरक निबन्ध मानल जाय हय, जे में ओ साहित्य के समग्र लेखा-जोखा प्रस्तुत कैलथिन हय।

यदुवर (१८८८–१९३५ ई॰) 'मिथिला गीताञ्जलि' (१९२३)क माध्यमसँ राष्ट्रीय स्वाधीनता-संग्रामक चेतनाकेँ मैथिली काव्यमे स्थापित कएलनि। हुनकर कविता मिथिला, मैथिली आ भारतीय राष्ट्रीयताक संयुक्त स्वर अछि। ओ पुरान परम्पराकेँ तोड़ि राष्ट्रीय कार्यक सूत्रपात कएलनि आ संगीतक रागपाशसँ मैथिली कविताकेँ सर्वप्रथम मुक्त कएलनि। हुनक 'मैथिली साहित्य दिग्दर्शन' मैथिलीक प्रथम अनुसन्धानपरक निबन्ध मानल जाइछ, जाहिमे ओ साहित्यक समग्र लेखा-जोखा प्रस्तुत कएलनि अछि।

यदुवर के 'राष्ट्रीय चेतनाक पुरोधा' घोषित करै रमानन्द झा एक विशिष्ट स्थापना करै छै — 'कवीश्वर चन्दा झासँ चलल देश-कालसँ जुड़बाक प्रवृत्तिपरसँ धार्मिक लेप पोछि राष्ट्रीय आ देशोत्थान-विषयक रचनाक सुदृढ़ परिपाटी यदुवरक रचनासँ प्रारम्भ भेल।' 'धार्मिक लेप पोछब' — ई पदावली साहित्यिक प्रवृत्ति के धर्मनिरपेक्षीकरणक सूक्ष्म ऐतिहासिक बोध के प्रकट करै छै आरो नव-ऐतिहासिकतावादी प्रवृत्ति-रेखाङ्कनक उत्तम नमूना छै।

यदुवर के 'राष्ट्रीय चेतना के पुरोधा' घोषित करै रमानन्द झा एक विशिष्ट स्थापना करै हथिन — 'कवीश्वर चन्दा झा से चलल देश-काल से जुड़बा के प्रवृत्ति पर से धार्मिक लेप पोछि राष्ट्रीय आ देशोत्थान-विषय के रचना के सुदृढ परिपाटी यदुवर के रचना से प्रारम्भ भेल।' 'धार्मिक लेप पोछब' — ई पदावली साहित्यिक प्रवृत्ति के धर्मनिरपेक्षीकरण के सूक्ष्म ऐतिहासिक बोध के प्रकट करै हय आ नव-ऐतिहासिकतावादी प्रवृत्ति-रेखाङ्कन के उत्तम नमूना हय।

यदुवरकेँ 'राष्ट्रीय चेतनाक पुरोधा' घोषित करैत रमानन्द झा एक विशिष्ट स्थापना करैत छथि — 'कवीश्वर चन्दा झासँ चलल देश-कालसँ जुड़बाक प्रवृत्तिपरसँ धार्मिक लेप पोछि राष्ट्रीय आ देशोत्थान-विषयक रचनाक सुदृढ परिपाटी यदुवरक रचनासँ प्रारम्भ भेल।' 'धार्मिक लेप पोछब' — ई पदावली साहित्यिक प्रवृत्तिक धर्मनिरपेक्षीकरणक सूक्ष्म ऐतिहासिक बोधकेँ प्रकट करैत अछि आ नव-ऐतिहासिकतावादी प्रवृत्ति-रेखाङ्कनक उत्तम नमूना थिक।

ऊ शिक्षित मैथिल समाज के मातृभाषा-विमुखता, आलस्य आरो बाह्य भाषिक प्रभुत्व के खिलाफ जागरण के आह्वान करै छै। हुनकर काव्य के वीर रस युद्धक्षेत्रक खाली नै, भाषिक-सांस्कृतिक संघर्ष के वीर रस छै। मातृभाषा में लिखब, साहित्य प्रकाशित करब आरो मैथिल समाज के जगाबै हुनका लेली राष्ट्रसेवा छेलै। उत्तर-औपनिवेशिक नजर सें यदुवर भाषा के हीनताबोध के औपनिवेशिक मानसिकता के परिणाम मानै छै। विदेह समान्तर इतिहास में हुनकर कविता राजनीतिक आन्दोलन के समानान्तर चलै भाषिक स्वाधीनता-आन्दोलन के दस्तावेज बनै छै।

ओ शिक्षित मैथिल समाज के मातृभाषा-विमुखता, आलस्य आ बाह्य भाषिक प्रभुत्व के विरुद्ध जागरण के आह्वान करै हथिन। हुनकर काव्य के वीर रस युद्धक्षेत्र के खाली न, भाषिक-सांस्कृतिक संघर्ष के वीर रस हय। मातृभाषा में लिखब, साहित्य प्रकाशित करब आ मैथिल समाज के जगायब हुनका खातिर राष्ट्रसेवा हल। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि से यदुवर भाषा के हीनताबोध के औपनिवेशिक मानसिकता के परिणाम मानै हथिन। विदेह समान्तर इतिहास में हुनकर कविता राजनीतिक आन्दोलन के समानान्तर चलै भाषिक स्वाधीनता-आन्दोलन के दस्तावेज बनै हय।

ओ शिक्षित मैथिल समाजक मातृभाषा-विमुखता, आलस्य आ बाह्य भाषिक प्रभुत्वक विरुद्ध जागरणक आह्वान करैत छथि। हुनकर काव्यक वीर रस युद्धक्षेत्रक मात्र नहि, भाषिक-सांस्कृतिक संघर्षक वीर रस अछि। मातृभाषामे लिखब, साहित्य प्रकाशित करब आ मैथिल समाजकेँ जगायब हुनका लेल राष्ट्रसेवा छल। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ यदुवर भाषाक हीनताबोधकेँ औपनिवेशिक मानसिकताक परिणाम मानैत छथि। विदेह समान्तर इतिहासमे हुनकर कविता राजनीतिक आन्दोलनक समानान्तर चलैत भाषिक स्वाधीनता-आन्दोलनक दस्तावेज बनैत अछि।

८. कवि-सेनानी छेदी झा 'द्विजवर'

८. कवि-सेनानी छेदी झा 'द्विजवर'

८. कवि-सेनानी छेदी झा 'द्विजवर'

अध्याय — मैथिली साहित्यकार सब्भे राष्ट्रीय चेतना सें पृथक छेलै — ई सामान्य आरोप के खण्डन करै छै। द्विजवर के जन्म १८९३ ई॰ में सहरसाक वनगाँव में भेलै छेलै। ऊ केवल राष्ट्रीय कविता लिखनिहार नै, गान्धीजीक आह्वानपर सरकारी सेवा छोड़ि स्वतन्त्रता-सङ्ग्राम में सक्रिय भाग लेनिहार कवि-सेनानी छेलै आरो चार बेर जेल गेलाह। यदुवर आरो द्विजवर के तुलना करै समीक्षक एक सूक्ष्म भेद स्थापित करै छै — यदुवर सरकारी सेवक रहै के कारणें खाली साहित्यिक स्तरपर सक्रिय, जखन कि द्विजवर सरकारी सेवा के त्यागि राजनीति आरो साहित्य दुन्नु स्तरपर सक्रिय। 'एकहि व्यक्तिमे सर्जनात्मक प्रतिभा आ आन्दोलनात्मक क्षमताक संगम' के 'बिरल घटना' कहब — ई मूल्याङ्कन साहित्य आरो कर्म के अद्वै के प्रतिष्ठित करै छै, जे प्रतिबद्ध-साहित्य के अवधारणा सें मेल खाइत छै।

अध्याय — मैथिली साहित्यकार सब राष्ट्रीय चेतना से पृथक हलथिन — ई सामान्य आरोप के खण्डन करै हय। द्विजवर के जन्म १८९३ ई॰ में सहरसा के वनगाँव में भेल हल। ओ खाली राष्ट्रीय कविता लिखनिहार न, गान्धीजी के आह्वान पर सरकारी सेवा छोड़के स्वतन्त्रता-सङ्ग्राम में सक्रिय भाग लेनिहार कवि-सेनानी हलथिन आ चारि बेर जेल गेलथिन। यदुवर आ द्विजवर के तुलना करै समीक्षक एक सूक्ष्म भेद स्थापित करै हथिन — यदुवर सरकारी सेव के रहे के कारणेँ खाली साहित्यिक स्तर पर सक्रिय, जब कि द्विजवर सरकारी सेवा के

त्यागि राजनीति आ साहित्य दुनो स्तर पर सक्रिय। 'एके व्यक्ति में सर्जनात्मक प्रतिभा आ आन्दोलनात्मक क्षमता के संगम' के 'बिरल घटना' कहब — ई मूल्याङ्कन साहित्य आ कर्म के अद्वैत के प्रतिष्ठित करै हय, जे प्रतिबद्ध-साहित्य के अवधारणा से मेल खाय हय।

अध्याय — मैथिली साहित्यकार सभ राष्ट्रीय चेतनासँ पृथक छलाह — एहि सामान्य आरोपक खण्डन करैत अछि। द्विजवरक जन्म १८९३ ई॰ मे सहरसाक वनगाँवमे भेल छल। ओ केवल राष्ट्रीय कविता लिखनिहार नहि, गान्धीजीक आह्वानपर सरकारी सेवा छोड़ि स्वतन्त्रता-सङ्ग्राममे सक्रिय भाग लेनिहार कवि-सेनानी छलाह आ चारि बेर जेल गेलाह। यदुवर आ द्विजवरक तुलना करैत समीक्षक एक सूक्ष्म भेद स्थापित करैत छथि — यदुवर सरकारी सेवक रहबाक कारणेँ मात्र साहित्यिक स्तरपर सक्रिय, जखन कि द्विजवर सरकारी सेवाकेँ त्यागि राजनीति आ साहित्य दुनू स्तरपर सक्रिय। 'एकहि व्यक्तिमे सर्जनात्मक प्रतिभा आ आन्दोलनात्मक क्षमताक संगम'केँ 'बिरल घटना' कहब — ई मूल्याङ्कन साहित्य आ कर्मक अद्वैतकेँ प्रतिष्ठित करैत अछि, जे प्रतिबद्ध-साहित्यक अवधारणासँ मेल खाइत अछि।

स्वदेशी, चरखा, आर्थिक स्वतन्त्रता आरो ग्रामजीवन हुनकर राष्ट्रीयता के आधार छै — 'चरखा चौमासा' जकाँ कविता में स्वदेशी आन्दोलन के गूँज साफ सुनल जा सकैछ। राष्ट्र हुनका लेली अमूर्त सत्ता नै, गाम-घर, नदी, खेत, मनुष्य आरो प्रकृति के संयुक्त जिनगी छै। हुनकर रचना 'छूतहर' समाज के अस्पृश्यता आरो सामन्ती क्रूरताक खिलाफ प्रहार छै — "अस्पृश्य भेलहुँ कै कोन पाप? मृतिका एक एके कुम्हार" — ई पङ्क्ति सामाजिक विषमतापर प्रखर प्रहार करै छै आरो हुनकर कविता में वञ्चित वर्ग के स्वर साफ छै। वीर रस के संग करुण आरो रौद्र रस के मेल हुनकर कविता के प्रचार-पद सें ऊपर उठाबै छै। विदेह समान्तर इतिहास में द्विजवर साहित्य आरो राजनीतिक कर्म के मध्यक कृत्रिम बँटवारा तोड़ै छै।

स्वदेशी, चरखा, आर्थिक स्वतन्त्रता आ ग्रामजीवन हुनकर राष्ट्रीयता के आधार हय — 'चरखा चौमासा' जइसन कविता में स्वदेशी आन्दोलन के गूँज साफ सुनल जा सकै हय। राष्ट्र हुनका खातिर अमूर्त सत्ता न, गाम-घर, नदी,

खेत, मनुष्य आ प्रकृति के संयुक्त जीवन हय। हुनकर रचना 'छूतहर' समाज के अस्पृश्यता आ सामन्ती क्रूरता के विरुद्ध प्रहार हय — "अस्पृश्य भेलहुँ कै कोन पाप? मृतिका एक एके कुम्हार" — ई पङ्क्ति सामाजिक विषमता पर प्रखर प्रहार करै हय आ हुनकर कविता में वञ्चित वर्ग के स्वर साफ हय। वीर रस के संग करुण आ रौद्र रस के मेल हुनकर कविता के प्रचार-पद से ऊपर उठावै हय। विदेह समान्तर इतिहास में द्विजवर साहित्य आ राजनीतिक कर्म के मध्य के कृत्रिम विभाजन तोड़ै हथिन।

स्वदेशी, चरखा, आर्थिक स्वतन्त्रता आ ग्रामजीवन हुनकर राष्ट्रीयताक आधार अछि — 'चरखा चौमासा' जकाँ कवितामे स्वदेशी आन्दोलनक गूँज स्पष्ट सुनल जा सकैछ। राष्ट्र हुनका लेल अमूर्त सत्ता नहि, गाम-घर, नदी, खेत, मनुष्य आ प्रकृतिक संयुक्त जीवन अछि। हुनक रचना 'छूतहर' समाजक अस्पृश्यता आ सामन्ती क्रूरताक विरुद्ध प्रहार थिक — "अस्पृश्य भेलहुँ कै कोन पाप? मृतिका एक एके कुम्हार" — ई पङ्क्ति सामाजिक विषमतापर प्रखर प्रहार करैत अछि आ हुनक कवितामे वञ्चित वर्गक स्वर स्पष्ट अछि। वीर रसक सङ्ग करुण आ रौद्र रसक मेल हुनकर कविताकेँ प्रचार-पदसँ ऊपर उठबैत अछि। विदेह समान्तर इतिहासमे द्विजवर साहित्य आ राजनीतिक कर्मक मध्यक कृत्रिम विभाजन तोड़ैत छथि।

९. कुमार गंगानन्द सिंह के कथा-संवेदना

९. कुमार गंगानन्द सिंह के कथा-संवेदना

९. कुमार गंगानन्द सिंहक कथा-संवेदना

कुमार गंगानन्द सिंह के कथा-यात्रा दीर्घ काल (१९२४–१९६५) तक पसरल छै। 'मनुष्यक मोल', 'विवाह', 'बिहाड़ि', 'पण्डितपुत्र', 'पञ्च परमेश्वर', 'आमक गाछी' आदि कथा में सामाजिक सुधार, विवाह-कुरीति, अस्पृश्यता, शिक्षा आरो ग्रामजीवन के समस्या उठाओल गेलै। 'मनुष्यक मोल' में एक बाल-विधवा के आत्महत्या के कारुणिक यथार्थ छै; 'बिहाड़ि' में अछूतोद्धार के चेतना छै, जहाँ शोषित वर्ग बाबू-भैया के बेगारी करबा सें मना कऽ हड़ताल करै छै। लेखक हुनकर कथा-विधि के महत्त्व ई बात में देखै छै जे ऊ पुराण अथवा धर्मग्रन्थ सें कथावस्तु नै लै, अपन समकालीन समाज सें लै छै — उपाख्यान के

उपदेशात्मक परम्परा सें हटि समाज के जीवित विकृतिपर प्रहार करब हुनकर उपलब्धि छै।

कुमार गंगानन्द सिंह के कथा-यात्रा दीर्घ काल (१९२४–१९६५) तक पसरल हय। 'मनुष्य के मोल', 'विवाह', 'बिहाड़ि', 'पण्डितपुत्र', 'पञ्च परमेश्वर', 'आम के गाछी' आदि कथा में सामाजिक सुधार, विवाह-कुरीति, अस्पृश्यता, शिक्षा आ ग्रामजीवन के समस्या उठाओल गेल हय। 'मनुष्य के मोल'में एक बाल-विधवा के आत्महत्या के कारुणिक यथार्थ हय; 'बिहाड़ि'में अछूतोद्धार के चेतना हय, जहाँ शोषित वर्ग बाबू-भैया के बेगारी करबा से मना के हड़ताल करै हय। लेखक हुनकर कथा-विधि के महत्त्व ई बात में देखै हथिन कि ओ पुराण वा धर्मग्रन्थ से कथावस्तु न ले, अपन समकालीन समाज से ले हथिन — उपाख्यान के उपदेशात्मक परम्परा से हटि समाज के जीवित विकृति पर प्रहार करब हुनकर उपलब्धि हय।

कुमार गंगानन्द सिंहक कथा-यात्रा दीर्घ काल (१९२४–१९६५) धरि पसरल अछि। 'मनुष्यक मोल', 'विवाह', 'बिहाड़ि', 'पण्डितपुत्र', 'पञ्च परमेश्वर', 'आमक गाछी' आदि कथामे सामाजिक सुधार, विवाह-कुरीति, अस्पृश्यता, शिक्षा आ ग्रामजीवनक समस्या उठाओल गेल अछि। 'मनुष्यक मोल'मे एक बाल-विधवाक आत्महत्याक कारुणिक यथार्थ अछि; 'बिहाड़ि'मे अछूतोद्धारक चेतना अछि, जतय शोषित वर्ग बाबू-भैयाक बेगारी करबासँ मना कऽ हड़ताल करैत अछि। लेखक हुनकर कथा-विधिक महत्त्व एहि बातमे देखैत छथि जे ओ पुराण अथवा धर्मग्रन्थसँ कथावस्तु नहि लैत, अपन समकालीन समाजसँ लैत छथि — उपाख्यानक उपदेशात्मक परम्परासँ हटि समाजक जीवित विकृतिपर प्रहार करब हुनकर उपलब्धि अछि।

ई निबन्ध में रमानन्द झा 'अनुभूति-अभिव्यक्ति-सत्य-सम्प्रेषण' के शृङ्खला स्थापित करै छै — 'अनुभूतिक अभिव्यक्तिमे सत्यक सम्प्रेषण रहैछ, सत्यक सम्प्रेषणमे जीवन आ परिवेशक यथार्थ व्यञ्जित रहैछ।' ई 'व्यञ्जना'-पद सोझे आनन्दवर्धन के ध्वनि-सिद्धान्त के स्मरण करबै छै — साहित्य के सार्थकता वाच्यार्थ में नै, व्यङ्ग्यार्थ में छै। संग-संग 'काल-प्रवाहमे प्रमाणित होएब' के कसौटी कालातीत-मूल्य के अवधारणा सें मेल खाइत छै। 'मनुष्यक मोल' आरो

'विवाह' के कर्तृत्व-विवाद (जयकान्त मिश्र आरो श्रीश एकरा 'भोल' के रचना मानने रहलै) के समाधान करै रमानन्द झा भाषा-प्रयोग के समाजशास्त्रीय पाठ परस्तुत करै छै — 'बिहाड़ि' कथा में रौदी-कामातिक हिन्दी-मिश्रित बोली 'अशिक्षितपर अन्य भाषाक प्रभाव' के व्यञ्जित करै छै। ई भाषिक-यथार्थवाद के सूक्ष्म आलोचनात्मक बोध छै।

ई निबन्ध में रमानन्द झा 'अनुभूति-अभिव्यक्ति-सत्य-सम्प्रेषण' के शृङ्खला स्थापित करै हथिन — 'अनुभूति के अभिव्यक्ति में सत्य के सम्प्रेषण रहै हय, सत्य के सम्प्रेषण में जीवन आ परिवेश के यथार्थ व्यञ्जित रहै हय।' ई 'व्यञ्जना'-पद प्रत्यक्षतः आनन्दवर्धन के ध्वनि-सिद्धान्त के स्मरण करावै हय — साहित्य के सार्थकता वाच्यार्थ में न, व्यङ्ग्यार्थ में हय। साथे 'काल-प्रवाह में प्रमाणित होएब' के कसौटी कालातीत-मूल्य के अवधारणा से मेल खाय हय। 'मनुष्य के मोल' आ 'विवाह' के कर्तृत्व-विवाद (जयकान्त मिश्र आ श्रीश एकरा 'भोल' के रचना मानने रहथिन) के समाधान करै रमानन्द झा भाषा-प्रयोग के समाजशास्त्रीय पाठ प्रस्तुत करै हथिन — 'बिहाड़ि' कथा में रौदी-कामाति के हिन्दी-मिश्रित बोली 'अशिक्षित पर आन भाषा के प्रभाव' के व्यञ्जित करै हय। ई भाषिक-यथार्थवाद के सूक्ष्म आलोचनात्मक बोध हय।

एहि निबन्धमे रमानन्द झा 'अनुभूति-अभिव्यक्ति-सत्य-सम्प्रेषण'क शृङ्खला स्थापित करैत छथि — 'अनुभूतिक अभिव्यक्तिमे सत्यक सम्प्रेषण रहैछ, सत्यक सम्प्रेषणमे जीवन आ परिवेशक यथार्थ व्यञ्जित रहैछ।' ई 'व्यञ्जना'-पद प्रत्यक्षतः आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्तक स्मरण करबैत अछि — साहित्यक सार्थकता वाच्यार्थमे नहि, व्यङ्ग्यार्थमे अछि। संगहि 'काल-प्रवाहमे प्रमाणित होएब'क कसौटी कालातीत-मूल्यक अवधारणासँ मेल खाइत अछि। 'मनुष्यक मोल' आ 'विवाह'क कर्तृत्व-विवाद (जयकान्त मिश्र आ श्रीश एकरा 'भोल'क रचना मानने रहथि)क समाधान करैत रमानन्द झा भाषा-प्रयोगक समाजशास्त्रीय पाठ प्रस्तुत करैत छथि — 'बिहाड़ि' कथामे रौदी-कामातिक हिन्दी-मिश्रित बोली 'अशिक्षितपर अन्य भाषाक प्रभाव'कँ व्यञ्जित करैत अछि। ई भाषिक-यथार्थवादक सूक्ष्म आलोचनात्मक बोध थिक।

स्त्री-पात्र, बालविवाह, विधवापन आरो घरेलू उत्पीड़न के चित्रण करुण रस उपजाबै छै। कथा-भाषा सोझ, लोकानुकूल आरो विनोदपूर्ण छै। 'आमक गाछी' जइसन छोट कथा में अनावश्यक फैलाव के कमी आरो रहस्यपूर्ण अन्त आधुनिक कथा के निकट लै छै।

स्त्री-पात्र, बालविवाह, विधवापन आ घरेलू उत्पीड़न के चित्रण करुण रस पैदा करै हय। कथा-भाषा सरल, लोकानुकूल आ विनोदपूर्ण हय। 'आम के गाछी' जइसन छोट कथा में अनावश्यक विस्तार के अभाव आ रहस्यपूर्ण अन्त आधुनिक कथा के निकट ले हय।

स्त्री-पात्र, बालविवाह, विधवापन आ घरेलू उत्पीड़नक चित्रण करुण रस उत्पन्न करैत अछि। कथा-भाषा सरल, लोकानुकूल आ विनोदपूर्ण अछि। 'आमक गाछी' सन छोट कथामे अनावश्यक विस्तारक अभाव आ रहस्यपूर्ण अन्त आधुनिक कथाक निकट लैत अछि।

१०. कवीश्वरी हरिलता के वैष्णवता

१०. कवीश्वरी हरिलता के वैष्णवता

१०. कवीश्वरी हरिलताक वैष्णवता

ई निबन्ध के विशिष्टता ई जे रमानन्द झा एक स्त्री-रचनाकार — कवीश्वरी हरिलता (मोदवती, जन्म १९०३ ई॰) — के साहित्य-साधना के प्रकाश में अनै छै, जे विदेह समान्तर इतिहास के लैङ्गिक फेर-उभार के अग्रगामी सङ्केत छै। हरिलता के जिनगी-वृत्त — खाली चार वर्ष के अवस्था में विवाह, अल्पवय में वैधव्य आरो पति के विक्षिप्तता, 'स्त्रीगण लेल पढ़ब निषिद्ध छलैक' तइयो 'सासु आदिसँ चोरा कऽ अक्षर सिखब' — ई सब्भे नारी-अस्मिता के संघर्ष-गाथा छै।

ई निबन्ध के विशिष्टता ई जे रमानन्द झा एक स्त्री-रचनाकार — कवीश्वरी हरिलता (मोदवती, जन्म १९०३ ई॰) — क साहित्य-साधना के प्रकाश में आनै हथिन, जे विदेह समान्तर इतिहास के लैङ्गिक पुनरुद्धार के अग्रगामी संकेत हय। हरिलता के जीवन-वृत्त — खाली चारि वर्ष के अवस्था में विवाह, अल्पवय में वैधव्य आ पति के विक्षिप्तता, 'स्त्रीगण खातिर पढ़ब निषिद्ध हल'

तबो 'सासु आदि से चोरा के अक्षर सीखब' — ई सब नारी-अस्मिता के संघर्ष-गाथा हय।

एहि निबन्धक विशिष्टता ई जे रमानन्द झा एक स्त्री-रचनाकार — कवीश्वरी हरिलता (मोदवती, जन्म १९०३ ई॰) — क साहित्य-साधनाकेँ प्रकाशमे अनैत छथि, जे विदेह समान्तर इतिहासक लैङ्गिक पुनरुद्धारक अग्रगामी सङ्केत थिक। हरिलताक जीवन-वृत्त — मात्र चारि वर्षक अवस्थामे विवाह, अल्पवयमे वैधव्य आ पतिक विक्षिप्तता, 'स्त्रीगण लेल पढ़ब निषिद्ध छलैक' तथापि 'सासु आदिसँ चोरा कऽ अक्षर सिखब' — ई सभटा नारी-अस्मिताक संघर्ष-गाथा थिक।

हुनकर 'भजनमालिका' (१९३७ ई॰) वैष्णव सगुण भक्ति के उत्कृष्ट निदर्शन छै। भक्ति-काव्यशास्त्रीय दृष्टि सें रमानन्द झा हरिलता के 'निराकारकेँ अप्राप्त मानि सगुण-आराधना' के वैष्णव-परम्परा के अनुरूप सिद्ध करै छै — पलना में झूलै, अँगना में ठुमुकै, वृन्दावन में गाय चरबै सगुण-कृष्ण के चित्रण 'श्रुति-मधुरता आ रस-प्रचुरता' सें युक्त। हुनकर गीत में भक्ति के छओ अङ्ग — आनुकूल्य-संकल्प, प्रातिकूल्य-वर्जन, रक्षण-विश्वास, गोप्तृत्व-वरण, आत्मनिक्षेप, कार्पण्य — आरो माधुर्य रस प्रवाहित छै। बाल-वैधव्य के असह्य पीड़ा के ऊ कृष्ण-भक्ति के मधुर रस में रूपान्तरित कऽ देलीह। ई भक्ति-रस आरो वात्सल्य-रस के शास्त्रीय विवेचन छै।

हुनकर 'भजनमालिका' (१९३७ ई॰) वैष्णव सगुण भक्ति के उत्कृष्ट निदर्शन हय। भक्ति-काव्यशास्त्रीय दृष्टि से रमानन्द झा हरिलता के 'निराकार के अप्राप्त मानके सगुण-आराधना' के वैष्णव-परम्परा के अनुरूप सिद्ध करै हथिन — पलना में झूलै, अँगना में ठुमुकै, वृन्दावन में गाय चरावै सगुण-कृष्ण के चित्रण 'श्रुति-मधुरता आ रस-प्रचुरता' से युक्त। हुनकर गीत में भक्ति के छओ अंग — आनुकूल्य-संकल्प, प्रातिकूल्य-वर्जन, रक्षण-विश्वास, गोप्तृत्व-वरण, आत्मनिक्षेप, कार्पण्य — आ माधुर्य रस प्रवाहित हय। बाल-वैधव्य के असह्य पीड़ा के ओ कृष्ण-भक्ति के मधुर रस में रूपान्तरित के देलथिन। ई भक्ति-रस आ वात्सल्य-रस के शास्त्रीय विवेचन हय।

हुनक 'भजनमालिका' (१९३७ ई॰) वैष्णव सगुण भक्तिक उत्कृष्ट निदर्शन अछि। भक्ति-काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ रमानन्द झा हरिलताक 'निराकारकेँ अप्राप्त मानि सगुण-आराधना'केँ वैष्णव-परम्पराक अनुरूप सिद्ध करैत छथि — पलनामे झूलैत, अँगनामे ठुमुकैत, वृन्दावनमे गाय चरबैत सगुण-कृष्णक चित्रण 'श्रुति-मधुरता आ रस-प्रचुरता'सँ युक्त। हुनक गीतमे भक्तिक छओ अङ्ग — आनुकूल्य-संकल्प, प्रातिकूल्य-वर्जन, रक्षण-विश्वास, गोप्तृत्व-वरण, आत्मनिक्षेप, कार्पण्य — आ माधुर्य रस प्रवाहित अछि। बाल-वैधव्यक असह्य पीड़ाकेँ ओ कृष्ण-भक्तिक मधुर रसमे रूपान्तरित कऽ देलीह। ई भक्ति-रस आ वात्सल्य-रसक शास्त्रीय विवेचन थिक।

११. कविवर श्यामानन्द झा के काव्य-वस्तु

११. कविवर श्यामानन्द झा के काव्य-वस्तु

११. कविवर श्यामानन्द झाक काव्य-वस्तु

लेखक श्यामानन्द झा के काव्य के राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक आरो व्यावहारिक चार वर्ग में पढ़ै छै आरो 'युग-सचेत कवि' के अवधारणा परस्तुत करै छै। कवि के आक्रोश व्यक्तिगत नै, ओहि समय के राजनीतिक पराधीनता, आर्थिक असमानता, भाषिक अपमान आरो सामाजिक उदासीनता सें उत्पन्न छै — 'जरि जाय जेँ जजाते करिते पटाय की हो' जइसन आक्रोश के पाछाँ तात्कालिक परिवेश के कारुणिक स्थिति छै। गान्धी-युगीन राजनीतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक पतन के खिलाफ सामन्ती वर्ग के उदासीनता — 'कोउ नृप होहिं हमे का हानी' — के तीक्ष्ण व्यङ्ग्यात्मक चित्रण भेटै छै।

लेखक श्यामानन्द झा के काव्य के राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक आ व्यावहारिक चारि वर्ग में पढ़ै हथिन आ 'युग-सचेत कवि' के अवधारणा प्रस्तुत करै हथिन। कवि के आक्रोश व्यक्तिगत न, तत्कालीन राजनीतिक पराधीनता, आर्थिक असमानता, भाषिक अपमान आ सामाजिक उदासीनता से उत्पन्न हय — 'जरि जाय जेँ जजाते करिते पटाय की हो' जइसन आक्रोश के पाछाँ तात्कालिक परिवेश के कारुणिक स्थिति हय। गान्धी-युगीन राजनीतिक-

सामाजिक-सांस्कृतिक पतन के विरुद्ध सामन्ती वर्ग के उदासीनता — 'कोउ नृप होहिं ह में का हानी' — क तीक्ष्ण व्यङ्ग्यात्मक चित्रण भेटै हय।

लेखक श्यामानन्द झाक काव्यकेँ राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक आ व्यावहारिक चारि वर्गमे पढ़ैत छथि आ 'युग-सचेत कवि'क अवधारणा प्रस्तुत करैत छथि। कविक आक्रोश व्यक्तिगत नहि, तत्कालीन राजनीतिक पराधीनता, आर्थिक असमानता, भाषिक अपमान आ सामाजिक उदासीनतासँ उत्पन्न अछि — 'जरि जाय जेँ जजाते करिते पटाय की हो' सन आक्रोशक पाछाँ तात्कालिक परिवेशक कारुणिक स्थिति अछि। गान्धी-युगीन राजनीतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक पतनक विरुद्ध सामन्ती वर्गक उदासीनता — 'कोउ नृप होहिं हमे का हानी' — क तीक्ष्ण व्यङ्ग्यात्मक चित्रण भेटैत अछि।

हुनकर कविता भारतीय स्वाधीनता, मैथिली के रक्षा, आर्थिक समानता, सामाजिक जागरण आरो सांस्कृतिक पुनरुत्थान के आह्वान करै छै। ऊ अङ्ग्रेजी आरो हिन्दी के अन्धभक्त उच्च वर्गपर व्यङ्ग्य करै लिखै छै जे लोक अपन भूषण-वसन के छोड़ि विद्यापति के नाम सें कान छिपबै छै आरो "टोप ओ नेकटाय"पर लोट-पोट रहै छै — ई सांस्कृतिक दासता के खिलाफ उद्घोष छै। 'देश सेवा हित छदामो बाहर होएब दुर्लभ ... सोम होथि छदाम लय' — ई विदग्ध व्यङ्ग्य कुन्तक के वक्रोक्ति-सिद्धान्त के वाक्य-वक्रताक परमाण छै। रस के नजर सें एकरा में करुण आरो वीर के संग सामन्ती वृत्तिक प्रति बीभत्स-भाव के सामञ्जस्य छै; मार्क्सवादी नजर सें ई पूँजी-केन्द्रीकरण आरो वर्ग-विषमता के प्रत्यक्ष साहित्यिक आलोचना छै। गरीबी, वस्त्र, भोजन, आवास आरो पारिवारिक भार के वर्णन हुनकर सामाजिक दृष्टि के परमाण छै।

हुनकर कविता भारतीय स्वाधीनता, मैथिली के रक्षा, आर्थिक समानता, सामाजिक जागरण आ सांस्कृतिक पुनरुत्थान के आह्वान करै हय। ओ अंग्रेजी आ हिन्दी के अन्धभक्त उच्च वर्ग पर व्यङ्ग्य करै आ लिखै हथिन कि लोक अपन भूषण-वसन के छोड़के विद्यापति के नाम से कान छिपावै हय आ "टोप ओ नेकटाय"पर लोट-पोट रहै हय — ई सांस्कृतिक दासता के विरुद्ध उद्घोष हय। 'देश सेवा हित छदामो बाहर होएब दुर्लभ ... सोम होथिन छदाम लय' — ई विदग्ध व्यङ्ग्य कुन्तक के वक्रोक्ति-सिद्धान्त के वाक्य-वक्रता के प्रमाण हय।

रस-दृष्टि से एमें करुण आ वीर के संग सामन्ती वृत्ति के प्रति बीभत्स-भाव के सामञ्जस्य हय; मार्क्सवादी दृष्टि से ई पूँजी-केन्द्रीकरण आ वर्ग-विषमता के प्रत्यक्ष साहित्यिक आलोचना हय। गरीबी, वस्त्र, भोजन, आवास आ पारिवारिक भार के वर्णन हुनकर सामाजिक दृष्टि के प्रमाण हय।

हुनकर कविता भारतीय स्वाधीनता, मैथिलीक रक्षा, आर्थिक समानता, सामाजिक जागरण आ सांस्कृतिक पुनरुत्थानक आह्वान करैत अछि। ओ अङ्ग्रेजी आ हिन्दीक अन्धभक्त उच्च वर्गपर व्यङ्ग्य करैत लिखैत छथि जे लोक अपन भूषण-वसनकेँ छोड़ि विद्यापतिक नामसँ कान छिपबैत अछि आ "टोप ओ नेकटाय"पर लोट-पोट रहैत अछि — ई सांस्कृतिक दासताक विरुद्ध उद्घोष थिक। 'देश सेवा हित छदामो बाहर होएब दुर्लभ ... सोम होथि छदाम लय' — ई विदग्ध व्यङ्ग्य कुन्तकक वक्रोक्ति-सिद्धान्तक वाक्य-वक्रताक प्रमाण थिक। रस-दृष्टिसँ एहिमे करुण आ वीरक सङ्ग सामन्ती वृत्तिक प्रति बीभत्स-भावक सामञ्जस्य अछि; मार्क्सवादी दृष्टिसँ ई पूँजी-केन्द्रीकरण आ वर्ग-विषमताक प्रत्यक्ष साहित्यिक आलोचना थिक। गरीबी, वस्त्र, भोजन, आवास आ पारिवारिक भारक वर्णन हुनकर सामाजिक दृष्टिक प्रमाण अछि।

हुनकर 'मैथिल सन्देश' आरो 'मैथिली गीत-चन्द्रिका' में राष्ट्रप्रेम आरो लोक-संस्कृति के समन्वय छै। व्यावहारिक गीत में सोहर, नामकरण, उपनयन, विवाह, कोबर, समदाउन आरो अन्य संस्कार के समावेश लोकजीवन के काव्यात्मक अभिलेख रचै छै। शृङ्गार, हास्य, भक्ति आरो लोकरीतिक समन्वय हुनकर काव्य-वस्तु के व्यापक बनाबै छै।

हुनकर 'मैथिल सन्देश' आ 'मैथिली गीत-चन्द्रिका'में राष्ट्रप्रेम आ लोक-संस्कृति के समन्वय हय। व्यावहारिक गीत में सोहर, नामकरण, उपनयन, विवाह, कोबर, समदाउन आ आन संस्कार के समावेश लोकजीवन के काव्यात्मक अभिलेख रचै हय। शृंगार, हास्य, भक्ति आ लोकरीति के समन्वय हुनकर काव्य-वस्तु के व्यापक बनावै हय।

हुनक 'मैथिल सन्देश' आ 'मैथिली गीत-चन्द्रिका'मे राष्ट्रप्रेम आ लोक-संस्कृतिक समन्वय अछि। व्यावहारिक गीतमे सोहर, नामकरण, उपनयन, विवाह, कोबर, समदाउन आ अन्य संस्कारक समावेश लोकजीवनक काव्यात्मक

अभिलेख रचैत अछि। शृङ्गार, हास्य, भक्ति आ लोकरीतिक समन्वय हुनकर काव्य-वस्तुकेँ व्यापक बनबैत अछि।

१२. बाबू लक्ष्मीपति सिंह आरो मैथिली पत्रकारिता

१२. बाबू लक्ष्मीपति सिंह आ मैथिली पत्रकारिता

१२. बाबू लक्ष्मीपति सिंह आ मैथिली पत्रकारिता

ई निबन्ध में रमानन्द झा साहित्य-समीक्षा के सीमा लाँघि पत्रकारिता-इतिहास के क्षेत्र में प्रवेश करै छै। लक्ष्मीपति सिंह (१९०७–१९७२) के लेखक साहित्यकार, सम्पादक, प्रकाशक, संस्कृतिकर्मी आरो मैथिली पत्रकारिता के संस्थापक-पुरुष के रूप में देखै छै — 'एक विधामे बान्हल नहि, एक भाषामे नहि'। पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर के शिष्यत्व सें प्राप्त साहित्य-सर्जना के मन्त्र के ऊ जीवनभरि मातृभाषा-सेवा में लगौलनि आरो प्रवासी-मैथिल के मिथिला सें जोड़बाक आजीवन कोसिस कैलकै।

ई निबन्ध में रमानन्द झा साहित्य-समीक्षा के सीमा लाँघि पत्रकारिता-इतिहास के क्षेत्र में प्रवेश करै हथिन। लक्ष्मीपति सिंह (१९०७–१९७२) के लेखक साहित्यकार, सम्पादक, प्रकाशक, संस्कृतिकर्मी आ मैथिली पत्रकारिता के संस्थापक-पुरुष के रूप में देखै हथिन — 'एक विधा में बान्हल न, एक भाषा में न'। पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर के शिष्यत्व से प्राप्त साहित्य-सर्जना के मन्त्र के ओ जीवनभरि मातृभाषा-सेवा में लगौलनि आ प्रवासी-मैथिल के मिथिला से जोड़े के आजीवन प्रयास कैलथिन।

एहि निबन्धमे रमानन्द झा साहित्य-समीक्षाक सीमा लाँघि पत्रकारिता-इतिहासक क्षेत्रमे प्रवेश करैत छथि। लक्ष्मीपति सिंह (१९०७–१९७२)केँ लेखक साहित्यकार, सम्पादक, प्रकाशक, संस्कृतिकर्मी आ मैथिली पत्रकारिताक संस्थापक-पुरुषक रूपमे देखैत छथि — 'एक विधामे बान्हल नहि, एक भाषामे नहि'। पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुरक शिष्यत्वसँ प्राप्त साहित्य-सर्जनाक मन्त्रकेँ ओ जीवनभरि मातृभाषा-सेवामे लगौलनि आ प्रवासी-मैथिलकेँ मिथिलासँ जोड़बाक आजीवन प्रयास कएलनि।

हुनकर योगदान केवल अपन लेखन तक सीमित नै। दुर्लभ रचना के सम्पादन, परकाशन, लेखक के प्रोत्साहन आरो पत्रिका के माध्यम सें पाठक-समुदाय के निर्माण मैथिली सार्वजनिक क्षेत्र के विकास के आधार बनल। ऊ मैथिली पत्रकारिता के राजनीतिक आरो आर्थिक दासता सें मुक्त कऽ आत्मनिर्भर बनाबै के वकालत कैलकै आरो साफ कैलकै जे मैथिली के पत्र-पत्रिका केवल साहित्यिक एकाधिकार नै, बल्कि समाचार आरो जन-सरोकार के माध्यम होय के चाही। निबन्ध के आखिरी अंश मैथिली समाचार-पत्र के भविष्य-सम्बंधी दूरदर्शी विश्लेषण छै — विज्ञापन, संवाददाता-प्रतिनिधित्व, सम्पादकीय नीति आरो पाठक-आधार के कमी में मैथिलहु के आन भाषा के पत्रपर निर्भर रहै के विवशता। ई मीडिया-समाजशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि अपन युग सें आगू छै।

हुनकर योगदान खाली अपन लेखन तक सीमित न। दुर्लभ रचना के सम्पादन, प्रकाशन, लेखक के प्रोत्साहन आ पत्रिका के माध्यम से पाठक-समुदाय के निर्माण मैथिली सार्वजनिक क्षेत्र के विकास के आधार बनल। ओ मैथिली पत्रकारिता के राजनीतिक आ आर्थिक दासता से मुक्त कर आत्मनिर्भर बनावे के वकालत कैलथिन आ साफ कैलथिन जे मैथिली के पत्र-पत्रिका खाली साहित्यिक एकाधिकार न, बल्कि समाचार आ जन-सरोकार के माध्यम होय के चाही। निबन्ध के अन्तिम अंश मैथिली समाचार-पत्र के भविष्य-सम्बन्धी दूरदर्शी विश्लेषण हय — विज्ञापन, संवाददाता-प्रतिनिधित्व, सम्पादकीय नीति आ पाठक-आधार के अभाव में मैथिलहु के आन भाषा के पत्र पर निर्भर रहे के विवशता। ई मीडिया-समाजशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि अपन युग से आगाँ हय।

हुनकर योगदान केवल अपन लेखन धरि सीमित नहि। दुर्लभ रचनाक सम्पादन, प्रकाशन, लेखकक प्रोत्साहन आ पत्रिकाक माध्यमसँ पाठक-समुदायक निर्माण मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक विकासक आधार बनल। ओ मैथिली पत्रकारिताकेँ राजनीतिक आ आर्थिक दासतासँ मुक्त कऽ आत्मनिर्भर बनेबाक वकालत कएलनि आ स्पष्ट कएलनि जे मैथिलीक पत्र-पत्रिका केवल साहित्यिक एकाधिकार नहि, अपितु समाचार आ जन-सरोकारक माध्यम होएबाक चाही। निबन्धक अन्तिम अंश मैथिली समाचार-पत्रक भविष्य-सम्बन्धी दूरदर्शी विश्लेषण थिक — विज्ञापन, संवाददाता-प्रतिनिधित्व,

सम्पादकीय नीति आ पाठक-आधारक अभावमे मैथिलहुकेँ आन भाषाक पत्रपर निर्भर रहबाक विवशता। ई मीडिया-समाजशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि अपन युगसँ आगाँ थिक।

पाठक-प्रतिक्रिया के नजर सें पत्रकारिता लेखक आरो पाठक के बीच जीवित संवाद स्थापित करै छै। विदेह समान्तर इतिहास में सम्पादक साहित्य के पार्श्व-पात्र नै, स्मृति आरो पाठकत्वक निर्माता छै।

पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टि से पत्रकारिता लेखक आ पाठक के बीच जीवित संवाद स्थापित करै हय। विदेह समान्तर इतिहास में सम्पादक साहित्य के पार्श्व-पात्र न, स्मृति आ पाठकत्व के निर्माता हथिन।

पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टिसँ पत्रकारिता लेखक आ पाठकक बीच जीवित संवाद स्थापित करैत अछि। विदेह समान्तर इतिहासमे सम्पादक साहित्यक पार्श्व-पात्र नहि, स्मृति आ पाठकत्वक निर्माता छथि।

१३. कविचूड़ामणि मधुप के गीत-साहित्य

१३. कविचूड़ामणि मधुप के गीत-साहित्य

१३. कविचूड़ामणि मधुपक गीत-साहित्य

काशीकान्त मिश्र 'मधुप' के गीति-साहित्य के विवेचन ई संग्रह के सबसें बेसी रसशास्त्रीय निबन्ध छै। 'गीत भावाश्रित होइछ, हृदयपर ओकर प्रभाव तत्काल पड़ैछ, रागात्मिका वृत्तिक तार झनझना उठैछ' — ई विवेचन सोझे भरतमुनिक रस-निष्पत्ति आरो अभिनवगुप्त के रस-चर्वणाक मैथिली पुनराख्यान छै; 'नादब्रह्मकेँ जगबैत' गीत-साधना के अवधारणा भारतीय संगीत-दर्शनक नादब्रह्म-सिद्धान्त सें जुड़ै छै। मधुप के 'घसल अठन्नी सोनाकेँ घसि कऽ हीरा' बनौनिहार आरो 'विद्यापति ओ मीरा' के स्वर में बजनिहार कहि (मणिपद्मक शब्द में) रमानन्द झा गीति-परम्परा के शीर्ष-स्थान दै छै।

काशीकान्त मिश्र 'मधुप' के गीति-साहित्य के विवेचन ई संग्रह के सबसे बेसी रसशास्त्रीय निबन्ध हय। 'गीत भावाश्रित होय हय, हृदय पर ओकर प्रभाव तत्काल पड़ै हय, रागात्मिका वृत्ति के तार झनझना उठै हय' — ई विवेचन प्रत्यक्षतः भरतमुनि के रस-निष्पत्ति आ अभिनवगुप्त के रस-चर्वणा के मैथिली

पुनराख्यान हय; 'नादब्रह्म के जगावै' गीत-साधना के अवधारणा भारतीय संगीत-दर्शन के नादब्रह्म-सिद्धान्त से जुड़ै हय। मधुप के 'घसल अठन्नी सोना के घसि के हीरा' बनौनिहार आ 'विद्यापति ओ मीरा' के स्वर में बजनिहार कहके (मणिपद्म के शब्द में) रमानन्द झा गीति-परम्परा के शीर्ष-स्थान दे हथिन।

काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क गीति-साहित्यक विवेचन एहि संग्रहक सर्वाधिक रसशास्त्रीय निबन्ध थिक। 'गीत भावाश्रित होइछ, हृदयपर ओकर प्रभाव तत्काल पड़ैछ, रागात्मिका वृत्तिक तार झनझना उठैछ' — ई विवेचन प्रत्यक्षतः भरतमुनिक रस-निष्पत्ति आ अभिनवगुप्तक रस-चर्वणाक मैथिली पुनराख्यान थिक; 'नादब्रह्मकेँ जगबैत' गीत-साधनाक अवधारणा भारतीय संगीत-दर्शनक नादब्रह्म-सिद्धान्तसँ जुड़ैत अछि। मधुपकेँ 'घसल अठन्नी सोनाकेँ घसि कऽ हीरा' बनौनिहार आ 'विद्यापति ओ मीरा'क स्वरमे बजनिहार कहि (मणिपद्मक शब्दमे) रमानन्द झा गीति-परम्पराक शीर्ष-स्थान दैत छथि।

मधुप के गीत-संसार में शृङ्गार, भक्ति, गृहस्थजीवन, नारी-आदर्श, सामाजिक शिक्षा आरो सांस्कृतिक संस्कार के मेल छै। गीत केवल पढ़ै के वस्तु नै, कण्ठस्थ करै के, गाबयबाक आरो सामुदायिक रूप सें अनुभव करै के रचना छै — 'लोक-जीवनमे गीतक अत्याज्यता' (आँगन, दलान, खेत, खरिहान, कोबर, सिमरिया-घाट) के ई मूल्याङ्कन भट्टनायक के साधारणीकरण-सिद्धान्त के उत्तम परयोग छै। जखन मैथिल युवा वर्ग सिनेमा के गीत के धुनपर पागल छेलै, तखन मधुपजी मैथिली भाषा के विलुप्त होएबा सें बचै के लेली सिनेमा के तर्जपर मैथिली गीत लिखलकै — विदेह समान्तर इतिहास के दृष्टि सें ई जनभाषा के जीवित रखै के एगो लोकतन्त्रवादी, जमीनी कोसिस छेलै। 'वट-सावित्री' जकाँ पावनिक कथा के ऊ गीत के रूप देलकै जाहि सें नीरसता समाप्त भेलै, स्त्री आरो बुतरू तक कथा पहुँचल आरो लोक-कण्ठ में मैथिली स्थापित भेलै — ई गीत के सामाजिक प्रयोगशीलता देखाबै छै।

मधुप के गीत-संसार में शृंगार, भक्ति, गृहस्थजीवन, नारी-आदर्श, सामाजिक शिक्षा आ सांस्कृतिक संस्कार के मेल हय। गीत खाली पढ़े के वस्तु न, कण्ठस्थ करे के, गावे के आ सामुदायिक रूप से अनुभव करे के रचना हय — 'लोक-जीवन में गीत के अत्याज्यता' (आँगन, दलान, खेत, खरिहान, कोबर, सिमरिया-

घाट) के ई मूल्याङ्कन भट्टनायक के साधारणीकरण-सिद्धान्त के उत्तम प्रयोग हय। जब मैथिल युवा वर्ग सिनेमा के गीत के धुन पर पागल हल, तब मधुपजी मैथिली भाषा के विलुप्त होएबा से बचावे के खातिर सिनेमा के तर्ज पर मैथिली गीत लिखलथिन — विदेह समान्तर इतिहास के दृष्टि से ई जनभाषा के जीवित रखे के एकगो लोकतन्त्रवादी, जमीनी प्रयास हल। 'वट-सावित्री' जइसन पावनि के कथा के ओ गीत के रूप देलथिन जे से नीरसता समाप्त भेल, स्त्री आ बालक तक कथा पहुँचल आ लोक-कण्ठ में मैथिली स्थापित भेल — ई गीत के सामाजिक प्रयोगशीलता देखाबै हय।

मधुपक गीत-संसारमे शृङ्गार, भक्ति, गृहस्थजीवन, नारी-आदर्श, सामाजिक शिक्षा आ सांस्कृतिक संस्कारक मेल अछि। गीत केवल पढ़बाक वस्तु नहि, कण्ठस्थ करबाक, गाबयबाक आ सामुदायिक रूपसँ अनुभव करबाक रचना अछि — 'लोक-जीवनमे गीतक अत्याज्यता' (आँगन, दलान, खेत, खरिहान, कोबर, सिमरिया-घाट)क ई मूल्याङ्कन भट्टनायकक साधारणीकरण-सिद्धान्तक उत्तम प्रयोग थिक। जखन मैथिल युवा वर्ग सिनेमाक गीतक धुनपर पागल छल, तखन मधुपजी मैथिली भाषाकेँ विलुप्त होएबासँ बचेबाक लेल सिनेमाक तर्जपर मैथिली गीत लिखलनि — विदेह समान्तर इतिहासक दृष्टिसँ ई जनभाषाकेँ जीवित रखबाक एकटा लोकतन्त्रवादी, जमीनी प्रयास छल। 'वट-सावित्री' जकाँ पावनिक कथाकेँ ओ गीतक रूप देलनि जाहिसँ नीरसता समाप्त भेल, स्त्री आ बालक धरि कथा पहुँचल आ लोक-कण्ठमे मैथिली स्थापित भेल — ई गीतक सामाजिक प्रयोगशीलता देखबैत अछि।

रस के नजर सें मधुप के गीत में भक्ति, विप्रलम्भ शृङ्गार आरो करुणा के समन्वय छै। ध्वनि के नजर सें गृहस्थ आदर्श के भीतर स्त्री के सामाजिक भूमिका, परिवार के नैतिक अनुशासन आरो लोकपरम्पराक संरक्षण निहित छै।

रस-दृष्टि से मधुप के गीत में भक्ति, विप्रलम्भ शृंगार आ करुणा के समन्वय हय। ध्वनि-दृष्टि से गृहस्थ आदर्श के भीतर स्त्री के सामाजिक भूमिका, परिवार के नैतिक अनुशासन आ लोकपरम्परा के संरक्षण निहित हय।

रस-दृष्टिसँ मधुपक गीतमे भक्ति, विप्रलम्भ शृङ्गार आ करुणाक समन्वय अछि। ध्वनि-दृष्टिसँ गृहस्थ आदर्शक भीतर स्त्रीक सामाजिक भूमिका, परिवारक नैतिक अनुशासन आ लोकपरम्पराक संरक्षण निहित अछि।

१४. भट्टीकाव्य के परम्परा आरो मधुपजी

१४. भट्टीकाव्य के परम्परा आ मधुपजी

१४. भट्टीकाव्यक परम्परा आ मधुपजी

ई निबन्ध कृति के सबसें साहसी सैद्धान्तिक अध्याय छै आरो संस्कृत के शिक्षाप्रद काव्यपरम्परा आरो मैथिली काव्य के अन्तर्सम्बन्धक खोज करै छै। भट्टीकाव्य में कथा केवल रसास्वाद लेली नै, व्याकरण, अलङ्कार, छन्द आरो भाषाज्ञानक शिक्षण लेली सेहो प्रयुक्त छै; मधुपजी के काव्य में ई शिक्षणपरक परम्परा के आधुनिक मैथिली रूप देखल गेलै। भारतीय काव्यशास्त्र के दृष्टि सें ज्ञान आरो आनन्द के एकता ई अध्याय के प्रमुख सूत्र छै — काव्य नितान्त उपदेश होइत तें रसहीन भऽ जाय; नितान्त मनोरञ्जन होइत तें शैक्षिक प्रयोजन लुप्त भऽ जाय। मधुप के उपलब्धि ई द्वन्द्व में समन्वय स्थापित करब छै।

ई निबन्ध कृति के सबसे साहसी सैद्धान्तिक अध्याय हय आ संस्कृत के शिक्षाप्रद काव्यपरम्परा आ मैथिली काव्य के अन्तर्सम्बन्ध के खोज करै हय। भट्टीकाव्य में कथा खाली रसास्वाद खातिर न, व्याकरण, अलङ्कार, छन्द आ भाषाज्ञान के शिक्षण खातिर भी प्रयुक्त हय; मधुपजी के काव्य में ई शिक्षणपरक परम्परा के आधुनिक मैथिली रूप देखल गेल हय। भारतीय काव्यशास्त्र के दृष्टि से ज्ञान आ आनन्द के एकता ई अध्याय के प्रमुख सूत्र हय — काव्य नितान्त उपदेश होय त रसहीन होके जाय; नितान्त मनोरञ्जन होय त शैक्षिक प्रयोजन लुप्त होके जाय। मधुप के उपलब्धि ई द्वन्द्व में समन्वय स्थापित करब हय।

ई निबन्ध कृतिक सभसँ साहसी सैद्धान्तिक अध्याय थिक आ संस्कृतक शिक्षाप्रद काव्यपरम्परा तथा मैथिली काव्यक अन्तर्सम्बन्धक खोज करैत अछि। भट्टीकाव्यमे कथा केवल रसास्वाद लेल नहि, व्याकरण, अलङ्कार, छन्द आ भाषाज्ञानक शिक्षण लेल सेहो प्रयुक्त अछि; मधुपजीक काव्यमे एहि शिक्षणपरक परम्पराक आधुनिक मैथिली रूप देखल गेल अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ ज्ञान आ आनन्दक एकता एहि अध्यायक प्रमुख सूत्र अछि — काव्य नितान्त उपदेश होइत तँ रसहीन भऽ जाइत; नितान्त मनोरञ्जन होइत तँ शैक्षिक प्रयोजन लुप्त भऽ जाइत। मधुपक उपलब्धि एहि द्वन्द्वमे समन्वय स्थापित करब अछि।

'कोबर-गीत' के रचना के आधार बनाय रमानन्द झा एक निर्भीक प्रश्न उठाबै छै — 'कविता कथी लेल लिखल जाइत अछि?' आरो साफ उत्तर दै छै — 'यश' आरो 'अर्थ'; कोय कवि ई दुन्नु शर्तक सीमा सें बाहर नै। ई घोषणा साहित्य के शुद्धतावादी आदर्शवाद के चुनौती दै ओकर भौतिक-आर्थिक आधार के उघारै छै — जे साफ तौर पर मार्क्सवादी साहित्य-समाजशास्त्र के अन्तर्दृष्टि छै। प्रसङ्ग ई जे विद्यालयक अनुदान बचै के विवशता में — कुमार गंगानन्द सिंह आरो राजपण्डित बलदेव मिश्र के दबाव में — मधुपजी के महाराज कामेश्वर सिंह के 'कोबर गीत' लिखय पड़लनि। 'कोबर-गीत' के 'युगीन विवशताक द्योतक' कहि रमानन्द झा एक जटिल नैतिक-सौन्दर्यशास्त्रीय प्रश्न के सामना करै छै — कवि अपन आत्मा के प्रतिकूल किएक लिखै छै? ऊ मानी लै छै जे मधुप के 'कवित्व-शक्ति ततेक प्रखर छल जे अनिश्चित विषयोपर सेहो दिव्य-मार्मिकता आबि जाइत छलैक।' ई प्रयोजन आरो प्रतिभा के द्वन्द्व के ईमानदार विवेचन छै। विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें ई अध्याय संस्कृत आरो मैथिली के स्वामी-दास सम्बन्ध में नै, संवादशील परम्परा में रखै छै।

'कोबर-गीत' के रचना के आधार बनाके रमानन्द झा एक निर्भीक प्रश्न उठावै हथिन — 'कविता काहे खातिर लिखल जाय हय?' आ साफ उत्तर दे हथिन — 'यश' आ 'अर्थ'; कोनो कवि ई दुनो शर्त के सीमा से बाहर न। ई घोषणा साहित्य के शुद्धतावादी आदर्शवाद के चुनौती दे ओकर भौतिक-आर्थिक आधार के उद्घाटित करै हय — जे स्पष्टतः मार्क्सवादी साहित्य-समाजशास्त्र के अन्तर्दृष्टि हय। प्रसङ्ग ई जे विद्यालय के अनुदान बचावे के विवशता में — कुमार गंगानन्द सिंह आ राजपण्डित बलदेव मिश्र के दबाव में — मधुपजी के महाराज कामेश्वर सिंह के 'कोबर गीत' लिखय पड़लथिन। 'कोबर-गीत' के 'युगीन विवशता के द्योतक' कहके रमानन्द झा एक जटिल नैतिक-सौन्दर्यशास्त्रीय प्रश्न के सामना करै हथिन — कवि अपन आत्मा के प्रतिकूल काहे लिखै हथिन? ओ स्वीकार करै हथिन कि मधुप के 'कवित्व-शक्ति एतना प्रखर हल जे अनिश्चित विषयो पर भी दिव्य-मार्मिकता आबि जाय हल।' ई प्रयोजन आ प्रतिभा के द्वन्द्व के ईमानदार विवेचन हय। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि से ई अध्याय संस्कृत आ मैथिली के स्वामी-दास सम्बन्ध में न, संवादशील परम्परा में रखै हय।

'कोबर-गीत'क रचनाकेँ आधार बनाय रमानन्द झा एक निर्भीक प्रश्न उठबैत छथि — 'कविता कथी लेल लिखल जाइत अछि?' आ स्पष्ट उत्तर दैत छथि — 'यश' आ 'अर्थ'; कोनो कवि एहि दुनू शर्तक सीमासँ बाहर नहि। ई घोषणा साहित्यक शुद्धतावादी आदर्शवादकेँ चुनौती दैत ओकर भौतिक-आर्थिक आधारकेँ उद्घाटित करैत अछि — जे स्पष्टतः मार्क्सवादी साहित्य-समाजशास्त्रक अन्तर्दृष्टि थिक। प्रसङ्ग ई जे विद्यालयक अनुदान बचेबाक विवशतामे — कुमार गंगानन्द सिंह आ राजपण्डित बलदेव मिश्रक दबावमे — मधुपजीकेँ महाराज कामेश्वर सिंहक 'कोबर गीत' लिखय पड़लनि। 'कोबर-गीत'केँ 'युगीन विवशताक द्योतक' कहि रमानन्द झा एक जटिल नैतिक-सौन्दर्यशास्त्रीय प्रश्नक सामना करैत छथि — कवि अपन आत्माक प्रतिकूल किएक लिखैत छथि? ओ स्वीकार करैत छथि जे मधुपक 'कवित्व-शक्ति ततेक प्रखर छल जे अनिश्चित विषयोपर सेहो दिव्य-मार्मिकता आबि जाइत छलैक।' ई प्रयोजन आ प्रतिभाक द्वन्द्वक ईमानदार विवेचन थिक। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ ई अध्याय संस्कृत आ मैथिलीकेँ स्वामी-दास सम्बन्धमे नहि, संवादशील परम्परामे रखैत अछि।

१५. काञ्चीनाथ झा 'किरण' के कथा-जगत

१५. काञ्चीनाथ झा 'किरण' के कथा-जगत

१५. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क कथा-जगत

किरण (१९०६–१९८९) के रमानन्द झा तेसरका दशक के संक्रान्ति-काल के प्रतिनिधि कथाकार मानै छै — विद्यापतीय कल्पनालोक सें हटि 'देसिल वयना' के यथार्थ ओर उन्मुख। हुनकर कथा-जगत ('चन्द्रग्रहण', 'धर्मरत्नाकर', 'समाजक चित्र') सामाजिक विषमता, जाति, श्रम, धर्मान्धता, सत्ता, स्त्री आरो मनुष्य के नैतिक सङ्घर्ष के कथा-जगत छै। लेखक हुनकर रचना में समाज के अँधार परत के भेदैवाला आलोचनात्मक प्रकाश देखै छै। 'चन्द्रग्रहण' में प्राकृतिक घटनापर अन्धविश्वास के आड़ में होइत व्यभिचार आरो ठगी उजागर छै; 'धर्मरत्नाकर' में राम किसन जकाँ शोषित रैयत के हाहाकार आरो धर्मरत्नाकर बाबू साहेब के पाखण्ड बेनकाब कैल गेलै।

किरण (१९०६–१९८९) के रमानन्द झा तृतीय दशक के संक्रान्ति-काल के प्रतिनिधि कथाकार मानै हथिन — विद्यापतीय कल्पनालो के से हटि 'देसिल वयना' के यथार्थ ओर उन्मुख। हुनकर कथा-जगत ('चन्द्रग्रहण', 'धर्मरत्नाकर', 'समाज के चित्र') सामाजिक विषमता, जाति, श्रम, धर्मान्धता, सत्ता, स्त्री आ मनुष्य के नैतिक सङ्घर्ष के कथा-जगत हय। लेखक हुनकर रचना में समाज के अँधार परत के भेदयवला आलोचनात्मक प्रकाश देखै हथिन। 'चन्द्रग्रहण'में प्राकृतिक घटना पर अन्धविश्वास के आड़ में होय व्यभिचार आ ठगी उजागर हय; 'धर्मरत्नाकर'में राम किसन जइसन शोषित रैयत के हाहाकार आ धर्मरत्नाकर बाबू साहेब के पाखण्ड बेनकाब कैल गेल हय।

किरण (१९०६–१९८९)कँ रमानन्द झा तृतीय दशकक संक्रान्ति-कालक प्रतिनिधि कथाकार मानैत छथि — विद्यापतीय कल्पनालोकसँ हटि 'देसिल वयना'क यथार्थ दिस उन्मुख। हुनक कथा-जगत ('चन्द्रग्रहण', 'धर्मरत्नाकर', 'समाजक चित्र') सामाजिक विषमता, जाति, श्रम, धर्मान्धता, सत्ता, स्त्री आ मनुष्यक नैतिक सङ्घर्षक कथा-जगत अछि। लेखक हुनकर रचनामे समाजक अँधार परतकेँ भेदयवला आलोचनात्मक प्रकाश देखैत छथि। 'चन्द्रग्रहण'मे प्राकृतिक घटनापर अन्धविश्वासक आड़मे होइत व्यभिचार आ ठगी उजागर अछि; 'धर्मरत्नाकर'मे राम किसन जकाँ शोषित रैयतक हाहाकार आ धर्मरत्नाकर बाबू साहेबक पाखण्ड बेनकाब कएल गेल अछि।

'जाड़क पालामे ठिठुरैत नाङट नेना', 'लाज झँपबा लेल व्याकुल तरुणी', 'स्कूलक फीस लेल दौड़ करैत देशक भविष्य' — ई सब्भे बिम्ब यथार्थवादी करुण-रस के तीव्र सम्प्रेषण छै। पाठक-प्रतिक्रिया-सिद्धान्त के दृष्टि सें किरण के कथा के विस्फोट-क्षण — 'कल्पनाक मचकीपर आस लगैत काल यथार्थसँ सरोकार छूटि जाएब' — के रमानन्द झा जाहि सूक्ष्मता सें पकड़ै छै, ऊ रूपवादी अपरिचितीकरणक बोध के परिचायक छै।

'जाड़ के पाला में ठिठुरै नाङट नेना', 'लाज झँपबा खातिर व्याकुल तरुणी', 'स्कूल के फीस खातिर दौड़ करै देश के भविष्य' — ई सब बिम्ब यथार्थवादी करुण-रस के तीव्र सम्प्रेषण हय। पाठक-प्रतिक्रिया-सिद्धान्त के दृष्टि से किरण के कथा के विस्फोट-क्षण — 'कल्पना के मचकी पर आस लगै काल यथार्थ से

सरोकार छूटि जाएब' — के रमानन्द झा जे सूक्ष्मता से पकड़ै हथिन, ओ रूपवादी अपरिचितीकरण के बोध के परिचायक हय।

'जाड़क पालामे ठिठुरैत नाङट नेना', 'लाज झँपबा लेल व्याकुल तरुणी', 'स्कूलक फीस लेल दौड़ करैत देशक भविष्य' — ई सभ बिम्ब यथार्थवादी करुण-रसक तीव्र सम्प्रेषण थिक। पाठक-प्रतिक्रिया-सिद्धान्तक दृष्टिसँ किरणक कथाक विस्फोट-क्षण — 'कल्पनाक मचकीपर आस लगैत काल यथार्थसँ सरोकार छूटि जाएब' — कँ रमानन्द झा जाहि सूक्ष्मतासँ पकड़ैत छथि, ओ रूपवादी अपरिचितीकरणक बोधक परिचायक थिक।

मार्क्सवादी नजर सें किरण सुविधा-सम्पन्न वर्ग आरो श्रमजीवी वर्ग के अन्तर उजागर करै छै; दलित दृष्टि सें सामाजिक प्रतिष्ठा के ब्राह्मणवादी निर्धारण प्रश्नाङ्कित होय छै; नारीवादी नजर सें स्त्री के जिनगी केवल गृहस्थ आदर्श के उदाहरण नै, स्वतन्त्र सामाजिक अनुभव के क्षेत्र बनै छै। किरण के कथा लोकमङ्गलवादी छै, मतरकि उपदेश खाली नै — पात्र के अन्तर्विरोध, विडम्बना आरो सामाजिक असंगति कथा के जीवित बनाबै छै। विदेह समान्तर इतिहास में किरण मिथिला के गौरवगानक बदला मिथिला के भीतर के विषमता देखाबै छै।

मार्क्सवादी दृष्टि से किरण सुविधा-सम्पन्न वर्ग आ श्रमजीवी वर्ग के अन्तर उजागर करै हथिन; दलित दृष्टि से सामाजिक प्रतिष्ठा के ब्राह्मणवादी निर्धारण प्रश्नाङ्कित होय हय; नारीवादी दृष्टि से स्त्री के जीवन खाली गृहस्थ आदर्श के उदाहरण न, स्वतन्त्र सामाजिक अनुभव के क्षेत्र बनै हय। किरण के कथा लोकमङ्गलवादी हय, मुदा उपदेश खाली न — पात्र के अन्तर्विरोध, विडम्बना आ सामाजिक असंगति कथा के जीवित बनावै हय। विदेह समान्तर इतिहास में किरण मिथिला के गौरवगान के बदला मिथिला के भीतर के विषमता देखाबै हथिन।

मार्क्सवादी दृष्टिसँ किरण सुविधा-सम्पन्न वर्ग आ श्रमजीवी वर्गक अन्तर उजागर करैत छथि; दलित दृष्टिसँ सामाजिक प्रतिष्ठाक ब्राह्मणवादी निर्धारण प्रश्नाङ्कित होइत अछि; नारीवादी दृष्टिसँ स्त्रीक जीवन केवल गृहस्थ आदर्शक उदाहरण नहि, स्वतन्त्र सामाजिक अनुभवक क्षेत्र बनैत अछि। किरणक कथा लोकमङ्गलवादी अछि, मुदा उपदेश मात्र नहि — पात्रक अन्तर्विरोध,

विडम्बना आ सामाजिक असंगति कथाकेँ जीवित बनबैत अछि। विदेह समान्तर इतिहासमे किरण मिथिलाक गौरवगानक बदला मिथिलाक भीतरक विषमता देखबैत छथि।

१६. मैथिली उपन्यास के आलोक में 'चन्द्रग्रहण' के नारी-पात्र

१६. मैथिली उपन्यास के आलोक में 'चन्द्रग्रहण' के नारी-पात्र

१६. मैथिली उपन्यासक आलोकमे 'चन्द्रग्रहण'क नारी-पात्र

ई निबन्ध कृति के सबसें बेसी आधुनिक-आलोचनात्मक अध्याय छै आरो मैथिली उपन्यास में स्त्री-पात्र के परिवर्तनशील रूपक अध्ययन करै छै। किरण के 'चन्द्रग्रहण' (१९३२) के रजनी आरो सुषमा सें लऽ कऽ 'रूपा' (१९८८) धरि के नारी-पात्र के विकास-रेखा के रमानन्द झा समाज-सुधार-आन्दोलन के ऐतिहासिक पिछुलका बात सें जोड़ि विश्लेषित करै छै — 'जेना-जेना परिवेशमे सुधारात्मक-आन्दोलनात्मक चेतना प्रखर होइत गेल, उपन्यासक चरित्र-निर्माणमे तकर प्रभाव पड़ैत रहल।' ई साहित्य आरो समाज के द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध के उत्कृष्ट नव-ऐतिहासिकतावादी पाठ छै।

ई निबन्ध कृति के सबसे बेसी आधुनिक-आलोचनात्मक अध्याय हय आ मैथिली उपन्यास में स्त्री-पात्र के परिवर्तनशील रूपक अध्ययन करै हय। किरण के 'चन्द्रग्रहण' (१९३२) के रजनी आ सुषमा से लेके 'रूपा' (१९८८) तक नारी-पात्र के विकास-रेखा के रमानन्द झा समाज-सुधार-आन्दोलन के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से जोड़के विश्लेषित करै हथिन — 'जइसन-जइसन परिवेश में सुधारात्मक-आन्दोलनात्मक चेतना प्रखर होय गेल, उपन्यास के चरित्र-निर्माण में ओकर प्रभाव पड़ै रहल।' ई साहित्य आ समाज के द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध के उत्कृष्ट नव-ऐतिहासिकतावादी पाठ हय।

ई निबन्ध कृतिक सर्वाधिक आधुनिक-आलोचनात्मक अध्याय थिक आ मैथिली उपन्यासमे स्त्री-पात्रक परिवर्तनशील रूपक अध्ययन करैत अछि। किरणक 'चन्द्रग्रहण' (१९३२)क रजनी आ सुषमासँ लऽ कऽ 'रूपा' (१९८८) धरिक नारी-पात्रक विकास-रेखाकेँ रमानन्द झा समाज-सुधार-आन्दोलनक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिसँ जोड़ि विश्लेषित करैत छथि — 'जेना-जेना परिवेशमे

सुधारात्मक-आन्दोलनात्मक चेतना प्रखर होइत गेल, उपन्यासक चरित्र-निर्माणमे तकर प्रभाव पड़ैत रहल।' ई साहित्य आ समाजक द्वन्द्वात्मक सम्बन्धक उत्कृष्ट नव-ऐतिहासिकतावादी पाठ थिक।

सामाजिक सुधार-आन्दोलन, शिक्षा आरो आधुनिक चेतना के प्रभाव सें 'चन्द्रग्रहण' के नारी-पात्र पारम्परिक मौनता छोड़ि नूतन व्यक्तित्व ग्रहण करै छै। नारी के अन्तःकामना, प्रेम, विरह, देहबोध, निर्णय आरो सामाजिक दायित्व कथा के सक्रिय अङ्ग बनै छै; वातावरण आरो नायिका के अन्तःस्थितिक समान्तर विन्यास मनोवैज्ञानिक गहराई उपजाबै छै। नारीवादी समीक्षा के दृष्टि सें ई निबन्ध कृति के सबसें बेसी अग्रगामी छै — कैलेकि रमानन्द झा पण्डित-वर्ग के ओहि पाखण्ड के उघारै छै जेकर 'समस्त उपदेश अनके लेल' होइत छै, आरो जे मेला-ठेला में अपहृत नारी के सेहो शिक्षा सें वञ्चित रखै छै। 'रचनाकारक व्यक्तित्वक आक्रामकता' के चरित्र-निर्माण में देखब — ई अभिव्यञ्जनावादी आलोचना छै। स्त्री के केवल त्यागमूर्ति अथवा कुलरक्षिका नै, इच्छाशील आरो विचारशील मनुष्य के रूप में देखै के ई कोसिस जरूरी छै।

सामाजिक सुधार-आन्दोलन, शिक्षा आ आधुनिक चेतना के प्रभाव से 'चन्द्रग्रहण' के नारी-पात्र पारम्परिक मौनता छोड़के नूतन व्यक्तित्व ग्रहण करै हय। नारी के अन्तःकामना, प्रेम, विरह, देहबोध, निर्णय आ सामाजिक दायित्व कथा के सक्रिय अंग बनै हय; वातावरण आ नायिका के अन्तःस्थिति के समान्तर विन्यास मनोवैज्ञानिक गहराई पैदा करै हय। नारीवादी समीक्षा के दृष्टि से ई निबन्ध कृति के सबसे बेसी अग्रगामी हय — काहे कि रमानन्द झा पण्डित-वर्ग के ओ पाखण्ड के उघारै हथिन जकर 'समस्त उपदेश अनके खातिर' होय हय, आ जे मेला-ठेला में अपहृत नारी के भी शिक्षा से वञ्चित रखै हय। 'रचनाकार के व्यक्तित्व के आक्रामकता' के चरित्र-निर्माण में देखब — ई अभिव्यञ्जनावादी आलोचना हय। स्त्री के खाली त्यागमूर्ति वा कुलरक्षिका न, इच्छाशील आ विचारशील मनुष्य के रूप में देखे के ई प्रयास महत्त्वपूर्ण हय।

सामाजिक सुधार-आन्दोलन, शिक्षा आ आधुनिक चेतनाक प्रभावसँ 'चन्द्रग्रहण'क नारी-पात्र पारम्परिक मौनता छोड़ि नूतन व्यक्तित्व ग्रहण करैत अछि। नारीक अन्तःकामना, प्रेम, विरह, देहबोध, निर्णय आ सामाजिक दायित्व

कथाक सक्रिय अङ्ग बनैत अछि; वातावरण आ नायिकाक अन्तःस्थितिक समान्तर विन्यास मनोवैज्ञानिक गहराई उत्पन्न करैत अछि। नारीवादी समीक्षाक दृष्टिसँ ई निबन्ध कृतिक सर्वाधिक अग्रगामी अछि — किएक तँ रमानन्द झा पण्डित-वर्गक ओहि पाखण्डकेँ उघारैत छथि जकर 'समस्त उपदेश अनके लेल' होइत छैक, आ जे मेला-ठेलामे अपहृत नारीकेँ सेहो शिक्षासँ वञ्चित रखैत अछि। 'रचनाकारक व्यक्तित्वक आक्रामकता'केँ चरित्र-निर्माणमे देखब — ई अभिव्यञ्जनावादी आलोचना थिक। स्त्रीकेँ केवल त्यागमूर्ति अथवा कुलरक्षिका नहि, इच्छाशील आ विचारशील मनुष्यक रूपमे देखबाक ई प्रयास महत्त्वपूर्ण अछि।

१७. प्रो॰ हरिमोहन झा एवं हुनकर 'चर्चरी'

१७. प्रो॰ हरिमोहन झा आ हुनकर 'चर्चरी'

१७. प्रो॰ हरिमोहन झा एवं हुनक 'चर्चरी'

मैथिली के सबसें बेसी लोकप्रिय हास्य-व्यङ्ग्यकार हरिमोहन झा (१९०८–१९८४) के 'चर्चरी' एक विधा के पोथी नै — ई संग्रह में कथा, एकाङ्की, छायारूपक, पत्र, दलान के गप्प, पोखरिक गप्प, प्रहसन आरो सांस्कृतिक निबन्ध सम्मिलित छै। 'चर्चरी' के ई विविध-विधात्मक स्वरूप के व्यञ्जन-सम्मिलित 'चर्चरी' (भोज्य-पदार्थ) के रूपक सें उघारलों करब — ई नामकरण-मूल के विश्लेषण चतुर छै। लेखक एकरा पारम्परिक कथा अथवा निबन्ध नै, स्वतन्त्र गप्प-विधा के रूप में पहचानै छै — हुनकर रचना-संसार ('चर्चरी', 'खट्टर ककाक तरंग', 'प्रणम्य देवता') मैथिली में गप्प-विधा के प्रवर्तन कैलकै। हास्य-व्यङ्ग्य आरो वक्रोक्ति के माध्यम सें ऊ थोथा पाण्डित्य, रूढ़िवाद आरो सामाजिक पाखण्डपर प्रहार कैलकै। हुनकर 'पाँच पत्र' जकाँ रचना रस-सिद्धान्त के दृष्टि सें करुण रस के उत्कृष्ट निदर्शन छै, जे पति-पत्नी के बदलै रागात्मक सम्बंध आरो युग-बोध के मार्मिक रूप में परस्तुत करै छै; 'रेलक झगड़ा' जकाँ प्रहसन में आधुनिक शिक्षा के वायु सें सिहकल परिवार के हास्यपूर्ण चित्रण छै।

मैथिली के सबसे बेसी लोकप्रिय हास्य-व्यङ्ग्यकार हरिमोहन झा (१९०८–१९८४) के 'चर्चरी' एक विधा के पोथी न — ई संग्रह में कथा, एकाङ्की, छायारूपक, पत्र, दलान के गप्प, पोखरि के गप्प, प्रहसन आ सांस्कृतिक निबन्ध

सम्मिलित हय। 'चर्चरी' के ई विविध-विधात्मक स्वरूप के व्यञ्जन-सम्मिलित 'चर्चरी' (भोज्य-पदार्थ) के रूपक से उद्घाटित करब — ई नामकरण-मूलक विश्लेषण चतुर हय। लेखक एकरा पारम्परिक कथा वा निबन्ध न, स्वतन्त्र गप्प-विधा के रूप में पहचानै हथिन — हुनकर रचना-संसार ('चर्चरी', 'खट्टर कका के तरंग', 'प्रणम्य देवता') मैथिली में गप्प-विधा के प्रवर्तन कैलक। हास्य-व्यङ्ग्य आ वक्रोक्ति के माध्यम से ओ थोथा पाण्डित्य, रूढ़िवाद आ सामाजिक पाखण्ड पर प्रहार कैलथिन। हुनकर 'पाँच पत्र' जइसन रचना रस-सिद्धान्त के दृष्टि से करुण रस के उत्कृष्ट निदर्शन हय, जे पति-पत्नी के बदलै रागात्मक सम्बन्ध आ युग-बोध के मार्मिक रूप में प्रस्तुत करै हय; 'रेल के झगड़ा' जइसन प्रहसन में आधुनिक शिक्षा के वायु से सिहकल परिवार के हास्यपूर्ण चित्रण हय।

मैथिलीक सर्वाधिक लोकप्रिय हास्य-व्यङ्ग्यकार हरिमोहन झा (१९०८–१९८४)क 'चर्चरी' एक विधाक पोथी नहि — एहि संग्रहमे कथा, एकाङ्की, छायारूपक, पत्र, दलानक गप्प, पोखरिक गप्प, प्रहसन आ सांस्कृतिक निबन्ध सम्मिलित अछि। 'चर्चरी'क एहि विविध-विधात्मक स्वरूपकेँ व्यञ्जन-सम्मिलित 'चर्चरी' (भोज्य-पदार्थ)क रूपकसँ उद्घाटित करब — ई नामकरण-मूलक विश्लेषण चतुर अछि। लेखक एकरा पारम्परिक कथा अथवा निबन्ध नहि, स्वतन्त्र गप्प-विधाक रूपमे पहचानैत छथि — हुनक रचना-संसार ('चर्चरी', 'खट्टर ककाक तरंग', 'प्रणम्य देवता') मैथिलीमे गप्प-विधाक प्रवर्तन कएलक। हास्य-व्यङ्ग्य आ वक्रोक्तिक माध्यमसँ ओ थोथा पाण्डित्य, रूढ़िवाद आ सामाजिक पाखण्डपर प्रहार कएलनि। हुनक 'पाँच पत्र' जकाँ रचना रस-सिद्धान्तक दृष्टिसँ करुण रसक उत्कृष्ट निदर्शन थिक, जे पति-पत्नीक बदलैत रागात्मक सम्बन्ध आ युग-बोधकेँ मार्मिक रूपेँ प्रस्तुत करैत अछि; 'रेलक झगड़ा' जकाँ प्रहसनमे आधुनिक शिक्षाक वायुसँ सिहकल परिवारक हास्यपूर्ण चित्रण अछि।

हरिमोहन झा के सबसें बड़का उपलब्धि मैथिली में विशाल पाठक-समुदाय के निर्माण छै। मैथिल समाज के हास्यप्रिय संस्कार के ऊ साहित्यिक रूप देलकै आरो पाठक के साहित्य ओर आकर्षित कैलकै। भारतीय हास्यरस आरो

पाश्चात्य व्यङ्ग्य-दृष्टि ई रचना में एकत्र होय छै; गप्प के मिश्रित विधागत स्वरूप लोक के मौखिक कथन, शास्त्रीय विनोद आरो आधुनिक मुद्रित साहित्य के बीच सेतु बनाबै छै।

हरिमोहन झा के सबसे बड़ उपलब्धि मैथिली में विशाल पाठक-समुदाय के निर्माण हय। मैथिल समाज के हास्यप्रिय संस्कार के ओ साहित्यिक रूप देलथिन आ पाठक के साहित्य दिस आकर्षित कैलथिन। भारतीय हास्यरस आ पाश्चात्य व्यङ्ग्य-दृष्टि ई रचना में एकत्र होय हय; गप्प के मिश्रित विधागत स्वरूप लोक के मौखिक कथन, शास्त्रीय विनोद आ आधुनिक मुद्रित साहित्य के बीच सेतु बनावै हय।

हरिमोहन झाक सभसँ पैघ उपलब्धि मैथिलीमे विशाल पाठक-समुदायक निर्माण अछि। मैथिल समाजक हास्यप्रिय संस्कारकेँ ओ साहित्यिक रूप देलनि आ पाठककेँ साहित्य दिस आकर्षित कएलनि। भारतीय हास्यरस आ पाश्चात्य व्यङ्ग्य-दृष्टि एहि रचनामे एकत्र होइत अछि; गप्पक मिश्रित विधागत स्वरूप लोकक मौखिक कथन, शास्त्रीय विनोद आ आधुनिक मुद्रित साहित्यक बीच सेतु बनबैत अछि।

संग-संग ई निबन्ध संग्रह के सबसें बेसी असहमति-परधान निबन्ध में एक छै। रमानन्द झा हरिमोहन झा-जइसन कैननी लेखक के सीमा के निर्भीकता सें रेखांकित करै छै — 'अधिकांश रचना पढ़लापर विचारक उन्मेष नहि होइछ, वैचारिक मन्थन नहि होइछ, मात्र गुदगुदी लगैछ, एक बेर हँसा गेलापर ओकर प्रभाव बिला जाइछ।' ई कैनन-केन्द्रित मूल्याङ्कन के खिलाफ विदेह-प्रतिमान के पुनर्मूल्याङ्कन-साहस के अग्रदूत छै — लोकप्रियता के साहित्यिक श्रेष्ठता के पर्याय नै मानब।

साथे ई निबन्ध संग्रह के सबसे बेसी असहमति-प्रधान निबन्ध में एक हय। रमानन्द झा हरिमोहन झा-जइसन कैननी लेखक के सीमा के निर्भीकता से रेखाङ्कित करै हथिन — 'अधिकांश रचना पढ़ला पर विचार के उन्मेष न होय हय, वैचारिक मन्थन न होय हय, खाली गुदगुदी लगै हय, एक बेर हँसा गेला पर ओकर प्रभाव बिला जाय हय।' ई कैनन-केन्द्रित मूल्याङ्कन के विरुद्ध विदेह-प्रतिमान के पुनर्मूल्याङ्कन-साहस के अग्रदूत हय — लोकप्रियता के साहित्यिक श्रेष्ठता के पर्याय न मानब।

संगहि ई निबन्ध संग्रहक सर्वाधिक असहमति-प्रधान निबन्धमे एक थिक। रमानन्द झा हरिमोहन झा-सन कैननी लेखकक सीमाकेँ निर्भीकतासँ रेखाङ्कित करैत छथि — 'अधिकांश रचना पढ़लापर विचारक उन्मेष नहि होइछ, वैचारिक मन्थन नहि होइछ, मात्र गुदगुदी लगैछ, एक बेर हँसा गेलापर ओकर प्रभाव बिला जाइछ।' ई कैनन-केन्द्रित मूल्याङ्कनक विरुद्ध विदेह-प्रतिमानक पुनर्मूल्याङ्कन-साहसक अग्रदूत थिक — लोकप्रियताकेँ साहित्यिक श्रेष्ठताक पर्याय नहि मानब।

१८. कविवर यात्री के स्तम्भ-लेखन

१८. कविवर यात्री के स्तम्भ-लेखन

१८. कविवर यात्रीक स्तम्भ-लेखन

यात्री (नागार्जुन) के स्तम्भ-लेखन के साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित करै रमानन्द झा मैथिली पत्रकारिता आरो साहित्य के अन्तःसम्बन्ध के उघारै छै। प्रारम्भिक पत्र-पत्रिका के उद्देश्य मातृभाषा-सेवा आरो सामाजिक कुरीति के निदान छेलै; पाठकीय स्तम्भ लेखक, सम्पादक आरो पाठक के बीच वैचारिक संवाद स्थापित करै छेलै। 'यत्र तत्र सर्वत्र', 'यत्किंचित' आरो 'चिन्तन-अनुचिन्तन' जइसन स्तम्भ में यात्री राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था, भाषा आरो संस्कृतिपर तात्कालिक टिप्पणी करै छै; 'चोआ-काका' जइसन व्यङ्ग्य-पात्र के विकास धरि के विश्लेषण ई निबन्ध में छै। यात्री के 'तेज दृष्टिक सीमा-रेखासँ छोटसँ छोट घटनाक बाहर नहि रहब' — ई व्यङ्ग्यकार के सर्वग्राही दृष्टि के स्वीकृति छै।

यात्री (नागार्जुन) के स्तम्भ-लेखन के साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित करै रमानन्द झा मैथिली पत्रकारिता आ साहित्य के अन्तःसम्बन्ध के उद्घाटित करै हथिन। प्रारम्भिक पत्र-पत्रिका के उद्देश्य मातृभाषा-सेवा आ सामाजिक कुरीति के निदान हल; पाठकीय स्तम्भ लेखक, सम्पादक आ पाठक के बीच वैचारिक संवाद स्थापित करै हल। 'यत्र तत्र सर्वत्र', 'यत्किंचित' आ 'चिन्तन-अनुचिन्तन' जइसन स्तम्भ में यात्री राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था, भाषा आ संस्कृति पर तात्कालिक टिप्पणी करै हथिन; 'चोआ-काका' जइसन व्यङ्ग्य-पात्र के विकास तक विश्लेषण ई निबन्ध में हय। यात्री के 'तेज दृष्टि

के सीमा-रेखा से छोट से छोट घटना के बाहर न रहब' —ई व्यङ्ग्यकार के सर्वग्राही दृष्टि के स्वीकृति हय।

यात्री (नागार्जुन)क स्तम्भ-लेखनकेँ साहित्यिक विधाक रूपमे प्रतिष्ठित करैत रमानन्द झा मैथिली पत्रकारिता आ साहित्यक अन्त:सम्बन्धकेँ उद्घाटित करैत छथि। प्रारम्भिक पत्र-पत्रिकाक उद्देश्य मातृभाषा-सेवा आ सामाजिक कुरीतिक निदान छल; पाठकीय स्तम्भ लेखक, सम्पादक आ पाठकक बीच वैचारिक संवाद स्थापित करैत छल। 'यत्र तत्र सर्वत्र', 'यत्किंचित' आ 'चिन्तन-अनुचिन्तन' सन स्तम्भमे यात्री राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था, भाषा आ संस्कृतिपर तात्कालिक टिप्पणी करैत छथि; 'चोआ-काका' सन व्यङ्ग्य-पात्रक विकास धरिक विश्लेषण एहि निबन्धमे अछि। यात्रीक 'तेज दृष्टिक सीमा-रेखासँ छोटसँ छोट घटनाक बाहर नहि रहब' —ई व्यङ्ग्यकारक सर्वग्राही दृष्टिक स्वीकृति थिक।

यात्री अपन स्तम्भ के माध्यम सें शासक वर्ग के वाक्जाल, मिथिलाञ्चलक आर्थिक उपेक्षा आरो भाषा-साम्राज्यवादक तीक्ष्ण आलोचना कैलकै। ऊ हिन्दी के सम्पर्कभाषाक सम्मान दैतहुँ ओकर नामपर मैथिली आरो अन्य भाषा के अधिकार छीनबाक विरोध करै छै। स्तम्भ के भाषा तीक्ष्ण, व्यङ्ग्यपूर्ण, संवादात्मक आरो पात्रप्रधान छै। विधा-फैलाव के दृष्टि सें ई निबन्ध साहित्येतिहास के अखबारी गद्य ओर उन्मुख करै छै आरो मैथिली गद्य में राजनीतिक व्यङ्ग्य आरो सामाजिक चिन्तन के एगो नव प्रतिमान रेखांकित करै छै।

यात्री अपन स्तम्भ के माध्यम से शासक वर्ग के वाक्जाल, मिथिलाञ्चल के आर्थिक उपेक्षा आ भाषा-साम्राज्यवाद के तीक्ष्ण आलोचना कैलथिन। ओ हिन्दी के सम्पर्कभाषा के सम्मान देतो ओकर नाम पर मैथिली आ आन भाषा के अधिकार छीने के विरोध करै हथिन। स्तम्भ के भाषा तीक्ष्ण, व्यङ्ग्यपूर्ण, संवादात्मक आ पात्रप्रधान हय। विधा-विस्तार के दृष्टि से ई निबन्ध साहित्येतिहास के अखबारी गद्य दिस उन्मुख करै हय आ मैथिली गद्य में राजनीतिक व्यङ्ग्य आ सामाजिक चिन्तन के एकगो नव प्रतिमान रेखाङ्कित करै हय।

यात्री अपन स्तम्भक माध्यमसँ शासक वर्गक वाक्जाल, मिथिलाञ्चलक आर्थिक उपेक्षा आ भाषा-साम्राज्यवादक तीक्ष्ण आलोचना कएलनि। ओ हिन्दीकेँ सम्पर्कभाषाक सम्मान दैतहुँ ओकर नामपर मैथिली आ अन्य भाषाक अधिकार छीनबाक विरोध करैत छथि। स्तम्भक भाषा तीक्ष्ण, व्यङ्ग्यपूर्ण, संवादात्मक आ पात्रप्रधान अछि। विधा-विस्तारक दृष्टिसँ ई निबन्ध साहित्येतिहासकेँ अखबारी गद्य दिस उन्मुख करैत अछि आ मैथिली गद्यमे राजनीतिक व्यङ्ग्य तथा सामाजिक चिन्तनक एकटा नव प्रतिमान रेखाङ्कित करैत अछि।

१९. कविवर आरसी

१९. कविवर आरसी

१९. कविवर आरसी

आरसी प्रसाद सिंह (जन्म १९११ ई॰) मैथिली आरो हिन्दी दुनु भाषा में सर्जन करै छेलै, मतरकि मैथिली में हुनकर मुख्य परिचय गीतकार के छै। 'शेफालिका', 'माटिक दीप', 'पूजाक फूल' आरो 'सूर्यमुखी' के माध्यम सें हुनकर काव्य-यात्रा राष्ट्रीयता, परकृति, प्रेम, सामाजिक चेतना आरो जन-अधिकार तक विस्तृत होय छै। हुनकर प्रारम्भिक गीत में राष्ट्रीय एकता, स्वाधीनता, त्याग आरो भारतीय समन्वित संस्कृति के स्वर छै — ऊ नव युग के नव निर्माण आरो कोटि-कोटि भारतवासी के ऐक्य-सूत्र में बान्हबाक आह्वान करै छै; बाद के कविता में मिथिला के शोषण, भाषिक अधिकार, बाढ़, राजनीतिक भ्रष्टाचार आरो जनाक्रोश मुखर होय छै।

आरसी प्रसाद सिंह (जन्म १९११ ई॰) मैथिली आ हिन्दी दुनो भाषा में सर्जन करै हलथिन, मुदा मैथिली में हुनकर मुख्य परिचय गीतकार के हय। 'शेफालिका', 'माटि के दीप', 'पूजा के फूल' आ 'सूर्यमुखी' के माध्यम से हुनकर काव्य-यात्रा राष्ट्रीयता, प्रकृति, प्रेम, सामाजिक चेतना आ जन-अधिकार तक विस्तृत होय हय। हुनकर प्रारम्भिक गीत में राष्ट्रीय एकता, स्वाधीनता, त्याग आ भारतीय समन्वित संस्कृति के स्वर हय — ओ नव युग के नव निर्माण आ कोटि-कोटि भारतवासी के ऐक्य-सूत्र में बाँधे के आह्वान करै हथिन; बाद के

कविता में मिथिला के शोषण, भाषिक अधिकार, बाढ, राजनीतिक भ्रष्टाचार आ जनाक्रोश मुखर होय हय।

आरसी प्रसाद सिंह (जन्म १९११ ई०) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषामे सर्जन करैत छलाह, मुदा मैथिलीमे हुनकर मुख्य परिचय गीतकारक अछि। 'शेफालिका', 'माटिक दीप', 'पूजाक फूल' आ 'सूर्यमुखी'क माध्यमसँ हुनकर काव्य-यात्रा राष्ट्रीयता, प्रकृति, प्रेम, सामाजिक चेतना आ जन-अधिकार धरि विस्तृत होइत अछि। हुनकर प्रारम्भिक गीतमे राष्ट्रीय एकता, स्वाधीनता, त्याग आ भारतीय समन्वित संस्कृतिक स्वर अछि — ओ नव युगक नव निर्माण आ कोटि-कोटि भारतवासीकेँ ऐक्य-सूत्रमे बान्हबाक आह्वान करैत छथि; बादक कवितामे मिथिलाक शोषण, भाषिक अधिकार, बाढ़, राजनीतिक भ्रष्टाचार आ जनाक्रोश मुखर होइत अछि।

रूपवादी नजर सें आरसी के खासियत गीतात्मकता, बिम्ब, अनुप्रास, इन्द्रियबोध आरो कोमल भावप्रवाह छै। ई निबन्ध के खास शक्ति इन्द्रियबोध-विश्लेषण में छै — हरसिंगार आरो सुमन में रस-गन्ध, पवन में स्पर्श, सुरभि-धार में रस-गन्ध-नाद के सम्मिश्रण — ई विभिन्न इन्द्रियबोध के सम्मिश्रण-विश्लेषण पाश्चात्य आधुनिक काव्य-समीक्षा के परिष्कृत उपकरण छी; भारतीय दृष्टि सें ई गुण-रीति (माधुर्य-गुण) आरो अलङ्कार-विवेचन के क्षेत्र छै। 'शेफालिका' सें 'सूर्यमुखी' धरि के यात्रा वैयक्तिक सौन्दर्यचेतना सें सामाजिक चेतना ओर बढ़ै कवि के विकास छै।

रूपवादी दृष्टि से आरसी के विशेषता गीतात्मकता, बिम्ब, अनुप्रास, इन्द्रियबोध आ कोमल भावप्रवाह हय। ई निबन्ध के विशेष शक्ति इन्द्रियबोध-विश्लेषण में हय — हरसिंगार आ सुमन में रस-गन्ध, पवन में स्पर्श, सुरभि-धार में रस-गन्ध-नाद के सम्मिश्रण — ई विभिन्न इन्द्रियबोध के सम्मिश्रण-विश्लेषण पाश्चात्य आधुनिक काव्य-समीक्षा के परिष्कृत उपकरण छी; भारतीय दृष्टि से ई गुण-रीति (माधुर्य-गुण) आ अलङ्कार-विवेचन के क्षेत्र हय। 'शेफालिका' से 'सूर्यमुखी' तक यात्रा वैयक्तिक सौन्दर्यचेतना से सामाजिक चेतना ओर बढ़ै कवि के विकास हय।

रूपवादी दृष्टिसँ आरसीक विशेषता गीतात्मकता, बिम्ब, अनुप्रास, इन्द्रियबोध आ कोमल भावप्रवाह अछि। एहि निबन्धक विशेष शक्ति इन्द्रियबोध-विश्लेषणमे अछि — हरसिंगार आ सुमनमे रस-गन्ध, पवनमे स्पर्श, सुरभि-धारमे रस-गन्ध-नादक सम्मिश्रण — ई विभिन्न इन्द्रियबोधक सम्मिश्रण-विश्लेषण पाश्चात्य आधुनिक काव्य-समीक्षाक परिष्कृत उपकरण छी; भारतीय दृष्टिसँ ई गुण-रीति (माधुर्य-गुण) आ अलङ्कार-विवेचनक क्षेत्र थिक। 'शेफालिका'सँ 'सूर्यमुखी' धरिक यात्रा वैयक्तिक सौन्दर्यचेतनासँ सामाजिक चेतना दिस बढ़ैत कविक विकास अछि।

२०. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' आरो हुनकर कविता

२०. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' आ हुनकर कविता

२०. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' आ हुनक कविता

संग्रह के बहुत विस्तृत निबन्ध में सें ई एक 'आयल वसन्त' के अमर गीतकार मोहन के समर्पित छै। मोहनजी के कविता स्मृति, परकृति, वसन्त, गीतात्मकता आरो जिनगी-सङ्घर्ष के सम्मिलित संसार छै। 'आयल वसन्त' जइसन गीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी कण्ठस्थ रहलै, जाहि सें कविता पाठ्यपुस्तकक बाहर जीवित सामुदायिक स्मृति बनल। रमानन्द झा एहिजा आत्मकथात्मक शैली — छात्र-जीवन में श्रीरामचन्द्र बाबू के कक्षा में गीत-श्रवण, 'मिहिर'-कार्यालय में मोहन के अनवरत कर्मशीलताक स्मरण — अपनाबै छै, जे समीक्षा के संस्मरणात्मक आत्मीयता दै छै।

संग्रह के बहुत विस्तृत निबन्ध में से ई एक 'आयल वसन्त' के अमर गीतकार मोहन के समर्पित हय। मोहनजी के कविता स्मृति, प्रकृति, वसन्त, गीतात्मकता आ जीवन-सङ्घर्ष के सम्मिलित संसार हय। 'आयल वसन्त' जइसन गीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी कण्ठस्थ रहल, जे से कविता पाठ्यपुस्तक के बाहर जीवित सामुदायिक स्मृति बनल। रमानन्द झा इहाँ आत्मकथात्मक शैली — छात्र-जीवन में श्रीरामचन्द्र बाबू के कक्षा में गीत-श्रवण, 'मिहिर'-कार्यालय में मोहन के अनवरत कर्मशीलता के स्मरण — अपनावै हथिन, जे समीक्षा के संस्मरणात्मक आत्मीयता दे हय।

संग्रहक अत्यन्त विस्तृत निबन्धमे सँ ई एक 'आयल वसन्त'क अमर गीतकार मोहनकेँ समर्पित अछि। मोहनजीक कविता स्मृति, प्रकृति, वसन्त, गीतात्मकता आ जीवन-सङ्घर्षक सम्मिलित संसार अछि। 'आयल वसन्त' सन गीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी कण्ठस्थ रहल, जाहिसँ कविता पाठ्यपुस्तकक बाहर जीवित सामुदायिक स्मृति बनल। रमानन्द झा एतय आत्मकथात्मक शैली — छात्र-जीवनमे श्रीरामचन्द्र बाबूक कक्षामे गीत-श्रवण, 'मिहिर'-कार्यालयमे मोहनक अनवरत कर्मशीलताक स्मरण — अपनबैत छथि, जे समीक्षाकेँ संस्मरणात्मक आत्मीयता दैत अछि।

मोहन के मातृभाषा-प्रेम — 'घरक गोसाउनि झँखथि अन्हारेँ, मन्दिर बारब दीप?', 'गाम नोत नहि, नोत बेलाही' — के माध्यम सें भाषिक अस्मिता के तीक्ष्ण चेतना उघारलों होय छै। 'जखन मैथिली सूपक भाँटा भेल संकटापन्न, की राष्ट्रीयता? देश-भक्ति की?' — ई पदावली भाषा आरो राष्ट्रीयता के अन्तःसम्बन्ध के प्रश्नाङ्कित करै छै।

मोहन के मातृभाषा-प्रेम — 'घर के गोसाउनि झँखथि अन्हारेँ, मन्दिर बारब दीप?', 'गाम नोत न, नोत बेलाही' — क माध्यम से भाषिक अस्मिता के तीक्ष्ण चेतना उद्घाटित होय हय। 'जब मैथिली सूप के भाँटा भेल संकटापन्न, की राष्ट्रीयता? देश-भक्ति की?' — ई पदावली भाषा आ राष्ट्रीयता के अन्तःसम्बन्ध के प्रश्नाङ्कित करै हय।

मोहनक मातृभाषा-प्रेम — 'घरक गोसाउनि झँखथि अन्हारेँ, मन्दिर बारब दीप?', 'गाम नोत नहि, नोत बेलाही' — क माध्यमसँ भाषिक अस्मिताक तीक्ष्ण चेतना उद्घाटित होइत अछि। 'जखन मैथिली सूपक भाँटा भेल संकटापन्न, की राष्ट्रीयता? देश-भक्ति की?' — ई पदावली भाषा आ राष्ट्रीयताक अन्तःसम्बन्धकेँ प्रश्नाङ्कित करैत अछि।

मोहनजी के जिनगी आर्थिक कमी, शिक्षा के संघर्ष, प्रवास, रोजगार-कमी आरो मुद्रणालय के श्रम सें बनल। ई कारण हुनकर कविता केवल प्रकृति के माधुर्य नै, श्रमशील जीवन के भीतर सौन्दर्य बचायबाक प्रयत्न छै। विदेह समान्तर इतिहास के दृष्टि सें मुद्रणालय के प्रूफ-संशोध के सेहो साहित्येतिहास

के निर्माता छै — ऊ केवल दोसर के पोथी सुधारै नै, अपन समय के भाषिक रूप, वर्तनी आरो साहित्यिक संस्कृति के संरक्षक बनै छै।

मोहनजी के जीवन आर्थिक अभाव, शिक्षा के संघर्ष, प्रवास, रोजगार-अभाव आ मुद्रणालय के श्रम से बनल। ई कारण हुनकर कविता खाली प्रकृति के माधुर्य न, श्रमशील जीवन के भीतर सौन्दर्य बचावे के प्रयत्न हय। विदेह समान्तर इतिहास के दृष्टि से मुद्रणालय के प्रूफ-संशोधक भी साहित्येतिहास के निर्माता हथिन — ओ खाली दोसर के पोथी सुधारै न, अपन समय के भाषिक रूप, वर्तनी आ साहित्यिक संस्कृति के संरक्षक बनै हथिन।

मोहनजीक जीवन आर्थिक अभाव, शिक्षाक संघर्ष, प्रवास, रोजगार-अभाव आ मुद्रणालयक श्रमसँ बनल। एहि कारण हुनकर कविता केवल प्रकृतिक माधुर्य नहि, श्रमशील जीवनक भीतर सौन्दर्य बचायबाक प्रयत्न अछि। विदेह समान्तर इतिहासक दृष्टिसँ मुद्रणालयक प्रूफ-संशोधक सेहो साहित्येतिहासक निर्माता छथि — ओ केवल दोसरक पोथी सुधारैत नहि, अपन समयक भाषिक रूप, वर्तनी आ साहित्यिक संस्कृतिक संरक्षक बनैत छथि।

२१. शुद्धतावादी कथाकार उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

२१. शुद्धतावादी कथाकार उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

२१. शुद्धतावादी कथाकार उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' (जन्म १९१७ ई॰) मैथिली भाषा के शुद्ध, देशज आरो स्वाभाविक रूपक पक्षधर कथाकार छै। 'विडम्बना' आरो 'भजना भजले' के विवेचन में रमानन्द झा मात्रा बनाम गुणवत्ता के सैद्धान्तिक प्रश्न उठाबै छै — 'ढाकीक-ढाकी लिखेलेपर जँ कोनो जीवन-मूल्य स्वीकृत नहि भऽ सकल ... तँ जीवन-कालहिमे रचनाकार अप्रासङ्गिक घोषित भऽ जाइत अछि।' ई रूपवादी गुणवत्ता-केन्द्रित मूल्याङ्कन छै; व्यास के कथा के 'बासितेवासि नहि, टटका बनल रहब' — कालातीत ताजगी — के कसौटी कालातीत-मूल्य के अवधारणा सें मेल खाइत छै।

उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' (जन्म १९१७ ई॰) मैथिली भाषा के शुद्ध, देशज आ स्वाभाविक रूपक पक्षधर कथाकार हथिन। 'विडम्बना' आ 'भजना भजले' के

विवेचन में रमानन्द झा मात्रा बनाम गुणवत्ता के सैद्धान्तिक प्रश्न उठावै हथिन — 'ढाकी के-ढाकी लिखेले पर अगर कोनो जीवन-मूल्य स्वीकृत न होके सकल ... त जीवन-कालहि में रचनाकार अप्रासङ्गिक घोषित हो जाय हय।' ई रूपवादी गुणवत्ता-केन्द्रित मूल्याङ्कन हय; व्यास के कथा के 'बासितेवासि न, टटका बनल रहब' — कालातीत ताजगी — क कसौटी कालातीत-मूल्य के अवधारणा से मेल खाय हय।

उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' (जन्म १९१७ ई॰) मैथिली भाषाक शुद्ध, देशज आ स्वाभाविक रूपक पक्षधर कथाकार छथि। 'विडम्बना' आ 'भजना भजले'क विवेचनमे रमानन्द झा मात्रा बनाम गुणवत्ताक सैद्धान्तिक प्रश्न उठबैत छथि — 'ढाकीक-ढाकी लिखेलेपर जँ कोनो जीवन-मूल्य स्वीकृत नहि भऽ सकल ... तँ जीवन-कालहिमे रचनाकार अप्रासङ्गिक घोषित भऽ जाइत अछि।' ई रूपवादी गुणवत्ता-केन्द्रित मूल्याङ्कन थिक; व्यासक कथाक 'बासितेवासि नहि, टटका बनल रहब' — कालातीत ताजगी — क कसौटी कालातीत-मूल्यक अवधारणासँ मेल खाइत अछि।

हुनकर कथा भाषा-परयोग, सामाजिक व्यङ्ग्य, नैतिक विडम्बना आरो ग्रामजीवन के जीवित संवाद के कारण विशिष्ट छै। शुद्धतावाद हुनका लेली केवल शब्द के छनोट नै, सांस्कृतिक प्रतिरोध छै — बाहरी भाषिक प्रभाव के बीच मैथिली के अपन वाक्य-विन्यास, लोकोक्ति, उच्चारण आरो भावभूमि बचायब मातृभाषा के अस्मिता बचायब छेलै। रूपवादी नजर सें हुनकर कथा-भाषा पात्र के सामाजिक स्तर आरो मानसिकता निर्माण करै छै; उत्तर-औपनिवेशिक नजर सें भाषिक शुद्धता के आग्रह स्वाभिमान के प्रतीक छै।

हुनकर कथा भाषा-प्रयोग, सामाजिक व्यङ्ग्य, नैतिक विडम्बना आ ग्रामजीवन के जीवित संवाद के कारण विशिष्ट हय। शुद्धतावाद हुनका खातिर खाली शब्द के छनोट न, सांस्कृतिक प्रतिरोध हय — बाहरी भाषिक प्रभाव के बीच मैथिली के अपन वाक्य-विन्यास, लोकोक्ति, उच्चारण आ भावभूमि बचायब मातृभाषा के अस्मिता बचायब हल। रूपवादी दृष्टि से हुनकर कथा-भाषा पात्र के सामाजिक स्तर आ मानसिकता निर्माण करै हय; उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि से भाषिक शुद्धता के आग्रह स्वाभिमान के प्रतीक हय।

हुनकर कथा भाषा-प्रयोग, सामाजिक व्यङ्ग्य, नैतिक विडम्बना आ ग्रामजीवनक जीवित संवादक कारण विशिष्ट अछि। शुद्धतावाद हुनका लेल केवल शब्दक छनोट नहि, सांस्कृतिक प्रतिरोध अछि — बाहरी भाषिक प्रभावक बीच मैथिलीक अपन वाक्य-विन्यास, लोकोक्ति, उच्चारण आ भावभूमि बचायब मातृभाषाक अस्मिता बचायब छल। रूपवादी दृष्टिसँ हुनकर कथा-भाषा पात्रक सामाजिक स्तर आ मानसिकता निर्माण करैत अछि; उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ भाषिक शुद्धताक आग्रह स्वाभिमानक प्रतीक अछि।

२२. पं॰ राजेश्वर झा: व्यक्तित्व ऊ कृतित्व

२२. पं॰ राजेश्वर झा: व्यक्तित्व ओ कृतित्व

२२. पं॰ राजेश्वर झा : व्यक्तित्व ओ कृतित्व

राजेश्वर झा (१९२२–१९७७) शोधकर्ता, नाटककार, कथाकार, सम्पादक, प्रकाशक आरो संस्थापक के रूप में बहुत सक्रिय छेलै। हुनकर कृति के अनुसन्धानपरक, ऐतिहासिक-पौराणिक आरो सर्जनात्मक तीन वर्ग में बाँटल गेलै — 'मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास', 'मैथिली साहित्यक आदिकाल', 'अवहट्टक उद्भव ओ विकास' आदि हुनकर शोधपरक कृति छै। ई विवेचन में रमानन्द झा एक गम्भीर पद्धतिगत घोषणा करै छै — 'साहित्यकारक व्यक्तित्वकेँ बूझब सर्वप्रथम आवश्यक अछि, विना व्यक्तित्व बूझने कृतित्वक तहमे जाएब सम्भव नहि।' ई जीवनीमूलक समीक्षा के साफ प्रतिपादन छै। राजेश्वर बाबू के आर्थिक विपन्नता के अछै प्रतिवर्ष पोथी-परकाशन आरो लोक के लिखै के लेली प्रेरित करब — ई प्रेरक भूमिका के रमानन्द झा कृतित्व सें बेसी मूल्यवान् मानै छै ('तराजूक पलरापर व्यक्तित्व भरिगर भऽ जएतनि')। संस्था-निर्माता के ई मूल्याङ्कन विदेह-आन्दोलन के संस्था-केन्द्रित दृष्टि के पूर्वाभास छै।

राजेश्वर झा (१९२२–१९७७) शोधकर्ता, नाटककार, कथाकार, सम्पादक, प्रकाशक आ संस्थापक के रूप में बहुत सक्रिय हलथिन। हुनकर कृति के अनुसन्धानपरक, ऐतिहासिक-पौराणिक आ सर्जनात्मक तीन वर्ग में बाँटल गेल हय — 'मिथिलाक्षर के उद्भव ओ विकास', 'मैथिली साहित्य के आदिकाल', 'अवहट्ट के उद्भव ओ विकास' आदि हुनकर शोधपरक कृति हय। ई विवेचन में

रमानन्द झा एक गम्भीर पद्धतिगत घोषणा करै हथिन — 'साहित्यकार के व्यक्तित्व के बूझब सबसे पहिने जरूरी हय, बिना व्यक्तित्व बूझने कृतित्व के तह में जाएब सम्भव न।' ई जीवनीमूलक समीक्षा के साफ प्रतिपादन हय। राजेश्वर बाबू के आर्थिक विपन्नता के रहतो प्रतिवर्ष पोथी-प्रकाशन आ लोक के लिखे के खातिर प्रेरित करब — ई प्रेरक भूमिका के रमानन्द झा कृतित्व से बेसी मूल्यवान् मानै हथिन ('तराजू के पलरा पर व्यक्तित्व भरिगर होके जएतनि')। संस्था-निर्माता के ई मूल्याङ्कन विदेह-आन्दोलन के संस्था-केन्द्रित दृष्टि के पूर्वाभास हय।

राजेश्वर झा (१९२२–१९७७) शोधकर्ता, नाटककार, कथाकार, सम्पादक, प्रकाशक आ संस्थापकक रूपमे अत्यन्त सक्रिय छलाह। हुनकर कृतिकेँ अनुसन्धानपरक, ऐतिहासिक-पौराणिक आ सर्जनात्मक तीन वर्गमे बाँटल गेल अछि — 'मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास', 'मैथिली साहित्यक आदिकाल', 'अवहट्टक उद्भव ओ विकास' आदि हुनकर शोधपरक कृति अछि। एहि विवेचनमे रमानन्द झा एक गम्भीर पद्धतिगत घोषणा करैत छथि — 'साहित्यकारक व्यक्तित्वकेँ बूझब सर्वप्रथम आवश्यक अछि, विना व्यक्तित्व बूझने कृतित्वक तहमे जाएब सम्भव नहि।' ई जीवनीमूलक समीक्षाक स्पष्ट प्रतिपादन थिक। राजेश्वर बाबूक आर्थिक विपन्नताक अछैत प्रतिवर्ष पोथी-प्रकाशन आ लोककेँ लिखबाक लेल प्रेरित करब — एहि प्रेरक भूमिकाकेँ रमानन्द झा कृतित्वसँ बेसी मूल्यवान् मानैत छथि ('तराजूक पलरापर व्यक्तित्व भरिगर भऽ जएतनि')। संस्था-निर्माताक ई मूल्याङ्कन विदेह-आन्दोलनक संस्था-केन्द्रित दृष्टिक पूर्वाभास थिक।

अध्याय के खासियत ई छै जे लेखक प्रशंसापर रुकै नै। राजेश्वर झा के साहित्येतिहास के काल-बँटवारा, ईसापूर्व सहस्राब्दी सें मैथिली साहित्य के सुरुआत आरो अवहट्टसम्बन्धी कई निष्कर्ष के प्रमाणहीन कहै छै। औचित्य आरो ऐतिहासिक पद्धति के दृष्टि सें ई अध्याय 'अखियासल' के सबसें बेसी सन्तुलित आलोचना में सें एक छै — व्यक्ति के श्रम के सम्मान आरो हुनकर निष्कर्ष के कठोर परीक्षण एकसाथ सम्भव छै।

अध्याय के विशेषता ई हय कि लेखक प्रशंसा पर रुकै न। राजेश्वर झा के साहित्येतिहास के काल-विभाजन, ईसापूर्व सहस्राब्दी से मैथिली साहित्य के

आरम्भ आ अवहट्टसम्बन्धी अनेक निष्कर्ष के प्रमाणहीन कहै हथिन। औचित्य आ ऐतिहासिक पद्धति के दृष्टि से ई अध्याय 'अखियासल' के सबसे बेसी सन्तुलित आलोचना में से एक हय — व्यक्ति के श्रम के सम्मान आ हुनकर निष्कर्ष के कठोर परीक्षण एकसाथ सम्भव हय।

अध्यायक विशेषता ई अछि जे लेखक प्रशंसापर रुकैत नहि। राजेश्वर झाक साहित्येतिहासक काल-विभाजन, ईसापूर्व सहस्राब्दीसँ मैथिली साहित्यक आरम्भ आ अवहट्टसम्बन्धी अनेक निष्कर्षकेँ प्रमाणहीन कहैत छथि। औचित्य आ ऐतिहासिक पद्धतिक दृष्टिसँ ई अध्याय 'अखियासल'क सर्वाधिक सन्तुलित आलोचनामे सँ एक अछि — व्यक्तिक श्रमक सम्मान आ हुनकर निष्कर्षक कठोर परीक्षण एकसाथ सम्भव अछि।

२३. ललित के कथा में परिवेश के संक्रान्त जिनगी

२३. ललित के कथा में परिवेश के संक्रान्त जीवन

२३. ललितक कथामे परिवेशक संक्रान्त जीवन

ललित के कथा के रमानन्द झा स्वातन्त्र्योत्तर मोहभङ्ग के साहित्यिक दस्तावेज के रूप में व्याख्या करै छै — स्वतन्त्रतापूर्व आशा आरो स्वतन्त्रतापरान्त मोहभङ्ग के बीच के संक्रमण: 'आशाक किरण निराशामे बदलि गेलैक, लाबनि टूटि कऽ खसि पड़लैक।' पहिलों निर्वाचन में धुरफन्दी, स्वार्थान्धता, धन, जाति आरो जातिवादक नग्न-नाच, नकली नेता, गरीब मतदाता आरो भ्रष्ट विकास-योजना — ई सब्भे सामाजिक परिवेश के यथार्थ बनै छै। ई मार्क्सवादी-यथार्थवादी समीक्षा के उत्कृष्ट परयोग छै, जे साहित्य के राष्ट्रीय-राजनीतिक यथार्थ के संक्रमणशील प्रतिबिम्ब मानै छै।

ललित के कथा के रमानन्द झा स्वातन्त्र्योत्तर मोहभङ्ग के साहित्यिक दस्तावेज के रूप में व्याख्यायित करै हथिन — स्वतन्त्रतापूर्व आशा आ स्वतन्त्रतापरान्त मोहभङ्ग के बीच के संक्रमण: 'आशा के किरण निराशा में बदलि गेलै के, लाबनि टूटि के खसि पड़लै के।' प्रथम निर्वाचन में धुरफन्दी, स्वार्थान्धता, धन, जाति आ जातिवाद के नग्न-नाच, नकली नेता, गरीब मतदाता आ भ्रष्ट विकास-योजना — ई सब सामाजिक परिवेश के यथार्थ बनै हय। ई मार्क्सवादी-यथार्थवादी समीक्षा के उत्कृष्ट प्रयोग हय, जे साहित्य के राष्ट्रीय-राजनीतिक यथार्थ के संक्रमणशील प्रतिबिम्ब मानै हय।

ललितक कथाकेँ रमानन्द झा स्वातन्त्र्योत्तर मोहभङ्गक साहित्यिक दस्तावेजक रूपमे व्याख्यायित करैत छथि — स्वतन्त्रतापूर्व आशा आ स्वतन्त्रतापरान्त मोहभङ्गक बीचक संक्रमण: 'आशाक किरण निराशामे बदलि गेलैक, लाबनि टूटि कऽ खसि पड़लैक।' प्रथम निर्वाचनमे धुरफन्दी, स्वार्थान्धता, धन, जाति आ जातिवादक नग्न-नाच, नकली नेता, गरीब मतदाता आ भ्रष्ट विकास-योजना — ई सभ सामाजिक परिवेशक यथार्थ बनैत अछि। ई मार्क्सवादी-यथार्थवादी समीक्षाक उत्कृष्ट प्रयोग थिक, जे साहित्यकेँ राष्ट्रीय-राजनीतिक यथार्थक संक्रमणशील प्रतिबिम्ब मानैत अछि।

मार्क्सवादी नजर सेँ 'प्रतिनिधि' जइसन कथा सुविधा-भोगी शासक वर्ग आरो अधिकार-विहीन गरीब के द्वन्द्व उघारै छै — श्रम के हीन बुझनिहार शिक्षित युवक आखिर में शारीरिक श्रम के महत्त्व स्वीकारै छै। 'लड़ाइ'-कथा में द्वैध-मानसिकता आरो दू पीढ़ी के वैचारिक स्तर आरो दायित्वबोधक विश्लेषण छै। 'रमजानी', 'मृत्युञ्जय', 'ओभरलोड', 'दू चित्र' आदि कथा में परम्परा-विघटन, रोजगार-संकट, धार्मिक पाखण्ड, देहगत आवश्यकता, अस्तित्वगत भार आरो सामन्ती मानसिकता के अवशेष छै।

मार्क्सवादी दृष्टि से 'प्रतिनिधि' जइसन कथा सुविधा-भोगी शासक वर्ग आ अधिकार-विहीन गरीब के द्वन्द्व उद्घाटित करै हय — श्रम के हीन बुझनिहार शिक्षित युवक अन्त में शारीरिक श्रम के महत्त्व स्वीकारै हय। 'लड़ाइ'-कथा में द्वैध-मानसिकता आ दू पीढ़ी के वैचारिक स्तर आ दायित्वबोध के विश्लेषण हय। 'रमजानी', 'मृत्युञ्जय', 'ओभरलोड', 'दू चित्र' आदि कथा में परम्परा-विघटन, रोजगार-संकट, धार्मिक पाखण्ड, देहगत आवश्यकता, अस्तित्वगत भार आ सामन्ती मानसिकता के अवशेष हय।

मार्क्सवादी दृष्टिसँ 'प्रतिनिधि' सन कथा सुविधा-भोगी शासक वर्ग आ अधिकार-विहीन गरीबक द्वन्द्व उद्घाटित करैत अछि — श्रमकेँ हीन बुझनिहार शिक्षित युवक अन्ततः शारीरिक श्रमक महत्त्व स्वीकारैत अछि। 'लड़ाइ'-कथामे द्वैध-मानसिकता आ दू पीढ़ीक वैचारिक स्तर तथा दायित्वबोधक विश्लेषण अछि। 'रमजानी', 'मृत्युञ्जय', 'ओभरलोड', 'दू चित्र' आदि कथामे परम्परा-विघटन, रोजगार-संकट, धार्मिक पाखण्ड, देहगत आवश्यकता, अस्तित्वगत भार आ सामन्ती मानसिकताक अवशेष अछि।

२४. धीरेन्द्र के कथा के सामाजिक सन्दर्भ

२४. धीरेन्द्र के कथा के सामाजिक सन्दर्भ

२४. धीरेन्द्रक कथाक सामाजिक सन्दर्भ

अध्याय सामाजिक सन्दर्भ के सैद्धान्तिक व्याख्या सें सुरुआत होय छै आरो एकरा में रमानन्द झा अपन सबसें बेसी परिष्कृत सैद्धान्तिक प्रतिपादन परस्तुत करै छै — 'सामाजिकता थिक समाजरूपी नेहाइपर पीटि तैयार रूपाकृति; नेहाइ थिक व्यक्ति-मन आ सामाजिक-मनक द्वन्द्व।' ई व्यक्ति-मन बनाम सामाजिक-मन के द्वन्द्वात्मक सिद्धान्त कृति के बौद्धिक शिखर छै — जे मार्क्सवादी द्वन्द्ववाद आरो मनोविश्लेषणात्मक समीक्षा के संगम सें निर्मित छै। लेखक के वैयक्तिक अनुभव तखन सामाजिक बनै छै जखन पाठक के सुप्त अनुभव के जागृत कऽ मिल-जुल के मन के प्रतिनिधित्व करए — रचनाकार के अनुभव के 'समाजक अनुभव भऽ पएब, समाजक दर्पण भऽ पएब' कला के प्रतिबिम्ब-सिद्धान्त के सुस्पष्ट मैथिली अभिव्यक्ति छै।

अध्याय सामाजिक सन्दर्भ के सैद्धान्तिक व्याख्या से आरम्भ होय हय आ एमें रमानन्द झा अपन सबसे बेसी परिष्कृत सैद्धान्तिक प्रतिपादन प्रस्तुत करै हथिन — 'सामाजिकता हय समाजरूपी नेहाइ पर पीटि तैयार रूपाकृति; नेहाइ हय व्यक्ति-मन आ सामाजिक-मन के द्वन्द्व।' ई व्यक्ति-मन बनाम सामाजिक-मन के द्वन्द्वात्मक सिद्धान्त कृति के बौद्धिक शिखर हय — जे मार्क्सवादी द्वन्द्ववाद आ मनोविश्लेषणात्मक समीक्षा के संगम से निर्मित हय। लेखक के वैयक्तिक अनुभव तब सामाजिक बनै हय जब पाठक के सुप्त अनुभव के जागृत के सामूहिक मन के प्रतिनिधित्व करय — रचनाकार के अनुभव के 'समाज के अनुभव होके पएब, समाज के दर्पण होके पएब' कला के प्रतिबिम्ब-सिद्धान्त के सुस्पष्ट मैथिली अभिव्यक्ति हय।

अध्याय सामाजिक सन्दर्भक सैद्धान्तिक व्याख्यासँ आरम्भ होइत अछि आ एहिमे रमानन्द झा अपन सर्वाधिक परिष्कृत सैद्धान्तिक प्रतिपादन प्रस्तुत करैत छथि — 'सामाजिकता थिक समाजरूपी नेहाइपर पीटि तैयार रूपाकृति; नेहाइ थिक व्यक्ति-मन आ सामाजिक-मनक द्वन्द्व।' ई व्यक्ति-मन बनाम सामाजिक-मनक द्वन्द्वात्मक सिद्धान्त कृतिक बौद्धिक शिखर थिक — जे मार्क्सवादी द्वन्द्ववाद आ मनोविश्लेषणात्मक समीक्षाक संगमसँ निर्मित अछि। लेखकक वैयक्तिक अनुभव तखन सामाजिक बनैत अछि जखन पाठकक सुप्त अनुभवकेँ

जागृत कऽ सामूहिक मनक प्रतिनिधित्व करए — रचनाकारक अनुभवक 'समाजक अनुभव भऽ पएब, समाजक दर्पण भऽ पएब' कलाक प्रतिबिम्ब-सिद्धान्तक सुस्पष्ट मैथिली अभिव्यक्ति थिक।

धीरेन्द्र के कथा में शिक्षित बेरोजगारी, सिफारिश, भ्रष्ट नियुक्ति, सत्य के अवमूल्यन, गरीब के श्रम के अपहरण आरो वर्गीय शोषण के चित्र छै। 'मनुख बिकाइत' आरो 'गीध' के प्रतीक आधुनिक समाज में मनुष्य के वस्तुकरण आरो शक्तिशाली द्वारा निर्बलक भक्षण व्यक्त करै छै — मार्क्सवादी नजर सें 'गीध' पूँजी आरो सत्ता द्वारा श्रमजीवी शरीरक उपभोगक रूपक छै। साधारणीकरण के दृष्टि सें बेरोजगार युवक के निजी वेदना देश के लाखों युवक के वेदना बनै छै। धीरेन्द्र के कथा के 'आँखिक डबडबाएब' के समान-तत्त्व आरो शिल्प के रूप में विवेचित करब सूक्ष्म रूपवादी अवलोकन छै, यद्यपि एहिजा समीक्षक भावुकता आरो शिल्प के भेद-रेखापर अपन असमंजस अपने मानी लै छै।

धीरेन्द्र के कथा में शिक्षित बेरोजगारी, सिफारिश, भ्रष्ट नियुक्ति, सत्य के अवमूल्यन, गरीब के श्रम के अपहरण आ वर्गीय शोषण के चित्र हय। 'मनुख बिकाय' आ 'गीध' के प्रतीक आधुनिक समाज में मनुष्य के वस्तुकरण आ शक्तिशाली द्वारा निर्बल के भक्षण व्यक्त करै हय — मार्क्सवादी दृष्टि से 'गीध' पूँजी आ सत्ता द्वारा श्रमजीवी शरीर के उपभोग के रूपक हय। साधारणीकरण के दृष्टि से बेरोजगार युवक के निजी वेदना देश के लाखों युवक के वेदना बनै हय। धीरेन्द्र के कथा के 'आँखि के डबडबाएब' के समान-तत्त्व आ शिल्प के रूप में विवेचित करब सूक्ष्म रूपवादी अवलोकन हय, यद्यपि इहाँ समीक्षक भावुकता आ शिल्प के भेद-रेखा पर अपन असमंजस खुद स्वीकार करै हथिन।

धीरेन्द्रक कथामे शिक्षित बेरोजगारी, सिफारिश, भ्रष्ट नियुक्ति, सत्यक अवमूल्यन, गरीबक श्रमक अपहरण आ वर्गीय शोषणक चित्र अछि। 'मनुख बिकाइत' आ 'गीध'क प्रतीक आधुनिक समाजमे मनुष्यक वस्तुकरण आ शक्तिशाली द्वारा निर्बलक भक्षण व्यक्त करैत अछि — मार्क्सवादी दृष्टिसँ 'गीध' पूँजी आ सत्ता द्वारा श्रमजीवी शरीरक उपभोगक रूपक अछि। साधारणीकरणक दृष्टिसँ बेरोजगार युवकक निजी वेदना देशक लाखों युवकक वेदना बनैत अछि। धीरेन्द्रक कथाक 'आँखिक डबडबाएब'केँ समान-तत्त्व आ

शिल्पक रूपमे विवेचित करब सूक्ष्म रूपवादी अवलोकन थिक, यद्यपि एतय समीक्षक भावुकता आ शिल्पक भेद-रेखापर अपन असमंजस स्वयं स्वीकार करैत छथि।

२५. प्रभास के कथा-यात्रा

२५. प्रभास के कथा-यात्रा

२५. प्रभासक कथा-यात्रा

संग्रह के आखिरी आरो सबसें बेसी दीर्घ निबन्ध प्रभास कुमार चौधरी (जन्म १९४१ ई॰) के समर्पित छै। रमानन्द झा एहिजा एक व्यापक प्रभाव-अध्ययन करै छै — मैथिली कथापर संस्कृत, अङ्ग्रेजी आरो बङ्गला, तीन साहित्य के प्रभाव के विश्लेषण। ई तुलनात्मक साहित्य के पद्धतिगत परयोग छै, जे संग्रह के ऐतिहासिक वर्णन सें उठाय सैद्धान्तिक तुलना के स्तरपर लऽ जाय छै।

संग्रह के अन्तिम आ सबसे बेसी दीर्घ निबन्ध प्रभास कुमार चौधरी (जन्म १९४१ ई॰) के समर्पित हय। रमानन्द झा इहाँ एक व्यापक प्रभाव-अध्ययन करै हथिन — मैथिली कथा पर संस्कृत, अंग्रेजी आ बङ्गला, तीन साहित्य के प्रभाव के विश्लेषण। ई तुलनात्मक साहित्य के पद्धतिगत प्रयोग हय, जे संग्रह के ऐतिहासिक वर्णन से उठाय सैद्धान्तिक तुलना के स्तर पर ले जाय हय।

संग्रहक अन्तिम आ सर्वाधिक दीर्घ निबन्ध प्रभास कुमार चौधरी (जन्म १९४१ ई॰)केँ समर्पित अछि। रमानन्द झा एतय एक व्यापक प्रभाव-अध्ययन करैत छथि — मैथिली कथापर संस्कृत, अङ्ग्रेजी आ बङ्गला, तीन साहित्यक प्रभावक विश्लेषण। ई तुलनात्मक साहित्यक पद्धतिगत प्रयोग थिक, जे संग्रहकेँ ऐतिहासिक वर्णनसँ उठाय सैद्धान्तिक तुलनाक स्तरपर लऽ जाइत अछि।

प्रभास के दू दशक के कथा-यात्रा के क्रमिक यात्रा मानि लेखक हुनकर जिनगी-दृष्टि, सामाजिक चेतना आरो कथन-पद्धति में भेलै परिवर्तन के परीक्षण करै छै — कथाकार के 'घरसँ चलि, गाममे घुमि, क्रमशः भावगत निर्लिप्तता आ निष्क्रियता-बोध धरि पहुँचब' के विकास-रेखा। आर्थिक विपन्नता, समाज के स्वार्थ, गरीब के उपेक्षा आरो तथाकथित सम्भ्रान्त वर्ग के अमानवीयता हुनकर

कथा के मुख्य विषय बनै छै। प्रभास के कथा-यात्रा व्यक्ति-केन्द्रित अनुभव सें व्यापक सामाजिक बनावट ओर बढ़ै छै — पात्र प्रारम्भ में परिस्थिति के शिकार बुझाइत छै, मतरकि धीरे-धीरे शोषण के संरचना के पहचानय लागै छै। ई लेखकीय चेतना के विकासात्मक अध्ययन समीक्षक के परिपक्व दृष्टि के द्योतक छै। संग्रह के अंत ई आधुनिकतम कथाकारपर होएब 'प्रथम' सें 'समकालीन' धरि के यात्रा के पूरा करै छै। विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें प्रभास के कथा इतिहास के विजय-घोष नै, उपेक्षित मनुष्य के दैनिक पराजय, संघर्ष आरो आत्मरक्षाक इतिहास लिखै छै।

प्रभास के दू दशक के कथा-यात्रा के क्रमिक यात्रा मानके लेखक हुनकर जीवन-दृष्टि, सामाजिक चेतना आ कथन-पद्धति में भेल परिवर्तन के परीक्षण करै हथिन — कथाकार के 'घर से चलके, गाम में घूमके, क्रमशः भावगत निर्लिप्तता आ निष्क्रियता-बोध तक पहुँचब' के विकास-रेखा। आर्थिक विपन्नता, समाज के स्वार्थ, गरीब के उपेक्षा आ तथाकथित सम्भ्रान्त वर्ग के अमानवीयता हुनकर कथा के मुख्य विषय बनै हय। प्रभास के कथा-यात्रा व्यक्ति-केन्द्रित अनुभव से व्यापक सामाजिक संरचना दिस बढ़ै हय — पात्र प्रारम्भ में परिस्थिति के शिकार बुझाय हय, मुदा धीरे-धीरे शोषण के संरचना के पहचानय लगै हय। ई लेखकीय चेतना के विकासात्मक अध्ययन समीक्षक के परिपक्व दृष्टि के द्योतक हय। संग्रह के समापन ई आधुनिकतम कथाकार पर होएब 'प्रथम' से 'समकालीन' तक यात्रा के पूर्ण करै हय। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि से प्रभास के कथा इतिहास के विजय-घोष न, उपेक्षित मनुष्य के दैनिक पराजय, संघर्ष आ आत्मरक्षा के इतिहास लिखै हय।

प्रभासक दू दशकक कथा-यात्राकेँ क्रमिक यात्रा मानि लेखक हुनकर जीवन-दृष्टि, सामाजिक चेतना आ कथन-पद्धतिमे भेल परिवर्तनक परीक्षण करैत छथि — कथाकारक 'घरसँ चलि, गाममे घुमि, क्रमशः भावगत निर्लिप्तता आ निष्क्रियता-बोध धरि पहुँचब'क विकास-रेखा। आर्थिक विपन्नता, समाजक स्वार्थ, गरीबक उपेक्षा आ तथाकथित सम्भ्रान्त वर्गक अमानवीयता हुनकर कथाक मुख्य विषय बनैत अछि। प्रभासक कथा-यात्रा व्यक्ति-केन्द्रित अनुभवसँ व्यापक सामाजिक संरचना दिस बढ़ैत अछि — पात्र प्रारम्भमे परिस्थितिक शिकार बुझाइत अछि, मुदा धीरे-धीरे शोषणक संरचनाकेँ पहचानय लगैत

अछि। ई लेखकीय चेतनाक विकासात्मक अध्ययन समीक्षकक परिपक्व दृष्टिक द्योतक थिक। संग्रहक समापन एहि आधुनिकतम कथाकारपर होएब 'प्रथम'सँ 'समकालीन' धरिक यात्राकेँ पूर्ण करैत अछि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ प्रभासक कथा इतिहासक विजय-घोष नहि, उपेक्षित मनुष्यक दैनिक पराजय, संघर्ष आ आत्मरक्षाक इतिहास लिखैत अछि।

उत्तरार्ध: अध्यायवार सीमा, अन्तर्विरोध आरो अपूर्णता

उत्तरार्ध: अध्यायवार सीमा, अन्तर्विरोध आ अपूर्णता

उत्तरार्ध : अध्यायवार सीमा, अन्तर्विरोध आ अपूर्णता

ई मूल्याङ्कन के दोसरका आधा भाग पूर्णतः 'अखियासल' के सीमा, कमजोरी आरो पद्धतिगत संकट के समर्पित छै। ई आलोचनात्मक कठोरता कोय अवमूल्यन नै, बल्कि कृति के ऐतिहासिक महत्त्व के गम्भीर स्वीकृति के जरूरी अङ्ग छै — एक अग्रगामी ग्रन्थ के सीमा के निर्मम विवेचन उपरान्तहि ओकर उत्तराधिकारी कोसिस अपन दिशा निर्धारित कऽ सकै छै।

ई मूल्याङ्कन के दोसर आधा भाग पूरा तरह से 'अखियासल' के सीमा, दुर्बलता आ पद्धतिगत संकट के समर्पित हय। ई आलोचनात्मक कठोरता कोनो अवमूल्यन न, बल्कि कृति के ऐतिहासिक महत्त्व के गम्भीर स्वीकृति के अनिवार्य अंग हय — एक अग्रगामी ग्रन्थ के सीमा के निर्मम विवेचन उपरान्तहि ओकर उत्तराधिकारी प्रयास अपन दिशा निर्धारित के सकै हय।

एहि मूल्याङ्कनक दोसर आधा भाग पूर्णतः 'अखियासल'क सीमा, दुर्बलता आ पद्धतिगत संकटकेँ समर्पित अछि। ई आलोचनात्मक कठोरता कोनो अवमूल्यन नहि, अपितु कृतिक ऐतिहासिक महत्त्वक गम्भीर स्वीकृतिक अनिवार्य अङ्ग थिक — एक अग्रगामी ग्रन्थक सीमाक निर्मम विवेचन उपरान्तहि ओकर उत्तराधिकारी प्रयास अपन दिशा निर्धारित कऽ सकैत अछि।

१. श्रीकृष्ण ठाकुर आरो 'चन्द्रप्रभा' अध्याय के सीमा

१. श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा' अध्याय के सीमा

१. श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा' अध्यायक सीमा

'चन्द्रप्रभा' के पहिलों कथा-संग्रह मानै के तर्क जरूरी छै, मतरकि उपलब्ध पाण्डुलिपि अपूर्ण छै। पूरा पाठ, रचनाकाल, पाठान्तर आरो लेखक के आखिरी

रूपक कमी में 'प्रथम' पद सावधानी सें देल जाएबाक चाही। अध्याय ऐतिहासिक महत्त्वपर अधिक केन्द्रित छै; कथा सब्भे के पृथक कथानक, चरित्र, कथावाचक, समय-विन्यास आरो भाषिक संरचना के निकट परीक्षण कम छै। संस्कृत नीति-कथा परम्परा सें समानता देखाओल गेलै, मतरकि समानता, प्रभाव, रूपान्तरण आरो मौलिकता के साफ भेद सर्वत्र नै राखल गेलै। संग-संग, विदेह-दृष्टि सें ई सेहो कहल जा सकैछ जे 'चन्द्रप्रभा' के कथा-संसार मुख्यतः संस्कृत ग्रन्थ के छाया में पलल-बढ़ल छै; एकरा में जमीनी लोक-जिनगी आरो वञ्चित वर्ग के यथार्थवादी चित्रण के कमी छै, आरो नीति-उपदेश के प्राधान्य रस-निष्पत्ति में बाधक बनै छै। सुरुआती होय के गौरव कृति के कलात्मक सीमा के ओझल नै करै के चाही।

'चन्द्रप्रभा' के प्रथम कथा-संग्रह माने के तर्क महत्त्वपूर्ण हय, मुदा उपलब्ध पाण्डुलिपि अपूर्ण हय। पूरा पाठ, रचनाकाल, पाठान्तर आ लेखक के अन्तिम रूपक अभाव में 'प्रथम' पद सावधानी से देल जाएबा के चाही। अध्याय ऐतिहासिक महत्त्व पर बेसी केन्द्रित हय; कथा सब के पृथक कथानक, चरित्र, कथावाचक, समय-विन्यास आ भाषिक संरचना के निकट परीक्षण कम हय। संस्कृत नीति-कथा परम्परा से समानता देखावल गेल हय, मुदा समानता, प्रभाव, रूपान्तरण आ मौलिकता के साफ भेद सर्वत्र न राखल गेल। साथे, विदेह-दृष्टि से ई भी कहल जा सकै हय कि 'चन्द्रप्रभा' के कथा-संसार मुख्य रूप से संस्कृत ग्रन्थ के छाया में पलल-बढ़ल हय; एमें जमीनी लोक-जीवन आ वञ्चित वर्ग के यथार्थवादी चित्रण के अभाव हय, आ नीति-उपदेश के प्राधान्य रस-निष्पत्ति में बाधक बनै हय। आरम्भिक होय के गौरव कृति के कलात्मक सीमा के ओझल न करे के चाही।

'चन्द्रप्रभा'केँ प्रथम कथा-संग्रह मानबाक तर्क महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा उपलब्ध पाण्डुलिपि अपूर्ण अछि। सम्पूर्ण पाठ, रचनाकाल, पाठान्तर आ लेखकक अन्तिम रूपक अभावमे 'प्रथम' पद सावधानीसँ देल जाएबाक चाही। अध्याय ऐतिहासिक महत्त्वपर अधिक केन्द्रित अछि; कथा सभक पृथक कथानक, चरित्र, कथावाचक, समय-विन्यास आ भाषिक संरचनाक निकट परीक्षण कम अछि। संस्कृत नीति-कथा परम्परासँ समानता देखाओल गेल अछि, मुदा समानता,

प्रभाव, रूपान्तरण आ मौलिकताक स्पष्ट भेद सर्वत्र नहि राखल गेल। संगहि, विदेह-दृष्टिसँ ई सेहो कहल जा सकैछ जे 'चन्द्रप्रभा'क कथा-संसार मुख्यतः संस्कृत ग्रन्थक छायामे पलल-बढ़ल अछि; एहिमे जमीनी लोक-जीवन आ वञ्चित वर्गक यथार्थवादी चित्रणक अभाव अछि, आ नीति-उपदेशक प्राधान्य रस-निष्पत्तिमे बाधक बनैत अछि। आरम्भिक होयबाक गौरव कृतिक कलात्मक सीमाकेँ ओझल नहि करबाक चाही।

२. जीवछ मिश्र आरो 'रामेश्वर' अध्याय के सीमा

२. जीवछ मिश्र आ 'रामेश्वर' अध्याय के सीमा

२. जीवछ मिश्र आ 'रामेश्वर' अध्यायक सीमा

अध्याय 'रामेश्वर' के पहिलों मौलिक उपन्यास सिद्ध करै के दिशा में प्रबल छै, मतरकि 'प्रथम' के परमाण लेली समकालीन परकाशन-सूची, विज्ञापन, पाण्डुलिपि आरो अन्य सम्भावित उपन्यास के व्यवस्थित तुलना अपेक्षित छेलै। रामेश्वर के अपराध के सामाजिक विवशता सें व्याख्यायित करब युक्तिसंगत छै, मतरकि पत्नीपर अविश्वास, हिंसक प्रवृत्ति आरो डकैती में सक्रिय सहभागिता के नैतिक उत्तरदायित्व कम प्रश्नाङ्कित भेलै। अन्त में पुत्र सें पुनर्मिलन आरो चरित्र-परिवर्तन बहुत आकस्मिक छै — मनोवैज्ञानिक रूपान्तरण के क्रमिक परक्रिया गायब रहने समाधान अतिनाटकीय बुझाइत छै। मार्क्सवादी निकषपर सेहो ई कहल जा सकैछ जे आखिर में उपन्यासकार रामेश्वर के हृदय-परिवर्तन करा कऽ वर्ग-संघर्ष के एगो नैतिक आदर्शवाद में बदलि दै छै — क्रान्तिक सम्भावना के सुधारवाद के पानि सें निझा देल जाय छै। स्त्री-पात्र पार्वती के पीड़ा छै, मतरकि हुनकर स्वाधीन दृष्टि सीमित छै।

अध्याय 'रामेश्वर' के प्रथम मौलिक उपन्यास सिद्ध करे के दिशा में प्रबल हय, मुदा 'प्रथम' के प्रमाण खातिर समकालीन प्रकाशन-सूची, विज्ञापन, पाण्डुलिपि आ आन सम्भावित उपन्यास के व्यवस्थित तुलना अपेक्षित हल। रामेश्वर के अपराध के सामाजिक विवशता से व्याख्यायित करब युक्तिसंगत हय, मुदा पत्नी पर अविश्वास, हिंसक प्रवृत्ति आ डकैती में सक्रिय सहभागिता के नैतिक उत्तरदायित्व कम प्रश्नाङ्कित भेल हय। अन्त में पुत्र से पुनर्मिलन आ चरित्र-परिवर्तन बहुत आकस्मिक हय — मनोवैज्ञानिक रूपान्तरण के क्रमिक प्रक्रिया अनुपस्थित रहने समाधान अतिनाटकीय बुझाय हय। मार्क्सवादी

निकष पर भी ई कहल जा सकै हय कि अन्त में उपन्यासकार रामेश्वर के हृदय-परिवर्तन करा के वर्ग-संघर्ष के एकगो नैतिक आदर्शवाद में बदल दे हथिन — क्रान्ति के सम्भावना के सुधारवाद के पानि से निझा देल जाय हय। स्त्री-पात्र पार्वती के पीड़ा हय, मुदा हुनकर स्वाधीन दृष्टि सीमित हय।

अध्याय 'रामेश्वर'केँ प्रथम मौलिक उपन्यास सिद्ध करबाक दिशामे प्रबल अछि, मुदा 'प्रथम'क प्रमाण लेल समकालीन प्रकाशन-सूची, विज्ञापन, पाण्डुलिपि आ अन्य सम्भावित उपन्यासक व्यवस्थित तुलना अपेक्षित छल। रामेश्वरक अपराधकेँ सामाजिक विवशतासँ व्याख्यायित करब युक्तिसंगत अछि, मुदा पत्नीपर अविश्वास, हिंसक प्रवृत्ति आ डकैतीमे सक्रिय सहभागिताक नैतिक उत्तरदायित्व कम प्रश्नाङ्कित भेल अछि। अन्तमे पुत्रसँ पुनर्मिलन आ चरित्र-परिवर्तन अत्यन्त आकस्मिक अछि — मनोवैज्ञानिक रूपान्तरणक क्रमिक प्रक्रिया अनुपस्थित रहने समाधान अतिनाटकीय बुझाइत अछि। मार्क्सवादी निकषपर सेहो ई कहल जा सकैछ जे अन्ततः उपन्यासकार रामेश्वरक हृदय-परिवर्तन करा कऽ वर्ग-संघर्षकेँ एकटा नैतिक आदर्शवादमे बदलि दैत छथि — क्रान्तिक सम्भावनाकेँ सुधारवादक पानिसँ निझा देल जाइछ। स्त्री-पात्र पार्वतीक पीड़ा अछि, मुदा हुनकर स्वाधीन दृष्टि सीमित अछि।

३. 'सुमति' अध्याय के सीमा

३. 'सुमति' अध्याय के सीमा

३. 'सुमति' अध्यायक सीमा

अध्याय पूर्ववर्ती आलोचक के मत के संग संवाद करै छै, मतरकि 'सुमति' के पूरा कथानक, पात्र-बनावट, दृष्टिबिन्दु आरो भाषा-विन्यास के पर्याप्त प्रत्यक्ष विश्लेषण नै करै छै। ऐतिहासिक महत्त्व आरो 'सफल आधुनिक उपन्यास' होय के दावा बीच तनाव छै — जखन कथानक असंगठित, चरित्र अस्पष्ट आरो प्रस्तुति अपरिपक्व छै, तखन 'सफलता' के कसौटी साफ होय के चाही। नारीवादी नजर सें एगो गम्भीर प्रश्न ई जे सुमति के शिक्षा के एकमात्र उद्देश्य देखाओल गेलै — खसै सासुर के सम्हारब आरो परिवार के कर्ज सें मुक्त करब; एहिजा नारी के अपन कोय स्वतन्त्र सत्ता वा आकाङ्क्षा नै छै, ऊ

पितृसत्तात्मक परिवार के उद्धारकक भूमिका तक सीमित छै। 'उचित वक्ता' रूप में कथावाचक के बेर-बेर हस्तक्षेप उपन्यास के संरचनात्मक स्वायत्तते के खण्डित करै छै, जकरा जयकान्त मिश्र 'अपरिपक्व शिल्प' कहने छै; भाषा निबन्धात्मक छै, जाहि में तुलसीदासक चौपाइक भरमार छै — ई काव्य-दोष छै। सामाजिक सुधारक विषय अपनहि कलात्मक श्रेष्ठता के परमाण नै — कथा-वस्तु जरूरी होइतहुँ ओकर प्रस्तुति, चरित्रगत जटिलता आरो आन्तरिक अनिवार्यता समान रूप सें आवश्यक छै।

अध्याय पूर्ववर्ती आलोचक के मत के संग संवाद करै हय, मुदा 'सुमति' के पूरा कथानक, पात्र-संरचना, दृष्टिबिन्दु आ भाषा-विन्यास के पर्याप्त प्रत्यक्ष विश्लेषण न करै हय। ऐतिहासिक महत्त्व आ 'सफल आधुनिक उपन्यास' होय के दावा बीच तनाव हय — जब कथानक असंगठित, चरित्र अस्पष्ट आ प्रस्तुति अपरिपक्व हय, तब 'सफलता' के कसौटी साफ होय के चाही। नारीवादी दृष्टि से एकगो गम्भीर प्रश्न ई जे सुमति के शिक्षा के एकमात्र उद्देश्य देखावल गेल हय — खसै सासुर के सम्हारब आ परिवार के कर्ज से मुक्त करब; इहाँ नारी के अपन कोनो स्वतन्त्र सत्ता वा आकाङ्क्षा न हय, ओ पितृसत्तात्मक परिवार के उद्धारक के भूमिका तक सीमित हय। 'उचित वक्ता' रूप में कथावाचक के बेर-बेर हस्तक्षेप उपन्यास के संरचनात्मक स्वायत्तते के खण्डित करै हय, जकरा जयकान्त मिश्र 'अपरिपक्व शिल्प' कहने हथिन; भाषा निबन्धात्मक हय, जे में तुलसीदास के चौपाइ के भरमार हय — ई काव्य-दोष हय। सामाजिक सुधार के विषय अपनहीं कलात्मक श्रेष्ठता के प्रमाण न — कथा-वस्तु महत्त्वपूर्ण रहितो ओकर प्रस्तुति, चरित्रगत जटिलता आ आन्तरिक अनिवार्यता समान रूप से जरूरी हय।

अध्याय पूर्ववर्ती आलोचकक मतक सङ्ग संवाद करैत अछि, मुदा 'सुमति'क सम्पूर्ण कथानक, पात्र-संरचना, दृष्टिबिन्दु आ भाषा-विन्यासक पर्याप्त प्रत्यक्ष विश्लेषण नहि करैत अछि। ऐतिहासिक महत्त्व आ 'सफल आधुनिक उपन्यास' होयबाक दावा बीच तनाव अछि — जखन कथानक असंगठित, चरित्र अस्पष्ट आ प्रस्तुति अपरिपक्व अछि, तखन 'सफलता'क कसौटी स्पष्ट होयबाक चाही। नारीवादी दृष्टिसँ एकटा गम्भीर प्रश्न ई जे सुमतिक शिक्षाक एकमात्र उद्देश्य देखाओल गेल अछि — खसैत सासुरकेँ सम्हारब आ परिवारकेँ कर्जसँ मुक्त

करब; एतय नारीक अपन कोनो स्वतन्त्र सत्ता वा आकाङ्क्षा नहि अछि, ओ पितृसत्तात्मक परिवारक उद्धारकक भूमिका धरि सीमित अछि। 'उचित वक्ता' रूपेँ कथावाचकक बेर-बेर हस्तक्षेप उपन्यासक संरचनात्मक स्वायत्ततेकेँ खण्डित करैत अछि, जकरा जयकान्त मिश्र 'अपरिपक्व शिल्प' कहने छथि; भाषा निबन्धात्मक अछि, जाहिमे तुलसीदासक चौपाइक भरमार अछि — ई काव्य-दोष थिक। सामाजिक सुधारक विषय अपनहि कलात्मक श्रेष्ठताक प्रमाण नहि — कथा-वस्तु महत्त्वपूर्ण होइतहुँ ओकर प्रस्तुति, चरित्रगत जटिलता आ आन्तरिक अनिवार्यता समान रूपसँ आवश्यक अछि।

४. 'निर्दयी सासु' अध्याय के सीमा

४. 'निर्दयी सासु' अध्याय के सीमा

४. 'निर्दयी सासु' अध्यायक सीमा

कथा स्त्री-उत्पीड़न के प्रश्न उठाबै छै, मतरकि सासु के 'निर्दयी' खलपात्र बनाओलापर पितृसत्ताक व्यापक बनावट व्यक्तिगत क्रूरता में सीमित भऽ सकै छै। सासु अपने कोन सामाजिक दबाव, आर्थिक भय, विवाह-व्यवस्था आरो प्रतिष्ठा-बोध के उत्पाद छै — ई प्रश्न के पर्याप्त विवेचन नै छै। पुतोहु के चरित्र करुणा के पात्र बनै छै, मतरकि ओकर प्रतिरोध, इच्छाशक्ति, स्त्री-समुदाय के सहयोग आरो वैकल्पिक जिनगी-सम्भावना कम विकसित छै — नायिका शारदा पूरा कथा में अकसर मूक छै, आरो वञ्चित-विमर्श के यक्ष प्रश्न — की उपाश्रित बाजि सकै छै? — एहिजा पूर्णत: प्रासङ्गिक छै। एकाङ्गी आरो सपाट चरित्र-निर्माण संरचनावादी दृष्टि सें सेहो सीमा छै। नारीवादी नजर सें स्त्री के केवल पीड़िता बनायब सेहो प्रतिनिधित्व के सीमा छै।

कथा स्त्री-उत्पीड़न के प्रश्न उठावै हय, मुदा सासु के 'निर्दयी' खलपात्र बनाओला पर पितृसत्ता के व्यापक संरचना व्यक्तिगत क्रूरता में सीमित हो सकै हय। सासु खुद कोन सामाजिक दबाव, आर्थिक भय, विवाह-व्यवस्था आ प्रतिष्ठा-बोध के उत्पाद हथिन — ई प्रश्न के पर्याप्त विवेचन न हय। पुतोहु के चरित्र करुणा के पात्र बनै हय, मुदा ओकर प्रतिरोध, इच्छाशक्ति, स्त्री-समुदाय के सहयोग आ वैकल्पिक जीवन-सम्भावना कम विकसित हय — नायिका शारदा पूरा कथा में प्राय: मूक हय, आ वञ्चित-विमर्श के यक्ष प्रश्न — की

उपाश्रित बाज सकै हय? — इहाँ पूरा तरह से प्रासङ्गिक हय। एकाङ्गी आ सपाट चरित्र-निर्माण संरचनावादी दृष्टि से भी सीमा हय। नारीवादी दृष्टि से स्त्री के खाली पीड़िता बनाके भी प्रतिनिधित्व के सीमा हय।

कथा स्त्री-उत्पीड़नक प्रश्न उठबैत अछि, मुदा सासुकेँ 'निर्दयी' खलपात्र बनाओलापर पितृसत्ताक व्यापक संरचना व्यक्तिगत क्रूरतामे सीमित भऽ सकैत अछि। सासु स्वयं कोन सामाजिक दबाव, आर्थिक भय, विवाह-व्यवस्था आ प्रतिष्ठा-बोधक उत्पाद छथि — एहि प्रश्नक पर्याप्त विवेचन नहि अछि। पुतोहुक चरित्र करुणाक पात्र बनैत अछि, मुदा ओकर प्रतिरोध, इच्छाशक्ति, स्त्री-समुदायक सहयोग आ वैकल्पिक जीवन-सम्भावना कम विकसित अछि — नायिका शारदा सम्पूर्ण कथामे प्रायः मूक अछि, आ वञ्चित-विमर्शक यक्ष प्रश्न — की उपाश्रित बाजि सकैत अछि? — एतय पूर्णतः प्रासङ्गिक अछि। एकाङ्गी आ सपाट चरित्र-निर्माण संरचनावादी दृष्टिसँ सेहो सीमा थिक। नारीवादी दृष्टिसँ स्त्रीकेँ केवल पीड़िता बनायब सेहो प्रतिनिधित्वक सीमा अछि।

५. बिसरल साहित्यसेवी जनार्दन झासम्बन्धी सीमा

५. बिसरल साहित्यसेवी जनार्दन झासम्बन्धी सीमा

५. बिसरल साहित्यसेवी जनार्दन झासम्बन्धी सीमा

अध्याय के अभिलेखीय उद्देश्य प्रशंसनीय छै, मतरकि सीमित सामग्रीपर आधारित जिनगी-विवेचन कतेको स्थानपर अनुमानपर निर्भर छै। 'जानकी परिणय' के सांस्कृतिक विवरण के चर्चा छै, मतरकि काव्य के छन्द, भाषा, अलङ्कार, कथन-गति आरो पात्र-निर्माण के फैलाव कम छै। बिसरल लेखक के फेर प्रतिष्ठित करै के उत्साह में कृति के वास्तविक कलात्मक सीमा कहियो-कहियो गौण होय जाय छै — इतिहास में स्थान देब आरो उच्च साहित्यिक मूल्य देब एके बात नै।

अध्याय के अभिलेखीय उद्देश्य प्रशंसनीय हय, मुदा सीमित सामग्री पर आधारित जीवन-विवेचन कतको स्थान पर अनुमान पर निर्भर हय। 'जानकी परिणय' के सांस्कृतिक विवरण के चर्चा हय, मुदा काव्य के छन्द, भाषा, अलङ्कार, कथन-गति आ पात्र-निर्माण के विस्तार कम हय। विस्मृत लेखक के

फेर प्रतिष्ठित करे के उत्साह में कृति के वास्तविक कलात्मक सीमा कहियो-कहियो गौण हो जाय हय — इतिहास में स्थान देब आ उच्च साहित्यिक मूल्य देब एके बात न।

अध्यायक अभिलेखीय उद्देश्य प्रशंसनीय अछि, मुदा सीमित सामग्रीपर आधारित जीवन-विवेचन कतेको स्थानपर अनुमानपर निर्भर अछि। 'जानकी परिणय'क सांस्कृतिक विवरणक चर्चा अछि, मुदा काव्यक छन्द, भाषा, अलङ्कार, कथन-गति आ पात्र-निर्माणक विस्तार कम अछि। विस्मृत लेखककेँ पुनः प्रतिष्ठित करबाक उत्साहमे कृतिक वास्तविक कलात्मक सीमा कहियो-कहियो गौण भऽ जाइत अछि — इतिहासमे स्थान देब आ उच्च साहित्यिक मूल्य देब एके बात नहि।

६. त्रिलोचन झासम्बन्धी अध्याय के सीमा

६. त्रिलोचन झासम्बन्धी अध्याय के सीमा

६. त्रिलोचन झासम्बन्धी अध्यायक सीमा

लेखक अपने मानी लै छै जे त्रिलोचन झा के सामग्री बिखरल आरो कम उपलब्ध छै। ई कारण अध्याय जीवनीपरक पुनर्निर्माण अधिक, कृति-आधारित आलोचना कम बनी जाय छै। मातृभाषा-प्रेम, संगठन आरो समाजसेवाक प्रशंसा पर्याप्त छै, मतरकि हुनकर विशिष्ट साहित्यिक शैली, भाषिक परयोग, विधागत क्षमता आरो विचार के अन्तर्विरोध कम साफ छै। मिथिला के गौरव फेर प्राप्त करै के आह्वान कहियो-कहियो रोमानी अतीतवाद ओर जा सकै छै — समाज के वर्ग-भेद आरो जाति-भेद के ओझराय केवल भावनात्मक एकता के आह्वान अव्यावहारिक बनि सकैछ। प्राचीन गौरव के संग जातिगत विषमता, स्त्री-बहिष्कार आरो सामाजिक रूढ़ि के आलोचना सेहो समान रूप सें आवश्यक छेलै।

लेखक खुद स्वीकार करै हथिन कि त्रिलोचन झा के सामग्री बिखरल आ कम उपलब्ध हय। ई कारण अध्याय जीवनीपरक पुनर्निर्माण बेसी, कृति-आधारित आलोचना कम बन जाय हय। मातृभाषा-प्रेम, संगठन आ समाजसेवा के प्रशंसा पर्याप्त हय, मुदा हुनकर विशिष्ट साहित्यिक शैली, भाषिक प्रयोग, विधागत क्षमता आ विचार के अन्तर्विरोध कम साफ हय। मिथिला के गौरव फेर प्राप्त

करे के आह्वान कहियो-कहियो रोमानी अतीतवाद ओर जा सकै हय — समाज के वर्ग-भेद आ जाति-भेद के ओझरा खाली भावनात्मक एकता के आह्वान अव्यावहारिक बन सकै हय। प्राचीन गौरव के संग जातिगत विषमता, स्त्री-बहिष्कार आ सामाजिक रूढ़ि के आलोचना भी समान रूप से जरूरी हल।

लेखक स्वयं स्वीकार करैत छथि जे त्रिलोचन झाक सामग्री बिखरल आ अल्प उपलब्ध अछि। एहि कारण अध्याय जीवनीपरक पुनर्निर्माण अधिक, कृति-आधारित आलोचना कम बनि जाइत अछि। मातृभाषा-प्रेम, संगठन आ समाजसेवाक प्रशंसा पर्याप्त अछि, मुदा हुनकर विशिष्ट साहित्यिक शैली, भाषिक प्रयोग, विधागत क्षमता आ विचारक अन्तर्विरोध कम स्पष्ट अछि। मिथिलाक गौरव पुनः प्राप्त करबाक आह्वान कहियो-कहियो रोमानी अतीतवाद दिस जा सकैत अछि — समाजक वर्ग-भेद आ जाति-भेदकेँ ओझराय केवल भावनात्मक एकताक आह्वान अव्यावहारिक बनि सकैछ। प्राचीन गौरवक सङ्ग जातिगत विषमता, स्त्री-बहिष्कार आ सामाजिक रूढ़िक आलोचना सेहो समान रूपसँ आवश्यक छल।

७. यदुवरसम्बन्धी अध्याय के सीमा

७. यदुवरसम्बन्धी अध्याय के सीमा

७. यदुवरसम्बन्धी अध्यायक सीमा

यदुवर के राष्ट्रीय आरो भाषिक चेतनापर अधिक बल देल गेलै; काव्य के रूप, छन्द, ध्वनि, बिम्ब, वक्रोक्ति आरो वैयक्तिक स्वर के विश्लेषण अपेक्षाकृत कम छै। मातृभाषा-जागरण के कविता कतेको स्थानपर घोषणात्मक आरो उपदेशात्मक भऽ सकै छै — 'जय जय जयति मैथिल जाति' जइसन पङ्क्ति में अभिधा के प्राधान्य छै, ध्वन्यार्थ कम — आरो अध्याय प्रचारात्मकता आरो काव्यात्मकताक अन्तर साफ नै करै छै। 'मैथिल' समुदाय के एकरूप मानल गेलै; जाति, वर्ग, लिङ्ग आरो क्षेत्रानुसार मैथिल अनुभव के भिन्नतापर विचार कम छै। भाषिक अस्मिता सब्भे मैथिल लेली एके रूप में अनुभवित होय छै — ई मान्यता प्रश्नास्पद छै। आदर्शवादक अतिरेक में मिथिला के सामन्ती व्यवस्था के ठोस आलोचना के कमी सेहो एगो सीमा छै।

यदुवर के राष्ट्रीय आ भाषिक चेतना पर बेसी बल देल गेल हय; काव्य के रूप, छन्द, ध्वनि, बिम्ब, वक्रोक्ति आ वैयक्तिक स्वर के विश्लेषण अपेक्षाकृत कम हय। मातृभाषा-जागरण के कविता कतको स्थान पर घोषणात्मक आ उपदेशात्मक हो सकै हय — 'जय जय जयति मैथिल जाति' जइसन पङ्क्ति में अभिधा के प्राधान्य हय, ध्वन्यार्थ कम — आ अध्याय प्रचारात्मकता आ काव्यात्मकता के अन्तर साफ न करै हय। 'मैथिल' समुदाय के एकरूप मानल गेल हय; जाति, वर्ग, लिङ्ग आ क्षेत्रानुसार मैथिल अनुभव के भिन्नता पर विचार कम हय। भाषिक अस्मिता सब मैथिल खातिर एके रूप में अनुभवित होय हय — ई मान्यता प्रश्नास्पद हय। आदर्शवाद के अतिरेक में मिथिला के सामन्ती व्यवस्था के ठोस आलोचना के अभाव भी एकगो सीमा हय।

यदुवरक राष्ट्रीय आ भाषिक चेतनापर अधिक बल देल गेल अछि; काव्यक रूप, छन्द, ध्वनि, बिम्ब, वक्रोक्ति आ वैयक्तिक स्वरक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम अछि। मातृभाषा-जागरणक कविता कतेको स्थानपर घोषणात्मक आ उपदेशात्मक भऽ सकैत अछि — 'जय जय जयति मैथिल जाति' सन पङ्क्तिमे अभिधाक प्राधान्य अछि, ध्वन्यार्थ कम — आ अध्याय प्रचारात्मकता आ काव्यात्मकताक अन्तर स्पष्ट नहि करैत अछि। 'मैथिल'

समुदायकेँ एकरूप मानल गेल अछि; जाति, वर्ग, लिङ्ग आ क्षेत्रानुसार मैथिल अनुभवक भिन्नतापर विचार कम अछि। भाषिक अस्मिता सभ मैथिल लेल एके रूपेँ अनुभवित होइत अछि — ई मान्यता प्रश्नास्पद अछि। आदर्शवादक अतिरेकमे मिथिलाक सामन्ती व्यवस्थाक ठोस आलोचनाक अभाव सेहो एकटा सीमा थिक।

८. द्विजवरसम्बन्धी अध्याय के सीमा

८. द्विजवरसम्बन्धी अध्याय के सीमा

८. द्विजवरसम्बन्धी अध्यायक सीमा

कवि-सेनानी के सक्रिय जिनगी निश्चय जरूरी छै, मतरकि जीवनी के वीरता काव्य के स्वतन्त्र आलोचनापर भारी पड़ै छै। राजनीतिक सक्रियता अपनहि उत्कृष्ट काव्य के परमाण नै — कविता सब्भे के भाषा, छन्द, प्रतीक, वैचारिक जटिलता आरो कलात्मक स्थायित्व के अधिक निकट विश्लेषण आवश्यक छेलै। राष्ट्रीयता के निर्विवाद लोकमङ्गल के मूल्य मानि लेली गेलै; राष्ट्रवाद के भीतर वर्ग, जाति, धर्म आरो लैङ्गिक असमानता सेहो रहि सकै छै। स्वदेशी आरो चरखा के सामाजिक अरथ छै, मतरकि आधुनिक आर्थिक संरचना सें ओकर सम्बंध आलोचनात्मक रूप सें नै खोलल गेलै। 'छूतहर' में शोषित के बात छै, मतरकि ई क्रान्तिकारी चेतना के बदला गान्धीवादी सुधारवादी परिधि तक सीमित रहि जाय छै आरो छन्द-बद्धता कहीं-कहीं यथार्थ के कुण्ठित करै छै।

कवि-सेनानी के सक्रिय जीवन निश्चय महत्त्वपूर्ण हय, मुदा जीवनी के वीरता काव्य के स्वतन्त्र आलोचना पर भारी पड़ै हय। राजनीतिक सक्रियता अपनहीं उत्कृष्ट काव्य के प्रमाण न — कविता सब के भाषा, छन्द, प्रतीक, वैचारिक जटिलता आ कलात्मक स्थायित्व के बेसी निकट विश्लेषण जरूरी हल। राष्ट्रीयता के निर्विवाद लोकमङ्गल के मूल्य मानके खातिर गेल हय; राष्ट्रवाद के भीतर वर्ग, जाति, धर्म आ लैङ्गिक असमानता भी रह सकै हय। स्वदेशी आ चरखा के सामाजिक अर्थ हय, मुदा आधुनिक आर्थिक संरचना से ओकर सम्बन्ध आलोचनात्मक रूप से न खोलल गेल। 'छूतहर'में शोषित के बात हय, मुदा ई क्रान्तिकारी चेतना के बदला गान्धीवादी सुधारवादी परिधि तक सीमित रह जाय हय आ छन्द-बद्धता कहीं-कहीं यथार्थ के कुण्ठित करै हय।

कवि-सेनानीक सक्रिय जीवन निश्चय महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा जीवनीक वीरता काव्यक स्वतन्त्र आलोचनापर भारी पड़ैत अछि। राजनीतिक सक्रियता अपनहि उत्कृष्ट काव्यक प्रमाण नहि — कविता सभक भाषा, छन्द, प्रतीक, वैचारिक जटिलता आ कलात्मक स्थायित्वक अधिक निकट विश्लेषण आवश्यक छल। राष्ट्रीयताकेँ निर्विवाद लोकमङ्गलक मूल्य मानि लेल गेल अछि; राष्ट्रवादक भीतर वर्ग, जाति, धर्म आ लैङ्गिक असमानता सेहो रहि सकैत अछि। स्वदेशी आ चरखाक सामाजिक अर्थ अछि, मुदा आधुनिक आर्थिक संरचनासँ ओकर सम्बन्ध आलोचनात्मक रूपसँ नहि खोलल गेल। 'छूतहर'मे शोषितक बात अछि, मुदा ई क्रान्तिकारी चेतनाक बदला गान्धीवादी सुधारवादी परिधि धरि सीमित रहि जाइछ आ छन्द-बद्धता कतहु-कतहु यथार्थकेँ कुण्ठित करैत अछि।

९. कुमार गंगानन्द सिंहसम्बन्धी सीमा

९. कुमार गंगानन्द सिंहसम्बन्धी सीमा

९. कुमार गंगानन्द सिंहसम्बन्धी सीमा

लेखक अपने देखाबै छै जे कथाकार के कतेको कथा लक्ष्य-परधान छै — पहिने नैतिक निष्कर्ष स्थिर होय छै, ओकर बाद पात्र आरो घटना जोड़ल जाय छै। ई कारण कथा जीवन के स्वाभाविक जटिलता के बदला उदाहरण बनी जाय छै। कई कथा में दीर्घ कालखण्ड, अनावश्यक मोड़, घटना के फैलाव आरो अन्त में पूरा समाधान कथा-प्रभाव के कमजोर करै छै — लेखक सेहो 'विवाह' आरो 'बिहाड़ि' के तन्तुवाय फलकि जाएब स्वीकारै छै। सामाजिक सुधारक आग्रह रहितहुँ जाति-उन्मूलन आधा बाटपर रुकि जाय छै — अस्पृश्यताविरोधी कथा दलित पात्र के पूरा सामाजिक समानता तक नै लऽ जाय छै आरो 'बिहाड़ि' के सुधार आखिर में उच्च वर्ग के अनुकम्पापर निर्भर रहै छै। नव्य-न्याय के दृष्टि सें 'पञ्च परमेश्वर' में खिलाफ हेत्वाभास के स्थिति छै — एक ओर सुधारक बात आरो दोसरका ओर ग्राम-पञ्चायत के ई उपदेश जे "सामन्त आ जमीन्दारक आमोद-प्रमोदमे व्याघात नहि करबाक चाही" — सुधारक गप्प करै शोषक वर्ग के सुख-शान्तिक वकालत। स्त्री-पात्र के संख्या सेहो कम छै।

लेखक खुद देखाबै हथिन कि कथाकार के कतको कथा लक्ष्य-प्रधान हय — पहिने नैतिक निष्कर्ष स्थिर होय हय, ओकर बाद पात्र आ घटना जोड़ल जाय हय। ई कारण कथा जीवन के स्वाभाविक जटिलता के बदला उदाहरण बन जाय हय। अनेक कथा में दीर्घ कालखण्ड, अनावश्यक मोड़, घटना के विस्तार आ अन्त में पूरा समाधान कथा-प्रभाव के कमजोर करै हय — लेखक भी 'विवाह' आ 'बिहाड़ि' के तन्तुवाय फलकि जाएब स्वीकारै हथिन। सामाजिक सुधार के आग्रह रहितो जाति-उन्मूलन आधा बाट पर रुक जाय हय — अस्पृश्यताविरोधी कथा दलित पात्र के पूर्ण सामाजिक समानता तक न ले जाय हय आ 'बिहाड़ि' के सुधार अन्त में उच्च वर्ग के अनुकम्पा पर निर्भर रहै हय। नव्य-न्याय के दृष्टि से 'पञ्च परमेश्वर'में विरुद्ध हेत्वाभास के स्थिति हय — एक ओर सुधार के बात आ दोसर ओर ग्राम-पञ्चायत के ई उपदेश जे "सामन्त आ जमीन्दार के आमोद-प्रमोद में व्याघात न करे के चाही" — सुधार के गप्प करै शोषक वर्ग के सुख-शान्ति के वकालत। स्त्री-पात्र के संख्या भी कम हय।

लेखक स्वयं देखबैत छथि जे कथाकारक कतेको कथा लक्ष्य-प्रधान अछि — पहिने नैतिक निष्कर्ष स्थिर होइत अछि, तकर बाद पात्र आ घटना जोड़ल जाइत अछि। एहि कारण कथा जीवनक स्वाभाविक जटिलताक बदला उदाहरण बनि जाइत अछि। अनेक कथामे दीर्घ कालखण्ड, अनावश्यक मोड़, घटनाक विस्तार आ अन्तमे सम्पूर्ण समाधान कथा-प्रभावकेँ कमजोर करैत अछि — लेखक सेहो 'विवाह' आ 'बिहाड़ि'क तन्तुवाय फलकि जाएब स्वीकारैत छथि। सामाजिक सुधारक आग्रह रहितहुँ जाति-उन्मूलन आधा बाटपर रुकि जाइत अछि — अस्पृश्यताविरोधी कथा दलित पात्रकेँ पूर्ण सामाजिक समानता धरि नहि लऽ जाइत अछि आ 'बिहाड़ि'क सुधार अन्ततः उच्च वर्गक अनुकम्पापर निर्भर रहैत अछि। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ 'पञ्च परमेश्वर'मे विरुद्ध हेत्वाभासक स्थिति अछि — एक दिस सुधारक बात आ दोसर दिस ग्राम-पञ्चायतकेँ ई उपदेश जे "सामन्त आ जमीन्दारक आमोद-प्रमोदमे व्याघात नहि करबाक चाही" — सुधारक गप्प करैत शोषक वर्गक सुख-शान्तिक वकालत। स्त्री-पात्रक संख्या सेहो कम अछि।

१०. हरिलतासम्बन्धी अध्याय के सीमा

१०. हरिलतासम्बन्धी अध्याय के सीमा

१०. हरिलतासम्बन्धी अध्यायक सीमा

ई निबन्ध के सीमा ई जे समीक्षक हरिलता के वैधव्य-जनित वेदना के खाली 'ईश्वरोन्मुखता' के कारण मानि लै छै, ओकर सामाजिक-आलोचनात्मक सम्भावना के अनदेखा कऽ दै छै। एक सशक्त नारीवादी पाठ एहिजा सम्भव छेलै — बाल-विवाह, वैधव्य, स्त्री-शिक्षा के निषेधक खिलाफ चोरा कऽ अक्षर सीखबाक संघर्ष — मतरकि विवेचन मुख्यत: वैष्णव भक्ति तक सीमित रहि गेलै। मनोविश्लेषणक दृष्टि सें ई प्रश्न सेहो उठै छै जे भक्ति एहिजा सामाजिक यथार्थ सें पलायन के साधन तें नै बनल — भौतिक यन्त्रणा के आध्यात्मिक रहस्यवाद में रूपान्तरित कऽ सामाजिक अधिकार के प्रश्न के स्थगित कऽ देब। ई दुन्नु सम्भावित पाठ — भक्ति-रस के शास्त्रीय आस्वाद आरो सामाजिक प्रतिरोध के अपठित सम्भावना — के बीच के तनाव के निबन्ध नै खोलै छै।

ई निबन्ध के सीमा ई जे समीक्षक हरिलता के वैधव्य-जनित वेदना के खाली 'ईश्वरोन्मुखता' के कारण मानके ले हथिन, ओकर सामाजिक-आलोचनात्मक सम्भावना के अनदेखा के दे हथिन। एक सशक्त नारीवादी पाठ इहाँ सम्भव हल — बाल-विवाह, वैधव्य, स्त्री-शिक्षा के निषेध के विरुद्ध चोरा के अक्षर सीखे के संघर्ष — मुदा विवेचन मुख्य रूप से वैष्णव भक्ति तक सीमित रह गेल। मनोविश्लेषण के दृष्टि से ई प्रश्न भी उठै हय कि भक्ति इहाँ सामाजिक यथार्थ से पलायन के साधन त न बनल — भौतिक यन्त्रणा के आध्यात्मिक रहस्यवाद में रूपान्तरित के सामाजिक अधिकार के प्रश्न के स्थगित के देब। ई दुनो सम्भावित पाठ — भक्ति-रस के शास्त्रीय आस्वाद आ सामाजिक प्रतिरोध के अपठित सम्भावना — क बीच के तनाव के निबन्ध न खोलै हय।

एहि निबन्धक सीमा ई जे समीक्षक हरिलताक वैधव्य-जनित वेदनाकेँ मात्र 'ईश्वरोन्मुखता'क कारण मानि लैत छथि, ओकर सामाजिक-आलोचनात्मक सम्भावनाकेँ अनदेखा कऽ दैत छथि। एक सशक्त नारीवादी पाठ एतय सम्भव छल — बाल-विवाह, वैधव्य, स्त्री-शिक्षाक निषेधक विरुद्ध चोरा कऽ अक्षर सीखबाक संघर्ष — मुदा विवेचन मुख्यत: वैष्णव भक्ति धरि सीमित रहि गेल। मनोविश्लेषणक दृष्टिसँ ई प्रश्न सेहो उठैत अछि जे भक्ति एतय सामाजिक

यथार्थसँ पलायनक साधन तँ नहि बनल — भौतिक यन्त्रणाकेँ आध्यात्मिक रहस्यवादमे रूपान्तरित कऽ सामाजिक अधिकारक प्रश्नकेँ स्थगित कऽ देब। ई दुनू सम्भावित पाठ — भक्ति-रसक शास्त्रीय आस्वाद आ सामाजिक प्रतिरोधक अपठित सम्भावना — क बीचक तनावकेँ निबन्ध नहि खोलैत अछि।

११. श्यामानन्द झासम्बन्धी अध्याय के सीमा

११. श्यामानन्द झासम्बन्धी अध्याय के सीमा

११. श्यामानन्द झासम्बन्धी अध्यायक सीमा

अध्याय के शीर्ष के 'काव्य-वस्तु' छै आरो लेखक साफ करै छै जे ऊ कला-पक्ष के बदला वस्तु-पक्ष के अध्ययन करै छै। ई कारण छन्द, बिम्ब, ध्वनि, वाक्य-विन्यास, अलङ्कार आरो शैली के समुचित मूल्याङ्कन छूटि जाय छै। सांस्कृतिक पुनरुत्थान के विचार में 'आर्य संस्कृति' के आदर्शीकरण छै; ई संस्कृति के भीतर जाति, स्त्री-अधिकार आरो सामाजिक बहिष्कार के प्रश्न कम उठै छै। विदेशी प्रभाव अथवा देवनागरी के प्रयोग के कतेको स्थानपर षड्यन्त्रक रूप में देखल गेलै — भाषिक परिवर्तन के जटिल सामाजिक, मुद्रणगत आरो शैक्षिक कारण सेहो सोचै वाला छेलै। व्यङ्ग्य कहीं-कहीं व्यक्तिगत आक्रोश आरो नारा में बदलि जाय छै, जाहि सें ध्वनि क्षीण भऽ जाय छै।

अध्याय के शीर्ष के 'काव्य-वस्तु' हय आ लेखक साफ करै हथिन कि ओ कला-पक्ष के बदला वस्तु-पक्ष के अध्ययन करै हथिन। ई कारण छन्द, बिम्ब, ध्वनि, वाक्य-विन्यास, अलङ्कार आ शैली के उचित मूल्याङ्कन छूटि जाय हय। सांस्कृतिक पुनरुत्थान के विचार में 'आर्य संस्कृति' के आदर्शीकरण हय; ई संस्कृति के भीतर जाति, स्त्री-अधिकार आ सामाजिक बहिष्कार के प्रश्न कम उठै हय। विदेशी प्रभाव वा देवनागरी के प्रयोग के कतको स्थान पर षड्यन्त्र के रूप में देखल गेल हय — भाषिक परिवर्तन के जटिल सामाजिक, मुद्रणगत आ शैक्षिक कारण भी विचारणीय हल। व्यङ्ग्य कहीं-कहीं व्यक्तिगत आक्रोश आ नारा में बदलि जाय हय, जे से ध्वनि क्षीण होके जाय हय।

अध्यायक शीर्षक 'काव्य-वस्तु' अछि आ लेखक स्पष्ट करैत छथि जे ओ कला-पक्षक बदला वस्तु-पक्षक अध्ययन करैत छथि। एहि कारण छन्द, बिम्ब,

ध्वनि, वाक्य-विन्यास, अलङ्कार आ शैलीक समुचित मूल्याङ्कन छूटि जाइत अछि। सांस्कृतिक पुनरुत्थानक विचारमे 'आर्य संस्कृति'क आदर्शीकरण अछि; एहि संस्कृतिक भीतर जाति, स्त्री-अधिकार आ सामाजिक बहिष्कारक प्रश्न कम उठैत अछि। विदेशी प्रभाव अथवा देवनागरीक प्रयोगकेँ कतेको स्थानपर षडयन्त्रक रूपमे देखल गेल अछि — भाषिक परिवर्तनक जटिल सामाजिक, मुद्रणगत आ शैक्षिक कारण सेहो विचारणीय छल। व्यङ्ग्य कतहु-कतहु व्यक्तिगत आक्रोश आ नारामे बदलि जाइछ, जाहिसँ ध्वनि क्षीण भऽ जाइछ।

१२. लक्ष्मीपति सिंह आरो पत्रकारितासम्बन्धी सीमा

१२. लक्ष्मीपति सिंह आ पत्रकारितासम्बन्धी सीमा

१२. लक्ष्मीपति सिंह आ पत्रकारितासम्बन्धी सीमा

अध्याय व्यक्तित्व के स्नेहपूर्ण स्मरण अधिक छै, पत्रकारिता के संस्थागत इतिहास कम। पत्रिका के प्रसार-सङ्ख्या, आर्थिक आधार, ग्राहक-वर्ग, वितरण-क्षेत्र, सम्पादकीय नीति आरो पाठकीय प्रतिक्रिया सम्बंधी तथ्य सीमित छै। महिला पाठिका, ग्रामीण ग्राहक, मुद्रक, वितरक आरो सहयोगी लेखक के भूमिका साफ नै होय छै। पत्रकारिता आरो साहित्यिक सम्पादन के सीमा सेहो अधिक साफ होय के चाही — समाचार, विचार, साहित्य, संस्था-सूचना आरो सामाजिक अभियानक पृथक कार्यप्रणालीक विश्लेषण कएल जा सकै छेलै। संग-संग, मैथिली पत्रकारिता के 'वैसाखी'पर ठाढ़ रहै के जे स्वीकृति छै, ओकर विश्लेषण में आर्थिक संकटपर जतेक जोर छै, वैचारिक शून्यता आरो सत्ता सें प्रश्न करै के साहस के अभावपर ओतेक नै।

अध्याय व्यक्तित्व के स्नेहपूर्ण स्मरण बेसी हय, पत्रकारिता के संस्थागत इतिहास कम। पत्रिका के प्रसार-सङ्ख्या, आर्थिक आधार, ग्राहक-वर्ग, वितरण-क्षेत्र, सम्पादकीय नीति आ पाठकीय प्रतिक्रिया सम्बन्धी तथ्य सीमित हय। महिला पाठिका, ग्रामीण ग्राहक, मुद्रक, वितरक आ सहयोगी लेखक के भूमिका साफ न होय हय। पत्रकारिता आ साहित्यिक सम्पादन के सीमा भी बेसी साफ होय के चाही — समाचार, विचार, साहित्य, संस्था-सूचना आ सामाजिक अभियान के पृथक कार्यप्रणाली के विश्लेषण कैल जा सकै हल। साथे, मैथिली पत्रकारिता के 'वैसाखी'पर ठाढ़ रहे के जे स्वीकृति हय, ओकर विश्लेषण में

आर्थिक संकट पर जतना जोर हय, वैचारिक शून्यता आ सत्ता से प्रश्न करे के साहस के अभाव पर ओतना न।

अध्याय व्यक्तित्वक स्नेहपूर्ण स्मरण अधिक अछि, पत्रकारिताक संस्थागत इतिहास कम। पत्रिकाक प्रसार-सङ्ख्या, आर्थिक आधार, ग्राहक-वर्ग, वितरण-क्षेत्र, सम्पादकीय नीति आ पाठकीय प्रतिक्रिया सम्बन्धी तथ्य सीमित अछि। महिला पाठिका, ग्रामीण ग्राहक, मुद्रक, वितरक आ सहयोगी लेखकक भूमिका स्पष्ट नहि होइत अछि। पत्रकारिता आ साहित्यिक सम्पादनक सीमा सेहो अधिक स्पष्ट होयबाक चाही — समाचार, विचार, साहित्य, संस्था-सूचना आ सामाजिक अभियानक पृथक कार्यप्रणालीक विश्लेषण कएल जा सकैत छल। संगहि, मैथिली पत्रकारिताक 'वैसाखी'पर ठाढ़ रहबाक जे स्वीकृति अछि, ओकर विश्लेषणमे आर्थिक संकटपर जतेक जोर अछि, वैचारिक शून्यता आ सत्तासँ प्रश्न करबाक साहसक अभावपर ओतेक नहि।

१३. मधुप के गीत-साहित्य के सीमा

१३. मधुप के गीत-साहित्य के सीमा

१३. मधुपक गीत-साहित्यक सीमा

अध्याय मधुप के गीत के सामाजिक आरो सांस्कृतिक उपयोगितापर बल दै छै, मतरकि धुन, मात्रा, ताल, गायन-परम्परा आरो प्रदर्शन-सन्दर्भ के विस्तृत विश्लेषण कम छै। सावित्री, पतिव्रता आरो गृहस्थ आदर्श के स्त्री-छवि पितृसत्तात्मक आदर्श के पुष्ट करि सकै छै — स्त्री के शिक्षा आरो नैतिक सामर्थ्यक प्रशंसा छै, मतरकि ओकर आत्मनिर्णय, इच्छा आरो वैकल्पिक जीवन के प्रश्न सीमित छै। गीत के लोकप्रियता आरो साहित्यिक स्थायित्व अलग-अलग कसौटी छै — कण्ठस्थता काव्य-मूल्य के जरूरी सङ्केत छै, मतरकि एकमात्र परमाण नै।

अध्याय मधुप के गीत के सामाजिक आ सांस्कृतिक उपयोगिता पर बल दे हय, मुदा धुन, मात्रा, ताल, गायन-परम्परा आ प्रदर्शन-सन्दर्भ के विस्तृत विश्लेषण कम हय। सावित्री, पतिव्रता आ गृहस्थ आदर्श के स्त्री-छवि पितृसत्तात्मक आदर्श के पुष्ट कर सकै हय — स्त्री के शिक्षा आ नैतिक सामर्थ्य के प्रशंसा हय, मुदा ओकर आत्मनिर्णय, इच्छा आ वैकल्पिक जीवन के प्रश्न

सीमित हय। गीत के लोकप्रियता आ साहित्यिक स्थायित्व अलग-अलग कसौटी हय — कण्ठस्थता काव्य-मूल्य के महत्त्वपूर्ण संकेत हय, मुदा एकमात्र प्रमाण न।

अध्याय मधुपक गीतक सामाजिक आ सांस्कृतिक उपयोगितापर बल दैत अछि, मुदा धुन, मात्रा, ताल, गायन-परम्परा आ प्रदर्शन-सन्दर्भक विस्तृत विश्लेषण कम अछि। सावित्री, पतिव्रता आ गृहस्थ आदर्शक स्त्री-छवि पितृसत्तात्मक आदर्शकेँ पुष्ट करि सकैत अछि — स्त्रीक शिक्षा आ नैतिक सामर्थ्यक प्रशंसा अछि, मुदा ओकर आत्मनिर्णय, इच्छा आ वैकल्पिक जीवनक प्रश्न सीमित अछि। गीतक लोकप्रियता आ साहित्यिक स्थायित्व अलग-अलग कसौटी अछि — कण्ठस्थता काव्य-मूल्यक महत्त्वपूर्ण सङ्केत अछि, मुदा एकमात्र प्रमाण नहि।

१४. भट्टीकाव्य परम्परासम्बन्धी सीमा

१४. भट्टीकाव्य परम्परासम्बन्धी सीमा

१४. भट्टीकाव्य परम्परासम्बन्धी सीमा

संस्कृत भट्टीकाव्य आरो मधुप के काव्य के बीच सम्बंध रोचक छै, मतरकि प्रत्यक्ष पाठगत समानता, अनुकरण, रूपान्तरण आरो स्वतन्त्र विकास के साफ परमाण अधिक चाही। शिक्षणपरक काव्य के परम्परागत निरन्तरताक रूप में देखब कतेको भिन्न काल, भाषा आरो पाठक-समुदाय के एकरूप बना सकै छै। व्याकरण अथवा अलङ्कार सिखयबाक प्रयोजन कहियो काव्य के रसात्मक स्वतन्त्रता के सीमित करै छै — अध्याय ई तनाव के पर्याप्त कठोरता सें नै परखै छै। सबसें गम्भीर प्रश्न औचित्य-सिद्धान्त के — 'आत्माक प्रतिकूल' रचना के 'व्यक्तिसँ पैघ समाज' के तर्क सें उचित ठहराएब भाव-औचित्य के मूल-भङ्ग के प्रश्न अनुत्तरित छोड़ि दै छै; प्रयोजन-प्रेरित रचना के सौन्दर्यशास्त्रीय स्थिति की हएत, ताहिपर सैद्धान्तिक स्पष्टता नै भेटै छै। विदेह ज्ञानमीमांसा के कठोरतम निकषपर तें राज्याश्रय में लिखल 'कोबर गीत' दरबारी विवशता के द्योतक छै — जनभाषाक गीतकार जखन राजस्तुति लिखय लेली बाध्य कएल जाय छै, तखन ज्ञानमीमांसीय साहस आरो सबद-परमाण दुन्नु आहत होय छै — यद्यपि रमानन्द झा के 'युगीन विवशता' के सहानुभूतिपूर्ण व्याख्या ई प्रकरणक ऐतिहासिक जटिलता के सेहो रेखांकित करै छै।

संस्कृत भट्टीकाव्य आ मधुप के काव्य के बीच सम्बन्ध रोचक हय, मुदा प्रत्यक्ष पाठगत समानता, अनुकरण, रूपान्तरण आ स्वतन्त्र विकास के साफ प्रमाण बेसी चाही। शिक्षणपरक काव्य के परम्परागत निरन्तरता के रूप में देखब कतको भिन्न काल, भाषा आ पाठक-समुदाय के एकरूप बना सकै हय। व्याकरण वा अलङ्कार सिखावे के प्रयोजन कहियो काव्य के रसात्मक स्वतन्त्रता के सीमित करै हय — अध्याय ई तनाव के पर्याप्त कठोरता से न परखै हय। सबसे गम्भीर प्रश्न औचित्य-सिद्धान्त के — 'आत्मा के प्रतिकूल' रचना के 'व्यक्ति से बड़ समाज' के तर्क से उचित ठहराएब भाव-औचित्य के मूल-भङ्ग के प्रश्न अनुत्तरित छोड़के दे हय; प्रयोजन-प्रेरित रचना के सौन्दर्यशास्त्रीय स्थिति की हएत, ओ पर सैद्धान्तिक स्पष्टता न भेटै हय। विदेह ज्ञानमीमांसा के कठोरतम निकष पर त राज्याश्रय में लिखल 'कोबर गीत' दरबारी विवशता के द्योतक हय — जनभाषा के गीतकार जब राजस्तुति लिखय खातिर बाध्य कैल जाय हथिन, तब ज्ञानमीमांसीय साहस आ शब्द-प्रमाण दुनो आहत होय हय — यद्यपि रमानन्द झा के 'युगीन विवशता' के सहानुभूतिपूर्ण व्याख्या ई प्रकरण के ऐतिहासिक जटिलता के भी रेखाङ्कित करै हय।

संस्कृत भट्टीकाव्य आ मधुपक काव्यक बीच सम्बन्ध रोचक अछि, मुदा प्रत्यक्ष पाठगत समानता, अनुकरण, रूपान्तरण आ स्वतन्त्र विकासक स्पष्ट प्रमाण अधिक चाही। शिक्षणपरक काव्यकेँ परम्परागत निरन्तरताक रूपमे देखब कतेको भिन्न काल, भाषा आ पाठक-समुदायकेँ एकरूप बना सकैत अछि। व्याकरण अथवा अलङ्कार सिखयबाक प्रयोजन कहियो काव्यक रसात्मक स्वतन्त्रताकेँ सीमित करैत अछि — अध्याय एहि तनावकेँ पर्याप्त कठोरतासँ नहि परखैत अछि। सभसँ गम्भीर प्रश्न औचित्य-सिद्धान्तक — 'आत्माक प्रतिकूल' रचनाकेँ 'व्यक्तिसँ पैघ समाज'क तर्कसँ उचित ठहराएब भाव-औचित्यक मूल-भङ्गक प्रश्न अनुत्तरित छोड़ि दैत अछि; प्रयोजन-प्रेरित रचनाक सौन्दर्यशास्त्रीय स्थिति की हएत, ताहिपर सैद्धान्तिक स्पष्टता नहि भेटैत अछि। विदेह ज्ञानमीमांसाक कठोरतम निकषपर तँ राज्याश्रयमे लिखल 'कोबर गीत' दरबारी विवशताक द्योतक थिक — जनभाषाक गीतकार जखन राजस्तुति लिखय लेल बाध्य कएल जाइत छथि, तखन ज्ञानमीमांसीय साहस आ शब्द-प्रमाण दुनू आहत होइत अछि — यद्यपि रमानन्द झाक 'युगीन

विवशता'क सहानुभूतिपूर्ण व्याख्या एहि प्रकरणक ऐतिहासिक जटिलताकेँ सेहो रेखाङ्कित करैत अछि।

१५. किरण के कथा-जगतसम्बन्धी सीमा

१५. किरण के कथा-जगतसम्बन्धी सीमा

१५. किरणक कथा-जगतसम्बन्धी सीमा

किरण के सामाजिक प्रगतिशीलताक प्रशंसा कतेको स्थानपर कथा के औपचारिक विश्लेषण के पाछाँ छोड़ि दै छै। कथानक, कथावाचक, दृष्टिबिन्दु, समय, मौन आरो प्रतीक के फैलाव अपेक्षित छै। मार्क्सवादी अथवा सुधारवादी निष्कर्ष सभे कथापर समान रूप सें लागू कएलापर रचना के अन्तर्विरोध, अस्पष्टता आरो बहुअर्थकता घटि सकै छै। किरण के 'मैथिल दृष्टि' कोन सामाजिक स्थान सें बनै छै — ब्राह्मण, दलित, स्त्री, किसान अथवा नगरवासी सभे के दृष्टि एक होय छै कि नै — ई प्रश्न कम उठै छै। नव्य-न्याय के दृष्टि सें 'चन्द्रग्रहण' के तर्क-पद्धति में सव्यभिचार हेत्वाभास के स्थिति देखल जा सकैछ — अन्धविश्वास के खण्डन लेली 'विधर्मी द्वारा अपहरण' जइसन अतिनाटकीय आरो साम्प्रदायिक रङ्गवला तर्क के सहारा — जँ अपहरण नै होइत, तें की गङ्गा-स्नान-सम्बंधी अन्धविश्वास उचित छेलै? तर्क के ई शिथिलता कथा के प्रगतिशील अभिप्राय के कमजोर करै छै।

किरण के सामाजिक प्रगतिशीलता के प्रशंसा कतको स्थान पर कथा के औपचारिक विश्लेषण के पाछाँ छोड़के दे हय। कथानक, कथावाचक, दृष्टिबिन्दु, समय, मौन आ प्रतीक के विस्तार अपेक्षित हय। मार्क्सवादी वा सुधारवादी निष्कर्ष सब कथा पर समान रूप से लागू कइला पर रचना के अन्तर्विरोध, अस्पष्टता आ बहुअर्थकता घट सकै हय। किरण के 'मैथिल दृष्टि' कोन सामाजिक स्थान से बनै हय — ब्राह्मण, दलित, स्त्री, किसान वा नगरवासी सब के दृष्टि एक होय हय कि न — ई प्रश्न कम उठै हय। नव्य-न्याय के दृष्टि से 'चन्द्रग्रहण' के तर्क-पद्धति में सव्यभिचार हेत्वाभास के स्थिति देखल जा सकै हय — अन्धविश्वास के खण्डन खातिर 'विधर्मी द्वारा अपहरण' जइसन अतिनाटकीय आ साम्प्रदायिक रंगवला तर्क के सहारा — अगर अपहरण न

होय, त की गङ्गा-स्नान-सम्बन्धी अन्धविश्वास उचित हल? तर्क के ई शिथिलता कथा के प्रगतिशील अभिप्राय के कमजोर करै हय।

किरणक सामाजिक प्रगतिशीलताक प्रशंसा कतेको स्थानपर कथाक औपचारिक विश्लेषणकेँ पाछाँ छोड़ि दैत अछि। कथानक, कथावाचक, दृष्टिबिन्दु, समय, मौन आ प्रतीकक विस्तार अपेक्षित अछि। मार्क्सवादी अथवा सुधारवादी निष्कर्ष सभ कथापर समान रूपसँ लागू कएलापर रचनाक अन्तर्विरोध, अस्पष्टता आ बहुअर्थकता घटि सकैत अछि। किरणक 'मैथिल दृष्टि' कोन सामाजिक स्थानसँ बनैत अछि — ब्राह्मण, दलित, स्त्री, किसान अथवा नगरवासी सभक दृष्टि एक होइत अछि कि नहि — ई प्रश्न कम उठैत अछि। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ 'चन्द्रग्रहण'क तर्क-पद्धतिमे सव्यभिचार हेत्वाभासक स्थिति देखल जा सकैछ — अन्धविश्वासक खण्डन लेल 'विधर्मी द्वारा अपहरण' सन अतिनाटकीय आ साम्प्रदायिक रङ्गवला तर्कक सहारा — जँ अपहरण नहि होइत, तँ की गङ्गा-स्नान-सम्बन्धी अन्धविश्वास उचित छल? तर्कक ई शिथिलता कथाक प्रगतिशील अभिप्रायकेँ कमजोर करैत अछि।

१६. 'चन्द्रग्रहण' के नारी-पात्रसम्बन्धी सीमा

१६. 'चन्द्रग्रहण' के नारी-पात्रसम्बन्धी सीमा

१६. 'चन्द्रग्रहण'क नारी-पात्रसम्बन्धी सीमा

स्त्री-पात्र के नूतनता पहचानल गेलै, मतरकि स्त्री के मूल्याङ्कन कतेको स्थानपर त्याग, शील, प्रेम आरो पारिवारिक दायित्व के परम्परागत कसौटी सें होय छै। नायिका के कामना आरो देहबोध के चर्चा छै, मतरकि स्त्री के आर्थिक स्वतन्त्रता, सम्पत्ति-अधिकार, शिक्षा, श्रम आरो सार्वजनिक जीवन में सहभागिता के प्रश्न सीमित छै। कथा-वाचक के पुरुष-दृष्टि आरो पात्र के अपन स्वर में साफ अन्तर करब आवश्यक छेलै — लेखकद्वारा स्त्री के बजाओल जाएब आरो स्त्री के स्वतन्त्र आत्मकथन समान नै।

स्त्री-पात्र के नूतनता पहचानल गेल हय, मुदा स्त्री के मूल्याङ्कन कतको स्थान पर त्याग, शील, प्रेम आ पारिवारिक दायित्व के परम्परागत कसौटी से होय हय। नायिका के कामना आ देहबोध के चर्चा हय, मुदा स्त्री के आर्थिक स्वतन्त्रता, सम्पत्ति-अधिकार, शिक्षा, श्रम आ सार्वजनिक जीवन में सहभागिता

के प्रश्न सीमित हय। कथा-वाचक के पुरुष-दृष्टि आ पात्र के अपन स्वर में साफ अन्तर करब जरूरी हल — लेखकद्वारा स्त्री के बजाओल जाएब आ स्त्री के स्वतन्त्र आत्मकथन समान न।

स्त्री-पात्रक नूतनता पहचानल गेल अछि, मुदा स्त्रीक मूल्याङ्कन कतेको स्थानपर त्याग, शील, प्रेम आ पारिवारिक दायित्वक परम्परागत कसौटीसँ होइत अछि। नायिकाक कामना आ देहबोधक चर्चा अछि, मुदा स्त्रीक आर्थिक स्वतन्त्रता, सम्पत्ति-अधिकार, शिक्षा, श्रम आ सार्वजनिक जीवनमे सहभागिताक प्रश्न सीमित अछि। कथा-वाचकक पुरुष-दृष्टि आ पात्रक अपन स्वरमे स्पष्ट अन्तर करब आवश्यक छल — लेखकद्वारा स्त्रीकेँ बजाओल जाएब आ स्त्रीक स्वतन्त्र आत्मकथन समान नहि।

१७. 'चर्चरी' अध्याय के सीमा

१७. 'चर्चरी' अध्याय के सीमा

१७. 'चर्चरी' अध्यायक सीमा

गप्प के स्वतन्त्र विधा मानै के तर्क सर्जनात्मक छै, मतरकि विधा के जरूरी लच्छन, सीमा, बनावट आरो कथा-निबन्ध-प्रहसन सें भेद व्यवस्थित रूप सें निर्धारित नै छै। हरिमोहन झा के हास्य कहियो सामाजिक विद्रूपताक सूक्ष्म परीक्षण के बदला पात्र के उपहास बनी जाय छै — हास्य के लक्ष्य अकसर कमजोर, ग्रामीण, स्त्री अथवा रूढ़िवादी पात्र बनलापर सत्ता-विरोधी व्यङ्ग्य के धार मन्द भऽ सकै छै। मार्क्सवादी नजर सें ई सेहो कहल गेलै जे हरिमोहन झा समाज के ऊपरी सतहपर चोट करै छै — कर्मकाण्ड आरो पण्डिताइपर — मतरकि सामन्ती आर्थिक आधारपर प्रहार नै करै छै; केवल हँसी-ठट्ठा सें समाज के गम्भीर घाउक चिकित्सा असम्भव। लेखक अपने पूर्ववर्ती आलोचक के — प्रो॰ जयदेव मिश्र आरो डा॰ जयकान्त मिश्र के — ई मत उद्धृत करै छै जे हरिमोहन बाबू पुरान मूल्य के तें तोड़ि देलकै, मतरकि कोय नव आरो रचनात्मक जिनगी-मूल्य स्थापित नै कऽ सकलाह — ई वैचारिक शून्यता के प्रश्न उठाबै छै, आरो ई सेहो जे दोष खोजबाक अत्यधिक आग्रह उदात्त सांस्कृतिक मूल्य के क्षति पहुँचबै छै आरो विकल्प परस्तुत नै करै।

गप्प के स्वतन्त्र विधा माने के तर्क सर्जनात्मक हय, मुदा विधा के अनिवार्य लक्षण, सीमा, संरचना आ कथा-निबन्ध-प्रहसन से भेद व्यवस्थित रूप से

निर्धारित न हय। हरिमोहन झा के हास्य कहियो सामाजिक विद्रूपता के सूक्ष्म परीक्षण के बदला पात्र के उपहास बन जाय हय — हास्य के लक्ष्य प्रायः कमजोर, ग्रामीण, स्त्री वा रूढ़िवादी पात्र बनला पर सत्ता-विरोधी व्यङ्ग्य के धार मन्द हो सकै हय। मार्क्सवादी दृष्टि से ई भी कहल गेल हय कि हरिमोहन झा समाज के ऊपरी सतह पर चोट करै हथिन — कर्मकाण्ड आ पण्डिताइ पर — मुदा सामन्ती आर्थिक आधार पर प्रहार न करै हथिन; खाली हँसी-ठट्ठा से समाज के गम्भीर घाउ के चिकित्सा असम्भव। लेखक खुद पूर्ववर्ती आलोचक के — प्रो॰ जयदेव मिश्र आ डा॰ जयकान्त मिश्र के — ई मत उद्धृत करै हथिन कि हरिमोहन बाबू पुरान मूल्य के त तोड़ देलथिन, मुदा कोनो नव आ रचनात्मक जीवन-मूल्य स्थापित न कर सकलथिन — ई वैचारिक शून्यता के प्रश्न उठावै हय, आ ई भी जे दोष खोजे के अत्यधिक आग्रह उदात्त सांस्कृतिक मूल्य के क्षति पहुँचावै हय आ विकल्प प्रस्तुत न करै।

गप्पकेँ स्वतन्त्र विधा मानबाक तर्क सर्जनात्मक अछि, मुदा विधाक अनिवार्य लक्षण, सीमा, संरचना आ कथा-निबन्ध-प्रहसनसँ भेद व्यवस्थित रूपसँ निर्धारित नहि अछि। हरिमोहन झाक हास्य कहियो सामाजिक विद्रूपताक सूक्ष्म परीक्षणक बदला पात्रक उपहास बनि जाइत अछि — हास्यक लक्ष्य प्रायः कमजोर, ग्रामीण, स्त्री अथवा रूढ़िवादी पात्र बनलापर सत्ता-विरोधी व्यङ्ग्यक धार मन्द भऽ सकैत अछि। मार्क्सवादी दृष्टिसँ ई सेहो कहल गेल अछि जे हरिमोहन झा समाजक ऊपरी सतहपर चोट करैत छथि — कर्मकाण्ड आ पण्डिताइपर — मुदा सामन्ती आर्थिक आधारपर प्रहार नहि करैत छथि; केवल हँसी-ठट्ठासँ समाजक गम्भीर घाउक चिकित्सा असम्भव। लेखक स्वयं पूर्ववर्ती आलोचकक — प्रो॰ जयदेव मिश्र आ डा॰ जयकान्त मिश्रक — ई मत उद्धृत करैत छथि जे हरिमोहन बाबू पुरान मूल्यकेँ तँ तोड़ि देलनि, मुदा कोनो नव आ रचनात्मक जीवन-मूल्य स्थापित नहि कऽ सकलाह — ई वैचारिक शून्यताक प्रश्न उठबैत अछि, आ ई सेहो जे दोष खोजबाक अत्यधिक आग्रह उदात्त सांस्कृतिक मूल्यकेँ क्षति पहुँचबैत अछि आ विकल्प प्रस्तुत नहि करैत।

१८. यात्री के स्तम्भ-लेखन के सीमा

१८. यात्री के स्तम्भ-लेखन के सीमा

१८. यात्रीक स्तम्भ-लेखनक सीमा

स्तम्भ तात्कालिक घटनापर लिखल जाय छै, तें ओकर कई सन्दर्भ समय बीतलापर अस्पष्ट होय जाय छै; पूरा पत्रिका, समाचार आरो पाठकीय प्रतिक्रिया बिना टिप्पणी के आशय अधूरा रहि सकै छै। यात्री के पहिलों पुरुष के तीक्ष्ण स्वर स्तम्भ के जीवन्त बनाबै छै, मतरकि कतेको स्थानपर व्यक्तिगत निर्णय, व्यङ्ग्य अथवा आक्रोश विश्लेषणपर भारी पड़ि सकै छै। स्तम्भ-लेखन के विधागत सीमा सेहो छै — तात्कालिक प्रतिक्रिया सें आगू बढ़ि ई कोय दीर्घकालीन सैद्धान्तिक विकल्प नै दऽ पाबै छै। तीनू स्तम्भ कम अवधिक लेली चलल; ई कारण यात्री के स्तम्भ-चिन्तन के दीर्घकालीन विकासक्रम निर्धारित करब कठिन छै। उपलब्ध सामग्री के आलोचनात्मक सम्पादन आरो कालानुक्रमिक परकाशन आवश्यक छै।

स्तम्भ तात्कालिक घटना पर लिखल जाय हय, तेँ ओकर अनेक सन्दर्भ समय बीतला पर अस्पष्ट हो जाय हय; पूरा पत्रिका, समाचार आ पाठकीय प्रतिक्रिया बिना टिप्पणी के आशय अधूरा रह सकै हय। यात्री के प्रथम पुरुष के तीक्ष्ण स्वर स्तम्भ के जीवन्त बनावै हय, मुदा कतको स्थान पर व्यक्तिगत निर्णय, व्यङ्ग्य वा आक्रोश विश्लेषण पर भारी पड़ि सकै हय। स्तम्भ-लेखन के विधागत सीमा भी हय — तात्कालिक प्रतिक्रिया से आगाँ बढ़ि ई कोनो दीर्घकालीन सैद्धान्तिक विकल्प न दऽ पावै हय। तीनू स्तम्भ कम अवधि के खातिर चलल; ई कारण यात्री के स्तम्भ-चिन्तन के दीर्घकालीन विकासक्रम निर्धारित करब कठिन हय। उपलब्ध सामग्री के आलोचनात्मक सम्पादन आ कालानुक्रमिक प्रकाशन जरूरी हय।

स्तम्भ तात्कालिक घटनापर लिखल जाइत अछि, तेँ ओकर अनेक सन्दर्भ समय बीतलापर अस्पष्ट भऽ जाइत अछि; सम्पूर्ण पत्रिका, समाचार आ पाठकीय प्रतिक्रिया बिना टिप्पणीक आशय अधूरा रहि सकैत अछि। यात्रीक प्रथम पुरुषक तीक्ष्ण स्वर स्तम्भकेँ जीवन्त बनबैत अछि, मुदा कतेको स्थानपर व्यक्तिगत निर्णय, व्यङ्ग्य अथवा आक्रोश विश्लेषणपर भारी पड़ि सकैत अछि। स्तम्भ-लेखनक विधागत सीमा सेहो अछि — तात्कालिक प्रतिक्रियासँ आगाँ बढ़ि ई कोनो दीर्घकालीन सैद्धान्तिक विकल्प नहि दऽ पबैत अछि। तीनू स्तम्भ कम अवधिक लेल चलल; एहि कारण यात्रीक स्तम्भ-चिन्तनक दीर्घकालीन विकासक्रम निर्धारित करब कठिन अछि। उपलब्ध सामग्रीक आलोचनात्मक सम्पादन आ कालानुक्रमिक प्रकाशन आवश्यक अछि।

१९. आरसीसम्बन्धी अध्याय के सीमा

१९. आरसीसम्बन्धी अध्याय के सीमा

१९. आरसीसम्बन्धी अध्यायक सीमा

आरसी के विशाल काव्ययात्रा के राष्ट्रीयता, मिथिला-प्रेम, सामाजिकता आरो गीतात्मकता के प्रमुख सूत्र में समेटल गेलै, मतरकि चरणानुसार वैचारिक परिवर्तन के अधिक सूक्ष्म विश्लेषण सम्भव छेलै। प्रारम्भिक राष्ट्रीय कविता कहियो घोषणात्मक छै — प्रखर राष्ट्रवाद के शोर में कहीं-कहीं मिथिला के आन्तरिक वर्ग-संघर्ष आरो सीमान्तकृत समाज के सूक्ष्म यथार्थ दबा जाय छै आरो कविता प्रचार ओर झुकि जाय छै। मिथिला के प्राकृतिक सौन्दर्य के वर्णन आदर्शीकृत छै, जखन यथार्थ में बाढ़, गरीबी आरो पलायन सेहो समान रूप सें अखनका छेलै। छायावाद आरो रहस्यवादक प्रभाव उल्लेखित छै, मतरकि आरसी ई प्रभाव के कोना मैथिली अनुभव में रूपान्तरित करै छै, ओकर तुलनात्मक परीक्षण कम छै।

आरसी के विशाल काव्ययात्रा के राष्ट्रीयता, मिथिला-प्रेम, सामाजिकता आ गीतात्मकता के प्रमुख सूत्र में समेटल गेल हय, मुदा चरणानुसार वैचारिक परिवर्तन के बेसी सूक्ष्म विश्लेषण सम्भव हल। प्रारम्भिक राष्ट्रीय कविता कहियो घोषणात्मक हय — प्रखर राष्ट्रवाद के शोर में कहीं-कहीं मिथिला के आन्तरिक वर्ग-संघर्ष आ सीमान्तकृत समाज के सूक्ष्म यथार्थ दबा जाय हय आ कविता प्रचार ओर झुकि जाय हय। मिथिला के प्राकृतिक सौन्दर्य के वर्णन आदर्शीकृत हय, जब यथार्थ में बाढ़, गरीबी आ पलायन भी समान रूप से वर्तमान हल। छायावाद आ रहस्यवाद के प्रभाव उल्लेखित हय, मुदा आरसी ई प्रभाव के कोना मैथिली अनुभव में रूपान्तरित करै हथिन, ओकर तुलनात्मक परीक्षण कम हय।

आरसीक विशाल काव्ययात्राकेँ राष्ट्रीयता, मिथिला-प्रेम, सामाजिकता आ गीतात्मकताक प्रमुख सूत्रमे समेटल गेल अछि, मुदा चरणानुसार वैचारिक परिवर्तनक अधिक सूक्ष्म विश्लेषण सम्भव छल। प्रारम्भिक राष्ट्रीय कविता कहियो घोषणात्मक अछि — प्रखर राष्ट्रवादक शोरमे कतहु-कतहु मिथिलाक आन्तरिक वर्ग-संघर्ष आ सीमान्तकृत समाजक सूक्ष्म यथार्थ दबा जाइत अछि

आ कविता प्रचार दिस झुकि जाइत अछि। मिथिलाक प्राकृतिक सौन्दर्यक वर्णन आदर्शीकृत अछि, जखन यथार्थमे बाढ़, गरीबी आ पलायन सेहो समान रूपसँ वर्तमान छल। छायावाद आ रहस्यवादक प्रभाव उल्लेखित अछि, मुदा आरसी एहि प्रभावकेँ कोना मैथिली अनुभवमे रूपान्तरित करैत छथि, तकर तुलनात्मक परीक्षण कम अछि।

२०. मोहनजीसम्बन्धी अध्याय के सीमा

२०. मोहनजीसम्बन्धी अध्याय के सीमा

२०. मोहनजीसम्बन्धी अध्यायक सीमा

अध्याय संस्मरणात्मक आत्मीयता सें भरल छै। ई आत्मीयता सें व्यक्तित्व जीवन्त बनै छै, मतरकि आलोचनात्मक दूरी घटै छै। जिनगी-सङ्घर्ष, गरीबी आरो उदार स्वभाव के वर्णन विस्तृत छै; काव्य-संग्रह, पाठान्तर, छन्द, बिम्ब, भाषा आरो विचार-विकास के व्यवस्थित विश्लेषण अपेक्षाकृत कम। 'आयल वसन्त' के लोकप्रियता पूरा काव्य-व्यक्तित्व के प्रतिनिधि नै भऽ सकै छै — कम प्रसिद्ध, कमजोर अथवा विचारात्मक कविता सब्भे के परीक्षण रहितए मूल्याङ्कन अधिक सन्तुलित होइत।

अध्याय संस्मरणात्मक आत्मीयता से भरल हय। ई आत्मीयता से व्यक्तित्व जीवन्त बनै हय, मुदा आलोचनात्मक दूरी घटै हय। जीवन-सङ्घर्ष, गरीबी आ उदार स्वभाव के वर्णन विस्तृत हय; काव्य-संग्रह, पाठान्तर, छन्द, बिम्ब, भाषा आ विचार-विकास के व्यवस्थित विश्लेषण अपेक्षाकृत कम। 'आयल वसन्त' के लोकप्रियता पूरा काव्य-व्यक्तित्व के प्रतिनिधि न हो सकै हय — कम प्रसिद्ध, कमजोर वा विचारात्मक कविता सब के परीक्षण रहितए मूल्याङ्कन बेसी सन्तुलित होय।

अध्याय संस्मरणात्मक आत्मीयतासँ भरल अछि। एहि आत्मीयतासँ व्यक्तित्व जीवन्त बनैत अछि, मुदा आलोचनात्मक दूरी घटैत अछि। जीवन-सङ्घर्ष, गरीबी आ उदार स्वभावक वर्णन विस्तृत अछि; काव्य-संग्रह, पाठान्तर, छन्द, बिम्ब, भाषा आ विचार-विकासक व्यवस्थित विश्लेषण अपेक्षाकृत कम। 'आयल वसन्त'क लोकप्रियता सम्पूर्ण काव्य-व्यक्तित्वक प्रतिनिधि नहि भऽ

सकैत अछि — कम प्रसिद्ध, कमजोर अथवा विचारात्मक कविता सभक परीक्षण रहितए मूल्याङ्कन अधिक सन्तुलित होइत।

२१. उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'सम्बंधी सीमा

२१. उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'सम्बन्धी सीमा

२१. उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'सम्बन्धी सीमा

भाषिक शुद्धतावाद मातृभाषा-स्वाभिमान के साधन भऽ सकै छै, मतरकि कठोर रूप में ऊ भाषा-संकरता, नवशब्द, शहरी अनुभव आरो बदलै बोलचाल के अस्वीकार करि सकै छै। भाषा जीवित समाज के संग बदलै छै — प्रत्येक बाहरी सबद अपवित्र आरो प्रत्येक पुरान सबद शुद्ध नै होय छै; शुद्धता के कसौटी के निर्धारित करत — ई प्रश्न आवश्यक छै। कथाकार के भाषा-साधना के प्रशंसा छै, मतरकि कथानक, चरित्र, मनोविज्ञान आरो सामाजिक दृष्टि के सीमापर समान फैलाव नै — भाषा कथा-साहित्य के प्रमुख तत्त्व छै, मतरकि एकमात्र तत्त्व नै। संग-संग एहिजा एक आलोचनात्मक अन्तर्विरोध सेहो छै — रमानन्द झा व्यास के कथा के 'समसामयिक जीवनसँ विशेष प्रभावित नहि होएब' आरो 'परिवर्तित युग-जीवनक विकृतिसँ अप्रभावित रहब' के गुण मानै छै, जखन कि अन्यत्र (गंगानन्द सिंह, चन्द्रग्रहण, ललित, धीरेन्द्र के विवेचन में) ऊ यथार्थ-संवेदना आरो परिवेश-सम्पृक्ति के सर्वोच्च मूल्य मानै छै — मूल्य-मानदण्ड के अस्थिरता के ई साफ परमाण छै, जेकर विस्तृत विवेचन आगू पद्धतिगत सीमा में कैल गेलै।

भाषिक शुद्धतावाद मातृभाषा-स्वाभिमान के साधन हो सकै हय, मुदा कठोर रूप में ओ भाषा-संकरता, नवशब्द, शहरी अनुभव आ बदलै बोलचाल के अस्वीकार कर सकै हय। भाषा जीवित समाज के संग बदलै हय — हरेक बाहरी शब्द अपवित्र आ हरेक पुरान शब्द शुद्ध न होय हय; शुद्धता के कसौटी के निर्धारित करत — ई प्रश्न जरूरी हय। कथाकार के भाषा-साधना के प्रशंसा हय, मुदा कथानक, चरित्र, मनोविज्ञान आ सामाजिक दृष्टि के सीमा पर समान विस्तार न — भाषा कथा-साहित्य के प्रमुख तत्त्व हय, मुदा एकमात्र तत्त्व न। साथे इहाँ एक आलोचनात्मक अन्तर्विरोध भी हय — रमानन्द झा व्यास के कथा के 'समसामयिक जीवन से विशेष प्रभावित न होएब' आ 'परिवर्तित युग-

जीवन के विकृति से अप्रभावित रहब' के गुण मानै हथिन, जब कि अन्यत्र (गंगानन्द सिंह, चन्द्रग्रहण, ललित, धीरेन्द्र के विवेचन में) ओ यथार्थ-संवेदना आ परिवेश-सम्पृक्ति के सर्वोच्च मूल्य मानै हथिन — मूल्य-मानदण्ड के अस्थिरता के ई साफ प्रमाण हय, जकर विस्तृत विवेचन आगाँ पद्धतिगत सीमा में कैल गेल हय।

भाषिक शुद्धतावाद मातृभाषा-स्वाभिमानक साधन भऽ सकैत अछि, मुदा कठोर रूपमे ओ भाषा-संकरता, नवशब्द, शहरी अनुभव आ बदलैत बोलचालकेँ अस्वीकार करि सकैत अछि। भाषा जीवित समाजक सङ्ग बदलैत अछि — प्रत्येक बाहरी शब्द अपवित्र आ प्रत्येक पुरान शब्द शुद्ध नहि होइत अछि; शुद्धताक कसौटी के निर्धारित करत — ई प्रश्न आवश्यक अछि। कथाकारक भाषा-साधनाक प्रशंसा अछि, मुदा कथानक, चरित्र, मनोविज्ञान आ सामाजिक दृष्टिक सीमापर समान विस्तार नहि — भाषा कथा-साहित्यक प्रमुख तत्त्व अछि, किन्तु एकमात्र तत्त्व नहि। संगहि एतय एक आलोचनात्मक अन्तर्विरोध सेहो अछि — रमानन्द झा व्यासक कथाकेँ 'समसामयिक जीवनसँ विशेष प्रभावित नहि होएब' आ 'परिवर्तित युग-जीवनक विकृतिसँ अप्रभावित रहब'केँ गुण मानैत छथि, जखन कि अन्यत्र (गंगानन्द सिंह, चन्द्रग्रहण, ललित, धीरेन्द्रक विवेचनमे) ओ यथार्थ-संवेदना आ परिवेश-सम्पृक्तिकेँ सर्वोच्च मूल्य मानैत छथि — मूल्य-मानदण्डक अस्थिरताक ई स्पष्ट प्रमाण थिक, जकर विस्तृत विवेचन आगाँ पद्धतिगत सीमामे कएल गेल अछि।

२२. राजेश्वर झासम्बन्धी अध्याय के सीमा

२२. राजेश्वर झासम्बन्धी अध्याय के सीमा

२२. राजेश्वर झासम्बन्धी अध्यायक सीमा

ई अध्याय अपने बहुत आलोचनात्मक छै, मतरकि कतेको स्थानपर खण्डन के स्वर अत्यधिक कठोर बनी जाय छै। शोधकर्ता के ऐतिहासिक परिस्थिति, उपलब्ध स्रोत आरो समय के पद्धतिगत सीमा सेहो ध्यान में राखल जा सकै छेलै। राजेश्वर झा के निष्कर्ष प्रमाणहीन छै — ई देखाओल गेलै, मतरकि वैकल्पिक काल-बँटवारा अथवा अवहट्ट-विकास के पूरा प्रतिमान परस्तुत नै कैल गेलै। व्यक्तित्व आरो कृतित्व के परिचय के बाद त्रुटि-सूची विस्तृत छै;

श्रेष्ठ सोध, उपयोगी सङ्कलन अथवा सफल नाटकक निकट पाठ कम छै। आलोचना केवल असहमति नै, उपयोगी अंश के पुनर्स्थापन सेहो होय के चाही। संग-संग राजेश्वर झा के निधन के शोक-प्रसङ्ग में आत्मीयता-जनित भावुकता आलोचनात्मक दूरी के प्रभावित करै छै।

ई अध्याय खुद बहुत आलोचनात्मक हय, मुदा कतको स्थान पर खण्डन के स्वर अत्यधिक कठोर बन जाय हय। शोधकर्ता के ऐतिहासिक परिस्थिति, उपलब्ध स्रोत आ समय के पद्धतिगत सीमा भी ध्यान में राखल जा सकै हल। राजेश्वर झा के निष्कर्ष प्रमाणहीन हय — ई देखावल गेल, मुदा वैकल्पिक काल-विभाजन वा अवहट्ट-विकास के पूर्ण प्रतिमान प्रस्तुत न कैल गेल। व्यक्तित्व आ कृतित्व के परिचय के बाद त्रुटि-सूची विस्तृत हय; श्रेष्ठ शोध, उपयोगी सङ्कलन वा सफल नाटक के निकट पाठ कम हय। आलोचना खाली असहमति न, उपयोगी अंश के पुनर्स्थापन भी होय के चाही। साथे राजेश्वर झा के निधन के शोक-प्रसङ्ग में आत्मीयता-जनित भावुकता आलोचनात्मक दूरी के प्रभावित करै हय।

ई अध्याय स्वयं अत्यन्त आलोचनात्मक अछि, मुदा कतेको स्थानपर खण्डनक स्वर अत्यधिक कठोर बनि जाइत अछि। शोधकर्ताक ऐतिहासिक परिस्थिति, उपलब्ध स्रोत आ समयक पद्धतिगत सीमा सेहो ध्यानमे राखल जा सकैत छल। राजेश्वर झाक निष्कर्ष प्रमाणहीन अछि — ई देखाओल गेल, मुदा वैकल्पिक काल-विभाजन अथवा अवहट्ट-विकासक पूर्ण प्रतिमान प्रस्तुत नहि कएल गेल। व्यक्तित्व आ कृतित्वक परिचयक बाद त्रुटि-सूची विस्तृत अछि; श्रेष्ठ शोध, उपयोगी सङ्कलन अथवा सफल नाटकक निकट पाठ कम अछि। आलोचना केवल असहमति नहि, उपयोगी अंशक पुनर्स्थापन सेहो होयबाक चाही। संगहि राजेश्वर झाक निधनक शोक-प्रसङ्गमे आत्मीयता-जनित भावुकता आलोचनात्मक दूरीकेँ प्रभावित करैत अछि।

२३. ललित के कथासम्बन्धी अध्याय के सीमा

२३. ललित के कथासम्बन्धी अध्याय के सीमा

२३. ललितक कथासम्बन्धी अध्यायक सीमा

अध्याय सामाजिक, राजनीतिक, अस्तित्ववादी, लैङ्गिक आरो धार्मिक कई प्रश्न एकत्र करै छै। ई फैलाव सें कतेको कथा के विशिष्ट रूप आरो सौन्दर्य पाछाँ पड़ि जाय छै। यौनिक इच्छा के जैविक आवश्यकता कहि धार्मिक-नैतिक बन्धन सें मुक्त करै के व्याख्या एकाङ्गी भऽ सकै छै — इच्छा सत्ता, सहमति, लैङ्गिक असमानता आरो भावात्मक सम्बन्ध सें सेहो जुड़ल छै। कथा सब्भे के युग के प्रत्यक्ष दस्तावेज मानल गेलै; साहित्य यथार्थ के प्रतिलिपि नै — चयन, कल्पना, प्रतीक आरो कथन-दृष्टिद्वारा निर्मित रूप छै। लेखक आरो पात्र के विचार में भेद आवश्यक छै।

अध्याय सामाजिक, राजनीतिक, अस्तित्ववादी, लैङ्गिक आ धार्मिक अनेक प्रश्न एकत्र करै हय। ई विस्तार से कतको कथा के विशिष्ट रूप आ सौन्दर्य पाछाँ पड़ि जाय हय। यौनिक इच्छा के जैविक आवश्यकता कहके धार्मिक-नैतिक बन्धन से मुक्त करे के व्याख्या एकाङ्गी हो सकै हय — इच्छा सत्ता, सहमति, लैङ्गिक असमानता आ भावात्मक सम्बन्ध से भी जुड़ल हय। कथा सभ के युग के प्रत्यक्ष दस्तावेज मानल गेल हय; साहित्य यथार्थ के प्रतिलिपि न — चयन, कल्पना, प्रतीक आ कथन-दृष्टिद्वारा निर्मित रूप हय। लेखक आ पात्र के विचार में भेद जरूरी हय।

अध्याय सामाजिक, राजनीतिक, अस्तित्ववादी, लैङ्गिक आ धार्मिक अनेक प्रश्न एकत्र करैत अछि। एहि विस्तारसँ कतेको कथाक विशिष्ट रूप आ सौन्दर्य पाछाँ पड़ि जाइत अछि। यौनिक इच्छाकेँ जैविक आवश्यकता कहि धार्मिक-नैतिक बन्धनसँ मुक्त करबाक व्याख्या एकाङ्गी भऽ सकैत अछि — इच्छा सत्ता, सहमति, लैङ्गिक असमानता आ भावात्मक सम्बन्धसँ सेहो जुड़ल अछि। कथा सभकेँ युगक प्रत्यक्ष दस्तावेज मानल गेल अछि; साहित्य यथार्थक प्रतिलिपि नहि — चयन, कल्पना, प्रतीक आ कथन-दृष्टिद्वारा निर्मित रूप अछि। लेखक आ पात्रक विचारमे भेद आवश्यक अछि।

२४. धीरेन्द्र के कथासम्बन्धी सीमा

२४. धीरेन्द्र के कथासम्बन्धी सीमा

२४. धीरेन्द्रक कथासम्बन्धी सीमा

सामाजिक सन्दर्भ के सैद्धान्तिक प्रस्ताव जरूरी छै, मतरकि प्रत्येक कथा के वर्ग-शोषण, बेरोजगारी आरो सामाजिक अन्याय में सीमित करलापर रचना के मनोवैज्ञानिक, भाषिक आरो प्रतीकात्मक स्तर घटि सकै छै। 'गीध' के प्रतीक प्रभावशाली छै, मतरकि प्रतीक के कई सम्भावित अर्थ के बदला एक निश्चित वर्गीय अर्थपर बल देल गेलै। कथा के भाषा, संवाद, मौन, कथा-वाचक के दूरी, अन्त के अनिश्चितता आरो पाठकीय सहभागिता के अधिक विश्लेषण अपेक्षित छेलै। सामाजिक विषय के प्रासङ्गिकता स्वतः कलात्मक सिद्धि के परमाण नै।

सामाजिक सन्दर्भ के सैद्धान्तिक प्रस्ताव महत्त्वपूर्ण हय, मुदा हरेक कथा के वर्ग-शोषण, बेरोजगारी आ सामाजिक अन्याय में सीमित करला पर रचना के मनोवैज्ञानिक, भाषिक आ प्रतीकात्मक स्तर घट सकै हय। 'गीध' के प्रतीक प्रभावशाली हय, मुदा प्रतीक के अनेक सम्भावित अर्थ के बदला एक निश्चित वर्गीय अर्थ पर बल देल गेल हय। कथा के भाषा, संवाद, मौन, कथा-वाचक के दूरी, अन्त के अनिश्चितता आ पाठकीय सहभागिता के बेसी विश्लेषण अपेक्षित हल। सामाजिक विषय के प्रासङ्गिकता स्वतः कलात्मक सिद्धि के प्रमाण न।

सामाजिक सन्दर्भक सैद्धान्तिक प्रस्ताव महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा प्रत्येक कथाकेँ वर्ग-शोषण, बेरोजगारी आ सामाजिक अन्यायमे सीमित करलापर रचनाक मनोवैज्ञानिक, भाषिक आ प्रतीकात्मक स्तर घटि सकैत अछि। 'गीध'क प्रतीक प्रभावशाली अछि, मुदा प्रतीकक अनेक सम्भावित अर्थक बदला एक निश्चित वर्गीय अर्थपर बल देल गेल अछि। कथाक भाषा, संवाद, मौन, कथा-वाचकक दूरी, अन्तक अनिश्चितता आ पाठकीय सहभागिताक अधिक विश्लेषण अपेक्षित छल। सामाजिक विषयक प्रासङ्गिकता स्वतः कलात्मक सिद्धिक प्रमाण नहि।

२५. प्रभास के कथा-यात्रा के सीमा

२५. प्रभास के कथा-यात्रा के सीमा

२५. प्रभासक कथा-यात्राक सीमा

'यात्रा' सबद क्रमिक विकास के भाव उपजाबै छै, मतरकि प्रत्येक लेखक के सर्जना सोझ रेखा में सुरुआती सें परिपक्व ओर नै बढ़ै छै — बाद के रचना सदैव पहिल सें श्रेष्ठ हो, ई आवश्यक नै। जीवनी आरो सामाजिक परिवेश के कथा-विकास के प्रमुख कारण मानल गेलै; साहित्यिक प्रभाव, पत्रिका के सम्पादकीय नीति, पाठक-वर्ग, विधागत परयोग आरो आत्मसमीक्षाक भूमिका कम साफ छै। प्रभास के चुनल कथा सब्भे के आधारपर पूरा कथा-दृष्टि निर्धारित करब सीमित निष्कर्ष भऽ सकै छै — अप्रकाशित, दुर्लभ अथवा कम सफल कथा सेहो पूरा मूल्याङ्कन लेली आवश्यक छै।

'यात्रा' शब्द क्रमिक विकास के भाव पैदा करै हय, मुदा हरेक लेखक के सर्जना सरल रेखा में आरम्भिक से परिपक्व ओर न बढ़ै हय — बाद के रचना सदैव पहिल से श्रेष्ठ हो, ई जरूरी न। जीवनी आ सामाजिक परिवेश के कथा-विकास के प्रमुख कारण मानल गेल हय; साहित्यिक प्रभाव, पत्रिका के सम्पादकीय नीति, पाठक-वर्ग, विधागत प्रयोग आ आत्मसमीक्षा के भूमिका कम साफ हय। प्रभास के चुनल कथा सब के आधार पर पूरा कथा-दृष्टि निर्धारित करब सीमित निष्कर्ष हो सकै हय — अप्रकाशित, दुर्लभ वा कम सफल कथा भी समग्र मूल्याङ्कन खातिर जरूरी हय।

'यात्रा' शब्द क्रमिक विकासक भाव उत्पन्न करैत अछि, मुदा प्रत्येक लेखकक सर्जना सरल रेखामे आरम्भिकसँ परिपक्व दिस नहि बढ़ैत अछि — बादक रचना सदैव पहिलसँ श्रेष्ठ हो, ई आवश्यक नहि। जीवनी आ सामाजिक परिवेशकेँ कथा-विकासक प्रमुख कारण मानल गेल अछि; साहित्यिक प्रभाव, पत्रिकाक सम्पादकीय नीति, पाठक-वर्ग, विधागत प्रयोग आ आत्मसमीक्षाक भूमिका कम स्पष्ट अछि। प्रभासक चुनल कथा सभक आधारपर सम्पूर्ण कथा-दृष्टि निर्धारित करब सीमित निष्कर्ष भऽ सकैत अछि — अप्रकाशित, दुर्लभ अथवा कम सफल कथा सेहो समग्र मूल्याङ्कन लेल आवश्यक अछि।

पद्धतिगत संकट: पूरा सीमा के विस्तृत विवेचन

पद्धतिगत संकट: समग्र सीमा के विस्तृत विवेचन

पद्धतिगत संकट : समग्र सीमाक विस्तृत विवेचन

सीमा १: संकलनात्मक असंगति आरो संरचनात्मक एकसूत्रताक कमी

सीमा १: संकलनात्मक असंगति आ संरचनात्मक एकसूत्रता के अभाव

सीमा १ : संकलनात्मक असंगति आ संरचनात्मक एकसूत्रताक अभाव

कृति के सर्वप्रथम आरो सबसें बेसी मौलिक सीमा ओकर उत्पत्ति-प्रक्रिया में निहित छै। ई पचीस निबन्ध सन् १९७२ सें १९८९ तक विभिन्न पत्र-पत्रिका में विभिन्न अवसरपर, विभिन्न पाठक-वर्ग के ध्यान में राखि, स्वतन्त्र रूप में लिखल गेलै छेलै। एकरा एकठाम राखि 'ग्रन्थ' बना देला सें एक अन्तर्निहित असंगति उपजै छै — कहीं व्यक्तित्व-परधान (त्रिलोचन झा, राजेश्वर झा), कहीं कृति-परधान ('सुमति', 'चन्द्रग्रहण' के नारी-पात्र), कहीं विधा-परधान (स्तम्भ-लेखन), कहीं प्रवृत्ति-परधान (यदुवर, द्विजवर) समीक्षा। कोय एकसमान सैद्धान्तिक ढाँचा समस्त निबन्ध के नै बान्है छै। फलतः पाठक के बेर-बेर सन्दर्भ-परिवर्तन करय पड़ै छै। रूपवादी नजर सें ई संरचनात्मक शिथिलता छै — ग्रन्थ में कोय आरोह-अवरोह-युक्त तार्किक प्रगति नै। अध्याय-क्रम अकसर लेखक-जन्म के कालक्रमपर आधारित बुझाइत छै, मतरकि ई क्रम सेहो असंगत छै — कुछ निबन्ध बहुत नान्हकी, कुछ बहुत दीर्घ, बिना कोय घोषित तर्क के। एक सुनियोजित ग्रन्थ में जे भूमिका, पद्धति-कथन आरो उपसंहार अपेक्षित होय छै, से एकरा में गायब छै — प्रत्येक निबन्ध के अन्त में खाली मूल परकाशन-स्रोत आरो तिथि देल छै, जे संकलनक जोड़ा-जाड़ी प्रकृति के उघारि दै छै। अध्याय सब्भे के फैलाव, पद्धति आरो आलोचनात्मक गहराई समान नै।

कृति के सबसे पहिने आ सबसे बेसी मौलिक सीमा ओकर उत्पत्ति-प्रक्रिया में निहित हय। ई पचीस निबन्ध सन् १९७२ से १९८९ तक विभिन्न पत्र-पत्रिका में विभिन्न अवसर पर, विभिन्न पाठक-वर्ग के ध्यान में रखके, स्वतन्त्र रूप में लिखल गेल हल। एकरा एकठाम रखके 'ग्रन्थ' बना देला से एक अन्तर्निहित असंगति पैदा होय हय — कहीं व्यक्तित्व-प्रधान (त्रिलोचन झा, राजेश्वर झा), कहीं कृति-प्रधान ('सुमति', 'चन्द्रग्रहण' के नारी-पात्र), कहीं विधा-प्रधान (स्तम्भ-लेखन), कहीं प्रवृत्ति-प्रधान (यदुवर, द्विजवर) समीक्षा। कोनो एकसमान सैद्धान्तिक ढाँचा समस्त निबन्ध के न बाँधै हय। फलतः पाठक के बेर-बेर सन्दर्भ-परिवर्तन करय पड़ै हय। रूपवादी दृष्टि से ई संरचनात्मक शिथिलता

हय — ग्रन्थ में कोनो आरोह-अवरोह-युक्त तार्किक प्रगति न। अध्याय-क्रम प्रायः लेखक-जन्म के कालक्रम पर आधारित बुझाय हय, मुदा ई क्रम भी असंगत हय — किछु निबन्ध बहुत लघु, किछु बहुत दीर्घ, बिना कोनो घोषित तर्क के। एक सुनियोजित ग्रन्थ में जे भूमिका, पद्धति-कथन आ उपसंहार अपेक्षित होय हय, से एमें अनुपस्थित हय — हरेक निबन्ध के अन्त में खाली मूल प्रकाशन-स्रोत आ तिथि देल हय, जे संकलन के जोड़ा-जाड़ी प्रकृति के उघारि दे हय। अध्याय सब के विस्तार, पद्धति आ आलोचनात्मक गहराई समान न।

कृतिक सर्वप्रथम आ सर्वाधिक मौलिक सीमा ओकर उत्पत्ति-प्रक्रियामे निहित अछि। ई पचीस निबन्ध सन् १९७२ सँ १९८९ धरि विभिन्न पत्र-पत्रिकामे विभिन्न अवसरपर, विभिन्न पाठक-वर्गकेँ ध्यानमे राखि, स्वतन्त्र रूपेँ लिखल गेल छल। एकरा एकठाम राखि 'ग्रन्थ' बना देलासँ एक अन्तर्निहित असंगति उत्पन्न होइत अछि — कतहु व्यक्तित्व-प्रधान (त्रिलोचन झा, राजेश्वर झा), कतहु कृति-प्रधान ('सुमति', 'चन्द्रग्रहण'क नारी-पात्र), कतहु विधा-प्रधान (स्तम्भ-लेखन), कतहु प्रवृत्ति-प्रधान (यदुवर, द्विजवर) समीक्षा। कोनो एकसमान सैद्धान्तिक ढाँचा समस्त निबन्धकेँ नहि बान्हैत अछि। फलतः पाठककेँ बेर-बेर सन्दर्भ-परिवर्तन करय पड़ैत अछि। रूपवादी दृष्टिसँ ई संरचनात्मक शिथिलता थिक — ग्रन्थमे कोनो आरोह-अवरोह-युक्त तार्किक प्रगति नहि। अध्याय-क्रम प्रायः लेखक-जन्मक कालक्रमपर आधारित बुझाइत अछि, मुदा ई क्रम सेहो असंगत अछि — किछु निबन्ध अत्यन्त लघु, किछु अत्यन्त दीर्घ, बिना कोनो घोषित तर्कक। एक सुनियोजित ग्रन्थमे जे भूमिका, पद्धति-कथन आ उपसंहार अपेक्षित होइत अछि, से एहिमे अनुपस्थित अछि — प्रत्येक निबन्धक अन्तमे मात्र मूल प्रकाशन-स्रोत आ तिथि देल अछि, जे संकलनक जोड़ा-जाड़ी प्रकृतिकेँ उघारि दैत अछि। अध्याय सभक विस्तार, पद्धति आ आलोचनात्मक गहराई समान नहि।

सीमा २: 'अनुपलब्धता' के आवर्ती स्वीकृति — समीक्षा के आधारभूत कमजोरी

सीमा २: 'अनुपलब्धता' के आवर्ती स्वीकृति — समीक्षा के आधारभूत दुर्बलता

सीमा २ : 'अनुपलब्धता'क आवर्ती स्वीकृति — समीक्षाक आधारभूत दुर्बलता

कृति के सबसें बेसी गम्भीर पद्धतिगत संकट ई जे लगभग प्रत्येक प्रारम्भिक निबन्ध में समीक्षक अपने मूल रचना के 'अनुपलब्धता' के मानी लै छै। 'चन्द्रप्रभा' के प्रसङ्ग में — 'चन्द्रप्रभाक अध्ययन-विश्लेषण नीक जकाँ नहि कएल जा सकल अछि, एकर प्रमुख कारण थिक अनुपलब्धता'; त्रिलोचन झा के प्रसङ्ग में — 'बड़ कम सामग्री उपलब्ध अछि'; यदुवर के प्रसङ्ग में — 'यदुवरक प्रसंग अद्यावधि बड़ कम अनुसन्धान भेल अछि'; बिसरल जनार्दन झा के प्रसङ्ग में — 'पत्र-पत्रिकोमे जे रचना प्रकाशित भेल होएत, आब सर्वसुलभ नहि अछि।'

कृति के सबसे बेसी गम्भीर पद्धतिगत संकट ई जे लगभग हरेक प्रारम्भिक निबन्ध में समीक्षक खुद मूल रचना के 'अनुपलब्धता' के स्वीकार करै हथिन। 'चन्द्रप्रभा' के प्रसङ्ग में — 'चन्द्रप्रभा के अध्ययन-विश्लेषण नीक जइसन न कैल जा सकल हय, एकर प्रमुख कारण हय अनुपलब्धता'; त्रिलोचन झा के प्रसङ्ग में — 'बड़ कम सामग्री उपलब्ध हय'; यदुवर के प्रसङ्ग में — 'यदुवर के प्रसंग अद्यावधि बड़ कम अनुसन्धान भेल हय'; बिसरल जनार्दन झा के प्रसङ्ग में — 'पत्र-पत्रिको में जे रचना प्रकाशित भेल होयत, अब सर्वसुलभ न हय।'

कृतिक सर्वाधिक गम्भीर पद्धतिगत संकट ई जे लगभग प्रत्येक प्रारम्भिक निबन्धमे समीक्षक स्वयं मूल रचनाक 'अनुपलब्धता'कैं स्वीकार करैत छथि। 'चन्द्रप्रभा'क प्रसङ्गमे — 'चन्द्रप्रभाक अध्ययन-विश्लेषण नीक जकाँ नहि कएल जा सकल अछि, एकर प्रमुख कारण थिक अनुपलब्धता'; त्रिलोचन झाक प्रसङ्गमे — 'बड़ कम सामग्री उपलब्ध अछि'; यदुवरक प्रसङ्गमे — 'यदुवरक प्रसंग अद्यावधि बड़ कम अनुसन्धान भेल अछि'; बिसरल जनार्दन झाक प्रसङ्गमे — 'पत्र-पत्रिकोमे जे रचना प्रकाशित भेल होएत, आब सर्वसुलभ नहि अछि।'

एहिजा एक गहन विरोधाभास उपजै छै — जँ मूल कृति समीक्षक के अपने उपलब्ध नै छेलै, तें ओकर सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन कोन आधारपर सम्भव? बहुत ठाम समीक्षा असल में दोसरका स्रोतपर — जयकान्त मिश्र के मैथिली साहित्येतिहास, करुणाकान्त झा के सोध-प्रबन्ध, अन्य समीक्षक के उद्धरणपर — आश्रित होय जाय छै। रमानन्द झा अपने मानी लै छै जे अधिकांश परवर्ती समीक्षक के 'सामग्रीक सीमा जयकान्त मिश्रक इतिहासे अछि' — मतरकि ई आरोप अपने हुनकहुपर आंशिक रूप में लागू होय छै। पाठ-केन्द्रित समीक्षा के दृष्टि सें ई एक मौलिक कमजोरी छै — पाठ बिना समीक्षा।

इहाँ एक गहन विरोधाभास पैदा होय हय — अगर मूल कृति समीक्षक के खुद उपलब्ध न हल, त ओकर सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन कोन आधार पर सम्भव? बहुत ठाम समीक्षा असल में द्वितीय के स्रोत पर — जयकान्त मिश्र के मैथिली साहित्येतिहास, करुणाकान्त झा के शोध-प्रबन्ध, आन समीक्षक के उद्धरण पर — आश्रित हो जाय हय। रमानन्द झा खुद स्वीकार करै हथिन कि अधिकांश परवर्ती समीक्षक के 'सामग्री के सीमा जयकान्त मिश्र के इतिहासे हय' — मुदा ई आरोप खुद हुनकहु पर आंशिक रूप में लागू होय हय। पाठ-केन्द्रित समीक्षा के दृष्टि से ई एक मौलिक दुर्बलता हय — पाठ बिना समीक्षा।

एतय एक गहन विरोधाभास उत्पन्न होइत अछि — जँ मूल कृति समीक्षककेँ स्वयं उपलब्ध नहि छल, तँ ओकर सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन कोन आधारपर सम्भव? बहुत ठाम समीक्षा वस्तुतः द्वितीयक स्रोतपर — जयकान्त मिश्रक मैथिली साहित्येतिहास, करुणाकान्त झाक शोध-प्रबन्ध, अन्य समीक्षकक उद्धरणपर — आश्रित भऽ जाइत अछि। रमानन्द झा स्वयं स्वीकार करैत छथि जे अधिकांश परवर्ती समीक्षकक 'सामग्रीक सीमा जयकान्त मिश्रक इतिहासे अछि' — मुदा ई आरोप स्वयं हुनकहुपर आंशिक रूपेँ लागू होइत अछि। पाठ-केन्द्रित समीक्षाक दृष्टिसँ ई एक मौलिक दुर्बलता थिक — पाठ बिना समीक्षा।

विदेह समान्तर इतिहास-प्रतिमान के दृष्टि सें ई सीमा बहुत शिक्षाप्रद छै। समान्तर इतिहास के पहिलों दायित्व अभिलेखीकरण आरो पाठ-सुलभीकरण छै — मूल पाठ के डिजिटल/मुद्रित रूप में सर्वसुलभ केने बिना ओकर पुनर्मूल्याङ्कन असम्भव। रमानन्द झा ई आवश्यकता के बेर-बेर रेखाङ्कित तें करै छै ('सर्वसुलभ भेलेपर विशेष प्रकाश पड़ि सकत'), मतरकि ऊ अपने ओहि

अभिलेखीय कार्य के सम्पन्न नै कऽ पाबै छै — कैलेकि ओहि डिजिटल-पूर्व युग में ई व्यक्तिगत श्रम सें असम्भव-प्राय छेलै। इहे अभिलेखीय रिक्तता के विदेह-आन्दोलन अपन ई-पत्रिका, पोथी-संग्रह आरो पञ्जी-अभिलेखीकरण सें भरबाक कोसिस करै छै। तात्पर्य — 'अखियासल' के सबसें बड़का सीमा इहे ओकर सबसें बड़का ऐतिहासिक सार्थकता छै: ई ओहि रिक्तता के नामाङ्कित करै छै जकरा भरब परवर्ती पीढ़ी के दायित्व बनी जाय छै।

विदेह समान्तर इतिहास-प्रतिमान के दृष्टि से ई सीमा बहुत शिक्षाप्रद हय। समान्तर इतिहास के पहिल दायित्व अभिलेखीकरण आ पाठ-सुलभीकरण हय — मूल पाठ के डिजिटल/मुद्रित रूप में सर्वसुलभ केने बिना ओकर पुनर्मूल्याङ्कन असम्भव। रमानन्द झा ई आवश्यकता के बेर-बेर रेखाङ्कित त करै हथिन ('सर्वसुलभ भेले पर विशेष प्रकाश पड़ि सकत'), मुदा ओ खुद ओ अभिलेखीय कार्य के सम्पन्न न के पावै हथिन — काहे कि ओ डिजिटल-पूर्व युग में ई व्यक्तिगत श्रम से असम्भव-प्राय हल। इहे अभिलेखीय रिक्तता के विदेह-आन्दोलन अपन ई-पत्रिका, पोथी-संग्रह आ पञ्जी-अभिलेखीकरण से भरे के प्रयास करै हय। तात्पर्य — 'अखियासल' के सबसे बड़ सीमा इहे ओकर सबसे बड़ ऐतिहासिक सार्थकता हय: ई ओ रिक्तता के नामाङ्कित करै हय जकरा भरब परवर्ती पीढ़ी के दायित्व बन जाय हय।

विदेह समान्तर इतिहास-प्रतिमानक दृष्टिसँ ई सीमा अत्यन्त शिक्षाप्रद थिक। समान्तर इतिहासक पहिल दायित्व अभिलेखीकरण आ पाठ-सुलभीकरण थिक — मूल पाठकेँ डिजिटल/मुद्रित रूपेँ सर्वसुलभ केने बिना ओकर पुनर्मूल्याङ्कन असम्भव। रमानन्द झा एहि आवश्यकताकेँ बेर-बेर रेखाङ्कित तँ करैत छथि ('सर्वसुलभ भेलेपर विशेष प्रकाश पड़ि सकत'), मुदा ओ स्वयं ओहि अभिलेखीय कार्यकेँ सम्पन्न नहि कऽ पबैत छथि — किएक तँ ओहि डिजिटल-पूर्व युगमे ई व्यक्तिगत श्रमसँ असम्भव-प्राय छल। इएह अभिलेखीय रिक्तताकेँ विदेह-आन्दोलन अपन ई-पत्रिका, पोथी-संग्रह आ पञ्जी-अभिलेखीकरणसँ भरबाक प्रयास करैत अछि। तात्पर्य — 'अखियासल'क सभसँ पैघ सीमा इएह ओकर सभसँ पैघ ऐतिहासिक सार्थकता थिक : ई ओहि

रिक्ततासँ नामाङ्कित करैत अछि जकरा भरब परवर्ती पीढ़ीक दायित्व बनि जाइत अछि।

सीमा ३: मूल्य-मानदण्ड के अस्थिरता आरो आन्तरिक अन्तर्विरोध

सीमा ३: मूल्य-मानदण्ड के अस्थिरता आ आन्तरिक अन्तर्विरोध

सीमा ३ : मूल्य-मानदण्डक अस्थिरता आ आन्तरिक अन्तर्विरोध

गम्भीर सैद्धान्तिक दृष्टि सें कृति के सबसें बेसी सोचै वाला दोष ओकर मूल्य-मानदण्ड के अस्थिरता छै। रमानन्द झा एक निबन्ध में जाहि गुण के सर्वोच्च मानै छै, दोसर में ओकरे विपरीत के प्रशंसित करै छै —

गम्भीर सैद्धान्तिक दृष्टि से कृति के सबसे बेसी विचारणीय दोष ओकर मूल्य-मानदण्ड के अस्थिरता हय। रमानन्द झा एक निबन्ध में जे गुण के सर्वोच्च मानै हथिन, दोसर में ओकरे विपरीत के प्रशंसित करै हथिन —

गम्भीर सैद्धान्तिक दृष्टिसँ कृतिक सर्वाधिक विचारणीय दोष ओकर मूल्य-मानदण्डक अस्थिरता थिक। रमानन्द झा एक निबन्धमे जाहि गुणकेँ सर्वोच्च मानैत छथि, दोसरमे ओकरे विपरीतकेँ प्रशंसित करैत छथि —

(क) गंगानन्द सिंह, 'चन्द्रग्रहण' के नारी-पात्र, ललित आरो धीरेन्द्र के विवेचन में समसामयिक यथार्थ-संवेदना, परिवेश-सम्पृक्ति आरो युग-जीवन के प्रतिबिम्बन के सर्वोच्च मूल्य मानल गेलै; मतरकि व्यास के कथा के ठीक ई कारणें प्रशंसित कैल गेलै जे ऊ समसामयिक जीवन सें खास प्रभावित नै होय छै आरो परिवर्तित युग-जीवन के विकृति सें अप्रभावित रहै छै। ई प्रत्यक्ष आत्मविरोध छै — यथार्थ-सम्पृक्ति कखनहु गुण, कखनहु ओकर कमी गुण।

(क) गंगानन्द सिंह, 'चन्द्रग्रहण' के नारी-पात्र, ललित आ धीरेन्द्र के विवेचन में समसामयिक यथार्थ-संवेदना, परिवेश-सम्पृक्ति आ युग-जीवन के प्रतिबिम्बन के सर्वोच्च मूल्य मानल गेल हय; मुदा व्यास के कथा के ठीक एही कारण से प्रशंसित कैल गेल जे ओ समसामयिक जीवन से विशेष प्रभावित न होय हय आ परिवर्तित युग-जीवन के विकृति से अप्रभावित रहै हय। ई प्रत्यक्ष आत्मविरोध हय — यथार्थ-सम्पृक्ति कखनियो गुण, कखनियो ओकर अभाव गुण।

(क) गंगानन्द सिंह, 'चन्द्रग्रहण'क नारी-पात्र, ललित आ धीरेन्द्रक विवेचनमे समसामयिक यथार्थ-संवेदना, परिवेश-सम्पृक्ति आ युग-जीवनक प्रतिबिम्बनकेँ सर्वोच्च मूल्य मानल गेल अछि; किन्तु व्यासक कथाकेँ ठीक एहि कारणेँ प्रशंसित कएल गेल जे ओ समसामयिक जीवनसँ विशेष प्रभावित नहि होइत अछि आ परिवर्तित युग-जीवनक विकृतिसँ अप्रभावित रहैत अछि। ई प्रत्यक्ष आत्मविरोध थिक — यथार्थ-सम्पृक्ति कखनहु गुण, कखनहु ओकर अभाव गुण।

(ख) हरिमोहन झा के हास्य के 'विचारक उन्मेष नहि करब' के कारणें न्यून मूल्य देल गेलै, मतरकि मधुप के गीत के 'तत्काल हृदय-प्रभाव' आरो आनन्द के कारणें उच्च मूल्य देल गेलै — जखन कि गीत सेहो अकसर वैचारिक मन्थन नै, बल्कि भाव-तात्कालिकतापर आश्रित होय छै। तत्काल-प्रभाव कखनहु गुण (गीत), कखनहु दोष (हास्य)।

(ख) हरिमोहन झा के हास्य के 'विचार के उन्मेष न करब' के कारणेँ न्यून मूल्य देल गेल, मुदा मधुप के गीत के 'तत्काल हृदय-प्रभाव' आ आनन्द के कारणेँ उच्च मूल्य देल गेल — जब कि गीत भी प्रायः वैचारिक मन्थन न, बल्कि भाव-तात्कालिकता पर आश्रित होय हय। तत्काल-प्रभाव कखनियो गुण (गीत), कखनियो दोष (हास्य)।

(ख) हरिमोहन झाक हास्यकेँ 'विचारक उन्मेष नहि करब'क कारणेँ न्यून मूल्य देल गेल, किन्तु मधुपक गीतकेँ 'तत्काल हृदय-प्रभाव' आ आनन्दक कारणेँ उच्च मूल्य देल गेल — जखन कि गीत सेहो प्रायः वैचारिक मन्थन नहि, अपितु भाव-तात्कालिकतापर आश्रित होइत अछि। तत्काल-प्रभाव कखनहु गुण (गीत), कखनहु दोष (हास्य)।

(ग) 'कोबर-गीत' जइसन आत्म-विरोधी, प्रयोजन-प्रेरित रचना के 'व्यक्तिसँ पैघ समाज' के तर्क सें उचित ठहराओल गेलै, मतरकि क्षेमेन्द्र के औचित्य-विचार के दृष्टि सें आत्मा के प्रतिकूल रचना भाव-औचित्य के मूल-भङ्ग छै — समीक्षक एहिजा सैद्धान्तिक स्पष्टता प्रदान नै कऽ पाबै छै।

(ग) 'कोबर-गीत' जइसन आत्म-विरोधी, प्रयोजन-प्रेरित रचना के 'व्यक्ति से बड़ समाज' के तर्क से उचित ठहरावल गेल, मुदा क्षेमेन्द्र के औचित्य-विचार के

दृष्टि से आत्मा के प्रतिकूल रचना भाव-औचित्य के मूल-भङ्ग हय — समीक्षक इहाँ सैद्धान्तिक स्पष्टता प्रदान न के पावै हथिन।

(ग) 'कोबर-गीत' सन आत्म-विरोधी, प्रयोजन-प्रेरित रचनाकेँ 'व्यक्तिसँ पैघ समाज'क तर्कसँ उचित ठहराओल गेल, किन्तु क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचारक दृष्टिसँ आत्माक प्रतिकूल रचना भाव-औचित्यक मूल-भङ्ग थिक — समीक्षक एतय सैद्धान्तिक स्पष्टता प्रदान नहि कऽ पबैत छथि।

ई अस्थिरता ई कारणें छै जे रमानन्द झा कोय एक घोषित सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता नै अपनाबै छै। ऊ प्रसङ्गानुसार कखनहु प्रभाववादी, कखनहु समाजशास्त्रीय, कखनहु जीवनीमूलक, कखनहु रूपवादी दृष्टि अपनाबै छै। ई पद्धतिगत सारसंग्रहवाद एक ओर लचीलापन दै छै, तें दोसरका ओर मूल्याङ्कन के अप्रत्याशित आरो असंगत बना दै छै।

ई अस्थिरता एही कारण से हय कि रमानन्द झा कोनो एक घोषित सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता न अपनावै हथिन। ओ प्रसङ्गानुसार कखनियो प्रभाववादी, कखनियो समाजशास्त्रीय, कखनियो जीवनीमूलक, कखनियो रूपवादी दृष्टि अपनावै हथिन। ई पद्धतिगत सारसंग्रहवाद एक ओर लचीलापन दे हय, त दोसर ओर मूल्याङ्कन के अप्रत्याशित आ असंगत बना दे हय।

ई अस्थिरता एहि कारणेँ अछि जे रमानन्द झा कोनो एक घोषित सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता नहि अपनबैत छथि। ओ प्रसङ्गानुसार कखनहु प्रभाववादी, कखनहु समाजशास्त्रीय, कखनहु जीवनीमूलक, कखनहु रूपवादी दृष्टि अपनबैत छथि। ई पद्धतिगत सारसंग्रहवाद एक दिस लचीलापन दैत अछि, तँ दोसर दिस मूल्याङ्कनकेँ अप्रत्याशित आ असंगत बना दैत अछि।

सीमा ४: सैद्धान्तिक अनुशीलन के कमी — शास्त्रीय शब्दावलीक अनुपस्थिति

सीमा ४: सैद्धान्तिक अनुशीलन के अभाव — शास्त्रीय शब्दावली के अनुपस्थिति

सीमा ४ : सैद्धान्तिक अनुशीलनक अभाव — शास्त्रीय शब्दावलीक अनुपस्थिति

यद्यपि रमानन्द झा के समीक्षा में रस, ध्वनि, व्यञ्जना, औचित्य आदि भारतीय काव्यशास्त्रीय अवधारणा अन्तर्निहित रूप में विद्यमान छै, तइयो ऊ

ई शास्त्रीय प्रतिमान के कहीं सुस्पष्ट सैद्धान्तिक उपकरण के रूप में परयोग नै करै छै। 'व्यञ्जित', 'सम्प्रेषण', 'भावाश्रित' जइसन सबद तें आबै छै, मतरकि आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, कुन्तक, क्षेमेन्द्र, भट्टनायक आदि आचार्यक नाम आरो हुनकर सिद्धान्त के व्यवस्थित अनुप्रयोग गायब छै। ओहिना, पाश्चात्य सिद्धान्त के कहीं नामोल्लेख अथवा सुविचारित परयोग नै भेटै छै। ई सें एक द्वैध स्थिति उपजै छै। एक ओर ई सैद्धान्तिक लाघव समीक्षा के सुपाठ्य, सम्प्रेषणीय आरो पत्रकारीय-सुलभ बनाबै छै — जे ओकर मूल परकाशन-सन्दर्भ (पत्रिका) के अनुकूल छेलै। मतरकि दोसरका ओर ई अकादमिक गहनताक कमी उपजाबै छै। समीक्षा विवरणात्मक आरो मूल्याङ्कनात्मक तें छै, मतरकि सैद्धान्तिक-विश्लेषणात्मक कम छै। एक समान्तर इतिहास के दीर्घकालिक वैधता प्रदान करबा लेली जे सुदृढ सैद्धान्तिक आधार आवश्यक होय छै, से एकरा में अविकसित रहि जाय छै।

यद्यपि रमानन्द झा के समीक्षा में रस, ध्वनि, व्यञ्जना, औचित्य आदि भारतीय काव्यशास्त्रीय अवधारणा अन्तर्निहित रूप में विद्यमान हय, तबो ओ ई शास्त्रीय प्रतिमान के कहीं सुस्पष्ट सैद्धान्तिक उपकरण के रूप में प्रयोग न करै हथिन। 'व्यञ्जित', 'सम्प्रेषण', 'भावाश्रित' जइसन शब्द त आवै हय, मुदा आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, कुन्तक, क्षेमेन्द्र, भट्टनायक आदि आचार्य के नाम आ हुनकर सिद्धान्त के व्यवस्थित अनुप्रयोग अनुपस्थित हय। ओहिने, पाश्चात्य सिद्धान्त के कहीं नामोल्लेख वा सुविचारित प्रयोग न भेटै हय। एही से एक द्वैध स्थिति पैदा होय हय। एक ओर ई सैद्धान्तिक लाघव समीक्षा के सुपाठ्य, सम्प्रेषणीय आ पत्रकारीय-सुलभ बनावै हय — जे ओकर मूल प्रकाशन-सन्दर्भ (पत्रिका) के अनुकूल हल। मुदा दोसर ओर ई अकादमिक गहनता के अभाव पैदा करै हय। समीक्षा विवरणात्मक आ मूल्याङ्कनात्मक त हय, मुदा सैद्धान्तिक-विश्लेषणात्मक कम हय। एक समान्तर इतिहास के दीर्घकालिक वैधता प्रदान करबा खातिर जे सुदृढ सैद्धान्तिक आधार जरूरी होय हय, से एमें अविकसित रह जाय हय।

यद्यपि रमानन्द झाक समीक्षामे रस, ध्वनि, व्यञ्जना, औचित्य आदि भारतीय काव्यशास्त्रीय अवधारणा अन्तर्निहित रूपेँ विद्यमान अछि, तथापि ओ एहि शास्त्रीय प्रतिमानकेँ कतहु सुस्पष्ट सैद्धान्तिक उपकरणक रूपमे प्रयोग नहि

करैत छथि। 'व्यञ्जित', 'सम्प्रेषण', 'भावाश्रित' सन शब्द तँ अबैत अछि, मुदा आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, कुन्तक, क्षेमेन्द्र, भट्टनायक आदि आचार्यक नाम आ हुनक सिद्धान्तक व्यवस्थित अनुप्रयोग अनुपस्थित अछि। ओहिना, पाश्चात्य सिद्धान्तक कतहु नामोल्लेख अथवा सुविचारित प्रयोग नहि भेटैत अछि। एहिसँ एक द्वैध स्थिति उत्पन्न होइत अछि। एक दिस ई सैद्धान्तिक लाघव समीक्षाकेँ सुपाठ्य, सम्प्रेषणीय आ पत्रकारीय-सुलभ बनबैत अछि — जे ओकर मूल प्रकाशन-सन्दर्भ (पत्रिका)क अनुकूल छल। मुदा दोसर दिस ई अकादमिक गहनताक अभाव उत्पन्न करैत अछि। समीक्षा विवरणात्मक आ मूल्याङ्कनात्मक तँ अछि, मुदा सैद्धान्तिक-विश्लेषणात्मक कम अछि। एक समान्तर इतिहासकेँ दीर्घकालिक वैधता प्रदान करबा लेल जे सुदृढ़ सैद्धान्तिक आधार आवश्यक होइत अछि, से एहिमे अविकसित रहि जाइत अछि।

सीमा ५: पिछुलका संदर्भ के सीमा — पुरुष-केन्द्रिकता आरो वर्ण-केन्द्रिकता

सीमा ५: परिप्रेक्ष्य के सीमा — पुरुष-केन्द्रिकता आ वर्ण-केन्द्रिकता

सीमा ५ : परिप्रेक्ष्यक सीमा — पुरुष-केन्द्रिकता आ वर्ण-केन्द्रिकता

समाजशास्त्रीय आरो उत्तर-औपनिवेशिक नजर सें कृति के एक गम्भीर सीमा ओकर सामाजिक पिछुलका संदर्भ के संकीर्णता में छै। पचीस निबन्ध में चौबीस पुरुष-रचनाकार के समर्पित छै; खाली एक (हरिलता) स्त्री-रचनाकार के। ओहू में हरिलता के विवेचन मुख्यतः वैष्णव भक्ति तक सीमित रहि जाय छै। स्त्री अधिकतर पात्र अथवा प्रेरणा के रूप में उपस्थित छै, स्वतन्त्र लेखिका, सम्पादिका आरो आलोचक के रूप में कम — स्त्री-लेखिका के स्वतन्त्र साहित्यिक इतिहास पर्याप्त विकसित नै।

समाजशास्त्रीय आ उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि से कृति के एक गम्भीर सीमा ओकर सामाजिक परिप्रेक्ष्य के संकीर्णता में हय। पचीस निबन्ध में चौबीस पुरुष-रचनाकार के समर्पित हय; खाली एक (हरिलता) स्त्री-रचनाकार के। ओहू में हरिलता के विवेचन मुख्य रूप से वैष्णव भक्ति तक सीमित रह जाय हय। स्त्री जादेकर पात्र वा प्रेरणा के रूप में उपस्थित हथिन, स्वतन्त्र लेखिका, सम्पादिका आ आलोचक के रूप में कम — स्त्री-लेखिका के स्वतन्त्र साहित्यिक इतिहास पर्याप्त विकसित न।

समाजशास्त्रीय आ उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ कृतिक एक गम्भीर सीमा ओकर सामाजिक परिप्रेक्ष्यक संकीर्णतामे अछि। पचीस निबन्धमे चौबीस पुरुष-रचनाकारकेँ समर्पित अछि; मात्र एक (हरिलता) स्त्री-रचनाकारकेँ। ओहूमे हरिलताक विवेचन मुख्यत: वैष्णव भक्ति धरि सीमित रहि जाइत अछि। स्त्री अधिकतर पात्र अथवा प्रेरणाक रूपमे उपस्थित छथि, स्वतन्त्र लेखिका, सम्पादिका आ आलोचकक रूपमे कम — स्त्री-लेखिकाक स्वतन्त्र साहित्यिक इतिहास पर्याप्त विकसित नहि।

ओहिना, विवेचित अकसर समस्त रचनाकार एक विशिष्ट सामाजिक स्तर सँ आबै छै। मिथिला के दलित, अतिपिछड़ा, अल्पसंख्यक आरो लोक-परम्परा के — मौखिक साहित्य, गीत-नाद-परम्परा के अनाम रचयिता — रचनाकार ई समान्तर इतिहास सँ अकसर गायब रहि जाय छै; जाति आरो वर्ग के प्रश्न उठै छै, मतरकि दलित समुदाय के आत्मस्वर सीमित छै। ई सीमा युग-सापेक्ष छै (जे उपलब्ध अभिलेख अकसर उच्च-वर्ण के छेलै), तइयो विदेह समान्तर-प्रतिमान के पूरा जनतान्त्रिक समावेशिताक कसौटीपर 'अखियासल' आंशिक रूप में अपूर्ण रहि जाय छै। समान्तर इतिहास के अरथ खाली बिसरल उच्चवर्णीय रचनाकार के फेर-उभार नै, बल्कि पूरा हाशिया के — दलित, स्त्री, लोक, मौखिक — पुन:स्थापना छै; ई व्यापक अर्थ में रमानन्द झा के परियोजना एक सुरुआत खाली छै, पूर्णता नै।

ओहिने, विवेचित प्राय: समस्त रचनाकार एक विशिष्ट सामाजिक स्तर से आवै हथिन। मिथिला के दलित, अतिपिछड़ा, अल्पसंख्यक आ लोक-परम्परा के — मौखिक साहित्य, गीत-नाद-परम्परा के अनाम रचयिता — रचनाकार ई समान्तर इतिहास से प्राय: अनुपस्थित रह जाय हथिन; जाति आ वर्ग के प्रश्न उठै हय, मुदा दलित समुदाय के आत्मस्वर सीमित हय। ई सीमा युग-सापेक्ष हय (जे उपलब्ध अभिलेख प्राय: उच्च-वर्ण के हल), तबो विदेह समान्तर-प्रतिमान के पूर्ण जनतान्त्रिक समावेशिता के कसौटी पर 'अखियासल' आंशिक रूप में अपूर्ण रह जाय हय। समान्तर इतिहास के अर्थ खाली बिसरल उच्चवर्णीय रचनाकार के पुनरुद्धार न, बल्कि समग्र हाशिया के — दलित, स्त्री,

लोक, मौखिक — पुनःस्थापना हय; ई व्यापक अर्थ में रमानन्द झा के परियोजना एक आरम्भ खाली हय, पूर्णता न।

ओहिना, विवेचित प्रायः समस्त रचनाकार एक विशिष्ट सामाजिक स्तरसँ अबैत छथि। मिथिलाक दलित, अतिपिछड़ा, अल्पसंख्यक आ लोक-परम्पराक — मौखिक साहित्य, गीत-नाद-परम्पराक अनाम रचयिता — रचनाकार एहि समान्तर इतिहाससँ प्रायः अनुपस्थित रहि जाइत छथि; जाति आ वर्गक प्रश्न उठैत अछि, मुदा दलित समुदायक आत्मस्वर सीमित अछि। ई सीमा युग-सापेक्ष थिक (जे उपलब्ध अभिलेख प्रायः उच्च-वर्णक छल), तथापि विदेह समान्तर-प्रतिमानक पूर्ण जनतान्त्रिक समावेशिताक कसौटीपर 'अखियासल' आंशिक रूपेँ अपूर्ण रहि जाइत अछि। समान्तर इतिहासक अर्थ मात्र बिसरल उच्चवर्णीय रचनाकारक पुनरुद्धार नहि, अपितु समग्र हाशियाक — दलित, स्त्री, लोक, मौखिक — पुनःस्थापना थिक; एहि व्यापक अर्थमे रमानन्द झाक परियोजना एक आरम्भ मात्र थिक, पूर्णता नहि।

सीमा ६: पाठ-प्रामाणिकता आरो सम्पादकीय अशुद्धिक प्रश्न

सीमा ६: पाठ-प्रामाणिकता आ सम्पादकीय अशुद्धि के प्रश्न

सीमा ६ : पाठ-प्रामाणिकता आ सम्पादकीय अशुद्धिक प्रश्न

कृति में उद्धृत पद्यांश आरो गद्यांशक पाठ-प्रामाणिकता सन्दिग्ध रहि जाय छै। कैलेकि अपने समीक्षक मानी लै छै जे बहुत रचना पत्र-पत्रिका में छिड़िआएल आरो अनुपलब्ध छै, तें उद्धृत अंश के मूल पाठ सें तुलना-सत्यापन अकसर असम्भव छेलै। परवर्ती सम्पादन आरो मुद्रण-प्रक्रिया में ई पाठक शुद्धता आओर संकटग्रस्त भऽ सकै छै — उपलब्ध प्रति में वर्तनी-अस्थिरता आरो मुद्रण-दोष सेहो विद्यमान छै। एक विश्वसनीय समान्तर इतिहास लेली पाठ-समीक्षा आरो आलोचनात्मक संस्करणक अनुशासन जरूरी छै, जेकर कमी ई सुरुआती कृति में स्वाभाविक छै। 'प्रथम' आरो 'मौलिक' जइसन पद लेली अधिक कठोर पाठालोचन, पाण्डुलिपि-अध्ययन आरो परकाशन-इतिहास आवश्यक छै; निष्कर्ष जँ सीमित सामग्रीपर आधारित हो, तें अनुमान के प्रमाण के स्थान नै लै के चाही।

कृति में उद्धृत पद्यांश आ गद्यांश के पाठ-प्रामाणिकता सन्दिग्ध रह जाय हय। काहे कि खुद समीक्षक स्वीकार करै हथिन कि बहुतो रचना पत्र-पत्रिका में छितरायल आ अनुपलब्ध हय, तँ उद्धृत अंश के मूल पाठ से तुलना-सत्यापन प्रायः असम्भव हल। परवर्ती सम्पादन आ मुद्रण-प्रक्रिया में ई पाठक शुद्धता आओर संकटग्रस्त हो सकै हय — उपलब्ध प्रति में वर्तनी-अस्थिरता आ मुद्रण-दोष भी विद्यमान हय। एक विश्वसनीय समान्तर इतिहास खातिर पाठ-समीक्षा आ आलोचनात्मक संस्करण के अनुशासन अनिवार्य हय, जकर अभाव ई आरम्भिक कृति में स्वाभाविक हय। 'प्रथम' आ 'मौलिक' जइसन पद खातिर बेसी कठोर पाठालोचन, पाण्डुलिपि-अध्ययन आ प्रकाशन-इतिहास जरूरी हय; निष्कर्ष अगर सीमित सामग्री पर आधारित हो, त अनुमान के प्रमाण के स्थान न लेवे के चाही।

कृतिमे उद्धृत पद्यांश आ गद्यांशक पाठ-प्रामाणिकता सन्दिग्ध रहि जाइत अछि। किएक तँ स्वयं समीक्षक स्वीकार करैत छथि जे बहुतो रचना पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल आ अनुपलब्ध अछि, तँ उद्धृत अंशक मूल पाठसँ तुलना-सत्यापन प्रायः असम्भव छल। परवर्ती सम्पादन आ मुद्रण-प्रक्रियामे एहि पाठक शुद्धता आओर संकटग्रस्त भऽ सकैत अछि — उपलब्ध प्रतिमे वर्तनी-अस्थिरता आ मुद्रण-दोष सेहो विद्यमान अछि। एक विश्वसनीय समान्तर इतिहास लेल पाठ-समीक्षा आ आलोचनात्मक संस्करणक अनुशासन अनिवार्य थिक, जकर अभाव एहि आरम्भिक कृतिमे स्वाभाविक अछि। 'प्रथम' आ 'मौलिक' सन पद लेल अधिक कठोर पाठालोचन, पाण्डुलिपि-अध्ययन आ प्रकाशन-इतिहास आवश्यक अछि; निष्कर्ष जँ सीमित सामग्रीपर आधारित हो, तँ अनुमानकेँ प्रमाणक स्थान नहि लेबाक चाही।

सीमा ७: आत्मीयता-जनित प्रशंसा के अतिरेक आरो आलोचनात्मक दूरी के कमी

सीमा ७: आत्मीयता-जनित प्रशंसा के अतिरेक आ आलोचनात्मक दूरी के अभाव

सीमा ७ : आत्मीयता-जनित प्रशंसाक अतिरेक आ आलोचनात्मक दूरीक अभाव

कई निबन्ध में — विशेषतः लक्ष्मीपति सिंह, मोहन आरो राजेश्वर झा-सम्बंधी अध्याय में — समीक्षक आरो विवेच्य रचनाकार के बीच व्यक्तिगत आत्मीयता समीक्षा के संस्मरणात्मक श्रद्धाञ्जलिक रूप दऽ दै छै। मोहन के स्मरण, लक्ष्मीपति सिंह के विहुँसै आकृतिक भावुक चित्रण, राजेश्वर झा के निधन के शोक — ई सब्भे भावनात्मक रूप में मार्मिक तें छै, मतरकि ई सें आलोचनात्मक दूरी भङ्ग होय छै। वस्तुनिष्ठ समीक्षा के दृष्टि सें ई प्रशंसा-पूर्वाग्रह छै, जे मूल्याङ्कन के निष्पक्षता के प्रभावित करै छै। अपवाद-स्वरूप हरिमोहन झा-सम्बंधी निबन्ध में समीक्षक जे आलोचनात्मक साहस देखाबै छै, से समस्त संग्रह में समान रूप में उपस्थित नै छै। जीवनी कहीं-कहीं कृति के विश्लेषणपर आरो विषयवस्तु रूप-सौन्दर्यपर भारी पड़ै छै।

अनेक निबन्ध में — विशेषतः लक्ष्मीपति सिंह, मोहन आ राजेश्वर झा-सम्बन्धी अध्याय में — समीक्षक आ विवेच्य रचनाकार के बीच व्यक्तिगत आत्मीयता समीक्षा के संस्मरणात्मक श्रद्धाञ्जलि के रूप दऽ दे हय। मोहन के स्मरण, लक्ष्मीपति सिंह के विहुँसै आकृति के भावुक चित्रण, राजेश्वर झा के निधन के शोक — ई सब भावनात्मक रूप में मार्मिक त हय, मुदा एही से आलोचनात्मक दूरी भङ्ग होय हय। वस्तुनिष्ठ समीक्षा के दृष्टि से ई प्रशंसा-पूर्वाग्रह हय, जे मूल्याङ्कन के निष्पक्षता के प्रभावित करै हय। अपवाद-स्वरूप हरिमोहन झा-सम्बन्धी निबन्ध में समीक्षक जे आलोचनात्मक साहस देखाबै हथिन, से समस्त संग्रह में समान रूप में उपस्थित न हय। जीवनी कहीं-कहीं कृति के विश्लेषण पर आ विषयवस्तु रूप-सौन्दर्य पर भारी पड़ै हय।

अनेक निबन्धमे — विशेषतः लक्ष्मीपति सिंह, मोहन आ राजेश्वर झा-सम्बन्धी अध्यायमे — समीक्षक आ विवेच्य रचनाकारक बीच व्यक्तिगत आत्मीयता समीक्षाकेँ संस्मरणात्मक श्रद्धाञ्जलिक रूप दऽ दैत अछि। मोहनक स्मरण, लक्ष्मीपति सिंहक विहुँसैत आकृतिक भावुक चित्रण, राजेश्वर झाक निधनक शोक — ई सभटा भावनात्मक रूपेँ मार्मिक तँ अछि, मुदा एहिसँ आलोचनात्मक दूरी भङ्ग होइत अछि। वस्तुनिष्ठ समीक्षाक दृष्टिसँ ई प्रशंसा-पूर्वाग्रह थिक, जे मूल्याङ्कनक निष्पक्षताकेँ प्रभावित करैत अछि। अपवाद-स्वरूप हरिमोहन झा-सम्बन्धी निबन्धमे समीक्षक जे आलोचनात्मक साहस देखबैत छथि, से समस्त संग्रहमे समान रूपेँ उपस्थित नहि अछि। जीवनी

कतहु-कतहु कृतिक विश्लेषणपर आ विषयवस्तु रूप-सौन्दर्यपर भारी पड़ैत अछि।

सीमा ८: समान्तर इतिहास-प्रतिमान के अपूर्ण सैद्धान्तिकीकरण

सीमा ८: समान्तर इतिहास-प्रतिमान के अपूर्ण सैद्धान्तिकीकरण

सीमा ८ : समान्तर इतिहास-प्रतिमानक अपूर्ण सैद्धान्तिकीकरण

आखिर में, विदेह समान्तर इतिहास-प्रतिमान के दृष्टि सें सबसें बेसी मौलिक सीमा ई जे रमानन्द झा समान्तर इतिहास के अवधारणा के व्यवहार में तें जीबै छै, मतरकि ओकरा सिद्धान्त के रूप में साफ तौर पर प्रतिपादित नै करै छै। 'दू कोटिक साहित्यकार' के सिद्धान्त एकर सबसें बेसी निकट छै, मतरकि ऊ मुख्यधारा के कैनन के — जयकान्त मिश्र के इतिहास के — विकल्प अथवा विरोध नै, बल्कि ओकर पूरक बनि रहि जाय छै। समीक्षक बेर-बेर जयकान्त मिश्र के सच्चा आधार मानि हुनकहि सूचनापर आश्रित रहै छै, जखन कि समान्तर इतिहास के असली दायित्व मुख्यधारा के कैनन के आधार-मान्यता के अपने प्रश्नाङ्कित करब छै। तात्पर्य — 'अखियासल' समान्तर इतिहास के सामग्री तें परस्तुत करै छै, मतरकि ओकर सैद्धान्तिकी अविकसित छोड़ि दै छै। ई कैनन के विस्तारित करै छै, मतरकि कैनन-निर्माण के शक्ति-संरचना के विखण्डित नै करै छै। इहे ओहि कार्य के रिक्तता छै जकरा विदेह-आन्दोलन अपन घोषित सैद्धान्तिकी, संस्थागत अभिलेखीकरण आरो जनतान्त्रिक समावेशिता सें पूरा करै के कोसिस करै छै।

अन्त में, विदेह समान्तर इतिहास-प्रतिमान के दृष्टि से सबसे बेसी मौलिक सीमा ई जे रमानन्द झा समान्तर इतिहास के अवधारणा के व्यवहार में त जीयै हथिन, मुदा ओकरा सिद्धान्त के रूप में स्पष्टत: प्रतिपादित न करै हथिन। 'दू कोटि के साहित्यकार' के सिद्धान्त एकर सबसे बेसी निकट हय, मुदा ओ मुख्यधारा के कैनन के — जयकान्त मिश्र के इतिहास के — विकल्प वा विरोध न, बल्कि ओकर पूरक बनि रह जाय हय। समीक्षक बेर-बेर जयकान्त मिश्र के प्रामाणिक आधार मानके हुनकहि सूचना पर आश्रित रहै हथिन, जब कि समान्तर इतिहास के असली दायित्व मुख्यधारा के कैनन के आधार-मान्यता के खुद प्रश्नाङ्कित करब हय। तात्पर्य — 'अखियासल' समान्तर इतिहास के

सामग्री त प्रस्तुत करै हय, मुदा ओकर सैद्धान्तिकी अविकसित छोड़के दे हय। ई कैनन के विस्तारित करै हय, मुदा कैनन-निर्माण के शक्ति-संरचना के विखण्डित न करै हय। इहे ओ कार्य के रिक्तता हय जकरा विदेह-आन्दोलन अपन घोषित सैद्धान्तिकी, संस्थागत अभिलेखीकरण आ जनतान्त्रिक समावेशिता से पूर्ण करे के प्रयास करै हय।

अन्ततः, विदेह समान्तर इतिहास-प्रतिमानक दृष्टिसँ सर्वाधिक मौलिक सीमा ई जे रमानन्द झा समान्तर इतिहासक अवधारणाकेँ व्यवहारमे तँ जीबैत छथि, मुदा ओकरा सिद्धान्तक रूपमे स्पष्टतः प्रतिपादित नहि करैत छथि। 'दू कोटिक साहित्यकार'क सिद्धान्त एकर सर्वाधिक निकट थिक, मुदा ओ मुख्यधाराक कैननक — जयकान्त मिश्रक इतिहासक — विकल्प अथवा विरोध नहि, अपितु ओकर पूरक बनि रहि जाइत अछि। समीक्षक बेर-बेर जयकान्त मिश्रकेँ प्रामाणिक आधार मानि हुनकहि सूचनापर आश्रित रहैत छथि, जखन कि समान्तर इतिहासक असली दायित्व मुख्यधाराक कैननक आधार-मान्यताकेँ स्वयं प्रश्नाङ्कित करब थिक। तात्पर्य — 'अखियासल' समान्तर इतिहासक सामग्री तँ प्रस्तुत करैत अछि, मुदा ओकर सैद्धान्तिकी अविकसित छोड़ि दैत अछि। ई कैननकेँ विस्तारित करैत अछि, मुदा कैनन-निर्माणक शक्ति-संरचनाकेँ विखण्डित नहि करैत अछि। इएह ओहि कार्यक रिक्तता थिक जकरा विदेह-आन्दोलन अपन घोषित सैद्धान्तिकी, संस्थागत अभिलेखीकरण आ जनतान्त्रिक समावेशितासँ पूर्ण करबाक प्रयास करैत अछि।

संग-संग ई सेहो कहबाक चाही जे मातृभाषा-प्रेम पोथी के ऊर्जा छै, मतरकि कतेको स्थानपर ई प्रेम सांस्कृतिक गौरववाद अथवा बाहरी प्रभाव के प्रति अत्यधिक संशय में बदलि जाय छै — जखन कि भाषा सदैव सम्पर्क, मिश्रण आरो परिवर्तन सें विकसित होय छै; आरो राष्ट्रीय अथवा सांस्कृतिक आस्था कहीं-कहीं प्रश्नरहित मूल्य बनी जाय छै।

साथे ई भी कहे के चाही जे मातृभाषा-प्रेम पोथी के ऊर्जा हय, मुदा कतको स्थान पर ई प्रेम सांस्कृतिक गौरववाद वा बाहरी प्रभाव के प्रति अत्यधिक संशय में बदलि जाय हय — जब कि भाषा सदैव सम्पर् के, मिश्रण आ

परिवर्तन से विकसित होय हय; आ राष्ट्रीय वा सांस्कृतिक आस्था कहीं-कहीं प्रश्नरहित मूल्य बन जाय हय।

संगहि ई सेहो कहबाक चाही जे मातृभाषा-प्रेम पोथीक ऊर्जा अछि, मुदा कतेको स्थानपर ई प्रेम सांस्कृतिक गौरववाद अथवा बाहरी प्रभावक प्रति अत्यधिक संशयमे बदलि जाइत अछि — जखन कि भाषा सदैव सम्पर्क, मिश्रण आ परिवर्तनसँ विकसित होइत अछि; आ राष्ट्रीय अथवा सांस्कृतिक आस्था कतहु-कतहु प्रश्नरहित मूल्य बनि जाइत अछि।

पूरा आलोचनात्मक निर्णय

समग्र आलोचनात्मक निर्णय

समग्र आलोचनात्मक निर्णय

पोथी के प्रमुख उपलब्धि

पोथी के प्रमुख उपलब्धि

पोथीक प्रमुख उपलब्धि

'अखियासल' के सबसें बेसी जरूरी उपलब्धि छै — साहित्यिक इतिहास के बिसरल स्थान सभपर प्रकाश देब। ई पोथी पूछै छै —

'अखियासल' के सबसे बेसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हय — साहित्यिक इतिहास के विस्मृत स्थान सभ पर प्रकाश देब। ई पोथी पूछै हय —

'अखियासल'क सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि — साहित्यिक इतिहासक विस्मृत स्थान सभपर प्रकाश देब। ई पोथी पूछैत अछि —

मैथिली कथा के वास्तविक सुरुआत कतय सें मानल जाए?

मैथिली कथा के वास्तविक आरम्भ कतय से मानल जाय?

मैथिली कथाक वास्तविक आरम्भ कतयसँ मानल जाए?

प्रभाव आरो अनुवाद में की अन्तर छै?

प्रभाव आ अनुवाद में की अन्तर हय?

प्रभाव आ अनुवादमे की अन्तर अछि?

'प्रथम' कृति निर्धारित करै के परमाण की हो?

'प्रथम' कृति निर्धारित करे के प्रमाण की हो?

'प्रथम' कृति निर्धारित करबाक प्रमाण की हो?

दुर्लभ पाण्डुलिपि इतिहास सें कोना बाहर होय जाय छै?

दुर्लभ पाण्डुलिपि इतिहास से कोना बाहर हो जाय हय?

दुर्लभ पाण्डुलिपि इतिहाससँ कोना बाहर भऽ जाइत अछि?

पत्रिका, सम्पादक आरो प्रकाशक साहित्य निर्माण में की भूमिका निभाबै छै?

पत्रिका, सम्पादक आ प्रकाशक साहित्य निर्माण में की भूमिका निभावै हथिन?

पत्रिका, सम्पादक आ प्रकाशक साहित्य निर्माणमे की भूमिका निभबैत छथि?

राष्ट्रीय आन्दोलन में मैथिली साहित्यकार के योगदान किएक बिसरल भेलै?

राष्ट्रीय आन्दोलन में मैथिली साहित्यकार के योगदान काहे विस्मृत भेल?

राष्ट्रीय आन्दोलनमे मैथिली साहित्यकारक योगदान किएक विस्मृत भेल?

हास्य के लोकप्रियता के भीतर सामाजिक अन्याय ओझल तें नै?

हास्य के लोकप्रियता के भीतर सामाजिक अन्याय ओझल त न?

हास्यक लोकप्रियताक भीतर सामाजिक अन्याय ओझल तँ नहि?

भाषिक शुद्धता आरो भाषिक विकास के बीच कोन सम्बंध छै?

भाषिक शुद्धता आ भाषिक विकास के बीच कोन सम्बन्ध हय?

भाषिक शुद्धता आ भाषिक विकासक बीच कोन सम्बन्ध अछि?

स्वतन्त्रता के बाद गरीब, बेरोजगार आरो श्रमिक के जिनगी किएक नै बदलल?

स्वतन्त्रता के बाद गरीब, बेरोजगार आ श्रमिक के जीवन काहे न बदलल?

स्वतन्त्रताक बाद गरीब, बेरोजगार आ श्रमिकक जीवन किएक नहि बदलल?

साहित्यकार के वैयक्तिक अनुभव कोना सामाजिक अनुभव बनै छै?

साहित्यकार के वैयक्तिक अनुभव कोना सामाजिक अनुभव बनै हय?

साहित्यकारक वैयक्तिक अनुभव कोना सामाजिक अनुभव बनैत अछि?

ई प्रश्न पोथी के साधारण व्यक्तित्व-कृतित्व सङ्ग्रह सें ऊपर उठाबै छै।

ई प्रश्न पोथी के साधारण व्यक्तित्व-कृतित्व सङ्ग्रह से ऊपर उठावै हय।

ई प्रश्न पोथीकेँ साधारण व्यक्तित्व-कृतित्व सङ्ग्रहसँ ऊपर उठबैत अछि।

भारतीय साहित्यशास्त्र के दृष्टि सें

भारतीय साहित्यशास्त्र के दृष्टि से

भारतीय साहित्यशास्त्रक दृष्टिसँ

पोथी रस के सामाजिक फैलाव करै छै। करुणा केवल पात्र के दुःखपर आँसू बहायब नै, दुःख के सामाजिक कारण खोजब छै। वीरता केवल रणभूमि में नै, मातृभाषा-रक्षा, सत्य के पक्ष आरो शोषण-विरोध में छै। हास्य केवल मनोरञ्जन नै, सत्ता आरो रूढ़ि के मुखौटा उतारबाक साधन छै। ध्वनि-सिद्धान्त के अनुसार कई कृति के भीतर प्रत्यक्ष कथा सें अधिक जरूरी अप्रत्यक्ष सामाजिक अरथ छै। औचित्य-सिद्धान्त लेखक के इतिहास के दावा, विधागत नामकरण आरो चरित्र के विश्वसनीयता परखबाक आधार दै छै। मतरकि शास्त्रीय निकषपर मुख्यधारा के कई सुरुआती रचना के सीमा सेहो साफ होय छै — नीति आरो उपदेश के भरमार सें रसभङ्ग, अभिधा के प्राधान्य सें ध्वनि के क्षय, आरो नारा बनै कविता में वक्रोक्ति के विनाश।

पोथी रस के सामाजिक विस्तार करै हय। करुणा खाली पात्र के दुःख पर आँसू बहायब न, दुःख के सामाजिक कारण खोजब हय। वीरता खाली रणभूमि में न, मातृभाषा-रक्षा, सत्य के पक्ष आ शोषण-विरोध में हय। हास्य खाली मनोरञ्जन न, सत्ता आ रूढ़ि के मुखौटा उतारे के साधन हय। ध्वनि-सिद्धान्त के अनुसार अनेक कृति के भीतर प्रत्यक्ष कथा से बेसी महत्त्वपूर्ण अप्रत्यक्ष सामाजिक अर्थ हय। औचित्य-सिद्धान्त लेखक के इतिहास के दावा, विधागत नामकरण आ चरित्र के विश्वसनीयता परखबा के आधार दे हय। मुदा शास्त्रीय निकष पर मुख्यधारा के अनेक आरम्भिक रचना के सीमा भी साफ होय हय — नीति आ उपदेशक भरमार से रसभङ्ग, अभिधा के प्राधान्य से ध्वनि के क्षय, आ नारा बनै कविता में वक्रोक्ति के विनाश।

पोथी रसक सामाजिक विस्तार करैत अछि। करुणा केवल पात्रक दुःखपर आँसू बहायब नहि, दुःखक सामाजिक कारण खोजब अछि। वीरता केवल रणभूमिमे नहि, मातृभाषा-रक्षा, सत्यक पक्ष आ शोषण-विरोधमे अछि। हास्य केवल मनोरञ्जन नहि, सत्ता आ रूढ़िक मुखौटा उतारबाक साधन अछि। ध्वनि-सिद्धान्तक अनुसार अनेक कृतिक भीतर प्रत्यक्ष कथासँ अधिक महत्त्वपूर्ण अप्रत्यक्ष सामाजिक अर्थ अछि। औचित्य-सिद्धान्त लेखककेँ इतिहासक दावा, विधागत नामकरण आ चरित्रक विश्वसनीयता परखबाक आधार दैत अछि। मुदा शास्त्रीय निकषपर मुख्यधाराक अनेक आरम्भिक रचनाक सीमा सेहो स्पष्ट होइत अछि — नीति आ उपदेशक भरमारसँ रसभङ्ग, अभिधाक प्राधान्यसँ ध्वनिक क्षय, आ नारा बनैत कवितामे वक्रोक्तिक विनाश।

पाश्चात्य सिद्धान्त के दृष्टि सें

पाश्चात्य सिद्धान्त के दृष्टि से

पाश्चात्य सिद्धान्तक दृष्टिसँ

'अखियासल' में नव-इतिहासवादी आरो मार्क्सवादी प्रवृत्ति खास प्रखर छै। साहित्य सत्ता, धन, जाति, भाषा, संस्था आरो सामाजिक आन्दोलन सें जुड़ल छै। ललित आरो धीरेन्द्र के कथा-विवेचन अस्तित्वगत संकट, वर्गीय शोषण आरो आधुनिक मनुष्य के निरर्थकता उघारै छै। नारीवादी दृष्टि उपस्थित छै — विशेषतः 'निर्दयी सासु', 'सुमति' आरो 'चन्द्रग्रहण' के विवेचन में — मतरकि ओकर पूरा सम्भावना (जइसन हरिलता के प्रतिरोधी पाठ) अविकसित रहि जाय छै। उत्तर-औपनिवेशिक नजर सें मातृभाषा-विमुखता, हिन्दी-अङ्ग्रेजी के प्रभुत्व आरो मैथिली के सार्वजनिक क्षेत्र सें निष्कासन पोथी के स्थायी चिन्ता छै।

'अखियासल'में नव-इतिहासवादी आ मार्क्सवादी प्रवृत्ति विशेष प्रखर हय। साहित्य सत्ता, धन, जाति, भाषा, संस्था आ सामाजिक आन्दोलन से जुड़ल हय। ललित आ धीरेन्द्र के कथा-विवेचन अस्तित्वगत संकट, वर्गीय शोषण आ आधुनिक मनुष्य के निरर्थकता उद्घाटित करै हय। नारीवादी दृष्टि उपस्थित हय — विशेषतः 'निर्दयी सासु', 'सुमति' आ 'चन्द्रग्रहण' के विवेचन में — मुदा ओकर पूर्ण सम्भावना (जइसन हरिलता के प्रतिरोधी पाठ) अविकसित रह जाय

हय। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि से मातृभाषा-विमुखता, हिन्दी-अंग्रेजी के प्रभुत्व आ मैथिली के सार्वजनिक क्षेत्र से निष्कासन पोथी के स्थायी चिन्ता हय।

'अखियासल'मे नव-इतिहासवादी आ मार्क्सवादी प्रवृत्ति विशेष प्रखर अछि। साहित्य सत्ता, धन, जाति, भाषा, संस्था आ सामाजिक आन्दोलनसँ जुड़ल अछि। ललित आ धीरेन्द्रक कथा-विवेचन अस्तित्वगत संकट, वर्गीय शोषण आ आधुनिक मनुष्यक निरर्थकता उद्घाटित करैत अछि। नारीवादी दृष्टि उपस्थित अछि — विशेषतः 'निर्दयी सासु', 'सुमति' आ 'चन्द्रग्रहण'क विवेचनमे — मुदा ओकर पूर्ण सम्भावना (जेना हरिलताक प्रतिरोधी पाठ) अविकसित रहि जाइत अछि। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ मातृभाषा-विमुखता, हिन्दी-अङ्ग्रेजीक प्रभुत्व आ मैथिलीक सार्वजनिक क्षेत्रसँ निष्कासन पोथीक स्थायी चिन्ता अछि।

विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें

विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि से

विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ

'अखियासल' मैथिली साहित्य के वैकल्पिक वंशावली बनाबै छै। ई वंशावली में —

'अखियासल' मैथिली साहित्य के वैकल्पिक वंशावली बनावै हय। ई वंशावली में —

'अखियासल' मैथिली साहित्यक वैकल्पिक वंशावली बनबैत अछि। एहि वंशावलीमे —

श्रीकृष्ण ठाकुर आरो 'चन्द्रप्रभा',

श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा',

श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा',

जीवछ मिश्र आरो 'रामेश्वर',

जीवछ मिश्र आ 'रामेश्वर',

जीवछ मिश्र आ 'रामेश्वर',

रासबिहारी लाल दास आरो 'सुमति',

रासबिहारी लाल दास आ 'सुमति',

रासबिहारी लाल दास आ 'सुमति',

जनसीदन आरो बिसरल जनार्दन झा जइसन साहित्यसेवी,

जनसीदन आ बिसरल जनार्दन झा जइसन साहित्यसेवी,

जनसीदन आ बिसरल जनार्दन झा सन साहित्यसेवी,

त्रिलोचन झा जइसन मातृभाषानुरागी,

त्रिलोचन झा जइसन मातृभाषानुरागी,

त्रिलोचन झा सन मातृभाषानुरागी,

यदुवर आरो द्विजवर जइसन जागरणकारी कवि,

यदुवर आ द्विजवर जइसन जागरणकारी कवि,

यदुवर आ द्विजवर सन जागरणकारी कवि,

हरिलता जइसन संघर्षशील कवीश्वरी,

हरिलता जइसन संघर्षशील कवीश्वरी,

हरिलता सन संघर्षशील कवीश्वरी,

लक्ष्मीपति सिंह जइसन सम्पादक,

लक्ष्मीपति सिंह जइसन सम्पादक,

लक्ष्मीपति सिंह सन सम्पादक,

मधुप आरो मोहन जइसन गीतकार,

मधुप आ मोहन जइसन गीतकार,

मधुप आ मोहन सन गीतकार,

यात्री जइसन स्तम्भकार,

यात्री जइसन स्तम्भकार,

यात्री सन स्तम्भकार,

व्यास जइसन भाषिक शुद्धतावादी,

व्यास जइसन भाषिक शुद्धतावादी,

व्यास सन भाषिक शुद्धतावादी,

राजेश्वर झा जइसन संस्था-निर्माता,

राजेश्वर झा जइसन संस्था-निर्माता,

राजेश्वर झा सन संस्था-निर्माता,

किरण, ललित, धीरेन्द्र आरो प्रभास जइसन सामाजिक कथाकार

किरण, ललित, धीरेन्द्र आ प्रभास जइसन सामाजिक कथाकार

किरण, ललित, धीरेन्द्र आ प्रभास सन सामाजिक कथाकार

— एकहि विस्तृत इतिहास में स्थान पाबै छै। ई इतिहास मिथिला के राजवंश अथवा पाण्डित्य के केन्द्र खाली नै मानै छै। ई मिथिला में भूखल बुतरू, अत्याचारित पुतोहु, बेरोजगार युवक, शोषित किसान, मातृभाषा-विहीन शिक्षित वर्ग, मुद्रणालय के श्रमिक आरो बिसरल सम्पादक सब्भे उपस्थित छै।

— एके विस्तृत इतिहास में स्थान पावै हथिन। ई इतिहास मिथिला के राजवंश वा पाण्डित्य के केन्द्र खाली न मानै हय। ई मिथिला में भूखल बालक, अत्याचारित पुतोहु, बेरोजगार युवक, शोषित किसान, मातृभाषा-विहीन शिक्षित वर्ग, मुद्रणालय के श्रमिक आ विस्मृत सम्पादक सब उपस्थित हथिन।

— एकहि विस्तृत इतिहासमे स्थान पबैत छथि। ई इतिहास मिथिलाकेँ राजवंश अथवा पाण्डित्यक केन्द्र मात्र नहि मानैत अछि। एहि मिथिलामे भूखल बालक, अत्याचारित पुतोहु, बेरोजगार युवक, शोषित किसान, मातृभाषा-विहीन शिक्षित वर्ग, मुद्रणालयक श्रमिक आ विस्मृत सम्पादक सभ उपस्थित छथि।

उपसंहार: सुरुआत के गरिमा आरो रिक्तता के उत्तराधिकार

उपसंहार: आरम्भ के गरिमा आ रिक्तता के उत्तराधिकार

उपसंहार : आरम्भक गरिमा आ रिक्ततात उत्तराधिकार

'अखियासल' के महत्त्व आखिरी निर्णय देबा में नै, मैथिली साहित्य के इतिहासपर पुनर्विचार करबा में छै। ई पोथी प्रतिष्ठित इतिहास के सामने वैकल्पिक प्रश्न राखै छै। लेखक साहित्य के चमकै शिखर खाली नै देखै छै; ऊ नीचाँ दबाओल ईंट, टूटल पाण्डुलिपि, पुरान पत्रिका, भूखल पात्र, उपेक्षित भाषा आरो बिसरल साहित्यसेवी के सेहो देखै छै। पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर सें लऽ कऽ प्रभास कुमार चौधरी तक साहित्य में यथार्थवाद, राष्ट्रवाद आरो समाज-सुधारक क्रमिक विकास दृष्टिगोचर होय छै, आरो संग-संग — जखन ई पूरा रचना-संसार के समान्तर इतिहास-दृष्टि, नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा आरो पाश्चात्य-भारतीय काव्यशास्त्र के कठोर निकषपर कसल जाय छै — तखन एकर ढाँचागत, वैचारिक आरो सैद्धान्तिक सीमा सेहो उजागर होय छै: सामन्ती मानसिकता के अवशेष, सुधारवाद के सीमा, पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रह आरो वञ्चित वर्ग के सच्चा स्वर के कमी। साहित्य तखनहि पूर्णतः समान्तर आरो सच्चा बनि सकैछ जखन ऊ राज्याश्रय आरो सामन्ती वर्चस्व सें मुक्त भऽ, शोषित के यथार्थ के बिना कोय हेत्वाभास के, पूरा ज्ञानमीमांसीय साहस के संग परस्तुत करए।

'अखियासल' के महत्त्व अन्तिम निर्णय देबा में न, मैथिली साहित्य के इतिहास पर पुनर्विचार करबा में हय। ई पोथी प्रतिष्ठित इतिहास के सामने वैकल्पिक प्रश्न रखै हय। लेखक साहित्य के चमकै शिखर खाली न देखै हथिन; ओ नीचे दबाओल ईंट, टूटल पाण्डुलिपि, पुरान पत्रिका, भूखल पात्र, उपेक्षित भाषा आ विस्मृत साहित्यसेवी के भी देखै हथिन। पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर से लेके प्रभास कुमार चौधरी तक साहित्य में यथार्थवाद, राष्ट्रवाद आ समाज-सुधार के क्रमिक विकास दृष्टिगोचर होय हय, आ साथे — जब ई पूरा रचना-संसार के समान्तर इतिहास-दृष्टि, नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा आ पाश्चात्य-भारतीय काव्यशास्त्र के कठोर निकष पर कसल जाय हय — तब एकर ढाँचागत, वैचारिक आ सैद्धान्तिक सीमा भी उजागर होय हय: सामन्ती मानसिकता के अवशेष, सुधारवाद के सीमा, पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रह आ वञ्चित वर्ग के प्रामाणिक स्वर के अभाव। साहित्य तखनहि पूरा तरह से समान्तर आ प्रामाणिक बन सकै हय जब ओ राज्याश्रय आ सामन्ती वर्चस्व से मुक्त होके,

शोषित के यथार्थ के बिना कोनो हेत्वाभास के, पूर्ण ज्ञानमीमांसीय साहस के संग प्रस्तुत करय।

'अखियासल'क महत्त्व अन्तिम निर्णय देबामे नहि, मैथिली साहित्यक इतिहासपर पुनर्विचार करबामे अछि। ई पोथी प्रतिष्ठित इतिहासक सामने वैकल्पिक प्रश्न राखैत अछि। लेखक साहित्यक चमकैत शिखर मात्र नहि देखैत छथि; ओ नीचाँ दबाओल ईंट, टूटल पाण्डुलिपि, पुरान पत्रिका, भूखल पात्र, उपेक्षित भाषा आ विस्मृत साहित्यसेवीकेँ सेहो देखैत छथि। पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुरसँ लऽ कऽ प्रभास कुमार चौधरी धरि साहित्यमे यथार्थवाद, राष्ट्रवाद आ समाज-सुधारक क्रमिक विकास दृष्टिगोचर होइछ, आ संगहि — जखन एहि सम्पूर्ण रचना-संसारकेँ समान्तर इतिहास-दृष्टि, नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा आ पाश्चात्य-भारतीय काव्यशास्त्रक कठोर निकषपर कसल जाइछ — तखन एकर ढाँचागत, वैचारिक आ सैद्धान्तिक सीमा सेहो उजागर होइत अछि: सामन्ती मानसिकताक अवशेष, सुधारवादक सीमा, पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रह आ वञ्चित वर्गक प्रामाणिक स्वरक अभाव। साहित्य तखनहि पूर्णतः समान्तर आ प्रामाणिक बनि सकैछ जखन ओ राज्याश्रय आ सामन्ती वर्चस्वसँ मुक्त भऽ, शोषितक यथार्थकेँ बिना कोनो हेत्वाभासकेँ, पूर्ण ज्ञानमीमांसीय साहसक सङ्ग प्रस्तुत करए।

एकर श्रेष्ठता ओतए छै जतए —

एकर श्रेष्ठता उहाँ हय जहाँ —

एकर श्रेष्ठता ओतए अछि जतए —

लेखक अभिलेख खोजै छै,

लेखक अभिलेख खोजै हथिन,

लेखक अभिलेख खोजैत छथि,

प्रचलित भूल सुधारै छै,

प्रचलित भूल सुधारै हथिन,

प्रचलित भूल सुधारैत छथि,

बिसरल लेखक के फेर उपस्थित करै छै,

विस्मृत लेखक के फेर उपस्थित करै हथिन,

विस्मृत लेखककेँ पुनः उपस्थित करैत छथि,

सामाजिक जिनगी आरो साहित्य के सम्बंध खोलै छै,

सामाजिक जीवन आ साहित्य के सम्बन्ध खोलै हथिन,

सामाजिक जीवन आ साहित्यक सम्बन्ध खोलैत छथि,

प्रशंसा करितो आलोचनात्मक दूरी रखै छै,

प्रशंसा करितो आलोचनात्मक दूरी रखै हथिन,

प्रशंसा करितो आलोचनात्मक दूरी रखैत छथि,

मातृभाषा आरो जनजीवन के साहित्येतिहास के केन्द्र बनाबै छै।
मातृभाषा आ जनजीवन के साहित्येतिहास के केन्द्र बनावै हथिन।
मातृभाषा आ जनजीवनकेँ साहित्येतिहासक केन्द्र बनबैत छथि।
एकर सीमा ओतए छै जतए —
एकर सीमा उहाँ हय जहाँ —
एकर सीमा ओतए अछि जतए —
अनुमान प्रमाण के स्थान लै छै,

अनुमान प्रमाण के स्थान ले हय,

अनुमान प्रमाणक स्थान लैत अछि,

जीवनी कृति के विश्लेषणपर भारी पड़ै छै,

जीवनी कृति के विश्लेषण पर भारी पड़ै हय,

जीवनी कृतिक विश्लेषणपर भारी पड़ैत अछि,

विषयवस्तु रूप-सौन्दर्य के ढाँकि दै छै,

विषयवस्तु रूप-सौन्दर्य के ढाँकि दे हय,

विषयवस्तु रूप-सौन्दर्यकेँ ढाँकि दैत अछि,

मूल्य-मानदण्ड अस्थिर होय जाय छै,

मूल्य-मानदण्ड अस्थिर हो जाय हय,

मूल्य-मानदण्ड अस्थिर भऽ जाइत अछि,

राष्ट्रीय अथवा सांस्कृतिक आस्था प्रश्नरहित मूल्य बनी जाय छै,

राष्ट्रीय वा सांस्कृतिक आस्था प्रश्नरहित मूल्य बन जाय हय,

राष्ट्रीय अथवा सांस्कृतिक आस्था प्रश्नरहित मूल्य बनि जाइत अछि,

स्त्री, दलित आरो निम्नवर्गक आत्मस्वर पर्याप्त स्वतन्त्रता नै पाबै छै।

स्त्री, दलित आ निम्नवर्ग के आत्मस्वर पर्याप्त स्वतन्त्रता न पावै हय।

स्त्री, दलित आ निम्नवर्गक आत्मस्वर पर्याप्त स्वतन्त्रता नहि पबैत अछि।

पूरा मूल्याङ्कन के निष्कर्ष ई जे 'अखियासल' अपन युग के एक अग्रगामी, साहसी आरो ऐतिहासिक दृष्टि सें अपरिहार्य कृति छै, जेकर मौलिकता ओकर सीमा सें अभिन्न रूप में जुड़ल छै। एकर गुण — पहिलों-खोज के साहस, बिसरल रचनाकार के फेर-उभार, समाजशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि, 'दू कोटिक साहित्यकार' के मौलिक सिद्धान्त, आरो मैथिली साहित्येतिहास के व्यक्ति-केन्द्रित कैनन सें मुक्त कऽ जन-केन्द्रित बनएबाक कोसिस — ई सब्भे एकरा मैथिली आलोचना के एक कोसिला-प्रस्तर बनाबै छै। संग-संग एकर सीमा — संकलनात्मक असंगति, मूल पाठक अनुपलब्धता, मूल्य-मानदण्ड के अस्थिरता, सैद्धान्तिक अनुशीलन के कमी, पिछुलका संदर्भ के संकीर्णता, पाठ-प्रामाणिकता के संकट, आत्मीयता-जनित पूर्वाग्रह आरो समान्तर इतिहास के अपूर्ण सैद्धान्तिकीकरण — ई सब्भे कोय व्यक्तिगत न्यूनता नै, बल्कि ओहि मुद्रण-सीमित, डिजिटल-पूर्व, संस्था-विहीन युग के संरचनात्मक बाध्यताक प्रतिफल छै।

समग्र मूल्याङ्कन के निष्कर्ष ई जे 'अखियासल' अपन युग के एक अग्रगामी, साहसी आ ऐतिहासिक दृष्टि से अपरिहार्य कृति हय, जकर मौलिकता ओकर सीमा से अभिन्न रूप में जुड़ल हय। एकर गुण — प्रथम-अन्वेषण के साहस, बिसरल रचनाकार के पुनरुद्धार, समाजशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि, 'दू कोटि के साहित्यकार' के मौलिक सिद्धान्त, आ मैथिली साहित्येतिहास के व्यक्ति-

केन्द्रित कैनन से मुक्त के जन-केन्द्रित बनावे के प्रयास — ई सब एकरा मैथिली आलोचना के एक कोसिला-प्रस्तर बनावै हय। साथे एकर सीमा — संकलनात्मक असंगति, मूल पाठक अनुपलब्धता, मूल्य-मानदण्ड के अस्थिरता, सैद्धान्तिक अनुशीलन के अभाव, परिप्रेक्ष्य के संकीर्णता, पाठ-प्रामाणिकता के संकट, आत्मीयता-जनित पूर्वाग्रह आ समान्तर इतिहास के अपूर्ण सैद्धान्तिकीकरण — ई सब कोनो व्यक्तिगत न्यूनता न, बल्कि ओ मुद्रण-सीमित, डिजिटल-पूर्व, संस्था-विहीन युग के संरचनात्मक बाध्यता के प्रतिफल हय।

समग्र मूल्याङ्कनक निष्कर्ष ई जे 'अखियासल' अपन युगक एक अग्रगामी, साहसी आ ऐतिहासिक दृष्टिसँ अपरिहार्य कृति थिक, जकर मौलिकता ओकर सीमासँ अभिन्न रूपेँ जुड़ल अछि। एकर गुण — प्रथम-अन्वेषणक साहस, बिसरल रचनाकारक पुनरुद्धार, समाजशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि, 'दू कोटिक साहित्यकार'क मौलिक सिद्धान्त, आ मैथिली साहित्येतिहासकेँ व्यक्ति-केन्द्रित कैननसँ मुक्त कऽ जन-केन्द्रित बनएबाक प्रयास — ई सभटा एकरा मैथिली आलोचनाक एक कोसिला-प्रस्तर बनबैत अछि। संगहि एकर सीमा — संकलनात्मक असंगति, मूल पाठक अनुपलब्धता, मूल्य-मानदण्डक अस्थिरता, सैद्धान्तिक अनुशीलनक अभाव, परिप्रेक्ष्यक संकीर्णता, पाठ-प्रामाणिकताक संकट, आत्मीयता-जनित पूर्वाग्रह आ समान्तर इतिहासक अपूर्ण सैद्धान्तिकीकरण — ई सभटा कोनो व्यक्तिगत न्यूनता नहि, अपितु ओहि मुद्रण-सीमित, डिजिटल-पूर्व, संस्था-विहीन युगक संरचनात्मक बाध्यताक प्रतिफल थिक।

इहे द्वैध — गुण आरो सीमा के अभिन्नता — 'अखियासल' के विदेह समान्तर इतिहास-आन्दोलन के एक पूर्व-रूप बनाबै छै। जे रिक्तता के रमानन्द झा नामाङ्कित करै छै — सर्वसुलभता, अभिलेखीकरण, पुनर्मूल्याङ्कन — ओहि रिक्तता के भरब परवर्ती पीढ़ी के ऐतिहासिक दायित्व बनी जाय छै। ई अर्थ में, कृति के सबसें बड़का सीमा इहे ओकर सबसें बड़का उत्तराधिकार छै। 'आँखि' ओहि दृष्टि के छै जे बिसरल पाठ के देखै के साहस केलक, आरो 'साल' ओहि युग के छै जाहि में ओहि दृष्टि के पूरा करै के साधन अनुपलब्ध छेलै —

'अखियासल' नाम अपने ई द्वैध के व्यञ्जना करै छै। तइयो मैथिली आलोचना आरो साहित्येतिहास में 'अखियासल' के स्थान जरूरी छै। ई पोथी इतिहास के बन्द कपाट खोलि कहै छै जे साहित्य के वास्तविक परम्परा केवल प्रसिद्ध नाम के सूची नै — ऊ स्मृति, विस्मृति, संघर्ष, भाषा, संस्था, पाठक आरो जनजीवनक संयुक्त समान्तर इतिहास छै।

इहे द्वैध — गुण आ सीमा के अभिन्नता — 'अखियासल' के विदेह समान्तर इतिहास-आन्दोलन के एक पूर्व-रूप बनावै हय। जे रिक्तता के रमानन्द झा नामाङ्कित करै हथिन — सर्वसुलभता, अभिलेखीकरण, पुनर्मूल्याङ्कन — ओ रिक्तता के भरब परवर्ती पीढ़ी के ऐतिहासिक दायित्व बन जाय हय। ई अर्थ में, कृति के सबसे बड़ सीमा इहे ओकर सबसे बड़ उत्तराधिकार हय। 'आँखि' ओ दृष्टि के हय कि बिसरल पाठ के देखे के साहस कैलक, आ 'साल' ओ युग के हय कि में ओ दृष्टि के पूर्ण करे के साधन अनुपलब्ध हल — 'अखियासल' नाम खुद ई द्वैध के व्यञ्जना करै हय। तबो मैथिली आलोचना आ साहित्येतिहास में 'अखियासल' के स्थान महत्त्वपूर्ण हय। ई पोथी इतिहास के बन्द कपाट खोलि कहै हय कि साहित्य के वास्तविक परम्परा खाली प्रसिद्ध नाम के सूची न — ओ स्मृति, विस्मृति, संघर्ष, भाषा, संस्था, पाठक आ जनजीवन के संयुक्त समान्तर इतिहास हय।

इएह द्वैध — गुण आ सीमाक अभिन्नता — 'अखियासल'केँ विदेह समान्तर इतिहास-आन्दोलनक एक पूर्व-रूप बनबैत अछि। जे रिक्ततातेँ रमानन्द झा नामाङ्कित करैत छथि — सर्वसुलभता, अभिलेखीकरण, पुनर्मूल्याङ्कन — ओहि रिक्ततातेँ भरब परवर्ती पीढ़ीक ऐतिहासिक दायित्व बनि जाइत अछि। एहि अर्थमे, कृतिक सभसँ पैघ सीमा इएह ओकर सभसँ पैघ उत्तराधिकार थिक। 'आँखि' ओहि दृष्टिक थिक जे बिसरल पाठकेँ देखबाक साहस केलक, आ 'साल' ओहि युगक थिक जाहिमे ओहि दृष्टिकेँ पूर्ण करबाक साधन अनुपलब्ध छल — 'अखियासल' नाम स्वयं एहि द्वैधक व्यञ्जना करैत अछि। तथापि मैथिली आलोचना आ साहित्येतिहासमे 'अखियासल'क स्थान महत्त्वपूर्ण अछि। ई पोथी इतिहासक बन्द कपाट खोलि कहैत अछि जे साहित्यक वास्तविक परम्परा केवल प्रसिद्ध नामक सूची नहि — ओ स्मृति, विस्मृति, संघर्ष, भाषा, संस्था, पाठक आ जनजीवनक संयुक्त समान्तर इतिहास अछि।

परिशिष्ट: संग्रह के अध्याय-सूची (मूल परकाशन-स्रोत सहित)

परिशिष्ट: संग्रह के अध्याय-सूची (मूल प्रकाशन-स्रोत सहित)

परिशिष्ट : संग्रहक अध्याय-सूची (मूल प्रकाशन-स्रोत सहित)

क्रम	अध्याय / विवेच्य रचनाकार	मूल परकाशन-स्रोत आरो तिथि
१	मैथिली के पहिलों कथाकार पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर आरो 'चन्द्रप्रभा'	मिथिला मिहिर,१८ अगस्त १९८५
२	मैथिली के पहिलों उपन्यासकार पं॰ जीवछ मिश्र आरो 'रामेश्वर'	मिथिला मिहिर,मार्च १९७७
३	रासबिहारी लाल दास आरो उपन्यास 'सुमति'	हालचाल,१/१९८६
४	जनार्दन झा 'जनसीदन' आरो 'निर्दयी सासु'	मिथिला मिहिर,जून १९८२
५	पं॰ जनार्दन झा — एक बिसरल साहित्यसेवी	मिथिला मिहिर दैनिक,२९-७-१९८५
६	पं॰ त्रिलोचन झा (बेतिया) — बिसरल मातृभाषानुरागी	भाखा,सितम्बर १९८७
७	राष्ट्रीय चेतना के पुरोधा कवि यदुनाथ झा 'यदुवर'	भाखा,१९८८
८	कवि-सेनानी छेदी झा 'द्विजवर'	मिथिला मिहिर दैनिक,अगस्त १९८५
९	कुमार गंगानन्द सिंह के कथा-संवेदना	मिथिला मिहिर,२४-१०-१९७६
१०	कवीश्वरी हरिलता के वैष्णवता	मैथिली प्रकाश,सितम्बर

क्रम	अध्याय / विवेच्य रचनाकार	मूल परकाशन-स्रोत आरो तिथि
		१९७२
११	कविवर श्यामानन्द झा के काव्य-वस्तु	मिथिला मिहिर, २३-११-१९७५
१२	बाबू लक्ष्मीपति सिंह आरो मैथिली पत्रकारिता	बसात, प्रवेशांक १९८४
१३	कवि चूड़ामणि मधुप के गीति-साहित्य	मिथिला मिहिर, अक्टूबर १९८७
१४	भट्टीकाव्य के परम्परा आरो मधुपजी	मिथिला मिहिर, १२/१९८७
१५	काञ्चीनाथ झा 'किरण' के कथा-जगत	मिथिला मिहिर, मइ १९७७
१६	मैथिली उपन्यास के आलोक में 'चन्द्रग्रहण' के नारी-पात्र	अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, १९८९
१७	प्रो॰ हरिमोहन झा एवं हुनकर 'चर्चरी'	मैथिली अकादमी पत्रिका, मार्च १९८४
१८	कविवर यात्री के स्तम्भ-लेखन	मिथिला मिहिर
१९	कविवर आरसी	मैथिली अकादमी पत्रिका, १९८२
२०	उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' आरो हुनकर कविता	मैथिली अकादमी पत्रिका, १९८९
२१	शुद्धतावादी कथाकार उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'	मिथिला मिहिर
२२	पं॰ राजेश्वर झा — व्यक्तित्व ऊ कृतित्व	मिहिर, १९७८

क्रम	अध्याय / विवेच्य रचनाकार	मूल परकाशन-स्रोत आरो तिथि
२३	ललित के कथा में परिवेश के संक्रान्त जिनगी	मिहिर,१९७५
२४	धीरेन्द्र के कथा के सामाजिक सन्दर्भ	जून १९८८
२५	प्रभास के कथा-यात्रा	मिथिला मिहिर,१९८६
क्रम	अध्याय / विवेच्य रचनाकार	मूल प्रकाशन-स्रोत ओ तिथि
१	मैथिली के पहिल कथाकार पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा'	मिथिला मिहिर,१८ अगस्त १९८५
२	मैथिली के प्रथम उपन्यासकार पं॰ जीवछ मिश्र आ 'रामेश्वर'	मिथिला मिहिर,मार्च १९७७
३	रासबिहारी लाल दास आ उपन्यास 'सुमति'	हालचाल,१/१९८६
४	जनार्दन झा 'जनसीदन' आ 'निर्दयी सासु'	मिथिला मिहिर,जून १९८२
५	पं॰ जनार्दन झा — एक बिसरल साहित्यसेवी	मिथिला मिहिर दैनिक,२९-७-१९८५
६	पं॰ त्रिलोचन झा (बेतिया)— बिसरल मातृभाषानुरागी	भाखा,सितम्बर १९८७
७	राष्ट्रीय चेतना के पुरोधा कवि यदुनाथ झा 'यदुवर'	भाखा,१९८८
८	कवि-सेनानी छेदी झा 'द्विजवर'	मिथिला मिहिर दैनिक,अगस्त १९८५
९	कुमार गंगानन्द सिंह के कथा-संवेदना	मिथिला मिहिर,२४-१०-१९७६

क्रम	अध्याय / विवेच्य रचनाकार	मूल परकाशन-स्रोत आरो तिथि
१०	कवीश्वरी हरिलता के वैष्णवता	मैथिली प्रकाश, सितम्बर १९७२
११	कविवर श्यामानन्द झा के काव्य-वस्तु	मिथिला मिहिर, २३-११-१९७५
१२	बाबू लक्ष्मीपति सिंह आ मैथिली पत्रकारिता	बसात, प्रवेशां के १९८४
१३	कवि चूड़ामणि मधुप के गीति-साहित्य	मिथिला मिहिर, अक्टूबर १९८७
१४	भट्टीकाव्य के परम्परा आ मधुपजी	मिथिला मिहिर, १२/१९८७
१५	काञ्चीनाथ झा 'किरण' के कथा-जगत	मिथिला मिहिर, मइ १९७७
१६	मैथिली उपन्यास के आलोक में 'चन्द्रग्रहण' के नारी-पात्र	अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, १९८९
१७	प्रो॰ हरिमोहन झा आ हुनकर 'चर्चरी'	मैथिली अकादमी पत्रिका, मार्च १९८४
१८	कविवर यात्री के स्तम्भ-लेखन	मिथिला मिहिर
१९	कविवर आरसी	मैथिली अकादमी पत्रिका, १९८२
२०	उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' आ हुनकर कविता	मैथिली अकादमी पत्रिका, १९८९
२१	शुद्धतावादी कथाकार उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'	मिथिला मिहिर

क्रम	अध्याय / विवेच्य रचनाकार	मूल परकाशन-स्रोत आरो तिथि
२२	पं॰ राजेश्वर झा — व्यक्तित्व ओ कृतित्व	मिहिर,१९७८
२३	ललित के कथा में परिवेश के संक्रान्त जीवन	मिहिर,१९७५
२४	धीरेन्द्र के कथा के सामाजिक सन्दर्भ	जून १९८८
२५	प्रभास के कथा-यात्रा	मिथिला मिहिर,१९८६
क्रम	**अध्याय / विवेच्य रचनाकार**	**मूल प्रकाशन-स्रोत ओ तिथि**
१	मैथिलीक पहिल कथाकार पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा'	मिथिला मिहिर,१८ अगस्त १९८५
२	मैथिलीक प्रथम उपन्यासकार पं॰ जीवछ मिश्र आ 'रामेश्वर'	मिथिला मिहिर,मार्च १९७७
३	रासबिहारी लाल दास आ उपन्यास 'सुमति'	हालचाल,१/१९८६
४	जनार्दन झा 'जनसीदन' आ 'निर्दयी सासु'	मिथिला मिहिर,जून १९८२
५	पं॰ जनार्दन झा — एक बिसरल साहित्यसेवी	मिथिला मिहिर दैनिक,२९-७-१९८५
६	पं॰ त्रिलोचन झा (बेतिया) — बिसरल मातृभाषानुरागी	भाखा,सितम्बर १९८७
७	राष्ट्रीय चेतनाक पुरोधा कवि यदुनाथ झा 'यदुवर'	भाखा,१९८८
८	कवि-सेनानी छेदी झा 'द्विजवर'	मिथिला मिहिर दैनिक,अगस्त १९८५

क्रम	अध्याय / विवेच्य रचनाकार	मूल परकाशन-स्रोत आरो तिथि
९	कुमार गंगानन्द सिंहक कथा-संवेदना	मिथिला मिहिर, २४-१०-१९७६
१०	कवीश्वरी हरिलताक वैष्णवता	मैथिली प्रकाश, सितम्बर १९७२
११	कविवर श्यामानन्द झाक काव्य-वस्तु	मिथिला मिहिर, २३-११-१९७५
१२	बाबू लक्ष्मीपति सिंह आ मैथिली पत्रकारिता	बसात, प्रवेशांक १९८४
१३	कवि चूड़ामणि मधुपक गीति-साहित्य	मिथिला मिहिर, अक्टूबर १९८७
१४	भट्टीकाव्यक परम्परा आ मधुपजी	मिथिला मिहिर, १२/१९८७
१५	काञ्चीनाथ झा 'किरण'क कथा-जगत	मिथिला मिहिर, मइ १९७७
१६	मैथिली उपन्यासक आलोकमे 'चन्द्रग्रहण'क नारी-पात्र	अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, १९८९
१७	प्रो॰ हरिमोहन झा एवं हुनक 'चर्चरी'	मैथिली अकादमी पत्रिका, मार्च १९८४
१८	कविवर यात्रीक स्तम्भ-लेखन	मिथिला मिहिर
१९	कविवर आरसी	मैथिली अकादमी पत्रिका, १९८२
२०	उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' आ हुनक कविता	मैथिली अकादमी पत्रिका, १९८९
२१	शुद्धतावादी कथाकार	मिथिला मिहिर

क्रम	अध्याय / विवेच्य रचनाकार	मूल परकाशन-स्रोत आरो तिथि
	उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'	
२२	पं॰ राजेश्वर झा — व्यक्तित्व ओ कृतित्व	मिहिर,१९७८
२३	ललितक कथामे परिवेशक संक्रान्त जीवन	मिहिर,१९७५
२४	धीरेन्द्रक कथाक सामाजिक सन्दर्भ	जून १९८८
२५	प्रभासक कथा-यात्रा	मिथिला मिहिर,१९८६

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

1. रमानन्द झा 'रमण', अखियासल, भारतीय भाषा संस्थान (सी.आइ.आइ.एल.), मैसूर, १९९५ ।

1. रमानन्द झा 'रमण', अखियासल, भारतीय भाषा संस्थान (सी.आइ.आइ.एल.), मैसूर, १९९५ ।

1. रमानन्द झा 'रमण', अखियासल, भारतीय भाषा संस्थान (सी.आइ.आइ.एल.), मैसूर, १९९५ ।

2. जयकान्त मिश्र, अ हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर (मैथिली साहित्य के इतिहास)।

2. जयकान्त मिश्र, अ हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर (मैथिली साहित्य के इतिहास)।

2. जयकान्त मिश्र, अ हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर (मैथिली साहित्यक इतिहास)।

3. करुणाकान्त झा, सोध-प्रबन्ध (मैथिली साहित्य-सम्बंधी), 'अखियासल' में उद्धृत।

3. करुणाकान्त झा, शोध-प्रबन्ध (मैथिली साहित्य-सम्बन्धी), 'अखियासल'में उद्धृत।

3. करुणाकान्त झा, शोध-प्रबन्ध (मैथिली साहित्य-सम्बन्धी), 'अखियासल'मे उद्धृत।

4. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह: पहिलों मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग १, https://www.videha.co.in/new_page_1.htm

4. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग १, https://www.videha.co.in/new_page_1.htm

4. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग १, https://www.videha.co.in/new_page_1.htm

5. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह: पहिलों मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग २७, https://www.videha.co.in/new_page_27.htm

5. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग २७, https://www.videha.co.in/new_page_27.htm

5. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग २७, https://www.videha.co.in/new_page_27.htm

6. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह: पहिलों मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग २८, https://www.videha.co.in/new_page_28.htm

6. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग २८, https://www.videha.co.in/new_page_28.htm

6. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग २८, https://www.videha.co.in/new_page_28.htm

7. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह: पहिलों मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग ९०, https://www.videha.co.in/new_page_90.htm

7. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग ९०, https://www.videha.co.in/new_page_90.htm

7. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग ९०, https://www.videha.co.in/new_page_90.htm

8. गजेन्द्र ठाकुर, रचना-सङ्कलन, विदेह: पहिलों मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, https://www.videha.co.in/gajenthakur.htm

8. गजेन्द्र ठाकुर, रचना-सङ्कलन, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, https://www.videha.co.in/gajenthakur.htm

8. गजेन्द्र ठाकुर, रचना-सङ्कलन, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, https://www.videha.co.in/gajenthakur.htm

9. मूल निबन्ध सब्भे के पहिलों-परकाशन पत्र-पत्रिका: मिथिला मिहिर, मिथिलामोद, भाखा, मैथिली अकादमी पत्रिका, बसात, हालचाल, मैथिली प्रकाश आरो अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन/परिषद्क स्मारिका (१९७२–१९८९)।

9. मूल निबन्ध सब के प्रथम-प्रकाशन पत्र-पत्रिका: मिथिला मिहिर, मिथिलामोद, भाखा, मैथिली अकादमी पत्रिका, बसात, हालचाल, मैथिली

प्रकाश आ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन/परिषद् के स्मारिका (१९७२–१९८९)।

9. मूल निबन्ध सभक प्रथम-प्रकाशन पत्र-पत्रिका : मिथिला मिहिर, मिथिलामोद, भाखा, मैथिली अकादमी पत्रिका, बसात, हालचाल, मैथिली प्रकाश तथा अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन/परिषद्क स्मारिका (१९७२–१९८९)।

आलेख ०५ · आलोचना-सिद्धान्त आ समालोचनाक परिप्रेक्ष्य

हिआओल : बहुपद्धतीय आलोचनात्मक आस्वाद

सारांश

'अखियासल', 'बेसाहल' आरो 'भजारल' के अनन्तर डा. रमानन्द झा 'रमण' के ई चौथका आलोचना-संग्रह 'हिआओल' (२०१२) मैथिली आलोचना के ओहि विरल परम्परा के कड़ी छै, जे में आलोचना गुटबन्दी के चपेट सें मुक्त होय कें पाठ, पत्र-पत्रिका आरो अभिलेख के परमाण मानि चलै छै।

बीजशब्द

हिआओल : बहुपद्धतीय आलोचनात्मक आस्वाद · आलोचना-पद्धति · भारतीय काव्यशास्त्र · मैथिली समालोचना · विदेह समानान्तर दृष्टि

'हिआओल' : भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आरो विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद

'हिआओल': भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि से विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद

'हिआओल' : भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद

-गजेन्द्र ठाकुर

-गजेन्द्र ठाकुर

-गजेन्द्र ठाकुर

(डा. रमानन्द झा 'रमण', मैथिली आलोचना, अखियासल प्रकाशन, लालगंज, सरिसब-पाही, मधुबनी, २०१२)

(डा. रमानन्द झा 'रमण', मैथिली आलोचना, अखियासल प्रकाशन, लालगंज, सरिसब-पाही, मधुबनी, २०१२)

(डा. रमानन्द झा 'रमण', मैथिली आलोचना, अखियासल प्रकाशन, लालगंज, सरिसब-पाही, मधुबनी, २०१२)

१. उपक्रम : पोथी-परिचय आरो 'हिआओल' के अरथ-गरिमा

१. उपक्रम: पोथी-परिचय आ'हिआओल' के अर्थ-गरिमा

१. उपक्रम : पोथी-परिचय आ 'हिआओल'क अर्थ-गरिमा

'अखियासल', 'बेसाहल' आरो 'भजारल' के अनन्तर डा. रमानन्द झा 'रमण' के ई चौथका आलोचना-संग्रह 'हिआओल' (२०१२) मैथिली आलोचना के ओहि विरल परम्परा के कड़ी छै, जे में आलोचना गुटबन्दी के चपेट सें मुक्त होय कें पाठ, पत्र-पत्रिका आरो अभिलेख के परमाण मानि चलै छै। पोथी के नामकरणे में लेखक के विनम्र प्रविधि के घोषणा छै — 'हिआओल' यानी थाहल, अन्दाजल। ई सबद-चयन आत्मश्लाघा के स्थान पर अनुसन्धान के अनन्त सम्भावना के स्वीकार छै; क्षेमेन्द्र के औचित्य-सिद्धान्त के भाषा में कही तें शीर्षकहि में प्रबन्धौचित्य के बीज रोपल छै। लेखकीय में अपने स्वीकारल गेलै जे ई सब आलेख मनोरंजक साहित्य के कोटि के नै छै, 'अरबेधि-अरबेधि' अइसन विषयक चयन कैल गेलै जेकर अध्ययन अपेक्षित छै, मतरकि लोक-नजर जहाँ प्रायः नै जाय छै। पण्डित गोविन्द झा आवरण-टिप्पणी में मार्मिक सबद में लिखने छै, जे मैथिली-जगत के आनो नामी आलोचक के पूर्वज-साहित्य आरो परम्परा में सड़ाइन गन्ध लागैछै, मतरकि रमणजी के 'पुरान चाउरक भात टटका दहीक संग' प्रिय छै — यानी परम्परा के संरक्षण आरो नव मूल्याङ्कन दुनू काज ई पूर्वज-पूजा बूझि करैछै। फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' पुरोवाक्में उचिते लिखने छै, जे ई निबन्ध-संग्रह में आलोचना-प्रत्यालोचना के संगम छै आरो लेखक के मकसद ककरो प्रतिष्ठा के धूमिल करना नै, विमर्श हेतु बिन्दु सब हाजिर करना छै — 'वादे वादे जायते तत्त्वबोधः'।

'अखियासल', 'बेसाहल' आ 'भजारल' के बाद डा. रमानन्द झा'रमण' के ई चारिम आलोचना-संग्रह'हिआओल' (२०१२) मैथिली आलोचना के ओ विरल परम्परा के कड़ी हय जेमें आलोचना गुटबन्दी के चपेट से मुक्त होके पाठ, पत्र-पत्रिका आ अभिलेख के प्रमाण मानके चलै हय। पोथी के नामकरणे में लेखक के विनम्र प्रविधिक घोषणा हय — 'हिआओल' अर्थात् थाहल, अन्दाजल। ई

शब्द-चयन आत्मश्लाघा के स्थान पर अनुसन्धान के अनन्त सम्भावना के स्वीकार हय; क्षेमेन्द्र के औचित्य-सिद्धान्त के भाषा में कही त शीर्षकहि में प्रबन्धौचित्य के बीज रोपल हय। लेखकीय में खुद स्वीकारल गेल हय कि ई सब आलेख मनोरंजक साहित्य के कोटि के न हय, 'अरबेधि-अरबेधि' अइसन विषय के चयन कैल गेल हय जकर अध्ययन अपेक्षित हय मुदा लोक-दृष्टि जहाँ प्रायः न जाय हय। पण्डित गोविन्द झा आवरण-टिप्पणी में मार्मिक शब्द में लिखने हथिन कि मैथिली-जगत के अउरी नामी आलोचक के पूर्वज-साहित्य आ परम्परा में सड़ाइन गन्ध लगै हय, मुदा रमणजी के 'पुरान चाउर के भात टटका दही के संग' प्रिय हय — अर्थात् परम्परा के संरक्षण आ नव मूल्याङ्कन दुनो काज ई पूर्वज-पूजा बूझि करै हथिन। फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' पुरोवाक्मे उचिते लिखने हथिन कि ई निबन्ध-संग्रह में आलोचना-प्रत्यालोचना के संगम हय आ लेखक के उद्देश्य ककरो प्रतिष्ठा के धूमिल करब न, विमर्श हेतु बिन्दु सब उपस्थित करब हय — 'वादे वादे जायते तत्त्वबोधः'।

'अखियासल', 'बेसाहल' आ 'भजारल'क अनन्तर डा. रमानन्द झा 'रमण'क ई चारिम आलोचना-संग्रह 'हिआओल' (२०१२) मैथिली आलोचनाक ओहि विरल परम्पराक कड़ी थिक जाहिमे आलोचना गुटबन्दीक चपेटसँ मुक्त भऽ पाठ, पत्र-पत्रिका आ अभिलेखकेँ प्रमाण मानि चलैत अछि। पोथीक नामकरणेमे लेखकक विनम्र प्रविधिक घोषणा अछि — 'हिआओल' अर्थात् थाहल, अन्दाजल। ई शब्द-चयन आत्मश्लाघाक स्थान पर अनुसन्धानक अनन्त सम्भावनाक स्वीकार थिक; क्षेमेन्द्रक औचित्य-सिद्धान्तक भाषामे कही तँ शीर्षकहिमे प्रबन्धौचित्यक बीज रोपल अछि। लेखकीयमे स्वयं स्वीकारल गेल अछि जे ई सभ आलेख मनोरंजक साहित्यक कोटिक नहि थिक, 'अरबेधि-अरबेधि' एहन विषयक चयन कएल गेल अछि जकर अध्ययन अपेक्षित छैक मुदा लोक-दृष्टि जतऽ प्रायः नहि जाइत अछि। पण्डित गोविन्द झा आवरण-टिप्पणीमे मार्मिक शब्दमे लिखने छथि जे मैथिली-जगतक आनो नामी आलोचककेँ पूर्वज-साहित्य आ परम्परामे सड़ाइन गन्ध लगैत छनि, मुदा रमणजीकेँ 'पुरान चाउरक भात टटका दहीक संग' प्रिय छनि — अर्थात् परम्पराक संरक्षण आ नव मूल्याङ्कन दुनू काज ई पूर्वज-पूजा बूझि करैत छथि। फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' पुरोवाक्मे उचिते लिखने छथि जे एहि निबन्ध-

संग्रहमे आलोचना-प्रत्यालोचनाक संगम अछि आ लेखकक उद्देश्य ककरो प्रतिष्ठाकेँ धूमिल करब नहि, विमर्श हेतु बिन्दु सभ उपस्थित करब थिक — 'वादे वादे जायते तत्त्वबोधः'।

ई पोथी में भाषा-विज्ञान, साहित्येतिहास, प्रत्यालोचना, कथा, कविता, महाकाव्य, लोकगाथा, लोकगीत, पत्रकारिता, प्राकृतिक विपत्ति, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद आरो भाषिक उपनिवेशवाद सें सम्बन्धित सत्रह अध्याय समाहित छै। विषय-सूची सें स्पष्ट होय छै जे संग्रह के विस्तार ग्रियर्सन के भाषा-अध्ययन सें आरम्भ होय कें उपनिवेशवाद के नव चालि तक जाय छै। सत्रह निबन्ध के ई संग्रह तीन वर्ग में सहजहिं बँटि जाय छै। पहिलों, भाषा-चिन्तन आरो भाषा-राजनीति : मैथिली आरो मिथिला भाषा के अध्ययन; रमानाथ झा आरो मिथिला भाषा; मैथिली लोकगीत — अवस्था आरो संरक्षण; उपनिवेशवाद के नऽव चालि। दोसरका, व्यक्ति ओ कृति-केन्द्रित प्रत्यालोचना : प्रत्यालोचक किरणजी; उपेक्षित के आँखि सें कन्यादान; अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह; यात्री के भाषा; मनमोहन झा के कथा के अनालोचित पक्ष। तेसरका, विधा ओ प्रवृत्ति-केन्द्रित इतिहास-नजर : पत्रकारिता के विकास में प्रवासी के योगदान; लोकगाथा में दीनाभद्री; मैथिली कथा के विकास — कुछ नव तथ्य; कविता में मिथिला के भूकम्प; कथी लऽ लगेलिऐ हे कोसी माइ; महाकाव्य में युग-सन्दर्भ; नऽव गीत में समाज-चेतना; मैथिली कविता के वर्तमान धारा। ई त्रिवर्गीय बनावट में लेखक के पूरा आलोचकीय व्यक्तित्व — भाषाशास्त्री, पाठालोच के, इतिहासकार आरो प्रत्यालोचक — के चारू रूप एकहि ठाम मिलैछै।

ई पोथी में भाषा-विज्ञान, साहित्येतिहास, प्रत्यालोचना, कथा, कविता, महाकाव्य, लोकगाथा, लोकगीत, पत्रकारिता, प्राकृतिक विपत्ति, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद आ भाषिक उपनिवेशवाद से सम्बन्धित सत्रह अध्याय समाहित हय। विषय-सूची से साफ होय हय कि संग्रह के विस्तार ग्रियर्सन के भाषा-अध्ययन से आरम्भ होके उपनिवेशवाद के नव चालि तक जाय हय। सत्रह निबन्ध के ई संग्रह तीन वर्ग में सहजहिं बँटि जाय हय। पहिल, भाषा-चिन्तन आ भाषा-राजनीति: मैथिली आ मिथिला भाषा के अध्ययन; रमानाथ झा आ मिथिला भाषा; मैथिली लोकगीत — अवस्था आ संरक्षण; उपनिवेशवाद के नऽव चालि। दोसर, व्यक्ति ओ कृति-केन्द्रित प्रत्यालोचना: प्रत्यालोचक

किरणजी; उपेक्षित के आँखि से कन्यादान; अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह; यात्री के भाषा; मनमोहन झा के कथा के अनालोचित पक्ष। तेसर, विधा ओ प्रवृत्ति-केन्द्रित इतिहास-दृष्टि: पत्रकारिता के विकास में प्रवासी के योगदान; लोकगाथा में दीनाभद्री; मैथिली कथा के विकास — किछु नव तथ्य; कविता में मिथिला के भूकम्प; कथी ले लगेलिऐ हे कोसी माइ; महाकाव्य में युग-सन्दर्भ; नऽव गीत में समाज-चेतना; मैथिली कविता के वर्तमान धारा। ई त्रिवर्गीय संरचना में लेखक के समग्र आलोचकीय व्यक्तित्व — भाषाशास्त्री, पाठालोच के, इतिहासकार आ प्रत्यालोचक — के चारू रूप एके ठाम भेटै हय।

एहि पोथीमे भाषा-विज्ञान, साहित्येतिहास, प्रत्यालोचना, कथा, कविता, महाकाव्य, लोकगाथा, लोकगीत, पत्रकारिता, प्राकृतिक विपत्ति, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद आ भाषिक उपनिवेशवादसँ सम्बन्धित सत्रह अध्याय समाहित अछि। विषय-सूचीसँ स्पष्ट होइत अछि जे संग्रहक विस्तार ग्रियर्सनक भाषा-अध्ययनसँ आरम्भ भऽ उपनिवेशवादक नव चालि धरि जाइत अछि। सत्रह निबन्धक ई संग्रह तीन वर्गमे सहजहिं बँटि जाइत अछि। पहिल, भाषा-चिन्तन आ भाषा-राजनीति : मैथिली एवं मिथिला भाषाक अध्ययन; रमानाथ झा आ मिथिला भाषा; मैथिली लोकगीत — अवस्था एवं संरक्षण; उपनिवेशवादक नऽव चालि। दोसर, व्यक्ति ओ कृति-केन्द्रित प्रत्यालोचना : प्रत्यालोचक किरणजी; उपेक्षितक आँखिसँ कन्यादान; अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह; यात्रीक भाषा; मनमोहन झाक कथाक अनालोचित पक्ष। तेसर, विधा ओ प्रवृत्ति-केन्द्रित इतिहास-दृष्टि : पत्रकारिताक विकासमे प्रवासीक योगदान; लोकगाथामे दीनाभद्री; मैथिली कथाक विकास — किछु नव तथ्य; कवितामे मिथिलाक भूकम्प; कथी लऽ लगेलिऐ हे कोसी माइ; महाकाव्यमे युग-सन्दर्भ; नऽव गीतमे समाज-चेतना; मैथिली कविताक वर्तमान धारा। एहि त्रिवर्गीय संरचनामे लेखकक समग्र आलोचकीय व्यक्तित्व — भाषाशास्त्री, पाठालोचक, इतिहासकार आ प्रत्यालोचक — क चारू रूप एकहि ठाम भेटैत अछि।

ई पोथी एकरेखीय साहित्येतिहास नै, बल्कि प्रचलित निष्कर्ष सब के प्रश्नांकित करै अनेक समान्तर आख्यान के संकलन छै। लेखक के मुख्य प्रवृत्ति छै — विस्मृत लेखक आरो रचना के फेर सें प्रतिष्ठित करना, पूर्ववर्ती

आलोचना के अधूरापन देखाना, लोक आरो शिष्ट के कृत्रिम विभाजन तोड़ब, मैथिली भाषा-साहित्य के विकास के सत्ता, समाज, भूगोल आरो इतिहास सें जोड़ना, आरो मुख्य इतिहास के पार्श्व में दबाओल स्त्री, दलित, श्रमिक, प्रवासी, ग्रामीण, बाढ़िपीड़ित आरो भाषिक समुदाय के दृश्य बनाना। लेखक अपने आलोचना के रचना के भाषा, शिल्प, तथ्य, कथ्य, पात्र आरो चरित्र के गुन-दोष के बारीक विवेचन मानैछै। हुनका लेली आलोचना दोषान्वेषण खाली नै, गुन के आलोकन सेहो छै, आरो साहित्य के सृजन सें बेसी ओकर संरक्षण ओ मूल्याङ्कन के ओ महत्त्व दैछै।

ई पोथी एकरेखीय साहित्येतिहास न, बल्कि प्रचलित निष्कर्ष सब के प्रश्नांकित करै अनेक समान्तर आख्यान के संकलन हय। लेखक के मुख्य प्रवृत्ति हय — विस्मृत लेखक आ रचना के फेर प्रतिष्ठित करब, पूर्ववर्ती आलोचना के अधूरापन देखायब, लोक आ शिष्ट के कृत्रिम विभाजन तोड़ब, मैथिली भाषा-साहित्य के विकास के सत्ता, समाज, भूगोल आ इतिहास से जोड़ब, आ मुख्य इतिहास के पार्श्व में दबावल स्त्री, दलित, श्रमिक, प्रवासी, ग्रामीण, बाढ़िपीड़ित आ भाषिक समुदाय के दृश्य बनायब। लेखक खुद आलोचना के रचना के भाषा, शिल्प, तथ्य, कथ्य, पात्र आ चरित्र के गुण-दोष के सूक्ष्म विवेचन मानै हथिन। हुनका खातिर आलोचना दोषान्वेषण खाली न, गुण के आलोकन भी हय, आ साहित्य के सृजन से बेसी ओकर संरक्षण ओ मूल्याङ्कन के ओ महत्त्व दे हथिन।

ई पोथी एकरेखीय साहित्येतिहास नहि, अपितु प्रचलित निष्कर्ष सभकेँ प्रश्नांकित करैत अनेक समान्तर आख्यानक संकलन अछि। लेखकक मुख्य प्रवृत्ति अछि — विस्मृत लेखक आ रचनाकेँ पुनः प्रतिष्ठित करब, पूर्ववर्ती आलोचनाक अधूरापन देखायब, लोक आ शिष्टक कृत्रिम विभाजन तोड़ब, मैथिली भाषा-साहित्यक विकासकेँ सत्ता, समाज, भूगोल आ इतिहाससँ जोड़ब, तथा मुख्य इतिहासक पार्श्वमे दबाओल स्त्री, दलित, श्रमिक, प्रवासी, ग्रामीण, बाढ़िपीड़ित आ भाषिक समुदायकेँ दृश्य बनायब। लेखक स्वयं आलोचनाकेँ रचनाक भाषा, शिल्प, तथ्य, कथ्य, पात्र आ चरित्रक गुण-दोषक सूक्ष्म विवेचन मानैत छथि। हुनका लेल आलोचना दोषान्वेषण मात्र नहि, गुणक आलोकन

सेहो अछि, आ साहित्यक सृजनसँ बेसी ओकर संरक्षण ओ मूल्याङ्कनकेँ ओ महत्त्व दैत छथि।

२. समीक्षा-पद्धति : त्रिविध कसौटी

२. समीक्षा-पद्धति: त्रिविध कसौटी

२. समीक्षा-पद्धति : त्रिविध कसौटी

परस्तुत मूल्याङ्कन तीन कसौटी पर आधारित छै।

प्रस्तुत मूल्याङ्कन तीन कसौटी पर आधारित हय।

प्रस्तुत मूल्याङ्कन तीन कसौटी पर आधारित अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र के आधार

भारतीय काव्यशास्त्र के आधार

भारतीय काव्यशास्त्रक आधार

पहिलों कसौटी भारतीय काव्यशास्त्र छै — भरत के रस-निष्पत्ति, आनन्दवर्धन के ध्वनि-सिद्धान्त, कुन्तक के वक्रोक्ति, क्षेमेन्द्र के औचित्य-विचार, साधारणीकरण, लोकमंगल-नजर आरो न्यायदर्शन के परमाण-मीमांसा (विशेषतः अभाव-परमाण के प्रश्न, जे अपने रमणजी के तर्क-पद्धति में बार-बार झलकैछै)। रस-सिद्धान्त रचना में अन्ततः उत्पन्न भावानुभूति के परीक्षा करैछै। ध्वनि-सिद्धान्त प्रत्यक्ष कथन के पीछे निहित सामाजिक, राजनीतिक आरो सांस्कृतिक अरथ खोलै छै। वक्रोक्ति-सिद्धान्त सामान्य कथन सें हटिकें रचनात्मक भाषा, प्रतीक, व्यङ्ग्य आरो विचलन के सुन्नरता देखैछै। औचित्य-सिद्धान्त विषय, भाषा, पात्र, परसंग आरो निष्कर्ष के परस्पर संगति के जाँच करैछै। साधारणीकरण देखैछै जे व्यक्तिगत अनुभव कोना सामूहिक अनुभव बनैछै। लोकमंगल-नजर साहित्य के सामाजिक उपयोगिता, अन्याय-विरोध आरो जनहित के मूल्याङ्कन करैछै।

पहिल कसौटी भारतीय काव्यशास्त्र हय — भरत के रस-निष्पत्ति, आनन्दवर्धन के ध्वनि-सिद्धान्त, कुन्तक के वक्रोक्ति, क्षेमेन्द्र के औचित्य-विचार, साधारणीकरण, लोकमंगल-दृष्टि आ न्यायदर्शन के प्रमाण-मीमांसा (विशेषतः अभाव-प्रमाण के प्रश्न, जे खुद रमणजी के तर्क-पद्धति में बेरि-बेरि झलकै हय)।

रस-सिद्धान्त रचना में अन्त में पैदा भावानुभूति के परीक्षा करै हय। ध्वनि-सिद्धान्त प्रत्यक्ष कथन के पीछे निहित सामाजिक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक अर्थ खोलै हय। वक्रोक्ति-सिद्धान्त सामान्य कथन से हटिकऽ रचनात्मक भाषा, प्रतीक, व्यङ्ग्य आ विचलन के सौन्दर्य देखै हय। औचित्य-सिद्धान्त विषय, भाषा, पात्र, प्रसंग आ निष्कर्ष के परस् पर संगति के जाँच करै हय। साधारणीकरण देखै हय कि व्यक्तिगत अनुभव कइसे सामूहिक अनुभव बनै हय। लोकमंगल-दृष्टि साहित्य के सामाजिक उपयोगिता, अन्याय-विरोध आ जनहित के मूल्याङ्कन करै हय।

पहिल कसौटी भारतीय काव्यशास्त्र थिक — भरतक रस-निष्पत्ति, आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्त, कुन्तकक वक्रोक्ति, क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचार, साधारणीकरण, लोकमंगल-दृष्टि आ न्यायदर्शनक प्रमाण-मीमांसा (विशेषतः अभाव-प्रमाणक प्रश्न, जे स्वयं रमणजीक तर्क-पद्धतिमे बेरि-बेरि झलकैत अछि)। रस-सिद्धान्त रचनामे अन्ततः उत्पन्न भावानुभूतिक परीक्षा करैत अछि। ध्वनि-सिद्धान्त प्रत्यक्ष कथनक पाछाँ निहित सामाजिक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक अर्थ खोलैत अछि। वक्रोक्ति-सिद्धान्त सामान्य कथनसँ हटिकऽ रचनात्मक भाषा, प्रतीक, व्यङ्ग्य आ विचलनक सौन्दर्य देखैत अछि। औचित्य-सिद्धान्त विषय, भाषा, पात्र, प्रसंग आ निष्कर्षक परस्पर संगतिक जाँच करैत अछि। साधारणीकरण देखैत अछि जे व्यक्तिगत अनुभव कोना सामूहिक अनुभव बनैत अछि। लोकमंगल-दृष्टि साहित्यक सामाजिक उपयोगिता, अन्याय-विरोध आ जनहितक मूल्याङ्कन करैत अछि।

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त के आधार

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त के आधार

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आधार

दोसरका कसौटी पाश्चात्य सिद्धान्त छै — उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श, नव-इतिहासवाद, समाजभाषाविज्ञान, शैलीविज्ञान, पाठालोचन-शास्त्र, अभिग्रहण-सौन्दर्यशास्त्र (पाठक-अनुक्रिया), मार्क्सवादी ओ निम्नवर्गीय (अधीनस्थ) विमर्श, नारीवाद, दलित-विमर्श आरो पर्यावरणीय आलोचना। रूपवादी नजर

भाषिक विन्यास, बनावट, प्रतीक, पुनरावृत्ति आरो कथन-पद्धति के विश्लेषण करैछै। पाठक-प्रतिक्रिया नजर अरथ के स्थिर नै मानि पाठक के अनुभव सें निर्मित मानैछै। मार्क्सवादी नजर वर्ग, श्रम, उत्पादन, शोषण आरो सत्ता-बनावट केन्द्र में राखैछै। नारीवादी नजर स्त्री के मौन, देह, श्रम, शिक्षा, अधिकार आरो प्रतिनिधित्व के परीक्षण करैछै। दलित आरो अधीनस्थ नजर इतिहास में दबाओल समुदाय के स्वर आरो आत्मप्रतिनिधित्व खोजैछै। उत्तर-औपनिवेशिक नजर भाषा, शिक्षा, ज्ञान आरो संस्कृतिपर औपनिवेशिक प्रभुत्व के निरन्तरता के उद्घाटित करैछै। नव-इतिहासवादी नजर साहित्यिक कृति के अपन समय के सत्ता, संस्था, अर्थव्यवस्था आरो सामाजिक संघर्ष सें जोड़ै छै। पर्यावरणीय आलोचना मनुष्य, नदी, वनस्पति, पशु-पक्षी, भूमि आरो विपत्तिक परस्पर सम्बन्ध देखैछै।

दोसर कसौटी पाश्चात्य सिद्धान्त हय — उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श, नव-इतिहासवाद, समाजभाषाविज्ञान, शैलीविज्ञान, पाठालोचन-शास्त्र, अभिग्रहण-सौन्दर्यशास्त्र (पाठक-अनुक्रिया), मार्क्सवादी ओ निम्नवर्गीय (अधीनस्थ) विमर्श, नारीवाद, दलित-विमर्श आ पर्यावरणीय आलोचना। रूपवादी दृष्टि भाषिक विन्यास, संरचना, प्रतीक, पुनरावृत्ति आ कथन-पद्धति के विश्लेषण करै हय। पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टि अर्थ के स्थिर न मानके पाठक के अनुभव से निर्मित मानै हय। मार्क्सवादी दृष्टि वर्ग, श्रम, उत्पादन, शोषण आ सत्ता-संरचना केन्द्र में रखै हय। नारीवादी दृष्टि स्त्री के मौन, देह, श्रम, शिक्षा, अधिकार आ प्रतिनिधित्व के परीक्षण करै हय। दलित आ अधीनस्थ दृष्टि इतिहास में दबावल समुदाय के स्वर आ आत्मप्रतिनिधित्व खोजै हय। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि भाषा, शिक्षा, ज्ञान आ संस्कृति पर औपनिवेशिक प्रभुत्व के निरन्तरता के उद्घाटित करै हय। नव-इतिहासवादी दृष्टि साहित्यिक कृति के अपन समय के सत्ता, संस्था, अर्थव्यवस्था आ सामाजिक संघर्ष से जोड़ै हय। पर्यावरणीय आलोचना मनुष्य, नदी, वनस्पति, पशु-पक्षी, भूमि आ विपत्ति के परस् पर सम्बन्ध देखै हय।

दोसर कसौटी पाश्चात्य सिद्धान्त थिक — उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श, नव-इतिहासवाद, समाजभाषाविज्ञान, शैलीविज्ञान, पाठालोचन-शास्त्र, अभिग्रहण-

सौन्दर्यशास्त्र (पाठक-अनुक्रिया), मार्क्सवादी ओ निम्नवर्गीय (अधीनस्थ) विमर्श, नारीवाद, दलित-विमर्श आ पर्यावरणीय आलोचना। रूपवादी दृष्टि भाषिक विन्यास, संरचना, प्रतीक, पुनरावृत्ति आ कथन-पद्धतिक विश्लेषण करैत अछि। पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टि अर्थकेँ स्थिर नहि मानि पाठकक अनुभवसँ निर्मित मानैत अछि। मार्क्सवादी दृष्टि वर्ग, श्रम, उत्पादन, शोषण आ सत्ता-संरचनाकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। नारीवादी दृष्टि स्त्रीक मौन, देह, श्रम, शिक्षा, अधिकार आ प्रतिनिधित्वक परीक्षण करैत अछि। दलित आ अधीनस्थ दृष्टि इतिहासमे दबाओल समुदायक स्वर आ आत्मप्रतिनिधित्व खोजैत अछि। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि भाषा, शिक्षा, ज्ञान आ संस्कृतिपर औपनिवेशिक प्रभुत्वक निरन्तरताकेँ उद्घाटित करैत अछि। नव-इतिहासवादी दृष्टि साहित्यिक कृतिकेँ अपन समयक सत्ता, संस्था, अर्थव्यवस्था आ सामाजिक संघर्षसँ जोड़ैत अछि। पर्यावरणीय आलोचना मनुष्य, नदी, वनस्पति, पशु-पक्षी, भूमि आ विपत्तिक परस्पर सम्बन्ध देखैत अछि।

विदेह समान्तर इतिहास-नजर

विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि

विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि

तेसरका कसौटी विदेह समान्तर साहित्य-इतिहास के नजर छै, जे राजवंश, दरबार, शास्त्र, प्रतिष्ठित लेखक आरो संस्था के इतिहास के समानान्तर लोकजीवन के इतिहास लिखैछै आरो प्रतिष्ठान-पोषित प्रतिमानक स्थान पर अनालोचित, उपेक्षित, लोकधर्मी आरो अभिलेख-सिद्ध धारा केन्द्र में आनै छै। ई नजर में मिथिला केवल राजनीतिक सीमा नै, सांस्कृतिक भूगोल छै; भारत आरो नेपाल के मैथिली क्षेत्र एक दीर्घ सांस्कृतिक प्रवाहक अङ्ग छै; इतिहास राजा के संग किसान, स्त्री, दलित, मुसहर, श्रमिक, गायक, पत्रकार, प्रवासी आरो विपत्तिग्रस्त जनक सेहो होय छै; साहित्यिक इतिहास केवल प्रकाशित पोथी के नै, लोककण्ठ, व्रतकथा, गीत, अप्रकाशित पाण्डुलिपि आरो विस्मृत रचनाकार के सेहो होय छै; आरो नदी, बाढ़ि, भूकम्प, पलायन आरो भाषिक विस्थापन ऐतिहासिक सक्ति बनि उठै छै। ई तेसरका कसौटी ई पोथी के लेली विशेष सार्थक छै, कारण 'हिआओल' के अनेक अध्याय — 'अनालोचित कवि',

‘अनालोचित पक्ष’, ‘उपेक्षितक आँखिसँ’, ‘किछु नव तथ्य’ — अपने प्रति-प्रतिमान निर्माण के, यानी समान्तर इतिहास-लेखन के पूर्वाभ्यास छै। 'हिआओल' के मूल उपलब्धि इहे समान्तर इतिहास-बोध में निहित छै। ई मूल्याङ्कन के लगभग आधा भाग अध्याय सब के सीमा-विवेचन पर केन्द्रित छै — ई अपने रमणजी के घोषित सिद्धान्त के अनुकूल छै जे आलोचना अभिनन्दन-पत्र नै छै, आरो प्रीतिकर होना ओकरा लेली आवश्यक नै छै।

तेसर कसौटी विदेह समान्तर साहित्य-इतिहास के दृष्टि हय, जे राजवंश, दरबार, शास्त्र, प्रतिष्ठित लेखक आ संस्था के इतिहास के समानान्तर लोकजीवन के इतिहास लिखै हय आ प्रतिष्ठान-पोषित प्रतिमान के स्थान पर अनालोचित, उपेक्षित, लोकधर्मी आ अभिलेख-सिद्ध धारा केन्द्र में आनै हय। ई दृष्टि में मिथिला खाली राजनीतिक सीमा न, सांस्कृतिक भूगोल हय; भारत आ नेपाल के मैथिली क्षेत्र एक दीर्घ सांस्कृतिक प्रवाह के अङ्ग हय; इतिहास राजा के संग किसान, स्त्री, दलित, मुसहर, श्रमिक, गायक, पत्रकार, प्रवासी आ विपत्तिग्रस्त जन के भी होय हय; साहित्यिक इतिहास खाली प्रकाशित पोथी के न, लोककण्ठ, व्रतकथा, गीत, अप्रकाशित पाण्डुलिपि आ विस्मृत रचनाकार के भी होय हय; आ नदी, बाढ़ि, भूकम्प, पलायन आ भाषिक विस्थापन ऐतिहासिक शक्ति बनि उठै हय। ई तेसर कसौटी ई पोथी के खातिर विशेष सार्थक हय, कारण ‘हिआओल’ के अनेक अध्याय —'अनालोचित कवि’, ‘अनालोचित पक्ष’, ‘उपेक्षित के आँखि से’, ‘किछु नव तथ्य’ — खुद प्रति-प्रतिमान निर्माण के, अर्थात् समान्तर इतिहास-लेखन के पूर्वाभ्यास हय।'हिआओल' के मूल उपलब्धि एही समान्तर इतिहास-बोध में निहित हय। ई मूल्याङ्कन के लगभग आधा भाग अध्याय सभ के सीमा-विवेचन पर केन्द्रित हय — ई खुद रमणजी के घोषित सिद्धान्त के अनुकूल हय कि आलोचना अभिनन्दन-पत्र न हय आ प्रीतिकर होएब ओकरा खातिर आवश्यक न हय।

तेसर कसौटी विदेह समान्तर साहित्य-इतिहासक दृष्टि थिक, जे राजवंश, दरबार, शास्त्र, प्रतिष्ठित लेखक आ संस्थाक इतिहासक समानान्तर लोकजीवनक इतिहास लिखैत अछि, आ प्रतिष्ठान-पोषित प्रतिमानक स्थान पर अनालोचित, उपेक्षित, लोकधर्मी आ अभिलेख-सिद्ध धाराकेँ केन्द्रमे अनैत

अछि। एहि दृष्टिमे मिथिला केवल राजनीतिक सीमा नहि, सांस्कृतिक भूगोल अछि; भारत आ नेपालक मैथिली क्षेत्र एक दीर्घ सांस्कृतिक प्रवाहक अङ्ग अछि; इतिहास राजाक संग किसान, स्त्री, दलित, मुसहर, श्रमिक, गायक, पत्रकार, प्रवासी आ विपत्तिग्रस्त जनक सेहो होइत अछि; साहित्यिक इतिहास केवल प्रकाशित पोथीक नहि, लोककण्ठ, व्रतकथा, गीत, अप्रकाशित पाण्डुलिपि आ विस्मृत रचनाकारक सेहो होइत अछि; तथा नदी, बाढ़ि, भूकम्प, पलायन आ भाषिक विस्थापन ऐतिहासिक शक्ति बनि उठैत अछि। ई तेसर कसौटी एहि पोथीक लेल विशेष सार्थक अछि, कारण 'हिआओल'क अनेक अध्याय — 'अनालोचित कवि', 'अनालोचित पक्ष', 'उपेक्षितक आँखिसँ', 'किछु नव तथ्य' — स्वयं प्रति-प्रतिमान निर्माणक, अर्थात् समान्तर इतिहास-लेखनक पूर्वाभ्यास थिक। 'हिआओल'क मूल उपलब्धि एही समान्तर इतिहास-बोधमे निहित अछि। एहि मूल्याङ्कनक लगभग आधा भाग अध्याय सभक सीमा-विवेचन पर केन्द्रित अछि — ई स्वयं रमणजीक घोषित सिद्धान्तक अनुकूल थिक जे आलोचना अभिनन्दन-पत्र नहि थिक आ प्रीतिकर होएब ओकरा लेल आवश्यक नहि छैक।

३. अध्यायवार उपलब्धि आरो आलोचनात्मक आस्वाद

३. अध्यायवार उपलब्धि आ आलोचनात्मक आस्वाद

३. अध्यायवार उपलब्धि आ आलोचनात्मक आस्वाद

३.१ मैथिली आरो मिथिला भाषा के अध्ययन

३.१ मैथिली आ मिथिला भाषा के अध्ययन

३.१ मैथिली एवं मिथिला भाषाक अध्ययन

उद्घाटक निबन्ध कोलब्रुक (१८०१)सें ग्रियर्सन धरिक पश्चिमी भाषा-अध्ययन के कालक्रम परस्तुत करै ई मार्मिक सवाल उठाबैछै जे साहित्य-सर्जना के सुदीर्घ अविच्छिन्न परम्परा रहितहुँ मैथिली के व्याकरण सबसें पछाति काहे लिखलों गेलै। कोलब्रुक के ई संकीर्ण स्थापना जे मैथिली कोय समृद्ध भाषा नै छै आरो एकर कोय खास कवि नै छै, ओकरा विखण्डित करै बीम्स (१८७२), केलौग, हार्नले (१८८०) आरो अन्ततः ग्रियर्सन (१८८१) कोना मैथिली के स्वतन्त्र

भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कैलकै, ओकर मूल अंग्रेजी साक्ष्य सामने राखि लेखक देखाबैछै जे प्रारम्भिक पश्चिमी अध्ययन मैथिली के अध्ययन नै, प्रशासनिक सुविधार्थ 'नमूना-संकलन' खाली छेलै। उत्तर-औपनिवेशिक नजर सें ई अध्याय बहुत महत्त्वपूर्ण छै — मैकाले के १८३५ के टिप्पणी ('जाहि भाषाकेँ केओ बिना सरकारी पाइक पढ़बा लेल तैयार नहि, ताहि पर खर्च किएक') आरो १८६४ के ट्रेवेलियन-टिप्पणी के उद्धरण सें स्पष्ट होय छै जे भाषा-नीति उपनिवेश के उपयोगिता के दासी छेलै। 'बिहारी अस्मिताक पहिल उद्भावक जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन छलाह' — ई व्यंग्य-गर्भित स्थापना नव-इतिहासवादी सूझ के उदाहरण छै, जे नामकरण के राजनीति के अस्मिता के राजनीति सें जोड़ै छै। ग्रियर्सन एहिठाम द्वैध व्यक्तित्व के रूप में हाजिर होय छै : एक ओर हुनकर सर्वेक्षण मैथिली के स्वतन्त्र पहचान दैछै आरो हिन्दी के छाया सें मुक्त करैके दिशा में मैथिली के स्वतन्त्र ध्वनि-बनावट ओ क्रिया-रूपावली के प्रामाणिकता दैछै; दोसरका ओर 'बिहारी' जइसन सामूहिक नाम औपनिवेशिक प्रशासन के सुविधानुसार भाषिक विविधता के एक खाँचा में राखैछै।

उद्घाटक निबन्ध कोलब्रुक (१८०१)से ग्रियर्सन तक के पश्चिमी भाषा-अध्ययन के कालक्रम प्रस्तुत करै ई मार्मिक प्रश्न उठावै हय कि साहित्य-सर्जना के सुदीर्घ अविच्छिन्न परम्परा रहितो मैथिली के व्याकरण सबसे पछाति काहे लिखल गेल। कोलब्रुक के ई संकीर्ण स्थापना जे मैथिली कोनो समृद्ध भाषा न हय आ एकर कोनो विशिष्ट कवि न हय, तकरा विखण्डित करै बीम्स (१८७२), केलौग, हार्नले (१८८०) आ अन्त में ग्रियर्सन (१८८१) कइसे मैथिली के स्वतन्त्र भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कैलथिन, ओकर मूल अंग्रेजी साक्ष्य सोझाँ रखके लेखक देखाबै हथिन कि प्रारम्भिक पश्चिमी अध्ययन मैथिली के अध्ययन न, प्रशासनिक सुविधार्थ 'नमूना-संकलन' खाली हल। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि से ई अध्याय बहुत महत्त्वपूर्ण हय — मैकाले के १८३५ के टिप्पणी ('जे भाषा केओ बिना सरकारी पाइ के पढ़बा खातिर तैयार न, ओ पर खर्च काहे') आ १८६४ के ट्रेवेलियन-टिप्पणी के उद्धरण से साफ होय हय कि भाषा-नीति उपनिवेश के उपयोगिता के दासी हल। 'बिहारी अस्मिता के पहिल उद्भावक जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन हलथिन' — ई व्यंग्य-गर्भित स्थापना नव-इतिहासवादी सूझ के उदाहरण हय, जे नामकरण के राजनीति के अस्मिता

के राजनीति से जोड़ै हय। ग्रियर्सन इहाँ द्वैध व्यक्तित्व के रूप में उपस्थित होय हथिन: एक ओर हुनकर सर्वेक्षण मैथिली के स्वतन्त्र पहचान दे हय आ हिन्दी के छाया से मुक्त करे के दिशा में मैथिली के स्वतन्त्र ध्वनि-संरचना ओ क्रिया-रूपावली के प्रामाणिकता दे हय; दोसर ओर 'बिहारी' जइसन सामूहिक नाम औपनिवेशिक प्रशासन के सुविधानुसार भाषिक विविधता के एक खाँचा में राखैत हय।

उद्घाटक निबन्ध कोलब्रुक (१८०१)सँ ग्रियर्सन धरिक पश्चिमी भाषा-अध्ययनक कालक्रम प्रस्तुत करैत ई मार्मिक प्रश्न उठबैत अछि जे साहित्य-सर्जनाक सुदीर्घ अविच्छिन्न परम्परा रहितहुँ मैथिलीक व्याकरण सभसँ पछाति किएक लिखल गेल। कोलब्रुकक ई संकीर्ण स्थापना जे मैथिली कोनो समृद्ध भाषा नहि थिक आ एकर कोनो विशिष्ट कवि नहि अछि, तकरा विखण्डित करैत बीम्स (१८७२), केलौग, हार्नले (१८८०) आ अन्ततः ग्रियर्सन (१८८१) कोना मैथिलीकेँ स्वतन्त्र भाषाक रूपमे प्रतिष्ठित कएलनि, तकर मूल अंग्रेजी साक्ष्य सोझाँ राखि लेखक देखबैत छथि जे प्रारम्भिक पश्चिमी अध्ययन मैथिलीक अध्ययन नहि, प्रशासनिक सुविधार्थ 'नमूना-संकलन' मात्र छल। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिएँ ई अध्याय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि — मैकालेक १८३५क टिप्पणी ('जाहि भाषाकेँ केओ बिना सरकारी पाइक पढ़बा लेल तैयार नहि, ताहि पर खर्च किएक') आ १८६४क ट्रेवेलियन-टिप्पणीक उद्धरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे भाषा-नीति उपनिवेशक उपयोगिताक दासी छल। 'बिहारी अस्मिताक पहिल उद्भावक जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन छलाह' — ई व्यंग्य-गर्भित स्थापना नव-इतिहासवादी सूझक उदाहरण थिक, जे नामकरणक राजनीतिकेँ अस्मिताक राजनीतिसँ जोड़ैत अछि। ग्रियर्सन एहिठाम द्वैध व्यक्तित्वक रूपमे उपस्थित होइत छथि : एक दिस हुनकर सर्वेक्षण मैथिलीकेँ स्वतन्त्र पहचान दैत अछि आ हिन्दीक छायासँ मुक्त करबाक दिशामे मैथिलीक स्वतन्त्र ध्वनि-संरचना ओ क्रिया-रूपावलीकेँ प्रामाणिकता दैत अछि; दोसर दिस 'बिहारी' सन सामूहिक नाम औपनिवेशिक प्रशासनक सुविधानुसार भाषिक विविधताकेँ एक खाँचामे राखैत अछि।

अध्याय के प्रमुख उपलब्धि ई छै जे लेखक भाषा-विकास केवल व्याकरण-लेखन के इतिहास नै मानैछै। ओ कार्यभार आरो कार्य-पारदर्शिता के समाजभाषावैज्ञानिक कसौटी सें मैथिली के ह्रास के व्याख्या करैछै — जे भाषा

के परयोग प्रशासन, शिक्षा, न्याय, व्यापार आरो सार्वजनिक जिनगी में घटै छै, ओकर सामाजिक सामर्थ्य सेहो घटै छै। कर्णाट-शासन में मैथिली के राजकाज के भाषा रहबा के अभिलेखीय परमाण, नेपाल के राजकीय अभिलेख, आरो भोलालाल दास के कहल गेलै ओ प्रसिद्ध वाक्य ('मैथिलीकेँ स्वीकृत कएने मिथिला जीबि उठत...') — ई सब बिहार-निर्माण के राजनीतिक अन्तर्कथा के उघारै छै। पारम्परिक आरो शिक्षाशास्त्रीय व्याकरण के भेद आरो शिक्षाशास्त्रीय व्याकरण के पाँच स्तर के विवेचन मैथिली में प्रायः पहिलों बेर एतेक व्यवस्थित रूप में आयल छै। विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें ई अध्याय विशेष महत्त्वपूर्ण छै, कारण भाषा-इतिहास के राजकीय मान्यता सें नै, शिलालेख, लोकव्यवहार, व्याकरण-लेखन आरो सांस्कृतिक विस्तार सें जोड़ल गेलै — भाषा राजनीतिक सीमा पार करै एक सभ्यतागत प्रवाह बनि जाय छै।

अध्याय के प्रमुख उपलब्धि ई हय कि लेखक भाषा-विकास के खाली व्याकरण-लेखन के इतिहास न मानै हथिन। ओ कार्यभार आ कार्य-पारदर्शिता के समाजभाषावैज्ञानिक कसौटी से मैथिली के ह्रास के व्याख्या करै हथिन — जे भाषा के प्रयोग प्रशासन, शिक्षा, न्याय, व्यापार आ सार्वजनिक जीवन में घटै हय, ओकर सामाजिक सामर्थ्य भी घटै हय। कर्णाट-शासन में मैथिली के राजकाज के भाषा रहे के अभिलेखीय प्रमाण, नेपाल के राजकीय अभिलेख, आ भोलालाल दास के कहल गेल ओ प्रसिद्ध वाक्य ('मैथिली के स्वीकृत कैने मिथिला जीबि उठत...') — ई सब बिहार-निर्माण के राजनीतिक अन्तर्कथा के उघारै हय। पारम्परिक आ शिक्षाशास्त्रीय व्याकरण के भेद आ शिक्षाशास्त्रीय व्याकरण के पाँच स्तर के विवेचन मैथिली में प्रायः पहिल बेर एतना व्यवस्थित रूप में आएल हय। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि से ई अध्याय विशेष महत्त्वपूर्ण हय, कारण भाषा-इतिहास के राजकीय मान्यता से न, शिलालेख, लोकव्यवहार, व्याकरण-लेखन आ सांस्कृतिक विस्तार से जोड़ल गेल हय — भाषा राजनीतिक सीमा पार करै एक सभ्यतागत प्रवाह बन जाय हय।

अध्यायक प्रमुख उपलब्धि ई अछि जे लेखक भाषा-विकासकेँ केवल व्याकरण-लेखनक इतिहास नहि मानैत छथि। ओ कार्यभार आ कार्य-पारदर्शिताक समाजभाषावैज्ञानिक कसौटीसँ मैथिलीक ह्रासक व्याख्या करैत छथि — जाहि भाषाक प्रयोग प्रशासन, शिक्षा, न्याय, व्यापार आ सार्वजनिक

जीवनमे घटैत अछि, ओकर सामाजिक सामर्थ्य सेहो घटैत अछि। कर्णाट-शासनमे मैथिलीक राजकाजक भाषा रहबाक अभिलेखीय प्रमाण, नेपालक राजकीय अभिलेख, तथा भोलालाल दासकेँ कहल गेल ओ प्रसिद्ध वाक्य ('मैथिलीकेँ स्वीकृत कएने मिथिला जीबि उठत...') — ई सभ बिहार-निर्माणक राजनीतिक अन्तर्कथाकेँ उघारैत अछि। पारम्परिक आ शिक्षाशास्त्रीय व्याकरणक भेद तथा शिक्षाशास्त्रीय व्याकरणक पाँच स्तरक विवेचन मैथिलीमे प्रायः पहिल बेर एतेक व्यवस्थित रूपमे आएल अछि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ ई अध्याय विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, कारण भाषा-इतिहासकेँ राजकीय मान्यतासँ नहि, शिलालेख, लोकव्यवहार, व्याकरण-लेखन आ सांस्कृतिक विस्तारसँ जोड़ल गेल अछि — भाषा राजनीतिक सीमा पार करैत एक सभ्यतागत प्रवाह बनि जाइत अछि।

३.२ रमानाथ झा आरो मिथिला भाषा

३.२ रमानाथ झा आ मिथिला भाषा

३.२ रमानाथ झा आ मिथिला भाषा

संग्रह के मेरुदण्ड ई दीर्घतम निबन्ध प्रत्यालोचना के प्रतिमान छै। आचार्य रमानाथ झा के जन्मशतवार्षिकी (१९०६–२००६)के बहन्ने हुनका पर जिनगी-काल आरो मरणोपरान्त लगाओल गेलै आरोप के 'टाल' के अभिलेखीय परीक्षण कैल गेलै। शशिनाथ चौधरी के १९३२के परिषद्-प्रतिवेदन जइसन दुर्लभ साक्ष्य सें ई सिद्ध कैल गेलै जे पटना विश्वविद्यालय में मैथिली के स्वीकृति-सम्बन्धी षड्यन्त्र के आरोप तथ्य-सम्मत नै छै। चन्दा झा के मिथिला भाषा रामायण के चौथका संस्करण सें रमानाथ झा के आधा पृष्ठ के 'क्षमा-प्रार्थना' छाँटि दैके परसंग, आरो ओकर तुलना सोवियत 'व्यक्तिपूजा' के आरोप में नेता के शव के समाधि सें उपाड़बा के घटना सें — ई प्रत्यालोचना के तीक्ष्णतम क्षण छै, जहाँ स्थानीय साहित्यिक राजनीति विश्व-इतिहास के आलोक में अर्थवान होय जाय छै।

संग्रह के मेरुदण्ड ई दीर्घतम निबन्ध प्रत्यालोचना के प्रतिमान हय। आचार्य रमानाथ झा के जन्मशतवार्षिकी (१९०६–२००६)के बहन्ने हुनका पर जीवन-काल आ मरणोपरान्त लगावल गेल आरोप के 'टाल' के अभिलेखीय परीक्षण कैल गेल हय। शशिनाथ चौधरी के १९३२ के परिषद्-प्रतिवेदन जइसन दुर्लभ साक्ष्य

से ई सिद्ध कैल गेल जे पटना विश्वविद्यालय में मैथिली के स्वीकृति-सम्बन्धी षडयन्त्र के आरोप तथ्य-सम्मत न हय। चन्दा झा के मिथिला भाषा रामायण के चारिम संस्करण से रमानाथ झा के आधा पृष्ठ के' क्षमा-प्रार्थना' छाँटि देवे के प्रसंग, आ ओकर तुलना सोवियत'व्यक्तिपूजा' के आरोप में नेता के शव के समाधि से उपाड़बा के घटना से — ई प्रत्यालोचना के तीक्ष्णतम क्षण हय, जहाँ स्थानीय साहित्यिक राजनीति विश्व-इतिहास के आलोक में अर्थवान हो जाय हय।

संग्रहक मेरुदण्ड ई दीर्घतम निबन्ध प्रत्यालोचनाक प्रतिमान थिक। आचार्य रमानाथ झाक जन्मशतवार्षिकी (१९०६–२००६)क बहन्ने हुनका पर जीवन-काल आ मरणोपरान्त लगाओल गेल आरोपक 'टाल'क अभिलेखीय परीक्षण कएल गेल अछि। शशिनाथ चौधरीक १९३२क परिषद्-प्रतिवेदन सन दुर्लभ साक्ष्यसँ ई सिद्ध कएल गेल जे पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृति-सम्बन्धी षडयन्त्रक आरोप तथ्य-सम्मत नहि अछि। चन्दा झाक मिथिला भाषा रामायणक चारिम संस्करणसँ रमानाथ झाक आधा पृष्ठक 'क्षमा-प्रार्थना' छाँटि देबाक प्रसंग, आ ओकर तुलना सोवियत 'व्यक्तिपूजा'क आरोपमे नेताक शवकेँ समाधिसँ उपाड़बाक घटनासँ — ई प्रत्यालोचनाक तीक्ष्णतम क्षण थिक, जतऽ स्थानीय साहित्यिक राजनीति विश्व-इतिहासक आलोकमे अर्थवान भऽ जाइत अछि।

निबन्ध के उत्तरार्ध में रमानाथ झा के अवदान के — अध्यापन, पाठ्यक्रम-निर्माण, अनुसन्धान, भाषा-मान्यता, सम्पादन आरो साहित्येतिहास — के व्यवस्थित पुनर्पाठ छै। रमानाथ झा के मैथिली आलोचना केन्द्र-स्तम्भ मानैत रमणजी मिथिला भाषा के प्राचीनता के पाँच ऐतिहासिक साक्ष्य के उल्लेख करैछै : कालिदास के विक्रमोर्वशीय के दोहा, प्राकृत पैंगल के वर्णवृत्त, नेपाल सें प्राप्त सहजपन्थी सिद्ध लोकनिक चर्यापद, डाकवचन, आरो अवहट्ट में विद्यापति के रचना। बुद्धवचन-महावीरवचन-अर्धमागधी के विवेचन सें विदेह जनपद के भाषा के सातत्य, तिरहुता लिपिक व्याप्ति, मानकीकरण के इतिहास में पण्डित जीवनाथ राय के चिन्ता आरो महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह के १८८०के ओ ऐतिहासिक आदेश जेकरा सें देवनागरी आरो हिन्दी के राजकाज में प्रवेश भेटलै के आरो अन्ततः तिरहुता (मिथिलाक्षर) लिपिक विस्थापन भेलै — ई सब

परसंग अध्याय के भाषा-राजनीतिक दस्तावेज बना दैछै। सबसें मौलिक छै हाउगेन आरो फर्गुसन के भाषा-प्रबन्धन सिद्धान्त के चार चरण (चयन, संहिताकरण, प्रकार्य-विस्तार, ग्राह्यता)के कसौटी पर रमानाथ झा के काम के पुनर्मूल्याङ्कन — ई देखाना जे जे शास्त्र के जन्महुँ नै भेलै छेलै, ओहि शास्त्र के प्रक्रिया के अनुरूप रमानाथ झा मैथिली के भाषा-नियोजन कें गेलाह। बहुवाचिकता (द्विभाषिक स्तर-भेद)के अवधारणा सें मैथिल समाज के भाषिक यथार्थ के व्याख्या समाजभाषाविज्ञान के मैथिली में सफल अवतरण छै।

निबन्ध के उत्तरार्ध में रमानाथ झा के अवदान के — अध्यापन, पाठ्यक्रम-निर्माण, अनुसन्धान, भाषा-मान्यता, सम्पादन आ साहित्येतिहास — के व्यवस्थित पुनर्पाठ हय। रमानाथ झा के मैथिली आलोचना केन्द्र-स्तम्भ मानै रमणजी मिथिला भाषा के प्राचीनता के पाँच ऐतिहासिक साक्ष्य के उल्लेख करै हथिन: कालिदास के विक्रमोर्वशीय के दोहा, प्राकृत पैंगल के वर्णवृत्त, नेपाल से प्राप्त सहजपन्थी सिद्ध लोग के चर्यापद, डाकवचन, आ अवहट्ट में विद्यापति के रचना। बुद्धवचन-महावीरवचन-अर्धमागधी के विवेचन से विदेह जनपद के भाषा के सातत्य, तिरहुता लिपि के व्याप्ति, मानकीकरण के इतिहास में पण्डित जीवनाथ राय के चिन्ता आ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह के १८८० के ओ ऐतिहासिक आदेश जेसे देवनागरी आ हिन्दी के राजकाज में प्रवेश भेटलै के आ अन्त में तिरहुता (मिथिलाक्षर) लिपि के विस्थापन भेल — ई सब प्रसंग अध्याय के भाषा-राजनीतिक दस्तावेज बना दे हय। सबसे मौलिक हय हाउगेन आ फर्गुसन के भाषा-प्रबन्धन सिद्धान्त के चारि चरण (चयन, संहिताकरण, प्रकार्य-विस्तार, ग्राह्यता)के कसौटी पर रमानाथ झा के कार्य के पुनर्मूल्याङ्कन — ई देखाएब जे जे शास्त्र के जन्महुँ न भेल हल, ओ शास्त्र के प्रक्रिया के अनुरूप रमानाथ झा मैथिली के भाषा-नियोजन के गेलथिन। बहुवाचिकता (द्विभाषिक स्तर-भेद)के अवधारणा से मैथिल समाज के भाषिक यथार्थ के व्याख्या समाजभाषाविज्ञान के मैथिली में सफल अवतरण हय।

निबन्धक उत्तरार्धमे रमानाथ झाक अवदानक — अध्यापन, पाठ्यक्रम-निर्माण, अनुसन्धान, भाषा-मान्यता, सम्पादन आ साहित्येतिहास — क व्यवस्थित पुनर्पाठ अछि। रमानाथ झाकेँ मैथिली आलोचनाक केन्द्र-स्तम्भ मानैत रमणजी मिथिला भाषाक प्राचीनताक पाँच ऐतिहासिक साक्ष्यक उल्लेख

करैत छथि : कालिदासक विक्रमोर्वशीयक दोहा, प्राकृत पैंगलक वर्णवृत्त, नेपालसँ प्राप्त सहजपन्थी सिद्ध लोकनिक चर्यापद, डाकवचन, आ अवहट्टमे विद्यापतिक रचना। बुद्धवचन-महावीरवचन-अर्धमागधीक विवेचनसँ विदेह जनपदक भाषाक सातत्य, तिरहुता लिपिक व्याप्ति, मानकीकरणक इतिहासमे पण्डित जीवनाथ रायक चिन्ता आ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक १८८०क ओ ऐतिहासिक आदेश जाहिसँ देवनागरी आ हिन्दीकेँ राजकाजमे प्रवेश भेटलैक आ अन्ततः तिरहुता (मिथिलाक्षर) लिपिक विस्थापन भेल — ई सभ प्रसंग अध्यायकेँ भाषा-राजनीतिक दस्तावेज बना दैत अछि। सभसँ मौलिक अछि हाउगेन आ फर्गुसनक भाषा-प्रबन्धन सिद्धान्तक चारि चरण (चयन, संहिताकरण, प्रकार्य-विस्तार, ग्राह्यता)क कसौटी पर रमानाथ झाक कार्यक पुनर्मूल्याङ्कन — ई देखाएब जे जाहि शास्त्रक जन्महुँ नहि भेल छल, ताहि शास्त्रक प्रक्रियाक अनुरूप रमानाथ झा मैथिलीक भाषा-नियोजन कऽ गेलाह। बहुवाचिकता (द्विभाषिक स्तर-भेद)क अवधारणासँ मैथिल समाजक भाषिक यथार्थक व्याख्या समाजभाषाविज्ञानक मैथिलीमे सफल अवतरण थिक।

भारतीय परम्परा में आलोचक के 'सहृदय' कहल गेलै; ई अध्याय में रमणजी सहृदयता के अरथ अन्धप्रशंसा नै, ऐतिहासिक न्याय मानैछै। हुनकर आग्रह छै जे व्यक्ति के योगदान के मूल्याङ्कन ओकर समय, संस्थागत कठिनाइ आरो उपलब्ध साधन के आधारपर हो। पाठक-प्रतिक्रिया नजर सें ई अध्याय देखाबैछै जे एके व्यक्तित्व के मूल्याङ्कन विभिन्न पीढ़ी अलग-अलग ढङ्ग सें करैछै — संस्थाप के पीढ़ी के श्रम पछिला पीढ़ी के लेली सामान्य सुविधा बनि जाय छै, फलतः मूल संघर्ष विस्मृत होय जाय छै। विदेह समान्तर इतिहास के स्तरपर अध्याय ई सवाल उठाबैछै जे मैथिली भाषा-साहित्य के संस्थागत निर्माण केना भेलै : विश्वविद्यालय, पाठ्यक्रम, साहित्यिक संस्था आरो व्यक्तिगत विद्वत्ता एक-दोसरका सें जुड़ल छेलै; अतः साहित्यिक इतिहास केवल प्रकाशित रचना के इतिहास नै, संस्था-निर्माण के इतिहास सेहो छै।

भारतीय परम्परा में आलोचक के 'सहृदय' कहल गेल हय; ई अध्याय में रमणजी सहृदयता के अर्थ अन्धप्रशंसा न, ऐतिहासिक न्याय मानै हथिन। हुनकर आग्रह हय कि व्यक्ति के योगदान के मूल्याङ्कन ओकर समय,

संस्थागत कठिनाइ आ उपलब्ध साधन के आधार पर हो। पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टि से ई अध्याय देखाबै हय कि एके व्यक्तित्व के मूल्याङ्कन अलग-अलग पीढ़ी अलग-अलग ढङ्ग से करै हय — संस्थापक पीढ़ी के श्रम पछिला पीढ़ी के खातिर सामान्य सुविधा बन जाय हय, फलतः मूल संघर्ष विस्मृत हो जाय हय। विदेह समान्तर इतिहास के स्तर पर अध्याय ई प्रश्न उठावै हय कि मैथिली भाषा-साहित्य के संस्थागत निर्माण केना भेल: विश्वविद्यालय, पाठ्यक्रम, साहित्यिक संस्था आ व्यक्तिगत विद्वत्ता एक-दोसर से जुड़ल हल; अतः साहित्यिक इतिहास खाली प्रकाशित रचना के इतिहास न, संस्था-निर्माण के इतिहास भी हय।

भारतीय परम्परामे आलोचककेँ 'सहृदय' कहल गेल अछि; एहि अध्यायमे रमणजी सहृदयताक अर्थ अन्धप्रशंसा नहि, ऐतिहासिक न्याय मानैत छथि। हुनकर आग्रह अछि जे व्यक्तिक योगदानक मूल्याङ्कन ओकर समय, संस्थागत कठिनाइ आ उपलब्ध साधनक आधारपर हो। पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टिसँ ई अध्याय देखबैत अछि जे एके व्यक्तित्वक मूल्याङ्कन विभिन्न पीढ़ी अलग-अलग ढङ्गसँ करैत अछि — संस्थापक पीढ़ीक श्रम पछिला पीढ़ीक लेल सामान्य सुविधा बनि जाइत अछि, फलतः मूल संघर्ष विस्मृत भऽ जाइत अछि। विदेह समान्तर इतिहासक स्तरपर अध्याय ई प्रश्न उठबैत अछि जे मैथिली भाषा-साहित्यक संस्थागत निर्माण केना भेल : विश्वविद्यालय, पाठ्यक्रम, साहित्यिक संस्था आ व्यक्तिगत विद्वत्ता एक-दोसरसँ जुड़ल छल; अतः साहित्यिक इतिहास केवल प्रकाशित रचनाक इतिहास नहि, संस्था-निर्माणक इतिहास सेहो अछि।

३.३ प्रत्यालोचक किरणजी

३.३ प्रत्यालोचक किरणजी

३.३ प्रत्यालोचक किरणजी

ई निबन्ध 'प्रत्यालोचना' पद के मैथिली आलोचना-शास्त्र में सैद्धान्तिक प्रतिष्ठा दैछै — आलोचना के आलोचना, जे लेखक के अनुसार समाज के वैचारिक गतिशीलता आरो जीवन्तता के लच्छन छै। डा. काञ्चीनाथ झा 'किरण' के आलोचकीय व्यक्तित्व के त्रिविध विश्लेषण (लोक आलोचक,

साहित्यिक आलोचक, प्रत्यालोचक) आरो रचनाकार के तीन कोटि के वर्गीकरण (युगातीत, युगानुगामी, सचेत विपक्षी) पद्धति-सजग आलोचना के परिचाय के छै। किरणजी के नव स्थापना सब के — वर्णरत्नाकर काव्य-ग्रन्थ छै, लोकसाहित्य शिष्ट-साहित्य सें बड़का, विद्यापति स्वाधीनताकामी सेनानी, आरो चन्दा झा के स्थान पर अकाली कवि फतूर लाल नवयुग के प्रवर्त के — सहृदय प्रस्तुतिक साथे हुनकर अन्तर्विरोध के निर्मम उद्घाटन सेहो छै : जे किरणजी रमानाथ झा के राधाकृष्ण-विषयक मत के तीव्र खण्डन करैछै, वैह अन्यत्र विद्यापति के नायिका के राजदरबारी संस्कारक कल्पित पात्र कहि प्रकारान्तर सें ओहि मत के समर्थन कें दैछै। कुलानन्द मिश्र के चन्द्रग्रहण-टिप्पणी के परसंग में लेखक के ई सूत्र-वाक्य आलोचना-नीतिशास्त्र के निष्कर्ष जइसन छै जे कृति में व्यक्त विचार के विवेचन ने भक्त जइसन हो, ने अपन मतवाद के रचनाकार पर आरोपित करै।

ई निबन्ध 'प्रत्यालोचना' पद के मैथिली आलोचना-शास्त्र में सैद्धान्तिक प्रतिष्ठा दे हय — आलोचना के आलोचना, जे लेखक के अनुसार समाज के वैचारिक गतिशीलता आ जीवन्तता के लक्षण हय। डा. काञ्चीनाथ झा' किरण' के आलोचकीय व्यक्तित्व के त्रिविध विश्लेषण (लोक आलोचक, साहित्यिक आलोचक, प्रत्यालोचक) आ रचनाकार के तीन कोटि के वर्गीकरण (युगातीत, युगानुगामी, सचेत विपक्षी) पद्धति-सजग आलोचना के परिचायक हय। किरणजी के नव स्थापना सभ के — वर्णरत्नाकर काव्य-ग्रन्थ हय, लोकसाहित्य शिष्ट-साहित्य से बड़, विद्यापति स्वाधीनताकामी सेनानी, आ चन्दा झा के स्थान पर अकाली कवि फतूर लाल नवयुग के प्रवर्तक — सहृदय प्रस्तुति के साथे हुन के अन्तर्विरोध के निर्मम उद्घाटन भी हय: जे किरणजी रमानाथ झा के राधाकृष्ण-विषय के मत के तीव्र खण्डन करै हथिन, ओहे अन्यत्र विद्यापति के नायिका के राजदरबारी संस्कार के कल्पित पात्र कहके प्रकारान्तर से ओही मत के समर्थन के दे हथिन। कुलानन्द मिश्र के चन्द्रग्रहण-टिप्पणी के प्रसंग में लेखक के ई सूत्र-वाक्य आलोचना-नीतिशास्त्र के निष्कर्ष जइसन हय कि कृति में व्यक्त विचार के विवेचन ने भक्त जइसन हो, ने अपन मतवाद के रचनाकार पर आरोपित करै।

ई निबन्ध 'प्रत्यालोचना' पदकेँ मैथिली आलोचना-शास्त्रमे सैद्धान्तिक प्रतिष्ठा दैत अछि — आलोचनाक आलोचना, जे लेखकक अनुसार समाजक वैचारिक गतिशीलता आ जीवन्ततााक लक्षण थिक। डा. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क आलोचकीय व्यक्तित्वक त्रिविध विश्लेषण (लोक आलोचक, साहित्यिक आलोचक, प्रत्यालोचक) आ रचनाकारक तीन कोटिक वर्गीकरण (युगातीत, युगानुगामी, सचेत विपक्षी) पद्धति-सजग आलोचनाक परिचायक अछि। किरणजीक नव स्थापना सभक — वर्णरत्नाकर काव्य-ग्रन्थ थिक, लोकसाहित्य शिष्ट-साहित्यसँ पैघ, विद्यापति स्वाधीनताकामी सेनानी, तथा चन्दा झाक स्थान पर अकाली कवि फतूर लाल नवयुगक प्रवर्तक — सहृदय प्रस्तुतिक संगहि हुनक अन्तर्विरोधक निर्मम उद्घाटन सेहो अछि : जे किरणजी रमानाथ झाक राधाकृष्ण-विषयक मतक तीव्र खण्डन करैत छथि, वैह अन्यत्र विद्यापतिक नायिकाकेँ राजदरबारी संस्कारक कल्पित पात्र कहि प्रकारान्तरसँ ओही मतक समर्थन कऽ दैत छथि। कुलानन्द मिश्रक चन्द्रग्रहण-टिप्पणीक प्रसंगमे लेखकक ई सूत्र-वाक्य आलोचना-नीतिशास्त्रक निष्कर्ष जकाँ अछि जे कृतिमे व्यक्त विचारक विवेचन ने भक्त जकाँ हो, ने अपन मतवादकेँ रचनाकार पर आरोपित करैत।

किरणजी जाति, रूढ़ि, अन्धविश्वास, श्रम के अवमानना आरो सामाजिक विषमता के विरुद्ध आलोचनात्मक स्वर उठाबैछै; 'पराशर' के माध्यम सें श्रम, भूख, जातीय विभाजन, धार्मिक आडम्बर आरो स्त्री-पुरुष सम्बन्ध के प्रश्न उठावल गेलै, जे आभिजात्य पण्डित-समाज के कौलीनता आरो पाँजि-व्यवस्थापर कठोर प्रहार छै। भारतीय नजर सें किरणजी के आलोचना लोकमंगलवादी छै — हुनका लेली साहित्य के श्रेष्ठता ओकर सामाजिक उत्तरदायित्व सें अलग नै। पाश्चात्य मार्क्सवादी नजर सें हुनकर विचार सामाजिक उत्पादन, श्रम आरो प्रभुत्वशाली वर्ग के आलोचना सें जुड़ै छै; दलित नजर सें ओ शास्त्रीय पात्र के निम्नवर्गीय अनुभव के आलोक में पुनः लिखैछै। 'मैथिल आँखि' के अवधारणा ई अध्याय के मौलिक सूत्र छै, जेकरा 'गुलामी नजरि' के विरुद्ध संघर्ष के रूप में राखलों गेलै — एकर अरथ संकीर्ण प्रादेशिकता नै, अपन भाषिक-सांस्कृतिक अनुभव के आधारपर विश्व के देखना।

विदेह समान्तर इतिहास के नजर में ई स्थानीय ज्ञान के पुनर्प्रतिष्ठा आरो स्थापित संभ्रान्तवादी इतिहास-लेखन के विरुद्ध निम्नवर्गीय प्रतिरोधक स्वर छै।

किरणजी जाति, रूढ़ि, अन्धविश्वास, श्रम के अवमानना आ सामाजिक विषमता के विरुद्ध आलोचनात्मक स्वर उठावै हथिन;'पराशर' के माध्यम से श्रम, भूख, जातीय विभाजन, धार्मिक आडम्बर आ स्त्री-पुरुष सम्बन्ध के प्रश्न उठावल गेल हय, जे आभिजात्य पण्डित-समाज के कौलीनता आ पाँजि-व्यवस्था पर कठोर प्रहार हय। भारतीय दृष्टि से किरणजी के आलोचना लोकमंगलवादी हय — हुनका खातिर साहित्य के श्रेष्ठता ओकर सामाजिक उत्तरदायित्व से अलग न। पाश्चात्य मार्क्सवादी दृष्टि से हुनकर विचार सामाजिक उत्पादन, श्रम आ प्रभुत्वशाली वर्ग के आलोचना से जुड़ैत हय; दलित दृष्टि से ओ शास्त्रीय पात्र के निम्नवर्गीय अनुभव के आलोक में फेर लिखै हथिन।'मैथिल आँखि' के अवधारणा ई अध्याय के मौलिक सूत्र हय, जकरा'गुलामी नजरि' के विरुद्ध संघर्ष के रूप में राखल गेल हय — एकर अर्थ संकीर्ण प्रादेशिकता न, अपन भाषिक-सांस्कृतिक अनुभव के आधार पर विश्व के देखब। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि में ई स्थानीय ज्ञान के पुनर्प्रतिष्ठा आ स्थापित संभ्रान्तवादी इतिहास-लेखन के विरुद्ध निम्नवर्गीय प्रतिरोध के स्वर हय।

किरणजी जाति, रूढ़ि, अन्धविश्वास, श्रमक अवमानना आ सामाजिक विषमताक विरुद्ध आलोचनात्मक स्वर उठबैत छथि; 'पराशर'क माध्यमसँ श्रम, भूख, जातीय विभाजन, धार्मिक आडम्बर आ स्त्री-पुरुष सम्बन्धक प्रश्न उठाओल गेल अछि, जे आभिजात्य पण्डित-समाजक कौलीनता आ पाँजि-व्यवस्थापर कठोर प्रहार थिक। भारतीय दृष्टिसँ किरणजीक आलोचना लोकमंगलवादी अछि — हुनका लेल साहित्यक श्रेष्ठता ओकर सामाजिक उत्तरदायित्वसँ पृथक नहि। पाश्चात्य मार्क्सवादी दृष्टिसँ हुनकर विचार सामाजिक उत्पादन, श्रम आ प्रभुत्वशाली वर्गक आलोचनासँ जुड़ैत अछि; दलित दृष्टिसँ ओ शास्त्रीय पात्रकेँ निम्नवर्गीय अनुभवक आलोकमे पुनः लिखैत छथि। 'मैथिल आँखि'क अवधारणा एहि अध्यायक मौलिक सूत्र अछि, जकरा 'गुलामी नजरि'क विरुद्ध संघर्षक रूपमे राखल गेल अछि — एकर अर्थ संकीर्ण प्रादेशिकता नहि, अपन भाषिक-सांस्कृतिक अनुभवक आधारपर विश्वकेँ देखब। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिमे ई स्थानीय ज्ञानक पुनर्प्रतिष्ठा आ

स्थापित संभ्रान्तवादी इतिहास-लेखनक विरुद्ध निम्नवर्गीय प्रतिरोधक स्वर थिक।

३.४ अपेक्षिता के आँखि छोड़ि, उपेक्षित के आँखि सें कन्यादान पढ़ल जाए

३.४ अपेक्षिता के आँखि छोड़के, उपेक्षित के आँखि से कन्यादान पढ़ल जाए

३.४ अपेक्षिताक आँखि छोड़ि, उपेक्षितक आँखिसँ कन्यादान पढ़ल जाए

ई संग्रह के सबसें बेसी चुनौतीपूर्ण अध्याय में सें एक छै आरो अभिग्रहण-सौन्दर्यशास्त्र (पाठक-अनुक्रिया सिद्धान्त)के मैथिली में विरल परयोग। हरिमोहन झा के पाठक के तीन सरेनी — मनोरंजनार्थी, हनुमान-चालीसा-भक्त, आरो समाज-कथा बूझि पढ़निहार — के विभाजन कें लेखक ई देखाबैछै जे कृति के अरथ पाठक-नजर सें निर्मित होय छै। तब नजर-परिवर्तन के प्रस्ताव आबैछै : अपेक्षिता (सी. सी. मिश्र जइसन शिक्षित वर)के आँखि छोड़ि उपेक्षिता बुच्ची दाइ के आँखि सें उपन्यास पढ़ल जाए। ई नारी-विमर्श के ओ पद्धति छै जे केन्द्र के हटा हाशिया केन्द्र बनाबै छै। प्रचलित हास्यप्रधान पाठ के छोड़ि लेखक बुच्ची दाइ के मौन, अशिक्षा, भय आरो सांस्कृतिक विस्थापन केन्द्र बनाबै छै — प्रश्न ई छै जे बुच्ची दाइ बाजै काहे नै छै, हुनकर जिनगी के फैसला दोसरका लोक काहे करैछै, आरो शिक्षित समाज हुनकर मौन के लेली कतेक जिम्मेवार छै। बुच्ची दाइ के निरक्षरता लेली ओ व्यक्ति के नै, समाज के 'संरचनात्मक निर्माणक दोष' कैं जिम्मेवार मानैछै।

ई संग्रह के सबसे बेसी चुनौतीपूर्ण अध्याय में से एक हय आ अभिग्रहण-सौन्दर्यशास्त्र (पाठक-अनुक्रिया सिद्धान्त)के मैथिली में विरल प्रयोग। हरिमोहन झा के पाठक के तीन श्रेणी — मनोरंजनार्थी, हनुमान-चालीसा-भक्त, आ समाज-कथा बूझि पढ़निहार — के विभाजन के लेखक ई देखाबै हथिन कि कृति के अर्थ पाठक-दृष्टि से निर्मित होय हय। तब दृष्टि-परिवर्तन के प्रस्ताव आबै हय: अपेक्षिता (सी. सी. मिश्र जइसन शिक्षित वर)के आँखि छोड़के उपेक्षिता बुच्ची दाइ के आँखि से उपन्यास पढ़ल जाए। ई नारी-विमर्श के ओ पद्धति हय कि केन्द्र के हटा हाशिया केन्द्र बनावै हय। प्रचलित हास्यप्रधान पाठ के छोड़के लेखक बुच्ची दाइ के मौन, अशिक्षा, भय आ सांस्कृतिक विस्थापन केन्द्र बनावै हथिन — प्रश्न ई हय कि बुच्ची दाइ बाजै काहे न

हथिन, हुनकर जीवन के निर्णय दोसर लोक काहे करै हय, आ शिक्षित समाज हुनकर मौन के खातिर कतना उत्तरदायी हय। बुच्ची दाइ के निरक्षरता खातिर ओ व्यक्ति के न, समाज के'संरचनात्मक निर्माण के दोष' के उत्तरदायी मानै हथिन।

ई संग्रहक सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण अध्यायमे सँ एक थिक आ अभिग्रहण-सौन्दर्यशास्त्र (पाठक-अनुक्रिया सिद्धान्त)क मैथिलीमे विरल प्रयोग। हरिमोहन झाक पाठकक तीन श्रेणी — मनोरंजनार्थी, हनुमान-चालीसा-भक्त, आ समाज-कथा बूझि पढ़निहार — क विभाजन कऽ लेखक ई देखबैत छथि जे कृतिक अर्थ पाठक-दृष्टिसँ निर्मित होइत अछि। तखन दृष्टि-परिवर्तनक प्रस्ताव अबैत अछि : अपेक्षिता (सी. सी. मिश्र सन शिक्षित वर)क आँखि छोड़ि उपेक्षिता बुच्ची दाइक आँखिसँ उपन्यास पढ़ल जाए। ई नारी-विमर्शक ओ पद्धति थिक जे केन्द्रकेँ हटा हाशियाकेँ केन्द्र बनबैत अछि। प्रचलित हास्यप्रधान पाठकेँ छोड़ि लेखक बुच्ची दाइक मौन, अशिक्षा, भय आ सांस्कृतिक विस्थापनकेँ केन्द्र बनबैत छथि — प्रश्न ई अछि जे बुच्ची दाइ बजैत किएक नहि छथि, हुनकर जीवनक निर्णय दोसर लोक किएक करैत अछि, आ शिक्षित समाज हुनकर मौनक लेल कतेक उत्तरदायी अछि। बुच्ची दाइक निरक्षरता लेल ओ व्यक्तिकेँ नहि, समाजक 'संरचनात्मक निर्माणक दोष'केँ उत्तरदायी मानैत छथि।

सबसें बलगर पक्ष छै अभिलेख-प्रथम परमाण : जनसीदन के यशोदा (जे रामायण बाँचि लै छै), रासबिहारी लाल दास के सुमति, पुण्यानन्द झा के योगमाया, पुलकित मिश्र के मोहिनी — कन्यादान सें पूर्वक मैथिली उपन्यास के नारी-पात्र निरक्षर नै, साक्षर छेली। ई तथ्य-शृंखला सें ई क्रान्तिकारी स्थापना निकलै छै जे स्त्री-शिक्षा के प्रश्न पर हरिमोहन झा अपन पूर्ववर्ती औपन्यासिक परम्परा सें आगू नै, पीछे छै। मिथिला दर्पण के योगानन्द आरो कन्यादान के सी. सी. मिश्र के तुलना, आरो 'अबोधक अपंगताक दोषी अबोध स्वयं की ओकर समाज?' के प्रश्न मानवीय गरिमा के कसौटी पर हास्य के औचित्य-परीक्षा छै। भाषिक नजर सें अध्याय के बारीक निष्कर्ष ई छै जे शहराती पति आरो ग्रामीण पत्नी एके सांस्कृतिक-भाषिक धरातलपर नै छै — पतिद्वारा हिन्दी में संवाद करना स्त्री के मौन के आरो गाढ़ करैछै। नारीवादी आलोचना सें ई पुनर्पाठ बहुत महत्त्वपूर्ण छै : विवाहक हास्य के आवरण के

भीतर स्त्री के वस्तुकरण, भाषिक असमानता, शिक्षा-वञ्चना आरो पितृसत्तात्मक नियन्त्रण छै; बुच्ची दाइ केवल पात्र नै, अशिक्षित मैथिल कन्या के प्रतीक बनि जाय छै। ध्वनि-सिद्धान्त के आलोक में उपन्यास के हास्य के पीछे करुण ध्वनि सुनाय छै। विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें ई अध्याय प्रतिष्ठित हास्यकृतिक भीतर दबाओल स्त्री-इतिहास के पुनः दृश्य बनाबै छै।

सबसे बलगर पक्ष हय अभिलेख-प्रथम प्रमाण: जनसीदन के यशोदा (जे रामायण बाँचि ले हय), रासबिहारी लाल दास के सुमति, पुण्यानन्द झा के योगमाया, पुलकित मिश्र के मोहिनी — कन्यादान से पहिले के मैथिली उपन्यास के नारी-पात्र निरक्षर न, साक्षर हली। ई तथ्य-शृंखला से ई क्रान्तिकारी स्थापना निकलैत हय कि स्त्री-शिक्षा के प्रश्न पर हरिमोहन झा अपन पूर्ववर्ती औपन्यासिक परम्परा से आगू न, पीछे हथिन। मिथिला दर्पण के योगानन्द आ कन्यादान के सी. सी. मिश्र के तुलना, आ'अबोध के अपंगता के दोषी अबोध खुद की ओकर समाज?' के प्रश्न मानवीय गरिमा के कसौटी पर हास्य के औचित्य-परीक्षा हय। भाषिक दृष्टि से अध्याय के सूक्ष्म निष्कर्ष ई हय कि शहराती पति आ ग्रामीण पत्नी एके सांस्कृतिक-भाषिक धरातल पर न हथिन — पतिद्वारा हिन्दी में संवाद करब स्त्री के मौन के आरो गाढ़ करै हय। नारीवादी आलोचना से ई पुनर्पाठ बहुत महत्त्वपूर्ण हय: विवाह के हास्य के आवरण के भीतर स्त्री के वस्तुकरण, भाषिक असमानता, शिक्षा-वञ्चना आ पितृसत्तात्मक नियन्त्रण हय; बुच्ची दाइ खाली पात्र न, अशिक्षित मैथिल कन्या के प्रतीक बन जाय हथिन। ध्वनि-सिद्धान्त के आलोक में उपन्यास के हास्य के पीछे करुण ध्वनि सुनाइत हय। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि से ई अध्याय प्रतिष्ठित हास्यकृति के भीतर दबावल स्त्री-इतिहास के फेर दृश्य बनावै हय।

सभसँ बलगर पक्ष अछि अभिलेख-प्रथम प्रमाण : जनसीदनक यशोदा (जे रामायण बाँचि लैत अछि), रासबिहारी लाल दासक सुमति, पुण्यानन्द झाक योगमाया, पुलकित मिश्रक मोहिनी — कन्यादानसँ पूर्वक मैथिली उपन्यासक नारी-पात्र निरक्षर नहि, साक्षर छलीह। एहि तथ्य-शृंखलासँ ई क्रान्तिकारी स्थापना निकलैत अछि जे स्त्री-शिक्षाक प्रश्न पर हरिमोहन झा अपन पूर्ववर्ती

औपन्यासिक परम्परासँ आगाँ नहि, पाछाँ छथि। मिथिला दर्पणक योगानन्द आ कन्यादानक सी. सी. मिश्रक तुलना, तथा 'अबोधक अपंगताक दोषी अबोध स्वयं की ओकर समाज?'क प्रश्न मानवीय गरिमाक कसौटी पर हास्यक औचित्य-परीक्षा थिक। भाषिक दृष्टिसँ अध्यायक सूक्ष्म निष्कर्ष ई अछि जे शहराती पति आ ग्रामीण पत्नी एके सांस्कृतिक-भाषिक धरातलपर नहि छथि — पतिद्वारा हिन्दीमे संवाद करब स्त्रीक मौनकेँ आरो गाढ़ करैत अछि। नारीवादी आलोचनासँ ई पुनर्पाठ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि : विवाहक हास्यक आवरणक भीतर स्त्रीक वस्तुकरण, भाषिक असमानता, शिक्षा-वञ्चना आ पितृसत्तात्मक नियन्त्रण अछि; बुच्ची दाइ केवल पात्र नहि, अशिक्षित मैथिल कन्याक प्रतीक बनि जाइत छथि। ध्वनि-सिद्धान्तक आलोकमे उपन्यासक हास्यक पाछाँ करुण ध्वनि सुनाइत अछि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ ई अध्याय प्रतिष्ठित हास्यकृतिक भीतर दबाओल स्त्री-इतिहासकेँ पुनः दृश्य बनबैत अछि।

३.५ अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह

३.५ अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह

३.५ अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह

ई अध्याय विदेह समान्तर इतिहास-नजर के बीज-पद्धति के श्रेष्ठ उदाहरण छै — 'अनालोचित' के पुनर्वास। पत्र-पत्रिका में छिड़िआएल कविता के 'झोड़ि' कें लेखक एक विस्मृत कवि के काव्य-संसार के पुनर्निर्माण करैछै आरो हुनका राष्ट्रीय चेतना, मिथिला-बोध, सामाजिक सुधार, स्त्री-दुःख, बाढ़ि, शोषण आरो सांस्कृतिक संकट के कवि के रूप में परस्तुत करैछै। अपने लेखक स्वीकार करैछै जे सम्पूर्ण रचनावली उपलब्ध नै रहला ई आरम्भिक अनुसन्धान छै। 'शरदागम' के व्याख्या ध्वनि-सिद्धान्त के व्यावहारिक परयोग छै — पावस के प्रयाण, फुलाएल कास, थीर सरोवर आरो विवश पुरन्दर में १९३५ के शासन-सुधार आरो जन-आक्रोश के व्यंग्यार्थ के उद्घाटन; परकृति-वर्णन के अभिधा के भीतर राजनीतिक व्यञ्जना के ई पाठ आनन्दवर्धन के 'अर्थान्तर-संक्रमित' ध्वनि के जीवन्त निदर्शन छै। 'पछबा' कविता के विश्लेषण में पश्चिमी भाषा-संस्कृति के धुक्कड़ सें भारतीय सबद-सम्पदा के झड़बा के जे प्रतीक-योजना

देखावल गेलै, से सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के पूर्वाभास जइसन छै आरो अन्तिम अध्याय सें ई निबन्ध के जोड़ि दैछै — 'पछबा' केवल हवा नै, पाश्चात्य सांस्कृतिक दबाव के प्रतीक बनैछै, आरो शरदागमन औपनिवेशिक शासन के क्षीणता के सङ्केत। 'नोत पूरब' जइसन सांस्कृतिक सन्दर्भ-गर्भित सबद के टीका, विधवा-विलाप के करुण चित्र, आरो बाढ़ि-भूकम्प के द्वैध त्रासदी के कवि-साक्ष्य — सब मिलि एक 'निरपेक्ष' किन्तु मैथिली-पक्षधर कवि के मूर्ति गढ़ै छै। नव-इतिहासवादी नजर सें कविता के स्वतन्त्र सुन्नरता-वस्तु नै, स्वतन्त्रता आन्दोलन, विभाजन, सामाजिक सुधार, बाढ़ि आरो सांस्कृतिक संस्था के गतिविधि सें जोड़ल गेलै; करुण रस विधवा, बाढ़िपीड़ित आरो उपेक्षित मिथिला के चित्रण में प्रखर होय छै। प्रतिष्ठित साहित्येतिहास जे कवि के पोथी उपलब्ध नै रहला हुनका पार्श्व में छोड़ि दैछै, रमणजी पत्र-पत्रिका में बिखरल सामग्री के आधारपर हुनकर वैकल्पिक साहित्यिक जीवनचरित निर्मित करैछै — विस्मृत लेखक के पुनरुद्धार के आदर्श उदाहरण।

ई अध्याय विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि के बीज-पद्धति के श्रेष्ठ उदाहरण हय — 'अनालोचित' के पुनर्वास। पत्र-पत्रिका में छिड़िआएल कविता के'झोड़ि' के लेखक एक विस्मृत कवि के काव्य-संसार के पुनर्निर्माण करै हथिन आ हुनका राष्ट्रीय चेतना, मिथिला-बोध, सामाजिक सुधार, स्त्री-दुःख, बाढ़ि, शोषण आ सांस्कृतिक संकट के कवि के रूप में प्रस्तुत करै हथिन। खुद लेखक स्वीकार करै हथिन कि पूरा रचनावली उपलब्ध न रहने ई आरम्भिक अनुसन्धान हय। 'शरदागम' के व्याख्या ध्वनि-सिद्धान्त के व्यावहारिक प्रयोग हय — पावस के प्रयाण, फुलाएल कास, थीर सरोवर आ विवश पुरन्दर में १९३५ के शासन-सुधार आ जन-आक्रोश के व्यंग्यार्थ के उद्घाटन; प्रकृति-वर्णन के अभिधा के भीतर राजनीतिक व्यञ्जना के ई पाठ आनन्दवर्धन के'अर्थान्तर-संक्रमित' ध्वनि के जीवन्त निदर्शन हय। 'पछबा' कविता के विश्लेषण में पश्चिमी भाषा-संस्कृति के धुक्कड़ से भारतीय शब्द-सम्पदा के झड़बा के जे प्रतीक-योजना देखावल गेल हय, से सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के पूर्वाभास जइसन हय आ अन्तिम अध्याय से ई निबन्ध के जोड़के दे हय — 'पछबा' खाली हवा न, पाश्चात्य सांस्कृतिक दबाव के प्रतीक बनै हय, आ शरदागमन औपनिवेशिक शासन के क्षीणता के सङ्केत। 'नोत पूरब' जइसन सांस्कृतिक

सन्दर्भ-गर्भित शब्द के टीका, विधवा-विलाप के करुण चित्र, आ बाढ़ि-भूकम्प के द्वैध त्रासदी के कवि-साक्ष्य — सब मिलि एक 'निरपेक्ष' मुदा मैथिली-पक्षधर कवि के मूर्ति गढ़ैत हय। नव-इतिहासवादी दृष्टि से कविता के स्वतन्त्र सौन्दर्य-वस्तु न, स्वतन्त्रता आन्दोलन, विभाजन, सामाजिक सुधार, बाढ़ि आ सांस्कृतिक संस्था के गतिविधि से जोड़ल गेल हय; करुण रस विधवा, बाढ़िपीड़ित आ उपेक्षित मिथिला के चित्रण में प्रखर होय हय। प्रतिष्ठित साहित्येतिहास जे कवि के पोथी उपलब्ध न रहने हुनका पार्श्व में छोड़के दे हय, रमणजी पत्र-पत्रिका में बिखरल सामग्री के आधार पर हुनकर वैकल्पिक साहित्यिक जीवनचरित निर्मित करै हथिन — विस्मृत लेखक के पुनरुद्धार के आदर्श उदाहरण।

ई अध्याय विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिक बीज-पद्धतिक श्रेष्ठ उदाहरण थिक — 'अनालोचित'क पुनर्वास। पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल कविताकेँ 'झोड़ि' कऽ लेखक एक विस्मृत कविक काव्य-संसारक पुनर्निर्माण करैत छथि आ हुनका राष्ट्रीय चेतना, मिथिला-बोध, सामाजिक सुधार, स्त्री-दुःख, बाढ़ि, शोषण आ सांस्कृतिक संकटक कविक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। स्वयं लेखक स्वीकार करैत छथि जे सम्पूर्ण रचनावली उपलब्ध नहि रहने ई आरम्भिक अनुसन्धान अछि। 'शरदागम'क व्याख्या ध्वनि-सिद्धान्तक व्यावहारिक प्रयोग थिक — पावसक प्रयाण, फुलाएल कास, थीर सरोवर आ विवश पुरन्दरमे १९३५क शासन-सुधार आ जन-आक्रोशक व्यंग्यार्थक उद्घाटन; प्रकृति-वर्णनक अभिधाक भीतर राजनीतिक व्यञ्जनाक ई पाठ आनन्दवर्धनक 'अर्थान्तर-संक्रमित' ध्वनिक जीवन्त निदर्शन थिक। 'पछबा' कविताक विश्लेषणमे पश्चिमी भाषा-संस्कृतिक धुक्कड़सँ भारतीय शब्द-सम्पदाक झड़बाक जे प्रतीक-योजना देखाओल गेल अछि, से सांस्कृतिक साम्राज्यवादक पूर्वाभास जकाँ अछि आ अन्तिम अध्यायसँ एहि निबन्धकेँ जोड़ि दैत अछि — 'पछबा' केवल हवा नहि, पाश्चात्य सांस्कृतिक दबावक प्रतीक बनैत अछि, आ शरदागमन औपनिवेशिक शासनक क्षीणताक सङ्केत। 'नोत पूरब' सन सांस्कृतिक सन्दर्भ-गर्भित शब्दक टीका, विधवा-विलापक करुण चित्र, आ बाढ़ि-भूकम्पक द्वैध त्रासदीक कवि-साक्ष्य — सभ मिलि एक 'निरपेक्ष' किन्तु मैथिली-पक्षधर कविक मूर्ति गढ़ैत अछि। नव-इतिहासवादी दृष्टिसँ कविताकेँ स्वतन्त्र सौन्दर्य-वस्तु

नहि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, विभाजन, सामाजिक सुधार, बाढ़ि आ सांस्कृतिक संस्थाक गतिविधिसँ जोड़ल गेल अछि; करुण रस विधवा, बाढ़िपीड़ित आ उपेक्षित मिथिलाक चित्रणमे प्रखर होइत अछि। प्रतिष्ठित साहित्येतिहास जाहि कविक पोथी उपलब्ध नहि रहने हुनका पार्श्वमे छोड़ि दैत अछि, रमणजी पत्र-पत्रिकामे बिखरल सामग्रीक आधारपर हुनकर वैकल्पिक साहित्यिक जीवनचरित निर्मित करैत छथि — विस्मृत लेखकक पुनरुद्धारक आदर्श उदाहरण।

३.६ यात्री के भाषा : शब्दचयन आरो शब्दनिर्माण

३.६ यात्री के भाषा: शब्दचयन आ शब्दनिर्माण

३.६ यात्रीक भाषा : शब्दचयन एवं शब्दनिर्माण

शैलीविज्ञान के चार उपकरण — चयन, विचलन, समानान्तरता आरो अप्रस्तुत-विधान — के सहारे वैद्यनाथ मिश्र ‘यात्री’ (नागार्जुन)के काव्य-भाषा के ई विश्लेषण संग्रह के सबसें बेसी शास्त्र-सम्पन्न आरो व्यवस्थित भाषिक अध्याय छै। यात्री के काव्यभाषा में देसज, तत्सम, तद्भव आरो आगन्तु के सबद के सर्जनात्मक मेल देखावल गेलै — ‘अपरोजक’ (नाभिपद्मसम्भूत विधाता लेली), ‘ऊत्तुंग खोपा’, ‘तपोवनी’ जइसन देशी-अनदेशी सबद के संकर-निर्माण, आरो ‘दलकब’ क्रिया के अरथ-व्यञ्जकता के पद-परीक्षा। प्रत्येक स्थल पर लेखक देखाबैछै जे पर्यायवाची में सें एकहि सबद काहे अनिवार्य छै : एक सबद के चयन खाली अरथ नै, पात्र के सामाजिक स्थिति, वक्ता के मनोदशा, व्यङ्ग्य आरो सांस्कृतिक स्मृति के व्यक्त करैछै। ई विवेचन कुन्तक के वर्ण-विन्यास-वक्रता आरो पद-पूर्वार्ध-वक्रता के आधुनिक रूपान्तर जइसन छै, आरो ’विचलन’ के अवधारणा ’निरंकुशाः कवयः’ के शास्त्रीय अनुमति सें जोड़ल गेलै — पूर्व-पश्चिम के ई सेतु-बन्ध दुर्लभ छै। वक्रोक्ति-सिद्धान्त के नजर सें व्याकरणिक क्रम के विचलन, असामान्य संयोग आरो नया शब्दनिर्माण भाषा के सामान्य सूचना-साधन सें काव्यात्मक अनुभव में बदलै छै; ध्वनि-सिद्धान्त के हिसाब सें सबद के कोशगत अरथ सें बेसी ओकर प्रसङ्गगत व्यञ्जना महत्त्वपूर्ण होय छै। गौरी, कार्तिक, गणेश, लक्ष्मी जइसन पौराणिक पात्र के कोश-स्वीकृत अरथ सें फराक नव-सन्दर्भीकरण के विश्लेषण, कंकाल-शृंखला

आरो मामा-गीत में समानान्तरता के परयोग, अप्रस्तुत विधान में सादृश्य, मानवीकरण आरो इन्द्रियबोध के चित्र — सब यात्री-काव्य के भाषिक वैलक्षण्य के परमाणिक कुंजी छै। यात्री के 'भाषाक भूगोल' के अवधारणा उल्लेखनीय छै — कवि अपन भाषा-क्षेत्र के वस्तु, श्रम, रीति, मिथ के आरो बोलचाल सें परिचित छै, तें हुनकर सबद केवल सजावट नै, जीवित जनजीवन के वाहक छै। यात्री के भाषा आभिजात्य संस्कृतनिष्ठ मैथिली के विरुद्ध जनपदीय बहुस्वरता के प्रकटीकरण सेहो छै।

शैलीविज्ञान के चारि उपकरण — चयन, विचलन, समानान्तरता आ अप्रस्तुत-विधान — के सहारे वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (नागार्जुन)के काव्य-भाषा के ई विश्लेषण संग्रह के सबसे बेसी शास्त्र-सम्पन्न आ व्यवस्थित भाषिक अध्याय हय। यात्री के काव्यभाषा में देशज, तत्सम, तद्भव आ आगन्तुक शब्द के सर्जनात्मक मेल देखावल गेल हय — 'अपरोजक' (नाभिपद्मसम्भूत विधाता खातिर), 'ऊत्तुंग खोपा', 'तपोवनी' जइसन देशी-अनदेशी शब्द के संकर-निर्माण, आ 'दलकब' क्रिया के अर्थ-व्यञ्जकता के पद-परीक्षा। हरेक स्थल पर लेखक देखाबै हथिन कि पर्यायवाची में से एके शब्द काहे अनिवार्य हय: एक शब्द के चयन खाली अर्थ न, पात्र के सामाजिक स्थिति, वक्ता के मनोदशा, व्यङ्ग्य आ सांस्कृतिक स्मृति के व्यक्त करै हय। ई विवेचन कुन्तक के वर्ण-विन्यास-वक्रता आ पद-पूर्वार्ध-वक्रता के आधुनिक रूपान्तर जइसन हय, आ'विचलन' के अवधारणा'निरंकुशाः कवयः' के शास्त्रीय अनुमति से जोड़ल गेल हय — पूर्व-पश्चिम के ई सेतु-बन्ध दुर्लभ हय। वक्रोक्ति-सिद्धान्त के दृष्टि से व्याकरणिक क्रम के विचलन, असामान्य संयोग आ नूतन शब्दनिर्माण भाषा के सामान्य सूचना-साधन से काव्यात्मक अनुभव में बदलै हय; ध्वनि-सिद्धान्त के अनुसार शब्द के कोशगत अर्थ से अधिक ओकर प्रसङ्गगत व्यञ्जना महत्त्वपूर्ण होय हय। गौरी, कार्तिक, गणेश, लक्ष्मी जइसन पौराणिक पात्र के कोश-स्वीकृत अर्थ से फराक नव-सन्दर्भीकरण के विश्लेषण, कंकाल-शृंखला आ मामा-गीत में समानान्तरता के प्रयोग, अप्रस्तुत विधान में सादृश्य, मानवीकरण आ इन्द्रियबोध के चित्र — सब यात्री-काव्य के भाषिक वैलक्षण्य के प्रामाणिक कुंजी हय। यात्री के'भाषा के भूगोल' के अवधारणा उल्लेखनीय हय — कवि अपन भाषा-क्षेत्र के वस्तु, श्रम, रीति, मिथक आ बोलचाल से परिचित हथिन, तेँ

हुनकर शब्द खाली सजावट न, जीवित जनजीवन के वाहक हय। यात्री के भाषा आभिजात्य संस्कृतनिष्ठ मैथिली के विरुद्ध जनपदीय बहुस्वरता के प्रकटीकरण भी हय।

शैलीविज्ञानक चारि उपकरण — चयन, विचलन, समानान्तरता आ अप्रस्तुत-विधान — क सहारे वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (नागार्जुन)क काव्य-भाषाक ई विश्लेषण संग्रहक सर्वाधिक शास्त्र-सम्पन्न आ व्यवस्थित भाषिक अध्याय थिक। यात्रीक काव्यभाषामे देशज, तत्सम, तद्भव आ आगन्तुक शब्दक सर्जनात्मक मेल देखाओल गेल अछि — 'अपरोजक' (नाभिपद्मसम्भूत विधाता लेल), 'ऊत्तुंग खोपा', 'तपोवनी' सन देशी-अनदेशी शब्दक संकर-निर्माण, आ 'दलकब' क्रियाक अर्थ-व्यञ्जकताक पद-परीक्षा। प्रत्येक स्थल पर लेखक देखबैत छथि जे पर्यायवाचीमे सँ एकहि शब्द किएक अनिवार्य अछि : एक शब्दक चयन मात्र अर्थ नहि, पात्रक सामाजिक स्थिति, वक्ताक मनोदशा, व्यङ्ग्य आ सांस्कृतिक स्मृतिकेँ व्यक्त करैत अछि। ई विवेचन कुन्तकक वर्ण-विन्यास-वक्रता आ पद-पूर्वार्ध-वक्रताक आधुनिक रूपान्तर जकाँ अछि, आ 'विचलन'क अवधारणा 'निरंकुशाः कवयः'क शास्त्रीय अनुमतिसँ जोड़ल गेल अछि — पूर्व-पश्चिमक ई सेतु-बन्ध दुर्लभ अछि। वक्रोक्ति-सिद्धान्तक दृष्टिसँ व्याकरणिक क्रमक विचलन, असामान्य संयोग आ नूतन शब्दनिर्माण भाषाकेँ सामान्य सूचना-साधनसँ काव्यात्मक अनुभवमे बदलैत अछि; ध्वनि-सिद्धान्तक अनुसार शब्दक कोशगत अर्थसँ अधिक ओकर प्रसङ्गगत व्यञ्जना महत्त्वपूर्ण होइत अछि। गौरी, कार्तिक, गणेश, लक्ष्मी सन पौराणिक पात्रक कोश-स्वीकृत अर्थसँ फराक नव-सन्दर्भीकरणक विश्लेषण, कंकाल-शृंखला आ मामा-गीतमे समानान्तरताक प्रयोग, अप्रस्तुत विधानमे सादृश्य, मानवीकरण आ इन्द्रियबोधक चित्र — सभ यात्री-काव्यक भाषिक वैलक्षण्यक प्रामाणिक कुंजी थिक। यात्रीक 'भाषाक भूगोल'क अवधारणा उल्लेखनीय अछि — कवि अपन भाषा-क्षेत्रक वस्तु, श्रम, रीति, मिथक आ बोलचालसँ परिचित छथि, तेँ हुनकर शब्द केवल सजावट नहि, जीवित जनजीवनक वाहक अछि। यात्रीक भाषा आभिजात्य संस्कृतनिष्ठ मैथिलीक विरुद्ध जनपदीय बहुस्वरताक प्रकटीकरण सेहो थिक।

३.७ मनमोहन झा के कथा के अनालोचित पक्ष

३.७ मनमोहन झा के कथा के अनालोचित पक्ष

३.७ मनमोहन झाक कथाक अनालोचित पक्ष

करुणा के कथाकारक रूप में प्रतिष्ठित मनमोहन झा के कथा-साहित्य के सर्वथा अनालोचित पक्ष — भारतीय राष्ट्रीयता आरो मैथिल उपराष्ट्रीयता — के उद्घाटन ई नान्हकी निबन्ध के उपलब्धि छै। पटना सचिवालय-गोलीकाण्ड (१९४२)के पृष्ठभूमि पर लिखल 'आहत आत्मा' के नरेन्द्र बाबू, ताजमहल के वैभव के नीचाँ दबल श्रमिक-वेदना के कथा, 'वीरभोग्या', 'सप्तपदी' के महाश्वेता आरो 'मीनाक्षी' के बलिदान — ई सब देखाबैछै जे करुणा के अन्तःसलिला धार के भीतर राष्ट्र-प्रेम आरो मिथिला-संस्कृति के रक्षा के दृढ़ स्वर बहै छै। रस-नजर सें करुण आरो वीर रस के समन्वय ई कथा के मूल सक्ति छै — पात्र के व्यक्तिगत प्रेम राष्ट्र, मातृभूमि अथवा सांस्कृतिक अस्मिता के लेली त्याग में परिणत होय छै। नव-इतिहासवादी नजर सें कथा के भावभूमि स्वतन्त्रता आन्दोलन, विदेसी आक्रमण आरो मिथिला के सांस्कृतिक स्मृति सें निर्मित छै। विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें मिथिला भारतीय राष्ट्र के विरोधी नै, ओकर भीतर खास सांस्कृतिक इकाई छै — ई कारण मैथिल उपराष्ट्रीयता विखण्डन नै, बहुस्तरीय भारतीयता के रूप बनैछै। मनमोहन झा के निधन (२००९)के दसम दिन के भीतर लिखल ई आलेख श्रद्धांजलि आरो आलोचना के मर्यादित संगम छै।

करुणा के कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित मनमोहन झा के कथा-साहित्य के पूरा तरह से अनालोचित पक्ष — भारतीय राष्ट्रीयता आ मैथिल उपराष्ट्रीयता — के उद्घाटन ई लघु निबन्ध के उपलब्धि हय। पटना सचिवालय-गोलीकाण्ड (१९४२)के पृष्ठभूमि पर लिखल 'आहत आत्मा' के नरेन्द्र बाबू, ताजमहल के वैभव के नीचे दबल श्रमिक-वेदना के कथा,'वीरभोग्या','सप्तपदी' के महाश्वेता आ'मीनाक्षी' के बलिदान — ई सब देखाबै हय कि करुणा के अन्तःसलिला धार के भीतर राष्ट्र-प्रेम आ मिथिला-संस्कृति के रक्षा के दृढ़ स्वर बहैत हय। रस-दृष्टि से करुण आ वीर रस के समन्वय ई कथा के मूल शक्ति हय — पात्र के व्यक्तिगत प्रेम राष्ट्र, मातृभूमि वा सांस्कृतिक अस्मिता के खातिर त्याग में परिणत होय हय। नव-इतिहासवादी दृष्टि से कथा के भावभूमि स्वतन्त्रता आन्दोलन, विदेशी आक्रमण आ मिथिला के सांस्कृतिक स्मृति से निर्मित हय।

विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि से मिथिला भारतीय राष्ट्र के विरोधी न, ओकर भीतर विशिष्ट सांस्कृतिक इकाई हय — ई कारण मैथिल उपराष्ट्रीयता विखण्डन न, बहुस्तरीय भारतीयता के रूप बनै हय। मनमोहन झा के निधन (२००९)के दसम दिन के भीतर लिखल ई आलेख श्रद्धांजलि आ आलोचना के मर्यादित संगम हय।

करुणाक कथाकारक रूपमे प्रतिष्ठित मनमोहन झाक कथा-साहित्यक सर्वथा अनालोचित पक्ष — भारतीय राष्ट्रीयता आ मैथिल उपराष्ट्रीयता — क उद्घाटन एहि लघु निबन्धक उपलब्धि थिक। पटना सचिवालय-गोलीकाण्ड (१९४२)क पृष्ठभूमि पर लिखल 'आहत आत्मा'क नरेन्द्र बाबू, ताजमहलक वैभवक नीचाँ दबल श्रमिक-वेदनाक कथा, 'वीरभोग्या', 'सप्तपदी'क महाश्वेता आ 'मीनाक्षी'क बलिदान — ई सभ देखबैत अछि जे करुणाक अन्तःसलिला धारक भीतर राष्ट्र-प्रेम आ मिथिला-संस्कृतिक रक्षाक दृढ़ स्वर बहैत अछि। रस-दृष्टिसँ करुण आ वीर रसक समन्वय एहि कथाक मूल शक्ति अछि — पात्रक व्यक्तिगत प्रेम राष्ट्र, मातृभूमि अथवा सांस्कृतिक अस्मिताक लेल त्यागमे परिणत होइत अछि। नव-इतिहासवादी दृष्टिसँ कथाक भावभूमि स्वतन्त्रता आन्दोलन, विदेशी आक्रमण आ मिथिलाक सांस्कृतिक स्मृतिसँ निर्मित अछि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ मिथिला भारतीय राष्ट्रक विरोधी नहि, ओकर भीतर विशिष्ट सांस्कृतिक इकाई अछि — एहि कारण मैथिल उपराष्ट्रीयता विखण्डन नहि, बहुस्तरीय भारतीयताक रूप बनैत अछि। मनमोहन झाक निधन (२००९)क दसम दिनक भीतर लिखल ई आलेख श्रद्धांजलि आ आलोचनाक मर्यादित संगम थिक।

३.८ मैथिली पत्रकारिता के विकास में प्रवासी के योगदान

३.८ मैथिली पत्रकारिता के विकास में प्रवासी के योगदान

३.८ मैथिली पत्रकारिताक विकासमे प्रवासीक योगदान

पत्रकारिता के परिभाषा (निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप पाठ्य-सामग्री के निष्पक्ष प्रसार)सें आरम्भ कें लेखक पत्र, पत्रकार आरो पत्रकारिता के बीच अन्तर स्पष्ट करैछै। हुनकर प्रश्न छै — मैथिली में नियमित, आर्थिक रूप सें आत्मनिर्भर समाचार-पत्र परम्परा सीमित रहला 'पत्रकारिता' सबद के अरथ

कोना निर्धारित हो? प्रवासी-निवासी के विधिक कसौटी (विदेसी मुद्रा विनिमय अधिनियम)के सामने ओ सांस्कृतिक मिथिला के अखण्डता के तर्क राखैछै — नेपाल-तराइ आरो भारतीय मिथिला के बीच युग-युग के अविच्छिन्न सांस्कृतिक एकसूत्रता के आगू राजनीतिक सीमा गौण। प्रवासी मैथिल सिनी द्वारा जयपुर सें प्रकाशित 'मैथिल-हितसाधन' (१९०५) आरो बनारस सें प्रकाशित 'मिथिलामोद' (१९०५) सामाजिक शिक्षा, स्त्रीशिक्षा, रूढ़िविरोध, भाषा-संवर्धन आरो निर्भी के सम्पादकीय नजर के वाहक बनल; ई पत्रिका सब के उद्गार-उद्धरण सहित विवेचन ऐतिहासिक नजर सें बहुमूल्य छै। सबसें बारीक छै ज्ञान-समाजशास्त्रीय ई विश्लेषण जे सम्पादकीय निर्भीकता के सामाजिक आधार की छेलै — विद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझा आरो मम मुरलीधर झा तत्कालीन सत्ता-केन्द्र दरभंगा पर आश्रित नै छेलै, तें स्पष्टवादिता सम्भव भेलै। सार्वजनिक क्षेत्र के सिद्धान्त सें ई पत्र-पत्रिका समाज के वैचारिक संवाद-मञ्च बनैछै — मिथिला के भीतर जे प्रश्न उठाना कठिन छेलै, प्रवास के अपेक्षाकृत स्वतन्त्र वातावरण में ओ प्रश्न निर्भीकता सें उठल। विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें प्रवास सीमा-बाहर के अवस्था नै, मिथिला के विस्तृत सांस्कृतिक परिधि छै — जयपुर, बनारस, अजमेर, कलकत्ता, दिल्ली, नेपाल आदि स्थान मैथिली चेतना के वैकल्पिक केन्द्र बनैछै। पत्रकारिता के आजीविका आरो व्यवसाय के कसौटी सें फराक कें देखैके प्रस्ताव मैथिली पत्रकारिता के इतिहास-लेखन लेली एक वैकल्पिक (समान्तर) ढाँचा परस्तुत करैछै।

पत्रकारिता के परिभाषा (निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप पाठ्य-सामग्री के निष्पक्ष प्रसार)से आरम्भ के लेखक पत्र, पत्रकार आ पत्रकारिता के बीच अन्तर साफ करै हथिन। हुनकर प्रश्न हय — मैथिली में नियमित, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर समाचार-पत्र परम्परा सीमित रहने 'पत्रकारिता' शब्द के अर्थ कइसे निर्धारित हो? प्रवासी-निवासी के विधिक कसौटी (विदेशी मुद्रा विनिमय अधिनियम)के सोझाँ ओ सांस्कृतिक मिथिला के अखण्डता के तर्क रखै हथिन — नेपाल-तराइ आ भारतीय मिथिला के बीच युग-युग के अविच्छिन्न सांस्कृतिक एकसूत्रता के आगू राजनीतिक सीमा गौण। प्रवासी मैथिल लोग द्वारा जयपुर से प्रकाशित 'मैथिल-हितसाधन' (१९०५) आ बनारस से प्रकाशित

'मिथिलामोद' (१९०५) सामाजिक शिक्षा, स्त्रीशिक्षा, रूढ़िविरोध, भाषा-संवर्धन आ निर्भीक सम्पादकीय दृष्टि के वाहक बनल; ई पत्रिका सभ के उद्गार-उद्धरण सहित विवेचन ऐतिहासिक दृष्टि से बहुमूल्य हय। सबसे सूक्ष्म हय ज्ञान-समाजशास्त्रीय ई विश्लेषण जे सम्पादकीय निर्भीकता के सामाजिक आधार की हल — विद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझा आ मम मुरलीधर झा तत्कालीन सत्ता-केन्द्र दरभंगा पर आश्रित न हलथिन, तँ स्पष्टवादिता सम्भव भेल। सार्वजनिक क्षेत्र के सिद्धान्त से ई पत्र-पत्रिका समाज के वैचारिक संवाद-मञ्च बनै हय — मिथिला के भीतर जे प्रश्न उठाएब कठिन हल, प्रवास के अपेक्षाकृत स्वतन्त्र वातावरण में ओ प्रश्न निर्भीकता से उठल। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि से प्रवास सीमा-बाहर के अवस्था न, मिथिला के विस्तृत सांस्कृतिक परिधि हय — जयपुर, बनारस, अजमेर, कलकत्ता, दिल्ली, नेपाल आदि स्थान मैथिली चेतना के वैकल्पिक केन्द्र बनै हय। पत्रकारिता के आजीविका आ व्यवसाय के कसौटी से फराक के देखे के प्रस्ताव मैथिली पत्रकारिता के इतिहास-लेखन खातिर एक वैकल्पिक (समान्तर) ढाँचा प्रस्तुत करै हय।

पत्रकारिताक परिभाषा (निर्धारित लक्ष्यक अनुरूप पाठ्य-सामग्रीक निष्पक्ष प्रसार)सँ आरम्भ कऽ लेखक पत्र, पत्रकार आ पत्रकारिताक बीच अन्तर स्पष्ट करैत छथि। हुनकर प्रश्न अछि — मैथिलीमे नियमित, आर्थिक रूपसँ आत्मनिर्भर समाचार-पत्र परम्परा सीमित रहने 'पत्रकारिता' शब्दक अर्थ कोना निर्धारित हो? प्रवासी-निवासीक विधिक कसौटी (विदेशी मुद्रा विनिमय अधिनियम)क सोझाँ ओ सांस्कृतिक मिथिलाक अखण्डताक तर्क रखैत छथि — नेपाल-तराइ आ भारतीय मिथिलाक बीच युग-युगक अविच्छिन्न सांस्कृतिक एकसूत्रताक आगाँ राजनीतिक सीमा गौण। प्रवासी मैथिल लोकनि द्वारा जयपुरसँ प्रकाशित 'मैथिल-हितसाधन' (१९०५) आ बनारससँ प्रकाशित 'मिथिलामोद' (१९०५) सामाजिक शिक्षा, स्त्रीशिक्षा, रूढ़िविरोध, भाषा-संवर्धन आ निर्भीक सम्पादकीय दृष्टिक वाहक बनल; एहि पत्रिका सभक उद्गार-उद्धरण सहित विवेचन ऐतिहासिक दृष्टिएँ बहुमूल्य अछि। सभसँ सूक्ष्म अछि ज्ञान-समाजशास्त्रीय ई विश्लेषण जे सम्पादकीय निर्भीकताक सामाजिक आधार की छल — विद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझा आ मम मुरलीधर झा तत्कालीन सत्ता-केन्द्र दरभंगा पर आश्रित नहि छलाह, तँ स्पष्टवादिता सम्भव भेल।

सार्वजनिक क्षेत्रक सिद्धान्तसँ ई पत्र-पत्रिका समाजक वैचारिक संवाद-मञ्च बनैत अछि — मिथिलाक भीतर जे प्रश्न उठाएब कठिन छल, प्रवासक अपेक्षाकृत स्वतन्त्र वातावरणमे ओ प्रश्न निर्भीकतासँ उठल। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ प्रवास सीमा-बाहरक अवस्था नहि, मिथिलाक विस्तृत सांस्कृतिक परिधि अछि — जयपुर, बनारस, अजमेर, कलकत्ता, दिल्ली, नेपाल आदि स्थान मैथिली चेतनाक वैकल्पिक केन्द्र बनैत अछि। पत्रकारिताकेँ आजीविका आ व्यवसायक कसौटीसँ फराक कऽ देखबाक प्रस्ताव मैथिली पत्रकारिताक इतिहास-लेखन लेल एक वैकल्पिक (समान्तर) ढाँचा प्रस्तुत करैत अछि।

३.९ मैथिली लोकगाथा में दीनाभद्री

३.९ मैथिली लोकगाथा में दीनाभद्री

३.९ मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री

ई अध्याय पाठालोचन-शास्त्र आरो निम्नवर्गीय विमर्श के संगम-स्थल छै। ग्रियर्सन-संकलित गीत दीनाभद्री (१८८५)के मूल-स्रोत के प्रतिष्ठा दै लेखक ई मार्मिक सवाल उठाबैछै जे परवर्ती विद्वान् अपन-अपन व्यक्तिगत संकलन के आधार बना लिखै गेलाह, मतरकि मूल पाठ आरो अपन पाठक अन्तर के हिसाब कोय नै देलकै — ई साहित्यिक अराजकता छै; ग्रियर्सन के संकलन के उपेक्षित राखि ‘मूल गाथा अप्रकाशित’ कहना ऐतिहासिक रूप सें अनुचित छै। दुनू पाठक तुलनात्मक अध्ययन (सात बनाम तेरह अध्याय, गुलामी जट के भूमिका-भेद, स्वाधीनता के बाद दीनाभद्री के मुह में अंग्रेजी सबद के प्रवेश) लोकगाथा के ‘लोच’-सिद्धान्त के परमाणिक निदर्शन छै — लोककण्ठ में रहै गाथा वाचक, काल आरो श्रोता के अनुसार बदलै रहै छै, आरो इहे लोच ओकर जीवनी-सक्ति छै।

ई अध्याय पाठालोचन-शास्त्र आ निम्नवर्गीय विमर्श के संगम-स्थल हय। ग्रियर्सन-संकलित गीत दीनाभद्री (१८८५)के मूल-स्रोत के प्रतिष्ठा दे लेखक ई मार्मिक प्रश्न उठावै हथिन कि परवर्ती विद्वान् अपन-अपन व्यक्तिगत संकलन के आधार बना लिखै गेलथिन, मुदा मूल पाठ आ अपन पाठ के अन्तर के हिसाब केओ न देलथिन — ई साहित्यिक अराजकता हय; ग्रियर्सन के संकलन

के उपेक्षित रखके 'मूल गाथा अप्रकाशित' कहब ऐतिहासिक रूप से अनुचित हय। दुनो पाठ के तुलनात्मक अध्ययन (सात बनाम तेरह अध्याय, गुलामी जट के भूमिका-भेद, स्वाधीनता के बाद दीनाभद्री के मुह में अंग्रेजी शब्द के प्रवेश) लोकगाथा के 'लोच'-सिद्धान्त के प्रामाणिक निदर्शन हय — लोककण्ठ में रहै गाथा वाचक, काल आ श्रोता के अनुसार बदलै रहै हय, आ इहे लोच ओकर जीवनी-शक्ति हय।

ई अध्याय पाठालोचन-शास्त्र आ निम्नवर्गीय विमर्शक संगम-स्थल थिक। ग्रियर्सन-संकलित गीत दीनाभद्री (१८८५)केँ मूल-स्रोतक प्रतिष्ठा दैत लेखक ई मार्मिक प्रश्न उठबैत छथि जे परवर्ती विद्वान् अपन-अपन व्यक्तिगत संकलनकेँ आधार बना लिखैत गेलाह, मुदा मूल पाठ आ अपन पाठक अन्तरक हिसाब केओ नहि देलनि — ई साहित्यिक अराजकता थिक; ग्रियर्सनक संकलनकेँ उपेक्षित राखि 'मूल गाथा अप्रकाशित' कहब ऐतिहासिक रूपसँ अनुचित अछि। दुनू पाठक तुलनात्मक अध्ययन (सात बनाम तेरह अध्याय, गुलामी जटक भूमिका-भेद, स्वाधीनताक बाद दीनाभद्रीक मुहमे अंग्रेजी शब्दक प्रवेश) लोकगाथाक 'लोच'-सिद्धान्तक प्रामाणिक निदर्शन थिक — लोककण्ठमे रहैत गाथा वाचक, काल आ श्रोताक अनुसार बदलैत रहैत अछि, आ इएह लोच ओकर जीवनी-शक्ति थिक।

दीना आरो भद्री मुसहर जातिक वीर भ्रातृद्वय छै; जोरावर सिंह के सामन्ती अत्याचार के विरुद्ध हुनकर विद्रोह, शौर्य, भ्रातृ-प्रेम, पंचायती लोकतन्त्र में आस्था ('पंचसँ निसाफ') आरो शोष के-प्रतिकारक विश्लेषण देखाबैछै जे नायकत्व के समस्त शास्त्रीय गुन दलित समाजो में वर्तमान छेलै — ई स्थापना राजकुल-केन्द्रित नायकत्व-सिद्धान्त के प्रति-कथन छै। लोकगाथा में जातीय उत्पीड़न, सामाजिक विषमता, साहस, न्याय आरो सामुदायिक स्मृति संरक्षित छै; लोकनायक के महत्ता राजकीय पद सें नै, पीड़ित समुदाय के रक्षा आरो आत्मसम्मान सें निर्धारित होय छै। दलित आलोचना सें ई अध्याय विशेष उल्लेखनीय छै — मुख्य इतिहास जे समुदाय के इतिहासहीन मानैछै, ओकर लोकगाथा अपने इतिहास के वैकल्पिक अभिलेख बनि जाय छै। विदेह समान्तर इतिहास के नजर में दीनाभद्री राजदरबार के नायक नै, लोककण्ठ के नायक छै — ई परिवर्तन सें साहित्यिक आरो राजनीतिक स्थान के पुनर्वितरण

होय छै, आरो लोकगाथा के वर्तमान राजनीतिक अवकाश-निर्माण में भूमिका के संकेत एकरा समकालीन विमर्श सें जोड़ै छै।

दीना आ भद्री मुसहर जाति के वीर भ्रातृद्वय हथिन; जोरावर सिंह के सामन्ती अत्याचार के विरुद्ध हुन के विद्रोह, शौर्य, भ्रातृ-प्रेम, पंचायती लोकतन्त्र में आस्था ('पंच से निसाफ') आ शोष के-प्रतिकारक विश्लेषण देखाबै हय कि नायकत्व के समस्त शास्त्रीय गुण दलित समाजो में वर्तमान हल — ई स्थापना राजकुल-केन्द्रित नायकत्व-सिद्धान्त के प्रति-कथन हय। लोकगाथा में जातीय उत्पीड़न, सामाजिक विषमता, साहस, न्याय आ सामुदायिक स्मृति संरक्षित हय; लोकनायक के महत्ता राजकीय पद से न, पीड़ित समुदाय के रक्षा आ आत्मसम्मान से निर्धारित होय हय। दलित आलोचना से ई अध्याय विशेष उल्लेखनीय हय — मुख्य इतिहास जे समुदाय के इतिहासहीन मानै हय, ओकर लोकगाथा खुद इतिहास के वैकल्पिक अभिलेख बन जाय हय। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि में दीनाभद्री राजदरबार के नायक न, लोककण्ठ के नायक हथिन — ई परिवर्तन से साहित्यिक आ राजनीतिक स्थान के पुनर्वितरण होय हय, आ लोकगाथा के वर्तमान राजनीतिक अवकाश-निर्माण में भूमिका के संकेत एकरा समकालीन विमर्श से जोड़ै हय।

दीना आ भद्री मुसहर जातिक वीर भ्रातृद्वय छथि; जोरावर सिंहक सामन्ती अत्याचारक विरुद्ध हुनक विद्रोह, शौर्य, भ्रातृ-प्रेम, पंचायती लोकतन्त्रमे आस्था ('पंचसँ निसाफ') आ शोषक-प्रतिकारक विश्लेषण देखबैत अछि जे नायकत्वक समस्त शास्त्रीय गुण दलित समाजोमे वर्तमान छल — ई स्थापना राजकुल-केन्द्रित नायकत्व-सिद्धान्तक प्रति-कथन थिक। लोकगाथामे जातीय उत्पीड़न, सामाजिक विषमता, साहस, न्याय आ सामुदायिक स्मृति संरक्षित अछि; लोकनायकक महत्ता राजकीय पदसँ नहि, पीड़ित समुदायक रक्षा आ आत्मसम्मानसँ निर्धारित होइत अछि। दलित आलोचनासँ ई अध्याय विशेष उल्लेखनीय अछि — मुख्य इतिहास जाहि समुदायकेँ इतिहासहीन मानैत अछि, ओकर लोकगाथा स्वयं इतिहासक वैकल्पिक अभिलेख बनि जाइत अछि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिमे दीनाभद्री राजदरबारक नायक नहि, लोककण्ठक नायक छथि — एहि परिवर्तनसँ साहित्यिक आ राजनीतिक

स्थानक पुनर्वितरण होइत अछि, आ लोकगाथाक वर्तमान राजनीतिक अवकाश-निर्माणमे भूमिकाक संकेत एकरा समकालीन विमर्शसँ जोड़ैत अछि।

३.१० मैथिली कथा के विकास : कुछ नव तथ्य

३.१० मैथिली कथा के विकास: किछु नव तथ्य

३.१० मैथिली कथाक विकास : किछु नव तथ्य

नव-इतिहासवादी पुनर्लेखन के ई श्रेष्ठ उदाहरण छै। स्थापित मान्यता — चन्दा झाकृत पुरुषपरीक्षा के अनुवाद (१८८९) मैथिली कथा के प्रस्थान-बिन्दु — के खण्डन तीन कसौटी पर कैल गेलै : अनुवादक प्रचार-प्रसार के तत्कालीन असम्भाव्यता, शब्दानुवाद के अनाकर्ष के भाषा (जयकान्त मिश्र आरो रमानाथ झा के साक्ष्य सहित), आरो प्रभावित वर्ग के अव्यावहारिकता (संस्कृत के अधीत विद्वान् अनुवाद सें प्रेरित काहे होएताह?)। ओकर विकल्प में लेखक मैथिली कथा के आरम्भ केवल मुद्रित आधुनिक कथा सें मानैके विरोध करैछै : ज्योतिरीश्वर के वर्णरत्नाकर में चौंसठि कला में परिगणित 'कथाकौशल', व्रतकथा के तेसरका धारा (मधुश्रावणी, सिरता-बिसता)के वाचिक परम्परा, लोककथा, हास्य-व्यङ्ग्य आरो मौखिक आख्यान के दीर्घ परम्परा के आधुनिक कथा के पूर्वपीठिका मानलों गेलै। रचनात्मक उपलब्धि ई छै जे लेखक कथा आरो कथाकौशल में भेद करैछै — कथ्य एक वस्तु छै; श्रोता के बान्हि राखैके भाषा, गति, स्वर, संवाद आरो प्रस्तुति दोसरका। ई नजर सें मौखिक साहित्य अपरिपक्व नै, अपन स्वतन्त्र सौन्दर्यशास्त्रवाला विधा छै।

नव-इतिहासवादी पुनर्लेखन के ई श्रेष्ठ उदाहरण हय। स्थापित मान्यता — चन्दा झाकृत पुरुषपरीक्षा के अनुवाद (१८८९) मैथिली कथा के प्रस्थान-बिन्दु — के खण्डन तीन कसौटी पर कैल गेल हय: अनुवादक प्रचार-प्रसार के तत्कालीन असम्भाव्यता, शब्दानुवाद के अनाकर्षक भाषा (जयकान्त मिश्र आ रमानाथ झा के साक्ष्य सहित), आ प्रभावित वर्ग के अव्यावहारिकता (संस्कृत के अधीत विद्वान् अनुवाद से प्रेरित काहे होएताह?)। ओकर विकल्प में लेखक मैथिली कथा के आरम्भ खाली मुद्रित आधुनिक कथा से माने के विरोध करै हथिन: ज्योतिरीश्वर के वर्णरत्नाकर में चौंसठि कला में परिगणित 'कथाकौशल',

व्रतकथा के तेसर धारा (मधुश्रावणी, सिरता-बिसता)के वाचिक परम्परा, लोककथा, हास्य-व्यङ्ग्य आ मौखिक आख्यान के दीर्घ परम्परा के आधुनिक कथा के पूर्वपीठिका मानल गेल हय। रचनात्मक उपलब्धि ई हय कि लेखक कथा आ कथाकौशल में भेद करै हथिन — कथ्य एक वस्तु हय; श्रोता के बान्हि रखे के भाषा, गति, स्वर, संवाद आ प्रस्तुति दोसर। ई दृष्टि से मौखिक साहित्य अपरिपक्व न, अपन स्वतन्त्र सौन्दर्यशास्त्रवाला विधा हय।

नव-इतिहासवादी पुनर्लेखनक ई श्रेष्ठ उदाहरण थिक। स्थापित मान्यता — चन्दा झाकृत पुरुषपरीक्षाक अनुवाद (१८८९) मैथिली कथाक प्रस्थान-बिन्दु — क खण्डन तीन कसौटी पर कएल गेल अछि : अनुवादक प्रचार-प्रसारक तत्कालीन असम्भाव्यता, शब्दानुवादक अनाकर्षक भाषा (जयकान्त मिश्र आ रमानाथ झाक साक्ष्य सहित), आ प्रभावित वर्गक अव्यावहारिकता (संस्कृतक अधीत विद्वान् अनुवादसँ प्रेरित किएक होएताह?)। तकर विकल्पमे लेखक मैथिली कथाक आरम्भ केवल मुद्रित आधुनिक कथासँ मानबाक विरोध करैत छथि : ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरमे चौंसठि कलामे परिगणित ‘कथाकौशल’, व्रतकथाक तेसर धारा (मधुश्रावणी, सिरता-बिसता)क वाचिक परम्परा, लोककथा, हास्य-व्यङ्ग्य आ मौखिक आख्यानक दीर्घ परम्पराकेँ आधुनिक कथाक पूर्वपीठिका मानल गेल अछि। रचनात्मक उपलब्धि ई अछि जे लेखक कथा आ कथाकौशलमे भेद करैत छथि — कथ्य एक वस्तु अछि; श्रोताकेँ बान्हि रखबाक भाषा, गति, स्वर, संवाद आ प्रस्तुति दोसर। एहि दृष्टिसँ मौखिक साहित्य अपरिपक्व नहि, अपन स्वतन्त्र सौन्दर्यशास्त्रवाला विधा अछि।

श्रीकृष्ण ठाकुर के चन्द्रप्रभा (रचना १८८०के दश के तक, प्रकाशन १९३९)के मैथिली के पहिलों मौलिक कथा के प्रस्थान-बिन्दु मानैके प्रस्ताव, ‘चन्द्रभागा’ के स्थानपर 'चन्द्रप्रभा' नाम के शुद्धि, 'विलक्षण दाम्पत्य' के विधागत पुनर्निर्धारण आरो 'मदनराज चरित' के काल-सम्बन्धी प्रश्न अध्याय के शोधपर के उपलब्धि छै। चन्द्रप्रभा के रसधज-राजा के कथा के व्याख्या — प्रजापीड़ के शासक के विरुद्ध प्रजा के असहयोग आरो पलायन — में १८५७के असफलता के बाद के जन-आक्रोश के प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति देखना, फूलबाड़ी आरो माली के प्रतीक के माध्यम सें प्रजा आरो शासन के सम्बन्ध पढ़ना, आरो

विद्यासिन्धु के बेंग-कथा (इन्द्र-पृथ्वी-बेंग)में औपनिवेशिक शोषण आरो सत्याग्रही प्रतिरोधक रूपक पढ़ना — ई साहित्य आरो इतिहास के पारस्परिक पाठक (नव-इतिहासवाद के मूल प्रविधि के) सुन्नर परयोग छै; ध्वनि-नजर सें राजकथा औपनिवेशिक आरो सामन्ती अत्याचार के आलोचना बनि जाय छै।

श्रीकृष्ण ठाकुर के चन्द्रप्रभा (रचना १८८० के दश के तक, प्रकाशन १९३९)के मैथिली के पहिल मौलिक कथा के प्रस्थान-बिन्दु माने के प्रस्ताव, 'चन्द्रभागा' के स्थान पर'चन्द्रप्रभा' नाम के शुद्धि,'विलक्षण दाम्पत्य' के विधागत पुनर्निर्धारण आ'मदनराज चरित' के काल-सम्बन्धी प्रश्न अध्याय के शोधपरक उपलब्धि हय। चन्द्रप्रभा के रसधज-राजा के कथा के व्याख्या — प्रजापीड़ के शासक के विरुद्ध प्रजा के असहयोग आ पलायन — मे १८५७ के असफलता के बाद के जन-आक्रोश के प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति देखब, फूलबाड़ी आ माली के प्रतीक के माध्यम से प्रजा आ शासन के सम्बन्ध पढ़ब, आ विद्यासिन्धु के बेंग-कथा (इन्द्र-पृथ्वी-बेंग)मे औपनिवेशिक शोषण आ सत्याग्रही प्रतिरोध के रूपक पढ़ब — ई साहित्य आ इतिहास के पारस्परिक पाठक (नव-इतिहासवाद के मूल प्रविधिक) सुन्दर प्रयोग हय; ध्वनि-दृष्टि से राजकथा औपनिवेशिक आ सामन्ती अत्याचार के आलोचना बन जाय हय।

श्रीकृष्ण ठाकुरक चन्द्रप्रभा (रचना १८८०क दशक धरि, प्रकाशन १९३९)केँ मैथिलीक पहिल मौलिक कथाक प्रस्थान-बिन्दु मानबाक प्रस्ताव, 'चन्द्रभागा'क स्थानपर 'चन्द्रप्रभा' नामक शुद्धि, 'विलक्षण दाम्पत्य'क विधागत पुनर्निर्धारण आ 'मदनराज चरित'क काल-सम्बन्धी प्रश्न अध्यायक शोधपरक उपलब्धि अछि। चन्द्रप्रभाक रसधज-राजाक कथाक व्याख्या — प्रजापीड़क शासकक विरुद्ध प्रजाक असहयोग आ पलायन — मे १८५७क असफलताक बादक जन-आक्रोशक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति देखब, फूलबाड़ी आ मालीक प्रतीकक माध्यमसँ प्रजा आ शासनक सम्बन्ध पढ़ब, तथा विद्यासिन्धुक बेंग-कथा (इन्द्र-पृथ्वी-बेंग)मे औपनिवेशिक शोषण आ सत्याग्रही प्रतिरोधक रूपक पढ़ब — ई साहित्य आ इतिहासक पारस्परिक पाठक (नव-इतिहासवादक मूल प्रविधिक) सुन्दर प्रयोग थिक; ध्वनि-दृष्टिसँ राजकथा औपनिवेशिक आ सामन्ती अत्याचारक आलोचना बनि जाइत अछि।

३.११ मैथिली कविता में मिथिला के भूकम्प

३.११ मैथिली कविता में मिथिला के भूकम्प

३.११ मैथिली कवितामे मिथिलाक भूकम्प

प्रकृतिक उद्दीप के रूपक वर्णन-बहुल मैथिली काव्य-परम्परा में ध्वंस के रूपक उपेक्षा के सैद्धान्तिक प्रश्न सें ई निबन्ध खुजै छै। एकरा में सन् १९३४ आरो १९८८के भूकम्प के काव्यात्मक अभिलेखक अध्ययन छै। कविवर सीताराम झा के 'भूकम्प वर्णन' आरो कृष्णनन्दन सिंह के 'कम्पकारिका' के तुलनात्मक अध्ययन में कम्पकारिका के ऐतिहासिक प्रलेख-मूल्य (भूकम्प-पूर्व मिथिला के राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक स्थिति सहित) रेखांकित कैल गेलै — ई केवल विनाश-वर्णन नै, तत्कालीन मिथिला के राजनीति, अर्थव्यवस्था, भ्रष्टाचार, वस्तु-मूल्य आरो पुनर्निर्माण के काव्यात्मक दस्तावेज छै। अठारह वर्ष के वयस में भोगल त्रास के अड़तीस वर्ष तक स्मृति में जिआ कें काव्यबद्ध करैके मनोवैज्ञानिक टिप्पणी, दरभंगा अस्पताल आरो चतुर्भुज स्थान के करुण-व्यंग्य-मिश्रित चित्र, आरो १९८८के भूकम्प-काव्य-संकलन सें यात्री, चन्द्रभानु सिंह, धीरेन्द्र आरो जीवकान्त के साक्ष्य — सब मिलि आपदा-साहित्य के एक नान्हकी इतिहास बनि जाय छै। धीरेन्द्र के पाँती में विपत्ति में मनुजता के एक होय कें जएबा के निरीक्षण करुण-रस के सामाजिक परिणतिक सूच के छै।

प्रकृति के उद्दीपक रूपक वर्णन-बहुल मैथिली काव्य-परम्परा में ध्वंस के रूपक उपेक्षा के सैद्धान्तिक प्रश्न से ई निबन्ध खुजैत हय। ई में सन् १९३४ आ १९८८ के भूकम्प के काव्यात्मक अभिलेख के अध्ययन हय। कविवर सीताराम झा के 'भूकम्प वर्णन' आ कृष्णनन्दन सिंह के' केम्पकारिका' के तुलनात्मक अध्ययन में कम्पकारिका के ऐतिहासिक प्रलेख-मूल्य (भूकम्प-पूर्व मिथिला के राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक स्थिति सहित) रेखांकित कैल गेल हय — ई खाली विनाश-वर्णन न, तत्कालीन मिथिला के राजनीति, अर्थव्यवस्था, भ्रष्टाचार, वस्तु-मूल्य आ पुनर्निर्माण के काव्यात्मक दस्तावेज हय। अठारह वर्ष के वयस में भोगल त्रास के अड़तीस वर्ष तक स्मृति में जिआ के काव्यबद्ध करे के मनोवैज्ञानिक टिप्पणी, दरभंगा अस्पताल आ चतुर्भुज स्थान के करुण-व्यंग्य-मिश्रित चित्र, आ १९८८ के भूकम्प-काव्य-संकलन से यात्री, चन्द्रभानु सिंह, धीरेन्द्र आ जीवकान्त के साक्ष्य — सब मिलि आपदा-साहित्य के एक लघु

इतिहास बन जाय हय। धीरेन्द्र के पाँती में विपत्ति में मनुजता के एक होके जाय के निरीक्षण करुण-रस के सामाजिक परिणति के सूचक हय।

प्रकृतिक उद्दीपक रूपक वर्णन-बहुल मैथिली काव्य-परम्परामे ध्वंसक रूपक उपेक्षाक सैद्धान्तिक प्रश्नसँ ई निबन्ध खुजैत अछि। एहिमे सन् १९३४ आ १९८८क भूकम्पक काव्यात्मक अभिलेखक अध्ययन अछि। कविवर सीताराम झाक 'भूकम्प वर्णन' आ कृष्णनन्दन सिंहक 'कम्पकारिका'क तुलनात्मक अध्ययनमे कम्पकारिकाक ऐतिहासिक प्रलेख-मूल्य (भूकम्प-पूर्व मिथिलाक राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक स्थिति सहित) रेखांकित कएल गेल अछि — ई केवल विनाश-वर्णन नहि, तत्कालीन मिथिलाक राजनीति, अर्थव्यवस्था, भ्रष्टाचार, वस्तु-मूल्य आ पुनर्निर्माणक काव्यात्मक दस्तावेज थिक। अठारह वर्षक वयसमे भोगल त्रासकेँ अड़तीस वर्ष धरि स्मृतिमे जिआ कऽ काव्यबद्ध करबाक मनोवैज्ञानिक टिप्पणी, दरभंगा अस्पताल आ चतुर्भुज स्थानक करुण-व्यंग्य-मिश्रित चित्र, तथा १९८८क भूकम्प-काव्य-संकलनसँ यात्री, चन्द्रभानु सिंह, धीरेन्द्र आ जीवकान्तक साक्ष्य — सभ मिलि आपदा-साहित्यक एक लघु इतिहास बनि जाइत अछि। धीरेन्द्रक पाँतीमे विपत्तिमे मनुजताक एक भऽ जएबाक निरीक्षण करुण-रसक सामाजिक परिणतिक सूचक थिक।

करुण आरो भयान के रस के संयोजन ई अध्याय केन्द्र छै। घर, अस्पताल, मन्दिर, बाजार, राजभवन, गरीब के झोपड़ी — सब विनाश के समान परिधि में आबि जाय छै, मतरकि समान प्राकृतिक आघात के सामाजिक नतीजा असमान होय छै। पर्यावरणीय आलोचना सें प्राकृतिक घटना आरो सामाजिक निर्मितिक अन्तर स्पष्ट होय छै — भूकम्प प्राकृतिक छै, मतरकि कमजोर भवन, सरकारी उपेक्षा, असमान संसाधन आरो राहत के राजनीति मानवीय फैसला के नतीजा छै। विदेह समान्तर इतिहास में विपत्ति साहित्यिक इतिहास के वैध विषय बनैछै।

करुण आ भयान के रस के संयोजन ई अध्याय केन्द्र हय। घर, अस्पताल, मन्दिर, बाजार, राजभवन, गरीब के झोपड़ी — सब विनाश के समान परिधि में आबि जाय हय, मुदा समान प्राकृतिक आघात के सामाजिक परिणाम असमान होय हय। पर्यावरणीय आलोचना से प्राकृतिक घटना आ सामाजिक निर्मिति के अन्तर साफ होय हय — भूकम्प प्राकृतिक हय, मुदा कमजोर भवन, सरकारी

उपेक्षा, असमान संसाधन आ राहत के राजनीति मानवीय निर्णय के परिणाम हय। विदेह समान्तर इतिहास में विपत्ति साहित्यिक इतिहास के वैध विषय बनै हय।

करुण आ भयानक रसक संयोजन एहि अध्यायक केन्द्र अछि। घर, अस्पताल, मन्दिर, बाजार, राजभवन, गरीबक झोपड़ी — सभ विनाशक समान परिधिमे आबि जाइत अछि, मुदा समान प्राकृतिक आघातक सामाजिक परिणाम असमान होइत अछि। पर्यावरणीय आलोचनासँ प्राकृतिक घटना आ सामाजिक निर्मितिक अन्तर स्पष्ट होइत अछि — भूकम्प प्राकृतिक अछि, मुदा कमजोर भवन, सरकारी उपेक्षा, असमान संसाधन आ राहतक राजनीति मानवीय निर्णयक परिणाम अछि। विदेह समान्तर इतिहासमे विपत्ति साहित्यिक इतिहासक वैध विषय बनैत अछि।

३.१२ कथी लऽ लगेलिऐ हे कोसी माइ

३.१२ कथी ले लगेलिऐ हे कोसी माइ

३.१२ कथी लऽ लगेलिऐ हे कोसी माइ

बाढ़ि-साहित्य के ई प्रवृत्ति-सर्वेक्षण आरसी प्रसाद सिंह के हाकरोस सें आरम्भ होय कें चन्दा झा, यात्री (कौशिकी के धार), लक्ष्मीपति सिंह, चन्द्रभानु सिंह, सियाराम झा 'सरस' आरो सुकान्त सोम तक पसरल छै। ई अध्याय में कोसी आरो मिथिला के अन्य नदी सब के मातृरूप, जीवनदायिनी सक्ति आरो विनाशकारी बाढ़ि — तीनू रूप में देखल गेलै। 'नदी मातृक क्षेत्र' के शास्त्रीय गौरव आरो प्रतिवर्ष के जल-प्रलय, भूख, विस्थापन, ऋण आरो पलायन के यथार्थ के बीच के विडम्बना के लेखक कोसी-माइ के लोकगीतीय उपराग सें जोड़ि दैछै — माइ के प्रकोप मानि मनौती करै लोक-मानस के चित्रण सांस्कृतिक अध्ययन के सामग्री छै। कोसी के 'माइ' रूप सांस्कृतिक आत्मीयता उत्पन्न करैछै, मतरकि कविता में ई माइ सें प्रश्न सेहो कैल जाय छै — भक्ति आरो प्रतिरोध एकसाथ हाजिर छै। सुकान्त सोम के कविता में मन्त्री के हवाई-सर्वेक्षण के व्यंग्य — सुखाएल बाँस के फट्ठी जइसन आकृति सब के ऊपर उड़ै विमान आरो अखबार में एगो हरियर मुस्काइत चेहरा — सत्ता-आलोचना के तीक्ष्णतम उदाहरण के रूप में उद्धृत छै। राहत-सामग्री के लूट, साँप-मूस के मिलन आरो पारिस्थितिकीय क्षतिक परसंग बाढ़ि के प्राकृतिक आपदा सें आगू

राजनीतिक-नैतिक प्रश्न बना दैछै। पर्यावरणीय आलोचना के नजर सें ई अध्याय मनुष्यकेन्द्रित सीमा पार करै पशु-पक्षी, बगुला, खेत, पोखरि, वनस्पति आरो सम्पूर्ण जीव-मण्डल के त्रासदी देखाबैछै; नदी के प्राकृतिक प्रवाह, बान्ह, तटबन्ध, राहत-व्यवस्था, सरकारी सर्वेक्षण आरो भ्रष्टाचार एक जटिल राजनीतिक पर्यावरण बनाबै छै। विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें बाढ़ि मिथिला के बाहरी दुर्घटना नै, ओकर सामाजिक बनावट, लोकगीत, स्मृति, अर्थव्यवस्था आरो पलायन के निर्णायक इतिहास छै।

बाढ़ि-साहित्य के ई प्रवृत्ति-सर्वेक्षण आरसी प्रसाद सिंह के हाकरोस से आरम्भ होके चन्दा झा, यात्री (कौशिकी के धार), लक्ष्मीपति सिंह, चन्द्रभानु सिंह, सियाराम झा 'सरस' आ सुकान्त सोम तक पसरल हय। ई अध्याय में कोसी आ मिथिला के आन नदी सब के मातृरूप, जीवनदायिनी शक्ति आ विनाशकारी बाढ़ि — तीनू रूप में देखल गेल हय। 'नदी मातृ के क्षेत्र' के शास्त्रीय गौरव आ प्रतिवर्ष के जल-प्रलय, भूख, विस्थापन, ऋण आ पलायन के यथार्थ के बीच के विडम्बना के लेखक कोसी-माइ के लोकगीतीय उपराग से जोड़के दे हथिन — माइ के प्रकोप मानके मनौती करै लोक-मानस के चित्रण सांस्कृतिक अध्ययन के सामग्री हय। कोसी के'माइ' रूप सांस्कृतिक आत्मीयता पैदा करै हय, मुदा कविता में ई माइ से प्रश्न भी कैल जाय हय — भक्ति आ प्रतिरोध एकसाथ उपस्थित हय। सुकान्त सोम के कविता में मन्त्री के हवाई-सर्वेक्षण के व्यंग्य — सुखाएल बाँस के फट्टी जइसन आकृति सभ के ऊपर उड़ैत विमान आ अखबार में एकगो हरियर मुस्काइत चेहरा — सत्ता-आलोचना के तीक्ष्णतम उदाहरण के रूप में उद्धृत हय। राहत-सामग्री के लूट, साँप-मूस के मिलन आ पारिस्थितिकीय क्षति के प्रसंग बाढ़ि के प्राकृतिक आपदा से आगू राजनीतिक-नैतिक प्रश्न बना दे हय। पर्यावरणीय आलोचना के दृष्टि से ई अध्याय मनुष्यकेन्द्रित सीमा पार करै पशु-पक्षी, बगुला, खेत, पोखरि, वनस्पति आ पूरा जीव-मण्डल के त्रासदी देखाबै हय; नदी के प्राकृतिक प्रवाह, बान्ह, तटबन्ध, राहत-व्यवस्था, सरकारी सर्वेक्षण आ भ्रष्टाचार एक जटिल राजनीतिक पर्यावरण बनावै हय। विदेह समान्तर इतिहास के दृष्टि से बाढ़ि मिथिला के बाहरी दुर्घटना न, ओकर सामाजिक संरचना, लोकगीत, स्मृति, अर्थव्यवस्था आ पलायन के निर्णायक इतिहास हय।

बाढ़ि-साहित्यक ई प्रवृत्ति-सर्वेक्षण आरसी प्रसाद सिंहक हाकरोससँ आरम्भ भऽ चन्दा झा, यात्री (कौशिकीक धार), लक्ष्मीपति सिंह, चन्द्रभानु सिंह, सियाराम झा 'सरस' आ सुकान्त सोम धरि पसरल अछि। एहि अध्यायमे कोसी आ मिथिलाक अन्य नदी सभकेँ मातृरूप, जीवनदायिनी शक्ति आ विनाशकारी बाढ़ि — तीनू रूपमे देखल गेल अछि। 'नदी मातृक क्षेत्र'क शास्त्रीय गौरव आ प्रतिवर्षक जल-प्रलय, भूख, विस्थापन, ऋण आ पलायनक यथार्थक बीचक विडम्बनाकेँ लेखक कोसी-माइक लोकगीतीय उपरागसँ जोड़ि दैत छथि — माइक प्रकोप मानि मनौती करैत लोक-मानसक चित्रण सांस्कृतिक अध्ययनक सामग्री थिक। कोसीक 'माइ' रूप सांस्कृतिक आत्मीयता उत्पन्न करैत अछि, मुदा कवितामे एहि माइसँ प्रश्न सेहो कएल जाइत अछि — भक्ति आ प्रतिरोध एकसाथ उपस्थित अछि। सुकान्त सोमक कवितामे मन्त्रीक हवाई-सर्वेक्षणक व्यंग्य — सुखाएल बाँसक फट्ठी सन आकृति सभक ऊपर उड़ैत विमान आ अखबारमे एकटा हरियर मुस्काइत चेहरा — सत्ता-आलोचनाक तीक्ष्णतम उदाहरणक रूपमे उद्धृत अछि। राहत-सामग्रीक लूट, साँप-मूसक मिलन आ पारिस्थितिकीय क्षतिक प्रसंग बाढ़िकेँ प्राकृतिक आपदासँ आगाँ राजनीतिक-नैतिक प्रश्न बना दैत अछि। पर्यावरणीय आलोचनाक दृष्टिसँ ई अध्याय मनुष्यकेन्द्रित सीमा पार करैत पशु-पक्षी, बगुला, खेत, पोखरि, वनस्पति आ सम्पूर्ण जीव-मण्डलक त्रासदी देखबैत अछि; नदीक प्राकृतिक प्रवाह, बान्ह, तटबन्ध, राहत-व्यवस्था, सरकारी सर्वेक्षण आ भ्रष्टाचार एक जटिल राजनीतिक पर्यावरण बनबैत अछि। विदेह समान्तर इतिहासक दृष्टिसँ बाढ़ि मिथिलाक बाहरी दुर्घटना नहि, ओकर सामाजिक संरचना, लोकगीत, स्मृति, अर्थव्यवस्था आ पलायनक निर्णायक इतिहास अछि।

३.१३ मैथिली महाकाव्य में युग-सन्दर्भ

३.१३ मैथिली महाकाव्य में युग-सन्दर्भ

३.१३ मैथिली महाकाव्यमे युग-सन्दर्भ

पाँच महाकाव्य — सुभद्राहरण (मुंशी रघुनन्दन दास), राधाविरह (मधुप), अगस्त्यायनी (मार्कण्डेय प्रवासी), त्रिपुण्ड (धीरेन्द्र) आरो पराशर (किरण) — के चयन पाँच युगीन प्रयोजनक आधार पर कैल गेलै : स्वाधीनता-संघर्ष, नारी-

सशक्तीकरण, राष्ट्रीय भावात्मक एकता, श्रम-निष्ठ युवा-सक्ति आरो मैथिल उपराष्ट्रीयता। पौराणिक कथानक के भीतर समकालीन इतिहास पढ़ैके ई पद्धति — जहल सें बेटा के पत्र पाबि लिखल सुभद्राहरण में असहयोग आन्दोलन के कर-बहिष्कार, अगस्त्यायनी में भाषा-विवाद के समाधान रूप में शिव के डमरू सें तमिल-संस्कृत के युगपत् जन्म, पराशर में 'अन्न थिक प्राण' के श्रम-घोष आरो सीता के मुहेँ मिथिला के लोकतन्त्री गौरव — रूपक-पाठ (अन्योक्ति-व्याख्या)के सफल परयोग छै। नव-इतिहासवादी सिद्धान्त के अनुरूप पुराण के पात्र अपन पुरान समय में बन्द नै रहै छै : अर्जुन स्वतन्त्रता सेनानी के कर्तव्यबोध के प्रतीक बनैछै; राधा राष्ट्र आरो समाज-सुधार में स्त्री के सहभागिता के स्वर बनैछै; अगस्त्य उत्तर-दक्षिण समन्वय के वाहक बनैछै; त्रिपुण्ड में शिव कृष के आरो श्रमिक बनैछै; पराशर में श्रम-प्रतिष्ठा, वर्णभेद-विरोध, भूख के समक्ष कर्मकाण्ड के निरर्थकता आरो मैथिली अस्मिता व्यक्त छै। भारतीय काव्यशास्त्र के साधारणीकरण प्रक्रिया एहिठाम स्पष्ट छै — पुराण के खास पात्र आधुनिक जनक सामूहिक आकांक्षा के प्रतिनिधि बनैछै। रचना-काल आरो प्रकाशन-काल के सावधान अभिलेखन ई अध्याय के इतिहास-लेखन के नजर सें सेहो परमाणिक बनाबै छै।

पाँच महाकाव्य — सुभद्राहरण (मुंशी रघुनन्दन दास), राधाविरह (मधुप), अगस्त्यायनी (मार्कण्डेय प्रवासी), त्रिपुण्ड (धीरेन्द्र) आ पराशर (किरण) — के चयन पाँच युगीन प्रयोजन के आधार पर कैल गेल हय: स्वाधीनता-संघर्ष, नारी-सशक्तीकरण, राष्ट्रीय भावात्मक एकता, श्रम-निष्ठ युवा-शक्ति आ मैथिल उपराष्ट्रीयता। पौराणिक कथानक के भीतर समकालीन इतिहास पढ़े के ई पद्धति — जहल से पुत्र के पत्र पाबि लिखल सुभद्राहरण में असहयोग आन्दोलन के कर-बहिष्कार, अगस्त्यायनी में भाषा-विवाद के समाधान रूप में शिव के डमरू से तमिल-संस्कृत के युगपत् जन्म, पराशर में'अन्न हय प्राण' के श्रम-घोष आ सीता के मुहेँ मिथिला के लोकतन्त्री गौरव — रूपक-पाठ (अन्योक्ति-व्याख्या)के सफल प्रयोग हय। नव-इतिहासवादी सिद्धान्त के अनुरूप पुराण के पात्र अपन प्राचीन समय में बन्द न रहै हथिन: अर्जुन स्वतन्त्रता सेनानी के कर्तव्यबोध के प्रतीक बनै हथिन; राधा राष्ट्र आ समाज-सुधार में स्त्री के सहभागिता के स्वर बनै हथिन; अगस्त्य उत्तर-दक्षिण

समन्वयक वाहक बनै हथिन; त्रिपुण्ड में शिव कृषक आ श्रमिक बनै हथिन; पराशर में श्रम-प्रतिष्ठा, वर्णभेद-विरोध, भूख के समक्ष कर्मकाण्ड के निरर्थकता आ मैथिली अस्मिता व्यक्त हय। भारतीय काव्यशास्त्र के साधारणीकरण प्रक्रिया इहाँ साफ हय — पुराण के विशिष्ट पात्र आधुनिक जन के सामूहिक आकांक्षा के प्रतिनिधि बनै हथिन। रचना-काल आ प्रकाशन-काल के सावधान अभिलेखन ई अध्याय के इतिहास-लेखन के दृष्टि से भी प्रामाणिक बनावै हय।

पाँच महाकाव्य — सुभद्राहरण (मुंशी रघुनन्दन दास), राधाविरह (मधुप), अगस्त्यायनी (मार्कण्डेय प्रवासी), त्रिपुण्ड (धीरेन्द्र) आ पराशर (किरण) — क चयन पाँच युगीन प्रयोजनक आधार पर कएल गेल अछि : स्वाधीनता-संघर्ष, नारी-सशक्तीकरण, राष्ट्रीय भावात्मक एकता, श्रम-निष्ठ युवा-शक्ति आ मैथिल उपराष्ट्रीयता। पौराणिक कथानकक भीतर समकालीन इतिहास पढ़बाक ई पद्धति — जहलसँ पुत्रक पत्र पाबि लिखल सुभद्राहरणमे असहयोग आन्दोलनक कर-बहिष्कार, अगस्त्यायनीमे भाषा-विवादक समाधान रूपमे शिवक डमरूसँ तमिल-संस्कृतक युगपत् जन्म, पराशरमे 'अन्न थिक प्राण'क श्रम-घोष आ सीताक मुहेँ मिथिलाक लोकतन्त्री गौरव — रूपक-पाठ (अन्योक्ति-व्याख्या)क सफल प्रयोग थिक। नव-इतिहासवादी सिद्धान्तक अनुरूप पुराणक पात्र अपन प्राचीन समयमे बन्द नहि रहैत छथि : अर्जुन स्वतन्त्रता सेनानीक कर्तव्यबोधक प्रतीक बनैत छथि; राधा राष्ट्र आ समाज-सुधारमे स्त्रीक सहभागिताक स्वर बनैत छथि; अगस्त्य उत्तर-दक्षिण समन्वयक वाहक बनैत छथि; त्रिपुण्डमे शिव कृषक आ श्रमिक बनैत छथि; पराशरमे श्रम-प्रतिष्ठा, वर्णभेद-विरोध, भूखक समक्ष कर्मकाण्डक निरर्थकता आ मैथिली अस्मिता व्यक्त अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक साधारणीकरण प्रक्रिया एहिठाम स्पष्ट अछि — पुराणक विशिष्ट पात्र आधुनिक जनक सामूहिक आकांक्षाक प्रतिनिधि बनैत छथि। रचना-काल आ प्रकाशन-कालक सावधान अभिलेखन एहि अध्यायकेँ इतिहास-लेखनक दृष्टिएँ सेहो प्रामाणिक बनबैत अछि।

३.१४ नऽव गीत में समाज-चेतना

३.१४ नऽव गीत में समाज-चेतना

३.१४ नऽव गीतमे समाज-चेतना

‘नऽव गीत’ पद के प्रवर्तन आरो परिभाषा ई निबन्ध के सैद्धान्तिक योगदान छै — ई वयोवर्ग के नै, मूल्यबोध के द्योत के; नवीन गीत के उपरान्त रचल सब्भे गीत नऽव गीत नै। नऽव गीत पारम्परिक रूढ़ कथ्य, मिथ्या गौरव, उपदेशात्मकता आरो भावु के विलाप सें हटि आधुनिक सामाजिक विसङ्गति, औद्योगीकरण, महानगरीय त्रास, भूख, बेरोजगारी आरो संघर्ष के लयात्मक रूप दैछै। यन्त्र-युग के उपज मानि एकरा में बुद्धि-तत्त्व आरो भाव-तत्त्व के लयात्मक सम्मिश्रण के लच्छन-निर्धारण, आरो पुरान गीत के गार्हस्थ्य शृंगार, चन्दा झा के भाव-विह्वलता, राष्ट्रीय चेतनावादी अतीत-गान आरो मंचीय तुकबन्दी — चारू सें एकर सीमा-रेखा खीचब वर्गीकरण-शास्त्र के सुन्नर अभ्यास छै। नऽव गीत में बुद्धि आरो भावना विरोधी नै, परस्पर पूर के छै; निजी दुःख सामूहिक सामाजिक संकट में साधारणीकृत होय छै। गंगेश गुंजनक 'दूभिक पेंपी पर बड़क गाछ पतरब' के प्रतीक-व्याख्या — दलित-शोषित के नव चेतना पर प्रभु-वर्ग के पसरब — मार्क्सवादी पाठक संयत परयोग छै; बुद्धिनाथ मिश्र के जेठुआ मकइ आरो मार्कण्डेय प्रवासी के फागुन-आह्वान के विश्लेषण नऽव गीत के वैविध्य के प्रमाणित करैछै। बालुपर लिखल इतिहास, माटिक डिबिया जइसन जरै गाम — ई प्रतीक आधुनिक असमानता के तीव्र ध्वनि उत्पन्न करैछै। मार्क्सवादी नजर सें सुविधा-भोगी वर्ग, विफल विकास-योजना, महानगर के प्रभुत्व आरो ग्रामीण दण्ड के आलोचना छै; रूपवादी नजर सें नया प्रतीक, खण्डित बिम्ब आरो बोलचाल के लय नऽव गीत के वैशिष्ट्य छै। अध्याय नऽव गीत के विविधता के कमजोरी नै, जीवित विकास के परमाण मानैछै।

‘नऽव गीत’ पद के प्रवर्तन आ परिभाषा ई निबन्ध के सैद्धान्तिक योगदान हय — ई वयोवर्ग के न, मूल्यबोध के द्योतक; नवीन गीत के उपरान्त रचल सब गीत नऽव गीत न। नऽव गीत पारम्परिक रूढ़ कथ्य, मिथ्या गौरव, उपदेशात्मकता आ भावु के विलाप से हटि आधुनिक सामाजिक विसङ्गति, औद्योगीकरण, महानगरीय त्रास, भूख, बेरोजगारी आ संघर्ष के लयात्मक रूप दे हय। यन्त्र-युग के उपज मानके ई में बुद्धि-तत्त्व आ भाव-तत्त्व के लयात्मक सम्मिश्रण के लक्षण-निर्धारण, आ प्राचीन गीत के गार्हस्थ्य शृंगार, चन्दा झा के भाव-विह्वलता, राष्ट्रीय चेतनावादी अतीत-गान आ मंचीय तुकबन्दी — चारू

से एकर सीमा-रेखा खीचब वर्गीकरण-शास्त्र के सुन्दर अभ्यास हय। नऽव गीत में बुद्धि आ भावना विरोधी न, परस् पर पूरक हय; निजी दुःख सामूहिक सामाजिक संकट में साधारणीकृत होय हय। गंगेश गुंजन के'दूभि के पेंपी पर बड़ के गाछ पतरब' के प्रतीक-व्याख्या — दलित-शोषित के नव चेतना पर प्रभु-वर्ग के पसरब — मार्क्सवादी पाठक संयत प्रयोग हय; बुद्धिनाथ मिश्र के जेठुआ मकइ आ मार्कण्डेय प्रवासी के फागुन-आह्वान के विश्लेषण नऽव गीत के वैविध्य के प्रमाणित करै हय। बालु पर लिखल इतिहास, माटि के डिबिया जइसन जरैत गाम — ई प्रतीक आधुनिक असमानता के तीव्र ध्वनि पैदा करै हय। मार्क्सवादी दृष्टि से सुविधा-भोगी वर्ग, विफल विकास-योजना, महानगर के प्रभुत्व आ ग्रामीण दण्ड के आलोचना हय; रूपवादी दृष्टि से नूतन प्रतीक, खण्डित बिम्ब आ बोलचाल के लय नऽव गीत के वैशिष्ट्य हय। अध्याय नऽव गीत के विविधता के कमजोरी न, जीवित विकास के प्रमाण मानै हय।

'नऽव गीत' पदक प्रवर्तन आ परिभाषा एहि निबन्धक सैद्धान्तिक योगदान थिक — ई वयोवर्गक नहि, मूल्यबोधक द्योतक; नवीन गीतक उपरान्त रचल सभटा गीत नऽव गीत नहि। नऽव गीत पारम्परिक रूढ़ कथ्य, मिथ्या गौरव, उपदेशात्मकता आ भावुक विलापसँ हटि आधुनिक सामाजिक विसङ्गति, औद्योगीकरण, महानगरीय त्रास, भूख, बेरोजगारी आ संघर्षकेँ लयात्मक रूप दैत अछि। यन्त्र-युगक उपज मानि एहिमे बुद्धि-तत्त्व आ भाव-तत्त्वक लयात्मक सम्मिश्रणक लक्षण-निर्धारण, आ प्राचीन गीतक गार्हस्थ्य शृंगार, चन्दा झाक भाव-विह्वलता, राष्ट्रीय चेतनावादी अतीत-गान तथा मंचीय तुकबन्दी — चारूसँ एकर सीमा-रेखा खीचब वर्गीकरण-शास्त्रक सुन्दर अभ्यास थिक। नऽव गीतमे बुद्धि आ भावना विरोधी नहि, परस्पर पूरक अछि; निजी दुःख सामूहिक सामाजिक संकटमे साधारणीकृत होइत अछि। गंगेश गुंजनक 'दूभिक पेंपी पर बड़क गाछ पतरब'क प्रतीक-व्याख्या — दलित-शोषितक नव चेतना पर प्रभु-वर्गक पसरब — मार्क्सवादी पाठक संयत प्रयोग थिक; बुद्धिनाथ मिश्रक जेठुआ मकइ आ मार्कण्डेय प्रवासीक फागुन-आह्वानक विश्लेषण नऽव गीतक वैविध्यकेँ प्रमाणित करैत अछि। बालुपर लिखल इतिहास, माटिक डिबिया जकाँ जरैत गाम — ई प्रतीक आधुनिक असमानताक तीव्र ध्वनि उत्पन्न करैत अछि। मार्क्सवादी दृष्टिसँ सुविधा-भोगी वर्ग, विफल विकास-योजना,

महानगरक प्रभुत्व आ ग्रामीण दण्डक आलोचना अछि; रूपवादी दृष्टिसँ नूतन प्रतीक, खण्डित बिम्ब आ बोलचालक लय नऽव गीतक वैशिष्टय अछि। अध्याय नऽव गीतक विविधताकेँ कमजोरी नहि, जीवित विकासक प्रमाण मानैत अछि।

३.१५ मैथिली कविता के वर्तमान धारा

३.१५ मैथिली कविता के वर्तमान धारा

३.१५ मैथिली कविताक वर्तमान धारा

भुवनेश्वर-संगोष्ठी (२०१२)में पठित ई आलेख रवीन्द्रनाथ आरो सुब्रह्मण्यम भारती के साक्ष्य सें भारतीय सामासिक संस्कृति के पट पर मागधी-प्राच्य परिवार के चारू सहोदरा (असमिया, ओड़िआ, बंगला, मैथिली)के साझा विरासत, विद्यापति के प्रभाव आरो औपनिवेशिक भाषा-सत्ता के इतिहास के स्मरण करै मैथिली कविता के चार वर्तमान धारा के निर्धारण करैछै : मानवजाति पर आयल संकट के चिन्ता (जीवकान्त के युद्ध-जर्जर शताब्दी के विदाइ), उपभोक्तावादी संस्कृति के विरोध, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के प्रतिरोध (सूचना-महापथ पर एकरेखीय विकास के मत्स्यन्याय), आरो जैविक-सांस्कृतिक वैविध्य के क्षरण-चिन्ता (छओ बिगहा आठ कट्ठा के कलम-उजाड़ि, बगुला के पलायन)। जीवकान्त आरो उदयनारायण सिंह 'नचिकेता' के कविता के आलोक में उपभोक्तावादी दानवता के विरुद्ध मानव के अस्तित्व आरो सांस्कृतिक स्वायत्तता के संघर्ष विश्लेषित छै। उत्तर-औपनिवेशिक नजर सें सूचना-साधन, बजार, उच्च प्रौद्योगिकी आरो सांस्कृतिक प्रभुत्व के सम्बन्ध उद्घाटित होय छै — एकर आशय ई नै जे बाहरी संस्कृति सें सम्पर् के वर्जित हो, बल्कि एकतरफा प्रभुत्व स्थानीय भाषा, लिपि, जिनगी-पद्धति आरो कल्पनाशक्ति के समाप्त नै करए। पर्यावरणीय नजर सें जैवविविधता, स्थानीय धान, आम के प्रजाति, पोखरि, बगुला आरो प्राकृतिक आवास के विनाश आधुनिक कविता के चिन्ता बनैछै। आशबी के 'अपेक्षित बहुमुखता' के नियम — परिवेश सें लड़बा लेली कम सें कम ओतबे आन्तरिक वैविध्य चाही जतबा परिवेश में छै — के परयोग मैथिली आलोचना में व्यवस्था-चिन्तन के प्रवेश छै, आरो ई अस्तित्व-रक्षा के प्रश्न के भावुकता सें निकालि विज्ञान के धरातल पर आनि दैछै। विदेह

समान्तर इतिहास के नजर सें मैथिली कविता भारत आरो नेपाल के साझा भाषिक जिनगी, लोकज्ञान आरो सांस्कृतिक बहुलता के रक्षा करै प्रतिरोधक काव्य बनैछै।

भुवनेश्वर-संगोष्ठी (२०१२)मे पठित ई आलेख रवीन्द्रनाथ आ सुब्रह्मण्यम भारती के साक्ष्य से भारतीय सामासिक संस्कृति के पट पर मागधी-प्राच्य परिवार के चारू सहोदरा (असमिया, ओड़िआ, बंगला, मैथिली)के साझा विरासत, विद्यापति के प्रभाव आ औपनिवेशिक भाषा-सत्ता के इतिहास के स्मरण करै मैथिली कविता के चारि वर्तमान धारा के निर्धारण करै हय: मानवजाति पर आएल संकट के चिन्ता (जीवकान्त के युद्ध-जर्जर शताब्दी के विदाइ), उपभोक्तावादी संस्कृति के विरोध, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के प्रतिरोध (सूचना-महापथ पर एकरेखीय विकास के मत्स्यन्याय), आ जैविक-सांस्कृतिक वैविध्य के क्षरण-चिन्ता (छओ बिगहा आठ कट्ठा के कलम-उजाड़ि, बगुला के पलायन)। जीवकान्त आ उदयनारायण सिंह'नचिकेता' के कविता के आलोक में उपभोक्तावादी दानवता के विरुद्ध मानव के अस्तित्व आ सांस्कृतिक स्वायत्तता के संघर्ष विश्लेषित हय। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि से सूचना-साधन, बजार, उच्च प्रौद्योगिकी आ सांस्कृतिक प्रभुत्व के सम्बन्ध उद्घाटित होय हय — एकर आशय ई न जे बाहरी संस्कृति से सम्पर् के वर्जित हो, बल्कि एकतरफा प्रभुत्व स्थानीय भाषा, लिपि, जीवन-पद्धति आ कल्पनाशक्ति के समाप्त न करए। पर्यावरणीय दृष्टि से जैवविविधता, स्थानीय धान, आम के प्रजाति, पोखरि, बगुला आ प्राकृतिक आवास के विनाश आधुनिक कविता के चिन्ता बनै हय। आशबी के'अपेक्षित बहुमुखता' के नियम — परिवेश से लड़बा खातिर कम से कम ओतने आन्तरिक वैविध्य चाही जतना परिवेश में हय — के प्रयोग मैथिली आलोचना में व्यवस्था-चिन्तन के प्रवेश हय, आ ई अस्तित्व-रक्षा के प्रश्न के भावुकता से निकालि विज्ञान के धरातल पर लाके दे हय। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि से मैथिली कविता भारत आ नेपाल के साझा भाषिक जीवन, लोकज्ञान आ सांस्कृतिक बहुलता के रक्षा करै प्रतिरोध के काव्य बनै हय।

भुवनेश्वर-संगोष्ठी (२०१२)मे पठित ई आलेख रवीन्द्रनाथ आ सुब्रह्मण्यम भारतीक साक्ष्यसँ भारतीय सामासिक संस्कृतिक पट पर मागधी-प्राच्य

परिवारक चारू सहोदरा (असमिया, ओड़िआ, बंगला, मैथिली)क साझा विरासत, विद्यापतिक प्रभाव आ औपनिवेशिक भाषा-सत्ताक इतिहासकेँ स्मरण करैत मैथिली कविताक चारि वर्तमान धाराक निर्धारण करैत अछि : मानवजाति पर आएल संकटक चिन्ता (जीवकान्तक युद्ध-जर्जर शताब्दीकेँ विदाइ), उपभोक्तावादी संस्कृतिक विरोध, सांस्कृतिक साम्राज्यवादक प्रतिरोध (सूचना-महापथ पर एकरेखीय विकासक मत्स्यन्याय), आ जैविक-सांस्कृतिक वैविध्यक क्षरण-चिन्ता (छओ बिगहा आठ कट्ठाक कलम-उजाड़ि, बगुलाक पलायन)। जीवकान्त आ उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'क कविताक आलोकमे उपभोक्तावादी दानवताक विरुद्ध मानवक अस्तित्व आ सांस्कृतिक स्वायत्तताक संघर्ष विश्लेषित अछि। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ सूचना-साधन, बजार, उच्च प्रौद्योगिकी आ सांस्कृतिक प्रभुत्वक सम्बन्ध उद्घाटित होइत अछि — एकर आशय ई नहि जे बाहरी संस्कृतिसँ सम्पर्क वर्जित हो, अपितु एकतरफा प्रभुत्व स्थानीय भाषा, लिपि, जीवन-पद्धति आ कल्पनाशक्तिकेँ समाप्त नहि करए। पर्यावरणीय दृष्टिसँ जैवविविधता, स्थानीय धान, आमक प्रजाति, पोखरि, बगुला आ प्राकृतिक आवासक विनाश आधुनिक कविताक चिन्ता बनैत अछि। आशबीक 'अपेक्षित बहुमुखता'क नियम — परिवेशसँ लड़बा लेल कमसँ कम ओतबे आन्तरिक वैविध्य चाही जतबा परिवेशमे अछि — क प्रयोग मैथिली आलोचनामे व्यवस्था-चिन्तनक प्रवेश थिक, आ ई अस्तित्व-रक्षाक प्रश्नकेँ भावुकतासँ निकालि विज्ञानक धरातल पर आनि दैत अछि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ मैथिली कविता भारत आ नेपालक साझा भाषिक जीवन, लोकज्ञान आ सांस्कृतिक बहुलताक रक्षा करैत प्रतिरोधक काव्य बनैत अछि।

३.१६ मैथिली लोकगीत : अवस्था आरो संरक्षण

३.१६ मैथिली लोकगीत: अवस्था आ संरक्षण

३.१६ मैथिली लोकगीत : अवस्था एवं संरक्षण

जनकपुरधाम के राष्ट्रीय संगोष्ठी में कार्यपत्र पर टिप्पणी-रूप में परस्तुत ई आलेख 'लोके च वेदे च' के शास्त्रीय समानान्तरता सें लोक-प्रतिष्ठा के भारतीय आधार जोड़ै छै। आरम्भ में लेखक परस्तुत आलेखक परिचयात्मक प्रवृत्तिक आलोचना करैछै आरो माँग करैछै जे लोकगीत केवल सूची नै, ओकर सामाजिक कार्य, परिवर्तन आरो विलुप्तिक कारण के विश्लेषण हो — जाँत के

स्थानपर यन्त्र आरो ढेकी के स्थानपर मिल आबि गेलापर श्रमगीत के भविष्य की होयत, ई प्रश्न बहुत सार्थक छै। लोकगीत के लेखक सामूहिक भावात्मक अभिलेख, परम्परागत ज्ञान, औषधीय अनुभव, कृषि-संस्कृति, पारिवारिक सम्बन्ध आरो जिनगी-संस्कारक भण्डार मानैछै — मेथी-हरदिक औषधीय गुन, 'नानीक पीसल मेथी' के सामाजिक अर्थशास्त्र, धोबिनियाँ के सोहाग के पौराणिक कथा-गुम्फन, तुलसी, बेल, बाँस जइसन प्रतीक अनुभवसिद्ध लोकज्ञान के अङ्ग छै। नारीवादी नजर सें अध्याय विशेष प्रखर छै : बेटी-जन्म के अवसाद आरो भ्रूण-परीक्षा-पूर्वक मरीच-परयोग के साक्ष्य, कन्या के सामाजिक अवमूल्यन, पतिद्वारा श्रम-शोषण, दहेज, सासु-ननद के नियन्त्रण आरो नवविवाहिता के देहगत आकांक्षा लोकगीत में सुरक्षित छै। लगनी के अप्रस्तुत-विधान (लौंग के फूल, यमुना में जाल)के रस-सजग व्याख्या शिष्ट-लोक के कृत्रिम भेद के खण्डन छै। संरक्षण लेली यूनेस्को के अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदा-ढाँचा सें चिन्हबा के तीन आरो संरक्षण के सात उपाय के प्रस्ताव — अभिलेखागार, सङ्ग्रहालय, क्षेत्रीय वर्गीकरण, प्रशिक्षित सङ्कलक, ध्वनि-अभिलेखन आरो समुदाय के प्रति उपलब्ध कराना — आरो समष्टि-चेतना आरो ओगबर्न के सांस्कृतिक-तत्त्व-वैविध्य के सूत्र सें नेपाल के नव लोकतन्त्र में लोकशक्तिक सांस्कृतिक आधार के तर्क व्यावहारिक नीति-प्रस्ताव के स्तर तक जाय छै, जे मैथिली आलोचना में दुर्लभ छै। विदेह समान्तर इतिहास में लोकगीत अशिक्षित समुदाय के मनोरञ्जन नै, समाज के जीवित इतिहास छै।

जनकपुरधाम के राष्ट्रीय संगोष्ठी में कार्यपत्र पर टिप्पणी-रूप में प्रस्तुत ई आलेख'लोके च वेदे च' के शास्त्रीय समानान्तरता से लोक-प्रतिष्ठा के भारतीय आधार जोड़ै हय। आरम्भ में लेखक प्रस्तुत आलेख के परिचयात्मक प्रवृत्ति के आलोचना करै हथिन आ माँग करै हथिन कि लोकगीत के खाली सूची न, ओकर सामाजिक कार्य, परिवर्तन आ विलुप्ति के कारण के विश्लेषण हो — जाँत के स्थान पर यन्त्र आ ढेकी के स्थान पर मिल आबि गेला पर श्रमगीत के भविष्य की होयत, ई प्रश्न बहुत सार्थक हय। लोकगीत के लेखक सामूहिक भावात्मक अभिलेख, परम्परागत ज्ञान, औषधीय अनुभव, कृषि-संस्कृति, पारिवारिक सम्बन्ध आ जीवन-संस्कार के भण्डार मानै हथिन — मेथी-हरदि के औषधीय गुण,'नानी के पीसल मेथी' के सामाजिक अर्थशास्त्र, धोबिनियाँ के

सोहाग के पौराणिक कथा-गुम्फन, तुलसी, बेल, बाँस जइसन प्रतीक अनुभवसिद्ध लोकज्ञान के अङ्ग हय। नारीवादी दृष्टि से अध्याय विशेष प्रखर हय: बेटी-जन्म के अवसाद आ भ्रूण-परीक्षा-पहिले के मरीच-प्रयोग के साक्ष्य, कन्या के सामाजिक अवमूल्यन, पतिद्वारा श्रम-शोषण, दहेज, सासु-ननद के नियन्त्रण आ नवविवाहिता के देहगत आकांक्षा लोकगीत में सुरक्षित हय। लगनी के अप्रस्तुत-विधान (लौंग के फूल, यमुना में जाल)के रस-सजग व्याख्या शिष्ट-लोक के कृत्रिम भेद के खण्डन हय। संरक्षण खातिर यूनेस्को के अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदा-ढाँचा से चिन्हे के तीन आ संरक्षण के सात उपाय के प्रस्ताव — अभिलेखागार, सङ्ग्रहालय, क्षेत्रीय वर्गीकरण, प्रशिक्षित सङ्कलक, ध्वनि-अभिलेखन आ समुदाय के प्रति उपलब्ध करायब — आ समष्टि-चेतना आ ओगबर्न के सांस्कृतिक-तत्त्व-वैविध्य के सूत्र से नेपाल के नव लोकतन्त्र में लोकशक्ति के सांस्कृतिक आधार के तर्क व्यावहारिक नीति-प्रस्ताव के स्तर तक जाय हय, जे मैथिली आलोचना में दुर्लभ हय। विदेह समान्तर इतिहास में लोकगीत अशिक्षित समुदाय के मनोरञ्जन न, समाज के जीवित इतिहास हय।

जनकपुरधामक राष्ट्रीय संगोष्ठीमे कार्यपत्र पर टिप्पणी-रूपमे प्रस्तुत ई आलेख 'लोके च वेदे च'क शास्त्रीय समानान्तरतासँ लोक-प्रतिष्ठाक भारतीय आधार जोड़ैत अछि। आरम्भमे लेखक प्रस्तुत आलेखक परिचयात्मक प्रवृत्तिक आलोचना करैत छथि आ माँग करैत छथि जे लोकगीतक केवल सूची नहि, ओकर सामाजिक कार्य, परिवर्तन आ विलुप्तिक कारणक विश्लेषण हो — जाँतक स्थानपर यन्त्र आ ढेकीक स्थानपर मिल आबि गेलापर श्रमगीतक भविष्य की होयत, ई प्रश्न अत्यन्त सार्थक अछि। लोकगीतकेँ लेखक सामूहिक भावात्मक अभिलेख, परम्परागत ज्ञान, औषधीय अनुभव, कृषि-संस्कृति, पारिवारिक सम्बन्ध आ जीवन-संस्कारक भण्डार मानैत छथि — मेथी-हरदिक औषधीय गुण, 'नानीक पीसल मेथी'क सामाजिक अर्थशास्त्र, धोबिनियाँक सोहागक पौराणिक कथा-गुम्फन, तुलसी, बेल, बाँस सन प्रतीक अनुभवसिद्ध लोकज्ञानक अङ्ग अछि। नारीवादी दृष्टिसँ अध्याय विशेष प्रखर अछि : बेटी-जन्मक अवसाद आ भ्रूण-परीक्षा-पूर्वक मरीच-प्रयोगक साक्ष्य, कन्याक सामाजिक अवमूल्यन, पतिद्वारा श्रम-शोषण, दहेज, सासु-ननदक नियन्त्रण आ नवविवाहिताक देहगत आकांक्षा लोकगीतमे सुरक्षित अछि। लगनीक

अप्रस्तुत-विधान (लौंगक फूल, यमुनामे जाल)क रस-सजग व्याख्या शिष्ट-लोकक कृत्रिम भेदक खण्डन थिक। संरक्षण लेल यूनेस्कोक अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदा-ढाँचासँ चिन्हबाक तीन आ संरक्षणक सात उपायक प्रस्ताव — अभिलेखागार, सङ्ग्रहालय, क्षेत्रीय वर्गीकरण, प्रशिक्षित सङ्कलक, ध्वनि-अभिलेखन आ समुदायकेँ प्रति उपलब्ध करायब — तथा समष्टि-चेतना आ ओगबर्नक सांस्कृतिक-तत्त्व-वैविध्यक सूत्रसँ नेपालक नव लोकतन्त्रमे लोकशक्तिक सांस्कृतिक आधारक तर्क व्यावहारिक नीति-प्रस्तावक स्तर धरि जाइत अछि, जे मैथिली आलोचनामे दुर्लभ अछि। विदेह समान्तर इतिहासमे लोकगीत अशिक्षित समुदायक मनोरञ्जन नहि, समाजक जीवित इतिहास अछि।

३.१७ उपनिवेशवाद के नऽव चालि

३.१७ उपनिवेशवाद के नऽव चालि

३.१७ उपनिवेशवादक नऽव चालि

समापन-निबन्ध उत्तर-औपनिवेशिक चिन्तन के व्यावहारिक शिखर छै आरो राजनीतिक स्वतन्त्रता के बादो भाषिक उपनिवेशवाद के निरन्तरता उद्घाटित करैछै। तंजानिया के किस्वाहिली-प्रकरण के विस्तृत अध्ययन — स्वाधीनता (१९६२)के बाद शिक्षा के माध्यम बनाबैके संकल्प, आर्थिक संकट, विश्व बैंक के आरो अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोष के शर्त, निजीकरण, आरो ब्रिटिश सहायता-योजना के माध्य में अंग्रेजी के पुनःस्थापन — सें ई सूत्र निकालल गेलै जे राजनीतिक उपनिवेश गेला के बाद भाषिक-सांस्कृतिक उपनिवेश आर्थिक सहायता के नव चालि सें चलै छै। मेडागास्कर, जाम्बिया, मलेशिया आरो भारत के (कर्पूरी ठाकुर-परसंग सहित) समान्तर दृष्टान्त, आरो एकहि दिन (१९ नवम्बर २००८) पटना में ब्रिटिश मन्त्री के बालिका-विद्यालय आरो अमेरिकी दूतावास के महिला-महाविद्यालय गमन के बारीक पाठ — जे स्त्री-शिक्षा के नव-विकसित क्षेत्र के औपनिवेशिक भाषा के प्रभाव-क्षेत्र बनाबैके सुनियोजित चालि छै — विचारोत्तेज के छै।

समापन-निबन्ध उत्तर-औपनिवेशिक चिन्तन के व्यावहारिक शिखर हय आ राजनीतिक स्वतन्त्रता के बादो भाषिक उपनिवेशवाद के निरन्तरता उद्घाटित

करै हय। तंजानिया के किस्वाहिली-प्रकरण के विस्तृत अध्ययन — स्वाधीनता (१९६२)के बाद शिक्षा के माध्यम बनावे के संकल्प, आर्थिक संकट, विश्व बैंक आ अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोष के शर्त, निजीकरण, आ ब्रिटिश सहायता-योजना के माध्य में अंग्रेजी के पुनःस्थापन — से ई सूत्र निकालल गेल हय कि राजनीतिक उपनिवेश गेला के बाद भाषिक-सांस्कृतिक उपनिवेश आर्थिक सहायता के नव चालि से चलै हय। मेडागास्कर, जाम्बिया, मलेशिया आ भारत के (कर्पूरी ठाकुर-प्रसंग सहित) समान्तर दृष्टान्त, आ एके दिन (१९ नवम्बर २००८) पटना में ब्रिटिश मन्त्री के बालिका-विद्यालय आ अमेरिकी दूतावास के महिला-महाविद्यालय गमन के सूक्ष्म पाठ — जे स्त्री-शिक्षा के नव-विकसित क्षेत्र के औपनिवेशिक भाषा के प्रभाव-क्षेत्र बनावे के सुनियोजित चालि हय — विचारोत्तेजक हय।

समापन-निबन्ध उत्तर-औपनिवेशिक चिन्तनक व्यावहारिक शिखर थिक आ राजनीतिक स्वतन्त्रताक बादो भाषिक उपनिवेशवादक निरन्तरता उद्घाटित करैत अछि। तंजानियाक किस्वाहिली-प्रकरणक विस्तृत अध्ययन — स्वाधीनता (१९६२)क बाद शिक्षाक माध्यम बनएबाक संकल्प, आर्थिक संकट, विश्व बैंक आ अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोषक शर्त, निजीकरण, आ ब्रिटिश सहायता-योजनाक माध्यमे अंग्रेजीक पुनःस्थापन — सँ ई सूत्र निकालल गेल अछि जे राजनीतिक उपनिवेश गेलाक बाद भाषिक-सांस्कृतिक उपनिवेश आर्थिक सहायताक नव चालिसँ चलैत अछि। मेडागास्कर, जाम्बिया, मलेशिया आ भारतक (कर्पूरी ठाकुर-प्रसंग सहित) समान्तर दृष्टान्त, तथा एकहि दिन (१९ नवम्बर २००८) पटनामे ब्रिटिश मन्त्रीक बालिका-विद्यालय आ अमेरिकी दूतावासक महिला-महाविद्यालय गमनक सूक्ष्म पाठ — जे स्त्री-शिक्षाक नव-विकसित क्षेत्रकेँ औपनिवेशिक भाषाक प्रभाव-क्षेत्र बनएबाक सुनियोजित चालि थिक — विचारोत्तेजक अछि।

उत्तर-औपनिवेशिक नजर सें लेखक के प्रमुख स्थापना छै — राज्यसत्ता छोड़ि दैना खाली उपनिवेशवाद के अन्त नै; शासन के भाषा, ज्ञान के मानदण्ड, शिक्षा के माध्यम आरो रोजगार के प्रवेश-द्वारपर अधिकार बनल रहला तक औपनिवेशिक सत्ता नव रूप में जीवित रहै छै। भारत में अंग्रेजी माध्यम के निजी विद्यालय के विस्तार, स्थानीय भाषा के प्रति शिक्षित वर्ग के हीनताबोध

आरो घर में पीढ़ीगत भाषा-संक्रमण के टूटन मैथिली के लेली दूतरफा संकट उत्पन्न करैछै। फिशमैन के भाषा-संक्रमण सिद्धान्त के सूत्र — अन्तरपुस्तीय मातृभाषा-संक्रमण के बिना भाषा-रक्षा असम्भव; जे भाषा अन्तर-पीढ़ीगत रूप सें संक्रमित नै होय छै, ओकर मृत्यु सुनिश्चित छै — आरो मैथिल परिवारसभ सें पारिवारिक भाषा के रूप में मैथिली के उठि जएबा के दृष्टान्त ई निबन्ध के 'मैथिली पर दू तरफा मारि' के चेतावनी-पत्र बना दैछै। विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें अध्याय के सबसें बेसी मार्मिक पक्ष पारिवारिक भाषा-विच्छेद छै — जब दादा-दादी पोता-पोती सें संवाद नै कें पाबै छै, तब केवल सबद नै, कथा, गीत, संस्कार, लोकज्ञान आरो सामूहिक स्मृति सेहो टूटै छै।

उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि से लेखक के प्रमुख स्थापना हय — राज्यसत्ता छोड़के देब खाली उपनिवेशवाद के अन्त न; शासन के भाषा, ज्ञान के मानदण्ड, शिक्षा के माध्यम आ रोजगार के प्रवेश-द्वार पर अधिकार बनल रहला तक औपनिवेशिक सत्ता नव रूप में जीवित रहै हय। भारत में अंग्रेजी माध्यम के निजी विद्यालय के विस्तार, स्थानीय भाषा के प्रति शिक्षित वर्ग के हीनताबोध आ घर में पीढ़ीगत भाषा-संक्रमण के टूटन मैथिली के खातिर दूतरफा संकट पैदा करै हय। फिशमैन के भाषा-संक्रमण सिद्धान्त के सूत्र — अन्तरपुस्तीय मातृभाषा-संक्रमण के बिना भाषा-रक्षा असम्भव; जे भाषा अन्तर-पीढ़ीगत रूप से संक्रमित न होय हय, ओकर मृत्यु सुनिश्चित हय — आ मैथिल परिवारसभ से पारिवारिक भाषा के रूप में मैथिली के उठि जाय के दृष्टान्त ई निबन्ध के'मैथिली पर दू तरफा मारि' के चेतावनी-पत्र बना दे हय। विदेह समान्तर इतिहास के दृष्टि से अध्याय के सबसे बेसी मार्मिक पक्ष पारिवारिक भाषा-विच्छेद हय — जब दादा-दादी पोता-पोती से संवाद न के पावै हथिन, तब खाली शब्द न, कथा, गीत, संस्कार, लोकज्ञान आ सामूहिक स्मृति भी टूटैत हय।

उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ लेखकक प्रमुख स्थापना अछि — राज्यसत्ता छोड़ि देब मात्र उपनिवेशवादक अन्त नहि; शासनक भाषा, ज्ञानक मानदण्ड, शिक्षाक माध्यम आ रोजगारक प्रवेश-द्वारपर अधिकार बनल रहला धरि औपनिवेशिक सत्ता नव रूपमे जीवित रहैत अछि। भारतमे अंग्रेजी माध्यमक निजी विद्यालयक विस्तार, स्थानीय भाषाक प्रति शिक्षित वर्गक हीनताबोध आ

घरमे पीढ़ीगत भाषा-संक्रमणक टूटन मैथिलीक लेल दूतरफा संकट उत्पन्न करैत अछि। फिशमैनक भाषा-संक्रमण सिद्धान्तक सूत्र — अन्तरपुस्तीय मातृभाषा-संक्रमणक बिना भाषा-रक्षा असम्भव; जे भाषा अन्तर-पीढ़ीगत रूपसँ संक्रमित नहि होइत अछि, ओकर मृत्यु सुनिश्चित अछि — आ मैथिल परिवारसभसँ पारिवारिक भाषाक रूपमे मैथिलीक उठि जएबाक दृष्टान्त एहि निबन्धकेँ 'मैथिली पर दू तरफा मारि'क चेतावनी-पत्र बना दैत अछि। विदेह समान्तर इतिहासक दृष्टिसँ अध्यायक सर्वाधिक मार्मिक पक्ष पारिवारिक भाषा-विच्छेद अछि — जखन दादा-दादी पोता-पोतीसँ संवाद नहि कऽ पबैत छथि, तखन केवल शब्द नहि, कथा, गीत, संस्कार, लोकज्ञान आ सामूहिक स्मृति सेहो टूटैत अछि।

४. अध्यायवार सीमा, अन्तर्विरोध आरो अपूर्णता

४. अध्यायवार सीमा, अन्तर्विरोध आ अपूर्णता

४. अध्यायवार सीमा, अन्तर्विरोध आ अपूर्णता

रमणजी के अपन घोषित सिद्धान्त छै जे आलोचना अभिनन्दन-पत्र नै छै; व्यक्त विचार के सप्रमाण खण्डित करना वा वैमत्य राखब अवमानना नै। समीक्षाशास्त्र में केवल प्रशंसा करना गुटबन्दी आरो मित्र-मण्डली के संकीर्ण दायरा के पोसबा के समान छै। तें ओहि कसौटी पर, आरो ओहि आदर-भाव सें, प्रत्येक अध्याय के सीमा, वर्गीय विलोपन आरो सैद्धान्तिक अपूर्णता के विवेचन नीचाँ परस्तुत छै। ई सीमा सब पोथी के मूल्य के घटाबै नै छै, बल्कि आगू के अनुसन्धान लेली 'वादे वादे जायते' के द्वार खोलै छै।

रमणजी के अपन घोषित सिद्धान्त हय कि आलोचना अभिनन्दन-पत्र न हय; व्यक्त विचार के सप्रमाण खण्डित करब वा वैमत्य राखब अवमानना न। समीक्षाशास्त्र में खाली प्रशंसा करब गुटबन्दी आ मित्र-मण्डली के संकीर्ण दायरा के पोसे के समान हय। तेँ ओही कसौटी पर, आ ओही आदर-भाव से, हरेक अध्याय के सीमा, वर्गीय विलोपन आ सैद्धान्तिक अपूर्णता के विवेचन नीचे प्रस्तुत हय। ई सीमा सब पोथी के मूल्य के घटबैत न हय, बल्कि आगाँ के अनुसन्धान खातिर'वादे वादे जायते' के द्वार खोलै हय।

रमणजीक अपन घोषित सिद्धान्त थिक जे आलोचना अभिनन्दन-पत्र नहि थिक; व्यक्त विचारकेँ सप्रमाण खण्डित करब वा वैमत्य राखब अवमानना नहि। समीक्षाशास्त्रमे केवल प्रशंसा करब गुटबन्दी आ मित्र-मण्डलीक संकीर्ण दायराकेँ पोसबाक समान अछि। तेँ ओही कसौटी पर, आ ओही आदर-भावसँ, प्रत्येक अध्यायक सीमा, वर्गीय विलोपन आ सैद्धान्तिक अपूर्णताक विवेचन नीचाँ प्रस्तुत अछि। ई सीमा सभ पोथीक मूल्यकेँ घटबैत नहि अछि, अपितु आगाँक अनुसन्धान लेल 'वादे वादे जायते'क द्वार खोलैत अछि।

४.१ मैथिली आरो मिथिला भाषा के अध्ययन : सीमा

४.१ मैथिली आ मिथिला भाषा के अध्ययन: सीमा

४.१ मैथिली एवं मिथिला भाषाक अध्ययन : सीमा

पहिलों सीमा स्रोत-केन्द्र के छै। अध्याय मुख्यतः पश्चिमी विद्वान्के (कोलब्रुक, बीम्स, हार्नले, ग्रियर्सन) साक्ष्य पर ठाढ़ छै; दीनबन्धु झा सें पूर्वक देशी वैयाकरण-चेतना — पाँजि-प्रबन्ध के भाषिक अभिलेख, ज्योतिरीश्वर-काल के सबद-संग्रह-प्रवृत्ति, संस्कृत-टीका-परम्परा में मैथिली-परयोग के साक्ष्य — प्रायः अस्पर्शित रहि गेलै। फलतः जे औपनिवेशिक ज्ञान-मीमांसा के आलोचना निबन्ध करैछै, तकरहि स्रोत-सामग्री पर ओ अपने आश्रित होय जाय छै — ई उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श के चिर-परिचित आत्म-विरोध छै। दोसरका, औपनिवेशिक ज्ञान-निर्माण के अन्तर्विरोध के पर्याप्त विश्लेषण नै छै : ग्रियर्सन के कार्य मैथिली के पहचान के साधन सेहो छेलै आरो औपनिवेशिक जनगणना, वर्गीकरण आरो प्रशासन के उपकरण सेहो; कैम्पबेल (१८७४)के सबद-संग्रह केवल प्रशासनिक सुविधा मानना, आरो ग्रियर्सन द्वारा कैल गेलै औपभाषिक विभाजन — पूर्वी रूप के 'गँवारी' आरो निम्नवर्ग के भाषिका के 'जोलहा बोली' कहना — के वर्ग-विभेदी पक्ष के नै चिन्हब, प्राच्यवादी ज्ञान-संचय के ओहि आलोचना सें वञ्चित रहि जाय छै जे ई द्वैधता के बेसी गम्भीरता सें खोलि सकै छेलै। तेसरका, कार्यभार आरो कार्य-पारदर्शिता के सिद्धान्त के परयोग आरम्भ तें भेलै, मतरकि मैथिली के विभिन्न प्रक्षेत्र (शिक्षा, प्रशासन, व्यापार, धरम, संचार)में परयोग के कोय क्षेत्रवार विवरण वा तुलनात्मक आकलन नै — सिद्धान्त उदाहरण के (अंग्रेजी, संस्कृत) स्तरहि पर रहि गेलै,

मैथिली के मापन नै भेलै। चौथका, 'मानक मैथिली' के निर्धारण में अन्य उपभाषा-रूपक सामाजिक अधिकार के प्रश्न — मानक कोन सक्ति-बनावट सें बनैछै — अनुत्तरित छै; भाषा के अवनतिक कारण बाहरी आक्रमण आरो प्रशासनिक उपेक्षा में केन्द्रित छै, मैथिल समाज के आन्तरिक जातिगत विभाजन, शिक्षित वर्ग के भाषिक उदासीनता, स्त्रीशिक्षा के अभाव आरो आर्थिक बनावट के भूमिका तुलनात्मक रूप सें कम विश्लेषित छै। पाँचम, अंग्रेजी पाद-टिप्पणी के बाहुल्य बिना अनुवादक छै, आरो निबन्ध के समापन प्रश्न-शृंखला में विसर्जित होय जाय छै — व्याकरण-लेखन के विलम्ब के जे कारण-मीमांसा आरम्भ भेलै छेलै, ओकर सुगठित निष्कर्ष-सूत्र पाठक के अपने जोड़ऽ पड़ैछै।

पहिल सीमा स्रोत-केन्द्र के हय। अध्याय मुख्य रूप से पश्चिमी विद्वान् के (कोलब्रुक, बीम्स, हार्नले, ग्रियर्सन) साक्ष्य पर ठाढ़ हय; दीनबन्धु झा से पहिले के देशी वैयाकरण-चेतना — पाँजि-प्रबन्ध के भाषिक अभिलेख, ज्योतिरीश्वर-काल के शब्द-संग्रह-प्रवृत्ति, संस्कृत-टीका-परम्परा में मैथिली-प्रयोग के साक्ष्य — प्रायः अस्पर्शित रहि गेल। फलतः जे औपनिवेशिक ज्ञान-मीमांसा के आलोचना निबन्ध करै हय, तकरहि स्रोत-सामग्री पर ओ खुद आश्रित हो जाय हय — ई उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श के चिर-परिचित आत्म-विरोध हय। दोसर, औपनिवेशिक ज्ञान-निर्माण के अन्तर्विरोध के पर्याप्त विश्लेषण न हय: ग्रियर्सन के कार्य मैथिली के पहचान के साधन भी हल आ औपनिवेशिक जनगणना, वर्गीकरण आ प्रशासन के उपकरण भी; कैम्पबेल (१८७४)के शब्द-संग्रह के खाली प्रशासनिक सुविधा मानब, आ ग्रियर्सन द्वारा कैल गेल औपभाषिक विभाजन — पूर्वी रूप के 'गँवारी' आ निम्नवर्ग के भाषिका के 'जोलहा बोली' कहब — के वर्ग-विभेदी पक्ष के न चिन्हब, प्राच्यवादी ज्ञान-संचय के ओ आलोचना से वञ्चित रह जाय हय कि ई द्वैधता के अधिक गम्भीरता से खोलि सकै हल। तेसर, कार्यभार आ कार्य-पारदर्शिता के सिद्धान्त के प्रयोग आरम्भ त भेल, मुदा मैथिली के अलग-अलग प्रक्षेत्र (शिक्षा, प्रशासन, व्यापार, धर्म, संचार)मे प्रयोग के कोनो क्षेत्रवार विवरण वा तुलनात्मक आकलन न — सिद्धान्त उदाहरण के (अंग्रेजी, संस्कृत) स्तरहि पर रहि गेल, मैथिली के मापन

न भेल। चारिम,'मान के मैथिली' के निर्धारण में आन उपभाषा-रूपक सामाजिक अधिकार के प्रश्न — मान के कोन शक्ति-संरचना से बनै हय — अनुत्तरित हय; भाषा के अवनति के कारण बाहरी आक्रमण आ प्रशासनिक उपेक्षा में केन्द्रित हय, मैथिल समाज के आन्तरिक जातिगत विभाजन, शिक्षित वर्ग के भाषिक उदासीनता, स्त्रीशिक्षा के अभाव आ आर्थिक संरचना के भूमिका तुलनात्मक रूप से कम विश्लेषित हय। पाँचम, अंग्रेजी पाद-टिप्पणी के बाहुल्य बिना अनुवादक हय, आ निबन्ध के समापन प्रश्न-शृंखला में विसर्जित हो जाय हय — व्याकरण-लेखन के विलम्ब के जे कारण-मीमांसा आरम्भ भेल हल, ओकर सुगठित निष्कर्ष-सूत्र पाठक के खुद जोड़ऽ पड़ै हय।

पहिल सीमा स्रोत-केन्द्रक थिक। अध्याय मुख्यतः पश्चिमी विद्वान्क (कोलब्रुक, बीम्स, हार्नले, ग्रियर्सन) साक्ष्य पर ठाढ़ अछि; दीनबन्धु झासँ पूर्वक देशी वैयाकरण-चेतना — पाँजि-प्रबन्धक भाषिक अभिलेख, ज्योतिरीश्वर-कालक शब्द-संग्रह-प्रवृत्ति, संस्कृत-टीका-परम्परामे मैथिली-प्रयोगक साक्ष्य — प्रायः अस्पर्शित रहि गेल। फलतः जाहि औपनिवेशिक ज्ञान-मीमांसाक आलोचना निबन्ध करैत अछि, तकरहि स्रोत-सामग्री पर ओ स्वयं आश्रित भऽ जाइत अछि — ई उत्तर-औपनिवेशिक विमर्शक चिर-परिचित आत्म-विरोध थिक। दोसर, औपनिवेशिक ज्ञान-निर्माणक अन्तर्विरोधक पर्याप्त विश्लेषण नहि अछि : ग्रियर्सनक कार्य मैथिलीक पहचानक साधन सेहो छल आ औपनिवेशिक जनगणना, वर्गीकरण आ प्रशासनक उपकरण सेहो; कैम्पबेल (१८७४)क शब्द-संग्रहकेँ केवल प्रशासनिक सुविधा मानब, आ ग्रियर्सन द्वारा कएल गेल औपभाषिक विभाजन — पूर्वी रूपकेँ 'गँवारी' आ निम्नवर्गक भाषिकाकेँ 'जोलहा बोली' कहब — क वर्ग-विभेदी पक्षकेँ नहि चिन्हब, प्राच्यवादी ज्ञान-संचयक ओहि आलोचनासँ वञ्चित रहि जाइत अछि जे एहि द्वैधताकेँ अधिक गम्भीरतासँ खोलि सकैत छल। तेसर, कार्यभार आ कार्य-पारदर्शिताक सिद्धान्तक प्रयोग आरम्भ तँ भेल, मुदा मैथिलीक विभिन्न प्रक्षेत्र (शिक्षा, प्रशासन, व्यापार, धर्म, संचार)मे प्रयोगक कोनो क्षेत्रवार विवरण वा तुलनात्मक आकलन नहि — सिद्धान्त उदाहरणक (अंग्रेजी, संस्कृत) स्तरहि पर रहि गेल, मैथिलीक मापन नहि भेल। चारिम, 'मानक मैथिली'क निर्धारणमे अन्य

उपभाषा-रूपक सामाजिक अधिकारक प्रश्न — मानक कोन शक्ति-संरचनासँ बनैत अछि — अनुत्तरित अछि; भाषाक अवनतिक कारण बाहरी आक्रमण आ प्रशासनिक उपेक्षामे केन्द्रित अछि, मैथिल समाजक आन्तरिक जातिगत विभाजन, शिक्षित वर्गक भाषिक उदासीनता, स्त्रीशिक्षाक अभाव आ आर्थिक संरचनाक भूमिका तुलनात्मक रूपसँ कम विश्लेषित अछि। पाँचम, अंग्रेजी पाद-टिप्पणीक बाहुल्य बिना अनुवादक अछि, आ निबन्धक समापन प्रश्न-शृंखलामे विसर्जित भऽ जाइत अछि — व्याकरण-लेखनक विलम्बक जे कारण-मीमांसा आरम्भ भेल छल, तकर सुगठित निष्कर्ष-सूत्र पाठककेँ स्वयं जोड़ऽ पड़ैत छैक।

४.२ रमानाथ झा आरो मिथिला भाषा : सीमा

४.२ रमानाथ झा आ मिथिला भाषा: सीमा

४.२ रमानाथ झा आ मिथिला भाषा : सीमा

संग्रह के ई दीर्घतम अध्याय बनावट के नजर सें शिथिल छै — प्रत्यालोचना, जीवनी, भाषा-प्राचीनता, लिपि-विमर्श, मानकीकरण आरो भाषा-प्रबन्धन : छह स्वतन्त्र निबन्ध के सामग्री एकहि छत्र में अटकाओल गेलै, जेकरा सें तर्क के धार ठाम-ठाम मोथरा जाय छै। दोसरका, सन्तुलन के घोषित प्रतिज्ञा के बादो स्वर कतोक स्थानपर आलोचनात्मक जिनगी-विवेचन सें बेसी प्रतिरक्षात्मक श्रद्धाञ्जलि बनि जाय छै : किरणजी के मत-खण्डन के ‘आवेगात्मक’ आरो ‘सुविचारित नहि’ कहल गेलै, मतरकि विरोधी पक्ष लेली प्रयुक्त लेखक के अपन शब्दावली (‘कौचर्य-प्रवीण’, ‘खिधांस’, ‘लटुआएल-दबकल’) सेहो आवेग सें सर्वथा मुक्त नै — प्रत्यालोचक जे तटस्थता के माँग करैछै, से अपने हुनकर भाषा में कतहु-कतहु भंग होय छै; विरोधी मत के तर्क के निष्पक्ष पुनर्निर्माण नै कैल गेलापर प्रत्युत्तर के विश्वसनीयता घटै छै। तेसरका, हाउगेन-फर्गुसन के परवर्ती सिद्धान्त सें रमानाथ झा के पूर्ववर्ती काम के संगति देखाना जतेक आकर्ष के छै, ततबे कालदोष के जोखिम सें भरल — ई संगति सप्रयोजन नियोजन छेलै की आकस्मिक समान्तरता, एकर विवेचन नै भेलै। चौथका, मैथिली के बहुत पुरान अस्तित्व सिद्ध करैके उत्साह में महाकाव्य, बौद्धकाल अथवा पुरान जनपद सें सम्बन्धित कुछ निष्कर्ष भाषावैज्ञानिक

परमाण के अपेक्षा सांस्कृतिक अनुमानपर बेसी आधारित बुझाय छै — 'मिथिला' नाम के प्राचीनता स्वतः वर्तमान मैथिली भाषा के अखण्ड रूपक परमाण नै बनैछै। पाँचम, रमानाथ झा के अपन सीमा — जइसन हुनकर शब्दानुवाद के नीरसता जेकर चर्च दसम अध्याय में अपने लेखक करैछै, हुनकर मानकीकरण-प्रतिरूपक व्यावहारिक असफलता, वा मानकीकरण में आभिजात्य वर्ग के भाषिक रूप के प्राथमिकता देला सें आन वर्ग-क्षेत्र के मैथिली के अवमूल्यन के प्रश्न — ई अध्याय में प्रायः मौन छै; व्यक्ति-समर्थन आरो सिद्धान्त-समर्थन एक वस्तु नै, आरो प्रशंसा के आधिक्य सें चरित्र पूरा मानवीय व्यक्तित्व के बदला आदर्शीकृत प्रतिमा बनबा के जोखिम में पड़ैछै। छठम, 'साहित्य-पत्र' के बन्द होयके आरोप के जे खण्डन छै, ओ तर्काश्रित बेसी, अभिलेखाश्रित कम — पत्रिका के अरथ-व्यवस्था, ग्राहक-संख्या वा बन्द होयके प्रत्यक्ष कारण के कोय दस्तावेज नै देल गेलै।

संग्रह के ई दीर्घतम अध्याय संरचना के दृष्टि से शिथिल हय — प्रत्यालोचना, जीवनी, भाषा-प्राचीनता, लिपि-विमर्श, मानकीकरण आ भाषा-प्रबन्धन: छह स्वतन्त्र निबन्ध के सामग्री एके छत्र में अटकावल गेल हय, जेसे तर्क के धार ठाम-ठाम मोथरा जाय हय। दोसर, सन्तुलन के घोषित प्रतिज्ञा के बादो स्वर कतको स्थान पर आलोचनात्मक जीवन-विवेचन से अधिक प्रतिरक्षात्मक श्रद्धाञ्जलि बन जाय हय: किरणजी के मत-खण्डन के 'आवेगात्मक' आ 'सुविचारित न' कहल गेल, मुदा विरोधी पक्ष खातिर प्रयुक्त लेखक के अपन शब्दावली ('कौचर्य-प्रवीण', 'खिधांस', 'लटुआएल-दबकल') भी आवेग से पूरा तरह से मुक्त न — प्रत्यालोचक जे तटस्थता के माँग करै हथिन, से खुद हुन के भाषा में कहीं-कहीं भंग होय हय; विरोधी मत के तर्क के निष्पक्ष पुनर्निर्माण न कैल गेला पर प्रत्युत्तर के विश्वसनीयता घटै हय। तेसर, हाउगेन-फर्गुसन के परवर्ती सिद्धान्त से रमानाथ झा के पूर्ववर्ती कार्य के संगति देखाएब जतना आकर्षक हय, ततबे कालदोष के जोखिम से भरल — ई संगति सप्रयोजन नियोजन हल की आकस्मिक समान्तरता, एकर विवेचन न भेल। चारिम, मैथिली के बहुत प्राचीन अस्तित्व सिद्ध करे के उत्साह में महाकाव्य, बौद्धकाल वा प्राचीन जनपद से सम्बन्धित किछु निष्कर्ष भाषावैज्ञानिक प्रमाण के अपेक्षा सांस्कृतिक अनुमान पर अधिक आधारित बुझाय हय — 'मिथिला'

नाम के प्राचीनता स्वतः वर्तमान मैथिली भाषा के अखण्ड रूपक प्रमाण न बनै हय। पाँचम, रमानाथ झा के अपन सीमा — जेना हुन के शब्दानुवाद के नीरसता जकर चर्च दसम अध्याय में खुद लेखक करै हथिन, हुन के मानकीकरण-प्रतिरूप के व्यावहारिक असफलता, वा मानकीकरण में आभिजात्य वर्ग के भाषिक रूप के प्राथमिकता देला से आन वर्ग-क्षेत्र के मैथिली के अवमूल्यन के प्रश्न — ई अध्याय में प्रायः मौन हय; व्यक्ति-समर्थन आ सिद्धान्त-समर्थन एक वस्तु न, आ प्रशंसा के आधिक्य से चरित्र पूर्ण मानवीय व्यक्तित्व के बदला आदर्शीकृत प्रतिमा बने के जोखिम में पड़ै हय।
छठम,'साहित्य-पत्र' के बन्द होय के आरोप के जे खण्डन हय, ओ तर्काश्रित बेसी, अभिलेखाश्रित कम — पत्रिका के अर्थ-व्यवस्था, ग्राहक-संख्या वा बन्द होय के प्रत्यक्ष कारण के कोनो दस्तावेज न देल गेल।

संग्रहक ई दीर्घतम अध्याय संरचनाक दृष्टिएँ शिथिल अछि — प्रत्यालोचना, जीवनी, भाषा-प्राचीनता, लिपि-विमर्श, मानकीकरण आ भाषा-प्रबन्धन : छह स्वतन्त्र निबन्धक सामग्री एकहि छत्रमे अटकाओल गेल अछि, जाहिसँ तर्कक धार ठाम-ठाम मोथरा जाइत अछि। दोसर, सन्तुलनक घोषित प्रतिज्ञाक बादो स्वर कतोक स्थानपर आलोचनात्मक जीवन-विवेचनसँ अधिक प्रतिरक्षात्मक श्रद्धाञ्जलि बनि जाइत अछि : किरणजीक मत-खण्डनकेँ 'आवेगात्मक' आ 'सुविचारित नहि' कहल गेल, मुदा विरोधी पक्ष लेल प्रयुक्त लेखकक अपन शब्दावली ('कौचर्य-प्रवीण', 'खिधांस', 'लटुआएल-दबकल') सेहो आवेगसँ सर्वथा मुक्त नहि — प्रत्यालोचक जाहि तटस्थताक माँग करैत छथि, से स्वयं हुनक भाषामे कतहु-कतहु भंग होइत अछि; विरोधी मतक तर्कक निष्पक्ष पुनर्निर्माण नहि कएल गेलापर प्रत्युत्तरक विश्वसनीयता घटैत अछि।
तेसर, हाउगेन-फर्गुसनक परवर्ती सिद्धान्तसँ रमानाथ झाक पूर्ववर्ती कार्यक संगति देखाएब जतेक आकर्षक अछि, ततबे कालदोषक जोखिमसँ भरल — ई संगति सप्रयोजन नियोजन छल की आकस्मिक समान्तरता, एकर विवेचन नहि भेल। चारिम, मैथिलीक अत्यन्त प्राचीन अस्तित्व सिद्ध करबाक उत्साहमे महाकाव्य, बौद्धकाल अथवा प्राचीन जनपदसँ सम्बन्धित किछु निष्कर्ष भाषावैज्ञानिक प्रमाणक अपेक्षा सांस्कृतिक अनुमानपर अधिक आधारित बुझाइत अछि — 'मिथिला' नामक प्राचीनता स्वतः वर्तमान मैथिली भाषाक

अखण्ड रूपक प्रमाण नहि बनैत अछि। पाँचम, रमानाथ झाक अपन सीमा — जेना हुनक शब्दानुवादक नीरसता जकर चर्च दसम अध्यायमे स्वयं लेखक करैत छथि, हुनक मानकीकरण-प्रतिरूपक व्यावहारिक असफलता, वा मानकीकरणमे आभिजात्य वर्गक भाषिक रूपकेँ प्राथमिकता देलासँ आन वर्ग-क्षेत्रक मैथिलीक अवमूल्यनक प्रश्न — एहि अध्यायमे प्रायः मौन अछि; व्यक्ति-समर्थन आ सिद्धान्त-समर्थन एक वस्तु नहि, आ प्रशंसाक आधिक्यसँ चरित्र पूर्ण मानवीय व्यक्तित्वक बदला आदर्शीकृत प्रतिमा बनबाक जोखिममे पड़ैत अछि। छठम, 'साहित्य-पत्र'क बन्द होएबाक आरोपक जे खण्डन अछि, ओ तर्काश्रित बेसी, अभिलेखाश्रित कम — पत्रिकाक अर्थ-व्यवस्था, ग्राहक-संख्या वा बन्द होएबाक प्रत्यक्ष कारणक कोनो दस्तावेज नहि देल गेल।

४.३ प्रत्यालोचक किरणजी : सीमा

४.३ प्रत्यालोचक किरणजी: सीमा

४.३ प्रत्यालोचक किरणजी : सीमा

पहिलों, अध्याय केन्द्रीय स्थापना — किरणजी के आलोचना मूलतः प्रत्यालोचना छै, स्वतन्त्र कृति-अवगाहन सें नै जनमल — एगो गम्भीर न्यूनीकरण के जोखिम राखैछै; प्रत्यालोचना के स्वभाव प्रतिक्रियात्मक होय छै आरो ई अध्याय में किरणजी के विचार प्रायः पूर्ववर्ती निष्कर्ष के खण्डन के माध्यम सें सामने आबैछै, हुनकर स्वतन्त्र सौन्दर्यशास्त्रीय प्रतिमान बेसी व्यवस्थित रूप में निर्मित नै होय छै। जे 'प्रतिक्रियावादिता' के प्रश्न लेखक अपने उठाबैछै, से बिना पूरा उत्तर के छोड़ि देल गेलै — प्रश्न उठा कें ओकर मीमांसा सें बचि जाएब आलोचकीय जिम्मेवारी के अधूरा निर्वाह छै। दोसरका, विरोधाभास-प्रदर्शन में उद्धरण-चयन एकतरफा छै : किरणजी के जे स्थल सब में आत्म-संशोधन वा मत-परिमार्जन भेलै हो, से खोजल नै गेलै; कोय चिन्तक के चालीस वर्ष के लेखन में मत-भिन्नता विकास सेहो होय कें सकै छै, केवल विरोधाभास नै। तेसरका, कुलानन्द मिश्र के चन्द्रग्रहण-परसंग अपूर्ण छै — मिश्रजी के मूल आपत्तिक पूरा तर्क-पक्ष नै राखलों गेलै, केवल खण्डनीय अंश उद्धृत भेलै। चौथका, सामाजिक न्याय आरो लोकमंगल के आग्रह महत्त्वपूर्ण छै, मतरकि साहित्य केवल विचारधारात्मक उपयोगिता सें मापल गेलापर रूप,

लय, जटिलता, हास्य, विरोधाभास आरो कलात्मक स्वतन्त्रता के अवमूल्यन होयबा के आशङ्का रहै छै; किरणजी के क्रान्तिकारी वर्ग-नजर के पारम्परिक अलंकारशास्त्र के चौखठि में बान्हि देला सें ओकर सामाजिक धार कुनहटएबा के जोखिम सेहो छै — दूषण-पाँजि आरो कौलीनतावादी शुद्धतावाद के जे आन्तरिक विखण्डन के ओर किरणजी के लेखन के संकेत छेलै, से पूरा विकसित नै भेलै। पाँचम, 'मैथिल आँखि' स्थानीय नजर के सशक्त अवधारणा छै, मतरकि एकर सीमा स्पष्ट नै — की ई नजर सब जाति, लिङ्ग, वर्ग, धरम आरो क्षेत्र के मैथिल अनुभव के समान रूप सें ग्रहण करैछै, अथवा शिक्षित पुरुष-केन्द्रित सांस्कृतिक नजर पुनः 'सम्पूर्ण मिथिला' के नामपर स्थापित होय छै? छठम, किरणजी के काव्य-कृति (पराशर जइसन)के आलोचकीय नजर सें हुनकर आलोचना-गद्य के अन्तर्सम्बन्ध के — कवि-आलोचक के द्वैध व्यक्तित्व के — कोय विवेचन नै; ई पक्ष तेरहम अध्याय में फराक चलि गेलै, दुनू के सेतु नै बनल। साथे, पुरान रचना सब में आधुनिक राष्ट्रीयता, वर्ग-संघर्ष अथवा लोकतान्त्रिक मूल्य खोजै काल ऐतिहासिक दूरी के सावधानी हरदम नै राखलों गेलै।

पहिल, अध्याय केन्द्रीय स्थापना — किरणजी के आलोचना मूलतः प्रत्यालोचना हय, स्वतन्त्र कृति-अवगाहन से न जनमल — एकगो गम्भीर न्यूनीकरण के जोखिम रखै हय; प्रत्यालोचना के स्वभाव प्रतिक्रियात्मक होय हय आ ई अध्याय में किरणजी के विचार प्रायः पूर्ववर्ती निष्कर्ष के खण्डन के माध्यम से सामने आबै हय, हुनकर स्वतन्त्र सौन्दर्यशास्त्रीय प्रतिमान अधिक व्यवस्थित रूप में निर्मित न होय हय। जे 'प्रतिक्रियावादिता' के प्रश्न लेखक खुद उठावै हथिन, से बिना पूर्ण उत्तर के छोड़के देल गेल हय — प्रश्न उठा के ओकर मीमांसा से बचि जाएब आलोचकीय दायित्व के अधूरा निर्वाह हय। दोसर, विरोधाभास-प्रदर्शन में उद्धरण-चयन एकतरफा हय: किरणजी के जे स्थल सब में आत्म-संशोधन वा मत-परिमार्जन भेल हो, से खोजल न गेल; कोनो चिन्तक के चालीस वर्ष के लेखन में मत-भिन्नता विकास भी होके सकै हय, खाली विरोधाभास न। तेसर, कुलानन्द मिश्र के चन्द्रग्रहण-प्रसंग अपूर्ण हय — मिश्रजी के मूल आपत्ति के पूरा तर्क-पक्ष न राखल गेल, खाली खण्डनीय अंश उद्धृत भेल। चारिम, सामाजिक न्याय आ लोकमंगल के आग्रह महत्त्वपूर्ण हय,

मुदा साहित्य के खाली विचारधारात्मक उपयोगिता से मापल गेला पर रूप, लय, जटिलता, हास्य, विरोधाभास आ कलात्मक स्वतन्त्रता के अवमूल्यन होय के आशङ्का रहै हय; किरणजी के क्रान्तिकारी वर्ग-दृष्टि के पारम्परिक अलंकारशास्त्र के चौखठि में बान्हि देला से ओकर सामाजिक धार कुनहटएबा के जोखिम भी हय — दूषण-पाँजि आ कौलीनतावादी शुद्धतावाद के जे आन्तरिक विखण्डन के ओर किरणजी के लेखन के संकेत हल, से पूर्ण विकसित न भेल। पाँचम,'मैथिल आँखि' स्थानीय दृष्टि के सशक्त अवधारणा हय, मुदा एकर सीमा साफ न — की ई दृष्टि सब जाति, लिङ्ग, वर्ग, धर्म आ क्षेत्र के मैथिल अनुभव के समान रूप से ग्रहण करै हय, वा शिक्षित पुरुष-केन्द्रित सांस्कृतिक दृष्टि फेर'पूरा मिथिला' के नाम पर स्थापित होय हय? छठम, किरणजी के काव्य-कृति (पराशर जइसन)के आलोचकीय दृष्टि से हुन के आलोचना-गद्य के अन्तर्सम्बन्ध के — कवि-आलोचक के द्वैध व्यक्तित्व के — कोनो विवेचन न; ई पक्ष तेरहम अध्याय में फराक चलि गेल, दुनू के सेतु न बनल। साथे, प्राचीन रचना सब में आधुनिक राष्ट्रीयता, वर्ग-संघर्ष वा लोकतान्त्रिक मूल्य खोजै काल ऐतिहासिक दूरी के सावधानी हरदम न राखल गेल हय।

पहिल, अध्यायक केन्द्रीय स्थापना — किरणजीक आलोचना मूलतः प्रत्यालोचना थिक, स्वतन्त्र कृति-अवगाहनसँ नहि जनमल — एकटा गम्भीर न्यूनीकरणक जोखिम रखैत अछि; प्रत्यालोचनाक स्वभाव प्रतिक्रियात्मक होइत अछि आ एहि अध्यायमे किरणजीक विचार प्रायः पूर्ववर्ती निष्कर्षक खण्डनक माध्यमसँ सामने अबैत अछि, हुनकर स्वतन्त्र सौन्दर्यशास्त्रीय प्रतिमान अधिक व्यवस्थित रूपमे निर्मित नहि होइत अछि। जे 'प्रतिक्रियावादिता'क प्रश्न लेखक स्वयं उठबैत छथि, से बिना पूर्ण उत्तरक छोड़ि देल गेल अछि — प्रश्न उठा कऽ ओकर मीमांसासँ बचि जाएब आलोचकीय दायित्वक अधूरा निर्वाह थिक। दोसर, विरोधाभास-प्रदर्शनमे उद्धरण-चयन एकतरफा अछि : किरणजीक जाहि स्थल सभमे आत्म-संशोधन वा मत-परिमार्जन भेल हो, से खोजल नहि गेल; कोनो चिन्तकक चालीस वर्षक लेखनमे मत-भिन्नता विकास सेहो भऽ सकैत अछि, केवल विरोधाभास नहि। तेसर, कुलानन्द मिश्रक चन्द्रग्रहण-प्रसंग अपूर्ण अछि — मिश्रजीक मूल आपत्तिक पूरा तर्क-पक्ष नहि राखल गेल, केवल

खण्डनीय अंश उद्धृत भेल। चारिम, सामाजिक न्याय आ लोकमंगलक आग्रह महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा साहित्यकेँ केवल विचारधारात्मक उपयोगितासँ मापल गेलापर रूप, लय, जटिलता, हास्य, विरोधाभास आ कलात्मक स्वतन्त्रताक अवमूल्यन होयबाक आशङ्का रहैत अछि; किरणजीक क्रान्तिकारी वर्ग-दृष्टिकेँ पारम्परिक अलंकारशास्त्रक चौखठिमे बान्हि देलासँ ओकर सामाजिक धार कुनहटएबाक जोखिम सेहो अछि — दूषण-पाँजि आ कौलीनतावादी शुद्धतावादक जाहि आन्तरिक विखण्डनक दिस किरणजीक लेखनक संकेत छल, से पूर्ण विकसित नहि भेल। पाँचम, 'मैथिल आँखि' स्थानीय दृष्टिक सशक्त अवधारणा अछि, मुदा एकर सीमा स्पष्ट नहि — की ई दृष्टि सभ जाति, लिङ्ग, वर्ग, धर्म आ क्षेत्रक मैथिल अनुभवकेँ समान रूपसँ ग्रहण करैत अछि, अथवा शिक्षित पुरुष-केन्द्रित सांस्कृतिक दृष्टि पुनः 'सम्पूर्ण मिथिला'क नामपर स्थापित होइत अछि? छठम, किरणजीक काव्य-कृति (पराशर सन)क आलोचकीय दृष्टिसँ हुनक आलोचना-गद्यक अन्तर्सम्बन्धक — कवि-आलोचकक द्वैध व्यक्तित्वक — कोनो विवेचन नहि; ई पक्ष तेरहम अध्यायमे फराक चलि गेल, दुनूक सेतु नहि बनल। संगहि, प्राचीन रचना सभमे आधुनिक राष्ट्रीयता, वर्ग-संघर्ष अथवा लोकतान्त्रिक मूल्य खोजैत काल ऐतिहासिक दूरीक सावधानी हरदम नहि राखल गेल अछि।

४.४ कन्यादान-पाठ : सीमा

४.४ कन्यादान-पाठ: सीमा

४.४ कन्यादान-पाठ : सीमा

ई प्रखर निबन्ध के पहिलों सीमा छै प्रश्न-शृंखला के अनुत्तरता — 'एकर उत्तरदायी के?' बार-बार पूछल गेलै (अशिक्षा? माए-बाप? सर-कुटुम्ब? समाज?), मतरकि लेखक अपन फैसला सप्रमाण नै देलकै; उपेक्षिता के आँखि सें पढ़ैके जे प्रतिज्ञा छेलै, से अन्ततः प्रश्नवाचक मुद्रा में स्थगित होय गेलै। दोसरका, कन्यादान के हास्य-रस के पक्ष — जे कृति के लोकप्रियता के मूलाधार छै — के रस-शास्त्रीय परीक्षा नै भेलै : हास्य के आलम्बन अबोध बुच्ची छै की अपने अर्ध-शिक्षित समाज, हास्य के भीतर करुण के अन्तर्धारा कोन विन्यास सें

बहै छै, कथावाचक के दूरी आरो विडम्बनात्मक द्वयर्थता के विश्लेषण, आरो पाठक के असहज हँसी के परीक्षण — ई प्रश्न अस्पर्शित रहलों; कतोक स्थानपर पुनर्पाठ अभियोग-पत्र बनि जाय छै आरो साहित्यिक पात्र के प्रत्येक व्यवहार के प्रत्यक्ष सामाजिक यथार्थ मानि लेखक अथवा कृति के नैतिक दोष निर्धारित करना विधागत रूप सें जोखिमपूर्ण छै, कारण कन्यादान हास्य, व्यङ्ग्य, विडम्बना, अतिरञ्जना आरो सामाजिक प्रकार-निर्माण के रचना छै। तेसरका, द्विरागमन — जे में हरिमोहन झा अपने कथा के उत्तर-पक्ष रचलनि — के चर्चा के अभाव सें मूल्याङ्कन आधा पाठ पर ठाढ़ छै; उपन्यास-युग्म के पूरा पाठँ लेखकीय नजर के न्याय होय कें सकै छेलै। चौथका, पूर्ववर्ती उपन्यास के साक्षर नारी-पात्र के जे तालिका छै, ओ मात्रात्मक साक्ष्य छै — ओहि पात्र सब के साक्षरता कथानक में कतेक केन्द्रीय छै आरो बुच्ची के निरक्षरता कतेक, ई गुणात्मक तुलना के बिना 'पाछाँ हटब' के स्थापना पूरा-प्रमाणित नै कहल जा सकै छै। पाँचम, बुच्ची के निरक्षरता अपने व्यंग्य के अस्त्र — समाज के आत्म-दर्शन के दर्पण — रूप में सप्रयोजन रचना तें नै छै, ई प्रश्न छूटल; साथे बुच्ची दाइ के सम्भावित अन्तःचेतना, मौन के प्रतिरोधी अरथ, स्त्री-समुदाय के पारस्परिक सम्बन्ध आरो घरेलू ज्ञान के विस्तार पूरा रूप सें विकसित नै भेलै। छठम, पति-पत्नी में भाषिक असमानता के प्रश्न मूल्यवान छै, तइयो हिन्दी बोलब खाली सांस्कृतिक अनात्मीयता के निश्चित परमाण मानना सरल निष्कर्ष होय कें सकै छै — वर्ग, शिक्षा, नगर-ग्राम दूरी आरो वैवाहिक अपरिचय के संयुक्त प्रभाव के विश्लेषण अपेक्षित छेलै।

ई प्रखर निबन्ध के पहिल सीमा हय प्रश्न-शृंखला के अनुत्तरता — 'एकर उत्तरदायी के?' बेरि-बेरि पूछल गेल (अशिक्षा? माए-बाप? सर-कुटुम्ब? समाज?), मुदा लेखक अपन निर्णय सप्रमाण न देलथिन; उपेक्षिता के आँखि से पढ़े के जे प्रतिज्ञा हल, से अन्त में प्रश्नवाच के मुद्रा में स्थगित होके गेल। दोसर, कन्यादान के हास्य-रस के पक्ष — जे कृति के लोकप्रियता के मूलाधार हय — के रस-शास्त्रीय परीक्षा न भेल: हास्य के आलम्बन अबोध बुच्ची हय की खुद अर्ध-शिक्षित समाज, हास्य के भीतर करुण के अन्तर्धारा कोन विन्यास से बहैत हय, कथावाचक के दूरी आ विडम्बनात्मक द्वयर्थता के विश्लेषण, आ

पाठक के असहज हँसी के परीक्षण — ई प्रश्न अस्पर्शित रहल; कतको स्थान पर पुनर्पाठ अभियोग-पत्र बन जाय हय आ साहित्यिक पात्र के हरेक व्यवहार के प्रत्यक्ष सामाजिक यथार्थ मानके लेखक वा कृति के नैतिक दोष निर्धारित करब विधागत रूप से जोखिमपूर्ण हय, कारण कन्यादान हास्य, व्यङ्ग्य, विडम्बना, अतिरञ्जना आ सामाजिक प्रकार-निर्माण के रचना हय। तेसर, द्विरागमन — जेमें हरिमोहन झा खुद कथा के उत्तर-पक्ष रचलनि — के चर्चा के अभाव से मूल्याङ्कन आधा पाठ पर ठाढ़ हय; उपन्यास-युग्म के समग्र पाठेँ लेखकीय दृष्टि के न्याय होके सकै हल। चारिम, पूर्ववर्ती उपन्यास के साक्षर नारी-पात्र के जे तालिका हय, ओ मात्रात्मक साक्ष्य हय — ओ पात्र सभ के साक्षरता कथानक में कतना केन्द्रीय हय आ बुच्ची के निरक्षरता कतना, ई गुणात्मक तुलना के बिना 'पीछे हटब' के स्थापना पूर्ण-प्रमाणित न कहल जा सकै हय। पाँचम, बुच्ची के निरक्षरता खुद व्यंग्य के अस्त्र — समाज के आत्म-दर्शन के दर्पण — रूप में सप्रयोजन रचना त न हय, ई प्रश्न छूटल; साथे बुच्ची दाइ के सम्भावित अन्तःचेतना, मौन के प्रतिरोधी अर्थ, स्त्री-समुदाय के पारस्परिक सम्बन्ध आ घरेलू ज्ञान के विस्तार पूरा रूप से विकसित न भेल। छठम, पति-पत्नी में भाषिक असमानता के प्रश्न मूल्यवान हय, तबो हिन्दी बोलब खाली सांस्कृतिक अनात्मीयता के निश्चित प्रमाण मानब सरल निष्कर्ष होके सकै हय — वर्ग, शिक्षा, नगर-ग्राम दूरी आ वैवाहिक अपरिचय के संयुक्त प्रभावक विश्लेषण अपेक्षित हल।

एहि प्रखर निबन्धक पहिल सीमा थिक प्रश्न-शृंखलाक अनुत्तरता — 'एकर उत्तरदायी के?' बेरि-बेरि पूछल गेल (अशिक्षा? माए-बाप? सर-कुटुम्ब? समाज?), मुदा लेखक अपन निर्णय सप्रमाण नहि देलनि; उपेक्षिताक आँखिसँ पढ़बाक जे प्रतिज्ञा छल, से अन्ततः प्रश्नवाचक मुद्रामे स्थगित भऽ गेल। दोसर, कन्यादानक हास्य-रसक पक्ष — जे कृतिक लोकप्रियताक मूलाधार थिक — क रस-शास्त्रीय परीक्षा नहि भेल : हास्यक आलम्बन अबोध बुच्ची थिक की स्वयं अर्ध-शिक्षित समाज, हास्यक भीतर करुणक अन्तर्धारा कोन विन्याससँ बहैत अछि, कथावाचकक दूरी आ विडम्बनात्मक द्वयर्थताक विश्लेषण, तथा पाठकक असहज हँसीक परीक्षण — ई प्रश्न अस्पर्शित रहल; कतोक स्थानपर

पुनर्पाठ अभियोग-पत्र बनि जाइत अछि आ साहित्यिक पात्रक प्रत्येक व्यवहारकेँ प्रत्यक्ष सामाजिक यथार्थ मानि लेखक अथवा कृतिक नैतिक दोष निर्धारित करब विधागत रूपसँ जोखिमपूर्ण अछि, कारण कन्यादान हास्य, व्यङ्ग्य, विडम्बना, अतिरञ्जना आ सामाजिक प्रकार-निर्माणक रचना अछि। तेसर, द्विरागमन — जाहिमे हरिमोहन झा स्वयं कथाक उत्तर-पक्ष रचलनि — क चर्चाक अभावसँ मूल्याङ्कन आधा पाठ पर ठाढ़ अछि; उपन्यास-युग्मक समग्र पाठेँ लेखकीय दृष्टिक न्याय भऽ सकैत छल। चारिम, पूर्ववर्ती उपन्यासक साक्षर नारी-पात्रक जे तालिका अछि, ओ मात्रात्मक साक्ष्य थिक — ओहि पात्र सभक साक्षरता कथानकमे कतेक केन्द्रीय अछि आ बुच्चीक निरक्षरता कतेक, एहि गुणात्मक तुलनाक बिना 'पाछाँ हटब'क स्थापना पूर्ण-प्रमाणित नहि कहल जा सकैत अछि। पाँचम, बुच्चीक निरक्षरता स्वयं व्यंग्यक अस्त्र — समाजक आत्म-दर्शनक दर्पण — रूपमे सप्रयोजन रचना तँ नहि थिक, ई प्रश्न छूटल; संगहि बुच्ची दाइक सम्भावित अन्तःचेतना, मौनक प्रतिरोधी अर्थ, स्त्री-समुदायक पारस्परिक सम्बन्ध आ घरेलू ज्ञानक विस्तार पूर्ण रूपसँ विकसित नहि भेल। छठम, पति-पत्नीमे भाषिक असमानताक प्रश्न मूल्यवान अछि, तथापि हिन्दी बोलब मात्र सांस्कृतिक अनात्मीयताक निश्चित प्रमाण मानब सरल निष्कर्ष भऽ सकैत अछि — वर्ग, शिक्षा, नगर-ग्राम दूरी आ वैवाहिक अपरिचयक संयुक्त प्रभावक विश्लेषण अपेक्षित छल।

४.५ अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह : सीमा

४.५ अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह: सीमा

४.५ अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह : सीमा

लेखक अपने स्वीकारै छै जे छिड़िआएल कविता में सें 'किछु मात्रे झोड़ि' सकलै — ई ईमानदार स्वीकारोक्ति प्रशंसनीय छै, मतरकि एकर नतीजा ई जे निष्कर्ष सब (निरपेक्षता, अनुदार समकालीनता के शिकार) सीमित नमूना पर ठाढ़ छै आरो सामान्यीकरण के वैधता संदिग्ध रहै छै — सीमित आरो बिखरल उदाहरण के आधारपर कवि के सम्पूर्ण काव्य-नजर निर्धारित करना सावधानी माँगै छै। दोसरका, कतोक प्राकृतिक प्रतीक के प्रत्यक्ष राजनीतिक रूपक मानलों गेलै — 'पछबा' पाश्चात्य संस्कृति आरो 'शरदागम' औपनिवेशिक क्षय के प्रतीक अवश्य होय कें सकै छै, मतरकि प्रतीक के ई अरथ कविता के आन्तरिक

बनावट, रचनाकालीन साक्ष्य आरो अन्य कविता सें पुष्ट होयबा के चाही; जीवनीपर के तथ्य आरो काव्यार्थ कतोक स्थानपर एक-दोसरका में मिलि जाय छै, आरो कवि के जिनगी के राष्ट्रीय वातावरण सें ई स्वतः सिद्ध नै होय छै जे प्रत्येक परकृति-कविता राजनीतिक ध्वनि राखै हो। तेसरका, गद्य-कृति — श्रीचामुण्डा आरो पंचवटी उपन्यास — के नाममात्र उल्लेख भेलै; 'अनालोचित' के पुनर्वास के जे प्रतिज्ञा छेलै, से कविता तक सीमित रहि गेलै आरो कवि के आधा व्यक्तित्व एहू अध्याय के बाद अनालोचिते रहलों। चौथका, विवरण-बाहुल्य छै — जिनगी-वृत्त, पत्रिका-नाम, तिथि — मतरकि काव्य-शास्त्रीय विश्लेषण (छन्द-विधान, बिम्ब-योजना, भाषिक स्तर) 'शरदागम' आरो 'पछबा' के बाहर विरल छै; फलतः लक्ष्मीपति सिंह महत्त्वपूर्ण विचार के रूप में उभरै छै, मतरकि कवि के खास कलात्मक स्वर कम स्पष्ट होय छै। पाँचम, कवि के दरबारी-सामन्ती परिवेश के सान्निध्य सें हुनकर वर्ग-नजर कोना प्रभावित भेलै — पाश्चात्य संस्कृति के विरोध के संग गाम के जमीन्दारी शोषण के विरुद्ध हुनकर काव्य में कोन स्वर छै — ई वर्ग-प्रश्न अस्पर्शित रहलों। छठम, कवि के हिन्दी-लेखन आरो मैथिली-लेखन के अन्तर्सम्बन्ध के प्रश्न — द्विभाषिक कवि-चेतना के गति — उठाओल नै गेलै, जब कि पोथी के अन्तिम अध्याय के द्विभाषिकता-विमर्श सें एकर सोझ संगति बनि सकै छेलै।

लेखक खुद स्वीकारै हथिन कि छिड़िआएल कविता में से 'किछु मात्रे झोड़ि' सकलथिन — ई ईमानदार स्वीकारोक्ति प्रशंसनीय हय, मुदा एकर परिणाम ई जे निष्कर्ष सब (निरपेक्षता, अनुदार समकालीनता के शिकार) सीमित नमूना पर ठाढ़ हय आ सामान्यीकरण के वैधता संदिग्ध रहै हय — सीमित आ बिखरल उदाहरण के आधार पर कवि के पूरा काव्य-दृष्टि निर्धारित करब सावधानी माँगै हय। दोसर, कतको प्राकृतिक प्रतीक के प्रत्यक्ष राजनीतिक रूपक मानल गेल हय — 'पछबा' पाश्चात्य संस्कृति आ 'शरदागम' औपनिवेशिक क्षय के प्रतीक अवश्य होके सकै हय, मुदा प्रतीक के ई अर्थ कविता के आन्तरिक संरचना, रचनाकालीन साक्ष्य आ आन कविता से पुष्ट होय के चाही; जीवनीपरक तथ्य आ काव्यार्थ कतको स्थान पर एक-दोसर में मिलि जाय हय, आ कवि के जीवन के राष्ट्रीय वातावरण से ई स्वतः सिद्ध न होय हय कि हरेक प्रकृति-कविता

राजनीतिक ध्वनि रखै हो। तेसर, गद्य-कृति — श्रीचामुण्डा आ पंचवटी उपन्यास — के नाममात्र उल्लेख भेल; 'अनालोचित' के पुनर्वास के जे प्रतिज्ञा हल, से कविता तक सीमित रहि गेल आ कवि के आधा व्यक्तित्व एहू अध्याय के बाद अनालोचिते रहल। चारिम, विवरण-बाहुल्य हय — जीवन-वृत्त, पत्रिका-नाम, तिथि — मुदा काव्य-शास्त्रीय विश्लेषण (छन्द-विधान, बिम्ब-योजना, भाषिक स्तर)'शरदागम' आ'पछबा' के बाहर विरल हय; फलतः लक्ष्मीपति सिंह महत्त्वपूर्ण विचार के रूप में उभरैत हथिन, मुदा कवि के विशिष्ट कलात्मक स्वर कम साफ होय हय। पाँचम, कवि के दरबारी-सामन्ती परिवेश के सान्निध्य से हुन के वर्ग-दृष्टि कइसे प्रभावित भेल — पाश्चात्य संस्कृति के विरोध के संग गाम के जमीन्दारी शोषण के विरुद्ध हुन के काव्य में कोन स्वर हय — ई वर्ग-प्रश्न अस्पर्शित रहल। छठम, कवि के हिन्दी-लेखन आ मैथिली-लेखन के अन्तर्सम्बन्ध के प्रश्न — द्विभाषिक कवि-चेतना के गति — उठावल न गेल, जब कि पोथी के अन्तिम अध्याय के द्विभाषिकता-विमर्श से एकर सोझ संगति बनि सकै हल।

लेखक स्वयं स्वीकारैत छथि जे छिड़िआएल कवितामे सँ 'किछु मात्रे झोड़ि' सकलाह — ई ईमानदार स्वीकारोक्ति प्रशंसनीय अछि, मुदा एकर परिणाम ई जे निष्कर्ष सभ (निरपेक्षता, अनुदार समकालीनताक शिकार) सीमित नमूना पर ठाढ़ अछि आ सामान्यीकरणक वैधता संदिग्ध रहैत अछि — सीमित आ बिखरल उदाहरणक आधारपर कविक सम्पूर्ण काव्य-दृष्टि निर्धारित करब सावधानी माँगैत अछि। दोसर, कतोक प्राकृतिक प्रतीककेँ प्रत्यक्ष राजनीतिक रूपक मानल गेल अछि — 'पछबा' पाश्चात्य संस्कृति आ 'शरदागम' औपनिवेशिक क्षयक प्रतीक अवश्य भऽ सकैत अछि, मुदा प्रतीकक ई अर्थ कविताक आन्तरिक संरचना, रचनाकालीन साक्ष्य आ अन्य कवितासँ पुष्ट होयबाक चाही; जीवनीपरक तथ्य आ काव्यार्थ कतोक स्थानपर एक-दोसरमे मिलि जाइत अछि, आ कविक जीवनक राष्ट्रीय वातावरणसँ ई स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि जे प्रत्येक प्रकृति-कविता राजनीतिक ध्वनि रखैत हो। तेसर, गद्य-कृति — श्रीचामुण्डा आ पंचवटी उपन्यास — क नाममात्र उल्लेख भेल; 'अनालोचित'क पुनर्वासक जे प्रतिज्ञा छल, से कविता धरि सीमित रहि गेल आ कविक आधा व्यक्तित्व एहू अध्यायक बाद अनालोचिते रहल। चारिम,

विवरण-बाहुल्य अछि — जीवन-वृत्त, पत्रिका-नाम, तिथि — मुदा काव्य-शास्त्रीय विश्लेषण (छन्द-विधान, बिम्ब-योजना, भाषिक स्तर) 'शरदागम' आ 'पछबा'क बाहर विरल अछि; फलतः लक्ष्मीपति सिंह महत्त्वपूर्ण विचारक रूपमे उभरैत छथि, मुदा कविक विशिष्ट कलात्मक स्वर कम स्पष्ट होइत अछि। पाँचम, कविक दरबारी-सामन्ती परिवेशक सान्निध्यसँ हुनक वर्ग-दृष्टि कोना प्रभावित भेल — पाश्चात्य संस्कृतिक विरोधक संग गामक जमीन्दारी शोषणक विरुद्ध हुनक काव्यमे कोन स्वर अछि — ई वर्ग-प्रश्न अस्पर्शित रहल। छठम, कविक हिन्दी-लेखन आ मैथिली-लेखनक अन्तर्सम्बन्धक प्रश्न — द्विभाषिक कवि-चेतनाक गति — उठाओल नहि गेल, जखन कि पोथीक अन्तिम अध्यायक द्विभाषिकता-विमर्शसँ एकर सोझ संगति बनि सकैत छल।

४.६ यात्री के भाषा : सीमा

४.६ यात्री के भाषा: सीमा

४.६ यात्रीक भाषा : सीमा

पहिलों, चारू उपकरण पश्चिमी शैलीविज्ञान सें आनल गेलै आरो भारतीय काव्यशास्त्र सें संगति-स्थापन ('निरंकुशाः कवयः', वक्रोक्ति-सम्प्रदाय) संकेत-खाली रहि गेलै; कुन्तक के छह वक्रता-भेद सें चयन-विचलन के व्यवस्थित मिलान भेलै रहितै के तें पूर्व-पश्चिम-सेतु पूरा बनितै के — से अवसर छूटि गेलै। दोसरका, उदाहरण चयन मुख्यतः सफल भाषिक प्रयोगपर केन्द्रित छै आरो विश्लेषण-सामग्री मुख्यतः पत्रहीन नग्न गाछ पर; यात्री के कमजोर, अतिशय कृत्रिम, अस्पष्ट अथवा समयबद्ध शब्दनिर्माण के परीक्षण, आरो हुनकर परवर्ती संग्रह आरो गद्य के व्यवस्थित समावेश कैल गेलै रहितए तें 'यात्रीक भाषा' के पूरा चित्र आरो सन्तुलित होय। तेसरका, विचलन के कतोक स्थानपर अपने सुन्नरता के परमाण मानलों गेलै, मतरकि प्रत्येक व्याकरणिक उल्लङ्घन कलात्मक नै होय छै — औचित्य, प्रसङ्ग, अरथ-स्पष्टता आरो पाठकीय प्रभाव के कसौटीपर प्रत्येक विचलन के अलग परीक्षा आवश्यक छै। चौथका, 'भाषाक भूगोल' के आकर्ष के रूपक अपरिभाषित रहलों — एकर मानचित्रण (कोन अंचल के, कोन वर्ग के, कोन व्यवसाय-क्षेत्र के सबद-सम्पदा यात्री कतऽ सें

आनलकै) बिना ई रूपक अलंकारे रहि जाय छै, विश्लेषण-उपकरण नै बनैछै; साथे 'देशज' के गौरव उचित छै, मतरकि भाषा सदा मिश्रित आरो परिवर्तनशील होय छै — देसज आरो आगन्तुक के कठोर विभाजन अपने ऐतिहासिक रूप सें अस्थिर छै। पाँचम, समानान्तरता-खण्ड में मामा-गीत के उद्धरण दीर्घ छै मतरकि ओकर सामाजिक व्यंग्य-पाठ (मध्यवर्गीय जिनगी-वृत्त के विडम्बना) संक्षेप में निपटा देल गेलै — शैली-विश्लेषण अरथ-विश्लेषण सें आगू भागि गेलै; ध्वनि-बनावट, वाक्य-दीर्घता, कथन-स्वर, संवाद, व्यङ्ग्य के बहुस्तर, भाषिक संकरता आरो विभिन्न विधा में भाषा-परिवर्तन के पर्याप्त विवेचन सेहो नै छै।

पहिल, चारू उपकरण पश्चिमी शैलीविज्ञान से आनल गेल हय आ भारतीय काव्यशास्त्र से संगति-स्थापन ('निरंकुशाः कवयः', वक्रोक्ति-सम्प्रदाय) संकेत-खाली रहि गेल; कुन्तक के छह वक्रता-भेद से चयन-विचलन के व्यवस्थित मिलान भेल रहितै के त पूर्व-पश्चिम-सेतु पूर्ण बनितै के — से अवसर छूटि गेल। दोसर, उदाहरण चयन मुख्य रूप से सफल भाषिक प्रयोग पर केन्द्रित हय आ विश्लेषण-सामग्री मुख्य रूप से पत्रहीन नग्न गाछ पर; यात्री के कमजोर, अतिशय कृत्रिम, अस्पष्ट वा समयबद्ध शब्दनिर्माण के परीक्षण, आ हुन के परवर्ती संग्रह आ गद्य के व्यवस्थित समावेश कैल गेल रहितए त 'यात्री के भाषा' के समग्र चित्र आरो सन्तुलित होय। तेसर, विचलन के कतको स्थान पर खुद सौन्दर्य के प्रमाण मानल गेल हय, मुदा हरेक व्याकरणिक उल्लङ्घन कलात्मक न होय हय — औचित्य, प्रसङ्ग, अर्थ-स्पष्टता आ पाठकीय प्रभावक कसौटी पर हरेक विचलन के अलग परीक्षा आवश्यक हय। चारिम, 'भाषा के भूगोल' के आकर्षक रूपक अपरिभाषित रहल — एकर मानचित्रण (कोन अंचल के, कोन वर्ग के, कोन व्यवसाय-क्षेत्र के शब्द-सम्पदा यात्री कहाँ से अनलनि) बिना ई रूपक अलंकारे रह जाय हय, विश्लेषण-उपकरण न बनै हय; साथे 'देशज' के गौरव उचित हय, मुदा भाषा सदा मिश्रित आ परिवर्तनशील होय हय — देशज आ आगन्तुक के कठोर विभाजन खुद ऐतिहासिक रूप से अस्थिर हय। पाँचम, समानान्तरता-खण्ड में मामा-गीत के उद्धरण दीर्घ हय मुदा ओकर सामाजिक व्यंग्य-पाठ (मध्यवर्गीय जीवन-वृत्त के विडम्बना) संक्षेप में

निपटा देल गेल — शैली-विश्लेषण अर्थ-विश्लेषण से आगू भागि गेल; ध्वनि-संरचना, वाक्य-दीर्घता, कथन-स्वर, संवाद, व्यङ्ग्य के बहुस्तर, भाषिक संकरता आ अलग-अलग विधा में भाषा-परिवर्तन के पर्याप्त विवेचन भी न हय।

पहिल, चारू उपकरण पश्चिमी शैलीविज्ञानसँ आनल गेल अछि आ भारतीय काव्यशास्त्रसँ संगति-स्थापन (‘निरंकुशाः कवयः’, वक्रोक्ति-सम्प्रदाय) संकेत-मात्र रहि गेल; कुन्तकक छह वक्रता-भेदसँ चयन-विचलनक व्यवस्थित मिलान भेल रहितैक तँ पूर्व-पश्चिम-सेतु पूर्ण बनितैक — से अवसर छूटि गेल। दोसर, उदाहरण चयन मुख्यतः सफल भाषिक प्रयोगपर केन्द्रित अछि आ विश्लेषण-सामग्री मुख्यतः पत्रहीन नग्न गाछ पर; यात्रीक कमजोर, अतिशय कृत्रिम, अस्पष्ट अथवा समयबद्ध शब्दनिर्माणक परीक्षण, तथा हुनक परवर्ती संग्रह आ गद्यक व्यवस्थित समावेश कएल गेल रहितए तँ 'यात्रीक भाषा'क समग्र चित्र आरो सन्तुलित होइत। तेसर, विचलनकेँ कतोक स्थानपर स्वयं सौन्दर्यक प्रमाण मानल गेल अछि, मुदा प्रत्येक व्याकरणिक उल्लङ्घन कलात्मक नहि होइत अछि — औचित्य, प्रसङ्ग, अर्थ-स्पष्टता आ पाठकीय प्रभावक कसौटीपर प्रत्येक विचलनक पृथक परीक्षा आवश्यक अछि। चारिम, 'भाषाक भूगोल'क आकर्षक रूपक अपरिभाषित रहल — एकर मानचित्रण (कोन अंचलक, कोन वर्गक, कोन व्यवसाय-क्षेत्रक शब्द-सम्पदा यात्री कतऽ सँ अनलनि) बिना ई रूपक अलंकारे रहि जाइत अछि, विश्लेषण-उपकरण नहि बनैत अछि; संगहि 'देशज'क गौरव उचित अछि, मुदा भाषा सदा मिश्रित आ परिवर्तनशील होइत अछि — देशज आ आगन्तुकक कठोर विभाजन स्वयं ऐतिहासिक रूपसँ अस्थिर अछि। पाँचम, समानान्तरता-खण्डमे मामा-गीतक उद्धरण दीर्घ अछि मुदा ओकर सामाजिक व्यंग्य-पाठ (मध्यवर्गीय जीवन-वृत्तक विडम्बना) संक्षेपमे निपटा देल गेल — शैली-विश्लेषण अर्थ-विश्लेषणसँ आगाँ भागि गेल; ध्वनि-संरचना, वाक्य-दीर्घता, कथन-स्वर, संवाद, व्यङ्ग्यक बहुस्तर, भाषिक संकरता आ विभिन्न विधामे भाषा-परिवर्तनक पर्याप्त विवेचन सेहो नहि अछि।

४.७ मनमोहन झा : सीमा

४.७ मनमोहन झा: सीमा

४.७ मनमोहन झा : सीमा

ई संग्रह के लघुतम अध्याय छै आरो एकर लघुते एकर मुख्य सीमा छै। 'अनालोचित पक्ष' के घोषणा भेलै, मतरकि विश्लेषण कथा-सार के स्तर पर रहि गेलै — पात्र के उद्धरण छै, कथा-शिल्प के (दृष्टिबिन्दु, कथन-भंगिमा, समय-विन्यास, संवाद, कथन-गति, करुणा आरो राष्ट्रीयता के रचनात्मक सन्धिक) विवेचन नै। अध्याय पात्र के कथन, कथावाचक के नजर आरो लेखक के विचार में पर्याप्त भेद नै करैछै — कोय पात्र राष्ट्र अथवा मिथिला के लेली आत्मोत्सर्ग के बात कहैछै, ओकरा सें सम्पूर्ण कथा अथवा लेखक के अन्तिम विचार स्वतः निर्धारित नै होय छै। राष्ट्रीयता आरो मैथिल उपराष्ट्रीयता के प्रायः सकारात्मक नैतिक मूल्य मानि लेली गेलै — राष्ट्रवाद के भीतर जाति, वर्ग, लिङ्ग, धरम आरो क्षेत्रीय प्रभुत्व के सम्भावना प्रश्नांकित नै भेलै, आरो उपराष्ट्रीय गौरव के भीतर निम्नवर्गीय समाज के मूल प्रश्न (भूख, बेगारी) ओझल रहि गेलै। आत्मबलिदानी स्त्री-पात्र सब के प्रशंसा करै समय ई पूछब आवश्यक छेलै जे स्त्री के स्वाधीनता हुनकर अपन जिनगी-चयन में छै अथवा पुरुष-निर्धारित राष्ट्र आरो संस्कृति के लेली बलिदान में — नारीवादी नजर सें त्याग के महिमामण्डन पितृसत्तात्मक आदर्श के पुनः पुष्ट करि सकै छै। करुण-रस के ख्याति आरो नव-प्रतिपादित राष्ट्रीय स्वर के अन्तःसम्बन्ध के रस-शास्त्रीय मीमांसा — करुणा राष्ट्रीय चेतना के उद्दीपन बनैछै की अवरोध — सर्वथा अस्पर्शित छै। निधन के दसम दिन लिखल गेला के कारण श्रद्धांजलिक आर्द्र स्वर आलोचना के तटस्थता पर भारी छै; बंगला कथा के प्रभाव के जे प्रचलित चर्च छै, ओकर परीक्षण स्थगित रहि गेलै।

ई संग्रह के लघुतम अध्याय हय आ एकर लघुते एकर मुख्य सीमा हय।'अनालोचित पक्ष' के घोषणा भेल, मुदा विश्लेषण कथा-सार के स्तर पर रहि गेल — पात्र के उद्धरण हय, कथा-शिल्प के (दृष्टिबिन्दु, कथन-भंगिमा, समय-विन्यास, संवाद, कथन-गति, करुणा आ राष्ट्रीयता के रचनात्मक सन्धि के) विवेचन न। अध्याय पात्र के कथन, कथावाचक के दृष्टि आ लेखक के विचार में पर्याप्त भेद न करै हय — कोनो पात्र राष्ट्र वा मिथिला के खातिर आत्मोत्सर्ग के बात कहै हय, ओसे पूरा कथा वा लेखक के अन्तिम विचार स्वतः निर्धारित न होय हय। राष्ट्रीयता आ मैथिल उपराष्ट्रीयता के प्रायः सकारात्मक

नैतिक मूल्य मानके खातिर गेल हय — राष्ट्रवाद के भीतर जाति, वर्ग, लिङ्ग, धर्म आ क्षेत्रीय प्रभुत्व के सम्भावना प्रश्नांकित न भेल, आ उपराष्ट्रीय गौरव के भीतर निम्नवर्गीय समाज के मूल प्रश्न (भूख, बेगारी) ओझल रहि गेल। आत्मबलिदानी स्त्री-पात्र सभ के प्रशंसा करै समय ई पूछब आवश्यक हल जे स्त्री के स्वाधीनता हुनकर अपन जीवन-चयन में हय वा पुरुष-निर्धारित राष्ट्र आ संस्कृति के खातिर बलिदान में — नारीवादी दृष्टि से त्याग के महिमामण्डन पितृसत्तात्मक आदर्श के फेर पुष्ट करि सकै हय। करुण-रस के ख्याति आ नव-प्रतिपादित राष्ट्रीय स्वर के अन्तःसम्बन्ध के रस-शास्त्रीय मीमांसा — करुणा राष्ट्रीय चेतना के उद्दीपन बनै हय की अवरोध — पूरा तरह से अस्पर्शित हय। निधन के दसम दिन लिखल गेला के कारण श्रद्धांजलि के आर्द्र स्वर आलोचना के तटस्थता पर भारी हय; बंगला कथा के प्रभावक जे प्रचलित चर्च हय, ओकर परीक्षण स्थगित रहि गेल।

ई संग्रहक लघुतम अध्याय थिक आ एकर लघुते एकर मुख्य सीमा थिक। 'अनालोचित पक्ष'क घोषणा भेल, मुदा विश्लेषण कथा-सारक स्तर पर रहि गेल — पात्रक उद्धरण अछि, कथा-शिल्पक (दृष्टिबिन्दु, कथन-भंगिमा, समय-विन्यास, संवाद, कथन-गति, करुणा आ राष्ट्रीयताक रचनात्मक सन्धिक) विवेचन नहि। अध्याय पात्रक कथन, कथावाचकक दृष्टि आ लेखकक विचारमे पर्याप्त भेद नहि करैत अछि — कोनो पात्र राष्ट्र अथवा मिथिलाक लेल आत्मोत्सर्गक बात कहैत अछि, ताहिसँ सम्पूर्ण कथा अथवा लेखकक अन्तिम विचार स्वतः निर्धारित नहि होइत अछि। राष्ट्रीयता आ मैथिल उपराष्ट्रीयताकेँ प्रायः सकारात्मक नैतिक मूल्य मानि लेल गेल अछि — राष्ट्रवादक भीतर जाति, वर्ग, लिङ्ग, धर्म आ क्षेत्रीय प्रभुत्वक सम्भावना प्रश्नांकित नहि भेल, आ उपराष्ट्रीय गौरवक भीतर निम्नवर्गीय समाजक मूल प्रश्न (भूख, बेगारी) ओझल रहि गेल। आत्मबलिदानी स्त्री-पात्र सभक प्रशंसा करैत समय ई पूछब आवश्यक छल जे स्त्रीक स्वाधीनता हुनकर अपन जीवन-चयनमे अछि अथवा पुरुष-निर्धारित राष्ट्र आ संस्कृतिक लेल बलिदानमे — नारीवादी दृष्टिसँ त्यागक महिमामण्डन पितृसत्तात्मक आदर्शकेँ पुनः पुष्ट करि सकैत अछि। करुण-रसक ख्याति आ नव-प्रतिपादित राष्ट्रीय स्वरक अन्तःसम्बन्धक रस-शास्त्रीय मीमांसा — करुणा राष्ट्रीय चेतनाक उद्दीपन

बनैत अछि की अवरोध — सर्वथा अस्पर्शित अछि। निधनक दसम दिन लिखल गेलाक कारण श्रद्धांजलिक आर्द्र स्वर आलोचनाक तटस्थता पर भारी अछि; बंगला कथाक प्रभावक जे प्रचलित चर्च अछि, तकर परीक्षण स्थगित रहि गेल।

४.८ प्रवासी के योगदान : सीमा

४.८ प्रवासी के योगदान: सीमा

४.८ प्रवासीक योगदान : सीमा

पहिलों, प्रवासी-निवासी के निर्धारण हेतु विदेसी मुद्रा-विनिमय अधिनियम के विधिक कसौटी के परयोग साहित्यिक-सांस्कृतिक विश्लेषण लेली अटपटाह छै — लेखक अपने एकर असंगति देखाबैछै, मतरकि तब अपन वैकल्पिक कसौटी ('सांस्कृतिक मिथिलाक सघनता')के कोय परिचालनीय परिभाषा नै दैछै; नेपाल-तराइ के सांस्कृतिक निरन्तरता के कारण 'प्रवास' सें बाहर राखैके तर्क भावनात्मक रूप सें सशक्त छै, मतरकि राजनीतिक सीमा, नागरिकता, प्रशासन, आर्थिक सम्बन्ध आरो भिन्न ऐतिहासिक अनुभव के वास्तविकता सेहो विचारणीय छै। दोसरका, प्रवासी पत्रकारिता के इतिहास मुख्यत: शिक्षित पुरुष सम्पादक आरो प्रतिष्ठित पत्रिका के इतिहास बनि रहि जाय छै — महिला सम्पादक, मुद्र के, वितर के, पाठिका, आर्थिक सहयोगी, ग्रामीण ग्राहक आरो पत्राचार-लेखक के भूमिका बहुत कम देखाइत छै; साथे सम्पादक-वर्ग के अपन सामाजिक स्थिति — जमीन्दार-संभ्रान्त वर्ग के संरक्षण आरो ओकर वैचारिक प्रभाव — के वर्ग-विश्लेषण नै भेलै। तेसरका, अध्याय आँकड़ा-रहित छै — कोन पत्रिका कतेक दिन चलल, प्रसार-संख्या, ग्राहक-वर्ग, वितरण-क्षेत्र, अरथ-स्रोत, नियमितता, प्रतिबन्ध, राजकीय दबाव आरो पाठकीय प्रतिक्रिया — पत्रकारिता के इतिहास-लेखन जे परिमाणात्मक आधार के अपेक्षा करैछै, से एहिजा नै छै; पत्रिका के वैचारिक प्रभाव के आकलन मुख्यत: सम्पादकीय सामग्री सें भेलै। चौथका, स्वाधीनोत्तर काल के सर्वेक्षण असन्तुलित छै — मिथिला दर्शन के चर्च भेलै, मतरकि दिल्ली, मुम्बई, कलकत्ता के परवर्ती पत्रिका-प्रयास 'नाम गनाएब' सें आगू नै गेलै। पाँचम, प्रवासी-योगदान के छाया-पक्ष — प्रवास-जन्य आदर्शीकरण, मिथिला के यथार्थ सें दूरी, भावु के

अतीत-मोह — के आलोचनात्मक परीक्षा नै भेलै; योगदान के अभिनन्दन छै, योगदान के सीमा के हिआओल नै। छठम, पत्रकारिता आरो साहित्यिक पत्रिका के सीमा कतोक स्थानपर धुँधला छै — साहित्यिक विशेषाङ् के, सामाजिक पत्रिका, समाचार-पत्र आरो विचार-पत्र के अलग कार्यपद्धतिक बेसी स्पष्ट वर्गीकरण अपेक्षित छेलै।

पहिल, प्रवासी-निवासी के निर्धारण हेतु विदेशी मुद्रा-विनिमय अधिनियम के विधिक कसौटी के प्रयोग साहित्यिक-सांस्कृतिक विश्लेषण खातिर अटपटाह हय — लेखक खुद एकर असंगति देखाबै हथिन, मुदा तब अपन वैकल्पिक कसौटी ('सांस्कृतिक मिथिला के सघनता')के कोनो परिचालनीय परिभाषा न दे हथिन; नेपाल-तराइ के सांस्कृतिक निरन्तरता के कारण'प्रवास'से बाहर रखे के तर्क भावनात्मक रूप से सशक्त हय, मुदा राजनीतिक सीमा, नागरिकता, प्रशासन, आर्थिक सम्बन्ध आ भिन्न ऐतिहासिक अनुभव के वास्तविकता भी विचारणीय हय। दोसर, प्रवासी पत्रकारिता के इतिहास मुख्य रूप से शिक्षित पुरुष सम्पादक आ प्रतिष्ठित पत्रिका के इतिहास बनि रह जाय हय — महिला सम्पादक, मुद्रक, वितरक, पाठिका, आर्थिक सहयोगी, ग्रामीण ग्राहक आ पत्राचार-लेखक के भूमिका बहुत कम देखाय हय; साथे सम्पादक-वर्ग के अपन सामाजिक स्थिति — जमीन्दार-संभ्रान्त वर्ग के संरक्षण आ ओकर वैचारिक प्रभाव — के वर्ग-विश्लेषण न भेल। तेसर, अध्याय आँकड़ा-रहित हय — कोन पत्रिका कतना दिन चलल, प्रसार-संख्या, ग्राहक-वर्ग, वितरण-क्षेत्र, अर्थ-स्रोत, नियमितता, प्रतिबन्ध, राजकीय दबाव आ पाठकीय प्रतिक्रिया — पत्रकारिता के इतिहास-लेखन जे परिमाणात्मक आधार के अपेक्षा करै हय, से इहाँ न हय; पत्रिका के वैचारिक प्रभावक आकलन मुख्य रूप से सम्पादकीय सामग्री से भेल हय। चारिम, स्वाधीनोत्तर काल के सर्वेक्षण असन्तुलित हय — मिथिला दर्शन के चर्च भेल, मुदा दिल्ली, मुम्बई, कलकत्ता के परवर्ती पत्रिका-प्रयास'नाम गनाएब'से आगू न गेल। पाँचम, प्रवासी-योगदान के छाया-पक्ष — प्रवास-जन्य आदर्शीकरण, मिथिला के यथार्थ से दूरी, भावु के अतीत-मोह — के आलोचनात्मक परीक्षा न भेल; योगदान के अभिनन्दन हय, योगदान के सीमा के हिआओल न। छठम, पत्रकारिता आ साहित्यिक पत्रिका के सीमा कतको

स्थान पर धुँधला हय — साहित्यिक विशेषाङ्क के, सामाजिक पत्रिका, समाचार-पत्र आ विचार-पत्र के अलग कार्यपद्धतिक अधिक साफ वर्गीकरण अपेक्षित हल।

पहिल, प्रवासी-निवासीक निर्धारण हेतु विदेशी मुद्रा-विनिमय अधिनियमक विधिक कसौटीक प्रयोग साहित्यिक-सांस्कृतिक विश्लेषण लेल अटपटाह अछि — लेखक स्वयं एकर असंगति देखबैत छथि, मुदा तखन अपन वैकल्पिक कसौटी ('सांस्कृतिक मिथिलाक सघनता')क कोनो परिचालनीय परिभाषा नहि दैत छथि; नेपाल-तराइकेँ सांस्कृतिक निरन्तरताक कारण 'प्रवास'सँ बाहर रखबाक तर्क भावनात्मक रूपसँ सशक्त अछि, मुदा राजनीतिक सीमा, नागरिकता, प्रशासन, आर्थिक सम्बन्ध आ भिन्न ऐतिहासिक अनुभवक वास्तविकता सेहो विचारणीय अछि। दोसर, प्रवासी पत्रकारिताक इतिहास मुख्यतः शिक्षित पुरुष सम्पादक आ प्रतिष्ठित पत्रिकाक इतिहास बनि रहि जाइत अछि — महिला सम्पादक, मुद्रक, वितरक, पाठिका, आर्थिक सहयोगी, ग्रामीण ग्राहक आ पत्राचार-लेखकक भूमिका बहुत कम देखाइत अछि; संगहि सम्पादक-वर्गक अपन सामाजिक स्थिति — जमीन्दार-संभ्रान्त वर्गक संरक्षण आ ओकर वैचारिक प्रभाव — क वर्ग-विश्लेषण नहि भेल। तेसर, अध्याय आँकड़ा-रहित अछि — कोन पत्रिका कतेक दिन चलल, प्रसार-संख्या, ग्राहक-वर्ग, वितरण-क्षेत्र, अर्थ-स्रोत, नियमितता, प्रतिबन्ध, राजकीय दबाव आ पाठकीय प्रतिक्रिया — पत्रकारिताक इतिहास-लेखन जाहि परिमाणात्मक आधारक अपेक्षा करैत अछि, से एतऽ नहि अछि; पत्रिकाक वैचारिक प्रभावक आकलन मुख्यतः सम्पादकीय सामग्रीसँ भेल अछि। चारिम, स्वाधीनोत्तर कालक सर्वेक्षण असन्तुलित अछि — मिथिला दर्शनक चर्च भेल, मुदा दिल्ली, मुम्बई, कलकत्ताक परवर्ती पत्रिका-प्रयास 'नाम गनाएब'सँ आगाँ नहि गेल। पाँचम, प्रवासी-योगदानक छाया-पक्ष — प्रवास-जन्य आदर्शीकरण, मिथिलाक यथार्थसँ दूरी, भावुक अतीत-मोह — क आलोचनात्मक परीक्षा नहि भेल; योगदानक अभिनन्दन अछि, योगदानक सीमाक हिआओल नहि। छठम, पत्रकारिता आ साहित्यिक पत्रिकाक सीमा कतोक स्थानपर धुँधला अछि — साहित्यिक

विशेषाङ्क, सामाजिक पत्रिका, समाचार-पत्र आ विचार-पत्रक पृथक कार्यपद्धतिक अधिक स्पष्ट वर्गीकरण अपेक्षित छल।

४.९ दीनाभद्री : सीमा

४.९ दीनाभद्री: सीमा

४.९ दीनाभद्री : सीमा

पहिलों, पाठ-प्रामाणिकता के जे केन्द्रीय प्रश्न उठावल गेलै — कोन पाठ आधार मानल जाए — ओकर समाधान लेखक अपने नै देलकै; समीक्षित पाठक समालोचनात्मक संस्करण (पाठान्तर-सूची सहित) तैयार करैके जे स्वाभाविक अगिला डेग छेलै, से प्रस्तावो रूप में नै आयल। साथे लोकगाथा के एक मूल पाठ खोजबा के प्रवृत्ति अपने मौखिक परम्परा के बहुरूपता सें मेल नै खाइत — प्रत्येक क्षेत्र, गायक, अवसर, जातीय उपसमूह आरो पीढ़ी अपन पाठ निर्मित करैछै। दोसरका, ग्रियर्सन के संकलन महत्त्वपूर्ण छै, मतरकि औपनिवेशिक सङ्कलक, अनुवादक, लिप्यन्तर के आरो सम्पादक के मध्यस्थता के आलोचनात्मक परीक्षण पर्याप्त नै — घुमन्तू गायक के जीवित प्रस्तुति लिखित पाठ में आबि कतेक बदलल, ई प्रश्न आवश्यक छै। तेसरका, महेन्द्रनारायण राम आरो फूलो पासवान के दावा के खण्डन में जे कठोरता छै ('इतिहास-सम्मत नहि', 'नकारात्मक दृष्टि'), से हुनकर संकलन-श्रम के स्वीकृतिक संग सन्तुलित नै भेलै — प्रत्यालोचना के जे मर्यादा-सूत्र तेसरका अध्याय में प्रतिपादित छै, से एहिजा कुछ शिथिल छै। चौथका — आरो ई गम्भीरतम — दलित लोकगाथा के विवेचन पूर्णतः अभिजात आलोचकीय स्थिति सें भेलै : मुसहर समुदाय के अपन गायक, अपन भगता, अपन वर्तमान वाचिक परम्परा के कोय प्रत्यक्ष साक्ष्य (क्षेत्र-कार्य) नै छै; जे तेलुगु दलित-विमर्श के उद्धरण अध्याय में छै — जे कहैछै जे दलित-विषय में बाजबा के अधिकार पर अपने दलित-स्वर के दावी छै — ओकर आलोक अपनहि पद्धति पर नै पड़ल; बाहरी आलोचक के व्याख्या आरो समुदाय के आत्मव्याख्या में अन्तर होय कें सकै छै। दीनाभद्री के गाथा के प्रेतयोनि सें मुक्ति आरो तीर्थ-पूजा जइसन सनातनी ढाँचा में राखि पढ़ला सें हुनकर स्वायत्त विद्रोही रूपक संस्कृतिकरण के जोखिम सेहो प्रश्नांकित नै भेलै। पाँचम, गाथा के स्त्री-पात्र (निरसो, हिरिया, जिरिया)के

भूमिका के स्वतन्त्र विश्लेषण नै भेलै — निम्नवर्गीय विमर्श के भीतरो नारी-स्वर हाशिये पर रहि गेलै; साथे मुसहर समुदाय के आन्तरिक विविधता, अनुष्ठान, प्रस्तुति-सन्दर्भ, आर्थिक परिवर्तन आरो वर्तमान राजनीतिक उपयोग के विस्तृत क्षेत्रीय अध्ययन अपेक्षित छेलै।

पहिल, पाठ-प्रामाणिकता के जे केन्द्रीय प्रश्न उठावल गेल — कोन पाठ आधार मानल जाए — ओकर समाधान लेखक खुद न देलथिन; समीक्षित पाठ के समालोचनात्मक संस्करण (पाठान्तर-सूची सहित) तैयार करे के जे स्वाभाविक अगिला डेग हल, से प्रस्तावो रूप में न आएल। साथे लोकगाथा के एक मूल पाठ खोजे के प्रवृत्ति खुद मौखिक परम्परा के बहुरूपता से मेल न खाय — हरेक क्षेत्र, गायक, अवसर, जातीय उपसमूह आ पीढ़ी अपन पाठ निर्मित करै हय। दोसर, ग्रियर्सन के संकलन महत्त्वपूर्ण हय, मुदा औपनिवेशिक सङ्कलक, अनुवादक, लिप्यन्तरक आ सम्पादक के मध्यस्थता के आलोचनात्मक परीक्षण पर्याप्त न — घुमन्तू गायक के जीवित प्रस्तुति लिखित पाठ में आबि कतना बदलल, ई प्रश्न आवश्यक हय। तेसर, महेन्द्रनारायण राम आ फूलो पासवान के दावा के खण्डन में जे कठोरता हय (‘इतिहास-सम्मत न’, ‘नकारात्मक दृष्टि’), से हुन के संकलन-श्रम के स्वीकृति के संग सन्तुलित न भेल — प्रत्यालोचना के जे मर्यादा-सूत्र तेसर अध्याय में प्रतिपादित हय, से इहाँ किछु शिथिल हय। चारिम — आ ई गम्भीरतम — दलित लोकगाथा के विवेचन पूरा तरह से अभिजात आलोचकीय स्थिति से भेल हय: मुसहर समुदाय के अपन गायक, अपन भगता, अपन वर्तमान वाचिक परम्परा के कोनो प्रत्यक्ष साक्ष्य (क्षेत्र-कार्य) न हय; जे तेलुगु दलित-विमर्श के उद्धरण अध्याय में हय — जे कहै हय कि दलित-विषय में बाजबा के अधिकार पर खुद दलित-स्वर के दावी हय — ओकर आलोक अपनहि पद्धति पर न पड़ल; बाहरी आलोचक के व्याख्या आ समुदाय के आत्मव्याख्या में अन्तर होके सकै हय। दीनाभद्री के गाथा के प्रेतयोनि से मुक्ति आ तीर्थ-पूजा जइसन सनातनी ढाँचा में रखके पढ़ला से हुन के स्वायत्त विद्रोही रूपक संस्कृतिकरण के जोखिम भी प्रश्नांकित न भेल। पाँचम, गाथा के स्त्री-पात्र (निरसो, हिरिया, जिरिया)के भूमिका के स्वतन्त्र विश्लेषण न भेल — निम्नवर्गीय विमर्श के भीतरो नारी-स्वर हाशिये पर रहि गेल; साथे मुसहर

समुदाय के आन्तरिक विविधता, अनुष्ठान, प्रस्तुति-सन्दर्भ, आर्थिक परिवर्तन आ वर्तमान राजनीतिक उपयोग के विस्तृत क्षेत्रीय अध्ययन अपेक्षित हल।

पहिल, पाठ-प्रामाणिकताक जे केन्द्रीय प्रश्न उठाओल गेल — कोन पाठ आधार मानल जाए — तकर समाधान लेखक स्वयं नहि देलनि; समीक्षित पाठक समालोचनात्मक संस्करण (पाठान्तर-सूची सहित) तैयार करबाक जे स्वाभाविक अगिला डेग छल, से प्रस्तावो रूपमे नहि आएल। संगहि लोकगाथाक एक मूल पाठ खोजबाक प्रवृत्ति स्वयं मौखिक परम्पराक बहुरूपतासँ मेल नहि खाइत — प्रत्येक क्षेत्र, गायक, अवसर, जातीय उपसमूह आ पीढ़ी अपन पाठ निर्मित करैत अछि। दोसर, ग्रियर्सनक संकलन महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा औपनिवेशिक सङ्कलक, अनुवादक, लिप्यन्तरक आ सम्पादकक मध्यस्थताक आलोचनात्मक परीक्षण पर्याप्त नहि — घुमन्तू गायकक जीवित प्रस्तुति लिखित पाठमे आबि कतेक बदलल, ई प्रश्न आवश्यक अछि। तेसर, महेन्द्रनारायण राम आ फूलो पासवानक दावाक खण्डनमे जे कठोरता अछि ('इतिहास-सम्मत नहि', 'नकारात्मक दृष्टि'), से हुनक संकलन-श्रमक स्वीकृतिक संग सन्तुलित नहि भेल — प्रत्यालोचनाक जे मर्यादा-सूत्र तेसर अध्यायमे प्रतिपादित अछि, से एतऽ किछु शिथिल अछि। चारिम — आ ई गम्भीरतम — दलित लोकगाथाक विवेचन पूर्णतः अभिजात आलोचकीय स्थितिसँ भेल अछि : मुसहर समुदायक अपन गायक, अपन भगता, अपन वर्तमान वाचिक परम्पराक कोनो प्रत्यक्ष साक्ष्य (क्षेत्र-कार्य) नहि अछि; जाहि तेलुगु दलित-विमर्शक उद्धरण अध्यायमे अछि — जे कहैत अछि जे दलित-विषयमे बाजबाक अधिकार पर स्वयं दलित-स्वरक दावी अछि — तकर आलोक अपनहि पद्धति पर नहि पड़ल; बाहरी आलोचकक व्याख्या आ समुदायक आत्मव्याख्यामे अन्तर भऽ सकैत अछि। दीनाभद्रीक गाथाकेँ प्रेतयोनिसँ मुक्ति आ तीर्थ-पूजा सन सनातनी ढाँचामे राखि पढ़लासँ हुनक स्वायत्त विद्रोही रूपक संस्कृतिकरणक जोखिम सेहो प्रश्नांकित नहि भेल। पाँचम, गाथाक स्त्री-पात्र (निरसो, हिरिया, जिरिया)क भूमिकाक स्वतन्त्र विश्लेषण नहि भेल — निम्नवर्गीय विमर्शक भीतरो नारी-स्वर हाशिये पर रहि गेल; संगहि मुसहर समुदायक आन्तरिक विविधता, अनुष्ठान, प्रस्तुति-सन्दर्भ,

आर्थिक परिवर्तन आ वर्तमान राजनीतिक उपयोगक विस्तृत क्षेत्रीय अध्ययन अपेक्षित छल।

४.१० कथा के विकास : सीमा

४.१० कथा के विकास: सीमा

४.१० कथाक विकास : सीमा

पहिलों, चन्द्रप्रभा के तिथि-निर्धारण (रचना १८८०के दश के तक) मुख्यत: सम्पादक लक्ष्मीपति सिंह के स्मृति-कथन ('साठि-सत्तरि वर्ष पूर्वक') आरो जीर्ण-शीर्ण पाण्डुलिपिक वर्णन पर आधारित छै — पाण्डुलिपि-विज्ञान के कोय बाह्य कसौटी (कागज, मसि, लिपि-शैली के काल-निर्धारण)के अभाव में प्रस्थान-बिन्दु के ई पुनर्स्थापन ओतबे दृढ नै छै जतेक निबन्ध के स्वर सुझाबै छै; जे कठोरता सें रामदेव झा के मदनराज-चरित-विषयक तिथि-भ्रम के खण्डन भेलै, ओहि कठोरता के परयोग अपन पक्ष के साक्ष्य पर नै भेलै — ई मापदण्ड के द्वैध छै। दोसरका, आत्म-सन्दर्भ के सघनता — मैथिली के आरम्भिक कथा, मिथिला दर्पण, निर्दयी सासु आदि उद्धृत स्रोत के सम्पादक अपने लेखक छै; सम्पादन-श्रम स्तुत्य छै, मतरकि अपनहि सम्पादित सामग्री के निर्णायक परमाण बनएबा में स्वार्थ-संलग्नता के आभास अनिवार्य छै, जेकर कोय पद्धतिगत निराकरण (स्वतन्त्र साक्ष्य सें पुष्टि) नै कैल गेलै। तेसरका, जलधर झा के 'विलक्षण दाम्पत्य' के विधागत स्वरूप — रम्य-रचना, समाचार-मूल के गद्य की कथा — के जे विवाद छै, से अनिर्णीत छोड़ल गेलै; 'आद्य कथा मानबाक औचित्य नहि' कहल गेलै मतरकि कथात्व के कसौटी (कथान के, चरित्र, परिणति) सूत्रबद्ध नै भेलै — मौखिक आख्यान, व्रतकथा, नीति-कथा, आख्यायिका, उपन्यास आरो आधुनिक लघुकथा के विधागत भेद सेहो पर्याप्त कठोरता सें निर्धारित नै छै। चौथका, लुप्त सामग्री के सम्भावना इतिहास के महत्त्वपूर्ण प्रश्न छै, मतरकि 'उपलब्ध नहि अछि' सें 'अवश्य छल' तक पहुँचब अनुमानक छलाँग होय छै — पाण्डुलिपि, उल्लेख, प्रकाशन-विज्ञापन, पत्राचार आरो समकालीन समीक्षा जइसन बाहरी साक्ष्य आवश्यक छै; वाचिक कथा-परम्परा के तेसरका धारा के स्थापना सेहो रमानाथ झा के पुरान कथन पर आश्रित छै, स्वतन्त्र क्षेत्र-साक्ष्य गायब। पाँचम, पुरुषपरीक्षा के अनुवाद प्रभावहीन छेलै — ई सम्भव निष्कर्ष

छै, मतरकि एकर प्रचार, पाठक-संख्या आरो प्रभाव के अभाव के प्रत्यक्ष परमाण सेहो सीमित छै; प्रभाव केवल लोकप्रियता सें नै, भाषिक अथवा शैलीगत अनुकरण सें सेहो निर्धारित होय छै। छठम, चन्द्रप्रभा के राजनीतिक प्रतीकात्मक पाठ रोच के छै, मतरकि प्रत्येक राजा-प्रजा कथा औपनिवेशिक प्रतिरोधक रूपक हो, ई निश्चित नै — सामाजिक नीति-कथा, राजधर्म आरो पुरातन उपदेश-परम्परा के सम्भावना समान रूप सें जाँचल जाएबा के चाही।

पहिल, चन्द्रप्रभा के तिथि-निर्धारण (रचना १८८० के दश के तक) मुख्य रूप से सम्पादक लक्ष्मीपति सिंह के स्मृति-कथन ('साठि-सत्तरि वर्ष पहिले के') आ जीर्ण-शीर्ण पाण्डुलिपि के वर्णन पर आधारित हय — पाण्डुलिपि-विज्ञान के कोनो बाह्य कसौटी (कागज, मसि, लिपि-शैली के काल-निर्धारण)के अभाव में प्रस्थान-बिन्दु के ई पुनर्स्थापन ओतने दृढ न हय जतना निबन्ध के स्वर सुझबैत हय; जे कठोरता से रामदेव झा के मदनराज-चरित-विषय के तिथि-भ्रम के खण्डन भेल, ओही कठोरता के प्रयोग अपन पक्ष के साक्ष्य पर न भेल — ई मापदण्ड के द्वैध हय। दोसर, आत्म-सन्दर्भ के सघनता — मैथिली के आरम्भिक कथा, मिथिला दर्पण, निर्दयी सासु आदि उद्धृत स्रोत के सम्पादक खुद लेखक हथिन; सम्पादन-श्रम स्तुत्य हय, मुदा अपनहि सम्पादित सामग्री के निर्णायक प्रमाण बनएबा में स्वार्थ-संलग्नता के आभास अनिवार्य हय, जकर कोनो पद्धतिगत निराकरण (स्वतन्त्र साक्ष्य से पुष्टि) न कैल गेल। तेसर, जलधर झा के 'विलक्षण दाम्पत्य' के विधागत स्वरूप — रम्य-रचना, समाचार-मूल के गद्य की कथा — के जे विवाद हय, से अनिर्णीत छोड़ल गेल;'आद्य कथा माने के औचित्य न' कहल गेल मुदा कथात्व के कसौटी (कथानक, चरित्र, परिणति) सूत्रबद्ध न भेल — मौखिक आख्यान, व्रतकथा, नीति-कथा, आख्यायिका, उपन्यास आ आधुनिक लघुकथा के विधागत भेद भी पर्याप्त कठोरता से निर्धारित न हय। चारिम, लुप्त सामग्री के सम्भावना इतिहास के महत्त्वपूर्ण प्रश्न हय, मुदा 'उपलब्ध न हय'से'अवश्य हल' तक पहुँचब अनुमान के छलाँग होय हय — पाण्डुलिपि, उल्लेख, प्रकाशन-विज्ञापन, पत्राचार आ समकालीन समीक्षा जइसन बाहरी साक्ष्य आवश्यक हय; वाचिक कथा-परम्परा के तेसर धारा के स्थापना भी रमानाथ झा के प्राचीन कथन पर आश्रित हय, स्वतन्त्र

क्षेत्र-साक्ष्य अनुपस्थित। पाँचम, पुरुषपरीक्षा के अनुवाद प्रभावहीन हल — ई सम्भव निष्कर्ष हय, मुदा एकर प्रचार, पाठक-संख्या आ प्रभावक अभाव के प्रत्यक्ष प्रमाण भी सीमित हय; प्रभाव खाली लोकप्रियता से न, भाषिक वा शैलीगत अनुकरण से भी निर्धारित होय हय। छठम, चन्द्रप्रभा के राजनीतिक प्रतीकात्मक पाठ रोचक हय, मुदा हरेक राजा-प्रजा कथा औपनिवेशिक प्रतिरोध के रूपक हो, ई निश्चित न — सामाजिक नीति-कथा, राजधर्म आ पुरातन उपदेश-परम्परा के सम्भावना समान रूप से जाँचल जाएबा के चाही।

पहिल, चन्द्रप्रभाक तिथि-निर्धारण (रचना १८८०क दशक धरि) मुख्यतः सम्पादक लक्ष्मीपति सिंहक स्मृति-कथन (‘साठि-सत्तरि वर्ष पूर्वक’) आ जीर्ण-शीर्ण पाण्डुलिपिक वर्णन पर आधारित अछि — पाण्डुलिपि-विज्ञानक कोनो बाह्य कसौटी (कागज, मसि, लिपि-शैलीक काल-निर्धारण)क अभावमे प्रस्थान-बिन्दुक ई पुनर्स्थापन ओतबे दृढ नहि अछि जतेक निबन्धक स्वर सुझबैत अछि; जाहि कठोरतासँ रामदेव झाक मदनराज-चरित-विषयक तिथि-भ्रमक खण्डन भेल, ओही कठोरताक प्रयोग अपन पक्षक साक्ष्य पर नहि भेल — ई मापदण्डक द्वैध थिक। दोसर, आत्म-सन्दर्भक सघनता — मैथिलीक आरम्भिक कथा, मिथिला दर्पण, निर्दयी सासु आदि उद्धृत स्रोतक सम्पादक स्वयं लेखक छथि; सम्पादन-श्रम स्तुत्य अछि, मुदा अपनहि सम्पादित सामग्रीकेँ निर्णायक प्रमाण बनएबामे स्वार्थ-संलग्नताक आभास अनिवार्य अछि, जकर कोनो पद्धतिगत निराकरण (स्वतन्त्र साक्ष्यसँ पुष्टि) नहि कएल गेल। तेसर, जलधर झाक ‘विलक्षण दाम्पत्य’क विधागत स्वरूप — रम्य-रचना, समाचार-मूलक गद्य की कथा — क जे विवाद अछि, से अनिर्णीत छोड़ल गेल; ’आद्य कथा मानबाक औचित्य नहि’ कहल गेल मुदा कथात्वक कसौटी (कथानक, चरित्र, परिणति) सूत्रबद्ध नहि भेल — मौखिक आख्यान, व्रतकथा, नीति-कथा, आख्यायिका, उपन्यास आ आधुनिक लघुकथाक विधागत भेद सेहो पर्याप्त कठोरतासँ निर्धारित नहि अछि। चारिम, लुप्त सामग्रीक सम्भावना इतिहासक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि, मुदा ‘उपलब्ध नहि अछि’सँ ’अवश्य छल’ धरि पहुँचब अनुमानक छलाँग होइत अछि — पाण्डुलिपि, उल्लेख, प्रकाशन-विज्ञापन, पत्राचार आ समकालीन समीक्षा सन बाहरी साक्ष्य आवश्यक अछि; वाचिक

कथा-परम्पराक तेसर धाराक स्थापना सेहो रमानाथ झाक प्राचीन कथन पर आश्रित अछि, स्वतन्त्र क्षेत्र-साक्ष्य अनुपस्थित। पाँचम, पुरुषपरीक्षाक अनुवाद प्रभावहीन छल — ई सम्भव निष्कर्ष अछि, मुदा एकर प्रचार, पाठक-संख्या आ प्रभावक अभावक प्रत्यक्ष प्रमाण सेहो सीमित अछि; प्रभाव केवल लोकप्रियतासँ नहि, भाषिक अथवा शैलीगत अनुकरणसँ सेहो निर्धारित होइत अछि। छठम, चन्द्रप्रभाक राजनीतिक प्रतीकात्मक पाठ रोचक अछि, मुदा प्रत्येक राजा-प्रजा कथा औपनिवेशिक प्रतिरोधक रूपक हो, ई निश्चित नहि — सामाजिक नीति-कथा, राजधर्म आ पुरातन उपदेश-परम्पराक सम्भावना समान रूपसँ जाँचल जाएबाक चाही।

४.११ भूकम्प : सीमा

४.११ भूकम्प: सीमा

४.११ भूकम्प : सीमा

अध्याय द्वि-केन्द्रित छै — सीताराम झा आरो कृष्णनन्दन सिंह — आरो १९८८के संकलन के परयोग चयनित उद्धरण तक सीमित; संकलन के पूरा प्रवृत्ति-विश्लेषण (कतेक कवि, कोन-कोन नजर, कोन छन्द-परम्परा) नै भेलै। दोसरका, अध्याय कविता के ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में प्रभावपूर्ण ढङ्ग सें पढ़ै छै, मतरकि दस्तावेजी मूल्य काव्यात्मक मूल्यपर भारी पड़ैछै — छन्द, ध्वनि, गति, विराम, पुनरावृत्ति आरो भयान के रस के बनावट के तुलनात्मक विश्लेषण सीमित छै; आपदा-वर्णन लेली छन्द के औचित्य-प्रश्न — करुण-रस आरो बद्ध-छन्द के सम्बन्ध — अस्पर्शित रहलों। तेसरका, भूकम्प के लोक-स्मृति — लोकगीत, कहबी, जनश्रुति — सर्वथा छूटल, जब कि लोकगीत-अध्याय के लेखक सें ई स्रोत के उपयोग के अपेक्षा स्वाभाविक छेलै; शिष्ट काव्य आरो लोक-अभिव्यक्तिक तुलना सें आपदा-स्मृतिक द्विस्तरीय पाठ बनि सकै छेलै। चौथका, कम्पकारिका के ‘धर्मशाला बँचि गेल, काशी-वैद्यनाथ मन्दिर बँचल’ जइसन पाँती के जे दैवी-लीला-पर के व्याख्या कवि के छै, ओकर आलोचनात्मक परीक्षण (भवन-बनावट के भौतिक कारण बनाम आस्था-पाठ) नै भेलै — आलोचक एहिजा कवि के विश्व-नजर के वर्णनकर्ता रहि गेलाह,

विश्लेष के नै बनलाह; धार्मिक विश्वास आरो वास्तविक विनाश-वितरण के अन्तर्विरोध पर्याप्त प्रश्नांकित नै भेलै। पाँचम, पीड़ित स्त्री, दलित बस्ती, भूमिहीन मजदूर, अपाङ्ग व्यक्ति आरो अनाथ बुतरू के अलग अनुभव के खोज कम छै — राहत-वितरण आरो पुनर्वास में वर्ग-भेद आरो जाति-भेद पर रचित लोक-अभिव्यक्ति उपेक्षित रहलों; 'सम्पूर्ण मिथिला' के सामूहिक त्रास के भीतर सामाजिक विषमता छिपि सकै छै। साथे भूकम्प के कारण, भूगर्भीय बनावट, राहत-नीति, मृत के-संख्या आरो सामाजिक वितरण के ऐतिहासिक स्रोत सें काव्य-वर्णन के तुलना कैल जाय तें साहित्य आरो इतिहास के सम्बन्ध बेसी स्पष्ट होय।

अध्याय द्वि-केन्द्रित हय — सीताराम झा आ कृष्णनन्दन सिंह — आ १९८८ के संकलन के प्रयोग चयनित उद्धरण तक सीमित; संकलन के समग्र प्रवृत्ति-विश्लेषण (कतना कवि, कोन-कोन दृष्टि, कोन छन्द-परम्परा) न भेल। दोसर, अध्याय कविता के ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में प्रभावपूर्ण ढङ्ग से पढ़ैत हय, मुदा दस्तावेजी मूल्य काव्यात्मक मूल्य पर भारी पड़ै हय — छन्द, ध्वनि, गति, विराम, पुनरावृत्ति आ भयान के रस के संरचना के तुलनात्मक विश्लेषण सीमित हय; आपदा-वर्णन खातिर छन्द के औचित्य-प्रश्न — करुण-रस आ बद्ध-छन्द के सम्बन्ध — अस्पर्शित रहल। तेसर, भूकम्प के लोक-स्मृति — लोकगीत, कहबी, जनश्रुति — पूरा तरह से छूटल, जब कि लोकगीत-अध्याय के लेखक से ई स्रोत के उपयोग के अपेक्षा स्वाभाविक हल; शिष्ट काव्य आ लोक-अभिव्यक्ति के तुलना से आपदा-स्मृति के द्विस्तरीय पाठ बनि सकै हल। चारिम, कम्पकारिका के 'धर्मशाला बँचि गेल, काशी-वैद्यनाथ मन्दिर बँचल' जइसन पाँती के जे दैवी-लीला-पर के व्याख्या कवि के हय, ओकर आलोचनात्मक परीक्षण (भवन-संरचना के भौतिक कारण बनाम आस्था-पाठ) न भेल — आलोचक इहाँ कवि के विश्व-दृष्टि के वर्णनकर्ता रहि गेलथिन, विश्लेषक न बनलाह; धार्मिक विश्वास आ वास्तविक विनाश-वितरण के अन्तर्विरोध पर्याप्त प्रश्नांकित न भेल। पाँचम, पीड़ित स्त्री, दलित बस्ती, भूमिहीन मजदूर, अपाङ्ग व्यक्ति आ अनाथ बालक के अलग अनुभव के खोज कम हय — राहत-वितरण आ पुनर्वास में वर्ग-भेद आ जाति-भेद पर रचित

लोक-अभिव्यक्ति उपेक्षित रहल;'पूरा मिथिला' के सामूहिक त्रास के भीतर सामाजिक विषमता छिपि सकै हय। साथे भूकम्प के कारण, भूगर्भीय संरचना, राहत-नीति, मृत के-संख्या आ सामाजिक वितरण के ऐतिहासिक स्रोत से काव्य-वर्णन के तुलना कैल जाय त साहित्य आ इतिहास के सम्बन्ध अधिक साफ होय।

अध्याय द्वि-केन्द्रित अछि — सीताराम झा आ कृष्णनन्दन सिंह — आ १९८८क संकलनक प्रयोग चयनित उद्धरण धरि सीमित; संकलनक समग्र प्रवृत्ति-विश्लेषण (कतेक कवि, कोन-कोन दृष्टि, कोन छन्द-परम्परा) नहि भेल। दोसर, अध्याय कविताकेँ ऐतिहासिक दस्तावेजक रूपमे प्रभावपूर्ण ढङ्गसँ पढ़ैत अछि, मुदा दस्तावेजी मूल्य काव्यात्मक मूल्यपर भारी पड़ैत अछि — छन्द, ध्वनि, गति, विराम, पुनरावृत्ति आ भयानक रसक संरचनाक तुलनात्मक विश्लेषण सीमित अछि; आपदा-वर्णन लेल छन्दक औचित्य-प्रश्न — करुण-रस आ बद्ध-छन्दक सम्बन्ध — अस्पर्शित रहल। तेसर, भूकम्पक लोक-स्मृति — लोकगीत, कहबी, जनश्रुति — सर्वथा छूटल, जखन कि लोकगीत-अध्यायक लेखकसँ एहि स्रोतक उपयोगक अपेक्षा स्वाभाविक छल; शिष्ट काव्य आ लोक-अभिव्यक्तिक तुलनासँ आपदा-स्मृतिक द्विस्तरीय पाठ बनि सकैत छल। चारिम, कम्पकारिकाक 'धर्मशाला बँचि गेल, काशी-वैद्यनाथ मन्दिर बँचल' सन पाँतीक जे दैवी-लीला-परक व्याख्या कविक अछि, तकर आलोचनात्मक परीक्षण (भवन-संरचनाक भौतिक कारण बनाम आस्था-पाठ) नहि भेल — आलोचक एतऽ कविक विश्व-दृष्टिक वर्णनकर्ता रहि गेलाह, विश्लेषक नहि बनलाह; धार्मिक विश्वास आ वास्तविक विनाश-वितरणक अन्तर्विरोध पर्याप्त प्रश्नांकित नहि भेल। पाँचम, पीड़ित स्त्री, दलित बस्ती, भूमिहीन मजदूर, अपाङ्ग व्यक्ति आ अनाथ बालकक पृथक अनुभवक खोज कम अछि — राहत-वितरण आ पुनर्वासमे वर्ग-भेद आ जाति-भेद पर रचित लोक-अभिव्यक्ति उपेक्षित रहल; 'सम्पूर्ण मिथिला'क सामूहिक त्रासक भीतर सामाजिक विषमता छिपि सकैत अछि। संगहि भूकम्पक कारण, भूगर्भीय संरचना, राहत-नीति, मृतक-संख्या आ सामाजिक वितरणक ऐतिहासिक स्रोतसँ काव्य-वर्णनक तुलना कएल जाइत तँ साहित्य आ इतिहासक सम्बन्ध अधिक स्पष्ट होइत।

४.१२ कोसी : सीमा

४.१२ कोसी: सीमा

४.१२ कोसी : सीमा

ई अध्याय संग्रह के सबसें बेसी वर्णनात्मक छै — कवि-दर-कवि उद्धरण-माला छै, मतरकि विश्लेषण के सूत्र पातर। पहिलों, बाढ़िक राजनीतिक अर्थशास्त्र — बान्ह-निर्माण के इतिहास, कोसी-परियोजना, नेपाल-भारत जल-सन्धि, गाद, धारा-परिवर्तन, जल-प्रबन्धन, तटबन्ध के भीतर के बस्ती के स्थायी विस्थापन — के कोय चर्च नै; 'लोककृत त्रासदी' के पद एक ठाम आयल छै, मतरकि ओकर विस्तार नै भेलै, जेकरा सें बाढ़ि प्रायः नियतिक प्रकोप बनल रहि गेलै आरो सरकारी नीतिक आलोचना नैतिक रूप सें प्रभावी मतरकि नीतिगत रूप सें अपूर्ण रहि जाय छै। दोसरका, कथा-उपन्यास के (पंचवटी, लिली रे के पटाक्षेप, इन्किलाब) खाली नामोल्लेख छै — 'बाढ़ि-साहित्य' के जे व्यापक शीर्ष के-ध्वनि छै, से कविता तक सिकुड़ि गेलै। तेसरका, लोकगीत के कोसी-उपराग के जे मार्मिक सन्दर्भ शीर्षकहि में छै, ओकर पाठ-विश्लेषण अत्यल्प छै — शीर्ष के जे वादा करैछै, पाठ से पूरा नै करैछै। चौथका, कविता के कतोक स्थानपर प्रत्यक्ष सामाजिक प्रतिवेदन के समान पढ़ल गेलै — कविता में अतिशयोक्ति, प्रतीक, भावात्मक संक्षेप आरो वक्ता के काल्पनिकता सेहो होय छै; साथे नदी के 'माइ' कहना आत्मीय छै, मतरकि मातृत्व के प्रतीक प्राकृतिक विनाश के भाग्य अथवा देवी के कोप मानि राजनीतिक उत्तरदायित्व धुँधला करि सकै छै — नदी नै, अनुचित बान्ह, कमजोर प्रशासन, भ्रष्ट राहत आरो असमान बसावट अनेक त्रासदी के कारण होय छै, आरो शृंगारिक-कारुणिक व्याख्या में रोमानीकरण के जोखिम रहै छै। पाँचम, बाढ़िक बोझ स्त्री, निम्नजाति, भूमिहीन, पशुपालक आरो प्रवासी मजदूरपर भिन्न-भिन्न पड़ैछै — ई अन्तरसम्बन्धी विश्लेषण के विस्तार अपेक्षित छेलै। छठम, बाढ़ि-वर्णन के पुनरावृत्ति-दोष — प्रत्येक वर्ष एकहि अनुभव के एकहि प्रकारक अभिव्यक्ति — के जे संकेत लेखक अपने दैछै, ओकरा कसौटी बना कें कविता सब के तारतम्य-फैसला (के रूढ़ि, के मौलिक) नै कैल गेलै।

ई अध्याय संग्रह के सबसे बेसी वर्णनात्मक हय — कवि-दर-कवि उद्धरण-माला हय, मुदा विश्लेषण के सूत्र पातर। पहिल, बाढ़िक राजनीतिक अर्थशास्त्र — बान्ह-निर्माण के इतिहास, कोसी-परियोजना, नेपाल-भारत जल-सन्धि, गाद, धारा-परिवर्तन, जल-प्रबन्धन, तटबन्ध के भीतर के बस्ती के स्थायी विस्थापन — के कोनो चर्च न; 'लोककृत त्रासदी' के पद एक ठाम आएल हय, मुदा ओकर विस्तार न भेल, जेसे बाढ़ि प्रायः नियतिक प्रकोप बनल रहि गेल आ सरकारी नीति के आलोचना नैतिक रूप से प्रभावी मुदा नीतिगत रूप से अपूर्ण रह जाय हय। दोसर, कथा-उपन्यास के (पंचवटी, लिली रे के पटाक्षेप, इन्किलाब) खाली नामोल्लेख हय —'बाढ़ि-साहित्य' के जे व्यापक शीर्षक-ध्वनि हय, से कविता तक सिकुड़ि गेल। तेसर, लोकगीत के कोसी-उपराग के जे मार्मिक सन्दर्भ शीर्षकहि में हय, ओकर पाठ-विश्लेषण अत्यल्प हय — शीर्षक जे वादा करै हय, पाठ से पूरा न करै हय। चारिम, कविता के कतको स्थान पर प्रत्यक्ष सामाजिक प्रतिवेदन के समान पढ़ल गेल हय — कविता में अतिशयोक्ति, प्रतीक, भावात्मक संक्षेप आ वक्ता के काल्पनिकता भी होय हय; साथे नदी के'माइ' कहब आत्मीय हय, मुदा मातृत्व के प्रतीक प्राकृतिक विनाश के भाग्य वा देवी के कोप मानके राजनीतिक उत्तरदायित्व धुँधला करि सकै हय — नदी न, अनुचित बान्ह, कमजोर प्रशासन, भ्रष्ट राहत आ असमान बसावट अनेक त्रासदी के कारण होय हय, आ शृंगारिक-कारुणिक व्याख्या में रोमानीकरण के जोखिम रहै हय। पाँचम, बाढ़िक बोझ स्त्री, निम्नजाति, भूमिहीन, पशुपाल के आ प्रवासी मजदूर पर भिन्न-भिन्न पड़ै हय — ई अन्तरसम्बन्धी विश्लेषण के विस्तार अपेक्षित हल। छठम, बाढ़ि-वर्णन के पुनरावृत्ति-दोष — हरेक वर्ष एके अनुभव के एके प्रकार के अभिव्यक्ति — के जे संकेत लेखक खुद दे हथिन, तकरा कसौटी बना के कविता सभ के तारतम्य-निर्णय (के रूढ़ि, के मौलिक) न कैल गेल।

ई अध्याय संग्रहक सर्वाधिक वर्णनात्मक अछि — कवि-दर-कवि उद्धरण-माला अछि, मुदा विश्लेषणक सूत्र पातर। पहिल, बाढ़िक राजनीतिक अर्थशास्त्र — बान्ह-निर्माणक इतिहास, कोसी-परियोजना, नेपाल-भारत जल-सन्धि, गाद, धारा-परिवर्तन, जल-प्रबन्धन, तटबन्धक भीतरक बस्तीक स्थायी

विस्थापन — क कोनो चर्च नहि; ‘लोककृत त्रासदी’क पद एक ठाम आएल अछि, मुदा ओकर विस्तार नहि भेल, जाहिसँ बाढ़ि प्रायः नियतिक प्रकोप बनल रहि गेल आ सरकारी नीतिक आलोचना नैतिक रूपसँ प्रभावी मुदा नीतिगत रूपसँ अपूर्ण रहि जाइत अछि। दोसर, कथा-उपन्यासक (पंचवटी, लिली रेक पटाक्षेप, इन्किलाब) मात्र नामोल्लेख अछि — ’बाढ़ि-साहित्य’क जे व्यापक शीर्षक-ध्वनि अछि, से कविता धरि सिकुड़ि गेल। तेसर, लोकगीतक कोसी-उपरागक जे मार्मिक सन्दर्भ शीर्षकहिमे अछि, तकर पाठ-विश्लेषण अत्यल्प अछि — शीर्षक जे वादा करैत अछि, पाठ से पूरा नहि करैत अछि। चारिम, कविताकेँ कतोक स्थानपर प्रत्यक्ष सामाजिक प्रतिवेदनक समान पढ़ल गेल अछि — कवितामे अतिशयोक्ति, प्रतीक, भावात्मक संक्षेप आ वक्ताक काल्पनिकता सेहो होइत अछि; संगहि नदीकेँ ’माइ’ कहब आत्मीय अछि, मुदा मातृत्वक प्रतीक प्राकृतिक विनाशकेँ भाग्य अथवा देवीक कोप मानि राजनीतिक उत्तरदायित्व धुँधला करि सकैत अछि — नदी नहि, अनुचित बान्ह, कमजोर प्रशासन, भ्रष्ट राहत आ असमान बसावट अनेक त्रासदीक कारण होइत अछि, आ शृंगारिक-कारुणिक व्याख्यामे रोमानीकरणक जोखिम रहैत अछि। पाँचम, बाढ़िक बोझ स्त्री, निम्नजाति, भूमिहीन, पशुपालक आ प्रवासी मजदूरपर भिन्न-भिन्न पड़ैत अछि — एहि अन्तरसम्बन्धी विश्लेषणक विस्तार अपेक्षित छल। छठम, बाढ़ि-वर्णनक पुनरावृत्ति-दोष — प्रत्येक वर्ष एकहि अनुभवक एकहि प्रकारक अभिव्यक्ति — क जे संकेत लेखक स्वयं दैत छथि, तकरा कसौटी बना क‌ऽ कविता सभक तारतम्य-निर्णय (के रूढ़ि, के मौलिक) नहि कएल गेल।

४.१३ महाकाव्य में युग-सन्दर्भ : सीमा

४.१३ महाकाव्य में युग-सन्दर्भ: सीमा

४.१३ महाकाव्यमे युग-सन्दर्भ : सीमा

पहिलों, पाँच महाकाव्य के चयन परयोजन-आधारित घोषित छै, मतरकि बहिष्करण के तर्क अपूर्ण — ‘शेष महाकाव्य युग-सन्दर्भसँ हीन नहि’ कहि आगू बढ़ि जाएब चयन-पूर्वाग्रह के प्रश्न खुजल छोड़ि दैछै; कीचकवध, दत्तवती वा चित्रा जइसन कृति के अनुपस्थितिक कारण-कथन अपेक्षित छेलै, आरो शेष महाकाव्य के उल्लेख खाली सें ई निर्धारित नै होय छै जे चुनल कृति सम्पूर्ण

परम्परा के पर्याप्त प्रतिनिधित्व करैछै। दोसरका, तीनू पुरस्कृत महाकाव्य के चयन सें जे प्रतिष्ठान-निरपेक्षता के दावी पोथी के स्वर छै, ओकरा में व्यवधान आबैछै — साहित्य अकादमी के स्वीकृतिक छाया चयन पर देखि पड़ैछै। तेसरका, युग-सन्दर्भ के खोज में काव्यत्व गौण होय गेलै — रस-निष्पत्ति, बिम्ब-विधान, छन्द-परयोग, महाकाव्यत्व के शास्त्रीय लच्छन (सर्ग-बद्धता, नायक-स्वरूप, व्यापक कथान के, उदात्त शैली, चरित्र-विकास, वर्णन, संवाद) पर प्रायः मौन; फलतः महाकाव्य विचार-वाहक प्रलेख जइसन पढ़ाएल, काव्य जइसन कम। चौथका, पुराण के पात्र के आधुनिक स्वतन्त्रता सेनानी, समाज-सुधार के, कृष के अथवा क्षेत्रीय राष्ट्रवादी के रूप में पढ़ना फलदायी छै, मतरकि ऐतिहासिक वर्तमानवाद के जोखिम सेहो छै — पुरान मिथ के आधुनिक विचार के सीधा पूर्वरूप नै। पाँचम, कृतिवार विस्तार असन्तुलित छै — सुभद्राहरण आरो पराशर के जतेक स्थान, राधाविरह आरो त्रिपुण्ड के ओकरा सें बहुत कम; नारी-सशक्तीकरण के जे स्थापना राधाविरह सें जोड़ल गेलै, से दू-तीन उद्धरण के भरोसे छै आरो विप्रलम्भ-शृंगार के प्रधान रस सें ई सामाजिक पाठक सम्बन्ध के मीमांसा नै भेलै — राधा के कर्तव्य पुनः पति आरो राष्ट्र के सेवा सें निर्धारित छै; स्त्री के आत्मनिर्णय, देह, कामना आरो निजी जिनगी के स्वतन्त्र मूल्यपर चर्चा सीमित रहि जाय छै। छठम, अगस्त्यायनी आरो पराशर जइसन कृति में जाति-संघर्ष आरो आभिजात्य व्यवस्था के जे प्रश्न निहित छै, ओकर सामने-सोझी विखण्डन के स्थान पर 'युग-धर्म' के सामान्य विमर्श तक रुकि जाएब सामन्ती बनावट के पूरा आलोचना के अवसर गमा दैछै।

पहिल, पाँच महाकाव्य के चयन प्रयोजन-आधारित घोषित हय, मुदा बहिष्करण के तर्क अपूर्ण — 'शेष महाकाव्य युग-सन्दर्भ से हीन न' कहके आगू बढ़ि जाएब चयन-पूर्वाग्रह के प्रश्न खुजल छोड़के दे हय; कीचकवध, दत्तवती वा चित्रा जइसन कृति के अनुपस्थिति के कारण-कथन अपेक्षित हल, आ शेष महाकाव्य के उल्लेख खाली से ई निर्धारित न होय हय कि चुनल कृति पूरा परम्परा के पर्याप्त प्रतिनिधित्व करै हय। दोसर, तीनू पुरस्कृत महाकाव्य के चयन से जे प्रतिष्ठान-निरपेक्षता के दावी पोथी के स्वर हय, ओमें व्यवधान आबै हय — साहित्य अकादमी के स्वीकृति के छाया चयन पर देखि पड़ै हय। तेसर, युग-सन्दर्भ के खोज में काव्यत्व गौण हो गेल — रस-निष्पत्ति, बिम्ब-विधान,

छन्द-प्रयोग, महाकाव्यत्व के शास्त्रीय लक्षण (सर्ग-बद्धता, नायक-स्वरूप, व्यापक कथानक, उदात्त शैली, चरित्र-विकास, वर्णन, संवाद) पर प्रायः मौन; फलतः महाकाव्य विचार-वाहक प्रलेख जइसन पढ़ाएल, काव्य जइसन कम। चारिम, पुराण के पात्र के आधुनिक स्वतन्त्रता सेनानी, समाज-सुधारक, कृषक वा क्षेत्रीय राष्ट्रवादी के रूप में पढ़ब फलदायी हय, मुदा ऐतिहासिक वर्तमानवाद के जोखिम भी हय — प्राचीन मिथक आधुनिक विचार के सीधा पूर्वरूप न। पाँचम, कृतिवार विस्तार असन्तुलित हय — सुभद्राहरण आ पराशर के जतना स्थान, राधाविरह आ त्रिपुण्ड के ओसे बहुत कम; नारी-सशक्तीकरण के जे स्थापना राधाविरह से जोड़ल गेल, से दू-तीन उद्धरण के भरोसे हय आ विप्रलम्भ-शृंगार के प्रधान रस से ई सामाजिक पाठक सम्बन्ध के मीमांसा न भेल — राधा के कर्तव्य फेर पति आ राष्ट्र के सेवा से निर्धारित हय; स्त्री के आत्मनिर्णय, देह, कामना आ निजी जीवन के स्वतन्त्र मूल्य पर चर्चा सीमित रह जाय हय। छठम, अगस्त्यायनी आ पराशर जइसन कृति में जाति-संघर्ष आ आभिजात्य व्यवस्था के जे प्रश्न निहित हय, ओकर सोझाँ-सोझी विखण्डन के स्थान पर'युग-धर्म' के सामान्य विमर्श तक रुकि जाएब सामन्ती संरचना के पूर्ण आलोचना के अवसर गमा दे हय।

पहिल, पाँच महाकाव्यक चयन प्रयोजन-आधारित घोषित अछि, मुदा बहिष्करणक तर्क अपूर्ण — 'शेष महाकाव्य युग-सन्दर्भसँ हीन नहि' कहि आगाँ बढ़ि जाएब चयन-पूर्वाग्रहक प्रश्न खुजल छोड़ि दैत अछि; कीचकवध, दत्तवती वा चित्रा सन कृतिक अनुपस्थितिक कारण-कथन अपेक्षित छल, आ शेष महाकाव्यक उल्लेख मात्रसँ ई निर्धारित नहि होइत अछि जे चुनल कृति सम्पूर्ण परम्पराक पर्याप्त प्रतिनिधित्व करैत अछि। दोसर, तीनू पुरस्कृत महाकाव्यक चयनसँ जाहि प्रतिष्ठान-निरपेक्षताक दावी पोथीक स्वर अछि, ताहिमे व्यवधान अबैत अछि — साहित्य अकादमीक स्वीकृतिक छाया चयन पर देखि पड़ैत अछि। तेसर, युग-सन्दर्भक खोजमे काव्यत्व गौण भऽ गेल — रस-निष्पत्ति, बिम्ब-विधान, छन्द-प्रयोग, महाकाव्यत्वक शास्त्रीय लक्षण (सर्ग-बद्धता, नायक-स्वरूप, व्यापक कथानक, उदात्त शैली, चरित्र-विकास, वर्णन, संवाद) पर प्रायः मौन; फलतः महाकाव्य विचार-वाहक प्रलेख जकाँ पढ़ाएल,

काव्य जकाँ कम। चारिम, पुराणक पात्रकेँ आधुनिक स्वतन्त्रता सेनानी, समाज-सुधारक, कृषक अथवा क्षेत्रीय राष्ट्रवादीक रूपमे पढ़ब फलदायी अछि, मुदा ऐतिहासिक वर्तमानवादक जोखिम सेहो अछि — प्राचीन मिथक आधुनिक विचारक सीधा पूर्वरूप नहि। पाँचम, कृतिवार विस्तार असन्तुलित अछि — सुभद्राहरण आ पराशरकेँ जतेक स्थान, राधाविरह आ त्रिपुण्डकेँ ताहिसँ बहुत कम; नारी-सशक्तीकरणक जे स्थापना राधाविरहसँ जोड़ल गेल, से दू-तीन उद्धरणक भरोसे अछि आ विप्रलम्भ-शृंगारक प्रधान रससँ एहि सामाजिक पाठक सम्बन्धक मीमांसा नहि भेल — राधाक कर्तव्य पुनः पति आ राष्ट्रक सेवासँ निर्धारित अछि; स्त्रीक आत्मनिर्णय, देह, कामना आ निजी जीवनक स्वतन्त्र मूल्यपर चर्चा सीमित रहि जाइत अछि। छठम, अगस्त्यायनी आ पराशर सन कृतिमे जाति-संघर्ष आ आभिजात्य व्यवस्थाक जे प्रश्न निहित अछि, तकर सोझाँ-सोझी विखण्डनक स्थान पर 'युग-धर्म'क सामान्य विमर्श धरि रुकि जाएब सामन्ती संरचनाक पूर्ण आलोचनाक अवसर गमा दैत अछि।

४.१४ नऽव गीत : सीमा

४.१४ नऽव गीत: सीमा

४.१४ नऽव गीत : सीमा

पहिलों, 'नऽव गीत' के अवधि आरो व्याप्तिक निर्धारण अस्पष्ट रहलों — कोन तिथि सें, कोन कृति सें एकर आरम्भ मानल जाए, कोन-कोन गीतकार ई कोटि में आबैछै — एकर कोय सूची वा काल-रेखा नै; परिभाषा मूल्यबोध-आधारित छै, मतरकि मूल्यबोध के कसौटी व्यक्तिनिष्ठ रहि गेलै, आरो ई परिभाषा सें अनेक आधुनिक कविता स्वतः नऽव गीत के भीतर आबि सकै छै — गीतत्व के खास कसौटी स्पष्ट नै। दोसरका, साक्ष्य-आधार तीन-चार गीतकार (गुंजन, प्रवासी, बुद्धिनाथ मिश्र) तक सीमित — एतेक पातर आधार पर पूरा प्रवृत्ति-निर्धारण आगमन-दोष सें ग्रस्त छै; नऽव गीतकारक सामाजिक स्थिति, प्रकाशन-मञ्च, पाठक, पीढ़ीगत अन्तर आरो स्त्री-गीतकारक योगदान के विस्तृत मानचित्र नै बनैछै। तेसरका, नऽव गीत आरो नऽव कविता के भेद-विवेचन सूत्र-रूप में दऽ विस्तार हेतु अपनहि पोथी के सन्दर्भ देल गेलै — आत्म-निर्देश के ई प्रवृत्ति पाठक के अपूर्ण तर्क के संग छोड़ि दैछै। चौथका,

गीत के गीतत्व — गेयता, स्वर-विधान, आरोह-अवरोह, ध्वनि-क्रम, अन्त्यानुप्रास, मात्रा, आवृत्ति, लोक-धुन सें सम्बन्ध आरो सामूहिक गायन-सम्भावना — पर कोय विचार नै; 'लयात्मक सम्मिश्रण' के पद आयल, मतरकि लय-विश्लेषण के कोय उदाहरण नै, जब कि गीत-विधा के प्राण गेयते में बसै छै — सामाजिक विषय खाली सें रचना गीत नै बनैछै। पाँचम, पारम्परिक प्रेम, भक्ति अथवा परकृति-काव्य के कतोक स्थानपर रूढ़ि मानि छोड़ि देल गेलै — मतरकि आधुनिकता केवल विषय-परिवर्तन नै; पुरान विषयक नया संवेदना आरो रूपान्तरण सेहो आधुनिक होय छै। छठम, वर्तमान युग में नव माध्यम — ध्वनि-दृश्य मञ्च, अन्तर्जाल आरो ई-पत्रिका — सें होय कें रहलों गीत के लोकतन्त्रीकरण के चर्च नै छै; गीत-विमर्श पारम्परिक मुद्रित संकलन के सीमा में रहि गेलै।

पहिल,'नऽव गीत' के अवधि आ व्याप्ति के निर्धारण अस्पष्ट रहल — कोन तिथि से, कोन कृति से एकर आरम्भ मानल जाए, कोन-कोन गीतकार ई कोटि में आबै हथिन — एकर कोनो सूची वा काल-रेखा न; परिभाषा मूल्यबोध-आधारित हय, मुदा मूल्यबोध के कसौटी व्यक्तिनिष्ठ रहि गेल, आ ई परिभाषा से अनेक आधुनिक कविता स्वतः नऽव गीत के भीतर आबि सकै हय — गीतत्व के विशिष्ट कसौटी साफ न। दोसर, साक्ष्य-आधार तीन-चारि गीतकार (गुंजन, प्रवासी, बुद्धिनाथ मिश्र) तक सीमित — एतना पातर आधार पर समग्र प्रवृत्ति-निर्धारण आगमन-दोष से ग्रस्त हय; नऽव गीतकार के सामाजिक स्थिति, प्रकाशन-मञ्च, पाठक, पीढ़ीगत अन्तर आ स्त्री-गीतकार के योगदान के विस्तृत मानचित्र न बनै हय। तेसर, नऽव गीत आ नऽव कविता के भेद-विवेचन सूत्र-रूप में दऽ विस्तार हेतु अपनहि पोथी के सन्दर्भ देल गेल — आत्म-निर्देशक ई प्रवृत्ति पाठक के अपूर्ण तर्क के संग छोड़के दे हय। चारिम, गीत के गीतत्व — गेयता, स्वर-विधान, आरोह-अवरोह, ध्वनि-क्रम, अन्त्यानुप्रास, मात्रा, आवृत्ति, लोक-धुन से सम्बन्ध आ सामूहिक गायन-सम्भावना — पर कोनो विचार न;'लयात्मक सम्मिश्रण' के पद आएल, मुदा लय-विश्लेषण के कोनो उदाहरण न, जब कि गीत-विधा के प्राण गेयते में बसैत हय — सामाजिक विषय खाली से रचना गीत न बनै हय। पाँचम, पारम्परिक प्रेम, भक्ति वा प्रकृति-काव्य के

कतको स्थान पर रूढ़ि मानके छोड़के देल गेल — मुदा आधुनिकता खाली विषय-परिवर्तन न; पुरान विषय के नूतन संवेदना आ रूपान्तरण भी आधुनिक होय हय। छठम, वर्तमान युग में नव माध्यम — ध्वनि-दृश्य मञ्च, अन्तर्जाल आ ई-पत्रिका — से होके रहल गीत के लोकतन्त्रीकरण के चर्च न हय; गीत-विमर्श पारम्परिक मुद्रित संकलन के सीमा में रहि गेल।

पहिल, 'नऽव गीत'क अवधि आ व्याप्तिक निर्धारण अस्पष्ट रहल — कोन तिथिसँ, कोन कृतिसँ एकर आरम्भ मानल जाए, कोन-कोन गीतकार एहि कोटिमे अबैत छथि — एकर कोनो सूची वा काल-रेखा नहि; परिभाषा मूल्यबोध-आधारित अछि, मुदा मूल्यबोधक कसौटी व्यक्तिनिष्ठ रहि गेल, आ एहि परिभाषासँ अनेक आधुनिक कविता स्वतः नऽव गीतक भीतर आबि सकैत अछि — गीतत्वक विशिष्ट कसौटी स्पष्ट नहि। दोसर, साक्ष्य-आधार तीन-चारि गीतकार (गुंजन, प्रवासी, बुद्धिनाथ मिश्र) धरि सीमित — एतेक पातर आधार पर समग्र प्रवृत्ति-निर्धारण आगमन-दोषसँ ग्रस्त अछि; नऽव गीतकारक सामाजिक स्थिति, प्रकाशन-मञ्च, पाठक, पीढ़ीगत अन्तर आ स्त्री-गीतकारक योगदानक विस्तृत मानचित्र नहि बनैत अछि। तेसर, नऽव गीत आ नऽव कविताक भेद-विवेचन सूत्र-रूपमे दऽ विस्तार हेतु अपनहि पोथीक सन्दर्भ देल गेल — आत्म-निर्देशक ई प्रवृत्ति पाठककेँ अपूर्ण तर्कक संग छोड़ि दैत अछि। चारिम, गीतक गीतत्व — गेयता, स्वर-विधान, आरोह-अवरोह, ध्वनि-क्रम, अन्त्यानुप्रास, मात्रा, आवृत्ति, लोक-धुनसँ सम्बन्ध आ सामूहिक गायन-सम्भावना — पर कोनो विचार नहि; 'लयात्मक सम्मिश्रण'क पद आएल, मुदा लय-विश्लेषणक कोनो उदाहरण नहि, जखन कि गीत-विधाक प्राण गेयतेमे बसैत अछि — सामाजिक विषय मात्रसँ रचना गीत नहि बनैत अछि। पाँचम, पारम्परिक प्रेम, भक्ति अथवा प्रकृति-काव्यकेँ कतोक स्थानपर रूढ़ि मानि छोड़ि देल गेल — मुदा आधुनिकता केवल विषय-परिवर्तन नहि; पुरान विषयक नूतन संवेदना आ रूपान्तरण सेहो आधुनिक होइत अछि। छठम, वर्तमान युगमे नव माध्यम — ध्वनि-दृश्य मञ्च, अन्तर्जाल आ ई-पत्रिका — सँ भऽ रहल गीतक लोकतन्त्रीकरणक चर्च नहि अछि; गीत-विमर्श पारम्परिक मुद्रित संकलनक सीमामे रहि गेल।

४.१५ वर्तमान धारा : सीमा

४.१५ वर्तमान धारा: सीमा

४.१५ वर्तमान धारा : सीमा

पहिलों, ई व्याख्यान-पाठ छै आरो ओकर श्रोता-सापेक्षता निबन्ध में बनल रहि गेलै — पूर्वांचलीय भाषा-बन्धुत्व के दीर्घ भूमिका (जे भुवनेश्वर के सभा लेली सार्थक छेलै) पोथी के पाठक लेली विषयान्तर जइसन लागैछै आरो 'वर्तमान धारा' के मूल विवेचन लेली स्थान घटा दैछै। दोसरका, 'वर्तमान धारा' के चारू विषय बहुत व्यापक छै — मानव-संकट, उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद आरो पर्यावरण लगभग सम्पूर्ण आधुनिक साहित्य के समेटि सकै छै; काव्य-आन्दोलन, पीढ़ी, रूप, भाषा आरो सौन्दर्यबोध के आधारपर बेसी बारीक वर्गीकरण अपेक्षित छेलै, आरो धारा-विभाजनक पारस्परिक अतिच्छादन (उपभोक्तावाद आरो सांस्कृतिक साम्राज्यवाद कतऽ फराक?) पर विचार नै। तेसरका, चारू धारा के साक्ष्य-घनत्व असमान छै — मानव-संकट आरो सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के धारा सुसाक्षित, मतरकि उपभोक्तावाद-विरोध के धारा एक-दू उद्धरण पर; चुनल कविता के संख्या सीमित छै आरो ताहिपर आधारित व्यापक निष्कर्ष सम्पूर्ण वर्तमान मैथिली कविता के प्रतिनिधित्व के दावा पूरा रूप सें सिद्ध नै करैछै। चौथका, वर्तमान धारा के सूची में नारी-स्वर आरो दलित-स्वर के अनुपस्थिति खटकै छै — जे आलोचक के अपन पोथी में उपेक्षिता आरो दीनाभद्री पर स्वतन्त्र अध्याय छै, हुनकर वर्तमान-धारा-चित्रण में ई दुनू धारा नै गनाएब आन्तरिक संगति के अभाव छै; स्त्रीवादी, दलित, आदिवासी, प्रवासी, अन्तर्जालीय आरो प्रयोगधर्मी कविता के अलग वर्तमान धारा के रूप में पर्याप्त स्थान नै भेटल, आरो विमर्श मुख्यतः प्रतिष्ठित केन्द्र के कवि तक सीमित रहि गेलै। पाँचम, नेपाल के मैथिली कविता के भिन्न प्रवृत्तिक जे संकेत छै ('राजतन्त्रक भयसँ भिन्न रहल'), ओकर एकोटा उदाहरण नै — स्थापना निराधार लटकल छै। छठम, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के विवेचन कतोक स्थानपर स्थानीय संस्कृति बनाम बाहरी संस्कृति के द्वैत बना दैछै — संस्कृति सदैव आदान-प्रदान, मिश्रण, ग्रहण आरो

प्रतिरोध सें विकसित होय छै; प्रत्येक बाहरी प्रभाव विनाशकारी नै आरो प्रत्येक स्थानीय परम्परा मुक्तिकामी नै।

पहिल, ई व्याख्यान-पाठ हय आ ओकर श्रोता-सापेक्षता निबन्ध में बनल रहि गेल — पूर्वांचलीय भाषा-बन्धुत्व के दीर्घ भूमिका (जे भुवनेश्वर के सभा खातिर सार्थक हल) पोथी के पाठक खातिर विषयान्तर जइसन लगै हय आ 'वर्तमान धारा' के मूल विवेचन खातिर स्थान घटा दे हय। दोसर,'वर्तमान धारा' के चारू विषय बहुत व्यापक हय — मानव-संकट, उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद आ पर्यावरण लगभग पूरा आधुनिक साहित्य के समेटि सकै हय; काव्य-आन्दोलन, पीढ़ी, रूप, भाषा आ सौन्दर्यबोध के आधार पर अधिक सूक्ष्म वर्गीकरण अपेक्षित हल, आ धारा-विभाजन के पारस्परिक अतिच्छादन (उपभोक्तावाद आ सांस्कृतिक साम्राज्यवाद कहाँ फराक?) पर विचार न। तेसर, चारू धारा के साक्ष्य-घनत्व असमान हय — मानव-संकट आ सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के धारा सुसाक्षित, मुदा उपभोक्तावाद-विरोध के धारा एक-दू उद्धरण पर; चुनल कविता के संख्या सीमित हय आ ओ पर आधारित व्यापक निष्कर्ष पूरा वर्तमान मैथिली कविता के प्रतिनिधित्व के दावा पूरा रूप से सिद्ध न करै हय। चारिम, वर्तमान धारा के सूची में नारी-स्वर आ दलित-स्वर के अनुपस्थिति खटकै हय — जे आलोचक के अपन पोथी में उपेक्षिता आ दीनाभद्री पर स्वतन्त्र अध्याय हय, हुन के वर्तमान-धारा-चित्रण में ई दुनो धारा न गनाएब आन्तरिक संगति के अभाव हय; स्त्रीवादी, दलित, आदिवासी, प्रवासी, अन्तर्जालीय आ प्रयोगधर्मी कविता के अलग वर्तमान धारा के रूप में पर्याप्त स्थान न भेटल, आ विमर्श मुख्य रूप से प्रतिष्ठित केन्द्र के कवि तक सीमित रहि गेल। पाँचम, नेपाल के मैथिली कविता के भिन्न प्रवृत्ति के जे संकेत हय ('राजतन्त्र के भय से भिन्न रहल'), ओकर एकोटा उदाहरण न — स्थापना निराधार लटकल हय। छठम, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के विवेचन कतको स्थान पर स्थानीय संस्कृति बनाम बाहरी संस्कृति के द्वैत बना दे हय — संस्कृति सदैव आदान-प्रदान, मिश्रण, ग्रहण आ प्रतिरोध से विकसित होय हय; हरेक बाहरी प्रभाव विनाशकारी न आ हरेक स्थानीय परम्परा मुक्तिकामी न।

पहिल, ई व्याख्यान-पाठ थिक आ ओकर श्रोता-सापेक्षता निबन्धमे बनल रहि गेल — पूर्वांचलीय भाषा-बन्धुत्वक दीर्घ भूमिका (जे भुवनेश्वरक सभा लेल सार्थक छल) पोथीक पाठक लेल विषयान्तर जकाँ लगैत अछि आ 'वर्तमान धारा'क मूल विवेचन लेल स्थान घटा दैत अछि। दोसर, 'वर्तमान धारा'क चारू विषय अत्यन्त व्यापक अछि — मानव-संकट, उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद आ पर्यावरण लगभग सम्पूर्ण आधुनिक साहित्यकेँ समेटि सकैत अछि; काव्य-आन्दोलन, पीढ़ी, रूप, भाषा आ सौन्दर्यबोधक आधारपर अधिक सूक्ष्म वर्गीकरण अपेक्षित छल, आ धारा-विभाजनक पारस्परिक अतिच्छादन (उपभोक्तावाद आ सांस्कृतिक साम्राज्यवाद कतऽ फराक?) पर विचार नहि। तेसर, चारू धाराक साक्ष्य-घनत्व असमान अछि — मानव-संकट आ सांस्कृतिक साम्राज्यवादक धारा सुसाक्षित, मुदा उपभोक्तावाद-विरोधक धारा एक-दू उद्धरण पर; चुनल कविताक संख्या सीमित अछि आ ताहिपर आधारित व्यापक निष्कर्ष सम्पूर्ण वर्तमान मैथिली कविताक प्रतिनिधित्वक दावा पूर्ण रूपसँ सिद्ध नहि करैत अछि। चारिम, वर्तमान धाराक सूचीमे नारी-स्वर आ दलित-स्वरक अनुपस्थिति खटकैत अछि — जाहि आलोचकक अपन पोथीमे उपेक्षिता आ दीनाभद्री पर स्वतन्त्र अध्याय अछि, हुनक वर्तमान-धारा-चित्रणमे ई दुनू धारा नहि गनाएब आन्तरिक संगतिक अभाव थिक; स्त्रीवादी, दलित, आदिवासी, प्रवासी, अन्तर्जालीय आ प्रयोगधर्मी कविताकेँ पृथक वर्तमान धाराक रूपमे पर्याप्त स्थान नहि भेटल, आ विमर्श मुख्यतः प्रतिष्ठित केन्द्रक कवि धरि सीमित रहि गेल। पाँचम, नेपालक मैथिली कविताक भिन्न प्रवृत्तिक जे संकेत अछि ('राजतन्त्रक भयसँ भिन्न रहल'), तकर एकोटा उदाहरण नहि — स्थापना निराधार लटकल अछि। छठम, सांस्कृतिक साम्राज्यवादक विवेचन कतोक स्थानपर स्थानीय संस्कृति बनाम बाहरी संस्कृतिक द्वैत बना दैत अछि — संस्कृति सदैव आदान-प्रदान, मिश्रण, ग्रहण आ प्रतिरोधसँ विकसित होइत अछि; प्रत्येक बाहरी प्रभाव विनाशकारी नहि आ प्रत्येक स्थानीय परम्परा मुक्तिकामी नहि।

४.१६ लोकगीत : सीमा

४.१६ लोकगीत: सीमा

४.१६ लोकगीत : सीमा

पहिलों, ई स्वतन्त्र निबन्ध नै, कार्यपत्र पर टिप्पणी छै आरो एकर बनावट में से झलकैछै — आरम्भ में कार्यपत्र के पद्धति-दोष के चर्च, बीच में स्वतन्त्र लोकगीत-विमर्श, अन्त में नीति-प्रस्ताव; तीनू खण्ड के सन्धि शिथिल छै। दोसरका, यूनेस्को-ढाँचा के सात संरक्षण-उपाय के जे सूची छै, से प्रायः अनूदित-प्रतिध्वनित छै — मैथिली लोकगीत के खास स्थिति (के गाओत, कोन पीढ़ी, कोन अवसर बँचल छै, कोन मरि रहलों छै)के क्षेत्र-सर्वेक्षण बिना ई उपाय-सूची यान्त्रिक अनुप्रयोग बनि गेलै; साथे अभिलेखागार, सङ्ग्रहालय आरो वर्गीकरण आवश्यक छै, मतरकि जीवित लोकगीत के स्थिर नमूना में बदलि दैके खतरा रहै छै — लोकगीत के जिनगी गायन, अवसर, देहगत प्रस्तुति, सामूहिक सहभागिता आरो परिवर्तनशील पाठ में छै, केवल ध्वनि-सङ्ग्रह में नै, आरो सांस्थानिक संरक्षण सें लोक-अभिव्यक्तिक प्रतिरोधी धार कुनहटएबा के प्रश्न सेहो विचारणीय छै। तेसरका, लोकगीत के संगीत-पक्ष — राग, ताल, स्वर-लिपिबद्धता — सर्वथा अछूत; 'अवस्था एवं संरक्षण' के शीर्षक में जे संरक्षण छै, से पाठ-संरक्षण तक सोचल गेलै, ध्वनि-संरक्षण (स्वर-आलेखन)के चर्च नै। चौथका, सङ्कलक, शोधकर्ता आरो संस्था के अधिकार देल गेलै, मतरकि गायक समुदाय के स्वामित्व, सहमति, आर्थिक लाभ, नामोल्लेख आरो अभिलेखपर पहुँच के प्रश्न पर्याप्त विकसित नै। पाँचम, लोकगीत के भीतर के पितृसत्तात्मक स्वर — जेकर मार्मिक उदाहरण (बेटी-जन्म के अवसाद, अरजल बिआनि) अपने निबन्ध में छै — के आलोचनात्मक सामना नै भेलै; संरक्षण के उत्साह में ई प्रश्न दबि गेलै जे लोक-सम्पदा के कोन अंश संरक्ष्य छै आरो कोन अंश समीक्ष्य। छठम, लोकज्ञान में औषधीय अथवा वैज्ञानिक तत्त्व के उपस्थिति महत्त्वपूर्ण छै, मतरकि प्रत्येक परम्परागत विश्वास के वैज्ञानिक सत्य मानि लैना रोमानीकरण होयत — अनुभवजन्य उपयोगिता आरो चिकित्सकीय परमाण में भेद रहै छै; साथे स्त्री के हास्य, सामूहिक प्रतिरोध, गीत-निर्माण के अधिकार आरो जातिगत स्त्री-अनुभव के भिन्नता पर आरो विस्तार सम्भव छेलै।

पहिल, ई स्वतन्त्र निबन्ध न, कार्यपत्र पर टिप्पणी हय आ एकर संरचना में से झलकै हय — आरम्भ में कार्यपत्र के पद्धति-दोष के चर्च, बीच में स्वतन्त्र लोकगीत-विमर्श, अन्त में नीति-प्रस्ताव; तीनू खण्ड के सन्धि शिथिल हय। दोसर, यूनेस्को-ढाँचा के सात संरक्षण-उपाय के जे सूची हय, से प्रायः अनूदित-प्रतिध्वनित हय — मैथिली लोकगीत के विशिष्ट स्थिति (के गाओत, कोन पीढ़ी, कोन अवसर बँचल हय, कोन मरि रहल हय)के क्षेत्र-सर्वेक्षण बिना ई उपाय-सूची यान्त्रिक अनुप्रयोग बन गेल; साथे अभिलेखागार, सङ्ग्रहालय आ वर्गीकरण आवश्यक हय, मुदा जीवित लोकगीत के स्थिर नमूना में बदलि देवे के खतरा रहै हय — लोकगीत के जीवन गायन, अवसर, देहगत प्रस्तुति, सामूहिक सहभागिता आ परिवर्तनशील पाठ में हय, खाली ध्वनि-सङ्ग्रह में न, आ सांस्थानिक संरक्षण से लोक-अभिव्यक्ति के प्रतिरोधी धार कुनहटएबा के प्रश्न भी विचारणीय हय। तेसर, लोकगीत के संगीत-पक्ष — राग, ताल, स्वर-लिपिबद्धता — पूरा तरह से अछूत;'अवस्था आ संरक्षण' के शीर्षक में जे संरक्षण हय, से पाठ-संरक्षण तक सोचल गेल, ध्वनि-संरक्षण (स्वर-आलेखन)के चर्च न। चारिम, सङ्कलक, शोधकर्ता आ संस्था के अधिकार देल गेल हय, मुदा गायक समुदाय के स्वामित्व, सहमति, आर्थिक लाभ, नामोल्लेख आ अभिलेख पर पहुँच के प्रश्न पर्याप्त विकसित न। पाँचम, लोकगीत के भीतर के पितृसत्तात्मक स्वर — जकर मार्मिक उदाहरण (बेटी-जन्म के अवसाद, अरजल बिआनि) खुद निबन्ध में हय — के आलोचनात्मक सामना न भेल; संरक्षण के उत्साह में ई प्रश्न दबि गेल जे लोक-सम्पदा के कोन अंश संरक्ष्य हय आ कोन अंश समीक्ष्य। छठम, लोकज्ञान में औषधीय वा वैज्ञानिक तत्त्व के उपस्थिति महत्त्वपूर्ण हय, मुदा हरेक परम्परागत विश्वास के वैज्ञानिक सत्य मानके लेब रोमानीकरण होयत — अनुभवजन्य उपयोगिता आ चिकित्सकीय प्रमाण में भेद रहै हय; साथे स्त्री के हास्य, सामूहिक प्रतिरोध, गीत-निर्माण के अधिकार आ जातिगत स्त्री-अनुभव के भिन्नता पर आरो विस्तार सम्भव हल।

पहिल, ई स्वतन्त्र निबन्ध नहि, कार्यपत्र पर टिप्पणी थिक आ एकर संरचनामे से झलकैत अछि — आरम्भमे कार्यपत्रक पद्धति-दोषक चर्च, बीचमे स्वतन्त्र लोकगीत-विमर्श, अन्तमे नीति-प्रस्ताव; तीनू खण्डक सन्धि शिथिल अछि।

दोसर, यूनेस्को-ढाँचाक सात संरक्षण-उपायक जे सूची अछि, से प्रायः अनूदित-प्रतिध्वनित अछि — मैथिली लोकगीतक विशिष्ट स्थिति (के गाओत, कोन पीढ़ी, कोन अवसर बँचल अछि, कोन मरि रहल अछि)क क्षेत्र-सर्वेक्षण बिना ई उपाय-सूची यान्त्रिक अनुप्रयोग बनि गेल; संगहि अभिलेखागार, सङ्ग्रहालय आ वर्गीकरण आवश्यक अछि, मुदा जीवित लोकगीतकेँ स्थिर नमूनामे बदलि देबाक खतरा रहैत अछि — लोकगीतक जीवन गायन, अवसर, देहगत प्रस्तुति, सामूहिक सहभागिता आ परिवर्तनशील पाठमे अछि, केवल ध्वनि-सङ्ग्रहमे नहि, आ सांस्थानिक संरक्षणसँ लोक-अभिव्यक्तिक प्रतिरोधी धार कुनहटएबाक प्रश्न सेहो विचारणीय अछि। तेसर, लोकगीतक संगीत-पक्ष — राग, ताल, स्वर-लिपिबद्धता — सर्वथा अछूत; 'अवस्था एवं संरक्षण'क शीर्षकमे जे संरक्षण अछि, से पाठ-संरक्षण धरि सोचल गेल, ध्वनि-संरक्षण (स्वर-आलेखन)क चर्च नहि। चारिम, सङ्कलक, शोधकर्ता आ संस्थाकेँ अधिकार देल गेल अछि, मुदा गायक समुदायक स्वामित्व, सहमति, आर्थिक लाभ, नामोल्लेख आ अभिलेखपर पहुँचक प्रश्न पर्याप्त विकसित नहि। पाँचम, लोकगीतक भीतरक पितृसत्तात्मक स्वर — जकर मार्मिक उदाहरण (बेटी-जन्मक अवसाद, अरजल बिआनि) स्वयं निबन्धमे अछि — क आलोचनात्मक सामना नहि भेल; संरक्षणक उत्साहमे ई प्रश्न दबि गेल जे लोक-सम्पदाक कोन अंश संरक्ष्य अछि आ कोन अंश समीक्ष्य। छठम, लोकज्ञानमे औषधीय अथवा वैज्ञानिक तत्त्वक उपस्थिति महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा प्रत्येक परम्परागत विश्वासकेँ वैज्ञानिक सत्य मानि लेब रोमानीकरण होयत — अनुभवजन्य उपयोगिता आ चिकित्सकीय प्रमाणमे भेद रहैत अछि; संगहि स्त्रीक हास्य, सामूहिक प्रतिरोध, गीत-निर्माणक अधिकार आ जातिगत स्त्री-अनुभवक भिन्नता पर आरो विस्तार सम्भव छल।

४.१७ उपनिवेशवाद के नऽव चालि : सीमा

४.१७ उपनिवेशवाद के नऽव चालि: सीमा

४.१७ उपनिवेशवादक नऽव चालि : सीमा

पहिलों, तंजानिया-प्रकरण के विस्तार जतेक छै, मैथिली-स्थितिक तुलनात्मक विश्लेषण ओहि अनुपात में संक्षिप्त — किस्वाहिली के जे संस्थागत आँकड़ा

(बजट-प्रतिशत, नीति-तिथि) देल गेलै, ओकर समकक्ष मैथिली के कोय आँकड़ा (विद्यालय में मैथिली-माध्यम के स्थिति, निजी विद्यालय के प्रसार-संख्या) नै; दृष्टान्त सुदृढ़, अनुप्रयोग पातर, आरो प्रत्येक देश के भिन्न इतिहास, भाषिक जनसंख्या, अर्थव्यवस्था आरो शिक्षा-बनावट के अन्तर पर्याप्त स्पष्ट नै रहला तुलनात्मक निष्कर्ष कुछ स्थानपर अत्यधिक शीघ्र छै। दोसरका, विश्व बैं के, अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोष आरो विदेसी सहायता भाषिक प्रभुत्व में भूमिका निभाबै छै, तइयो स्थानीय अभिजन, सरकारी अकर्मण्यता, अभिभावक के रोजगार-चिन्ता, शिक्षा के गुणवत्ता, पाठ्यपुस्तक के अभाव आरो मातृभाषी संस्था के कमजोरी सेहो जिम्मेवार छै — बाहरी षड्यन्त्र के व्याख्या आन्तरिक उत्तरदायित्व के ओझल करि सकै छै; मिथिला के भीतर के भाषिक हीनताबोध आरो आन्तरिक उपनिवेश के विखण्डन बिना बाहरी भाषिक उपनिवेशवाद सें संघर्ष अधूरा रहतै, ई प्रश्न पर्याप्त विकसित नै भेलै। तेसरका, निबन्ध निदान-प्रधान छै, चिकित्सा-न्यून — भाषा-मृत्यु के संकट देखावल गेलै, मतरकि फिशमैनहिक प्रतिवर्तन-सिद्धान्त के (भाषा-ह्रास उनटएबा के) रचनात्मक पक्ष, जे ओहि ग्रन्थ में छै, नै आनल गेलै; पाठक चेतल तें जाय छै, मतरकि दिशाहीन; साथे अंग्रेजी आरो मैथिली के सर्वथा विरोधी मानना व्यावहारिक समाधान नै — बहुभाषिक शिक्षा, मातृभाषा में आधारभूत ज्ञान, भारतीय सम्पर्कभाषा आरो अन्तरराष्ट्रीय भाषा के क्रमिक शिक्षण के समन्वित रूपपर चर्चा अपेक्षित छेलै, कारण द्विभाषिकता स्वतः भाषा-मृत्यु नै, असमान प्रतिष्ठावाली द्विभाषिकता संकट बनैछै। चौथका, व्यक्तिगत दृष्टान्त (प्राध्याप के-दम्पति, वकील साहेब, ग्रामीण महिला) नाम-सन्दर्भ-रहित छै — सत्यापन असम्भव; जे लेखक अन्यत्र अभिलेख-परमाण के आग्रही छै, से एहिजा किंवदन्ती-शैली अपना लै छै। पाँचम, आठम अनुसूची में समावेश (२००३)के 'प्राणक संचार' के जे आशावादी विराम-बिन्दु बनाओल गेलै, ओकर आलोचनात्मक परीक्षण नै — अनुसूची-प्रवेश के दस वर्ष बाद प्रकाशित पोथी में ई प्रश्न स्वाभाविक छेलै जे संवैधानिक मान्यता सें जमीनी संक्रमण-स्थिति में की बदलल; निबन्ध के अपनहि तर्क (सरकारी मान्यता पर्याप्त नै, अन्तरपुस्तीय संक्रमण अनिवार्य) ई आशावाद के काटै छै — ई अन्तिम आत्म-

विरोध अनसुलझल रहि गेलै। छठम, शहरी द्विभाषिक परिवार, मिश्रित विवाह, प्रवासी बुतरू आरो नया माध्यम में मैथिली के सम्भावना के चर्चा कम छै।

पहिल, तंजानिया-प्रकरण के विस्तार जतना हय, मैथिली-स्थिति के तुलनात्मक विश्लेषण ओ अनुपात में संक्षिप्त — किस्वाहिली के जे संस्थागत आँकड़ा (बजट-प्रतिशत, नीति-तिथि) देल गेल, ओकर समकक्ष मैथिली के कोनो आँकड़ा (विद्यालय में मैथिली-माध्यम के स्थिति, निजी विद्यालय के प्रसार-संख्या) न; दृष्टान्त सुदृढ, अनुप्रयोग पातर, आ हरेक देश के भिन्न इतिहास, भाषिक जनसंख्या, अर्थव्यवस्था आ शिक्षा-संरचना के अन्तर पर्याप्त साफ न रहने तुलनात्मक निष्कर्ष किछु स्थान पर अत्यधिक शीघ्र हय। दोसर, विश्व बैंक, अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोष आ विदेशी सहायता भाषिक प्रभुत्व में भूमिका निभावै हय, तबो स्थानीय अभिजन, सरकारी अकर्मण्यता, अभिभावक के रोजगार-चिन्ता, शिक्षा के गुणवत्ता, पाठ्यपुस्तक के अभाव आ मातृभाषी संस्था के कमजोरी भी उत्तरदायी हय — बाहरी षड्यन्त्र के व्याख्या आन्तरिक उत्तरदायित्व के ओझल करि सकै हय; मिथिला के भीतर के भाषिक हीनताबोध आ आन्तरिक उपनिवेश के विखण्डन बिना बाहरी भाषिक उपनिवेशवाद से संघर्ष अधूरा रहत, ई प्रश्न पर्याप्त विकसित न भेल। तेसर, निबन्ध निदान-प्रधान हय, चिकित्सा-न्यून — भाषा-मृत्यु के संकट देखावल गेल, मुदा फिशमैनहि के प्रतिवर्तन-सिद्धान्त के (भाषा-ह्रास उनटएबा के) रचनात्मक पक्ष, जे ओही ग्रन्थ में हय, न आनल गेल; पाठक चेतल त जाय हय, मुदा दिशाहीन; साथे अंग्रेजी आ मैथिली के पूरा तरह से विरोधी मानब व्यावहारिक समाधान न — बहुभाषिक शिक्षा, मातृभाषा में आधारभूत ज्ञान, भारतीय सम्पर्कभाषा आ अन्तरराष्ट्रीय भाषा के क्रमिक शिक्षण के समन्वित रूप पर चर्चा अपेक्षित हल, कारण द्विभाषिकता स्वतः भाषा-मृत्यु न, असमान प्रतिष्ठावाली द्विभाषिकता संकट बनै हय। चारिम, व्यक्तिगत दृष्टान्त (प्राध्यापक-दम्पति, वकील साहेब, ग्रामीण महिला) नाम-सन्दर्भ-रहित हय — सत्यापन असम्भव; जे लेखक अन्यत्र अभिलेख-प्रमाण के आग्रही हथिन, से इहाँ किंवदन्ती-शैली अपना ले हथिन। पाँचम, आठम अनुसूची में समावेश (२००३)के 'प्राण के संचार' के जे आशावादी विराम-बिन्दु बनावल गेल, ओकर आलोचनात्मक परीक्षण न — अनुसूची-प्रवेश के दस वर्ष बाद प्रकाशित पोथी में ई प्रश्न स्वाभाविक हल जे

संवैधानिक मान्यता से जमीनी संक्रमण-स्थिति में की बदलल; निबन्ध के अपनहि तर्क (सरकारी मान्यता पर्याप्त न, अन्तरपुस्तीय संक्रमण अनिवार्य) ई आशावाद के काटैत हय — ई अन्तिम आत्म-विरोध अनसुलझल रहि गेल। छठम, शहरी द्विभाषिक परिवार, मिश्रित विवाह, प्रवासी बालक आ नूतन माध्यम में मैथिली के सम्भावना के चर्चा कम हय।

पहिल, तंजानिया-प्रकरणक विस्तार जतेक अछि, मैथिली-स्थितिक तुलनात्मक विश्लेषण ताहि अनुपातमे संक्षिप्त — किस्वाहिलीक जे संस्थागत आँकड़ा (बजट-प्रतिशत, नीति-तिथि) देल गेल, तकर समकक्ष मैथिलीक कोनो आँकड़ा (विद्यालयमे मैथिली-माध्यमक स्थिति, निजी विद्यालयक प्रसार-संख्या) नहि; दृष्टान्त सुदृढ, अनुप्रयोग पातर, आ प्रत्येक देशक भिन्न इतिहास, भाषिक जनसंख्या, अर्थव्यवस्था आ शिक्षा-संरचनाक अन्तर पर्याप्त स्पष्ट नहि रहने तुलनात्मक निष्कर्ष किछु स्थानपर अत्यधिक शीघ्र अछि। दोसर, विश्व बैंक, अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोष आ विदेशी सहायता भाषिक प्रभुत्वमे भूमिका निभबैत अछि, तथापि स्थानीय अभिजन, सरकारी अकर्मण्यता, अभिभावकक रोजगार-चिन्ता, शिक्षाक गुणवत्ता, पाठ्यपुस्तकक अभाव आ मातृभाषी संस्थाक कमजोरी सेहो उत्तरदायी अछि — बाहरी षड्यन्त्रक व्याख्या आन्तरिक उत्तरदायित्वकेँ ओझल करि सकैत अछि; मिथिलाक भीतरक भाषिक हीनताबोध आ आन्तरिक उपनिवेशक विखण्डन बिना बाहरी भाषिक उपनिवेशवादसँ संघर्ष अधूरा रहत, ई प्रश्न पर्याप्त विकसित नहि भेल। तेसर, निबन्ध निदान-प्रधान अछि, चिकित्सा-न्यून — भाषा-मृत्युक संकट देखाओल गेल, मुदा फिशमैनहिक प्रतिवर्तन-सिद्धान्तक (भाषा-ह्रास उनटएबाक) रचनात्मक पक्ष, जे ओही ग्रन्थमे अछि, नहि आनल गेल; पाठक चेतल तँ जाइत अछि, मुदा दिशाहीन; संगहि अंग्रेजी आ मैथिलीकेँ सर्वथा विरोधी मानब व्यावहारिक समाधान नहि — बहुभाषिक शिक्षा, मातृभाषामे आधारभूत ज्ञान, भारतीय सम्पर्कभाषा आ अन्तरराष्ट्रीय भाषाक क्रमिक शिक्षणक समन्वित रूपपर चर्चा अपेक्षित छल, कारण द्विभाषिकता स्वतः भाषा-मृत्यु नहि, असमान प्रतिष्ठावाली द्विभाषिकता संकट बनैत अछि। चारिम, व्यक्तिगत दृष्टान्त (प्राध्यापक-दम्पति, वकील साहेब, ग्रामीण महिला) नाम-सन्दर्भ-रहित अछि — सत्यापन असम्भव; जे लेखक अन्यत्र अभिलेख-प्रमाणक आग्रही छथि, से एतऽ

किंवदन्ती-शैली अपना लैत छथि। पाँचम, आठम अनुसूचीमे समावेश (२००३)कँ 'प्राणक संचार'क जे आशावादी विराम-बिन्दु बनाओल गेल, तकर आलोचनात्मक परीक्षण नहि — अनुसूची-प्रवेशक दस वर्ष बाद प्रकाशित पोथीमे ई प्रश्न स्वाभाविक छल जे संवैधानिक मान्यतासँ जमीनी संक्रमण-स्थितिमे की बदलल; निबन्धक अपनहि तर्क (सरकारी मान्यता पर्याप्त नहि, अन्तरपुस्तीय संक्रमण अनिवार्य) एहि आशावादकँ काटैत अछि — ई अन्तिम आत्म-विरोध अनसुलझल रहि गेल। छठम, शहरी द्विभाषिक परिवार, मिश्रित विवाह, प्रवासी बालक आ नूतन माध्यममे मैथिलीक सम्भावनाक चर्चा कम अछि।

४.१८ पूरा सीमा

४.१८ समग्र सीमा

४.१८ समग्र सीमा

अध्यायवार सीमा के अतिरिक्त कुछ सीमा पूरा ग्रन्थ-स्तर के छै। पहिलों, पुनरावृत्ति : निबन्ध-संग्रह के स्वाभाविक दोष एहिजा सघन छै — किरणजी के 'आनक कानब खसब देखि कय' वला पद्य दू अध्याय में, सीता के 'जनक नहि छथि राजाक दास' वला परसंग तीन अध्याय में, भोलालाल दास-सम्बन्धी उद्धरण आरो किरण-रमानाथ विवाद के बिन्दु अनेक ठाम दोहराएल छै; सम्पादन-स्तर पर सन्दर्भ-निर्देश सें ई बँचि सकै छेलै। दोसरका, अननूदित अंग्रेजी : पाद-टिप्पणी आरो मूल-पाठ दुनू में अंग्रेजी उद्धरण के बाहुल्य मैथिली-खाली पाठक के साक्ष्य सें वञ्चित करैछै — मातृभाषा-पक्षधर ग्रन्थ के ई आन्तरिक विडम्बना छै। तेसरका, आत्म-सन्दर्भ : उद्धृत स्रोत सब में लेखक के अपन सम्पादित-लिखित पोथी के अनुपात पर्याप्त छै — ई एक ओर हुनकर अध्यवसाय के परमाण छै, दोसरका ओर परमाण-स्वातन्त्र्य के सवाल उठाबैछै। चौथका, पद्धति-वैषम्य : कुछ अध्याय (यात्री, रमानाथ झा) सिद्धान्त-सघन छै तें कुछ (कोसी, मनमोहन झा) विवरण-प्रधान; कुछ अध्याय निकट पाठपर आधारित छै, कुछ इतिहास-संशोधन के दस्तावेज, कुछ विचारात्मक प्रतिवाद — ई विविधता सें पोथी समृद्ध बनैछै, मतरकि समान कसौटी के अनुप्रयोग के

अभाव में संग्रह के आन्तरिक स्थापत्य विषम लागैछै आरो एकर एकीकृत सिद्धान्त स्पष्ट नै रहि पाबै छै। पाँचम, मुद्रण-दोष : ठाम-ठाम अशुद्धि आरो सन्दर्भ-शैली के अनेकरूपता (कतहु पूरा, कतहु अपूर्ण पाद-टिप्पणी) अइसन परमाण-आग्रही ग्रन्थ के विश्वसनीयता-मानक सें मेल नै खाइत छै। छठम, समाधान-न्यूनता : संग्रह के अधिकांश निबन्ध प्रश्न आरो निदान पर विरमि जाय छै — प्रश्नोत्थापन के लेखक अपने अभीष्ट कहने छै, तइयो कम सें कम भाषा-संकट जइसन विषय में कार्य-सूत्र के अपेक्षा अतृप्त रहि जाय छै। सातम, लेखक के मैथिलीप्रेम पोथी के ऊर्जा छै, मतरकि कतोक स्थानपर ई प्रेम सांस्कृतिक आदर्शीकरण, पुरान गौरव, बाहरी शक्तिक प्रति अत्यधिक संशय अथवा राष्ट्रीय प्रतीक के अतिव्याख्या में परिणत होय छै। आठम, स्त्री, दलित, श्रमिक आरो लोक के प्रश्न उठावल गेलै, मतरकि ई सब नजर के अन्तरसम्बन्ध — जइसन दलित स्त्री, बाढ़िपीड़ित भूमिहीन स्त्री, प्रवासी मजदूर, सीमावर्ती भाषाभाषी — के व्यवस्थित विवेचन कम छै; जहाँ-जहाँ आभिजात्य वर्चस्व सें पूरा टकराएब सम्भव छेलै, ततऽ-ततऽ समीक्षा कतहु-कतहु अर्ध-प्रगतिशील रहि जाय छै।

अध्यायवार सीमा के अतिरिक्त किछु सीमा समग्र ग्रन्थ-स्तर के हय। पहिल, पुनरावृत्ति: निबन्ध-संग्रह के स्वाभाविक दोष इहाँ सघन हय — किरणजी के ‘आन के कानब खसब देखि कय’ वला पद्य दू अध्याय में, सीता के ‘जनक न हथिन राजा के दास’ वला प्रसंग तीन अध्याय में, भोलालाल दास-सम्बन्धी उद्धरण आ किरण-रमानाथ विवाद के बिन्दु अनेक ठाम दोहराएल हय; सम्पादन-स्तर पर सन्दर्भ-निर्देश से ई बँचि सकै हल। दोसर, अननूदित अंग्रेजी: पाद-टिप्पणी आ मूल-पाठ दुनो में अंग्रेजी उद्धरण के बाहुल्य खाली मैथिली पाठक के साक्ष्य से वञ्चित करै हय — मातृभाषा-पक्षधर ग्रन्थ के ई आन्तरिक विडम्बना हय। तेसर, आत्म-सन्दर्भ: उद्धृत स्रोत सब में लेखक के अपन सम्पादित-लिखित पोथी के अनुपात पर्याप्त हय — ई एक ओर हुन के अध्यवसाय के प्रमाण हय, दोसर ओर प्रमाण-स्वातन्त्र्य के प्रश्न उठावै हय। चारिम, पद्धति-वैषम्य: किछु अध्याय (यात्री, रमानाथ झा) सिद्धान्त-सघन हथिन त किछु (कोसी, मनमोहन झा) विवरण-प्रधान; किछु अध्याय निकट पाठ पर

आधारित हय, किछु इतिहास-संशोधन के दस्तावेज, किछु विचारात्मक प्रतिवाद — ई विविधता से पोथी समृद्ध बनै हय, मुदा समान कसौटी के अनुप्रयोग के अभाव में संग्रह के आन्तरिक स्थापत्य विषम लगै हय आ एकर एकीकृत सिद्धान्त साफ न रहि पावै हय। पाँचम, मुद्रण-दोष: ठाम-ठाम अशुद्धि आ सन्दर्भ-शैली के अनेकरूपता (कहीं पूर्ण, कहीं अपूर्ण पाद-टिप्पणी) अइसन प्रमाण-आग्रही ग्रन्थ के विश्वसनीयता-मान के से मेल न खाय हय। छठम, समाधान-न्यूनता: संग्रह के अधिकांश निबन्ध प्रश्न आ निदान पर विरमि जाय हय — प्रश्नोत्थापन के लेखक खुद अभीष्ट कहने हथिन, तबो कम से कम भाषा-संकट जइसन विषय में कार्य-सूत्र के अपेक्षा अतृप्त रह जाय हय। सातम, लेखक के मैथिलीप्रेम पोथी के ऊर्जा हय, मुदा कतको स्थान पर ई प्रेम सांस्कृतिक आदर्शीकरण, प्राचीन गौरव, बाहरी शक्ति के प्रति अत्यधिक संशय वा राष्ट्रीय प्रतीक के अतिव्याख्या में परिणत होय हय। आठम, स्त्री, दलित, श्रमिक आ लोक के प्रश्न उठावल गेल हय, मुदा ई सब दृष्टि के अन्तरसम्बन्ध — जेना दलित स्त्री, बाढ़िपीड़ित भूमिहीन स्त्री, प्रवासी मजदूर, सीमावर्ती भाषाभाषी — के व्यवस्थित विवेचन कम हय; जहाँ-जहाँ आभिजात्य वर्चस्व से पूर्ण टकराएब सम्भव हल, उहाँ-उहाँ समीक्षा कहीं-कहीं अर्ध-प्रगतिशील रह जाय हय।

अध्यायवार सीमाक अतिरिक्त किछु सीमा समग्र ग्रन्थ-स्तरक अछि। पहिल, पुनरावृत्ति : निबन्ध-संग्रहक स्वाभाविक दोष एतऽ सघन अछि — किरणजीक ‘आनक कानब खसब देखि कय’ वला पद्य दू अध्यायमे, सीताक ‘जनक नहि छथि राजाक दास’ वला प्रसंग तीन अध्यायमे, भोलालाल दास-सम्बन्धी उद्धरण आ किरण-रमानाथ विवादक बिन्दु अनेक ठाम दोहराएल अछि; सम्पादन-स्तर पर सन्दर्भ-निर्देशसँ ई बँचि सकैत छल। दोसर, अननूदित अंग्रेजी : पाद-टिप्पणी आ मूल-पाठ दुनूमे अंग्रेजी उद्धरणक बाहुल्य मैथिली-मात्र पाठककेँ साक्ष्यसँ वञ्चित करैत अछि — मातृभाषा-पक्षधर ग्रन्थक ई आन्तरिक विडम्बना थिक। तेसर, आत्म-सन्दर्भ : उद्धृत स्रोत सभमे लेखकक अपन सम्पादित-लिखित पोथीक अनुपात पर्याप्त अछि — ई एक दिस हुनक अध्यवसायक प्रमाण थिक, दोसर दिस प्रमाण-स्वातन्त्र्यक प्रश्न उठबैत अछि।

चारिम, पद्धति-वैषम्य : किछु अध्याय (यात्री, रमानाथ झा) सिद्धान्त-सघन छथि तँ किछु (कोसी, मनमोहन झा) विवरण-प्रधान; किछु अध्याय निकट पाठपर आधारित अछि, किछु इतिहास-संशोधनक दस्तावेज, किछु विचारात्मक प्रतिवाद — एहि विविधतासँ पोथी समृद्ध बनैत अछि, मुदा समान कसौटीक अनुप्रयोगक अभावमे संग्रहक आन्तरिक स्थापत्य विषम लगैत अछि आ एकर एकीकृत सिद्धान्त स्पष्ट नहि रहि पबैत अछि। पाँचम, मुद्रण-दोष : ठाम-ठाम अशुद्धि आ सन्दर्भ-शैलीक अनेकरूपता (कतहु पूर्ण, कतहु अपूर्ण पाद-टिप्पणी) एहन प्रमाण-आग्रही ग्रन्थक विश्वसनीयता-मानकसँ मेल नहि खाइत अछि। छठम, समाधान-न्यूनता : संग्रहक अधिकांश निबन्ध प्रश्न आ निदान पर विरमि जाइत अछि — प्रश्नोत्थापनकेँ लेखक स्वयं अभीष्ट कहने छथि, तथापि कमसँ कम भाषा-संकट सन विषयमे कार्य-सूत्रक अपेक्षा अतृप्त रहि जाइत अछि। सातम, लेखकक मैथिलीप्रेम पोथीक ऊर्जा अछि, मुदा कतोक स्थानपर ई प्रेम सांस्कृतिक आदर्शीकरण, प्राचीन गौरव, बाहरी शक्तिक प्रति अत्यधिक संशय अथवा राष्ट्रीय प्रतीकक अतिव्याख्यामे परिणत होइत अछि। आठम, स्त्री, दलित, श्रमिक आ लोकक प्रश्न उठाओल गेल अछि, मुदा एहि सभ दृष्टिक अन्तरसम्बन्ध — जेना दलित स्त्री, बाढ़िपीड़ित भूमिहीन स्त्री, प्रवासी मजदूर, सीमावर्ती भाषाभाषी — क व्यवस्थित विवेचन कम अछि; जतऽ-जतऽ आभिजात्य वर्चस्वसँ पूर्ण टकराएब सम्भव छल, ततऽ-ततऽ समीक्षा कतहु-कतहु अर्ध-प्रगतिशील रहि जाइत अछि।

५. पूरा आलोचनात्मक फैसला

५. समग्र आलोचनात्मक निर्णय

५. समग्र आलोचनात्मक निर्णय

५.१ पोथी के प्रमुख उपलब्धि

५.१ पोथी के प्रमुख उपलब्धि

५.१ पोथीक प्रमुख उपलब्धि

'हिआओल' के सबसें बेसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ई छै जे ई मैथिली साहित्येतिहास के प्रचलित सरल रेखा के बाधित करैछै। ई पोथी पूछै छै —

स्वतन्त्र भाषा कहैके अधिकार केकरा छै? साहित्यिक मानक के बनाबै छै? कोन लेखक इतिहास में प्रतिष्ठित आरो कोन विस्मृत होय छै? लोककण्ठ के सामग्री साहित्य छै कि नै? स्त्री के मौन के हास्य मानल जाए कि सामाजिक त्रास? दलित लोकनायक इतिहास के विषय काहे नै? भूकम्प आरो बाढ़ साहित्येतिहास के घटना काहे नै? प्रवासी केन्द्र मैथिली चेतना के निर्माण में की भूमिका निभाबै छै? राजनीतिक स्वतन्त्रता के बाद भाषिक पराधीनता कोना जीवित रहै छै? ई सवाल के कारण पोथी केवल आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह नै, मैथिली साहित्य के वैकल्पिक ज्ञान-मानचित्र बनि जाय छै।

'हिआओल' के सबसे बेसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ई हय कि ई मैथिली साहित्येतिहास के प्रचलित सरल रेखा के बाधित करै हय। ई पोथी पूछै हय — स्वतन्त्र भाषा कहे के अधिकार केकरा हय? साहित्यिक मान के बनावै हय? कोन लेखक इतिहास में प्रतिष्ठित आ कोन विस्मृत होय हथिन? लोककण्ठ के सामग्री साहित्य हय कि न? स्त्री के मौन के हास्य मानल जाए कि सामाजिक त्रास? दलित लोकनायक इतिहास के विषय काहे न? भूकम्प आ बाढ़ साहित्येतिहास के घटना काहे न? प्रवासी केन्द्र मैथिली चेतना के निर्माण में की भूमिका निभावै हय? राजनीतिक स्वतन्त्रता के बाद भाषिक पराधीनता कइसे जीवित रहै हय? ई प्रश्न के कारण पोथी खाली आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह न, मैथिली साहित्य के वैकल्पिक ज्ञान-मानचित्र बन जाय हय।

'हिआओल'क सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ई अछि जे ई मैथिली साहित्येतिहासक प्रचलित सरल रेखाकेँ बाधित करैत अछि। ई पोथी पूछैत अछि — स्वतन्त्र भाषा कहबाक अधिकार केकरा अछि? साहित्यिक मानक के बनबैत अछि? कोन लेखक इतिहासमे प्रतिष्ठित आ कोन विस्मृत होइत छथि? लोककण्ठक सामग्री साहित्य अछि कि नहि? स्त्रीक मौनकेँ हास्य मानल जाए कि सामाजिक त्रास? दलित लोकनायक इतिहासक विषय किएक नहि? भूकम्प आ बाढ़ साहित्येतिहासक घटना किएक नहि? प्रवासी केन्द्र मैथिली चेतनाक निर्माणमे की भूमिका निभबैत अछि? राजनीतिक स्वतन्त्रताक बाद भाषिक पराधीनता कोना जीवित रहैत अछि? एहि प्रश्नक कारण पोथी केवल

आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह नहि, मैथिली साहित्यक वैकल्पिक ज्ञान-मानचित्र बनि जाइत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र के नजर सें पोथी के आलोचना रस आरो अलंकार तक सीमित नै — ओ ध्वनि, औचित्य, वक्रोक्ति, लोकमंगल आरो साधारणीकरण के सामाजिक इतिहास सें जोड़ै छै। पाश्चात्य सिद्धान्त के नजर सें पोथी एकसाथ उत्तर-औपनिवेशिक, नव-इतिहासवादी, मार्क्सवादी, नारीवादी, दलित, रूपवादी आरो पर्यावरणीय सवाल उठाबै छै, यद्यपि लेखक ई सब सिद्धान्त के सदैव व्यवस्थित नाम आरो पद्धति सें लागू नै करै छै। विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें 'हिआओल' राजकीय आरो प्रतिष्ठित इतिहास के समानान्तर निम्नलिखित इतिहास लिखै छै — भाषिक दमन के इतिहास, उपेक्षित आलोचक आरो कवि के इतिहास, अशिक्षित स्त्री के इतिहास, दलित लोकनायक के इतिहास, प्रवासी पत्र-पत्रिका के इतिहास, मौखिक कथा के इतिहास, भूकम्प आरो बाढ़ के इतिहास, लोकगीत में सुरक्षित स्त्री-श्रम आरो लोकज्ञान के इतिहास, आओर पीढ़ीगत भाषा-विच्छेद के इतिहास।

भारतीय काव्यशास्त्र के दृष्टि से पोथी के आलोचना रस आ अलंकार तक सीमित न — ओ ध्वनि, औचित्य, वक्रोक्ति, लोकमंगल आ साधारणीकरण के सामाजिक इतिहास से जोड़ै हय। पाश्चात्य सिद्धान्त के दृष्टि से पोथी एकसाथ उत्तर-औपनिवेशिक, नव-इतिहासवादी, मार्क्सवादी, नारीवादी, दलित, रूपवादी आ पर्यावरणीय प्रश्न उठावै हय, यद्यपि लेखक ई सब सिद्धान्त के सदैव व्यवस्थित नाम आ पद्धति से लागू न करै हथिन। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि से 'हिआओल' राजकीय आ प्रतिष्ठित इतिहास के समानान्तर निम्नलिखित इतिहास लिखै हय — भाषिक दमन के इतिहास, उपेक्षित आलोचक आ कवि के इतिहास, अशिक्षित स्त्री के इतिहास, दलित लोकनायक के इतिहास, प्रवासी पत्र-पत्रिका के इतिहास, मौखिक कथा के इतिहास, भूकम्प आ बाढ़ के इतिहास, लोकगीत में सुरक्षित स्त्री-श्रम आ लोकज्ञान के इतिहास, आओर पीढ़ीगत भाषा-विच्छेद के इतिहास।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ पोथीक आलोचना रस आ अलंकार धरि सीमित नहि — ओ ध्वनि, औचित्य, वक्रोक्ति, लोकमंगल आ साधारणीकरणकेँ सामाजिक इतिहाससँ जोड़ैत अछि। पाश्चात्य सिद्धान्तक दृष्टिसँ पोथी

एकसाथ उत्तर-औपनिवेशिक, नव-इतिहासवादी, मार्क्सवादी, नारीवादी, दलित, रूपवादी आ पर्यावरणीय प्रश्न उठबैत अछि, यद्यपि लेखक एहि सभ सिद्धान्तकेँ सदैव व्यवस्थित नाम आ पद्धतिसँ लागू नहि करैत छथि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ 'हिआओल' राजकीय आ प्रतिष्ठित इतिहासक समानान्तर निम्नलिखित इतिहास लिखैत अछि — भाषिक दमनक इतिहास, उपेक्षित आलोचक आ कविक इतिहास, अशिक्षित स्त्रीक इतिहास, दलित लोकनायकक इतिहास, प्रवासी पत्र-पत्रिकाक इतिहास, मौखिक कथाक इतिहास, भूकम्प आ बाढ़क इतिहास, लोकगीतमे सुरक्षित स्त्री-श्रम आ लोकज्ञानक इतिहास, आओर पीढ़ीगत भाषा-विच्छेदक इतिहास।

५.२ पूरा मूल्याङ्कन

५.२ समग्र मूल्याङ्कन

५.२ समग्र मूल्याङ्कन

'हिआओल' के महत्त्व अन्तिम फैसला देबा में नै, सवाल के नया भूमि तैयार करबा में छै। ई पोथी पूरा साहित्येतिहास नै, मतरकि भावी साहित्येतिहास के लेली अनिवार्य संकेत-पोथी छै; ई अन्तिम सिद्धान्त नै, मतरकि स्थापित सिद्धान्त के निश्चिन्तता के भङ्ग करयवला आलोचनात्मक हस्तक्षेप छै। एकर श्रेष्ठ रूप ओतए देखाइत छै जतए लेखक विस्मृत दस्तावेज खोजैछै, स्थापित निष्कर्ष के परमाण माँगै छै, भाषिक रूपक बारीक विश्लेषण करैछै, स्त्री, लोक, दलित आरो विपत्तिग्रस्त जनक स्वर सुनै छै, आरो साहित्य के जीवित सामाजिक इतिहास सें जोड़ै छै। एकर सीमा ओतए प्रकट होय छै जतए प्रतिवाद विश्लेषणपर भारी पड़ैछै, अनुमान परमाण के स्थान लै छै, राष्ट्रीय अथवा सांस्कृतिक आस्था कलात्मक परीक्षण के दबा दैछै, आरो जटिल इतिहास सरल द्वैत में बदलि जाय छै। साथे, जहाँ-जहाँ आभिजात्य वर्चस्व सें पूरा टकराएब सम्भव छेलै, ततऽ-ततऽ समीक्षा अर्ध-प्रगतिशील रहि जाय छै — कौलीन्य, पाँजि-प्रथा आरो राज्य-प्रायोजित संस्थान के विखण्डन जतेक तीक्ष्णता सें अपेक्षित छेलै, ओकरा सें कुछ न्यून भेलै।

'हिआओल' के महत्त्व अन्तिम निर्णय देबा में न, प्रश्न के नूतन भूमि तैयार करबा में हय। ई पोथी पूर्ण साहित्येतिहास न, मुदा भावी साहित्येतिहास के खातिर अनिवार्य संकेत-पोथी हय; ई अन्तिम सिद्धान्त न, मुदा स्थापित सिद्धान्त के निश्चिन्तता के भङ्ग करयवला आलोचनात्मक हस्तक्षेप हय। एकर श्रेष्ठ रूप उहाँ देखाय हय जहाँ लेखक विस्मृत दस्तावेज खोजै हथिन, स्थापित निष्कर्ष के प्रमाण माँगै हथिन, भाषिक रूपक सूक्ष्म विश्लेषण करै हथिन, स्त्री, लोक, दलित आ विपत्तिग्रस्त जन के स्वर सुनै हथिन, आ साहित्य के जीवित सामाजिक इतिहास से जोड़ै हथिन। एकर सीमा उहाँ प्रकट होय हय जहाँ प्रतिवाद विश्लेषण पर भारी पड़ै हय, अनुमान प्रमाण के स्थान ले हय, राष्ट्रीय वा सांस्कृतिक आस्था कलात्मक परीक्षण के दबा दे हय, आ जटिल इतिहास सरल द्वैत में बदलि जाय हय। साथे, जहाँ-जहाँ आभिजात्य वर्चस्व से पूर्ण टकराएब सम्भव हल, उहाँ-उहाँ समीक्षा अर्ध-प्रगतिशील रह जाय हय — कौलीन्य, पाँजि-प्रथा आ राज्य-प्रायोजित संस्थान के विखण्डन जतना तीक्ष्णता से अपेक्षित हल, ओसे किछु न्यून भेल।

'हिआओल'क महत्त्व अन्तिम निर्णय देबामे नहि, प्रश्नक नूतन भूमि तैयार करबामे अछि। ई पोथी पूर्ण साहित्येतिहास नहि, मुदा भावी साहित्येतिहासक लेल अनिवार्य संकेत-पोथी अछि; ई अन्तिम सिद्धान्त नहि, मुदा स्थापित सिद्धान्तक निश्चिन्ततासँ भङ्ग करयवला आलोचनात्मक हस्तक्षेप अछि। एकर श्रेष्ठ रूप ओतए देखाइत अछि जतए लेखक विस्मृत दस्तावेज खोजैत छथि, स्थापित निष्कर्षक प्रमाण माँगैत छथि, भाषिक रूपक सूक्ष्म विश्लेषण करैत छथि, स्त्री, लोक, दलित आ विपत्तिग्रस्त जनक स्वर सुनैत छथि, आ साहित्यसँ जीवित सामाजिक इतिहाससँ जोड़ैत छथि। एकर सीमा ओतए प्रकट होइत अछि जतए प्रतिवाद विश्लेषणपर भारी पड़ैत अछि, अनुमान प्रमाणक स्थान लैत अछि, राष्ट्रीय अथवा सांस्कृतिक आस्था कलात्मक परीक्षणसँ दबा दैत अछि, आ जटिल इतिहास सरल द्वैतमे बदलि जाइत अछि। संगहि, जतऽ-जतऽ आभिजात्य वर्चस्वसँ पूर्ण टकराएब सम्भव छल, ततऽ-ततऽ समीक्षा अर्ध-प्रगतिशील रहि जाइत अछि — कौलीन्य, पाँजि-प्रथा आ राज्य-प्रायोजित संस्थानक विखण्डन जतेक तीक्ष्णतासँ अपेक्षित छल, ताहिसँ किछु न्यून भेल।

६. उपसंहार

६. उपसंहार

६. उपसंहार

समग्रत: 'हिआओल' मैथिली आलोचना के ओहि दुर्लभ कोटि के ग्रन्थ छै जे श्रद्धा आरो संशय — दुनू के परमाण के कसौटी पर कसै छै। भारतीय काव्यशास्त्र के नजर सें एकर मूल कसौटी औचित्य छै — सबद के औचित्य (यात्री-अध्याय), पाठक-नजर के औचित्य (कन्यादान), इतिहास-कथन के औचित्य (कथा के विकास); ध्वनि-सिद्धान्त के व्यवहार 'शरदागम' आरो 'पछबा' के पाठ में, आरो रस-चेतना करुण-प्रधान अध्याय सब में हाजिर छै, यद्यपि रस-मीमांसा एकर दुर्बल पक्ष रहलों। पाश्चात्य कसौटी पर ई उत्तर-औपनिवेशिक आरो समाजभाषावैज्ञानिक विमर्श के मैथिली में अग्रणी परयोग छै, जेकर सीमा सिद्धान्त के असमान आरो कतहु-कतहु यान्त्रिक अनुप्रयोग में छै। आरो विदेह समान्तर इतिहास के नजर सें एकर महत्त्व सर्वोपरि छै — अनालोचित कवि, उपेक्षिता नायिका, दलित महानायक, प्रवासी सम्पादक, लोकगीत के अज्ञात गायिका : प्रतिष्ठान जेकरा-जेकरा हाशिया पर रखलकै, रमणजी ओकरा-ओकरा अभिलेखक बलेँ केन्द्र में आनलकै।

समग्रत: 'हिआओल' मैथिली आलोचना के ओ दुर्लभ कोटि के ग्रन्थ हय कि श्रद्धा आ संशय — दुनो के प्रमाण के कसौटी पर कसैत हय। भारतीय काव्यशास्त्र के दृष्टि से एकर मूल कसौटी औचित्य हय — शब्द के औचित्य (यात्री-अध्याय), पाठक-दृष्टि के औचित्य (कन्यादान), इतिहास-कथन के औचित्य (कथा के विकास); ध्वनि-सिद्धान्त के व्यवहार 'शरदागम' आ'पछबा' के पाठ में, आ रस-चेतना करुण-प्रधान अध्याय सब में उपस्थित हय, यद्यपि रस-मीमांसा एकर दुर्बल पक्ष रहल। पाश्चात्य कसौटी पर ई उत्तर-औपनिवेशिक आ समाजभाषावैज्ञानिक विमर्श के मैथिली में अग्रणी प्रयोग हय, जकर सीमा सिद्धान्त के असमान आ कहीं-कहीं यान्त्रिक अनुप्रयोग में हय। आ विदेह समान्तर इतिहास के दृष्टि से एकर महत्त्व सर्वोपरि हय — अनालोचित कवि, उपेक्षिता नायिका, दलित महानायक, प्रवासी सम्पादक, लोकगीत के अज्ञात गायिका: प्रतिष्ठान जकरा-जकरा हाशिया पर रखल के, रमणजी तकरा-तकरा अभिलेख के बलेँ केन्द्र में अनलनि।

समग्रतः 'हिआओल' मैथिली आलोचनाक ओहि दुर्लभ कोटिक ग्रन्थ थिक जे श्रद्धा आ संशय — दुनूकेँ प्रमाणक कसौटी पर कसैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिएँ एकर मूल कसौटी औचित्य थिक — शब्दक औचित्य (यात्री-अध्याय), पाठक-दृष्टिक औचित्य (कन्यादान), इतिहास-कथनक औचित्य (कथाक विकास); ध्वनि-सिद्धान्तक व्यवहार 'शरदागम' आ 'पछबा'क पाठमे, आ रस-चेतना करुण-प्रधान अध्याय सभमे उपस्थित अछि, यद्यपि रस-मीमांसा एकर दुर्बल पक्ष रहल। पाश्चात्य कसौटी पर ई उत्तर-औपनिवेशिक आ समाजभाषावैज्ञानिक विमर्शक मैथिलीमे अग्रणी प्रयोग थिक, जकर सीमा सिद्धान्तक असमान आ कतहु-कतहु यान्त्रिक अनुप्रयोगमे अछि। आ विदेह समान्तर इतिहासक दृष्टिएँ एकर महत्त्व सर्वोपरि अछि — अनालोचित कवि, उपेक्षिता नायिका, दलित महानायक, प्रवासी सम्पादक, लोकगीतक अज्ञात गायिका : प्रतिष्ठान जकरा-जकरा हाशिया पर रखलक, रमणजी तकरा-तकरा अभिलेखक बलेँ केन्द्रमे अनलनि।

मतरकि एहू नजर सें एक अन्तिम सीमा-रेखा खीचब न्यायोचित होतै : समानान्तर धारा के पूरा पद्धति ओहिजा पहुँचै छै जहाँ हाशिया के स्वर अपने बाजै — 'हिआओल' में हाशिया लेली बाजल गेलै, हाशिया के बजाओल कम गेलै। ई अपूर्णता आगामी अनुसन्धान के निमन्त्रण छै, आरो इहे निमन्त्रण-धर्मिता — विचारकलोकनि विमर्श के हेतु हाजिर होय — ई पोथी के स्थायी मूल्य छै। मैथिली आलोचना के इतिहास में 'हिआओल' प्रत्यालोचना के प्रतिमान-ग्रन्थ आरो समानान्तर इतिहास-लेखन के पूर्वपीठिका — दुनू रूप में स्मरणीय रहतै।

मुदा एहू दृष्टि से एक अन्तिम सीमा-रेखा खीचब न्यायोचित होयतः समानान्तर धारा के पूर्ण पद्धति उहाँ पहुँचैत हय जहाँ हाशिया के स्वर अपने बाजए — 'हिआओल'मे हाशिया खातिर बाजल गेल हय, हाशिया के बजाओल कम गेल हय। ई अपूर्णता आगामी अनुसन्धान के निमन्त्रण हय, आ इहे निमन्त्रण-धर्मिता — विचारकलोकनि विमर्श के हेतु उपस्थित होथिन — ई पोथी के स्थायी मूल्य हय। मैथिली आलोचना के इतिहास में'हिआओल' प्रत्यालोचना के प्रतिमान-ग्रन्थ आ समानान्तर इतिहास-लेखन के पूर्वपीठिका — दुनो रूप में स्मरणीय रहत।

मुदा एहू दृष्टिएँ एक अन्तिम सीमा-रेखा खीचब न्यायोचित होएत : समानान्तर धाराक पूर्ण पद्धति ओतऽ पहुँचैत अछि जतऽ हाशियाक स्वर अपने बाजए — 'हिआओल'मे हाशिया लेल बाजल गेल अछि, हाशियाकेँ बजाओल कम गेल अछि। ई अपूर्णता आगामी अनुसन्धानक निमन्त्रण थिक, आ इएह निमन्त्रण-धर्मिता — विचारकलोकनि विमर्शक हेतु उपस्थित होथि — एहि पोथीक स्थायी मूल्य थिक। मैथिली आलोचनाक इतिहासमे 'हिआओल' प्रत्यालोचनाक प्रतिमान-ग्रन्थ आ समानान्तर इतिहास-लेखनक पूर्वपीठिका — दुनू रूपमे स्मरणीय रहत।

डा. रमानन्द झा 'रमण' के 'हिआओल' (२०१२) मैथिली साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में एगो सराहनीय आरो साहसिक डेग छै, जे में कतेको स्थापित स्थापना के गम्भीर बौद्धिक चुनौती देल गेलै। रमणजी के भाषा-प्रेम आरो मैथिली के ठेठ सबद-संस्कृति के प्रति अनुराग सर्वथा स्पृहणीय छै। ई सैद्धान्तिक सीमा के बावजूद, 'हिआओल' मैथिली समीक्षाशास्त्र के सुदीर्घ पथ पर एगो बहुत महत्त्वपूर्ण मील के पत्थर छै, जे भावी पीढ़ी के स्थापित आभिजात्य इतिहास-लेखन के विरुद्ध "हिआओ" (साहस) सें लड़बा के दिशा-निर्देश अवश्य करैछै। ई पोथी साहित्य के मुख्य द्वार के अतिरिक्त पछुआरि, आँगन, खेत, नदी, लोककण्ठ, स्त्री के मौन, मुसहर के गाथा, प्रवासी के पत्रिका आरो भूकम्प सें ढहल घर के भीतर सें इतिहास देखैके नजर दैछै। ई अरथ में ई विदेह समान्तर इतिहास-नजर के एक सशक्त आलोचनात्मक आधारग्रन्थ छै।

डा. रमानन्द झा 'रमण' के'हिआओल' (२०१२) मैथिली साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में एकगो सराहनीय आ साहसिक डेग हय, जेमें कतको स्थापित स्थापना के गम्भीर बौद्धिक चुनौती देल गेल हय। रमणजी के भाषा-प्रेम आ मैथिली के ठेठ शब्द-संस्कृति के प्रति अनुराग पूरा तरह से स्पृहणीय हय। ई सैद्धान्तिक सीमा के बावजूद, 'हिआओल' मैथिली समीक्षाशास्त्र के सुदीर्घ पथ पर एकगो बहुत महत्त्वपूर्ण मील के पत्थर हय, जे भावी पीढ़ी के स्थापित आभिजात्य इतिहास-लेखन के विरुद्ध "हिआओ" (साहस) से लड़े के दिशा-निर्देश अवश्य करै हय। ई पोथी साहित्य के मुख्य द्वार के अतिरिक्त पछुआरि, आँगन, खेत, नदी, लोककण्ठ, स्त्री के मौन, मुसहर के गाथा, प्रवासी के पत्रिका

आ भूकम्प से ढहल घर के भीतर से इतिहास देखे के दृष्टि दे हय। ई अर्थ में ई विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि के एक सशक्त आलोचनात्मक आधारग्रन्थ हय।

डा. रमानन्द झा 'रमण'क 'हिआओल' (२०१२) मैथिली साहित्यिक आलोचनाक क्षेत्रमे एकटा सराहनीय आ साहसिक डेग थिक, जाहिमे कतेको स्थापित स्थापनाकेँ गम्भीर बौद्धिक चुनौती देल गेल अछि। रमणजीक भाषा-प्रेम आ मैथिलीक ठेठ शब्द-संस्कृतिक प्रति अनुराग सर्वथा स्पृहणीय अछि। एहि सैद्धान्तिक सीमाक बावजूद, 'हिआओल' मैथिली समीक्षाशास्त्रक सुदीर्घ पथ पर एकटा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मीलक पत्थर थिक, जे भावी पीढ़ीकेँ स्थापित आभिजात्य इतिहास-लेखनक विरुद्ध "हिआओ" (साहस) सँ लड़बाक दिशा-निर्देश अवश्य करैत अछि। ई पोथी साहित्यक मुख्य द्वारक अतिरिक्त पछुआरि, आँगन, खेत, नदी, लोककण्ठ, स्त्रीक मौन, मुसहरक गाथा, प्रवासीक पत्रिका आ भूकम्पसँ ढहल घरक भीतरसँ इतिहास देखबाक दृष्टि दैत अछि। एहि अर्थमे ई विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिक एक सशक्त आलोचनात्मक आधारग्रन्थ अछि।

सन्दर्भ-सूची

सन्दर्भ-सूची

सन्दर्भ-सूची

डा. रमानन्द झा 'रमण', हिआओल (मैथिली आलोचना-संग्रह), अखियासल प्रकाशन, लालगंज, सरिसब-पाही, मधुबनी, २०१२।

डा. रमानन्द झा 'रमण', हिआओल (मैथिली आलोचना-संग्रह), अखियासल प्रकाशन, लालगंज, सरिसब-पाही, मधुबनी, २०१२।

डा. रमानन्द झा 'रमण', *हिआओल* (मैथिली आलोचना-संग्रह), अखियासल प्रकाशन, लालगंज, सरिसब-पाही, मधुबनी, २०१२।

डा. रमानन्द झा 'रमण', अखियासल (आलोचना-संग्रह)।

डा. रमानन्द झा 'रमण', अखियासल (आलोचना-संग्रह)।

डा. रमानन्द झा 'रमण', *अखियासल* (आलोचना-संग्रह)।

डा. रमानन्द झा 'रमण', बेसाहल (आलोचना-संग्रह)।

डा. रमानन्द झा 'रमण', बेसाहल (आलोचना-संग्रह)।

डा. रमानन्द झा 'रमण', *बेसाहल* (आलोचना-संग्रह)।

डा. रमानन्द झा 'रमण', भजारल (आलोचना-संग्रह)।

डा. रमानन्द झा 'रमण', भजारल (आलोचना-संग्रह)।

डा. रमानन्द झा 'रमण', *भजारल* (आलोचना-संग्रह)।

जी. ए. ग्रियर्सन, An Introduction to the Maithili Language of North Bihar, कलकत्ता, १८८१।

जी. ए. ग्रियर्सन, An Introduction to the Maithili Language of North Bihar, कलकत्ता, १८८१।

जी. ए. ग्रियर्सन, *An Introduction to the Maithili Language of North Bihar*, कलकत्ता, १८८१।

जी. ए. ग्रियर्सन, Maithili Chrestomathy एवं दीनाभद्रीसम्बन्धी संकलन, १८८५।

जी. ए. ग्रियर्सन, Maithili Chrestomathy आ दीनाभद्रीसम्बन्धी संकलन, १८८५।

जी. ए. ग्रियर्सन, *Maithili Chrestomathy* एवं दीनाभद्रीसम्बन्धी संकलन, १८८५।

हरिमोहन झा, कन्यादान (मैथिली उपन्यास)।

हरिमोहन झा, कन्यादान (मैथिली उपन्यास)।

हरिमोहन झा, *कन्यादान* (मैथिली उपन्यास)।

PART 27, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_27.htm।

PART 27, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_27.htm।

PART 27, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_27.htm ।

PART 28, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_28.htm ।

PART 28, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_28.htm ।

PART 28, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_28.htm ।

PART 82, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_82.htm ।

PART 82, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_82.htm ।

PART 82, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_82.htm ।

A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_90.htm ।

A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_90.htm ।

A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_90.htm ।

नूतन अंक सम्पादकीय, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/aboutme.htm ।

नूतन अंक सम्पादकीय, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/aboutme.htm ।

नूतन अंक सम्पादकीय, विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/aboutme.htm ।

“रमानन्द झा ‘रमण’”, मैथिली लेखक संघ, maithililekhaksangh.blogspot.com/2010/07/blog-post_677.html ।

“रमानन्द झा ‘रमण’”, मैथिली लेखक संघ, maithililekhaksangh.blogspot.com/2010/07/blog-post_677.html ।

“रमानन्द झा ‘रमण’”, मैथिली लेखक संघ, maithililekhaksangh.blogspot.com/2010/07/blog-post_677.html ।

आलेख ०६ · आलोचना-सिद्धान्त आ समालोचनाक परिप्रेक्ष्य

अंगिका साहित्य केरौं इतिहास

सारांश

‘अंगिका साहित्य केरौं इतिहास’[समीक्ष्य ग्रन्थ: आमुख — डॉ. डोमन साहु ‘समीर’ • पद्य-खण्ड — डॉ.

बीजशब्द

अंगिका साहित्य केरौं इतिहास ·आलोचना-पद्धति ·भारतीय काव्यशास्त्र · मैथिली समालोचना ·विदेह समानान्तर दृष्टि

‘अंगिका साहित्य केरौं इतिहास’[समीक्ष्य ग्रन्थ: आमुख — डॉ. डोमन साहु ‘समीर’ • पद्य-खण्ड — डॉ. तेजनारायण कुशवाहा • गद्य-खण्ड — डॉ. अमरेन्द्र • हिन्दी अकादमी, हैदराबाद • प्रथम संस्करण, १९९८ ई.]

भारतीय आ पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धान्त आ विदेह समानान्तर परम्परा-दृष्टिक आलोकमे विस्तृत आलोचनात्मक समीक्षा

१

[केन्द्रीय मैथिली बोली]

समीक्ष्य ग्रन्थ: आमुख — डॉ. डोमन साहु ‘समीर’ • पद्य-खण्ड — डॉ. तेजनारायण कुशवाहा • गद्य-खण्ड — डॉ. अमरेन्द्र • हिन्दी अकादमी, हैदराबाद • प्रथम संस्करण, १९९८ ई.

भूमिका

‘अंगिका साहित्य केरौं इतिहास’ अंगिका भाषा-साहित्यक इतिहास-लेखनमे महत्त्वपूर्ण आधार-ग्रन्थ अछि। एकर विशेष सामर्थ्य सामग्री-संग्रह, विस्मृत लेखक-रचनाक संरक्षण, लोक आ लिखित साहित्यक संयुक्त प्रस्तुति, भाषिक रूपरेखा, साहित्यिक संस्थाक दस्तावेजीकरण आ व्यापक सांस्कृतिक मानचित्र बनेबामे अछि। एकर सीमा मुख्यत: ओहि ठाम देखाइत अछि जतय प्राचीनता, भाषिक वंश, जन्मस्थान, लिपि-परम्परा वा साहित्यिक स्वामित्वक दाबी उपलब्ध प्रमाणसँ बेसी निश्चित रूपमे प्रस्तुत होइत अछि। अत: पोथीक

अभिलेखीय महत्त्व आ ओकर दाबीसभक प्रमाण-स्थिति—दुनूकेँ पृथक् राखि मूल्यांकन करब आवश्यक अछि।

1. ग्रन्थक स्वरूप, प्रकाशन-पृष्ठभूमि आ सहलेखनक विन्यास

प्रस्तुत इतिहास-ग्रंथक प्रकाशन हिन्दी अकादमी, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) द्वारा श्रावणी पूर्णिमा, संवत् २०५५ (१९९८ ई०) मे संपन्न भेल। पोथीक मुद्रण स्वर्ण कम्प्यूटर प्रेस, टावर चौक, देवघर (बिहार) मे कएल गेल छल, जाहि मे कुल २६० पृष्ठ समाहित अछि। ग्रंथक प्रथम संस्करणक प्रसार संख्या एक सहस्र प्रति तथा मूल्य एक सौ पच्चीस टका निर्धारित कएल गेल छल। ई पोथी आन्ध्र प्रदेशक प्रसिद्ध उद्योगपति आ साहित्य-प्रेमी पद्मश्री डॉ० बी० वी० राजू केँ सादर समर्पित कएल गेल अछि, जिनकर उदार आर्थिक संबल सँ ई मुद्रण संभव भऽ सकल।

पोथीक उत्पत्ति आ पृष्ठभूमि पर दृष्टि देला सँ स्पष्ट होइत अछि जे एकर मूल प्रेरणा हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबादक हीरक जयंती समारोह (अगस्त, १९९६ ई०) मे निहित छल। हिन्दी अकादमीक तत्कालीन अध्यक्ष प्रो० डॉ० बैजनाथ चतुर्वेदी अपन दिवंगता धर्मपत्नी वाणीमुक्ता प्रतिभा मिश्र (जे मूलतः अंग-सवासिनि छलीह) क अंतिम इच्छाक पूर्तये अंगिका भाषाक एकटा सांगोपांग इतिहास प्रस्तुत करबाक संकल्प कएने छलाह। चतुर्वेदीजीक एहि आग्रहेँ तीनटा मूर्धन्य विद्वानक एकटा लेखक-मंडल गठित कएल गेल, जाहि मे श्रम आ विषयक सुस्पष्ट विभाजन कएल गेल।

लेखकत्रयक ई विभाजन पोथीक विषय-सामग्रीकेँ एकटा संतुलित स्वरूप प्रदान करैत अछि। डॉ० डोमन साहु 'समीर' अपन असाधारण भाषावैज्ञानिक अंतर्दृष्टिसँ अंगिकाक ध्वनि-व्यवस्था, पद-रचना आ व्याकरणिक स्वरूपक नियामक ढाँचा 'आमुख' मे निर्मित कएलनि। डॉ० तेजनारायण कुशवाहा पद्य-खंड मे सिद्ध-परंपरा सँ लऽ कऽ आधुनिक मंचोत्तर काल धरिक सहस्र वर्षक काव्य-प्रवृत्तिक विवेचन कएलनि। डॉ० अमरेन्द्र गद्य-खंड मे अंग-भूमिक सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमिक आलोक मे उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा आ पत्र-पत्रिकाक ऐतिहासिक विकास-क्रमक सूक्ष्म प्रलेखीकरण कएलनि।

लेखक	दायित्व आ विषय-विभाजन	ग्रंथ मे पृष्ठ-विस्तार
डॉ० डोमन साहु 'समीर'	'आमुख' (अंगिका भाषा आ व्याकरणक सांगोपांग रूपरेखा)	पृष्ठ १ सँ १३
डॉ० तेजनारायण कुशवाहा	खंड-१: पद्य (प्रारंभिक, मध्य आ आधुनिक युगक संपूर्ण काव्य-इतिहास)	पृष्ठ १६ सँ १४६
डॉ० अमरेन्द्र	खंड-२: गद्य (कथा, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना, पत्रकारिता आदि)	पृष्ठ १४९ सँ २६०

ई विन्यास देखबैत अछि जे ग्रन्थकार सभ “साहित्य” कैं मात्र कविता-कहानीक संग्रह नहि मानैत छथि। भाषा, व्याकरण, लोकपरम्परा, इतिहास-भूगोल, पत्र-पत्रिका, रेडियो-नाटक, आलोचना, संस्मरण, जीवनी, शब्दकोश, विज्ञान-लेखन, कृषि-लेखन आदिकैं सेहो साहित्यिक सार्वजनिकता बनाबयवाला अवयव मानल गेल अछि। एहि कारण पोथीकैं मात्र साहित्येतिहास नहि, एक प्रकारक सांस्कृतिक अभिलेख-निर्माण सेहो कहल जा सकैत अछि।

1.1 साहित्यिक संस्थाक इतिहासक रूपमे “मंच-पूर्व–मंच–मंचोत्तर”

आधुनिक अंगिका साहित्यक इतिहासकैं “मंच-पूर्व”, “मंच” आ “मंचोत्तर” अवस्था रूपैं देखबाक प्रवृत्ति पोथीक एक उल्लेखनीय आलोचनात्मक आविष्कार अछि। ई सामान्य राजवंशीय काल-विभाजनसँ पृथक् अछि। एतय साहित्यक परिवर्तनकैं लेखक-मंच, अधिवेशन, पत्रिका, संगठन, आकाशवाणी, सार्वजनिक वाचन, प्रकाशन-संस्था आ नूतन लेखक-पाठक समुदायसँ जोड़ल जा

रहल अछि। पश्चिमी साहित्य-सामाजिकी आ पाठक-स्वीकृति सिद्धान्तक दृष्टिसँ ई अत्यन्त उपजाऊ सूत्र अछि।

मुदा ई वर्गीकरणकेँ अधिक कठोर बनाबय लेल प्रत्येक अवस्थाक मापदण्ड स्पष्ट चाही—कतेक संस्था, कोन प्रकाशन-घटना, कोन भाषिक परिवर्तन, कोन पीढ़ीगत भेद, आ कोन पाठक-वर्ग परिवर्तनकारी मानल जाएत। एखन ई अधिकतर वर्णनात्मक अछि; एकरा विश्लेषणात्मक बनाओल जा सकैत अछि।

2. भाषा-व्याकरण, अंग-लिपि, प्राचीनता आ भाषिक इतिहास

पोथीक 'आमुख' (पृष्ठ १-१३) मे डॉ० डोमन साहु 'समीर' अंगिका भाषाक प्राचीनता, क्षेत्रीय विस्तार आ ओकर आंतरिक व्याकरणिक संरचनाक अत्यंत प्रामाणिक भाषावैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत कएने छथि। प्राचीन भारतीय वाङ्मय, विशेषतः अथर्ववेद, महाभारत, पुराण, बौद्ध ग्रन्थ 'अंगुत्तरनिकाय' तथा जैन ग्रन्थ 'भगवती-सूत्र' मे उल्लिखित षोडश महाजनपदक साक्ष्य लैत लेखक अंग-भूमिक ऐतिहासिक सत्ताक निरूपण करैत छथि। आधुनिक भूगोलक दृष्टि सँ बिहारक भागलपुर, बाँका, मुंगेर, सहरसा, कटिहार, अररिया, किशनगंज, पूर्णिया, जमुई, बेगूसराय तथा संताल परगनाक साहेबगंज, गोड्डा, पाकुड़, दुमका आ देवघर जिलाक लोक-भाषाक रूप मे अंगिकाक प्रसार-क्षेत्र रेखांकित कएल गेल अछि।

लिपि आ प्राचीन भाषा-संज्ञाक संदर्भ मे बौद्ध ग्रन्थ 'ललितविस्तर' मे उल्लिखित ६४ लिपिसभ मे ब्राह्मी, खरोष्ठी आ पुष्करसारीक उपरांत चतुर्थ स्थान पर परिगणित 'अंग-लिपि'क आधार पर लेखक ई प्रतिपादित करैत छथि जे मिथिलाक्षर, वंगलिपि, असमिया आ कैथी लिपिक ऐतिहासिक प्रस्थान-बिंदु वस्तुतः अंग-लिपिये मे अंतर्निहित छल। तहिना प्राचीन भौगोलिक वर्गक प्राच्या भाषाक अंतर्गत उद्धृत वाक्य "आंगी वांगी पांचाली वैदर्भी मागधी एते प्राच्याः" क आधार पर 'आंगी' कें अंगिकाक मातृ-रूप मानल गेल अछि, जाहि सँ प्राकृत आ अपभ्रंशक स्तर पार कऽ आधुनिक जनभाषा विकसित भेल।

2.1 ध्वनितत्त्व

अंगिकाक ध्वनि-व्यवस्था यद्यपि देवनागरी लिपिक माध्यम सँ अभिव्यक्त होइत अछि, तथापि एहि भाषा मे दूटा विशिष्ट स्वर-ध्वनि विद्यमान अछि

जाहि लेल स्वतंत्र वर्ण-चिह्नक प्रस्ताव पोथी मे कएल गेल अछि। पहिल विशिष्ट ध्वनि थिक 'प्रसृत ए-कार' (/ ऍ / ~), जे सामान्य ए-कार सँ अधिक विवृत भऽ कऽ उच्चारित होइत अछि आ जे 'लें', 'दें', 'जमें', 'तबें', 'आबें' सन पद मे प्रयुक्त होइत अछि। ई ध्वनि मात्र उच्चारणे मे भिन्न नहि अछि, प्रत्युत अर्थ-भेदक नियामक सेहो अछि; जेना 'ले' कहलासँ अवज्ञार्थक बोध होइत अछि मुदा 'लें' आदरार्थक बनैत अछि। दोसर विशिष्ट ध्वनि थिक 'प्रसृत अ-कार वा ऑ-कार' (/ ओं / ^), जे 'आबों', 'बैठों', 'पढ़ों', 'लिखों', 'हमरों', 'तोरों' मे समाहित अछि। एहि ठाम 'हमरो' (समावेशी = हमहुँ) आ 'हमरों' (संबंधार्थक = हमर) क मध्यक अर्थ-परिवर्तन एहि ध्वनिक सूक्ष्मताक अकाट्य प्रमाण अछि। एकर अतिरिक्त न्, म्, य्, र् आ ल् क संग महाप्राण 'ह' क संयुक्त ध्वनि (कान्हो, हम्हें, ठाम्हें, ऐयूहों, कल्हे) अंगिकाक उच्चारण-प्रवृत्तिकें एकटा विशिष्ट झंकार प्रदान करैत अछि।

2.2 रूपतत्त्व आ व्याकरणिक वैशिष्ट्य

अंगिकाक रूपतात्विक संरचना मे संज्ञाक द्विविध रूप अत्यंत मौलिक अछि, जाहि मे सामान्य आ निश्चयार्थक (विशिष्ट) संज्ञाक स्पष्ट विभाजन देखल जाइत अछि। सामान्यार्थक संज्ञामे '-आ' प्रत्ययक योग भेला पर पूर्ववर्ती दीर्घ स्वर ह्रस्व भऽ जाइत अछि तथा मध्य मे य अथवा व क आगम भऽ कऽ निश्चयार्थक रूप बनैत अछि; जेना गाय सँ गैया, लोटा सँ लोटवा, धोती सँ धोतिया आ कुत्ता सँ कुतवा।

अंगिकाक क्रियापद मे सर्वनामीकरण (Pronominal Concord) भाषावैज्ञानिक दृष्टि सँ सर्वाधिक जटिल आ समृद्ध वैशिष्ट्य अछि। एहि प्रक्रिया मे एकहि क्रियापदक भीतर संपूर्ण वाक्यक अर्थ समाहित भऽ जाइत अछि, जतय कर्ता आ कर्मक पुरुष तथा आदरक मात्रा क्रियाक प्रत्यय मे पूर्णतः एकाकार भऽ जाइत अछि। मागधी अपभ्रंश सँ उद्भूत प्राच्य भाषा-समूह मे ई विशिष्टता अंगिकाक पद-रचनाकें अत्यंत सशक्त आ संश्लिष्ट रूप प्रदान करैत अछि।

व्याकरणिक कोटि	संरचनात्मक लक्षण	पोथी मे प्रदत्त उदाहरण
कारक एवं परसर्ग	सकर्मक भूतकालिक	'बरदा चरै छै' (अकर्मक) मुदा

व्याकरणिक कोटि	संरचनात्मक लक्षण	पोथी मे प्रदत्त उदाहरण
	क्रियाक संग कर्ता मे अनुस्वार (वा 'नें') क विकार, अकर्मक मे अविकारी। संबंध परसर्ग '-कें', '-केरों', '-रों' तथा संप्रदान '-लें', '-लेली', '-बास्तें'।	'बरदाँ खैलकै' (सकर्मक)। तोरा लें/लेली, ओकरा बास्तें।
लिंग आ वचन	प्राकृतिक लिंग-व्यवस्था; व्याकरणिक लिंग-भेद संकुचित। बहुवचनक लेल '-सनी', '-सिनी' आ '-सब' प्रत्यय।	बुतरू (ए०व०) बुतरूसनी / बुतरूसिनी (ब०व०)। नूँगा नूँगा-सब।
सर्वनाम	लिंग-भेद रहित, मुदा आदरक त्रिविध स्तर: अवज्ञार्थक/सम तार्थक, आदरार्थक आ परम-आदरार्थक।	उत्तम: हम/हम्में/हम रासिनी; मध्यम: तों, तोंय (अनादर), तोहें/आपने (आदर); अन्य: ऊ (अनादर), हुनी (आदर)।
मूल क्रिया (Substantive Verb)	सत्तासूचक 'छै' आ विकारसूचक (स्वरूप-	'एकरा मे पानी छै' (अस्तित्व) बनाम 'ऊ

व्याकरणिक कोटि	संरचनात्मक लक्षण	पोथी मे प्रदत्त उदाहरण
	तादात्म्य) 'छैकै' क मध्य नित्य भेद।	पानी छैकै' (स्वरूप/परिचय)।
क्रियापदिक सर्वनामीकरण	समापक क्रियापद मे कर्ता, कर्म अथवा संबोधी-संबंधी सर्वनाम अंशक नीर-क्षीरवत संश्लिष्ट संलयन।	'देखलियौ' (हम तोरा देखलियौ), 'ऐल्हौं' (ऊ, जे तोहर सगा छेकौ, से आएल)।

2.3 आधुनिक भाषावैज्ञानिक कसौटी

मुदा आधुनिक भाषावैज्ञानिक कसौटीपर एहि आमुखकेँ वर्णनात्मक व्याकरणक आरम्भिक दस्तावेज मानब अधिक उचित होयत। व्यवस्थित ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, क्षेत्रवार बोली-नमूना, न्यूनतम युग्म, ध्वनि-परिवर्तन, वक्ताक सामाजिक विवरण, रूपिम-सारिणी, पाठ-संग्रह, प्राकृतिक संवाद, सांख्यिकीय आवृत्ति आ तुलनात्मक पूर्वी आर्यभाषिक विश्लेषण जोड़ल नहि अछि। तेँ ई साहित्यिक-व्याकरणिक रूपरेखा अछि, पूर्ण आधुनिक वर्णनात्मक व्याकरण नहि।

पोथी अनेक ठाम भाषाक प्राचीनता आ साहित्यक प्राचीनता एक-दोसरक साक्ष्य रूपेँ उपयोग करैत अछि। मुदा “एहि भूगोलमे अमुक कवि रहलाह”, “ओहि पाठमे किछु रूप आइक अंगिकासँ मिलैत अछि”, आ “ओ पाठ पूर्णतः आधुनिक अर्थक अंगिका साहित्य अछि”—ई तीन पृथक् दाबी छथि। भाषिक इतिहासमे नियमित ध्वनि-परिवर्तन, व्याकरणिक नवाचार, हस्तलिखित पाठक तिथि आ तुलनात्मक प्रमाण आवश्यक अछि।

नव संस्करणमे “भाषा-इतिहास”, “साहित्यिक परम्परा”, “क्षेत्रीय सांस्कृतिक स्मृति” आ “आधुनिक भाषिक पहिचान” चारि पृथक् उपखंड बनाओल जाए। एहि सँ परम्परा कमजोर नहि होयत; उलटे प्रमाणक स्तर स्पष्ट भेला सँ विश्वसनीयता बढ़त।

2.4 “अंग-लिपि” सम्बन्धी दावाक पुरालिपिवैज्ञानिक परीक्षण

आमुखमे ललितविस्तरक चौंसठि लिपिक पाँतिमे “अंग-लिपि” उल्लेखकेँ ऐतिहासिक महत्त्व देल गेल अछि। ग्रन्थक तर्क एहि उल्लेखसँ आगाँ बढ़ि मिथिलाक्षर, बंगला, असमिया आदिक विकास-सूत्र धरि पहुँचबाक प्रयत्न करैत अछि।

एहि ठाम कठोर पुरालिपिवैज्ञानिक भेद आवश्यक अछि—ककरो प्राचीन ग्रन्थमे “अंग-लिपि” नाम भेटब एक तथ्य अछि; मुदा ओहि नामसँ जुड़ल अक्षररूप, दिनांकित अभिलेख, विकासक्रम आ उत्तरवर्ती लिपिक प्रत्यक्ष वंशपरम्परा सिद्ध भऽ गेल—ई दोसर बात अछि।

Richard Salomonक भारतीय पुरालिपि-विषयक मानक विवेचनमे दक्षिण एशियाक अधिकांश देशज लिपिक प्रमाणित विकास-वृक्ष ब्राह्मीक अनेक क्षेत्रीय शाखासँ जोड़ल जाइत अछि। ललितविस्तरक चौंसठि लिपिक पाँतिक ऐतिहासिक मूल्य सीमित मानल गेल अछि, कारण ब्राह्मी आ खरोष्ठी छोड़ि बहुत नामकेँ विशिष्ट पुरातात्त्विक अक्षरमालासँ निश्चयपूर्वक मिला सकब कठिन अछि।

तेँ पोथीक “अंग-लिपि” प्रसंगकेँ “प्राचीन ग्रन्थमे अंग-नामित लेखन-परम्पराक स्मृति” कहब सुरक्षित अछि; “एहि सँ अमुक-अमुक आधुनिक लिपि सीधे उत्पन्न भेल” कहबाक लेल अभिलेखीय मध्य-कड़ि चाही। ई अन्तर नव संस्करणमे अवश्य स्पष्ट कएल जएबाक चाही।

2.5 ऐतिहासिक आ भाषावैज्ञानिक दाबासभक तुलनात्मक समालोचना

प्रस्तुत इतिहास-ग्रंथक सर्वाधिक विचारणीय आ संवेदनशील पक्ष थिक एकर कतिपय अति-उत्साही ऐतिहासिक आ भाषावैज्ञानिक दाबी, जाहि मे क्षेत्रीय अस्मिताक भावुकता भाषावैज्ञानिक तटस्थता पर हावी देखाइत अछि।

ऋग्वेदक मंत्रद्रष्टा दीर्घतमस्, कक्षीवत आ घोषा तथा पालकव्यक 'हस्त्यायुर्वेद'क भाषिक प्रवृत्तिकेँ अंगिकाक मूल रूप मानब भाषावैज्ञानिक दृष्टि सँ सर्वथा असिद्ध अछि। वैदिक संस्कृत भारत-यूरोपीय भाषा-परिवारक आदिम रूप थिक, जखन कि नव्य भारतीय आर्य-भाषा (जाहि मे अंगिका, मैथिली, बँगला आदि सम्मिलित अछि) मध्यकालीन प्राकृत आ अपभ्रंशक स्तर

पार कऽ दशमीं-एकादशीं शतीक आस-पास स्वतंत्र रूप ग्रहण कएलक। सहस्र वर्ष पूर्व भेल वैदिक ऋचाकें कोनो आधुनिक बोली विशेषक आद्य रूप मानब कालदोष (Anachronism) सँ ग्रस्त अछि।

विक्रमशिला महाविहारक भौगोलिक अवस्थितिक आधार पर चौरासी सिद्धक चर्यापद आ दोहाकोशक संपूर्ण वाङ्मयकें 'विशुद्ध प्राचीन अंगिका' घोषित करब एकांगी दृष्टि अछि। महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री, डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी, महापंडित राहुल सांकृत्यायन तथा डॉ० सुभद्र झा सिद्ध-साहित्यक भाषाकें 'अवहट्ट' वा 'आदिम मागधी अपभ्रंश' मानैत छथि। ई भाषा वस्तुतः आधुनिक मैथिली, बँगला, असमिया आ ओड़िआक साझी पूर्वज (Proto-Eastern Indo-Aryan) छल। एहि मे प्रयुक्त 'पइट्ठइ', 'सुण्ण', 'णदह' सन रूप कोनो एक विशिष्ट भाषाक नहि भऽ समग्र प्राच्य प्राकृत-अपभ्रंशक सामान्य संपत्ति थिक। यद्यपि सरहपा विक्रमशिला सँ संबद्ध छलाह, तथापि ओहि साझी भाषा-परंपरा सँ मैथिली, बँगला वा मगहीक दाबीकें सर्वथा खारिज कऽ मात्र अंगिकाक एकाधिकार सिद्ध करब न्यायसंगत नहि बुझाइत अछि।

महाकवि विद्यापतिकें अंगिकाक कवि सिद्ध करबाक चेष्टा ऐतिहासिक आ भाषावैज्ञानिक साक्ष्यक दृष्टि सँ सर्वथा निराधार अछि। विद्यापतिक जन्म मिथिलाक मधुबनी जिलांतर्गत बिसफी ग्राम मे ओइनिवार राजवंशक छत्रछाया मे भेल छल, जतय राजा शिवसिंह हुनका बिसफी गाम ताम्रपत्र पर लिख कऽ दान देने छलाह। विद्यापतिक घोषणा "देसिल बअना सब जन मिट्ठा, तें तैसन जम्पओ अवहट्ठा" तत्कालीन लोकभाषा अवहट्ठक संदर्भ मे अछि। विद्यापतिक पदावलीक क्रियापद (गेलनि, कहलन्हि, देखलहुँ) आ सर्वनाम (हमार, तोहार, अहाँ, ओ) मानक मैथिलीक व्याकरणिक संरचना थिक। अंगिकाक विशिष्ट क्रिया-प्रत्यय (यथा 'खैलकै', 'गेलै', 'छेकै') विद्यापतिक मूल पदों मे पूर्णतः अनुपलब्ध अछि। मात्र एहि आधार पर जे हुनक नचारी अंग-क्षेत्र मे गाओल जाइत अछि, हुनका अंगिकाक कवि मानब भाषावैज्ञानिक दृष्टिसँ स्वीकार्य नहि भऽ सकैत अछि।

अंगिका आ मैथिलीक अंतर्संबंधक भाषावैज्ञानिक यथार्थ ई अछि जे सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपन 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' (खंड ५, भाग २) मे अंगिकाकें बिहारी भाषा-समूहक अंतर्गत 'मैथिलीक दक्षिणी-पूर्वी बोली'

(छिका-छिकी) क रूप मे वर्गीकृत कएने छलाह। व्याकरणिक धरातल पर मैथिली आ अंगिका दुनू मागधी अपभ्रंशक अत्यंत निकटवर्ती सहोदरा छथि। क्रियापद मे सर्वनामीकरणक संश्लिष्ट विन्यास, भूतकाल मे सकर्मक कर्ताक विकारी रूप, आदरार्थक सर्वनामक त्रिविध कोटि तथा बहुसंख्यक परसर्ग दुनू मे एकसमान अछि। अंगिकाक अपन विशिष्टता ओकर विवृत स्वर (प्रसृत ऍ आ ओं), 'छै' आ 'छेकै' क रूपभेद तथा विशेषणक निश्चयार्थक प्रत्यय (-का/-की) मे निहित अछि। अतः अंगिकाकेँ एकटा स्वतंत्र भाषिक अस्मिता मानल जा सकैत अछि, मुदा मैथिलीसँ ओकर संरचनात्मक संबंधक पूर्ण अपलाप करब भाषाविज्ञानक नियमक विरुद्ध अछि।

3. साहित्यिक काल-विभाजन आ ऐतिहासिक विकास

डॉ० तेजनारायण कुशवाहा पद्य-खंड मे अंगिका काव्यक सुदीर्घ विकास-यात्राकेँ तीनटा कालखंड मे विभक्त कएने छथि:

कालखंड	कालावधि	प्रमुख साहित्यिक धारा आ प्रतिनिधि काव्य
प्रारंभिक युग	५०० ई० सँ १२२० ई० धरि	अपभ्रंश ('सुदंसण चरिउ'), सहजयानी सिद्ध-काव्य, नाथ-पंथ, लोक-गीति-गाथा, लोकोक्ति-काव्य।
मध्य युग	१२२० ई० सँ १८५० ई० धरि	पूर्व-मध्य युग (१२२०-१६५० ई०): विद्यापतिक पदावली, कबीर, साधु-काव्य, भृगुराम मिश्र। उत्तर-मध्य युग (१६५०-१८५० ई०): 'सती बिहुला' महाकाव्य, रेशमा,

कालखंड	कालावधि	प्रमुख साहित्यिक धारा आ प्रतिनिधि काव्य
		सलेस भगत, लोक-नृत्य।
आधुनिक युग	१८५० ई० सँ अद्यावधि	मंच-पूर्व युग (१८५०-१९५० ई०): पंच कविरत्न। मंच-युग (१९५०-१९८५ ई०): भाषा-आंदोलन, 'सवर्णा' महाकाव्य। मंचोत्तर युग (१९८५ सँ आब धरि): बृहत्त्रयी महाकाव्य, विश्वविद्यालयीय प्रतिष्ठा।

3.1 प्रारम्भिक युग

प्रारंभिक युगक विवेचन मे लेखक वैदिक संहिताक दीर्घतमस्, कक्षीवत आ घोषाक ऋचा तथा पालकव्य मुनिक 'हस्त्यायुर्वेद' मे स्थानीय 'आंगी' प्रवृत्तिक बीजरूप देखैत छथि। तदुपरान्त जैन आ बौद्ध आगमक पृष्ठभूमि मे अपभ्रंश चरित-काव्य 'सुदंसण चरिउ' मे वर्णित अंगदेशक प्राकृतिक सौन्दर्यकें रेखांकित कएल गेल अछि।

सहजयानी सिद्ध-साहित्यक संदर्भ मे विक्रमशिला महाविहारक अंग-क्षेत्र (कहलगाँव, भागलपुर) मे अवस्थितिक कारणेँ सिद्धक संपूर्ण चर्यापद आ दोहाकोशक भाषाकें अंगिकाक पूर्व-रूप घोषित कएल गेल अछि। सिद्ध सरहपाक जन्म-स्थान 'राज्ञी' (भागलपुरक आधुनिक रानी दियारा अथवा बरारी) मानैत हुनका अंगिकाक आदि-कवि स्वीकार कएल गेल अछि। सरहपाक अतिरिक्त शबरपा, लुइपा, दारिकपा, कण्हपा आ शान्तिपाक पद उद्धृत कऽ एहि बात पर बल देल गेल अछि जे एहि मे प्रयुक्त 'जब्बे-तब्बे', 'नइ' (नाओ),

'अहणिसि' सन शब्दरूप आधुनिक अंगिकाक स्वाभाविक पूर्वज थिक। नाथ-पंथक विवेचन मे गोरखनाथक वाणी "हँसिबा, खेलिबा, धरिबा ध्यान" कें अंगिकाक "हँसबों, खेलबों, धरबों धियान" सँ समीकृत कऽ नाथ-काव्य मे अंगिकाक भाषिक प्रभाव प्रतिपादित कएल गेल अछि।

एहि युग मे आल्हा-ऊदल, लोरिकैन, शोभा नायक बनजारा, सोरठी-बृजाभार, कुँवर विजयमल, राजा भरथरी, राजा मानिकचंद आ गोपीचंद सन लोक-गीति-गाथाक मौखिक परंपरा पल्लवित भेल। एहि गीति-प्रबंधक माध्यम सँ तत्कालीन समाजक वीरगाथा, तंत्र-मंत्र, कौटुंबिक निष्ठा आ वैराग्य-भावना अज्ञात लोक-कविसभक कंठ मे संरक्षित भेल। संगे-संग घाघ, भड्डरी आ डाकक कृषि-लोकोक्ति तथा शिशु-मनोविनोदक 'फेंकड़ा' आ 'लोरी' कें सेहो प्रारंभिक काव्य-निधिक रूप मे समाविष्ट कएल गेल अछि।

3.2 मध्य युग

मध्य युगक अंतर्गत पूर्व-मध्य काल मे महाकवि विद्यापतिक 'पदावली' आ 'कीर्तिलता'क भाषाकें 'देसिल बअना' कहैत पोथी मे ई दाबी कएल गेल अछि जे तखन 'मैथिली' शब्दक प्रचलन नहि रहबाक कारणेँ ओ वस्तुतः तत्कालीन 'आंगी' भाषा छल। विद्यापतिक नचारी उत्तरी अंग-क्षेत्र मे घर-घर मे गाओल जाइत अछि, एहि आधार पर हुनका अंगिकाक कवि मानबाक आग्रह कएल गेल अछि। साधु-काव्यक प्रसंग मे संत कबीरक पूरबी भाषा ("भाषा हमरी पूरबी हमको लखै न कोय") मे प्रयुक्त निश्चयार्थक क्रियापदक साम्य देखबैत हुनका ज्ञानमार्गी शाखामे राखल गेल अछि। मुंगेरक कवि भृगुराम मिश्र (१४वीं शती) क कृति 'रासबिहार', 'सुदामा चरित' आ 'दानलीला' कें मध्यकालीन अंगिकाक अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानल गेल अछि, जाहि विषय मे फ्रांसिस बुकाननक सर्वेक्षण-विवरणक साक्ष्य देल गेल अछि।

उत्तर-मध्य युग मे शृंगारिक आ पौराणिक लोक-प्रबंधक विपुल सृष्टि भेल। एहि मे १७वीं शती मे चम्पावासी भीमसेनक समकालीन कवि केशो साव द्वारा रचित नौ खंडक महाकाव्य 'सती बिहुला' (बिहुला-विषहरी) अंगिकाक प्रथम प्रबंध-काव्य मानल गेल अछि, जाहि मे मनसा विषहरीक कोप आ महासती बिहुलाक अनुपम पातिव्रतक चित्रण अछि। एकर अतिरिक्त दलित नायक वीर

चूहरमल आ रेशमाक आत्मोत्सर्गक कथा 'रेशमा', राजा सलेस (सहलेस) क त्याग आ शौर्यक गाथा 'सलेस भगत', तथा 'बाबा बिसू राउत', 'नेटुआ दयालऽ आ 'ज्योति तपस्या' सन लोक-गाथा लोक-संस्कृतिक उच्चतम आदर्श स्थापित करैत अछि।

3.3 आधुनिक युग

आधुनिक युगक प्रथम सोपान 'मंच-पूर्व युग' (१८५०-१९५० ई०) मे लोकवार्ताक संकलनक संगहि शिष्ट काव्य-परंपराक विकास भेल। एहि काल मे 'पंच कविरत्न' उदित भेलाह:

पं० काली प्रसाद पाण्डेय अपन लोक-प्रसिद्ध 'बारहमासा' लेल स्मरणीय छथि।

पं० दर्शन दुबे (१८७६-१९१२ ई०) गोड्डाक वंदनवार निवासी छलाह, जिनकर २७ छंदक रीतिकालीन कृति 'कृष्ण-लीला' (सवैया आ कवित्त मे) ब्रजभाषाक शृंगार-काव्यक समकक्ष प्रतिभा प्रदर्शित करैत अछि।

पं० बाजितलाल मिश्र (जन्म १८९३ ई०) प्रतापपुर (गोड्डा) क लोक-कवि छलाह, जिनकर शिव-भक्तिपरक झूमर महिला-समाज मे अत्यंत समादृत अछि।

सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द ओझा (१८८६-१९७० ई०) देवघरक सरदार पंडा छलाह, जे झूमर विधाक अप्रतिम सम्राट भेलाह आ राधा-कृष्णक प्रेम तथा शिव-भक्तिक अद्वितीय पद रचलाह।

पं० भुवनेश्वर चौधरी 'भुवनेश' (१८९०-?) सुल्तानगंजक बाथ निवासी छलाह, जे अंगिकामे बाल-साहित्य, बुझौवल आ अंतर्लापिकाक प्रवर्तन कएलाह तथा ९५१ पृष्ठक हस्तलिखित पत्रिका 'भारती' (१९५७ ई०) क संपादन कएलाह।

'मंच-युग' (१९५०-१९८५ ई०) मे जनपदीय साहित्यिक चेतनाक संगठनात्मक रूप प्रकट भेल। १९५६ ई० मे पटना मे डॉ० लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु' आ गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ द्वारा 'अंगभाषा-परिषद्' क नींव राखल गेल। १९६४ ई० मे डॉ० तेजनारायण कुशवाहा 'अंग प्रान्तीय साहित्य-सम्मेलन' आ १९७३ ई० मे 'अखिल भारतीय अंगिका भाषा सम्मेलन'क गठन कएलाह। एहि युगेँ सदानन्द

मिश्र 'साहित्यिक साँढ़' क हास्य-व्यंग्य संग्रह 'खोंड़-पतार' (१९६५), डॉ० तेजनारायण कुशवाहाक राजभाषा-पुरस्कृत सौर-महाकाव्य 'सवर्णा' (१९८४), डॉ० परमानन्द पाण्डेय क 'पछिया बयार', उचितलाल सिंहक चारि संकलन ('पंचरंग चोलऽ, 'माटी के चेत', 'रौदा के दूब', 'कानै छै लोर'), डॉ० भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' क 'घैरकों' आ 'खोरना', तथा प्रभातरंजन सरकार 'आनन्दमूर्ति' क 'प्रभात-संगीत' (५०१८ गीत) सन युगांतरकारी कृति समाजक सोझाँ आयल।

'मंचोत्तर युग' (१९८५ ई० सँ आब धरि) मे अंगिकाक अधिकार-यात्रा दिल्लीक गांधी शांति प्रतिष्ठान (१० अप्रैल, १९९४ ई०) धरि पहुँचल, जाहि सँ १९ जून, १९९५ कें तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालयक स्नातक स्तर पर अंगिकाक अध्ययन-अध्यापनक वैधानिक स्वीकृति प्राप्त भेल। एहि युग मे अनिरुद्ध प्रसाद विमलक विरह-काव्य 'कागा की संदेश उचारै', डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर' क 'ययाति', डॉ० अमरेन्द्रक दलितोत्थानपरक महाकाव्य 'गेना' तथा सुमन सूरोक भीष्म-चरितपरक महाकाव्य 'उर्ध्वरेता' आधुनिक अंगिकाक 'बृहत्त्रयी' महाकाव्यक रूप मे प्रतिष्ठित भेल।

3.4 काल-विभाजनक उपयोगिता आ सीमा

500–1220, 1220–1850, 1850 सँ आधुनिक, फेर मंच-पूर्व, मंच आ मंचोत्तर—ई ढाँचा पाठककेँ स्पष्ट दिशा दैत अछि। साहित्यिक इतिहासमे एहन कालरेखा आवश्यक होइत अछि। मुदा हर सीमा-वर्षक मापदण्ड समान नहि देखाइत अछि। किछु सीमा राजनीतिक-सांस्कृतिक, किछु भाषिक, किछु संस्थागत, किछु लेखक-पीढ़ीपर आधारित प्रतीत होइत अछि।

आलोचनात्मक संस्करणमे एक सारिणी चाही: “काल-नाम | आरम्भक कारण | अन्तक कारण | प्रमुख भाषिक लक्षण | प्रमुख संस्था | प्रमुख विधा | प्रमुख स्रोत | अनिश्चितता।” तखन काल-विभाजन वर्णनात्मक सुविधासँ आगाँ शोधयोग्य प्रतिपादन बनत।

4. पद्य-खण्डक गहिर समीक्षा

4.1 प्रारम्भिक आ मध्यकाल: परम्पराक पुनरुद्धार, प्रमाणक सावधानी

पद्य-खंड सिद्ध, सहजयान, नाथ-पन्थ, साधु-परम्परा, गीत-गाथा, लोकगीत आ लोकनृत्यक माध्यमेँ दीर्घ ऐतिहासिक निरन्तरता बनबैत अछि। साहित्यिक इतिहासक दृष्टिसँ ई साहसी परियोजना अछि, कारण मौखिकता आ सीमित लिखित साक्ष्यवाला परम्पराकेँ इतिहासक भीतर स्थान देल गेल अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ एहि खंडक विशालता रस, ध्वनि, छन्द, वक्रोक्ति आ लोक-प्रदर्शनक अध्ययन लेल बहुमूल्य अछि। पश्चिमी मौखिकता-अध्ययन आ सांस्कृतिक इतिहासक दृष्टिसँ सेहो ई महत्त्वपूर्ण अभिलेख अछि। मुदा प्राचीन कविक क्षेत्रीय भाषिक स्वामित्व, जन्मस्थान आ निश्चित तिथिक प्रश्न पर स्रोत-श्रेणी अनिवार्य अछि। पोथीक अपन उपसंहार एहि सावधानीक पुष्टि करैत अछि।

4.2 लोकगीत आ गीत-गाथा: साहित्यिक लोकाधार

पोथी लोकगीतकेँ “नीच” वा “असाहित्य” कहि बाहर नहि करैत। विवाह, संस्कार, श्रम, प्रेम, धार्मिक उत्सव, कथा-गाथा, लोकनृत्य आदि साहित्यिक इतिहासक अवयव बनैत अछि। ई भारतीय सहृदय-संस्कृति आ बाख्तिनीय बहुध्वनिताक संग अनुकूल अछि।

नव संस्करणमे एतय प्रदर्शन-सन्दर्भ आवश्यक होयत—के गबैत छथि, ककरा आगाँ, कोन अवसरपर, पुरुष/स्त्री भूमिका की, धुन आ नृत्यक सम्बन्ध की, पाठक रूपान्तर कतेक, मौखिक संस्करण कतेक। लोकगीतक मात्र लिखित पाठ ओकर आधा जीवन अछि; प्रदर्शन, शरीर, संगीत आ सामुदायिक स्मृति दोसर आधा।

4.3 आधुनिक पद्य: संस्थागत इतिहासक मूल्य

आधुनिक पद्य-खंडमे कवि-परिचय, साहित्यिक मंच, अधिवेशन, पीढ़ी, प्रकाशन आ सामाजिक अभिव्यक्तिक सम्बन्ध अधिक स्पष्ट अछि। ई भाग साहित्येतिहासक दस्तावेजी चरित्रकेँ मजबूत करैत अछि। पृ. 165 क आसपास आधुनिकता, भक्ति-परम्परा, प्रकृति-लोकरीति, नव मंच आ नूतन पीढ़ीक सन्दर्भ एकसंग भेटैत अछि।

मुदा कवि-सूची विशाल भेला कारण मूल्यांकन कतेको बेर जीवन-वृत्त + काव्यांश + प्रशंसात्मक टिप्पणी धरि सीमित रहि जाइत अछि। समीक्षात्मक

इतिहास लेल चयन-पद्धति चाही: प्रतिनिधि कवि किएक? काव्य-प्रवृत्ति कोन? भाषिक नवाचार की? छन्द-परिवर्तन की? परम्परासँ विच्छेद वा संवाद कोना? पाठक-स्वीकृति की? एहि प्रश्नक उत्तर संरचनात्मक रूपेँ देल जाए।

4.4 ऐतिहासिक उपादेयता आ मौलिकता

ऐतिहासिक आ साहित्यिक उपादेयताक दृष्टि सँ ई ग्रंथ अंगिका भाषा-आंदोलनक मील-स्तंभ थिक। एहि सँ पूर्व डॉ० अभयकान्त चौधरी आ डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर' क इतिहास-ग्रंथ हिन्दी भाषामे छल, मुदा प्रस्तुत पोथी स्वयं अंगिका भाषामे रचित अंगिका साहित्यक प्रथम सांगोपांग इतिहास थिक। लोक-साहित्यक क्षेत्र मे 'सती बिहुला', 'रेशमा', 'सलेस भगत' आ 'बाबा बिसू राउत' सन अमूल्य मौखिक प्रबंध-काव्यक पाठ-संरक्षण आ शास्त्रीय विवेचन एहि पोथीक सर्वाधिक मौलिक उपलब्धि मानल जाएत। स्वातंत्र्योत्तर काल मे 'अंगभाषा-परिषद्' सँ लऽ कऽ विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रम मे अंगिकाक प्रवेश धरिक संगठनात्मक संघर्षक दस्तावेजीकरण भावी शोधार्थिसभ लेल अमूल्य सामग्री अछि।

5. गद्य-खण्डक स्वरूप, विधागत विकास आ गहिर समीक्षा

डॉ० अमरेन्द्र द्वारा लिखित खंड-२: गद्य (पृष्ठ १४९-२६०) अंगिका गद्यक विविध विधाक प्रादुर्भाव, विकास आ प्रवृत्तिक सांगोपांग इतिहास प्रस्तुत करैत अछि। लेखक अंग-जनपदक सांस्कृतिक अवनति आ पुनर्जागरणक समाजशास्त्रीय विवेचन करैत बीसमीं शतीक गद्य-साहित्यक रूपरेखा निर्धारित कएने छथि।

गद्य-विधा	प्रतिनिधि साहित्यकार / संपादक	प्रमुख कृति / मील-स्तंभ	विधागत वैशिष्ट्य आ अंतर्वस्तु
कथा-साहित्य (कहानी, व्यंग्य, अणुकथा)	अनूपलाल मंडल, डॉ० वचनदेव कुमार, डॉ० कुमार विमल,	'फूल फूलैलै' (सं० 'चकोर'), 'दुपल्लो',	ग्रामीण शोषण, कृषक-जीवनक संत्रास, मध्यवर्गीय

गद्य-विधा	प्रतिनिधि साहित्यकार / संपादक	प्रमुख कृति / मील-स्तंभ	विधागत वैशिष्ट्य आ अंतर्वस्तु
	डॉ० मधुकर गंगाधर, डॉ० अमरेन्द्र।	'अंग-माधुरी' आ 'आंगी' मे प्रकाशित सैकड़ो कथा।	पाखंड आ सामंती अवशेषक विरुद्ध जनवादी आक्रोश।
उपन्यास	अनूपलाल मंडल, डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर', डॉ० अमरेन्द्र।	'नया सूरज नया चान' (मंडल, १९९१), 'विशाखा' ('चकोर'), 'जटायु' (अमरेन्द्र), 'छाहुर', 'सुभद्रांगी', 'परबतिया', 'अन्तहीन वैतरणी'।	सामाजिक चेतना, लोक-गाथाक औपन्यासिक पुनर्सृजन, नारी-मुक्ति आ आंचलकताक सशक्त रूपायन।
नाटक एवं रंगमंच	डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर', डॉ० अमरेन्द्र, आचार्य आनन्द शंकर माधवन।	'किसान कें जगावों', 'सर्वोदय समाज', 'सिंहासन का संन्यास', 'पूस की रात' (रूपांतर),	आकाशवाणी भागलपुरसँ प्रसारित रेडियो नाटक आ पारसी-ग्रामीण शैलीक रंगमंचीय नाटक;

गद्य-विधा	प्रतिनिधि साहित्यकार / संपादक	प्रमुख कृति / मील-स्तंभ	विधागत वैशिष्ट्य आ अंतर्वस्तु
		'फूलवा कटोरवा'।	कुरीति-निवारण।
आत्मपरक साहित्य (जीवनी, संस्मरण)	डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर', गुरेश मोहन घोष 'सरलऽ।	'एक साहित्यकार परिवार', 'हलधर बाबा', 'साहित्य सन्तः अभयकान्त', 'जो रे तहिया!' ('सरलऽ)।	स्वतंत्रता संग्रामक संस्मरण, जनपदक पूर्ववर्ती मनीषीक आख्यान आ आत्मानुभूतिक जीवंत दस्तावेज।
निबंध आ आलोचना	डॉ० डोमन साहु 'समीर', डॉ० अभयकान्त चौधरी, डॉ० अमरेन्द्र।	'समीक्षात्मक निबंध' (समीर), 'अंगिका साहित्य का इतिहास' (चौधरी एवं चकोर), 'सृष्टि आपकी दृष्टि मेरी'।	भाषावैज्ञानिक नियमन, ग्रंथ-मूल्यांकन, रस-सिद्धांतक अनुप्रयोग आ जनपदीय विमर्शक सैद्धांतिकी।
अभिज्ञान-	डॉ० डोमन साहु	'अंगिका-हिंदी	भाषाक स्तरीकरण,

गद्य-विधा	प्रतिनिधि साहित्यकार / संपादक	प्रमुख कृति / मील-स्तंभ	विधागत वैशिष्ट्य आ अंतर्वस्तु
साहित्य (कोश आ व्याकरण)	'समीर', डॉ० परमानन्द पाण्डेय, डॉ० अभयकान्त चौधरी।	शब्दकोश' (समीर), 'अंगिका व्याकरण' (समीर), 'प्रथम अंगिका व्याकरण' (पाण्डेय)।	मानक वर्तनी-विधान, शब्द-संपदाक संरक्षण आ पुरातात्त्विक अन्वेषण।
पत्र-पत्रिका-साहित्य	डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर', डॉ० अमरेन्द्र, डॉ० तेजनारायण कुशवाहा।	'अंग-माधुरी' (मासिक, सं० चकोर, निरंतर ४६ वर्ष), 'आंगी' (सं० अमरेन्द्र), 'अंगप्रिया' , 'नवकल्प'।	जनपदीय अस्मिताक संवाहक, नवोदित प्रतिभाक उन्मेषक आ समेकित साहित्यिक मंच।

5.1 सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक भूमिका: साहित्यक जमीन

डॉ० अमरेन्द्रक गद्य-खंड अंग-जनपदक १८५७क विद्रोह, अंग्रेजी शासनक विरुद्ध महेन्द्र गोपक क्रांतिक बलिदान, विभाजनकालीन सांप्रदायिक हिंसा (तारापुर-भागलपुर), आ स्वतंत्रता-पश्चात राजनीतिक उपेक्षाकेँ साहित्यक पृष्ठभूमिक रूपमे विस्तारसँ राखैत अछि। "बिकौआ" जकाँ सामाजिक कुप्रथाक चर्चा आ जातीय महासभासिनीक उदयक विवेचन साहित्येतर सामाजिक

इतिहासकेँ बुझबामे सहायक अछि, यद्यपि ई अंश कतहु-कतहु साहित्य-समीक्षासँ बेसी समाजशास्त्रीय निबंध बनि जाइत अछि।

कथा-साहित्यक खंडमे फादर एंतोनियोकरक "नामी गोस्पेल" (१८शतीक अंत) आ ग्रियर्सनक भाषा-सर्वेक्षणमे संकलित "उड़ाऊ पुत्र"क दृष्टांतक अंगिका रूपांतरणकेँ आदि गद्यक प्रमाणक रूपमे प्रस्तुत करब भाषावैज्ञानिक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण अछि। कहानी, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा आदिक सूचीकरण विस्तृत अछि, मुदा समालोचनात्मक विश्लेषणसँ बेसी सूचीकरण (नाम, कृति, संक्षिप्त परिचय) पर बल देल गेल बुझना जाइत अछि — ई एहि प्रकारक "प्रारंभिक इतिहास"मे स्वाभाविक सीमा थिक।

गद्य-खंडक आरम्भिक पृष्ठ 149–162 साहित्यसँ पहिने समाज, राजनीति, शिक्षा आ अर्थव्यवस्था पर केन्द्रित अछि। पृ. 149 पर औपनिवेशिक शासन, विद्रोह, सामन्ती व्यवस्था आ स्थानीय राजनीति; पृ. 153 पर सामाजिक सुधार, जाति, शिक्षा, कन्या-विद्यालय आ स्त्री-सुधार; पृ. 157 पर शिक्षा-नीति आ भाषिक प्रतिष्ठा; पृ. 161 पर उद्योग, रेशम, वन, कृषि आ आर्थिक संकटक चर्चा भेटैत अछि।

ई साहित्येतिहासक बड़ी उपलब्धि अछि, कारण साहित्य हवा मे जन्म नहि लैत। मुदा ई पृष्ठभूमि अगिला साहित्यिक रूपसभसँ अधिक प्रत्यक्ष सम्बन्ध माँगैत अछि। उदाहरणार्थ, आर्थिक संकट कथाक विषय कोना बनल? शिक्षा-विस्तार लेखक-वर्ग कोना बदललक? भाषा-राजनीति कथा/नाटकक शब्द-चयनपर की प्रभाव देलक? एहन कारण-सूत्र अधिक विकसित हो सकैत छल।

5.2 कथा-साहित्य: विषयगत विस्तार आ निकट-पाठक आवश्यकता

कथा-खंड आधुनिक अंगिका कहानीक उद्भव, मुद्रित संग्रह, लेखक आ प्रवृत्तिक विस्तृत परिचय दैत अछि। पृ. 169 पर आरम्भिक कहानी-संग्रह आ लेखकक चर्चा, पृ. 177 पर सामाजिक संघर्ष, नारी-जागृति, वातावरण, प्रेम, शैलीगत भेद आदि विषयगत समूह, आ आगाँ अनेक कथाकारक रचनाक परिचय भेटैत अछि।

कथा-इतिहासक शक्ति—स्मृति-संरक्षण। सीमा—निकट-पाठ। पोथी विषयक आधारपर समूह बनबैत अछि, मुदा कथन-दृष्टि, समय-संरचना, अविश्वसनीय

कथाकार, संवाद, प्रतीक, विडम्बना, अन्त, पात्र-निर्माण, लोकभाषिकता आ पाठकीय तनावक सूक्ष्म विश्लेषण कम अछि। पाश्चात्य कथाविज्ञान आ भारतीय ध्वनि-वक्रोक्ति मिलि एहि भागकेँ बहुत समृद्ध कऽ सकैत अछि।

5.3 उपन्यास: विधागत आत्मबोध

पृ. 185 पर उपन्यासक तत्व रूपेँ कथावस्तु, पात्र, संवाद, देश-काल, शिल्प आ उद्देश्यक चर्चा अछि; घटना-प्रधान, चरित्र-प्रधान, वातावरण-प्रधान आदि वर्गीकरण सेहो देल गेल अछि। ई दर्शबैत अछि जे ग्रन्थकार विधागत सिद्धान्तक आधारपर सामग्री व्यवस्थित करबाक प्रयत्न करैत छथि।

पृ. 193 पर ‘अन्तहीन वैतरणी’क कथा-सार स्त्रीक जीवन-संघर्ष, विवाह, अपमान आ प्रतिरोधक प्रश्न खोलैत अछि। एहन उपन्यासपर स्त्रीवादी, समाजशास्त्रीय, कथावैज्ञानिक आ ध्वनि-दृष्टिक संयुक्त विश्लेषण सम्भव अछि। पोथी कथा-सार दैत अछि; आलोचनात्मक संस्करण एहि पाठक रूप-शिल्प आ दृष्टिकोणक विश्लेषण जोड़ि सकैत अछि।

5.4 नाटक आ रेडियो-नाटक: माध्यमिक इतिहासक विशिष्ट उपलब्धि

नाट्य-खंडक विशेष महत्त्व रेडियो-नाटकक दस्तावेजीकरणमे अछि। पृ. 209 पर प्रसारण-वर्ष, लेखक, आकाशवाणी भागलपुर, रेडियो-नाटक, रूपान्तर आ धारावाहिक प्रस्तुति सम्बन्धी सामग्री अछि। ई साहित्येतिहासकेँ मुद्रित पुस्तकक सीमा पार करबैत अछि।

भारतीय नाट्यशास्त्रीय दृष्टिसँ एतय अभिनय, वाचिकाभिनय, संगीत, संवाद, पात्र-विन्यास, रस-निष्पत्ति आ श्रोता-अनुभवक चर्चा हो सकैत छल। माध्यम-अध्ययनक दृष्टिसँ रेडियो नाटकक ध्वनि, मौन, संगीत, प्रसारण समय आ श्रोतृ-वर्ग महत्त्वपूर्ण अछि। पोथी स्रोत-सूचना दैत अछि; प्रदर्शन-विवेचन अगिला शोधक विषय बनैत अछि।

5.5 आत्मपरक साहित्य: निजी जीवनसँ सार्वजनिक इतिहास

पृ. 215–227 क आत्मपरक खंड आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण आदि रूप समेटैत अछि। पृ. 217 पर आत्मकथा-साहित्यक सीमित उपलब्धता स्वीकार कएल गेल अछि आ विशिष्ट आत्मकथा/जीवनीक उल्लेख अछि। एहि रूपक साहित्येतिहासमे समावेश महत्त्वपूर्ण अछि, कारण लेखकक जीवन, संस्था,

शिक्षा, पेशा, भाषा-चेतना आ सामाजिक नेटवर्कक प्रत्यक्ष सामग्री एतहि सँ भेटैत अछि।

मुदा आत्मकथा तथ्यक पारदर्शी खिड़की नहि। स्मृति चयन करैत अछि, आत्मछवि बनबैत अछि, मौन रखैत अछि, पछिलका अनुभवसँ पुरान घटना पुनर्लिखैत अछि। तें आत्मपरक स्रोतकेँ अन्य अभिलेखसँ मिलान करब बहुप्रमाणीय पद्धतिक आवश्यक शर्त अछि।

5.6 निबन्ध: विचार-जगतक विस्तार

निबन्ध-खंड साहित्यिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, अनूदित आ विविध विषयक लेखनक चर्चा करैत अछि। पृ. 225 पर निबन्धकारक चिंतन, विवेचन, ललित निबन्ध, अनुवादित निबन्ध आ सामाजिक विषयक सूची देखाइत अछि। एहि सँ स्पष्ट अछि जे अंगिका गद्य मात्र कथा-मनोरंजन धरि सीमित नहि, विचार-विमर्शक माध्यम सेहो बनल।

निबन्धक आलोचनामे पोथी विषय-विस्तारक मूल्यांकन करैत अछि; मुदा तर्क-संरचना, निबन्धकारक आवाज, विडम्बना, आत्मपरकता, सार्वजनिक विवेक, भाषा-राजनीति आ गद्य-लयक सूक्ष्म परीक्षण सीमित अछि। एतय मॉन्तेनसँ आधुनिक भारतीय निबन्ध-परम्परा धरि तुलनात्मक विधा-अध्ययन सम्भव अछि, मुदा नव संस्करणमे बाहरी तुलना स्रोतसहित देल जाए।

5.7 आलोचना: आत्मचेतनाक आरम्भ

आलोचना-खंड (पृ. 228 सँ) अंगिका साहित्यक अपन समीक्षा-परम्पराक निर्माणक संकेत दैत अछि। पृ. 233 पर परिचयात्मक आलोचना, तुलनात्मक आलोचना, काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ आ छन्द-विवेचनक उल्लेख अछि। पोथी ईहो कहैत अछि जे वैज्ञानिक आलोचनाक विकास सीमित अछि आ नव पीढ़ीक आवश्यकता अछि। ई आत्मनिरूपण उल्लेखनीय अछि।

एहि खंडक आधारपर एक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकलैत अछि—साहित्यिक समुदाय परिपक्व तखन होइत अछि जखन ओ मात्र रचना नहि, अपन रचनाक मूल्यांकन-पद्धति सेहो विकसित करैत अछि। वर्तमान समीक्षा एहि ऐतिहासिक मागक उत्तर रूपेँ भारतीय-पाश्चात्य-समानान्तर तीन स्तरक संयुक्त कसौटी प्रस्तावित करैत अछि।

5.8 लोकसाहित्य: मौखिकता केन्द्रीय, पर दस्तावेजी विधि आवश्यक

लोकसाहित्यक स्वतंत्र खंड देब पोथीक व्यापक दृष्टिक प्रमाण अछि। लोककथा, लोकोक्ति, मुहावरा, गीत, गाथा आदि सामग्री क्षेत्रीय स्मृति आ सामाजिक भाषाक मुख्य भंडार छथि। साहित्यक लिखित केन्द्रवादकेँ एहि समावेशसँ चुनौती भेटैत अछि।

नव संस्करणमे लोकसाहित्य लेल क्षेत्रकार्यक मानक अपनाओल जाए: संग्रहक स्थान, तिथि, कथक/गायकक नाम वा गोपनीय संकेत, आयु, लिंग, सामाजिक पृष्ठभूमि, प्रदर्शन प्रसंग, ध्वनि-अभिलेख, पाठांतर, सम्पादकीय हस्तक्षेप। बिना एहि विवरणक मौखिक पाठ मुद्रित भेला पर ओकर स्रोत-जीवन अस्पष्ट रहि जाइत अछि।

5.9 अभिज्ञान-साहित्य: साहित्यक सीमाक विस्तार

पृ. 241 सँ “अभिज्ञान-साहित्य” इतिहास, भूगोल, भाषा-शास्त्र, लिपि, कृषि, धर्म, चिकित्सा, विज्ञान आदि विषयक लेखन समेटैत अछि। पृ. 249 पर कृषि-साहित्य, आध्यात्मिक लेखन, विज्ञान-संबंधी पुस्तक आदिक उल्लेख भेटैत अछि। ई वर्ग पारम्परिक “रचनात्मक साहित्य”क सीमा बहुत व्यापक करैत अछि।

ई विस्तार सांस्कृतिक इतिहास लेल उपयोगी अछि, मुदा अवधारणात्मक स्पष्टता चाही। सभ ज्ञान-पुस्तक “साहित्य” किएक? कसौटी भाषा-शैली अछि, भाषिक योगदान, सामुदायिक ज्ञान-परम्परा, कि मात्र अंगिकामे लिखल होयब? जँ अभिज्ञान-साहित्यक परिभाषा स्पष्ट कएल जाए तऽ ई पोथीक मौलिक योगदान बनि सकैत अछि; अन्यथा विधागत सीमा धुँधली रहत।

5.10 पत्र-साहित्य आ पत्र-पत्रिका: सार्वजनिक क्षेत्रक इतिहास

पत्र-साहित्य आ पत्र-पत्रिका सम्बन्धी अन्तिम खंड साहित्यिक सार्वजनिकताक संरचना समझबाक लेल अनमोल अछि। पृ. 257 पर दैनिक/साप्ताहिक स्तम्भ, समाचार-पत्र, अंगिका कविता-कथा प्रकाशन, नियमित स्तम्भ, रिपोर्टाज आ ललित निबन्धक चर्चा अछि। ई सामग्री देखबैत अछि जे भाषा मात्र पुस्तकमे नहि, आवधिक सार्वजनिक संवादमे जीवित रहैत अछि।

हाबर्मासीय सार्वजनिक क्षेत्र, बाख्तिनीय बहुध्वनिता आ पाठक-स्वीकृति तीनू दृष्टिसँ ई खंड गहिर शोधक आधार बनि सकैत अछि। नव संस्करणमे प्रत्येक पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन-काल, सम्पादक, स्थान, आवृत्ति, उपलब्ध अंक, संग्रहालय/पुस्तकालय, डिजिटल प्रतिक ठिकाना, प्रमुख बहस आ पाठकीय पत्रक सूची देल जाए।

5.11 उपसंहार: पोथीक आत्मसमीक्षात्मक आयाम

पृ. 259–260 क उपसंहार विशेष महत्त्व रखैत अछि। एतय पोथी साहित्यकेँ सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आ परिवेशीय प्रभावसँ बदलैत मानैत अछि; प्राचीन सिद्ध-कवि आ कबीर सम्बन्धी भ्रमक सावधानी देत अछि; आधुनिक गद्यक विविध विधाक विकास स्वीकारैत अछि; आ राजनीति द्वारा संस्कृति-साहित्यक उपयोग पर चेतावनी दैत अछि।

एहि कारण उपसंहारकेँ मात्र समापन नहि, पद्धतिक पुनर्जन्म मानल जा सकैत अछि। जँ नव संस्करण एहि आत्मसमीक्षाकेँ आरम्भिक नियम बनाय—प्रत्येक विवादित दाबी संग स्रोत, प्रतिपक्ष आ अनिश्चितता—तऽ पोथी अभिलेखीय महत्त्वसँ आलोचनात्मक प्रामाणिकताक अगिला स्तरपर पहुँचि सकैत अछि।

6. भारतीय काव्यशास्त्रीय आ प्रमाणमीमांसात्मक समीक्षा

6.1 रस-सिद्धान्त

भरतमुनि आ अभिनवगुप्तक परम्परामे रस साहित्यिक अनुभूतिक रूपान्तरित, साधारणीकृत स्वरूप अछि। ‘अंगिका साहित्य केरौं इतिहास’ लोकगीत, सिद्ध-पद, नाथ-पन्थ, साधु-काव्य, प्रेमगीत, विवाहगीत, सामाजिक कविता, कथा, नाटक आ अनेक लोकगाथाक भरपूर सामग्री दैत अछि। एहि कारण रस-विवेचन लेल पोथी अत्यन्त सम्पन्न सामग्री-संग्रह बनि सकैत अछि।

मुदा ग्रन्थकारक टिप्पणी प्रायः विषय, कविक जीवन, सामाजिक महत्त्व, भाषा, शैली वा साहित्यिक स्थानपर केन्द्रित अछि। स्थायीभाव, विभाव, अनुभाव, संचारीभाव, रसाभास, भावान्तर वा रस-संक्रमणक पद्धतिगत विश्लेषण कम भेटैत अछि। उदाहरणार्थ लोकगाथामे वीर, करुण, भक्ति, शृंगार आ अद्भुतक मिश्रित संभावना अछि, कथा-खंडमे नारी-अन्तर्मन, दमन, परिवार,

प्रेम आ सामाजिक संघर्षक प्रसंग अछि (पृ. 177 आदि), मुदा एहि भाव-संरचनाक रसात्मक गहिराई प्रायः खुलल नहि अछि।

एहि आधारपर भारतीय रस-दृष्टिसँ निर्णय ई होइत अछि—पोथी रस-समीक्षा नहि, रस-समीक्षा लेल विशाल प्राथमिक भंडार अछि। नव संस्करणमे चुनल दस-पन्द्रह प्रतिनिधि पाठक सूक्ष्म रस-विश्लेषण जोड़ला सँ साहित्यिक इतिहास मात्र नाम-पाँजि नहि रहत, अनुभूतिक इतिहास सेहो बनत।

ग्रंथमे उद्धृत पद्य-नमूनासिनीकेँ रस-निष्पत्तिक सूत्र (विभाव-अनुभाव-व्यभिचारिभाव-संयोगसँ रसक आस्वाद) सँ जाँचला पर एकटा रोचक चित्र उभरैत अछि। सिद्ध सरहपाक दोहा — "सहजे सहजहु बूझै जब्बे, अंतराल गति टूटै तब्बें। जब्बे मणु अंथु मणु जाइ, तनु टुट्टइ बन्धन..." — मे वैराग्य-भावक प्राधान्य अछि, जे शांत-रसक अन्तर्गत आबए योग्य अछि; एतय स्थायीभाव 'निर्वेद' शरीर-मन-बंधनक नश्वरताक विभावसँ पुष्ट होइत अछि। शांतिपाक "भव निर्वाणे पड़ह मादला..." पद सेहो भव-सागर पार करबाक रूपक-योजनासँ शांत-रसक दिस झुकल अछि, यद्यपि डोम्बी-विवाहक लौकिक बिम्ब-योजनासँ एहिमे शृंगारक छाया सेहो घुरल-मिझल अछि — जे सहजयानी साधना-काव्यक चरित्र-लक्षण थिक। आधुनिक युगमे श्रीनन्दन शास्त्रीक गीत "केकरा देखैयो सखि..." मे सखि-सम्बोधन-शैलीक माध्यमे करुण रसक उन्मेष स्पष्ट अछि — दुनियाँक आँख पाथर बनि गेलाक बिम्ब आलंबन-विभावक (देश-कालक विनाश) संग जुड़ि करुणकेँ पुष्ट करैत अछि।

मुदा एहि रस-विश्लेषणसँ एकटा आलोचनात्मक निष्कर्ष सेहो निकलैत अछि, जकरा ग्रंथ स्वयं आपन निष्कर्ष-खंडमे (पृष्ठ १४३) स्वीकार करैत अछि — कविसिनीक आकर्षण "आंतरिक सौंदर्यक अपेक्षा वाह्य सौंदर्य दिस बेसी" अछि। भरतमुनिक रस-सिद्धान्तक दृष्टिएँ ई अंतर "भाव-काव्य" आ "रस-सिद्ध काव्य" केर बीचक अंतर थिक — भाव मात्र उदय भऽ सकैत अछि, रस-चमत्कारक स्तर धरि पहुँचब सभ रचनाक भाग्यमे नहि होइत अछि। एहि ग्रंथमे संकलित बहुतांश आधुनिक कविता, अपन इतिवृत्तात्मकताक (आत्मकथात्मकताक) कारणें, भावोदयक स्तरपर रहि जाइत अछि, रस-

निष्पत्तिक चरम स्तर धरि विरले पहुँचैत अछि — ई अवलोकन ग्रंथक स्वयंक स्वीकृतिसँ सेहो पुष्ट होइत अछि।

6.2 ध्वनि-सिद्धान्त आ व्यंजना-शक्ति

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्त काव्यक श्रेष्ठता प्रत्यक्ष वाच्यार्थसँ आगाँ व्यंजित अर्थमे देखैत अछि। समीक्ष्य पोथी अक्सर कविताक विषय अथवा कथाक सामाजिक संदेश बतबैत अछि; मुदा पाठक अनकहल सांस्कृतिक आशय, मौन, प्रतीक, विडम्बना, संकेत, निषेध, जातीय-सामाजिक स्मृति, स्त्रीक अप्रकट प्रतिरोध, आ भाषिक स्वाभिमानक सूक्ष्म व्यंजना पर कम ठहरैत अछि।

विशेषतः पृ. 177 पर स्त्री-सम्मान, नारी-उत्पीड़न, नारी-जागृति आ अन्तर्मनक कथा-प्रवृत्तिक उल्लेख अछि। एहन रचनामे ध्वनि-दृष्टि पूछत—प्रत्यक्ष कथानकक पाछाँ पितृसत्ता, मौन, शरीर, प्रतिष्ठा, घर-बहिरक सीमा, सामाजिक भय आ आत्मस्वर कोना व्यंजित होइत अछि? पोथी विषयक अस्तित्व दर्ज करैत अछि; ध्वनि-विश्लेषण ओकर साहित्यिक ऊर्जा खोलि सकैत छल।

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्त — "काव्यस्यात्मा ध्वनिः" — केर कसौटीपर ग्रंथक एकटा पद्धतिगत प्रयोग विशेष रूपें परीक्षणीय अछि। नाथ-पंथी काव्यक अध्यायमे (पृष्ठ २६) गोरखनाथक मूल पद "हसिबा, खेलिबा धरिबा ध्यान, अहनिसि करिबा ब्रह्मा गियान..." कैं "हँसबों, खेलबों, धरबों धियान..." रूपमे अंगिका व्याकरणिक रूपमे रूपांतरित कऽ दुनूक भाषिक सामीप्य देखाओल गेल अछि। मुदा ध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिएँ ई प्रयोग एकटा मौलिक भ्रम पर आधारित अछि — काव्यक आत्मा शब्दक व्याकरणिक रूप (रूपतत्व) मे नहि, बल्कि ओहि विशिष्ट शब्द-विन्यास द्वारा उत्पन्न व्यंजना (वस्तुध्वनि, अलंकारध्वनि आ रसध्वनि) मे बसैत अछि, जे मूल उच्चारणक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक सन्दर्भसँ अभिन्न रूपें जुड़ल रहैत अछि। एकटा पदकैं आधुनिक भाषाक रूपतत्वमे "अनुवादित" कऽ पुनः प्रस्तुत करब — भले ओ अनुवाद व्याकरणिक दृष्टिएँ कतेक निकट किएक नहि होउ — मूल रचयिताक भाषिक अस्मिताक प्रमाण नहि बनि सकैत अछि, किएक तँ शब्द-शक्ति (अभिधा-लक्षणा-व्यंजना) कऽ स्रोत सदिखन मूल उच्चारण थिक, पश्चातवर्ती रूपांतरण

नहि। ई तर्क-पद्धति ओहि भ्रमक निकट अछि, जतय रूप-सादृश्यकेँ स्रोत-प्रमाण मानि लेल जाइत अछि।

6.3 वक्रोक्ति

कुन्तकक वक्रोक्ति-सिद्धान्त अनुसार काव्यत्व साधारण कथनक असाधारण अभिव्यक्तिमे उभरैत अछि। अंगिका साहित्यक इतिहासमे लोकभाषा, देशज रूप, हास-व्यंग्य, कथोपकथन, लोकछन्द, कहावत, गीत-गाथा, रेडियो-भाषा आ कथा-शैलीक अनेक संकेत भेटैत अछि। पृ. 177 पर कहानीकारसभक वर्णनात्मक, संस्मरणात्मक आ अन्य शैलीगत भेदक चर्चा सेहो अछि; पृ. 260 पर गद्यक “शैली-शिल्प”क आधुनिकताक उल्लेख अछि।

मुदा वक्रोक्ति-दृष्टिसँ शब्द-विन्यास, पद-वक्रता, वाक्य-वक्रता, प्रसंग-वक्रता आ प्रबन्ध-वक्रताक उदाहरणात्मक परीक्षा कम अछि। खास कऽ क्षेत्रीय भाषाक साहित्येतिहासमे ई आवश्यक अछि, कारण भाषा-विशिष्ट काव्यत्व मात्र “ई अंगिकामे लिखल अछि” सँ सिद्ध नहि होइत; भाषाक विशेष अभिव्यक्ति-शक्ति पाठक सूक्ष्म बनावटमे देखाबय पड़ैत अछि।

6.4 रीति, गुण, अलंकार आ शैली

वामनक रीति-दृष्टि आ उत्तरवर्ती गुण-विवेचन साहित्यिक भाषाक रचना-स्वभावकेँ केन्द्रमे आनैत अछि। पोथी अनेक ठाम “भाषा”, “शैली”, “शिल्प”, “वर्णन”, “संवाद”, “धारावाहिकता” आदि शब्दक प्रयोग करैत अछि। गद्य-खंड कथा आ उपन्यासक भेद करत समय कथावस्तु, पात्र, संवाद, देश-काल, शिल्प आ उद्देश्य सन अवयवक उल्लेख करैत अछि (पृ. 185)। ई भारतीय रीति-विचारक आधुनिक व्यावहारिक समकक्ष जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि।

सीमा ई जे शैलीक मूल्यांकन लेल स्थिर कसौटी नहि बनाओल गेल अछि। कोनो लेखक “सरल”, “प्रभावी”, “आधुनिक”, “वर्णनात्मक” किएक छथि—एहि निर्णयक भाषिक प्रमाण अधिक चाही। नव संस्करणमे शब्दसंपदा, वाक्यलम्बाइ, संवाद-घनत्व, कथाकारक दृष्टिबिन्दु, अलंकारिकता, लोक-रूपक, विदेशी शब्द आ क्षेत्रीय रूपक तुलनात्मक सारिणी उपयोगी होयत।

वामनक रीति-सिद्धान्त — "रीतिरात्मा काव्यस्य" — गुण-त्रय (माधुर्य, ओज, प्रसाद) केर आधारपर काव्य-शैलीक वर्गीकरण करैत अछि। ग्रंथमे संकलित लोक-छन्दाश्रित आधुनिक कविता (जेना श्रीनन्दन शास्त्रीक गीत, जे लोक-रंगमे रँगल कहल गेल अछि) प्रसाद-गुण-प्रधान शैली देखबैत अछि — सहज बोधगम्यता आ लोक-प्रचलित शब्दावली एकर विशेषता थिक, ओज-गुणक गाम्भीर्य एतय अपेक्षित सेहो नहि अछि। शांतिपाक पदमे "भव-निर्वाण", "मन-पवन-वेणी", "करण्ड-कशाला" जकाँ रूपक-अलंकारक सघन प्रयोग देखल जाइत अछि, जकरा ग्रंथ स्वयं "रूपक केरो योजना" कहि रेखांकित करैत अछि (पृष्ठ २५) — ई भाषिक-साहित्यिक अवलोकन प्रामाणिक आ स्वागतयोग्य अछि। तथापि आधुनिक कवि-परिचय-खंडमे (पृष्ठ ६२-१४१) अलंकार-विश्लेषण प्रायः अनुपस्थित अछि; कवि-परिचय जीवनी-आधारित रहि जाइत अछि, शैली-वैशिष्ट्यक सूक्ष्म विवेचन दुर्लभ अछि — ई एकटा साहित्येतिहासक अपेक्षा एकटा जीवनी-कोशक बेसी निकट पहुँचि जाइत अछि।

6.5 औचित्य

क्षेमेन्द्रक औचित्य-सिद्धान्त साहित्यक प्रत्येक अवयवक प्रसंगानुकूलता पर बल दैत अछि। साहित्येतिहास लेल औचित्यक आधुनिक रूप ई प्रश्न बनैत अछि—जे कवि, रचना वा भाषा-रूपकेँ जे कालमे राखल गेल अछि, ओकर तिथि, भाषिक अवस्था, सामाजिक संस्था आ उपलब्ध पाठ ताहि स्थानक अनुकूल अछि की नहि?

एहि कसौटीपर पोथीक आधुनिक भाग प्रायः अधिक सुरक्षित देखाइत अछि, कारण पत्रिका, प्रकाशन-वर्ष, अधिवेशन, आकाशवाणी, लेखक-परिचय आ मुद्रित पुस्तकक उल्लेख भेटैत अछि। प्राचीन भागमे जन्मस्थान, सिद्ध-परम्परा, भाषिक स्वामित्व, आरम्भिक तिथि आदि विषय अधिक सावधानी माँगैत अछि। अन्तिम उपसंहारक आत्मस्वीकृति (पृ. 259) स्वयं देखबैत अछि जे किछु प्राचीन स्थान-सम्बन्धी निष्कर्ष पुनर्परीक्षणीय छथि। औचित्य-दृष्टि एहि कारण पोथीक निन्दा नहि, ओकर आलोचनात्मक पुनर्संयोजनक साधन अछि।

क्षेमेन्द्रक औचित्य-सिद्धान्त — "औचित्यं रसासिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्" — कैं मात्र काव्य-रचनाक भीतर सीमित नहि राखि, ऐतिहासिक/समालोचनात्मक कथनक औचित्यपरो प्रसारित कएल जा सकैत अछि। एहि दृष्टिएँ, कोनो ऐतिहासिक प्रस्थापना तखने "सानुचित" मानल जाइत अछि, जखन ओकरा समुचित विभाव अर्थात् प्रमाण-सामग्रीक समर्थन प्राप्त रहै। उपसंहारमे (पृष्ठ २५९) प्रस्तुत ई दावा जे महाकवि विद्यापतिक जन्म उत्तरी भागलपुरक एक भाग सहरसामे भेल, आ हुनक पिता ओइनवार वंशक राजा गणेश्वरक सभासद रहथि — ई एकटा गुरुतर औचित्य-भंगक उदाहरण थिक, किएक तँ मैथिली साहित्यक सर्वाधिक प्रतिष्ठित आ बहु-प्रमाणित कविक जन्मस्थान-सम्बन्धी एहि क्रांतिकारी प्रस्थापनाकेँ बिना कोनो प्रमाण-सामग्रीक उद्धरणक, मात्र एक्के वाक्यमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। औचित्य-सिद्धान्तक भाषामे कहल जाय तँ, दावाक "भार" (गुरुत्व) आ ओकरा समर्थन देनिहार विभावक "हल्कापन" (अभाव) केर बीच स्पष्ट असंतुलन अछि — जे कोनो सुगठित ऐतिहासिक तर्ककेँ "रस-असिद्ध" अर्थात् अप्रतीतिकर बना दैत अछि।

6.6 सहृदय, साधारणीकरण आ सामुदायिक स्मृति

भारतीय काव्यशास्त्रमे सहृदय मात्र निष्क्रिय पाठक नहि; ओ संस्कार, संवेदना आ अर्थग्रहणक सक्रिय सहभागी अछि। अंगिका साहित्यक इतिहास लोकगीत, कहावत, लोकनाटक, लोकगाथा, पत्रिका, रेडियो आ सार्वजनिक साहित्यिक मंचकेँ समाविष्ट करैत अछि। एहि कारण पोथीमे सहृदयक सामाजिक रूप निहित अछि—गामक श्रोता, विवाहगीत गबनिहार स्त्री, रेडियो श्रोता, पत्रिका-पाठक, अधिवेशनक सहभागी, स्थानीय शिक्षक, लेखक-मंडली।

मुदा वास्तविक पाठक-अध्ययन, संस्करण-संख्या, प्रसार-क्षेत्र, पाठकीय पत्र, वाचन-परम्परा, स्त्री-पुरुष पाठक अनुपात, ग्राम-नगर भेद आदि आँकड़ा प्रायः नहि अछि। फलतः सामुदायिक स्वीकृतिक चित्र उपस्थित अछि, परिमाणित पाठक-इतिहास नहि।

6.7 नव्य-न्यायक प्रमाण-मीमांसा

मिथिलाक अपन गौरवशाली नव्य-न्याय परम्परा (गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणि आदिमे प्रतिष्ठित प्रमाण-मीमांसा) प्रमाणकेँ चारि कोटिमे बाँटैत अछि — प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द/आगम। एहि कसौटीपर उपसंहारमे प्रस्तुत व्युत्पत्तिमूलक तर्क — "काशी > कासड़ी (भागलपुर)" आ "मुद्गलपुर > मुद्गर > मगहर > मुंगेर" (पृष्ठ २५९) — द्वारा कबीरकेँ अंग-क्षेत्रसँ जोड़बाक प्रयासकेँ जाँचल जाय तँ ई मात्र ध्वन्यात्मक सादृश्यपर आधारित अछि, जकरा नैयायिक भाषामे "साधर्म्य-वैधर्म्यमूलक हेत्वाभास" कहल जा सकैत अछि। कोनो सामान्य नियम (व्याप्ति) — जे "स्थान-नामक ध्वन्यात्मक सादृश्य सदिखन ऐतिहासिक तादात्म्यक सूचक होइत अछि" — स्थापित नहि कएल गेल अछि, आ बिना व्याप्ति-ग्रहणक कोनो एकल दृष्टान्तसँ सामान्यीकरण करब अनुमान-प्रमाणक मौलिक शर्तक उल्लंघन थिक। यैह बात "विद्यापति-सहरसा" दावापर सेहो लागू होइत अछि — शब्द-प्रमाण (आगम) तखने मान्य होइत अछि, जखन ओ किओ विश्वसनीय मूल स्रोत (प्रामाणिक ग्रंथ, ताम्रपत्र, वंशावली) पर आधारित होइक; एतय एहन कोनो शब्द-प्रमाणक उद्धरण नहि देल गेल अछि।

6.8 भारतीय इतिहास-लेखन-परम्परा: इतिवृत्त आ समालोचनात्मक इतिहास

पौराणिक परम्परामे "इतिहास" पंच-लक्षणसँ (सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, वंशानुचरित) युक्त मानल जाइत अछि, जाहिमे वंशानुचरित (राजवंश आ समाजक निरंतरताक कथा) एकटा प्रमुख अंग थिक। गद्य-खंडक प्रारंभिक अध्याय "अंग-जनपदों के पिछलका स्थिति-परिस्थिति" (पृष्ठ १४९-१६२) स्पष्ट रूपें एहि वंशानुचरित-शैलीक अनुसरण करैत अछि — राजनीतिक इतिहास, जातीय महासभाक उत्थान, सामाजिक कुप्रथाक विवरण साहित्येतिहाससँ पहिने विस्तारसँ राखल गेल अछि। ई भारतीय इतिहास-लेखनक एकटा जेनुइन देशज पद्धति थिक, जे साहित्यकेँ समाज-वंशसँ काटि कऽ नहि देखैत अछि — एहि दृष्टिएँ ई ग्रंथ अपन सांस्कृतिक जड़िसँ जुड़ल अछि। मुदा एकर मूल्य ई सेहो थिक जे विशुद्ध साहित्यिक विश्लेषण (काव्य-गुण-दोष विवेचन) कतोक ठाम एहि वंशानुचरितात्मक विस्तारमे दबि जाइत अछि, जकरा आधुनिक समालोचना-पद्धतिक कसौटीपर एकटा सीमा मानल जा सकैत अछि।

7. पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक दृष्टिसँ समीक्षा

7.1 साहित्येतिहासक सिद्धान्त

रेने वेलेकक प्रसिद्ध निबंध "द फॉल ऑफ लिटरेरी हिस्ट्री" मे ई चेतावनी देल गेल अछि जे साहित्येतिहास प्रायः दू छोरपर जा फँसैत अछि — वा तँ शुद्ध सकारात्मकतावादी सूची-निर्माण (नाम, तिथि, कृतिक गणना) वा फेर वैचारिक/राष्ट्रवादी टेलिओलॉजी (एकटा पूर्वनिर्धारित गंतव्य दिस अग्रसर होइत कथा)। प्रस्तुत ग्रंथमे दुनू प्रवृत्ति स्पष्ट देखल जा सकैत अछि — आधुनिक कवि-परिचय-खंडक ८० पृष्ठ (६२-१४१) प्रायः पहिल छोर (सूचीकरण) दिस झुकल अछि, जखन कि समग्र आख्यान (अंगक प्राचीन गौरव → राजनीतिक उपेक्षा → साहित्यिक क्षतिपूर्ति) दोसर छोर (टेलिओलॉजिकल आख्यान) केर उदाहरण थिक। वेलेकक अनुसार, सच्चा साहित्येतिहास एहि दुनूकेँ — कालक्रमबद्ध तथ्य आ सौंदर्यशास्त्रीय मूल्यांकन — कें एकठाम गूंथने रहैत अछि; प्रस्तुत ग्रंथमे ई गुंथाव आंशिक रूपेण भेल अछि, पूर्ण रूपेण नहि।

7.2 नव-इतिहासवाद

नव-इतिहासवादी दृष्टिकोणक अनुसार पाठ आ संदर्भ परस्पर-निर्मायक होइत अछि — साहित्य मात्र इतिहासक प्रतिबिम्ब नहि, बल्कि शक्ति-संबंधक उत्पादनमे स्वयं सहभागी होइत अछि। एहि दृष्टिएँ गद्य-खंडक ओ अध्याय, जाहिमे १८५७क विद्रोह, महेन्द्र गोपक बलिदान, विभाजनकालीन तारापुर-भागलपुर हिंसा, आ स्वतंत्रता-पश्चात जातीय-महासभा-राजनीतिक उदयकेँ साहित्यक पृष्ठभूमिक रूपमे विस्तारसँ राखल गेल अछि (पृष्ठ १५०-१५३) — नव-इतिहासवादक दृष्टिएँ एकटा सराहनीय उपक्रम थिक, किएक तँ ई साहित्यकेँ शक्ति-संरचनासँ काटि कऽ शुद्ध सौंदर्यवस्तु नहि बनबैत अछि, बल्कि ओकरा राजनीतिक-सामाजिक इतिहासक अभिन्न भागक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

7.3 कल्पित समुदाय आ आविष्कृत परम्परा

बेनेडिक्ट एंडरसनक प्रसिद्ध थीसिस — मुद्रण-पूँजीवाद (प्रिंट-कैपिटलिज्म) आ स्थानीय भाषाक मुद्रित प्रसार एकटा "कल्पित समुदाय" (इमैजिन्ड

कम्युनिटी) कऽ निर्माण करैत अछि — एहि ग्रंथक अस्तित्वपर हूबहू लागू होइत अछि। स्वयं ग्रंथमे उल्लिखित पत्रिका-परम्परा — 'भारती' (१९५४, गाम बाथ, भागलपुर), 'अंगिकांचल'ऽ, 'आंगी', 'अंग-प्रिया', 'अंग-तरंगिनी' (पृष्ठ १४३) — प्रिंट-आधारित ओ पूर्वापेक्षित अवसंरचना थिक, जकर माध्यमसँ बिखरल अंगिका-भाषी जनसमूह अपनाकेँ एकटा साझा भाषिक-सांस्कृतिक समुदायक रूपमे "कल्पित" करैत अछि। सिद्ध-कविसिनी आ विद्यापति-कबीर जकाँ प्राचीन/महान् नामसिनीकेँ "पूर्वज" घोषित करब — एरिक हॉब्सबॉमक शब्दावलीमे — एकटा "इनवेंटेड ट्रेडिशन" (आविष्कृत परम्परा) कऽ शास्त्रीय उदाहरण थिक, जाहिमे नवोदित पहचान-परियोजना अपनाकेँ वैधता देबाक हेतु प्राचीनताक आवरण ओढ़ैत अछि।

7.4 सांस्कृतिक पूँजी आ साहित्यिक क्षेत्र

बोर्दियूक "साहित्यिक क्षेत्र" (फील्ड) सिद्धान्त अनुसार, कोनो साहित्यिक कृतिक मान्यता ओकर आंतरिक गुणसँ जतेक नहि, ओतेक बेसी संस्थागत "स्वीकृति-प्रदाता" (कन्सिक्रेटिंग एजेंसी) — अकादमी, पुरस्कार, प्रकाशन-गृह — पर निर्भर करैत अछि। एहि ग्रंथक प्रकाशन-कथा (पृष्ठ ३, ८) एकर सटीक दृष्टान्त थिक — ग्रंथक अस्तित्व एकटा एकल औद्योगिक दानदाता (पद्मश्री डॉ॰ बी॰ वी॰ राजू) आ एकटा अकादमीक (हिंदी अकादमी, हैदराबाद — जे अंगिका-भाषी क्षेत्रसँ बाहर, आंध्र प्रदेशमे स्थित अछि) उदार सहयोगपर निर्भर रहल। ई तथ्य बोर्दियूक ओहि अवधारणाक ठोस उदाहरण थिक, जाहिमे एकटा प्रभुत्वहीन/परिधीय साहित्यिक क्षेत्र अपन प्रतीकात्मक पूँजी (सिंबॉलिक कैपिटल) स्वयं उत्पन्न नहि कऽ सकबाक कारणें बाहरी संस्था-तंत्रपर निर्भर रहैत अछि।

7.5 उत्तर-औपनिवेशिक आ निम्नवर्गीय इतिहास-लेखन

रणजित गुहा-प्रवर्तित सबाल्टर्न स्टडीज़क दृष्टिएँ "नीचाँसँ इतिहास" लिखब — केन्द्रीकृत, प्रभुत्वशाली (एतय हिंदी-केंद्रित) आख्यानक विरुद्ध एकटा प्रतिरोधी उपक्रम थिक। अंगिकाक ई परियोजना संरचनात्मक रूपेण एहि निम्नवर्गीय-इतिहासलेखनक ढाँचामे फिट बैसैत अछि — बिहारक आंतरिक भाषिक बहुलताकेँ "हिंदी-पट्टी" केर एकरूपी आख्यानक विरुद्ध सामने अनैत

अछि। मुदा गायत्री स्पिवाकक प्रसिद्ध प्रश्न — "कऽ सबाल्टर्न बाजि सकैत अछि?" — एतय सेहो प्रासंगिक अछि। ई इतिहास डॉक्टरेट-उपाधिधारी, संस्थागत रूपेण प्रतिष्ठित (कुलमचिव, अकादमी-अध्यक्ष जकाँ पद धारण कएनिहार) विद्वानसिनी द्वारा लिखल गेल अछि, जे अपन तर्क-पद्धति आ ऐतिहासिक ढाँचा प्रायः ओहि हिंदी/संस्कृतनिष्ठ अकादमिक मॉडलसँ ग्रहण करैत छथि, जकर विरुद्ध ई परियोजना खड़ भेल अछि। एहि विरोधाभासकेँ चिन्हित करब आवश्यक अछि — निम्नवर्गीय पहचानक हेतु आवाज उठेनिहार स्वर स्वयं अभिजात्य संस्थागत भाषामे गठित अछि।

7.6 अंतःपाठकता

क्रिस्तेवाक अंतःपाठकता-सिद्धान्त अनुसार प्रत्येक पाठ अन्य पाठसिनीक मोज़ाइक थिक — कोनो एकल, शुद्ध, एकल-स्वामित्वयुक्त उद्गम-बिंदु दुर्लभ होइत अछि। एहि सिद्धान्तक आलोकमे सिद्ध-नाथ-चर्यापद-परम्परा आ कबीर-परम्पराकेँ नव रूपें बुझल जा सकैत अछि — ई साझा पाठ-संपदा थिक, जे आधुनिक मानकीकृत भाषिक सीमारेखा निर्धारित होएबासँ पूर्वेक मौखिक-हस्तलिखित निरंतरतामे बंगला, असमिया, ओड़िआ, मैथिली आ अंगिका — सभटा परवर्ती परम्पराक साझा पूर्वज-सामग्री थिक। एहि दृष्टिएँ बहुविध भाषिक परम्परा द्वारा एकहि चर्यापद-कोषपर दावा करब आवश्यक रूपेण "चोरी" नहि, बल्कि पाठक अंतर्निहित बहुस्वामित्वशीलताक स्वाभाविक परिणाम थिक। मुदा एतय समीक्षात्मक बिंदु ई अछि — ग्रंथ एहि साझा-विरासतकेँ "साझा संगम" केर रूपमे प्रस्तुत नहि करैत, बल्कि "अंगिका केरो कवि" जकाँ अनन्य-स्वामित्वसूचक भाषामे प्रस्तुत करैत अछि — जे अंतःपाठकता-सिद्धान्तक भावनाक विपरीत, प्रतिस्पर्धी-स्वामित्वक भाषामे बात करैत अछि।

7.7 रूपवाद आ नव-समीक्षा: निकट-पाठक प्रश्न

रूसी रूपवाद आ नव-समीक्षा साहित्यिक रचनाक बनावट, पुनरावृत्ति, बिम्ब, विरोध, विडम्बना, कथन-रणनीति, ध्वनि-संरचना आ शब्द-चयनपर निकट दृष्टि माँगैत अछि। समीक्ष्य पोथीक प्रधान प्रयोजन साहित्यिक इतिहास बनायब अछि, तेँ हजारो रचनामे सभक निकट-पाठ सम्भव नहि छल। मुदा किछु

प्रतिनिधि पाठक विस्तृत विश्लेषण आवश्यक छल, जाहिसँ “महत्त्वपूर्ण”, “श्रेष्ठ”, “आधुनिक”, “प्रभावी” सन मूल्य-निर्णय प्रमाणित होइत।

गद्य-खंड कथा-विवेचनमे विषयगत समूह बनबैत अछि—नारी-जागृति, वातावरण, प्रेम, सामाजिक संघर्ष आदि (पृ. 177)—मुदा एहन वर्गीकरण “की कहल गेल” बतबैत अछि; “कोना कहल गेल” पर कम प्रकाश दैत अछि। रूपवादी कसौटीपर ई पोथीक प्रमुख आलोचनात्मक कमी अछि।

7.8 संरचनावाद: वर्गीकरणक शक्ति आ सीमा

संरचनावादी दृष्टिसँ पोथीक काल-विभाजन, विधा-विभाजन, कविता–गद्य, लोक–लिखित, मंच–मंचोत्तर, कथा–उपन्यास–नाटक–निबन्ध–आलोचना आदि वर्गीकरण एक अर्थ-व्यवस्था बनबैत अछि। ई संरचना पाठककेँ विशाल सामग्रीमे दिशा दैत अछि। खास कऽ “मंच” केन्द्रीय संकेतक बनि साहित्यिक संस्थाक नेटवर्क देखबैत अछि।

मुदा वर्गीकरणक नियम सर्वत्र एकसमान नहि। कतहु तिथि, कतहु संस्था, कतहु शैली, कतहु धार्मिक सम्प्रदाय, कतहु माध्यम, कतहु पीढ़ी—पृथक्-पृथक् आधार एकहि स्तरपर प्रयुक्त अछि। संरचनावादी पुनर्लेखनमे वर्गीकरणक प्रत्येक अक्ष पृथक् चाही: काल, विधा, माध्यम, संस्था, विचारधारा, भूगोल, भाषा-रूप। एहि पाँच-सात अक्षकेँ एक दोसरमे नहि मिलाओल जाए।

7.9 व्याख्याशास्त्र: परम्परा-निर्माण आ पूर्वबोध

गाडामरक व्याख्याशास्त्रीय दृष्टि कहैत अछि जे इतिहासकार परम्परासँ बाहर ठाढ़ नहि होइत; ओ अपन समयक प्रश्नसँ अतीत पढ़ैत अछि। ‘अंगिका साहित्य केरौं इतिहास’ सेहो 1990-दशकक भाषिक-सांस्कृतिक आत्मपहिचान, संस्थागत प्रयास आ साहित्यिक संगठनक क्षितिजसँ प्राचीन आ आधुनिक सामग्रीकेँ पुनर्संयोजित करैत अछि। ई दोष मात्र नहि; सभ साहित्येतिहास एहन क्षितिज-संवाद करैत अछि।

समस्या तखन होइत अछि जखन वर्तमान पहिचानक आवश्यकता अतीतक अनिश्चित प्रमाणकेँ निश्चित वंशावलीमे बदलि दैत अछि। व्याख्याशास्त्रीय ईमानदारी लेल इतिहासकारकेँ अपन पूर्वबोध स्पष्ट करबाक चाही। पोथीक प्रकाशकीय, प्राक्कथन आ उपसंहार ई आत्मबोधक अनेक संकेत दैत अछि; नव

संस्करणमे एक स्वतंत्र “पद्धति आ स्रोत” अध्याय एहि बातकेँ अधिक स्पष्ट कऽ सकैत अछि।

7.10 बाख्तिन: बहुभाषिकता, बहुध्वनिता आ माध्यम

बाख्तिनक संवादिता आ बहुध्वनिता-दृष्टिसँ पोथी विशेष रूपेँ सशक्त अछि। एतय मात्र उच्च काव्य नहि, लोककंठ, गीत, गाथा, कथा, हास-व्यंग्य, रेडियो-नाटक, आत्मकथा, पत्र, पत्रिका, आलोचना, इतिहास-भूगोल आ विज्ञान-लेखन धरि अनेक सामाजिक स्वर एकहि साहित्यिक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। पृ. 209 पर रेडियो-नाटकक लेखक, प्रसारण आ रूपान्तरक चर्चा ई माध्यमिक बहुध्वनिताक ठोस उदाहरण अछि।

एहि दृष्टिसँ अंगिका साहित्यक “एक शुद्ध आवाज” खोजब पोथीक वास्तविक उपलब्धिक विरुद्ध होयत। पोथी स्वयं देखबैत अछि जे साहित्य अनेक सामाजिक भाषा, संस्था आ माध्यमक मिलनबिन्दु अछि। नव संस्करणमे एहि बहुध्वनिताकेँ विश्लेषणात्मक रूपेँ नाम देल जाए तऽ पोथीक आधुनिक महत्त्व आरो बढ़त।

7.11 मार्क्सवादी आ सांस्कृतिक भौतिकवादी दृष्टि

गद्य-खंडक आरम्भ (पृ. 149–162) राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक आ आर्थिक परिस्थिति पर विस्तृत चर्चा करैत अछि। पृ. 153 पर सामाजिक सुधार, शिक्षा, स्त्री-सुधार, जातिगत संस्था आ गुलामी-प्रथाक अवशेषक उल्लेख अछि; पृ. 161 पर आर्थिक परिस्थिति, रेशम-उद्योग, वन, कृषि आ औद्योगिक संकटपर विचार अछि। ई सामग्री साहित्यकेँ सामाजिक आधारसँ जोड़बाक महत्त्वपूर्ण प्रयास अछि।

मुदा सांस्कृतिक भौतिकवाद पूछत—ई आर्थिक-सामाजिक परिवर्तन साहित्यिक रूप, प्रकाशन, लेखकक वर्ग-स्थिति, पाठक-वर्ग, विषय-चयन, भाषा-मानकीकरण वा पुस्तक-बाजारकेँ प्रत्यक्ष कोना बदललक? पोथी पृष्ठभूमि दैत अछि, मुदा कारण-सम्बन्ध प्रायः अनुमानित रहि जाइत अछि। अधिक अभिलेखीय प्रमाण—प्रकाशन संख्या, संस्थागत धन, शिक्षित वर्गक विस्तार, पत्रिकाक वितरण, लेखकक पेशा—एहि कड़ीकेँ मजबूत करत।

7.12 उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि: भाषा, सत्ता आ प्रत्याख्यान

पृ. 157 पर अंग्रेजी शिक्षा, स्थानीय भाषा, “मधुबनी-बोली”क संस्थागत प्रतिष्ठा आ अंगिका सम्बन्धी भाषिक-राजनीतिक असन्तोषक स्पष्ट वर्णन अछि। ई अंश उत्तर-औपनिवेशिक समीक्षा लेल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, कारण एतय भाषा मात्र संचार नहि, सत्ता, विद्यालय, विश्वविद्यालय, अनुदान, प्रतिष्ठा आ क्षेत्रीय पहिचानक विषय बनैत अछि।

उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि पोथीक प्रतिरोधी मूल्य स्वीकारैत अछि—केन्द्रीय अथवा प्रतिष्ठित भाषिक आख्यानक बाहर स्थानीय साहित्यिक सार्वजनिकता दृश्यमान बनाओल गेल। मुदा समानान्तर इतिहास-दृष्टि एक अतिरिक्त सावधानी माँगैत अछि: केन्द्रीय आख्यान गलत भऽ सकैत अछि, पर हाशियाक आख्यान स्वतः सत्य नहि। प्रतिरोधी इतिहासकेँ सेहो स्रोत, तिथि, तुलनात्मक भाषा-विज्ञान आ बहुस्रोतक कसौटी पार करय पड़त।

7.13 स्त्रीवादी समीक्षा: उपस्थिति, विषय आ प्रतिनिधित्व

पोथी स्त्री-अनुभवकेँ पूर्णतः उपेक्षित नहि करैत। सामाजिक पृष्ठभूमिमे स्त्री-उत्थान आ कन्या-शिक्षाक चर्चा अछि (पृ. 153)। कथा-खंडमे नारी-सम्मान, नारी-उत्पीड़न, नारी-जागृति, नारी-अन्तर्मन आदि विषयक रचनाक उल्लेख अछि (पृ. 177)। पृ. 193 पर आशा पूर्वेक उपन्यास ‘अन्तहीन वैतरणी’क विस्तृत परिचय भेटैत अछि। आत्मपरक साहित्यमे स्त्री-लेखिका सम्बन्धी सामग्री सेहो दर्ज अछि (पृ. 217)।

मुदा स्त्रीवादी इतिहास मात्र स्त्री-विषय खोजब नहि; लेखकीय प्रतिनिधित्व, प्रकाशन-संस्था, आलोचनात्मक स्वीकृति, घरेलू श्रम, देह, विवाह, उत्तराधिकार, शिक्षा, जाति-वर्ग आ भाषिक अधिकारक संग स्त्री-अनुभवक सम्बन्ध जाँचब सेहो अछि। पोथी समूचा लेखक-सूचीमे स्त्री-पुरुष अनुपातक सांख्यिकीय पाँजि नहि दैत अछि; तेँ प्रतिनिधित्वक समता सम्बन्धी कठोर निष्कर्ष बिना स्वतंत्र गणना देब उचित नहि। नव संस्करणमे ई गणना अनिवार्य होयत।

7.14 फूको आ विमर्श-सत्ता: साहित्यक इतिहास स्वयं सत्ता-कर्म

ककरा “पहिल कवि”, “श्रेष्ठ लेखक”, “आधुनिक”, “प्राचीन”, “लोक”, “सिद्ध”, “अंगिका” अथवा “बाहर” कहल जाए—ई मात्र निर्दोष वर्गीकरण

नहि; ई साहित्यिक स्मृतिक सत्ता-विन्यास बनबैत अछि। पोथी अनेक विस्मृत नामकेँ दृश्य करैत अछि, जे एक प्रतिरोधी कॅनन-निर्माण अछि। मुदा जखन नव कॅनन बनैत अछि, तखन ओकर चयन, मौन, अनुपस्थिति आ प्राधिकार सेहो जाँचल जाए।

एहि दृष्टिसँ आलोचना पोथीक उद्देश्यकेँ नकारैत नहि; उलटे ओकर ऐतिहासिक महत्त्व बढ़बैत अछि। 1998 ई.क ई पोथी अंगिका साहित्यिक सार्वजनिकताक संस्थापनामे स्वयं एक घटना अछि। तेँ एकर अध्ययन “पोथी अंगिका साहित्यकेँ कोना वर्णित करैत अछि?” मात्र नहि, “ई पोथी अंगिका साहित्यिक कॅननकेँ कोना बनबैत अछि?” सेहो होयबाक चाही।

7.15 पाठक-स्वीकृति सिद्धान्त

याउस आ ईज़रक पाठक-स्वीकृति दृष्टिसँ “मंच”, अधिवेशन, पत्रिका, आकाशवाणी, धारावाहिक कथा, रेडियो-नाटक, स्तम्भ, समाचार-पत्र आ साहित्यिक संस्था अत्यन्त उपयोगी सामग्री अछि। पृ. 209 पर रेडियो-नाटकक प्रसारण, पृ. 257 पर पत्र-पत्रिकाक स्तम्भ आ नियमित प्रकाशनक चर्चा देखबैत अछि जे साहित्य पाठक-श्रोता समुदाय बिना जीवित नहि।

तथापि वास्तविक स्वीकृति-इतिहास लेल समीक्षा-लेख, पत्र, बिक्री, सदस्यता, प्रसार-संख्या, श्रोता-प्रतिक्रिया, पुनर्मुद्रण, मंचीय प्रस्तुति संख्या, पाठचक्रम-समावेशन आदि चाही। पोथी संस्थाक अस्तित्व बतबैत अछि; पाठकीय प्रतिक्रिया-संरचनाक पूर्ण इतिहास एखन बाँकी अछि।

8. विदेह समानान्तर परम्परा-दृष्टि

विदेह समानान्तर परम्परा-दृष्टि मुख्यधाराक नकार नहि, हाशियाक स्वतः महिमामंडन सेहो नहि। एकर मूल आग्रह अछि—स्रोतक बहुलता, प्रमाणक अनुशासन, केन्द्र आ हाशिया दुनू पर समान कसौटी, मानवीय गरिमा, बहुकेन्द्रिक सार्वजनिकता, परम्परासँ संवाद आ निरन्तर आत्मसमीक्षा। एहि समीक्षा मे सात कसौटी लागू कएल गेल अछि: बहुप्रमाणीय विवेकवाद, सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद, गरिमा-आधारित नैतिकता, बहुकेन्द्रिक

लोकतन्त्र, धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता, समानान्तर इतिहास-दृष्टि, आ आत्मसमीक्षा।

समानान्तर सूत्र: परम्परासँ बाहर नहि, परम्पराक भीतर कैद नहि; स्रोतक उत्तराधिकारी बनू, स्रोतक प्रहरी नहि; जे भेटल से ग्रहण करू, जे असत्य से संशोधित करू।

8.1 बहुप्रमाणीय विवेकवाद

समीक्ष्य पोथीक निर्माण स्वयं बहुप्रमाणीय प्रयत्नक संकेत दैत अछि—मुद्रित रचना, लेखक-परिचय, पत्रिका, लोकगीत, जनश्रुति, भाषा-रूप, सामाजिक इतिहास, संस्था, रेडियो, पत्र आ आलोचना एकत्र कएल गेल अछि। ई एक पैघ शक्ति अछि।

मुदा सभ प्रमाण समान दर्जाक नहि। दिनांकित मुद्रित पुस्तक, लेखकक आत्मकथा, समकालीन समाचार, मौखिक जनश्रुति, पछिलका किंवदन्ती, भाषिक अनुमान आ सम्पादकक स्मृति पृथक्-पृथक् ज्ञान-स्रोत छथि। बहुप्रमाणीय विवेकवादक माँग अछि जे स्रोत बहुल हो, मुदा ओकर विश्वसनीयता-क्रम स्पष्ट हो। नव संस्करणमे प्रत्येक प्रमुख दाबी संग स्रोत-श्रेणी देल जाए: प्राथमिक पाठ, समकालीन अभिलेख, उत्तरवर्ती स्रोत, मौखिक साक्ष्य, भाषिक अनुमान, अथवा सम्पादकीय निष्कर्ष।

8.2 सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद

अंगिका एक सामाजिक-भाषिक वास्तविकता रूपेँ लोकक बोलचाल, साहित्य, संस्था, पत्रिका आ आत्मपहिचानमे उपस्थित अछि—पोथीक विशाल सामग्री एहि अस्तित्वक साक्ष्य देत अछि। मुदा भाषिक सीमा, ऐतिहासिक वंश, उपभाषिक सम्बन्ध आ नामकरण समयसँ बदलि सकैत अछि। सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद एतय दू अतिवादसँ बचबैत अछि: एक दिस “सब मात्र राजनीतिक निर्माण अछि” कहि वास्तविक भाषिक समुदायकेँ नकारब; दोसर दिस वर्तमान पहिचानकेँ अतीतमे अपरिवर्तित रूपेँ आरोपित करब।

तेँ समीक्षाक निष्कर्ष ई नहि जे अंगिका अनिवार्यत: अमुक भाषाक भीतर अछि वा बाहर; ई प्रश्न तुलनात्मक भाषाविज्ञान, ऐतिहासिक ध्वनि-विकास, व्याकरण, शब्दसंपदा, दस्तावेज आ आत्मपहिचान सभक संयुक्त परीक्षण माँगैत

अछि। पोथीक साहित्यिक सामग्री एहि अनुसन्धानक एक प्रमुख स्रोत भऽ सकैत अछि, अन्तिम निर्णय नहि।

8.3 गरिमा-आधारित नैतिकता

क्षेत्रीय भाषा-साहित्यकेँ अदृश्यता सँ बाहर आनब अपनेमे गरिमाक कार्य अछि। पोथी लोककंठ, कम प्रसिद्ध लेखक, स्थानीय पत्रिका, स्त्री-विषय, श्रम-जीवन, ग्राम्य संस्कृति, साधु-लोक, रेडियो आ गैर-महानगरीय साहित्यिक संस्था दर्ज करैत अछि। ई सांस्कृतिक गरिमाक पुनर्स्थापन अछि।

मुदा गरिमा मात्र “हमर परम्परा महान” कहब नहि। जँ जाति, लिंग, आर्थिक असमानता, श्रमिक-अनुभव, धार्मिक अल्पता, ग्रामीण-शहरी विषमता वा भाषिक सीमा भीतर ककरो आवाज कम अछि, तकर अभाव सेहो दर्ज होयत। पोथी किछु सामाजिक प्रश्न उठबैत अछि; नव संस्करणमे प्रतिनिधित्वक व्यवस्थित सूचकांक चाही।

8.4 बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र

पोथीक मूल सांस्कृतिक हस्तक्षेप बहुकेन्द्रिक अछि: साहित्यिक वैधता मात्र महानगर, विश्वविद्यालय वा प्रतिष्ठित भाषा-केंद्रक देन नहि; भागलपुर, मुंगेर, स्थानीय मंच, पत्रिका, गाम, रेडियो आ लोकपरम्परा सेहो साहित्यिक केन्द्र बनि सकैत अछि। ई दृष्टि आधुनिक बहुकेन्द्रिक सांस्कृतिक लोकतन्त्रसँ मेल खाइत अछि।

मुदा बहुकेन्द्रिकताक नैतिक कसौटी ई सेहो अछि जे अंगिका-केंद्र स्वयं अपन भीतरक बोली, सीमावर्ती भाषारूप, जनजातीय वा स्थानीय उपरूपपर एकरूपता थोपय नहि। “केन्द्रक आलोचना” तखन विश्वसनीय होइत अछि जखन नव केन्द्र अपन परिधिक स्वतंत्रता सेहो मानैत अछि।

8.5 धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता

सिद्ध, नाथ, साधु, भक्ति, कबीर-परम्परा, लोकदेवता, धार्मिक गीत आ विविध सांस्कृतिक परम्पराक समावेश पोथीक एक विशेषता अछि। विवेकपूर्ण बहुलता एहि सामग्रीकेँ न तऽ धर्मविरोधी पूर्वाग्रहसँ पढ़त, न श्रद्धाक कारण ऐतिहासिक प्रश्न रोकत। धार्मिक साहित्यक आध्यात्मिक मूल्य, सामाजिक कार्य, भाषिक योगदान आ ऐतिहासिक प्रमाण पृथक्-पृथक् स्तरपर जाँचल जाए।

प्राचीन संत अथवा सिद्धकेँ वर्तमान भाषिक-क्षेत्रीय पहिचानक प्रतीक बनाबय काल विशेष सावधानी चाही। श्रद्धा एक प्रकारक सांस्कृतिक सत्य हो सकैत अछि; जन्मस्थान आ भाषिक वर्गीकरण ऐतिहासिक दाबी अछि। दुनूकेँ एक नहि मानब समानान्तर पद्धतिक अनिवार्य अनुशासन अछि।

8.6 समानान्तर इतिहास-दृष्टि

समानान्तर इतिहास-दृष्टि दुई विपरीत भूल अस्वीकारैत अछि: “आधिकारिक स्रोत जे कहय से स्वत: सत्य” आ “हाशियाक स्मृति जे कहय से स्वत: सत्य।” पोथी मुख्यधाराक उपेक्षाकेँ चुनौती दैत अछि—ई ओकर शक्ति। मुदा तकर प्रत्येक प्रतिदाबी पर सेहो समान प्रमाण-कसौटी लागू होयत।

एहि कसौटीपर आधुनिक मुद्रित कालक लेखक, पत्रिका, रेडियो, संस्था आ प्रकाशन सम्बन्धी हिस्सा अधिक परीक्षणयोग्य अछि। प्राचीन कालक दाबी, जन्मस्थान, भाषिक वंशावली, लिपि-सम्बन्ध आ कतेको तिथि पुन:स्रोत-परीक्षण माँगैत अछि। पोथीक अन्तिम उपसंहार जे भ्रम-संशोधनक आवश्यकता स्वीकारैत अछि, ओ समानान्तर इतिहास-दृष्टिक दिशा स्वयं खोलैत अछि।

8.7 आत्मसमीक्षा

आत्मसमीक्षा समानान्तर परम्पराक सुरक्षा-कवच अछि। कोनो प्रतिरोधी इतिहास जँ एक बेर प्रतिष्ठित भऽ जाए, तकरो नूतन प्राधिकार बनबाक सम्भावना रहैत अछि। तें पोथीक संशोधन मात्र बाहरी आलोचकक काम नहि; पोथीक अपन परम्पराकेँ समय-समय पर स्रोत, तिथि, भाषा-विज्ञान, सामाजिक प्रतिनिधित्व आ नूतन सामग्रीसँ स्वयं जाँचबाक चाही।

पृ. 259–260 एहि आत्मसमीक्षाक महत्त्वपूर्ण आन्तरिक आधार अछि। ग्रन्थकार किछु भ्रमक उल्लेख करैत छथि, आधुनिक गद्यक विकास स्वीकारैत छथि, आ राजनीति द्वारा संस्कृति-साहित्यक उपयोगपर सावधानी व्यक्त करैत छथि। ई उपसंहार पोथीकेँ बंद घोषणा नहि, खुलल परियोजना रूपेँ पढ़बाक अवसर दैत अछि।

8.8 मैथिली साहित्येतिहास-लेखनक समानान्तर अनुभव

मैथिली साहित्येतिहास-लेखनक अपन बीसम शताब्दीक अनुभव अंगिकाक वर्तमान संघर्षक एकटा जीवंत समानांतर दृष्टान्त प्रस्तुत करैत अछि।

मैथिलीकेँ सेहो लंबा समय धरि हिंदीक "बोली" मात्र मानल गेल, ग्रियर्सनक भाषा-सर्वेक्षणमे भलहिं स्वतंत्र भाषाक रूपमे मान्यता भेटल, मुदा राजनीतिक-प्रशासनिक मान्यता (अष्टम अनुसूचीमे समावेश) २००३ ईस्वी धरि प्रतीक्षारत रहल। एहि संघर्षक दौरान मैथिलीक साहित्येतिहासकारसिनी (कपिलेश्वर झा, रमानाथ झा, जयकान्त मिश्र आदि) केँ सेहो प्राचीनता-सिद्धिक हेतु समान प्रलोभनक सामना करय पड़ल छल — आदिकवि-खोज, चर्यापद-दावा, आ भाषिक स्वतंत्रताक प्रमाणीकरणक हेतु ऐतिहासिक व्याप्ति खिंचबाक प्रवृत्ति। एहि समानांतर अनुभवक आलोकमे, अंगिका-साहित्येतिहासकारसिनीक आग्रह — जे प्रथम दृष्टिमे अतिरंजित बुझना जाइत अछि — वस्तुतः एकटा सुपरिचित, संरचनात्मक रूपेण अनिवार्य चरण थिक, जाहिसँ प्रायः प्रत्येक उपेक्षित भाषा-समुदायकेँ अपन मान्यता-यात्रामे गुजरय पड़ैत अछि।

8.9 विद्यापति-सम्बद्ध दावाक प्रमाण-परीक्षण

मिथिलाक सामाजिक-ऐतिहासिक स्मृतिक वास्तविक दस्तावेजी रीढ़ पंजी-प्रबंध (वंशावली-अभिलेख) परम्परा थिक, जे शताब्दीसिनीसँ मैथिल कुलक जन्म, विवाह आ वंशक्रमक अभिलेख राखि आयल अछि। पंजी-आधारित आ विद्यापति-स्वयंक रचनासिनीमे उल्लिखित ताम्रपत्र/कोलोफोन-प्रमाणसँ पुष्ट प्रचलित विद्वत्-मान्यता विद्यापतिक वंश-मूल सरिसब-बिसफी (आधुनिक मधुबनी) क्षेत्रमे राखैत अछि, आ हुनक राजाश्रय ओइनवार वंशक मिथिला-स्थित राजा — विशेषतः राजा शिवसिंह आ रानी लखिमा देवी — सँ जोड़ैत अछि। उपसंहारमे प्रस्तुत "सहरसा-जन्म, राजा गणेश्वरक सभासद-पिता" दावा (पृष्ठ २५९) एहि प्रचलित मान्यताक विरुद्ध एकटा गुरुतर संशोधनवादी प्रस्थापना थिक। "विदेह समानान्तर परम्परा" केर कसौटी ई अछि — कोनो प्रतिस्पर्धी दावा तखने ग्राह्य होइत अछि, जखन ओ ओहि प्रमाण-मानदंड (स्वतंत्र पंजी-प्रविष्टि, समकालीन ताम्रपत्र, हस्तलिखित कोलोफोन) केँ पूर्ण करय, जकरा मिथिला-परम्परा स्वयं अपन दावाक हेतु अनिवार्य मानैत अछि। समीक्षाधीन ग्रंथक जतेक अंश देखल गेल, ओतेक मे एहन कोनो स्वतंत्र दस्तावेजी प्रमाणक उद्धरण नहि भेटल — एहि लेल ई दावा, वर्तमान स्वरूपमे, प्रामाणिक इतिहासक अपेक्षा परिकल्पनाक स्तरपर रहि जाइत अछि।

8.10 मैथिली-अंगिका ऐतिहासिक अन्तर्सम्बन्ध आ सीमा-क्षेत्र

तथापि ई सेहो स्वीकार्य अछि जे सहरसा, पूर्णिया आ कटिहारक किछु सीमावर्ती भूभाग ऐतिहासिक रूपेण मैथिली-अंगिका-बज्जिका भाषिक सम्पर्क-क्षेत्र (कॉन्टैक्ट ज़ोन) रहल अछि, जतय भाषिक सीमारेखा कहियो एकदम स्पष्ट-रेखांकित नहि रहल। ग्रियर्सनक भाषा-सर्वेक्षण आ परवर्ती बोली-सर्वेक्षणसिनी सेहो एहि क्षेत्रकेँ संक्रमण-क्षेत्रक रूपमे देखैत छथि, नहि कि पूर्णतः एक अथवा दोसर भाषाक अनन्य अधिकार-क्षेत्रक रूपमे। एहि दृष्टिएँ, "विद्यापति सहरसाक छथि, अतः अंगिका छथि" जकाँ द्विआधारी (बाइनरी) दावाक अपेक्षा — "सहरसा-क्षेत्र भाषिक-सांस्कृतिक संक्रमण-क्षेत्र थिक, जतय मिथिला आ अंग दुनूक प्रभाव विद्यमान अछि" — एहन सूक्ष्म, संक्रमण-क्षेत्र-संवेदनशील उपसंहार अधिक प्रामाणिक आ रक्षणीय बुझना जाइत अछि।

8.11 समानान्तर आग्रहक द्वन्द्व

मैथिली आ अंगिका, दुनू साहित्येतिहास-लेखन एकहि "आदिकवि-खोज" केर चिंतासँ ग्रस्त देखबामे अबैत अछि — दुनू परम्परा अपन प्राचीनताक अधिकतम विस्तार आ कोनो सर्वस्वीकृत महान् नामक अनन्य स्वामित्वक हेतु प्रतिस्पर्धारत बुझना जाइत अछि। "विदेह समानान्तर परम्परा" अपन कठिन दशकसिनीक अनुभवसँ एकटा उपयोगी पाठ प्रस्तुत करैत अछि — भाषिक मान्यता आ साहित्यिक गौरव अंततः प्रतिस्पर्धी-स्वामित्व-दावासँ नहि, बल्कि कठोर स्रोत-समालोचना, सम्पूर्ण दस्तावेजीकरण, आ आवश्यकता पड़ला पर "साझा विरासत" केँ साझे रूपमे स्वीकार करबाक उदारतासँ अधिक सुदृढ़ होइत अछि। भविष्यक अंगिका साहित्येतिहास-लेखन, आ सम्भवतः मिथिला-अंग सीमा-क्षेत्रक संयुक्त, सम्पर्क-क्षेत्र-संवेदनशील अध्ययन, एहि दिशामे एकटा उपयोगी अगिला कदम भऽ सकैत अछि।

9. स्त्री, समाज, वर्ग, संस्था, माध्यम आ पाठक

9.1 स्त्री

पोथी स्त्री-विषयक सामग्री दर्ज करैत अछि, मुदा समेकित स्त्रीवादी अध्याय नहि अछि। सामाजिक सुधार, कन्या-शिक्षा, नारी-जागृति, नारी-अन्तर्मन, स्त्री-उपन्यासकार आ आत्मपरक लेखनक उदाहरण उपलब्ध अछि। एहि सामग्रीकेँ

पृथक् सूचकांकमे संकलित करला सँ अंगिका साहित्यक स्त्री-इतिहास अधिक स्पष्ट भऽ सकैत अछि।

विशेष सावधानी: “स्त्री-विषय” आ “स्त्री-दृष्टि” एक नहि। पुरुष लेखक स्त्री-विषय लिखि सकैत छथि; स्त्री लेखक सेहो पितृसत्तात्मक संरचना पुनरुत्पन्न कऽ सकैत छथि। आलोचना लेल कथनकर्ता, दृष्टिकोण, निर्णय-अधिकार, देह, श्रम, संपत्ति, शिक्षा, विवाह, हिंसा, भाषा आ मौनक संरचना जाँचब आवश्यक अछि।

9.2 जाति, श्रम आ वर्ग

पृ. 153 क सामाजिक पृष्ठभूमि जातीय महासभा, शिक्षा, सामाजिक सुधार आ गुलामी-प्रथाक अवशेषक चर्चा करैत अछि; पृ. 161 आर्थिक उद्योग, जंगल आ जीवनयापनक प्रश्न उठबैत अछि। ई सामग्री वर्ग-जाती सम्बन्धी आलोचनाक द्वार खोलैत अछि।

मुदा समूचा साहित्यिक चयनमे विभिन्न सामाजिक समूहक प्रतिनिधित्वक गणना नहि अछि। तें “पोथी पूर्ण समावेशी” अथवा “पूर्ण बहिष्कारी” कहब बिना स्वतंत्र आँकड़ा अनुचित होयत। उचित शोध-पद्धति अछि—लेखकक सामाजिक पृष्ठभूमि जतय सार्वजनिक आ प्रमाणित हो, तकर सावधानीपूर्वक सूची; विषयगत उपस्थिति; पात्र-प्रतिनिधित्व; भाषिक रजिस्टर; प्रकाशन-अवसर; आलोचनात्मक स्वीकृति।

9.3 संस्था आ माध्यम

हिन्दी अकादमीक प्रकाशन, अंगिका साहित्यिक मंच, अधिवेशन, आकाशवाणी, पत्र-पत्रिका, विद्यालय-विश्वविद्यालय, स्थानीय संगठन—ई सभ पोथीक इतिहासमे सक्रिय छथि। एहि कारण साहित्यिक इतिहास मात्र लेखकक प्रतिभाक इतिहास नहि रहैत; संस्था, माध्यम आ वैधताक इतिहास बनैत अछि।

एहि पोथीक भविष्यक डिजिटल संस्करण लेल संस्थागत मानचित्र अत्यन्त उपयोगी होयत: कोन संस्था कतय, कोन वर्ष, कोन लेखक, कोन पत्रिका, कोन कार्यक्रम, कोन प्रकाशन। एहन नेटवर्क-मानचित्र साहित्यिक आधुनिकताक वास्तविक संरचना देखाओत।

10. पूर्वपक्ष–उत्तरपक्ष

10.1 पूर्वपक्ष: “क्षेत्रीय साहित्येतिहासमे पहिले सामग्री बचाउ, पाछाँ कठोर आलोचना”

एहि पूर्वपक्षमे पर्याप्त बल अछि। जखन रचना छितरायल हो, पत्रिका नष्ट होइत हो, लेखकक नाम विस्मृत हो, लोकसाहित्य मौखिक हो, तखन पहिल कर्तव्य सामग्री एकत्र करब हो सकैत अछि। 1998 ई.क पोथी एहि आपात अभिलेखीय आवश्यकता पूरा करबाक साहसी प्रयत्न अछि। एतय आधुनिक स्रोत-मानकक अभावकेँ ऐतिहासिक परिस्थिति सँ पृथक् कऽ देखब न्यायपूर्ण नहि।

उत्तरपक्ष

मुदा सामग्री-संग्रह आ इतिहास-दाबी पृथक् बात छथि। जेहि क्षण पोथी “पहिल”, “प्राचीन”, “जन्मस्थान”, “भाषा-वंश”, “काल-सीमा” आदि निर्णय दैत अछि, तेहि क्षण प्रमाण-पद्धति आवश्यक भऽ जाइत अछि। तेँ 1998 संस्करणक अभिलेखीय मूल्य अक्षुण्ण राखि 2026-स्तरीय आलोचनात्मक उपकरण जोड़ब सभसँ न्यायपूर्ण मार्ग अछि।

10.2 पूर्वपक्ष: “प्रत्येक रचनाक निकट-पाठ साहित्येतिहासमे सम्भव नहि”

ई आपत्ति ठीक अछि। सैकड़ो कवि-कथा-नाटकक इतिहास लिखैत समय प्रत्येक रचनापर पूर्ण रस, ध्वनि, रूपवाद, स्त्रीवाद आ समाजशास्त्रीय समीक्षा देब सम्भव नहि।

उत्तरपक्ष

समाधान सभक निकट-पाठ नहि, प्रतिनिधि निकट-पाठ अछि। प्रत्येक प्रमुख काल/विधासँ 3–5 पाठ चुनि स्पष्ट चयन-कसौटी सहित गहिर विश्लेषण जोड़ल जाए। बाकी सामग्रीकेँ सूची, सार, संदर्भ आ स्रोत-संकेत रूपेँ राखल जाए। एहि सँ विस्तार आ आलोचनात्मक गहिराई दुनू बचत।

10.3 पूर्वपक्ष: “हाशियाक परम्पराकेँ मुख्यधाराक प्रमाण-मानक पर जाँचब स्वयं अन्याय हो सकैत अछि”

एहि आपत्तिमे सेहो सत्य अछि। अभिलेख-सत्ता असमान होइत अछि; प्रतिष्ठित भाषा/राज्य अधिक दस्तावेज छोड़ैत अछि, ग्रामीण वा मौखिक

समुदाय कम। मात्र लिखित कागजकेँ प्रमाण मानला सँ हाशियाक इतिहास मिटि सकैत अछि।

उत्तरपक्ष

समानान्तर बहुप्रमाणीय पद्धति लिखित दस्तावेजक एकाधिकार अस्वीकारैत अछि, मुदा प्रमाणक अनुशासन नहि छोड़ैत। मौखिक इतिहास वैध अछि, पर कथक, समय, पाठांतर, स्मृति-दूरी आ अन्य स्रोतसँ तुलना चाही। लोकगीत वैध अछि, पर ओकर प्रदर्शन-सन्दर्भ चाही। पुरानी जनश्रुति वैध शोध-स्रोत अछि, पर ओ स्वत: दिनांकित ऐतिहासिक घटना नहि।

10.4 पूर्वपक्ष: “भाषिक स्वाभिमान लेल प्राचीन वंशावली आवश्यक”

भाषिक समुदाय अनेक बेर ऐतिहासिक गौरवक माध्यमेँ सार्वजनिक अधिकार प्राप्त करैत अछि। अतएव प्राचीनता-निर्माणक सामाजिक कारण बुझल जा सकैत अछि।

उत्तरपक्ष

मुदा सांस्कृतिक गरिमा सत्यताक शर्तपर निर्भर होयबाक आवश्यकता नहि। अंगिका साहित्यक आधुनिक, लोक, पत्रिका, नाटक, कथा, कविता, रेडियो आ संस्था-सम्पन्न जीवन अपनेमे गरिमायुक्त अछि। अतिप्राचीन दाबी गलत सिद्ध भेलो आधुनिक साहित्यक मूल्य कम नहि होयत। एहि कारण सत्यापित इतिहास सांस्कृतिक आत्मसम्मानक शत्रु नहि, ओकर दीर्घजीवी आधार अछि।

11. संशोधित आलोचनात्मक संस्करणक ठोस रूपरेखा

मूल 1998 पाठकेँ हटाओल नहि जाए। ओकर ऐतिहासिक रूप अक्षुण्ण राखि प्रत्येक अध्याय पाछाँ आधुनिक आलोचनात्मक उपकरण जोड़ल जाए। एहि परियोजनाक उद्देश्य पुरान लेखककेँ “गलत सिद्ध” करब नहि, बल्कि हुनक अभिलेखीय काजकेँ अधिक टिकाउ, सत्यापनयोग्य आ बहुस्तरीय बनायब होयत।

11.1 प्रस्तावित समीक्षात्मक अध्याय-ढाँचा

प्रत्येक अध्याय लेल निम्न स्थिर क्रम अपनाओल जा सकैत अछि: समस्या → मूल पोथीक प्रतिपादन → उपलब्ध स्रोत → प्रमुख तर्क → पूर्वपक्ष → उत्तरपक्ष → भारतीय काव्यशास्त्रीय संवाद → पाश्चात्य आलोचनात्मक संवाद

→ समानान्तर इतिहास-दृष्टि → प्रमाण-स्थिति → अध्याय-निष्कर्ष → ग्रन्थसूची। एहि स्थिर ढाँचासँ प्रशंसा, आलोचना आ स्रोत-परीक्षण एक दोसरसँ पृथक् रहत।

12. समेकित निर्णय

‘अंगिका साहित्य केरौं इतिहास’क स्थायी महत्त्व ओकर सामग्री-संग्रह, सांस्कृतिक आत्मपहिचान, लोक आ लिखित साहित्यक संयुक्त मानचित्र, अनेक विधाक समावेश, साहित्यिक संस्था-माध्यमक दस्तावेजीकरण, आ विस्मृत लेखक-रचनाकेँ इतिहासक भीतर स्थान देबामे अछि। 1998 ई.क सन्दर्भमे ई एक महत्त्वाकांक्षी आधार-ग्रन्थ अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय कसौटीपर पोथीक सामग्री अत्यन्त समृद्ध, मुदा रस–ध्वनि–वक्रोक्ति–रीति–औचित्यक व्यवस्थित निकट-पाठ सीमित अछि। पाश्चात्य दृष्टिसँ पोथी सांस्कृतिक इतिहास, बहुध्वनिता, माध्यम, संस्था आ उत्तर-औपनिवेशिक भाषिक आत्मपहिचानक क्षेत्रमे सशक्त अछि; रूपवादी निकट-पाठ, पाठक-स्वीकृतिक आँकड़ा, स्रोत-समीक्षा आ वर्गीकरणक स्पष्ट पद्धति अधिक अपेक्षित अछि।

विदेह समानान्तर परम्परा-दृष्टिसँ पोथीक मूल आवेग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: उपेक्षित साहित्यिक क्षेत्रकेँ दृश्य करब, केन्द्रीय वैधताक एकाधिकार प्रश्नांकित करब, लोक–पत्रिका–रेडियो–गद्य–काव्य सभकेँ एक विस्तृत साहित्यिक सार्वजनिकतामे आनब। मुदा समानान्तर पद्धतिक निर्णायक नियम ई अछि जे केन्द्र आ हाशिया दुनू पर प्रमाणक समान कसौटी लागू हो। प्रतिरोधक नैतिक मूल्य ऐतिहासिक दाबीकेँ स्वतः प्रमाणित नहि करैत।

एहि कारण अंतिम निर्णय द्विध्रुवीय नहि। ई पोथी न तऽ अस्वीकारयोग्य पुरान प्रयास अछि, न प्रत्येक दाबीमे अन्तिम प्रामाणिक इतिहास। एकर उचित स्थान अछि—अंगिका साहित्यक आधारभूत अभिलेखीय इतिहास, जे आधुनिक आलोचनात्मक संस्करण, स्रोत-श्रेणीकरण, प्रतिनिधि निकट-पाठ, तुलनात्मक भाषा-अध्ययन, सामाजिक प्रतिनिधित्व, डिजिटल अभिलेख आ आत्मसमीक्षासँ आरो प्रामाणिक बनि सकैत अछि।

सर्वोत्तम पुनर्पाठक सूत्र: पोथीक सामग्रीकेँ बचाउ; पोथीक दाबीकेँ जाँचू; जे प्रमाणित से दृढ करू; जे विवादित से स्पष्ट लिखू; जे असत्य सिद्ध हो से संशोधित करू; आ जे स्वर पहिने छूटल अछि, ओकरा समान गरिमासँ स्थान दिअ।

परिशिष्ट 1: संशोधनक ठोस कार्य-सारिणी

कार्य	ठोस सुधार
1. स्रोत-श्रेणी	प्रत्येक प्रमुख दाबी संग संकेत: प्राथमिक पाठ / समकालीन अभिलेख / उत्तरवर्ती स्रोत / मौखिक साक्ष्य / भाषिक अनुमान / सम्पादकीय निष्कर्ष।
2. दाबी-स्थिति	प्रमाणित / प्रबल सम्भावना / सम्भावित / विवादित / अप्रमाणित—स्पष्ट शब्दावली।
3. काल-विभाजन सारिणी	हर सीमा-वर्षक कारण, प्रमुख स्रोत, भाषिक लक्षण, संस्था, विधा आ अनिश्चितता।
4. भाषा आ साहित्य पृथक्	भाषिक वंश, बोली-संबंध, साहित्यिक पहिचान, भूगोल आ सांस्कृतिक स्मृति पृथक् अध्याय।
5. प्रतिनिधि निकट-पाठ	प्रत्येक काल-विधासँ चुनल रचनापर रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, कथाविज्ञान, स्त्रीवादी आ सामाजिक विश्लेषण।
6. लेखक–रचना सूचकांक	नाम, जन्म/मृत्यु जतय सत्यापित, प्रमुख रचना, प्रथम प्रकाशन, विधा, स्रोत।

कार्य	ठोस सुधार
7. पत्र-पत्रिका अभिलेख	प्रकाशन-स्थल, अवधि, सम्पादक, उपलब्ध अंक, पुस्तकालय/डिजिटल प्रति।
8. लोकसाहित्य क्षेत्रकार्य	स्थान, तिथि, कथक/गायक, प्रदर्शन-सन्दर्भ, पाठांतर, ध्वनि/वीडियो संकेत।
9. प्रतिनिधित्व-अध्ययन	स्त्री, ग्रामीण-शहरी, सामाजिक समूह, पेशागत पृष्ठभूमि आदि जतय सार्वजनिक प्रमाण उपलब्ध, तकर सांख्यिकीय सार।
10. संस्था-माध्यम मानचित्र	मंच, अकादमी, विद्यालय, विश्वविद्यालय, आकाशवाणी, प्रकाशक, पत्रिका, अधिवेशनक नेटवर्क।
11. संशोधन-इतिहास	1998 मूल कथन जसक तस; नूतन टिप्पणीमे की संशोधित, किएक, कोन स्रोतसँ—स्पष्ट।
12. डिजिटल पाठ-संग्रह	खोजयोग्य पाठ, लेखक/विधा/वर्ष टैग, स्कैनक संग सत्यापित पाठ, ध्वनि-सामग्री आ दीर्घकालिक अभिलेख।

परिशिष्ट 2: प्रमाण-जोखिम सारिणी

दाबी/सामग्री	जोखिम	आवश्यक कसौटी
पोथीक विषय-पाँजि, अध्याय-क्रम, मुद्रित पृष्ठ	न्यून	प्रत्यक्ष मूल पाठसँ जाँचयोग्य

दाबी/सामग्री	जोखिम	आवश्यक कसौटी
आधुनिक मुद्रित पुस्तक/पत्रिका/रेडियो प्रसंग	न्यून–मध्यम	जतय वर्ष/नाम देल अछि, स्वतंत्र अभिलेखसँ सत्यापन सम्भव
लेखक-जीवनवृत्त	मध्यम	स्रोत-सूचना असमान; जीवनी/अभिलेखसँ मिलान चाही
लोकपरम्परा आ जनश्रुति	मध्यम–उच्च	सांस्कृतिक स्रोत रूपेँ महत्त्वपूर्ण; ऐतिहासिक घटना रूपेँ अतिरिक्त प्रमाण चाही
प्राचीन कविक जन्मस्थान/क्षेत्रीय स्वामित्व	उच्च	पोथीक उपसंहार स्वयं किछु भ्रमक सावधानी दैत अछि
भाषा-वंश आ अतिप्राचीन भाषिक निरन्तरता	उच्च	तुलनात्मक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान, पाठ-तिथि आ ध्वनि-नियम चाही
साहित्यिक मूल्य-निर्णय: “श्रेष्ठ”, “आधुनिक”, “प्रभावी”	मध्यम	स्पष्ट आलोचनात्मक कसौटी आ प्रतिनिधि निकट-पाठ चाही

परिशिष्ट 3: कसौटी-अनुसार संक्षिप्त मूल्यांकन

क्षेत्र	निर्णय	कारण
सामग्री-संग्रह	अत्यन्त	विस्तृत लेखक,

क्षेत्र	निर्णय	कारण
	सशक्त	विधा, लोक, पत्रिका, रेडियो, गद्य-पद्य
साहित्यिक संस्थाक इतिहास	सशक्त	मंच, अधिवेशन, आकाशवाणी, पत्र-पत्रिका
भारतीय सौन्दर्यशास्त्रीय विश्लेषण	सीमित	रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्यक व्यवस्थित प्रयोग कम
निकट-पाठ	सीमित	विषय-सार अधिक, रूप-विश्लेषण कम
स्रोत-विधान	असमान	एकरूप उद्धरण/अभिलेख -संकेत आवश्यक
काल-विभाजन	उपयोगी मुदा पुनर्परीक्षणीय	मापदण्ड पृथक्-पृथक् स्तरक
स्त्री-विषयक उपस्थिति	उपस्थित	समेकित प्रतिनिधित्व-अध्ययन बाँकी
लोकसाहित्य	विशेष सशक्त	मौखिकता समाविष्ट; क्षेत्रकार्य विवरण चाही
माध्यम-अध्ययन	उल्लेखनीय	रेडियो, पत्र-पत्रिका, स्तम्भ आदिक दस्तावेज
आत्मसमीक्षा	महत्त्वपूर्ण बीज	उपसंहारमे भ्रम-संशोधनक स्वीकृति

क्षेत्र	निर्णय	कारण
विदेह समानान्तर कसौटी	उच्च सम्भावना	प्रतिरोधी इतिहास + समान प्रमाण-मानकक आवश्यकता

ग्रन्थसूची

नीचाँ देल सूचीमे मात्र पुस्तक आ पुस्तकाकार शास्त्रीय ग्रन्थ राखल गेल अछि। पत्रिका-लेख, वेबसाइट, वेब-पृष्ठ, ऑनलाइन लिंक आ स्वतंत्र निबन्ध एहि सूचीमे सम्मिलित नहि अछि।

समीक्ष्य ग्रन्थ आ भाषा-साहित्य इतिहास

डोमन साहु ‘समीर’, तेजनारायण कुशवाहा आ अमरेन्द्र — अंगिका साहित्य केरौं इतिहास. हिन्दी अकादमी, हैदराबाद, १९९८.

Grierson, George A. — Linguistic Survey of India, Vol. V, Part II: Bihari and Oriya. Calcutta: Office of the Superintendent of Government Printing, 1903.

Grierson, George A. — An Introduction to the Maithili Language of North Bihar. Calcutta, 1881.

Mishra, Jayakanta — A History of Maithili Literature.

Chatterji, Suniti Kumar — The Origin and Development of the Bengali Language. Calcutta University, 1926.

Masica, Colin P. — The Indo-Aryan Languages. Cambridge University Press, 1991.

Jain, Dhanesh and George Cardona, eds. — The Indo-Aryan Languages. Routledge, 2003.

Salomon, Richard — Indian Epigraphy: A Guide to the Study of Inscriptions in Sanskrit, Prakrit, and the Other Indo-Aryan Languages. Oxford University Press, 1998.

भारतीय काव्यशास्त्र आ दर्शन

भरतमुनि — नाट्यशास्त्र.

आनन्दवर्धन — ध्वन्यालोक.

अभिनवगुप्त — अभिनवभारती.

कुन्तक — वक्रोक्तिजीवित.

वामन — काव्यालंकारसूत्रवृत्ति.

क्षेमेन्द्र — औचित्यविचारचर्चा.

मम्मट — काव्यप्रकाश.

विश्वनाथ कविराज — साहित्यदर्पण.

गंगेश उपाध्याय — तत्त्वचिन्तामणि.

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, इतिहास आ संस्कृति

Aristotle — Poetics.

Wellek, René and Austin Warren — Theory of Literature.

Brooks, Cleanth — The Well Wrought Urn: Studies in the Structure of Poetry.

Erlich, Victor — Russian Formalism: History—Doctrine.

Culler, Jonathan — Structuralist Poetics: Structuralism, Linguistics and the Study of Literature.

Bakhtin, Mikhail M. — The Dialogic Imagination: Four Essays.

Gadamer, Hans-Georg — Truth and Method.

Jauss, Hans Robert — Toward an Aesthetic of Reception.

Iser, Wolfgang — The Act of Reading: A Theory of Aesthetic Response.

Williams, Raymond — Marxism and Literature.

Greenblatt, Stephen — Renaissance Self-Fashioning: From More to Shakespeare.

Anderson, Benedict — Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism.

Hobsbawm, Eric and Terence Ranger, eds. — The Invention of Tradition.

Bourdieu, Pierre — The Rules of Art: Genesis and Structure of the Literary Field.

Guha, Ranajit — Elementary Aspects of Peasant Insurgency in Colonial India.

Spivak, Gayatri Chakravorty — A Critique of Postcolonial Reason: Toward a History of the Vanishing Present.

Kristeva, Julia — Desire in Language: A Semiotic Approach to Literature and Art.

Foucault, Michel — The Archaeology of Knowledge.

Said, Edward W. — Orientalism.

Showalter, Elaine — A Literature of Their Own: British Women Novelists from Brontë to Lessing.

Eagleton, Terry — Literary Theory: An Introduction.

विदेह समानान्तर परम्परा
गजेन्द्र ठाकुर — समानान्तर दर्शन.

२

[ठेठी-अंगिका मैथिली]

‘अंगिका साहित्य केरौं इतिहास’[समीक्ष्य ग्रन्थ: आमुख — डॉ. डोमन साहु ‘समीर’ • पद्य-खण्ड — डॉ. तेजनारायण

कुशवाहा • गद्य-खण्ड — डॉ. अमरेन्द्र • हिन्दी अकादमी, हैदराबाद • प्रथम संस्करण, १९९८ ई.]

भारतीय आरू पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धान्त आरू विदेह समानान्तर परम्परा-दृष्टि केरौ आलोक मँ विस्तृत आलोचनात्मक समीक्षा

समीक्ष्य ग्रन्थ: आमुख — डॉ. डोमन साहु ‘समीर’ • पद्य-खण्ड — डॉ. तेजनारायण कुशवाहा • गद्य-खण्ड — डॉ. अमरेन्द्र • हिन्दी अकादमी, हैदराबाद • प्रथम संस्करण, १९९८ ई.

भूमिका

‘अंगिका साहित्य केरौं इतिहास’ अंगिका भाषा-साहित्य केरौ इतिहास-लेखन मँ महत्त्वपूर्ण आधार-ग्रन्थ छै। एकरौ विशेष सामर्थ्य सामग्री-संग्रह, विस्मृत लेखक-रचना केरौ संरक्षण, लोक आरू लिखित साहित्य केरौ संयुक्त प्रस्तुति, भाषिक रूपरेखा, साहित्यिक संस्था केरौ दस्तावेजीकरण आरू व्यापक सांस्कृतिक मानचित्र बनेबा मँ छै। एकरौ सीमा मुख्यत: ऊ जगह देखाय छै जहाँ प्राचीनता, भाषिक वंश, जन्मस्थान, लिपि-परम्परा वा साहित्यिक स्वामित्व केरौ दाबी उपलब्ध प्रमाणसें बेसी निश्चित रूप मँ प्रस्तुत होय छै। एही लेली पोथी केरौ अभिलेखीय महत्त्व आरू ओकरौ दाबी सिनी केरौ प्रमाण-स्थिति—दुन्नो के पृथक् राखी क मूल्यांकन करना आवश्यक छै।

1. ग्रन्थ केरौ स्वरूप, प्रकाशन-पृष्ठभूमि आरू सहलेखनक विन्यास

प्रस्तुत इतिहास-ग्रंथ केरौ प्रकाशन हिन्दी अकादमी, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) द्वारा श्रावणी पूर्णिमा, संवत् २०५५ (१९९८ ई०) मँ संपन्न होलौ। पोथी केरौ मुद्रण स्वर्ण कम्प्यूटर प्रेस, टावर चौक, देवघर (बिहार) मँ करल गेलौ छेलै, जे मँ कुल २६० पृष्ठ समाहित छै। ग्रंथ केरौ प्रथम संस्करण केरौ प्रसार संख्या एक सहस्र प्रति तथा मूल्य एक सौ पच्चीस टका निर्धारित करल गेलौ छेलै। ई पोथी आन्ध्र प्रदेशक प्रसिद्ध उद्योगपति आरू साहित्य-प्रेमी पद्मश्री डॉ० बी० वी० राजू कें सादर समर्पित करल गेलौ छै, जेकरौ उदार आर्थिक संबल सें ई मुद्रण संभव होय सकल।

पोथी केरौ उत्पत्ति आरू पृष्ठभूमि पर दृष्टि देला सें स्पष्ट होय छै जे एकरौ मूल प्रेरणा हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबादक हीरक जयंती समारोह (अगस्त, १९९६ ई०) मँ निहित छेलै। हिन्दी अकादमी केरौ तत्कालीन अध्यक्ष प्रो० डॉ० बैजनाथ चतुर्वेदी अपनो दिवंगता धर्मपत्नी वाणीमुक्ता प्रतिभा मिश्र (जे मूलत:

अंग-सवासिनि छेलथिन) क अंतिम इच्छाक पूर्तये अंगिका भाषा केरौ एगो सांगोपांग इतिहास प्रस्तुत करबाक संकल्प करने छेलथिन। चतुर्वेदीजीक ई आग्रहेँ तीनगो मूर्धन्य विद्वानक एगो लेखक-मंडल गठित करल गेलौ, जे मँ श्रम आरू विषयक सुस्पष्ट विभाजन करल गेलौ।

लेखकत्रयक ई विभाजन पोथी केरौ विषय-सामग्रीकेँ एगो संतुलित स्वरूप प्रदान करै छै। डॉ० डोमन साहु 'समीर' अपनो असाधारण भाषावैज्ञानिक अंतर्दृष्टि सेँ अंगिका केरौ ध्वनि-व्यवस्था, पद-रचना आरू व्याकरणिक स्वरूपक नियामक ढाँचा 'आमुख' मँ निर्मित करलथिन। डॉ० तेजनारायण कुशवाहा पद्य-खंड मँ सिद्ध-परंपरा सेँ लै क करी आधुनिक मंचोत्तर काल धरिक सहस्र वर्ष केरौ काव्य-प्रवृत्तिक विवेचन करलथिन। डॉ० अमरेन्द्र गद्य-खंड मँ अंग-भूमिक सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि केरौ आलोक मँ उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा आरू पत्र-पत्रिका केरौ ऐतिहासिक विकास-क्रमक सूक्ष्म प्रलेखीकरण करलथिन।

लेखक	दायित्व आ विषय-विभाजन	ग्रंथ मे पृष्ठ-विस्तार
डॉ० डोमन साहु 'समीर'	'आमुख' (अंगिका भाषा आ व्याकरणक सांगोपांग रूपरेखा)	पृष्ठ १ सँ १३
डॉ० तेजनारायण कुशवाहा	खंड-१: पद्य (प्रारंभिक, मध्य आ आधुनिक युगक संपूर्ण काव्य-इतिहास)	पृष्ठ १६ सँ १४६
डॉ० अमरेन्द्र	खंड-२: गद्य (कथा, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना, पत्रकारिता	पृष्ठ १४९ सँ २६०

लेखक	दायित्व आ विषय-विभाजन	ग्रंथ मे पृष्ठ-विस्तार
	आदि)	

ई विन्यास देखाबै छै जे ग्रन्थकार सिनी “साहित्य” के मात्र कविता-कहानीक संग्रह नै मानै छथिन। भाषा, व्याकरण, लोकपरम्परा, इतिहास-भूगोल, पत्र-पत्रिका, रेडियो-नाटक, आलोचना, संस्मरण, जीवनी, शब्दकोश, विज्ञान-लेखन, कृषि-लेखन आदि के भी साहित्यिक सार्वजनिकता बनाबै वाला अवयव मानल गेलौ छै। ई कारण पोथी के मात्र साहित्येतिहास नै, एक प्रकार केरौ सांस्कृतिक अभिलेख-निर्माण भी कहलौ जाय सकै छै।

1.1 साहित्यिक संस्था केरौ इतिहास केरौ रूप मँ “मंच-पूर्व–मंच–मंचोत्तर”

आधुनिक अंगिका साहित्य केरौ इतिहास के “मंच-पूर्व”, “मंच” आरू “मंचोत्तर” अवस्था रूप मँ देखबाक प्रवृत्ति पोथी केरौ एक उल्लेखनीय आलोचनात्मक आविष्कार छै। ई सामान्य राजवंशीय काल-विभाजनसें पृथक् छै। हियाँ साहित्य केरौ परिवर्तन के लेखक-मंच, अधिवेशन, पत्रिका, संगठन, आकाशवाणी, सार्वजनिक वाचन, प्रकाशन-संस्था आरू नूतन लेखक-पाठक समुदायसें जोड़ल जा रहलौ छै। पश्चिमी साहित्य-सामाजिकी आरू पाठक-स्वीकृति सिद्धान्त केरौ दृष्टि सें ई अत्यन्त उपजाऊ सूत्र छै।

मगर ई वर्गीकरण के अधिक कठोर बनाबै लेली प्रत्येक अवस्थाक मापदण्ड स्पष्ट चाही—कतना संस्था, कोन प्रकाशन-घटना, कोन भाषिक परिवर्तन, कोन पीढ़ीगत भेद, आरू कोन पाठक-वर्ग परिवर्तनकारी मानल जैतै। अखनी ई अधिकतर वर्णनात्मक छै; एकरा विश्लेषणात्मक बनैलौ जाय सकै छै।

2. भाषा-व्याकरण, अंग-लिपि, प्राचीनता आरू भाषिक इतिहास

पोथी केरौ 'आमुख' (पृष्ठ १-१३) मँ डॉ॰ डोमन साहु 'समीर' अंगिका भाषा केरौ प्राचीनता, क्षेत्रीय विस्तार आरू ओकरौ आंतरिक व्याकरणिक संरचनाक अत्यंत प्रामाणिक भाषावैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करने छथिन। प्राचीन भारतीय वाङ्मय, विशेषतः अथर्ववेद, महाभारत, पुराण, बौद्ध ग्रन्थ 'अंगुत्तरनिकाय' तथा जैन ग्रन्थ 'भगवती-सूत्र' मँ उल्लिखित षोडश महाजनपदक साक्ष्य लै लेखक अंग-भूमिक ऐतिहासिक सत्ताक निरूपण करै

छथिन। आधुनिक भूगोलक दृष्टि सें बिहारक भागलपुर, बाँका, मुंगेर, सहरसा, कटिहार, अररिया, किशनगंज, पूर्णिया, जमुई, बेगूसराय तथा संताल परगनाक साहेबगंज, गोड्डा, पाकुड़, दुमका आरू देवघर जिलाक लोक-भाषा केरौ रूप मँ अंगिका केरौ प्रसार-क्षेत्र रेखांकित करल गेलौ छै।

लिपि आरू प्राचीन भाषा-संज्ञा केरौ संदर्भ मँ बौद्ध ग्रन्थ 'ललितविस्तर' मँ उल्लिखित ६४ लिपि सिनी मँ ब्राह्मी, खरोष्ठी आरू पुष्करसारीक उपरांत चतुर्थ स्थान पर परिगणित 'अंग-लिपि'क आधार पर लेखक ई प्रतिपादित करै छथिन जे मिथिलाक्षर, वंगलिपि, असमिया आरू कैथी लिपिक ऐतिहासिक प्रस्थान-बिंदु वस्तुतः अंग-लिपिये मँ अंतर्निहित छेलै। ओहिना प्राचीन भौगोलिक वर्गक प्राच्या भाषा केरौ अंतर्गत उद्धृत वाक्य "आंगी वांगी पांचाली वैदर्भी मागधी एते प्राच्याः" क आधार पर 'आंगी' कें अंगिका केरौ मातृ-रूप मानल गेलौ छै, जेकरा सें प्राकृत आरू अपभ्रंश केरौ स्तर पार करी आधुनिक जनभाषा विकसित होलौ।

2.1 ध्वनितत्त्व

अंगिका केरौ ध्वनि-व्यवस्था भले देवनागरी लिपिक माध्यम सें अभिव्यक्त होय छै, तैयो ई भाषा मँ दूगो विशिष्ट स्वर-ध्वनि विद्यमान छै जेकरा लेली स्वतंत्र वर्ण-चिह्नक प्रस्ताव पोथी मँ करल गेलौ छै। पहिल विशिष्ट ध्वनि छेकै 'प्रसृत ए-कार' (/ ऍ / ~), जे सामान्य ए-कार सें अधिक विवृत होय करी उच्चारित होय छै आरू जे 'लें', 'दें', 'जमें', 'तबें', 'आबें' जइसन पद मँ प्रयुक्त होय छै। ई ध्वनि मात्र उच्चारणे मँ भिन्न नै छै, बल्कि अर्थ-भेदक नियामक भी छै; जेना 'ले' कहलासें अवज्ञार्थक बोध होय छै मगर 'लें' आदरार्थक बनै छै। दोसर विशिष्ट ध्वनि छेकै 'प्रसृत अ-कार वा ऑ-कार' (/ ओं / ^), जे 'आबों', 'बैठों', 'पढ़ों', 'लिखों', 'हमरों', 'तोरों' मँ समाहित छै। ई जगह 'हमरो' (समावेशी = हमहुँ) आरू 'हमरों' (संबंधार्थक = हमर) क मध्यक अर्थ-परिवर्तन ई ध्वनिक सूक्ष्मताक अकाट्य प्रमाण छै। एकरौ अतिरिक्त न्, म्, य्, र् आरू ल् क संग महाप्राण 'ह' क संयुक्त ध्वनि (कान्हो, हम्हें, ठाम्हें, ऐयूहों, कल्हे) अंगिका केरौ उच्चारण-प्रवृत्तिकें एगो विशिष्ट झंकार प्रदान करै छै।

2.2 रूपतत्त्व आरू व्याकरणिक वैशिष्ट्य

अंगिका केरौ रूपतात्विक संरचना मँ संज्ञा केरौ द्विविध रूप अत्यंत मौलिक छै, जे मँ सामान्य आरू निश्चयार्थक (विशिष्ट) संज्ञा केरौ स्पष्ट विभाजन देखल जाय छै। सामान्यार्थक संज्ञा मँ '-आ' प्रत्ययक योग भेला पर पूर्ववर्ती दीर्घ स्वर ह्रस्व होय जाय छै तथा मध्य मँ य अथवा व क आगम होय करी निश्चयार्थक रूप बनै छै; जेना गाय सें गैया, लोटा सें लोटवा, धोती सें धोतिया आरू कुत्ता सें कुतवा।

अंगिका केरौ क्रियापद मँ सर्वनामीकरण (Pronominal Concord) भाषावैज्ञानिक दृष्टि सें सर्वाधिक जटिल आरू समृद्ध वैशिष्ट्य छै। ई प्रक्रिया मँ एकहि क्रियापदक भीतर संपूर्ण वाक्यक अर्थ समाहित होय जाय छै, जहाँ कर्ता आरू कर्मक पुरुष तथा आदर केरौ मात्रा क्रिया केरौ प्रत्यय मँ पूर्णतः एकाकार होय जाय छै। मागधी अपभ्रंश सें उद्भूत प्राच्य भाषा-समूह मँ ई विशिष्टता अंगिका केरौ पद-रचनाकें अत्यंत सशक्त आरू संश्लिष्ट रूप प्रदान करै छै।

व्याकरणिक कोटि	संरचनात्मक लक्षण	पोथी मे प्रदत्त उदाहरण
कारक एवं परसर्ग	सकर्मक भूतकालिक क्रियाक संग कर्ता मे अनुस्वार (वा 'नें') क विकार, अकर्मक मे अविकारी। संबंध परसर्ग '-कें', '-केरों', '-रों' तथा संप्रदान '-लें', '-लेली', '-बास्तें'।	'बरदा चरै छै' (अकर्मक) मुदा 'बरदाँ खैलकै' (सकर्मक)। तोरा लें/लेली, ओकरा बास्तें।
लिंग आ वचन	प्राकृतिक लिंग-व्यवस्था; व्याकरणिक	बुतरू (ए०व०) बुतरूसनी / बुतरूसिनी

व्याकरणिक कोटि	संरचनात्मक लक्षण	पोथी मे प्रदत्त उदाहरण
	लिंग-भेद संकुचित। बहुवचनक लेल '-सनी', '-सिनी' आ '-सब' प्रत्यय।	(ब०व०)। नूँगा नूँगा-सब।
सर्वनाम	लिंग-भेद रहित, मुदा आदरक त्रिविध स्तर: अवज्ञार्थक/समतार्थक, आदरार्थक आ परम-आदरार्थक।	उत्तम: हम/हम्में/हम रासिनी; मध्यम: तों, तोंय (अनादर), तोहें/आपने (आदर); अन्य: ऊ (अनादर), हुनी (आदर)।
मूल क्रिया (Substantive Verb)	सत्तासूचक 'छै' आ विकारसूचक (स्वरूप-तादात्म्य) 'छेकै' क मध्य नित्य भेद।	'एकरा मे पानी छै' (अस्तित्व) बनाम 'ऊ पानी छेकै' (स्वरूप/परिचय)।
क्रियापदिक सर्वनामीकरण	समापक क्रियापद मे कर्ता, कर्म अथवा संबोधी-संबंधी सर्वनाम अंशक नीर-क्षीरवत संश्लिष्ट संलयन।	'देखलियौ' (हम तोरा देखलियौ), 'ऐल्हौं' (ऊ, जे तोहर सगा छेकौ, से आएल)।

2.3 आधुनिक भाषावैज्ञानिक कसौटी

मगर आधुनिक भाषावैज्ञानिक कसौटीपर ई आमुख के वर्णनात्मक व्याकरण केरौ आरम्भिक दस्तावेज मानना अधिक उचित होतै। व्यवस्थित ध्वन्यात्मक लिप्यन्तरण, क्षेत्रवार बोली-नमूना, न्यूनतम युग्म, ध्वनि-परिवर्तन, वक्ताक सामाजिक विवरण, रूपिम-सारिणी, पाठ-संग्रह, प्राकृतिक संवाद, सांख्यिकीय आवृत्ति आरू तुलनात्मक पूर्वी आर्यभाषिक विश्लेषण जोड़ल नै छै। तें ई साहित्यिक-व्याकरणिक रूपरेखा छै, पूर्ण आधुनिक वर्णनात्मक व्याकरण नै।

पोथी अनेक ठाम भाषा केरौ प्राचीनता आरू साहित्य केरौ प्राचीनता एक-दोसरौक साक्ष्य रूप मँ उपयोग करै छै। मगर “एहि भूगोलमे अमुक कवि रहलाह”, “ओहि पाठमे किछु रूप आइक अंगिकासँ मिलैत अछि”, आरू “ओ पाठ पूर्णतः आधुनिक अर्थक अंगिका साहित्य अछि”—ई तीन पृथक् दाबी छथिन। भाषिक इतिहास मँ नियमित ध्वनि-परिवर्तन, व्याकरणिक नवाचार, हस्तलिखित पाठक तिथि आरू तुलनात्मक प्रमाण आवश्यक छै।

नव संस्करण मँ “भाषा-इतिहास”, “साहित्यिक परम्परा”, “क्षेत्रीय सांस्कृतिक स्मृति” आरू “आधुनिक भाषिक पहिचान” चार पृथक् उपखंड बनाओल जाए। ई सें परम्परा कमजोर नै होतै; उलटे प्रमाण केरौ स्तर स्पष्ट भेला सें विश्वसनीयता बढ़तै।

2.4 “अंग-लिपि” सम्बन्धी दावा केरौ पुरालिपिवैज्ञानिक परीक्षण

आमुख मँ ललितविस्तर केरौ चौंसठि लिपिक पाँति मँ “अंग-लिपि” उल्लेख के ऐतिहासिक महत्त्व देलौ गेलौ छै। ग्रन्थ केरौ तर्क ई उल्लेखसें आगाँ बढ़ि मिथिलाक्षर, बंगला, असमिया आदिक विकास-सूत्र तलक पहुँचबाक प्रयत्न करै छै।

ई जगह कठोर पुरालिपिवैज्ञानिक भेद आवश्यक छै—ककरो प्राचीन ग्रन्थ मँ “अंग-लिपि” नाम भेटब एक तथ्य छै; मगर ऊ नामसें जुड़ल अक्षररूप, दिनांकित अभिलेख, विकासक्रम आरू उत्तरवर्ती लिपिक प्रत्यक्ष वंशपरम्परा सिद्ध होय गेलौ—ई दोसर बात छै।

Richard Salomonक भारतीय पुरालिपि-विषयक मानक विवेचन मँ दक्षिण एशियाक अधिकांश देशज लिपिक प्रमाणित विकास-वृक्ष ब्राह्मीक अनेक क्षेत्रीय शाखासें जोड़ल जाय छै। ललितविस्तर केरौ चौंसठि लिपिक पाँतिक ऐतिहासिक मूल्य सीमित मानल गेलौ छै, कारण ब्राह्मी आरू खरोष्ठी छोड़ि

बहुत नाम के विशिष्ट पुरातात्त्विक अक्षरमालासें निश्चयपूर्वक मिला सकब कठिन छै।

एहीं लेली पोथी केरौ “अंग-लिपि” प्रसंग के “प्राचीन ग्रन्थमे अंग-नामित लेखन-परम्पराक स्मृति” कहना सुरक्षित छै; “एहि सँ अमुक-अमुक आधुनिक लिपि सीधे उत्पन्न भेल” कहबाक लेली अभिलेखीय मध्य-कड़ि चाही। ई अन्तर नव संस्करण मँ अवश्य स्पष्ट करल जएबाक चाही।

2.5 ऐतिहासिक आरू भाषावैज्ञानिक दाबा सिनी केरौ तुलनात्मक समालोचना

प्रस्तुत इतिहास-ग्रंथ केरौ सर्वाधिक विचारणीय आरू संवेदनशील पक्ष छेकै एकरौ कतिपय अति-उत्साही ऐतिहासिक आरू भाषावैज्ञानिक दाबी, जे मँ क्षेत्रीय अस्मिता केरौ भावुकता भाषावैज्ञानिक तटस्थता पर हावी देखाय छै।

ऋग्वेदक मंत्रद्रष्टा दीर्घतमस्, कक्षीवत आरू घोषा तथा पालकव्यक 'हस्त्यायुर्वेद'क भाषिक प्रवृत्तिकें अंगिका केरौ मूल रूप मानना भाषावैज्ञानिक दृष्टि सें सर्वथा असिद्ध छै। वैदिक संस्कृत भारत-यूरोपीय भाषा-परिवारक आदिम रूप छेकै, जब कि नव्य भारतीय आर्य-भाषा (जे मँ अंगिका, मैथिली, बँगला आदि सम्मिलित छै) मध्यकालीन प्राकृत आरू अपभ्रंश केरौ स्तर पार करी दशमीं-एकादशीं शती केरौ आस-पास स्वतंत्र रूप ग्रहण करलकै। सहस्र वर्ष पूर्व होलौ वैदिक ऋचाकें कोनो आधुनिक बोली विशेषक आद्य रूप मानना कालदोष (Anachronism) सें ग्रस्त छै।

विक्रमशिला महाविहार केरौ भौगोलिक अवस्थितिक आधार पर चौरासी सिद्ध केरौ चर्यापद आरू दोहाकोश केरौ संपूर्ण वाङ्मयकें 'विशुद्ध प्राचीन अंगिका' घोषित करना एकांगी दृष्टि छै। महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री, डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी, महापंडित राहुल सांकृत्यायन तथा डॉ० सुभद्र झा सिद्ध-साहित्य केरौ भाषाकें 'अवहट्ठ' वा 'आदिम मागधी अपभ्रंश' मानै छथिन। ई भाषा वस्तुतः आधुनिक मैथिली, बँगला, असमिया आरू ओड़िआक साझी पूर्वज (Proto-Eastern Indo-Aryan) छेलै। ई मँ प्रयुक्त 'पइट्ठइ', 'सुण्ण', 'णदह' जइसन रूप कोनो एक विशिष्ट भाषा केरौ नै होय समग्र प्राच्य प्राकृत-अपभ्रंश केरौ सामान्य संपत्ति छेकै। भले सरहपा विक्रमशिला सें संबद्ध छेलथिन, तैयो ऊ साझी भाषा-परंपरा सें मैथिली, बँगला वा मगहीक दाबीकें

सर्वथा खारिज करी मात्र अंगिका केरौ एकाधिकार सिद्ध करना न्यायसंगत नै बुझाइत छै।

महाकवि विद्यापतिकें अंगिका केरौ कवि सिद्ध करबाक चेष्टा ऐतिहासिक आरू भाषावैज्ञानिक साक्ष्यक दृष्टि सें सर्वथा निराधार छै। विद्यापति केरौ जन्म मिथिला केरौ मधुबनी जिलांतर्गत बिसफी ग्राम मँ ओइनिवार राजवंशक छत्रछाया मँ होलौ छेलै, जहाँ राजा शिवसिंह हुनका बिसफी गाम ताम्रपत्र पर लिख करी दान देने छेलथिन। विद्यापति केरौ घोषणा "देसिल बअना सब जन मिट्ठा, तें तैसन जम्पओ अवहट्ठा" तत्कालीन लोकभाषा अवहट्ठक संदर्भ मँ छै। विद्यापति केरौ पदावलीक क्रियापद (गेलनि, कहलन्हि, देखलहुँ) आरू सर्वनाम (हमार, तोहार, अहाँ, ऊ) मानक मैथिली केरौ व्याकरणिक संरचना छेकै। अंगिका केरौ विशिष्ट क्रिया-प्रत्यय (यथा 'खैलकै', 'गेलै', 'छेकै') विद्यापति केरौ मूल पदों मँ पूर्णत: अनुपलब्ध छै। मात्र ई आधार पर जे हुनकरौ नचारी अंग-क्षेत्र मँ गाओल जाय छै, हुनका अंगिका केरौ कवि मानना भाषावैज्ञानिक दृष्टि सें स्वीकार्य नै होय सकै छै।

अंगिका आरू मैथिली केरौ अंतर्संबंधक भाषावैज्ञानिक यथार्थ ई छै जे सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपनो 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' (खंड ५, भाग २) मँ अंगिकाकें बिहारी भाषा-समूह केरौ अंतर्गत 'मैथिलीक दक्षिणी-पूर्वी बोली' (छिका-छिकी) क रूप मँ वर्गीकृत करने छेलथिन। व्याकरणिक धरातल पर मैथिली आरू अंगिका दुन्नो मागधी अपभ्रंश केरौ अत्यंत निकटवर्ती सहोदरा छथिन। क्रियापद मँ सर्वनामीकरणक संश्लिष्ट विन्यास, भूतकाल मँ सकर्मक कर्ताक विकारी रूप, आदरार्थक सर्वनामक त्रिविध कोटि तथा बहुसंख्यक परसर्ग दुन्नो मँ एकसमान छै। अंगिका केरौ अपनो विशिष्टता ओकरौ विवृत स्वर (प्रसृत ऍ आरू ओं), 'छै' आरू 'छेकै' क रूपभेद तथा विशेषणक निश्चयार्थक प्रत्यय (-का/-की) मँ निहित छै। एही लेली अंगिकाकें एगो स्वतंत्र भाषिक अस्मिता मानलौ जाय सकै छै, मगर मैथिलीसें ओकरौ संरचनात्मक संबंध केरौ पूर्ण अपलाप करना भाषाविज्ञानक नियमक विरुद्ध छै।

3. साहित्यिक काल-विभाजन आरू ऐतिहासिक विकास

डॉ० तेजनारायण कुशवाहा पद्य-खंड मँ अंगिका काव्य केरौ सुदीर्घ विकास-यात्राकें तीनगो कालखंड मँ विभक्त करने छथिन:

कालखंड	कालावधि	प्रमुख साहित्यिक धारा आ प्रतिनिधि काव्य
प्रारंभिक युग	५०० ई० सँ १२२० ई० धरि	अपभ्रंश ('सुदंसण चरिउ'), सहजयानी सिद्ध-काव्य, नाथ-पंथ, लोक-गीति-गाथा, लोकोक्ति-काव्य।
मध्य युग	१२२० ई० सँ १८५० ई० धरि	पूर्व-मध्य युग (१२२०-१६५० ई०): विद्यापतिक पदावली, कबीर, साधु-काव्य, भृगुराम मिश्र। उत्तर-मध्य युग (१६५०-१८५० ई०): 'सती बिहुला' महाकाव्य, रेशमा, सलेस भगत, लोक-नृत्य।
आधुनिक युग	१८५० ई० सँ अद्यावधि	मंच-पूर्व युग (१८५०-१९५० ई०): पंच कविरत्न। मंच-युग (१९५०-१९८५ ई०): भाषा-आंदोलन, 'सवर्णा' महाकाव्य। मंचोत्तर युग (१९८५ सँ आब धरि): बृहत्त्रयी महाकाव्य, विश्वविद्यालयीय प्रतिष्ठा।

3.1 प्रारम्भिक युग

प्रारंभिक युग केरौ विवेचन मँ लेखक वैदिक संहिताक दीर्घतमस्, कक्षीवत आरू घोषाक ऋचा तथा पालकव्य मुनिक 'हस्त्यायुर्वेद' मँ स्थानीय 'आंगी' प्रवृत्तिक बीजरूप देखैत छथिन। तदुपरान्त जैन आरू बौद्ध आगमक पृष्ठभूमि मँ अपभ्रंश चरित-काव्य 'सुदंसण चरिउ' मँ वर्णित अंगदेशक प्राकृतिक सौन्दर्यकें रेखांकित करल गेलौ छै।

सहजयानी सिद्ध-साहित्य केरौ संदर्भ मँ विक्रमशिला महाविहार केरौ अंग-क्षेत्र (कहलगाँव, भागलपुर) मँ अवस्थितिक कारणेँ सिद्ध केरौ संपूर्ण चर्यापद आरू दोहाकोश केरौ भाषाकें अंगिका केरौ पूर्व-रूप घोषित करल गेलौ छै। सिद्ध सरहपा केरौ जन्म-स्थान 'राङ्गी' (भागलपुर केरौ आधुनिक रानी दियारा अथवा बरारी) मानै हुनका अंगिका केरौ आदि-कवि स्वीकार करल गेलौ छै। सरहपा केरौ अतिरिक्त शबरपा, लुइपा, दारिकपा, कण्हपा आरू शान्तिपाक पद उद्धृत करी ई बात पर बल देलौ गेलौ छै जे ई मँ प्रयुक्त 'जब्बे-तब्बे', 'नइ' (नाओ), 'अहणिसि' जइसन शब्दरूप आधुनिक अंगिका केरौ स्वाभाविक पूर्वज छेकै। नाथ-पंथक विवेचन मँ गोरखनाथ केरौ वाणी "हँसिबा, खेलिबा, धरिबा ध्यान" कें अंगिका केरौ "हँसबों, खेलबों, धरबों धियान" सें समीकृत करी नाथ-काव्य मँ अंगिका केरौ भाषिक प्रभाव प्रतिपादित करल गेलौ छै।

ई युग मँ आल्हा-ऊदल, लोरिकैन, शोभा नायक बनजारा, सोरठी-बृजाभार, कुँवर विजयमल, राजा भरथरी, राजा मानिकचंद आरू गोपीचंद जइसन लोक-गीति-गाथा केरौ मौखिक परंपरा पल्लवित होलौ। ई गीति-प्रबंध केरौ माध्यम सें तत्कालीन समाज केरौ वीरगाथा, तंत्र-मंत्र, कौटुंबिक निष्ठा आरू वैराग्य-भावना अज्ञात लोक-कवि सिनी केरौ कंठ मँ संरक्षित होलौ। संगे-संग घाघ, भड्डरी आरू डाकक कृषि-लोकोक्ति तथा शिशु-मनोविनोदक 'फेंकड़ा' आरू 'लोरी' कें भी प्रारंभिक काव्य-निधिक रूप मँ समाविष्ट करल गेलौ छै।

3.2 मध्य युग

मध्य युग केरौ अंतर्गत पूर्व-मध्य काल मँ महाकवि विद्यापति केरौ 'पदावली' आरू 'कीर्तिलता'क भाषाकें 'देसिल बअना' कहै पोथी मँ ई दाबी

करल गेलौ छै जे तब 'मैथिली' शब्द केरौ प्रचलन नै रहबाक कारणेँ ऊ वस्तुतः तत्कालीन 'आंगी' भाषा छेलै। विद्यापति केरौ नचारी उत्तरी अंग-क्षेत्र मेँ घर-घर मेँ गाओल जाय छै, ई आधार पर हुनका अंगिका केरौ कवि मानबाक आग्रह करल गेलौ छै। साधु-काव्य केरौ प्रसंग मेँ संत कबीर केरौ पूरबी भाषा ("भाषा हमरी पूरबी हमको लखै न कोय") मेँ प्रयुक्त निश्चयार्थक क्रियापदक साम्य देखाबै हुनका ज्ञानमार्गी शाखा मेँ राखल गेलौ छै। मुंगेरक कवि भृगुराम मिश्र (१४वीं शती) क कृति 'रासबिहार', 'सुदामा चरित' आरू 'दानलीला' कें मध्यकालीन अंगिका केरौ अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानल गेलौ छै, जे विषय मेँ फ्रांसिस बुकाननक सर्वेक्षण-विवरण केरौ साक्ष्य देलौ गेलौ छै।

उत्तर-मध्य युग मेँ शृंगारिक आरू पौराणिक लोक-प्रबंध केरौ विपुल सृष्टि होलौ। ई मेँ १७वीं शती मेँ चम्पावासी भीमसेनक समकालीन कवि केशो साव द्वारा रचित नौ खंडक महाकाव्य 'सती बिहुला' (बिहुला-विषहरी) अंगिका केरौ प्रथम प्रबंध-काव्य मानल गेलौ छै, जे मेँ मनसा विषहरीक कोप आरू महासती बिहुलाक अनुपम पातिव्रतक चित्रण छै। एकरौ अतिरिक्त दलित नायक वीर चूहरमल आरू रेशमाक आत्मोत्सर्गक कथा 'रेशमा', राजा सलेस (सहलेस) क त्याग आरू शौर्यक गाथा 'सलेस भगत', तथा 'बाबा बिसू राउत', 'नेटुआ दयालऽ आ 'ज्योति तपस्या' सन लोक-गाथा लोक-संस्कृतिक उच्चतम आदर्श स्थापित करैत अछि।

3.3 आधुनिक युग

आधुनिक युग केरौ प्रथम सोपान 'मंच-पूर्व युग' (१८५०-१९५० ई०) मेँ लोकवार्ताक संकलनक संगहि शिष्ट काव्य-परंपराक विकास होलौ। ई काल मेँ 'पंच कविरत्न' उदित भेलाह:

पं० काली प्रसाद पाण्डेय अपनो लोक-प्रसिद्ध 'बारहमासा' लेली स्मरणीय छथिन।

पं० दर्शन दुबे (१८७६-१९१२ ई०) गोड्डाक वंदनवार निवासी छेलथिन, जेकरौ २७ छंदक रीतिकालीन कृति 'कृष्ण-लीला' (सवैया आरू कवित्त मेँ) ब्रजभाषाक शृंगार-काव्य केरौ समकक्ष प्रतिभा प्रदर्शित करै छै।

पं० बाजितलाल मिश्र (जन्म १८९३ ई०) प्रतापपुर (गोड्डा) क लोक-कवि छेलथिन, जेकरौ शिव-भक्तिपरक झूमर महिला-समाज मँ अत्यंत समादृत छै।

सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द ओझा (१८८६-१९७० ई०) देवघरक सरदार पंडा छेलथिन, जे झूमर विधा केरौ अप्रतिम सम्राट भेलाह आरू राधा-कृष्णक प्रेम तथा शिव-भक्तिक अद्वितीय पद रचलाह।

पं० भुवनेश्वर चौधरी 'भुवनेश' (१८९०-?) सुल्तानगंजक बाथ निवासी छेलथिन, जे अंगिका मँ बाल-साहित्य, बुझौवल आरू अंतर्लापिकाक प्रवर्तन कएलाह तथा ९५१ पृष्ठक हस्तलिखित पत्रिका 'भारती' (१९५७ ई०) क संपादन कएलाह।

'मंच-युग' (१९५०-१९८५ ई०) मँ जनपदीय साहित्यिक चेतनाक संगठनात्मक रूप प्रकट होलौ। १९५६ ई० मँ पटना मँ डॉ० लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु' आरू गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ द्वारा 'अंगभाषा-परिषद्' क नींव राखल गेलौ। १९६४ ई० मँ डॉ० तेजनारायण कुशवाहा 'अंग प्रान्तीय साहित्य-सम्मेलन' आरू १९७३ ई० मँ 'अखिल भारतीय अंगिका भाषा सम्मेलन'क गठन कएलाह। ई युगेँ सदानन्द मिश्र 'साहित्यिक साँढ़' क हास्य-व्यंग्य संग्रह 'खोंड़-पतार' (१९६५), डॉ० तेजनारायण कुशवाहाक राजभाषा-पुरस्कृत सौर-महाकाव्य 'सवर्णा' (१९८४), डॉ० परमानन्द पाण्डेय क 'पछिया बयार', उचितलाल सिंहक चार संकलन ('पंचरंग चोलऽ, 'माटी के चेत', 'रौदा के दूब', 'कानै छै लोर'), डॉ० भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' क 'घैरकों' आ 'खोरना', तथा प्रभातरंजन सरकार 'आनन्दमूर्ति' क 'प्रभात-संगीत' (५०१८ गीत) सन युगांतरकारी कृति समाजक सोझाँ आयल।

'मंचोत्तर युग' (१९८५ ई० सें आब तलक) मँ अंगिका केरौ अधिकार-यात्रा दिल्लीक गांधी शांति प्रतिष्ठान (१० अप्रैल, १९९४ ई०) तलक पहुँचल, जेकरा सें १९ जून, १९९५ कें तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालयक स्नातक स्तर पर अंगिका केरौ अध्ययन-अध्यापनक वैधानिक स्वीकृति प्राप्त होलौ। ई युग मँ अनिरुद्ध प्रसाद विमलक विरह-काव्य 'कागा की संदेश उचारै', डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर' क 'ययाति', डॉ० अमरेन्द्रक दलितोत्थानपरक महाकाव्य 'गेना'

तथा सुमन सूरोक भीष्म-चरितपरक महाकाव्य 'उर्ध्वरेता' आधुनिक अंगिका केरौ 'बृहत्त्रयी' महाकाव्यक रूप मँ प्रतिष्ठित होलौ।

3.4 काल-विभाजनक उपयोगिता आरू सीमा

500–1220, 1220–1850, 1850 सें आधुनिक, फेर मंच-पूर्व, मंच आरू मंचोत्तर —ई ढाँचा पाठक के स्पष्ट दिशा दै छै। साहित्यिक इतिहास मँ एहन कालरेखा आवश्यक होय छै। मगर हर सीमा-वर्ष केरौ मापदण्ड समान नै देखाय छै। किछु सीमा राजनीतिक-सांस्कृतिक, किछु भाषिक, किछु संस्थागत, किछु लेखक-पीढ़ीपर आधारित प्रतीत होय छै।

आलोचनात्मक संस्करण मँ एक सारिणी चाही: “काल-नाम | आरम्भिक कारण | अन्तक कारण | प्रमुख भाषिक लक्षण | प्रमुख संस्था | प्रमुख विधा | प्रमुख स्रोत | अनिश्चितता।” तब काल-विभाजन वर्णनात्मक सुविधासें आगाँ शोधयोग्य प्रतिपादन बनतै।

4. पद्य-खण्डक गहिर समीक्षा

4.1 प्रारम्भिक आरू मध्यकाल: परम्परा केरौ पुनरुद्धार, प्रमाण केरौ सावधानी

पद्य-खंड सिद्ध, सहजयान, नाथ-पन्थ, साधु-परम्परा, गीत-गाथा, लोकगीत आरू लोकनृत्यक माध्यमेँ दीर्घ ऐतिहासिक निरन्तरता बनाबै छै। साहित्यिक इतिहास केरौ दृष्टि सें ई साहसी परियोजना छै, कारण मौखिकता आरू सीमित लिखित साक्ष्यवाला परम्परा के इतिहास केरौ भीतर स्थान देलौ गेलौ छै।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि सें ई खंडक विशालता रस, ध्वनि, छन्द, वक्रोक्ति आरू लोक-प्रदर्शनक अध्ययन लेली बहुमूल्य छै। पश्चिमी मौखिकता-अध्ययन आरू सांस्कृतिक इतिहास केरौ दृष्टि सें भी ई महत्त्वपूर्ण अभिलेख छै। मगर प्राचीन कवि केरौ क्षेत्रीय भाषिक स्वामित्व, जन्मस्थान आरू निश्चित तिथिक प्रश्न पर स्रोत-श्रेणी अनिवार्य छै। पोथी केरौ अपनो उपसंहार ई सावधानीक पुष्टि करै छै।

4.2 लोकगीत आरू गीत-गाथा: साहित्य केरौ लोकाधार

पोथी लोकगीत के “नीच” वा “असाहित्य” कहि बाहर नै करै। विवाह, संस्कार, श्रम, प्रेम, धार्मिक उत्सव, कथा-गाथा, लोकनृत्य आदि साहित्यिक

इतिहास केरौ अवयव बनै छै। ई भारतीय सहृदय-संस्कृति आरू बाख्तिनीय बहुध्वनिताक संग अनुकूल छै।

नव संस्करण मँ हियाँ प्रदर्शन-सन्दर्भ आवश्यक होतै—के गबैत छथिन, ककरा आगाँ, कोन अवसरपर, पुरुष/स्त्री भूमिका की, धुन आरू नृत्यक सम्बन्ध की, पाठक रूपान्तर कतना, मौखिक संस्करण कतना। लोकगीत केरौ मात्र लिखित पाठ ओकरौ आधा जीवन छै; प्रदर्शन, शरीर, संगीत आरू सामुदायिक स्मृति दोसर आधा।

4.3 आधुनिक पद्य: संस्थागत इतिहास केरौ मूल्य

आधुनिक पद्य-खंड मँ कवि-परिचय, साहित्यिक मंच, अधिवेशन, पीढ़ी, प्रकाशन आरू सामाजिक अभिव्यक्तिक सम्बन्ध अधिक स्पष्ट छै। ई भाग साहित्येतिहास केरौ दस्तावेजी चरित्र के मजबूत करै छै। पृ. 165 क आसपास आधुनिकता, भक्ति-परम्परा, प्रकृति-लोकरीति, नव मंच आरू नूतन पीढ़ी केरौ सन्दर्भ एकसंग मिलै छै।

मगर कवि-सूची विशाल भेला कारण मूल्यांकन कतेको बेर जीवन-वृत्त + काव्यांश + प्रशंसात्मक टिप्पणी तलक सीमित रहि जाय छै। समीक्षात्मक इतिहास लेली चयन-पद्धति चाही: प्रतिनिधि कवि कैन्हें? काव्य-प्रवृत्ति कोन? भाषिक नवाचार की? छन्द-परिवर्तन की? परम्परासें विच्छेद वा संवाद केना? पाठक-स्वीकृति की? ई प्रश्नक उत्तर संरचनात्मक रूप मँ देलौ जाए।

4.4 ऐतिहासिक उपादेयता आरू मौलिकता

ऐतिहासिक आरू साहित्यिक उपादेयताक दृष्टि सें ई ग्रंथ अंगिका भाषा-आंदोलनक मील-स्तंभ छेकै। ई सें पूर्व डॉ॰ अभयकान्त चौधरी आरू डॉ॰ नरेश पाण्डेय 'चकोर' क इतिहास-ग्रंथ हिन्दी भाषा मँ छेलै, मगर प्रस्तुत पोथी स्वयं अंगिका भाषा मँ रचित अंगिका साहित्य केरौ प्रथम सांगोपांग इतिहास छेकै। लोक-साहित्य केरौ क्षेत्र मँ 'सती बिहुला', 'रेशमा', 'सलेस भगत' आरू 'बाबा बिसू राउत' जइसन अमूल्य मौखिक प्रबंध-काव्य केरौ पाठ-संरक्षण आरू शास्त्रीय विवेचन ई पोथी केरौ सर्वाधिक मौलिक उपलब्धि मानल जैतै। स्वातंत्र्योत्तर काल मँ 'अंगभाषा-परिषद्' सें लै क करी विश्वविद्यालयक

पाठचक्रम मँ अंगिका केरौ प्रवेश धरिक संगठनात्मक संघर्ष केरौ दस्तावेजीकरण भावी शोधार्थि सिनी लेली अमूल्य सामग्री छै।

5. गद्य-खण्डक स्वरूप, विधागत विकास आरू गहिर समीक्षा

डॉ० अमरेन्द्र द्वारा लिखित खंड-२: गद्य (पृष्ठ १४१-२६०) अंगिका गद्यक विविध विधा केरौ प्रादुर्भाव, विकास आरू प्रवृत्तिक सांगोपांग इतिहास प्रस्तुत करै छै। लेखक अंग-जनपद केरौ सांस्कृतिक अवनति आरू पुनर्जागरणक समाजशास्त्रीय विवेचन करै बीसमीं शती केरौ गद्य-साहित्य केरौ रूपरेखा निर्धारित करने छथिन।

गद्य-विधा	प्रतिनिधि साहित्यकार / संपादक	प्रमुख कृति / मील-स्तंभ	विधागत वैशिष्ट्य आ अंतर्वस्तु
कथा-साहित्य (कहानी, व्यंग्य, अणुकथा)	अनूपलाल मंडल, डॉ० वचनदेव कुमार, डॉ० कुमार विमल, डॉ० मधुकर गंगाधर, डॉ० अमरेन्द्र।	'फूल फूलैलै' (सं० 'चकोर'), 'दुपल्लो', 'अंग-माधुरी' आ 'आंगी' मे प्रकाशित सैकड़ो कथा।	ग्रामीण शोषण, कृषक-जीवनक संत्रास, मध्यवर्गीय पाखंड आ सामंती अवशेषक विरुद्ध जनवादी आक्रोश।
उपन्यास	अनूपलाल मंडल, डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर', डॉ० अमरेन्द्र।	'नया सूरज नया चान' (मंडल, १९९१), 'विशाखा' ('चकोर'), 'जटायु' (अमरेन्द्र),	सामाजिक चेतना, लोक-गाथाक औपन्यासिक पुनर्सृजन, नारी-मुक्ति आ आंचलकता

गद्य-विधा	प्रतिनिधि साहित्यकार / संपादक	प्रमुख कृति / मील-स्तंभ	विधागत वैशिष्ट्य आ अंतर्वस्तु
		'छाहुर', 'सुभद्रांगी', 'परबतिया', 'अन्तहीन वैतरणी'।	क सशक्त रूपायन।
नाटक एवं रंगमंच	डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर', डॉ० अमरेन्द्र, आचार्य आनन्द शंकर माधवन।	'किसान कें जगावों', 'सर्वोदय समाज', 'सिंहासन का संन्यास', 'पूस की रात' (रूपांतर), 'फूलवा कटोरवा'।	आकाशवाणी भागलपुरसँ प्रसारित रेडियो नाटक आ पारसी-ग्रामीण शैलीक रंगमंचीय नाटक; कुरीति-निवारण।
आत्मपरक साहित्य (जीवनी, संस्मरण)	डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर', गुरेश मोहन घोष 'सरलऽ।	'एक साहित्यकार परिवार', 'हलधर बाबा', 'साहित्य सन्तः अभयकान्त', 'जो रे तहिया!' ('सरलऽ)।	स्वतंत्रता संग्रामक संस्मरण, जनपदक पूर्ववर्ती मनीषीक आख्यान आ आत्मानुभूतिक जीवंत दस्तावेज।
निबंध आ	डॉ० डोमन	'समीक्षात्मक	भाषावैज्ञानिक

गद्य-विधा	प्रतिनिधि साहित्यकार / संपादक	प्रमुख कृति / मील-स्तंभ	विधागत वैशिष्ट्य आ अंतर्वस्तु
आलोचना	साहु 'समीर', डॉ० अभयकान्त चौधरी, डॉ० अमरेन्द्र।	निबंध' (समीर), 'अंगिका साहित्य का इतिहास' (चौधरी एवं चकोर), 'सृष्टि आपकी दृष्टि मेरी'।	नियमन, ग्रंथ-मूल्यांकन, रस-सिद्धांतक अनुप्रयोग आ जनपदीय विमर्शक सैद्धांतिकी।
अभिज्ञान-साहित्य (कोश आ व्याकरण)	डॉ० डोमन साहु 'समीर', डॉ० परमानन्द पाण्डेय, डॉ० अभयकान्त चौधरी।	'अंगिका-हिंदी शब्दकोश' (समीर), 'अंगिका व्याकरण' (समीर), 'प्रथम अंगिका व्याकरण' (पाण्डेय)।	भाषाक स्तरीकरण, मानक वर्तनी-विधान, शब्द-संपदाक संरक्षण आ पुरातात्त्विक अन्वेषण।
पत्र-पत्रिका-साहित्य	डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर', डॉ० अमरेन्द्र, डॉ० तेजनाराय	'अंग-माधुरी' (मासिक, सं० चकोर, निरंतर ४६ वर्ष),	जनपदीय अस्मिताक संवाहक, नवोदित प्रतिभाक उन्मेषक आ समेकित

गद्य-विधा	प्रतिनिधि साहित्यकार / संपादक	प्रमुख कृति / मील-स्तंभ	विधागत वैशिष्ट्य आ अंतर्वस्तु
	ण कुशवाहा।	'आंगी' (सं॰ अमरेन्द्र), 'अंगप्रिया', 'नवकल्प'।	साहित्यिक मंच।

5.1 सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक भूमिका: साहित्य केरौ जमीन

डॉ॰ अमरेन्द्रक गद्य-खंड अंग-जनपद केरौ १८५७क विद्रोह, अंग्रेजी शासनक विरुद्ध महेन्द्र गोप केरौ क्रांतिक बलिदान, विभाजनकालीन सांप्रदायिक हिंसा (तारापुर-भागलपुर), आरू स्वतंत्रता-पश्चात राजनीतिक उपेक्षा के साहित्य केरौ पृष्ठभूमि केरौ रूप मँ विस्तारसें राखै छै। "बिकौआ" जेना सामाजिक कुप्रथा केरौ चर्चा आरू जातीय महासभासिनीक उदयक विवेचन साहित्येतर सामाजिक इतिहास के बुझबा मँ सहायक छै, भले ई अंश कतहु-कतहु साहित्य-समीक्षासें बेसी समाजशास्त्रीय निबंध बनि जाय छै।

कथा-साहित्य केरौ खंड मँ फादर एंतोनियोकरक "नामी गोस्पेल" (१८शती केरौ अंत) आरू ग्रियर्सन केरौ भाषा-सर्वेक्षण मँ संकलित "उड़ाऊ पुत्र"क दृष्टांतक अंगिका रूपांतरण के आदि गद्यक प्रमाण केरौ रूप मँ प्रस्तुत करना भाषावैज्ञानिक दृष्टि सें महत्वपूर्ण छै। कहानी, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा आदिक सूचीकरण विस्तृत छै, मगर समालोचनात्मक विश्लेषणसें बेसी सूचीकरण (नाम, कृति, संक्षिप्त परिचय) पर बल देलौ गेलौ बुझाय छै — ई ई प्रकार केरौ "प्रारंभिक इतिहास"मँ स्वाभाविक सीमा छेकै।

गद्य-खंडक आरम्भिक पृष्ठ 149–162 साहित्यसें पहिने समाज, राजनीति, शिक्षा आरू अर्थव्यवस्था पर केन्द्रित छै। पृ. 149 पर औपनिवेशिक शासन, विद्रोह, सामन्ती व्यवस्था आरू स्थानीय राजनीति; पृ. 153 पर सामाजिक सुधार, जाति, शिक्षा, कन्या-विद्यालय आरू स्त्री-सुधार; पृ. 157 पर शिक्षा-नीति

आरू भाषिक प्रतिष्ठा; पृ. 161 पर उद्योग, रेशम, वन, कृषि आरू आर्थिक संकटक चर्चा मिलै छै।

ई साहित्येतिहास केरौ बड़ी उपलब्धि छै, कारण साहित्य हवा मँ जन्म नै लै। मगर ई पृष्ठभूमि अगला साहित्यिक रूप सिनी सें अधिक प्रत्यक्ष सम्बन्ध मांगै छै। उदाहरणार्थ, आर्थिक संकट कथा केरौ विषय केना बनल? शिक्षा-विस्तार लेखक-वर्ग केना बदलकै? भाषा-राजनीति कथा/नाटकक शब्द-चयनपर की प्रभाव देलकै? एहन कारण-सूत्र अधिक विकसित हो सकै छेलै।

5.2 कथा-साहित्य: विषयगत विस्तार आरू निकट-पाठक आवश्यकता

कथा-खंड आधुनिक अंगिका कहानीक उद्भव, मुद्रित संग्रह, लेखक आरू प्रवृत्तिक विस्तृत परिचय दै छै। पृ. 169 पर आरम्भिक कहानी-संग्रह आरू लेखक केरौ चर्चा, पृ. 177 पर सामाजिक संघर्ष, नारी-जागृति, वातावरण, प्रेम, शैलीगत भेद आदि विषयगत समूह, आरू आगाँ अनेक कथाकार केरौ रचना केरौ परिचय मिलै छै।

कथा-इतिहास केरौ शक्ति—स्मृति-संरक्षण। सीमा—निकट-पाठ। पोथी विषयक आधारपर समूह बनाबै छै, मगर कथन-दृष्टि, समय-संरचना, अविश्वसनीय कथाकार, संवाद, प्रतीक, विडम्बना, अन्त, पात्र-निर्माण, लोकभाषिकता आरू पाठकीय तनावक सूक्ष्म विश्लेषण कम छै। पाश्चात्य कथाविज्ञान आरू भारतीय ध्वनि-वक्रोक्ति मिलि ई भाग के बहुत समृद्ध करी सकै छै।

5.3 उपन्यास: विधागत आत्मबोध

पृ. 185 पर उपन्यास केरौ तत्व रूप मँ कथावस्तु, पात्र, संवाद, देश-काल, शिल्प आरू उद्देश्यक चर्चा छै; घटना-प्रधान, चरित्र-प्रधान, वातावरण-प्रधान आदि वर्गीकरण भी देलौ गेलौ छै। ई दर्शबैत छै जे ग्रन्थकार विधागत सिद्धान्त केरौ आधारपर सामग्री व्यवस्थित करबाक प्रयत्न करै छथिन।

पृ. 193 पर ‘अन्तहीन वैतरणी’क कथा-सार स्त्री केरौ जीवन-संघर्ष, विवाह, अपमान आरू प्रतिरोध केरौ प्रश्न खोलै छै। एहन उपन्यासपर स्त्रीवादी, समाजशास्त्रीय, कथावैज्ञानिक आरू ध्वनि-दृष्टि केरौ संयुक्त विश्लेषण सम्भव

छै। पोथी कथा-सार दै छै; आलोचनात्मक संस्करण ई पाठक रूप-शिल्प आरू दृष्टिकोण केरौ विश्लेषण जोड़ि सकै छै।

5.4 नाटक आरू रेडियो-नाटक: माध्यमिक इतिहास केरौ विशिष्ट उपलब्धि

नाट्य-खंडक विशेष महत्त्व रेडियो-नाटकक दस्तावेजीकरण मँ छै। पृ. 209 पर प्रसारण-वर्ष, लेखक, आकाशवाणी भागलपुर, रेडियो-नाटक, रूपान्तर आरू धारावाहिक प्रस्तुति सम्बन्धी सामग्री छै। ई साहित्येतिहास के मुद्रित पुस्तक केरौ सीमा पार करबैत छै।

भारतीय नाट्यशास्त्रीय दृष्टि सें हियाँ अभिनय, वाचिकाभिनय, संगीत, संवाद, पात्र-विन्यास, रस-निष्पत्ति आरू श्रोता-अनुभव केरौ चर्चा हो सकै छेलै। माध्यम-अध्ययनक दृष्टि सें रेडियो नाटकक ध्वनि, मौन, संगीत, प्रसारण समय आरू श्रोतृ-वर्ग महत्त्वपूर्ण छै। पोथी स्रोत-सूचना दै छै; प्रदर्शन-विवेचन अगला शोधक विषय बनै छै।

5.5 आत्मपरक साहित्य: निजी जीवनसें सार्वजनिक इतिहास

पृ. 215–227 क आत्मपरक खंड आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण आदि रूप समेटै छै। पृ. 217 पर आत्मकथा-साहित्य केरौ सीमित उपलब्धता स्वीकार करल गेलौ छै आरू विशिष्ट आत्मकथा/जीवनीक उल्लेख छै। ई रूपक साहित्येतिहास मँ समावेश महत्त्वपूर्ण छै, कारण लेखक केरौ जीवन, संस्था, शिक्षा, पेशा, भाषा-चेतना आरू सामाजिक नेटवर्कक प्रत्यक्ष सामग्री एतहि सें मिलै छै।

मगर आत्मकथा तथ्यक पारदर्शी खिड़की नै। स्मृति चयन करै छै, आत्मछवि बनाबै छै, मौन रखैत छै, पछिलका अनुभवसें पुरान घटना पुनर्लिखैत छै। तें आत्मपरक स्रोत के अन्य अभिलेखसें मिलान करना बहुप्रमाणीय पद्धतिक आवश्यक शर्त छै।

5.6 निबन्ध: विचार-जगतक विस्तार

निबन्ध-खंड साहित्यिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, अनूदित आरू विविध विषयक लेखनक चर्चा करै छै। पृ. 225 पर निबन्धकार केरौ चिंतन, विवेचन, ललित निबन्ध, अनुवादित निबन्ध आरू सामाजिक विषयक सूची देखाय छै। ई सें स्पष्ट छै जे अंगिका गद्य मात्र कथा-मनोरंजन तलक सीमित नै, विचार-विमर्श केरौ माध्यम भी बनल।

निबन्ध केरौ आलोचना मँ पोथी विषय-विस्तारक मूल्यांकन करै छै; मगर तर्क-संरचना, निबन्धकार केरौ आवाज, विडम्बना, आत्मपरकता, सार्वजनिक विवेक, भाषा-राजनीति आरू गद्य-लयक सूक्ष्म परीक्षण सीमित छै। हियाँ मॉन्तेनसें आधुनिक भारतीय निबन्ध-परम्परा तलक तुलनात्मक विधा-अध्ययन सम्भव छै, मगर नव संस्करण मँ बाहरी तुलना स्रोतसहित देलौ जाए।

5.7 आलोचना: आत्मचेतनाक आरम्भ

आलोचना-खंड (पृ. 228 सें) अंगिका साहित्य केरौ अपनो समीक्षा-परम्परा केरौ निर्माण केरौ संकेत दै छै। पृ. 233 पर परिचयात्मक आलोचना, तुलनात्मक आलोचना, काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ आरू छन्द-विवेचनक उल्लेख छै। पोथी ईहो कहै छै जे वैज्ञानिक आलोचना केरौ विकास सीमित छै आरू नव पीढ़ी केरौ आवश्यकता छै। ई आत्मनिरूपण उल्लेखनीय छै।

ई खंडक आधारपर एक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकलै छै—साहित्यिक समुदाय परिपक्व तब होय छै जब ऊ मात्र रचना नै, अपनो रचना केरौ मूल्यांकन-पद्धति भी विकसित करै छै। वर्तमान समीक्षा ई ऐतिहासिक मागक उत्तर रूप मँ भारतीय-पाश्चात्य-समानान्तर तीन स्तर केरौ संयुक्त कसौटी प्रस्तावित करै छै।

5.8 लोकसाहित्य: मौखिकता केन्द्रीय, पर दस्तावेजी विधि आवश्यक

लोकसाहित्य केरौ स्वतंत्र खंड देना पोथी केरौ व्यापक दृष्टि केरौ प्रमाण छै। लोककथा, लोकोक्ति, मुहावरा, गीत, गाथा आदि सामग्री क्षेत्रीय स्मृति आरू सामाजिक भाषा केरौ मुख्य भंडार छथिन। साहित्य केरौ लिखित केन्द्रवाद के ई समावेशसें चुनौती मिलै छै।

नव संस्करण मँ लोकसाहित्य लेली क्षेत्रकार्यक मानक अपनाओल जाए: संग्रहक स्थान, तिथि, कथक/गायकक नाम वा गोपनीय संकेत, आयु, लिंग, सामाजिक पृष्ठभूमि, प्रदर्शन प्रसंग, ध्वनि-अभिलेख, पाठांतर, सम्पादकीय हस्तक्षेप। बिना ई विवरण केरौ मौखिक पाठ मुद्रित भेला पर ओकरौ स्रोत-जीवन अस्पष्ट रहि जाय छै।

5.9 अभिज्ञान-साहित्य: साहित्य केरौ सीमाक विस्तार

पृ. 241 सें “अभिज्ञान-साहित्य” इतिहास, भूगोल, भाषा-शास्त्र, लिपि, कृषि, धर्म, चिकित्सा, विज्ञान आदि विषयक लेखन समेटै छै। पृ. 249 पर कृषि-साहित्य, आध्यात्मिक लेखन, विज्ञान-संबंधी पुस्तक आदिक उल्लेख मिलै छै। ई वर्ग पारम्परिक “रचनात्मक साहित्य”क सीमा बहुत व्यापक करै छै।

ई विस्तार सांस्कृतिक इतिहास लेली उपयोगी छै, मगर अवधारणात्मक स्पष्टता चाही। सिनी ज्ञान-पुस्तक “साहित्य” कैन्हें? कसौटी भाषा-शैली छै, भाषिक योगदान, सामुदायिक ज्ञान-परम्परा, कि मात्र अंगिका मँ लिखल होना? जों अभिज्ञान-साहित्य केरौ परिभाषा स्पष्ट करल जाए त ई पोथी केरौ मौलिक योगदान बनि सकै छै; अन्यथा विधागत सीमा धुँधली रहतै।

5.10 पत्र-साहित्य आरू पत्र-पत्रिका: सार्वजनिक क्षेत्र केरौ इतिहास

पत्र-साहित्य आरू पत्र-पत्रिका सम्बन्धी अन्तिम खंड साहित्यिक सार्वजनिकता केरौ संरचना समझै लेली अनमोल छै। पृ. 257 पर दैनिक/साप्ताहिक स्तम्भ, समाचार-पत्र, अंगिका कविता-कथा प्रकाशन, नियमित स्तम्भ, रिपोर्टाज आरू ललित निबन्ध केरौ चर्चा छै। ई सामग्री देखाबै छै जे भाषा मात्र पुस्तक मँ नै, आवधिक सार्वजनिक संवाद मँ जीवित रहै छै।

हाबर्मासीय सार्वजनिक क्षेत्र, बाख्तिनीय बहुध्वनिता आरू पाठक-स्वीकृति तीनू दृष्टि सें ई खंड गहिर शोधक आधार बनि सकै छै। नव संस्करण मँ प्रत्येक पत्र-पत्रिका केरौ प्रकाशन-काल, सम्पादक, स्थान, आवृत्ति, उपलब्ध अंक, संग्रहालय/पुस्तकालय, डिजिटल प्रतिक ठिकाना, प्रमुख बहस आरू पाठकीय पत्रक सूची देलौ जाए।

5.11 उपसंहार: पोथी केरौ आत्मसमीक्षात्मक आयाम

पृ. 259–260 क उपसंहार विशेष महत्त्व रखैत छै। हियाँ पोथी साहित्य के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आरू परिवेशीय प्रभावसें बदलै मानै छै; प्राचीन सिद्ध-कवि आरू कबीर सम्बन्धी भ्रम केरौ सावधानी देत छै; आधुनिक गद्यक विविध विधा केरौ विकास स्वीकारैत छै; आरू राजनीति द्वारा संस्कृति-साहित्य केरौ उपयोग पर चेतावनी दै छै।

ई कारण उपसंहार के मात्र समापन नै, पद्धतिक पुनर्जन्म मानलौ जाय सकै छै। जों नव संस्करण ई आत्मसमीक्षा के आरम्भिक नियम बनाय—प्रत्येक विवादित दाबी संग स्रोत, प्रतिपक्ष आरू अनिश्चितता—त पोथी अभिलेखीय महत्त्वसें आलोचनात्मक प्रामाणिकताक अगला स्तरपर पहुँचि सकै छै।

6. भारतीय काव्यशास्त्रीय आरू प्रमाणमीमांसात्मक समीक्षा

6.1 रस-सिद्धान्त

भरतमुनि आरू अभिनवगुप्तक परम्परा मँ रस साहित्यिक अनुभूति केरौ रूपान्तरित, साधारणीकृत स्वरूप छै। ‘अंगिका साहित्य केरौं इतिहास’ लोकगीत, सिद्ध-पद, नाथ-पन्थ, साधु-काव्य, प्रेमगीत, विवाहगीत, सामाजिक कविता, कथा, नाटक आरू अनेक लोकगाथाक भरपूर सामग्री दै छै। ई कारण रस-विवेचन लेली पोथी अत्यन्त सम्पन्न सामग्री-संग्रह बनि सकै छै।

मगर ग्रन्थकारक टिप्पणी प्रायः विषय, कवि केरौ जीवन, सामाजिक महत्त्व, भाषा, शैली वा साहित्यिक स्थानपर केन्द्रित छै। स्थायीभाव, विभाव, अनुभाव, संचारीभाव, रसाभास, भावान्तर वा रस-संक्रमणक पद्धतिगत विश्लेषण कम मिलै छै। उदाहरणार्थ लोकगाथा मँ वीर, करुण, भक्ति, शृंगार आरू अद्भुतक मिश्रित संभावना छै, कथा-खंड मँ नारी-अन्तर्मन, दमन, परिवार, प्रेम आरू सामाजिक संघर्ष केरौ प्रसंग छै (पृ. 177 आदि), मगर ई भाव-संरचनाक रसात्मक गहिराई प्रायः खुलल नै छै।

ई आधार पर भारतीय रस-दृष्टि सें निर्णय ई होय छै—पोथी रस-समीक्षा नै, रस-समीक्षा लेली विशाल प्राथमिक भंडार छै। नव संस्करण मँ चुनल दस-पन्द्रह प्रतिनिधि पाठक सूक्ष्म रस-विश्लेषण जोड़ला सें साहित्यिक इतिहास मात्र नाम-पाँजि नै रहतै, अनुभूति केरौ इतिहास भी बनतै।

ग्रंथ मँ उद्धृत पद्य-नमूनासिनी के रस-निष्पत्ति केरौ सूत्र (विभाव-अनुभाव-व्यभिचारिभाव-संयोगसें रस केरौ आस्वाद) सें जाँचला पर एगो रोचक चित्र उभरै छै। सिद्ध सरहपा केरौ दोहा — "सहजे सहजहु बूझै जब्बे, अंतराल गति टूटै तब्बें। जब्बे मणु अंथु मणु जाइ, तनु टुट्टइ बन्धन..." —मँ वैराग्य-भावक प्राधान्य छै, जे शांत-रस केरौ अन्तर्गत आबए योग्य छै; हियाँ स्थायीभाव

'निर्वेद' शरीर-मन-बंधनक नश्वरताक विभावसें पुष्ट होय छै। शांतिपा केरौ "भव निर्वाणे पड़ह मादला..." पद भी भव-सागर पार करबाक रूपक-योजनासें शांत-रस केरौ दिस झुकल छै, भले डोम्बी-विवाहक लौकिक बिम्ब-योजनासें ई मँ शृंगारक छाया भी घुरल-मिझल छै — जे सहजयानी साधना-काव्य केरौ चरित्र-लक्षण छेकै। आधुनिक युग मँ श्रीनन्दन शास्त्री केरौ गीत "केकरा देखैयो सखि..." मँ सखि-सम्बोधन-शैलीक माध्य मँ करुण रस केरौ उन्मेष स्पष्ट छै — दुनियाँक आँख पाथर बनि गेलाक बिम्ब आलंबन-विभाव केरौ (देश-काल केरौ विनाश) संग जुड़ि करुण के पुष्ट करै छै।

मगर ई रस-विश्लेषणसें एगो आलोचनात्मक निष्कर्ष भी निकलै छै, जकरा ग्रंथ स्वयं आपन निष्कर्ष-खंड मँ (पृष्ठ १४३) स्वीकार करै छै — कविसिनीक आकर्षण "आंतरिक सौंदर्यक अपेक्षा वाह्य सौंदर्य दिस बेसी" छै। भरतमुनि केरौ रस-सिद्धान्त केरौ दृष्टि सें ई अंतर "भाव-काव्य" आरू "रस-सिद्ध काव्य" केरौ बीचक अंतर छेकै — भाव मात्र उदय होय सकै छै, रस-चमत्कारक स्तर तलक पहुँचब सिनी रचना केरौ भाग्य मँ नै होय छै। ई ग्रंथ मँ संकलित बहुतांश आधुनिक कविता, अपनो इतिवृत्तात्मकताक (आत्मकथात्मकताक) कारण सें, भावोदयक स्तरपर रहि जाय छै, रस-निष्पत्ति केरौ चरम स्तर तलक विरले पहुँचैत छै — ई अवलोकन ग्रंथ केरौ स्वयं केरौ स्वीकृतिसें भी पुष्ट होय छै।

6.2 ध्वनि-सिद्धान्त आरू व्यंजना-शक्ति

आनन्दवर्धन केरौ ध्वनि-सिद्धान्त काव्य केरौ श्रेष्ठता प्रत्यक्ष वाच्यार्थसें आगाँ व्यंजित अर्थ मँ देखैत छै। समीक्ष्य पोथी अक्सर कविताक विषय अथवा कथा केरौ सामाजिक संदेश बताबै छै; मगर पाठक अनकहल सांस्कृतिक आशय, मौन, प्रतीक, विडम्बना, संकेत, निषेध, जातीय-सामाजिक स्मृति, स्त्री केरौ अप्रकट प्रतिरोध, आरू भाषिक स्वाभिमानक सूक्ष्म व्यंजना पर कम ठहरै छै।

विशेषतः पृ. 177 पर स्त्री-सम्मान, नारी-उत्पीड़न, नारी-जागृति आरू अन्तर्मनक कथा-प्रवृत्तिक उल्लेख छै। एहन रचना मँ ध्वनि-दृष्टि पूछत— प्रत्यक्ष कथानकक पाछाँ पितृसत्ता, मौन, शरीर, प्रतिष्ठा, घर-बहिरक सीमा,

सामाजिक भय आरू आत्मस्वर केना व्यंजित होय छै? पोथी विषयक अस्तित्व दर्ज करै छै; ध्वनि-विश्लेषण ओकरौ साहित्यिक ऊर्जा खोलि सकै छेलै।

आनन्दवर्धन केरौ ध्वनि-सिद्धान्त — "काव्यस्यात्मा ध्वनिः" — केरौ कसौटीपर ग्रंथ केरौ एगो पद्धतिगत प्रयोग विशेष रूप मँ परीक्षणीय छै। नाथ-पंथी काव्य केरौ अध्याय मँ (पृष्ठ २६) गोरखनाथ केरौ मूल पद "हसिबा, खेलिबा धरिबा ध्यान, अहनिसि करिबा ब्रह्मा गियान..." के "हँसबों, खेलबों, धरबों धियान..." रूप मँ अंगिका व्याकरणिक रूप मँ रूपांतरित करी दुन्नो केरौ भाषिक सामीप्य देखाओल गेलौ छै। मगर ध्वनि-सिद्धान्त केरौ दृष्टि सें ई प्रयोग एगो मौलिक भ्रम पर आधारित छै — काव्य केरौ आत्मा शब्द केरौ व्याकरणिक रूप (रूपतत्व) मँ नै, बल्कि ऊ विशिष्ट शब्द-विन्यास द्वारा उत्पन्न व्यंजना (वस्तुध्वनि, अलंकारध्वनि आरू रसध्वनि) मँ बसैत छै, जे मूल उच्चारणक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक सन्दर्भसें अभिन्न रूप मँ जुड़ल रहै छै। एगो पद के आधुनिक भाषा केरौ रूपतत्व मँ "अनुवादित" करी पुनः प्रस्तुत करना — भले ऊ अनुवाद व्याकरणिक दृष्टि सें कतना निकट कैन्हें नै होउ — मूल रचयिताक भाषिक अस्मिता केरौ प्रमाण नै बनि सकै छै, कैन्हें कि शब्द-शक्ति (अभिधा-लक्षणा-व्यंजना) करी स्रोत हरदम मूल उच्चारण छेकै, पश्चातवर्ती रूपांतरण नै। ई तर्क-पद्धति ऊ भ्रम केरौ निकट छै, जहाँ रूप-सादृश्य के स्रोत-प्रमाण मानी लेलौ जाय छै।

6.3 वक्रोक्ति

कुन्तक केरौ वक्रोक्ति-सिद्धान्त अनुसार काव्यत्व साधारण कथन केरौ असाधारण अभिव्यक्ति मँ उभरै छै। अंगिका साहित्य केरौ इतिहास मँ लोकभाषा, देशज रूप, हास-व्यंग्य, कथोपकथन, लोकछन्द, कहावत, गीत-गाथा, रेडियो-भाषा आरू कथा-शैलीक अनेक संकेत मिलै छै। पृ. 177 पर कहानीकार सिनी केरौ वर्णनात्मक, संस्मरणात्मक आरू अन्य शैलीगत भेदक चर्चा भी छै; पृ. 260 पर गद्यक “शैली-शिल्प”क आधुनिकता केरौ उल्लेख छै।

मगर वक्रोक्ति-दृष्टि सें शब्द-विन्यास, पद-वक्रता, वाक्य-वक्रता, प्रसंग-वक्रता आरू प्रबन्ध-वक्रताक उदाहरणात्मक परीक्षा कम छै। खास करी क्षेत्रीय भाषा केरौ साहित्येतिहास मँ ई आवश्यक छै, कारण भाषा-विशिष्ट काव्यत्व

मात्र “ई अंगिकामे लिखल अछि” सें सिद्ध नै होय; भाषा केरौ विशेष अभिव्यक्ति-शक्ति पाठक सूक्ष्म बनावट मँ देखाबय पड़ै छै।

6.4 रीति, गुण, अलंकार आरू शैली

वामन केरौ रीति-दृष्टि आरू उत्तरवर्ती गुण-विवेचन साहित्यिक भाषा केरौ रचना-स्वभाव के केन्द्र मँ आनै छै। पोथी अनेक ठाम “भाषा”, “शैली”, “शिल्प”, “वर्णन”, “संवाद”, “धारावाहिकता” आदि शब्द केरौ प्रयोग करै छै। गद्य-खंड कथा आरू उपन्यास केरौ भेद करतै समय कथावस्तु, पात्र, संवाद, देश-काल, शिल्प आरू उद्देश्य जइसन अवयवक उल्लेख करै छै (पृ. 185)। ई भारतीय रीति-विचारक आधुनिक व्यावहारिक समकक्ष जेना पढ़लौ जाय सकै छै।

सीमा ई जे शैलीक मूल्यांकन लेली स्थिर कसौटी नै बनैल गेलौ छै। कोनो लेखक “सरल”, “प्रभावी”, “आधुनिक”, “वर्णनात्मक” कैन्हें छथिन—ई निर्णयक भाषिक प्रमाण अधिक चाही। नव संस्करण मँ शब्दसंपदा, वाक्यलम्बाइ, संवाद-घनत्व, कथाकार केरौ दृष्टिबिन्दु, अलंकारिकता, लोक-रूपक, विदेशी शब्द आरू क्षेत्रीय रूपक तुलनात्मक सारिणी उपयोगी होतै।

वामन केरौ रीति-सिद्धान्त — "रीतिरात्मा काव्यस्य" — गुण-त्रय (माधुर्य, ओज, प्रसाद) केरौ आधारपर काव्य-शैलीक वर्गीकरण करै छै। ग्रंथ मँ संकलित लोक-छन्दाश्रित आधुनिक कविता (जेना श्रीनन्दन शास्त्री केरौ गीत, जे लोक-रंग मँ रँगल कहल गेलौ छै) प्रसाद-गुण-प्रधान शैली देखाबै छै — सहज बोधगम्यता आरू लोक-प्रचलित शब्दावली एकरौ विशेषता छेकै, ओज-गुणक गाम्भीर्य हियाँ अपेक्षित भी नै छै। शांतिपा केरौ पद मँ "भव-निर्वाण", "मन-पवन-वेणी", "करण्ड-कशाला" जेना रूपक-अलंकारक सघन प्रयोग देखल जाय छै, जकरा ग्रंथ स्वयं "रूपक केरो योजना" कहि रेखांकित करै छै (पृष्ठ २५) — ई भाषिक-साहित्यिक अवलोकन प्रामाणिक आरू स्वागतयोग्य छै। तैयो आधुनिक कवि-परिचय-खंड मँ (पृष्ठ ६२-१४१) अलंकार-विश्लेषण प्रायः अनुपस्थित छै; कवि-परिचय जीवनी-आधारित रहि जाय छै, शैली-वैशिष्ट्यक सूक्ष्म विवेचन दुर्लभ छै — ई एगो साहित्येतिहास केरौ अपेक्षा एगो जीवनी-कोशक बेसी निकट पहुँचि जाय छै।

6.5 औचित्य

क्षेमेन्द्र केरौ औचित्य-सिद्धान्त साहित्य केरौ प्रत्येक अवयवक प्रसंगानुकूलता पर बल दै छै। साहित्येतिहास लेली औचित्य केरौ आधुनिक रूप ई प्रश्न बनै छै—जे कवि, रचना वा भाषा-रूप के जे काल मँ राखल गेलौ छै, ओकरौ तिथि, भाषिक अवस्था, सामाजिक संस्था आरू उपलब्ध पाठ ऊ स्थानक अनुकूल छै की नै?

ई कसौटी पर पोथी केरौ आधुनिक भाग प्रायः अधिक सुरक्षित देखाय छै, कारण पत्रिका, प्रकाशन-वर्ष, अधिवेशन, आकाशवाणी, लेखक-परिचय आरू मुद्रित पुस्तक केरौ उल्लेख मिलै छै। प्राचीन भाग मँ जन्मस्थान, सिद्ध-परम्परा, भाषिक स्वामित्व, आरम्भिक तिथि आदि विषय अधिक सावधानी मांगै छै। अन्तिम उपसंहारक आत्मस्वीकृति (पृ. 259) स्वयं देखाबै छै जे किछु प्राचीन स्थान-सम्बन्धी निष्कर्ष पुनर्परीक्षणीय छथिन। औचित्य-दृष्टि ई कारण पोथी केरौ निन्दा नै, ओकरौ आलोचनात्मक पुनर्संयोजनक साधन छै।

क्षेमेन्द्र केरौ औचित्य-सिद्धान्त — "औचित्यं रसासिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्" — के मात्र काव्य-रचना केरौ भीतर सीमित नै राखी क, ऐतिहासिक/समालोचनात्मक कथन केरौ औचित्यपरो प्रसारित करलौ जाय सकै छै। ई दृष्टि सें, कोनो ऐतिहासिक प्रस्थापना तखने "सानुचित" मानल जाय छै, जब ओकरा समुचित विभाव अर्थात् प्रमाण-सामग्रीक समर्थन प्राप्त रहै। उपसंहार मँ (पृष्ठ २५९) प्रस्तुत ई दावा जे महाकवि विद्यापति केरौ जन्म उत्तरी भागलपुर केरौ एक भाग सहरसा मँ होलौ, आरू हुनकरौ पिता ओइनवार वंशक राजा गणेश्वरक सभासद रहलथिन — ई एगो गुरुतर औचित्य-भंगक उदाहरण छेकै, कैन्हें कि मैथिली साहित्य केरौ सर्वाधिक प्रतिष्ठित आरू बहु-प्रमाणित कवि केरौ जन्मस्थान-सम्बन्धी ई क्रांतिकारी प्रस्थापना के बिना कोनो प्रमाण-सामग्रीक उद्धरणक, मात्र एक्के वाक्य मँ प्रस्तुत करल गेलौ छै। औचित्य-सिद्धान्त केरौ भाषा मँ कहल जाय तँ, दावा केरौ "भार" (गुरुत्व) आरू ओकरा समर्थन देनिहार विभाव केरौ "हल्कापन" (अभाव) केरौ बीच स्पष्ट असंतुलन छै — जे कोनो सुगठित ऐतिहासिक तर्क के "रस-असिद्ध" अर्थात् अप्रतीतिकर बना दै छै।

6.6 सहृदय, साधारणीकरण आरू सामुदायिक स्मृति

भारतीय काव्यशास्त्र मँ सहृदय मात्र निष्क्रिय पाठक नै; ऊ संस्कार, संवेदना आरू अर्थग्रहणक सक्रिय सहभागी छै। अंगिका साहित्य केरौ इतिहास लोकगीत, कहावत, लोकनाटक, लोकगाथा, पत्रिका, रेडियो आरू सार्वजनिक साहित्यिक मंच के समाविष्ट करै छै। ई कारण पोथी मँ सहृदयक सामाजिक रूप निहित छै—गामक श्रोता, विवाहगीत गबनिहार स्त्री, रेडियो श्रोता, पत्रिका-पाठक, अधिवेशनक सहभागी, स्थानीय शिक्षक, लेखक-मंडली।

मगर वास्तविक पाठक-अध्ययन, संस्करण-संख्या, प्रसार-क्षेत्र, पाठकीय पत्र, वाचन-परम्परा, स्त्री-पुरुष पाठक अनुपात, ग्राम-नगर भेद आदि आँकड़ा प्रायः नै छै। फलतः सामुदायिक स्वीकृतिक चित्र उपस्थित छै, परिमाणित पाठक-इतिहास नै।

6.7 नव्य-न्यायक प्रमाण-मीमांसा

मिथिला केरौ अपनो गौरवशाली नव्य-न्याय परम्परा (गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणि आदि मँ प्रतिष्ठित प्रमाण-मीमांसा) प्रमाण के चार कोटि मँ बाँटैत छै — प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आरू शब्द/आगम। ई कसौटी पर उपसंहार मँ प्रस्तुत व्युत्पत्तिमूलक तर्क — "काशी > कासड़ी (भागलपुर)" आरू "मुद्गलपुर > मुद्गर > मगहर > मुंगेर" (पृष्ठ २५९) — द्वारा कबीर के अंग-क्षेत्रसें जोड़बाक प्रयास के जाँचल जाय तँ ई मात्र ध्वन्यात्मक सादृश्यपर आधारित छै, जकरा नैयायिक भाषा मँ "साधर्म्य-वैधर्म्यमूलक हेत्वाभास" कहलौ जाय सकै छै। कोनो सामान्य नियम (व्याप्ति) — जे "स्थान-नामक ध्वन्यात्मक सादृश्य सदिखन ऐतिहासिक तादात्म्यक सूचक होइत अछि" — स्थापित नै करल गेलौ छै, आरू बिना व्याप्ति-ग्रहणक कोनो एकल दृष्टान्तसें सामान्यीकरण करना अनुमान-प्रमाण केरौ मौलिक शर्तक उल्लंघन छेकै। यैह बात "विद्यापति-सहरसा" दावापर भी लागू होय छै — शब्द-प्रमाण (आगम) तखने मान्य होय छै, जब ऊ किओ विश्वसनीय मूल स्रोत (प्रामाणिक ग्रंथ, ताम्रपत्र, वंशावली) पर आधारित होइक; हियाँ एहन कोनो शब्द-प्रमाण केरौ उद्धरण नै देलौ गेलौ छै।

6.8 भारतीय इतिहास-लेखन-परम्परा: इतिवृत्त आरू समालोचनात्मक इतिहास

पौराणिक परम्परा मँ "इतिहास" पंच-लक्षणसें (सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, वंशानुचरित) युक्त मानल जाय छै, जे मँ वंशानुचरित (राजवंश आरू समाज केरौ निरंतरताक कथा) एगो प्रमुख अंग छेकै। गद्य-खंडक प्रारंभिक अध्याय "अंग-जनपदों के पिछलका स्थिति-परिस्थिति" (पृष्ठ १४९-१६२) स्पष्ट रूप मँ ई वंशानुचरित-शैलीक अनुसरण करै छै — राजनीतिक इतिहास, जातीय महासभाक उत्थान, सामाजिक कुप्रथा केरौ विवरण साहित्येतिहाससें पहिने विस्तारसें राखल गेलौ छै। ई भारतीय इतिहास-लेखनक एगो जेनुइन देशज पद्धति छेकै, जे साहित्य के समाज-वंशसें काटि करी नै देखैत छै — ई दृष्टि सें ई ग्रंथ अपनो सांस्कृतिक जड़िसें जुड़ल छै। मगर एकरौ मूल्य ई भी छेकै जे विशुद्ध साहित्यिक विश्लेषण (काव्य-गुण-दोष विवेचन) कतोक ठाम ई वंशानुचरितात्मक विस्तार मँ दबि जाय छै, जकरा आधुनिक समालोचना-पद्धतिक कसौटीपर एगो सीमा मानलौ जाय सकै छै।

7. पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त केरौ दृष्टि सें समीक्षा

7.1 साहित्येतिहास केरौ सिद्धान्त

रेने वेलेक केरौ प्रसिद्ध निबंध "द फॉल ऑफ लिटरेरी हिस्ट्री" मँ ई चेतावनी देलौ गेलौ छै जे साहित्येतिहास प्रायः दू छोरपर जा फँसैत छै — वा तँ शुद्ध सकारात्मकतावादी सूची-निर्माण (नाम, तिथि, कृतिक गणना) वा फेर वैचारिक/राष्ट्रवादी टेलिओलॉजी (एगो पूर्वनिर्धारित गंतव्य दिस अग्रसर होय कथा)। प्रस्तुत ग्रंथ मँ दुन्नो प्रवृत्ति स्पष्ट देखलौ जाय सकै छै — आधुनिक कवि-परिचय-खंडक ८० पृष्ठ (६२-१४१) प्रायः पहिल छोर (सूचीकरण) दिस झुकल छै, जब कि समग्र आख्यान (अंगक प्राचीन गौरव → राजनीतिक उपेक्षा → साहित्यिक क्षतिपूर्ति) दोसर छोर (टेलिओलॉजिकल आख्यान) केरौ उदाहरण छेकै। वेलेक केरौ अनुसार, सच्चा साहित्येतिहास ई दुन्नो के — कालक्रमबद्ध तथ्य आरू सौंदर्यशास्त्रीय मूल्यांकन — के एकठाम गूंथने रहै छै; प्रस्तुत ग्रंथ मँ ई गुंथाव आंशिक रूपेण होलौ छै, पूर्ण रूपेण नै।

7.2 नव-इतिहासवाद

नव-इतिहासवादी दृष्टिकोण केरौ अनुसार पाठ आरू संदर्भ परस्पर-निर्मायक होय छै — साहित्य मात्र इतिहास केरौ प्रतिबिम्ब नै, बल्कि शक्ति-संबंध केरौ उत्पादन मँ स्वयं सहभागी होय छै। ई दृष्टि सें गद्य-खंडक ऊ अध्याय, जे मँ १८५७क विद्रोह, महेन्द्र गोप केरौ बलिदान, विभाजनकालीन तारापुर-भागलपुर हिंसा, आरू स्वतंत्रता-पश्चात जातीय-महासभा-राजनीतिक उदय के साहित्य केरौ पृष्ठभूमि केरौ रूप मँ विस्तारसें राखल गेलौ छै (पृष्ठ १५०-१५३) — नव-इतिहासवादक दृष्टि सें एगो सराहनीय उपक्रम छेकै, कैन्हें कि ई साहित्य के शक्ति-संरचनासें काटि करी शुद्ध सौंदर्यवस्तु नै बनाबै छै, बल्कि ओकरा राजनीतिक-सामाजिक इतिहास केरौ अभिन्न भागक रूप मँ प्रस्तुत करै छै।

7.3 कल्पित समुदाय आरू आविष्कृत परम्परा

बेनेडिक्ट एंडरसन केरौ प्रसिद्ध थीसिस — मुद्रण-पूँजीवाद (प्रिंट-कैपिटलिज्म) आरू स्थानीय भाषा केरौ मुद्रित प्रसार एगो "कल्पित समुदाय" (इमैजिन्ड कम्युनिटी) करी निर्माण करै छै — ई ग्रंथ केरौ अस्तित्वपर हूबहू लागू होय छै। स्वयं ग्रंथ मँ उल्लिखित पत्रिका-परम्परा — 'भारती' (१९५४, गाम बाथ, भागलपुर), 'अंगिकांचल', 'आंगी', 'अंग-प्रिया', 'अंग-तरंगिनी' (पृष्ठ १४३) — प्रिंट-आधारित ओ पूर्वापेक्षित अवसंरचना थिक, जकर माध्यमसँ बिखरल अंगिका-भाषी जनसमूह अपनाकेँ एकटा साझा भाषिक-सांस्कृतिक समुदायक रूपमे "कल्पित" करैत अछि। सिद्ध-कविसिनी आ विद्यापति-कबीर जकाँ प्राचीन/महान् नामसिनीकेँ "पूर्वज" घोषित करब — एरिक हॉब्सबॉमक शब्दावलीमे — एकटा "इनवेंटेड ट्रेडिशन" (आविष्कृत परम्परा) क' शास्त्रीय उदाहरण थिक, जाहिमे नवोदित पहचान-परियोजना अपनाकेँ वैधता देबाक हेतु प्राचीनताक आवरण ओढ़ैत अछि।

7.4 सांस्कृतिक पूँजी आरू साहित्यिक क्षेत्र

बोर्दियूक "साहित्यिक क्षेत्र" (फील्ड) सिद्धान्त अनुसार, कोनो साहित्यिक कृतिक मान्यता ओकरौ आंतरिक गुणसें जतेक नै, ओतेक बेसी संस्थागत "स्वीकृति-प्रदाता" (कन्सिक्रेटिंग एजेंसी) — अकादमी, पुरस्कार, प्रकाशन-गृह — पर निर्भर करै छै। ई ग्रंथ केरौ प्रकाशन-कथा (पृष्ठ ३, ८) एकरौ सटीक दृष्टान्त

छैकै — ग्रंथ केरौ अस्तित्व एगो एकल औद्योगिक दानदाता (पद्मश्री डॉ॰ बी॰ वी॰ राजू) आरू एगो अकादमी केरौ (हिंदी अकादमी, हैदराबाद — जे अंगिका-भाषी क्षेत्रसें बाहर, आंध्र प्रदेश मँ स्थित छै) उदार सहयोगपर निर्भर रहल। ई तथ्य बोर्दियूक ऊ अवधारणाक ठोस उदाहरण छेकै, जे मँ एगो प्रभुत्वहीन/परिधीय साहित्यिक क्षेत्र अपनो प्रतीकात्मक पूँजी (सिंबॉलिक कैपिटल) स्वयं उत्पन्न नै करी सकबाक कारण सें बाहरी संस्था-तंत्रपर निर्भर रहै छै।

7.5 उत्तर-औपनिवेशिक आरू निम्नवर्गीय इतिहास-लेखन

रणजित गुहा-प्रवर्तित सबाल्टर्न स्टडीज़क दृष्टि सें "नीचाँसँ इतिहास" लिखना — केन्द्रीकृत, प्रभुत्वशाली (हियाँ हिंदी-केंद्रित) आख्यान केरौ विरुद्ध एगो प्रतिरोधी उपक्रम छेकै। अंगिका केरौ ई परियोजना संरचनात्मक रूपेण ई निम्नवर्गीय-इतिहासलेखनक ढाँचा मँ फिट बैसैत छै — बिहारक आंतरिक भाषिक बहुलता के "हिंदी-पट्टी" केरौ एकरूपी आख्यान केरौ विरुद्ध सामने अनैत छै। मगर गायत्री स्पिवाक केरौ प्रसिद्ध प्रश्न — "कऽ सबाल्टर्न बाजि सकैत अछि?" — हियाँ भी प्रासंगिक छै। ई इतिहास डॉक्टरेट-उपाधिधारी, संस्थागत रूपेण प्रतिष्ठित (कुलमचिव, अकादमी-अध्यक्ष जेना पद धारण कएनिहार) विद्वानसिनी द्वारा लिखल गेलौ छै, जे अपनो तर्क-पद्धति आरू ऐतिहासिक ढाँचा प्रायः ऊ हिंदी/संस्कृतनिष्ठ अकादमिक मॉडलसें ग्रहण करै छथिन, जेकरौ विरुद्ध ई परियोजना खड़ होलौ छै। ई विरोधाभास के चिन्हित करना आवश्यक छै — निम्नवर्गीय पहचानक हेतु आवाज उठेनिहार स्वर स्वयं अभिजात्य संस्थागत भाषा मँ गठित छै।

7.6 अंतःपाठकता

क्रिस्तेवाक अंतःपाठकता-सिद्धान्त अनुसार प्रत्येक पाठ अन्य पाठसिनीक मोज़ाइक छेकै — कोनो एकल, शुद्ध, एकल-स्वामित्वयुक्त उद्गम-बिंदु दुर्लभ होय छै। ई सिद्धान्त केरौ आलोक मँ सिद्ध-नाथ-चर्यापद-परम्परा आरू कबीर-परम्परा के नव रूप मँ बुझल जा सकै छै — ई साझा पाठ-संपदा छेकै, जे आधुनिक मानकीकृत भाषिक सीमारेखा निर्धारित होएबासें पूर्वेक मौखिक-हस्तलिखित निरंतरता मँ बंगला, असमिया, ओड़िआ, मैथिली आरू अंगिका —

सभटा परवर्ती परम्परा केरौ साझा पूर्वज-सामग्री छेकै। ई दृष्टि सें बहुविध भाषिक परम्परा द्वारा एकहि चर्यापद-कोषपर दावा करना आवश्यक रूपेण "चोरी" नै, बल्कि पाठक अंतर्निहित बहुस्वामित्वशीलताक स्वाभाविक परिणाम छेकै। मगर हियाँ समीक्षात्मक बिंदु ई छै — ग्रंथ ई साझा-विरासत के "साझा संगम" केरौ रूप मँ प्रस्तुत नै करै, बल्कि "अंगिका केरो कवि" जेना अनन्य-स्वामित्वसूचक भाषा मँ प्रस्तुत करै छै — जे अंत:पाठकता-सिद्धान्त केरौ भावनाक विपरीत, प्रतिस्पर्धी-स्वामित्व केरौ भाषा मँ बात करै छै।

7.7 रूपवाद आरू नव-समीक्षा: निकट-पाठक प्रश्न

रूसी रूपवाद आरू नव-समीक्षा साहित्यिक रचना केरौ बनावट, पुनरावृत्ति, बिम्ब, विरोध, विडम्बना, कथन-रणनीति, ध्वनि-संरचना आरू शब्द-चयनपर निकट दृष्टि मांगै छै। समीक्ष्य पोथी केरौ प्रधान प्रयोजन साहित्यिक इतिहास बनायब छै, एही लेली हजारो रचना मँ सभक निकट-पाठ सम्भव नै छेलै। मगर किछु प्रतिनिधि पाठक विस्तृत विश्लेषण आवश्यक छेलै, जेकरा सें “महत्त्वपूर्ण”, “श्रेष्ठ”, “आधुनिक”, “प्रभावी” जइसन मूल्य-निर्णय प्रमाणित होय।

गद्य-खंड कथा-विवेचन मँ विषयगत समूह बनाबै छै—नारी-जागृति, वातावरण, प्रेम, सामाजिक संघर्ष आदि (पृ. 177)—मगर एहन वर्गीकरण “की कहल गेल” बताबै छै; “कोना कहल गेल” पर कम प्रकाश दै छै। रूपवादी कसौटीपर ई पोथी केरौ प्रमुख आलोचनात्मक कमी छै।

7.8 संरचनावाद: वर्गीकरण केरौ शक्ति आरू सीमा

संरचनावादी दृष्टि सें पोथी केरौ काल-विभाजन, विधा-विभाजन, कविता–गद्य, लोक–लिखित, मंच–मंचोत्तर, कथा–उपन्यास–नाटक–निबन्ध–आलोचना आदि वर्गीकरण एक अर्थ-व्यवस्था बनाबै छै। ई संरचना पाठक के विशाल सामग्री मँ दिशा दै छै। खास करी “मंच” केन्द्रीय संकेतक बनि साहित्यिक संस्था केरौ नेटवर्क देखाबै छै।

मगर वर्गीकरण केरौ नियम सर्वत्र एकसमान नै। कतहु तिथि, कतहु संस्था, कतहु शैली, कतहु धार्मिक सम्प्रदाय, कतहु माध्यम, कतहु पीढ़ी—पृथक्-पृथक् आधार एकहि स्तरपर प्रयुक्त छै। संरचनावादी पुनर्लेखन मँ वर्गीकरण केरौ

प्रत्येक अक्ष पृथक् चाही: काल, विधा, माध्यम, संस्था, विचारधारा, भूगोल, भाषा-रूप। ई पाँच-सात अक्ष के एक दोसर मँ नै मिलाओल जाए।

7.9 व्याख्याशास्त्र: परम्परा-निर्माण आरू पूर्वबोध

गाडामर केरौ व्याख्याशास्त्रीय दृष्टि कहै छै जे इतिहासकार परम्परासें बाहर ठाढ़ नै होय; ऊ अपनो समयक प्रश्नसें अतीत पढ़ैत छै। 'अंगिका साहित्य केरौं इतिहास' भी 1990-दशकक भाषिक-सांस्कृतिक आत्मपहिचान, संस्थागत प्रयास आरू साहित्यिक संगठनक क्षितिजसें प्राचीन आरू आधुनिक सामग्री के पुनर्संयोजित करै छै। ई दोष मात्र नै; सिनी साहित्येतिहास एहन क्षितिज-संवाद करै छै।

समस्या तब होय छै जब वर्तमान पहिचान केरौ आवश्यकता अतीतक अनिश्चित प्रमाण के निश्चित वंशावली मँ बदलि दै छै। व्याख्याशास्त्रीय ईमानदारी लेली इतिहासकार के अपनो पूर्वबोध स्पष्ट करबाक चाही। पोथी केरौ प्रकाशकीय, प्राक्कथन आरू उपसंहार ई आत्मबोधक अनेक संकेत दै छै; नव संस्करण मँ एक स्वतंत्र "पद्धति आ स्रोत" अध्याय ई बात के अधिक स्पष्ट करी सकै छै।

7.10 बाख्तिन: बहुभाषिकता, बहुध्वनिता आरू माध्यम

बाख्तिन केरौ संवादिता आरू बहुध्वनिता-दृष्टि सें पोथी विशेष रूप मँ सशक्त छै। हियाँ मात्र उच्च काव्य नै, लोककंठ, गीत, गाथा, कथा, हास-व्यंग्य, रेडियो-नाटक, आत्मकथा, पत्र, पत्रिका, आलोचना, इतिहास-भूगोल आरू विज्ञान-लेखन तलक अनेक सामाजिक स्वर एकहि साहित्यिक क्षेत्र मँ प्रवेश करै छै। पृ. 209 पर रेडियो-नाटकक लेखक, प्रसारण आरू रूपान्तरक चर्चा ई माध्यमिक बहुध्वनिताक ठोस उदाहरण छै।

ई दृष्टि सें अंगिका साहित्य केरौ "एक शुद्ध आवाज" खोजना पोथी केरौ वास्तविक उपलब्धिक विरुद्ध होतै। पोथी स्वयं देखाबै छै जे साहित्य अनेक सामाजिक भाषा, संस्था आरू माध्यमक मिलनबिन्दु छै। नव संस्करण मँ ई बहुध्वनिता के विश्लेषणात्मक रूप मँ नाम देलौ जाए त पोथी केरौ आधुनिक महत्त्व आरो बढ़तै।

7.11 मार्क्सवादी आरू सांस्कृतिक भौतिकवादी दृष्टि

गद्य-खंडक आरम्भ (पृ. 149–162) राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक आरू आर्थिक परिस्थिति पर विस्तृत चर्चा करै छै। पृ. 153 पर सामाजिक सुधार, शिक्षा, स्त्री-सुधार, जातिगत संस्था आरू गुलामी-प्रथाक अवशेष केरौ उल्लेख छै; पृ. 161 पर आर्थिक परिस्थिति, रेशम-उद्योग, वन, कृषि आरू औद्योगिक संकटपर विचार छै। ई सामग्री साहित्य के सामाजिक आधारसें जोड़बाक महत्त्वपूर्ण प्रयास छै।

मगर सांस्कृतिक भौतिकवाद पूछत—ई आर्थिक-सामाजिक परिवर्तन साहित्यिक रूप, प्रकाशन, लेखक केरौ वर्ग-स्थिति, पाठक-वर्ग, विषय-चयन, भाषा-मानकीकरण वा पुस्तक-बाजार के प्रत्यक्ष केना बदलकै? पोथी पृष्ठभूमि दै छै, मगर कारण-सम्बन्ध प्रायः अनुमानित रहि जाय छै। अधिक अभिलेखीय प्रमाण—प्रकाशन संख्या, संस्थागत धन, शिक्षित वर्गक विस्तार, पत्रिका केरौ वितरण, लेखक केरौ पेशा—ई कड़ी के मजबूत करतै।

7.12 उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि: भाषा, सत्ता आरू प्रत्याख्यान

पृ. 157 पर अंग्रेजी शिक्षा, स्थानीय भाषा, “मधुबनी-बोली”क संस्थागत प्रतिष्ठा आरू अंगिका सम्बन्धी भाषिक-राजनीतिक असन्तोषक स्पष्ट वर्णन छै। ई अंश उत्तर-औपनिवेशिक समीक्षा लेली अत्यन्त महत्त्वपूर्ण छै, कारण हियाँ भाषा मात्र संचार नै, सत्ता, विद्यालय, विश्वविद्यालय, अनुदान, प्रतिष्ठा आरू क्षेत्रीय पहिचान केरौ विषय बनै छै।

उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि पोथी केरौ प्रतिरोधी मूल्य स्वीकारैत छै—केन्द्रीय अथवा प्रतिष्ठित भाषिक आख्यान केरौ बाहर स्थानीय साहित्यिक सार्वजनिकता दृश्यमान बनाओल गेलौ। मगर समानान्तर इतिहास-दृष्टि एक अतिरिक्त सावधानी मांगै छै: केन्द्रीय आख्यान गलत होय सकै छै, पर हाशिया केरौ आख्यान स्वतः सत्य नै। प्रतिरोधी इतिहास के भी स्रोत, तिथि, तुलनात्मक भाषा-विज्ञान आरू बहुस्रोतक कसौटी पार करय पड़त।

7.13 स्त्रीवादी समीक्षा: उपस्थिति, विषय आरू प्रतिनिधित्व

पोथी स्त्री-अनुभव के पूर्णतः उपेक्षित नै करै। सामाजिक पृष्ठभूमि मँ स्त्री-उत्थान आरू कन्या-शिक्षाक चर्चा छै (पृ. 153)। कथा-खंड मँ नारी-सम्मान,

नारी-उत्पीड़न, नारी-जागृति, नारी-अन्तर्मन आदि विषयक रचना केरौ उल्लेख छै (पृ. 177)। पृ. 193 पर आशा पूर्वेक उपन्यास 'अन्तहीन वैतरणी'क विस्तृत परिचय मिलै छै। आत्मपरक साहित्य मँ स्त्री-लेखिका सम्बन्धी सामग्री भी दर्ज छै (पृ. 217)।

मगर स्त्रीवादी इतिहास मात्र स्त्री-विषय खोजना नै; लेखकीय प्रतिनिधित्व, प्रकाशन-संस्था, आलोचनात्मक स्वीकृति, घरेलू श्रम, देह, विवाह, उत्तराधिकार, शिक्षा, जाति-वर्ग आरू भाषिक अधिकारक संग स्त्री-अनुभव केरौ सम्बन्ध जाँचना भी छै। पोथी समूचा लेखक-सूची मँ स्त्री-पुरुष अनुपातक सांख्यिकीय पाँजि नै दै छै; तें प्रतिनिधित्व केरौ समता सम्बन्धी कठोर निष्कर्ष बिना स्वतंत्र गणना देना उचित नै। नव संस्करण मँ ई गणना अनिवार्य होतै।

7.14 फूको आरू विमर्श-सत्ता: साहित्य केरौ इतिहास स्वयं सत्ता-कर्म

ककरा "पहिल कवि", "श्रेष्ठ लेखक", "आधुनिक", "प्राचीन", "लोक", "सिद्ध", "अंगिका" अथवा "बाहर" कहल जाए—ई मात्र निर्दोष वर्गीकरण नै; ई साहित्यिक स्मृतिक सत्ता-विन्यास बनाबै छै। पोथी अनेक विस्मृत नाम के दृश्य करै छै, जे एक प्रतिरोधी कॅनन-निर्माण छै। मगर जब नव कॅनन बनै छै, तब ओकरौ चयन, मौन, अनुपस्थिति आरू प्राधिकार भी जाँचल जाए।

ई दृष्टि सें आलोचना पोथी केरौ उद्देश्य के नकारैत नै; उलटे ओकरौ ऐतिहासिक महत्त्व बढ़बैत छै। 1998 ई.क ई पोथी अंगिका साहित्यिक सार्वजनिकता केरौ संस्थापना मँ स्वयं एक घटना छै। तें एकरौ अध्ययन "पोथी अंगिका साहित्यकेँ कोना वर्णित करैत अछि?" मात्र नै, "ई पोथी अंगिका साहित्यिक कॅननकेँ कोना बनबैत अछि?" भी होयबाक चाही।

7.15 पाठक-स्वीकृति सिद्धान्त

याउस आरू ईज़रक पाठक-स्वीकृति दृष्टि सें "मंच", अधिवेशन, पत्रिका, आकाशवाणी, धारावाहिक कथा, रेडियो-नाटक, स्तम्भ, समाचार-पत्र आरू साहित्यिक संस्था अत्यन्त उपयोगी सामग्री छै। पृ. 209 पर रेडियो-नाटकक प्रसारण, पृ. 257 पर पत्र-पत्रिका केरौ स्तम्भ आरू नियमित प्रकाशनक चर्चा देखाबै छै जे साहित्य पाठक-श्रोता समुदाय बिना जीवित नै।

तैयो वास्तविक स्वीकृति-इतिहास लेली समीक्षा-लेख, पत्र, बिक्री, सदस्यता, प्रसार-संख्या, श्रोता-प्रतिक्रिया, पुनर्मुद्रण, मंचीय प्रस्तुति संख्या, पाठ्यक्रम-समावेशन आदि चाही। पोथी संस्था केरौ अस्तित्व बताबै छै; पाठकीय प्रतिक्रिया-संरचनाक पूर्ण इतिहास अखनी बाँकी छै।

8. विदेह समानान्तर परम्परा-दृष्टि

विदेह समानान्तर परम्परा-दृष्टि मुख्यधारा केरौ नकार नै, हाशिया केरौ स्वतः महिमामंडन भी नै। एकरौ मूल आग्रह छै—स्रोत केरौ बहुलता, प्रमाण केरौ अनुशासन, केन्द्र आरू हाशिया दुन्नो पर समान कसौटी, मानवीय गरिमा, बहुकेन्द्रिक सार्वजनिकता, परम्परासें संवाद आरू निरन्तर आत्मसमीक्षा। ई समीक्षा मँ सात कसौटी लागू करल गेलौ छै: बहुप्रमाणीय विवेकवाद, सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद, गरिमा-आधारित नैतिकता, बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र, धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता, समानान्तर इतिहास-दृष्टि, आरू आत्मसमीक्षा।

समानान्तर सूत्र: परम्परासें बाहर नै, परम्परा केरौ भीतर कैद नै; स्रोत केरौ उत्तराधिकारी बनू, स्रोत केरौ प्रहरी नै; जे भेटल से ग्रहण करौ, जे असत्य से संशोधित करौ।

8.1 बहुप्रमाणीय विवेकवाद

समीक्ष्य पोथी केरौ निर्माण स्वयं बहुप्रमाणीय प्रयत्नक संकेत दै छै—मुद्रित रचना, लेखक-परिचय, पत्रिका, लोकगीत, जनश्रुति, भाषा-रूप, सामाजिक इतिहास, संस्था, रेडियो, पत्र आरू आलोचना एकत्र करल गेलौ छै। ई एक पैघ शक्ति छै।

मगर सिनी प्रमाण समान दर्जाक नै। दिनांकित मुद्रित पुस्तक, लेखक केरौ आत्मकथा, समकालीन समाचार, मौखिक जनश्रुति, पछिलका किंवदन्ती, भाषिक अनुमान आरू सम्पादकक स्मृति पृथक्-पृथक् ज्ञान-स्रोत छथिन। बहुप्रमाणीय विवेकवादक माँग छै जे स्रोत बहुल हो, मगर ओकरौ विश्वसनीयता-क्रम स्पष्ट हो। नव संस्करण मँ प्रत्येक प्रमुख दाबी संग स्रोत-श्रेणी देलौ जाए: प्राथमिक पाठ, समकालीन अभिलेख, उत्तरवर्ती स्रोत, मौखिक साक्ष्य, भाषिक अनुमान, अथवा सम्पादकीय निष्कर्ष।

8.2 सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद

अंगिका एक सामाजिक-भाषिक वास्तविकता रूप मँ लोकक बोलचाल, साहित्य, संस्था, पत्रिका आरू आत्मपहिचान मँ उपस्थित छै—पोथी केरौ विशाल सामग्री ई अस्तित्वक साक्ष्य देत छै। मगर भाषिक सीमा, ऐतिहासिक वंश, उपभाषिक सम्बन्ध आरू नामकरण समयसें बदलि सकै छै। सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद हियाँ दू अतिवादसें बचबैत छै: एक दिस “सब मात्र राजनीतिक निर्माण अछि” कहि वास्तविक भाषिक समुदाय के नकारब; दोसर दिस वर्तमान पहिचान के अतीत मँ अपरिवर्तित रूप मँ आरोपित करना।

एही लेली समीक्षाक निष्कर्ष ई नै जे अंगिका अनिवार्यतः अमुक भाषा केरौ भीतर छै वा बाहर; ई प्रश्न तुलनात्मक भाषाविज्ञान, ऐतिहासिक ध्वनि-विकास, व्याकरण, शब्दसंपदा, दस्तावेज आरू आत्मपहिचान सभक संयुक्त परीक्षण मांगै छै। पोथी केरौ साहित्यिक सामग्री ई अनुसन्धानक एक प्रमुख स्रोत होय सकै छै, अन्तिम निर्णय नै।

8.3 गरिमा-आधारित नैतिकता

क्षेत्रीय भाषा-साहित्य के अदृश्यता सें बाहर आनब अपने मँ गरिमाक कार्य छै। पोथी लोककंठ, कम प्रसिद्ध लेखक, स्थानीय पत्रिका, स्त्री-विषय, श्रम-जीवन, ग्राम्य संस्कृति, साधु-लोक, रेडियो आरू गैर-महानगरीय साहित्यिक संस्था दर्ज करै छै। ई सांस्कृतिक गरिमाक पुनर्स्थापन छै।

मगर गरिमा मात्र “हमर परम्परा महान” कहना नै। जों जाति, लिंग, आर्थिक असमानता, श्रमिक-अनुभव, धार्मिक अल्पता, ग्रामीण-शहरी विषमता वा भाषिक सीमा भीतर ककरो आवाज कम छै, तेकरौ अभाव भी दर्ज होतै। पोथी किछु सामाजिक प्रश्न उठबैत छै; नव संस्करण मँ प्रतिनिधित्व केरौ व्यवस्थित सूचकांक चाही।

8.4 बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र

पोथी केरौ मूल सांस्कृतिक हस्तक्षेप बहुकेन्द्रिक छै: साहित्यिक वैधता मात्र महानगर, विश्वविद्यालय वा प्रतिष्ठित भाषा-केंद्रक देन नै; भागलपुर, मुंगेर, स्थानीय मंच, पत्रिका, गाम, रेडियो आरू लोकपरम्परा भी साहित्यिक केन्द्र बनि सकै छै। ई दृष्टि आधुनिक बहुकेन्द्रिक सांस्कृतिक लोकतन्त्रसें मेल खाइत छै।

मगर बहुकेन्द्रिकताक नैतिक कसौटी ई भी छै जे अंगिका-केंद्र स्वयं अपनो भीतरक बोली, सीमावर्ती भाषारूप, जनजातीय वा स्थानीय उपरूपपर एकरूपता थोपय नै। “केन्द्रक आलोचना” तब विश्वसनीय होय छै जब नव केन्द्र अपनो परिधिक स्वतंत्रता भी मानै छै।

8.5 धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता

सिद्ध, नाथ, साधु, भक्ति, कबीर-परम्परा, लोकदेवता, धार्मिक गीत आरू विविध सांस्कृतिक परम्परा केरौ समावेश पोथी केरौ एक विशेषता छै। विवेकपूर्ण बहुलता ई सामग्री के न त धर्मविरोधी पूर्वाग्रहसें पढ़त, न श्रद्धाक कारण ऐतिहासिक प्रश्न रोकत। धार्मिक साहित्य केरौ आध्यात्मिक मूल्य, सामाजिक कार्य, भाषिक योगदान आरू ऐतिहासिक प्रमाण पृथक्-पृथक् स्तरपर जाँचल जाए।

प्राचीन संत अथवा सिद्ध के वर्तमान भाषिक-क्षेत्रीय पहिचान केरौ प्रतीक बनाबय काल विशेष सावधानी चाही। श्रद्धा एक प्रकार केरौ सांस्कृतिक सत्य हो सकै छै; जन्मस्थान आरू भाषिक वर्गीकरण ऐतिहासिक दाबी छै। दुन्नो के एक नै मानना समानान्तर पद्धतिक अनिवार्य अनुशासन छै।

8.6 समानान्तर इतिहास-दृष्टि

समानान्तर इतिहास-दृष्टि दुई विपरीत भूल अस्वीकारैत छै: “आधिकारिक स्रोत जे कहय से स्वत: सत्य” आरू “हाशियाक स्मृति जे कहय से स्वत: सत्य।” पोथी मुख्यधारा केरौ उपेक्षा के चुनौती दै छै—ई ओकरौ शक्ति। मगर तेकरौ प्रत्येक प्रतिदाबी पर भी समान प्रमाण-कसौटी लागू होतै।

ई कसौटी पर आधुनिक मुद्रित काल केरौ लेखक, पत्रिका, रेडियो, संस्था आरू प्रकाशन सम्बन्धी हिस्सा अधिक परीक्षणयोग्य छै। प्राचीन काल केरौ दाबी, जन्मस्थान, भाषिक वंशावली, लिपि-सम्बन्ध आरू कतेको तिथि पुन:स्रोत-परीक्षण मांगै छै। पोथी केरौ अन्तिम उपसंहार जे भ्रम-संशोधन केरौ आवश्यकता स्वीकारैत छै, ऊ समानान्तर इतिहास-दृष्टि केरौ दिशा स्वयं खोलै छै।

8.7 आत्मसमीक्षा

आत्मसमीक्षा समानान्तर परम्परा केरौ सुरक्षा-कवच छै। कोनो प्रतिरोधी इतिहास जों एक बेर प्रतिष्ठित होय जाए, तकरो नूतन प्राधिकार बनबाक सम्भावना रहै छै। तें पोथी केरौ संशोधन मात्र बाहरी आलोचकक काम नै; पोथी केरौ अपनो परम्परा के समय-समय पर स्रोत, तिथि, भाषा-विज्ञान, सामाजिक प्रतिनिधित्व आरू नूतन सामग्रीसें स्वयं जाँचबाक चाही।

पृ. 259–260 ई आत्मसमीक्षाक महत्त्वपूर्ण आन्तरिक आधार छै। ग्रन्थकार किछु भ्रम केरौ उल्लेख करै छथिन, आधुनिक गद्यक विकास स्वीकारैत छथिन, आरू राजनीति द्वारा संस्कृति-साहित्य केरौ उपयोगपर सावधानी व्यक्त करै छथिन। ई उपसंहार पोथी के बंद घोषणा नै, खुलल परियोजना रूप मँ पढ़बाक अवसर दै छै।

8.8 मैथिली साहित्येतिहास-लेखनक समानान्तर अनुभव

मैथिली साहित्येतिहास-लेखनक अपनो बीसम शताब्दीक अनुभव अंगिका केरौ वर्तमान संघर्ष केरौ एगो जीवंत समानांतर दृष्टान्त प्रस्तुत करै छै। मैथिली के भी लंबा समय तलक हिंदीक "बोली" मात्र मानल गेलौ, ग्रियर्सन केरौ भाषा-सर्वेक्षण मँ भलहिं स्वतंत्र भाषा केरौ रूप मँ मान्यता भेटल, मगर राजनीतिक-प्रशासनिक मान्यता (अष्टम अनुसूची मँ समावेश) २००३ ईस्वी तलक प्रतीक्षारत रहल। ई संघर्ष केरौ दौरान मैथिली केरौ साहित्येतिहासकारसिनी (कपिलेश्वर झा, रमानाथ झा, जयकान्त मिश्र आदि) के भी प्राचीनता-सिद्धिक हेतु समान प्रलोभनक सामना करय पड़ल छेलै — आदिकवि-खोज, चर्यापद-दावा, आरू भाषिक स्वतंत्रताक प्रमाणीकरणक हेतु ऐतिहासिक व्याप्ति खिंचबाक प्रवृत्ति। ई समानांतर अनुभव केरौ आलोक मँ, अंगिका-साहित्येतिहासकारसिनीक आग्रह — जे प्रथम दृष्टि मँ अतिरंजित बुझाय छै — वस्तुतः एगो सुपरिचित, संरचनात्मक रूपेण अनिवार्य चरण छेकै, जेकरा सें प्रायः प्रत्येक उपेक्षित भाषा-समुदाय के अपनो मान्यता-यात्रा मँ गुजरय पड़ै छै।

8.9 विद्यापति-सम्बद्ध दावा केरौ प्रमाण-परीक्षण

मिथिला केरौ सामाजिक-ऐतिहासिक स्मृतिक वास्तविक दस्तावेजी रीढ़ पंजी-प्रबंध (वंशावली-अभिलेख) परम्परा छेकै, जे शताब्दीसिनीसें मैथिल

कुलक जन्म, विवाह आरू वंशक्रमक अभिलेख राखी क आयल छै। पंजी-आधारित आरू विद्यापति-स्वयं केरौ रचनासिनी मँ उल्लिखित ताम्रपत्र/कोलोफोन-प्रमाणसें पुष्ट प्रचलित विद्वत्-मान्यता विद्यापति केरौ वंश-मूल सरिसब-बिसफी (आधुनिक मधुबनी) क्षेत्र मँ राखै छै, आरू हुनकरौ राजाश्रय ओइनवार वंशक मिथिला-स्थित राजा — विशेषतः राजा शिवसिंह आरू रानी लखिमा देवी — सें जोड़ै छै। उपसंहार मँ प्रस्तुत "सहरसा-जन्म, राजा गणेश्वरक सभासद-पिता" दावा (पृष्ठ २५९) ई प्रचलित मान्यताक विरुद्ध एगो गुरुतर संशोधनवादी प्रस्थापना छेकै। "विदेह समानान्तर परम्परा" केरौ कसौटी ई छै — कोनो प्रतिस्पर्धी दावा तखने ग्राह्य होय छै, जब ऊ ऊ प्रमाण-मानदंड (स्वतंत्र पंजी-प्रविष्टि, समकालीन ताम्रपत्र, हस्तलिखित कोलोफोन) के पूर्ण करय, जकरा मिथिला-परम्परा स्वयं अपनो दावा केरौ हेतु अनिवार्य मानै छै। समीक्षाधीन ग्रंथ केरौ जतेक अंश देखल गेलौ, ओतेक मँ एहन कोनो स्वतंत्र दस्तावेजी प्रमाण केरौ उद्धरण नै भेटल — ई लेली ई दावा, वर्तमान स्वरूप मँ, प्रामाणिक इतिहास केरौ अपेक्षा परिकल्पनाक स्तरपर रहि जाय छै।

8.10 मैथिली-अंगिका ऐतिहासिक अन्तर्सम्बन्ध आरू सीमा-क्षेत्र

तैयो ई भी स्वीकार्य छै जे सहरसा, पूर्णिया आरू कटिहारक किछु सीमावर्ती भूभाग ऐतिहासिक रूपेण मैथिली-अंगिका-बज्जिका भाषिक सम्पर्क-क्षेत्र (कॉन्टैक्ट ज़ोन) रहलौ छै, जहाँ भाषिक सीमारेखा कहियो एकदम स्पष्ट-रेखांकित नै रहल। ग्रियर्सन केरौ भाषा-सर्वेक्षण आरू परवर्ती बोली-सर्वेक्षणसिनी भी ई क्षेत्र के संक्रमण-क्षेत्र केरौ रूप मँ देखैत छथिन, नै कि पूर्णतः एक अथवा दोसर भाषा केरौ अनन्य अधिकार-क्षेत्र केरौ रूप मँ। ई दृष्टि सें, "विद्यापति सहरसाक छथि, अतः अंगिका छथि" जेना द्विआधारी (बाइनरी) दावा केरौ अपेक्षा — "सहरसा-क्षेत्र भाषिक-सांस्कृतिक संक्रमण-क्षेत्र थिक, जतय मिथिला आ अंग दुनूक प्रभाव विद्यमान अछि" — एहन सूक्ष्म, संक्रमण-क्षेत्र-संवेदनशील उपसंहार अधिक प्रामाणिक आरू रक्षणीय बुझाय छै।

8.11 समानान्तर आग्रहक द्वन्द्व

मैथिली आरू अंगिका, दुन्नो साहित्येतिहास-लेखन एकहि "आदिकवि-खोज" केरौ चिंतासें ग्रस्त देखबा मँ अबैत छै — दुन्नो परम्परा अपनो प्राचीनताक अधिकतम विस्तार आरू कोनो सर्वस्वीकृत महान् नामक अनन्य स्वामित्व केरौ हेतु प्रतिस्पर्धारत बुझाय छै। "विदेह समानान्तर परम्परा" अपनो कठिन दशकसिनीक अनुभवसें एगो उपयोगी पाठ प्रस्तुत करै छै — भाषिक मान्यता आरू साहित्यिक गौरव अंततः प्रतिस्पर्धी-स्वामित्व-दावासें नै, बल्कि कठोर स्रोत-समालोचना, सम्पूर्ण दस्तावेजीकरण, आरू आवश्यकता पड़ला पर "साझा विरासत" के साझे रूप मँ स्वीकार करबाक उदारतासें अधिक सुदृढ़ होय छै। भविष्यक अंगिका साहित्येतिहास-लेखन, आरू सम्भवतः मिथिला-अंग सीमा-क्षेत्र केरौ संयुक्त, सम्पर्क-क्षेत्र-संवेदनशील अध्ययन, ई दिशा मँ एगो उपयोगी अगला कदम होय सकै छै।

9. स्त्री, समाज, वर्ग, संस्था, माध्यम आरू पाठक

9.1 स्त्री

पोथी स्त्री-विषयक सामग्री दर्ज करै छै, मगर समेकित स्त्रीवादी अध्याय नै छै। सामाजिक सुधार, कन्या-शिक्षा, नारी-जागृति, नारी-अन्तर्मन, स्त्री-उपन्यासकार आरू आत्मपरक लेखनक उदाहरण उपलब्ध छै। ई सामग्री के पृथक् सूचकांक मँ संकलित करला सें अंगिका साहित्य केरौ स्त्री-इतिहास अधिक स्पष्ट होय सकै छै।

विशेष सावधानी: “स्त्री-विषय” आरू “स्त्री-दृष्टि” एक नै। पुरुष लेखक स्त्री-विषय लिखि सकै छथिन; स्त्री लेखक भी पितृसत्तात्मक संरचना पुनरुत्पन्न करी सकै छथिन। आलोचना लेली कथनकर्ता, दृष्टिकोण, निर्णय-अधिकार, देह, श्रम, संपत्ति, शिक्षा, विवाह, हिंसा, भाषा आरू मौनक संरचना जाँचना आवश्यक छै।

9.2 जाति, श्रम आरू वर्ग

पृ. 153 क सामाजिक पृष्ठभूमि जातीय महासभा, शिक्षा, सामाजिक सुधार आरू गुलामी-प्रथाक अवशेष केरौ चर्चा करै छै; पृ. 161 आर्थिक उद्योग, जंगल आरू जीवनयापनक प्रश्न उठबैत छै। ई सामग्री वर्ग-जाती सम्बन्धी आलोचना केरौ द्वार खोलै छै।

मगर समूचा साहित्यिक चयन मँ विभिन्न सामाजिक समूह केरौ प्रतिनिधित्व केरौ गणना नै छै। तें “पोथी पूर्ण समावेशी” अथवा “पूर्ण बहिष्कारी” कहना बिना स्वतंत्र आँकड़ा अनुचित होतै। उचित शोध-पद्धति छै—लेखक केरौ सामाजिक पृष्ठभूमि जहाँ सार्वजनिक आरू प्रमाणित हो, तेकरौ सावधानीपूर्वक सूची; विषयगत उपस्थिति; पात्र-प्रतिनिधित्व; भाषिक रजिस्टर; प्रकाशन-अवसर; आलोचनात्मक स्वीकृति।

9.3 संस्था आरू माध्यम

हिन्दी अकादमी केरौ प्रकाशन, अंगिका साहित्यिक मंच, अधिवेशन, आकाशवाणी, पत्र-पत्रिका, विद्यालय-विश्वविद्यालय, स्थानीय संगठन—ई सिनी पोथी केरौ इतिहास मँ सक्रिय छथिन। ई कारण साहित्यिक इतिहास मात्र लेखक केरौ प्रतिभाक इतिहास नै रहै; संस्था, माध्यम आरू वैधताक इतिहास बनै छै।

ई पोथी केरौ भविष्यक डिजिटल संस्करण लेली संस्थागत मानचित्र अत्यन्त उपयोगी होतै: कोन संस्था कतय, कोन वर्ष, कोन लेखक, कोन पत्रिका, कोन कार्यक्रम, कोन प्रकाशन। एहन नेटवर्क-मानचित्र साहित्यिक आधुनिकता केरौ वास्तविक संरचना देखाओत।

10. पूर्वपक्ष–उत्तरपक्ष

10.1 पूर्वपक्ष: “क्षेत्रीय साहित्येतिहासमे पहिले सामग्री बचाउ, पाछाँ कठोर आलोचना”

ई पूर्वपक्ष मँ पर्याप्त बल छै। जब रचना छितरायल हो, पत्रिका नष्ट होय हो, लेखक केरौ नाम विस्मृत हो, लोकसाहित्य मौखिक हो, तब पहिल कर्तव्य सामग्री एकत्र करना हो सकै छै। 1998 ई.क पोथी ई आपात अभिलेखीय आवश्यकता पूरा करबाक साहसी प्रयत्न छै। हियाँ आधुनिक स्रोत-मानकक अभाव के ऐतिहासिक परिस्थिति सें पृथक् करी देखना न्यायपूर्ण नै।

उत्तरपक्ष

मगर सामग्री-संग्रह आरू इतिहास-दाबी पृथक् बात छथिन। जेहि क्षण पोथी “पहिल”, “प्राचीन”, “जन्मस्थान”, “भाषा-वंश”, “काल-सीमा” आदि निर्णय दै छै, तेहि क्षण प्रमाण-पद्धति आवश्यक होय जाय छै। तें 1998 संस्करण केरौ

अभिलेखीय मूल्य अक्षुण्ण राखी क 2026-स्तरीय आलोचनात्मक उपकरण जोड़ना सभसँ न्यायपूर्ण मार्ग छै।

10.2 पूर्वपक्ष: “प्रत्येक रचनाक निकट-पाठ साहित्येतिहासमे सम्भव नहि”

ई आपत्ति ठीक छै। सैकड़ो कवि-कथा-नाटकक इतिहास लिखैत समय प्रत्येक रचनापर पूर्ण रस, ध्वनि, रूपवाद, स्त्रीवाद आरू समाजशास्त्रीय समीक्षा देना सम्भव नै।

उत्तरपक्ष

समाधान सभक निकट-पाठ नै, प्रतिनिधि निकट-पाठ छै। प्रत्येक प्रमुख काल/विधासँ 3–5 पाठ चुनि स्पष्ट चयन-कसौटी सहित गहिर विश्लेषण जोड़ल जाए। बाकी सामग्री के सूची, सार, संदर्भ आरू स्रोत-संकेत रूप मँ राखल जाए। ई सँ विस्तार आरू आलोचनात्मक गहिराई दुन्नो बचत।

10.3 पूर्वपक्ष: “हाशियाक परम्पराकेँ मुख्यधाराक प्रमाण-मानक पर जाँचब स्वयं अन्याय हो सकैत अछि”

ई आपत्ति मँ भी सत्य छै। अभिलेख-सत्ता असमान होय छै; प्रतिष्ठित भाषा/राज्य अधिक दस्तावेज छोड़ैत छै, ग्रामीण वा मौखिक समुदाय कम। मात्र लिखित कागज के प्रमाण मानला सँ हाशिया केरौ इतिहास मिटि सकै छै।

उत्तरपक्ष

समानान्तर बहुप्रमाणीय पद्धति लिखित दस्तावेजक एकाधिकार अस्वीकारैत छै, मगर प्रमाण केरौ अनुशासन नै छोड़ैत। मौखिक इतिहास वैध छै, पर कथक, समय, पाठांतर, स्मृति-दूरी आरू अन्य स्रोतसँ तुलना चाही। लोकगीत वैध छै, पर ओकरौ प्रदर्शन-सन्दर्भ चाही। पुरानी जनश्रुति वैध शोध-स्रोत छै, पर ऊ स्वत: दिनांकित ऐतिहासिक घटना नै।

10.4 पूर्वपक्ष: “भाषिक स्वाभिमान लेल प्राचीन वंशावली आवश्यक”

भाषिक समुदाय अनेक बेर ऐतिहासिक गौरवक माध्यमेँ सार्वजनिक अधिकार प्राप्त करै छै। अतएव प्राचीनता-निर्माण केरौ सामाजिक कारण बुझल जा सकै छै।

उत्तरपक्ष

मगर सांस्कृतिक गरिमा सत्यताक शर्तपर निर्भर होयबाक आवश्यकता नै। अंगिका साहित्य केरौ आधुनिक, लोक, पत्रिका, नाटक, कथा, कविता, रेडियो आरू संस्था-सम्पन्न जीवन अपने मँ गरिमायुक्त छै। अतिप्राचीन दाबी गलत सिद्ध भेलो आधुनिक साहित्य केरौ मूल्य कम नै होतै। ई कारण सत्यापित इतिहास सांस्कृतिक आत्मसम्मानक शत्रु नै, ओकरौ दीर्घजीवी आधार छै।

11. संशोधित आलोचनात्मक संस्करण केरौ ठोस रूपरेखा

मूल 1998 पाठ के हटाओल नै जाए। ओकरौ ऐतिहासिक रूप अक्षुण्ण राखी क प्रत्येक अध्याय पाछाँ आधुनिक आलोचनात्मक उपकरण जोड़ल जाए। ई परियोजनाक उद्देश्य पुरान लेखक के “गलत सिद्ध” करना नै, बल्कि हुनकरौ अभिलेखीय काज के अधिक टिकाउ, सत्यापनयोग्य आरू बहुस्तरीय बनायब होतै।

11.1 प्रस्तावित समीक्षात्मक अध्याय-ढाँचा

प्रत्येक अध्याय लेली निम्न स्थिर क्रम अपनाओल जा सकै छै: समस्या → मूल पोथी केरौ प्रतिपादन → उपलब्ध स्रोत → प्रमुख तर्क → पूर्वपक्ष → उत्तरपक्ष → भारतीय काव्यशास्त्रीय संवाद → पाश्चात्य आलोचनात्मक संवाद → समानान्तर इतिहास-दृष्टि → प्रमाण-स्थिति → अध्याय-निष्कर्ष → ग्रन्थसूची। ई स्थिर ढाँचासें प्रशंसा, आलोचना आरू स्रोत-परीक्षण एक दोसरसें पृथक् रहतै।

12. समेकित निर्णय

‘अंगिका साहित्य केरौं इतिहास’क स्थायी महत्त्व ओकरौ सामग्री-संग्रह, सांस्कृतिक आत्मपहिचान, लोक आरू लिखित साहित्य केरौ संयुक्त मानचित्र, अनेक विधा केरौ समावेश, साहित्यिक संस्था-माध्यमक दस्तावेजीकरण, आरू विस्मृत लेखक-रचना के इतिहास केरौ भीतर स्थान देबा मँ छै। 1998 ई.क सन्दर्भ मँ ई एक महत्त्वाकांक्षी आधार-ग्रन्थ छै।

भारतीय काव्यशास्त्रीय कसौटीपर पोथी केरौ सामग्री अत्यन्त समृद्ध, मगर रस–ध्वनि–वक्रोक्ति–रीति–औचित्य केरौ व्यवस्थित निकट-पाठ सीमित छै। पाश्चात्य दृष्टि सें पोथी सांस्कृतिक इतिहास, बहुध्वनिता, माध्यम, संस्था आरू उत्तर-औपनिवेशिक भाषिक आत्मपहिचानक क्षेत्र मँ सशक्त छै; रूपवादी निकट-

पाठ, पाठक-स्वीकृतिक आँकड़ा, स्रोत-समीक्षा आरू वर्गीकरण केरौ स्पष्ट पद्धति अधिक अपेक्षित छै।

विदेह समानान्तर परम्परा-दृष्टि सें पोथी केरौ मूल आवेग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण छै: उपेक्षित साहित्यिक क्षेत्र के दृश्य करना, केन्द्रीय वैधताक एकाधिकार प्रश्नांकित करना, लोक-पत्रिका-रेडियो-गद्य-काव्य सिनी के एक विस्तृत साहित्यिक सार्वजनिकता मँ आनब। मगर समानान्तर पद्धतिक निर्णायक नियम ई छै जे केन्द्र आरू हाशिया दुन्नो पर प्रमाण केरौ समान कसौटी लागू हो। प्रतिरोध केरौ नैतिक मूल्य ऐतिहासिक दाबी के स्वतः प्रमाणित नै करै।

ई कारण अंतिम निर्णय द्विध्रुवीय नै। ई पोथी न त अस्वीकारयोग्य पुरान प्रयास छै, न प्रत्येक दाबी मँ अन्तिम प्रामाणिक इतिहास। एकरौ उचित स्थान छै—अंगिका साहित्य केरौ आधारभूत अभिलेखीय इतिहास, जे आधुनिक आलोचनात्मक संस्करण, स्रोत-श्रेणीकरण, प्रतिनिधि निकट-पाठ, तुलनात्मक भाषा-अध्ययन, सामाजिक प्रतिनिधित्व, डिजिटल अभिलेख आरू आत्मसमीक्षासें आरो प्रामाणिक बनि सकै छै।

सर्वोत्तम पुनर्पाठक सूत्र: पोथी केरौ सामग्री के बचाबौ; पोथी केरौ दाबी के जाँचौ; जे प्रमाणित से दृढ करौ; जे विवादित से स्पष्ट लिखौ; जे असत्य सिद्ध हो से संशोधित करौ; आरू जे स्वर पहिने छूटल छै, ओकरा समान गरिमासें स्थान दियौ।

परिशिष्ट 1: संशोधन केरौ ठोस कार्य-सारिणी

कार्य	ठोस सुधार
1. स्रोत-श्रेणी	प्रत्येक प्रमुख दाबी संग संकेत: प्राथमिक पाठ / समकालीन अभिलेख / उत्तरवर्ती स्रोत / मौखिक साक्ष्य / भाषिक अनुमान / सम्पादकीय निष्कर्ष।
2. दाबी-स्थिति	प्रमाणित / प्रबल सम्भावना / सम्भावित / विवादित / अप्रमाणित—

कार्य	ठोस सुधार
	स्पष्ट शब्दावली।
3. काल-विभाजन सारिणी	हर सीमा-वर्षक कारण, प्रमुख स्रोत, भाषिक लक्षण, संस्था, विधा आ अनिश्चितता।
4. भाषा आ साहित्य पृथक्	भाषिक वंश, बोली-संबंध, साहित्यिक पहिचान, भूगोल आ सांस्कृतिक स्मृति पृथक् अध्याय।
5. प्रतिनिधि निकट-पाठ	प्रत्येक काल-विधासँ चुनल रचनापर रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, कथाविज्ञान, स्त्रीवादी आ सामाजिक विश्लेषण।
6. लेखक–रचना सूचकांक	नाम, जन्म/मृत्यु जतय सत्यापित, प्रमुख रचना, प्रथम प्रकाशन, विधा, स्रोत।
7. पत्र-पत्रिका अभिलेख	प्रकाशन-स्थल, अवधि, सम्पादक, उपलब्ध अंक, पुस्तकालय/डिजिटल प्रति।
8. लोकसाहित्य क्षेत्रकार्य	स्थान, तिथि, कथक/गायक, प्रदर्शन-सन्दर्भ, पाठांतर, ध्वनि/वीडियो संकेत।
9. प्रतिनिधित्व-अध्ययन	स्त्री, ग्रामीण-शहरी, सामाजिक समूह, पेशागत पृष्ठभूमि आदि जतय सार्वजनिक प्रमाण उपलब्ध, तकर सांख्यिकीय सार।
10. संस्था-माध्यम मानचित्र	मंच, अकादमी, विद्यालय, विश्वविद्यालय,

कार्य	ठोस सुधार
	आकाशवाणी, प्रकाशक, पत्रिका, अधिवेशनक नेटवर्क।
11. संशोधन-इतिहास	1998 मूल कथन जसक तस; नूतन टिप्पणीमे की संशोधित, किएक, कोन स्रोतसँ—स्पष्ट।
12. डिजिटल पाठ-संग्रह	खोजयोग्य पाठ, लेखक/विधा/वर्ष टैग, स्कैनक संग सत्यापित पाठ, ध्वनि-सामग्री आ दीर्घकालिक अभिलेख।

परिशिष्ट 2: प्रमाण-जोखिम सारिणी

दाबी/सामग्री	जोखिम	आवश्यक कसौटी
पोथीक विषय-पाँजि, अध्याय-क्रम, मुद्रित पृष्ठ	न्यून	प्रत्यक्ष मूल पाठसँ जाँचयोग्य
आधुनिक मुद्रित पुस्तक/पत्रिका/रेडियो प्रसंग	न्यून–मध्यम	जतय वर्ष/नाम देल अछि, स्वतंत्र अभिलेखसँ सत्यापन सम्भव
लेखक-जीवनवृत्त	मध्यम	स्रोत-सूचना असमान; जीवनी/अभिलेखसँ मिलान चाही
लोकपरम्परा आ जनश्रुति	मध्यम–उच्च	सांस्कृतिक स्रोत रूपेँ महत्त्वपूर्ण; ऐतिहासिक घटना रूपेँ अतिरिक्त प्रमाण चाही
प्राचीन कविक	उच्च	पोथीक उपसंहार

दाबी/सामग्री	जोखिम	आवश्यक कसौटी
जन्मस्थान/क्षेत्रीय स्वामित्व		स्वयं किछु भ्रमक सावधानी दैत अछि
भाषा-वंश आ अतिप्राचीन भाषिक निरन्तरता	उच्च	तुलनात्मक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान, पाठ-तिथि आ ध्वनि-नियम चाही
साहित्यिक मूल्य-निर्णय: “श्रेष्ठ”, “आधुनिक”, “प्रभावी”	मध्यम	स्पष्ट आलोचनात्मक कसौटी आ प्रतिनिधि निकट-पाठ चाही

परिशिष्ट 3: कसौटी-अनुसार संक्षिप्त मूल्यांकन

क्षेत्र	निर्णय	कारण
सामग्री-संग्रह	अत्यन्त सशक्त	विस्तृत लेखक, विधा, लोक, पत्रिका, रेडियो, गद्य-पद्य
साहित्यिक संस्थाक इतिहास	सशक्त	मंच, अधिवेशन, आकाशवाणी, पत्र-पत्रिका
भारतीय सौन्दर्यशास्त्रीय विश्लेषण	सीमित	रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्यक व्यवस्थित प्रयोग कम
निकट-पाठ	सीमित	विषय-सार अधिक, रूप-विश्लेषण कम
स्रोत-विधान	असमान	एकरूप

क्षेत्र	निर्णय	कारण
		उद्धरण/अभिलेख -संकेत आवश्यक
काल-विभाजन	उपयोगी मुदा पुनर्परीक्षणीय	मापदण्ड पृथक्-पृथक् स्तरक
स्त्री-विषयक उपस्थिति	उपस्थित	समेकित प्रतिनिधित्व-अध्ययन बाँकी
लोकसाहित्य	विशेष सशक्त	मौखिकता समाविष्ट; क्षेत्रकार्य विवरण चाही
माध्यम-अध्ययन	उल्लेखनीय	रेडियो, पत्र-पत्रिका, स्तम्भ आदिक दस्तावेज
आत्मसमीक्षा	महत्त्वपूर्ण बीज	उपसंहारमे भ्रम-संशोधनक स्वीकृति
विदेह समानान्तर कसौटी	उच्च सम्भावना	प्रतिरोधी इतिहास + समान प्रमाण-मानकक आवश्यकता

ग्रन्थसूची

नीचाँ देलौ सूची मँ मात्र पुस्तक आरू पुस्तकाकार शास्त्रीय ग्रन्थ राखल गेलौ छै। पत्रिका-लेख, वेबसाइट, वेब-पृष्ठ, ऑनलाइन लिंक आरू स्वतंत्र निबन्ध ई सूची मँ सम्मिलित नै छै।

समीक्ष्य ग्रन्थ आरू भाषा-साहित्य इतिहास

डोमन साहु ‘समीर’, तेजनारायण कुशवाहा आरू अमरेन्द्र — अंगिका साहित्य केरौं इतिहास. हिन्दी अकादमी, हैदराबाद, १९९८.

Grierson, George A. — Linguistic Survey of India, Vol. V, Part II: Bihari and Oriya. Calcutta: Office of the Superintendent of Government Printing, 1903.

Grierson, George A. — An Introduction to the Maithili Language of North Bihar. Calcutta, 1881.

Mishra, Jayakanta — A History of Maithili Literature.

Chatterji, Suniti Kumar — The Origin and Development of the Bengali Language. Calcutta University, 1926.

Masica, Colin P. — The Indo-Aryan Languages. Cambridge University Press, 1991.

Jain, Dhanesh and George Cardona, eds. — The Indo-Aryan Languages. Routledge, 2003.

Salomon, Richard — Indian Epigraphy: A Guide to the Study of Inscriptions in Sanskrit, Prakrit, and the Other Indo-Aryan Languages. Oxford University Press, 1998.

भारतीय काव्यशास्त्र आरू दर्शन

भरतमुनि — नाट्यशास्त्र.

आनन्दवर्धन — ध्वन्यालोक.

अभिनवगुप्त — अभिनवभारती.

कुन्तक — वक्रोक्तिजीवित.

वामन — काव्यालंकारसूत्रवृत्ति.

क्षेमेन्द्र — औचित्यविचारचर्चा.

मम्मट — काव्यप्रकाश.

विश्वनाथ कविराज — साहित्यदर्पण.

गंगेश उपाध्याय — तत्त्वचिन्तामणि.

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, इतिहास आरू संस्कृति

Aristotle — Poetics.

Wellek, René and Austin Warren — Theory of Literature.

Brooks, Cleanth — The Well Wrought Urn: Studies in the Structure of Poetry.

Erlich, Victor — Russian Formalism: History—Doctrine.

Culler, Jonathan — Structuralist Poetics: Structuralism, Linguistics and the Study of Literature.

Bakhtin, Mikhail M. — The Dialogic Imagination: Four Essays.

Gadamer, Hans-Georg — Truth and Method.

Jauss, Hans Robert — Toward an Aesthetic of Reception.

Iser, Wolfgang — The Act of Reading: A Theory of Aesthetic Response.

Williams, Raymond — Marxism and Literature.

Greenblatt, Stephen — Renaissance Self-Fashioning: From More to Shakespeare.

Anderson, Benedict — Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism.

Hobsbawm, Eric and Terence Ranger, eds. — The Invention of Tradition.

Bourdieu, Pierre — The Rules of Art: Genesis and Structure of the Literary Field.

Guha, Ranajit — Elementary Aspects of Peasant Insurgency in Colonial India.

Spivak, Gayatri Chakravorty — A Critique of Postcolonial Reason: Toward a History of the Vanishing Present.

Kristeva, Julia — Desire in Language: A Semiotic Approach to Literature and Art.

Foucault, Michel — The Archaeology of Knowledge.

Said, Edward W. — Orientalism.

Showalter, Elaine — A Literature of Their Own: British Women Novelists from Brontë to Lessing.

Eagleton, Terry — Literary Theory: An Introduction.

विदेह समानान्तर परम्परा

गजेन्द्र ठाकुर — समानान्तर दर्शन.

आलेख ०७ · आलोचना-सिद्धान्त आ समालोचनाक परिप्रेक्ष्य

नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल

सारांश

ई अध्ययन १०९४-पृष्ठीय मैथिली न्यायालय-प्रधान उपन्यास ‘नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल’क सम्पूर्ण १०० क्रमांकित रचनाक पाठ-आधारित विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि। उपन्यास डिजिटल न्यायवैज्ञानिक सामग्री, अधिवक्ता-ग्राहक विशेषाधिकार, मुहरबन्द अभिलेख, भुगतान-पथ, साक्षी-स्मृति, स्रोत-स्वतंत्रता, अनुपस्थिति आ सार्वजनिक भाषाक समस्या कैं मिथिलाक नव्य-न्यायीय बौद्धिक संस्कार, ग्रामीण रूपक आ न्यायालयीय प्रक्रिया संग जोड़ैत अछि। अध्ययनक मूल निष्कर्ष ई अछि जे कृति अपराधक रहस्य खोलबाक पारम्परिक लक्ष्यसँ अधिक ‘प्रमाणक व्याकरण’ रचैत अछि। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द गङ्गेशीय न्याय-परम्पराक चारि प्रमाण-स्रोतसँ संवाद करैत अछि; अर्थापत्ति आ अनुपलब्धि भारतीय प्रमाणमीमांसाक विस्तृत परिप्रेक्ष्य जोड़ैत अछि; तर्क कैं कृति स्वयं स्वतंत्र प्रमाण नहि, वैकल्पिक व्याख्याक परीक्षण-साधन मानैत अछि। अंतिम निर्णय-खंड एहि सभ पथ कैं एक समेकित, संशोधनशील आ अधिकार-संवेदनशील न्यायिक पद्धतिमे रूपान्तरित करैत अछि। भारतीय रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आ गुण-रीति; पाश्चात्य कथानक, बहुध्वनिकता, काल-विन्यास, व्याख्या, अभिलेख-सत्ता आ इतिहास-कथन; तथा विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक स्रोत-आलोचना, मौन, प्रतिपक्ष, स्वतंत्र पुष्टिकरण आ पुनरीक्षणक कसौटी पर ई उपन्यास मैथिली गद्यक एक विशिष्ट ज्ञानमीमांसात्मक प्रयोग सिद्ध होइत अछि।

बीजशब्द

नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल ·आलोचना-पद्धति ·भारतीय काव्यशास्त्र · मैथिली समालोचना ·विदेह समानान्तर दृष्टि

११२. गजेन्द्र ठाकुर- नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल [प्रमाण, भाषा, न्यायालय आ समानान्तर इतिहास-दृष्टिक बहुपद्धतीय साहित्यिक समीक्षा]- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल

प्रमाण, भाषा, न्यायालय आ समानान्तर इतिहास-दृष्टिक बहुपद्धतीय साहित्यिक समीक्षा

समग्र १००-रचना पाठ, भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य आलोचना, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधार पर शोध-लेख

सारांश

ई अध्ययन १०९४-पृष्ठीय मैथिली न्यायालय-प्रधान उपन्यास ‘नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल’क सम्पूर्ण १०० क्रमांकित रचनाक पाठ-आधारित विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि। उपन्यास डिजिटल न्यायवैज्ञानिक सामग्री, अधिवक्ता-ग्राहक विशेषाधिकार, मुहरबन्द अभिलेख, भुगतान-पथ, साक्षी-स्मृति, स्रोत-स्वतंत्रता, अनुपस्थिति आ सार्वजनिक भाषाक समस्या कैं मिथिलाक नव्य-न्यायीय बौद्धिक संस्कार, ग्रामीण रूपक आ न्यायालयीय प्रक्रिया संग जोड़ैत अछि। अध्ययनक मूल निष्कर्ष ई अछि जे कृति अपराधक रहस्य खोलबाक पारम्परिक लक्ष्यसँ अधिक ‘प्रमाणक व्याकरण’ रचैत अछि। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द गङ्गेशीय न्याय-परम्पराक चारि प्रमाण-स्रोतसँ संवाद करैत अछि; अर्थापत्ति आ अनुपलब्धि भारतीय प्रमाणमीमांसाक विस्तृत परिप्रेक्ष्य जोड़ैत अछि; तर्क कैं कृति स्वयं स्वतंत्र प्रमाण नहि, वैकल्पिक व्याख्याक परीक्षण-साधन मानैत अछि। अंतिम निर्णय-खंड एहि सभ पथ कैं एक समेकित, संशोधनशील आ अधिकार-संवेदनशील न्यायिक पद्धतिमे रूपान्तरित करैत अछि। भारतीय रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आ गुण-रीति; पाश्चात्य कथानक, बहुध्वनिकता, काल-विन्यास, व्याख्या, अभिलेख-सत्ता आ इतिहास-कथन; तथा विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक स्रोत-आलोचना, मौन, प्रतिपक्ष, स्वतंत्र पुष्टिकरण आ पुनरीक्षणक कसौटी पर ई उपन्यास मैथिली गद्यक एक विशिष्ट ज्ञानमीमांसात्मक प्रयोग सिद्ध होइत अछि।

कुंजी-शब्द: मैथिली उपन्यास, नव्य न्याय, प्रमाणमीमांसा, न्यायालय-कथा, डिजिटल न्यायविज्ञान, विशेषाधिकार, समानान्तर इतिहास-दृष्टि, स्रोत-आलोचना, भाषा-अनुशासन

१. प्रस्तावना

‘नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल’ अपन घोषित विधागत रूपमे न्यायालय-प्रधान मैथिली उपन्यास अछि, मुदा ओकर वास्तविक साहित्यिक महत्त्व केवल न्यायालय अथवा अपतटीय जुआ-विवादक विषयमे नहि। एहि कृतिक केन्द्र प्रश्न अछि: मनुष्य कोन आधार पर कहि सकैत अछि जे कोनो वस्तु, सम्बन्ध, कर्ता, प्रयोजन अथवा अपराध ‘सिद्ध’ अछि? एहि प्रश्नक उत्तर कथा सनसनी, अपराधी-उद्घाटन वा गुप्त षडयन्त्रक एकरेखीय रहस्योद्घाटनसँ नहि दैत; ओ प्रमाणक उत्पत्ति, संरक्षण, स्रोत, सम्बन्ध, भाषा, वैकल्पिक व्याख्या, मौन, गोपनीयता, पुनरीक्षण आ न्यायिक उपयोगक क्रमिक परीक्षण करैत अछि।

उपन्यासक आरम्भ गार्ह एन अरिकेलक भोर, माटि, पोखरि आ गंगाक स्मृतिसँ होइत अछि, जखन अन्वेषणक सामग्री पूर्णतः आधुनिक अछि: न्यायवैज्ञानिक प्रतिबिम्ब, हैश, समय-मुद्रा, पहुँच-अभिलेख, ग्राहक-पहिचान, भुगतान-सन्दर्भ, सेवा-संगणक आ मुहरबन्द संचिका। ई द्वैधता सजावटी स्थानीय रंग नहि। मिथिलाक माप, धान, पगचिह्न, पोखरि, गंगा, खेतक मेड़ आ ग्राम्य स्मृति डिजिटल प्रमाणक दुरूहता कँ मानवीय अनुभवक तुलनात्मक धरातल दैत अछि। एहि कारण उपन्यास आधुनिक प्रौद्योगिकी कँ स्थानीय बौद्धिक भूगोलमे अनुवाद करैत अछि, न कि स्थानीयता कँ आधुनिकताक पाछाँ छोड़ैत अछि।

एहि अध्ययनमे कृतिक सभ १०० रचना अलग-अलग देखल गेल अछि, तकर बाद समग्र स्थापत्य, पात्र, भारतीय काव्यशास्त्र, नव्य-न्याय, पाश्चात्य आलोचना आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधार पर तुलनात्मक समीक्षा कएल गेल अछि। आलोचनाक उद्देश्य कृतिक दाबी कँ बिना परीक्षण स्वीकारब नहि, अथवा बाहरी सिद्धान्तक साँचा जबरन थोपब नहि; पाठक वास्तविक संरचना, भाषा आ प्रक्रियाक आधार पर गुण, सीमा आ मौलिक उपलब्धि निर्धारित करब अछि।

२. अध्ययन-पद्धति आ पाठ-संपूर्णता

अध्ययनक आधार सम्पूर्ण प्रकाशन-तैयार पाठ अछि। अनुक्रमणिकाक ००१ सँ १०० धरि सभ रचना कैं स्वतंत्र इकाइ मानि कथ्य, प्रमाण-प्रश्न, पात्रगत परिवर्तन, न्यायालयीय मोड़, भाषिक सूत्र, ग्रामीण अथवा शहरी बिम्ब आ अगिला अध्यायसँ सम्बन्ध नोट कएल गेल। तकर बाद आठ संरचनात्मक खण्ड बनाओल गेल। पहिल सात खण्ड तेरह-तेरह रचनाक अछि आ अन्तिम निर्णय-खण्ड नौ रचनाक। एहि संरचनासँ कृतिक योजनाबद्ध दार्शनिक विन्यास स्पष्ट होइत अछि।

बाह्य तुलनात्मक अध्ययन लेल भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य, रीति-गुण आ नाट्य-कथ्य; गङ्गेशीय नव्य-न्यायक प्रमाण-विचार; न्याय-परम्पराक तर्क; मीमांसा-परम्परामे अर्थापत्ति आ अनुपलब्धि; तथा पाश्चात्य साहित्य-विचारमे अरस्तूक कथानक, बाख्तिनक बहुध्वनिकता, जेनेट्क काल-विन्यास, रिकेरक कथा-समय, गादामरक पुनर्व्याख्या, फूकोक अभिलेख-सत्ता आ हेडेन व्हाइटक इतिहास-कथनक प्रश्न उपयोग कएल गेल। विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि लेल स्रोत-उत्पत्ति, अभिलेखक असमानता, मौन, प्रतिपक्ष, स्वतंत्र पुष्टिकरण, संशोधन आ ‘अज्ञात’ अथवा ‘विवादित’क नैतिक श्रेणी विशेष कसौटी बनल।

शास्त्रीय सावधानी: गङ्गेश उपाध्यायक ‘तत्त्वचिन्तामणि’ न्याय-परम्पराक चारि स्वतंत्र प्रमाण, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द, पर विन्यस्त अछि। अर्थापत्ति आ अनुपलब्धि कैं अलग स्वतंत्र प्रमाणक दर्जा देबाक परम्परा मुख्यत: मीमांसासँ जुड़ल अछि। न्यायमे तर्क स्वतंत्र प्रमाण नहि, प्रमाण-परीक्षणक सहायक चिन्तन-पद्धति अछि। अत: एहि उपन्यासक छह प्रमाण-चक्र कैं शुद्ध गङ्गेशीय सूची नहि, नव्य-न्याय-प्रेरित विस्तृत भारतीय प्रमाणमीमांसात्मक स्थापत्य कहब अधिक शास्त्रीय-सटीक अछि।

३. समग्र रचनात्मक स्थापत्य

रचना-क्रम	खंड	प्रधान ज्ञान-प्रश्न	रचनात्मक कार्य	मुख्य सीमा
००१-०१३	प्रमाणक छाया /	की देखल गेल?	वस्तु, अखण्डता,	अस्तित्व ≠ सत्य ≠

	प्रत्यक्ष		अभिरक्षा, साक्षी, विशेषाधिकार	दोष
०१४-०२६	अनुमानक जाल	कोन सम्बन्ध उचित?	हेतु, सम्बन्ध, विकल्प, प्रतिपक्ष	साम्य/निकटता ≠ कारण/कर्तृत्व
०२७-०३९	उपमानक नक्शा	समानता कतय धरि?	तुलना, नक्शा, स्रोत-समूह	समानता ≠ अभिन्नता
०४०-०५२	शब्दक कसौटी	शब्द कोन दाबी आनैत?	मूल वाक्य, लेबल, अनुवाद, मुहरबन्द भाषा	लेबल ≠ विधिक/तथ्यात्मक सत्य
०५३-०६५	अर्थापत्तिक मोड़	न्यूनतम आवश्यक स्थापना की?	असंगत तथ्यक परीक्षणीय पूर्ति	आवश्यकता ≠ इच्छित कथा
०६६-०७८	अनुपलब्धिक धार	नहि भेटल वस्तुक अर्थ की?	अपेक्षा, खोज, संरक्षण, मौन	अनुपस्थिति ≠ अस्तित्वहीनता/मेटेबाक कृत्य
०७९-०९१	तर्कक वज्र	विपरीत सम्भावना टिकैत अछि?	आत्म-प्रतिपक्ष, दोष-परीक्षण	तर्क ≠ स्वतंत्र प्रमाण
०९२-१००	निर्णयक	अधिकतम	समेकन,	निर्णय ≠

	प्रभात	वैध निष्कर्ष की?	अधिकार, अंतिम सीमा	कथात्मक अतिशयोक्ति

एहि स्थापत्यक विशेषता ई अछि जे प्रत्येक खण्ड पहिल खण्डकेँ नकारैत नहि, ओकर सीमा पर अगिला प्रश्न जोड़ैत अछि। प्रत्यक्षक सीमा अनुमान खोलैत; अनुमानक अति उपमानक कसौटी माँगैत; तुलना शब्दक सटीकता पर निर्भर होइत; शब्दक रिक्ति अर्थापत्तिक प्रश्न खोलैत; अर्थापत्तिक निष्कर्ष अनुपस्थित सामग्रीक अर्थसँ जुझैत; अनुपलब्धि तर्क द्वारा विपरीत सम्भावनासँ परखल जाइत; तर्कक बाद निर्णय मात्र ओतबे स्वीकारैत अछि जतबा पथ संरचनात्मक रूपेँ टिकैत अछि। एहि कारण उपन्यासक कथानक अपराध-घटना सँ अधिक ज्ञानक क्रम बनि जाइत अछि।

४. रचनानुक्रमिक सूक्ष्म-समीक्षा : ००१-१००

४.१ प्रत्यक्ष आ प्रमाणक छाया

001 गार्ह एन अरिकेलक प्रभात

आरम्भिक रचना गार्ह एन अरिकेलक भोर, माटि, पोखरि, गंगा आ ताड़पत्रक बिम्बसँ आधुनिक संगणकीय अन्वेषण केँ मिथिलाक बौद्धिक भूगोलमे रोपैत अछि। आदित्य झा पहिलहि दृश्यसँ अपराध-कथा बनाबयवला नायक नहि, प्रमाणक सीमा मानयवला अन्वेषक बनि उठैत छथि। मुहरबन्द संग्रहक, पहुँच-संकेत आ हैश-मूल्यक बीच ‘पहिने प्रत्यक्ष’क आग्रह सम्पूर्ण उपन्यासक नैतिक बीज अछि।

002 प्रमाणक छायाक अध्याय 2

मालिनी कर्णक कालक्रम आ आदित्यक प्रत्यक्ष-अनुमान विभाजन एहि रचनाक केन्द्र अछि। हैश अखण्डता सिद्ध करैत अछि, कथनक सत्यता नहि; समानता सम्बन्धक सम्भावना खोलैत अछि, स्वामित्व नहि। न्यायमूर्ति आर्याक समक्ष विशेषाधिकार, पृथक समीक्षा-दल आ वैध अन्वेषणक प्रश्न उठैत अछि। ई अध्याय प्रमाणक अस्तित्व, अर्थ आ विधिक उपयोग केँ तीन अलग तल पर स्थापित करैत अछि।

003 प्रमाणक छायाक अध्याय 3

विशेष अनुमति याचिकाक तैयारी दुनू पक्षक भाषिक अनुशासन परखैत अछि। विद्यानंद मिश्र ‘अवैध’क बदला ‘विवादित’ कहबाक आग्रह करैत छथि, जखन अनन्या कश्यप समाचारक त्वरित निष्कर्षसँ दूरी सीखैत छथि। सामग्री भेटब, स्रोत प्रमाणित होयब, अर्थ निर्धारित होयब आ दोष सिद्ध होयब अलग चरण कहल गेल अछि। कथा एहि भेद केँ नैतिक भाषा-राजनीतिक रूप दैत अछि।

004 प्रमाणक छायाक अध्याय 4

राज्यक प्रतिष्ठा, पैघ विधिक दल आ व्यक्तिनामक आकर्षणक बीच रचना ई कसौटी राखैत अछि जे नाम, पद अथवा प्रतिष्ठा प्रमाणक भार नहि बढ़बैत। समय-मुद्राक विचलन, उपकरणक घड़ी आ सरकारी दबाव कथ्यकेँ जटिल बनबैत अछि। आदित्यक सावधानी उपन्यासक मूल प्रतिपक्ष रचैत अछि: संस्था त्वरित कथा चाहैत अछि, मुदा प्रमाण क्रमिक सत्यापन माँगैत अछि।

005 प्रमाणक छायाक अध्याय 5

पहुँच-अभिलेख, संचिका खोलल गेल कि केवल नाम देखल गेल, शाखा-प्रतिलिपि कोना बनल, आ पुनर्निर्माणक प्रक्रिया की छल, एहि सभ सूक्ष्म प्रश्नसँ अभिरक्षा-श्रृंखला कथानक बनैत अछि। न्यायवैज्ञानिक विवरण एतय सजावट नहि, चरित्र-परीक्षा अछि। संस्थागत विश्वसनीयता गलती नुकेनाइमे नहि, गलतीक ठीक स्थान दर्ज करबामे स्थापित होइत अछि।

006 प्रमाणक छायाक अध्याय 6

एहि अध्यायमे मंत्रालयीय प्रतिष्ठा आ प्रमाणिक ईमानदारीक टकराव तीक्ष्ण होइत अछि। एक त्रुटि खुल्लमखुल्ला स्वीकारल जाइत अछि, कार्य-प्रतिलिपि फेर बनैत अछि, आ ‘राज्यक मान’क बदला न्यायिक विश्वास बचाबय पर जोर पड़ैत अछि। उपन्यास राज्य-पक्ष केँ स्वभावत: सत्यवादी नहि मानैत; ओकर सत्यता पारदर्शी प्रक्रिया सँ अर्जित होइत अछि।

007 प्रमाणक छायाक अध्याय 7

प्रत्येक संकेत केँ प्रत्यक्ष, सत्यापनाधीन, अनुमान अथवा विशेषाधिकार-विवादित श्रेणी देबाक अभ्यास कथा केँ प्रमाण-सारणी जकाँ अनुशासित करैत

अछि। स्रोतक अलग स्तम्भ जोड़ल जाइत अछि। अधिवक्ताक महँगी उपस्थिति वा निजी दबाव तथ्यक मूल्य नहि बदलैत। एहि रचनामे 'स्रोत' एक स्वतंत्र साहित्यिक पात्र जकाँ उभरैत अछि।

008 प्रमाणक छायाक अध्याय 8

दीपनारायण मण्डल सहित साक्षीसभक कथन मनुष्य-स्मृतिक सीमा सामने आनैत अछि। उपस्थिति, परिचय, सम्बन्ध आ कर्तृत्व अलग-अलग प्रश्न बनैत अछि। 'जे देखलहुँ ओतबे कहब' साक्ष्यक नैतिक सूत्र बनैत अछि। ग्रामीण अनुभवक गरिमा सुरक्षित रहैत अछि, मुदा अनुभव कैं तथ्यात्मक अचूकता नहि देल जाइत अछि; ई संतुलन रचनाक विशेष उपलब्धि अछि।

009 प्रमाणक छायाक अध्याय 9

व्यवसायिक अभिलेख आ अधिवक्ता-ग्राहक विशेषाधिकारक सीमा एहि अध्यायक मुख्य विवाद अछि। कोनो दस्तावेज अधिवक्ताक कार्यालयमे भेटल मात्रसँ विशेषाधिकारित नहि भऽ जाइत, तखनहि मूल अभिलेखक स्वतंत्र स्रोत खोजल जाइत अछि। यात्रा, गाम, पावती आ लेखा-बहीक प्रसंग डिजिटल कथाकैं भौतिक प्रमाणक धरातल पर फेर आनैत अछि।

010 प्रमाणक छायाक अध्याय 10

समीक्षा-श्रेणीकरण, पूर्वस्थित व्यवसायिक तथ्य, विधिक सलाह आ अन्वेषण-दैनिकी कैं अलग राखि अध्याय 'मुहरबन्द' शब्दक मोह तोड़ैत अछि। मुहर सुरक्षा वा प्रक्रिया दर्शा सकैत अछि, सत्यता नहि। प्रारम्भिक धारणासभ संशोधित होइत अछि, जाहिसँ उपन्यास अपन नायक कैं निष्कर्ष-संग्रहक नहि, संशोधन-सक्षम अन्वेषक रूपेँ प्रतिष्ठित करैत अछि।

011 प्रमाणक छायाक अध्याय 11

एहि रचनाक शक्ति 'प्रमाण की नहि देखबैत अछि' पर केन्द्रित अछि। प्रमाणक नकारात्मक सीमा बारम्बार कहल जाइत अछि। आदित्यक गाम-स्मृति, धान नापबाक रूपक आ नव ग्रामीण सामग्री एकत्र होयब कथाकैं बौद्धिक आ सांस्कृतिक दुनू धरातल पर जोड़ैत अछि। प्रत्यक्षक मूल्य वस्तु देखब मात्र नहि, ओकर सीमा देखबमे अछि।

012 प्रमाणक छायाक अध्याय 12

प्रतिपक्षीय जिरह, राजनीतिक संदेशक दबाव आ मापक ग्रामीण रूपक एक साथ चलैत अछि। ‘माप जीतल’क संस्कार आदित्यक भीतर प्रमाणीय विनम्रता बनि रहल अछि। प्रश्नक कठोरता भय कैं निर्मूल नहि करैत, ओकरा परीक्षणीय बनबैत अछि। एहि अध्यायमे न्यायालयीय तनाव सनसनीक बदला शब्दक सूक्ष्म भेद सँ पैदा होइत अछि।

013 प्रमाणक छायाक अध्याय 13

पहिल चक्रक समापनमे अधिग्रहण, उपकरण, हैश, अभिरक्षा आ पटल-चित्र सभक सीमा फेर जाँचल जाइत अछि। विदेशी नियंत्रण एखन सिद्ध नहि, ई स्पष्ट कहल जाइत अछि। अध्याय प्रत्यक्षक पूर्णता नहि, प्रत्यक्षक परिक्रमा पूरा करैत अछि। ई समाप्ति उपन्यासक पद्धति बता दैत अछि: प्रमाणक प्रत्येक चरण अगिला चरणक प्रश्न खोलत।

४.२ अनुमानक जाल

014 अनुमानक जालक अध्याय 1

अनुमान-चक्र सम्बन्ध-नक्शासँ शुरू होइत अछि। मंत्रालय ‘समन्वित अपतटीय संरचना’ सन पैघ कथन चाहैत अछि, आदित्य ‘सम्भावित परस्पर सम्बन्ध’ धरि सीमित रहैत छथि। नाम, भुगतान, समय आ प्राविधिक चिह्नक रेखा जोड़ल जाइत अछि, मुदा प्रत्येक रेखाक कारण लिखब अनिवार्य बनैत अछि। अनुमान दृश्यता नहि, तर्कसंगत सम्बन्धक दावा अछि।

015 अनुमानक जालक अध्याय 2

पूरक निवेदन आ वैकल्पिक व्याख्यासभक चर्चा अनुमानक विनम्रता गाढ़ करैत अछि। शैलजा आ व्यक्तिगत दबाव कथाकैं मानवीय बनबैत अछि। कोनो व्याख्या अनुकूल लगैत अछि तखनो ओकर विकल्प जीवित राखल जाइत अछि। एहि अध्यायमे अनुमानक शत्रु ‘अज्ञान’ मात्र नहि, प्रिय निष्कर्षक प्रति मोह अछि।

016 अनुमानक जालक अध्याय 3

समाचारक ‘निर्णायक प्रमाण’ वाक्यक विरोध, पक्ष-हेतु-साध्य-व्याप्तिक संकेत, आ साक्षी-प्रश्नक भाषा एहि अध्याय कैं दार्शनिक घनत्व दैत अछि।

प्रेरित प्रश्न आ स्वत: स्मरणक भेद स्थापित होइत अछि। अन्वेषणक नैतिकता एतय केवल सही निष्कर्ष नहि, सही प्रश्न पूछबाक पद्धति बनि जाइत अछि।

017 अनुमानक जालक अध्याय **4**

संगणकीय विवरणसँ अनुमान बनाबैत काल सीमा चिह्नित करब, विशेषाधिकार समीक्षा, आ गंगा दिस यात्रा एहि रचनाक तीन धुरी अछि। प्रश्न कैं कमजोरी नहि, ज्ञानक ईमानदार अवस्था मानल गेल अछि। बाह्य दृश्य आ अन्त:प्रश्नक समानान्तरता कथानक कैं दार्शनिक यात्रा बनबैत अछि।

018 अनुमानक जालक अध्याय **5**

मुहरबन्द अन्वेषण-दैनिकी कैं स्वतंत्र साक्ष्य न मानबाक आग्रह एहि अध्यायक निर्णायक बिन्दु अछि। जँ न्यायालय गोपनीय सामग्री पर निर्भर करत, प्रतिपक्ष कैं पर्याप्त आधार जानबाक अधिकार रहत। गोपनीयता सत्यक पर्याय नहि। कथा न्यायिक गोपनीयता आ प्रतिपक्षीय न्याय दुनूक वैधता कैं एक साथ बचबैत अछि।

019 अनुमानक जालक अध्याय **6**

साझा सेवा-संरचना आ जालक संकेत सामने अबैत अछि, मुदा ‘साझा नियंत्रण’ एखन निष्कर्ष नहि बनैत। समाचार-माध्यमक शीर्षकक दबाव फेर मौजूद अछि। अध्याय देखबैत अछि जे एकहि तथ्य प्रशासनिक, प्राविधिक आ सार्वजनिक भाषामे अलग आकार ग्रहण करैत अछि; साहित्यिक तनाव एहि भाषिक अनुवादमे अछि।

020 अनुमानक जालक अध्याय **7**

प्रतिपक्ष वैकल्पिक कारण सामने आनैत अछि: समान संरचना साझा सेवा-दाताक कारणो भऽ सकैत अछि। आह्वान-पत्रक सीमा आ सार्वजनिक वक्तव्यक सावधानीक बीच अनुमान फेर कसौटी पर चढ़ैत अछि। विपक्षक सम्भावना कैं शत्रु नहि, प्रमाणक परीक्षण-उपकरण मानब उपन्यासक न्यायिक परिपक्वता अछि।

021 अनुमानक जालक अध्याय **8**

एक संग चारि तथ्य देखाइत होइतहुँ ओ सभ स्वतः एक निष्कर्ष नहि बनबैत। व्यापक आह्वान-पत्र बादमे सीमित कएल गेल, आ न्यायालयमे 'एखन नहि जानैत छी' वैध उत्तर बनैत अछि। अध्यायमे ज्ञानक सीमितता स्वीकारब पराजय नहि, विधिक विश्वसनीयता बनैत अछि।

022 अनुमानक जालक अध्याय 9

आन्तरिक प्रतिपक्ष-दल बना कऽ अपनहि अनुमान तोड़बाक अभ्यास रचनाक अभिनव मोड़ अछि। एक समूह राज्यक सम्भावित निष्कर्ष बनबैत अछि, दोसर ओकर प्रत्येक सम्बन्ध पर आक्रमण करैत अछि। कथा प्रतिपक्ष कैं बाहरी शत्रु भरि नहि छोड़ि, संस्थाक भीतर आत्मसमीक्षा रूपेँ स्थापित करैत अछि।

023 अनुमानक जालक अध्याय 10

वरिष्ठ विधिक प्रतिनिधित्वक प्रभाव वाक्य जोड़बामे नहि, कमजोर वाक्य काटबामे देखाओल गेल अछि। निजी जीवनक दबाव, ग्राहक-अपेक्षा आ पेशागत उत्तरदायित्व पात्रसभ कैं मानवीय बनबैत अछि। न्यायालयीय वैभवक बीच शब्द-संयम असली शक्ति बनैत अछि।

024 अनुमानक जालक अध्याय 11

अनुमान प्रत्यक्षक स्थानापन्न नहि, परीक्षणीय तथ्यसभक बीच सम्बन्ध अछि। पगचिह्न, कुकुरक भुकब आ व्यक्ति-निर्धारणक ग्रामीण स्मृति सँ कारण-अनुमानक सीमा सहज बनैत अछि। बदलल साक्ष्य केवल ओहि अनुमान कैं कमजोर करैत अछि जे ओकरा पर निर्भर अछि; सम्पूर्ण प्रकरण स्वतः ध्वस्त नहि होइत।

025 अनुमानक जालक अध्याय 12

निकटता आ अभिन्नता, व्यवसायिक तथ्य आ विधिक सलाह, एके दिनक घटना आ कारणसम्बन्ध सभ जोड़ी अलग कएल जाइत अछि। मिश्रित संचिकाक खण्डवार वर्गीकरण बतबैत अछि जे कानूनी श्रेणी दस्तावेजक नामसँ नहि, सामग्रीक कार्यसँ बनैत अछि।

026 अनुमानक जालक अध्याय 13

अनुमान-चक्र मुहरबन्द दैनिकी आ गोपनीयताक सीमा पर समाप्त होइत अछि। दैनिकी अन्वेषणक मार्ग-दर्शक अछि, स्वतंत्र दोष-साक्ष्य नहि। आवश्यक सारांश देल जाइत अछि, मुदा साक्षीक सुरक्षा सेहो राखल जाइत अछि। एहि संतुलनमे उपन्यासक प्रक्रियात्मक न्याय स्पष्ट होइत अछि।

४.३ उपमानक नक्शा

027 उपमानक नक्शाक अध्याय 1

उपमान-चक्र समानता आ अभिन्नताक भेदसँ शुरू होइत अछि। अलग जाल-ठाम, सेवा-संरचना, भुगतान-पथ आ प्रशासनिक चिन्हक तुलना होइत अछि। एकर मूल सूत्र अछि: समानता प्रश्नक बाट खोलैत अछि, स्वामित्व अथवा नियंत्रण सिद्ध नहि करैत। नक्शा कथा-उपकरण आ ज्ञानमीमांसात्मक रूपक दुनू बनैत अछि।

028 उपमानक नक्शाक अध्याय 2

नक्शाक किछु रेखा काटल जाइत अछि, किछु पातर कएल जाइत अछि। देवव्रत सेनक प्रसंग आ समान रूपवाला पशुक ग्रामीण रूपक बतबैत अछि जे मेल देखब पर्याप्त नहि; भिन्नता सेहो दर्ज होयबाक चाही। काटल रेखा कमजोरी नहि, मानचित्रक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

029 उपमानक नक्शाक अध्याय 3

अभिरक्षा-श्रृंखलाक विसंगति आ संचिका-लेखक विवरणक सीमा सामने अबैत अछि। लेखक-नाम सामग्रीक वास्तविक रचनाकार सिद्ध नहि करैत। राज्य स्वतंत्र परीक्षण स्वीकारैत अछि। एहि अध्यायमे गलती स्वीकारब कथानकक संकट होइतहुँ नैतिक विजय बनैत अछि।

030 उपमानक नक्शाक अध्याय 4

मंत्रालयीय समीक्षामे हटाओल रेखासभ नक्शाकेँ अधिक प्रामाणिक बनबैत अछि। सरल, चमकदार उत्तर जँ उपलब्ध सामग्रीसँ पैघ अछि तँ ओकरा अस्वीकार करब आवश्यक अछि। उपमानक अनुशासन एतय तुलनाक आकर्षण पर संयम बनि सामने अबैत अछि।

031 उपमानक नक्शाक अध्याय 5

नव तुलनात्मक नक्शा कोनो नव प्रमाण घोषित नहि करैत; ओ पहिने उपलब्ध सामग्रीक सम्बन्ध पुनर्व्यवस्थित करैत अछि। राजनीतिक अनुभूति, पेशागत मूल्य आ विरोधी सम्भावनासभ संग चलैत अछि। अध्याय तुलना कैं सजावटी समानता नहि, शोधक पुनर्गठन मानैत अछि।

032 उपमानक नक्शाक अध्याय 6

साक्षी आ भुगतानक तुलना, भुगतानक कारणक अनिश्चितता, आ शंका-अभियोग-प्रमाणक विभाजन एहि रचनाक केन्द्र अछि। एक रंगमे सम्पूर्ण नक्शा रँगब साहित्यिक रूपैं सुन्दर हो सकैत अछि, मुदा न्यायिक रूपैं खतरनाक; उपन्यास स्वयं अपन कथात्मक मोह पर रोक लगबैत अछि।

033 उपमानक नक्शाक अध्याय 7

प्रत्येक सम्बन्धक संग स्रोत, असमानता आ सीमा लिखल जाइत अछि। कोनो कार्यालय अथवा स्थान मात्र विशेषाधिकारक निर्णायक सूचक नहि। तुलना ‘ककर जकाँ, किएक, कतय धरि’क त्रिक प्रश्नमे बदलैत अछि। एहि सूत्रसँ उपमानक व्यावहारिक शक्ति स्पष्ट होइत अछि।

034 उपमानक नक्शाक अध्याय 8

मुहरबन्द संचिका, तुलनात्मक सारणी आ स्रोत-समूहक पुनर्गणना बतबैत अछि जे अनेक प्रतिलिपि स्वतंत्र पुष्टिकरण नहि। पाँच देखाइत सम्बन्ध तीन मूल स्रोतमे सिमटि जाइत अछि। पोखरिमे प्रतिबिम्बक रूपक पुनरावृत्तिक भ्रम तोड़ैत अछि।

035 उपमानक नक्शाक अध्याय 9

पूरक निवेदनमे उपमानक शास्त्रीय अर्थक समीप एक विचार उभरैत अछि: परिचित संरचनासँ अपरिचित कैं बुझब, मुदा समानता कैं अभिन्नता नहि मानब। साझा भुगतान-मध्यस्थ एक सम्भावित वैकल्पिक कारण अछि। न्यायालयीय स्वीकृति स्वयं तथ्यक सत्यता नहि बनैत।

036 उपमानक नक्शाक अध्याय 10

महँगा अधिवक्ता, राज्यक पद अथवा तीन समान प्राविधिक संकेत प्रमाणक भार स्वत: नहि बढ़बैत। एके सेवा-दाता तीन संकेत पैदा कऽ सकैत अछि।

मुहर सेहो सत्य बढ़बैत नहि। अध्याय सत्ता आ संख्या, दुनू प्रकारक भ्रम पर प्रहार करैत अछि।

037 उपमानक नक्शाक अध्याय 11

न्यायवैज्ञानिक प्रतिबिम्ब, हैश आ अभिरक्षा फेर कसौटी पर अछि। हैश समानता आ अखण्डता बतबैत अछि, कथन, लेखक, प्रयोजन अथवा दोष नहि। एकहि मूलस्रोतक अनेक अभिलेख कैं स्वतंत्र प्रमाण नहि गिनल जाइत। उपमान प्रश्न खोलैत अछि, उत्तरक भार दोसर प्रमाण-पथ उठबैत अछि।

038 उपमानक नक्शाक अध्याय 12

स्रोत-समूह पाँचसँ तीन भऽ जाइत अछि, ‘साझा नियंत्रण’क कथन अन्वेषण-दिशा धरि सीमित होइत अछि। दूरक नगर-इजोत एक पंक्तिमे देखाइतहुँ एकहि घरक नहि होइत, ई रूपक अध्याय कैं स्मरणीय बनबैत अछि।

039 उपमानक नक्शाक अध्याय 13

उपमान-चक्रक अन्तमे परित्यक्त रेखा, विसंगति आ असफल सम्बन्धसभ सुरक्षित राखल जाइत अछि। अपन पक्षक लाभकारी किन्तु असमर्थित कथन सेहो काटल जाइत अछि। सत्यक नक्शामे काटल रेखासभ इतिहासक हिस्सा रहैत अछि, ई भाव अगिला इतिहास-पद्धतिक समीक्षासँ गहरे जुड़ैत अछि।

४.४ शब्दक कसौटी

040 शब्दक कसौटीक अध्याय 1

शब्द-चक्र एके तथ्यक अलग शब्दावली सँ खुलैत अछि। मूल साक्षी-वाक्य आ अन्वेषकक पुनर्लेखन, भुगतान आ कारण, प्राप्ति आ चरित्र सभ अलग कएल जाइत अछि। भाषिक सुविधा कोना निष्कर्ष चोरीसँ भीतर आनैत अछि, अध्याय ओकर सूक्ष्म अध्ययन अछि।

041 शब्दक कसौटीक अध्याय 2

‘नियंत्रण’ आ ‘पहुँच’क अन्तर, वक्ताक भूमिका, प्रयोजन आ संदर्भ शब्दक अर्थ निर्धारित करैत अछि। व्यवसायिक अभिलेख अधिवक्ताक कात पहुँचला मात्रसँ विशेषाधिकारित नहि होइत। दस्तावेजक खण्डवार समीक्षा भाषा आ विधिक अधिकारक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

042 शब्दक कसौटीक अध्याय 3

अन्वेषण-दैनिकीमे 'स्थापित', 'सम्बद्ध', 'सत्यापित', 'मेल' सन शब्द लेल स्थिर परिभाषा चाही। दैनिकीमे प्रत्यक्ष, साक्ष्य, व्याख्या आ दिशा मिश्रित रहि सकैत अछि। एके स्रोतक अनेक प्रति संख्या बढ़बैत अछि, स्वतंत्रता नहि। शब्दक कसौटी एतय वर्गीकरणक कसौटी सेहो अछि।

043 शब्दक कसौटीक अध्याय 4

'सिद्ध तथ्य', 'प्रतिकूल प्रस्ताव', 'अन्वेषण-दिशा' आ 'कठोर कदम' अलग स्तर पर राखल जाइत अछि। खुल्ला सारांश आ गोपनीय स्रोतक बीच सीमा बनैत अछि। समाचार-माध्यम आ न्यायालय दुनू भाषाक गति अलग, तथापि गलत विशेषण दुनूमे हानि करि सकैत अछि।

044 शब्दक कसौटीक अध्याय 5

'प्राप्त', 'संग्रहीत', 'प्रतिलिपिकृत', 'सुरक्षित' शब्द एके वस्तुक अलग प्रक्रियात्मक अवस्था बतबैत अछि। 'सम्बद्ध', 'नियंत्रित', 'स्वामित्व', 'पहुँच', 'उपयोग' सेहो अलग। धान नापबाक रूपक शब्दक सूक्ष्म माप बनि फेर लौटैत अछि।

045 शब्दक कसौटीक अध्याय 6

आह्वान, न्यायवैज्ञानिक प्रति, हैश आ अभिरक्षा-पञ्जी एक शृंखला बनबैत अछि। प्रत्येक त्रुटिक अलग वजन अछि; एक दोष सम्पूर्ण सामग्री नष्ट नहि करैत, मुदा छिपाओल दोष विश्वसनीयता नष्ट कऽ सकैत अछि। संशोधन स्वयं दोष वा निर्दोषता सिद्ध नहि, प्रक्रियाक ईमानदारी बतबैत अछि।

046 शब्दक कसौटीक अध्याय 7

सुरक्षित प्रवेश-संकेत पहुँचक सम्भावना देत, वास्तविक उपयोगकर्ता अथवा नियंत्रण नहि। 'स्वीकारोक्ति' शब्द पर सेहो कसौटी लगैत अछि। स्रोतक स्वतंत्रता, कथनक सीमा आ मौन तीनू पर ध्यान देल जाइत अछि। शब्द सुनब केवल उच्चरित भाग नहि, ओकर अनकहल सीमा सुनब सेहो अछि।

047 शब्दक कसौटीक अध्याय 8

अन्तिम शब्द-संशोधनमे लाभकारी किन्तु अतिरंजित कथन हटाओल जाइत अछि। विद्यानंदक पेशागत दबाव आ निजी आर्थिक प्रसंग चरित्रक मानवीयता बढ़बैत अछि। मालिनीक सूची: भुगतान अछि पर प्रयोजन अनिश्चित, पहुँच अछि पर व्यक्ति अनिश्चित। ई शब्द-चक्रक परिपक्व निष्कर्ष अछि।

048 शब्दक कसौटीक अध्याय 9

न्यायालय शंका, आरोप, संकेत, साक्ष्य आ न्यायिक रूपेँ स्वीकृत तथ्यक स्तर अलग करैत अछि। रजत, मनोज, सुदीपक कथनमे भावना स्मृति कैँ प्रभावित कऽ सकैत अछि, मुदा दोष नहि सिद्ध करैत। न्यायिक भाषा पात्रसभक भावना नकारैत नहि, केवल ओकर प्रमाणीय सीमा निर्धारित करैत अछि।

049 शब्दक कसौटीक अध्याय 10

‘विशेषाधिकारित’ लेबल स्वयं विशेषाधिकार उत्पन्न नहि करैत। मूल व्यवसायिक तालिका, ओकर चयन, टिप्पणी आ विधिक व्याख्या अलग वस्तु बनैत अछि। समान नाम समान अभिलेख नहि। शीर्षक आ लेबल कोना निष्कर्ष कैँ चुपचाप भीतर आनैत अछि, ई अध्यायक प्रमुख आलोचना अछि।

050 मुहरबन्द लिफाफाक भीतर

‘मुहरबन्द लिफाफा’ उपन्यासक एक केन्द्रीय रूपक बनैत अछि। बंद वस्तु रहस्य पैदा करैत अछि, मुदा न्यायिक उपयोग लेल परीक्षणीय आधार चाही। एक शब्दक त्रुटि सम्पूर्ण विश्लेषण नष्ट नहि करैत जँ सुधार खुला अछि। मुहरक भीतर की अछि ताहिसँ अधिक महत्त्वपूर्ण अछि: ओकरा कोन प्रयोजनसँ, कोन सीमा धरि देखल जाए।

051 शब्दक कसौटीक अध्याय 12

मुहरबन्द सामग्रीक ‘छाया’ खुल्ला निर्णय पर नहि पड़य, एहि लेल उपयोग-श्रेणी आ पर्याप्त सारांशक आवश्यकता उठैत अछि। व्यापक स्थगन नहि भेटैत, तथापि गुण-दोषक अन्तिम निर्णय सेहो नहि होइत। प्रक्रिया अस्थायी होइतहुँ अधिकार स्थायी रूपेँ सुरक्षित करैत अछि।

052 शब्दक कसौटीक अध्याय 13

अनुवाद, मूल स्रोत-शब्द, संस्करण-इतिहास आ पुनरावृत्त सामग्रीक स्रोत-स्वतंत्रता जाँचल जाइत अछि। शब्द-चक्रक अन्त एक 'रिक्ति' पर होइत अछि: जे वस्तु अपेक्षित क्रममे नहि बैठैत, ओकर व्याख्या कोना हो? एतयसँ अर्थापत्तिक अगिला पथ खुलैत अछि।

४.५ अर्थापत्तिक मोड़

053 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 1

अर्थापत्ति-चक्र स्थापित तथ्यसभक असंगति सँ शुरू होइत अछि। सेवा-कुंजी आ सत्रक विवरणक बीच अन्तर कोनो न्यूनतम आवश्यक स्थिति प्रस्तावित करब बाध्य करैत अछि, मुदा व्यक्ति-विशिष्ट कर्तृत्व एखन दूर अछि। अध्याय स्पष्ट करैत अछि जे अर्थापत्ति रिक्ति भरबाक कल्पना नहि, उपलब्ध तथ्यक कारण अनिवार्य न्यूनतम स्थापना होयबाक चाही।

054 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 2

'न्यूनतम आवश्यक' वाक्य रचनाक मुख्य कसौटी बनैत अछि। सेवा-संगणक, भुगतान-अभिलेख आ समय-साम्य पर विचार होइत अछि, मुदा समयक निकटता कारणसम्बन्ध नहि। न्यूनतम परिकल्पना जतेक छोट रहत, ओतबे परीक्षणीय आ न्यायसंगत रहत।

055 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 3

पूरक प्रक्रिया नव दोषक कथा बनाबय लेल नहि, पूर्व तथ्यक आवश्यक सम्बन्ध परखय लेल अछि। कुंजी-सत्र सम्बन्ध पर प्रतिपक्ष कहैत अछि जे राज्य रिक्ति भरि रहल अछि। असफल परीक्षण आ अस्वीकृत निष्कर्ष लिखित रखल जाइत अछि, जाहिसँ अन्वेषणक इतिहास मिटैत नहि।

056 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 4

न्यायालय अर्थापत्तिक कार्यात्मक परिभाषा देत: स्थापित तथ्य जखन एक न्यूनतम स्थिति बिना साथ नहि बैठय। बस-मार्ग जानबाक उदाहरण ज्ञानक स्रोत प्रश्न खोलैत अछि, अपराधी नहि निर्धारित करैत। भावना स्मृति केँ रूप देत, मुदा व्यक्ति-दोषक पुल नहि।

057 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 5

विशेषाधिकार भेदबाक पहिने स्वतंत्र बाह्य स्रोत खोजल जाए, ई अध्यायक नैतिक केन्द्र अछि। व्यवसायिक तथ्य आ विधिक चयन आ टिप्पणी अलग कएल जाइत अछि। ‘अन्यथा असम्भव’ कहबाक पहिने वैकल्पिक स्थिति सचमुच जीवित राखब आवश्यक अछि।

058 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 6

मुहरबन्द दैनिकी आ स्वतंत्र परीक्षणक सम्बन्ध फेर केन्द्रमे अबैत अछि। गोपनीय सामग्री गुप्त सत्य बनि खुल्ला निर्णयमे प्रवेश नहि करय। ‘समर्थन’ आ ‘दिशा’क भेद राखल जाइत अछि। ‘आवश्यक’ शब्द लिखबाक प्रत्येक बेर कारण-सूची माँगल जाइत अछि।

059 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 7

खुल्ला स्थापित आधार, वैकल्पिक व्याख्या आ गोपनीय सामग्री हटाओला बाद निष्कर्षक स्थिति की रहत, ई तीन कसौटी उभरैत अछि। पत्रकारिताक सावधानी सेहो एहि पद्धतिसँ जुड़ैत अछि। रहस्य घटैत अछि, किन्तु विश्वसनीयता बढ़ैत अछि।

060 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 8

स्वचालित प्रणाली जीवित वैकल्पिक कारण बनि सामने अबैत अछि। अभिलेखक अनुपस्थिति प्रक्रिया सँ हो सकैत अछि, जानि-बुझि मेटेबाक संकेत अलग चाही। राजनीतिक वक्तव्य न्यायिक स्थिति सँ आगाँ नहि बढ़य, एहि लेल संस्थागत संयम देखाओल जाइत अछि।

061 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 9

हैश पूर्व-अधिग्रहण सत्य, लेखक, उपयोगकर्ता वा प्रयोजनक उत्तर नहि देत। प्रमाणित प्रति आ मूल निर्यात अलग। प्राविधिक शब्दक छोट अन्तरक कानूनी परिणाम पैघ हो सकैत अछि। खुला सुधार प्रक्रियाक विश्वसनीयता बचबैत अछि।

062 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 10

प्रणाली-अभिलेख आ कुंजी सम्बन्धी नूतन तथ्य पूर्व वर्गीकरण बदलि सकैत अछि। प्रणाली-स्तरक संरचना सम्भावित रूपरेखा समर्थन करैत अछि, किन्तु

व्यक्ति-दोष नहि। ‘जहाँ प्रमाण रुकैत, राज्य रुकैत’ अध्यायमे विधिक आत्मसंयमक सूत्र बनैत अछि।

063 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 11

प्रणाली-स्तरक तथ्यसँ व्यक्ति-विशिष्ट अर्थापत्ति बनाबयक विरोध कएल जाइत अछि। आरम्भिक व्यापक भाषा मात्रसँ जानि-बुझि झूठ सिद्ध नहि। विद्यानंद-शैलजाक निजी आर्थिक तनाव मानवीय दाँव बढ़बैत अछि, मुदा ओकरा प्रमाणमे रूपान्तरित नहि कएल जाइत।

064 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 12

साक्षी, प्रविष्टि, सदस्यता आ समयक सम्बन्धक बीच कर्ता एखन अनिश्चित रहैत अछि। भुगतान-संशोधन, भवन-प्रवेश आ सत्र-समय सम्भावना बढ़बैत अछि, प्रत्यक्ष भागीदारी नहि। भावनात्मक प्रसंग आ प्रमाणीय निष्कर्षक सीमा पुनः स्थापित होइत अछि।

065 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 13

पूर्वस्थित व्यवसायिक सामग्री अधिवक्ताक कात पहुँचला बादो स्वतंत्र स्रोतसँ प्राप्त होय सकैत अछि; विशेषाधिकार ओकर चयन, टिप्पणी आ विधिक सन्दर्भ रक्षा करैत अछि। विलम्ब स्वयं दोष नहि। अर्थापत्ति-चक्रक निष्कर्ष अछि: आवश्यक न्यूनतम स्थिति धरि जाउ, इच्छित कथा धरि नहि।

४.६ अनुपलब्धिक धार

066 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 1

अनुपलब्धि-चक्र नकारात्मक सामग्रीक वर्गीकरणसँ शुरू होइत अछि: नहि भेटल, खोज अपूर्ण, वैकल्पिक स्रोत, संरक्षित सामग्री, नष्ट होयबाक सम्भावना। विशेषाधिकारक कारण उपलब्ध नहि वस्तु कैं ‘अस्तित्वहीन’ कहब त्रुटि होयत। अँधार कोठलीमे वस्तु नहि देखाइत, तैं वस्तु नहि अछि—एहन छलाँग रोकल जाइत अछि।

067 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 2

सेवा-दाताक संरक्षण-अवधि समाप्त भेला बाद माँगल अभिलेख नहि भेटल, तकर नकारात्मक मूल्य सीमित अछि। अनुपस्थिति तखने अर्थपूर्ण जखन वस्तु

ओहि ठाम, ओहि समय, ओहि प्रक्रिया अनुसार रहबाक अपेक्षा उचित हो। समाचारक सत्यता सेहो एहि अनुशासनसँ जुड़ैत अछि।

068 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 3

'राज्यक अभिरक्षामे नहि भेटल' आ 'अस्तित्व नहि'क अन्तर विस्तारसँ रखल जाइत अछि। अपेक्षित अभिलेखक प्रतिरूप बनाओल जाइत अछि: कतय खोजल, कतय नहि, संरक्षण-अवधि, मेटेबाक संकेत, वैकल्पिक स्थान, समय। नकारात्मक प्रमाण कैं संरचित जाँचक आवश्यकता स्पष्ट होइत अछि।

069 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 4

अभिरक्षा-मौन, समय-अन्तर आ संशोधित अनुपस्थिति-श्रेणी देखबैत अछि जे पूर्व धारणा कोना छोट होइत अछि। सुधारक बाद जे अंश बचैत अछि, ओकरहि प्रमाणीय भार मानल जाए। अनुपलब्धिक ई अनुशासन कथा कैं 'नहि भेटल' सन नाटकीय वाक्यसँ बचबैत अछि।

070 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 5

'अपेक्षित उपस्थिति' सिद्ध करब बिना अनुपस्थिति सँ प्रतिकूल निष्कर्ष नहि। मंत्रालय तीन पेटी बनबैत अछि: सिद्ध, परीक्षणीय, असिद्ध। हैशक मानक भाषा फेर अखण्डता धरि सीमित रहैत अछि। अध्याय प्रशासनिक रणनीति कैं प्रमाणीय शब्दकोशक अधीन करैत अछि।

071 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 6

अनुपस्थित अभिलेख मेटाओल गेल, गुप्त छल, अमुक व्यक्ति मेटेलक— एहि सभमे प्रत्येक नव दाबी लेल स्वतंत्र आधार चाही। अभिलेखक कात होयब सत्यक पर्याय नहि। नकारात्मक सामग्रीक सीमा जिरह द्वारा उजागर होइत अछि।

072 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 7

अनुमति-अभिलेख, समान सत्रसभ आ व्यवस्थित अनुपस्थिति तुलना कएल जाइत अछि। कतहु अनुपस्थिति लगभग शून्य प्रमाण-मूल्य रखैत, कतहु संरचनात्मक अपवाद बना सकैत अछि। साक्षीक भावना वास्तविक अछि, मुदा कर्तृत्व नहि। राजनीतिक भाषण पर सेहो एहि भेदक अनुशासन लागू होइत अछि।

073 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 8

विशेषाधिकारित सामग्री अप्रस्तुत अछि, ताहि कारण 'नहि भेटल' श्रेणीमे नहि राखल जा सकैत। स्वतंत्र बाह्य स्रोतक खोज, समय-साम्यक सीमा, अभिरक्षा आ विशेषाधिकारक अलग प्रश्न सामने अबैत अछि। संरक्षित मौन कैं दोषक संकेत बनाबय सँ कथा स्पष्ट रूपेँ इनकार करैत अछि।

074 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 9

मुहरबन्द दैनिकी, अखण्डता, मूल, पूर्णता आ सत्यताक भेद फेर समेकित होइत अछि। असफल दिशा आ नकारात्मक परीक्षण नष्ट नहि कएल जाइत; ओकरा अन्वेषणक इतिहासमे राखल जाइत अछि। एतयसँ समग्र प्रमाण-नक्शाक तैयारी शुरू होइत अछि।

075 गंगेश उपाध्यायक सूत्र

'गंगेश उपाध्यायक सूत्र' उपन्यासक दार्शनिक मध्यबिन्दु अछि। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति आ अनुपलब्धि छह वृत्तमे रखल जाइत अछि; प्रत्येक निष्कर्ष लेल व्यक्ति, सम्बन्ध, समय, स्रोत, सीमा आ विकल्प पूछल जाइत अछि। नक्शा समय-बद्ध आ संशोधनशील अछि, अनन्त सत्य नहि। शास्त्रीय दृष्टिसँ एहि छहक समान दर्जा नव्य न्यायमे नहि, मुदा उपन्यासक विस्तृत भारतीय प्रमाणमीमांसात्मक स्थापत्य एतय पूर्ण दृश्य रूप पबैत अछि।

076 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 11

प्रतिपक्ष 'स्रोत, सम्बन्ध, सीमा'क सूत्र अपन जिरहमे प्रयोग करैत अछि। अनुपस्थिति आ अर्थापत्तिक सम्बन्ध परखल जाइत अछि: अपेक्षा सिद्ध हो तखनहि अनुपस्थित अभिलेख विसंगति हो सकैत। उपन्यासक पद्धति एतय पक्ष-विशेषक सम्पत्ति नहि रहि, साझा न्यायिक व्याकरण बनैत अछि।

077 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 12

संयुक्त नक्शामे प्रत्येक रेखाक कारण अनिवार्य अछि। पुनरावृत्त समय-मुद्रा एके घड़ी-स्रोतक कारण हो सकैत, तैं संख्या स्वतंत्र पुष्टि नहि। पहिले सरकारी

वक्तव्य जँ प्रमाणसँ आगाँ गेल हो, तकर सार्वजनिक सुधारक विचार उठैत अछि। सत्यक यात्रा अपना पूर्व वाक्यक आलोचना सेहो माँगैत अछि।

078 अनुपलब्धिक धारक अध्याय **13**

राज्य समेकित प्रस्ताव-पञ्जी तैयार करैत अछि। समय-क्षेत्र, सेवा-दाताक संरक्षण-अवधि आ शब्दक परिशुद्धता पर फेर विचार होइत अछि। मंत्रालय स्वयं कथन छोट करैत अछि। अनुपलब्धि-चक्र एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत अछि जे मौनक अर्थ संदर्भ, अपेक्षा आ खोजक गुणवत्ता बिना तय नहि होइत।

४.७ तर्कक वज्र

079 तर्कक वज्रक अध्याय **1**

तर्क-चक्रक पहिल अध्याय स्पष्ट कहैत अछि: तर्क स्वयं प्रमाण नहि। छह पट्टीक बाद सातम पट्टी तुरन्त देवाल पर नहि चढ़ाओल जाइत। वैकल्पिक व्याख्या नया स्तम्भ बनैत अछि। तर्कक काम प्रमाण पैदा करब नहि, प्रस्तावक विपरीत सम्भावना कँ ईमानदारीसँ जीवित राखि दोष खोजब अछि।

080 तर्कक वज्रक अध्याय **2**

शंका कतय धरि विधिसंगत बढ़ि सकैत, आरोप लेल अतिरिक्त पुल की चाही, आ ‘प्रमाण’ शब्द कखन उचित होयत—ई प्रश्न केन्द्रमे अछि। भावना वास्तविक होइतहुँ तथ्यक श्रेणी नहि बदलैत। स्वतंत्र आधारक खोज तर्कक कसौटी बनैत अछि।

081 तर्कक वज्रक अध्याय **3**

विशेषाधिकार स्वतंत्र बाह्य तथ्य कँ नष्ट नहि करैत, मुदा संरक्षित सामग्रीक दुआर तोड़बाक अनुमति सेहो नहि। विपरीत सम्भावना कँ जीवित राखब तर्कक नैतिक कार्य कहल जाइत अछि। तर्क दुआरक स्थान देखबैत अछि, प्रमाण बनि दुआर फोड़ैत नहि।

082 तर्कक वज्रक अध्याय **4**

व्यवसायिक परिचयक स्रोत स्वतंत्र अछि कि पुनरावृत्त, साक्षी-वाक्य समयसँग कोना बदलल, आ अनुपस्थिति वास्तवमे स्वीकारोक्ति अछि कि नहि—एहि सभ पर जिरह चलैत अछि। न्यायालय ‘अनिर्णीत’ अवस्था कँ वैध

परिणाम मानैत अछि। ज्ञानक अपूर्णता एतय निर्णय-विफलता नहि, सही वर्गीकरण अछि।

083 तर्कक वज्रक अध्याय 5

सीमित पूरक याचिका, मुहरबन्द सामग्रीक उपयोग, उपलब्ध नहि रखरखाव-अभिलेख आ सेवा-दाताक उत्तरक प्रतीक्षा कथाकेँ अधूरा रखैत अछि। एक प्रस्ताव हटला सँ सम्पूर्ण प्रकरण ध्वस्त नहि, जँ शेष प्रस्ताव स्वतंत्र आधार पर टिकैत हो। तर्क संरचनात्मक निर्भरता मापैत अछि।

084 तर्कक वज्रक अध्याय 6

‘आवाजक संख्या’ आ ‘आधारक स्वतंत्रता’क भेद पुनः तीक्ष्ण होइत अछि। एक उपकरणक तीन दृश्य तीन स्रोत नहि। समय-क्षेत्र आ घड़ी-सामञ्जस्यक छोट प्राविधिक प्रश्न पैघ न्यायिक निष्कर्ष बदलि सकैत अछि। सूक्ष्मता कथा-गति धीमा करैत अछि, मुदा विधागत विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

085 तर्कक वज्रक अध्याय 7

हैश प्रतिबिम्ब बनय सँ पहिने सामग्रीक इतिहास पर मौन अछि। सात मिनट अभिरक्षा-अन्तर, कर्तृत्व-पुल, पहुँच, स्रोत आ समयक आरक्षण एक साथ जाँचल जाइत अछि। प्राविधिक निश्चितताक छवि क्रमशः शर्तबद्ध ज्ञानमे बदलैत अछि।

086 तर्कक वज्रक अध्याय 8

मंत्रालय अपनहि रणनीति छोट करैत अछि। ग्राहक-पहिचान, कर, भुगतान आ समय सम्बन्धी पूर्व पैघ कथन पुनर्विचारित होइत अछि। राजनीतिक लाभ लेल वाक्य जोड़बक बदला काटब चुन्नाइ उपन्यासक राज्य-चित्रण कैं एकरेखीय बनबा सँ रोकैत अछि।

087 तर्कक वज्रक अध्याय 9

पहिने त्यागल प्रस्ताव फेर चोरीसँ जीवित नहि कएल जा सकैत। बहु-अधिकृत उपयोगकर्ताक सम्भावना व्यक्ति-विशिष्ट निष्कर्ष कमजोर करैत अछि। तर्क प्रमाण नहि, प्रतिस्पर्धी सम्भावनासभक भार मापबाक साधन अछि।

088 तर्कक वज्रक अध्याय **10**

दुनू पक्ष तर्कक गैर-प्रमाणीय दर्जा पर सहमत होइत अछि। भावनात्मक अवस्था, भय अथवा बेचैनी तथ्यात्मक सन्दर्भ देत, संचालक-पहिचान नहि। ‘कोन प्रस्तावक प्रमाण?’ प्रश्न प्रत्येक नाटकीय तथ्य कैं विशिष्ट दाबी सँ जोड़य बाध्य करैत अछि।

089 तर्कक वज्रक अध्याय **11**

खुल्ला स्रोतक उत्पत्ति संरक्षित संवादसँ पहिने छल कि बादमे, एहि कारण स्रोत-स्वतंत्रता सूक्ष्म बनैत अछि। दैनिकी दिशा अछि, प्रमाण नहि। निजी पारिवारिक दबावक बीच पेशागत ईमानदारी पात्रसभक नैतिक गहराई बनबैत अछि।

090 तर्कक वज्रक अध्याय **12**

मुहरबन्द विश्लेषण पर न्यायालय पुछैत अछि जे राज्य ओकरा सँ प्रतिकूल निष्कर्ष चाहैत अछि कि केवल प्रक्रियात्मक दिशा। मुहर संरक्षणक साधन अछि, अदृश्य दोषनिर्णयक माध्यम नहि। अधिकार-संतुलन कथा-चरमोत्कर्षक पहिने निर्णायक रूप लेत अछि।

091 तर्कक वज्रक अध्याय **13**

समेकित पूरक आधारमे बाह्य बैंक-अभिलेख, संरक्षित संवाद आ स्वतंत्र स्रोतक सम्बन्ध फेर जाँचल जाइत अछि। प्रत्यक्ष सँ अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि आ तर्क धरि पूरा यात्रा निर्णयक दुआर पर पहुँचैत अछि। प्रश्न शेष रहब कथा-दुर्बलता नहि; अगिला चरणक शर्त अछि।

४.८ निर्णयक प्रभात

092 निर्णयक प्रभातक अध्याय **1**

निर्णय-चक्रमे पैघ प्रतिपक्ष दल आ राज्य दुनू अपन कथन छोट करैत अछि। अन्वेषण अधिकारीक लक्ष्य अभियोजन-कथा बचाबय नहि, वैध रूपेँ समर्थित सीमा बतायब अछि। व्यक्ति-विशिष्ट अधिकतम निष्कर्ष की हो सकैत, एहि प्रश्नसँ अंतिम भाग आरम्भ होइत अछि।

093 निर्णयक प्रभातक अध्याय **2**

अभिलेखक संख्या आ स्रोतक स्वतंत्रता पुनः निर्णयक केन्द्र बनैत अछि। पंजीकरण, सम्पर्क, भुगतान आ समयक अनेक प्रविष्टि एके घटना-दोहोराव हो सकैत अछि। पुरान कतेको राज्य-कथन हटाओल जा चुकल अछि। निर्णय प्रमाणक ‘परिमाण’ नहि, संरचनात्मक स्वतंत्रता तौलैत अछि।

094 निर्णयक प्रभातक अध्याय 3

मंत्रालय निर्णयक सम्भावित प्रभाव कैं रणनीतिमे बदलैत अछि, मुदा गैर-उत्पादनक सभ कारण एक नहि मानैत। उपकरण-संकेत व्यक्ति-क्रिया नहि। राज्य अपन सीमासभ स्वयं कहत, ई निर्णय नैतिक राजनीति कैं न्यायिक प्रमाणक अधीन रखैत अछि।

095 निर्णयक प्रभातक अध्याय 4

राज्यक वरिष्ठ विधि-दल चारि प्रकारक सामग्री, सहित त्यागल प्रस्ताव, सामने रखैत अछि। सीमित राहतक प्रत्येक आग्रह अलग कारण पर टिकाओल जाइत अछि। प्रतिपक्ष सेहो पद्धतिक निरपेक्ष उपयोग मानैत अछि। न्यायालय पूछैत अछि: सम्पूर्ण प्रकरणमे वास्तवमे सबसँ महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव कोन अछि?

096 निर्णयक प्रभातक अध्याय 5

व्यक्ति-विशिष्ट पुल पर अन्तिम कठोर परीक्षण होइत अछि। स्वतंत्र मेटेबाक संकेत बिना ‘मेटायल’ कहब असंगत; समूह-नियंत्रण सेहो प्रत्यक्ष व्यक्ति-कर्म नहि। एक प्रस्ताव असिद्ध भेल, ताहिसँ ओकर विपरीत स्वतः सिद्ध नहि। निर्णयक व्याकरण द्वैध विजय-पराजयसँ ऊपर उठैत अछि।

097 निर्णयक प्रभातक अध्याय 6

विशेषाधिकार-सन्निकट सामग्रीसँ उत्पन्न खोज बादमे स्वतंत्र रूपेँ पुनरुत्पादित भऽ सकैत अछि कि नहि, एहि पर प्रामाणिकता निर्भर करैत अछि। न्यायालय वर्तमान अभिलेख देखैत अछि, मुदा ओकर निर्माण-पथ नहि बिसरैत। तीन अतिरंजित कथन हटाओल जाइत अछि; संशोधन स्वयं निर्णयक अंश बनैत अछि।

098 निर्णयक प्रभातक अध्याय 7

मुहरबन्द सामग्रीक अदृश्य प्रभाव पर गम्भीर प्रश्न उठैत अछि। न्यायिक निर्णयक कारण-मार्ग स्पष्ट हो, प्रतिपक्ष कैं पर्याप्त अवसर भेटय, आ ‘नहि भेटल’ कैं ‘नष्ट कएल’ नहि कहल जाए। स्वतंत्र स्रोत, स्वतंत्र खोज आ स्वतंत्र अर्थ तीन अलग अवधारणा एहि अध्यायमे विशेष स्पष्टता पबैत अछि।

099 निर्णयक प्रभातक अध्याय 8

अन्तिम पूरक आग्रह सीमित होइत अछि। प्रतिपक्ष स्तम्भसभक सम्बन्ध पर जिरह करैत अछि, पत्रकारसभ सनसनीक शीर्षक सँ दूरी बनबैत छथि। दैनिकी दिशा रहैत अछि, स्वतंत्र दोष-साक्ष्य नहि; अनुपस्थित सम्पर्क-अभिलेखक कर्ता अनिश्चित। सत्यक धीमा स्वर चरमोत्कर्षक पूर्व लय बनैत अछि।

100 गंगा पर निर्णयक उजास

अन्तिम रचना गंगाक उजासमे सम्पूर्ण प्रमाण-यात्रा लौटबैत अछि। न्यायवैज्ञानिक विज्ञानक अनुशासन अनेक बेर नव विशेषण जोड़ब नहि, अनावश्यक विशेषण हटाबयमे प्रकट होइत अछि। गोपनीयता प्रक्रिया बचा सकैत अछि, अदृश्य दोष नहि बना सकैत। संरक्षित सामग्री, दैनिकी, भावना, मौन, प्रवेश-संकेत आ समानता सभ अपन-अपन सीमा पबैत अछि। अन्तिम नैतिक सूत्र अछि: जे सिद्ध नहि, ओकरा सिद्ध नहि कहबाक साहस; जे अनुमान अछि, ओकरा अनुमान कहबाक स्पष्टता।

५. पात्र-रचना : व्यक्ति सँ अधिक ज्ञानमीमांसात्मक भूमिकासभ

५.१ आदित्य झा : नायक नहि, प्रमाणीय आत्मसंयमक केन्द्र

आदित्य झा पारम्परिक अन्वेषक-कथाक ‘सर्वज्ञ खोजी’ नहि छथि। हुनकर प्रमुख गुण गलत अनुमान पकड़ब मात्र नहि, अपन प्रिय अनुमान कैं मरय देबाक क्षमता अछि। गामक माप, पगचिह्न, धान, पोखरि आ बाबूजीक सीख हुनकर भीतर नैतिक स्मृति बनि बसल अछि। एहि स्मृति सँ आधुनिक न्यायवैज्ञानिक तकनीकक व्याख्या होइत अछि। आदित्यक विकास सूक्ष्म अछि: चरित्र आरम्भहि सँ संयमी अछि, तैं परिवर्तन नाटकीय नहि; विकास हुनकर पद्धतिक संस्थानीकरणमे अछि, जखन मालिनी, राज्यक वकील, पत्रकार, प्रतिपक्ष आ न्यायालय सेहो सीमा-भाषा अपनाबय लगैत अछि।

५.२ मालिनी कर्ण : सीखबाक सर्वाधिक स्पष्ट वक्र

मालिनी कर्ण उपन्यासक सर्वाधिक गतिशील पात्र छथि। आरम्भमे रंगीन नक्शा, समय-साम्य आ रूप-विन्यासक आकर्षण हुनका शीघ्र निष्कर्ष दिस खींचैत अछि। क्रमशः ओ प्रत्यक्ष, अनुमान, स्रोत, सीमा, अस्थायी समय-मुद्रा, वैकल्पिक व्याख्या आ संशोधनक अनुशासन सीखैत छथि। ‘जेदेखल, ओतबेकहू’ सँ ‘सत्य कैं पैघ बनाबय नहि पड़ैत; केवल स्पष्ट’ धरि हुनकर वाक्य-विकास पाठकक बौद्धिक विकासक समानान्तर अछि।

५.३ विद्यानंद मिश्र : प्रतिपक्षीय मर्यादा आ व्यावसायिक नैतिकता

विद्यानंद मिश्र कैं उपन्यास खलनायक वकील नहि बनबैत। ओ विशेषाधिकार, प्रक्रिया, शब्द आ प्रतिपक्षीय परीक्षणक आवश्यक प्रतिरोध प्रस्तुत करैत छथि। ग्राहकक आक्रोश, शुल्क, परिवार आ पेशागत दबावक बीच हुनकर नैतिक स्थिति बनैत अछि। विशेष महत्त्व ई जे धीरे-धीरे हुनकर जिरह सेहो ‘स्रोत, सम्बन्ध, सीमा’क भाषा अपनबैत अछि। परिणामतः सत्य राज्यक एकाधिकार नहि, प्रतिपक्षीय प्रक्रिया सँ निर्मित न्यायिक उपलब्धि बनैत अछि।

५.४ न्यायमूर्ति आर्या : संस्थागत विवेकक स्वर

न्यायमूर्ति आर्या कृतिक ज्ञानमीमांसात्मक अनुशासन कैं विधिक रूप दैत छथि। ‘आरोप नहि, वर्णन’, मुहरबन्द सामग्रीक कारण-विशिष्ट उपयोग, हैशक सीमा, पर्याप्त सारांश, प्रतिपक्षीय अवसर आ व्यक्ति-विशिष्ट प्रतिकूल निष्कर्ष लेल खुल्ला आधार, ई सभ निर्णयक माध्यमसँ कथा संस्थागत नैतिकता पबैत अछि। मुदा हुनकर निजी मनोविज्ञान सीमित अछि; ओ व्यक्ति कम, न्यायिक विवेकक रूप अधिक छथि।

५.५ अनन्या कश्यप आ सार्वजनिक ज्ञान

अनन्या कश्यप समाचार-माध्यमक समानान्तर ज्ञान-पथ खोलैत छथि। आरम्भक ‘पैघ वाक्य’क दबाव धीरे-धीरे तथ्य, सम्भावना, न्यायिक स्थिति आ अज्ञातक भेदमे बदलैत अछि। कृति देखबैत अछि जे न्यायालयक बाहर गलत भाषा सेहो सामाजिक तथ्य बनि सकैत अछि। अनन्याक विकास उपन्यास कैं केवल विधिक कक्षमे बन्द नहि रहय दैत; सार्वजनिक सत्यक निर्माणक प्रश्न जोड़ैत अछि।

५.६ संस्थागत बहुध्वनिकता

मंत्री, संयुक्त निदेशक, वरिष्ठ सरकारी अधिवक्ता, प्राविधिक विशेषज्ञ, ग्रामीण शिकायतकर्ता, साक्षी आ परिवारजन सभ अलग स्वार्थ, भाषा आ दायित्व आनैत छथि। एहि बहुध्वनिकताक शक्ति अछि जे सत्य एक आवाजक घोषणासँ नहि बनैत। सीमा ई जे समय बीतलापर अनेक पात्र एकहि प्रमाणीय संयमक नीति स्वीकारय लगैत छथि। बाख्तिनीय अर्थमे पूर्ण स्वतंत्र बहुध्वनिकता नहि; एक प्रकारक नैतिक सहमति धीरे-धीरे प्रमुख होइत अछि।

आलोचनात्मक रूपेँ आदित्य झा आ न्यायमूर्ति आर्या बहुधा अत्यन्त स्थिर नैतिक केन्द्र छथि। हुनकर निजी भ्रम, स्वार्थ अथवा गम्भीर आन्तरिक असफलता कम देखाइत अछि। उपन्यासक उद्देश्य पद्धतिक नायकत्व अछि, ताहि कारण ई सचेत चयन बुझाइत अछि; तथापि अधिक मनोवैज्ञानिक विरोधाभास पात्र-रचना कैँ आरो बहुस्तरीय कऽ सकित छल।

६. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

६.१ रस : शान्तक ज्ञानमीमांसात्मक रूप

कृतिक प्रधान रस पारम्परिक प्रेम, वीरता वा करुणामे एकल रूपेँ नहि समाहित होइत। समग्र प्रभाव ‘शान्त’ रसक आधुनिक ज्ञानमीमांसात्मक रूप बनबैत अछि: अनिश्चितता स्वीकारि, विशेषण काटि, असिद्ध कैँ असिद्ध कहि, अन्ततः मनक आग्रहसँ ऊपर प्रमाणक सीमा मानब। वीर रसक रूप सेहो अछि, मुदा युद्ध बाहरी शत्रुसँ कम, संस्थागत दबाव, समाचारक सनसनी, ग्राहकक अपेक्षा आ अपन प्रिय अनुमानक विरुद्ध अछि। करुण रस साक्षी, परिवार, आर्थिक दबाव आ अभियोगक मानवीय मूल्यसँ उभरैत अछि; भय उच्च न्यायालय, सर्वोच्च न्यायालय, प्रतिष्ठा आ व्यक्तिजीवन पर सम्भावित प्रभावसँ। अद्भुत रस बौद्धिक उद्घाटनमे अछि, जखन एक छोट प्राविधिक भेद पूरा निष्कर्ष बदलि दैत अछि।

६.२ ध्वनि : छाया, उजास, गंगा, नक्शा आ मुहर

‘छाया’ कृतिक महत्त्वपूर्ण ध्वन्यात्मक बिम्ब अछि: प्रमाणक वस्तु आ ओकर व्याख्याक छाया अलग। ‘उजास’ अन्तिम निश्चित सत्यक अन्ध प्रकाश नहि,

सीमा देखय योग्य भोरक प्रकाश अछि। गंगा प्रवाह, समय, स्मृति आ सांस्कृतिक निरन्तरताक संकेत दैत अछि; मुदा कथा ओकरा मिथकीय प्रमाण नहि बनबैत। नक्शा सम्बन्धक दृश्य रूप अछि, जतय मोट रेखा काटल जा सकैत अछि। मुहरबन्द लिफाफा शक्ति, रहस्य, संरक्षण आ अपारदर्शिताक द्वैध ध्वनि वहन करैत अछि। पोखरि प्रतिबिम्ब दैत अछि, आकाश नहि बनबैत, ई पूरा कृतिक ज्ञान-दर्शनक सशक्त ध्वनि अछि।

६.३ वक्रोक्ति : प्राविधिक अमूर्तनक ग्राम्य पुनर्भाषा

कथा कठिन डिजिटल आ विधिक अवधारणा कैं प्रत्यक्ष व्याख्यान मात्रसँ नहि, ग्राम्य तुलनासँ मोड़ दैत अछि। पगचिह्न व्यक्ति नहि, धानक गलत माप विवादक कारण, दूरक इजोत एकहि घर नहि, पोखरिक प्रतिबिम्ब आकाश नहि, अँधारमे नदेखल वस्तु अस्तित्वहीन नहि, एहि वक्र कथनसभसँ प्राविधिक तर्क स्मरणीय होइत अछि। ई शैली मिथिलाक लोकबोध कैं ज्ञानमीमांसात्मक सहचर बनबैत अछि।

६.४ औचित्य : भाषा स्वयं कथ्य बनैत अछि

कृतिक सबसँ पैघ काव्यशास्त्रीय उपलब्धि औचित्य अछि। कथा जखन अतिशयोक्ति-विरोधी प्रमाण-पद्धति पर अछि, तखन ओकर गद्य सेहो ‘निर्णायक’, ‘सिद्ध’, ‘नियंत्रण’, ‘स्वामित्व’ सन शब्दक अनियंत्रित प्रयोगसँ बाँचैत अछि। विषय आ शैलीक ई सामञ्जस्य दुर्लभ अछि। रचनाक पुनरावृत्ति किछु अंशमे औचित्यपूर्ण, कारण न्यायालयीय प्रक्रिया पुनः-पुनः एकहि तथ्यक भाषा जाँचैत अछि। तथापि कतहु सूत्र-वाक्यक अधिकता व्याख्यानात्मक भार बढ़बैत अछि।

६.५ रीति आ गुण

गद्यक मुख्य गुण प्रसाद अछि: कठिन तर्क प्रायः स्पष्ट वाक्य आ दृश्य उदाहरणसँ बुझायल अछि। न्यायालयीय जिरह, प्रश्नोत्तर आ संस्थागत टकरावमे ओज गुण उभरैत अछि। गाम, गंगा, भोर, मायक चाह, खेत आ पोखरिक अंशमे माधुर्य प्रवेश करैत अछि। एहि तीन गुणक अदला-बदली कृतिक दीर्घ आकार कैं एकरूप शुष्कता सँ बचबैत अछि।

६.६ भारतीय नाट्य-दृष्टि आ कथानक

कथानकक 'फल' अपराधीक नाटकीय पर्दाफाश नहि। फल अछि उचित दाबी-सीमा निर्धारित करब। एहि कारण पारम्परिक उत्कंठा अनेक बेर विलम्बित होइत अछि। पाठक जे अपराध-रोमांच अपेक्षित करैत, ओकरा निराशा भऽ सकैत; मुदा कृतिक आन्तरिक प्रयोजन संग ई पूर्णतः सुसंगत अछि। ज्ञानक क्रम स्वयं कार्य-व्यापार बनैत अछि।

७. नव्य-न्याय आ विस्तृत भारतीय प्रमाणमीमांसाक आधार पर समीक्षा

७.१ गङ्गेशीय चारि प्रमाण आ कृतिक प्रथम चारि चक्र

गङ्गेश उपाध्यायक 'तत्त्वचिन्तामणि' प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द चारि प्रमाण पर विन्यस्त अछि। उपन्यासक ००१-०५२ धरि प्रथम चारि बृहत् खण्ड एहि क्रमसँ गहरा साम्य रखैत अछि। प्रत्यक्ष-चक्र वस्तु आ ज्ञानक सीमा, अनुमान-चक्र सम्बन्धक वैधता, उपमान-चक्र साम्यक सीमा, आ शब्द-चक्र वक्ता, स्रोत, प्रयोजन आ अर्थक भेद जाँचैत अछि। कृति शास्त्रक प्रतिलिपि नहि; न्यायवैज्ञानिक, डिजिटल आ विधिक परिस्थिति मे प्रमाण-सिद्धान्तक कार्यात्मक पुनर्सृजन करैत अछि।

७.२ प्रत्यक्ष : वस्तु देखल, गुण देखल, सीमा देखल

उपन्यास प्रत्यक्ष कँ आँखिसँ दृश्य वस्तु धरि सीमित नहि रखैत। न्यायवैज्ञानिक प्रतिबिम्ब, अभिलेख, समय-मुद्रा, हैश, पटल-चित्र आ साक्षीक अनुभव प्रत्यक्ष सामग्री हो सकैत अछि, मुदा प्रत्येकक गुण आ सीमा संग। हैशक सूत्र विशेष महत्त्वपूर्ण अछि: ओ अधिग्रहणोत्तर अखण्डता बता सकैत अछि, भीतर लिखल कथनक सत्यता नहि। ई भेद नव्य-न्यायक विश्लेषणात्मक प्रवृत्तिक आधुनिक तकनीकी अनुवाद अछि।

७.३ अनुमान : व्याप्ति-चिन्ता आ वैकल्पिक कारण

अनुमान-खंड पक्ष, साध्य, हेतु आ सम्बन्धक वैधता सँ प्रेरित अछि। समान समय, साझा सेवा, भुगतान-साम्य वा प्रवेश-संकेत केवल तखन निष्कर्षक भार उठबैत जखन वैकल्पिक कारणसभ पर्याप्त रूपेँ परखल जाए। कृति व्याप्तिक औपचारिक शब्दावली कम प्रयोग करैत अछि, मुदा कार्यात्मक रूपेँ 'अन्यथा कारण सम्भव अछि कि नहि' प्रश्न निरन्तर पूछैत अछि।

७.४ उपमान : साम्यक ज्ञान, अभिन्नताक निषेध

उपमानक नक्शा कृतिक सर्वाधिक दृश्य खण्ड अछि। नोड, रेखा, स्रोत-समूह, समान प्राविधिक स्वरूप आ भुगतानक साम्य सम्बन्ध-पहिचानमे उपयोगी अछि, मुदा ‘एक जकाँ’ कैं ‘एकहि’ नहि बनाओल जाइत। समानता आ असमानता दुनू दर्ज होइत। एहि संतुलनसँ उपमान आधुनिक जाल-अन्वेषणक विधि बनैत अछि।

७.५ शब्द : आप्तता सँ आगाँ स्रोत-भूमिका आ विधिक प्रयोजन

न्यायमे शब्द विश्वसनीय वक्ता आ कथनक ज्ञानमूल्यसँ जुड़ैत अछि। उपन्यास एहि समस्या कैं बहुस्तरीय करैत अछि: साक्षी, अधिकारी, प्राविधिक विशेषज्ञ, पत्रकार, अधिवक्ता, अन्वेषण-दैनिकी, व्यवसायिक अभिलेख आ न्यायिक आदेश, सभ ‘शब्द’ अलग संस्थागत स्थिति रखैत अछि। ई आधुनिक विस्तार शास्त्रीय प्रश्न कैं विधिक प्रामाणिकता, विशेषाधिकार, प्रतिपक्षीय अवसर आ लेखकीय भूमिका संग जोड़ैत अछि।

७.६ अर्थापत्ति आ अनुपलब्धि : नव्य-न्यायक बाहरक भारतीय संवाद

शास्त्रीय सटीकताक दृष्टिसँ अर्थापत्ति आ अनुपलब्धि कैं गङ्गेशीय स्वतंत्र प्रमाण कहल नहि जा सकैत। कृतिमे ई दुनू स्वतंत्र दीर्घ चक्र अवश्य अछि। एहि कारण उपन्यासक दर्शन ‘नव्य न्याय मात्र’ नहि, विस्तृत भारतीय प्रमाणमीमांसा अछि। अर्थापत्ति-खंडक प्रमुख कसौटी ‘न्यूनतम आवश्यक स्थापना’ अछि; ई कल्पनात्मक रिक्ति-पूर्ति सँ बचबैत अछि। अनुपलब्धि-खंड ‘नहि भेटल’ कैं तखने अर्थपूर्ण मानैत जखन अपेक्षित उपस्थिति, खोजक पर्याप्तता, संरक्षण-अवधि आ वैकल्पिक स्थान स्थापित हो।

७.७ तर्क : प्रमाणक सहायक, प्रमाण नहि

तर्क-खंड दार्शनिक दृष्टिसँ कृतिक सर्वाधिक शास्त्रीय-सचेत अंशमे सँ एक अछि, कारण कथा स्पष्ट कहैत अछि जे तर्क स्वयं प्रमाण नहि। तर्क विपरीत सम्भावना, असंगति, स्रोत-निर्भरता, पूर्वाग्रह आ अनावश्यक विस्तार जाँचैत अछि। न्याय-परम्पराक सहायक चिन्तनक ई आधुनिक रूप ‘आन्तरिक प्रतिपक्ष-दल’ आ वैकल्पिक व्याख्या-स्तम्भमे मूर्त होइत अछि।

७.८ अवच्छेद, सम्बन्ध आ सीमा : नव्य-न्यायीय सूक्ष्मताक आधुनिक समकक्ष

नव्य-न्यायक भाषिक सूक्ष्मता वस्तु, गुण, सम्बन्ध, सीमक आ शर्तक परिशुद्ध निर्धारण चाहैत अछि। उपन्यासक 'स्रोत-सम्बन्ध-सीमा' त्रिक, 'पहुँच ≠ उपयोग ≠ नियंत्रण ≠ स्वामित्व', 'अखण्डता ≠ सत्यता', 'अनुपस्थिति ≠ विनाश', 'संरक्षित ≠ सत्य' सन सूत्र एहि सूक्ष्म संस्कारक आधुनिक समकक्ष बुझाइत अछि। कथा औपचारिक नव्य-न्याय भाषा नहि अपनबैत, मुदा भेद-निर्माणक वृत्ति पूर्णतः केन्द्रीय अछि।

७.९ नव्य-न्यायीय उपलब्धि आ सीमा

उपन्यासक उपलब्धि ई नहि जे ओ शास्त्रीय प्रमाण-सिद्धान्तक पाठ्यपुस्तक बनैत अछि, बल्कि जे ओ ज्ञानमीमांसात्मक अनुशासन कैं न्यायालयीय क्रिया, डिजिटल अभिलेख, पत्रकारिता आ राज्य-सत्ता मे काम करैत देखबैत अछि। सीमा ई जे किछु स्थाने छह प्रमाणक दृश्य-समानता पाठक कैं ऐतिहासिक रूपैं ई भ्रम दऽ सकैत अछि जे गङ्गेश सभ छह कैं स्वतंत्र प्रमाण मानैत छलाह। शोधपरक पाठमे एहि भेदक स्पष्टता आवश्यक अछि।

८. पाश्चात्य आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य

८.१ अरस्तू : कथानक, सम्भाव्यता आ आवश्यक सम्बन्ध

अरस्तूक दृष्टिमे कथानक घटनाक अर्थपूर्ण विन्यास अछि, जतय सम्भाव्यता आ आवश्यकता महत्त्वपूर्ण। एहि उपन्यासमे विडम्बना ई जे पात्रसभ 'आवश्यक' सम्बन्ध स्थापित करबाक पहिने अत्यन्त सावधानी बरतैत छथि। पारम्परिक अपराध-कथामे जखन घटनासभ अन्ततः अपराधीक एक केन्द्र दिस जायत, एतय अनेक रेखा काटल, कमजोर, विवादित अथवा अनिर्णीत रहि जाइत अछि। ताहि कारण कथानकक चरमोत्कर्ष 'ककरा पकड़ल' नहि, 'कतय धरि कहि सकैत छी' बनैत अछि। ई अरस्तूवादी कारण-विन्यासक आधुनिक आलोचनात्मक रूप अछि।

८.२ बाख्तिन : नियंत्रित बहुध्वनिकता

राज्य, प्रतिपक्ष, न्यायालय, अन्वेषक, विश्लेषक, साक्षी, पत्रकार आ मंत्री—एहि सभक अलग आवाज अछि। कोनो एक पात्रक प्रथम कथन अन्तिम सत्य

नहि। ई बहुध्वनिक संरचना बाख्तिनीय संवादक निकट अछि। तथापि पूर्ण बहुध्वनिकता सीमित अछि, कारण क्रमशः अधिकांश महत्त्वपूर्ण आवाज 'प्रमाणीय संयम'क साझा नैतिक केन्द्र स्वीकार करैत अछि। लेखकक मूल्य-व्यवस्था अन्ततः स्पष्ट प्रभुत्व राखैत अछि। अतः एकरा पूर्ण बहुध्वनिक उपन्यासक बदला नियंत्रित बहुध्वनिक न्यायालय-कथा कहब उचित।

८.३ जेनेत : कालक्रम, पुनरावृत्ति आ दृष्टिकेन्द्र

कथानक मूलतः कालक्रमिक अछि, मुदा स्मृति, गामक अतीत, पूर्व कथन, पुराने अभिलेख आ संशोधित संस्करण बारम्बार वर्तमान सुनवाईमे लौटैत अछि। एके तथ्य विभिन्न अध्यायमे अलग संदर्भसँ पुनः कहल जाइत अछि। साधारण दृष्टिसँ ई पुनरावृत्ति बुझाइत, मुदा कथाशास्त्रीय दृष्टिसँ एहि पुनरागमनक कार्य अछि: पाठक एके अभिलेखक अर्थ बदलैत देखैत अछि। सूचना-वितरणक केन्द्र आदित्यसँ मालिनी, विद्यानंद, अनन्या आ न्यायालय दिस सरकैत अछि।

८.४ रिकेर : समय, कथा आ उत्तरदायित्व

समय-मुद्रा, उपकरण-घड़ी, बैंक-अभिलेख, संरक्षण-अवधि आ सुनवाईक तारीख केवल प्राविधिक तथ्य नहि। मानव क्रिया कैं उत्तरदायित्वसँ जोड़बाक लेल समयक कथात्मक व्यवस्था आवश्यक अछि। रिकेरक कथा-समयक दृष्टिसँ कृति देखबैत अछि जे 'कखन'क प्रश्न बिना 'के' आ 'की'क न्यायिक अर्थ अधूरा अछि। गंगा आ भोरक बिम्ब प्राविधिक समयक विपरीत जीवित, सांस्कृतिक समयक अनुभूति प्रदान करैत अछि।

८.५ गाडामर : पूर्वबोध आ संशोधित व्याख्या

पात्रसभ शून्य मनसँ प्रमाणक सामने नहि अबैत। राज्यक शंका, प्रतिपक्षक रक्षा, पत्रकारक शीर्षक-अपेक्षा, साक्षीक भावना आ अन्वेषकक प्रारम्भिक नक्शा सभ पूर्वबोध बनबैत अछि। संवाद आ प्रतिपक्षीय परीक्षण एहि पूर्वबोध कैं नष्ट नहि, संशोधित करैत अछि। कृतिक ज्ञान स्थिर संग्रह नहि; व्याख्या आ पुनर्व्याख्याक अनुशासित प्रक्रिया अछि।

८.६ फूको : अभिलेख, पहुँच आ शक्ति

मुहरबन्द लिफाफा, अन्वेषण-दैनिकी, प्रवेश-अधिकार, विशेषाधिकार, अभिलेख-पञ्जी, राज्यक वर्गीकरण आ समाचार-माध्यमक शीर्षक सभ बतबैत अछि जे ज्ञानक पहुँच शक्ति-संरचना सँ प्रभावित अछि। फूकोक अभिलेख-सत्ता दृष्टि एतय उपयोगी अछि। तथापि उपन्यास शुद्ध सापेक्षतावाद स्वीकार नहि करैत: शक्ति अभिलेख बना सकैत अछि, मुदा स्रोत-उत्पत्ति, स्वतंत्र अभिलेख, प्रतिपक्षीय जिरह आ सार्वजनिक सुधार शक्ति कैं चुनौती देत। सत्य सत्ता मात्रक उत्पाद नहि।

८.७ हेडन व्हाइट : कथात्मक विन्यासक आत्म-नियंत्रण

इतिहास-कथनक सिद्धान्त बतबैत अछि जे तथ्य चुनि, क्रमबद्ध कऽ, कारण-रूप देला पर कथा बनैत अछि। एहि उपन्यासमे ‘कथा बनाबय नहि आयल छी’ सन भाव बारम्बार एहि खतरा कैं स्वयं विषय बनबैत अछि। अन्वेषण दलक नक्शा एक सम्भावित कथानक अछि, मुदा काटल रेखा, असफल परिकल्पना आ ‘अनिर्णीत’ श्रेणी कथात्मक बन्दीकरण रोकैत अछि। उपन्यास अपन कथाकार्यक ऊपर आत्म-नियंत्रण रखैत अछि।

८.८ प्रक्रियात्मक यथार्थवाद

न्यायालय, मंत्रालय, सुरक्षित विश्लेषण-कक्ष, रेल-यात्रा, ग्रामीण शिकायत, बैंक-अभिलेख आ समाचार-कक्षक विस्तृत दिनचर्या कृति कैं प्रक्रियात्मक यथार्थवाद दैत अछि। पारम्परिक अपराध-रोमांचक ‘एक गुप्त सत्य’क बदला अनेक सीमित सत्यक जाल अछि। एहि कारण ई उपन्यास रहस्य-कथा, विधिक उपन्यास, दार्शनिक कथा आ दस्तावेजी यथार्थवादक संगम पर ठाढ़ देखाइत अछि।

९. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधार पर समीक्षा

९.१ घटना सँ पुनरीक्षण धरि प्रमाण-पथ

समानान्तर इतिहास-दृष्टि घटना अथवा प्रक्रिया सँ चिह्न, चयन, लेखन, संरक्षण अथवा विनाश, वर्गीकरण, अभिलेख, खोज, स्रोत-आलोचना, पुष्टिकरण, प्रतिपक्ष, व्याख्या, सार्वजनिक दाबी आ पुनरीक्षण धरि एक सम्बन्ध-मानचित्र प्रस्तावित करैत अछि। उपन्यासक लगभग पूरा न्यायवैज्ञानिक ढाँचा एहि क्रमक कथात्मक समकक्ष अछि। घटना संगणकीय चिह्न छोड़ैत अछि; चिह्न

प्रतिलिपि बनैत; अभिरक्षा ओकर संरक्षण; विशेषाधिकार ओकर पहुँच; न्यायालय स्रोत-आलोचना; प्रतिपक्ष वैकल्पिक व्याख्या; समाचार सार्वजनिक दावा; सुधार पुनरीक्षण बनैत अछि।

९.२ अभिलेख तटस्थ पात्र नहि

उपन्यासमे कोन सामग्री राज्यक हाथमे अछि, कोन अधिवक्ताक कार्यालयमे, कोन सेवा-दाताक संरक्षण-अवधि पार कऽ चुकल, कोन मुहरबन्द, कोन साक्षीक स्मृतिमे, कोन समाचार-पटल पर—ई सभ निर्णायक अछि। समानान्तर इतिहास-दृष्टिक समान, अभिलेखक अस्तित्व आ अनुपस्थिति सामाजिक, संस्थागत आ प्राविधिक शक्ति सँ प्रभावित होइत अछि। तथापि कृति एहि प्रभाव केँ मनमाना सत्यक अनुमति नहि बनबैत।

९.३ मौनक अनुशासन

अनुपलब्धि-खंड आ समानान्तर इतिहास-दृष्टिक सबसँ गाढ़ साम्य ‘मौन’क अनुशासन अछि। कोनो अभिलेख नहि भेटल ताहिसँ ‘मेटायल’, ‘गुप्त’, ‘दोषी’ अथवा ‘घटना नहि भेल’क निष्कर्ष स्वतः नहि। पहिने पूछल जाए: अभिलेख बनबाक अपेक्षा छल? संरक्षण-अवधि की? कतय खोजल गेल? ककर पहुँच छल? वैकल्पिक स्रोत अछि? इतिहासलेखन आ न्यायिक अन्वेषण दुनूमे ई प्रश्न कल्पनाक हिंसा रोकैत अछि।

९.४ केन्द्र, हाशिया आ समान प्रमाणीय कसौटी

ग्रामीण शिकायतकर्ता आ राज्यक वरिष्ठ अधिकारी, साक्षीक भावना आ संगणकीय अभिलेख, अधिवक्ताक दावा आ मंत्रीक वक्तव्य—कृति कोनो एक सामाजिक स्थान केँ तथ्यात्मक अचूकता नहि दैत। गरिमा सबकेँ, प्रमाणीय छूट ककरो नहि। समानान्तर इतिहास-दृष्टिक हाशियाक आवाज जोड़बाक संग समान आलोचनात्मक कसौटी रखबाक नीति एहि उपन्यासमे जीवित रूप पबैत अछि।

९.५ असफल पथक संरक्षण

उपन्यास काटल रेखा, असफल अनुमान, गलत शब्द, संशोधित सारणी आ त्यागल प्रस्ताव मिटबैत नहि। ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण इतिहासलेखन-नैतिकता

अछि। इतिहास केवल सफल निष्कर्षक सूची नहि; ज्ञान कोना बनल, कोन पथ टूटल, कोन स्रोत बादमे कमजोर भेल, सेहो दर्ज होयबाक चाही। उपन्यासक अन्वेषण-दैनिकी आ संस्करण-सुधार पद्धतिक इतिहास बनैत अछि।

९.६ श्रेणीक वंशावली

‘नियंत्रण’, ‘सम्बन्ध’, ‘स्वामित्व’, ‘विदेशी’, ‘अपतटीय’, ‘विशेषाधिकारित’, ‘गोपनीय’ सन श्रेणी कथामे स्थिर प्राकृतिक तथ्य नहि; प्रत्येकक निर्माण आ उपयोग परखल जाइत अछि। समानान्तर इतिहास-दृष्टिक वंशावली-पद्धति जकाँ उपन्यास पूछैत अछि जे ई श्रेणी ककर द्वारा, कोन उद्देश्यसँ, कोन स्रोत पर बनल। मुदा फेरो, श्रेणीक सत्ता-इतिहासक कारण वास्तविक भौतिक अभिलेख महत्त्वहीन नहि भऽ जाइत।

९.७ मिथिला, गंगा आ पद्धतिक स्थानीयकरण

गंगा, गार्ह एन अरिकेल, मिथिलाक गाम, लोकस्मृति आ नव्य-न्यायक परम्परा आधुनिक संगणकीय अभिलेखसँ एकहि कथा-अक्ष पर आबैत अछि। एहि जोड़मे पुरातनक गौरवगान नहि, पद्धतिक निरन्तरता खोजल गेल अछि: माप ठीक राखू, कथनक सीमा जानू, स्रोत पूछू, प्रतिपक्ष सुनू। ई क्षेत्रीयता कृतिक विश्वसनीय दार्शनिक स्थानीयकरण बनैत अछि।

९.८ इतिहासलेखनक नैतिकताक न्यायालयीय प्रयोगशाला

समानान्तर इतिहास-दृष्टिसँ देखला पर ‘नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल’ कैं इतिहासलेखनक नैतिकताक न्यायालयीय कथात्मक प्रयोगशाला कहल जा सकैत अछि। न्यायालय वर्तमानक तथ्य निश्चय करैत अछि, मुदा ओकर पद्धति इतिहासकारक मूल दायित्वसँ मेल खाइत अछि: स्रोतक उत्पत्ति, पाठ-संक्रमण, मौन, स्वतंत्र पुष्टिकरण, प्रतिपक्ष, सार्वजनिक दाबी आ सुधार। समान रचनाकारक दार्शनिक पद्धति आ उपन्यासिक संरचनामे स्पष्ट सुसंगति देखाइत अछि, तथापि साहित्यिक कृतिक मूल्य ओकर स्वतन्त्र कथात्मक कार्यद्वारा स्थापित होइत अछि।

१०. मैथिली उपन्यासक विधागत विस्तार

मैथिली गद्यक सन्दर्भमे एहि कृतिक महत्त्व एकटा विषय-विस्तारक रूपमे देखल जा सकैत अछि। न्यायालय, संगणकीय न्यायविज्ञान, अभिलेखीय प्रक्रिया, विशेषाधिकार, समाचार-नैतिकता आ दर्शन कँ दीर्घ कथामे एकत्र करब सामान्य घरेलू-सामाजिक उपन्यासक सीमा सँ बाहरक प्रयोग अछि। कृति विधिक शब्दावली कँ स्थानीय जीवनक लय संग जोड़ैत अछि।

कथानकक तनाव बहुधा भौतिक पीछा, हिंसा वा गुप्त बैठकसँ नहि, एक शब्द हटेबाक निर्णय, सात मिनट अभिरक्षा-अन्तर, घड़ी-सामञ्जस्य, स्रोतक स्वतंत्रता अथवा मुहरबन्द सामग्रीक उपयोग पर निर्भर अछि। एहन सूक्ष्म तनाव धैर्यशील पाठक लेल अत्यन्त प्रभावी, मुदा द्रुत रोमांच चाहनिहार पाठक लेल कठिन भऽ सकैत अछि।

दीर्घता कृतिक शक्ति आ सीमा दुनू अछि। तेरह-अध्यायीय पुनरावृत्त चक्र प्रत्येक प्रमाण-पद्धति कँ पर्याप्त विस्तार दैत, मुदा ‘अखण्डता सत्य नहि’, ‘समानता अभिन्नता नहि’, ‘जे सिद्ध नहि से नहि कहू’ सन सूत्र बहु बेर लौटला पर उपदेशात्मक प्रतिध्वनि बनि सकैत अछि। सम्पादनक दृष्टिसँ किछु पुनरावृत्ति घटाओल जाए त कथा-गति तीव्र होयत; किन्तु अत्यधिक कटौतीसँ कृतिक प्रक्रियात्मक चरित्र नष्ट होयबाक जोखिम रहत।

न्यायालयीय संवाद प्रायः स्पष्ट, लयबद्ध आ नाटकीय अछि। प्रश्नोत्तरक छोट वाक्य अनेक स्थाने दीर्घ व्याख्यानक भार तोड़ैत अछि। सर्वश्रेष्ठ दृश्य ओ छथि जतय न्यायमूर्ति आर्या अथवा प्रतिपक्ष कोनो अतिरंजित शब्द पकड़ैत छथि, आ एक छोट भाषिक संशोधन पूरा अभिलेखक अर्थ बदलि दैत अछि।

११. शुद्ध मैथिली निखार-परीक्षण

११.१ शब्द-संसार

मूल पाठक व्यापक संगणकीय परीक्षणमे हिन्दी-आश्रित सामान्य विकल्पक स्थान पर मैथिली रूपक अनुशासित प्रयोग देखाइत अछि। ‘पानि’, ‘चाह’, ‘केवाड़ी’, ‘कोठली’, ‘माटि’, ‘पएर’, ‘राति’, ‘ओसारा’ सन रूप कृतिक भाषिक धरातल कँ मैथिली बनबैत अछि। गामक संवाद आ न्यायालयीय गद्यक बीच शैली बदलैत अछि, मुदा भाषा अनायास हिन्दीमे सरकि नहि जाइत।

११.२ क्रियारूप आ जीव-अजीव भेद

‘छथि’क प्रयोग मुख्यत: व्यक्ति अथवा सम्मानित मानवीय कर्ता लेल अछि; निर्जीव वस्तु लेल ‘अछि’ आदि रूप प्रधान अछि। ‘दैत’ सन रूप चालू अथवा अभ्यासगत क्रियामे, आ ‘देत’ भावी अथवा परिणामी प्रयोगमे भेद बनाबैत अछि। प्रस्तुत शोध-लेखक भाषा सेहो एहि भेदक पालन करैत अछि।

११.३ आधुनिक पारिभाषिक मैथिली

कृति आधुनिक न्यायवैज्ञानिक शब्द लेल देसी वा तत्सम मैथिली संयोजन बनबैत अछि: ‘न्यायवैज्ञानिक प्रतिबिम्ब’, ‘अभिरक्षा-श्रृंखला’, ‘पहुँच-अभिलेख’, ‘समय-मुद्रा’, ‘स्रोत-समूह’, ‘ग्राहक-पहिचान’ इत्यादि। एहि सँ रोमन प्राविधिक शब्दक निर्भरता घटैत अछि। पारिभाषिक घनत्व कतहु वाक्य भारी बनबैत अछि, तैं साहित्यिक अंशमे ग्राम्य बिम्बक प्रवेश आवश्यक विराम दैत अछि।

११.४ पाठ-परत आ लय

मूल प्रकाशन-पाठक इलेक्ट्रॉनिक पाठ-परतमे कतहु संयुक्ताक्षर अथवा शब्द-विच्छेद दृश्य रूपेँ टूटल देखाइत अछि; ई भाषा-दोष मानबाक पहिने पृष्ठीय मुद्रणसँ मिलान आवश्यक अछि। साहित्यिक स्तर पर मुख्य सुधार-क्षेत्र पुनरावृत्त सूत्रक मात्रा, किछु अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ प्रशासकीय पदबंध, आ लम्बा तर्क-सूचीक लय अछि। अर्थ बदलने बिना वाक्य-लम्बाइमे विविधता आ समान सूत्रक चयनात्मक पुनरागमन भाषा केँ आरो स्वाभाविक बना सकैत अछि।

११.५ रोमन रूपक नियन्त्रण

मूल मुख्य कथापाठमे रोमन रूप अत्यल्प अछि; प्रकाशन-विवरणक जाल-पता आ दार्शनिक संकेतक एक-दू प्रतीक अपवादस्वरूप देखाइत अछि। प्रस्तुत समीक्षामे रोमन अथवा अंग्रेजी शीर्षक जतेक आवश्यक अछि, सभकेँ ब्रैकेटमे देल गेल अछि।

१२. कृतिक प्रमुख उपलब्धि

प्रमाणक सीमा केँ कथानकक मूल संघर्ष बनायब: अपराधक ‘सत्य’ खोजबाक बदला कोन वाक्य वैध रूपेँ कहल जा सकैत अछि, एहि प्रश्न पर उपन्यास टिकल अछि।

मिथिलाक ग्रामीण रूपक आ संगणकीय न्यायविज्ञानक सर्जनात्मक संयोग: स्थानीय अनुभव आधुनिक प्रौद्योगिकी कैं सरल नहि, गहरा बनबैत अछि।

प्रतिपक्षक गरिमा: बचाव पक्ष, पत्रकार, साक्षी आ राज्य सभक आवाज गलती करि सकैत अछि, मुदा ककरो केवल कार्टून नहि बनाओल गेल।

भाषिक नैतिकता: विशेषण, लेबल, शीर्षक, मुहर, अनुवाद आ सारांशक राजनीतिक-न्यायिक भार कथा स्वयं जाँचैत अछि।

असफलता-संरक्षण: काटल रेखा, खण्डित अनुमान आ संशोधित वाक्य ज्ञानक इतिहासक हिस्सा बनि रहैत अछि।

गोपनीयता आ न्यायिक पारदर्शिताक संतुलन: संरक्षित सामग्री कैं न पूर्णत: निषिद्ध, न अदृश्य सत्यक स्रोत बनाओल गेल।

विधागत मौलिकता: दार्शनिक उपन्यास, न्यायालय-कथा, संगणकीय न्यायविज्ञान, पत्रकारिता-नैतिकता आ क्षेत्रीय यथार्थवाद एक संरचनामे संलग्न अछि।

१३. आलोचनात्मक सीमा

सूत्र-वाक्यक पुनरावृत्ति अनेक बेर साहित्यिक स्वाभाविकतासँ अधिक शिक्षणात्मक प्रभाव पैदा करैत अछि।

आदित्य झा आ न्यायमूर्ति आर्या नैतिक आ बौद्धिक रूपेँ अत्यन्त स्थिर छथि; आन्तरिक असफलता अथवा गहरा स्व-विरोध कम अछि।

बहुध्वनिक आरम्भ धीरे-धीरे प्रमाणीय संयमक एक साझा नैतिक केन्द्रमे समाहित होइत अछि; विचारधारात्मक असहमतिक दीर्घजीवी स्वतंत्रता सीमित रहैत अछि।

प्राविधिक आ प्रक्रियात्मक विवरणक घनत्व सामान्य कथा-पाठक लेल गति धीमा कऽ सकैत अछि।

छह प्रमाणक दृश्य समता शास्त्रीय इतिहासक दृष्टिसँ सावधानी माँगैत अछि, कारण गङ्गेशीय न्याय चारि स्वतंत्र प्रमाण मानैत अछि; अर्थापत्ति-अनुपलब्धि विस्तृत भारतीय प्रमाण-विमर्शक भाग अछि।

अपराध-उपन्यासक पारम्परिक अपेक्षामे अन्तिम 'दोषी'क निर्णायक उद्घाटनक अपेक्षा सीमित निष्कर्ष प्रमुख अछि; विधागत दृष्टिसँ ई शक्ति, बाजारू रोमांचक दृष्टिसँ सम्भावित सीमा अछि।

१४. निष्कर्ष

'नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल' कैं केवल जुआ-अपराधक कथा कहब ओकर साहित्यिक परियोजना छोट करब होयत। ई मूलतः प्रमाण, भाषा आ संस्थागत उत्तरदायित्वक उपन्यास अछि। कृतिक पहिल दृश्य सँ अन्तिम गंगा-उजास धरि एक सूत्र चलैत अछि: वस्तु, सम्बन्ध, शब्द आ मौन अपन सीमा बिना न्यायसंगत अर्थ नहि पबैत। एहि सीमा-ज्ञान कैं कथा कमजोरी नहि, नैतिक साहस बनबैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ कृति शान्त-प्रधान बौद्धिक रस, ध्वन्यात्मक बिम्ब, ग्राम्य वक्रोक्ति आ विषय-शैलीक औचित्यक कारण उल्लेखनीय अछि। नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, तर्क आ सूक्ष्म सम्बन्ध-विभाजन आधुनिक न्यायवैज्ञानिक प्रसंगमे प्रभावी रूप पबैत अछि; अर्थापत्ति-अनुपलब्धिक समावेश एकरा विस्तृत भारतीय प्रमाणमीमांसात्मक आख्यान बनबैत अछि। पाश्चात्य सिद्धान्तक दृष्टिसँ ई कारण-विन्यासक आत्मसंयमी कथा, नियंत्रित बहुध्वनिक न्यायालय-कथा, पुनरावृत्त अभिलेख-व्याख्या, शक्ति-प्रभावित किन्तु यथार्थ-बद्ध ज्ञान आ कथात्मक बन्दीकरणक आलोचना अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक आधार पर कृतिक सर्वाधिक मौलिक पाठ खुलैत अछि। अभिलेख तटस्थ नहि, मौन स्वयं उत्तर नहि, स्रोत स्वतंत्रता जाँचय योग्य, प्रतिपक्ष आवश्यक, परिकल्पना संशोधनशील, आ सार्वजनिक दाबी प्रमाणक सीमा भीतर रहबाक चाही। एहि अर्थमे उपन्यास वर्तमान न्यायालयक कथा होइतहुँ इतिहासकारक नैतिक अनुशासनक कथा सेहो अछि। घटना सँ अभिलेख, अभिलेख सँ व्याख्या, व्याख्या सँ सार्वजनिक वाक्य, आ वाक्य सँ पुनरीक्षण धरि पूरा पथ कथा बनैत अछि।

मैथिली साहित्यक परिप्रेक्ष्यमे कृति विषय, भाषा आ दार्शनिक आकांक्षाक स्तर पर महत्वाकांक्षी प्रयोग अछि। एकर सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि ई जे नव्य-न्याय कैं संग्रहालयीय शास्त्र नहि बनबैत, आ संगणकीय न्यायविज्ञान कैं सांस्कृतिक

रूपेँ निराधार आधुनिकता नहि। दुनू केँ गंगा, माटि, गाम, न्यायालय, संगणकीय चिह्न आ मानवीय भूलक एकहि जगतमे राखि ई प्रश्न करैत अछि: सत्यक सम्मान की अछि? कृतिक उत्तर अन्ततः नाटकीय नहि, गम्भीर अछि: जे सिद्ध अछि, ओकरा स्पष्ट कहू; जे अनुमान अछि, ओकरा अनुमान कहू; जे अज्ञात अछि, ओकरा गढ़ू नहि; आ अपन वाक्य सुधारबाक साहस राखू।

ग्रन्थसूची

नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल

तत्त्वचिन्तामणि

न्यायसूत्र

नाट्यशास्त्र

ध्वन्यालोक

वक्रोक्तिजीवित

औचित्यविचारचर्चा

काव्यप्रकाश

साहित्यदर्पण

काव्यादर्श

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन - खण्ड २

द न्याय थ्योरी ऑफ नॉलेज (The Nyaya Theory of Knowledge)

पोएटिक्स (Poetics)

माइमेसिस (Mimesis)

प्रॉब्लम्स ऑफ दोस्तोएव्स्कीज पोएटिक्स (Problems of Dostoevsky's Poetics)

द डायलॉजिक इमैजिनेशन (The Dialogic Imagination)

नैरेटिव डिस्कोर्स (Narrative Discourse)

टाइम ऐंड नैरेटिव (Time and Narrative)

ट्रुथ ऐंड मेथड (Truth and Method)

द आर्किऑलॉजी ऑफ नॉलेज (The Archaeology of Knowledge)

डिसिप्लिन ऐंड पनिश (Discipline and Punish)

मेटाहिस्ट्री (Metahistory)

द थ्योरी ऑफ द नोवेल (The Theory of the Novel)

आलेख ०८ · आलोचना-सिद्धान्त आ समालोचनाक परिप्रेक्ष्य

अनुवादक

सारांश

“अनुवादक” १०० अध्यायमे विस्तृत एहन उपन्यास अछि जाहिमे मिथिलाक नव्य-न्यायपरम्परा, दिल्लीक बहुभाषी जीविका-संसार, भारत–चीन व्यावसायिक सम्पर्क, मकाऊक चमकदार किन्तु संदिग्ध तकनीकी-वित्तीय परिवेश, विधिक गोपनीयता, सरकारी जाँच, समाचार-माध्यमक अतिशयोक्ति, मित्रता, लोभ, अपमान आ आत्म-उत्तरदायित्व एक-दोसरासँ गुँथल अछि। उपन्यासक मौलिकता केवल विषय-वस्तुमे नहि, बल्कि एहि बातमे अछि जे कथा स्वयं प्रमाणक श्रेणीकरण सीखैत जाइत अछि। आरम्भमे शशांक झा “भाषा” केँ जीविका, प्रवेश आ शक्ति बुझैत अछि; मध्यभागमे भाषा करार, भुगतान, अनुवाद, मुहरबन्द संचिका आ समाचारक बीच अर्थक आकार बदलैत अछि; अन्तभागमे वही भाषा न्यायिक अनुशासनक अधीन अपन सीमा स्वीकार करैत अछि। एहि शोध-समीक्षाक मुख्य प्रतिपाद्य ई अछि जे “अनुवादक” मूलतः ज्ञान, कथन आ उत्तरदायित्वक उपन्यास अछि—अर्थात् कियो की जानैत अछि, कोना जानैत अछि, कतेक कहि सकैत अछि, आ जे नहि जानैत तकरा कोना नहि जोड़बाक चाही। भारतीय काव्यशास्त्रक रस–ध्वनि–वक्रोक्ति–औचित्य परम्परा, पाश्चात्य कथाशास्त्रक कथानक, बहुस्वरता, दृष्टिबिन्दु, समय-रचना आ नैतिक आत्म-पहिचान, गंगेशोत्तर नव्य-न्यायक प्रमाण-सूक्ष्मता, तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक अन्तर्गत मिथिला–दिल्ली–नोएडा–मकाऊ–न्यायालय–संस्थागत अभिलेखक समानान्तर पठन द्वारा ई अध्ययन देखबैत अछि जे उपन्यास अपराध-कथा होएबासँ बेसी “आरोप बनाम सिद्धि”क कथा अछि। शुद्ध मैथिली निखार-अंकेक्षणमे भाषा सामान्यतः सघन, सुगम आ अवधारणात्मक रूपेँ सक्षम भेटैत अछि; मुदा रोमन/अंगरेजी तकनीकी पद, दू ठाम “हर”, तथा किछु शब्द-रूपक स्तर पर एकरूपता लेल संपादकीय सुधार आवश्यक अछि।

बीजशब्द

अनुवादक · आलोचना-पद्धति · भारतीय काव्यशास्त्र · मैथिली समालोचना · विदेह समानान्तर दृष्टि

१.१३. गजेन्द्र ठाकुर- **अनुवादक [एक समग्र साहित्यिक, ज्ञानमीमांसात्मक आ समानान्तर ऐतिहासिक शोध-समीक्षा]- शोध आलेख**

गजेन्द्र ठाकुर

अनुवादक

एक समग्र साहित्यिक, ज्ञानमीमांसात्मक आ समानान्तर ऐतिहासिक शोध-समीक्षा

स्रोत-ग्रन्थ: “अनुवादक” — गजेन्द्र ठाकुर

भारतीय काव्यशास्त्र · पाश्चात्य कथाशास्त्र · नव्य-न्याय · विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

सारांश

“अनुवादक” १०० अध्यायमे विस्तृत एहन उपन्यास अछि जाहिमे मिथिलाक नव्य-न्यायपरम्परा, दिल्लीक बहुभाषी जीविका-संसार, भारत–चीन व्यावसायिक सम्पर्क, मकाऊक चमकदार किन्तु संदिग्ध तकनीकी-वित्तीय परिवेश, विधिक गोपनीयता, सरकारी जाँच, समाचार-माध्यमक अतिशयोक्ति, मित्रता, लोभ, अपमान आ आत्म-उत्तरदायित्व एक-दोसरासँ गुँथल अछि। उपन्यासक मौलिकता केवल विषय-वस्तुमे नहि, बल्कि एहि बातमे अछि जे कथा स्वयं प्रमाणक श्रेणीकरण सीखैत जाइत अछि। आरम्भमे शशांक झा “भाषा” कैं जीविका, प्रवेश आ शक्ति बुझैत अछि; मध्यभागमे भाषा करार, भुगतान, अनुवाद, मुहरबन्द संचिका आ समाचारक बीच अर्थक आकार बदलैत अछि; अन्तभागमे वही भाषा न्यायिक अनुशासनक अधीन अपन सीमा स्वीकार करैत अछि। एहि शोध-समीक्षाक मुख्य प्रतिपाद्य ई अछि जे “अनुवादक” मूलतः ज्ञान, कथन आ उत्तरदायित्वक उपन्यास अछि—अर्थात् कियो की जानैत अछि, कोना जानैत अछि, कतेक कहि सकैत अछि, आ जे नहि जानैत तकरा कोना नहि जोड़बाक चाही।

भारतीय काव्यशास्त्रक रस–ध्वनि–वक्रोक्ति–औचित्य परम्परा, पाश्चात्य कथाशास्त्रक कथानक, बहुस्वरता, दृष्टिबिन्दु, समय-रचना आ नैतिक आत्म-पहिचान, गंगेशोत्तर नव्य-न्यायक प्रमाण-सूक्ष्मता, तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक अन्तर्गत मिथिला–दिल्ली–नोएडा–मकाऊ–न्यायालय–

संस्थागत अभिलेखक समानान्तर पठन द्वारा ई अध्ययन देखबैत अछि जे उपन्यास अपराध-कथा होएबासँ बेसी “आरोप बनाम सिद्धि”क कथा अछि। शुद्ध मैथिली निखार-अंकेक्षणमे भाषा सामान्यतः सघन, सुगम आ अवधारणात्मक रूपेँ सक्षम भेटैत अछि; मुदा रोमन/अंगरेजी तकनीकी पद, दू ठाम “हर”, तथा किछु शब्द-रूपक स्तर पर एकरूपता लेल संपादकीय सुधार आवश्यक अछि।

मुख्य शब्द: अनुवाद, नव्य-न्याय, प्रमाण, प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अनुपस्थित अपेक्षित चिह्न, मिथ्या आरोप, मित्रता, मकाऊ, भाषिक नैतिकता, अभिलेख, समानान्तर इतिहास।

१. अध्ययनक क्षेत्र, पाठ-परिधि आ पद्धति

एहि अध्ययनमे पोथीक सभ १०० अध्याय स्वतंत्र पाठ-इकाई रूपेँ गृहीत कएल गेल अछि। अनुक्रमणिकाक अध्याय १ “मिथिलाक अनुवादक” सँ अध्याय १०० “अनुवादकक निर्णय” धरि कथानकक क्रम अखण्ड अछि। समीक्षा नमूना-पठन पर आधारित नहि; कथा-विकास, आवर्ती सूत्र, अध्याय-अन्तक संक्रमण, चरित्र-सम्बन्ध, भाषिक पदावली, संस्थागत अभिलेख, अंकीय सामग्री, न्यायालयीय दृश्य आ अन्तिम निर्णय धरि पूरा संरचना केँ संगति मे पढ़ल गेल अछि।

पद्धति चारि परतमे चलैत अछि। पहिल, स्रोत-पाठीय परत—अध्यायक भीतर कथानक, प्रतीक, संवाद, आवर्ती सूत्र आ चरित्र-परिवर्तन। दोसर, भारतीय आलोचनात्मक परत—रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आ कथ्य–भाव–संकेतक सम्बन्ध। तेसर, नव्य-न्यायीय परत—प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, संशय, हेत्वाभास, व्याप्ति, अवच्छेदक, सम्बन्ध आ प्रमाणक भार। चौठ, समानान्तर ऐतिहासिक परत—मिथिलाक बौद्धिक परम्परा, दिल्लीक प्रवासी श्रम-बाजार, चीन-सम्बद्ध व्यापारिक संसार, मकाऊक वित्त-प्रौद्योगिकी छाया, भारतीय संस्थागत जाँच आ न्यायालयीय उत्तरदायित्व केँ एकहि समय-अक्ष पर पढ़ब।

“विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति” केँ एहि समीक्षामे एहन कार्य-पद्धति रूपेँ प्रयुक्त कएल गेल अछि जाहिमे अलग-अलग भूगोल, संस्था, भाषा आ स्मृति-रेखाकेँ एक-दोसराक कारण मानि जल्दबाजी नहि कएल जाइत; पहिने

समानान्तर राखि समय, स्रोत, संपर्क आ परिणामक बिन्दु पर वास्तविक छेदन खोजल जाइत अछि। एहि अर्थमे ई पद्धति उपन्यासक अपन न्याय-दृष्टिसँ मेल खाइत अछि: साथ-साथ घटल घटना अनिवार्यत: परस्पर कारण नहि।

२. उपन्यासक केन्द्रीय प्रतिपाद्य: अनुवाद शब्दक नहि, उत्तरदायित्वक

उपन्यासक आरम्भे शशांक कहैत अछि जे ओ “भाषा ताकय” जा रहल अछि। एहि वाक्यक भीतर पूरा रचना संक्षिप्त अछि। भाषा ओकरा जीविका दैत अछि, विदेश पहुँच दैत अछि, निगमक भीतर प्रवेश दैत अछि, विधिक दस्तावेज पढ़बाक अधिकार दैत अछि, सरकारी जाँचमे उपयोगी बनबैत अछि, आ अन्तत: ओकर विरुद्ध साक्ष्यक सामग्री सेहो बनि जाइत अछि। भाषा एतय तटस्थ माध्यम नहि; शक्ति अछि। मुदा लेखक लगातार देखबैत छथि जे शक्ति आ अधिकार समान नहि। ककरो संग बात बुझि सकब, ओकर खाताक स्वामी होएब नहि; पटल देखब, प्रणाली नियंत्रित करब नहि; करार अनुवाद करब, करारक आर्थिक लाभकारी स्वामी होएब नहि; वकीलक संग बैसार करब, अपराधी योजना मे सहभागी होएब नहि।

एहि कारण “अनुवादक”क कथानक बारम्बार अर्थक “सीमा” शब्द पर लौटैत अछि। नायकक आरम्भिक दोष मिथ्या बोलबाक साधारण प्रवृत्ति नहि; सीमा अपन सुविधा अनुसार बढ़ेनाइ-घटेनाइ अछि। जखन ओकरा प्रतिष्ठा चाही तखन अपन भूमिका बड़ा कहैत अछि; जखन जाँच अबैत अछि तखन छोट करैत अछि; जखन मित्रक नाम अबैत अछि तखन भावना पहिने पहुँचैत अछि; जखन समाचार ओकरा अपराधी बनबैत अछि तखन ओ अपन पीड़ा कैं पूर्ण निर्दोषताक प्रमाण बनाबय चाहैत अछि। अन्तिम परिपक्वता एहि असमान मापक कैं त्यागब अछि।

“आरोप अलग, शंका अलग, प्रमाण अलग” — एहि सूत्रक अनेक रूप पूरा उपन्यासक आलोचनात्मक मेरुदण्ड अछि।

३. आठ खण्डमे कथात्मक स्थापत्य

1–13: प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार

मिथिलासँ दिल्ली आ पहिल मकाऊ धरि नायकक जीविका, प्रशिक्षण, मित्रता, महत्वाकांक्षा आ चयनित मौनक बीज पड़ैत अछि। भाषा एक अवसर होइत-होइत विशेष पहुँचक लालसा बनैत अछि।

14–26: भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व

जुलियाना, मृणाल, राघव, आदित्य आ अदालत नायकक भाषा-बोध कैं स्रोत, प्रसंग, गोपनीयता आ सार्वजनिक कथनक कसौटी पर कसैत छथि।

27–39: कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत

नोएडा, करार, गुंडाक फोन, सरकारी टिप्पणी आ समाचारक मिश्रण बाहरी छाया रचैत अछि; उपमान उपयोगी संकेत, पर अपराध-सिद्धि नहि।

40–52: कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन

मैंडरिन–कैंटनिज, विक्रेता, अंकीय जब्ती, मित्रता आ यात्रा-अभिलेख द्वारा भाषा कौशलक दर्प न्यायिक सूक्ष्मता मे रूपान्तरित होइत अछि।

53–65: मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख

एके दस्तावेजक अनेक संस्करण, मुहरबन्द सामग्री, समाचार रूपान्तर आ नायकक पुरान उपकरण एक-दोसराक दर्पण बनैत अछि।

66–78: भोज, देवता, अपमान: प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा

जन्मदिनक मंच, सामाजिक प्रतिष्ठा, हवाला-बिटकॉइनक शब्द, समाचार-अतिशयोक्ति आ अंकीय डींग मिलि छवि आ वास्तविक शक्ति बीच दूरी खोलैत अछि।

79–91: समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति

कथित नियंत्रण, स्वामित्व, साँठगाँठ वा लीक सच होइत त’ कोन चिह्न रहबाक चाही—एहि प्रश्नसँ अनुपस्थिति कैं अनुशासित ढंगसँ पढ़ल जाइत अछि।

92–100: निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी

अन्तिम अध्यायसभ अपन, मित्र, वकील, संस्था, समाचार आ वित्तीय अभिलेख—सभ पर एके कसौटी लागू करैत अछि; नैतिक निष्कर्ष विधिक सीमा सँ बाहर नहि जाएत।

४. सभ १०० अध्यायक रचना-मानचित्र आ आलोचनात्मक लेखा

नीचाँक सारणी केवल अनुक्रमणिका नहि; प्रत्येक अध्यायक कथात्मक कार्य आ आलोचनात्मक योगदान चिन्हित करैत अछि। एहि प्रकार कोनो रचना समीक्षा सँ बाहर नहि रहैत।

अध्याय	शीर्षक	खण्डीय कार्य	आलोचनात्मक निष्कर्ष
1	मिथिलाक अनुवादक	प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार	मिथिलाक ज्ञान-परम्परा, आर्थिक विवशता आ भाषा-जीविकाक आकांक्षा एक संग नायकक प्रस्थान-बिन्दु बनैत अछि; नव्य-न्याय ओकर चरित्रक बौद्धिक व्याकरण रूपेँ स्थापित होइत अछि।
2	तीन पोथीक पाठ	प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार	ध्वनि–वाक्य–व्यवहारक त्रिक अनुवादकक प्रशिक्षण कैँ केवल शब्द-ज्ञान नहि, प्रसंग-नीति बनबैत अछि; “उद्देश्य” नैतिक निर्णायक पद बनि उठैत अछि।
3	मिथिलासँ दिल्ली 3	प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार	दिल्लीक आर्थिक दबाव नायक कैँ संदिग्ध भुगतान-भाषा लग पहुँचबैत अछि; मृणालक प्रवेश “आरोप–शंका–प्रमाण” भेदक लोकजीवन-संस्करण प्रस्तुत करैत अछि।
4	मिथिलासँ दिल्ली 4	प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार	पहिल मकाऊ-यात्रा विशेष पहुँच, अधिक पारिश्रमिक आ चयनित मौनक त्रिकोण रचैत अछि; पतन पैघ अपराध नहि, सीमा फेर

			लिखबाक छोट चयनसँ शुरू होइत देखाओल गेल अछि।
5	मिथिलासँ दिल्ली 5	प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार	विधिक अनुवादक रूपेँ शशांक अर्थक सीमा बचबैत अछि, मुदा ओहि सीमा केँ भविष्य मे मोड़ि सकबाक शक्ति पहचानैत अछि; ज्ञान आ प्रलोभन एकै ठाम उपस्थित होइत अछि।
6	मिथिलासँ दिल्ली 6	प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार	गोपनीयता, सहभागिता आ लिखित सीमा बीचक भेद पेशागत नैतिकता केँ दृढ़ करैत अछि, पर उच्च पारिश्रमिक आ सम्मान नायकक आत्म-नियंत्रण पर निरन्तर दबाव बनौने रहैत अछि।
7	मिथिलासँ दिल्ली 7	प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार	आन्तरिक सरकारी प्रक्रिया, सार्वजनिक कथा आ व्यक्तिगत अपमानक पहिल स्पष्ट टकराव; पीड़ाक सत्य केँ प्रमाणक सत्यसँ अलग राखबाक आग्रह उपन्यासक न्याय-दृष्टि केँ तीक्ष्ण करैत अछि।
8	लाल किलाक चीनी पर्यटक	प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार	लाल किलाक प्रसंग भविष्यक अदालत मे लौटि स्मृति केँ साक्ष्यक कसौटी पर रखैत अछि; “जे नहि देखल गेल” ओकर अनुवाद न्याय-विकृति बनि सकैत अछि।
9	मिथिलासँ दिल्ली 9	प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार	समन आ औपचारिक जाँच नायकक आत्म-कथा केँ अभिलेखीय भाषा मे बदलैत अछि; जानब आ मानबक अन्तर चरित्र-विकासक नवल स्तर खोलैत अछि।
10	मिथिलासँ	प्रस्थान, भाषा आ पहिल	अंकीय जब्ती पछाति भाषिक गर्व नायकक रक्षात्मक शक्ति बनैत

	दिल्ली 10	नैतिक दरार	अछि; उपन्यास प्रश्न उठबैत अछि जे सूक्ष्म अर्थ-बोध सत्यक सेवा करैत अछि कि आत्म-बचावक।
11	मिथिलासँ दिल्ली 11	प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार	करार आ भुगतान-अभिलेखक बहुअर्थी भाषा शक्ति-संबंध कँ स्पष्ट करैत अछि; “अर्थक सम्भावना” आ “अपराधक सिद्धि” अलग राखल गेल अछि।
12	मिथिलासँ दिल्ली 12	प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार	दोसर मकाऊ अवसर विशेष पहुँचक लोभ कँ वैध पेशागत अवसरक रूप मे छद्म-वेश दैत अछि; सीमा पार करब शान्त आ तर्कसंगत देखाइ पड़ैत अछि।
13	पितमपुराक ताओ मंदिर	प्रस्थान, भाषा आ पहिल नैतिक दरार	ताओ मंदिर बाहरी कथानक सँ भीतरक नैतिक श्रवण दिस मोड़ अछि; जुलियाना क्षमा नहि, आत्म-श्रवणक अनुशासन दैत छथि।
14	भाषाक साधना 1	भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व	शब्द-प्रमाणक विश्वसनीयता स्रोतक विश्वसनीयता सँ जोड़ल गेल अछि; भाषिक साधना ज्ञानमीमांसात्मक साधना बनि उठैत अछि।
15	भाषाक साधना 2	भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व	समाचार-आघातक बीच नायक तत्काल प्रतिक्रियाक बदला लिखित तथ्यक बाट चुनैत अछि; चरित्रक भीतर विवेकक दोसर स्वर स्पष्ट होइत अछि।
16	भाषाक साधना 3	भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व	अदालत ध्वनि, वाक्य आ आशयक प्रशिक्षण कँ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक कसौटी पर राखैत अछि; भाषा-कक्षा न्याय-कक्ष मे

			रूपान्तरित होइत अछि।
17	भाषाक साधना 4	भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व	स्रोत, उद्धरण आ प्रसंगक सूक्ष्म भेद शशांकक पेशागत कौशलक संग ओकर नैतिक संकट कँ जोड़ैत अछि।
18	भाषाक साधना 5	भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व	आंशिक सत्य आ चयनित मौनक सम्बन्ध खुलैत अछि; उपन्यास “मिथ्या” कँ केवल असत्य वाक्य नहि, अपूर्ण प्रस्तुति रूपँ सेहो देखैत अछि।
19	भाषाक साधना 6	भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व	मित्रता नायकक आत्म-कथा पर प्रतिरोधी साक्षी बनैत अछि; मृणालक उपस्थिति भावुक समर्थनक बदला कसौटी प्रदान करैत अछि।
20	जुलियानाक पाठ	भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व	जुलियानाक पाठ “दोस्ती” कँ अदालतक प्रमाण नहि, अंतरात्माक प्रश्न ठहरबैत अछि; लोभक नामकरण शुद्ध होइत अछि, लोभ समाप्त नहि।
21	भाषाक साधना 8	भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व	विधिक गोपनीयता आ अनुवादकक प्रसंग-बोध बीच समय, स्थान आ सीमा चरित्र-परीक्षा बनैत अछि।
22	भाषाक साधना 9	भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व	संस्थागत सारांश आ मूल टिप्पणी बीच अन्तर राजनीतिक/प्रशासनिक भाषा-कर्मक नैतिक जोखिम देखबैत अछि।
23	भाषाक साधना 10	भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ	शब्दक यात्रा—मूल, सारांश, समाचार—स्वयं साक्ष्यक विषय

		सार्वजनिक उत्तरदायित्व	बनैत अछि; कथनक वंशावली उपन्यासक प्रमुख औपचारिक उपकरण अछि।
24	भाषाक साधना 11	भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व	अदालतक बाद नायक अपन कथनक सीमा कैं अपन जिम्मेदारी मानय लगैत अछि; भाषिक आत्मगौरव पर संयमक आरम्भ।
25	भाषाक साधना 12	भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व	पूरक समन अंकीय सामग्री आ आत्म-प्रतिमा बीच संघर्ष खोलैत अछि; सीमित कथनक नैतिक मूल्य बढ़ैत अछि।
26	भाषाक साधना 13	भाषाक साधना: शब्द-प्रमाण सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व	पुरान शिक्षकक श्यामपट्ट संग लौटाव भाषिक साधनाक पहिल चक्र पूरा करैत अछि; आगाँ सिद्धान्त सीधे धन, करार आ दबावक संसार मे उतरैत अछि।
27	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 1	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत	नोएडा औद्योगिक संसार भाषा कैं श्रम, करार आ कॉर्पोरेट शक्ति सँ जोड़ैत अछि; “छाया” श्रृंखलाक सामाजिक भूमि तैयार।
28	नोएडाक पहिल कॉन्ट्रैक्ट	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत	पहिल करारमे उपमान उपयोगी संकेत अछि, सिद्धि नहि; समानताक मोह सँ बचबाक शिक्षा केन्द्र मे अछि।
29	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 3	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत	गोपनीयता-पत्र, मकाऊ प्रस्ताव आ सरकारी टिप्पणी एके कथानक मे निजी करार आ सार्वजनिक जाँच कैं समानान्तर करैत अछि।
30	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 4	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार	मूल टिप्पणी आ प्राथमिकता घटेबाक निर्देश बीच वैषम्य “पूरा वाक्य”क मांग उत्पन्न करैत अछि;

		आ स्रोत	संपादन स्वयं शक्ति-कर्म ठहरैत अछि।
31	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 5	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत	समाचारक कथा नामक चारूकात आरोपक तैयार आकृति बनबैत अछि; उपमानक दुरुपयोग सामाजिक अपमानक स्रोत बनैत अछि।
32	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 6	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत	अदालत नायकक “केन्द्र” होएबाक लालसा कैं तोड़ैत अछि; घटनाक केन्द्र आ सत्यक स्वामी एक नहि।
33	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 7	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत	समन, अंकीय फाइल आ नामकरणक संकट मित्रता/स्वार्थक संभावित हस्तक्षेप देखबैत अछि; सत्यक स्थान भावनासँ अलग राखल गेल।
34	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 8	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत	द्विभाषिक करारमे “प्रतिनिधि”, “पाबनिहार”, “नियन्त्रण” आ “स्वामित्व”क अर्थ-भेद नव्य-न्यायीय अवच्छेदक-जेकाँ काम करैत अछि।
35	गुंडाक फोन	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत	गुंडाक फोन बाहरी दबाव कैं अंतरात्माक कसौटी मे बदलैत अछि; मृणाल भयक बीच सीमित सत्य पर टिकबाक सहारा।
36	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 10	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत	मकाऊ निमन्त्रण फेर लोभ जगबैत अछि, पर एहि बेर लिखित सीमा पहिल प्रतिरक्षा बनैत अछि; प्रलोभनक रूप बदलैत अछि।
37	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 11	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार,	राघव भसीनक कार्यालयमे परामर्श, करार आ सहभागिताक भेद पेशागत नैतिकता कैं विधिक

		दबाव, समाचार आ स्रोत	संरचना दैत अछि।
38	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 12	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत	मूल सन्देश सुरक्षित रखबाक आग्रह स्रोत-समालोचनाक अनुशासन अछि; अज्ञात प्रश्न छाया बनैत अछि, आरोप नहि।
39	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 13	कॉन्ट्रैक्ट आ छाया: करार, दबाव, समाचार आ स्रोत	मुहरबन्द संचिका सम्बन्धी बाहरी प्रश्न लीक, अनुमान आ पत्रकारिता बीच सीमा खोलैत अछि; अदालत अगिला सत्य-परीक्षणक मंच बनैत अछि।
40	कैंटनिजक केवाड़ी 1	कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन	कैंटनिज भाषिक क्षमता अदालतक अनुमान-अनुशासन मे प्रवेश करैत अछि; भाषा कौशलक मूल्य तबे जखन साक्ष्य-सीमा सुरक्षित रहय।
41	कैंटनिजक केवाड़ी 2	कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन	समनक औपचारिकता आ स्वामित्व-अभिलेखक भेद नायकक “महत्त्व” भ्रम घटबैत अछि; भाषा केवाड़ी अछि, घर नहि।
42	वीवोक गेट [VIVO]	कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन	वीवो परिसरक भौतिक फाटक निजी कॉर्पोरेट संसार आ न्यायिक जाँचक प्रतीकात्मक सीमा बनैत अछि; मित्रताक प्रश्न भाषासँ आगाँ जाएत अछि।
43	कैंटनिजक केवाड़ी 4	कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-	मृणाल पर संदेहक सम्भावना नायक कैं मित्रक पक्ष मे मिथ्या अनुमान न करबाक परीक्षा दैत अछि; पक्षधरता स्वयं विश्वासघात भ’ सकैत अछि।

		अनुशासन	
44	कैंटनिजक केवाड़ी 5	कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन	मकाऊक स्मृति लोभक संवेदी रूप —होटल, पटल, पहुँच—रचैत अछि; आकर्षण एखन प्रमाण-चिन्तनक विरुद्ध दबाव बनि ठाढ़।
45	कैंटनिजक केवाड़ी 6	कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन	विधिक परामर्शक प्रसंगमे “केवल भाषा-काज” आ दिशा-निर्धारणक सहभागिता बीच नैतिक रेखा जाँचल जाइत अछि।
46	कैंटनिजक केवाड़ी 7	कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन	निचला आपत्ति आ ऊपरी प्राथमिकता-ह्रास संस्थागत दोहरी भाषा देखबैत अछि; विश्वासघातक अनुभूति अभी सिद्ध निष्कर्ष नहि।
47	कैंटनिजक केवाड़ी 8	कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन	अज्ञात प्रश्न “दू नेटवर्कक कड़ी” कहि निष्कर्ष पूर्वनिर्धारित करैत अछि; उपन्यास प्रश्नक व्याकरणमे छुपल आरोप चिन्हैत अछि।
48	मैंडरिन सँ कैंटनिज धरि	कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन	मैंडरिन–कैंटनिज भेद भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्यक सूक्ष्मता धरि सेतु बनैत अछि; कतरल उद्धरणक अनुमानात्मक सीमा अदालतमे जाँचल जाइत अछि।
49	कैंटनिजक केवाड़ी 10	कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक	जब्ती-सूची आ बयान मिलान “अभिलेख बनाम स्मरण”क टकराव तीव्र करैत अछि;

		सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन	व्यक्तित्वक दावा वस्तुगत सामग्रीक साम्हिन राखल जाइत अछि।
50	जुआ अनुप्रयोगक विक्रेता [vendor]	कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन	जुआ अनुप्रयोगक विक्रेता प्रसंग प्रत्यक्ष तकनीकी दृश्य, पेशागत सम्बन्ध आ वित्तीय अनुमान कँ अलग-अलग रखैत अछि; अपराध-कथा बनाबय सँ परहेज।
51	कैंटनिजक केवाड़ी 12	कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन	शशांक–मृणाल समान मेज पर बैसि अलग बयान दैत छथि; मित्रता साक्ष्यक समानता कँ प्रतिस्थापित नहि करैत।
52	कैंटनिजक केवाड़ी 13	कैंटनिजक केवाड़ी: भाषिक सूक्ष्मता सँ साक्ष्य-अनुशासन	यात्रा-अभिलेख स्मरणक चमक कँ पासपोर्ट, आरक्षण, होटल, बैठक-सन्देश सँ कसैत अछि; मकाऊ अब स्मृति नहि, दस्तावेजी स्थल।
53	मकाऊक दर्पण 1	मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख	“गोपनीय: विधिक समीक्षा” संचिका एके अभिलेखक अलग संस्करणक संकट खोलैत अछि; दर्पण-रूपक पाठांतरक रूपक बनैत अछि।
54	मकाऊक दर्पण 2	मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख	दू प्रशासनिक संस्करणक तुलना संस्थागत संपादन कँ कथा-कर्म बनबैत अछि; क्रोध कँ तथ्यक नाम न देबाक अनुशासन दृढ।
55	मकाऊक दर्पण 3	मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ	मुहरबन्द सामग्री आ समाचारक प्रसार बीच सम्बन्ध जाँचल जाइत अछि; बाहरक कथा भीतरक

		आ आत्म-अभिलेख	दस्तावेजक प्रामाणिक प्रतिरूप मानल नहि जाइत।
56	मकाऊक दर्पण 4	मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख	अदालत सार्वजनिक अतिशयोक्ति आ मूल सामग्रीक मौन तुलना करैत अछि; नायकक पुरान उपकरण अगिला आत्म-साक्ष्य बनय वाला अछि।
57	मकाऊक दर्पण 5	मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख	अंकीय जब्ती महत्त्वाकांक्षाक निजी लिखावट कँ वस्तुगत अभिलेख बनबैत अछि; “भूमिका बढ़ाब” चाहना अधिकार सिद्ध नहि करैत।
58	वकील जे चीनी नहि बुझैत	मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख	चीनी नहि बुझनिहार वकील राघवक हस्ताक्षर भाषा, परामर्श आ वास्तविक सहभागिताक सीमाक परीक्षण बनैत अछि।
59	मकाऊक दर्पण 7	मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख	भुगतान अभिलेख आ मित्रता-सम्बन्धक मिलान धनक पथ कँ नैतिक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि, बिना तुरन्त दोष-सिद्धि कएने।
60	मकाऊक दर्पण 8	मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख	दोसर मकाऊ यात्रा, प्रवेश-अभिलेख आ स्मरणक तुलना “विशेष पहुँच”क मिथक कँ मापैत अछि।
61	मकाऊक दर्पण 9	मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख	विधिक विशेषाधिकारक सीमा विषय-वस्तु सँ बाहर समय-क्रम आ भूमिका-चिह्न द्वारा जाँचल जाइत अछि; गोपनीयता अपराधक पर्याय नहि।

62	मकाऊक राति	मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख	मकाऊक राति संस्थागत प्रसार-सूची, आरक्षण-पत्र आ स्मृति कैं जोड़ैत अछि; कागज बाहर जाइतहि अर्थ बदलि सकबाक संकट।
63	मकाऊक दर्पण 11	मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख	समाचार-आघात फेर नाम कैं तथ्यसँ आगे दौड़बैत अछि; मूल वाक्य आ संसार द्वारा सुनेल रूपक बीच दूरी नापल जाइत अछि।
64	मकाऊक दर्पण 12	मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख	अदालत मुहरबन्द मूल, सार्वजनिक रूपान्तर आ आर्थिक दाबी कैं अलग पांतिमे राखैत अछि; प्रायश्चित सेहो प्रमाणक सीमा पार नहि क' सकैत।
65	मकाऊक दर्पण 13	मकाऊक दर्पण: संस्करण, मुहरबन्द पाठ आ आत्म-अभिलेख	अंकीय पुनर्परीक्षण नायकक डींग, आधा-सत्य आ भूमिका-विस्तारक हस्ताक्षर देखबैत अछि; “अपराध”क बदला महत्त्वाकांक्षा स्पष्ट सिद्ध होइत अछि।
66	भोज, देवता, अपमान 1	भोज, देवता, अपमान: प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा	जन्मदिन भोजक निमन्त्रण शक्ति, प्रतिष्ठा आ मंचीय दृश्यता कैं सामाजिक मुद्रा बनबैत अछि; आवाजक क्षणिक स्वामित्व बनाम वास्तविक अधिकार।
67	भोज, देवता, अपमान 2	भोज, देवता, अपमान: प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा	मृणालक “सावधान रह” पछाति नैतिक प्रतिध्वनि बनैत अछि; मित्र चेतबैत अछि, लोभ सुनैत रहैत अछि।
68	भोज, देवता,	भोज, देवता,	“विशेष पहुँच” पुरस्कार-जेकाँ

	अपमान 3	अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा	अनुभव होइत अछि; यात्रा-स्मृति वैध प्रवेश आ आत्म-कल्पित अधिकारक भेद खोलैत अछि।
69	भोज, देवता, अपमान 4	भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा	विधिक परामर्श, व्यावसायिक सन्देश आ अनुवादित सारांश अलग वर्ग मे राखि सहभागिताक आरोपक सीमा जाँचल जाइत अछि।
70	हवाला आ बिटकॉइन	भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा	हवाला आ बिटकॉइन शब्द स्वयं अपराध-सिद्धि नहि; प्रश्नचिह्न कैं समाचारक पूर्णविराम बनाबयक प्रक्रिया पर तीक्ष्ण आलोचना।
71	भोज, देवता, अपमान 6	भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा	समाचार शीर्षक, भोजक छवि आ वित्तीय शब्द मिलि सार्वजनिक नैतिक आतंक रचैत अछि; नायकक अपमानक उत्तर सेहो सीमाबद्ध रहबाक चाही।
72	भोज, देवता, अपमान 7	भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा	अदालत मूल अंश, सार्वजनिक शीर्षक, मंचीय सन्देश आ भाषिक त्रुटि एकठाम रखैत अछि; आत्म-स्वीकृति आ वस्तुगत उत्तरदायित्व अलग।
73	भोज, देवता, अपमान 8	भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक	पुरान उपकरणक पुनर्परीक्षण महत्त्वाकांक्षाक अंकीय अवशेष खोलैत अछि; स्मृति सँ अधिक कठोर “स्वयं द्वारा लिखल” साक्ष्य।

		कथा	
74	भोज, देवता, अपमान 9	भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा	करार, आयोजन, विक्रेता-पथ आ स्वामित्वक अभिलेख मंचीय प्रभाव कैं वास्तविक नियंत्रणसँ अलग करैत अछि।
75	भोज, देवता, अपमान 10	भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा	भुगतान-द्वार आ मध्यवर्ती खाताक बीच परिचित आद्याक्षर मित्रताक संकट जगबैत अछि; नाम कड़ी नहि।
76	जन्मदिनक मंच	भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा	जन्मदिनक मंचक सामाजिक शक्ति मकाऊक प्रणाली-प्रवेश संग मिलान होइत अछि; प्रतिष्ठा वास्तविक तकनीकी अधिकारक प्रमाण नहि।
77	भोज, देवता, अपमान 12	भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा	राघवक संग विधिक परामर्शक बाह्य समय-क्रम “गोपनीयता बनाम सहभागिता” प्रश्न कैं फेर सूक्ष्म करैत अछि।
78	भोज, देवता, अपमान 13	भोज, देवता, अपमानः प्रतिष्ठा, वित्तीय शब्द आ सार्वजनिक कथा	मूल टिप्पणी, बदलल सारांश आ प्रश्नचिह्नक विलयन विश्वासघातक अनुभूति कैं अभिलेख-समालोचना मे बदलैत अछि; अगिला खण्ड अनुपस्थिति पर केन्द्रित।
79	समझौताक दरार 1	समझौताक दरारः	“समझौताक दरार” उपलब्ध सामग्रीक बदला अपेक्षित किन्तु अनुपस्थित चिह्न पर नजर देत

		अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति	अछि; नकारात्मक साक्ष्यक विधि शुरू।
80	समझौताक दरार 2	समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति	अदालत पूछैत अछि—जे नहि भेटल, से भेटबाक योग्य छल कि नहि; अनुपस्थिति कँ यांत्रिक निर्दोषता/दोषक प्रमाण नहि मानल गेल।
81	समझौताक दरार 3	समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति	अंकीय प्रतिलिपि मे लाभकारी स्वामीक नाम न भेटब निष्कर्ष नहि; “रिक्त स्थान”क प्रमाण-मूल्य ओकर अभिलेखीय अपेक्षा पर निर्भर।
82	समझौता कएल एजेंसी	समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति	एजेंसी-समझौता स्वामित्व-नामक वैधानिक/व्यावसायिक अपेक्षा जाँचैत अछि; रिक्त कोष्ठक भरबाक पुरान प्रवृत्ति पर अंकुश।
83	समझौताक दरार 5	समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति	भुगतान-द्वार, मध्यवर्ती खाते, हवाला-सन्दर्भ आ मित्रताक सन्देशसभ मे अपेक्षित परिचालन चिह्न खोजल जाइत अछि; पथ न भेटल त’ कथा नहि गढ़ल जाए।
84	समझौताक दरार 6	समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति	व्यापक सर्वर-नियन्त्रण दाबी कँ अपेक्षित अंकीय चिह्नसँ जाँचल जाइत अछि; “विशेष पहुँच”क वास्तविक सीमा उघड़ैत अछि।
85	समझौताक दरार 7	समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति	विधिक परामर्शक बाहर स्वतंत्र व्यावसायिक/परिचालन चिह्न खोजि कथित साँठगाँठ जाँचल जाइत अछि; गोपनीयता कँ स्वतः अपराध न मानल गेल।
86	समझौताक	समझौताक	संस्थागत प्रतिरोध दबाओल गेल

	दरार 8	दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति	दाबी लेल आदेश, पुनःआवंटन, बैठक-नोंद, कारण-पत्र जेकाँ अपेक्षित चिह्नक खोज; अनुपस्थिति पर संयत निर्णय।
87	समझौताक दरार 9	समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति	मुहरबन्द सामग्रीसँ सार्वजनिक आरोप धरि पहुँचल कथित लीक कैं विशिष्ट स्रोत-चिह्नसँ जाँचल जाइत अछि; अनुमानक दायरा संकुचित।
88	दोसरा गामक जांचकर्ता	समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति	“दोसरा गामक जांचकर्ता” नव्य-न्याय कैं नायकक बचाव नहि, ओकर कर्मक विरुद्धो लागू करैत अछि; पद्धति आत्म-पक्षपात सँ स्वतंत्र होएबाक परीक्षा।
89	समझौताक दरार 11	समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति	समन, बयान आ अंकीय सामग्री मे “निर्णायक भूमिका” दाबी कैं अपेक्षित शक्ति-चिह्नसँ तौला जाइत अछि; डींग स्वयं साक्ष्य, अधिकार नहि।
90	समझौताक दरार 12	समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति	करार, विक्रेता-पथ आ लाभकारी स्वामित्वक शब्द-विकास जाँचि देखाओल जाइत अछि जे एक अस्पष्ट वाक्य अनेक कागज मे दोहराइ “सत्य” जेकाँ दिखि सकैत अछि।
91	समझौताक दरार 13	समझौताक दरार: अनुपस्थित अपेक्षित चिह्नक पद्धति	धनक पथ पर स्वतन्त्र निर्देश, लाभ, नियन्त्रण आ सम्बन्धक चिह्न खोजल जाइत अछि; अनुपलब्धि भारी आरोप घटबैत अछि, मुदा आधा-सत्य नहि मेटबैत।
92	दोस्ती सँ दुश्मनी	निर्णय: दू नव्य न्याय आ	“दोस्ती सँ दुश्मनी” निर्णय-खण्डक प्रवेश अछि; मित्रता न

		समान कसौटी	प्रमाण छोट करय, न नाम पैघ— एहि समान कसौटी पर संबंधक नैतिक सम्मान टिकल अछि।
93	दू नव्य न्याय 2	निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी	विधिक विशेषाधिकार मौनक वैध सीमा बनैत अछि; बाहरी स्वतंत्र चिह्न बिना गोपनीयताक भीतर अपराध अनुमान करब अनुचित।
94	दू नव्य न्याय 3	निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी	संस्थागत संस्करण-इतिहास पर ओही धार लगाओल जाइत अछि जे नायक पर; पद्धति अपन संस्थागत सहयोगीक पक्षो नहि लेत।
95	दू नव्य न्याय 4	निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी	सार्वजनिक आरोप चारि श्रेणी— स्थापित तथ्य, अनुमान, असमर्थित विस्तार, स्रोत-अनिर्णीत—मे वर्गीकृत; उपन्यासक आलोचनात्मक व्याकरण चरम स्पष्टता पबैत अछि।
96	मिथ्या आरोप	निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी	प्रतिपरीक्षा “मिथ्या आरोप”क अधिकार कैं सीमित करैत अछि; नायक अपन दोष स्वीकारैत अछि, मुदा प्रमाणहीन अतिरिक्त अपराध नहि।
97	दू नव्य न्याय 6	निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी	पूरक बयानमे अंकीय डींग आ वस्तुगत क्रियाक अन्तर जाँचल जाइत अछि; प्रायश्चितक नाम पर दोष बड़ा करब सेहो पद्धतिगत त्रुटि।
98	दू नव्य न्याय 7	निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी	करार, विक्रेता-पंजीकरण आ ग्राहक-पहिचान प्रपत्रक अलग प्रयोजन “स्वामी” शब्दक अर्थक अवच्छेदक तय करैत अछि।
99	नव्य-न्यायक	निर्णय: दू नव्य	अन्तिम वित्तीय वर्गीकरण मे मित्र

	अंतिम परीक्षा	न्याय आ समान कसौटी	मृणालक नाम पर सेहो समान कसौटी लागू; नव्य-न्यायक नैतिक परीक्षा पक्षपात-विरहित नियमपालन बनैत अछि।
100	अनुवादकक निर्णय	निर्णय: दू नव्य न्याय आ समान कसौटी	अदालतक निर्णय न पूर्ण निर्दोषता दैत अछि, न सर्वग्रासी दोष; न्याय सीमित सिद्धि, सीमित उत्तरदायित्व आ भाषा पर आत्म-अनुशासनक कठोर शान्ति रूपेँ समाप्त होइत अछि।

५. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

५.१ रस: भय, लज्जा, करुणा, शान्ति आ नैतिक जुगुप्सा

उपन्यास एकरस भावधारा पर नहि टिकैत। आरम्भक अद्भुत—दिल्ली, चीनी भाषा, लाल किला, मकाऊ—धीरे-धीरे भय आ लज्जा मे बदलैत अछि। गुंडाक फोन, समन, अंकीय जब्ती, मुहरबन्द संचिका आ समाचारक शीर्षक भयानक रसक परिस्थितियाँ बनबैत अछि, मुदा लेखक सनसनीक लागि भय नहि रचैत छथि। भयक काम नायकक अन्त:करणक छिपल चयन उघारब अछि। करुणा सेहो “बेचारा नायक” बनाबय लेल नहि; गरीबी, पारिवारिक जिम्मेदारी, अपमान आ सार्वजनिक गलत आरोप पाठक कैँ नायकक पक्ष मे भावनात्मक रूपेँ खींचैत अछि, फेर प्रमाणक कसौटी ओहि पक्षधरता कैँ रोकैत अछि। अन्तिम “कठोर शान्ति” शान्त रसक आधुनिक नैतिक रूप अछि—विजय नहि, सीमित सत्य स्वीकारब।

५.२ ध्वनि: शब्दक नीचे चलैत दोसर कथा

“विशेष पहुँच”, “मुख्य भाषिक संयोजक”, “स्वामी”, “साझेदार”, “कड़ी”, “ऊपर”, “समीक्षा” जेकाँ पदक अभिधा आ व्यंजना बीचक अन्तर पूरा रचनामे कार्य करैत अछि। पाठक बारम्बार देखैत अछि जे शब्दक सामान्य अर्थक नीचे शक्ति, प्रतिष्ठा, अपराध-संकेत, आत्म-प्रचार वा संस्थागत बचावक व्यंजना चलि रहल अछि। एहि कारण ध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिसँ उपन्यासक सौन्दर्य “कहलक की?” सँ बेसी “एहि प्रसंगमे ई शब्द की संकेत करैत अछि?” प्रश्नमे अछि।

५.३ वक्रोक्ति आ पुनरावृत्ति

लेखकक प्रमुख वक्रता रूपकात्मक श्रृंखलामे अछि—“केवाड़ी”, “दर्पण”, “छाया”, “दरार”, “मंच”, “परीक्षा”। ई मात्र सजावटी शीर्षक नहि। “केवाड़ी” भाषिक प्रवेशक रूपक; “दर्पण” एके तथ्यक अनेक संस्करण; “छाया” अपूर्ण संकेत; “दरार” कथित समग्र कथाक भीतर अनुपस्थित चिह्न; “मंच” सामाजिक प्रतिष्ठा; “परीक्षा” समान कसौटी। शीर्षक-शृंखला कथानकक विचारात्मक मानचित्र बनैत अछि।

५.४ औचित्य: नैतिक आ भाषिक मितव्ययिता

औचित्यक दृष्टिसँ उपन्यासक श्रेष्ठ अंश ओ अछि जतय कथाकार स्वयं अपराधक अंतिम निर्णय नहि सुनबैत, बल्कि उपलब्ध सामग्रीक सीमा पर रुकैत अछि। ई मितव्ययिता विषयक अनुकूल अछि। जँ रचना स्वयं सनसनीपूर्ण अपराध-उपन्यासक लय पकड़ि लैत, त’ ओकर “प्रमाण-सीमा”क प्रतिपाद्य टूटि जाइत। हँ, किछु मध्यवर्ती अध्यायमे आवर्ती सूत्र अत्यधिक स्पष्ट रूपेँ दोहरायल अछि; संपादकीय कसावटसँ ध्वनिक सूक्ष्मता आरो बढ़ि सकैत अछि।

६. पाश्चात्य कथाशास्त्रीय समीक्षा

६.१ त्रासदीक दोष नहि, क्रमिक नैतिक विचलन

अरस्तूीय [Poetics] दृष्टिसँ शशांकक पतन “एक महाभूल” पर आधारित नहि। ओकर त्रुटि क्रमिक अछि—अतिरिक्त पृष्ठ खोलब, मृणालसँ आंशिक बात कहब, भूमिका बढ़ा क’ कहब, विशेष पहुँचक लोभ, प्रसंगक आधा हिस्सा छोड़ब। एहि सूक्ष्म विचलनक संचय आधुनिक त्रासदीक ढाँचा बनबैत अछि। नायक न पूर्ण दुष्ट, न निष्कलंक; ओकर क्षमता—भाषिक सूक्ष्मता—ओकर दोषक साधन सेहो बनैत अछि।

६.२ बहुस्वरता आ सामाजिक भाषा

बाख्तिनीय [The Dialogic Imagination] दृष्टिसँ पोथी बहुभाषिक आ बहुस्वरात्मक अछि। मैथिली, हिन्दी, चीनी, कैंटनिज, विधिक भाषा, निगमीय करार, सरकारी टिप्पणी, समाचार शीर्षक, मित्रक चेतावनी, साधिकाक आध्यात्मिक वाक्य—सभ अलग सामाजिक भाषा अछि। उपन्यासक संघर्ष

व्यक्ति बनाम व्यक्ति कम, भाषा-प्रणाली बनाम भाषा-प्रणाली बेसी अछि। एके घटना “व्यापार”, “सुविधा”, “संदिग्ध भुगतान”, “आरोप”, “सिद्ध तथ्य” वा “समाचार” बनि सकैत अछि।

६.३ दृष्टिबिन्दु, समय आ पुनरागमन

जेनेटियन [Narrative Discourse] कसौटी पर कथानक प्रायः शशांक-केन्द्रित निकट दृष्टिबिन्दु राखैत अछि, मुदा अदालत आ अभिलेख ओकर स्मृति पर बाहरी नियंत्रण लगबैत अछि। अध्याय ८ जेकाँ भविष्यक अदालत सँ लाल किला दिस लौटाव समयक रैखिकता तोड़ैत अछि; एहि पूर्वाभास सँ पाठक जानि जाइत अछि जे आरम्भिक “छोट” भाषिक घटना बादमे साक्ष्य बनत। बारम्बार पुरान वाक्य, सन्देश, कागज वा दृश्य लौटब कथा मे “पुनर्पठन”क संरचना बनबैत अछि।

६.४ नैतिक आत्म-पहिचान

रिकरियन [Time and Narrative] दृष्टिसँ शशांकक पहिचान स्थिर सार नहि; ओ अपन जीवनक कथा कहि-कहि बनबैत अछि। समस्या तखन होइत अछि जखन आत्म-कथा तथ्य पर शासन करय लगैत अछि—कखनो “हम केवल अनुवादक”, कखनो “हम निर्णायक कड़ी”। अन्तिम नैतिक परिपक्वता अपन कथा कँ अभिलेखक सीमा अधीन करब अछि। एहि कारण अन्तिम निर्णय विधिक निर्णयक संग आत्म-कथात्मक पुनर्संयोजन सेहो अछि।

६.५ यथार्थवाद: दस्तावेजी वस्तु आ दैनिक विवरण

औएरबाखीय [Mimesis] अर्थमे उपन्यासक यथार्थवाद महाकाव्यात्मक घटना सँ नहि, साधारण वस्तु सँ बनैत अछि—बसक टिकट, चाहक गिलास, सस्ती कोठली, नव कलम, करारक पृष्ठ, समन, मुहर, सन्देश, प्रवेश-अभिलेख, पंखाक घुरघुराहट। एहि साधारण वस्तुक भीतर सामाजिक वर्ग, आकांक्षा, संस्था आ नैतिक भार बसल अछि। अन्तिम अदालतक साधारणता जानि-बुझि भव्य नाटकीयता कँ अस्वीकार करैत अछि।

७. नव्य-न्यायीय समीक्षा

७.१ प्रमाणक चारि आधार आ उपन्यास

न्यायपरम्परा प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द केँ ज्ञानक प्रमुख साधन मानैत अछि; गंगेशक [तत्त्वचिन्तामणि] एहि साधनसभक परिभाषा, सीमा आ दोष पर असाधारण सूक्ष्मता विकसित करैत अछि। “अनुवादक” एहि दार्शनिक विरासत केँ शाब्दिक पाठ नहि बनबैत, बल्कि कथात्मक अनुशासन रूपेँ उपयोग करैत अछि। प्रत्यक्ष—शशांक की देखलक; अनुमान—देखल सामग्री सँ की युक्तिसंगत निकलैत अछि; शब्द—ककर कथन विश्वसनीय अछि; उपमान—पुरान संरचना सँ समानता कतेक दूर उपयोगी; एहि चारू प्रश्नक साथ कथा निरन्तर चलैत अछि।

७.२ प्रत्यक्ष: देखल बातक मर्यादा

पहिल मकाऊ पटलसँ अन्तिम अंकीय पुनर्परीक्षण धरि “देखल”क अर्थ सरल नहि। पटल खुलल, मुदा डेटा वास्तविक छल कि प्रदर्शन? प्रवेश मिलल, मुदा पढ़बाक अधिकार कतेक? छवि मे मंच पर उपस्थिति अछि, मुदा स्वामित्व? प्रत्यक्षक साहित्यिक उपयोग एहि तरहें अछि जे दृश्य आकर्षक संकेत दैत अछि, पर दृश्य स्वयं पूर्ण सम्बन्ध नहि बतबैत।

७.३ अनुमान आ व्याप्तिक संकट

“जटिल भुगतान = अपराध”, “विदेश यात्रा = नियंत्रण”, “एके आद्याक्षर = एके व्यक्ति”, “गोपनीय विधिक बैठक = साँठगाँठ”, “समाचारमे नाम = दोष” — ई सभ अधूरी व्याप्ति पर आधारित सम्भावित अनुमान अछि। उपन्यास बारम्बार समानता, सह-अवस्थिति आ कारण-सम्बन्ध केँ अलग करैत अछि। एतय नव्य-न्यायक महत्त्व ई जे अनुमानक वैधता केवल आकर्षक कथा पर नहि, हेतुक साध्यसँ नियत सम्बन्ध पर निर्भर।

७.४ शब्द-प्रमाण: वक्ता, प्रसंग आ विश्वसनीयता

अनुवादक स्वयं शब्द-प्रमाणक मध्यस्थ अछि। शिक्षकक सावधानी, मृणालक चेतावनी, राघवक विधिक सीमा, जुलियानाक आध्यात्मिक पाठ, आदित्यक जाँच-पद्धति—ई विश्वसनीयता अलग-अलग प्रकारक अछि। समाचारक शीर्षक, अज्ञात सन्देश, निगमीय आत्म-प्रचार, शशांकक डींग—ई कथन सेहो अछि, मुदा समान प्रमाण-मूल्य नहि। पोथी शब्दक “अर्थ” संग शब्ददाताक “अधिकार” आ “विश्वसनीयता” केँ जोड़ैत अछि।

७.५ उपमान: समानता संकेत, सिद्धि नहि

नोएडाक भुगतान-ढाँचा मकाऊक कागज जेकाँ लगैत अछि; एके शब्द अनेक करारमे अबैत अछि; समान ईमेल क्षेत्र वा परिचित नाम पुन: देखाइत अछि। उपन्यास बारम्बार चेतबैत अछि जे उपमान नवल प्रश्न खोलि सकैत अछि, मुदा स्वतंत्र प्रमाणक स्थान नहि लय। एहि पाठक कारण रचना “पैटर्न पहचान”क आधुनिक आकर्षण पर दार्शनिक रोक लगबैत अछि।

७.६ अनुपस्थित अपेक्षित चिह्न: नव्य-न्यायीय नकारात्मक परीक्षण

अन्तिम खण्डमे “जे नहि भेटल”क विशेष महत्त्व अछि। मुदा एकरा स्वतन्त्र प्रमाण-साधन कहि न्यायपरम्पराक सिद्धान्त कैं सरलीकृत करब उचित नहि। उपन्यासमे ई अधिक उपयुक्त रूपैं नकारात्मक परीक्षण अछि: जँ कथित व्यापक सर्वर-नियन्त्रण सच होइत, त’ प्रवेश-अभिलेख, संशोधन-इतिहास, आदेश वा स्वतंत्र परिचालन चिह्नक किछु अपेक्षा होयत; जँ साँठगाँठ सच होइत, त’ विधिक गोपनीयताक बाहर किछु व्यावसायिक संकेत अपेक्षित; जँ संस्थागत प्रतिरोध कुचलल गेल, त’ आदेश, पुन:आवंटन वा कारण-पत्रक अपेक्षा। अनुपस्थिति तखने वजन पबैत अछि जखन उपस्थितिक उचित अपेक्षा पहिने सिद्ध हो। ई अत्यन्त परिपक्व ज्ञानमीमांसात्मक बिन्दु अछि।

७.७ “दू नव्य न्याय”

अन्तिम शीर्षक-शृंखला “दू नव्य न्याय” उपन्यासक आत्मालोचनात्मक आविष्कार अछि। पहिल नव्य-न्याय शशांकक चतुर विश्लेषण—जे शब्द बड़ा-छोट क’ लाभ लेब जानैत अछि। दोसर नव्य-न्याय नियमक समरूपता—जे अपन, मित्र, संस्था, वकील, समाचार-माध्यम आ अभियोग सभ पर एके कसौटी लगबैत अछि। ज्ञानक तकनीक नैतिक न्याय तबे बनैत अछि जखन पद्धति पक्ष बदलला पर नियम नहि बदलय।

८. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सँ पठन

एहि पद्धतिमे पोथीक इतिहास “एक रेखा” नहि, पाँच समानान्तर रेखा अछि। (१) मिथिला—गंगेश, नव्य-न्याय, शिक्षित किन्तु सीमित आर्थिक अवसरवला युवक; (२) दिल्ली–नोएडा—प्रवासन, भाषा-बाजार, निगमीय श्रम, विधिक कार्यालय, सरकारी जाँच; (३) चीन–कैंटन–मकाऊ—भाषा, व्यापार,

तकनीकी भुगतान आ प्रतिष्ठाक वैश्विक नेटवर्क; (४) संस्थागत भारत—आयुक्तालय, कर-गुप्तचर शाखा, अदालत, संस्करण, मुहरबन्द सामग्री; (५) व्यक्तिगत इतिहास—गरीबी, परिवार, मित्रता, लोभ, अपमान, प्रायश्चित। उपन्यासक शक्ति एहि रेखासभ कैँ तुरन्त एक कारण-श्रृंखला नहि मानबामे अछि।

मिथिलाक दार्शनिक परम्परा एतय संग्रहालयीय गौरव नहि; दिल्लीक व्यवहारिक संसारमे परीक्षित जीवित विधि अछि। तथापि उपन्यास परम्परा कैँ रोमानीकरण सेहो नहि करैत। शशांक नव्य-न्याय पढ़ने अछि, तइयो लोभ, चयनित मौन आ आत्म-प्रचार करैत अछि। ज्ञान नैतिकता कैँ स्वचालित नहि बनबैत; पद्धति कैँ जीवनमे समान रूपेँ लागू करब पड़ैत अछि। एहि बिन्दु पर “विदेह” दृष्टि इतिहासक गौरव आ वर्तमानक विडम्बना दुनू कैँ एक संग देखैत अछि।

समानान्तर इतिहासक दोसर लाभ भारत–चीन सम्बन्ध कैँ राष्ट्रवादी सरलता सँ बचेनाइ अछि। चीनी व्यक्ति सभ एकरूप शक्ति नहि; शिक्षक, पर्यटक, तकनीकी कर्मचारी, प्रतिनिधि, विक्रेता—अलग भूमिका अछि। भारतीय संस्था सेहो एकरूप नहि; निचला अधिकारी, ऊपरी सारांश, वकील, जाँचकर्ता, न्यायाधीश, समाचार-माध्यम—सभ अलग। एहि बहु-स्तरीयता सँ उपन्यास “विदेशी जाल बनाम भारतीय निर्दोषता” जेकाँ सरल कथा कैँ अस्वीकार करैत अछि।

९. चरित्र-समीक्षा

९.१ शशांक झा: सूक्ष्मबुद्धि, भूख, गर्व आ आत्म-सीमा

शशांकक चरित्रक सबसँ महत्वपूर्ण विशेषता ई जे ओकर गुण आ दोष एकहि स्रोतसँ अबैत अछि। ओ सूक्ष्म भेद देखैत अछि; एहि कारण उत्कृष्ट अनुवादक बनैत अछि। ओ सूक्ष्म भेद कैँ अपन पक्षमे मोड़ि सकैत अछि; एहि कारण नैतिक संकटमे पड़ैत अछि। ओ गरीबीसँ निकलय चाहैत अछि—ई मानवीय; ओ सम्मान चाहैत अछि—ई सेहो स्वाभाविक; मुदा “हम आवश्यक छी”क सुख धीरे-धीरे साक्ष्यसँ पैघ आत्म-छवि बनबैत अछि। अन्तमे ओकर मुक्ति निर्दोष घोषित होएब नहि, बल्कि अपन दोषक सही आकार स्वीकारब अछि।

९.२ मृणाल कर्ण: मित्र नहि, सममित कसौटी

मृणालक साहित्यिक महत्त्व सहायक मित्र होएबासँ अधिक अछि। ओ आरम्भे “आरोप अलग, शंका अलग, प्रमाण अलग” कहैत अछि; अन्तमे ओकर अपन नाम जाँचमे आएत तखन ओहि सूत्रक परीक्षा होइत अछि। यदि शशांक मित्रताक कारण नियम बदलैत, पूरा उपन्यास टूटि जाइत। मृणालक कठोरता मित्रताक उच्च रूप बनैत अछि—मित्र कँ प्रमाणक बाहर न बचाउ, न प्रमाण बिना दोषी मानू।

९.३ जुलियाना: पकड़बासँ स्थान देबाक पाठ

जुलियाना कथानकक आध्यात्मिक प्रतिपक्ष छथि। नव्य-न्याय विश्लेषण, विभाजन आ परिभाषा सिखबैत अछि; जुलियाना श्वास, विराम, सुनब आ स्थान देब सिखबैत छथि। ई विरोध नहि, पूरकता अछि। अनुवादकक दोष कखनो अत्यधिक पकड़ब—अर्थ पर स्वामित्व—होइत अछि; जुलियानाक पाठ अर्थ कँ स्थान देबाक नैतिकता सिखबैत अछि।

९.४ राघव भसीन: विधिक सीमा आ पेशागत मौन

राघवक चरित्र उपन्यासक गोपनीयता-विमर्श कँ संतुलन दैत अछि। विधिक विशेषाधिकार न अपराधक पर्दा मानल गेल, न पवित्र अछूत क्षेत्र। विषय-वस्तुक गोपनीयता बचैत अछि, मुदा बाहरी समय-क्रम, भूमिका आ स्वतंत्र व्यावसायिक चिह्न जाँचक योग्य रहैत अछि। ई सूक्ष्मता रचनाक विधिक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

९.५ आदित्य मिश्र आ दोसरा गामक जांचकर्ता: संस्थागत विवेक

आदित्य कथा मे केवल “अधिकारी” नहि; वर्गीकरणक अनुशासन अछि। “दोसरा गामक जांचकर्ता” एहि अनुशासन कँ आरो आत्मालोचनात्मक बनबैत अछि—ओ नायकक दार्शनिक भाषा कँ नायकक विरुद्ध लागू करबाक प्रस्ताव करैत अछि। एहि बिन्दु पर संस्था व्यक्ति-सुधारक बनैत अछि, मुदा उपन्यास संस्था कँ निर्दोष सेहो नहि मानैत; बदलल सारांश, प्राथमिकता-ह्रास आ संस्करण-भेद ओकर आलोचना करैत अछि।

१०. भाषा, शैली आ कथन-तकनीक

गद्यक प्रधान गुण अवधारणात्मक स्पष्टता आ दृश्यात्मक साधारणता अछि। छोट वस्तु—कलम, चाह, कागज, मुहर, चलदूरभाष, प्रवेश-संकेत—दर्शनक भारी अवधारणा सँ जोड़ल गेल अछि। एहि सँ नव्य-न्याय कथानक पर आरोपित शास्त्रीय सजावट नहि लगैत; दैनिक क्रियामे प्रवेश करैत अछि। लेखक बारम्बार सूत्र-वाक्य प्रयोग करैत छथि। ई स्मरणीयता दैत अछि, पर किछु अध्यायमे प्रत्येक अन्त पर अगिला अध्यायक प्रश्न घोषित करबाक ढाँचा अधिक आवर्ती होइत अछि। शोधात्मक पाठक लेल ई संरचनात्मक स्पष्टता लाभकारी, किन्तु शुद्ध साहित्यिक कसावट लेल चयनित पुनरावृत्ति घटाओल जा सकैत अछि।

संवादसभ प्रायः कार्यात्मक अछि—प्रश्न, सीमा, प्रतिप्रश्न, वर्गीकरण। एहि कारण कथा भावुक विस्तारक बदला नैतिक-विवेचनक लय रखैत अछि। मृणाल, जुलियाना, राघव, आदित्यक स्वर अलग अछि: मृणाल लोक-व्यावहारिक; जुलियाना विरामप्रधान; राघव विधिक; आदित्य वर्गीकरणप्रधान। एहि स्वर-भेद सँ बहुस्वरता बनैत अछि।

११. शुद्ध मैथिली निखार-अंकेक्षण

समग्र रूपेँ पोथीक मैथिली सक्षम, प्रवाहपूर्ण आ अवधारणात्मक अछि। “केवाड़ी”, “कोठली”, “चाह”, “पानि”, “बिलायल”, “अएना”, “पित्तरि” जेकाँ मैथिली रूप पर्याप्त रूपेँ प्रयुक्त अछि। तथापि प्रकाशन-पूर्व निखार लेल नीचाँक बिन्दु आवश्यक अछि।

क्षेत्र	देखल प्रवृत्ति	संपादकीय निर्णय	कारण
रोमन/अंगरेजी पद	स्रोत-पाठमे तकनीकी पद जेना [vendor], [wallet], [payment gateway], [review], [owner], [beneficial ownership], [access], [server]	मुख्य मैथिली पद पहिने; आवश्यक मूल पद तुरन्त ब्रैकेटमे। उदाहरण: विक्रेता [vendor], अंकीय पर्स [wallet], भुगतान-द्वार	पाठकक प्रवाह, शब्दावलीक एकरूपता आ उपयोगकर्ताक निर्देश—रोमन/अंगरेजी केवल ब्रैकेटमे—पूरा होएत।

	आदि अनेक ठाम रोमन रूपमे अछि।	[payment gateway]।	
शीर्षक	“वीवो” आ “जुआ अनुप्रयोगक विक्रेता” जेकाँ शीर्षक देवनागरीमे एकरूप कएल जा सकैत अछि; मूल ब्रान्ड/तकनीकी रूप ब्रैकेटमे।	“वीवोक गेट [VIVO]”, “जुआ अनुप्रयोगक विक्रेता [vendor]” जेकाँ रूप।	अनुक्रमणिका आ मुख्य पाठक भाषिक नीति एकरूप।
“हर”	स्वतंत्र “हर” दू प्रसंगमे भेटैत अछि।	“सभ बेर” अथवा प्रसंगानुसार “सभ प्रकारक/प्रत्येक” क मैथिली विकल्प।	स्थापित मैथिली शैली-नीतिक संगति।
चाह	“चाह” व्यापक रूपेँ अछि; निखारमे एहि रूप केँ एकरूप राखब।	यदि कोनो संपादकीय स्तर पर “चाय” वा भिन्न रूप आबय, “चाह” करू।	आन्तरिक शब्द-संगति।
व्याकरणिक मानव/अमानव भेद	“छथि” पात्र/व्यक्ति लेल उपयुक्त; निर्जीव वस्तु लेल “अछि/छै/छी” नीति निरन्तर जाँचल जाउ।	अन्तिम यांत्रिक खोजक बाद प्रसंग-पठन द्वारा मात्र सुधार।	अंध यांत्रिक प्रतिस्थापनसँ अर्थ बिगड़ि सकैत अछि।
भविष्य/	“देत” आ	“देत” भविष्य,	काल-अर्थक

प्रगतिशील रूप	“दैत” दुनू अछि; प्रयोग प्रसंगानुसार भविष्य बनाम नियमित/प्रगति शील [habitual/progressive] भेदसँ जाँचल जाउ।	“दैत” नियमित/प्रगति शील अर्थमे।	शुद्धता।
विराम-चिह्न	मूल पाठमे कतहु पूर्णविरामक रूप, उद्धरण-चिह्न आ अपोस्ट्रोफ [apostrophe]- जेकाँ चिह्न मिश्रित अछि।	एक प्रकाशकीय नीति— देवनागरी वाक्य-समाप्ति, एकरूप उद्धरण-चिह्न, अनावश्यक रोमन अपोस्ट्रोफ [apostrophe] हटाउ।	दृश्य स्वच्छता आ शोध-संस्करणक स्तर।
शब्द-संयोजन	किछु यौगिक पदमे अन्तराल [space]/संयोजन बदलैत अछि— जेना भाषिक तकनीकी पद।	शब्दावली-सूची बनाक’ एकरूप रूप अपनाउ।	दीर्घ उपन्यासमे संकल्पनात्मक शब्दक स्थायित्व आवश्यक।

निखारक विशेष गुण ई अछि जे स्रोत-पाठमे उपयोगकर्ताक पसन्दक अनेक मैथिली रूप पहिनेसँ दृढ़ अछि: “केवाड़ी”, “कोठली”, “चाह”, “पानि”, “बिलायल”, “अएना”, “पित्तरि” आदि। तें अंतिम संपादनक लक्ष्य भाषा बदलनाइ नहि, विरल असंगतिसभ हटेनाइ हेबाक चाही।

१२. तथ्य, कल्पना आ हैलीसुनेशन-विरोधी पाठ-पद्धति

उपन्यास स्वयं तथ्य-विवेकक कथा अछि; तें आलोचना लेल सेहो ओही अनुशासन आवश्यक अछि। एहि समीक्षामे रचनाक भीतर स्पष्ट कथानक-वस्तु

कैं “पाठ-तथ्य” मानल गेल अछि; वास्तविक संसारमे कोनो कम्पनी, व्यक्ति, वित्तीय नेटवर्क वा संस्थाक दोष/निर्दोषता एहि साहित्यिक पाठसँ सिद्ध मानल नहि गेल। “वीवो”, मकाऊ, हवाला, बिटकॉइन, भुगतान-द्वार, कर-गुप्तचर, विधिक विशेषाधिकार जेकाँ पद कथानकक वस्तु अछि; आलोचना हुनक साहित्यिक आ ज्ञानमीमांसात्मक कार्य पर केन्द्रित अछि। एहि भेदक कारण समीक्षा उपन्यासक संकेत कैं बाहरी ऐतिहासिक अभियोगमे परिवर्तित नहि करैत।

१३. रचनाक प्रमुख उपलब्धि

नव्य-न्याय कैं मृत शास्त्रीय विरासत नहि, आधुनिक भाषा, कानून, अंकीय अभिलेख आ संस्थागत जाँचक जीवित पद्धति रूपेँ कथा मे उतारब।

अनुवादकक पेशा कैं केवल द्विभाषिक कौशल नहि, नैतिक शक्ति-संबंध रूपेँ देखब—ककर अर्थ कतेक बड़ा/छोट कएल जाए, ई राजनीतिक प्रश्न बनैत अछि।

अपराध-कथा जेकाँ सामग्री होइतहुँ सनसनीक बदला प्रमाणक श्रेणीकरण पर बल देब।

मित्रता कैं भावुक निष्ठा नहि, समान कसौटीक परीक्षा बनाबयब।

समाचार-माध्यम, सरकारी सारांश, मुहरबन्द सामग्री, विधिक परामर्श, निगमीय करार आ निजी सन्देश—सभकैं अलग भाषिक विधा मानि हुनक प्रमाण-मूल्य अलग राखब।

अन्तिम निर्णयमे पूर्ण निर्दोषता वा पूर्ण अपराधक सरल समाधान अस्वीकार करब; सीमित सिद्धि, सीमित दोष, सीमित मौन स्वीकारब।

१४. रचनाक सुधार-क्षेत्र

पहिल सुधार-क्षेत्र आवर्ती अध्याय-अन्त अछि। अनेक अध्याय अगिला अध्यायक प्रश्न स्पष्ट क’ समाप्त होइत अछि—ई धारावाहिक पठनमे उपयोगी, पर १०० अध्यायक एकमुष्ट पोथीमे यांत्रिकता उत्पन्न करैत अछि। किछु संक्रमण कैं मौन, दृश्य वा चरित्र-क्रिया पर समाप्त कएल जाए त’ ध्वनि बढ़त। दोसर, दार्शनिक सूत्र कतहु-कतहु पात्रक स्वाभाविक अनुभूति सँ अधिक “स्पष्ट निष्कर्ष” रूपेँ अबैत अछि। चुनिन्दा ठाम सूत्र घटा दृश्य कैं अर्थ वहन

करय देब उपन्यासक साहित्यिक घनत्व बढ़ाओत। तेसर, तकनीकी अंगरेजी पदक मैथिलीकरण आ ब्रैकेट-नीति एकरूप कएल जाए। चारिम, संस्थागत पात्रसभमे किछु अतिरिक्त व्यक्तिगत विशेषता द' देल जाए त' अदालती/जाँच खण्डक मानवीय बहुलता आरो गहिर होएत।

१५. समेकित साहित्यिक निर्णय

"अनुवादक" कैं केवल अपराध, चीन-सम्बद्ध व्यापार वा विदेशस्थ [offshore] वित्तीय छायाक उपन्यास कहब ओकर साहित्यिक आकार छोट करब होयत। एकर केन्द्र "ज्ञानक नैतिकता" अछि। शशांकक यात्रा मिथिला सँ दिल्ली, दिल्ली सँ मकाऊ, मकाऊ सँ अदालत आ अदालत सँ आत्म-निर्णय धरि चलैत अछि; मुदा वास्तविक यात्रा "हम बुझैत छी" सँ "हम एतबे सिद्ध कहि सकैत छी" धरि अछि। एहि परिवर्तनमे नव्य-न्याय दर्शन कथानकक विषय मात्र नहि, कथानकक व्याकरण बनैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ रचनाक ध्वनि शब्दक नीचे चलैत शक्ति, लज्जा, लोभ आ औचित्यक कथा अछि। पाश्चात्य कथाशास्त्रक दृष्टिसँ ई बहुस्वर, दस्तावेजी यथार्थवाद आ नैतिक आत्म-पहिचानक उपन्यास अछि। नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ ई प्रमाणक वर्गीकरण, अनुमानक मर्यादा, शब्ददाताक विश्वसनीयता, उपमानक सीमा आ अपेक्षित चिह्नक अनुपस्थिति पर आधारित आधुनिक ज्ञानमीमांसात्मक आख्यान अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ देखला पर मिथिला, दिल्ली, नोएडा, मकाऊ, निगम, राज्य, अदालत आ व्यक्तिगत स्मृति एकहि समयमे चलैत इतिहासक अलग रेखा अछि—जतय छेदन प्रमाणित कएल जएबाक चाही, कल्पित नहि।

रचनाक अन्तिम महत्त्व एहि वाक्य मे समेटल जा सकैत अछि: न्याय तखन शुरू होइत अछि जखन शब्द अपन पक्षक सेवक होएब छोड़ि अपन प्रमाणित सीमाक सेवक बनैत अछि। "अनुवादक" एहि सीमा-अनुशासन कैं कथा, दर्शन आ नैतिक अनुभवक स्तर पर एक संग स्थापित करैत अछि।

१६. निष्कर्ष

समग्र १०० अध्यायक पठनसँ स्पष्ट अछि जे "अनुवादक"क स्थापत्य आकस्मिक घटनाक ढेर नहि। प्रत्येक प्रमुख श्रृंखला—मिथिलासँ दिल्ली,

भाषाक साधना, कॉन्ट्रैक्ट आ छाया, कैंटनिजक केवाड़ी, मकाऊक दर्पण, भोज–देवता–अपमान, समझौताक दरार, दू नव्य न्याय—एक नवल ज्ञानमीमांसात्मक समस्या जोड़ैत अछि। प्रारम्भमे प्रश्न “अर्थ की?”; मध्यभागमे “कथनक स्रोत की?”; तकर बाद “सम्बन्ध कतेक सिद्ध?”; अन्तमे “जे नहि भेटल, से कतेक महत्त्वपूर्ण?” आ “की हम अपन प्रिय/अपन विरोधी दुनू पर एके नियम लगा सकैत छी?” एहि क्रमिक विस्तारक कारण उपन्यासक बौद्धिक संरचना संगत अछि।

भाषिक स्तर पर पोथी मैथिली गद्यक आधुनिक विषय-विस्तारक उदाहरण अछि—निगम, अंकीय अभिलेख, विधिक विशेषाधिकार, भुगतान, सर्वर, स्वामित्व, समाचार-रूपान्तर, न्यायिक प्रतिपरीक्षा जेकाँ आधुनिक क्षेत्र कैं मैथिली वाक्य-संरचनामे वहन करब संभव बनबैत अछि। अंतिम निखारमे रोमन तकनीकी पदकैं ब्रैकेटमे सीमित करब, विरल “हर” कैं मैथिली विकल्पसँ बदलब, काल-रूप आ विराम-चिह्नक एकरूपता जाँचब, आ आवर्ती सूत्रक चयनित संक्षेप रचनाकैं शोधात्मक आ साहित्यिक दुनू स्तर पर आरो दृढ़ बनाओत।

बिबलियोग्राफी

नीचाँ केवल पोथीक नाम देल जा रहल अछि; कोनो वेबसाइट, लेख वा जाल-स्रोत सम्मिलित नहि अछि।

अनुवादक

तत्त्वचिन्तामणि

न्यायसूत्र

ध्वन्यालोक

वक्रोक्तिजीवित

काव्यप्रकाश

नाट्यशास्त्र

औचित्यविचारचर्चा

[Poetics]

[Mimesis]

[The Dialogic Imagination]

[Narrative Discourse]

[Time and Narrative]

[Epistemology in Classical India]

[The Lost Age of Reason]

द्वितीय खण्ड

कथा, लघुकथा आ कथा-समालोचना

आलेख ०९ · कथा, लघुकथा आ कथा-समालोचना

शुभ कथा संसार

सारांश

'शुभ कथा संसार' डॉ. शुभ कुमार वर्णवाल जीक अमूल्य मैथिली कथा संग्रह अछि।

बीजशब्द

शुभ कथा संसार ·मैथिली कथा ·लघुकथा ·पाठाधारित समीक्षा ·कथन-शिल्प

शुभ कथा संसार

'शुभ कथा संसार' डॉ. शुभ कुमार वर्णवाल जीक अमूल्य मैथिली कथा संग्रह अछि। एकर भाषा नितान्त सरल, मधुर आ सजीव अछि, आ अइ तरहक भाषाक माध्यमसँ जखन कोनो समाजक सुख-दुख, संघर्ष आ संस्कृतिक चित्रण होइत अछि, तँ ओ साहित्य विशिष्ट बनि जाइत अछि। 'शुभ कथा संसार' मैथिली भाषाक एहनै एकटा विरासत छी, जाहिमे मिथिलाक माटिक सुगन्ध, एतुक्का लोकजीवनक रंग, आ संस्कृतिक विविधता कलात्मक ढंगसँ प्रस्तुत कएल गेल अछि।

डॉ. शुभ कुमार वर्णवाल जीक कृतित्व मैथिली साहित्यक लेल एकटा प्रेरणास्रोत छी। भौगोलिक विषयक विशेषज्ञता, शोधक दृष्टि, आ साहित्यिक संवेदनाक समन्वय सँ बनल हुनकर कथासभ पाठककेँ अंतर्मन धरि प्रभावित करैत अछि। ऐ पोथीमे संकलित कथा- चाहे ओ 'सरस्वतीक वरदान' जकर पौराणिक आस्था हो, 'जुगबा' जकर ग्रामीण पीड़ा हो, 'शहीदक पत्नी' जकर करुण आत्मबल हो, अथवा 'प्रकृतिक रौद्र रूप' जकर भयानक यथार्थ- सब मिलि क' मैथिली कथा-परम्पराक समृद्ध परम्पराकेँ आगाँ लऽ जाइत अछि।

लेखकक कथा-यात्रा आधुनिक मैथिली साहित्यक अनेक आयामकेँ स्पर्श करैत अछि। हुनकर भाषा सरल आ सजीव अछि, चरित्र-चित्रण अत्यन्त जीवन्त अछि, आ परिवेशक चित्रण करबामे हुनकर सूक्ष्म दृष्टि बहुत प्रभावशाली अछि। एहि कथा-संग्रहमे मिथिलाक सांस्कृतिक पहिचानकेँ मात्र नहि, बल्कि समकालीन समस्या सभक सूक्ष्म विश्लेषण सेहो भेटैत अछि। एहन समयमे, जखन साहित्य आ संस्कृति बदलैत प्रवाहमे

अछि, तखन मैथिली भाषा आ संस्कृतिक उत्थान लेल एहन कथा-संग्रहक विशेष महत्त्व अछि। 'शुभ कथा संसार' मात्र कथा-संग्रह नै,वरन् मैथिली जीवन-दर्शनक एकटा दर्पण छी।

मैथिली साहित्य जगतमे ऐ संग्रहक स्वागत हएत, हुनकर पाठकगणक मोनमे एकटा गहींर सन्देश आ स्मृति स्थापित करत।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक, विदेह [प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका]
www.videha.co.in

आलेख १० · कथा, लघुकथा आ कथा-समालोचना

कथा-त्रिधारा : खण्ड १

सारांश

एहि अध्ययनक आधार कथा-त्रिधारा : खण्ड-१क सम्पूर्ण एक सय कथा अछि। अध्ययनक मूल प्रतिपाद्य ई अछि जे संग्रह निजी स्मृति आ घरेलू वस्तुक सूक्ष्म जगत सँ आरम्भ भऽ सामुदायिक हिंसा, अफवाह, सार्वजनिक नैतिकता, प्रशासनिक अभिलेख, श्रम-अधिकार, पर्यावरण आ नागरिक पहचान धरि क्रमशः विस्तार करैत अछि। एहि विस्तारक भीतर एक गहीर संरचनात्मक परिवर्तन देखाइत अछि: आरम्भिक कथासभ बारम्बार ई देखबैत अछि जे लिखल शब्द जीयल स्मृतिक पूर्ण विकल्प नहि बनि सकैत, जखनकि अन्तिम कथासभमे सही नाम, नाप, सूची, पावती, नक्शा आ हस्ताक्षर अधिकार बचेनिहार आवश्यक साक्ष्य बनैत अछि। अतः संग्रहक केन्द्र केवल “लोकजीवनक चित्रण” नहि, बल्कि अनुभव कँ सत्य, स्मृति, अभिलेख आ न्यायमे कोना रूपान्तरित कएल जाइत अछि—एहि प्रश्नक कथा-परम्परा अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ करुण, हास्य, शान्त आ वीर भावक विविध संयोजन, ध्वनि द्वारा अनकहल अर्थ, वक्रोक्ति द्वारा उलटाव, आ औचित्य द्वारा संयत अन्त कथा-रचनाक मुख्य गुण बनैत अछि। पाश्चात्य कथाशास्त्रीय पाठमे निकट दृष्टिबिन्दु, अविश्वसनीय अथवा आत्ममुग्ध वाचक, पुनरावृत्ति, लघु प्रत्यभिज्ञान, वस्तु-प्रतीक, सामाजिक बहुध्वन्यता आ दैनन्दिन यथार्थक प्रतिष्ठा विशेष रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि। नव्य-न्यायीय परीक्षण प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द-प्रमाण, संशय, बाधक साक्ष्य, सन्दर्भ-सीमा आ पदक स्पष्ट अवच्छेदनक आधारपर कथा ३, १६, ३४, ४३, ४९, ५८, ५९, ६९, ७७ तथा ८४–१००क विशेष अर्थ खोलैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति मुख्यधाराक सार्वजनिक आख्यानक समानान्तर घर, गाम, स्त्री-श्रम, खेत, जंगल, नदी, बस्ती, मजदूर, विद्यालय आ छोट अभिलेखक इतिहास पढ़ैत अछि। सम्पूर्ण कथा-दर-कथा समीक्षा देखबैत अछि जे एहि संग्रहक सर्वाधिक विशिष्ट शिल्प एक छोट वस्तु अथवा प्रशासनिक चिह्न कँ ज्ञानक केन्द्र बनायब अछि—घंटी, शीशा, कटोरी, कंघी, ढोल, लालटेन, सीटी, बाट, रजिस्टर, पावती, कार्ड, नक्शा,

फोटो आ हस्ताक्षर। भाषा-अंकेक्षणमे कथा-पाठक मूल देवनागरी प्रवाह अत्यन्त सघन अछि; मुख्य कथा-शरीरमे रोमन अक्षर नहि भेटल। तथापि घोषित शुद्ध मैथिली शैलीक दृष्टिसँ पानी, अंगूठा, गायब, दरवाजा, बरामदा, पीतल, चाय आ कमरा सन रूपक उल्लेखनीय आवृत्ति भेटैत अछि, जाहि लेल क्रमशः पानि, औंठा, बिलायल, केवाड़ी, ओसारा, पित्तरि, चाह आ कोठली सन रूपक सुसंगत सम्पादकीय प्रयोग अनुशंसित अछि। अनुक्रमक कथा ३९क शीर्षक आ वास्तविक कथा-शीर्षक बीच पाठभेद सेहो सुधारयोग्य अछि।

बीजशब्द

कथा-त्रिधारा : खण्ड १ ·मैथिली कथा ·लघुकथा ·पाठाधारित समीक्षा ·कथन-शिल्प

१.१४. गजेन्द्र ठाकुर- कथा-त्रिधारा : खण्ड-१ [कथा ००१–१००क समग्र साहित्यिक आ ज्ञानमीमांसात्मक समीक्षा]- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

कथा-त्रिधारा : खण्ड-१

कथा ००१–१००क समग्र साहित्यिक आ ज्ञानमीमांसात्मक समीक्षा

भारतीय काव्यशास्त्र · पाश्चात्य कथाशास्त्र · नव्य-न्याय · विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

मूल कथा-संग्रह : गजेन्द्र ठाकुर

समग्र शोध-समीक्षा

सारांश

एहि अध्ययनक आधार कथा-त्रिधारा : खण्ड-१क सम्पूर्ण एक सय कथा अछि। अध्ययनक मूल प्रतिपाद्य ई अछि जे संग्रह निजी स्मृति आ घरेलू वस्तुक सूक्ष्म जगत सँ आरम्भ भऽ सामुदायिक हिंसा, अफवाह, सार्वजनिक नैतिकता, प्रशासनिक अभिलेख, श्रम-अधिकार, पर्यावरण आ नागरिक पहचान धरि क्रमशः विस्तार करैत अछि। एहि विस्तारक भीतर एक गहीर संरचनात्मक परिवर्तन देखाइत अछि: आरम्भिक कथासभ बारम्बार ई देखबैत अछि जे लिखल शब्द जीयल स्मृतिक पूर्ण

विकल्प नहि बनि सकैत, जखनकि अन्तिम कथासभमे सही नाम, नाप, सूची, पावती, नक्शा आ हस्ताक्षर अधिकार बचेनिहार आवश्यक साक्ष्य बनैत अछि। अतः संग्रहक केन्द्र केवल “लोकजीवनक चित्रण” नहि, बल्कि अनुभव कैं सत्य, स्मृति, अभिलेख आ न्यायमे कोना रूपान्तरित कएल जाइत अछि—एहि प्रश्नक कथा-परम्परा अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ करुण, हास्य, शान्त आ वीर भावक विविध संयोजन, ध्वनि द्वारा अनकहल अर्थ, वक्रोक्ति द्वारा उलटाव, आ औचित्य द्वारा संयत अन्त कथा-रचनाक मुख्य गुण बनैत अछि। पाश्चात्य कथाशास्त्रीय पाठमे निकट दृष्टिबिन्दु, अविश्वसनीय अथवा आत्ममुग्ध वाचक, पुनरावृत्ति, लघु प्रत्यभिज्ञान, वस्तु-प्रतीक, सामाजिक बहुध्वन्यता आ दैनन्दिन यथार्थक प्रतिष्ठा विशेष रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि। नव्य-न्यायीय परीक्षण प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द-प्रमाण, संशय, बाधक साक्ष्य, सन्दर्भ-सीमा आ पदक स्पष्ट अवच्छेदनक आधारपर कथा ३, १६, ३४, ४३, ४९, ५८, ५९, ६९, ७७ तथा ८४–१००क विशेष अर्थ खोलैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति मुख्यधाराक सार्वजनिक आख्यानक समानान्तर घर, गाम, स्त्री-श्रम, खेत, जंगल, नदी, बस्ती, मजदूर, विद्यालय आ छोट अभिलेखक इतिहास पढ़ैत अछि। सम्पूर्ण कथा-दर-कथा समीक्षा देखबैत अछि जे एहि संग्रहक सर्वाधिक विशिष्ट शिल्प एक छोट वस्तु अथवा प्रशासनिक चिह्न कैं ज्ञानक केन्द्र बनायब अछि—घंटी, शीशा, कटोरी, कंघी, ढोल, लालटेन, सीटी, बाट, रजिस्टर, पावती, कार्ड, नक्शा, फोटो आ हस्ताक्षर। भाषा-अंकेक्षणमे कथा-पाठक मूल देवनागरी प्रवाह अत्यन्त सघन अछि; मुख्य कथा-शरीरमे रोमन अक्षर नहि भेटल। तथापि घोषित शुद्ध मैथिली शैलीक दृष्टिसँ पानी, अंगूठा, गायब, दरवाजा, बरामदा, पीतल, चाय आ कमरा सन रूपक उल्लेखनीय आवृत्ति भेटैत अछि, जाहि लेल क्रमशः पानि, औंठा, बिलायल, केवाड़ी, ओसारा, पित्तरि, चाह आ कोठली सन रूपक सुसंगत सम्पादकीय प्रयोग अनुशंसित अछि। अनुक्रमक कथा ३९क शीर्षक आ वास्तविक कथा-शीर्षक बीच पाठभेद सेहो सुधारयोग्य अछि।

बीज-शब्द : मैथिली कथा, स्मृति, अभिलेख, ध्वनि, वक्रोक्ति, नव्य-न्याय, प्रमाण, समानान्तर इतिहास, श्रम, नागरिकता, भाषा-निखार

१. प्रस्तावना

कथा-त्रिधारा : खण्ड-१ एक सय कथा कैँ पाँच बीस-कथा अनुक्रम-खण्डमे प्रस्तुत करैत अछि। कथासभक भूगोल मिथिला, वज्जि आ अंगक सांस्कृतिक परिसर सँ जुड़ल अछि, मुदा कथा-स्थितिसभ केवल आंचलिक रंग तक सीमित नहि; घर बेचबाक निर्णय, सड़क नाप, पानि भरब, विद्यालय, बाजार, बाढ़ि, आगि, चुनाव, सार्वजनिक दान, राशन, जंगल, मजूरी आ मुआवजा सन प्रसंग आधुनिक नागरिक जीवनक व्यापक प्रश्न बनि उठैत अछि। संग्रहक महत्त्व एतय अछि जे पैघ ऐतिहासिक अवधारणा कैँ छोट दैनिक वस्तु आ क्रियामे रखैत अछि।

एहि समीक्षा मे “इतिहास”क अर्थ केवल कालक्रम नहि। कथा मे जे वस्तु, स्मृति, बोली, स्थानीय नाप, नाम, पर्ची, पावती, हस्ताक्षर आ मौखिक साक्ष्य बचैत अछि, ताहि सभक परस्पर सम्बन्ध सेहो इतिहास-निर्माण अछि। तैँ साहित्यिक विश्लेषण आ पाठ-साक्ष्यक जाँच एक-दोसरसँ अलग नहि राखल गेल अछि।

२. पाठ-सामग्री, सीमा आ पद्धति

अध्ययनमे मूल संग्रहक कथा ००१ सँ १०० धरि प्रत्येक रचना पढ़ि कथ्य, वाचक-दृष्टि, वस्तु-प्रतीक, संघर्ष, अन्त, सामाजिक सन्दर्भ आ साक्ष्य-व्यवस्था दर्ज कएल गेल। शीर्षक अथवा अनुक्रम मात्रक आधारपर कोनो कथा पर निष्कर्ष नहि बनाओल गेल। कथा-दर-कथा खण्ड एहि पूर्णता कैँ प्रत्यक्ष करैत अछि।

चारि आलोचनात्मक लेन्स एकसंग प्रयोग कएल गेल अछि। भारतीय काव्यशास्त्र रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्यक प्रश्न उठबैत अछि; पाश्चात्य कथाशास्त्र कथानक, दृष्टिबिन्दु, वाचक, बहुध्वन्यता आ यथार्थ-प्रतिनिधित्व जाँचैत अछि; नव्य-न्याय प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द-प्रमाण, संशय आ भाषिक स्पष्टताक अनुशासन प्रदान करैत अछि; विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति आधिकारिक अथवा केन्द्रित आख्यानक समानान्तर स्थानीय, श्रमिक, स्त्री, सीमांत भूगोल आ लघु-अभिलेखक इतिहास पढ़ैत अछि। ई चारू पद्धति कैँ कथासभ पर यान्त्रिक साँचा रूपेँ नहि थोपल गेल; जतय जे पद्धति व्याख्यात्मक रूपेँ फलदायी अछि, ओतहि ओकर उपयोग कएल गेल।

३. संग्रहक स्थापत्य : पाँच क्रमिक रूपान्तरण

कथा	कुल शब्द	औसत शब्द	मुख्य प्रवृत्ति	आलोचनात्म

				क संकेत
१–२०	४९०५२	२४५३	स्मृति, देह, घर, समय, आत्म-पहचान	लघु रूपक सँ सार्वजनिक साक्ष्य दिस क्रमिक विस्तार
२१–४०	३६२६८	१८१३	सामुदायिक तनाव, आपदा, अफवाह, विकास, साक्ष्य	लघु रूपक सँ सार्वजनिक साक्ष्य दिस क्रमिक विस्तार
४१–६०	२७७५२	१३८८	संकट सँ हास्य-व्यंग्य दिस संक्रमण; लोक-ज्ञान आ सार्वजनिक व्यवहार	लघु रूपक सँ सार्वजनिक साक्ष्य दिस क्रमिक विस्तार
६१–८०	३०८७८	१५४४	नैतिक विशेषण, पाखण्ड, प्रक्रिया, पारदर्शिता आ प्रमाण	लघु रूपक सँ सार्वजनिक साक्ष्य दिस क्रमिक विस्तार
८१–१००	२५१३०	१२५६	श्रम, अधिकार, अभिलेख, पर्यावरण, नागरिकता	लघु रूपक सँ सार्वजनिक साक्ष्य दिस क्रमिक विस्तार

शब्द-संख्या केवल आकारक संकेत अछि, मूल्यक नहि। तथापि पहिल बीस कथाक औसत विस्तार बादक खण्डसभ सँ स्पष्टतः पैघ अछि। संग्रह आगाँ बढ़ैत कथ्य अधिक

संक्षिप्त, प्रक्रियामूलक आ दस्तावेज-केंद्रित होइत अछि। निजी मनोवैज्ञानिक विस्तार सँ सार्वजनिक संस्थागत क्षण दिस ई संकुचन शिल्पगत बदलावक संकेत मानल जा सकैत अछि।

पहिल बीस कथामे घंटी, सड़क, आकाश, प्याज, शीशा, घैला, कॉपी, कंघी, हाथ, धूप, दूध, लिफाफा, सफेद केश, कटोरी आ चिड़ै सन वस्तु-अनुभव मुख्य अछि। दोसर बीस कथामे पुल, लाठी, झण्डा, बूट, नाव, काँच, राख आ पहराक उपकरण सामाजिक तनाव आ सार्वजनिक जीवनक साक्ष्य बनैत अछि। मध्य खण्डमे भाषा आ आत्म-छवि पर हास्य बढ़ैत अछि; चौठ खण्ड नैतिक विशेषणसभक परीक्षण करैत अछि; अन्तिम बीस कथा "कागजक राजनीति" कैं श्रम, पर्यावरण आ नागरिक अधिकारसँ जोड़ैत अछि।

४. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

४.१ रस : करुण सँ हास्य, फेर शान्त-विवेक धरि

पहिल खण्डमे करुण रसक आधार मृत्यु अथवा विलाप मात्र नहि, "जे हेराइत अछि ओकर पहचान" अछि। कथा १क स्मृति-लोप, कथा ८क टूटल कंघी, कथा १२क प्रतीक्षा, कथा १३क सफेद केश आ कथा २०क प्रवासी गन्ध करुणाक भीतर शान्त भावक बाट खोलैत अछि। एहि कथासभक प्रभाव उच्च स्वरक विलाप सँ नहि, लघु वस्तु आ रोकल क्रियासँ उत्पन्न होइत अछि।

कथा ४४–६३ मे हास्य प्रधान होइत अछि। ई हास्य केवल मनोरंजन नहि; आत्ममुग्ध व्यापारी, गलत बराती, उधारक दार्शनिक, सर्वज्ञ विशेषज्ञ, मुफ्त सलाहकार, चुनावी चाह, माइक, बाट आ चन्दा—सभ ठाम हास्य ज्ञानक झूठा दावा अथवा सामाजिक आत्म-छविक परीक्षा करैत अछि। कथा ६४–८२ मे हास्य अधिक नैतिक विडम्बनामे परिणत होइत अछि: "धर्मपरायण", "सदाचार", "पवित्र", "महान", "सत्यवादी", "सभ्य", "शुद्ध", "दयालु", "भलमानुस", "सज्जन"—विशेषण स्वयं कथाक परीक्षण-वस्तु बनि जाइत अछि।

अन्तिम खण्डमे करुणा आ वीरभावक संयमित मिश्रण अछि। धनवन्ती हस्ताक्षर सँ पहिने हिसाब पढ़ैत अछि; स्त्रीसभ पत्थर तोड़ैत गीतमे अपन दिन दर्ज करैत अछि;

फुलमती आवेदनक तारीख बचबैत अछि; जंगलक बस्ती पानि लेल “अस्थायी” दर्जा बदलाबैत अछि। ई वीरता युद्धक नहि, प्रक्रियामे टिकि रहबाक वीरता अछि।

४.२ ध्वनि : अनकहल अर्थक वस्तु-व्यवस्था

ध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिसँ संग्रहक सर्वाधिक सफल क्षण ओ अछि जतय कथा अपन अर्थ घोषित नहि करैत, वस्तु कैं छोड़ि दैत अछि। कथा १क दबायल नहि गेल घंटी, कथा ७क खाली कॉपी, कथा २८क राख पर फूल, कथा ३०क दरारयुक्त लालटेन, कथा ३८क काँचक टुकड़ा, कथा ४०क सीटी, कथा ७०क रिक्त पावती, कथा ८२क बिना नामक उपयोगी काज—ई सभ प्रत्यक्ष कथन सँ पैघ अर्थ व्यंजित करैत अछि।

४.३ वक्रोक्ति आ नामक उलटाव

वक्रोक्तिक प्रमुख साधन शीर्षक आ कथ्यक दूरी अछि। “महान व्यापार” विफल अव्यवस्था अछि; “उधारक दार्शनिक” सिद्धान्तक नामपर अपवाद रचैत अछि; “सदाचार समिति” स्वयं जाँचक विषय बनैत अछि; “सत्यवादी व्यापारी” अस्पष्ट लेबलक लाभ लैत अछि; “नम्रताक पुरस्कार” नम्रताक प्रदर्शन बढ़बैत अछि। ई शीर्षकीय विडम्बना संग्रहक मध्य भागक सुविचारित शिल्प-श्रृंखला अछि।

४.४ औचित्य : अन्तक संयम आ कतिपय अति-व्याख्या

अधिकांश कथा अन्तमे छोट क्रिया अथवा वस्तु पर रुकैत अछि; ई औचित्यक दृष्टिसँ प्रभावकारी अछि, कारण कथ्यक भावक समानुपातिक समाप्ति होइत अछि। तथापि किछु कथा अन्तिम वाक्यमे अपन नैतिक आशय अधिक स्पष्ट कहि दैत अछि। जतय वस्तु स्वयं अर्थ वहन करि चुकल अछि, ओतय एक अतिरिक्त व्याख्यात्मक वाक्य ध्वनिक खुलापन घटा सकैत अछि। भावी सम्पादनमे एहन स्थल पर “दृश्य पर विराम” अधिक प्रभावकारी होयत।

५. पाश्चात्य कथाशास्त्रीय समीक्षा

५.१ कथानक, प्रत्यभिज्ञान आ सूक्ष्म मोड़

अरस्तूक [Poetics] सँ लेल कथानक-मोड़ आ प्रत्यभिज्ञानक धारणा एहि संग्रहमे लघु रूपमे उपयोगी अछि। कथा १मे घंटीक तार नहि होयब, कथा २मे बाटक घरहि लौटब, कथा ३४मे गोलीक संख्या अस्थिर होयब, कथा ४३मे रक्तक बदला सिंदूर,

कथा ५८मे बाटक माप गलत निकलनाइ, कथा ७७मे सद्भावनापूर्ण गवाहीक अप्रमाणित अंश—ई सभ “जे मानल गेल छल” तकर पुनर्संरचना करैत अछि। मुदा संग्रह प्रायः विराट नाटकीय पलटावक बदला ज्ञानक छोट सुधार चुनैत अछि।

५.२ दृष्टिबिन्दु, वाचक आ पाठकीय दूरी

जेनेट केर [Narrative Discourse]क दृष्टिबिन्दु-विचार सँ देखला पर पहिल भागमे निकट तृतीय-पुरुष अनुभव बहुल अछि; पाठक पात्रक अनुभूतिक अस्थिरता भीतर रहैत अछि। कथा ४४, ४५ आ ६३ सन रचनामे आत्मकथ्यात्मक हास्य वाचकक आत्म-मूल्यांकन आ पाठकीय निर्णय बीच दूरी पैदा करैत अछि। बूथ केर [The Rhetoric of Fiction]क “अविश्वसनीय वाचक” सम्बन्धी दृष्टि एतय विशेष फलदायी अछि: पाठक वाचकक कथन मानैतो ओकर आत्म-छल पहचानैत अछि।

५.३ बहुध्वन्यता, गाम-नगरक सामाजिक भाषा

बाख्तिन केर [The Dialogic Imagination]क बहुध्वन्यता दृष्टिसँ कथा-संसारमे कार्यालय, पंचायत, बाजार, विद्यालय, घर, अस्पताल, बाढ़ि-राहत, ठेका, धर्म, चुनाव आ श्रमक अलग-अलग भाषिक रजिस्टर एक-दोसर सँ टकराइत अछि। “सत्य”, “शुद्ध”, “अस्थायी”, “सभ्य”, “चरित्र”, “दान”, “मुआवजा”, “आधा दिन”—ई शब्द संस्थागत अर्थ आ लोक-अनुभवक बीच विवादित होइत अछि।

५.४ दैनन्दिन यथार्थ आ सूक्ष्म इतिहास

आउअरबाख केर [Mimesis]क यथार्थ-प्रतिनिधित्वक व्यापक प्रश्नक सापेक्ष एहि संग्रहक बल “साधारण” लोकक अनुभव कैं गंभीर साहित्यिक विषय बनेनाइ अछि। कथा ८४–१०० विशेष रूपेँ देखबैत अछि जे नक्शा, ईंटक नम्बर, मजदूरी-पत्र, राशन-सूची, दूरी, फोटो, कार्ड, बालू-घाट आ बस्ती इतिहासक लघु सामग्री बनि सकैत अछि। पैघ नीति छोट पर्ची आ एक व्यक्तिक नाममे अपना प्रभाव देखबैत अछि।

६. नव्य-न्यायीय ज्ञानमीमांसात्मक पाठ

६.१ प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द-प्रमाण आ संशय

नव्य-न्याय कैं कथा पर आरोपित दार्शनिक नामावलीक रूपमे नहि, ज्ञानक वैधता जाँचबाक अनुशासन रूपमे उपयोग कएल गेल अछि। कथा ३ मानवीय आँखि आ

यन्त्रक प्रत्यक्षक विरोध देखबैत अछि; कथा ३४ अफवाहक अनुमानक दोष खोलैत अछि; कथा ४९ भूसि आ पगचिह्न सँ क्रमिक अनुमान बनबैत अछि; कथा ७७ शब्द-प्रमाणमे वक्ताक प्रत्यक्ष सीमा महत्त्वपूर्ण करैत अछि। गंगेशक तत्त्वचिन्तामणिक परम्परा जेना प्रमाणक अलग साधनक वैधता पर बल दैत अछि, तहिना एहि कथासभमे “के कहलक?” सँ पहिने “के देखलक?” प्रश्न उठैत अछि।

६.२ बाधक साक्ष्य आ निष्कर्षक संशोधन

कथा ४३मे लाल रंग रक्त मानबाक अनुमान सिंदूरक पुड़िया सँ बाधित होइत अछि। कथा ५८मे सामाजिक भरोसा मानक बाटक मापन सँ संशोधित होइत अछि। कथा ५९मे शिक्षकक स्मृति अनेक अभिलेखक संग मिलान बिना पर्याप्त नहि। कथा ८४–९७मे नक्शा, पुरान दिनांक, नाप, पावती, गाँठ आ स्थल-जाँच एक-दोसर कैं पुष्टि अथवा बाधित करैत अछि। एहि कारण संग्रहक उत्तरार्ध एक प्रकारक लोक-ज्ञानमीमांसा रचैत अछि।

६.३ विशेषणक परीक्षण : “सत्यवादी” के? “अस्थायी” की?

नव्य-न्यायीय भाषिक सूक्ष्मताक लेल विशेषण-विशेष्य आ सन्दर्भ-सीमा विशेष उपयोगी अछि। “धर्मपरायण चोर”, “पवित्र पार्किंग”, “महान त्यागी”, “सत्यवादी व्यापारी”, “सभ्य परिवार”, “शुद्ध भोजन”, “दयालु मालिक”, “भलमानुसक गवाही”, “सज्जन चालक” आ “अस्थायी बस्ती” शीर्षकसभ शब्दक लागू होयबाक शर्त जाँचैत अछि। कथा पूछैत अछि—विशेषण केवल आत्मघोषणा अछि कि व्यवहार, अभिलेख आ परिणाम ओकर सीमा निर्धारित करत?

६.४ शब्दक अर्थ आ आर्थिक परिणाम

नव्य-न्यायीय भाषा-दर्शनमे शब्द ज्ञानक माध्यम बनि सकैत अछि; एहि संग्रहमे गलत अथवा अस्पष्ट शब्द भौतिक परिणामो पैदा करैत अछि। कथा ६९क लेबल ग्राहकक निर्णय बदलैत अछि; कथा ८०क चरित्र-विशेषण व्यक्ति कैं संस्थागत रूप दैत अछि; कथा ९७क “अस्थायी” शब्द तीन दशकक सुविधा-वंचना टिकबैत अछि; कथा १००क “आधा दिन” मजदूरी घटबैत अछि। अर्थ एतय दार्शनिक अमूर्तता नहि, जीवनक वितरण-तन्त्र अछि।

७. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

एहि अध्ययनमे “विदेह समानान्तर इतिहास” कँ एक परिचालनात्मक इतिहास-दृष्टि मानल गेल अछि: केन्द्रक आधिकारिक अथवा प्रतिष्ठित आख्यानक समांतर गाम, घर, स्त्री-श्रम, स्थानीय बोली, नदी, जंगल, खेत, अस्थायी बस्ती, मजदूर, विद्यालय, छोट रजिस्टर, मौखिक स्मृति आ उपेक्षित व्यक्ति कँ ऐतिहासिक साक्ष्यक बराबर महत्त्व देनाइ। एहि दृष्टिसँ कथा-त्रिधारा सामाजिक इतिहासक “नीचाँक पाँति” सँ पढ़ल जा सकैत अछि।

कथा २५क तीन मिनटक जुलूस औपचारिक घटना सँ बेसी गलीमे बचल अवशेषक इतिहास लिखैत अछि। कथा ३१ पुलक उद्घाटनक समानान्तर पुलक नीचाँक विस्थापन लिखैत अछि। कथा ३६ सार्वजनिक सुरक्षा-कथाक समानान्तर घरमे बूटक निशान दर्ज करैत अछि। कथा ८४ नदीक नक्शाक खाली जगह सँ बस्ती खोजैत अछि; कथा ९१ सड़कक समानान्तर पत्थर तोड़ैत स्त्रीक गीत रखैत अछि; कथा ९४ सार्वजनिक निर्माणक फोटोमे अनाम मजदूरक नाम धरि पहुँचबाक बाट बनबैत अछि। ई सभ इतिहासक समानान्तर अभिलेख अछि।

एहि पद्धतिक विशेष लाभ ई अछि जे “विकास”, “दान”, “सदाचार”, “सुरक्षा”, “वन”, “पुल”, “विद्यालय”, “मजूरी” सन पैघ संज्ञा कँ ओहि लोकक अनुभवसँ जाँचैत अछि जकरा पर नीति घटित होइत अछि। समानान्तर इतिहास मुख्य इतिहास कँ नकारैत नहि; ओकर अपूर्णता देखबैत, अतिरिक्त साक्ष्य जोड़ैत आ इतिहासक विषय-वस्तु विस्तृत करैत अछि।

८. एक सय कथाक पृथक् समीक्षात्मक पाठ

निम्न खण्डमे कथा ००१–१०० सभक पृथक् आलोचनात्मक टिप्पणी देल जा रहल अछि। पृष्ठ-संख्या मूल अनुक्रमक कथा-आरम्भक पृष्ठ-संख्या अछि; कथा ३९क अनुक्रम-शीर्षक आ वास्तविक शीर्षकक पाठभेद भाषा-अंकेक्षणमे अलग दर्ज अछि।

८.1 कथा १–२०

१. आवाज नहि देनिहार घंटी — पृ. ९

लहेरियासरायक पुरान घर, माधवी, ईरा आ आवाज नहि देनिहार घंटीक माध्यमे कथा स्मृति आ भौतिक स्थानक सम्बन्ध जाँचैत अछि। घंटी दबौलापर साझा घर-स्मृति मेटेबाक रहस्य कथा कैं अलौकिक बनबैत अछि, मुदा ओकर लक्ष्य रहस्यक वैज्ञानिक समाधान नहि; लिखल शब्द आ जीयल अनुभूतिक अन्तर अछि। अन्तक तीन ठक-ठक स्मृतिक पूर्ण पुनर्प्राप्ति नहि, बल्कि बचल अनुभूतिक नैतिक रक्षा बनैत अछि।

२. उल्टा रास्ता — पृ. २३

सड़क नापयवाली अर्चनाक माप, नक्शा आ यन्त्र बारम्बार निष्फल होइत अछि, कारण घरक फाटक सँ बाहर जाएबाक इच्छा सड़क कैं फेर घरहि दिस मोड़ि दैत अछि। खेतक मेड़ आ रेल वैकल्पिक बाट बनैत अछि। कथाक शक्ति एहि विरोधमे अछि जे “सड़क” भौगोलिक रेखा रहि नहि जाइत, घरक आकर्षण, प्रस्थानक कठिनाइ आ अनुभवजन्य ज्ञानक सीमा बनि जाइत अछि।

३. रातिक दोसर आकाश — पृ. ३७

रातिक पहरेदारक आँखि आ यन्त्रक आकाश एक नहि रहैत अछि। एक दिस फोन आ नाप सामान्य आकाश देखबैत अछि, दोसर दिस मानवीय आँखि दोसर तारामण्डल। साझा प्रत्यक्ष भेटलापर कथा निजी भ्रम सँ सामूहिक साक्ष्य दिस बढ़ैत अछि, फेर घटना बिना स्थायी अभिलेखक समाप्त होइत अछि। ई कथा प्रत्यक्ष, यन्त्र-साक्ष्य आ अन्तरव्यक्तिक प्रमाणक सूक्ष्म टकराव अछि।

४. प्याज काटैत स्त्री — पृ. ४९

प्याज काटैत स्त्रीक नोर घरेलू श्रम, विवाहोत्तर पहचान आ अपन जीवनक कथा कहबाक दबी आवश्यकता खोलैत अछि। साधारण रसोइ-काज स्मृति-द्वार बनैत अछि, मुदा कथा केवल करुणामे नहि अटकैत; स्त्री अपन दिनचर्या आ चयनमे छोट-छोट परिवर्तन आरम्भ करैत अछि। घरेलू वस्तु स्त्री-अनुभवक मौन अभिलेख बनि उठैत अछि।

५. बसक शीशा — पृ. ६२

बसक शीशामे देखाइत प्रतिबिम्ब धीरे-धीरे स्वाभाविक अनुकरण छोड़ि अलग व्यवहार करय लगैत अछि। कथा आत्म-परिचयक अस्थिरता कैँ भयक रूपमे आरम्भ कऽ स्वीकृतिक दिशामे लऽ जाइत अछि। अन्तमे पात्र प्रतिबिम्ब सँ लड़ाइ छोड़ैत अछि; एहि ठाम दर्पण-सदृश शीशा “स्वयं” कैँ निश्चित प्रतिमा नहि, बदलैत सम्बन्धक रूपमे स्थापित करैत अछि।

६. पानि भरबाक बेर — पृ. ७५

पानि भरबाक पाँतिक दिनचर्या घरक लैंगिक श्रम-विभाजन कैँ दृश्य करैत अछि। मंजरीक समय, स्थान बचेनाइ, घरक अन्य सदस्यक भागीदारी आ घैला-नलक व्यवहारिक जगत मिलि घरेलू श्रमक सामाजिक मूल्य खोलैत अछि। कथा घोषणापरक नारीवादक बदला दैनन्दिन श्रमक पुनर्वितरण द्वारा परिवर्तन देखबैत अछि।

७. खाली कॉपी — पृ. ९१

खाली कॉपी शिक्षक-जीवन, मूल्यांकन आ स्वयं पर लाल कलम चलाबयवाली आदतक प्रतीक अछि। खाली पन्ना पहिने अपूर्णता लगैत अछि, बादमे सम्भावना। कथा शिक्षकीय अनुशासनक भीतर सँ आत्म-मूल्यांकनक कठोरता खोलैत अछि आ अन्तमे खालीपन कैँ विफलता नहि, अनलिखल जीवनक जगह मानैत अछि।

८. टूटल कंघी — पृ. १०६

टूटल कंघी मायक स्मृति, शरीरक देखभाल आ समयक टूटन कैँ एक छोट वस्तुमे संचित करैत अछि। कंघीक बचल दाँत आ टूटल दाँतक रिक्ति दुनू अर्थवान अछि। कथा बतबैत अछि जे स्मृति केवल जे बचल अछि ओहि सँ नहि, जे हेरायल अछि ओकर आकार सँ सेहो बनैत अछि।

९. तरकारी चुनैत हाथ — पृ. ११९

तरकारी चुनैत हाथमे रोजक अभ्यस्त अंग एकाएक अपरिचित अनुभव देबय लगैत अछि। पात्र अपन हाथक चयन, गति आ थकान कैँ नव दृष्टिसँ देखैत अछि। कथा चिकित्सकीय निदान देबाक लोभ सँ बचैत, शरीरक स्वायत्तता आ आदतक बीचक विचित्र दूरी पर केन्द्रित रहैत अछि; अन्तक खाली हाथ अपनापनक सूक्ष्म अनुभूति दैत अछि।

१०. जाड़क धूप — पृ. १४६

जाड़क धूप कँ समय, कोण आ चिह्नमे बाँधबाक जाँकीक प्रयास कथा कँ मापनक निजी प्रयोगशाला बनबैत अछि। दिनक प्रकाश नापल जा सकैत अछि, मुदा राति आ विराम नाप सँ बाहर रहैत अछि। अन्तमे अनमापल समयक स्वीकृति कथा कँ शान्त रसक दिशामे लऽ जाइत अछि।

११. दूध उफनल — पृ. १६९

दूध उफनबाक छोट दुर्घटना प्रमिलाक सतत जिम्मेदारी, घरक घड़ी आ विश्राम-विहीन श्रमक भीतर दरार खोलैत अछि। दूधक उफनब कोनो नैतिक अपराध नहि रहि, नियंत्रित दिनचर्यामे मानवीय चूक आ विश्रामक अधिकारक प्रतीक बनैत अछि। अन्तमे खाली हाथ गोदमे राखब कथा केर निर्णायक क्रिया अछि।

१२. लिफाफा खोलबाक पहिने — पृ. १८७

लिफाफा खोलबाक विलम्ब प्रतीक्षा कँ कथानक बनबैत अछि। सुधा पत्रक भीतरक सम्भावित समाचार सँ बेसी ओकरा खोलबाक पहिने उपलब्ध अनेक भविष्यक संग जीबैत अछि। खोललाक बाद जीवन तुरन्त सरल नहि होइत; कथा सम्भावना, निर्णय आ समयक मनोविज्ञान पर टिकैत अछि।

१३. शीशामे सफेद केश — पृ. २०९

सफेद केशक दृश्य वृद्धावस्था मात्र नहि, सम्बन्धसूचक नामसभक बीच स्त्रीक निज नामक प्रश्न उठबैत अछि। माधवी कँ माय, पत्नी अथवा अन्य भूमिका सँ अलग “माधवी” कहबाक ध्वनि आत्म-पहचानक केन्द्र बनैत अछि। देहक परिवर्तन एहि कथा मे नामक पुनःप्राप्तिसँ जुड़ैत अछि।

१४. खाली कटोरी — पृ. २२४

खाली कटोरी बाल-दृष्टि सँ मात्रा, भोजन, प्रतीक्षा आ अभावक अर्थ खोलैत अछि। कटोरीक खालीपन केवल वजनक शून्यता नहि; भोजनक समय, घरक अर्थव्यवस्था आ “कखन भरत”क सामाजिक प्रश्न सेहो अछि। कथा वस्तुक मापनीयता आ अनुभवक अमापनीयता कँ एकसंग रखैत अछि।

१५. खिड़की पर चिड़ै — पृ. २३९

खिड़की पर आबयवाली चिड़ै प्रभाक अत्यन्त नियमित घरेलू समयमे एक अनियोजित उपस्थिति अछि। कथा क्रमशः देखबैत अछि जे व्यवस्था आ स्वतंत्रता परस्पर शत्रु नहि; दिनचर्यामे एक छोट रिक्त जगह राखल जा सकैत अछि। अन्तमे चिड़ैक फड़फड़ाहट पर नहिं मुड़ब स्वीकृत स्वतंत्रताक संकेत अछि।

१६. एक शब्द गलत — पृ. २५२

एक गलत शब्द बहिनक भाषा आ स्मृतिक विषयमे संशय जन्मबैत अछि। कथा तुरन्त रोग, भूल अथवा पतनक निष्कर्ष पर नहि पहुँचैत; संदर्भ, पुनरावृत्ति आ सम्भावित कारणक प्रतीक्षा करैत अछि। एहि संयममे नव्य-न्यायीय संशय-संस्कृति सन बौद्धिक गुण अछि—एक उदाहरण सँ व्यापक निष्कर्ष नहि।

१७. नव चप्पल — पृ. २६९

नव चप्पल पुरान चाल, देह-स्मृति आ बदलावक अनिच्छा कैं उजागर करैत अछि। उर्मिलाक पएर नव वस्तु कैं तुरन्त स्वीकार नहि करैत; धीरे-धीरे घरक छोट व्यवस्था बदलैत-बदलैत देह अपन नव गति खोजैत अछि। कथा परिवर्तन कैं विचार नहि, शरीरक अभ्यासक रूपमे देखबैत अछि।

१८. दुपहरियाक मौन — पृ. २८९

दुपहरियाक मौन परिवारक बीच एक निजी समयक माँग अछि। “किछु नहि” करब एहि कथा मे आलस्य नहि, आत्म-उपस्थितिक अभ्यास बनैत अछि। घरेलू आवाजसभक बीच मौनक छोट समय व्यक्तिक भीतरी जगह कैं वैधता दैत अछि।

१९. टूटैत नख — पृ. ३०८

टूटैत नख शरीरक छोट पीड़ा सँ हाथक असमान श्रम, देखभाल आ लिखबाक क्रिया खोलैत अछि। एक नाम लिखैत समय दुनू हाथक सहयोग कथा कैं कोमल प्रतीक देत अछि। देह एतय सजावट नहि, श्रम आ स्नेहक जीवित साधन अछि।

२०. फल काटबाक गन्ध — पृ. ३२४

अनिरुद्धक फल काटबाक गन्ध दोहा आ घरक अनुभव कैं एक-दोसरमे मिला दैत अछि। प्रवासक स्मृति घरक विपरीत नहि; गन्ध, काटबाक ढंग आ साझा थारी बहु-

स्थानिक जीवन रचैत अछि। कथा “घर” कैं एक ठामक बदला अनेक जीयल ठामक संगम बनबैत अछि।

८.2 कथा २१–४०

२१. पंखाक नीचे — पृ. ३४४

बीमार जयनारायण पंखाक गति, छतक बिन्दु आ गिनतीक सहारे अनिश्चितता पर नियंत्रण चाहैत छथि। धीरे-धीरे नाप सँ ध्यान शारदाक हाथ दिस सरकैत अछि। कथा बीमारीक भय कैं चमत्कार सँ नहि, देखभालक स्पर्श आ गिनती छोड़बाक क्षण सँ रूपान्तरित करैत अछि।

२२. अधलिखल नाम — पृ. ३६१

अधलिखल नाम साक्षरता, हस्ताक्षर आ पहचानक कथा अछि। रेनुकाक अपूर्ण नाम केवल अक्षरक कमी नहि; संस्थागत पहचान आ अपन हाथक इतिहासक प्रश्न अछि। पूर्ण नाम लिखब “नव जन्म”क अतिरंजना नहि, बल्कि सही आवेदक रूपेँ अपन उपस्थिति दर्ज करब अछि।

२३. दीप मिझेबाक पहिने — पृ. ३७७

दीप मिझेबाक पहिने घरक भीतर खींचल विभाजन-रेखा, पारिवारिक तनाव आ साझा उपयोगक वस्तुसभक माध्यमे घरेलू भूगोल रचैत अछि। दीवार बनलापर सेहो पानि, प्रकाश अथवा दैनिक आवश्यकता सीमा पार करैत अछि। कथा सम्पत्ति-विभाजनक कठोर रेखा आ जीवनक परस्परावलम्बनक बीच तनाव स्थापित करैत अछि।

२४. लाल धूर — पृ. ३९५

लाल धूर बालक नयनक दृष्टि सँ खेत, नाप, जमीनक तनाव आ खेलक संसार कैं एकसंग देखबैत अछि। वयस्क सभक लाल रेखा आ बालकक पतंग एकहि आकाश-धरतीक अलग अर्थ बनबैत अछि। कथा बाल-दृष्टिक माध्यमे सम्पत्ति-विवादक भय कैं अतिनाटकीय बनाए बिना गम्भीर बनबैत अछि।

२५. तीन मिनटक जुलूस — पृ. ४०९

तीन मिनटक जुलूस घटना सँ बेसी ओकर अवशेषक कथा अछि—कागज, टूटल वस्तु, धूल, आवाजक स्मृति। सार्वजनिक प्रदर्शन क्षणिक अछि, मुदा गली ओकर छाप दीर्घ समय धरि राखैत अछि। एहि सूक्ष्म इतिहासमे "घटना"क वास्तविक अवधि ओकर औपचारिक समय सँ बहुत पैघ बनि जाइत अछि।

२६. फाटल ढोल — पृ. ४२३

फाटल ढोल सामुदायिक उत्सवक बीच तनावक आवाज बनेबाक संगहि मरम्मतिक कथा अछि। नव ढोल पुरानक स्थान लऽ सकैत अछि, मुदा सिअल पुरान चमड़ा घटना-क स्मृति राखैत अछि। वस्तुक घाव सामुदायिक तनावक मौन अभिलेख बनैत अछि।

२७. रातिक ट्रक — पृ. ४३९

रातिक ट्रक बाढ़ि, राहत-सामग्री, खराब बाट आ सूचीसभक बीच निर्णयक दबाव रचैत अछि। भय व्यक्तिगत अछि, मुदा गाड़ी चलाबय, माल पहुँचाबय आ जोखिम दर्ज करब सामूहिक दायित्व बनैत अछि। लाल धागा विजय-ध्वज नहि, खतरा चिन्हित करयवाला व्यवहारिक साक्ष्य अछि।

२८. राख पर फूल — पृ. ४५०

आगिक बाद राख पर रोपल फूल पुनर्निर्माणक भावुक चमत्कार नहि। परिवार घर, वस्तु आ दिनचर्या धीरे-धीरे फेर बनबैत अछि; फूल केवल "आगिक बाद"क काल-चिह्न बनैत अछि। करुणा सँ शान्ति दिस कथा केर गति संयत अछि।

२९. लोहारक हथौड़ा — पृ. ४५८

लोहारक हथौड़ा शिल्प, पिता-पुत्री सम्बन्ध आ विवाहक प्रसंग कैं जोड़ैत अछि। जगदीशक देल छोट हथौड़ा सजावटी उपहार नहि, कौशल आ स्वावलम्बनक विरासत अछि। नव घरमे ढील कील ठीक करबाक क्षण बेटी कैं करुण पात्र नहि, कार्यक्षम उत्तराधिकारी बनबैत अछि।

३०. लालटेनक शीशा — पृ. ४६५

लालटेनक फाटल शीशा दू पड़ोसी ठामक तनावक बीच प्रकाश कैं विभाजित नहि, विकृत करैत अछि। साफ प्रकाश सेहो पूरा सत्य नहि कहैत—दरार ओकर इतिहास

संग लैत अछि। कथा सामुदायिक भरोसा कैं "निर्दोष पारदर्शिता"क बदला मरम्मत भेल, स्मृतिसहित पारदर्शिता रूपमे देखबैत अछि।

३१. पुलक नीचे — पृ. ४७२

पुलक उद्घाटन ऊपर होइत अछि, मुदा कथा पुलक नीचाँ रहनिहार विमला आ परिवारक आँखिसँ विकासक मूल्य देखैत अछि। विद्यालयी वाक्य "पुल दू किनारा जोड़ैत अछि" अपूर्ण रहि जाइत अछि, कारण प्रश्न अछि—केकरा जोड़ैत, केकरा हटबैत? नाम लिखेबाक माँग विस्थापनक विरुद्ध न्यूनतम नागरिक उपस्थिति अछि।

३२. कागज आ लाठी — पृ. ४८३

कागज आ लाठी भूमि-विवादमे दस्तावेजी अधिकार आ बलक धमकी कैं आमने-सामने रखैत अछि। अन्ततः नाप, स्थानीय चिन्ह आ साक्षीक संग जमीनक सीमा तय होइत अछि। कथा कागज कैं स्वतः सत्य नहि मानैत; सत्य तब बनैत अछि जखन कागज, धरती आ प्रत्यक्ष नाप एक-दोसर सँ मेल खाइत अछि।

३३. कटहरक गन्ध — पृ. ४९०

कटहरक गन्ध बाजारक अफवाह, सामुदायिक आशंका आ पड़ोसी सम्बन्धक कथा अछि। राति बदलल लगैत अछि, मुदा रोजक गन्ध आ वस्तु सभ सामुदायिक जीवनक निरन्तरता राखैत अछि। भयक विरुद्ध कथाक उपाय भाषण नहि, साधारण लेन-देन आ परिचित गन्धक वापसी अछि।

३४. पाँच गोलीक अफवाह — पृ. ४९९

पाँच गोलीक अफवाहमे आवाजक संख्या तीन, पाँच, सात बनैत-बढ़ैत अछि, मुदा प्रत्यक्ष साक्षी स्थिर नहि। कथा अफवाहक गणित देखबैत अछि—संख्या बढ़ला सँ सत्य बलवान नहि होइत। देवालक अंक मेटाइत अछि, बाजारक रोजक आवाज लौटैत अछि; प्रमाण-विवेक एहि कथाक मूल नाभि अछि।

३५. फाटल झण्डा — पृ. ५०५

फाटल झण्डा सिलयवाली शान्ति राजनीतिक पक्षक बदला कपड़ा आ काजक क्रम देखैत अछि। "पहिने आयल कपड़ा पहिने"क शिल्प-नैतिकता पक्षधर प्रतीक सभपर

श्रमक समानता थोपैत अछि। फाटल झण्डा मरम्मत होइत अछि, मुदा कथा कोणो पक्षक विजय घोषित नहि करैत।

३६. बूटक निशान — पृ. ५१२

बूटक निशान घरमे राज्य-सत्ता अथवा सुरक्षा-दलक प्रवेशक भौतिक चिह्न अछि। कीचड़, दबाव आ टूटल फूलक बीच बेटी नाप आ रेखांकन करैत अछि। बरखा जमीनक निशान मेटा सकैत अछि, मुदा कापीमे दर्ज माप घटना कैं निजी स्मृति सँ सार्वजनिक साक्ष्यक दिशामे लऽ जाइत अछि।

३७. रातिक नाव — पृ. ५१८

रातिक नाव बाढ़ि-बचावक नैतिक दुविधा पर केन्द्रित अछि: पहिले के, कतय, कतेक भार, कोन जोखिम? जगन्नाथक निर्णय कोनो सरल वीर-नीति सँ नहि चलैत; परिस्थिति, नावक क्षमता आ लोकक तात्कालिक संकट संग बदलैत अछि। कथा व्यवहारिक नैतिकता कैं अनिश्चितता भीतर देखबैत अछि।

३८. काँचक टुकड़ा — पृ. ५२८

काँचक टुकड़ा दुर्घटनाक बाद बचल वस्तु अछि, जाहिमे प्रकाश नव ढंग सँ टूटैत अछि। पात्र ओकरा जादुई वस्तु नहि बनबैत; टूटा सामग्री दृष्टिक रूपक बनैत अछि। सम्पूर्णता हेरायलाक बादो जगत देखल जा सकैत अछि, मुदा कोण बदलि जाइत अछि।

३९. राख भेल खेत — पृ. ५३७

खेतमे आगि लगलापर सीमा-चिह्न राख भऽ जाइत अछि। पुरान नक्शा, स्थानीय स्मृति आ सामूहिक नाप सँ सीमा फेर स्थापित होइत अछि; बीआ पुनः पड़ैत अछि। आपदा बाद सम्पत्ति-सम्बन्ध पुनर्निर्माणमे दस्तावेज आ समुदाय दुनूक आवश्यकता कथा स्पष्ट करैत अछि।

४०. बन्दूक बिना पहरा — पृ. ५४५

बन्दूक बिना पहरा मे बीआ-भण्डारक रक्षा बन्दूक सँ नहि, सीटी, नाम-दर्ज, जागरूकता आ सामुदायिक प्रतिक्रिया सँ होइत अछि। जगतक पद्धति भय पैदा

करबाक बदला प्रश्न पैदा करैत अछि। सुरक्षा कैँ हिंसक शक्ति सँ हटाकऽ उत्तरदायित्व आ देखरेखक प्रणाली बनाओल गेल अछि।

८.3 कथा ४१–६०

४१. धुआँक बीच गीत — पृ. ५५३

धुआँक बीच गीत आगि-संकटक समय श्रम-गीत कैँ समन्वयक साधन बनबैत अछि। सबिताक गीत लोक कैँ गति, क्रम आ साहस दैत अछि; बादमे ओ गीत खेतमे फेर अपन सामान्य अर्थ पबैत अछि। कला संकटपर स्थायी कब्जा नहि करैत—जीवन ओकरा फेर रोजक श्रममे लौटा लैत अछि।

४२. एक मिनटक बिजली — पृ. ५५८

अस्पतालक अन्हार आ एक मिनट बिजलीक वापसी देखभाल, मशीन, प्रसव आ प्रतीक्षाक तनाव कैँ घनीभूत करैत अछि। एक मिनट “उजास” समस्या समाधान नहि, बल्कि निर्भरता दृश्य करैत अछि। कथा आधारभूत संरचना आ मानवीय देखभालक अन्तर्सम्बन्ध पर करुण यथार्थवाद रचैत अछि।

४३. रक्त नहि, सिंदूर — पृ. ५६४

बाजारक लाल पदार्थ कैँ रक्त मानल जाइत अछि, बादमे सिंदूरक फाटल पुड़िया साक्ष्य बदलि दैत अछि। एक रंगक अर्थ संदर्भ बदलला सँ बदलैत अछि। कथा प्रत्यक्षक अधूरापन, अनुमानक जल्दबाजी आ वस्तुगत जाँचक महत्त्व कैँ छोट घटनामे तीक्ष्ण रूपेँ प्रस्तुत करैत अछि।

४४. हमर महान व्यापार — पृ. ५६८

पहिल पुरुषक आत्ममुग्ध वाचक अपन छोट भण्डारण-काज कैँ “महान व्यापार” बनाकऽ सुनबैत अछि। गलत पर्ची, वस्तुक अदला-बदली आ अव्यवस्थाक बावजूद ओ विफलता कैँ प्रसिद्धि कहैत अछि। वाचक आ पाठकीय निर्णयक दूरी हास्यक मूल स्रोत अछि; कथाकारक मूल्य वाचकक आत्म-प्रशंसासँ अलग सुनाइत अछि।

४५. तीन बेरक बराती — पृ. ५७४

एक्के सन लाल शामियाना, बाजा आ विवाह-संकेत वाचक कैँ तीन बेर गलत बरातीमे पहुँचा दैत अछि। पुनरावृत्ति कथाक हास्य-यन्त्र अछि, मुदा भीतर प्रश्न सामाजिक

संकेतक यांत्रिक समानताक अछि। अन्तक व्यवहारिक सलाह—दुल्हिनक नाम पूछू —पहचानक ठोस अवच्छेदक बनैत अछि।

४६. उधारक दार्शनिक — पृ. ५८०

उधारक विरोधी दुकानदार अपन सभ अपवादक लेल दार्शनिक तर्क गढ़ैत अछि। पुत्री अथवा परिवारक साधारण प्रश्न हुनकर भाषिक जाल खोलि दैत अछि। कथा अवधारणा बदलि कऽ व्यवहार बचेनाइ पर व्यंग्य करैत अछि—नाम बदलला सँ उधारक आर्थिक तथ्य नहि बदलैत।

४७. पंचायतक विशेषज्ञ — पृ. ५८७

पंचायतक स्वयंभू विशेषज्ञ सभ विषयपर मत दैत अछि, चाहे प्रत्यक्ष ज्ञान हो वा नहि। नालीक व्यवहारिक समस्या सामूहिक अवलोकन सँ हल होइत अछि, जबकि विशेषज्ञता भाषणमे फँसल अछि। अन्तक आत्म-व्यंग्य अज्ञान कैं निष्पक्षता कहि बचाबय चाहैत अछि, आ पाठक एहि विडम्बना कैं पहचानैत अछि।

४८. हमर अमीर मामा — पृ. ५९३

“अमीर मामा”क प्रतिष्ठा सम्पत्ति, उधार, उपकार आ सम्बन्धक उलझल हिसाब पर बनल अछि। आर्थिक अभावक बीच परिवारक छत ठीक करब हुनकर वास्तविक सामाजिक पूँजी देखबैत अछि। कथा धनक मापनक इकाई पर हास्यपूर्ण प्रश्न करैत अछि—नगद, सम्पत्ति कि सम्बन्ध?

४९. हरायल बकरीक बयान — पृ. ६००

हरायल बकरीक खोजमे अनुमानक भीड़ लगैत अछि, मुदा मालती भूसि, पगचिह्न आ प्रत्यक्ष निशानक क्रम देखैत अछि। पंचायतक कथन अन्ततः जे देखल गेल तेतेक धरि सीमित रहैत अछि। कथा लोक-तर्कक उत्कृष्ट लघु उदाहरण अछि: कहानी गढ़बाक पहिने भौतिक साक्ष्यक अनुक्रम।

५०. मोबाइल गुरु — पृ. ६०७

सेवानिवृत्त डाककर्मी वृद्ध लोक कैं मोबाइल चलाएब सिखबैत छथि, मुदा स्वयं पासवर्ड आ नब व्यवस्था मे अटकैत छथि। गुरु-शिष्यक भूमिका उलटैत अछि। “आज

गुरु सेहो विद्यार्थी"क भाव कथा कैं तकनीकी बदलावक मानवीय रूप दैत अछि आ ज्ञानक पारस्परिकता स्थापित करैत अछि।

५१. विवाहक बजट — पृ. ६१२

"सादा विवाह"क बजट बनबैत-बनबैत बैठक, चाह-नास्ता आ सलाहक खर्च स्वयं बजट बढ़बैत अछि। कापी आर्थिक आत्म-भ्रमक दर्पण बनैत अछि। हास्यक लक्ष्य विवाह नहि, खर्च घटेबाक नामपर चलयवाला सामाजिक प्रदर्शन आ गणनाक असंगति अछि।

५२. महान कविक पड़ोसी — पृ. ६१८

महान कविक पड़ोसी लम्बा कविता-पाठ सँ बचबाक लेल घरेलू काम पकड़ैत अछि; फलतः कविता आ श्रम हास्यास्पद ढंग सँ जुड़ि जाइत अछि। व्यंग्य कठोर अपमान नहि; आत्मघोषित महत्ता कैं रोजक काजक धरातल पर उतारैत अछि। एहि कारण कथा स्नेहपूर्ण साहित्यिक आत्मालोचना बनैत अछि।

५३. किरायाक विद्वान — पृ. ६२४

किरायाक विद्वानमे मकान-मालिक शोधार्थीक विषयपर लगातार मुफ्त "मौलिक" विचार दैत छथि आ श्रेयक चाह राखैत छथि। भाड़ा, ज्ञान आ नामोल्लेखक सम्बन्ध अकादमिक व्यंग्य पैदा करैत अछि। कथा बौद्धिक स्वामित्वक अतिरंजित दावाक हास्यपूर्ण आलोचना अछि।

५४. गामक मौसम विज्ञानी — पृ. ६३१

गामक मौसम विज्ञानीक संकेत बारम्बार अचूक नहि, मुदा हुनकर चेतावनी लोक कैं छप्पर, अनाज आ पानि लेल तैयार करैत अछि। बादमे परिणाम लिखबाक अभ्यास भविष्यवाणी कैं परीक्षणीय बनबैत अछि। कथा ज्ञानक मूल्य कैं केवल "सही अनुमान" नहि, उपयोगी सावधानी आ सुधारयोग्य अभिलेखमे देखैत अछि।

५५. मुफ्त सलाह — पृ. ६३९

मुफ्त सलाह देनिहार व्यक्ति दोसरा लेल सिद्धान्त सहज बनबैत अछि; अपन झुकल देवाल पर ओही सिद्धान्त लागू करबाक बेर कठिनाइ बुझाइत अछि। तथ्य, अनुमान आ

छोट उपयोगी कदम अलग करबाक अभ्यास कथा कैँ हास्य सँ ज्ञानमीमांसात्मक अनुशासन दिस लऽ जाइत अछि।

५६. चुनावक चाय — पृ. ६४६

चुनावक चाह-दोकान सभ दलक भाषण सुनैत अछि, मुदा दुकानदारक कापी उधारक प्याला नहि बिसरैत। राजनीतिक वादा आ दैनिक हिसाबक अन्तर कथाक हास्य अछि। मत घोषित नहि कऽ आर्थिक लेखा राखब पात्रक व्यावहारिक निष्पक्षता बनैत अछि।

५७. माइकवाला काका — पृ. ६५३

विद्यालय समारोहक माइक आ लम्बा परिचय भाषणक आत्मविस्तार कैँ बढ़ा दैत अछि। तकनीक आवाज पैघ करैत अछि, अर्थ नहि। अन्ततः “जे कहब, से आवश्यक अछि?” सन प्रश्न समारोहक वाचालता पर सटीक रोक लगबैत अछि।

५८. एक किलो प्रतिष्ठा — पृ. ६६१

एक किलो प्रतिष्ठा मे पुरान बाट पर सामाजिक भरोसा अछि, मुदा माप बारह ग्राम चूकैत अछि। प्रमाणित बाट आबय पर व्यापारिक लाभ आ प्रतिष्ठा दुनू पुनर्गणित होइत अछि। कथा दिखबैत अछि जे भरोसा महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा मापन-सत्यक विकल्प नहि।

५९. नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक — पृ. ६७२

नष्ट विद्यालय-अभिलेख पुनः बनबैत समय शिक्षक अपन स्मृति कैँ अन्तिम प्रमाण मानय सँ इनकार करैत छथि। अलग-अलग स्रोत मिलाकऽ नाम फेर दर्ज होइत अछि। शीर्षकक उलटाव बतबैत अछि जे नाम बिसरणाइ व्यक्तिगत दोषक कथा नहि, संस्थागत अभिलेखक विश्वसनीयता बनाबयक प्रश्न अछि।

६०. चन्दा विशेषज्ञ — पृ. ६८०

चन्दा विशेषज्ञ सार्वजनिक पठन-कक्षक छत लेल संग्रहक नियम, सूची आ पावती बनबैत अछि, मुदा अपन योगदानक पाँति ओकर नैतिक स्थिति खोलैत अछि। हास्य सार्वजनिक काममे श्रेय, श्रम आ धनक अनुपात पर अछि। अभिलेख एतय आत्म-प्रचारक प्रतिरोधक बनैत अछि।

८.4 कथा ६१–८०

६१. मुफ्तक फोटो — पृ. ६९०

“मुफ्त फोटो”क आकर्षण लोक कँ सेवा सँ बेसी छविक प्रति सचेत करैत अछि। अन्ततः उपयोगी काज, उपस्थित श्रम आ सामूहिक क्षण तस्वीरक असली अर्थ बनैत अछि। कथा छवि-प्रदर्शनक मोह पर हल्का व्यंग्य करैत, दृश्य साक्ष्यक वैकल्पिक नैतिकता प्रस्तावित करैत अछि।

६२. समय पर नहि, बात पर — पृ. ६९८

गामक घड़ीसभ एक समय नहि देखबैत, तइयो लोक वचनक समय पर काज पूरा करैत अछि। कथा यान्त्रिक समय आ सामाजिक समयक भेद बनबैत अछि। “समय पर नहि, बात पर”क अर्थ अव्यवस्था नहि, पारस्परिक भरोसाक एक स्थानीय समय-प्रणाली अछि।

६३. हम दोषी कतय छी? — पृ. ७०५

पहिल पुरुष वाचक बेराबेरी पूछैत अछि—हम दोषी कतय छी? मुदा ओकर याद, संक्षिप्ताक्षर आ अनुमान पौध-वितरणमे गड़बड़ी करैत अछि। बादक सत्यापन-नियम व्यक्तिगत स्मृति पर निर्भरता घटबैत अछि। आत्मरक्षात्मक वाचक कथा कँ हास्यपूर्ण उत्तरदायित्व-अध्ययन बनबैत अछि।

६४. धर्मपरायण चोर — पृ. ७१३

धर्मपरायण व्यक्ति दोसरा केर औजार बिना अनुमति लऽ कऽ “अस्थायी उपयोग” मानैत अछि। उधार-रजिस्टर स्वामित्व, अनुमति आ वापसीक भेद स्पष्ट करैत अछि। कथा धार्मिक आत्म-छवि आ साधारण नैतिक व्यवहारक असंगति कँ तीक्ष्ण मुदा अहिंसक व्यंग्य बनबैत अछि।

६५. सदाचार समिति — पृ. ७१९

सदाचार समिति दोसरा पर अनुशासन लागू करैत-करैत अपन सदस्यक व्यवहारक विरोधाभास देखैत अछि। शिकायतक प्रक्रिया आत्म-जाँच दिशामे मुड़ैत अछि। संस्थागत नैतिकता तखन विश्वसनीय बनैत अछि जखन नियम बनौनिहार स्वयं ओकर भीतर अबैत अछि।

६६. पवित्र पार्किंग — पृ. ७२५

"पवित्र" पार्किंगक रेखा शक्तिशाली, परिचित आ आयोजक लेल अलग-अलग ढंग सँ मोड़ल जाइत अछि। अन्तमे पवित्रताक विशेषण हटाकऽ साधारण नियमक समानता महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। कथा विशेषणक नैतिक चमक आ प्रक्रियात्मक न्यायक अन्तर खोलैत अछि।

६७. दानक फोटो — पृ. ७३१

दानक फोटोमे दाता रिबन, नाम आ तस्वीर चाहैत अछि, मुदा हैंडपम्पक आसपास नाली बननाइ समुदायक वास्तविक आवश्यकता अछि। अन्ततः काजक तस्वीर उद्घाटनक तस्वीर सँ बेसी अर्थवान होइत अछि। सेवा आ दृश्य श्रेयक भेद कथा स्पष्ट करैत अछि।

६८. महान त्यागी — पृ. ७३७

महान त्यागी अपन त्यागक कथा स्वयं प्रचारित करैत अछि, मुदा बीआ-भण्डारक संकटमे वास्तविक योगदानक मात्रा दर्ज होइत अछि। अन्ततः नैतिक विशेषणक बदला बीआक संख्या महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। व्यंग्य आत्मघोषित पुण्य कैं मापनीय सार्वजनिक दायित्वक कसौटी पर राखैत अछि।

६९. सत्यवादी व्यापारी — पृ. ७४५

"सत्यवादी" व्यापारी वस्तुक लेबल एहन भाषा मे लिखैत अछि जे तकनीकी रूपेँ गलत नहो, मुदा ग्राहक कैं भ्रमित करय। शिकायत बाद अधिक स्पष्ट नामकरण अबैत अछि। कथा सत्य कैं केवल झूठक अनुपस्थिति नहि, पर्याप्त स्पष्टताक नैतिक दायित्व मानैत अछि।

७०. पुण्यक रसीद — पृ. ७५२

पुण्यक रसीद बनौनिहार लेखा-प्रिय पात्र सद्कर्म कैं अंकमे बदलय चाहैत अछि। बसन्तीक प्रसंग देखबैत अछि जे सहायता, ऋण, नाली आ पुरान दायित्व एक सरल पुण्य-खातामे नहि समाइत। अन्तक रिक्त पावती नैतिक हिसाबक असम्भवता आ आत्म-दायित्वक स्पष्ट संकेत अछि।

७१. सभ्य परिवार — पृ. ७६०

सभ्य परिवारक नियम देवाल पर अछि, मुदा दीर्घकाल सँ काज करयवाली स्त्रीक पूरा नाम परिवार नहि जानैत। बच्चा आ अभिलेखक माध्यमे ओकर नाम पुनःस्थापित होइत अछि। कथा शिष्टाचारक बाह्य प्रदर्शनक बदला व्यक्ति कैं नामसहित चिन्हबाक प्राथमिक नैतिकता पर बल दैत अछि।

७२. उपदेशक यात्री — पृ. ७६९

बसक उपदेशक यात्री टिकट, पाँति आ अनुशासनपर दोसरा कैं भाषण दैत अछि, फेर अपन टिकटहि पर संकटमे पड़ैत अछि। आत्मानुभव वाचाल नैतिकता कैं संयममे बदलैत अछि। मोड़ल टिकट अन्तमे स्मारक नहि, व्यवहार-सुधारक साधारण चिह्न अछि।

७३. शुद्ध भोजन — पृ. ७७८

शुद्ध भोजनक आग्रह करयवाला पात्र भाँड़ा, छुअन आ नियम देखैत अछि, मुदा मालतीक प्रति अपन भाषा जाँचैत नहि। कथा बाह्य शुद्धताक समानान्तर वाणी आ व्यवहारक शुद्धता उठबैत अछि। अन्तक सहज स्वीकृति नैतिक प्राथमिकता बदलबाक संकेत अछि।

७४. क्षमाक समारोह — पृ. ७८८

क्षमाक समारोहमे सार्वजनिक माफी आकर्षक दृश्य बनैत अछि, मुदा सरोजाक समस्या लेखा, दर आ संस्थागत प्रक्रिया सँ जुड़ल अछि। वास्तविक सुधार सार्वजनिक अभिनय सँ नहि, रजिस्टर-संशोधन सँ होइत अछि। कथा भावनात्मक क्षमा आ प्रक्रियात्मक न्यायक भेद स्पष्ट करैत अछि।

७५. दयालु मालिक — पृ. ७९७

दयालु मालिकक आत्म-छवि वास्तु आ जगहक वितरणमे परखल जाइत अछि। नव घरक योजना अनेक सुविधा देखबैत अछि, मुदा नीलिमाक जीवन-जगह पुरान “कोठली”क छायामे रहैत अछि। कथा पितृसत्तात्मक/मालिकाना दयाक सीमा स्थान-विन्यास द्वारा खोलैत अछि।

७६. सत्यक पोस्टर — पृ. ८०५

सत्यक पोस्टर सार्वजनिक धनक पारदर्शिता घोषित करैत अछि, मुदा असली परीक्षा छोट अंक, खाता आ उपलब्ध विवरणक अछि। पैघ घोषणाक बगलमे छोट लेखा टाँगल रहब कथाक दृश्य विडम्बना अछि। सत्यक नारा आ सत्यापनयोग्य सूचना अलग वस्तु अछि।

७७. भलमानुसक गवाही — पृ. ८१५

भलमानुसक प्रतिष्ठा साक्षी कैँ स्वतः विश्वसनीय नहि बनबैत। भवेश्वर जे प्रत्यक्ष नहि देखने छथि सेहो सद्भावनासँ कहि दैत छथि, आ निर्णय प्रभावित होइत अछि। बादमे ओ अपन गवाही कैँ “जे देखल” धरि सीमित करैत छथि। कथा शब्द-प्रमाणक पात्रता, सीमा आ उत्तरदायित्वक प्रखर अध्ययन अछि।

७८. दान पेटीक सिक्का — पृ. ८२५

दान पेटीक पहिल सिक्का दाता लेल विशिष्ट श्रेयक स्रोत अछि, मुदा सामूहिक काजमे ओ कुल राशिक एक अंश बनि जाइत अछि। पावतीसभ व्यक्तिगत योगदान दर्ज करैत अछि, पर सार्वजनिक उपयोग ओकरा बराबर करैत अछि। कथा दानमे अहंकार आ समुदायिक प्रयोजनक तनाव पर केन्द्रित अछि।

७९. सज्जन चालक — पृ. ८३४

सज्जन चालक अपन नम्रताक दावा करैत अछि, मुदा दबावमे कटु व्यंग्यपूर्ण भाषा प्रयोग करैत अछि। शिकायत आ दर्ज प्रतिक्रिया बाद भाषा बदलैत अछि। कथा चरित्र कैँ प्रमाणपत्र अथवा नारा सँ नहि, दोहरायल व्यवहार सँ परखैत अछि।

८०. चरित्र प्रमाण-पत्र — पृ. ८४५

चरित्र प्रमाण-पत्र नौकरीक आवेदकक “चरित्र” कैँ कागज पर स्थिर करबाक विडम्बना खोलैत अछि। अतिशयोक्तिपूर्ण प्रमाणपत्रक बीच काटल-छाँटल अथवा अपूर्ण फारम अधिक सत्यनिष्ठ लगैत अछि। व्यक्ति कागजक विशेषण सँ पैघ अछि—ई कथाक मूल व्यंग्यात्मक निष्कर्ष अछि।

८.5 कथा ८१–१००

८१. उपवासक भोज — पृ. ८५६

उपवासक भोज उपवासक नामपर फलाहार, व्यवस्था आ प्रदर्शनक विस्तार देखबैत अछि, जखन सेवा करयवाला लोकक भोजन आ औषधि पाछाँ पड़ैत अछि। चमकीला फलक उलटि साधारण हिसाब लिखबाक जगह बनैत अछि। धार्मिक प्रदर्शनक पाछाँ श्रमक अदृश्यता कथा केर केन्द्र अछि।

८२. नम्रताक पुरस्कार — पृ. ८६७

नम्रताक पुरस्कार नम्र होयबाक सार्वजनिक प्रतियोगिता बनि जाइत अछि। चयन-प्रक्रिया स्वयं नम्रताक उल्टा प्रदर्शन पैदा करैत अछि। अन्ततः नामक बदला उपयोगी काज दिस झुकाव कथा कैँ आत्मविरोध सँ व्यवहारिक नैतिकता दिस लऽ जाइत अछि।

८३. अन्तिम पाँति — पृ. ८७५

अन्तिम पाँति सामाजिक प्रतिष्ठाक सीट-क्रम पर आरम्भ होइत अछि। पठन-कक्षक समारोहमे पाछाँ बैसब अपमान बुझाइत, मुदा ओतय सँ मंच अधिक साफ देखाइत अछि। कथा स्थानक अर्थ कैँ दर्जासँ दृष्टिबिन्दु दिस बदलैत अछि; “अन्तिम” शब्द मूल्यांकनक स्थिर श्रेणी नहि रहैत।

८४. नदीक कागज — पृ. ८८४

नदीक बहाव बदलैत अछि, मुदा पुरान कागज स्थिर रेखा पकड़े रहैत अछि; एहि फाँकमे बस्ती कागज पर लगभग अनुपस्थित भऽ जाइत अछि। चम्पा दस्तावेज, नाप आ स्थानीय वास्तविकता जोड़ैत अछि। “कागज जतय खाली अछि, ओतयसँ शुरू” समानान्तर इतिहासक शक्तिशाली सूत्र बनैत अछि।

८५. ईंटक नम्बर — पृ. ८९४

ईंट-भट्ठाक श्रमिक पहिने केवल नम्बर अछि। रजिस्टरमे नाम, दिनांक आ निरन्तरता जुड़ला पर संख्या काज-चिह्न रहैत अछि, व्यक्ति-परिचयक विकल्प नहि। कथा प्रशासनिक सरलता आ मनुष्यक नामित अस्तित्व बीच आवश्यक संतुलन देखबैत अछि।

८६. जंगलक रास्ता — पृ. ९०३

जंगलक पैदल बाट कैँ नक्शामे मोटर-रास्ता मानबाक भूल स्थानीय उपयोगक वास्तविकता मेटबैत अछि। विद्यालयी बच्चा, चलनक प्रमाण आ स्थल-जाँच नक्शा सुधारैत अछि। श्रेणीकरण धरतीक व्यवहार पर आधारित हो, कार्यालयक सुविधा पर नहि—कथा एहि सिद्धान्त कैँ कथानक बनबैत अछि।

८७. मजूरीक हस्ताक्षर — पृ. ९१०

मजूरीक हस्ताक्षरमे धनवन्ती केवल हस्ताक्षर सीखैत नहि; ओ हस्ताक्षर सँ पहिने दिन, काम आ रकम पढ़ब सीखैत अछि। अक्षर ज्ञान सूचित सहमतिक शक्ति बनैत अछि। कथा साक्षरताक सफलता हस्ताक्षरक आकृति सँ नहि, सत्यापित अर्थ बुझबाक अधिकार सँ मापैत अछि।

८८. कटान क्षेत्र — पृ. ९१९

कटान क्षेत्रक लाल सीमा धीरे-धीरे सुगियाक जमीन दिस सरकैत अछि। पएरक माप, पुरान चिन्ह आ आधिकारिक नाप दूरीक घटाव प्रमाणित करैत अछि। खननक आर्थिक भाषा सामने स्थानीय भूगोल आ देह-आधारित मापन प्रतिरोधक साधन बनैत अछि।

८९. राशनक दिन — पृ. ९२७

राशनक दिनमे सोनमतीक नाम सूची सँ छुटल अछि; पावती, पुरान कागज आ निरन्तर प्रयत्न ओकर अधिकारक सूत्र बनैत अछि। कथा कागजक स्मृति कैँ नागरिक अस्तित्वसँ जोड़ैत अछि। अभिलेख एतय शुष्क प्रशासन नहि, भोजनक पहुँचक जीवन्त माध्यम अछि।

९०. स्कूलक दूरी — पृ. ९३६

विद्यालयक दूरी केवल किलोमीटर नहि, नीति द्वारा बनाओल पात्रता-अन्तर अछि। कंचन कैँ निश्चित उपस्थिति चाही, आ पुरान नील साइकिल ओ अन्तर पार करबाक सामुदायिक साधन बनैत अछि। दूरी घटैत नहि, मुदा पहुँचक संरचना बदलैत अछि—ई कथा केर सूक्ष्म विकास-दृष्टि अछि।

९१. पत्थर तोड़ैत गीत — पृ. ९४५

पत्थर तोड़ैत स्त्रीसभक गीत दिन, श्रम आ घटनाक मौखिक अभिलेख अछि। सड़क बनि गेलापर पत्थर ढँकाइत अछि, मुदा कापीमे दर्ज बाइस दिनक आवाज बचैत अछि। कथा श्रम-इतिहास कैं केवल ठेका अथवा माप-पुस्तिका सँ नहि, काम करयवाली स्त्रीक स्वर सँ लिखैत अछि।

९२. वनक अधिकार — पृ. ९५४

वनक अधिकारमे धनमायाक जमीन आ वन-सीमा पुरान मौसमी धार, खूँटा, नक्शा आ स्थल-साक्ष्य सँ पुनः पढ़ल जाइत अछि। कुसुम पहिने अधिकारी कैं नापय दैत अछि, फेर अपन कापी मिलबैत अछि। स्थानीय पर्यावरणीय ज्ञान आ औपचारिक अभिलेख प्रतिद्वन्द्वी नहि, सत्यापनक सहकारी स्रोत बनैत अछि।

९३. पुलक मुआवजा — पृ. ९६१

पुल बनबाक मूल्य झुमरीक घर, सामान आ विस्थापनमे देखाइत अछि। आरम्भिक मुआवजा वास्तविक क्षति सँ कम अछि; दस्तावेजी पुनरीक्षण बाद सुधार सम्भव होइत अछि। पुल अन्ततः खुलैत अछि, मुदा कथा उद्घाटनक बदला दावाक शुद्धतापर ध्यान राखैत अछि।

९४. मजदूरक फोटो — पृ. ९६९

मजदूरक फोटोमे दृश्य साक्ष्य मौजूद अछि, मुदा तस्वीरमे देखाइत लोकक नाम प्रशासनिक अभिलेख सँ जुड़ल नहि। व्यवस्था फोटो, मस्टर आ औजार-रजिस्टरक बीच पहचानक बाट बनबैत अछि। कथा कहैत अछि—नाम फोटो पर छपब अनिवार्य नहि, मुदा नाम धरि पहुँचबाक सत्यापनीय मार्ग आवश्यक अछि।

९५. लाल कार्ड — पृ. ९७६

लाल कार्डक कथा घर-परिवारक प्रशासनिक परिभाषा आ फुलमतीक वास्तविक घरेलू इकाईक बीच फाँक देखबैत अछि। आवेदन, दिनांक आ सत्यापनक परत-दर-परत प्रक्रिया अन्ततः पृथक पहचान दैत अछि। पुरान दिनांक सुरक्षित रहब संघर्षक ऐतिहासिक निरन्तरता बचबैत अछि।

९६. बालू घाट — पृ. ९८५

बालू घाटमे नदी-सँ बालू निकासी आ इनारक जलस्तरक सम्बन्ध स्थानीय माप सँ उभरैत अछि। रस्सीक गाँठ सभ पानि घटबाक समय-श्रृंखला बनैत अछि। कथा पर्यावरणीय दावाकें केवल भावना पर नहि, पुनरावृत्त स्थानीय मापनपर टिकबैत अछि।

९७. अस्थायी बस्ती — पृ. ९९२

दशकधरि "अस्थायी" कहल बस्ती अस्थायित्वक प्रशासनिक जालमे स्थायी जीवन बितबैत अछि। आवेदन, नाप आ पुनरीक्षणक बाद जल-नली पहुँचैत अछि; पुरान अस्थायी नली देवाल पर ऐतिहासिक वस्तु बनि रहैत अछि। कथा देखबैत अछि जे अस्थायी स्थिति टूटलासँ नहि, दर्जा संशोधित भेलासँ समाप्त होइत अछि।

९८. जंगलक स्कूल — पृ. १००१

जंगलक स्कूलमे प्रश्न-पर्ची बच्चासभक नब आवाज बनैत अछि। फुलकुमारीक आग्रह जे प्रश्न चुपचाप बिला नहि जाए, शिक्षण कँ उत्तर देबाक प्रक्रिया सँ पहिने प्रश्न स्वीकारबाक संस्था बनबैत अछि। लाल झोरा ज्ञानक अधिकार आ संस्थागत सुनवाइक प्रतीक बनैत अछि।

९९. हस्ताक्षरक शक्ति — पृ. १०१०

महिला बचत-समूहक हस्ताक्षर-अभ्यास अक्षर बनबैत-बनबैत दस्तावेज पढ़बाक सामूहिक अनुशासन बनैत अछि। "पहिने पढू, तकर बाद हस्ताक्षर" ज्ञान आ सहमतिक क्रम स्थापित करैत अछि। व्यक्तिगत साक्षरता सामूहिक स्त्री-शक्तिक रूप लैत अछि।

१००. मजदूरीक आधा दिन — पृ. १०१८

मजदूरीक आधा दिन शब्द, घड़ी आ श्रमक वास्तविक भारक विवाद अछि। दोपहरिक सीमा देखाकऽ आधा दिन लिखल जाइत अछि, जखन बोरा उतारबाक श्रमक तीव्रता आ समय-संरचना अलग सत्य कहैत अछि। अन्तमे "आधा" शब्द स्वयं बोरा सँ भारी बनैत—भाषा द्वारा आर्थिक अन्यायक निर्माण उजागर होइत अछि।

९. अन्तरकथात्मक रूपांकन : संग्रह कँ जोड़यवाला दीर्घ सूत्र

९.१ वस्तु सँ प्रमाण धरि

संग्रहक आरम्भमे वस्तु मुख्यतः स्मृति खोलैत अछि—घंटी, कंघी, कटोरी, चप्पल, नख, फल। मध्य भागमे वस्तु सामाजिक तनावक चिह्न होइत अछि—ढोल, झण्डा, बूट, नाव, काँच, लालटेन। अन्तमे वस्तु अभिलेखीय प्रमाण बनैत अछि—कागज, बाट, रसीद, सूची, नक्शा, कार्ड, फोटो, हस्ताक्षर। एहि क्रम मे वस्तु-साहित्य निजी मानस सँ सार्वजनिक न्याय धरि यात्रा करैत अछि।

९.२ स्मृति बनाम अभिलेख : विरोध नहि, कार्य-विभाजन

कथा १ स्पष्ट करैत अछि जे कागज स्मृति घुरा नहि सकैत; शब्द दृश्यक बीमा नहि। मुदा कथा ५९, ८४, ८७, ८९, ९२, ९४, ९५, ९७, ९९ आ १०० बतबैत अछि जे अधिकारक जगतमे बिना कागज स्मृति पर्याप्त नहि। संग्रहक गहीरता एहि प्रकट विरोध कैं सुलझेबामे अछि: स्मृति अनुभव बचबैत अछि, अभिलेख दावा सत्यापित करैत अछि। एकटा दोसरा केर विकल्प नहि।

९.३ स्त्रीक श्रम आ ज्ञान

प्याज काटैत स्त्री, पानि भरबाक बेर, दूध उफनल, पत्थर तोड़ैत गीत, मजूरीक हस्ताक्षर, हस्ताक्षरक शक्ति, राशनक दिन आ वनक अधिकार स्त्री पात्र कैं केवल पीड़ित रूपमे नहि रखैत। ओ सभ नापैत, लिखैत, तुलना करैत, हस्ताक्षर रोकैत, प्रश्न उठबैत, नियम बदलाबैत आ सामूहिक स्मृति बनबैत छथि। एहि कारण स्त्री-अनुभव संग्रहमे भावात्मक विषयसँ आगाँ ज्ञान-उत्पादनक स्रोत बनैत अछि।

९.४ अफवाह, गवाही आ सार्वजनिक सत्य

कथा ३३, ३४, ४३, ४९, ५४, ५५, ५८, ५९ आ ७७ कैं एक श्रृंखला रूपमे पढ़ला पर संग्रहक “सत्यशास्त्र” उभरैत अछि। गन्ध, आवाज, रंग, संकेत, बाट, स्मृति, विशेषज्ञता आ प्रतिष्ठा—किछुओ अकेले पर्याप्त नहि। पुनरावृत्ति, मिलान, स्थल-जाँच, प्रत्यक्ष सीमा आ सुधारयोग्य अभिलेख मिलि सार्वजनिक सत्य बनबैत अछि।

९.५ विकासक दोसर पृष्ठ

पुल, सड़क, खनन, जंगल, राशन, विद्यालय, पानि, मुआवजा आ मजदूरीक कथा सभ विकास-विरोधी घोषणापत्र नहि। ई सभ विकासक “दोसर पृष्ठ” खोलैत अछि—ककर घर हटत, ककर नाम छूटत, ककर फोटो अनाम रहत, नक्शा कोन बाट कैं गलत

वर्गीकृत करत, आधा दिन कोना लिखल जाएत। एहि प्रश्नसँ विकास अधिक सत्यापनीय आ उत्तरदायी बनैत अछि।

९.६ अन्तक शिल्प

संग्रह बारम्बार उच्च कथनक बदला छोट अन्तिम क्रिया चुनैत अछि—घंटी नहि दबेनाइ, नाप छोड़ब, कापी खुला राखब, पुरान वस्तु टाँगब, हस्ताक्षर सँ पहिने पढ़ब। ई "मन्द अन्त" संग्रहक विशिष्ट लय अछि। किछु रचनामे अन्तिम वाक्य प्रतीकक अर्थ फेर कहि दैत अछि; एहन ठाम कटौती ध्वनिक क्षमता बढ़ा सकैत अछि।

१०. निष्कर्ष

कथा-त्रिधारा : खण्ड-१क एक सय कथा कैं समग्र रूपेँ पढ़ला पर संग्रह तीन स्तरपर विशिष्ट ठहरैत अछि। पहिल, ई घर-परिवारक सूक्ष्म अनुभूति कैं सामाजिक इतिहाससँ जोड़ैत अछि। दोसर, ई वस्तु आ कागज कैं केवल प्रतीक नहि, ज्ञानक साधन बनबैत अछि। तेसर, ई हास्य आ नैतिक विडम्बनाक माध्यमे विशेषणक सामाजिक शक्ति जाँचैत अछि—सत्यवादी, सभ्य, शुद्ध, दयालु, सज्जन अथवा अस्थायी कहल मात्र सँ वस्तु/व्यक्ति ताहि गुणक नहि भऽ जाइत। व्यवहार, प्रत्यक्ष, अभिलेख आ परिणाम अर्थक सीमा बनबैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र एहि संग्रहक व्यंजना, रस-संयम आ वक्रोक्ति कैं उघारैत अछि; पाश्चात्य कथाशास्त्र दृष्टिबिन्दु, वाचक आ दैनन्दिन यथार्थक संरचना स्पष्ट करैत अछि; नव्य-न्याय प्रमाण, संशय आ भाषिक परिशुद्धताक सूक्ष्म उपकरण दैत अछि; विदेह समानान्तर इतिहास घर, श्रम, सीमांत भूगोल आ लघु-अभिलेख कैं इतिहासक केन्द्र बनबैत अछि। चारू दृष्टि मिलि ई निष्कर्ष देत अछि जे संग्रहक बड़का उपलब्धि "लोक-रंग" मात्र नहि, बल्कि ज्ञान, स्मृति आ न्यायक दैनिक व्याकरण रचनाइ अछि।

संग्रहक आरम्भिक घंटी दबौलापर स्मृति हेराइत अछि; अन्तिम कथा मे "आधा दिन" लिखल शब्द मजदूरी घटा सकैत अछि। एहि दू छोरक बीच पूरा खण्ड एक प्रश्नक विविध रूप लिखैत अछि—शब्द, वस्तु आ अभिलेख मनुष्यक जीवन पर कतेक अधिकार रखैत अछि, आ मनुष्य ओकर अर्थ कैं कोना फेर जाँचि सकैत अछि। एहि

दृष्टिसँ कथा-त्रिधारा : खण्ड-१ समकालीन मैथिली लघुकथात्मक/कथा-लेखनमे स्मृति सँ साक्ष्य धरि यात्रा करयवाला एक सुसंगत प्रयोग रूपेँ पढ़ल जाए योग्य अछि।

ग्रन्थसूची

कथा-त्रिधारा : खण्ड-१

नाट्यशास्त्र

ध्वन्यालोक

अभिनवभारती

वक्रोक्तिजीवित

औचित्यविचारचर्चा

काव्यप्रकाश

साहित्यदर्पण

तत्त्वचिन्तामणि

पोएटिक्स [Poetics]

नैरेटिव डिस्कोर्स [Narrative Discourse]

द रेटरिक ऑफ फिक्शन [The Rhetoric of Fiction]

द डायलॉजिक इमैजिनेशन [The Dialogic Imagination]

माइमेसिस [Mimesis]

सेमान्टिक पावर्स [Semantic Powers]

अर्थ : मीनिंग [Artha: Meaning]

प्रोविन्शलाइजिंग यूरोप [Provincializing Europe]

आलेख ११ · कथा, लघुकथा आ कथा-समालोचना

कथा-त्रिधारा : खण्ड २

सारांश

ई अध्ययन ‘कथा-त्रिधारा, खण्ड-२’क कथा १०१ सँ २०० धरि सम्पूर्ण एक सय कथाकेँ एकसंग पढ़ैत अछि। पाठ-संग्रहमे मिथिला, वज्जि आ अंगक ग्राम्य श्रम-विनिमय, जल-भूमि-संसाधन, मौखिक चलन, स्त्री-श्रम, माप आ हिस्सेदारी सँ आरम्भ भऽ संकेत, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य, कार्यालयी चिह्न, नस्ती, मोहर, दिनांक, अंकीय पाँजि, पहचान आ घरेलू सम्बन्ध धरि एक क्रमिक कथात्मक विस्तार देखाइत अछि। एहि कारण खण्डकेँ केवल एक सय अलग कथा रूपेँ नहि, बल्कि ‘अनलिखल चलन सँ लिखित प्रमाण, आ लिखित प्रमाण सँ पुनः मानवीय सम्बन्ध’ धरि जाएवला दीर्घ आख्यानिक वक्र रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय परीक्षणमे करुण, शान्त, अद्भुत आ हास्यक सूक्ष्म मिश्रण, ध्वनि द्वारा अव्यक्त अर्थ, वक्रोक्तिपरक वस्तु-शीर्षक, तथा औचित्यक अनुशासन प्रमुख ठहरैत अछि। पाश्चात्य आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ वस्तु-केन्द्रित कथा-विन्यास, सीमित दृष्टिबिन्दु, समय-मापन, खुला अन्त, संवादक अर्थ-भार आ संस्थागत व्यंग्य महत्त्वपूर्ण अछि। नव्य-न्याय पद्धति एहि कथासभमे प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द/साक्ष्य, अभाव, अवच्छेद, सम्बन्ध, काल-सीमा आ प्रमाण-विरोध जेकाँ प्रश्नकेँ सूक्ष्म बनबैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अन्तर्गत सरकारी/लिखित अभिलेखक समानान्तर लोकस्मृति, घरेलू कागज, भूगोल, देहगत अनुभव, वस्तु, गन्ध, ध्वनि आ श्रमक साक्ष्य पढ़ल गेल अछि; कोनो स्रोतकेँ केवल हाशियाक कारण स्वतः सत्य नहि मानल गेल अछि।

बीजशब्द

कथा-त्रिधारा : खण्ड २ · मैथिली कथा · लघुकथा · पाठाधारित समीक्षा · कथन-शिल्प

१.१५. गजेन्द्र ठाकुर- कथा-त्रिधारा, खण्ड-२, कथा १०१–२००क बहुपद्धति साहित्यिक अध्ययन [भारतीय काव्यशास्त्र · पाश्चात्य आख्यानशास्त्र · नव्य-न्याय · विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति]- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

कथा-त्रिधारा, खण्ड-२

कथा १०१–२००क बहुपद्धति साहित्यिक अध्ययन

भारतीय काव्यशास्त्र · पाश्चात्य आख्यानशास्त्र · नव्य-न्याय · विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

शोध-लेख

सारांश

ई अध्ययन ‘कथा-त्रिधारा, खण्ड-२’क कथा १०१ सँ २०० धरि सम्पूर्ण एक सय कथाकेँ एकसंग पढ़ैत अछि। पाठ-संग्रहमे मिथिला, वज्जि आ अंगक ग्राम्य श्रम-विनिमय, जल-भूमि-संसाधन, मौखिक चलन, स्त्री-श्रम, माप आ हिस्सेदारी सँ आरम्भ भऽ संकेत, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य, कार्यालयी चिह्न, नस्ती, मोहर, दिनांक, अंकीय पाँजि, पहचान आ घरेलू सम्बन्ध धरि एक क्रमिक कथात्मक विस्तार देखाइत अछि। एहि कारण खण्डकेँ केवल एक सय अलग कथा रूपेँ नहि, बल्कि ‘अनलिखल चलन सँ लिखित प्रमाण, आ लिखित प्रमाण सँ पुनः मानवीय सम्बन्ध’ धरि जाएवला दीर्घ आख्यानिक वक्र रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय परीक्षणमे करुण, शान्त, अद्भुत आ हास्यक सूक्ष्म मिश्रण, ध्वनि द्वारा अव्यक्त अर्थ, वक्रोक्तिपरक वस्तु-शीर्षक, तथा औचित्यक अनुशासन प्रमुख ठहरैत अछि। पाश्चात्य आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ वस्तु-केन्द्रित कथा-विन्यास, सीमित दृष्टिबिन्दु, समय-मापन, खुला अन्त, संवादक अर्थ-भार आ संस्थागत व्यंग्य महत्त्वपूर्ण अछि। नव्य-न्याय पद्धति एहि कथासभमे प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द/साक्ष्य, अभाव, अवच्छेद, सम्बन्ध, काल-सीमा आ प्रमाण-विरोध जेकाँ प्रश्नकेँ सूक्ष्म बनबैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अन्तर्गत सरकारी/लिखित अभिलेखक समानान्तर लोकस्मृति, घरेलू कागज, भूगोल, देहगत अनुभव, वस्तु, गन्ध, ध्वनि आ श्रमक

साक्ष्य पढ़ल गेल अछि; कोनो स्रोतकेँ केवल हाशियाक कारण स्वतः सत्य नहि मानल गेल अछि।

सम्पूर्ण पाठ-परीक्षण देखबैत अछि जे खण्डक सर्वाधिक विशिष्ट शक्ति ‘छोट वस्तु’ कैँ विचारक यन्त्र बनबामे अछि—चारि मुट्ठी बीआ, लाल सूत, घंटी, फीता, मोहर, कुर्सी, पेंसिल, स्कैनरक छाँह, टिकट, डिब्बा, बल्ब, जूता, कप, रस्सी वा मेड़। ई वस्तुसभ अधिकार, अनुपस्थिति, स्मृति, श्रम, समय आ प्रमाणक अमूर्त प्रश्नकेँ स्पर्शनीय बनबैत अछि। भाषिक निखार परीक्षणमे किछु शब्दरूपक असंगति सेहो भेटैत अछि; तकर गणना आ कथानुसार वितरण अन्तिम खण्डमे देल गेल अछि।

बीजशब्द: कथा-त्रिधारा; मैथिली कथा; ग्राम्य अर्थनीति; अभिलेख; प्रमाण; नव्य-न्याय; रस; ध्वनि; आख्यान; समानान्तर इतिहास; मिथिला; वज्जि; अंग।

१. अध्ययनक पाठ-स्रोत, परिधि आ पद्धति

अध्ययनक आधार प्रस्तुत खण्डक सम्पूर्ण कथा-पाठ अछि। संरचनात्मक जाँचमे कथा १०१ सँ कथा २०० धरि ठीक एक सय स्वतंत्र कथा-संख्या, एक सय शीर्षक आ तदनुरूप मुख्य-पाठ भेटल। अतः विश्लेषण अनुक्रमक शीर्षक अथवा चुनल नमूना पर नहि, सभ कथा पर आधारित अछि।

कथा-पाठक स्वचालित देवनागरी पद-गणनामे करीब १९६६०१ पद भेटैत अछि; प्रति कथा औसत करीब १९६६ पद अछि। सभसँ छोट कथा कथा १९८ ‘बिना घंटीक साइकल’ आ सभसँ दीर्घ कथा कथा १२८ ‘निर्जन घाटक तानल रस्सी’ अछि। ई गणना आलोचनात्मक दिशा निर्धारित करबाक साधन अछि, साहित्यिक मूल्यक माप नहि।

पद्धतिगत रूपेँ चारि दृष्टि एक-दोसराक विकल्प नहि, पूरक अछि। भारतीय काव्यशास्त्र भाव-अनुभव आ व्यञ्जनात्मक अर्थ पर बल दैत अछि; पाश्चात्य आख्यानशास्त्र कथा-विन्यास, दृष्टिबिन्दु, समय, कथक-स्वर आ पाठक-प्रभाव पर; नव्य-न्याय प्रमाणक प्रकार, सम्बन्धक सीमा आ निष्कर्षक वैधता पर; विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति भिन्न स्रोत-प्रणालीकेँ एके विश्लेषण-रेखापर राखि पूछैत अछि—ककर साक्ष्य बचल, ककर मेटल, ककर भाषा वैध ठहरल, आ वर्तमान परिणाम पर ओकर की असर भेल।

एहि लेखमे लेखकक निजी आशय, रचनाक बाहरी जीवन-वृत्त वा अप्रकाशित स्रोतक अनुमान नहि कएल गेल अछि। जतय पाठ स्पष्ट नहि, ओतय अनिश्चिततासँ अनिश्चित रूपेँ राखल गेल अछि। साहित्यिक व्याख्या पाठ-साक्ष्यक ऊपर निर्मित अछि, पाठ-साक्ष्यक स्थान नहि लैत।

१.१ पाठ-सांख्यिकी

कथा-समूह	कथा-संख्या	कुल पद	औसत पद	न्यूनतम	अधिकतम
१०१–१२०	२०	४४८८२	२२४४	१६०२	२८४९
१२१–१४०	२०	५१५८७	२५७९	१९८८	३३०५
१४१–१६०	२०	३९४०३	१९७०	१४६४	२४३४
१६१–१८०	२०	३४०४५	१७०२	१२८८	२८५०
१८१–२००	२०	२६६८४	१३३४	१०२८	१६१२

२. खण्डक दीर्घ संरचना: पाँच कथात्मक चरण

२.१ कथा १०१–१२०: मौखिक चलन सँ माप, लेखा आ साझा नियम धरि

एहि बीस कथाक प्रमुख नाट्य-क्षेत्र गाम, खेत, गोठ, खलिहान, पोखरि, बाँध, इनार, तेलीघर, भट्ठी आ साझा औजार अछि। विवाद प्रायः पैघ सम्पत्तिपर नहि, छोट मात्रापर उठैत अछि—चारि मुट्ठी बीआ, आधा दिन, आधा बाँस, पहिल दूध, भूसाक भाग, दू पसेरी, पम्पक मिनट, घासक पालि। मुदा ई छोट मात्रा सामाजिक सम्बन्धक असली संरचना खोलैत अछि। कथासभ बारम्बार देखबैत अछि जे ‘पुरान नियम’ स्वभावतः न्यायपूर्ण नहि; ओ पुरान परिस्थितिक संक्षिप्त रूप हो सकैत अछि। परिस्थिति बदललापर नियमक इकाइ फेर परिभाषित करब पड़ैत अछि।

सभ कथा एक तरहक समाधान नहि दैत। कखनो कापी बनैत अछि, कखनो सूत, कखनो पाँति, कखनो श्रम-इकाइ, कखनो केवल नया नाम। महत्त्वपूर्ण ई जे लेखन मौखिक स्मृतिक शत्रु नहि बनैत; ओ स्मृतिक सीमा स्पष्ट करैत अछि। ‘ककर श्रम?’, ‘ककर समय?’, ‘ककर हिस्सा?’, ‘ककर जिम्मा?’—ई चार प्रश्न एहि चरणक मूल न्याय-व्याकरण अछि।

२.२ कथा १२१–१४०: विस्मय सँ परीक्षण धरि—चिह्न, स्मृति आ वस्तु-साक्ष्य

एहि चरणमे वातावरण अचानक गाढ़ होइत अछि। सूखल नहरमे लेखनी चलैत अछि, कुलुप पर खरोंच अछि, तेरहम थैला भेटैत अछि, पनचक्कीक पाँख उलटैत अछि, उज्जर पर्दा पर कारी बिन्दु, छाजन पर तीन चोट, पेटीक ताप, देबालक खटखट, ओसक सीधा पट्टा, लाल सूत, कालिख—शीर्षकहि सँ रहस्यक सम्भावना खुलैत अछि। मुदा कथासभ रहस्यकेँ अलौकिक निष्कर्षमे शीघ्र बन्द नहि करैत। बारम्बार भौतिक वस्तु, पाँजि, छवि, नाप, स्रोत, स्मृति आ वर्तमान उपयोगक तुलनासँ अर्थ निर्मित होइत अछि।

भारतीय सौन्दर्य-दृष्टिसँ अद्भुत रस आरम्भक ऊर्जा दैत अछि, पर अन्त प्रायः शान्त अथवा करुण बोधमे स्थिर होइत अछि। नव्य-न्याय दृष्टिसँ प्रत्यक्षक पहिल प्रभाव अनुमानक पर्याप्त हेतु नहि; उपाधि, अभाव, वैकल्पिक कारण आ स्रोत-जाँच जरूरी अछि। एहि समूहक सौन्दर्य एहि कारण बढ़ैत अछि जे समाधान रहस्य नष्ट नहि करैत—ओ रहस्यक स्वरूप बदलैत अछि।

२.३ कथा १४१–१६०: कार्यालयी चिह्न, पद आ रिक्त स्थानक सत्ता

नाम-पट्टी, हस्ताक्षरक बीचक खाली घर, कुर्सी नम्बर शून्य, अवकाश-पत्र, खाली दराज, फीता, पदनामक आधा अक्षर, दिनांक, घंटी, मोहर, झरोखा, फाटकक टेबुल, लाल पेंसिल, गुलाबी कात, सीढ़ी—एहि समूहमे कार्यालयक वस्तु सभ ‘नियम’ जेकाँ व्यवहार करय लगैत अछि। अनेक स्थिति मे लिखित नियम कम, वस्तुक परम्परागत अर्थ बेसी प्रभावशाली अछि। कथासभ एहि छद्म-अधिकारकेँ एक-एक कऽ खोलैत अछि।

व्यंग्यक मूल स्रोत पात्रक मूर्खता नहि, प्रणालीक अर्द्धस्पष्टता अछि। खाली खाँचा भरबाक दबाव, रंग कैँ दर्जा बुझब, अक्षरक आधा भाग सँ पद बदलि जाएब, झरोखा जे अस्तित्वमे नहि—ई सभ हँसी उत्पन्न करैत अछि, मुदा हँसीक नीचाँ नागरिक परिणाम गंभीर अछि। कथाक नैतिकता व्यक्तिविरोधी नहि; प्रणाली-संशोधक अछि।

२.४ कथा १६१–१८०: प्रमाण, परिचय, अंकीय पाँजि आ समय-सापेक्ष सत्य

ई बीस कथा खण्डक सर्वाधिक विश्लेषणात्मक भाग अछि। एक व्यक्ति तीन ठाम उपस्थित, बन्द कोठलीमे खुलल शाखा, उच्चारणक दोसर नाम, उत्तर पहिने माँगैत प्रपत्र, मोहरबन्द अभिलेख पर चलैत काज, रोमन लिप्यन्तरण सँ दू

गामक विलय, छुट्टीक दिन उपस्थितिक आदेश, प्रश्न सँ जन्मल शिकायत, स्कैनरक छाँह, एके नामक दू वेतन, उपस्थितिक प्रमाण लेल कार्यक्षेत्र सँ अनुपस्थिति—सभ स्थितिमे वर्गीकरण वास्तविक जीवनसँ टकरैत अछि।

एहि चरणमे ‘सत्य’ प्रायः एक दस्तावेज नहि। मूल, छायाप्रति, पावती, फाटक-पाँजि, समय, प्रत्यक्ष उपस्थिति, स्थानीय उच्चारण, पुरान गवाही, निर्णय-अंक—सभक क्षेत्र अलग अछि। नव्य-न्यायीय विभाजन एहि कथासभ पर विशेष फलदायी अछि, कारण पाठ स्वयं पूछैत अछि: कोन ज्ञान-स्रोत कोन निष्कर्ष धरि वैध अछि? कथा १७५ आ १७९ समयक प्रश्नकेँ अत्यन्त सूक्ष्म बनबैत अछि—सुधार मूलकेँ मिटबैत नहि, आ बादक मृत्यु पुरान समयक सत्य गवाही कैँ मिथ्या नहि बनबैत।

२.५ कथा १८१–२००: अल्पकथन, घरेलू वस्तु आ सम्बन्धक पुनर्संयोजन

अन्तिम बीस कथा कार्यालयी घनत्वसँ बाहर आबि फेर घर, पोखरि, बान्ह, स्टेशन, अस्पताल, ओसारा, खेत, रेडियो, छत, दोकान, पुल, गाछ, नदी आ भानसघरमे लौटैत अछि। मुदा पहिल बीस कथाक ‘नियम’ आ बीचक कथाक ‘प्रमाण’ एतय अदृश्य रूपेँ संग अछि। टिकट, कंगनक डिब्बा, पुरान ऊन, लाल सूत, खाली कुर्सी, नाप-डोरी, टॉर्च, आधा गिलास पानि, बल्ब, रस्सी, रेडियो, जूता, तेसर कप, जाफरी, जाल, धुआँ, घंटी आ मेड़—वस्तुसभ सम्बन्धक अर्थ वहन करैत अछि।

एहि समूहक शैली अधिक संक्षिप्त अछि; पद-औसत सेहो पछिला समूहसभसँ घटि जाइत अछि। अन्त प्रायः उद्घोषणा नहि करैत—वस्तुकेँ स्थान बदलैत अछि, कनेक पानि छोड़ैत अछि, कप उल्टा रहैत अछि, जाफरी दुनू कात सँ खुलैत अछि, वा मेड़मे पानि जाएबाक जगह छोड़ल जाइत अछि। ई अल्पकथन ध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिसँ खण्डक परिपक्व उपलब्धि अछि।

३. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

रस-दृष्टिसँ खण्ड एकरूप भाव-संसार नहि। ग्राम्य हिस्सेदारीक कथामे करुण अथवा रौद्रक खुला विस्फोट कम, ‘न्याय होअय’क स्थायी आकांक्षा बेसी अछि। एहि आकांक्षाकेँ वीरक सूक्ष्म नैतिक रूप कहि सकैत छी, मुदा अनेक कथाक अन्त शान्त भावमे उतरैत अछि—नियम बनल, कागज साफ भेल, वस्तु

अपन सही ठाम गेल, वा लोक एक-दोसराक काज बुझलक। कथा १२१–१४० मे अद्‌भुत आरम्भक रस-ऊर्जा प्रमुख अछि; अन्तिम समूहमे करुण-शान्त मिश्रण प्रबल अछि।

ध्वनि एहि खण्डक केन्द्रीय सौन्दर्य-शक्ति अछि। लेखक बारम्बार प्रत्यक्ष नैतिक वाक्यक बदला वस्तु छोड़ैत छथि: बीआक बोरा पर खेतक नाँव, लाल सूत, खाली पाँति, कुर्सी शून्य, छायाहस्ताक्षर, उल्टा कप, अन्हारमे चौकी, जाफरी, मेड़मे पानि जाएबाक जगह। वाच्यार्थ वस्तुक स्थिति कहैत अछि; व्यञ्जित अर्थ सम्बन्ध, अधिकार, स्मृति आ नैतिक परिवर्तनक होइत अछि।

वक्रोक्ति शीर्षक-स्तर पर विशेष प्रभावी अछि। ‘छुट्टीक आवेदनक छुट्टी’, ‘प्रपत्र जे अपन उत्तर पहिने माँगैत अछि’, ‘उपस्थितिक प्रमाण लेल अनुपस्थित’, ‘जीवितक गवाह’, ‘बन्द विभागक अन्तिम काज’—एहि शीर्षकसभमे विरोधाभासी वाक्य-विन्यास कथाक संरचनात्मक तनाव पहिनहि खोलि दैत अछि।

औचित्यक दृष्टिसँ खण्डक बल ई जे पैघ प्रश्न लेल प्रायः छोट दृश्य चुनल गेल अछि। भूमि-अधिकार पर निबन्ध नहि, मेड़; श्रम-अदृश्यता पर घोषणापत्र नहि, चारि मुट्ठी बीआ वा बाछीक देखभाल; नौकरशाही पर अमूर्त व्याख्यान नहि, सात मिलीमीटरक नाम-पट्टी वा खाली खाँचा। विषय-वस्तु आ कथात्मक माप बीच ई सामंजस्य औचित्यक महत्वपूर्ण उदाहरण अछि।

रीति आ शब्द-व्यवहारमे लोकप्रयुक्त मैथिली वाक्य-संरचना, माप, ऋतु, कृषि-कर्म, पाँजि, सूत, नाप, ओसारा, मेड़, खलिहान, गोठ जेकाँ पद पाठकेँ स्थानीय देह दैत अछि। तथापि शब्दरूपक असंगति—विशेषतः पानि/पानी, चाह/चाय, कोठली/कोठरी/कमरा—एकरूप शैलीक बाधा बनैत अछि; भाषिक निखार खण्डमे एकर विस्तृत गणना देल अछि।

४. पाश्चात्य आख्यानशास्त्रीय समीक्षा

कथा-विन्यासक दृष्टिसँ खण्डक प्रमुख युक्ति ‘समस्या—मापन—पुनर्परिभाषा’ अछि। पहिल समूहमे ई सामाजिक नियमक रूपमे, बीचक समूहमे साक्ष्य-जाँचक रूपमे, कार्यालयी समूहमे वर्गीकरण-सुधारक रूपमे, आ अन्तिम समूहमे सम्बन्धक सूक्ष्म पुनर्संयोजन रूपमे प्रकट होइत अछि। एहि आवृत्त

ढाँचाक भीतर कथासभक वस्तु आ परिस्थिति बदलैत रहैत अछि, तँ एकता आ विविधता दूनू बनल अछि।

दृष्टिबिन्दु प्रायः सीमित मानवीय अनुभूति लग रहैत अछि। पाठक पात्रसँ बेसी सर्वज्ञ जानकारी बहुत कम पबैत अछि। एहि कारण कथा १२१–१४०क रहस्य प्रभावी बनैत अछि: पाठक सेहो ओही आवाज, दाग, गन्ध, छवि वा चिह्न देखैत अछि जे पात्र देखैत अछि। बादमे अतिरिक्त स्रोत जुड़ला पर अर्थ बदलैत अछि।

समय खण्डक प्रमुख कथात्मक पदार्थ अछि। आधा दिन, पाँच मिनट, नियुक्तिक पहिल दिन, जन्म-दिन, छुट्टीक दिन, अन्तिम काज, पछिला दिन, अन्तिम लोकल—समय केवल पृष्ठभूमि नहि, विवादक इकाइ अछि। कथा-समय आ अभिलेखीय समयक अन्तर विशेष रूपेँ १४८, १५५, १५६, १६८, १७२, १७५ आ १७९ मे गाढ़ अछि।

संवाद कथासभकेँ बहुस्वरी बनबैत अछि। विवादक पक्ष एक-दोसराकेँ पूर्णतः पराजित नहि करैत; नियम प्रायः चर्चा, परीक्षण वा कापी बनबामे विकसित होइत अछि। एतय लेखकक नैतिक निष्कर्ष पात्रक मुँह सँ घोषणाक रूपमे कम, साझा प्रक्रियाक परिणाम रूपमे बेसी आबैत अछि।

अन्तिम बीस कथामे खुला अन्तक मात्रा बढ़ैत अछि। ‘तीनटा खाली कुर्सी’क कुर्सी खाली रहैत अछि; ‘आधा गिलास पानि’मे तल्लाक पानि काँपैत अछि; ‘एक कप चाय कम’मे तेसर कप उल्टा; ‘ओसाराक बल्ब’मे बीचक चौकी अन्हारमे। ई अन्त समाधानक बदला पाठकक नैतिक सहभागिता माँगैत अछि।

५. नव्य-न्याय आधारित पाठ-परीक्षण

नव्य-न्यायकेँ एहि लेखमे कथाक ऊपर बाहरसँ आरोपित दुरूह पदावली रूपेँ नहि, प्रमाण-संरचना स्पष्ट करबाक उपकरण रूपेँ उपयोग कएल गेल अछि। प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द/साक्ष्य, उपमानक अलग वैधता; अभावक अर्थ; सम्बन्धक अवच्छेद; समय-सीमा; आ विरोधी प्रमाणक निवारण—ई प्रश्न कथासभमे स्वाभाविक रूपेँ उपस्थित अछि।

कथा १२२मे कुलुपक खरोंच ‘प्रवेश भेल’ निष्कर्षक पर्याप्त हेतु नहि, कारण भीतर धूलमे नव पएर-चिह्नक अभाव अछि। कथा १३५मे आधा मोहर

‘अमान्य’ निष्कर्षक तुरन्त हेतु नहि; स्रोत, प्रति आ छापक इतिहास देखब पड़ैत अछि। कथा १७०मे स्कैनरक कारी छाँह रद्द-चिह्न जेकाँ प्रत्यक्ष होइत अछि, मुदा मूल कागज ओकर अर्थ बदलि दैत अछि। ई सभ प्रसंग हेतु आ साध्यक सम्बन्धक सावधानी सिखबैत अछि।

अभाव अनेक कथामे सकारात्मक ज्ञान-स्रोत जेकाँ कार्य करैत अछि: खाली दराज, पाँचम खाली खाँचा, कुर्सी नम्बर शून्य, प्रेषकक नामक अभाव, क्रमांक ०००, तीन खाली कुर्सी। मुदा सभ अभाव समान नहि। कखनो अभाव व्यवस्थाक कमी अछि, कखनो वैध रिक्तता, कखनो स्मृति, कखनो केवल स्रोत-अज्ञातता। कथासभ अभावकेँ वस्तु मानि एके अर्थ नहि दैत—ई सूक्ष्मता नव्य-न्यायीय पाठ लेल विशेष उपयुक्त अछि।

सम्बन्धक सीमा सेहो केन्द्रमे अछि। ‘बीआ ककर?’—व्यक्ति, मालिक, जोतदार कि खेत? ‘बाटक समय ककर?’—ग्राहक कि बैलक दिन? ‘गवाही कखन सत्य?’—गवाह जीवित रहला धरि कि गवाही देल क्षणमे? ‘नामक उच्चारण ककर?’—यन्त्रक मानकीकरण कि व्यक्तिक भाषिक पहचान? एहि प्रश्नमे अवच्छेदक स्पष्ट करैत अछि जे अधिकार/सत्य सर्वत्र नहि, निश्चित सम्बन्ध आ कालमे लागू अछि।

कथा १७५ नव्य-न्यायीय सूक्ष्मताक उत्कृष्ट साहित्यिक समकक्ष अछि। मूल पृष्ठ, सुधार-पाँजि आ वर्तमान प्रभावी स्थिति—तीन स्तर अछि। मूलकेँ मेटल नहि जा सकैत, मुदा वर्तमान निर्णय केवल मूल पर आधारित सेहो नहि। सत्यक ऐतिहासिक अनुक्रम बचा कऽ वर्तमान प्रामाण्य निर्धारित कएल जाइत अछि।

६. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सँ समीक्षा

एहि पद्धतिक मूल नियम अछि—राज्य/कार्यालय/अभिलेखक इतिहास आ लोकस्मृति/देहगत अनुभव/भूगोल/वस्तु/मौखिक कथनकेँ एक विश्लेषण-रेखापर राखब, मुदा स्वतः समान प्रामाण्य नहि देब। सामाजिक रूपेँ दबायल स्रोत होएब ओकर तथ्य-सत्यक स्वतः प्रमाण नहि; तकरो स्रोत-सीमा, समय, प्रसंग आ अन्य साक्ष्य सँ जाँच आवश्यक अछि।

कथा १०१–१२०मे मौखिक चलन, कापी, खेतक उपयोग आ श्रम-स्मृति समानान्तर स्रोत अछि। कथा १२१–१४०मे गन्ध, ध्वनि, ओस, कालिख, खरोंच, चाबी, शीशी जेकाँ भौतिक/देहगत स्रोत लिखित अभिलेखक समानान्तर उभरैत अछि। कथा १४१–१८०मे कार्यालय स्वयं इतिहास-उत्पादक संस्था बनैत अछि —ओ नाम, तिथि, क्रमांक, रंग, पद, उपस्थिति आ शिकायतक श्रेणी बनबैत अछि।

पद्धतिक मुख्य प्रश्न ‘ककर साक्ष्य बचल?’ कथा १११मे देखाइत अछि: पशु, मालिक, पाइ दर्ज, देखभाल करयवला हाथ नहि। कथा १५५मे राज्य एक दिनांक माँगैत अछि, जखन घर क्रमशः तीन दिनमे नष्ट होइत अछि। कथा १६७मे रोमन लिप्यन्तरण दू स्थानीय भूगोलकेँ एक नाममे मिला दैत अछि। कथा १७४मे उपस्थिति-पाँजि खेतक वास्तविक काजक बदला मुख्यालयक यात्रा दर्ज करैत अछि।

‘अज्ञातकेँ अज्ञात रूपेँ राखब’ सिद्धान्त कथा १७६मे साहित्यिक रूप पबैत अछि। प्रेषक अज्ञात अछि; एहि कारण पत्रक सामग्री मिथ्या घोषित नहि होइत, मुदा सत्यापन आवश्यक रहैत अछि। कथा १२८ सेहो ई सावधानी धारण करैत अछि—रस्सी संकेत अछि, किन्तु संकेतक अर्थ तत्काल अन्तिम सत्य नहि।

समानान्तर इतिहासक अर्थ सरकारी इतिहास केँ झूठ कहब नहि; अनेक कथामे सरकारी पाँजि उपयोगी सुधारक साधन बनैत अछि। प्रश्न तखन उठैत अछि जखन पाँजि अपन सीमा बिसरि वास्तविकताक पूरा रूप बनबाक दावा करैत अछि। एहि खण्डक दीर्घ यात्रा ‘स्मृति विरुद्ध अभिलेख’ नहि, ‘स्मृति + अभिलेख + वस्तु + भूगोल + वर्तमान परिणाम’क परस्पर जाँच अछि।

७. एक सय कथाक सम्पूर्ण आलोचनात्मक अनुशीलन

नीचाँ कथा १०१ सँ २०० धरि सभ कथा क्रमशः सम्मिलित अछि। ई खण्ड अध्ययनक सम्पूर्णता-सूची सेहो अछि; कोनो कथा छोड़ल नहि गेल अछि।

१०१. चारि मुट्ठी बीआ

बीआक चारि मुट्ठी खेतीक अगिला चक्र लेल ‘ककर हिस्सा’ नहि, ‘खेतक निरन्तरता’ बनि उठैत अछि। मालिक, बटाइदार, श्रम आ भविष्यक जोतदारक

बीच सुनैनाक श्रम पहिने अदृश्य छल; नाँव, वजन, जिम्मेवारी आ दू रंगक सूत ओकरा दृश्य बनबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २८०३।

१०२. हलक बाट

हलक किराया ‘आधा दिन’ कहलासँ समानता देखाइत अछि, मुदा दूर खेत, बाट, विश्राम आ वास्तविक जोत-समय अलग-अलग लागत बनैत अछि। कापीमे समय लिखला पर पुरान सरल नियमक भीतर लुकायल असमानता खुलैत अछि आ नया नियम साझा परीक्षणसँ जन्मैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २५१६।

१०३. आधा बाँस

‘आधा बाँस’ मापक अस्पष्टताकेँ बजार-व्यवहारक केन्द्र बनबैत अछि। मोट-पातर, पूरा-आधा, हाथक नाप आ दामक सम्बन्ध बुझबैत-बुझबैत कथा ई स्थापित करैत अछि जे नामित माप बिना न्यायपूर्ण मोल-भाव सम्भव नहि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २३६९।

१०४. गोठक पहिल दूध

गोठक ‘पहिल दूध’ पर मौखिक ‘दूध आधा’ नियम बाछा, देखभाल, मालिकाना आ दैनिक श्रमक कारण जटिल भऽ जाइत अछि। कथा हिस्सा गिनबाक पहिने उत्पादनक जैविक आ मानवीय शर्त सभकेँ लेखामे अनबाक आग्रह करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २५८३।

१०५. मचानक राति

मचान पर रातिक पहरा खेत-सीमा जेकाँ सरल नहि; पहर, दिनक मेड़, देरी, बदली आ ककर श्रम कखन शुरू भेल—ई सभ मिलि साझा सुरक्षा बनबैत

अछि। खाली पाँति स्वयं प्रमाण बनि उठैत अछि जे अनलिखल श्रम शून्य श्रम नहि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २८४९।

१०६. भूसाक भाग

भूसाक हिस्सा मशीन, पूला, गाड़ी आ श्रमक अलग लागतक संग उलझैत अछि। कथा ‘एक ढेरी—एक बाँट’क सहजता तोड़ि तीन पृथक हिसाब बनबैत अछि, जाहिसँ वस्तु, यन्त्र आ श्रमक योगदान अलग-अलग चिन्हित होइत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २५८९।

१०७. पोखरिक दू घाट

पोखरिक दू घाट जल-अधिकार, पहुँच आ देखभालक सामाजिक भूगोल अछि। पानि घटला-बढ़लासँ उपयोगक रेखा बदलैत अछि, मुदा कथा स्थिर स्वामित्वक बदला साझा उपयोगक व्यवहारिक सीमा पर ध्यान केन्द्रित करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २३२०।

१०८. उधारक खाता

उधारक पुरान खाता घरक नाँव पर चलैत अछि, मुदा घर एक व्यक्ति नहि। व्यक्तिगत देनदारी, पीढ़ीगत स्मृति आ पुरान पारिवारिक नाम अलग कएलापर कथा आर्थिक उत्तरदायित्वकेँ अधिक सटीक बनबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २३४६।

१०९. खेतक छोरक आम

खेतक छोरक आमगाछ फल, छाया, मेड़ आ पहुँच—चारू अधिकार एक संग धारण करैत अछि। फल ककर, बाट ककर, गाछक जड़ कतय—एहि प्रश्नसँ

कथा स्थावर सीमा आ जीवित वृक्षक गतिशील अधिकारक अन्तर खोलैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २०३९।

११०. रोपनीक दू दिन

रोपनीक दू दिनमे रद्द दिन, प्रतीक्षा, मजदूरी आ वास्तविक रोपनी-समय अलग घटक बनैत अछि। ‘प्रतीक्षा’ कैं नाँव देलाक बाद ओकरा मुफ्त समय मानबाक पुरान प्रवृत्ति टूटैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २४३४।

१११. बाछीक देखभाल

बाछीक देखभालमे पशु-पाँजि, मालिक आ पाइ पहिनहिसँ दर्ज अछि, मुदा देखभाल करयवला हाथक नाँव नहि। कथा स्त्री-श्रमक दृश्यता कैं छोट प्रशासनिक सुधार नहि, सामाजिक मान्यताक परिवर्तन बनबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २०४७।

११२. तेलीघरक खली

तेलीघरमे तेल नापल जाइत अछि, खली स्मृतिसँ बाँटल जाइत अछि। खलीक मात्रा, पेराइ आ भुगतानकैं लेखा-अंश बनबैत कथा उप-उत्पादक मूल्य आ परम्परागत ‘एहिना होइत अछि’क बीच स्पष्टता आनैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १९८५।

११३. चरवाहीक सीटी

चरवाहीक सामूहिक व्यवस्था एक पशुवला आ छह पशुवला घरक समान पालि सँ असमान बनैत अछि। पशु-संख्या, पूरा/आधा दिन आ बाट-पानि सुधारक श्रम-इकाइ कथा कैं ग्राम्य साझा-संसाधन शासनक सूक्ष्म आख्यान बनबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्षः श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणनाः करीब २०७७।

११४. कुम्हारक आगि

कुम्हारक साझा भट्ठीमे आगि केवल ईंधन नहि; जगह, ताप, फाँक आ बरतनक क्रम सामूहिक जोखिम निर्धारित करैत अछि। ‘फाँक खाली राखू’ जेकाँ अनाम नियम निजी अधिकारसँ बेसी साझा सुरक्षा पर आधारित अछि।

मूल विश्लेषण-अक्षः श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणनाः करीब २२२४।

११५. किरायाक पम्प

किरायाक पम्पमे घड़ी एक, मुदा पम्पक समय, नाली बनबाक समय, इंजन रुकबाक समय आ खेतमे पानि पहुँचबाक समय एक नहि। कथा समय-मापनक सतही समानताकेँ उत्पादन-परिणामक असमानता सँ जाँचैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्षः श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणनाः करीब २०५०।

११६. दू पसेरी मड़ुआ

दू पसेरी मड़ुआ माप आ भावक सम्बन्धक कथा अछि। बजार-भाव बदलैत अछि, पीतलाक पसेरी स्थिर रहैत अछि; एहि विरोधसँ पाठ मात्रा, मूल्य आ श्रमक बीचक फरक साफ करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्षः श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणनाः करीब १९४५।

११७. बाँधक घास

बाँधक घास निजी पशुखाद्य जेकाँ काटल जाइत अछि, मुदा बाँध, पगडंडी आ कटाव सभक साझा हित अछि। उपयोगक अधिकारकेँ देखभालक दायित्वसँ जोड़ि कथा ‘साझा’ शब्दक वास्तविक मूल्य निर्धारित करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्षः श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणनाः करीब २३७५।

११८. सूखल कुइयाँक पाल

सूखल इनारक पाल उपयोगहीन बुझाइत अछि, मुदा ईंट, पाल, नाप, पुरान जल-स्मृति आ नव जल-सुविधा एक-दोसरासँ जुड़ल अछि। कथा बेकार घोषित संरचनामे सेहो भू-इतिहास आ सामुदायिक अधिकार देखैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १८४२।

११९. कटनीक पछिला दिन

कटनीक ‘पछिला दिन’ अक्सर मुख्य फसलक बादक छोट काज मानल जाइत अछि। कथा बचल पूला, बोरा, समेटब, ढुलाई आ अन्तिम श्रमकेँ उत्पादन-चक्रक वैध अंश बनबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १८८७।

१२०. मेड़क नाम

मेड़ अपन नाम नहि, काजसँ अर्थ ग्रहण करैत अछि—सीमा, पानि रोकब, पानि छोड़ब, पएर-बाट। कथा खेसरा-पाँजिक स्थिर भूमि-वर्णनक समानान्तर व्यवहारिक जल-भूगोलक नाँव बनबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: श्रम, माप, साझा संसाधन, मौखिक चलन आ लिखित नियम। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १६०२।

१२१. सूखल नहरक लेखनी

सूखल घोषित नहरमे जल-मापक लेखनीक चलब अभिलेख आ वास्तविक जल-प्रवाहक विरोध खोलैत अछि। कथा आरम्भिक विस्मयकेँ अन्धविश्वास नहि बनबैत; प्रत्यक्ष ध्वनि, यन्त्र, पुरान नहर-स्मृति आ जाँच एक-दोसराकेँ परखैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब ३१९६।

१२२. कुलुप पर तीन खरोंच

कुलुप पर तीन खरोंच चोरीक निश्चित प्रमाण नहि बनैत। भीतर धूलमे नव पएर-चिह्नक अभाव आ उपयोग-अधिकारक इतिहास जोड़ि कथा देखबैत अछि जे बाहरी क्षति आ वास्तविक प्रवेश एके बात नहि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २७४०।

१२३. डाकघरक तेरहम थैला

डाकघरक तेरहम थैला गिनतीक अतिरिक्त वस्तु जेकाँ प्रकट होइत अछि। क्रम, थैला, पाँजि आ खाली जगहक पुनर्जाँच सँ कथा अभिलेखीय भूल आ अनाम वस्तुक अस्तित्वक बीच सूक्ष्म तनाव रचैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब ३१५७।

१२४. पनचक्कीक उलटल पाँख

उलटल पनचक्की-पाँख जल, स्मृति, यान्त्रिक दिशा आ पुरान उपयोगक संकेत अछि। कथा विचित्र गतिसँ शुरू भऽ वस्तुगत परीक्षण धरि पहुँचैत अछि; कारणक खोज कथ्यक मुख्य नैतिकता बनैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब ३२३३।

१२५. उज्जर पर्दा पर कारी बिन्दु

उज्जर पर्दा पर कारी बिन्दु छविक दोष, प्रकाशक संकेत आ स्मृतिक दागक बीच सरकैत अछि। देखल वस्तुकेँ तुरन्त सत्य मानबाक बदला पुनरुत्पादित छवि आ मूल दृश्यक सम्बन्ध जाँचल जाइत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब ३२१६।

१२६. कचहरीक गुम जूता-चिन्ह

कचहरीक गुम जूता-चिन्ह न्यायिक नस्तीसँ बाहर रहि गेल भौतिक साक्ष्यक रूपक अछि। कथा ई प्रश्न उठबैत अछि जे न्याय केवल कागजमे प्रवेश करैत अछि कि देहक छोट चिन्ह सेहो ओकर दुआर पर अर्थवान अछि।

मूल विश्लेषण-अक्षः संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणनाः करीब २७५५।

१२७. आधा घण्टा बजैत घड़ी

आधा घण्टा बजैत घड़ी संस्थागत समयक त्रुटि भरि नहि; पुस्तकालयक दिनचर्या, कर्मचारीक स्मृति आ नाँव दर्ज होएबाक प्रक्रिया एक संग चलैत अछि। समयक सुधार मनुष्यक अदृश्य उपस्थितिक पहचानसँ जुड़ैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्षः संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणनाः करीब २५४०।

१२८. निर्जन घाटक तानल रस्सी

निर्जन घाट पर तानल रस्सी अनुपस्थित पाराव, पुरान आवागमन आ वर्तमान जोखिमक संकेत बनैत अछि। कथा नदीक भौतिकता, स्मृति आ प्रमाणक बीच एहन स्थिति बनबैत अछि जतय अनुमानक सीमा स्वीकार करब आवश्यक अछि।

मूल विश्लेषण-अक्षः संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणनाः करीब ३३०५।

१२९. नीला काँचक शीशी

नीला काँचक शीशी बन्द औषधालयक अतीतकेँ रंग, प्रकाश आ वस्तुगत उपस्थिति सँ जीवित करैत अछि। कथा वस्तु केँ रहस्यक स्रोत बनबैत अवश्य अछि, मुदा अन्ततः ओकर अर्थ संस्थागत इतिहासक भीतर राखैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्षः संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणनाः करीब २१५५।

१३०. खोइछामे भेटल चाबी

खोइछामे भेटल चाबी घर-बँटवारा, आलमारी, मातृ-स्मृति आ विरासतक कथा खोलैत अछि। चाबी अलौकिक संकेत नहि; बन्द चीजक सामाजिक इतिहास खोलबाक साधन अछि।

मूल विश्लेषण-अक्षः संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणनाः करीब २९४७।

१३१. सिझल धानक गन्ध

सिझल धानक गन्ध श्रम-स्मृति कैं वर्तमान रातिमे आनैत अछि। गन्ध दृश्य अभिलेख नहि, मुदा देहगत साक्ष्य जेकाँ काज करैत अछि; कथा ओकरा बीते आवाजक निश्चित प्रमाण नहि बनबैत, स्मृतिक द्वार बनबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २२१८।

१३२. छाजन पर तीन चोट

छाजन पर तीन चोट नियमित अन्तरालक कारण संकेत जेकाँ सुनाइत अछि। पाँजि, रस्सी, छाजन आ अन्ततः पानिक सामान्य आवाजक तुलना सँ कथा भय-विस्मय कैं परीक्षणशील दृष्टिसँ शान्त करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २२०३।

१३३. काठक पेटीक ताप

काठक पेटीक असामान्य ताप रहस्यक आरम्भ अछि, मुदा पाँजि, वस्तु-इतिहास आ तापक दर्जीकरण ओकरा जाँच योग्य बनबैत अछि। कथाक बल ‘गरम पेटी’ पर नहि, अनुभवकैं लिखित साक्ष्यमे बदलबाक प्रक्रियापर अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २५६८।

१३४. माटिक देबालक भीतरक खटखट

माटिक देबालक भीतरक खटखट एकपक्षीय ‘भीतर’ सँ नहि अबैत; देबालक दूनू कातक जीवन ओकर अर्थ बनबैत अछि। कथा वास्तु-सीमा कैं श्रव्य सम्बन्धमे बदलैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १९८८।

१३५. घुरैत मोहर

घुरैत मोहर आधा/पूरा छापक कारण प्रमाणिकता पर प्रश्न उठबैत अछि। कथा मोहरक आकृतिकेँ अधिकारक पर्याय मानबाक खतरा देखबैत अछि आ स्रोत, प्रति, पृष्ठ-क्रम तथा स्मृति सभकेँ एक संग मिलबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २४३३।

१३६. ओसक सीधा पट्टा

ओसक सीधा पट्टा खेतमे अदृश्य मापनक दृश्य चिह्न बनैत अछि। ओस हटैत अछि, खूँटा रहि जाइत अछि; प्राकृतिक सतह आ कानूनी/मानवीय सीमा एक क्षण लेल एक-दोसराकेँ प्रकट करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २१२७।

१३७. टूटल दर्पणक पछिला भाग

टूटल दर्पणक पछिला भाग चेहराक प्रतिछविसँ बेसी वस्तुक इतिहास खोलैत अछि। दरार, पछिला सतह, सिलाइघर आ छूटल छेद मिलि देखाइत अछि जे पहचान केवल सामनेक प्रतिबिम्बमे नहि बसैत।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २२६७।

१३८. ओसारा पर लाल सूत

ओसारा पर लाल सूत घरक सामान्य वस्तुसँ सीमा-चिह्न बनैत अछि। लाल रेखाक एहि पार मौन आ ओहि पार सम्भावित संवाद—कथा स्थानिक दूरीकेँ सम्बन्धक नैतिक दूरीमे रूपान्तरित करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २१९९।

१३९. खसैत अक्षर

खसैत अक्षर पुरान मुद्रणालयमे भाषा, छपाइ आ मौनक भौतिकता देखबैत अछि। धातुक अक्षर, दबायल पाँति आ टेढ़ पेटी एहि निष्कर्ष धरि लैत अछि जे तकनीकी दोष आ मानवीय दमनक उपचार एक नहि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २०४८।

१४०. अन्तिम लालटेनक कालिख

अन्तिम लालटेनक कालिख रातिक जागरणक भौतिक अवशेष अछि। कालिख स्वयं कथा नहि कहैत, मुदा कागजी समयक संग मिललापर उपस्थितिक सीमित, सत्यापनीय प्रमाण बनैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: संकेत, प्रत्यक्ष, अनुमान, स्मृति, वस्तु-साक्ष्य आ अभिलेख। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २२९२।

१४१. नाम-पट्टीक सात मिलीमीटर

नाम-पट्टीक सात मिलीमीटर पद-प्रतिष्ठाक सूक्ष्म दृश्य राजनीति अछि। पट्टीक ऊँचाइ घटल-बढ़लासँ अधिकारक अनुभूति बदलैत अछि; अन्तमे काज नागरिकक कागज पढ़बामे लौटैत अछि आ पुरान पट्टी ‘अनुपयोगी’ होइत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १९९०।

१४२. दू हस्ताक्षरक बीचक खाली जगह

दू हस्ताक्षरक बीच खाली चौकोर घर कार्यालयी कल्पनाक खुला स्थान बनि जाइत अछि। लिखित नियम नहि रहितो कर्मचारी ‘ऊपर सँ आबत’ कहि ओकरा अधिकार देत; कथा रिक्तता कोना परम्परा बनैत अछि से देखबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २४३४।

१४३. प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य

कुर्सी नम्बर शून्य व्यवस्था-बाहरी व्यक्ति/वस्तुक प्रतीक बनैत अछि। शून्य अधिकारहीन स्थान बुझाइत अछि, मुदा ओही कुर्सी अस्पताल कैं प्राथमिक-जाँचक वास्तविक कमी देखबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २००५।

१४४. छुट्टीक आवेदनक छुट्टी

अवकाशक आवेदन स्वयं ‘अस्थायी अवकाश’ श्रेणीमे पड़ि प्रक्रियाक हास्य-विसंगति पैदा करैत अछि। संस्था एक त्रुटि सुधारैत-सुधारैत ओकर नाम नियममे स्थायी कऽ दैत अछि—यही कथाक प्रशासनिक व्यंग्य अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २१३२।

१४५. खाली दराजक सूची

खाली दराजक सूची ‘किछु नहि’ कैं प्रमाणित करबाक कठिनता सँ शुरू होइत अछि। खोजमे मानचित्र आ दबी सूचना भेटैत अछि; अन्ततः प्रमाणित खालीपन स्वयं संस्थागत स्मृतिक चिह्न बनि जाइत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १७१७।

१४६. पीयर फीता वली नस्ती

पीयर फीता नस्तीक कानूनी प्रकृति नहि, परम्परागत डर आ विशेषाधिकार वहन करैत अछि। रंगक अर्थक असंगति खुललापर कथा रंगकैं फेर केवल रंग बनबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २१५२।

१४७. पदनामक आधा अक्षर

पदनामक आधा अक्षर ‘अवर/वर’ जेकाँ पदक्रम बदलि सकैत अछि। एक अक्षरक त्रुटि प्रशासनिक हैसियत पर वास्तविक असर करैत अछि, तेँ भाषा-सटीकता यहाँ सौन्दर्य नहि, अधिकारक शर्त अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २०६२।

१४८. प्रमाण-पत्रक जन्म-दिन

प्रमाण-पत्रक जन्म-दिनमे जारी तिथि नहि भेटलापर संस्था दस्तावेजक ‘जन्म’ गढ़बाक जोखिममे पड़ैत अछि। कथा घटना-तिथि, निर्गमन-तिथि आ वर्तमान प्रेषण-तिथि कैं अलग राखबाक आग्रह करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १६५९।

१४९. घंटीक अधिकार

पित्तरिक घंटी व्यक्तिपरक तात्कालिक आदेशक साधन बनि गेल अछि। कारण-पर्ची लागू भेला पर आवाजक अधिकार कारणक उत्तरदायित्वमे बदलैत अछि—सत्ता ध्वनिसँ लिखित कारण दिस सरकैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १८००।

१५०. चारि मोहरक पाँचम जगह

चारि मोहरक प्रपत्रमे पाँचम खाली खाँचा कर्मचारीकैं काल्पनिक स्वीकृति खोजबाक लेल उकसाबैत अछि। कथा स्पष्ट करैत अछि जे सभ रिक्त स्थान भरबाक लेल नहि; ‘अभाव’ सेहो संरचनाक वैध रूप अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १७६७।

१५१. सेवा-झरोखा नम्बर नौ

सेवा-झरोखा नम्बर नौ कागज पर अछि, देबाल पर नहि। नागरिक कागजक दाबी पर चलैत अछि आ संस्था अन्ततः वास्तविक सम्पर्क-बिन्दु बनबैत अछि; संख्या एहि कथामे स्थानक बदला सेवा-उत्तरदायित्वक प्रश्न अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १६२९।

१५२. फाटकक पासक टेबुल

फाटकक पासक टेबुल दू हाथ भीतर-बाहर सरकलापर निवेदनक हैसियत बदलैत अछि। कथा प्रशासनिक सीमा कैं देबाल नहि, ग्रहण-प्रक्रियाक स्थानिक सूक्ष्मता रूपेँ पढ़ैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार।
कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १७४६।

१५३. लाल पेंसिलक पदोन्नति

लाल पेंसिल वरिष्ठताक अनलिखित प्रतीक अछि। दिनेशक हाथमे आबिते गोल घेरा अर्थ बदलय लगैत अछि; कथा बतबैत अछि जे औजारक रंग जखन अधिकारक अर्थ धारण करैत अछि तखन व्याख्या स्वयं सत्ता बनैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार।
कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १४६४।

१५४. छायाप्रतिमे हरायल गुलाबी कात

गुलाबी कात अस्थायी प्रभारक समय-सीमा बतबैत अछि; कृष्ण-उज्जर छायाप्रतिमे रंग बिलायलापर ‘अस्थायी’ अधिकार अनिश्चित बनि जाइत अछि। कथामे रंग सूचना अछि, सजावट नहि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार।
कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २११२।

१५५. दिनांकक खाली खाँचा

दिनांकक खाली खाँचा बाढ़िक क्रमिक विनाशकेँ एक दिनमे समेटय चाहैत अछि। घरक अलग-अलग भाग अलग दिन नष्ट होइत अछि; सरकारी एक तिथि आ जीवित स्मृतिक बहु-तिथि बीचक तनाव कथा सँ स्पष्ट होइत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार।
कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २३२८।

१५६. पाँच मिनट देरक प्रमाण

पाँच मिनट देर चाबीक सुपुर्दगीक दोष बनैत अछि, मुदा घड़ी, फाटक, प्रतीक्षा आ वास्तविक हस्तान्तरणक समय एक नहि। कथा सटीकता आ औपचारिक दण्डक बीच कारण-सम्बन्ध खोजैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार।
कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १८५३।

१५७. नस्तीक कपड़ाक रंग

नस्तीक कपड़ाक रंग शाखागत पहचानक सुविधा सँ बढ़ि नस्ती-दर्जा बुझाओल लगैत अछि। गलत अर्थक प्रभाव खुललापर रंगक विशेष अधिकार हटैत अछि—वर्गीकरणकेँ सत्य नहि, साधन मानबाक शिक्षा।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २३६३।

१५८. एक कार्यालय, दू नाम

विलयक बाद एक कार्यालयक दू पुरान नाँव कागज, मोहर, बैंक आ नागरिकक व्यवहारमे अलग समय धरि जीवित रहैत अछि। कथा संस्थागत परिवर्तनक ‘घोषणा’ आ ‘व्यवहार’क बीचक विलम्ब दर्ज करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २०५९।

१५९. सीढ़ीक दोसर पायदान

सीढ़ीक दोसर पायदान अस्थायी सहायता-बिन्दु बनि कार्यालयक वास्तु-असफलताकेँ सेवा-व्यवस्थामे बदलैत अछि। ‘सीढ़ी’ नाम पर्याप्त नहि; काजक दृष्टिसँ ओ क्षणिक झरोखा बनि जाइत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २३१६।

१६०. अन्तिम पाँतिक अधिकारी

पद-पाँजिक अन्तिम पाँति बजटमे स्थान नहि पबैत कर्मचारीक अस्तित्वक प्रश्न उठबैत अछि। अलग अस्थायी सूची बनलापर कथा स्थायी संस्थाक भीतर अस्थायी श्रमक स्पष्ट दृश्यता माँगैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: कार्यालयी चिह्न, पद, रिक्तता, वर्गीकरण आ अधिकार। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १८१५।

१६१. तीन ठाम उपस्थित

एक परिचय-अंक जगदीशकेँ तीन ठाम ‘स्थायी उपस्थित’ देखबैत अछि, कारण निवास, परिवार आ कार्यस्थल अलग अंकीय श्रेणी अछि। कथा मनुष्यक बहु-सम्बन्धक वास्तविकता आ यन्त्रक एकरूप पहचानक संघर्षकेँ वर्ग-सुधार द्वारा सुलझबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २८५०।

१६२. बन्द कोठरीक खुलल शाखा

बन्द कोठली पर शाखाक नाम-पट्टी अछि, काज दोसर ठाम चलैत अछि। नागरिक ‘शाखा’ कैं भौतिक कोठली मानैत अछि, प्रशासन प्रक्रिया मानैत अछि; कथा सेवा-स्थानक द्वैत स्पष्ट करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २२०७।

१६३. उच्चारणक दोसर नाम

स्वर-आधारित उपस्थितिक यन्त्र नामक उच्चारणकैं मानकीकृत करैत अछि आ व्यक्ति कैं गलत ध्वनि अपनाबय पर बाध्य करैत अछि। लिखित सही नाम आ यान्त्रिक ‘स्वीकृत’ उच्चारणक द्वन्द्व भाषा-अधिकारक प्रश्न बनैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १४९४।

१६४. प्रपत्र जे अपन उत्तर पहिने माँगैत अछि

प्रपत्र पहिने ओही अंक माँगैत अछि जे आवेदन पूरा भेला पर बनबाक अछि। ई वृत्ताकार शर्त प्रशासनिक तर्कक आत्म-विरोध अछि; पुरान कापी अस्थायी मानवीय सेतु बनैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १५००।

१६५. आधा दिनक कर्मचारी

‘आधा दिनक कर्मचारी’ कहायल सफाइ-कर्मी वास्तविक भवन-जीवनक आरम्भसँ जुड़ल छथि। प्रवेश-पाँजि, दुर्घटना आ परिचय-पत्रक प्रसंग देखबैत अछि जे अनुबन्धक अवधि मनुष्यक वास्तविक उपस्थितिक पूरा माप नहि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १९६१।

१६६. मोहरबन्द कोठरीक काज

अभिलेख-कोठली मोहरबन्द रहितो सेवा-काज रुकि नहि सकैत। छायाप्रति, वेतन-पर्ची, विद्यालय-पत्र आ स्रोत-टिप्पणीसँ अस्थायी कार्य-पत्र बनैत अछि; कथा मूल अनुपलब्ध रहला पर प्रमाणक श्रेणी स्पष्ट लिखबाक नैतिकता स्थापित करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १८५४।

१६७. अनुवादित गाम

अंकीय पता-पाँजि रोमन रूपक आधार पर दू अलग गामकेँ एक नाममे मिला दैत अछि। स्थानीय उच्चारण, बाट, नदी-बन्धन आ वास्तविक भूगोल बतबैत अछि जे अनुवाद/लिप्यन्तरण पहचानक तटस्थ क्रिया नहि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १५४९।

१६८. छुट्टीक दिनक उपस्थितिक आदेश

छुट्टीक दिन उपस्थितिक अनिवार्य आदेश संस्था कैँ अपनहि कैलेंडरसँ टकरा दैत अछि। सुधारक बाद ‘छुट्टी’ केवल घोषणा नहि, अनुपस्थित रहबाक वैध अधिकार बनैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १६७९।

१६९. शिकायत जे पूछलासँ जन्मल

चन्द्रकला देवी केवल लंबित आवेदनक स्थिति पूछैत छथि, मुदा प्रणाली प्रश्नकेँ शिकायत बना दैत अछि। कथा वर्गीकरणक हिंसा देखबैत अछि—नागरिकक आशय बदलल बिना संस्था ओकर भाषिक प्रकार बदलि दैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब २१२५।

१७०. स्कैनरक कारी छाँह

स्कैनरक कारी छाँह पुरान क्लिपक छवि अछि, मुदा अंकीय प्रति पर रद्द-चिह्न जेकाँ पढ़ल जाइत अछि। मूल-सत्यापन छायाकेँ मेटबैत नहि; केवल ओकर निर्णयकारी अधिकार समाप्त करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १८३३।

१७१. बाहर पठाओल भीतरक पत्र

अभिलेख बचाबय बनल पत्र कार्यालयी मार्गमे ‘बाहर पठाओल’ मानल जाइत अछि, जखन वास्तविक बचावक श्रम भीतर चलैत अछि। कथा कागजक यात्रा आ मनुष्यक तत्काल काजक असमान गति देखबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १२८८।

१७२. नियुक्तिक पहिल दिन

नियुक्ति-पत्र कहैत अछि सेवा कार्यभार-ग्रहणक दिनसँ शुरू; मुदा कार्यभार ग्रहण करेनिहार प्रक्रिया अनुपस्थित अछि। फाटक-पर्ची आ हस्ताक्षर कम-सँ-कम उपस्थितिक तथ्य बचबैत अछि, जखन सेवा-दिन निर्णयाधीन रहैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १४१६।

१७३. एके नामक दू वेतन

एके नाँवक दू कर्मचारी अंकीय मिलानमे एक व्यक्ति बनि जाइत छथि आ वेतन/अवकाश गड़बड़ा जाइत अछि। ‘मनुष्य पहिने अलग छल’—कथा ई बात स्थापित करैत अछि जे प्रणालीकेँ भेद सिखेनाइ पड़ैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १३४३।

१७४. उपस्थितिक प्रमाण लेल अनुपस्थित

मैदानी कर्मचारीकेँ क्षेत्रमे उपस्थित रहबाक प्रमाण लेल क्षेत्र छोड़ि मुख्यालय जाए पड़ैत अछि। कथा प्रमाण-प्रक्रियाक लागत देखबैत अछि: आधिकारिक उपस्थिति सत्यापित होइत अछि, वास्तविक काज साँझमे शुरू होइत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १७५८।

१७५. सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ

मूल पाँजि काटल नहि जाइत; सुधार अलग जिल्दमे बढ़ैत-बढ़ैत वर्तमान निर्णयक मुख्य स्रोत बनि जाइत अछि। कथा इतिहास कैं स्थिर मूल नहि, मूल-सुधारक समय-स्तर रूपेँ पढ़बाक प्रस्ताव करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १४१८।

१७६. प्रेषक-विहीन लिफाफा

प्रेषक-विहीन लिफाफा नामक अभावक कारण असत्य नहि ठहरैत। सामग्री जाँच, सत्यापन आ परिणामक आधार पर ओकर उपयोग होइत अछि; कथा स्रोत-अज्ञातता कैं अस्वीकृति नहि, सावधान पद्धतिक कारण मानैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १७५१।

१७७. छायाहस्ताक्षर

नमूना हस्ताक्षरक छवि प्रारूपमे स्थायी रहि स्वीकृति जेकाँ पढ़ल जाइत अछि। वास्तविक निर्णय-अंक खोजलापर कथा प्रतिरूप आ अधिकारक स्पष्ट विभाजन करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १५०१।

१७८. क्रमांक ०००

वार्षिक क्रम पुन: आरम्भ होइत ‘०००’ आवेदन प्रणाली लेल मानो आवेदनहि नहि। बादमे निस्तारण देखबैत अछि जे संख्या-व्यवस्थाक सीमा वास्तविक आरम्भकैं नकारि सकैत अछि, मुदा घटना मिटैत नहि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १५३२।

१७९. जीवितक गवाह

जीवित-प्रमाण लेल गवाह चाही, मुदा पुरान गवाह बादमे मरि जाइत छथि। कथा समय-सापेक्ष सत्यक सूक्ष्म सिद्धान्त रचैत अछि: मृत्यु बादक अवस्था पुरान समयक सत्य गवाही कैं मिथ्या नहि करैत।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १५०४।

१८०. बन्द विभागक अन्तिम काज

विभाग समाप्त घोषित अछि, मुदा अन्तिम प्रकरण आ अनुबन्धित कर्मचारीक काज एखन बचल। संस्थागत मृत्यु आ कार्य-समाप्ति एक तिथि नहि; कथा ‘बन्द’ शब्दक प्रशासनिक आ मानवीय अर्थ अलग करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: प्रमाण, परिचय, समय, अंकीय पाँजि आ स्रोत-सीमा। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १४८२।

१८१. दू टिकट

दू यात्रा-टिकट परिवारक अलग आकांक्षा, रोजगार आ भविष्यक खर्चक बीच रखल अछि। टिकट अन्ततः यात्रा मात्र नहि, ‘पहिने एक-दोसराक बाट’ बुझबाक पारस्परिक निर्णयक प्रतीक बनैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १३८६।

१८२. कंगनक डिब्बा

कंगनक डिब्बामे जकरा सोना बुझल जाइत अछि, ओकर वास्तविक मूल्य घर, ऋण, मातृ-वचन आ अगिला पीढ़ीक जीवनमे पसरल अछि। कथा बाजार-मूल्यक ऊपर स्मृति आ त्यागक मूल्य स्थापित करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १५३७।

१८३. लाल स्वेटर

पुरान भूरा कम्बलक ऊन लाल स्वेटरमे नब जीवन पबैत अछि। वस्तु बदलैत अछि, सम्बन्धक तन्तु नहि; पुनरुपयोग यहाँ गरीबीक संकेत मात्र नहि, पीढ़ीगत स्नेहक रूपान्तरण अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १६१२।

१८४. पोखरिक ओहि पार

पोखरिक ओहि पारक पातर बाट, खूँटा, लाल सूत आ नाप-कागज सीमा-स्मृतिक कथा बनबैत अछि। माप जरूरी अछि, मुदा अन्तिम अर्थ कागज आ जीवित उपयोगक संग पढ़ल जाइत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १४१८।

१८५. तीनटा खाली कुर्सी

तीनटा खाली कुर्सी अनुपस्थितिक भौतिक रूप बनि रहैत अछि। पाहुन-पाँजिक अनाम फाटल पन्ना कुर्सीक पएर सम करैत अछि—लिखित नाम नहि रहितो स्मृति स्थान धारण करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १३६८।

१८६. बान्ह पर साँझ

बान्ह पर साँझमे कटैत नदी पुरान खूँटा आ नाप-डोरीक स्थिर दाबीकेँ निरन्तर चुनौती दैत अछि। लाल चिन्ह रहैत अछि, भू-दृश्य बदलैत अछि; कथा सीमा केँ समयक अधीन देखैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १०९२।

१८७. अन्तिम लोकल

अन्तिम लोकल विदाइकेँ घोषणा बिना दृश्य बनबैत अछि—स्टेशन, माला, झोरा, टॉर्च आ अन्हार। कम संवाद आ वस्तु-संकेतसँ सम्बन्धक दूरी निर्मित होइत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १३१४।

१८८. आधा गिलास पानि

आधा गिलास पानि अस्पतालक प्रतीक्षा, देखभाल आ अधूरा आश्वासनक सूक्ष्म वस्तु अछि। अन्तमे बचल कनेक पानि निर्णय नहि दैत, भावनात्मक कम्पन बचबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त।
कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १३९५।

१८९. ओसाराक बल्ब

ओसाराक बल्ब घरक बीचक स्थानकेँ इजोत/अन्हारसँ विभाजित करैत अछि। पश्चिम आ पूब सँ कनेक इजोत रहितो बीचक चौकी अन्हारमे रहब सम्बन्धक अनिर्णीत मध्यभूमि बनैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त।
कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १५१२।

१९०. दू कट्ठा बालू

बाढ़िक बाद जमल दू कट्ठा बालू भूमि-माप, उपयोग आ भविष्यक रोपनीक प्रश्न उत्पन्न करैत अछि। नपनीक रस्सी समेटल जाइत अछि, मुदा अंतिम गाँठ भीतर राखल रहब पूर्ण समाधानक बदला विवेकपूर्ण विराम सूचित करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त।
कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १२८७।

१९१. बन्द रेडियो

बन्द रेडियो मरम्मत भऽ गीत बजबैत अछि, मुदा ओ गीतक संग जुड़ल नाँव स्पष्ट नहि कहल जाइत। आवाज लौटैत अछि, स्मृति संकेतमे रहैत अछि—कथा अल्पकथनसँ भाव गाढ़ करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त।
कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १५७७।

१९२. छत पर राखल जूता

छत पर राखल जूता बरखा, मरम्मति आ अनुपस्थित देहक संकेत बनैत अछि। अन्तमे दुनू जूता देबाल लग रखल जाइत अछि आ छत खाली होइत अछि; वस्तु-स्थान परिवर्तन भावनात्मक स्वीकृतिक सूक्ष्म क्रिया बनैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त।
कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १४२२।

१९३. एक कप चाय कम

बरखों धरि तीन कप चाह बनैत छल; आब दू। उल्टा तेसर कप अनुपस्थित व्यक्ति वा आदतक मौन स्मारक बनि रहैत अछि। कथा शोक वा परिवर्तनकेँ नाम दए बिना दिनचर्याक कमी सँ व्यक्त करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १२९३।

१९४. बाँसक पुल

बाँसक पुलक ढीला फाँक दू लोककेँ एके ठाम झुकबैत अछि। साझा मरम्मति कथाक नैतिक केन्द्र अछि—पार उतरबाक सुविधा साझा जिम्मेवारी बिना टिकैत नहि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १२१४।

१९५. अधकटल आम

घर बँटि गेल, आमक डाढ़ि अधकटल, मुदा तना लग डेढ़ हाथक साझा जगह बचल अछि। दुनू कात सँ खुलैत जाफरी कानूनी विभाजनक भीतर व्यवहारिक सम्बन्धक द्वार बचबैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब ११८२।

१९६. माछक जाल

माछक जाल नब खूँटाक बीच पहिने पसारल जाइत अछि, घर एखन पुरान ठाम अछि। परिवर्तित नदी/वासस्थानक बीच जीविका पहिने अनुकूलित होइत अछि; कथा भविष्यक पुनर्स्थापनाकेँ श्रमक वस्तुसँ संकेत करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त। कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब ११०७।

१९७. भोरक धुआँ

भोरक धुआँ घर, भानस, परिवार आ प्रस्थानक बीच उठैत अछि आ उजासमे घुलि जाइत अछि। संवादक बदला घरेलू क्रिया आ धुआँ सम्बन्धक तनाब वा छुटावकेँ वहन करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त।
कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १३४२।

१९८. बिना घंटीक साइकल

बिना घंटीक साइकलमे घंटी अलग भऽ बेंचक नीचाँ पड़ल अछि। साइकलक उपयोग चलैत अछि, ध्वनि-चिह्न हटि गेल; वस्तुक अपूर्णता पुरान स्वामित्व वा स्मृतिक अवशेष बनि रहैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त।
कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १०२८।

१९९. पाँच मिनट देरी

पाँच मिनट देरी पानि-बँटवाराक विवाद भड़का सकैत अछि, मुदा अन्तमे दुनू घड़ी छोड़ि नलकूप आ पइनक वास्तविक प्रवाह पर लौटैत छथि। कथा मापनकेँ साधन बनबैत अछि, सम्बन्धक मालिक नहि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त।
कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १३०८।

२००. उजड़ल मेड़

उजड़ल मेड़ दू खेतक सीमा मिटा दैत अछि, मुदा पुनर्निर्माणक समय पानि जाएबाक जगह जानि-बुझि छोड़ल जाइत अछि। अन्तिम कथा सीमा आ साझा प्रवाहक संतुलन पर खण्डकेँ समाप्त करैत अछि।

मूल विश्लेषण-अक्ष: अल्पकथन, वस्तु-ध्वनि, स्मृति, सम्बन्ध आ खुला अन्त।
कथा-पाठक देवनागरी पद-गणना: करीब १२९०।

८. समेकित विषय-विमर्श

८.१ श्रमक दृश्यता

कथा १०१, १०५, ११०, १११, ११३, ११९, १६५ आ १७४ विशेष रूपेँ देखबैत अछि जे श्रमक समस्या केवल मजदूरी नहि; श्रमक नाँव, समय, पाँजि आ जिम्मेवारी दर्ज होएब सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। खण्डक अनेक कथामे सुधारक पहिल पएर पाइ नहि, ‘काजक नाँव’ अछि।

८.२ वस्तु, अधिकार आ अर्थ

बीआक बोरा, लाल सूत, घंटी, फीता, मोहर, कुर्सी, पेंसिल, चाबी, डिब्बा, कप, जूता, बल्ब आ मेड़—ई सभ वस्तु निष्क्रिय सजावट नहि। अधिकार जखन अमूर्त रहैत अछि तखन कथा ओकरा वस्तुमे बाँधि दृश्य बनबैत अछि। वस्तुक अर्थ बदलिते सामाजिक नियमक अर्थ बदलैत अछि।

८.३ अभिलेखक नैतिकता

अभिलेख खण्डमे न त निरपेक्ष सत्य, न निरर्थक कागज। नीक अभिलेख ओ अछि जे स्रोत, समय, संशोधन, अनिश्चितता आ प्रभाव स्पष्ट करय। कथा १६६, १७५, १७६, १७९ एहि अभिलेख-नैतिकताकेँ सर्वाधिक स्पष्ट रूप दैत अछि।

८.४ स्त्री पात्रक विश्लेषणात्मक भूमिका

सुनैना, फूलमती, फूलकली, आरती, माधवी, रचना, मीरा, पूनम, रमा, अर्चना, नीलिमा, ललिता, सरिता, मालती आदि पात्र केवल भावनात्मक केन्द्र नहि; अनेक बेर नियमक त्रुटि पहिचाननिहार, हिसाब बनौनिहार, स्रोत बचौनिहार, श्रमक नाँव माँगनिहार आ वर्गीकरण सुधारनिहार छथि। एहि कारण स्त्री-अनुभव सामाजिक ज्ञानक स्रोत बनैत अछि।

८.५ स्थानिकता आ भूगोल

मिथिलाक कथा-भूगोल केवल नामसूची नहि; खेतक मेड़, पानि जाएबाक मुँह, पोखरिक घाट, बाँधक ढाल, इनारक पाल, गामक उच्चारण, बान्हक कटाव—सभ कथानकक तर्क निर्धारित करैत अछि। भूगोलक एहि सक्रिय भूमिकाकेँ विदेह समानान्तर पद्धति विशेष रूपेँ महत्त्व दैत अछि।

८.६ अन्तक शिल्प

खण्डक आरम्भिक कथा समाधानक नियम अपेक्षाकृत स्पष्ट लिखैत अछि; मध्यभाग स्रोत-संशोधन करैत अछि; अन्तिम बीस कथा वस्तु-स्थिति पर रुकि जाइत अछि। एहि परिवर्तनसँ पाठक पर भरोसा बढ़ैत अछि। अन्तिम अर्थ ‘कहल’ नहि, ‘देखाओल’ जाइत अछि।

९. शुद्ध मैथिली निखार-परीक्षण

ई परीक्षण कथा-पाठक शब्दरूप पर केन्द्रित अछि। गणना केवल मुख्य १०० कथाक पाठ पर आधारित अछि; अनुक्रम, प्रकाशकीय विवरण वा शीर्षक-पृष्ठ एहि गणनामे नहि। सुधारक उद्देश्य कथ्य बदलनाइ नहि, शब्दरूपक एकरूपता बढ़ेनाइ अछि। जतय शब्द पात्रक विशिष्ट बोली, उद्धरण वा कथानकीय प्रमाण हो, ओतय यान्त्रिक प्रतिस्थापन उचित नहि; प्रसंग-दर-प्रसंग सम्पादन अपेक्षित अछि।

पाठमे रूप	निखार-रूप	कुल आवृत्ति	कथा-संख्या	सम्पादकीय टिप्पणी
कोठरी	कोठली	२३०	१०१,१०६, १०७,१०८, ११२,११४, ११९,१२१, १२२,१२३, १२४,१२५, १२७,१२९, १३०,१३१, १३२,१३४, १३५,१३७, १३…	एकरूपता लेल ‘कोठली’ अपनाएब; शीर्षक वा उद्धरण अलग सँ जाँचू।
कमरा	कोठली	३७	१२२,१२६, १३२,१३३, १३९,१४४, १५०,१६६, १६८,१६९, १७०,१७१, १७२,१७४, १७५,१७६, १७७,१७८, १८७,१९७	‘कोठली’ सँ एकरूप कएल जा सकैत अछि।
चाय	चाह	९३	१०२,१०३, १०६,१०७, १११,११३, १२३,१३०, १३१,१३२,	मुख्य कथनमे ‘चाह’; पात्र-उद्धरण प्रसंगानुसार।

पाठमे रूप	निखार-रूप	कुल आवृत्ति	कथा-संख्या	सम्पादकीय टिप्पणी
			१३४,१३५, १३६,१३७, १३९,१४१, १४२,१४३, १४६,१४७, १५...	
पानी	पानि	७२	१०५,१०८, ११३,११४, ११७,१२१, १२२,१२३, १२४,१२८, १२९,१३२, १३३,१३८, १४०,१४८, १४९,१५८, १५९,१६५, १७...	'पानि' रूप खण्डमे पहिनहिसँ बहुसंख्यक अछि; ताहि रूपमे एकरूपता।
गायब	बिलायल	५८	१०१,१०६, १०८,११०, ११२,१२१, १२३,१२४, १२५,१२६, १२७,१३२, १३३,१३५, १३६,१३७, १४०,१४७, १५४,१५९, १६...	'बिलायल' अपनाएब उचित।
अंगूठा	औंठा	१२	१०१,१०२, १०३,१०४, १०९,११०, १११,११२, १२३,१३२	'औंठा' अथवा प्रसंगानुसार 'बुढ़बा आंगुर'।
कुआँ	इनार	३	१३०,१९५	'इनार'

पाठमे रूप	निखार-रूप	कुल आवृत्ति	कथा-संख्या	सम्पादकीय टिप्पणी
				अपनाएब।
कुइयाँ	इनार	२७	११५,११८	शीर्षक कथा ११८ सहित रूप बदलला सँ शीर्षक-संपादनक निर्णय अलग चाही; मुख्य गद्यमे ‘इनार’।
पीतल	पित्तरि	४६	१०१,१०४, ११२,११३, ११६,१२१, १२२,१२६, १३३,१३८, १४०,१४५, १४६,१४९, १५६,१६६, १८२,१८५, १८६,१८७, १९…	‘पित्तरि’ अपनाएब।
आईना	अएना	१	१७३	‘अएना’ अपनाएब।
दरवाजा	केवाड़ी	१०	१२५	‘केवाड़ी’ अपनाएब।

विशेष लिपि-जाँच: मुख्य कथा-पाठमे रोमन लिपिक प्रयोग केवल कथा १६७ ‘अनुवादित गाम’मे भेटल, कुल १९ पद-रूप। ई कथानकीय रूपेँ आवश्यक लिप्यन्तरण-साक्ष्य अछि। मुद्रित निखारमे उदाहरण देल जाए तँ रोमन रूप कोष्ठकमे राखब उचित: (PIPRAHI), (PIPRAAHI), (PIPRAHI-K), (PIPRAHI-M)।

एकरूपता-प्राथमिकता: पानि, चाह, कोठली, बिलायल, औंठा, इनार, पित्तरि, अएना, केवाड़ी—एहि रूपसभकेँ मुख्य कथावाचक गद्यमे स्थिर करबासँ खण्डक

भाषिक व्यक्तित्व अधिक समरूप होएत। तथापि पात्र-भाषा, शीर्षक आ ऐतिहासिक/दस्तावेजी उद्धरणक रूप बिना प्रसंग-जाँच बदलनाइ उचित नहि।

१०. निष्कर्ष

‘कथा-त्रिधारा, खण्ड-२’क १०० कथा मिलि छोट सामाजिक संस्थासभक एक विशाल कथात्मक नकाशा बनबैत अछि। खेतक चलन, साझा पशु, पम्प, भट्ठी, बाँध, पोखरि सँ कार्यालय, नस्ती, मोहर, अंकीय क्रमांक आ फेर घरक कप, डिब्बा, रेडियो, पुल, जाल आ मेड़ धरि—सभ ठाम मूल प्रश्न एक्के परिवारक अछि: मनुष्य कोना तय करैत अछि जे ककर अधिकार, ककर श्रम, ककर समय, ककर प्रमाण आ ककर स्मृति मान्य हो?

खण्डक मुख्य साहित्यिक उपलब्धि उपदेशक बदला प्रक्रियामे अछि। पात्र चर्चा करैत छथि, मापैत छथि, लिखैत छथि, फेर पुरान नियमकेँ सीमित करैत छथि। मध्यभागमे ई पद्धति ज्ञानमीमांसक गहराई लैत अछि: छवि मूल नहि, नाम व्यक्ति नहि, क्रमांक घटना नहि, रंग नियम नहि, खाली जगह आदेश नहि। अन्तिम भाग ई विश्लेषण पुनः भावनात्मक संसारमे लौटा दैत अछि, जतय वस्तु कम बोलैत अछि मुदा बेसी ध्वनित करैत अछि।

भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक ध्वनि आ औचित्य, पाश्चात्य आख्यानशास्त्रक दृष्टिबिन्दु आ समय, नव्य-न्यायक प्रमाण-सूक्ष्मता, तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक स्रोत-नैतिकता—चारू दृष्टि एहि खण्डमे परस्पर पुष्टि करैत अछि। सभसँ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष ई जे कथा-संसारमे ‘सत्य’ बहुत बेर एक वस्तु वा एक पाँतिमे पूरा नहि; ओ अलग स्रोतक सीमित सत्यकेँ उचित सम्बन्धमे राखलापर बनैत अछि।

भाषिक स्तर पर खण्डक लोकाधारित मैथिली सशक्त अछि, मुदा शब्दरूपक किछु असंगति सम्पादकीय एकरूपता माँगैत अछि। निखार-संशोधनक बाद ई खण्ड विषय-विस्तार, संरचनात्मक अनुक्रम, वस्तु-प्रतीक, प्रमाण-चिन्तन आ लोकजीवनक सूक्ष्म व्याख्याक कारण समकालीन मैथिली कथा-साहित्यक एक महत्त्वपूर्ण दीर्घ-संकलन रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।

बिबलियोग्राफी

- कथा-त्रिधारा: खण्ड-२
- नाट्यशास्त्र
- ध्वन्यालोक
- अभिनवभारती
- वक्रोक्तिजीवित
- औचित्यविचारचर्चा
- काव्यप्रकाश
- तत्त्वचिन्तामणि
- दीधिति
- शक्तिवाद
- व्युत्पत्तिवाद
- (POETICS)
- (MIMESIS)
- (THE RHETORIC OF FICTION)
- (NARRATIVE DISCOURSE)
- (TIME AND NARRATIVE)
- (THE DIALOGIC IMAGINATION)

आलेख १२ · कथा, लघुकथा आ कथा-समालोचना

कथा-त्रिधारा : खण्ड ३

सारांश

ई अध्ययन ‘कथा-त्रिधारा खण्ड-३’क कथा २०१ सँ ३०० धरि सभ एक सय कथाकेँ समग्र पाठ-इकाइ मानि विश्लेषित करैत अछि। अध्ययनक मूल प्रश्न ई अछि जे ग्रामीण श्रम, सार्वजनिक संसाधन, दफ्तरशाही, दस्तावेज, पहचान, स्मृति, भय, नगर-बोध, प्रवास, समय, परिवार आ अभिलेख जेकाँ विषय सभ कथा-संरचना, बिम्ब, संवाद आ अन्तिम दृश्यक माध्यमसँ कोना अर्थ ग्रहण करैत अछि। पहिल आलोचनात्मक धुरी भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्य; दोसर पाश्चात्य कथाविज्ञान (Narratology), दृष्टिकेन्द्र (Focalization), कथन-विश्वसनीयता (Reliability), संवादिता (Dialogism) आ काल-बोध; तेसर नव्य-न्यायक प्रमाण, अभाव, व्याप्ति, विशेषण-विशेष्य, अवच्छेदक आ शब्दबोध; आ चारिम विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक अभिलेख, मौन, स्रोत-समीक्षा, परस्पर-पुष्टि आ संशोधनशील निष्कर्ष अछि। पाठगत विश्लेषण देखबैत अछि जे खण्डक पहिल भागमे जीवनोपार्जनक ठोस अर्थनीति, मध्य भागमे स्मृति-भय-प्रमाणक अनिश्चितता, तकर बाद दफ्तरशाहीक व्यंग्यात्मक संरचना, आ अन्तिम भागमे नगर, आत्मबोध, समय आ अभिलेखक सूक्ष्म पुनर्पाठ क्रमशः विकसित होइत अछि। शुद्ध मैथिली निखार-जाँचमे रोमन लिपिक स्वतंत्र शब्द नहि भेटल; तथापि किछु स्थानपर मानकीकरण-सापेक्ष रूप—जेना ‘पानी’, ‘गायब’, ‘दरवाजा’, ‘बरामदा’, ‘चाय’, ‘कमरा’, ‘कोठरी’—विदेह-प्रचलित ‘पानि’, ‘बिलायल’, ‘केवाड़ी’, ‘ओसारा’, ‘चाह’, ‘कोठली’सँ भिन्न भेटैत अछि। समग्रतः ई खण्ड साधारण वस्तु, छोट प्रशासनिक प्रक्रिया आ दैनिक निर्णयकेँ कथात्मक ज्ञानक माध्यम बनबैत अछि; ओकर प्रमुख उपलब्धि घोषणात्मक नीतिक बदला दृश्य, क्रिया, कागज, वस्तु आ मौनसँ अर्थ उत्पन्न करब अछि।

बीजशब्द

कथा-त्रिधारा : खण्ड ३ ·मैथिली कथा ·लघुकथा ·पाठाधारित समीक्षा ·कथन-शिल्प

१.१६. गजेन्द्र ठाकुर- कथा-त्रिधारा खण्ड-३ कथा २०१–३०० : विस्तृत साहित्यिक समीक्षा आ ज्ञानमीमांसात्मक परीक्षण भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

कथा-त्रिधारा खण्ड-३

कथा २०१–३०० : विस्तृत साहित्यिक समीक्षा आ ज्ञानमीमांसात्मक परीक्षण

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे

शोध-लेख

सारांश

ई अध्ययन 'कथा-त्रिधारा खण्ड-३'क कथा २०१ सँ ३०० धरि सभ एक सय कथाकेँ समग्र पाठ-इकाइ मानि विश्लेषित करैत अछि। अध्ययनक मूल प्रश्न ई अछि जे ग्रामीण श्रम, सार्वजनिक संसाधन, दफ्तरशाही, दस्तावेज, पहचान, स्मृति, भय, नगर-बोध, प्रवास, समय, परिवार आ अभिलेख जेकाँ विषय सभ कथा-संरचना, बिम्ब, संवाद आ अन्तिम दृश्यक माध्यमसँ कोना अर्थ ग्रहण करैत अछि। पहिल आलोचनात्मक धुरी भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्य; दोसर पाश्चात्य कथाविज्ञान (Narratology), दृष्टिकेन्द्र (Focalization), कथन-विश्वसनीयता (Reliability), संवादिता (Dialogism) आ काल-बोध; तेसर नव्य-न्यायक प्रमाण, अभाव, व्याप्ति, विशेषण-विशेष्य, अवच्छेदक आ शब्दबोध; आ चारिम विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक अभिलेख, मौन, स्रोत-समीक्षा, परस्पर-पुष्टि आ संशोधनशील निष्कर्ष अछि। पाठगत विश्लेषण देखबैत अछि जे खण्डक पहिल भागमे जीवनोपार्जनक ठोस अर्थनीति, मध्य भागमे स्मृति-भय-प्रमाणक अनिश्चितता, तकर बाद दफ्तरशाहीक व्यंग्यात्मक संरचना, आ अन्तिम भागमे नगर, आत्मबोध, समय आ अभिलेखक सूक्ष्म पुनर्पाठ क्रमशः विकसित होइत अछि। शुद्ध मैथिली निखार-जाँचमे रोमन लिपिक स्वतंत्र शब्द नहि भेटल; तथापि किछु स्थानपर

मानकीकरण-सापेक्ष रूप—जेना ‘पानी’, ‘गायब’, ‘दरवाजा’, ‘बरामदा’, ‘चाय’, ‘कमरा’, ‘कोठरी’—विदेह-प्रचलित ‘पानि’, ‘बिलायल’, ‘केवाड़ी’, ‘ओसारा’, ‘चाह’, ‘कोठली’सँ भिन्न भेटैत अछि। समग्रतः ई खण्ड साधारण वस्तु, छोट प्रशासनिक प्रक्रिया आ दैनिक निर्णयकेँ कथात्मक ज्ञानक माध्यम बनबैत अछि; ओकर प्रमुख उपलब्धि घोषणात्मक नीतिक बदला दृश्य, क्रिया, कागज, वस्तु आ मौनसँ अर्थ उत्पन्न करब अछि।

मुख्य शब्द: कथा-त्रिधारा; मैथिली कथा; रस; ध्वनि; वक्रोक्ति; नव्य-न्याय; प्रमाण; अभाव; दफ्तरशाही; अभिलेख; समानान्तर इतिहास-दृष्टि; भाषिक निखार।

१. उपक्रम : पोथीक स्वरूप आ अध्ययनक सीमा

‘कथा-त्रिधारा खण्ड-३’ गजेन्द्र ठाकुरक तीन सय चयनित कथामे सँ कथा २०१–३०० समेटैत अछि। एहि खण्डक अनुक्रम एक सय स्वतंत्र कथा प्रस्तुत करैत अछि, आ पाठक आरम्भे देखैत अछि जे विषय-क्षेत्र केवल एक प्रकारक सामाजिक कथा धरि सीमित नहि। खेत, हाट, विद्यालय, पोखरि, श्रम, बीज, ऋण, बाढ़ि, प्रवास, चित्र, स्मृति, रातिक भय, सरकारी कार्यालय, पहचान-पत्र, पेंशन, अनुमति, प्रतिवेदन, पुस्तकालय, नगरक साँझ, रेलवे घोषणा, सिनेमा, अएना, पञ्जी—ई सभ वस्तु आ संस्था एक विस्तृत कथा-संसार बनबैत अछि।

एहि अध्ययनमे ‘कोनो रचना छुटबाक नहि’ कसौटीकेँ औपचारिक रूपेँ स्वीकार कएल गेल अछि। तेँ सामान्य विषयगत विश्लेषणक अतिरिक्त नीचे कथा २०१ सँ ३०० धरि पृथक् आलोचनात्मक टिप्पणी देल गेल अछि। कोनो कथाकेँ केवल शीर्षक आधारपर नहि पढ़ल गेल; कथाक आरम्भ, कथ्य-विकास, निर्णायक वस्तु/स्थिति आ अन्तिम अर्थ-गति केन्द्रीय आधार बनल अछि। जहाँ कथा अनिश्चितता बनाए रखैत अछि, ओतय समीक्षा सेहो निर्णायक चमत्कार वा घटना गढ़ैत नहि।

खण्डक समग्र प्रवाह पाँच पाठगत पट्टीमे देखल जा सकैत अछि। कथा २०१–२१८ ग्रामीण अर्थजीवन, श्रम, सामुदायिक संसाधन आ परिवारक निर्णय पर केन्द्रित अछि। कथा २१९–२४० स्मृति, भय, दृश्यता, ध्वनि, वस्तु-साक्ष्य आ अनिश्चित अनुभवक क्षेत्र खोलैत अछि। कथा २४१–२६० दफ्तरक वस्तु,

आदेश, प्रमाणपत्र, निरीक्षण, प्रतिलिपि आ प्रक्रियाकेँ व्यंग्यक मुख्य साधन बनबैत अछि। कथा २६१–२७८ अमूर्त प्रशासनिक श्रेणी—नम्बर, सीमा, सत्यापन, अनुमति, मुहर, कर, प्रवेश, मंजूरी—क माध्यमसँ व्यक्ति आ कागजक संघर्षकेँ तीव्र करैत अछि। कथा २७९–३०० फेर व्यक्तिगत अनुभव दिस घुरैत अछि, मुदा एखन पात्र ग्रामीण/नगरीय व्यवस्था, स्मृति, समय, श्रम आ अभिलेखक प्रति अधिक आत्म-सजग छथि।

२. पद्धति : चार आलोचनात्मक परम्पराक समन्वित उपयोग

भारतीय काव्यशास्त्रक उपयोग एहि अध्ययनमे कथाकेँ कविता बनायब लेल नहि, बल्कि भाव-व्यञ्जना, संकेत, भाषा-विन्यास आ प्रसंग-संगतिक जाँच लेल कएल गेल अछि। भरतक रस-सिद्धान्त पात्रक भावात्मक स्थितिक सामाजिकीकरण बुझबैत अछि; आनन्दवर्धनक ध्वनि प्रत्यक्ष कथनसँ बाहर उत्पन्न अर्थ पर ध्यान दैत अछि; कुन्तकक वक्रोक्ति सामान्य कथ्यकेँ विशिष्ट रूपेँ कहबाक शक्ति जाँचैत अछि; क्षेमेन्द्रक औचित्य पात्र, प्रसंग, भाषा आ निष्कर्षक संगति पर कसौटी दैत अछि। एहि पोथीक अनेक अन्त—पाँच भुट्टा, लाल सूत, जंग लागल साँकल, खाली खूँटा, शून्य बाकी, नम्बर, मुहर, टूटल रोशनी—ध्वन्यात्मक अर्थक प्रमुख उदाहरण छथि।

पाश्चात्य आलोचनामे कथाविज्ञान (Narratology)क मुख्य प्रश्न—कौन देखैत अछि, कौन कहैत अछि, समय कोना व्यवस्थित अछि, जानकारी कतेक सीमित अछि, अन्तिम अर्थ निश्चित कि खुला—विशेष उपयोगी अछि। कथा २२१, २२५, २२७, २३०, २३७, २३८ जेकाँ पहिल-पुरुष कथासभमे कथन-विश्वसनीयता (Reliability) स्वयं विषय बनि जाइत अछि। कथा २७९–३०० मे दृष्टिकेन्द्र (Focalization) प्रायः एक पात्रक अनुभवपर टिकैत अछि, मुदा बाहरी वस्तु ओकर आत्मकथा सुधारैत अछि। बाख्तिनीय संवादिता (Dialogism)क दृष्टिसँ पोथी एक आवाजक नैतिक घोषणा नहि, बल्कि मजदूर, किसान, स्त्री, लिपिक, अधिकारी, शिल्पी, विद्यार्थी, वृद्ध, रोगी आ परिवारक अनेक व्यावहारिक भाषाक सह-अस्तित्व अछि।

नव्य-न्याय एहि अध्ययनमे साहित्यकेँ तर्कसूत्रमे घटेबाक साधन नहि, बल्कि दाबीकेँ सूक्ष्म करबाक अनुशासन अछि। कोन कथामे प्रत्यक्ष प्रमाण अछि, कोन

पात्र अनुमान करैत अछि, कोन ठाम शब्द-प्रमाण प्रशासनिक आदेश बनि जाइत अछि, कोन ठाम अभाव स्वयं अर्थवान अछि—ई भेद अत्यन्त फलदायी अछि। ‘खाली मुहर’मे अक्षरक अभाव, ‘एक केवाड़ी कम’मे अभिलेखीय मान्यताक अभाव, ‘सत्यापन’मे जीवित व्यक्तिक कागजी उपस्थितिक अभाव, ‘मिथिलाक पुस्तकालय’मे स्रोत-सहमतिक अभाव—सभ एक्के प्रकारक ‘नहि’ नहि। नव्य-न्यायिक विश्लेषण एहि अभावसभक प्रतियोगी, आश्रय, सीमा आ प्रमाण-स्रोत अलग करबाक आग्रह करैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि साहित्यिक पाठकेँ सामाजिक इतिहासक सीधा दस्तावेज मानि लेबाक विरुद्ध सावधान करैत अछि। कथा अनुभवक रूपांकन अछि; तथापि ओकर वस्तु-संसार—पाँजि, रसीद, कार्ड, खतियान, आवेदन, प्रतिलिपि, माप-पुस्तिका, पेंशन, नस्ती, पञ्जी—इतिहास लिखबाक स्रोत-समस्या पर गम्भीर रूपक रचैत अछि। एहि पद्धतिक मुख्य कसौटी अछि: सत्ता जाँचू, प्रमाण नहि छोड़ू; मौन दर्ज करू, कथा नहि गढ़ू; केन्द्र आ हाशिया दुनू पर समान आलोचनात्मक प्रश्न लागू करू। कथा २९९–३०० एहि पद्धतिक साहित्यिक समकक्ष बनि उठैत अछि।

३. खण्डक आन्तरिक संरचना : श्रमसँ अभिलेख धरि

खण्डक संरचना रैखिक विकास-कथा नहि, मुदा एक अर्थपूर्ण गति अवश्य अछि। आरम्भिक कथासभमे संघर्ष प्रायः संसाधनक प्रत्यक्ष अभावसँ उपजैत अछि—जूता बनाम बीज, औषधि बनाम धानक मूल्य, नलपर पहुँच, बूढ़ गोरूक देखभाल, मजदूरीक बाकी, बीजक चयन, बकरीक बिक्री, बाढ़ि बाद ऋण। एहि कथासभमे समस्या देखाइत अछि, छूबि सकैत अछि, गिनल जा सकैत अछि। पात्रक निर्णय कठिन अछि, मुदा वस्तु स्पष्ट अछि।

मध्यक रहस्यात्मक पट्टीमे वस्तु स्पष्ट रहितहुँ अर्थ अस्पष्ट भऽ जाइत अछि। चित्र बदलल कि नजर? घंटी सचमुच बजल कि स्मृति? पोखरि देखलक कि जल-स्रोत उभरल? दीवार भीतर भेटल चिरै स्मृतिक पुष्टि करैत अछि कि स्मृति पुनर्गठित करैत अछि? ई कथासभ प्रत्यक्षवादक सरल रूपकेँ चुनौती दैत अछि, मुदा अन्धविश्वासक पुष्टिकरण नहि करैत। निर्णायक विशेषता ई अछि जे पात्र अन्तमे अनिश्चितताक संग जीबय सीखैत छथि।

दफ्तरशाहीक पट्टीमे उलटा प्रक्रिया होइत अछि: अर्थ सामान्यत: स्पष्ट अछि, मुदा प्रक्रिया ओकरा अस्पष्ट बना दैत अछि। पंखा चाही—प्रस्ताव सात पड़ाव घूमैत अछि। हस्ताक्षर चाही—व्यक्ति कोठली-दर-कोठली चलैत अछि। सरकारी छाता उपलब्ध अछि—उपयोग नहि। जीवित व्यक्ति सामने अछि—अभिलेख कहैत अछि मृत। घरमे पीढ़ीसभसँ रहैत व्यक्ति कैं निवास-अनुमति चाही। एहि कथासभक हास्य हलुक नहि; ई वर्गीकरण, विलम्ब, प्रतीकात्मक अनुपालन आ उत्तरदायित्व-वितरणक संरचनात्मक आलोचना अछि।

अन्तिम पट्टीमे पात्र अपनहि कथन, इच्छा वा स्मृतिक पुनर्परीक्षण करैत छथि। 'गाड़ी छूटल' बदलि 'हम चढ़ल नहि' होइत अछि; प्रेमक पुरान संकेत 'वास्तविक मनुष्य'क स्वतंत्र जीवनसँ बदलैत अछि; शोधक 'जमा भेलाक बाद' स्थगित जीवन छोड़ैत अछि; मेला, सिनेमा, पुरान दोकान, साइकिल, घड़ी, पञ्जी आ पुस्तकालय—सभ आत्मबोधक साधन बनैत अछि। एहि प्रकारेँ खण्डक अन्त अभिलेखीय विनम्रतापर होइत अछि: सभ स्रोत एकमत नहि होइत, आ ई असहमति स्वयं ज्ञानक हिस्सा अछि।

४. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

एहि खण्डक प्रधान रस करुण अछि, मुदा ओ एकरूप विलाप नहि। कथा २०१, २०२, २०४, २१३, २१४, २१५, २७६ जेकाँ रचनामे करुण रस आर्थिक विवशता, देह, परिवार आ प्रशासनिक समयसँ उपजैत अछि। लेखक प्राय: करुणाकेँ पात्रक मुखसँ घोषित नहि करबैत; वस्तु ओकर वहन करैत अछि—फाटल जूता, लाल सूत, खाली खूँटा, नीला लिफाफा। एहि कारण करुण रस अतिरेक भावुकतासँ बचैत अछि।

शान्त रसक प्रवाह विशेषत: कथाक अन्तिम अनुच्छेदसभमे देखाइत अछि। निर्णयक बाद पात्र प्राय: संसारकेँ नब अर्थमे देखैत अछि: मोती पाँच भुट्टा गिनैत छथि; नयन पाँजिमे 'चारि हाथ' लिखैत अछि; माधवी बन्द पुस्तकालयक कारण जीवनक स्थगन बुझैत छथि; विनोदनाथ भाषा सुधारैत छथि। ई शान्ति समस्या समाप्त भेला सँ नहि, दृष्टि बदलला सँ उपजैत अछि।

ध्वनि एहि पोथीक सर्वाधिक सफल काव्यतत्त्व अछि। शीर्षक-वस्तु प्रायः अन्तमे पुनरावृत्त होइत अछि, मुदा अर्थ बदलि चुकल रहैत अछि। ‘साँकल’ आरम्भमे सुरक्षा, अन्तमे भय-स्मृतिसँ जुड़ल जाँच; ‘घड़ीक काँटा’ आरम्भमे बाहरी समय, अन्तमे आत्मनिर्णय; ‘अन्तिम पन्ना’ आरम्भमे उपन्यास समाप्त करबाक इच्छा, अन्तमे जीवनक खुला विकल्प; ‘अनन्त पञ्जी’ आरम्भमे वंशक अभिलेख, अन्तमे अनलिखल जीवनक सीमा। ई वस्तु-ध्वनि कथाकेँ उपदेशात्मक निष्कर्षसँ बचबैत अछि।

वक्रोक्तिक स्तर पर दफ्तरशाहीक कथासभ उल्लेखनीय छथि। ‘उपस्थिति पाँजि अपन ठाम पर नियमित उपस्थित छल’, ‘सरकारी छाता चालू, सुरक्षित’, ‘अन्तिम मंजूरी—भुगतान प्रतीक्षामे’, ‘निष्क्रिय वस्तुक पहरो चाही’—एहन संरचना सामान्य वाक्यकेँ अर्थ-विपर्यासद्वारा व्यंग्यमय बनबैत अछि। वक्रोक्ति एतय अलंकार नहि, संस्थागत असंगतिक ज्ञानात्मक उपकरण अछि।

औचित्यक कसौटी पर खण्डक श्रेष्ठ पक्ष ई अछि जे अधिकांश पात्र अपन सामाजिक स्थितिक अनुरूप भाषा बोलैत छथि। किसानक संवाद खर्च, समय, मौसम, श्रम आ बीजक चारू कात घूमैत अछि; लिपिकक भाषा क्रमांक, प्रस्ताव, हस्ताक्षर, टिप्पणी, प्रमाण, स्थिति आ आदेशक शब्दावली लैत अछि; वृद्धक स्मृति वस्तुसँ उभरैत अछि; विद्यार्थी समय-सारणी आ परीक्षा-दबावमे सोचैत अछि। जतय भाषा अत्यधिक सूक्तिपरक होएत, ओतय कृत्रिमताक जोखिम उत्पन्न होइत अछि; मुदा बहुसंख्य कथामे दृश्य-आधारित अन्त एहि जोखिमकेँ घटबैत अछि।

५. पाश्चात्य कथाविज्ञान आ आधुनिक साहित्य-सिद्धान्त

कथाविज्ञान (Narratology)क दृष्टिसँ एहि खण्डक प्रमुख तकनीक सीमित दृष्टिकेन्द्र (Focalization) अछि। कथावाचक सामान्यतः सर्वज्ञ नैतिक निर्णायक बनि सभ पात्रक सत्य नहि बतबैत; पाठक एक पात्रक अनुभवक संग स्थिति देखैत अछि। एहि कारण सरकारी प्रणालीक हास्यास्पदता सेहो बाहरसँ घोषित नहि, आवेदक वा लिपिकक अनुभवमे क्रमशः उभरैत अछि।

काल-विन्यासक दृष्टिसँ अनेक कथा ‘एक दिन’ वा ‘एक घटना’ सँ आरम्भ होइत अछि, मुदा अन्तिम भाग महीना वा बरख पार करैत अछि। कथा २०१मे

एक दिनक जूता-बीज निर्णय अगिला मौसमक बीज धरि पहुँचैत अछि; २०२मे धानक एक खेप अगिला मौसमक हिसाब बनैत अछि; २८९मे बन्द दोकान सत्ताइस बरखक स्मृति-परत खोलैत अछि; २८८मे तीन सुर तीस वर्ष पार करैत अछि। एहि संक्षिप्त काल-विस्तारसँ कथा ‘क्षण’केँ जीवनक व्यापक अनुक्रममे रखैत अछि।

कथन-विश्वसनीयता (Reliability) विशेषत: २२१–२३८ समूहमे केन्द्रीय अछि। पहिल-पुरुष कथावाचक सभ बेर ई नहि कहैत जे ‘हम जे देखलहुँ से सत्य’; ओ अपन स्मृति, भय, देहगत अनुभूति आ जाँचक सीमा स्वीकार करैत अछि। आधुनिक कथाक ई महत्त्वपूर्ण गुण अछि: अनिश्चितता प्रभाव पैदा करबाक सस्ता उपाय नहि, ज्ञानक सीमा प्रस्तुत करबाक साधन बनैत अछि।

संवादिता (Dialogism)क स्तर पर दफ्तरक कथासभ अत्यन्त समृद्ध छथि। आदेशक भाषा, नागरिकक भाषा, मौखिक नियम, पाँजिक भाषा, वस्तुक व्यवहारिक उपयोग—सभ परस्पर टकराइत अछि। ‘व्यक्ति नहि, प्रमाण देखू’ जेकाँ वाक्य राज्यक औपचारिक भाषा अछि; चौकीदारक अनुभव ओकर प्रतिपक्ष। ‘अहाँक धन, हमर देखरेख’ संस्थागत आश्वासन अछि; बन्द खाता ओकर प्रत्यक्ष विडम्बना। ई बहुभाषिकता कथा संसारकेँ एकल लेखक-वाणी सँ बचबैत अछि।

आधुनिक लघुकथाक दृष्टिसँ खण्डक सर्वाधिक प्रभावशाली रचनासभ ‘अन्तिम खुलासा’ पर निर्भर नहि। कथा प्राय: एक वस्तु वा वाक्यक अर्थ बदलि समाप्त होइत अछि। एहि कारण अन्त ‘ट्विस्ट’ नहि, पुनर्वाचनक आमन्त्रण अछि। पाठक आरम्भक जूता, साँकल, घड़ी, शीशा, पञ्जी, पुस्तकालय दिस फेर मोनसँ घुरैत अछि।

६. नव्य-न्यायीय समीक्षा : प्रमाण, अभाव, शब्दबोध आ अवच्छेद

नव्य-न्यायक मूल उपयोग एतय कथाक दाबीसभक प्रकार अलग करब अछि। प्रत्यक्ष (प्रत्यक्षानुभव) आ शब्द (आदेश, कागज, प्रमाणपत्र) बारम्बार टकराइत अछि। कथा २६४मे तिलक पासवान स्वयं उपस्थित छथि—प्रत्यक्ष प्रमाण। अभिलेखमे मृत्यु दर्ज अछि—शब्द/दस्तावेजी प्रमाण। कथाक व्यंग्य

एहि संघर्षमे अछि जे संस्था प्रत्यक्ष जीवित व्यक्तिक ऊपर गलत अभिलेखकेँ प्राथमिकता दैत अछि।

अभावक विश्लेषण खण्डक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि। 'बिलायल घंटी'मे घंटीक अभाव भौतिक; 'खाली मुहर'मे अक्षरक अभाव अर्थगत; 'एक केवाड़ी कम'मे प्रशासनिक मान्यताक अभाव अभिलेखीय; 'खाली कुर्सीक आदेश'मे पदाधिकारीक अभाव शारीरिक, मुदा आदेश-सत्ताक उपस्थिति जारी। नव्य-न्यायिक सावधानी ई सभ 'नहि' केँ एक्के कोटिमे नहि रखैत। अभाव कतय अछि, ककर अपेक्षा अछि, ककर प्रतिपक्ष अछि—ई प्रश्न कथाक सूक्ष्म अर्थ खोलैत अछि।

शब्दबोधक प्रश्न कथा २७२ 'अनुवाद'मे प्रत्यक्ष अछि। आदेश चारि भाषामे अछि, मुदा अर्थक समानता सुनिश्चित नहि। शब्द केवल छपल रूप नहि; योग्यतापूर्वक बोध उत्पन्न करब आवश्यक। जँ अर्थ अस्पष्ट, दण्ड स्पष्ट—तखन राज्यक भाषिक न्याय दोषपूर्ण अछि। एहि दृष्टिसँ 'रातिक आदेश' सेहो महत्त्वपूर्ण: संदेश घर-घर पहुँचैत बदलि सकैत अछि, तें बोधगम्यता प्रशासनिक वैधताक शर्त बनैत अछि।

अवच्छेदकक दृष्टिसँ कथा २६३ 'सीमा' आदर्श उदाहरण अछि। व्यक्ति 'क्षेत्र क' वा 'क्षेत्र ख'मे वर्गीकृत होइत अछि, मुदा पानि सीमा पार बहैत अछि। श्रेणी वास्तविकताक कोन अंशकेँ सीमित करैत अछि, ई स्पष्ट कएल बिना वर्गीकरणकेँ वस्तु स्वयं मानि लेब त्रुटि अछि। एहि प्रकार कथा २५१मे मेजक ऊँचाई पदसँ जुड़ि 'पद-विशेषेण अवच्छिन्न' अर्थ ग्रहण करैत अछि, यद्यपि आरम्भिक कारण केवल घुटनाक सुविधा छल।

व्याप्तिक प्रश्न दफ्तरशाहीक व्यंग्यमे बारम्बार उठैत अछि। 'मुहर अछि त वैध', 'कार्ड अछि त व्यक्ति सत्य', 'पाँजिमे अछि त घटना सत्य', 'रिपोर्ट पूरा त काज पूरा'—संस्था एहन सार्वत्रिक सम्बन्ध मानि लैत अछि। कथा प्रतिव्याप्ति देखबैत अछि: नकली कार्ड प्रवेश पाबि सकैत अछि; प्रतिवेदन पूरा रहितहुँ छाजन अधूरा; सरकारी छाता 'चालू' रहितहुँ उपयोगातीत; पेंशनधारी जीवित रहितहुँ मृत दर्ज। साहित्य एतय प्रतिदृष्टान्तक माध्यमसँ झूठी व्याप्ति तोड़ैत अछि।

७. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति : अभिलेख, मौन आ बहुस्रोत

एहि खण्डमे अभिलेख केवल पृष्ठभूमि नहि; अनेक कथाक मुख्य पात्र-समान सक्रिय तत्व अछि। मजदूरी-पाँजि, ऋण-पत्र, श्रम कार्ड, हाजिरी-पाँजि, नस्ती, प्रमाणित प्रतिलिपि, पहचान-पत्र, प्रतिवेदन, अनुमति, क्रमांक, मृत्यु प्रमाणपत्र, खाताबही, पञ्जी—ई सभ लिखित स्रोत मनुष्यक जीवनपर वास्तविक प्रभाव डालैत अछि। समानान्तर इतिहास-दृष्टि एहि स्रोतसभकेँ न त स्वतः सत्य मानैत अछि, न स्वतः दमनकारी झूठ। प्रश्न अछि—कागज कोन प्रक्रियासँ बनल, कोन वर्गीकरण पर आधारित, कोन अनुभव छोड़ि देलक, आ कोन स्वतंत्र स्रोत ओकर पुष्टि वा खण्डन करैत अछि।

कथा २५६मे अनुभवी चौकीदारक स्मृति आ छायाचित्रयुक्त कार्ड दूनू स्रोत छथि। कथा २६४मे देहगत उपस्थिति आ मृत्यु प्रमाणपत्र दूनू स्रोत। कथा २६९मे एक तारीख दू अभिलेखीय सन्दर्भमे अलग अर्थ लैत अछि। कथा २९९मे पञ्जी लिखल नाम रखैत अछि, मुदा ‘नामक बीचक खाली ठाम’ सेहो ऐतिहासिक संकेत अछि। ई सभ समानान्तर पद्धतिक मूल सूत्र पुष्ट करैत अछि जे अभिलेखीय मौन स्वतः कथा गढ़बाक अनुमति नहि, मुदा मौन दर्ज करब आवश्यक अछि।

कथा ३०० एहि दृष्टिक लगभग घोषणाविहीन समापन अछि। ईशानक स्रोत आपसमे नहि मिलैत; ओ ‘एक सही कथा’ जबरन नहि बनबैत। भिन्न कथन, तारीख, स्मृति आ अभिलेखक सीमा अलग लिखैत अछि। इतिहासलेखनक ई संशोधनशीलता—समर्थित, सम्भाव्य, विवादित, अज्ञात जेकाँ स्तरक सम्भावना—पोथीक पूर्ववर्ती स्मृति-कथासभकेँ सेहो नब प्रकाशमे रखैत अछि।

पोथीक सामाजिक इतिहास उपयोगितामे एक अतिरिक्त सावधानी चाही। कथा २०१क मजदूर परिवार, २०३क सार्वजनिक नल, २१४क प्रवासी श्रमिक, २१७क सामुदायिक कोठार, २७१क घुरती प्रवासी—ई सभ मिथिलाक सम्भाव्य सामाजिक अनुभवक साहित्यिक रूप छथि; मुदा एकल कथा सँ ऐतिहासिक आवृत्ति वा सांख्यिक निष्कर्ष निकालब अनुचित होएत। साहित्यिक सत्य अनुभवक संरचना देखबैत अछि; ऐतिहासिक दावा स्वतंत्र स्रोत चाहैत अछि। एही भेदकेँ स्पष्ट राखब समानान्तर पद्धतिक शक्ति अछि।

८. भाषा, शिल्प आ शैली

पोथीक भाषा मूलतः दृश्यात्मक मैथिली गद्य अछि। वाक्य प्रायः मध्यम आकारक, संवाद संक्षिप्त, आ वस्तु-वर्णन सटीक अछि। ग्रामीण कथासभमे कृषि, श्रम, माप, मौसम, बोरा, बीज, औजार आ घरेलू वस्तुक शब्दावली कथा कैं भौतिक धरातल दैत अछि। दफ्तर-कथासभमे सरकारी शब्दावली जानबूझि कथा-सामग्री बनैत अछि; ओहि भाषाक पुनरावृत्ति व्यंग्य उत्पन्न करैत अछि।

शिल्पक एक स्थायी युक्ति ‘वस्तु-प्रत्यावर्तन’ अछि। आरम्भमे साधारण वस्तु प्रस्तुत होइत अछि; कथा समाप्ति धरि ओकर अर्थ बदलि जाइत अछि। ई संरचना अनेक कथामे अछि, मुदा वस्तु अलग आ प्रसंग विशिष्ट रहला कारण एकरूपता पूर्णतः यांत्रिक नहि बनैत। तथापि लगातार बहुत कथा पढ़ला पर ‘अन्तिम वस्तु-बिम्ब’क पुनरावृत्ति पाठक अनुमानित करि सकैत अछि। भावी सम्पादकीय संस्करणमे किछु कथाक अन्त वस्तु-बिम्बक बदला संवाद, क्रिया वा खुला दृश्य पर छोड़ल जाए तँ लयक विविधता आरो बढ़ि सकैत अछि।

संवादक श्रेष्ठता ओकर अर्थ-संयममे अछि। पात्र प्रायः अपन स्थिति पर निबन्ध नहि पढ़ैत; ‘एक घरक पानि रुकल तँ हमसभक पानि रुकल’, ‘माए चौबीस बरख गनैत छलीह। पंचाहत एक मिनट’, ‘गाड़ी छूटल नहि छल; ओ चढ़ल नहि छलाह’ जेकाँ वाक्य कथा-स्थिति सँ अर्थ पबैत अछि। एहि शैलीमे लेखकक प्रत्यक्ष टिप्पणी न्यून रहला पर पाठक सक्रिय रहैत अछि।

स्थानिकता—दरभंगा, मधुबनी, लहेरियासराय, झंझारपुर, बेनीपट्टी, जयनगर, रहिका, सौराठ, कमला नदी, सूरत सँ घुरती प्रवास—कथा संसारकेँ मिथिलाक ठोस भूगोल दैत अछि। स्थान केवल सजावट नहि; हाट, स्टेशन, अंचल, अस्पताल, पोखरि, गली, टावर चौक, पुस्तकालय, पुल—सभ पात्रक निर्णयक भौतिक सीमा बनैत अछि।

९. कथा-दर-कथा विस्तृत आलोचनात्मक पञ्जी : २०१–३००

एहि पञ्जीक उद्देश्य अनुक्रमक एको कथा छोड़ब नहि अछि। प्रत्येक टिप्पणी कथाक विशिष्ट संघर्ष, प्रमुख प्रतीक वा ज्ञानात्मक प्रश्न चिन्हैत अछि; ई संक्षिप्त पञ्जी उपर्युक्त समग्र विश्लेषणक स्थानापन्न नहि, ओकर सत्यापनयोग्य कथा-मानचित्र अछि।

कथा 201–210

201. विद्यालयक जूता — गरीबीक भीतर शिक्षा आ उत्पादनक प्रतिस्पर्धी आवश्यकता एहि कथाक नैतिक केन्द्र अछि। मोती बेटी सरिताक जूता चुनैत तत्काल खेतीक अवसर छोड़ैत छथि, मुदा अन्तमे बचाओल पाँच भुट्टा भविष्यक बीज बनि त्यागकेँ पराजय नहि, स्थगित स्वावलम्बनमे रूपान्तरित करैत अछि।

202. धानक बोरा — धानक नमी, सरकारी खरीद, औषधिक तात्कालिकता आ बजारक कम दाम एक्के आर्थिक श्रृंखलामे बान्हल अछि। लाल सूतक गाँठि निजी संकटकेँ सार्वजनिक खरीद-व्यवस्थाक शुष्क नियमक सामने दृश्य बनबैत अछि; अन्तिम लाल सूत हानि, उपचार आ अगिला मौसमक हिसाब तीनूकेँ एक प्रतीकमे जोड़ैत अछि।

203. पंचायतक नल — सार्वजनिक नल निजी फाटक भीतर स्थापित भेला सँ ‘सार्वजनिक’ शब्दक व्यवहारिक अर्थ प्रश्नांकित होइत अछि। स्त्रीसभक सामूहिक उपस्थिति अधिकारकेँ टकरावसँ अधिक दिनचर्या, सफाइ आ साझा उत्तरदायित्वक रूपमे पुनःस्थापित करैत अछि; जंग लागैत साँकल निष्क्रिय निजी नियन्त्रणक सशक्त बिम्ब अछि।

204. गोरूक दाम — बूढ़ गोरू बसन्तक बिक्री आर्थिक विवशता आ दीर्घ सहजीवनक संवेदना बीच रखल गेल अछि। कथा भावुक पशु-मानवीकरणसँ बचैत देखबैत अछि जे उपयोगिताक हिसाब आवश्यक अछि, मुदा पशुक देखभालक ठोस शर्त मनुष्यक नैतिक दायित्वकेँ जीवित रखैत अछि।

205. मजदूरी — ईंट-भट्ठाक मजदूरी, बाल-श्रम आ अस्थायी पाठशाला बीच कथा श्रमक गिनतीक राजनीति खोलैत अछि। ‘बाकी ५०’ जेकाँ छोट अंक गायब नहि होएब—ई कथाक निर्णायक उपलब्धि अछि: लेखा-पाँजिमे दर्ज होएब स्वयं दृश्यता आ अधिकारक पहिल रूप बनैत अछि।

206. आधारक औंठा — जैविक पहचानक तकनीक जखन श्रमिक वृद्धा फुलमन्तीक औंठाक रेखा पढ़ि नहि पबैत अछि, तखन राज्यक ‘पहचान’ आ वास्तविक व्यक्ति बीच दूरी खुलैत अछि। कथा प्रमाणक साधनकेँ सत्यक एकमात्र द्वार बनबैत संस्थागत प्रवृत्तिक आलोचना करैत अछि।

207. मकईक खेत — राति खेतक पहरा आ बेटाक पढ़ाइ एक्के मचान पर आबि मिलैत अछि। मकई बचेबाक पारिवारिक श्रमक बीच शिक्षा अतिरिक्त विलास नहि, भविष्यक दोसर प्रकारक ‘फसल’ बनैत अछि; कटनी बादो मचान आ थारीक बचल रहनाइ संघर्षक स्मृति अछि।

208. बाढ़िक ऋण — बाढ़ि केवल फसल नहि नष्ट करैत अछि; ऋण, बीज, अगिला बोआई आ घरक वस्तुसभक ऊँचाई धरि बदलि दैत अछि। देबालक बाढ़ि-रेखा आ ऊपर उठाओल बीयाक मचान आपदा-स्मृति तथा अनुकूलनक समानान्तर चिह्न बनैत अछि।

209. छोट मास्टर — ‘छोट मास्टर’ औपचारिक विद्यालयक बाहर ज्ञान-साझेदारीक लघु समुदाय रचैत अछि। विवाहक कोलाहल बीच प्रश्नक तीन उत्तर सुनबाक दृश्य कथा कैं एकल ‘सही’ उत्तरक बदला संवाद, जिज्ञासा आ स्थानीय शिक्षण-लोकतन्त्रक पक्षमे रखैत अछि।

210. चूल्हिक धुँआ — गैस-चूल्हि आ माटिक चूल्हि बीच कथा आधुनिक सुविधा बनाम परम्पराक साधारण द्वन्द्व नहि रचैत। धुँआ, इन्धन, लागत, स्वाद आ घरक व्यवस्था मिलि एक मिश्रित प्रौद्योगिक जीवन बनबैत अछि; अन्तिम ‘झिर्री’ ई सह-अस्तित्वक वास्तु-बिम्ब अछि।

कथा 211–220

211. एक कट्ठा पोखरि — एक कट्ठा पोखरिक निजी घेराबन्दी आजीविका, ठेका, साझा जल-संसाधन आ मछुआ समुदायक अधिकारकैं भिड़बैत अछि। अन्तमे प्रवेशक बाट फेर पोखरि भीतर सँ जएबाक अर्थ पूर्ण विजय नहि, बल्कि असमान किन्तु वार्तालाप-सक्षम नब सम्बन्ध अछि।

212. बीजक थैली — बाजारक संकर बीज आ घरक देसी बीजक द्वन्द्व जैव-विविधता, जोखिम आ किसानक स्मृति पर केन्द्रित अछि। चमकदार खाली थैलीक सामने फेर बाँधल सूती बीज-थैली स्वायत्तता आ पीढ़ीगत ज्ञानक शान्त प्रतिरोध बनैत अछि।

213. दू बकरी — दू बकरी विधवा कमलाक घरमे चल संपत्ति, आकस्मिक कोष आ बेटी सुनीताक शिक्षाक आधार छथि। एक बकरी बिकला बाद खाली

खूँटा आ बचल रस्सी आर्थिक निर्णयक दृश्य लागत बनैत अछि—त्याग यहाँ आँकड़ा नहि, घरेलू भूगोलमे खाली स्थान अछि।

214. श्रम कार्ड — प्रवासी मजदूर नन्दलालक श्रम कार्ड जखन मुखियाक बाकसमे बन्द रहैत अछि, तखन दस्तावेजक स्वामित्व प्रश्न बनैत अछि। मूल प्रति अपन भीतरी जेबमे राखब प्रशासनिक वस्तु पर श्रमिकक पुनःअधिकारक छोट मुदा निर्णायक क्षण अछि।

215. माटिक घर — आवास-योजनाक किस्त पर निर्भर नब ईंटक घर आ बरखा झेलैत पुरान माटिक घर एक्के आँगनमे विकासक अधूरापन देखबैत अछि। पुरान घरक मरम्मत पिछड़ेपनक चिह्न नहि, अनिश्चित सरकारी समयक विरुद्ध व्यावहारिक बुद्धि अछि।

216. कर्जक कागज — कर्जक कागजमे औंठाछाप, ब्याज, किस्त आ ‘बाकी—शून्य’ पढ़बाक क्षमता आर्थिक साक्षरताक कथा बनैत अछि। ऋण-मुक्ति केवल रकम चुकौनाइ नहि; कागजक भाषा कँ अपन पक्षमे पढ़ि सकबाक अधिकार सेहो अछि।

217. सामुदायिक धान — सामुदायिक धान कोठार व्यक्तिगत संकटकँ पारस्परिक भण्डारणक संस्थामे बदलैत अछि। खाली स्थान स्वयं अभाव नहि; ओ सावनमे बाँटल धान आ कार्तिकमे लौटैत बोरा द्वारा समुदायिक विश्वासक लेखा बनि जाइत अछि।

218. पहिल फसल — नगरक लेखा-बुद्धि लऽ गाम घुरल नयन आरम्भमे खेतीकँ केवल नकद खर्चमे मापैत अछि। बेराबेरी श्रम बुझला बाद पाँजिमे ‘चारि हाथ’ आ ‘तीन दिन’ लिखनाइ देखबैत अछि जे ग्रामीण अर्थव्यवस्थामे समय, प्रत्युपकार आ उपलब्ध श्रम सेहो पूँजीक रूप छथि।

219. मधुबनीक बन्द कोठली — बन्द कोठलीक रहस्यमय चित्र स्मृति, दृष्टि आ कलात्मक प्रामाणिकताक प्रश्न उठबैत अछि। कथा चमत्कार सिद्ध नहि करैत; कोठली खोलि देब आ परिवर्तनक दाबी छोड़ब पाठककँ देखबाक स्वतन्त्रता दैत अछि।

220. घंटीक आवाज — घंटीक अस्पष्ट आवाज भयक स्रोतसँ अधिक अपराधबोध, स्मृति आ प्रशासनिक अतीतक प्रतिध्वनि बनैत अछि। सुधार-पत्र

सिरहाना लग रहला बाद पात्र घंटीक सम्भावित स्वरकेँ प्रतिक्रिया बिना गुजरय दैत अछि—मनोवैज्ञानिक नियन्त्रणक ई सूक्ष्म परिवर्तन कथाक समाधान अछि।

कथा 221–230

221. पोखरिक आँखि — पहिल पुरुषक कथन पोखरि ‘देखैत’ अछि कि नहि, एहि अनिश्चिततातकेँ अन्त धरि बनौने रखैत अछि। भौतिक सोता, जलघास आ देहक अनायास पाछाँ हटब—ई सभ अलौकिक व्याख्या आ अनुभवजन्य सावधानी बीच तनाव रचैत अछि।

222. दीवार भीतर — दीवार भीतर भेटल वस्तु बाल-स्मृतिक सत्यतातकेँ प्रमाणित करैत कम, ओकर निर्माण-प्रक्रियातकेँ जटिल बनबैत अछि। ‘पहिने स्मृति छल कि वस्तु भेटलाक बाद स्मृति बदलल’—ई प्रश्न कथा केँ स्मृति-दर्शनक स्तर पर उठा दैत अछि।

223. कालिख — चूल्हिक कालिखमे उभरैत आकृति घरेलू श्रम, पुनरावृत्ति आ अवचेतन संकेतक कथा अछि। अन्तिम तर्जनीक मुद्रा देखबैत अछि जे बाहरी चिन्ह मेटाओल जा सकैत अछि, मुदा देह अपन रेखांकनक स्मृति राखि सकैत अछि।

224. लालटेन — रातिक भंडार, लालटेन आ वृद्ध चौकीदारक संसारमे ‘साक्षी’ मूल शब्द अछि। खाली लालटेन टाँगबाक दृश्य पहरा, उम्र आ कर्तव्यक सीमातकेँ बिना घोषणात्मक निष्कर्षक सामने रखैत अछि।

225. सात सीढ़ी — सात सीढ़ीक गिनती भय, आदत आ शरीरक स्मृतिक संरचना बनैत अछि। कथावाचक अन्तमे गिनती छोड़बाक अभ्यास करैत अछि, मुदा सातम सीढ़ीपर देहक ठमकनाइ देखबैत अछि जे तर्कसंगत निर्णय अवचेतन लयकेँ तुरन्त नष्ट नहि करैत।

226. बन्द घड़ीघर — बन्द घड़ीघर आ घड़ी-सुधारकक पेशा समयक सार्वजनिक तथा निजी रूपक द्वन्द्व रचैत अछि। स्थिर चारि बजि बारह मिनटकेँ ‘ठीक’ करबाक बदला कथावाचक समय रोकबाक अपन मनोवैज्ञानिक आग्रह छोड़ैत अछि।

227. सफेद पाँख — सफेद पाँखक पुनरावृत्ति विश्वास-अविश्वासक सादा परीक्षा नहि, स्मृतिक विश्वसनीयताक परीक्षा अछि। खिड़की खोलि राखबाक

अन्तिम निर्णय चमत्कार स्वीकार करब नहि, भविष्यक अनुभवकेँ बिना पूर्व-निर्णय ग्रहण करबाक तैयारी अछि।

228. अन्तिम चित्र — मृतक छायाचित्र बनबयवला विनोदक पेशा छवि, शोक आ ‘अन्तिम’ रूपक नैतिक जटिलता खोलैत अछि। कथा कैमरा केँ निष्पक्ष यन्त्र नहि मानैत; देखनिहारक इच्छा आ स्मृति छविक अर्थ बनबैत अछि।

229. तरहड़िक पानि — बाढ़ि उतरला बाद तरहड़िक पानि, सीलन आ अस्पष्ट आवाज वस्तुगत क्षति तथा मानसिक अवशेषकेँ एक संग रखैत अछि। कथाक शक्ति एहि मे अछि जे आवाजक अंतिम सत्य नहि दैत; हिसाबक व्यवहारिक क्रिया रहस्यक संग सह-अस्तित्वमे रहैत अछि।

230. रातिक पाँति — मसान-घाटक रातिक पाँजि नामकेँ प्रशासनिक पंक्तिसँ अस्तित्वक घटना बनबैत अछि। रिक्त पाँति भरबाक पहिने ‘सचमुच खाली’ अछि कि नहि देखब—ई कथावाचकक विकसित नैतिक सावधानी अछि।

कथा 231–240

231. साँकल — रूपा-कारीगरक सुरक्षित साँकल आ रेलक दूरक सीटी घरक सुरक्षा तथा पुरान असुरक्षाक स्मृति जोड़ैत अछि। धातुक स्वाभाविक संकुचन तर्कसंगत स्पष्टीकरण दैत अछि, मुदा बाम कब्जा सेहो जाँचबाक नब आदत अनुभवक अवशिष्ट असर स्वीकार करैत अछि।

232. धड़कन — चिकित्सालयक बन्द कोठलीमे ‘धड़कन’ चिकित्सकीय श्रवण आ स्मृतिक अस्पष्टता बीच स्थित अछि। कथा चुप्पीकेँ निःशब्दता बराबर नहि मानि अनुभवक सूक्ष्म अवशेषक प्रति संवेदनशीलता रचैत अछि।

233. काला दर्पण — पुरान दर्पणक कारी धब्बा प्रतिबिम्बक विलम्ब वा विचलनक आशंका पैदा करैत अछि। मालतीक अन्तिम चुनाव—दर्पणक परीक्षा छोड़ि सीधा कलाई देखब—अनिश्चित प्रतिरूपक बदला जीवित मनुष्य पर भरोसा लौटबैत अछि।

234. छत पर पएर — मृदंगकारक प्रशिक्षित कान छतपर पएरक आवाज सुनैत अछि, मुदा ऊपर जएबाक सीढ़ी नहि। कथाक भय ‘की अछि’सँ कम ‘जाँचि नहि सकबाक’ सीमासँ बनैत अछि; तेसर थाप नहि देब अनिश्चितताकेँ अनुशासित स्वीकृति अछि।

235. चिट्ठीक गन्ध — पुरान चिट्ठीक गन्ध कागजसँ अधिक स्मृतिपर असर करैत अछि। कथा देखबैत अछि जे इन्द्रिय-स्मृति कालक्रमक अनुशासन मानैत नहि; गन्ध अतीतकेँ दस्तावेजक उमरसँ अलग समयमे जीवित रखैत अछि।

236. नीलकंठ — नीलकंठ पक्षी शुभ-अशुभ संकेतक लोकविश्वासक छाया लैत अछि, मुदा कथा दैनिक श्रमकेँ रोकैत नहि। फूलो देवी ऊपर देखैत छलीह, फेर हाथ काजपर रहैत अछि—विश्वास आ व्यवहारक संतुलन एहि कथा केँ अतिनाटकीयता सँ बचबैत अछि।

237. दोसरा कोठली — होटलक नक्शा, नम्बर आ ‘दोसरा कोठली’ स्थानिक निश्चितताक भ्रम तोड़ैत अछि। भीजल चूनाक ठंढक जेकाँ देहगत प्रमाण बचि रहैत अछि, मुदा कथावाचक ओकर एकल अलौकिक अर्थ घोषित नहि करैत।

238. माटिक भीतर — आँगनक माटि नीचाँ भेटल वस्तु परिवार-स्मृति आ देहक स्थान-स्मृतिक भेद खोलैत अछि। पाँचम पएरपर गति धीम भऽ जाएब देखबैत अछि जे शरीर कखनो मनक स्पष्ट कथासँ बेसी दीर्घ अभिलेख राखैत अछि।

239. मुद्रांक — गायब सरकारी मुद्रांकक खोज प्रशासनिक प्रामाणिकताक हास्यास्पद केन्द्र देखबैत अछि। अन्तमे मुद्रांक सुरक्षित करबाक साँकल दस्तावेजक प्रवाह बाधित करैत अछि—सुरक्षा स्वयं सेवा-विरोधी अवरोध बनि जाइत अछि।

240. नस्तीक आत्मकथा — नस्ती स्वयं कथावाचक बनि कार्यालयी पदक्रमक यात्रा वर्णित करैत अछि। मनुष्य पदक्रम बनबैत अछि ‘कागज ऊपर चढ़य’ लेल, मुदा जिम्मेवारी नीचाँ उतरैत रहैत अछि—ई व्यंग्य दफ्तरशाहीक संरचनात्मक निष्कर्ष अछि।

कथा 241–250

241. कुर्सी नम्बर सत्रह — कुर्सी नम्बर सत्रह कर्मचारी, पद आ वस्तुक सम्बन्धक व्यंग्यात्मक इतिहास रचैत अछि। व्यक्ति बदलि सकैत अछि, देबाल बदलि सकैत अछि, मुदा नम्बर फेर गाढ़ कएल जाइत अछि; संस्था वस्तुकेँ निरन्तरता दैत अछि, मनुष्यकेँ नहि।

242. नामक वर्तनी — अधिकारीक नामक एक अक्षरक भूल संस्था कैं तुरन्त सक्रिय करैत अछि, जखन आम आवेदन ढेरीमे पड़ल रहैत अछि। लाल कलम छोड़ि आवेदनक ढेरी अपन दिस खींचबाक अन्तिम क्रिया प्राथमिकताक नैतिक पुनर्संयोजन अछि।

243. महान निरीक्षण — ‘महान निरीक्षण’मे कार्यालय वास्तविक सेवा सुधरबाक बदला निरीक्षण-दृश्य सजाबय लगैत अछि। निरीक्षणक बाद ‘जकरासँ बेसी दूर रही’ से लिखबाक निर्देश आत्म-व्यंग्यकैं सुधारक सम्भावनामे बदलैत अछि।

244. पंखाक प्रस्ताव — पंखा प्रस्ताव सात प्रशासनिक पड़ाव पार करैत-करैत गरमी समाप्त भऽ जाइत अछि। नब पंखा चलैत अछि, मुदा मेजसभ बरामदामे; कथा प्रक्रिया-पूर्णताक सफलता आ वास्तविक समयक विफलता बीच तीक्ष्ण व्यंग्य रचैत अछि।

245. दफ्तरक देवता — ‘दफ्तरक देवता’ कहल पुरान अलमारी निर्णय-टारबाक अनौपचारिक संस्था बनि गेल अछि। देबालसँ हटला बाद कर्मचारीक नस्ती फेर अपन मेजपर लौटैत अछि—अंधविश्वासक असल रूप वस्तुमे नहि, उत्तरदायित्व टारबाक अभ्यासमे अछि।

246. हस्ताक्षर — एक हस्ताक्षर लेल कुम्हारक बहुस्तरीय यात्रा राज्यक लघु सहायता प्रक्रियाक अनुपातहीन भार देखबैत अछि। अन्तमे चाह-विक्रेताक कागज फेर सत्यापनक चक्रमे भेजल जाएब देखबैत अछि जे पात्रक सफलता प्रणालीगत समस्या समाप्त नहि करैत।

247. विशेष टोपी — विशेष टोपी पदाधिकारीक व्यक्तित्वक साधारण निशानी सँ धीरे-धीरे पद-संस्कृतिक अनुकरण बनैत अछि। नील टाँका बढ़ेबाक अन्तिम दृश्य दफ्तरमे प्रतीक-राजनीति कोना प्रश्न आ कार्य-संस्कृति पर चढ़ि जाइत अछि, से व्यंग्यपूर्वक देखबैत अछि।

248. चाय समिति — चाह वितरणक दैनिक श्रम ‘समिति’ बनैतहि प्रशासनिक मद, विशेष प्याला आ बिलमे रूपान्तरित होइत अछि। चन्द्रकलाक वास्तविक पाँजि आ समिति-बैसारक ‘विशेष चाह’ बीच असमानता लघु भ्रष्ट संरचनाकैं बिना भाषण उजागर करैत अछि।

249. बिलायल घंटी — विद्यालयक बेनाम पुरान घंटी गायब भेला बाद स्वामित्व आ नामकरणक बहस उभरैत अछि। घंटी घुरि बजैत अछि, समय फेर चलैत अछि, मुदा नामक विवाद बरामदामे रहि जाइत—उपयोगिता सामुदायिक, प्रतिष्ठा व्यक्तिक।

250. प्रमाणित प्रतिलिपि — पुरान शिल्पी प्रमाणपत्रक प्रमाणित प्रतिलिपि बनबैत-बनबैत व्यक्ति अनेक कागजी रूपमे विभाजित भऽ जाइत अछि। अन्तमे बाँस काटल हाथक निशान—जकर कोनो प्रतिलिपि नहि—शिल्पी पहचानक अधिक गहिर प्रमाण बनैत अछि।

कथा 251–260

251. मेजक ऊँचाई — मेजक ऊँचाई पदानुक्रमक दृश्य व्यंग्य अछि: कार्य-सुविधा बदलैतहि फर्नीचरक माप पदक संकेत बनि जाइत अछि। अन्तमे भूमि स्थिर, उपाय बदलल—ई वाक्य संस्था द्वारा आकस्मिक भेदकेँ ‘स्वाभाविक’ बना देबाक प्रवृत्तिक आलोचना अछि।

252. लाल फीता — लाल फीता समाप्ति अभियान स्वयं लाल फीता सँ बन्हल प्रक्रियामे बदलि जाइत अछि। ‘अवशिष्ट सामग्री’ पर लाल गाँठ कथा केँ आत्म-सन्दर्भित व्यंग्यक चरम बिन्दु तक लऽ जाइत अछि।

253. बिसरल आदेश — पुरान आदेश भूलि गेल कार्यालय पाछाँ फाटक सँ सामान घुमबैत रहैत अछि, जखन आगू फाटक खुलल अछि। आदेश पुनःपाठ भेला बाद भौतिक रास्ता सरल होइत अछि—संस्था कखनो नियम नहि, नियमक स्मृतिहीन जड़ता सँ कठिन बनैत अछि।

254. सरकारी छाता — सरकारी छाता ‘चालू, सुरक्षित’ राखबाक लागि कर्मचारी स्वयं फाटल छाता लऽ बरखामे निकलैत अछि। संपत्तिक संरक्षण जखन उपयोगक उद्देश्य पर भारी पड़ैत अछि, तखन सार्वजनिक वस्तु संग्रहालयी विडम्बना बनि जाइत अछि।

255. उपस्थिति — उपस्थिति-पाँजि समय-अनुशासनक प्रतीक अछि, मुदा कर्मचारीक वास्तविक उपस्थिति सँ विच्छिन्न। अन्तमे पाँजि समय पर उपस्थित अछि—ई उलटबाँसी संस्था द्वारा चिह्नकेँ वास्तविकता मानि लेबाक सटीक व्यंग्य अछि।

256. छायाचित्रयुक्त पहचान — ‘व्यक्ति नहि, प्रमाण देखू’ निर्देश अनुभवजन्य पहचानकेँ छायाचित्र-पत्रसँ प्रतिस्थापित करैत अछि। पुरान असली परिचय-पत्र वाला कर्मचारी बाहर आ चमकदार नकली पत्र वाला व्यक्ति भीतर जा सकब—प्रमाण-प्रणालीक असफल यथार्थवाद पर कठोर टिप्पणी अछि।

257. स्वागत द्वार — भव्य स्वागत-द्वार, दीपक आ दिशा-सूचक बाहरी ‘नागरिक-मित्र’ सुधार अछि, मुदा सेवा-खिड़कीपर वही पुरान चक्कर चलैत अछि। पाँचम बेर दर्ज रमकलीक नाम सजावटी पहुँच आ वास्तविक सेवा बीच दूरी प्रमाणित करैत अछि।

258. वार्षिक प्रतिवेदन — वार्षिक प्रतिवेदन अधूरा योजनाकेँ पूर्ण वाक्य, छायाचित्र आ पेटीमे व्यवस्थित करैत अछि। कागज समय पर पूरा, हाट-छाजन अधूरा—ई समकालिकता प्रतिनिधित्व आ वास्तविकता बीच संस्थागत दरारक तीक्ष्ण रूप अछि।

259. अनुमति — पैतृक घरमे रहैत वृद्ध केँ अपन निवासक अनुमति सत्यापित करब पड़ैत अछि। बहत्तर बरख पुरान खतियानक ऊपर ‘आइ सँ लागू’ अनुमति रखब इतिहास आ प्रशासनिक वर्तमानक विचित्र असमानता देखबैत अछि।

260. प्रतीक्षा कक्ष — रोगी प्रवाह सरल बनाबय लेल रंगीन तीर प्रतीक्षा-कक्षक संख्या बढ़ा दैत अछि। परामर्श पूरा भेलापर सेहो ‘केवल प्रतीक्षा बाँकी’ रहब प्रक्रिया-केंद्रित स्वास्थ्य-व्यवस्थाक सारगर्भित व्यंग्य बनैत अछि।

कथा 261–270

261. नम्बर — नाम-मुक्त निष्पक्षता आवेदककेँ क्रमांकमे बदलैत अछि, मुदा समाधानक अन्तमे नाम फेर आवश्यक होइत अछि। ‘आब ई क्रमांकक की अर्थ?—कागजक’ द्वारा कथा पहचान-अमूर्तीकरणक सीमाकेँ स्पष्ट करैत अछि।

262. खुलल मुकदमा — शिक्षक पर ‘खुलल मुकदमा’ अछि, मुदा आरोप स्पष्ट नहि—प्रक्रिया स्वयं दण्ड बनि जाइत अछि। सुधारल छात्र-नामक सामान्य शैक्षिक काजक संग अनिश्चित आरोपक सहअस्तित्व संस्थागत संशयक वातावरण रचैत अछि।

263. सीमा — गाममे प्रशासनिक ‘क्षेत्र क/ख’ अदृश्य सीमा उतारल जाइत अछि, जखन पानि सहज बहैत रहैत अछि। कथा देखबैत अछि जे वर्गीकरण उपयोगी हो सकैत अछि, मुदा वास्तविक जीवनक प्रवाह ओकर रेखासँ सदा मेल नहि खाइत।

264. सत्यापन — जीवित वृद्धक पेंशन रोकल अछि कारण अभिलेखमे मृत्यु दर्ज; जीवित-सत्यापन आ मृत्यु-प्रमाण एक्के झोरामे पड़ल अछि। ‘आवेदक स्वयं उपस्थित’ वाक्य प्रणालीक आत्मविरोधकेँ लगभग दार्शनिक व्यंग्यमे बदलैत अछि।

265. बन्द लिफ्ट — लिफ्टक अंक हटाकऽ शाखाक नाम लगाओल ‘सुगमता’ उलटा भ्रम पैदा करैत अछि। अन्तमे कागज उखड़ला नीचे पुरान १–६ अंक चमकब अनुभवपर आधारित सरल संकेतक पुनर्मूल्यांकन अछि।

266. खाली मुहर — अक्षरहीन ‘खाली मुहर’ संस्थागत वैधताक रहस्यात्मक शक्ति धारण करैत अछि। ‘आवश्यक मुहर नहि’ लिखल नस्ती सामने पड़िते कथा देखबैत अछि जे कभी-कभी चिह्नक उपस्थिति ओकर अर्थसँ पूर्णतः अलग संस्थागत सत्य बनि जाइत अछि।

267. रातिक आदेश — आधा रातिक आदेश मौखिक रूपेँ घर-घर पहुँचैत अछि; समय, भाषा आ अर्थ रास्तामे बदलैत अछि। अन्तमे ‘ई तँ कम सँ कम बुझाइत अछि’ कथाक प्रमुख कसौटी बनैत अछि—आदेशक प्रभाव तकर बोधगम्यता पर निर्भर अछि।

268. अदृश्य कर — समेकित सुविधा-करक ‘अदृश्य’ स्वरूप नागरिक लेल अस्पष्ट शुल्क, वर्गीकरण आ सेवा-तर्कक समस्या खोलैत अछि। सूखल पात फेर डलियामे राखबाक छोट घरेलू क्रिया प्रशासनिक अमूर्त करक सामने ठोस श्रम-जगत केँ उपस्थित रखैत अछि।

269. बेठीक जन्मतिथि — शिल्पी-पहिचानपत्रक तारीख यन्त्र-पाँजिमे जन्मतिथि बनि व्यक्ति केँ कागजी रूपेँ बदलि दैत अछि। एक्के तारीख ‘काज शुरू’ आ ‘मनुष्य जन्म’ दुनू अर्थमे जीवित रहब डेटा-प्रविष्टिक सन्दर्भ-विहीनताक मार्मिक उदाहरण अछि।

270. एक केवाड़ी कम — पुरान पछिला केवाड़ी नकाशा वा अभिलेखमे मान्य नहि, तेँ ओकर औपचारिक अस्तित्व मेटा देल जाइत अछि। चौखट आ

खुला रास्ता बचल रहब भौतिक वास्तविकता तथा कागजी श्रेणी बीच प्रत्यक्ष विरोध रचैत अछि।

कथा 271–280

271. घुरती — चौबीस बरख बाद स्थायी घुरती करैत प्रवासी कैं 'पुनःप्रवेश' पंजीकरण चाही। माएक चौबीस बरख आ पंचायतक एक मिनट—ई दू समय-माप प्रवासक जीवित इतिहास तथा प्रशासनिक क्षणकैं तीक्ष्ण समानान्तरमे रखैत अछि।

272. अनुवाद — बहुभाषी आदेशक 'अनुवाद' सुरक्षा नियमक अर्थ बदलि दैत अछि, मुदा दण्ड-पर्ची तत्पर रहैत अछि। कथा भाषायी न्यायकैं सजावटी बहुभाषिकतासँ अलग करैत अछि: अर्थ अस्पष्ट हो त नियमक वैधता स्वयं प्रश्नांकित होइत अछि।

273. खाली कुर्सीक आदेश — पदाधिकारीक खाली कुर्सी पूर्व आदेशक कारण शासन करैत रहैत अछि। व्यक्तिहीन आदेश-सत्ता कथा कैं दफ्तरशाहीक लगभग रूपक-कथा बनबैत अछि—हस्ताक्षरित अतीत जीवित वर्तमान पर शासन करैत अछि।

274. प्रवेश-पर्ची — आपातकालीन रोगी प्रवेश-पर्ची बिना 'आपात' कक्षमे नहि जा सकैत अछि; प्रक्रिया चिकित्सा सँ पहिने आ जाइत अछि। छुट्टीक समय कियो प्रवेश समय नहि पुछैत—नियमक असमान तीव्रता कथा कैं अधिक व्यंग्यात्मक बनबैत अछि।

275. बन्द खाता — धन खातामे अछि, मुदा सुरक्षा कारण मालिक ओकरा छू नहि सकैत। 'अहाँक धन, हमर देखरेख' वाक्य संरक्षण आ स्वामित्वक विडम्बनाकैं एक पंक्तिमे समेटैत अछि।

276. अन्तिम मंजूरी — मृत व्यक्ति नामे बाढ़ि सहायता 'अन्तिम मंजूरी' पबैत अछि, मुदा उत्तराधिकार-प्रक्रिया भुगतान रोकैत अछि। अन्तिम हरियर संदेश—'भुगतान प्रतीक्षामे'—मृत्यु, समय आ दफ्तरक असमकालिकता कैं कठोर व्यंग्य बनबैत अछि।

277. निषिद्ध प्रश्न — हरियर आवरण बिना नस्ती नहि बढ़त, फेर प्रश्न पूछबाक अनुमति लेल अलग प्रपत्र चाही। प्रश्नक स्रोत भरबाक खाँचा देखैत

मधुकान्तक ठमकनाइ संस्थागत आत्म-सेंसरशिपक सटीक मनोवैज्ञानिक क्षण अछि।

278. केवाड़ीक पहरा — 'विशेष सत्यापन' केवाड़ी बन्द अछि, मुदा ओकर सामने लोकक उपस्थिति सेवा-आँकड़ा बनैत अछि। जखन लोक आबय छोड़ैत अछि तखने भीतरक बाट खुलैत—कथा मापनक उद्देश्यमूलक भ्रम पर अत्यन्त तीक्ष्ण व्यंग्य अछि।

279. लहेरियासरायक साँझ — लहेरियासरायक साँझ घरेलू हिसाब, थकान आ नगरक सूक्ष्म ध्वनिसँ दाम्पत्य जीवनक नब संवेदना बनबैत अछि। खाली पाँति पर तारीख लिखनाइ भविष्यकेँ भव्य निर्णय नहि, साझा लेखाक अगिला दिनक रूपमे स्वीकार करैत अछि।

280. पुल पर रोशनी — नीलाभ पुरान प्रेम-संकेतक अपन कल्पित कथा केँ पुनःपरीक्षण करैत अछि। पानिमे टूटैत रोशनीक बिम्ब बतबैत अछि जे मानवीय सम्बन्ध स्थिर अर्थ नहि; अगिला भेट 'वास्तविक मनुष्य' सँ होएत, अपन कल्पनासँ नहि।

कथा 281–290

281. बन्द पुस्तकालय — शोधार्थी माधवीक 'शोध जमा भेलाक बाद' जीवन टारैत रहने स्थायी वाक्य बनि गेल अछि। बन्द पुस्तकालय आकस्मिक अवरोधसँ अधिक आत्मबोधक अवसर बनैत अछि—शोध आ जीवनक समय एक-दोसरक बाद नहि, संग-संग चलैत अछि।

282. मेला समाप्त — मेला समाप्त भेला बाद रंगीन भ्रम खण्डित नहि, समय-बद्ध रूपमे पुनःसमझल जाइत अछि। मिहिर अपन यात्राक इच्छा छोड़ैत नहि; ओकर स्रोत, लागत आ वास्तविकता पहचानि ओकरा अधिक परिपक्व रूप दैत अछि।

283. सिनेमा सँ बाहर — सिनेमा नायकक शैली सँ प्रेरित नवनीत बाहर निकलि अपन जीवनकेँ सिनेमाई मुद्रा मे देखय चाहैत अछि। अगिला बिहान किराया, मजदूरी आ रहबाक ठाम जेकाँ 'नीरस' प्रश्न स्वीकार करब इच्छाकेँ कल्पनासँ निर्णयमे बदलैत अछि।

284. ओसाराक बल्ब — ओसाराक एक बल्ब घरेलू सिलाइ, अध्ययन, व्यापार आ सार्वजनिक गलीक सीमा पर प्रकाश दैत अछि। कथा प्रकाशक साधारण

वस्तु द्वारा घरेलू श्रमक दृश्यता, रातिक सुरक्षा आ सामुदायिक उपयोगक स्तर जोड़ैत अछि।

285. चाह दोकानक शीशा — शीशा भीतर-बाहरक दृश्य एक चौखटामे राखि वर्गीय आत्मबोधक क्षण रचैत अछि। श्रुतिक महँग झोरा गलत नहि ठहरैत; ओकर अर्थ केवल निजी कमाइक गर्वसँ बढ़ि श्रम-जगतक तुलनात्मक चेतनामे बदलैत अछि।

286. रेलवे घोषणा — रेलवे घोषणा वृद्ध विनोदनाथक जीवनक पुरान कथन —'गाड़ी छूटल'—कैं सूक्ष्म रूपेँ सुधारैत अछि: 'ओ चढ़ल नहि छलाह।' भाषा बदलिते आत्मकथाक नैतिक एजेंसी बदलैत अछि; अन्तमे घोषणा पूरा सुनबाक प्रयास आत्म-सुनवाईक संकेत अछि।

287. धूपक पट्टी — ज्वरग्रस्त बुनकर धूपक पट्टी सँ दिन, उत्पादन आ स्वास्थ्यक समय मापैत अछि। अन्तमे 'आज कतेक टुकड़ा' प्रश्न हटि धूपक स्वतन्त्र गति देखब श्रम-समयक दबावसँ क्षणिक मुक्ति दैत अछि।

288. संगीतक टुकड़ा — तीन छोट सुर तीस वर्ष पुरान विवाह, मित्रता आ अनुत्तरित जीवनक दरवाजा खोलैत अछि। संगीत स्मृतिक यथार्थ प्रमाण नहि, मुदा समयक घनत्व नापयवला संवेदनात्मक यन्त्र बनैत अछि।

289. बन्द दोकान — बाल्यकालक खेलौना-दोकान बन्द भेटला पर अनिरुद्ध स्मृतिमे 'एक' दोकान नहि, विभिन्न समयक विभिन्न रंग पहचानैत अछि। कथा नॉस्टैल्जियाकेँ स्थिर अतीतक भ्रमसँ निकालि परतदार ऐतिहासिक दृष्टिमे बदलैत अछि।

290. छज्जा — बरखा नीचाँ वास्तु-नक्शा धेने अभियन्ता आ सीमेंट-दागवला श्रमिक एक छज्जाक साझा स्थानमे आबैत छथि। अनुभवक पानि धारणाक भीतर 'पातर दरार' बनबैत अछि—विशेषज्ञ ज्ञानक मानवीय पुनर्संशोधन एहि कथाक मूल बिन्दु अछि।

कथा 291–300

291. साइकिल — पिताक पुरान साइकिलक बजार-मूल्य पाँजिमे आठ सय चालीस रुपैया अछि, मुदा पारिवारिक श्रम-स्मृतिक मूल्यक कोनो खाँचा नहि। कथा बाजार-लेखा रद्द नहि करैत; ओकर बाहर बचल मूल्य-क्षेत्र देखबैत अछि।

292. पानिक गिलास — उद्यम-सम्मेलनक वक्ता जखन पानिक गिलासक पाछाँक श्रम-श्रृंखला अनुभव करैत अछि, तखन ओकर व्यवस्थापन-वाणी बदलैत अछि। कार्यस्थलक ‘स्वाभाविक आवाज’ चलय देब अमूर्त दक्षताक बदला जीवित श्रमक उपस्थिति स्वीकार करब अछि।

293. जुलूस — चुनावी जुलूस बालक अभय लेल रंग, ध्वनि आ गति; माएक लेल बिक्री; बरखा बाद नालीक पानि एक दोसर नगर-सत्य देखबैत अछि। चित्रमे नाली खाली नहि छोड़ब दृश्य-राजनीतिक आकर्षणक बाहर दैनिक शहरी संरचनाकेँ स्थान दैत अछि।

294. छोट अएना — छोट अएना वृद्ध हरिनारायणक पछिला रूप देखबयवला उपकरण अछि, मुदा कथा पिता-पुत्रक वर्तमान स्पर्श पर समाप्त होइत अछि। खाली कुरसी आ उज्जर केशक प्रतिबिम्ब उम्रकेँ दार्शनिक नाटच नहि, दिनचर्याक परिवर्तन रूपेँ देखबैत अछि।

295. छत पर कबूतर — छात्रवृत्ति परीक्षाक कठोर दिनचर्या ‘कोनो सहारा नहि’क आत्मनिर्भर आदर्श बनबैत अछि। कबूतर एक संग रहि एक्के रेखामे नहि उड़ैत—ई बिम्ब परिवार, सहयोग आ व्यक्तिगत प्रयासक गैर-द्वैत सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

296. घड़ीक काँटा — पुरान कलाई-घड़ी पिता-पुत्र सम्बन्ध, नौकरीक समय-अनुशासन आ व्यक्तिगत निर्णय जोड़ैत अछि। ‘सभ काँटा जिधर देखबैत अछि, ओहि दिस दौड़बाक बाध्यता नहि’ समय-विरोध नहि, बाहरी समयसारणी पर आत्मनिर्णयक विजय अछि।

297. अन्तिम पन्ना — ‘अन्तिम पन्ना’ पढ़ैत रजनी अपन माएक पुरान वाक्यक नब अर्थ पबैत अछि। दू सम्भावित प्रशिक्षण-मार्गक नीचे समान खाली ठाम छोड़ब निर्णय स्थगित करब नहि; विकल्पकेँ बराबर गंभीरता सँ देखबाक नब क्षमता अछि।

298. सबेरे पहिल बस — पहिल बस पर परदेसक काज लेल निकलैत कृष्णमोहनक ‘बेसी कमाइ’ हिसाब धीरे-धीरे अधूरा सिद्ध होइत अछि। कथा आर्थिक तर्कक विरोध नहि करैत, बल्कि देखबैत अछि जे परिवार, समय, दूरी आ अनिश्चिततताक खाने बिना खाता अपूर्ण रहैत अछि।

299. अनन्त पञ्जी — पञ्जी वंश-क्रमक लिखित अभिलेख अछि, मुदा वाचस्पति ‘नामक बीचक खाली ठाम’ पढ़ब सीखैत छथि। अगिला नाम लिखल जा सकैत अछि, अगिला जीवन नहि—ई भेद अभिलेखीय नियतिवादक विरुद्ध कथाक गहिर प्रतिपादन अछि।

300. मिथिलाक पुस्तकालय — लेखक-शोधक ईशान एक एहन ‘मिथिलाक पुस्तकालय’ खोजैत अछि जतय स्रोतसभ एक-दोसरसँ मेल नहि खाइत। अन्तमे भिन्न कथन, तिथि, स्मृति आ अभिलेखक सीमा अलग दर्ज करब—निर्णय थोपबाक बदला प्रमाणक असंगति सुरक्षित राखब—समूचा खण्डक ज्ञानमीमांसात्मक समापन बनैत अछि।

१०. तुलनात्मक निष्कर्ष : चार पद्धतिक संगम आ भेद

भारतीय काव्यशास्त्र पूछैत अछि—भाव आ व्यञ्जना कोना उत्पन्न भेल? पाश्चात्य कथाविज्ञान पूछैत अछि—जानकारी के देखैत/कहैत अछि, समय कोना सजल अछि, अन्त कतेक खुला अछि? नव्य-न्याय पूछैत अछि—दाबी कोन प्रमाण पर टिकल, अभावक प्रकार की, शब्दक बोध कतेक निश्चित? समानान्तर इतिहास-दृष्टि पूछैत अछि—स्रोत कोना बनल, कोन आवाज बचल/छूटल, आ परस्पर-पुष्टि की कहैत अछि? एहि चारू प्रश्नकेँ अलग रखला पर पोथीक जटिलता अधिक स्पष्ट होइत अछि।

उदाहरणत: ‘सत्यापन’केँ रस-दृष्टिसँ पढ़ू त वृद्धक अपमान आ विडम्बना करुण-हास्य उत्पन्न करैत अछि; कथाविज्ञानक दृष्टिसँ पाठक पात्रक संग क्रमश: असंगति जानैत अछि; नव्य-न्याय कहैत अछि प्रत्यक्ष जीवित व्यक्ति गलत शब्द-प्रमाणक प्रतिदृष्टान्त अछि; समानान्तर इतिहास-दृष्टि पूछैत अछि गलत मृत्यु-प्रविष्टि कोन अभिलेखीय प्रक्रिया सँ बनल आ कोन स्रोत ओकर संशोधन करैत। चारू पद्धति एक्के निष्कर्ष नहि दैत, मुदा एक-दोसरक अन्ध-बिन्दु घटबैत अछि।

‘पोखरिक आँखि’ जेकाँ रहस्यकथामे भारतीय ध्वनि अनकहल भयक अर्थ खोलैत अछि; कथन-विश्वसनीयता कथावाचकक सीमाकेँ सामने आनैत अछि; नव्य-न्याय प्रत्यक्ष, अनुमान आ स्मृतिक भेद करैत अछि; समानान्तर पद्धति चेतावनी दैत अछि जे अस्पष्ट अनुभवकेँ ‘लोकविश्वासक ऐतिहासिक तथ्य’

नहि बना देल जाए। एहि संयोजनसँ साहित्यिक रहस्य बचैत अछि, तथ्य-दाबी अनुशासित रहैत अछि।

'मिथिलाक पुस्तकालय' चारू दृष्टिक समेकित चरम अछि। ध्वनि-दृष्टिसँ 'अधूरा प्रश्न' कथाक अन्तिम व्यञ्जना अछि; कथाविज्ञानक दृष्टिसँ खोजक कथा निश्चित उत्तर छोड़ि स्रोत-विभेद पर समाप्त होइत अछि; नव्य-न्यायिक दृष्टिसँ भिन्न प्रमाणक परस्पर सम्बन्ध अलग करबाक आवश्यकता अछि; समानान्तर इतिहास-दृष्टिसँ असहमति लुकाए बिना अभिलेखित करब स्वयं पद्धतिगत ईमानदारी अछि।

११. साहित्यिक मूल्यांकन : उपलब्धि, सीमा आ स्थान

पोथीक सर्वप्रमुख उपलब्धि 'छोट वस्तु द्वारा पैघ संरचना' देखेनाइ अछि। जूता, बोरा, नल, औंठा, थैली, कार्ड, साँकल, घंटी, मुहर, कुर्सी, पंखा, छाता, पर्ची, शीशा, घड़ी आ पञ्जी—ई सभ वस्तु कथामे केवल प्रतीक नहि; उपयोगी वस्तु सेहो छथि। प्रतीकात्मक अर्थ उपयोगक भीतर सँ जन्मैत अछि, एहि कारण कथा जमीनसँ कटैत नहि।

दोसर उपलब्धि नैतिक जटिलता अछि। किसान बनाम व्यापारी, नागरिक बनाम अधिकारी, परम्परा बनाम आधुनिकता जेकाँ सरल द्विपक्षीय खाँचा बारम्बार टूटैत अछि। नवलकिशोरक घरमे पंचायत नल निजी फाटक भीतर अछि, मुदा विमला बाँसक टाट जेकाँ व्यावहारिक समाधान सुझबैत छथि; बूढ़ गोरू खरीदनिहारक 'ममता' कम, आर्थिक स्वार्थ बेसी, मुदा ओही स्वार्थ देखभालक भरोसा बनैत अछि। ई मिश्रित प्रेरणासभ कथा संसारकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि।

तेसर उपलब्धि ज्ञानमीमांसात्मक विनम्रता अछि। रहस्यकथासभ चमत्कार साबित नहि करैत; दफ्तर-कथासभ नागरिककेँ सर्वदा नैतिक देवता आ अधिकारीकेँ सर्वदा खलनायक नहि बनबैत; स्मृति-कथासभ अतीतकेँ पूर्णतः विश्वसनीय नहि मानैत। पाठककेँ निर्णयक श्रम देल जाइत अछि।

सीमाक स्तर पर सबसे स्पष्ट जोखिम संरचनात्मक पुनरावृत्ति अछि। अनेक कथा वस्तु-केन्द्रित आरम्भ, व्यावहारिक संघर्ष, अल्प संवाद, अन्तिम वस्तु-बिम्बक पुनरागमनक ढाँचा अपनबैत अछि। एकल कथा पढ़ला पर ई सघनता शक्ति अछि; लगातार एक सय कथा पढ़ला पर अनुमानित लय बनि सकैत

अछि। सम्पादकीय क्रम-विन्यासमे भिन्न गति, भिन्न कथन-पुरुष, अधिक सामूहिक कथन, पत्र/नस्ती/संवाद-रूप आ अति-संक्षिप्त कथासभ बीच-बीचमे रखला सँ विविधता बढ़त।

दफ्तरशाहीक दीर्घ शृंखला २४१–२७८ साहित्यिक रूपेँ उद्देश्यपूर्ण अछि, मुदा ३८ कथा लगातार एक्के संस्थागत क्षेत्रमे रहला कारण व्यंग्यक तीक्ष्णता किछु पाठक लेल क्रमशः परिचित हो सकैत अछि। तइयो एहि शृंखलाक संचयी प्रभाव महत्त्वपूर्ण अछि: एकल ‘बुरा बाबू’क कथा नहि, बल्कि कुर्सी, मेज, पाँजि, मुहर, रंग, क्रमांक आ आदेशसँ बनल व्यवस्था स्वयं पात्र बनैत अछि।

समग्र मैथिली कथा-परम्परामे एहि खण्डकेँ ग्रामीण यथार्थ, प्रशासनिक व्यंग्य, मनोवैज्ञानिक अनिश्चितता आ अभिलेखीय आत्मचेतनाक संगम रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि। ओकर विशिष्टता लोकजीवनक चित्रण मात्र नहि; लोकजीवन आ संस्थागत आधुनिकताक संगम-बिन्दु पर उत्पन्न ‘कागजी यथार्थ’ केँ कथा-विषय बनब अछि।

१२. निष्कर्ष

‘कथा-त्रिधारा खण्ड-३’क एक सय कथा पढ़ला पर स्पष्ट होइत अछि जे खण्डक केन्द्रीय प्रश्न ‘मनुष्य कठिन परिस्थिति मे की करैत अछि’ मात्र नहि; ‘मनुष्य अपन परिस्थिति केँ कोन प्रमाण, शब्द, वस्तु, स्मृति आ अभिलेख द्वारा बुझैत अछि’ सेहो अछि। आरम्भिक आर्थिक कथा एहि प्रश्नक भौतिक आधार दैत अछि; रहस्यात्मक कथा ज्ञानक सीमा देखबैत अछि; दफ्तरशाहीक कथा प्रमाण-व्यवस्थाक विडम्बना खोलैत अछि; अन्तिम आत्मपुनर्पाठ कथा व्यक्तिगत कथनक संशोधन सिखबैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र एहि पोथीक करुण-शान्त रस, ध्वन्यात्मक वस्तु-बिम्ब, वक्रोक्तिपूर्ण व्यंग्य आ औचित्यपूर्ण संवादकेँ स्पष्ट करैत अछि। पाश्चात्य कथाविज्ञान सीमित दृष्टिकेन्द्र, अनिश्चित कथन, समय-संकुचन-विस्तार आ बहुध्वनिक संस्थागत भाषाकेँ पढ़बाक साधन दैत अछि। नव्य-न्याय प्रत्यक्ष, शब्द, अनुमान, अभाव आ झूठी व्याप्तिक भेद द्वारा कथाक प्रमाण-संकट खोलैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि अभिलेखक शक्ति आ सीमा, मौनक अनुशासित पठन आ बहुस्रोतक आवश्यकता सामने आनैत अछि।

भाषिक दृष्टिसँ पोथी व्यापक रूपेँ मैथिली गद्यक संगत धरातल पर अछि आ रोमन शब्द-मिश्रणसँ मुक्त अछि। शुद्ध मैथिली निखारक आगामी सम्पादकीय चरणमे 'पानि/बिलायल/केवाड़ी/ओसारा/चाह/कोठली/औंठा' जेकाँ स्थिर रूपक प्रसंगानुकूल एकरूपता, व्यक्ति/(non-person) अनुसार क्रियारूप, आ विराम-संपादन पर विशेष ध्यान अपेक्षित अछि।

अन्ततः कथा ३००क अधूरा प्रश्न समूचा खण्डक उचित अन्तिम संकेत अछि। साहित्यक काज सभ विरोध मिटा एक उत्तर देब नहि; कखन-कखन ई देखेनाइ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि जे कतेक स्रोत अछि, कतेक आवाज अछि, कतेक खाली ठाम अछि, आ कोन दाबी एखनहुँ अधूरा अछि। एहि अर्थमे 'कथा-त्रिधारा खण्ड-३' सामाजिक कथा-संग्रह मात्र नहि, अनुभव आ प्रमाण बीचक सम्बन्ध पर एक विस्तृत मैथिली कथात्मक प्रयोग अछि।

ग्रन्थ-सूची

कथा-त्रिधारा खण्ड-३

नाट्यशास्त्र

ध्वन्यालोक

अभिनवभारती

वक्रोक्तिजीवित

औचित्यविचारचर्चा

काव्यप्रकाश

साहित्यदर्पण

तत्त्वचिन्तामणि

शब्दखण्ड

(Navya-Nyaya Philosophy of Language)

(Nyaya Philosophy of Language)

(Poetics)

(The Rhetoric of Fiction)

(Narrative Discourse)

(Time and Narrative)

(The Dialogic Imagination)

(The Theory of the Novel)

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — खण्ड २

आलेख १३ · कथा, लघुकथा आ कथा-समालोचना

कथा-शतत्रयी : खण्ड १

सारांश

‘कथा-शतत्रयी (खण्ड-१)’क एहि विस्तृत अध्ययनमे कथा १ ‘खिड़कीक गमला’ सँ कथा १०० ‘गिनतीक बाहर’ धरि सभ एक सय रचनाकेँ पृथक रूपेँ पढ़ल, रचनात्मक कार्य अनुसार चिन्हित आ चारि आलोचनात्मक पद्धतिमे समेकित कएल गेल अछि। संग्रहक आरम्भिक कथा सभ सेवानिवृत्ति, शोक, परिवार, पड़ोस, बेरोजगारी आ समयक धीमा परिवर्तन पर केन्द्रित अछि; मध्य भागमे वस्तु, नाप, रसीद, पाँजि, नाम, श्रम, साझा संसाधन आ संस्थागत नियमक प्रश्न बढ़ैत अछि; उत्तरार्द्धमे अभिलेख, स्रोत, पर्यावरणीय स्थान, कारीगरी, साझा उपयोग आ ‘गिनतीसँ बाहर’ रहि जाएबक संरचना विशेष तीव्र होइत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ करुण, शान्ताभिमुखता, सूक्ष्म हास्य, ध्वनि, औचित्य आ वस्तु-व्यञ्जना संग्रहक प्रधान गुण अछि। पाश्चात्य कथा-सिद्धान्तक दृष्टिसँ लघु यथार्थवाद, खुलल समापन, वस्तु-मोटिफ, विडम्बना, नैतिक प्रत्यभिज्ञान आ सूक्ष्म मोड़ उल्लेखनीय अछि। नव्य-न्याय पद्धति कथासभक भीतर देखल बात आ मानल बात, संख्या आ सन्दर्भ, हेतु आ निष्कर्ष, अभाव आ अनुपस्थिति, तथा नाम आ वस्तुक सम्बन्ध अलग करबाक प्रवृत्तिकेँ स्पष्ट करैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अनुसार निजी स्मृति, मौखिक कथन, बही-पाँजि, निशान, रसीद, वस्तु, स्थल, जल, श्रम आ संस्थागत कागज अलग-अलग स्रोत-पंक्ति रूपेँ उभरैत अछि। भाषिक अंकेक्षणमे रोमन लिपिक छओ स्पष्ट रूप भेटैत अछि; संगहि ‘पानी/पानि’, ‘दरबज्जा/केवाड़ी’, ‘बरामदा/ओसारा’, ‘कमरा/कोठली’, ‘चाय/चाह’, ‘आईना/अएना’, ‘अंगूठा/औंठा’, ‘गायब/बिलायल’ जेकाँ रूपक संपादकीय एकरूपता आवश्यक देखाइत अछि।

बीजशब्द

कथा-शतत्रयी : खण्ड १ ·मैथिली कथा ·लघुकथा ·पाठाधारित समीक्षा ·कथन-शिल्प

१.१७. गजेन्द्र ठाकुर- कथा-शतत्रयी (खण्ड-१)- शोध आलेख

कथा-शतत्रयी (खण्ड-१)

पहिल एक सय कथाक पूर्ण समालोचनात्मक अध्ययन

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य कथा-सिद्धान्त, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे

शोध-लेख

सारांश

'कथा-शतत्रयी (खण्ड-१)'क एहि विस्तृत अध्ययनमे कथा १ 'खिड़कीक गमला' सँ कथा १०० 'गिनतीक बाहर' धरि सभ एक सय रचनाकेँ पृथक रूपेँ पढ़ल, रचनात्मक कार्य अनुसार चिन्हित आ चारि आलोचनात्मक पद्धतिमे समेकित कएल गेल अछि। संग्रहक आरम्भिक कथा सभ सेवानिवृत्ति, शोक, परिवार, पड़ोस, बेरोजगारी आ समयक धीमा परिवर्तन पर केन्द्रित अछि; मध्य भागमे वस्तु, नाप, रसीद, पाँजि, नाम, श्रम, साझा संसाधन आ संस्थागत नियमक प्रश्न बढ़ैत अछि; उत्तरार्द्धमे अभिलेख, स्रोत, पर्यावरणीय स्थान, कारीगरी, साझा उपयोग आ 'गिनतीसँ बाहर' रहि जाएबक संरचना विशेष तीव्र होइत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ करुण, शान्ताभिमुखता, सूक्ष्म हास्य, ध्वनि, औचित्य आ वस्तु-व्यञ्जना संग्रहक प्रधान गुण अछि। पाश्चात्य कथा-सिद्धान्तक दृष्टिसँ लघु यथार्थवाद, खुलल समापन, वस्तु-मोटिफ, विडम्बना, नैतिक प्रत्यभिज्ञान आ सूक्ष्म मोड़ उल्लेखनीय अछि। नव्य-न्याय पद्धति कथासभक भीतर देखल बात आ मानल बात, संख्या आ सन्दर्भ, हेतु आ निष्कर्ष, अभाव आ अनुपस्थिति, तथा नाम आ वस्तुक सम्बन्ध अलग करबाक प्रवृत्तिकेँ स्पष्ट करैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अनुसार निजी स्मृति, मौखिक कथन, बही-पाँजि, निशान, रसीद, वस्तु, स्थल, जल, श्रम आ संस्थागत कागज अलग-अलग स्रोत-पंक्ति रूपेँ उभरैत अछि। भाषिक अंकेक्षणमे रोमन लिपिक छओ स्पष्ट रूप भेटैत अछि; संगहि 'पानी/पानि', 'दरबज्जा/केवाड़ी', 'बरामदा/ओसारा', 'कमरा/कोठली', 'चाय/चाह', 'आईना/अएना', 'अंगूठा/औंठा', 'गायब/बिलायल' जेकाँ रूपक संपादकीय एकरूपता आवश्यक देखाइत अछि।

बीज-शब्द: मैथिली कथा; लघु यथार्थवाद; रस; ध्वनि; नव्य-न्याय; प्रमाण; अभाव; सूक्ष्म-इतिहास; अभिलेख; श्रम; नाम; संख्या; स्मृति; भाषा-निखार।

१. पाठाधार, उद्देश्य आ शोध-पद्धति

एहि अध्ययनक पाठाधार खण्ड-१क मूल मैथिली कथा-पाठ अछि। अनुक्रममे कुल एक सय कथा अछि; अध्ययनमे एको शीर्षक छोड़ल नहि गेल अछि। प्रत्येक कथाक आरम्भ, मध्यगत संघर्ष, वस्तु-संरचना, अन्तिम अर्थ-परिवर्तन आ व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक निहितार्थकेँ ध्यानमे रखल गेल अछि। लक्ष्य कथानकक पुनर्कथन नहि, कथा जे प्रश्न खोलैत अछि तकर सटीक समालोचनात्मक निर्धारण अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र अन्तर्गत रस-भाव, ध्वनि, औचित्य, वक्रता, चरित्र-वाणी आ वस्तु-व्यञ्जना देखल गेल। पाश्चात्य कथा-समीक्षा अन्तर्गत यथार्थवाद, दृष्टिबिन्दु, वस्तु-मोटिफ, खुलल समापन, विडम्बना, संक्षिप्त मोड़ आ नैतिक प्रत्यभिज्ञान जाँचल गेल। नव्य-न्याय अन्तर्गत प्रत्यक्ष, अनुमान, हेतु, साध्य, व्याप्ति, शर्त, शब्द, अभाव, संख्या-सन्दर्भ आ दाबी-सीमा देखल गेल। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अन्तर्गत कागज, स्मृति, वस्तु, स्थल, श्रम, मौखिक कथन, सूची, निशान, जल-परिवर्तन आ मौनकेँ समानान्तर स्रोत रूपेँ पढ़ल गेल।

विशेष सावधानी ई राखल गेल अछि जे आलोचना पाठक भीतरक तथ्यसँ बाहर मनगढ़न्त कथानक नहि जोड़य। जतय कथा ‘नहि जानब’, ‘खाली पाँति’, ‘अधूरा’, ‘सम्भवत:’ वा बहु-स्रोतक स्थिति बचबैत अछि, अध्ययन सेहो ओहि अनिश्चिततातकेँ अर्थपूर्ण सीमा रूपेँ स्वीकारैत अछि।

२. संग्रहक व्यापक रचनात्मक स्थापत्य

एक सय कथाक क्रममे पाँच मोट प्रवाह देखाइत अछि। कथा १-२० निजी जीवनक धीमा संक्रमण—सेवानिवृत्ति, शोक, एकांत, परिवार, प्रतीक्षा आ समय —पर केन्द्रित अछि। कथा २१-४० मे टिकट, डिब्बा, कलम, घोड़ा, मशीन, जूता, पर्स, कोठली, पार्सल, तस्वीर आ दीप जेकाँ वस्तु सम्बन्ध आ उत्तरदायित्वक संवाहक बनैत अछि। कथा ४१-६० मे श्रम, सूची, नाप, मेड़, कुर्सी, मुहर, थारी,

ठेला, पानि, नाम, नमूना आ घरेलू/संस्थागत हिसाब कथ्यक केन्द्र बनैत अछि। कथा ६१-८० मे स्मृति-संरक्षण, कारीगरी, पर्यावरण, साझा स्थान, लोक-ज्ञान, पाठांतर आ नामकरणक प्रश्न उभरैत अछि। कथा ८१-१०० मे 'गिनतीमे ककर देह अछि' प्रश्न सर्वाधिक तीक्ष्ण होइत अछि—कर्मचारी, सेवा-पथ, पर्ची, कुरता, उजास, ईंट, जेब, कुर्सी, पानि, परिचय-पत्र, हस्ताक्षर, ताला, समय, तौल, थारी, बत्ती आ बाढ़-गणना।

संग्रहक एक केंद्रीय शिल्प-सूत्र 'छोट वस्तु—पैघ नैतिक प्रश्न' अछि। गमला, चाबी, पर्ची, खाट, बाल्टी, कलम, बटन, जूता, कटोरा, खिड़की, पाँजि—ई सभ कथा-संसारमे मात्र प्रतीक नहि; पहिने उपयोगी वस्तु अछि। प्रतीकात्मक अर्थ उपयोगक इतिहाससँ उपजैत अछि, जाहिसँ कथा अमूर्त नैतिक भाषणमे बदलैत नहि।

३. कथा-दर-कथा पूर्ण समालोचनात्मक परीक्षण

कथा 1 — खिड़कीक गमला

सेवानिवृत्त शशिभूषण बाबू, कार्यालयक खिड़कीक गमला आ मालतीक खाली कुर्सी—तीनू मिलि कऽ कथा 'काज' आ 'जीवन'क सीमा पर प्रश्न करैत अछि। गमला कार्यालयक नियमितता सँ निजी शोक आ नब दिनचर्या धरि सरकैत अछि; अन्तमे माटि नम देखिकऽ पानि नहि देब ओकर भीतर उपजल नब संयमक सूक्ष्म संकेत अछि।

कथा 2 — छुट्टीक आवेदन

प्रभा मिश्राक छुट्टीक आवेदन तीन दिन, दू दिन, एक दिन होइत-होइत अन्ततः अपन जीवनक आवश्यकताकेँ वैध मानबाक कथा बनैत अछि। माएक कमजोरीक बहाने खुलल संवाद ओकर दबायल शोक धरि पहुँचैत अछि; अगिला छुट्टी माँगब आत्म-देखभालक अधिकारक पुनःस्वीकार अछि।

कथा 3 — देरि सँ आयल चिट्ठी

बीस बरख पुरान अधखुलल चिट्ठी कथा-केंद्र अछि, मुदा लेखक ओकर भीतरक सामग्री नहि खोलैत। शारदा आ हरिनारायणक बीच पुरान चुप्पी,

मनोजक विवाह-विवाद आ स्मृतिक रिक्तता धीरे-धीरे मुख्य विषय बनैत अछि; चिट्ठी न खुलब वर्तमान दाम्पत्य-संवादक वास्तविक उद्घाटन बनैत अछि।

कथा 4 — बरखा रुकलाक बाद

बाढ़ि मेड़ मेटा दैत अछि आ संगहि रामलोचन-बिन्देश्वरक पुरान विवादक कठोरता सेहो नरम करैत अछि। नव मेड़ सीधा नहि, कने टेढ़ अछि; ई टेढ़पन कथाक नैतिक यथार्थ अछि—मेल-मिलाप पूर्ण समरूपता नहि, व्यवहारिक सह-अस्तित्व अछि।

कथा 5 — साँझक बस

परदेसमे सफल निरंजनक गाम-फेरती यात्रा पदोन्नति, जमीनक कागज आ पुरान शिक्षकक उपस्थिति बीच सफलता पुनर्परिभाषित करैत अछि। साँझक बस स्मृति, पीढ़ी, घर आ संस्थागत सम्बन्धकेँ अस्थायी सार्वजनिक कक्ष बनि जाइत अछि।

कथा 6 — खाली पलंग

बेटीक विवाहक बाद ‘खाली पलंग’ कौशल्याक मातृत्व, दूरी आ छोड़बाक कठिन कला केँ मूर्त करैत अछि। कोठलीकेँ तुरन्त उपयोगी बना देबाक विरोध धीरे-धीरे स्वीकारमे बदलैत अछि; खालीपन नष्ट नहि होइत, ओकर संग बैसब सिखल जाइत अछि।

कथा 7 — पेंशनक दिन

पेंशन भेटब बाहरी समस्या अछि; असल प्रश्न अवकाशक बाद ‘काजक आदमी’क आत्म-परिचय अछि। प्रतीक्षा-कक्ष आ आवेदन भराबयवला लोकक संग भुवनेश्वर बाबू उपयोगिताक नब अर्थ पबैत छथि; कलम सेवा-निवृत्तिक बादो सामाजिक काजक साधन बनैत अछि।

कथा 8 — दू अक्षर

धूसर छाता पर खोंचल ‘र. क.’ दू अक्षर स्मृति, अपराध-बोध आ अधूर सम्बन्धक संवाहक अछि। सुधांशु तुरन्त प्रायश्चित नाटक नहि करैत, केवल सन्देश पठेबाक छोट कदम उठबैत छथि; छाता सुखैत रहब समयक नैतिक अवशेषक बिम्ब अछि।

कथा 9 — चाबी सौंपबाक दिन

विद्यालयक एगारह चाबी, अप्रयुक्त पुरान चाबीसभ आ अन्तिम दिनक हाजिरी रामचरित काकाक दीर्घ सेवाकेँ वस्तुमय करैत अछि। नब डायरीमे समय लिखब भूमिकासँ व्यक्ति अलग होएबाक मार्मिक ज्ञान अछि।

कथा 10 — दू कप चाय

दाम्पत्यक तीन मासक मौनक बीच ‘दू कप चाह’ सम्बन्धक नब आरम्भ बनैत अछि। कथा संवादक पुनर्स्थापनाकेँ घोषणासँ नहि, दैनिक क्रियाक पुनर्रचनासँ देखबैत अछि।

कथा 11 — सड़कक ओहि पार

सड़कक ओहि पारक खिड़की आ बत्ती शिवकान्तक एकांतकेँ पड़ोसी उमा देवीक एकांतसँ जोड़ैत अछि। दूरसँ जरैत बत्ती ‘घरमे छी’क सार्वजनिक संकेत बनैत अछि; कथा वृद्धावस्थाक सहचर्यकेँ परस्पर दृश्यता रूपेँ प्रतिष्ठित करैत अछि।

कथा 12 — नाम कटबाक सूचना

सरकारी सूची सँ मृत पिता रघुनाथ मिश्रक नाम काटब प्रशासनिक आवश्यकता अछि, मुदा शैलेन्द्र लेल ‘मृत्यु’ लिखब जीवनक भाषायी कठोरता बनि जाइत अछि। सूचीमे नाम नहि, घरमे स्मृति एखनहुँ—एहि विरोध द्वारा कथा अभिलेखीय सत्य आ पारिवारिक उपस्थिति अलग करैत अछि।

कथा 13 — कापीक अन्तिम पन्ना

शिक्षिका सुधाक लाल कलम आ छात्रा पल्लवीक अन्तिम पन्ना मूल्यांकनक नैतिकता पर कथा अछि। ‘अधूरा’ शब्दक प्रशासनिक सुविधा छात्राक आत्म-मूल्य पर असर करैत अछि; खुलल टिप्पणी शिक्षा केँ बन्द निर्णय नहि, संशोधनीय प्रक्रिया बनबैत अछि।

कथा 14 — आमक सूखल डारि

घर बिकबाक पूर्वसन्ध्यामे काटल आमक डारि निजी स्मृतिक हिंसा बुझाइत अछि, मुदा धीरे-धीरे गाछ, घर आ स्मृति पर अनेक लोकक छोट अधिकार स्पष्ट होइत अछि। कानूनी हस्तान्तरण आ निजी स्मृति अलग राहेँ चलैत अछि।

कथा 15 — बेरोजगार दुपहरिया

‘बेरोजगार दुपहरिया’ बेरोजगारीक आर्थिक पीड़ासँ अधिक सामाजिक समयक असुविधा देखबैत अछि। अनिरुद्ध निष्क्रियता लुकबैत अछि, मुदा बच्चीक गृहकाज आ पुस्तकालय ओकर आत्म-परिभाषाक सूक्ष्म पुनरारम्भ बनैत अछि।

कथा 16 — फोन नहि आयल

रविवारक अपेक्षित दूरभाष पर निर्भर गोपाल बाबूक जीवन प्रतीक्षाक घड़ी बनि गेल अछि। दूरभाष नहि आयल दिन ओ छत, नाली, अमरूद आ पड़ोसीक काज दिस लौटैत छथि; अगिला रविवार पहिले काम पूरा करब प्रतीक्षा सँ क्रिया दिस संक्रमण अछि।

कथा 17 — छोट पुरस्कार

साहित्यिक सम्मान शशिकान्तक लेखकीय मौन कें उजागर करैत अछि। मंच, माला आ बाहरी मान्यता सामने डायरीक खाली पन्ना अधिक कठोर सत्य अछि; न काटल नब पाँति कथा-क्लाइमेक्स बनैत अछि।

कथा 18 — नव पड़ोसी

नव पड़ोसी नीलिमा-अभिनवक आगमन सरस्वती देवीक वृद्ध एकांतमे नियमित ध्वनि, औषधि, तरकारी आ समयक नब लय आनैत अछि। परिवार चलि गेलापर धनियाँक नब पट्टी बचल रहैत अछि—अस्थायी देखभालक स्मृति।

कथा 19 — कुर्सीक चरमराहट

पूर्व पंचायत-प्रभाव सँ मुक्त रामलोचन पुरान कुर्सीक चरमराहटमे अपन पद-आधारित परिचय सुनैत छथि। कथा सत्ता-स्थानक बादक रिक्तता सँ ध्यानपूर्वक सुनबाक नब सार्वजनिक जीवन धरि पहुँचैत अछि।

कथा 20 — सबेरे सात बजे

सेवानिवृत्त शिक्षक रघुनाथक देह एखनहुँ विद्यालयक घड़ी अनुसार चलैत अछि। दूर घंटी बजला पर दरवाजा दिस सरकल पयर रुकैत अछि; धूपक चौकोर टुकड़ा नब समयक मापक बनैत अछि।

कथा 21 — दू टिकट

रामविलासक 'दू टिकट' व्यक्तिगत अनुपस्थितिक पीड़ाकेँ परोपकारी नियममे बदलैत अछि। खाली सीट बारम्बार ककरो यात्रा बचाबय लेल उपलब्ध होइत अछि; टिकट-पाछाँ लिखल वाक्य सामाजिक श्रृंखला बनबैत अछि।

कथा 22 — कंगनक डिब्बा

कंगनक डिब्बा मातृस्मृति सँ खुलैत अछि, मुदा रसीदसभ बतबैत अछि जे कंगन एकक भावनात्मक सम्पत्ति नहि—माए-पिताक दीर्घ साझा श्रम अछि। उत्तराधिकारक अधिक न्यायपूर्ण व्याख्या एहि साझा श्रमसँ बनैत अछि।

कथा 23 — एक रुपैया कम

'एक रुपैया कम' छोट आर्थिक हिसाबसँ स्मृतिक विश्वसनीयता धरि पहुँचैत अछि। लाल बही कर्जक दमनकारी औजार नहि, भूल सुधारबाक सार्वजनिक स्मृति बनैत अछि; 'हिसाब पूरा' सम्बन्धक पुनर्सन्तुलन अछि।

कथा 24 — फोटो स्टूडियो

पुरान छायाचित्रशालामे वृद्ध माता-पिताक अलग-अलग छवि खिंचेनाइ पुत्र कैं हुनकर अलग व्यक्तित्व देखबाक प्रेरणा दैत अछि। परिवारिक 'संगवला' छविसँ पहिने 'अलग' छवि व्यक्ति कैं सम्बन्धमे विलीन नहि करबाक सौन्दर्यशास्त्र रचैत अछि।

कथा 25 — लाल स्वेटर

लाल स्वेटरक गलत/अधूर नाप पर्ची देखबैत अछि जे संख्या शरीरक पूर्ण अनुभव नहि पकड़ैत। कारीगरक स्मृति, ग्राहकक कहल बात आ वस्तुगत नाप एक संग चाही; नब पर्ची दस्तावेज-सुधारक रूपक बनैत अछि।

कथा 26 — चाबी

घर छोड़ैत कमला चारि मकानी चाबी सौंपैत छथि, मुदा पाँचम चाबी छोट शिक्षण-कोठलीक अछि। ई चाबी स्वामित्व नहि, पहुँचक उत्तरदायित्व बनैत अछि आ रिकीक हाथमे चलि जाइत अछि; मुख्य फाटक बन्द होइत, गलीक छोट केवाड़ी खुलल रहब कथा-नीतिक सार अछि।

कथा 27 — दस मिनट

रेलवे स्टेशनक ‘दस मिनट’ अनजान ललिता आ शशांकक बीच सहयोग, पारस्परिकता आ समयक मनोवैज्ञानिक विस्तार रचैत अछि। सामान, सीट, लिफाफा आ बाट देखेनाइ लेन-देनक हिसाबमे न समाइत; दस मिनट मापे छोट, अनुभवमे पैघ हो सकैत अछि।

कथा 28 — अन्तिम ग्राहक

रामसेवकक नाई-दोकानक अन्तिम दिन पेशा, उत्तराधिकार आ कारीगरीक स्मृति पर केन्द्रित अछि। अन्तिम ग्राहकक बाद कैंची-कंघी नन्दूक हाथमे चलि जाइत अछि; शटर बन्द होइत अछि, कौशल नहि।

कथा 29 — टूटल घड़ी

उल्टा चलैत पुरान घड़ी वस्तुगत त्रुटि नहि, दृष्टिकोणक समस्या ठहरैत अछि—अएनामे ओ सही समय देखबैत अछि। परिवारक स्मृति, नानीक आदत आ तकनीकी समझ एक संग जुड़ैत अछि; कथा ‘सही’क सम्बन्धपरक स्वरूपक रूपक बनैत अछि।

कथा 30 — मिठाइक डिब्बा

धरौटीवला मिठाइक डिब्बा अवसरक प्रदर्शन, पारिवारिक प्रतिष्ठा आ वस्तुक अस्थायी स्वामित्व पर हलुक व्यंग्य अछि। अन्तमे डिब्बा दोकान घुरि जाइत अछि, मुदा साझा मिठास वस्तुसँ अधिक स्थायी रहैत अछि।

कथा 31 — छोट विज्ञापन

बेरोजगार निलेशक छोट विज्ञापन पहिने असफलता जेकाँ, बादमे कागज-फारम भरबाक उपयोगी सेवा जेकाँ उभरैत अछि। मुद्रणक त्रुटि संख्या आ जिम्मेदारीक महत्व सिखबैत अछि; नौकरीक खोज बन्द नहि, मुदा उपयोगी काज आत्मनिर्माणक व्यवहारिक मोड़ बनैत अछि।

कथा 32 — नील पेन

नील कलम फूलकुमारीक साक्षरता आ स्वाक्षर-अधिकारक वस्तु-प्रतीक अछि। छात्रवृत्ति-फारम पर माताक नब हस्ताक्षर प्रशासनिक शंका उत्पन्न करैत अछि, मुदा अन्ततः औंठा-छापसँ नाम-लेखन धरि यात्रा वैध ठहरैत अछि।

कथा 33 — काठक घोड़ा

काठक घोड़ा मरम्मत कथा वस्तुक दीर्घ सामाजिक जीवनी लिखैत अछि। निर्माता, मरम्मतकर्ता, आँगनबाड़ी, बच्चासभ—कियो एकल मालिक नहि; उपयोग-आधारित स्वामित्व आ देखभालक उत्तरदायित्व कथा कैं सामुदायिक अर्थ दैत अछि।

कथा 34 — सिलाइ मशीन

सिलाइ मशीनक आवाज सावित्रीक अदृश्य श्रमकैं प्रतिष्ठा दैत अछि। सम्मान पुरुष-नाम पर केन्द्रित रहैत, मुदा नब पट्ट पर सावित्रीक नाम अग्रभागमे अबैत अछि; कथा कारीगरीक इतिहासमे स्त्रीक श्रम कैं नाम देबाक आवश्यकता उजागर करैत अछि।

कथा 35 — एक जोड़ी जूता

छात्रावासक पुरान जूता बेकार वस्तु नहि, अवसरक सामुदायिक साधन बनैत अछि। व्यक्तिगत स्वामित्व अस्पष्ट होइतहुँ उपयोग स्पष्ट अछि; जरूरत, साफ-सफाइ आ मरम्मत साझा जिम्मेदारी बनैत अछि।

कथा 36 — खोआइल पर्स

हेरायल पर्सक वापसी ईमानदारीक साधारण कथा रहि सकैत छल, मुदा छोट रकमक स्मरण एकरा जिम्मेदार स्मृतिक कथा बनबैत अछि। आर्थिक मूल्य आ नैतिक मूल्यक अनुपात कथा भीतर उलटि जाइत अछि।

कथा 37 — किरायाक कमरा

किरायाक कोठलीक अन्तिम राति उपयोग, अधिकार आ अनाम परोपकारक कथा बनैत अछि। किरण अपन शेष समय/किराया दोसरा परीक्षार्थी लेल छोड़ैत छथि; निजी स्थान क्षणिक सार्वजनिक संसाधनमे बदलैत अछि।

कथा 38 — बिना नामक पार्सल

बिना नामक पार्सल अनौपचारिक भरोसा-व्यवस्थाक रहस्य खोलैत अछि। फाटक, बस, झोरा आ बही द्वारा घर स्थानीय वितरण-केंद्र बनल छल; नब बही खोलब खाली झोरा कैं अगिला जिम्मेदारीक जगह बनबैत अछि।

कथा 39 — तस्वीरक पाछाँ

‘सभ गोटेक तस्वीर’ वास्तवमे अलग-अलग समय-ठामक छविसभक संयुक्त निर्माण निकलैत अछि। कथा परिवारिक मिथक कैं अपमानित नहि करैत, ओकर निर्माण-प्रक्रिया उजागर करैत अछि; ‘एक संग खिंचाओल नहि, एक संग बनाओल’ स्मृतिक जटिल सत्य अछि।

कथा 40 — दू दीप

दू दीपमे निजी चौखट आ सार्वजनिक मोड़क उजास अलग नैतिक क्षेत्र बनैत अछि। सरकारी बत्ती ठीक भऽ गेलापर सेहो मोड़क दीप जरब सामुदायिक स्मृति आ साझा जिम्मेदारीक चिह्न बनैत अछि।

कथा 41 — पछिला पंगति

विवाहमे माधव एक्के समय ‘अतिथि’ आ ‘काजवला’ छथि। निमन्त्रण-पत्र आ मजूरी-पावती दुनू संग रहब सामाजिक वर्गीकरणक असुविधा प्रकट करैत अछि; कथा औपचारिक सम्मान आ वास्तविक श्रमक बीच पछिला पंगतिक दूरी नापैत अछि।

कथा 42 — चारि हाथ कपड़ा

‘चारि हाथ कपड़ा’ नापकेँ एकमात्र संख्या मानबाक भूल उजागर करैत अछि; चौड़ाइ बदलला पर चारि हाथक उपयोगिता बदलैत अछि। सूची, दर्जी आ रसीद मिलि कऽ मापनक सन्दर्भ-सापेक्षता सिखबैत अछि।

कथा 43 — बाँटल छाँह

फुटपाथक लाल आयत निजी सीमा तय करैत अछि, मुदा घामक छाँह सीमा नहि मानैत। साझा जाल पर प्रशासनिक आपत्ति नियम आ जीवित पर्यावरणक असंगति देखबैत अछि; कथा कागजी समानता आ वास्तविक उपयोगिता बीच व्यंग्य रचैत अछि।

कथा 44 — एक दिनक छुट्टी

मालतीक एक दिनक छुट्टी आ पर्व-सफाइक बदली श्रमक मौखिक नियम कतेक अस्पष्ट हो सकैत अछि, कथा एहि छोट हिसाबमे देखबैत अछि। नब बहीमे ‘मंजूर छुट्टी’ अलग लिखब श्रम-सम्मानक संस्थागत रूपान्तरण अछि।

कथा 45 — जमानतक टीन

जमानतक टीन मजदूर गोविन्दक अस्थायी प्रवास, कर्ज आ सामानक प्रतिष्ठा सँ जुड़ल अछि। कबाड़ी-मूल्यसँ अधिक ओकर व्यक्तिगत वापसी-मूल्य अछि; टीन चलि गेलापर धूरिमे बचल चौकोर निशान अनुपस्थित वस्तुक सामाजिक वजन देखबैत अछि।

कथा 46 — आधा बोरा

आधा बोरा बटाइ, तौल, नमी आ भरोसक सम्बन्ध जाँचैत अछि। बराबरी केवल काँटा नहि, बोरा-बेर, अवस्था आ पारस्परिक विश्वास सँ बनैत अछि; कथा मात्रात्मक विवादसँ साझा कृषि-नैतिकता निकालैत अछि।

कथा 47 — दोसर दर

निःशुल्क स्वास्थ्य-शिविर लेल ‘दोसर दर’ औपचारिक व्यवस्थाक नाम पर प्रतीकात्मक विभाजन रचैत अछि। एक अवधि लेल द्वारभेद हटला पर सेवा-समता प्रत्यक्ष होइत अछि; अन्तिम प्रश्नचिह्न नियमक औचित्य कैं खुलल जाँचमे राखैत अछि।

कथा 48 — पाँच कुर्सी

पाँच आरक्षित कुर्सी आ भीजल चटाइ प्रतिनिधित्वक व्यंग्यात्मक दृश्य अछि। माननीय अनुपस्थित, समुदाय उपस्थित; कुर्सीसब अन्ततः वास्तविक जरूरत अनुसार चलैत अछि, आ बैठक-विवरणक रिक्तता संस्थागत भाषा पर टिप्पणी बनैत अछि।

कथा 49 — धोबीक निशान

धोबीक निशान वस्तु-परिचय लेल अछि, मुदा अफवाह सामाजिक दोषक दोसर ‘निशान’ बना दैत अछि। गलत आरोप खुलला पर कथा स्मृति, चिन्ह आ निष्कर्षक जोखिम देखबैत अछि।

कथा 50 — मजदूरीक घंटा

मजदूरक प्रवेश-बेर आ औजार भेटबाक बेर बीचक अन्तर मजदूरी कटौतीमे लुप्त होइत छल। दू घड़ी/दू पाँजि मिलला पर प्रणालीगत देरी व्यक्तिगत दोषसँ अलग होइत अछि; समय श्रम-अधिकारक प्रमाण बनैत अछि।

कथा 51 — लाल मुहर

विधवा-पेंशन आवेदनक ‘लाल मुहर’ कर्मचारीक मेज पर रहैत अछि, तथापि आवेदिका बेर-बेर लौटैत छथि। औपचारिक अपूर्णता वास्तवमे संस्थागत प्रक्रियाक अपूर्णता निकलैत अछि; कथा मुहर कँ सत्ता, खर्च आ अदृश्य प्रशासनिक भारक प्रतीक बनबैत अछि।

कथा 52 — साझा मेड़

साझा मेड़ सीमा सेहो अछि, सिंचाइक संरचना सेहो। घास काटबाक छोट विवाद पानि फूटबाक वास्तविक जोखिम देखबैत अछि; सीमा पर अधिकार एकल हो सकैत, देखभाल अनिवार्यतः साझा।

कथा 53 — एक थारी भात

भोजनालयक ‘एक थारी भात’ परिवारिक श्रम, कर्मी भोजन, नकद बिक्री आ घरक उपभोगक अलग-अलग लेखा खोलैत अछि। लाभक संख्या अपूर्ण छल, कारण घरक अदृश्य श्रम आ भोजन हिसाबसँ बाहर छल।

कथा 54 — किरायाक ठेला

ठेला किराया ‘दिन’ पर आधारित, जबकि उपयोग कखनहुँ आधा दिन—एहि असमानतासँ कथा समयक मूल्य निकालैत अछि। बिहान/साँझक पाली अलग भेला पर खाली समय सेहो संसाधन बनैत अछि।

कथा 55 — तीन गिलास पानी

‘निःशुल्क पानि’क संग गिलास-जमानत घुरेबाक प्रतीक्षा उपयोगकर्ताक वास्तविक लागत बनैत अछि। कथा संस्थागत सुविधा आ गरीब/यात्रीक समय बीच असमानता देखबैत अछि; नब व्यवस्था दूरी घटबैत अछि।

कथा 56 — नामक पाँति

बाढ़-शिविरमे मंजरीक नाम अस्थायी सूचीमे अछि, स्थायी घर-पाँजिमे नहि। विवाहोत्तर स्थानान्तरणक प्रशासनिक विलम्ब मनुष्यकँ ‘बीच बाट’ पर कागजी रूपेँ छोड़ि दैत अछि; नाम-लेखन राहत आ अधिकारक आधारभूत क्रिया बनैत अछि।

कथा 57 — फसलक नमूना

धान-खरीद केन्द्रक जाँच-नमूना किसानक बोरा सँ निकलैत छल, मुदा हिसाबमे ओकर पृथक स्थान नहि। नमूनाक वजन/खर्च संस्थागत जाँचमे स्थान पाबैतहि न्याय अधिक पारदर्शी बनैत अछि; जे खाना नहि अछि, ओ वस्तु बिलायल नहि।

कथा 58 — छोट छज्जा

किरायेदार ममताक छोट छज्जा निजी सुविधा बुझाइत अछि, मुदा बरखाक पानि साझा भित्ति आ भंडार प्रभावित करैत अछि। कथा निजी सुधारक सार्वजनिक परिणामक सूक्ष्म अध्ययन अछि।

कथा 59 — साबुनक टिकिया

छात्रावासमे कोठली-आधारित यांत्रिक गणना एक अतिरिक्त छात्राकेँ मेटा दैत अछि। नब सूची कोठली नहि, नाम गिनैत अछि; कथा सांख्यिक सुविधा आ व्यक्ति-उपस्थितिक भेदक स्पष्ट उदाहरण अछि।

कथा 60 — हिसाबसँ बाहर

हाटक लाभ-हिसाब परिवारिक सहायक श्रमकेँ शून्य मजदूरी कहि अदृश्य करैत अछि। ‘परिवारिक सहायक’ अलग लिखलापर नकद लाभ घटैत नहि, मुदा आर्थिक अर्थ बदलैत अछि; कथा घरेलू श्रमक लेखांकन पर तीक्ष्ण टिप्पणी अछि।

कथा 61 — भित्तिक दोसर जनम

पुरान भित्तिचित्रक संरक्षणक प्रश्न अन्ततः प्रतिकृति बनाम जीवित परम्परा बनैत अछि। चित्रक छवि सुरक्षित होइत अछि, मुदा नब भित्ति पर नब पीढ़ी अपन रेखा जोड़ैत अछि; ‘दोसर जनम’ मूलक नकल नहि, परम्पराक पुनर्रचना अछि।

कथा 62 — दू रंगक सूत

दू रंगक सूत एके रंग-नाम भीतर खेप-अन्तर देखबैत अछि। किनारीक छोट गाँठ दोष-चिह्न नहि, स्रोत-चिह्न बनैत अछि; नमूना, तिथि आ खेप-पहचान गुणवत्ताक संयुक्त प्रमाण बनैत अछि।

कथा 63 — बगियाक बाट

बगियाक सीधा नब बाट गाछक जड़ि आ जल-ढलानक ज्ञान नजरअंदाज करैत अछि; पुरान टेढ़ बाट पर्यावरणीय स्मृति निकलैत अछि। कथा ‘टेढ़पन’ कैं अकुशलता नहि, समयसिद्ध स्थानीय ज्ञान रूपेँ पुनर्मूल्यांकित करैत अछि।

कथा 64 — बिनु नाँवक चित्र

सामूहिक भित्तिचित्रक लेखकत्व एकल नाममे समाए नहि। रूपरेखा, रंग, सुधार, सहभागिता—सभ अलग श्रम अछि; पुरान खाली पाँति जानि-बुझि खाली राखब अभिलेखक पूर्व अपूर्णताक स्मारक बनैत अछि।

कथा 65 — सात मिनटक आवाज

सौरभक ‘सात मिनट’ दूरभाष-संवाद कैं प्रश्न-सूचीमे बाँधैत अछि। बादमे मौन, रेलक आवाज आ अनिश्चित उत्तर संवादक अधिक समृद्ध रूप बनैत अछि; कथा समय-मात्रा सँ सम्बन्धक गुणवत्ता अलग करैत अछि।

कथा 66 — माटिक कटोरा

माटिक कटोरा मानकीकरण आ हस्तकला बीच तनाव रचैत अछि। बाहरी रूपक पूर्ण समानता उपयोगक मापक नहि; धारिता, मोटाइ, भट्ठी-पश्चात रूप अधिक अर्थपूर्ण अछि। नाप अन्ततः उद्देश्यक अधीन होइत अछि।

कथा 67 — छतक तारा

छतक तारा विज्ञान-अभ्यास, घरेलू उपयोग आ साझा छतक बातचीत जोड़ैत अछि। अदिति ‘जे नहि देखाइत’ सेहो लिखैत अछि; मेघ, कपड़ा, दिशा जेकाँ कारण दर्ज होइत अछि—अभावक सन्दर्भ सुरक्षित रहैत अछि।

कथा 68 — पातर परदा

पातर परदा नव दुलहिनक निजता आ संयुक्त घरक साझा बाट बीच संतुलन खोजैत अछि। एक सीधा परदा आवागमन/इजोत रोकैत, तिरछा विन्यास निजता राखैत बाट खोलैत अछि; वास्तु-संशोधन सम्बन्ध-संशोधनक रूपक बनैत अछि।

कथा 69 — छाँहक नाप

नीमक गाछक मूल्य तना गिनला मात्र सँ नहि; छाँह, ताप-नियन्त्रण, बैठकी, जल-घैल आ समयक विस्तारमे अछि। बच्चासभ छाँह नापि गाछक कार्यात्मक क्षेत्र देखैत अछि; क्षतिपूर्तिक अर्थ नब छाँह रचबमे अछि।

कथा 70 — दूनू घरक दीप

दूनू घरक दीप अलग रहैत माता-पिताक बीच बच्चीक अनुभवकेँ द्वैतमे बन्द नहि करैत। दुनू घर अलग रीति राखि सकैत अछि; चित्रक बीच खुलल बाट सह-अस्तित्वक दृश्य व्याकरण अछि।

कथा 71 — ओसाराक पाठ

ओसाराक पाठ पुरान बाढ़-वृत्तान्तकेँ वृद्ध स्त्रीसभक स्मृतिसँ बेराबेरी पढ़ैत अछि। ‘काज पहिने’ सिद्धान्त नायक-केन्द्रित इतिहासक बदला श्रम, दवा, बोरा, पानि, बच्चा-गिनती जेकाँ सूक्ष्म कार्य सामने आनैत अछि; विरोधी स्मृति पर ‘जाँचबाक अछि’ लिखब ऐतिहासिक ईमानदारी अछि।

कथा 72 — खिलौनाक तल्लामे नाँव

खिलौनाक तल्लामे नाँव निर्माता-गौरव मात्र नहि, मरम्मत, चूक, तिथि आ कारीगर-श्रृंखलाक अभिलेख बनैत अछि। पूरा नाम, क्रम-अंक, मोहर आ छोट अक्षर अलग सूचना वहन करैत अछि; लेखकत्व उत्तरदायित्वक स्रोत-चिह्न बनैत अछि।

कथा 73 — टूटल सुर

टूटल हारमोनियम-सुर कारण पुरान धुनक नब रूप जन्मैत अछि। बाजा ठीक भेलापर सेहो ‘टूटल’ अवस्थाक ध्वनि मिटाओल नहि जाइत; भिन्न प्रदर्शन-पथ संग सुरक्षित रहैत अछि। कथा पाठांतर कैँ दोष-क्रम नहि, सर्जनात्मक इतिहास मानैत अछि।

कथा 74 — नदीक दोसर नाँव

सरकारी नक्शाक नदी-नाम आ स्थानीय ‘पातर धार’, ‘दुइमुँही’, ‘घुमनी’ एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि। प्रत्येक नाम अलग स्थिति, ठाम वा जल-व्यवहार चिन्हैत अछि; कागजी नाम आ जीवित भूगोल समानान्तर सत्य बनैत अछि।

कथा 75 — दू किसिमक बीआ

प्रमाणित नब बीआ आ दादीक बचाओल पुरान बीआ बीच कथा सरल परम्परा-बनाम-आधुनिकता संघर्ष नहि रचैत। उपज, ठाम, पानि, स्वाद आ उपयोग जोड़ला पर ‘नीक’क अर्थ सन्दर्भानुकूल बनैत अछि।

कथा 76 — पुस्तकक भीतरक पात

पुस्तकक भीतर भेटल सुखाएल पात, टिप्पणी आ पाठक-चिह्न संरक्षणक कठिन प्रश्न उठबैत अछि। सब किछु पुस्तकमे छोड़ब नुकसान, सब हटेब इतिहास-हानि; अलग नोंद-व्यवस्था मूल पाठ आ पाठकीय इतिहास दुनू बचबैत अछि।

कथा 77 — छतक बाँटल समय

साझा छत पर टहलनाइ, कपड़ा, खेल, धूप, सौर-पट्ट आ सेवा-बाट समय अनुसार जगह बदलैत अछि। स्थायी रेखाक बदला समय-खंड आधारित नियम अधिक न्यायपूर्ण निकलैत अछि; कथा स्थान कैं स्थिर भूगोल नहि, काल-सापेक्ष उपयोग मानैत अछि।

कथा 78 — अधूर नाटक

शशांकक अधूर नाटक मित्रसभ लेल लेखकत्व आ मंचीय स्वाधीनताक प्रश्न बनैत अछि। मूल पन्ना जसक तस राखि अलग अभ्यास-पात बनबैत अछि; पाठक/अभिनेता संशोधन करैत अछि, मुदा मूल लेखकक खाली जगह हड़पैत नहि। ई पाठ-संपादनक उत्कृष्ट नैतिक रूपक अछि।

कथा 79 — चन्द्रमाक हिस्सा

दू घरक बीच पातर आकाश आ चन्द्रमा निजी निर्माणक सीमा जाँचैत अछि। पानि-टंकी आवश्यक अछि, मुदा फाँक, इजोत, बाट सेहो; नाप, कुछ दिनक निरीक्षण आ बादक सुधार साझा आकाशक व्यवहारिक अधिकार रचैत अछि।

कथा 80 — नब आँगन

पुनर्वास भवनक ‘मध्य खुलल स्थल’ धीरे-धीरे ‘नब आँगन’ बनैत अछि। रेखा, अरिपन, खेल, बेंच, चारि बाट आ खाली जगह मिलि सामुदायिक उपयोग सिखबैत अछि; आँगन वास्तु-नाम नहि, सामूहिक व्यवहारक परिणाम अछि।

कथा 81 — एकतीसम खाट

तीस खाटवला महिला आश्रयमे कर्मचारी चम्पा लेल सुतबाक स्थान नहि; ‘एकतीसम खाट’ एहि गणनात्मक अन्धता कैं सुधारैत अछि। निवासी संख्या बदलैत नहि, पर कर्मचारीक देह वस्तु-सूचीमे पहली बेर जगह पबैत अछि।

कथा 82 — पाछाँक सीढ़ी

मुख्य सीढ़ी चमकैत, पाछाँक ‘सेवा-पथ’ अन्हार, अवरुद्ध आ असुरक्षित। दैनिक श्रमिकक अनुभव सुरक्षा-निरीक्षणक माप बदलैत अछि; दुनू सीढ़ीक लेल समान मानक समान सुरक्षा-अधिकारक संक्षिप्त घोषणापत्र बनैत अछि।

कथा 83 — रातिक पर्ची

रातिक अस्पताल-प्रवेश लेल अस्थायी पर्ची स्मृति-आधारित पहरा कैं व्यवस्थित करैत अछि। कथा महत्त्वपूर्ण आ क्षणिक सूचना बीच भेद बनबैत अछि—किछु पाँजिमे बचत, किछु भोर धरि; अभिलेख-नैतिकता उपयोगानुसार संरक्षण अछि।

कथा 84 — दू बटन

विवाह-कर्मीकैं देल कुरताक पुरान दोष नब मजदूरक माथ कटौती रूपैं चढ़ैत छल। वस्तुक ‘प्रारम्भिक अवस्था’ दर्ज भेला पर दू अलग बटन इतिहास बनैत अछि, अपराध नहि; कथा वस्तु-जीवनी द्वारा श्रम-न्याय स्थापित करैत अछि।

कथा 85 — बन्द खिड़कीक भाड़ा

सुनयनाक भाड़ाक कोठलीक बन्द खिड़की उजास घटबैत अछि, जे सिलाइक प्रत्यक्ष उत्पादन-क्षमता प्रभावित करैत अछि। तेलक खर्च, कामक समय आ अस्थायी भाड़ा-घटौती घरक मूल्य कैं ईंट-प्लास्टरसँ आगाँ लैत अछि।

कथा 86 — ईंटक निशान

ईंट पर कारीगरक निशान खेप-पहचान लेल बनल, मुदा तिथि/व्यक्ति सँ अलग भेला पर पछिला देनदारी नब मजदूरपर चढ़ि सकैत अछि। कथा चिन्ह, स्रोत आ जिम्मेदारीक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

कथा 87 — जेबक हिसाब

धोबीघरक नियम ‘जे भेटल से लिखू’ निजी कागज/पर्ची भेटलापर गोपनीयताक संकट पैदा करैत अछि। नब पाँति—‘जे लिखल अछि, से नहि’—वस्तु-लेखा आ व्यक्ति-कथा बीच उचित सीमा बनबैत अछि।

कथा 88 — साँझक कुर्सी

‘ग्राहक लेल’ आरक्षित हरियर कुर्सी थाकल कर्मचारीक देहकेँ बाहर रखैत अछि। मोड़ायल साझा आसन आवागमन रोके बिना जरूरत अनुसार खुलैत अछि; कथा कठोर नाम-पट्टीक बदला स्थितिनिष्ठ उपयोगक पक्ष लैत अछि।

कथा 89 — पाँचम बाल्टी

भवनक पानि चारि आवास अनुसार बाँटल छल, जबकि सेवा-कक्षमे रहैत परिवार गणनामे नहि। ‘पाँचम बाल्टी’ दरवाजा-आधारित लेखा केँ देह-आधारित बनबैत अछि; काज करयवला लोक सेहो गिनतीमे आबैत अछि।

कथा 90 — रद्दी परिचय-पत्र

ठेका समाप्त होतहि लाल परिचय-पत्र रद्दी बनैत अछि, मुदा मजदूरी/निपटारा एखन बाकी। नब निपटारा-पर्ची प्रवेश, पहचान, काम आ भुगतानक संक्रमण सुरक्षित करैत अछि; रोजगार समाप्ति आ दायित्व समाप्ति अलग अछि।

कथा 91 — आधा हस्ताक्षर

जगरनाथ पूरा मजूरी भेटबाक पहिने ‘आधा हस्ताक्षर’ पर रुकैत अछि, कारण कटौतीक कारण अस्पष्ट अछि। पाँजिमे अधूर नाम जानि-बुझि बचाओल जाइत अछि ताकि नब नियमक इतिहास मेटाय नहि; रुकब प्रतिरोधक सक्रिय रूप अछि।

कथा 92 — बन्द पेटी

हरायल वस्तुक बन्द पेटी नीलामीक माल आ पहचान-सूत्रवला निजी वस्तु बीच भेद न राखैत छल। परिचय-कागज/छवि भेटला पर वापसीक सम्भावना देखाइत अछि; नब श्रेणीकरण वस्तुक मोल नहि, ओकर सम्बन्ध-पथ पर आधारित अछि।

कथा 93 — किरायाक इजोत

रातिक हाटमे सार्वजनिक चारि बत्ती आ निजी विद्युत-जोड़क एक समान शुल्क अलग उपयोग कैं एक बना दैत छल। कथा पूर्ण गणितीय समानताक बदला व्यवहारिक विकल्प-न्याय चुनैत अछि—जोड़ लेबाक वा नहि लेबाक अधिकार।

कथा 94 — छोट ताला

सेवा-प्रवेशक छोट पेटीसभ पर मुख्य चाबी प्रबन्धकक नियंत्रण निजी सीमा भंग करैत छल। पाँजिमे मुख्य चाबी कखन, किएक, ककर उपस्थितिमे खुलल—ई नोंद अधिकार आ आपात उपयोग बीच संतुलन बनबैत अछि।

कथा 95 — दू मिनटक देरी

भोजन पहुँचाबयवला नवल पर दू मिनटक दण्ड लागैत, मुदा भवन पहुँचना, फाटक-पंजीकरण आ ग्राहक ग्रहण—तीन अलग समय एक बनल छल। नब पाँजिमे बेर अलग भेला पर देरीक कारण वितरित रूपेँ देखाइत अछि।

कथा 96 — गील धानक तौल

गील धानक तौल बतबैत अछि जे एक अंक अलग अवस्थामे अलग आर्थिक अर्थ लैत अछि। गील आ सुखायल वजन दुनू सही, मुदा सन्दर्भ बिना तुलना भ्रामक; बोरा पर ‘गील’ लिखब अंकक काल-स्थिति सुरक्षित करैत अछि।

कथा 97 — खाली थारी

विवाह-भोजक कर्मी अतिथि-गिनतीसँ बाहर रहला पर भोजन-अधिकार अनिश्चित होइत अछि। कर्मी भोजन पहिनेसँ अलग राखलापर श्रम-दल दृश्य होइत अछि; अन्तिम खाली थारी दर्ज अनुपस्थितिक सही सूचना बनैत अछि।

कथा 98 — तीन रुपैयाक पर्ची

तीन रुपैयाक पर्ची छोट शुल्कक कड़ा मिलान कथा अछि। उपयोगकर्ता पर्ची नहि लैत तऽ कागजी बिक्री आ नकदक सम्बन्ध बिगड़ैत अछि; ‘नहि लेल’ अलग गिनलापर पर्ची, पाइ आ उपयोग तीनू मेल खाइत अछि।

कथा 99 — पछिला बत्ती

अन्तिम बस चलि गेलापर सफाईकर्मी कमलीक काम शुरू होइत अछि। पछिला बत्ती तबतक जरैत रहबाक नियम बनैत अछि जखन धरि अन्तिम कर्मी बाहर नहि; कथा सार्वजनिक स्थल बंद होएबाक समय कैं ग्राहक नहि, अन्तिम श्रमिकक समयसँ परिभाषित करैत अछि।

कथा 100 — गिनतीक बाहर

बाढ़-पश्चात गणना ‘एक घर—एक नाम’ सँ संरचना गिनैत छल, लोक नहि। पूरक पन्नामे एके ठामक कुल रहनिहार, अनुपस्थित सदस्य आ वर्तमान ठाम अलग लिखला पर पुनर्वासक मानवीय इकाई स्पष्ट होइत अछि; एक्के ठामक दू गिनती दुनू सही, मुदा अलग प्रश्नक उत्तर अछि।

४. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

४.१ रस-संरचना

संग्रहक प्रधान भावभूमि करुण अछि, मुदा करुणा विलापप्रधान नहि। ‘खाली पलंग’, ‘दू अक्षर’, ‘नाम कटबाक सूचना’, ‘खिड़कीक गमला’, ‘देरि सँ आयल चिट्ठी’ जेकाँ कथामे हानि उपस्थित अछि, पर पात्रक रोदन सँ बेसी दैनिक क्रिया—चादर, छाता, लाठी, चाह, पानि, कागज, खाली कुर्सी—करुण रस उत्पन्न करैत अछि। एहि संयमक कारण करुणा भावुकता नहि बनैत।

शान्ताभिमुख भाव संग्रहक अन्तिम शिल्पमे बारम्बार भेटैत अछि। कथा निर्णायक विजय पर विराम नहि लैत; पात्र कने बदलैत अछि, नियम सुधरैत अछि, मुदा संसार पूर्ण सिद्ध नहि होइत। ‘कापीक अन्तिम पन्ना’, ‘अधूर नाटक’, ‘पुस्तकक भीतरक पात’, ‘बन्द पेटी’ आ ‘गिनतीक बाहर’ जेकाँ कथामे अपूर्णताक स्वीकार शान्त रसक बौद्धिक रूप बनैत अछि।

४.२ ध्वनि, व्यञ्जना आ वस्तु-प्रतीक

ध्वनिक अर्थमे संग्रहक वस्तुसभ प्रत्यक्ष कथ्यसँ अधिक अर्थ वहन करैत अछि। ‘खिड़कीक गमला’ सेवा-निवृत्तिक बाद देखभालक दिशा बदलैत अछि; ‘खाली पलंग’ अनुपस्थित बेटी आ मातृ-शोकक स्थान अछि; ‘नील पेन’ स्वाक्षर-अधिकार; ‘पाँचम बाल्टी’ अदृश्य श्रमिक-परिवार; ‘एकतीसम खाट’

कार्यरत देहक विश्राम-अधिकार; ‘पछिला बत्ती’ अन्तिम श्रमिकक सुरक्षा। वस्तुक अर्थ कथाकार घोषणा नहि करैत; क्रिया द्वारा व्यञ्जित होइत अछि।

४.३ औचित्य, वाणी आ चरित्र

पात्रक भाषा प्रायः सामाजिक भूमिकासँ अनुकूल अछि। वृद्ध पात्र छोट, ठहरल वाक्य बजैत छथि; कर्मचारी पाँजि, नियम, हस्ताक्षर, समय आ हिसाबक भाषामे; कारीगर नाप, औजार, खेप आ हाथक अनुभवक भाषामे; बच्चा प्रश्न, कापी, रेखा, चित्र आ निरीक्षणक भाषामे। औचित्यक सर्वाधिक सफल रूप ओतय अछि जतय पात्र दार्शनिक निष्कर्ष नहि, अपन काजक भाषा बजैत-बजैत सिद्धान्त धरि पहुँचैत अछि।

५. पाश्चात्य कथा-सिद्धान्तक आलोकमे

५.१ लघु यथार्थवाद आ खुलल समापन

बहुत कथा दैनिक स्थितिक सूक्ष्म बदलाब पर टिकल अछि। खुलल समापनक अनुशासन विशेष महत्त्वपूर्ण अछि: चिट्ठी नहि खुलैत; पुरान सम्बन्ध तुरन्त ठीक नहि होइत; बाढ़-पश्चात विवाद पूर्ण समाप्त नहि; अधूर नाटक अधूर रहैत; नदीक स्थानीय नाम अन्तिम एकल सत्य नहि बनैत। एहि शिल्पमे पाठककेँ नैतिक निष्कर्ष स्वयं पूरा करबाक स्थान भेटैत अछि।

५.२ विडम्बना, प्रत्यभिज्ञान आ सूक्ष्म मोड़

अनेक कथामे मोड़ अचानक रहस्योद्घाटन नहि, अर्थ-दिशाक छोट परिवर्तन अछि। ‘दू टिकट’क खाली सीट सामाजिक यात्रा बनैत अछि; ‘तस्वीरक पाछाँ’ परिवारिक छवि संयुक्त निर्माण निकलैत अछि; ‘एक रुपैया कम’ आर्थिक बकाया स्मृतिक प्रश्न बनैत अछि; ‘लाल मुहर’ आवेदिकाक त्रुटि नहि, कार्यालयक प्रक्रिया निकलैत अछि; ‘मजदूरीक घंटा’ मजदूरक देरी नहि, औजार-पंक्तिक देरी उजागर करैत अछि। एहि सूक्ष्म प्रत्यभिज्ञानमे संग्रहक आधुनिकता अछि।

५.३ वस्तु-मोटिफ आ दृश्यात्मक अर्थ

एक केन्द्रीय वस्तु चारूकात कथा घुमेबाक युक्ति कथानककेँ सघन बनबैत अछि। संग्रहमे ई युक्ति स्थानीय जीवनसँ निकलैत अछि: गमला, छाता, चाबी,

कप, टिकट, डिब्बा, पेन, जूता, मुहर, मेड़, थारी, पर्ची, खाट, बाल्टी। ई वस्तु कथाक अन्तमे रूपक बनैत अछि, मुदा आरम्भमे ओकर व्यावहारिक कार्य विश्वसनीयता दैत अछि।

६. नव्य-न्याय पद्धतिक आलोचनात्मक प्रयोग

नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ संग्रहक अनेक कथा सामाजिक जीवनक ‘जल्दबाजीवला व्याप्ति’ तोड़ैत अछि। ‘कपड़ा कम = धोबी दोषी’, ‘देर = पहुँचाबयवला दोषी’, ‘कम वजन = किसानक भूल’, ‘खाली पाँति = व्यक्ति नहि’, ‘एक घर = एक परिवार’, ‘परिचय-पत्र रद्द = देनदारी समाप्त’—एहन निष्कर्ष कथा भीतर परीक्षण भेला पर अपूर्ण सिद्ध होइत अछि।

अभावक प्रश्न संग्रहक मूल ज्ञानमीमांसात्मक सूत्रमे सँ एक अछि। नाम नहि होएब व्यक्ति नहि होएब नहि; उत्तर नहि भेटब घटना नहि भेलक प्रमाण नहि; पर्ची नहि लेब उपयोग नहि भेलक प्रमाण नहि; खाली पाँति इतिहासक शून्यता नहि; तारा नहि देखाइत तऽ तारा अनुपस्थित नहि। ‘छतक तारा’, ‘नामक पाँति’, ‘बिनु नाँवक चित्र’, ‘रातिक पर्ची’, ‘तीन रुपैयाक पर्ची’ आ ‘गिनतीक बाहर’ एहि भेदकेँ अलग-अलग सामाजिक सन्दर्भमे रचैत अछि।

शर्तक महत्त्व अनेक कथा मे स्पष्ट अछि। ‘चारि हाथ कपड़ा’क अर्थ चौड़ाइ पर निर्भर; ‘गील धान’क वजन नमी पर; ‘बीआ नीक’ ठाम-पानि-उपयोग पर; ‘समय पर पहुँचल’ भवन-फाटक-ग्राहकक अलग घड़ी पर; ‘समान किराया’ उपयोग-समय पर। कथासभ निष्कर्षक संग सन्दर्भ जोड़बाक आग्रह करैत अछि—ई नव्य-न्यायीय सूक्ष्मताक साहित्यिक रूप अछि।

शब्द-प्रमाणक स्तरपर पाँजि, रसीद, सूचना-पट, मौखिक कथन, कारीगरक स्मृति आ सरकारी कागजक विश्वसनीयता समान नहि। संग्रहक श्रेष्ठ कथासभ स्रोतकेँ नकारैत नहि, ओकर प्रयोजन सीमा तय करैत अछि। नक्शा नदीक स्थायी नाम देत, स्थानीय नाविकक नाम विशेष जल-चाल बतौत; पाँजि घर गिनत, देहक उपस्थिति अलग गिनती माँगत।

७. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधारपर समीक्षा

समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिक कार्यकारी सिद्धान्त ई अछि जे लिखित पाँजि, मौखिक स्मृति, वस्तु-चिह्न, स्थल-रूप, देहगत श्रम, रसीद, निजी कापी, सरकारी नक्शा, पर्यावरणीय बदलाब आ मौन—सभकेँ अपन स्रोत-मूल्य सहित रखि परस्पर जाँचल जाए। ‘विरोध’ तुरन्त एक स्रोतक असत्यता सिद्ध नहि करैत; कखनो दुनू अलग प्रश्नक सही उत्तर होइत अछि।

‘तस्वीरक पाछाँ’ परिवारिक मौखिक कथा, छविक भौतिक संरचना, छायाचित्रशालाक क्रम-अंक आ अलग-अलग मूल छवि मिलि नब इतिहास बनबैत अछि। ‘नदीक दोसर नाँव’ सरकारी नक्शा आ स्थानीय जल-नामकेँ प्रतिस्पर्धी सत्य नहि, अलग पैमाना बनबैत अछि। ‘ओसाराक पाठ’ लिखित बाढ़-वृत्तान्तक संग वृद्ध स्त्रीसभक कार्य-स्मृति जोड़ैत अछि। ‘पुस्तकक भीतरक पात’ मूल पुस्तक आ पाठकीय नोंद अलग सुरक्षित करैत अछि।

अभिलेखीय मौनक नैतिकता संग्रहक बड़ा उपलब्धि अछि। ‘कापीक अन्तिम पन्ना’, ‘बिनु नाँवक चित्र’, ‘अधूर नाटक’, ‘जेबक हिसाब’, ‘बन्द पेटी’ आ ‘गिनतीक बाहर’ देखबैत अछि जे रिक्त जगह भरब हमेशा ज्ञान-वृद्धि नहि; कखनो रिक्ततासँ चिन्हित छोड़ब अधिक सत्यनिष्ठ होइत अछि। समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ प्रश्न, अज्ञात, संशोधन वा पूरक पन्ना—ई सभ वैध ऐतिहासिक श्रेणी बनैत अछि।

सूक्ष्म-इतिहासक दृष्टिसँ एक रुपैया, दू बटन, तीन रुपैयाक पर्ची, पाँचम बाल्टी, एकतीसम खाट, आधा हस्ताक्षर जेकाँ छोट वस्तु बड़े सामाजिक ढाँचा खोलैत अछि। राज्य, श्रम, लिंग, वर्ग, सेवा, परिवार, पुनर्वास, शिक्षा, किराया, स्वास्थ्य, सार्वजनिक संसाधन—सभक संरचना छोट घटनामे दृश्य होइत अछि।

८. विषयगत समेकन

८.१ वृद्धावस्था, सेवानिवृत्ति आ उपयोगिता

कथा १, ७, ९, १७, १९, २० सहित अनेक रचनामे काम छोड़ला बाद व्यक्ति ‘बेकार’ नहि, अलग प्रकारक उपयोगिता खोजैत अछि। कार्यालय/विद्यालयक घड़ीक बदला धूप, पड़ोस, आवेदन, कापी, गाछ, चाह आ बातचीत नब समय बनबैत अछि।

८.२ स्त्री-श्रम आ अदृश्यता

कथा २, ६, २५, ३२, ३४, ४४, ५९, ६१, ८१, ८९, ९७ मे स्त्रीक श्रम घर, विद्यालय, कार्यशाला, छात्रावास, आश्रय, भवन आ भानसघरमे दृश्य होइत अछि। संग्रह स्त्री-पात्रकेँ केवल पीड़ित नहि, नियम-संशोधक ज्ञानधारी रूपेँ स्थापित करैत अछि।

८.३ दस्तावेज आ जीवनक फरक

सूची, पाँजि, रसीद, आवेदन, मुहर, परिचय-पत्र, तौल-पर्ची बारम्बार अपूर्ण होइत अछि; मुदा समाधान दस्तावेज नष्ट करब नहि, ओकर श्रेणी सुधरब अछि। संग्रहक संस्थागत कल्पना मूलतः सुधारवादी अछि।

८.४ पर्यावरण आ स्थानीय ज्ञान

बाढ़, बरखा, मेड़, नदी, बगिया, नीम, छत, आकाश, पानि, धान—पर्यावरण कथा-पृष्ठभूमि नहि, तर्कक सक्रिय घटक अछि। स्थानीय अनुभव आधुनिक मापनक विरोधी नहि; दुनू मिलि अधिक सटीक निर्णय बनबैत अछि।

८.५ साझा संसाधन आ न्याय

छाँह, पानि, खाट, सीढ़ी, कुर्सी, छत, ठेला, उजास, बाट—साझा संसाधनक न्याय बराबर हिस्सासँ हमेशा नहि बनैत। जरूरत, समय, उपयोग, श्रम आ सुरक्षा अनुसार भिन्न व्यवस्था आवश्यक होइत अछि।

९. शुद्ध मैथिली निखार-अंकेक्षण

मूल कथा-वाणी सामान्यतः प्रवाहमान आ पात्रानुकूल अछि। निखारक मुख्य आवश्यकता रोमन लिपिक प्रत्यक्ष अवशेष हटेनाइ, हिन्दी/अंग्रेजी-मूलक देवनागरी शब्दक अनावश्यक पुनरावृत्ति घटेनाइ, आ समान अर्थक मैथिली रूपमे संपादकीय एकरूपता आनब अछि।

९.१ रोमन लिपिक स्पष्ट रूप

पाठमे रूप	आवृत्ति	निखार-सुझाव
(CL-1)	2	‘एक दिनक आकस्मिक छुट्टी’ लिखू; मूल कार्यालयी

		संकेत चाही तँ ब्रैकेटमे (CL-1) राखू।
(R)	1	रोमन अक्षरक वर्णन करैत समय ब्रैकेटमे (R) राखू।
(enlarged)	1	'पैघ कएल' लिखू; मूल तकनीकी शब्द केवल ब्रैकेटमे (enlarged)।
(print)	1	'छाप'/'छवि-छाप' लिखू; आवश्यकतापर (print)।
(zoom)	1	'पैघ कऽ देखब' लिखू; आवश्यकतापर (zoom)।
(enlarger)	1	'छवि-विस्तारक यन्त्र' लिखू; आवश्यकतापर (enlarger)।

९.२ प्राथमिक शब्द-मानकीकरण

वर्तमान रूप	पाठमे आवृत्ति	प्राथमिक मैथिली रूप	टिप्पणी
पानी	228	पानि	सम्पूर्ण खण्डमे एकरूपता आवश्यक।
दरबज्जा	127	केवाड़ी	वर्णन आ संवाद दुनूमे प्राथमिक रूप बनाओल जा सकैत अछि।
बरामदा	211	ओसारा	मिथिला-परिवेशमे 'ओसारा' अधिक स्वाभाविक।

कमरा	61	कोठली	'कोठली' पाठमे पहिनेसँ बहुल; एकरूपता लाभकारी।
चाय	182	चाह	शीर्षक सहित संपादकीय निखार अपेक्षित।
आईना	39	अएना	विशेषतः 'टूटल घड़ी'मे एकरूप सुधार।
अंगूठा	21	औंठा	हस्ताक्षर/छाप सन्दर्भमे।
गायब	23	बिलायल	वर्णनात्मक गद्य मे प्राथमिक मैथिली रूप।
कुआँ	2	इनार	स्थल-सन्दर्भ जाँचि बदलू।
खोआइल	0	हेरायल	कथा ३६क शीर्षक सहित निखार उचित।

९.३ आधुनिक तकनीकी आ प्रशासनिक पद

दूरभाष (फोन), चल-दूरभाष (मोबाइल), संगणक (कम्प्यूटर), पर्दा (स्क्रीन), संचिका (फाइल), छवि (फोटो), आवेदन-पत्र (फॉर्म), पञ्जी (रजिस्टर), छवि-अंकन (स्कैन), मुद्रक (प्रिन्टर), जाल (नेटवर्क), क्रमांक (नम्बर) जेकाँ युग्म लेल संपादकीय शब्दावली बनाओल जाय। पात्रक स्वाभाविक आधुनिक बोलचाल सुरक्षित रखबाक आवश्यकता रहला पर पहिल प्रयोगमे मैथिली रूप, तकर बाद ब्रैकेटमे अंग्रेजी-मूलक रूप राखल जा सकैत अछि।

निखार यान्त्रिक प्रतिस्थापन नहि हो। 'बस', 'बैंक', 'टिकट', 'डॉक्टर' जेकाँ अत्यन्त प्रचलित शब्द पात्रक सामाजिक यथार्थक हिस्सा भऽ सकैत अछि। लक्ष्य ई अछि जे लेखक-वर्णनक भाषामे उपलब्ध स्वाभाविक मैथिली रूप अनावश्यक रूपेँ हिन्दी/अंग्रेजी-मूलक रूपसँ प्रतिस्थापित नहि हो, आ एक्के वस्तु लेल अनेक रूप बिना कारण नहि चलय।

९.४ शुद्धिपाठक उत्पादन-स्तरक त्रुटि

आरम्भिक पृष्ठसभमे 'सुरसुक्षित', 'मुद्रिमु त', 'अनुक्रनु म' जेकाँ स्पष्ट टंकण-विकृति भेटैत अछि। ई कथ्यक त्रुटि नहि, उत्पादन-स्तरक त्रुटि अछि। अन्तिम प्रकाशनपूर्व संयुक्ताक्षर, मात्रा, पंक्ति-विच्छेद, 'तऽ/तँ', 'कऽ/क', 'भऽ/भ', अंक-शैली, संवाद-चिह्न आ शीर्षकक वर्तनी एकरूप जाँचल जाय।

१०. संग्रहक प्रमुख साहित्यिक उपलब्धि

दैनिक जीवनक अत्यन्त छोट घटना सँ संस्थागत, नैतिक आ दार्शनिक प्रश्न निकालबाक अनुशासन।

वस्तु-मोटिफक असाधारण निरन्तरता, मुदा प्रत्येक कथामे अलग कार्य।

खुलल समापन आ अनिश्चितताकेँ कमजोरी नहि, कथ्यक नैतिक सीमा बनाबयब।

स्त्री, वृद्ध, दैनिक मजदूर, कारीगर, परिचारक, किसान, विद्यार्थी, लिपिक आ छोट व्यापारी केँ ज्ञानधारी पात्र बनाबयब।

कागजी अभिलेखक आलोचना करितहुँ अभिलेख-सुधारक रचनात्मक दृष्टि राखब।

पर्यावरण, बाढ़, बरखा, नदी, छाँह, उजास, माटि आ समय केँ सक्रिय कथानक-घटक बनाबयब।

सूक्ष्म हास्य आ विडम्बनाक उपयोग, पात्रक गरिमा तोड़ने बिना।

मैथिली लघुकथामे प्रमाण, गिनती, पाँजि, श्रम आ उत्तरदायित्वक विशिष्ट ज्ञानमीमांसात्मक संसार रचब।

११. आलोचनात्मक सीमासभ

एक सय कथामे पाँजि, रसीद, कापी, सूची, नाप, छोट नियम-संशोधन आ अन्तिम वस्तु-बिम्बक पुनरावृत्ति संग्रहक विशिष्ट पहचान सेहो अछि आ सम्भावित एकरसताक कारणो। लगातार पाठमे कखनो-कखनो समापन-व्याकरण अनुमानित भऽ सकैत अछि—पहिने विसंगति, फेर निरीक्षण, फेर नब पाँति/नियम, अन्तमे वस्तुक नब अर्थ। संग्रह-विन्यासमे समान शिल्पवला कथाकेँ अधिक दूरी पर रखलासँ विविधता आरो खुलत।

किछु कथा मे संस्थागत समस्या अपेक्षाकृत शीघ्र सुधरि जाइत अछि। वास्तविक प्रशासनिक जीवनमे नियम-संशोधन अधिक प्रतिरोध, समय आ हित-संघर्ष माँगैत अछि। साहित्यिक संक्षेपण स्वाभाविक अछि, मुदा किछु रचनामे विरोधी पक्षक तर्कक गहराई बढ़ला सँ संघर्ष अधिक बहुध्रुवीय भऽ सकैत अछि।

आधुनिक तकनीकी शब्दावली आ शुद्ध मैथिली कथा-वाणी बीच शैलीगत असंगति तेसर प्रमुख सीमा अछि। एकरूप संपादकीय शब्दावली संग्रहक भाषिक स्तर उँच कऽ सकैत अछि, बशर्ते पात्रक सामाजिक वास्तविकता नहि टूटय।

१२. निष्कर्ष

‘कथा-शतत्रयी (खण्ड-१)’क पहिल एक सय कथा मिलि आधुनिक मैथिली लघुकथाक एक विशिष्ट नैतिक-ज्ञानमीमांसात्मक संसार रचैत अछि। संग्रहक आरम्भ निजी शोक, अवकाश, परिवार, प्रतीक्षा आ स्मृतिसँ होइत अछि; धीरे-धीरे कथा सार्वजनिक नियम, श्रम, माप, सूची, नाम, दस्तावेज, साझा संसाधन आ पर्यावरणीय ज्ञानक क्षेत्रमे पसारैत अछि; अन्ततः ‘गिनतीक बाहर’ रहि जाएब—मनुष्य, श्रम, समय, पानि, उजास, नाम, खाट, भोजन, देनदारी—मुख्य समस्या बनैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ संग्रहक मूल्य संयत करुण, शान्ताभिमुख समाप्ति, वस्तु-ध्वनि आ औचित्यपूर्ण वाचिकतामे अछि। पाश्चात्य कथा-दृष्टिसँ एकर बल लघु यथार्थवाद, खुलल समापन, सूक्ष्म विडम्बना, वस्तु-मोटिफ आ नैतिक प्रत्यभिज्ञानमे अछि। नव्य-न्याय एकरा पढ़बाक अत्यन्त उपयुक्त औजार सिद्ध होइत अछि, कारण कथा सभ बारम्बार निष्कर्षक शर्त, हेतु, संख्या, अभाव, नाम आ सन्दर्भ अलग करैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ देखला पर ई संग्रह दैनिक जीवनक बहु-स्रोत अभिलेख बनैत अछि, जतय कागज आ स्मृति, वस्तु आ देह, नक्शा आ नदी, नियम आ व्यवहार, नाम आ मौन—एक-दोसराकेँ मेटबैत नहि, परस्पर जाँचैत अछि।

समग्र रूपेँ संग्रहक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कथन ई बुझाइत अछि: न्याय अक्सर पैघ भाषणसँ नहि, सही पाँति जोड़ला, गलत पाँति खाली

छोड़ला, सही बेर लिखला, अनुपस्थित देह गिनला, आ वस्तुक इतिहासक संग वर्तमान जिम्मेदारी अलग करला सँ शुरू होइत अछि। एहि कारण ई एक सय कथा केवल सामाजिक यथार्थक चित्र नहि; ई दैनिक प्रमाण-विवेकक साहित्यिक अभ्यास अछि।

ग्रन्थसूची

कथा-शतत्रयी (खण्ड-१)

नाट्यशास्त्र

ध्वन्यालोक

वक्रोक्तिजीवित

काव्यप्रकाश

तत्त्वचिन्तामणि

न्यायसूत्र

न्यायभाष्य

पोएटिक्स

एस्पेक्ट्स ऑफ द नॉवेल

द मॉडर्न शॉर्ट स्टोरी

द डायलॉगिक इमैजिनेशन

क्लूज, मिथ्स ऐंड द हिस्टोरिकल मेथड

साइलेंसिंग द पास्ट

द हिस्टोरियन्स क्राफ्ट

आलेख १४ · कथा, लघुकथा आ कथा-समालोचना

कथा-शतत्रयी : खण्ड २

सारांश

'कथा-शतत्रयी (खण्ड-२)'क कथा १०१ 'बाँधक ओहि पार' सँ कथा २०० 'एक बीघाक सपना' धरि सभ एक सय रचनाक एहि अध्ययनमे पृथक पाठ, समेकित प्रवृत्ति, दार्शनिक प्रमाण-विवेक आ भाषिक निखारक विश्लेषण कएल गेल अछि। खण्डक आरम्भ पुनर्वास, रिक्त सार्वजनिक सेवा, जमीनक रास्ता, बेरोजगारी, उधार, साझेदारी आ हास्यपूर्ण दैनिक न्यायसँ होइत अछि; मध्य भाग वस्तु, प्रतिष्ठा, दहेज, अभिलेख, छायाचित्र, ऋण, शिक्षा, सीमा, स्त्री-स्मृति आ मौखिक परम्पराक प्रश्न खोलैत अछि; अंतिम बीस कथा आपदा, साम्प्रदायिक तनाव, पीड़ितक निजता, माध्यम-साक्ष्य, प्रवासी श्रम, गवाहीक आर्थिक मूल्य, बाढ़ि आ कृषि-अभाव जेकाँ अधिक कठोर सार्वजनिक स्थितिमे प्रमाणक सीमा जाँचैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ करुण, हास्य, वीर आ शान्ताभिमुख भाव; ध्वनि, वस्तु-व्यञ्जना, औचित्य आ लोकधर्मी वाणी संग्रहक प्रमुख शक्ति अछि। पाश्चात्य कथा-सिद्धान्तक दृष्टिसँ एकल प्रभाव, दैनिक यथार्थ, सूक्ष्म प्रत्यभिज्ञान, खुललान्त, पुनरावर्ती वस्तु-बिम्ब, संवादात्मकता आ दस्तावेजी यथार्थ महत्त्वपूर्ण अछि। नव्य-न्यायीय पाठ बारम्बार देखबैत अछि जे दृश्य चिन्ह साध्यक अव्यभिचारी हेतु नहि होइत, संख्या संदर्भ बिना अपूर्ण होइत, शब्द-साक्ष्यक स्रोत जाँच आवश्यक अछि, आ अभावकेँ मनगढ़न्त उपस्थितिसँ नहि भरल जाए। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सरकारी कागजक संग मौखिक स्मृति, वस्तु-चिह्न, स्थल-रूप, श्रम, देह, छायाचित्र, निजी पाँजि आ अभिलेखीय मौनकेँ अलग स्रोत-मूल्य सहित रखैत अछि। समग्र रूपेँ ई खण्ड दैनिक जीवनक छोट वस्तु आ छोट त्रुटि द्वारा सामाजिक न्याय, स्मृति आ उत्तरदायित्वक पैघ प्रश्न रचैत अछि।

बीजशब्द

कथा-शतत्रयी : खण्ड २ · मैथिली कथा · लघुकथा · पाठाधारित समीक्षा · कथन-शिल्प

१.१८. गजेन्द्र ठाकुर- कथा-शतत्रयी (खण्ड-२)- शोध आलेख

कथा-शतत्रयी (खण्ड-२)

कथा १०१–२००: दैनिक जीवन, प्रमाण, स्मृति, श्रम आ न्याय

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य कथा-सिद्धान्त, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे विस्तृत साहित्यिक शोध-समीक्षा

मूल कृति: गजेन्द्र ठाकुर

सार

‘कथा-शतत्रयी (खण्ड-२)’क कथा १०१ ‘बाँधक ओहि पार’ सँ कथा २०० ‘एक बीघाक सपना’ धरि सभ एक सय रचनाक एहि अध्ययनमे पृथक पाठ, समेकित प्रवृत्ति, दार्शनिक प्रमाण-विवेक आ भाषिक निखारक विश्लेषण कएल गेल अछि। खण्डक आरम्भ पुनर्वास, रिक्त सार्वजनिक सेवा, जमीनक रास्ता, बेरोजगारी, उधार, साझेदारी आ हास्यपूर्ण दैनिक न्यायसँ होइत अछि; मध्य भाग वस्तु, प्रतिष्ठा, दहेज, अभिलेख, छायाचित्र, ऋण, शिक्षा, सीमा, स्त्री-स्मृति आ मौखिक परम्पराक प्रश्न खोलैत अछि; अंतिम बीस कथा आपदा, साम्प्रदायिक तनाव, पीड़ितक निजता, माध्यम-साक्ष्य, प्रवासी श्रम, गवाहीक आर्थिक मूल्य, बाढ़ि आ कृषि-अभाव जेकाँ अधिक कठोर सार्वजनिक स्थितिमे प्रमाणक सीमा जाँचैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ करुण, हास्य, वीर आ शान्ताभिमुख भाव; ध्वनि, वस्तु-व्यञ्जना, औचित्य आ लोकधर्मी वाणी संग्रहक प्रमुख शक्ति अछि। पाश्चात्य कथा-सिद्धान्तक दृष्टिसँ एकल प्रभाव, दैनिक यथार्थ, सूक्ष्म प्रत्यभिज्ञान, खुललान्त, पुनरावर्ती वस्तु-बिम्ब, संवादात्मकता आ दस्तावेजी यथार्थ महत्त्वपूर्ण अछि। नव्य-न्यायीय पाठ बारम्बार देखबैत अछि जे दृश्य चिन्ह साध्यक अव्यभिचारी हेतु नहि होइत, संख्या संदर्भ बिना अपूर्ण होइत, शब्द-साक्ष्यक स्रोत जाँच आवश्यक अछि, आ अभावकेँ मनगढ़न्त उपस्थितिसँ नहि भरल जाए। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सरकारी कागजक संग मौखिक स्मृति, वस्तु-चिह्न, स्थल-रूप, श्रम, देह, छायाचित्र, निजी पाँजि आ अभिलेखीय मौनकेँ अलग स्रोत-मूल्य

सहित रखैत अछि। समग्र रूपेँ ई खण्ड दैनिक जीवनक छोट वस्तु आ छोट त्रुटि द्वारा सामाजिक न्याय, स्मृति आ उत्तरदायित्वक पैघ प्रश्न रचैत अछि।

बीज-शब्द: मैथिली कथा; कथा-शतत्रयी; रस; ध्वनि; लघु यथार्थवाद; नव्य-न्याय; प्रमाण; अभाव; समानान्तर इतिहास; सूक्ष्म-इतिहास; श्रम; अभिलेख; आपदा; स्मृति; भाषा-निखार।

१. अध्ययनक पाठ-सीमा, उद्देश्य आ पद्धति

एहि अध्ययनक प्राथमिक पाठ केवल एहि खण्डक कथा १०१–२०० अछि। अनुक्रम, कथा-शीर्षक आ मूल पाठ मिलाकऽ कुल एक सय कथा सत्यापित कएल गेल अछि। प्रत्येक कथा लेल अलग समालोचनात्मक टिप्पणी देल गेल अछि, ताहि सँ कोनो रचना समेकित सामान्यीकरणमे गुम नहि हो। कथानक पुनर्कथनक बदला कथाक प्रमुख क्रिया, प्रमाण-वस्तु, चरित्रगत परिवर्तन, ध्वन्यार्थ, सामाजिक प्रश्न आ समाप्तिक अर्थ पर बल देल गेल अछि।

भारतीय पद्धतिमे रस, भाव, ध्वनि, वक्रता, औचित्य आ लोकधर्मी भाषा; पाश्चात्य पद्धतिमे कथासंघनन, एकल प्रभाव, खुलल समापन, दृष्टिबिन्दु, सूक्ष्म प्रत्यभिज्ञान, पुनरावर्ती वस्तु-बिम्ब आ संवादात्मकता; नव्य-न्यायमे प्रत्यक्ष, अनुमान, हेतु-साध्य-व्याप्ति, उपाधि, शब्द, अभाव आ दाबी-सीमा; समानान्तर इतिहासमे राजकीय वा संस्थागत स्रोतक संग मौखिक, घरेलू, वस्तुगत, स्थलिक, देहगत आ श्रम-साक्ष्यक तुलनात्मक परीक्षण अपनाओल गेल अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिकेँ एहि शोधमे परिचालनात्मक रूपेँ एना लेल गेल अछि: अधिकृत अभिलेखकेँ न तऽ स्वत: अन्तिम सत्य मानब, न लोकस्मृति अथवा हाशियाक कथनकेँ सामाजिक उपेक्षाक कारण स्वत: तथ्यात्मक रूपेँ सही मानब। प्रश्न ई रहत—ककर साक्ष्य बचल, ककर मेटल, ककरा लिखबाक संस्था छल, ककरा केवल देह, वस्तु वा स्थलमे चिन्ह छोड़बाक अवसर; आ विभिन्न स्रोत एक-दोसराकेँ कतय पुष्ट, सीमित वा खण्डित करैत अछि।

२. खण्डक समग्र रचनात्मक स्थापत्य

कथा-परिसर	प्रधान प्रवृत्ति	मुख्य प्रमाण-वस्तु	प्रमुख भाव-गति

१०१–१२०	पुनर्वास, सार्वजनिक सेवा, श्रम, बेरोजगारी, साझेदारी, हास्यपूर्ण न्याय	पाँजि, रस्सी, नक्शा, बाट, उधार-पाँजि, चाह, रेडियो, छाता, सिक्का	हास्य, करुण, सहचर्य, नागरिक विवेक
१२१–१४०	वस्तु-जीवनी, किराया, उपहार, शिक्षा, कारीगरी, परिवारिक ऋण	चप्पल, चाबी, घड़ी, डिब्बा, पेन, जूता, पर्स, छायाचित्र, दीप, जमीन	शान्ताभिमुख स्मृति, विडम्बना, आत्मसम्मान
१४१–१६०	प्रतिष्ठा, दहेज, विवाह, सार्वजनिक प्रदर्शन, स्त्री-शिक्षा, प्रवास	थारी, चल-दूरभाष, पंखा, केवाड़ी, सम्मान-पत्र, छायाचित्र, क्रमांक-पट्ट	विडम्बना, सामाजिक करुण, नैतिक प्रत्यभिज्ञान
१६१–१८०	मौखिक परम्परा, स्त्री-स्मृति, कारीगर ज्ञान, सीमा, शिक्षा, पर्यावरण, बाढ़ि	गीत, पाती, बक्सा, डिबिया, बाँसुरी, नाम, डाक-पत्र, कागजक नाव, सीमा-कागज	स्मृति, करुण, शान्त, पुनर्रचना
१८१–२००	आपदा, साम्प्रदायिकता, निजता, माध्यम, प्रवासी श्रम, गवाही, कृषि-अभाव	कम्बल, पर्ची, पाँजि, केवाड़ी, चल-छवि, कपड़ा, दाग, पहचान-पर्ची, बीआ	तीव्र करुण, नैतिक वीरता, प्रमाणिक संयम

एहि पाँच प्रवाहक बीच एक स्थायी सूत्र ‘गिनतीक पुनरीक्षण’ अछि। बयालीस पुरान घरक बारी नव उनचास घरमे पुनर्संयोजित होइत अछि; गाँठदार रस्सी रिक्त पदक सामाजिक दूरी गनैत अछि; छओ हाथक बाट नक्शासँ बेसी उपयोगक प्रश्न बनैत अछि; एक अतिरिक्त पकौड़ी बराबरीक

कसौटी बदलैत अछि; राहतक दस किलो चाउर छायाचित्रक वितरण आ वास्तविक वितरण अलग करैत अछि; बाढ़ि-शिविरमे कपड़ा देह पर पहिरल वस्तु मात्र नहि, निजताक आड़ सेहो होइत अछि। संग्रहक संसारमे सही गिनती सदिखन नब खाँचा माँगैत अछि।

३. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

३.१ रस आ भावक बहुस्तरीयता

खण्डक आरम्भिक भागमे हास्य रस महत्त्वपूर्ण अछि, विशेषत: ‘आधा समोसा’, ‘पाँच रुपैयाक राजा’, ‘पानवाला दार्शनिक’, ‘किरायाक कुकुर’, ‘खाली जेबक भोज’, ‘टूटा छाता संघ’, ‘भुलक्कड़ प्रेमी’ आ ‘एक प्लेट पकौड़ी’मे। ई हास्य पात्रक गरिमा तोड़ैत नहि; उलटे न्याय, माप, प्रतिष्ठा आ गरीबीक प्रश्नकेँ बिना भारी उपदेशक पाठक धरि आनैत अछि।

करुण रस मध्य आ अंतिम भागमे गाढ़ होइत अछि—‘रिक्त पद’क लौटाओल रोगी, ‘कर्जक भोज’क छूटल शिक्षा, ‘माएक बक्सा’क अधूर पत्र, ‘सिंदूरक डिबिया’क विधवा-स्मृति, ‘बाढ़ि शिविर’क असुरक्षित स्त्री, ‘लाल कम्बल’ आ ‘दू शव’क अचिन्हार देह, ‘गवाहीक मूल्य’क रोजगार-हानि, ‘कुर्थीक दालि’क चिकित्सा-बीआ दुविधा। मुदा लेखक करुणाकेँ आँसू वा भाषणसँ नहि, वस्तु, रिक्ति, रसीद, टूटल चप्पल, दाग, पर्ची आ बीआक माध्यमे सघन करैत छथि।

वीरभाव शारीरिक पराक्रममे कम, नैतिक जोखिममे अधिक अछि: जमुना रस्सी नुकबैत नहि; जसोदा सार्वजनिक बाटपर बैसैत छथि; माधवी शिक्षा लेल पत्र लिखैत छथि; कुसुम अपन गवाहीक सीमा तय करैत छथि; लखन रोजी गँवेनाइ जानते तथ्य कहैत अछि। शान्ताभिमुख रस खुलल समाप्तिसभमे अछि—सपना पूरा वा भंगक निश्चित घोषणा नहि, बल्कि अर्थक नब व्यवस्था।

३.२ ध्वनि, वस्तु-व्यञ्जना आ रिक्त स्थान

ध्वनि-दृष्टिसँ संग्रहक वस्तु प्रत्यक्ष कथनसँ बेसी अर्थ वहन करैत अछि। गाँठदार रस्सी, खाली नाम-पट्टी, पुरान पाँजि, आधा समोसा, आकाशवाणी-यन्त्र, छाता, नील पेन, खाली लिफाफा, दू दीप, सिंदूरक डिबिया, टूटल चप्पल, बन्द

केवाड़ी, लाल कम्बल—ई सभ प्रथम स्तरपर उपयोगी वस्तु अछि; तकर बाद सामाजिक अर्थ फूटैत अछि। वस्तु प्रतीक बनबाक पहिने जीवनमे काज करैत अछि, एहि कारण व्यञ्जना कृत्रिम नहि लगैत।

रिक्तता सेहो ध्वन्यात्मक साधन अछि। खाली चिकित्सक-पट्टी पदक अनुपस्थिति; माएक अधूर पत्र बोलबाक सीमा; खाली लिफाफा बिसरल नोंद; छायाचित्रमे अनुपस्थित प्रसंग; पाँजिमे गलत वा खाली नाम; अज्ञात शवक अनिश्चित पहचान—एहि सभ ठाम 'जे नहि अछि' अर्थ उत्पन्न करैत अछि। महत्त्वपूर्ण ई जे कथासभ रिक्ति स्वयं कल्पनासँ नहि भरैत।

३.३ औचित्य, वक्रता आ लोकधर्मी वाणी

पात्रानुकूल वाणी संग्रहक मुख्य गुण अछि। जमुनाक 'गिनती सँ पद भरत?'; जसोदाक 'हमरा सभक पएर'; देवकलीक 'स्मृति बोरा भरि नहि अबैत'; बच्चाक 'हम एतयक'; शिल्पी आ मजदूरक नाप, औजार, बीआ, बाँस, माटि, कपड़ा सम्बन्धी भाषा—ई सभ औपचारिक दार्शनिक शब्द बिना दर्शन रचैत अछि। वक्रता बहुधा वस्तु-विन्यासमे अछि: समानताक पट्टक रस्सी भोजन-पाँति विभाजित करैत अछि; प्रतिष्ठित क्रमांक दुर्घटनाक पहचान बनैत अछि; महँग जूता सत्यापित प्रमाणपत्रक कमी पूरा नहि करैत।

४. पाश्चात्य कथा-सिद्धान्तक आलोकमे

४.१ कथासंघनन आ एकल प्रभाव

लघुकथाक संघनित प्रभावक दृष्टिसँ अनेक कथा एक वस्तु वा एक विसंगति चारूकात कसि कऽ बनल अछि। 'रिक्त पद'क रस्सी, 'जमीनक आवाज'क बाट, 'दू दीप'क दीप, 'दस किलो चाउर'क बोरा, 'मौन गवाही'क मौन, 'दाग'क देह-चिह्न—कथा समाप्त भेलोपर वही केन्द्र स्मृतिमे रहैत अछि। कथ्यक व्यापक सामाजिक अर्थ एहि एकाग्र दृश्यसँ उत्पन्न होइत अछि।

४.२ खुललान्त, सूक्ष्म प्रत्यभिज्ञान आ दैनिक यथार्थ

अनेक कथा निर्णायक समाधानक बदला सूक्ष्म पहचान-परिवर्तन पर समाप्त होइत अछि। चिकित्सकक स्थायी पद एखनहुँ रिक्त; केवल दू दिन सेवा शुरू। सीमाक कागज जीवनक दुनू चाबीकेँ एक नहि करैत। नदी पार कएल लोक सूखल जमीनपर फेर समूह बनबैत। एक बीघाक जमीन अपन नहि भेलो पर

सपनाक अर्थ बदलैत अछि। ई खुललान्त यथार्थवादी अछि—समस्या मिटैत नहि, पात्रक समझ वा व्यवस्था कने बदलबैत अछि।

४.३ दृष्टिबिन्दु, दस्तावेजी यथार्थ आ संवादात्मकता

खण्डमे पाँजि, रसीद, पत्र, पट्ट, पहचान-पर्ची, छायाचित्र, नक्शा, चल-छवि, गवाही आ राहत-सूची जेकाँ दस्तावेजी वस्तु बारम्बार कथानक चलबैत अछि। मुदा कोनो दस्तावेज ‘सर्वज्ञ’ नहि। ओ एक दृष्टिबिन्दु अछि जकरा दोसर स्रोत चुनौती दैत अछि। एहि कारण कथा बहुवाणी बनैत अछि—अधिकारी, वृद्धा, बच्चा, मजदूर, कारीगर, स्त्री, पत्रकार, परिवार, नक्शा आ वस्तु सभ अपना-अपना सीमा भीतर बाजैत अछि।

५. नव्य-न्यायीय समीक्षा: प्रमाण, व्याप्ति आ दाबी-सीमा

५.१ प्रत्यक्ष आ अनुमान

संग्रहक बारम्बार नियम अछि: प्रत्यक्ष जे देखबैत अछि, निष्कर्ष ओकरासँ अधिक नहि हो। लाल कम्बल देखल जा सकैत अछि; धर्म नहि। टूटल चप्पल आ लाल दाग देखल जा सकैत अछि; मृत्यु वा रक्त नहि। छायाचित्रमे मुस्की देखाइत अछि; परिवारिक एकता सिद्ध नहि। तीन मिनटक चल-छवि घटना-अंश देखबैत अछि; पूरा कारण-क्रम नहि। एहि भेदक कथात्मक पुनरावृत्ति खण्डकेँ ज्ञानमीमांसात्मक एकता दैत अछि।

५.२ हेतु-साध्य-व्याप्ति आ उपाधि

अनेक सामाजिक भ्रान्ति गलत व्याप्ति बनबैत अछि: खास कपड़ा = खास समुदाय; महँग जूता = साक्षात्कार-सफलता; नगरक पता = अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति; पक्की पैघ केवाड़ी = नीक घर; सरकारी पट्ट = वास्तविक समानता। कथा प्रत्येक ठाम उपाधि अथवा शर्त सामने आनैत अछि। हेतु व्यभिचारी होइत अछि, कारण वही चिन्ह आन प्रसंगमे सेहो भेटैत अछि। ‘आधा समोसा’ जेकाँ कथामे मापकक शर्त स्वयं कथ्य बनैत अछि।

५.३ शब्दप्रमाण, अभाव आ संशोधन

शब्दप्रमाणक स्रोत जाँच आवश्यक अछि। कुसुमीक स्मृति जखन स्थल-चिह्न, पुरान नापी आ आन वृद्धक पुष्टि सँ जुड़ैत अछि तखन वजन बढ़ैत अछि।

अफवाह, भीड़क बात वा पत्रकारक अनुमान ओहि स्तरक प्रमाण नहि। अभावक बाबत ‘माएक बक्सा’ निर्णायक अछि—अधूर वाक्यक शेष शब्दक अभाव लेखक वा पाठककेँ मनगढ़न्त पूर्ति करबाक अधिकार नहि दैत। गलत अभिलेखीय प्रविष्टि सुधारल जा सकैत अछि; सुधारक अर्थ पुरान त्रुटि पूर्णतः मेटेनाइ नहि, ओकर इतिहास स्पष्ट करब अछि।

६. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधारपर समीक्षा

६.१ बहु-स्रोत, मुदा समान वजन नहि

‘जमीनक आवाज’मे नब नक्शा, पुरान नक्शा, कुसुमीक मौखिक स्मृति, पुरान इनार, खूंटा, स्थल-गोलाइ आ रामलखनक स्मरण अलग स्रोत अछि। कथा कोनो एक स्रोतकेँ प्रभुता नहि दैत; एक-दोसराक जाँच करबैत अछि। ‘तस्वीरक पाछाँ’मे छवि, पाछाँक लिखावट, मौखिक पारिवारिक स्मृति आ बिसरल श्रम; ‘सीमाक कागज’मे नागरिकता-कागज, घरक चाबी आ सीमापार पारिवारिक व्यवहार; ‘दस किलो चाउर’मे छायाचित्र आ वास्तविक बोरा-वितरण—सभ समानान्तर पढ़ाइ माँगैत अछि।

६.२ अभिलेखीय मौन आ हाशियाक उपस्थिति

जकरा लिखबाक सत्ता कम छल, ओकर इतिहास वस्तु वा देहमे बचैत अछि। जमुनाक रस्सी आधिकारिक पाँजि नहि, मुदा सेवा-अभावक न्यूनतम सामाजिक गणना अछि। घरेलू कामगार कन्हैयाक ऊँचाइ लुकायल भित्ति पर; विधवा कमलाक इतिहास सिंदूरक डिबियामे; घरेलू श्रम अनुपस्थितिमे; स्त्री-सुरक्षाक विफलता अन्हार गलियारामे; मजदूरक सत्य रोजगार-पाँजिक धमकीमे। समानान्तर इतिहास एहि चिन्हसभकेँ दावा-सीमा भीतर पढ़ैत अछि।

६.३ सूक्ष्म-इतिहास: छोट वस्तुसँ पैघ संरचना

एक गाँठ स्वास्थ्य-व्यवस्था, एक थारी जातिगत पाँति, एक क्रमांक जवाबदेही, एक साड़ी निजता, एक दाग सहमति, एक पर्ची मृतक-परिचय, एक मुट्ठी कुर्थी कृषि-अर्थशास्त्र खोलैत अछि। पैघ व्यवस्था छोट दैनन्दिन वस्तुमे काज करैत देखाइत अछि। खण्डक साहित्यिक शक्ति एहि ठाम अछि जे

व्यवस्था पात्रक भाषण रूपेँ नहि, ओकर हाथमे धरल वस्तु रूपेँ उपस्थित होइत अछि।

७. कथा-दर-कथा समालोचना

कथा 101 — बाँधक ओहि पार

पुनर्वासित ‘नव बहुअरा’ आ बाँधक ओहि पार रहि गेल पुरनका गामक बीच कथा स्मृति आ जीवित परम्पराक भेद खोलैत अछि। पुरान ‘दीप-बारी’ पाँजि बयालीस घरक नाम बचबैत अछि, मुदा चन्दन बुझैत अछि जे ओ अन्तिम नाम-सूची नहि, बारीक नियमक साक्ष्य अछि। नब बसावटमे अनुपस्थित परिवार आ नव जुड़ल घर दुनूकेँ मान्यता देल जाइत अछि। देवकलीक आग्रह —पुरान ठामक माटि बोरा भरि आनलासँ स्मृति नहि अबैत—कथाकेँ अतीत-पूजासँ बचबैत अछि। नब चबूतरा, बिना दाता-पट्ट, आ मधुबालाक घरसँ आरम्भ बारी परम्पराकेँ पुनरुत्पादन नहि, उत्तरदायी पुनर्रचना बनबैत अछि।

कथा 102 — रिक्त पद

पाँच बरखसँ रिक्त चिकित्सक-पदक सरकारी ‘रिक्तता’ जमुना देवीक गाँठदार रस्सीमे रोगीक प्रत्यक्ष दूरी बनि जाइत अछि। एक गाँठ एक बेर चिकित्सक नहि भेटलाक कारण घुरल रोगीकेँ सूचित करैत अछि; जमुना एकरा पूर्ण प्रमाण नहि, ‘हमर गिनती’ कहैत छथि, जखन औपचारिक प्रमाण कार्यालयक रिक्त पदमे अछि। निरीक्षणक दिन अस्थायी चिकित्सक आ छिपाओल रस्सी संस्थागत प्रदर्शनक विडम्बना रचैत अछि। रस्सी सार्वजनिक भेलापर न्यूनतम संख्या, अनुभव आ लिखित आवेदन एक संग दबाव बनबैत अछि। अन्तरिम सेवा शुरू भेलो पर पुरान गाँठ नहि खोलल जाइत—बीती दूरी मिटाओल नहि जाए।

कथा 103 — जमीनक आवाज

छओ हाथ चौड़ा ‘बीचक बाट’ नब नक्शामे अलग चिन्ह बिना अछि; भूमिमालिकक कागजी दावा आ सदा टोलीक दीर्घ उपयोग एक-दोसरासँ टकराइत अछि। कुसुमी सदा अपन वृद्ध स्मृतिमात्र पर भरोसा माँगैत नहि; ओ पुरान इनार, नापी, खूंटा आ स्थल-रूपक जाँच करबैत छथि। स्मृति भौतिक चिन्ह आ दोसर साक्षीसँ पुष्ट होइत अछि। कथा मौखिक इतिहासकेँ रोमानी

‘सत्य’ नहि बनबैत; ओ कहैत अछि जे स्मृति फँसा सकैत अछि, तँ खोदि, नापि, नक्शा मिलाउ। जमीनक ‘आवाज’ पएरक निरन्तर उपयोग, भू-चिह्न आ सामुदायिक स्मृतिक संयुक्त साक्ष्य अछि।

कथा 104 — आधा समोसा

एक समोसाकेँ दू मजदूर बराबर बाँटबाक हास्यपूर्ण प्रसंग ‘बराबरी’ शब्दक जटिलता खोलैत अछि। आकार, भरावन, वजन, टुकड़ाक रूप—कुन मापक न्यायसंगत? पात्रसभ बारम्बार नब कसौटी प्रस्तावित करैत छथि आ प्रत्येक कसौटीमे किछु शर्त छूटि जाइत अछि। भूख वास्तविक अछि, मुदा बहस हास्यक माध्यमे मापनक सीमाकेँ सहज बनबैत अछि। नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ कथा उपाधिक महत्त्व देखबैत अछि—‘आधा’ शब्द आकार, वजन वा मूल्यक शर्त बिना अधूर अछि।

कथा 105 — बरामदाक विश्वविद्यालय

बेरोजगार शिक्षित युवकसभक ओसारा ‘विश्वविद्यालय’ बनि जाइत अछि, जतय देश-दुनियाक विचार, रोजगार, राजनीति आ जीवन पर बहस चलैत अछि। मालती काकीक चाहक उधार-पाँजि एहि उच्च विमर्शकेँ दैनिक अर्थव्यवस्थासँ जोड़ैत अछि। रामाकान्तक साक्षात्कार-पत्र भेटलापर यात्रा-भाड़ाक संकट सिद्धान्तकेँ श्रममे बदलैत अछि: मित्रसभ विवाहक कुर्सी ढोएबाक काज करि यात्रा-धन जुटबैत छथि। कथा बेरोजगारीक गरिमाकेँ दया नहि, सामूहिक श्रम आ हास्यद्वारा रचैत अछि।

कथा 106 — प्रेमक उधार

दोकानदार रामदेवक उधार-पाँजिमे रकमक संग ‘कहल बात’क नब खाँचा जुड़ैत अछि। माधवक गरीबी, स्वाभिमान, देनदारी आ कठिन समयक वाक्य पैसा चुकलापर समाप्त नहि होइत। बरखा-संकटमे ओ दोकान बचाबय श्रम दैत अछि; मजूरी आ उधारक गणना सम्भव अछि, मुदा सम्बन्धक भाषा बाकी रहैत अछि। कथा आर्थिक लेखाक बगलमे भावात्मक-सामाजिक लेखा खोलैत अछि।

कथा 107 — एक कप मुफ्त चाय

‘एक कप मुफ्त चाह’ दानक साधारण कथा नहि; ई परिचित, ग्राहक, उधारिया आ अनजान राहगीर बीच आतिथ्यक अलग नैतिकता बनबैत अछि। बुधन पहिल कप ओहि अनजान लेल राखैत अछि जकर संग पहिने कोनो हिसाब नहि। खाली कप एक खुलल सामाजिक स्थान बनैत अछि—सहायता बिना नाम, जाति, पूर्व परिचय वा प्रतिफलक शर्त। कथा परोपकारकेँ प्रदर्शनसँ अलग करैत अछि।

कथा 108 — बूढ़ा आ रेडियो

महेश्वर बाबूक आकाशवाणी-यन्त्र वृद्धावस्थाक एकांतिक जीवनमे केवल समाचार-यन्त्र नहि, सुनबाक आ सुनेबाक अनुभूति अछि। पोता नीलू पहिने दादाक विश्वासपर संदेह करैत अछि, मुदा धीरे-धीरे बुझैत अछि जे नियमित आवाज, समय आ प्रतीक्षा सेहो सामाजिक संगति बना सकैत अछि। कथा वृद्ध पात्रक विश्वासकेँ उपहासक वस्तु नहि बनबैत; अन्तक अनिश्चितता माध्यम, अकेलापन आ मानवीय संबोधनक सूक्ष्म क्षेत्र खोलैत अछि।

कथा 109 — छाता साझा

लखन आ सलीमक साझा छाता बरखासँ बचबाक साधनसँ बढ़ि सम्बन्धक अभ्यास बनैत अछि। मरम्मत, पकड़, झुकाव आ बाटक तालमेलमे दुनूक शरीर एक साझा लय सीखैत अछि। छाताक स्वामित्वक प्रश्न धीरे गौण होइत अछि; बरखा कम भेलो पर संग चलबाक बाट बचल रहैत अछि। साझा वस्तु सम्बन्धक आरम्भ करैत अछि, मुदा सम्बन्ध वस्तु समाप्त भेलापर टिकत कि नहि, से असली कसौटी।

कथा 110 — पाँच रुपैयाक राजा

पाँच रुपैयाक सिक्का बालक गोपीक ‘राज्य’क पूँजी बनैत अछि। बहिन झुन्नीक संग राजा, मन्त्री, पहरेदार आ खर्चक खेल बच्चाक दृष्टिसँ अर्थशास्त्र, श्रम आ सत्ता पर हास्यपूर्ण टिप्पणी करैत अछि। अन्ततः सिक्का छुट्टा आवश्यकतामे चलि जाइत अछि; मुद्रा चलला पर अर्थवान अछि। कथा बालमनक खेल द्वारा मूल्यक सामाजिक प्रकृति देखबैत अछि।

कथा 111 — भातक सुगन्ध

भातक सुगन्ध माधव आ कमला काकीक घरक बीच अभाव, चूल्हि, ईंधन आ भोजनक सूक्ष्म साझेदारी रचैत अछि। सुगन्ध पहिने दूरीक संकेत अछि, मुदा धीरे-धीरे आगि, हाँड़ी, समय आ छोट सहायता साझा होइत अछि। कथा दया एकतरफा नहि बनबैत; दुनू पक्ष अलग बेर पर एक-दोसराक काज अबैत अछि। चूल्हिक आँच आर्थिक गणनाक बाहरक परस्परता बनैत अछि।

कथा 112 — प्रेम-पत्रक व्याकरण

दीपक प्रेम-पत्र लिखय चाहैत अछि, मुदा उधार लएल वाक्य, घिसल उपमा आ ‘सही’ व्याकरण ओकर अपन भावकेँ ढाँकि दैत अछि। रामानन्दक सहायता पत्र सजाबय नहि, अनावश्यक उधार भाषा हटाबयमे अछि। प्रत्येक पाँति पर प्रश्न—ई सचमुच तोहर बात अछि कि सुनल वाक्य?—व्याकरणकेँ सत्यनिष्ठ अभिव्यक्तिक अनुशासन बनबैत अछि।

कथा 113 — पानवाला दार्शनिक

पान-दोकान चलौनिहार बदरी दैनिक ग्राहक, छोट विवाद, मौसम आ जीवनपर एहन टिप्पणीक केन्द्र छथि जे लोक हुनका ‘दार्शनिक’ मानय लगैत अछि। कथा एहि उपाधिपर हलुक हँसी करैत, मुदा अनुभव-बुद्धिकेँ खारिज नहि करैत। दोकान बदलबाक स्थितिमे दर्शन रोजीरोटी, भाड़ा, ग्राहक आ नब ठामक संग चलैत देखाइत अछि।

कथा 114 — किरायाक कुकुर

किरायापर कुकुर रखबाक विचार सुरक्षा, स्वामित्व आ सम्बन्धक हास्यपूर्ण उलझन खोलैत अछि। कालू भोजन, परिचय, गन्ध आ सहज आकर्षण अनुसार चलैत अछि; किरायाक अनुबन्ध ओकर व्यवहारकेँ पूर्ण नियंत्रित नहि करैत। पहरा ककरा लेल, घर ककर, कुकुर ककर—ई प्रश्न बारम्बार खिसकैत अछि। कथा बाजारक भाषा द्वारा जीवित सम्बन्धकेँ मापबाक सीमा देखबैत अछि।

कथा 115 — खाली जेबक भोज

खाली जेबवला मित्रसभ सफलताक अवसर पर भोज करबाक निश्चय करैत छथि, मुदा खर्च लेल पैसा लगभग नहि। एतयसँ भोज वस्तु-संपन्नता सँ हटि सामूहिक कल्पना, उधार, बाँटल छोट खाद्य आ हँसी दिस चलैत अछि। कथा अभावकेँ अपमान नहि बनबैत; मित्रता ओकरा खेलक ऊर्जा दैत अछि।

कथा 116 — टूटा छाता संघ

टूटल छातासभक अलग-अलग उपयोगी भाग जोड़ि एक साझा छाता बनबैत ‘संघ’ हास्यक साथ सामुदायिक संसाधनक विचार प्रस्तुत करैत अछि। डाँड़ ककर, कपड़ा ककर, तार ककर—स्वामित्वक प्रश्न जतेक पूछल जाइत अछि, वस्तुक वर्तमान उपयोग ओतेक सामूहिक बनैत अछि। बरखामे मुख्य प्रश्न ‘ककर छाता’ नहि, ‘ककर काँख पहिने भीजल’ होइत अछि। शीर्षकक ‘टूटा’ कैं ‘टूटल’ करब निखारयोग्य अछि।

कथा 117 — भुलक्कड़ प्रेमी

भुलक्कड़ प्रेमी नन्दू प्रेमक सच्चाई आ तारीखक विश्वसनीयता बीच हास्य रचैत अछि। ओ अपन स्मृतिपर भरोसा करैत अछि, मुदा महत्त्वपूर्ण तिथि गड़बड़ होइत अछि। परिवारक कापी वा लिखित दिनांक स्मृतिक सुधारक साधन बनैत अछि। कथा लिखित प्रमाणकैं प्रेमक स्थानापन्न नहि, सहायक मानैत अछि।

कथा 118 — निःशुल्क हजाम

निःशुल्क हजामक प्रसंग ‘मुफ्त’ शब्दक अर्थ पर हास्यपूर्ण जाँच अछि। कारीगर मंगलक कौशल, ग्राहकक अपेक्षा, अएना मे देखल रूप आ ‘दाम नहि’क कारण सेवा कम मूल्यवान होइत अछि कि नहि—ई प्रश्न उठैत अछि। बाल काटबाक तकनीक अनेक कोणसँ देखबाक माँग करैत अछि; सेवा समाप्त भेलापर ‘दर्शनक दाम’क मजाक कथाक लय पूरा करैत अछि।

कथा 119 — दादीक मोबाइल

धनमन्ती दादीक नब चल-दूरभाष घरक पीढ़ी-अन्तरक मंच बनैत अछि। नातिन अनिमा एक्के बेर अनेक क्रिया सिखाबय चाहैत अछि, जखन दादी एक दिनमे एक उपयोग पकड़बाक पक्षमे छथि। ‘सम्पर्क (contact), सन्देश (message), चल-छवि (video)’ जेकाँ रोमन शब्द मूल मैथिली पाठमे सीधे आ गेल अछि; निखारक दृष्टिसँ ई स्थान विशेष ध्यान माँगैत अछि। कथा सीखबाक अपन गति आ सम्बन्धक मूल उद्देश्य पर जोर दैत अछि।

कथा 120 — एक प्लेट पकौड़ी

एक प्लेट पकौड़ीमे विषम संख्या—एगारहम पकौड़ी—मित्रसभक बीच न्यायशास्त्रक विनोदी समस्या बनैत अछि। 'ककरा अधिक चाही', 'के कम खएलक', 'के भुगतान कएलक'—प्रत्येक कसौटी नब विवाद खोलैत अछि। कथा गणितीय बराबरी आ सामाजिक न्यायक भेद हास्यसँ देखबैत अछि।

कथा 121 — चप्पलक जोड़ी

मन्दिर वा सार्वजनिक ठाम पर एकरूप चप्पल बदलि जाएब सँ दू परिवारक परिचय आरम्भ होइत अछि। नील सूत, गोल दाग वा छोट मरम्मत जेकाँ भौतिक चिन्ह वस्तु-पहचानक साधन बनैत अछि। गलत जोड़ी लौटेबाक प्रक्रिया लज्जा नहि, बातचीतक अवसर होइत अछि। एक छोटी त्रुटि सामाजिक दूरी घटा दैत अछि।

कथा 122 — घरक सबसँ धनी आदमी

जगदीशक घर आर्थिक अर्थमे समृद्ध नहि, मुदा मुसाफिर, अतिथि आ जरूरतमन्द लेल चटाइ खोलि देबाक क्षमता ओकर 'धन'क नब परिभाषा बनबैत अछि। संसाधन सीमित होइतहुँ साझा भोजन, जगह आ श्रम उपलब्ध अछि। बच्चीक 'घरक सबसँ धनी आदमी' विषयक लेख एहि अनुभवसँ अर्थ पबैत अछि। धन एतय संचय नहि, उपयोगयोग्य उदारता अछि।

कथा 123 — हँसीक बचत

'हँसीक बचत' संख्या आ अनुभवक असंगतिकेँ खेल-खेलमे देखबैत अछि। बचत-पेटी वा घरेलू लेखा जेकाँ ढाँचा हँसीक क्षणकेँ गिनबाक कल्पना करैत अछि, मुदा सभ मूल्य अंकमे बंद नहि होइत। कथा गणनाक विरोधी नहि; ओ अनुभवक अन्य मूल्यक लेल अलग भाषा चाही कहैत अछि।

कथा 124 — चाबी

माधव सात बरखक किरायाक घर छोड़ैत समय चाबी सौंपैत अछि; एक पुरान चाबी बन्द सन्दूक/पुरान जीवनक संकेत बनि उभरैत अछि। चाबी स्वामित्वक छोट धातु-वस्तु होइतहुँ खुलब-बन्द होएबाक नैतिक रूपक बनैत अछि। नब घरमे पुरान सन्दूक खुलल रखबाक निर्णय प्रवासकेँ स्मृति खोलबाक प्रक्रिया बनबैत अछि।

कथा 125 — दस मिनट

रेल-ठामक दस मिनट अनजान लोक बीच भरोसा, सामान देखरेख, प्रमाणपत्र बचेनाइ आ छोट सहायताक घनीभूत समय बनैत अछि। घड़ीमे दस मिनट सीमित, अनुभवमे विस्तृत। कथा देखबैत अछि जे सम्बन्धक गहराई समयक मात्रासँ सदिखन समानुपाती नहि। वस्तु—झोरा, कागज, सीट, भोजन—अस्थायी विश्वासक माध्यम बनैत अछि।

कथा 126 — अन्तिम ग्राहक

नाई जयरामक ‘अन्तिम ग्राहक’ व्यवसाय बन्द वा परिवर्तनक क्षणकेँ प्रतिदानक नब नियमसँ जोड़ैत अछि। पैसा कम पड़ल ग्राहकक उधार पाँजिमे नहि चढ़ाओल जाइत; ओकरा कहल जाइत अछि जे आगाँ ककरो जरूरतमन्द लेल एक छोट काज निःशुल्क करिह। एहिसँ लेन-देन व्यक्तिगत ऋणसँ सामाजिक श्रृंखला बनैत अछि। ‘अन्तिम’ कहि बन्द होइत क्षणमे फेर एक जरूरतमन्द ग्राहकक प्रवेश देखबैत अछि—सेवा-नैतिकताक अन्तिम ग्राहक नहि होइत।

कथा 127 — टूटल घड़ी

टूटल घड़ी समयक यन्त्र मात्र नहि; अमरेश, माधवी आ पारिवारिक स्वीकृतिक प्रतीक्षा एकर चारूकात रचित अछि। घड़ी मरम्मत होइत अछि, मुदा सम्बन्धक समय अलग गति सँ चलैत अछि। अलग घड़ी अलग समय देखबैत अछि; मानवीय निर्णय यान्त्रिक समकालिकतासँ नहि बनैत। पिता अन्ततः संवादक केवाड़ी खोलैत छथि, मुदा निर्णायक उत्तर तुरन्त नहि। ‘बात लम्बा चलत’ खुललान्तक प्रभावी रूप अछि।

कथा 128 — मिठाइक डिब्बा

मिठाइक सजाओल डिब्बा घर-घर घूमैत उपहारक बाहरी आवरण, स्मृति आ पुनरुपयोगक कथा बनैत अछि। मिठाइ समाप्त भेलापर डिब्बा बेकार नहि; सूत, पर्ची, बच्चाक लिखावट वा सिलाइ-सामानक संग्रह बनैत अछि। वस्तुक मूल्य उपभोगक पहिल क्षणसँ आगाँ बढ़ैत अछि। कथा वस्तु-जीवनीक सुन्दर उदाहरण अछि।

कथा 129 — छोट विज्ञापन

छोट विज्ञापन रोजगारक स्पष्ट लक्ष्यसँ निकलैत अछि, मुदा ओकर असर अप्रत्याशित सामाजिक दिशामे पहुँचैत अछि। छपल सूचना पुरान हिसाब, बिसरल परिचय वा नब छोट काज खोलि दैत अछि। मुद्रणक अंकगत त्रुटि संख्या-सावधानी सिखबैत अछि। सार्वजनिक शब्द मनुष्यकेँ एक-दोसरासँ पुनः जोड़बाक माध्यम बनैत अछि।

कथा 130 — नील पेन

नील पेन परीक्षाक तनाव, मित्रता आ भाग्य-बोधक वस्तु बनैत अछि। खरोंचवला पेनकेँ ‘शुभ’ मानबाक संभावना उठैत अछि, मुदा पात्र सफलता वा उत्तरकेँ अपन श्रमसँ अलग नहि करैत। पेन एक उत्तर लिखि सकैत अछि; बाकी पाठ परीक्षार्थीकेँ लिखय पड़ैत अछि। एतय वस्तु-विश्वासक सान्त्वना आ आत्मजिम्मेदारी बीच संतुलन अछि।

कथा 131 — काठक घोड़ा

कारीगरक बनाओल काठक घोड़ा बाजार-मूल्य, बाल-स्नेह, कौशल आ घरक आर्थिक आवश्यकता बीच घूमैत अछि। वस्तु केवल खिलौना नहि, घरक श्रमक रूप अछि। बेचब, बचाबयब वा घुरि पाबयब—कथाक केन्द्र हस्तनिर्मित वस्तुक दोहरा मूल्य अछि: बाजारक दाम आ पारिवारिक अर्थ।

कथा 132 — सिलाइ मशीन

सिलाइ मशीन स्त्रीक घरेलू श्रमकेँ उत्पादन, आय आ आत्मनिर्भरता रूपेँ दृश्य बनबैत अछि। मशीन पर खर्च, मरम्मत, मोटर, रसीद वा खाली डिब्बा परिवारक आर्थिक इतिहास खोलैत अछि। पुरुष सदस्यक सार्वजनिक परिचयक पाछाँ स्त्रीक निरन्तर सिलाइ-काज घर चलबामे मूल भूमिका निभबैत अछि। मशीन ‘उपहार’ नहि, श्रम-पूँजी बनैत अछि।

कथा 133 — एक जोड़ी जूता

एक जोड़ी जूता शिक्षा, भाई-बहिनक सहयोग आ छोट पारिवारिक त्यागक कथा बनैत अछि। जूताक दाम आ प्रवेश-शुल्कक कागज एकहि आर्थिक संकटमे जुड़ैत अछि; वस्तु प्रतिष्ठाक साधन होएबाक बदला शिक्षाक राह

खोलबाक स्रोत बनैत अछि। कथा ‘त्याग’कैं भाषण नहि, रसीद, जूता आ चलब योग्य बाटमे मूर्त करैत अछि।

कथा 134 — हेरायल पर्स

रिक्शाचालक रघुबीर हेरायल पर्स घुरबैत अछि, मुदा ईमानदारीक बदलामे पैघ पुरस्कार स्वीकार नहि करैत। ओ जकरा अपन कमाइ मानैत अछि—भाड़ाक छोट राशि—ओकरे हिसाब रखैत अछि। पर्स भीतरक निजी वस्तु वा कागजक कथा सार्वजनिक करबासँ सेहो बचैत अछि। गोपनीयता आ ईमानदारी कथामे एकहि नैतिक सीमाक दू पक्ष अछि।

कथा 135 — किरायाक कमरा

किरायाक कोठली छात्र जीवन, भाड़ा, परीक्षा-शुल्क आ सहायता स्वीकारबाक स्वाभिमानक जटिल कथा अछि। मकान-मालिकक मदद सीधा दान रूपेँ नहि, एहन ढंगसँ अबैत अछि जाहिमे छात्रक गरिमा बचल रहय। रसीद, लिफाफा, किराया आ अगिला शुल्कक नोंद आर्थिक सम्बन्धकैं पारदर्शी रखैत अछि। शीर्षकक ‘कमरा’क बदला ‘कोठली’ निखारयोग्य अछि।

कथा 136 — बिना नामक पार्सल

बिना नामक पार्सल घरमे जरूरी वस्तु आनैत अछि, मुदा प्रेषकक नाम नहि। रहस्य खुलला पर रात्रिक माल-ढुलाईक कठिन श्रम करयवला नन्दू काकाक योगदान सामने अबैत अछि, जकर दिनमे सुतबाक आदतपर परिवार गलत निर्णय बना लेने छल। पार्सल वस्तु-सहायतासँ अधिक दृष्टि-संशोधन करैत अछि; ‘गुप्त दाता’ बनाबयक बदला श्रमक साधारण गरिमा सामने अबैत अछि।

कथा 137 — तस्वीरक पाछाँ

पुरान परिवारिक छायाचित्रक पाछाँ लिखल नाम कौशल्याक बिसरल उपस्थिति फेर सामने आनैत अछि। मौखिक स्मृति हुनकर संकट-समयक श्रमक प्रसंग दैत अछि, जखन औपचारिक वंश-कथा हुनका बाहर राखैत रहल। तस्वीरक अगिला भाग दृश्य उपस्थिति दैत अछि; पाछाँक लिखावट नाम; जीवित साक्षी प्रसंग। समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ छवि, लेख, स्मृति आ विस्मरण परस्पर जाँचल जाइत अछि।

कथा 138 — दू दीप

दीपक पर्वमे दू दीप घरेलू उजास आ ओहि राति काज करयवला अदृश्य श्रमिकक उजासकेँ बराबर दृश्यता दैत अछि। बच्चाक प्रश्न कथा के नैतिक ऊर्जा दैत अछि: जखन सभ घरमे दीप जरैत अछि, तखन पहरा वा रात्रिक काज करयवला लोकक हिस्सा कतय? दोसर दीप दया नहि, समान मानवीय उपस्थिति स्वीकारब अछि।

कथा 139 — उधारक साड़ी

उधार पर किनल साड़ी विवाह-प्रतिष्ठा, सामाजिक अपेक्षा आ दीर्घ आर्थिक बोझक कथा अछि। अवसर बीतलापर साड़ीक चमक रहैत अछि, कर्जक किस्त सेहो। पात्र धीरे-धीरे वस्तुकेँ ‘विशेष अवसर’क प्रतिष्ठासँ मुक्त करि साधारण दिन पहिरबाक निर्णय लैत अछि। साड़ी सामाजिक प्रदर्शनसँ फेर देहक उपयोगी वस्तु बनैत अछि।

कथा 140 — पाँच धुर जमीन

पाँच धुर जमीनक विवाद छोट क्षेत्रफल पर पैघ पारिवारिक कटुता रचैत अछि। सड़क-विस्तार अथवा अधिग्रहण जेकाँ सार्वजनिक परिवर्तन ओहि सीमाकेँ नब अर्थ दैत अछि, जकर लेल परिवार दीर्घ समय झगड़ैत रहल। मुआवजा बाँटल जा सकैत अछि, मुदा सम्बन्धक क्षति अलग हिसाब अछि। सीधा सार्वजनिक सड़क छोट निजी रेखाक अस्थायित्व देखबैत अछि।

कथा 141 — मेजबान

मेजबानक प्रतिष्ठा भोजक बाहरी वैभवसँ मापल जाइत अछि, मुदा कथा पाछाँक उधार-पाँजि, मजदूरी आ भुगतान देखबैत अछि। अतिथिक संख्या आ उपलब्ध धनक संख्या बीच जे अन्तर अछि, वही कर्जक असली भार। खाली पित्तरि थारी आ नील पाँजि कथाक दू दृश्य ध्रुव बनैत अछि—एक सार्वजनिक आदर, दोसर निजी देनदारी।

कथा 142 — नव मोबाइल

नब चल-दूरभाष खरीदबाक आकर्षण परीक्षार्थीक शुल्क-संकट बनैत अछि। यन्त्र सामाजिक प्रतिष्ठा दैत अछि, मुदा परीक्षा-शुल्क चुकल नहि तऽ

वास्तविक अवसर टलि जाइत अछि। गलती स्वीकारि यन्त्र बेचब, पूरक परीक्षा लेल बचत करब आ पुरान साधारण यन्त्र पर लौटब प्राथमिकताक पुनर्गठन अछि।

कथा 143 — दहेजक पंखा

दहेजक पंखा ‘स्वेच्छिक उपहार’ आ सामाजिक दहेज-प्रथा बीचक धुँधल क्षेत्र देखबैत अछि। वस्तु पर विवाह-स्मृति वा नामक पट्टी ओकर उपयोगसँ अधिक प्रतिष्ठात्मक अर्थ जोड़ैत अछि। समय बीतला पर पंखा घरक साधारण जरूरत पूरा करैत अछि; पट्टी रहैत अछि, मुदा नियंत्रणकारी अर्थ घटैत अछि। वस्तुक बदलैत उपयोग दहेजक सामान्यीकरण पर प्रश्न करैत अछि।

कथा 144 — बड़का दरवाजा

प्रवासी कमाइ सँ पैघ केवाड़ी बनाओल जाइत अछि, जखन घरक छत चुबैत अछि। केवाड़ी प्रतिष्ठा देखबैत, मुदा बरखाक पानि रोकि आँगनमे जल-जमाव बढ़बैत अछि; बादमे छोट निकास आ छत-मरम्मत अधिक उपयोगी सिद्ध होइत अछि। कथा वास्तुक ‘देखाइ’ आ ‘काज’क भेद स्थापित करैत अछि।

कथा 145 — सम्मान-पत्र

साहित्यिक सम्मान-पत्र लेखकक आत्ममूल्य, समारोह-व्यय, गलत छपल नाम आ वास्तविक लेखनक बीच दूरी खोलैत अछि। मंचीय प्रशंसा सुख दैत अछि, मुदा रचना पढ़ल वा समझल गेल कि नहि, ई प्रश्न बाकी रहैत अछि। घर घुरि नब कथा लिखबाक निर्णय प्रमाणपत्रकेँ लेखनक स्थानापन्न बनबा सँ रोकैत अछि।

कथा 146 — एक प्लेट कम

विवाह-भोजमे ‘एक प्लेट कम’ सामाजिक बहिष्कारक दृश्य रूप अछि। जकर परिवारकेँ पाँति अथवा आमन्त्रणसँ बाहर राखल गेल, संकट आबिते वही लोक सहायता लेल दौड़ैत अछि। मेजबानक अपने हाथे भोजन परोसब प्रायश्चित्तक आरम्भ अछि। ‘गिनती फेर करब’ कथाक मुख्य नैतिक सूत्र अछि—सामाजिक गणनामे जकरा छुटाओल गेल, ओकरा पुनः गिनब।

कथा 147 — नगरक पता

नगरक प्रतिष्ठित पता लिखबाक चाहमे पात्र अपन स्थायी गाम-पताकेँ अस्पष्ट करैत अछि; दस्तावेज-सत्यापनमे यही अस्पष्टता अवसर बाधित करैत अछि। बादमे स्थायी आ वर्तमान दुनू पता पूर्ण रूपेँ लिखल जाइत अछि। कथा अभिलेखीय सटीकता आ आत्मपरिचयक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि।

कथा 148 — फोटोमे मुस्की

परिवारिक छायाचित्रमे पाँच सेकण्डक मुस्की बाहरसँ एकता देखबैत अछि, जखन भीतर देखभाल, खर्च, विरासत वा जिम्मेदारीक तनाव जारी अछि। कथा छवि कैं झूठ नहि कहैत; ओकर प्रमाण-सीमा निश्चित करैत अछि। तस्वीर ई सिद्ध करैत अछि जे लोक ओ क्षण एक छवि-सीमामे छल; ई सिद्ध नहि करैत जे सम्बन्ध निर्विवाद छल।

कथा 149 — कर्जक भोज

ऋण लऽ कऽ कएल मृत्युभोज सामाजिक प्रतिष्ठा बचबैत अछि, मुदा परिवारक शिक्षा-निधि खा जाइत अछि। सार्वजनिक स्मृति भोजक ‘इज्जत’ याद रखैत अछि; कॉलेजक छूटल सत्र वा बेटी नीलिमाक रुकल पढ़ाइ कम दृश्य अछि। कर्जक पाँजि आ खाली शैक्षिक समय एक-दोसराक समानान्तर अभिलेख बनैत अछि।

कथा 150 — किरायाक कार

किरायाक महँगी मोटरगाड़ीकेँ अपन बताबय अथवा देखाबयक प्रयास विवाह-प्रतिष्ठाक हास्यपूर्ण आलोचना अछि। किरायाक चिन्ह ढाँकबाक कोशिश, खराबी, सफाइ-शुल्क वा वापसीक शर्त वस्तुक वास्तविक स्वामित्व उजागर करैत अछि। प्रतिष्ठा-प्रदर्शनक खर्च केवल पैसा नहि, झूठक लगातार रखरखाव सेहो अछि।

कथा 151 — सोना जेकाँ

‘सोना जेकाँ’ आभूषणक डिब्बा परिवारमे मोल, विरासत आ अविश्वासक ऊर्जा पैदा करैत अछि। चमक देखिते वस्तु पर निगरानी, ताला, अधिकार आ मूल्यांकन बढ़ैत अछि। समयक संग वस्तु जखन बच्चाक खेल अथवा दैनिक प्रयोगमे फेर प्रवेश करैत अछि, ओकर भयकारी प्रतिष्ठा घटैत अछि। कथा

‘सोना’क आर्थिक मूल्यसँ अधिक परिवारिक कल्पनाक मूल्य पर अछि—वस्तु सम्बन्धक अर्थ कतेक जल्दी बदलि दैत अछि।

कथा 152 — दस किलो चाउर

राहत-वितरणमे दस किलो चाउरक बोरा छायाचित्र लेल बेराबेरी उपयोग होइत, जखन वास्तविक वितरण अपूर्ण रहैत अछि। बच्चाक देखल दाना, छायाचित्रक क्रम आ बोरा-चिन्ह मिलि प्रशासनिक प्रदर्शनक विरुद्ध साक्ष्य बनैत अछि। एक छायाचित्र वितरण सिद्ध नहि करैत; ओ केवल ओ क्षणक बोरा-उपस्थिति सिद्ध करैत अछि। कथा दृश्य प्रमाणक सीमाक उत्कृष्ट उदाहरण अछि।

कथा 153 — महँग जूता

महँग जूता साक्षात्कारक सफलता लेल बाहरी तैयारीक प्रतीक अछि, मुदा निर्णायक समस्या प्रशिक्षण अथवा प्रमाणपत्रक सत्यापन बनैत अछि। वस्त्र-सज्जा तत्क्षण देखाइत अछि; दस्तावेजक वैधता धीमी प्रशासनिक समयमे जँचल जाइत अछि। नब सत्यापित प्रति देरि सँ आबि सकैत अछि, तइयो पुरान मूल अनुभवक इतिहास रूपेँ बचल रहैत अछि।

कथा 154 — खाली लिफाफा

विवाह-उपहार पाँजिमे खाली लिफाफा चोरी वा कंजूसीक तुरन्त अनुमान जगबैत अछि। जाँचला पर ज्ञात होइत अछि जे संकटमे लिफाफाक पैसा आवश्यक काज लेल उपयोग भेल छल आ नोंद तुरन्त नहि भेल। बादमे राशि, कारण आ तिथि दर्ज कएल जाइत अछि, मुदा खाली लिफाफा पाँजि बीच बचल रहैत अछि। ई ‘अभाव’क वस्तु-साक्ष्य अछि—खालीपन घटनाक इतिहास राखि सकैत अछि।

कथा 155 — निमंत्रण

छपल निमन्त्रण-पत्र नहि भेटलासँ सम्बन्धक अपमान मानल जाइत अछि। बादमे ज्ञात होइत अछि जे पत्र-वितरण कार्यालयी अथवा सूचीगत प्रक्रिया सँ नियंत्रित छल, निजी संबंधक पूरा मानचित्र नहि। पत्र अन्ततः अबैत अछि, मुदा कथा ओकर प्रतीकात्मक अधिकार घटा दैत अछि। ‘याद लेल’ नहि, ‘भूल लेल’ बचाओल पत्र सम्बन्ध आ दस्तावेजक दूरीक स्मारक अछि।

कथा 156 — छतरीवाला

पुरान पैबन्दवला छतरी प्रतिष्ठित घरमे ‘असुन्दर’ वस्तु बुझाइत बाहर रखल जाइत अछि, मुदा बरखा-संकटमे वही छतरी उपयोगी उपाय बनि कोठली बचबैत अछि। छतरीवला वृद्ध अथवा कर्मीकेँ वस्तुक संग बाहर राखब सामाजिक वर्ग-पूर्वाग्रहक दृश्य अछि। अगिला दिन भीतर हुक लगेनाइ सम्मानक छोट, मुदा ठोस पुनर्संयोजन अछि।

कथा 157 — नम्बर प्लेट

विशेष आकर्षक क्रमांक-पट्ट प्रतिष्ठाक चिन्ह बनैत अछि, मुदा दुर्घटना पछाति वाहनक पहचानमे वही स्मरणीय अंक साक्ष्य बनि जाइत अछि। जकरा देखाबय लेल चुनल गेल, ओ उत्तरदायित्वसँ बचबाक बाधा बनैत अछि। अंक स्वयं दोषी नहि, मुदा सार्वजनिक स्मृति ओकरा जवाबदेहीक साधन बना सकैत अछि।

कथा 158 — गामक मंच

गामक मंचपर ‘एकता’क भाषण चलैत अछि, जखन भोजन-पाँत पाछाँ जातिगत विभाजन कायम अछि। समानता-वला पट्ट आ विभाजनक रस्सी एकहि दृश्य-संरचनामे अबैत अछि। वाणी आ व्यवहारक विपरीतता मुख्य कथानक अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ व्यंग्य-ध्वनि अत्यन्त प्रभावी— कथा जे नहि कहैत, मंचक व्यवस्था ओकरे कहि दैत अछि।

कथा 159 — खिड़की लग बैसल लड़की

खिड़की लग बैसल लड़की माधवी लेल सड़क आ विद्यालय दृश्य अछि, उपलब्ध अधिकार नहि। दूर विद्यालयक कारण पढ़ाइ रोकल गेल, मुदा ओ लोक-सवारी, डाक, समय आ सूचना पर ध्यान राखि स्वयं पत्राचार शुरू करैत अछि। विद्यालयसँ संवाद आ परिवारक धीरे बदलैत निर्णय ओकर एजेंसी बढ़बैत अछि। ‘घरमे पुस्तक’ शिक्षा नहि, ‘बाट’ सेहो चाही।

कथा 160 — परदेसियाक बेटी

परदेसमे रहैत पिता पत्र वा कथा द्वारा बेटी कुसुमसँ सम्बन्ध बनाए रखैत अछि। बच्ची कथा पढ़ि प्रश्न करैत अछि आ पिता अगिला पत्रमे उत्तर वा

संशोधन करैत अछि। धीरे-धीरे एकतरफा पितृ-कथा संयुक्त लेखन बनैत अछि। ‘आगाँ कुसुम लिखत’ प्रवासक भावुक पुनर्मिलनसँ अधिक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक उत्तराधिकार अछि।

कथा 161 — अधूरा गीत

अधूर गीत चारि सुर, रुकल पाँति आ वृद्ध स्त्रीक देहगत स्मृति द्वारा जीवित अछि। छूटल अंश पूरा करबाक प्रयासपर स्पष्ट होइत अछि जे विराम स्वयं गीतक इतिहासक हिस्सा अछि। कथा अधूरापनकेँ दोष मानि काल्पनिक पाँति जोड़बासँ बचैत अछि। प्रदर्शनक ‘रुकब’ अभिलेखीय रिक्तता जेकाँ सहेजल जाइत अछि।

कथा 162 — नदीक पाती

बाढ़ि आ बदलैत नदी-दिशाक बीच दू सखी माटि अथवा कागजक पाती आ गुप्त चिन्हसँ संवाद बचबैत अछि। नदी पुरान बाट काटि दैत अछि, तेँ संदेशक ठाम बदलैत अछि; परम्परा स्थिर स्थल पर निर्भर नहि रहैत। किछु पाती बचाओल, किछु माटिमे छोड़ल—संरक्षण आ विसर्जन दुनू आवश्यक। नदी एतय अभिलेखक सह-निर्माता अछि।

कथा 163 — छोट नौकर

घरक बालक ईशानक ऊँचाइ प्रतिवर्ष भित्ति पर दर्ज होइत अछि, जखन लगभग समान उमेरक घरेलू कामगार कन्हैयाक बढ़त सार्वजनिक नोंदमे नहि। मरम्मतमे लुकायल पुरान रेखा सामने अबैत अछि आ घर बुझैत अछि जे ‘घरक स्मृति’मे ककर देह गिनल गेल, ककर नहि। बादक नाप दुनूक नाम सहित दृश्य ठाम पर राखल जाइत अछि।

कथा 164 — माएक बक्सा

माएक मृत्यु पछाति तीन बहिन बक्सामे अधूर पत्र, खर्च-पाँजि आ अधछोड़ल कामक चिन्ह पबैत छथि। सभसँ महत्त्वपूर्ण निर्णय ई अछि जे ओ माएक अधूर वाक्य ‘पूरा’ नहि करैत—अनुमानित शब्द माएक नामेँ लिखब असत्य होएत। बहिनसभ अपन पन्ना लिखैत छथि, पर स्रोतक रिक्तता बचाओल रहैत अछि। अभिलेखीय मौनक नैतिकतामे ई कथा संग्रहक उच्च उपलब्धि अछि।

कथा 165 — पाठशालाक आँगन

गामक छोट पाठशाला कम नामांकनक कारण बन्द अथवा विलयक संकटमे अछि। वृद्ध सुभद्रा स्वयं नाम लिखब सीखैत छथि आ बच्चा-पढ़ाइ, वयस्क सीख, आँगनक सामुदायिक उपयोग एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि। संख्या बढ़ेनाइ केवल प्रशासनिक लक्ष्य नहि; विद्यालय फेर लोकक जीवित ठाम बनैत अछि।

कथा 166 — सिंदूरक डिबिया

सिंदूरक डिबिया विधवापनक संस्कार, स्त्रीक देहपर सामाजिक अधिकार आ बाल-स्मृतिक कथा अछि। कमलासँ वैवाहिक चिह्न हटाओल गेलाक क्षण बच्चीक दृष्टिमे ‘माए’ पहचान बदलि गेल जेकाँ लगैत अछि। बरखों बाद वही डिबिया नातिनक खेल वा फूलक पाँखुरिसँ भरि नब अर्थ पबैत अछि। वस्तु पीड़ा मिटबैत नहि, मुदा ओकर एकाधिकार समाप्त करैत अछि।

कथा 167 — गाछक झूला

कुसुम बेटी संग बचपनक गाछपर झूला फेर लगाबय घुरैत अछि, मुदा पुरान गाछ सुरक्षा कारण काटल जा चुकल। माएक वाक्य—जखन स्मृति माथपर खसय लागय, ओ स्मृति मात्र नहि रहैत—अतीत-संरक्षणक सीमा निर्धारित करैत अछि। नब पौधा रोपल जाइत, पुरान रस्सी भविष्य लेल बचल रहैत। कथा परम्पराक समयानुकूल पुनर्जन्म स्वीकारैत अछि।

कथा 168 — माटिक बाँसुरी

माटिक बाँसुरीमे कुम्हार-बालक नीलू आ औपचारिक संगीत-ज्ञानवला देवव्रत परस्पर सीखैत छथि। सुरक मापन, छेदक दूरी आ ध्वनिक नियम एक दिस; माटिक नमी, सुखनाइ, भट्ठीक सिकुड़नाइ आ हाथक अनुभूति दोसर दिस। कोनो ज्ञान-प्रणाली स्वतः सर्वोच्च नहि। कथा कारीगर-ज्ञान आ औपचारिक संगीत-ज्ञानक सममित संवाद रचैत अछि।

कथा 169 — एकटा नाम

गोद लएल अंशुक पुरान नाम ‘कुश’ सामने अबैत अछि तखन नाम-परिवर्तन पहचानक प्रश्न बनैत अछि। वर्तमान परिवार अतीत नुकबैत नहि, मुदा बच्चा लेल ‘पहिने हम के?’क प्रश्न भावनात्मक अछि। कथा पुरान नामकेँ प्रतिस्पर्धी

परिवारक चिह्न नहि बनबैत; दुनू नाम एक जीवित व्यक्तिक इतिहास बनैत अछि।

कथा 170 — साँझक पाठ

साँझक पाठमे नयन दादी सरयू देवीक मौखिक कथा लिखब चाहैत अछि। ओ बुझैत अछि जे कथा केवल घटनाक क्रम नहि—लोकशब्द, विराम, दोहराव, स्वर, हँसी आ श्रोताक प्रतिक्रिया सेहो एकर देह अछि। विद्यालयी लेखन जँ सभ भाषा ‘साफ’ कऽ देत तँ स्रोतक स्वर बदलि जाएत। दादी लिखब सीखैत छथि; नयन सुनब सीखैत अछि।

कथा 171 — सीमाक मेला

भारत-नेपाल सीमाक मेलामे हेरायल बच्ची रानीक घरक पहचान राष्ट्र-नामसँ नहि, स्थानीय गाछ, बाट, गोरू, दुकान आ परिचित संकेतसँ होइत अछि। सीमाक दुनू दिसक लोक खोजमे सहभागी होइत अछि। ‘ई नेपालक, ई भारतक, हम एतयक’ बहुस्तरीय पहचान अछि—राज्यसीमा वास्तविक, मुदा स्थानीय जीवन ओकर ऊपर दैनिक सम्बन्धक जाल रचैत अछि।

कथा 172 — नीमक छाँह

जमुना काकीक बीमारी अथवा अनुपस्थितिमे घरक लोक पहिल बेर देखैत अछि जे दिनभरि कतेक छोट काम अपने-आप होइत बुझाइत छल। पानि, झाड़ू, भोजन, बच्चा, वस्तु-व्यवस्था—अदृश्य देखभाल अलग-अलग देह पर बाँटल जखन जाइत अछि तखन श्रमक वास्तविक मात्रा सामने अबैत अछि। घुरलापर काज फेर एके स्त्रीक माथ नहि छोड़ब घरेलू श्रमक पुनर्वितरणक संकेत अछि।

कथा 173 — कागजक नाव

माए-पिताक घर बाँटैत परिवार जमीन आ कोठली मापैत अछि, मुदा बरखाक पानि याद दिलबैत अछि जे आँगन, नाली आ निकास पूर्ण निजी खण्डमे नहि बाँटल जा सकैत। बचपनक कागजक नाव साझा जल-पथक स्मृति बनैत अछि। अन्ततः साझा निकास छोड़ल जाइत अछि। कथा सम्पत्ति-अधिकारक संग भौतिक प्रवाहक अधिकार जोड़ैत अछि।

कथा 174 — चुप्पी

सास सरोजिनी आ बहू रीताक चुप्पी घरमे तेसर सदस्यद्वारा संदेश चलबैत देवाल बनि गेल अछि। बच्चाक आपात स्थिति प्रत्यक्ष बातचीतक आवश्यकता पैदा करैत अछि; देखभालक साझा काज संवाद खोलैत अछि। कथा चुप्पीकेँ एक अर्थ नहि दैत—ई बचावो हो सकैत, दण्डो, आदतो। अन्तिम प्रत्यक्ष प्रश्न-उत्तर देवालमे नब केवाड़ी खोलब अछि।

कथा 175 — पोस्टकार्ड

डाक-पत्र विद्यालयक बच्चा आ वृद्धाश्रमक लोक बीच धीमा, हस्तलिखित सम्बन्ध बनबैत अछि। नयनक पत्र पुरान स्मृति अथवा बिसरल परिचयक राह खोलि दैत अछि। खुलल, धीमा माध्यम उत्तर सोचबाक, लिखबाक, अक्षर छूबबाक समय दैत अछि। ‘बाट भेटि गेल’ कथाक सार अछि। शीर्षकक ‘पोस्टकार्ड’क निखार ‘डाक-पत्र’ विचारणीय, मुदा वस्तुक ऐतिहासिक विशिष्टता सेहो बचाबय योग्य।

कथा 176 — झरोखाक फूल

दिवाकर झरोखामे प्रतिदिन देखाइत फूलकेँ संकेत मानि कथा बनाबय लगैत अछि—फूल अछि तऽ ई अर्थ, नहि तऽ दोसर अर्थ। वृद्ध कमला ओकर अनुमानक गति धीमा करैत छथि। फूलक अनुपस्थिति बीमारी, मौसम, भूल—किछुओ हो सकैत; एक चिन्हसँ निष्कर्ष निश्चित नहि। कमला जखन धीरे-धीरे झरोखासँ केवाड़ी अथवा ओसारा धरि पहुँचैत छथि, फूलक ठाम बदलैत अछि। ‘आइ एतय धरि’ वर्तमानक सटीक, अनावश्यक अर्थारोपण-विहीन वाक्य अछि।

कथा 177 — पहिल कमाइ

पहिल कमाइ मंजरी लेल आत्मनिर्भरता मात्र नहि, परिवारिक सहायताक प्रवाह बुझबाक अवसर अछि। किताब-दोकानक पहिल मजदूरी सँ ओ अपन पढ़ाइ, घर आ माएक टूटल चप्पल बीच प्राथमिकता तय करैत अछि। नब महँग चप्पलक बदला पुरानक मरम्मत कंजूसी नहि; उपलब्ध संसाधनक विवेकपूर्ण उपयोग अछि। मरम्मत-चिह्न श्रम आ देखभालक दृश्य स्मृति बनैत अछि।

कथा 178 — लौटैत गीत

सात बरख बाद परदेससँ घुरल राघव गामक बदलल बाट, घर, ध्वनि आ लोकक बीच ‘घरे घुरब’क जटिल अनुभव पबैत अछि। पुरान गीत अथवा पुकारक उत्तर पूरा जसक तस नहि, बदलल रूपमे जीवित अछि। कथा अतीत-मोहकेँ सरल ‘पहिने सभ नीक’मे बदलैत नहि। लौटैत गीत अतीतक नकल नहि, वर्तमानमे पहिचानक पुनर्रचना अछि।

कथा 179 — सीमाक कागज

देवकीक जीवन भारत-नेपाल सीमाक दुनू दिस परिवार, घर आ चाबी सँ जुड़ल अछि; नागरिकता वा पहचानक कागज ओकर चलायमान जीवनकेँ एक ठाममे स्थिर करय चाहैत अछि। नाम, उम्र वा पता मे असंगति प्रशासनिक समस्या बनैत अछि, मुदा सामाजिक सत्य अधिक बहुस्थलीय अछि। ‘कागज एक ठाम, चाबी दू दिशाक’ सीमाक्षेत्रक इतिहासक घनीभूत रूपक अछि।

कथा 180 — बाढ़ि शिविर

बाढ़ि-शिविरमे ‘स्त्री-सुरक्षा’क घोषणापट्ट होइतहुँ अन्हार गलियारा, भीड़, निजताक अभाव आ शिकायतक असुरक्षित प्रक्रिया स्त्रीकेँ वास्तविक जोखिममे रखैत अछि। रत्नाक देहपर चिन्ह वा फाटल कपड़ा घटना केँ सनसनीखेज दृश्य बनाबय लेल नहि, सुरक्षा-संरचनाक विफलता देखाबय लेल अछि। बादक प्रकाश, खुलल मार्ग, सुरक्षित शिकायत-पेटी आ निजी सुनवाई बतबैत अछि जे नीति शब्दसँ नहि, स्थान-विन्यास आ प्रक्रिया सँ प्रभावी होइत अछि।

कथा 181 — लाल कम्बल

साम्प्रदायिक हिंसाक बीच अचिन्हार बच्चाक लाल कम्बल, धागा वा कपड़ा देखिकऽ लोग धर्म वा समुदाय ठहराबय लगैत अछि। सिलाइ वा सरकारी खेपक सूचना ई अनुमान तोड़ैत अछि—एके प्रकारक कम्बल अनेक घरमे गेल। कथा चिन्ह आ पहचानक अवैध व्याप्ति पर कठोर प्रहार करैत अछि। सही पहचान भेटला पहिने सामुदायिक दावा नहि देब प्रमाणिक आ मानवीय अनुशासन अछि।

कथा 182 — नाम पूछू नहि

रेल दुर्घटना अथवा आपदामे उपचारक पहिल आवश्यकता नाम, जाति वा धर्म नहि; रक्त-समूह, चोटक स्थिति आ क्रमांक जेकाँ चिकित्सकीय सूचना

अछि। अफवाहक भीड़ मृत्यु-संख्या आ समुदाय-नाम जल्द तय करय चाहैत अछि। ‘नाम पूछू नहि’ स्थायी अनामता नहि, उपचारक प्राथमिकता आ सत्यापनक क्रम सुझबैत अछि।

कथा 183 — रजिस्टर

पाँजिमे देवकीक गलत नाम-संबंध, उमेर वा वैवाहिक पहचान दर्ज भऽ जाइत अछि; एकतरफा टिप्पणी घटना कैं गलत अर्थ दैत अछि। नब सूचना भेटला पर प्रविष्टि संशोधित कएल जाइत अछि ताकि गलत संस्करणक इतिहास सेहो बुझल जा सकय। कथा अभिलेखकैं निष्पक्ष यन्त्र मानबाक भ्रम तोड़ैत अछि। शीर्षक ‘रजिस्टर’क निखार ‘पाँजि’ विचारणीय अछि।

कथा 184 — खुलल दरवाजा

शोषण अथवा बन्दीकरणक अनुभव पछाति रेखाक घर-फेरती ‘खुलल केवाड़ी’ सँ स्वागत पबैत अछि, मुदा असली मुक्ति केवल प्रतीकात्मक खुलापन नहि। पहिने बन्द कोठलीक चाबी दोसरक हाथमे छल; सुरक्षित स्थानमे रेखा अपन इच्छा सँ भीतरसँ साँकल लगा सकैत अछि। एके ‘बन्द’ क्रिया अर्थ बदलैत अछि जखन नियंत्रण पीड़ित व्यक्तिक अपन हाथमे हो।

कथा 185 — तीन मिनट

तीन मिनटक बाजार-घटनाक टुकड़ा-टुकड़ा चल-छवि, लोकक कथन आ अफवाह मिलि कथाकैं निश्चित अपराधक रूप देबय लगैत अछि। मुदा अलग कोणक दृश्य अलग अंश देखबैत अछि; पूरा कारण-क्रम ककरो एक अंशमे नहि। कथा चल-छविकैं असत्य नहि, सीमित प्रत्यक्ष मानैत अछि। संदर्भहीन अंशक तीव्र प्रसार-शक्ति पर ई महत्त्वपूर्ण प्रमाण-समीक्षा अछि।

कथा 186 — कपड़ा

बाढ़ि-शिविरमे कपड़ा-वितरण संख्या अनुसार व्यवस्थित अछि, मुदा स्त्रीसभक कपड़ा बदलबाक निजता गणनामे नहि। रूपकला पाँच साड़ी देहपर पहिरबाक बदला आड़ बनाबय उपयोग करैत छथि। कथा वस्तु-वर्गीकरणक सीमा तोड़ैत अछि: कपड़ा देह ढाँकैत अछि, मुदा कखनो स्थान वा निजता सेहो बनबैत अछि। ‘आड़’क जरूरत अलग मद रूपेँ दर्ज होएब प्रशासनिक भाषा सुधारैत अछि।

कथा 187 — स्टेशनक कोठरी

रेल-ठामक कोठलीमे भेटल बच्चा रविक पहचान पूछताछक अधिकतासँ झन भ्रमित होइत अछि। नाम, घर, यात्रा, संग के छल—सभ प्रश्न तुरन्त उत्तरयोग्य नहि। बच्चाक हाथक भोजन, बहिनक स्मृति आ सम्बन्ध-सूत्र धीरे-धीरे वास्तविक परिवार धरि लैत अछि। अस्थायी सुरक्षित कोठलीक उद्देश्य वर्गीकरण नहि, प्रतीक्षा आ संरक्षण अछि।

कथा 188 — मौन गवाही

कुसुमक मौन संवेदनशील हिंसाक जाँचमे ‘गवाही नहि’ मानल जा सकैत छल, मुदा कथा बतबैत अछि जे चुप रहबो स्वायत्त सीमाक रूप हो सकैत अछि। दोसर लोक ओकरा सामने बेसी बजैत रहल—ईहो सूचना अछि, मुदा कुसुमक अपन अनुभवक अधिकार अलग। नियंत्रित प्रश्न आ बाहरी दबावक बीच ‘जे हमर कहबाक अछि’क सीमा गवाहीक नैतिकता स्थापित करैत अछि।

कथा 189 — दू शव

बाढ़िमे भेटल दू अचिन्हार शवपर धागा, डोरी, स्थान वा वस्त्र देखिऽ समुदाय-परिचय ठहराबयक जल्दी अछि। नाविक अथवा अधिकारी एहि चिन्हसभकेँ अपर्याप्त मानैत अछि। लाल धागा वा कारी डोरी धर्मक अव्यभिचारी हेतु नहि। सही पहचान धरि शवकेँ समुदाय-प्रतिस्पर्धाक प्रतीक नहि बनाबयक संयम ही न्याय अछि।

कथा 190 — कर्फ्यूक दूध

कर्फ्यूमे दूधवाला बदरी दुनू मुहल्लामे दूध पहुँचबैत अछि; तनावग्रस्त समाज ओकर आवागमनकेँ पक्षधरता समझि सकैत अछि। ओकर बही मात्रा लिखैत अछि, धर्म नहि। दू मापक पात्र अलग रहि सकैत, मुदा दूधक भाँड़ एक—ई दृश्य कथाक गाढ़ ध्वनि अछि। आर्थिक परस्परता साम्प्रदायिक रेखासँ पुरान अछि, तथापि कथा एकर आधारपर हिंसा समाप्त घोषित नहि करैत।

कथा 191 — टूटा चप्पल

अशान्ति पछाति टूटल नील चप्पल आ लाल दाग देखिऽ पत्रकार तुरन्त सनसनीखेज अर्थ बनबैत अछि। बादमे मालिक जीवित भेटैत छथि आ लाल दागक निरापद कारण सामने अबैत अछि। कथा दृश्य-साक्ष्यक आकर्षण आ

पुष्टिक पूर्वाग्रह पर सीधा प्रहार अछि। छोट सुधार मूल सनसनीक असर पूर्णतः वापस नहि लैत। शीर्षकक 'टूटा' कैं 'टूटल' करब निखारयोग्य।

कथा 192 — बन्द कमरा

बन्द कोठलीमे किशोरीसभकैं जबरन श्रम अथवा शोषणक अनुभव पछाति उद्धार-क्षणमे छायांकन फेर निजता भंग करय चाहैत अछि। अधिकारी छायांकन रोकैत अछि। नीलमक गाँठदार कपड़ा दिन गिनबाक निजी अभिलेख अछि, सार्वजनिक तमाशा नहि। आश्रयमे ओ बादमे अपने भीतरसँ केवाड़ी बन्द करैत अछि; वही बन्द क्रिया स्वायत्त निजता बनैत अछि, कारण साँकलक अधिकार आब ओकर हाथमे अछि।

कथा 193 — दाग

हिंसा-पीड़िता बिमलाक दाग सहायता-समिति लेल 'प्रमाण' बनाबय चाहल जाइत अछि, मुदा दस्तावेज उपलब्ध रहितो देह देखाबयक माँग निजतापर अतिक्रमण अछि। बादमे कपड़ा सिलबैत समय ओ स्वयं दर्जीकैं दाग देखबैत अछि ताकि नाप सही हो। एके दृश्यता दू प्रसंगमे दू नैतिक अर्थ रखैत अछि— सहमति, उद्देश्य आ नियंत्रण निर्णायक अछि।

कथा 194 — रातिक ट्रक

रातिक मालवाहक मोटर प्रवासी मजदूरक संकट, दलाली, पुलिस-नियम, वाहन-मालिकक भय आ घर लौटबाक बाध्यताकैं एके गतिशील दृश्यमे राखैत अछि। मध्यस्थ पैसा बचबैत, चालक वाहन, पुलिस नियम; मजदूर की बचबैत? एहि प्रश्नसँ कथा प्रणालीगत असमानता खोलैत अछि। तिरपालक फाँक जेकाँ छोट विवरण देहगत जोखिम प्रत्यक्ष करैत अछि।

कथा 195 — पहचान-पर्ची

मृत नसीमक प्रारम्भिक पहचान-पर्चीमे अधपुष्ट क्षेत्र अथवा समुदाय अनुमान जुड़ल अछि। परिवार देहक विशिष्ट चिन्ह, कामक वस्तु आ व्यक्तिगत जानकारीसँ पहचान पुष्ट करैत अछि; अधिकारी अनुमान काटि केवल सत्यापित नाम राखैत अछि। अभिलेखीय त्रुटि मृतकक जीवनपर नब सामाजिक कथा थोपि सकैत अछि। कागज सुधरला मात्रसँ बाहरी भय समाप्त नहि होइत।

कथा 196 — बच्चाक प्रश्न

साम्प्रदायिक आगि वा राहत-केन्द्रमे परदा दुनू समूह अलग करैत अछि, मुदा बच्चा नयन दुनू दिस ‘हम’ शब्द सुनैत अछि। ओकर सरल प्रश्न—जँ दुनू ‘हम’, तखन ‘ओ’ के?—वयस्क सामान्यीकरणक व्याकरण तोड़ैत अछि। माए तुरन्त तैयार उत्तर देबाक बदला जल्दी उत्तर नहि बनाबयक शिक्षा दैत छथि। प्रश्न करबाक पद्धति स्वयं कथाक नैतिक केन्द्र अछि।

कथा 197 — गवाहीक मूल्य

ईंट-भट्ठाक दुर्घटनामे लखन जे देखलक, ओकर गवाही ओकर रोजी पर सीधा खतरा अछि। मालिक परिवारक नाम काज-पाँजिसँ कटबाक धमकी दैत अछि। अदालतमे लखन मरम्मत टारबाक तथ्य कहैत अछि आ आर्थिक मूल्य चुकबैत अछि। कथा सत्यवादी पात्रक महिमामंडन पर नहि रुकैत; ‘गवाहीक मूल्य’ वास्तविक मजदूरी, रोजगार आ परिवारिक असुरक्षा अछि।

कथा 198 — नदी पार

बाढ़िक पानि पार करैत नावमे वजन-सन्तुलन, बच्चा धरब, वृद्धकेँ जगह देब आ पानि बाँटब क्षणिक रूपेँ जाति-धर्मक दूरी नरम करैत अछि। मुदा सूखल जमीन पहुँचतहि लोक फेर परिचित समूहमे बँटि जाइत अछि। कथा आपदाकेँ नैतिक उद्धारक चमत्कार नहि बनबैत। ‘नदी पार’ अस्थायी अनुभव अछि जे अन्य सम्भावना देखबैत अछि, सामाजिक संरचना आपे समाप्त नहि करैत।

कथा 199 — कुर्थीक दालि

कुर्थीक दालि परिवारक बीआ, भोजन आ वृद्ध माएक चिकित्सा बीच कठोर संसाधन-वितरणक कथा अछि। कुल्थी एक्के समय अगिला फसलक बीआ, घरक दालि आ उपचार/पोषण जरूरतक वस्तु अछि। कम बीआ रखि, किछु बेचि, किछु खाइ, वैकल्पिक फसलक निर्णय वर्तमान जीवन आ भविष्यक उत्पादन दुनू तौलैत अछि। अभावमे ‘सही’ विकल्प शुद्ध गणितसँ नहि निकलैत।

कथा 200 — एक बीघाक सपना

एक बीघा जमीन किनबाक दीर्घ सपना स्वामित्व, खेती, बेटी रामाक पढ़ाइ आ परिवारक भविष्य बीच टकराइत अछि। बचत जमीनक अग्रिम वा शिक्षाक

खर्च—दुनूमे पूरा नहि पड़ैत। कथा सपनाक हार पर समाप्त नहि; अर्थ बदलैत अछि। जमीन अपन नामेँ नहि आयल तइयो खेतीक उपयोग आ शिक्षामे निवेश भविष्यक अलग बाट खोलि सकैत अछि। ‘एक बीघा’क नाप जसक तस, ओकर अर्थ बदलल—ई खण्डक शक्तिशाली समापन अछि।

८. समेकित विषयगत निष्कर्ष

८.१ संख्या, माप आ न्याय

एक रुपैया, एक कप, एक थारी, पाँच रुपैया, छओ हाथ, दस किलो, दू दिन, तीन मिनट, एक बीघा—खण्डक शीर्षक आ कथानकमे संख्या बारम्बार अछि। मुदा कथा संख्या-विरोधी नहि; ओ संदर्भ-विहीन संख्या-विरोधी अछि। सही माप लेल अवस्थाक शर्त, उपयोगकर्ता, समय, उद्देश्य आ छूटल देह गिनब आवश्यक अछि।

८.२ वस्तु-जीवनी आ नैतिक स्मृति

छाता, पेन, जूता, डिब्बा, साड़ी, पंखा, कम्बल, चप्पल, चाबी, बाँसुरी जेकाँ वस्तु एक मालिक वा एक क्षणपर समाप्त नहि। मरम्मत, उधार, उपहार, विरासत, संकट आ पुनरुपयोग ओकर अर्थ बदलैत अछि। एहि कारण वस्तु संग्रहक वैकल्पिक अभिलेख बनैत अछि।

८.३ स्त्री-अनुभव, देह आ स्वायत्तता

माधवीक शिक्षा, माएक बक्सा, सिंदूरक डिबिया, घरेलू श्रम, बाढ़ि-शिविरक सुरक्षा, मौन गवाही, बन्द कोठली आ दाग—ई कथा स्त्रीकेँ ‘पीड़िता’ भरि नहि, प्रश्नक स्वामी बनबैत अछि। विशेषत: निजता आ सहमति: ककरा देखेब, कखन बाजब, केवाड़ी ककर हाथसँ बन्द वा खुलत—एहि सूक्ष्म अधिकारसभ पर जोर अछि।

८.४ श्रम, गरिमा आ अदृश्य काज

ओसाराक बेरोजगार युवक, कारीगर, हजाम, सिलाइ-कर्मी, घरेलू कामगार, दूधवाला, मालवाहक-मोटरक मजदूर, ईंट-भट्ठा साक्षी, किसान—श्रम बहुविध अछि। संग्रहक दृष्टि मजदूरकेँ दया-पात्र नहि; हुनकर अनुभव प्रमाण आ ज्ञानक स्रोत अछि।

८.५ पर्यावरण, सीमा आ चलायमान भूगोल

बाँध, बाढ़ि, नदी, बाट, माटि, गाछ, नाली, सीमा—भूगोल स्थिर पृष्ठभूमि नहि। पानि बाट बदलैत अछि, बाँध गाम विस्थापित करैत अछि, सीमा परिवारक चाबी विभाजित करैत अछि। स्थानक सत्य कागज आ उपयोग दुनू सँ बनैत अछि।

८.६ साम्प्रदायिकता, माध्यम आ चिन्हक दुरुपयोग

लाल कम्बल, दू शव, कर्फ्यूक दूध, टूटल चप्पल, पहचान-पर्ची, बच्चाक प्रश्न—अन्तिम कथा-समूह चिन्हसँ समुदाय ठहराबयक हिंसक जल्दी पर केन्द्रित अछि। समाचार, अफवाह वा भीड़ जखन अधूर चिन्हकेँ पूर्ण कथा बनबैत अछि, तखन प्रमाणक अनुशासन स्वयं नैतिक प्रतिरोध बनैत अछि।

९. शुद्ध मैथिली निखार-अंकेक्षण

मूल पाठक कथा-वाणी जीवंत आ वाचनयोग्य संवादसँ सम्पन्न अछि। तथापि पूर्ण मैथिली निखार लेल शब्दावलीक एकरूपता आवश्यक अछि। नीचे देल आवृत्तिसभ मूल शब्द-संसाधक फाइलक यांत्रिक पाठ-गणना पर आधारित अछि; ई केवल संपादकीय संकेत अछि, कथ्य-मूल्यांकन नहि।

९.१ रोमन लिपिक प्रत्यक्ष रूप

स्थान	मूल रूप	निखार-प्रस्ताव	टिप्पणी
प्रकाशन-विवरण	अन्तरराष्ट्रीय मानक पुस्तक-संख्या (ISBN)	देवनागरी रूप प्राथमिक; संक्षेप केवल ब्रैकेटमे	कथापाठक बाहरक प्रकाशन-सूचना।
कथा ११९ — दादीक मोबाइल	सम्पर्क (contact)	सम्पर्क	रोमन शब्द मूल मैथिली संवादमे अनपेक्षित।
कथा ११९ — दादीक मोबाइल	सन्देश (message)	सन्देश	मैथिली रूप पर्याप्त स्पष्ट।
कथा ११९ — दादीक मोबाइल	चल-छवि (video)	चल-छवि	तकनीकी अर्थ पहिल प्रयोगपर ब्रैकेटमे मूल रूप देल जा

			सकैत अछि।

९.२ प्राथमिक शब्द-एकरूपता

पाठमे रूप	आवृत्ति	निखारक प्राथमिक रूप	संपादकीय टिप्पणी
पानी	८०	पानि	'पानि' १४९ बेर पहिनेसँ अछि; एकरूपता लेल 'पानि' प्राथमिक।
दरवाजा / दरबज्जा	५५ / ८	केवाड़ी	वर्णनकर्ताक भाषामे 'केवाड़ी'; पात्र-वाणीमे सामाजिक रूप प्रसंगानुसार राखल जा सकैत अछि।
बरामदा	१६५	ओसारा	मिथिला-परिवेशक स्वाभाविक प्राथमिक रूप।
कमरा	८	कोठली	'कोठरी' १७७ बेर अछि; पूर्ण निखारमे 'कोठली' प्राथमिक।
चाय	१६१	चाह	'चाह' २३५ बेर; एकरूपता आवश्यक।
ऐना	१६	अएना	वर्तनी-मानकीकरण।
अंगूठा	८	औंठा / बुढ़बा आंगुर	प्रसंगानुसार।
गायब	८	बिलायल	वर्णनात्मक गद्य लेल।

खोआइल	१	हेरायल	‘हेरायल’ सेहो पाठमे अछि; प्राथमिक मैथिली रूप।
पीतल	७६	पित्तरि	शुद्ध मैथिली निखारक विकल्प।

९.३ शीर्षक-स्तरक निखार-सुझाव

मूल शीर्षक शोध-भागमे जसक तस राखल गेल अछि, कारण आलोचना स्रोत-पाठकेँ बदलि नहि सकती। अगिला संपादित संस्करणमे निम्न रूप विचारणीय अछि: ‘टूटा छाता संघ’ → ‘टूटल छाता संघ’; ‘दादीक मोबाइल’ → ‘दादीक चल-दूरभाष’; ‘किरायाक कमरा’ → ‘किरायाक कोठली’; ‘नव मोबाइल’ → ‘नव चल-दूरभाष’; ‘बड़का दरवाजा’ → ‘बड़का केवाड़ी’; ‘फोटोमे मुस्की’ → ‘छायाचित्रमे मुस्की’; ‘किरायाक कार’ → ‘किरायाक मोटरगाड़ी’; ‘नम्बर प्लेट’ → ‘क्रमांक-पट्ट’; ‘रजिस्टर’ → ‘पाँजि’; ‘स्टेशनक कोठरी’ → ‘रेल-ठामक कोठली’; ‘टूटा चप्पल’ → ‘टूटल चप्पल’; ‘बन्द कमरा’ → ‘बन्द कोठली’। ‘रातिक ट्रक’ लेल ‘रातिक मालवाहक मोटर’ सम्भावित रूप अछि, मुदा बोलचालक स्वाभाविकता जाँचि निर्णय उचित।

निखारक नियम यान्त्रिक संस्कृतीकरण नहि हो। अत्यन्त प्रचलित बाहरी-मूलक बोलचालक शब्द पात्रक सामाजिक यथार्थक अंग रहि सकैत अछि। मुख्य आवश्यकता ई जे लेखक-वर्णनक भाषामे सहज मैथिली विकल्प उपलब्ध होइतहुँ अनावश्यक मिश्रण कम हो, आ एके वस्तु लेल रूप बारम्बार बिना कारण नहि बदलय।

१०. आलोचनात्मक सीमा आ संपादकीय सम्भावना

खण्डक बड़ी शक्ति—छोट वस्तु, नोंद वा मापक सँ सामाजिक न्यायक प्रश्न उठेब—किछु लगातार कथामे संरचनात्मक पुनरावृत्ति सेहो उत्पन्न करैत अछि। पाठक कखनो अनुमान लगा सकैत अछि जे अन्तमे नब पाँति, नब खाँचा, सुधारल सूची वा वस्तुक पुनर्परिभाषा आएत। अगिला संस्करणक अनुक्रम-विन्यासमे एके प्रकारक दस्तावेज-सुधार कथा बीच अधिक भिन्न शिल्पवला कथा रखला सँ लय विविध होएत।

किछु कथामे संस्थागत सुधार अपेक्षाकृत जल्दी संभव होइत अछि—एक आदेश, एक नब खाँचा, एक बैठक। साहित्यिक संक्षेपण मान्य अछि, मुदा किछु चयनित कथामे प्रतिरोध, हित-संघर्ष, असफल सुधार वा दीर्घकालिक अनुवर्ती परिणाम बढ़ाओल गेलासँ सामाजिक यथार्थ आरो जटिल होएत।

अन्तिम बीस कथा संवेदनशील विषय—साम्प्रदायिक हिंसा, स्त्री-विरुद्ध हिंसा, बंदी श्रम, मृत देह—स्पर्श करैत अछि। पाठक गरिमा बचाबय लेल वर्तमान संयम उपयोगी अछि: सनसनी, देहक अनावश्यक विवरण आ समुदाय-निर्धारणक अधपुष्ट भाषा सँ कथा सामान्यत: बचैत अछि। एहि अनुशासनकेँ भविष्यक संपादनमे कायम राखब आवश्यक।

११. समग्र निष्कर्ष

‘कथा-शतत्रयी (खण्ड-२)’क कथा १०१–२०० दैनिक जीवनक ‘छोट प्रमाण’क महागाथा जेकाँ पढ़ल जा सकैत अछि। रस्सीक गाँठ, बाटक खूंटा, आधा समोसा, उधार-पाँजि, आकाशवाणी-यन्त्र, छाता, जूता, तस्वीरक पाछाँक नाम, खाली लिफाफा, सिंदूरक डिबिया, बाढ़ि-शिविरक आड़, लाल कम्बल, टूटल चप्पल, दाग, पहचान-पर्ची, कुर्थीक बीआ—ई सभ वस्तु मनुष्यक जीवनमे जे काज करैत अछि, ओही काजसँ साहित्यिक अर्थ निकलैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र एकर भाव-संयम, ध्वनि आ औचित्य बुझबैत अछि; पाश्चात्य कथा-सिद्धान्त एकर संघनन, खुललान्त, विडम्बना आ दस्तावेजी यथार्थ; नव्य-न्याय एकर दाबी-परीक्षा, हेतु-साध्यक सीमा, अभाव आ शब्दप्रमाणक अनुशासन; समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति एकर बहु-स्रोत, हाशियाक श्रम, मौखिक स्मृति, वस्तु-चिह्न आ अभिलेखीय मौनक महत्व खोलैत अछि। चारू दृष्टि मिलि देखबैत अछि जे संग्रहक नैतिक केन्द्र ‘सही उत्तर’ देब मात्र नहि, गलत निश्चितता रोकब सेहो अछि।

खण्डक अन्तिम कथा ‘एक बीघाक सपना’ एहि समग्र दृष्टिक उपयुक्त समापन अछि। नाप बदलैत नहि, अर्थ बदलैत अछि। जमीन स्वामित्वक सपना यदि बदलि शिक्षा, खेतीक उपयोग आ अगिला पीढ़ीक अवसरमे रूपान्तरित होइत अछि, तखन हार आ उपलब्धिक पुरान श्रेणी पुन: जाँचबाक

पड़ैत अछि। यही संग्रहक व्यापक साहित्यिक योगदान अछि—जीवनक पाँजिमे नब खाँचा जोड़ब, मुदा पुरान सत्य मेटाए बिना।

ग्रन्थसूची

कथा-शतत्रयी (खण्ड-२)

नाटचशास्त्र

ध्वन्यालोक

अभिनवभारती

वक्रोक्तिजीवित

औचित्यविचारचर्चा

काव्यप्रकाश

तत्त्वचिन्तामणि

न्यायसूत्र

न्यायभाष्य

तर्कसंग्रह

काव्यशास्त्र (पोएटिक्स)

रचना-दर्शन (द फिलॉसफी ऑफ कम्पोजिशन)

संवादात्मक कल्पना (द डायलॉगिक इमैजिनेशन)

उपन्यासक पक्ष (आस्पेक्ट्स ऑफ द नॉवेल)

एकाकी स्वर (द लोनली वॉइस)

इतिहासकारक शिल्प (द हिस्टोरियन्स क्राफ्ट)

संकेत, मिथक आ ऐतिहासिक पद्धति (क्लूज, मिथ्स ऐंड द हिस्टोरिकल मेथड)

अतीतक मौनकरण (साइलेंसिंग द पास्ट)

आलेख १५ · कथा, लघुकथा आ कथा-समालोचना

कथा-शतत्रयी : खण्ड ३

सारांश

ई शोध-समीक्षा 'कथा-शतत्रयी (खण्ड-३)'क कथा २०१ सँ ३०० धरि सभटा एक सय कथाकेँ अध्ययन-क्षेत्र बनबैत अछि। पोथीक कथा-समूह लगभग १,७६,९९८ शब्दक अछि; औसत कथा-लम्बाइ लगभग १,७७० शब्द आ मध्यिका लगभग १,७०९ शब्द अछि। अध्ययनमे कोनो कथा प्रतिनिधि नमूना रूपेँ चुनि बाँकी कथाकेँ छोड़ल नहि गेल; प्रत्येक कथाक कथ्य, वस्तु-संकेत, सामाजिक प्रसंग आ अन्तिम अर्थ-गतिक पृथक आलोचनात्मक लेखा देल गेल अछि। समग्र स्तर पर पाँच प्रमुख कथा-चक्र उभरैत अछि—घरेलू/नगरीय सूक्ष्म यथार्थ; कृषि, जल, जमीन आ गामक रूपान्तरण; संस्था, प्रमाण, नियम आ सार्वजनिक नैतिकता; स्त्री-श्रम, निजता, नाम आ घरेलू स्थान; तथा समय-स्थानक अद्भुत अस्थिरता। भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, औचित्य आ वक्रोक्तिक अवधारणा; पाश्चात्य कथाशास्त्रक घटना-संरचना, कालक्रम, दृष्टिबिन्दु, समय-स्थान, अपरिचयीकरण आ अद्भुत-अनिश्चय; नव्य-न्यायक प्रमाण, अभाव, लक्षण, उपाधि, सीमांकन आ पूर्वपक्ष–उत्तरपक्ष; आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक स्रोत-परीक्षण, स्मृति-अभिलेख तुलना, केन्द्र-सीमान्त पुनर्पाठ, प्रतिपक्ष आ आत्म-संशोधन—एहि चारि आलोचनात्मक धरातल पर पोथीक संयुक्त मूल्यांकन कएल गेल अछि। निष्कर्षतः ई संग्रह साधारण वस्तु, घरेलू क्रिया, कागज-पाँजि, नाप-जोख, दुआर-खिड़की, पानि, आवाज आ खाली स्थानकेँ मानवीय गरिमा, सामाजिक न्याय आ ज्ञानक प्रश्नमे रूपान्तरित करैत अछि; अन्तिम सत्रह कथा यथार्थवादी आधारकेँ छोड़े बिना अद्भुत-अनिश्चयक नब क्षेत्र खोलैत अछि।

बीजशब्द

कथा-शतत्रयी : खण्ड ३ ·मैथिली कथा ·लघुकथा ·पाठाधारित समीक्षा ·कथन-शिल्प

१.१९. गजेन्द्र ठाकुर- कथा-शतत्रयी (खण्ड-३)- शोध आलेख

कथा-शतत्रयी (खण्ड-३)

कथा २०१–३०० : गहन साहित्यिक शोध-समीक्षा

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य कथा-सिद्धान्त, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे

शोध-लेख

आधार-पोथी : गजेन्द्र ठाकुरक कथा-शतत्रयी (खण्ड-३)

अध्ययन-परिसर : कथा २०१ सँ कथा ३००

सारांश

ई शोध-समीक्षा ‘कथा-शतत्रयी (खण्ड-३)’क कथा २०१ सँ ३०० धरि सभटा एक सय कथाकेँ अध्ययन-क्षेत्र बनबैत अछि। पोथीक कथा-समूह लगभग १,७६,९९८ शब्दक अछि; औसत कथा-लम्बाइ लगभग १,७७० शब्द आ मध्यिका लगभग १,७०९ शब्द अछि। अध्ययनमे कोनो कथा प्रतिनिधि नमूना रूपेँ चुनि बाँकी कथाकेँ छोड़ल नहि गेल; प्रत्येक कथाक कथ्य, वस्तु-संकेत, सामाजिक प्रसंग आ अन्तिम अर्थ-गतिक पृथक आलोचनात्मक लेखा देल गेल अछि। समग्र स्तर पर पाँच प्रमुख कथा-चक्र उभरैत अछि—घरेलू/नगरीय सूक्ष्म यथार्थ; कृषि, जल, जमीन आ गामक रूपान्तरण; संस्था, प्रमाण, नियम आ सार्वजनिक नैतिकता; स्त्री-श्रम, निजता, नाम आ घरेलू स्थान; तथा समय-स्थानक अद्भुत अस्थिरता। भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, औचित्य आ वक्रोक्तिक अवधारणा; पाश्चात्य कथाशास्त्रक घटना-संरचना, कालक्रम, दृष्टिबिन्दु, समय-स्थान, अपरिचयीकरण आ अद्भुत-अनिश्चय; नव्य-न्यायक प्रमाण, अभाव, लक्षण, उपाधि, सीमांकन आ पूर्वपक्ष–उत्तरपक्ष; आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक स्रोत-परीक्षण, स्मृति-अभिलेख तुलना, केन्द्र-सीमान्त पुनर्पाठ, प्रतिपक्ष आ आत्म-संशोधन—एहि चारि आलोचनात्मक धरातल पर पोथीक संयुक्त मूल्यांकन कएल गेल अछि। निष्कर्षतः ई संग्रह साधारण वस्तु, घरेलू क्रिया, कागज-पाँजि, नाप-जोख, दुआर-खिड़की, पानि, आवाज आ खाली स्थानकेँ मानवीय गरिमा, सामाजिक न्याय आ ज्ञानक प्रश्नमे

रूपान्तरित करैत अछि; अन्तिम सत्रह कथा यथार्थवादी आधारकेँ छोड़े बिना अद्‌भुत-अनिश्चयक नब क्षेत्र खोलैत अछि।

बीज-शब्द : मैथिली कथा, मिथिला, लोकजीवन, सूक्ष्म यथार्थ, ध्वनि, रस, नव्य-न्याय, प्रमाण, अभाव, समानान्तर इतिहास, स्त्री-श्रम, सार्वजनिक नैतिकता, अद्‌भुत कथा।

१. आधार-पोथी, सीमा आ शोध-पद्धति

आधार-पोथीक तेसर खण्डमे कथा २०१ 'खाली थैला' सँ कथा ३०० 'अपरिचित अपन घर' धरि एक सय कथा अछि। अनुक्रमा कथा-संख्या, शीर्षक आ आरम्भिक पृष्ठ स्पष्ट करैत अछि; अध्ययन एहि मूल क्रमकेँ अक्षुण्ण रखने अछि। कथासभक मूल्यांकन केवल शीर्षक वा कथासार पर आधारित नहि, बल्कि कथा-आरम्भ, मध्यवर्ती क्रिया, अन्तिम संरचना, आवर्ती वस्तु, संवाद, स्थान, अभिलेखीय वस्तु आ निर्णय-क्षणक समग्र पाठ पर आधारित अछि।

शोधक चारि तुलनात्मक आधार अछि। पहिल, भारतीय काव्यशास्त्र—रस, ध्वनि, औचित्य, वक्रोक्ति आ सहृदय अनुभव। दोसर, पाश्चात्य कथाशास्त्र—कथानकक कारण-क्रम, समयक विन्यास, दृष्टिबिन्दु, समय-स्थानक संयुक्त संरचना, साधारण वस्तु केँ अपरिचित बना कऽ फेर देखेबाक युक्ति, आ अद्‌भुत-अनिश्चय। तेसर, नव्य-न्याय—कथनक प्रमाण-आधार, लक्षणक शुद्धता, उपाधि वा छिपल शर्त, अभावक सकारात्मक ज्ञानात्मक भूमिका, सीमांकन, प्रतिपक्ष आ निष्कर्षक वैधता। चारिम, विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति—एके केन्द्रक बदला अनेक प्रवेश-बिन्दु, दस्तावेज आ लोक-स्मृतिक समानान्तर परीक्षण, अधिकारिक अभिलेखक मौन, सीमान्त आवाज, भौतिक साक्ष्य, प्रतिपक्ष आ आत्म-संशोधन।

ई चारू पद्धति एक-दोसराक पर्याय नहि अछि। उदाहरणार्थ ध्वनि केँ आधुनिक संकेतार्थक सिद्धान्तक ठीक बराबर, वा नव्य-न्याय केँ आधुनिक विश्लेषण-दर्शनक पूर्वरूप मानल नहि गेल अछि। तुलनाक उद्देश्य समानता घोषित करब नहि, समस्या-संरचना स्पष्ट करब अछि। एहि सावधानी कारण इतिहासक दावा आ वर्तमान आलोचनात्मक उपयोग अलग राखल गेल अछि।

२. पाठ-सांख्यिकी आ समग्र बनावट

सूचक	मान
कुल कथा	१००
आधार-पृष्ठ	१०८९
कथा-पाठक अनुमानित कुल शब्द	१७६९९८
औसत कथा-लम्बाइ	लगभग १७७० शब्द
मध्यिका	लगभग १७०९ शब्द
सब सँ छोट कथा	कथा २७१ ‘लाल बक्सा’ — लगभग ११०३ शब्द
सब सँ पैघ कथा	कथा २८७ ‘बिना मालिकक छाया’ — लगभग २५०४ शब्द

शब्द-सांख्यिकी मात्र साहित्यिक मूल्यक माप नहि, मुदा संग्रहक लय बुझबामे उपयोगी अछि। कथा सभ सामान्यतः छोट-कथा आ दीर्घ-लघुकथा बीचक विस्तारमे अछि; तैँ लेखक कैँ साधारण वस्तु पर पर्याप्त दृश्यात्मक ध्यान देबाक आ तकर बाद अर्थक धीरे परिवर्तन देखेबाक जगह भेटैत अछि। कथासभक अन्त प्रायः अचानक चमत्कारिक मोड़ पर नहि, वस्तुक अर्थ बदललापर टिकैत अछि—थैला, पाँजि, खिड़की, कुर्सी, पट्ट, नक्शा, चाबी, घड़ी, कोठली, दुआर, छाया, पानि, नाम।

समग्र पाठमे ‘कागज’, ‘पाँजि’, ‘नाम’, ‘आवाज’, ‘पानि’, ‘पट्ट’, ‘कुर्सी’, ‘मेज’, ‘केवाड़ी/दुआर’, ‘खिड़की’, ‘घड़ी’, ‘नक्शा’ आ ‘चाबी’ बेराबेरी अबैत अछि। एहि आवृत्तिक साहित्यिक महत्व ई अछि जे कथा-संसार केवल भावनात्मक नहि, अभिलेखीय आ पदार्थगत सेहो अछि। पात्र अपन अनुभव लिखैत, नापैत, गिनैत, चिन्ह लगबैत, फेर लिखित तथ्यक सीमा देखैत छथि।

३. पाँच कथा-चक्रक समग्र पाठ

३.१ कथा २०१–२२० : घरेलू/नगरीय सूक्ष्म यथार्थ

एहि बीस कथामे घरक बजट, किराया, पानि, गैस, सामान, पड़ोस, छोट तकनीकी वस्तु आ दाम्पत्य/पीढ़ीगत संवाद मुख्य अछि। ‘खाली थैला’, ‘नीला मग’, ‘चार्जर’, ‘किराना पर्ची’, ‘पुरान गद्दा’ जेकाँ वस्तु कथानकक केन्द्र बनैत अछि। वस्तु स्वयं प्रतीक घोषित नहि होइत; उपयोग, टूटन, रखबाक ठाम, देन-

लेन आ मौनक कारण धीरे-धीरे ध्वन्यर्थ कमबैत अछि। ई चक्र घरेलू अर्थनीतिक भीतर गरिमा, पारदर्शिता, निजता आ साझा निर्णयक नैतिकता विकसित करैत अछि।

३.२ कथा २२१–२४३ : गाम, कृषि, जल, जमीन आ स्मृति

एहि खण्डमे खेत, पथार, पोखरि, नदी, बथान, कच्ची सड़क, रोपनी, कटनी, गाछ आ मशीन मुख्य समय-स्थान बनैत अछि। विकासक प्रश्न ‘पुरान बनाम नब’क सरल द्वन्द्व नहि; नब ट्रैक्टर आवश्यक अछि, मुदा जगेसरक माटि-ज्ञानो आवश्यक; सरकारी जल-पाँजि आवश्यक अछि, मुदा बरगदक नीचाँक स्थानीय रजिस्टर वास्तविक पहुँच बतबैत अछि। भूमि आ जलक कथा सभ अभिलेखीय सत्य आ भौतिक बदलाहट बीच तनाव रचैत अछि।

३.३ कथा २४४–२६३ : संस्था, प्रमाण, नियम आ सार्वजनिक नैतिकता

प्रमाण-पत्र, स्वच्छता-अभियान, साक्षरता-सभा, उद्घाटन, पुरस्कार, नियम, डिजिटल घोषणा, शिकायत-समिति आ दहेज-विरोधी मंच—ई चक्र सार्वजनिक भाषा कैं परिणामक कसौटी पर राखैत अछि। व्यंग्य तिक्त नहि; पात्र स्वयं गलती चिन्हि प्रक्रिया बदलैत छथि। ‘नकल-विरोधी भाषण’ आ ‘आदर्शविवाह’ विशेष रूपेँ आत्म-संशोधनक कथा अछि, जतय उपदेश देनिहार पहिले अपन आचरण पर ओही नियम लागू करैत अछि।

३.४ कथा २६४–२८३ : स्त्री-श्रम, निजता, नाम आ घरेलू स्थान

एहि बीस कथामे आलमारीक चाबी, छत पर समय, बहूक कोठली, मायकेक चाबी, सिलाइ-खर्च, रसोइक दुआर, लाल बक्सा, फोन, साड़ी, भोजनक मेज, पार्लरक अएना, पहिल तनखाह, पुरान वस्त्र, अतिथि-कोठली, गुप्त बचत, छायाचित्र आ नाम-पट्ट मार्फत स्त्रीक अधिकारक अनेक सूक्ष्म रूप उभरैत अछि। कथा घोषणात्मक स्त्रीवादक बदला रोजक व्यवस्थाक सूक्ष्म असमानता देखबैत अछि—ककर समय ककर अछि, ककर वस्तु पर निर्णय ककर, ककर नाम बाहर लिखल, ककर श्रम हिसाबमे अछि।

३.५ कथा २८४–३०० : अद्भुत-अनिश्चय आ ज्ञानक सीमा

‘तीसरी सीढ़ी’ सँ कथा-संसारक यथार्थवादी सतह टूटैत नहि, मुदा ओकर निश्चितता अस्थिर होइत अछि। असम्भव सीढ़ी, उल्टा दिन-पाँजि, बन्द कोठलीक ऋतु, बिना मालिकक छाया, नक्शामे नहि स्टेशन, आधा बजल घड़ी, दोसर दुआर, बदलैत गली, अतिरिक्त खिड़की, भविष्य-जेकाँ आवाज, संख्या शून्यक बस, कागजक वर्षा, नक्शाक पोखरि, विलम्बित प्रतिबिम्ब, गायब बुधदिन, पाँचम कोना आ अपरिचित अपन घर—सभमे पात्र पहिने निरीक्षण, नाप, लिखावट आ पुनर्परीक्षण करैत छथि। रहस्यक चमत्कारी समाधान प्रायः नहि देल जाइत; ज्ञानक सीमा स्वयं कथा-वस्तु बनैत अछि।

४. कथा-दर-कथा आलोचनात्मक लेखा : २०१–३००

कथा २०१ — खाली थैला (पृ. ११–२१)। पैतृक बीआ-दोकानक उत्तरदायित्व बेटी मंजू दिस धीरे-धीरे सरकैत अछि। पाँजि, बटखरा, काँटा आ अन्ततः खाली थैला अधिकार-हस्तान्तरणक वस्तुगत व्याकरण बनैत अछि; कथाक बल घोषणा पर नहि, गोपीनाथक चुप्पी आ थैलाक हलुक भऽ जाएब पर अछि।

कथा २०२ — रौदक एक टुकड़ा (पृ. २२–३३)। वृद्ध दम्पतीक देह, जाड़ आ रौदक छोट टुकड़ा सँ प्रेमक अनकहल रूप खुलैत अछि। मचिया सँ पटिया धरि खिसकैत व्यवस्था देखबैत अछि जे देखभाल बराबरीक स्थान बनबैत अछि; करुण आ शान्त रस अतिनाटकीयता बिना विकसित होइत अछि।

कथा २०३ — नाव बान्हल रहल (पृ. ३४–४३)। रघुनाथ सहनी मेला, बेटी सुनीताक गीत आ घाटक दायित्वक बीच फँसल छथि। बान्हल नाव केवल साधन नहि, कर्तव्यक प्रतिमा अछि; ओहि पारक ताली आ एहि पारक गाँठ दूरी, श्रम आ पारिवारिक आकांक्षाक एकसंग ध्वनि करैत अछि।

कथा २०४ — फ्रिजक आवाज (पृ. ४४–५४)। पुरान फ्रिज बेचबाक प्रश्न पति-पत्नी बीच आर्थिक निर्णय आ संवादहीनताक संकट खोलैत अछि। बिजली गेलापर फ्रिजक चुप्पी घरक आन आवाज सुनबैत अछि, आ फेर फ्रिजक आवाज लौटला पर सम्बन्ध सेहो व्यवहारिक बातचीत दिस घुरैत अछि; वस्तु घरेलू मनोविज्ञानक ध्वनि-संकेत बनैत अछि।

कथा २०५ — किरायाक महीना (पृ. ५५–६५)। किराया, पाँच सय रुपैयाक कमी, रसीद आ हिलैत मेज गरीब-मध्यवर्गीय गरिमाक सूक्ष्म परीक्षा अछि। पुरान रसीदक मेजक पाँय नीचाँ सँ हटब आर्थिक असुरक्षा मेटब नहि करैत, मुदा दस्तावेजक अर्थ ‘बेकार कागज’ सँ ‘अपन स्थिति दर्ज करबाक साधन’ दिस बदलैत अछि।

कथा २०६ — नीला मग (पृ. ६६–७६)। टूटल नीला मग छोट घरेलू खर्चक भीतर दोष, आवश्यकता आ अधिकारक प्रश्न खोलैत अछि। खर्च-पाँजिमे ‘जरूरी?’ लिखबाक संस्कार धीरे-धीरे परस्पर मान्यतामे बदलैत अछि; नब मग समाधान नहि, परन्तु निर्णयक बराबर अधिकारक संकेत अछि।

कथा २०७ — चार्जर (पृ. ७७–८९)। चार्जर जेकाँ साझा वस्तु घरक भीतर निजता, अविश्वास आ पीढ़ीगत सीमाक कसौटी बनैत अछि। झोरा खोलबाक लालसा रोकल जाएब आ वस्तु कैँ जसक तस छोड़ि देब कथाक नैतिक केन्द्र अछि—विश्वास प्रमाण खोजलासँ नहि, अनावश्यक हस्तक्षेप रोकलासँ बनैत अछि।

कथा २०८ — कपड़ा सुखेबाक तार (पृ. ९०–१००)। कपड़ा सुखेबाक तार निजी सीमा आ संकट-बेला साझा उपयोगक स्मृति दुनूकैँ जोड़ैत अछि। बाढ़ि-बेलाक सहजीवन आ बादक अलग-अलग तार देखबैत अछि जे स्वामित्वक रेखा जरूरी हो सकैत अछि, मुदा पुरान साझा काँटा सम्बन्धक इतिहास मेटैत नहि।

कथा २०९ — बन्द नल (पृ. १०१–११३)। बन्द नल घरेलू संकट कैँ स्त्री-श्रम, बेटीकैँ परीक्षा आ पानि-संग्रहक वितरणसँ जोड़ैत अछि। कथा ‘पानि के आनत’ प्रश्न कैँ स्वाभाविक स्त्री-दायित्व मानबाक बदला परिवारक साझा व्यवस्था दिस मोड़ैत अछि।

कथा २१० — आधा किलो चाउर (पृ. ११४–१२५)। आधा किलो चाउर उधार, गरीबी आ सार्वजनिक लाजक कथा अछि। दोकानदारक पाँजि जखन छिपायल ऋण कैँ लिखित तथ्य बनबैत अछि, शशिकान्तक अन्तिम क्रिया—झोरा नहि छिपेनाइ—गरिमाक पुनर्प्राप्ति बनि जाइत अछि।

कथा २११ — बालकोनीक गमला (पृ. १२६–१४०)। बालकोनीक गमला दम्पतीक घर-बदलाव आ करियर-संतुलनक छोट दृश्यकैँ जीवनक पैघ निर्णयसँ

जोड़ैत अछि। सुखाइत पौधा तुरन्त हरियर नहि होइत, तैं कथा तत्काल सुखान्त नहि बनबैत; मुख्य परिवर्तन हिसाब-पत्र एक-दोसरासँ नहि लुकायब अछि।

कथा २१२ — गलत नम्बर (पृ. १४१–१५३)। गलत नम्बर वृद्ध हरिनारायणक समय-बोध, अकेलापन आ प्रतीक्षाक कथा अछि। फोनक घंटी दिनचर्याक बाहरी घड़ी बनैत अछि; अन्तमे घड़ी नहि देखब प्रतीक्षाक आतंकसँ कने मुक्ति संकेत करैत अछि, बिना भावुक निष्कर्षक।

कथा २१३ — पुरान परदा (पृ. १५४–१६७)। पुरान परदा घर-बदलावक बीच स्मृति आ उपयोगिताक सन्तुलन रचैत अछि। वस्तु न स्मारक बनैत अछि, न रद्दी; अगिला काज धरि ओकर उपस्थित रहब स्मृतिक जीवित, व्यवहारिक रूपकेँ उभारैत अछि।

कथा २१४ — सिलिन्डर खत्म (पृ. १६८–१८९)। सिलिन्डर समाप्त होएबाक साधारण संकट घरेलू अर्थव्यवस्था आ साझा जिम्मेदारीक अधखुलल प्रश्नकेँ सामने आनैत अछि। नब सिलिन्डर समस्या समाधान करैत अछि, मुदा कथा स्पष्ट करैत अछि जे साधन बदलला सँ सम्बन्धक ‘बाकी बात’ अपने समाप्त नहि होइत।

कथा २१५ — दू प्लेट (पृ. १९०–२०२)। दू प्लेट प्रतीक्षा, अतिथि-सम्भावना आ रोजगार/भविष्यक अनिश्चिततासँ भोजनक मेज पर केन्द्रित करैत अछि। खाली पड़ल प्लेट अन्ततः घरेलू बातचीतक कारण बनैत अछि; भोजन व्यर्थ नहि जाएब कथाक व्यवहारिक आशावाद अछि।

कथा २१६ — पड़ोसीक टीवी (पृ. २०३–२१२)। रुकल घड़ी आ पड़ोसीक दूरदर्शनक आवाजसँ मालती देवी समय गिनैत छथि। तकनीकी समय-बोधक पाछाँ पड़ोसक जीवित लय अछि; घड़ी फेर चलला परो देबाल-पारक आवाज सम्बन्धक वैकल्पिक समय बनल रहैत अछि।

कथा २१७ — बन्द लिफ्ट (पृ. २१३–२२४)। बन्द लिफ्ट बहुमंजिली नगरीय जीवनक अपरिचय तोड़ैत अछि। सीढ़ी, प्रतीक्षा आ साझा समय दू पड़ोसी बीच संवादक जगह बनबैत अछि; लिफ्ट ठीक भेलाक बाद संबंध पुरान औपचारिकतामे पूरा नहि घुरैत।

कथा २१८ — किराना पर्ची (पृ. २२५–२३९)। किराना पर्ची दम्पतीक खर्च-संवादक लिखित रूप अछि। प्रश्नचिह्न, अलग-अलग लिखावट आ खाली जगह देखबैत अछि जे घरक अर्थनीति एक व्यक्ति द्वारा तय सूची नहि, सतत बातचीत अछि।

कथा २१९ — पुरान गद्दा (पृ. २४०–२५६)। पुरान गद्दा दाम्पत्यक शारीरिक सुविधा आ साझा स्थानक रूपक अछि। बीचक उभार, खाट आ नव गद्दाक समतलता सम्बन्धक अनकहल दूरीकेँ दृश्य बनबैत अछि; अन्तमे बीचक जगह खाली नहि रहब शान्त पुनर्समीपता अछि।

कथा २२० — दरबज्जाक घंटी (पृ. २५७–२७८)। दरबज्जाक घंटी घर, किराया, सम्भावित आगन्तुक आ रहबाक अगिला ठामक अनिश्चितता एकत्र करैत अछि। घंटीक चुप्पी निर्णयहीनता नहि; परिवार सम्भावित स्थानसभ लिखि प्रश्नचिह्न लगा रहल अछि—अर्थात् निष्क्रिय प्रतीक्षा सँ सक्रिय योजना दिस गमन।

कथा २२१ — बचल तरकारी (पृ. २७९–२९०)। बचल तरकारी ‘बचल’ शब्दक अर्थ बदलैत अछि। जे वस्तु घरक अतिरिक्त भोजन छल, ओ बीमार पड़ोसिनीक घरमे साझा आहार बनैत अछि; अन्तिम उत्तर ‘घरक’ निजी स्वामित्व सँ समुदायिक उत्तरदायित्व दिस अर्थ-विस्तार अछि।

कथा २२२ — बन्द खिड़की (पृ. २९१–३०९)। बन्द खिड़की चक्कीक आवाज, किरायाक कोठली, बेटीकेँ पढ़ाइ आ परिवारक खर्चक दबावकेँ एक ठाम आनैत अछि। खिड़की बन्द रहैत अछि, मुदा संवाद खुलैत अछि; भौतिक असुविधाक समाधान तुरन्त नहि, पारिवारिक योजना पहिने बनैत अछि।

कथा २२३ — रविक दिनक कपड़ा (पृ. ३१०–३२३)। रविक दिनक कपड़ा स्त्री-श्रम, पुरान तकरार आ घरेलू सहकारक अनौपचारिक क्षेत्र खोलैत अछि। विवाद समाप्त घोषित नहि होइत; कपड़ा समेटबाक साझा क्रिया देखबैत अछि जे सह-अस्तित्व बहुत बेर पूर्ण सामंजस्यसँ नहि, व्यवहारिक सहयोगसँ बनैत अछि।

कथा २२४ — सरिसो कटबाक बाद (पृ. ३२४–३४१)। सरिसो कटबाक बाद पुरान ‘आधा-आधा’ साझेदारी मशीन, बजार आ बदलैत श्रम-रूपक कारण

प्रश्नांकित होइत अछि। नब पाँजि फसलक बाद हिसाब नहि, फसलसँ पहिने शर्त पूछैत अछि—ई परिवर्तन कथाक मुख्य नैतिक उपलब्धि अछि।

कथा २२५ — चरबाहाक पगडंडी (पृ. ३४२–३६८)। चरबाहाक पगडंडी विकासक पक्की सड़क आ नालाक बीच पशु-पथक लोप देखबैत अछि। तीन पटिया जेकाँ छोट समाधान बतबैत अछि जे स्थानीय उपयोगक ज्ञान बिना ‘सड़क’ पूर्ण नहि; विकासक माप गाड़ी मात्रसँ नहि होयत।

कथा २२६ — पोखरिक रखबार (पृ. ३६९–३८३)। पोखरिक रखबार स्थानीय स्मृति, जीव-जगत आ औपचारिक माप-जाँचक संवाद अछि। वंशीक अनुभव आ अरुणक नाप-डोरी परस्पर विरोधी नहि बनैत; कथा दू प्रमाण-पद्धतिक सह-अस्तित्वक सम्भावना रचैत अछि।

कथा २२७ — बथानक साँझ (पृ. ३८४–४०१)। बथानक साँझ पशुकेँ संख्या बनाम नामक प्रश्न उठबैत अछि। नरेशक पाँजि जखन झुमकी-सुपतीक व्यवहारो लिखैत अछि, रजिस्टर गणना सँ देखभालक दस्तावेज बनैत अछि; आधुनिक प्रबन्ध आ अनुभवक ज्ञान एकसंग आबैत अछि।

कथा २२८ — आमक बगीचा (पृ. ४०२–४१६)। आमक बगीचा स्वामित्व-बदलाव, रखबारक निरन्तरता आ फल पर पुरान सौदाक अधिकारक बीच भूमि-अर्थशास्त्र खोलैत अछि। हवा ककरो नाम नहि जानैत—ई अन्तिम छवि संपत्ति-पत्रक ऊपर ऋतु आ श्रमक दीर्घ समय राखैत अछि।

कथा २२९ — कमलाक धार (पृ. ४१७–४२७)। कमलाक धार नदीक बदलैत बाट आ मनुष्यक स्थिर चौहद्दीक असंगति पर केन्द्रित अछि। कागज, माटि आ स्मृति—तीनू पर रेखा खिंचैत अछि, मुदा नदी छह कट्ठा वा पाँच कट्ठा आठ धुरक हिसाब नहि मानैत; प्रकृति विधिक मापक सीमा उघारैत अछि।

कथा २३० — धानक गन्ध (पृ. ४२८–४३९)। धानक गन्ध प्रवास, लौटब, खेतक श्रम आ पारिवारिक हिसाबकेँ गन्ध-स्मृतिसँ जोड़ैत अछि। नब पाँजिमे रुपैया आ दिनक संग ‘देखभाल’ लेल अलग खाँचा बनब आर्थिक मूल्यांकनक नैतिक विस्तार अछि।

कथा २३१ — गाछक छाँह (पृ. ४४०–४५०)। गाछक छाँह विद्यालय-निर्माणक औपचारिक नक्शा कैं जमीनक ढाल, नाली आ पुरान पीपरक

वास्तविकता सँ भिड़बैत अछि। ‘जमीन एना अछि’ वाक्य विकास-योजनाक स्थानीय स्थलज्ञानक संक्षिप्त सिद्धान्त बनैत अछि।

कथा २३२ — डोमक बाँसुरी (पृ. ४५१–४६३)। डोमक बाँसुरी कार्यक्रम-सूची, समय-अनुशासन आ जातिगत सांस्कृतिक उपेक्षाक बीच संगीतक जगह बनबैत अछि। बाँसुरी सुनबाक लेल आदेशित मौन नहि, स्वयंस्फूर्त ध्यान बनैत अछि; अन्तिम पातक आवाज कला-सुनबाक नैतिकता विस्तृत करैत अछि।

कथा २३३ — झोपड़ीक नक्शा (पृ. ४६४–४७४)। झोपड़ीक नक्शा नक्शामे ‘खाली’ देखाओल ठाम आ जमीन पर तीन पीढ़ीसँ बसैत घरक टकराव अछि। ‘वर्तमान आवास’ लिखल जाएब पूर्ण अधिकार नहि, मुदा प्रशासनिक अदृश्यतासँ पहिल बाहर निकलनाइ अछि।

कथा २३४ — गोरूक घंटी (पृ. ४७५–४८९)। गोरूक घंटी मशीनीकरणक बीच पशु, हलवाहा आ पुरान श्रम-संबंधक स्वर बचबैत अछि। घंटीक छोट, साफ आवाज नॉस्टैल्जिया मात्र नहि; बदलैत उत्पादन-पद्धतिमे मानवीय स्मृतिक सूक्ष्म अवशेष अछि।

कथा २३५ — कच्ची सड़क (पृ. ४९०–४९७)। कच्ची सड़क बस-आवागमनक आवश्यकता आ जलनिकासक संकटकेँ एक-दोसराक विरुद्ध नहि, संग देखैत अछि। ‘बस चाही, घरमे पानि नहि चाही’ कथाक विकास-दृष्टि अछि—सुविधा आ सुरक्षा दुनूकेँ एके हिसाबमे धरबाक।

कथा २३६ — पथारक रक्षक (पृ. ४९८–५०६)। पथारक रक्षक साझा चराइ-जमीन पर औपचारिक सर्वेक्षणसँ पहिने उपयोगक जीवित प्रमाण बचबैत अछि। दुखनक काट-चिन्ह पाँजिमे बदलैत अछि; निजी निर्णय नहि, निर्णयकर्ताकेँ सम्पूर्ण तथ्य देबाक आग्रह मुख्य अछि।

कथा २३७ — धान रोपनीक गीत (पृ. ५०७–५१२)। धान रोपनीक गीत हाथक सामूहिक श्रम आ यन्त्रक सीधा पाँतिक बीच सांस्कृतिक परिवर्तन देखबैत अछि। कथा गीतकेँ कृत्रिम रूपेँ बचबैत नहि; जतय सामूहिक देह एकसंग काज करैत अछि, ओतय स्वर फेर उठि सकैत अछि—एतबे सम्भावना छोड़ैत अछि।

कथा २३८ — बरगदक नीचाँ रजिस्टर (पृ. ५१३–५१८)। बरगदक नीचाँ रजिस्टर सरकारी ‘पानि छोड़ल गेल’ आ खेत धरि ‘पानि पहुँचल’ बीचक

निर्णायक अन्तर दर्ज करैत अछि। मुनिलालक पाँजि प्रतिद्वन्द्वी राज्य नहि, स्थानीय अनुभवक परीक्षणीय सह-स्रोत बनैत अछि।

कथा २३९ — बाढ़िक निशान (पृ. ५१९–५२४)। बाढ़िक निशान देबालक दागकेँ परिवारक आपदा-अभिलेख बनबैत अछि। निशान पोतल जाइत अछि, मुदा ओकर सीख नब कोठलीक ऊँच तलमे रूपान्तरित होइत अछि; स्मृति सजावट नहि, अनुकूलनक ज्ञान बनैत अछि।

कथा २४० — पहिल ट्रैक्टर (पृ. ५२५–५३२)। पहिल ट्रैक्टर बैल-हल सँ मशीन धरि बदलावक उत्सवी आख्यान नहि बनबैत। नरेशक यन्त्र आ जगेसरक माटि-पहिचान समानान्तर चलैत अछि; उत्पादनक नब साधन पुरान अनुभवकेँ शून्य नहि करैत, सम्बन्धक दूरी फेर नापैत अछि।

कथा २४१ — सिमानक खूँटा (पृ. ५३३–५३९)। सिमानक खूँटा एक इंच जमीनक विवादकेँ साझा बाल्य-स्मृतिक काठ धरि लऽ जाइत अछि। सीमा-चिन्ह बच्चासभक ऊँचाइक रेखा सेहो अछि; स्वामित्वक कठोर रेखा साझा इतिहासक बहुस्तरीय निशान बनि जाइत अछि।

कथा २४२ — खाली बथान (पृ. ५४०–५४६)। खाली बथान पशुपालन घटलाक बादो जगह साफ राखबाक जिदक कथा अछि। खालीपन मृत परम्परा नहि; ‘फेर काज भेटि सकैत अछि’ कहि कथा स्थानकेँ भविष्यक उपयोग लेल खुला रखैत अछि।

कथा २४३ — आखिरी कटनी (पृ. ५४७–५५६)। आखिरी कटनी जमीन बेचबाक पहिने श्रमक अन्तिम सामूहिक क्रिया अछि। निबन्धन-पत्र क्षेत्रफल, चौहद्दी आ दाम लिखैत अछि, मुदा ‘आखिरी कटनी’ नहि; कथा विधिक अभिलेखक मौन आ देहगत स्मृतिक अन्तर उघारैत अछि।

कथा २४४ — प्रमाण-पत्रक गाम (पृ. ५५७–५६८)। प्रमाण-पत्रक गाम उपलब्धिक प्रमाण आ उपलब्धिक प्रदर्शन बीच अन्तर देखबैत अछि। चौखटा, संख्या आ प्रतिष्ठा बढ़ैत-बढ़ैत जखन तथ्य सँ कटैत अछि, एक बिना-चौखट कागज वास्तविक जाँचक आरम्भ बनैत अछि।

कथा २४५ — स्वच्छता दिवस (पृ. ५६९–५७७)। स्वच्छता दिवस समारोहक चमक आ कूड़ा उठेबाक नियमित व्यवस्था बीच दूरी मापैत अछि।

विद्यालयक दू खाँचा—‘सफाइ भेल’ आ ‘कूड़ा उठल’—एके शब्द ‘स्वच्छ’क भीतर प्रक्रियागत भेद स्पष्ट करैत अछि।

कथा २४६ — पढ़ल-लिखल सभा (पृ. ५७८–५८४)। पढ़ल-लिखल सभा साक्षरताकेँ प्रमाण-पत्रक संख्या नहि, आवेदन अपने पढ़ि-बुझि भरबाक क्षमता सँ नापैत अछि। गलत वा अधूर संख्या स्वीकार करब ‘सम्मान’ गमाय सकैत अछि, मुदा सत्यापनक संस्कृति बनबैत अछि।

कथा २४७ — आदर्श चौक (पृ. ५८५–५९२)। आदर्श चौक नाम-पट्ट बदलैत रहबाक व्यंग्यक बीच वास्तविक खाधि कँ केन्द्रमे आनैत अछि। स्थानक प्रतिष्ठा नामसँ नहि, रख-रखावक इतिहाससँ तय होइत अछि; पुरान पट्ट अभिलेख बनि बचैत अछि।

कथा २४८ — विकासक फीता (पृ. ५९३–५९९)। विकासक फीता एके नालीक बारम्बार उद्घाटन आ अधूर काज पर तीखा किन्तु संयत व्यंग्य अछि। अन्तिम माप सात हाथक ईंट-जोड़ अछि, फीता नहि; उपयोगिता समारोहक भाषाकेँ विस्थापित करैत अछि।

कथा २४९ — प्रतिष्ठित परिवार (पृ. ६००–६११)। प्रतिष्ठित परिवारक बाहरी पट्ट आ घरक भीतर वृद्ध स्त्रीक निजी कोठलीक अधिकार एक-दोसराक आलोचना करैत अछि। सामाजिक प्रतिष्ठाक माप तखन सार्थक होइत अछि जखन घरक प्रत्येक व्यक्तिक स्थान आ स्वत्व मानल जाए।

कथा २५० — अफवाहक दिन (पृ. ६१२–६२०)। अफवाहक दिन नील बाल्टीक संदेश मार्फत डिजिटल अफवाहक सामाजिक यांत्रिकी देखबैत अछि। ‘ठाम, तिथि, स्रोत, उत्तरदायी’ चारि प्रश्न समुदायिक सत्यापनक सरल पद्धति बनैत अछि; कथा उपदेश नहि, व्यवहार-परिवर्तन देखबैत अछि।

कथा २५१ — टॉपरक फोटो (पृ. ६२१–६२७)। टॉपरक फोटो उच्च अंकक स्थिर छवि आ बन्द विज्ञान-प्रयोगशालाक विरोधाभास खोलैत अछि। रश्मि अपन ९४ प्रतिशत कँ असत्य नहि मानैत, मुदा प्रयोगक कमीकेँ दोसर सत्य स्वीकारैत अछि; खुलल केवाड़ी छायाचित्रक अर्थ बदलि दैत अछि।

कथा २५२ — सभसँ स्वच्छ घर (पृ. ६२८–६३५)। सभसँ स्वच्छ घर घरक भीतर चमक आ कचराक बाहर विस्थापनक बीच नैतिक सीमा खोजैत अछि। ‘जतय धरि अपन फेंकल वस्तु दोसरक जीवन बदलि सकैत अछि’—एहि

विचारसँ स्वच्छता निजी आँगन सँ पारिस्थितिक उत्तरदायित्व धरि बढ़ैत अछि।

कथा २५३ — सम्मान समारोह (पृ. ६३६–६४६)। सम्मान समारोहमे गलत नाम प्रतिष्ठाक मूल विरोधाभास बनैत अछि। माला, मंच, सुनहर अक्षरसभ बेकार होइत अछि जँ व्यक्तिक नामे गलत; अन्तिम साधारण लिफाफामे सही नाम सम्मानक वास्तविक न्यूनतम शर्त बनैत अछि।

कथा २५४ — नकल-विरोधी भाषण (पृ. ६४७–६५६)। नकल-विरोधी भाषण स्वयं स्रोत-उल्लेखक प्रश्नमे फँसैत अछि। छात्राक सीधा प्रश्न शिक्षकक भाषणक नैतिकता कँ परीक्षणमे आनैत अछि; ‘स्रोत सहित नोट’ बनब आत्म-संशोधनक महत्त्वपूर्ण क्षण अछि।

कथा २५५ — पुस्तकालय उद्घाटन (पृ. ६५७–६६३)। पुस्तकालय उद्घाटन ताला, छायाचित्र आ सोलह पुस्तकक दृश्यसँ समारोहवादी संस्कृति पर व्यंग्य करैत अछि। पुस्तक जखन पढ़ल जाइत अछि तखन जिल्द घिसैत, पन्ना मुड़ैत —ई घिसावटे जीवित पुस्तकालयक प्रमाण बनैत अछि।

कथा २५६ — जातिक कुर्सी (पृ. ६६४–६७२)। जातिक कुर्सी एकसमान नीला कुर्सीसभ पर अदृश्य सामाजिक विभाजनक नक्शा बनबैत अछि। कुर्सीक स्थायी स्थान हटला पर जातिगत विन्यासक ‘स्वाभाविकता’ टूटैत अछि; वस्तुक समानता सामाजिक नियमक कृत्रिमता उघारैत अछि।

कथा २५७ — डिजिटल गाम (पृ. ६७३–६८०)। डिजिटल गाम चमकैत बोर्ड आ कमजोर जाल-संयोजनक विरोधाभास अछि। आरतीक नब नक्शा ‘पूर्ण’ शब्द स्वीकार नहि करैत जखन धरि सभ टोला जुड़ल नहि; घोषणाक बदला पहुँच वास्तविक माप बनैत अछि।

कथा २५८ — गरीबक प्रमाण (पृ. ६८१–६८८)। गरीबक प्रमाण निःशुल्क कागज बनबेबाक लुकायल लागत—छुटल मजूरी, यात्रा, प्रतीक्षा, कागज—गिनैत अछि। प्रमाण-पत्र गरीबीक संख्या लिखैत अछि, मुदा गरीबी प्रमाणित करबाक श्रम अलग हिसाब माँगैत अछि।

कथा २५९ — मौन समिति (पृ. ६८९–६९७)। मौन समिति ‘गुप्तता’ आ ‘चुप रहू’ बीचक अन्तर खोलैत अछि। शिकायतक विषय, अवस्था आ उत्तर

सार्वजनिक होएबाक बाद समिति सचमुच सुनबाक संस्था बनैत अछि; मौन अब शिकायतकर्ताक बाध्यता नहि, सुननिहारक अनुशासन अछि।

कथा २६० — आदर्शविवाह (पृ. ६९८–७१०)। आदर्शविवाह सार्वजनिक दहेज-विरोधी नारा कैं घरक उपहार, अपेक्षा आ सूक्ष्म नियंत्रण पर जाँचैत अछि। पाँच प्रश्नक पुस्तिका मंचक घोषणाकैं घरेलू व्यवहारक कसौटी पर राखैत अछि; आत्मालोचना कथा कैं प्रचार-पत्र बनबासँ बचबैत अछि।

कथा २६१ — सभक विचार (पृ. ७११–७१८)। सभक विचार ‘हम सभ स्वतंत्र सोचैत छी’ वाक्यक सामूहिक दोहरावमे निहित विडम्बना पकड़ैत अछि। जखन आरम्भिक वाक्य ढँकि जाइत अछि, एक स्वरक जगह अनेक विषय उठैत अछि; स्वतंत्र विचार घोषणा नहि, प्रक्रिया बनैत अछि।

कथा २६२ — पुरस्कारक पात्र (पृ. ७१९–७२७)। पुरस्कारक पात्र सेवा, आवेदन आ श्रेयक संस्थागत विभाजन देखबैत अछि। नवल आवेदन भरैत अछि, असल काज आन लोक करैत अछि; अन्तमे ‘आवेदन भरनिहार’ आ ‘सेवा करनिहार’ अलग लिखब श्रेयक नैतिक शुद्धि अछि।

कथा २६३ — नया नियम (पृ. ७२८–७३६)। नया नियम बारम्बार नियम बनायब आ दुआर रोकने आलमारी नहि हटायबक विडम्बना अछि। समस्या व्यवहारिक अवरोधमे अछि, मुदा संस्था भाषिक नियम बढ़बैत अछि; आलमारी हटब सिद्धान्त सँ पहिने संरचनात्मक बाधा देखबाक आग्रह अछि।

कथा २६४ — भीतरक आलमारी (पृ. ७३७–७४५)। भीतरक आलमारी परिवारक स्त्रीसभक कागज, पहचान आ चाबी-स्वामित्वक घरेलू अभिलेख अछि। सुषमाक पातर नस्ती बतबैत अछि जे ‘परिवारक कागज’ बहुत बेर पुरुष-केंद्रित रहैत अछि; अलग चाबी व्यक्तिगत अस्तित्वक मान्यता बनैत अछि।

कथा २६५ — छत परक दू घंटा (पृ. ७४६–७५६)। छत परक दू घंटा घरक दैनिक सेवा-श्रृंखलासँ बाहर दू स्त्रीक अनियोजित समय बनबैत अछि। बातचीतक मूल्य एहि मे अछि जे तुरन्त कोनो काज पूरा नहि करबाक अनुमति भेटैत अछि; ‘सभ काज तुरन्त जरूरी नहि’ घरेलू समय-राजनीतिक वाक्य बनैत अछि।

कथा २६६ — बहूक कमरा (पृ. ७५७–७६५)। बहूक कमरा ‘अपन कोठली’क वचन आ ओकरा धीरे-धीरे भंडार बनाओल जाएबाक अन्तर देखबैत अछि। नब कम्बल दुआर पार करबाक पहिने अनुमति माँगैत अछि—निजी स्थानक अधिकारक छोट किन्तु ठोस पुनर्स्थापना।

कथा २६७ — मायकेक चाबी (पृ. ७६६–७७७)। मायकेक चाबी विवाहोत्तर स्त्रीक मायके-संबंधक बदलैत रूपक अछि। चाबी एखनहुँ अछि, मुदा भीतर कियो रहला पर घंटी उचित; कथा अधिकार खोएबाक सरल विलाप नहि, सम्बन्धक नब शिष्टता आ स्वायत्तता खोजैत अछि।

कथा २६८ — सिलाइ खर्च (पृ. ७७८–७९१)। सिलाइ खर्च घरेलू स्त्री-श्रमक अदृश्य अर्थशास्त्र खोलैत अछि। धागा, मशीन, समय, ग्राहक आ घरक खर्चक हिसाब जखन लिखित होइत अछि, ‘घरमे कएल काज’ निःलागत मानबाक भ्रम टूटैत अछि।

कथा २६९ — परीक्षा फार्म (पृ. ७९२–८०१)। परीक्षा फार्म सीमित पाइ, दू तारीख आ परिवारक शैक्षिक प्राथमिकता बीच संघर्ष रचैत अछि। संस्थासँ सीधे बात कएलापर एक ‘अन्तिम’ तिथि वास्तवमे लचीली निकलैत अछि; तथ्य-पूछताछ भयक कृत्रिम तात्कालिकता घटबैत अछि।

कथा २७० — रसोइक दरबज्जा (पृ. ८०२–८११)। रसोइक दरबज्जा घरक भोजन-व्यवस्था पाछाँ स्त्री आ घरेलू कामगारक समय अदृश्य रहबाक प्रश्न उठबैत अछि। खड़िया-पट्टी पर फूलोक अपन चाहक समय लिखब रसोइकेँ एकतरफा सेवा-स्थल सँ साझा समय-सारिणी दिस मोड़ैत अछि।

कथा २७१ — लाल बक्सा (पृ. ८१२–८१७)। लाल बक्सा परिवारक जिज्ञासा आ वृद्ध स्त्रीक निजताक सीमा अछि। बक्सा अन्त धरि बन्द रहैत अछि, मुदा ई पराजय नहि; कथा ‘जानबाक अधिकार’ सँ ‘नहि खोलबाक अधिकार’ दिस नैतिक दृष्टि सरकबैत अछि।

कथा २७२ — बहिनक फोन (पृ. ८१८–८२८)। बहिनक फोन रातिक फोन पर परिवारक उत्सुकता आ स्त्रीक निजी संवादक प्रश्न उठबैत अछि। अन्तमे संदेश आबैत अछि आ कियो ‘ककर?’ नहि पूछैत—निजता असामान्य छूट नहि, घरक साधारण व्यवहार बनैत अछि।

कथा २७३ — किरायेदार कन्या (पृ. ८२९–८३५)। किरायेदार कन्या नर्सक रातिक पाली आ मकान-मालकिनक दस बजेक साँकल बीच नगरीय स्त्री-गतिशीलताक संघर्ष अछि। घरक सुरक्षा-नियम पेशागत जीवनक वास्तविकता अनुसार बदलैत अछि; गलीक रात्रि-ध्वनि धीरे-धीरे नैतिक आतंक खोबैत अछि।

कथा २७४ — उपहारक साड़ी (पृ. ८३६–८४२)। उपहारक साड़ी उपहार आ निरन्तर नियंत्रणक सूक्ष्म सीमा देखबैत अछि। साड़ी पाबनिहार मधुलिका जखन अपन कटाई-सिलाइ निर्णय अपने करैत अछि, उपहार स्मृति रहैत अछि, स्वामित्व दाताक न रहैत।

कथा २७५ — भोजनक मेज (पृ. ८४३–८५५)। भोजनक मेज आधुनिक फर्नीचर आयलापर पुरान लैंगिक भोजन-क्रम अपने नहि बदलैत, ई देखबैत अछि। पाँचम कुर्सीक खुलब चार-कुर्सीवला संरचनामे अनिर्धारित सदस्य लेल स्थान बनबैत अछि; व्यवस्था अपन आकार बदलैत अछि।

कथा २७६ — चुप्पीवाली मामी (पृ. ८५६–८६३)। चुप्पीवाली मामी शारदाक मौन कैं सहमति मानि लेबाक पारिवारिक आदत पर प्रश्न उठबैत अछि। जखन हुनका सीधा पूछल जाइत अछि, ओ स्थान, इच्छा आ जीवनक चयन स्पष्ट करैत छथि; सुननाइ कथाक मुख्य नैतिक क्रिया अछि।

कथा २७७ — पार्लरक शीशा (पृ. ८६४–८७३)। पार्लरक शीशा विवाहपूर्व सौन्दर्य-निर्देशसभक लिखित चौखटा आ स्त्रीक आत्म-दृष्टिक संघर्ष अछि। पर्ची हटला पर चेहरा ‘खाली’ नहि, पूरा देखाइत अछि; चयनित रंग, थकान, आँसू, हँसी सभ एके प्रतिबिम्बक भाग बनैत अछि।

कथा २७८ — नौकरीक पहिल महीना (पृ. ८७४–८८६)। नौकरीक पहिल महीना स्त्रीक पहिल तनखाह कैं तुरन्त ‘घरक सहारा’ मानि लेबाक सामाजिक प्रवृत्ति देखबैत अछि। संजना आय कैं परिवारसँ काटैत नहि, मुदा अपन खर्च, समय आ निर्णयक खाता सेहो बचबैत अछि—आय साझा अछि, व्यक्तित्व विलीन नहि।

कथा २७९ — पुरान पेटीकोट (पृ. ८८७–९००)। पुरान पेटीकोट वस्त्रक भीतर छिपल घरेलू श्रम, दुर्घटना, आराम आ देहक इतिहास खोलैत अछि। जानि-

बुझि देखाइत पीयर टेढ़ सीवन अदृश्य मरम्मत-संस्कृतिक विरुद्ध स्मृति-चिन्ह बनैत अछि।

कथा २८० — अतिथि कमरा (पृ. ९०१–९०८)। अतिथि कमरा घरमे चारि कोठली रहितो वृद्ध देवकी देवीक ‘अपन कोठली’ न हेबाक विरोधाभास अछि। देवाल पर घड़ी टँगनाइ अस्थायी बिछाओनक ठाम स्थायित्वक पहिल दावा बनैत अछि।

कथा २८१ — गुप्त बचत (पृ. ९०९–९१८)। गुप्त बचत एक ठाम छिपायल नकद नहि, बजारक अनेक भरोसा-संबंधमे बिखरल छोट-छोट जमा अछि। कथा स्त्रीक अनौपचारिक वित्तीय बुद्धि, जोखिम-वितरण आ आपतिक स्वायत्तताकेँ घरेलू अर्थनीतिक वैकल्पिक प्रणाली रूपेँ देखबैत अछि।

कथा २८२ — फोटोमे नहि रहल स्त्री (पृ. ९१९–९२६)। फोटोमे नहि रहल स्त्री परिवारक छायाचित्र-इतिहासमे अनुपस्थित, मुदा आयोजन आ देखभालमे सर्वत्र उपस्थित मंजरी देवीक कथा अछि। अन्तमे हुनकर नाम काजक पाछाँ नहि, अपन छविक पाछाँ लिखल जाइत—प्रतिनिधित्व आ श्रमक अन्तर कम होइत अछि।

कथा २८३ — नामक प्लेट (पृ. ९२७–९३३)। नामक प्लेट बाहरी पट्ट पर पुरुषक नाम आ घरक भीतर स्त्रीक अदृश्य प्रबन्धक काम बीच दूरी उघारैत अछि। चारू नाम एके पट्ट पर आएब केवल प्रतीक नहि; सार्वजनिक पतेमे घर चलौनिहार सभक अस्तित्व दर्ज होइत अछि।

कथा २८४ — तीसरी सीढ़ी (पृ. ९३४–९४३)। तीसरी सीढ़ी परिचित घरक दू पायदान बीच असम्भव तेसर पायदानक अनुभवसँ आरम्भ होइत अछि। कथा वृद्ध देह, स्मृति आ वास्तु-ज्ञानक निश्चितता केँ अस्थिर करैत अछि; अन्तिम ढलुआ समाधान अद्भुत कारण नहि बुझबैत, मुदा चलबाक अधिकार सुनिश्चित करैत अछि।

कथा २८५ — उल्टा कैलेंडर (पृ. ९४४–९५६)। उल्टा कैलेंडर घर छोड़बाक निश्चित तारीखक बीच असम्भव ‘एकतीस सितम्बर’ जेकाँ पन्नासभ उघारैत अछि। समयक प्रशासनिक क्रम आ पारिवारिक अपूर्ण स्मृति अलग लयमे चलैत अछि; असम्भव पन्ना अनिर्णीत भावनात्मक समयक ठाम बनैत अछि।

कथा २८६ — बन्द कमराक हवा (पृ. ९५७–९६८)। बन्द कोठलीक हवा खोललाक बाद ऋतु बदलि देबाक असम्भव अनुभव रचैत अछि। अवलोकन स्वयं वस्तु बदलैत अछि—ई कथाक ज्ञानमीमांसक उलझन अछि; केवाड़ी बन्द रहला पर 'जानब' आ 'घटना बचेनाइ' एक-दोसराक विरोधी बनैत अछि।

कथा २८७ — बिना मालिकक छाया (पृ. ९६९–९८२)। बिना मालिकक छाया बजारक साझा अवलोकनसँ धीरे-धीरे पहिचानल असामान्य सत्ता अछि। लोक ओकर कारण नहि पबैत, मुदा बाट सीखि लैत अछि; अनिश्चितताकेँ मिटेबाक बदला व्यवहारिक सह-अस्तित्व अद्भुतक सामाजिक रूप बनैत अछि।

कथा २८८ — स्टेशन जे नक्शामे नहि (पृ. ९८३–९८८)। स्टेशन जे नक्शामे नहि दृष्टिकोण-निर्भर अस्तित्वक कथा अछि। कदम्बबारी विशिष्ट खिड़कीक फाँकसँ देखाइत अछि, मानचित्रमे नहि; प्रभाकर अन्ततः नक्शामे स्टेशनक बिन्दु नहि, खिड़कीक आयत बनबैत छथि—दर्शक-स्थान प्रमाणक हिस्सा बनैत अछि।

कथा २८९ — आधा बजल घड़ी (पृ. ९८९–९९५)। आधा बजल घड़ी पूरा घंटीक बीच एक 'बीचक समय' खोलैत अछि जाहिमे काज अधूरा रहि सकैत अछि। पात्र टिक, कार्य आ घटनाक पाँजि बनबैत अछि, मुदा कारण अन्त तक नहि पकड़ैत; कथा मापन आ रहस्यक सह-अस्तित्व राखैत अछि।

कथा २९० — दोसर दरबज्जा (पृ. ९९६–१००३)। दोसर दरबज्जा परिचित फ्लैटक पश्चिम देबालमे नब वास्तु-संभावना उघारैत अछि। घर धीरे-धीरे एहन स्थान बनैत अछि जे स्वयंकेँ दोसर कोणसँ देखैत हो; परिवार घर छोड़ैत अछि, मुदा प्रश्न खाली कोठलीमे रहि जाइत अछि।

कथा २९१ — नाम बदलैत गली (पृ. १००४–१००९)। नाम बदलैत गली प्रतिदिन बदलैत नाम आ स्थिर नगर-खण्ड/घर-संख्याक विरोधाभास अछि। नाम स्मृतिसँ खसैत अछि, संख्या संदर्भ बचबैत अछि; कथा 'नाम' आ 'पहिचान' समान नहि, ई सूक्ष्म भेद उघारैत अछि।

कथा २९२ — एक अतिरिक्त खिड़की (पृ. १०१०–१०१५)। एक अतिरिक्त खिड़की घरक वास्तविक तीन खिड़की आ बिक्री-छायाचित्रक चारि खिड़की बीच

प्रमाण-संघर्ष रचैत अछि। नाप, निजी छवि आ विज्ञापन एकमत नहि; खाली कागजक पट्टी निर्णय स्थगित करैत अछि आ प्रतिनिधित्वक अस्थिरता बचबैत अछि।

कथा २९३ — आवाजक कमरा (पृ. १०१६–१०२२)। आवाजक कोठली रिक्त स्थानमे भविष्य/अतीतक वाक्य जेकाँ सुनाइ देबासँ समयक क्रम अस्थिर करैत अछि। अन्ततः नव परिवारक वर्तमान आवाज कथाकारक कानकेँ फेर वर्तमानमे आनैत अछि; रहस्य समाधान नहि, सुनबाक अनुशासन बदलैत अछि।

कथा २९४ — बस संख्या शून्य (पृ. १०२३–१०३०)। बस संख्या शून्य निश्चित गन्तव्य बिना चलैत रात्रि-बसक माध्यमसँ जीवन-निर्णयक संक्रमणकाल रचैत अछि। खाली गन्तव्य-पर्ची अनिर्णयक कमजोरी नहि; इशानी पहिने घर, संवाद आ तथ्य पूरा करब चाहैत छथि, तकर बाद निर्णय लिखतीह।

कथा २९५ — कागजक वर्षा (पृ. १०३१–१०३७)। कागजक वर्षा छापाखानासँ काटल, गलत वा त्यागल पन्नासभ केँ आकाशसँ फेर शहर पर बरसबैत अछि। त्रुटि नष्ट नहि, सार्वजनिक रूपेँ लौटैत अछि; सही तारीख भीतर सुरक्षित रहब पाठ-संशोधन आ उत्तरदायित्वक रूपक अछि।

कथा २९६ — नक्शाक पोखरि (पृ. १०३८–१०४५)। नक्शाक पोखरि धरतीक पानि बढ़ला पर नक्शाक नीला रंग घटब आ उलट सम्बन्धक रहस्य रचैत अछि। मृदुला कारण गढ़ैत नहि; ओ दू स्वतंत्र अवलोकन दर्ज करैत छथि—अनुमान सँ पहिने प्रमाण-संग्रहक अनुशासन कथाक केन्द्र अछि।

कथा २९७ — उलटल प्रतिबिम्ब (पृ. १०४६–१०५४)। उलटल प्रतिबिम्ब देहक क्रिया आ अएनाक क्रियाक समय अलग करैत अछि। मीरा प्रयोगपूर्वक देखैत छथि जे प्रतिबिम्बक ‘बकाया’ क्रिया कखन पूरा होइत; कथा आत्म-छवि केँ प्रतिलिपि नहि, विलम्बित दोसरता बनबैत अछि।

कथा २९८ — गायब बुधदिन (पृ. १०५५–१०६४)। गायब बुधदिन घरेलू दिन-पाँजि आ पाँच कुर्सीक विचित्र सम्बन्ध बनबैत अछि। मंगल राति एको खाली कुर्सी नहि रहला पर बुधदिन लोप पबैत; एक खाली स्थान बचेनाइ समयक निरन्तरता लेल शर्त बनैत अछि—‘अभाव’ सकारात्मक संरचना ग्रहण करैत अछि।

कथा २९९ — पाँचम कोना (पृ. १०६५–१०७५)। पाँचम कोना चौकोर घरक भीतर नब, खिसकैत कोणसँ माप आ वास्तुक निश्चितता विफल करैत अछि। सरोज अन्ततः लगातार नाप छोड़ि पाँचम कोनामे बैसि पुस्तक पढ़ैत छथि; ज्ञानक एक रूप नियंत्रणसँ सह-अस्तित्व दिस सरकैत अछि।

कथा ३०० — अपरिचित अपन घर (पृ. १०७६–१०८९)। अपरिचित अपन घर तीन दिन बाद लौटला पर अपन वस्तुसभक अनजान व्यवस्था देखबैत अछि। विनय पहिने भय, बादमे जिज्ञासा चुनैत छथि; अन्तिम एक अँगुर कुर्सी खिसकाब स्वयं परिवर्तनमे भागीदारीक सूक्ष्म स्वीकृति अछि।

५. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

५.१ रस : करुण, शान्त, हास्य आ अद्भुतक संयमित विन्यास

संग्रहक पहिल चारि चक्रमे करुण रसक आधार दुःखक प्रदर्शन नहि, अभाव आ असमानताक साधारण अनुभव अछि—पैसाक कमी, अकेलापन, वृद्धावस्था, श्रमक अदृश्यता, घरमे अपन स्थानक कमी, कागज पर गलत नाम। एहि करुणक साथ शान्त रस बेराबेरी अन्तिम दृश्यमें आबैत अछि: खाली थैला हवा सँ खुलैत अछि; दूनू वृद्धक हाथ पर रौदक अन्तिम टुकड़ा पड़ैत अछि; बाँसुरीक बाद पीपरक पात सुनाइत अछि; नव गद्दाक बीचक समतल जगह खाली नहि रहैत। भावक निष्पत्ति उच्च स्वरमे नहि, वस्तु आ मौनक संग होइत अछि।

संस्थागत कथासभमे हास्य आ व्यंग्य गौण रस रूपेँ प्रभावी अछि—एके नालीक बेराबेरी उद्घाटन, ‘पूर्ण डिजिटल’ बोर्डक नीचाँ जाल-अभाव, ‘स्वतंत्र सोच’क सामूहिक दोहराव, नकल-विरोधी भाषणक स्रोत-संकट। हास्य पात्रकेँ अपमानित करबाक बदला व्यवस्था केँ आत्मदृष्टि दैत अछि। अन्तिम सत्रह कथामे अद्भुत रस प्रमुख होइत अछि, मुदा भयावहता पूर्ण अधिकार नहि लैत; जिज्ञासा, मापन, अवलोकन आ सह-अस्तित्व अद्भुतकेँ नियंत्रित करैत अछि।

५.२ ध्वनि : कथाक असल अर्थ अन्तिम वस्तु-स्थिति मे

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्तक आलोचनात्मक उपकरणसँ देखला पर संग्रहक सबलता प्रत्यक्ष कथन सँ अधिक संकेतित अर्थमे अछि। ‘खाली थैला’मे लेखक ‘पीढ़ीगत हस्तान्तरण’ नहि कहैत; पाँजि, बटखरा आ काँटा बेटी लग रहि

जाइत अछि, थैला खाली घुरैत अछि। ‘फोटोमे नहि रहल स्त्री’मे प्रतिनिधित्वक राजनीति पर भाषण नहि; अन्तमे स्त्री अपन नाम अपन छविक पाछाँ लिखैत अछि। ई अर्थक अतिरिक्त स्तर कथा-पाठक सहृदय सक्रियता माँगैत अछि।

५.३ औचित्य आ वक्रोक्ति

भाषा प्रायः पात्र, स्थान आ सामाजिक स्तर अनुरूप सरल अछि। कथाक निष्कर्षमे उपदेशात्मक विस्तार कम रहला कारण औचित्य बनल रहैत अछि। वक्रोक्तिक दृष्टिसँ साधारण वस्तु कैं तिरछा अर्थ देनाइ मुख्य शिल्प अछि—फीता विकासक माप बनैत अछि, कुर्सी जातिक नक्शा, आलमारी नियमक भौतिक बाधा, खाली कुर्सी बुधदिनक शर्त, खिड़की प्रमाणक दृष्टिबिन्दु। वस्तु अपन सामान्य उपयोग छोड़ैत नहि; ओकरा पर नब अर्थक परत चढ़ैत अछि।

६. पाश्चात्य कथाशास्त्रीय समीक्षा

६.१ क्रिया, परिवर्तन आ लघु कथानक

अरस्तू-केंद्रित कथानक-दृष्टिसँ ई कथासभक क्रिया प्रायः सूक्ष्म अछि। बाहरी घटना छोट—मग टूटब, नल बन्द होएब, फीता कटब, आलमारी हटब, चाबी घुमब, फोटो बनब—मुदा एतहि सँ पात्रक निर्णय-क्रम बदलैत अछि। अनेक कथा मे ‘पहिचान’क क्षण अछि: समस्या जे बुझल जा रहल छल, असल समस्या दोसर निकलैत अछि। स्वच्छता घरक आँगन नहि, कचराक यात्रा अछि; साक्षरता प्रमाण नहि, आवेदन अपने भरबाक क्षमता; सम्मान मंच नहि, सही नाम।

६.२ समय, आवृत्ति आ दृष्टिबिन्दु

जेरार जेनेट (Gérard Genette)क समय-विश्लेषणक भाषामे अधिकांश कथासभ क्रमिक कथन अपनबैत अछि, मुदा पुनरावृत्त दिनचर्या—रविक कपड़ा, बजारक दिन, पानि आबयब, बैठक, दवा, फोन, दूध, खेतक पालि—एक बेर कथित भऽ कऽ दीर्घ सामाजिक समयक अनुभूति दैत अछि। दृश्यात्मक क्षणमे कथन धीमा होइत अछि: काँटा बीचमे ठहरब, थैला हलुक होएब, रौद हाथ पर रहि जाएब, नाम-पट्ट पोंछब। दृष्टिबिन्दु प्रायः निकट तृतीय पुरुष अछि; कथाकार पात्रक ऊपर सर्वज्ञ नैतिक निर्णय लादैत नहि।

६.३ समय-स्थान : गामक पथार सँ नगरीय ओसारा धरि

मिखाइल बाख्तिन (Mikhail Bakhtin)क समय-स्थानक अवधारणा सँ संग्रहक प्रमुख स्थानसभक अर्थ स्पष्ट होइत अछि। ओसारा निजी आ सार्वजनिक बीचक सीमा; बजार विनिमय आ प्रतिष्ठाक क्षेत्र; खेत ऋतु, श्रम आ मालिकानाक समय; पंचायत-ओसारा सार्वजनिक भाषाक मंच; रसोइ घरेलू समय-वितरणक केन्द्र; रेलवे/बस-पड़ाव संक्रमणक ठाम; अन्तिम चक्रक खिड़की, दुआर, कोना आ नक्शा वास्तविकताक दृष्टिगत शर्त बनैत अछि।

६.४ अपरिचयीकरण आ अद्भुत-अनिश्चय

विक्टर श्क्लोव्स्की (Viktor Shklovsky)क अपरिचयीकरणक विचारसँ देखला पर संग्रह पहिलहि कथा सँ परिचित वस्तुकेँ फेर देखेबैत अछि; मुदा कथा २८४–३०० मे ई युक्ति अस्तित्वगत स्तर धरि पहुँचैत अछि। दू सीढ़ी तीन होइत अछि, परिचित घरमे दोसर दुआर, नक्शा आ धरती विपरीत व्यवहार करैत अछि। त्वेतान तोदोरोव (Tzvetan Todorov)क अद्भुत-अनिश्चयक कसौटीक निकट अनेक कथा प्राकृतिक/अप्राकृतिक व्याख्याक बीच निर्णय स्थगित रखैत अछि। महत्त्वपूर्ण ई जे पात्र अन्धविश्वास दिस नहि, अवलोकन आ पुनर्परीक्षण दिस जाइत छथि।

७. नव्य-न्याय आधारित समीक्षा

७.१ प्रमाण आ प्रमाणक क्षेत्र

नव्य-न्यायक प्रेरित पठनमे संग्रहक सर्वाधिक उल्लेखनीय प्रवृत्ति ‘कथनक आधार की?’ प्रश्न अछि। कथा २३८ मे सरकारी पाँजि कहैत अछि पानि छोड़ल गेल, स्थानीय पाँजि कहैत अछि कतय पहुँचल। कथा २४५ मे ‘सफाइ भेल’ आ ‘कूड़ा उठल’ अलग तथ्य। कथा २५० स्रोत, तिथि, ठाम आ उत्तरदायी पूछैत अछि। कथा २९६ मे मृदुला कारण गढ़बाक बदला नक्शा आ धरतीक दू स्वतंत्र अवलोकन लिखैत छथि। एहि सभमे प्रत्यक्ष, शब्द, स्मृति, लिखित अभिलेख आ अनुमानक क्षेत्र अलग राखबाक अनुशासन अछि।

७.२ लक्षण : शब्दक परिभाषा केँ व्यवहार सँ शुद्ध करब

‘स्वच्छ’, ‘साक्षर’, ‘आदर्श’, ‘प्रतिष्ठित’, ‘पूर्ण डिजिटल’, ‘स्वतंत्र’, ‘सम्मान’, ‘गरीब’, ‘दहेज-मुक्त’ जेकाँ शब्द पहिने व्यापक दावा रूपेँ अबैत अछि। कथा बादमे प्रश्न करैत अछि—लक्षण की? जँ घर साफ मुदा कचरा पड़ोसीक जमीन पर, तखन स्वच्छता? जँ प्रमाण-पत्र अछि मुदा आवेदन अपने नहि भरि सकैत, तखन साक्षरता? जँ बोर्ड चमकैत मुदा जाल नहि, तखन पूर्ण डिजिटल? ई लक्षण-शुद्धि नव्य-न्यायिक सूक्ष्मताक साहित्यिक समतुल्य समस्या-संरचना प्रस्तुत करैत अछि।

७.३ अभाव : खालीपनक सकारात्मक भूमिका

एहि संग्रहमे अभाव केवल ‘किछु नहि’ नहि अछि। खाली थैला अधिकार-हस्तान्तरणक साक्ष्य अछि; खाली बथान भविष्यक उपयोगक क्षमता; फोटोमे स्त्रीक अभाव अभिलेखीय मौन; खाली कुर्सी बुधदिनक निरन्तरताक शर्त; नक्शामे स्टेशनक अभाव दृष्टिबिन्दुक सीमा; घरक पाँचम कोना मापनक अपूर्णता। नव्य-न्यायिक अभाव-विचारक आलोकमे ई कथासभ देखबैत अछि जे अनुपस्थिति सेहो ज्ञान उत्पन्न करैत अछि, बशर्ते ओकर स्थान, सम्बन्ध आ अपेक्षा स्पष्ट हो।

७.४ उपाधि, सीमांकन आ प्रतिपक्ष

अनेक सार्वजनिक दावा छिपल शर्त कारण विफल होइत अछि। ‘नियम बढ़ाउ’ समाधान नहि जँ दुआरमे आलमारी ठाढ़ अछि; ‘सड़क बनाउ’ पर्याप्त नहि जँ जलनिकास बन्द; ‘सम्मान दिअ’ पर्याप्त नहि जँ नाम गलत; ‘स्वतंत्र सोच’ पर्याप्त नहि जँ सभ एके वाक्य दोहरबैत अछि। ई छिपल शर्त उपाधि-जेकाँ दावाक सार्वत्रिकता रोकैत अछि। कथासभक संवाद पूर्वपक्ष–उत्तरपक्षक लघु रूप बनैत अछि—एक पात्र दावा करैत, दोसर अपवाद देत, वस्तु वा परिणाम अंतिम परीक्षण प्रस्तुत करैत अछि।

८. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सँ पुनर्पाठ

८.१ अनेक स्रोत, एक घटना

समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक मूल लाभ ई संग्रहमे स्पष्ट अछि: राज्यक कागज, पारिवारिक पाँजि, मौखिक स्मृति, भौतिक निशान, स्थानीय उपयोग आ देहगत अनुभव एके घटना पर अलग सूचना देत अछि। ‘आखिरी कटनी’क

निबन्धन-पत्र श्रमक अन्तिमता नहि लिखैत; ‘बाढ़िक निशान’क देबाल तारीख नहि लिखैत, परिवार घटना-स्मृति सँ समय चिन्हैत; ‘झोपड़ीक नक्शा’मे प्रशासनिक खालीपन जमीनक वास्तविक आवास कँ मिटा नहि सकैत। इतिहास एतय दस्तावेजक नकार नहि, स्रोतसभक तुलनात्मक अनुशासन अछि।

८.२ केन्द्र–सीमान्त आ अदृश्य श्रम

कथा-संग्रहक अनेक पात्र औपचारिक केन्द्रसँ बाहर छथि—डोम कलाकार, चरबाहा, रखबार, घरेलू स्त्री, सिलाइ-कर्मचारी, किरायेदार नर्स, स्थानीय पाँजि राखनिहार, वृद्धा, कचरा उठौनिहार। कथा हुनका ‘पीड़ित प्रतिमा’ बनबैत नहि; हुनकर ज्ञान, समय, श्रम आ निर्णय-सामर्थ्य देखबैत अछि। समानान्तर दृष्टि एहि आवाजसभकँ मुख्य स्रोतक पूरक सजावट नहि, स्वतन्त्र प्रमाण-बिन्दु मानैत अछि।

८.३ स्मृति बनाम महिमामंडन

ग्रामीण चक्रक शक्ति ई अछि जे पुरान व्यवस्था स्वतः श्रेष्ठ घोषित नहि। बैल-हल, बथान, रोपनी गीत, कच्ची सड़क, बगीचा—सभक संग स्मृति अछि, मुदा नब ट्रैक्टर, सड़क, नाप, पाँजि आ तकनीक आवश्यक सेहो अछि। आलोचना एतय ‘पुरान बचाउ’ नहि; प्रश्न ई अछि जे बदलावमे कोन ज्ञान, सम्बन्ध आ दायित्व नष्ट भऽ रहल अछि, आ कोन नब व्यवस्था ओकरा न्यायपूर्ण ढंगसँ समेटि सकैत अछि। ई दृष्टि प्रमाणहीन गौरवगान सँ बचबैत अछि।

८.४ आत्म-संशोधन : समानान्तर पद्धतिक सबल नैतिक सूत्र

कथा २५४ मे शिक्षक अपन स्रोत-चूक स्वीकारैत छथि; कथा २६० मे दहेज-विरोधी वक्ता अपन घरक पाँच प्रश्न देखैत छथि; कथा २४६ मे साक्षरता-सम्मानक आवेदन सत्य संख्या कम होएबो पर सच लिखैत अछि। एहि उदाहरणसभमे आलोचना केवल ‘दोसरा’ पर नहि चलैत। जे माप समाज पर लागू, ओ स्वयं परो लागू—ई आत्म-संशोधन संग्रहक नैतिक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

९. प्रमुख शिल्पगत उपलब्धि

पहिल उपलब्धि वस्तु-केंद्रित कथन अछि। थैला, मग, तार, पर्ची, गद्दा, खूँटा, घंटी, फीता, कुर्सी, आलमारी, चाबी, पेटी, अएना, दिन-पाँजि, खिड़की—ई सभ कथाक 'प्रॉप' मात्र नहि, निर्णयक इतिहास राखैत अछि। दोसर उपलब्धि अनकहल अन्त अछि; कथा प्रायः अंतिम नैतिक वाक्य नहि दैत, दृश्य छोड़ैत अछि। तेसर, सामाजिक आलोचना पात्र-विरोधी नहि; व्यवस्था बदलल जा सकैत अछि कारण पात्र गलती मानि सकैत छथि। चारिम, समकालीन तकनीकी वस्तु—चल-दूरभाष, जाल-संयोजन, मशीन—लोकजीवनक बाहरी सजावट नहि, नब नैतिक सम्बन्धक साधन बनैत अछि। पाँचम, अन्तिम सत्रह कथा पहिलक यथार्थवादी वस्तु-शैली कैं अद्भुत क्षेत्रमे लऽ जाइत अछि; तैं संग्रहक अन्त अचानक अलग पुस्तक जेकाँ नहि, पहिने सँ विकसित 'वस्तु कैं फेर देखू' युक्तिक चरम रूप बुझाइत अछि।

१०. आलोचनात्मक सीमासभ

संग्रहक एक महत्त्वपूर्ण सीमा शिल्पक अत्यधिक नियमितता अछि। अनेक कथामे समान क्रम देखाइत अछि—साधारण वस्तु/समस्या; दू वा तीन पात्रक संवाद; कागज, पाँजि, नाप वा सूची; छोट आत्मबोध; संयत अन्तिम दृश्य। ई स्थिरता संग्रहक पहिचान बनबैत अछि, मुदा एक सय कथा लगातार पढ़ला पर सूत्रबद्ध लयक अनुभूति हो सकैत अछि। विशेषतः संस्था-केंद्रित कथासभमे 'घोषणा बनाम वास्तविकता' संरचना बेराबेरी लौटैत अछि। विविध कथाकार-स्वर, असफल आत्म-संशोधन, गम्भीर नैतिक अस्पष्टता वा पूर्णतः अविश्वसनीय दृष्टिबिन्दु बढ़लासँ बनावट आरो बहुरंगी भऽ सकैत छल।

दोसर सीमा किछु कथामे संवादक अत्यधिक कार्यात्मक होएब अछि। पात्र बहुत बेर प्रश्न–उत्तरक माध्यमसँ विचार साफ करैत छथि; एहन ठाम भाषा जीवित बातचीत सँ कने अधिक तर्क-प्रदर्शन लगि सकैत अछि। तेसर, ग्रामीण कथा-संसारमे जाति, भूमिहीनता आ श्रम-संबंध उपस्थित अछि, मुदा किछु ठाम सामाजिक टकरावक तीक्ष्णता समाधानक व्यवहारिकता मे जल्दी नरम भऽ जाइत अछि। ई दोष सर्वत्र नहि, मुदा आलोचनात्मक पठनमे ध्यान देबाक बिन्दु अछि।

११. शुद्ध मैथिली निखार-परीक्षण

भाषिक स्तर पर पोथीक मूल स्वर प्रवाहमय मैथिली अछि, मुदा सम्पूर्ण निखार लेल किछु शब्द-रूप व्यवस्थित रूपेँ एकरूप करबाक आवश्यकता अछि। नीचाँक गणना सम्पूर्ण आधार-पोथीमे रूप-उपस्थिति पर आधारित अछि; एके शब्द उद्धरण, शीर्षक वा पात्रक बोलीमे सेहो आबि सकैत अछि, तेँ सम्पादकीय निर्णय प्रसंग देखि करबाक चाही।

देखल रूप	लगभग उपस्थिति	निखार लेल वांछित रूप	टिप्पणी
कमरा	८२	कोठली	विशेषत: कथा-शीर्षक आ घरेलू स्थानमे एकरूपता अपेक्षित।
दरवाजा	१३	केवाड़ी	‘दरबज्जा’ सेहो बहुत ठाम अछि; शुद्ध रूप एकरूप कएल जाए।
पानी	३५	पानि	पोथीमे ‘पानि’ बहुत अधिक अछि; शेष ‘पानी’ सुधारल जाए।
गायब	३८	बिलायल	अद्भुत कथासभमे सेहो मैथिली रूप सम्भव।
चाय	२३९	चाह	‘चाह’ सेहो उपस्थित; एकरूपता आवश्यक।
आईना	१	अएना	कथा २७४मे स्पष्ट सुधार योग्य।
अंगूठा	५	औंठा	देह-शब्दावलीमे शुद्ध मैथिली रूप राखल

			जाए।
पीतल	५०	पित्तरि	वस्तु-वर्णनमे बहुत आवृत्ति; सम्पूर्ण प्रतिस्थापन सँ पहिने प्रसंग-जाँच।
बरामदा	२१५	ओसारा	पोथीमे 'ओसारा' सेहो अछि; क्षेत्रीय स्थान-भेद चाही तऽ अर्थभेद स्पष्ट राखल जाए।

समकालीन वस्तु-नाम—फ्रिज, चार्जर, दूरदर्शन, सिलिन्डर, डिजिटल, फोटो, लिफ्ट, कैलेंडर, बस—सभकेँ कृत्रिम संस्कृतनिष्ठ विकल्पसँ बदलनाइ आवश्यक नहि। शुद्ध मैथिली निखारक अर्थ लोकप्रचलित आधुनिक वस्तु-नाम हटेनाइ नहि, बल्कि वाक्य-विन्यास, क्रियापद, सर्वनाम, विभक्ति, देशज शब्द-संपदा आ अनावश्यक हिन्दीकरण पर नियंत्रण अछि। जतय विदेशी मूलक शब्द विवेचनमे देबाक जरूरी हो, मूल रोमन रूप केवल कोष्ठकमे देल जाए।

क्रियापदक स्तर पर 'दैत' आ 'देत'क कार्य अलग राखब आवश्यक अछि—अभ्यास/चलित क्रिया लेल 'दैत', भविष्य/देबाक आशय लेल 'देत'। एहि पोथीमे दुनू रूप उपस्थित अछि; सम्पादनमे वाक्यगत अर्थ देखि जाँच कएल जाए, यांत्रिक एकरूपीकरण नहि। 'छथि' व्यक्ति लेल, 'अछि/छै/छी' निर्जीव वा प्रसंगानुसार रूप लेल राखब सेहो आवश्यक।

अन्तराल, संयुक्त शब्द आ मुद्रण-जाँच सेहो जरूरी अछि। आधार-पाठक डिजिटल पाठ-स्तर पर किछु ठाम शब्द एक-दोसरासँ सटल रूपमे देखाइत अछि; मूल वर्ड फाइलमे बहुत ठाम अंतराल ठीक अछि, तैँ अन्तिम शुद्धिपाठ दृश्य पृष्ठ पर कएल जाए। शीर्षक, अनुक्रमा आ कथा-मुखक शीर्षक एक-दोसरासँ अक्षरशः मिलान कएल जाए; विरामचिह्न, उद्धरण-चिह्न आ दीर्घ डैशक एकरूप शैली अपनाओल जाए।

१२. संयुक्त साहित्यिक मूल्यांकन

'कथा-शतत्रयी (खण्ड-३)'क कथा २०१–३०० कैं एकसंग पढ़ला पर स्पष्ट होइत अछि जे संग्रहक मूल परियोजना 'पैघ घटना'क खोज नहि, साधारण जीवनमे निर्णयक सूक्ष्म क्षण चिन्हब अछि। पात्र बहुत बेर क्रान्तिकारी घोषणा नहि करैत; ओ पाँजिमे नब खाँचा जोड़ैत, फीता नहि काटैत, गलत नाम सुधारैत, दुआर पर अनुमति माँगैत, कचरा कतय गेल से पूछैत, चाबी बाँटैत, कुर्सी खिसकबैत, नक्शा पर 'अधूरा' लिखैत छथि। एहि सूक्ष्म क्रियामे साहित्यिक नैतिकता बसैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ संग्रहक श्रेष्ठता ध्वनि, औचित्य आ करुण–शान्त रसक संयमित निष्पत्तिमे अछि। पाश्चात्य कथाशास्त्रक दृष्टिसँ वस्तु-केंद्रित सूक्ष्म कथानक, समय-स्थानक सामाजिकता आ अन्तिम चक्रक अपरिचयीकरण उल्लेखनीय अछि। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ कथासभ शब्दक लक्षण, प्रमाणक सीमा, अभाव, छिपल शर्त आ प्रतिपक्षक महत्त्व बेराबेरी नाटकीय बनबैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक दृष्टिसँ ई पोथी अभिलेखक केन्द्रवाद तोड़ि पाँजि, स्मृति, निशान, श्रम, स्थानीय ज्ञान आ अदृश्य आवाजकेँ समानान्तर स्रोत बनबैत अछि।

संग्रहक अन्तिम सत्रह कथाक अद्भुत मोड़ विशेष महत्त्व रखैत अछि। पहिल चारि कथा-चक्रमे विकसित माप, नाप, पाँजि, सूची, चाबी, खिड़की आ वस्तु-साक्ष्यक विश्वास एतय स्वयं परीक्षणमे पड़ैत अछि। जखन सीढ़ी बढ़ि जाइत, गलीक नाम बदलैत, नक्शा आ धरती उलट सम्बन्ध बनबैत, तखन पाठक बुझैत अछि जे प्रमाण जरूरी अछि, मुदा प्रमाणक परिस्थिति सेहो प्रश्नक विषय अछि। एहि कारण अद्भुत खण्ड पहिल यथार्थवादी भागक निषेध नहि, ओकर ज्ञानमीमांसक विस्तार अछि।

१३. निष्कर्ष

ई एक सय कथा समकालीन मैथिली गद्यक एक विशिष्ट वस्तु-नैतिक संसार रचैत अछि। मिथिला, वज्जि आ अंगक गाम-नगर, घर-बाजार, खेत-पोखरि, विद्यालय-पंचायत, रसोइ-ओसारा, बस-रेल—सभ ठाम मनुष्यक सम्बन्ध वस्तु, अभिलेख आ समयक संग बनैत-बिगड़ैत अछि। संग्रह बारम्बार देखबैत अछि

जे न्याय बहुत बेर महाघोषणा सँ पहिने छोट सुधार रूपेँ अबैत अछि: सही नाम, खुलल प्रयोगशाला, कचरा उठबाक पाँजि, घरक स्त्रीक चाबी, साझा मेज पर अतिरिक्त कुर्सी, स्थानीय जल-पहुँचक रजिस्टर, अथवा निर्णय सँ पहिने स्रोत पूछबाक आदत।

साहित्यिक दृष्टिसँ पोथीक दीर्घजीविता ओकरा एहि संयम पर निर्भर अछि जे कथासभ पाठक कैँ अन्तिम अर्थ तैयार अवस्था मे नहि दैत। अन्तिम दृश्य प्राय: कने खुलल रहैत अछि—थैलाक मुँह बाँधल नहि, नाव बान्हल, पाँजि मे निर्णय बाँकी, खिड़की सँ स्टेशन देखाइत, गन्तव्यक कोष्ठ खाली, पाँचम कोनामे पुस्तक खुलल। ई अपूर्णता कमजोरी नहि; पाठक कैँ सह-निर्णायक बनबैत अछि। शुद्ध मैथिली शब्दावलीक एकरूप निखार आ किछु पुनरावृत्त शिल्प-सूत्रक भविष्यमे अधिक विविधीकरण सँ एहि कथा-समूहक साहित्यिक प्रभाव आरो गाढ़ भऽ सकैत अछि।

ग्रन्थसूची

- कथा-शतत्रयी (खण्ड-३)
- नाट्यशास्त्र
- ध्वन्यालोक
- अभिनवभारती
- वक्रोक्तिजीवितम्
- काव्यप्रकाश
- न्यायसूत्र
- न्यायभाष्य
- तत्त्वचिन्तामणि
- दीधिति
- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली
- हिस्ट्री ऑफ नव्य-न्याय इन मिथिला (History of Navya-Nyaya in Mithila)
- लॉजिक, लैंग्वेज ऐंड रियलिटी (Logic, Language and Reality)
- फिलॉसफी इन क्लासिकल इंडिया (Philosophy in Classical India)

- पोएटिक्स (Poetics)
- माइमेसिस (Mimesis)
- नैरेटिव डिस्कोर्स (Narrative Discourse)
- दि डायलॉजिक इमैजिनेशन (The Dialogic Imagination)
- आर्ट ऐज टेक्नीक (Art as Technique)
- दि फैन्टास्टिक (The Fantastic)
- गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — खण्ड १
- गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — खण्ड २
- मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास — खण्ड १
- मिथिला, वज्जि आ अंगक सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक इतिहास — खण्ड २

आलेख १६ · कथा, लघुकथा आ कथा-समालोचना

स्मृतिक दोसर दिस

सारांश

ई अध्ययन “स्मृतिक दोसर दिस”क सभ ९८ लघुकथा कैं अनुक्रमणिकाक क्रममे समेटैत संग्रहक कथ्य, शिल्प, प्रमाण-बोध, स्मृति-विन्यास, इतिहास-दृष्टि आ भाषा पर समग्र आलोचनात्मक विवेचन करैत अछि। संग्रहक आरम्भिक कथा अभिलेख, नकाशा, पाण्डुलिपि, अनुवाद, वंश-पाँजि आ संग्रहालयी कथनक विश्वसनीयता जाँचैत अछि; मध्य खण्ड दुर्घटना, अपराध, विवाह, श्रम-सुरक्षा आ सार्वजनिक संकटमे एकल कारणक आकर्षण तोड़ैत अछि; घरेलू लघु कथा वस्तु, गन्ध, स्वाद, देह, निजता आ स्त्री-अनुभवक सूक्ष्म राजनीति खोलैत अछि; ग्रामीण-भूगोलक कथा नदी, पोखरि, पगडंडी, इनार, नाव आ पलायनक माध्यमसँ स्थान-स्मृति रचैत अछि; अन्तिम कथा परिवार, वृद्धावस्था, शहर, मित्रता आ माएक स्वतंत्र जीवनक पुनर्पाठ करैत अछि। मूल निष्कर्ष ई अछि जे अनिश्चितता एहि कृतिमे दुर्बलता नहि, नैतिक अनुशासन अछि: जहाँ प्रमाण समाप्त, ओतय कथा गढ़बाक बदला रिक्ति कैं चिन्हित करब एकर विशिष्ट साहित्यिक उपलब्धि अछि।

बीजशब्द

स्मृतिक दोसर दिस ·मैथिली कथा ·लघुकथा ·पाठाधारित समीक्षा ·कथन-शिल्प

१.२२. गजेन्द्र ठाकुर- स्मृतिक दोसर दिस- शोध आलेख

स्मृतिक दोसर दिस

९८ लघुकथाक गहन शोध-समीक्षा

भारतीय काव्यशास्त्र · पाश्चात्य कथाशास्त्र · नव्य-न्याय · विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

मूल कृति: गजेन्द्र ठाकुर

समग्र कथा-पाठ: ९८ रचना · लगभग 251,305 शब्द

सारांश

ई अध्ययन “स्मृतिक दोसर दिस”क सभ ९८ लघुकथा कैं अनुक्रमणिकाक क्रममे समेटैत संग्रहक कथ्य, शिल्प, प्रमाण-बोध, स्मृति-विन्यास, इतिहास-दृष्टि आ भाषा पर समग्र आलोचनात्मक विवेचन करैत अछि। संग्रहक आरम्भिक कथा अभिलेख, नकाशा, पाण्डुलिपि, अनुवाद, वंश-पाँजि आ संग्रहालयी कथनक विश्वसनीयता जाँचैत अछि; मध्य खण्ड दुर्घटना, अपराध, विवाह, श्रम-सुरक्षा आ सार्वजनिक संकटमे एकल कारणक आकर्षण तोड़ैत अछि; घरेलू लघु कथा वस्तु, गन्ध, स्वाद, देह, निजता आ स्त्री-अनुभवक सूक्ष्म राजनीति खोलैत अछि; ग्रामीण-भूगोलक कथा नदी, पोखरि, पगडंडी, इनार, नाव आ पलायनक माध्यमसँ स्थान-स्मृति रचैत अछि; अन्तिम कथा परिवार, वृद्धावस्था, शहर, मित्रता आ माएक स्वतंत्र जीवनक पुनर्पाठ करैत अछि। मूल निष्कर्ष ई अछि जे अनिश्चितता एहि कृतिमे दुर्बलता नहि, नैतिक अनुशासन अछि: जहाँ प्रमाण समाप्त, ओतय कथा गढ़बाक बदला रिक्ति कैं चिन्हित करब एकर विशिष्ट साहित्यिक उपलब्धि अछि।

बीज-शब्द

स्मृति; अभिलेख; प्रमाण; बहुवचन इतिहास; मिथिला; लघुकथा; नव्य-न्याय; ध्वनि; लोकस्मृति; स्त्री-अनुभव; स्थान-स्मृति; विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति।

१. अनुसंधान-विधि आ पाठ-परिसर

मूल ग्रन्थक सभ ९८ कथा पृथक इकाई रूपेँ पढ़ल गेल; कथा-संख्या, शीर्षक, आरम्भिक कथ्य, अन्तिम संकेत, शब्द-विस्तार, आवर्ती बिम्ब, प्रमाणक प्रकार, समय-संरचना, सामाजिक स्थान आ निष्कर्षक स्वरक तुलनात्मक पंजी बनाओल गेल। कृतिक बाहर सँ कोनो घटना, पात्र, तिथि वा कथानक नहि जोड़ल गेल। जहाँ पाठ स्वयं “सम्भव”, “अनिश्चित”, मौन, रिक्ति वा अपूर्ण प्रमाण राखैत अछि, आलोचना ओहि सीमा कैं सुरक्षित रखैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति कैं कार्यकारी अर्थमे आधिकारिक/लिखित इतिहासक समानान्तर लोकस्मृति, क्षेत्रीय अनुभव, वस्तु, स्थल, श्रम, मौखिक साक्ष्य, निशान, देहक अनुभव आ मौन कैं एक विश्लेषण-रेखापर रखबाक पद्धति मानल गेल अछि।

२. कृतिक रचना-विन्यास

संग्रह पाँच प्रमुख कथात्मक लयमे विकसित होइत अछि। कथा १–२० अभिलेख, पाण्डुलिपि, नकाशा, प्रतिलिपि, अनुवाद, वंश-पाँजि, संग्रहालय आ पाठकीय अधिकार पर केन्द्रित अछि। कथा २१–४० अपराध, दुर्घटना, विवाह, आगि, बाढ़ि, सीमा आ श्रम-सुरक्षामे बहुकारकीय उत्तरदायित्व जाँचैत अछि। कथा ४१–५८ घरेलू वस्तु आ इन्द्रिय-अनुभव द्वारा वर्ग, देह, निजता, उम्र, विरासत आ स्त्री-स्वायत्तता खोलैत अछि। कथा ५९–८० नदी, माटि, पगडंडी, कब्र, इनार, नाव आ पलायनक माध्यमसँ भूगोलक स्मृति लिखैत अछि। कथा ८१–९८ वृद्धावस्था, परिवार, विवाह, मित्रता, माएक अप्रकाशित जीवन, शहर आ यात्रा द्वारा निजी इतिहासक पुनर्पाठ करैत अछि।

३. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

ध्वनि एहि संग्रहक प्रधान काव्य-शक्ति अछि। “दू जनकपुर”क गेरुआ नकाशा, “अदृश्य पुस्तक”क खाली काँचक पेटी, “पुरान तस्वीर”क प्रश्नचिह्न, “फूलदान”क मरम्मत-रेखा, “तीन कब्र”क “किछु”, “खोआइल वर्ष”क धूसर खण्ड—ई सभ कथित अर्थसँ अधिक संकेत करैत अछि। करुण रस व्यापक अछि, मुदा विलापप्रधान नहि; शोक, मृत्यु, पलायन, उजड़ल घर आ वृद्धावस्था छोट वस्तु, क्रिया आ मौन द्वारा प्रकट होइत अछि। वक्रोक्ति चमत्कारिक भाषा नहि, दृष्टिकोणक सूक्ष्म मोड़ रूपेँ काज करैत अछि। औचित्यक दृष्टिसँ अधिकांश कथा अपन प्रमाण-सीमा अनुरूप समाप्त होइत अछि।

४. पाश्चात्य कथाशास्त्रीय समीक्षा

दृष्टिबिन्दुक बहुलता कृतिक मूल कथन-तन्त्र अछि। अनेक कथा एक्के घटना पर दू, चारि वा पाँच दृष्टि रखैत अछि; अतएव विश्वसनीयता कथावाचकक चरित्र मात्र नहि, स्रोतक संरचना बनैत अछि। काल-विन्यास रैखिक नहि: वर्तमानक वस्तु पुरान समय खोलैत अछि, फेर वर्तमान अनुभव पुरान अर्थ बदलैत अछि। पत्र, नस्ती, नकाशा, पाँजि, पाण्डुलिपि, छायाचित्र, दैनिकी, सूची आ समय-रेखा सजावटी सामग्री नहि, कथानकक ज्ञान-उपकरण छथि। कृति कथा आ इतिहास-लेखनक सीमारेखा पर निरन्तर प्रयोग करैत अछि।

५. नव्य-न्यायक आलोकमे

एहि कृति कैं नव्य-न्यायक साहित्यिक रूपान्तर मानब उचित नहि; पाठ एहन दावा नहि करैत अछि। मुदा प्रमाण, अनुमान, शब्द-साक्ष्य, स्मृति, अभाव, उपाधि, पक्षता आ निष्कर्ष-सीमाक धारणा एहि कथासभक तार्किक चालि बुझबयमे अत्यन्त उपयोगी अछि। “सीमाक गोली” मे “हम सुनल नहि” आ “ओ बोलल नहि” अलग तथ्य अछि; “बाढ़िक नाव” अनेक सहायक कारण चिन्हित करैत अछि; “दुर्घटनाक मोड़” अनुपस्थित समय-खण्ड कैं मनमाना अनुमानसँ नहि भरैत; “अदृश्य पुस्तक” अप्राप्त मूल प्रति कैं अस्तित्वक स्वतः प्रमाण नहि मानैत; “तीन कब्र” पूर्ण निश्चितताक अभावमे आंशिक प्रमाण स्वीकार करैत अछि।

६. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

एहि पद्धतिक कसौटी पर संग्रहक विशेषता ई जे आधिकारिक कागजक समानान्तर लोक-स्मृति, चलनक बाट, गन्ध, ध्वनि, श्रम, वस्तु, स्त्री-अनुभव, मौन आ वर्तमान परिणाम कैं इतिहासक सामग्री मानल गेल अछि। राजकीय पट्टिकाक सामने मौखिक साक्ष्य; जमीनक कागजक सामने पगडंडी; वंश-पाँजिक सामने आश्रय आ दायित्व; छायाचित्रक सामने श्रम; बाढ़िक निशानक सामने देहक स्मृति—ई समानान्तर पठन एकल इतिहासक अधिकार ढीला करैत अछि। पद्धतिक नैतिक केन्द्र तीनटा अछि: अनुपस्थिति कैं कल्पना सँ स्वतः नहि भरू; प्रामाणिकता आ उपयोगिता अलग प्रश्न मानू; लोकस्मृति कैं महत्त्व दिअ, मुदा ओकरा त्रुटिहीन नहि मानू।

७.१ कथा १–२०: अभिलेख, नकाशा आ पाठक अधिकार

इतिहास वस्तु नहि, सम्पादन-प्रक्रिया रूपेँ उपस्थित अछि। नकाशा मोड़ल जाइत अछि, पाण्डुलिपि जाँचल जाइत अछि, प्रतिलिपि बनैत अछि, टीका पढ़ल जाइत अछि, संग्रहालयी पट्टिकाक भाषा बदलैत अछि। एहि खण्डमे ज्ञान-निर्माणक अदृश्य श्रम कथा-केंद्रमे आबि जाइत अछि।

७.२ कथा २१–४०: घटना, दोष आ बहुकारकीय उत्तरदायित्व

मूर्ति-चोरी, गोली, विवाह-विवाद, नाव-दुर्घटना, मृत्यु, मुकदमा, मेला, आगि, सड़क-दुर्घटना आ श्रम-सुरक्षाक कथा बारम्बार “एक दोषी”क सामाजिक माँग रोकि व्यवस्था, परिस्थिति आ अनेक निर्णयक संगम देखबैत अछि।

७.३ कथा ४१–५८: घरेलू वस्तु, देह आ सूक्ष्म राजनीति

मेज, काजर, परदा, सुगन्ध, कटोरी, बाल, फूल, दुपट्टा, खिड़की, नींबू, कप, साड़ी, बाली, नखरंग, अस्पतालक परदा, इलायची आ फूलदान—प्रत्येक वस्तु संबंध, निजता, श्रम, उम्र आ स्वायत्तताक प्रश्न खोलैत अछि।

७.४ कथा ५९–८०: भूगोल, नदी आ विस्थापन

नदी, पोखरि, माटि, पगडंडी, कब्र, इनार, पुल, नाव, धुँआ आ पलायन स्मृतिक सहलेखक बनैत अछि। भौतिक चिह्न मिटैत अछि, मुदा भाषा, चलन आ देहक स्मृति स्थानक दीर्घ इतिहास बचबैत अछि।

७.५ कथा ८१–९८: परिवार, वृद्धावस्था आ पुनर्पाठ

बहिन, मित्र, विवाह, फोटो एल्बम, न भेजल पत्र, माएक मित्र, दू शहर, विद्यालयक पुनर्मिलन आ अन्तिम यात्रा द्वारा निजी जीवनक इतिहास पुनः पढ़ल जाइत अछि। ‘महान घटना’क बदला साधारण निर्णय इतिहासक प्रमुख इकाई बनैत अछि।

८. कथा १–९८: सम्पूर्ण पाठ-पंजी

नीचाँ सभ ९८ रचनाक क्रमिक पंजी अछि। कोनो कथा छोड़ल नहि गेल अछि। “आरम्भिक केन्द्र” आ “अन्तिम संकेत” मूल पाठक प्रत्यक्ष पठन पर आधारित अछि; एकरा कथासारक बदला आलोचनात्मक पाठ-साक्ष्य रूपेँ पढ़ल जाए।

1. दू जनकपुर

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 2,120 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: अमरेश झा जनकपुर उतरला पर पहिने जे चीज किनलनि, से जलक बोतल नहि, न प्रसाद, न फूल—एकटा कागजी नकाशा। रेल स्थानकक बाहर छोट सन खोमचामे धार्मिक चित्र, जनकपुरधामक पुस्तिका, बसक समय-सारिणी आ रंगीन नकाशा लटकल छल। अमरेश बहुत दिन सँ

कागज पर बाट देखबाक अभ्यस्त छलाह। हुनकर माए कमला देवी मरबाक दू मास पहिने एक पुरान लिफाफा हुनका दैत कहने…

अन्तिम संकेत: मुदा जखन दूर मन्दिरक घण्टी तीन बेर सुनाइ देलक, अमरेश अनायासे बुझि गेलाह जे दोसर जनकपुर कतय अछि। ओ नकाशामे बन्द नहि छल, आ न केवल माएक मोनमे। ओ लोकसभक बीच चलैत ओहि बाटमे छल जकर दूरी कदमसँ नहि, स्मरणसँ नापल जाइत अछि। अमरेश कागजक मोड़ पर अंगुरी फेरलनि। दुनू नगर अलग-अलग रहितो ओहि पतली धार पर एक-दोसराकेँ छू रहल छल।

2. भूलल शास्त्रार्थ

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 2,099 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: नीलिमा झा कैं पुरान कागजक गन्ध सँ बरखा पहिचानबाक अभ्यास भऽ गेल छल। बाहर आकाश साफ रहितो जँ संग्रह-कक्षमे कागजक गन्ध सहसा भारी भऽ उठैत, ओ बुझि जाइत छलीह—हवामे नमी बढ़ल अछि, खिड़कीक जोड़ फेर जाँचबाक बेर भेल। ओ राजनगरक एक पुरान पाण्डुलिपि-संग्रहमे कागज मरम्मत करैत छलीह। हुनकर काज लेखकक नाम पढ़ब सँ बेसी पन्नाक देह बचेनाइ छल—कीड़ा…

अन्तिम संकेत: नीलिमा सिर हिलौलनि। ‘नहि। पुरान कागज अपन चूक सहित एतय रहत। नव प्रश्न ओतय रहय जतय ओकर उत्तर बदलैत रहत।’ खिड़कीक बाहर फेर मेघ जमि रहल छल। नीलिमा संग्रहक खिड़की बन्द करबाक लेल उठलीह। टेबुल पर ‘उदकाधिकार-विचार:’क पन्ना स्थिर छल; कनकपुरमे, बहुत दूर नहि, एक धारक बाट एखन नापल जा रहल छल।

3. समयक पोखरि

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 2,545 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: मृदुला आठ बरख बाद ननिहालक ओ पोखरि लग एना ठाढ़ छलीह जेना बीचक बरखसभ बाटमे कतहु छूटि गेल हो। भोरक उजास एखन पूरा फइलल नहि छल। पूब दिस आकाश हल्का धूसर छल, पोखरिक पानि ओहि धूसर रंग कैं चुपचाप धारण केने छल। पच्छिम घाटक तीनटा पुरान

सीढ़ी काईसँ हरियर पड़ि गेल छल। बाल्यकालमे मृदुला एहि सीढ़ी पर बैसि माछक बच्चा गिनैत छलीह। आब किनार पर…

अन्तिम संकेत: मृदुला फाटक पार कऽ सड़क पर एलिह। दूर बसक आवाज आबि रहल छल। हुनकर झोरामे विमलक दू पत्र छल, दूरभाषमे नचिकेतक सन्देश, आ आदित्यक विद्यालयक समय-सारिणी। ई तीनू वस्तु एक-दोसरासँ मेल नहि खाइत छल; तइयो एखन हुनकर जीवन एही सभसँ बनल छल। पाछाँ पोखरि पर सूर्यक पहिल साफ किरण पड़ल। पानि चमकल, फेर हवा सँ काँपि उठल। ओहि सतह पर भविष्य लेल कोनो ठाम स्थिर नहि रहल।

4. अक्षरक नगर

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 2,308 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: निरुपमा कर्ण सिद्धपुर घुरलीह तऽ स्टेशनक बाहर पहिल चीज जे हुनका बदलल देखायल, ओ घण्टाघर नहि छल। घण्टाघर ओहिना चारि मुखवला, धूसर आ थोड़े झुकल छल। बदलल चीज छल ओकर नीचाँ टाँगल नव नकाशा। नकाशामे सड़कक नाम नहि, संख्या देल छल—१, २, ३, ४—आ लाल रंगक एक मोट रेखा स्टेशन सँ नगरपालिकाधरि सीधा गेल छल। निरुपमा ओकरा देखि अनायास हँसि देलीह।…

अन्तिम संकेत: हुनकर हाथमे बाबूजीक “र” पट्टी छल। ओकर तीन तीरक नीचाँ निरुपमा चौठम तीर नहि बनौलीह। ओ केवल एक छोट खाली रेखा छोड़ि देलीह। नीचाँ “ज्ञ-संगम” पर चन्दन अपन दादीक हाथ पकड़ने भीड़मे घुसल। एक क्षण लेल ओ देखायल, फेर घरसभक बीचक कोनो पातर मोड़ ओकरा निगलि लेलक। निरुपमा नकाशाक हाशिया खोललीह। हवा ओकर खाली भाग कैं फड़फड़ौलक—जतय शहरक अगिला बाट एखन लिखल जाएब बाँकी छल।

5. अन्तिम टीका

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 2,476 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: मिथिला पोथी-संरक्षण केन्द्रमे रघुनन्दन साहक काज एहन छल जाहिमे लोक प्राय: हुनकर नाम नहि पढ़ैत छल। प्रदर्शनीमे विद्वानक नाम लिखल रहैत, सम्पादकक नाम लिखल रहैत, दान देनिहार परिवारक नाम सेहो;

मुदा जे हाथ कीड़ाक खायल कागजक रेशा जोड़ैत, टूटल सिलाइ खोलि फेर बाँधैत आ स्याही कैं पानिसँ बचबैत, ओकर नाम प्रायः पाछाँक पाँजिमे रहि जाइत।...

अन्तिम संकेत: एहि बेर हुनका ई मुख्य ग्रन्थ पर लिखल आपत्ति नहि लगल। ई एहन प्रश्न लगल जकर उत्तर सदियौं बाद लिखल गेल, फेर लोक भूलि गेल जे प्रश्न पहिने छल। ओ प्रदर्शनीक काँच पर धूलिक एक पातर रेखा देखलनि। कपड़ा निकालि पोंछलनि। भीतरक पृष्ठ कैं हाथ नहि लगौलनि। पृष्ठक दहिना कात पुरान पट्टी अपन ठाम पर रहल—न अन्तिम, न पहिल; केवल ओ ठाम जतयसँ पूरा ग्रन्थ कैं फेर पढ़बाक पड़ैत छल।

6. नकाशा जे बढ़ैत रहल

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 2,171 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: दरभंगाक पुरान अभिलेखागारक पछिला कोठरीमे रमापति झाक मेज एतेक पैघ नहि छल जे ओहि पर जिलाक पूरा नकाशा पसारल जा सकय। तैं ओ दू मेज जोड़ि, बीचक फाँक पर मोट कागज राखि काज आरम्भ कएलनि। उद्देश्य सरल लिखल गेल छल—“कमला आ ओकर पुरान धारसभक कात बसल बस्तीक ऐतिहासिक नकाशा, १९०० सँ वर्तमान धरि।” जिला संग्रहालयक शताब्दी प्रदर्शनी लेल ई नकाशा...

अन्तिम संकेत: रमापति किछु उत्तर देबय जा रहल छलाह, तखने लड़काक माए कहलखिन, “चलू, देर भऽ रहल अछि।” लड़का चलि गेल। प्रश्न रहि गेल। रमापति अन्तिम किनार पर एक खाली पट्टी साटलनि। ओकर ऊपर कोनो नदी, सड़क, गाम नहि बनौलनि। केवल तिथि लिखलनि—“एतय सँ आगाँ प्रमाण अबैत रहत।” मीना दूरसँ देखि पूछलनि, “फेर बढ़ेब?” रमापति सीसा-कलम रखैत कहलनि, “जँ भूभाग बदलत तऽ नहि। जँ हमर बुझाइ बदलत तऽ।”...

7. एक लेखक, दू जन्म

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 2,062 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: अनघा कर्ण कैं पहिल बेर ई खबर दूरभाष सँ नहि, डाक सँ भेटल। मोट पीयर लिफाफा पर कमला कथा परिषदक मोहर छल। ओ बुझलनि

—पुरस्कारक औपचारिक पत्र होयत; दू मास पहिने हुनकर कथा ‘रेखा’ कैं एहि बरखक श्रेष्ठ लघुकथा चुनल गेल छल। मुदा भीतरक पहिल पाँति पढ़िते हाथ रुकि गेलनि—‘सम्मान स्थगित राखल जा रहल अछि, कारण प्रस्तुत कथाक पाठ १८२६ ई.क एक...

अन्तिम संकेत: बाहर सँ छात्रसभक एक समूह भीतर आयल। एक लड़का पुरान पृष्ठक लाल टिप्पणी पढ़ि अपन संगिनीसँ कहलक, ‘देख, तखन लोक एकरा गलती बुझैत छल।’ संगिनी दहिना पृष्ठक फाटक-जेकाँ पेंसिल निशान देखलक आ उत्तर देलक, ‘कथा तँ बीचमे अछि। गलती आ बाट—ई सभ किनारक बात अछि।’ अनघा किछु नहि बजलीह। ओ अपन बाल्यकालक कापी, १८२६क पोथी आ २०२६क मसौदा—तीनू कैं एक बेर देखलनि। पहिलमे चौदह पाँति छल,...

8. स्मृतिक शब्दकोश

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 1,426 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: मालती मिश्र शब्दसभक अर्थ लिखैत-लिखैत बूढ़ भेलिह, मुदा हुनका पहिल बेर भय अर्थसँ नहि, विस्मरणसँ लागल। दरभंगाक पुरान घरक ऊपरका कोठरीमे हुनकर चारि दशकक कापी, पर्ची आ संदर्भ-पोथी राखल छल। ओहि सभमे मैथिलीक एहन शब्द जमा छल जे नव पीढ़ीक बोलचालसँ धीरे-धीरे ओझराइत जा रहल छल। सेवानिवृत्त भेलाक बाद हुनकर इच्छा छल—सभ कैं एक ठाम सहेजि एक...

अन्तिम संकेत: थोड़े बेर बाद भीतरसँ रंजनाक आवाज आयल—चाय बनि गेल। ईरा उठय लागलिह, मुदा मालती ओकर हाथ पकड़ि फेर बैसा लेलनि। सामनेक आकाशमे साँझ ढलि रहल छल। हुनका बाबूजीक हाथमे की छल, एखनहुँ याद नहि पड़ल; माए कोन साड़ी पहिरने छलिह, सेहो नहि। मुदा ओसरा पर हवा सचमुच नीक छल। मालती शब्दक अर्थ मनमे दोहरौलनि नहि। ओ केवल किछु बेर ओतहि बैसल रहलिह।

9. शून्य अध्याय

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 1,908 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: बरखा दुपहरिया जिला पुस्तकालयक पछिला कोठरीमे छतक पानि एक ठाम सँ टपकि रहल छल। सुधा झा पुरान पोथीसभक ढेरी बीच बैसल छलिह आ ओहि पोथीसभ पर कागजक छोट पर्ची लगा रहल छलिह जे अगिला महीना मरम्मति, पुनर्बन्धन अथवा निकासी लेल समिति आगाँ जाएत। हुनकर काज सीधा छल—जकर पृष्ठ पूरा, ओकरा साफ कराउ; जकर जिल्द छुटल, ओकरा बन्धाउ; जकर भीतर आधा पोथी…

अन्तिम संकेत: सुधा उधार-पर्ची पर तारीख लिखलनि। क्रम लिखबाक कोनो खण्ड नहि छल। ओ खाली ठाम खाली छोड़ि देलनि।

10. प्रतिलिपिकार

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 2,316 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: दरभंगाक पुरान राजपथ सँ दू गली भीतर “लोक-पोथी संरक्षण कक्ष” छल। बाहरक फाटक पर अक्षर आधा झड़ि गेल छल, मुदा भीतर धूलिक गन्ध, पुरान कागजक भुरभुराहट आ धीमा पंखाक आवाज एहन छल जे सुधीन्द्र दास पहिल दिनहि बुझि गेल—एतय जल्दबाजी करनिहारक काज नहि। सुधीन्द्रक असल पेशा अक्षर साफ लिखब छल। हुनकर पिता विवाह-पत्र, दुकानक पट्टी आ कभी-कभी…

अन्तिम संकेत: ओहि राति, मूल पाण्डुलिपिमे अनेक अक्षर प्रतिलिपिक पाछू चलि चुकल छल। मुदा एक ठाम एहन बचल जतय प्रतिलिपि मूलक आदेश मानबाक बदला मूलक पुरान असमर्थता केँ बचा रहल छल। सुधीन्द्र दीप बुझौलक। अन्हारमे खाली कोष्ठक देखाइत नहि छल, मुदा ओकरा पता छल —ओतय किछु नहि लिखल अछि। आ एहि बेर, नहि लिखल चीजे सबसँ सटीक प्रतिलिपि छल।

11. तीसर इतिहास

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 2,856 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: जिलाक पुरातन भवन सभमे एकटा एहन कक्ष अवश्य भेटैत अछि जतय इतिहासक नाम पर पहिने धूलि रहैत अछि, तकर बाद नस्ती। मधुबनी जिलाक संस्कृति कार्यालयक पाछूक भवनमे सेहो एक एहन कक्ष छल। चारू कात लोहमय आलमारी, बीचमे दू मेज, आ खिड़कीक नीचा सँ दीमक

खायल फर्श। एहि कक्षमे मणिकान्त मिश्रक काज इतिहास लिखब नहि, इतिहासक पट्टिका लिखब छल। सरकार…

अन्तिम संकेत: आ मणिकान्त कँ पहिल बेर बुझायल जे इतिहासक किछु खाली ठाम असफलता नहि होइत अछि। कखनो-कखनो ओही खाली ठाम प्रमाण होइत अछि जे कथा एखनहुँ इतिहासक जगह पूर्णत: नहि घेरने अछि।

12. अनुवादक

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 2,959 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: १९८३ केर जाड़क एक दुपहरिया दरभंगा अभिलेखागारक पाछूक कोठरीमे नसीम आरा पहिल बेर ओ वाक्य देखलनि। कोठरीक खिड़की आधा बन्द छल, भीतर धूलि, पुरान कपड़ा आ चर्मपत्रक गन्ध घुलल छल। नसीम ओहि समय अट्ठाइस बरखक शोध-सहायिका छलीह। हुनकर काज फारसी नस्ती पढ़ि छोट-छोट विवरण बनायब छल—तिथि, लेखक, प्राप्तकर्ता, विषय, ठाम। ओहि दिन हुनका एक पातर गट्ठर…

अन्तिम संकेत: केवल तिथि। आ खाली ठाम छोड़ि देलनि—अगिला भाषाक लेल।

13. नामहीन देवता

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 3,103 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: विभा झा लोककथा संग्रह करैत-करैत एक बात जल्दी सीखि गेल छलीह—गामक कथा कखनो केवल कथा नहि होइत अछि। ओकरा संग बाट, गाछ, पोखरि, कुनबा, ऋतु, डर, मान, झगड़ा आ कतेको बेर मौन सेहो बन्हायल रहैत अछि। मुदा कचनारिया गाम पहुँचि हुनका पहिल बेर बुझायल जे कखनो-कखनो कथाक सबसँ आवश्यक अंश ओ होइत अछि जे लोक जानि-बुझि नहि कहैत अछि। कचनारिया कमला नदीक…

अन्तिम संकेत: किछु स्मृति बचाबय लेल ओकरा बेराबेरी पुकारब आवश्यक नहि होइत अछि। किछु नाम, शायद, याद रहबाक सबसँ सुरक्षित ढंग ई होइत अछि जे कथा ओकर चारू कात चलैत रहय—आ मुँह ठीक ओहि ठाम चुप भऽ जाय जतय शब्द हो सकैत छल।

14. समयक पगडंडी

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 3,378 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: सिरसिया गामक पुरान पगडंडी नकाशामे सीधा रेखा छल, मुदा जमीन पर कहियो सीधा नहि रहल। कतहु आमक जड़ि बचाबय घूमि जाइत, कतहु बरखाक पानि काटि देत तऽ लोक माटि भरि कातसँ नव बाट बना लैत, कतहु खेतक मेड़ मोट भऽ गेल तऽ पगडंडी ओकर कात पकड़ि लैत। नीलिमा कैँ बचपनसँ लगैत छल—ई बाट गामक लोक जेकाँ अछि; कागज पर एक, चलनमे दोसर। एहि बेर ओकरा ओही…

अन्तिम संकेत: पगडंडी ओहि दिन कोनो दोसर कालमे नहि गेल। माटि केवल माटि रहल, घास घास, साँझ साँझ। मुदा दू पयर एक संग पड़ला पर ओकर चौड़ाइ ठीक ओतेक बुझायल जतेक आवश्यक छल।

15. दर्पणक वंश

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 3,070 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: सौराठक सभा-मैदान बरखा बाद खाली रहैत अछि, मुदा पञ्जीकार माधवी झाक घरमे सालक कोनो मास पूर्णत: खाली नहि जाइत छल। कियो पुरान मूल पूछय अबैत, कियो विवाहक पहिने शाखा मिलाबय, कियो केवल अपन पुरखा कतेक दूर धरि लिखल छथि से देखय। माधवीक दादा कहैत छलाह—“पाँजि वंश नहि बनबैत अछि; लोक अपन सम्बन्ध बनबैत अछि, पाँजि केवल ओकर छाया पकड़ैत अछि।”…

अन्तिम संकेत: दर्पणक भीतर लोक सभ बेराबेरी हिलैत रहल, मुदा कागज पर एहि बेर कियो प्रतिबिम्ब मनुष्यक बदला नहि लिखल गेल। ओतय मनुष्यक नाम छल—आ छविक अर्थ अलग।

16. अदृश्य पुस्तक

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 4,342 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: दरभंगाक राजकीय ग्रन्थालयक तेसर तल पर एकटा काँचक पेटी तीन मास सँ खाली पड़ल छल। पेटीक भीतर लाल मखमल बिछाओल गेल छल, चारू कात पातर पीतलिक पट्टी, ऊपर छोट अक्षरमे लिखल—“साझा दीप — अनुमानित अठारहम शताब्दी? मूल प्रति अद्यापि अप्राप्त।”

अन्तिम संकेत: ओ पेटी खालीए रहल। आ शायद पहिल बेर ओ खालीपन पुस्तकक कमी नहि, प्रमाणक मर्यादा जेकाँ देखाइत छल।

17. सातम दिशा

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 3,061 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: दरभंगाक “लोक-स्मृति आ भू-अभिलेख केन्द्र”मे नकाशासभ प्राय: दू प्रकारक छल—जमीन देखौनिहार आ जमीन पर दावा करौनिहार। तेसर प्रकारक नकाशा बहुत कम अबैत छल। मुदा जे दिन अनुजा झा कैं “सातम दिशा” नामक पुरान नकाशा भेटल, ओकरा बुझायल जे किछु नकाशा जमीनक नहि, मनुष्यक अनुपस्थित ठामक हिसाब रखैत अछि। नकाशा मोट हाथकागज पर बनल छल। चारू कात साधारण…

अन्तिम संकेत: सातम दिशा ओहि क्षण ककरो उत्तर, दक्षिण, पूब वा पश्चिम नहि काटलक। ओ केवल एक अनुपस्थित ठाम सँ एक जीवित सम्बन्ध धरि पहुँचेबाक क्रम बनि गेल।

18. अन्तिम पाठक

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 3,463 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: सोनबरसाक “जनवाचनालय”क दुआर जखन अन्तिम बेर खुलल, भीतर पुस्तक नहि छल—केवल भीजल राखि, मुड़ल लोहमय आलमारी, आ फर्श पर कागजक एहन कारी परत जे पयर पड़िते चूर्ण भऽ जाइत। आगि तीन राति पहिने लागल छल। बरखाक पानि छत सँ चुबैत पुरान तार धरि पहुँचल कि कोनो चूहे तार काटने छल—विद्युत विभागक लोक दू अलग बात कहैत छल। आगि बहुत पैघ नहि छल; भवन बचि…

अन्तिम संकेत: बाहर वाचनालयक बोर्ड पर नव प्रकाश जरि उठल। कियो अन्तिम पाठक नहि रहल।

19. पोखरिक घटना

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 3,550 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: बरैला पोखरिक पश्चिम घाट पर पाथरक नबका सीढ़ी बनलाकैं दू दिनो नहि भेल छल, जखन गुंजा पानि मे खसि गेलीह। घटना साँझ

पाँच बजि बारह मिनटक आसपासक छल—ई समय पर लगभग सभ सहमत छल। पोखरिक कातक औषधि-दुकानक बन्द घड़ी पाँच बजि दस मिनट देखबैत छल, मुदा दुकानक मालिक कहैत छल घड़ी दू मिनट पाछू चलैत अछि। विद्यालयक घंटी पाँच बजे बजि चुकल छल। पानीक…

अन्तिम संकेत: बाकी—ककर चूक भारी, ककर हलुक—पानीक सतह पर पड़ल पाँच प्रतिबिम्ब जेकाँ छल। पोखरि एक्के छल। दृष्टि पाँच।

20. दरबारक राति

आलोचनात्मक धुरी: अभिलेख/स्मृति/प्रमाण · लगभग 4,183 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: रतनपुरक पुरान राजमहल आब संग्रहालय बनि गेल छल। बाहरक फाटक पर प्रवेश-पर्ची-कक्ष, भीतर दरबार-भवनक ऊँच छत, टूटल झरोखा, दीर्घामे काँचक पेटी, आ अन्तिम कक्षमे एक कारी पड़ल शहतीर—जकर नीचा पीतलिक पट्ट पर लिखल छल— “दरबारक राति, संवत् १९७३। बाहरी उपद्रवीसभक षडयन्त्रमे आगि। राजपरिवार सुरक्षित। अभिलेखागार आ उत्तर दीवानखाना आंशिक नष्ट।”

अन्तिम संकेत: धूसर ठाम सेहो। मुदा आगिक राति फेर एक्के कथा नहि बनल।

21. चोरीक मूर्ति

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 3,624 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: अमराहीक भुवनेश्वरी स्थानक मुख्य कपाट भोर चारि बजि पचपन मिनट पर खुलैत छल। ईश्वरनाथ झा पैंतीस बरखसँ लगभग एक्के क्रममे दिन आरम्भ करैत छलाह—पहिने बाहरी घण्टा, तकर बाद तुलसीक पात, फेर भीतरक छोट दीप, आ अन्तमे पीतलिक चाबी सँ गर्भगृहक जाली। ओहि भोर जाली खुलिते हुनकर हाथ हवा मे रुकि गेल।

अन्तिम संकेत: ककरो आस्था। ककरो रोजी। ककरो नाम। ककरो मान। ककरो झूठ। ककरो पुरान स्मृति। प्रतिमा वापस आयलाक बादो सभ चीज एक्के दिन वापस नहि आयल।

22. सीमाक गोली

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 4,063 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: रेखापुर चौकी सँ आधा कोस दक्षिण एक पातर नाला बहैत छल। बरखा मे नाला फूलि जाइत, जाड़ामे घुँट्ठा धरि पानि, गर्मीमे बीच-बीचमे केवल कीचड़। नकाशामे ओ नाला सीमा नहि छल। असल सीमा नालासँ कतहु दस हाथ उत्तर, कतहु बीस हाथ दक्षिण, पुरान सफेद पत्थरसभक बीच सीधी रेखा जेकाँ खींचल छल। गामक लोक नकाशा कम, पत्थर बेसी मानैत छल।

अन्तिम संकेत: गोलीक आवाज एक क्षणक छल। ओकर अर्थ बहुत देर धरि चलल।

23. विवाहक विवाद

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 4,701 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: बरियाहीक विवाह-भवनक बाहर राति नौ बजिते पाँच तरहक बात चलि गेल। कियो कहैत छल—वरपक्ष पाँच लाख माँगलक। कियो कहैत —कन्या स्वयं विवाह सँ मना कऽ देलक। कियो कहैत—दुलहा माएक बातमे दबि गेल। कियो कहैत—कन्याक सहेली कान भरि देलक। आ कियो कहैत— बिचौलिन सब बात बिगाड़ि देलीह।

अन्तिम संकेत: कौशल्या फूलक डोरी सीधा करैत कहलीह— “कथा ओही अछि—सभकेँ एक कारण चाही छल।” ओ आगाँ बढ़ि गेलीह।

24. बाढ़िक नाव

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 2,917 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: कमला बलानक पानि जखन बेलहीक पूरब बाँध काटि गाममे घुसल, लोक पहिने घरक ऊँच चौकी पर चढ़ल, तकर बाद छत पर, आ तेसर दिन नावक राह ताकय लागल। बाढ़ि एहि गाम लेल नब बात नहि छल, मुदा एहि बेर पानि एतेक जल्दी बढ़ल जे भोरमे गोठक गोरु खोलि सुरक्षित ठाम पठेबाक सोचनिहार दुपहरिया धरि अपनहि ओसार सँ बाहर नहि निकलि सकल। विद्यालय भवन, पंचायत घर आ…

अन्तिम संकेत: एहि सभमे एक चीज ढीला पड़य तऽ नाव चलि सकैत अछि। दू-तीन ढीला पड़य तऽ सेहो संभव। मुदा कतेक धरि—कियो पहिले सँ ठीक नापि नहि सकैत। तेँ सुरक्षा एक व्यक्ति पर छोड़ब गलत। जगलाल

दोसर फेरा लेल नाव घुमौलक। एहि बेर कियो जल्दबाजीमे “जतेक बैसि सकय, लिअ” नहि कहल। पानी ओही छल। मनुष्यक तैयारी कने बदलल छल। आ बाढ़िक नावक कथा एहि बेर पलटला बिना आगाँ बढ़ि गेल।

25. चित्रकारक मृत्यु

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 4,340 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: नचिकेत मिश्रक मृत्युकेँ बारह बरख बीति गेलाक बाद हुनकर बेटी ईरा पहिल बेर ओहि ऊपरी कोठरीक ताला खोललक जतय पिता अन्तिम राति चित्र बना रहल छलाह। घर बिकयवला छल।

अन्तिम संकेत: चारू दैनिकी नचिकेतक चित्र बनाबय निकलल छल। अन्तमे चारू दर्पण बनि गेल।

26. पुरान मुकदमा

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 4,938 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: अनामिका मिश्र इतिहास पढ़बैत छलीह, मुदा अपन गामक पुरान मुकदमा सँ सदा दूर रहल छलीह। बचपनमे जखन घरक ओसार पर दू वृद्ध एक-दोसर केँ देखिते चुप भऽ जाइत छलाह, तखन माए कहैत छलीह— “बरियार पट्टीक बात अछि।”

अन्तिम संकेत: ओ नस्ती बन्द कएलनि। पुरान मुकदमा बन्द नहि भेल। मुदा आब ओकर कागज थोड़े कम एकल छल।

27. मेला राति

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 5,090 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: बसहा-मेला वर्षमे एक बेर तीन राति चलैत छल। दिनमे पशु-बजार, कृषि-औजार, कपड़ा, मिठाइ, खिलौना। साँझ पड़िते झूला, लोकगीत, नाटक, बाँसुरी, धुन, गरम तेलक गन्ध, धूलि आ हजार लोकक पयर। मंजरी कर्ण ओहि मेला मे गायब भेलीह।

अन्तिम संकेत: ओ घरमे छल— मुदा एहि बेर घर ओकर उपस्थितिक अर्थ अपन हिसाब सँ तय नहि करैत छल। कम सँ कम एखन धरि।

28. वीरक कथा

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 4,254 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: कजराघाटक वीर-गीत अदिति कुमारी पहिल बेर विद्यालयक मंच पर सुनने छलीह। तखन ओ बारह बरखक छलीह।

अन्तिम संकेत: कजराघाटक युद्ध एक बेर भेल छल। वीरक कथा एखनहुँ बेराबेरी भऽ रहल छल।

29. अन्तिम भोजन

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 3,285 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: देवकी देवीक घरमे भोजनक समय सात बजि तीस मिनट छल, मुदा ओहि राति सभ लोक आठ बजे धरि मेज लग नहि बैसल। कारण वसीयतनामा।

अन्तिम संकेत: मेज पर सभ खाइत रहल। खाली कुर्सी खाली रहि गेल।

30. कवि आ राजा

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 3,625 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: सोनवर्षा राजक पुरान अभिलेखागारमे ईरा झा कैं पहिल बेर हरिनाथ कविक नाम एकटा फाटल आदेश-पत्रमे भेटल। कागजक दहिना कोन चूहा काटि लेने छल, बाम भागमे राजमुद्राक आधा छाप बचल छल, आ बीचमे केवल एतबे साफ पढ़ाइत छल—“दरबारी मर्यादा भंग करबाक कारण कवि हरिनाथ मिश्र कैं राजधानी सँ बाहर रहबाक आदेश...” आदेशमे अपराधक नाम नहि छल।

अन्तिम संकेत: अन्तमे “कवि आ राजा”क कथा ककरो एक व्यक्तिक कथा नहि रहल। ओ अर्थक मालिकाना पर चलैत दीर्घ विवाद बनि गेल।

31. दुर्घटनाक मोड़

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 4,150 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: भोरक सात बजि चौवन मिनट पर नवलखा मोड़ एखन पूरा जागल नहि छल। दूधक गाड़ी जा चुकल छल, विद्यालयक पहिल घंटीमे एखन समय छल, आ बजारक आधा शटर अधखुला छल। सात बजि चौवन

मिनट चौबीस सेकण्ड पर औषधि-दोकानक निगरानी-यन्त्रमे एकटा नीला छोट गाड़ी दहिना दिस सँ देखाइ पड़ल। ओकर सामनेक काँच पर रातिक ओसक दू रेखा एखन सुखल नहि छल। चालक सुरेश यादव बादमे...

अन्तिम संकेत: मुदा ओ एगारह सेकण्ड धीरे-धीरे एक दोसर चीज स्पष्ट कऽ गेल—दुर्घटना केवल दू चलैत वस्तुक टक्कर नहि छल। ओ सड़कक डिजाइन, रखरखाव, आदत, अनुमान, निर्णय, समय आ संस्थागत उपेक्षाक एक क्षणमे मिलन छल। आ ताहि कारण ओकर सत्य एक नाममे समा नहि सकल।

32. झूठक पुरस्कार

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 3,292 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: जखन “मिथिला नवलेखन सम्मान”क परिणाम घोषित भेल, सभसँ पहिने बधाई अरुणेश मिश्र कैं नहि, हुनकर सम्पादक रतन झा कैं भेटल। रतन फोन उठबैत-उठबैत थाकि गेल छलाह। साहित्यिक पत्रिका, स्थानीय दूरदर्शन, विश्वविद्यालयक विभाग, पुस्तक-विक्रेता—सभ ठाम एक्के बात: “एहि बरखक सभसँ साहसी कथा।”

अन्तिम संकेत: मुदा ओकर नीचाँ स्रोत सेहो रहल। आ एहि बेर, ककरो नाम अलग संलग्न नस्ती मे नहि छुटल।

33. गामक आगि

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 3,611 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: सिमरिया गामक दक्षिण टोला मे आगि वैशाखक एक साँझि लगल, जखन हवा एतेक तेज नहि छल जे लोक ओकरा तूफान कहितय, मुदा एतेक जरूर छल जे एक घरक धुआँ दोसर घरक छप्पर धरि पहुँचि सकय। पहिल धुआँ सुगिया देवीक घरक पछिला कोन पर देखल गेल।

अन्तिम संकेत: मुदा आब गाम मे एक बात पहिने सँ बेसी स्पष्ट छल—अगिला आगि रोकबाक लेल पहिल चिनगारीक नाम जानब आवश्यक हो सकैत अछि, मुदा केवल नाम जानब पर्याप्त नहि।

34. नदीक पार

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 3,910 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: कमला नदीक एहि भागमे पुल बनबाक काज आरम्भ भेल तखन ककरो अनुमान नहि छल जे पहिल विवाद पुल पर नहि, घाट पर उठत। भादवक एक राति पानी सहसा घटल। दू दिन पहिने धरि जे धार मटमैला आ चौड़ा छल, तेसर दिन भोरे नदी बीच एक लम्बा पत्थरक पाँति देखाए पड़ल।

अन्तिम संकेत: नदी कैं शायद एहि भेदक जरूरत कहियो नहि छल। जरूरत लोक कैं छल—बाट चिन्हबाक, कथा कहबाक, लौटबाक, आ फेर पार जाएबाक।

35. राजमिस्त्रीक गिरावट

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 2,614 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: नगरक पश्चिम छोर पर नव बनैत पाँच-मंजिला वाणिज्यिक भवनक नाम “समृद्धि सदन” राखल गेल छल, जखनकि भवनक आधा देवालो एखन प्लास्टर बिना छल। मुख्य फाटक पर नीला पट्ट टँगल छल—“सुरक्षा पहिने।” पट्टक ठीक नीचाँ सीमेंट, बालु आ लोहेक सरिया बीच सँ मजदूरसभक सँकरा बाट भीतर जाइत छल।

अन्तिम संकेत: ओ पन्ना जकाँक-तकाँ छोड़ि देलनि। किएक तँ कखनो अधूर वाक्ये पूरा व्यवस्था पर सभसँ स्पष्ट प्रश्न होइत अछि।

36. पुरान तस्वीर

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 2,749 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: मधुबनीक पुरान मोहल्लामे नीलम झाक घरक पछिला कोठरी बहुत दिन सँ बन्द पड़ल छल। घर बेचबाक निर्णय भेलापर जे दिन पुरान संदूक, पीतलिक बासन आ कागजक गठरी अलग कएल जा रहल छल, ओहि दिन नीलम कैं एकटा काठक चौखटामे दबायल कारी-सफेद छायाचित्र भेटल।

अन्तिम संकेत: ओ प्रश्नचिह्न मेटौलनि नहि। किएक तँ अन्ततः ओही छोट चिह्न छायाचित्रक सभसँ ईमानदार हिस्सा छल।

37. रातिक आवाज

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 2,532 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: बरसातिक ओ राति झा परिवारक पुरान हवेलीमे रहबाक अन्तिम राति छल। दूसर दिन सँ घर खाली होएबाक छल, तेसर दिन खरीददारक लोक नापजोख आरम्भ करैत, आ मास भरिक भीतर पछिला हिस्सा तोड़ि नब मकानक नींव खनाइत।

अन्तिम संकेत: केवल लोहेक आवाज छल। मुदा नचिकेत जानैत छल—ओही आवाज यदि अन्हार, बरखा, पुरान अपराधबोध आ आधा-खुलल स्मृतिक बीच अबैत, तऽ शायद फेर ककरो नाम बनि सकैत छल।

38. ककर दोष

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 2,905 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: विद्यालयक मुख्य फाटक ओहि सोमदिन सामान्य समय पर खुलल छल, मुदा भीतरक आवाज सामान्य नहि छल। घण्टी बाजल, विद्यार्थी पाँतिमे लगल, शिक्षकसभ अपन-अपन कक्ष दिस बढ़लाह, मुदा प्रार्थना-सभा नहि भेल। प्रधानाचार्य कार्यालयसँ छोट सूचना देल गेल—दसम कक्षाक विद्यार्थी आदित्य मिश्र आब नहि रहल।

अन्तिम संकेत: आ शायद एहि कारण “ककर दोष” सँ कठिन प्रश्न अछि—“ककर जिम्मेदारी?” ओकर उत्तर एक नाम नहि, अनेक हाथमे बाँटल काज अछि।

39. मखानक गन्ध

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 2,203 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: नव घरक रसोईमे पहिल बेर मखान भुजायल तऽ माधवी कैं बुझायल जे गन्धक सेहो अपन बाट होइत अछि। धुआँ नहि, आगि नहि, कोनो देखाइ पड़ैत चीज नहि—तइयो ओ गन्ध एकदम सीधा ओकर नाक सँ भीतर गेल आ बरखों पुरान एक दुपहरिया खोलि देलक। ओ दुपहरिया ओकर मायकेक आँगनमे छल। बरखा नुकायल छल, माटि नम छल, आ ओकर माए लोहाक कड़ाहीमे मखान भुजैत रहथिन। कड़ाहीमे मखान…

अन्तिम संकेत: आ आब ओ गन्ध ओकरा केवल घुरायब नहि सिखबैत छल। ओकरा ठहरब सेहो सिखबैत छल।

40. पीयर फूल

आलोचनात्मक धुरी: घटना/कारण/उत्तरदायित्व · लगभग 2,623 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: अनामिका जखन पहिल बेर ओहि घरक बगैचा देखलक, तखन ओकरा फूलसभक नाम नहि, रंग याद रहल। मुख्य फाटक सँ भीतर घुसिते दहिना कात लम्बा घासक पट्टी छल, बीचमे गोल फव्वारा, आ चारू दिस कतार-बद्ध फूल। लाल गुलाब सभ ठाम सँ देखाइत छल, उज्जर चमेली साँझक गन्ध लेल राखल गेल छल, मुदा अनामिकाक आँखि बारम्बार एकटा नीच झाड़ी पर जाइत रहल—छोट-छोट पीयर फूल, जे…

अन्तिम संकेत: ओ हाथ धोएबाक लेल भीतर नहि घुरल। आज ओहि माटिक संगहि काज पर गेल।

41. दुपहरियाक मेज

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 2,483 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: जेठक दुपहरिया छल। आँगनक टाइल पर रौद एहन सफेद चमकि रहल छल जे आँखि सीधा ओतय टिकैत नहि छल। भीतर भोजन-कक्षमे मोट परदा आधा खिंचल छल, पंखा तेज घूमैत छल, आ मेजक बीचोबीच काँचक कटोरामे जल भरि दूटा हरियर पात तैराओल गेल छल। प्रभा झा तेसर बेर मेजक चारू कात घूमि देखलनि—कटोरी सभ एक्के दिशा मे अछि कि नहि, अचारक शीशी पर तेलक दाग तऽ नहि, आ…

अन्तिम संकेत: रमा एक पात निकालि काजल कैं देलक। दोसर पात कूड़ेदान दिस लऽ गेल, फेर किछु सोचि खिड़कीक गमलामे रखि देलक। प्रभा ओ छोट क्रिया देखलनि। पात दुनू एक्के छल—एक किताबमे स्मृति बनत, दोसर माटिमे गलि जाएत। मूल्य वस्तुमे नहि, ओकरा रखनिहारक ठाम आ नजरिमे सेहो बनैत अछि। साँझक रौद नरम होएत-होएत भोजन-कक्षक मेज पर तिरछा पड़ल। कपड़ा हटि चुकल छल। उज्जर काँच पर दिनक छोट-छोट खरोंच…

42. काजर

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,343 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: भोरक उजास एखन पूरा फैलल नहि छल। आँगनक पूर्वी देवाल पर पीयर रौदक एक पातल पट्टी चढ़ि रहल छल, आ शारदा देवीक कमरामे पुरान काठक दरपन आगाँ ईरा दू बेर आँखिमे काजर खींचि फेर कपाससँ पोछि चुकल छल। तेसर बेर हाथ उठौलनि तऽ शारदा देवी खाट पर सँ बजलीह—“दे, हम लगा दी।” ईरा हँसि पड़ल। “अहाँ लगायब? रेखा टेढ़ भऽ गेल तऽ हमर पहिल दिनक छायाचित्र…

अन्तिम संकेत: शारदा देवी दरपन सँ नजर हटौने बिना कहलीह, “ईरा पर नीक लागल तऽ हमरा पर किएक नहि?” नीलिमा उत्तर देबाक बदला खिड़कीक परदा खोलि देलनि। भोरक रौद पूरा कमरामे आबि गेल। काजरक रेखा एक आँखिमे सीधा, दोसरमे कने टेढ़ छल। शारदा देवी ओकरा बराबर करबाक प्रयास नहि कएलनि। हुनका पहिल बेर लागल—सभ रेखा बराबर होएब आवश्यक नहि; आवश्यक ई जे रेखा अपन आँखि छोपाय नहि।

43. नव परदा

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,316 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: घरमे परदा बदलबाक बात पहिने रंगसँ आरम्भ भेल छल। आरती झा कहने रहथि जे बैठकक पुरान हलुक भूर परदा आब देवालक नब रंग संग मेल नहि खाइत अछि। पति नवीन कहने छलाह—“जे ठीक अछि, ओकरा किएक बदलू?” मुदा दू सप्ताह बाद जखन आरती ऑनलाइन देखल डिजाइनक छायाचित्र कागज पर छपबा कऽ लय आयलीह, तखन निर्णय भऽ गेल। परदा भारी नहि, झीना होएत। बाहरी रोशनी भीतर…

अन्तिम संकेत: सविता दुआरक चौखट लग बैसि गेली। ओकरा पहिल बेर लागल—ओट देब आ अदृश्य करब एक बात नहि। घरक निजीपन केवल कपड़ा नहि बनबैत; ई निर्णय सेहो होइत अछि जे के देखायत, के देखत, आ केकर उपस्थितिकेँ चित्र सँ हटाओल नहि जाएत। हवा उठल। भूर परदा फुलि कऽ भीतर आयल, फेर बाहर गेल। सविता हाथ बढ़ा कऽ ओकरा रोकल नहि।

44. सुगन्ध

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,172 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: नीलिमा झा कैं सुगन्ध पसिन्न नहि छल। कम सँ कम ओ एतबे मानैत रहलीह। दिल्लीक छोट फ्लैटमे रहैत ओ साबुन, तेल, धूप, कपड़ा धोबाक द्रव्य—सभ किछु बिना तेज गन्धक चुनैत रहलीह। कार्यालय जाएबाक पहिने कखनो-कखनो अलमारी खोलि शीशीसभ देखैत, मुदा हाथ बिना छूने घुरि अबैत।

अन्तिम संकेत: नीलिमा शीशी दिस देखलनि, मुदा हाथ नहि बढ़ौलनि। ओहि दिन वर्तमानक गन्ध पर्याप्त छल।

45. चाँदीक कटोरी

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 973 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: चाँदीक कटोरी सभ दिन रसोईक ऊपरी आलमारीमे रहैत छल—ओहि ठाम, जतय रोजक थारी, गिलास आ कटोरी नहि पहुँचैत। मंजरी देवी ओकरा केवल अतिथि आबि रहल हो तखन निकालैत रहथि। कटोरीक किनार पर बारीक बेल-बूटाक नक्काशी छल, बीचमे एक छोट फूल। वर्षसभक उपयोग सँ भीतरक चमक कने मद्धिम पड़ि गेल छल, मुदा बाहर सँ ओ एखनहुँ उज्जर देखाइत छल।

अन्तिम संकेत: मंजरी धीरे-धीरे दही खाइत रहलीह। कटोरी मेज पर छल। आलमारी बन्द छल।

46. बाल सुकबैत

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,446 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: बरखा थमलापर छत पर हवा एकाएक साफ भऽ गेल छल। टीनक छज्जा सँ पानीक अन्तिम बूँद टपकि रहल छल, आ पूरब दिस बादरक फाँक सँ धूप निकसि आयल छल। किरण आ मृणालिनी दू बहिन, सिर धोने, भीजल बाल खोलि छत पर आबि बैसल छलीह।

अन्तिम संकेत: धूप अपने काज करैत रहल। किरण कैं पहली बेर ई अधसुखल अवस्था अधूरी नहि, बीचक एक पूरा समय जेकाँ लागल—जतय निर्णय एखन बनि रहल अछि, मुदा ओकरा जल्दी निचोड़ि आकार देब आवश्यक नहि।

47. सफेद फूल

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,155 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: श्मशान सँ घुरैत काल रागिनी कैँ पहिल चीज जे सुन्दर लागल, से सड़कक कातमे खसल एकटा सफेद फूल छल। एहि बातसँ ओकरा तुरन्त लाज लागल।

अन्तिम संकेत: फेर ओकर आँखि भीजि गेल। एहि बेर ओ दुनू भावमे सँ ककरो वापस नहि धकेलक।

48. छोट पार्टी

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,287 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: शहरक ओ घर बाहर सँ छोट नहि छल, मुदा पार्टीक नाम ‘छोट’ रखल गेल छल। रिद्धिमा मेमसाहेब कहने रहथि—“केवल परिवारक लोक, दू-चार मित्र, बस।”

अन्तिम संकेत: ओकरा बुझायल, चीजक आकार केवल कमरा, अतिथि वा खर्च सँ नहि नापल जाइत अछि। कखनो जे लोक चित्रमे छोट देखाइत अछि, ओही पूरा दृश्य कैँ सम्भव बनबैत अछि।

49. रेशमी दुपट्टा

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,077 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: दुपट्टा हलुक बैंगनी रंगक छल, जकर ऊपर धूप पड़िते रंग एक बेर नील, एक बेर गुलाबी बुझाइत। सुधा ओकरा खरीदबाक योजना बना कऽ बाजार नहि गेली छलथि।

अन्तिम संकेत: आ ओ अपन देहमे उपस्थित छलीह। एतबे पर्याप्त छल।

50. खिड़कीक वर्षा

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,250 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: वर्षा दुपहरिया बाद आरम्भ भेल। पहिने छिटपुट, फेर घनघोर। रमा खिड़की लग ठाढ़ रहलीह। काँच पर पानीक धार एक-दोसर कैँ

काटैत नीचाँ खसि रहल छल। सामनेक अमरूदक गाछ हवा सँ एक दिस झुकैत, फेर उठैत।

अन्तिम संकेत: भीतर रमा चुपचाप ठाढ़ रहलीह। एहि बेर चुप्पी अनसुनी नहि छल।

51. नींबूक स्वाद

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,041 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: डॉक्टर कहने छलाह जे मुँहक कड़वापन घटेबाक लेल कने नींबू देल जा सकैत अछि। संध्या आधा नींबू काटि प्लेट पर रखलीह। माए, देवकी देवी, तकिया सँ टेक लेने पलंग पर बैसल छलीह। बीमारी बहुत गम्भीर नहि छल, मुदा दू सप्ताहक ज्वर हुनका कमजोर कऽ देने छल।

अन्तिम संकेत: एहि बेर ओकरा कियो नहि कहलक—मुँह फेरू नहि, निगलू। ओ अपने निर्णय सँ फेर एक बूँद चाखलक।

52. गुलाबी कप

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,153 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: कार्यालयक रसोईघरमे कुल बारह कप छल—छः उज्जर, तीन नीला, दू क्रीम रंगक, आ एक गुलाबी। गुलाबी कप पर छोट सफेद बिन्दु बनल छल। हैंडल पतला छल, मुदा पकड़मे सहज।

अन्तिम संकेत: कप एखनहुँ प्रिय छल। मुदा आब प्रिय होएबाक लेल ओकरा सीमा बनि कड़ा रहबाक जरूरत नहि छल।

53. धूपक गन्ध

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 910 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: कमला देवी पुरान कपड़ा धूपमे सुखेबाक लेल अलग दिन चुनैत रहथि। ओहि दिन आकाश साफ होएबाक चाही, हवा हलुक, आ दुपहरिया धरि छत पर छाँह नहि पड़बाक चाही।

अन्तिम संकेत: कमला देवी आलमारी बन्द करैत मुस्कुरेलीह। किछु चीज धूप देखबाक बाद फेर अन्हारमे बन्द करब उचित नहि लगैत।

54. कानक बाली

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,252 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: सुधा देवीक नजर पहिने बाली पर नहि, ओकर चमक पर गेल। दुपहरिया छल। बैठकक खिड़की आधा खुलल। भीतर धूपक एक पट्टी फर्श पर पड़ल छल।

अन्तिम संकेत: गौरी मुस्कुरेली। “हमरा सेहो।”

55. लाल नेलपॉलिश

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,447 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: रुचिका पहिल बेर अपन नख पर लाल रंग लगौलक तऽ ओकरा लगल जे हाथ बदलि गेल। हाथ वही छल—पतला अँगुरी, दाहिना तर्जनीक कात छोट कट, बीचवला नख पर विद्यालयक स्याहीक पुरान दाग।

अन्तिम संकेत: ओकरा आब अपन हाथ पहचानबाक लेल लाल रंग आवश्यक नहि छल। मुदा लाल रंग सँ ओकर पहिल परिचय सेहो ओकर अपन रहत।

56. झीना परदा

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,460 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: रोगी-कक्षक बीच लटकल परदा एतेक पातर छल जे रोशनी आर-पार भासैत छल। अनामिका पहिल बेर ओकरा देखिते सोचलीह—ई परदा निजता नहि, निजताक अभिनय अछि।

अन्तिम संकेत: तइयो राति भरि ओ दुनू स्त्रीक बीच एक छोट मर्यादा बनि रहल। आ ओ मर्यादा कपड़ासँ कम, प्रश्न नहि पूछबाक निर्णयसँ बेसी बनल छल।

57. इलायची

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,873 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: हरिनारायण झा कैं इलायचीवाली चाय पसिन्न नहि छल। कम सँ कम ओ एहि बात पर चालीस बरख सँ अडिग छलाह। हुनकर पत्नी

सुधा सभ भोर चायमे एक इलायची कुटि दैत रहथि, आ हरिनारायण सभ भोर कहैत—“एतेक गन्ध किएक?”

अन्तिम संकेत: इलायचीक गन्ध हवा मे छल—न बहुत, न कम। आज जतेक चाही, ओतेक।

58. फूलदान

आलोचनात्मक धुरी: घरेलू वस्तु/देह/निजता · लगभग 1,846 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: फूलदान टूटबाक आवाज एतेक तीख छल जे बैठकमे बैसल सभ लोक एक्के बेर चुप भऽ गेल। काँचक मोट फूलदान फर्श पर पाँच पैघ टुकड़ामे बँटल छल। छोट टुकड़ा दूर धरि छिटकि गेल।

अन्तिम संकेत: रेखा गायब नहि भेल। मुदा ओकर आर-पार प्रकाश जाइत छल।

59. सूखल कमला

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 3,056 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: गोपी, तूँ रहितें तऽ हमरा एतेक बेर रुकि कऽ दिशा नहि पूछय पड़ित। तोरा सभ मोन रहैत छल।

अन्तिम संकेत: किछु बाट मृत लोक हमरा संग आरम्भ करैत अछि। मुदा अन्तमे पयर जीवितकेँ उठेबाक पड़ैत अछि।

60. बालुकाक घर

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 3,005 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: सुभद्रा देवी पहिल बेर बालुका पर पयर रखते रुकि गेलीह। “एतय नहि,” ओ कहलीह।

अन्तिम संकेत: ओ सभ जे लऽ जा रहल छल, ओकर वजन नापल नहि जा सकैत छल। आ जे ओतय छोड़ि अयल छल, ओकर सीमा सेहो नहि।

61. बाँसक आवाज

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 3,145 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: रातिक पहिल पहरमे बाँस बजल। खररर... ठक।

अन्तिम संकेत: शिवनाथक पछतावाक अपना। दुनू कैं एक बनायब आवश्यक नहि रहल।

62. धूलिक पगडंडी

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 3,659 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: दिवाकर कैं गामक पगडंडी मोन नहि छल। ओकरा केवल एतेक मोन छल जे विद्यालय जाइत समय धूरि पयरक अँगुरी धरि चढ़ि जाइत छल।

अन्तिम संकेत: आ ओकर पिताक नाम, ओ जानि गेल छल, ओकर संग शहर नहि जा रहल। ओतहि रहत—जतय लोक ढलान पर साइकिल धकेलैत दहिना मुड़बाक बाट बतबैत अछि।

63. खाली पोखरि

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 3,002 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: पोखरि सूखल छल। पूरा।

अन्तिम संकेत: कथा छल। आ क्रियासभ—डूबैत अछि, दौड़ैत अछि, चिल्लैत अछि—वृद्धसभक जिह्वा पर अपन पुरान पानीमे चलैत छल।

64. कटान

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 3,060 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: नदी एहि बरख फेर तीन हाथ नजदीक अएल। रामलोचन एहि बात कैं हाथ सँ नापैत छलाह।

अन्तिम संकेत: मुदा ओ सभ कम सँ कम एतेक तय कऽ सकल—जतय ज्ञान समाप्त होइत अछि, ओतय कथा नहि गढ़त। नदीक पाछाँ छोड़ा खाली ठाममे ई सीमा हुनका लेल नया प्रकारक मर्यादा बनि गेल।

65. माटिक गन्ध

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 3,169 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: पहिल बरखा शहरमे साँझ पाँच बजे आयल। पहिने हवा।

अन्तिम संकेत: ओ मुस्कुरायल। शायद स्मृति आखिर गन्ध सँ स्वतंत्र भऽ गेल छल।

66. बिना छत घर

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 3,845 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: घरेश्वर झा कैं अपन घर दूर सँ पहिने दीवालक कारण नहि, आकाशक कारण चिन्हायल। जतय खपरैल छत होएबाक चाही छल, ओतय साँझक नील आकाश देखाइत छल।

अन्तिम संकेत: टिन पर पानी बजैत रहल। एहि बेर ओकरा छत होएबाक आवाज सुनाइत छल।

67. नदी बोलल

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 3,226 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: जतन सहनी कहैत छलाह जे नदी नाम पुकारैत अछि। लोक हँसैत छल।

अन्तिम संकेत: किछु कथा कहबाक लेल। आ किछु बात—जतन एखन मानैत छलाह—अधूरा छोड़ि देलासँ अधिक सच्ची रहैत अछि।

68. धसान

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 2,862 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: धसान राति दू बजि कऽ सत्रह मिनट पर भेल। समय बादमे मीराक दूरभाष सँ मालूम भेल।

अन्तिम संकेत: ओ घर फेर बना सकैत अछि, मुदा जमीन पर नहि। आ जे घर स्मृतिमे बनैत अछि, ओकर छत सभ बेर आवश्यक नहि।

69. कासक मैदान

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 3,470 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: शरदक पहिल उज्जर कास फूटल तखन तारामणि कैं अपन उमेर मोन पड़ल। बासठ।

अन्तिम संकेत: ई वाक्य अपूर्ण जेकाँ छल। मुदा एखन तारामणि बुझैत छलीह—किछु जीवनक वाक्य पूर्ण विराम बिना सेहो सत्य रहैत अछि।

70. तिरहुतक धूलि

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 3,463 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: जगेसर गाड़ीवान नाम सँ बाट नापैत छल। दूरी-पाथर देखबाक ओकरा आदत कखनो नहि रहल।

अन्तिम संकेत: नाम गिनतीसँ बाहर आबि वर्तमानमे घुरि अएल। गाड़ी पक्का तिरहुतक सड़क पर धीरे-धीरे आगाँ बढ़ैत रहल।

71. तीन कब्र

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 3,072 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: तेसर कब्र गुम भेल तखन परिवारमे कियो ओ क्षण देखल नहि। ई बात नसीम कैँ सभसँ बेसी खटकैत छल।

अन्तिम संकेत: सभ नहि। एहि ‘किछु’ कैँ परिवार आखिरमे पर्याप्त मानि लेलक।

72. बाढ़िक निशान

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 3,802 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: अदिति कैँ भीत पर ओ भूरा रेखा बचपनसँ देखाइत छल। ओकर अर्थ नहि।

अन्तिम संकेत: जे बदलल, ओकरा बदलल मानू। आ जे भीत पर नहि बचल, ओकरा जबरदस्ती भीत पर फेर नहि बनाउ।

73. छोड़ल इनार

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 2,153 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: गामक पुरान इनार पन्द्रह बरख सँ बन्द छल। बन्द मतलब भरल नहि।

अन्तिम संकेत: इनार रातिमे केवल इनार छल। आ कखनो-कखनो ओकर कात बैसल लोकक कानमे पूरा गाम खुलि जाइत छल।

74. मकईक सूखल पात

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 2,905 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: कार्तिकक हवा चलिते मकईक सूखल पात खड़खड़ायल। हरिनारायण महतो हाथ रोकि देलनि।

अन्तिम संकेत: आ जखन पात बजय, तखन कखनो सुनब। कखनो काज करैत रहब।

75. अन्तिम नाव

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 2,778 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: पुल खुलल दिन रामधनी नाविक पहिल बेर अपन नाव पर अकेले बैसल। एहि वाक्यमे एक भूल अछि।

अन्तिम संकेत: केवल नदी पार करबाक पुरान ढंग बदलि गेल छल। आ रामधनीक भीतर नाव चलाबयक ढंग सेहो।

76. गाछक ठूँठ

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 2,950 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: “पीपल लग उतारि देब।” बसगाड़ीमे बैसल वृद्धा ई कहलीह तऽ नवल टिकट काटैत-काटैत रुकि गेल।

अन्तिम संकेत: अगिला ठहरावक नाम स्पष्ट छल। ओकरा ओकर चिन्ता नहि भेल।

77. धुँआ

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 2,160 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: साँझक धुँआ दूर खेतमे उठल तऽ हमरा चूड़ाक गन्ध किएक आबि गेल, ई हम पहिने नहि बुझलहुँ। धान कटि चुकल छल।

अन्तिम संकेत: धुँआ केवल आइक साँझक छल। पलायनक कथा ओकरा सँ बहुत पैघ।

78. मौन गाम

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 2,538 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: दोपहरियाक बसगाड़ी मुख्य सड़क पर देवनाथ कँ उतारि कऽ आगाँ बढ़ि गेल। बसगाड़ीक धूलि बैसला पर सड़क फेर खाली भऽ गेल।

अन्तिम संकेत: पाछाँ कोनो आवाज नहि एलै। आ जे नहि एलै, देवनाथ ओकरा आवाज बना कऽ सुनबाक प्रयत्न सेहो नहि कएलनि।

79. तीन बरखाक बीच

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 2,396 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: अड़सठ बरखक अनिमा देवी अपन दोकानक आधा शटर उठा कऽ भीतर पैसलीह तँ पहिल काज कुर्सी पर बैसल धूर झाड़ब नहि, पुरान टंकण-यन्त्रक ढक्कन खोलब भेल। यन्त्र आब चलैत नहि छल।

अन्तिम संकेत: अनिमा हाथ हटौलनि नहि। दुनू धीरे-धीरे घर दिस चलि गेलीह।

80. घुरबाक कारण

आलोचनात्मक धुरी: भूगोल/स्मृति/विस्थापन · लगभग 2,600 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: एकोनसठि बरखक माधवी झा दरभंगाक पुरान बस पड़ाव पर उतरलीह तँ पहिल बेर हुनका ई नहि लागल जे ओ घर घुरि अएलीह। हुनका लागल, ओ कोनो एहन ठाम अएलीह जकर नाप-जोख हुनकर देह पहिने सँ जनैत अछि, मुदा आँखि फेर सँ सीखि रहल अछि।

अन्तिम संकेत: एकोनसठि बरखमे हुनका बुझायल जे कखनो-कखनो घुरबाक कारण ठाम नहि, कथा होइत अछि। ओ कथा जकर आधा भाग बहुत दिन धरि घरमे रहि गेल हो।

81. बहिनसभ

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 2,282 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: मृदुला आ नीराक तेसर मुलाकात एक विद्यालयक बरामदामे भेल। दुनू वृद्धा भऽ चुकल छलीह।

अन्तिम संकेत: किछु जगह खाली रहय देलनि। एहि बेर हुनका ओकर नाम रखबाक कोनो जल्दी नहि छल।

82. पुरान डॉक्टर

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 2,073 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: वसुधा अड़सठ बरखक भऽ चुकल छलीह, जखन पुरान बजारक ओ गल्ली फेर देखलनि। गल्ली ओही छल, मुदा ओकर चौड़ाइ मानू घटि गेल छल।

अन्तिम संकेत: आ सभसँ अन्तमे पुरान चिकित्सकक। एहि बेर क्रम हुनका ठीक लागल।

83. घर नम्बर पाँच

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 1,596 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: उन्नीस सय सत्तानबेक सावनमे सरिता साह पहिल बेर घर नम्बर पाँचक उत्तर देवाल ध्यानसँ देखलीह। देवालमे एक विचित्र खिड़की छल—नीचा भाग ईंटसँ भरल, ऊपर पुरान सखुआक चौखट, तकर भीतर लोहेक जाली।

अन्तिम संकेत: बाहर सफेद पट्ट पर पाँच अंक धीरे-धीरे अन्हारमे हराएत गेल। घर ओतहि रहल—एक्के नम्बर, बदलैत उपयोग, आ पाँच स्त्रीक एहन अनजान निर्णयक बीच बनल सूक्ष्म जोड़ जकरा हुनका सभमे सँ कियो पूरा जानि नहि सकल।

84. फोटो एल्बम

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 2,022 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: बरखा थमलाक बाद साँझक उजास एखन पूर्ण साफ नहि भेल छल। आँगनक ईंट भीजल छल, आमक पात सँ बेर-बेर बूँद खसैत छल, आ बरामदामे राखल बाँसक मोढ़ा पर चन्द्रिमा पुरान छायाचित्रक पोथी खोलि बैसल रहथि। पोथीक जिल्द पहिने गहिर लाल रंगक रहल होएत, मुदा आब किनार सभ घिसि कऽ धूसर भऽ गेल छल। बीचक सुनहरा रेखा केवल ओतबे बचल छल जतय हाथ कम लगल रहय। घरमे दू...

अन्तिम संकेत: छायाचित्र सभ ओ सत्य सिद्ध नहि करैत छल। मुदा ओ सभ एकटा सुविधा अवश्य तोड़ि देने छल—एक वाक्यमे पूरा परिवार कहि देबाक सुविधा।

85. एक निर्णय

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 2,071 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: बीस बरख बाद सीमा ओ शीशी कैं पहिने गन्ध सँ चिन्हलक। भंडारक ताख पर काँचक एक पाँति सजल छल। ढक्कन आब पहिने जेकाँ टिनक नहि, मोट प्लास्टिकक छल; कागजी चिह्न चमकदार; अक्षर पैघ। सीमा अपन बेटी आर्या लेल तिलकुट आ चूड़ा किनबाक लेल भीतर आयल छल। आर्या एक शीशी उठा कऽ कहलकी, “माँ, ई आमक अचार लिअ? मौसीक घरमे खाइने रही, नीक छल।”

अन्तिम संकेत: कापीक पहिल पन्ना खुलल छल। सावित्री देवीक नाम सभसँ ऊपर छल।

86. मित्रक बेटी

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 2,040 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: सरोजिनी झा कैं पहिने ओकर आँखि चिन्हलनि। चेहरा नहि, नाम नहि, पोशाक नहि—आँखिक कोनमे बात सुनैत काल जे छोट सिकुड़न बनैत छल, से। नगर पुस्तकालयक बरामदा मे भीड़ छल। पुरान सदस्यसभक नाम फेर दर्ज कएल जा रहल छल, नव परिचय-पत्र बाँटल जा रहल छल, आ भीतर बच्चासभ लेल पुस्तक-प्रदर्शनी लागल छल। सरोजिनी अपन नवीकरणक पर्ची हाथमे लेने पंक्तिमे ठाढ़...

अन्तिम संकेत: सरोजिनी चायक पहिल घूँट लेलनि। चीनी नहि छल। स्वाद बदलि चुकल छल। मुदा हुनका पहिल बेर लागल जे बदलल स्वाद पुरान स्वाद कैं झूठ नहि बनबैत अछि।

87. बस-ठाम

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 1,985 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: किरण मिश्र कैं ओ बस-ठहराव पहिल बेर प्रेमक ठाम जेकाँ याद छल। ई स्मृति बहुत बाद बनल छल। जखन घटना भेल, तखन ओ केवल महाविद्यालयक परीक्षा समाप्त भेला बादक एक गरम दुपहरिया छल, सड़कक कात धूलि छल, आ टीनक छज्जा तर तीन गोट लोक बसक बाट देखैत ठाढ़ छल।

अन्तिम संकेत: ओ उत्तरमे नरेनक बात सेहो कहतीह। एहि बेर कोनो कथा चालीस बरख तक अधूरी छोड़बाक जरूरत नहि छल।

88. विवाहक बाद

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 1,790 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: तीस बरख बाद भोरक चाय ठंढा भऽ गेल छल। सुधा कपक ऊपर बनल पातर मलाई चमचसँ हटबैत खिड़की दिस देखैत रहलीह। सामने अमरूदक गाछक आधा भाग पड़ोसीक नब दीवाल पाछाँ लुकि गेल छल। देवेश मेज पर दूटा कागज पसारने बैसल छलाह—एक घर मरम्मतिक अनुमान, दोसर बेटी अर्चनाक पत्रक छपल प्रति।

अन्तिम संकेत: सुधा कैं एहि अनिर्णय सँ बेचैनी नहि भेल। तीस बरख बाद हुनका पहिल बेर लगल—कखनो-कखनो विवाहक सभसँ पक्की बात ई नहि जे दुनू एक्के उत्तर पर पहुँचि गेल, बल्कि ई जे आब उत्तर बनबाक पहिने दुनू प्रश्नमे उपस्थित छथि।

89. माएक मित्र

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 1,787 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: माएक मृत्यु भेलाक दू मास बाद अपर्णा पहिल बेर लीला देवीक घर गेलीह। लीला देवी अन्त्येष्टिमे नहि आबि सकल रहथि। घुटनाक शल्यक्रिया भेल रहनि। तेरहम दिन हुनकर छोट सन पत्र आयल छल —“सरोज गेलीह, मुदा हमर जीवनक एक पूरा समय हुनका संग गेल।” अपर्णा पत्र तीन बेर पढ़ने रहथि। हुनका माएक जीवनमे “एक पूरा समय” एहन कोनो हिस्सा हो सकैत अछि जकरा…

अन्तिम संकेत: राति चाय बनबैत ओ आलू छीलबाक बात याद कएलनि आ अपनहि हँसि पड़लीह। सरोजक सभसँ नया परिचय हुनका कोनो महान घटना

सँ नहि, एहि बात सँ भेल छल जे कखनो ओ आलू मोट छीलैत रहथि। आ शायद एहि छोट बातक कारणेँ माए पहिल बेर स्मृति सँ बाहर, फेर मनुष्य जेकाँ लगलीह।

90. पत्र जे भेजल नहि गेल

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 1,909 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: सेवानिवृत्तिक तीन दिन पहिने सुधा अपन विद्यालयक पुरान काठक मेज खाली करैत रहथि। ऊपरक दराजमे चाक, मुहर, आधा भरल काँटीक डिब्बी, दूटा सूखल कलम आ तीन बरख पुरान परीक्षा-सूची छल। नीचाँक दराज खोलिते एक पीयर पड़ल लिफाफा किनार सँ बाहर झाँकि रहल छल।

अन्तिम संकेत: मुदा एहि बेर ओकर न भेजल रहब पछतावा नहि छल। ओ कागज आब कोनो अधूर काज नहि, एक पुरान दृष्टिक साक्षी छल—जकर अर्थ दराज बदलला सँ नहि, जीवन बदलला सँ बदलैत रहल।

91. दू शहर

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 1,674 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: दिल्ली, २०२६। अर्चना आवास-भवनक कार्यालयमे एक छोट प्रपत्र भरि रहल छलीह।

अन्तिम संकेत: आ दरभंगा दिस सेहो नहि। ओ बस आगाँ बढ़ि गेलीह—एहन चालि सँ जाहिमे दुनू शहरक अभ्यास छल।

92. बीस बरख बाद

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 2,199 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: विद्यालयक फाटक पर नब रंग छल, मुदा नामक पट्ट एखनहुँ ओतबे ऊँच छल जतय बीस बरख पहिने छल। मृदुला भीतर पैसिते माथ उठौलक।

अन्तिम संकेत: सड़क खाली भेल। पाँचो बेराबेरी पार भेल। कियो ठीक नहि बुझि सकल जे पहिने के पग बढ़ौलक।

93. मौसीक घर

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 1,832 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: २०२६। सुधा जखन अड़सठि बरखक उमेरमे मालती मौसीक घरक सामने ठाढ़ भेलीह, तखन हुनका पहिने घर नहि, दुआर गलत लागल।

अन्तिम संकेत: घर अपन दिशा बदलि लेने छल। सुधा बुझलीह—शायद ओहो।

94. लाल पेटी

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 2,113 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: भादवक दुपहरिया छल। आँगनमे धूप एक कात सरकि गेल छल, मुदा बरामदाक भीतर उमस एखनहुँ अटकल छल। मालती पुरान कोठरी खाली करबा लेल एक-एक वस्तु बाहर निकालि रहल छलीह।

अन्तिम संकेत: ओ केवल जे राखल गेल, से सम्हारैत रहल। आ तीन पीढ़ी अपन-अपन समयमे ओकर अर्थ बदलैत रहल।

95. संगीत शिक्षक

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 1,553 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: महिला कौशल केन्द्रक तेसर मंजिल पर ओहि दिन विद्युत-मरम्मत प्रशिक्षणक अन्तिम व्यावहारिक परीक्षा छल। नलिनी झा बिहान साढ़े आठ बजेसँ भवनमे छलीह।

अन्तिम संकेत: मुदा दुनूक बीच एक सूक्ष्म सुर छल। एतेक दिन बाद ओ सुर पहिल बेर स्पष्ट सुनाइ देलक।

96. अलग बाट

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 1,664 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: १९८६ भादवक अन्तिम सप्ताह छल। सिमराहा उच्च विद्यालयक आँगनमे परिणामक पर्चा बाँटल जा चुकल छल।

अन्तिम संकेत: कारण अलग बाट पर चलब मित्रताक विरुद्ध नहि छल। आ कोन बाट स्थायी अछि—ई प्रश्न आब दुनूक लेल बहुत पुरान भऽ चुकल छल।

97. खोआइल वर्ष

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 1,599 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: २०२६क भादव मासक एक रविदिन, अनिमा झा अपन नातिन अदितिक संग भोजनक मेज पर पुरान कागज पसारने बैसल छलीह। अदितिक विद्यालयमे “हमर परिवारक समय-रेखा” बनयबाक काज देल गेल छल।

अन्तिम संकेत: स्मृति जतेक देलक, ततेक राखलनि। बाकी अर्थ ओहि लोकसभमे रहय देलनि, जे ओ पाँच बरखक किछु अंश अपना भीतर लेने आगाँ बढ़ि गेल छल।

98. अन्तिम यात्रा

आलोचनात्मक धुरी: परिवार/समय/पुनर्पाठ · लगभग 1,494 शब्द।

आरम्भिक केन्द्र: साँझक गाड़ी दरभंगा सँ खुलिते शशिप्रभा खिड़कीक काँच पर हाथ रखलनि। काँच ठंढा छल। बाहरक उजास धीरे-धीरे पाछाँ सरकि रहल छल। हुनकर उमेर चौहत्तरि बरख छल, मुदा रेलयात्रामे ओ एखनहुँ अपन सामान स्वयं गिनैत रहथि—एक कपड़ाक झोरा, एक छोट थैला, जलक बोतल, औषधिक डिबिया आ यात्रा-पत्रक छापल प्रति।

अन्तिम संकेत: यात्रा-पत्र ककरो लग बचल नहि। मुदा ओहि दिनक बाद मायकेक दुआर भोरमे फेर कहियो माएक हाथ सँ भीतर दिस सँ नहि खुलल।

९. शिल्पगत समेकित मूल्यांकन

अधिकांश कथा अन्तिम पाँतिमे उपदेश नहि दैत, आरम्भिक वस्तु कैं बदलल अर्थमे फेर उपस्थित करैत अछि। नकाशा, पेटी, प्रश्नचिह्न, फूल, कप, परदा, नाव, कब्र, दुआर, रेलयात्रा—ई वापसी-बिम्ब कथा कैं वृत्ताकार एकता दैत अछि। किछु कथा मे अन्तिम व्याख्या बिम्बक अर्थ बहुत स्पष्ट कऽ दैत अछि; ओहि ठाम १–२ व्याख्यात्मक वाक्य घटेला पर ध्वनिक स्वायत्तता आरो बढ़ि सकैत अछि।

९.१ पुनरावृत्ति: परियोजनाक शक्ति आ जोखिम

संग्रहक वैचारिक एकता अत्यन्त मजबूत अछि, मुदा “एक कारण नहि”, “प्रमाण अपूर्ण”, “रिक्ति बचाउ”, “कथा गढ़ब नहि”, “अनेक दृष्टि” जेकाँ सूत्र

बारम्बार लौटैत अछि। स्वतंत्र कथा रूपेँ ई प्रभावी अछि; लगातार ९८ कथा पढ़ला पर कखनो-कखनो प्रत्याशित निष्कर्षक जोखिम बनैत अछि। तथापि विषय, आकार, स्थान आ पात्रक विविधता एहि पुनरावृत्ति केँ पर्याप्त रूपेँ संतुलित करैत अछि।

९.२ स्त्री-अनुभव

संग्रहक पैघ भाग स्त्री-पात्रक अनुभव पर केन्द्रित अछि, मुदा स्त्रीत्व केँ एकल पीड़ा वा प्रतीकमे सीमित नहि कएल गेल। शोधकर्त्री, अभिलेखकर्मी, शिक्षिका, बेटी, माए, बहिन, मजदूर, विद्यार्थी, वृद्धा, मित्र, पत्नी आ विधवा—भूमिका व्यापक अछि। विशेष उपलब्धि ई जे घरेलू वस्तु आ देह-संबंधी कथा मे सौन्दर्य, निजता, श्रम आ निर्णयक प्रश्न परस्पर जुड़ैत अछि।

९.३ मिथिला: पृष्ठभूमि नहि, ज्ञान-भूगोल

जनकपुर, दरभंगा, मधुबनी, सौराठ, कमला, तिरहुत, पोखरि, पगडंडी, इनार, मेला आ नदी-घाट स्थानीय रंग मात्र नहि। बाटक नाम, बोली, जलप्रवाह, वंश-स्मृति, विवाह, पलायन, श्रम आ अभिलेखक संस्था मिलि एक विशिष्ट ज्ञान-व्यवस्था रचैत अछि। क्षेत्रीयता एहि कारण कथ्यक प्रमाण-तर्कक आधार अछि।

१०. शुद्ध मैथिली निखार ऑडिट

भाषिक प्रवाह समग्र रूपेँ स्वाभाविक आ मैथिली-केंद्रित अछि; मुदा प्रकाशन-निखार लेल किछु रूपक एकरूपता आवश्यक अछि। नीचाँक संख्या मूल पाठक शब्द-गणना पर आधारित अछि।

विषय	मात्रा	मूल रूप	निखार-प्रस्ताव
रोमन रूप	४	[ISBN], caption, missed call	प्रकाशन-संकेतक लेल [ISBN]; caption → विवरण-पाँति; missed call → अनुत्तरित दूरभाष-संकेत

पानी	268	पानी	पानि
गायब	58	गायब	बिलायल
भूलल	4	भूलल	बिसरल; शीर्षक “भूलल शास्त्रार्थ” पर निखार-विचार
खोआइल	7	खोआइल	हेरायल; शीर्षक “खोआइल वर्ष” → “हेरायल वर्ष”
कमरा	63	कमरा	कोठली
कोठरी	85	कोठरी	कोठली / प्रसंगानुसार कक्ष
बरामदा	41	बरामदा	ओसारा
चाय	177	चाय	चाह
अंगूठा	3	अंगूठा	औंठा

शब्द-बदलाव यान्त्रिक रूपेँ नहि करबाक चाही। “कोठरी” किछु ऐतिहासिक/संस्थागत प्रसंगमे विशेष अर्थ दऽ सकैत अछि; ओतय “कक्ष” अधिक उपयुक्त हो सकैत अछि। मुदा एक्के पुस्तकमे “पानी/पानि”, “चाय/चाह” जेकाँ व्यापक मिश्रण शैलीगत एकरूपता घटबैत अछि।

पाठमे बाहरी कार्य-निर्देश, कृत्रिम प्रतिरूप-पाठ, अधूर संपादकीय निर्देश वा यन्त्रजनित संवाद-चिह्नक स्पष्ट अवशेष नहि भेटल। कथा-विश्वक भीतरक सूची, टिप्पणी, नस्ती-भाषा, प्रश्नचिह्न आ अभिलेखीय निर्देश स्वाभाविक कथात्मक उपकरण रूपेँ समाहित अछि।

११. निष्कर्ष

“स्मृतिक दोसर दिस” स्मृति-विषयक संग्रह मात्र नहि; ई स्मृति केँ प्रमाण, इतिहास, भाषा, स्थान, परिवार, श्रम आ संस्थागत अधिकारक संग जोड़ि व्यापक कथात्मक प्रयोग करैत अछि। कृतिक मूल प्रश्न अछि—जे हम जानैत छी, से कोना जानैत छी? कागज, आँखि, गन्ध, आवाज, नकाशा, लोककथा,

दैनिकी, पाँजि, छायाचित्र, देह वा मौन—कोन साक्ष्य कतेक कहैत अछि, आ कतय चुप रहैत अछि?

भारतीय काव्यशास्त्रक ध्वनि आ औचित्य अकथित रिक्ति बुझबैत अछि; पाश्चात्य कथाशास्त्र बहुदृष्टि, काल-विन्यास आ अभिलेखीय कथन स्पष्ट करैत अछि; नव्य-न्याय प्रमाणक प्रकार आ निष्कर्ष-सीमा पर प्रकाश दैत अछि; विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति आधिकारिक स्रोतक समानान्तर लोकस्मृति, श्रम, स्थल, वस्तु आ मौनक अधिकार स्थापित करैत अछि। १८ कथा मिलि एक एहन साहित्यिक संसार रचैत अछि जतय स्मृति अतीतक प्रतिलिपि नहि, वर्तमानमे चलैत नैतिक क्रिया अछि।

बिबलियोग्राफी

स्मृतिक दोसर दिस

नाटचशास्त्र

ध्वन्यालोक

काव्यप्रकाश

वक्रोक्तिजीवित

साहित्यदर्पण

रसगंगाधर

तत्त्वचिन्तामणि

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली

व्युत्पत्तिवाद

[Poetics]

[Mimesis]

[The Dialogic Imagination]

[Narrative Discourse]

[Time and Narrative]

[Memory, History, Forgetting]

[Metahistory]

[The Content of the Form]

[On Collective Memory]

आलेख १७ · कथा, लघुकथा आ कथा-समालोचना

इजोत : जनम-जनमक कथा

सारांश

ई अध्ययन ४९ लघुकथाक सम्पूर्ण संग्रहकेँ एकटा अन्तर्संबद्ध कथाचक्रक रूपमे पढ़ैत अछि। ग्रन्थ चारि बारह-कथीय खण्ड—‘इजोत’, ‘गोतगोत’, ‘तत्त्व-कथा’ आ ‘पिप्रा’—क पश्चात् ‘विदेह’ समापनिकामे पहुँचैत अछि। संग्रहक केन्द्रीय सर्जनात्मक क्रिया “पूरा सत्य” घोषित करब नहि, बल्कि प्रमाण, स्मृति, मौखिक गवाही, दस्तावेज, देह, मौन, अनुपस्थिति आ संशोधनकेँ एक-दोसराक समानान्तर रखि पाठककेँ निर्णयक नैतिक भार सौंपब अछि। पाँजिक खुरचल पाँति, घरक बाहरी दृष्टि, प्रवासी देह, नदीक अनिश्चित पुकार, जातिक बाहर राखल नाँव, ओछाइनक ठाम, विधवा स्त्रीक पुनर्विवाह, गजलिक बहर, पाहुनक कोठली, कुहेस, न्यायक सीमा आ लुप्तप्राय आखर—पहिल खण्डमे इजोत ज्ञानक रूपक बनैत अछि; ओ अन्हार मिटबैत नहि, वस्तुक किनार देखबैत अछि। दोसर खण्ड वंशकेँ रक्तक रेखा नहि, अभिलेखीय संघर्ष, दत्तक सम्बन्ध, जाति-पार परिवार, मातृवंश, कला-वंश, छिपल शाखा आ परदेशी जड़िक बहुल संरचना रूपेँ पुनर्लेखित करैत अछि। तेसर खण्ड भारतीय दार्शनिक पदसभ—प्रमाण, माया, रस, नियति, शब्द-ब्रह्म, अनित्य, आत्म-अनात्म, कार्य-कारण, मौन, स्वप्न, संशय, मोक्ष—केँ अमूर्त भाष्य नहि, दैनिक जीवनक परीक्षण-भूमि बनबैत अछि। चौठ खण्ड पिप्राकेँ सूक्ष्म सार्वजनिक जगत बनबैत अछि, जतय पर्व, संगीत, अदालत, डाक, परदेस, बाढ़ि, भूत, विद्यालय, चित्रकला, घर-घुरनाइ, नाह आ पुनः छठ सामुदायिक स्मृति आ परिवर्तनक बहस खोलैत अछि। अन्तिम ‘विदेह’ ई सभ प्रवाहकेँ सम्पादकीय नैतिकतामे परिणत करैत अछि—स्रोत, सहमति, संशोधन, अनिश्चितता आ अगिला लिखनिहार लेल खाली पन्ना।

बीजशब्द

इजोत : जनम-जनमक कथा · मैथिली कथा · लघुकथा · पाठाधारित समीक्षा · कथन-शिल्प

१.२३. गजेन्द्र ठाकुर- इजोत — जनम-जनमक कथा- शोध आलेख

इजोत — जनम-जनमक कथा

अभिलेख, स्मृति, प्रमाण, वंश, देह आ लोक-इतिहासक बहुस्तरीय साहित्यिक अध्ययन

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य आख्यान-चिन्तन, नव्य न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति पर आधारित गहन शोध-समीक्षा

विषय-ग्रन्थ : गजेन्द्र ठाकुरक ४९ लघुकथाक संग्रह

शोध-लेख

सारांश

ई अध्ययन ४९ लघुकथाक सम्पूर्ण संग्रहकेँ एकटा अन्तर्संबद्ध कथाचक्रक रूपमे पढ़ैत अछि। ग्रन्थ चारि बारह-कथीय खण्ड—‘इजोत’, ‘गोतगोत’, ‘तत्त्व-कथा’ आ ‘पिप्रा’—क पश्चात् ‘विदेह’ समापनिकामे पहुँचैत अछि। संग्रहक केन्द्रीय सर्जनात्मक क्रिया “पूरा सत्य” घोषित करब नहि, बल्कि प्रमाण, स्मृति, मौखिक गवाही, दस्तावेज, देह, मौन, अनुपस्थिति आ संशोधनकेँ एक-दोसराक समानान्तर रखि पाठककेँ निर्णयक नैतिक भार सौंपब अछि। पाँजिक खुरचल पाँति, घरक बाहरी दृष्टि, प्रवासी देह, नदीक अनिश्चित पुकार, जातिक बाहर राखल नाँव, ओछाइनक ठाम, विधवा स्त्रीक पुनर्विवाह, गजलिक बहर, पाहुनक कोठली, कुहेस, न्यायक सीमा आ लुप्तप्राय आखर—पहिल खण्डमे इजोत ज्ञानक रूपक बनैत अछि; ओ अन्हार मिटबैत नहि, वस्तुक किनार देखबैत अछि। दोसर खण्ड वंशकेँ रक्तक रेखा नहि, अभिलेखीय संघर्ष, दत्तक सम्बन्ध, जाति-पार परिवार, मातृवंश, कला-वंश, छिपल शाखा आ परदेशी जड़िक बहुल संरचना रूपेँ पुनर्लेखित करैत अछि। तेसर खण्ड भारतीय दार्शनिक पदसभ—प्रमाण, माया, रस, नियति, शब्द-ब्रह्म, अनित्य, आत्म-अनात्म, कार्य-कारण, मौन, स्वप्न, संशय, मोक्ष—केँ अमूर्त भाष्य नहि, दैनिक जीवनक परीक्षण-भूमि बनबैत अछि। चौठ खण्ड पिप्राकेँ सूक्ष्म सार्वजनिक जगत बनबैत अछि, जतय पर्व, संगीत, अदालत, डाक, परदेस, बाढ़ि, भूत, विद्यालय, चित्रकला, घर-घुरनाइ, नाह आ पुनः छठ सामुदायिक स्मृति आ परिवर्तनक बहस खोलैत अछि। अन्तिम ‘विदेह’ ई सभ प्रवाहकेँ सम्पादकीय

नैतिकतामे परिणत करैत अछि—स्रोत, सहमति, संशोधन, अनिश्चितता आ अगिला लिखनिहार लेल खाली पन्ना।

बीज-शब्द : इजोत, अभिलेख, स्मृति, पाँजि, प्रमाण, नव्य न्याय, रस, ध्वनि, वंश, लोक-इतिहास, पिप्रा, विदेह, समानान्तर इतिहास।

१. अध्ययनक पाठाधार, सीमा आ पद्धति

अध्ययनक पाठाधार प्रकाशन-संस्करणक ४९ लघुकथा अछि। संगणकीय पाठ-विभाजनमे मुख्य कथाभाग लगभग १,५३,४०९ शब्दक अछि। ई संख्या मुद्रित पृष्ठ-संख्याक विकल्प नहि, बल्कि सम्पूर्णता जाँचबाक सहायक मात्र अछि। चारू मुख्य खण्डमे बारह-बारह कथा अछि, आ अन्तिम ‘विदेह’ स्वतंत्र समापनिका अछि। एहि कारण समीक्षा केवल “प्रतिनिधि कथा” चुनि निष्कर्ष नहि निकालैत; १ सँ ४९ धरि सभ रचनाकेँ पृथक रूपेँ पढ़ल गेल अछि।

पद्धति चारि स्तरपर चलैत अछि। पहिल, भारतीय काव्यशास्त्रीय स्तर—रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य, विभाव-अनुभाव आ सहृदयता। दोसर, पाश्चात्य आख्यान-चिन्तन—दृष्टिबिन्दु, काल, बहुस्वर, पाठकीय रिक्ति, स्मृति-आख्यान, दस्तावेजी रूप आ दैनिक यथार्थ। तेसर, नव्य न्याय—प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द-प्रमाण, अभाव-ज्ञान, हेतु-साध्य, व्याप्ति, उपाधि आ प्रमाणक सीमा। चारिम, एहि अध्ययनमे ‘विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति’ नामे ओ प्रक्रिया ग्रहण कएल गेल अछि जाहिमे राजकीय कागज, निजी लेखन, मौखिक स्मृति, वस्तुगत चिन्ह, मौन/अनुपस्थिति आ बादक संशोधनकेँ एकहि रेखामे विलीन नहि कऽ समानान्तर स्रोत-रेखा रूपेँ राखल जाइत अछि। ई परिभाषा ग्रन्थक कथन-व्यवहारसँ निष्पन्न विश्लेषणात्मक रूप अछि; एकरा पूर्वनिर्धारित सार्वत्रिक सिद्धान्त मानल नहि गेल अछि।

शोधक मूल अनुशासन ई रहल अछि जे कथा जतबा कहैत अछि, विश्लेषण ओतबेसँ आगाँ निश्चित दावा नहि करय। जतय पात्र स्वयं “अज्ञात”, “अस्पष्ट”, “सम्भावित”, “नहि जानैत छी” वा “दोसरो कथा छल” कहैत अछि, समीक्षा ओहि अनिश्चितताकेँ कथात्मक दुर्बलता नहि, ज्ञान-नैतिकताक सक्रिय युक्ति रूपेँ पढ़ैत अछि।

१.१ रचना-सम्पूर्णता जाँच

क्रम	कथा	खण्ड	संगणकीय शब्द	केन्द्रीय प्रश्न
१	पाँजिक चोर	इजोत	२’४५१	मेटाओल नाँव, अभिलेखीय प्रमाण, चुप्पी
२	फेर सँ देखल घर	इजोत	२’५७४	घर, स्त्री-स्मृति, दूरीक दृष्टि
३	मुक्त राज्यमे	इजोत	३’२०३	प्रवास, श्रम, स्वतंत्रताक सीमित अर्थ
४	जल समाधि	इजोत	२’६०४	नदी, स्त्री-देह, अनिश्चित लोकविश्वास
५	जातिक बाहर	इजोत	२’१७५	पाँजि, जातिगत बहिष्कार, लोक-स्मृति
६	ओछाइनक हिसाब	इजोत	२’२८८	वैवाहिक ठाम, देह, हास्य, स्वेच्छा
७	दोसर बियाह	इजोत	१’९४१	विधवा पुनर्विवाह, घर, स्त्रीक निर्णय

क्रम	कथा	खण्ड	संगणकीय शब्द	केन्द्रीय प्रश्न
८	गजलक बहर	इजोत	२’३३१	कला-अनुशासन, स्त्री-स्वर, पीढ़ीगत संचरण
९	पाहुनक कोठली	इजोत	१’४६३	घर-पाहुन भेद, प्रवास, संवाद
१०	कुहेस	इजोत	१’८०२	घुरनाइ, दृष्टि, प्रवासी पहचान
११	न्यायक सीमा	इजोत	१’५११	अभाव-ज्ञान, शोक, दर्शनक सीमा
१२	आखर	इजोत	१’९९६	मैथिलाक्षर, भाषा-संचरण, खाली पाँति
१३	पाँजी (अन्तिम प्रविष्टि)	गोतगोत	४’८४५	अभिलेख-संशोधन, दया आ तथ्य
१४	जुड़वा	गोतगोत	४’५०१	जन्म-विनिमय, जैविकता आ पालन

क्रम	कथा	खण्ड	संगणकीय शब्द	केन्द्रीय प्रश्न
१५	गोतिया	गोतगोत	२’७५६	स्थायी पता, प्रवास, मातृ-पितृ पाँति
१६	छिपल शाखा	गोतगोत	३’७५६	पत्र, दबल शाखा, परिवारक पुनर्सम्पर्क
१७	दत्तक	गोतगोत	३’७५७	दत्तक सम्बन्ध, कानून, सम्पत्ति
१८	जाति-पार	गोतगोत	३’४८३	अन्तर्जातीय परिवार, उपनाम, स्व-परिचय
१९	डायरी	गोतगोत	२’५७०	निष्पक्षताक मिथक, निजी लेखन
२०	नकली वंश	गोतगोत	२’८३८	प्रतिष्ठा, गढ़ल वंश, सार्वजनिक सुधार
२१	परदेशी जड़ि	गोतगोत	३’१५४	प्रवासी उत्तराधिकार, अप्रमाणित सम्बन्ध

क्रम	कथा	खण्ड	संगणकीय शब्द	केन्द्रीय प्रश्न
२२	पुरोहिताई	गोतगोत	३’३७५	वंशानुगत पद, सेवा, साझा जिम्मेवारी
२३	रागिनी-वंश	गोतगोत	३’६९१	संगीत-वंश, स्रोत, श्रेय, अभिलेखन
२४	मातृवंश	गोतगोत	४’१४०	स्त्री-उत्तराधिकार, परम्पराक नव दमन
२५	प्रमाण	तत्त्व-कथा	३’२०४	आरोप, प्रत्यक्ष-अनुमान, पूर्वग्रह
२६	माया	तत्त्व-कथा	३’१७०	दृश्य-आकर्षण, निवेश, अर्थ-भ्रम
२७	रस	तत्त्व-कथा	२’४२६	रंगमंच, करुण, सहृदय, अनुभव
२८	नियति	तत्त्व-कथा	३’७८०	जुआ, उत्तरदायित्व, परिस्थिति

क्रम	कथा	खण्ड	संगणकीय शब्द	केन्द्रीय प्रश्न
२९	शब्द-ब्रह्म	तत्त्व-कथा	२’५०७	भाषाक सीमा, शोक, अधूर वाक्य
३०	अनित्य	तत्त्व-कथा	२’९७९	घर-विनाश, परिवर्तन, स्मृति
३१	आत्म-अनात्म	तत्त्व-कथा	३’२४३	अभिनय, भूमिका, आत्म-परिवर्तन
३२	कार्य-कारण	तत्त्व-कथा	३’१००	पुलिया-दुर्घटना, बहुकारणता
३३	मौन	तत्त्व-कथा	२’१३२	मौन-व्रत, प्रक्षेपण, उत्तरदायित्व
३४	स्वप्न	तत्त्व-कथा	३’६४४	स्वप्न-जागरण, अनुभवक श्रेणी
३५	संशय	तत्त्व-कथा	२’८०५	वैज्ञानिक प्रश्न, कर्म, विनम्रता
३६	मोक्ष	तत्त्व-कथा	४’७७१	मृत्यु, त्याग, अनुत्तरित मुक्ति

क्रम	कथा	खण्ड	संगणकीय शब्द	केन्द्रीय प्रश्न
३७	छठ	पिप्रा	२′८२४	सार्वजनिक घाट, आरक्षण, सामुदायिक सुधार
३८	राग	पिप्रा	३′४७६	लोक-संगीत, अभिलेखन, परिवर्तन
३९	अदालत	पिप्रा	५′४०८	भूमि-विवाद, गवाही, मानचित्र, उपयोग
४०	डाकिया	पिप्रा	३′२८५	पता, स्थानीय ज्ञान, संचार-संक्रमण
४१	परदेस	पिप्रा	२′७८२	प्रवासी पत्र, घाट, शरीरक स्मृति
४२	डूम	पिप्रा	४′९३७	बाढ़ि, लापता बालक, अनिश्चित शोक
४३	भूत	पिप्रा	२′८२१	लोकविश्वास, प्रत्यक्ष अनुभव, नामकरण

क्रम	कथा	खण्ड	संगणकीय शब्द	केन्द्रीय प्रश्न
४४	मास्टर साहेब	पिप्रा	२’८८६	सेवानिवृत्ति, भूमिका, शिक्षकीय पहचान
४५	चित्रकार	पिप्रा	४’०५६	मिथिला-चित्र, बाजार, समकालीन दृश्य
४६	घुरनाइ	पिप्रा	५’४६९	घर-फेर, स्त्री, उत्तराधिकार, नामकरण
४७	नाह	पिप्रा	२’१४१	बाल-अन्वेषण, जोखिम, अनुभव-शिक्षा
४८	छठ फेर सँ	पिप्रा	१’७०३	संस्थागत स्मृति, सुधारक पुनरावृत्ति
४९	विदेह	समापनिका	४’६५५	सम्पादन, सहमति, स्रोत, अगिला खाली पन्ना

२. ग्रन्थ-संरचना : चारि वृत्त आ एक समापनिका

ग्रन्थक रचना-व्यवस्था गणितीय सममिति रखैत अछि—बारह-बारह कथाक चारि वृत्त, फेर एक समापनिका। मुदा विषयगत गति सरल वृत्ताकार नहि।

पहिल वृत्त व्यक्ति आ घरक सीमित प्रकाशक्षेत्र सँ शुरू होइत अछि; दोसर वंश, नाम आ अभिलेखक सामूहिक संरचना खोलैत अछि; तेसर अमूर्त दार्शनिक पदकेँ जीवनक घटनामे जाँचैत अछि; चारिम सार्वजनिक स्थल पिप्राकेँ प्रयोगशाला बनबैत अछि; आ अन्तिम कथा ई सभकेँ सम्पादकीय आ ऐतिहासिक अनुशासनमे संगठित करैत अछि।

“इजोत” संग्रहक शीर्षकीय रूपक मात्र नहि, ज्ञानमीमांसात्मक व्याकरण अछि। इजोत १४५ बेर, दीप ३०९ बेर, कागज ६३८ बेर, स्मृति २१५ बेर, प्रमाण २१४ बेर, खाली २१५ बेर, घर १,१८६ बेर, नदी १५१ बेर आ पाँजि १३३ बेर पाठमे आवैत अछि। संख्या अपनहि साहित्यिक अर्थ सिद्ध नहि करैत, मुदा आवृत्ति ई देखबैत अछि जे दृश्यता, अभिलेख, अनुपस्थिति, घर, जल आ वंश संग्रहक दीर्घकालिक संकेत-तंत्र छथि।

सभसँ महत्त्वपूर्ण बात ई जे आवर्ती प्रतीक समान अर्थ नहि रखैत। दीप कखनो अभिलेखक तिरछ इजोत, कखनो मायक स्मृति, कखनो अभिनयक कार्य-दीप, कखनो मृत्युशय्याक कातर लौ, कखनो सार्वजनिक घाटक बहैत प्रतिबिम्ब बनैत अछि। एहि परिवर्त्तनशील पुनरावृत्तिसँ संग्रहक एकरूपता यांत्रिक नहि रहि “अर्थ-परिवर्तनशील आवर्तन” बनैत अछि।

३. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

३.१ रस : अनुभूतिक निर्मिति, आदेश नहि

‘रस’ कथा स्वयं करुण रसक सरलीकरणक विरोध करैत अछि। निर्देशक उदयकान्त “करुण” लिखि दृश्यक केन्द्र नामित करैत छथि, मुदा अभिनेत्री माधवी प्रश्न करैत छथि जे नाम देलासँ अनुभव तय भऽ जाइत अछि की। कथा विभाव, अनुभाव, सञ्चारी भाव आ स्थायी भावक पारम्परिक संरचनाकेँ खारिज नहि करैत; उलटा ओकरा रंगाभ्यासक भीतर पुनः परीक्षित करैत अछि। एहि संग्रहमे करुण ‘डूम’, ‘मोक्ष’, ‘जल समाधि’ आ ‘फेर सँ देखल घर’मे, हास्य ‘ओछाइनक हिसाब’ आ ‘छठ’मे, भयानक-अद्भुत ‘भूत’ आ ‘जल समाधि’मे, शान्त-प्रवणता ‘अनित्य’ आ ‘मोक्ष’मे देखाइत अछि। मुदा कथा सभ पाठकपर भाव आरोप नहि करैत; परिस्थितिजन्य संकेत जमा करैत अछि।

एतय सहृदयता मुख्य अछि। पाठकक्कें पात्रक पीड़ा जानबाक संग-संग ओकर ज्ञानक सीमा स्वीकारब पड़ैत अछि। करुणा तखन नैतिक शक्ति बनैत अछि जखन ओ तथ्यकें विस्थापित नहि करय—‘पाँजी (अन्तिम प्रविष्टि)’क मूल प्रश्न एही ठाम अछि: दया तथ्य बदलि सकती अछि, मुदा बादक पीढ़ीकें दया आ तथ्य दुनूक इतिहास दर्ज करबाक चाही।

३.२ ध्वनि : जे स्पष्ट नहि कहल गेल, वैह दीर्घ अर्थ बनैत अछि

ध्वन्यात्मक शक्ति संग्रहक सभसँ सफल पक्ष अछि। खुरचल पाँति, खाली पादटिप्पणी, खाली कुर्सी, खाली खाना, अधूर गीत, फाटल चिट्ठी, अज्ञात स्त्री, हेरायल देह, बिना नाँवक स्रोत—ई सभ अभाव मात्र नहि, अर्थक सक्रिय स्थल छथि। “चोर चुप्पी भऽ जाइत अछि” जकाँ वाक्य ध्वनिक तत्त्वकें कथानकक भीतर रूपान्तरित करैत अछि: चोरी वस्तुक नहि, सामाजिक मौनक सेहो हो सकैत अछि।

इजोतक तिरछापन सेहो ध्वनिक संरचना अछि। सीधा उजास “अक्षर” देखबैत अछि, तिरछ इजोत “कागजक देह”। एहि भेदसँ ग्रन्थ बारम्बार कहैत अछि जे अभिधा पर्याप्त नहि; सतहक दबान, छाया, किनार, मौन, देहक चाल, पुरान दाग आ वस्तुक स्थान सेहो कथ्यक वाहक छथि।

३.३ वक्रोक्ति आ शीर्षकीय अर्थ-परिवर्तन

शीर्षक सभ प्रायः आरम्भिक अर्थक विपरीत वा विस्तृत अर्थ ग्रहण करैत अछि। ‘पाँजिक चोर’मे चोर व्यक्ति सँ चुप्पी बनैत अछि; ‘मुक्त राज्यमे’ मुक्तता प्रवासी श्रमिकक निर्भरता सँ विडम्बित होइत अछि; ‘ओछाइनक हिसाब’ घरेलू ठामक हास्य सँ स्वेच्छा आ प्रेमक नैतिक अन्तर धरि पहुँचैत अछि; ‘भूत’ अलौकिक सत्ता सँ बेसी अज्ञात अनुभवकें तुरन्त नाम देबाक मानवीय इच्छा पर केन्द्रित अछि; ‘विदेह’ देह-रहितता नहि, अनेक देह, आवाज आ अभिलेखक सम्पादकीय सहअस्तित्व बनैत अछि। ई शीर्षकीय वक्रता संग्रहक बौद्धिक ऊर्जा अछि।

३.४ औचित्य : निष्कर्षक संयम

कथासभ प्रायः एहन बिन्दुपर समाप्त होइत अछि जतय लेखक चाहिते एक सूत्रात्मक शिक्षा दे सकैत छलाह; मुदा श्रेष्ठ प्रसंगमे ओ रुकि जाइत छथि। ‘फेर सँ देखल घर’मे माधवी अपन नब अर्थकें पूरा वाक्य नहि बनबैत, कारण

पूरा कयलासँ उपदेश बनि जायत। ‘मोक्ष’ अंतिम अर्थ स्थिर नहि करैत। ‘भूत’ स्त्रीकेँ भूत घोषित नहि करैत। ई औचित्य—कतेक कहब, कतेक छोड़ब—ग्रन्थक नैतिक शैलीक मूल अछि।

४. पाश्चात्य आख्यान-चिन्तनक आलोक

४.१ दृष्टिबिन्दु आ सीमित ज्ञान

संग्रह सर्वज्ञ कथावाचकक अधिकार बारम्बार सीमित करैत अछि। प्रथमपुरुष ‘जल समाधि’मे मालती जे अनुभव करैत छथि, पाठक ओकर सत्यापन नहि करि सकैत; ‘परदेस’ चिट्ठी-रूपमे एक प्रवासीक शरीर-स्मृति अछि; ‘अदालत’ गवाही-दर-गवाही रचल गेल अछि, जतय एको आवाज पूर्ण नकाशा नहि दैत। एहन रचना आधुनिक आख्यानशास्त्रक सीमित दृष्टिबिन्दु आ बहुवचन सत्यक निकट अछि।

कथावाचकक विश्वसनीयता एतय “सत्य/झूठ”क द्वैत नहि, स्रोत-सीमा सँ निर्धारित होइत अछि। सुभद्रा कहैत छथि—“हम प्रमाण नहि छी, हम सुनल बात छी”; एहि आत्म-सीमांकनसँ कथन कमजोर नहि, अधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

४.२ बहुस्वर, दस्तावेज आ संवादात्मकता

पाँजि, डायरी, अदालतक गवाही, पत्र, सरकारी फार्म, चिकित्सकीय रजिस्टर, मार्ग-सूची, गीत, चित्र, मौखिक कथा—संग्रह अनेक वचन-प्रकारकेँ एकहि साहित्यिक क्षेत्रमे आनैत अछि। ई बहुस्वरता बाख्तिनीय संवादात्मकताक निकट पढ़ल जा सकैत अछि: परिवारक “आधिकारिक” वाक्यक बगलमे स्त्रीक स्मृति, प्रशासनिक कागजक बगलमे स्थानीय भूगोल, गुरु-वंशक बगलमे अज्ञात गायिका, धार्मिक नियमक बगलमे सेवा-काज।

विशेष रूपेँ ‘अदालत’ कथामे प्रश्न-उत्तर रूप पाठककेँ न्यायाधीशक कुर्सीपर बसबैत अछि, मुदा अन्तमे स्थलीय निरीक्षण स्वयं कहैत अछि जे मानचित्र, मौखिक स्मृति आ वर्तमान नदी एक रेखापर पूर्ण रूपेँ नहि बैसैत। कथा निर्णय स्थगित करैत अछि, पर जाँच समाप्त नहि करैत।

४.३ स्मृति, समय आ आख्यान-परिचय

‘फेर सँ देखल घर’, ‘कुहेस’, ‘परदेशी जड़ि’, ‘घुरनाइ’ आ ‘परदेस’मे व्यक्ति अपन अतीतकेँ जसक-तस पुनर्प्राप्त नहि करैत; वर्तमान दृष्टि अतीतक अर्थ बदलैत अछि। स्मृति संग्रहक लेल भण्डार नहि, पुनर्रचना अछि। घर, घाट, गली, सूटकेस, पुरान पट्टी आ घुट्टीक दाग कथात्मक समयकेँ शरीर आ वस्तुमे बाँधैत अछि।

आख्यान-परिचय एहि कारण स्थायी परिचय-पत्र नहि। ‘आत्म-अनात्म’क अभिनेता भूमिका ग्रहण कऽ बदलैत अछि; ‘जाति-पार’क ईरा अपन नामकेँ खुलल संरचना बनबैत अछि; ‘गोतिया’क अयन एक स्थायी पता बदला “दू ठाम” स्वीकारय चाहैत अछि। व्यक्ति कथा सँ बनैत अछि, मुदा कोनो एक कथा ओकरा पूरा बन्द नहि करैत।

४.४ पाठकीय रिक्ति

अज्ञात नाँव, खाली पन्ना, न भेटल देह, अप्रमाणित शाखा, अनिर्णीत भूत, अधूर गीत—ई “रिक्ति” पाठकसँ सक्रिय सहभागिता माँगैत अछि। मुदा संग्रहक विशेषता ई जे रिक्ति भरबाक पूर्ण स्वच्छन्दता नहि दैत; पाठककेँ स्रोत-सीमा याद रखब पड़ैत अछि। एहि कारण रचना कल्पना आ प्रमाणक बीच नैतिक अनुशासन स्थापित करैत अछि।

५. नव्य न्यायीय परीक्षण : प्रमाण, अभाव आ निष्कर्षक अनुशासन

५.१ प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्द-प्रमाण

‘प्रमाण’ कथा संग्रहक न्यायीय व्याकरणकेँ प्रत्यक्ष रूपेँ नाटकीय करैत अछि। ककरो कोठलीसँ निकलैत देखब प्रत्यक्ष हो सकैत अछि; ओकर हाथमे चोरीक हँसुली छल—ई नहि। “सभ कहैत अछि” शब्द-प्रमाणक रूप तखनि ग्रहण करि सकैत अछि जखन वक्ता, स्रोत आ कथन-श्रृंखला विश्वसनीय हो। जातिगत पूर्वग्रह अनुमानकेँ दूषित करैत उपाधि जकाँ काज करैत अछि।

ई अनुशासन ‘पाँजिक चोर’मे सेहो अछि: दबान देखाइत अछि, नाम नहि; ‘छिपल शाखा’मे पत्र सम्बन्धक दिशा देखबैत अछि, सभ जीवन नहि; ‘भूत’मे सवारीक भार, संवाद आ उतरबाक ठाम प्रत्यक्ष-अनुभव अछि, मुदा “भूत” निष्कर्ष लेल आवश्यक व्याप्ति अनुपस्थित।

५.२ अभाव-ज्ञान : खाली ठामक सकारात्मक स्थिति

‘न्यायक सीमा’ अभावकेँ केवल नकार नहि मानैत। खाली कुर्सी देखब आ जकरा कुर्सीपर बैसल देखल गेल छल ओकर अनुपस्थिति जीब—दुनू अलग स्तर छथि। संग्रहक २१५ “खाली” आवृत्ति संयोग नहि; खाली ठाम रिकॉर्डक त्रुटि, हिंसा, भविष्य, मृत्यु, अधिकार आ संशोधन सभ हो सकैत अछि।

नव्य न्यायीय दृष्टिसँ ई उल्लेखनीय अछि जे अभावक अवच्छेदक बदलिते अर्थ बदलैत अछि। पाँजिक खाली पाँति जातिगत बहिष्कार हो सकैत अछि; “विदेह”क अगिला खाली पन्ना भावी लेखकीय अधिकार। एके दृश्य-रूप, भिन्न सम्बन्ध-संरचना।

५.३ हेतु-साध्य, व्याप्ति आ उपाधि

‘कार्य-कारण’ एकल कारणक लोभक विरोध करैत अछि। पुलिया धँसल—एहिमे वर्षा, कटाव, संरचनात्मक दुर्बलता, निरीक्षण, भार, रखरखावक सम्बन्ध अलग-अलग अछि। “एक दुर्घटना, एक दोषी”क सरल हेतु-साध्य सम्बन्ध सामाजिक क्रोधकेँ सन्तुष्ट कऽ सकैत अछि, मुदा तकनीकी सत्यकेँ नहि।

‘नियति’मे हारि गेलहुँ, अतः नियति प्रतिकूल—ई अनुमान शशिभूषणक अपन निर्णय, जुआक आदत आ आर्थिक परिस्थिति दबा दैत अछि। कथा बाहरी अनियंत्रित घटना आ स्वनिर्णयक बीच रेखा स्थिर नहि करैत, मुदा दुनूकेँ एक करबासँ इनकार करैत अछि।

५.४ प्रमाणक सीमा आ नैतिकता

नव्य न्यायीय सूक्ष्मता संग्रहमे केवल बौद्धिक खेल नहि। गलत निष्कर्ष ककरो नाँव, सम्पत्ति, जातिगत प्रतिष्ठा, मातृत्व, पितृत्व, अपराध वा स्मृति बदलि सकैत अछि। एतय “नहि जानैत छी” एक नैतिक उपलब्धि बनैत अछि। ज्ञानक सीमा स्वीकारब निर्णयहीनता नहि; प्रमाणक स्तर स्पष्ट कऽ काज करब अछि।

६. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

एहि संग्रहसँ निष्पन्न समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक पहिल नियम अछि—स्रोतसभकेँ एक-दोसराक अनुवाद मानि विलीन नहि करू। पाँजि जे कहैत अछि, मौखिक स्मृति ओकर “सुधार” मात्र नहि; डायरी जे कहैत अछि, सरकारी

कागज ओकर “सत्यापन” मात्र नहि; वस्तुक दाग, नदीक बदलल धारा, शरीरक घाव, गीतक स्वर, घरक चाभी—ई सभ अलग प्रकारक स्रोत छथि।

दोसर नियम—स्रोतक उत्पत्ति, अधिकार आ सीमा लिखू। ‘डायरी’ निजी लेखनकेँ पूर्ण प्रमाण घोषित नहि करैत; ‘राग’ ध्वनि-अभिलेखनसँ पहिने अनुमति आ स्रोत-श्रेय पुछैत; ‘विदेह’ लिखित रूप उतारि कथाकारकेँ फेर सुनएबाक, काटबाक, नाँव छापबाक निर्णय देबाक प्रक्रिया रचैत अछि। इतिहास एतय सामग्री “लेबाक” अधिकार नहि, सम्बन्ध बनबैत अनुशासन अछि।

तेसर नियम—पुरान चूक मेटाउ नहि; ओकरा चूक रूपेँ चिन्हित करू। ‘पाँजी (अन्तिम प्रविष्टि)’ एहि पद्धतिक आदर्श उदाहरण अछि: गलत प्रविष्टि काटि मेटा नहि देल जाइत, बादक टिप्पणी ओकर प्रसंग स्पष्ट करैत अछि। इतिहासक सत्य संशोधनशील अछि, मुदा संशोधन पूर्व पाठक अस्तित्व मेटा कऽ नहि होइत।

चारिम नियम—अज्ञातकेँ अज्ञात कहू। “अज्ञात गायिका”, “अप्रमाणित”, “सम्भावित सम्बद्ध कागज”, “देह नहि भेटल”, “स्वामित्व न्यायालयक विषय”—एहन वाक्य इतिहासक दुर्बलता नहि, ओकर सत्यनिष्ठता अछि।

पाँचम नियम—भावी पाठक/लिखनिहार लेल ठाम छोड़ू। ‘आखर’क खाली पाँति, ‘छिपल शाखा’क खाली कागज, ‘जाति-पार’क भावी परिवार लेल खाली ठाम, ‘विदेह’क अगिला अंकक खाली पन्ना—इतिहासकेँ बन्द सूचीक बदला निरन्तर संवाद बनबैत अछि।

७. रचना-दर-रचना विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

१. पाँजिक चोर

पाठ-केन्द्र : मेटाओल नाँव, अभिलेखीय प्रमाण, चुप्पी।

अभिलेखीय रहस्यक आवरणमे ई कथा सत्य-निर्माणक नैतिकता पर केन्द्रित अछि। निरंजनक प्रमुख गुण खोज नहि, संयम अछि: ओ दबान देखैत अछि मुदा अक्षर घोषित नहि करैत; “महेसर” संकेत भेटितो खुरचल पाँतिक नाम निश्चित नहि मानैत। भारतीय ध्वनि-दृष्टिसँ खुरचन स्वयं वाचक बनैत अछि; नव्य न्यायीय दृष्टिसँ प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्द-स्मृतिक सीमा पृथक राखल

जाइत अछि। पाश्चात्य अभिलेख-कथामे जकाँ दस्तावेज रहस्य खोलैत अछि, मुदा एतय रहस्य पूर्ण समाधानपर समाप्त नहि। “चोर”क अर्थ व्यक्ति सँ सामूहिक चुप्पी धरि विस्तृत होइत अछि। विदेह पद्धतिमे ई मूल सूत्र स्थापित करैत अछि—मेटाओल बातकेँ अनुमानसँ भरू नहि; मेटाओल रूपेँ दर्ज करू।

२. फेर सँ देखल घर

पाठ-केन्द्र : घर, स्त्री-स्मृति, दूरीक दृष्टि।

माधवीक घर-फेर स्मृतिक पुनर्संपादन अछि। कथा घरकेँ स्थिर वास्तु नहि, दृष्टिबिन्दुक वस्तु बनबैत अछि: भीतरक किशोरी अपन चोट देखैत छलीह; बाहरी वृद्ध दृष्टि मायक सीमित साधन आ मौन प्रतिरोध देखब शुरू करैत अछि। “घर भीतर रहि कऽ पूरा नहि देखाइत” शीर्षकीय तत्त्व बनैत अछि। रस-दृष्टिसँ करुणा आत्म-दया सँ मातृ-सहृदयता दिस सरकैत अछि; पाश्चात्य स्मृति-आख्यानमे अतीत वर्तमान द्वारा पुनः विन्यस्त होइत अछि। कथा मायक भूमिकाकेँ वीरगाथा नहि बनबैत—“सम्भव अछि”क भाषा रखैत—जे नव्य न्यायीय सावधानीक अनुरूप अछि।

३. मुक्त राज्यमे

पाठ-केन्द्र : प्रवास, श्रम, स्वतंत्रताक सीमित अर्थ।

पाँच भौगोलिक खण्डमे फैलल ई प्रवास-कथा “मुक्त” होयबाक विडम्बना जाँचैत अछि। दिल्ली, खाड़ी, असम, कोलकाता आ पंजाब—ठाम बदलैत अछि, मुदा श्रम, परिवारक आवश्यकता, छुट्टी, कर्ज, पहचान-पट्ट आ घुरबाक अनिश्चितता परस्पर प्रतिध्वनित होइत अछि। राज्य वा शहर व्यक्तिक कुल-परिचय हलुक कऽ सकैत अछि, आर्थिक निर्भरता नहि। पश्चिमी बहुखण्डीय आख्यान तकनीक एतय समानान्तर जीवनक तुलना संभव करैत अछि। “टिकट स्क्रीनक भीतर” जकाँ बिम्ब भविष्यक सम्भावना आ बाधा एक संग रखैत अछि। शीर्षकक वक्रोक्ति स्पष्ट अछि: औपचारिक गतिशीलता भीतर आर्थिक अस्वतंत्रता।

४. जल समाधि

पाठ-केन्द्र : नदी, स्त्री-देह, अनिश्चित लोकविश्वास।

प्रथमपुरुष मालतीक स्वर कथा केन्द्रीय बनबैत अछि। नदीक पुकार, सुबोधक हेरायल देह, “जल-नेम” आ स्त्री-बलिदानक दबाव मिलि एहन क्षेत्र बनबैत अछि जतय लोकविश्वास, भय, पारिवारिक नियंत्रण आ अलौकिक अनुभव अलग-अलग करब कठिन अछि। कथा अलौकिकताकेँ प्रमाणित नहि करैत; नकारितो नहि। मालतीक निर्णायक काज नदीमे दोसर पग नहि बढ़ेनाइ आ पोथीमे “देह नहि भेटल” लिखनाइ अछि। ई “जल समाधि”क सम्भावित कथा विरुद्ध सूक्ष्म अभिलेखीय प्रतिरोध अछि। भयानक-अद्भुत रसक बीच नव्य न्यायीय अनिश्चितता कथा के महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि।

५. जातिक बाहर

पाठ-केन्द्र : पाँजि, जातिगत बहिष्कार, लोक-स्मृति।

जातिक बाहर राखल परिवार पाँजिक भीतर किन रूपमे उपस्थित रहैत अछि—ई कथा ओ विरोधाभास खोलैत अछि। आधिकारिक वंश-पोथी बहिष्कारक यंत्र बनैत अछि, मुदा मौखिक स्मृति धरनीक जीवनकेँ केवल “घटना” नहि, हुनकर सूप बुनब, बाढ़िमे बच्चा बचेनाइ, गीत गेनाइ जकाँ बहुआयामी कार्य सँ पुनः उपस्थित करैत अछि। कथावाचक “पाँजि” शब्द छोड़ि अपन बहीक नाँव “लोक” रखैत अछि। विदेह पद्धतिमे ई समानान्तर अभिलेखक घोषणापत्र अछि। आलोचनात्मक रूपेँ कथा व्यवस्था आ व्यक्तिगत हाथ दुनूक उत्तरदायित्व बचा कऽ चलैत अछि—संरचना कहि देलासँ व्यक्ति निर्दोष नहि।

६. ओछाइनक हिसाब

पाठ-केन्द्र : वैवाहिक ठाम, देह, हास्य, स्वेच्छा।

ओछाइन घरेलू भूगोलक सूक्ष्मतम इकाई बनैत अछि। सोनमती हास्यक माध्यमसँ विवाह, पाहुन, संतान, उम्र, विधवापन आ नातिनक संग ठामक बदलैत हिसाब लिखैत छथि। हास्य रस कथा के हलुक बनबैत अछि, मुदा प्रश्न गम्भीर—ककर शरीर केन्द्रक स्वाभाविक अधिकार मानल जाइत अछि? अन्तिम अन्तर “ठाम बचेनाइ” आ “अपन मनसँ ठाम देनाइ”क बीच अछि। नारीवादी घरेलू पाठक दृष्टिसँ ई स्वेच्छा आ अदृश्य श्रमक कथा; भारतीय औचित्यदृष्टिसँ अन्तिम “कम्बल विवाद” गम्भीर निष्कर्षकेँ मनुष्यक दैनिक जीवनमे फेर धरती पर आनैत अछि।

७. दोसर बियाह

पाठ-केन्द्र : विधवा पुनर्विवाह, घर, स्त्रीक निर्णय।

पद्माक दोसर बियाह पर सभ बोलैत अछि, पद्मा अन्त धरि नहि। परिवारक प्रत्येक आवाज ओकर हितक भाषा उपयोग करैत ओकर जीवनक संरचना तय करय चाहैत अछि। नाटकीय निर्णायक वाक्य तखन अबैत अछि जखन पहिल बेर प्रश्न "पद्मा की चाहैत छथि?" बनैत अछि। पद्माक उत्तर—बियाह करब, मुदा घर नहि छोड़ब—विवाहक पितृस्थानीय मानककेँ उलटैत अछि। कथा पुनर्विवाहक पक्ष-विपक्षक उपदेश नहि; एजेंसीक व्याकरण अछि। बही, फीस-पर्ची आ दवाई-पर्चा भावनात्मक बहसकेँ जीवनक वास्तविक जिम्मेवारी सँ जोड़ैत अछि।

८. गजलक बहर

पाठ-केन्द्र : कला-अनुशासन, स्त्री-स्वर, पीढ़ीगत संचरण।

गजलिक बहर कथामे छन्द मात्र नहि, जीवनक माप आ सामाजिक अनुशासनक रूपक अछि। नसीमा उस्तादसँ सीखैत छथि जे समापन-पद बेराबेरी आबि अर्थ बदलि सकैत अछि; ओही सिद्धान्त हुनकर जीवन, महफिल, आर्थिक सम्बन्ध, स्त्री-कलाकारक मर्यादा आ पीढ़ीगत प्रशिक्षणपर लागू होइत अछि। कला-अनुशासन आ दमनक सीमा कथा स्पष्ट करैत अछि—"जे माप सच बोलय देत, से बहर; जे चुप करय, से दीवार।" भारतीय रस-ध्वनि परम्परा आ पाश्चात्य प्रदर्शन-अध्ययन दुनूक लेल ई कथा समृद्ध अछि, कारण अर्थ लिखित पाठसँ बेसी स्वर, विराम, श्रोता आ पुनरावृत्तिमे बनैत अछि।

९. पाहुनक कोठली

पाठ-केन्द्र : घर-पाहुन भेद, प्रवास, संवाद।

अनामिका अपनहि घरमे "पाहुन" बनबाक पुरान चोट लऽ घुरैत छथि, मुदा रातिक बातचीत हुनका देखबैत अछि जे ओ अपन बेटी ईराक संग ओही संरचना दोहरा रहल छथि। कथा आरोपक बदला पीढ़ीगत पुनरावृत्तिक सूक्ष्म पहचान करैत अछि। टूटल काठक हाथी, नब कुंडी आ पाहुनक कोठली वस्तुगत स्मृति बनैत अछि। निर्णायक शिक्षा "ईरा जे चाहय, पहिले ओकरा पूछिहेँ" अछि—घरक अधिकारक केन्द्र स्वामित्व नहि, प्रश्न करब। पाश्चात्य

पारिवारिक स्मृति-आख्यानक निकट, मुदा मैथिली घरेलू वस्तु-विन्यास ओकर सांस्कृतिक देह बनबैत अछि।

१०. कुहेस

पाठ-केन्द्र : घुरनाइ, दृष्टि, प्रवासी पहचान।

कुहेस प्रवासी बिनोदक दृष्टि आ भूगोल दुनू पर छायल अछि। सड़क पक्की, स्मृति कच्ची; पुरान पहचान-पट्ट बचल, गाम बदलल। कथा "घुरनाइ"कैं समाधान नहि बनबैत—बिनोद गमलामे माटि भरैत अछि, मुदा बिरबा एखन नहि। ई खुलल रूप भविष्यक अनिश्चितता बचबैत अछि। ध्वनिक स्तरपर कुहेस अज्ञान नहि मात्र, संक्रमण अछि; इजोत घरकैं आंशिक देखबैत अछि। कथा ३क प्रवास-विषयक बाद ई व्यक्तिगत वापसी कथा संग्रहक प्रतिध्वनि-संरचना बनबैत अछि।

११. न्यायक सीमा

पाठ-केन्द्र : अभाव-ज्ञान, शोक, दर्शनक सीमा।

रत्नेश्वरक दार्शनिक सूक्ष्मता पोताक मृत्यु-सन्निकट दुर्घटनासँ जीवनक सीमा पर पहुँचित अछि। कथा नव्य न्यायीय अभाव-ज्ञानक भाषाकैं शोकक अनुभवक संग रखैत अछि: खाली कुर्सी जानब एक बात, ओहि मनुष्यक अभावमे जीब दोसर। दर्शन असफल घोषित नहि; ओकर क्षेत्र सीमित कएल जाइत अछि। शिक्षक कक्षामे अपन कमजोर उदाहरण स्वीकारैत छथि—एहि बौद्धिक विनम्रतासँ कथा उपदेशक बदला शोध-नैतिक बनैत अछि। खाली पादटिप्पणी अन्तमे ज्ञानक त्रुटि नहि, सीमा स्वीकारक स्थान बनैत अछि।

१२. आखर

पाठ-केन्द्र : मैथिलाक्षर, भाषा-संचरण, खाली पाँति।

सरस्वती देवीक मैथिलाक्षरमे लिखल चिट्ठी भाषा-उत्तराधिकारक सरल "बचाउ अभियान" नहि। ईरा पुरान लिपि नहि पढ़ि सकैत, मुदा नानी ओकरा दोष नहि बनबैत छथि; खाली अन्तिम पाँति अगिला पीढ़ीक अधिकार अछि। भाषा एतय निरन्तरता आ परिवर्तन दुनू। "पुरान आखर" आ देवनागरी एक-दोसराक अनुवाद नहि, एक-दोसराक बाद छथि। ध्वनि-दृष्टिसँ खाली पाँति

सभसँ महत्त्वपूर्ण वाक्य बनैत अछि। कथा लिपि-परिवर्तनमे क्षति स्वीकारैत अछि, मुदा जीवित भाषा के केवल संरक्षण-वस्तु बनबासँ बचबैत अछि।

१३. पाँजी (अन्तिम प्रविष्टि)

पाठ-केन्द्र : अभिलेख-संशोधन, दया आ तथ्य।

“अन्तिम प्रविष्टि” शीर्षक स्वयं विडम्बित होइत अछि, कारण संशोधनक बाद अन्तिम प्रविष्टि अन्तिम नहि रहैत। हरिनारायणक दयालु अथवा सुविधाजन्य निर्णय बादमे कानूनी अधिकारक स्रोत बनि सकैत अछि; पोता ईशानक काम दादाक नाम बचेनाइ नहि, स्रोत-इतिहास स्पष्ट करब। अभिलेखीय आलोचनाक दृष्टिसँ कथा विशेष महत्त्वपूर्ण अछि: मूल गलती मेटायल नहि, टिप्पणी द्वारा स्तरित कएल गेल। विदेह समानान्तर इतिहासक मूल सिद्धान्त—चूकक इतिहास सेहो इतिहास—एतय सर्वाधिक स्पष्ट।

१४. जुड़वा

पाठ-केन्द्र : जन्म-विनिमय, जैविकता आ पालन।

रक्त-समूहक असंगति सँ शुरू भेल कथा अस्पतालक सम्भावित जन्म-विनिमय धरि पहुँचैत अछि। विज्ञान एतय परिवार नष्ट करबाक यंत्र नहि; प्रश्न खोलबाक साधन। रक्त-समूह प्रारम्भिक संकेत, पुरान रजिस्टर, पहचान-पट्टी, कर्मचारी-स्मृति आ सम्बन्ध-जाँच क्रमशः प्रमाणक स्तर बनैत अछि। अन्तिम समाधान जैविक सत्यकेँ मानैत अछि, मुदा पालन-पोषणक तीन दशक रद्द नहि करैत। “एके भूलक दू जीवन” संक्षिप्त नैतिक सूत्र अछि। कथा सामाजिक माता-पिता आ जैविक माता-पिताक सम्बन्धकेँ शून्य-योग संघर्ष बनबासँ बचबैत अछि।

१५. गोतिया

पाठ-केन्द्र : स्थायी पता, प्रवास, मातृ-पितृ पाँति।

स्थायी पता, वर्तमान पता, गोतिया-सत्यापन आ पारिवारिक नक्शा—अयनक कथा प्रशासनिक फार्मक संकीर्ण खानों विरुद्ध जीवित सम्बन्धक बहुरेखीयता देखबैत अछि। मातृ-पाँति आ पितृ-पाँति एकहि चित्रमे आओत, स्थानीय गवाही आ विदेशक वर्तमान जीवन साथ रहत—ई अयनक नब परिवार-मानचित्र

अछि। “दू ठाम” उत्तर आधुनिक प्रवासी पहचानक सरल किन्तु प्रभावी रूपक। नव्य न्यायीय अर्थमे अवच्छेदक बदलिते “स्थायी”क अर्थ बदलैत अछि; कार्यालयक स्थायित्व आ स्मृतिक स्थायित्व एक नहि।

१६. छिपल शाखा

पाठ-केन्द्र : पत्र, दबल शाखा, परिवारक पुनर्सम्पर्क।

काठक पेटी आ फाटल पत्रसभ दबल परिवार-शाखाकेँ पुनः दृश्य करैत अछि। कथा खोजकेँ तुरन्त मिलनमे परिणत नहि करैत—पत्र साक्ष्य छथि, मुदा सम्बन्ध नब रोपनी जकाँ समय माँगैत अछि। डिजिटल प्रति बनैत अछि, मूल मोड़ जसक-तस रहैत—कागजक भौतिक इतिहास सुरक्षित। खाली पन्ना भावी शाखाक सम्भावना अछि। पश्चिमी पत्रात्मक अभिलेख-कथा आ भारतीय वंश-स्मृतिक संयोजन एतय परिपक्व रूप लैत अछि।

१७. दत्तक

पाठ-केन्द्र : दत्तक सम्बन्ध, कानून, सम्पत्ति।

दत्तक सम्बन्धकेँ अदालत, सम्पत्ति, घरक बोली आ चारि अभिभावकक भाव-संरचना एक संग जाँचैत अछि। कानूनी नामक प्रश्न बच्चाक जीवनक बहुपितृत्व/बहुमातृत्वकेँ एक खानेमे समेटय चाहैत अछि। कथा अन्तमे न्यायालयक निर्णयक ऊपर घरेलू पुनर्सम्बन्ध रचैत अछि—साझा बाल्य-वस्तु बाँटलासँ आधा नहि होइत। नव्य न्यायीय दृष्टिसँ “पिता”क सम्बन्ध एकाधिक अवच्छेदकमे खुलैत अछि: जैविक, पालन, विधिक, भावात्मक।

१८. जाति-पार

पाठ-केन्द्र : अन्तर्जातीय परिवार, उपनाम, स्व-परिचय।

अन्तर्जातीय दम्पति अपन बेटी ईराक उपनाम खाली छोड़ि आरम्भ करैत अछि। प्रशासनिक दबाव, पितृवंशीय पाँजि, दलित परिवारक मौखिक स्मृति आ चारि दादा-दादीक उपस्थिति मिलि जाति-पार परिवारक जटिलता बनबैत अछि। कथा जाति-विलयनक रोमानी घोषणा नहि करैत; दुनू परम्पराक असमान इतिहास स्वीकारैत अछि। ईराक “आगाँ जे लोक परिवार बनत” लेल खाली ठाम परिवारकेँ जैविक सूची सँ सामाजिक भविष्य बनबैत अछि।

१९. डायरी

पाठ-केन्द्र : निष्पक्षताक मिथक, निजी लेखन।

निष्पक्ष पंजीकार देवकीनन्दनक डायरी सार्वजनिक छविक पाछाँ नैतिक संकोच आ सम्भावित पक्षपात खोलैत अछि। निजी डायरी सेहो पूर्ण प्रमाण नहि—कथा एहि चेतावनीकेँ पुस्तकालयक प्रदर्शनमे स्पष्ट लिखैत अछि। मौखिक साक्षात्कारक हिचकिचाहट काटि साफ उत्तर मात्र राखल नहि जाइत, कारण विराम सेहो स्रोत। इतिहासलेखनक दृष्टिसँ ई कथा संग्रहक सर्वाधिक आत्मालोचनात्मक रचना सभमे अछि: अभिलेख पढ़निहार स्वयं अभिलेखक बाहर नहि।

२०. नकली वंश

पाठ-केन्द्र : प्रतिष्ठा, गढ़ल वंश, सार्वजनिक सुधार।

प्रतिष्ठा लेल गढ़ल सात-पीढ़ी वंशावली हास्य आ सामाजिक आलोचना दुनू उत्पन्न करैत अछि। “कतेक पीढ़ी चाही?” प्रश्न वंशकेँ बाजारू वस्तु बना दैत अछि। झूठ एक बेर मुद्रित भेलापछि छोट सुधारसँ पूर्ण नष्ट नहि होइत—सार्वजनिक असत्यक गति कथा बारीकीसँ देखबैत अछि। अन्ततः “नहि जानैत छी” सात रंगीन पीढ़ीसँ भारी बनैत अछि। खाली खाना लाजक बदला ईमानदार इतिहासक स्थान।

२१. परदेशी जड़ि

पाठ-केन्द्र : प्रवासी उत्तराधिकार, अप्रमाणित सम्बन्ध।

कनाडामे जन्मल अर्णव पिता शैलेशक मिथिला-संबन्ध खोजैत अछि, मुदा कथा ओकरा “मूल घर”क रोमान्टिक पुनरागमन नहि दैत। चाबी ताला निश्चित नहि खोलैत, पाँजिमे नाँव पूरक-पत्रमे, गीत अधूर, स्मृति विभाजित। “अप्रमाणित” शब्द शून्यता नहि; सीमित सम्बन्धक स्वीकार। प्रवासी जड़ि एतय वृक्षक एक स्थिर मूल नहि, अनेक ठामक सम्बन्ध-जाल। अगिला पीढ़ी लेल “कुसुमपुर—एक ठाम” लिखनाइ स्थानीयता के विकल्प बनबैत अछि, अनिवार्य पहचान नहि।

२२. पुरोहिताई

पाठ-केन्द्र : वंशानुगत पद, सेवा, साझा जिम्मेवारी।

पुरोहिताईक प्रश्न वंशानुगत अधिकार विरुद्ध ज्ञान, सेवा आ दीर्घ अभ्यासक प्रश्न खोलैत अछि। शिवनाथ स्थानीय दैनिक सेवा, विद्यानाथ शास्त्रीय शिक्षा; कथा ककरो एकल विजेता नहि बनबैत। अन्ततः पदक बदला काजसभक सूची आ साझा जिम्मेवारी उभरैत अछि। धार्मिक परम्परा एतय जीवित संस्था अछि; उसका न्याय केवल रक्त वा प्रमाणपत्रसँ नहि। मुख्य दीप राति भरि जरबाक रूपक पहरुआईक उत्तराधिकारकेँ व्यक्ति-स्वामित्व सँ सेवा-निरन्तरता दिस मोड़ैत अछि।

२३. रागिनी-वंश

पाठ-केन्द्र : संगीत-वंश, स्रोत, श्रेय, अभिलेखन।

संगीतक वंश रक्त वा एक गुरु-नामसँ आरम्भ करबाक आग्रह कथा अस्वीकार करैत अछि। किरण जीवित गायकीक संवाहिका, आदित्य ध्वनि-अभिलेखक; दुनू आधा भूमिका। अज्ञात गायिका, नाविक, माय, गुरु, शिष्या—रागिनी-वंश तीरसभक जाल। स्रोत-श्रेय, डिजिटल प्रसार, अनुमति आ बाजारक प्रश्न एक संग अछि। कला-परम्पराक इतिहास लिखैत समय “मुख्य नाम मात्र”क फार्म अपर्याप्त—ई कथा सांस्कृतिक इतिहासलेखन पर तीक्ष्ण टिप्पणी।

२४. मातृवंश

पाठ-केन्द्र : स्त्री-उत्तराधिकार, परम्पराक नव दमन।

मातृवंश प्रारम्भमे पितृसत्ताक उत्तराधिकारक सफल विकल्प बुझाइत अछि, मुदा जेठ बेटीपर घर लेबाक अनिवार्यता नव दबाव बनि जाइत अछि। ईशानी परम्पराकेँ अस्वीकार नहि, सन्दर्भित करैत अछि: नानीक समयक प्रतिरोधकेँ नियम बना अगिला पीढ़ीपर थोपब उचित नहि। “घर चाही, स्वामित्वक पूरा कथा नहि” उपयोग, स्मृति, पहुँच आ मालिकीकेँ अलग करैत अछि। स्त्रीवादी ऐतिहासिक पद्धतिक लेल ई आत्मालोचना महत्त्वपूर्ण—मुक्तिक पुरान उपाय भविष्यक अपरिवर्तनीय विधान नहि।

२५. प्रमाण

पाठ-केन्द्र : आरोप, प्रत्यक्ष-अनुमान, पूर्वग्रह।

हँसुली चोरीमे रामजीतपर तुरन्त आरोप जातिगत पूर्वधारणासँ चलैत अछि। मुखिया उमा देवी देखल, सुनल, अनुमान, पहिने सँ मानल आ अज्ञातक भेद स्थापित करैत छथि। ई कथा नव्य न्यायीय प्रमाण-शिक्षाकेँ सीधे सामाजिक न्यायमे बदलैत अछि। वस्तु भेटि जाएब आरोपीक निर्दोषता स्वत: सार्वजनिक नहि करैत; रजिस्टरमे “पूर्व आरोपी विरुद्ध नव प्रमाण नहि” लिखनाइ नामक मरम्मत अछि। कथा न्यायकेँ केवल वस्तु-पुनर्प्राप्ति नहि, गलत आरोपक अभिलेख-संशोधन मानैत अछि।

२६. माया

पाठ-केन्द्र : दृश्य-आकर्षण, निवेश, अर्थ-भ्रम।

माया निवेश-छल, चमकदार दृश्य आ मानवीय अर्थ-निर्माणक कथा अछि। हरिनारायण माया के “जे देखाइत अछि, से झूठ” रूपेँ सरल नहि करैत; काँचक दीप-प्रतिबिम्ब देखाइत साँच अछि, भ्रम ओकरा असल लौ मानब। दार्शनिक पद आर्थिक जीवनमे उतरि व्यावहारिक विवेक बनैत अछि। संशय मात्र पर्याप्त नहि—ढाँचा, नाम, हिसाब, जोखिम देखबाक आवश्यकता। ई कथा वेदान्ती शब्दक लोकप्रिय अर्थकेँ ज्ञानमीमांसात्मक सूक्ष्मतामे मोड़ैत अछि।

२७. रस

पाठ-केन्द्र : रंगमंच, करुण, सहृदय, अनुभव।

रंगाभ्यासक भीतर रस-सिद्धान्त आ अभिनेताक अनुभवक संवाद एहि कथा के आत्मसमीक्षात्मक बनबैत अछि। निर्देशक सिद्धान्त छोड़ैत नहि, अभिनेत्री जीवित अनुभूतिक एकाधिकारो नहि माँगैत। “करुण—ककर भीतर? ककर संग?” प्रश्न रसकेँ स्थिर लेबलसँ सम्बन्धात्मक घटना बनबैत अछि। खाली मंचपर कोनो रस नहि—वस्तु, अभिनेता, दर्शक, स्मृति आ परिस्थिति मिलि अनुभूति रचैत अछि। भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक आधुनिक रंग-प्रयोगक सशक्त कथा।

२८. नियति

पाठ-केन्द्र : जुआ, उत्तरदायित्व, परिस्थिति।

जुआक हारि “नियति”पर डालब स्वनिर्णयक जिम्मेवारी ढँकैत अछि। ललिता हिसाब लिखि भाग्यक अमूर्त कथा के तिथि, रकम आ निर्णयमे बदलैत छथि। मुदा कथा विपरीत अतिवाद सेहो टारैत—वर्षा, बीमारी, अवसर सभ मनुष्यक वशमे नहि। अन्तिम पन्ना नियति आ निर्णयक बीच स्थिर रेखा नहि, विवेकशील भेद-प्रयास अछि। व्यवहारिक नैतिकता आ कारणमीमांसा दुनू स्तरपर कथा संतुलित।

२९. शब्द-ब्रह्म

पाठ-केन्द्र : भाषाक सीमा, शोक, अधूर वाक्य।

कवि विनयकान्त शब्दक अन्याय सँ भयभीत भऽ लिखब छोड़ैत छथि। “सरल”, “उदार” जकाँ एकल विशेषण पूर्ण जीवन ढँकि दैत; मुदा मौन सेहो न्याय नहि। कथा शब्द-ब्रह्मक महिमा वा भाषाक पूर्ण असमर्थता दुनू अस्वीकार करैत। “सीमा होयब व्यर्थ होयब नहि” कथा के केन्द्र। खाली पाँति भविष्यक सहलेखन; भाषिक विनम्रता सर्जनात्मक अवरोधक उपचार बनैत अछि।

३०. अनित्य

पाठ-केन्द्र : घर-विनाश, परिवर्तन, स्मृति।

पुरान घर टूटबाक कथा अनित्यताकेँ सुन्दर सूक्ति बनबासँ जानि-बुझि रोकैत अछि। सुधा देवी स्वीकारैत छथि जे कखनो धूरा बस धूरा, दुःख बस दुःख। एहि संयमसँ दार्शनिक अवधारणा जीवनक असुविधा पर आवरण नहि बनैत। वास्तुक भौतिक चिन्ह दस्तावेजीकृत होइत, मुदा नित्य प्रदर्शन नहि; स्मृति बचेनाइ आ जीवन जारी रखनाइ बीच संतुलन। “स्मृति बनबाक पहिने जीबो कर” संग्रहक महत्वपूर्ण आत्म-सुधारक वाक्य।

३१. आत्म-अनात्म

पाठ-केन्द्र : अभिनय, भूमिका, आत्म-परिवर्तन।

अभिनेता अनिरुद्ध दामोदरक चाल, साँस, नखक बानि अपन देहमे बसबैत-बसबैत भूमिका आ निजी आत्मक सीमा अनुभव करैत छथि। कथा आत्म-अनात्मकेँ दार्शनिक निरूपण नहि, प्रदर्शनक शरीर-प्रयोग बनबैत अछि। भूमिका समाप्त भेलापछि किछु प्रभाव बचल—ओ न “सच्चा आत्म”केँ नष्ट करैत, न

पात्र स्थायी स्वामित्व पबैत। छाया बदलैत अछि, इजोत रहैत—रूपक पहचानक निरन्तरता आ परिवर्तन दुनू राखैत अछि।

३२. कार्य-कारण

पाठ-केन्द्र : पुलिया-दुर्घटना, बहुकारणता।

पुलिया दुर्घटनाक बाद गाम एक कारण खोजय चाहैत अछि; तकनीकी जाँच बहुकारणीय जाल देखबैत अछि। वर्षा, कटाव, आधार, निरीक्षण, भार, रखरखाव —सभक सम्बन्ध अलग। कथा दुःखक अर्थ आ दुर्घटनाक कारण अलग राखैत अछि: कारण भेटलासँ शोक समाप्त नहि, मुदा अगिला पुलिया नीक बनि सकैत अछि। नव्य न्यायीय हेतु-साध्य अनुशासन आ आधुनिक जोखिम-अध्ययनक संग ई कथा सहज संवाद करैत अछि।

३३. मौन

पाठ-केन्द्र : मौन-व्रत, प्रक्षेपण, उत्तरदायित्व।

हरिनाथक मौन-व्रत शीघ्र दूसराक अर्थ-प्रक्षेपणक पर्दा बनि जाइत अछि। शिष्य मौनकेँ प्रचार, लोक संकेत, दान, सहमति—जे चाहैत अछि से अर्थ देब लगैत। “मौन” स्वयं उत्तर नहि। रामवतीक जमीन प्रसंगमे समयपर स्पष्ट “नहि” आवश्यक छल। भारतीय तपस्या-परम्पराक सम्मान रहैत कथा ओकर सामाजिक दुरुपयोगक आलोचना करैत अछि। सुनब आ चुप रहबक भेद एतय केन्द्र।

३४. स्वप्न

पाठ-केन्द्र : स्वप्न-जागरण, अनुभवक श्रेणी।

स्वप्नक पुल, खाली पुस्तकालय, भविष्य-तिथि, वस्तुगत बटन—ई कथा स्वप्न आ जागरणक सीमा पर खेलैत अछि, मुदा चमत्कार सिद्ध करबाक प्रयत्न नहि। ईशान अनुभवकेँ तिथि-दर-तिथि दर्ज करैत, जाँच योग्य आ अजाँच योग्य तत्व अलग करैत अछि। वर्गीकरण उपयोगी, अन्तिम नहि—ई ज्ञानमीमांसात्मक विनम्रता कथा के दार्शनिक केन्द्र। “भोर भेल” बिना प्रश्नचिह्नक अन्तिम नोंट अनुभवक तत्काल सत्य स्वीकारैत अछि, तात्त्विक निष्कर्ष नहि।

३५. संशय

पाठ-केन्द्र : वैज्ञानिक प्रश्न, कर्म, विनम्रता।

वैज्ञानिक संशय आ पारिवारिक कर्मक कथा किसी एक पक्षक विजय नहि। शैलेश ग्रहणक भयक प्रमाण पुछैत छथि, मुदा पितृश्राद्धमे उपस्थित जीवित सम्बन्धक प्रभावक प्रश्न अलग मानैत छथि। कर्म मृतकपर प्रभाव करैत अछि की—प्रमाण नहि; जीवित लोकपर किछु होइत अछि—कारण मिश्रित। कथा संशयकेँ विध्वंस नहि, गति धीमा करब मानैत अछि ताकि तर्क अपन अहंकारसँ ककरो कुचलय नहि।

३६. मोक्ष

पाठ-केन्द्र : मृत्यु, त्याग, अनुत्तरित मुक्ति।

दयाकान्तक मृत्युशय्या पर “मोक्ष” शब्द अनेक अर्थ खोलैत अछि—देहक पीड़ा, अपराधबोध, सम्पत्ति, स्मृति, सम्बन्ध, छोड़ब। परिवार धार्मिक कर्म करैत अछि, मुदा बाबूक अस्पष्ट इच्छाकेँ एक सिद्धान्तमे बन्द नहि करैत। कथा मोक्षकेँ अन्तिम परिभाषा देबाक बदला प्रश्नक सम्मान करैत अछि। कमलाक फोटो देवघर सँ बैठकमे आनब मृतककेँ देवत्वक दूरी सँ घरेलू स्मृतिमे फेर आनबाक सूक्ष्म क्रिया। खुलल खिड़की आ काँपैत लौ जीवन-मृत्यु सीमा के बिना भाषणक स्पर्श करैत अछि।

३७. छठ

पाठ-केन्द्र : सार्वजनिक घाट, आरक्षण, सामुदायिक सुधार।

पिप्राक सार्वजनिक घाटपर चारि बाँस प्रवेश, दान, जाति/टोला आ सुविधा-राजनीतिक सीमा बनि जाइत अछि। समिति “व्यवस्था” कहैत, सुखदेव रोक देखैत। स्त्री-दलक हस्तक्षेप, दक्षिण ढाल, दस्ताना, सहायता-पथ—कथा लोकतान्त्रिक संस्थाकेँ एक बैठकक विजय नहि, सुधारक प्रक्रियामे देखैत अछि। हास्य तनाव घटबैत अछि, मुदा असमानता छिपबैत नहि। पर्वक पवित्रता सार्वजनिक अधिकारक प्रश्न सँ अलग नहि।

३८. राग

पाठ-केन्द्र : लोक-संगीत, अभिलेखन, परिवर्तन।

हरिहरक जीवित गायकी आ नैनाक ध्वनि-अभिलेखनक बीच तनाव “संरक्षण” शब्दक जटिलता खोलैत अछि। रिकॉर्ड बचबैत अछि, मुदा बीस बरखक अभ्यास नहि समेटैत; सार्वजनिक करब प्रसिद्धि देत, अनुचित सांस्कृतिक आत्मसातक जोखिम सेहो। कथा लिखित अनुमति, स्रोत-नाम, जीवित परम्पराक बदलैत सुर आ बच्चा मुन्नीक नव टान सबकेँ एक संग रखैत अछि। “फरक भेलासँ सभ चूक नहि, सभ फरक नव बाटो नहि”—परम्परा-विकासक सटीक सूत्र।

३९. अदालत

पाठ-केन्द्र : भूमि-विवाद, गवाही, मानचित्र, उपयोग।

गवाही-रूपक ई दीर्घ कथा संग्रहक बहुस्वर इतिहास-पद्धतिक चरम रूप अछि। बद्री काका उपयोगक स्मृति, रामदेवक स्वामित्व-दावा, नक्शा, नदीक वर्तमान धारा, अधिकारीक स्थल-जाँच—सभ एकहि भूमि पर अलग “रेखा” खींचैत अछि। अदालतक रूप पाठककेँ साक्ष्यक वजन तौलय बाध्य करैत अछि। अन्तिम निरीक्षण कहैत अछि सीमा कठिन देखाइत अछि, ताहिसँ अस्तित्वहीन नहि; कागजमे अछि, तेँ धरतीपर साफ—सेहो नहि। ई द्विपक्षीय निषेध नव्य न्यायीय आ ऐतिहासिक दुनू दृष्टिसँ उल्लेखनीय।

४०. डाकिया

पाठ-केन्द्र : पता, स्थानीय ज्ञान, संचार-संक्रमण।

दीनबंधु डाकियाक ज्ञान प्रशासनिक पतासँ बेसी स्थानीय सम्बन्धक नकाशा अछि। नीम कटि गेल, घड़ीक दोकान बन्द, स्कूलक दीवार टूटल—पता बदलैत अछि, व्यक्ति नहि। सेवानिवृत्ति आधुनिक संचार-संक्रमणक पृष्ठभूमि; मार्ग-सूची निजी ज्ञानकेँ सार्वजनिक उपयोग योग्य बनबैत अछि। नव डाकियाक पहिल पाठ—पहिने लोक, फेर कागज, दुनू अलग तँ अनुमान नहि—सम्पूर्ण संग्रहक प्रमाण-नैतिकता छोट सूत्रमे समेटैत अछि।

४१. परदेस

पाठ-केन्द्र : प्रवासी पत्र, घाट, शरीरक स्मृति।

परदेस चिट्ठी एहन सम्बोधन अछि जकर प्राप्तकर्ता मनुष्य नहि, घाट/ठाम अछि। प्रवासी देह घुट्टीक पुरान दाग, मशीनक तेल, गरम हवा आ स्क्रीनक दृश्य द्वारा घर सँ सम्बन्ध राखैत अछि। लेखक “हम घुरब” जकाँ वचन नहि दैत, कारण तिथि बिना वचन भारी। स्मृति ठामकेँ भरैत अछि, मुदा घुरलापर पहिने दूरसँ देखबाक निर्णय स्मृतिक स्वयं आलोचना अछि। पत्रात्मक रूप निजी आ भूगोलिक दूरीक उपयुक्त माध्यम।

४२. डूम

पाठ-केन्द्र : बाढ़ि, लापता बालक, अनिश्चित शोक।

बाढ़िक कथा सुमित्राक काज-केंद्रित दृष्टिसँ बनैत अछि। नीलू लापता अछि; देह नहि भेटैत। समाज “मानि लेलहुँ?” पूछैत, मुदा मानबक अर्थ अनेक। कथा अनिश्चित शोककेँ स्थानीय घरेलू क्रियामे उतारैत अछि—एक कटोरी कम, खिड़की अधिक खुलल, बच्चा गिनबाक आदत, बरखा होते वस्तु ऊपर चढ़ेनाइ। अन्तमे नालीक पात हटेनाइ जीवन जारी रखबाक नाटकीयहीन, गम्भीर क्रिया। करुण रसक सबसे संयत उदाहरणसभमे एक।

४३. भूत

पाठ-केन्द्र : लोकविश्वास, प्रत्यक्ष अनुभव, नामकरण।

रिक्शाचालक जगदीशक रातिक सवारी कथा अलौकिक रोमांचक अपेक्षा जगबैत अछि, मुदा अन्तमे प्रमाण-शिक्षामे बदलैत अछि। “भार छल, बात केलनि, उतरलीह; तकर बाद नहि देखलहुँ”—अनुभवक सीमा एतबे। युवकक “पक्का भूत?” प्रश्न आधुनिक माध्यमक स्पष्ट शीर्षक-लालसा; जगदीशक उत्तर अस्पष्टताक नैतिक रक्षा। इजोत सभ अन्हार समाप्त नहि करैत—संग्रहक शीर्षकीय सिद्धान्त एतय लोककथा-रूपमे पुनः प्रकट।

४४. मास्टर साहेब

पाठ-केन्द्र : सेवानिवृत्ति, भूमिका, शिक्षकीय पहचान।

जगन्नाथ मास्टरक सेवानिवृत्ति पद आ सम्बोधनक अन्तर खोलैत अछि। विद्यालयक समय-सारिणी शरीरमे बसि गेल; छुट्टीक घंटी बजल, शिक्षा समाप्त नहि। व्याकरण, आवेदन, पुरान विद्यार्थी आ घरक घड़ी मार्फत कथा संस्थागत

पहचानसँ निजी समय दिस संक्रमण देखबैत अछि। अन्तिम भोर विद्यालय तुरन्त नहि जा कऽ उजास बढ़ैत देखब—भूमिकासँ मुक्त होयबाक अभ्यास, खालीपन नहि।

४५. चित्रकार

पाठ-केन्द्र : मिथिला-चित्र, बाजार, समकालीन दृश्य।

उर्मिला मिथिला-चित्रमे मोबाइल टावर, साइकिल, लाल प्लास्टिक कुर्सी आनैत छथि—परम्पराकेँ संग्रहालयी शुद्धता सँ मुक्त करैत। गैलरीक दृष्टि, कलाकार “खोजल” गेल कहबाक भाषा, बाजार योग्य श्रृंखला आ स्रोत-स्मृति—सभ कला-राजनीति खोलैत अछि। कलाकार पहिनेसँ अस्तित्वमान छलीह; बाहरी संस्था दृश्यता बढ़बैत अछि, अस्तित्व उत्पन्न नहि। नब रातिक घाट-चित्र ककरो आदेश लेल नहि—आत्मनिर्णीत सर्जनात्मक क्षेत्र।

४६. घुरनाइ

पाठ-केन्द्र : घर-फेर, स्त्री, उत्तराधिकार, नामकरण।

रेणुकाक घर-घुरनाइ मृत्यु, पुरान वैवाहिक विदाइ, सम्पत्ति आ गामक आरोपसभकेँ एक संग आनैत अछि। कियो हुनका साहसी, अपराधिनी, पीड़ित वा अभिमानी एक शब्दमे बन्द नहि करि सकैत। भतीजा अंशुक दृष्टि महत्वपूर्ण—ओ बुझैत अछि व्यक्ति घर जकाँ अछि, सभ कोठली एक बेर नहि खुलैत। चाभी केवल खोलबाक अधिकार नहि, जिम्मेदारी। कथा स्त्रीक “घुरनाइ”केँ पश्चाताप वा विजयक सरल ढाँचासँ बचबैत अछि।

४७. नाह

पाठ-केन्द्र : बाल-अन्वेषण, जोखिम, अनुभव-शिक्षा।

गोपी-झुनकीक बेड़ा बाल-अन्वेषण आ जोखिमक कथा। निषेधक बदला कारण पुछब, चोरीसँ प्रयोगक बदला नाविक बिसुनसँ सीखब—ज्ञानक परिवर्तन एतय मुख्य। “नदी सीखब हो त देखू, पुछू, संग रहू” अनुभववादी शिक्षा अछि। बेड़ा आधा पार गेल, पूरा घुरल—शीर्षक “नाह” इच्छित नाम आ वास्तविक वस्तुक भेद सेहो खोलैत। बाल-कथा होइतहुँ आत्मशिक्षा, सुरक्षा आ प्रमाणक परिपक्व संरचना।

४८. छठ फेर सँ

पाठ-केन्द्र : संस्थागत स्मृति, सुधारक पुनरावृत्ति।

पहिल 'छठ'क प्रस्ताव अगिला बरख व्यवहारमे फेर जाँचल जाइत अछि। चारि बाँसक झगड़ा नहि, मुदा दस्तानाक "मानक आकार" नव समस्या; बद्री काकाक खाली लाल कुर्सी स्मृति बनैत अछि। सुधार एक बेरक घोषणासँ पूरा नहि—नियम घाटिक माटि छूबिते बदलैत। संस्था सीखि सकैत अछि, मुदा स्मृति आ शोकक अपना गति अछि। "खाली ठामक अर्थ पिछला बरखक समान नहि" समयक परिवर्तनक सूक्ष्म निष्कर्ष।

४९. विदेह

पाठ-केन्द्र : सम्पादन, सहमति, स्रोत, अगिला खाली पन्ना।

समापनिका संग्रहक कथात्मक विषयकेँ सम्पादकीय क्रियामे बदलैत अछि। संदूकक कागज, पाँजि, डायरी, मौखिक कथा, संशोधित प्रतिलिपि, सहमति, नाँव छापब/न छापबक अधिकार—सभ एतय प्रक्रिया बनैत अछि। "विदेह" एकल सत्यक मंच नहि, अनेक स्रोतक नियंत्रित सहअस्तित्व। विशेष महत्त्व ई जे सम्पादक अगिला खाली पन्नापर "हमर सत्य" जकाँ घोषणात्मक वाक्य नहि लिखैत; पन्ना अगिला लिखनिहार लेल रहैत। एहि कारण समापनिका पूरा संग्रहक नैतिक-सौन्दर्यशास्त्रीय विधान बनैत अछि।

८. चारू कथा-वृत्तक समानान्तर ऐतिहासिक विकास

८.१ 'इजोत' : निजी दृश्यता सँ ज्ञान-नैतिकता धरि

पहिल बारह कथामे "देखब" प्रमुख क्रिया अछि—तिरछ इजोतमे खुरचन, बाहर सँ घर, कुहेसमे बाट, नदीक चेहरा, पाहुनक कोठली, आखरक अनपढ़नीयता। ई वृत्त व्यक्तिगत अनुभवक विश्वसनीयता के न पूर्ण स्वीकार करैत, न नकारैत। दृश्यता सीमित अछि; सीमाक घोषणा ही सत्यनिष्ठता।

स्त्री-अनुभव एहि खण्डक मेरुदण्ड अछि—मालती, सोनमती, पद्मा, नसीमा, अनामिका, माधवी। घरेलू ठाम, देह, विवाह, भाषा आ स्मृति राजनीतिक होइत अछि बिना कथाकेँ घोषणापत्र बनेने।

८.२ 'गोतगोत' : वंशक एकरेखीयता भंग

तेरहम सँ चौबीसम कथा धरि वंश एकल रक्त-रेखा सँ बाहर आबैत अछि। अस्पतालक त्रुटि, दत्तक पालन, मातृ-पाँति, अन्तर्जातीय विवाह, प्रवासी जड़ि, कला-परम्परा, पुरोहिताई, दबल पत्र—सभ वंशक अलग अवच्छेदक बनैत अछि। “गोत” स्थिर वर्ग नहि, सम्बन्धक बहुरेखीय जाल।

एहि खण्डमे कागजक शक्ति विशेष स्पष्ट अछि। कागज अधिकार देत, छीनत, झूठ प्रतिष्ठित करत, बादमे सुधरल जा सकत। तें अभिलेखक आलोचना सामाजिक न्यायक प्रश्न बनैत अछि।

८.३ ‘तत्त्व-कथा’ : दर्शनक लोक-प्रयोग

तत्त्व-कथा बारह दार्शनिक शीर्षक लेत अछि, मुदा कथासभ सिद्धान्तक उदाहरण मात्र नहि। उलटा सिद्धान्त जीवनसँ प्रश्न पबैत अछि। प्रमाण पूर्वग्रहसँ, रस अभिनेत्री सँ, नियति लत सँ, शब्द-ब्रह्म शोक सँ, अनित्य घर टूटलासँ, आत्म-अनात्म अभिनय सँ, कार्य-कारण दुर्घटनासँ, मौन गलत अर्थग्रहण सँ, संशय परिवारक कर्म सँ, मोक्ष मृत्युशय्या सँ पुनर्परीक्षित होइत अछि।

ई संरचना भारतीय दर्शनकेँ संग्रहालयी भाषा सँ निकालि दैनिक मैथिली अनुभवमे पुनर्स्थापित करैत अछि। कथा सभ दर्शनकेँ खारिज नहि करैत; ओकर उपयोग-सीमा देखबैत अछि।

८.४ ‘पिप्रा’ : स्थानीय सार्वजनिक क्षेत्र

पिप्रा नामक ठाम चौठ खण्डमे पात्र-समान होइत अछि। घाट, विद्यालय, डाकघर, अदालत, नदी, मन्दिर, बजार, चित्रकारक ओसारा—सभ मिलि एक सार्वजनिक संसार रचैत अछि। एतय निजी स्मृति संस्थागत नियम बनैत, नियम व्यवहारमे टूटैत-सुधरैत, आ अगिला कथा पिछिला कथाक परिणाम फेर जाँचैत अछि।

‘छठ’ सँ ‘छठ फेर सँ’क दूरी विशेष महत्त्वपूर्ण: सुधार प्रस्ताव सँ शुरू होइत, अगिला बरख आकार, कुर्सी, दस्ताना आ प्रतिनिधित्वक नव प्रश्न उठैत। इतिहास एतय प्रगतिक सीधा रेखा नहि, पुनरावृत्ति-सहित सुधारक प्रक्रिया।

८.५ ‘विदेह’ : कथा सँ सम्पादन धरि

अन्तिम कथा सभ पहिल रूपक—दीप, कागज, खाली पन्ना, सहमति, संशोधन —के एक संपादकीय संरचनामे बान्हैत अछि। एहि समापनसँ संग्रह “कथा-संग्रह” रहितो एक आत्मचिन्तनशील अभिलेख-परियोजना बनि उठैत अछि।

९. शुद्ध मैथिली निखार ऑडिट

ई भाषिक परीक्षण कथानक बदलबाक प्रस्ताव नहि, सम्पादकीय एकरूपता आ मैथिली-स्वाभाविकता बढ़ेबाक परीक्षण अछि। संख्या पाठक शब्द-रूपक सीधा संगणकीय खोजपर आधारित अछि; प्रसंगानुसार किछु रूप तकनीकी नाम, पात्रक भाषा वा उद्धरणक कारण जानि-बुझि राखल जा सकैत अछि।

मौजूदा रूप	गिनती	निखार-प्रस्ताव	टिप्पणी
पानी	१३३	पानि	संग्रहमे “पानि” सेहो ९९ बेर अछि; एकरूपता लेल “पानि” प्रधान रूप नीक।
चाय	११७	चाह	पेय अर्थमे “चाह” अधिक मैथिली; “चाह” इच्छार्थक क्रियासँ प्रसंग स्पष्ट राखू।
बरामदा	१०६	ओसारा	ग्रामीण मैथिली परिवेशमे “ओसारा” अधिक स्वाभाविक।
कमरा	१३	कोठली	“कोठली” संग्रहमे प्रचुर अछि; एकरूपता लाभकारी।

मौजूदा रूप	गिनती	निखार-प्रस्ताव	टिप्पणी
कोठरी	२०	कोठली	एकहि स्थापत्य अर्थ लेल मिश्रित रूप घटाउ।
गायब	३२	बिलायल / हेरायल	प्रसंगानुसार “बिलायल” वा “हेरायल”; तथ्य-अनुपस्थिति लेल “नहि भेटल” सेहो।
अंगूठा	६	औंठा / बुढबा आंगुर	शारीरिक प्रसंगानुसार देशज रूप।
भूलल	५	बिसरल	स्मृति-सन्दर्भमे “बिसरल” प्रधान।
चाभी / चाबी	४९ / २८	एक रूप निश्चित करू	दुनू रूप चलैत; एक पुस्तकमे सम्पादकीय एकरूपता आवश्यक।

९.१ रोमन/अंग्रेजी प्रयोग

मूल पाठमे रोमन लिपिक उपस्थिति ३८ अनुच्छेदमे भेटैत अछि। ई मुख्यतः पहचान-पट्ट, रक्त-समूह, चिकित्सकीय रजिस्टर, प्रशासनिक फार्म, तकनीकी लेबल आ संस्थागत भाषाक यथार्थपरक प्रतिकृति अछि। प्रकाशन-निखार लेल जे रोमन रूप कथानक-प्रमाण रूपेँ आवश्यक अछि, ओकरा देवनागरी विवरणक तुरन्त बाद ब्रैकेटमे देल जा सकैत अछि; जे आवश्यक नहि, ओकर देवनागरी रूप पर्याप्त। एहि शोध-लेखमे अनावश्यक रोमन रूप जानि-बुझि नहि राखल गेल अछि।

९.२ आगन्तुक तकनीकी शब्द

“स्कैन”, “स्क्रीन”, “फाइल”, “डिजिटल”, “मोबाइल”, “फोन”, “रिकॉर्ड”, “वेबसाइट” जकाँ शब्द आधुनिक अभिलेखीय संसारक अंग छथि; सभकेँ कृत्रिम संस्कृतनिष्ठ विकल्प देनाइ कथा-स्वाभाविकता घटा सकैत अछि। निखारक सही उपाय दू स्तरक अछि—मैथिली वाक्य-विन्यास शुद्ध राखू, आ तकनीकी संज्ञा प्रथम प्रसंगमे अर्थ-स्पष्टता सहित राखू। पात्रक सामाजिक स्तर अनुसार शब्द-चयन बदलि सकैत अछि।

९.३ वाक्य-संयोजन आ रूप-एकरूपता

ग्रन्थक कथा-भाषा मुख्यतः प्रवाहमय अछि, मुदा दीर्घ पुस्तकमे समानार्थी रूपक मिश्रण बढ़ि गेल अछि। “पानि/पानी”, “कोठली/कोठरी/कमरा”, “चाभी/चाबी” जकाँ युग्म सम्पादकीय शैली-पत्र द्वारा एकरूप कएल जा सकैत अछि। “देत/दैत”क यांत्रिक प्रतिस्थापन नहि करबाक चाही—भविष्य, अभ्यस्त/प्रगतिशील आ वाक्य-सन्दर्भ देखबाक आवश्यक। व्यक्ति-सूचक आदरसूचक क्रिया आ निर्जीव/अमानवीय विषयक क्रिया सेहो अन्तिम प्रूफ-पाठमे पृथक जाँच योग्य।

९.४ कथ्य-भाषाक विशेष उपलब्धि

भाषिक निखारक अर्थ स्थानीय बोलचाल मेटेनाइ नहि। “गोतिया”, “ओछाइन”, “ओसार”, “पाँजि”, “थाकि”, “घुरनाइ”, “नाह”, “कुहेस” जकाँ शब्द संग्रहक सांस्कृतिक देह छथि। निखार एही स्थानीय शब्द-संसारकेँ मानक वर्तनी, स्वाभाविक क्रियारूप आ एकरूप सम्पादनद्वारा अधिक स्पष्ट करबाक प्रक्रिया हेबाक चाही।

१०. साहित्यिक उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ सम्पादकीय सावधानी

१०.१ प्रमुख उपलब्धि

संग्रहक सबसे पैघ उपलब्धि विषयगत एकता आ कथात्मक विविधताक संतुलन अछि। एकहि “प्रमाण-नैतिकता” अनेक रूपमे आबैत अछि—रहस्य, घरेलू हास्य, पत्र, अदालत, दार्शनिक कथा, बाल-अन्वेषण, लोककला, बाढ़ि-कथा, सम्पादकीय समापन। एहि कारण विचार दोहराइतो विधा बदलैत अछि।

दोसर उपलब्धि अनिश्चितताक नैतिक प्रतिष्ठा अछि। आधुनिक सार्वजनिक लेखन प्रायः तीव्र निष्कर्ष माँगैत अछि; ई संग्रह अनेक ठाम अज्ञातकेँ चिन्हित रखैत अछि। एहि गुणसँ कथा न्यायिक, ऐतिहासिक आ पारिवारिक संवेदनशीलता प्राप्त करैत अछि।

१०.२ सम्भावित सीमा

किछु कथामे पात्र अन्तिम अनुच्छेदमे अपन अनुभवक दार्शनिक सार स्वयं स्पष्ट कऽ दैत छथि। जे ठाम प्रतीक आ घटना पहिने सँ पर्याप्त छथि, ओतय एहन व्याख्या ध्वनिक खुलापन घटा सकैत अछि। विशेषतः दीप/इजोत, खाली ठाम आ “पूर्ण उत्तर नहि”क आवृत्ति अत्यधिक निकट पठनमे पूर्वानुमेय बनबाक जोखिम रखैत अछि।

मुदा संग्रह बारम्बार अपनहि एहि जोखिमकेँ काटैत अछि—“वाक्य बहुत सुन्दर बनि रहल छल” कहि पात्र सूक्ति सँ सावधान होइत छथि; निष्कर्ष काटैत, प्रश्नचिह्न लगबैत, खाली छोड़ैत छथि। आत्मालोचनात्मक ई उपकरण सीमाकेँ साहित्यिक विषय बना दैत अछि।

१०.३ अन्तर्सम्बन्धक शक्ति

चरित्र, प्रतीक, स्थान आ विधिक प्रतिध्वनिसँ ४९ कथा अलग पुस्तकक अध्याय जकाँ संवाद करैत अछि। पाँजि सँ “लोक” बही, खाली पन्ना सँ भावी लेखन, छठ सँ छठ फेर सँ, प्रवास सँ घुरनाइ, कलाकारक स्रोत-स्मृति सँ विदेहक सम्पादकीय सहमति—ई अन्तर्सम्बन्ध संग्रहकेँ साधारण संकलन सँ कथाचक्र बनबैत अछि।

११. निष्कर्ष

‘इजोत — जनम-जनमक कथा’क मूल साहित्यिक उपलब्धि सत्यक एकाधिकार भंग करब अछि। ग्रन्थ न त दस्तावेज-विरोधी अछि, न लोकस्मृति-रोमानी; न दर्शन-विरोधी, न विज्ञानवादी सरलीकरण; न परम्परा-विरोधी, न परम्पराक आज्ञापालक। ओ प्रत्येक क्षेत्रमे स्रोत, सम्बन्ध, सन्दर्भ आ सीमा पुछैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ संग्रह ध्वनि, रस, वक्रोक्ति आ औचित्यक आधुनिक मैथिली प्रयोग प्रस्तुत करैत अछि। पाश्चात्य आख्यान-दृष्टिसँ ई

बहुस्वर, स्मृति-आख्यान, दस्तावेजी रूप, सीमित दृष्टिबिन्दु आ पाठकीय रिक्तिक सघन कथाचक्र अछि। नव्य न्यायीय दृष्टिसँ ई प्रमाणक प्रकार, अनुमानक त्रुटि, अभावक सकारात्मक ज्ञान, उपाधि, कारण-जाल आ “नहि जानैत छी”क वैधता के दैनिक जीवनमे नाटकीय बनबैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ संग्रह ई सिखबैत अछि जे इतिहास एक “साफ कथा” नहि, स्रोतसभक उत्तरदायी सह-अस्तित्व अछि।

अन्तिम दीप सभ अन्हार समाप्त नहि करैत। एही संग्रहक सौन्दर्य आ विचारक केन्द्र अछि। इजोतक पर्याप्तता पूर्णता मे नहि, सीमा चिन्हेबामे अछि। कथा १क मेटाओल पाँतिसँ कथा ४९क खाली पन्ना धरि यात्रा एहि नैतिक रूपान्तरणक यात्रा अछि—मेटाओल ठाम देखू, अनुमानकेँ प्रमाण नहि बनाउ, आवाजक अनुमति लिअ, चूक मेटाउ नहि बल्कि चिन्हित करू, आ अगिला लिखनिहार लेल ठाम छोड़ू। एहि अर्थमे ई संग्रह मैथिली लघुकथाकेँ अभिलेख, दर्शन, लोकजीवन आ सार्वजनिक नैतिकताक संग एक व्यापक आधुनिक संवादमे स्थापित करैत अछि।

ग्रन्थसूची

इजोत — जनम-जनमक कथा

नाट्यशास्त्र

ध्वन्यालोक

काव्यप्रकाश

वक्रोक्तिजीवितम्

साहित्यदर्पण

रसगंगाधर

तत्त्वचिन्तामणि

दीधिति

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली

पोएटिक्स

माइमेसिस

द डायलोजिक इमैजिनेशन

टाइम ऐंड नैरेटिव

द ऐक्ट ऑफ रीडिंग

ट्रुथ ऐंड मेथड

द आर्कियोलॉजी ऑफ नॉलेज

आलेख १८ · कथा, लघुकथा आ कथा-समालोचना

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

सारांश

ई शोध-समीक्षा गजेन्द्र ठाकुरक कथा-संग्रह ‘पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’ कैं एक समग्र पाठ-समुच्चय मानि कऽ पढ़ैत अछि। पोथीक आरम्भिक पाठकीय निर्देश, नौ गोट लघुकथा, तीन गोट दीर्घकथा, उनतालीस गोट बीहनि-कथा-शीर्षक, बीहनि कथाक भीतरक शृंखलाबद्ध उपखंड, आ चारि गोट अंग्रेजी अनुवाद—सभकैं आलोचनात्मक विवेचनामे समेटल गेल अछि। समीक्षा चारि प्रमुख पद्धतिक संयुक्त उपयोग करैत अछि: भारतीय काव्यशास्त्रीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टि; पाश्चात्य कथाविज्ञान, यथार्थवाद, संवादात्मकता आ सूक्ष्म-कथा सिद्धान्त; नव्य-न्यायक शब्दबोध, सम्बन्ध, अवच्छेद, अभाव आ प्रमाण-विवेक; तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक बहु-दृष्टिक, प्रतिपक्ष-सम्मिलित आ स्रोत-सचेत ढाँचा। संग्रहक केंद्रीय शक्ति एकर सामाजिक विस्तार अछि। गाम, महानगर, प्रवास, महामारी, जाति, विधवा-जीवन, न्याय-व्यवस्था, प्रशासन, राजनीति, शिक्षा, रोजी-रोटी, लोकविश्वास, इतिहास, पञ्जी, स्मृति, पर्यावरण, स्त्री-अनुभव आ ज्ञानक विविध रूप एक-दोसरासँ टकराइत आ एक-दोसराकैं खोलैत अछि। लेखक अनेक कथामे निर्णायक उपदेश देबाक बदला परस्पर विरोधी आवाज सभकैं आमने-सामने राखैत छथि। एहि कारण ‘सिद्ध महावीर’ मे आस्था आ वैज्ञानिक व्याख्या, ‘तस्कर’ मे अभिलेख आ प्रेम-स्मृति, ‘शब्दशास्त्रम्’ मे शब्द आ सामाजिक इतिहास, ‘मधुबनी मोडचूल’ मे राज्य, हिंसा आ वैचारिक आकर्षण, तथा ‘महिसबार ब्राह्मणक गाम’ मे गाम स्वयं कथानायक बनि उठैत अछि।

बीजशब्द

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल ·मैथिली कथा ·लघुकथा ·पाठाधारित समीक्षा · कथन-शिल्प

१.४५. गजेन्द्र ठाकुर-पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

गहन शोध, बहु-पद्धतिक साहित्यिक समीक्षा आ शुद्ध मैथिली निखार-अध्ययन

भारतीय काव्यशास्त्र • पाश्चात्य आलोचना • नव्य-न्याय • विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

शोध-समीक्षा

सारांश

ई शोध-समीक्षा गजेन्द्र ठाकुरक कथा-संग्रह 'पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल' कैं एक समग्र पाठ-समुच्चय मानि कऽ पढ़ैत अछि। पोथीक आरम्भिक पाठकीय निर्देश, नौ गोट लघुकथा, तीन गोट दीर्घकथा, उनतालीस गोट बीहनि-कथा-शीर्षक, बीहनि कथाक भीतरक शृंखलाबद्ध उपखंड, आ चारि गोट अंग्रेजी अनुवाद—सभकैं आलोचनात्मक विवेचनामे समेटल गेल अछि। समीक्षा चारि प्रमुख पद्धतिक संयुक्त उपयोग करैत अछि: भारतीय काव्यशास्त्रीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टि; पाश्चात्य कथाविज्ञान, यथार्थवाद, संवादात्मकता आ सूक्ष्म-कथा सिद्धान्त; नव्य-न्यायक शब्दबोध, सम्बन्ध, अवच्छेद, अभाव आ प्रमाण-विवेक; तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक बहु-दृष्टिक, प्रतिपक्ष-सम्मिलित आ स्रोत-सचेत ढाँचा।

संग्रहक केंद्रीय शक्ति एकर सामाजिक विस्तार अछि। गाम, महानगर, प्रवास, महामारी, जाति, विधवा-जीवन, न्याय-व्यवस्था, प्रशासन, राजनीति, शिक्षा, रोजी-रोटी, लोकविश्वास, इतिहास, पञ्जी, स्मृति, पर्यावरण, स्त्री-अनुभव आ ज्ञानक विविध रूप एक-दोसरासँ टकराइत आ एक-दोसराकैं खोलैत अछि। लेखक अनेक कथामे निर्णायक उपदेश देबाक बदला परस्पर विरोधी आवाज सभकैं आमने-सामने राखैत छथि। एहि कारण 'सिद्ध महावीर' मे आस्था आ वैज्ञानिक व्याख्या, 'तस्कर' मे अभिलेख आ प्रेम-स्मृति, 'शब्दशास्त्रम्' मे शब्द आ सामाजिक इतिहास, 'मधुबनी मोड्यूल' मे राज्य, हिंसा आ वैचारिक आकर्षण, तथा 'महिसबार ब्राह्मणक गाम' मे गाम स्वयं कथानायक बनि उठैत अछि।

भाषिक स्तरपर पोथी जीवित बोलचाल, लोकप्रयोग, प्रशासनिक शब्दावली आ आधुनिक नगरीय शब्द-संसारक घर्षणकेँ जानि-बुझि कऽ रखैत अछि। तकरा कारण पाठककेँ समाजक वास्तविक बहुभाषिकता भेटैत अछि, मुदा मुद्रित मानक मैथिली लेल किछु ठाम वर्तनी, विराम, पद-विभाजन, अनावश्यक रोमन रूप आ अंग्रेजी-आश्रित प्रयोगक एकरूपता अपेक्षित अछि। समीक्षा एहि बिंदुसभक निखार-अध्ययन सेहो प्रस्तुत करैत अछि। निष्कर्षतः ई संग्रह केवल कथा-समूह नहि, अपितु मिथिला आ प्रवासी मिथिलाक सामाजिक स्मृति, विवाद, विडम्बना आ ज्ञान-रूपक एक बहुस्तरीय अभिलेख रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

मुख्य शब्द: मैथिली कथा; बीहनि कथा; लोकस्मृति; नव्य-न्याय; भारतीय काव्यशास्त्र; कथाविज्ञान; समानान्तर इतिहास; पञ्जी; प्रवास; सामाजिक व्यंग्य।

१. अध्ययनक विषय, परास आ मूल प्रश्न

‘पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’ अपन संरचनामे एकरूप कथा-संग्रह नहि अछि। एतऽ विस्तारक तीन स्तर स्पष्ट अछि—लघुकथा, दीर्घकथा आ बीहनि कथा। एकर अतिरिक्त अंग्रेजी अनुवादक चारि परिशिष्ट मूल मैथिली कथाक अन्तरभाषिक पुनर्रचना प्रस्तुत करैत अछि। आरम्भिक ‘पाठकक लेल किछु निर्देश बा सुझाव’ भाग लेखकक आत्म-व्याख्यात्मक प्रस्तावना अछि; ई पाठककेँ प्रकाशन-इतिहास, रूपान्तर, पूर्वप्रकाशन, अनुवाद, पञ्जी-स्रोत, लोकगीत-स्रोत आ कथा-विधाक परिवर्तनक सूचना दैत अछि। तेँ समीक्षा लेल प्रस्तावना स्वयं एक महत्त्वपूर्ण पाठ अछि, केवल बाहरी भूमिका नहि।

अध्ययनक पहिल प्रश्न अछि—एतेक भिन्न आकार आ कथाभंगिमाबला रचना सभकेँ एक सूत्रमे कोना पढ़ल जाय? दोसर प्रश्न—लेखकक गामक स्मृति, प्रशासकीय अनुभव, प्रवासी जीवन आ ऐतिहासिक अभिलेख कथामे तथ्यक रूपमे अबैत अछि कि सौन्दर्यात्मक संरचनाक रूपमे? तेसर प्रश्न—हास्य, व्यंग्य, विडम्बना, करुणा आ विस्मयक परस्पर सम्बन्ध की अछि? चारिम प्रश्न —जाति, लिंग, वर्ग, राज्य आ ज्ञानक प्रश्नपर कथा कोन ठाम प्रतिपक्ष खोलैत अछि, आ कोन ठाम कथाकारक दृष्टि स्वयं प्रश्नांकित भऽ सकैत अछि? पाँचम प्रश्न—भाषिक बहुलता आ शुद्ध मैथिली निखारक बीच संतुलन कोना बनत?

पोथीक मूल मैथिली अंशमे नौ लघुकथा, तीन दीर्घकथा आ उनतालीस बीहनि-कथा-शीर्षक अछि। एहि हिसाबे एकावन मूल कथा-इकाई बनैत अछि। चारि अंग्रेजी अनुवाद जोड़ला पर पोथीक आलोचनात्मक परास पचपन रचनात्मक प्रस्तुति धरि पहुँचैत अछि। ‘यातायात निअम’, ‘बाढ़ि, भूख आ प्रवास’, ‘मीत भाइ शृंखला’ आ ‘साइंस’ बहु-उपखंडीय रचना छथि; अतः संख्यात्मक शीर्षक एकावन भए सकैत अछि, मुदा आन्तरिक प्रसंगक संख्या एहिसँ बेसी अछि। एहि समीक्षामे एहि उपखंड सभकेँ सेहो पृथक ध्यान देल गेल अछि।

२. आलोचनात्मक पद्धति

२.१ भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

भारतीय काव्यशास्त्रक उपयोग एतऽ केवल रस-निर्धारण धरि सीमित नहि अछि। रस पाठकक अनुभवात्मक परिणति बुझबाक साधन अछि; ध्वनि कथित वाक्यक पाछाँक संकेतित अर्थ खोलैत अछि; वक्रोक्ति व्यंग्य, उलटबाँसी आ कथनक अप्रत्यक्ष शक्ति बुझबैत अछि; औचित्य पात्र, भाषा, प्रसंग आ कथानकक अनुरूपता जाँचैत अछि। बीहनि कथाक बहुत रचना एक-दू वाक्यक मोड़पर टिकैत अछि—एहन ठाम वक्रोक्ति आ ध्वनि विशेष उपयोगी अछि। दीर्घ कथामे रस मिश्रित अछि: करुणक बीच हास्य, हास्यक भीतर भय, शृंगारक भीतर इतिहास, आ वीरक भीतर नैतिक संशय।

२.२ पाश्चात्य आलोचनात्मक दृष्टि

पाश्चात्य कथाविज्ञानक आधारपर कथावाचक, कालक्रम, दृष्टिबिन्दु, दृश्य-संक्षेप, स्मृति-प्रत्यावर्तन, खुला अन्त, बहुस्वरता आ विडम्बनात्मक दूरीक अध्ययन कएल गेल अछि। यथार्थवादी परम्परा ई देखबाक साधन दैत अछि जे सामान्य जीवनक सूक्ष्म दृश्य—बस-स्टैण्ड, कार्यालय, अस्पताल, बान्ह, पोखरि, बाजार, जेल, श्मशान, मॉल, गामक बैठक—कोना सामाजिक संरचना खोलैत अछि। संवादात्मक दृष्टि सँ देखला पर संग्रहक श्रेष्ठ भाग ओ अछि जतऽ कथाकार एकमात्र अन्तिम सत्य घोषित नहि करैत छथि, बल्कि पात्रक भिन्न भाषा आ विश्वासकेँ टकराबऽ दैत छथि। बीहनि कथा लेल लघुतम

कथात्मकता, अन्तिम मोड़, सामाजिक चुटकी आ अर्थ-संघनन महत्त्वपूर्ण कसौटी अछि।

२.३ नव्य-न्याय आधारित पाठ

नव्य-न्याय दृष्टि साहित्यक सौन्दर्यकेँ तर्कशास्त्रमे बदलबाक उपक्रम नहि, बल्कि कथामे ज्ञानक दावाक संरचना जाँचबाक उपाय अछि। कोन कथन प्रत्यक्षपर आधारित अछि, कोन अनुमानपर, कोन लोकश्रुतिपर, कोन अभिलेखपर, कोन स्मृतिपर? कथनक विशेष्य की अछि, ओकरा सीमित करनिहार अवच्छेदक की अछि, आ सम्बन्ध कोन प्रकारक अछि? ‘सिद्ध महावीर’ मे हृदयाघातक चिकित्सकीय व्याख्या आ ‘श्राप’क लोकव्याख्या एकहि घटनाक दू भिन्न ज्ञान-रूप प्रस्तुत करैत अछि। ‘शब्दशास्त्रम्’ मे शब्द-श्रवण, स्मृति, भ्रम आ अर्थ-निर्माण स्वयं कथाक विषय बनि जाइत अछि। ‘तस्कर’ मे पञ्जी अभिलेख ऐतिहासिक प्रमाण होइतहुँ कथात्मक पुनर्रचनाक पूरा आधार नहि बनि सकैत अछि; बीचक रिक्तता लेखक कल्पनाक माध्यमसँ भरैत छथि आ ई भेद समीक्षा लेल आवश्यक अछि।

२.४ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति एकल आलोचनात्मक चश्माक बदला बहु-दृष्टिक समानान्तर उपयोगपर जोर दैत अछि। वर्ग-संबंध, ऐतिहासिक भौतिक परिस्थिति, संरचना, जादुई-यथार्थ सन लोकविश्वास, उत्तर-आधुनिक विखंडन, स्त्री-दृष्टि, दलित-दृष्टि, विघटनात्मक पाठ आ भारतीय सौन्दर्यशास्त्र—ई सभ एक-दोसराकेँ काटैत नहि, बल्कि एकहि पाठक विभिन्न तल खोलैत अछि। एहि पद्धतिक दोसर महत्त्वपूर्ण अनुशासन अछि स्रोतक मर्यादा: जे अभिलेख प्रमाणित करै, तकरा तथ्य कही; जे कथा कल्पना करै, तकरा कल्पना कही; जे विवादित हो, तकरा विवादित मानि कऽ पढ़ी। ई समीक्षा एहि सिद्धान्तकेँ ‘तस्कर’, ‘शब्दशास्त्रम्’, ‘महिसबार ब्राह्मणक गाम’ आ जाति-इतिहास सम्बन्धी बीहनि कथामे विशेष रूपेँ अपनबैत अछि।

३. रचनात्मक स्थापत्य: संग्रह रूपमे पोथी

पोथीक शीर्षक स्वयं एक चित्रात्मक असंगति बनबैत अछि—‘पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’। पर्वत स्थायित्व, विशालता आ ऊर्ध्वता; भमरा गति, गुंजन,

लघुता आ क्षणिकता। 'सूतल' गतिशील जीवकेँ स्थिर करैत अछि। एहि त्रिकोणमे संग्रहक रूपक देखल जा सकैत अछि: विशाल सामाजिक संरचनाक ऊपर छोट मनुष्य, अथवा इतिहासक कठोर पर्वतपर स्मृति आ कथाक अस्थिर भमरा। कथासभ बारम्बार एहन छोट पात्र, छोट घटना, छोट संवाद उठबैत अछि जे पाछाँ पैघ संरचना खोलि दैत अछि।

लघुकथा खण्डक रचना सभ सामान्यत: एक केंद्रीय संघर्ष, स्मृति बा सामाजिक प्रश्नक विस्तृत विन्यास करैत अछि। दीर्घकथा खण्डमे व्यक्ति सँ संस्था, इतिहास, दर्शन आ समुदायक स्तर धरि विस्तार अछि। बीहनि कथा खण्ड संग्रहक सूक्ति-सदृश, व्यंग्यात्मक आ मौखिक ऊर्जा केन्द्र अछि। एहि त्रिस्तरीय स्थापत्यमे पाठक दीर्घ भावानुभव सँ छोट झटका धरि निरन्तर लय-परिवर्तन अनुभव करैत अछि। जोखिम सेहो एतहि अछि: विषयक विपुलता कखनो-कखनो समग्र संग्रहकेँ सघन कथात्मक एकरूपतासँ दूर लऽ जाइत अछि। मुदा यदि एकरा 'सामाजिक कथा-अभिलेख' मानल जाय तँ ई विविधता दोष नहि, संरचनात्मक सिद्धान्त बनि जाइत अछि।

४. लघुकथा खण्ड: नौ रचनाक विस्तृत समीक्षा

४.१ सिद्ध महावीर

'सिद्ध महावीर'क मूल संघर्ष भूमि, आस्था, विधवा-जीवन आ सामाजिक स्वार्थक बीच अछि। अनमना दीदी अपन श्रम, अन्न-पानि आ जीवनक बचतसँ महावीरक मन्दिर बनबैत छथि। भातिजक भूमि-लालसा, रजिस्ट्रीक चालि आ सामाजिक कानूनी संरचना हुनकर धार्मिक समर्पणकेँ सांसारिक संपत्ति-विवादमे बदलि दैत अछि। कथा करुण रस सँ शुरू भऽ कऽ रोष, व्यंग्य आ अन्ततः अद्भुत-भयानक लोकविश्वास धरि पहुँचैत अछि।

कथाक श्रेष्ठ बिंदु अन्तिम द्विस्वरता अछि। भातिजक मृत्यु एक दल लेल हृदयाघात, चिन्ता आ चिकित्सकीय विलम्बक परिणाम अछि; दोसर दल लेल अनमना दीदीक श्राप आ 'जागृत' महावीरक शक्ति। कथाकार दुनूमे सँ कोनो एक व्याख्या पर मुहर नहि लगबैत छथि। नव्य-न्याय दृष्टिसँ ई समान घटना पर भिन्न हेतु-कल्पना अछि; भारतीय ध्वनि-सिद्धान्तसँ कथा ई संकेत करैत अछि जे विश्वासक शक्ति तथ्य मात्र नहि, सामुदायिक अर्थ-निर्माणमे बसैत

अछि। स्त्री-दृष्टिसँ अनमना दीदीक देह, घर, भूमि आ धार्मिक श्रमपर पुरुष उत्तराधिकारक दबाव कथा केर सामाजिक नाभि अछि।

४.२ नवी मुम्बै

‘नवी मुम्बै’ महानगरक कथा होइतहुँ मूलतः ‘विस्तारित गाम’क कथा अछि। गढ़ नारिकेलक लोक नवी मुम्बै, दिल्ली, नोयडा, ग्रेटर नोयडा आ आन ठाम बसि गेल छथि; फोन, स्मृति, जातीय-पारिवारिक परिचय, रोजी-रोटी आ बीमारी एहि बिखरल भूगोलकेँ एक सामाजिक जालमे बाँधैत अछि। कोरोना काल एहि जालक कमजोरी आ शक्ति दुनू खोलैत अछि।

कथामे महामारीक चिकित्सा-अनिश्चितता, ऑक्सीजनक संकट, अस्पतालक दुविधा, दवाईक कालाबाजारी, अफवाह, घरेलू परिचर्या आ प्रवासी पलायन एकहि कथन-प्रवाहमे अबैत अछि। ई दस्तावेजी यथार्थक निकट अछि, मुदा साहित्यिक शक्ति केवल घटनासूचीमे नहि—अन्तिम तनाव ‘सातम दिन’क प्रतीक्षामे अछि। गाममे लोक शीघ्र ठीक भेल कहबाक सामूहिक आशा आ दिल्लीमे पुत्रक नउतरल बोखार एक-दोसराकेँ काटैत अछि। निजी भय सार्वजनिक महामारीक आँकड़ाकेँ मानवीय ताप दैत अछि।

४.३ नई दिल्ली

‘नई दिल्ली’ राजधानीक चमक, प्रवासक अर्थशास्त्र आ मृत्युकेँ एक त्रिकोणमे रखैत अछि। विमानतलक आधुनिकता, ‘इण्डिया मजगूत भऽ रहल अछि’ सन टिप्पणी, कामक अवसर, परिवारक पुनर्संरचना आ अन्ततः श्मशानक दृश्य—ई सभ प्रगतिक रेखीय कथाकेँ अस्थिर करैत अछि। कथा नव शहरी परिवार बनबाक कीमत देखबैत अछि: पीढ़ी अपन गाम छोड़ैत अछि, भविष्यक लेल वर्तमान देह श्रम करैत अछि, आ मृत्यु शहरी आकांक्षाक बीच स्थिर स्मृति बनि जाइत अछि।

अन्तिम संस्कारक विस्तार औचित्यपूर्ण अछि, कारण ई महानगरीय अमूर्तनकेँ देह, लकड़ी, धुआँ, पानि आ स्पर्शमे फेर आनैत अछि। पाश्चात्य यथार्थवादी दृष्टिसँ ई भौतिक विवरण वर्ग-आकांक्षा पर नैतिक टिप्पणी बनैत अछि; भारतीय करुण रसक दृष्टिसँ मृत्यु निजी शोक सँ ऊपर उठि प्रवासी पीढ़ीक सामूहिक अनुभव बनैत अछि।

४.४ तस्कर

‘तस्कर’ पञ्जी, लोकस्मृति, प्रेम आ सत्ता-निर्मित नामकरणक कथा अछि। केशव आ मालतीक स्मृति समयक दीर्घ अन्तराल पार करैत अछि; राजा बीरेश्वर सिंहक सत्ता पञ्जीमे ‘तस्कर’ उपाधि लिखबैत अछि। प्रश्न ई अछि जे तस्कर वास्तवमे के—प्रेमी, अपहरणकर्ता, कि सत्ता द्वारा अपराधी नामित व्यक्ति?

कथा इतिहासक अवशेष—पोखरि, मन्दिर, डिहबार स्थान, शालिग्राम, पञ्जी-उल्लेख—केँ भावात्मक भूगोलमे बदलैत अछि। विदेह समानान्तर पद्धतिसँ देखला पर अभिलेखक सत्ता आ मौखिक/प्रेम-स्मृतिक प्रतिपक्ष समान महत्त्वक अछि। लेखक स्वयं ऐतिहासिक रिक्ततामे लेखकीय स्वतंत्रता लेबाक संकेत दैत छथि; अतः एहि कथा केर मूल्य ‘घटना ज्योंकात्यों सिद्ध’ करब नहि, बल्कि अभिलेखक एकपक्षीय नामकरणकेँ कथात्मक प्रश्नमे बदलब अछि।

४.५ संघर्ष

‘संघर्ष’क केंद्र सोहागो नामक वृद्ध विधवा आ ओकर फाइल अछि। गरदासँ भरल कागज, पेटीशन, कार्यालय, आरोप-प्रत्यारोप, सेवाक प्रश्न आ पुत्रक स्मारक—कथा प्रशासनिक वस्तु ‘फाइल’ केँ मानवीय समयक पात्र बना दैत अछि। विधवाक दीर्घ हारिक सामने कथावाचक अपन निजी हारिकेँ छोट देखऽ लगैत अछि।

कथाक नैतिक ऊर्जा ‘सहानुभूति’ सँ अधिक ‘संक्रमित जिद्द’मे अछि। शुरू मे अधिकारी कर्तव्यवश फाइल उठबैत अछि; बादमे वृद्धाक जीतक इच्छा अपन इच्छा बनि जाइत अछि। अन्ततः पेटीशन स्वीकृत होइत अछि आ कथावाचकक भीतर सोझाँ-सोझी विजयक इच्छा जागैत अछि। भारतीय वीर रसक आधुनिक रूप एतऽ युद्धभूमि नहि, कार्यालयी प्रक्रिया अछि। स्त्रीवादी पाठमे वृद्ध विधवाक सामाजिक अकेलापन आ प्रशासनक प्रति ओकर अविश्वास गम्भीर अछि; ई पात्र विनीत पीड़िता नहि, ‘अगरजित’ प्रतिरोधी नागरिक छथि।

४.६ लेटरबॉक्समे आयल चिट्ठी

ई कथा अपराध, ड्रग्स, आतंकवाद, राज्य-तंत्र, पूछताछ आ नैतिक अस्पष्टताक जटिल आख्यान अछि। तमिल भाषी अभियुक्त मुतालिफक आरम्भिक भाषिक एकाकीपन कथा केर महत्त्वपूर्ण संकेत अछि—राज्य ओकर

देह पर नियंत्रण रखैत अछि, मुदा ओकर भाषा बुझबाक कठिनाई राज्यक ज्ञानक सीमाक प्रतीक बनैत अछि। कथा क्रमशः गिरफ्तारीक प्रक्रिया सँ हिंसक संगठनक तर्क-वितर्क आ निजी क्षति धरि बढ़ैत अछि।

अन्तिम दृश्य विशेष महत्त्वपूर्ण अछि: कथावाचक बिनु हथियार ठाढ़ अछि आ मुतालिफक निर्णयक प्रतीक्षा करैत अछि—ओ नायक बनत कि नहि, ई लेखक नहि बल्कि पात्रक कर्म तय करत। एहि खुला अन्तमे पाश्चात्य आधुनिकतावादी अनिश्चितता आ नव्य-न्यायिक 'असिद्ध निष्कर्ष' दुनू भेटैत अछि। कथा नैतिक निर्णय स्थगित करैत अछि, मुदा हिंसा आ राज्य-दोहन दुनूक प्रश्न उठबैत अछि।

४.७ डोमा, बुधन आ...

'डोमा, बुधन आ...' जाति, शिक्षा, आरक्षण, श्रम, आत्मसम्मान आ पीढ़ीगत परिवर्तनक कथा अछि। बुधन पासवान छोट भायकेँ पढ़ेबाक लेल चण्डीगढ़ धरि श्रम करैत छथि। सरकारी योजना, मुफ्त किताब, विद्यालयी पहुँच आ रोजगारक आशा सामाजिक हस्तक्षेपक एक चरण देखबैत अछि; बादक भागमे प्रश्न उठैत अछि जे केवल राहत पर्याप्त अछि कि स्वामित्व, कौशल आ संस्थागत शक्ति सेहो चाही।

कथामे बर्बरीकक 'कमजोरक पक्ष' लेबाक प्रण, गार्गी-याज्ञवल्क्य संवाद आ जाति-अचेत नब पीढ़ीक प्रसंग एक खास बौद्धिक संरचना बनबैत अछि। ई दलित विमर्शकेँ केवल पीड़ा-वर्णनपर नहि रोकैत; सामाजिक न्यायकेँ शिक्षा, उत्पादन-साधन, पेशागत गरिमा आ मानसिक मुक्तिसँ जोड़ैत अछि। आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे कथावाचकक समाधानवादी स्वर किछु ठाम पात्रक अनुभवपर भारी पड़ैत अछि; तथापि बहस खुला रहैत अछि, जे कथा केर शक्ति अछि।

४.८ आत्महत्या

'आत्महत्या' मनोवैज्ञानिक कारणक सरलीकरणक विरोध करैत अछि। आर्या, ओकर पिता, परिवार, प्रेम-संबंध आ सामाजिक अवमानना आपसमे जुड़ल छथि, मुदा कथा एक कारणकेँ अन्तिम कारण घोषित नहि करैत अछि। आत्महत्या

केकरा कष्ट पहुँचाबऽ लेल छल—मायकेँ, प्रेमीकेँ, स्वयंकेँ? प्रश्नोत्तरक अन्तिम विन्यास एहि अनिश्चितता केँ जतनसँ बचा कऽ रखैत अछि।

नव्य-न्यायिक दृष्टिसँ ई कारण-सम्बन्धक कथा अछि: सहसम्बन्धकेँ कारण मानि लेबाक खतरा, मनोभावक अप्रत्यक्ष प्रमाण, आ मृतकक मंशाक अनिर्णेयता। करुण रस एतऽ भावुक विलाप नहि, बल्कि अपूर्ण ज्ञानक पीड़ा बनि जाइत अछि। कथा मानसिक संकटकेँ नैतिक दोषक एक वाक्यीय व्याख्या सँ बचबैत अछि—ई साहित्यिक उपलब्धि अछि।

४.९ गंधर्व लेटरबम

‘गंधर्व लेटरबम’ शारीरिक भिन्नता, सामाजिक अपमान, संगीत-साधना आ मान्यताक कथा अछि। लेटरबमक छोट कद सामाजिक दृष्टिक केन्द्र बनैत अछि; मुदा कथा क्रमशः देहक ‘अभाव’ सँ प्रतिभाक ‘अधिकता’ दिस दृष्टि फेरैत अछि। अन्तिम अभिनन्दन कार्यक्रममे देशक श्रेष्ठ संगीतकार श्रोता छथि आ वृद्ध कलाकारक स्वर नव रस जागबैत अछि।

कथाक नैतिक कथन—सम्मान केवल व्यक्तिक नहि, ओकर विचार, भावना आ समुदाय-निर्मित आकाशक सम्मान अछि—रचनाक धुरी अछि। भारतीय रस-सिद्धान्त एतऽ प्रत्यक्ष विषय बनि जाइत अछि, कारण संगीतक प्रभाव ‘नव रस’क रूपमे चित्रित अछि। आधुनिक विकलांगता-दृष्टिसँ कथा ई कहैत अछि जे भिन्न देहकेँ करुणाक वस्तु बनाबऽ सँ बेसी आवश्यक अछि ओकर ज्ञान, कला आ स्वायत्तता स्वीकार करब। ‘बाणवीर समाज’क सामुदायिक सम्मान निजी सफलता केँ सामाजिक इतिहाससँ जोड़ैत अछि।

५. दीर्घकथा खण्ड: संस्था, दर्शन आ समुदाय

५.१ मधुबनी मोड्यूल

‘मधुबनी मोड्यूल’ आतंकवाद-विरोधी पूछताछ, वैचारिक कट्टरता, राज्यक सुरक्षा-तंत्र, वर्ग-वंचना आ संगठनात्मक हिंसाक बहुस्तरीय कथा अछि। अहमदक पृष्ठभूमि—अल्प औपचारिक शिक्षा, अन्तर्जाल-समूह, वैचारिक प्रभाव, स्लीपर-सेल, हथियार प्रशिक्षण—कथाकेँ समकालीन सुरक्षा आख्यान बनबैत अछि; मुदा लेखक केवल अभियुक्तक अपराध-प्रोफाइलपर नहि रुकैत

छथि। पूछताछक क्रममे राज्य आ विद्रोही दुनू एक-दोसराक नैतिक असंगति खोलैत छथि।

कथा केर महत्त्वपूर्ण तकनीक भूमिका-परिवर्तन अछि। पूछताछकर्ता समझाबैत-समझाबैत स्वयं प्रश्नक घेरेमे आबि जाइत अछि; विरोधी ओकर पोस्टिंग, संस्थागत उपयोग, बेरोजगारी आ विकासक विफलता पर प्रश्न करैत अछि। अन्तिम पहचान-वाक्य—'मण्डल नै अहमद'—नाम, भूमिका आ गुप्त परिचयक खेलकेँ एकदम तेज करैत अछि। पाश्चात्य कथाविज्ञानक दृष्टिसँ ई सूचना-नियन्त्रण आ पहचान-स्थगनक कथा; नव्य-न्याय दृष्टिसँ प्रमाण, शंका आ हेतुक निरन्तर पुनर्गठन; समानान्तर इतिहास दृष्टिसँ राज्य-विरोधक सामाजिक भौतिक कारण आ हिंसक संगठनक स्वार्थ दुनूक आलोचना अछि।

५.२ शब्दशास्त्रम्

'शब्दशास्त्रम्' पोथीक दार्शनिक केन्द्र अछि। तालपत्रक संरक्षण, आनन्दा आ मितूक स्मृति, गंगेश उपाध्याय सम्बन्धी इतिहास-परम्परा, चर्मकार टोलक गीत, शब्दक अर्थ, भ्रम, श्रुति, मृत्यु आ सामाजिक स्मृतिसँ कथा अपना नामक पूर्ण औचित्य सिद्ध करैत अछि। आरम्भिक सूत्र—'शब्दक अर्थ हम सभ गढ़ि लइ छी'—आख्यानक भीतर अनेक बेर अनुभव-सत्य बनि घुरैत अछि।

नव्य-न्यायिक पठनमे ई कथा शब्दबोधक साहित्यिक प्रयोगशाला बनि जाइत अछि। एक ध्वनि केकर? सुन्नल शब्द वर्तमानक कि स्मृतिक? नाम आ व्यक्तिक सम्बन्ध स्थिर अछि कि सामाजिक इतिहास ओकर अर्थ बदलैत अछि? 'भ्रम' केवल इन्द्रियदोष नहि; इतिहासक दमन, जातिगत निषेध आ अपूर्ण अभिलेख सेहो भ्रम उत्पन्न करैत अछि। कथा अन्तमे 'शब्द भ्रम नै छल' कहि पूर्व कथनकेँ पलटैत अछि—एहि वक्र संरचनामे ज्ञानक दार्शनिक संकट भावनात्मक परिणतिसँ जुड़ैत अछि।

स्त्री-दृष्टिसँ आनन्दा कथा केर केवल प्रेम-पात्र नहि; तालपत्र-संरक्षक, गीत-स्मृति आ जीवन-संरक्षक उपस्थिति छथि। दलित/समानान्तर दृष्टिसँ चर्मकार टोलक गीत उच्च दार्शनिक आख्यानक किनार नहि, बल्कि तकर अर्थ-उत्पादक स्रोत बनैत अछि। एहि बिंदुपर कथा मिथिलाक बौद्धिक इतिहासकेँ सामाजिक इतिहाससँ जोड़बाक महत्त्वपूर्ण प्रयत्न करैत अछि। जहाँ ऐतिहासिक दावाक

निश्चितता उपलब्ध नहि, समीक्षा तकरा कथा-अन्तर्गत दावाक रूपमे पढ़ैत अछि, सिद्ध इतिहासक रूपमे नहि।

५.३ महिसबार ब्राह्मणक गाम

‘महिसबार ब्राह्मणक गाम’ व्यक्ति-नायकविहीन सामुदायिक आख्यान अछि। चारू कातक पोखरि, धार, बान्ह, खेती, मछैर, मेला, जाति-टोल, लोककथा, प्लेगक स्मृति, दुर्गापूजा, भोजन, खेल, जमीन, शिक्षा आ ऐतिहासिक आत्मव्याख्या—ई सभ मिलि गामकेँ कथानायक बनबैत अछि। कथा ‘कोन व्यक्ति की केलक’ सँ बेसी ‘एक समुदाय अपना विषयमे कोना सोचैत-बजैत अछि’ पर केन्द्रित अछि।

पाश्चात्य ‘क्रॉनिकल’ (chronicle) आ एथ्नोग्राफिक कथा पद्धतिक निकट ई रचना विवरणक पुनरावृत्ति द्वारा स्थानक घनत्व रचैत अछि। भारतीय औचित्य दृष्टिसँ स्थानीय शब्द, पोखरिक नाम, खाद्य-पदार्थ, पाबनि आ उपहास अनिवार्य अछि; मानकीकरण द्वारा एहि स्थानीयता केँ हटाओल जाय तँ कथा केर जीव मरि जायत। समानान्तर इतिहास दृष्टिसँ गामक आत्मकथा मे आधिकारिक इतिहास, जातीय दावे, बौद्ध स्मृति, भूमि-संबंध, महामारी आ पर्यावरणीय परिवर्तन एक-दोसराकेँ काटैत अछि।

आलोचनात्मक सावधानी जरूरी अछि: समुदाय द्वारा उच्चरित जातीय-ऐतिहासिक दावे कथात्मक सामग्री छथि; तकर बाह्य ऐतिहासिक सत्यापन अलग शोधक विषय अछि। साहित्यिक मूल्य एहि दावाक सामाजिक कार्यमे अछि—कियो अपनाकेँ ‘डीही’ किएक मानैत अछि, दोसराकेँ ‘पछिमा’ किएक कहैत अछि, प्लेगक स्मृति जनसंख्या-अधिकारक तर्कमे कोना घुसैत अछि। एहि रूपमे ई कथा मौखिक इतिहासक जटिलता अत्यन्त सफलतासँ पकड़ैत अछि।

६. बीहनि कथा खण्ड: उनतालीस शीर्षकक समग्र विवेचना

बीहनि कथा सभ संग्रहक सबसे संक्षिप्त, मुदा वैचारिक रूपेँ तीक्ष्ण खण्ड अछि। बहुत रचनामे एक छोट संवाद अन्तिम पंक्तिमे अर्थ पलटि दैत अछि। ई रूप लोकक फकड़ा, शहरी चुटकुला, दंतकथा, प्रशासनिक अनुभव आ

आधुनिक सूक्ष्म-कथाक संगम जकाँ अछि। नीचाँ सभ उनतालीस शीर्षक क्रमशः विवेचित अछि।

६.१ रिक्शाक सवारी आ लूटिक डर

रातिक पटना, असुरक्षित मोहल्ला आ रिक्शाबलाक भय—एतेकमे कथा बनि जाइत अछि। यात्रीक वाक्य “हमहीं सभ तँ छीनै छिऐ” भयक सामाजिक गणित पलटि दैत अछि। हास्य एतऽ अपराधक सामान्यीकरणपर कारी टिप्पणी बनैत अछि।

६.२ नकली नोट

एक हजारक नोट असली कि नकली—एहि आशंकाक बीच टैक्सीबला वर्ग-पहचानक आधारपर ग्राहकक ईमानदारीक गवाही दैत अछि। कथा मुद्रा-संकटसँ बेसी सामाजिक अनुमानक कथा अछि: “देखै नै छहीं कथीसँ एलखिनहँ” आर्थिक विश्वसनीयताकेँ बाहरी चिह्नसँ जोड़ैत अछि।

६.३ पानिबला रोड

कुशेश्वरस्थानक बाढ़ि-भूगोल शहरी ‘सड़क’क सामान्य अर्थ उलटि दैत अछि। बिना बाढ़िक समय टूटल सड़कसँ यात्रा लम्बा; बाढ़ि एलापर नावसँ छोट। पर्यावरणीय अनुकूलनक ई सूक्ष्म कथा विकासक एकरेखीय धारणाकेँ चुनौती दैत अछि।

६.४ जी सर

कार्यालयी अधीनता भाषा पर एतेक बसि जाइत अछि जे घरमे बेटाक आदेशपर सेहो “जी सर” निकलैत अछि। एक वाक्यक पुनरावृत्ति संस्थागत अनुशासनक मनोवैज्ञानिक देहधारण देखबैत अछि।

६.५ दू टा कैदी

जेलर छोट अपराधीकेँ मारैत अछि, हत्या अभियुक्तक हालचाल पूछैत अछि—एहि तुलना द्वारा जेल प्रशासनक वर्गीकृत व्यवहारपर व्यंग्य अछि। अपराधक गम्भीरता आ संस्थागत व्यवहारक अपेक्षित सम्बन्ध उलटि जाइत अछि।

६.६ अपन-अपन भाग्य

‘दण्डात्मक’ पोस्टिंग प्राकृतिक आपदा एलापर आर्थिक अवसर बनि जाइत अछि। टिहरीक भूकम्प आ कुशेश्वरस्थानक बाढि/सुखार सरकारी सेवा, राहत-धन आ भाग्यवादक विचित्र सम्बन्ध खोलैत अछि।

६.७ प्रवचन

गोनर भाइ श्रोता अनुसार नकली भूगोल आ नकली प्रसंग रचैत छथि, कारण तकर आर्थिक लाभ अछि। धार्मिक वक्तृत्वक बाजारीकरणपर ई साफ व्यंग्य अछि; कथाकार तथ्य-जाँचक एक छोट प्रश्नसँ पूरा आवरण फाड़ि दैत छथि।

६.८ गछल गप

विवाहक धूमधाममे “हँ-हँ” करैत गछल वस्तु बादमे दायित्व बनि लौटैत अछि। कथा वचन, स्मृति आ सामाजिक लेन-देनक तिक्त हास्य प्रस्तुत करैत अछि।

६.९ भूरा बाल

जातीय फकड़ा आ राजनीतिक संक्षेपक प्रसंग आत्म-व्यंग्यक माध्यम बनैत अछि। पात्र अपन जातिक फकड़ा नब बनबाक प्रतीक्षा कहि जातीय श्रेष्ठताक दावाकेँ हास्यास्पद करैत अछि।

६.१० आत्म-गौरव

सतर्कता अधिकारी रिश्वत देबाक संकेत दैत अछि, मुदा हवलदार अपन गामक इज्जत आ व्यक्तिगत मर्यादाक कारण अस्वीकार करैत अछि। लघुकथा ई देखबैत अछि जे पद छोट होइतहुँ नैतिक कद पैघ भऽ सकैत अछि।

६.११ छाह

अपन फोटो, फ्रेम आ माला देखिक मित्र मृत पिता बुझैत अछि। अर्थ वस्तुमे नहि, पाठकक पूर्वधारणामे बनैत अछि—ई बीहनि कथा दृश्य-संकेतक छोट प्रयोग अछि।

६.१२ वाटर कूलर

लोककल्याणक उद्देश्य सँ लगाओल पानि-यंत्र अनपेक्षित उपयोग आ अतिरिक्त सफाईक भार उत्पन्न करैत अछि। कथा दानक नैतिकता नहि

नकारैत; सार्वजनिक वस्तुक सामाजिक व्यवहारक अप्रत्याशित परिणाम देखबैत अछि।

६.१३ तौं अखन एतेक पैघ नै भेल छौं बाउ

पीढ़ीगत सम्बोधनक भीतर ‘पैघ’ होयबाक अर्थ केवल उमेर नहि, सामाजिक अधिकार आ बोलबाक वैधता अछि। हास्यक सतह पर वयस्कता/प्राधिकारक मूलधारात्मक मापदण्ड प्रश्नांकित होइत अछि।

६.१४ एमबियेन्स मॉल कैम्पसक मिस्त्रीक खिस्सा

बिजली-मिस्त्रीक व्यवहारिक दक्षता आ सामान्य-ज्ञान प्रश्नक विफलता एक-दोसराक विरोधी छवि बनबैत अछि। कथा प्रमाणपत्र/साक्षात्कार-आधारित योग्यता आ वास्तविक कौशलक दूरीपर तीक्ष्ण टिप्पणी अछि; संगहि सुरक्षा-नियमक तर्कसंगत सामाजिक आवश्यकता सेहो उभरैत अछि।

६.१५ स्निफर डॉग आख्यान

ड्रग खोजबाक प्रशिक्षित कुकुर बैग फाड़ि माउस खा लैत अछि; हवलदार तुरन्त “कुकुरक भोजनक पाइ सेहो खा जाइ छै” निष्कर्ष निकालैत अछि। घटना हास्यपूर्ण अछि, मुदा तकर ध्वनि संस्थागत भ्रष्टाचारक सर्वव्यापक कल्पना अछि।

६.१६ यातायात निअम

चारि भागक ई शृंखला नियमक पुस्तकीय रूप आ स्थानीय व्यवहारक दूरी देखबैत अछि। भाग ० वैज्ञानिक यातायात-कल्पना बनाम बदलैत दिल्ली; भाग १ क्षेत्र बदलिते हेलमेट-नियमक व्यवहार; भाग २ संकेतक बदला हाथ-हॉर्नक स्थानीय कोड; भाग ३ गलत पार्किंगक कार चोरी कि पुलिस द्वारा उठाओल—एहि संशयक हास्य। नियम स्थिर नहि, स्थान-विशिष्ट सामाजिक व्यवहारसँ अर्थ पबैत अछि।

६.१७ जातिवादी मराठी

शीर्षक जानि-बुझि कऽ उलटा आरोप रचैत अछि। मराठी सज्जन बिहारक समाजमे एकहि क्षेत्रक भीतर अधिकारी, रिक्शाचालक आ रसोइया वर्ग-विभाजन देखैत छथि; कथावाचक उलटे मराठीकेँ “जातिवादी” कहैत अछि।

विडम्बना पाठककेँ पूछैत अछि—जातिवाद वास्तवमे के देखैत अछि आ के सामान्य मानि चुका अछि?

६.१८ थेथर मनुक्ख

साथी खोने पशु आ मनुष्यक शोक-व्यवहार तुलना बनैत अछि। नानीक वाक्य मनुष्यक अनुकूलनक्षमताकेँ ‘थेथरपन’ कहि करुणा आ व्यंग्यक मिश्रित अर्थ पैदा करैत अछि।

६.१९ बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा

निस्सन्तानताक दोष लगातार पत्नीपर देनिहार पुरुष अन्ततः लोक-वार्तामे स्वयं प्रश्नांकित होइत अछि। भाषा कठोर अछि, मुदा कथा पितृसत्तात्मक दोषारोपणक दिशा उलटैत अछि; स्त्रीक प्रजनन-दोषक रूढ़ि पर प्रतिघात अछि।

६.२० स्त्री-बेटी

भोजनक क्रम, दूधक हिस्सा आ बचल तरकारी—घरक सूक्ष्म व्यवस्था लिंग-असमानता स्पष्ट करैत अछि। कथा ऐतिहासिक अन्यायकेँ रोजमर्रा भोजनक दृश्यसँ पकड़ैत अछि; अन्तमे अपाला-गार्गी-मैत्रेयी स्मरण नब स्त्री-शिक्षाक आकांक्षा जोड़ैत अछि।

६.२१ बिआह आ गोरलगाइ

दहेज/संपत्ति पर भारी खर्चक बाद गोरलगाइक एक सय एक टाका “परम्परा” बनि रहैत अछि। जमायक अस्वीकारक प्रयासक सामने ससुरक सहज वाक्य रस्मक मनोवैज्ञानिक जड़ता देखबैत अछि।

६.२२ प्रतिभा

प्रतियोगी परीक्षा पास करब आ व्यापक बौद्धिक प्रतिभा एक नहि—दारू पार्टीक आत्मश्लाघा पर पुरान विद्यालयी इतिहास चुटकी लैत अछि। कथा कोचिंग, प्रश्न-पैटर्न आ प्रतिभाक मिथक अलग करैत अछि।

६.२३ जाति-पाति

राजपूत पहचान गर्वसँ घोषित कएल जा सकैत अछि; डोम पहचान ओही शक्ति-सन्दर्भमे घोषित करब कठिन। एक वाक्य सामाजिक समान पदक भीतर जातीय असमान प्रतिष्ठाक पूरा ढाँचा खोलि दैत अछि।

६.२४ अनुकम्पाक नोकरी

एतऽ 'अनुकम्पा' सरकारी योजना नहि, विडम्बनात्मक रूपक बनैत अछि। पैघ भायक मृत्यु बाद छोट भाय ओकर प्रमाणपत्र आ नामक सहारे निजी नोकरी पबैत अछि—"बाप मरलापर नहि, भाय मरलापर"। शोक, बेरोजगारी आ नैतिक अस्थिरता एकहि मोड़मे जुड़ैत अछि।

६.२५ पैरवी-पैगाम आ हाकिम

इमानदार पुलिस अधिकारी शिक्षा विभागमे पैरवी करबाक संस्थागत असंगति बुझैत छथि। कुटुमक दबावक उत्तर—पहिने कॉलेज गेटपर बम फोड़ाउ, तखन प्रिन्सिपल पुलिसक लग आएत—पैरवी संस्कृतिक तर्ककेँ असंगत चरम धरि लऽ जाइत अछि।

६.२६ नूतन मीडिआ

'सर्वप्रथम' समाचार देबाक स्पर्धा पुलिसपर तुरन्त गिरफ्तारीक दबाव बनबैत अछि; दबाव झूठ स्वीकारोक्ति उत्पन्न करैत अछि। चारि अज्ञात साथी केर नाम देबाक असमर्थता सत्य आ टेलिविजन-निर्मित सत्यक फर्क खोलैत अछि।

६.२७ मिथिलाक उद्योग

गामक दबंग चौधरीजीक एक बस संगठित बस-स्टैण्ड शक्ति सामने टिकि नहि सकैत अछि; अन्ततः बसपर कदीमाक लत्ती चढ़ैत अछि। बन्द बस आ बन्द औद्योगिक इकाइ बीच अन्तिम तुलना उद्यमिता, स्थानीय दबंगई, संस्थागत नेटवर्क आ आर्थिक विफलताक रूपक बनैत अछि।

६.२८ बाढ़ि, भूख आ प्रवास

चारि उपप्रसंगक शृंखलामे पप्पू भाइक अतृप्त भोजन-आकांक्षा, बाढ़ि/भूखक अनुभव आ हरिद्वार प्रवासक हास्य एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि। 'भूख' देहक, सांस्कृतिक स्मृतिक आ प्रवासी अपेक्षाक रूप बदलैत अछि; खीर-पूड़ीक आशा पर अल्हुआक आगमन ग्रामीण खाद्य-स्मृतिक विडम्बनात्मक पुनरागमन अछि।

६.२९ नव-सामन्त

शिक्षा आ आजीविकाक पूँजी बिना सामाजिक रोआबकेँ ‘लेबल’ माननिहार युवक महानगरीय समय-दूरी सेहो आदेशसँ बदलऽ चाहैत अछि। पुरान सामन्ती अहंकार नगरीय बेरोजगारीमे नब रूप धारण करैत अछि।

६.३० चारिम स्थान

“अहाँ चारिम स्थानपर छी” सुनि पहलमान जान लगा दैत छथि, मुदा सन्दर्भ गलत बुझल जाइत अछि। कथा सूचना, प्रेरणा आ चयनित तथ्यक शक्ति देखबैत अछि—अधूरी सूचना व्यवहार बदलैत अछि, किन्तु सत्य परिणाम नहि।

६.३१ भोट

गामक सात उमेदवार बनाम पड़ोसक एक उमेदवार—लोकतांत्रिक गणित सामुदायिक प्रतिष्ठा सँ टकराइत अछि। आन्तरिक प्राथमिक चुनावक योजना आचार-संहिताक भय सँ रुकैत अछि; कथा स्थानीय लोकतंत्रमे जाति, टोल, प्रतिष्ठा, धन आ कानूनी प्रक्रिया सभकेँ एक मंचपर आनैत अछि।

६.३२ मसुआइ

खरहा पालतू कि खाद्य—दिल्लीक विद्यालय आ मिथिलाक खाद्य-संस्कृति अलग उत्तर दैत अछि। बच्चाक “मसुआइ बना कऽ खायब” वाक्य सांस्कृतिक सापेक्षता केँ हास्यक माध्यमसँ तीक्ष्ण बनबैत अछि; शिक्षकक चिन्ता सांस्कृतिक अनजानपनक उदाहरण अछि।

६.३३ साइबेरिया कैम्प

अफगानिस्तानसँ विस्थापित, जर्मनीक नागरिक, साइबेरियामे व्यापारी व्यक्ति एक बहु-प्रवासी विश्व प्रस्तुत करैत अछि। कटल आंगुर स्टालिनवादी इतिहासक संकेत बुझायल जा सकैत छल, मुदा कारण ठंड आ नशामे दस्ताना खोलब निकलैत अछि—पूर्वधारणाक विघटन कथा केर मोड़ अछि।

६.३४ मीत भाइ शृंखला

बारह उपकथाक ई शृंखला गामक मौखिक हास्य-परम्पराक सबसे विस्तृत बीहनि रूप अछि। ‘चन्सगर’ आ ‘गढ़नि’ विवाह-बाजारक अतिशयोक्ति;

‘चयन’ सामाजिक निर्णय; ‘चोर बजार’ ब्राण्ड आ मूल्यक छल; ‘मास्टरी’ ज्ञानक सामाजिक प्रतिष्ठा; ‘पसीझक काँट’ ग्रामीण शिकार/पर्यावरणीय व्यवहार; ‘टेलीफोन डायरी’ सूचना-संग्रहक हास्य; ‘गोबर काढ़ब’ श्रमक मूल्य; ‘अधिक फलम् डूबाड़ूबी’ लोभ-परिणाम; ‘मीत भाइक बेटा’ प्रवास, रेल आ संदेह; ‘भा.प्र.से.’ पदनामक अर्थ-भ्रम; आ ‘महादेवक दूध पीबाक सोर’ सामूहिक विश्वासक दबाव पर लोकदृष्टान्त प्रस्तुत करैत अछि। शृंखला केर वास्तविक नायक ‘मीत भाइ’ सँ अधिक सामुदायिक कथा-बाचनक ढंग अछि।

६.३५ बिहारी

“चारिटा बिहारी” शब्द मजदूरक पर्याय बनि गेल अछि; अधिकारी स्वयं बिहारी होयबाक तथ्य एहि भाषिक वर्गीकरणकेँ तुरन्त प्रश्नांकित करैत अछि। पहचान आ श्रमक रूढ़ि एक संवादमे खुलैत अछि।

६.३६ फिल्डिंग

खेलमे अवसर-वितरणक असमानता—सदिखन फिल्डिंग, बल्लेबाजी एक गेंद, गेंदबाजी कहियो नहि—राष्ट्रीय क्रिकेटक मजाकिया निष्कर्ष बनैत अछि। बाल-अनुभवक सूक्ष्म अन्यायकेँ प्रणालीगत कौशल-विकाससँ जोड़ल गेल अछि।

६.३७ स्किल

तेज डिजिटल काम करनिहार कर्मचारी बाहर सँ “फोनमे लागल” बुझाइत अछि; धीमा कर्मचारी मेहनती देखाइत अछि। कथा दृश्य-परिश्रम आ वास्तविक उत्पादकता बीचक भेद देखबैत अछि—आधुनिक कार्य-संस्कृतिक सटीक सूक्ष्म व्यंग्य।

६.३८ डिसीप्लीन

बॉसक गारि पर कर्मचारी प्रत्यक्ष प्रतिरोध नहि, मोनक भीतर प्रतिगारि करैत अछि। अनुशासन बाहरी आज्ञापालन अछि; मानसिक स्वतंत्रता अबाध रहैत अछि। हास्यक भीतर कार्यालयी सत्ता-संबंधक सूक्ष्म मनोविज्ञान अछि।

६.३९ साइंस

तीन उपभाग विज्ञान-शिक्षाक तीन विडम्बना खोलैत अछि। ‘साइंस शिक्षा’ छात्रक तनाव आ उमंगहीनता; ‘रसायनशास्त्र’ ग्राम्य दण्ड-विचार, शिष्टाचार आ वैज्ञानिक शब्दक हास्य; ‘भौतिकी’ एक चट्टी छोड़ि दोसर दिन फेर भेटबाक तर्कसँ गामक वैज्ञानिक उत्साह। विज्ञान एतऽ प्रयोगशाला सँ बाहर रोजमर्रा तर्क, गलत तर्क आ सामाजिक प्रतिष्ठाक विषय बनैत अछि।

७. चारि अंग्रेजी अनुवाद: अन्तरभाषिक पुनर्रचना

परिशिष्टमे ‘सिद्ध महावीर’, ‘तस्कर’, ‘शब्दशास्त्रम्’ आ ‘महिसबार ब्राह्मणक गाम’क लेखक-कृत अंग्रेजी अनुवाद अछि। एहि चारि अनुवादकेँ स्वतंत्र नब कथा नहि, मूल मैथिली पाठक अन्तरभाषिक पुनर्रचना मानब उचित अछि। अनुवादक सामने तीन कठिनाई स्पष्ट अछि: स्थानीय सम्बोधन आ जाति-समाजक शब्द, मिथिलाक भौगोलिक/पाबनि-सांस्कृतिक सन्दर्भ, आ कथावाचकक बोलचाल-प्रधान लय।

७.१ ‘द प्रोवन महावीर’ (The Proven Mahavir)

आस्था बनाम वैज्ञानिक व्याख्याक द्विस्वरता अंग्रेजी पाठमे सेहो मूल ढाँचा रहैत अछि। मुदा ‘दीदी’, ‘गाम’, ‘घरारी’, ‘भातिज’, ‘सप्पत’ सन शब्दक सांस्कृतिक भार पूर्ण रूपेँ प्रतिशब्दसँ नहि आबि सकैत अछि। तेँ अनुवादक निर्णय—कत्तऽ स्थानीय शब्द बचाओल जाय, कत्तऽ अर्थ-व्याख्या—पाठक प्रवेशक मुख्य प्रश्न बनैत अछि।

७.२ ‘द रॉबर’ (The Robber)

‘तस्कर’क अंग्रेजी रूपमे शीर्षक अर्थ स्पष्ट करैत अछि, मुदा मूल मैथिली ‘तस्कर’ शब्दक ऐतिहासिक-पञ्जीय व्यंग्यक कुछ परत कम होयबाक जोखिम अछि। प्रेमकथा, राजसत्ता आ अभिलेखक सम्बन्ध बुझाबऽ लेल सांस्कृतिक सन्दर्भक संयमित विस्तार जरूरी होइत अछि।

७.३ ‘द साइंस ऑफ वर्ड्स’ (The Science of Words)

‘शब्दशास्त्रम्’क दार्शनिक शब्द, लोकगीत, तालपत्र, जाति-सम्बन्ध आ शब्द-भ्रम अंग्रेजीमे सबसे कठिन अन्तरित तत्व छथि। मूल शीर्षक संस्कृतनिष्ठ-मैथिली बौद्धिक ध्वनि रखैत अछि; अंग्रेजी शीर्षक अवधारणा खोलैत अछि,

मुदा 'शास्त्रम्'क सांस्कृतिक गम्भीरता पूर्णतः समान नहि। लोकगीतक लय/ध्वनि अनुवादमे अर्थ बचे, ताहि संग ध्वन्यात्मक स्मृति केना बचे—ई केन्द्रीय चुनौती अछि।

७.४ 'द कैटल ग्रेजर ब्राह्मिन विलेज' (The Cattle Grazer Brahmin Village)

'महिसबार ब्राह्मणक गाम'क अनुवाद सबसे अधिक सांस्कृतिक घनत्व सँ जूझैत अछि, कारण मूल कथा नाम, पोखरि, टोल, खाद्य, पाबनि, लोककथा आ जातीय सम्बोधन सँ बनल अछि। वैश्विक पाठक लेल प्रवेश-सुगमता जरूरी अछि, मुदा अत्यधिक स्पष्टीकरण कथाक मौखिक लय तोड़ि सकैत अछि। एहि कारण ई अनुवाद स्थानीयता बचाबऽ आ पठनीयता बढ़ाबऽ बीच सतत संतुलनक काम अछि।

८. चारि पद्धति सँ समेकित साहित्यिक मूल्यांकन

८.१ रस, ध्वनि आ वक्रोक्ति

संग्रहक प्रमुख रस एक नहि। 'सिद्ध महावीर', 'संघर्ष', 'आत्महत्या' आ 'नई दिल्ली' करुणक अलग-अलग रूप उपस्थित करैत अछि। 'गंधर्व लेटरबम'मे करुण सँ अद्भुत आ सम्मानक अनुभूति; 'तस्कर'मे स्मृतिमय शृंगार आ इतिहासक विषाद; बीहनि कथामे हास्य आ व्यंग्य प्रधान अछि। महत्त्वपूर्ण बात ई जे हास्य अक्सर करुणा कैं नष्ट नहि करैत, ओकर वहन करैत अछि। 'मिथिलाक उद्योग'क कदीमासँ झपल बस हँसाबैत अछि, मुदा बन्द उद्यमक आर्थिक विफलता अन्तिम ध्वनि अछि।

वक्रोक्ति संग्रहक सबसे निरन्तर अलंकारिक शक्ति अछि। 'जातिवादी मराठी' शीर्षके उलटा आईना अछि; 'अनुकम्पाक नोकरी'मे अनुकम्पा शब्दक अर्थ उलटैत अछि; 'चारिम स्थान'मे सूचना शाब्दिक रूपेँ ठीक होइतहुँ सन्दर्भविहीन भऽ भ्रम बनैत अछि; 'साइबेरिया कैम्प'मे ऐतिहासिक कैम्पक अपेक्षा व्यक्तिगत ठंड-अनुभव निकलैत अछि।

८.२ यथार्थवाद, बहुस्वरता आ सूक्ष्म-कथा

लेखकक यथार्थवाद 'तटस्थ कैमरा' नहि। कथावाचक टिप्पणी करैत छथि, कखनो स्वयं पात्र छथि, कखनो स्मृतिक वाहक। एहि कारण कथामे

आत्मकथात्मक निकटता आ सामाजिक दस्तावेजीकरणक मिश्रण अछि। बहुस्वरता ओहि ठाम सबसे सफल अछि जतऽ कथाकारक आवाज अंतिम निर्णय नहि दैत—‘सिद्ध महावीर’, ‘आत्महत्या’, ‘लेटरबॉक्समे आयल चिट्ठी’, ‘मधुबनी मोड्चूल’। ओहि ठाम कम सफल अछि जतऽ अन्तिम टिप्पणी पाठक लेल अर्थ अधिक स्पष्ट कऽ दैत अछि; किछु बीहनि कथामे पाठक स्वयं निष्कर्ष निकालि सकैत छल, पर लेखक संकेतक एक अतिरिक्त पंक्ति देथि।

बीहनि कथा रूपमे घटनाक चयन निर्णायक अछि। सफल बीहनि कथा—‘जी सर’, ‘जाति-पाति’, ‘बिहारी’, ‘डिसीप्लीन’, ‘छाह’—बहुत कम कथनमे भाषिक/सामाजिक संरचना खोलि दैत अछि। जतेक कम व्याख्या, ततेक ध्वनि पैघ। अधिक विवरणबला बीहनि—‘यातायात निअम’, ‘मीत भाइ शृंखला’—सूक्ष्म-कथा सँ लघु संस्मरण/श्रृंखलाबद्ध विनोद दिस बढ़ैत अछि; ई विधागत विस्तार अछि, त्रुटि नहि, मुदा शीर्षक ‘बीहनि’क भीतर आकारक विविधता ध्यान देबाक योग्य अछि।

८.३ नव्य-न्याय: ज्ञानक दावा, भ्रम आ अभाव

एहि संग्रहमे ‘कियो कहलक’, ‘लोक कहै छै’, ‘हम सुनलौं’, ‘पञ्जीमे अछि’, ‘डाक्टर कहलक’, ‘समाचार कहैत अछि’ सन सूत्र बारम्बार अबैत अछि। ई सब ज्ञान-स्रोतक संकेत छथि। नव्य-न्यायिक समीक्षा पूछैत अछि—कथनक प्रमाण-स्थिति की? उदाहरणत: ‘सिद्ध महावीर’क श्राप लोकव्याप्ति पर आधारित अछि, हृदयाघात चिकित्सकीय अनुमानपर; कथा दुनूकेँ सामाजिक प्रभावक स्तरपर रखैत अछि, तथ्यगत समानता घोषित नहि करैत। ‘महिसबार ब्राह्मणक गाम’क जातीय इतिहासक कथन गामक आत्म-स्मृति अछि; बाह्य इतिहासक प्रमाण अलग अपेक्षित अछि। एहि भेदकेँ बचेनाइ साहित्यिक ईमानदारी लेल आवश्यक अछि।

‘अभाव’ सेहो महत्त्वपूर्ण संरचना अछि। अनमना दीदीक भूमि-अधिकारक अभाव; आर्याक मंशाक निश्चित ज्ञानक अभाव; इतिहासमे आनन्दाक समुचित दृश्यताक अभाव; बीहनि कथामे संस्थागत न्याय/तर्कक अभाव—ई ‘नहि’ कथा चलबैत अछि। तें संग्रह अनेक बेर उपस्थित वस्तुसँ बेसी अनुपस्थित न्याय, अनुपस्थित प्रमाण, अनुपस्थित स्मृति आ अनुपस्थित समानताक कथा बनैत अछि।

८.४ समानान्तर इतिहास: हाशिया, प्रतिपक्ष आ स्रोत

समानान्तर पठनमे संग्रहक भूगोल महत्त्वपूर्ण अछि। मिथिलाक गाम मात्र अतीतक स्मृति नहि; दिल्ली, नवी मुम्बै, गुरुग्राम, पटना, साइबेरिया धरि विस्तार पबैत सामाजिक जाल अछि। प्रवासी श्रम, प्रशासनिक सेवा, शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार आ सांस्कृतिक स्मृति एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि। एहि कारण ‘मिथिला’ भू-सीमा मात्र नहि, चलायमान सम्बन्धक क्षेत्र बनैत अछि।

हाशियाक पात्र—विधवा, दलित परिवार, मजदूर, छोट कर्मचारी, प्रवासी, शारीरिक रूपेँ भिन्न कलाकार, स्त्री-बेटी, कैदी—बारम्बार केंद्रमे अबैत छथि। मुदा समानान्तर इतिहास पद्धति आलोचककेँ ईहो कहैत अछि जे केवल विषय चुनलासँ हाशियाक दृष्टि स्वत: सिद्ध नहि होइत; कथनाधिकार, भाषा, पात्रक स्वायत्तता आ निष्कर्षक दिशा सेहो जाँचब जरूरी अछि। संग्रहक श्रेष्ठ कथा पात्रकेँ कथावाचकक उदाहरण बनाबऽ सँ बचबैत अछि; कमजोर क्षण ओहि ठाम बनैत अछि जतऽ पात्र विचारक नमूना जकाँ अधिक इस्तेमाल होइत अछि।

९. शुद्ध मैथिली निखार-अध्ययन

पोथीक भाषा मूलत: जीवित मैथिली बोली, क्षेत्रीय शब्द, कार्यालयी व्यवहार आ आधुनिक तकनीकी शब्दावलीक मिश्रण अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ ई मिश्रण अनेक पात्रकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि। मुदा मुद्रित मानक संस्करण लेल किछु स्तरपर एकरूपता उपयोगी हएत। निखारक लक्ष्य लोकभाषा मिटेनाइ नहि, बल्कि अनपेक्षित वर्तनी-असंगति, रोमन रूप, पद-विभाजन आ सम्पादकीय असमानता हटेनाइ अछि।

९.१ पद-विभाजन आ वर्तनी

किछु ठाम संयुक्त पद बिना आवश्यक रिक्तिक लिखल भेटैत अछि—जैसे ‘किछुनिर्देश’, ‘कथामेसुविधा’, ‘मेमोटामोटी’ प्रकारक रूप। मानक पठनीयता लेल ‘किछु निर्देश’, ‘कथामे सुविधा’, ‘मोटामोटी’ अलग लिखल उचित। एहि प्रकारक समस्या पाठ-परिवर्तनक दौरान उत्पन्न भऽ सकैत अछि; सम्पूर्ण पोथीमे एक स्वचालित खोजक बाद मानवीय प्रूफ-पठन अपेक्षित अछि।

९.२ आधुनिक/अंग्रेजी मूलक शब्द

पात्र-भाषामे आधुनिक शब्द जरूरी छथि, मुदा शोध/सम्पादकीय गद्य मे मैथिली रूप पहिले देल जा सकैत अछि आ मूल अंग्रेजी रूप ब्रैकेटमे—जैसे खोज-अभियान (search operation), बन्दी-अवधि (lockdown), पृथक्करण (quarantine), चिकित्सालय (hospital), साक्षात्कार (interview), कौशल (skill), अनुशासन (discipline), समाचार-माध्यम (media), सामान्य ज्ञान (general knowledge), परामर्श (consultation)। कथा-सम्वादमे जहाँ कोड-मिश्रण पात्रक चरित्र बनबैत अछि, ओतऽ शब्द जसक तस रखनाइ औचित्यपूर्ण अछि।

९.३ नाम, स्थान आ तकनीकी पद

स्थान-नाम, संस्थान-नाम आ पदनामक रूप एकरूप होयबाक चाही। ‘नई दिल्ली’/‘नवी मुम्बै’ शीर्षक कथा-पहचानक भाग छथि, तेँ शीर्षक अपरिवर्तित रहथि; किन्तु गद्य मे एकहि संस्थाक नाम अलग-अलग वर्तनीमे नहि आबय। तकनीकी शब्द—‘ऑक्सीजन’, ‘सिलिण्डर’, ‘वैक्सीन’, ‘रेमडेसिविर’ आदि—लेखनकालक वास्तविक अनुभवक भाग छथि; चिकित्सा-सन्दर्भमे गलत वैज्ञानिक दावाकेँ कथावाचक/पात्रक कथन रूपमे स्पष्ट रखनाइ जरूरी अछि, लेखक-प्रमाणित चिकित्सकीय निर्देश रूपमे नहि।

९.४ विरामचिह्न, उद्धरण आ संवाद

संवादमे डैश, उद्धरणचिह्न आ पूर्णविरामक एकरूपता आवश्यक अछि। कतहु डैश, कतहु दोहरा उद्धरण, कतहु बिनु स्पेसक विराम—ई मुद्रित संस्करणमे दृश्य असमानता दैत अछि। शोध-पत्रिकासदृश स्वच्छ पाठ लेल एक संवाद-पद्धति चुनि पूरा पोथीमे लागू करब उचित। बहु-बिन्दु ‘…’क उपयोग अर्थपूर्ण ठाम राखी, केवल दृश्य विराम लेल अनावश्यक पुनरावृत्ति कम कएल जा सकैत अछि।

९.५ मैथिली निखारक सिद्धान्त

निखारक अर्थ संस्कृतनिष्ठ बनायब नहि। ‘घरारी’, ‘एकचारी’, ‘मसोमात’, ‘ढील-लीख’, ‘गछुल गप’, ‘मछैर’, ‘ब्यौंत’, ‘हुथैत’, ‘घुरि’, ‘अरबेङल’ सन स्थानीय शब्द कथा केर सांस्कृतिक धन छथि। एहिसभकेँ हिन्दी प्रतिशब्दसँ बदलनाइ साहित्यिक क्षति हएत। मानकता केवल ओहि ठाम लागू हो जहाँ

वर्तनी-त्रुटि अर्थ धुँधला करैत हो वा एकहि शब्दक अनावश्यक बहुरूपता पाठ बाधित करैत हो।

१०. प्रमुख साहित्यिक उपलब्धि आ आलोचनात्मक आपत्ति

संग्रहक सबसे पैघ उपलब्धि सामाजिक परास अछि: गामक पोखरि सँ अन्तरराष्ट्रीय प्रवास, पञ्जी सँ डिजिटल समूह, विधवा सँ वरिष्ठ अधिकारी धरि एकहि कथा-संसारमे अबैत छथि।

हास्यक उपयोग केवल मनोरंजन लेल नहि; व्यवस्था, जाति, पद, ज्ञान, नैतिकता आ आत्मछविक विसंगति खोलबाक साधन अछि।

लोकभाषा आ प्रशासनिक/नगरीय भाषा एक-दोसरासँ टकरा कऽ आधुनिक मैथिली जीवनक वास्तविक बहु-रजिस्टर रूप प्रस्तुत करैत अछि।

‘सिद्ध महावीर’, ‘शब्दशास्त्रम्’, ‘तस्कर’ आ ‘महिसबार ब्राह्मणक गाम’मे मिथिला केर लोक-इतिहास आ आधुनिक कथाशिल्पक संगम विशेष उल्लेखनीय अछि।

बीहनि कथा मैथिली गद्यक सूक्तिपरक, मौखिक आ तीक्ष्ण सम्भावना खोलैत अछि; किछु कथा एक-दू संवादमे पूर्ण सामाजिक निबन्धक प्रभाव उत्पन्न करैत अछि।

आलोचनात्मक रूपेँ किछु बिंदु सुधार योग्य छथि। पहिल, विषयक विपुलता कारण किछु दीर्घ रचनामे प्रसंग मुख्य कथारेखासँ बहुत दूर चलि जाइत अछि; सजग सम्पादन कथात्मक तनाव बढ़ा सकैत अछि। दोसर, किछु बीहनि कथामे अन्तिम व्याख्यात्मक पंक्ति हटेला पर ध्वनि अधिक शक्तिशाली भऽ सकैत अछि। तेसर, ऐतिहासिक/वैज्ञानिक कथन पात्रक वाणी कि लेखकक तथ्य-दावा —एहि सीमा किछु ठाम और स्पष्ट होय तऽ भविष्यक पाठक लेल भ्रम कम हएत। चारिम, आधुनिक अंग्रेजी मूलक शब्दक वर्तनी आ रोमन रूप सम्पूर्ण पोथीमे एक नियमसँ चलबाक चाही। पाँचम, स्त्री, दलित आ अन्य हाशियाक पात्रक विषयमे कथा जतेक ठाम हुनकर स्वकीय वाणीकेँ जगह दैत अछि, ओतेक कथा जीवंत होइत अछि; तेँ व्याख्याकारक स्वर कम आ पात्रक स्वर बेसी रखबाक प्रवृत्ति आगे मजबूत कएल जा सकैत अछि।

११. निष्कर्ष

‘पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’ कँ केवल लघुकथा-संग्रह कहब एकर संरचनात्मक विस्तार घटा देत। ई कथा, सामाजिक संस्मरण, सूक्ष्म व्यंग्य, दार्शनिक आख्यान, ग्राम-अभिलेख, प्रशासनिक अनुभव, महामारी-स्मृति, पञ्जी-आधारित कल्पना आ अन्तरभाषिक अनुवादक संयुक्त पोथी अछि। एकर एकावन मूल कथा-इकाई आ चारि अनुवाद एकहि साहित्यिक प्रश्नक भिन्न उत्तर दैत अछि—मनुष्य अपना अनुभवकँ कथा बनबैत काल सत्य, स्मृति, विश्वास, संस्था आ भाषा बीच कोना रास्ता निकालैत अछि?

भारतीय काव्यशास्त्र एहि संग्रहक रस-बहुलता, ध्वनि आ वक्रोक्तिक शक्ति स्पष्ट करैत अछि। पाश्चात्य आलोचना यथार्थवाद, बहुस्वरता, कथावाचक आ सूक्ष्म-कथात्मक मोड़क संरचना खोलैत अछि। नव्य-न्याय ज्ञान-दावाक सीमा, भ्रम, शब्दबोध, कारणता आ अभावक भूमिका देखबैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति एहि सबकँ सामाजिक इतिहास, हाशियाक आवाज, प्रतिपक्ष आ स्रोत-सचेततासँ जोड़ैत अछि। चारू दृष्टि एक संग उपयोग कएलापर स्पष्ट होइत अछि जे पोथीक वास्तविक शक्ति ‘एक उत्तर’मे नहि, बल्कि उत्तर सभक बीच बनैत तनावमे अछि।

भाषिक निखारक बाद ई संग्रह आधुनिक मैथिली गद्यक एक महत्त्वपूर्ण बहु-रजिस्टर दस्तावेज रूपमे और स्पष्ट भऽ सकैत अछि। एकर लोकशब्द, स्थानीय भूगोल, मौखिक हास्य आ सामाजिक तीखापन जतनसँ बचेनाइ चाही; संगहि टंकण, विराम, रोमन/अंग्रेजी रूप आ सम्पादकीय एकरूपता पर कठोर प्रूफ-पठन होय। साहित्यिक रूपेँ संग्रहक स्मरणीय छवि वएह अछि जे शीर्षक सुझबैत अछि—पर्वत जकाँ भारी इतिहासक ऊपर भमरा जकाँ छोट, चंचल, गुंजैत कथा; कखनो सूतल बुझाइत, मुदा नजदीक जाइते भीतर सँ सामाजिक अर्थक गुंजन सुनाइ पड़ैत अछि।

रचना-समावेशन जाँच

ई सूची समीक्षा-परासक पूर्णता देखेबाक लेल अछि; मूल पोथीक सभ कथा-शीर्षक एहि शोध-समीक्षामे विवेचित अछि।

क्रम	रचना
1	सिद्ध महावीर

2	नवी मुम्बै
3	नई दिल्ली
4	तस्कर
5	संघर्ष
6	लेटरबॉक्समे आयल चिट्ठी
7	डोमा, बुधन आ...
8	आत्महत्या
9	गंधर्व लेटरबम
10	मधुबनी मोडचूल
11	शब्दशास्त्रम्
12	महिसबार ब्राह्मणक गाम
13	रिक्शाक सवारी आ लूटिक डर
14	नकली नोट
15	पानिबला रोड
16	जी सर
17	दू टा कैदी
18	अपन-अपन भाग्य
19	प्रवचन
20	गछ्ल गप
21	भूरा बाल
22	आत्म-गौरव
23	छाह
24	वाटर कूलर
25	तौ अखन एतेक पैघ नै भेल छँ बाउ
26	एमबियेन्स मॉल कैम्पसक मिस्त्रीक खिस्सा
27	स्निफर डॉग आख्यान
28	यातायात निअम
29	जातिवादी मराठी
30	थेथर मनुक्ख
31	बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा
32	स्त्री-बेटी

33	बिआह आ गोरलगाइ
34	प्रतिभा
35	जाति-पाति
36	अनुकम्पाक नोकरी
37	पैरवी-पैगाम आ हाकिम
38	नूतन मीडिआ
39	मिथिलाक उद्योग
40	बाढ़ि, भूख आ प्रवास
41	नव-सामन्त
42	चारिम स्थान
43	भोट
44	मसुआइ
45	साइबेरिया कैम्प
46	मीत भाइ शृंखला
47	बिहारी
48	फिल्डिंग
49	स्किल
50	डिसीप्लीन
51	साइंस

ग्रन्थ-सूची

नीचाँ केवल पोथीक नाम देल जा रहल अछि। वेबसाइट, लेख-पता वा अन्तर्जाल-स्रोत सम्मिलित नहि अछि।

नाटचशास्त्र

ध्वन्यालोक

काव्यप्रकाश

वक्रोक्तिजीवित

औचित्यविचारचर्चा

साहित्यदर्पण

तत्त्वचिन्तामणि

न्यायकुसुमाञ्जलि

भामती

(History of Navya-Nyaya in Mithila)

(The Dialogic Imagination)

(Narrative Discourse)

(Mimesis)

(Anatomy of Criticism)

(Aspects of the Novel)

(The Theory of the Novel)

(The Short Story: The Reality of Artifice)

(A Parallel History of Mithila & Maithili Literature)

(Gajendra Thakur’s Parallel Philosophy)

(History of Mithila, Vajji & Anga in India & Nepal)

(Decoding the Panji of Mithila)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

आलेख १९ · कथा, लघुकथा आ कथा-समालोचना

गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा

सारांश

एहि शोधग्रन्थक मूल पाठ गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथाक संलग्न विदेह संस्करण अछि। मूल कथाकार आ चयन-सम्पादकक श्रेय मूल प्रकाशकीय अनुसार राखल गेल अछि।

बीजशब्द

गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा ·मैथिली कथा ·लघुकथा ·पाठाधारित समीक्षा ·कथन-शिल्प

गजेन्द्र ठाकुरक
८२ टा चयनित कथा

आधुनिक साहित्यिक समीक्षा
आ पाठाधारित तुलनात्मक अध्ययन

कथाभूमि · शिल्प · सामाजिक संस्था · स्मृति · अभिलेख

मूल कथाकार : गजेन्द्र ठाकुर

मूल कथा-संग्रहक चयन आ सम्पादन : आशीष अनचिन्हार

आधार-पाठ : विदेह संस्करण, २०२६

मैथिली साहित्यिक आलोचना

अध्ययनक आधार

एहि शोधग्रन्थक मूल पाठ गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथाक संलग्न विदेह संस्करण अछि। मूल कथाकार आ चयन-सम्पादकक श्रेय मूल प्रकाशकीय अनुसार राखल गेल अछि। समीक्षा मूल कथाक पुनर्लेखन नहि; ई कथावस्तु, संरचना, कथकक दृष्टि, पात्रक विकल्प, भाषा आ सामाजिक अर्थक स्वतन्त्र विवेचन अछि।

सन्दर्भक केन्द्र कथाक क्रमाङ्क आ शीर्षक अछि। बाहरी आलोचनात्मक सिद्धान्तकेँ मूल कथासभ पर विचार करबाक औजारक रूपमे प्रयोग कएल गेल

अछि, मूल कथाक प्रमाणक विकल्पक रूपमे नहि। मुख्य सन्दर्भ-पोथीक विवरण अन्तमे देल गेल अछि।

अनुक्रमणिका

प्रथम भाग — पाठक परिधि आ आलोचनाक अवधारणा

दोसर भाग — दस स्रोत-खण्डक कथा-दर-कथा अध्ययन

- पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल
- स्मृतिक दोसर दिस
- इजोत — जनम-जनमक कथा
- कथा-शतत्रयी खण्ड-१
- कथा-शतत्रयी खण्ड-२
- कथा-शतत्रयी खण्ड-३
- कथा-त्रिधारा खण्ड-१
- कथा-त्रिधारा खण्ड-२
- कथा-त्रिधारा खण्ड-३
- नव पाँखि

तेसर भाग — गाम, जाति, धर्म आ सार्वजनिक प्रतिष्ठा

चारिम भाग — स्मृति, अभिलेख आ सत्यक प्रश्न

पाँचम भाग — पाँजि, राज्य, श्रम, शिक्षा आ पर्यावरण

छठम भाग — स्वर, मौन, कथाविधान आ तुलनात्मक मूल्याङ्कन

सातम भाग — समग्र निष्कर्ष आ सन्दर्भ-पोथी

परिशिष्ट — बयासी कथाक समीक्षा-अनुक्रम

प्रथम भाग : अध्ययनक पद्धति

पाठ, चयन आ आलोचनाक परिधि

गजेन्द्र ठाकुरक ‘८२ टा चयनित कथा’ एक लेखकक कथा-जगतक एकरूप प्रतिरूप नहि, दस मूल पोथी अथवा खण्डसँ चुनल रचनासभक एक सघन संवाद अछि। चयन-संपादनक श्रेय पोथीमे आशीष अनचिन्हारकेँ देल गेल अछि। पाँच कथा ‘पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’सँ, दस ‘स्मृतिक दोसर दिस’सँ, पाँच ‘इजोत — जनम-जनमक कथा’सँ, तीस ‘कथा-शतत्रयी’क तीन खण्डसँ, तीस ‘कथा-त्रिधारा’क तीन खण्डसँ आ दू कथा ‘नव पाँखि’सँ आयल अछि। ई विभाजन मात्र ग्रन्थ-सूची नहि; प्रत्येक स्रोतक कथात्मक लय, विस्तार आ विषय-निर्णय पृथक् अछि। आलोचनाक पहिल दायित्व ई भेद बचाएब अछि।

एहि संग्रहक कथा संसारमे घरक ओसारा, मन्दिरक छत, पोखरि, खेतक मेड़, छात्रावासक जूता, लिपिकक मेज, बाढ़ि-सहायताक कागज, छापाखानाक सीढ़ी, कार्यालयक मोहर, चाहक कप आ पुस्तकालयक खाली पन्ना बारम्बार अर्थ रचैत अछि। ई वस्तुसभ केवल दृश्यसज्जा नहि: एकर उपयोग, स्थिति आ नाम बदलिते पात्रक अधिकारक परिभाषा बदलैत अछि। अही रूपात्मक गुणकेँ एहि अध्ययनमे कथा-जगतक एक प्रमुख सूत्र मानल गेल अछि; मुदा एहि सूत्रक आधारपर प्रत्येक कथाकेँ एके निस्सार निष्कर्षमे समेटबाक प्रयास नहि कएल गेल अछि।

कथाक भीतर पात्र जे इतिहास, शास्त्र, विज्ञान वा सामाजिक परम्पराक विषयमे कहैत छथि, ओ साहित्यिक पात्रक कथन अछि। ओकरा स्वत: स्वतन्त्र ऐतिहासिक प्रमाण नहि मानल जाएबाक चाही। विशेषत: ‘डोमा, बुधन आ...’ आ ‘शब्दशास्त्रम्’ सन विचारप्रधान आख्यानमे पात्र-वक्तव्य, कथकक दृष्टि आ बाह्य इतिहासलेखनक अन्तर आवश्यक अछि। एहने प्रकारेँ ‘सीमाक गोली’ आ ‘अदालत’मे एक प्रमाणसँ सभ प्रमाणक समानता अथवा असमानता सिद्ध नहि होइत। एहि शोधक निष्कर्ष कथा-पाठक आन्तरिक कार्यप्रणाली पर आधारित अछि।

एहि आलोचनाक पाठ-साक्ष्य लेल कथाक शीर्षकक संग संग्रहक क्रमाङ्क देल गेल अछि। अलग-अलग मुद्रण-विन्यासमे पृष्ठ-संख्या बदलि सकैत अछि; तेँ शीर्षक आ कथा-क्रमक आधारसँ सन्दर्भ निर्धारित कएल गेल अछि। शीर्षकक एकरूप पुनरावृत्ति सेहो ध्यान राखल गेल अछि: क्रमाङ्क ६७ आ ७८ दुनूक नाम ‘ओसाराक बल्ब’ अछि, किन्तु कथासभ एक नहि छथि। एहन अन्तरक चिन्हांकन महत्त्वहीन सम्पादकीय सूक्ष्मता नहि, पाठ-पहिचानक आधार अछि।

आलोचनाक अवधारणा : पाठक आवाज, ध्वनि आ उत्तरदायित्व

भारतीय काव्यचिन्तनमे आनन्दवर्धनक ध्वनिविचार आ कुन्तकक वक्रोक्तिचिन्तन ई बुझबाक सैद्धान्तिक सहारा दैत अछि जे साहित्यिक अर्थ अभिधात्मक कथनसँ आगाँ उत्पन्न होइत अछि। ‘दू अक्षर’क सन्देश, ‘एक कप चाय कम’क उल्टा कप आ ‘मौन गवाही’क सामान्य भोजन-इच्छा घोषणाक बदला संकेतक रूपमे अर्थ उत्पन्न करैत अछि। मुदा ध्वनिको एकटा तैयार समीकरण बना देब अनुचित अछि। पाठक अनुभव विभिन्न पात्रक व्यवहार आ सामाजिक प्रसंगसँ बनैत अछि, केवल प्रतीक पहिचानलासँ नहि।

जेरार जेनेतक कथाविधान-विषयक विवेचन कथकक स्थिति, समयक क्रम आ कथित घटनाक दूरी पढ़बाक लेल उपयोगी अछि। ‘सूखल कमला’मे मृत गोपीकेँ सम्बोधन वर्तमानक भीतर अतीतक निरन्तर प्रवेश अछि; ‘अदालत’मे प्रश्न-उत्तर कालानुक्रमक बदला प्रमाणानुक्रम रचैत अछि; ‘सात सीढ़ी’मे प्रथम-पुरुषक स्मृति शारीरिक प्रतिक्रियाकेँ कथानक बनबैत अछि। एहिमे कथा-समय आ पात्रक अनुभूत समय समान नहि रहैत।

मिखाइल बाख्तिनक बहुवचनात्मक भाषा-दृष्टिसँ एहन कथा पढ़ल जा सकैत अछि जाहिमे विभिन्न सामाजिक बोलिआ शैली एक मंचपर भेटैत अछि। ‘सिद्ध महावीर’मे आस्था, चिकित्सकीय विवेचन आ सामुदायिक अफवाह अलग आवाज छथि; ‘सीमाक गोली’मे सैन्य प्रक्रियाक भाषा आ गामक स्मृति परस्पर विवादरत छथि; ‘बरगदक नीचाँ रजिस्टर’मे सरकारी पाँजि आ लोक-पाँजि दू भिन्न प्रशासनिक व्याकरण छथि। तथापि कथामे अनेक पात्रक

उपस्थिति मात्र बहुवचनात्मकता सिद्ध नहि करैत; असल प्रश्न ई जे केकरो दृष्टिकेँ अन्तिम सत्य बनबाक सुविधा भेटैत अछि कि नहि।

वेन सी. बूथक कथात्मक विश्वसनीयता-विचारकेँ स्मरण करैत ई संग्रह कथकक जानकारीक सीमा पर विशेष ध्यान माँगैत अछि। 'प्रतिलिपिकार' मूलक रिक्तता जसक तस राखैत अछि; 'अन्तिम पाठक' पुनर्निर्मित स्मृतिकेँ मूलक प्रतिरूप नहि घोषित करैत; 'मिथिलाक पुस्तकालय' स्रोत-विरोधक पृष्ठ जोड़ैत अछि। एहि कथासभक प्रामाणिकता सर्वज्ञ कथनसँ नहि, "हम एतबे जनैत छी" स्वीकार करबाक नैतिकतासँ बनैत अछि।

विक्तर श्क्लोव्स्कीक अपरिचयीकरणक अवधारणा रोजक वस्तु नब दृष्टिसँ देखबाक क्रिया बुझबामे मदति करैत अछि। एकतीसम खाट, शून्य कुर्सी, खाली कॉपी वा बिगड़ल घंटी एही प्रक्रिया सँ सामान्य उपयोगसँ हटि प्रश्न बनैत अछि। मुदा एहि संग्रहमे वस्तुक अपरिचयीकरण शुद्ध कलात्मक खेल नहि; अक्सर अधिकारक व्यावहारिक स्थिति ओकरा उत्पन्न करैत अछि। वस्तु देखबाक नब ढंग सामाजिक व्यवहारक नब मापक बनि उठैत अछि।

दोसर भाग : कथा-दर-कथा पाठालोचना

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

प्रथम खण्डमे पाँच कथाक अन्तर असाधारण अछि। विस्तृत सांस्कृतिक आख्यान, शास्त्र-विचार आ एक अत्यल्प संवादक मूल्याङ्कन लेल पृथक् शिल्पगत मापदण्ड आवश्यक अछि।

१. सिद्ध महावीर

'सिद्ध महावीर'मे अनमना दीदीक विधवापन, मन्दिरक निर्माण आ घरारीक स्वामित्व एकहि सामाजिक यथार्थक तीन परत बनैत अछि। भातिजक प्रस्ताव आर्थिक मदति बुझाइत अछि, मुदा रजिस्ट्रीक बाद बाट आ जमीनक सम्बन्ध बदलि जाइत अछि। एहि ठाम धार्मिक विश्वासक विफलता सँ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि कागजक भाषामे सामर्थ्यहीन स्त्रीक विस्थापन। भातिजक मृत्युकेँ गामक लोक श्रापक फल मानैत अछि; दीदी ओकरा हृदयाघात आ उपचारक अभावसँ जोड़ैत छथि। अन्तिम कीर्तनमे वैज्ञानिक आ चमत्कारी दुनू व्याख्या एक संग बचल रहैत अछि। कथा निर्णय थोपबाक बदला सामुदायिक विश्वासक निर्माण-

प्रक्रिया देखबैत अछि; आरम्भक 'दीदी'क 'बाबा'मे बदलैत सामाजिक नामकरण सेहो अर्थपूर्ण अछि।

२. डोमा, बुधन आ...

बुधन अपन छोट भाय डोमाक पढ़ाइ लेल हरवाही छोड़ि चण्डीगढ़मे रिक्शा चलबैत छथि; ई क्रिया शिक्षाक सामाजिक लागत कँ श्रमक देहपर लिखैत अछि। कथाक उत्तरार्धमे स्मृतिक्षय सँ जूझैत कथक आ बुधनक बेटाक भेट एक पीढ़ीक अनुभवकँ दोसर पीढ़ीक प्रश्नसँ भिड़बैत अछि। आरक्षण, जाति आ जाति-व्यवस्थाक भेद, वैदिक पाठक व्याख्या आ विश्व-दृष्टि पर लम्बा विचार-विनिमय कथा कँ प्रबन्धात्मक विस्तार दैत अछि। एकर सामर्थ्य इतिहास आ निजी स्मृतिक सतत टकराव अछि; शिल्पगत जोखिम ई जे विचारक प्रवाह किछु ठाम पात्रक जीवन-स्थितिसँ बेसी फैलि जाइत अछि। 'डोमा' नाम स्वयं सामाजिक अपमान आ जीवनरक्षाक लोक-विश्वासक अस्थिर सम्बन्ध खोलैत अछि।

३. शब्दशास्त्रम्

'शब्दशास्त्रम्' तालपत्रक परिरक्षणसँ आरम्भ होइत अछि: शब्दक इतिहास एतय पोथीक जिल्द वा विद्वत्ताक घोषणामे नहि, रौदमे पसारल नाजुक पदार्थमे सुरक्षित अछि। मितू, आनन्दा आ शास्त्रीय प्रतिष्ठासँ जुड़ल प्रसंग ज्ञानक अधिकार, प्रेम आ सामाजिक निर्णय बीच संघर्ष रचैत अछि। सिंह राशिक मौसम, विवाहक शुभकाल आ मीमांसकक प्रभाव साहित्यिक समयकँ अनुष्ठानिक समयसँ भिड़बैत अछि। ई कथा अपन आख्यानक भीतर विद्वत्ता कँ स्वत: नैतिकता मानि लेबाक विरुद्ध प्रश्न रखैत अछि। अन्तमे आनन्दाक गीतक उपस्थितिसँ बुझाइत अछि जे मनुष्यक जीवित कण्ठ ज्ञानक कठोर संस्थागत सीमासँ बाहर अपन अर्थ सुरक्षित रखि सकैत अछि।

४. महिसबार ब्राह्मणक गाम

'महिसबार ब्राह्मणक गाम'क विस्तार पारम्परिक एकरेखीय घटनाक्रम नहि, गामक सांस्कृतिक नृवृत्त जकाँ पढ़ल जाएबाक चाही। पोखरि, जातिगत टोला, पेशा, मेले आ नाच-गानक सूची सँ सामाजिक स्थानक जटिल नक्शा बनैत अछि। कथकक बेराबेरी विषयान्तर पाठक कँ स्मरण करबैत अछि जे गामक 'एक' कथा कहनाइ असम्भव प्राय: अछि। जाति केवल विचार नहि, आवास,

श्रम-विभाजन आ आयोजनक ठोस व्यवस्था अछि; लोकनाट्यक विस्तृत उपस्थिति एहि व्यवस्था भीतर विविध कला-स्मृति सुरक्षित करैत अछि। एकर दस्तावेजी समृद्धि उल्लेखनीय अछि, यद्यपि घना सूचीसभ कथात्मक तनावकेँ जानि-बुझि धीमा करैत अछि। एहने धीमापन एहि आख्यानक रूपात्मक चुनाव अछि।

५. जाति-पाति

‘जाति-पाति’ अत्यल्प आकारमे सामाजिक प्रतिष्ठाक असमान व्याकरण उघारैत अछि। दू प्रशिक्षित पुलिस अधिकारीक बराबर पद, एक्के समारोह आ मद्यपानक साझा स्थिति देखल जाए तँ सामाजिक दूरी नष्ट होबाक चाही; मुदा “राजपूतक छाती” गर्वसँ कहबाक सुविधा आ “हम डोम छी” कहबाक असुविधा बराबरीक सीमाकेँ उजागर करैत अछि। कथाक प्रभाव व्याख्यामे नहि, दोसर पात्रक एक प्रश्नमे अछि। एतय संक्षिप्तता शिल्पगत बाध्यता नहि, सामाजिक विडम्बनाक मापक बनैत अछि। ओकरा विस्तारित कथानकक मानदण्डपर कमतर ठहराएब अनुचित होयत।

स्मृतिक दोसर दिस

एहि खण्डक दस कथा स्मृति आ प्रमाणक बीच असहमतिकेँ विविध जीवन-स्थितिमे परखैत अछि। रिक्त दस्तावेज, गवाही, घरक खिड़की आ ज्ञानक अपूर्णता एतय कथात्मक बुनियाद बनैत अछि।

६. प्रतिलिपिकार

सुधीन्द्र दासक प्रतिलिपि बनएबाक कौशल ‘प्रतिलिपिकार’मे नैतिक निर्णयक विषय बनि जाइत अछि। रामदुलारी देवीक मूल लेखनक एक रिक्त स्थान भरब ओकर लेल प्राविधिक रूपसँ सहज अछि, मुदा ओ खाली कोष्ठक जसक तस राखैत अछि। एहि निर्णयमे नकल करबाक निष्क्रियता नहि, मूल पाठक अनिश्चितता सुरक्षित रखबाक सक्रिय अनुशासन अछि। भवानीबाबूसँ संवाद आ कागजक संरक्षणक परिवेश ई प्रश्न उठबैत अछि जे सम्पादन कखन मूलक अधिकार पर अतिक्रमण करैत अछि। कथाक अन्हारमे अदृश्य रहैत रिक्त स्थान स्मृतिक अनुपस्थितिक दृश्यरूप बनैत अछि। एही कारण ई कथा संग्रहक पाठ-नीतिक सेहो एक समुचित रूपक अछि।

७. अन्तिम पाठक

आगिसँ नष्ट जनवाचनालयक पुस्तकसभ ‘अन्तिम पाठक’मे केवल जरेबाक वस्तु नहि, अपूर्ण स्मृतिक रूपमे पुनः प्रकट होइत अछि। रघुपति पहिने हेरायल पाठ अपन अनुमानसँ भरय चाहैत छथि; पछाति ओ रिक्त ठाम अलग चिन्हित करबाक अनुशासन सीखैत छथि। नेहाक नाटक आ फेर वाचनालयक नव आरम्भ “अन्तिम” शब्दक निर्णायकताकेँ निरस्त करैत अछि। कथा स्मरण आ कल्पनाक अधिकारमय दूरी जाँचैत अछि: पुनर्निर्माण सम्भव अछि, मुदा ओकरा मूलक पुनर्प्राप्ति कहल नहि जा सकैत। जखन आगिक बादक पहिल पुस्तक सुरक्षित होइत अछि, साहित्यिक भविष्य नष्ट अतीतक निर्विवाद प्रतिलिपि बनि नहि अबैत।

८. सीमाक गोली

‘सीमाक गोली’मे नाला, पुरान सीमा-पत्थर आ नकाशाक भिन्न स्थितिसँ गोली चलबाक घटनाक सत्य सेहो विवादित भऽ जाइत अछि। पाइपकेँ तत्काल हथियार बुझबाक सम्भावना, जवानक खतरा-बोध आ प्रत्यक्षदर्शीक अवस्थिति अलग-अलग कथन रचैत अछि। अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भेद ई अछि जे ‘हम नहि सुनलहुँ’ सँ ‘ओ नहि बाजल’ निष्कर्ष नहि निकालल जा सकैत। घटनाक पुनर्निर्माणमे प्रक्रियागत भाषा प्रायः अनुभवक अनिश्चितताकेँ मिटबैत अछि; कथा ओकर विरोध करैत अछि। अन्तिम वाक्यमे गोलीक क्षणिक ध्वनि आ अर्थक दीर्घ अवधि बीच अनुपातहीनता नैतिक आ कथात्मक दुनू स्तरपर सफल अछि।

९. राजमिस्त्रीक गिरावट

‘राजमिस्त्रीक गिरावट’मे “सुरक्षा पहिने” लिखल फाटकक नीचाँ असुरक्षित श्रमिक-बाट अछि। ई दृश्य सरकारी वा निजी सुरक्षा-वचन आ वास्तविक निर्माणस्थलक बीच विडम्बना स्थापित करैत अछि। बुधनक गिरावट कैं एकटा बाँसक चूक अथवा मजदूरक निजी गलती बुझला पर निर्णय सरल भऽ जाइत; मुदा रस्सी, पटरा, पुरान जोड़ आ पूर्व शिकायत अनेक उत्तरदायित्व खोलैत अछि। मञ्जूक लग बचल नोटबुकमे “ऊपर रस्सी बदलय कहने” ई बातक पाठ-प्रमाण अछि जे श्रमिक दुर्घटना सँ पहिनहि जोखिम चिन्हि सकैत छल। कथा दोष कैं विलीन करबाक सामूहिक भाषाक प्रतिकार करैत अछि।

१०. काजर

'काजर'मे शारदा देवीक पुरान अधूर प्रशिक्षण आ ईराक नव आरम्भ एक दिनक छोट घरेलू अनुष्ठानमे मिलैत अछि। आँखिक काजर पीढ़ीगत सौन्दर्य-मानक नहि, निजी निर्णयक अभ्यास बनि जाइत अछि। शारदाक टेढ़ रेखाकेँ नहि पोछबाक निर्णय हुनक वर्तमान शरीरकेँ स्वीकार करबाक क्रिया अछि; ई कथाक वास्तविक परिणति थिक। संस्मरणक दबाव रहितो रचना नानीक अधूर सपनाकेँ नातिनक उपलब्धिमे कृत्रिम रूपसँ पूरा नहि करैत। साधारण दरपन आ परदा खोलबाक घटना सँ स्त्रीक समयक स्वायत्तता व्यक्त होइत अछि।

११. सूखल कमला

सूखल कमलाक कात मृत गोपीसँ एकतर्फा सम्बोधन पूरा कथाक अन्तरंग लय बनबैत अछि। नदीक पुरान धारा आ स्मृतिक दिशा एक-दोसरसँ मेल नहि खाइत; भूगोल आ शोक दुनू बदलल अछि। कथक परालीक धुआँ देखिकऽ चिताक स्मृति लबैत अछि, फेर स्वयंकेँ सुधारैत अछि—सभ धुआँ मृत्यु नहि। एही आत्मसंशोधनसँ स्मृतिपर भावनात्मक अधिकारक सीमा निर्धारित होइत अछि। अन्तमे मृत संग चलबाक कल्पना रहैत अछि, मुदा पएर जीवितकेँ उठेबाक पड़ैत अछि। शोककेँ विस्मरण नहि, वर्तमानमे चलबाक कठिन अनुशासन रूपेँ लिखल गेल अछि।

१२. माटिक गन्ध

'माटिक गन्ध'मे पहिल वर्षाक गन्ध सुधांशुक स्मरण खोलैत अछि, मुदा कथा गन्ध आ स्मृतिक अनिवार्य सम्बन्ध स्थापित कऽ बन्द नहि भऽ जाइत। मायक अनेक क्षण बिना कोनो गन्धक सेहो घुरि अबैत अछि। पाठक पहिने एक परिचित इन्द्रिय-रूपकक अपेक्षा करैत अछि; अन्तिम बिन्दुपर स्मृति ओहि रूपकसँ स्वतन्त्र होइत अछि। कथाक खण्डित, कखनो लघु अनुच्छेद स्मरणक अचानक आवागमनक अनुरूप अछि। सहजबोधक भावुकता सँ बचब एहि रचनाक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

१३. बहिनसभ

मृदुला आ नीराक पुरान झगड़ा लोक-शिल्पक कपड़ापर बनल रेखासभमे नव अर्थ पबैत अछि। "ई रेखा के बनौलक" प्रश्न सृजनक व्यक्तिगत दावासँ अधिक परम्पराक सामूहिक इतिहासक प्रश्न बनि जाइत अछि। चालीस बरखक

दूरी बहिनसभक असहमतिमे स्वत: समाधान नहि दैत; दुनू बुझैत छथि जे पहिनुक रेखा ओकरा सभसँ पुरान छल, मुदा दुनूक हाथ ओकर दिशा बदलने अछि। अन्तिम खाली ठाम ‘सुलह’क सस्तो प्रतीक नहि, सम्बन्धक अपूर्णताकेँ स्वीकार करबाक रचनात्मक निर्णय अछि।

१४. घर नम्बर पाँच

‘घर नम्बर पाँच’ एक घरक भीतर बदलैत स्त्री-जीवनक इतिहास रचैत अछि। उत्तर देवालक खिड़की, ओहि ठामक पुरान उपयोग आ अगिला पीढ़ीक नव जरूरत पाँचक स्थिर घर-संख्याक विपरीत बदलैत अर्थ दैत अछि। कियो सम्पूर्ण इतिहास नहि जानैत, मुदा एक स्त्रीक निर्णय दोसर स्त्रीक दैनिक सुविधामे जीवित रहि सकैत अछि। एहि कारण कथा स्मारकक बदला उपयोग, स्मृतिक बदला अनजान उत्तराधिकार आ निजी स्वामित्वक बदला दीर्घ सामूहिक प्रभाव पर ध्यान दैत अछि। अन्तमे खिड़की खुलल रहब अनिर्णीत किन्तु सार्थक खुलापन अछि।

१५. संगीत शिक्षक

महिला कौशल केन्द्रक परीक्षणमे समान नियमक आग्रह आ विशेष परिस्थिति लेल आवश्यक काठक पाटीक व्यवस्था—‘संगीत शिक्षक’क केन्द्रीय विवाद अछि। नलिनी झा पहिने निष्पक्षता केँ एकरूपता मानैत छथि। शबनमक एड़ी आ प्रशिक्षणक वास्तविक बाधा देखलाक बाद हुनका पुरान शिक्षिकाक हारमोनियमक पट्टी बदलबाक स्मृति अबैत अछि। दुनू घटना समान नहि, मुदा शिक्षणक न्यायबोधमे गहिर सम्बन्ध अछि। रचना दया आ अधिकारक भेद पर सूक्ष्म ढंगसँ विचार करैत अछि: व्यवस्था सभकेँ एके जकाँ राखि कऽ न्यायसंगत नहि भऽ सकैत।

इजोत — जनम-जनमक कथा

ई पाँच कथा वंश, संगीत, न्याय, बाढ़ि आ साहित्यिक संस्था बीच संवाद रचैत अछि। एक खण्डक अन्तर्गत रहितो प्रत्येकक कथन-रूप आ काल-आकार स्वतंत्र अछि।

१६. मातृवंश

'मातृवंश'मे जेठ बेटीक उत्तराधिकार प्रथाक पाछाँ पुरखा-स्त्रीक घर सम्हारबाक वास्तविक काज रहैत अछि। ईशानी जखन परम्पराक मूल कारण सुनैत अछि तऽ बुझैत अछि जे जिम्मेदारी पर आधारित पुरान निर्णय कालान्तरमे जन्मक्रमक कठोर आदेश बनि गेल। कथा स्त्री-वंशकेँ स्वतः मुक्तिकारी मानि लेनेसँ बचैत अछि। घरक चाभी, ओकर नकल आ आगाँक आवागमन स्वामित्वसँ अधिक सामूहिक देखरेखक प्रस्ताव बनैत अछि। अन्तिम दीपक इजोत कोनो वंशादेश नहि, एक-दोसराकेँ देखबाक सम्भावनाक रूपमे उद्घाटित अछि।

१७. राग

'राग'मे पिप्राक घाट, छठक बादक रिक्तता, हरिहरक स्वराभ्यास आ मुन्नीक गान परम्पराक जीवित संवाद बनैत अछि। कथा शुद्धता बनाम नवाचारक आसान द्वन्द्व नहि रचैत; हरिहरक कथन अनुसार प्रत्येक फरक चूक नहि, मुदा प्रत्येक फरक नब बाटो नहि। गाबि-सुनि-फेर गाबबाक अभ्यास संप्रेषण, आत्मसंशोधन आ स्वरक सामुदायिक उत्तरदायित्वक प्रक्रिया अछि। नदीक कात काँपैत इजोत एहि अपूर्ण सीखक अनुरूप अछि—संगीतक यात्रा पूर्ण प्रकाशक प्रतीक्षा नहि करैत।

१८. अदालत

'अदालत' अनुच्छेदक पारम्परिक आख्यानक बदला प्रश्न-उत्तर आ गवाहक कथनसँ गठित अछि। घाटक विवादित पट्टीक बारेमे पुरान नकाशा, बदलैत नदी, फोटो आ स्मृति परस्पर एक मत नहि छथि। खास बात ई अछि जे निरीक्षणक एक दृश्य स्वामित्व-विवादसँ प्रत्यक्षतः असम्बद्ध होइतो मानवीय अर्थ रखैत अछि। प्रमाणक सीमा स्वीकार करैत कथा अदालतक निर्णायक भाषाकेँ जटिल बनबैत अछि। एतय बहु-कण्ठात्मकता केवल शैली नहि; निष्कर्षक नैतिक संयम अछि।

१९. डूम

'डूम'मे बाढ़ि पहिने समाचार, फेर ध्वनि, फेर गन्ध आ अन्ततः घरक भीतर पहुँचैत अछि। एहि क्रमसँ विपत्ति प्राविधिक सूचना नहि, क्रमशः देहगत अनुभव बनैत अछि। सुमित्राक घरेलू काज, घाटक गाद हटेबाक श्रम आ लालटेनक सीमित इजोत एके सामाजिक संसारक अंग छथि। कथा नायकत्वक

ऊँच स्वर सँ बचैत अछि; नालीमे अटकल पात निकालि पानिक प्रवाह पुनः चालू करब छोटे स्तर पर पुनर्निर्माणक ठोस संकेत अछि। बाढ़िक बाद स्मृतियो केवल महाविपत्तिक चिन्ह नहि, दैनिक श्रमक सतत विस्तार बनैत अछि।

२०. विदेह

‘विदेह’मे घरक पुरान संदूक सँ निकलल कागज निजी स्मृतिक सीमासँ आगाँ सामूहिक प्रकाशन-प्रक्रियाक विषय बनैत अछि। नैना, जगदम्बा देवी, चम्पाक घाट-हिसाब आ आन सहयोगीक योगदानक संग साहित्यिक संस्था अपन व्यावहारिक अर्थ पबैत अछि। नकल, सुधार, अंशदान आ अगिला अङ्कक सम्पादन कथा भीतर कथा निर्माणक इतिहास अछि। अन्तिम खाली पन्ना पर सम्पादकीय स्वामित्वक घोषणा नहि लिखब अधिक अर्थपूर्ण अछि: आगामी लिखनिहार लेल अवसर छूटैत अछि। जलमे टूटि-जुड़ैत दीपक प्रतिबिम्ब एकमात्र सत्य-रेखाक बदला बहुविध आवाजक रूपक बनैत अछि।

कथा-शतत्रयी खण्ड-१

पहिल दस चयनमे निजी स्मृति आ सार्वजनिक संस्था बारम्बार एक-दोसराक मापक बनैत अछि। रोजक वस्तुक स्थान आ नाम सामाजिक व्यवहारक अदृश्य नियम खोलैत अछि।

२१. दू अक्षर

‘दू अक्षर’मे केवाड़ीक पाछाँ टाँगल धूसर छाता छओ बरखक पारिवारिक मौनक वाहक बनैत अछि। छाता ककर अछि, एहि तथ्य सँ अधिक निर्णायक अछि जे सुधांशु बाबू ककरासँ बात करबाक टारि रहल छथि। अन्तमे ओ फोन करबाक बदला अमितकेँ शारदा भाभीक कुशल पूछैत छोट सन्देश पठबैत छथि। कथा पुनर्मिलनक नाटकीय दृश्य नहि देत; सम्बन्धक नब सम्भावना एक साधारण सामाजिक प्रश्नसँ खुलैत अछि। छाताक छोट छेदसँ खसैत पीयर इजोत संकोच आ सम्पर्कक बीचक दू अक्षरक जकाँ छोट दूरीकेँ मूर्त करैत अछि।

२२. फोटो स्टूडियो

पुरान फोटो स्टूडियोक काँचमे अनुशासित ‘परिचयपत्रवला चेहरा’ आ वास्तविक जीवित चेहरा भिन्न होइत अछि। पंकज झाक कौशल व्यक्तिक

छवि सुन्दर बनएबाक भ्रम तोड़ि, हुनका हुनक चश्मा आ माथक रेखासहित देखबाक आग्रह करैत अछि। अनिरुद्ध आ परिवारक चित्रणक बीच संबंधक बारीकी खुलैत अछि। 'पहिने अलग-अलग' फोटो खींचबाक निर्णय सामूहिक स्मृतिक पहिने व्यक्तिक अखण्ड पहिचानकेँ मान्यता दैत अछि। कथा कैमरा केँ पहचानक मनमाना सुधारक औजार नहि, पारिवारिक दृष्टिक परीक्षण बनबैत अछि।

२३. एक जोड़ी जूता

'एक जोड़ी जूता'क पुरान छात्रावास-जूता निजी स्वामित्वक साखी नहि, जरूरतक अदलाबदलीक सामाजिक वस्तु अछि। मधु झाक नब सूची व्यवस्था नाम आ मालिक ताकैत अछि, मुदा विमला दीदीक अनुभव वस्तुक चलैत उपयोग देखैत अछि। रजिस्टरमे 'छात्रावासक' लिखल जा सकैत अछि, वास्तविक उत्तर 'जकरा जरूरत अछि' बनैत अछि। ई छोट अन्तर कल्याणकारी संस्थाक सामूहिकता केँ दस्तावेजक सीमासँ आगाँ लऽ जाइत अछि। कथाक विनम्र अन्त कुनै सजावटी त्यागक गाथा नहि रचैत।

२४. बाँटल छाँह

बस-पड़ावक रामसागर आ नसीमाक ठेलाक सर्वेक्षण-रेखा साझा छाँहक ठोस कठिनाइ बनैत अछि। एक हरियर जालक उपयोगक प्रश्न पर नगरपालिका अलग-अलग पर्चीमे एक बेर सीमा पार मानैत अछि, दोसर बेर साझाक सत्यापन अस्वीकार करैत अछि। एहि औपचारिक विरोधाभासक बीच विक्रेता जीविकाक व्यावहारिक तर्कसँ जाल खसकबैत छथि। पोस्टरमे साझा हँसी प्रचारक छवि अछि, मुदा वास्तविक सहकार्य अनिश्चित आ परिस्थितिजन्य रहैत अछि। कथा सार्वजनिक नीतिक चित्र आ फुटपाथक जीवन बीच सूक्ष्म आलोचना रखैत अछि।

२५. दोसर दर

आरोग्य केन्द्रक मुख्य केवाड़ी आ निःशुल्क शिविरक 'दोसर दर' सामाजिक वर्गीकरणक स्थापत्य बनैत अछि। रोगी लेल सेवा एक कहल जाए, मुदा रङ्गीन पर्ची आ प्रवेशक अलग बाट सम्मानक अलग अनुभव रचैत अछि। समाचारपत्रक समूह-फोटोमे पर्चीक रंग अदृश्य रहैत अछि आ शीर्षक 'समान सेवा' घोषित करैत अछि; अगिला मासक सूची फेर ओही दोसर दरक व्यवस्था

लिखैत अछि। कथाक अन्तिम विरोधाभास उद्घोषणा नहि, प्रशासनक पुनरावृत्त दिनचर्या अछि। एही पुनरावृत्तिसँ भेदभावक दीर्घ आयु बुझाइत अछि।

२६. सात मिनटक आवाज

सौरभक कापी पर बनल ‘सात मिनट’क सात गोल परदेसमे रहैत परिवारक समय-सारिणी अछि। प्रत्येक प्रश्न भोजन, पढ़ाइ, दवाई, जूता वा मौसम सँ जुड़ल अछि; रिक्त सातम गोल संवादक अनपेक्षित विस्तार लेल ठाम छोड़ैत अछि। मोबाइलक निश्चित समय भीतर माय-बेटाक सम्बन्ध पूरा नहि समाइत। बसक हॉर्न, दूरक नानीक खाँसी आ साझा रातिक आकाश कथाक श्रव्य संरचना रचैत अछि। फोन कटितो सातम गोल नहि भरब अपूर्णताकेँ विफलता नहि, जीवित सम्बन्धक सम्भावना मानब अछि।

२७. अधूर नाटक

विद्यालयक ‘अधूर नाटक’मे मूल लिखल पाठ आ मंचपर अभिनीत पाठक बीच भिन्नता विवाद उठबैत अछि। मालती झा ‘मूल पाठ’ आ ‘मंच-अभ्यास’ अलग-अलग लिखबाबैत छथि; तखन पात्रक अनकहल अगिला क्रियाक अनेक रूप सम्भव होइत अछि। नील कापीक रिक्त पृष्ठ चूकक चिन्ह नहि, सामूहिक कल्पनाक अनुशासन बनैत अछि। पाठक स्थिर अधिकार आ मंचीय व्याख्याक प्रश्न समकालीन सम्पादन-विवादसँ जुड़ैत अछि। कथा मूलक सम्मानक अर्थ ओकर प्रत्येक सम्भावना बन्द करब नहि मानैत।

२८. एकतीसम खाट

तीस खाटवला महिला रात्रि-आश्रयमे चम्पा देवीक काज आ विश्रामक अधिकार गणनाक बाहर अछि। आधिकारिक खाट-संख्या आ सफाइकर्मीक देहगत अनुभवक अन्तर एकतीसम मोड़ल खाटक माध्यमसँ उभरैत अछि। जाँचमे “खाट” आ “कर्मचारी” अलग पाँतिमे रहितो जीवित कार्यस्थितिक जटिल सम्बन्ध खुलैत अछि। अन्तमे वस्तु-पाँजिमे छुटल खाट दर्ज होइत अछि; मनुष्यक अधिकारक स्वीकृति केवल सामानक गणना सँ नहि, ओकर कारण बुझलासँ होइत अछि। कथा प्रशासनिक अंकक मानवीय अपूर्णता पर मार्मिक व्यंग्य अछि।

२९. ईंटक निशान

ईंट पर दू तिरछा निशान कौशल्याक परिवारक श्रमिक-पहिचान सँ आरम्भ भऽ पाँजिमे देनदारीक संकट बनि जाइत अछि। चिन्हक अर्थ मौसम, खेप, व्यक्ति आ तारीख बदललासँ बदलैत अछि; गलत सम्बन्ध मानला पर श्रमिकक जीवनपर अकारण कर्जा चढ़ि सकैत अछि। कौशल्याक “प्रश्न-चिन्ह मेटाउ” सँ पहिले प्रमाण माँगबाक जिद कथा कैं अन्वेषणक लय दैत अछि। माटिपर बनल रेखा कागजक कठोर सत्ता बनैत अछि, ई रूपान्तरण कथाक आलोचनात्मक केन्द्र अछि।

३०. गिनतीक बाहर

बाढ़ि-पछाति गणना करबाक काममे ‘घर’ आ ‘परिवार’ एक्के इकाई नहि छथि। देबालक ३७ आ पूरक सूचीमे व्यक्तिक उपस्थिति दू अलग सत्य मानैत ‘गिनतीक बाहर’ आपदाक आँकड़ाक मूल प्रश्न उठबैत अछि। मृणालिनी किरायेदार आ अलग रसोई करनिहारक उपस्थिति दर्ज करबाक प्रयास करैत छथि। पानी देबाल पर क्षतिक चिन्ह छोड़ैत अछि; पाँजि लोकक अधिकारक निशान छोड़बामे पिछड़ैत अछि। कथाक शक्तिशाली पक्ष आँकड़ा-विरोध नहि, गणनाक इकाईक नैतिक चयन अछि।

कथा-शतत्रयी खण्ड-२

एहि दस कथा नदी, जमीन, बीया, श्रम आ समताक बीच छोट किन्तु निर्णायक परिस्थिति रचैत अछि। खेतक मेड़सँ न्यायक कोठली धरि व्यवहारक वास्तविक लागत मुख्य प्रश्न अछि।

३१. बाँधक ओहि पार

‘बाँधक ओहि पार’मे सरकारी नकाशाक ‘पुनर्वास खण्ड–३’ आ लोकक ‘नव बहुअरा’ नामक बीच स्मृतिक असमान भूगोल उपस्थित अछि। पुरान बारी जलाशयक ओहि पार रहि गेल, मुदा वर्तमान जीविका एतय बनल अछि। देवकलीक अन्तिम उत्तर पुरान ठामक अधिकार आ नब बारीक उपयोगकैं अलग-अलग बुझैत अछि। पुनर्वास ई कथा अनुसार केवल घरक संख्या बदलनाइ नहि; लोकक स्थान-स्मृतिक अनेक तह कैं एक संग रखनाइ अछि। कथाक संयत स्वर खोआइल स्थान लेल सरल शोकगीत नहि बनबैत।

३२. जमीनक आवाज

सदा टोलीक 'बीचक बाट'क कोनो आधिकारिक नाम नहि, मुदा दूध, विद्यालय आ खेतक दैनिक आवाजाही ओकर सार्वजनिक अस्तित्वक प्रमाण अछि। भूमि-विवादक समय लेखाजोखा बाटकेँ वस्तु बनबैत अछि, जखनकि कुसुमीक लाठी आ पएरक क्रम ओकर उपयोगी जीवन-रेखा देखबैत अछि। अन्तमे बालकक प्रश्नक उत्तर "बाट" मात्र अछि; ई एक शब्द सरकारी परिभाषाक अपूर्णताकेँ दर्शबैत अछि। कथा भूमि-अधिकारकेँ केवल निजी टुकड़ाक हिसाब नहि, सामूहिक आवागमनक सुविधा मानैत अछि।

३३. सिलाइ मशीन

लीलाक सिलाइ मशीन घरेलू श्रमक उपकरण, आर्थिक बंधक आ पुनर्प्राप्त स्वायत्तताक प्रतीक तीनू बनैत अछि। पुरान मशीन सँ मोटर चलित मशीन धरि पहुँचबाक कथा श्रमक दक्षता केँ बाहरी उपकारक विषय नहि बनबैत। जन्मदिनक लाल किनारीवला गमछा आ मोटरक तेलक छोट बूँद सहजी हास्य निर्माण करैत अछि। एहि हास्यमे परिवारक प्रेम आ कामक भौतिक अनिवार्यता एक संग उपस्थित अछि। श्रम-मुक्तिक अति-भव्य निष्कर्षक बदला कथा यथार्थक सान क्षणपर समाप्त होइत अछि।

३४. दस किलो चाउर

'दस किलो चाउर'मे सहायता-वितरणक प्रचारक फोटो आ वास्तविक अनाजक वितरणक बीच दूरी कथाक मूल युक्ति अछि। एके नील गाँठवला बोरा अनेक लाभार्थीक हाथमे फोटो लेल घूमैत अछि; दृश्य प्रमाण भोजनक प्रमाण नहि रहि जाइत। मालतीक "चाउर कतय अछि?" प्रश्न प्रशासनक आभासी सफलताकेँ भेदि दैत अछि। पात्रसभक विवरणक बीच सूचनाक छोट वस्तुगत अन्तर सँ धोखाक पूरा विधान खुलैत अछि। रचना राहतक दानभावना नहि, उत्तरदायित्व आ सत्यापनक प्रश्न केन्द्रित करैत अछि।

३५. अधूरा गीत

कौशल्याक अधूर रोपनी-गीत आ मृणालक नव संगीत-संरचना परम्पराक टूटन आ रूपान्तरणक कठोर प्रश्न बनबैत अछि। खेतीक श्रम-संरचना बदललासँ गीतक पूरा वाक्य हराइत अछि; केवल शब्द ताकि ओकर जीवित

प्रसंग घुरा देब सम्भव नहि। अन्तमे नव पाँति गाओल नहि जाइत; पित्तरि थारीपर दू थाप सँ पुरान ठहरावक लयकेँ संगति भेटैत अछि। कथा पुनरुत्पादनक बदला सुनबाक उत्तरदायित्व सिखबैत अछि। अधूरापन एतय संग्रहणक कमी नहि, अनुभवक ऐतिहासिक तथ्य अछि।

३६. माटिक बाँसुरी

कुम्हारटोलीक नीलू छेद बेठीक पड़ल बाँसुरीमे हवा बदलि स्वर निकालैत अछि। विद्वान शिक्षक देवव्रत पहिने स्वरक पाठ दैत छथि, पछाति माटिक नमी, थाक आ चाकक गति सीखबाक लेल लौटैत छथि। ज्ञानक प्रवाह केवल विद्यालय सँ कारीगर दिस नहि, उल्टो होइत अछि। “पहिने माटि थाकि लेत” संगीतक शारीरिक आधार आ सृजनक धैर्य दुनू व्यक्त करैत अछि। कला परम्पराक अन्त:क्रिया कैं कथा उपदेश नहि, स्पर्श आ अभ्यासक स्तर पर रखैत अछि।

३७. खुलल दरवाजा

‘खुलल दरवाजा’मे श्रम आ देहक अधिकार खोएने रेखाक घर वापसी साधारण उत्सव नहि अछि। फाटक खुलल रहितो बाहर निकलबाक निर्णय कठिन अछि; समाजक नजरि आ अपन हातक काम फेर सीखनाइ एकटा साथ चलैत अछि। मालती काकीक डलिया बनएबाक आमन्त्रण आ हाटमे लोकक मिश्रित प्रतिक्रिया रेखाक गति धीरे-धीरे बदलैत अछि। रचना पीड़िताकेँ केवल पीड़ाक पहिचानमे सीमित नहि करैत। “हाथ फेर सिखि रहल अछि” जीवनक पुन: अर्जित स्वायत्तताक सटीक कथन अछि।

३८. मौन गवाही

‘मौन गवाही’ न्यायालयक बन्द कार्यवाही, परिवारक भय आ कुसुमक कथनक अधिकार बीच सूक्ष्म संघर्ष रचैत अछि। मायक “गाममे की कहब?” प्रश्न सामाजिक दबावक उपस्थिति खोलैत अछि; कुसुमक उत्तर—जे बात ओकर अछि, ओ स्वयं कहत—प्रमाण आ निजता दुनूक मर्यादा स्थापित करैत अछि। न्यायिक प्रक्रियाक प्रत्येक प्रश्न स्त्रीक जीवनक सम्पूर्ण कथाक अधिकारी नहि बनि सकैत। अन्तमे नींबूक दू गिलासक चुनाव पीड़ासँ बाहर स्वतन्त्र, साधारण इच्छा व्यक्त करबाक सम्भावना लौटबैत अछि।

३९. कुर्थीक दालि

‘कुर्थीक दालि’मे छब्बीस सेर उपज कैँ बीया, भोजन आ बिक्रीक बीच बाँटनाइ कृषि-अर्थशास्त्रक घनिष्ठ नैतिक प्रश्न बनैत अछि। अनाजक हर दाना एक समयमे बाजारक वस्तु, अगिला ऋतुक सम्भावना आ आजुक भोजन अछि। चारि सेर बीया सँ पश्चिमक पट्टी खाली रहि जाइत अछि, जतय मड़ुआ बोएल जाइत अछि; निर्णयक लागत कथा छिपबैत नहि। जगमायक टूटा दानाकैँ भोजनक योग्य मानबाक विवेक उत्पादनक कठोर वर्गीकरणकैँ चुनौती दैत अछि। समाधान सम्पूर्ण नहि; मुदा उपलब्ध संसाधनक जटिल वास्तविकता विश्वसनीय अछि।

४०. एक बीघाक सपना

‘एक बीघाक सपना’मे शिवनाथक जमीन किनबाक चाहना रमा बेटीक पढ़ाइ आ परिवारक ऋणक संग जूझैत अछि। रस्सीसँ खेत नापबाक प्रारम्भिक क्रिया स्वामित्वक इच्छा व्यक्त करैत अछि; अन्तमे ओही रस्सी नब मालिकक भूमि पर श्रमक नाप बनैत अछि। वस्तु समान रहितो सामाजिक सम्बन्ध बदलि गेल अछि। रमा छात्रावास जाइत अछि—ई उपलब्धि परिवारक हार-जीतक एकाङ्गी कथा नहि बनैत। रचना कृषकक आकांक्षाकैँ संवेदनशीलतासँ जाँचैत, जमीनक अभिलाषा आ शिक्षा निवेशक परस्पर कीमत सामने रखैत अछि।

कथा-शतत्रयी खण्ड-३

तेसर खण्डक चयनमे खाली थैला, नाव, पोखरि, बाँसुरी, कुर्सी, बचत आ अनिश्चित स्टेशन अनुभवक विविध रूप बनैत अछि। यहाँ वस्तुक अर्थ परिवर्तित होयबाक प्रक्रिया विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

४१. खाली थैला

‘खाली थैला’मे गोपीनाथ साहक पुरान कपड़ाक थैला रोजक विनिमय, सहायता आ स्मृतिक धारी बनैत अछि। अन्तमे ओकर खाली होनाइ नष्ट हेबाक चिन्ह नहि; गाँठ नहि बाँधल जाएबाक कारण अगिला उपयोगक बाट खुलल अछि। कथाक गति स्थूल घटनासँ नहि, थैलाक भीतर राखल वस्तुसभक परिवर्तनसँ चलैत अछि। ई साधारण पात्र-वस्तु सम्बन्ध उपभोक्तावादी ‘नव वस्तु’क आकर्षणसँ अलग चलैत उपयोगक समयकैँ प्रमुख बनबैत अछि।

४२. नाव बान्हल रहल

‘नाव बान्हल रहल’ मेलेर उत्सवक चकाचौंध आ नदीक अस्थिर धार बीच नाविक रघुनाथ सहनीक जिम्मेदारीक कथा अछि। ओहि पारक ताली आ एहि पार डोरीक गाँठ दू भिन्न समय-लय रचैत अछि। नब आनन्दक लेल नाव खोलि देब सहज विकल्प देखाइत अछि, मुदा धारा आ खूँटाक भौतिक स्थिति काजक कठोर विवेक माँगैत अछि। अन्तक नाव बान्हल रहब ठहरावक विफलता नहि, जोखिमक समय उचित संयमक निर्णय अछि।

४३. पोखरिक रखबार

‘पोखरिक रखबार’मे वंशी महतोक बाँसक नाप आ बादमे सरकारी नाप-डाँड़ जलाशयक दू प्रकारक ज्ञान चिन्हित करैत अछि। पोखरिक गाद, नाला, बगुलाक पएर आ नव घेराक छाया पर्यावरणकेँ स्थिर सम्पत्ति मात्र नहि रहय दैत। वंशी अन्तमे बगुलाक निशान नापैत नहि, स्मृतिमे राखैत छथि; ई प्रकृतिक सभ संकेतकेँ भू-अभिलेखमे बदलबाक आग्रहक विरुद्ध सूक्ष्म उत्तर अछि। सामुदायिक संरक्षणक कथा स्थानीय अनुभव आ बाहरी तकनीकी मापनक आवश्यक संवाद उघारैत अछि।

४४. डोमक बाँसुरी

ग्राम-उत्सवक कार्यक्रम-पाँजिमे ‘डोमक बाँसुरी’ लेल निर्धारित समय सामाजिक मंच पर आवाजक अधिकारक प्रश्न अछि। आरम्भक मद्धिम सुर लोकक बातचीतमे हराइत अछि; सुनबाक वास्तविक प्रक्रिया मंचक घोषणा मात्रसँ सम्पन्न नहि होइत। शिक्षिका जे नाम आ बजबाक समय पाँजिमे राखैत छथि, हुनकर क्रिया स्मरणक संस्थागत आकार बनबैत अछि। अन्तिम पातक सरसराहटक लेल कोनो चुप्पीक आदेश नहि अछि—एहि दृश्यसँ संगीतक सन्मान सुनबाक स्वतन्त्र सावधानी रूपेँ व्यक्त होइत अछि।

४५. बरगदक नीचाँ रजिस्टर

‘बरगदक नीचाँ रजिस्टर’क मुनिलालक पाँजि अनौपचारिक सामुदायिक अभिलेख अछि। जल-वितरणक सरकारी कागज केवल पानि छोड़ल जाएबाक समय गनैत अछि; स्थानीय पाँजि पानि खेत धरि पहुँचल कि नहि, से सेहो लिखैत अछि। दुनू सत्यक भेद अधिकारक नाप बदलि दैत अछि। सुधाक छायाप्रति बनएबाक कार्य पारम्परिक स्मृतिकेँ आधुनिक अभिलेखसँ जोड़ैत

अछि। कथा राज्यक नकार नहि करैत, ओकर मापककेँ संशोधित करबाक प्रमाण-आधारित आग्रह रचैत अछि।

४६. जातिक कुर्सी

अट्ठाइस नील कुर्सीक समान रंग बीचोबीच पुरान जातिगत बैठक-क्रमक असमानता छिपबैत अछि। 'जातिक कुर्सी'मे भौतिक वस्तुक समानता सामाजिक स्थानक समानता नहि अछि। नीलू जेना कुर्सी फेर सँ राखैत अछि, ओ केवल सजावट नहि, सार्वजनिक स्थानक अदृश्य शासन बदलैत अछि। अन्तमे "स्थायी स्थान—कोनो नहि" लिखबाक क्रिया संस्थागत परिवर्तनक संकेत अछि। कथा प्रतीकात्मक दखलकेँ सान प्रत्यक्ष सुधारक रूपमे देखबैत अछि, पूर्ण सामाजिक मुक्ति घोषित नहि करैत।

४७. किरायेदार कन्या

'किरायेदार कन्या'मे रातिक फाटक आ साँकल स्त्रीक कामक समयपर समाजक निगरानीक औजार अछि। अनामिकाक आवागमनपर उठल प्रश्न पछाति नीलिमाक रात्रि-पालीक सामान्य क्रियासँ नव सन्दर्भ पबैत अछि। कथा निषेधक घोषणा वा सनसनीखेज विद्रोह नहि करैत; रामप्यारी देवीक अन्तिम व्यवहारमे धीमा परिवर्तन देखबैत अछि। रातिक साँकलक दोहरायल ध्वनि शुरुआतमे आशङ्काक जगबैत अछि, अन्तमे दैनिक जीवनक एक स्वीकृत आवाज भऽ जाइत अछि।

४८. गुप्त बचत

मालती देवीक 'गुप्त बचत' बक्सामे नहि, बाजारक अनेक छोट लेनदेनमे जमा होइत अछि। गोपाल साहुक पाँजि आ रेवतीक लाल कापी घरेलू स्त्रीक अनौपचारिक वित्तीय स्वायत्तताक ठोस साक्ष्य छथि। गुप्तताक कारण मात्र आशङ्का नहि, अपन निर्णय लेल बचल आर्थिक अवकाश अछि। लिफाफामे राखल आपात-राशि आ "हमर नामे लिखि दिअ"क पुनरावृत्ति बचतक निरन्तरताकेँ मात्र धनसंग्रहसँ अलग करैत अछि। कथाक सूक्ष्मता ई जे आर्थिक आत्मनिर्भरता बड़े-बड़े घोषणासँ नहि, किरानाक दैनिक हिसाब सँ प्रकट होइत अछि।

४९. स्टेशन जे नक्शामे नहि

'स्टेशन जे नक्शामे नहि'मे प्रभाकरक समय-सारिणी आ अभिलेखागारी मानसिकता एक एहन स्टेशनसँ टकराइत अछि जकर उपस्थिति आधिकारिक नकाशाक भरोसा तोड़ैत अछि। चौथ खिड़कीक दृश्य, कदम्बबारी आ पीयर पट्टक पुनरावृत्ति यथार्थक अनिश्चितता क्रमशः बढ़बैत अछि। कथा अप्राकृतिक दृश्यकेँ तुरन्त भ्रम वा चमत्कार घोषित नहि करैत। जखन दृष्टिक स्थान बदलैत अछि, वास्तविकताक मानचित्र सेहो बदलैत अछि; एहि कारण ई कथा संग्रहक समकालीन विस्मयात्मक शिल्पक एक अलग उदाहरण अछि।

५०. अपरिचित अपन घर

'अपरिचित अपन घर'मे विनयक घुरब परिचित वस्तुसभक बीच बदलल दैनिक व्यवस्थाक अनुभव अछि। ताला, चाभी आ ओसाराक बल्ब परिचित अछि, मुदा ककर जीवनक अनुसार घर चलैत अछि, से अनिश्चित। खाली कुर्सीकेँ एक औंठा आगाँ खिसकाएब अभ्यस्त स्थानक पुनर्निर्माणक नाजुक क्रिया अछि। कथाक मौनक मूल्य घरक 'असल मालिक' तय करबासँ बचैत अछि। स्वामित्व आ अपनत्वक भेद वस्तु-सज्जासँ पैदा होइत अछि, कोनो औपचारिक वाद-विवादसँ नहि।

कथा-त्रिधारा खण्ड-१

एहि दस कथा घरेलू ध्वनि, पगडंडी, रिक्त कॉपी आ गलत शब्द सँ आरम्भ भऽ बाढ़ि, विद्यालय, नदीक नकाशा आ हस्ताक्षर धरि पहुँचैत अछि। सुनबाक आ पढ़बाक अधिकार केन्द्रमे अछि।

५१. आवाज नहि देनिहार घंटी

'आवाज नहि देनिहार घंटी'मे लहेरियासरायक घरक धूसर पित्तरिक बटन दबौलापर कखनो नहि बजैत। तथापि ओकर निष्क्रियता बाल्यकालक स्मृतिसँ जुड़ल अछि। माधवीक घर छोड़बाक अवसरपर दुआर ठोकबाक तीन आवाज छोट उमेरक एक भीजल दृश्य घुरा दैत अछि। बिगड़ल उपकरणकेँ तुरन्त ठीक करब स्मृतिक अनपेक्षित मार्ग बन्द कऽ सकैत अछि—कथा एहि विरोधाभासकेँ संवेदनशील बनबैत अछि। एहि रचनामे ध्वनि तखन महत्त्वपूर्ण बनैत अछि जखन अपेक्षित यान्त्रिक ध्वनि अनुपस्थित अछि।

५२. उल्टा रास्ता

अर्चना झा सड़क नापबाक अधिकारी छथि, मुदा 'उल्टा रास्ता'मे सोझ सड़क आ पाछाँक मेड़क उपयोगक बीच भिन्न भूगोल बनैत अछि। सरकारी नाप, नब सफेद पट्टी आ सहज गति एक प्रकारक सुविधा दर्शबैत अछि; स्थानीय पगडंडी दोसर अनुभव खोलैत अछि। अर्चनाक अन्तिम निर्णय कोन बाट चुनब, से मात्र यातायातक प्रश्न नहि रहैत। कथा 'सीधापन' कैं प्रगतिक स्वत:सिद्ध प्रमाण मानबाक विरुद्ध अनुभवक बहुविध दिशाकैं रखैत अछि।

५३. खाली कॉपी

सेवानिवृत्त शिक्षक गोविन्दकान्त खाली कॉपी देखिकऽ पहिने नाम, वर्ग, विषय आ अनुशासनक अभाव खोजैत छलाह। अपन लेल नब कॉपी आयला पर हुनका 'रिक्तता'क अर्थ फेर समझबाक पड़ैत अछि। देवानन्दक संग भेँट पुरान मूल्याङ्कनक दृष्टिक सीमा देखबैत अछि: लिखल नहि गेल पन्ना निष्क्रिय जीवनक प्रमाण आवश्यक नहि। अन्तमे जिल्दपर नाम अछि, विषय नहि; ई शून्य व्यक्तिगत समयकैं निर्धारित पाठ्यक्रमसँ मुक्त करैत अछि। कथाक संवाद शिक्षा-संस्थाक पुरान आदतिक भीतरक सूक्ष्म पूर्वाग्रह खोलैत अछि।

५४. एक शब्द गलत

वसुधा अपन शल्यक्रिया-पछाति स्वस्थ होइत दीदी सरोजक मुँहसँ एक 'गलत शब्द' सुनैत छथि। प्रश्न शब्दकोशक शुद्धतासँ आगाँ दूनू बहिनक अलग समय, सम्बन्ध आ व्याख्याक अछि। वसुधाक दीर्घ आग्रह आ सरोजक प्रतिक्रिया पाठक कैं अनुभवक अनुवादक असफलता बुझबैत अछि। अन्तिम फोन बजला पर वसुधा एहि बेर बोलनिहारक अनुमान नहि लगबैत छथि; पहिने "कहू" बजैत छथि। भाषा सम्बन्धक निश्चित स्वामित्व नहि, दोसराक कण्ठ सुनबाक निमन्त्रण बनैत अछि।

५५. दीप मिझेबाक पहिने

आँगनमे चूनासँ खींचल पातर उज्जर रेखा देबाल बनैत-बनैत कुसुमक घरेलू सम्बन्धक सीमा बनि जाइत अछि। 'दीप मिझेबाक पहिने'मे भूमि-विभाजनक कागज आ साझा नालीक पानि एक-दोसरासँ असहमत छथि। मीनाक्षीक नाम मुखधरि आबि ठहरैत अछि; दैनन्दिन श्रमक अनकहल सम्बन्ध आधिकारिक रेखाक पार रहैत अछि। अन्तमे तीन ईंटक रिक्त भागसँ पानि बहबाक ध्वनि

विभाजनक सम्पूर्णता कैं भङ्ग करैत अछि। कथा सीमा हटएबाक चमत्कारी समाधान नहि, ओकर भीतर उपयोगक छोट बाट सुरक्षित करबाक उपाय देखबैत अछि।

५६. रातिक नाव

'रातिक नाव'क जगरनाथ मल्लाह लेल बाढ़िमे नाव चलौनाइ वीरताक दम्भ नहि, भार, रस्सी, दू हाथक कमी आ अन्हारक ठोस निर्णयक श्रृंखला अछि। दूरक दीप जानक संकेत छथि, मुदा प्रत्येक संकेत धरि पहुँचब तत्काल सम्भव नहि। नावमे बचल लाल सूतक टुकड़ी अन्तमे स्मृति-चिन्हक बदला अगिला बेर रस्सीक सिरा चिन्हबाक उपकरण बनैत अछि। ई रूपान्तरण कथा कैं आपदाक भावुक स्मारकसँ कर्मशील ज्ञानक आख्यान बनबैत अछि।

५७. नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक

भीजल पुरान विद्यार्थी-पाँजि सँ नाम बचएबाक कार्यमे शिक्षक शिवनारायणक स्मृतिक सीमा सामने अबैत अछि। 'नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक' शीर्षक पाठकक अपेक्षासँ खेलैत अछि; शिक्षक पात्र अपन विस्मरण लुकबैत नहि, नामक पुष्टि लेल सार्वजनिक पाँजिक सहारा लैत छथि। पुरान विद्यार्थी बीचक गणनाक ढंगसँ चिन्हाइत छथि। स्मरणक नैतिकता एतय सब नाम कण्ठस्थ रखब नहि, अनुमानक ठाम सत्यापन स्वीकार करब अछि। अन्तिम हलुक हास्य एहि गंभीर ज्ञान-नीतिकैं सहज बनबैत अछि।

५८. नदीक कागज

कमला नदीक धार बदललासँ गढ़िया टोलाक घर कागजक नकाशामे गायब छथि, मुदा जीवन सँ नहि। 'नदीक कागज'मे बसोबासक प्रमाण आन-आन कार्यालयक अलग पर्ची सँ जुटैत अछि। चम्पाक "जतय कागज खाली अछि" सँ गणना शुरू करबाक सुझाव अनुपस्थितिक औपचारिक इतिहासक विरुद्ध नागरिक अस्तित्वक आग्रह अछि। कथा नकाशाक विरोधमे नहि, ओकर संशोधनक अधिकारक पक्षमे अछि। नदीक चलैत भूगोलक संग अभिलेखक स्थिरता कतेक अपर्याप्त अछि, से प्रत्यक्ष होइत अछि।

५९. बालू घाट

‘बालू घाट’मे रेतक उत्खनन, नदीक सतही धारा आ गामक इनारक जलस्तर एक-दोसरसँ जुड़ैत छथि। हरिप्रिया रस्सीक सातम आ आठम गाँठ, पानिक रंग आ कछेरक बदलाव देखैत अछि; ज्ञान ई सूक्ष्म दोहरायल निरीक्षण सँ बनैत अछि। कथा प्रकृतिक संसाधनकेँ खाली बाजारक बालू नहि मानैत, भूमिगत जलक जीवित परिसंचरणक अंग देखबैत अछि। अन्तमे साफ बाल्टीक पानि आ रस्सीक अतिरिक्त गाँठ अलग रहि नहि सकैत। कथानकक प्रमाणमुखी बनावट पर्यावरणीय आलोचनाकेँ विश्वसनीयता दैत अछि।

६०. हस्ताक्षरक शक्ति

अँजोर महिला बचत मंडलीमे सभ महिला अपन नाम लिखब सीखने छथि। मुदा चन्द्रकला देवी पूछैत छथि—नामक ऊपर जे लिखल अछि, से पढ़ब सीखल गेल कि नहि? ‘हस्ताक्षरक शक्ति’मे कर्जक अवधि, छप्पन दिनक दायित्व आ बारह मासक बन्धन दस्तावेजक भीतर लुकायल असमानता बनि जाइत अछि। नीलम हस्ताक्षर सँ पहिने कागज घुमा कऽ पढ़ैत छथि। ई सान क्रिया प्रतीकात्मक साक्षरताकेँ वास्तविक निर्णयाधिकारमे बदलैत अछि। कथा अधिकारक सौन्दर्यशास्त्र नहि, विधिक भाषा बुझबाक ठोस अभ्यासक कथा अछि।

कथा-त्रिधारा खण्ड-२

मचान आ मोहर सँ अस्पतालक शून्य कुर्सी तथा प्रशासनिक दिनांक धरि सामाजिक लेखाक प्रश्न खुलैत अछि। संगहि चाहक कप आ बाँसक पुल मार्मिक दैनन्दिन अनुभव सुरक्षित रखैत अछि।

६१. मचानक राति

चारि खेतक संग बनल मचान साझा श्रमक चिन्ह अछि, मुदा रातिक रखवारी आ फसलक क्षति गिनबाक समय उत्तरदायित्व अलग-अलग करबाक पड़ैत अछि। ‘मचानक राति’मे पाँजि खाली राति दर्ज करैत अछि, जखनकि मेड़ आ भोरुक निरीक्षण घटना जाँचैत छथि। बुधनक प्रश्न अनौपचारिक स्मृतिक प्रमाणक्षमता उभारैत अछि। खेतक एक पसेरीक सम्भावित घाटा, रातिक पहर आ मचानक साझेदारी आधुनिक लेखाक प्रश्न बनैत अछि। आ अन्तमे हँसी

विवादक मिटाओनाइ नहि, प्रमाणक आधारपर बातचीत चालू रखबाक साधन अछि।

६२. घुरैत मोहर

पंचायत कार्यालयक पुरान मोहरक आधा गोल दाग ‘घुरैत मोहर’मे अस्पष्ट निर्णयक सांकेतिक रूप बनैत अछि। हरिनाथक दीर्घ कार्यालय-अनुभव कागजकेँ भरोसेमन्द मानबाक अभ्यस्त दृष्टि दैत अछि; रचनाक प्रश्न आ भीजल मोहरक चिन्ह निर्णय केँ पुनः जाँचबाक बाध्यता जगबैत अछि। ‘अधूर वृत्त’क रूपक एतय प्रभावकारी अछि: प्रशासनिक सत्य कतेको बेर पूरा देखाएबाक अभिनय करैत अछि, जखनकि शेष हिस्सा मनुष्यक जवाबदेहीसँ पूरा होइत अछि।

६३. प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य

जिला अस्पतालक ‘शून्य’ अंकित पुरान कुर्सी प्रतीक्षालयक गणना आ रोगीक चिन्ताक केन्द्र बनैत अछि। नब भवनमे सभ कुर्सी एकरूप देखाइत अछि, मुदा शून्यक संकेतक सामाजिक अर्थ स्वतः बनि जाइत अछि। कुर्सी प्राथमिक जाँच लेल स्थानान्तरित होइत अछि; पाँजिमे ओकर अंक ४९ होइत अछि, पीठपर शून्य बचैत अछि। “नहि, जाँच लेल बैसू”मे अधिकांश लोक निषेध छोडि ‘जाँच’ सुनैत अछि। कथा आधिकारिक संख्याक बदलैत उपयोग आ लोक-व्याख्याक अस्थिरता जाँचैत अछि।

६४. दिनांकक खाली खाँचा

बाढ़ि-सहायताक अङ्क-पटल एक क्षतिक लेल एकटा दिनांक माँगैत अछि; जानकी देवीक जीवनमे क्षति तीन दिनक क्रममे घटल। ‘दिनांकक खाली खाँचा’मे प्रपत्रक एक दिन आ रेनूक दिन-पाँजि बीच असहमति सत्यक अभाव नहि, तथ्यक बहुस्तरीयता अछि। पावती पर बारह अगस्त लिखित रहैत अछि, भीतर दस-एगारह-बारहक क्रम बचल अछि। कथा आकस्मिक आपदा कैं प्राविधिक-एककमे समायोजनक नैतिक कीमत सामने रखैत अछि।

६५. सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ

भूमि-अभिलेखक ‘मूल पृष्ठ’ अपरिवर्तनीय मानबाक नियम त्रुटिक स्थायित्व सेहो पैदा करैत अछि। ‘सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ’मे सीता देवीक नाम आ कृषि-

ऋणक अलग समय-सन्दर्भ देखबैत अछि जे सचाइ केवल एक तारीखक निर्देश नहि। सुरेश बाबू आ नेहाक संवाद अभिलेखकेँ समयमे बनल अर्थ मानबाक आग्रह अछि। “पाँजि देरिसँ बुझलक” कथनमे प्रशासनक भूलक मानवीय लागत अछि। मूल आ सुधार दुनू इतिहास छथि, मुदा दुनूक वर्तमान प्रभाव समान नहि।

६६. तीनटा खाली कुर्सी

‘तीनटा खाली कुर्सी’मे भोजक व्यवस्था बीच सम्मानपूर्वक राखल आसनसभ अन्त धरि खाली रहैत अछि। जनार्दन मिश्र आ अभयक क्रियाक माध्यमसँ अनुपस्थितिक सामाजिक भार अनुभव होइत अछि। पएर नीचाँ राखल फाटल पाहुन-पाँजिक पन्ना एक अस्थिर वस्तु-स्मारक बनैत अछि। कथाक महत्त्व ई नहि जे अनुपस्थित तीन लोकक जीवनक पूरा रहस्य खुलि जाइत; अपितु प्रतीक्षाक विधि, सफाइक बादो सुरक्षित खालीपन आ अनकहल सम्बन्धक जटिलता एक दृश्यरूप पबैत अछि।

६७. ओसाराक बल्ब

पहिल ‘ओसाराक बल्ब’मे रामप्रसादक ओसाराक टिमटिमाइत बत्ती, नरेशक मरम्मत आ घरक अन्हार मध्यस्थ घरेलू सम्बन्धक भाषा बनैत अछि। मुख्य स्विच काटि देलापर पूबक रसोइ सेहो बुझि जाइत अछि—एक बिन्दुक सुधार आन ठामक जीवनकेँ अस्थायी रूपसँ प्रभावित करैत अछि। अन्तमे बत्ती बुझलाक बाद खिड़की आ दुआरक नीचाँ सँ अल्प उजास बचल अछि। बीचक चौकी अन्हारेमे सेहो बीचमे रहैत अछि। ई शिल्प भौतिक व्यवस्था आ मनोवैज्ञानिक स्थिति बीच सावधान साम्य रचैत अछि।

६८. एक कप चाय कम

‘एक कप चाय कम’मे हरिनाथ साहक चाहक तीन कपसँ दू कप होनाइ पारिवारिक रिक्तता लेल एक अत्यल्प, किन्तु दीर्घगामी रूपक अछि। उल्टा राखल तेसर कप प्रतिदिनक समयसारिणीमे अनुपस्थित व्यक्तिक स्थान बचबैत अछि। पाँजिक नब खाँचामे सम्बन्धक आर्थिक अथवा व्यवहारिक व्यवस्था बदलैत अछि; मुदा कप तुरन्त सीधा नहि होइत। कथा शोक केँ अतिशय शब्दक बदला वस्तुक स्थितिसँ व्यक्त करैत अछि। शीर्षकक ‘कम’ संख्या दुःखक मापक नहि, उपस्थितिक बदलल तालिका अछि।

६९. बाँसक पुल

'बाँसक पुल'मे भीजल बाँसक ढीला फाँक रामजतनक पुरान चोट कारण अलग जोखिम बनैत अछि। हरिप्रसाद आ रामजतन दुनू पुलक बीच धरि पहुँचि एके फाँक पर झुकैत छथि। कथा पुलक सुरक्षितता कैं केवल मिस्त्रीक नाप नहि, चलनिहारक देहगत विविधतासँ जाँचैत अछि। एक कात आ दोसर कातसँ एके बिन्दुपर पहुँचबाक दृश्य सामाजिक सहयोगक घोषणा नहि, सामूहिक मरम्मतक साक्षात क्रिया बनि जाइत अछि।

७०. उजड़ल मेड़

'उजड़ल मेड़'मे देवनाथ आ रघुनाथक बीच बरखासँ बहल जमीनक सीमा विवादक कारण अछि। मुदा नब मेड़ बनबैत समय पानिक निकास लेल बीचमे ठाम छोड़बाक आवश्यकता स्पष्ट होइत अछि। निजी सीमा सुदृढ़ करब आ सामूहिक जलप्रवाह जोगायब एक-दोसराक विरोधी लक्ष्य नहि रहि जाइत। अन्तिम अलग बाट पकड़ैत पड़ोसी दू घण्टा पहिनुक विवादसँ भिन्न समझौता तक पहुँचैत छथि। एहि कथाक नैतिकता उपदेशमे नहि, मेड़क बीच बचल पानिक ठाममे लिखल अछि।

कथा-त्रिधारा खण्ड-३

अन्तिम दस कथा शिक्षा, पानि, मजदूरी, सीमा आ वंशावलीक अनेक रूप देखबैत अछि। समान शीर्षकवला 'ओसाराक बल्ब'क एहि खण्डक कथा क्रमाङ्क ७८ अछि, जकर प्रसंग क्रमाङ्क ६७ सँ भिन्न अछि।

७१. विद्यालयक जूता

'विद्यालयक जूता'मे मोती पासवानक बेटी सरिताक घिसल एड़ी आ नव जूताक लागतक संग खेतक बीया सुरक्षित राखबाक प्रश्न जुड़ैत अछि। ऊपर कड़ियामे बान्हल पाँच भुट्टा भोजनसँ अलग अगिला मौसमक बीया बनैत अछि। बालिका जे नब जूता पहिरि विद्यालय जाइत अछि, तकर पाछाँ परिवारक अनाज आ श्रमक विवेक अछि। कथा विद्यालयक पहुँच कैं केवल नामांकनक घटना मानब अस्वीकार करैत अछि। जूता आ बीया दुनू भविष्य लेल वर्तमानक हिस्से बचबाक प्रतीक छथि।

७२. पंचायतक नल

पंचायतक नल सार्वजनिक पानिक स्रोत अछि, मुदा फाटक आ निजी ओसाराक प्रवेश ओकर उपयोग सीमित करैत अछि। मालतीक “नल पंचायतक अछि” कथन अधिकारक स्पष्ट परिभाषा अछि। टाटक ओट बनलाक बाद पानि भरबाक बाट खुलैत अछि आ निजी आवासक गोपनीयता सेहो बचैत अछि। कहानी विवादकेँ केवल स्वामित्वक जीत-हार नहि, उपयोगक व्यवहारिक संरचना रूपेँ देखैत अछि। सामूहिक हक आ व्यक्तिगत मर्यादा बीच छोटे स्थापत्य-परिवर्तनसँ सम्भव समझौता एकर विशेष उपलब्धि अछि।

७३. मजदूरी

ईंट-भट्ठाक ‘मजदूरी’मे रामफलक परिवारक निर्माण-संख्या आ मालिकक हिसाब बीच बाकी रकम अदृश्य होइत अछि। चन्दा पाठशालामे शून्य आ जोड़ब-घटएबाक अभ्यास अपन परिवारक वास्तविक श्रम-संख्यासँ करैत अछि। “शून्य नहि, बाकी बदलैत अछि” कथन शिक्षा केँ जीवनक आर्थिक न्यायसँ जोड़ैत अछि। कथा बालश्रमक स्थितिकेँ सुन्दर नहि बनबैत; लेखाक ज्ञानक महत्त्व स्पष्ट करैत अछि, संगहि मजदूरी कटबाक अवशिष्ट असमानता सुरक्षित राखैत अछि। गणितक परिणाम आ सामाजिक परिणाम अलग छथि।

७४. छोट मास्टर

बेरोजगार स्नातक उपेन्द्र साँझक छोट ओसारामे बच्चासभकेँ पढ़बैत छथि। नियुक्ति-परीक्षामे हुनकर नाम नहि अएलाक बाद गामक मान्यता आ हुनकर शिक्षणक वास्तविक काजक अन्तर स्पष्ट होइत अछि। अन्तमे विवाहक कोलाहल बीच तीन बच्चा अलग उत्तर लऽ हुनका लग पहुँचैत छथि। ओ तुरन्त उत्तर नहि दैत, पहिने पूछैत छथि—‘अहाँसभ की सोचलहुँ?’ शिक्षकक गरिमा सरकारी पदक सूचीसँ बाहर परिभाषित होइत अछि। कथा बेरोजगारीक वास्तविक पीड़ा नहि लुकबैत, मुदा पेशागत उपलब्धिक अन्य मापक सुझबैत अछि।

७५. सात सीढ़ी

‘सात सीढ़ी’क प्रथम-पुरुष कथक छापाखानाक तरहड़िमे सात पएरक बाद आठम “ठक” सुनैत अछि। मशीन, काठ, काँटी आ भारक भौतिक कारण अन्ततः स्पष्ट होइत अछि, किन्तु भयक देहगत स्मृति तुरन्त नहि मिटैत। वैज्ञानिक व्याख्या आ अनुभवक अवशिष्ट असरक भेद कथा केँ साधारण रहस्य-

उद्घाटनसँ बेसी समृद्ध बनबैत अछि। अन्तमे सीढ़ी गिनब छोड़ल जाएब मानसिक स्वतन्त्रताक आरम्भ अछि, जखनकि देहक क्षणिक ठमक मनुष्यक स्मरण-प्रणालीक जटिलता देखबैत अछि।

७६. नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा

'नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा'मे निवेदनक लाल गत्ताक संचिका स्वयं कथक अछि। टूटल साँघ पर बाँस राखबाक छोट माँग अनेक मेज, टिप्पणी, मोहर आ "मार्गदर्शन अपेक्षित" सन वाक्य बीच घूमैत अछि। कथाक अप्रत्याशित कथावाचक प्रशासनिक विलम्ब कैं स्वत: दृश्यमान करैत अछि: कागज नहि, मनुष्य समय गमबैत अछि। अन्तमे अस्थायी संरचना निरीक्षणक बाद मूल समस्या पूर्ण रूपेँ हल नहि होइत। निर्जीव वस्तुक कथन-स्वर संस्थागत उत्तरदायित्वक आलोचना लेल असाधारण प्रभावी शिल्प अछि।

७७. सीमा

'सीमा'मे खेतक मेड़ आ सरकारी आवाजाही-पर्चीक रेखा एक नहि अछि। सामान्य गतिविधिक सूचीमे दूध, विद्यालय, पशुधन आ पानि मानल जाइत अछि; बहिनक घर भोजमे जेबाक प्रश्न असमंजसमे रहि जाइत अछि। कथा नियमक भाषामे 'सामान्य जीवन'क अर्थ निर्धारित करबाक अधिकारक समस्या उठबैत अछि। पुरान रंगीन पर्ची घरक कीलपर बान्हल रहब नियंत्रणक अनुभवक स्मृति अछि। प्रशासकीय निअम शिथिल भेलो ओकर सामाजिक असर तुरन्त नष्ट नहि होइत।

७८. ओसाराक बल्ब

दोसर 'ओसाराक बल्ब' दरभंगाक अनिमाक सिलाइ-काज पर केन्द्रित अछि; एकर कथ्य पहिल 'ओसाराक बल्ब'सँ स्पष्ट भिन्न अछि। बल्ब बुझला सँ रातिक कामक समयक असुविधा उजागर होइत अछि, मुदा नव बल्ब लगला सँ मात्र श्रमक मूल्य निर्धारित नहि होइत। अनिमा दोकानक पट्टीक बदला 'काजक समय'क सार्वजनिक संकेत चाहैत छथि। पुरान बल्ब फेकि देबाक निर्णय बदलल श्रम-संबंधक संकेत अछि। घरक ओसारा निजी सेवा सँ पहिचानल पेशागत स्थान बनबाक दिशामे बढ़ैत अछि।

७९. अनन्त पञ्जी

'अनन्त पञ्जी'मे वाचस्पति झा वंशावलीक पन्नासभ पढ़ैत छथि, मुदा नवजातक भविष्यकेँ पहिनेसँ लिखल सम्बन्धक भीतर पूर्ण रूपेँ बन्द नहि करैत। भीजल पञ्जीक पुरान अक्षर आ घरमे बच्चाक सम्भावित नामसभक बीच परम्परा आ अगिला जीवनक दूरी खुलैत अछि। ईशान नाम मनमे उठितो हुनकर "पहिने किछु दिन ओकरा देखू" उत्तर नव व्यक्तिक स्वायत्त अस्तित्वकेँ मान्यता दैत अछि। कथा वंशावलीक उपयोगक अस्वीकार नहि, ओकर अनन्त विस्तारक सीमा पर प्रश्न अछि।

८०. मिथिलाक पुस्तकालय

'मिथिलाक पुस्तकालय'मे ईशान मिश्र अपन प्रस्तावित पोथीकेँ खोजैत अनलिखल, हरायल आ मौखिक परम्पराक सम्भावित संग्रहमे पहुँचैत अछि। पोखरि, घाट आ लोकस्मृतिक परस्पर विरोधी साक्ष्य मिलाबय लेल सरल आख्यान गढ़बाक प्रलोभन रहैत अछि। अन्तमे ओ पाण्डुलिपिमे 'जहाँ स्रोत एक-दोसरसँ नहि मेल खाइत अछि' शीर्षकसँ नव पन्ना जोड़ैत अछि। ई निर्णय अनुसन्धानक नैतिक केन्द्र अछि। पातर पोथी बनबाक सम्भावना भौतिक अपूर्णता होइतो तर्कक ईमानदारी बढ़बैत अछि। शोधक भाषा लेल ई कथा संग्रहक विशेष आत्मालोचनात्मक रचना अछि।

नव पाँखि

दू किशोर कथामे प्रवेश-परीक्षाक गरिमा आ बाढ़िमे पुस्तक-संरक्षण अनायास उपदेश बनि नहि रहि जाइत; बालकक दृष्टि आ सामूहिक क्रियासँ निर्णयक अर्थ बनैत अछि।

८१. बैसाखीपर जिनगी

'बैसाखीपर जिनगी'मे अभियान्त्रिकी प्रवेश-परीक्षाक फाटक पर एक किशोरक बैसाखी अनेक लोकक नजरि आकर्षित करैत अछि। फूल अपन बेटाक गणित, मशीन खोलबाक कौशल आ जिज्ञासाक बात पहिने कहैत छथि; रतीशक अपेक्षा कठिनाइ सुनबाक छल। "बैसाखी ओकर परिचयक एक अंश अछि, पूरा परिचय नहि" कथाक केन्द्रीय पुनर्परिभाषा अछि। बालकक बिनु-शब्द मुस्की सामाजिक निरीक्षणक एक सहज, गैर-दयाभावी विकल्प अछि। दिव्याङ्गताकेँ समूची पहिचान बनएबाक विरुद्ध कथा गरिमामय दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि।

८२. बाढ़िमे बचल पोथी

‘बाढ़िमे बचल पोथी’मे ईशान, नीरज, सोनाली आ अर्पिताक सहयोगसँ बाढ़िक बीच पोथी-बचाउ कार्य सम्पन्न होइत अछि। पुस्तकक रक्षा केवल सामग्री सूखल रखब नहि; पोथीबाबाक कथन अनुसार अर्थ बुझब आ जीवनमे उपयोग करब सेहो आवश्यक अछि। भीजल किनारक दाग हटाएल नहि जाइत —ओ क्षतिक संग स्मृतियो रखैत अछि। कथा किशोर साहसकेँ चमत्कारी उपलब्धि नहि, समन्वित श्रम आ सांस्कृतिक उत्तरदायित्व रूपेँ प्रस्तुत करैत अछि। इएह कारण अन्तिम दाग नष्ट कएल जाएबाक वस्तु नहि, जीवित अनुभवक प्रमाण बनैत अछि।

तेसर भाग : समेकित आलोचनात्मक विवेचन

गाम, जाति, विश्वास आ सार्वजनिक प्रतिष्ठा

‘सिद्ध महावीर’ आ ‘जाति-पाति’केँ एक संग पढ़लापर संग्रहक पहिल खण्डक रूप-वैविध्य उद्घाटित होइत अछि। पहिल कथा मे विहित दान, मन्दिर आ रजिस्ट्रीक बहुअध्यायी नाटक अछि; दोसरमे लगभग एक नोकदार संवाद। मुदा दुनू प्रश्न एक अछि: सार्वजनिक प्रतिष्ठा ककरा कतेक सहज उपलब्ध अछि? अनमना दीदीक श्रमक बावजूद पवित्र स्थलक कायिक अधिकार छलपूर्ण दस्तावेजसँ हटि सकैत अछि। उधर पुलिस अकादमीक बराबर पद पर दू व्यक्तिक जातिनामक उच्चारणक सामाजिक मूल्य असमान अछि। धर्म आ जाति एतय केन्द्रीय विषय अवश्य छथि, मुदा कला ओकर सामाजिक व्यवहारक अन्तर्विरोध ठोस बनबैत अछि।

‘डोमा, बुधन आ...’ दीर्घ विचार-प्रवाहमे जातिक ऐतिहासिक अर्थपर विवाद उठबैत अछि। कथा ‘जाति’ आ ‘जाति-व्यवस्था’क भेद बुझेबाक प्रयास करैत अछि आ पाठकसँ ओहि तर्कक परीक्षण अपेक्षित रखैत अछि। एकर कथन-ऊर्जा बुधनक पीढ़ीगत त्यागसँ उठैत अछि; से यदि बिसरल जाए तँ पछिला दार्शनिक बहस असंबद्ध प्रबन्ध जकाँ देखि पड़ि सकैत अछि। एहि बिन्दुपर आलोचककेँ कथा-शिल्पक सीमा सेहो स्वीकार करबाक चाही: विचारोत्तेजक सामग्री स्वत: सदा कसीन कथानक नहि बनबैत।

'महिसबार ब्राह्मणक गाम' लोकवाङ्मयक सूची, पोखरिक नाप-नाम, पेशाक विवरण आ जातिगत भौगोलिक समूहसँ एक विस्तृत सांस्कृतिक नक्शा बनबैत अछि। नाचक गाथा, कीर्तन, रोजी-रोटी आ धार्मिक श्रमक परस्पर निर्भरता एकल जातिक आत्मवर्णनसँ बहुतेक बड़ सामाजिक ढाँचा उघारैत अछि। एतय अनुसंधानक सही विधि ई होयत जे पाठमे वर्णित परम्पराक साहित्यिक रूप मानल जाए, तत्पश्चात् स्वतंत्र इतिहासक जाँच अलग कएल जाए। बिना बाह्य प्रमाणक प्रत्येक विवरणकेँ मिथिलाक सम्पूर्ण समाजक निर्विवाद सामान्य इतिहास लिखब जोखिमपूर्ण होयत।

'जातिक कुर्सी' एहि दीर्घ सामाजिक इतिहासक एक लघुतर समकालीन रूप देखबैत अछि। वस्तु समान, रंग समान, दाम समान रहितो बैसबाक स्थान पुरान असमानता अनुवादित करैत अछि। एतय कथाकार खुल्लमखुल्ला नैतिक फैसला दऽ समाप्त नहि करैत; क्रम बदलबाक अभ्यास ठोस रूपसँ देखबैत अछि। परिणाम ई अछि जे समानता 'सभ एके कुर्सी पर छथि' नहि, 'ककरो स्थायी पीछे ठाम नहि' बनैत अछि।

स्मृति आ अभिलेख : जे लिखल अछि, जे नहि लिखल

स्मृतिक कथासभ एतय अतीतक शृङ्गारक बजाए पाठ-संशोधनक नैतिक समस्या पर केन्द्रित छथि। 'प्रतिलिपिकार'क सुधीन्द्र मूलक रिक्तता स्वीकार करैत अछि। 'अन्तिम पाठक'क रघुपति आगिक बाद हेरायल ग्रन्थ अपने लिखि देबाक प्रलोभनसँ पाछाँ हटैत छथि। 'मिथिलाक पुस्तकालय'क शोधकर्ता असहमत स्रोतक एक अलग पन्ना बनबैत अछि। तीनू कथामे सत्यक व्यावहारिक माप ई अछि जे जे नहि जनैत छी तकरा नहि जनबाक अवस्था मानेब। एहन स्वीकृति इतिहास-विमुखता नहि; इतिहासक नाम पर अनुमान लिखबाक विरुद्ध अनुशासन अछि।

'सूखल कमला', 'माटिक गन्ध' आ 'एक शब्द गलत'मे ई प्रश्न कागजसँ हटि देह, गन्ध आ आपसी सम्बोधनमे प्रवेश करैत अछि। कमलाक सूखल धार पुरान दिशा सुरक्षित नहि रखैत; वर्षाक गन्धक स्मरण बादमे गन्धसँ स्वतंत्र होइत; एक गलत शब्द सम्बन्धक सही सुनबाक कठिनाइ सामने रखैत अछि। पॉल रिकरक स्मृति आ विस्मरण विषयक दार्शनिक प्रश्न एहिठाम उपयोगी पृष्ठभूमि दैत अछि: अतीत केवल संग्रहीत चीज नहि, वर्तमानमे फेर घटैत व्याख्याक

घटना अछि। मुदा प्रत्येक स्मृतिका प्रतीकात्मक रूपान्तरण समान नहि; किछु ठाम शोक, किछु ठाम घर-परिवारक अनिर्णीत विवाद, किछु ठाम समाजक दस्तावेजी हिंसा प्रभावी अछि।

‘घर नम्बर पाँच’क खुलल खिड़की, ‘बहिनसभ’क कढ़ाइक अनभरल रेखा आ ‘सात मिनटक आवाज’क खाली गोल स्मृतिक एक विशेष शिल्प देबैत अछि। कथा अन्तमे रिक्तता मिटाएबक बदला ओकर अर्थ बदलैत अछि। खाली पन्ना मूलक कमी नहि रहि जाए, यदि ओ अगिला लिखनिहार लेल स्थान हो। घरक पुरान निर्णयक सम्पूर्ण स्रोत नहि बुझल जाय, मुदा उपयोगक बोध बाँचल रहि सकैत अछि। ई रिक्तताक सौन्दर्यशास्त्र अछि; तथापि रिक्तता जँ प्रत्येक कथाक तयशुदा समाधान बनि जाय तकर पुनरावृत्तिसँ शिल्प एकरूप होयबाक सम्भावना सेहो अछि।

पाँजि, मोहर, खाँचा आ राज्यक दृष्टि

‘गिनतीक बाहर’, ‘एकतीसम खाट’, ‘दिनांकक खाली खाँचा’ आ ‘प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य’ चारि भिन्न संस्थाक एक साझा प्रश्न उठबैत अछि: गिनतीक एकक ककरा कहल जाए? घरक संख्या परिवारक संख्या नहि, खाट सामानक संख्या कर्मचारिक आरामक माप नहि, एक दिनांक तीन दिनक क्षतिक अनुभव नहि, आ शून्य अंक कुर्सीक उपयोगक सरल निर्देश नहि। संख्याकेँ दोषी ठहराएब एतय अपर्याप्त अछि। असल समस्या संख्या बनबैत समय इस्तेमाल कएल गेल परिभाषा अछि।

‘सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ’ आर ‘बरगदक नीचाँ रजिस्टर’मे सरकारी अभिलेखक सत्य समयक संग परिवर्तनशील साबित होइत अछि। मूल पृष्ठक त्रुटि मेटाओल नहि जाइत, मुदा सुधारक प्रभाव वास्तविक जमीन आ ऋणक संसारमे प्रवेश करैत अछि। मुनिलालक स्थानीय पाँजि पानि छोड़ल जाएबाक समय सँ आगाँ पानि खेत धरि पहुँचबाक बात जोड़ैत अछि। एहि दुनू उदाहरणमे वैधता अलग प्रक्रिया सँ बनैत अछि। कथा अभिलेख-विरोधी नहि; सूक्ष्म, परिशुद्ध आ उत्तरदायी अभिलेखक पक्षधर अछि।

‘घुरैत मोहर’, ‘नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा’ आ ‘हस्ताक्षरक शक्ति’मे मोहर, संचिका आ हस्ताक्षर चलायमान अधिकार-संकेत छथि। संचिका मेजसँ

मेज घूमैत अछि, मुदा टूटल साँघक समस्या ओतहि रहैत अछि। महिला बचत-मंडली अपन नाम लिखैत अछि, मुदा कागजक भाषा नहि पढ़लापर ऋणक अवधि ओकर विरुद्ध जा सकैत अछि। एही प्रकारेँ मोहरक दाग निर्णयक आधा वृत्त बनि रहैत अछि। राज्य वा संस्था एतय अमूर्त खलनायक नहि; ओकर कार्य एक-एक वाक्य, पाँति, पावती, चूक आ विलम्बसँ पहिचानल जाइत अछि।

‘दस किलो चाउर’क फोटो-प्रमाण सभसँ तीक्ष्ण दृश्य-आलोचना अछि। एके बोरा फेर-फेर कैमरा सोझाँ पहुँचलाक बाद अनेक लाभार्थीक वितरणक छवि बनैत अछि। वास्तविक अनाजक अभाव आ तस्वीरक ‘पूरा’ दृश्यक द्वन्द्व मीडिया-साक्ष्यक सीमाक आलोचना करैत अछि। एहि कथा, ‘सीमाक गोली’क प्रत्यक्षदर्शी-विरोध आ ‘अदालत’क फोटो-फ्रेमकेँ संग पढ़लापर स्पष्ट होइत अछि जे दृश्य उपस्थितिक स्वतः सम्पूर्ण प्रमाण नहि अछि।

स्त्रीक श्रम, घरक उपस्थिति आ आत्मनिर्णय

संग्रहमे स्त्री-पात्रसभकेँ मात्र सहानुभूतिक पात्रक रूपमे पढ़ब ओकर सक्रिय ज्ञान कैँ कम करब होयत। ‘काजर’क शारदा देवी अपन चेहराक वर्तमान स्वीकार करैत छथि। ‘खुलल दरवाजा’क रेखा सार्वजनिक नजरिक बीच फेर चलबाक निर्णय लैत अछि। ‘मौन गवाही’क कुसुम अपन अनुभवक कथनाधिकार स्पष्ट करैत अछि। ‘किरायेदार कन्या’मे रात्रिक समय पर स्त्रीक वैध आवागमन प्रश्न बनैत अछि। एहि कथासभक साझी रचना अछि जे स्त्रीक अधिकार ककरो महान वक्तव्यसँ नहि, अपन दैनिक क्रिया पर निर्णयक माध्यमसँ उपस्थित होइत अछि।

‘गुप्त बचत’मे मालती देवीक पैसा अलग तिजोरीमे नहि, बजारक अनौपचारिक भरोसा-जालमे सुरक्षित अछि। ‘सिलाइ मशीन’क लीला आ दोसर ‘ओसाराक बल्ब’क अनिमा अपन श्रमकेँ परिवारक अघोषित सेवा रहय नहि देबाक दिशा खोजैत छथि। एहिसँ घरेलू अर्थशास्त्रक भीतर पैसा, समय आ श्रमक नामकरणक समस्या उभरैत अछि। अधिकार केवल कानूनक प्रश्न नहि; “ई काजक समय अछि” सन कथनसँ निजी श्रमक सार्वजनिक मूल्य स्थिर होएबाक आरम्भ होइत अछि।

'मातृवंश' स्त्री-उत्तराधिकारक परम्पराक भीतर सेहो अन्याय सम्भव होयबाक प्रश्न उठबैत अछि। पुरान स्त्रीक देखरेख पर आधारित घर-हस्तान्तरण बादमे जेठ बेटीक जन्मसिद्ध आदेश बनि जाइत अछि। 'बहिनसभ'मे श्रमक रेखा केकर हाथक, एहि विवादमे उत्पत्तिक एकल स्वामित्व जटिल होइत अछि। एही कारण एहि संग्रहमे स्त्री-स्वातन्त्र्यक अर्थ पुरुष-निर्मित व्यवस्था हटाकऽ स्त्रीक अपरिवर्तनीय अधिकार थोपब नहि, बराबरी, उत्तरदायित्व आ विवेकसँ व्यवस्था बदलब अछि।

नदी, मेड़, बीया : पर्यावरण आ जीविकाक नैतिकता

कमला नदी अनेक कथामे अछियै, मुदा सभ ठाम ओकर कार्य एक नहि। 'सूखल कमला'मे ओ स्मृतिक दिशा अछि; 'डूम' आ 'रातिक नाव'मे आपदा आ बचावक जीवन-परिस्थिति; 'नदीक कागज'मे घरक वैधता हेराएबाक चलैत भूगोल; 'बालू घाट'मे जलस्तर आ उत्खननक सम्बन्ध; 'सीमाक गोली'मे नाला आ रेखाक प्रमाणगत असहमति। एक नदीक प्रतीक बनि जाएबाक प्रलोभन एहि भिन्न अर्थसभकेँ समेटि लेत। आलोचना केँ भूगोलक प्रत्येक रूपकक विशेष कार्य चिन्हबाक चाही।

'कुर्थीक दालि', 'विद्यालयक जूता' आ 'एक बीघाक सपना' अर्थव्यवस्थाक एक दुःसाध्य नैतिक गणना करैत अछि। आजुक भोजन, अगिला वर्षक बीया, बालिकाक शिक्षा आ जमीनक स्वामित्व सभ सीमित साधन माँगैत अछि। छोट निर्णयक लागत अलग-अलग रूपमे अएल अछि: कुर्थीक कम बीया, कड़ियामे बान्हल पाँच भुट्टा, शिवनाथक हाथमे ओही पुरान नाप-रस्सी। कथा एहन लागत केँ लुकाबैत नहि; फलतः आर्थिक आशावादमे वास्तविक संघर्ष सुरक्षित रहैत अछि।

'बाँसक पुल' आ 'उजड़ल मेड़'मे समाधान निजी सीमा-नाश नहि, साझा जोखिमक सटीक मरम्मत अछि। पुलक ढीला फाँक चलनिहारक चोटग्रस्त पयरक अनुसार जाँचल जाइत अछि; मेड़ ठाढ़ रहैत अछि, मुदा बीचमे पानि जेबाक स्थान छोड़ल जाइत अछि। यएह "उपयोगक न्याय"क ठोस रूप थिक। 'पोखरिक रखबार'क वंशी महतो बगुलाक पएरक निशान नापब छोड़ि स्मरण

करैत छथि—प्रकृति पर अधिकारक प्रत्येक ज्ञान-सूत्र मापनसँ समाप्त नहि होइत।

स्वर, मौन आ रूपात्मक प्रयोग

गद्यक भीतर ध्वनि अनेक रूप लैत अछि। ‘राग’क गायन आ अभ्यास, ‘अधूरा गीत’क ठहराव, ‘डोमक बाँसुरी’क अनसुन्न सुर, ‘एक कप चाय कम’क मौन तथा ‘आवाज नहि देनिहार घंटी’क गैर-यान्त्रिक ठकठक अलग तरहक सामाजिक सुनब रचैत अछि। एहि कथासभमे निषेधात्मक क्रिया—नहि बाजब, नहि गाएब, नहि भरब—अर्थविहीन चुप्पी नहि, समुचित निर्णय भऽ सकैत अछि। मुदा ओकर कारण प्रसंगानुसार बदलैत अछि: निजता, शोक, प्रमाण, कला वा सामाजिक दर्जा।

‘अदालत’क गवाही-रूप, ‘नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा’क निर्जीव प्रथमपुरुष, ‘स्टेशन जे नक्शामे नहि’क विस्मयात्मक अनिश्चितता आ ‘सात सीढ़ी’क अनुभूत ध्वनि एहि चयनमे अलग कथाविधानक उदाहरण छथि। अन्यथा अनेक रचनामे तृतीय-पुरुषक निकटवर्ती दृष्टि, ठोस स्थानवर्णन, नाजुक संवाद आ अल्प-प्रकाशवला अन्त रहैत अछि। एतय कथाकार अनिर्णय केन्द्रीय शिल्प बनबैत छथि: अनेक बेर चाभी, पन्ना, चौकी, कप वा कुर्सी एक सीमित दृश्य बनि कथा समाप्त करैत अछि।

एहि तकनीकक उपयोग संग ओकर सीमा सेहो जाँचल जाएबाक चाही। वारंवार खाली पृष्ठ, अनकहल उत्तर, तिरछी रोशनी आ खुलल अन्त आबी तँ पाठक अगिला कथा मे सेहो एहेन आवर्तन अपेक्षित करैत अछि। अपेक्षा बनबाक बाद अपरिचयीकरणक ताजगी घटि सकैत अछि। तथापि रूपकक अलग-अलग सामाजिक कारण एही सम्भावित पुनरावृत्तिक जोखिम कैं कतेको ठाम सँभालैत अछि। सचेत सम्पादकीय पुनर्पाठ लेल रूपकक कार्य देखब अधिक उपयोगी अछि, केवल ओकर आवृत्ति गनब नहि।

दस स्रोत-खण्डक तुलनात्मक परख

‘पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’क चयन शैलीगत रूपसँ सभसँ असमान अछि। ‘जाति-पाति’ अति संक्षिप्त, जखनकि ‘महिसबार ब्राह्मणक गाम’ विस्तृत सामाजिक संसार रचैत अछि। ‘शब्दशास्त्रम्’ ज्ञान आ संस्कृतिक विवाद पर दीर्घ संवाद रखैत अछि। एकर तुलना ‘कथा-शतत्रयी’क लघु, कसेल रोजमर्राक यथार्थसँ करैत समय आकारक भेदकेँ काव्यगत हीनता या श्रेष्ठताक सरल तराजूमे नहि रखल जाए। संग्रहक एक प्रारम्भिक उपलब्धि कथात्मक दीर्घता आ बीहनि-कथाक सहअस्तित्व अछि।

‘स्मृतिक दोसर दिस’क दस कथा स्मरण, लेखन आ प्रमाणक झगड़ा अधिक विस्तारसँ खोलैत अछि। ‘इजोत — जनम-जनमक कथा’क पाँच रचना परस्पर सम्बन्धित भूगोल आ बहुपीढ़ीक स्वरक माध्यमसँ एक विस्तृत नैतिक संसार रचैत अछि; एहि खण्डक अंतर्गत ‘अदालत’ विशेष रूपेँ दस्तावेजी कथनक प्रयोग करैत अछि। ‘कथा-शतत्रयी’क तीन खण्ड छोट वस्तु-सम्बन्ध आ दैनिक संस्थासभ सँ समाजक ढाँचा परखैत अछि। ‘कथा-त्रिधारा’क तीन खण्डमे गृहस्मृति, पारिवारिक सम्बोधन आ कार्यालयक विधिकरणक मध्यम मार्ग अछि। ‘नव पाँखि’क दू कथा किशोर अनुभवक दृष्टिसँ गरिमा आ सांस्कृतिक रक्षा उठबैत अछि।

संग्रहक परस्पर संवाद लेल तीन जोड़ा विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। पहिल ‘सिद्ध महावीर’ आ ‘सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ’—दुनूमे लिखल दस्तावेज मनुष्यक भूमि-अधिकार बदलैत अछि, मुदा पहिलमे छल आ दोसरमे संशोधन-प्रक्रिया मुख्य अछि। दोसर ‘काजर’ आ ‘अनन्त पञ्जी’—दुनूमे पीढ़ीक सम्बन्ध अछि, मुदा पहिलमे वर्तमानक देहक स्वीकृति आ दोसरमे भविष्यक अनिर्धारित पहचान प्रश्न अछि। तेसर ‘ओसाराक बल्ब’क दू अलग कथा—पहिलमे घरक साझा उजासक स्थान-व्यवस्था, दोसरमे स्त्रीक श्रमक समय आ व्यावसायिक पहिचानक प्रश्न। एहि भेदसभकेँ बचाएब चयनित संग्रहक आलोचनात्मक न्याय अछि।

उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ मूल्याङ्कन

एहि चयनक सबसँ भरोसेमन्द उपलब्धि छोट सामाजिक वस्तुकेँ वैचारिक विवादक केन्द्र बनएबाक क्षमता अछि। कथा ‘अधिकार’ कहि छोड़ि नहि दैत; पूछैत अछि—कोन दरसँ भीतर जाएत? केकर जूता पाँजिमे चढ़त? ककर नामक आगाँ गलती मेटायल? ककरा चाउर भेटल वा मात्र फोटो खिंचल? ककर जूताक लागत बीयासँ चुकाओल गेल? वस्तु-प्रसंगक एहि विशेषतासँ सामाजिक यथार्थ उपदेशात्मक परिभाषाक बदला अनुभूत दृश्य बनैत अछि।

दोसर उपलब्धि ज्ञानक मर्यादाक सामर्थ्य अछि। अनेक कथा निर्णायक वाक्य हटबैत छथि, प्रमाणक अन्तर बचबैत छथि, आ गवाही कैं पात्रक दृश्यस्थिति सँ जोड़ैत छथि। ई आलोचनात्मक चेतना ‘प्रतिलिपिकार’क रिक्त कोष्ठक सँ ‘मिथिलाक पुस्तकालय’क असहमत स्रोत धरि फैलल अछि। एहि अर्थमे संग्रह साहित्यक रूपमे पढ़ब आ सामाजिक दस्तावेजक रूपमे सावधानी सँ उपयोग करब दुनूक शिक्षा दैत अछि।

सीमा सेहो अछि। किछु कथा बहुत छोट समयमे सामाजिक प्रश्न स्पष्ट करबाक प्रयास करैत अछि, जाहिसँ पात्रक मनोवैज्ञानिक विस्तार कम रहि सकैत अछि। किछु विचारप्रधान आख्यानमे दार्शनिक तर्क चरित्रक तत्काल क्रियासँ अधिक स्थान लैत अछि। आ किछु अन्तमे वस्तु-संकेतक मिलैत-जुलैत युक्ति बारम्बार अयल अछि। एहि आधार पर समूच साहित्यिक प्रयत्नकेँ कमतर नहि मानल जाए; मुदा प्रत्येक कथा स्वयंसिद्ध उत्कृष्ट अछि एहन निष्कर्ष सेहो आलोचनात्मक नहि होयत।

चयनक सीमा सेहो स्पष्ट अछि: दस स्रोतसँ छाँटल ८२ कथा मूल लेखकक सम्पूर्ण रचनाधर्मिता नहि होइत। तसर्थ एहि पुस्तकसँ लेखकक समूच कालानुक्रमिक विकास, ऐतिहासिक प्रभाव, प्रत्यक्ष सामाजिक स्वीकृति अथवा मूल स्रोत-पोथीक प्रत्येक अध्यायपर निर्णायक मत देब अनुचित होयत। ई समीक्षा चयनक भीतर देखाएबवला रूप, सामाजिक बोध आ भाषिक कार्यप्रणालीक अध्ययन अछि।

निष्कर्ष : रिक्त स्थानक उत्तरदायित्व

गजेन्द्र ठाकुरक एहि बयासी चयनित कथामे सामाजिक यथार्थक एक महत्त्वपूर्ण सूत्र “जकर नाम लिखल नहि” ओकर निरर्थकता नहि, उल्टे ओकर हकक प्रश्न अछि। अज्ञात निवासी, मूलक रिक्त कोष्ठक, नाम-विहीन विद्यार्थी, बिना नम्बरक बाट, अधिक खाट, असंगत क्षति-दिनांक आ अनलिखल भविष्य एके न्यायविचारक अनेक पृथक रूप बनैत अछि। एहि कारण कथा-जगत मे साहित्यक निःशब्द भाग सेहो प्रतिवाद करैत अछि।

परन्तु रिक्तता अपने-आपमे न त महिमामण्डित अछि, न समाधान। कतहु ओकरा भरब जरूरी अछि—मजदूरीक हिसाब, बाढ़ि-पीड़ितक नाम, पानिक वास्तविक उपयोग; कतहु ओकरा बचाएब जरूरी अछि—मूल पाण्डुलिपिक अनिश्चितता, व्यक्तिगत कथनक निजता, आगामी लिखनिहारक अवसर। ई भेद करबाक विवेक संग्रहक अनेक सफल कथाकेँ एक सूत्रमे जोड़ैत अछि। ‘की भरब’क संग ‘की नहि भरब’ पूछब आधुनिक कथा-समीक्षाक नैतिक चुनौती अछि।

संग्रहक दीर्घ अर्थ एहि कारण केवल सन्देश नहि, विचारक विधिमे अछि। कथा पाठककेँ ठोस दृश्य, विवादित प्रमाण, बदलैत वस्तु आ सीमित निर्णयक सामने रखैत अछि। जखन पाठक तुरन्त फैसला दैब छोड़ि पात्रक वास्तविक विकल्प आ ओकर कीमत पर ध्यान दैत अछि, तखने एहि चयनक आधुनिकता पूर्ण रूपेँ उभरैत अछि।

सन्दर्भ-पोथी

ठाकुर, गजेन्द्र। गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा। चयन आ सम्पादन: आशीष अनचिन्हार। विदेह, २०२६। समीक्षित मूल पाठ।

आनन्दवर्धन। ध्वन्यालोक। संस्कृत काव्यशास्त्रक मूल ग्रन्थ।

कुन्तक। वक्रोक्तिजीवितम्। संस्कृत काव्यशास्त्रक मूल ग्रन्थ।

Booth, Wayne C. The Rhetoric of Fiction. University of Chicago Press, 1961; 2nd ed., 1983.

Genette, Gérard. Narrative Discourse: An Essay in Method. Translated by Jane E. Lewin. Cornell University Press, 1980.

Bakhtin, M. M. The Dialogic Imagination: Four Essays. Edited by Michael Holquist; translated by Caryl Emerson and Michael Holquist. University of Texas Press, 1981.

Ricoeur, Paul. Memory, History, Forgetting. Translated by Kathleen Blamey and David Pellauer. University of Chicago Press, 2004.

Lemon, Lee T., and Marion J. Reis, editors and translators. Russian Formalist Criticism: Four Essays. University of Nebraska Press, 1965.

परिशिष्ट : कथानुक्रम

मूल चयन-संग्रहमे कथा जे क्रममे अछि, एतय समीक्षा सेहो ओही क्रममे राखल गेल अछि। समान शीर्षक दोहरल होय तँ क्रमाङ्क आ स्रोत-खण्ड देखल जाए।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

१. सिद्ध महावीर

२. डोमा, बुधन आ...

३. शब्दशास्त्रम्

४. महिसबार ब्राह्मणक गाम

५. जाति-पाति

स्मृतिक दोसर दिस

६. प्रतिलिपिकार

७. अन्तिम पाठक

८. सीमाक गोली

९. राजमिस्त्रीक गिरावट

१०. काजर

११.सूखल कमला

१२.माटिक गन्ध

१३.बहिनसभ

१४.घर नम्बर पाँच

१५.संगीत शिक्षक

इजोत — जनम-जनमक कथा

१६.मातृवंश

१७.राग

१८.अदालत

१९.डूम

२०.विदेह

कथा-शतत्रयी खण्ड-१

२१.दू अक्षर

२२.फोटो स्टूडियो

२३.एक जोड़ी जूता

२४.बाँटल छाँह

२५.दोसर दर

२६.सात मिनटक आवाज

२७.अधूर नाटक

२८.एकतीसम खाट

२९.ईंटक निशान

३०.गिनतीक बाहर

कथा-शतत्रयी खण्ड-२

३१.बाँधक ओहि पार

३२.जमीनक आवाज

३३.सिलाइ मशीन

३४.दस किलो चाउर

३५.अधूरा गीत

३६.माटिक बाँसुरी

३७.खुलल दरवाजा

३८.मौन गवाही

३९.कुर्थीक दालि

४०.एक बीघाक सपना

कथा-शतत्रयी खण्ड-३

४१.खाली थैला

४२.नाव बान्हल रहल

४३.पोखरिक रखबार

४४.डोमक बाँसुरी

४५.बरगदक नीचाँ रजिस्टर

४६.जातिक कुर्सी

४७.किरायेदार कन्या

४८.गुप्त बचत

४९.स्टेशन जे नक्शामे नहि

५०.अपरिचित अपन घर

कथा-त्रिधारा खण्ड-१

५१.आवाज नहि देनिहार घंटी

५२.उल्टा रास्ता

५३.खाली कॉपी

५४.एक शब्द गलत

५५.दीप मिझेबाक पहिने

५६. रातिक नाव

५७. नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक

५८. नदीक कागज

५९. बालू घाट

६०. हस्ताक्षरक शक्ति

कथा-त्रिधारा खण्ड-२

६१. मचानक राति

६२. घुरैत मोहर

६३. प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य

६४. दिनांकक खाली खाँचा

६५. सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ

६६. तीनटा खाली कुर्सी

६७. ओसाराक बल्ब

६८. एक कप चाय कम

६९. बाँसक पुल

७०. उजड़ल मेड़

कथा-त्रिधारा खण्ड-३

७१. विद्यालयक जूता

७२. पंचायतक नल

७३. मजदूरी

७४. छोट मास्टर

७५. सात सीढ़ी

७६. नस्तीक (संचिकाक) आत्मकथा

७७. सीमा

७८. ओसाराक बल्ब

७९. अनन्त पञ्जी

८०. मिथिलाक पुस्तकालय

नव पाँखि

८१. बैसाखीपर जिनगी

८२. बाढ़िमे बचल पोथी

तृतीय खण्ड

उपन्यास आ विस्तृत आख्यानक अध्ययन

आलेख २० · उपन्यास आ विस्तृत आख्यानक अध्ययन

पाँच प्रतिशत अन्हार

सारांश

‘पाँच प्रतिशत अन्हार’क आरम्भ दरभंगाक रेलवे पुलक नीचाँ रानी देवीक छोट दोकान आ हुनकर बेटा अमरेशक पाँच सय रुपैआक जुआसँ होइत अछि; कथा आगाँ बढ़ैत वित्तीय अपराध, बैंक-खाताक वास्तविक नियन्त्रण, अन्तरदेशीय कम्पनी, मानव-शोषण, समाचारक विश्वसनीयता, सरकारी उत्तरदायित्व आ न्यायालयमे प्रमाणक परीक्षा धरि पहुँचैत अछि। १२० क्रमाङ्कित अध्याय छह भागमे व्यवस्थित अछि; साठिम अध्यायक बाद एकटा अलग ‘उपसंहार : अगिला नाम’ सेहो देल गेल अछि। उपन्यासक विस्तार भौगोलिक अछि, मुदा ओकर नैतिक केन्द्र छोट घरेलू जीवनमे बसल अछि। एहि कृतिक महत्त्व केवल अपराध-रहस्य खोलब नहि, बल्कि अपराधक सम्बन्धमे ‘जे देखल गेल’, ‘जे सम्भव अछि’ आ ‘जे सिद्ध भेल’—एहि तीन अवस्थाक भेदपर कथात्मक आग्रह अछि। पाँच प्रतिशत कखनो कथित दलाली, कखनो सेवा-शुल्क, कखनो चुप्पीक मूल्य, आ अन्तमे शेष रहि गेल अस्पष्टताक रूपमे उभरैत अछि। एहि बहुअर्थी संकेतसँ शीर्षक मात्र अङ्कक नाम नहि रहि जाइत; ओ व्यवस्था, भय आ सत्यक अपूर्णताक कलात्मक रूपक बनैत अछि। कृतिक सर्वाधिक सफल प्रसंगसभ ओ अछि जाहिमे आर्थिक विवरण लोकक जीवनसँ भिड़ैत अछि—रानीक दोकान, शिवशंकर मिश्रक बेटी लेल बचत, मिराक पासपोर्ट आ अपन घरक आकाङ्क्षा, विवेक सूदक अपराधबोध, तथा बचल धन घुरेबाक अधूरी प्रक्रिया। मुख्य सीमासभमे कतिपय संवादक अत्यधिक स्पष्टीकरणधर्मी स्वर, एक जकाँ शुरू होइत मौसम-आधारित अध्याय-प्रवेश, बहुत पैघ पात्र-संख्या, आ साठिम अध्यायक उपसंहारक बादो कथा पुनः खुलबाक संरचनात्मक असंगति प्रमुख अछि। एहि सीमाक स्वीकार कृतिक गम्भीर उपलब्धिकेँ घटबैत नहि; ओकर शिल्पक वास्तविक प्रकृति स्पष्ट करैत अछि।

बीजशब्द

पाँच प्रतिशत अन्हार ·मैथिली उपन्यास ·आख्यान-रचना ·स्मृति ·सामाजिक इतिहास

एक विस्तृत आलोचनात्मक अध्ययन

पाँच प्रतिशत अन्हार

अङ्क, साक्ष्य, सत्ता आ मनुष्यक बीच

गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यास पर
मूल पाठाधारित आधुनिक साहित्यिक समीक्षा
मूल कृति : ‘पाँच प्रतिशत अन्हार’
प्रथम संस्करण २०२० • पुनरीक्षित संस्करण २०२६

विषय-सूची

अध्ययनक सार
१. कृतिक पाठ, समीक्षा-पद्धति आ परिसीमा
२. कथाबीज, विस्तार आ छह भागक स्थापत्य
३. पात्रक नैतिक संरचना आ सम्बन्धक विकास
४. कथन-शिल्प, काल-विधान आ रूपक
५. भारतीय काव्य-दृष्टि, नव्यन्याय आ आधुनिक पाठन
६. अपराध-सन्दर्भक यथार्थबोध आ कल्पनाक मर्यादा
७. शिल्पगत आपत्ति, पुनरावृत्ति आ सम्पादकीय सम्भावना
८. अध्यायक्रममे सूक्ष्म पाठ-परीक्षण : १२० अध्याय
९. समेकित मूल्याङ्कन : विधागत स्थान आ पाठकीय प्रभाव
१०. समीक्षाक अन्तिम निर्णय
पुस्तक-सन्दर्भ

अध्ययनक सार

‘पाँच प्रतिशत अन्हार’क आरम्भ दरभंगाक रेलवे पुलक नीचाँ रानी देवीक छोट दोकान आ हुनकर बेटा अमरेशक पाँच सय रुपैआक जुआसँ होइत अछि; कथा आगाँ बढ़ैत वित्तीय अपराध, बैंक-खाताक वास्तविक नियन्त्रण, अन्तरदेशीय कम्पनी, मानव-शोषण, समाचारक विश्वसनीयता, सरकारी उत्तरदायित्व आ न्यायालयमे प्रमाणक परीक्षा धरि पहुँचैत अछि। १२० क्रमाङ्कित अध्याय छह भागमे व्यवस्थित अछि; साठिम अध्यायक बाद

एकटा अलग ‘उपसंहार : अगिला नाम’ सेहो देल गेल अछि। उपन्यासक विस्तार भौगोलिक अछि, मुदा ओकर नैतिक केन्द्र छोट घरेलू जीवनमे बसल अछि।

एहि कृतिक महत्त्व केवल अपराध-रहस्य खोलब नहि, बल्कि अपराधक सम्बन्धमे ‘जे देखल गेल’, ‘जे सम्भव अछि’ आ ‘जे सिद्ध भेल’—एहि तीन अवस्थाक भेदपर कथात्मक आग्रह अछि। पाँच प्रतिशत कखनो कथित दलाली, कखनो सेवा-शुल्क, कखनो चुप्पीक मूल्य, आ अन्तमे शेष रहि गेल अस्पष्टताक रूपमे उभरैत अछि। एहि बहुअर्थी संकेतसँ शीर्षक मात्र अङ्कक नाम नहि रहि जाइत; ओ व्यवस्था, भय आ सत्यक अपूर्णताक कलात्मक रूपक बनैत अछि।

कृतिक सर्वाधिक सफल प्रसंगसभ ओ अछि जाहिमे आर्थिक विवरण लोकक जीवनसँ भिड़ैत अछि—रानीक दोकान, शिवशंकर मिश्रक बेटी लेल बचत, मिराक पासपोर्ट आ अपन घरक आकाङ्क्षा, विवेक सूदक अपराधबोध, तथा बचल धन घुरेबाक अधूरी प्रक्रिया। मुख्य सीमासभमे कतिपय संवादक अत्यधिक स्पष्टीकरणधर्मी स्वर, एक जकाँ शुरू होइत मौसम-आधारित अध्याय-प्रवेश, बहुत पैघ पात्र-संख्या, आ साठिम अध्यायक उपसंहारक बादो कथा पुनः खुलबाक संरचनात्मक असंगति प्रमुख अछि। एहि सीमाक स्वीकार कृतिक गम्भीर उपलब्धिकेँ घटबैत नहि; ओकर शिल्पक वास्तविक प्रकृति स्पष्ट करैत अछि।

१. कृतिक पाठ, समीक्षा-पद्धति आ परिसीमा

एहि अध्ययनक प्राथमिक आधार उपन्यासक संलग्न पुनरीक्षित मैथिली पाण्डुलिपि अछि। मूल अनुक्रमणिका, छहू भाग, अध्याय १ सँ १२०, बीचक अतिरिक्त उपसंहार आ अन्तिम दृश्यकेँ परस्पर जोड़ि पढ़ल गेल अछि। चरित्र अथवा घटनाक तथ्य जाहि अध्यायमे देखाइत अछि, तकरा पाठक तथ्यक रूपमे स्वीकार कएल गेल; जकर अन्तिम प्रमाण कथा स्वयं टारि दैत अछि, तकरा समीक्षामे सिद्ध घटना बनाओल नहि गेल। ई भेद एहि उपन्यासक आलोचना लेल विशेष आवश्यक अछि, किएक तँ कथा स्वयं अनुमानसँ प्रमाण धरि पहुँचबाक कठिनाइपर केन्द्रित अछि।

समीक्षाक पाँच परस्पर सम्बद्ध दृष्टि अछि। पहिल, कथावस्तु आ पात्रक अन्तर्विकास; दोसर, रस-ध्वनि आ अर्थक व्यञ्जना सम्बन्धी भारतीय काव्य-विचार; तेसर, कथाकाल, कथन-दृष्टि, बहुस्वर आ पाठकीय नैतिकता सम्बन्धी आधुनिक कथाशास्त्र; चारिम, नव्यन्यायक प्रमाण-विवेकसँ प्रेरित तर्क-परीक्षण; पाँचम, मिथिला केन्द्रित स्थानीय जीवनकेँ विश्वव्यापी धन-प्रवाह आ ऐतिहासिक संस्थागत सम्बन्धमे रखनिहार समानान्तर ऐतिहासिक पाठन। ई पद्धतिसभ कृतिक ऊपर आरोपित ‘प्रभाव’क घोषणा नहि, समीक्षाक विवेचनात्मक उपकरण अछि।

भारतीय काव्य-चिन्तनमे भरतक रस-संरचना आ आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्त ई बुझबाक बाट दैत अछि जे आर्थिक अपराधक कठोर विवरणो करुणा, भय, नैतिक वितृष्णा आ धैर्यक कलात्मक अनुभवमे कोना परिणत होइत अछि। पाश्चात्य कथाविश्लेषणमे जेरार जेनेतक कथाकाल आ सूचना-वितरण, मिखाइल बाख्तिनक बहुभाषिकता, वेन बूथक पाठकीय नैतिकता, आ पॉल रिकरक समय-आख्यान सम्बन्धी विचार विशेष उपयोगी अछि। नव्यन्यायक पक्ष, साध्य, हेतु, व्याप्ति, उपाधि आ अवच्छेदक सम्बन्धी विवेकक प्रयोग एतय उपमात्मक अछि; उपन्यासक पात्र वास्तविक दार्शनिक न्यायसूत्र लिखैत छथि, एहन दाबी नहि अछि।

कथाक कल्पित पात्र, संस्था आ विशिष्ट घटनाक्रमकेँ वास्तविक व्यक्ति अथवा संस्थाक विरुद्ध आरोप मानब अनुचित होएत। प्रकाशकीय विवरण स्वयं कथा-कल्पनाक एहि सीमाकेँ स्पष्ट करैत अछि। अपराध-विज्ञान सम्बन्धी बाह्य सन्दर्भ मात्र तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य प्रदान करैत अछि; ओ उपन्यासक भीतरक कल्पित लेनदेन अथवा व्यक्तिक ऐतिहासिक सत्यापन नहि करैत। पाठकीय मूल्याङ्कनमे असहज प्रश्न होएत तँ ओकरा प्रश्नक रूपमे रखब, उत्तरक रूपमे नहि।

२. कथाबीज, विस्तार आ छह भागक स्थापत्य

२.१ पाँच सयक साम्राज्य : अपराधक स्थानीय प्रवेश-द्वार

आरम्भमे पाँच सय रुपैआ अमरेश लेल घुरेबाक आशा, रानी लेल अनाज आ बकाया दाम, नीलिमा लेल बैंकक असामान्य आवागमन, आ अनाम मध्यस्थ

लेल सम्भावित कमाइ बनि जाइत अछि। एके राशिक ई चारि अर्थ उपन्यासक आर्थिक-नैतिक व्याकरण आरम्भहि मे स्थापित करैत अछि। रानीक दोकानक काँचक बरनी रेलक आवाजसँ काँपैत अछि; जीवनक ई छोट दृश्य अन्तमे घुरि अबैत अछि। एकर कारण कथा वैश्विक विस्तारक बादो अपन पहिल स्थानक स्मृति नहि हरबैत अछि।

पहिल बीस अध्यायमे जुआ-पृष्ठ ‘अम्बर-९’, बैंक-खाताक नाम आ वास्तविक संचालनक अन्तर, तथाकथित ‘डिजिटल गिरफ्तारी’क शिकार शिवशंकर मिश्र, विराज सहनीक सार्वजनिक जुआ-विरोधी छवि, पत्रकार रेवती कर्ण, विवेक सूदक संदिग्ध मृत्यु-प्रमाण, विज्ञापनक सांकेतिक खेल आ मिराक असुरक्षा—ई सभ समानान्तर रूपसँ प्रवेश करैत अछि। कथाकार आरम्भसँ अपराधी निश्चित करबाक आसान बाट छोड़ि साक्ष्यक आंशिकता देखबैत छथि। ई संयम कथावस्तुक नैतिक अनुशासन अछि, यद्यपि अनेक नव परिचयक कारण कतिपय पाठककेँ आरम्भमे पात्र-सम्बन्ध व्यवस्थित करब पड़ि सकैत अछि।

२.२ सात समुद्रक धन : स्थानान्तरित रकम, विस्थापित मनुष्य

एक्कैसमसँ चालिसम अध्याय धरि मकाउ, हांगकांग, माल्टा, ब्रुसेल्स, सूरत, बीजिंग आ अरीजोनाक प्रसंग खुलैत अछि। विदेशक स्थल केवल वैभव देखेबाक सजावट नहि; कम्पनी पञ्जीकरण, नियन्त्रणक असली केन्द्र, श्रमिकक कागज, प्रचार-सेवा आ कम्प्यूटरी अभिलेखक बीच परस्पर दूरीकेँ साकार करैत अछि। माल्टाक मुहर आ तीन तहक कम्पनी कथामे वैधानिक नाम तथा वास्तविक लाभार्थीक अलगावक रूपक होइत अछि।

एहि भागमे मिराक पासपोर्ट, समीरक सीमित प्रत्यक्ष जानकारी, मेघनाक गुम सहकर्मी तारा, लिन यूक गणनाक प्रश्न, लता देसाइक तकनीकी जाँच, आ एलिस वान्देरक दान-व्यय परीक्षण सँगहि चलैत अछि। कृति अंतरदेशीय वित्तीय जालकेँ एकटा सर्वज्ञ षडयन्त्रक रूपमे नहि, अलग-अलग अपूर्ण स्रोत सँ जोड़बाक संरचनामे प्रस्तुत करैत अछि। मुदा स्थान-बदलावक आवृत्ति नायकत्वकेँ वितरित करैत अछि; पाठककेँ स्थायी भावनात्मक केन्द्र खोजबाक प्रयत्न करय पड़ैत अछि।

२.३ चमकैत देह, कारी कारोबार : सार्वजनिक दृश्य आ निजी आघात

एकचालिसम अध्यायसँ पटना सम्बन्धी भीड़, भ्रामक दृश्य, मंच आ प्रकाशनक संघर्ष तीव्र होइत अछि। राजगीरक पुरान प्रशिक्षण केन्द्र विवेक सूदक कथाक्रमकेँ नव दिशा दैत अछि; जीवित गवाह, अज्ञात मृतकक पहिचान आ मूल लेखा-प्रतिलिपिक अन्तर आपसमे जुड़ैत अछि। गोदामक छापामारी आ कथित ‘दू हजार करोड़’क अर्थ प्रश्नांकित होइत अछि। एतय उपन्यासक प्रखर उपलब्धि ई अछि जे बड़ा समाचारक अङ्ककेँ स्वतः वास्तविक अपराध-लाभ नहि मानल जाइत।

साठिम अध्याय ‘अन्हारक हिसाब’मे कथा प्रथम व्यापक मुकाम पर पहुँचैत अछि, आ ओकर बाद ‘उपसंहार : अगिला नाम’ अगिला विज्ञापनक जन्म सूचित करैत अछि। मुदा एकसठिम अध्यायसँ फेर मूल कथाक विस्तार शुरू होइत अछि। संरचनात्मक दृष्टिसँ ई उपसंहार असल समाप्तिसँ बेसी मध्यवर्ती विराम अछि। ओकरा ‘अन्तराल’ अथवा ‘पहिल चक्रक परिणति’ बनौने कथा-पाठक अपेक्षा बेसी सुस्पष्ट होइत—यद्यपि वर्तमान पाठक ‘उपसंहार’ शब्दक समयपूर्वता स्वयं अपराध-जालक अनवरत रूप बदलबाक संकेत बनि सकैत अछि।

२.४ झूठक निर्यात : वस्तु, नाम आ श्रमिकक गवाही

एकसठिमसँ अस्सिम अध्यायमे निर्यातक कागज, मुहर, गोदामक ताला, चारि दिनक समयान्तर, श्रमिकक सुरक्षा, संस्थाक मिलैत-जुलैत नाम, कृत्रिम विज्ञापनक आवाज, शवक पहिचान, नोकरीक छल आ साक्षीक धमकीक ताना-बाना अछि। कथाकार एतय आर्थिक अपराधक अनुसन्धाने श्रम-संसार आ मनुष्यक आवागमनमे प्रवेश करैत अछि, ई देखबैत छथि। मालक तौल आ देहक मूल्यक समीपता सामाजिक दृष्टिसँ कठिन प्रश्न उठबैत अछि।

‘परिवारक मूल्य’मे रानी-अमरेशक बातचीत आ ‘नोकरीक झूठ सपना’मे असुरक्षित रोजगारीक आकर्षण, दुनू घटना अपराधक पुरान तथा नवा प्रवेश-द्वारकेँ स्पष्ट करैत अछि। एहि भागक प्रभाव तखन अधिक होइत अछि जखन कोनो मजदूर, बहिन अथवा गवाह अपन अलग स्वर पबैत अछि; यदा-कदा दफ्तरक विवेचनात्मक भाषण हुनकर स्वरपर हावी भऽ जाइत अछि।

२.५ लोकतन्त्रक अन्हार : जाँचक संस्थागत परीक्षा

एकासीमसँ एकसयम अध्यायमे अधिकारियोंक बदली, हेरायल फाइल, सम्पादकीय मौन, चित्रपर हमला, विपरीत समाचार, मृत्युक अस्पष्ट कारण, ठेके पर देल आदेश, आरोपितक अधिकार, अनुदानक स्रोत आ दस्तावेजक तेसर हस्ताक्षर कथाक केन्द्र बनैत अछि। एतय प्रश्न अपराधी पकड़बाक मात्र नहि, जाँच करनिहार राज्य, समाचारक संस्था आ सार्वजनिक मत स्वयं जाँचक योग्य अछि कि नहि—एहि पर केन्द्रित अछि।

‘आरोपितक अधिकार’ समूचा उपन्यासक नैतिक विश्वसनीयताक कसौटी अछि। जँ कृति केवल अभियोजनक अनुकूल प्रमाण रखैत, तँ ओकर पूर्वकथित विवेक खोखला बनि जाइत। आरोपित व्यक्तिक प्रतिवाद सुनेबाक अवसर देलासँ कथा अपराधक बचाव नहि करैत; ओ सत्य-निर्णयक शर्त स्पष्ट करैत अछि। ‘दू अखबारक दू सच’ आ ‘सम्पादकक मौन’ एहि शर्तकेँ जनसञ्चारक क्षेत्र धरि विस्तारित करैत अछि।

२.६ अन्तिम पाँच प्रतिशत : प्रतिपरीक्षा, राहत आ अपूर्ण इजोत

एकसय एकसँ एकसय बीसम अध्यायमे गवाहीक भाषा, मूल समय, कथित असली मालिक, फाड़ल पृष्ठ, बैंकक भीतरक विरोध, सात मेजपर साक्ष्य-विभाजन, सुधारल अभियोग, प्रतिपरीक्षा आ धनक सम्भावित वापसी क्रमशः सामने अबैत अछि। कथा धन-वसूलीकेँ सर्वसुलभ सुखान्त नहि बनबैत; शिवशंकरक पावती, रानीक सीमित बैंक-सुविधा, मिराक अपन घर आ अमरेशक सँभलल व्यवहारक बीच राहतक अलग-अलग आकार देखाइत अछि।

अन्तिम अध्याय रेल-पुल आ काँचक बरनीक कम्पनसँ आरम्भिक दृश्य फेर खोलैत अछि। आरम्भमे जे फोन दाँवक शिकार बनबैत छल, अन्तमे ओ सावधान जीवनक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत अछि। ‘अन्हार’ पूर्णतः समाप्त होइत नहि; ओकर नाम स्पष्ट करबाक क्षमता मात्र अर्जित होइत अछि। आधुनिक नैतिक उपन्यासक लेल ई अपूर्ण समाधान बड़का उपलब्धि अछि: सत्यक विजय सर्वज्ञता नहि, अपन ज्ञानक सीमाकेँ मानबाक सामर्थ्य अछि।

३. पात्रक नैतिक संरचना आ सम्बन्धक विकास

३.१ रानी देवी : नाममात्रक मालिकसँ बोलनिहार नागरिक धरि

रानीक चरित्र उपन्यासक सर्वाधिक विश्वसनीय केन्द्रसभमे एक अछि। पहिल परिचयमे हुनकर दोकानक साधारण व्यापार, बकाया राशिक चिन्ता आ अमरेशक खेलक प्रति असमर्थता अछि। पाँच हजार रुपैआक बदला हस्ताक्षर कएलाक कथामे केवल नैतिक दोष-अदोष नहि, आर्थिक बाध्यता, अपर्याप्त जानकारी आ छलक संयोग देखाइत अछि। बैंकमे सुजाता ठाकुर लग हुनकर प्रश्न—खाता हमर नामपर अछि तँ ओकर उपयोग ककर नियन्त्रणमे—कथाक प्रमुख राजनीतिक प्रश्नमे परिणत होइत अछि।

अन्तिम भागमे ‘रानीक पाँच रुपैआ’ पहिल अध्यायक ‘पाँच सय’क सँग अर्थपूर्ण व्यत्यास बनबैत अछि। विशाल वित्तीय आँकड़ा लघुतम जीवन-राशिक अर्थकेँ लीलि नहि पबैत। ‘खाता रोकल अछि, रोटी नहि’ सम्बन्धी हुनकर कथन कृतिक आर्थिक तत्त्वज्ञानकेँ दू ठोस शब्दमे सीमित करैत अछि। रानीक परिवर्तन सर्वज्ञ वित्त-विशेषज्ञ बनब नहि; अपन कागज, आत्मसम्मान आ जिबिकाक विषयमे प्रश्न करबाक साहस अछि।

३.२ अमरेश : लत, लज्जा आ जिम्मेदारी

अमरेशक पात्र बाल-उपभोक्ताक कमजोरीकेँ मात्र दण्डनीय वृत्ति नहि बनबैत। पहिल जीतक छवि, एक सयसँ अधिक हारक सन्देश, कर्जाक हिसाब छोड़ि देबाक प्रवृत्ति आ सहपाठीक प्रश्न—ई सभ ओकर निर्णयक मनोवैज्ञानिक यथार्थ रचैत अछि। डर ओकर जीवनमे केवल पैसा हेराएब नहि, सार्वजनिक अपमान आ ब्लैकमेलक खतरा सेहो अछि। मायसँ संवादक टूटल धागा धीरे-धीरे जुड़ैत अछि।

अन्तमे अमरेशक महत्त्व एतय नहि जे ओ कतेक रकम घुरेलक, बल्कि ई जे ओ स्क्रीनक लालच आ अपन वास्तविक जीवनक बीच अन्तर करबाक अभ्यास करैत अछि। ‘परिवारक मूल्य’ आ ‘रानीक पाँच रुपैआ’ ओकर परिवर्तनकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि। तथापि जुआ-लतक चिकित्सकीय वा सामुदायिक पुनर्वासक दीर्घकालिक कठिनाइ अपेक्षाकृत संक्षेपमे रहि गेल अछि; भविष्यक पाठमे एहि सामाजिक अनुभवक विस्तार सम्भव अछि।

३.३ नीलिमा झा आ अरुणिमा राव : ज्ञान आ अधिकारक अलग काज

नीलिमा वित्तीय लेखा, समय, कागजक स्रोत आ सम्भावित अर्थक स्तर पर सोचैत छलीह; अरुणिमा औपचारिक अनुसन्धान, स्थानीय सुरक्षा आ विधिक

सीमाक परीक्षण करैत छलीह। दुनूकेँ एके अदम्य जासूसक रूपमे मिलाओल नहि गेल अछि। नीलिमाक विवेक सूदकेँ जीवित देखबाक निजी इच्छा स्वीकार करब अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: जाँचक दृष्टि अपन पूर्वाग्रहकेँ सेहो पहचानैत अछि। अरुणिमा अमरेश, असमक छात्र, अन्य खाताधारी आ गवाहक बयान लेल स्पष्ट प्रक्रियाक आग्रह करैत छलीह।

एहि दूनू पात्रक बल सहमति मात्र नहि, पद्धतिक अन्तर अछि। तइयो अनेक प्रसंगमे लेखक हुनकर मुँहसँ समरूप सिद्धान्तात्मक वाक्य कहलाबैत छथि —‘स्रोत अलग’, ‘अनुमान प्रमाण नहि’, ‘पहिने सत्यापन’। वैचारिक रूपसँ उचित ई आग्रह पात्रक स्वतंत्र वाक्-लयकेँ कखनो कम करैत अछि। दूनूक व्यक्तिगत इतिहास, निजी भय आ निर्णयक असफलता जतय कथामे अबैत अछि, ओतय उपन्यास बेसी जीवित होइत अछि।

३.४ रेवती कर्ण : पत्रकारिताक उत्तरदायित्व

रेवतीक संघर्ष कतेक जल्दी खबर छपायब, एतबे नहि; कोन बात छपेबाक अधिकार अछि, ई प्रश्न अछि। फोटो सार्वजनिक भेने स्रोतक नाम सार्वजनिक नहि होइत; कम्पनीक नाम एकहि पत्रमे भेटलाक कारण वास्तविक स्वामित्व सिद्ध नहि होइत; उत्तर नहि भेटलासँ आरोप स्वत: सत्य नहि भऽ जाइत—ई विचार हुनकर संवादसभमे सुस्पष्ट अछि। रेवतीक पत्रकारिता आर्थिक अपराधक कथामे एकटा समानान्तर साक्ष्य-परम्परा बनैत अछि।

‘प्रकाशनसँ पहिने’ आ ‘दू अखबारक दू सच’ देखबैत अछि जे छपल शब्दो छलक उपकरण बनि सकैत अछि। पत्रकारक नामसँ झूठ बनाओल, विज्ञापनक आड़मे भ्रमक प्रसार आ सम्पादकक दबाव व्यक्ति आ संस्था दुनूक परीक्षा करैत अछि। रेवतीक चरित्र सफल होइत अछि जखन ओकर सावधानीक दाम समय, सुरक्षा आ प्रकाशनक सम्भावना रूपमे चुकाबय पड़ैत अछि।

३.५ विवेक सूद : जीवित गवाह, अस्थिर अतीत

विवेकक कथित मृत्यु आ वास्तविक पहिचानक प्रश्न रहस्यात्मक तकनीक अछि; मुदा ‘जीबैत गवाहक अपराधबोध’ पात्रकेँ चालाकीभरा मोड़सँ आगाँ लऽ जाइत अछि। गलत पहिचानल मृतदेहक अपन परिवार अछि, ई स्वीकार कथाक करुण सन्तुलन अछि। विवेकक बचल रहब कोनो सर्व-समाधान नहि; ओ

अपन मौनक दाम आ पूर्व निर्णयक विफलता सँ मुक्ति नहि पबैत। 'मूल लेखा आ प्रतिलिपि'मे हुनकर ज्ञान सेहो स्वतः प्रमाणित नहि मानल जाइत अछि।

३.६ मिरा आ आन स्त्री-पात्र : सुरक्षित गवाहीक अधिकार

मिराक पासपोर्ट, सहायता-गृह, सुजाताक खोज आ अन्ततः अपन घरक प्रसंग कृतिक मानवाधिकारपरक रेखाकेँ प्राण दैत अछि। गवाही देब ओकरे जीवनक एकमात्र उद्देश्य नहि; ओ भविष्य, निजता आ अपन इच्छा लेल स्वतंत्र स्थान चाहैत अछि। स्त्रीकेँ केवल निरीह पीड़ित बनाकऽ रखने कथा बेसी सहज होइत; उपन्यास हुनका सीमित मुदा वास्तविक निर्णयक अधिकार देबैत अछि। सोफिया, मेघना, एलिस, लता, ईशा आ सारा अलग पेशागत स्थिति मे उपस्थित छथि; हुनकर प्रश्नसभसँ विश्वव्यापी आर्थिक जालक तसवीर बनैत अछि।

ई बहुस्त्री दृष्टि कृतिक बल अछि, मुदा बहुत पात्रक संक्षिप्त प्रवेश हुनकर आन्तरिक संसारकेँ पूरा विकसित नहि करय दैत। 'दू स्त्रीक दूरी' आ 'साराक सत्य' सन अध्याय एहि अभावकेँ किछु दूर धरि पूरा करैत अछि, कारण ओतय कार्यस्थलक कागजक बीच निजी सम्बन्धक भाषा उभरैत अछि।

३.७ विराज सहनी आ आरव मलकानी : निश्चित अपराधीक सहज आकृति सँ अस्वीकार

विराजक जुआ-विरोधी अभियान आ व्यावसायिक सम्पर्क संशय पैदा करैत अछि; मुदा उपन्यास ओकरा पहिनेसँ अपराधक एकमात्र स्वामी घोषित नहि करैत। 'आरोपितक अधिकार', 'जाहि नामक आशा' आ 'सुधारल अभियोग' हुनकर सम्बन्धमे प्रमाणक बदलैत स्थिति देखबैत अछि। आरवक भूमिकामे अनुमोदन, कार्यालयी दबाव, भाड़ा-सम्बन्धी सेवा आ जिम्मेदारीक प्रश्न अछि। कोनो हस्ताक्षर एके समय कई स्तरक अर्थ धारण कऽ सकैत अछि; ई जटिलता एहिसँ उपजैत अछि जे कथा दुनू व्यक्तिक भूमिका परीक्षणक अधीन रखैत अछि।

४. कथन-शिल्प, काल-विधान आ रूपक

४.१ अनेक देश, एक असमान समय

उपन्यासक कथाविन्यास स्थान-परिवर्तनक तेज गतिक ऊपर बनल अछि। दरभंगा, पटना, दिल्ली, सूरत, मुम्बई, कोलकाता, राजगीर सँ कथा हांगकांग, मकाउ, माल्टा, ब्रुसेल्स, बीजिंग आ अरीजोना धरि फैलैत अछि। एहि फैलावमे समयक दू रूप अछि: प्रत्यक्ष घटना घटबाक समय आ ओकर कागजी अभिलेख बनबाक समय। 'चारि दिनक फरक', 'मूल समयक प्रतिमा', 'सतरह मिनट'क अन्तर आ 'हस्ताक्षरक तेसर हाथ' देखबैत अछि जे घटना आ प्रमाण एकहि घड़ीमे उपस्थित नहि होइत।

जेनेतक कथाकाल-विचारसँ देखल जाए तँ ई उपन्यास क्रमभङ्गक चमत्कारसँ बेसी पुनरावृत्ति आ अधूरा सूचनाक बादमे पूर्तिपर आश्रित अछि। पहिने देखल मुहरक दोसर अर्थ, पहिने सुनल व्यक्तिक दोसर परिचय, पहिने गनल राशिक दोसर गणना—ई सभ कथा-समयकेँ पीछे घुरि पुनः पढ़बाक हेतु बनबैत अछि। ई पुनर्पाठ पाठकीय जागरूकता बढ़बैत अछि; मुदा प्रायः प्रत्येक अध्यायक अन्तमे अगिला 'प्रश्न' छोड़ि देबाक चलन कखनो रचनात्मक अपेक्षाक बदला यान्त्रिक सूत्र बनि जाइत अछि।

४.२ ज्ञानक सीमित दृष्टि

कथा तेसर पुरुषमे चलैत अछि, मुदा अधिकांश दृश्य कोनो विशिष्ट पात्रक सीमित जानकारीक संग जुड़ल अछि। नीलिमा बैंकक तालिका देखैत छलीह, रानी अपन दोकानक तिथि चिन्हैत छलीह, समीर होटलक गलियार जानैत छलाह, लिन कम्प्यूटरी गणनाक विचित्रता देखैत छलीह। कियो सभक भीतर आ बाहरक सत्य एक बेरमे नहि जनैत। एहि कारण रहस्य केवल अपराधीक नाम छिपेबाक तकनीक नहि, ज्ञानक असमान वितरणक फल अछि।

तथापि कथाकारक व्याख्यात्मक स्वर अनेक ठाम पात्रसभसँ ऊपर उठि सामान्य नैतिक सूत्र सुनबैत अछि। जखन दृश्य स्वयं बहुते किछु कहि रहल हो, तखन ओहि सूत्रक पुनरुक्ति ध्वन्यात्मक सम्भावना घटबैत अछि। उदाहरणतः रानीक बरनी, मिराक रसोइघरक गन्ध आ शिवशंकरक विवाह-खर्चक कापी अपनहि पर्याप्त अर्थ वहन करैत अछि; हर दृश्यकेँ तत्काल निष्कर्षसँ बन्द करब जरूरी नहि।

४.३ अङ्कक बहुवचन

‘पाँच सय’, ‘पाँच हजार’, ‘पाँच प्रतिशत’ आ ‘दू हजार करोड़’ संख्यासभ एकहि अर्थव्यवस्थाक भिन्न माप नहि मात्र, भिन्न नैतिक दूरियाँ अछि। पाँच सय घरक रसोइ आ छात्रक लतसँ जुड़ल; पाँच हजार हस्ताक्षर करबैत छल; पाँच प्रतिशतक अर्थ अनुबन्धक बदलैत सन्दर्भमे विवादित अछि; दू हजार करोड़ शीर्षकक आकर्षण, फेर गणना-पद्धतिक त्रुटिक सम्भावना खोलैत अछि। ‘दू हजार करोड़क धुआँ’मे प्रचारित समग्र राशिक विरोधमे नव जमा, दाँव, निकासी आ फेर जमा कएल पाइक पृथक्करण विशिष्ट आलोचनात्मक उपलब्धि अछि।

एहि अंकशास्त्रक साहित्यिक पक्ष ई जे संख्या स्वयं मनुष्यक अनुभवक प्रतिनिधि नहि बनि सकैत। एकर मात्रा बढ़लासँ चोटक वास्तविकता अवश्य नहि बढ़ैत; रानीक पाँच रुपैआ शिवशंकरक एक लाख तिरासी हजार जकाँ भिन्न जीवन-समयक अर्थ धारण करैत अछि। एतय अर्थशास्त्र नैतिक स्मृतिक अधीन अनल गेल अछि।

४.४ प्रकाश, काँच, केवाड़ी आ कागज

काँचक बरनी, होटलक शीशा, कार्यालयक खिड़की, उज्जर सभागार, बन्द केवाड़ी, सफेद लिफाफा, फाटल पृष्ठ आ मुहर—ई वस्तुसभ पुनः पुनः उभरैत अछि। काँचक सतह पारदर्शिता सुझबैत अछि, मुदा प्रतिबिम्ब असली चेहरा छिपाओ सेहो सकैत अछि। उज्जरपन पवित्रताक प्रमाण नहि; दान-पेटी आ सभागारक उज्जर रंगक नीचाँ खर्चक प्रश्न बचल रहैत अछि। फाटल पृष्ठ केवल हेरायल जानकारी नहि, साक्ष्यक अनिश्चित उत्तराधिकार अछि।

दरभंगाक रेल-पुल समूचा पाठक विशेष आवर्ती बिम्ब अछि। ओकर कम्पन पहिने अमरेशक घरक असुरक्षा चिन्हित करैत अछि; अन्तमे ओहि सामान्य कम्पनक बीच दुनूक जीवनक अनुभव बदलल भेटैत अछि। कथाक भूगोल विशाल भेनेहुँ वस्तु-प्रतिध्वनिक ई छोट वृत्त रचनाकेँ बाँधि रखैत अछि।

४.५ भाषा आ अनेक आवाज

रानीक बोलचाल, अरुणिमाक औपचारिक प्रश्न, आरवक बहीखाता, पत्रकारक प्रकाशन-भाषा, विदेशी वकील अथवा कर्मचारीक अनुबन्ध, आ अमरेशक छात्र-मनोविज्ञान—ई भिन्न सामाजिक भाषासभ बाख्तिनक बहुस्वर-सिद्धान्तक

आलोकमे पढ़ल जा सकैत अछि। उपन्यासक एक विशेष गुण ई जे तकनीकी व्यवहार मैथिलीमे विचारयोग्य बनैत अछि; वित्तीय शब्दावली केवल विदेशी नामक भार नहि रहि जाइत।

मुदा भाषिक वैविध्यक संग पात्रगत स्वरक पृथक्करण सर्वत्र एक समान नहि। जखन लगभग प्रत्येक जाँचकर्ता एके सावधानीपूर्ण वाक्य-विन्यास दोहरबैत छथि, तखन पेशागत विश्वसनीयता पात्रक विशिष्ट बोलीपर भारी पड़ैत अछि। अधिक सफल दृश्यसभमे रानीक घरेलू उपमा, शिवशंकरक शिक्षकीय लज्जा, रेवतीक समय-दबाव आ मिराक निजी निर्णय अपन भाषासँ स्वतंत्र रंग भरैत अछि।

५. भारतीय काव्य-दृष्टि, नव्यन्याय आ आधुनिक पाठन

५.१ करुण आ भयानकक बीच आशाक सूक्ष्म स्वर

रानीक असहायता, शिवशंकरक अपमान, मिराक असुरक्षा आ अज्ञात मृतकक परिवार करुण अनुभव रचैत अछि। धमकी, बनावटी वर्दी, हेरायल व्यक्ति आ गुमनाम रकम भयक वातावरण बनबैत अछि। मुदा कृति भयकेँ केवल सनसनी बनाकऽ नहि छोड़ैत; पीड़ित जे दिन अपन कागज सुरक्षित राखैत अछि अथवा गवाहीक सीमा निश्चित करैत अछि, ओहि दिन धैर्य आ आत्मसम्मानक सूक्ष्म भाव उभरैत अछि। भारतीय रसदृष्टिसँ ई सम्बन्ध स्थूल वीरता नहि, संकटमे मर्यादा बचेनिहार साहसक रूपमे पढ़ल जाएत।

५.२ ध्वनि : ‘पाँच प्रतिशत’क अनकहल अर्थ

आनन्दवर्धनक ध्वनि-विचारक आलोकमे कृतिक मुख्य सांकेतिक शक्ति शीर्षकमे अछि। ‘पाँच प्रतिशत’क प्राथमिक अर्थ धनक अनुपात अछि; कथामे ओ कथित दलाली, जिम्मेदारीक हिस्सा, मौनक दाम, आ जानल सत्यक बाहर बाँचल धुँधलापन सुझबैत अछि। अन्तिम वाक्य ‘अन्हार’केँ नष्ट नहि, नामित करैत अछि। ताहि कारण उपन्यासक अन्त कथानकक विजय-घोषणासँ बेसी व्यञ्जना बनि उठैत अछि।

५.३ नव्यन्यायपरक प्रमाण-विवेक

कोनो पृष्ठपर नाम भेटब आ ओ नामक धारक अपराधी होएब—ई दूनू एकहि प्रतिज्ञा नहि। मुहर वास्तविक होइतो हस्ताक्षर नकली भऽ सकैत अछि; बैंकक खाता एक व्यक्तिक नामपर होइतो तकर संचालन अन्यक हाथमे रहि सकैत अछि। एहि भेदकेँ नव्यन्यायपरक दृष्टि सँ समझब उपयोगी अछि: पक्ष के अछि, साध्य की सिद्ध करबाक अछि, हेतु कथि आधारपर देल जा रहल अछि, आ ओकर सामान्य सम्बन्धमे किछु उपाधि अथवा सीमा तँ नहि? उपन्यास बारम्बार निर्णयक अवच्छेदक शर्त खोजबाक आग्रह करैत अछि।

कृतिक एकटा गम्भीर शक्ति ई अछि जे घटना, स्रोत, परिप्रेक्ष्य आ निष्कर्षक स्तर गड्डमड्ड करब रोकैत अछि। मुदा साहित्य अपन आलोचकसँ एतबो प्रश्न चाहैत अछि जे प्रमाण-विवेक पात्रक निजी संकटमे कतय रूपान्तरित होइत अछि। जखन केवल सैद्धान्तिक सावधानी लिखल रहि जाइत अछि, तखन कथा अनुसन्धान-प्रक्रियाक उदाहरण जकाँ बनि सकैत अछि; जखन रानी अपन खाता वापस चाहैत छलीह, तखन वैह सावधानी जीवन्त नाटकीय संघर्ष बनि उठैत अछि।

५.४ समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि

मिथिलाक घर-दोकानक आर्थिक इतिहास, भारतक बैंकिंग आ पत्रकारिताक सामाजिक व्यवस्था, तथा समुद्रपार कम्पनी-पञ्जीकरणक प्रक्रियाक कथा एक समयमे चलैत अछि। समानान्तर इतिहास पढ़बाक अर्थ एहि भिन्न स्थानसभकेँ एके केन्द्रक अधीन सपाट करब नहि; प्रत्येकक अपन सामाजिक काल, श्रम, असमानता आ अभिलेख-संस्कृति देखब अछि। दरभंगाक स्त्रीक हस्ताक्षर, सूरतक श्रमिकक वजन-बही आ माल्टाक कम्पनीक मुहर एकहि वैश्विक जालमे भिन्न शक्ति-स्थिति राखैत अछि।

एहि आधारपर ‘पाँच प्रतिशत अन्हार’ उपन्यास मैथिली साहित्यक भौगोलिक परिधि फैलौने अछि; मुदा ओकर सार्थकता केवल विदेशक नगरसभक संख्या नहि। जे दिनक घरेलू सम्बन्धक संकटकेँ अन्तरदेशीय कागजक संग साक्षात् टकराव देल जाइत अछि, ताहि ठाम वैचारिक विस्तार साहित्य बनैत अछि।

६. अपराध-सन्दर्भक यथार्थबोध आ कल्पनाक मर्यादा

एकहि भुगतान-पथ पर जुआ, छल-कपट अथवा अन्य कारोबारी प्रविष्टि भेटब सामान्य वित्तीय विवेचनमे परस्पर सम्बन्ध जाँचबाक आधार होइत अछि; मुदा ई तथ्य मात्र एके अपराध-सङ्गठन प्रमाणित नहि करैत। उपन्यास एहि मूल विवेकक रक्षा करैत अछि। कम्पनीक कानूनी नाम आ वास्तविक लाभार्थीक अन्तर, भर्ती आ आवागमनक कागज, पीड़ितक खाता-वापसीक बाधा, तथा समाचारमे सकल लेनदेनकेँ शुद्ध आय समझि लेबाक खतरा—ई सभ समकालीन आर्थिक अपराध-विमर्शसँ तुलनीय विषय अछि।

एहि तुलनाक सीमा स्पष्ट रहबाक चाही। कृतिक ‘अम्बर-९’ अथवा आन संस्थाक भीतरक कार्यविधि साहित्यिक कल्पना अछि; ओकरा कोनो वास्तविक अन्तरराष्ट्रीय प्रतिवेदनक घटनासँ एक-एक कड़ी मिला कऽ ऐतिहासिक सत्य मानल नहि जा सकैत। कृति जखन कानूनी प्रक्रिया सम्बन्धी सावधानी लिखैत अछि, ओ कथाक नैतिक यथार्थवाद बनबैत अछि, पाठक लेल विधिक सलाह नहि। अपराधी, गवाह, आरोपी आ पीड़ितक पृथक् अधिकार देखेबाक संयम एकर मौलिक विशिष्टता अछि।

७. शिल्पगत आपत्ति, पुनरावृत्ति आ सम्पादकीय सम्भावना

कृतिक पहिल आलोचनात्मक समस्या अत्यधिक व्याख्यात्मक पुनरुक्ति अछि। अनेक प्रसंगमे पात्र लगभग समान निषेध-वाक्य प्रयोग करैत छथि: नाम मिलल, मुदा सम्बन्ध सिद्ध नहि; छवि भेटल, मुदा सत्यापन शेष; पत्र आयल, मुदा मूल स्रोत चाही। वैचारिक स्तरपर ई बड़ आवश्यक अछि, किन्तु लगातार स्पष्ट कहलासँ पाठक स्वयं अनुमान करबाक अवसर घटैत अछि। बेहतर शिल्पमे किछु संवाद बिना निष्कर्ष राखि दृश्य, मुद्रा, वस्तु आ पात्रक अगिला काजपर अर्थक भार देल जा सकैत अछि।

दोसर सीमा अनेक अध्यायक वातावरण-प्रवेशक समानता अछि। क्रमाङ्कित १२० अध्यायक प्रारम्भिक सय अक्षरक सूचक-परीक्षणमे कम सँ कम ६७ अध्याय भोर, साँझ, राति, बरखा, घाम, उजास अथवा हवा सन समय-मौसमक संकेतसँ आरम्भ होइत अछि। ई आरम्भ सभ ठाम अशुद्ध नहि—किछु ठाम वातावरण कथानकक विरोधी अर्थ बनबैत अछि—मुदा घनघोर आवृत्तिसँ अध्यायक स्वतंत्र लय एक रूप होयबाक जोखिम अछि। कखनो सीधा संवाद,

कखनो दस्तावेजक अन्तर, कखनो पात्रक निर्णयसँ अध्याय खोलनाइ गति-सन्तुलन बढ़ा सकैत अछि।

तेसर प्रश्न पात्र-विस्तार अछि। रानी, अमरेश, नीलिमा, अरुणिमा, रेवती, विवेक, मिरा, विराज, आरव, समीर, मेघना, सोफिया, एलिस, लता, लिन आ अन्य अनेक नाम अपने-अपने दृश्य लऽ अबैत छथि। वैश्विक कथा लेल ई विस्तार आवश्यक लगैत अछि; तथापि किछु गौण पात्र केवल एक सुरागक वाहक रहि जाइत छथि। कथाक भावनात्मक ताप तखन बढ़ैत अछि जखन हुनकर व्यक्तिगत परिस्थिति अपूर्ण जानकारीक संग जुड़ैत अछि।

चारिम समस्या मध्यवर्ती ‘उपसंहार’क नामकरण अछि। साठिम अध्यायक बाद समाप्ति-सूचक शीर्षक आ फेर एकसठिमसँ दीर्घ नव प्रसार पाठकीय करारमे अनिश्चितता आनैत अछि। पाँचम समस्या विज्ञापन, कागज आ धमकीक पुनरावर्ती अन्त्य-बिन्दु अछि; अध्यायान्तपर प्रश्न छोड़ब सर्वदा पर्याप्त कलात्मक परिवर्तन नहि। छठम, वास्तविक सम्पादनमे मूल अनुक्रमणिकाक मुद्रित पृष्ठ-सङ्केतकेँ नव विन्यासक अनुसार पुनः मिलान आवश्यक अछि; कथात्मक टिप्पणीसँ अलग ई प्रकाशन-सजगताक विषय अछि।

एहि आपत्तिसभक बावजूद उपन्यासक अन्तिम चयन उल्लेखनीय अछि। मृतकक गलत पहिचानकेँ केवल रहस्य-तोड़क उपकरण नहि बनाओल गेल; एकटा आन परिवारक हानि देखाओल गेल। आरोपितकेँ सुनबाक अधिकार देल गेल। राहत आ धन-वापसीकेँ प्रक्रियासँ जोड़ल गेल। एहि कारण कथा न्यायकेँ केवल प्रतिशोधक मनोवृत्तिसँ अलग करैत अछि।

८. अध्यायक्रममे सूक्ष्म पाठ-परीक्षण

एहि खण्डमे प्रत्येक क्रमाङ्कित अध्यायक स्वतंत्र आलोचनात्मक संकेत देल जा रहल अछि। एहि निरीक्षणसभक उद्देश्य कथासार फेर लिखब नहि; प्रत्येक अध्यायमे कथनक कोनो विशिष्ट विकल्प, नाटकीय तनाव अथवा अर्थ-परिवर्तनकेँ पहचानब अछि।

८.१ पहिल भाग : अध्याय १–२०

१. पाँच सयक राति

रेल-पुलक कम्पन, पाँच सयक लुभावन आ रानीक दोकानक सीमित कमाइ एकहि आरम्भिक दृश्यकेँ सामाजिक गहराइ दैत अछि। दिल्लीक नीलिमासँ जुड़िते पारिवारिक चिन्ता खाताक वास्तविक नियन्त्रणक प्रश्न बनैत अछि। छोट हानिसँ विराट जाल धरि पहुँचबाक कथा-बीज अत्यन्त प्रभावी अछि।

२. भारत लेल खुलल, सभ लेल बन्द

‘अम्बर-९’क भारतीय रुपैआवला प्रदर्शन आ दूसरे देशक सम्भावित निषेधकेँ कथाकार सिद्ध तथ्य नहि बनबैत। जुआ आ तथाकथित डिजिटल गिरफ्तारीक भुगतान-पथक समानता देखबैत अलग अपराध-पद्धतिक भेद सुरक्षित राखब उपन्यासक अनुसन्धानीय विवेकक पहिल कठोर परीक्षा अछि।

३. मृत लोकक हाजिरी

विवेक सूदक जलनक निशान आ मृत्यु-प्रमाणपत्रक अन्तर सघन रहस्य रचैत अछि। मुदा असल गहराइ एहि स्वीकारमे अछि जे गलत पहिचानल शवक सेहो अपन नाम आ परिवार होएत। अमरेशक धमकी आ शर्मक प्रसंग सनसनीकेँ मानवीय परिणाममे बदलैत अछि।

४. खाताक दोसर मालिक

रानीक बैंक-जात्रा सामाजिक वर्ग-भेदक सूक्ष्म दृश्य अछि: साफ फर्शपर अपन पयरक माटिक डर आर्थिक संस्थाक आन्तरिक दूरी उघारैत अछि। सुजातासँ बातचीत कानूनी नाम आ वास्तविक अधिकारक अन्तर स्पष्ट करैत अछि। ई अध्याय एकटा गम्भीर नागरिक प्रश्नपर समाप्त होइत अछि।

५. झूठक अदालत

शिवशंकरक बेटी लेल बचतक कापी बनावटी न्यायालयक आतंकक प्रतिवाद अछि। रेवतीक विराज सहनी सम्बन्धी खोज कथामे सार्वजनिक सदाचारक मुखौटाक सम्भावना उठबैत अछि, मुदा आरोप स्थगित राखैत अछि। घरेलू लज्जा आ सार्वजनिक दृश्य दुनूक समानान्तरता शक्तिशाली अछि।

६. धनक पहिल नक्शा

चारि रङ्गक पेंसिल रहितो नक्शापर तुरन्त रङ्ग नहि भरब जाँचक सौन्दर्यशास्त्र अछि। पात्र पहले नाम नहि, लोकक वास्तविक स्थिति खोजय चाहैत अछि। ई दृश्य तथ्य आ रेखाचित्रक बीच सावधान दूरी बनबैत अछि, यद्यपि व्याख्या किछु बेसी प्रत्यक्ष होइत अछि।

७. अपरिचित हस्ताक्षर

सूरतक अदिति राणे जेना गोपनीय बिलक प्रतिलिपि तत्काल साझा नहि करैत छलीह, ताहिमे अधिकारक सीमा आ प्रमाणक संरक्षण दुनू उपस्थित अछि। अपरिचित हस्ताक्षर कागजक जीवन आ वास्तविक व्यक्तिक जीवनक भयावह दूरी देखबैत अछि।

८. अमरेशक हिसाब

अमरेशक फाइल गणितक पृष्ठ जुआक मनोविज्ञान लेल उत्कृष्ट दृश्य-बिम्ब अछि। जे छात्र अङ्क जोड़बाक शिक्षा पबैत अछि, ओ अपन हानिक हिसाब टारैत अछि। दबावक बीच विश्वासपात्र संवादक सम्भावना पात्रकेँ केवल गलतीक प्रतीक नहि रहय दैत।

९. आधारक दुरुपयोग

आधार-संबन्धी कागजक दुरुपयोगक आशङ्का बैंकक पाँति आ सामान्य नागरिकक अनुभवसँ जुड़ैत अछि। कर्मचारी अपन नामसँ बयान देबाक दिशा मे बढ़ैत अछि। एहि ठाम संस्था केवल भ्रष्ट संरचना नहि, विवेकशील व्यक्तिसभक विरोधाभासी कार्यक्षेत्र अछि।

१०. पाँच प्रतिशतक पहिल पत्र

पाँच प्रतिशतक पत्र सार्वजनिक अभियानक खर्चसँ सम्बद्ध प्रश्न पैदा करैत अछि। रेवतीक मनमे रानीक एकटा छोट आग्रह बचल रहब आर्थिक सूत्रकेँ मनुष्यक स्वरतक घुरबैत अछि। शीर्षकक राशि अपन पहिल स्पष्ट नैतिक बहुअर्थिता प्राप्त करैत अछि।

११. हांगकांगक खिड़की

हांगकांगक मेघना आ तारा लामाक प्रसंग स्थानीय बैंकक सीमा भाँगैत अछि। गलत दिनांकक सन्देश आ अनुत्तरित फोन ‘हेरायल व्यक्ति’क कथा शुरू करैत अछि। शहरक उज्जर इमारत आ व्यक्तिक अदृश्यता एक-दोसराकेँ अर्थ दैत अछि।

१२. अन्तिम चाहक गिलास

आधा चाहक गिलास वस्तुगत उपस्थिति आ मानवीय अनुपस्थितिक असरदार बिम्ब अछि। मेघना ओकरा तुरन्त अपराधक निर्णायक सबूत नहि मानैत छलीह। हुनकर बेचैनी वस्तुक विवरणसँ उपजैत अछि, बिना अतिनाटकीय घोषणा कएने।

१३. कागजक दोसर भाषा

कागजक दोसर भाषा विदेशी अनुबन्ध आ स्थानीय विज्ञापनक शब्दार्थक अन्तर खोलैत अछि। संदर्भ-संख्या मिललासँ स्रोत समान भऽ जाएत, एहि भूलसँ कथा बचैत अछि। भाषाक अनुवाद एतय तकनीकी सेवा मात्र नहि, सत्य-निर्णयक गम्भीर शर्त बनैत अछि।

१४. समर्थनक मूल्य

‘समर्थनक मूल्य’ सार्वजनिक मंचपर व्यक्त नामसभ आ सम्भावित लाभक सम्बन्ध जाँचैत अछि। पुरान सूचीमे नवा तिथिक उपस्थिति सघन कथात्मक संकेत अछि। तथापि मंचक समाजसँ बेसी कागजक विवरणपर केन्द्रित दृष्टि किछु भावनात्मक विस्तार सीमित करैत अछि।

१५. चुप्पीक वेतन

चुप्पीक वेतन आर्थिक लाभ आ संस्थागत मौनक सम्बन्ध सुझबैत अछि। काटल पृष्ठक प्रश्न प्रारम्भिक विवेक-पोथीक फाटल अंशसँ प्रतिध्वनित होइत अछि। शीर्षकक नैतिक भास अछि: चुप्पी स्वतन्त्र अनुपस्थिति नहि, सम्भवतः मूल्य पाबि सकनिहार क्रिया बनैत अछि।

१६. सफेद लिफाफा

मुम्बईक आरवक सफेद लिफाफा वैध सेवाशुल्क आ अभिलेख नष्ट करबाक सन्दिग्ध आग्रहक भेद उभारैत अछि। अलग शहरक ध्रुव नामक व्यक्ति संग तुरन्त सम्बन्ध नबनाओल गेल अछि। ई स्थगन कहानीकेँ अधिक विश्वसनीय, यद्यपि धीम गतिवला, बनबैत अछि।

१७. वर्दीक नकली चेहरा

शिवशंकरक अनुभवमे नकली वर्दीक अधिकार-संकेत कतेक गहिर मनोवैज्ञानिक हिंसा करैत अछि, से उभरैत अछि। मोबाइल लग लिखल ‘पहिने अपन लोकसँ बात करू’ सन भावक कारण भयपर विजय चमत्कारी पुलिस-कार्रवाई नहि, पारिवारिक संवाद बनैत अछि।

१८. विज्ञापनक पाछाँ

विज्ञापन-नियन्त्रण आ प्रकाशनक दबाव कबीर आ प्रणयक निजी सम्बन्धसँ टकरबैत अछि। पेशागत अनुसन्धानक कारण कोनो व्यक्तिक निजी जीवन सार्वजनिक करबाक बाध्यता नहि, एहि प्रश्नक स्पष्ट नैतिक महत्त्व अछि। एतय उपन्यास अपराध-गाथासँ निजताक गम्भीर विमर्श धरि पहुँचैत अछि।

१९. विलासी विमानयात्राक चुप्पी

विलासी विमानयात्राक दृश्य खर्चक चमक आ साक्षीक असुरक्षाक विरोध तैयार करैत अछि। समीरक ‘जे देखलहुँ, ओ कहब’क आग्रह साक्षी-विश्वसनीयताक मानवीय आधार अछि। परदेशक वैभव सजावटक बदला श्रमक असमान स्थान पहचानयमे सहायक होइत अछि।

२०. शीशाक भीतर चेहरा

होटलक ऊपरी विलास आ नीचाँक सेवा-द्वार समाजक दू स्तर दृष्टिगत करबैत अछि। ‘अपन कागज घुराउ’क स्त्री-स्वर मिराक आगामी कथा लेल निर्णायक संकेत बनैत अछि। भागान्त मे प्रश्न रोमाञ्चसँ बेसी व्यक्तिक आवागमनक अधिकारक रूपमे उभरैत अछि।

८.२ दोसर भाग : अध्याय २१–४०

२१. मकाउक नाचघर

मकाउक नाचघरमे समीरक बयानक सीमा जाँचब कथा-तत्त्व अछि। नीलिमा प्रत्यक्ष देखल घटना आ सूचीमे जोड़ल चिह्नक स्रोत अलग राखैत छलीह। पर्यटनक चमक आ सेवाकक्षक श्रम-जीवनक बीच प्रतिकूल समानान्तरता गहराइ पबैत अछि।

२२. पासपोर्टक खाली खोल

मिराक सुरक्षित गृह आ पासपोर्टक खाली खोल पात्रक अस्मिता पर गम्भीर प्रश्न अछि। सुजाताक खोजसँ पूर्व निज सुरक्षाक प्राथमिकता निर्धारित करब हुनकर सक्रिय व्यक्तित्वक चिह्न अछि। अधिकारक भाषा एतय भावुक उद्धारक कहानीसँ अलग अपना स्थान बनबैत अछि।

२३. दू पुरुषक सम्बन्ध

दू पुरुषक सम्बन्ध सम्बन्धी चित्रकेँ जनमतक अटकलबाजी बनायबाक खतराक सामना करैत अछि। निजी सम्बन्ध आ कारोबारी कड़ीक बीच अन्तर बचाएब पात्रसभक गरिमाक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि। ब्रुसेल्सक प्रश्न भारतक घरेलू सुरक्षा धरि पहुँचैत अछि।

२४. दू स्त्रीक स्वीकृति

दू स्त्रीक स्वीकृति निजी सम्बन्ध, अलग घड़ी आ सहमतिक कथात्मक अनिश्चितता जोड़ैत अछि। अन्तक ‘एखन सिद्ध नहि’ आत्मविश्वासक विरोध नहि; जल्दबाजीसँ रक्षा अछि। किछु संवादमे सावधानीक भाषा अपेक्षाकृत सूक्तिपरक होइत अछि।

२५. माल्टाक मुहर

माल्टाक मुहर कागजी पञ्जीकरण आ सेवा चलबैत वास्तविक व्यक्तिक भेद चिन्हित करैत अछि। एक पतापर अनेक नाम भेटब अपने अपराधक सिद्धि नहि। सोफियाक खोज संस्थागत रूपक जटिलता उद्घाटित करैत अछि।

२६. तीन परतवला कम्पनी

‘तीन परतवला कम्पनी’क तीन तह सूचना-गोपनक युक्ति हो सेहो सकैत अछि, वैध कारोबारी ढाँचा सेहो; उपन्यास निर्णय टारैत अछि। सूरतक गोदाम-पञ्जी आ रात्रिक पालीमे काम करनिहारक स्मृति जोड़िते अमूर्त कम्पनी श्रमिकक जीवनसँ भिड़ैत अछि।

२७. झूठक निर्यातक छाया

झूठक निर्यातक पहिल छाया वास्तविक माल, बिल आ अनुपस्थित पृष्ठक बीच झूलैत अछि। रमाकान्तक पारिवारिक दायित्वक स्मरण मात्र दया जुटाबय लेल नहि; आरोपक प्रभाव रोजगारीपर सेहो पड़ैत अछि, ई प्रश्न उत्पन्न करैत अछि।

२८. नील टिकट

नील टिकट वस्तुपर लगल चिह्नक बदलैत अर्थक कथा अछि। आरव पाछाँ घुरि अपन अनुमोदनक विश्वसनीयता जाँचैत अछि। पुरान बहीक अधूरा नील निशान बचल अपराध-बोध आ अविश्वसनीय स्मृतिक बीच एकटा प्रभावी सेतु अछि।

२९. बाजारक सीमारेखा

बाजारक सीमारेखा डिजिटल प्रचारक वास्तविक ग्राहक-क्षेत्र आ असमान लाभ-वितरण देखबैत अछि। फरहाक घरक दवाक लेल रुपैआक छोट घटना विशाल कारोबारी विवेचनकेँ क्षणभरि मानवजीवनमे घुरबैत अछि। आधा बयान पूरा सुनबाक आग्रह उचित अछि।

३०. बीजिंगक बन्द सूची

बीजिंगक लिन यू गणनाक त्रुटि अथवा दोहरावक सम्भावना देखैत छलीह; मुदा अनुज्ञापत्र आ सम्पूर्ण अभिलेख हुनका लग नहि। तकनीकी ज्ञानक ई मर्यादा कथाविन्यासमे महत्त्वपूर्ण, किएक तँ पाठक सेहो पूरा संख्या तत्काल नहि मानि सकैत।

३१. अङ्कक भीतरे घर

कम्प्यूटरी अङ्कक बीच रानी-अमरेशक घरेलू हिसाबक समावेश कथा भीतर पैमाना बदलैत अछि। अनुमति-संख्या आ बादमे कएल संशोधनक समयक अन्तर निर्णयक नवा प्रश्न उठबैत अछि। शीर्षक बोधगम्य रूपसँ दोसर जीवनक लेखा देखबैत अछि।

३२. संकेतक व्यापार

हांगकांगमे ताराक अनुपस्थितिक बीच संकेत-आधारित व्यापारक कागज मेघनाक खोजकेँ मार्ग दैत अछि। ‘नाम पूरा नहि; प्रश्न पूरा’ सन अन्त्य संरचनात्मक लय रचैत अछि। बारम्बार एही तरहेँ प्रश्न-विराम आबि रहल होएबाक जोखिम सेहो देखाइत अछि।

३३. मरुभूमिक अनुबन्ध

मरुभूमिक अनुबन्धमे लता देसाइक घरेलू गाछ आ अनुबन्धक जोखिम एक-दोसराकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि। समयपर संरक्षणक परिणाम तुरन्त नहि देखाइत—ई बात पेशागत सुरक्षा आ जीवनक देखभाल दुनूक व्यञ्जना बनैत अछि।

३४. अरीजोनाक राति

अरीजोनाक राति तकनीकी अनुबन्धक स्वीकृति आ वास्तविक अधिकारीक पहिचानकेँ केन्द्रमे अनैत अछि। लताक सार्वजनिक उपस्थितिक पाछाँ अनुपस्थित पृष्ठक निजी चिन्ता पात्रक भीतरी द्वन्द्व बनबैत अछि।

३५. संगीतक पाछाँक डर

मकाउक सेवाकर्मी रेशमाक पञ्जीक सूचना संगीतक चमकक पाछाँक श्रम-संसार खोलैत अछि। कर्मचारीक स्मृति, लिखल तिथि आ बादमे जोड़ल कम्पनी-नामक अन्तर चिह्नित कएल गेल अछि। ई अध्याय गौण श्रमिकक आवाजकेँ अर्थपूर्ण स्थान दैत अछि।

३६. उज्जर दान-पेटी

ब्रुसेल्सक उज्जर दान-पेटी परोपकार आ खर्चक पारदर्शिताक अन्तर पर आलोचना अछि। एलिस अनुपस्थित सेवा-पुष्टिकेँ तुरन्त हिंसाक आर्थिक प्रमाण नहि कहैत छलीह। सहानुभूति आ उत्तरदायित्वक बीच आवश्यक सामंजस्य उभरैत अछि।

३७. जनचेतना मंच

पटनाक जनचेतना मंच शिक्षणक वास्तविक प्रयत्न आ राजनीतिक विज्ञापनक सम्भावित दुरुपयोगक बीच तनाव बनबैत अछि। प्राची झाक विद्यार्थी-संसारकेँ कथामे अधिक समय भेटित तँ मंचक सामाजिक द्वैध आ तीक्ष्ण होइत।

३८. ब्रुसेल्सक उज्जर सभागार

ब्रुसेल्सक सभागारक उज्जर मेजपोश आ नीचाँ अनुत्तरित खर्चक पाँति दृश्यात्मक विडम्बना अछि। विराजसँ सम्बन्धित सार्वजनिक कार्यक्रममे रेवतीक हस्तक्षेप कथाकेँ अन्तरदेशीय पत्रकारिताक संघर्ष बनबैत अछि; शोरक बादो कागजक उत्तर नहि भेटब सार्थक अछि।

३९. उजागर भेल पहिल झूठ

‘उजागर भेल पहिल झूठ’मे सार्वजनिक दृश्य पर सत्यापनक प्रभाव देखाइत अछि। विद्यार्थीक चेहरा सुरक्षित राखबाक निर्णय सूचना-पारदर्शिता आ निजताक सीमाक जटिलता खोलैत अछि। झूठक पहिल परत खुललाक बादो साक्षी भयभीत अछि।

४०. अग्निसँ पहिने

‘अग्निसँ पहिने’ सामूहिक भीड़ आ अपेक्षित सार्वजनिक घटनाक प्राक्कथन अछि। दरभंगाक दोकानक भोर घुमाकऽ आनब स्थानिक सूत्रकेँ बचबैत अछि। भागान्तक तनाव माइकक आवाज आ मौन स्रोत दुनूसँ उपजैत अछि।

८.३ तेसर भाग : अध्याय ४१–६० आ मध्यवर्ती उपसंहार

४१. भीड़क अपन चेहरा

भीड़ हजारो चेहराक समुदाय अछि, मुदा बदलल भिडियो ओकरा एकहि भयमे परिणत करबाक प्रयत्न करैत अछि। बीमार बच्चाक चिकित्सकीय तम्बू दिस जाएब सार्वजनिक दृश्यकेँ जीवित दायित्वक संग जोड़ैत अछि। भीड़ स्वयं कोनो अविवेकी पात्र नहि।

४२. पटनाक अग्निपरीक्षा

पटनाक सार्वजनिक संकटमे अरुणिमा विभिन्न सूचना-स्रोत अलग करैत छलीह। आयोजनक भुगतान-सूची आ प्रत्यक्ष घटनाक समयक अन्तर पृष्ठक तर्क बनैत अछि। राजगीरक नाम अगिला चरण खोलैत अछि, मुदा घटना-अध्याय किछु अधिक जाँच-प्रपत्रपर आश्रित अछि।

४३. मञ्चक चेहरा

मञ्चक चेहरा मीडिया आ सार्वजनिक छवि रचनाक बहुस्तरीयता देखबैत अछि। प्रणयक कलाकृति आ कबीरक सूचनापर संयम निजी सम्बन्धक अधिकारकेँ अपराध-जाँचसँ पृथक् राखैत अछि।

४४. प्रकाशनसँ पहिने

प्रकाशनसँ पहिने रेवतीक नामसँ झूठ छपेबाक प्रयास धमकीक नव प्रकार अछि। एतय पत्रकारक संकट सत्य खोजबाक संग अपन लेखकत्व बचेनाइ सेहो बनैत अछि। कथा प्रभावी रूपसँ कागजक नकलकेँ चरित्रपर आक्रमण बनबैत अछि।

४५. राजगीरक चुप्पी

राजगीरक बन्द फाटक कानूनसम्मत प्रवेशक सीमा याद करबैत अछि। विवेकक सम्भावित लिखावट सन सङ्केतपर विश्वास नहि कएल गेल अछि। दृश्य अपन भूगोल आ प्रतीक्षाक कारण सफल अछि, यद्यपि रहस्यक गति जानि-बुझि धीम राखल गेल।

४६. राजगीरक पुरान प्रशिक्षण केन्द्र

पुरान प्रशिक्षण केन्द्रमे विवेक सूदक जीवित उपस्थिति कथाक पैघ मोड़ अछि। किन्तु गलत मृत्युप्रमाणक पाछाँ जे वास्तविक मृतक छलाह, हुनकर पहिचान शेष राखि लेखक आसान चमत्कारी समाधानसँ बचैत छथि।

४७. जीबैत गवाहक अपराधबोध

जीबैत गवाहक अपराधबोध उपन्यासमे स्मृति आ दायित्वक एकटा सघन अध्याय अछि। विवेकक कथनमे अपन चुप्पी आ शैलेश सम्बन्धी अनिश्चितता जुड़ैत अछि। गवाही, पश्चात्ताप आ आत्मरक्षा तीनू एक नहि—ई भेद पात्रकेँ नैतिक जटिलता दैत अछि।

४८. मूल लेखा आ प्रतिलिपि

मूल पोथी, फोटोप्रति आ बैंकक प्रमाणित लेखा—तीनू वस्तुक बीच ‘मनुष्यक बयान’क खाली स्थान प्रभावी रूपक अछि। तिथिक एक दिनक अन्तरक अर्थ निश्चित नहि। कागजी विश्वसनीयता कथामे व्यक्तिक आवाजक प्रतिरूप नहि बनि पबैत।

४९. बचि निकलल आवाज

मिराक सुरक्षित आश्रयक भोर आ अदौरीक गन्ध ओकरा पीड़ितक संख्या सँ स्वतंत्र मनुष्य बनबैत अछि। ओ अपन घरक स्मृति आ भयक बीच जीबाक अधिकार चाहैत अछि। ई अध्याय तकनीकी वर्णनसँ राहत पबैत संवेदनशील विराम अछि।

५०. बेचायल नाम, बचल साक्ष्य

बेचायल नाम आ बचल साक्ष्यक शीर्षक स्वयं दोहरा विपर्यय अछि। रानीक ‘खाता रोकल अछि, रोटी नहि’ व्यापार आ बैंक-जाँचक विरोधकेँ प्राण दैत अछि। हुनकर छोट वाक्य अनेक सरकारी प्रस्तावसँ बेसी साहित्यिक असर छोड़ैत अछि।

५१. पाँच लोकक बैंक

पाँच लोकक बैंक आर्थिक नेटवर्कक गणनाक संग घरक दिनचर्याक निगरानीक खतरा खोलैत अछि। अमरेश द्वारा आन ग्राहकक विवरणक छवि नहि बनायब गोपनीयताक सिखल व्यवहार अछि। भय धनसँ आगाँ बढ़ि निजी दिनचर्या धरि पहुँचैत अछि।

५२. अज्ञात शवक नाम

अज्ञात शवक नाममे भुवनेश्वरी देवीक अपन बेटाक नाम माँगब कथाक न्यायिक-मानवीय शिखरसभमे अछि। विवेकक जीवित रहबक खुशीसँ आन परिवारक शोक मेटैत नहि। ई संतुलन रहस्य-लेखनकेँ करुण नैतिकतामे रूपान्तरित करैत अछि।

५३. संख्याक पाश

संख्याक पाशमे नीलिमा अङ्कक श्रेणीकरण नव दृष्टिसँ करैत छलीह; रानी अमरेशकेँ बिसरल सात सयक विषय पुछैत छलीह। उपचारक लेल राखल राशिक प्रचारमे प्रयोगक प्रश्न सामुदायिक भरोसाक संकट खोलैत अछि।

५४. दू हजार करोड़क धुआँ

‘दू हजार करोड़क धुआँ’ उपन्यासक वित्तीय विवेकक निर्णायक अध्याय अछि। समाचारक शीर्षक आ वास्तविक नव जमा, सकल दाँव, निकासी तथा दोहरायल रकममे अन्तरकेँ कृति स्पष्ट करैत अछि। अप्रमाणित आँकड़ा अलग लिखबाक कारण नाटकीय सनसनीक प्रतिरोध होइत अछि।

५५. समीकरणक साक्षी

आरवक बयान आ तीन प्रकारक पाँच प्रतिशत भुगतानक मिलान एके दरक अलग वैध-अवैध अर्थ उद्घाटित करैत अछि। ‘समीकरणक साक्षी’ शीर्षक ठीक तखने सिद्ध होइत अछि जखन संख्या अपन स्रोत आ निर्णयक संरचना माँगैत अछि।

५६. छापाक पहिल राति

छापाक पहिल राति प्रक्रियाक अनुमति, वस्तुक जप्ती आ मानवीय थकानकेँ एकसंग रखैत अछि। गोदामक धुँआ आ दोसर स्थानक अदृश्य आगिक तुलनाक कारण नाटकीय व्यापकताक अनुभव भेटैत अछि।

५७. पाँच प्रतिशतक मालिक

एकहि समय अनेक ठाम कार्रवाई भेलाक दृश्य अस्थायी कथात्मक शिखर अछि। मुदा जप्त कागज भेटलासँ पाँच प्रतिशतक अंतिम मालिक सिद्ध नहि। नव प्रचारक जन्म ई बुझबैत अछि जे अपराधक कारोबार प्रचार-रूप बदलि सकैत अछि।

५८. फेर नाम बदलल

फेर नाम बदललाक बाद अमरेशक फोन-संयम रानीक पावती पढ़ि देबाक सामान्य क्षमतासँ जुड़ैत अछि। कबीरक निजी जीवनक सुरक्षा आ पत्रकारिक अनुशासनक समरूपता चरित्र-विकासक अर्थपूर्ण प्रतिफल अछि।

५९. छओ मासक दूरी

छापामारीक बाद बैंकक पाँति घटबाक बदला बढ़ब न्याय-प्रक्रियाक सामाजिक लागत देखबैत अछि। खाता रोकब, जिबिका चलाबब आ साक्षी बचायबक समस्या एकसाथ रहैत अछि। एहि ठाम विजयक सरल घोषणा असम्भव बनि जाइत अछि।

६०. अन्हारक हिसाब

अदालतक बाहर कैमरा आ भीतर साक्ष्य-समीक्षा सार्वजनिक सफलताक दाबीक सीमा देखबैत अछि। रेवतीक समाचारसँ पहिने रानीक दोकानक कुशल पूछबाक निर्णय कृतिक मानवीय केन्द्र पुनः स्थापित करैत अछि।

‘उपसंहार : अगिला नाम’ साठिम अध्यायक पाछाँ नव साइटक विज्ञापन आ पहिल शिकायत-जागरूकताक दृश्य रखैत अछि। कथा एतय समाप्त नहि होइत, एक नव चक्र खोलैत अछि। ताहि कारण एकरा पाठकीय विसर्जनसँ

बेसी संरचनात्मक अन्तराल मानब उचित अछि; प्रकाशित विन्यासमे एहि स्थानक स्पष्ट नामकरण उपयोगी होएत।

८.४ चारिम भाग : अध्याय ६१–८०

६१. अगिला नामक पहिल दिन

‘अगिला नामक पहिल दिन’ पहिने बनल जालक नव रूपक परीक्षण शुरू करैत अछि। पुरान कागज आ नव सन्देश एके चिह्न धारण करितो ओकर अर्थ तुरन्त समान नहि होइत। अदालतक बाहर रेवतीक पुनरागमन कथाक निरन्तरता बचबैत अछि।

६२. एकहि मुहरक दू अर्थ

सूरतक एके मुहरक दू अर्थ वस्तु-विक्रयक वास्तविकता आ कागजी अनुबन्धक सम्भावित विकृतिकेँ आमने-सामने अनैत अछि। गोदामक ताला पर नव उँगरीक चिह्न दृश्यकेँ जासूसी रोमाञ्च दैत अछि; स्रोतक सीमाक स्वीकार ओकर विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

६३. गोदामक बन्द केवाड़ी

गोदामक बन्द केवाड़ी आ फाटल पन्नाक टुकड़ा प्रत्यक्ष रूपसँ दस्तावेज-रहस्य रचैत अछि। मूल स्रोत मँगबाक पावती बनब देरी सन लगि सकैत अछि, मुदा यही देरी बादक गवाहीक आधार अछि।

६४. चारि दिनक फरक

‘चारि दिनक फरक’ मुम्बईक आरवक पूर्वज्ञानपर पुनः प्रश्न उठबैत अछि। जहाजक वास्तविक बिल आ लिखल वस्तु-विवरणक अन्तरमे अनुवाद निर्णायक होइत अछि। छोट समयान्तरकेँ अत्यधिक अर्थ देबाक जोखिम कथामे चिन्हित अछि।

६५. परिवारक मूल्य

रानी-अमरेशक संवादक दाम परस्पर विश्वासक कठिन पुनर्निर्माण अछि। ‘एखनो दाँवपर एको रुपैया नहि’ सन परिणाम किसी महान् घोषणासँ बेसी विश्वसनीय अछि। परिवारक मूल्य धनक जोड़-घटाव सँ बचल सम्बन्धमे अछि।

६६. स्वयंसेवाक मूल काम

प्राची झाक पुनर्वास-कक्ष वास्तविक समाजसेवा आ मिलैत-जुलैत संस्थागत नामक धोखाक सम्भावना एकसंग रखैत अछि। कृति लाभक स्रोत जाँचैत अछि, मुदा वास्तविक स्वयंसेवाक मानवीय कामकेँ स्वतः बदनाम नहि करैत।

६७. एकहि नामक दू व्यक्ति

एके नामक दू व्यक्ति सम्बन्धी भ्रम कानूनी अभिलेखक पहिचानक समस्या बनैत अछि। वास्तविक संस्थाक पहिल शिकायतक स्वीकृति कथित नकलक प्रश्न खोलैत अछि। यूटचूबरक गोपनीय भुगतानक उल्लेख सार्वजनिक छवि-विन्यासक नव माध्यम परिचित करैत अछि।

६८. स्वरक विज्ञापन

स्वरक विज्ञापनमे ध्वनि-संपादन आ दृश्यक विश्वसनीयता प्रश्नवाचक बनैत अछि। मुम्बईक तात्कालिक प्रचारक पाछाँ असली आवाज ककर, ई खोज तकनीकीक संग नैतिक अछि। प्रचारक चमक आ निजी सम्बन्धक थकानक विरोध सफल अछि।

६९. दू स्त्रीक दूरी

ईशा आ साराक बीच निजी विश्वासक दूरी दस्तावेजी अनुसन्धानमे भावात्मक पीड़ा जोड़ैत अछि। कियो हुनकर सम्बन्ध तोड़ि जाँचक दिशा बदलय चाहैत अछि, ई सम्भावना कथात्मक रूपसँ उपजैत अछि; मुदा निश्चित दोषी बनाकऽ नहि प्रस्तुत होइत।

७०. विदेशी कम्पनीक रङ्ग

विदेशी कम्पनीक रंग आ बहुस्तरीय नामक बीच मेघना व्यक्तिक वास्तविक जीवनकेँ फेर जोड़बाक कठिनाई देखैत छलीह। एतय एकटा उल्लेखनीय रूपक अछि: व्यापारिक स्वामित्वसँ कठिन कखनो मनुष्यक गुम पहचान वापस आनब होइत अछि।

७१. दान आ सौदा

दान आ सौदा सार्वजनिक राहतक पावती, पुरान भुगतान-सूची आ अनुपस्थित प्राप्तकर्ताक विवरणक आधारपर आगे बढ़ैत अछि। मानवीय सहायताक वस्तुकेँ स्वत: दोषपूर्ण नहि मानब उपन्यासक सतर्क दृष्टि अछि।

७२. धूपमे भेटल शव

धूपमे भेटल शव सामाजिक अफवाह आ मृतकक परिवारक वास्तविक जानकारीक बीच दूरी खोलैत अछि। अनुपमा झाक आवाज मृत्युकेँ सनसनीक स्थल नहि बनय दैत। कथा पाठकसँ मृत्यु-कारण अनुमान करबाक अधीरता रोकबाक आग्रह करैत अछि।

७३. मृतकक अपूर्ण पत्र

मृतकक अपूर्ण पत्रमे अनुपमाक प्रश्न—जीवित रहिते कियो सुनलक किएक नहि—कार्यालयी चुप्पीक मूल आलोचना अछि। परितोषक अन्तिम दिनक बदला पहिनुक चारि दिन देखबाक आवश्यकता रहस्यक काल-विन्यासकेँ अर्थ दैत अछि।

७४. मालक तौल

मालक तौलसँ मनुष्यक आवागमन धरि पहुँचनिहार जाँच कृतिक सामाजिक क्षितिज विस्तार करैत अछि। मजदूरक प्रत्यक्ष अनुभव आ गोदामक वजन-बहीक अन्तर श्रमकेँ महज निर्यातक अङ्क नहि रहय दैत।

७५. देह आ दस्तावेज

देह आ दस्तावेजमे फरहीनक बयान व्यावसायिक नाम आ वास्तविक भेटल लोकक सम्बन्ध जाँचबाक आग्रह करैत अछि। अनुपस्थित नामपर तुरन्त जालसाजीक निष्कर्ष नहि कएने कथा व्यक्तिक जोखिमक सम्मान करैत अछि।

७६. नोकरीक झूठ सपना

नोकरीक झूठ सपनामे कोलकाताक सारा आ ओकर छोट भायक सावधान प्रश्न छलक अवसरकेँ रोकैत अछि। श्रम-बाजारक अनिश्चितता कथामे भर्ती-जालक पृष्ठभूमि अछि। स्वयं साक्षी बनबाक निर्णय ओकर सक्रियता बढ़बैत अछि।

७७. सीमारेखाक राति

सीमारेखाक राति नबीन पालक डर आ अनिश्चित हमलाक अभिलेख अलग राखैत अछि। बयानक सत्यापन शेष रहितो गवाहक सुरक्षा टारल नहि जा सकैत—ई अध्याय अपराध-प्रमाण आ संरक्षणक अलग मानदण्ड सुझबैत अछि।

७८. कागजक माफिया

कागजक माफिया कानूनसम्मत सीमित आदेश आ निर्दोष व्यक्तिक जीवनपर प्रक्रियाक प्रभावक प्रश्न उठबैत अछि। अनेक कागजक अस्तित्व अपने एक सङ्गठनक सिद्धि नहि। विवेकक नैतिक सावधानी प्रारम्भिक अपराधबोधक बाद अधिक अर्थपूर्ण होइत अछि।

७९. छाया बनल साक्षी

नबीनक बयान स्थगित होएब आ अधिकारीक बदलीक सम्भावना समान समयमे घटैत अछि। लेखक ओहि संयोगकेँ कारण-सम्बन्ध बनाबैत नहि; एहि संयमसँ राजनीतिक दाबक प्रसंग अधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

८०. झूठक निर्यात

झूठक निर्यात मालक कटौती, श्रमिकक सहमति, गोदामक अभिलेख आ अधिकृत पावती एकत्र करैत अछि। महत्त्वपूर्ण परिणाम ई जे अधिकारी बदलबाक बादो सुरक्षित कागज प्रश्न करैत रहबाक चाही। भागान्त संस्थागत स्मृतिक आवश्यकता स्थापित करैत अछि।

८.५ पाँचम भाग : अध्याय ८१–१००

८१. बदलीक दिन

बदलीक आदेश अपराध-जाँचक निरन्तरतामे व्यवधानक सम्भावना उत्पन्न करैत अछि। अरुणिमाक पुरान काज आ नवा पदक सीमाक अलगाव राज्य-संस्थाक मानवीय जटिलता देखबैत अछि। बदली स्वयं षड्यन्त्र सिद्ध नहि।

८२. दफ्तरक खाली कुर्सी

दफ्तरक खाली कुर्सीकेँ सत्ता आ अनुपस्थित निर्णयक रूपक बनाओल गेल अछि। रघुक सफाइ, निखिलक फाइल, नीलिमाक पावती—साधारण कार्यालय-क्रियाक भीतर असाधारण जिम्मेदारी अछि।

८३. हेरायल फाइलक प्रतिलिपि

हेरायल फाइलक प्रतिलिपि रंगभेद, सतरह मिनटक अन्तर आ सीलबन्द मूल सामग्री पर प्रश्न उठबैत अछि। ई समयक सूक्ष्म फरक कथानकक विस्तृत परिकल्पनामे निर्णायक सूत्र बनैत अछि; लेखक समाधान स्थगित राखैत छथि।

८४. सम्पादकक मौन

सम्पादकक मौनमे विद्या देशमुख आ रेवतीक मतभेद समाचारक उत्तरदायित्वपर केन्द्रित अछि। प्रकाशन-विलम्ब आ स्रोत-रक्षा दुनूक दाम अछि। मौन सदा षड्यन्त्र नहि, कखनो अपूर्ण साक्ष्यक बोझ सेहो अछि।

८५. प्रणयक चित्र

प्रणयक चित्रपर आक्रमण निजी कलाकृति आ सार्वजनिक अपराध-कथा बीच अन्त:प्रवेश अछि। चित्रक नकल आ अनजान युवकक दाबी छवि-स्वामित्वक प्रश्न खोलैत अछि। मात्र परिचयक आधारपर अपराधी निश्चित नहि कएल गेल।

८६. बचायल पत्र

बचायल पत्र प्रणयक स्वतन्त्र निर्णयकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। ओकरा केवल कबीरक संग रहबाक कारण साक्षी-यन्त्र नहि बनाओल गेल। लिफाफाक वास्तविक संरक्षण आ प्राप्ति-कथन पात्रक निजता आ प्रमाणक मर्यादा जोड़ैत अछि।

८७. सभा आ सङ्कट

पटना सभाक दू परस्पर विरोधी पोस्टर सार्वजनिक मतक विभाजन देखबैत अछि। हिंसाक धमकी आ पुरान फोटो फैलाएबक सम्भावना जिम्मेदार पत्रकारिता लेल चुनौती अछि। भीड़क नाटकीयता विवेकसँ सन्तुलित होइत अछि।

८८. दू अखबारक दू सच

दू अखबारक अलग शीर्षकसँ एके घटना पर भिन्न राजनीतिक सत्य निर्मित होएबाक खतरा देखाइत अछि। रेवती ‘साझा एजेन्सी कि साझा नकल?’ प्रश्न छोड़ैत छलीह। सूचना-प्रवाहक स्रोत-सम्बन्ध स्वयं कथात्मक रहस्य बनैत अछि।

८९. रातिक चेतावनी

रातिक चेतावनीमे शिवशंकरक पुरान भय फेर जागैत अछि, मुदा आब हुनका ‘जे सुनल’ आ ‘जे अनुमान’क भेद बुझेबाक साधन अछि। प्रारम्भिक असहाय शिक्षक धीरे-धीरे सावधान साक्षी बनैत अछि।

१०. हत्या कि दुर्घटना

हत्या कि दुर्घटना शीर्षक स्वयं निर्णायक पूर्वनिष्कर्षसँ बचैत अछि। नरेशक मृत्यु, भुगतानक अनुरोध आ घटनाक समयक सम्बन्ध जाँचबाक आवश्यकता अछि; शोकक ताप आ कागजक शीतलता एक दृश्य-क्रममे भेटैत अछि।

११. भाड़ाक आदेश

भाड़ाक आदेश निर्णयक दृश्य चेहरा आ वास्तविक वित्तीय भार देनिहारक भिन्नता खोलैत अछि। आरवक पूर्वकृत अनुमोदन आ बैंकक वास्तविक कटौती मिलानक अभाव आरोपक सरल रेखाकेँ जटिल करैत अछि।

१२. दू हजार करोड़क दुसर आँकड़ा

दू हजार करोड़क दुसर आँकड़ा पहिल सनसनीक पुनरीक्षण अछि। नव जमा, खेलक कुल दाँव, निकासी आ फेर जमा कएल रकम अलग करबाक दृश्य अङ्कक कथात्मक चरित्रकेँ समृद्ध करैत अछि। पुनरावृत्ति एतय विषयगत रूपसँ सार्थक अछि।

१३. धनक सुरागक अन्हार

हांगकांगक कारोबारी कागज आ इरेन लो सहित सम्बन्धक सम्भावित सूत्र धनक गुम ठेकानाक प्रश्न विकसित करैत अछि। विराजक वकील मूल सेवा-अनुबन्ध प्रस्तुत करबाक आवेदन करैत छथि—न्यायिक विरोधी स्वर कथामे प्रवेश पबैत अछि।

१४. आरोपितक अधिकार

आरोपितक अधिकार न्यायपरक रचनाक निर्णायक परीक्षा अछि। विराजक प्रतिवाद स्वयमे निर्दोषताक प्रमाण नहि, मुदा अभियोजनक पद्धतिकेँ कठोर प्रश्न पूछबाक वैध अवसर अछि। रेवतीक ‘फैसला’ शीर्षक नहि लिखबाक निर्णय पत्रकारिक सावधानीक चरम अछि।

१५. दोषक छोट गलती

दोषक छोट गलतीमे एकटा कागजक त्रुटि सुधारलासँ नवा अनुदान-सुराग भेटैत अछि। त्रुटि स्वीकार कएलासँ अनुसन्धान समाप्त नहि, अधिक यथार्थपूर्ण बनैत अछि। ई अध्याय प्रमाण-विवेकक सूक्ष्म फल देखबैत अछि।

१६. अनुदानक अनाम स्रोत

अनुदानक अनाम स्रोत राहत-कार्यक्रमक पावती आ भवनक पत्राचार-ठेकानाक समानता उठबैत अछि। वास्तविक वित्तीय प्राप्तकर्ताक नाम शेष रहबाक कारण कथा स्पष्टीकरणक अधिकारीक प्रतीक्षा करैत अछि।

१७. हस्ताक्षरक तेसर हाथ

हस्ताक्षरक तेसर हाथमे सोफियाक पञ्जीमे लगभग समान नामवला संस्थाक प्रविष्टि अछि। नामक छायाक संग अधिकार-सत्यापनक गम्भीर प्रश्न बनैत अछि। तेसर हस्ताक्षर सत्ता-सम्बन्धक छिपल स्तरक संकेत अछि, निष्कर्ष नहि।

१८. स्थानान्तरणक पाछाँ

स्थानान्तरणक पाछाँ पत्राचारक समय सिद्ध होइत अछि, मुदा कारण शेष रहैत अछि। अरुणिमाक दफ्तरी दूरीक बावजूद तर्क-शृंखलाक निरन्तरता पाठककेँ दिखाओल गेल अछि। ई सावधानी राज्यशक्तिपर सहज अविश्वासक बदला विवेचित समीक्षा प्रस्तुत करैत अछि।

१९. अन्तिम प्रचार

अन्तिम प्रचारमे कबीर आ प्रणयक सम्बन्ध सार्वजनिक हिंसाक भयक संग पुनः जुड़ैत अछि। निजी पत्रक उद्धरण लेल अनुमति जरूरी होएब कथाक नैतिक स्मृति अछि। पत्रकारक शरीर स्वयं दृश्य-सूचनाक जोखिममे प्रवेश करैत अछि।

१००. लोकतन्त्रक अन्हार

लोकतन्त्रक अन्हार नाम निजी पीड़ाक संग राज्यक संस्थागत जिम्मेदारी जोड़ैत अछि। शिवशंकरक ओसारासँ सरकारी आवेदन-समय धरि कथानक चलैत अछि। कथाक ई भाग दिखबैत अछि जे राजनीतिक अन्हार केवल भाषणमे नहि, निर्णयक दिनांक आ सूचना-व्यवस्थामे सेहो बसैत अछि।

८.६ छठम भाग : अध्याय १०१–१२०

१०१. आवाज फेर आयल

कबीरक अस्पताल-दृश्य मीडिया-हिंसाक शारीरिक मूल्य देखबैत अछि। प्रणय ओकरा तत्काल कागज नहि देखबैत—देखभाल आ अनुसन्धानक बीच उचित दूरी अछि। ‘पूर्वस्वीकृति’क सूक्ष्म पदसँ अगिला साक्ष्य-परीक्षा शुरू होइत अछि।

१०२. साराक सत्य

सारा आ ईशाक सम्बन्धमे मौनक गलत अर्थ समझबाक प्रसंग निजी जीवनक स्वतन्त्रता बचबैत अछि। स्वीकृति शब्दक अनुवाद आ सर्वर-अभिलेखक संरक्षण तकनीकी साक्ष्यकेँ मानवीय संवादक पृष्ठभूमि दैत अछि।

१०३. मूल समयक प्रतिमा

मूल समयक प्रतिमा डिजिटल अभिलेखक घड़ी आ निर्णय-अधिकारीक पहचानक भेद कड़ी बनबैत अछि। सही समय भेटलासँ असली स्वामी अनिवार्य रूपसँ भेटत, एहन सरल निष्कर्ष कथाकार नहि निकालैत छथि।

१०४. एतय नकली मालिक

एतय नकली मालिकमे चेनक नामक मुहर आ अस्वीकृत हस्ताक्षर गम्भीर मोड़ अछि। पहचानक दृश्य आ वास्तविक अनुमोदन एक नहि। मेघनाक जाँच कम्पनी-नामक परत पार व्यक्ति-दायित्व तकबाक प्रयास करैत अछि।

१०५. धनक हेरायल ठेकाना

धनक हेरायल ठेकानामे माल्टाक चकमक दृश्य आ अधूरी खाताबहीक पृष्ठ अलग धरातल पर रहैत अछि। सोफिया अनुपस्थितिक स्वतन्त्र प्रमाण मँगैत छलीह; कथित गवाहीकेँ बिना परीक्षा निर्णायक स्थान नहि भेटैत।

१०६. गवाहीक कीमत

गवाहीक कीमतमे विवेक द्वारा पूर्वकथित ‘पूरा पृष्ठ’क एक कोन पहिनेसँ हटि गेल छल, ई स्वीकार पात्रक जटिलता बढ़बैत अछि। अपन गवाहीक भीतरक गलती स्वीकारब ओकर नैतिक यात्रा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

१०७. फाड़ल पृष्ठ

फाड़ल पृष्ठ सुरक्षित अभिलेख-कक्षमे पुनः भेटल सामग्रीक पाठन करैत अछि। परितोषक अपूर्ण पत्र आ बैंकक पहिनुक चेतावनीक सम्भावित सम्बन्ध जुड़ैत अछि; स्रोतक अनुपस्थित कर्मचारीक परिचय अद्यापि शेष अछि।

१०८. बैंकक भीतरक विरोध

बैंकक भीतरक विरोध आरवक रोजगारीक व्यक्तिगत इतिहास आ संस्थागत गलत निर्णयक सम्भावनाक टकराहट अछि। अधिकृत जिम्मेदारीक अन्तरिक विभाजन जाँच जटिल बनबैत अछि। गवाहीक बहुभाषिक परीक्षा लेल कथा तैयार होइत अछि।

१०९. बहुभाषी साक्ष्य

बहुभाषी साक्ष्य अनुवादक एक शब्दसँ दायित्व बदलि जेबाक खतराकेँ ठोस रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। मूल भाषा, अनुवादकक पहिचान आ स्वतन्त्र प्रतिपुष्टिक आग्रह कथाक वैश्विक स्वभावक एकटा अनिवार्य नैतिक प्रश्न अछि।

११०. साक्ष्यक सात मेज

सात मेजपर साक्ष्यक भिन्न श्रेणी राखब कथाक बहुस्तरीय संरचनाक रूपक अछि। नीलिमा खाली स्थानसँ नहि डरैत छलीह। नवा पद-संकेत सातम मेज बन्द नहि होय देबैत अछि—ज्ञान अपूर्ण रहबाक ई पाठ असरदार अछि।

१११. जाहि नामक आशा

जाहि नामक आशा विराजक सार्वजनिक ठाठ आ अदालतक साधारण बेंचक अन्तर खोलैत अछि। आर्थिक भुगतानक इच्छा एकरापर निर्णयक वास्तविक अधिकार सिद्ध नहि करैत। व्यक्तिक प्रतिरक्षा आ चोट खाएल अन्य व्यक्तिक सत्य साथ-साथ रहि सकैत अछि।

११२. सुधारल अभियोग

सुधारल अभियोगमे वास्तविक निर्यातक अंशक स्वीकार निर्णायक अछि। जाँच जँ किछु कारोबार वैध भेटैत अछि, तँ पूरा कथा ध्वस्त नहि होइत; आरोप अधिक सटीक होइत अछि। एहिमे संस्थागत आत्म-संशोधनक नैतिक बल अछि।

११३. मिराक अपना घर

मिराक अपना घर कृतिक मानवोन्मुख सफलता अछि। गवाहीक निर्णय बनल रहितहुँ ओकर जीवन अनुसन्धानक समाप्तिक प्रतीक्षामे स्थगित नहि। कोठली, काठक केवाड़ी आ भविष्यक योजना कानूनी उपस्थिति सँ अधिक व्यापक स्वतंत्रता सुझबैत अछि।

११४. रानीक पाँच रुपैआ

रानीक पाँच रुपैआ प्रारम्भक पाँच सयक गम्भीर प्रत्युत्तर अछि। सिक्काक छोट माप वास्तविक कमाइ, उपयोग आ स्वामित्वक प्रश्न पुनः खोलैत अछि। पूर्ण राहत नहि भेटल, मुदा अपन बाट चिन्हबाक क्षमता प्राप्त भेल अछि।

११५. खाताक अन्तिम मालिक

खाताक अन्तिम मालिकमे सोफिया आ मेघनाक पञ्जी-समीक्षा अनुराग बेदी नामक सम्भावित सूत्र तक पहुँचैत अछि। तीन पत्रक क्रम बदललासँ नवा रेखा देखाइत अछि; रेखाक अन्त अज्ञात राखब प्रमाणविवेकक संगत चुनाव अछि।

११६. छापाक दोसर भोर

दोसर छापाक भोर पहिल कार्रवाइक पुनरावृत्ति नहि मात्र; मानसीक अधिकार, स्रोत-संरक्षण आ कामक अधिक सुस्पष्ट विभाजन दृश्य बनबैत अछि। अनाम पत्रकेँ तुरन्त गवाही नहि मानब कथाक सिद्धान्तक स्वाभाविक विस्तार अछि।

११७. भागल लोकक पत्र

भागल लोकक पत्र अनाम लिफाफाक मूल आवरण आ विदेशी सम्पर्कक शृंखला रखैत अछि। कथाकार पत्रक कथ्यक स्वतन्त्र सत्यापन शेष रखैत छथि। सुनवाईमे प्रतिपरीक्षा आनेबाक पूर्व-संकेत कथाक तनाव कायम रखैत अछि।

११८. प्रतिपरीक्षाक दिन

प्रतिपरीक्षाक दिन उपन्यासक प्रमाण-नीतिक सार्वजनिक परीक्षा अछि। नीलिमा लेल सबसँ कठिन शब्द ‘सिद्ध’ अछि; बचाव पक्ष आ अभियोजन दुनूक दाबीक भार बदलैत अछि। दोषक प्रमाण आ पीड़ितक हानिक पृथक् सत्य आवश्यक कहब एहि कृतिक बौद्धिक केन्द्रीय सूत्र अछि।

११९. फेर भेटल धन

फेर भेटल धनमे शिवशंकरक बैंक-पावती आ रानीक सीमित सुविधा राहतक वास्तविक अवरोध दर्शबैत अछि। टेलीविजनक घोषणासँ रुपैआ अपने-आप खातामे नहि घुरैत। राज्यक घोषणा आ नागरिकक प्राप्तिक बीचक दूरी मार्मिक अछि।

१२०. अन्तिम पाँच प्रतिशत

अन्तिम पाँच प्रतिशत आरम्भिक रेलवे-पुलक दृश्यकेँ फेर सँ पढ़बैत अछि। बरनीक कम्पन लगभग वैह अछि, मुदा अमरेशक जीवन-दृष्टि बदलल अछि। ‘अन्हार’ बचल रहब असफलता नहि, तकरा नाम देबाक नैतिक सामर्थ्य अन्तिम उपलब्धि अछि।

९. समेकित मूल्याङ्कन : विधागत स्थान आ पाठकीय प्रभाव

‘पाँच प्रतिशत अन्हार’केँ मात्र जासूसी अथवा अपराध-रोमाञ्चक उपन्यास कहला पर ओकर महत्त्वक एकटा हिस्सा छूटि जाइत। ई वित्तीय संस्थासभक असमान पारदर्शिता, सार्वजनिक प्रचारक नैतिकता, राजकीय प्रक्रियाक उत्तरदायित्व, आर्थिक रूपसँ कमजोर नागरिकक असुरक्षा आ जटिल जानकारीक मर्यादा पर विचार करैत एकटा बहुकेन्द्रीय सामाजिक-नैतिक आख्यान अछि। कथामे रोमाञ्च अवश्य अछि, मुदा ओ अन्तिम अपराधीक मुखौटा खोलि दण्ड देबाक रेखापर मात्र अवलम्बित नहि।

मैथिली उपन्यासक परिप्रेक्ष्य मे ई कृति आर्थिक अपराधक समकालीन शब्दावलीकेँ घरेलू जीवनक ठोस भाषा संग मिलायबाक प्रयत्न करैत अछि। दरभंगा आ मिथिलाक सामाजिक आधार कथाक ‘पिछड़ल’ आरम्भ मात्र नहि; वही स्थान पाठक लेल अन्तिम मूल्य-निर्णयक केन्द्र रहैत अछि। वैश्विक बैंक, कम्पनी आ कार्यालयक तुलना मे रानीक दोकानक दैनिक लेखा अन्तिम माप बनैत अछि।

कलात्मक दृष्टिसँ सर्वश्रेष्ठ प्रसंग सभमे वस्तु स्वयं बोलैत अछि: रेलक कम्पन, रानीक पावती, शिवशंकरक विवाहक कापी, मिराक घरक गन्ध, विवेकक अधूरा पृष्ठ, गोदामक तौल, अदालतक साधारण बेंच। विचारक गरिमा तखन किछु घटैत अछि जखन समान सत्यापनक सिद्धान्त नवा पात्रक मुँहसँ पुनः सुनाओल जाइत अछि। एहि दोहरा प्रवृत्तिकेँ पहिचानब सम्यक् आलोचनाक मूल शर्त अछि।

पाँच प्रतिशतक अन्तर कखनो आयक भाग नहि, चुप्पी आ औपचारिकताक बीचक शेष अन्धकार बनैत अछि। पाठ कहैत अछि जे सत्य परिपूर्ण नहियो हो तँ दायित्व समाप्त नहि। पूर्ण सर्वज्ञ विजयक बदला अधिक न्यायपूर्ण प्रश्न पूछबाक सामाजिक क्षमता बनब एहि कृतिक परिपक्व अन्त अछि। ताहि

रूपमे उपन्यास अपन कमजोरियक बादो मैथिलीमे वैश्विक विषयपर नैतिक-समीक्षात्मक कथारचनाक एकटा उल्लेखनीय प्रयत्न अछि।

१०. समीक्षाक अन्तिम निर्णय

कृतिक प्रभावक मूल कारण कथानकक विशाल फैलाव नहि, विशालताकेँ लघुतम जीवनक बोधसँ मापबाक आग्रह अछि। ‘पाँच प्रतिशत अन्हार’ पाठककेँ बतबैत अछि जे अपराधक प्रसंगमे निर्दोषताक सम्भावना, पीड़ितक गरिमा, भिन्न अपराध-पद्धतिक पृथक्करण आ अपूर्ण साक्ष्यक सम्मान रखनाइ साहित्यिक कमजोरी नहि, नैतिक उपलब्धि भऽ सकैत अछि।

जँ पुनः साहित्यिक सम्पादन हो, तँ समान विवेचनात्मक वाक्यक संक्षेप, अध्याय-आरम्भक विविधीकरण, मध्यवर्ती उपसंहारक पुनर्नामकरण, गौण पात्रक भावनात्मक पृथक्करण आ असाधारण दृश्यसभमे अनकहल अर्थ लेल स्थान कृतिक प्रभाव बढ़ा सकैत अछि। मूल पात्रक निर्णायक नैतिक चुनाव, कथा-क्रम आ अन्तक अपूर्ण प्रकाशकेँ नबदलने ई सुधार सम्भव अछि।

समीक्षाक समग्र निष्कर्ष ई अछि: उपन्यास आर्थिक अपराधक ‘समाधान’सँ बेसी सत्यक सामाजिक उत्पादन-प्रक्रिया पर केन्द्रित अछि। रानीक दोकानसँ न्यायालय धरि पहुँचबाक यात्रा धनक मात्र नहि, आवाजक यात्रा अछि। आरम्भमे काँचक बरनी काँपैत अछि; अन्तमे सेहो काँपैत अछि। बदलल अछि मनुष्यक ओकरा देखबाक आ समझबाक दृष्टि।

पुस्तक-सन्दर्भ

१. ठाकुर, गजेन्द्र। ‘पाँच प्रतिशत अन्हार’। मौलिक मैथिली उपन्यास। प्रथम संस्करण २०२०; पुनरीक्षित संस्करण २०२६। प्रस्तुत पुनरीक्षित पाण्डुलिपि।

२. भरतमुनि। ‘नाट्यशास्त्र’। रस, भाव आ नाट्य-अनुभव सम्बन्धी मूल ग्रन्थ।

३. आनन्दवर्धन। ‘ध्वन्यालोक’। काव्य-व्यञ्जना सम्बन्धी मूल ग्रन्थ।

४. गङ्गेश उपाध्याय। ‘तत्त्वचिन्तामणि’। नव्यन्यायक ज्ञान आ प्रमाण-विवेचन सम्बन्धी मूल ग्रन्थ।

५. Genette, Gérard. Narrative Discourse: An Essay in Method. Translated by Jane E. Lewin. Cornell University Press, 1980.

६. Bakhtin, Mikhail M. The Dialogic Imagination: Four Essays. Edited by Michael Holquist; translated by Caryl Emerson and Michael Holquist. University of Texas Press, 1981.

७. Booth, Wayne C. The Rhetoric of Fiction. University of Chicago Press, 1961; second edition, 1983.

८. Ricoeur, Paul. Time and Narrative, Volume 1. Translated by Kathleen McLaughlin and David Pellauer. University of Chicago Press, 1984.

आलेख २१ · उपन्यास आ विस्तृत आख्यानक अध्ययन

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक : बहुस्तरीय महाकथा

सारांश

गजेन्द्र ठाकुरक ‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक’ एकटा एहन मैथिली कादम्बरी अछि जाहिमे सार्वजनिक अभिलेखक एकटा असत्य, देहक वास्तविक क्षति, श्रमक अदृश्य इतिहास आ ज्ञानपर अधिकारक विवाद मिलिकऽ समकालीन कुरुक्षेत्र रचैत अछि। संलग्न प्रथम-संस्करण-विवरणमे २०१९ अंकित अछि; कथाक आधुनिक समयधारामे २०३९–२०४२ धरि पहुँचैत कालसङ्केत भेटैत अछि। २१६ अध्याय अठारह महाभारत-पर्वक अन्तर्गत बारह-बारह अध्यायक क्रममे विन्यस्त अछि, जखन कि सात रामायण-काण्ड एहि वृहत् ढाँचामे दोसर अन्तःसंरचना बनबैत अछि। भामती, न्यायकुसुमाञ्जलि आ तत्त्वचिन्तामणिक विवाद अलग कालधारामे प्रस्तुत भऽ आधुनिक साक्ष्य, प्रत्यक्ष-अनुमान, शब्द, श्रेय आ संस्थागत उत्तरदायित्वक प्रश्नकेँ चुनौती दैत अछि। एहि आलेखक मूल प्रतिपादन ई अछि जे उपन्यासक निर्णायक कथात्मक उपलब्धि महाकाव्यक विशालता मात्र नहि, अपितु ‘के कथन करैत अछि, केकर बात प्रमाण मानल जाइत अछि, केकर श्रम लिखल जाइत अछि, आ के अपन जीवनक सूचना सार्वजनिक करबाक अनुमति दैत अछि’—एहि चारि प्रश्नकेँ कथा-निर्णयमे बदलि देब अछि। तथापि अत्यधिक अभिलेखीय स्पष्टीकरण, दार्शनिक संवादक पुनरावृत्ति आ कतिपय गौण पात्रक सीमित जीवन-विस्तार एहि उपलब्धिक अन्तर्निहित सीमा सेहो देखबैत अछि।

बीजशब्द

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक : बहुस्तरीय महाकथा · मैथिली उपन्यास · आख्यान-रचना · स्मृति · सामाजिक इतिहास

गजेन्द्र ठाकुर:

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक : अभिलेख, शोक, श्रम आ ज्ञानक बहुस्तरीय महाकथा

भारतीय काव्यशास्त्र, मिथिलाक न्याय-वेदान्त आ पाश्चात्य आख्यान-सिद्धान्तक आलोकमे एकटा विस्तृत पाठाधारित समालोचना

सार

गजेन्द्र ठाकुरक ‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक’ एकटा एहन मैथिली कादम्बरी अछि जाहिमे सार्वजनिक अभिलेखक एकटा असत्य, देहक वास्तविक क्षति, श्रमक अदृश्य इतिहास आ ज्ञानपर अधिकारक विवाद मिलिकऽ समकालीन कुरुक्षेत्र रचैत अछि। संलग्न प्रथम-संस्करण-विवरणमे २०१९ अंकित अछि; कथाक आधुनिक समयधारामे २०३९–२०४२ धरि पहुँचैत कालसङ्केत भेटैत अछि। २१६ अध्याय अठारह महाभारत-पर्वक अन्तर्गत बारह-बारह अध्यायक क्रममे विन्यस्त अछि, जखन कि सात रामायण-काण्ड एहि वृहत् ढाँचामे दोसर अन्तःसंरचना बनबैत अछि। भामती, न्यायकुसुमाञ्जलि आ तत्त्वचिन्तामणिक विवाद अलग कालधारामे प्रस्तुत भऽ आधुनिक साक्ष्य, प्रत्यक्ष-अनुमान, शब्द, श्रेय आ संस्थागत उत्तरदायित्वक प्रश्नकेँ चुनौती दैत अछि। एहि आलेखक मूल प्रतिपादन ई अछि जे उपन्यासक निर्णायक कथात्मक उपलब्धि महाकाव्यक विशालता मात्र नहि, अपितु ‘के कथन करैत अछि, केकर बात प्रमाण मानल जाइत अछि, केकर श्रम लिखल जाइत अछि, आ के अपन जीवनक सूचना सार्वजनिक करबाक अनुमति दैत अछि’—एहि चारि प्रश्नकेँ कथा-निर्णयमे बदलि देब अछि। तथापि अत्यधिक अभिलेखीय स्पष्टीकरण, दार्शनिक संवादक पुनरावृत्ति आ कतिपय गौण पात्रक सीमित जीवन-विस्तार एहि उपलब्धिक अन्तर्निहित सीमा सेहो देखबैत अछि।

१. पाठ, अनुसन्धान-पद्धति आ आलोचनात्मक प्रतिज्ञा

एहि अध्ययनक प्राथमिक स्रोत संलग्न ‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक [मैथिली कादम्बरी]’क सम्पूर्ण २१६-अध्यायी प्रति अछि। विस्तृत अनुक्रम, महाकाव्य–दर्शनक सम्बन्ध-मानचित्र, पात्र-सम्बन्ध, मुख्य पात्रक निर्णय-पञ्जी आ १५७ व्यवसाय–समुदायक सूचीकेँ कथाक मूल अंशसँ अलग पारपाठीय सामग्री मानल गेल अछि। अनुक्रमसँ ककरो चरित्र-विकास सिद्ध नहि होइत; तकर पुष्टि कथाक दृश्य, संवाद आ निर्णयसँ करबाक चाही। तेँ एहि विवेचनमे आरम्भ, संकट, शोक, पुनर्निर्माण आ समापनक प्रमुख अध्यायसभक निकटपाठ तथा अठारह पर्वक समग्र संरचनात्मक तुलना दू भिन्न पद्धति रूपमे प्रयुक्त अछि। उद्धरण वा तथ्यक पाछाँ अध्याय-सङ्ख्या देल गेल अछि, जाहिसँ पाठक स्वयं प्रसंग जाँचि सकथि।

भारतीय पक्षमे भरतक रस-सिद्धान्त, आनन्दवर्धनक ध्वनि, अभिनवगुप्तक रस-व्याख्या, कुन्तकक वक्रोक्ति, क्षेमेन्द्रक औचित्य आ न्याय-वेदान्तक प्रमाण-विचारकेँ एक-दोसरक पर्याय नहि मानल गेल अछि। रस सौन्दर्यानुभवक प्रश्न उठबैत अछि; न्याय ज्ञापनक साधन आ युक्तिक वैधताक; वेदान्त व्यक्तिक पहिचानपर आरोपित अवधारणाक दार्शनिक जाँचक। पाश्चात्य पक्षमे मिखाइल बाख्तिनक बहुभाषिक संवाद, जेरार जेनेतक कथा-समय आ दृष्टिस्थिति, पॉल रिकरक काल-आख्यान, मिरान्डा फ्रिकरक ज्ञानगत अन्याय, गायत्री स्पिवाकक प्रतिनिधित्व-विवाद, रोब निक्सनक मन्द हिंसा आ स्मृति-अभिलेखविषयक चिन्तन उपयोगी तुलनात्मक औजार अछि। सिद्धान्तकेँ उपन्यासपर आरोपित करबाक बदला प्रत्येक अवधारणासँ एकटा परीक्षणयोग्य प्रश्न पुछल गेल अछि।

एहि पाठ-पद्धतिक एकटा आवश्यक मर्यादा अछि। रामायण, महाभारत आ तीनू शास्त्रक प्राचीन विवाद उपन्यासक भीतर सृजित नाटकीय कालधारा अछि; ओहि प्रसंगसभकेँ शब्दशः मूल शास्त्रीय संस्करणक ऐतिहासिक प्रतिलेख नहि कहि सकैत छी। उपन्यास स्वयं एतय प्राचीन प्रसंग आ आधुनिक कल्पित पात्रक अलग-अलग समय मानैत अछि। तहिना १५७ व्यवसायवृत्तक उपस्थिति स्वतः सभ पात्रक समान सक्रियता अथवा सभ समुदायकेँ समान स्वायत्त वाणी प्राप्त भेलाक प्रमाण नहि अछि। बृहत्तरता आ प्रतिनिधित्वक बीच ई भेद समालोचनाक सम्पूर्ण यात्रामे आवश्यक अछि।

२. शीर्षकक ‘कुरुक्षेत्र’ : बाह्य युद्धसँ अन्तःकरणक संघर्ष धरि

कुरुक्षेत्र नाम सुनिते राजवंशक युद्ध, प्रतिज्ञा, उत्तराधिकार आ धर्मसङ्कट स्मरण होइत अछि। ‘अन्तर्मनक’ जोड़लासँ युद्धक स्थल व्यक्ति भीतर चलि जाइत अछि, मुदा उपन्यास ओकरा मनोवैज्ञानिक एकान्तमे कैद नहि करैत। भीतरक द्वन्द्व सार्वजनिक नियम, अस्पतालक ढाँचा, नगर-पञ्जी, परिवारक निर्णय आ श्रमिकक अनाम दिनक संग लगातार टकराइत अछि। एहि कारणेँ शीर्षकक आशय ‘सभ किछु मनक भीतर अछि’ नहि, अपितु मनक नैतिक प्रश्न बाहरी संस्थाक प्रयोगमे परखल जाइत अछि—एहन द्विमुखी तनाव अछि।

अध्याय १ ‘मृतकक रसोइ’मे सरिता चूल्हापर भात रान्हि रहल छथि, तइ काल फोन कहैत अछि जे ओ मरि गेल छथि। हुनकर पति सत्रह वर्ष पहिने मरल छलाह, मुदा हुनकर नामक दवापर्ची काल्हिक अछि। एकटा जीवित देह

आ ओकरा मृत घोषित करैत सूचना एक-दोसरक विरोधमे ठाढ़ अछि। ई विचित्र उद्घाटन केवल कौतूहल पैदा नहि करैत; नागरिक अस्तित्व आ अभिलेखीय अस्तित्वक बीच महाभेद तुरन्त उपस्थित करैत अछि। सरिताक उत्तर—‘जँ ओ सभ फेर कहए जे हम मरि गेल छी, तँ पूछिहेँ—एहि भातक हिसाब के दैत अछि?’—अस्मिताक परीक्षण देहधारी श्रमसँ करैत अछि। भात, दवाइ, समयसीमा आ आवेदनक प्राप्ति-संख्या चारि अलग वस्तु रहितो एक प्रश्नक भिन्न साक्ष्य बनि जाइत अछि।

समापनक अध्याय २१६मे फेर चूल्हा, दाना, भात, लोटा आ नदी अछि। फर्क ई जे एखन नैरा नहि छथि; हुनकर अनुपस्थिति केवल अभिलेखक त्रुटि नहि, सत्यापित आ अपरिवर्तनीय मृत्यु अछि (अध्याय १२१, २१४)। आरम्भक झूठ ‘मृत्यु’ आ अन्तक अपरिवर्तनीय शोकक बीचक ई प्रतिलोम सम्बन्ध कथाक सूक्ष्म संरचनात्मक मेरुदण्ड अछि। आरम्भमे देह कागदक दावाकेँ खण्डित करैत अछि; अन्तमे कोनो नव कागद प्रियजनकेँ पुनर्जीवित नहि करैत। एहि अन्तरकेँ उपन्यास नीतिक सूत्रमे नहि, दिन-प्रतिदिनक भोजन आ खाली थारीमे अनुभवयोग्य बनबैत अछि।

३. अठारह पर्व, सात काण्ड आ पुनर्लिखित महाकाव्यत्व

अठारह पर्वमे प्रत्येक बारह अध्याय राखब एकटा अत्यन्त सजग स्थापत्य-निर्णय अछि। आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, अश्वमेध, आश्रमवासिक, मौसल, महाप्रस्थानिक आ स्वर्गारोहणक क्रम एक शास्त्रीय स्मृति-जाल बनबैत अछि। तकर भीतर बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड आ उत्तरकाण्डकेँ समायोजित कएल गेल अछि। तेँ एक अध्याय केवल अपन आधुनिक कथानकक चरण नहि, दूटा महाकाव्यीय वंशावलिक भीतर अपन स्थानो धारण करैत अछि। ई ‘कथानकक उद्धरण’सँ बेसी ‘रचनाक संरचनात्मक स्मृति’ अछि।

महाभारतक सभा-पर्वक आधुनिक अर्थ केवल पासा वा दरबार नहि। अध्याय १५मे द्रौपदीक प्रश्नक संग अनिता आ सलमाक दू अलग नागरिक मामला चलैत अछि। नैरा दुनूक यंत्रणा एक फाइलमे नहि मिला दैत छथि: एक ठाम गलत सामाजिक वर्गीकरण आ निजता, दोसर ठाम उपचारक पहिने पहिचानक

शर्त। सभामे स्त्रीकेँ वस्तु मानबाक प्रश्न आधुनिक कार्यालयमे निर्णयक विषय बनल व्यक्तिक स्वत्वक प्रश्न बनैत अछि। समानता अछि, मुदा एक-दोसराक स्थानापन्न नहि। उपन्यासक आरम्भिक संरचनात्मक टिप्पणी सेहो स्पष्ट करैत अछि जे आधुनिक पात्र प्राचीन पात्रक पुनर्जन्म वा जातीय समतुल्य नहि छथि। इएह सावधानी प्रतिरूपकेँ सरलीकृत रूपक भऽ जाएबासँ बचबैत अछि।

उत्तरकाण्ड आ शान्ति-अनुशासन-अश्वमेध-स्वर्गारोहणक अन्तिम चरण कथाकेँ ‘विजय’क बादो लम्बा चलबाक बाध्यता दैत अछि। अध्याय १३२मे मृतकक सत्यापित संख्या स्थिर भेलाक बादो छूटल देय, सहायता, प्रतिनिधित्व आ शेष दावाक दोसर पञ्जी बिना अन्तिम मुहरक रहैत अछि। अध्याय १५७क अश्वमेधमे साम्राज्य-विस्तारक घोड़ा आ आधुनिक प्रवेशक सहमति अलग प्रश्न बनैत अछि; कोनो गामक अस्वीकार तुरन्त ‘अवरोध’ नहि होइत, ओकरा ‘उत्तरक प्रतीक्षा’ लिखल जाइत अछि। अध्याय २०५क स्वर्ग-सूची संस्थागत पदक बदला प्रमाणित नाम आ परिवारक अनुमति पर बल दैत अछि। महाकाव्यक उत्तरार्द्ध एतय महिमामण्डनसँ हटि उत्तरदायित्वक कठिन काल बनि जाइत अछि।

एहि स्थापत्यक उपलब्धिक संग ओकर जोखिमो अछि। प्रत्येक पर्वकेँ ठीक बारह अध्याय देबाक सममिति पाठककेँ कालक्रमक विश्वास दैत अछि, मुदा अनेक प्रसंगमे फाइल, बैठकी, नापी, प्राप्ति-पत्र आ सुधार-पत्रक आवर्तन अत्यधिक पूर्वनिर्धारित बुझा सकैत अछि। महाकाव्यत्वक माप अध्यायक संख्या नहि; स्वरक स्वातन्त्र्य, चरित्रक अप्रत्याशितता आ घटनाक नैतिक परिणामो अछि। उपन्यास जखन पात्रकेँ अपन निर्दिष्ट दार्शनिक कार्यसँ आगाँ जीबय दैत अछि—सरिताक भात, महेशक बेटीक विद्यालय, द्रौपदीक छोट कटोरी—तखन ओकर महाकाव्यीय विस्तार सर्वाधिक प्रभावी होइत अछि।

४. कथा-समय, दृष्टिस्थिति आ बहुस्वरीय संरचना

जेनेतक आख्यान-विचारसँ एहि कादम्बरीमे ‘घटना कोन समय घटल’, ‘घटनाकेँ केकर अनुभवद्वारा देखाओल गेल’ आ ‘पाठककेँ सूचना कोन क्रममे भेटल’—ई तीनू प्रश्न अलग कए देखल जा सकैत अछि। आधुनिक विदेहपुरक २०३९-२०४२क समयधारा, रामायण-महाभारतक कथा-काल तथा वाचस्पति-उदयन-गङ्गेशक शास्त्रार्थक ऐतिहासिक-सांकेतिक धारा एकरूप काल नहि अछि। लेखक पारस्परिक कटानक द्वारा वचन, जन्म, साक्ष्य आ कारणकेँ

बारम्बार नव परिप्रेक्ष्यमे रखैत छथि। प्राचीन पात्र आधुनिक कार्यालयमे स्वयं पहुँचि कागद नहि लिखैत छथि; हुनकर प्रसंगक बाद आधुनिक पात्रक अलग निर्णय देखाओल जाइत अछि। अतः समयक ई सामीप्य पाठकीय तुलना करबैत अछि, घटनाक वास्तविक समकालिकता नहि।

अध्याय ६१मे गङ्गा–शान्तनुक शर्त, सात शिशुक मृत्यु आ आठम पुत्रक भविष्यक बीच मौनक अर्थ बदलैत अछि; समवर्ती विदेहपुरमे नैरा लिखैत छथि जे शर्त स्वीकार करब, ओकरा बुझब आ परिणाम भोगब तीन अलग काज। ई दृश्य एकदम कथन-स्तरक सेतु अछि; पात्र-दुनियासभक अनिवार्य ऐतिहासिक मिलन नहि। अध्याय १२५मे कुन्तीक कर्णसम्बन्धी स्वीकारोक्ति रक्तसम्बन्धक अधिकारकेँ राधा–अधिरथक पालनक जीवनसँ भिड़बैत अछि; आधुनिक कबीरक जन्म-पञ्जी आ पालनक गोपनीयताक प्रश्न संग तुलना सम्भव होइत अछि, मुदा दुनू जीवनक निष्कर्ष एक नहि बनैत।

उपन्यासमे तृतीयपुरुष कथन व्यापक अछि; तइयो दृष्टिस्थिति बेराबेरी सरिता, नैरा, तारा, रमा, रुहानी, महेश, मैथिली, शास्त्रार्थक पूर्वपक्षी आ अन्य पात्रक समीप सरकैत अछि। एहि पद्धतिकेँ अनेक स्वतन्त्र प्रथमपुरुष कथावाचकक उपन्यास कहब अशुद्ध होएत। उचित भेद ई अछि जे एक व्यापक कथनव्यवस्थाक भीतर अनेक अनुभवनिकट केन्द्र अछि। बाख्तिनक बहुस्वरिता एतय तखन सिद्ध होइत अछि जखन पात्रसभ लेखकक एकहि नैतिक वाक्यक प्रतिध्वनि बनबाक बदला वास्तविक असहमति राखि सकैत छथि। अध्याय १३९मे मीमांसक पूर्वपक्षी उदयनसँ जगतक कारणसम्बन्धी अनुमानक व्याप्ति पूछैत छथि; संवाद तत्काल ‘एक पक्ष जीतल’ कहि बन्द नहि होइत। अध्याय २१४मे कबीर नैराकेँ निर्दोष स्मारक-प्रतिमामे बदलबाक विरोध करैत छथि। एहन क्षणमे बहुस्वरिताक मूल्य स्पष्ट अछि।

रिकरक कथा-समयक दृष्टिसँ दैनिक पुनरावृत्ति—भात चढ़ब, पोखरि नापब, पर्ची सुरक्षित राखब—व्यापक ऐतिहासिक कालकेँ मानवीय समय बनबैत अछि। आपदा एकटा रातिक दुर्घटना मात्र नहि रहैत; ओकर कारण पहिनुक चेतावनीमे, ओकर परिणाम वर्षक बादक मजदूरी-पञ्जीमे, आ ओकर स्मृति घरक कोठरीमे रहि जाइत अछि। ई समय-विस्तार कथाक नैतिक आग्रहक मूल स्रोत अछि।

५. रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्यक भारतीय परीक्षण

भरतक रस-सिद्धान्तक आलोकमे ‘करुण’ एहि कादम्बरीक व्यापक स्थायी अनुभव बुझा पड़ैत अछि, किन्तु एकल रस घोषित करब पर्याप्त नहि। अध्याय ७०मे महेशक परिवारक भय, अध्याय १०८–१२१मे जलापदा, अध्याय १२३मे गान्धारीक मातृशोक, अध्याय १३०मे द्रौपदीक बचल दिन आ अध्याय २१४मे नैराक अनुपस्थितिक बोध करुणाकेँ अलग विभाव–अनुभाव दैत अछि। दोसर दिस अन्यायक विरोधमे उत्साह, गवाहीक साहस, श्रमिकक सामूहिक निर्णय आ पाठशालाक प्रश्नमे वीररसक नैतिक आवेग सम्भव अछि। भयानकता अस्पतालक असुरक्षित पाँख आ धमकीक अनुभवमे उभरैत अछि। ‘शान्त’केँ पूर्ण समाधानक रूपमे नहि, असमाप्त शोकक बीच संयत जीवित रहबाक अभ्यास रूपेँ पढ़ब अधिक उचित अछि।

आनन्दवर्धनक ध्वनिसिद्धान्तक प्रयोग तखन सार्थक अछि जखन प्रत्यक्ष कथनसँ आगाँ अर्थक सङ्केत देखाओल जाए। प्रथम अध्यायक चूल्हा आ अन्तिम अध्यायक चूल्हा एके काजक पुनरावृत्ति अछि, मुदा अन्तमे थारी, एक दाना चाउर आ अनुपस्थित नैराक स्मृति पहिनुक ‘कागद बनाम देह’ विवादकेँ शोकक नब अर्थ दैत अछि। अध्याय २१४मे सरिता थारी धोइ सुखबैत छथि, मुदा ‘खाली जगह’केँ नव नाम नहि दैत छथि। ई रिक्ति केवल विवरण नहि; ओ कथाक अव्यक्त अर्थक वाहक अछि। तथापि प्रत्येक कागद, चूल्हा आ बूँदकेँ स्वतः प्रतीक मानब आलोचनात्मक अतिरेक होएत। किछु वस्तु श्रमक वास्तविक उपकरण मात्र सेहो अछि; ओकर प्रतीकत्व प्रसंगसँ सिद्ध होइत अछि।

कुन्तकक वक्रोक्तिक कसौटीपर अध्याय १क ‘मृतकक रसोइ’ शीर्षक अत्यन्त सार्थक अछि: मृत घोषित स्त्री स्वयं रान्हैत छथि। शब्दक अन्तर्विरोध कथा खोलैत अछि। अध्याय १५क ‘द्रौपदीक प्रश्न’ आधुनिक निजताक प्रश्नक रूपेँ प्रतिध्वनित होइत अछि; अध्याय २०५क ‘स्वर्गक सूची’ मृतकक सार्वजनिक सम्मान आ परिवारक अधिकारक बीच व्यङ्ग्यमय दूरी बनबैत अछि। ई केवल सुन्दर अलङ्कार नहि; नामकरणक प्रचलित अर्थक उलटफेर अछि।

क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचारसँ दृश्य, पात्र, वातावरण आ विचारक परस्पर उपयुक्तता जाँचल जा सकैत अछि। दार्शनिक तर्क जखन रसोइक मजदूरी, पुरान पन्नाक संशोधन अथवा नापक औजारक संग जुड़ैत अछि, तखन ओकर कथात्मक औचित्य बनैत अछि। मुदा सभ छोट सामाजिक प्रसंगकेँ तत्काल

तर्कशास्त्रक दृष्टान्त बना देल जाए तँ अनुभवक स्वतन्त्र गहिराइ घटि सकैत अछि। एहि उपन्यासक कला अपने बनाएल अनुशासनसँ जखन मुक्त भऽ पात्रकेँ चुप रहबाक, क्रुद्ध होएबाक, व्यक्तिगत वस्तु नुकएबाक वा निर्णय टारबाक अवकाश दैत अछि, तखने अधिक सजीव होइत अछि।

६. भामती आ अध्यास : नाम, देह आ लेखकीय श्रेय

वाचस्पति मिश्रक 'भामती' अद्वैतवेदान्तक एक विशिष्ट व्याख्या-परम्परा अछि; 'अध्यास'क शास्त्रीय आशय केवल सरकारी सूचीमे गलत नाम चढ़ब नहि, आत्मा-अनात्माक परस्पर आरोपसम्बन्धी गहन दार्शनिक प्रश्न अछि। उपन्यास एहि मूल प्रश्नकेँ आधुनिक पहिचानक नैतिक उपमान रूपेँ बरतैत अछि। जीवित सरिता मृतकक कोठरीमे, श्रम करनिहारी अनाम सेवाक कोठरीमे, आ ककरो जातीय-पेशागत नाम ओकर समस्त व्यक्तित्वक स्थानमे चढ़ि जाए—एहि प्रसंगसभमे 'जे अछि' आ 'जे ओकरापर आरोपित कएल गेल'क अन्तर उजागर होइत अछि। ई अनुप्रयोग साहित्यिक समानता अछि, मूल अद्वैतसिद्धान्तक प्रत्यक्ष व्याख्यात्मक प्रतिस्थापन नहि।

उपन्यासक दार्शनिक सम्बन्ध-मानचित्र चतुःसूत्रीक चारि सूत्रकेँ अलग नैतिक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा'क समक्ष 'प्रश्न पूछबाक अधिकार ककरा?'; 'जन्माद्यस्य यतः'क समक्ष कारणक बहुस्तरीय खोज; 'शास्त्रयोनित्वात्'क समक्ष पुस्तक, प्रमाण आ स्रोतक विश्वसनीयता; 'तत्तु समन्वयात्'क समक्ष विरोधी वक्ताक कथनकेँ मिटौने बिना संग पढ़बाक अभ्यास। अध्याय ३२ 'अथातो ककर'मे लिखब सीखैत बालक आ शास्त्रीय जिज्ञासाक प्रवेशक प्रश्न एक धरातलपर आबैत अछि। कथा मूल सूत्रक सर्वथा सामाजिक अनुवाद कऽ देबाक दावा नहि करैत; ओ पूछैत अछि जे ज्ञानक दुआर बन्द करनिहार संस्थाक अधिकार कतए धरि अछि।

अध्याय ८२मे मैथिली अपन हस्तलिखित संशोधनक पन्ना पहिल बेर अपन वाणीमे पढ़ैत छथि। ओ सार्वजनिक लेखकीय श्रेयक विवादकेँ कबीरक निजी जन्म-अभिलेखक प्रकाशनसँ अलग रखैत छथि। अध्याय ८४मे ईशान स्वीकार करैत छथि जे मूल विचार, संशोधनक ऐतिहासिक दायित्व आ छपल पुस्तकक धन्यवादसूची तीन अलग जाँच माँगैत अछि; तइयो हुनकर स्वीकारोक्तिसँ सरिताक तीन दिनक हिसाब वा मजदूरक बकाया स्वतः समाप्त नहि होइत।

एहि ठाम 'ज्ञान'क पूँजी आ 'घरक काज'क अदृश्य आर्थिक आधारक सम्बन्ध पाठककेँ विचारबाक पड़ैत अछि।

अध्याय २१०मे 'तत्तु समन्वयात्'क पढ़ाइमे मतभेदक पत्र अलग सुरक्षित रहैत अछि। सरिता स्पष्ट करैत छथि जे स्मारकमे मृत श्रमिकक नाम चढ़लासँ परिवारक बकाया नहि चुकैत। समन्वय अतः विरोधकेँ सजावटी रूपेँ मेटब नहि, परस्पर असंगत दावाक विषय, सीमा आ देय पहिचानब अछि। अध्याय २१३मे मैथिलीक पोथीपर सरिताक श्रमक सूची आ लेखकीय दोषक स्वीकृति छपैत अछि। मुदा पाठ आगाँ जोड़ैत अछि जे भुगतानक प्रश्न शेष अछि। ई भामती-विवेचनक सशक्त आधुनिक परिणाम अछि: सहलेखनक प्रतिपूर्ति केवल प्रशंसाक पाँति नहि, श्रमक वास्तविक मान्यता आ उत्तरदायित्वो चाहैत अछि।

७. न्यायकुसुमाञ्जलि : दृढ़ पूर्वपक्ष आ असमाप्त ईश्वर-विवाद

उदयनाचार्यक 'न्यायकुसुमाञ्जलि'केँ उपन्यास पाँच स्तबकक तर्क-यात्रा रूपेँ ग्रहण करैत अछि। अदृष्ट आ कर्मफल, अनुष्ठानक स्वतन्त्रता, निषेधक प्रमाण, सर्वज्ञ वक्ताक प्रश्न तथा सकारात्मक ईश्वरानुमान—ई अलग-अलग चरण आधुनिक कारण-जाँचसँ संवाद करैत अछि। एहि ठाम विचारणीय बात ई नहि जे अस्पतालक दुर्घटनासँ ईश्वरक अस्तित्व सिद्ध वा असिद्ध होइत अछि। कथा बारम्बार ओहि शॉर्टकटकेँ अस्वीकार करैत अछि। एकटा दार्शनिक निष्कर्ष आ एकटा प्रशासनिक दोष-निर्धारणक प्रमाण-विधि एक नहि होइत।

अध्याय ५४ 'अनुष्ठान बिना प्रधान'मे सामूहिक भोजन बाँटबाक नियम आ उदयनक पूर्वपक्ष-दूटा कालधारा एकत्र पढ़ल जाइत अछि। मीमांसक आपत्ति पूछैत अछि जे वेदक प्रामाण्य यदि सर्वज्ञ वक्तापर निर्भर हो तँ तकर सर्वज्ञता कोन स्वतन्त्र प्रमाणसँ जाँचल जाएत; आ ईश्वरक परिचय फेर वेदसँ भेटत तँ परस्पर आश्रयक संकट बनत की नहि। आधुनिक आश्रयमे तख्ती कहैत अछि —मुख्य संयोजकक स्वीकृति अनिवार्य। रुखसाना तखन भोजनक तीन अलग स्रोतक हिसाब पूछैत छथि। ई समानान्तरता 'प्रधान व्यक्ति अनावश्यक'क सरल राजनीतिक घोषणा नहि, दायित्व, स्रोत आ नियमक औचित्य जाँचबाक अवसर बनबैत अछि।

अध्याय १३९मे पूर्वपक्षी जगतक कारणसँ एकमात्र चेतन नियन्ताक अनुमानक व्याप्ति चुनौती दैत छथि: कुम्हारक घटसँ प्राप्त अनुभवकेँ सम्पूर्ण जगतपर

कोना लागू कएल जाए? ई तर्कक असुविधाजनक सशक्तता लेखक बनौने रखैत छथि। विदेहपुरमे एकहि प्रसंगक काते गोमती आ रमा अलग-अलग फाइलमे आदेश, मौन, मजदूरी आ दायित्वक कारण जाँचैत छथि। साहित्यिक सेतु 'कारण' शब्द अछि, मुदा शास्त्रीय अनुमान आ विधिसम्मत जवाबदेहीक आधार अलग रहैत अछि।

अध्याय २११मे उदयन अपन प्रतिवादीक आपत्तिक प्रति सुरक्षित राखबाक लेल शिष्यक नकल-श्रमक दाम जोड़बाक कहैत छथि। विचारक संरक्षणक संग तर्क-विरोधीकेँ बोलबाक वास्तविक साधन प्रदान करबाक आग्रह उपन्यासक मौलिक नैतिक विस्तार अछि। एतय निष्पक्षता कोनो असम्भव स्वरहीनता नहि, अपितु पूर्वपक्षक उचित उपस्थिति, जाँचयोग्य प्रतिलिपि आ श्रमक मान्यता अछि। कोनो पक्षक अंतिम विजय घोषित नहि भेलापर सेहो शास्त्रार्थक महत्त्व कम नहि होइत; ओकर विधिगत शुचिता बढ़ैत अछि।

८. तत्त्वचिन्तामणि : प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द आ प्रमाणक सीमा

गङ्गेश उपाध्यायक 'तत्त्वचिन्तामणि' न्यायपरम्परामे प्रमाणक सूक्ष्म विवेचन करैत अछि। उपन्यासक दार्शनिक मानचित्रमे प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्दक कथात्मक प्रयोग अलग देखाओल गेल अछि; ईश्वरानुमानपर विशेष विवाद सेहो अछि। आधुनिक कथामे एहि भेदक सभसँ महत्त्वपूर्ण परिणाम ई अछि जे पंजीमे लिखल शब्द, आँखिसँ देखल वस्तु, सुनल बयान, एकरासँ निकालल अनुमान आ सार्वजनिक अफवाह—सभ समान दर्जाक सूचना नहि अछि। प्रमाणक वर्गीकरण कथा-सुलझावक सुविधा मात्र नहि; पात्रक नैतिक आचरणक कसौटी अछि।

अध्याय २क 'सत्ताइस नाम'मे नैराक लग छब्बीस नाम अछि; एकटा नामक अभावकेँ ओ स्पष्ट रूपेँ 'प्रमाणक कमी' लिखैत छथि, 'कसूरक प्रमाण' नहि। अध्याय ९मे तारा पुरान नक्शामे जलमार्गक रेखा भेटलापर ई नहि कहैत छथि जे मार्गक बन्द होएबाक निश्चित दिन सिद्ध भऽ गेल। अध्याय ६८मे अदितिक मूल चेतावनी आ संक्षिप्त कार्यालयी सारांशक अन्तर जाँचल जाइत अछि; ओकरा बाद पुनर्निरीक्षण वास्तवमे भेल छल की नहि, ई तेसर प्रश्न रहैत अछि। नैरा चेतावनीक अस्तित्व, सारांशक कटौती आ दुर्घटनाक अन्तिम

कारणक्रम तीन अलग स्तरपर राखैत छथि। ई विवेक नव्यन्यायक प्रमाण-शुचिता बुझबाक लेल कथात्मक रूपेँ अत्यन्त उपयुक्त अछि।

अध्याय ८८ 'चौदह विसंगति'मे चौदह गलतीकेँ एक प्रकारक नाम-सुधार नहि मानल जाइत। सामाजिक वर्गीकरणक भूल, नामकेँ पेशामे बदलि देब आ धर्मक अनुमान मजदूरीसँ निकालब अलग अनर्थ अछि। उपमान—मिलैत चेहरा, मिलैत नाम वा समान काम—समान व्यक्ति वा समान धर्मक पर्याप्त आधार नहि। अध्याय १४७मे संकेत बनौने सहायक चिह्नक अर्थ बच्चासभसँ पुछबाक पद्धाक आग्रह स्मरणीय अछि: माध्यमक निर्माता अर्थक एकाधिकार नहि रखैत। 'शब्द'क प्रामाण्य ककर अनुभवक विरुद्ध पहुँचैत अछि, ई प्रश्नो आवश्यक अछि।

अध्याय २०० 'शब्दक अन्तिम जाँच'मे पद्धा चारि पट्टी पर 'प्रत्यक्ष', 'श्रुत', 'अनुमान' आ 'कल्पना' लिखैत छथि। ई चतुष्टय मूल न्यायग्रन्थक चारि प्रमाणक पर्याय नहि; विशेषत: 'श्रुत' आ 'कल्पना' आधुनिक अभिलेख-लेखनमे स्रोतक स्थिति सूचित करैत अछि। एहि भेदकेँ बुझने बिना पाठक अनजानेमे साहित्यिक वर्गीकरणकेँ शास्त्रीय प्रमाण-मीमांसाक स्थानमे रखि देताह। अध्याय २१२क 'उदाहरण ककर जीवनसँ लेब?' प्रश्न एकरा आरो पैघ बनबैत अछि। शास्त्रक उदाहरण चयन स्वयं सामाजिक जीवनक कोन अंशकेँ ज्ञानक योग्य मानल जाइत अछि, से निर्धारित करैत अछि। एहि दृष्टिसँ गङ्गेशक कथात्मक पुनर्पाठ बौद्धिक लोकतंत्रीकरणक प्रखर अवसर अछि।

९. अभिलेख, सत्ता आ ज्ञानगत अन्याय

मिरान्डा फ्रिकर ज्ञानगत अन्यायक दू प्रमुख रूप चिन्हैत छथि: वक्ताक सामाजिक पहिचानक कारण गवाहीकेँ कम विश्वसनीय मानब आ अनुभवकेँ बुझबाक साझा भाषिक साधनक अभाव। उपन्यासमे एकर संग एकटा तेसर स्तर उभरैत अछि—प्रशासनिक पञ्जी स्वयं जकरा नागरिक मानबाक चाही ओकरा नाम, देह, श्रम वा सम्बन्धकेँ गलत खानामे धकेलैत अछि। सरिताक मृतक-घोषणा, अनिताक गलत वर्गीकरण आ रोजीक धर्मक पेशासँ अनुमान एहि पीड़ाक अलग प्रतिरूप अछि। एहि उदाहरणसभमे 'भूल' एकरूप नहि: तकनीकी त्रुटि, संस्थागत असावधानी, सामाजिक रूढ़ि आ जानबूझि कएल कटौतीक नैतिक तथा प्रामाणिक स्थिति अलग-अलग जाँचबाक चाही।

अध्याय २०मे नैरा महेशक गवाही प्रकाशित करबाक हड़बड़ीमे नाम नहि लिखने रहितो कामक प्रकार, समय आ ठाम एहन जोड़ि दैत छथि जाहिसँ पहिचान उजागर होएबाक जोखिम बनैत अछि। अध्याय ७०मे महेशक घरक लोक पहिचान-उद्घाटनक परिणाम झेलैत छथि। अधिकारी कहैत छथि जे 'नाम तँ नहि छपल'; पत्नी उत्तर दैत छथि जे घर, काम आ परिवारक इशारा छपल अछि। ई प्रसंग प्रेसक स्वतन्त्रता आ साक्षीक सुरक्षा बीच कठिन नैतिक सीमा देखबैत अछि। लेखक अपन खोजी नायिकाकेँ त्रुटिहीन न्याययोद्धा नहि बनबैत; सत्य प्रकाशित करबाक उत्साहो अनेकरा असुरक्षित कऽ सकैत अछि। अतः कथा नायकत्वक स्वसंशोधन माँगैत अछि।

मिशेल फूकोक संस्थागत ज्ञान-सत्ता विमर्शसँ पंजी, सूचीक खाना, अस्पतालक वर्गीकरण आ परीक्षणक प्रक्रियासभक सामाजिक प्रभाव देखल जा सकैत अछि। मुदा उपन्यासक अन्तर ई जे प्रत्येक अभिलेखकेँ केवल दमनक औजार नहि मानल गेल अछि। सटीक प्रमाणपत्र उपचार सुनिश्चित करैत अछि; श्रमक सही हिसाब भुगतानक आधार बनैत अछि; नामक गोपनीयता सुरक्षा दैत अछि। एकर राजनीतिक प्रश्न अछि—अभिलेख ककरा नियन्त्रित हाथमे, कोन स्पष्ट प्रक्रिया द्वारा, केकर सुधार-अधिकारसहित रहत? अध्याय २१५मे एक हाथमे सभ चाभी नहि देबाक निर्णय दस्तावेजीय सत्ता बाँटबाक ठोस प्रयोग अछि।

जाक देरिदाक अभिलेखसम्बन्धी चिन्तन स्मृति, अधिकार आ भविष्यक पाठकक जटिल सम्बन्ध उघारैत अछि। अध्याय २१४मे नैराक निजी फोनक सन्देश प्रकाशन लेल स्वतः उपलब्ध नहि होइत, जद्यपि सार्वजनिक स्मृति बनबाक आकांक्षा तीव्र अछि। अध्याय २१५मे तीन प्राप्ति-प्रति तीन संरक्षक लग सुरक्षित होइत अछि; एकटा मूल दस्तावेजक अखण्डता आ सार्वजनिक पहुँच दुनू बचएबाक प्रयत्न चलैत अछि। ई अभिलेखक नायकत्व नहि, अभिलेखपर परामर्श, संशोधन आ सीमित अधिकारक संरचना अछि। कथाक भविष्य एखनुओ खुलल अछि, कारण नब पाठक प्रश्न पूछताह।

१०. स्त्रीक वाणी, देखभाल आ स्वत्व : एकाधिक स्त्रीवादी पाठ

एहि कादम्बरीमे स्त्री केवल शोक सहन करनिहारी वा संकटमे उद्धारक प्रतीक्षा करनिहारी नहि छथि। सरिता जीवनक प्रमाण आ चूल्हाक श्रमक हिसाब पुछैत छथि; नैरा पत्रकारिक साहसक संग आत्मसमालोचना करैत

छथि; उर्मिला धुलाईक मजदूरी आ अस्पतालक कपड़ा-पञ्जी सुधारबाक प्रयत्न करैत छथि; तारा नापब, पुनजाँच आ ठेकेदारक दावाक जाँच अपन हाथमे लैत छथि; रुखसाना सामूहिक रसोइक आर्थिक तर्क सुनबैत छथि; रुहानी आश्रय देबाक अधिकारसँ नियन्त्रणक एकाधिकार दिस बढ़ि गेल अपन पुरान अभ्यास बदलैत छथि। स्त्रीक ई बहुरूपता 'स्त्री'कैं एकटा एकरूप पीड़ित वर्ग बना देबाक प्रवृत्तिकैं चुनौती दैत अछि।

अध्याय १२३मे गान्धारीक शोक केवल राजपुत्रक पतनक कथा नहि; रणभूमिमे सत्तू आ नमकक पुड़िया खोजैत अनाम वृद्धाक पीड़ाक संग ओकरा जोडल गेल अछि। अध्याय १२४मे मन्दोदरी लङ्काक राजमहलमे शेष स्त्रीसभक बाहरी प्रवेश आ मृतकक असमान पहिचानपर प्रश्न करैत छथि। अध्याय १२५मे कुन्ती स्वीकार करैत छथि जे जन्म देलासँ कर्णक राधा–अधिरथक संग जिएल सम्पूर्ण जीवन हुनकर निज स्वामित्व नहि बनि जाइत। अध्याय १३०मे द्रौपदी अपन लेल छोट कटोरी भात मँगैत छथि। ई छोट निर्णय शोक आ अस्तित्वक संग बसबाक अधिकार देखबैत अछि। महाकाव्यक स्त्री पात्रसभकैं युद्धक नैतिक टिप्पणीकार बनाकऽ छोड़ी नहि देल गेल; हुनका भोजन, देह, घर, स्मृति आ असहमतिक स्वायत्त उपस्थिति देल गेल अछि।

गायत्री स्पिवाकक प्रतिनिधित्वसम्बन्धी आलोचनासँ पुछल जा सकैत अछि: जकरा हकमे बोलल जा रहल अछि, ओकर अपन भाषणक स्थान कतए अछि? अध्याय १५मे नैरा अनिताक ओरसँ तत्काल सार्वजनिक प्रदर्शन नहि करैत; अनिता तय करैत छथि जे पहिने लिखित प्रश्न राखल जाए, हुनकर नाम भीड़मे नहि पुकारल जाए। अध्याय १४३मे रुहानी बुझैत छथि जे संकटमे खोलल चाभी सँ आश्रितक राति आ देहपर शाश्वत अधिकार नहि प्राप्त होइत। अध्याय १५४मे चम्पा सार्वजनिक घाट देखबाक अधिकार आ अपन भीजल देहक चित्र प्रकाशित करबाक सहमति अलग करैत छथि। एहि तिहरी भेदमे स्त्रीवादी आलोचना रक्षा, प्रतिनिधित्व आ स्वामित्वक असमान अर्थकैं ठोस बनबैत अछि।

तथापि सम्पूर्ण स्त्री-चरित्रक मुक्तिकथा समान गतिसँ विकसित नहि अछि। किछु पात्र विस्तृत जीवनक संग लौटैत छथि; किछु अपन सामुदायिक प्रतिनिधित्व वा पेशागत एक प्रश्नक माध्यम मात्र बनैत छथि। एतय आलोचककैं स्त्रीक मात्र सङ्ख्या गनबाक बदला ओ निर्णय ककरा हाथ रहल,

ओ अपन भूल स्वीकार कएलनि की नहि, आ ओ अपन असहमति कायम राखि सकलीह की नहि—एहि कसौटीपर प्रत्येक जीवन परखबाक चाही। उपन्यासक स्वर्णक्षण ओ अछि जतय मदद करनिहार व्यक्ति सेहो दोसरक स्वातन्त्र्यक आगे अपन अधिकार सीमित करैत अछि।

११. जाति, व्यवसाय आ १५७ वृत्त : विस्तारक उपलब्धि आ प्रतिनिधित्वक सीमा

पाण्डुलिपिक '१५७ व्यवसाय-समुदाय' सूचीमे बरही, डोम, कुम्हार, मलाह, जोलहा, पटवा, दर्जी, धुनिया, धोबि, लोहार, केवट, मुसहर, अनेक शिल्पी, कृषक, सेवा-समुदाय तथा अन्य वृत्तक पात्र-सङ्केत आ सम्बद्ध अध्याय देल अछि। सूची स्वयं चेतबैत अछि जे समुदाय वा व्यवसाय जन्मसँ पात्रक स्वभाव निर्धारित नहि करैत। एहि घोषणा आ कथा-दुनूकेँ एक संग पढ़ब आवश्यक अछि। विशाल पात्र-पुञ्ज मिथिलाक सामाजिक श्रम-विभाजनक स्मृति बनबैत अछि, किन्तु जाति-वृत्त आ व्यवसाय-वृत्त ऐतिहासिक रूपेँ एकार्थी नहि; नाम, स्थानीय पहचान, बदलैत जीविका आ व्यक्तिगत निर्णयक अन्तर पर ध्यान चाही।

अध्याय ९मे ललित अपन काठक खूँटा, अस्थायी घेराबन्दी आ नापीक मजदूरीकेँ केवल 'सामूहिक पर्व'क नामपर निःशुल्क नहि करैत छथि। अध्याय ४३मे कसेरा, सोनार आ अन्य कारीगर अपन काजक बिल, वस्तुक स्वामित्व आ नमूनाक अलग दायित्व पर बल दैत छथि। अध्याय ५४मे रुखसाना भोजनक स्रोतक भेद पूछैत छथि; काज कएल स्त्रीक समय शून्य लिखबाक विरोध होइत अछि। अध्याय ८४मे मंगरी ईशानकेँ स्पष्ट कहैत छथि जे दार्शनिक भेद बुझा देबासँ हुनकर मजदूरीक दाम तय करबाक अधिकार नहि भेटैत। एहि दृश्यमे जाति–श्रमक चिन्तन आर्थिक श्रमक माप आ वक्ताक स्थितिक संग गुँथल अछि।

उपन्यास जाति-विरोधी विचारकेँ एकटा अमूर्त समानताक उद्घोषमे नहि रोकैत। अध्याय ७६क एकलव्य-सम्बन्धी पुनर्पाठमे पढ़बाक प्रवेश, विदेश पठाओल धन, महिलाक बचत आ फाटकक मार्ग जकाँ भिन्न अधिकारक तुलना अछि। अध्याय १४९मे जानकीक घुमन्तु दलपर बच्चा चोरीक झूठा आरोपक सार्वजनिक खण्डन तखनहुँ पर्याप्त नहि होइत जखन पुरान काटल दृश्य फेर प्रसारित होइत अछि। अध्याय १५१मे शम्बूकक पाठ कक्षाक फट्टापर दू प्रश्न

बनि उभरैत अछि—'के पढ़ि सकैत अछि?' आ 'के फैसला करैत अछि?' ई प्रतिप्रश्न जाति-ज्ञानक असमान प्रवेशकेँ भक्ति अथवा नायकपूजाक सीमासँ बाहर लैत अछि।

एतय एक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक आपत्ति सम्भव अछि। १५७ प्रविष्टिक पूर्वसूची कथाक भीतर प्रतिव्यक्ति समान विस्तृत मनोवैज्ञानिक जीवनक प्रमाण नहि देत। किछु प्रसंगमे पात्रक पहिल परिचय ओकर व्यवसाय आ सही रसीदक समस्या होइत अछि; ओकर प्रेम, भय, असंगत इच्छा, विलम्बित विकल्प वा निजी स्मृति अपेक्षाकृत कम खोलैत अछि। जँ प्रत्येक समुदायकेँ एक प्रतिनिधि आ एक अनिवार्य अधिकार-वाक्य मात्र देल जाए, तँ समावेशन फेर वर्गीकरणक दोसर रूप बनबाक जोखिम रहैत अछि। एहि उपन्यासक उत्कृष्ट प्रसंग एहन सामान्यीकरण तोड़ैत अछि—जखन यूसुफ अपन बेटाकेँ दोसर पेशा चुनबाक अवसर दैत छथि, जखन शकुन्तला नतिनीक शिक्षाक पक्षमे पुरान नियम बदलैत छथि, अथवा जखन मजदूरक दावा ओकर जातीय संकेतसँ स्वतन्त्र प्रमाण चाहैत अछि। समावेशनक मूल्य उपस्थिति आ स्वतन्त्र कथात्मक जीवन—दूनूसँ नापल जाएत।

१२. नदी, पोखरि, बाहा : पारिस्थितिक न्याय आ दीर्घकालिक हिंसा

आधुनिक विदेहपुरक भूगोल नदी, पोखरि, बाहा, बाढ़-सङ्केत, बाँसक नाप, नाली, जलनिकासी आ सामूहिक उराहिसँ बनल अछि। ई केवल प्रकृतिक मनोरम वर्णन नहि। जलमार्ग बन्द भेलापर ककर घरमे पानि चढ़त, अस्पतालक पाँखक आधार कतेक कमजोर होएत, गामक नावक सुरक्षित भार कतेक, पोखरिक पट्टा ककर प्रवेश रोकत—ई प्रश्न काज, वर्ग, जाति आ देहक जीवन-सुरक्षाकेँ एक ठाम आनैत अछि। पर्यावरण इहाँ मानवीय संस्थासँ बाहरक पृष्ठभूमि नहि, सामाजिक सम्बन्धक भौतिक शर्त अछि।

अध्याय ९मे तारा घासक भीतर बन्द बाहाक ईंट देखैत छथि, मुदा 'मुँह भेटल'सँ 'बन्द होएबाक दिन' सिद्ध नहि मानैत छथि। अध्याय ६८मे अदितिक मूल चेतावनीमे पुनर्निरीक्षणक स्पष्ट शर्त छूटि जएबाक परिणाम गम्भीर भऽ सकैत अछि, मुदा दोषक पूरा कारणक्रम जाँचबाक बाकी अछि। अध्याय १०८मे जलस्तर नापक लाल रेखासँ ऊपर उठि जाइत अछि; अध्याय १०९–१२०क बचाव-दृश्यसभ श्रम, साधनक असुरक्षा आ निर्णयक समय-सीमा दिखबैत अछि। रोब निक्सनक 'मन्द हिंसा' अवधारणासँ ई दीर्घ तैयारी-रहित क्षति

बुझल जा सकैत अछि: दुर्घटना अचानक देखाइत अछि, मुदा ओकर परिस्थितिसभ दीर्घकालमे बनैत अछि। एहि विश्लेषणसँ तखनो ककरो विशिष्ट अपराधक स्वत: निष्कर्ष निकालब नहि चाही।

अध्याय १५४मे मत्स्यपट्टाक दस्तावेज पोखरिक सीढ़ी, पानि भरबाक अधिकार आ निजी चित्रक सहमतिक प्रतिस्थापन नहि बनि सकैत। अध्याय २१५मे २०४२क चैत्रमे सामूहिक उराहि पुन: शुरू होइत अछि। गोमती पहिने सुरक्षित पाट बनबाबय चाहैत छथि; हाजिरीमे नाम लिखबाक उत्सुकता खतरनाक काजक वस्तुगत आवश्यकताकेँ मेटा नहि सकैत। बच्चा दू टोपरी पाँक उठओने रहबाक दावा करैत अछि; गोमती श्रमक घटना मानैत छथि, मुदा बालकसँ असुरक्षित मजदूरी करएबाकेँ गलती कहैत छथि। एहि एक दृश्यमे पर्यावरणीय पुनर्निर्माण, श्रमिकक श्रेय, बाल-अधिकार आ सुरक्षाक बीच द्वन्द्व मूर्त अछि।

अमिताव घोषक जलवायु-विमर्श आ दोरीन मैसीक स्थानसम्बन्धी विचारसँ उपन्यासक नदीक बहावकेँ ऐतिहासिक गतिशीलता रूपेँ पढ़ब सम्भव अछि। मुदा ई पाठमे कोनो वैश्विक जलवायु-परिवर्तनक विशेष वैज्ञानिक कारण सिद्ध भेल अछि—एहन दावा स्रोत-विरोधी होएत। कथामे जे देखल जा सकैत अछि, से स्थानीय ढाँचाक अपूर्ण माप, जलमार्गक अवरोध, स्मृति-नक्शाक अन्तर आ सार्वजनिक निर्णयक असमान अधिकार अछि। एहि प्रमाणिक सीमाक भीतर रहिते उपन्यासक पर्यावरणीय चेतना पर्याप्त तीक्ष्ण अछि।

१३. हिंसा, आपदा, शोक आ करुणाक अपूर्ण मुक्ति

त्रासदीक आलोचनामे ई भेद अत्यन्त आवश्यक अछि जे त्रासद घटनाक बाद कथा कोन प्रकारक ‘समाधान’ प्रस्तावित करैत अछि। एहि उपन्यासमे नैरा आ उर्मिलाक मृत्युसँ उत्पन्न पीड़ा प्रशासनिक संख्या-निर्धारण, दायित्वक जाँच, सहायता, उत्तरजीवीक जीवन आ स्मरणक अनेक काम आरम्भ करबैत अछि। मुदा एहि सभमे सँ कोनो कार्य मृतकेँ लौटबैत नहि। अध्याय १२१मे सरिता अपन पहिनुक झूठ मृत्यु-पञ्जी आ नैरा–उर्मिलाक सत्यापित सूचना अलग-अलग परीक्षण करैत छथि। ओ स्पष्ट मानैत छथि जे पहिल कागद झूठ छल, नव कागद सत्य; तइयो सत्यवाला कागद दु:ख घटाबयवाला औषधि नहि। एहि कथनमे उपन्यासक शोकदर्शनक सार निहित अछि।

अध्याय १३२मे एकटा मृत्यु-सङ्ख्या सत्यापित भेलापर जाँच सम्पन्न नहि होइत। सहायता, चिकित्सकीय देखभाल, पारिश्रमिक, धार्मिक स्वैच्छिक सेवा आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व अलग खाता माँगैत अछि। रमा दू रङ्गक स्याही प्रयोग करैत छथि, मुदा सावधान करैत छथि जे असल भेद रङ्गमे नहि, अलग क्रमाङ्क, हस्ताक्षर आ स्रोतमे अछि। ई अंश त्रासदीक 'संख्या'क अमानवीकरणकेँ उलटैत अछि: संख्या अनिवार्य अछि, मुदा ओ व्यक्ति, श्रम आ परिजनक निर्णयक पर्याय नहि।

अध्याय २१४मे नैराकेँ एकदम निर्मल सार्वजनिक प्रतिमा बनबएबाक प्रस्तावक विरोध स्वयं कबीर करैत छथि: नैरा बहस करैत छलीह, कखनो बात काटि दैत छलीह, हुनकर संग मतभेद सेहो छल। एहन स्मृति दु:खक अवमानना नहि, व्यक्तिक वास्तविक जटिलताक रक्षा अछि। उपन्यास मृत्युकेँ कथानकक पवित्र निष्कर्ष नहि बनबैत। नैराक कापी बन्द अछि, निजी फोनक सन्देश प्रकाशन लेल उपलब्ध नहि, आ खाली स्थान रिक्त रहबाक अधिकार रखैत अछि। रिकरक स्मृति-विचार एहि प्रसंगमे उपयोगी अछि, कारण विश्वसनीय स्मरण केवल नाम-संग्रह नहि; स्मृति, विस्मरण, न्याय आ गोपनीयताक कठिन सन्तुलन अछि।

भारतीय करुणरसक अनुभूति सहृदयकेँ दु:खक सार्वजनीन बोध दऽ सकैत अछि, मुदा एहि पाठमे एक अतिरिक्त नैतिक माँग अछि: पाठक रसोइक आंशिक रिक्ति देखि भावुक होथि, तइयो उर्मिलाक बकाया मजदूरी वा असुरक्षित अस्पतालक कारण-जाँच नहि बिसरथि। एहिसँ रस आ उत्तरदायित्व विरोधी नहि बनैत; काव्यानुभव जीवनक कार्यक प्रति सजग बनैत अछि। त्रासदीक सफल कला एतय आँसूक पूर्णता नहि, शोकक बादो अपूर्ण देयकेँ देखैत रहबाक साहस अछि।

१४. भाषा, संवाद आ रोजमर्रा वस्तुक आख्यानशक्ति

मैथिली कथनभाषाक सभसँ ध्यानयोग्य विशेषता ई अछि जे विशाल दार्शनिक प्रश्न ओकरा सामान्य घरेलू क्रियासँ अलग नहि करैत। सरिता चाउर छाँटैत, तारा बाँस गाड़ैत, रुखसाना भाँड़ धोइत, गान्धारी फाटल सीवन टोहैत, द्रौपदी भातक कटोरी मँगैत, पद्मा काठक पट्टीपर शब्द लिखैत छथि। ओहि सामान्य क्रियासँ सोचक मार्ग खुलैत अछि। एहि कारण उपन्यासक सर्वाधिक

स्मरणीय वाक्य अनेक बेर कठिन शास्त्रीय पद नहि, अनुभवसँ निकसल संवाद होइत अछि। 'नाम सँ पहिचानक शुरुआत होइत अछि, अन्त नहि' (अध्याय ६१) वा 'जकर पयर फँसत ओकर नाम लिखलासँ पयर नहि बाँचत' (अध्याय २१५) भाषिक सादगीक भीतर सामाजिक आलोचना संचित करैत अछि।

कथाकार वस्तुक नाममे विशिष्टता रखैत छथि—पीतरक डिब्बा, कपड़ाक किनार, गोदामक चालान, माटिक घैला, बाँसक खूँटी, थारीक तली, स्याहीक दाग, आधा खुजल दरबज्जा। एही वस्तुसभक आवागमन अध्यायक बीच दृष्टिगत लय बनबैत अछि। श्क्लोव्स्कीक अपरिचयीकरणक अवधारणासँ एकर किछु अंश पढ़ल जा सकैत अछि: परिचित भातक हाँड़ी अचानक प्रशासनिक 'मृत्यु'क असम्भव दावाकेँ उघारैत अछि। तथापि वस्तुकेँ अलौकिक बनाउब एहि उपन्यासक आवश्यक शर्त नहि; वस्तुक वास्तविक उपयोग आ ओकर सांकेतिक क्षमता एक साथ रहैत अछि।

दुइ तरहक वाक्यरचना विशेष ध्यान खींचैत अछि। पहिल, निरीक्षणात्मक वाक्य—कोन कागद कतय छल, के मापलक, कतेक प्रमाण शेष। दोसर, निर्णयक क्षणमे प्रश्नवाचक वाक्य—के बोलत, के लिखत, ककर अनुमति, ककर दाम? एहि प्रवृत्तिसँ पाठक निष्कर्षक निष्क्रिय उपभोक्ता नहि रहैत; ओ लेखकक प्रस्तुत भेद पुनः जाँचबाक हेतु आमन्त्रित होइत अछि। किन्तु लगातार 'ई अलग, ओ अलग' शैली कथानकक भाषिक पुनरावृत्तिक जोखिम सेहो पैदा करैत अछि। जखन प्रत्येक दृश्य तुरन्त नैतिक सार-वाक्यपर समाप्त होइत अछि, तखन वक्रता आ अव्यक्त अर्थक खुलल ठाउँ कनेक कम भऽ सकैत अछि।

एकटा अनिवार्य सम्पादकीय सावधानी सेहो अछि। व्याकरणगत मानकक नामपर पात्रक जीवित बोलचाल, पेशागत शब्दावली वा स्थानिक उच्चारणकेँ अनावश्यक रूपेँ एकरूप करब उपन्यासक सामाजिक वाणी कमजोर करत। साहित्यिक मैथिलीमे सम्मानसूचकता, संवादक सामाजिक दूरी, लोक-क्रियाक ध्वनि आ शास्त्रीय पदक सटीक प्रयोग—ई सभ संगहि रहि सकैत अछि। एहि कादम्बरीक आलोचनामे भाषाक 'शुद्धता'क अर्थ ओकर आन्तरिक औचित्य, अर्थक स्पष्टता आ पात्रानुकूल भेद सुरक्षित राखब होएबाक चाही, न कि सर्वत्र एकटा निर्जीव रजिस्टर लादब।

१५. कथा-प्रकार : यथार्थवाद, उत्तराधुनिक विन्यास अथवा जादुई यथार्थवाद?

एहि उपन्यासक रचना-विन्यास ऐतिहासिक महाकाव्य, सामाजिक यथार्थ, शास्त्रार्थ, दस्तावेजीय खोज आ आत्मविवेचनक अनेक परत जोड़ैत अछि। एकरा मात्र 'ऐतिहासिक उपन्यास' कहला सँ आधुनिक अस्पताल, अभिलेख आ प्रवासी जीवनक जटिलता छूटि जाएत। केवल 'सामाजिक समस्या उपन्यास' कहला सँ रामायण–महाभारत–नव्यन्यायक रचनात्मक कालधारा दबि जाएत। उत्तराधुनिक अन्तर्पाठीयता, बहु-समय आ स्वपरीक्षणक औजार एहि संरचनाकेँ बुझएबाक काज करैत अछि, मुदा एहि शब्दसभक प्रयोग एकर यथार्थवादी नैतिक आग्रह मेटएबाक अधिकार नहि दैत।

'जादुई यथार्थवाद' पद एहि पाठमे सावधानीसँ लागू करबाक चाही। प्राचीन कालक पात्रक स्वतन्त्र अध्याय, आधुनिक दृश्य लग समानान्तर तर्क अथवा शास्त्रार्थक सजीव पुनर्रचना अपन आपमे अलौकिक घटना नहि अछि। वेंडी फारिस जादुई यथार्थवादमे असम्भव घटना आ यथार्थक सहअस्तित्व पर ध्यान दैत छथि। एहि उपन्यासमे दृश्यसभ अक्सर अपना-अपना कालधारामे पहचानल जा सकैत अछि; असम्भवकेँ प्रत्यक्ष यथार्थ मानबाक बाध्यता सभ ठाम नहि भेटैत। अधिक सटीक वर्णन 'महाकाव्यीय अन्तर्पाठसहित बहुकालिक सामाजिक–दार्शनिक आख्यान' भऽ सकैत अछि। जँ विशिष्ट अध्यायमे यथार्थक नियम तोड़ैत असाधारण घटना प्रमाणित भेटय, तखन जादुई यथार्थवादक दावा दृढ़ कएल जा सकैत अछि; केवल शीर्षकक आधारपर नहि।

पाश्चात्य उपन्यास-परम्परामे लूकाचक समष्टिगत यथार्थक प्रश्न एहि ग्रन्थसँ संवाद करैत अछि: व्यक्तिक दुःख सामाजिक संस्थाक सम्बन्धविहीन बुझल नहि जा सकैत। तथापि एकटा पूर्ण व्यवस्थाक कथात्मक चित्र बनएबाक इच्छा पात्रक सजीव अव्यवस्थाकेँ दबा सकैत अछि। ई तनाव एहि उपन्यासक रूप-राजनीतिक मूल समस्या अछि—विस्तार कतेक धरि अनुभवक विविधता बचबैत अछि, आ कोन बिन्दुपर काज-विभाजनक सूची साहित्यिक जीवनक स्थान लेबए लगैत अछि? एहि प्रश्नक उत्तर ग्रन्थक सर्वत्र एक समान नहि अछि।

१६. देखल-सुनल-लिखल : पत्रकारिता, निजता आ सार्वजनिक न्याय

ई कादम्बरी समकालीन डिजिटल सूचना-प्रवाहक उपन्यास सेहो अछि। फोटो, फोन, काटल वीडियो, सार्वजनिक प्रेषण, नाम-मिलान, अभिलेखक प्रतिलिपि आ संशोधनक इतिहास कथानकक साधन अछि। अध्याय ११मे संकेतक फोनपर अधिकारक प्रश्न आरम्भ होइत अछि; अध्याय १५मे ओ नैरासँ पूछैत अछि जे तस्वीर बिना ओकर कथन सुनल जाएत की नहि। नैरा उत्तर दैत छथि जे सुनब, देखब आ जाँचब अलग कार्य अछि, आ संकेतक इच्छा बिना ओकर तस्वीर नहि देखतीह। बालकक साधारण निर्णय एहि प्रसंगमे विचारक मूल नैतिक मापदण्ड बनैत अछि।

अध्याय २०क जल्दबाजी नैराकेँ नायकक स्थानसँ आलोचनाक विषय बनबैत अछि। प्रमाणित सार्वजनिक हित आ अनाम साक्षीक पुनःपहिचानक जोखिम बीच अन्तर नहि रखल गेल तँ सत्य-प्रकाशन स्वयं अन्यायक माध्यम बनि सकैत अछि। अध्याय ७०मे महेशक पत्नी एहि हिंसाकेँ फाइलक भाषासँ बेसी स्पष्ट चिन्हबैत छथि। जे नाम प्रकाशित नहि, तकर पहिचान स्थान, काम, समय आ सम्बन्ध जोड़ि उजागर होएब सम्भव अछि। कथा पत्रकारिक नैतिकताकेँ ‘सत्य छापू’ बनाम ‘नहि छापू’क द्वैतमे नहि राखैत; ओ पूछैत अछि जे केकर सत्य, कोन सुरक्षा, कतेक समय, कोन अनुमति, आ सुधारक दायित्व?

अध्याय १४९मे जानकीक दलपर पुरान आरोपक काटल वीडियो नव शीर्षकसहित फेर घूमैत अछि। एक बेर सार्वजनिक खण्डन भेला मात्रसँ दुष्प्रचार नष्ट नहि होइत। जानकी प्रतिशोधक अनन्त मौखिक झगड़ामे नहि पड़ि संदेशक समय, प्रेषक आ प्रति सुरक्षित करैत छथि। एहि कथात्मक निर्णयमे व्यक्ति अपन सार्वजनिक छवि पर नियंत्रण प्राप्त करबाक एक प्रक्रिया अपनबैत अछि, यद्यपि हिंसात्मक सामाजिक स्मृति तत्काल समाप्त नहि होइत।

अध्याय २००मे चारि सूचना-स्तरक वर्गीकरण आ अध्याय २१५मे प्रतिलिपिक वितरित संरक्षण मिलिकऽ उपन्यासक पत्रकारिक नैतिक संहिता जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि। तइयो कला सावधान करैत अछि जे एकटा भरोसेमन्द वर्गीकरण-पद्धति अपन आपमे सत्यनिष्ठ जीवनक समकक्ष नहि। कखनो जानल बातो निजताक कारण नहि छापल जाएत, आ कखनो अभिलेखमे सत्यापित नामो

परिवारक अनुमति बिना स्मारकक सार्वजनिक पट्टीपर नहि चढ़त। सत्य, न्याय आ प्रकाशन तीनूकेँ पृथक् औचित्य चाही।

१७. समापनक नैतिक संरचना : वितरित सत्ता आ शेष रहैत प्रश्न

अध्याय २०५सँ २१६ धरि कथाक दार्शनिक चर्चा पुनः खुलैत अछि। जनमेजयक प्रश्न आ उग्रश्रवाक श्रोता कथनक परम्परा पर विचार करबैत छथि; लव–कुशक पाठ कथाक प्रसारणक अधिकार पूछैत अछि; भामती, उदयन आ गङ्गेशक पाठ खुलल पाठशालामे पहुँचिते ज्ञानक पुरान अधिकार-ढाँचा पुनर्परीक्षित होइत अछि। अध्याय २१३मे मैथिली अपन दोष-सहित लेखकीय नाम प्रकाशित करैत छथि। अध्याय २१४मे नैराक व्यक्तिगत शोक सार्वजनिक स्मारकीकरणक दबावक प्रतिरोध करैत अछि। एहि क्रममे निष्कर्ष स्वयं नव आरम्भक शर्त बनैत अछि।

अध्याय २१५ ‘वितरित अभिलेख’मे सामूहिक पोखरि-उराहिक चौठ बेर शुरू होएब शासकीय पुनर्निर्माणक आवर्तन अछि, परिपूर्ण विजय नहि। गोमती कहैत छथि जे फँसल पयरकेँ सूचीमे नाम लिखलासँ नहि बचाओल जा सकैत। कागद आ वस्तुगत सुरक्षा दोसर-दोसर कार्य अछि; दूनूक आवश्यकता अछि। जखन रमा तीन संरक्षकक लग तीन प्रति सुरक्षित करैत छथि, तखन ज्ञान पर एकाधिकारक विरोध प्रशासनिक पद्धतिमे आकार ग्रहण करैत अछि। मुदा मूल पञ्जीक अपूर्ण जाँच, बकाया मजदूरी, सरिताक रोकल देय आ भविष्यक दुरुपयोगक आशंका शेष अछि। समापन वस्तुस्थिति पर पर्दा नहि खींचैत।

अध्याय २१६मे बालिका पूछैत अछि जे पाठशाला काल्हि खुलत की नहि; बच्चासभ नव अलमारीक चाभी देखबए चाहैत अछि। उत्तर भेटैत अछि जे सभ चाभी एक ठाम नहि अछि, आ दायित्वक नाम आ दोसर प्रति कतय अछि, से सीखल जाएत। ई दृश्य महाकाव्यक ‘स्वर्गारोहण’क उल्लेखनीय नव पाठ अछि: स्वर्ग एक अन्तिम छुटकारा नहि, काल्हि खुलबाक सार्वजनिक दुआरक सम्भावना अछि। सरिता भात परोसैत छथि; नैराक खाली स्थान एखन खाली अछि। न्याय पूर्ण भेल नहि, मुदा ओकरा प्रश्न पूछबाक संस्था कनेक अधिक बाँटल गेल अछि।

अस्तित्ववादी दृष्टिसँ ई उपन्यास शोकसँ मुक्त मनुष्यक स्वप्न नहि गढ़ैत; ओ बाधित जीवनक भीतर विकल्पक छोटे अवसर खोजैत अछि। नैराक मृत्युकेँ

कहानी बचा नहि सकैत; किन्तु ओकर अनुपस्थितिकेँ असत्य अर्थ भरि उपभोग करबाक विरुद्ध पात्रसभ प्रतिरोध कऽ सकैत छथि। एहि कारण शीर्षकक अन्तर्मन निजी उद्धारक गुहा नहि, अपूर्ण संसारक संग नीक निर्णय लेबाक एकटा सतत् साधना बनि जाइत अछि।

१८. प्रतिवाद, शिल्पगत सीमा आ मूल्याङ्कन

कोनो वृहत् महाग्रन्थक समालोचना केवल ओकर उद्देश्यक प्रशंसा नहि भऽ सकैत। पहिल सीमा रचनाक बारम्बार व्याख्यात्मक प्रवृत्ति अछि। कागदक भेद, अधिकारक सीमा, अनुमतिक नियम आ तर्कक विभिन्न स्तर अनेक बेर पात्र स्वयं स्पष्ट कऽ दैत छथि। एकर लाभ ई जे कथाक नैतिक अस्पष्टता विनाशकारी अफवाहमे नहि बदलैत; हानि ई जे पाठकक स्वतन्त्र अर्थान्वेषण किछु दृश्यक अन्तमे संकुचित भऽ सकैत अछि। करुणा अथवा ध्वनिक उभार अनेक बेर तखन तेज होइत अछि जखन कथा अपन सिद्धान्त कहबाक बदला दृश्यकेँ जीवित छोड़ि दैत अछि।

दोसर सीमा समष्टि आ व्यक्ति बीचक अनुपात अछि। १५७ व्यवसाय-समुदाय आ २१६ अध्यायक सूची ऐतिहासिक जनजीवनक पैघ परिसरक आकांक्षा देखबैत अछि। मुदा ‘सूचीमे उपस्थिति’ आ ‘कथामे पूर्ण स्वायत्त चरित्र’ एक नहि। विशेषतः कोनो व्यक्ति जँ एकहि बार अपन पेशागत विवरणक प्रमाण बनि उभरि विलीन भऽ जाइत अछि, तँ पाठक ओकर सम्बन्धक दीर्घ विकास नहि देखि पबैत। समालोचककेँ एहि सीमा स्वीकार करितो ई देखबाक चाही जे एहि उपन्यासक अनेक जीवनक पुनरावर्तन एके व्यक्ति पर निर्णयक बदलैत बोझ दैत अछि। सरिता, नैरा, रुहानी, तारा, मैथिली, उर्मिला आ कबीरक प्रसंग एहि दृष्टिसँ अपेक्षाकृत गहिर अछि।

तेसर प्रश्न कथा-कालक सन्धिसभसँ जुड़ल अछि। प्राचीन शास्त्रार्थक बाद आधुनिक कार्यालयक प्रसंग आएब पाठककेँ फलदायक तुलना दैत अछि, मुदा अति-नियमित समानान्तरता दर्शनक स्वतन्त्र जटिलता कम करि सकैत अछि। अध्याय ५४ आ १३९ एहि जोखिमसँ बचैत छथि, कारण पूर्वपक्ष स्वतन्त्र रूपेँ सशक्त अछि; अध्याय २११मे विरोधी पाण्डुलिपिक नकल-श्रमक दाम निर्धारित करब तर्क-विधिक गम्भीरता बढ़बैत अछि। जखन दार्शनिक बहसक निष्कर्ष पहिनेसँ आधुनिक पाठकक अपेक्षित नैतिक वाक्यक अनुसार व्यवस्थित लगैत अछि, तखन ऐतिहासिक विमर्शक खुलल प्रश्न सीमित पड़ि सकैत अछि।

चारिम प्रश्न नीतिपरक कथनक कलात्मक परिणाम अछि। उपन्यास बारम्बार सही प्रक्रिया, सहमति, स्रोत-जाँच, क्षतिपूर्तिक अधूरापन आ सामूहिक अधिकारक पक्ष लैत अछि। एहि मूल्य-व्यवस्थामे आन्तरिक संगति अछि; तथापि जटिल चरित्रक इच्छा हरदम नैतिक रूपेँ व्यवस्थित नहि होइत। महेशक भय, सरिताक शोक, कबीरक आंशिक असहमति, द्रौपदीक छोट भूख, शास्त्रार्थक तीक्ष्ण विरोध—ई सभ प्रसंग उपन्यासकेँ घोषणापत्र बनबासँ बचबैत अछि। अतः ओकर सर्वाधिक ठोस उपलब्धि विचारक संख्या नहि, विचारक कारण पात्रकेँ देबए पड़ल जीवनमूल्य अछि।

१९. सिद्धान्तसभक तुलनात्मक निष्कर्ष

रससिद्धान्त पूछैत अछि—कथाक दृश्य पाठकमे कोन अनुभूति जाग्रत करैत अछि? ध्वनि पूछैत अछि—प्रत्यक्ष कथनसँ बेसी कोन अव्यक्त अर्थ टिकैत अछि? औचित्य पूछैत अछि—दृश्य, भाषा आ विचार कथाक सम्बन्धमे उपयुक्त अछि की नहि? न्याय पूछैत अछि—एहि दावाक प्रमाण की, अनुमानक व्याप्ति कतेक, आ कोन हेत्वाभास सम्भव अछि? भामतीक पाठ पूछैत अछि—जे देखाइत अछि ताहिपर कोन गलत आरोप भेल अछि, आ जिज्ञासाक प्रवेश ककरा भेटैत अछि? बाख्तिन पूछैत छथि—विरोधी आवाज अपन वास्तविक अधिकार राखैत अछि की केवल लेखकक निर्णयक आडम्बर अछि? जेनेत पूछैत छथि—कालक्रम, कथनक्रम आ दृष्टिस्थिति कोना परिणाम बदलैत अछि? फ्रिकर आ स्पिवाक पूछैत छथि—ककर गवाही विश्वसनीय कहल जाइत अछि आ कोन प्रतिनिधि दोसरक आवाज हरण करैत अछि? निक्सन पूछैत छथि—दृश्य आपदाक पाछाँ अदृश्य लम्बा क्षति कतय जमैत अछि?

एहि प्रश्नसभकेँ एक-एक करि ग्रन्थपर प्रयोग कएलासँ स्पष्ट होइत अछि जे कोनो एक सिद्धान्त सम्पूर्ण कादम्बरीक चाभी नहि। न्याय कथाक अभिलेखीय अनुशासन समझा सकैत अछि, मुदा नैराक मृत्युजनित शोकक पूर्ण माप नहि। रस करुणाक अनुभव उघारैत अछि, मुदा अस्पतालक खर्च-पत्रक विधिक जाँच नहि। बहुस्वरिता असहमतिपर प्रकाश दैत अछि, मुदा नाप-डण्डाक भौतिक शुद्धताक जाँचक स्थान नहि लेत। पर्यावरणीय आलोचना पोखरिक सामुदायिक सम्बन्ध देखैत अछि, मुदा निजी फोनक चित्र प्रकाशित करबाक सहमतिक पूरा

उत्तर नहि। एही अपर्याप्ततासभक बीच बहुपद्धतिमूलक अध्ययन सर्वाधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

उपन्यासक केन्द्रीय नैतिक खोज एहि विश्लेषणसँ चारि सूत्रमे उद्घाटित होइत अछि। प्रथम, 'नाम' व्यक्ति नहि; हुनकर देह, निर्णय आ जीवन पंजीसँ पैघ अछि। द्वितीय, 'ज्ञान' केवल विद्वानक कथन नहि; शिष्य, लेखिका, अनाम रसोइन, नापी करनिहार आ साक्षी सभक श्रमसँ निर्मित अछि। तृतीय, 'सत्य' स्वयं सुरक्षा, सहमति आ उत्तरदायित्वक स्थानापन्न नहि। चतुर्थ, 'न्याय' मृतककेँ फेर जीवित नहि करैत, मुदा जीवित लोकक बोलबाक अधिकार आ भविष्यक गलतीकेँ जाँचबाक बाट सुरक्षित कऽ सकैत अछि। ई चारू सूत्र कथाक आरम्भ, मध्य आ समापनमे अलग रूपेँ प्रमाणित अछि।

उपसंहार : 'अन्तर्मन'क खुलल सार्वजनिक दुआर

'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक'क साहित्यिक महत्त्व किछु पैघ संख्यामे समाहित नहि होइत, यद्यपि २१६ अध्याय, अठारह पर्व, सात काण्ड आ १५७ व्यवसायवृत्त ओकर असाधारण संरचनात्मक आकांक्षा देखबैत अछि। एकर वास्तविक मौलिकता महाकाव्यक युद्धकेँ कागदक असत्य, श्रमिकक अनाम समय, स्त्रीक प्रकाशन-सहमति, बाढ़क पहिनुक चेतावनी आ शोकक बादक अधूर जीवनक रूपमे पुनर्सृजित करब अछि। रामायण आ महाभारतक प्राचीन पात्र आधुनिक मनुष्यक सरल समतुल्य नहि बनैत; हुनकर प्रश्न वर्तमानक संस्थागत निर्णयकेँ नव कोणसँ उजागर करैत अछि। भामती, न्यायकुसुमाञ्जलि आ तत्त्वचिन्तामणि शास्त्रीय आभूषण नहि, कथामे तर्कक सीमा जाँचबाक कठिन संसाधन बनबाक प्रयत्न करैत अछि।

एहि प्रयासक सफलताकेँ पूर्ण वा निर्विवाद कहब सेहो अशुद्ध होएत। कतहु संरचनाक परिमाण पात्रक स्वतन्त्र विकाससँ पैघ अछि; कतहु आलोचनात्मक वाक्य दृश्यपर भारी पड़ैत अछि। मुदा ई सीमा उपन्यासक मौलिक प्रश्नक महत्त्व घटबैत नहि: न्याय केवल निर्णयक घोषणा नहि, निर्णयक प्रमाण, दाम, सहमति, पुनर्विचार आ भविष्यक खुलल दुआर अछि। सरिताक घरमे झूठ मृत्यु-सूचनासँ शुरू भेल कथा अन्तमे सत्य मृत्युकेँ अपरिवर्तनीय मानि भात परसैत हाथपर टिकैत अछि। जे बचल अछि से जीवनक काज; जे नहि बचल से स्मृतिक सत्य; आ जे एखन खुलल अछि से प्रश्न पूछबाक अधिकार। एहि

अर्थमे 'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक' आधुनिक मैथिली कथासाहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण, विवादयोग्य आ गम्भीर अध्ययनक योग्य वृहत् आख्यान अछि।

परिशिष्ट : अठारह पर्वक संक्षिप्त परीक्षण-मानचित्र

एहि मानचित्रमे प्रत्येक पर्वक बारह अध्यायक समग्र भूमिका, एक-दूटा प्रतिनिधि दृश्य आ ओकर आलोचनात्मक प्रश्न संगहि राखल गेल अछि। एकरा पात्रक पूर्ण कथासार नहि, निकटपाठक लेल मार्गनिर्देश मानल जाए।

पर्व १—आदि (अध्याय १-१२)। 'मृतकक रसोइ' आ 'सत्ताइस नाम' अभिलेखीय असत्य, जीवित देह आ अपूर्ण स्रोतक पहिल समस्या ठाढ़ करैत अछि। 'बन्द बाहा'मे नाप-डण्डा बतबैत अछि जे नक्शाक रेखा आ वास्तविक जलप्रवाह एक नहि। आरम्भक बोध ई जे प्रत्येक पञ्जी मनुष्यक जीवनक एकटा सीमित व्याख्या अछि, सम्पूर्ण जीवन नहि।

पर्व २—सभा (अध्याय १३-२४)। 'द्रौपदीक प्रश्न', 'विकर्णक बादक मौन', 'उर्मिलाक राति' आ 'जल्दी प्रकाशन'क बीच सार्वजनिक अपमान, निजता आ साक्षीक सुरक्षा जुड़ैत अछि। नैराक हड़बड़ी नायकक प्रमाणभ्रमक रूपमे देखल जा सकैत अछि; प्रतिनिधित्वक अधिकार व्यक्तिक स्वीकृति बिना पूरा नहि होइत।

पर्व ३—वन (अध्याय २५-३६)। गुह, शबरी, अहल्या आ एकलव्यक पुनर्पाठ शिक्षा, जंगल, आश्रय आ समाजक किनारपर रहनिहार लोकक ज्ञानकेँ आगाँ अनैत अछि। 'अथातो ककर' प्रश्न शास्त्रीय जिज्ञासाक दुआर सामान्य विद्यार्थी लेल खोलबाक प्रतिज्ञा बनैत अछि। एकर परीक्षा प्रवेशक वास्तविक साधन आ श्रमक मान्यता अछि।

पर्व ४—विराट (अध्याय ३७-४८)। 'रान्हनिहारक नाम', 'ताँतीक देय', 'कपड़ा पंजी', 'माटिक भविष्य', 'कसेरा आ सोनार' आ 'लोहारक औजार' श्रमक बहुवचनता प्रत्यक्ष करैत अछि। एतय छद्मपरिचयक महाकाव्यीय स्मृति आधुनिक जीवनमे ओहि काजक अनामपन बनि उठैत अछि जे बिना मजदूरक नामक सम्पन्न कहल जाइत अछि।

पर्व ५—उद्योग (अध्याय ४९-६०)। 'सहयोगक दाम', 'अनुष्ठान बिना प्रधान' आ 'पहिल सन्धि टूटल' सहकारकेँ स्वाभाविक सद्भाव नहि, अलग हित, देय आ असहमतिक कठिन सन्धि मानैत अछि। उदयनक पूर्वपक्ष आ आश्रयक

भोजन-नियम एक संग पढ़लापर प्रश्न उठैत अछि—ककर अधिकार वैध, आ नियमक मूल प्रमाण की?

पर्व ६—भीष्म (अध्याय ६१–७२)। गङ्गाक शर्त, भीष्मक प्रतिज्ञा, अस्पतालक पुरान पाँख आ महेशक रातिक कथाक बीच वचनक मूल्य परिणामक आधारपर जाँचल जाइत अछि। अदितिक चेतावनीक संक्षेपण आ महेशक असुरक्षा दिखबैत अछि जे समयपर कहल सत्यक अपूर्ण ग्रहण स्वयं हिंसाक भूमि बना सकैत अछि; तइयो अंतिम दोष अलग जाँच चाहैत अछि।

पर्व ७—द्रोण (अध्याय ७३–८४)। नावक क्षमतासँ शुरू भऽ ‘एकलव्यक बाद’, ‘मैथिलीक पन्ना’ आ ‘गुरुक स्वीकार’ धरि कथा गुरु, विद्यार्थी, मजदूर आ लेखिका बीच श्रेयक दावाक नव मानचित्र बनबैत अछि। विद्वत्ता यदि मजदूरक देय नकारैत अछि तँ ओकर आन्तरिक सत्यो संस्थागत अन्याय रोकि नहि सकैत।

पर्व ८—कर्ण (अध्याय ८५–९६)। राधाक श्रम, जन्म–पालनक अन्तर, चौदह विसंगति आ सत्ताइस नामक मिलान सामुदायिक पहिचानक जटिलता उघारैत अछि। एक नामक अनुपस्थिति, एक रसीदक विसंगति आ एक निजी जन्मपञ्जीक प्रश्नकेँ एकहि रहस्यक सोझा उत्तरमे मिला देबाक लोभक विरोध एहि पर्वक आलोचनात्मक सार अछि।

पर्व ९—शल्य (अध्याय ९७–१०८)। ‘शल्यक निष्ठा’ आ ‘जलस्तरक बाहर’क बीच सहमति, कारणक जाल, पुलक परीक्षण आ बढ़ैत पानिक दबाव कथा-गतिकेँ प्रबल करैत अछि। ई पर्व जाँचैत अछि जे सदिच्छा बिना वास्तविक माप आ आपात व्यवस्थाक कोन सीमा धरि पर्याप्त भऽ सकैत अछि।

पर्व १०—सौप्तिक (अध्याय १०९–१२०)। ‘गोदाम खुलल’, ‘अश्वत्थामाक राति’, ‘दवाइ आ बचल श्वास’ तथा ‘उर्मिलाक थाकल हाथ’ विपत्तिक समय निर्णयक अपरिवर्तनीय दाम देखबैत अछि। ‘आश्वासन’ आ ‘प्राप्त सेवा’क बीचक दूरी असुरक्षित ढाँचामे देहक क्षतिक कारण बनि सकैत अछि; शोकक नैतिक आलोचना एतहि सँ तीक्ष्ण होइत अछि।

पर्व ११—स्त्री (अध्याय १२१–१३२)। नैरा–उर्मिलाक मृत्यु-पुष्टि, गान्धारीक प्रश्न, मन्दोदरीक घर, कुन्तीक स्वीकृति आ द्रौपदीक बचल दिन मृतकक केँ संख्या वा स्मारक बनबासँ रोकैत अछि। ‘नम्बरक बाद’ मृत्युसत्यक प्रमाणित सङ्ख्या

प्राप्त कऽ लेब आ शेष परिवारक देय चुकता भऽ जाएब एक नहि—ई स्पष्ट करैत अछि।

पर्व १२—शान्ति (अध्याय १३३–१४४)। युद्धक बाद शासन, दोष, पहिनुक प्रतिवेदन, तर्कक पुनरागमन आ आश्रयक नव नियम सोझाँ अबैत अछि। भीष्मक शय्याक उपदेश आ समकालीन समितिक जाँचक बीच सम्बन्ध उत्तरदायित्वक अछि; क्षमाक सार्वजनिक घोषणा वास्तविक बकायाक स्थानापन्न नहि।

पर्व १३—अनुशासन (अध्याय १४५–१५६)। राशनक पाँति, संकेतक कक्षा, जानकीक खण्डन, शम्बूकक पाठ आ सहमतिक दस्तावेज ‘नियम’क प्रयोग वास्तविक कमजोर व्यक्ति लेल कोना होइत अछि, से जाँचैत अछि। कागदपर लिखल सार्वभौम अधिकार तखनहि अर्थपूर्ण होइत अछि जखन विद्यालय, घाट आ आश्रयमे ओकर पालनक खर्च आ निर्णय स्पष्ट हो।

पर्व १४—अश्वमेध (अध्याय १५७–१६८)। घोड़ाक निर्बाध यात्रा आ विदेहपुरक गामसभक प्रवेश-सहमति बीच तुलना सम्राटीय विस्तारक स्थाने सीमाक परस्पर मान्यता प्रस्तुत करैत अछि। ‘सरिताक योगदान’, ‘मैथिलीक अपना नाम’, ‘बुनकरक बाजार’ आ ‘बिना सम्राटक नाप’ अधिकारसहित श्रेयक नव सार्वजनिक मानचित्र बनबैत अछि।

पर्व १५—आश्रमवासिक (अध्याय १६९–१८०)। वृद्धक देखभाल, कुन्तीक शेष वचन, ईशानक कमरा, कबीरक चिट्ठी आ आश्रयक बाहरक नियम निजी समयक स्वतन्त्रता पर बल दैत अछि। जीवित रहब केवल सुरक्षा-अभिलेखमे अंकित होएब नहि; सहायता स्वीकार अथवा अस्वीकार करबाक स्वतन्त्रता सेहो अछि।

पर्व १६—मौसल (अध्याय १८१–१९२)। यादवक विघटन, स्मारकक ठेका, औजारक बाजार आ कृष्णक अन्त सामूहिक विजयक पछिलुका संस्थागत भ्रंशक दृश्य देखबैत अछि। २०४१क जलस्वच्छता पर्वक क्रममे पुनः बकाया श्रम आ स्मारक पर नियन्त्रणक प्रश्न उठैत अछि। निष्कर्ष ई नहि जे सभटा नष्ट, अपितु नव व्यवस्था सेहो त्रुटिसँ मुक्त नहि।

पर्व १७—महाप्रस्थानिक (अध्याय १९३–२०४)। द्रौपदीक बाट, फकीराक स्टेशन, मृतकक फोन, शब्दक अन्तिम जाँच आ ‘पर्वत नहि दरबज्जा’ शेष

यात्रा आत्मसमर्पण नहि, भविष्यक छोट दुआरमे प्रवेश मानैत अछि। नैराक फोनक निजीपन आ बुजुर्गक स्वतन्त्र यात्रा एतय मुख्य नैतिक सन्धि अछि।

पर्व १८—स्वर्गारोहण (अध्याय २०५–२१६)। स्वर्गक सूचीसँ भामतीक सूत्र, उदयनक उत्तर, गङ्गेशक कक्षा, मैथिलीक वाणी, नैराक रिक्ति आ वितरित अभिलेख धरि समापन कथनक सत्ता बाँटैत अछि। अंतिम अध्यायमे भोजनक पुनरावृत्ति कोनो चमत्कारी पुनर्मिलन नहि देत; वास्तविक मृत्युक बाद न्यायपूर्ण सामुदायिक जीवन सम्भव बनेबाक अपूर्ण काज देत।

पाठ-सन्दर्भ सम्बन्धी टिप्पणी

एहि आलेखमे उपन्यासक उद्धरण आ घटना-निर्देशनक पहिचान अध्याय-सङ्ख्या द्वारा कएल गेल अछि। संलग्न पाण्डुलिपिक प्रारम्भिक सम्बन्ध-मानचित्र आ पात्र-पञ्जीकेँ रचनाकारक व्याख्यात्मक परिपाठ मानल गेल अछि, स्वतन्त्र ऐतिहासिक प्रमाण नहि। अध्याय १, २, ९, १५, २०, ३२, ५४, ६१, ६८, ७०, ७६, ८२, ८४, ८८, १०८, १२१, १२३–१२५, १३०, १३२, १३९, १४३, १४७, १४९, १५१, १५४, १५७, २००, २०५, २१०–२१६ सहित विविध पर्वक प्रसंगक निकटपाठ एकर प्रमुख आधार अछि। सिद्धान्तक प्रयोग आलोचनात्मक तुलना अछि; एहि तुलना सँ मूल शास्त्रीय ग्रन्थ आ कल्पित पात्रक वचन एके ऐतिहासिक दर्जाक नहि भऽ जाइत।

ग्रन्थसूची

क. प्राथमिक साहित्य आ भारतीय शास्त्रीय ग्रन्थ

१. ठाकुर, गजेन्द्र। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक [मैथिली कादम्बरी]। प्रथम संस्करण, २०१९। संलग्न सम्पूर्ण २१६-अध्यायी प्रति।

२. वाल्मीकि। रामायण। मूल संस्कृत महाकाव्य; विभिन्न आलोचित संस्करण।

३. व्यास। महाभारत। मूल संस्कृत महाकाव्य; विभिन्न आलोचित संस्करण।

४. भरतमुनि। नाटचशास्त्र। मूल संस्कृत ग्रन्थ।

५. आनन्दवर्धन। ध्वन्यालोक। मूल संस्कृत ग्रन्थ।

६. अभिनवगुप्त। अभिनवभारती। नाटचशास्त्रपर संस्कृत टीका।

७. कुन्तक। वक्रोक्तिजीवित। मूल संस्कृत ग्रन्थ।

८. क्षेमेन्द्र। औचित्यविचारचर्चा। मूल संस्कृत ग्रन्थ।

९. वाचस्पति मिश्र। भामती। ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्यपर संस्कृत व्याख्या।

१०. उदयनाचार्य। न्यायकुसुमाञ्जलि। मूल संस्कृत ग्रन्थ।

११. गङ्गेश उपाध्याय। तत्त्वचिन्तामणि। मूल संस्कृत ग्रन्थ।

ख. पाश्चात्य आख्यान, आलोचना, स्मृति आ सामाजिक सिद्धान्तक पुस्तकसभ

१२. Bakhtin, Mikhail M. The Dialogic Imagination: Four Essays. University of Texas Press, 1981.

१३. Genette, Gérard. Narrative Discourse: An Essay in Method. Cornell University Press, 1980.

१४. Ricoeur, Paul. Time and Narrative. 3 vols. University of Chicago Press, 1984–1988.

१५. Ricoeur, Paul. Memory, History, Forgetting. University of Chicago Press, 2004.

१६. Booth, Wayne C. The Rhetoric of Fiction. University of Chicago Press, 1961.

१७. Chatman, Seymour. Story and Discourse: Narrative Structure in Fiction and Film. Cornell University Press, 1978.

१८. Bal, Mieke. Narratology: Introduction to the Theory of Narrative. University of Toronto Press, 2009 edition.

१९. Shklovsky, Viktor. Theory of Prose. Dalkey Archive Press, 1990 English edition.

२०. Fricker, Miranda. Epistemic Injustice: Power and the Ethics of Knowing. Oxford University Press, 2007.

२१. Spivak, Gayatri Chakravorty. A Critique of Postcolonial Reason: Toward a History of the Vanishing Present. Harvard University Press, 1999.

२२. Foucault, Michel. Discipline and Punish: The Birth of the Prison. Pantheon Books, 1977 English edition.

२३. Derrida, Jacques. Archive Fever: A Freudian Impression. University of Chicago Press, 1996.

२४. Nixon, Rob. Slow Violence and the Environmentalism of the Poor. Harvard University Press, 2011.

२५. Ghosh, Amitav. The Great Derangement: Climate Change and the Unthinkable. University of Chicago Press, 2016.

२६. Massey, Doreen. For Space. SAGE Publications, 2005.

२७. Faris, Wendy B. Ordinary Enchantments: Magical Realism and the Remystification of Narrative. Vanderbilt University Press, 2004.

२८. Lukács, Georg. The Theory of the Novel. MIT Press, 1971 English edition.

सन्दर्भसीमा

उपर्युक्त ग्रन्थसूचीमे केवल पुस्तक आ मूल ग्रन्थ समाविष्ट अछि; बाह्य वेबसाइट, अनिश्चित वेब-लेख अथवा अप्रमाणित उद्धरण नहि जोड़ल गेल अछि। भारतीय मूलग्रन्थक लेल प्रकाशन-वर्षक कृत्रिम निर्धारण नहि कएल गेल, कारण विभिन्न आलोचित संस्करण प्रचलित अछि। पाश्चात्य पुस्तकक वर्ष निर्देशित संस्करणक अछि, सभ ठाम मूल रचनाक प्रथम प्रकाशन-वर्ष नहि।

आलेख २२ · उपन्यास आ विस्तृत आख्यानक अध्ययन

पातक भीतर लिखल नाँव

सारांश

ई शोध-समीक्षा “पातक भीतर लिखल नाँव” उपन्यासक सम्पूर्ण बत्तीस अध्याय कैं एकल कथानक नहि, बहुस्तरीय अभिलेखीय आख्यान रूपमे पढ़ैत अछि। पोथीक कथा मृणालिनी द्वारा पुरान घरमे भेटल भानस-पोथीक लेखकत्व जाँच सँ आरम्भ होइत अछि; क्रमशः ई जाँच घर, भोजन, लिपि, मौखिक स्मृति, स्त्री-श्रम, पारिवारिक प्रतिष्ठा, प्रकाशन, सम्पादन आ सांस्कृतिक बाजारक बीच ज्ञानक स्वामित्वक प्रश्न बनि जाइत अछि। १९३४ आ २०२६क दू कालरेखा एक-दोसराक नैतिक दर्पण अछि। देवकान्त जे गलती स्रोतक नाम संकुचित वा मेटाकऽ करैत छथि, आधुनिक मृणालिनी “स्वच्छ प्रतिलिपि” बनबैत समय ओकर सूक्ष्म पुनरावृत्ति करैत अछि। एहि कारण उपन्यासक नैतिक उत्कर्ष अतीतक दोषी खोजब नहि, अपन सम्पादकीय चयन कैं दृश्य बनाउब अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि आ वक्रोक्ति; पाश्चात्य आख्यान-विज्ञान (Narratology), संवादवाद (Dialogism), स्मृति-अध्ययन (Memory Studies) आ सूक्ष्म-इतिहास (Microhistory); नव्य न्यायक प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, संशय आ प्रमाण-सीमा; तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक हाशियाक नाम, लोक-स्रोत आ बहु-केंद्रित इतिहासक आधारपर पोथीक परीक्षण कएल गेल अछि। निष्कर्षतः ई उपन्यास भानस कैं घरेलू पृष्ठभूमि नहि, ज्ञान-उत्पादनक प्रयोगशाला रूपमे पुनर्स्थापित करैत अछि। “पात” पदार्थ, पृष्ठ, तिलकोर, अभिलेख आ जीवित परम्पराक एकीकृत प्रतीक बनैत अछि।

बीजशब्द

पातक भीतर लिखल नाँव ·मैथिली उपन्यास ·आख्यान-रचना ·स्मृति · सामाजिक इतिहास

१.२४. गजेन्द्र ठाकुर- पातक भीतर लिखल नाँव- शोध आलेख

पातक भीतर लिखल नाँव

अभिलेख, स्वाद, लेखकत्व आ स्मृतिक साहित्यिक-ज्ञानमीमांसक अध्ययन

भारतीय, पाश्चात्य, नव्य न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे विस्तृत शोध-समीक्षा

मूल पोथी: गजेन्द्र ठाकुर · मैथिली उपन्यास · २०१४/२०२६

सम्पूर्ण ३२ अध्यायक समग्र आलोचनात्मक अध्ययन

सारांश

ई शोध-समीक्षा “पातक भीतर लिखल नाँव” उपन्यासक सम्पूर्ण बत्तीस अध्याय कैँ एकल कथानक नहि, बहुस्तरीय अभिलेखीय आख्यान रूपमे पढ़ैत अछि। पोथीक कथा मृणालिनी द्वारा पुरान घरमे भेटल भानस-पोथीक लेखकत्व जाँच सँ आरम्भ होइत अछि; क्रमशः ई जाँच घर, भोजन, लिपि, मौखिक स्मृति, स्त्री-श्रम, पारिवारिक प्रतिष्ठा, प्रकाशन, सम्पादन आ सांस्कृतिक बाजारक बीच ज्ञानक स्वामित्वक प्रश्न बनि जाइत अछि। १९३४ आ २०२६क दू कालरेखा एक-दोसराक नैतिक दर्पण अछि। देवकान्त जे गलती स्रोतक नाम संकुचित वा मेटाकऽ करैत छथि, आधुनिक मृणालिनी “स्वच्छ प्रतिलिपि” बनबैत समय ओकर सूक्ष्म पुनरावृत्ति करैत अछि। एहि कारण उपन्यासक नैतिक उत्कर्ष अतीतक दोषी खोजब नहि, अपन सम्पादकीय चयन कैँ दृश्य बनाउब अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि आ वक्रोक्ति; पाश्चात्य आख्यान-विज्ञान (Narratology), संवादवाद (Dialogism), स्मृति-अध्ययन (Memory Studies) आ सूक्ष्म-इतिहास (Microhistory); नव्य न्यायक प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, संशय आ प्रमाण-सीमा; तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक हाशियाक नाम, लोक-स्रोत आ बहु-केंद्रित इतिहासक आधारपर पोथीक परीक्षण कएल गेल अछि। निष्कर्षतः ई उपन्यास भानस कैँ घरेलू पृष्ठभूमि नहि, ज्ञान-उत्पादनक प्रयोगशाला रूपमे पुनर्स्थापित करैत अछि। “पात” पदार्थ, पृष्ठ, तिलकोर, अभिलेख आ जीवित परम्पराक एकीकृत प्रतीक बनैत अछि।

बीजशब्द: अभिलेख; भानस; लेखकत्व; माधवी; मृणालिनी; तिरहुता; स्वाद; स्मृति; प्रमाण; समानान्तर इतिहास; स्त्री-ज्ञान; सम्पादकीय नैतिकता।

१. शोध-परिधि आ पाठाधार

मूल पोथी ३२ अध्यायमे व्यवस्थित अछि—“घर खोलबाक दिन” सँ “नाँव सहित” धरि। एहि अध्ययनमे कोनो अध्याय छोड़ल नहि गेल अछि। प्रत्येक अध्याय कैं कथानक, पात्र-विकास, प्रतीक, स्रोत-विवेक, भाषा आ सम्पादकीय नैतिकताक दृष्टिसँ पढ़ल गेल अछि। उपन्यासक मूल प्रश्न अछि: जे लिखल अछि से के लिखलक; जे लिखल नहि, ओकर अनुपस्थिति कोना बनल; जे स्मृतिमे अछि ओकर प्रमाण-मूल्य कतेक; आ आधुनिक सम्पादक जे पाठ बनबैत अछि, ओकर उत्तरदायित्व की?

भानस-पोथीक लेखकत्वक प्रश्न परिवारक इतिहास कैं स्त्री-ज्ञानक इतिहासमे कोना बदलैत अछि?

१९३४ आ २०२६क कथा एक-दोसराक नैतिक दर्पण कोना बनैत अछि?

भोजन, पात, नून, भाप, अमट, अदौरी, मखान, माछ आ पिरुकिया कथात्मक चिन्हमे कोना रूपान्तरित होइत अछि?

माधवीक तिरहुता, हेमलताक प्रतिलिपि, रेणुकाक मौखिक स्मृति, बसन्ती काकीक अनुभव आ देवकान्तक मुद्रित लेखक प्रमाण-मूल्य अलग-अलग किएक अछि?

अन्तिम श्रेय-ढाँचा न्यायसंगत अस्थायी निष्कर्ष किएक अछि?

२. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

२.१ रस-संयोजन

रचनामे करुण, अद्भुत, लौकिक शृंगार आ शान्त भाव परस्पर मिश्रित रूपमे चलैत अछि। करुण रस केवल माधवीक विस्मरण वा घर बिकबाक दुःखमे नहि, नामहीन विधि, काटल पाँति, पारिवारिक मौन आ असमान प्रेममे व्याप्त अछि। अद्भुत रस प्रत्येक छोट खोज—सूखल पात, तिरहुता अक्षर, हेमलताक प्रतिलिपि, अन्तिम पर्ची—सँ बनैत अछि। अन्तिम शान्त रस “पूर्ण सत्य” पाबि कऽ नहि, अपूर्णताक मर्यादा स्वीकार कऽ उत्पन्न होइत अछि।

२.२ ध्वनि

रचनाक श्रेष्ठ अंश ओतए अछि जतए वस्तु प्रत्यक्ष कथनसँ बाहर अर्थ खोलैत अछि। सूखल पात नश्वर देह, संरक्षण आ विस्मृति ध्वनित करैत अछि; नूनक माप ज्ञानक लचक; काटल पाँति अभिलेखीय सत्ता; खाली अगिला पृष्ठ इतिहासक अनन्तता। एहि स्तरपर पोथी भारतीय ध्वनि-परम्पराक आधुनिक गद्यात्मक रूप प्रस्तुत करैत अछि।

२.३ वक्रोक्ति

वक्रता रूपकक सजावटमे कम, संवाद आ संरचनात्मक उलटावमे बेसी अछि —घर मृणालिनीक सूची बनबैत अछि; फोटोमे गन्ध नहि; फोटोमे आवाज नहि; प्रतिलिपि मूलसँ बेसी स्पष्ट प्रमाण बनैत अछि; अन्तिम जीवित पात संग्रहालयमे नहि, देहमे प्रवेश करैत अछि। एहि वक्र विन्यास सँ घरेलू वाक्य दार्शनिक घनता प्राप्त करैत अछि।

३. पाश्चात्य साहित्यिक समीक्षा

३.१ आख्यान-विज्ञान (Narratology)

उपन्यास द्विकालिक संरचना पर आधारित अछि। २०२६क अनुसन्धान प्रश्न उत्पन्न करैत अछि, १९३४क कथा सम्भावित ऐतिहासिक कारण देखबैत अछि, फेर वर्तमान ओकर प्रमाण-परीक्षण करैत अछि। ई साधारण पूर्वदीप्ति नहि; दू कालरेखा एक-दोसराक व्याख्यात्मक सीमा जाँचैत अछि। पाठक १९३४मे जे देखैत अछि, मृणालिनी ओकर सभटा नहि जानैत; एहि ज्ञान-असमानतासँ नैतिक तनाव बनैत अछि।

३.२ संवादवाद (Dialogism)

भानस-पोथी एकल लेखक-वाणी नहि। मुख्य देवनागरी हाथ, तिरहुता किनार, मौखिक स्मृति, हेमलताक प्रतिलिपि, आधुनिक टंकित पाठ, प्रकाशकीय आवरण, भोजनालयक व्याख्या—सभ परस्पर संवादरत वाणी अछि। अन्तिम श्रेय-पृष्ठ एहि बहुवाणीक संस्थागत रूपान्तरण अछि।

३.३ सूक्ष्म-इतिहास (Microhistory) आ अभिलेखीय मौन

एक घर, एक पोथी, एक पात, एक नूनक मात्रा आ एक काटल पाँति द्वारा रचना व्यापक इतिहास-प्रश्न उठबैत अछि। मौन एक बेरक सेंसर नहि; स्रोत

बनबाक समय, अभिलेख बनबाक समय, प्रकाशनक समय आ पाछाँ इतिहास पढ़बाक समय—सभ स्तरपर निर्मित होइत अछि। माधवीक वाणी घरेलू अनुभव सँ देवकान्तक नोट, सम्पादकीय काट, मुद्रित सामान्यीकरण आ विस्मृतिक क्रम पार करैत अछि।

४. नव्य न्यायीय प्रमाण-विवेक

नव्य न्यायीय दृष्टिसँ उपन्यासक अनुसन्धान-पद्धति विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। प्रत्यक्ष (Pratyakṣa) रूपमे कागज, स्याही, हस्तलिपि, पात, दाग, धागा आ क्रम; अनुमान (Anumāna) रूपमे हस्तलिपि-साम्य वा मुख्य हाथक प्रतिक्रिया; शब्द (Śabda) रूपमे बसन्ती, रेणुका, शशिभूषण, हेमलता आ अन्य स्रोत; उपमान (Upamāna) रूपमे अक्षरक तुलना—सभ अलग प्रमाण-श्रेणी बनैत अछि।

मूल सिद्धान्त ई अछि जे प्रमाण कतेक निष्कर्ष वहन करैत अछि। माधवी नामयुक्त एक तिरहुता पर्ची आ हेमलताक प्रतिलिपि माधवीक प्रमाणित लेखन सिद्ध करैत अछि; मुदा एहि सँ सभ तिरहुता लिखाइ माधवीक सिद्ध नहि होइत। “सम्भवतः”, “निर्धारित नहि”, “जाँच बाकी”, “कम-से-कम”—ई शब्द संशय नहि, ज्ञानक सुरक्षा-कवच बनैत अछि।

५. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे

मुख्य पारिवारिक इतिहास जमीन, नौकरी, प्रमाणपत्र, पुरुष-वंश आ छपल लेखमे सुरक्षित अछि। समानान्तर इतिहास भानस, पात, माछ, पोखरि, तिरहुता, मौखिक ज्ञान, अभ्यास-पोथी आ स्त्री-श्रममे बचल अछि। रचना एहि दूसरा इतिहास केँ “घरक छोट बात” नहि मानैत; ओ मुख्य इतिहासक संरचना बदलि दैत अछि।

समानान्तर इतिहासक महत्त्वपूर्ण संयम ई अछि जे हाशियाक आवाज केँ वापस आनैत समय नवा मिथक नहि बनाओल जाए। माधवी निर्णायक छथि, मुदा जानकी, हेमलता, नसीमा, रमानन्द, बसन्ती आ रेणुकाक अलग-अलग स्रोत-भूमिका बचल अछि। अन्तिम श्रेय माधवी केँ न्याय दैत अछि, मुदा सभ अज्ञात किनार-लिखाइ ओकर नामे नहि करैत।

६. ऐतिहासिक आधार: १५ जनवरी १९३४

उपन्यासक “पन्द्रह जनवरी” अध्याय १५ जनवरी १९३४क बिहार-नेपाल भूकम्पक ऐतिहासिक समयक भीतर रचल अछि। रचनामे भूकम्पक प्रयोग विपत्ति-दृश्य बनयबाक लेल नहि, ज्ञानक सामाजिक पुनर्विन्यास देखयबाक लेल अछि। घरक संरचना दरकैत अछि; संकटमे भोजन, पानी, आगि, सामग्री आ श्रमक वास्तविक ज्ञान सोझाँ अबैत अछि। एहि क्षणमे घरेलू स्त्री-ज्ञान सार्वजनिक उपयोगिताक केन्द्र बनैत अछि।

७. सम्पूर्ण ३२ अध्यायक अध्याय-दर-अध्याय समीक्षा

अध्याय	शीर्षक	आलोचनात्मक धुरी
1	घर खोलबाक दिन	घर-अभिलेख
2	दोसर लिखाइ	द्विहस्त लेखन
3	पात	भौतिक पात
4	पन्द्रह जनवरी	भूकम्प-ज्ञान
5	खिच्चड़ घर	सामूहिक श्रम
6	माधवी	माधवी-सहज्ञान
7	कुर्थीक मास	लोकविश्वास-जाँच
8	नूनक माप	माप-स्वाद
9	तिलकोर	नाम-श्रम
10	पोखरिक आँखि	प्रक्रिया-भूगोल
11	भाप	क्षणिक साक्ष्य
12	माछक काँट	सामान्यीकरणक सीमा
13	अक्षर	हस्तलिपि
14	जे शब्दक अनुवाद नहि	अनुवादक सीमा
15	तरुआक थारी	स्वाद-भिन्नता
16	आमक अमट	सम्पादकीय छोड़
17	अरिकञ्चन	गोपनीयता
18	नाम रहित विधि	नामहीन विधि
19	जनकपुरक बाट	यात्रा-सीमा
20	वर्षा	संरक्षण
21	अदौरी	प्रतिलिपि-साक्ष्य
22	पिरुकियाक मोड़	प्रेम-समानता
23	काटल पाँति	काटल पाँति

24	भोजक बाहर	भीतर/बाहर श्रम
25	छपल लेख	मुद्रित मौन
26	जे नहि कहल गेल	अकहल नाँव
27	एखनक भानस	विरासत-बाजार
28	स्वादक मालिक	श्रेय–स्वामित्व
29	रेणुकाक स्मृति	मौखिक प्रमाण
30	अन्तिम पात	सीमित निष्कर्ष
31	सम्पादकक अपराध	सम्पादकीय आत्मालोचना
32	नाँव सहित	बहुस्तरीय श्रेय

७.1 अध्याय 1 — घर खोलबाक दिन

पुरान घर खोलबाक क्रिया उपन्यासक अभिलेखीय प्रवेश-द्वार बनैत अछि। मृणालिनी वस्तु-सूची बनयबाक व्यावहारिक उद्देश्यसँ अबैत अछि, मुदा भानस-पोथी, तिरहुता किनार-लिखाइ, नामहीन कागज आ बसन्ती काकीक मौखिक ज्ञान ओकरा बुझबैत अछि जे घर केवल सम्पत्ति नहि, बहुस्तरीय साक्ष्य-अवकाश अछि। “सूची” आ “घर द्वारा सूची बनाओल जाएब”क उलटाव एहि अध्यायक प्रधान सौन्दर्य अछि।

७.2 अध्याय 2 — दोसर लिखाइ

मुख्य लिखाइ आ किनारक तिरहुता लिखाइक भेद लेखकत्वक प्रश्न उठबैत अछि। देवकान्तक सम्भावित मुख्य हाथ, नूनक निश्चित मात्रा, “स्वाद अनुसार”क सुधार, आ पुरुष-नामयुक्त कागजसभक बीच नामहीन भानस-पोथी —ई सभ मिलि उपन्यासक ज्ञानमीमांसक द्वंद्व रचैत अछि। मृणालिनी पहिनहि निष्कर्ष रोकैत अछि; “सम्भवत:” ओकर अनुसन्धानक नैतिक शब्द बनैत अछि।

७.3 अध्याय 3 — पात

सूखल पात भौतिक साक्ष्य, खाद्य-स्मृति आ समयक जीवाश्म—तीनू रूपमे उभरैत अछि। मृणालिनी ओकर पहचान निश्चित नहि मानि सम्भावित तिलकोर रूपमे दर्ज करैत अछि। वस्तु-संरक्षणक सावधानी आ पृष्ठक बीच भेटल पात आगेक निर्णायक प्रमाण-श्रृंखलाक बीज बनैत अछि।

७.4 अध्याय 4 — पन्द्रह जनवरी

१५ जनवरी १९३४क भूकम्पक दिन बाहरी संरचना टूटैत अछि आ घरक भीतर ज्ञानक वास्तविक वितरण देखाइत अछि। माधवी पातक ऋतु, उम्र, उपयोग आ देहक जानकारी दैत अछि। भूकम्प केवल ऐतिहासिक घटना नहि, देवकान्तक एकल लेखकत्व-बोधमे दरारक आरम्भिक रूपक अछि।

७.5 अध्याय 5 — खिच्चड़ घर

भूकम्पोत्तर खिच्चड़ सामूहिक श्रमक पाठ अछि। अनाज, मिश्रण, लकड़ी, पातिल, नून, पानी—सभ अलग हाथ सँ संचालित होइत अछि। “ई खिच्चड़ के बनौलक?” प्रश्न आगाँ “ई पोथी के लिखलक?”क नैतिक पूर्वरूप बनैत अछि।

७.6 अध्याय 6 — माधवी

माधवी घरेलू सहायक नहि, ज्ञान-पद्धतिक सह-निर्माता रूपमे स्थापित होइत अछि। पात, अरिकञ्चन, ऋतु, संग्रह आ लिखित ज्ञानक सीमा पर ओकर अधिकार स्पष्ट अछि। देवकान्तक लेखन ओकर संवाद सँ बदलैत अछि; एकल लेखकक धारणाक बदला सहलेखनक भूमि तैयार होइत अछि।

७.7 अध्याय 7 — कुर्थीक मास

कुर्थीक लोकविश्वासक प्रसंग सुनल बात, प्रत्यक्ष अनुभव आ अप्रमाणित चिकित्सकीय दावाक भेद करैत अछि। जे निश्चित नहि, ओकरा निश्चित रूपमे न लिखब—ई अध्याय उपन्यासक प्रमाण-नीतिक आधार बनैत अछि।

७.8 अध्याय 8 — नूनक माप

“एक तोला” बनाम “स्वाद अनुसार” मापन आ अनुभवी निर्णयक द्वंद्व अछि। उपन्यास मात्राक विरोध नहि करैत; मात्राक सार्वभौमिकताक विरोध करैत अछि। नूनक प्रश्न ज्ञानक सीमा, प्रसंग आ अनुभवक प्रश्न बनि जाइत अछि।

७.9 अध्याय 9 — तिलकोर

तिलकोर चुनबाक बहुहस्तीय क्रिया श्रम आ नामक राजनीति खोलैत अछि। सामग्रीक नाम बचैत अछि, मुदा चुननिहार, पीठार बनौनिहार, तेलक ताप

बूझनिहार स्त्रीसभक नाम सहजें छुटि सकैत अछि। एहि ठाम भाषा-सुधार स्रोत-न्यायक प्रश्न बनैत अछि।

७.10 अध्याय 10 — पोखरिक आँखि

मखानक उज्जर अन्तिम रूपक पाछाँ पोखरि, बीआ, पानी, श्रम आ भूगोल लुकल अछि। “पोखरिक आँखि” वस्तु-संस्कृतिक इतिहासक रूपक अछि—उपभोक्ता वस्तुक अन्तिम रूप देखैत अछि, इतिहासकार कैं ओकर प्रक्रिया सेहो देखबाक चाही।

७.11 अध्याय 11 — भाप

भाप क्षणिक साक्ष्यक रूपक अछि। हाथक दबाव, आर्द्रता, गाढ़पन, गन्ध आ समय—बहुत ज्ञान लिखित मात्रा सँ बाहर अछि। “जे नहि कहल, से अपनासँ नहि भरब” अनुसन्धानक नैतिक वाक्य बनैत अछि।

७.12 अध्याय 12 — माछक काँट

माछक स्थानीय नाम आ नसीमाक ज्ञान समुदायगत विविधता देखबैत अछि। “मैथिल सभ” प्रकारक सामान्यीकरण पर उपन्यास शंका करैत अछि। काँट अधिक सामान्य निष्कर्षक जोखिमक रूपक बनैत अछि।

७.13 अध्याय 13 — अक्षर

माधवीक तिरहुता लिखाइ दृश्य साक्ष्य बनैत अछि। हस्तलिपिक आकार, अक्षर-विन्यास आ तुलना द्वारा लेखकत्वक प्रश्न नवा स्तर पबैत अछि। “हाथक लिखाइओ प्रमाण” उपन्यासक अभिलेखीय मेरुदण्ड अछि।

७.14 अध्याय 14 — जे शब्दक अनुवाद नहि

तरुआ, बगिया, अमट, अदौरी जकाँ शब्द पूर्ण अनुवादक प्रतिरोध करैत अछि। समतुल्य शब्द देलासँ पदार्थ, ऋतु, हाथ आ सांस्कृतिक संदर्भ कटि सकैत अछि। अपूर्ण अनुवाद स्वीकारब भाषिक ईमानदारी बनैत अछि।

७.15 अध्याय 15 — तरुआक थारी

एके पीठारमे अलग-अलग तरुआ बाहरी समानता आ भीतरक स्वाद-भेदक रूपक अछि। सम्बन्ध, ईर्ष्या, निकटता आ अनुभव एक सामाजिक थारीमे रहितहुँ एकरूप नहि।

७.16 अध्याय 16 — आमक अमट

आमक अमट स्वाद कैं ऋतु पार बचबैत अछि, मुदा देवकान्त प्रकाशन लेल माधवी-स्रोतक अंश छोड़ैत छथि। ई “पहिल छोड़” छोट सम्पादकीय सुविधा जकाँ अछि, जे आगाँ ऐतिहासिक मौन बनैत अछि।

७.17 अध्याय 17 — अरिकञ्चन

अरिकञ्चनक तह बहुल परतक रूपक अछि। माधवीक निजी पन्ना न पढ़बाक निर्णय महत्त्वपूर्ण: उपलब्ध अभिलेख स्वत: सार्वजनिक स्रोत नहि। गोपनीयता शोध-नीतिक अंश अछि।

७.18 अध्याय 18 — नाम रहित विधि

विधि विस्तारसँ लिखल, बनौनिहारक नाम खाली—ई विरोध उपन्यासक शीर्षक-प्रश्न कैं केन्द्रमे आनैत अछि। नामहीनता प्राकृतिक नहि; सामाजिक आ सम्पादकीय चयन द्वारा निर्मित अछि।

७.19 अध्याय 19 — जनकपुरक बाट

जनकपुरक बाट भूगोल, लिपि, प्रेम आ सीमा जोड़ैत अछि। अनुपस्थितिक अर्थ मनसँ भरबाक इच्छा रोकल जाइत अछि। यात्रा बाहरी दूरीक संग ज्ञानक दूरी सेहो मापैत अछि।

७.20 अध्याय 20 — वर्षा

वर्षा भोजन-संग्रह आ कागज-संरक्षण कैं एक रूपक-तन्त्रमे जोड़ैत अछि। अमट, अचार, अदौरी भविष्य लेल स्वाद बचबैत अछि; कागज, नाँव आ प्रतिलिपि भविष्य लेल ज्ञान।

७.21 अध्याय 21 — अदौरी

हेमलताक अभ्यास-पोथी साधारण प्रतिलिपि होइतहुँ निर्णायक साक्ष्य बनैत अछि। उपन्यास मूल बनाम प्रतिलिपिक पदानुक्रम उलटैत अछि: प्रमाण-मूल्य वस्तुक प्रतिष्ठासँ नहि, स्रोत-स्पष्टतासँ तय होइत अछि।

७.22 अध्याय 22 — पिरुकियाक मोड़

पिरुकियाक मोड़ निजी प्रेम आ सामाजिक असमानताक सीमा बनैत अछि। देवकान्तक प्रेम पर्याप्त नहि जँ सार्वजनिक निर्णयमे समानता आ साहस अनुपस्थित अछि। निजी सम्मान सामाजिक न्यायक विकल्प नहि।

७.23 अध्याय 23 — काटल पाँति

सम्पादकीय काट द्वारा “भानसक इतिहास बनौनिहार स्त्रीसभक नाँव” हटैत अछि। मौन एक दुर्घटना नहि, प्रकाशन-प्रक्रियाक चयन अछि। इतिहासक गुमशुदगी उत्पादनक प्रक्रिया बनि सामने अबैत अछि।

७.24 अध्याय 24 — भोजक बाहर

भोजक भीतर स्त्री-श्रम, बाहर पुरुष-प्रतिष्ठा—स्थानिक विभाजन सामाजिक विभाजन बनैत अछि। देवकान्त निजी मान्यता देतहुँ सार्वजनिक श्रेय पूरा नहि दैत छथि।

७.25 अध्याय 25 — छपल लेख

छपल लेख देवकान्तक नाम कैं स्थायित्व दैत अछि, स्रोत-स्त्रीसभ कैं धुँधला। मुद्रण स्मृति बचबैत अछि, मुदा मौन सेहो स्थिर करैत अछि। छपल पाठ स्वतः सत्य नहि।

७.26 अध्याय 26 — जे नहि कहल गेल

परिवारक दबावक सामने देवकान्त माधवीक नाम सार्वजनिक रूपेँ नहि कहि पबैत छथि। निजी प्रेम आ लेखकीय मौन एकहि नैतिक कमजोरीक दू रूप बनैत अछि। खाली पात अनुपस्थिति कैं दृश्य करैत अछि।

७.27 अध्याय 27 — एखनक भानस

२०२६क भोजनालय विरासत कैं बाजार, कथा, मेनू आ ग्राहकक भाषा मे बदलैत अछि। मृणालिनी पूछैत अछि—कथा केकर, श्रेय केकर, विधि सुधारनिहारक नाम कत?ऽ वर्तमान अतीतक गलती दोहरा सकैत अछि।

७.28 अध्याय 28 — स्वादक मालिक

प्रकाशन-प्रस्ताव देवकान्त-केंद्रित आकर्षक पैकेज बनबैत अछि। मृणालिनी स्वामित्व आ श्रेयक भेद करैत अछि। परिवारक भौतिक अधिकार ज्ञानक नैतिक लेखकत्वक पर्याय नहि।

७.29 अध्याय 29 — रेणुकाक स्मृति

रेणुका मौखिक स्मृति कैं “निश्चित”, “सुनेल”, “अनुमान”मे विभाजित करैत छथि। ओ बेबुनियाद पहचान नहि दैत छथि। मौखिक इतिहास भावुक सत्य नहि, स्रोत-विवेकसँ पढ़ल साक्ष्य बनैत अछि।

७.30 अध्याय 30 — अन्तिम पात

माधवी नामयुक्त तिरहुता पर्ची आ हेमलताक प्रतिलिपि एक-दोसराकैं बल दैत अछि, मुदा सभ किनार-लिखाइ माधवीक घोषित नहि कएल जाइत। निर्णायक प्रमाणो सीमित निष्कर्षहि समर्थन करैत अछि। “नाँव भेटल; न्याय एखन बाकी” उपन्यासक सार-वाक्य अछि।

७.31 अध्याय 31 — सम्पादकक अपराध

मृणालिनी अपन टंकित “स्वच्छ” प्रतिलिपिमे मूलक द्विस्वरता मेटा देने अछि। अतीतक सम्पादकक अपराध उजागर करैत-करैत ओ अपन चयनक अपराध देखैत अछि। आलोचना आत्मालोचना बनैत अछि।

७.32 अध्याय 32 — नाँव सहित

अन्तिम श्रेय-ढाँचा बहुस्तरीय लेखकत्वक संस्थागत रूप अछि—देवकान्तक संकलन/मुख्य लेखन, माधवीक प्रमाणित लेखन/मौखिक ज्ञान, हेमलताक प्रतिलिपि-साक्ष्य, अन्य नामित स्रोत, मृणालिनीक आलोचनात्मक सम्पादन। जीवित पात पोथीमे नहि दबाओल जाइत, खायल जाइत अछि; परम्परा संग्रहालयी अवशेष नहि, जीवित अभ्यास बनि समाप्त होइत अछि।

८. पात्र-तन्त्र

८.१ मृणालिनी

मृणालिनी अनुसन्धानकर्ता सँ आत्मालोचक सम्पादक धरि विकसित होइत अछि। ओकर शक्ति सूची, संरक्षण, तुलना आ स्रोत-विभाजन; ओकर कमजोरी आधुनिक “स्वच्छ पाठ”क आत्मविश्वास। अध्याय ३१मे ओ देखैत अछि जे ओकर प्रतिलिपि मूलक द्विस्वरता मेटा रहल अछि। एहि आत्मसुधारक कारण ओ विश्वसनीय अनुसन्धान-पात्र बनैत अछि।

८.२ माधवी

माधवी अनुपस्थित-उपस्थित केन्द्र अछि। तिरहुता हाथ, पातक ज्ञान, नूनक सुधार, अनुवादक प्रश्न, स्रोतक नाम, प्रेमक समानता—सभमे ओकर बौद्धिक स्वायत्तता स्पष्ट अछि। ओ केवल “भुलायल स्त्री” नहि; उपन्यासक आन्तरिक पद्धतिशास्त्री अछि।

८.३ देवकान्त

देवकान्त जटिल पात्र छथि: जिज्ञासु, सीखबाक इच्छुक, माधवीक ज्ञानक मान्यता देनिहार, मुदा सामाजिक प्रतिष्ठा, प्रकाशनक संक्षेप आ पारिवारिक संरचनाक सामने अपूर्ण। इतिहासक मौन दुष्ट नियतिसँ मात्र नहि, सुविधा आ “छोट छोड़”क संचयसँ बनैत अछि—ई देवकान्तक माध्यमे स्पष्ट होइत अछि।

८.४ बसन्ती काकी, हेमलता, रेणुका, ईशान, शशिभूषण

बसन्ती काकी जीवित अभिलेख छथि; हेमलता प्रतिलिपिक अप्रत्याशित शक्ति; रेणुका मौखिक साक्ष्यक अनुशासन; ईशान विरासत आ बाजारक तनाव; शशिभूषण पारिवारिक प्रतिष्ठा आ उपयोगी स्मृतिक मिश्रण। एहि पात्रसभक कारण रचना एकल नैतिक धुरी पर नहि टिकैत।

९. पदार्थक काव्यशास्त्र

९.१ पात

पात उपन्यासक सर्वाधिक घन प्रतीक अछि—तिलकोरक जीवित पात, पोथीक बीच दबायल सूखल पात, लिखित छोट पात, पृष्ठक पात आ भोजक पात। अन्तिम दृश्य जखन जीवित पात पोथीमे दबाओल नहि जाइत बल्कि खायल जाइत अछि, तखन रचना संग्रहालयी संरक्षणक सीमा घोषित करैत अछि।

९.२ नून

नून मापनीयता आ अनुभवक संघर्ष अछि। निश्चित तोला उपयोगी अछि, मुदा अन्तिम स्वाद परिस्थिति-निर्भर। नून उपन्यासक प्रमाण-दर्शनक लघु रूपक अछि।

९.३ भाप

भाप देखाइत अछि, ओझराइत अछि, मुदा पकवान बदलि दैत अछि। गन्ध, स्पर्श, मौखिक ज्ञान, घरेलू आदत—एहन क्षणिक साक्ष्य लिखित अभिलेखक बाहर रहितहुँ इतिहासपर असर छोड़ैत अछि।

९.४ अमट आ अदौरी

दुनू रूपान्तरण द्वारा संरक्षण करैत अछि। अभिलेख सेहो अनुभव कैँ जसक तस नहि बचबैत; रूप बदलैत अछि। तैं संरक्षणक प्रक्रिया स्वयं दर्ज रहबाक चाही।

९.५ मखान आ माछ

अन्तिम उपभोक्ता-वस्तुक पाछाँ जल, खेत, बाजार, समुदाय, श्रम आ नामक लम्बा इतिहास अछि। रचना अन्तिम रूप कैँ पूर्ण इतिहास मानबाक विरुद्ध अछि।

१०. नारीवादी आलोचना: श्रम, लेखकत्व आ नाम

रचनाक नारीवादी शक्ति पुरुष-विरोधी सरल विभाजनमे नहि, अभिलेखक असमान संरचनाक सूक्ष्म विश्लेषणमे अछि। पुरुषक नाम जमीन, नौकरी, लेख, वंश आ प्रकाशनमे सहज प्रवेश करैत अछि; स्त्रीक नाम “घरमे सभ कैँ बुझल” मानि छोड़ल जाइत अछि। एहन नामहीनता प्राकृतिक नहि, सामान्यीकृत सामाजिक-प्रशासकीय प्रक्रियाक परिणाम अछि।

माधवीक प्रेम-प्रसंग विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। देवकान्त निजी रूपेँ ओकर ज्ञानक सम्मान करैत छथि, मुदा सार्वजनिक सामाजिक निर्णयमे पूरा समानता देबाक साहस नहि करैत। निजी प्रशंसा सामाजिक न्यायक विकल्प नहि—ई उपन्यासक कठोर निष्कर्ष अछि।

११. सम्पादकीय नैतिकता: उपन्यासक आत्मालोचनात्मक शिखर

“सम्पादकक अपराध” अध्याय रचनाक निर्णायक उपलब्धि अछि। मृणालिनी अतीतक सम्पादक आ देवकान्तक काट-छाँट आलोचना करैत-करैत अपन टंकित पाठमे मूलक बहुहस्तीयता मेटबैत पकड़ैत अछि। एहि आत्मालोचनाक कारण उपन्यास नैतिक उपदेश सँ बचैत अछि। न्याय केवल “सही नाम” खोजब नहि, पाठ बनयबाक अपन हस्तक्षेप स्पष्ट करब सेहो अछि।

अन्तिम श्रेय-ढाँचा एहि कारण महत्त्वपूर्ण अछि जे ओ “लेखक”क एकल श्रेणी कैं विखण्डित करैत अछि: संकलन, मुख्य लेखन, प्रमाणित लेखन, मौखिक ज्ञान-स्रोत, प्रतिलिपि-साक्ष्य, आलोचनात्मक सम्पादन—सभक नाम अलग। ई साहित्यिक समापनक साथ व्यवहारिक सम्पादकीय मॉडल सेहो अछि।

१२. शुद्ध मैथिली निखार-ऑडिट

मूल पोथीक भाषिक आधार मजबूत मैथिली अछि; घरेलू शब्दावली कथ्यक अवधारणात्मक शक्ति बनैत अछि। तथापि प्रकाशनक अन्तिम निखार लेल शब्दरूपक एकरूपता, पद-विभाजन, रोमन अंशक कोष्ठकीकरण आ हिन्दी-प्रभावित विकल्पक पुनर्परीक्षण उचित रहत।

शब्दरूप	मूल पाठमे उपस्थिति	निखार-सुझाव
पानि / पानी	103 / 54	एकरूप “पानि” प्राथमिक
चाह / चाय	193 / 17	एकरूप “चाह” प्राथमिक
कोठली / कोठरी	9 / 10	“कोठली” प्राथमिक
इनार / कुआँ	0 / 6	देशज “इनार” प्राथमिक
बिलायल / गायब	0 / 6	“बिलायल” प्राथमिक
पित्तरि / पीतल	0 / 19	देशज संगति अनुसार “पित्तरि” विचारणीय
रोमन-अक्षरयुक्त अनुच्छेद	19	कथ्यगत रोमन अंश कोष्ठकमे; मैथिली अर्थ लग

विशेष निखार-बिन्दु: “पानी”→“पानि”, “चाय”→“चाह”, “कमरा/कोठरी”→सन्दर्भानुसार “कोठली”, “कुआँ”→“इनार”, “गायब”→“बिलायल”, “पीतल”→“पित्तरि”क प्रयोग संस्करणभरि एकरूप कएल जा सकैत अछि। रोमन/अंग्रेजी अंश जँ ऐतिहासिक दस्तावेजक उद्धरण रूपमे आवश्यक अछि तँ मूल रूप कोष्ठकमे राखि मैथिली अर्थ स्पष्ट कएल जाए।

टंकण-स्तरपर संयुक्त पदक बीच अनावश्यक चिपकाव, “कैं/सँ/मे”क पद-विभाजन, उद्धरण-चिह्न, दीर्घ डैश, अध्याय-शीर्षक आ विरामचिह्नक अन्तिम

एकरूप जाँच आवश्यक अछि। ई विशेष महत्त्वपूर्ण, कारण उपन्यास स्वयं अक्षर, प्रतिलिपि आ सम्पादनक नैतिकता पर केन्द्रित अछि।

१३. रचनात्मक उपलब्धि

भोजन कैं लोक-संस्कृतिक सजावटसँ निकालि ज्ञान, इतिहास आ लेखकत्वक केन्द्र बनाओल गेल अछि।

दू कालरेखा कारण-परिणाम नहि, नैतिक प्रतिध्वनि बनबैत अछि।

माधवीक पुनर्प्राप्ति भावुक खोज नहि; चरणबद्ध प्रमाण-शृंखलासँ बनैत अछि।

"सम्पादकक अपराध" आधुनिक अनुसन्धानकर्ता कैं निर्दोष नायक बनबाक सुविधा नहि दैत।

अन्तिम श्रेय-पद्धति साहित्यिक समाधानक संग व्यवहारिक सम्पादकीय नमूना दैत अछि।

पात, नून, भाप, अमट, अदौरी जकाँ पदार्थ प्रतीक बनितहुँ अपन भौतिकता नहि गमबैत।

मैथिली घरेलू शब्दावली स्वयं सिद्धान्त निर्माण करैत अछि।

१४. सीमासभ आ आलोचनात्मक आपत्ति

किछु खण्डमे पात्र नैतिक वा ज्ञानमीमांसक निष्कर्ष बहुत स्पष्ट शब्दमे कहि दैत अछि। जतए वस्तु वा दृश्य पहिनहि पर्याप्त ध्वनि उत्पन्न कऽ चुकल हो, ततए पुनः व्याख्यात्मक वाक्य कथात्मक सूक्ष्मता कनी घटा सकैत अछि। मध्य खण्डमे "नाम", "स्रोत", "सीमा"क पाठ बारम्बार आवैत अछि; ई उद्देश्यपूर्ण आवृत्ति सेहो अछि, मुदा संक्षिप्त सम्पादन सँ कतिपय ठाम प्रभाव आरो तीक्ष्ण भऽ सकैत अछि।

१९३४क व्यापक सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य सीमित अछि। रचना सूक्ष्म-इतिहासक घर-केंद्रितता चुनैत अछि; ई ओकर शक्ति सेहो, सीमा सेहो। माधवीक बौद्धिक स्पष्टता कखनो आधुनिक स्रोत-आलोचकक भाषा सन व्यवस्थित बुझा सकैत अछि, मुदा क्रिया, भोजन, लिपि आ श्रममे जड़ल होएबाक कारण ई दोष पूर्ण रूपेँ हावी नहि होइत।

१५. तुलनात्मक निष्कर्ष

पद्धति	मुख्य प्रश्न	उपन्यासक उदाहरण	निष्कर्ष
भारतीय काव्यशास्त्र	कथितक पार्श्वमे की ध्वनित?	पात, नून, काटल पाँति, खाली पृष्ठ	ध्वनि-वक्रोक्ति नैतिक अर्थ गाढ़ करैत अछि
पाश्चात्य आख्यान-सिद्धान्त	वाणी आ समय कोना संरचित?	१९३४/२०२६, बहुहस्त पाठ	बहुवाणी एकल लेखक-कथा तोड़ैत अछि
नव्य न्याय	कोन प्रमाण कतेक निष्कर्ष देत?	हस्तलिपि, प्रतिलिपि, मौखिक स्मृति	सीमित दावा ही प्रमाणानुकूल न्याय
विदेह समानान्तर इतिहास	ककर नाम मुख्य इतिहाससँ बाहर?	माधवी, हेमलता, बसन्ती, नसीमा	हाशियाक स्रोत केन्द्र बनैत, स्रोत-विवेक कायम

१६. निष्कर्ष

“पातक भीतर लिखल नाँव”क वास्तविक नायक एक नाँव नहि, नाँव देबाक पद्धति अछि। यदि कथा केवल अन्तिम पातपर “माधवी” भेटला पर समाप्त होइत, समाधान भावनात्मक रहित। अध्याय ३१ जोड़ि रचना मृणालिनीक अपन सम्पादकीय अपराध देखबैत अछि; एहि सँ इतिहासक न्याय पुनःलेखनक नैतिकता बनैत अछि।

अन्तिम तिलकोर-पात रचनाक पूर्ण रूपक अछि। मृणालिनी ओकरा पोथीमे दबा कऽ स्मृति बनाबय चाहैत अछि; बसन्ती काकी ओकरा खेबाक लेल कहैत छथि। अभिलेख जरूरी, मुदा जीवन अभिलेखक दास नहि; स्मृति जरूरी, मुदा परम्परा मृत नमूना नहि; नाम जरूरी, मुदा नामक न्याय श्रम, स्रोत, प्रतिलिपि, मौखिक ज्ञान आ आगाँक जीवनक सम्बन्धसँ अलग नहि।

चारू आलोचनात्मक पद्धति अलग-अलग मार्गसँ एकहि बिन्दुपर पहुँचैत अछि: सत्य एक नाँवक स्वामित्व नहि, उत्तरदायी सम्बन्धक विन्यास अछि। एहि कारण ई उपन्यास मैथिली गद्यक भीतर अभिलेखीय अनुसन्धान, खाद्य-

संस्कृति, स्त्री-इतिहास, पारिवारिक स्मृति आ सम्पादकीय नैतिकताक दुर्लभ संगम प्रस्तुत करैत अछि।

१७. बिबलियोग्राफी

एतय केवल पोथी/ग्रन्थ देल गेल अछि; कोनो वेबसाइट नहि।

ठाकुर, गजेन्द्र। पातक भीतर लिखल नाँव। विदेह, २०१४/२०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। अ पैरालेल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर (A Parallel History of Mithila & Maithili Literature), खण्ड १–४। विदेह।

ठाकुर, गजेन्द्र। समानान्तर दर्शन, खण्ड १ (Parallel Philosophy, Volume I)। विदेह।

ठाकुर, गजेन्द्र। समानान्तर दर्शन, खण्ड २ (Parallel Philosophy, Volume II)। विदेह।

भरतमुनि। नाट्यशास्त्र।

आनन्दवर्धन। ध्वन्यालोक।

अभिनवगुप्त। ध्वन्यालोक-लोचन।

कुन्तक। वक्रोक्तिजीवित।

मम्मट। काव्यप्रकाश।

विश्वनाथ कविराज। साहित्यदर्पण।

गङ्गेश उपाध्याय। तत्त्वचिन्तामणि।

बिमल कृष्ण मतिलाल। एपिस्टेमोलॉजी, लॉजिक एण्ड ग्रामर इन इंडियन फिलॉसॉफिकल एनालिसिस (Epistemology, Logic and Grammar in Indian Philosophical Analysis)।

योनार्दन गनेरी। फिलॉसफी इन क्लासिकल इंडिया (Philosophy in Classical India)।

अरस्तू। पोएटिक्स (Poetics)।

मिखाइल बाक्तिन। द डायलॉजिक इमेजिनेशन (The Dialogic Imagination)।

जेरार जेनेट। नैरेटिव डिस्कोर्स (Narrative Discourse)।

पॉल रिक्योर। टाइम एण्ड नैरेटिव (Time and Narrative), खण्ड १।

मिशेल-रोल्फ ट्रुइयो। साइलेंसिंग द पास्ट (Silencing the Past)।

कार्लो गिन्जबर्ग। द चीज एण्ड द वर्म्स (The Cheese and the Worms)।

यान अस्मान। कल्चरल मेमोरी एण्ड अर्ली सिविलाइजेशन (Cultural Memory and Early Civilization)।

मिशेल फूको। द आर्कियोलॉजी ऑफ नॉलेज (The Archaeology of Knowledge)।

रणजीत गुहा। डॉमिनन्स विदाउट हेजेमनी (Dominance without Hegemony)।

गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक। अ क्रिटीक ऑफ पोस्टकोलोनियल रीजन (A Critique of Postcolonial Reason)।

कैरोलिन स्टीडमैन। डस्ट: द आर्काइव एण्ड कल्चरल हिस्ट्री (Dust: The Archive and Cultural History)।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण। द बिहार–नेपाल अर्थक्वेक ऑफ १९३४ (The Bihar–Nepal Earthquake of 1934)।

विजय कुमार, सम्पादक। डॉक्युमेन्टेशन ऑफ द रिकॉर्ड्स ऑन अर्थक्वेक इन बिहार, १९३४ (Documentation of the Records on Earthquake in Bihar, 1934), खण्ड १–३। बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय।

आलेख २३ · उपन्यास आ विस्तृत आख्यानक अध्ययन

सातम साक्षी

सारांश

ई शोध-समीक्षा “सातम साक्षी”क ४२ अध्यायकेँ एकहि समालोचनात्मक अनुक्रममे पढ़ैत अछि आ उपन्यासक अपराध-कथा, अभिलेख-कथा, लोक-इतिहास, न्याय-विमर्श आ ज्ञानमीमांसात्मक प्रश्नकेँ परस्पर जोड़ि मूल्यांकन करैत अछि। अध्ययनक मूल प्रतिपाद्य ई अछि जे उपन्यासक वास्तविक केन्द्र अपराधी-उद्घाटन नहि, प्रमाणक निर्माण, प्रमाणक सीमा आ प्रमाणक नैतिक उत्तरदायित्व अछि। बन्द कोठली, चारि बजि सतरह मिनट पर रुकल घड़ी, सुपारीक डिबिया, नील किनारीक कप, नील सूत, देवालक गुप्त वायु-पथ, १९३४क राहत-अभिलेख, दुलारीक सीमित गवाही, कमली देवीक आदति-आधारित समय-स्मृति, रहमत काकाक बँधनी-ज्ञान, रामचरितक भवन-स्मृति आ अभिरामक “सूत्र”—ई सभ अलग-अलग सत्य नहि, परस्पर-जाँचल ज्ञान-स्रोत बनैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ करुण, भयानक, अद्भुत आ शान्त रसक क्रमिक संयोजन; ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्यक वस्तु-नियोजन; पाश्चात्य दृष्टिसँ अपराध-कथाक दूहरी समय-संरचना, संकेताधारित पुनर्निर्माण, बहुवाचिकता आ साक्ष्यगत अन्याय; नव्य-न्यायक दृष्टिसँ संशय, प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, अभाव, उपाधि आ हेत्वाभासक अनुशासन; तथा विदेह समानान्तर इतिहास-पद्धतिक दृष्टिसँ आधिकारिक अभिलेखक संग लोक-स्मृति, स्त्री-साक्ष्य, गरीब समुदाय, कारीगर-ज्ञान आ मिटाओल भू-नामक पुनर्पाठ—उपन्यासक मुख्य बौद्धिक संरचना बनैत अछि। भाषा-निखार परीक्षण स्रोत-पाठमे किछु हिन्दी-प्रभावित तथा तकनीकी आगन्तुक शब्दक पुनरावृत्ति सेहो चिन्हैत अछि; शोध-पाठमे यथासम्भव शुद्ध मैथिली रूप ग्रहण कएल गेल अछि।

बीजशब्द

सातम साक्षी ·मैथिली उपन्यास ·आख्यान-रचना ·स्मृति ·सामाजिक इतिहास

१.२५. गजेन्द्र ठाकुर- सातम साक्षी- शोध आलेख

सातम साक्षी

प्रमाण, स्मृति, अभिलेख आ माटिक न्याय

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य समीक्षा, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर इतिहास-पद्धतिक आधार पर विस्तृत शोध-समीक्षा

आधार-पाठः “सातम साक्षी” — उपन्यास — गजेन्द्र ठाकुर — प्रथम संस्करण २०१२; संशोधित पाठ २०२६। मूल पाठक ४२ अध्याय एहि अध्ययनमे सम्पूर्ण रूपेँ विचारित।

सार

ई शोध-समीक्षा “सातम साक्षी”क ४२ अध्यायकेँ एकहि समालोचनात्मक अनुक्रममे पढ़ैत अछि आ उपन्यासक अपराध-कथा, अभिलेख-कथा, लोक-इतिहास, न्याय-विमर्श आ ज्ञानमीमांसात्मक प्रश्नकेँ परस्पर जोड़ि मूल्यांकन करैत अछि। अध्ययनक मूल प्रतिपाद्य ई अछि जे उपन्यासक वास्तविक केन्द्र अपराधी-उद्घाटन नहि, प्रमाणक निर्माण, प्रमाणक सीमा आ प्रमाणक नैतिक उत्तरदायित्व अछि। बन्द कोठली, चारि बजि सतरह मिनट पर रुकल घड़ी, सुपारीक डिबिया, नील किनारीक कप, नील सूत, देवालक गुप्त वायु-पथ, १९३४क राहत-अभिलेख, दुलारीक सीमित गवाही, कमली देवीक आदति-आधारित समय-स्मृति, रहमत काकाक बँधनी-ज्ञान, रामचरितक भवन-स्मृति आ अभिरामक “सूत्र”—ई सभ अलग-अलग सत्य नहि, परस्पर-जाँचल ज्ञान-स्रोत बनैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ करुण, भयानक, अद्भुत आ शान्त रसक क्रमिक संयोजन; ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्यक वस्तु-नियोजन; पाश्चात्य दृष्टिसँ अपराध-कथाक दूहरी समय-संरचना, संकेताधारित पुनर्निर्माण, बहुवाचिकता आ साक्ष्यगत अन्याय; नव्य-न्यायक दृष्टिसँ संशय, प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, अभाव, उपाधि आ हेत्वाभासक अनुशासन; तथा विदेह समानान्तर इतिहास-पद्धतिक दृष्टिसँ आधिकारिक अभिलेखक संग लोक-स्मृति, स्त्री-साक्ष्य, गरीब समुदाय, कारीगर-ज्ञान आ मिटाओल भू-नामक पुनर्पाठ—उपन्यासक मुख्य बौद्धिक संरचना बनैत अछि। भाषा-निखार परीक्षण स्रोत-पाठमे किछु हिन्दी-प्रभावित तथा तकनीकी आगन्तुक शब्दक पुनरावृत्ति सेहो

चिन्हैत अछि; शोध-पाठमे यथासम्भव शुद्ध मैथिली रूप ग्रहण कएल गेल अछि।

मुख्य शब्द: प्रमाण, स्मृति, अभिलेख, नव्य-न्याय, रस, ध्वनि, अपराध-कथा, लोक-इतिहास, सात टोला, साक्ष्यगत न्याय, समानान्तर इतिहास।

१. अध्ययनक परिधि आ मूल प्रश्न

“सातम साक्षी” बाह्य रूपेँ बन्द कोठली आ संदिग्ध मृत्यु सँ आरम्भ होइत अपराध-रहस्य अछि, मुदा आरम्भहि सँ कथा अपन विधागत सीमा बढ़बैत चलैत अछि। वसुधाक मृत्यु, दुलारीक बिलायल रहब, सात टोला जमीनक मुकदमा आ १९३४क राहत-अभिलेख परस्पर जुड़ला पर अपराध केवल एक रातिक घटना नहि रहैत; ओ इतिहासक लेखन, दस्तावेजक प्रामाणिकता, परिवारक प्रतिष्ठा, गरीब समुदायक भूमि-अधिकार, स्त्रीक वाणी आ यंत्रक निष्कर्षक विश्वसनीयता पर प्रश्न बनि जाइत अछि।

अध्ययन चारि मुख्य प्रश्न पर केन्द्रित अछि। पहिल—उपन्यास प्रमाण कैँ कथानक-साधन मात्र मानैत अछि कि ज्ञानक नैतिक समस्या? दोसर—१९३४ आ वर्तमानक दू समय-रेखा कथाक रहस्य खोलबाक अतिरिक्त मिथिलाक लोक-इतिहासक पुनर्लेखन कोना करैत अछि? तेसर—जयनारायण, माधवी, अभिराम, दुलारी, कमली, रहमत, कुसुमा आ रासबिहारी सन पात्रक ज्ञान अलग-अलग सामाजिक स्थान सँ कोना आबैत अछि? चारिम—भाषा, बिम्ब, संवाद, पुनरावृत्ति आ प्रतीक उपन्यासक साहित्यिक प्रभाव कैँ कतबा समर्थ आ कतबा शिक्षापरक बनबैत अछि?

मूल पाठक ४२ अध्यायमे कोनो अध्याय छोड़ल नहि गेल अछि। अध्याय-दर-अध्याय परीक्षणक बाद समेकित आलोचना कएल गेल अछि, जाहिसँ कथानकक छोट संकेत—कपक किनारी, डिबियाक स्थान, घड़ीक समय, वायु-पथ, कागजक फाटल किनार, चाल, खाँसी, चाभीक छल्ला, नील सूत—बड़ निष्कर्षक भीतर ओझराइ नहि जाए।

२. पद्धति: चारि समालोचनात्मक धरातल

२.१ भारतीय काव्यशास्त्रीय धरातल

भारतीय काव्यशास्त्रक उपयोग एतऽ केवल रस-गणना लेल नहि, बल्कि अनुभूति आ अर्थक निर्माण बुझबाक लेल कएल गेल अछि। भरतक रस-विचार, आनन्दवर्धनक ध्वनि, कुन्तकक वक्रोक्ति, क्षेमेन्द्रक औचित्य आ भारतीय भाषिक आलोचनाक देशज आग्रहक सहायतासँ ई देखल गेल जे उपन्यास कतेक बेर प्रत्यक्ष कथन सँ बेसी वस्तु, मौन, मौसम आ पुनरावृत्त बिम्बक माध्यमे अर्थ उपजाबैत अछि।

करुण रस वसुधाक मृत्यु आ माधवीक शोकमे केन्द्रित रहितो भयानक आ अद्भुत रसक संग चलैत अछि। मुदा उपन्यास अलौकिक निष्कर्ष पर नहि टिकैत; सपना, पायल, देवालक साँस जकाँ दृश्य अन्ततः तर्कक परीक्षणमे राखल जाइत अछि। एहि कारण अद्भुत रस ज्ञान-विरोधी नहि, जिज्ञासा-जाग्रत रस बनैत अछि। औचित्यक दृष्टिसँ ई संयम उपन्यासक विशेष गुण अछि।

२.२ पाश्चात्य आलोचनात्मक धरातल

अपराध-कथाक पाश्चात्य सिद्धान्त प्रायः दू कथा चिन्हैत अछि—पहिने घटि चुकल अपराधक अनुपस्थित कथा, आ ओकरा बाद जाँचक वर्तमान कथा। “सातम साक्षी” एहि दूहरी संरचना कैं तेसर धारा दैत अछि: १९३४क ऐतिहासिक कथा। फलतः वर्तमान जाँच केवल “के मारलक?”क उत्तर नहि खोजैत, “कागज कोना बदलल?”, “ककर आवाज अभिलेखसँ बाहर रहल?” आ “कोन स्मृति संस्थागत सत्य बनल?” सेहो पूछैत अछि।

कार्लो गिन्सबर्गक सूक्ष्म संकेत सँ इतिहास-पुनर्निर्माणक पद्धति आ उमबर्तो एको–सेबिओकक अनुमानात्मक संकेत-पठनक परम्परा उपन्यासक जाँच-विन्यास बुझबाक उपयोगी तुलनात्मक धरातल दैत अछि। नील कप, डिबिया, राख, घड़ी, चाल, धागा आ फाटल कागज सभ “छोट” वस्तु अछि, मुदा एहि छोट वस्तुसँ बड़ सत्ता-संबन्ध खुलैत अछि। मिरान्डा फ्रिकरक साक्ष्यगत अन्यायक दृष्टिसँ दुलारीक सामाजिक स्थान विशेष महत्त्वपूर्ण अछि: गरीब युवतीक वाणी तुरन्त शंकाक पात्र बनैत अछि, जबकि उपन्यास ओकर कथनक सीमाबोध कैं विश्वसनीयताक आधार बनबैत अछि।

२.३ नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसात्मक धरातल

नव्य-न्याय दृष्टिसँ पढ़ला पर जयनारायणक पद्धति “निष्कर्ष पहिने नहि, अवच्छेद पहिने”क अनुशासन जकाँ देखाइत अछि। प्रत्यक्ष की अछि, अनुमान कोन हेतु पर टिकल अछि, शब्द-कथन कतेक आप्त अथवा सीमित अछि, अभाव स्वयं की बतबैत अछि, आ कोन उपाधि सामान्यीकरण तोड़ि दैत अछि —ई प्रश्न कथा भरि बेराबेरी उठैत अछि।

दुलारीक दूरभाष-संकेत कैँ दुलारीक देह मानि लेब, बन्द कोठली कैँ आत्महत्या मानि लेब, अन्तिम भेटनिहार कैँ अपराधी मानि लेब, परिवारक एक झूठ कैँ हत्या सिद्धि मानि लेब—ई सभ हेत्वाभासक कथात्मक रूप अछि। जयनारायण बेराबेरी सम्भावना आ सिद्ध तथ्य अलग राखैत छथि। अभिरामक प्रणाली सेहो अन्ततः स्रोत, अनिश्चितता आ मानवीय समीक्षा लिखबाक अनुशासन सीखैत अछि।

अभावक भूमिका विशेष उल्लेखनीय अछि। नील कपक अनुपस्थिति, मूल दस्तावेजक अनुपस्थिति, जूताक छापक अभाव, दुलारीक घर सँ धन नहि हेरायल रहब, घड़ीक अस्वाभाविक रुकावट, पन्नाक फाटल भाग—“जे नहि अछि” ओ कथा भरि सकारात्मक प्रश्न बनैत अछि। नव्य-न्यायक अभाव-विचार संग ई रचनात्मक साम्य अत्यन्त फलदायी अछि, यद्यपि उपन्यास कैँ दार्शनिक ग्रन्थ मानब उचित नहि।

२.४ विदेह समानान्तर इतिहास-पद्धति

विदेह समानान्तर इतिहास-पद्धतिक मूल आग्रह ई अछि जे आधिकारिक इतिहासक समानान्तर ओहि आवाज, भूगोल, जातिगत-सामाजिक अनुभव, स्त्री-स्मृति, श्रम-ज्ञान आ लोक-अभिलेख कैँ स्थान देल जाए जे संस्थागत लेखनमे किनार कएल गेल। “सातम साक्षी”क सात टोला कथा एहि आग्रहक उपन्यासात्मक रूप जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि।

एतऽ सरकारी नकल स्वतः सर्वोच्च सत्य नहि। ओकर सामना राहत-सूची, कर-रसीद, विवाह-बही, पोखरि-उपयोगक लेखा, सीमाक स्थानीय साक्ष्य, कुसुमाक पत्र, रहमतक बँधनी-ज्ञान, रामचरितक भवन-स्मृति, कमलीक चूल्हि-समय आ दुलारीक कापी सँ होइत अछि। समानान्तर इतिहास एतऽ

“आधिकारिकता नकारब” नहि, बल्कि आधिकारिकता कैं बहुस्रोत परीक्षणमे राखब अछि। यही उपन्यासक इतिहास-दृष्टिक सबसँ पक्का पक्ष अछि।

३. कथानकक स्थापत्य: रहस्य सँ अभिलेख धरि

कथा चारि पैघ गति-खंडमे पढ़ल जा सकैत अछि। अध्याय १–१२ वर्तमान घटनास्थल, वस्तु-व्याकरण, दुलारीक बिलायल रहब, “सूत्र” आ वसुधाक परिवारक झूठक माध्यमे प्रारम्भिक रहस्य गढ़ैत अछि। अध्याय १३–१७ अचानक १९३४क समयमे प्रवेश करैत कुसुमा–रासबिहारी आ सात टोला संघर्ष खोलैत अछि। अध्याय १८–३० अतीत आ वर्तमानक संकेत जोड़ि दुलारीक पुनर्प्रवेश, जमानत, यंत्रक त्रुटि आ बनाओल आत्महत्याक प्रश्न विकसित करैत अछि। अध्याय ३१–४२ जयनारायणक आत्म-संशय, अभिरामक पारिवारिक कागज, सातम साक्षीक असल अर्थ, प्रखर–नवलकिशोर श्रृंखला, न्यायालयीय निष्कर्ष आ भूमि-अधिकारक अपूर्ण पुनर्स्थापन धरि पहुँचैत अछि।

ई स्थापत्यक विशेषता ई जे समाधान एकहि “महान खुलासा” पर निर्भर नहि। अनेक छोट सुधार एक संग सत्यक आकार बनबैत अछि। नील धागा पहिने रहस्यक अलौकिक केन्द्र जकाँ प्रतीत होइत, बादमे कुसुमाक निजी चिन्ह बनैत अछि। “सातम साक्षी” पहिने व्यक्ति-संदेह जगबैत, बादमे दस्तावेज सत्यापनक सातम चिन्ह निकलैत अछि; तइयो अन्तिम पाँति “जे देखैत अछि मुदा नाम नहि कहैत” कथा कैं पूर्ण बन्द नहि करैत। शीर्षक एहि प्रकार समाधान आ शेष-अनिश्चितता दुनूकैं धारण करैत अछि।

कथाक गति कखनहुँ जाँच-पद्धतिक विस्तार कारण धीमी होइत अछि। विशेषत: १९३४क पाँच अध्याय मुख्य रहस्यक तात्कालिक वेग रोकैत अछि, मुदा यही विलम्ब उपन्यास कैं साधारण अपराध-कथा बनबासँ रोकैत अछि। पाठक अपराधक तात्कालिक रोमांच छोड़ि दीर्घकालिक अन्याय, भू-स्मृति आ दस्तावेजी हिंसाक भीतर प्रवेश करैत अछि।

४. अध्याय-दर-अध्याय विस्तृत समीक्षा

अध्याय १ — बरखाक चारि बजि सतरह मिनट

आरम्भिक अध्याय वातावरण आ प्रमाण-दृष्टि दुनू स्थापित करैत अछि। बरखा, सीलन, थमल घड़ी, बामा कात पड़ल सुपारीक डिबिया, दू कपक दाग,

अधलिखल वाक्य आ दुलारीक अनुपस्थिति—सभ मिलि आत्महत्याक सरल कथा कैं तुरन्त सन्देहमे राखैत अछि। जयनारायणक प्रवेश “देखल” आ “अर्थ देल”क भेद स्थापित करैत अछि। अध्यायक साहित्यिक उपलब्धि ई जे वस्तु सभ केवल सुराग नहि, स्मृति आ आदतिक व्याकरण बनैत अछि।

अध्याय २ — सुपारीक डिबिया

एहि अध्यायमे “आदति” जाँचक मूल कसौटी बनैत अछि। वसुधाक बिना चीनी चाह, नील किनारीक कप, डिबियाक स्थायी स्थान, कुर्सीक दिशा आ वस्तु-स्थानक विचलन घटनास्थल कैं बनाओल दृश्य होयबाक सम्भावना दैत अछि। दुलारीक घरमे बाइस रुपैया रहि जाएब ओकर “भागि गेल” कथा कमजोर करैत अछि। जयनारायणक वाक्य कि कोठलीक वस्तु शब्द नहि, व्याकरण होइत अछि—उपन्यासक सम्पूर्ण प्रमाण-दर्शनक संक्षिप्त सूत्र अछि।

अध्याय ३ — सूत्रक पहिल उत्तर

“सूत्र” अंकीय प्रणाली रूपेँ प्रवेश करैत अछि आ परम्परागत मानवीय जाँचक संग ज्ञानमीमांसात्मक संवाद शुरू होइत अछि। प्रणाली समय-रेखा, ताला-संवेदक, दूरभाष-संकेत आ दस्तावेज-प्रयोग जोड़ि सकैत अछि, मुदा जयनारायण ओकर सीमा तुरन्त देखबैत छथि: संख्या उपकरण चिन्हैत अछि, व्यक्ति नहि। अध्याय यंत्र बनाम मनुष्यक सस्ता द्वन्द्व नहि रचैत; दुनूकैं अधूरा मानैत अछि। अन्तमे आत्महत्याक सरल सम्भावना कमजोर होइत अछि।

अध्याय ४ — दुलारी गायब

धमकी-पत्र आ दुलारीक बिलायल रहब कथा कैं सामाजिक भयक धरातल पर आनैत अछि। फूलोक बयान, दुलारीक कापी, चमकैत जूता, स्थानीय दबाव आ “हम भागब नहि”क लिखित वाक्य ओकरा संभावित अपराधी सँ जोखिमग्रस्त साक्षीमे बदलय लगैत अछि। एहि अध्यायमे गरीब स्त्रीक वाणी पर तुरन्त अविश्वासक सामाजिक प्रवृत्ति प्रकट होइत अछि। विदेह समानान्तर दृष्टिसँ दुलारी “इतिहासक विषय” नहि, अपना कागज पढ़ए सीखैत ऐतिहासिक कर्ता अछि।

अध्याय ५ — माधवीक पहिल सपना

सपना कथा कैं अद्भुत आ मनोवैज्ञानिक तल दैत अछि—सात सीढ़ी, लाल ओढ़नी, पायल, नील धागा, देवालक साँस। महत्त्वपूर्ण ई जे उपन्यास सपनाकैं

प्रत्यक्ष प्रमाण घोषित नहि करैत। जयनारायण सपना कैं मनक सामग्री कहैत परीक्षण योग्य बाह्य चिन्ह अलग करैत छथि। मालतीक घरेलू विवेक—“मन दिनभरि जे निगलैत अछि, राति ओकर पाचन करैत अछि”—दार्शनिक संयमक लोकभाषिक रूप अछि।

अध्याय ६ — बन्द कोठरीक दोसर साँस

वायु-नलीक खोज बन्द कोठलीक रहस्य कैं भौतिक रूपैं तोड़ैत अछि, मुदा हत्या समाधान नहि करैत। रामचरितक भवन-स्मृति आधुनिक नक्शासँ अधिक उपयोगी सिद्ध होइत अछि; एतऽ श्रम-अनुभव संस्थागत अभिलेखक समानान्तर ज्ञान बनैत अछि। “कोठली पूर्ण बन्द” मान्यताक पतन नव्य-न्यायक उपाधिक उत्कृष्ट कथात्मक उदाहरण अछि—नब शर्त जुड़िते पुरान अनुमानक व्याप्ति टूटि जाइत अछि।

अध्याय ७ — वसुधाक घर

वसुधाक घर निजी शोक, पारिवारिक प्रतिष्ठा आ भूमि-मुकदमा एक-दोसरा मे मिलल क्षेत्र बनैत अछि। अरुण, प्रखर, सासु आ परिवारक मापल कथन देखबैत अछि जे परिवारक झूठ अनेक कारण सँ बनि सकैत अछि; झूठ स्वयं हत्या नहि। वसुधाक आदति घरमे सेहो संकेत छोड़ैत अछि। एहि अध्यायसँ उपन्यास “बाहरी अपराधी”क सहज अपेक्षा छोड़ि घरेलू सत्ता-संबन्धक भीतर प्रवेश करैत अछि।

अध्याय ८ — रोजक आदति

कमली देवीक चूल्हि, कप, चीनी, समय-बोध आ वसुधाक दैनन्दिन चाल जाँचक सूक्ष्म पद्धति बनैत अछि। सामान्य स्त्रीक श्रम-स्मृति अदालत योग्य ज्ञानमे धीरे-धीरे रूपान्तरित होइत अछि। उपन्यास एहि अध्यायमे “विशेषज्ञता”क परिभाषा विस्तार करैत अछि—विशेषज्ञ केवल पदवीधारी नहि, बेराबेरी देखल व्यवहारक विश्वसनीय स्मृतिकार सेहो भऽ सकैत अछि। अन्तक पाँच घंटी समयक साक्षी रूपक कैं सशक्त करैत अछि।

अध्याय ९ — माधवी आ अभिराम

ई अध्याय जाँचक बीच मानवीय निकटता विकसित करैत अछि। माधवी आ अभिरामक संवाद यंत्र-विश्वास बनाम संदर्भ-विश्वासक विवाद कैं भावनात्मक जटिलता दैत अछि। दुनू एक-दोसरा कैं सुधारैत छथि, आ प्रेमक बीज रहस्यक

गति रोकने बिना रोपल जाइत अछि। कखनहुँ संवाद थोड़ शिक्षापरक होइत अछि, मुदा चरित्रक अन्तर्द्वन्द्व आ शोक ओकरा निर्जीव विमर्श होयबासँ बचबैत अछि।

अध्याय १० — नछत्तर-पोथी

वसुधाक झोरा सँ भेटल पोथी वर्तमान जाँच कैं पारिवारिक अभिलेख आ १९३४क राहत-संसारसँ जोड़ैत अछि। “नछत्तर” शब्द रहस्य, स्मृति आ स्थानीय ज्ञानक दरवज्जा खोलैत अछि। कागज, फोटो, राहत-शिविर, कनियाँक कोठली आ वेंटिलेटरक सम्बन्ध कथा कैं बहुस्तरीय बनबैत अछि। एत ऽ दस्तावेज केवल सूचना नहि, समयक भौतिक अवशेष अछि।

अध्याय ११ — घरक एकटा झूठ

अरुणक गाड़ी आ पारिवारिक बयानक असंगति घरक पहिल झूठ खोलैत अछि। मुदा उपन्यास तुरन्त नैतिक सरलीकरण नहि करैत; झूठक पाछाँ दोसर स्त्रीक दुख, लाज आ निजी सम्बन्ध सेहो अछि। जयनारायणक सावधानी—परिवारक झूठ हत्या सिद्धि नहि—कथा कैं सनसनीखेज मोड़सँ बचबैत अछि। कनियाँक कोठली आगाँक ऐतिहासिक रहस्यक प्रवेश-द्वार बनैत अछि।

अध्याय १२ — कनियाँक कोठरी

पुरान कोठली, लाल ओढ़नी, १९३४क छवि, कुसुमा–रासबिहारीक नाम आ नील धागा वर्तमान रहस्यक भाषाकैं अतीतक देह दैत अछि। माधवीक सपना आ अभिलेखीय वस्तु बीच साम्य पाठकक अद्भुत-बोध बढ़बैत अछि, मुदा जयनारायण पुनः प्रमाणक सीमा रेखांकित करैत छथि। अध्याय स्मृति, परिवार आ भू-अधिकारक तिकोना सम्बन्ध तैयार करैत अछि।

अध्याय १३ — भूकम्पक बर्ख

कथा १९३४क भूकम्प-पछाति समयमे प्रवेश करैत अछि। राहत-शिविर, टूटल घर, नाम लिखबाक मेज, स्त्रीक नामक प्रश्न आ ऊँच जमीनक दावा—सभ सामाजिक इतिहासक जीवित दृश्य बनैत अछि। कुसुमाक जिज्ञासा आधिकारिक राहत-कामक भीतर भूमि-अधिकारक असमानता देखैत अछि। ई अध्याय ऐतिहासिक समय कैं सजावटी पृष्ठभूमि नहि, वर्तमान अन्यायक कारण-श्रृंखला बनबैत अछि।

अध्याय १४ — मनाहीक नेह

कुसुमा आ रासबिहारीक नेह व्यक्तिगत प्रेम आ सामाजिक निषेधक बीच बढ़ैत अछि। पत्र, नील सूत, राहत-सूची आ सात टोला संघर्ष प्रेमक भाषाक संग राजनीतिक अर्थ लैत अछि। “कागज धोएल जा सकैत अछि, मोनक नकल कतऽ बनत” सन वाक्य ध्वनिक स्तर पर निजी स्मृति आ सार्वजनिक अभिलेखक समान्तरता स्थापित करैत अछि। प्रेम एतऽ कथा-विराम नहि, जोखिमग्रस्त ज्ञान-साझेदारी अछि।

अध्याय १५ — सात टोला

सात टोला लोकक सामूहिक बैठक उपन्यासक लोक-इतिहासक केन्द्र अछि। नक्शा, रसीद, विवाह-बही, वृद्धक कथन आ साझा उपयोगक जमीन—एहि सभसँ समुदाय अपन अधिकारक बहुस्रोत दस्तावेज बनबैत अछि। कुसुमा देखैत छथि जे कागज बनब कानूनहि नहि, लोक कँ अपन बात स्पष्ट कहब सिखेबो अछि। “सातम साक्षी” शब्दक बीज एतहि ऐतिहासिक उपयोगमे पड़ैत अछि।

अध्याय १६ — गायब दस्तावेज

मूल दस्तावेज हेरायलाक संग कुसुमाक घर स्वयं निगरानीक कोठली बनि जाइत अछि। घरक भीतर साँकल, परिवारक मौन आ बाहरी कचहरीक अभिलेख-हिंसा एक-दोसरा प्रतिबिम्बित करैत अछि। नील सूत निजी चिन्ह रूपेँ उभरैत अछि। कुसुमाक देह, नाम आ नेह तीनू “साक्ष्य” बनि जाएब स्त्रीक निजी जीवन पर इतिहासक दबाव देखबैत अछि।

अध्याय १७ — लाल ओढ़नीक राति

कुसुमाक बिलायल रहबाक कथा इतिहास, लोककथा आ अपूर्ण अभिलेखक सीमारेखा पर ठाढ़ अछि। लाल ओढ़नी, पोखरिक घाट, पायल आ खाली पन्ना अनेक सम्भावना जगबैत अछि, मुदा निश्चित उत्तर नहि दैत। अध्यायक सामर्थ्य ओकर अनिर्णयमे अछि; सामाजिक दमनक दस्तावेज प्रायः पूर्ण नहि रहैत। “जकर बाट नहि भेटल, ओकर दिशा नछत्तर सँ नहि पूछब” पद्धतिक नैतिक सूत्र बनैत अछि।

अध्याय १८ — देवालक पेट

वर्तमान कथा फेर लौटि देवालक खोखरसँ नील धागा आ आधा पत्र पबैत अछि। माधवीक सपना आ भौतिक वस्तु बीच साम्य भयावह संयोग रचैत, मुदा अभिराम आ जयनारायण दुनू प्रमाणक अनुशासन बनाए रखैत छथि। “परिचालक डरि रहल अछि” कथन यंत्रक निष्पक्षताक मिथक तोड़ैत अछि—यंत्रक निष्कर्षक पाछाँ मनुष्यक चयन रहैत अछि।

अध्याय १९ — हथेली पर दू रेखा

हस्तरेखा, अनुमान आ सूत्रक परिणाम एकहि अध्यायमे राखि उपन्यास अर्थ-निर्माणक मानवीय प्रवृत्ति पर कटाक्ष करैत अछि। रेखा चाहे हथेली पर हो वा पर्दा पर, अर्थ अपने आप नहि निकलैत—ई अध्यायक केन्द्रीय विचार अछि। दुलारी पर “मुख्य संदिग्ध”क मोहर लगिते ई चेतावनी तुरन्त व्यावहारिक महत्व पबैत अछि।

अध्याय २० — सूत्रक पहिल भूल

दुलारीक बैंक, साझा दूरभाष आ स्थान-संकेतक आधार पर सूत्रक गलत प्राथमिकता उपन्यासक तकनीकी आलोचनाक निर्णायक क्षण अछि। सामाजिक संदर्भ—साझा उपकरण, सहायता-राशि, गरीब परिवारक व्यवहार—बिना आँकड़ा पूर्वाग्रहक नया रूप बनि सकैत अछि। प्रणालीक गलती स्वीकार करब अभिरामक चरित्र-विकास सेहो अछि। अन्तमे दुलारीक आवाज जाँच कँ फेर मनुष्यक वाणी दिस घुमबैत अछि।

अध्याय २१ — दुलारीक आवाज

“हम भागल नहि छी” सात सेकण्डक ध्वनि दुलारीक एजेंसी घुरबैत अछि। ओ खोजक वस्तु नहि, अपन अस्तित्वक घोषणा करैत साक्षी बनैत अछि। नदी-पारि अस्पष्ट स्थान आ नावक तैयारी कथा कँ भौगोलिक विस्तार दैत अछि। जयनारायण अनुमान लिखबाक आग्रह करैत छथि—मनमे राखल अनुमान अनजाने तथ्य बनि सकैत अछि; लिखल अनुमान अपनी अनिश्चितता देखबैत अछि।

अध्याय २२ — नाव पर राति

नदीक अनुभव अभिरामक नक्शा-विश्वासक सामने भोला सहनीक देहगत ज्ञान राखैत अछि। “पहिने नदी देखू, नक्शा बादमे” उपन्यासक बहु-ज्ञान पद्धतिक सुन्दर सूत्र अछि। माधवी–अभिराम सम्बन्ध एहि संकटमे निकट

होइत अछि, मुदा दुलारी खोज प्राथमिक रहैत अछि। भौगोलिक ज्ञान, मौसम, नाविक-अनुभव आ अंकीय नक्शा एक-दोसरा केँ पूरा करैत अछि।

अध्याय २३ — ज्योतिषी नहि, स्मृतिकार

अंबिका काकीक बही मौखिक इतिहास केँ अनुशासित लेखामे बदलैत अछि। ओ दावा सभक संग पुष्टि-अनिश्चितता अलग राखैत छथि; तेँ “ज्योतिषी” नहि, स्मृतिकार छथि। लोक-स्मृति एतऽ मिथकक विपरीत सत्य नहि, स्रोत-आलोचना योग्य सामग्री अछि। वसुधाक पुरान प्रश्न देखबैत अछि जे वर्तमान हत्या-जाँच पहिने सँ चलैत अभिलेख-अन्वेषणक विस्तार मात्र अछि।

अध्याय २४ — आध रातिक पायल

पायल-जकाँ ध्वनि फेर अद्भुत वातावरण जगबैत अछि। मुदा पात्र सभ ओकरा प्रमाण नहि मानैत; प्रकाश, देवाल, निरीक्षण आ छवि अलग जाँचल जाइत अछि। कथा अलौकिक संकेतक सौन्दर्य राखैत अछि, पर सत्यापनक अनुशासन नहि छोड़ैत। यही द्वैत उपन्यासक विशिष्ट भाव-संरचना अछि।

अध्याय २५ — दुलारी भेटल

दुलारीक पुनर्प्रवेश कथा केँ नैतिक केन्द्र प्रदान करैत अछि। ओ स्पष्ट कहैत अछि जे किनका देखलक, किनका नहि; वसुधाक आवाज, कागज, बाहर निकलबाक बाट आ अपन भयक सीमा अलग राखैत अछि। जयनारायण ओकर डर केँ तर्कहीन नहि कहैत—सामाजिक अनुभवक कारण भयक ज्ञानमूल्य मानैत छथि। दुलारीक सीमित कथन बादक अदालत-विश्वसनीयताक आधार बनैत अछि।

अध्याय २६ — गिरफ्तारी

थाना पहुँचि दुलारीक पहिल माँग अपन बयान पढ़बाक अधिकार अछि। ई छोट क्रिया ओकर साक्ष्यगत स्वाधीनताक घोषणा अछि। पुरान सूत्र-रिपोर्ट, कार्यालयी स्मृति आ संशोधित निष्कर्षक बीच अन्तर देखबैत अछि जे संस्थागत गलती परिणाम बदललासँ स्वतः मेटैत नहि। “गलती केवल परिणाम नहि, समयो होइत अछि”—अध्यायक नैतिक केन्द्र।

अध्याय २७ — जमानतक बहस

न्यायालयीय अध्याय उपन्यासक प्रमाण-दर्शन कैं विधिक भाषा दैत अछि। दुलारीक सामाजिक जड़, स्वैच्छिक कागज-प्रस्तुति, संशोधित तकनीकी निष्कर्ष, प्रत्यक्ष हिंसात्मक प्रमाणक अभाव आ साक्षी रूपैं खतरा—सभ जमानतक तर्कमे जुड़ैत अछि। कथा न्यायालय कैं चमत्कारिक सत्य-मशीन नहि, प्रमाणक भार तौलनिहार संस्था रूपैं देखबैत अछि।

अध्याय २८ — साक्ष्यक मालिक के

प्रश्न यंत्रक उत्तरदायित्व सँ बढ़ि संस्थागत उत्तरदायित्व धरि पहुँचैत अछि। यदि राज्य अंकीय निष्कर्ष उपयोग करैत अछि, तँ मूल आँकड़ा, परिवर्तन-इतिहास, नियम आ मानवीय हस्तक्षेप सेहो दृश्यमान रहबाक चाही। ई अध्याय वर्तमान ज्ञान-नैतिकता पर उपन्यासक सबसँ आधुनिक हस्तक्षेप अछि। अन्तक मीठ चाह आ सात मिनटक अन्तर हत्या-जाँच कैं नब दिशा दैत अछि।

अध्याय २९ — कमली देवीक चारि बजिया चाय

कमली घड़ी नहि, आदतिक क्रम सँ समय मोन रखैत छथि। चूल्हि, दूध, बसक सीटी, झाड़ूक ध्वनि—लोक-समय आधिकारिक घड़ीक समानान्तर चलैत अछि। चारि बजि दस मिनटक मीठ चाह आ चारि बजि सतरह मिनटक रुकल घड़ी बीच सात मिनटक फाँक निर्णायक बनैत अछि। कमलीक ज्ञान “कम पढ़ल” होयबाक कारण कमतर नहि; कथा ओकर परीक्षण करैत अछि, पूजा नहि।

अध्याय ३० — बनाओल आत्महत्या

पुलिस अपन प्रारम्भिक आत्महत्या-वर्णन फेर खोलैत अछि। वस्तु-स्थान, घड़ी, चाभी, राख, नील कप आ नली-प्रयोगक सम्भावना “दृश्य-परिवर्तन”क संयुक्त आधार बनैत अछि। महत्वपूर्ण ई जे दुलारी पर पुरान संदेह तुरन्त मेटैत नहि—संस्थागत कागजक जड़ता देखाइत अछि। उपन्यास आत्महत्या-आख्यानक सामाजिक सुविधा पर कठोर प्रश्न करैत अछि।

अध्याय ३१ — जयनारायणक पक्षपात

जयनारायण स्वयं अपन अनुमानक समीक्षा करैत छथि। कमलीक पहिचान अरुण पर टिकैत, मुदा समय-साक्ष्य ओकरा असम्भव बनबैत अछि; पुरान अनुभव कारण जयनारायण घरेलू झूठकैं बेसी वजन देने छथि। आत्म-संशोधन हुनका सर्वज्ञ जासूस बनबासँ रोकैत अछि। एहि अध्यायमे न्यायिक बुद्धिक

विश्वसनीयता ओकर “सही होयब”मे नहि, अपन गलती काटि सकबाक क्षमतामे अछि।

अध्याय ३२ — अभिरामक घरक कागज

अभिरामक परिवारक पुरान कागज १९३४क सात बस्ती, रासबिहारी आ नकल-प्रक्रियासँ जुड़ैत अछि। निजी परिवारक अभिलेख जाँचक सार्वजनिक स्रोत बनैत अछि, मुदा अभिराम एक राति कागज रोकि देत अछि। ई चूक ओकर सिद्धान्तक वास्तविक परीक्षा अछि: पारदर्शिता तब कठिन होइत अछि जखन स्रोत अपना घरसँ निकलैत अछि। सुन्दर तर्क डरक ओढ़ना बनि सकैत अछि—समापन अत्यन्त तीक्ष्ण।

अध्याय ३३ — नेहमे दरार

माधवी–अभिराम सम्बन्धक संकट ज्ञान-नैतिकता सँ सीधे जुड़ल अछि। अभिरामक देर सँ साझा कएल कागज व्यक्तिगत भरोसा आ जाँचक विश्वसनीयता दुनू तोड़ैत अछि। प्रेम कथा एतऽ मुख्य कथानक सँ अलग उपकथा नहि; “स्रोत रोकब”क नैतिक समस्या निजी सम्बन्धमे अनूदित होइत अछि। नक्शाक सरकैत सीमा आ दुनूक बीच खिंचल अदृश्य रेखा सुन्दर समान्तर बिम्ब अछि।

अध्याय ३४ — सूत्रक नव नक्सा

पुरान नक्शा वर्तमान निर्देशाङ्क पर चढ़ेबाक काज तकनीकक शक्ति आ सीमा दुनू देखबैत अछि। जमीनक रेखा सरकल देखाइत अछि, मुदा प्रणाली स्वयं वैधानिक माप नहि। माधवी आ अभिरामक पुनः सहकार स्रोत-पारदर्शिता पर आधारित अछि। एतऽ तकनीक तब उपयोगी अछि जखन ओ प्रमाणक सहायक दृश्य रहैत अछि, न्यायाधीश नहि।

अध्याय ३५ — रहमत काकाक गाँठि

रहमत काकाक बँधनी-दुकान इतिहासक वैकल्पिक अभिलेखागार बनैत अछि। धागा, जिल्द, गोंद आ फाटल कागजक कारीगरी लिखित पाठक बाहरक प्रमाण दैत अछि। नील सूत रासबिहारीक सरकारी चिन्ह नहि, कुसुमाक निजी चिह्न होयबाक दिशा स्पष्ट होइत अछि। अध्यायक अन्तिम बिम्ब—बूढ़ बँधनिहार छोट नाम कैं पन्नासँ खसबासँ बचबैत—विदेह समानान्तर इतिहासक सार जकाँ अछि।

अध्याय ३६ — सातम साक्षी शब्दक असल अर्थ

फाटल पत्रक दू भागक भौतिक मिलान आ “सातम साक्षी”क अर्थ-उद्घाटन शीर्षकक मुख्य रहस्य खोलैत अछि। सातम साक्षी व्यक्ति नहि, दस्तावेज सत्यापनक सातम प्रमाण-चिह्न अछि; नील सूत कुसुमाक निजी चिन्ह। उपन्यास अर्थक अतिउत्पादन पर आत्मालोचना करैत अछि—यंत्र शब्दक पड़ोस पढ़लक, मनुष्य कथा बनौलक, दुनू गलत भऽ सकैत। तइयो अन्तिम पाँति अनाम दृष्टा कैँ बचा राखैत अछि, जाहिसँ शीर्षक पूर्णतः बन्द नहि होइत।

अध्याय ३७ — परिवारक टूटल घेरा

प्रखरक कर्ज, भूमि-समूहक धन, दोसर दूरभाष, कार्यालयक छवि आ परिवारक परस्पर-सहायक झूठ एक-एक कऽ खुलैत अछि। वसुधाक माय स्वीकार करैत छथि जे बेटाकेँ बचाबय “देखल” शब्द गढ़ल; सासु बत्ती जरा अनुपस्थितिक अभिनय करैत छथि। परिवारक प्रेम सत्य-विरोधी सुरक्षा-तंत्र बनि सकैत अछि। प्रखर वकील माँगिते प्रश्न रोकल जाएब विधिक औचित्यक महत्त्वपूर्ण दृश्य अछि।

अध्याय ३८ — चारि बजि सतरह मिनट

प्रखर आ नवलकिशोरक भूमिका टुकड़ा-टुकड़ा प्रमाणसँ जुड़ैत अछि। वसुधाक संग झगड़ा, प्रखरक कर्ज, कागज रोकबाक दबाव, नवलकिशोरक भवन-ज्ञान, सुपारी, चाभी आ दृश्य-परिवर्तनक सामग्री अपराधक पुनर्निर्माण करैत अछि। मुदा उपन्यास दुलारीक सीमा कायम रखैत अछि—ओ हत्या नहि देखल, केवल कागजक आगि आ किछु सहायक चिन्ह देखल। यही प्रमाण-संयम अध्यायक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

अध्याय ३९ — दुलारीक आँखि

दुलारीक चाल-पहिचान प्रक्रियामे “पक्का नहि” कहबाक अधिकार केन्द्रमे अछि। ओ जे नहि देखलक, तकरा खाली छोड़ैत अछि। वसुधाक सीख —“कागज पर अपना मुँहसँ बेसी नहि लिखाउ”—दुलारीक ज्ञान-नैतिकता बनि चुकल अछि। जयनारायण अन्तमे चारु प्रमाण-ढेरी अलग रखैत छथि, ताकि कथा प्रमाण पर हावी नहि हो।

अध्याय ४० — अन्तिम बहस

आठ महीना बाद न्यायालय अपराधक संयुक्त प्रमाण तौलैत अछि। कमली, दुलारी, प्रयोगशाला, परिवारक झूठ, समय-रेखा आ स्वीकारोक्ति सभक भार अलग-अलग राखल जाइत अछि। “सूत्र” सहायक रहैत अछि, निर्णायक नहि। आपराधिक गाँठि खुलितो भूमि-मुकदमा शेष रहैत—ई विभाजन उपन्यास कैं नैतिक रूपैं परिपक्व बनबैत अछि; हत्या समाधान इतिहासक न्यायक विकल्प नहि।

अध्याय ४१ — माटि फेर नाम पबैत अछि

भूमि-अधिकारक प्रक्रिया अलग न्यायिक कसौटी पर चलैत अछि। सात टोला लोक पुरान रसीद, परिवार-स्मृति, नक्शा, विवाह-बही आ सरकारी नकल फेर जमा करैत अछि। महत्वपूर्ण वाक्य—“जे नहि अछि, ओ अपने सँ नब कथा बना कऽ नहि जोड़ब”—समानान्तर इतिहासक पद्धतिक अनुशासन अछि। माटि तुरन्त स्वामित्व नहि पबैत, मुदा नाम फेर रसीद, सुनवाई, नक्शा आ बच्चाक गृहकाजमे लौटैत अछि; इतिहासक पुनर्प्राप्ति क्रमिक अछि।

अध्याय ४२ — जतऽ तर्क थमि जाइत अछि

समापन पूर्ण निश्चितता थोपैत नहि। अभिलेख-स्थलक सुरक्षा सुधरल, माधवी स्थानीय नाम–परिवार-स्मृति–आधिकारिक सूचक बीच पुल बनबैत छथि, अभिरामक सूत्रमे स्रोत–अनिश्चितता–मानवीय समीक्षा अनिवार्य भेल, दुलारी पढ़ाइ जारी रखैत अछि। तइयो किछु प्रश्न शेष अछि। “तर्क थमि जाइत” ठाम अन्धविश्वास नहि, अनिश्चितताक ईमानदार स्वीकार अछि। सातम साक्षी अन्ततः चुप्पी, चिन्ह, इतिहास आ अपूर्ण ज्ञानक संयुक्त प्रतीक बनैत अछि।

५. पात्र आ ज्ञानक सामाजिक स्थान

५.१ जयनारायण: सर्वज्ञ जासूस नहि, संशोधनशील परीक्षक

जयनारायणक शक्ति अवलोकनमे अछि, मुदा उपन्यास हुनका अचूक नहि बनबैत। ओ “मोन नहि” कैं नीक उत्तर मानैत छथि, अनुमान लिखब कहैत छथि, वस्तुक स्थानक तुलना करैत छथि, आ अपन पक्षपात खुलला पर अनुमान संशोधित करैत छथि। हुनकर पद्धति नव्य-न्यायक संशय–परीक्षण–निर्णय क्रमक निकट अछि। सभसँ महत्त्वपूर्ण, ओ सत्यक गति तेज करबाक

नाम पर प्रक्रियागत अधिकार नहि तोड़ैत—प्रखर वकील माँगिते प्रश्न रुकैत अछि।

५.२ माधवी: शोक सँ स्रोत-समीक्षा धरि

माधवी पाठकक भावात्मक प्रवेश-द्वार छथि। आरम्भमे अपराध-बोध आ शोक हुनकर स्मृति पर दबाव बनबैत अछि, मुदा जयनारायण हुनका “जे पक्का मोन अछि से पक्का, जे धुँधल से धुँधल” कहबाक अनुशासन सिखबैत छथि। सपना, प्रेम, भय आ जाँचक बीच माधवी धीरे-धीरे अभिलेखीय संवेदनशीलता विकसित करैत छथि। अन्तमे स्थानीय नाम, बोली, परिवार-स्मृति आ आधिकारिक सूचकक बीच पुल बनब हुनकर चरित्र-विकासक स्वाभाविक परिणति अछि।

५.३ अभिराम: आँकड़ाक गर्व सँ पारदर्शिता धरि

अभिराम आधुनिक अंकीय ज्ञानक प्रतिनिधि अछि। प्रारम्भमे ओ मानैत अछि आँकड़ा झूठ नहि बजैत; कथा धीरे-धीरे देखबैत अछि जे आँकड़ा मौन रहैत अछि, ओकरा बोलबैत मनुष्य। साझा दूरभाष, अपूर्ण स्थानीय आँकड़ा, गलत वर्गीकरण आ घरक कागज रोकबाक व्यक्तिगत भय ओकर विश्वास कैं जटिल बनबैत अछि। अन्तिम संस्करणमे स्रोत, अनिश्चितता आ मानवीय समीक्षा जोड़ब तकनीकी परिपक्वता मात्र नहि, नैतिक परिपक्वता अछि।

५.४ दुलारी: साक्ष्यगत न्याय आ भाषिक स्वाधीनता

दुलारीक सामाजिक स्थिति—गरीब घर, साझा दूरभाष, रातिक पाठशाला, भूमि-विवादक समुदाय—ओकरा तुरन्त संदेहक योग्य बनबैत अछि। मुदा ओ अपना कथनक सीमा कठोरता सँ राखैत अछि: “देखल” आ “नहि देखल” अलग। बयान पढ़बाक अधिकार माँगब, झूठ नाम नहि कहब, चालक पहिचानमे “पक्का नहि” कहब—ई सभ ओकरा उपन्यासक नैतिक साक्षी बनबैत अछि। फ्रिकरक साक्ष्यगत अन्यायक दृष्टिसँ दुलारीक विश्वसनीयता सामाजिक पूर्वाग्रह विरुद्ध कथा-प्रतिरोध अछि।

५.५ वसुधा: अनुपस्थित केन्द्र

वसुधा जीवित वर्तमानमे कम, स्मृति, नोट, आदति, मुकदमा आ दोसर लोकक कथनमे अधिक उपस्थित छथि। यही अनुपस्थिति हुनका प्रतीकात्मक केन्द्र

बनबैत अछि। ओ सात टोला भूमि-मुकदमा कैं पेशागत फाइल नहि, घरक प्रश्न बुझैत छथि। हुनकर मृत्यु कथा आरम्भ करैत, मुदा हुनकर काज कथा कैं अपराधक समाधानसँ आगाँ ऐतिहासिक न्याय धरि धकेलैत अछि।

५.६ कमली, रहमत, रामचरित, अंबिका: लोक-विशेषज्ञता

कमलीक चाह-समय, रहमतक जिल्द-ज्ञान, रामचरितक भवन-स्मृति आ अंबिकाक बही उपन्यासक ज्ञान-लोकतन्त्र बनबैत अछि। ई पात्र सभ “सहायक रंग” नहि। जाँचक निर्णायक मोड़ अनेक बेर हुनके अनुभव सँ आबैत अछि। समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ ई उपन्यासक सबसँ महत्त्वपूर्ण सामाजिक हस्तक्षेप अछि: ज्ञान पदवीक एकाधिकार नहि।

६. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

६.१ रस-संयोजन

करुण रस उपन्यासक स्थायी भावात्मक आधार अछि—वसुधाक मृत्यु, मायक रोदन, माधवीक अपराध-बोध, कुसुमाक अनिश्चित अंत आ सात टोला लोकक विस्थापन एहि करुण धारा कैं बनबैत अछि। भयानक रस बन्द कोठली, आध रातिक पायल, धमकी, बिलायल साक्षी आ देवालक अन्हारसँ जुड़ैत अछि; अद्भुत रस सपना, नील धागा, फाटल पत्र आ “सातम साक्षी”क अर्थ-परिवर्तनमे। वीर रस दुलारी, वसुधा, कुसुमा आ रासबिहारीक प्रतिरोधमे प्रकट होइत अछि। अन्तिम अध्याय शान्त रसक निकट पहुँचैत अछि—सत्य पूर्ण नहि, मुदा अनिश्चिततताक संग रहबाक क्षमता जन्मैत अछि।

६.२ ध्वनि

घड़ी, बरखा, सीलन, नील रंग, ओढ़नी, पायल, देवाल, कप आ धागा प्रत्यक्ष अर्थसँ बेसी अर्थ वहन करैत अछि। “सीलन सेहो गवाही अछि” कथन वस्तु-ध्वनिक सम्पूर्ण तंत्र खोलैत अछि। चारि बजि सतरह मिनट पहिने मृत्यु-समयक प्रतीक, बादमे बनाओल दृश्य, अन्तमे साधारण समयमे पुनः प्रवाहित क्षण बनैत अछि। नील धागा रहस्य, प्रेम, निजी चिन्ह आ दस्तावेजी प्रमाणीकरणक भ्रमक बीच अर्थ बदलैत अछि।

६.३ वक्रोक्ति

उपन्यासक बिम्ब-भाषा तर्कप्रधान कथाकेँ काव्यात्मक बनबैत अछि। “वस्तु सभ शब्द नहि, व्याकरण”, “देवालक दोसर साँस”, “डर कैँ कुर्सी देब, कलम नहि”, “सुन्दर तर्क डरक ओढ़ना”—एहन वक्र वाक्य विचार कैँ स्मरणीय बनबैत अछि। कखनहुँ एहि सूक्तिपरक घनत्वक पुनरावृत्ति अधिक भऽ जाइत अछि, तथापि प्रमुख स्थाने ई चरित्रक आवाजसँ स्वाभाविक निकलैत अछि।

६.४ औचित्य

रहस्यक समाधान क्रमशः होइत अछि; एके वस्तु अचानक सर्वसमाधान नहि बनैत। दुलारीक गवाही ओकर देखल सीमा धरि, प्रयोगशाला सम्भावना धरि, नक्शा सहायक दृश्य धरि, सूत्र गणना धरि सीमित अछि। औचित्यक एहि अनुशासन कारण अदालतक निष्कर्ष विश्वसनीय बनैत अछि। कमजोरी ओतऽ देखाइत अछि जतऽ पात्र सभ बेराबेरी प्रमाण-दर्शन स्पष्ट शब्दमे दोहरबैत छथि; किछु स्थान पर क्रियासँ अर्थ स्वतः निकलय देल जा सकैत छल।

७. पाश्चात्य साहित्यिक समीक्षा

७.१ अपराध-कथाक दूहरी कथा सँ तिहरी इतिहास-कथा

परम्परागत जासूसी संरचनामे घटित अपराध आ बादक जाँच दू समय-क्रम बनबैत अछि। एहि उपन्यासमे १९३४क कुसुमा–रासबिहारी धारा तेसर कथा अछि। एहि कारण वर्तमान अपराधक पुनर्निर्माण ऐतिहासिक अभिलेखक पुनर्निर्माणसँ अविभाज्य भऽ जाइत अछि। पाठकक प्रश्न “के?” सँ “किएक?”, “ककर लेखा?”, “ककर नाम काटल?” धरि बढ़ैत अछि।

७.२ संकेताधारित पद्धति

गिन्सबर्गक संकेताधारित ऐतिहासिक दृष्टि संग तुलना करैत देखल जा सकैत अछि जे उपन्यास छोट, प्रायः तुच्छ बुझाइत चिन्हसँ संरचनात्मक सत्य निकालैत अछि। कपक रंग, चीनीक मात्रा, डिबियाक स्थान, चाभीक आकार, चाल, सूखल खाँसी, जिल्दक भीतर जेब—ई सभ संकेत सत्ता, इतिहास आ अपराधक बड़ तंत्र धरि पहुँचैत अछि। मुदा कथा प्रत्येक संकेत पर प्रतिकल्पना सेहो बनबैत अछि; एही सँ अनुमान वैज्ञानिक अनुशासन पबैत अछि।

७.३ बहुवाचिकता

कचहरीक दफ्तरी भाषा, दुलारीक सीधा बोल, कमलीक व्यवहारिक समय, रहमतक कारीगरी भाषा, अभिरामक अंकीय शब्दावली, जयनारायणक सूक्तिपरक तर्क, मालतीक घरेलू बुद्धि आ १९३४क पत्र-भाषा—सभ मिलि बहुवाचिक उपन्यास रचैत अछि। एक आवाज दोसरा कैं पूर्ण निगलैत नहि। यही बहुवाचिकता सत्यक बहुस्रोत संरचनासँ औपचारिक मेल रखैत अछि।

७.४ साक्ष्यगत अन्याय

दुलारी पर संदेह केवल उपलब्ध संकेत कारण नहि, सामाजिक विश्वसनीयता-वितरण कारण सेहो तेज होइत अछि। गरीब युवती, साझा दूरभाष, अनुपस्थित धन, भूमि-विवाद—एहि सभ कैं संस्था “संदिग्धता”मे जल्दी पढ़ैत अछि। उपन्यास ओकर सीमित, सावधान वाणी कैं अन्ततः उच्च विश्वसनीयता दैत अछि। ई व्यवस्था ककर वाणी कैं पहिने मानैत अछि आ ककरा सँ अधिक प्रमाण माँगैत अछि—ई बुनियादी प्रश्न उठैत अछि।

८. नव्य-न्याय दृष्टिसँ प्रमाण-विन्यास

८.१ संशय आ निर्णय

जयनारायण प्रत्येक प्रारम्भिक निष्कर्ष कैं संशयक अवस्था मे राखैत छथि। “हो सकैत” आ “भेल”क भेद कथा भरि दोहराओल अछि। निर्णय तखनहि बनैत अछि जखन स्वतंत्र स्रोत एक-दोसरा सँ मेल खाइत अछि। ई पद्धति नव्य-न्यायक परिशुद्ध भाषिक भेदक उपन्यासात्मक समान्तर अछि।

८.२ प्रत्यक्ष

घटनास्थलक वस्तु, शरीरक कण, कपक दाग, नालीमे नील कप, वायु-पथ, फाटल कागजक किनार—ई प्रत्यक्षक सामग्री अछि। मुदा प्रत्यक्षो वर्णनसँ मुक्त नहि; के की देखलक, कत८ सँ देखलक, कतेक प्रकाश छल—ई शर्त सभ महत्त्वपूर्ण। दुलारीक “चेहरा नहि देखल” कथन प्रत्यक्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

८.३ अनुमान आ व्याप्ति

दू कपक दागसँ दोसर व्यक्ति, डिबियाक स्थानसँ दृश्य-परिवर्तन, घड़ीक रुकावटसँ समय-हेरफेर, चालसँ नवलकिशोर—सभ अनुमान अछि। उपन्यास बारम्बार देखबैत अछि जे हेतु आ साध्य बीच सार्वत्रिक सम्बन्ध स्वतः सिद्ध

नहि। “दूरभाष ओतऽ, अतः दुलारी ओतऽ” अनुमान साझा उपकरणक उपाधि कारण टूटैत अछि।

८.४ शब्द-प्रमाण

कमली, दुलारी, रामचरित, अंबिका, परिवार, प्रखर—सभ कथन देत छथि, मुदा सभक विश्वसनीयता एकसमान नहि। विश्वसनीयता सामाजिक प्रतिष्ठा सँ नहि, कथनक सीमा, स्वतंत्र समर्थन, स्वार्थ, समय-अन्तर आ आत्म-संशोधन सँ बनैत अछि। दुलारीक “नहि जानैत” कथन ओकर शब्द-प्रमाणक शक्ति बढ़बैत अछि।

८.५ अभाव

नील कप नहि, मूल दस्तावेज नहि, दुलारीक धन घरमे, जूताक स्पष्ट छाप नहि, घड़ीक सामान्य चाल नहि—अभाव कथा मे सकारात्मक ज्ञानक स्रोत अछि। मुदा अभाव तभी अर्थवान जखन अपेक्षा ज्ञात हो: वसुधा कप कहाँ राखैत छलीह, दुलारी भागैत तँ की लैत, घड़ी सामान्यतः कोना चलैत। अपेक्षा बिना अभाव निरर्थक अछि।

८.६ हेत्वाभास

“भीतर सँ बन्द, अतः आत्महत्या”; “अन्तिम भेटनिहार, अतः अपराधी”; “परिवार झूठ बजल, अतः परिवारक सदस्य हत्यारा”; “प्रणाली उच्च सम्भावना देलक, अतः तथ्य”—ई सभ कथा मे टूटैत सामान्यीकरण अछि। उपन्यासक बौद्धिक उपलब्धि एहि हेत्वाभास सभकेँ केवल भाषणसँ नहि, कथानकक असफल अनुमानक माध्यमे देखेबाक अछि।

९. विदेह समानान्तर इतिहास-पद्धति सँ पुनर्पाठ

९.१ आधिकारिक अभिलेखक समानान्तर लोक-अभिलेख

सात टोला लोकक इतिहास सरकारी नकल मात्रमे नहि। विवाह-बही, चूल्हा-ठाम, पोखरि-उपयोग, बूढ़ लोकक सीमा-स्मृति, कुसुमाक पत्र, राहत-सूची, नील सूत आ बँधनी-ज्ञान मिलि लोक-अभिलेख बनबैत अछि। उपन्यास एहि स्रोत सभकेँ समान अधिकार नहि दैत; प्रत्येकक परीक्षण होइत अछि। यही समानान्तर इतिहासक वैज्ञानिक शक्ति अछि।

९.२ स्त्री-साक्ष्य आ इतिहास

कुसुमा, वसुधा, माधवी, दुलारी, कमली, मालती, फूलो—स्त्री पात्र इतिहासक वाहक छथि। कुसुमा १९३४मे स्त्रीक नाम पहिने लिखबाक प्रश्न उठबैत छथि; वसुधा नब्बे बर्ख बाद ओहि कागजक अधिकारिक अर्थ खोजैत छथि; दुलारी पढ़ि कऽ समुदायक कागज बुझए लगैत अछि। ई पीढ़ीगत स्त्री-रेखा मैथिली उपन्यासमे इतिहासक वैकल्पिक उत्तराधिकार रचैत अछि।

९.३ श्रम-ज्ञान

रहमतक हाथ जिल्द पढ़ैत अछि, कमलीक हाथ चाहक माप मोन रखैत अछि, रामचरितक देह भवनक वायु-पथ जानैत अछि, भोला सहनी नदीक चाल पढ़ैत अछि। संस्था प्रायः एहि ज्ञानकेँ “अनौपचारिक” मानैत, मुदा कथा साबित करैत अछि जे बिना एहि श्रम-ज्ञानक आधिकारिक प्रणाली अधूरी अछि।

९.४ माटिक नाम

अन्तिम भूमि-अध्यायमे विजय “मालिकाना तुरन्त घुरल” रूपेँ नहि, नाम फेर सार्वजनिक अभिलेखमे सुनाइ देब रूपेँ आबैत अछि। नामक पुनरागमन इतिहासक पुनर्स्थापनक पहिल चरण अछि। उपन्यासक राजनीति एतऽ घोषणात्मक नहि; ओ रसीद, सुनवाई, नक्शा, विद्यालयक गृहकाज सन छोट संस्थागत पुनरावृत्तिमे परिवर्तन मापैत अछि।

१०. भाषा, शैली, बिम्ब आ कथोपकथन

उपन्यासक शैलीक मुख्य शक्ति छोट दृश्य-वस्तु केँ वैचारिक अर्थ देब अछि। बरखा बारम्बार कागज, स्मृति आ मिटब/उभरबक बिम्बसँ जुड़ैत अछि। घड़ी समयक यांत्रिक सत्य नहि, बनाओल कथाक प्रतीक बनैत अछि। देवाल गोपन इतिहास, संस्थागत संरचना आ मनक भय तीनू अर्थमे आबैत अछि। नील रंग निजी चिन्ह, कप, धागा आ अभिलेखीय भ्रमक धुरी अछि।

संवाद प्रायः तीक्ष्ण आ चरित्रानुकूल अछि। जयनारायणक संवाद परिशुद्ध, माधवीक प्रश्नोन्मुख, अभिरामक आरम्भिक आत्मविश्वासी आ बादमे संशोधनशील, दुलारीक सीमित, कमलीक व्यवहारिक। तथापि किछु खण्डमे एके

ज्ञानमीमांसात्मक शिक्षा—“सम्भावना तथ्य नहि”, “यंत्र व्यक्ति नहि”, “स्रोत अलग राखू”—अधिक बेर स्पष्ट कहल गेल अछि। सम्पादनक दृष्टिसँ किछु पुनरावृत्ति काटल जाए तऽ कथात्मक तनाव आरो घन हो सकैत अछि।

१९३४क खण्डक भाषा वर्तमान खण्डसँ पूर्णतः कृत्रिम पुरातन नहि बनाओल गेल, जे पठनीयता बचबैत अछि। तथापि समय-अन्तर वस्तु, सामाजिक मर्यादा, राहत-व्यवस्था, पत्र आ पारिवारिक अनुशासनक माध्यमे स्पष्ट अछि। ई निर्णय सफल अछि।

११. शुद्ध मैथिली निखार-परीक्षण

मूल उपन्यासक भाषिक परीक्षणमे निम्न आवृत्तियाँ भेटली। ई गणना मुख्य कथाभागक यान्त्रिक पाठ-गणना पर आधारित अछि; शीर्षकक मूल रूप समीक्षा मे ज्योंक-त्यों राखल गेल अछि, कारण ओ स्रोत-पाठक नाम अछि। शुद्ध मैथिली संस्करण तैयार करैत काल प्रसंग अनुसार निम्न सुधार उपयोगी होएत।

मूल रूप	मुख्य कथाभागमे आवृत्ति	निखार लेल प्रस्तावित रूप/नीति
गायब	७९	बिलायल / हेरायल — प्रसंग अनुसार
कोठरी	१६६	कोठली
बरामदा	६०	ओसारा
चाय	९५	चाह
पानी	३७	पानि; पाठमे “पानि” सेहो ३५ बेर अछि, एकरूपता अपेक्षित
पीतल	१२	पित्तरि
अंगूठा / अँगूठा	१३	औंठा / बुढ़बा आंगुर
दरवाजा	२	केवाड़ी

कमरा	१	कोठली
डिजिटल	१४	अंकीय; आवश्यकता पड़ला पर अंग्रेजी मूल रूप ब्रैकेटमे
मोबाइल	२५	दूरभाष
स्क्रीन	४१	पर्दा
कैमरा	२४	छवि-यंत्र
फोन	६६	दूरभाष
फाइल	५७	संचिका / अभिलेख-पुट्ठी — प्रसंग अनुसार
केस	१०	मुकदमा / प्रकरण
वीडियो	८	चल-छवि
फोटो	१०९	छवि / चित्र
हरेक / स्वतंत्र “हर” रूप	“हर”क स्वतंत्र प्रयोग बहुल	सभ / प्रत्येक / बेराबेरी / प्रसंगानुसार देशज रूप

रूप-संशोधन केवल शब्द-बदली नहि होयबाक चाही। “गायब” जकाँ शब्द शीर्षकमे रहला पर स्रोत-नामक सम्मान लेल ज्योंक-त्यों उद्धृत होएत; मुख्य गद्यक नब संस्करणमे “बिलायल” अथवा “हेरायल” अधिक देशज होएत। “कोठरी”क बहुलता उपन्यासक केन्द्रीय स्थान-प्रतीक कारण विशेष दृष्टिगोचर अछि; “कोठली” रूप लगातार अपनौला पर भाषा एकरूप होएत।

तकनीकी शब्दावलीमे अत्यधिक कृत्रिम संस्कृतीकरणसँ पठनीयता घटि सकैत अछि। एहि लेल सिद्धान्त ई रहबाक चाही: उपलब्ध स्वाभाविक मैथिली पर्याय पहिने; जँ व्यापक तकनीकी पहचान आवश्यक हो, तखन अंग्रेजी मूल

शब्द ब्रैकेटमे। शोध-पाठमे रोमन रूप केवल ग्रन्थ-नामक आवश्यक उल्लेखमे ब्रैकेट भीतर राखल गेल अछि।

व्याकरणिक दृष्टिसँ “देत” आ “दैत”क भेद भविष्य/प्रदान बनाम अभ्यस्त-प्रगतिशील क्रिया अनुसार कठोर राखब उचित। “छथि” व्यक्ति लेल, निर्जीव/अमानवीय कर्ता लेल “अछि/छै/छी” प्रसंगानुसार। “हर”क हिन्दी-प्रभावित बहुलता घटा “सभ”, “प्रत्येक”, “बेराबेरी”, “सभ काल” सन रूप चयन कएल जाए।

१२. साहित्यिक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमाएँ

१२.१ प्रमुख उपलब्धि

अपराध-कथा कैं भूमि-अधिकार, अभिलेखीय हिंसा आ लोक-इतिहासक संग स्वाभाविक रूपेँ जोड़ब।

प्रमाणक बहुस्रोत पद्धति: वस्तु, स्मृति, दस्तावेज, श्रम-ज्ञान, अंकीय आँकड़ा आ न्यायालयीय परीक्षण एक-दोसरा कैं जाँचैत अछि।

दुलारी सन पात्रक माध्यमे साक्ष्यगत न्याय आ सामाजिक विश्वसनीयताक प्रश्न कैं कथानकक केन्द्र बनाब।

नव्य-न्यायसँ तुलनीय सूक्ष्म भेद—सम्भावना/सिद्धि, उपकरण/व्यक्ति, कथन/देखल तथ्य, अभाव/अनुपस्थिति—कैं कथा-क्रिया बनाब।

१९३४क ऐतिहासिक धारा द्वारा वर्तमान अपराधक कारण-समय कैं विस्तार दऽ उपन्यास कैं लोक-इतिहासक कृति बनाब।

समापनमे पूर्ण निश्चितताक लोभ छोड़ि अनिश्चितताक नैतिक स्वीकार राखब।

१२.२ आलोचनात्मक सीमा

किछु अध्यायमे प्रमाण-दर्शनक सिद्धान्त संवाद रूपेँ बारम्बार स्पष्ट होइत अछि; किछु कटौती सँ कथा आरो सघन हो सकैत अछि।

“सूत्र”क सुविधा कखनहुँ कथानकक आवश्यकता अनुसार अत्यन्त व्यापक लगैत अछि; यद्यपि कथा ओकर त्रुटि आ सीमा बारम्बार देखबैत अछि।

१९३४क पाँच-अध्यायी विचलन अपराध-रहस्यक गति धीमी करैत अछि; साहित्यिक रूपेँ ई लाभकारी विस्तार अछि, मुदा केवल त्वरित रहस्य चाहनिहार पाठक लेल विराम पैघ लगि सकैत अछि।

माधवी–अभिराम नेह-रेखा सुकोमल अछि, पर किछु संक्रमणमे मूल जाँचसँ ध्यान कने हटबैत अछि; फेर ई सम्बन्ध स्रोत-पारदर्शिताक नैतिक संकटसँ जुड़ि अपना औचित्य सिद्ध करैत अछि।

शुद्ध मैथिली दृष्टिसँ हिन्दी-प्रभावित आ तकनीकी आगन्तुक शब्दक संख्या अधिक अछि; भाषिक निखारक अलग सम्पादकीय आवृत्ति उपन्यासक साहित्यिक स्तर आरो ऊँच कऽ सकैत अछि।

१३. निष्कर्ष

“सातम साक्षी”क सबसँ महत्त्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि ई जे ई सत्य केँ “एक बुद्धिमान जासूसक अन्तिम भाषण”मे कैद नहि करैत। सत्य वस्तुक स्थान, स्त्रीक सीमित गवाही, गरीब घरक साझा उपकरण, कारीगरक हाथ, बूढ़ चपरासीक स्मृति, न्यायालयक प्रक्रिया, अंकीय प्रणालीक संशोधन, फाटल कागजक रेशा आ समुदायक भू-नामक बीच बनैत अछि। एहि कारण उपन्यासक असली नायक कोनो एक व्यक्ति नहि—परीक्षणशील प्रमाण-संस्कृति अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ करुण आ अद्भुतक मिश्रण, ध्वनि-समृद्ध वस्तु-बिम्ब, वक्र संवाद आ औचित्यपूर्ण समाधान कथा केँ प्रभावी बनबैत अछि। पाश्चात्य अपराध-सिद्धान्तक दृष्टिसँ ई बहु-समय, बहु-स्रोत रहस्यकथा अछि। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ ई हेत्वाभास काटैत, अभाव पढ़ैत आ उपाधि खोजैत उपन्यास अछि। विदेह समानान्तर इतिहास-पद्धतिक दृष्टिसँ ई मिटाओल नाम, स्त्री-स्मृति, लोक-अभिलेख, श्रम-ज्ञान आ सात टोला माटिक पुनर्लेखन अछि।

शीर्षकक अन्तिम शक्ति एतऽ अछि जे “सातम साक्षी” एक बेर अर्थ पाबि चुकलाक बादो पूरा समाप्त नहि होइत। ओ सातम प्रमाण-चिह्न अछि; ओ अनाम दृष्टाक प्रश्न अछि; ओ दस्तावेजक सत्यापन अछि; ओ इतिहासक किनार पर ठाढ़ लोकक सामूहिक आवाजो बनि सकैत अछि। अन्तिम अध्याय तर्क केँ हरबैत नहि, ओकर मर्यादा निश्चित करैत अछि। जतेक सिद्ध अछि,

ततेक कहू; जेतऽ प्रमाण थमैत अछि, ओतऽ झूठ निश्चितता नहि बनाउ। एहि नैतिक अनुशासन कारण “सातम साक्षी” मैथिली अपराध-उपन्यासक सीमा पार कऽ प्रमाण, इतिहास आ न्याय पर विचार करैत महत्त्वपूर्ण आधुनिक उपन्यास रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।

ग्रन्थ-सूची

निम्न सूचीमे केवल पोथीक नाम देल जा रहल अछि।

- सातम साक्षी
- नाट्यशास्त्र
- ध्वन्यालोक
- वक्रोक्तिजीवितम्
- औचित्यविचारचर्चा
- काव्यप्रकाश
- तत्त्वचिन्तामणि
- [The Navya-Nyāya Doctrine of Negation]
- [Classical Indian Philosophy of Induction: The Nyaya Viewpoint]
- [Clues, Myths, and the Historical Method]
- [The Sign of Three: Dupin, Holmes, Peirce]
- [The Cambridge Companion to Crime Fiction]
- [The Poetics of Murder: Detective Fiction and Literary Theory]
- [Epistemic Injustice: Power and the Ethics of Knowing]
- [The Dialogic Imagination: Four Essays]
- [After Amnesia: Tradition and Change in Indian Literary Criticism]
- [Literary Theory: Indian Conceptual Framework]

आलेख २४ · उपन्यास आ विस्तृत आख्यानक अध्ययन

जल-पाँजि

सारांश

ई शोध-समीक्षा जल-पाँजि उपन्यासक सभ ४८ अध्यायकेँ पृथक-पृथक पढ़ैत ओकर समग्र कथात्मक, अभिलेखीय, दार्शनिक आ ऐतिहासिक संरचनाक परीक्षण करैत अछि। उपन्यासक मूल सौन्दर्य एतय अछि जे ई बाढ़ि, पाँजि, जाति, देह, विस्थापन, राजकीय कागज, पारिवारिक मौन आ नदीक स्मृतिमे बिखरल इतिहासकेँ एकरेखीय कथा बनाकऽ सरल नहि करैत; उलटे, प्रमाणक भिन्न-भिन्न प्रकार, ओकर सीमा, परस्पर विरोध आ रिक्तिक नैतिक अर्थकेँ कथा-विधिक केन्द्र बनबैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, औचित्य आ वक्रोक्तिक आधार पर देखल जाए तँ करुणक प्रभाव प्रत्यक्ष विलापसँ नहि, मेटाओल पाँति, अधूर वाक्य, नामहीन देह आ विलम्बित पुनर्लेखनसँ उत्पन्न होइत अछि। पाश्चात्य आख्यान-विमर्शक दृष्टिसँ उपन्यास घटना-समय आ कथन-समयकेँ बेराबेरी पुनर्गठित करैत, अभिलेखक उत्पादनमे सत्ता आ मौनक स्थान खोलैत, आ सूक्ष्म चिह्नसँ इतिहासक पुनर्निर्माण करैत अछि। नव्य-न्यायक प्रमाण-अनुशासनसँ एकर गम्भीर साम्य अछि: देखल, सुनल, अनुमानित, अप्रमाणित आ विवादित कथन स्पष्ट पृथक राखल गेल अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे पाँजि, राजकीय नक्शा, मौखिक साक्ष्य, घरू लेखा, देहक चिह्न, हड्डी, विस्थापित बस्ती, प्रवासी स्वर, खाली घर आ कोसीक भू-आकृतिक स्मृति एक-दोसराक समानान्तर पढ़ल जाइत अछि। समीक्षाक निष्कर्ष ई अछि जे जल-पाँजि मैथिली उपन्यासमे अभिलेख-नैतिकता, प्रमाण-विवेक आ दबाओल नामक पुनर्प्रवेशक प्रश्नकेँ कथाक विषय मात्र नहि, कथाक रूप बना दैत अछि।

बीजशब्द

जल-पाँजि ·मैथिली उपन्यास ·आख्यान-रचना ·स्मृति ·सामाजिक इतिहास

१.२६. गजेन्द्र ठाकुर- जल-पाँजि : अभिलेख, मौन, देह आ नदीक समानान्तर इतिहास- शोध आलेख

जल-पाँजि : अभिलेख, मौन, देह आ नदीक समानान्तर इतिहास

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य आख्यान-सिद्धान्त, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे विस्तृत शोध-समीक्षा

आलोच्य कृति : जल-पाँजि - एक मैथिली उपन्यास

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

पाठ-विन्यास : ४८ अध्याय

सार

ई शोध-समीक्षा जल-पाँजि उपन्यासक सभ ४८ अध्यायकेँ पृथक-पृथक पढ़ैत ओकर समग्र कथात्मक, अभिलेखीय, दार्शनिक आ ऐतिहासिक संरचनाक परीक्षण करैत अछि। उपन्यासक मूल सौन्दर्य एतय अछि जे ई बाढ़ि, पाँजि, जाति, देह, विस्थापन, राजकीय कागज, पारिवारिक मौन आ नदीक स्मृतिमे बिखरल इतिहासकेँ एकरेखीय कथा बनाकऽ सरल नहि करैत; उलटे, प्रमाणक भिन्न-भिन्न प्रकार, ओकर सीमा, परस्पर विरोध आ रिक्तिक नैतिक अर्थकेँ कथा-विधिक केन्द्र बनबैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, औचित्य आ वक्रोक्तिक आधार पर देखल जाए तँ करुणक प्रभाव प्रत्यक्ष विलापसँ नहि, मेटाओल पाँति, अधूर वाक्य, नामहीन देह आ विलम्बित पुनर्लेखनसँ उत्पन्न होइत अछि। पाश्चात्य आख्यान-विमर्शक दृष्टिसँ उपन्यास घटना-समय आ कथन-समयकेँ बेराबेरी पुनर्गठित करैत, अभिलेखक उत्पादनमे सत्ता आ मौनक स्थान खोलैत, आ सूक्ष्म चिह्नसँ इतिहासक पुनर्निर्माण करैत अछि। नव्य-न्यायक प्रमाण-अनुशासनसँ एकर गम्भीर साम्य अछि: देखल, सुनल, अनुमानित, अप्रमाणित आ विवादित कथन स्पष्ट पृथक राखल गेल अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे पाँजि, राजकीय नक्शा, मौखिक साक्ष्य, घरू लेखा, देहक चिह्न, हड्डी, विस्थापित बस्ती, प्रवासी स्वर, खाली घर आ कोसीक भू-आकृतिक स्मृति एक-दोसराक समानान्तर पढ़ल जाइत अछि।

समीक्षाक निष्कर्ष ई अछि जे जल-पाँजि मैथिली उपन्यासमे अभिलेख-नैतिकता, प्रमाण-विवेक आ दबाओल नामक पुनर्प्रवेशक प्रश्नकेँ कथाक विषय मात्र नहि, कथाक रूप बना दैत अछि।

बीज-शब्द : जल-पाँजि; कोसी; पाँजि; साक्ष्य; मौन; अभिलेख; जाति; देह; विस्थापन; नव्य-न्याय; समानान्तर इतिहास; प्रमाण-नैतिकता।

१. प्रस्तावना

जल-पाँजि नाम स्वयं उपन्यासक द्वैत संरचनाकेँ खोलैत अछि। जल चलायमान, सीमाभंजक, पदार्थ-विन्यासी शक्ति अछि; पाँजि नाम, मूल, ग्राम, सम्बन्ध आ उत्तराधिकारकेँ स्थिर पाँतिमे बाँधबाक मानवीय प्रयास। उपन्यास एहि दुनूकेँ सरल विरोधमे नहि राखैत। जल जखन लिखल अक्षर धोइत अछि तखन कागजक क्षति होइत अछि; मुदा मनुष्य जखन ककरो नाम जानि-बुझि कऽ मेटबैत अछि तखन अभिलेखक नैतिक क्षति होइत अछि। कथाक मुख्य अनुसंधान एहि दुई प्रकारक मेटाओलपनकेँ अलग-अलग चिन्हबाक अछि।

आलोच्य पाठ ४८ अध्यायमे विन्यस्त अछि। अध्याय ४, १२, १९, २६, ३४, ३९, ४३ आ ४८ मे कोसी स्वयं कथन-स्वर ग्रहण करैत अछि। ई आठ अन्तराल मनुष्यक कागजी इतिहासकेँ भू-आकृतिक समयक पैघ परिप्रेक्ष्यमे राखैत अछि। कथाक आन अध्याय दैनिकी, पाँजि, साक्षी-कथन, नक्शा, निजी लेखा, सरकारी अभिलेख, स्वर-सन्देश, पारिवारिक स्मृति, स्थल-चिह्न, हड्डी आ पुनर्लेखनक माध्यमसँ बनैत अछि। एतेक भिन्न स्रोत रहितहुँ कथात्मक एकता टूटैत नहि; कारण सभ स्रोत एके प्रश्नक चारूकात घुमैत अछि - कोन नाम लिखल गेल, कोन नाम छुटल, कोन पाँति मेटाओल गेल, आ ककरा लग ओकर पुनर्पाठक अधिकार अछि।

एहि कारण उपन्यासकेँ केवल कोसी-बाढ़िक आख्यान, केवल पाँजि-परम्पराक कथा, केवल जाति-विमर्श, वा केवल पारिवारिक अपराध-बोधक आख्यान कहब ओकर संरचनाकेँ छोट करब होएत। ई सभ स्तर एक-दोसरामे प्रवेश करैत अछि। बाढ़ि भीजल गट्ठर सोझाँ आनैत अछि; गट्ठर तीन नामक रिक्ति देखबैत अछि; रिक्ति पाँजि-विधि पर प्रश्न उठबैत अछि; विधि साक्ष्य खोजैत अछि; साक्ष्य जाति-आधारित मेटाओल इतिहास दिस जाइत अछि; ओ इतिहास

राज्यक नक्शा, बान्ह, विस्थापन आ आधुनिक प्रवासनक अभिलेख तक फैलैत अछि।

२. शोध-उद्देश्य, प्रश्न आ पद्धति

एहि अध्ययनक पहिल उद्देश्य उपन्यासक कोनो अध्याय छोड़ने बिना सम्पूर्ण रचना-विन्यासक परीक्षण करब अछि। दोसर उद्देश्य कथाक भीतर प्रस्तुत साक्ष्य-विधिकेँ भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य आख्यान-विमर्श, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे अलग-अलग तथा परस्पर सम्बद्ध रूपेँ पढ़ब अछि। तेसर उद्देश्य ऐतिहासिक काल-संकेत सभक बाह्य संगति परखब, मुदा बाह्य इतिहासकेँ उपन्यासक भीतर जबरन प्रविष्ट नहि करब अछि। चारिम उद्देश्य भाषिक निखार-अंकेक्षण अछि, जाहिमे मैथिली शब्द-रूप, रोमन पद, लिपि-विन्यास, कथन-रजिस्टर आ शैलीगत विचलन सभ देखल गेल अछि।

मुख्य शोध-प्रश्न छह अछि: एक, उपन्यासमे प्रमाण कथानक बनैत कोना अछि? दुइ, मौन आ रिक्ति तथ्यक अभाव मात्र अछि कि सत्ता द्वारा निर्मित ऐतिहासिक स्थिति? तीन, कोसीक अमानवीय कथन-स्वर मानवीय अभिलेखक सीमा पर कोन आलोचनात्मक प्रभाव उत्पन्न करैत अछि? चारि, पाँजि जेकाँ परम्परागत अभिलेख आ सरकारी नक्शा, राहत-सूची, मापन-पुस्तिका, प्रवासन-पत्र आ चिकित्सकीय अभिलेख आपसमे कोना भिड़ैत वा पूरक बनैत अछि? पाँच, जाति आ लिंगक सत्ता नाम-प्रवेश आ नाम-मेटाओल प्रक्रियामे कोना काम करैत अछि? छह, अन्ततः पुनर्लेखन न्याय होइत अछि कि केवल सुधरल अभिलेख? उपन्यास अन्तिम प्रश्नक सरल उत्तर नहि दैत।

पाठ-पद्धतिमे प्रत्येक अध्यायक शीर्षक, आरम्भिक स्थिति, प्रमुख साक्ष्य-प्रकार, काल-संरचना, सामाजिक स्थान, आवर्ती बिम्ब, अन्तिम संकेत आ समग्र कथा-वक्रमे ओकर काज देखल गेल अछि। जे ठाम पाठ संशय राखैत अछि, समीक्षा सेहो संशयकेँ संशय रूपेँ राखैत अछि। उदाहरणतः अध्याय २५क नामहीन स्त्री-देहकेँ ककरो निश्चित ऐतिहासिक व्यक्ति घोषित नहि कयल गेल अछि; अध्याय ४५-४६मे जगेसर सदाक पितृत्व असिद्ध रहैत अछि; ई अनिश्चितता समीक्षा द्वारा समाप्त नहि कयल जाएत।

३. संरचनात्मक विन्यास आ कथा-व्याकरण

उपन्यासक काल-विन्यास वृत्ताकार नहि, परतदार अछि। २००८क कुसहा-बाढ़ि वर्तमान-द्वार बनैत अछि, मुदा भीजल पाँजि १९०१-१९३४क दबल इतिहास खोलैत अछि; तकर बाद १९५४-१९६६क बान्ह, राज्य, नक्शा आ अकालक अभिलेख प्रवेश करैत अछि; फेर कथानक २००७क विभागीय अनियमितता, २०१५क काठमाण्डू-मधेस, २०१६क खाली घर, खाड़ी प्रवासन, २०२०क बन्द आ २०२४क उत्तराधिकार धरि पहुँचैत अछि। एहन काल-आवागमनमे अतीत फ्लैश-जेकाँ सजावटी नहि; वर्तमानमे भेटल साक्ष्य अतीतकेँ फेर प्रश्न करैत अछि।

पाठमे स्पष्ट रूपेँ “खण्ड २ - पाँजि (१९०१-१९३४)” आ “खण्ड ३ - बान्ह (१९५४-१९६६)” जेकाँ संकेत काल-आधारित पुनर्विन्यासकेँ संस्थित करैत अछि। मुदा उपन्यासक गहिर संरचना शीर्षकीय खण्डसँ बेसी स्रोत-प्रकार पर निर्भर अछि: दैनिकी, पाँजि, मौखिक साक्ष्य, राजकीय अभिलेख, देह, पर्यावरण, प्रवासी स्वर आ प्रति-पाँजि। एहि स्रोतसभक कथात्मक क्रम एक प्रकारक प्रमाण-श्रृंखला बनबैत अछि।

कोसीक आठ स्वर-अध्याय विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। ओ सभ विराम नहि, बल्कि मानवीय प्रमाणक आलोचनात्मक प्रतिध्वनि छथि। मनुष्य “टूटन”, “सीमा”, “अधिकार”, “खाता”, “मूल” आ “देश” लिखैत अछि; नदी ढलान, दबाव, बालू, कटान, पुरान धार आ पदार्थक स्थानान्तरण बुझैत अछि। नदीक कथनमे विरामचिह्नक न्यूनता बहावक लय रचैत अछि। ई शैलीगत चुनाव पठनीयताक दोष नहि; कथावस्तु आ वाक्य-रूपक औचित्यपूर्ण मेल अछि।

कथाक भावात्मक चरम अध्याय ४६क लघु पुनर्लेखन अछि, मुदा ओकर नैतिक चरम अध्याय ४७-४८मे अछि। फुलझरीक नाम मुख्य वंश-पाँतिमे फेर लिखल जा सकैत अछि, मुदा इतिहासक हिंसा मेटैत नहि। पाँजि रहि जाइत अछि, लिखनिहार मरि जाइत अछि, नदी बहैत रहैत अछि। एहि अन्तिम विन्याससँ उपन्यास “सही अभिलेख”क विजयकथा नहि, निरन्तर पुनर्परीक्षणक नैतिकता बनि जाइत अछि।

४. अध्याय-दर-अध्याय सम्पूर्ण आलोचनात्मक पंजी

४.१ आरम्भिक अभिलेख-संकट : अध्याय १-८

अध्याय १ - कुसहा

१८ अगस्त २००८क दैनिकी-संरचना एहि अध्यायकेँ तत्कालिकता दैत अछि। दूध, देबालक सीलन आ डाकियाक अनुपस्थिति जेकाँ साधारण प्रविष्टिसँ शुरू भेल लेखा धीरे-धीरे कटान, तटबन्ध-विच्छेद, अस्पष्ट आदेश आ विस्थापनक भय दिस बढ़ैत अछि। “ऊपर” शब्दक बदलैत संस्थागत अर्थ राज्यक उत्तरदायित्वकेँ धुँधला करैत अछि। रामानुग्रह मिश्रक अभिलेखीय स्वभाव - कथनक शब्द ककर अछि, तिथि की अछि, परिमाण निश्चित अछि कि नहि - कथा-वाचकक नैतिक अनुशासन स्थापित करैत अछि। अन्तिम “पोथी सुरक्षित मानल” पर पछाति लाल रेखा पाठककेँ सिखबैत अछि जे अभिलेख स्वयं सुधारक इतिहास सेहो राखय।

अध्याय २ - पोथीक गट्ठर

भोला सहनी द्वारा अनल भीजल गट्ठर उपन्यासक प्रमुख वस्तु-साक्ष्य बनैत अछि। सूचीकरणक अत्यन्त सूक्ष्मता - ताड़पत्र, कपड़ा, कौड़ी, धानक भूसी, स्याहीक फैलाव, धब्बा, बालू, रिक्त पन्ना - वस्तुकेँ कथा बनएबा सँ पहिने वस्तुएँ रहय दैत अछि। “देखनाइ” आ “पढ़नाइ”क भेद आधुनिक अभिलेख-संरक्षणक मूल नैतिकता जकाँ काम करैत अछि। तीन नामक बादक रिक्ति कथा-रहस्य बनैत अछि, मुदा अध्याय तत्काल “नष्ट वंश” घोषित नहि करैत। एहि संयमक कारण रहस्य सनसनी नहि, ज्ञानमीमांसात्मक प्रश्न बनैत अछि।

अध्याय ३ - पँजीकारक विधि

ई अध्याय उपन्यासक भीतरक पद्धति-ग्रन्थ अछि। पहिचान, मूल, ग्राम, अधिकार, सम्बन्ध, साक्ष्य आ अभिलेख - सात विभाग पाँजि-काजकेँ यान्त्रिक वंशावलीसँ उठाकऽ स्रोत-आलोचनामे बदलैत अछि। “जे नहि बुझल, से नहि जोड़ब; जे सुनल, से सुनल; जे देखल, से देखल”क अनुशासन सम्पूर्ण उपन्यासक प्रमाण-वाक्य अछि। विशेषतः पुरान पाँति न काटब, भूल पृथक कारणसहित सुधारब, जल-क्षति आ मानवीय खुरचन अलग चिन्हब, आ अपन घरक

अभिलेख एकान्तमे नहि लिखब - ई सभ कथावाचकक आत्म-नियन्त्रण बनैत अछि। एहि अध्याय बिना अगिला जाँच मात्र रहस्यकथा होइत; एहि अध्यायसँ ओ प्रमाण-विवेकक कथा बनैत अछि।

अध्याय ४ - कोसी - १

कोसी पहिल बेर अपन स्वरमे बोलैत अछि। नदी मानवीय “भंग” आ “मार्ग”क भेद नहि मानैत; ओकर जगत ढलान, दबाव, भीजल माटि आ बहावक जगत अछि। बाँध, बोरा, बोल्डर, रजिस्टर आ हस्ताक्षर नदीक कात मानवीय स्थिरताक प्रयास रूपेँ देखाइत अछि। जाति कछेर पर पूछल जाइत अछि, जलमे नहि - ई बिम्ब सामाजिक श्रेणीकरणकेँ प्राकृतिक अनिवार्यता मानबाक विरुद्ध गहिर ध्वनि उत्पन्न करैत अछि। विरामचिह्न-विहीन लम्बा वाक्य नदीक लय, निरन्तरता आ मानवीय पंक्तिबद्ध अभिलेखक प्रतिपक्ष रचैत अछि।

अध्याय ५ - तीन नाम

तीन नाम - श्रीधर, रत्नेश्वर आ जयनारायण - तीन पृथक रिक्तिक संग उपस्थित छथि। कथावाचक सम्भावनासभ गनैत अछि: पुत्र नहि भेल, पुत्री मात्र भेल, प्रवासन भेल, अगिला पन्ना छुटल, वा आन खण्डमे क्रम चलल। एतय “नहि भेटल” केँ “नहि छल” बनएबाक निषेध निर्णायक अछि। राहत-सूचीमे नाम लिखेबाक भोला सहनीक आकांक्षा देखबैत अछि जे नामक सामाजिक उपयोग संदर्भानुसार बदलैत अछि। पाँजि, राहत-सूची आ जीवित मनुष्य तीन भिन्न आवश्यकताक व्यवस्था छथि; एक स्रोतकेँ दोसरक बदला उपयोग करब कथानक नैतिक रूपेँ अस्वीकार करैत अछि।

अध्याय ६ - मोहनक फोन

मोहनक दूरभाष-संवाद पितृ-पुत्र सम्बन्धक भीतर राज्यक तकनीकी संसार आनैत अछि। राहत-अभिलेखमे गाम आ नामक रूप बदलैत अछि, जखन रामानुग्रह स्थिर सन्दर्भ चाहैत छथि। मोहनक वाक्य - सभ तथ्य कागज पर नहि होइत - उपन्यासक भावी द्वन्द्वक सूत्र अछि, मुदा रामानुग्रहक प्रत्युत्तर ई नहि जे कागज सर्वशक्तिमान अछि; हुनकर आग्रह मात्र अछि जे विचारकेँ

तथ्यक नाम नहि दिअ। एहि अध्यायमे मौन स्वयं उपस्थित होइत अछि, मुदा कथाकार ओकरा तत्काल प्रमाण घोषित नहि करैत।

अध्याय ७ - कैम्प

राहत-शिविरमे रामानुग्रह नाम-विशेषज्ञ छथि, राज्यक सूची प्रमाणित करनिहार नहि। पाँजिमे सात पीढ़ी धरि भेटैत परिवारक समानान्तर बुधन सदा जेकाँ लोक छथि, जिनकर वर्तमान देह, भूख आ अधिकार राहत-सूचीमे स्पष्ट अछि, मुदा पाँजिमे अनुपस्थित। एहि संगति-विसंगतिसँ उपन्यास महत्वपूर्ण प्रश्न उठबैत अछि: अभिलेखक अनुपस्थिति सामाजिक अनुपस्थिति नहि। शिविर आधुनिक आपदा-राज्यक अस्थायी अभिलेख अछि; पाँजि दीर्घकालिक वंश-अभिलेख। दुनूक प्रयोजन अलग, मुदा दुनू मिलि समाजक असमान दृश्यता खोलैत अछि।

अध्याय ८ - मेटाओल पाँति

भीजल पन्नाक सतह पर खुरचन देखाइतहि कथा “जल-क्षति”क सहज व्याख्यासँ हटैत अछि। रामानुग्रह संशोधन आ उच्छेदनक भेद करैत छथि; एकर अर्थ ई जे परिवर्तन स्वयं दोष नहि, परिवर्तनक निशान लुकायब गम्भीर प्रश्न अछि। तीन नाममे एक पाँतिक मानवीय मेटाओलपनक सम्भावना बढ़ैत अछि, आ जखन सम्बन्ध अपन वंश-दिस जाइत अछि तखन कथावाचक हित-संघर्ष स्वीकार करैत छथि। ई आत्म-सन्देह उपन्यासक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि, कारण कथावाचक अपन निष्पक्षताकेँ स्वयंसिद्ध नहि मानैत।

४.२ स्मृति, साक्षी आ मेटाओल इतिहास : अध्याय ९-१६

अध्याय ९ - धरती हिलल

१९३४क भूकम्प लेखक-वाचकक प्रत्यक्ष स्मृति नहि, पीढ़ीगत समय-चिह्न अछि। अनेक वृद्धक स्मृतिमे घंटा, देबाल, पोखरि आ रातिक अनुभव एक-दोसरासँ पूर्ण नहि मिलैत। रामानुग्रह सहमतिक छोट क्षेत्र आ मतभेदक पैघ क्षेत्र अलग लिखैत छथि। ई अध्याय मौखिक इतिहासक मूल समस्या - स्मृति घटना मात्र नहि, दृष्टिकोण सेहो होइत अछि - कँ सूक्ष्म रूपेँ नाटकीय करैत अछि। विशेषत: “ओहि वर्षक दोसर बात” पर सामूहिक चुप्पी भूकम्पक प्राकृतिक स्मृतिसँ सामाजिक मौनक भिन्नता तैयार करैत अछि।

अध्याय १० - साक्षी एक: पुरोहित

पुरोहित हरिनारायण झाक साक्ष्यक बल ओकर सीमा स्वीकारबामे अछि। ओ औपचारिक विवाह-विधिक प्रत्यक्ष साक्षी नहि, तैँ मन्त्र, अग्नि वा कन्यादानक प्रमाण नहि दैत छथि; मुदा फुलझरीक इच्छा सम्बन्धी कथन हुनका मोन अछि। शरीरक चोट, ठाम आ समयक विवरणमे सुधार आ असंगति राखल गेल अछि। कथाकार गवाहीक कमजोर अंश काटि कऽ “साफ” कथा नहि बनबैत। फलतः पुरोहितक साक्ष्य विवाह सिद्ध नहि करैत, मुदा स्त्रीक व्यक्त इच्छा इतिहासमे प्रवेश करबैत अछि।

अध्याय ११ - साक्षी दुइ: भौजी

भौजी कमला देवीक स्मृति घरू वस्तु आ श्रमक माध्यमसँ बनैत अछि - बासन, तेल, रसोइक क्रम, देहक देखभाल। ई स्त्री-साक्ष्य सार्वजनिक अनुष्ठानक बदला घरेलू क्षेत्रमे घटल निर्णय आ भयकेँ खोलैत अछि। फुलझरीक अपन मनसँ सम्बन्ध चुनबाक कथन एतय अधिक स्पष्ट भाव-स्मृति रूपेँ अबैत अछि, मुदा कथाकार शब्दशः निश्चितताक दावा नहि करैत। घरेलू देखभालक सूक्ष्मता साक्ष्यक सामाजिक स्थान सिद्ध करैत अछि: जकरा औपचारिक अभिलेख नगण्य बुझैत, ओ घरक स्मृतिमे निर्णायक हो सकैत अछि।

अध्याय १२ - कोसी - २

कोसीक दोसर स्वर भूकम्प, धरतीक परत, बहल माटि आ पछाति भेट सकैत वस्तुकेँ एक दीर्घ भौतिक कालमे राखैत अछि। मनुष्य गवाहीमे मतभेद करैत अछि, मुदा माटि अपन परतमे हड्डी, धातु, धागा आ राख राखि सकैत अछि। नदी तथापि न्यायाधीश नहि; ओ वस्तुकेँ अर्थ नहि दैत, केवल स्थान बदलैत अछि। एहि कारण भौतिक चिह्न सेहो स्वतः कथन नहि, व्याख्याक सामग्री अछि। अध्याय १३क श्रमजीवी साक्ष्य आ पछिला हड्डी-अनुसन्धानक पूर्वछाया एतय बनैत अछि।

अध्याय १३ - साक्षी तीन: हरवाह

बुधन सदा, हरवाह, उपन्यासक सभसँ महत्त्वपूर्ण दबाओल साक्षीमे एक छथि। हुनकर कथन सामाजिक स्थानसँ पृथक नहि: कोठलीक भीतर कहब, बाहर कहब, ककर नाम लिखेबाक अनुमति देब - सभ सुरक्षा-संशय सँ जुड़ल

अछि। ओ फुलझरी आ जगेसरक साथ रहबाक निर्णयक गवाही दैत छथि, बादमे रक्तरंजित देह देखबाक बात कहैत छथि, मुदा प्रत्यक्ष हत्यारा वा देहक नाम बतबामे सीमा रखैत छथि। कथाकार एहि रिक्तिकेँ मनमाना पूर्ति नहि करैत। एतय मौन भीरुता नहि, असमान सत्ता-व्यवस्थामे जीवित रहबाक रणनीति बनि सकैत अछि।

अध्याय १४ - साक्षी चारि: पँजीकार

“साक्षी चारि: पँजीकार” उपन्यासक अभिलेखीय अपराध-दृश्य खोलैत अछि। फुलझरीक नाम, जगेसर सदा संग गृहस्थ-सम्बन्धक कथन, परिवारक आपत्ति, जातिगत विवाह-मर्यादा, विवाद-पत्र आ अन्ततः मुख्य पाँतिसँ नाम हटेबाक प्रक्रिया क्रमशः सामने अबैत अछि। “मुख्य पाँति शुद्ध” करबाक नाम पर खुरचन, फेर नव स्वच्छ प्रति बननाइ, सामाजिक हिंसाकेँ भौतिक निशानसँ हटाकऽ सामान्य अनुपस्थिति बनबैत अछि। ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि: पहिल पन्ना पर अपराधक चिह्न अछि; पछिला स्वच्छ पन्ना पर केवल मौन। अभिलेखक सत्ता एतय लिखबाक अधिकारसँ बेसी न लिखबाक अधिकारमे प्रकट होइत अछि।

अध्याय १५ - जे लिखल नहि गेल

ई अध्याय चारि साक्ष्य आ उपलब्ध कागजकेँ एकत्र करैत अछि, मुदा रहस्यक समाधान घोषित नहि करैत। देहक निश्चित पहिचान, हिंसाक प्रत्यक्ष कर्ता, विवाद-पत्रक वर्तमान ठाम, आ “भागि गेल” कथनक मूल स्रोत - सभमे रिक्ति अछि। उपन्यास तथ्य-संयमक परीक्षा एतय उत्तीर्ण करैत अछि: पाठक भावनात्मक रूपेँ निष्कर्ष दिस धकेलाइत अछि, मुदा कथावाचक दोष, मृत्यु, पलायन वा विधिसम्मत विवाहक पूर्ण सिद्धि नहि लिखैत। “जे लिखल नहि गेल” तेँ केवल हरायल वाक्य नहि, इतिहास-निर्माणक सक्रिय क्षेत्र अछि।

अध्याय १६ - १९३४क बाढ़ि

१९३४क बाढ़ि भूकम्पक पछाति भूगोल आ बस्ती-विस्थापनक परत खोलैत अछि। एके बस्ती अलग कागजमे “मुसहर टोली”, “दक्षिण टोला” वा खेतिहर बस्ती जकाँ भिन्न नाम पबैत अछि। राहतक संख्या घर, परिवार, अन्न वा सामग्री गनैत अछि; दुःख वा सम्बन्ध नहि। लोक जखन छिटकि कऽ नव ठाम

बसैत अछि तखन अगिला अभिलेखमे पुरान सामुदायिक निरन्तरता टूटि जाइत अछि। एहि अध्यायसँ तीन नामक बादक रिक्ति प्राकृतिक आपदा, सामाजिक विस्थापन आ अभिलेखीय पुनर्वर्गीकरणक संयुक्त परिणाम हो सकैत अछि - मुदा जानि-बुझि कऽ मेटाओल फुलझरीक मामला अलग राखल जाइत अछि।

४.३ बान्ह, नक्शा, सीमा आ जीवन-लेखा : अध्याय १७-२४

अध्याय १७ - सन्धि

१९५४क सन्धि गामक लोक लग पहिने कागज रूपेँ नहि, अफवाह, माप, खूँटा आ सर्वेक्षणक क्रिया रूपेँ पहुँचैत अछि। राज्यक पैघ समझौता स्थानीय जीवनमे जमीन पर ठाढ़ खूँटा, मापल दूरी आ बदलैत आवाजाही बनि कऽ उतरैत अछि। कथावाचकक गुरु-प्रेरित सिद्धान्त - तीन स्रोत समान नहि - एतय राजकीय योजनाकेँ सेहो प्रश्नसँ बाहर नहि रखैत। उपन्यास सन्धिक विधिक पाठक पुनर्कथन नहि, ओकर ग्राम्य अनुभूतिक इतिहास लिखैत अछि।

अध्याय १८ - नक्शा

नक्शा अध्यायमे रामानुग्रह स्थानीय नाम-सहायक बनैत छथि। पाँजिमे मनुष्य मूल, पिता, ग्राम आ सम्बन्धसँ चिन्हल जाइत; राजस्व-बहीमे भूमि-खण्ड आ धारकसँ; नक्शामे कखनो केवल अंकसँ। तीन अभिलेख एके भूगोलकेँ भिन्न प्रयोजनसँ काटैत छथि। विशेष महत्त्वक तथ्य ई जे पाँजिमे मेटाओल नाम सतह पर निशान छोड़ि सकैत अछि, मुदा नक्शामे कखनो प्रवेशे नहि कयल नाम स्वच्छ रिक्ति छोड़ैत अछि। “स्वच्छ” कागज तेँ निष्पक्षताक प्रमाण नहि।

अध्याय १९ - कोसी - ३

कोसीक तेसर स्वर सीधा रेखाक आलोचना अछि। नक्शा, तटबन्ध आ सीमा मनुष्यक विश्वासक ज्यामिति बनबैत अछि; धरतीक भीतरक पुरान धार आ पानि-दबाव ई ज्यामितिक स्थायित्व नहि मानैत। नदी अपना केँ नैतिक दुष्ट वा उद्धारक नहि कहैत। एहि अमानवीय दृष्टिसँ उपन्यास आपदा-बोधकेँ “प्रकृतिक क्रोध”क रूढ़िमे बदलएबा सँ बचैत अछि। मानवीय योजना आ नदी-

व्यवहारक बीच अन्तर जिम्मेदारीक प्रश्न समाप्त नहि करैत, उलटे योजना, निरीक्षण आ रखरखावक प्रश्न तीव्र करैत अछि।

अध्याय २० - भीतरका गाम

तटबन्धक कारण बनल “भीतरका गाम” प्रशासनिक श्रेणी नहि, जीवित भूगोल अछि। परिवारक पुरान घर एक ठाम, पुनर्वासित सदस्य आन ठाम; सरकारी संचिका एक परिवारकेँ एक ठेगानामे चाहैत अछि, जीवन दू वा बेसी ठाम फैलल अछि। आवेदन “निस्तारित” हो सकैत अछि, मुदा गाम भीतरहि रहैत अछि। ई अध्याय राजकीय क्रियापद आ सामाजिक परिणामक अन्तर खोलैत अछि - कागज पर काज समाप्त, भूमि पर स्थिति जारी।

अध्याय २१ - दुइ मिथिला

“दुइ मिथिला”मे सीमा पार विवाहक प्रसंग पाँजि आ राष्ट्र-राज्यक अभिलेखीय प्रश्नक भेद उघाड़ैत अछि। पाँजि पूछैत अछि मूल, वंश, विवाह-सम्बन्ध; सीमा पूछैत अछि देश, वस्तु, यात्रा-प्रयोजन आ कागज। नेपालक सप्तरी आ भारतीय मिथिला सांस्कृतिक निरन्तरतामे जुड़ल रहितहुँ आधुनिक राज्यक दस्तावेज आवागमनकेँ नब श्रेणी दैत अछि। एहि अध्यायमे “दुइ मिथिला” विरोध नहि, समान भू-सांस्कृतिक क्षेत्र पर आरोपित दू प्रशासनिक दृश्यता अछि।

अध्याय २२ - विवाह

स्वयं रामानुग्रहक विवाहक जाँच आन पँजीकारक हाथसँ कराओल जाइत अछि। ई छोट प्रसंग सम्पूर्ण उपन्यासक निष्पक्षता-विचारक व्यावहारिक नमूना अछि: अपन हित जुड़ल हो तँ दोसर हाथक सत्यापन। विवाहक एक अभिलेख वंश-संगति लिखैत अछि, दोसर घरू खर्च। एके घटना दुई कागजमे भिन्न अर्थ पबैत अछि। अध्याय अन्ततः ई देखबैत अछि जे औपचारिक लेखा दाम्पत्यक सम्पूर्ण अनुभव नहि समेटि सकैत; जीवनक अंतरंगता अभिलेखक बाहरे रहि सकैत अछि, बिना असत्य बनल।

अध्याय २३ - अकाल १९६६

१९६६क अकाल पाँजिमे प्रत्यक्ष रूपेँ लगभग अदृश्य अछि; ओकर इतिहास घरू खर्च-बही, राशन-पत्र, उधार, घटैत तेल-दालि, छोट होइत देगची आ भोजन-वितरणक क्रममे लिखल अछि। ई अध्याय समानान्तर इतिहासक उत्कृष्ट उदाहरण अछि। राज्य वा वंश-अभिलेख “अकाल” शीर्षक दे सकैत अछि वा नहि, मुदा रसोइक परिमाण देह पर संकट लिखैत अछि। बालकक भाग बचाबऽ लेल वृद्ध आ युवा अपन हिस्सा घटबैत छथि - संख्या सामाजिक नैतिकता बनि जाइत अछि।

अध्याय २४ - इन्जीनियर बाबू

मोहनक जन्म आ तटबन्ध-मरम्मतिक कागज एकहि दिन घरमे अएबाक संरचनात्मक समानान्तरता अध्यायकेँ भविष्यसूचक गहिरता दैत अछि। एक कागज देह बचएबाक तैयारी, दोसर माटिक उठाओल रेखा बचएबाक। मोहन पछाति अभियन्ता बनैत अछि; एतय निजी जीवन आ राज्यक जल-प्रशासन एक दीर्घ कथा-रेखा बनि जाइत अछि। उपन्यास प्रतीकात्मक संयोगकेँ भाग्यवादी नियति नहि बनबैत; ई केवल दू अभिलेखीय संसारक जन्म-समानान्तरता देखबैत अछि।

४.४ देह, हड्डी, स्वीकार आ प्रति-पाँजि : अध्याय २५-३२

अध्याय २५ - चुप्पी

“चुप्पी”मे नाम लगभग हटि जाइत अछि आ देह-संवेदना कथा बनैत अछि - ठंढा माटि, धुआँ, तेल, कपड़ा, थकान, गन्ध, पयर, साँस। एहि अध्यायकेँ फुलझरीक निश्चित आत्मकथा कहब पाठक सीमा तोड़ब होएत; पाठ जानि-बुझि कऽ नाम रोकैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ ई नाम-विहीनता अत्यन्त शक्तिशाली अछि: पाँजि जखन नाम मेटबैत अछि, उपन्यास देहक अनुभवकेँ नाम बिना बोलय दैत अछि। देह एतय अनौपचारिक अभिलेख बनैत अछि।

अध्याय २६ - कोसी - ४

कोसीक चारिम स्वर माटिक भीतर दबायल वस्तु आ हड्डी दिस कथा घुमबैत अछि। नदी “जाति”, “घर”, “पूर्वज”, “अधिकार” जेकाँ मानवीय पद नहि बुझैत, मुदा पदार्थक स्थानान्तरण करैत अछि। कटान पुरान वस्तु बाहर आनैत अछि तखन ओ स्थल नब प्रश्नक विषय बनि जाइत अछि। महत्त्वपूर्ण

चेतावनी ई जे एके माटिक परतमे भिन्न समयक वस्तु रहि सकैत अछि; अतः नजदीकी अपने कारण-संबंध सिद्ध नहि करैत। ई नव्य-न्यायिक उपाधि-जागरूकता जेकाँ पाठककेँ हतबड़ीक अनुमानसँ रोकैत अछि।

अध्याय २७ - अनुराधाक स्वर-सन्देश एक

दिल्लीमे कार्यरत अनुराधाक स्वर-सन्देश चिकित्सकीय अभिलेखक नब अनुशासन आनैत अछि। रोगी-देह, पाली-बदलाव, औषधि, क्रमांक, एलर्जी आ हस्तान्तरणक सूचना देखबैत अछि जे संचिका देहक बदला नहि, मुदा देहक देखभालक निरन्तरता लेल आवश्यक माध्यम अछि। एहि अनुभवसँ अनुराधा दादाक पाँजि-पद्धतिकेँ नब आधुनिक तुलना दैत छथि। स्वर-सन्देशक मौखिक लय आ ठहराव लिखित पाँजिक विपरीत माध्यम अछि, मुदा दुनूमे गलत सूचना देह वा वंश पर प्रभाव डालि सकैत अछि।

अध्याय २८ - देह आ जाति

ई अध्याय स्पष्ट करैत अछि जे पाँजि देहक रंग, श्रमक घाव वा दैनिक अपमान नहि लिखैत, मुदा ओकर विवाह-नियम देहसभ पर लागू होइत अछि। जाति तैँ केवल कागजी श्रेणी नहि, अभिलेखीय निर्णयक देहगत परिणाम अछि। फुलझरी-जगेसर प्रसंग एहि स्तर पर व्यक्तिगत प्रेमक कथा सँ पैघ बनैत अछि: ककर इच्छाकेँ सम्बन्ध मानल जाएत, ककर नाम मुख्य पाँतिमे रहत, आ ककर देह सामाजिक दण्ड वहत। कथावाचक अपन दैनिकीमे अधिकारक प्रश्न लिखैत छथि, पाँजिमे मनमाना सिद्धान्त नहि जोड़ैत।

अध्याय २९ - स्वर-सन्देश दुइ

अनुराधाक दोसर स्वर-सन्देश “मौन”क नैतिकता तीक्ष्ण करैत अछि। चिकित्सकीय सहमतिक अनुभवसँ ओ स्वेच्छिक मौन आ दोसर द्वारा थोपाल मौनक भेद उठबैत छथि। हुनकर सीधा प्रश्न - अपन वंशक लोक फुलझरीक पाँति मेटेलक कि नहि - दादाक अभिलेखीय संयमकेँ निजी उत्तरदायित्वक सामने आनैत अछि। दादाक चुप्पी भावात्मक रूपेँ उत्तर जकाँ सुनाइत अछि, मुदा उपन्यास ओकरा प्रमाण नहि घोषित करैत। ई साहित्यिक संयम एहि अध्यायक बल अछि।

अध्याय ३० - हड्डी

बाढ़ि उतरला पर भेटल हड्डी कथा-रहस्यकेँ न्यायिक/स्थल-आधारित जाँच दिस आनैत अछि। स्थलकेँ घेरब, वस्तु क्रमांकित करब, माटिक नमूना अलग राखब, पुरान नक्शा मिलाउब - सभ क्रिया वस्तुकेँ नाम देबाक पहिने प्रसंग सुरक्षित करैत अछि। १९३४क स्थल-सूचना आ बादक नक्शासभ पूर्ण मेल नहि खाइत, मुदा पुरान मुसहर टोलक सम्भावित भूगोल निकट अबैत अछि। हड्डीक नाम नहि, तैँ ई फुलझरी वा ककरो निश्चित देह घोषित नहि। प्रमाणक नैतिकता एहि संयममे अछि।

अध्याय ३१ - मोहनक स्वीकार

मोहन नीला संचिका आ मापन-पुस्तिकासँ अपन विभागीय अनियमितता स्वीकार करैत अछि: मात्रा सत्यरूपेँ नहि लिखल, चालीस हजार रुपैया लेल, आ धनक घरू उपयोग भेल। उपन्यास एतय कारण-श्रृंखला जाँचैत अछि। गलत मापन सिद्ध अछि; धन-स्वीकारक कथन आ बैंक-पर्ची अछि; मुदा एहि सँ कुसहा-विच्छेदक प्रत्यक्ष कारण वा उच्च अधिकारीक ज्ञान स्वतः सिद्ध नहि। निजी पश्चात्ताप इतिहासक कारण-विज्ञानक बदला नहि। मोहन पहिने ओ अपराध स्वीकारैत अछि जकर कागज हुनकर हस्ताक्षर सँ जुड़ल - ई अभिलेख आ अपराध-बोधक सूक्ष्म सम्बन्ध अछि।

अध्याय ३२ - जकर नाम नहि

हरियर कापीमे बनल “प्रति-पाँजि” मूल पाँजिक प्रतिलिपि नहि, प्रश्नक अभिलेख अछि। रामानुग्रह स्पष्ट लिखैत छथि जे मूल पाँजि जे कहलक तकर साक्ष्य ओहीमे अछि; प्रति-पाँजि ओ बात राखत जकरा मुख्य पाँजि छोड़लक, विवादित करलक वा पछाति जाँच आवश्यक अछि। ई उपन्यासक केन्द्रीय अभिलेखीय आविष्कार अछि। प्रति-पाँजि इतिहासकेँ मनमाने ढंगसँ सुधारैत नहि; सुधारक कारण, स्रोत, संशय आ रिक्ति सब संग राखैत अछि। भविष्य ओकर “ग्राहक” बनैत अछि।

४.५ प्रवासन, रिक्त घर आ नव अभिलेख : अध्याय ३३-४०

अध्याय ३३ - मस्कट

मस्कट दिस अनुराधाक प्रवासन रोजगार-पत्र, चिकित्सकीय योग्यता, एजेन्टक रसीद, अनुबन्ध आ पासपोर्टक शर्त जेकाँ नब अभिलेख-शृंखला खोलैत अछि। ओ मौखिक आश्वासन पर निर्भर नहि रहि लिखित शर्त माँगैत छथि। एहि व्यवहारमे दादाक पाँजि-विधिक आधुनिक श्रम-संसारमे रूपान्तरण देखाइत अछि। प्रवासन एतय रोमांचक विदेश-यात्रा नहि, दस्तावेजक जोखिम, ऋण, वेतन आ देह-श्रमक अनुशासन अछि। फुलझरीक अनुत्तरित प्रश्न सेहो दूरीक संग चलैत रहैत अछि।

अध्याय ३४ - कोसी - ५

कोसीक पाँचम स्वर गामक खालीपनकेँ बाढ़ि नहि, प्रवासनसँ पढ़ैत अछि। बन्द घर, आन लोकक लग चाबी, घटैत पयर, चलभाषक आवाज, बाहर सँ अएल धनसँ बनल नब छत - ई सभ धीमा जनसांख्यिक बहावक चिह्न अछि। नदी वस्तु आ मनुष्यक लौटबामे भेद करैत अछि: धन वस्तु बनि घुरि सकैत, मनुष्यक अनुपस्थिति वस्तुसँ भराइत नहि। अध्याय प्राकृतिक प्रवाहक रूपकेँ सामाजिक प्रवासन पर आरोपित नहि, बल्कि समानान्तर रखैत अछि।

अध्याय ३५ - हम सभ

“हम सभ” एकल नायक छोड़ि सामूहिक प्रवासी स्वर अपनबैत अछि। पंजाबक खेत, दिल्लीक निर्माण, सूरतक श्रम, दूर शहरक कोठली, घर भेजल धन, चलभाष पर देखल पर्व - अनुभवक बहुलता कथा बनैत अछि। पाँजि वंश लिखैत अछि, मुदा घर सँ बाहर बिताओल वर्ष, बालक केँ पटल पर पहिल बेर देखनाइ, वा अनुपस्थित देहक राति नहि लिखैत। एहि रिक्तिकेँ सामूहिक प्रथम-पुरुष भरैत अछि। साहित्यिक रूपेँ ई अध्याय अभिलेखीय उपन्यासकेँ व्यापक श्रम-इतिहासमे खोलैत अछि।

अध्याय ३६ - गाम जे खाली भेल

खाली घरक चाबी रामानुग्रहकेँ एक घरू संग्रहालयमे प्रवेश करबैत अछि। धूरि, बन्द घड़ी, पुरान कापी, बासन, निजी वंश-लेख आ अनुपस्थित परिवार - सभ स्रोत बनैत अछि। निजी कागजमे स्त्रीक नैहरक सूचना मुख्य पाँजिमे नहि, मुदा कथावाचक मूल सामग्री उठा नहि लैत; आवश्यक सूचना उतारि कऽ वस्तु

यथास्थान रखैत छथि। स्रोतक स्वामित्व आ गोपनीयताक सम्मान एहि अध्यायकेँ अभिलेख-संग्रहक लोभसँ अलग करैत अछि।

अध्याय ३७ - स्वर-सन्देश तीन-चारि-पाँच

तीन, चारि आ पाँचम स्वर-सन्देश खाड़ी-प्रवासनक दैनिक लेखा बनैत अछि: वेतन-कटौती, बैंक-प्रेषण, विनिमय, रसीद, उपस्थिति, भोजन आ कामक शर्त। अनुराधा धीरे-धीरे दादाक प्रमाण-भाषा अपनबैत छथि, मुदा चिकित्सा आ प्रवासनक अनुभव तकर अर्थ बदलि दैत अछि। घर भेजल धन छत, औषधि, विद्यालय वा बीआ बनि रूप बदलैत अछि; रसीद एहि रूपान्तरणक केवल एक चरण लिखैत अछि। मौनक “आकार” विषयक हुनकर निरीक्षण फुलझरी प्रसंगकेँ सीधा दोहराए बिना तकर नैतिक दबाव जीवित रखैत अछि।

अध्याय ३८ - पँजीकारक ग्राहक

आधुनिक ग्राहक छायाचित्र, चलभाष, जाति-प्रमाणपत्र, अचल विद्युतीय दस्तावेज (PDF), विद्युतीय भुगतान आ पटल-छवि लऽ कऽ अबैत छथि। रामानुग्रह मूल आ प्रति, अंक देखाएब आ खाता-प्राप्ति, छवि आ कागजक सतह बीच भेद राखैत छथि। विशेषत: छोट प्रपत्रक सीमित खाने नब प्रकारक मौन उत्पन्न करैत अछि: जे जानकारी लेल स्थान नहि, से हेराइत अछि, भले कियो पाँति खुरचल नहि हो। ई अध्याय मेटाओलपनक भौतिक रूप सँ अर्थगत/प्रारूपगत मेटाओलपन दिस उपन्यासक विचार बढ़बैत अछि।

अध्याय ३९ - कोसी - ६

कोसीक छठम स्वर कागजक क्षरण, छँटाइ, प्रतिलिपि आ विद्युतीय रूपान्तरणकेँ नदीक कटान-जमावक समानान्तर रखैत अछि। रिक्त खाना अनेक कारणसँ हो सकैत अछि - प्रश्न नहि पूछल गेल, उत्तर नहि भेटल, स्थान कम छल, अक्षर पढ़ायल नहि, वा जानि-बुझि कऽ छोड़ल गेल। नदीक निष्कर्षहीन स्वर उपन्यासक मूल ज्ञानमीमांसा दोहरबैत अछि: अभाव एक अर्थक एकमात्र चिह्न नहि।

अध्याय ४० - काठमाण्डू आ मधेस

२०१५क काठमाण्डू-मधेस प्रसंग राज्यक नागरिकता, जन्म-पंजीकरण, सीमा आ पाँजिक वंश-सूत्रकेँ एक संग आनैत अछि। पुरान पाँजिमे “देश” अनिवार्य खाने नहि; आधुनिक कागजमे देश/नागरिकता केन्द्रीय अछि। कोनो अभिलेख दोसरकेँ पूर्ण बदलि नहि सकैत। समकालीन राजनीतिक-सामाजिक तनाव घरू वस्तु, इन्धन, खाद्य-आपूर्ति आ पत्राचारक मार्फत अनुभवित होइत अछि। उपन्यास समाचारक पैघ नारा नहि, दैनंदिन कागज आ वस्तुमे इतिहासक असर देखबैत अछि।

४.६ घुरब, पुनर्पाठ, नाम-पुनर्प्रवेश आ उत्तरजीविता : अध्याय ४१-४८

अध्याय ४१ - घुरब

२०२०क बन्द अनुराधाक “घुरब”केँ एक क्रिया नहि, अनुमतिसभक शृंखला बना दैत अछि। मस्कट सँ विमानतल, गया, जिला, प्रखण्ड, पंचायत आ अन्तिम पैदल दूरी - प्रत्येक चरण पर नब नाम, नब पंजी, नब सीमा। एको कागज पूरा यात्रा नहि देखैत। अनुराधा अपन यात्रा-लेखामे मेज, जाँच, सवारी, पैदल दूरी आ समय गनैत छथि; अतिरंजित भाव-वाक्य काटि तथ्य रखैत छथि। ई व्यवहार दादाक अभिलेखीय अनुशासनक अगिला पीढ़ीमे रूपान्तर अछि।

अध्याय ४२ - तीन पीढ़ी एक कोठली

तीन पीढ़ी एक कोठलीमे महामारीक कारण भौतिक निकटता बढ़ैत अछि, मुदा पुरान प्रश्न तुरन्त समाधान नहि पबैत। स्नानघरक क्रम, विद्युत्-संयोजक, भोजन, दूरस्थ विवाह-जाँच जेकाँ लघु घरेलू व्यवस्था हास्य आ तनाव दुनू रचैत अछि। रामानुग्रह दैनिकीमे “तीन पीढ़ी” जेकाँ भावात्मक सूत्र नहि, वास्तविक घटना लिखैत छथि। एहि न्यून लेखनसँ उपन्यास फेर देखबैत अछि जे जीवनक अर्थ लेखासँ बेसी होइत अछि, मुदा लेखाकेँ अर्थक बदला बनाबय नहि चाही।

अध्याय ४३ - कोसी - ७

कोसीक सातम स्वर महामारीक विरामित मानवीय संसारक सामने नदीक निरन्तरता रखैत अछि। खाली सड़क, रुकी रेल, देहक दूरी, तापमान, साँस आ सीमा - मनुष्य नब मापन बनबैत अछि; जल बहैत रहैत अछि। एहि अध्यायमे

“सीमा” स्वास्थ्य, घर, प्रशासन आ नदीक अलग-अलग अर्थ पबैत अछि। पुरान पाँजि आ नब हस्ताक्षर एकहि घरमे आबि रहल अछि; अगिला अध्यायमे प्रति-पाँजिक सार्वजनिक पुनर्पाठक तैयारी एहि मौन लयमे बनैत अछि।

अध्याय ४४ - प्रति-पाँजि

अनुराधाक हाथ हरियर प्रति-पाँजि अनायास खोजैत अछि। ओ मोहनक सामने पढ़ैत छथि; “रिक्त”केँ स्वतः “संशय” कहबाक विरुद्ध रामानुग्रह तुरन्त सुधार करैत छथि। एहि सूक्ष्म प्रतिरोधसँ प्रति-पाँजि सेहो पवित्र सत्य-पोथी बनबाक खतरा सँ बचैत अछि। जे कापी पहिने पेटार वा थैलीक गोपनीय वस्तु छल, आब मेज पर सामूहिक वाचनक वस्तु बनैत अछि। अभिलेखक लोकतंत्रीकरण एतय घोषणा सँ नहि, पहुँच आ वाचनक क्रिया सँ घटैत अछि।

अध्याय ४५ - जे बाँचल

“जे बाँचल” उपन्यासक अनुसन्धानकेँ जीवित वंशधर धरि लऽ जाइत अछि। १९३४ पछातिक कागज, स्थान-परिवर्तन, मुसहर परिवारक श्रृंखला आ मौखिक स्मृतिसँ लक्ष्मी धरि सम्बन्ध पहुँचैत अछि। फुलझरीक पुत्री सुगनी, सुगनीक पुत्र बिन्देश्वर, आ बिन्देश्वरक कन्या लक्ष्मी - जीवित शाखा प्रमाणित होइत अछि। मुदा जगेसर सदाक पितृत्व अलग प्रश्न रहैत अछि। ई भेद निर्णायक अछि: पुनर्स्थापन भावुक पूर्ति नहि, जतेक प्रमाण अछि ओतबे लिखनाइ। जीवित परिवारक निजी कागज उपन्यासक अभिलेखीय क्षितिजकेँ पाँजि सँ बाहर फैलैत अछि।

अध्याय ४६ - नाम लिखब

अत्यन्त छोट “नाम लिखब” सम्पूर्ण उपन्यासक दीर्घ जाँचक संक्षिप्त फल अछि। फुलझरी मुख्य वंश-पाँतिमे पुनः प्रविष्ट छथि; जगेसर संग गृहस्थ-सम्बन्धक कथन दर्ज अछि; विवाह-विधि विवादित अछि; सुगनीक मातृत्व फुलझरीसँ जुड़ैत अछि; पितृत्व अपठित/असिद्ध सीमामे राखल अछि; जीवित शाखा लक्ष्मी धरि पहुँचैत अछि। अध्याय अपन लघुतासँ महत्त्व पबैत अछि: न्याय एतय भाषण नहि, सावधान प्रविष्टि अछि।

अध्याय ४७ - मृत्यु आ पोथी

२०२४क वृद्धावस्था, कमजोर दृष्टि आ मृत्यु उपन्यासक प्रश्नकेँ “कौन लिखत?” सँ “ककरा अधिकार अछि?” दिस घुमबैत अछि। पाँजि-परम्परा पुरुष उत्तराधिकारी मानि चलैत अछि, मुदा अनुराधा कहैत छथि जे ओ विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त पँजीकार नहि, आ इच्छा स्वयं मानि नहि लेल जाए। रामानुग्रहक मृत्यु पछाति पहिल ग्राहककेँ आन अधिकृत पँजीकार दिस पठाओल जाइत अछि। पेटार, चाबी, सुधरल पन्ना आ प्रति-पाँजि रहि जाइत अछि। परम्पराक वस्तु बचल, परम्पराक वैध उपयोग स्वतः हस्तान्तरित नहि भेल।

अध्याय ४८ - कोसी - ८

अन्तिम कोसी-स्वर पोथी आ मनुष्यक आयुकेँ नदीक दीर्घ समयमे रखैत अछि। लिखनिहारक हाथ रुकल, अक्षर रहि गेल; नदी चलैत रहली। नाम पुनः लिखनाइ पुरान हिंसा मेटब नहि, जइना पुरान धारक नाम बदललासँ भू-आकृतिक स्मृति समाप्त नहि होइत। उपन्यास अन्ततः “अन्तिम सत्य” नहि, सतत पुनर्पाठक सिद्धान्त पर समाप्त होइत अछि। जल, माटि, नाम, रिक्ति, पाँजि, नक्शा आ मनुष्यक स्मृति - सभ एक-दोसराकेँ जाँचैत रहैत अछि।

५. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

५.१ रस-संरचना

जल-पाँजि करुण रसक उपन्यास अवश्य अछि, मुदा करुणा एतय विलाप, मृत्यु-दृश्य वा भावोच्छ्वाससँ कम, अभिलेखीय न्यूनतासँ अधिक उत्पन्न होइत अछि। फुलझरीक मेटाओल नाम, बुधन सदाक सावधान मौन, रिक्त पाँति, नामहीन हड्डी, खाली घर, प्रवासी सामूहिक स्वर आ अन्तमे पोथीक बगलमे अनुपस्थित पँजीकार - ई सभ स्थायी भावकेँ धीरे-धीरे घनीभूत करैत अछि। करुणक संग भय, बीभत्स आ शान्तक सूक्ष्म मिश्रण अछि, मुदा ग्रन्थ कखनो रसकेँ सनसनी बनएबा लेल तथ्यक सीमा नहि तोड़ैत।

शान्त-भाव विशेषतः अन्तिम कोसी-स्वरमे प्रकट होइत अछि। ई मृत्यु पर समाधानक शान्ति नहि, अनित्यता आ अपूर्ण ज्ञानक स्वीकृति अछि। नदीक बहाव मनुष्यक नामक मूल्य नष्ट नहि करैत; ओ केवल एकर सीमा देखबैत

अछि। एहि कारण अन्त करुणासँ निराशा दिस नहि, सावधान उत्तरदायित्व दिस जाइत अछि।

५.२ ध्वनि आ मौन

आनन्दवर्धनक ध्वनि-दृष्टिसँ उपन्यासक सभसँ पैघ शक्ति ओ बात अछि जे प्रत्यक्ष नहि कहल गेल। “जे लिखल नहि गेल”, खुरचल पाँति, अनुपस्थित विवाद-पत्र, दादाक उत्तररहित मौन, नामहीन स्त्री-देह आ रिक्त खाने शब्दार्थक बाहर अर्थक क्षेत्र खोलैत अछि। ध्वनि एतय अलंकारिक सजावट नहि; अभिलेखीय मौनक नैतिक अनुभूति अछि। पाठक रिक्तिकेँ भरबाक प्रलोभन अनुभव करैत अछि, मुदा उपन्यास स्वयं रोकैत अछि। एहि रोकामे ध्वनि आ प्रमाण-नैतिकता एक-दोसराकेँ संतुलित करैत अछि।

५.३ औचित्य

औचित्यक कसौटी पर कथन-रूप आ विषयक मेल अत्यन्त सुसंगत अछि। पँजीकारक अध्याय मितभाषी, क्रमांकित, सूक्ष्म आ कारण-सचेत अछि; स्वर-सन्देश मौखिक ठहराव, पुनरुक्ति आ तत्कालिकता रखैत अछि; कोसीक अध्याय लम्बा बहैत वाक्य अपनबैत अछि; सामूहिक प्रवासी अध्याय “हम सभ”क आवाज लेइत अछि। कथावस्तु बदलला पर वाक्य-व्यवस्था बदलैत अछि, मुदा उपन्यासक मूल प्रमाण-संयम स्थिर रहैत अछि।

५.४ वक्रोक्ति आ अमानवीय कथन

कोसीकेँ प्रथम-पुरुष स्वर देनाइ उपन्यासक प्रमुख वक्रोक्तिमय युक्ति अछि। नदी नैतिक भाषा नहि बोलैत, किन्तु ओकर अमानवीय भौतिकता मानवीय श्रेणी सभक सीमाकेँ उजागर करैत अछि। “भंग” मनुष्यक शब्द, “मार्ग” नदीक व्यवहार; “जाति” कछेरक संस्था, जलक नहि; “सीमा” नक्शाक रेखा, पानि लेल ढलान आ अवरोध। ई दृष्टिकोण कथ्यकेँ उपदेशमय बनाए बिना सामाजिक आलोचना उत्पन्न करैत अछि।

६. पाश्चात्य आख्यान-सिद्धान्त आ इतिहास-विमर्शक आलोकमे

६.१ कथन-क्रम, अवधि आ आवृत्ति

जेरार्द जेनेतक आख्यान-विश्लेषणक कसौटी पर जल-पाँजि घटना-क्रम आ कथन-क्रमकेँ बराबर बदलैत अछि। २००८क बाढ़ि जाँच शुरू करैत अछि, मुदा कथा १९०१-१९३४क पाँजि, १९५४-१९६६क बान्ह-इतिहास, २००७क विभागीय भ्रष्टाचार, २०१५क सीमा-अनुभव, प्रवासन, २०२०क घुरब आ २०२४क उत्तराधिकार धरि आवागमन करैत अछि। समयक ई छलाँग सजावटी पूर्वदीप्ति नहि; प्रत्येक वर्तमान साक्ष्य अतीतक अर्थ फेर बनबैत अछि। “कोसी” अन्तराल बार-बार आवृत्त भऽ मानवीय काल-सरणी पर दीर्घ भौतिक समय आरोपित करैत अछि।

६.२ समयक मानवीकरण

पॉल रिकूरक समय-आख्यान सम्बन्धसँ देखल जाए तँ उपन्यास तिथिक मात्र क्रम नहि, अनुभवित समयक विन्यास अछि। १८ अगस्त २००८क मिनट-दर-मिनट दैनिकी आपदा-समयक संकुचन देखबैत अछि; १९३४क स्मृति पीढ़ीगत सीमा बनैत अछि; प्रवासनमे वर्ष घरक चाबी आ स्वर-सन्देशमे जमा होइत अछि; मृत्यु पछाति पोथीक समय लेखकक देहसँ पैघ भऽ जाइत अछि। कथन समयकेँ मानव अनुभवसँ जोड़ैत अछि, जबकि कोसीक स्वर फेर मनुष्येतर समयक सीमा खोलैत अछि।

६.३ अभिलेखक मौन आ सत्ता

मिशेल-रोल्फ त्रुयोके ऐतिहासिक मौनक सिद्धान्तसँ फुलझरीक प्रसंग अत्यन्त निकट पढ़ाइत अछि। मौन केवल बादक इतिहासकारक भूल नहि; स्रोत बनैत काल, संग्रह बनैत काल, पुनर्प्रति बनैत काल आ भविष्यक वाचन - सभ स्तर पर सत्ता प्रवेश करैत अछि। फुलझरीक नाम पहिने विवादित, फेर खुरचल, फेर स्वच्छ प्रति सँ अनुपस्थित; एहि क्रममे “मेटाओलपन” धीरे-धीरे “कखनो छल नहि” जेकाँ रूप लऽ सकैत छल। प्रति-पाँजि एहि प्रक्रिया विरुद्ध प्रतिरोधक साधन अछि, मुदा उपन्यास ओकरा सेहो अन्तिम सत्य-पोथी नहि बनबैत।

६.४ सूक्ष्म चिह्न आ प्रमाण

कार्लो जिन्जबर्गक सूक्ष्म-चिह्न आधारित इतिहास-पद्धतिसँ उपन्यासक खुरचन, स्याही, पन्नाक रेशा, चाबी, बैंक-पर्ची, घरू कापी, हड्डी, स्थल-माटि, सूखल तुलसीदल आ नामक वर्तनी सभ “छोट” वस्तु रहि नहि जाइत। पैघ इतिहास एहि सूक्ष्म चिह्नसभक उचित संयोजनसँ उभरैत अछि। मुदा उपन्यास चिह्नकेँ संकेतसँ प्रमाण बनएबाक प्रक्रिया स्पष्ट करैत अछि; एकटा खरोंच जानि-बुझि कऽ मेटाओल सिद्ध नहि, जखन धरि पुनरावृत्ति, दिशा, सन्दर्भ आ दोसर स्रोत मेल नहि खाय।

६.५ इतिहासकारक शिल्प

मार्क ब्लॉकक स्रोत-आलोचनात्मक दृष्टि - साक्षी केँ प्रश्न करब, अनिच्छित चिह्न पढ़ब, जाल वा भूलक सम्भावना राखब, काल-सन्दर्भ मिलाउब - उपन्यासक पँजीकार-विधिसँ गहिर साम्य रखैत अछि। जल-पाँजि विशेषत: ई मानैत अछि जे प्रत्यक्षदर्शी सेहो सीमित दृष्टिवला होइत अछि, सरकारी कागज सेहो प्रयोजन-विशिष्ट होइत अछि, आ पदार्थ-साक्ष्य सेहो प्रसंग बिना मूक अछि। एहि कारण ग्रन्थ इतिहासकारक “विश्वास” सँ बेसी “परीक्षण” पर जोर दैत अछि।

७. नव्य-न्यायीय प्रमाण-विवेकक आधार पर समीक्षा

७.१ संशयकेँ दोष नहि, आरम्भ मानब

नव्य-न्यायक विवेचन-पद्धतिमे संशय निर्णयक पूर्वावस्था हो सकैत अछि। उपन्यासक तीन नाम, रिक्त पाँति, खुरचन, हड्डी, विरोधी साक्ष्य आ पितृत्वक प्रश्न सभ पहिने संशय रूपेँ रहैत अछि। रामानुग्रहक श्रेष्ठता एहि मे नहि जे हुनका तुरन्त उत्तर भेटैत; बल्कि ई जे ओ संशयक स्थान नष्ट नहि करैत छथि। “अस्पष्ट”, “अनिश्चित”, “अप्रमाणित”, “विवादित” जेकाँ पद कथाक ज्ञानात्मक ईमानदारी बनबैत अछि।

७.२ प्रत्यक्ष, शब्द आ अनुमानक पृथक्करण

कथावाचक बेराबेरी पूछैत छथि - अपने देखल कि सुनल? ककरा सँ सुनल? समय की? कागज पर की अछि? एहि प्रश्नसँ प्रत्यक्ष, शब्द-साक्ष्य आ अनुमान आपसमे घुलैत नहि। पुरोहितक कथन विवाह-संस्कार सिद्ध नहि; भौजीक घरेलू

स्मृति फुलझरीक इच्छा पर प्रकाश दैत; बुधनक कथन हिंसा-सन्देह बढ़बैत, मुदा कर्ता निश्चित नहि करैत। स्रोतक विषय-क्षमता जतेक, निष्कर्ष ओतबे।

७.३ व्याप्ति, हेतु आ उपाधि

“रिक्त पाँति अछि, अतः वंश समाप्त” - ई कमजोर अनुमान अछि, कारण रिक्तिक अनेक वैकल्पिक कारण अछि। “खरोंच अछि, अतः जानि-बुझि कऽ नाम मेटाओल” सेहो तुरन्त सिद्ध नहि; जल-क्षति, रेशा, घर्षण जेकाँ उपाधि हटेबाक पड़ैत अछि। जखन एकहि क्षेत्रमे बेराबेरी धारदार सतह-क्षति, पुरान विवादक अभिलेख आ पुनः स्वच्छ प्रतिलिपि भेटैत अछि, तखन अनुमानक आधार मजबूत होइत अछि। उपन्यास एहि तर्क-क्रमकेँ कथानक क्रिया बनबैत अछि।

७.४ शब्द-प्रमाण आ वक्ताक स्थिति

न्याय परम्परामे विश्वसनीय कथन केवल वाक्य सुनलासँ नहि, वक्ता, प्रसंग आ ग्रहणक शर्तसँ जुड़ल अछि। जल-पाँजिमे साक्षीकेँ सामाजिक भय, दूरी, स्मृति, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अनुभव आ हितक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत अछि। “सभ कहैत अछि” पर्याप्त नहि; ककरा सँ, कखन सँ, कोन परिस्थितिमे - ई पूछल जाइत अछि। एहि कारण मौखिक इतिहासकेँ न तुच्छ कयल गेल, न पवित्र।

७.५ अभाव-ज्ञानक सावधानी

उपन्यासक मूल वाक्यात्मक तर्क ई अछि जे “नहि भेटल” बराबर “नहि छल” नहि। अभिलेखमे नामक अभाव, नक्शामे टोलक अभाव, पाँजिमे स्त्रीक इच्छाक अभाव, सरकारी संचिकामे प्रवासक सम्पूर्ण अनुभवक अभाव - सभ अलग कारणवला अभाव छथि। नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ अभावक आश्रय, काल, अपेक्षित उपस्थिति आ ग्रहण-शर्त बिना निष्कर्ष वैध नहि। एहि सूक्ष्मतासँ उपन्यास अनुपस्थित नामकेँ ज्ञानक सक्रिय समस्या बनबैत अछि।

७.६ निर्णय आ सीमित पुनर्प्रवेश

अन्तिम निर्णय अध्याय ४६मे “सभ प्रश्न हल” कहि नहि अबैत। फुलझरीक वंश-शाखा प्रमाणित भेल, तैँ नाम पुनः प्रविष्ट; जगेसरक पितृत्व असिद्ध, तैँ असिद्धे; विवाह-विधि विवादित, तैँ विवादिते। ई निर्णय नव्य-न्यायीय सीमा-

निष्ठा जेकाँ अछि - निष्कर्ष प्रमाणक विस्तारसँ पैघ नहि। साहित्यिक रूपेँ एही संयमसँ पुनर्स्थापन विश्वसनीय आ नैतिक बनैत अछि।

८. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति द्वारा समीक्षा

८.१ लिखित इतिहासक समानान्तर जीवित स्रोत

एहि पद्धतिमे राजकीय वा लिखित इतिहासकेँ अस्वीकार नहि, बल्कि ओकर संग मौखिक स्मृति, क्षेत्रीय अनुभव, घरू लेखा, पदार्थ-चिह्न, श्रम, देह, पर्यावरण, निजी कापी, स्थल-रूप, मौन आ वर्तमान परिणाम समानान्तर पढ़ल जाइत अछि। जल-पाँजि एहि दृष्टिक उपयुक्त पाठ अछि: नक्शा गामक एक रूप देखबैत, पाँजि वंशक दोसर, राहत-सूची वर्तमान देहक तेसर, नदी पुरान धारक चारिम रूप। सत्य एहि सभक यान्त्रिक जोड़ नहि, परस्पर परीक्षणसँ उभरैत सीमित निष्कर्ष अछि।

८.२ दबाओल स्वरक पुनर्प्रवेश

फुलझरी, बुधन सदा, मुसहर टोला, भौजीक घरेलू स्मृति, प्रवासी “हम सभ”, लक्ष्मी, खाली घर आ नाम-विहीन देह - सभ इतिहासक केन्द्र बदलैत अछि। ई पद्धति “महत्त्वपूर्ण व्यक्ति”क सूची बढ़ेबाक मात्र काज नहि करैत; प्रश्न करैत अछि जे ककर भाषा अभिलेखीय अधिकार पेलक, ककर कथन निजी वा अविश्वसनीय कहि कात कयल गेल, आ ककर जीवन सरकारी वा वंशीय खानेमे समायल नहि।

८.३ परस्पर-विरोधी स्रोतकेँ जीवित राखब

समानान्तर इतिहासक अर्थ सभ स्रोत बराबर विश्वसनीय मानब नहि। पुरोहित, भौजी, हरवाह आ पँजीकारक कथन आपसमे भिन्न भार रखैत अछि। सरकारी नक्शा भू-सीमा लेल उपयोगी, कुल-सम्बन्ध लेल नहि; पाँजि वंश लेल उपयोगी, अकालक रसोइ-इतिहास लेल अपर्याप्त; घरू खर्च-बही अन्नक संकट देखबैत, मगर बाढ़िक इंजीनियरी कारण नहि। जल-पाँजि स्रोतक क्षेत्र-सीमा बोधक अनुकरणीय उदाहरण अछि।

८.४ पर्यावरण स्वयं समानान्तर अभिलेख

कोसी केवल पृष्ठभूमि नहि। पुरान धार, बालू, कटान, स्थल-स्थानान्तरण, माटिक परत आ फेर उघड़ैत वस्तु इतिहासक पदार्थगत संग्रह बनैत अछि। सरकारी नक्शा रेखा बदलैत अछि, गामक नाम बदलैत अछि, मुदा भू-आकृतिक चिह्न अन्य काल-सूत्र दे सकैत अछि। एहि कारण नदी-स्वर “प्रकृति-काव्य” मात्र नहि, अभिलेखीय सत्ता पर भौतिक इतिहासक प्रतिपक्ष अछि।

८.५ वर्तमान परिणामक आधार पर अतीतक पुनर्प्रश्न

लक्ष्मी धरि जीवित वंश-शाखा भेटनाइ अतीतक रिक्ति पर नब प्रश्न आनैत अछि। २००८क बाढ़ि भीजल पोथी खोलैत अछि; २०१६क खाली घर प्रवासनक निजी कागज खोलैत अछि; २०२०क बन्द अनुराधाकेँ घर घुरबैत अछि; २०२४क मृत्यु उत्तराधिकारक अधिकार पूछैत अछि। समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अतीतकेँ बन्द प्रकरण नहि मानैत; वर्तमानक परिणाम नब स्रोत आ नब प्रश्न उत्पन्न करैत अछि।

९. ऐतिहासिक काल-संगति आ बाह्य सत्यापन

उपन्यासक भीतरक पात्र, निजी पाँजि, संवाद आ विशिष्ट स्थानीय कागजकेँ स्वतः ऐतिहासिक दस्तावेज मानल नहि गेल अछि। बाह्य सत्यापन केवल पैघ काल-खूँटाक संगति पर केन्द्रित अछि। ई भेद आवश्यक अछि, कारण ऐतिहासिक घटना संगत होइतहुँ काल्पनिक पात्र वा निजी दस्तावेज स्वतंत्र साहित्यिक रचना रहि सकैत अछि।

काल-खूँटा	ऐतिहासिक संगति	आलोचनात्मक सीमा
१८ अगस्त २००८ - कुसहा	कोसीक पूर्वी तटबन्ध कुसहा क्षेत्रमे १८ अगस्त २००८ केँ विच्छेदित भेल आ बिहार-नेपालमे पैघ बाढ़ि आयल। उपन्यासक आरम्भ-दिन एहि ऐतिहासिक खूँटा सँ संगत अछि।	उच्च संगति; स्थानीय दूरभाष-संवाद आ निजी दैनिकी साहित्यिक सामग्री रूपेँ पढ़ल जाए।

काल-खूँटा	ऐतिहासिक संगति	आलोचनात्मक सीमा
१५ जनवरी १९३४ - बिहार-नेपाल भूकम्प	महाभूकम्प १५ जनवरी १९३४ कैं घटल। उपन्यास एकरा पीढ़ीगत समय-सीमा आ भू-परिवर्तनक स्मृति रूपेँ उपयोग करैत अछि।	तिथि-संगति स्पष्ट; ग्राम्य व्यक्तिगत स्मृति स्रोत-विशिष्ट अछि।
२५ अप्रैल १९५४ -कोसी समझौता	भारत-नेपाल कोसी समझौता काठमाण्डूमे २५ अप्रैल १९५४ कैं हस्ताक्षरित भेल। उपन्यासक “सन्धि” खण्ड सर्वेक्षण, खूँटा, माप आ ग्राम्य प्रभाव पर केन्द्रित अछि।	ऐतिहासिक पृष्ठभूमि संगत; स्थानीय दृश्य साहित्यिक पुनर्रचना।
१९६६-६७ - बिहार खाद्य-संकट	बिहारमे १९६६-६७क दुष्काल आ अन्न-संकट इतिहासतः गंभीर छल। उपन्यास एहि संकटकेँ घरू खर्च, राशन आ भोजन-परिमाणसँ अनुभवित करैत अछि।	पैघ काल-संगति दृढ़; घरू सूक्ष्म-लेखा उपन्यासक आन्तरिक साक्ष्य।
२४ मार्च २०२० सँ - राष्ट्रीय बन्द	२०२०क मार्चमे देशव्यापी बन्द आ आवागमन-नियन्त्रण लागू भेल। अनुराधाक घुरबाक बहु-चरणीय यात्रा एहि व्यापक ऐतिहासिक परिस्थिति सँ संगत अछि।	ऐतिहासिक परिस्थिति संगत; यात्रा-विवरण पात्र-केंद्रित साहित्यिक संसारक अंश।

ऐतिहासिक सत्यापनक आधार पर उपन्यासक पैघ समय-खूँटा मनगढ़न्त काल-संयोजन नहि देखाइत। तथापि ई निष्कर्ष उपन्यासक प्रत्येक परिवार, प्रत्येक कागज, प्रत्येक संवाद वा प्रत्येक स्थल-विवरणकेँ बाह्य इतिहासक प्रमाणपत्र नहि दैत। साहित्यिक ईमानदारीक लेल ई सीमा स्पष्ट राखब आवश्यक अछि।

१०. शुद्ध मैथिली निखार-अंकेक्षण

१०.१ समग्र भाषिक उपलब्धि

उपन्यासक मुख्य कथन-भाषा मैथिली अछि आ अभिलेखीय विषयक लेल अत्यन्त सक्षम पारिभाषिक संसार विकसित करैत अछि - पाँति, मूल, ग्राम, साक्ष्य, खुरचन, प्रविष्टि, रिक्ति, प्रमाण, दैनिकी, गट्ठर, कछेर, धार, कोठली, पयर, गाम, घुरब आदि। वाक्यरचना कथन-स्वर अनुसार बदलैत अछि। पँजीकारक भाषा मित, कोसीक भाषा प्रवाही, साक्षीक भाषा सामाजिक स्थानानुसार, आ अनुराधाक स्वर-सन्देश आधुनिक कार्य-जगतक मिश्रित भाषा अछि। एहि भिन्नताकेँ एकरूप करब शैलीगत क्षति होएत।

१०.२ रोमन पदक स्थिति

मूल फाइलमे रोमन पद केवल पाँच अध्याय - २७, २९, ३३, ३७ आ ३८ - मे भेटल। कुल ४५० रोमन पद-उपस्थिति अछि; एहि मे ३४२ बेर (pause) आ ४ बेर (inaudible) स्वर-प्रतिलेखक संकेत रूपेँ अछि। शेष पद अस्पताल, नौकरी, प्रवासन, कागज वा विद्युतीय माध्यमक आधुनिक शब्दावली अछि। रचनात्मक दृष्टिसँ ई मिश्रण अनुराधाक पेशागत संसारकेँ विश्वसनीयता दैत अछि, मुदा शुद्ध मैथिली संस्करण लेल (pause) केँ “ठहराव”, (inaudible) केँ “अश्रव्य”, (voice-note) केँ “स्वर-सन्देश”, (night duty) केँ “रात्रि-पाली”, (staff room) केँ “कर्मचारी-कक्ष”, (screenshot) केँ “पटल-छवि” जेकाँ रूप देल जा सकैत अछि। जँ दस्तावेजीय असलियत लेल मूल रोमन पद राखल जाए तँ सभ रोमन पद एकरूप ब्रैकेट भीतर राखल जाए।

१०.३ शब्द-रूपक एकरूपता

पाठमे किछु स्थान पर मैथिली निखार लेल रूप-एकरूपता अपेक्षित अछि। “पानी”क विविध संयुक्त रूप लगभग १७ ठाम भेटैत अछि, जखन “पानि” सेहो व्यापक रूपेँ अछि; एकरूप रूप “पानि” उचित। “कुआँ”क रूप १० ठाम अछि; क्षेत्रीय मैथिली निखारमे “इनार” अधिक उपयुक्त। “पीतल”क रूप ४३ ठाम अछि; निर्धारित मैथिली रूप “पित्तरि” अपनाओल जा सकैत अछि। “दरबज्जा” २० ठाम, “गायब” २ ठाम, “अंगूठा/अँगूठा” कुल ६ ठाम, आ “चाय” १० ठाम भेटैत अछि; निखार-मानक अनुसार क्रमशः “केवाड़ी”, “बिलायल”, “औंठा” आ “चाह” उपयोगी होएत। ई गणना मूल शब्दक संयुक्त/विभक्त रूप सहित पाठ-अन्वेषण पर आधारित अछि।

१०.४ पाँजि आ पँजी रूप

शीर्षकमे “जल-पाँजि”, कथनमे “पाँजि”, तथा “पँजीकार/पँजी-काज” रूपसभ एक संग चलैत अछि। ई भिन्नता आंशिक रूपेँ व्युत्पत्तिगत/प्रचलनगत भेद बुझायल जा सकैत अछि, मुदा सम्पादकीय संस्करणमे पहिले निर्णय आवश्यक अछि जे “पाँजि” मूल संज्ञा आ “पँजीकार” परम्परागत पद रूपेँ जानि-बुझि कऽ राखल जा रहल अछि, अथवा सभ ठाम एक मानक चाही। जँ भिन्नता उद्देश्यपूर्ण अछि तँ ओकरा दोष नहि मानल जाए।

१०.५ शैलीगत विचलन जे दोष नहि

कोसी-अध्यायमे लम्बा, विरामहीन वाक्य; स्वर-सन्देशमे ठहराव; साक्षी-अध्यायमे बोलचालक पुनरुक्ति; “नाम लिखब”क अत्यल्प आकार - ई सभ सम्पादनक त्रुटि जकाँ नहि सुधारल जाए। कथ्य आ रूपक सम्बन्ध एहि विचलनकेँ औचित्य दैत अछि। शुद्धता केवल शब्द-प्रतिस्थापन नहि; शैलीगत प्रयोजनक रक्षा सेहो भाषा-सम्पादनक कर्तव्य अछि।

१०.६ प्राथमिक निखार-सूची

मूल रूप	निखार-रूप	टिप्पणी
पानी	पानि	मूल/संयुक्त रूप मिलाकऽ लगभग १७ ठाम; पाठमे “पानि” सेहो अछि।
कुआँ	इनार	लगभग १० ठाम।
पीतल	पित्तरि	लगभग ४३ ठाम।
दरबज्जा	केवाड़ी	लगभग २० ठाम।
गायब	बिलायल	२ ठाम।
अंगूठा / अँगूठा	औंठा	कुल ६ ठाम।
चाय	चाह	लगभग १० ठाम।

निखारक समय मूल रचनाक पात्र-स्वर आ ऐतिहासिक/प्रशासनिक उद्धरणक भेद राखब आवश्यक अछि। ककरो साक्षीक बोलीमे जानि-बुझि कऽ राखल

रूपकेँ संपादकीय मानकीकरणसँ नष्ट नहि कयल जाए। सर्वाधिक आवश्यक अछि कथावाचकक तटस्थ गद्य, शीर्षकीय एकरूपता आ लेखक-वर्णनमे मानक रूप लागू करब।

११. साहित्यिक उपलब्धि, नवीनता आ आलोचनात्मक सीमा

११.१ प्रमाणकेँ कथानक बनएबाक उपलब्धि

उपन्यासक सर्वाधिक मौलिक उपलब्धि ई जे “की भेल?” सँ बेसी “हम की आधार पर कहि सकैत छी जे की भेल?” प्रश्न कथा बनैत अछि। रहस्यकथा सामान्यतः छिपल तथ्यक अन्तिम उद्घाटन दिस बढ़ैत; जल-पाँजि उद्घाटनक संग अनिश्चितताक शेष क्षेत्र सेहो सुरक्षित रखैत अछि। फुलझरीक नाम लौटैत अछि, मुदा सभ प्रश्न नहि सुलझैत। एहि कारण रचना बौद्धिक रूपेँ ईमानदार रहैत अछि।

११.२ अभिलेखीय नैतिकता आ जाति

जाति-विमर्श घोषणापरक नारा रूपेँ नहि, अभिलेखीय क्रियामे प्रकट होइत अछि: ककर सम्बन्ध वैध मानल गेल, ककर नाम मुख्य पाँतिमे रहत, ककर घर “टोला” रूपेँ नक्शामे छुटत, ककर साक्ष्यक सामाजिक मूल्य कम होएत। फुलझरी आ जगेसरक प्रसंग एहि सत्ता-व्यवस्थाक केन्द्र अछि, मुदा बुधन सदा, राहत-शिविर आ लक्ष्मी कथा विस्तार करैत छथि।

११.३ स्त्री-स्वरक बहुस्तरीयता

फुलझरी प्रत्यक्ष आधुनिक आत्मकथात्मक वक्ता नहि, तैँ हुनकर आवाज साक्ष्य-खण्डसभसँ बनैत अछि। भौजी घरेलू स्मृति दैत छथि; अनुराधा आधुनिक चिकित्सकीय आ प्रवासी अनुभवसँ अभिलेखक नैतिक भाषा विकसित करैत छथि; लक्ष्मी जीवित वंश-शाखाक वर्तमान साक्ष्य छथि। स्त्री पात्रसभ एके “पीड़िता” प्रतिरूपमे नहि समेटल गेल - ई रचनात्मक बल अछि।

११.४ पिता-पुत्र-पोतीक ज्ञान-परम्परा

रामानुग्रह, मोहन आ अनुराधा तीन पीढ़ी ज्ञानक तीन व्यवस्था आनैत छथि: परम्परागत पाँजि, राज्यक इंजीनियरी संचिका, आ आधुनिक चिकित्सकीय/प्रवासी दस्तावेज। तीनू त्रुटिहीन नहि। मोहनक स्वीकार राज्यक

तकनीकी लेखाक नैतिक विफलता खोलैत; अनुराधा दादाक मौन पर प्रश्न करैत; रामानुग्रह प्रति-पाँजि बनाकऽ अपन परम्पराक दोष दर्ज करैत। पारिवारिक कथा तैँ ज्ञान-पद्धतिक पीढ़ीगत संवाद बनैत अछि।

११.५ सम्भावित आलोचनात्मक सीमा

अभिलेखीय सूक्ष्मता उपन्यासक बल अछि, मुदा किछु पाठक लेल दीर्घ सूची, माप, तिथि आ प्रमाण-भेद कथागतिकेँ धीमा बना सकैत अछि। तथापि ई धीमापन विषयगत अछि: हतबड़ीक निष्कर्षक विरुद्ध कथानक स्वयं धीमा होइत अछि। दोसर सीमा ई जे कोसीक अत्यन्त रूपकीय प्रथम-पुरुष स्वर यथार्थवादी अभिलेखीय भागसँ शैलीगत दूरी बनबैत अछि; मुदा यही दूरी मनुष्यक कागजी सत्ता पर आवश्यक आलोचनात्मक दृष्टि देत। तेसर, फुलझरीक प्रत्यक्ष आवाजक सीमितता प्रश्न उठबैत अछि, मुदा पाठ एहि अनुपस्थितिकेँ ढाँकैत नहि - ओहि अभावकेँ विषय बनबैत अछि।

१२. निष्कर्ष

जल-पाँजि मैथिली उपन्यासक भीतर इतिहास, अभिलेख, नदी, जाति, देह आ परिवारकेँ एके कथा-वस्त्रमे गूँथैत अछि, मुदा ककरो एककेँ अंतिम निर्णायक नहि बनबैत। पाँजि बिना अनेक वंश-सूत्र नहि बाँचत; पाँजि स्वयं अन्याय सेहो संरक्षित वा उत्पादित कऽ सकैत अछि। सरकारी नक्शा आवश्यक, मुदा ओ घरू स्मृति नहि। मौखिक साक्ष्य जीवनक अनुभव दैत, मुदा स्मृति सीमित। हड्डी भौतिक चिह्न, मुदा नाम नहि। नदी पुरान मार्ग राखैत, मुदा मानवीय उत्तरदायित्व नहि लिखैत। एहि सभक समानान्तर पठनसँ उपन्यास सत्यकेँ बहुल नहि, परीक्षणाधीन बनबैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ एकर करुणा ध्वनि आ मौनसँ उत्पन्न, औचित्य कथन-रूपक भिन्नतामे स्थित, आ वक्रोक्ति कोसीक अमानवीय स्वरमे प्रखर अछि। पाश्चात्य आख्यान-विमर्शक दृष्टिसँ ई समयक पुनर्विन्यास, अभिलेखीय मौनक सत्ता, सूक्ष्म चिह्न आ स्रोत-आलोचनाक सघन प्रयोग करैत अछि। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ एकर विशेष शक्ति संशयक संरक्षण, प्रमाण-प्रकारक विभाजन, उपाधि-जागरूक अनुमान, वक्ता-परिस्थितिक परीक्षण आ सीमित निर्णय

अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ ई लिखित इतिहासक संग दबाओल स्वर, देह, घरू कागज, प्रवासन, पर्यावरण आ मौनकेँ बराबर प्रश्नक क्षेत्रमे आनैत अछि।

अध्याय ४६मे फुलझरीक नाम पुनः लिखल जाएब नैतिक आवश्यकता पूरा करैत अछि, मुदा अध्याय ४८ स्मरण करबैत अछि जे सही नाम लिखि देलासँ पुरान हिंसा बिलाइत नहि। अतः उपन्यासक अन्तिम मूल्य “सुधरल पाँजि” मात्र नहि, सुधारक निशान सुरक्षित राखबाक संस्कार अछि। एहि अर्थमे जल-पाँजि अभिलेखक उपन्यास होइतहुँ स्मृतिक पूजा नहि करैत; ओ स्मृति, कागज, देह आ नदी सभकेँ प्रश्नक अधीन रखैत अछि। एही कारण ई रचना प्रमाण-नैतिकता पर केन्द्रित मैथिली आख्यानक एक विशिष्ट उपलब्धि रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।

ग्रन्थ-सूची

- जल-पाँजि
- न्यायसूत्र
- तत्त्वचिन्तामणि
- नाट्यशास्त्र
- ध्वन्यालोक
- अभिनवभारती
- वक्रोक्तिजीवितम्
- काव्यप्रकाश
- (Narrative Discourse)
- (Time and Narrative)
- (Memory, History, Forgetting)
- (Silencing the Past: Power and the Production of History)
- (Threads and Traces: True, False, Fictive)
- (The Historian’s Craft)

• (The Political Economy of Hunger, Volume Two: Famine Prevention)

• (The Bihar-Nepal Earthquake of 1934)

• (The Indian Famine, 1967)

• दुइ पाटन के बीच में - कोसी नदी की कहानी

आलेख २५ · उपन्यास आ विस्तृत आख्यानक अध्ययन

कूट नाम : तरहड़िमे गोहि

सारांश

ई शोध-समीक्षा “कूट नाम : तरहड़िमेगोहि”क सम्पूर्ण कथाविन्यास, सभ अध्याय, उपसंहार, “समाप्त”क बाद पुनः खुलैत गुप्त अध्याय ०, प्रमुख पात्र-समूह, प्रतीक-तंत्र, दृश्य-विन्यास, भाषिक गठन आ ज्ञानमीमांसात्मक संरचनाकेँ एक संग पढ़ैत अछि। कृति अपराध-कथाक पारम्परिक प्रश्न — अपराधी के? — केँ बदलि कऽ ई प्रश्न ठाढ़ करैत अछि जे अपराधीकेँ नामसँ चिन्हल जाए वा ओकर दोहराइत तरीकासँ। एहि परिवर्तनक केन्द्रमे “पानि”, “गोहि”, “जाल”, “माटि”, “किनार”, “नाम”, “निशान” आ “अभिलेख”क बहुस्तरीय रूपक अछि। बाहरी कथास्तरपर नन्द आरुणि आ गोप कुमार पुरान फाइल पढ़ैत छथि; भीतरक कथास्तरपर छोटन नामक गरीब बालक तलगोहि आ पनिकौआ जकाँ कूटनाम धारण कऽ अदृश्य अपराध-जालक संचालक बनैत अछि; तेसर ज्ञानस्तरपर कार्यदल, विशेषतः सुनयना ठाकुर, अभयकान्त झा आ अरुणेश मिश्र, नामक बदला व्यवहारक पुनरावृत्ति, स्वतंत्र प्रमाण आ स्रोत-संगमक सहायतासँ ओकरा तक पहुँचैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ कृतिमे भयानक, करुण, वीर आ अद्‌भुत भाव-क्षेत्रक संग ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आ प्रसादगुणक सक्रियता देखाइत अछि। पाश्चात्य कथाविज्ञानक आधारपर ई एकटा बहुस्तरीय अभिलेख-कथा अछि, जाहिमे बाहरी वाचन-फ्रेम, भीतरक अपराध-इतिहास, जाँचक कथा आ अन्तिम गुप्त अभिलेख एक-दोसरक अर्थ बदलैत अछि। नव्य न्यायीय परीक्षण विशेष महत्त्वपूर्ण अछि: कृतिमे बेर-बेर कहल “अनुमानकेँ प्रमाण नहि बुझू” साहित्यिक भाषामे ‘असिद्ध धारणा वा शककेँ सिद्ध ज्ञान नहि मानू’क अर्थ दैत अछि; कारण न्याय-परम्परामे विधिसम्मत अनुमान स्वयं प्रमाणक एक रूप अछि। कृति वास्तवमे एही सूक्ष्म भेदकेँ व्यवहारमे निभबैत अछि — समान तरीका मात्र पहचान सिद्ध नहि करैत; स्वतंत्र मानवीय, भौतिक आ व्यवहारगत साक्ष्यक संगम आवश्यक बनैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ पढ़लापर सार्वजनिक अभिलेख, गुप्त अभिलेख, लोकस्मृति, श्रमजीवी जीवन, भूगोल, मौन, अनुपस्थिति, वस्तुगत चिन्ह आ संस्थागत स्मृति समानान्तर स्रोत बनैत अछि; मुदा कृति स्वयं

सिखबैत अछि जे स्रोतक अस्तित्व सत्यक पर्याप्त शर्त नहि, स्रोत-सीमा आ प्रतिपक्ष जाँच आवश्यक अछि।

बीजशब्द

कूट नाम : तरहड़िमे गोहि ·मैथिली उपन्यास ·आख्यान-रचना ·स्मृति · सामाजिक इतिहास

१.२७. गजेन्द्र ठाकुर- कूट नाम : तरहड़िमे गोहि- शोध आलेख

कूट नाम : तरहड़िमे गोहि

विस्तृत साहित्यिक शोध-समीक्षा

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य कथाविज्ञान, नव्य न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक समेकित अध्ययन

मूल कृति : गजेन्द्र ठाकुर

सारांश

ई शोध-समीक्षा “कूट नाम : तरहड़िमेगोहि”क सम्पूर्ण कथाविन्यास, सभ अध्याय, उपसंहार, “समाप्त”क बाद पुनः खुलैत गुप्त अध्याय ०, प्रमुख पात्र-समूह, प्रतीक-तंत्र, दृश्य-विन्यास, भाषिक गठन आ ज्ञानमीमांसात्मक संरचनाकेँ एक संग पढ़ैत अछि। कृति अपराध-कथाक पारम्परिक प्रश्न — अपराधी के? — केँ बदलि कऽ ई प्रश्न ठाढ़ करैत अछि जे अपराधीकेँ नामसँ चिन्हल जाए वा ओकर दोहराइत तरीकासँ। एहि परिवर्तनक केन्द्रमे “पानि”, “गोहि”, “जाल”, “माटि”, “किनार”, “नाम”, “निशान” आ “अभिलेख”क बहुस्तरीय रूपक अछि। बाहरी कथास्तरपर नन्द आरुणि आ गोप कुमार पुरान फाइल पढ़ैत छथि; भीतरक कथास्तरपर छोटन नामक गरीब बालक तलगोहि आ पनिकौआ जकाँ कूटनाम धारण कऽ अदृश्य अपराध-जालक संचालक बनैत अछि; तेसर ज्ञानस्तरपर कार्यदल, विशेषतः सुनयना ठाकुर, अभयकान्त झा आ अरुणेश मिश्र, नामक बदला व्यवहारक पुनरावृत्ति, स्वतंत्र प्रमाण आ स्रोत-संगमक सहायतासँ ओकरा तक पहुँचैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ कृतिमे भयानक, करुण, वीर आ अद्भुत भाव-क्षेत्रक संग ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आ प्रसादगुणक सक्रियता देखाइत अछि।

पाश्चात्य कथाविज्ञानक आधारपर ई एकटा बहुस्तरीय अभिलेख-कथा अछि, जाहिमे बाहरी वाचन-फ्रेम, भीतरक अपराध-इतिहास, जाँचक कथा आ अन्तिम गुप्त अभिलेख एक-दोसरक अर्थ बदलैत अछि। नव्य न्यायीय परीक्षण विशेष महत्त्वपूर्ण अछि: कृतिमे बेर-बेर कहल “अनुमानकेँ प्रमाण नहि बुझू” साहित्यिक भाषामे ‘असिद्ध धारणा वा शककेँ सिद्ध ज्ञान नहि मानू’क अर्थ दैत अछि; कारण न्याय-परम्परामे विधिसम्मत अनुमान स्वयं प्रमाणक एक रूप अछि। कृति वास्तवमे एही सूक्ष्म भेदकेँ व्यवहारमे निभबैत अछि — समान तरीका मात्र पहचान सिद्ध नहि करैत; स्वतंत्र मानवीय, भौतिक आ व्यवहारगत साक्ष्यक संगम आवश्यक बनैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ पढ़लापर सार्वजनिक अभिलेख, गुप्त अभिलेख, लोकस्मृति, श्रमजीवी जीवन, भूगोल, मौन, अनुपस्थिति, वस्तुगत चिन्ह आ संस्थागत स्मृति समानान्तर स्रोत बनैत अछि; मुदा कृति स्वयं सिखबैत अछि जे स्रोतक अस्तित्व सत्यक पर्याप्त शर्त नहि, स्रोत-सीमा आ प्रतिपक्ष जाँच आवश्यक अछि।

भाषिक निखार-परीक्षणमे मूल गद्यक मुख्य शक्ति ओकर मैथिली लय, “पानि”क सुसंगत प्रयोग, भविष्य सूचक “देत” आ अभ्यस्त/प्रगतिशील “दैत”क प्रायः यथास्थान प्रयोग, छोट वाक्यक तनाव, आ ग्रामीण-सामाजिक बिम्बक सघनता अछि। तथापि किछु हिन्दी-प्रधान वा असंगत रूप — “हरेक”, “चाय”, “गायब”, “कोठरी”, “दरबज्जा” — केँ क्रमशः प्रसंगानुसार “सभ”, “चाह”, “बिलायल”, “कोठली”, “केवाड़ी”सँ निखारल जा सकैत अछि। अन्तिम गुप्त अध्यायमे “बोर देने” पदांश अर्थ-स्पष्ट नहि; एकरा अनुमानसँ बदलबाक बदला मूल लेखकीय आशय देखिकऽ पुनः सम्पादन आवश्यक अछि। समग्र रूपेँ ई कृति मैथिली अपराध-कथामे भौतिक हिंसासँ सूचना-आधारित अपराध दिस संक्रमण, सामाजिक स्मृति आ प्रमाण-नैतिकताकेँ एक संग कथा-वस्तु बनबैत अछि।

बीज-शब्द : कूटनाम, अपराध-जाल, अभिलेख, स्मृति, पानि-रूपक, प्रमाण, अनुमान, नव्य न्याय, ध्वनि, वक्रोक्ति, कथाविज्ञान, समानान्तर इतिहास, मैथिली गद्य।

१. प्रस्तावना : नामसँ निशान धरि

“कूट नाम : तरहड़िमेगोहि” अपराध-कथाक बाहरी आकृति धारण करैत अछि, मुदा ओकर असली चिन्ता अपराधक रोमांच नहि, अपराधकेँ जनबाक पद्धति अछि। पहिल पंक्तिसँ अन्तिम गुप्त रेकर्ड धरि कथा ई प्रश्न बारम्बार बदलैत अछि: की नाम सत्य अछि? की अभिलेख सत्य अछि? की दृश्य वस्तु अदृश्य सम्बन्धक पर्याप्त प्रमाण अछि? की मृत्यु देहक अभावसँ सिद्ध होइत अछि? की एक्के प्रकारक व्यवहार एक्के व्यक्तिक उपस्थिति सिद्ध करैत अछि? एहि प्रश्नसभक कारण कृति पुलिस-कथा, मनोवैज्ञानिक अपराध-कथा, अभिलेख-कथा आ ज्ञानमीमांसात्मक उपन्यासक सीमापर एक संग ठाढ़ देखाइत अछि।

कथानकक नैतिक केन्द्र सेहो असाधारण अछि। अपराधक तकनीकी तरीका विस्तारसँ नहि बताओल गेल अछि; कथाकार स्वयं संकेत दैत अछि जे स्मृति चेतावनी हो, प्रशिक्षण नहि। ई कथात्मक संयम औचित्यक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि। पाठक अपराधक संगठन, आर्थिक प्रवाह, मनोविज्ञान आ संस्थागत प्रत्युत्तर बुझैत अछि, मुदा ठगीक उपयोगी कार्यविधि नहि पबैत अछि। एहि कारण कृति अपराधक आकर्षण रचैत जरूर अछि, पर अपराधक कौशलकेँ उत्सव नहि बनबैत।

कृतिमे १५५ पृष्ठ, लगभग पन्द्रह हजार शब्दक कथात्मक देह आ ४५ दृश्य-चित्र अछि। मुख्य कथा एक प्रारम्भिक अध्याय ०, अध्याय १ सँ १२, उपसंहार, आ “समाप्त”क बाद पुनः खुलैत “अध्याय ० : जालक भीतर जाल”मे फैलल अछि। ई अन्तिम पुनःप्रारम्भ आकस्मिक परिशिष्ट नहि, समूचा उपन्यासक ज्ञान-दर्शन बदलि देनिहार संरचनात्मक कुंजी अछि।

२. पाठ-सीमा, शोध-पद्धति आ चार आलोचनात्मक आधार

एहि अध्ययनमे प्राथमिक पाठ रूपेँ सम्पूर्ण कृति लेल गेल अछि; विषय-सूची मात्र नहि, प्रत्येक अध्यायक कथा, बाहरी नन्द–गोप संवाद, उपसंहार, “समाप्त”क बादक गुप्त अध्याय, भाषा, पुनरावृत्त वाक्य, प्रतीक, दृश्य-चित्र आ अन्तिम अभिलेखीय उलटाव सभकेँ विश्लेषणमे समाविष्ट कएल गेल अछि। आलोचना चार आधारपर बनाओल गेल अछि: भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य कथाविज्ञान, नव्य न्यायीय ज्ञानमीमांसा, आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक

पद्धति। ई चारू दृष्टि एक-दोसरक विकल्प नहि; एकर प्रयोजन कृतिक अलग-अलग स्तर — रस, कथन-रूप, प्रमाण-तर्क आ इतिहास-स्रोत — कैं परस्पर जाँचब अछि।

भारतीय पद्धतिमे भरतक रस-विचार, आनन्दवर्धनक ध्वनि, कुन्तकक वक्रोक्ति, क्षेमेन्द्रक औचित्य, आ काव्यप्रकाश–साहित्यदर्पणपरम्पराक गुण-दोष-विचार उपयोगी अछि। पाश्चात्य पद्धतिमे अरस्तूक कथानक-एकता आ प्रत्यभिज्ञान-विपर्यय, जेरार जेनेटक समय–दृष्टिबिन्दु–कथास्तर, त्स्वेतान तोदोरोवक अपराध-कथामे अपराधक कथा आ जाँचक कथा, वेन बूथक कथात्मक विश्वसनीयता, पॉल रिकरक समय–कथा सम्बन्ध, आ बाख्तिनक बहु-स्वरता उपयोगी बनैत अछि। नव्य न्यायीय आधारपर संशय, हेतु, व्याप्ति, उपाधि, तर्क, निर्णय, अभाव-बोध आ प्रमाण-संगतिक चर्चा कएल गेल अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति एहि अध्ययनमे अधिकृत अभिलेखक समानान्तर लोकस्मृति, देहगत अनुभव, श्रम, भूगोल, वस्तु, मौखिक कथन, मौन, अनुपस्थिति आ वर्तमान परिणामकैं पढ़ैत अछि; मुदा सभ स्रोतकैं स्वतः समान प्रामाण्य नहि दैत। प्रत्येक स्रोतक प्रसंग, निर्माण-स्थितिक कारण, सम्भावित स्वार्थ, मौन, अनुपस्थित पक्ष आ स्वतंत्र पुष्टि जाँचल जाएत अछि। एहि पद्धतिक मूल कसौटी एतय तीन शब्दमे राखल जा सकैत अछि — स्रोत, सम्बन्ध, सीमा।

३. समग्र कथावास्तु आ संरचनात्मक मानचित्र

कृतिक बाहरी फ्रेम चन्ना गाछीक पाछाँक धोधरि, पुरान पेटार, कागच, धूरा-गर्दा, नन्द आरुणि आ गोप कुमारसँ बनैत अछि। ई ठाम केवल संग्रहालय नहि; ई स्मृतिक प्रयोगशाला अछि। नन्द घटना पढ़ैत छथि, गोप ओकर पाछाँक नियम पढ़ैत छथि। एहि विभाजनमे कृति अपन आलोचनात्मक पद्धति पहिनेहि स्थापित कऽ दैत अछि: तथ्य आ अर्थ, घटना आ नियम, नाम आ निशान। बाहरी फ्रेम हर अध्यायकैं वर्तमानक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि, जाहिसँ भीतरक अपराध-कथा मात्र अतीत नहि रहि जाइत।

भीतरक कथा छोटनक बाल्यावस्था, श्रमजीवी परिवार, तकनीकी जिज्ञासा, अपमान, अदृश्य बाजारमे प्रवेश, तलगोहि नामक नेटवर्क-निर्माण, बिरजू साहक पुरान आर्थिक जालसँ गठजोड़, सुनयना–अभयकान्त–अरुणेशक जाँच, नाम-बदलाव, व्यवहारगत हस्ताक्षर, माटि पर उतरैत पाइ, मनोवैज्ञानिक भूख, जालक दरार, भागबाक बाट, कथित जलसमाधि आ अन्ततः गुप्त गिरफ्तारी धरि चलैत अछि। एहि मुख्य रेखाक भीतर अपराधक उत्पत्ति, संस्थागत अनुकूलन, आर्थिक भौतिकी आ मनोविज्ञान चारू एक संग विकसित होइत अछि।

विषय-सूची उपसंहार आ “अध्याय ० : जालक भीतर जाल”कँ संयुक्त संकेत दैत अछि, मुदा कथात्मक देहमे पहिने उपसंहार, फेर “समाप्त”, आ ओकर बाद नव अध्याय ० खुलैत अछि। एही क्रमसँ पाठक पहिने जलसमाधिक सार्वजनिक सत्य स्वीकार करैत अछि, तखन गुप्त रेकर्ड ओहि स्वीकारकँ पुनः जाँचब मजबूर करैत अछि। ई ‘द्वि-अन्त’ (double ending) कृतिक सभसँ विशिष्ट संरचनात्मक साधन अछि।

क्र॰ म	रचना-इकाई	कथ्यक केन्द्र	समीक्षात्मक धुरी
०	अध्याय ०	अभिलेख-फ्रेम; नामक बदला निशानक खोज	स्मृति बनाम घटना
१	नाम बिना जाल	छोटनक बाल्य, अपमान, तकनीकी प्रतिभा, तलगोहि बनब	देखल जेबाक भूख
२	कार्यदलक नव पानि	सुनयना प्रवेश; तरीका-सूची; संस्थागत सीख	नव अपराध लेल नव दृष्टि
३	दू पानिक संगम	बिरजू साह आ तलगोहिक गठजोड़	डिजिटल संख्या आ भौतिक पाइ
४	पहिल गिट्ठ ऽ	मनोजक खाता; छोट माछसँ जाल धरि	पीड़ित/सहभागी बीच धूसर क्षेत्र
५	नाम बदलल, निशान बचल	तलगोहि सँ पनिकौआ	पहचानक स्थिरता बनाम कूटनाम
६	दूरीक द्वन्द्व	पानिमे पीछा छोड़ि माटिपर आर्थिक निशान	माध्यम बदलल, भौतिक सीमा शेष

क्रम	रचना-इकाई	कथ्यक केन्द्र	समीक्षात्मक धुरी
७	बूढ़ गोहिक छाया	पुरान कारी-पाइक हस्ताक्षर; बिरजूक पुनःपहचान	अपराधक संस्थागत स्मृति
८	जे नाम मेटौलक, से देखाइ चाहैत छल	माएक घर, गाम, पुरान अपमान दिस पाइ	अदृश्यताक भीतर मानवीय भूख
९	अनुमान आ प्रमाण	शक, चेहरा, गाम भेटल; गिरफ्तारी रोकल	ज्ञानमीमांसात्मक अनुशासन
१०	दरार	बिरजू–पनिकौआ पीढ़ीय द्वन्द्व	जाल भीतरसँ टूटैत अछि
११	किनार	बिरजू गेल; पनिकौआ असगर; नियंत्रित भागबाक बाट	अदृश्यतासँ दृश्यता
१२	जलसमाधि	नदी, कथित डूबन, छोटन नामक उद्घाटन	त्रासदीक सार्वजनिक रूप
—	उपसंहार	नामक बदला तरीका मोन राखबाक शिक्षा	स्मृति आ सामाजिक प्रतिरक्षा
०	जालक भीतर जाल	जलसमाधि मंचित; छाह-जाल; जीवित गिरफ्तारी	अभिलेखक पुनरीक्षण आ पूरा सत्य

४. रचना-दर-रचना विस्तृत समीक्षा

४.१ अध्याय ० : अभिलेखक अन्हार आ पानिक पहिल हिलोर

प्रारम्भिक अध्याय ० कृतिक सौन्दर्यशास्त्रीय अनुबंध बनबैत अछि। पुरान कागचक गन्ध, पेटार, धोधरि, धूरा-गर्दा आ नन्द–गोपक दीर्घ सहकारिता एक एहन वातावरण बनबैत अछि जतय अपराध पहिने “घटना” नहि, “स्मृति” बनि प्रवेश करैत अछि। खटाँसवला पुरान मोटरी बन्द होइत-होइत दोसर पेटार खुलैत अछि। एतय पहिल निर्णायक वाक्य ई अछि जे व्यक्ति मरि सकैत अछि, जालक तरीका नहि। एहि कथनसँ पूरा अगिला कथा रूपकक स्तरपर पहिनेहि संक्षेपित भऽ जाइत अछि।

४.२ अध्याय १ : नाम बिना जाल — सामाजिक अपमानसँ अदृश्य सत्ता धरि

ई अध्याय छोटनक निर्माणक कथा अछि। कमला-बलानक चर-चाँचड़, प्रवासी भट्ठा-मजदूर पिता, रोपनी करैत माए, अनियमित बिजली आ फूटल यन्त्रक मरम्मति — सभ मिलि ओकर प्रतिभा आ अभावकेँ एक्के पृष्ठभूमिमे राखैत अछि। बूढ़ीक रेडियो ठीक कएलाक बाद “कियो ओकरा देखलक” वाला अनुभूति बादक समूचा अपराध-मनोविज्ञानक बीआ बनैत अछि। मोबाइल-दोकानक अपमान, “मजदूरक बेटा मजदूरे रहत” जकाँ वर्ग–जाति मिश्रित तिरस्कार, ओकर भीतर देखल जेबाक आ एक्के संग नुकायल रहबाक विरोधाभासी भूख पैदा करैत अछि। अपराधक आरम्भ एतय लोभसँ कम, मान्यता-भूखसँ बेसी व्याख्यायित अछि।

४.३ अध्याय २ : कार्यदलक नव पानि — संस्थागत स्मृतिसँ नवीनीकरण

विशेष कार्यदल खटाँसक बाद भंग नहि होइ, संस्था बनि जाइत अछि। ई कथानकक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक बिन्दु अछि: व्यक्ति-आधारित वीरता संस्थागत ज्ञानमे बदलैत अछि। अभयकान्त आवाज आ चुप्पी पढ़ब सिखैत छथि; सुनयना डेटा-सदृश बिखरल शिकायतमे तरीका देखैत छथि; अरुणेश सभसँ महत्त्वपूर्ण अनुशासन थोपैत छथि — असिद्ध धारणा पर कार्रवाई नहि। सुनयनाक प्रवेश पुरान पुलिस-पुरुषवादी संस्कृतिक आलोचना सेहो अछि, कारण जे अधिकारी स्त्रीनक ज्ञानकेँ हल्का बुझैत छथि, ओही ज्ञान अपराधक नव रूप पढ़ब सक्षम होइत अछि।

४.४ अध्याय ३ : दू पानिक संगम — अपराधक आर्थिक भौतिकी

तलगोहिक डिजिटल संख्या उपयोगी धन तखन बनैत अछि जखन ओ माटिपर उतरैत अछि। एहि बिन्दुपर बिरजू साहक प्रवेश कथाकेँ महत्त्वपूर्ण यथार्थवाद दैत अछि। नव अपराध पूर्ण रूपेँ नव नहि; ओकरा पुरान हवाला, बेनामी कागच, ठेका आ धन-धुलाईक बाट चाही। “पाइक धोबी” रूपक बिरजूक भूमिकाकेँ अत्यन्त संक्षिप्त आ स्मरणीय बनबैत अछि। कृति एतय तकनीकी आधुनिकता आ पुरान भ्रष्ट आर्थिक संरचनाकेँ एक-दोसरक प्रतिद्वन्द्वी नहि, सहजीवी रूपमे देखबैत अछि।

४.५ अध्याय ४ : पहिल गिट्ठ ऽ — छोट माछक नैतिक जटिलता

मनोज नामक युवकक प्रसंग उपन्यासकेँ केवल “बड़ अपराधी बनाम पुलिस”क सरल द्वैतसँ बचबैत अछि। कर्ज, बीमार पिता, बहिनक बियाह आ भातक प्रश्नक बीच बैंक-खाता भाड़ापर देनिहार मनोज दोषी सेहो अछि आ शिकार सेहो। अभयकान्तक चाह देब, दंडक बदला बुझबाक प्रयास, आ “हमरा छोट माछ नहि चाही” वाला दृष्टि जाँचक नैतिकता स्थापित करैत अछि। एतय कृति समाजशास्त्रीय दृष्टिसँ देखबैत अछि जे जाल सभसँ पैघ अपराधीक मात्र कारीगरी नहि, छोट-छोट अभावक उपयोगसँ बनैत अछि।

४.६ अध्याय ५ : नाम बदलल, निशान बचल — पहचानक दर्शन

तलगोहि पनिकौआ बनि जाइत अछि, मुदा व्यवहारगत गलती नहि बदलैत। “नाम कपड़ा, चालि देह” वाला रूपक कृतिक केन्द्रीय सिद्धान्त अछि। सुनयना पहिने नाम हरायल बुझि निराश होइत छथि, तखन अपन पहिल सिद्धान्तक स्मरणसँ तरीका दिस घुरैत छथि। ई अध्याय डिजिटल पहचानक अस्थिरता आ व्यवहारगत पुनरावृत्तिक स्थिरताकेँ कथा-रूप दैत अछि। बाहरी फ्रेममे नन्द एहि अनुभवकेँ पुरान चेतावनीसँ जोड़ैत छथि, जाहिसँ पाठक बुझैत अछि जे कथा स्वयं अपन पहिल कथनक परीक्षण करैत अछि।

४.७ अध्याय ६ : दूरीक द्वन्द्व — पानि नहि, माटि पढ़ू

सुनयना जखन स्क्रीनपर पीछा करैत-करैत थाकि जाइत छथि, अभयकान्त रणनीति बदलैत छथि: गोहि पानिमे बलगर, माटिपर भारी। “संख्या”क चोरी अन्ततः भात, घर, जमीन, माएक सहायता वा भौतिक जीवनमे बदलनाइ पड़ैत अछि। ई अध्याय अपराध-विज्ञानक अत्यन्त प्रभावी रूपक प्रस्तुत करैत अछि — माध्यम जतेक आभासी हो, परिणामक किछु हिस्सा भौतिक संसारमे उतरबे करत। धीरकेतु झाक पुनःप्रवेश पीढ़ीगत ज्ञानक पूरकता देखबैत अछि; स्क्रीन नहि बुझनिहार बूढ़ आदमी पाइक गन्ध बुझैत छथि।

४.८ अध्याय ७ : बूढ़ गोहिक छाया — इतिहास अपराधीक सेहो शिक्षक

पुरान आ नव कागच कात-कात राखि अभयकान्त जखन एक्के पाइक हस्ताक्षर देखैत छथि, कृति स्मृतिक दुधारी प्रकृति प्रकट करैत अछि। अपराधी पुरान बाटसँ सीखैत अछि, जाँचकर्ता सेहो। बिरजू साह सार्वजनिक स्मृतिसँ लगभग मेटा गेल छलाह, मुदा कागचक क्रम, बेनामी दोकानक शृंखला आ

धीरकेतुक स्मृति हुनका फेर दृश्य बनबैत अछि। एहि अध्यायमे इतिहास मृत अतीत नहि, क्रियाशील ढाँचा बनैत अछि। विदेह समानान्तर पद्धतिक दृष्टिसँ लिखित कागच, अनुभवी व्यक्तिक स्मृति आ आर्थिक भूगोल तीनू एक-दोसरकेँ पुष्ट करैत अछि।

४.९ अध्याय ८ : जे नाम मेटौलक, से देखाइ चाहैत छल — अपराधीक मानवीय अवशेष

कृतिक मनोवैज्ञानिक शिखर एहि अध्यायमे अछि। पनिकौआक माएक घर पक्का करब, गामक बाट बनब, पुरान दोकानदारक परिवार दिस धन पठेब — ई सभ रणनीतिक लाभक विपरीत क्रिया अछि। अभयकान्त ठीक चिन्हैत छथि जे एहि पाइमे “बुद्धि नहि, मोन” अछि। छोटन अपन असली नाम कहि नहि सकैत, मुदा अपन उपस्थितिक फुसफुसाहटि चाहैत अछि। एहि ठाम करुणा आ भय एक संग उत्पन्न होइत अछि: पाठक ओकर सामाजिक अपमान बुझैत अछि, मुदा अपराधकेँ औचित्य नहि दैत।

४.१० अध्याय ९ : अनुमान आ प्रमाण — कृतिक ज्ञानमीमांसात्मक केन्द्र

सुनयनाक हाथमे गाम, चेहरा आ पुरान नामक दिशा आबि चुकल अछि, तइयो अरुणेश गिरफ्तारी रोकैत छथि। “शिकारीक धैर्य आलस नहि; जागल प्रतीक्षा” कथन न्याय-नैतिकताक सूत्र बनैत अछि। एहि अध्यायमे उपन्यास अपन रोमांचक गति जानि-बुझि धीमा करैत अछि, ताकि प्रमाणक न्यूनतम शर्त स्पष्ट हो। साथहि पनिकौआ अदृश्य रहि थाकि जाइत अछि आ वैध दोकान, समाज-सेवा, संरक्षणक नेटवर्क दिस बढ़ैत अछि। एहि द्विरचना — बाहर प्रमाणक धैर्य, भीतर दृश्य होयबाक अधैर्य — सस्पेन्सक गहिर स्रोत अछि।

४.११ अध्याय १० : दरार — पीढ़ी, भय आ अहंकार

बिरजू बचबाक विद्या जनैत छथि; पनिकौआ देखल जेबाक सत्ता चाहैत अछि। “अहाँ बूढ़ भऽ गेलहुँ” वाला संवाद केवल उमेरक तिरस्कार नहि, दू अपराध-दर्शनक टकराव अछि। कार्यदल एहि दरारकेँ बलपूर्वक नहि फोड़ैत; केवल एतेक संकेत दैत अछि जे बिरजू स्वयं बाट समेटऽ लगथि। ई रणनीति कथात्मक रूपेँ प्रभावी, कारण जाल बाहरी आक्रमणसँ नहि, भीतरक

अविश्वाससँ ढीला होइत अछि। बिरजूक कथा-सँ बाहर निकलि जेबाक तथ्य खुला खतरा छोड़ैत अछि — अपराधक सम्पूर्ण उन्मूलन नहि, अस्थायी विघटन।

४.१२ अध्याय ११ : किनार — नियंत्रित दृश्यता

बिरजू गायब भेलाक बाद पनिकौआक डिजिटल धन असहाय संख्या बनि जाइत अछि। कार्यदल सभ बाट बन्द नहि करैत; एकटा बाट खुला छोड़ैत अछि। ई रणनीति शिकार-कथाक पुरान नियमक उपयोग करैत अछि, मुदा रूपकक स्तरपर ई “विकल्पक स्थापत्य” अछि — लक्ष्यकेँ ओ दिशा स्वतन्त्र विकल्प सन देखबैत अछि, जकरा जाँचकर्ता पहिने सँ चुनने अछि। “भागैत आदमी सभसँ बेसी दृश्य” कृतिक नाम-दृश्यता थीमकेँ चरमपर लऽ जाइत अछि।

४.१३ अध्याय १२ : जलसमाधि — सार्वजनिक त्रासदीक निर्मिति

भरल कमला-बलान, कारी धार, छोट डोंगी, झोरा, भीजल कागच, टूटल डोंगी, चप्पल आ देहक अभाव — ई सभ मिलि उच्च नाटकीय दृश्य बनबैत अछि। अध्याय जानि-बुझि मृत्यु-वर्णन सीमित रखैत अछि; “मृत्युक विवरण बढ़ेलासँ मृत्यु अधिक सत्य नहि” कथन औचित्य आ कथात्मक संयमक उदाहरण अछि। छोटनक असली नाम मृत्यु-समान दृश्यक बाद खुलैत अछि। पैघ कूटनाम सभ डूबि जाइत अछि, साधारण “छोटन” बचैत अछि — ई प्रत्यभिज्ञान पाठकक भावानुभवकेँ तीव्र करैत अछि। मुदा ई केवल सार्वजनिक अन्त अछि, पूर्ण अन्त नहि।

४.१४ उपसंहार : नामक बदला तरीका मोन राखू

उपसंहार पहिल कथात्मक चक्र बन्द करैत अछि। नन्द आ गोप निष्कर्ष निकालैत छथि जे खटाँस बन्दूक छल, छोटन संख्या; पानी बदलल, जालक तर्क नहि। सामाजिक स्मृतिक प्रयोजन अपराधीक नाम-संग्रह नहि, कार्यपद्धतिक पहचान बनैत अछि। “पानि थिर अछि” वाला पुनरावृत्ति सम्भावित तेसर अपराधक चेतावनी बनैत अछि। एहिठाम कृति यदि सचमुच समाप्त होइत, तँ ओकर मुख्य अर्थ चक्रीय अपराध आ सामाजिक स्मृति रहैत।

४.१५ “समाप्त”क बाद अध्याय ० : जालक भीतर जाल — अभिलेखक प्रतिवाद

“समाप्त”क बाद गोप कुमार नन्दकेँ फेर बैसाबैत छथि आ गुप्त खाँचा खोलैत छथि। एतय उपन्यास अपन पहिल अन्तक सत्य-मर्यादा बदलि दैत अछि: सार्वजनिक रेकर्ड गलत कहल नहि जाइत, अपितु संचालनगत कारणसँ अपूर्ण कहल जाइत अछि। जलसमाधि मंचित दृश्य छल; छोटन जीवित अछि। सुनयना देहक अनुपस्थितिकेँ मृत्यु नहि मानैत, व्यवहारक लय पढ़ैत, नियंत्रित छाह-जाल बनबैत, स्वतन्त्र साक्ष्यक संगमपछि गुमटीमे छोटनकेँ जीवित पकड़बैत छथि। ई अध्याय कृतिक सभसँ पैघ ज्ञानमीमांसात्मक उपलब्धि अछि — इतिहास पुनर्लेखन विनाश नहि, स्रोत-विस्तारक परिणाम हो सकैत अछि। साथहि ई अध्याय पहिल अन्तक करुण-त्रासदीक प्रभाव किछु घटबैत अछि; मुदा ओकर बदलामे प्रमाण, स्रोत-आलोचना आ अभिलेखीय नैतिकताक गहिर अर्थ जोड़ैत अछि।

५. पात्र-तंत्र : व्यक्ति नहि, ज्ञानक भूमिका

५.१ छोटन / तलगोहि / पनिकौआ

छोटनक चरित्र बहु-नामिक अछि, पर कृति ओकरा “जन्मजात अपराधी” नहि बनबैत। गरीबी, प्रवासन, श्रम, तकनीकी दक्षता, सामाजिक अपमान, मान्यता-भूख आ अदृश्य बाजारक अवसर मिलि ओकर गठन करैत अछि। तथापि उपन्यास कारण आ उत्तरदायित्वकेँ अलग राखैत अछि: मनोज जकाँ छोट पात्रमे संरचनात्मक दबाव अधिक प्रत्यक्ष अछि, छोटनमे क्रमशः सचेत संगठन, नियंत्रण आ शोषण बढ़ैत अछि। ओकर त्रासदी ई जे ओ पहचान मेटा कऽ शक्ति पबैत अछि, फेर पहचानक भूखमे ओही शक्ति कमजोर करैत अछि।

५.२ सुनयना ठाकुर

सुनयना नव अपराध-पठनक प्रतिनिधि छथि। हुनकर शक्ति केवल संगणकीय दक्षता नहि, बिखरल शिकायतमे समान पद्धति देखबाक क्षमता अछि। प्रारम्भमे उत्साह हुनका नामक पाछाँ लऽ जाइत अछि; अभयकान्त आ अरुणेश हुनका पद्धतिगत धैर्य सिखबैत छथि। अन्तिम गुप्त अध्यायमे ओ स्वयं एहि अनुशासनक परिपक्व रूप बनि जाइत छथि: देह नहि भेटल = मृत्यु नहि; संकेत भेटल = अपराधी सिद्ध नहि। एहि विकाससँ चरित्र केवल

“तकनीकी विशेषज्ञ” नहि रहि, कृतिक प्रमुख ज्ञानमीमांसात्मक आवाज बनैत अछि।

५.३ अभयकान्त झा, अरुणेश मिश्र, गोप कुमार आ नन्द आरुणि

अभयकान्त पुरान माटि आ नव पानिक बीच सेतु छथि। अरुणेश प्रमाण-नैतिकताक संरक्षक छथि। गोप कुमार अभिलेखक दार्शनिक, नन्द आरुणि पाठकक प्रतिनिधि। ई चारू मिलि एकटा ज्ञान-श्रृंखला बनबैत छथि: देखब, संशय करब, सम्बन्ध जोड़ब, सीमा राखब, स्मृतिमे बदलब। कृति जानि-बुझि नायकत्वकेँ एक व्यक्ति पर नहि राखैत; सफलता सहयोगी ज्ञानसँ सम्भव होइत अछि।

५.४ बिरजू साह, धीरकेतु झा आ मनोज

बिरजू अपराधक संस्थागत स्मृति छथि; धीरकेतु गैर-औपचारिक अनुभवक स्मृति; मनोज गरीबी द्वारा उपयोग कएल गेल मानव-कड़ी। तीनू “मुख्य नायक” नहि, मुदा जालक वास्तविकता बुझबाक लेल अनिवार्य छथि। बिरजू देखबैत छथि जे पुरान संरचना नव अपराधकेँ सेवा दे सकैत अछि; धीरकेतु देखबैत छथि जे स्थानीय अनुभव डेटा-सदृश अभिलेखक पूरक हो सकैत अछि; मनोज देखबैत अछि जे अपराध-जालक निम्नतम कड़ीक सामाजिक परिस्थिति बुझने बिना नेटवर्कक नैतिक संरचना अधूरी रहत।

६. प्रतीक-तंत्र : पानि, गोहि, जाल, माटि, किनार आ नाम

“पानि” कृतिमे माध्यम, इतिहास, वातावरण आ भ्रम चारू अछि। ऊपरसँ थिर, भीतरसँ चलायमान पानि सामाजिक दृश्यताक सीमा सूचित करैत अछि। अपराधक रूप बदलैत अछि, पर प्रवाह जारी रहैत अछि। “गोहि” व्यक्ति आ संरचना दुनू; “जाल” संगठन, संरक्षण, धन-प्रवाह, स्मृति आ जाँचक नेटवर्क सेहो। एहि बहुअर्थकता कारण एक्के प्रतीक अपराधी आ शिकारी दुनूक भाषामे घुरैत अछि।

“माटि” भौतिक परिणामक क्षेत्र अछि। संख्या जाबत संख्या, ताबत जीवन नहि; संख्या जखन घर, जमीन, दान, दोकान, ठेका वा पाइक रूप लैत अछि, तखन निशान छोड़ैत अछि। “किनार” दृश्यता, पकड़ा जेबाक जोखिम,

सामाजिक मान्यता आ मृत्यु/गिरफ्तारीक सीमा अछि। “नाम” अस्थायी आवरण; “निशान” व्यवहारगत स्थिरता। ई विरोध-युग्म कृतिक सम्पूर्ण कथन-व्यवस्थाकेँ संगठित करैत अछि।

“पेटार”, “फाइल”, “कागच”, “करिया मोटरी” आ “गुप्त खाँचा” अभिलेखक अलग-अलग सत्ता-स्तर सूचित करैत अछि। सार्वजनिक अभिलेख सत्यक एक रूप अछि, गुप्त अभिलेख दोसर; दुनूकेँ एक-दोसरक विरोधी झूठ नहि मानल गेल अछि। एतय कृति अभिलेखकेँ तटस्थ पात्र नहि, निर्माणाधीन ऐतिहासिक उपकरण मानैत अछि।

७. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

७.१ रस-संरचना

भयानक रसक स्थायी क्षेत्र अदृश्य अपराधसँ बनैत अछि; गोली वा रक्तक दृश्यता घटैत अछि, भय संख्या, मौन, निष्क्रिय खाता आ अनाम हस्ताक्षरमे बसैत अछि। करुण भाव छोटनक बाल्य, माएक श्रम, पिताक प्रवासन, मनोजक कर्ज आ सामाजिक अपमानमे उभरैत अछि। वीर भाव पुलिसिया हिंसामे नहि, धैर्य, समन्वय, अनुसन्धान आ प्रमाणक प्रतीक्षामे अछि। अद्‌भुत भाव तकनीकी-अदृश्य संसार आ अन्तिम गुप्त उलटावसँ बनैत अछि। उत्तरवर्ती रस-परम्पराक दृष्टिसँ उपसंहारक भोर, थिर पानि आ अभिलेख-बन्द करबाक क्षण शान्त भावक छाया सेहो रचैत अछि।

७.२ ध्वनि

आनन्दवर्धनक ध्वनि-विचारक दृष्टिसँ कृतिक सर्वाधिक समर्थ भाग ओ अछि जतय कथन प्रत्यक्ष अर्थसँ अधिक संकेत करैत अछि। “पानि थिर अछि” कथ्यतः प्राकृतिक दृश्य, पर व्यञ्जनार्थमे अदृश्य खतरा, दबी स्मृति आ अपूर्ण ज्ञानक संकेत। “नाम कपड़ा, चालि देह” पहचान-दर्शनक ध्वनि रचैत अछि। “माटि” आर्थिक भौतिकता, “किनार” दृश्यता आ “गुप्त खाँचा” इतिहासक दबी परत व्यञ्जित करैत अछि।

७.३ वक्रोक्ति आ रूपकीय भाषा

कुन्तकक वक्रोक्ति-दृष्टिसँ कृतिक शक्ति साधारण अपराध-शब्दावलीकेँ जल-जगतक भाषा द्वारा वक्र बनबैत अछि। अपराधी “डूबैत” नहि, “पानिक तर” जाइत; धन “माटिपर उतरैत”; नेटवर्क “गिट्ठ ऽ” बनैत; जाँच “छोट माछ”सँ “गोहि” धरि बढ़ैत। ई भाषिक वक्रता सजावट मात्र नहि; कथा-बोधक साधन अछि। पाठक जटिल डिजिटल आ आर्थिक सम्बन्धकेँ स्थानिक, देहगत बिम्बमे बुझैत अछि।

७.४ औचित्य, गुण आ दोष

औचित्यक दृष्टिसँ अपराधक कार्यविधि जानि-बुझि सीमित राखल गेल अछि; हिंसाक विवरण सेहो संक्षिप्त। ई विषयानुकूल संयम कृतिक नैतिक बल अछि। गद्यक मुख्य गुण प्रसाद — स्पष्टता, सोझ बिम्ब, छोट वाक्य — अछि; अनुसन्धान दृश्यसभमे ओज बढ़ैत अछि; नदी, गाम आ श्रमक वर्णनमे माधुर्यक छाया भेटैत अछि। दोषक क्षेत्रमे किछु सूत्र-वाक्य अत्यधिक पुनरावृत्त होइत अछि — “नाम नहि, तरीका”, “पानिमे नहि, माटिपर”, “अनुमानकेँ प्रमाण नहि बुझू” — जे स्मृतिग्राह्यता बढ़बैत अछि, मुदा कतिपय ठाम पाठकपर अर्थ थोपबाक जोखिम सेहो पैदा करैत अछि।

८. पाश्चात्य कथाविज्ञानक आधारपर समीक्षा

८.१ अरस्तू : कथानक, भूल, विपर्यय आ प्रत्यभिज्ञान

अरस्तूक कथानक-प्रधान दृष्टिसँ छोटनक “देखल जेबाक भूख” ओकर निर्णायक त्रुटि बनैत अछि; ई नैतिक दोषक सरल पर्याय नहि, कथानककेँ उलटबला प्रवृत्ति अछि। पनिकौआक अदृश्य शक्ति वैध दोकान, दान आ सामाजिक दृश्यताक इच्छा द्वारा विपर्यय दिस बढ़ैत अछि। अध्याय १२मे “छोटन” नामक उद्घाटन प्रथम प्रत्यभिज्ञान; अन्तिम गुप्त अध्यायमे “ओ मरल नहि” दोसर, अधिक पैघ प्रत्यभिज्ञान। एहि दोसर उलटावसँ पहिल करुण-परिणति पुनः व्यवस्थित होइत अछि।

८.२ जेनेट : कथास्तर, काल आ दृष्टिबिन्दु

जेरार जेनेटक कथाविज्ञान अनुसार बाहरी नन्द–गोप स्तर एक फ्रेम बनबैत अछि, जकर भीतर फाइलक कथा चलैत अछि। छोटनक बाल्यक विस्तृत

पूर्वस्मरण, आगामी जलसमाधिक बारम्बार पूर्वसंकेत, आ प्रत्येक अध्यायपछि बाहरी टिप्पणी कथाक कालक्रमकेँ साधारण सीधा रेखा नहि रहऽ दैत। कथन-सूचना सेहो स्तरित अछि: पाठक ओतबे जनैत अछि जतेक सार्वजनिक फाइल नन्दकेँ बतबैत अछि; गुप्त मोटरी खुललापर पूर्व पाठक अनुभव पुनः अर्थान्वित होइत अछि।

८.३ तोदोरोव : अपराधक कथा, जाँचक कथा, आ तेसर कथा

त्स्वेतान तोदोरोव अपराध-कथामे प्रायः अपराधक घटना आ ओकर जाँचक कथा बीच भेद देखबैत छथि। एहि कृतिमे ई दुनू कथा समानान्तर चलैत अछि: छोटनक उदय आ कार्यदलक खोज एक-दोसरकेँ काटैत अछि। मुदा एतय तेसर कथा सेहो अछि — नन्द आरुणि द्वारा अभिलेख पढ़बाक कथा। एही तेसर स्तर कारण पाठक केवल “कोना पकड़ल गेल” नहि, “समाज घटना मोन केना राखत” सेहो पूछैत अछि।

८.४ बूथ, रिकर आ बाख्तिन

वेन बूथक कथात्मक विश्वसनीयता दृष्टिसँ ई कृति रोचक अछि, कारण सार्वजनिक फाइल झूठ नहि बाजैत, मुदा पूरा सत्य नहि कहैत। पाठकक विश्वास तोड़ल नहि, पुनर्स्थापित कएल जाइत अछि। पॉल रिकरक समय-कथा सम्बन्धसँ देखलापर अतीत घटना वर्तमान वाचनमे नित नव अर्थ पबैत अछि; जलसमाधि पहिने मृत्यु, बादमे मंचित कथा बनैत अछि। बाख्तिनीय बहु-स्वरता पूर्ण रूपेँ नहि, पर आंशिक रूपेँ अछि: गोपक अभिलेखीय दर्शन, अरुणेशक प्रमाण-नैतिकता, अभयकान्तक मैदान-ज्ञान, सुनयनाक पद्धति, छोटनक मान्यता-भूख, बिरजूक बचाव-दर्शन — ई सभ भिन्न आवाज दैत अछि। तथापि कृति कखनो-कखनो एक केन्द्रीय नैतिक सूत्रकेँ एतेक पुनरावृत्त करैत अछि जे बहु-स्वरक खुलापन कम भऽ जाइत अछि।

९. नव्य न्यायीय समीक्षा : संशयसँ सिद्ध ज्ञान धरि

९.१ “अनुमानकेँ प्रमाण नहि बुझू”क दार्शनिक परिशुद्धि

एहि कृतिक सभसँ चर्चित सूत्र “अनुमानकेँ प्रमाण नहि बुझू” अछि। साहित्यिक प्रसंगमे एकर अर्थ स्पष्ट — शक, अटकलबाजी वा अपुष्ट सम्बन्धकेँ न्यायिक सिद्धि नहि मानू। मुदा नव्य न्यायक पारिभाषिक भाषामे

“अनुमान” स्वयं प्रमाणक मान्य प्रकार अछि, जखन हेतु, व्याप्ति आ पक्षसम्बन्ध विधिसम्मत हो। तँ दार्शनिक परिशुद्धिसँ एहि सूत्रकेँ “असिद्ध अनुमानकेँ सिद्ध प्रमाण नहि बुझू” अथवा “शंका/कल्पनाकेँ प्रमाण नहि बुझू” जकाँ पढनाइ उचित अछि। कृति व्यवहारतः एही सूक्ष्म अर्थकेँ निभबैत अछि।

९.२ हेतु, व्याप्ति, उपाधि आ स्वतंत्र पुष्टि

समान व्यवहारगत “निशान” देखबैत अछि जे अनेक ठगी एक प्रशिक्षण-स्रोतसँ जुड़ल हो सकैत अछि। मुदा एतबेसँ “एक्के व्यक्ति” निष्कर्ष सिद्ध नहि। दोसर सम्भावना — अनेक लोक एक्के तरीका सीखने हो — उपाधि वा वैकल्पिक कारणक रूपमे उपस्थित अछि। अरुणेश एहि छलाँगकेँ रोकैत छथि। मनोजक मानवीय कड़ी, बिरजूवला आर्थिक बाट, पुरान कस्बाक सम्बन्ध, छाह-जालमे व्यवहार, गुमटीक आदमी आ स्वतंत्र रेकर्ड एक संग भेटलापर निष्कर्ष मजबूत होइत अछि। ई कथात्मक प्रक्रिया नव्य न्यायीय कठोरताक साहित्यिक रूपक सन अछि।

९.३ अभाव-बोध : देह नहि भेटल, तँ मृत्यु?

अध्याय १२क बाद सभसँ पैघ तर्कदोष ई होइत जे “देह नहि भेटल, अतः मृत्यु”। अन्तिम अध्याय एहि अनुमानकेँ रोकैत अछि। अभावक ज्ञान स्वतः सरल नहि; कोन वस्तु, कोन अधिकरणमे, कोन सम्बन्धेँ अपेक्षित छल, खोज पर्याप्त छल कि नहि, वैकल्पिक कारण की अछि — ई सभ विचारणीय अछि। सुनयनाक वाक्य “देह नहि भेटल। एतबे तथ्य अछि। ‘मरि गेल’ अनुमान अछि” कृतिक सर्वाधिक नव्य-न्यायसंगत क्षणमे सँ एक अछि।

९.४ शब्द, स्मृति, उपमान आ तर्क

गवाही, फाइल, पुरान बही आ गुप्त रेकर्ड “शब्द”क रूपमे ज्ञान दैत अछि, मुदा स्रोत-विश्वसनीयता जाँचल जाएत अछि। खटाँस आ छोटनक तुलना “उपमान”क भाँति दिशा दैत अछि, पर समानता प्रमाण नहि बनैत। “जँ सभ बाट बन्द करब तँ ओ गहींर नुका जाएत; एक बाट खुला छोड़ू” जकाँ रणनीतिक विचार तर्कक सहायक रूपक अछि — निष्कर्ष प्रत्यक्ष प्रमाण नहि, सम्भावित व्यवहारक परीक्षणक साधन। कृति एहि भेदसभकेँ कथा-क्रियामे समाहित करैत अछि, सिद्धान्त-पुस्तक बनि नहि।

१०. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ समीक्षा

१०.१ सार्वजनिक अभिलेख बनाम पूरा सत्य

अन्तिम अध्यायमे गोप कुमारक कथन — सार्वजनिक सत्य आ पूरा सत्य सभ काल एक नहि — एहि पद्धतिक केन्द्रीय समस्या खोलैत अछि। सार्वजनिक जलसमाधि-रेकर्ड तत्कालीन संचालनगत आवश्यकता सँ अपरिवर्तित राखल गेल; गुप्त रेकर्ड जीवित गिरफ्तारी दर्ज करैत अछि। समानान्तर इतिहासक काम सार्वजनिक स्रोतकेँ झूठ कहि फेकब नहि, ओकर निर्माण-स्थितिक कारण, सीमा आ दबायल परत खोलब अछि।

१०.२ लोकस्मृति, श्रम आ भूगोल

छोटनक इतिहास सरकारी कागचसँ मात्र नहि बनैत। भट्ठा-मजदूर पिता, रोपनी करैत माए, गामक बूढ़ीक रेडियो, मोबाइल-दोकानक अपमान, कच्चा बाट, अनियमित बिजली, कमला-बलानक बदलैत धारा — ई सभ सामाजिक इतिहासक स्रोत अछि। अपराधीक मनोविज्ञानक जड़ एहि अनुभवसभमे अछि। एहि कारण भूगोल पृष्ठभूमि नहि; नदी, कादो, चर-चाँचड़, बजार आ सीमाक्षेत्र कथाक कारण-व्यवस्थामे सक्रिय अछि।

१०.३ मौन, अनुपस्थिति आ भौतिक वस्तु

फोनक अचानक मौन, निष्क्रिय खाता, नामक गायब होयब, देहक अनुपस्थिति, भीजल झोरा, चप्पल, टूटल डोंगी — कृति “नहि”केँ सेहो स्रोत बनबैत अछि। मुदा अन्तिम अध्याय देखबैत अछि जे अनुपस्थिति केना मंचित कएल जा सकैत अछि। समानान्तर पद्धतिक मूल सावधानी एतय स्पष्ट अछि: मौन अभावक संकेत हो सकैत अछि, मुदा मौन स्वयं अन्तिम निष्कर्ष नहि। वस्तु साक्ष्य हो सकैत अछि, मुदा वस्तुक विन्यास सेहो निर्मित हो सकैत अछि।

१०.४ अभिलेखक पुनरीक्षण आ इतिहासक नैतिकता

कृति इतिहासकेँ बन्द फाइल नहि, संशोध्य ज्ञान मानैत अछि। पहिल सार्वजनिक कथा सामाजिक उपयोगक कारण कायम रहैत अछि; गुप्त रेकर्ड समयानुसार बाहर आबि सकैत अछि। एहि बिन्दुपर कृति महत्त्वपूर्ण प्रश्न

छोड़ैत अछि: राज्य वा संस्था कतेक काल धरि सत्य रोकि सकैत अछि? संचालनगत गोपनीयता कखन इतिहास-विकृति बनि जाइत अछि? उपन्यास स्पष्ट उत्तर नहि दैत, पर प्रश्न उपस्थित करैत अछि। विदेह पद्धतिसँ आलोचनात्मक सीमा एतय अछि जे गुप्त अभिलेखक रक्षक संस्था स्वयं सत्यक निर्णायक बनि जाइत अछि; तँ ओकरा सेहो प्रतिपक्ष, पीड़ितक आवाज आ स्वतंत्र स्रोतसँ जाँच आवश्यक अछि।

१०.५ हाशियाक आवाजक उपलब्धि आ कमी

छोटनक माए, प्रवासी पिता, मनोज, गामक बूढ़ी, छोट ठग, मजदूर आ ग्रामीण भूगोल कृतिमे मुख्यधाराक अपराध-इतिहासक समानान्तर सामाजिक आधार प्रस्तुत करैत अछि। तथापि पीड़ितसभ अधिकतर रकमक रूपमे सामूहिक संकेत बनि रहि जाइत छथि; हुनकर व्यक्तिगत जीवनक आवाज कम अछि। समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक कठोर कसौटीसँ अगिला संस्करणमे एक-दू पीड़ित परिवारक दृष्टि, महिलाक श्रम-स्मृति वा मनोज सन निम्न कड़ीक बादक जीवन जोड़ल जाए तँ इतिहास-बहुलता आरो गहिर भऽ सकैत अछि।

११. दृश्य-विन्यास : ४५ चित्रक कथात्मक भूमिका

कृतिमे ४५ चित्र पाठकक दृश्य-स्मृति बनबैत अछि। प्रारम्भिक चित्रसभ पुरान अभिलेख-कक्ष, पेटार, कागच, धूरा-गर्दा आ नन्द–गोपक निकटता स्थापित करैत अछि। बाल्यावस्था वाला चित्रसभ नदी-किनार, गाम, रेडियो, मोबाइल-दोकान आ अपमानक दृश्य दैत अछि। मध्य भागमे नीला दृश्यपट, नक्शा, स्क्रीन-सदृश नेटवर्क, दफ्तरक रात्रिकालीन अनुसन्धान आ बिरजू–धीरकेतु जकाँ बूढ़ पात्रक भूरे-पीयर प्रकाश-क्षेत्र पुरान माटि बनाम नव पानिक रंग-भेद रचैत अछि। अन्तिम भागमे नदी, राति, डोंगी, भीजल किनार आ भोरक दृश्य फेर प्रकृतिक चक्रपर कथा घुरा दैत अछि।

चित्रसभक मुख्य लाभ वातावरण आ चरित्र-स्मृति अछि; विशेषत: अभिलेख-कक्षक पुनरावृत्त दृश्य बाहरी फ्रेमकेँ स्थिर दृश्य-स्थान दैत अछि। मुदा किछु चित्र एक-दोसरसँ अत्यन्त निकट संरचना दोहरबैत अछि — एक्के मेज, एक्के तीन-चार पात्र, समान गर्म प्रकाश। शोध-पत्रीय दृष्टिसँ एहि पुनरावृत्तिक अर्थ

“संस्थागत निरन्तरता” मानल जा सकैत अछि, पर पुस्तक-डिजाइनक दृष्टिसँ किछु दृश्य-भिन्नता कथात्मक इकाइसभकेँ आरो विशिष्ट बना सकैत छल।

१२. भाषा, शैली आ शुद्ध मैथिली निखार-ऑडिट

१२.१ मूल भाषिक उपलब्धि

गद्यक सर्वाधिक सफल गुण ओकर सोझ, कसा, लयात्मक मैथिली अछि। “पानि” रूप लगातार सुसंगत अछि; हिन्दी “पानी” नहि आयल। “चाह” व्यापक रूपेँ प्रयुक्त अछि। “दैत” अभ्यस्त/प्रगतिशील क्रियामे आ “देत” भविष्यसूचक प्रसंगमे प्रायः ठीक भेद राखैत अछि। व्यक्ति लेल आदरसूचक क्रिया, गैर-मानवीय वस्तु लेल “अछि/छल”, ग्रामीण शब्द-भण्डार, “आस्तेसँ”, “कने”, “मोन”, “बिसरि”, “थाकि” जकाँ रूप गद्यकेँ मैथिली लय दैत अछि।

१२.२ आवर्ती शब्द-निखार

स्रोत-रूप	आवृत्ति	निखार-सुझाव	सम्पादकीय टिप्पणी
हरेक	९	सभ / प्रसंगानुसार “सभटा”	लेखकीय मैथिली-मानक अनुसार “हरेक” टारू; वाक्य-दर-वाक्य स्वाभाविक विकल्प चुनू।
चाय	२	चाह	कृतिमे “चाह” पहिले सँ व्यापक अछि; दू ठाम रूप-साम्य ठीक करू।
गायब	४	बिलायल / बिला गेल	प्रसंगानुसार व्यक्ति, नाम वा खाता लेल “बिलायल” अधिक स्वदेशी।
कोठरी /	५ प्रसंग	कोठली /	स्थानसूचक

स्रोत-रूप	आवृत्ति	निखार-सुझाव	सम्पादकीय टिप्पणी
कोठरीक		कोठलीक	शब्दक एकरूप निखार।
दरबज्जा	५–६ प्रसंग	केवाड़ी	पूर्वनिर्धारित मैथिली शब्द-रुचिक अनुकूल।
तरहड़ि / तरहड़ि	मिश्र रूप	एक्के युनिकोड-रूप “तरहड़ि”	शीर्षक आ कूटशब्दमे अक्षर-रूप एकरूप राखू।
कूट शब्द / कूटशब्द	२ रूप	कूटनाम वा एकरूप “कूटशब्द”	शीर्षक “कूट नाम”सँ सम्बन्ध स्पष्ट करबाक लेल “कूटनाम” अधिक सुसंगत।
“बोर देने”	२ बेर, एक्के संवादमे	मूल लेखकीय आशय देखिऽ पुनर्लेखन	अर्थ अस्पष्ट; अनुमानसँ सुधार नहि करबाक चाही।
साइबर-नदी, साइबर-झोरा आदि	अन्तिम अध्याय	रूपक आ भौतिक दृश्यक सीमा स्पष्ट करू	यदि वस्तु वास्तविक छल, तँ “साइबर” रूपकक व्याख्या एक वाक्यसँ स्पष्ट हो।

१२.३ वाक्य-लय आ पुनरावृत्ति

कृति छोट वाक्यक आवृत्तिसँ तनाव बनबैत अछि: “ओ सोचलक। फेर…”, “नाम बदलि गेल।”, “मुदा तरीका?” जकाँ संरचना अपराध-कथाक गति बढ़बैत अछि। “पानि थिर छल”, “गोहि पानिमे बलगर”, “नाम बदलैत रहत, निशान…” जकाँ सूत्र-वाक्य स्मृति बनबैत अछि। सम्पादकीय निखारमे एहि पुनरावृत्तिक सभटा काटब उचित नहि; केवल ओ ठाम कम करब, जतय पात्र

स्वयं निष्कर्ष देलाक तुरन्त बाद बाहरी फ्रेम फेर वही निष्कर्ष लगभग समान शब्दमे दोहरबैत अछि।

१२.४ तकनीकी शब्द आ मैथिली वाक्य

फोन, मोबाइल, बैंक, स्क्रीन, साइबर, रेकर्ड, फाइल जकाँ आधुनिक शब्द कथ्यक कारण अपरिहार्य रूपेँ आयल अछि। शुद्धता केवल सभ विदेशी मूलक शब्द हटेनाइ नहि; मैथिली वाक्य-व्याकरण, विभक्ति, क्रिया आ लयमे ओकर स्वाभाविक समावेश अधिक महत्त्वपूर्ण अछि। तथापि एक्के अवधारणाक लेल “संगणक” आ “स्क्रीन” जकाँ मिश्र शब्दावलीक सम्पादकीय नीति तय कएल जाए तँ शैली आरो एकरूप भऽ सकैत अछि।

१३. कृतिक मुख्य साहित्यिक उपलब्धि

पहिल उपलब्धि — अपराधक दृश्य रूप बदललाक संग आलोचनात्मक भाषा बदलनाइ। खटाँसक गोलीक विपरीत छोटनक संख्या, पनिक तरक अदृश्यता आ माटिपर उतरैत पाइ आधुनिक अपराधक जटिलताकेँ अत्यन्त ग्राह्य रूपकमे रूपान्तरित करैत अछि। दोसर — जाँचक नायकत्व हिंसा नहि, पद्धति अछि। तेसर — सामाजिक कारण आ नैतिक उत्तरदायित्व एक-दोसरक विरोधी नहि बनाओल गेल। चारिम — अन्तिम गुप्त अध्याय पाठकक पहिले बनल निष्कर्षकेँ पुनः जाँचब मजबूर करैत अछि। पाँचम — कृति स्मृतिक सामाजिक उपयोग पर लगातार विचार करैत अछि: नामक सूची नहि, पैटर्नक पहचान।

छठम उपलब्धि भाषा आ बिम्बक स्थानीयकरण अछि। कमला-बलान, चर-चाँचड़, रोपनी, भट्ठा, कच्चा बाट, चाह-दोकान, गुमटी, गाछी, पीपर, कागच, पेटार — ई सभ डिजिटल अपराधकेँ निराकार वैश्विक विषय नहि रहऽ दैत; ओकरा मिथिलाक सामाजिक भूगोलमे उतारैत अछि। एही स्थानीय देहसँ कृतिक वैश्विक आधुनिकता विश्वसनीय बनैत अछि।

१४. आलोचनात्मक सीमा आ सुधारक सम्भावना

कृतिक सूत्रात्मक स्पष्टता ओकर शक्ति सेहो अछि आ सीमा सेहो। गोप कुमार अनेक अध्यायपछि कथाक अर्थ स्पष्ट शब्दमे बता दैत छथि। आरम्भिक भागमे ई पाठकक मार्गदर्शन करैत अछि; मध्यभाग बाद कखनो-कखनो दृश्य स्वयं जे अर्थ दे चुकल, संवाद ओकरा फेर व्याख्यायित करैत अछि। किछु ठाम

व्याख्यात्मक वाक्य घटाओल जाए तँ ध्वनि अधिक खुलल रहत आ पाठकक सहभागिता बढ़त।

छोटनक मनोवैज्ञानिक रेखा प्रबल अछि, मुदा पीड़ितसभक व्यक्तिगत आवाज कम। अपराधक मात्रा “सैकड़ो शिकायत”, “पाँच हजार-दस हजार”, “करोड़क संख्या” रूपमे प्रकट होइत अछि। एक-दू पीड़ित चरित्रक जीवनपर असरक सूक्ष्म कथा जोड़ल जाए तँ करुण रस आ नैतिक भार बढ़त, तथा छोटनक करिश्माई केन्द्रीयता संतुलित रहत।

अन्तिम “जालक भीतर जाल” अध्याय बौद्धिक रूपेँ प्रभावशाली, पर पहिल जलसमाधिक त्रासद सौन्दर्य उलटि दैत अछि। ई जानि-बुझि कएल संरचनात्मक जोखिम अछि। यदि उद्देश्य ज्ञानमीमांसात्मक उलटाव मुख्य अछि, वर्तमान रूप सफल। यदि करुण त्रासदी मुख्य बनायब उद्देश्य हो, तँ अन्तिम खुलासाकेँ किछु संक्षिप्त कएल जा सकैत अछि। वर्तमान कृतिमे पहिल उद्देश्य अधिक प्रबल देखाइत अछि।

“साइबर-नदी” वाला अन्तिम स्पष्टीकरण रूपकीय तीव्रता रखैत अछि, मुदा वास्तविक कमला-बलानमे डोंगी, झोरा, चप्पल आ मंचित दुर्घटनाक भौतिकता संग कने भ्रम पैदा करैत अछि। एक स्पष्ट वाक्य — जे वास्तविक नदीक उपयोग डिजिटल भ्रमक सार्वजनिक कथा बनाबऽ लेल कएल गेल — एहि द्वयर्थता दूर कऽ सकैत अछि।

१५. समेकित निष्कर्ष

“कूट नाम : तरहड़िमेगोहि”क मूल उपलब्धि ई नहि जे ई एकटा चतुर अपराधी आ धैर्यवान कार्यदलक कथा कहैत अछि; मूल उपलब्धि ई जे ई अपराधक ज्ञान-व्यवस्था पर कथा बनबैत अछि। नाम, चेहरा, यन्त्र, संख्या, गवाही, कागच, मौन, अनुपस्थिति — कोनो एक वस्तु पर्याप्त नहि। सत्य सम्बन्धसभक संगममे बनैत अछि। एहि कारण कृतिमे जाँच कथा ज्ञानमीमांसा बनि जाइत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र एकर भाव, ध्वनि, वक्र रूपक आ औचित्य स्पष्ट करैत अछि; पाश्चात्य कथाविज्ञान फ्रेम, समय, अपराध-जाँच द्विरचना आ द्वि-अन्त खोलैत अछि; नव्य न्याय असिद्ध शक आ विधिसम्मत अनुमानक भेद, वैकल्पिक कारण, अभाव-बोध आ स्वतंत्र पुष्टिक महत्त्व देखबैत अछि; विदेह

समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सार्वजनिक रेकर्ड, गुप्त रेकर्ड, श्रम-स्मृति, भूगोल, मौन, वस्तु आ प्रतिपक्षकेँ समानान्तर पढ़ैत अछि। चारू दृष्टि मिलि एक निष्कर्षपर पहुँचैत अछि — कृति नामक स्थिरतापर अविश्वास करैत अछि, पर प्रमाणक अनुशासनपर गहिर विश्वास रखैत अछि।

छोटनक कथा अन्ततः “अदृश्यता”क कथा नहि, दृश्यता-कामनाक कथा अछि। ओ नाम मेटा कऽ बल पबैत अछि; माए, गाम, पुरान अपमान आ समाजक नजरि दिस घुरि ओ बल गमबैत अछि। कार्यदल ओकरा तकनीकसँ अधिक ओकर मानवीय पुनरावृत्तिसँ पढ़ैत अछि। एही कारण उपन्यासक अन्तिम सत्य “गोहि मरल” नहि, “कूटनाम मरल” अछि। व्यक्ति न्यायिक हिरासतमे अछि, मुदा तरीका इतिहासक विषय बनि चुकल अछि। सामाजिक प्रतिरक्षा तखन सम्भव जखन समाज केवल अपराधीक नाम नहि, अपराधक बनावट मोन राखय।

शुद्ध मैथिली निखारक बाद, किछु पुनरावृत्ति संयमित कऽ, अन्तिम गुप्त अध्यायक दू-तीन अस्पष्ट पदांश स्पष्ट कऽ, आ पीड़ितक आवाजक कने विस्तार जोड़ल जाए तँ कृति साहित्यिक, ज्ञानमीमांसात्मक आ ऐतिहासिक तीनू स्तरपर आरो सघन भऽ सकैत अछि। वर्तमान रूपोमे ई मैथिली गद्यक एहन प्रयोग अछि जतय स्थानीय भूगोल, आधुनिक सूचना-अपराध, अभिलेखीय स्मृति आ न्यायिक प्रमाण-नीति एक्के कथा-प्रवाहमे आबैत अछि।

ग्रन्थसूची

नीचाँ केवल उपयोग कएल पोथीसभक नाम देल जा रहल अछि; कोनो वेबसाइट वा वेब-स्रोत शामिल नहि अछि।

- कूट नाम : तरहड़िमेगोहि
- नाट्यशास्त्र
- ध्वन्यालोक
- अभिनवभारती
- वक्रोक्तिजीवित
- काव्यप्रकाश
- साहित्यदर्पण

- औचित्यविचारचर्चा
- तत्त्वचिन्तामणि
- (The Logic of Invariable Concomitance in the Tattvacintamani)
- (The Navya-Nyaya Doctrine of Negation)
- (Perception: An Essay on Classical Indian Theories of Knowledge)
- (Poetics)
- (Narrative Discourse: An Essay in Method)
- (Narrative Discourse Revisited)
- (The Poetics of Prose)
- (The Rhetoric of Fiction)
- (Time and Narrative)
- (The Dialogic Imagination)
- (The Historian’s Craft)
- (Memory, History, Forgetting)
- (Silencing the Past: Power and the Production of History)

आलेख २६ · उपन्यास आ विस्तृत आख्यानक अध्ययन

बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश

“बिज्जी : गोहि सभक बीच” अपराध-उपन्यास, पारिवारिक त्रासदी, न्याय-दर्शन, वित्तीय अपराधक सामाजिक इतिहास आ आत्मपरक लेखन—एहि पाँच धाराकेँ एक दीर्घ कालरेखामे जोड़ैत अछि। कृतिक आरम्भ गढ़ नारिकेलक घरमे बिज्जी–गहुमन संघर्षसँ होइत अछि; एहि सूक्ष्म घरेलू दृश्यक रूपक बादमे निविदा-उगाही, सत्यप्रकाश कर्णक सन्दिग्ध मृत्यु, दिगन्त-जाल, डिजिटल जुआ, धन-वाहक खाता, पुरान अपराधक पुनर्जाँच, न्यायालयी परीक्षण, पुनर्वास, नीति-परिवर्तन आ अन्ततः ईशानक लेखन धरि फैलैत अछि। पाठक संगणनासँ कथाभागमे ४१८ पृथक प्रसंग आ ५१,८०६ शब्द भेटैत अछि। आरम्भिक पचास प्रसंगक औसत आकार २०८.३ शब्द अछि, जखन कि अन्तिम अड़सठि प्रसंगक औसत ८१.१ शब्द; एकर अर्थ ई जे उपन्यास क्रमशः विस्तृत अन्वेषणात्मक गद्यसँ सूत्रात्मक, स्मृति-प्रधान आ आत्मसमीक्षात्मक लय दिस बढ़ैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ करुण रस कृतिक स्थायी भाव-संरचनाकेँ नियंत्रित करैत अछि; भय, वीर, शान्त आ रौद्र ओकर सहचर रस बनैत अछि। बिज्जी, गोहि, गहुमन, किनार, पानि आ पहराक आवर्ती रूपक ध्वनि-संरचना बनबैत अछि, जखन कि कथाक अनेक सूक्ति-वाक्य वक्रोक्तिक माध्यमसँ नैतिक विचारकेँ स्मरणीय बनबैत अछि। औचित्यक कसौटी पर कृतिक आरम्भिक आ मध्य भाग अत्यन्त नियंत्रित अछि, मुदा उत्तरार्धमे दर्शनात्मक सूक्तिक घनत्व बढ़ला कारण किछु ठाम कथात्मक स्वाभाविकता संकुचित होइत अछि। पाश्चात्य कथाशास्त्रक दृष्टिसँ ई कृति ‘के अपराधी?’ प्रश्नसँ अधिक ‘हम की जानैत छी, कोना जानैत छी, आ कतेक निश्चित छी?’ प्रश्नपर केन्द्रित ज्ञानमीमांसक अपराध-उपन्यास अछि। प्रत्यक्ष, अनुमान, साक्ष्य, स्मृति, अभाव, प्रतिपरीक्षण, वैकल्पिक परिकल्पना आ निर्णय—ई सभ कथाक रूप-विधान बनि जाइत अछि। नव्य-न्यायक आलोकमे कृति विशेष महत्त्व रखैत अछि। प्रत्यक्ष आ अनुमानक स्पष्ट भेद, हेतु-साध्य सम्बन्धक सावधानी, व्याप्ति गढ़बाक जोखिम, हेत्वाभासक निरन्तर पहचान, शब्द-प्रमाणक वक्ता-

सीमा, संशयकेँ दोष नहि मानि जाँचक आरम्भ मानब, आ अभाव अथवा मौनकेँ स्वतः सकारात्मक प्रमाण नहि बनायब—ई सभ उपन्यासक कथात्मक नीति अछि। स्मृतिक मानवीय मूल्य स्वीकारल गेल अछि, मुदा स्मृति आ नूतन प्रमाणक भेद निरन्तर राखल गेल अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक कसौटी पर कृति केन्द्र आ हाशिया, अभिलेख आ मौखिक स्मृति, संस्था आ व्यक्ति, पुरान भ्रष्टाचार आ नब डिजिटल अपराध, राज्यक प्रमाण आ परिवारक दुख—सभकेँ समान आलोचनात्मक अनुशासनमे रखैत अछि। न तऽ सरकारी कागच स्वतः सत्य, न पीड़ितक स्मृति स्वतः दोषसिद्धि; निष्कर्ष मजबूत, सम्भावित, विवादित अथवा अज्ञात रहि सकैत अछि। कृतिक सभसँ पैघ उपलब्धि ओकर ‘वितरित पहरा’क धारणा अछि। अन्त धरि कोनो एक नायक नहि बचैत; मृणालिनी, ईशान, रचना, अनिरुद्ध, मयंक, तृषा, सबीना, शैलेश, रितेश, वैदेही, विद्यालय, बैंक, न्यायालय, प्रशिक्षण आ पाठक—सभ पहराक छोट-छोट केन्द्र बनैत अछि। एहि कारण उपन्यास प्रतिशोधक आख्यान नहि, प्रमाण-अनुशासनक नागरिक आख्यान बनि उठैत अछि। शुद्ध मैथिली निखार-अडिटमे मूल कथाभागमे पाँच रोमन प्रयोग भेटल—(initials) तीन बेर, (motive) एक बेर, (Final) एक बेर—जकर मैथिली विकल्प क्रमशः “नामाक्षर”, “प्रयोजन” आ “अन्तिम” अछि। हिन्दी-प्रभावित “मगर”, “क्यों”, “क्योंकि”, “जरूरी”, “चाय”, “गायब” आदि रूप सेहो पर्याप्त संख्या मे अछि; सम्पादकीय निखारमे संदर्भानुसार “मुदा/तैयो”, “किएक”, “किएक तँ/कारण”, “आवश्यक”, “चाह”, “बिलायल/निपत्ता” आदिक प्रयोग कृतिक भाषिक एकरूपता बढ़ौत। समग्रतः ई कृति मैथिलीमे आधुनिक अपराध, डिजिटल अर्थतन्त्र, न्यायिक ज्ञानमीमांसा आ पारिवारिक स्मृतिक दुर्लभ समवाय उपस्थित करैत अछि।

बीजशब्द

बिज्जी : गोहि सभक बीच ·मैथिली उपन्यास ·आख्यान-रचना ·स्मृति · सामाजिक इतिहास

१.२८. गजेन्द्र ठाकुर- बिज्जी : गोहि सभक बीच- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

“बिज्जी : गोहि सभक बीच”

न्याय-दर्शन, अपराध-जाल, स्मृति आ वितरित पहराक औपन्यासिक संरचना

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य कथाशास्त्र, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधारपर विस्तृत शोध-समीक्षा

मूल कृति: गजेन्द्र ठाकुर

पाठ-परिसीमा: ५१० पृष्ठ · ४१८ कथात्मक प्रसंग · ५१,८०६ शब्दक कथाभाग

सारांश

“बिज्जी : गोहि सभक बीच” अपराध-उपन्यास, पारिवारिक त्रासदी, न्याय-दर्शन, वित्तीय अपराधक सामाजिक इतिहास आ आत्मपरक लेखन—एहि पाँच धाराकेँ एक दीर्घ कालरेखामे जोड़ैत अछि। कृतिक आरम्भ गढ़ नारिकेलक घरमे बिज्जी–गहुमन संघर्षसँ होइत अछि; एहि सूक्ष्म घरेलू दृश्यक रूपक बादमे निविदा-उगाही, सत्यप्रकाश कर्णक सन्दिग्ध मृत्यु, दिगन्त-जाल, डिजिटल जुआ, धन-वाहक खाता, पुरान अपराधक पुनर्जाँच, न्यायालयी परीक्षण, पुनर्वास, नीति-परिवर्तन आ अन्ततः ईशानक लेखन धरि फैलैत अछि। पाठक संगणनासँ कथाभागमे ४१८ पृथक प्रसंग आ ५१,८०६ शब्द भेटैत अछि। आरम्भिक पचास प्रसंगक औसत आकार २०८.३ शब्द अछि, जखन कि अन्तिम अड़सठि प्रसंगक औसत ८१.१ शब्द; एकर अर्थ ई जे उपन्यास क्रमशः विस्तृत अन्वेषणात्मक गद्यसँ सूत्रात्मक, स्मृति-प्रधान आ आत्मसमीक्षात्मक लय दिस बढ़ैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ करुण रस कृतिक स्थायी भाव-संरचनाकेँ नियंत्रित करैत अछि; भय, वीर, शान्त आ रौद्र ओकर सहचर रस बनैत अछि। बिज्जी, गोहि, गहुमन, किनार, पानि आ पहराक आवर्ती रूपक ध्वनि-संरचना बनबैत अछि, जखन कि कथाक अनेक सूक्ति-वाक्य वक्रोक्तिक माध्यमसँ नैतिक विचारकेँ स्मरणीय बनबैत अछि। औचित्यक कसौटी पर कृतिक आरम्भिक आ मध्य भाग अत्यन्त नियंत्रित अछि, मुदा उत्तरार्धमे दर्शनात्मक सूक्तिक घनत्व बढ़ला कारण किछु ठाम कथात्मक स्वाभाविकता संकुचित होइत अछि। पाश्चात्य कथाशास्त्रक दृष्टिसँ ई कृति ‘के अपराधी?’ प्रश्नसँ

अधिक ‘हम की जानैत छी, कोना जानैत छी, आ कतेक निश्चित छी?’ प्रश्नपर केन्द्रित ज्ञानमीमांसक अपराध-उपन्यास अछि। प्रत्यक्ष, अनुमान, साक्ष्य, स्मृति, अभाव, प्रतिपरीक्षण, वैकल्पिक परिकल्पना आ निर्णय—ई सभ कथाक रूप-विधान बनि जाइत अछि। नव्य-न्यायक आलोकमे कृति विशेष महत्त्व रखैत अछि। प्रत्यक्ष आ अनुमानक स्पष्ट भेद, हेतु-साध्य सम्बन्धक सावधानी, व्याप्ति गढ़बाक जोखिम, हेत्वाभासक निरन्तर पहचान, शब्द-प्रमाणक वक्ता-सीमा, संशयकेँ दोष नहि मानि जाँचक आरम्भ मानब, आ अभाव अथवा मौनकेँ स्वतः सकारात्मक प्रमाण नहि बनायब—ई सभ उपन्यासक कथात्मक नीति अछि। स्मृतिक मानवीय मूल्य स्वीकारल गेल अछि, मुदा स्मृति आ नूतन प्रमाणक भेद निरन्तर राखल गेल अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक कसौटी पर कृति केन्द्र आ हाशिया, अभिलेख आ मौखिक स्मृति, संस्था आ व्यक्ति, पुरान भ्रष्टाचार आ नब डिजिटल अपराध, राज्यक प्रमाण आ परिवारक दुख—सभकेँ समान आलोचनात्मक अनुशासनमे रखैत अछि। न तऽ सरकारी कागच स्वतः सत्य, न पीड़ितक स्मृति स्वतः दोषसिद्धि; निष्कर्ष मजबूत, सम्भावित, विवादित अथवा अज्ञात रहि सकैत अछि। कृतिक सभसँ पैघ उपलब्धि ओकर ‘वितरित पहरा’क धारणा अछि। अन्त धरि कोनो एक नायक नहि बचैत; मृणालिनी, ईशान, रचना, अनिरुद्ध, मयंक, तृषा, सबीना, शैलेश, रितेश, वैदेही, विद्यालय, बैंक, न्यायालय, प्रशिक्षण आ पाठक—सभ पहराक छोट-छोट केन्द्र बनैत अछि। एहि कारण उपन्यास प्रतिशोधक आख्यान नहि, प्रमाण-अनुशासनक नागरिक आख्यान बनि उठैत अछि। शुद्ध मैथिली निखार-अडिटमे मूल कथाभागमे पाँच रोमन प्रयोग भेटल—(initials) तीन बेर, (motive) एक बेर, (Final) एक बेर—जकर मैथिली विकल्प क्रमशः “नामाक्षर”, “प्रयोजन” आ “अन्तिम” अछि। हिन्दी-प्रभावित “मगर”, “क्यों”, “क्योंकि”, “जरूरी”, “चाय”, “गायब” आदि रूप सेहो पर्याप्त संख्या मे अछि; सम्पादकीय निखारमे संदर्भानुसार “मुदा/तैयो”, “किएक”, “किएक तँ/कारण”, “आवश्यक”, “चाह”, “बिलायल/निपत्ता” आदिक प्रयोग कृतिक भाषिक एकरूपता बढ़ौत। समग्रतः ई कृति मैथिलीमे आधुनिक अपराध, डिजिटल अर्थतन्त्र, न्यायिक ज्ञानमीमांसा आ पारिवारिक स्मृतिक दुर्लभ समवाय उपस्थित करैत अछि।

बीजशब्द: अपराध-उपन्यास; न्याय-दर्शन; नव्य-न्याय; प्रमाण; अनुमान; स्मृति; डिजिटल जुआ; धन-वाहक खाता; करुण रस; ध्वनि; समानान्तर इतिहास; मैथिली गद्य।

१. भूमिका: अपराधक कथा सँ प्रमाणक कथा धरि

एहि कृतिक साहित्यिक महत्त्व केवल एतबा नहि जे ई निविदा-उगाही सँ डिजिटल जुआ धरि अपराधक रूप-परिवर्तन देखबैत अछि। एकर वास्तविक वैचारिक केन्द्र “ज्ञान” अछि। सत्यप्रकाशक मृत्यु हत्या छल कि दुर्घटना, ककरा की ज्ञात छल, कोन कागच ककर सीमा धरि बोलैत अछि, स्मृति कतेक भरोसायोग्य, मौनक अर्थ की, गलत संकेत की, आ अदालत कतेक दूर अनुमानकेँ दण्डक आधार बना सकैत अछि—ई प्रश्न कथाक प्रत्येक पैघ मोड़केँ नियंत्रित करैत अछि। एहि कारण उपन्यासक अन्वेषण केवल पुलिसीय नहि, ज्ञानमीमांसक अछि। अपराधी पकड़ब एक लक्ष्य अछि; गलत आदमी नहि पकड़ब दोसर, समान रूपेँ आवश्यक लक्ष्य।

कथाक पहिल दृश्य—बिज्जी द्वारा गहुमनकेँ रोकब—एक सरल लोक-रूपक जकाँ आरम्भ होइत अछि। धनेश्वरीक व्याख्या एहि रूपककेँ तीन स्तर दैत अछि: साँप प्रत्यक्ष भय; गोहि अदृश्य अथवा विलम्बित भय; बिज्जी पहरा। बादक पाँच सय पृष्ठक आसपास ई त्रयी अनेक रूप बदलैत अछि। उगाहीक फोन गहुमन सन प्रत्यक्ष अछि, आर्थिक जाल गोहि सन पानिक भीतर; जाँचकर्ता बिज्जी सन किनार पढ़ैत अछि। उत्तरार्धमे कृति अपनहि रूपकक अतिरेक पर प्रश्न उठबैत अछि आ ईशान पाण्डुलिपिसँ बिज्जी/गोहि-प्रयोग काटैत अछि। ई आत्मसमीक्षा रूपककेँ स्थिर प्रतीक नहि, सम्पादित साहित्यिक साधन बनबैत अछि।

कृति बहु-पीढ़ी समय-विस्तार रखैत अछि। बालक ईशान पहिने पारिवारिक कथा सुनैत अछि; किशोर अवस्था मे पिता क मृत्यु देखैत अछि; वयस्क भऽ वित्तीय विश्लेषक बनैत अछि; पुरान जाँचक पुनरुत्थान देखैत अछि; अन्ततः लेखक बनि घटनाकेँ साहित्यिक रूप दैत अछि। एहि दीर्घ कालमे धनेश्वरी, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, मृणालिनी क्रमशः विदा होइत छथि, मुदा हुनकर वाक्य, पोथी, कलम, चश्मा, निर्णय-पद्धति आ सावधानी अगिला पीढ़ीमे रूपान्तरित

होइत अछि। तें कृतिक अन्त “अपराध समाप्त” नहि, “पहरा समाप्त नहि” पर होइत अछि।

शोध-समीक्षाक उद्देश्य चारि स्तरपर अछि: प्रथम, कृतिक सम्पूर्ण कथात्मक देहकेँ ४१८ प्रसंगक आधारपर निबद्ध करब; दोसर, भारतीय काव्यशास्त्र आ पाश्चात्य कथाशास्त्रक तुलनात्मक कसौटी पर साहित्यिक मूल्याङ्कन; तेसर, नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसाक उपकरणसँ प्रमाण-अनुशासनक परीक्षण; चौठ, विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधारपर अभिलेख, हाशिया, सत्ता, स्मृति आ अनिश्चितताक सम्बन्ध पढ़ब। अन्तिम खण्डमे शुद्ध मैथिली निखार-अडिट अछि, जाहिमे रोमन प्रयोग, हिन्दी-प्रभावित शब्द, शब्द-संगति आ शैलीगत एकरूपताक ठोस सूची देल गेल अछि।

२. पाठ-परिसीमा, गणना आ शोध-पद्धति

मूल वर्ड-पाठ ५१० पृष्ठक अछि। लेखकीय टिप्पणी पछाति कथाभागक आरम्भ गढ़ नारिकेलक रातिसँ होइत अछि। “❖” द्वारा विभाजित पाठकेँ यान्त्रिक रूपेँ गनला पर ४१८ कथात्मक प्रसंग भेटैत अछि; अन्तिम “❖” केवल समापन-चिह्न अछि, अलग रिक्त प्रसंग नहि। एहि ४१८ प्रसंगमे कुल ५१,८०६ शब्द अछि। एहि समीक्षा मे प्रत्येक प्रसंगक पाठ-संकेत, प्रमुख पात्र/संस्था, शब्द-संख्या आ विषय-सूत्र परिशिष्टमे देल गेल अछि, जाहिसँ कोनो कथात्मक खण्ड समीक्षा-बाहिर नहि रहय।

पद्धति चारि तहमे चलैत अछि। “प्रत्यक्ष पाठीय तथ्य” श्रेणीमे शब्द-संख्या, प्रसंग-संख्या, पात्रक नाम-आवृत्ति, रूपक-शब्दक आवृत्ति, रोमन शब्द आ दृश्य-लम्बाइ जकाँ मापनीय वस्तु अछि। “तुलनात्मक व्याख्या” श्रेणीमे रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, कथन-विन्यास, बहुभाषिकता आ समय-संरचना अछि। “ज्ञानमीमांसक परीक्षण”मे प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, संशय, व्याप्ति, हेत्वाभास, अभाव आ निर्णयक कार्य देखल गेल अछि। “इतिहास-परीक्षण”मे स्रोतक सत्ता, अभिलेखीय मौन, हाशियाक गवाही, डिजिटल अभिलेख, समयान्तर, प्रतिकूल साक्ष्य आ निष्कर्षक अनिश्चितता अलग-अलग देखल गेल अछि।

एहि पद्धतिक एक मुख्य नियम अछि: पाठ जतेक कहैत अछि, समीक्षा ओतबे तथ्य मानत; ओकर ऊपरक अर्थ स्पष्ट रूपेँ व्याख्या रूपमे प्रस्तुत होयत। उदाहरणत: सत्यप्रकाशक हत्या-विषयक अन्तिम न्यायालयी निष्कर्ष आ लेखक-पात्र ईशानक साहित्यिक निष्कर्ष एक नहि। उपन्यास स्वयं एहि भेदकेँ बारम्बार रेखांकित करैत अछि; तेँ समीक्षामे सेहो “सम्भव”, “संकेत”, “पुष्टि”, “असिद्ध” आ “अज्ञात” शब्दक अर्थ अलग राखल गेल अछि।

२.१ मात्रात्मक संरचना

मानक	गणना	टिप्पणी
कुल पृष्ठ	५१०	मूल वर्ड-पाठ
कथात्मक प्रसंग	४१८	“❖” द्वारा विभाजित, अन्तिम रिक्त खण्ड हटाकऽ
कथाभागक शब्द	५१,८०६	लेखकीय टिप्पणी पछाति कथात्मक देह
बिज्जी उल्लेख	120	आवर्ती रूपक/जीव
गोहि उल्लेख	62	अदृश्य/दीर्घकालिक जोखिमक रूपक
गहुमन उल्लेख	21	प्रत्यक्ष भयक रूपक
प्रमाण उल्लेख	107	ज्ञानमीमांसक केन्द्र
सत्य उल्लेख	275	नैतिक आ ज्ञानमीमांसक केन्द्र
अपराध उल्लेख	273	विषयक केन्द्र
पहरा उल्लेख	76	कृतिक अन्तिम सामाजिक सूत्र

३. कथात्मक वास्तु: दस दीर्घ चरण

प्रसंग	चरण	मुख्य गतिकी
१–१०	लोक-रूपक, निविदा आ मृत्यु	बिज्जी–गहुमन दृश्य; आठ बरख बाद विकास-ठेका; छह प्रतिशतक दबाव; सत्यप्रकाशक डायरी; सन्दिग्ध सड़क-मृत्यु; अनिरुद्धक आरम्भिक प्रमाण-अनुशासन।
११–३४	निविदा-जालक संस्थागत अन्वेषण	टोल-चित्र, नकली वाहन, लोकसेतु, प्रवाही, दिगन्त, प्रणवेश; गलत संकेतक सुधार; आर्थिक अपराध-जाँचक संयुक्त ढाँचा।
३५–५९	अम्बरक बीज आ कालान्तर	सत्यप्रकाशक कागचमे खेल-प्रायोजनक छाप; दिगन्तक आर्थिक दोषसिद्धि;

प्रसंग	चरण	मुख्य गतिकी
		हत्या असिद्ध; ईशानक शिक्षा; अम्बरक नब डिजिटल रूप।
६०–१०३	डिजिटल जुआ आ धन-वाहक जाल	अभिषेकक पतन; रितेश; धन-वाहक खाता; रचना सिन्हाक जाँच; अम्बरक वैध/अवैध तह; राज्य आ केन्द्रीय जाँचक सीमांकन; ईशानक हित-संघर्ष।
१०४–१५७	धनेश्वरीक मृत्यु, अभिलेख आ पुनर्जाँच	धनेश्वरीक अन्तिम वाक्य; प्रदीप, बिरजू, शशांक, पुरान बही; देवांशु/हरिचरणक पुराने सम्बन्ध; सत्यप्रकाश-मामला पुनः खोलबाक आधार।
१५८–२१६	पुरान आ नब अपराधक समानान्तर संयोजन	बीस वर्ष पुरान वाहन, हरिचरण, उदयनाथ, सौरभ; जुआ-जालक गिरफ्तारी; बाढ़क बीच पारिवारिक स्मृति; अपराधक संरचना आ व्यक्तिक दायित्वक अलगाव।
२१७–२६२	न्यायालयी परीक्षण	बैंक, सबीना, अभिषेक, रितेश, प्रदीप, केशव, सौरभ, मयंकक गवाही; प्रतिपरीक्षण; नब जुआ-मामलाक निर्णय; देवांशु-मामलामे परिस्थितिजन्य कड़ीक सीमा; आंशिक न्याय।
२६३–३१०	निर्णय पछाति जीवन, पुनर्वास आ नीति	तृषा, सबीना, अभिषेक, शैलेश, रितेश, बैंक-दिशानिर्देश, पुस्तक-कोष, शोध; अनिरुद्धक मृत्यु; ईशानक लेखनक प्रारम्भ।
३११–३५८	पहराक सामाजिक विस्तार	छोट ठगी, गलत पहचान, प्रशिक्षण, आवाज-नकल, वित्तीय सावधानी, संस्थागत सुधार, अनाम आठ पाँति, पाण्डुलिपिक आत्मसमीक्षा।
३५९–४१८	विरासत, मृत्यु आ आत्मपरक समापन	मृणालिनीक स्वास्थ्य/मृत्यु; पोथी, कलम, चश्मा; रचना सेवानिवृत्ति; दोषीसबहक उत्तरजीवन; ईशानक पाण्डुलिपि; अन्तिम नदी-दृश्य; वितरित पहरा।

३.१ आरम्भक दृश्य एक “बीज-संरचना”

पहिल प्रसंगमे घर, पानि, गहुमन, बिज्जी, बच्चा, दादी आ पहरा—एहि सात घटकक संक्षिप्त रूप उपस्थित अछि। बादमे घर समाज/राज्यक सूक्ष्म रूप बनैत अछि; पानि समय आ अपराध-जालक प्रवाह; गहुमन प्रत्यक्ष आ तात्कालिक हिंसा; गोहि विलम्बित, जटिल, पानिक भीतरक संरचनात्मक जोखिम; बिज्जी सावधान जाँच; बच्चा अगिला पीढ़ी; दादी ज्ञानक लोक-परम्परा। बीज-संरचना प्रभावी कारण ई बादक कथानक पर बाह्य रूपेँ चिपकाओल नहि, पात्रक स्मृति द्वारा धीरे-धीरे विस्तृत होइत अछि।

३.२ मध्यभागक वास्तविक मोड़—अपराधक “डिजिटल रूपान्तरण”

दिगन्तक आर्थिक जाल पर कार्रवाई कृतिक पहिल सम्भावित अन्त हो सकैत छल। मुदा कथाकार एतय समाप्त नहि करैत। अम्बरक छोट पर्ची, खेल-प्रायोजन, नब अनुप्रयोग, “कौशल-आधारित” प्रतियोगिता आ निजी रात्रि-कक्ष द्वारा अपराधक तकनीक बदलि जाइत अछि। ई संरचनात्मक निर्णय कृतिक महत्व बढ़बैत अछि, कारण अपराधकेँ एक खलनायकक निजी दुष्टता नहि, अनुकूलनशील संरचना रूपमे देखाओल गेल अछि। पुरान उगाही “स्थानीय सहयोग” कहल; नब जुआ “मनोरंजन”, “समुदाय-सहयोगी भुगतान”, “प्रचार-काज” आ “जोखिम-प्रबन्ध”क भाषा पहिरैत अछि। भाषा अपराधक आवरण बनैत अछि।

३.३ न्यायालय अन्त नहि, दीर्घ उपसंहारक आरम्भ

अनेक अपराध-उपन्यास दोषसिद्धि पर समाप्त होइत अछि। एहि कृतिमे निर्णय प्रसंग २५०–२५७ लग प्रमुख शिखर अछि, मुदा कथा ४१८ धरि चलैत अछि। एहि दीर्घ उत्तरार्धमे दण्डक बाद परिवार, रोजगार, विश्वास, संस्थागत सुधार, नीति, शिक्षा, पुनर्वास, स्मृति, वृद्धावस्था आ लेखनक जीवन देखाओल गेल अछि। एहि कारण कृति “समाधान”क भ्रम तोड़ैत अछि। न्यायालय अपराधक विधिक भाग नापि सकैत अछि; दुख, प्रतिष्ठा, समयक क्षति, पीढ़ीगत भय आ सामाजिक विश्वासक मरम्मति अलग प्रक्रियासभ अछि।

४. पात्र-संरचना: एकल नायक नहि, साक्ष्यक समुदाय

ईशान कथाक दीर्घतम जीवन-रेखा अछि, मुदा ओकरा पारम्परिक नायक कहब अधूरा होयत। बालक ईशान पहिने बिज्जीक पदचिह्न देखैत अछि;

किशोर ईशान पिता क मृत्यु झेलैत; वयस्क ईशान वित्तीय प्रतिरूप पढ़ैत; संघर्षशील ईशान अपन क्रोधक पूर्वाग्रह पहचानैत; अन्तिम ईशान लेखक बनि रूपक, तथ्य आ निजी शोकक सीमा तय करैत अछि। ओकर विकास “अपराधी पकड़ब” सँ “सही पद्धति बचायब” धरि अछि।

मृणालिनी उपन्यासक नैतिक केन्द्र छथि। ओ पति क मृत्यु पर न्याय चाहैत छथि, मुदा झूठा निश्चितता नहि। देवांशु विरुद्ध गवाहीमे हुनकर वाक्य—सत्यप्रकाशक नाम पर असत्य नहि—कृतिक नैतिक अनुशासनकेँ संक्षेप करैत अछि। उत्तरार्धमे ओ ईशानक लेखनकेँ सेहो नियंत्रित करैत छथि: मृतककेँ देवता नहि बनाउ, सभ बात नहि लिख, दुखकेँ साहित्यिक उपकरण मात्र नहि बनाउ। एहि कारण मृणालिनी पीड़ितक प्रतिनिधि होइतहुँ पीड़ित-केन्द्रित पक्षपातक प्रतिरोध करैत छथि।

धनेश्वरीक भूमिका आकारमे अपेक्षाकृत छोट, प्रभावमे अत्यन्त पैघ। हुनकर लोक-बुद्धि “किनार”, “पहरा”, “साँप”, “पानि” रूपेँ चलैत अछि। ओ औपचारिक न्याय-दर्शन नहि पढ़बैत छथि, मुदा संशय, सावधानी, आत्म-रक्षा आ प्रतिशोध-विरोधक घरेलू सूत्र अगिला पीढ़ीकेँ दैत छथि। हुनकर पोथी अन्ततः निजी ग्रन्थ, पारिवारिक अभिलेख, अनाम नागरिक आचार-संहिता आ साहित्यिक स्रोत—चारू बनि जाइत अछि।

अनिरुद्ध चौधरी पद्धतिक प्रथम संस्थागत रूप छथि। हुनकर मुख्य गुण “नाम” पर नहि, तथ्यक श्रेणी पर जोर अछि। गलत जारल ट्रक भेटला पर निराश नहि भऽ प्रश्न बदलनाइ—“कियो नकली उत्तर किएक बनौलक?”—उपन्यासक अन्वेषणात्मक बुद्धिक श्रेष्ठ उदाहरण अछि। सेवानिवृत्ति बादो हुनकर भाषा ईशान आ रचना मे जीवित रहैत अछि। हुनकर मृत्यु नायकक समाप्ति नहि, पद्धतिक उत्तराधिकार बनैत अछि।

रचना सिन्हा कृतिक दोसर दीर्घ संस्थागत स्तम्भ छथि। साइबर थाना सँ आर्थिक-अपराध, न्यायालय, प्रशिक्षण आ सेवानिवृत्ति धरि हुनकर यात्रा देखबैत अछि जे पद्धति व्यक्ति पर निर्भर नहि रहबाक चाही। रचना करुणा आ वर्गीकरण दुनू राखैत छथि: अभिषेक, सबीना, शैलेश जकाँ पात्रसभकेँ पूर्ण अपराधी वा पूर्ण निर्दोषक सुविधाजनक डिब्बामे नहि रखैत। अन्ततः हुनकर

“जे देखलहुँ से कहू; जे अनुमान, से अनुमान कहू; जे नहि जनैत छी, खाली छोड़ू” सूत्र कृतिक सर्वाधिक स्पष्ट ज्ञानमीमांसक विधान बनैत अछि।

देवांशु, केशव, सौरभ, प्रदीप, मनोज जकाँ दोषी/संदिग्ध पात्रक रचना सेहो एकरेखा नहि। कियो आर्थिक दबाव स्वीकारैत अछि मुदा हत्या-निर्देश असिद्ध रहैत; कियो वैध संस्थाक भीतर अवैध तह अलग रखैत; कियो निवेशक-भाषामे दूरी बनबैत; कियो अपराध स्वीकारि बादमे विधिक सहायता करैत। ई जटिलता अपराधकेँ क्षमा नहि करैत; बल्कि दायित्वक मात्रा, ज्ञान, आशय आ काजक भेद स्पष्ट करैत अछि। एहि बिन्दुपर उपन्यास नैतिक सरलीकरणक विरोधी अछि।

४.१ प्रमुख नामक पाठीय आवृत्ति

नाम	उल्लेख
ईशान	436
रचना	356
मृणालिनी	275
अनिरुद्ध	226
सत्यप्रकाश	191
प्रदीप	136
देवांशु	98
केशव	96
मयंक	88
सौरभ	84
रोहित	83
रितेश	74
धनेश्वरी	68
विहान	68
अभिषेक	62
तृषा	60
हरिचरण	46
शैलेश	40
सबीना	38
वैदेही	20
मंजरी	19

नोट: आवृत्ति साहित्यिक महत्त्वक स्वत: माप नहि; ई केवल पाठीय उपस्थितिक संकेत अछि। धनेश्वरीक उल्लेख कम होइतहुँ प्रतीकात्मक प्रभाव अत्यन्त पैघ अछि।

५. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

५.१ रस: करुणक दीर्घ अधिष्ठान

कृतिक प्रधान रस करुण अछि, मुदा करुणा केवल मृत्यु-दृश्य पर आधारित नहि। सत्यप्रकाश, मोहन, धनेश्वरी, अनिरुद्ध, मृणालिनी—एहि प्रत्यक्ष मृत्युसभक अतिरिक्त कन्हैया रजकक बदनाम नाम, अभिषेकक बहिनक छूटल प्रवेश, सबीनाक बच्चाक उपचार, शैलेशक लत, प्रदीपक बेटी तृषाक टूटल विश्वास, निर्दोष खाताधारकक रोकल पेंशन—सभ “दीर्घ करुणा” बनबैत अछि। एहि करुणामे सामाजिक संस्थाक समय-सापेक्ष हिंसा समाहित अछि।

भयानक रस पहिल साँप-दृश्य, धमकीक फोन, ट्रक, आगजनी, पीछा, डिजिटल जाल आ घरक पुरान भयमे उभरैत अछि; वीर रस सत्यप्रकाशक अस्वीकार, मृणालिनीक गवाही, गवाहक साहस, रचनाक सावधानी आ ईशानक आत्मसंयममे; रौद्र अनेक पात्रक क्रोधमे; शान्त रस उत्तरार्धक स्वीकार, सीमित न्याय, स्मृति आ “असिद्धकेँ असिद्ध छोड़ू” भावमे। करुण सँ शान्त दिशाक ई दीर्घ गति कृतिक भावात्मक परिपक्वता अछि।

५.२ ध्वनि: बिज्जी, गोहि, पानि आ किनार

प्रत्यक्ष कथन सँ बेसी कृतिक स्मरणीय अर्थ रूपक-संकेतसँ बनैत अछि। बिज्जी केवल जीव नहि; सक्रिय, छोट, सतर्क, सीमा-रक्षक बुद्धि। गोहि केवल खलनायक नहि; ओ छिपल, संरचनात्मक, दीर्घकालिक जोखिमक संकेत। गहुमन प्रत्यक्ष खतरा; पानि बदलैत माध्यम; किनार अवलोकनक स्थान। महत्त्वपूर्ण ई जे उत्तरार्धमे लेखक-पात्र स्वयं एहि रूपकक अतिरेक काटैत अछि। ध्वनिक शक्ति तखन बढ़ैत अछि जखन प्रतीक पुनरावृत्ति सँ सूत्र नहि, मौन सँ अर्थ बनबैत अछि। अन्तिम दृश्य—गहुमन दिशा बदलैत, गोहि क्षणभरि ऊपर, बिज्जी किनार नहि छोड़ैत—एहि कारण सफल अछि जे कथाकार व्याख्यात्मक पाँति काटि दैत अछि।

५.३ वक्रोक्ति आ सूक्ति-विधान

कृतिमे “मृत देहक सामने भविष्यकाल सभसँ क्रूर व्याकरण”, “गलत प्रमाण सेहो प्रमाण होइत अछि—ओहि आदमीक मनक”, “जल्दी न्याय नहि, जल्दी बदला”, “हाथ खाली रहब अपराध नहि”, “न्याय केवल अन्तिम निर्णय नहि;

मार्गमे ककरा कुचलल गेल”—एहन अनेक सूक्ति-वाक्य अछि। ई वक्रोक्ति कथा कैं वैचारिक तीक्ष्णता दैत अछि। मुदा मात्रात्मक शैली-परीक्षण देखबैत अछि जे उत्तरार्धमे छोट अनुच्छेद आ सूत्रात्मक वाक्यक अनुपात बहुत बढ़ैत अछि। तैं जे वक्रोक्ति आरम्भमे बिजली सन चमकैत अछि, अत्यधिक पुनरावृत्तिमे स्वयं शैलीक सामान्य तापमान बनि सकैत अछि। सम्पादकीय कसौटी: प्रत्येक सूत्रक प्रश्न हो—की ई पात्र/दृश्यसँ अनिवार्य रूपेँ जन्मल, कि लेखकक टिप्पणी मात्र?

५.४ औचित्य: दर्शनक मात्रा

औचित्यक कसौटी पर कृतिक श्रेष्ठ भाग ओ अछि जतऽ दर्शन घटना भीतर घुलल—अनिरुद्धक घटनास्थल जाँच, मयंकक प्रतिशत-प्रतिरूप, अदालतक भार-प्रमाण, रचनाक गवाह-सीमा, मृणालिनीक सत्य-वचन। कमजोर ठाम ओ अछि जतऽ संवाद स्वत: पात्रक जीवन सँ अधिक सूत्र-संग्रह जकाँ लगैत अछि। विशेषत: उत्तरार्धक प्रशिक्षण, पुनर्वास आ आत्मलेखन प्रसंगमे एक्के नैतिक सूत्र अलग पात्रक मुखसँ लौटैत अछि। कृति स्वयं प्रसंग ३७२ आ ४०२ आसपास एहि दोषकेँ पहचानि “जहाँ बिज्जी अधिक—काटल; जहाँ न्याय-दर्शन पाठ बनि गेल—संवादमे घोलल” जकाँ आत्मसमीक्षात्मक सम्पादन करैत अछि। एहि आत्मचेतना कारण दोष पूर्ण दुर्बलता नहि, कृतिक विषय बनि जाइत अछि।

६. पाश्चात्य कथाशास्त्रीय समीक्षा

६.१ कथानक आ उलटाव

अरस्तूक कथानक-दृष्टि अनुसार क्रिया, उलटाव आ पहिचानक क्रम कृतिक आरम्भमे अत्यन्त प्रभावी अछि। सत्यप्रकाशक सफल निविदा तुरन्त धमकीमे बदलैत; “दुर्घटना” हत्या-संशयमे; जारल ट्रक निर्णायक प्रमाण बुझाइत, फेर नकली; दिगन्तक आर्थिक दोषसिद्धि हत्या सिद्ध नहि करैत; अम्बर अपराधक उत्तराधिकारी बुझाइत, मुदा ओकर मुख्य वैध प्रणाली आ निजी अवैध तह अलग निकलैत; देवांशु आर्थिक दबाव स्वीकारैत, हत्या-आदेश नहि; अन्तिम न्यायालयी निष्कर्ष “पूर्ण हत्या-दोष”क अपेक्षा सीमित दायित्व दैत। ई

बारम्बार उलटाव सनसनी लेल नहि, निष्कर्षक सीमा सिखेबाक लेल प्रयुक्त अछि।

६.२ समय-विन्यास

कृति दीर्घ कालरेखाक उपयोग करैत अछि। पहिल दृश्य पछाति आठ बरखक छलाँग; फेर अनेक वर्ष; डिजिटल युग; बीस वर्ष पुरान जाँच; निर्णय पछाति पुनर्वास; वृद्धावस्था; पाण्डुलिपि। आरम्भिक भागमे भविष्य-संकेत सेहो अछि—अम्बरक छोट नाम “बरख बाद पूरा युगक दरबज्जा” बनत—ई अग्रसंकेत कथाकेँ नियति-जकाँ रंग देत, मुदा साथहि पाठककेँ पैघ संरचना लेल तैयार करैत अछि। उत्तरार्धमे ईशान अपनहि जीवनक कथा लिखैत अछि; एहि आत्मपरक स्तर पर “घटना” आ “घटनाक लेखन” समानान्तर होइत अछि।

६.३ बहुस्वरता

उपन्यासमे गामक लोक-बुद्धि, ठेकेदारक भाषा, सरकारी लेखा, पुलिस-जाँच, बैंक-अनुपालन, साइबर अपराध, मीडिया-शीर्षक, अदालत, जेल, पुनर्वास, प्रशिक्षण आ साहित्यिक लेखन—अनेक भाषिक क्षेत्र अछि। एहि बहुस्वरतामे कोनो एक भाषा अन्तिम अधिकार नहि। मीडिया नाम चाहैत; अदालत प्रमाण; परिवार सत्य; बैंक जोखिम; अपराधी अस्पष्ट व्यावसायिक शब्द; दादी रूपक; लेखक मौन। बाख्तिनक बहुस्वरता-दृष्टि सँ ई कृति विशेष पठनीय अछि, कारण “सत्य” एक स्वरक घोषणासँ नहि, विरोधी भाषासभक परीक्षणसँ उभरैत अछि।

६.४ यथार्थक प्रतिनिधित्व

कृतिक प्रभावशाली यथार्थवाद पैघ अपराधी-दृश्यसँ बेसी साधारण वस्तुसभमे अछि—रसगुल्लाक डिब्बा, अलमारी, कारी डायरी, बैंक-पर्ची, सिलाइ मशीन, अस्पताल, विद्यालय, जेलक काँच, पुरान चश्मा, नर्सिङ्ग प्रवेश, मोबाइल मरम्मति, बाढ़-दाग। अपराधक परिणाम एहि घरेलू वस्तुसभ पर उतरैत अछि। औएरबाखक दैनन्दिन जीवनक गंभीर प्रतिनिधित्वक कसौटी पर ई गुण कृतिक दीर्घ सामाजिक भार बनबैत अछि।

६.५ अपराध-उपन्यासक रूपान्तर: “कियो के?” सँ “ज्ञान कोना?”

पारम्परिक रहस्य-रचनामे रहस्यक केन्द्र अपराधीक पहचान होइत अछि। एतय पहचान बारम्बार बदलैत आ विभाजित अछि। “दोषी के?” प्रश्नक उत्तर

अलग-अलग स्तर पर देवांशु, हरिचरण, केशव, मनोज, सौरभ, प्रदीप, रितेश आदि हो सकैत अछि; मुदा कृति एकल खलनायकक मॉडल अस्वीकार करैत अछि। मुख्य रहस्य ई अछि—कौन तथ्य केहन ज्ञान दैत अछि? एहि कारण पुस्तक अपराध-साहित्यकेँ ज्ञानमीमांसक उपन्यासमे बदलैत अछि।

६.६ शैलीगत जोखिम

दीर्घ कालावधि समेटबाक लाभ संग एक जोखिम अछि—उत्तरार्धमे दृश्य छोट, सूक्ति बेसी, आ पात्र-जीवन “स्थिति-अद्यतन” सन होमय लगैत अछि। मात्रात्मक रूपेँ प्रसंग १–५०क औसत २०८.३ शब्द सँ प्रसंग ३५१–४१८मे ८१.१ शब्द पर आबि जाइत अछि; चारि शब्द वा कमक अनुच्छेद ४६.४ प्रतिशत सँ ७०.५ प्रतिशत धरि बढ़ैत अछि। ई लय शोक, विरासत आ वृद्धावस्थाक टुकड़ा-टुकड़ा स्मृतिक अनुकूल अछि, मुदा निरन्तर प्रयोग पाठककेँ भावनात्मक दूरी दे सकैत अछि। किछु उत्तरार्धक प्रसंग एक-दोसरासँ जोड़ि मध्यम लम्बाइक दृश्य बनाओल जाए तँ पात्रक देह, स्थान, गन्ध, गतिविधि आ अवकाश फेर मजबूत भऽ सकैत अछि।

७. नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसाक आलोकमे

७.१ प्रत्यक्ष

उपन्यास प्रत्यक्षकेँ न्यूनतम आधार मानैत अछि। घटनास्थलपर दू मृत देह, दू वाहनक टक्कर, गायब चालक—एतबे तत्काल प्रत्यक्ष; “हत्या” वा “दुर्घटना” निर्णय नहि। जारल वाहनक रंग/आकार प्रत्यक्ष, ओकर पहचान अनुमान। डिजिटल जाँचमे स्क्रीनक पंक्ति प्रत्यक्ष अभिलेख हो सकैत, ओकर आशय अलग प्रश्न। एहि विभाजनसँ उपन्यास पुलिसीय उतावलापन रोकैत अछि।

७.२ अनुमान, व्याप्ति आ उपाधि

मयंकक दू प्रतिशतक पुनरावृत्ति अनुमानक आरम्भ अछि, निष्कर्ष नहि। अनेक ठेकेदार, एके अनुपात, एके परामर्श-भाषा—व्याप्ति गढ़बाक आकर्षण अछि; मुदा सामान्य पेशेवर शुल्क, उद्योग-रीति अथवा संयोग उपाधि बनि सकैत अछि। कृति बारम्बार वैकल्पिक स्पष्टीकरण राखि व्याप्तिक अतितीव्र निर्माण रोकैत अछि।

७.३ हेत्वाभास

“जारल ट्रक = सत्यप्रकाशक ट्रक”, “कौ. म. = कौशल महतो”, “पुरान धन = वर्तमान अपराध”, “अम्बरक नाम = अम्बर दोषी”, “एक खाता = पूरा जाल”—एहन अनेक सम्भावित हेत्वाभास जानि-बुझि रचल गेल अछि। जाँचक श्रेष्ठ क्षण ओ अछि जखन पात्र अपन पहिल मिलान पर प्रसन्न होइत, फेर प्रमाण ओकरा तोड़ैत। उपन्यास पाठककेँ सेहो एहि मनोवैज्ञानिक हेत्वाभासमे फँसाक‌ऽ सुधार करबैत अछि।

७.४ शब्द-प्रमाण

गवाहक कथन कतेक दूर विश्वसनीय? वक्ता की प्रत्यक्ष जानैत, की सुनल, की अनुमान? प्रणवेश, बासुदेव, कृपानन्द, रामअवतार, रितेश, प्रदीप—सभक कथनक सीमा अलग। “वक्ता जे जानैत अछि ताहि धरि रहय” कृतिक शब्द-प्रमाण सिद्धान्त अछि। अदालतमे प्रतिपरीक्षण एहि सीमा केँ संस्थागत बनबैत अछि।

७.५ स्मृति आ नूतन ज्ञान

धनेश्वरी, मृणालिनी, पुरान चालक, बही, निजी डायरी, फोटो—सभ स्मृतिक वाहक। कृति स्मृतिक नैतिक मूल्य स्वीकारैत अछि, मुदा ओकर आत्मविश्वासकेँ प्रमाणक वजन नहि मानैत। कृपानन्दक “शायद”क चारू कात घेरा, रामअवतारक भाषा-हानि, मृतकक ऊपर बादक विचार आरोपित नहि करबाक ईशानक निर्णय—सभ स्मृति आ प्रमाणक भेद रखैत अछि।

७.६ अभाव, मौन आ हरायल अभिलेख

कारी डायरी गायब, वाहन गायब, पुरान अभिलेख अपूर्ण, मिटाओल ई-पत्र, खाली दीवाल, नबम पाँति रिक्त—अभाव कृतिक मुख्य संरचना अछि। मुदा “नहि भेटल”क अर्थ “अपराध सिद्ध” नहि। अभाव प्रश्न बनबैत अछि; कखनो गलत प्रमाण बनाबयवला मनक साक्ष्य; कखनो केवल समयक क्षति। ई सावधानी नव्य-न्यायक अभाव-विश्लेषणक साहित्यिक समकक्ष बनैत अछि।

७.७ संशय आ निर्णय

संशय एतय कमजोरी नहि। संशयक बाद जाँच नहि करब दोष। ई वाक्य मयंकक पिताक शिक्षा रूपमे अबैत अछि, फेर पूरा अन्वेषण-पद्धतिक मूल बनैत अछि। निर्णय तखन उचित जखन विरोधी सम्भावना परीक्षणसँ कमजोर हो। देवांशु-मामलामे आर्थिक दबाव सिद्ध, मुदा विशिष्ट हत्या-निर्देश संदेहातीत नहि; तें न्यायालय दायित्व सीमित करैत अछि।

७.८ अवच्छेदक आ दायित्व-सीमा

“जानि-बुझि”, “प्रत्यक्ष”, “सहभागिता”, “आपराधिक आशय”, “मुख्य प्रणाली”, “निजी तह”, “पुरान स्रोत”, “जोखिम-प्रबन्ध”—एहि शब्दसभक सीमा मुकदमामे निर्णायक। नव्य-न्यायक अवच्छेदक-संवेदनशीलता सन, उपन्यास साधारण शब्दकेँ बिना सीमा छोड़ैत नहि। एक व्यक्ति अपराध-जालक हिस्सा हो सकैत, मुदा सभ अपराधक समान दायित्व नहि।

७.९ तर्क आ वैकल्पिक संसार

रचना आ टीम कई बेर दू सम्भव संसार बनबैत अछि—योजनाबद्ध हत्या बनाम वास्तविक दुर्घटना; वैध निवेश बनाम जानि-बुझि अपराधी वित्त; निर्दोष धन-वाहक बनाम कमीशन-आधारित सहभागी। तर्क एतय विरोधीकेँ हरायब नहि, प्रस्तावित निष्कर्षक विरोधी सम्भावना सहन करबाक क्षमता जाँचब अछि।

७.१० नव्य-न्याय आ कृतिक सीमा

कृति नव्य-न्यायक औपचारिक तकनीकी भाषा पूर्ण रूपेँ उपयोग नहि करैत, आ करबो आवश्यक नहि। साहित्यक शक्ति उदाहरण, चरित्र, समय आ करुणामे अछि। जखन दार्शनिक पद अत्यधिक प्रत्यक्ष होइत अछि, कथा पाठच-पुस्तक बनबाक जोखिम लैत अछि। श्रेष्ठ उपलब्धि ई जे अधिकांश ठाम दर्शन “जाँचक आदत” बनि प्रकट होइत अछि, शास्त्रीय प्रदर्शन नहि।

८. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधारपर

समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि इतिहासकेँ एकरेखा, एक केन्द्र अथवा एक अभिलेखक दास नहि मानैत। शक्ति आ अभिलेखक सम्बन्ध जाँचल जाए, मुदा शक्ति-विश्लेषण तथ्यक स्थान नहि ले; हाशियाक आवाज सुनल जाए,

मुदा हाशिया स्वतः सत्य घोषित नहि हो; मौन दर्ज हो, मुदा मौनक भीतर मनपसन्द कथा नहि भरल जाए; निष्कर्षकेँ मजबूत, सम्भावित, विवादित अथवा अज्ञात अवस्था मे रखबाक ईमानदारी रहय। एहि कसौटी पर "बिज्जी : गोहि सभक बीच" लगभग आदर्श साहित्यिक प्रयोगशाला प्रदान करैत अछि।

केन्द्रक स्रोतसभ—पुलिस, लोक निर्माण विभाग, बैंक, कम्पनी-अभिलेख, अदालत, डिजिटल आँकड़ा—महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा स्वतः विश्वसनीय नहि। हाशियाक स्रोतसभ—सरोजिनी, सबीना, अभिषेक, शैलेश, बासुदेव, पुरान चालक, धनेश्वरीक पोथी, मृणालिनीक स्मृति—मानवीय अर्थ खोलैत अछि, मुदा दोषसिद्धि स्वतः नहि करैत। कृति दुनू स्रोत पर समान प्रश्न करैत अछि: ककरा की ज्ञात? कखन? कोन सन्दर्भ? कोन लाभ/भय? कोन प्रतिकूल प्रमाण? एहि कारण केन्द्र/हाशियाक नैतिक द्वैत टुटैत अछि।

अभिलेखीय मौन कृतिक मुख्य ऐतिहासिक विषय अछि। पुरान कागच नष्ट, कम्पनी बन्द, चालक वृद्ध, गवाह मरल, स्मृति धुँधली, डिजिटल ई-पत्र मिटाओल। बीस वर्ष बाद राज्य "पूर्ण सत्य" वापस नहि बना सकैत। मुदा अपूर्णता इतिहासक अन्त नहि। अलग-अलग कमजोर स्रोत परस्पर पुष्टिकरणसँ सम्भावना मजबूत करैत अछि। ठीक एहि ठाम साहित्य न्यायालयसँ अलग होइत अछि: अदालत दण्ड लेल कठोर मानक चाहैत; इतिहास सम्भावित पुनर्निर्माण दर्ज कऽ सकैत; परिवार अधूर सत्य संग जीबैत; उपन्यास एहि तीनू स्तरकेँ मिश्रित नहि करैत।

समयक समानान्तरता सेहो महत्त्वपूर्ण। पुरान निविदा-जालक भाषा आ नब डिजिटल जुआ-जालक भाषा अलग, कार्य-तर्क समान—भय, मध्यस्थ, प्रतिशत, अस्पष्ट सेवा, प्रतिस्पर्धा/उपयोगकर्ताक कमजोरी, पैसा घुमेनाइ, जिम्मेदारीक तह। समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ ई "एके षडयंत्र निरन्तर" कहब नहि; बल्कि अलग कालक संरचनात्मक साम्यक परीक्षण। कृति सही रूपेँ सावधान अछि: अम्बरक नब अपराधक कारण मात्र पुरान दिगन्त नहि; सम्बन्ध किछु ठाम अभिलेखीय, किछु ठाम रूपात्मक, किछु ठाम असिद्ध।

कृतिक अन्तिम "वितरित पहरा" समानान्तर इतिहासक बहुकेन्द्रिकता सँ मेल खाइत अछि। कोनो एक महान नायक इतिहास नहि बनबैत। छोट बैंक-

अधिकारी, गामक महिला, शिक्षक, पुनर्वासित अपराधी, वकील, शोधार्थी, प्रशिक्षणार्थी, विद्यालय, परिवार—सभ भविष्यक स्रोत आ प्रतिरोधक केन्द्र बनैत अछि। इतिहास आ न्याय दुनूकेँ नागरिक स्तरपर वितरित करबाक ई कल्पना कृतिक मौलिक उपलब्धि अछि।

९. अपराध, कानून आ नैतिकता: दण्ड सँ बाहरक न्याय

कृति “दोषी/निर्दोष”क द्वैतक भीतर सेहो मात्रा देखैत अछि। अभिषेक कमीशन लैत, फेर जालक गाँठ बनैत, सहयोग करैत; सबीना खाता देबाक जोखिममे पड़ैत, मुदा बच्चाक उपचारक दबाव; शैलेश जुआक लत आ भर्ती-दायित्व बीच; प्रदीप आर्थिक अपराध करैत, बादमे विधिक सहायता; रितेश भर्ती करैत, बादमे अस्वीकार सीखैत। ई नैतिक जटिलता अपराधक औचित्य नहि, कारण-परिस्थिति आ उत्तरदायित्वक मात्रा अलग करबाक अभ्यास अछि।

पीड़ितक अधिकार सेहो सरलीकृत नहि। मृणालिनी न्याय चाहैत छथि, प्रतिशोध नहि; रितेश माफी चाहैत, पीड़ित माफ करबाक बाध्य नहि; कन्हैया कानूनी रूपेँ साफ भऽ गेलाक बाद सामाजिक दाग तुरन्त नहि मिटैत; मोहनक परिवारक प्रतिकर पिता वापस नहि आनैत। “न्याय भेटल?” प्रश्नक उत्तर तेँ हँ/नहि मे सम्भव नहि। कृति निर्णय, सत्य, प्रतिकर, स्मृति आ बाकी दुख—एहि पाँच तहक बात करैत अछि।

कानूनक धीमापन कृतिक आलोचना सेहो अछि, मुदा कानूनक सावधानीक रक्षा सेहो। पीड़ित लेल “शायद” असह्य; मुदा राज्य जँ दुखक वेग पर दण्ड देत तँ गलत आदमी पकड़ा सकैत। एहि नैतिक तनावकेँ कृति समाधान नहि, सह-अस्तित्व रूपमे राखैत अछि। ई परिपक्वता अपराध-साहित्यक सामान्य बदला-कथा सँ ओकरा अलग करैत अछि।

१०. प्रतीक-तन्त्र आ वस्तु-स्मृति

प्रतीक/वस्तु	पाठीय कार्य
बिज्जी	सक्रिय सावधानी, छोट किन्तु तीक्ष्ण पहरा; अन्तमे जीवक अपेक्षा पद्धति।
गोहि	पानिक भीतरक दीर्घ, संरचनात्मक, विलम्बित जोखिम; अदृश्य नेटवर्क।

प्रतीक/वस्तु	पाठीय कार्य
गहुमन	तात्कालिक प्रत्यक्ष भय, स्पष्ट हिंसा।
पानि/कमला-बलान	समय, प्रवाह, परिवर्तित माध्यम, बाढ़ द्वारा अभिलेख/घरक अस्थिरता।
किनार	अवलोकनक नैतिक दूरी; न पानिक भीतर डूबब, न पाछाँ हटब।
कारी डायरी	निजी स्मृति, असुरक्षित अभिलेख, अपराधक अदृश्य खर्चा।
धनेश्वरीक पोथी	घरक ज्ञान, अनाम परम्परा, खुलल/अधूर ग्रन्थ, पीढ़ीगत नैतिक अभिलेख।
अनिरुद्धक कलम	प्रक्रियात्मक अनुशासनक उत्तराधिकार।
मृणालिनीक चश्मा	देखबाक मानवीय/निजी दृष्टि; स्मृति आ आलोचनात्मक स्नेह।
सत्यप्रकाशक टूटल पेन	अधूर गवाही, मृतकक सीमित किन्तु स्थायी संकेत।
खाली दीवाल	असिद्धकेँ असिद्ध छोड़बाक संस्थागत स्थान; खाली ठाम भरबाक लोभक प्रतिरोध।

११. भाषा, लय आ शैलीक मात्रात्मक परीक्षण

प्रसंग	कुल शब्द	औसत शब्द/प्रसंग	औसत शब्द/अनुच्छेद	संवाद-अनुच्छेद	४ शब्द वा कम
1–50	10,417	208.3	7.01	35.1%	46.4%
51–100	7,252	145.0	6.31	28.7%	44.1%
101–150	6,929	138.6	4.58	38.9%	61.2%
151–200	6,979	139.6	4.16	37.6%	65.6%
201–250	5,840	116.8	4.45	34.5%	62.6%
251–300	4,552	91.0	4.34	26.5%	65.9%
301–350	4,321	86.4	4.10	36.6%	67.1%
351–418	5,516	81.1	3.84	27.4%	70.5%

तालिका स्पष्ट करैत अछि जे कृतिक रूप स्वयं समय संग बदलैत अछि। आरम्भमे दृश्य विस्तृत, वर्णनात्मक आ प्रक्रिया-प्रधान; मध्यभागमे संवाद, कागच आ जाँच; उत्तरार्धमे लघु अनुच्छेद, एक-वाक्यीय सूत्र, सूची, रिक्ति आ स्मृतिखण्ड। ई परिवर्तन केवल शैलीगत थकान नहि मानल जा सकैत, कारण विषय सेहो संस्थागत अन्वेषण सँ विरासत/लेखन दिस बदलैत अछि। तथापि अन्तिम एक-तिहाईमे लघुता एतेक नियमित भऽ जाइत अछि जे लयक विविधता घटैत अछि।

कथाकारक एक विशिष्ट शैली “तीन अथवा पाँच छोट पाँति” अछि—वस्तु अथवा सम्भावनाकेँ अलग पंक्तिमे रखब: “फाइल। बैंक कागच। बीमा। पुरान रसीद।” अथवा “चूल्हि। विद्यालय। बैंक। अदालत।” एहि शैलीसँ दृश्यात्मक जोर आ नैतिक सूची बनैत अछि। सीमित प्रयोग प्रभावी, अधिक प्रयोग कृत्रिम सम्पादकीय टुकड़ा बनि सकैत।

संवादक विशेषता प्रश्नोत्तर अछि। पुलिस, अदालत, परिवार, प्रशिक्षण—सभ ठाम प्रश्न कथानकक इंजन। एहि कारण गद्यमें “किएक?”, “तखन?”, “प्रमाण?”, “के?”, “कतेक?” जकाँ लघु प्रश्न बारम्बार। ई शैली नव्य-न्यायिक शास्त्रार्थक नाटकीय समकक्ष बनैत अछि।

१२. शुद्ध मैथिली निखार-अडिट

एहि अडिटक उद्देश्य मूल कृतिक कथावस्तु बदलनाइ नहि, भाषिक एकरूपता बढ़ेनाइ अछि। गणना कथाभाग पर आधारित अछि; शीर्ष-पृष्ठ आ प्रकाशकीय विवरण अलग राखल गेल अछि।

१२.१ रोमन प्रयोग

रोमन रूप	गणना	मैथिली रूप
(initials)	३ बेर	नामाक्षर / नामक आरम्भिक अक्षर
(motive)	१ बेर	प्रयोजन / उद्देश्य
(Final)	१ बेर	अन्तिम

सम्पादकीय निर्णय: मूल कथाभागमे कोनो रोमन शब्द आवश्यक नहि। सभ पाँच प्रयोग शुद्ध मैथिली रूपमे बदलल जा सकैत अछि।

१२.२ हिन्दी-प्रभावित वा असंगत रूप

मूल रूप	गणना	प्रस्तावित रूप	टिप्पणी
मगर	263	मुदा / तैयो / तथापि	सन्दर्भ अनुसार
शायद	57	शाइत / सम्भवत:	कथनक स्वर अनुसार
क्यों	35	किएक	स्वाभाविक मैथिली प्रश्नरूप
क्योंकि	32	कारण / एहि कारण जे / किएक तँ	वाक्य-सन्दर्भ अनुसार
जरूरी	28	आवश्यक	औपचारिक गद्य मे
कमरा	15	कोठली	स्थान-सन्दर्भ अनुसार

मूल रूप	गणना	प्रस्तावित रूप	टिप्पणी
कोठरी	4	कोठली	एकरूपता लेल
बरामदा	3	ओसारा	गृह-सन्दर्भमे
चाय	14	चाह	स्थायी शब्द-निखार
पानी	2	पानि	स्थायी शब्द-निखार
गायब	11	बिलायल / निपत्ता	अर्थानुसार
भूलल	1	बिसरल	स्मरण-सन्दर्भमे
तहखाना	1	तरहड़ि	स्थान-सन्दर्भमे
अभी	3	एखन	काल-सन्दर्भमे
सबसे	10	सभसँ	तुलनात्मक रूप
किसी	2	ककरो	सर्वनाम
कोई	4	कियो	सर्वनाम

"मगर"क सभ २६३ प्रयोग यान्त्रिक रूपेँ एके शब्दसँ बदलनाइ उचित नहि। विरोधक तीव्रता अनुसार "मुदा", "तैयो", "तथापि", "एहि परो" आदि चुनल जाए। "शायद"क सेहो "शाइत" आ "सम्भवतः" बीच शैलीगत भेद राखल जा सकैत अछि। संवादमे पात्रक सामाजिक भाषा कारण किछु बाहरी रूप जानि-बुझि राखबाक निर्णय सम्भव, मुदा कथावाचकक गद्य शुद्ध मैथिली मानक पर अधिक कठोर रहबाक चाही।

१२.३ रूप-विधानक विशेष सावधानी

"दैत" आ "देत" यान्त्रिक रूपेँ एक-दोसराक विकल्प नहि। (habitual/progressive) अर्थमे "दैत", भविष्य/प्रदानक सन्दर्भमे "देत" राखल जाए। अंतिम निखारमे प्रत्येक प्रयोग वाक्यगत अर्थसँ जाँचल जाए।

व्यक्तिवाचक सम्मानसूचक "छथि" आ निर्जीव/अमानवीय विषयक "अछि/छै/छी"क भेद निरन्तर राखल जाए। वर्तमान पाठमे अधिकांश प्रयोग स्वाभाविक अछि, मुदा दीर्घ ग्रन्थ होयबाक कारण अंतिम प्रूफमे विषय-क्रिया संगति अलग सँ जाँचब उपयोगी।

स्थायी शब्द-संगति लेल "पानि", "चाह", "कोठली", "ओसारा", "बिलायल/निपत्ता", "बिसरल", "तरहड़ि", "अएना", "पित्तरि", "केवाड़ी" जकाँ रूप एकरूप राखल जाए। मूल पाठमे "दरबज्जा" बारम्बार अछि; यदि कृतिक बोलचाल-पात्रता बचेनाइ उद्देश्य हो तँ "दरबज्जा"क स्थानिक स्वाद राखल जा सकैत, मुदा मानकीकृत संपादकीय रूप लेल "केवाड़ी" विचारणीय।

“हर” वा “हरेक”क बदला सन्दर्भानुसार “सभ”, “सभ बेर”, “सभ काल”, “प्रत्येक”क मैथिली रूप-विन्यास अपनाओल जाए। यान्त्रिक प्रतिस्थापन सँ अर्थ बिगड़ि सकैत, तें वाक्य-दर-वाक्य निर्णय चाही।

१३. कृतिक प्रमुख उपलब्धि

1. अपराध-उपन्यासकेँ ज्ञानमीमांसक अनुशासनमे बदलनाइ।

2. मिथिलाक ग्रामीण भूगोल, आधुनिक ठेका-अर्थतन्त्र, बैंकिंग, डिजिटल मंच आ न्यायालयकेँ एके साहित्यिक संसारमे जोड़नाइ।

3. पीड़ितक दुख आ आरोपक प्रमाण-सीमा दुनूकेँ समान नैतिक गंभीरता देनाइ।

4. गलत गिरफ्तारी, सामाजिक दाग, बैंक-खाता रोक, परिवारक टूटन जकाँ “जाँचक सह-क्षति”केँ कथाक विषय बनायब।

5. अपराधक तकनीकी रूपान्तर—निविदा-जाल सँ डिजिटल जुआ/धन-वाहक संरचना—केँ दीर्घ कालरेखामे देखायब।

6. दोषीसबहक बादक जीवन लिखब, मुदा कृत्रिम मोक्ष नहि देब।

7. धनेश्वरी–मृणालिनी–अनिरुद्ध–रचना–ईशान द्वारा लोक-बुद्धि, संस्थागत पद्धति आ साहित्यिक आत्मसमीक्षाक पीढ़ीगत श्रृंखला बनायब।

8. अन्तिम “वितरित पहरा” द्वारा नायकवादक स्थान नागरिक पद्धतिकेँ देब।

१४. पुनर्सम्पादन लेल प्राथमिक अनुशंसा

प्राथमिकता	अनुशंसा
प्रथम प्राथमिकता—भाषिक शुद्धि	पाँच रोमन प्रयोग हटाउ; “मगर/क्यों/क्योंकि/जरूरी/चाय/गायब” आदि सूचीबद्ध रूप संदर्भानुसार मैथिली बनाउ।
दोसर—उत्तरार्धक लय-विविधता	प्रसंग ३०० पछाति अत्यधिक एक-वाक्यीय अनुच्छेदक बीच किछु संयुक्त, देहधारी दृश्य राखू—स्थान, क्रिया, वस्तु, मौन आ संवादक मध्यम लम्बाइ वापस आनू।
तेसर—सूक्ति-छँटाई	जे नैतिक सूत्र पहिने स्थापित भऽ चुकल, ओकर पुनरावृत्ति कम करू। खास कऽ “पहरा”, “असिद्ध”, “सम्भावना”, “गलत आदमी”, “जीवन

प्राथमिकता	अनुशंसा
	चलैत रहल" प्रकारक आवृत्ति पर पंक्ति-दर-पंक्ति कसौटी लगाउ।
चौठ—संस्थागत पात्रक भिन्न स्वर	अनिरुद्ध, रचना, ईशान, मयंक सभ सावधान ज्ञानमीमांसक भाषा बाजैत छथि। मूल स्वभाव राखैत, हुनकर वाक्य-लय, हास्य, क्षेत्रीय शब्द, पेशागत शब्दावली अधिक अलग कएल जाए तँ बहुस्वरता बढ़त।
पाँचम—डिजिटल अपराधक व्याख्यात्मक भार	तकनीकी प्रक्रिया कथा लेल जतबा आवश्यक, ततेबे राखू। पात्रक निर्णय आ परिणामकेँ प्राथमिकता दिअ; उपन्यास प्रशिक्षण-पुस्तिका नहि बनय।
छठम—अन्तिम आत्मपरक खण्ड	ईशानक पाण्डुलिपि-लेखन अत्यन्त अर्थवान। एहि खण्डमे आत्मसमीक्षा राखू, मुदा "हम रूपक बेसी लिखलहुँ—काटल" प्रकारक मेटा-टिप्पणी सीमित राखला पर अन्तिम नदी-दृश्यक मौन आर शक्तिशाली बनत।
सातम—नाम/संस्था सूची	दीर्घ कृति होयबाक कारण प्रकाशन संस्करणमे प्रारम्भ वा अन्तमे "प्रमुख पात्र आ संस्था"क संक्षिप्त सूची पाठक-सहायता लेल उपयोगी, मुदा कथानक-भेदन नहि करय।

१५. निष्कर्ष

"बिज्जी : गोहि सभक बीच"क अन्तिम मूल्य एहि बातमे अछि जे ई अपराधक कथा कहैत-कहैत सत्यक नैतिकता पर उपन्यास बनि जाइत अछि। सत्य एतय "जे हम मानैत छी" नहि; जे प्रत्यक्ष अछि, जे अनुमान अछि, जे गवाही अछि, जे स्मृति अछि, जे अभाव अछि, आ जे अज्ञात अछि—एहि सभक सीमाबद्ध समवाय। कृति अपराधक भयकेँ दण्डक रोमांचसँ नहि, सही वर्गीकरणक कठिन श्रमसँ उत्तर दैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र ओकर भावात्मक आ प्रतीकात्मक देह बुझबैत अछि; पाश्चात्य कथाशास्त्र समय, बहुस्वरता, यथार्थ आ आत्मपरक रचनाकेँ; नव्य-न्याय प्रमाण-अनुशासनक कंकाल खोलैत अछि; विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अभिलेख, हाशिया, शक्ति, मौन, प्रतिकूल प्रमाण आ अनिश्चितताकेँ समान फ्रेममे रखैत अछि। चारू पद्धति एक जगह मिलैत अछि—कृति न तऽ

पूर्ण निश्चितताक प्रचार करैत, न निरर्थक संशयक। ओ अनुशासित संशयक साहित्य बनबैत अछि।

कृतिक भाषिक निखार आवश्यक अछि, विशेषतः रोमन प्रयोग आ हिन्दी-प्रभावित शब्दक घनत्व। शैलीगत रूपेँ उत्तरार्धक सूत्रात्मकता छाँटल जाए तँ प्रारम्भिक भागक देहधारी यथार्थवाद आ अन्तिम भागक स्मृति-मौन बीच संतुलन आर मजबूत होयत। तथापि वर्तमान रूपमे सेहो ई दीर्घ उपन्यास मैथिली गद्यक आधुनिक विषय-विस्तारक उल्लेखनीय उदाहरण अछि—जतऽ गामक ओसारा, कमला-बलानक कछार, सरकारी फाइल, बैंक-खाता, डिजिटल जुआ, कारा, अदालत, प्रशिक्षण-कक्ष आ लेखकक टेबुल एके नैतिक भूगोलक हिस्सा बनैत अछि।

अन्तिम दृश्य कृतिक सर्वोत्तम निर्णय अछि: गहुमन दिशा बदलैत अछि, गोहि क्षणभरि ऊपर आबि फेर पानिमे समा जाइत अछि, बिज्जी किनार नहि छोड़ैत। लेखक व्याख्यात्मक निष्कर्ष काटि दैत अछि। पाठक पर अर्थ छोड़ल जाइत अछि। एहि मौनमे पूरा कृतिक सार अछि—अपराधक रूप बदलत, प्रमाण अपूर्ण रहत, मनुष्य गलती करत; मुदा पहिचान, प्रश्न, सीमा आ पहराक आदत अगिला पीढ़ी धरि पहुँचि सकैत अछि।

परिशिष्ट क: प्रमाण-अवस्था अनुसार प्रमुख दाबी

अवस्था	उदाहरण
मजबूत पाठीय समर्थन	सत्यप्रकाश पर दबाव छल; निविदा-जाल आर्थिक अपराधमे बदलल; डिजिटल जुआक निजी तह चलैत; धन-वाहक खाता भर्ती भेल; अनेक दोषसिद्धि भेल।
सम्भावित/परिस्थितिजन्य	सत्यप्रकाशक मृत्यु योजनाबद्ध हिंसक दबावक परिणाम; देवांशुक ज्ञान/आशयक सीमा; पुरान धन आ नब जालक किछु दीर्घ सम्बन्ध।
विवादित	एकल “मुख्य” अपराधी; सभ पुरान/नब अपराधक एके अखण्ड षडचंत्र; प्रत्येक संस्थागत शीर्ष व्यक्तिक समान दायित्व।
अज्ञात/अपूर्ण	विशिष्ट हत्या-आदेशक पूर्ण प्रत्यक्ष श्रृंखला; हर अभिलेखीय मौनक कारण; सभ रूपकक एक निश्चित अर्थ।

परिशिष्ट ख: प्रमुख रूपक/विषयक पाठीय आवृत्ति

शब्द/सूत्र	उल्लेख
सत्य	275
अपराध	273
खाता	194
न्याय	178
बिज्जी	120
प्रमाण	107
बैंक	92
पहरा	76
अदालत	76
जुआ	64
गोहि	62
स्मृति	52
म्यूल	43
डिजिटल	38
मोबाइल	32
निविदा	29
गहुमन	21

परिशिष्ट ग: सम्पूर्ण ४१८ प्रसंगक पाठ-अडिट

नीचाँक सूची प्रत्येक "❖"-विभाजित कथात्मक प्रसंगकेँ एक बेर दर्ज करैत अछि। "पाठ-संकेत" मूल प्रसंगक आरम्भिक शब्दसभक संक्षिप्त उद्धरण अछि; "विषय-सूत्र" केवल खोज-सहायता लेल वर्गीकरण अछि, स्वतंत्र कथासार नहि। एहि सूचीक उद्देश्य समीक्षा-परिसीमा पूर्ण राखब अछि।

क्र॰	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
1	490	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी	गढ़ नारिकेलमे ओहि राति बरखा नहि भेल छल, तैयो माटि भीजल छल। दिनमे कमला-बलानक एकटा पातर धार खेतक…	परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
2	458	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश	आठ बरख बाद गढ़ नारिकेल बदलि गेल छल। कमला-बलान वैह छल—बरखा मास मे उग्र, जाड़मे संकुचित, गर्मीमे बालू…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक ·बिज्जी–

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
				गोहि रूपक
3	230	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश	अगिला सप्ताह काम शुरू भेल। तटबन्धक माटि काटल गेल। मजदूरक टोली आयल। ट्रक बालू, गिट्टी, मिट्टी अनैत। विभागक…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक
4	248	सत्यप्रकाश, मयंक	राजधानी नगरक लोक निर्माण विभागमे सहायक लेखाधिकारी मयंक झा सत्यप्रकाशकेँ पहिने सँ चिन्हैत नहि छलाह। हुनका लग प्रतिदिन…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच
5	293	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश, मयंक	सत्यप्रकाशक पाँचम फोन साँझमे आयल, जखन ओ बाँधक साइट सँ घर घुरि रहल छलाह। “आबो समय अछि।” “अहाँ…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
6	153	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश	दू सप्ताह बाद सत्यप्रकाश मरि गेलाह। समाचार पहिने “सड़क दुर्घटना” कहल गेल। भोरक करीब चारि बजे, जिलाक सीमा…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक
7	271	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध	जिला पुलिस अधीक्षक अनिरुद्ध चौधरी दुर्घटनास्थलपर सामान्यतः नहि जाइत छलाह। मामला थाना स्तरक। मुदा सत्यप्रकाशक मृत्यु दिन व्यापार-मण्डल,…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच
8	275	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, मयंक	ओहि राति मृणालिनी सत्यप्रकाशक अलमारी खोललनि। कारी डायरी गायब। ओ एक-एक दराज देखलनि। फाइल। बैंक कागच। बीमा। पुरान…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
9	269	सत्यप्रकाश, मयंक	राजधानी नगरमे मयंक झा ओहि राति कार्यालयमे असगर छलाह। “प्रवाही परामर्श” विषय खोज अपेक्षा सँ अधिक विचित्र निकलल।…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण
10	181	ईशान, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश	भोरमे बिज्जी फेर सत्यप्रकाशक आँगनमे आयल। धनेश्वरी ओकरा सभसँ पहिने देखलनि। ओ तुलसीक चौरा लग ठाढ़, नाक ऊपर…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक · बिज्जी–गोहि रूपक
11	409	मृणालिनी, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, मयंक, रोहित	अनिरुद्ध चौधरीक मेजपर तीन वस्तु एक संग पहुँचल। पहिल—टोल-प्लाजाक झलफलाइत चलचित्र। सत्यप्रकाशक गाड़ी ३ बजि ४१ मिनट पर…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण
12	278	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, रोहित, कौशल	परित्यक्त गोदाम शहरक बाहरी भागमे छल, मुदा “परित्यक्त” केवल कागच पर। भोरक उजास उठि रहल छल जखन अनिरुद्ध…	मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण
13	292	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, रोहित, कौशल	कौशल महतो दुपहर धरि थाना पहुँचि गेल। ओकर उमेर पचासक आसपास। धूपमे जरल चेहरा, आँखिक नीचाँ गहिर थकान।…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच
14	400	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, मयंक, रोहित	मयंक झा राजधानी नगरसँ साँझक बस पकड़ि अयलाह। सरकारी अधिकारीक लेल विभाग गाड़ी दैत अछि, मुदा ओ गाड़ी…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ ·

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
				परिवार/शोक
15	177	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश	सत्यप्रकाशक घरमे शोकक भीड़ कम होमय लागल। पहिल सप्ताह घर लोकसँ भरल छल। दोसर सप्ताह केवल निकट सम्बन्धी।…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
16	193	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, रोहित, कौशल	जारल वाहनक जाँच तीन दिन बाद पहिल झटका देलक। ओ सत्यप्रकाशकेँ ठोकर देनिहार ट्रक नहि छल। आकार मिलैत।…	मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण
17	63	अनिरुद्ध, रोहित	दबाव सचमुच आयल। पहिने जिला कार्यालय। फेर राजधानी नगर। एक वरिष्ठ अधिकारी फोन पर कहलनि—“मामला संवेदनशील बनि रहल…	कथानक-संक्रमण
18	187	अनिरुद्ध, शिवकुमार	ओही राति शहरक नब औद्योगिक पट्टीमे आगि लागल। सड़क निर्माणमे लागयवला मशीन, डीजल-टंकी, तिरपाल, रबर-पाइप—किछु मिनटमे आगि तेज…	निविदा/उगाही · बिज्जी–गोहि रूपक
19	127	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, रोहित, शिवकुमार	मोहनक मृत्यु पहिल बेर जाँचक दिशा सार्वजनिक रूपेँ बदलि देलक। सत्यप्रकाशक सड़क-दुर्घटना एखनहुँ विवादित छल। मुदा यार्डक आगि…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · स्मृति/लेखन
20	158	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, मयंक, रोहित	यार्ड आगजनीक बाद एक बात स्पष्ट भेल—निविदा-जाल केवल पैसा नहि लैए, प्रतिस्पर्धा नियंत्रित करैए। मयंक झा दस्तावेज फेर…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच
21	174	अनिरुद्ध, मयंक, रोहित	लोकसेतुक पंजीकृत कार्यालय एक सांस्कृतिक केन्द्रक ऊपर दू कोठलीमे छल। देवालपर लोकनृत्यक	निविदा/उगाही · पुनर्वास/नीति

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			फोटो, रक्तदान शिविरक प्रमाणपत्र, खेलक ट्रॉफी।...	
22	75	अनिरुद्ध, मयंक, रोहित	कार्यालय छोड़ैत समय मयंक आस्ते सँ कहलनि —“तारीखक गलती संयोग भऽ सकैत अछि।” “हँ।” “मगर तीन फोटोमे?” अनिरुद्ध रुकलनि।...	कथानक-संक्रमण
23	208	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध	मृणालिनीक घरक बाहर एक साँझ मोटरसाइकिल रुकल। दू युवक नहि उतरला। केवल एक लिफाफा देहरीक भीतर फेंकल गेल।...	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक · बिज्जी–गोहि रूपक
24	110	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, मयंक, रोहित	अगिला सप्ताह सरकार एक संयुक्त जाँच-व्यवस्था स्वीकृत केलक। नाम बहुत साधारण—“समेकित आर्थिक-अपराध अन्वेषण कक्ष।” न विशेष वर्दी। न...	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · पुनर्वास/नीति
25	121	अनिरुद्ध, मयंक, रोहित	नैना वर्माक काज शुरू भेल भुगतान-अभिलेखसँ। ओ हैकर नहि छलीह। न अपराधी मंचक विशेषज्ञ। ओ बैंकिंग प्रणालीक आँकड़ा...	कथानक-संक्रमण
26	180	अनिरुद्ध, मयंक, रोहित	दू सप्ताहक भीतर पहिल ठोस सम्बन्ध भेटल। प्रवाही परामर्श आ लोकसेतु जनसंपर्कक कार्यालय अलग। निदेशक अलग। बैंक अलग।...	निविदा/उगाही
27	144	अनिरुद्ध, मयंक, रोहित	“प्रणव बाबू”क खोजमे पाँच प्रणव निकलल। एक बीमा अभिकर्ता। एक विद्यालय शिक्षक। एक वाहन-विक्रेता। एक बेरोजगार युवक। एक...	निविदा/उगाही · डिजिटल जुआ

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
28	98	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, देवांशु	दिगन्तक प्रमुख छल— देवांशु रक्षित। उम्र पैंतालीस। अंग्रेजी-माध्यम शिक्षा। पहिने निर्माण-कम्पनीमे परियोजना प्रबन्धक। बादमे अपन “समन्वय” व्यवसाय। ओ सार्वजनिक…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच
29	157	अनिरुद्ध, मयंक	एक राति मयंक झा घर लौटैत समय अपन पाछाँ मोटरसाइकिल देखलनि। पहिल मोड़। दोसर मोड़। तेसर। ओ गति…	कथानक-संक्रमण
30	143	अनिरुद्ध, मयंक	मोहन पासवानक पत्नी सरोजिनी राजधानी नगर नहि आयलीह। ओ अपन गाममे तीन बच्चासँ घेरल बैसल छलीह जखन अनिरुद्धक…	कथानक-संक्रमण
31	81	अनिरुद्ध, मयंक, रोहित	कक्षमे फेर बैठक भेल। बोर्डपर आब पाँच गोल घेरा। प्रवाही। लोकसेतु। दिगन्त। सरिता। अम्बर क्रीड़ा। मध्येमे प्रश्नचिह्न। नैना…	निविदा/उगाही · डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण
32	285	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, रोहित, देवांशु	प्रणवेश स्वयं पुलिस लग आयल। ई घटना सभकेँ चकित केलक। सवेरे दस बजे स्वागत-कक्षमे कहल —“हमरा अनिरुद्ध चौधरीसँ भेटबाक…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच
33	141	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, मयंक	प्रणवेशक बयान तुरन्त लिखल नहि गेल। पहिने ओकर दावाक स्वतन्त्र जाँच। ओ जे तीन बैठकक तारीख कहलक, हुनकर…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
34	122	देवांशु	दिगन्त कार्यालयमे देवांशु रक्षित साँझ धरि बैसल छल। ओकरा पुलिसक आधिकारिक नोटिस एखन नहि भेटल। तैयो ओकरा खबर…	निविदा/उगाही · न्यायालय/प्रमाण
35	168	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध	गढ़ नारिकेलमे ईशान ओहि राति पहिल बेर बाबूक पुरान कागच अपन हाथसँ क्रमबद्ध करैत छल। मृणालिनी अनुमति देने…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · परिवार/शोक
36	400	ईशान, धनेश्वरी	राति गढ़ नारिकेलमे कमला-बलानक कछार पर कुहेस उतरल। ईशान अकेले नहि छल। धनेश्वरी ओकर संग छलीह। “एतय किएक…	निविदा/उगाही · डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
37	230	अनिरुद्ध, रोहित	प्रणवेश पाठकक सुरक्षा लेल ओकरा शहरसँ बाहर एक सरकारी अतिथि-गृहमे राखल गेल। ओकर पत्नी रंजना दू दिन बाद…	कथानक-संक्रमण
38	198	अनिरुद्ध, देवांशु	दिगन्त परियोजना समूहक कागच मँगाबय लेल विधिवत आदेश जारी भेल। देवांशु रक्षित अपन वकील संग उपस्थित भेल। ओकर…	निविदा/उगाही
39	204	अनिरुद्ध, मयंक, रोहित	दिगन्तक अभिलेख तीन कोठरी भरि गेल। कागच, ई-पत्रक मुद्रित प्रति, करार, यात्रा-बिल, उपठेका, परामर्श शुल्क, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाहन…	निविदा/उगाही · डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
40	259	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, मयंक, रोहित, कौशल	कन्हैया रजकक जीवन एहि बीच टूटि रहल छल। ओही वाहन-दलाल जकर नाम कौशल महतो देने छल। पुलिस ओकरा…	मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण
41	195	अनिरुद्ध, मयंक, रोहित	जनविश्वास सहकारी समिति कागच पर लगभग निष्क्रिय संस्था छल। ग्राम्य बचत, लघु ऋण, स्वयं-सहायता समूह। मगर ड्राफ्ट जारी…	निविदा/उगाही
42	195	अनिरुद्ध, रोहित	जितेन्द्र पाल अस्पतालक बिछौनापर बहुत कमजोर छल। ओ अपराधी जकाँ नहि, बीमार मनुष्य जकाँ साँस लैत छल। अनिरुद्ध…	निविदा/उगाही
43	142	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध	प्रणवेश द्वारा बताओल एक बात अन्ततः स्वतन्त्र प्रमाणसँ पुष्ट भेल। दिगन्तक भीतर “समायोजन सूची” बनैत छल—कौन ठेकेदार कतेक…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक
44	146	मृणालिनी, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध	सत्यप्रकाशक फोन अभिलेख फेर खोलल गेल। अम्बर क्रीड़ा मीडिया पर दू कॉल। पहिल—सात मिनट। दोसर—एकोनइस मिनट। दू कॉलक…	मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
45	189	मृणालिनी, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, मयंक, रोहित	अम्बरक संस्थापकक नाम छल—विहान सारंग। एक समय जिला-स्तरीय क्रिकेट खेलैत छल। चोटक बाद खेल छोड़ि विज्ञापनक काज शुरू…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · परिवार/शोक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
46	247	अनिरुद्ध, मयंक, देवांशु	दिगन्त विरुद्ध पहिल कानूनी कार्रवाई हत्या लेल नहि, वित्तीय अनियमितता लेल भेल। तीन संदिग्ध परामर्श भुगतान, फर्जी कार्यक्रम,...	निविदा/उगाही
47	151	—	प्रणवेशकेँ अदालतक समक्ष बयान लेल आनबाक दिन मौसम खराब छल। बरखा। कचहरीक बरामदा भीड़सँ भरल। सुरक्षा बढ़ाओल गेल।...	निविदा/उगाही · न्यायालय/प्रमाण
48	175	मृणालिनी, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, रोहित	दिगन्तक एक पुरान वाहन-समन्वयक अचानक स्वयं उपस्थित भेल—राजन चौरसिया। ओ कहलक सत्यप्रकाशक दुर्घटनाक सप्ताहमे एक भारी वाहनक व्यवस्था...	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक
49	176	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, रोहित, देवांशु	किछु मास बीतल। दिगन्त पर आर्थिक अपराधक मामला मजबूत होइत गेल। कतेको ठेकेदार बयान देलक —निविदा वापस लेबाक दबाव,...	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच
50	151	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, देवांशु	देवांशु रक्षित अन्ततः आर्थिक षड्यंत्र, दस्तावेजी छल, उगाही आ निविदा-प्रभावित करबाक आरोपमे गिरफ्तार भेल। गिरफ्तारी कार्यालयमे भेल। न...	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण
51	75	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, देवांशु	देवांशुक गिरफ्तारीक बाद सत्यप्रकाशक घरमे पहिल बेर लोक मिठाई लऽ कऽ आयल। मृणालिनी डिब्बा वापस कऽ देलनि। “अभी...	मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
52	196	ईशान, मयंक, देवांशु	मामला अदालतमे चलऽ लागल। सैकड़ों पृष्ठक लेखा-अभिलेख, ठेकेदारक बयान, फर्जी कार्यक्रमक प्रमाण, सहकारी खाताक प्रवाह, प्रणवेशक स्वीकारोक्ति। बचाव-पक्षक...	न्यायालय/प्रमाण
53	182	मृणालिनी, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, देवांशु	आर्थिक मामलामे देवांशु दोषी सिद्ध भेल। निविदा-प्रतिस्पर्धा बाधित करब, भयक माध्यमसँ भुगतान, जाली सेवा-अभिलेख, वित्तीय छल—अदालत एहि बिन्दुसभपर...	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
54	79	रोहित	कन्हैया रजकक नाम औपचारिक रूपेँ साफ भेल। पुलिस लिखित पत्र देलक—तकर विरुद्ध कोनो आपराधिक आधार नहि। मगर नेहाक...	पुनर्वास/नीति
55	69	अनिरुद्ध	मोहन पासवानक परिवारकेँ क्षतिपूर्ति भेटल। सरोजिनी छोट दोकान खोललीह। बेटी विद्यालय छोड़ि किछु मास माँक संग बैसली, फेर...	न्यायालय/प्रमाण · पुनर्वास/नीति
56	133	अनिरुद्ध, देवांशु, विहान	वर्ष बीतल। दिगन्तक नाम धीरे-धीरे बाजारसँ गायब भेल। किछु पुरान कर्मचारी दोसर कम्पनीमे। किछु राजनीति दिस। किछु छोट...	निविदा/उगाही · डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण
57	80	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी	गढ़ नारिकेलमे ईशान कॉलेज जाएबाक उमेरक भऽ गेल। ओ पिता जकाँ निर्माण व्यवसाय नहि चुनलक। ओ	डिजिटल जुआ · परिवार/शोक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			गणित पढ़लक।...	·बिज्जी–गोहि रूपक
58	145	रचना, विहान, कौशल	अम्बरक नब अनुप्रयोग सार्वजनिक भेल। पहिने केवल खेल-परिणाम। फेर “अपन टोली बनाउ।” खिलाड़ी चुनू। प्रदर्शन अनुसार अंक। मासिक...	डिजिटल जुआ
59	99	अनिरुद्ध	अम्बर इंटरैक्टिवक वित्तीय निवेशकसभमे एक नब संस्था आयल—“उत्तरायण डिजिटल होल्डिङ्ग।” मालिकाना कई परतमे। कागच पर पूँजी वैध। ऑडिट...	निविदा/उगाही · डिजिटल जुआ · बिज्जी–गोहि रूपक
60	147	अभिषेक	एक बरख बाद, राजधानी नगरक विश्वविद्यालय छात्रावासमे रातिक साढ़े बारह बजे एक छात्र अपन मित्रकेँ कहल— “बस पाँच...	डिजिटल जुआ
61	215	ईशान, धनेश्वरी, कौशल	कमला-बलानक किनार पर धनेश्वरी बहुत बूढ़ भऽ गेल छलीह। ईशान छुट्टीमे घर आयल तऽ ओ हुनका संग साँझ...	मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता · परिवार/शोक
62	230	ईशान, मयंक	ईशानक नब कार्यालय राजधानी नगरक काँचवला व्यावसायिक भवनमे छल। नाम—“सूत्रलेख वित्तीय विश्लेषण।” कम्पनी बैंक, बीमा-संस्था, डिजिटल व्यवसाय आ...	डिजिटल जुआ · पुनर्वास/नीति
63	196	ईशान, विहान, कौशल	अम्बर इंटरैक्टिव आब केवल खेल-परिणामक अनुप्रयोग नहि छल। ओकर विज्ञापन क्रिकेट-म्याच,	डिजिटल जुआ · स्मृति/लेखन

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			कबड्डी, फुटबॉल, मोबाइल खेल—सभठाम देखाइत। उपयोगकर्ता अपन…	
64	168	ईशान	पहिल सप्ताहमे किछु विशेष नहि भेटल। दू लाख उपयोगकर्ता। हजारों प्रतियोगिता। लाखों छोट भुगतान। अधिकांश प्रवाह सामान्य। मगर…	डिजिटल जुआ
65	198	अभिषेक, रितेश, कौशल	अभिषेक झा एहि बीच अपन छात्रावासक कोठरीमे तीन राति लगातार नहि सुतल। ओ पाँच सौसँ शुरू केने छल।…	परिवार/शोक
66	149	ईशान	अम्बरक आधिकारिक प्रणालीमे “म्यूल खाता” शब्द कतहु नहि छल। सुमेधा पहिल बेर एहि सम्भावना उठौलनि। “धन-वाहक खाता,” ओ…	निविदा/उगाही · डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता · स्मृति/लेखन
67	142	अभिषेक, रितेश	रितेश अभिषेकक खातामे पहिल भुगतान अनौलक। रकम बारह हजार। अभिषेकक हिस्सा एक हजार। बाकी निर्दिष्ट व्यापारी-खातामे पठेबाक कहल…	कथानक-संक्रमण
68	148	ईशान, विहान	सूत्रलेखक अंतरिम प्रतिवेदन अम्बर लेल असुविधाजनक छल। “समुदाय-सहयोगी भुगतानमे पहचान सत्यापन कमजोर।” “किछु खातामे असामान्य त्वरित बहिर्गमन।” “बाहरी…	डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण
69	160	रचना, केशव, विहान	अम्बरक भीतर सभ कर्मचारी एके बात नहि जनैत छल। मुख्य अनुप्रयोग चलबैत तकनीकी दल वैध	डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			प्रतियोगिताक नियम पर...	
70	151	अभिषेक, रितेश, मंजरी	अभिषेकक खाता एक सोमबार भोर बैंक द्वारा रोकि देल गेल। मोबाइलमे सन्देश —“डेबिट प्रतिबन्धित।” ओ शाखा दौड़ल। प्रबन्धक कहलक—“साइबर...	परिवार/शोक
71	125	अभिषेक, रितेश, मंजरी	मंजरीक प्रवेश छुटि गेल। कॉलेज समय बढ़बाक अनुरोध अस्वीकार केलक। माए फोनपर रोअलीह नहि। केवल कहल—“बेटा, किछु नहि।...	न्यायालय/ प्रमाण · परिवार/शोक
72	147	रचना, अभिषेक, रितेश, मंजरी	राजधानी नगरक साइबर थाना में निरीक्षक रचना सिन्हा अभिषेकक बयान लेलनि। “तूँ पैसा आगाँ पठबैत छलह?” “हँ।” “कमीशन?”...	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
73	122	रचना, अभिषेक, रितेश	अभिषेकक फोनसँ रचना कैं कोनो पैघ अपराधी तुरन्त नहि भेटल। रितेशक बदलैत नम्बर। किछु समूह-सन्देश। “भुगतान सहायक”क सामान्य...	डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता
74	148	ईशान	ईशानक दलकैं एक नब आँकड़ा भेटल। अम्बरक आधिकारिक प्रतियोगिता भुगतान आ लोकविस्तारक प्रचार-भुगतान पूर्णतः अलग कहायल छल। मगर...	डिजिटल जुआ
75	128	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश	मृणालिनी एखन गढ़ नारिकेलमे छोट पुस्तक-दोकान चलबैत छलीह। निर्माण व्यवसाय सत्यप्रकाशक बाद धीरे-धीरे बन्द। दोकानक नाम —“सत्य-पुस्तकालय।”	मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · परिवार/शोक · स्मृति/लेखन

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			कियो पूछैत—“पति…	
76	160	ईशान, अनिरुद्ध, रचना, रोहित, अभिषेक	राज्य साइबर केन्द्रमे अभिषेकक बयान अन्य शिकायतसभसँ मिलाओल गेल। किछु पीड़ित कहैत छलाह—ऑनलाइन म्याच पर पैसा लगेलहुँ, जीतल…	डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता · पुनर्वास/नीति
77	117	रचना, केशव, कौशल	अम्बरक “रात्रि कक्ष” एहि बीच तेजी सँ फैलि रहल छल। मुख्य ब्राण्डक विज्ञापन भरोसा बनबैत। एजेन्ट लोक परिचित…	निविदा/ उगाही · डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता
78	222	ईशान, अनिरुद्ध	ईशान पहिल बेर दिगन्तक पुरान फाइल डिजिटल रूपमे देखलक। अनिरुद्ध स्वयं ओकरा बजौने छलाह। भेंट प्रशिक्षण संस्थाक पुस्तकालयमे…	निविदा/ उगाही · डिजिटल जुआ · पुनर्वास/नीति
79	103	अभिषेक, मंजरी	अभिषेक सहयोगी गवाह बनबाक प्रक्रिया मे छल, मुदा ओकर जीवन सामान्य नहि लौटल। विश्वविद्यालय प्रशासनकेँ बैंक-जाँचक खबर भेटल।…	डिजिटल जुआ
80	118	रचना, अभिषेक, रितेश	रचना सिन्हा अभिषेककेँ एक फोटो देखौलीह। “रितेश?” “नहि।” दोसर। “नहि।” तेसर। अभिषेक ठमकल। “एहि आदमीकेँ एक बेर देखने…	डिजिटल जुआ
81	135	रचना	मनोज नायकक पीछा करैत पुलिस एक एहन ठाम पहुँचल जतऽ जुआक वास्तविक रूप पहिल बेर प्रत्यक्ष भेल। राजधानी…	डिजिटल जुआ · पुनर्वास/नीति
82	127	ईशान, मृणालिनी, विहान	छापाक खबर मीडिया पर आयल। “ऑनलाइन जुआ गिरोह।” “अम्बर नामक	डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता ·

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			कम्पनीक लिंक?” “हजारों बैंक खाते?” “करोड़ोंक धनशोधन?” अधिकांश…	परिवार/शोक
83	91	अनिरुद्ध	जब्त कम्प्यूटरक परीक्षणसँ एक विचित्र नाम उभरल —“उत्तरायण।” सीधा कम्पनी नहि। एक खाता-समूहक आन्तरिक संकेत। आदित्य शेखर पुरान फाइल…	निविदा/ उगाही · डिजिटल जुआ
84	106	रचना, केशव, अभिषेक, रितेश	मनोज नायक अन्ततः पकड़ा गेल—भागैत नहि, अपन घरमे। ओ कहलक —“हम वैध प्रचार करैत छी।” रचना सिन्हा सामने अभिषेकक…	डिजिटल जुआ
85	227	ईशान, सत्यप्रकाश, रचना, विहान	ईशानक विश्लेषणक अन्तिम प्रतिवेदन अम्बरक निदेशक-मण्डल धरि पहुँचल। सूत्रलेख स्पष्ट लिखलक— मुख्य प्रतियोगिता प्रणालीक अधिकांश भुगतान सामान्य व्यापारिक…	निविदा/ उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · स्मृति/लेखन
86	94	ईशान, अनिरुद्ध, विहान	ओ राति ईशान पहिल बेर माएकेँ फोन नहि, अनिरुद्धकेँ केलक। सभ बात कहल। अनिरुद्ध शांत सुनलनि। “विहानक बयान…	परिवार/शोक
87	119	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी	गढ़ नारिकेलमे ओही राति मृणालिनी दोकान बन्द करैत देहरी लग एक बिज्जी देखलीह। ओ सामान्यतः मुस्कुराइत। एहि बेर…	परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
88	157	अनिरुद्ध, मयंक, रचना, अभिषेक	राज्य जाँचक नब बैठकमे पहिल बेर “धनशोधन” शब्द औपचारिक रूपेँ लिखल गेल। आदित्य शेखर बोर्डपर	डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्र

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			तीन स्तर बनौलक—…	माण
89	105	अनिरुद्ध, रचना	बैठक समाप्त होयबाक पाँच मिनट बाद रचना सिन्हाक फोन बजल। एक बैंक-अधिकारी। “मॅडम, जे खाता सूची अहाँ पठौने…	निविदा/उगाही
90	123	ईशान, अनिरुद्ध, विहान	ईशान कार्यालयक छतपर राति अकेले ठाढ़ छल। नीचाँ राजधानी नगरक बत्ती नदीक उलट तारा जकाँ पसारल। फोनमे माएक…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
91	200	ईशान, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, विहान	विहान सारंगक औपचारिक बयान अगिला दिन चारि घण्टा चलल। ओ सत्यप्रकाशक दू फोन स्वीकार केलक। कहल—सत्यप्रकाश दिगन्तक एक…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ
92	196	धनेश्वरी, अनिरुद्ध, रचना	ओही साँझ राज्य आर्थिक-अपराध शाखाकेँ केन्द्रसँ सूचना आयल। ऑनलाइन जुआ-जालक किछु धन देशक तीन राज्य पार कऽ एहन…	डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
93	221	अनिरुद्ध, रचना	अन्तर-एजेन्सी बैठक राजधानी नगरमे नहि, दिल्लीमे भेल। कमरा साधारण छल। लम्बा मेज। दीवालपर भारतक नक्शा। एक दिस राज्य…	डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता
94	185	रचना, सबीना	सात खातामे पाँच छोट व्यवसायीक नाम पर छल। एक विद्यार्थी। एक गृहिणी। गृहिणीक नाम—सबीना खातून। ओ मधुपुरक एक…	कथानक-संक्रमण
95	127	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, रचना	सातम खाता एक एहन युवकक छल जे एक महीना पहिने मरि चुकल छल। नाम—पवन राउत। उमर	मृत्यु/पुरान जाँच

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			छब्बीस। घर—राजधानी…	
96	189	रचना	पवनक माए घरक आँगनमे अनाज सुखा रहल छलीह जखन दल पहुँचल। “बैंकवला?” ओ पूछलीह। “जाँच।” बूढ़ी डरि गेलीह।…	परिवार/शोक
97	125	मयंक, रचना, प्रदीप	नीलकण्ठ एग्रीगेट्सक दफ्तर पहिल नजरिमे जाँचक सभ अनुमान खराब करैत छल। वास्तविक खदान-अनुज्ञा। वास्तविक ट्रक। वास्तविक मजदूर। कर।…	मृत्यु/पुरान जाँच ·धन-वाहक खाता
98	84	अनिरुद्ध, रोहित, प्रदीप	प्रदीप महाजन तीन दिन पहिने नौकरी छोड़ि चुकल छल। फोन बन्द। घर बन्द। पड़ोसी कहलक—पत्नी बच्चासभसँ मायके गेलीह।…	कथानक-संक्रमण
99	197	अनिरुद्ध, रचना	सहस्त्र ट्रेडलिंक कागच पर तीन वर्ष पुरान संस्था। कार्यालय—एक अन्य राज्यक औद्योगिक क्षेत्र। दफ्तर पहुँचला पर बोर्ड छल,…	डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता
100	92	—	एन.आई.ए. अपन भूमिका सीमित करबाक निर्णय लेलक। मगर सहयोग बन्द नहि। अपूर्वा कहलीह— “हमरा अलग मामलेमे जे वित्तीय…	डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण
101	184	केशव, विहान, रितेश	केशव मेहता एहि बीच अम्बर कार्यालय आबि रहल छल, मुदा ओकर व्यवहार बदलि गेल। पहिने प्रत्येक बैठकमे बोलैत।…	डिजिटल जुआ
102	88	रचना,	अगिला भोर अम्बर निदेशक-मण्डल केशव	डिजिटल जुआ

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
		केशव, विहान	मेहताकेँ अवकाश पर पठौलक। प्रेस-वक्तव्य छोट — “आन्तरिक अनुपालन समीक्षा पूर्ण होय धरि।” विहान…	
103	99	ईशान	ईशानकेँ अम्बर खातासँ औपचारिक रूपेँ अलग कऽ देल गेल। सूत्रलेखक प्रबन्धन निर्णय लेलक— पारिवारिक इतिहास आब सार्वजनिक जाँचक हिस्सा…	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण
104	141	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी	ओहि सप्ताह धनेश्वरीक स्वास्थ्य अचानक बिगड़ल। मृणालिनी ईशानकेँ फोन केलनि। फोन बन्द। ईशान एक गोपनीय प्रस्तुति मे छल,…	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
105	128	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी	गढ़ नारिकेलमे अन्त्येष्टि बाद घर बहुत चुप भेल। धनेश्वरीक खाट खाली। तकिया पर माथक गड्ढा एखनहुँ। मृणालिनी ईशानकेँ…	परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
106	129	रचना, अभिषेक, मंजरी	अभिषेक झाक घरमे सेहो समय रुकल नहि छल। मंजरी एहि वर्ष नर्सिङ्ग प्रवेश फेर देलक। एहि बेर सीट…	कथानक-संक्रमण
107	110	अनिरुद्ध, रचना, केशव	एन.आई.ए.क अलग जाँचसँ एक महीना बाद छोट डिजिटल अभिलेख राज्य दलकेँ वैधानिक प्रक्रिया सँ हस्तान्तरित भेल। आरोह परिवहनक…	डिजिटल जुआ
108	160	रचना, प्रदीप, केशव, विहान	केशव मेहता नोटिस पाबि उपस्थित भेल। वकील संग। स्वर स्थिर। “के.एम.हम नहि।” “रात्रि कक्ष?” “नाम	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			सुनने।” “ककरा...	
109	135	अनिरुद्ध, मयंक, रचना, प्रदीप	प्रदीप महाजनक खोज आब प्राथमिकता बनल। घरवालीक बयान लेल गेल। “ओ डरायल छल?” “हँ।” “ककरा सँ?” “काजसँ।” “कहल?”...	निविदा/ उगाही · डिजिटल जुआ
110	203	रचना, प्रदीप	“नदी पार पुरान कोठी” राजधानी नगरक स्थल नहि निकलल। तीन जिला पार एक पुरान चीनी मिलक नजिक गाम।...	कथानक-संक्रमण
111	169	ईशान, अनिरुद्ध, मयंक, रचना, प्रदीप	लिफाफा ओतहि नहि खोलल गेल। सील। जब्ती-पत्र। गवाह। कैमरा। प्रक्रिया। रचना अधीर हो सकैत छलीह। नहि भेलीह। कारण...	निविदा/ उगाही · डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण
112	91	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, विहान	अनिरुद्ध एहि राति बहुत देर जागल रहलाह। सेवानिवृत्त अधिकारी। आधिकारिक शक्ति नहि। मगर कथा फेर ओकर टेबुल धरि...	निविदा/ उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ
113	170	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, प्रदीप, अभिषेक	गढ़ नारिकेलमे धनेश्वरीक श्राद्धक बाद ईशान राजधानी नगर लौटबाक तैयारी करैत छल। मृणालिनी ओकर बैगमे भोजन रखलीह। “काम...	निविदा/ उगाही · डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
114	150	रचना	बिरजू साहक कोठीपर अगिला भोर स्थानीय पुलिसक पहरा लगा देल गेल। ओ स्वयं एहि व्यवस्था सँ प्रसन्न नहि...	बिज्जी-गोहि रूपक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
115	250	सत्यप्रकाश, रचना, देवांशु, प्रदीप, केशव	बिरजू पुरान कालक दलाल छल—ई बात ओ बिना घुमाओने मानि लेलक। “हवाला?” रचना पूछलीह। “ई शब्द पुलिसक अछि।”…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ
116	110	रचना	ओहि राति बिरजू साह अचानक बीमार पड़ल। पहिला शिकायत—छातीमे भारीपन। स्थानीय चिकित्सक पहुँचला। ई.सी.जी. केलनि। जिला अस्पताल लेबाक…	कथानक-संक्रमण
117	135	मयंक, रचना	शव-परीक्षणमे तत्काल कोनो विषाक्तता संकेत नहि। हृदयक पुरान रोग स्पष्ट। अन्तिम मत सुरक्षित। रचना राहत नहि लेलनि। कारण…	न्यायालय/प्रमाण
118	140	रचना	बिरजूक मृत्यु पछि ओकर बेटा कोठी पहुँचल। नाम—अलोक साह। बैंक अधिकारी। पिता सँ वर्षों दूरी। ओ पुलिसपर क्रुद्ध…	कथानक-संक्रमण
119	124	अनिरुद्ध, मयंक, रचना, रोहित	“चन्द्र”क अर्थ खोजब शुरू भेल। पहिला गलती आसान छल— शशि = चन्द्र। बिरजू “शशि किछु” कहने छल। की…	निविदा/उगाही
120	131	मयंक, रचना, रोहित	शशांक देवव्रत साठि वर्षक प्रभावशाली व्यक्ति छल। पूर्व उद्योगपति। न राजनीति। न सार्वजनिक अपराध-अभिलेख। उदयरेखा लोकन्यासक नाम देशक…	निविदा/उगाही · डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता
121	243	सत्यप्रकाश, रचना, रोहित, देवांशु,	शशांक देवव्रत बैठक लेल स्वयं समय देलक। ओ वकील नहि अनलक। “हमरा बुझायल जे ई दान	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच ·

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
		प्रदीप	आ निवेश…	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण
122	94	ईशान, सत्यप्रकाश, अभिषेक, सबीना	ओहि दिन ईशानकेँ औपचारिक रूपेँ एक नब दायित्व भेटल। अम्बर जाँच नहि। राज्यक वित्तीय अपराधक व्यापक आँकड़ा-परियोजना। कार्य—म्यूल…	मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता
123	183	ईशान, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध	आँकड़ा विचित्र कथा कहैत। बहुत म्यूल खाताधारक पूर्ण अपराधी नहि। बहुत पूर्ण निर्दोष सेहो नहि। किछु सीधे कमीशन…	मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता · परिवार/शोक
124	142	रचना, प्रदीप	प्रदीप महाजन अन्ततः स्वयं सामने आयल। पुलिस ओकरा खोजि नहि पेलक। ओ एक वकील मार्फत संदेश पठौलक— “हम…	धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण
125	103	प्रदीप	जिला काराक प्रवेश-द्वार प्रदीप कल्पना सँ छोट छुल। बाहर परिवार, वकील, चाय-दोकान, रिक्शा। भीतर लोहेक दरबज्जा। नाम दर्ज।…	कथानक-संक्रमण
126	93	प्रदीप	पहिल मुलाकातमे पत्नी नहि आयलीह। केवल भाई। काँचक पार फोन। भाई कहलक— “भाभी एखन नहि चाहैत।” प्रदीप आँखि…	न्यायालय/प्रमाण
127	170	रचना, प्रदीप, केशव	मजिस्ट्रेट समक्ष प्रदीपक विस्तृत बयान धीरे-धीरे भेल। रचना सवाल कम रखलीह। “रात्रि कक्ष?”	निविदा/उगाही · डिजिटल जुआ

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			“ऑनलाइन निजी दाँव।” “अम्बरक?” “अम्बरक…	
128	114	ईशान, सत्यप्रकाश, रचना, प्रदीप	प्रदीप एक आर बात बतौलक। सत्यप्रकाश कर्णक नाम ओ पुरान फाइलमे देखने छल। “कहाँ?” “दिगन्तक स्कैन कएल बही।”…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ
129	148	केशव, विहान	अम्बर इंटरैक्टिवक मुख्य कार्यालयमे एहि बीच संकट खुलि चुकल छल। केशव अवकाश पर। विहान जाँचमे सहयोगी। निवेशक बेचैन।…	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण
130	112	ईशान, अनिरुद्ध, मयंक, रचना	उत्तरायण निधिक लेखा जाँचमे एक विचित्र तथ्य भेटल। अम्बर आरम्भिक निवेशक समय निधि केवल उदयरेखासँ पैसा नहि लेने…	डिजिटल जुआ
131	104	रचना, रोहित	समृद्धि ग्राम-वित्त मंडलक परिसमापक बहुत पहिले मरि चुकल छल। ओकर कार्यालयक अभिलेख जिला रिकार्ड-रूममे। धूलि। दीमक। गठरी। तीन…	कथानक-संक्रमण
132	133	रचना	शशिभूषण लालक परिवारक खोजमे एक बेटी भेटलीह—अदिति लाल। विश्वविद्यालयक सेवानिवृत्त प्राध्यापिका। ओ पिता विषय खुलि कऽ कहलीह —…	निविदा/उगाही · परिवार/शोक
133	78	रचना, देवांशु	मगर अदिति एक अन्तिम बात कहलीह— “बाबूक मृत्यु बाद हुनकर किछु पुरान कारोबारी खाता एक युवक सँभालने छल।”…	कथानक-संक्रमण
13	96	ईशान,	राति ईशान गढ़ नारिकेलक	परिवार/शोक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
4		मृणालिनी	पुरान घर फोन केलक। मृणालिनी अकेली छलीह। “खाना?” “खा लेलहुँ।” “दवाई?” “हँ।” किछु सामान्य…	·स्मृति/लेखन
135	135	प्रदीप, तृषा	जिला कारामे प्रदीपक दोसर मुलाकातमे बेटी आयली। चौदह वर्ष। नाम—तृषा। काँचक पार पिता देखिते रोअल नहि। केवल पूछलक —…	न्यायालय/ प्रमाण
136	103	ईशान, मृणालिनी	कमला-बलान पर बरखा शुरू भेल। गढ नारिकेलक कछारमे पानि चढ़ल। एक साँझ ईशान छुट्टी पर घर आयल तऽ…	न्यायालय/ प्रमाण · परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
137	169	सत्यप्रकाश, रचना	राजधानी नगरमे ओहि समय रचना सिन्हाक टेबुलपर एक नब कागच राखल जा रहल छल। समृद्धि ग्राम-वित्त मंडलक अन्तिम…	निविदा/ उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · बिज्जी–गोहि रूपक
138	126	सत्यप्रकाश, रचना	बीस वर्ष पुरान “विशेष परियोजना—खेल प्रचार”क कागच रिकार्ड-रूमसँ बाहर आनल गेल तऽ सभसँ पहिने ओकर कागच नहि, गन्ध…	मृत्यु/पुरान जाँच
139	222	सत्यप्रकाश, रचना	कृपानन्द वर्मा अपन बेटाक घरमे रहैत छलाह। हाथ काँपैत। स्मृति कखनो तेज, कखनो धुँधली। रचना पहिने कागच नहि…	निविदा/ उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · स्मृति/लेखन
140	109	अनिरुद्ध, मयंक,	कृपानन्दक पुरान डायरी परिवार सँ अनुमति लऽ	निविदा/ उगाही

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
		रचना, देवांशु	देखल गेल। ओ सरकारी फाइल नहि छल। व्यक्तिगत नोट। तारीखक पास…	
141	315	मृणालिनी, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, रचना, देवांशु	देवांशु रक्षित एहि समय कारावास काटि चुकल छल। रिहाइ पछि ओ राजधानी नगर छोड़ि एक छोट पहाड़ी शहरमे…	निविदा/ उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक
142	160	सत्यप्रकाश, रचना, हरिचरण	हरिचरण मंडलक पुरान फाइल खोलल गेल। उगाही। मारपीट। वाहन। दू मामला प्रमाण-अभावमे बन्द। एक दोषसिद्धि। सत्यप्रकाशक दुर्घटना समय…	निविदा/ उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच
143	119	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, रचना	मृणालिनीकेँ रचना स्वयं भेटलीह। ईशान उपस्थित नहि। रचना धीरे-धीरे सब कहलनि। मृणालिनी सुनैत रहलि। अन्तमे केवल पूछलीह— “तखन…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक
144	185	रचना, प्रदीप, केशव	वर्तमान जुआ-जाँचमे पहिल निर्णायक तलाशी केशव मेहताक घर आ निजी कार्यालयपर एक्के भोर भेल। न्यायालयी आदेश। स्वतन्त्र गवाह।…	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण
145	118	रचना, केशव	केशव गिरफ्तार भेल। आर्थिक षडयंत्र, अवैध दाँव-व्यवस्था सँ जुड़ल वित्तीय छल, धनक स्रोत लुकाबयवला काज—जे आरोप उपलब्ध साक्ष्य…	डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता
146	94	प्रदीप, केशव	केशव न्यायिक हिरासतमे गेल। जिला काराक अलग बैरक, मुदा ओही परिसर जतऽ प्रदीप बंद छल। दुनू क	न्यायालय/ प्रमाण

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			सीधा भेट…	
147	136	प्रदीप	जेल पुस्तकालयमे प्रदीपक भेट एक नव बंदीसँ भेल। नाम—सौमित्र पासवान। उमर बीस। आई.टी.आई. विद्यार्थी। मामला—ओकर बैंक-खाता तीन अलग…	न्यायालय/ प्रमाण · परिवार/शोक
148	84	प्रदीप	सौमित्र तीन सप्ताह बाद बाहर गेल। जेल फाटक पर माए प्रतीक्षा करैत छलीह। प्रदीप भीतर रहल। ओहि राति…	न्यायालय/ प्रमाण · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
149	120	केशव, विहान	अम्बर इंटरैक्टिवक निदेशक-मण्डलमे विहान सारंग पहिल बेर अकेला पड़ल। किछु निवेशक कम्पनी बेचबाक पक्षमे। किछु ब्राण्ड बदलबाक। किछु…	डिजिटल जुआ
150	74	सत्यप्रकाश, रचना, विहान	विहान राज्य जाँच-दलकेँ एक आन्तरिक ई-पत्र संग्रह स्वेच्छासँ देलक। कानूनी दल जाँचि, अधिकार सीमा अनुसार। एक ई-पत्र सत्यप्रकाशक…	निविदा/ उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ
151	126	सत्यप्रकाश, रचना, देवांशु, हरिचरण	नलिन बरुआ कहलक—“एस.के. सत्यप्रकाश कर्ण।” एहि बेर (initials) तुरन्त नाम बनल—वक्ता स्वयं पुष्टि करैत। “अहाँकेँ कोना पता?”…	निविदा/ उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ
152	68	सत्यप्रकाश	नलिन एक आर बात बतौलक। “सत्यप्रकाश भुगतानक स्रोत देखैत-देखैत समृद्धि ग्राम-वित्तक पुरान रकम पर पहुँचल छल।” “चन्द्र?” नलिन…	निविदा/ उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच
153	146	सत्यप्रकाश,	अदिति लाल एहि बेर स्वयं	मृत्यु/पुरान

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
3		रचना, देवांशु	एक पुरान पेटी निकाललीह। “पिछला बेर अहाँ सभ गेलहुँ तऽ राति भरि सोचैत…	जाँच · न्यायालय/प्रमाण · स्मृति/लेखन
154	108	ईशान, अनिरुद्ध, रचना	रचना एहि सभ नब सामग्रीक आधार पर पुरान मृत्यु-जाँच औपचारिक रूपेँ पुनः खोलबाक सिफारिश केलनि। “हत्या मामला?” वरिष्ठ…	मृत्यु/पुरान जाँच
155	157	ईशान, रचना, केशव, सबीना	केशवक गिरफ्तारी पछि निजी जुआ-जाल तुरन्त बन्द नहि भेल। किछु समूह नब नामसँ। किछु एजेन्ट गायब। किछु उपयोगकर्ता…	डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता
156	141	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश	गढ़ नारिकेलमे एक साँझ मृणालिनी अकेली बरामदामे बैसल छलीह। ईशान राजधानी नगर। धनेश्वरी नहि। सत्यप्रकाशक फोटो भीतर। बरखा…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक · बिज्जी–गोहि रूपक
157	184	ईशान, सत्यप्रकाश, रचना, प्रदीप, केशव	राजधानी नगरक जाँच-कक्षमे रचना सिन्हा राति अकेली बैठल छलीह। बोर्ड पर दू रेखा। एक बीस वर्ष पुरान— समृद्धि।…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता
158	174	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, देवांशु	सत्यप्रकाशक मृत्यु-जाँच फेर खुलिते राजधानी नगरक समाचार-पत्र सभ पुरान फोटो खोजि निकाललक। एक अखबार आधा पृष्ठमे लिखलक —“बीस वर्ष…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · परिवार/शोक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
159	122	सत्यप्रकाश, रचना, रोहित	रचना सिन्हा पुरान दुर्घटनास्थलक पुनर्निरीक्षण लेल गेलीह। सड़क बदलि चुकल। तखनक दू लेन आब चारि। चाय-दोकान नहि। बगलक…	मृत्यु/पुरान जाँच
160	213	सत्यप्रकाश, रचना, रोहित, देवांशु, हरिचरण	हरिचरण मंडलक पुरान सहायकमे सँ एक जीवित भेटल—बासुदेव मरिक। ओ बीस वर्ष पहिने चालक छल। एखन गाममे किराना-दोकान।…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच
161	144	सत्यप्रकाश, हरिचरण, कौशल	पुरान परिवहन अनुज्ञप्ति अभिलेखसँ पाँच कौशल निकलल। दू मरल। एक विदेश। एक खेती। एक—कौशल किशोर चौबे—तखन “चौबे मालवाहक”…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच
162	109	मृणालिनी, रचना, रोहित, हरिचरण	रचना एहि खोजक सूचना मृणालिनीकेँ तुरन्त नहि देलीह। क्योंकि प्रत्येक नब संकेत परिवार लेल “आब सिद्ध” बनि सकैत।…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक
163	179	रचना, प्रदीप, केशव, रितेश	वर्तमान जुआ-जालमे मनोज नायक पर दबाव बढ़ि रहल छल। केशव गिरफ्तार। प्रदीप बयान दे रहल। रात्रि कक्षक कम्प्यूटरक…	मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता · परिवार/शोक
164	118	रचना, प्रदीप, केशव, अभिषेक, रितेश	रितेशक बयान मजिस्ट्रेटक सामने लेल व्यवस्था कएल गेल। ओ स्वीकार केलक—अभिषेककेँ खाता देबाक प्रस्ताव ओ देने छल।…	डिजिटल जुआ
165	114	रचना, रितेश	मनोज नायककेँ फेर पूछताछ लेल बजाओल गेल। एहि बेर वकील संग। रचना सीधे मारपीटक विषय	स्मृति/लेखन

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			रखलीह। “हम नहि…	
166	90	रचना, रोहित	लोकविस्तार डिजिटल सेवाक कॉर्पोरेट कागचमे “उदय” नामक कोनो निदेशक नहि। मगर पुरान सलाहकार अनुबंधमे एक व्यक्ति— उदयनाथ मिश्र।…	कथानक-संक्रमण
167	211	रचना, शैलेश	एहि बीच ऑनलाइन जुआक त्रासदी एक अन्य घरमे फूटल। नाम—शैलेश मंडल। सरकारी विद्यालयक सहायक शिक्षक। पत्नी—आरती। एक बेटा,…	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण
168	140	रचना, शैलेश	चारि दिन बाद शैलेश जीवित भेटल। एक दूरक धर्मशालामे। भूखल। थाकल। भागि गेल छल—मृत्यु लेल नहि, घरक सामना…	डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता
169	119	ईशान	ईशानक म्यूल-जोखिम प्रतिवेदनमे नब श्रेणी जुड़ल — “ऋणग्रस्त जुआ-उपयोगकर्ता द्वारा द्वितीयक भर्ती।” ओ आँकड़ा देखलक। जे लोक हारल रकम…	डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता · परिवार/शोक · स्मृति/लेखन
170	172	रचना, प्रदीप, केशव, रितेश	उदयनाथ मिश्र निर्धारित दिन आयल। सूट नहि। साधारण कुर्ता। वकील संग। ओ आत्मविश्वासी छल। “मनोज नायक?” “काज करैत।”…	डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता · पुनर्वास/नीति
171	112	अनिरुद्ध, मयंक, रचना, रोहित, केशव	उदयनाथक वित्तीय व्यवहार साफ देखाइत। परामर्श शुल्क। कर। घर। कोनो असामान्य नगद नहि। रोहित निराश। रचना नहि। “यदि…	न्यायालय/प्रमाण

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
172	104	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, रचना, हरिचरण	पुरान सत्यप्रकाश जाँचमे सेहो एहन दू संसार बनाओल गेल। पहिल— सत्यप्रकाश भुगतान-जाल खोजलक; दिगन्त नाराज; हरिचरण भारी वाहन…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण
173	143	रचना, रितेश	मनोजक फोन अभिलेखमे एक नया तथ्य भेटल। रितेशपर हमला सँ दू घंटा पहिने मनोज एक सुरक्षा-एजेन्सी संचालककेँ फोन…	न्यायालय/प्रमाण
174	116	रचना, रितेश	रघुवीर तीन दिन बाद राज्य सीमा पर पकड़ा गेल। गिरफ्तारी प्रक्रिया साधारण। कियो गोली नहि। कियो पीछा नहि।…	कथानक-संक्रमण
175	122	रचना, सौरभ, केशव	केशव,मनोज आ रघुवीरक अलग-अलग बयानक बीच एक नया नाम बार-बार नहि, एक बार मात्र आयल— “सौरभ भैया।”…	डिजिटल जुआ · बिज्जी–गोहि रूपक
176	118	मृणालिनी, सत्यप्रकाश	गढ़ नारिकेलमे मृणालिनी एहि राति सत्यप्रकाशक पुरान चश्मा हाथमे लेलनि। ओ बीस वर्ष सँ टेबुलक दराजमे छल। काँच…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
177	223	रचना, प्रदीप, सौरभ, केशव	रचना सिन्हा सौरभ बर्धनक फाइल खोललीह। पहिल पन्ना— शिक्षा। वित्त। सामाजिक निवेश। दूसर— उत्तरायण निधि। तेसर— अम्बरक प्रारम्भिक…	डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण · बिज्जी–गोहि रूपक
178	210	रचना, प्रदीप,	सौरभ बर्धन निर्धारित समयसँ पन्द्रह मिनट पहिने	डिजिटल जुआ

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
		सौरभ, केशव	पहुँचल। ओकरा देरी करबाक आवश्यकता नहि छल। जाँचसँ भागब ओकर रणनीति…	
179	146	रचना, प्रदीप, सौरभ, केशव	पूछताछक अगिला घंटामे किछु निर्णायक नहि भेटल। मगर एक संरचना स्पष्ट होय लागल। उत्तरायण निवेशक स्तरपर लाभ देखैत।…	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण
180	190	रचना, प्रदीप, सौरभ, केशव, रितेश	सौरभक फोन आ ई-पत्रक कानूनी परीक्षणसँ एक महत्त्वपूर्ण बैठकक अभिलेख भेटल। स्थान—उत्तरायणक अतिथि-गृह। उपस्थित—सौरभ। केशव। मनोज। उदयनाथ।…	डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण
181	90	रचना, रोहित	उदयनाथ पर तुरन्त गिरफ्तारी नहि भेल। सहभागिता आ आपराधिक आशय अलग प्रश्न। रचना ई बात प्रेसकेँ नहि, अपनी…	डिजिटल जुआ
182	158	रचना, प्रदीप, तृषा, शैलेश	जिला कारामे प्रदीपक तीसरा महीना चलि रहल छल। ओ आब विधिक सहायता कक्षमे नियमित मदति करैत। कागच लिखब।…	डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण
183	136	प्रदीप, तृषा	तृषा अगिला मुलाकातमे फेर आयली। एहि बेर फोन उठौलीह। “बाबू।” प्रदीपक चेहरा उज्जर पड़ल। “हँ बेटा।” “स्कूलमे सभ…	कथानक-संक्रमण
184	176	मयंक, रचना, सौरभ	सौरभक वित्तीय इतिहासमे अपराधक पैसा सीधे ओकर निजी खातामे नहि भेटल। वेतन। निवेश लाभ। कर। सम्पत्ति। सभ व्यवस्थित।…	डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता
185	100	रचना,	रचना एहि संरचना पर सौरभकेँ फेर पूछलीह।	धन-वाहक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
		सौरभ	“क्षितिज सम्पदा?” “उत्तरायणक सहायक।” “ऋण नीति?” “समिति तय करैत।” “अहाँ?” “सदस्य।”…	खाता · न्यायालय/प्रमाण
186	151	रचना, सौरभ	आलोक भसीनक पुरान कम्पनी-लैपटॉपक बैकअप वैधानिक रूपेँ उपलब्ध छल। किछु ई-पत्र मिटाओल। किछु बचल। एक ई-पत्र सौरभकेँ— “रात्रि…	न्यायालय/प्रमाण
187	120	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, रचना, सौरभ	सौरभक गिरफ्तारीक खबर गढ़ नारिकेल पहुँचली। ईशान माएक घरमे छल। टीवी पर नाम। उत्तरायण। अम्बर। पुरान पैसा। सत्यप्रकाशक…	मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · परिवार/शोक · बिज्जी–गोहि रूपक
188	113	सत्यप्रकाश, रचना	पुरान जाँचमे रजत चौबेक गोदामसँ एक अन्य बही भेटल—पहिल बहीक पछिला वर्षक। एहि बेर “एच.एम.”क एक प्रविष्टि साथ…	मृत्यु/पुरान जाँच
189	90	रचना, हरिचरण	बासुदेव मरिकेँ वाहनक पुरान फोटो लाइनअप देखाओल गेल। ओ एक फोटो पर रुकल। “एहन गाड़ी।” “इएह?” “नहि कहि…	मृत्यु/पुरान जाँच
190	161	सत्यप्रकाश, रचना, हरिचरण	रामअवतार यादवक घर पर पहुँचला पर दरबज्जा ओकर पोता खोललक। “दादा बोलि नहि सकैत।” पाँच वर्ष पहिने आघात।…	मृत्यु/पुरान जाँच · स्मृति/लेखन
191	92	रचना, देवांशु,	तीन दिन बाद रामअवतारक पोता स्वयं रचना केँ फोन	मृत्यु/पुरान जाँच

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
		हरिचरण	केलक। “दादा कागच देखाबऽ कहैत।” पुरान संदूकमे एक फोटो।…	
192	96	रचना, सौरभ	सौरभ बर्धन न्यायिक हिरासतमे भेजल गेल। जिला कारा नहि, राजधानी नगरक केन्द्रीय कारा। वकील तुरन्त जमानत याचिका। स्वास्थ्य।…	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण · बिज्जी-गोहि रूपक
193	122	ईशान	ईशान एहि बीच म्यूल खाताक जोखिम-रिपोर्ट राज्य बैंक संघक सामने प्रस्तुत करैत छल। स्लाइड पर कोनो अपराधीक नाम…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · धन-वाहक खाता · परिवार/शोक
194	84	ईशान, मृणालिनी	मृणालिनी राति ईशानक प्रस्तुति विषय फोन पर सुनलीह। “नीक केलह।” “कठोर कहलहुँ?” “जरूरी।” “माँ…” “हँ?” “जँ बाबूक केस…	परिवार/शोक · स्मृति/लेखन · बिज्जी-गोहि रूपक
195	136	सत्यप्रकाश, मयंक, रचना, रोहित, हरिचरण	रचना सिन्हा रातिक अन्तिम बैठकमे टीमकेँ दू फाइल सामने रखलीह। पुरान। नब। “हम दुनूकेँ एक मुकदमा नहि बनाएब।”…	मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण
196	114	रचना, रोहित	रामअवतारक स्वास्थ्य फेर बिगड़ल। रचना अस्पताल पहुँचलाक पहिने ओ चलि गेल। कोनो नब बयान नहि। एक फोटो बचल।…	कथानक-संक्रमण
197	137	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी,	गढ़ नारिकेलमे ओहि राति भीषण बरखा भेल। कमला-बलान खतरा-रेखा लग।	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
		सत्यप्रकाश	मृणालिनी आँगनक सामान भीतर खींचि रहल छलीह। बिज्जीक…	·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
198	158	सत्यप्रकाश, रचना, सौरभ	राजधानी नगरमे रचना सिन्हा ओहि समय सौरभक जब्त ई-पत्रक अंतिम समूह पढ़ि रहल छलीह। एक पाँति पर आँखि…	मृत्यु/पुरान जाँच ·धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण · स्मृति/लेखन
199	158	सत्यप्रकाश, रचना, सौरभ	“एस.के. प्रकरण”क अर्थ खोजबाक पहिल काज ई नहि छल जे सत्यप्रकाशक मृत्यु फेर सँ मानि लेल जाए। रचना…	मृत्यु/पुरान जाँच
200	268	सत्यप्रकाश, रचना, देवांशु, सौरभ	सौरभक पूछताछ एहि बेर छोट छल। रचना सामने जोखिम-टिप्पणी रखलीह। “सम्बन्धित ठेकेदारक मृत्यु।” सौरभ पढ़लक। ओकर चेहरा बदलल…	मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · स्मृति/लेखन
201	210	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश	गढ़ नारिकेलक विद्यालय राहत-शिविरमे तीस परिवार रहैत छल। मृणालिनीकेँ पहिल राति नींद नहि आयल। कक्षाक दीवालपर पहाड़ा लिखल।…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
202	123	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश	भोर धरि कमला-बलानक पानि आर चढ़ल। गढ़ नारिकेलक पुरान घरक पिछला हिस्सा डूबि गेल। ईशान नावसँ घरक स्थिति…	मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
203	172	सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, मयंक, रचना,	राजधानी नगरमे पुरान दुर्घटना-जाँचक वाहनक एक नब धागा बीमा अभिलेखसँ आयल। हरा मालवाहक पर	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
		देवांशु	कबाड़ दावा नहि छल,...	
204	281	सत्यप्रकाश, रचना, देवांशु, हरिचरण	रचना देवांशु रक्षितकेँ फेर एक बेर पूछबाक निर्णय लेलनि। पहाड़ी शहरमे एहि बेर वर्षा छल। देवांशु खिड़की कात...	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · स्मृति/लेखन
205	148	सत्यप्रकाश, रचना, देवांशु, हरिचरण	देवांशुक नब बयान तुरन्त सत्य नहि मानल गेल। ओ दोषसिद्ध पुरान अपराधी। अपने ऊपरक भार कम करबाक कारण...	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · स्मृति/लेखन
206	138	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, रचना, देवांशु	मृणालिनीकेँ खबर ईशान सँ नहि, रचना सँ भेटल। राहत-शिविरक एक खाली कक्षमे। रचना कहलीह— “देवांशु स्वीकार केने छथि...	मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
207	93	रचना, सौरभ, केशव, रितेश	नब जुआ-मामलामे मनोज नायक गिरफ्तार भेल। रितेशक बयान। रघुवीरक संपर्क। म्यूल भर्तीक लक्ष्य। आर्थिक लाभ। प्रचार-जाल। रात्रि कक्षक...	डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता · परिवार/शोक
208	95	रचना, सौरभ	सौरभक जमानत याचिका उच्च न्यायालयमे सुनवाई पर आयल। अभियोजन कहलक—वित्तीय संरचना जटिल; प्रभावशाली अभियुक्त; साक्षी पर प्रभावक जोखिम।...	न्यायालय/प्रमाण
209	84	प्रदीप, तृषा	प्रदीपक जमानत सेहो बादमे स्वीकार भेल। ओ घर	न्यायालय/प्रमाण

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			जाएबाक दिन काराक फाटक पर बहुत देर ठाढ़ रहल। पत्नी…	
210	98	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी	ईशान बाढ़ उतरला बाद घर साफ करैत एक भीजल पोथी भेटलक। धनेश्वरीक। पन्ना चिपकल। बीचमे मैथिलीमे लिखल एक…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
211	177	सत्यप्रकाश, रचना, देवांशु, हरिचरण	रचना सिन्हा पुरान जाँचक अंतरिम प्रतिवेदन लिखलनि। ओ भाषामे एक्को रूपक नहि। न गोहि। न बिज्जी। न पानि।…	निविदा/ उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · स्मृति/लेखन · बिज्जी–गोहि रूपक
212	101	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश	मृणालिनी प्रतिवेदनक सार्वजनिक सार पढ़लीह। बहुत देर बाद सत्यप्रकाशक फोटो सामने दीप जरेलनि। ई पूजा नहि। न विजय।…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
213	91	सत्यप्रकाश, रचना, रोहित, अभिषेक, रितेश	नब जुआ-मामलाक आरोप-पत्र बनब शुरू भेल। रचना टीमकेँ स्पष्ट निर्देश देलीह — “पुरान सत्यप्रकाश मामला एहि आरोप-पत्रक नाटकीय प्रस्तावना…	मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता
214	80	ईशान, रचना, रितेश	आरो एक सूची बनल— पीड़ित। जुआमे हारल परिवार। ठगीक मूल खाताधारक। फ्रीज भेल वैध आयवला म्यूल परिवार। कम्पनीक…	डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता
215	109	रचना	राति राजधानी नगरमे रचना कार्यालय सँ निकललीह तऽ बरखा रुकि चुकल छल। सड़कपर पानिक छोट-छोट पोखरि। ओ थाकल…	डिजिटल जुआ · स्मृति/लेखन

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
216	149	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश	गढ़ नारिकेलक राति साफ छल। बाढ़क पानि बहुत उतरि गेल। मृणालिनी देहरी पर बैसल छलीह। ईशान राजधानी नगर…	मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
217	90	ईशान, मृणालिनी, रचना, प्रदीप, सौरभ	नब अपराध-मामलाक पहिल विस्तृत सुनवाई राजधानी नगरक विशेष न्यायालयमे शुरू भेल। बाहर कैमरा। भीतर लकड़ीक बेंच। अभियुक्त सभ…	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
218	115	रचना	अभियोजन प्रारम्भिक प्रस्तुति करैत कहल— ई मामला एक व्यक्ति द्वारा चलाओल एकल जुआ-साम्राज्यक नहि। ई परत-दर-परत संगठनक मामला…	डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण
219	114	—	पहिल गवाह बैंक-अनुपालन अधिकारी छल। ओ हजार पन्नाक अभिलेख लऽ आयल नहि। केवल प्रमाणित सारणी, मूल अभिलेखक संदर्भ,…	धन-वाहक खाता
220	152	ईशान, सबीना	दूसर गवाह सबीना खातून। ओ अदालतमे काँपैत प्रवेश केलीह। ओ अपराधी-पंक्तिमे नहि। साक्षी। अभियोजन पूछलक— “अहाँ अपन खाता…	न्यायालय/प्रमाण
221	130	अभिषेक, रितेश	अभिषेकक गवाही आर कठिन छल। ओ स्वीकार केलक— रितेश ओकरा कमीशनक प्रस्ताव देने। पहिने वैध भुगतान-सहायता बुझल। फेर…	न्यायालय/प्रमाण

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
222	120	रितेश	रितेश दासक गवाही दिनभरि चलल। ओ पहिने अपन अपराध छुपेलक नहि। “हम खाता जुटबैत रही।” “कमीशन?” “हाँ।” “जानैत…	न्यायालय/प्रमाण
223	81	रितेश	रघुवीर तांतीक विरुद्ध मारपीटक मामला अपेक्षाकृत सीधा छल। फोन संपर्क। दो युवकक बयान। रितेशक चिकित्सा-अभिलेख। रघुवीरक स्वीकार —ओ लोक…	न्यायालय/प्रमाण
224	159	प्रदीप, तृषा, सौरभ, केशव	प्रदीप महाजन साक्षी-बॉक्समे आयल तऽ अदालतक वातावरण बदलल। क्योंकि ओ गवाह सेहो। अभियुक्त सेहो। ओ स्वयं पर आरोप…	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण
225	58	प्रदीप	बचाव प्रदीपक जेल डायरीक एक अंश प्रस्तुत करय चाहलक— “समान नियम समान परिणाम नहि दैत।” अभियोजन विरोध— “व्यक्तिगत…	न्यायालय/प्रमाण
226	108	रचना, केशव	केशव मेहताक बचाव रणनीति स्पष्ट छल— रात्रि कक्ष मुख्य कम्पनीबाहिर। नीचे स्तरक लोक अवैध गतिविधि बढ़ौलक। केशव केवल…	डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण
227	94	सौरभ	सौरभ बर्धनक पक्ष आर जटिल। ओ प्रत्यक्ष संचालन नहि करैत। मगर उत्तरायणक धन। जोखिम ई-पत्र। पुरान स्रोत। क्षितिज…	डिजिटल जुआ · धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण
228	126	—	उदयनाथ मिश्र अभियुक्त नहि बनल छल एखन। ओ साक्षी रूपेँ आयल। बैठकमे	डिजिटल जुआ · धन-

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			निजी दाँवक चर्चा स्वीकारने छल। मगर…	वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण
229	90	रचना	मुकदमा चलैत-चलैत बाहरक दुनिया अपन कथा बना रहल छल। एक चैनल— “जुआ सिंडिकेट का दार्शनिक बचाव।” दोसर— “गरीबों…	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण
230	120	मृणालिनी, सत्यप्रकाश	गढ़ नारिकेलमे मृणालिनी घरक बाढ़-दाग पर नब चूना लगबैत मजदूर देखैत छलीह। दीवाल आधा पुरान। आधा नब। सत्यप्रकाशक…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
231	137	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, देवांशु, हरिचरण	पुरान सत्यप्रकाश-मामला न्यायालयमे प्रारम्भिक आरोप-विचार धरि पहुँचल। देवांशु उपस्थित। वृद्ध। वकील संग। अभियोजन कहलक— देवांशु गैरकानूनी दबावक निर्देश…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
232	90	मृणालिनी, सत्यप्रकाश, देवांशु	देवांशु न्यायालय बाहर सीढ़ी उतरैत लड़खड़ायल। पत्रकार घेरि लेल। “क्या आपने श्री कर्ण को मरवाया?” “क्या आप स्वीकार…	मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
233	98	—	नब मुकदमामे निर्णायक डिजिटल विशेषज्ञक गवाही आयल। ओ स्पष्ट कहलक — “हम सामग्रीक सत्यापन करैत छी—कुन उपकरणसँ कखन संदेश,…	न्यायालय/प्रमाण
234	124	ईशान, मयंक, रचना	मयंक झा वित्तीय विशेषज्ञ रूपेँ साक्षी आयलाह। बचाव पहिल प्रश्न— “अहाँ एहि	धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्र

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			केसक जाँचकर्ता नहि?” “परामर्शदाता।” “अपराध-विज्ञान विशेषज्ञ?”...	माण
235	104	शैलेश	अदालत बाहर शैलेश मंडलक पत्नी आरती पहली बेर ओकरा भेटबाक आयलीह। शैलेश जमानत पर बाहर छल, मुदा निलम्बित।...	न्यायालय/प्रमाण
236	95	अभिषेक, रितेश	रितेश दास सेहो सरकारी संरक्षण मे गवाह बनल बाद गाम लौटल। मगर रोजगार नहि। लोक कहैत— “पुलिसक आदमी।”...	न्यायालय/प्रमाण
237	89	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, रचना, सौरभ	सौरभ बर्धनक जमानत अवधि मे एक दिन उत्तरायण निधि स्वयं घोषणा केलक— स्वतन्त्र बाहरी समीक्षा। पुरान निवेश स्रोत...	मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
238	71	रचना	न्यायालयक एक दिन न्यायाधीश बचाव आ अभियोजन दुनूकेँ रोकि कहलीह— “एहि मुकदमामे बार-बार ‘पूरा जाल’ शब्द उपयोग भऽ...	न्यायालय/प्रमाण · स्मृति/लेखन
239	95	ईशान, अनिरुद्ध, देवांशु	एक साँझ ईशान अनिरुद्ध चौधरीक घर गेल। अनिरुद्ध बहुत बूढ़ भऽ चुकल छलाह। टेबलपर पुरान फाइल नहि। केवल...	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक · बिज्जी–गोहि रूपक
240	101	मृणालिनी	गढ़ नारिकेलमे बिज्जी फेर देखायल। एहि बेर दूटा। एक पैघ। एक छोट। मृणालिनी बरामदासँ देखलीह। छोट बिज्जी	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक · बिज्जी–

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			पैघक…	गोहि रूपक
241	106	—	विशेष न्यायालयमे मुकदमा महीना-दर-महीना बढ़ैत रहल। जे बाहरसँ एक घटना लगैत छल, भीतर सैकड़ों छोट प्रश्नमे टूटि गेल।…	न्यायालय/प्रमाण
242	93	रितेश	मनोज नायकक प्रतिपरीक्षणक दिन अदालत भरल छल। ओ स्वयं साक्षी बनबाक निर्णय नहि लेने छल। मगर ओकर पूर्व…	न्यायालय/प्रमाण
243	79	—	रघुवीरक दू सहयोगी अलग मामला स्वीकार कऽ हलुक दण्डक आवेदन केलनि। हुनकर बयान मनोजक भूमिका अधिक स्पष्ट करैत…	न्यायालय/प्रमाण
244	137	सौरभ	सौरभ बर्धनक पक्ष अन्तिम बहसमे कहलक— “निवेशक जोखिम-प्रबन्ध अपराध नहि। वैध कम्पनी, वैध निधि, वैध व्यापार। नीचे स्तरपर…	डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण
245	91	प्रदीप, केशव	केशव मेहताक अन्तिम बहस अधिक व्यक्तिगत भेल। ओकर वकील कहलक — “केशवक अपराध, यदि किछु, अनुपालन-असफलता हो सकैत। ओ…	डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण
246	96	प्रदीप, तृषा	प्रदीप महाजनक वकील अन्तिम बहसमे दण्ड-निर्धारणक भविष्य दिस देखैत छल। “ओ अपराध स्वीकारने अछि। सहयोग केने अछि। दस्तावेज…	न्यायालय/प्रमाण
247	119	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश,	पुरान सत्यप्रकाश-मामलामे देवांशुक परीक्षण अलग न्यायालयमे धीमा चलैत।	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
		देवांशु	मृणालिनी एक दिन गवाही लेल बजाओल गेलीह। ओ केवल जे…	जाँच · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
248	95	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, देवांशु	देवांशुक वकील पुछलक— “अहाँ अपन पति मृत्यु बाद देवांशु रक्षित पर शंका केने छलीह?” “पहिने ककरो निश्चित नहि।”…	मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
249	105	ईशान, मृणालिनी	विशेष न्यायालयमे नब जुआ-मामलाक निर्णयक तारीख घोषित भेल। तीन सप्ताह बाद। बाहर अटकल। कौन दोषी? कौन मुक्त? कतेक…	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
250	209	ईशान, रचना, प्रदीप, सौरभ, केशव	निर्णयक दिन अदालतमे स्थान कम पड़ल। न्यायाधीश आरम्भे कहलीह — “ई आदेश प्रत्येक अभियुक्त विरुद्ध पृथक साक्ष्यक मूल्यांकन पर…	डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण · बिज्जी–गोहि रूपक
251	105	ईशान, अनिरुद्ध, रचना, सौरभ, केशव	बाहर मीडिया पहिल पाँच मिनटमे शीर्षक बना देलक — “सौरभ-केशव दोषी।” “जुआ जाल पर अदालत का हथौड़ा।” “कई आरोपी…	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण
252	86	प्रदीप, तृषा	दण्ड-निर्धारणक दिन प्रदीपक बेटी तृषा आयली। पाछाँ बैसल। प्रदीप ओकरा देखलक। किछु कहल नहि। अदालत सहयोग, आत्मसमर्पण, अपराधक…	न्यायालय/ प्रमाण
25	71	केशव,	केशवक दण्ड सुनैत विहान	डिजिटल

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
3		विहान	सारंग अदालतमे नहि छल। ओ अम्बर कार्यालयमे कर्मचारीसभक संग सार्वजनिक सुधार-योजना जारी करैत। निजी…	जुआ ·धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण · पुनर्वास/नीति
254	60	रचना	मनोजक माए दण्ड सुनि रोइत कहलीह— “हमर बेटा खराब संगतमे पड़ल।” रचना टीवी पर सुनलीह। ओ सोचलीह— खराब…	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
255	51	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, सौरभ, केशव	पुरान सत्यप्रकाश-मामलाक निर्णय एखन बाकी छल। ईशानक भीतर विचित्र स्थिति। नब अपराधक न्यायालय निर्णय दे चुकल। बाबूक कथा…	मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
256	103	सत्यप्रकाश, देवांशु, हरिचरण	देवांशु-मामलाक अन्तिम बहसमे अभियोजन कहलक — “हम सीधे हत्या-आदेशक लिखित प्रमाण प्रस्तुत नहि करैत। हमर मामला परिस्थितिजन्य श्रृंखला पर…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · स्मृति/लेखन
257	126	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, देवांशु, हरिचरण	निर्णयक दिन मृणालिनी आयलीह। ईशान कातमे। देवांशु सामने। न्यायाधीश दीर्घ आदेश पढ़लनि। पहिने स्पष्ट— सत्यप्रकाशक मृत्यु सामान्य आकस्मिक…	मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
258	75	ईशान, मृणालिनी	अदालत बाहर पत्रकार मृणालिनी दिस दौड़ल। “क्या आपको न्याय मिला?” ओ रुकलीह। ईशान रोकय चाहलक। मृणालिनी हाथ उठा…	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
25	36	मृणालिनी,	देवांशु दण्ड सुनि	न्यायालय/

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
9		देवांशु	न्यायालयक अनुमति सँ मृणालिनी दिस एक क्षण मुड़ल। किछु कहबाक प्रयास। मृणालिनी रुकलीह नहि। ओकरा…	प्रमाण · परिवार/शोक
260	74	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश	गढ़ नारिकेल लौटला पर मृणालिनी सत्यप्रकाशक फोटो सामने दीप नहि जरेलनि। ओ फोटो दीवालपर फेर टाँगि देलीह। बस।…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक
261	104	ईशान	ओहि साँझ कमला-बलानक किनार पर ईशान अकेले गेल। बरखा बाद नदी चौड़ी। कादोमे गोहिक लम्बा निशान। ओ नजिक…	बिज्जी–गोहि रूपक
262	88	मयंक, रचना, रोहित	राजधानी नगरमे रचना सिन्हा अंतिम संयुक्त समीक्षा-बैठकमे बोर्ड साफ करैत छलीह। “प्रमाण।” “संशय।” “प्रयोजन।” “तर्क।” “समवाय।” “स्मृति।” एक-एक…	स्मृति/लेखन
263	73	ईशान	ईशान अपन म्यूल-खाता जोखिम परियोजनाक अंतिम सार्वजनिक प्रतिवेदनमे एक पाँति जोड़लक— “अपराधी जाल तकनीक बदलैत अछि; सामाजिक कमजोरीक…	धन-वाहक खाता
264	65	मृणालिनी, धनेश्वरी	मृणालिनी एक दिन आँगन साफ करैत धनेश्वरीक भीजल पोथी धूपमे सुखेलनि। “साँपक भय सँ घर छोड़ू नहि; मुदा…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
265	90	मृणालिनी	राति देहरी बाहर सरसराहट भेल। मृणालिनी दरबज्जा खोललीह। छोट बिज्जी अकेले छल। पैघ नहि। ओ देहरी पर ठाढ़…	परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
266	46	सत्यप्रकाश	निर्णयक बाद शहर शान्त नहि भेल। केवल समाचारक दिशा बदलल। पहिने प्रश्न छल—के दोषी? आब— के अपील करत?...	मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण
267	95	प्रदीप, सौरभ, केशव	सौरभ बर्धन अपील दायर केलक। केशव सेहो। मनोज सेहो। प्रदीप आंशिक अपील नहि केलक; ओकर वकील केवल दण्डक...	कथानक-संक्रमण
268	117	प्रदीप, तृषा	तृषा पिता सँ भेटबाक जेल आयल। एहि बेर ओ काँचक पार नहि, अनुमत पारिवारिक मुलाकातक कक्षमे दूरी पर...	कथानक-संक्रमण
269	140	विहान	अम्बर इंटरैक्टिव बचि गेल। मगर छोट भऽ गेल। निवेशक हटला। कर्मचारी संख्या घटल। कुछ उत्पाद बन्द। मुख्य खेल-प्रणाली...	डिजिटल जुआ
270	69	मयंक, रचना, रोहित	रचना सिन्हा नब पद पर स्थानान्तरित भेलीह। राजधानी नगरसँ दूर। कियो कहलक—पुरस्कार। कियो—व्यवस्था हुनका हटेलक। कियो—सामान्य सेवा-परिवर्तन। रचना...	न्यायालय/प्रमाण
271	134	ईशान	ईशानक म्यूल-खाता परियोजना राज्यक दू विश्वविद्यालयमे प्रशिक्षण-पाठ्यक्रमक हिस्सा बनल। ओ कक्षा मे पहिल दिन अपराधक उदाहरण नहि, एक...	धन-वाहक खाता · परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति ·स्मृति/लेखन
272	80	सबीना	सबीना खातूनक सिलाइ-	पुनर्वास/नीति

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			दोकान फेर चलल। बैंक खाता पर निगरानी हटयमे समय लागल। स्थानीय लोकक अविश्वास आर देर। एक…	
273	116	अभिषेक, मंजरी	अभिषेकक बहिन मंजरी नर्सिङ्ग प्रशिक्षण पूरा करबाक कगार पर छलीह। एक दिन अस्पतालमे बैंक-जागरूकता शिविर लगल। वक्ता कहैत…	पुनर्वास/नीति ·बिज्जी–गोहि रूपक
274	78	शैलेश	शैलेश मंडल विद्यालयक नौकरीमे तुरन्त वापस नहि आयल। विभागीय जाँच। निलम्बन। परामर्श। आरती बच्चासभसँ अलग घरमे रहैत रहल।…	डिजिटल जुआ
275	63	अभिषेक, रितेश	रितेश दासक मोबाइल-मरम्मति दोकानक नाम ओ बदललक— “नव बाट।” कियो हँसल। ओ सहलक। अभिषेक महीना बाद फेर आयल।…	कथानक-संक्रमण
276	69	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, देवांशु	देवांशु रक्षित दण्डक विरुद्ध अपील केलक। स्वास्थ्य खराब। उमर। विधिक प्रश्न। मृणालिनी समाचार सुनलीह। ईशान पूछलक— “चिन्ता?” “नहि।”…	मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
277	117	ईशान, अनिरुद्ध	अनिरुद्ध चौधरीक स्वास्थ्य तेजी सँ गिरल। ईशान अस्पताल गेल। अनिरुद्ध ऑक्सीजन पर, मगर होशमे। “रिपोर्ट?” ओ धीमे पुछलक।…	परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति
278	107	ईशान, मृणालिनी, अनिरुद्ध,	अनिरुद्ध दू सप्ताह बाद चलि गेलाह। सरकारी सम्मान सीमित। परिवार निजी अन्त्येष्टि चाहैत।	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
		मयंक, रचना	रचना दूरक पदस्थापन सँ आयलीह।…	·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
279	55	रचना	रचना वापसी ट्रेनमे खिड़की बाहर देखैत रहलीह। फोन पर नब जिला सँ संदेश—एक ठगी-जाल। कई बैंक खाते।…	न्यायालय/प्रमाण
280	89	ईशान, मृणालिनी	कुछ महीना बाद राज्य सरकार म्यूल-खाता पीड़ित/सहभागी वर्गीकरण लेल नब दिशा-निर्देश जारी केलक। तीन मोट श्रेणी—जानि-बुझि संगठित…	धन-वाहक खाता · परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति
281	84	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश	उदयरेखा लोकन्यास आ उत्तरायणक नब सार्वजनिक अभिलेखमे सत्यप्रकाशक आपत्ति पूरा नामसँ दर्ज भेल। एक शोधार्थी ईशानकेँ ई-पत्र लिखलक—…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
282	68	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश	कमला-बलानक किनार पर नया तटबन्ध-मरम्मति शुरू भेल। ई विडम्बना ईशान सँ छूटल नहि। सत्यप्रकाश ठेकेदारी। तटबन्ध। प्रतिशत। मृत्यु।…	निविदा/उगाही · मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
283	77	मृणालिनी	एक साँझ छोट बिज्जी आँगनमे आयल। अब ओ पहिलक छोट नहि लगैत। देह भरल। चाल आत्मविश्वासी। मृणालिनी पहिचान…	परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
284	99	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश	ईशान राति माएक संग बरामदामे बैसल। “माँ, एहि सभक किताब बनय तऽ?” मृणालिनी ओकरा देखलीह।	मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ ·

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			“ककर?” “बाबू। जुआ-जाल।...	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
285	88	ईशान, मृणालिनी	राति गहिर भेल। कमला-बलान दिस हवा। दूर कुकुरक आवाज। झाड़ीमे हलुक सरसराहट। ईशान उठि देखलक। किछु नहि। मृणालिनी...	परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
286	84	रचना	रचना सिन्हाक नब कार्यालयमे पहिल प्रशिक्षण सत्र छल। ओ बोर्ड पर पाँच शब्द लिखलीह— देखल। सुनल। अनुमान। सिद्ध।...	पुनर्वास/नीति ·बिज्जी–गोहि रूपक
287	100	मृणालिनी	गढ़ नारिकेलमे भोरक पहिल उजास। मृणालिनी दरबज्जा खोललीह। माटिपर पदचिह्न। एक बिज्जी। फेर छोट-छोट दोसर पदचिह्न। शायद बच्चा।...	निविदा/उगाही · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
288	83	ईशान, मृणालिनी, प्रदीप, सौरभ, केशव	समय धीरे-धीरे निर्णयसभक धार कुन्द करैत गेल। समाचार-पत्रमे नब विषय आयल। नब घोटाला। नब चुनाव। नब बाढ़। नब...	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
289	97	सौरभ, केशव	उच्च न्यायालयमे सौरभ आ केशवक अपील एक संग नहि, अलग-अलग सुनल गेल। सौरभक वकील फेर कहलक— “निवेशक-पक्ष जोखिम...	न्यायालय/प्रमाण
290	190	केशव	केशवक अपीलमे अदालत कठोर छल। “अलग लेखा” स्वयं अपराध नहि—ई मानल गेल। मगर जखन व्यक्ति बार-बार एहन	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण ·

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			प्रवाहकेँ…	स्मृति/लेखन
291	116	प्रदीप, केशव	किछु दिन बाद कारामे वित्तीय अपराध विषय एक वैधानिक पुनर्वास सत्र भेल। कियो पीड़ित सीधे नहि अनल गेल।…	पुनर्वास/नीति
292	123	सौरभ, केशव	सौरभ जेलमे किछु अवधि काटय लागल। ओकरे वकील एखनहुँ उच्चतर अपीलक सलाह दैत। सौरभ कहलक— “करब।” ओ न्यायिक…	डिजिटल जुआ
293	130	प्रदीप, तृषा	प्रदीपक शेष कारावास पूरा भेला पर रिहाइ भेल। एहि बेर फाटक बाहर पत्नी आ तृषा दुनू। तृषा आब…	पुनर्वास/नीति
294	118	प्रदीप, तृषा	तृषा पहिल वर्षक कानून कक्षामे “आपराधिक आशय” विषय पढ़ैत घर आयली। राति पिता सँ पूछलीह— “अहाँक अपराध कखन…	कथानक-संक्रमण
295	116	ईशान, मृणालिनी, अनिरुद्ध, देवांशु	मृणालिनी एक दिन ईशानकेँ कहलीह— “अनिरुद्ध बाबूक परिवारकेँ भेटि आउ।” “क्यों?” “बस।” ईशान गेल। अनिरुद्धक पत्नी ओकरा एक…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
296	69	ईशान, मृणालिनी	ईशान लिखनाइ शुरू नहि केलक। पहिने नोट बनौलक। “जे प्रत्यक्ष।” “जे दस्तावेज।” “जे परिवारक स्मृति।” “जे अदालत सिद्ध…	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
297	93	अनिरुद्ध, रचना	रचना सिन्हा नब जिलामे जाँच करैत एक युवककेँ गिरफ्तार करबाक आदेश रोकलीह। कारण— फोन ओकर नाम पर। पैसा…	कथानक-संक्रमण

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
298	93	ईशान	राज्यक बैंक-दिशानिर्देश लागू भेला बाद पहिल वार्षिक समीक्षा आयल। गलत ढंगसँ पूर्ण रोकल खाता कम। संदिग्ध भर्ती-शिकायत बेसी—कारण…	कथानक-संक्रमण
299	86	शैलेश	शैलेश मंडलक विभागीय मामला समाप्त भेल। नौकरी तुरन्त पूर्ण पुनर्स्थापित नहि। ओकरा शर्तसहित सेवा-वापसी भेटल—परामर्श, वित्तीय निगरानी, अनुशासन।…	बिज्जी-गोहि रूपक
300	56	सबीना	सबीना खातूनक बेटी इलाज पूरा कऽ हँसैत फोटो खिंचौलक। सबीना फोटो दोकानक दीवालपर लगेलनि। पाछाँ सिलाइ मशीन। नीचाँ…	बिज्जी-गोहि रूपक
301	80	अभिषेक, मंजरी	अभिषेक बैंकक एक स्थानीय जागरूकता शिविरमे स्वयंसेवक बनल। पहिल बेर मंचपर गेल तऽ हाथ काँपल। “हम पुलिस नहि।…	पुनर्वास/नीति
302	126	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, रचना, सौरभ	उत्तरायण निधि पुनर्गठन बाद सौरभक नाम संचालक-मण्डलसँ हटाओल गेल। नब अध्यक्ष सार्वजनिक रूपेँ कहलक— “संस्था व्यक्ति सँ पैघ।”…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक
303	56	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी	मृणालिनी ओहि रकमक एक हिस्सा धनेश्वरीक नामपर गामक विद्यालयमे पुस्तक-कोष देलीह। ईशान पुछलक — “बाबूक नाम किएक नहि?” “बहुत…	परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति · स्मृति/लेखन · बिज्जी-गोहि रूपक
30	81	ईशान,	एक वर्ष बाद ईशानक	परिवार/शोक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
4		मृणालिनी, वैदेही	प्रशिक्षणक छात्रसभमे सँ एक युवती गढ़ नारिकेल आयलीह। नाम—वैदेही झा। शोध विषय—आर्थिक अपराधमे सामाजिक...	· पुनर्वास/नीति
305	73	ईशान, वैदेही	संध्याकाल वैदेही कमला-बलानक किनार देखय गेलीह। ईशान संग। ओ कादोमे गोहिक निशान देखलक। “एहि सँ शीर्षक बनि सकैत।”...	स्मृति/लेखन · बिज्जी–गोहि रूपक
306	49	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी	राति मृणालिनी पोथी खोललीह। धनेश्वरीक धुँधल पाँति। अपन जोड़ल पाँति। खाली जगह एखनहुँ बहुत। ओ कलम उठौलीह। तेसर...	परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
307	80	मृणालिनी	अगिला भोर मृणालिनी अकेली नदीक कात गेलीह। उमर हुनकर चाल धीम कऽ देने छल। ओ दूरसँ पानि देखलीह।...	परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
308	111	ईशान, अनिरुद्ध, रचना	ईशान अनिरुद्धक पुरान कलमसँ पहिल पाँति लिखलक— “ई कथा कोनो एक अपराधीक कथा नहि।” फेर रुकल। पन्ना फाड़ि...	न्यायालय/ प्रमाण · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
309	72	ईशान	ईशानक लिखल पन्ना धीरे-धीरे बढ़य लागल। ओ प्रतिदिन नहि लिखैत। कतेको दिन केवल पुरान फाइल पढ़ैत। कतेको दिन...	न्यायालय/ प्रमाण · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
310	122	मृणालिनी, वैदेही	एक साँझ वैदेही झा फेर गढ़ नारिकेल आयलीह। हुनकर शोध आगाँ बढ़ि चुकल। एहि बेर नोटबुक संग एक...	न्यायालय/ प्रमाण · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
311	80	रचना	रचना सिन्हाक नब जिलाक ठगी-जाल अपेक्षासँ छोट निकलल। पाँच खाता। दू आरोपी। एक कर्मचारी। कोनो अंतर्राज्यीय “सम्राट” नहि।…	कथानक-संक्रमण
312	95	ईशान	ईशानक प्रशिक्षणमे एक नब उदाहरण आयल। एक वृद्ध शिक्षकक पेंशन खाता अचानक रोकल गेल, कारण ओकर नम्बर एक…	धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण · पुनर्वास/नीति
313	91	मृणालिनी, धनेश्वरी	मृणालिनी धनेश्वरी स्मृति-पुस्तक कोषक किताब देखय विद्यालय गेलीह। बच्चासभ पुस्तक उलटैत। कियो नाम नहि पढ़ैत। कियो मुहर देखैत…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
314	104	प्रदीप, तृषा	प्रदीपक वित्तीय-साक्षरता कक्षा धीरे प्रसिद्ध होय लागल। कारण ओ भाषण नहि दैत। ओ कहैत— “जे बुझल नहि, हस्ताक्षर…	कथानक-संक्रमण
315	79	—	मनोज नायकक अपील आंशिक सफल भेल। मारपीटक प्रत्यक्ष उच्च स्तरक दायित्वक एक आरोप कम भेल। म्यूल भर्ती आ…	धन-वाहक खाता · न्यायालय/प्रमाण
316	78	रितेश	रितेश एक दिन मनोजक पिता सँ बजारमे टकरायल। वृद्ध ओकरा देखते थूक देलक— “गद्दार।” रितेश चुप। ओ प्रतिवाद…	न्यायालय/प्रमाण
317	126	सत्यप्रकाश, सौरभ	सौरभ बर्धन उच्चतर अपीलक तैयारीमे पुरान उत्तरायण अभिलेख माँगलक। वकील कहलक— “हम तर्क करब जे ‘पुरान स्रोत’क अर्थ…	मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
318	78	ईशान, मृणालिनी, रचना, सौरभ	ईशान लेखनक पन्नामे “सौरभ” लिखि फेर काटि देलक। मृणालिनी पुछलीह — “क्यों?” “बहुत लोक जीवित। मुकदमा, अपील।” “तखन?” “कथा…	परिवार/शोक
319	74	मृणालिनी, वैदेही	वैदेहीक शोधप्रबन्धक एक अध्याय “दीर्घकालीन न्यायिक अनिश्चितता” पर छल। ओ मृणालिनीक साक्षात्कारक एक वाक्य उपयोग करय चाहैत छलीह —…	परिवार/शोक
320	80	ईशान, रचना	रचना सिन्हा छुट्टी मे गढ नारिकेल नहि, राजधानी नगर आयलीह। ईशान सँ एक चाय-दोकानमे भेट। “लिखैत छी?” रचना…	कथानक-संक्रमण
321	76	ईशान, मृणालिनी	आँगनमे बिज्जीक नब परिवार स्थिर भऽ गेल। कखनो एक। कखनो दू। एक बेर तीन छोट बच्चा। मृणालिनी दूर…	परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
322	111	ईशान	एक दिन कमला-बलानक किनार पर सचमुच एक गोहि धूप खाइत देखायल। गामक बच्चा सभ दौड़ल। कियो पत्थर उठौलक।…	न्यायालय/प्रमाण · स्मृति/लेखन · बिज्जी–गोहि रूपक
323	33	ईशान, मृणालिनी	मृणालिनी ओ पाँति पढ़लीह। “ठीक।” “साहित्य कम नहि भऽ गेल?” “जँ बच्चा गोहि मारऽ लगय तऽ साहित्यक की…	परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
324	78	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, रचना, प्रदीप	समय आर आगाँ बढ़ल। धनेश्वरी स्मृति-पुस्तक कोषमे किताब बढ़ल। मंजरी अस्पतालमे नौकरी पेलनि। अभिषेकक बैंक-अभिलेख	डिजिटल जुआ · परिवार/शोक ·

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			सामान्य भेल। सबीना…	पुनर्वास/नीति ·स्मृति/लेखन
325	105	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी	एक राति मृणालिनी ईशानकेँ बजौलीह। “पोथी आन।” धनेश्वरीक पोथी। तीन पाँति— “साँपक भय सँ घर छोड़ू नहि; मुदा…	न्यायालय/ प्रमाण · परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति ·स्मृति/लेखन
326	93	ईशान	भोरमे कमला-बलान पर कुहेस। एक बिज्जी किनारपर। दूर गोहि धूपक प्रतीक्षा मे पानिक भीतर। घासमे साँपक पथ हो…	निविदा/ उगाही · न्यायालय/प्रमाण · स्मृति/लेखन · बिज्जी–गोहि रूपक
327	123	ईशान	ईशानक पाण्डुलिपि आब एक गोपनीय फोल्डरमे नहि रहि गेल। ओ किछु अंश सुमेधा घोषकेँ पढ़बाक लेल देलक। शर्त—…	स्मृति/लेखन
328	136	प्रदीप, तृषा	तृषा कानून महाविद्यालयमे एक प्रस्तुति देलीह— “आर्थिक अपराधमे नैतिक उत्तरदायित्व आ विधिक दोष।” ओ पिता विषय एक्को शब्द…	न्यायालय/ प्रमाण
329	91	रचना	रचना सिन्हाक नब केस अदालत पहुँचलाक पहिने बंद भऽ गेल। कारण— मुख्य शिकायतकर्ता स्वयं गलत पहचान केने छल।…	न्यायालय/ प्रमाण
330	90	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी	गढ़ नारिकेलमे धनेश्वरी स्मृति-पुस्तक कोषक पहिल वर्ष पूरा भेल। विद्यालयक प्रधानाध्यापक छोट कार्यक्रम करय चाहैत छलाह। मृणालिनी फेर…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
331	109	ईशान, मृणालिनी, विहान	विहान सारंग अम्बरक नब कार्यालयमे ईशानकेँ एक सार्वजनिक संगोष्ठी लैल आमन्त्रण पठौलक। विषय — “डिजिटल मनोरंजन, उपयोगकर्ता सुरक्षा आ…	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
332	73	ईशान	ईशान अपन प्रस्तुति मे अपराधी नाम नहि लेल। ओ केवल चारि वृत्त बनौलक — मनोरंजन। लत। ऋण। भर्ती। फेर…	कथानक-संक्रमण
333	112	ईशान, विहान	संगोष्ठी बाद विहान ईशानसँ अकेले कहलक— “तोहर बाबूक पुरान ई-पत्र फेर पढ़लहुँ।” ईशान चुप। “ओ ‘सेवा सत्यापन’ पर…	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति
334	49	ईशान, मृणालिनी, सौरभ	सौरभक उच्चतर अपील आंशिक रूपेँ स्वीकार भेल। दोषक एक तकनीकी अंश हटायल। मुख्य आर्थिक सहायता संबंधी निष्कर्ष कायम।…	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
335	85	केशव	केशव जेल पुस्तकालयमे नियमित लिखनाइ शुरू केलक। डायरी नहि। पीड़ितक नाम नहि। केवल प्रश्न। “कतेक चेतावनी बाद अज्ञान…	कथानक-संक्रमण
336	89	अभिषेक, रितेश	रितेशक दोकानमे एक किशोर आयल। फोन मरम्मति। भुगतान लेल डिजिटल हस्तान्तरण करय चाहलक। नेटवर्क समस्या। किशोर कहलक— “भैया,…	न्यायालय/प्रमाण
337	101	शैलेश	शैलेशक विद्यालयमे वित्तीय जागरूकता सप्ताह भेल। प्रधानाध्यापक ओकरा मंच	डिजिटल जुआ ·

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			पर बोलय नहि चाहैत छलाह। पुरान मामला। “बच्चा पर…	पुनर्वास/नीति ·बिज्जी-गोहि रूपक
338	60	मंजरी	मंजरी अस्पतालमे एक मरीजक परिवारक बैंक खाता ठगीक कारण रोकल सुनलीह। ओ तुरन्त पुराने दर्दक कारण उत्तेजित भऽ…	न्यायालय/प्रमाण
339	81	ईशान, मृणालिनी	ईशानक पाण्डुलिपि पचास हजार शब्द लग पहुँचेबाक पहिने ओ रुकल। ओ मृणालिनीकेँ किछु पन्ना पढ़ौलक। मृणालिनी बीचमे कहलीह—…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
340	82	मृणालिनी, धनेश्वरी	एक राति मृणालिनी नींद सँ उठलीह। बाहर कुकुर भौंकि रहल। पुरान भय एक क्षण लौटल— कियो आयल? साँप?…	परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी-गोहि रूपक
341	55	ईशान, मृणालिनी	भोरमे ईशान पोथी खोललक। पाँच पाँति। खाली छैठम। ओ माएक रातिक बात नहि जानैत। अपने एक पाँति लिखलक —…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी-गोहि रूपक
342	72	ईशान, मृणालिनी	कमला-बलानक किनार पर एहि वर्ष पानि कम छल। गोहि दूर बालू पर धूप खाइत। एक बिज्जी खेतक मेड़पर।…	परिवार/शोक ·बिज्जी-गोहि रूपक
343	49	ईशान, मृणालिनी	ईशानक लिखाइ धीरे-धीरे घरक चीज भऽ गेल। मृणालिनी आब पन्ना माँगि नहि पढ़ैत छलीह। ओ केवल कखनो पूछैत—…	परिवार/शोक
344	102	ईशान	एक दिन ईशानकेँ बैंक संघसँ फोन आयल। नब	धन-वाहक खाता

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			शिकायतक ढेर। एहि बेर समस्या पुरान म्यूल-खाता भर्ती जकाँ नहि।…	
345	102	रचना	रचना सिन्हाकेँ सेहो एहन मामला भेटल। एक वृद्धा कहलीह— “हम अपन बेटाक आवाज सुनलहुँ।” “बेटा कतऽ छल?” “विदेश।”…	मृत्यु/पुरान जाँच
346	75	ईशान, रचना	ईशान एहि नब जोखिम पर प्रशिक्षण बनौलक। शीर्षक सरल— “आवाज सुनू, मुदा पुष्टि करू।” ओ तकनीकी नकल कोना…	पुनर्वास/नीति ·बिज्जी–गोहि रूपक
347	50	ईशान, मृणालिनी	मृणालिनी एहि प्रशिक्षणक बात सुनि हँसलीह। “आब आवाजो साँप?” “माँ!” “तूँ सबकेँ रूपक बनबैत।” ईशान मुस्कुरायल। “नहि। एहि…	परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति
348	101	प्रदीप, तृषा	तृषा अपन कानून-अध्ययनमे एक लेख लिखलीह— “प्रमाणक नब रूप आ पुरान सावधानी।” ओ पिता केँ मसौदा नहि देखौलक।…	कथानक-संक्रमण
349	76	धनेश्वरी, सबीना	सबीना खातूनक दोकानमे एक दिन एक ग्राहक कहली — “दीदी, हमरा खाता सँ बहिनक दोस्त पैसा लऽ चाहैत। दू…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
350	127	शैलेश	शैलेशक विद्यालयमे एक छात्र चोरी सँ जुआ-जइसन खेल खेलैत पकड़ा गेल। प्रधानाध्यापक ओकर फोन जब्त कऽ माता-पिताकेँ बजौलनि।…	डिजिटल जुआ
351	60	रितेश	रितेशक दोकान आब स्थिर आय देब लागल। ओ एक सहायक रखलक—अठारह	कथानक-संक्रमण

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			वर्षक लड़का, नाम मोनू। पहिल दिन रितेश…	
352	82	ईशान, विहान	विहान सारंग अम्बरक प्रशिक्षण-कक्ष तैयार केलक। दीवालपर सफलता पुरस्कार नहि। चारि असफल निर्णय। “चेतावनी कैं वृद्धि-विरोधी मानल।” “बाहरी…	डिजिटल जुआ · न्यायालय/प्रमाण · पुनर्वास/नीति
353	126	सौरभ	सौरभ बर्धन दण्डक शेष अवधि पूरा कऽ बाहर आयल। कैमरा कम। समाचारक रुचि घटि चुकल। ओ सीधा घर…	न्यायालय/ प्रमाण
354	74	ईशान, मृणालिनी, रचना	मृणालिनी वृद्ध भऽ रहल छलीह। आब सीढ़ी धीरे। ठेहुन दुखैत। ईशान राजधानी नगर कम, गाम अधिक रहय लागल।…	परिवार/शोक
355	82	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी	धनेश्वरीक पोथी आब अलमारीक ऊपर नहि, मृणालिनीक सिरहाना लग रहैत। एक राति ओ ईशानकैं कहलनि— “सातम पाँति लिख।”…	परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति · स्मृति/लेखन · बिज्जी-गोहि रूपक
356	58	ईशान, मृणालिनी, वैदेही	एक दिन वैदेही झा अपन शोधप्रबन्धक अंतिम प्रति लऽ आयलीह। ओ मृणालिनीकैं धन्यवाद देलीह। “अहाँक नाम कहाँ?” “आभारमे—यदि…	परिवार/शोक · स्मृति/लेखन · बिज्जी-गोहि रूपक
357	105	रचना, रोहित	रचना सिन्हा एक प्रशिक्षण-पुस्तिका तैयार करैत छलीह। शीर्षक— “प्रारम्भिक डिजिटल वित्तीय जाँचमे प्रमाण-अनुशासन।” प्रथम पृष्ठ पर पाँच वाक्य—…	पुनर्वास/नीति
35	75	ईशान,	ईशानक पाण्डुलिपि आब	परिवार/शोक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
8		मृणालिनी	पूरा उपन्यासक आकार लऽ रहल छल। ओ अंतिम भाग लिखबाक प्रयास करैत बार-बार रुकैत। “अन्त…	·स्मृति/लेखन
359	86	ईशान, मृणालिनी	कमला-बलान पर साँझ उतरि रहल। बिज्जीक नब बच्चा सभ आब बड़े भऽ रहल। एक मेड़ पार। एक झाड़ी।…	परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
360	90	ईशान, मृणालिनी	मृणालिनीक ठेहुन दुखाइ अब केवल ठेहुन धरि नहि रहल। थकान बढ़ल। भोजन कम। कखनो साँस चढ़ि जाए। ईशान…	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक
361	74	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, रचना, तृषा	गढ़ नारिकेल लौटि ओ सिरहाना लग धनेश्वरीक पोथी रखलीह। सात पाँति। ईशान दवा समय लिखि देलक। सुबह। दुपहर।…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
362	75	ईशान, मृणालिनी	ईशान लिखनाइ धीमा कऽ देलक। माँक सोयल समय लिखैत। जागल तऽ संग बैसैत। एक दिन मृणालिनी कहलीह— “तोरा…	परिवार/शोक
363	86	ईशान, मृणालिनी	एक साँझ पोथी खोलि ओ आठम पाँति लिखबाक कहलीह। ईशान कलम हाथमे। “की?” मृणालिनी खिड़की बाहर देखलीह। बिज्जी…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
364	78	ईशान, रचना	रचना सिन्हा प्रशिक्षणक बीच एक केस सुनलीह— एक परिवार वृद्ध पिता केँ घरसँ बाहर नहि जाए दैत, कारण…	पुनर्वास/नीति
365	102	ईशान, मृणालिनी, प्रदीप, तृषा	तृषा छुट्टी मे गढ़ नारिकेल आयलीह। प्रदीप संग नहि। अकेली। मृणालिनी ओकरा देखिते कहलीह—	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			“कानूनवाली।” तृषा हँसलीह। “एखन…	गोहि रूपक
366	95	ईशान, मृणालिनी, रचना, प्रदीप, रितेश	ईशान आठ पाँतिक एक छोट पन्ना बनौलक। शीर्षक नहि। लेखक नहि। केवल पाँति सभ। विद्यालयक पुस्तकालयमे पाँच प्रति।…	डिजिटल जुआ · परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति ·बिज्जी–गोहि रूपक
367	60	ईशान, मृणालिनी	किछु सप्ताह बाद मृणालिनीक साँस फेर खराब भेल। राति। ईशान एम्बुलेंस बजौलक। ओ विरोध नहि केलनि। अस्पताल पहुँचल।…	परिवार/शोक
368	79	ईशान, मृणालिनी, रचना, तृषा, सबीना	अस्पतालक राति मृणालिनी ईशानकेँ पुछलीह— “पाण्डुलिपि कहाँ?” “लैपटॉप।” “अन्त?” “नहि।” “नीक।” “क्यों?” “कथा हमरा पाछाँ समाप्त मत करिह।”…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
369	62	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश	चौथा दिन हालत स्थिर। पाँचम दिन कने सुधार। सातम दिन चिकित्सक घर लऽ जाएबाक अनुमति देलक—ऑक्सीजन व्यवस्था, नर्सिंग…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
370	79	ईशान, मृणालिनी	एक सप्ताह बाद मृणालिनी बरामदामे धूप लेत छलीह। बिज्जी आयल। एकटा। मध्यम आकार। ओ देहरी कात रुकल। मृणालिनी…	परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
371	114	ईशान, मृणालिनी, रचना, रोहित	रचना सिन्हा कार्यालयमे अनाम पन्ना देखलीह। आठ पाँति। ओ “जे नहि जनैत छी…” पाँति पर रुकलीह। रोहित, जे…	परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति ·बिज्जी–गोहि रूपक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
372	69	ईशान, मृणालिनी	ईशान एक राति पाण्डुलिपिक अंतिम तिहाई फेर पढ़लक। ओ देखलक—कथा बहुते बेर “पहरा” कहि चुकल। किछु काटलक। प्रतीक…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
373	113	ईशान, मृणालिनी	अगिला भोर मृणालिनीक स्वास्थ्य अचानक बहुत गिरल। नर्स ईशानकेँ बजौलक। डॉक्टर फोन पर निर्देश। एम्बुलेंसक तैयारी। मृणालिनी आँखि…	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक ·बिज्जी–गोहि रूपक
374	93	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश, रचना	दिन धीमा। ऑक्सीजन। दवा। कखनो नींद। कखनो जागरण। मृणालिनी एक बेर सत्यप्रकाशक फोटो देखलीह। “बहुत प्रतीक्षा करौलह।” ईशान…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
375	69	ईशान, मृणालिनी	भोर होयबासँ किछु पहिने मृणालिनी चलि गेलीह। कोनो अंतिम भाषण नहि। कोनो रहस्य उद्घाटन नहि। कोनो अपराधी नाम…	परिवार/शोक
376	58	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश, रचना	अन्त्येष्टि साधारण। मृणालिनी जेना चाहैत—न भाषण, न राजनीतिक लोक, न मीडिया। गाम। परिवार। किछु मित्र। वैदेही। तृषा। प्रदीप…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
377	63	ईशान	तेरहम दिनक बाद ईशान पहिल बेर अकेले बरामदामे बैसल। कुर्सी खाली। माँक चश्मा। दवा। एक आधा पढ़ल पुस्तक।…	स्मृति/लेखन · बिज्जी–गोहि रूपक
378	47	ईशान, धनेश्वरी	कई सप्ताह बाद ओ धनेश्वरीक पोथी खोललक। आठ पाँति। नवम खाली। ओ कलम उठेलक। फेर रखि देलक। माँ…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
379	50	ईशान, मृणालिनी, रचना	रचना सिन्हा मृणालिनीक मृत्यु बाद एक छोट पत्र ईशानकेँ पठौलीह। कागच पर। फोन नहि। “हुनकर गवाही हमरा बहुत...	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
380	35	ईशान, तृषा	तृषा गढ़ नारिकेल आयलीह। पोथी देखलीह। “नवम पाँति?” “नहि।” “क्यों?” ईशान कहलक— “माँ कहने छलीह—आरो नहि।” “शायद मजाक?”...	न्यायालय/प्रमाण · स्मृति/लेखन
381	54	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश	ईशान पाण्डुलिपि फेर खोललक। मृणालिनीक मृत्यु लिखबाक पन्ना सामने। ओ पहिल मसौदामे बहुत लिखने छल। अंतिम शब्द। बिज्जी।...	मृत्यु/पुरान जाँच · न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
382	92	ईशान, रचना, प्रदीप, तृषा, सौरभ	कमला-बलानक किनार पर ओ महीना बाद गेल। पानि सामान्य। मछुआ। बच्चा। एक दूर गोहि। बिज्जी नहि। ओ किनार...	पुनर्वास/नीति ·बिज्जी–गोहि रूपक
383	85	ईशान, मृणालिनी	मृणालिनीक मृत्यु बाद पहिल बरख ईशान लेल ऋतु नहि, दूरी बनि गेल। सावन आयल। कमला-बलान भरल। धान रोपल...	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
384	62	ईशान, धनेश्वरी	धनेश्वरीक पोथी एक दिन विद्यालयक पुस्तकालयमे काँचक पेटीमे राखबाक प्रस्ताव आयल। ईशान मना केलक। “क्यों?” प्रधानाध्यापक पुछलनि। “उपयोग...	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
385	158	तृषा	तृषा कानून पूरा कऽ अधिवक्ता बनलीह। पहिल वर्ष पैघ मामला नहि।	न्यायालय/प्रमाण

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			जमानत। दस्तावेज। परिवारिक विवाद। छोट साइबर शिकायत।…	
386	89	प्रदीप, तृषा	ओहि राति प्रदीपकेँ फोन केलक। “एक केस छल।” सभ बतौलक। प्रदीप चुप। फेर कहलक— “तोरा हमरा लग किएक…	कथानक-संक्रमण
387	146	रचना	रचना सिन्हा वरिष्ठ पद पर पहुँचलाक बाद जाँच स्वयं कम, प्रशिक्षण अधिक करैत छलीह। एक दिन एक युवा…	पुनर्वास/नीति ·बिज्जी–गोहि रूपक
388	75	ईशान, मृणालिनी	ईशानकेँ एहि केस विषय सार्वजनिक प्रशिक्षण डेटा बादमे भेटल। ओ देखलक— एक छोट ग्रामीण खाता। एक मामूली विसंगति।…	परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति ·बिज्जी–गोहि रूपक
389	86	विहान	अम्बरक प्रशिक्षण-कक्षमे खाली कोना भरल नहि गेल। कर्मचारी बदलल। नब प्रबन्धक आयल। एक दिन ओ पुछलक— “ई दीवाल…	डिजिटल जुआ · पुनर्वास/नीति ·बिज्जी–गोहि रूपक
390	187	ईशान, मृणालिनी, केशव, अभिषेक, सबीना	केशव दण्ड पूरा कऽ बाहर आयल तऽ मीडिया लगभग नहि छल। ओ घर पहुँचि पहिल सप्ताह ककरो नहि…	डिजिटल जुआ · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
391	72	सौरभ	सौरभ सार्वजनिक जीवनमे वापस पूर्ण रूपेँ नहि आयल। ओ एक विश्वविद्यालयक शासन-अध्ययन केन्द्रकेँ निजी अभिलेख दान केलक —कानूनी अनुमति…	कथानक-संक्रमण
392	95	ईशान, मृणालिनी,	प्रदीप एक दिन प्रशिक्षण-कक्षा बाद घर लौटि देखलक तृषा धनेश्वरीक आठ पाँति	परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
		धनेश्वरी, प्रदीप, तृषा	प्रेम करि लाई छलीह। “दीवाल पर…	·बिज्जी–गोहि रूपक
393	69	शैलेश	शैलेशक छात्र जे जुआ-जइसन खेलमे पकड़ा गेल छल, एक वर्ष बाद विद्यालय परीक्षा पास कऽ शहर पढ़य गेल।…	डिजिटल जुआ · बिज्जी–गोहि रूपक
394	64	ईशान, सबीना	सबीना खातूनक दोकान बाहर सरकारी पोस्टर लगल — “म्यूल खाता सँ सावधान।” पोस्टरमे कठिन शब्द। सबीना नीचे हाथसँ लिखलीह—…	धन-वाहक खाता · पुनर्वास/नीति ·बिज्जी–गोहि रूपक
395	52	ईशान, मृणालिनी, वैदेही	वैदेही झाक शोध पुस्तक रूपमे प्रकाशित भेल। मृणालिनी नाम केवल आभारमे। एक पृष्ठ पर अनाम उद्धरण— “दुख संतुष्ट…	परिवार/शोक
396	70	ईशान	ईशान अपन पाण्डुलिपिक आखिरी खण्ड लिखैत एक समस्या पर अटक गेल— की दोषी लोकक बादक जीवन लिखब? की…	न्यायालय/प्रमाण · स्मृति/लेखन
397	45	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, अनिरुद्ध	एक संध्या ईशान धनेश्वरीक पोथी, अनिरुद्धक कलम आ मृणालिनीक चश्मा एके टेबुलपर देखलक। तीन पीढ़ीक वस्तु। ओ फोटो…	परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
398	79	रचना	रचना सिन्हा सेवा-निवृत्तिक नजिक छलीह। अंतिम प्रशिक्षण बैचमे एक अधिकारी पुछलक— “मैडम, तीस वर्ष बाद सबसे जरूरी नियम?”…	पुनर्वास/नीति
399	57	रचना, रोहित	सेवा-निवृत्ति दिन कियो पैघ समारोह नहि। कार्यालयक छोट सभा। रोहित आब	बिज्जी–गोहि रूपक

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			स्वयं वरिष्ठ। ओ रचनाकेँ एक फ्रेम देलक।…	
400	64	ईशान, रचना	ईशान रचना सँ अंतिम औपचारिक साक्षात्कार नहि केलक। ओ चाहैत तऽ उपन्यास लेल बहुत सामग्री। मगर एक दिन…	स्मृति/लेखन
401	65	ईशान	कमला-बलानक किनार पर एक नब पक्का पथ बनल। सुबह लोक टहलैत। बच्चा साइकिल। वृद्ध धूप। ईशानकेँ पहिने कने…	बिज्जी–गोहि रूपक
402	92	ईशान	राति ईशान पाण्डुलिपिक अंतिम पन्नासभक आरम्भ लिखलक। ओ जानैत छल अंतिम दृश्य केहन होय— न विजय-उत्सव। न गोहि…	न्यायालय/ प्रमाण · स्मृति/लेखन · बिज्जी–गोहि रूपक
403	57	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध	भोरक समय ओ बरामदासँ बाहर आयल। मृणालिनी नहि। धनेश्वरी नहि। सत्यप्रकाश नहि। अनिरुद्ध नहि। तैयो घर खाली नहि।…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक · पुनर्वास/नीति ·स्मृति/लेखन
404	89	ईशान, मृणालिनी, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध, देवांशु	एक वर्ष बाद ईशानक उपन्यास लगभग पूरा छल। लगभग। ई शब्द ओकरा परेशान करैत। क्योंकि “पूरा” कहिते मन…	मृत्यु/पुरान जाँच · डिजिटल जुआ ·धन-वाहक खाता · परिवार/शोक
405	131	ईशान, रचना	ओहि सप्ताह रचना सिन्हाक फोन आयल। सेवानिवृत्त होयबाक बादो हुनकर आवाज वैह तेज। “एक बात भेजैत छी।” “केस?”…	धन-वाहक खाता · पुनर्वास/नीति ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
40	86	प्रदीप, तृषा	तृषा आब नियमित वकालत	न्यायालय/

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
6			करैत छलीह। एक दिन न्यायालय बाहर पत्रकार ओकरा पुछलक— “आप आर्थिक अपराध के मामलों…	प्रमाण
407	76	केशव	केशव एक सार्वजनिक पुनर्वास कार्यक्रममे बोलबाक निमन्त्रण ठुकरा देलक। आयोजक पुछलक— “क्यों?” “एखन लोग हमरा सुनि कथा साफ…	न्यायालय/प्रमाण · पुनर्वास/नीति
408	66	रचना, सौरभ	सौरभक नाम धीरे-धीरे समाचारसँ गायब। ओकर दान कएल अभिलेख शोधार्थी पढ़य लागल। एक शोध-पत्रमे लिखल गेल— उत्तरायणक प्रारम्भिक…	स्मृति/लेखन
409	82	विहान	अम्बरक नब प्रशिक्षण-कक्षमे एक कर्मचारी खाली दीवालपर छोट कागच चिपका देलक— “आज हम की नहि देखैत छी?” विहान…	डिजिटल जुआ · पुनर्वास/नीति ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
410	108	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश	ईशान गढ़ नारिकेलक घरक मरम्मति अंतिम बेर करौलकि। “अंतिम” कहि फेर हँसल। घरमे किछु अंतिम नहि। छत। नाली।…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन
411	96	ईशान, मृणालिनी	ईशानक पाण्डुलिपिक अंतिम संशोधन तेज भेल। अब ओ वाक्य छोट करैत। जहाँ घटना चलैत, दर्शन रोकैत नहि। जहाँ…	न्यायालय/प्रमाण · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
412	72	ईशान, तृषा	तृषा एक सप्ताहांत गाम आयलीह। ईशान ओकरा	न्यायालय/प्रमाण ·

क्र·	शब्द	प्रमुख पात्र/संस्था	पाठ-संकेत	विषय-सूत्र
			अंतिम मसौदा नहि, केवल अन्तक पूर्वक अंश पढ़ौलक। ओ तेज पढ़लीह।…	स्मृति/लेखन
413	114	ईशान	ओहि राति ईशान नदीक कात अकेले गेल। चाँद कम। पानि कारी। गामक रोशनी पाछाँ। कादो कम, कारण पक्का…	बिज्जी–गोहि रूपक
414	72	ईशान	घर लौटि ओ अंतिम पृष्ठ लिखलक। पहिल मसौदा लम्बा। ओ काटलक। फेर काटलक। अन्ततः— “घासमे गहुमन दिशा बदलि…	स्मृति/लेखन · बिज्जी–गोहि रूपक
415	69	ईशान, मृणालिनी, धनेश्वरी, सत्यप्रकाश, अनिरुद्ध	भोरमे ईशान धनेश्वरीक पोथी खोललक। आठ पाँति। अधूर पन्ना— “घर बचेनाइ दीवाल बचेनाइ मात्र नहि।” ओ अनिरुद्धक कलम…	मृत्यु/पुरान जाँच · परिवार/शोक ·स्मृति/लेखन ·बिज्जी–गोहि रूपक
416	77	ईशान	दुपहर विद्यालयक दू बच्चा पुस्तक लौटाबय आयल। घरक बरामदा खुलेल। एक बच्चा आठ अनाम पाँति वाला पर्चा देखलक।…	न्यायालय/ प्रमाण
417	101	रचना, प्रदीप, तृषा, सौरभ, केशव	साँझ गढ़ नारिकेलमे हवा तेज भेल। कमला-बलानक पानि पर लहर। एक किसान घर लौटैत। एक लड़की साइकिल सँ…	निविदा/ उगाही · पुनर्वास/नीति ·बिज्जी–गोहि रूपक
418	23	—	राति फेर नदीक कात शान्ति। गहुमन घासमे। गोहि पानिक भीतर। बिज्जी किनारपर। दूर घरक एक-एक दीप बुझि रहल।…	बिज्जी–गोहि रूपक

ग्रन्थसूची

बिज्जी :गोहि सभक बीच

नाट्यशास्त्र
ध्वन्यालोक
वक्रोक्तिजीवितम्
औचित्यविचारचर्चा
काव्यप्रकाश
साहित्यदर्पण
न्यायसूत्र
न्यायभाष्य
तत्त्वचिन्तामणि
पदार्थतत्त्वनिरूपणम्
गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — खण्ड २
(Poetics)
(Mimesis: The Representation of Reality in Western Literature)
(The Dialogic Imagination)
(Narrative Discourse: An Essay in Method)
(Time and Narrative)
(The Historian’s Craft)
(What Is History?)
(The Archaeology of Knowledge)
(Discipline and Punish)
(Silencing the Past: Power and the Production of History)
(The Navya-nyāya Doctrine of Negation: The Semantics and Ontology of Negative Statements in Navya-nyāya Philosophy)
(Perception: An Essay on Classical Indian Theories of Knowledge)

आलेख २७ · उपन्यास आ विस्तृत आख्यानक अध्ययन

सहस्रबाढ़नि

सारांश

‘सहस्रबाढ़नि’ बहु-पीढ़ीय पारिवारिक आख्यानकेँ मिथिलाक नदी-भूगोल, औपनिवेशिक आ उत्तर-औपनिवेशिक प्रशासन, शिक्षा, अभियांत्रिकी, मध्यवर्गीय आकांक्षा, मृत्यु-स्मृति, भ्रष्टाचार, लोकविश्वास आ वैज्ञानिक चेतनाक परस्पर तनावसँ जोड़ैत अछि। उपन्यासक आरम्भ झिंगुर ठाकुरक स्मृतिमे बालक कलितसँ होइत अछि, मुदा कथाक वास्तविक विस्तार कलित, नन्द आ आरुणि धरि पहुँचैत एक एहन वंश-चक्र रचैत अछि जाहिमे जैविक उत्तराधिकारसँ बेसी महत्त्व नैतिक, मनोवैज्ञानिक आ ज्ञानमीमांसीय उत्तराधिकारक अछि। नदी, बाढ़ि, पुल, गाम, कॉलोनी, बस-यात्रा, सरकारी कार्यालय आ स्वप्न—ई सभ केवल स्थान वा घटना नहि, कालक भिन्न परत जोड़निहार आख्यान-उपकरण छथि। शीर्षकक ‘सहस्रबाढ़नि’ बाल-भयक झोंटाबला जीवसँ आरम्भ भऽ धीरे-धीरे मृत्यु, विपत्ति, संस्थागत हिंसा, स्मृति, अपराध-बोध आ पुनर्जन्मित साहसक बहुअर्थी ध्वनि बनि जाइत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्यक कसौटी पर ई रचना करुण, अद्भुत, वीर आ शान्त भावक बहुस्तरीय विन्यास प्रस्तुत करैत अछि; पाश्चात्य आख्यान-विज्ञानक काल-स्थान-संयोजन (Chronotope), बहुस्वरता (Heteroglossia), पूर्वदीप्ति (Analepsis), अग्रसूचना (Prolepsis) आ आत्म-सन्दर्भी आख्यान (Metafiction) एहि विन्यासकेँ बुझबाक उपयोगी उपकरण बनैत अछि। नव्य-न्यायकेँ साहित्यिक सिद्धान्तक रूपमे नहि, प्रमाण-अनुशासनक रूपमे ग्रहण केलापर नन्दक अदृश्य-दिशि झुकाव आ आरुणिक प्रमाण-शृंखला-आधारित प्रतिरोधक बीचक मूल भेद अत्यन्त स्पष्ट होइत अछि। विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि रचनामे उपस्थित ऐतिहासिक दाबीकेँ ‘सबल रूपेँ समर्थित’, ‘सम्भाव्य’, ‘विवादित’ आ ‘अज्ञात’ श्रेणीमे राखि साहित्यिक सत्य आ अभिलेखीय सत्यक भेद बचबैत अछि। ऐतिहासिक सत्यापनमे १९३४क बिहार-नेपाल भूकम्प, १९७५क पटना बाढ़ि, १९६२मे भारतीय वायुसेनाक आक्रामक उपयोग नहि होएब, आ १९७०क दशकमे महात्मा गांधी सेतु निर्माणक प्रसंग व्यापक रूपेँ

संगत भेटैत अछि; मुदा अबीसीनिया अभियानक सेनापति, स्नाइडर रायफलक तिथि आ खाकी वर्दीक उत्पत्तिसम्बन्धी वर्णन संशोधन माँगैत अछि।

बीजशब्द

सहस्रबाढ़नि ·मैथिली उपन्यास ·आख्यान-रचना ·स्मृति ·सामाजिक इतिहास

१.२९. गजेन्द्र ठाकुर- सहस्रबाढ़नि- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

सहस्रबाढ़नि

स्मृति, वंश, नदी, नैतिकता आ अन्तर्मनक बहुस्तरीय आख्यान

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य आख्यान-विज्ञान, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिसँ विस्तृत साहित्यिक शोध-समीक्षा

अध्ययन-वस्तु	गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यास — सहस्रबाढ़नि, खण्ड-२
अध्ययन-सीमा	उपलब्ध मूल पाठक आरम्भसँ अन्त धरि सम्पूर्ण पाठ
प्रकृति	पाठ-समीक्षा, तुलनात्मक साहित्यिक समीक्षा, ऐतिहासिक सत्यापन आ भाषिक निखार-अंकेक्षण

सारांश

‘सहस्रबाढ़नि’ बहु-पीढ़ीय पारिवारिक आख्यानकेँ मिथिलाक नदी-भूगोल, औपनिवेशिक आ उत्तर-औपनिवेशिक प्रशासन, शिक्षा, अभियांत्रिकी, मध्यवर्गीय आकांक्षा, मृत्यु-स्मृति, भ्रष्टाचार, लोकविश्वास आ वैज्ञानिक चेतनाक परस्पर तनावसँ जोड़ैत अछि। उपन्यासक आरम्भ झिंगुर ठाकुरक स्मृतिमे बालक कलितसँ होइत अछि, मुदा कथाक वास्तविक विस्तार कलित, नन्द आ आरुणि धरि पहुँचैत एक एहन वंश-चक्र रचैत अछि जाहिमे जैविक उत्तराधिकारसँ बेसी महत्त्व नैतिक, मनोवैज्ञानिक आ ज्ञानमीमांसीय उत्तराधिकारक अछि। नदी, बाढ़ि, पुल, गाम, कॉलोनी, बस-यात्रा, सरकारी

कार्यालय आ स्वप्न—ई सभ केवल स्थान वा घटना नहि, कालक भिन्न परत जोड़निहार आख्यान-उपकरण छथि। शीर्षकक 'सहस्रबाढ़नि' बाल-भयक झोंटाबला जीवसँ आरम्भ भऽ धीरे-धीरे मृत्यु, विपत्ति, संस्थागत हिंसा, स्मृति, अपराध-बोध आ पुनर्जन्मित साहसक बहुअर्थी ध्वनि बनि जाइत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्यक कसौटी पर ई रचना करुण, अद्‌भुत, वीर आ शान्त भावक बहुस्तरीय विन्यास प्रस्तुत करैत अछि; पाश्चात्य आख्यान-विज्ञानक काल-स्थान-संयोजन (Chronotope), बहुस्वरता (Heteroglossia), पूर्वदीप्ति (Analepsis), अग्रसूचना (Prolepsis) आ आत्म-सन्दर्भी आख्यान (Metafiction) एहि विन्यासकेँ बुझबाक उपयोगी उपकरण बनैत अछि। नव्य-न्यायकेँ साहित्यिक सिद्धान्तक रूपमे नहि, प्रमाण-अनुशासनक रूपमे ग्रहण केलापर नन्दक अदृश्य-दिशि झुकाव आ आरुणिक प्रमाण-शृंखला-आधारित प्रतिरोधक बीचक मूल भेद अत्यन्त स्पष्ट होइत अछि। विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि रचनामे उपस्थित ऐतिहासिक दाबीकेँ 'सबल रूपेँ समर्थित', 'सम्भाव्य', 'विवादित' आ 'अज्ञात' श्रेणीमे राखि साहित्यिक सत्य आ अभिलेखीय सत्यक भेद बचबैत अछि। ऐतिहासिक सत्यापनमे १९३४क बिहार-नेपाल भूकम्प, १९७५क पटना बाढ़ि, १९६२मे भारतीय वायुसेनाक आक्रामक उपयोग नहि होएब, आ १९७०क दशकमे महात्मा गांधी सेतु निर्माणक प्रसंग व्यापक रूपेँ संगत भेटैत अछि; मुदा अबीसीनिया अभियानक सेनापति, स्नाइडर रायफलक तिथि आ खाकी वर्दीक उत्पत्तिसम्बन्धी वर्णन संशोधन माँगैत अछि।

बीज-शब्द : सहस्रबाढ़नि; मिथिला; स्मृति; वंश-कथा; नदी-भूगोल; नैतिकता; नव्य-न्याय; समानान्तर इतिहास-दृष्टि; ध्वनि; काल-स्थान-संयोजन; प्रमाण-अनुशासन।

१. प्रस्तावना : उपन्यासक केन्द्र कतए अछि?

'सहस्रबाढ़नि'केँ केवल पारिवारिक उपन्यास, आत्मकथात्मक उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास वा प्रशासनिक जीवनक कथा कहि देब एकर संरचनात्मक जटिलताकेँ घटा देत। एहि रचनाक केन्द्र कोनो एक पात्र नहि, बल्कि 'परम्परा कोना बदलैत-बचैत अछि' ई प्रश्न अछि। झिंगुर बालक कलितकेँ देखैत छथि;

कलितक जीवन नन्दक मानसक पृष्ठभूमि बनैत अछि; नन्दक नैतिक कठोरता, विफलता आ अदृश्य-दिशि झुकाव आरुणिक भीतर दुविधा आ प्रतिरोध दुनू रूपमे प्रवेश करैत अछि; आरुणि अन्ततः पिताक मूल्यकेँ नहि त्यागैत छथि, मुदा पिताक हारक पद्धति दोहराबैत नहि छथि। एतए वंश रक्तक रेखा नहि, अनुभवक तर्क-शृंखला अछि।

रचनाक दोसर केन्द्र भूगोल अछि। बलान, कमला, कोशी, गंगा, पोखरि, इनार, बाध, गाछी, बालू, छहर, पुल—ई सभ दृश्य-पृष्ठभूमि नहि, जीवन-व्यवस्थाक सक्रिय कारण छथि। नदी दिशा बदलैत अछि, सभागाछी उजड़ैत अछि, खेतक मूल्य बदलैत अछि, बोरिगक असफलता कृषि-बोध बदलैत अछि, पटना बाढ़ि नगरक असुरक्षा खोलैत अछि, आ गंगा-पुल एक बेर विकासक प्रतीक, दोसर बेर भ्रष्ट निर्माणक आरोप, तेसर बेर शव-यात्राक मार्ग, चारिम बेर स्मृतिस्थल बनैत अछि। एहि प्रकार प्रकृति आ संस्था उपन्यासमे समानान्तर शक्तिक रूपमे उपस्थित छथि।

तेसर केन्द्र स्मृति अछि। उपन्यास स्मृतिमे विश्वास करैत अछि, मुदा स्मृतिक त्रुटिहीनता पर नहि। चरित्र लोकनि ‘हम सुनने छी’, ‘मोन पड़ैत अछि’, ‘सपना देखलहुँ’, ‘ओ कहलन्हि’—एहि कथन-रूपसँ अतीत रचैत छथि। ई शैली पाठककेँ बारम्बार स्मरण करबैत अछि जे परिवारक इतिहास एकरूप अभिलेख नहि; ई कथन, पुनर्कथन, स्वप्न, पत्र, दियादी ज्ञान, सरकारी दस्तावेज, सूची, डायरी आ मौखिक साक्ष्यक मिश्रित संग्रह अछि। एहि कारण रचनाक ऐतिहासिकता ओकर सभ कथन तथ्य होएबामे नहि, बल्कि इतिहास बनबाक सामाजिक प्रक्रिया देखेबामे अछि।

२. अध्ययन-पद्धति आ प्रमाण-सीमा

एहि शोध-समीक्षामे मूल पाठकेँ आरम्भसँ अन्त धरि क्रमागत रूपेँ पढ़ि कथानक, पात्र, काल, स्थान, आवर्ती प्रतीक, भाषिक स्तर, ऐतिहासिक संकेत आ प्रमाण-दाबी अलग-अलग चिन्हित कएल गेल अछि। साहित्यिक मूल्यांकन आ तथ्य-सत्यापनकेँ जानि-बुझि एक-दोसरामे नहि मिलाओल गेल अछि। कोनो पात्रक कथन ऐतिहासिक रूपेँ अशुद्ध हो सकैत अछि, मुदा ओ कथन पात्र-निर्माण, मौखिक स्मृति वा युगबोधक स्तर पर अत्यन्त सार्थक रहि सकैत

अछि। ठीक एहि प्रकार अभिलेखीय रूपेँ सत्य घटना स्वतः साहित्यिक रूपेँ प्रभावी नहि होइत; ओकर कलात्मक विन्यास अलग प्रश्न अछि।

भारतीय समीक्षा-पक्षमे भरतक रस-सिद्धान्त, आनन्दवर्धनक ध्वनि, अभिनवगुप्तक रसास्वाद, कुन्तकक वक्रोक्ति आ औचित्य-परम्पराकेँ उपयोग कएल गेल अछि। पाश्चात्य पक्षमे उपन्यासक काल-स्थान, बहुस्वरता, स्मृति-रचना, कथन-क्रम आ आत्म-सन्दर्भिताकेँ बाख्तिन, रिको, जेनेट आ आधुनिक इतिहास-दर्शनक प्रकाशमे पढ़ल गेल अछि। नव्य-न्यायकेँ साहित्यक सौन्दर्यशास्त्र कहब अनुचित होएत; एतए गंगेशक ‘तत्त्वचिन्तामणि’सँ विकसित प्रमाण, अनुमान, हेतु, व्याप्ति, उपाधि आ अवच्छेदक-जकाँ वैचारिक अनुशासनकेँ कथनक प्रमाण-भार जाँचबाक रूपकात्मक-विश्लेषणात्मक औजार बनाओल गेल अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि एहि शोधक इतिहास-पक्षक मुख्य कसौटी अछि। एहि पद्धतिमे सत्ता-जाँच प्रमाणक विकल्प नहि; हाशियाक स्मृति स्वतः सत्य नहि; अभिलेखीय मौन कल्पनाक अनुमति नहि; आ निष्कर्षकेँ ‘सबल रूपेँ समर्थित’, ‘सम्भाव्य’, ‘विवादित’ वा ‘अज्ञात’ रूपमे स्पष्ट करब आवश्यक अछि। ई कसौटी एहि उपन्यास लेल विशेष उपयुक्त अछि, कारण रचना स्वयं राजकीय अभिलेख, परिवारक मौखिकता, श्रमिक-स्मृति, अभियन्ताक अनुभव, लोकविश्वास आ निजी डायरीक बीच आवागमन करैत अछि।

३. समग्र कथानक : चार पीढ़ीक एकहि नैतिक प्रश्न

३.१ झिंगुरसँ कलित : औपनिवेशिक संक्रमणक घर-आँगन

कथाक पहिल बड़ परत झिंगुर ठाकुरक स्मृतिसँ खुलैत अछि। बालक कलितक ठेहुनियाँ मारब, देवाल पकड़ि ठाढ़ होएबाक प्रयास, ध्वनि-अनुकरण आ बाल-अभिनय घरेलू जीवनक अत्यन्त सूक्ष्म चित्र बनबैत अछि। बालकक विकासक एहि लघु दृश्यकेँ १८८५क औपनिवेशिक कालसँ जोड़ि देल जाइत अछि। परिवार संस्कृत-केन्द्रित पुरान शिक्षा आ अंग्रेजी-आधारित सरकारी अवसरक बीच ठाढ़ अछि। झिंगुरक निर्णय—कलकतियाबाबू शिक्षक, दरिभंगा मे अंग्रेजी शिक्षा—एक परिवारक शिक्षा-नीति मात्र नहि, मिथिलाक मध्यवर्गीय रूपान्तरणक सूचक बनैत अछि।

घरक सम्बोधन-पद्धति, सासु-ससुरक सोझाँ अप्रत्यक्ष संवाद, अखड़ाहा, तुरियाक बच्चा, दियादी संरचना, भोजपत्र पर तिरहुता संदेश आ उपनयनक हकार—ई सभ मिलि सामाजिक संसारक सूक्ष्म नृवंशात्मक गहराइ बनबैत अछि। परतापुरक सभागाछी आ पंचकोशी केवल विवाह-संबंधक स्थल नहि; ओ ज्ञान, वंश, गोत्र, सामाजिक मान्यता आ स्थानीय भूगोलक संयुक्त संस्था बनैत अछि। नदीक धारा बदललासँ सभागाछीक विनाश सामाजिक संस्थाक भौतिक असुरक्षाकेँ प्रत्यक्ष करैत अछि।

एकौरक विद्वत् जमघटमे अबीसीनिया अभियान, अफगान युद्ध, वर्दी, रायफल आ कांग्रेसक चर्चा स्थानीय मौखिक इतिहासमे विश्व-राजनीतिक घटनाक प्रवेश देखबैत अछि। यैह ठाम उपन्यासक इतिहास-पद्धति अत्यन्त रोचक आ जोखिमपूर्ण दुनू अछि: गामक सभा साम्राज्यक समाचारकेँ अपन स्मृतिमे आत्मसात करैत अछि, मुदा नाम आ तिथि चूकियो सकैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ ई चूक मौखिक इतिहासक स्वभाविकता बढ़बैत अछि; शोध-दृष्टिसँ ओकर स्वतंत्र सत्यापन आवश्यक होइत अछि।

३.२ कलित : रोजगार, विवाह, मृत्यु आ पारिवारिक पुनर्गठन

कलितक विवाह, कटिहारमे कर-वसूलीक कार्य, माएक मृत्यु, झिंगुरक विछोह, बुचियाक विवाह, घरक दायित्व आ परिवारक विस्तार उपन्यासकेँ व्यक्तिगत जीवनक दीर्घ लय दैत अछि। कलित सरकारी संरचना भीतर प्रतिष्ठा पबैत छथि, भ्रष्ट वसूली-पद्धति बदलबाक प्रयास करैत छथि, मुदा कथा हुनका वीर-पुरुष बनाकऽ स्थिर नहि करैत। माएक अधूरा मनोरथ, पिताक अकेलापन, बहिनक विवाहक चिन्ता—ई सभ निजी जीवनक साधारण किन्तु गहींर दबाव अछि।

१९३४क भूकम्प बाद पुरान घर ढहब, नव डीह पर घर बनब, पुत्र-पुत्रीक जन्म, प्रथम पुत्री आ ननकिरबीक मृत्यु, हैजा-प्लेगक भय—ई खण्ड मिथिलाक परिवारक इतिहासकेँ प्राकृतिक आपदा आ रोगक इतिहाससँ जोड़ैत अछि। जीवनक निरन्तरता एतए उत्सवक सरलीकृत रूप नहि; एक मृत्यु पर दोसर जन्म, एक घर ढहला पर दोसर घर, एक विछोहक बाद नव सम्बन्ध—एहि आवर्तनसँ उपन्यासक मूल ‘चक्र’ बनैत अछि।

३.३ नन्द : विज्ञान, नैतिकता आ अदृश्यक बीच

नन्दक बाल्यकालसँ विज्ञान आ अदृश्य एक संग चलैत अछि। चाटी उठेबाक लोकविश्वास, साँप-बिज्जी घटना, स्वप्न, पारिवारिक मृत्यु—ई सभ ओकर मानसक पहिल स्रोत छथि; दोसर दिशि गणित, महाविद्यालय, अभियान्त्रिकी शिक्षा, नाप-जोख आ सरकारी निर्माण वैज्ञानिक अनुशासनक संसार अछि। आर.के. कॉलेज मधुबनीसँ मुजफ्फरपुरक अभियान्त्रिकी शिक्षा धरि नन्दक यात्रा ग्रामीण मध्यवर्गक आधुनिकता ग्रहण करबाक महत्त्वपूर्ण आख्यान अछि। धोती-कुर्त्तासँ कार्यशाला लेल फुलपैंट-शर्ट धरि परिवर्तन मात्र पोशाकक नहि, संस्थागत आधुनिकताक देहगत अनुशासनक प्रतीक अछि।

स्वतंत्रता-दिवसक उमंग, १९६२क युद्धक आघात, १९६५मे सैन्य सेवा लेल आवेदन, सरकारी अभियन्ता रूपमे दूर-दराज क्षेत्रक काज, स्थानीय आदिवासी समुदायसँ निकटता, घूससँ दूरी—ई सभ नन्दकेँ नैतिक नागरिक-अभियन्ताक रूप दैत अछि। मुदा ई चरित्र एकरेखीय युक्तिवादी नहि। भातिज नवीनक मृत्यु-सपना, माएक रोग, लोकवैद्यक अनुभव आ जीवनक अनपेक्षित मृत्यु हुनका अदृश्य कारणक प्रति खुलल रखैत अछि। एतए उपन्यास आधुनिक विज्ञान आ लोकविश्वासकेँ सरल विरोधी शिबिर नहि बनबैत; दुनू नन्दक भीतर सह-अस्तित्व रखैत अछि।

यशोदा ‘बा’क कैंसर, रेडियम उपचार, मृत्यु, श्राद्ध, गाएक दाग देबाक विधिक विरोध, स्मृतिक रूपमे फोटो आ श्राद्धक गाछक आम नहि खाएब—ई प्रसंग स्त्री-पात्रक मृत्यु बादो घरक नैतिक केन्द्र बनेबाक उदाहरण अछि। बा जीवित पात्रसँ ‘पारिवारिक स्मृति-संस्था’ बनि जाइत छथि। बुढ़िया दीदीक दीर्घ खिस्सा, बोरिंग बला खेत, सरकारी बोरिंग, कमला-बलानक छहर, बालू भरान, खेतीक बदलाव, पुरान टोल-संघर्ष आ बच्चाक खेलक विवरण एहि वंशक इतिहासकेँ घरक चारदीवारीसँ निकालि पारिस्थितिक इतिहास बनबैत अछि।

३.४ गंगा-पुल : विकासक प्रतीकसँ नैतिक घाव धरि

१९७५क पटना बाढ़िक आसपास नन्द गंगा-पुल परियोजनासँ जुड़ैत छथि। एतए उपन्यासक मध्यबिन्दु बनैत अछि। पुल आधुनिक विकासक सर्वाधिक दृश्य प्रतीक अछि—उत्तर-दक्षिण जोड़निहार संरचना, अभियान्त्रिकी कौशल, राज्यक क्षमता। मुदा नन्दक अनुभवमे यैह पुल निर्माण-दोष, विभागीय दबाव,

श्रमिकक मृत्यु, क्षतिपूर्तिक प्रश्न आ भ्रष्टाचारक आरोपक स्थल बनैत अछि। एहि बिन्दुपर 'निर्माण' आ 'विनाश' एकहि वस्तुमे समाहित भऽ जाइत अछि।

नन्दक नैतिक त्रासदी ई नहि जे ओ भ्रष्ट होइत छथि; त्रासदी ई जे ईमानदारीक साधारण प्रशासनिक भाषा हुनकर अनुभवक अन्यायकेँ बदलि नहि पबैत अछि। पुल बनैत अछि, उद्घाटन होइत अछि, व्यवस्था आगू बढ़ैत अछि, मुदा हुनकर भीतर पराजयक बोध जमैत अछि। एहि बोधक संग बच्चाक परीक्षा-फल, घरेलू अपेक्षा आ निजी अपूर्णता जुड़ि एक एहन मनोवैज्ञानिक गाँठ बनबैत अछि जतए कारण आ संयोगक सीमा धुँधली होइत अछि। एतए सँ नन्द तंत्र, ज्योतिष, दीक्षा आ अदृश्य शक्ति दिस अधिक झुकैत छथि। उपन्यास हुनकर एहि विचलनकेँ मजाक नहि बनबैत; ओकर सामाजिक-नैतिक कारण देखबैत अछि।

३.५ आरुणि : सत्यक रूप, बाल-भय आ स्मृतिक निर्माण

आरुणिक जन्म-वृत्तान्त स्वयं सत्यक अनिश्चित सामाजिक रूपक अछि—पहिने बेटी भेल कहबाक सूचना, फेर बेटा भेल बुझब। एतएसँ उपन्यास एक मूल प्रश्न उठबैत अछि: जे सत्य हमरा उपलब्ध सूचना द्वारा बुझाइत अछि, ओ सूचना बदललापर कोना बदलैत अछि? आरुणि जन्मसँ पहिने मृत 'बा'केँ घरक कथा, फोटो आ स्मृतिसँ अपन जीवनक सदस्य बनबैत छथि। एहि प्रकार अनुपस्थित व्यक्ति कथन द्वारा उपस्थित रहैत छथि।

आरुणिक दु:स्वप्न—इनार-जकाँ गुरुत्व, छतक कातसँ खसबाक भय, भगवानक जन्मदाता सम्बन्धी प्रश्न, दाँत कटकटेनाइ, निन्नक समयक निरीक्षण—बाल-मनक दार्शनिकता आ भय दुनूकेँ पकड़ैत अछि। नन्द अपन बचपनक 'झोंटा बला सहस्रबाढ़नि'क सपना सुनबैत छथि। शीर्षक एतए पहिल बेर मूर्त बाल-राक्षस जकाँ देखाइत अछि, मुदा उपन्यासक आगाँक यात्रा एहि छविक अर्थ बहुगुणित करैत अछि।

संस्कृत श्लोक, गणना-सिखाइ, संख्याक विन्यास बुझबाक बाल-बुद्धि, नाम-परिवर्तन, पाठशाला, गंगा ब्रिज कॉलोनीक स्कूल, पिताक होम्योपैथी, अखबार पढ़ि सुनाएब—ई सभ आरुणिक ज्ञान-जगत रचैत अछि। बादमे गामक स्कूल, खेल, मारि-बझब, रामलीला, 'दानवीर दधीची' नामक बाल-नाटक, मंचनक बीच

वास्तविक झगड़ा, कक्षा छलाँग आ पढ़ाइक प्रतिस्पर्धा बाल्यकालकेँ स्मृतिपरक हास्य आ तनाव दुनूसँ भरैत अछि। ई प्रसंग छुट्टा बाल-किस्सा नहि; आगाँक आरुणिक प्रमाण-तर्क, अभिनय-बोध, सामाजिक मुखौटा आ नैतिक निर्णयक प्रशिक्षण-भूमि छथि।

३.६ नन्दक मृत्यु : पुल पर घुरैत शव आ इतिहासक वृत्त

नन्दक अन्तिम समय महाभारत देखबाक घरेलू क्षणसँ अचानक मृत्युमे बदलैत अछि। आरुणि पिताक देहकेँ पटनेसँ गाम लए जएबाक निर्णय करैत छथि, कारण पिताक गामसँ गहींर लगाव छलन्हि। एहि शव-यात्रामे गंगा-पुल पुनः आबैत अछि। जे पुल नन्दक जीवनमे नैतिक पराजयक स्थल छल, ओहि पुल पर हुनकर मृत देह पार होइत अछि। ई दृश्य उपन्यासक सर्वाधिक शक्तिशाली संरचनात्मक पुनरावृत्तिमे एक अछि: विकासक संरचना व्यक्तिगत जीवनक अन्तिम मार्ग बनि जाइत अछि।

क्रिया-कर्मक बीच संस्कृत पंक्ति ‘उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा...’क स्मरण भावी समानधर्मी पाठक वा उत्तराधिकारीक प्रश्न उठबैत अछि। एहि उद्धरणक पाठ-रूप मूल प्रतिमासँ मिलान योग्य अछि, मुदा कथात्मक कार्य स्पष्ट अछि: नन्द समाप्त छथि, पर हुनकर नैतिक प्रश्न नहि। आरुणिक यात्रा आब पिताक समानधर्मा होएब, कि पिताक पुनरावृत्ति, कि पिताक सुधारित उत्तर—एहि त्रिभुजमे प्रवेश करैत अछि।

३.७ १९९५क बस-यात्रा : स्मृति आ सार्वजनिक साक्ष्यक संयोग

श्राद्ध बाद १९९५क नवम्बरमे दरिभंगासँ पटना जा रहल आरुणिक बस-यात्रा वर्तमानसँ अतीत खोलबाक उत्कृष्ट आख्यान-यन्त्र अछि। आई.ए. आजम संग आकस्मिक भेँट गंगा ब्रिज कॉलोनी, स्कूल, नन्दक होम्योपैथी, ईमानदारी आ मजदूरक प्रति चिंता पुनर्जीवित करैत अछि। परिवारक निजी स्मृति एतए बाहरी व्यक्तिक साक्ष्यसँ टकराइत आ पुष्ट होइत अछि। रिको केर भाषामे कहब तँ निजी काल सार्वजनिक कालमे पुनः प्रवेश करैत अछि।

मजदूरक मृत्यु आ क्षतिपूर्तिक सूची सम्बन्धी कथन अत्यन्त मार्मिक अछि, मुदा इतिहास-दृष्टिसँ यैह ठाम सावधानी आवश्यक अछि। उपन्यासक भीतर आजमक प्रत्यक्षदर्शी साक्ष्य आ आरुणिक सूची देखब साहित्यिक सत्यक भाग अछि; बाह्य इतिहासमे संख्या, नाम, क्षतिपूर्ति आ अभिलेखक स्वतंत्र जाँच

बिना निश्चित निष्कर्ष नहि देल जा सकैत अछि। समानान्तर इतिहास-दृष्टिक हिसाबसँ ई ‘अज्ञात/अधिक अभिलेख अपेक्षित’ श्रेणीक दाबी अछि। रचनाक नैतिक प्रभाव एहि अनिश्चिततासँ कम नहि होइत; बल्कि अभिलेखीय मौन स्वयं कथा-विषय बनि जाइत अछि।

३.८ आरुणिक वयस्क संसार : अपराध-अनुसन्धान, प्रमाण आ अपराध-बोध

कलकत्ताक सरकारी जीवनमे आरुणि पितासँ अलग प्रकारक नैतिक अधिकारी बनैत छथि। स्वर्ण-प्लाइ प्रकरणमे प्रारम्भिक छापा निष्फल होइत अछि। यदि कथा एतहि रुकित, तखन आरुणि सेहो नन्द जकाँ संस्थागत विफलताक शिकार बनि सकैत छलाह। मुदा ओ प्रत्यक्ष लक्ष्य छोड़ि सहायक स्रोत दिस जाइत छथि—दस्तावेज, आपूर्ति-शृंखला, अररियाक कारखाना, व्यापारीक व्यवहार, बाहरी दूरभाष-सूचना, पुलिसक शिकायत। ई ‘दृष्टि बदलि कऽ प्रमाण ताकब’ हुनकर विशेषता अछि।

नवलक ‘समायोजन’ सम्बन्धी संकेत, छह मास बाद सूटकेस-छिनतई, नकद-चेकक अनुपात, डायरी, निकासी-विवरण आ भुगतानक मेल मिलि अपराधक प्रमाण-शृंखला बनबैत अछि। एतए उपन्यास प्रशासनिक रोमांचकथाक रूप ग्रहण करैत अछि, मुदा तुरन्त नैतिक जटिलता जोड़ैत अछि: नवलक सड़क-दुर्घटना वा सम्भावित हत्या बाद आरुणि प्रश्न करैत छथि जे कहीं ओ स्वयं ओकर मृत्यु के माध्यम तँ नहि बनि गेलाह। सत्य-उद्घाटन नैतिक निर्वाण नहि दैत; प्रमाण पाबि लेलाक बादो व्यक्ति परिणामक भारसँ मुक्त नहि होइत।

३.९ षड्यंत्र, दूरभाष-प्रमाण आ पितासँ भिन्न विजय

शशांक-सम्बद्ध कार्यालयी षड्यंत्र आरुणिक चरित्रक निर्णायक परीक्षा अछि। विदेश-दूरभाषक आरोप, पदस्थापन, बदनामी आ अभ्यावेदन नहि देबाक निर्णय पहिने समर्पण जकाँ देखाइत अछि। मणीन्द्र सेहो डरैत छथि जे आरुणि काका नन्द जकाँ हारि वैराग्य दिस नहि चलि जाएथ। मुदा आरुणि घटनाकेँ स्मृतिमे सुरक्षित रखैत छथि, दूरभाष-सूची, बूथक क्रम, प्राप्त कॉलक अनुपस्थिति आ प्रक्रियात्मक विसंगति जोड़ि अपन विरुद्ध आरोप तोड़ैत छथि।

दिल्लीमे सूचना-प्रौद्योगिकी शाखाक पदस्थापन—जकरा ‘शंटिंग’ मानल जाइत छल—आरुणि अवसरमे बदलैत छथि। तकनीक, कर्मचारी, उपकरण आ

दूरभाष-अवरोधन हुनकर प्रमाण-जगत बनैत अछि। बादमे शशांक आ तस्करक फोन-क्रम, छापाक अगिला भोर, कर्मचारीकेँ रातिक फोन आ आवाज-मिलान एक पूर्ण अनुमान-शृंखला बनैत अछि। शशांक अनिवार्य सेवानिवृत्ति स्वीकार करैत अछि। मणीन्द्रक कथन—काका आ आरुणिमे चरित्रक भेद नहि, मार्गक भेद अछि—समूचा उपन्यासक नैतिक सूत्र बनि जाइत अछि।

३.१० दुर्घटना, डायरी आ शीर्षकक अन्तिम रूपान्तरण

सरकारी यात्राक बाद आरुणिक भीषण दुर्घटना, पन्द्रह दिन जीवन-रक्षक श्वसन-यन्त्र पर रहब, एक वर्ष बैसाखी, अनेक शल्यक्रिया, सामाजिक सम्बन्धक टूटब-जुड़ब आ अन्ततः फेर अपन पएर पर ठाढ़ होएब उपन्यासक शारीरिक पुनर्जन्म अछि। आरुणिक पुरान डायरी-जकाँ पाठ, जाहिमे दुर्घटना आ पुनर्प्राप्ति मानू पहिने लिखल गेल हो, कथा आ जीवनक सीमा धुँधली करैत अछि। ई आत्म-सन्दर्भी आख्यान (Metafiction)क महत्त्वपूर्ण क्षण अछि: काल्पनिक लेखक भविष्य लिखलक कि भविष्य अतीतक लेखनकेँ अर्थ देलक—कथा एहि प्रश्नकेँ खुला रखैत अछि।

बेहोशीसँ बाहर अबैत आरुणिक अनुभूति—झोंटा बला सहस्रबाढ़नि हुनका झमारि कऽ एहि विश्वमे फेर फेंकि रहल अछि—शीर्षकक अर्थ पूर्ण करैत अछि। बाल्यकालक डरावन जीव आब मृत्यु-समीप अनुभवक वाहक अछि। आरम्भमे जे शक्ति निगलि लेबाक भय देइत छल, अन्तमे सैह शक्ति मानू जीवनमे पुनः फेंकैत अछि। अतएव ‘सहस्रबाढ़नि’ केवल विनाशक नहि; ओ अस्तित्वक अनियंत्रित ऊर्जा, आपदा, भय, स्मृति आ पुनरारम्भक संयुक्त रूपक अछि।

४. घटनाक्रम-मानचित्र : पाठक कोनो प्रमुख रचनात्मक इकाई छुटल नहि

क्रम	घटना/रचनात्मक इकाई	आलोचनात्मक महत्त्व
१	झिंगुरक स्मृतिमे बालक कलितक चलब, अनुकरण आ बाल-विकास	पारिवारिक स्मृतिक उद्घाटन; पीढ़ीगत दृष्टि
२	१८८५, औपनिवेशिक शिक्षा,	आधुनिक मध्यवर्गक आरम्भ

क्रम	घटना/रचनात्मक इकाई	आलोचनात्मक महत्त्व
	अंग्रेजी बनाम संस्कृत	
३	घरक सम्बोधन, अखड़ाहा, टोल-दियादी संरचना	सामाजिक व्यवहारक सूक्ष्म इतिहास
४	तिरहुता भोजपत्र, उपनयनक हकार, परतापुर सभागाछी	वंश, लिपि, संस्कार आ सामाजिक जाल
५	बलान-कमला धार, बाढ़ि आ सभागाछीक विनाश	भूगोलक सामाजिक संस्थापर प्रभाव
६	एकौरक शास्त्रार्थ-जमघट आ औपनिवेशिक सैन्य चर्चा	स्थानीय मौखिक इतिहासमे विश्व-राजनीति
७	कलितक विवाह आ कटिहारक रोजगार	परिवारसँ प्रशासनिक आधुनिकता दिस संक्रमण
८	माएक मृत्यु, झिंगुरक मृत्यु, बुचियाक विवाह	दायित्वक पीढ़ी-हस्तान्तरण
९	१९३४क भूकम्प, नव घर, परिवारक पुनर्गठन	आपदा बाद स्थानिक पुनर्निर्माण
१०	पुत्री-ननकिरबीक मृत्यु, हैजा-प्लेग	मृत्यु-स्मृति आ जनस्वास्थ्यक भय
११	नन्दक विज्ञान-शिक्षा, गणित, अदृश्यक प्रति आकर्षण	ज्ञानक दू स्रोतक सह-अस्तित्व
१२	कलितक अचानक मृत्यु	नन्दक मृत्यु-बोधक निर्णायक आघात
१३	महाविद्यालय, अभियान्त्रिकी, पोशाक-परिवर्तन	ग्रामीण शरीरपर आधुनिक संस्थाक अनुशासन
१४	१९४७क उमंग, १९६२क	राष्ट्रीय इतिहासक निजी मानस

क्रम	घटना/रचनात्मक इकाई	आलोचनात्मक महत्त्व
	आघात, १९६५क सैनिक आवेदन	
१५	सरकारी अभियन्ता नन्द, आदिवासी क्षेत्र, ईमानदारी	नैतिक पेशागत चरित्र
१६	नवीनक स्वप्न-मृत्यु प्रसंग	अदृश्य विश्वासक मनोवैज्ञानिक सबलीकरण
१७	बा केर कैंसर, उपचार, मृत्यु, कर्मकाण्ड-संशोधन	मातृस्मृति, पीड़ा आ नैतिक सुधार
१८	बोरिंग, छहर, बालू, खेतीक बदलाव	स्थानीय पर्यावरण-अर्थनीति
१९	बुढ़िया दीदीक खिस्सा, गामक खेल, आमक मौसम	मौखिकता आ बाल-सांस्कृतिक स्मृति
२०	१९७५क पटना बाढ़ि आ गंगा-पुल परियोजना	प्रकृति, नगर आ विकासक संधिबिन्दु
२१	आरुणिक जन्मक सूचना-विरोधाभास	सत्यक उपलब्ध रूपक प्रश्न
२२	बा केर अनुपस्थित उपस्थिति, स्वप्न, ईश्वर-प्रश्न	बाल-दार्शनिक चेतना
२३	संख्या, संस्कृत, नामकरण, शिक्षा	भाषा-तर्कक आरम्भिक प्रशिक्षण
२४	गंगा ब्रिज कॉलोनी, स्कूल, होम्योपैथी, अखबार	राजकीय कॉलोनीक घरेलू संसार
२५	गामक स्कूल, खेल, ‘दानवीर दधीची’, बाल-झगड़ा	अभिनय आ सामाजिक यथार्थक टकराव

क्रम	घटना/रचनात्मक इकाई	आलोचनात्मक महत्त्व
२६	स्थानान्तरण, वेतन-अवरोध, घरक कलह	ईमानदारीक पारिवारिक लागत
२७	पुल-निर्माण दोष आ मजदूर-मृत्यु सम्बन्धी स्मृति	विकासक नैतिक प्रतिपक्ष
२८	नन्दक तंत्र-ज्योतिष दिस झुकाव	संस्थागत हारक ज्ञानमीमांसीय परिणाम
२९	मध्यवर्गीय शिक्षा, सीमित सामाजिकता, दूरदर्शनक आगमन	नव पीढ़ीक नियंत्रित आधुनिकता
३०	नन्दक मृत्यु आ गामक शव-यात्रा	जीवन-चक्रक समापन आ पुनरारम्भ
३१	गंगा-पुल पर मृत देहक पारगमन	स्थानक प्रतीकात्मक पुनर्लेखन
३२	१९९५क बस-यात्रा आ आई.ए.आजम	निजी स्मृतिक बाह्य साक्ष्यसँ मिलान
३३	श्रमिक सूची आ क्षतिपूर्तिक कथन	अभिलेखीय मौनक प्रश्न
३४	बाल्यकालक मृत्यु-भय, सामाजिक मुखौटा, मित्रक दुर्घटना	आरुणिक मनोवैज्ञानिक निर्माण
३५	कलकत्ता, व्यवसायिक प्रयास, सरकारी नोकरी, विवाह	वयस्क पहचानक परिवर्तन
३६	स्वर्ण-प्लाइ छापा आ असफलता	प्रत्यक्ष प्रमाणक सीमा
३	अररिया, नवल, दूरभाष-सूचना	परोक्ष स्रोतक खोज

क्रम	घटना/रचनात्मक इकाई	आलोचनात्मक महत्त्व
७		
३८	सूटकेस-प्रकरण, डायरी, निकासी-विवरण	प्रमाण-शृंखलाक निर्माण
३९	नवलक मृत्यु आ आरुणिक अपराध-बोध	सफलताक नैतिक मूल्य
४०	शशांकक षड्यंत्र आ स्थानान्तरण	पिताक इतिहासक पुनरावृत्तिक खतरा
४१	दूरभाष-सूचीसँ आत्मरक्षा	रणनीतिक प्रमाण-विवेक
४२	दिल्ली सूचना-प्रौद्योगिकी शाखा	तकनीकक नैतिक पुनःउपयोग
४३	दूरभाष-अवरोधनसँ छापा-लीकक कड़ी	नव्य-न्यायसदृश अनुमान-शृंखला
४४	शशांकक अनिवार्य सेवानिवृत्ति	नन्दक मूल्यक आरुणि द्वारा रणनीतिक विजय
४५	सरकारी यात्राक दुर्घटना, जीवन-रक्षक श्वसन-यन्त्र, बैसाखी	शरीर पर आपदाक प्रहार
४६	डायरीक कथित अग्रलेखन	कथा-जीवन सीमाक विघटन
४७	बेहोशीसँ जागरण आ सहस्रबाढ़निक अन्तिम छवि	मृत्यु-भयक जीवन-प्रत्यावर्तनमे रूपान्तरण

५. शीर्षक ‘सहस्रबाढ़नि’ : राक्षसी छविसँ अस्तित्व-रूपक धरि

शीर्षकक सफलता एहि बातमे अछि जे ओकर अर्थ कथाक आरम्भमे पूर्ण नहि खुलैत अछि। सहस्रबाढ़नि पहिने बाल्यकालक भयावह, झोंटाबला, आगि-

बोकरैत छविक रूपमे अबैत अछि। लोककथा वा बूढ़-पुरानक खिस्सासँ नेनाक मानस एक एहन दैत्य रचैत अछि जे पृथ्वीकेँ निगलि सकैत अछि। बाल आरुणि एहि वंशानुगत स्वप्न-भयकेँ पिता नन्दसँ पबैत छथि। एतए 'सहस्र' संख्या अनन्त आवर्तनक, 'बाढ़' सर्वग्रासी प्रवाहक आ मानवीकृत प्रत्यय एक जीवित भयक संकेत दैत अछि।

कथा आगाँ बढ़लापर पाठक बुझैत अछि जे जीवनमे सहस्रबाढ़नि एकटा नहि अछि: नदीक बाढ़ि, भूकम्प, महामारी, परिवारक मृत्यु, संस्थागत भ्रष्टाचार, श्रमिकक गुमनाम मृत्यु, घरक आर्थिक अभाव, पदस्थापनक दण्ड, झूठ आरोप, मित्रक अकाल मृत्यु, दुर्घटना—सभ अलग-अलग बाढ़ि छथि। मुदा ई रूपक निराशावादी सर्वनाश पर समाप्त नहि होइत। अन्तिम बेहोशीमे सहस्रबाढ़नि आरुणिकेँ 'झमारि कऽ एहि विश्वमे फेंकि' दैत अछि। जे शक्ति पहिने निगलनिहार छल, सैह पुनरागमनक माध्यम बनैत अछि। ध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिसँ शीर्षकक वाच्यार्थसँ बेसी व्यंग्यार्थ एतहि स्थापित होइत अछि।

६. काल-रचना : रेखीय इतिहास नहि, स्मृतिक वृत्त

उपन्यासक बाहरी काल १८८५सँ बीसम शताब्दीक अन्तिम दशक आ आरुणिक बादक दुर्घटना धरि फैलल अछि, मुदा कथन रेखीय नहि। पात्रक एक स्मृति दोसर स्मृति खोलैत अछि; नदीक दृश्य पूर्वजक कथा खोलैत अछि; बसक खिड़की कॉलोनीक अतीत; पुल पिताक संघर्ष; कार्यालयी षडयंत्र पिताक पराजय; दुर्घटना बाल्यकालक सहस्रबाढ़नि खोलैत अछि। जेनेट-कथित पूर्वदीप्ति (Analepsis) एतए सजावटी तकनीक नहि, स्मृति-आधारित ज्ञानक मूल संरचना अछि।

किछु प्रसंग अग्रसूचना (Prolepsis)क काज करैत अछि। आरुणिक डायरी, बाल्यकालक सहस्रबाढ़नि, नन्दक 'समानधर्मा'क प्रतिध्वनि, पिता-पुत्रक समान स्वभाव—ई सभ बादक घटनाकेँ पहिनेसँ अर्थ-क्षेत्र दैत अछि। अन्तिम दुर्घटना डायरीक कथनसँ मिलला पर काल लगभग वृत्ताकार भऽ जाइत अछि। पाठक पछिला पृष्ठकेँ आगाँक घटना द्वारा फेर पढ़ैत अछि। रिको केर मानव-कालक अवधारणासँ देखल जाए तँ उपन्यास कलेण्डर-कालकेँ अनुभव-कालमे रूपान्तरित करैत अछि: १९३४, १९६२, १९७५, १९९५ सन तिथि सभ व्यक्तिगत दुःख, आशा वा निर्णयक कारण स्मरणीय बनैत अछि।

७. स्थान आ काल-स्थान-संयोजन (Chronotope)

बाख्तिनक काल-स्थान-संयोजन (Chronotope) अवधारणाक अनुसार उपन्यासमे स्थान समयक दृश्य रूप बनैत अछि। 'सहस्रबाढ़नि'मे गाम पुरानक स्थिर अवशेष नहि; नदी, खेती, विवाह, शिक्षा, पलायन आ रोजगारक कारण बदलैत स्थान अछि। कटिहार औपनिवेशिक/जमीन्दारी प्रशासनक बाहरी संसार खोलैत अछि; मुजफ्फरपुर आधुनिक तकनीकी शिक्षा; देहरी-सोन विकास-अभियान्त्रिकी; पटना राज्य, परिवार आ बाढ़िक संधि; हाजीपुर-गंगा ब्रिज कॉलोनी विकास-राज्यक प्रयोगशाला; कलकत्ता बाजार आ केन्द्रीय सरकारी विभाग; दिल्ली निगरानी-तकनीक आ प्रशासनिक शक्ति।

पुल एहि भूगोलक सर्वोच्च काल-स्थान-संयोजन अछि। पुलकेँ तीन बेर पढल जा सकैत अछि: भौतिक रूपमे नदी पार करबाक साधन; राजनीतिक रूपमे विकासक स्मारक; नैतिक रूपमे श्रमिक, अभियन्ता आ भ्रष्टाचारक विवादित स्मृति। नन्द आ आरुणि दुनूक जीवन पुलसँ बन्हल अछि, मुदा अर्थ अलग। पुल जे राज्य उत्तर-दक्षिण जोड़बाक लेल बनबैत अछि, सैह परिवारक भीतर पिता-पुत्रक नैतिक उत्तराधिकार सेहो जोड़ैत अछि।

८. पात्र-समालोचना : व्यक्ति नहि, सम्बन्धक जाल

८.१ झिंगुर आ कलित

झिंगुर आधुनिकता स्वीकार करैत परम्परागत गृहस्थ छथि। पुत्रकेँ अंग्रेजी शिक्षा देबाक निर्णय, तिरहुता पत्र पढ़ब, सभागाछीक संसार, विवाह-निर्णय—हुनकर भीतर परम्परा आ परिवर्तनक संतुलन अछि। कलित ई संतुलनकेँ प्रशासनिक नैतिकतामे रूपान्तरित करैत छथि। हुनकर चरित्रक बड़ गुण ई जे लेखक हुनका असाधारण नायक नहि बनबैत; परिवार, रोजगार, विवाह, मृत्यु आ जिम्मेवारीक साधारण प्रवाहमे हुनकर नैतिकता आकार लैत अछि।

८.२ नन्द

नन्द उपन्यासक सर्वाधिक त्रासद पात्र छथि। हुनका भीतर विज्ञान, शुचिता, देशभक्ति, सेवा, लोकविश्वास, क्रोध, जिद आ अन्ततः विरक्ति एक संग छथि। हुनकर विफलता व्यक्तिगत कमजोरी मात्र नहि; व्यवस्था ईमानदार व्यक्तिकेँ

परिणाम देखेबाक अवसर नहि देत तखन नैतिक आत्मविश्वास कोना ज्ञानमीमांसीय संकटमे बदलि सकैत अछि—नन्द एहि प्रश्नक जीवित रूप छथि। हुनकर तंत्र-दिशि झुकावकेँ केवल अंधविश्वास कहि हटा देब पात्रक गहराइ नष्ट करत; ई संस्थागत असहायता, संयोगक व्याख्या-इच्छा आ निजी शोकक संयुक्त परिणाम अछि।

८.३ बा, बुचिया आ घरक स्त्री-स्मृति

बा प्रत्यक्ष राजनीतिक शक्ति नहि रखैत छथि, मुदा परिवारक दीर्घकालीन नैतिक स्मृतिक केन्द्र छथि। रोग, मृत्यु, फोटो, आमक गाछ, नाति-नातिनक कथा—हुनकर प्रभाव शरीरक अनुपस्थितिक बाद बढ़ैत अछि। बुचिया आ बुढ़िया दीदीक खिस्सा स्त्री-मौखिक परम्पराक समानान्तर अभिलेख बनैत अछि। घरक स्त्री सभ केवल ‘परिवार’क पृष्ठभूमि नहि; विवाह, रोग, भोजन, सम्बन्ध, खिस्सा, शोक, शिक्षा आ सामाजिक स्मृतिक वाहिका छथि। तथापि उपन्यासक प्रशासनिक उत्तरार्धमे स्त्री-पात्रक स्वायत्त आवाज अपेक्षाकृत कम होइत अछि—ई संरचनात्मक असंतुलन आलोचनाक योग्य अछि।

८.४ आरुणि

आरुणि स्मृति-संग्राहक, संशयी, नैतिक उत्तराधिकारी आ रणनीतिक अधिकारी—चारू रूपमे विकसित होइत छथि। बाल्यकालक भय हुनका निरीक्षणशील बनबैत अछि; घरक कलह सामाजिक मुखौटा सिखबैत अछि; पिताक पराजय नैतिक मूल देइत अछि; सरकारी काज प्रमाणक अनुशासन सिखबैत अछि। आरुणिक विकासक महत्त्व ई नहि जे ओ पितासँ ‘बेहतर’ छथि, बल्कि ओ पिताक नैतिक मूलकेँ नूतन पद्धतिसँ बचबैत छथि।

८.५ मणीन्द्र, आजम, नवल आ शशांक

मणीन्द्र आरुणिक स्मृति-जागरणक सहचर छथि; ओ बारम्बार पिताक इतिहास दोहराएबासँ सावधान करैत छथि। आई.ए. आजम बाह्य साक्षी छथि, जे परिवारक निजी पितृ-छविक सार्वजनिक प्रतिध्वनि दैत छथि। नवल सीमा-पात्र अछि—व्यवस्थाक ‘समायोजन’क यथार्थ जानैत, आरुणिकेँ गुप्त सूचना दैत, फेर संदिग्ध दुर्घटनामे मरैत। शशांक प्रतिपक्षी जरूर अछि, मुदा अधिक

महत्त्वपूर्ण रूपमे ओ 'चरित्र बदलैत नहि, व्यक्ति बदलैत अछि' सूत्रक आधुनिक अवतार अछि।

९. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

९.१ रस : करुणक आधार, वीरक प्रत्यावर्तन

उपन्यासक स्थायी भाव एकवचनमे पकड़ब कठिन अछि, तथापि करुण रस व्यापक आधार रचैत अछि। माए, पिता, पुत्री, ननकिरबी, भातिज, बा, नन्द, नवल—मृत्यु बारम्बार अबैत अछि। प्राकृतिक आपदा, रोग, आर्थिक असुरक्षा, ईमानदारीक दण्ड आ श्रमिक-मृत्यु करुणकेँ सामाजिक आयाम दैत अछि। मुदा करुण अन्तिम निष्कर्ष नहि। आरुणिक प्रमाण-संघर्ष, शशांक प्रकरणमे विजय, दुर्घटना बाद पुनः चलब वीर भावक प्रत्यावर्तन करैत अछि। अन्तिम अनुभूति शान्त रसक पूर्ण समाधि नहि, बल्कि जीवनक अनिश्चितताक स्वीकृति अछि।

९.२ अद्भुत आ भय

स्वप्न, सहस्रबाढ़नि, साँप-बिज्जी, भविष्यसूचक अनुभव, तंत्र, रोग, बेहोशी—अद्भुत आ भयानक भावक क्षेत्र बनबैत अछि। लेखक एतए पूर्ण तर्कवादी व्याख्या थोपैत नहि छथि, ने अदृश्यकेँ निर्विवाद सत्य घोषित करैत छथि। एहि मध्यक्षेत्रसँ पाठकक अनुभव समृद्ध होइत अछि। नन्दक विश्वास आ आरुणिक संशय एकहि पारिवारिक संसारमे उपस्थित रहला कारण अद्भुत 'विश्वास करबाक आदेश' नहि, बल्कि 'मनुष्य अनिश्चितताकेँ कोना अर्थ दैत अछि' ई प्रश्न बनैत अछि।

९.३ ध्वनि : शीर्षक, पुल आ बा

आनन्दवर्धनक ध्वनि-दृष्टिसँ तीन प्रमुख प्रतीक देखल जा सकैत अछि। सहस्रबाढ़नि वाच्यार्थक बाल-राक्षससँ व्यंग्यार्थक अनियंत्रित जीवन-शक्तिमे बदलैत अछि। पुल वाच्यार्थक संरचनासँ विकास, भ्रष्टाचार, स्मृति, मृत्यु आ पीढ़ी-संयोजनक प्रतीक बनैत अछि। बा मृत शरीरसँ पारिवारिक नैतिक स्मृतिक स्थायी उपस्थिति बनैत छथि। एहि प्रतीकक अर्थ लेखक प्रत्यक्ष उपदेशसँ नहि, पुनरावृत्ति आ प्रसंग-परिवर्तनसँ उत्पन्न करैत छथि—यैह ध्वनि-शक्तिक मूल अछि।

९.४ वक्रोक्ति आ औचित्य

वक्रोक्तिक स्तर पर रचनाक सर्वाधिक प्रभावी युक्ति कालक उलट-फेर आ साधारण वस्तुक पुनरागमन अछि। बसक खिड़की अचानक इतिहास खोलैत अछि; पुल पर शव चलैत अछि; बाल-डायरी भविष्य जकाँ लगैत अछि; सहस्रबाढ़नि मृत्यु बाद जीवनमे फेंकैत अछि। औचित्यक प्रश्न पर कतिपय दीर्घ प्रशासनिक व्याख्या कथा-वेग रोकैत अछि, मुदा एहि रचनाक दस्तावेजी स्वभावक कारण सभटा कटौती उचित नहि होएत। जहाँ तकनीकी विवरण पात्रक निर्णय वा प्रमाण-शृंखलाकेँ बदलैत अछि, ओ औचित्यपूर्ण अछि; जहाँ सूचना केवल ज्ञान-प्रदर्शन बनि रहि जाइत अछि, ओतए संक्षेप रचनाकेँ अधिक तीक्ष्ण बना सकैत अछि।

१०. पाश्चात्य आख्यान-विज्ञानक प्रकाशमे

१०.१ बहुस्वरता (Heteroglossia)

उपन्यासमे एकहि ‘साहित्यिक’ भाषा नहि बोलैत। गामक बोलचाल, संस्कृत श्लोक, तिरहुता-पत्रक संस्कारिक शैली, औपनिवेशिक सैन्य शब्द, अभियान्त्रिकी, सरकारी कार्यालय, व्यापार, न्यायालय, घरक झगड़ा, बालभाषा, डायरी—सभक अलग स्वर अछि। बाख्तिनक बहुस्वरता (Heteroglossia)क अर्थ एतए स्पष्ट अछि: समाजक भिन्न संस्थागत भाषा एक-दोसराक भीतर टकराइत अछि। विशेषत: उत्तरार्धक प्रशासनिक शब्दावली आधुनिक राज्यक भाषिक दबावकेँ दृश्य बनबैत अछि।

१०.२ कथन-क्रम आ स्मृति

जेनेट-कथित पूर्वदीप्ति (Analepsis) उपन्यासक प्रमुख तकनीक अछि। आरुणिक वर्तमान बारम्बार बाल्यकाल, नन्दक युवावस्था, कलितक जीवन आ झिंगुरक समय धरि पाछाँ जाइत अछि। किन्तु ई स्मृति-कट छलाँग बिन कारण नहि; वर्तमानक वस्तु, व्यक्ति वा संकट ट्रिगर बनैत अछि। एहि कारण कालभंग पाठककेँ भ्रमित करबाक बदला अर्थ-सम्बन्ध बनबैत अछि। कतिपय लम्बा स्मृति-प्रवाहमे संक्रमण-संकेत अधिक स्पष्ट कएलासँ पठनीयता आरो बढ़ि सकैत अछि।

१०.३ रिको : कथात्मक पहचान आ पूर्वजक ऋण

रिको केर कथात्मक पहचानक अवधारणा एहि उपन्यास लेल विशेष फलदायी अछि। आरुणि 'के छथि'—ई प्रश्न हुनकर नौकरी वा नामसँ नहि सुलझैत; हुनका अपन कथा, पिताक कथा, बा केर कथा, गामक कथा आ संस्थागत संघर्षकेँ फेर-फेर जोड़बाक पड़ैत अछि। रिको मानव-कालमे पूर्वजक प्रति ऋणक चर्चा करैत छथि; 'सहस्रबाढ़नि'मे आरुणिक नैतिक जीवन मूलतः नन्दक अधूरा संघर्षक ऋण चुकएबाक एक पद्धति अछि। मुदा ई ऋण अन्धानुकरण नहि: समान मूल्य, भिन्न रणनीति।

१०.४ आत्म-सन्दर्भी आख्यान (Metafiction)

अन्तिम डायरी-प्रसंग कथा अपन रचना-विधिकेँ विषय बना लैत अछि। 'ओ काल्पनिक कथाकार सभटा सत्ते लिखने छल' सन संकेत पाठककेँ पूछबैत अछि जे कथा भविष्य कहलक, कि वास्तविक जीवन बादमे कथा-सदृश बुझायल? ई आत्म-सन्दर्भिता उपन्यासक संस्मरणात्मक दाबीकेँ जटिल बनबैत अछि। लेखक पाठककेँ तथ्य आ कथा बीच कठोर देबाल नहि दैत; ओ देखबैत छथि जे मनुष्य अपना जीवनकेँ बुझबाक लेल कथात्मक रूपेँ पुनर्गठित करैत अछि।

११. नव्य-न्याय : साहित्यिक सिद्धान्त नहि, प्रमाण-अनुशासनक विश्लेषण

नव्य-न्यायकेँ एहि उपन्यासक 'सौन्दर्यशास्त्र' कहब ऐतिहासिक रूपेँ गलत होएत। गंगेश आ उत्तरवर्ती नव्य-नैयायिक परम्परा ज्ञान, प्रमाण, अनुमान, परिभाषा आ भाषिक अवच्छेदकक सूक्ष्म विश्लेषणक परम्परा अछि। एहि समीक्षा मे ओकर उपयोग एहि प्रश्न लेल कएल गेल अछि: पात्र कोन आधार पर कोन निष्कर्ष निकालैत अछि, आ ओ निष्कर्षक प्रमाण-भार कतेक अछि? ई दृष्टि नन्द आ आरुणिक बीचक मूल ज्ञानमीमांसीय अन्तर खोलैत अछि।

११.१ नन्दक कारण-निर्णय : व्याप्तिक संकट

नन्दक जीवनमे अनेक सत्य घटना अछि—मृत्यु, स्वप्न, रोग, पुलक संघर्ष, पारिवारिक निराशा। समस्या तखन उत्पन्न होइत अछि जखन संयोगक बीच आवश्यक कारण-सम्बन्ध मानि लेल जाइत अछि। उदाहरणत: कोनो स्वप्नक बाद मृत्यु भेलासँ 'स्वप्न मृत्यु बतबैत अछि' एहन सार्वभौम व्याप्ति सिद्ध नहि होइत। पुल-उद्घाटन, बच्चाक परीक्षा-फल आ निजी विफलता कालगत निकट हो सकैत अछि, मुदा कालगत निकटता कारणगत अनिवार्यता नहि। नव्य-

न्याय-दृष्टिसँ एतए उपाधि, प्रतिदृष्टान्त आ व्याप्तिक परीक्षण आवश्यक छल। उपन्यासक मनोवैज्ञानिक शक्ति एहि बातमे अछि जे नन्दक दुख व्याप्ति-जाँचसँ पहिने निष्कर्ष पर पहुँचा दैत अछि।

११.२ आरुणिक जाँच : पक्ष, हेतु, कड़ी

स्वर्ण-प्लाइ प्रकरणमे पहिल छापा ‘प्रत्यक्ष’ स्तर पर असफल होइत अछि। आरुणि तखन नूतन हेतु ताकैत छथि: सहायक कारखाना, दूरभाष-सूचना, पुलिस शिकायत, डायरी, चेक, निकासी-विवरण। प्रत्येक तथ्य अकेला निर्णायक नहि; परस्पर सम्बन्ध प्रमाण-भार बढ़बैत अछि। शशांक प्रकरणमे सेहो फोनक समय, गेटपर पहुँच, तेसर कॉल, अगिला भोर छापा, आवाज-मिलान—ई क्रम अनुमानक कड़ी बनैत अछि। यैह आरुणिक विजयक पद्धति अछि: अदृश्य कारण मानि वैराग्य नहि, उपलब्ध चिन्हक सीमा स्पष्ट कऽ परोक्ष निष्कर्ष।

११.३ अवच्छेदक आ दाबी-सीमा

नव्य-न्यायिक अनुशासनक एक महत्त्वपूर्ण पाठ अछि—दाबीकेँ सीमा दिअ। ‘पुल निर्माणमे सएसँ ऊपर मजदूर मरल’ कथनकेँ बिना सीमा ‘ऐतिहासिक सत्य’ कहब अनुचित अछि। प्रश्न होएत: ककर साक्ष्य? कोन निर्माण-अवधि? कोन खण्ड? मृत्यु स्थल पर कि बादमे? सरकारी कि ठीकेदारक सूची? क्षतिपूर्ति-रजिस्टर? एहन अवच्छेदन दाबीकेँ कमजोर नहि करैत; उलटे सत्यापन-योग्य बनबैत अछि। एहि उपन्यासमे जतए मौखिक साक्ष्य अछि, ओहि रूपमे ओकर मूल्य स्वीकार करैत बाह्य ऐतिहासिक निश्चितता अलग राखब उचित अछि।

१२. विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि : केन्द्र, हाशिया आ प्रमाण

समानान्तर इतिहास-दृष्टिक मूल सूत्र—‘सत्ता जाँचू, प्रमाण नहि छोड़ू; मौन दर्ज करू, कथा नहि गढ़ू; हाशिया सुनू, स्वतः सत्य नहि मानू; केन्द्र पढ़ू, स्वतः प्रामाणिक नहि मानू’—‘सहस्रबाढ़नि’क इतिहास-पठन लेल विशेष उपयुक्त अछि। उपन्यासक केन्द्रक स्रोत छथि सरकारी विभाग, परियोजना, विद्यालय, महाविद्यालय, प्रशासनिक प्रक्रिया; हाशियाक स्रोत छथि श्रमिक-स्मृति, बुढ़िया दीदीक खिस्सा, परिवारक मौखिक कथा, स्त्री-स्मृति, स्थानीय पर्यावरण-बोध। रचना दुनूकेँ एकहि संसारमे रखैत अछि।

समानान्तर पद्धति ईहो कहैत अछि जे अभिलेखीय मौनक अनेक कारण हो सकैत अछि: घटना नहि भेल; भेल मुदा दर्ज नहि भेल; दर्ज भेल मुदा स्रोत नष्ट; अथवा शोधक स्रोत धरि नहि पहुँचि सकल। उपन्यासमे मजदूर-सूची प्रसंग एहि चारू सम्भावनाकेँ जगा दैत अछि। साहित्यिक स्तर पर ‘नाम नहि’ पीड़ाक रूपक अछि; इतिहासक स्तर पर ‘नाम नहि’ सँ स्वत: संख्या सिद्ध नहि होइत। एहि दू स्तरकेँ अलग राखनाइ शोधक नैतिक जिम्मेवारी अछि।

१३. ऐतिहासिक सत्यापन : दाबी-श्रेणी

ऐतिहासिक दाबी	श्रेणी	टिप्पणी
१८८५ आ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक आरम्भ	सबल रूपेँ समर्थित	काल-संकेत व्यापक इतिहाससँ मेल खाइत अछि; पात्रक शिक्षा-परिवर्तनक पृष्ठभूमि युक्तिसंगत।
१८६७–६८ अबीसीनिया अभियान	आंशिक संगत; नाम-संशोधन आवश्यक	अभियान सही, मुदा नेतृत्व सर रॉबर्ट नेपियरक छल; “सर चार्ल्स नेपियर” ऐतिहासिक रूपेँ अशुद्ध। यदि मौखिक पात्र-स्मृति रूपमे राखल जाए तँ कथात्मक चूक मानल जा सकैत अछि।
स्नाइडर रायफल “१८८७मे देल गेल”	विवादित/ अशुद्ध	स्नाइडर १८६६मे प्रस्तुत भेल आ १८७१क बाद मार्टिनी-हेनरी द्वारा क्रमश: प्रतिस्थापित; १८८७क कथन संशोधन माँगैत अछि।
खाकी वर्दी द्वितीय अफगान युद्धमे उत्पन्न	आंशिक रूपेँ अशुद्ध	खाकी पहिने कॉर्प्स ऑफ गाइड्स द्वारा १८४०क दशकमे अपनाओल गेल; १८५७मे अन्य इकाइयो उपयोग कएलक; द्वितीय अफगान युद्धमे व्यापक पुनःप्रयोग भेल।
१९३४क भूकम्प	सबल रूपेँ समर्थित	१५ जनवरी १९३४क बिहार-नेपाल महाभूकम्प ऐतिहासिक

ऐतिहासिक दाबी	श्रेणी	टिप्पणी
		रूपेँ स्थापित; उपन्यासक “चौंतीसक भूकम्प” संगत।
१९४७ स्वतंत्रता-दिवसक बाल-स्मृति	सबल ऐतिहासिक पृष्ठभूमि; निजी विवरण असत्याप्य	राष्ट्रीय तिथि स्थापित; पात्रक व्यक्तिगत सहभागिता उपन्यासक आन्तरिक सत्य।
१९६२मे वायुसेनाक आक्रामक उपयोग नहि	सबल रूपेँ समर्थित	भारतीय वायुसेना परिवहन, निकासी, आपूर्ति आ टोही भूमिकामे सक्रिय छल, मुदा आक्रामक वायु-शक्ति उपयोग नहि भेल।
१९७५ पटना बाढ़ि	सबल रूपेँ समर्थित	सोनक निचला प्रवाहक छलकावसँ दानापुर आ पटनाक बड़ भाग जलमग्न भेल—काल-संकेत संगत।
१९७५क आसपास गंगा-पुल निर्माण-कॉलोनी	सबल रूपेँ सम्भाव्य	महात्मा गांधी सेतु कार्य १९७२मे देल गेल; ऊपरी धारा लेन १९७२–८२मे बनल; अतः १९७५क निर्माण-परिवेश ऐतिहासिक रूपेँ युक्तिसंगत।
गंगा-पुल उद्घाटन १९८२	सबल रूपेँ समर्थित	सेतु १९८२मे उद्घाटित; उपन्यासक परियोजना-कालसँ मेल।
स्थायी बन्दोबस्त बाद दरभंगा राजक परगना-आधारित कर-वसूलीक सरल कथन	सम्भाव्य पृष्ठभूमि, कानूनी रूपेँ सरलीकृत	दरभंगा बड़ जमीन्दारी-संरचना छल, मुदा स्थानीय अधिकार, परगना, राजस्व मध्यस्थता आ स्थायी बन्दोबस्तक कानूनी सम्बन्ध अधिक जटिल; कथनकेँ

ऐतिहासिक दाबी	श्रेणी	टिप्पणी
		परिवारक ऐतिहासिक स्मृति रूपमे पढ़ब सुरक्षित।
पुल निर्माणमे “सएसँ ऊपर” मजदूर मृत्यु आ सीमित क्षतिपूर्ति	अज्ञात/स्वतंत्र अभिलेख अपेक्षित	उपन्यासमे प्रत्यक्षदर्शी-सदृश साक्ष्य शक्तिशाली; उपलब्ध त्वरित अभिलेखीय सत्यापन बिना संख्या ऐतिहासिक तथ्य रूपमे घोषित नहि कएल जाए।
स्थानीय गाम-वंश, विवाह, टोल-संघर्ष, बोरिंग, व्यक्तिगत पदस्थापन	आन्तरिक कथात्मक सत्य; बाह्य सत्यापन अपेक्षित	एहि दाबी सभ लेल पारिवारिक अभिलेख, पंजी, भूमि-दस्तावेज, सेवा-अभिलेख, स्थानीय साक्ष्य आदि आवश्यक।

१४. इतिहास आ साहित्यक सीमा : तथ्य-संशोधनसँ रचना कमजोर होइत अछि?

ऐतिहासिक उपन्यास वा इतिहास-संवेदी उपन्यासक एक मूल प्रश्न अछि: पात्रक अशुद्ध इतिहास लेखकक त्रुटि अछि कि पात्रक यथार्थ? उत्तर प्रसंग-निर्भर अछि। एकौरक जमघट मौखिक चर्चा रूपमे प्रस्तुत अछि; तँ अबीसीनिया अभियानक नाम-चूक पात्रक स्मृति-भ्रम हो सकैत अछि। मुदा यदि कथनक स्वर सर्वज्ञ ऐतिहासिक सूचना जकाँ लगैत अछि, पाठक ओकरा लेखकक तथ्य-दाबी मानि सकैत अछि। अतः संशोधित संस्करणमे दू उपाय सम्भव छथि—तथ्य ठीक कएल जाए, अथवा कथनक मौखिकता स्पष्ट कएल जाए।

ऐतिहासिक तथ्यक सुधार रचनाक स्थानीय रंग नष्ट नहि करैत। उलटे तथ्य सही रहला पर मौखिक संसारक विश्वसनीयता बढ़ैत अछि। मुदा सुधारक नाम पर लोकस्मृति, उपभाषा, पारिवारिक विश्वास आ असत्याप्य अनुभव मेटा देब समान रूपेँ अनुचित होएत। विदेह समानान्तर दृष्टिक बल एतहि अछि—स्रोतक प्रकार पहिने चिन्हू, तखन ओकर योग्य कसौटी लगाऊ।

१५. समाज, जाति, वर्ग, लिंग आ मध्यवर्गीय आधुनिकता

उपन्यासक सामाजिक संसार टोल, दियाद, जातिगत पेशा, जमीन्दारी उत्तराधिकार, शिक्षा, सरकारी नोकरी आ विवाह-संबंधक जालसँ बनल अछि। अखड़ाहा, नौआ-ठाकुर, भूमिहार टोल, स्थानीय मजदूर, आदिवासी समुदाय, मारवाड़ी व्यापारी, सरकारी अधिकारी—ई सभ भिन्न सामाजिक स्थानक प्रतिनिधि छथि। रचना प्रायः नैतिक व्यक्ति-केंद्रित अछि; संरचनात्मक जाति-विश्लेषण गौण रहैत अछि। तथापि रोजमर्रा व्यवहारक सूक्ष्म उल्लेख सामाजिक पृष्ठभूमिक महत्त्वपूर्ण सामग्री दैत अछि। भविष्यक संशोधित आलोचनात्मक संस्करणमे पात्र-सूची वा सामाजिक-सन्दर्भ टिप्पणी एहि आयामकेँ अधिक पठनीय बना सकैत अछि।

मध्यवर्गीय आकांक्षा रचनाक स्थायी दबाव अछि—पढ़ाइ, नोकरी, घर, बेटी-विवाह, बेटाक भविष्य, पदोन्नति, शहरमे मकान, सामाजिक सत्कार। नन्दक ईमानदारीक मूल्य परिवार भुगतान करैत अछि: स्थानान्तरण, वेतन-अवरोध, सीमित सुविधा, घरक कलह। आरुणि एहि अनुभवसँ दू शिक्षा लैत छथि—भ्रष्ट नहि होएब, आ केवल नैतिक क्रोध पर निर्भर नहि रहब। एहि प्रकार उपन्यास भारतीय मध्यवर्गीय नैतिकताक एक गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि: शुचिता टिकाउ बनेबाक लेल संस्था-विवेक आ रणनीतिक दक्षता कतेक आवश्यक अछि?

स्त्री-पात्र घरक स्मृति, देखभाल, भोजन, विवाह, शोक आ पीढ़ी-संयोजनक मुख्य वाहक छथि। तथापि पुरुष-पात्रक शिक्षा, नौकरी आ प्रशासनिक संघर्षक तुलना मे स्त्रीक सार्वजनिक आत्मकथा कम विस्तृत अछि। बा आ बुढ़िया दीदी एहि सीमाकेँ आंशिक रूपेँ तोड़ैत छथि, कारण हुनकर स्मृति आ कथा पुरुषक सार्वजनिक इतिहासक समानान्तर घरेलू अभिलेख बनैत अछि। ई रचना-क्षमता विस्तार योग्य अछि।

१६. नदी, बाढ़ि आ पारिस्थितिक इतिहास

कमला-बलानक धारा, रेत, छहर, रोपनी, परोर-अल्हुआ, छिटुआ धान, बोरिंगक विफलता—ई विवरण उपन्यासकेँ ‘पर्यावरणीय स्मृति’ दैत अछि। नदी केवल विनाशक नहि; जल, खेती, आवागमन, विवाह-भूगोल, टोलक सम्बन्ध आ

आर्थिक मूल्य बदलनिहार शक्ति अछि। प्राकृतिक प्रक्रिया आ मानव-हस्तक्षेप —छहर, बोरिंग, पुल—दुनू मिलि नूतन भूगोल बनबैत छथि।

‘सहस्रबाढ़नि’ शीर्षकक कारण बाढ़ि सहजहि रूपक बनि सकैत छल, मुदा रचनाक विशेषता ई जे वास्तविक जल-भूगोल पहिने पर्याप्त ठोस रूपमे उपस्थित अछि। एही ठोस आधार पर मानसिक वा नैतिक ‘बाढ़ि’क रूपक विश्वसनीय बनैत अछि। जँ प्राकृतिक विवरण हटा देल जाए, शीर्षक अमूर्त प्रतीक बनि जायत; जँ प्रतीक नहि हो, उपन्यास स्थानीय नदी-वर्णन धरि सीमित रहि जायत। दुनूक संयोजन एकर विशिष्टता अछि।

१७. भाषा, वाक्य-संरचना आ बहु-रजिस्टर शैली

रचनाक सर्वाधिक मौलिक बल मैथिली घरेलू आवाज अछि। ‘मोन पड़ल’, ‘गुनधुनी’, ‘भोरहा’, ‘अखड़ाहा’, ‘ओसारा’, ‘गाछी’, ‘बाध’, ‘दियाद’, ‘खबासनी’, ‘परिछनि’, ‘बुचिया’, ‘बा’ सन शब्द पाठकेँ अनुवादित ग्रामीणता नहि, भीतरसँ बोलैत समाज दैत अछि। संवाद आ कथनक सीमा अनेक ठाम प्रवाही अछि, जाहिसँ मौखिक खिस्सा-जकाँ लय बनैत अछि।

दोसर बल तकनीकी आ प्रशासनिक भाषाक प्रवेश अछि। अभियान्त्रिकी, दूरभाष, कर, छापा, सतर्कता, पदस्थापन, सेवा-नियम, व्यापारिक निकासी—ई आधुनिक अनुभवकेँ मैथिली कथाभाषामे आनैत अछि। समस्या तखन अछि जखन ध्वन्यात्मक अंग्रेजी-उधार शब्द बहुत घना भऽ जाइत अछि; ओतए कथाभाषा पात्र-विशिष्ट रहबाक बदला सम्पादकीय असमानता जकाँ बुझाइ सकैत अछि। समाधान अंग्रेजी मेटेनाइ नहि, बल्कि स्तर-निर्धारण अछि: संवादमे युगसंगत मिश्रण रहय; कथाकारक गद्य अधिक परिष्कृत मैथिलीमे हो; पहिल प्रयोगपर मूल अंग्रेजी शब्द कोष्ठकमे देल जा सकैत अछि।

१८. शुद्ध मैथिली निखार-अंकेक्षण

मूल पाठमे भाषिक ऊर्जा प्रबल अछि, मुदा प्रकाशनपूर्व निखार लेल चार स्तर पर सम्पादन आवश्यक अछि—वर्तनी, पद-विच्छेद, विरामचिह्न, आ तकनीकी पदावली। ई अंकेक्षण रचनाक बोलीगत स्वभाव बदलबाक प्रस्ताव नहि; केवल कथाकारक गद्य आ मुद्रण-संगतता मजबूत करबाक उद्देश्य रखैत अछि।

स्तर	मूल/प्रचलित रूप	निखार-प्रस्ताव	टिप्पणी
वर्तनी	“संस्कृत”	“संस्कृत”	अनावश्यक नुक्ता हटाउ।
वर्तनी	“श्रोत”	“स्रोत”	मानक रूप।
पद-विच्छेद	“आँगनसँबाहर”, “गाममेहुनकर” सन संयुक्त रूप	“आँगनसँ बाहर”, “गाममे हुनकर”	जहाँ अर्थ-लय नहि टूटय, मुद्रणीय पठनीयता लेल नियमित अन्तराल।
क्रिया/रूप-संगति	एकहि रूपक अनेक वर्तनी	घराना-शैली अनुसार एकरूपता	पात्रक बोलीगत भिन्नता जानि-बुझि राखल जा सकैत अछि।
तकनीकी पद	“कंवर्शेशन”	“वार्तालाप (Conversation)”	कथाकारक गद्य लेल; पात्रक यथार्थवादी संवादमे मूल रूप राखल जा सकैत अछि।
तकनीकी पद	“एवीडेंस”	“प्रमाण (Evidence)”	शोधोन्मुख मैथिली शब्दावली स्पष्ट।
तकनीकी पद	“कंपलसरी सेवा निवृत्ति”	“अनिवार्य सेवानिवृत्ति (Compulsory Retirement)”	द्विभाषिक स्पष्टता।
तकनीकी पद	“नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट”	“अनापत्ति प्रमाणपत्र (No Objection Certificate)”	प्रशासनिक मैथिली सुदृढ।

स्तर	मूल/प्रचलित रूप	निखार-प्रस्ताव	टिप्पणी
तकनीकी पद	“क्लेंडेस्टाइन रिमूवल”	“गुप्त निकासी (Clandestine Removal)”	अर्थ पहिने, अंग्रेजी कोष्ठकमे।
तकनीकी पद	“एडजेस्टमेंट”	“समायोजन (Adjustment)”	जहाँ ‘समायोजन’ व्यंग्यात्मक अर्थ वहन करि सकय।
तकनीकी पद	“रेड”	“छापा (Raid)”	मैथिली वाक्यप्रवाह सहज।
तकनीकी पद	“टेलीफोन टैपिंग”	“दूरभाष-अवरोधन (Telephone Tapping)”	प्रमाण-प्रक्रियाक स्पष्ट पद।
तकनीकी पद	“पोस्टिंग/पोस्टेड”	“पदस्थापन/पदस्थापित (Posting/Posted)”	कथाकारक गद्य लेल।
संस्कृत उद्धरण	“उतपत्स्येत हिमम…” रूप	स्थापित मूल पाठसँ मिलान	मुद्रणपूर्व प्रामाणिक पाठ-समीक्षा आवश्यक; अनुमानसँ सुधार नहि।
विराम चिह्न	संवादक आरम्भ-अन्तमे असमान उद्धरण	एकरूप उद्धरण-प्रणाली	पाश्चात्य शोध/प्रकाशन शैलीक पठनीयता।
संख्या/तिथि	देवनागरी आ रोमन अंकक मिश्रण	एक नीति चुनू	साहित्यिक संस्करणमे देवनागरी अंक उपयुक्त; दस्तावेजी संक्षेपमे

स्तर	मूल/प्रचलित रूप	निखार-प्रस्ताव	टिप्पणी
			मूल अंक राखल जा सकैत अछि।

एक महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय सिद्धान्त ई रहबाक चाही जे पात्रक बोली ‘गलती’ मानि मानकीकृत नहि कएल जाए। नन्द, आरुणि, आजम, व्यापारी, गामक बुढ़-पुरान, सरकारी अधिकारी—सभक भाषिक रजिस्टर समान नहि। निखार कथाकारक वर्तनी-संगति, अनावश्यक पद-जुड़ाव, स्पष्ट विरामचिह्न आ तकनीकी शब्दक नियंत्रित द्विभाषिक रूप धरि सीमित रहय। एहन सम्पादन रचनाक स्थानीय स्वभाव बचबैत पठनीयता बढ़ाएत।

१९. रचनात्मक उपलब्धि

बहु-पीढ़ीय संरचना तथ्य-सूचीक रूप नहि लैत; नैतिक प्रश्न पीढ़ी-दर-पीढ़ी रूप बदलैत अछि।

मिथिलाक नदी-भूगोल, कृषि, गाम, लिपि, संस्कार, शिक्षा आ नौकरीक संसार एकहि कथा-तन्तुमे जुड़ैत अछि।

नन्द-आरुणि समानता/भिन्नता उपन्यासक सर्वाधिक सफल चरित्र-विन्यास: मूल्य समान, पद्धति भिन्न।

गंगा-पुल बहुअर्थी प्रतीक रूपमे अत्यन्त प्रभावी—विकास, भ्रष्टाचार, श्रमिक, पिता, शव-यात्रा, स्मृति आ प्रतिरोध सभ एक स्थल पर।

बाल-स्मृति आ प्रशासनिक जाँचक सह-अस्तित्व मैथिली उपन्यासक विषय-क्षेत्रकेँ असामान्य विस्तार दैत अछि।

शीर्षकक अन्तिम रूपान्तरण—भयावह सहस्रबाढ़निसँ जीवनमे पुनः फेंकनिहार शक्ति—रचनाकेँ गहींर ध्वन्यात्मक एकता दैत अछि।

मौखिक इतिहास, परिवारक स्मृति आ सरकारी प्रमाणक टकराव रचनाकेँ इतिहास-दर्शनक स्तर पर पठनीय बनबैत अछि।

२०. सीमितता आ संशोधन-सम्भावना

पहिल सीमा ऐतिहासिक सूचना आ पात्र-स्मृतिक स्वर-भेदक अछि। अबीसीनिया, स्नाइडर, खाकी सन ठाम संशोधन वा कथन-सीमा स्पष्ट होएबाक

चाही। दोसर, प्रशासनिक उत्तरार्धमे किछु तकनीकी विवेचन दृश्य-नाटकीयता पर भारी पड़ैत अछि; प्रमाणक लेल आवश्यक अंश राखि पुनरुक्ति घटाओल जाए तँ गति बढ़त। तेसर, दीर्घ स्मृति-खंडक बीच काल-परिवर्तनक संकेत कतिपय ठाम सूक्ष्म अछि; पाठक-सुविधा लेल रिक्ति, तारक-चिह्न वा लघु उपशीर्षक उपयोगी हो सकैत अछि।

चारिम, स्त्री-पात्रक घरेलू प्रभाव अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होइतो सार्वजनिक आत्मस्वर कम विस्तार पबैत अछि। बा, आरुणिक माए, बहिन, पत्नी आ बुचियाक दृष्टि सँ किछु प्रसंगक गहराइ बढ़ाओल जा सकैत अछि। पाँचम, आरुणिक सरकारी जाँचक सफलता कथानककेँ सन्तोषजनक प्रतिफल दैत अछि, मुदा कानूनी-प्रक्रियाक कुछ परिणाम अत्यन्त शीघ्र होइत बुझाइत अछि; संशोधित संस्करणमे प्रक्रियात्मक अन्तराल वा संस्थागत प्रतिक्रिया अल्प विस्तार पाबि सकैत अछि।

एहि सीमाक उल्लेख रचनाक महत्त्व घटेबाक लेल नहि, बल्कि ओकर शक्तिक अनुकूल सम्पादन-संभावना देखेबाक लेल अछि। विशेषत: तथ्यगत त्रुटि सुधरलापर उपन्यासक स्मृति-आधारित सत्य कमजोर नहि, अधिक विश्वसनीय बनत।

२१. समग्र साहित्यिक मूल्यांकन

‘सहस्रबाढ़नि’केँ सर्वाधिक उपयुक्त रूपेँ ‘बहु-पीढ़ीय स्मृति-ऐतिहासिक मनोवैज्ञानिक उपन्यास’ कहल जा सकैत अछि, मुदा एहो परिभाषा पूर्ण नहि। ई विकास-राज्यक नैतिक उपन्यास, मिथिलाक पर्यावरणीय स्मृति, मध्यवर्गीय शिक्षा-आकांक्षा, लोकविश्वास आ आधुनिक प्रमाणबुद्धिक संघर्ष, आ पिता-पुत्रक समानधर्मिताक आख्यान सेहो अछि। उपन्यासक विस्तारक कारण ओकरा कसि कऽ पढ़बाक आवश्यकता अछि; मुदा यैह विस्तार मिथिलाक जीवनक दीर्घ काल-सरणी उपलब्ध करबैत अछि।

रचनाक सर्वोच्च उपलब्धि ‘इतिहास’केँ पृष्ठभूमि नहि, पात्रक भीतर बसल शक्ति बनाबयब अछि। १९३४क भूकम्प घर बदलैत अछि; १९६२क युद्ध नन्दक राष्ट्र-बोध; १९७५क बाढ़ि आ सेतु परियोजना हुनकर पेशागत जीवन; १९९५क

बस-यात्रा आरुणिक पितृस्मृति; सरकारी तकनीक आरुणिक प्रतिरोध-पद्धति। एतए बाहरी घटना मनुष्यक चरित्रमे रूपान्तरित होइत अछि।

दोसर महान उपलब्धि ई जे उपन्यास नन्दक 'हार'कैं नैतिक हार नहि बनबैत। नन्द संस्थागत रूपेँ पराजित होइत छथि, मनोवैज्ञानिक रूपेँ अदृश्य-दिशि खसैत छथि, किन्तु हुनकर ईमानदारी आरुणिक भीतर नूतन पद्धति पबैत अछि। आरुणि पिताकैं खारिज नहि करैत; ओ पिताक अधूरा सूत्रकैं प्रमाण, धैर्य आ रणनीति जोड़ि पूरा करबाक प्रयास करैत छथि। एहि कारण उपन्यासक वंशावली नियतिवादी नहि—उत्तराधिकार संशोधनशील अछि।

अन्तिम दुर्घटना एहि नैतिक वंशावलीकैं शारीरिक स्तर पर आनैत अछि। आरुणि तकनीकसँ शशांककैं हरौलन्हि, मुदा जीवनकैं पूर्ण नियंत्रित नहि कऽ सकैत छथि। शरीर टूटैत अछि; मित्र दूर होइत छथि; इलाज अनिश्चित होइत अछि। एतए सहस्रबाढ़नि फेर अबैत अछि। किन्तु आब आरुणि भयक शिकार मात्र नहि; ओ मृत्यु-सीमासँ घुरैत छथि। उपन्यासक अंतिम विजय 'सभ समस्या हल' नहि, बल्कि अनियंत्रित जीवनक बीच फेर ठाढ़ होएबाक क्षमता अछि।

२२. निष्कर्ष

'सहस्रबाढ़नि' मैथिली गद्यक एहन प्रयोग अछि जाहिमे घरक छोट स्मृति—नेनाक ठेहुनियाँ, बा केर फोटो, बुढ़िया दीदीक खिस्सा, पानक दोकान—आ पैघ ऐतिहासिक संरचना—औपनिवेशिक शिक्षा, जमीन्दारी प्रशासन, भूकम्प, युद्ध, बाढ़ि, सेतु-निर्माण, सरकारी सतर्कता—एक-दोसराकैं अर्थ दैत अछि। रचना देखबैत अछि जे इतिहास केवल राजकीय कालक्रम नहि; इतिहास ईहो अछि जे कोन कथा घरमे बचल, कोन नाम सूचीमे नहि आयल, कोन व्यक्ति विफलताक अर्थ तंत्रमे ताकलक, आ कोन पुत्र पिताक मूल्यकैं नूतन प्रमाण-पद्धतिसँ आगाँ बढ़ेलक।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ रचनाक प्राण ओकर करुण-वीर संक्रमण आ शीर्षकक ध्वनि अछि। पाश्चात्य आख्यान-विज्ञानक दृष्टिसँ स्मृति-काल, पुल-जकाँ काल-स्थान-संयोजन, बहुस्वरता आ अन्तिम आत्म-सन्दर्भिता एकर आधुनिकता सिद्ध करैत अछि। नव्य-न्याय ई बतबैत अछि जे नन्दक दुखद ज्ञान-संकट आ आरुणिक सफल प्रतिरोधक बीच प्रमाण-विधिक अन्तर अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि ई सुनिश्चित करैत अछि जे साहित्यिक स्मृतिक सम्मान करैत इतिहासक दाबी पर प्रमाणक समान कठोर कसौटी रहय।

ऐतिहासिक संशोधन—विशेषतः अबीसीनिया अभियानक नेतृत्व, स्नाइडर रायफलक तिथि आ खाकीक उत्पत्ति—आ भाषिक निखार बाद ई उपन्यास अधिक दृढ़ शोध-पाठ बनि सकैत अछि। तथापि एकर मूल साहित्यिक शक्ति एखनहु स्पष्ट अछि: सहस्रबाढ़नि बाहरक आपदा मात्र नहि, पीढ़ी-दर-पीढ़ी मनुष्यपर चढ़ैत परिस्थितिक नाम अछि; आ मनुष्यक गरिमा एहि बातमे अछि जे ओ हर बेर ओहि बाढ़िसँ बाहर निकलि अपन पएर पर फेर ठाढ़ होएबाक नूतन पद्धति खोजैत अछि।

परिशिष्ट : सम्पादकीय प्राथमिकता-सूची

प्राथमिकता	कार्य	उद्देश्य
पहिल	ऐतिहासिक तथ्य-संशोधन	अबीसीनिया/नेपियर, स्नाइडर, खाकी; दाबी आ पात्र-स्मृतिक स्वर अलग करू।
दोसर	वर्तनी आ पद-विच्छेद	संस्कृत, स्रोत, संयुक्त शब्द, उद्धरणचिह्न, विरामचिह्नक एकरूपता।
तेसर	तकनीकी पदावली	मैथिली अर्थ पहिने; आवश्यक अंग्रेजी शब्द केवल कोष्ठकमे।
चारिम	दीर्घ स्मृति-खंडक दृश्य विभाजन	काल-परिवर्तन स्पष्ट करबाक लेल सूक्ष्म खण्ड-विराम।
पाँचम	प्रमाण-दाबी सीमा	संख्या/मृत्यु/क्षतिपूर्ति/स्थानीय इतिहासक ठाम कथावाचक-स्रोत स्पष्ट।
छठम	संस्कृत उद्धरण-पाठ	प्रामाणिक संस्करणसँ मिलान बिना अनुमानित सुधार नहि।
सातम	स्त्री-दृष्टिक	जहाँ मूल संरचना अनुमति दे, घरेलू

प्राथमिकता	कार्य	उद्देश्य
	सम्भावित विस्तार	स्मृतिक स्वायत्त आवाज आरो स्पष्ट।

ग्रन्थसूची

1. सहस्रबाढ़नि

2. नाट्यशास्त्र

3. ध्वन्यालोक

4. अभिनवभारती

5. वक्रोक्तिजीवित

6. काव्यप्रकाश

7. तत्त्वचिन्तामणि

8. द डायलॉजिक इमैजिनेशन (The Dialogic Imagination)

9. टाइम ऐंड नैरेटिव (Time and Narrative)

10. मेमरी, हिस्ट्री, फॉरगेटिंग (Memory, History, Forgetting)

11. नैरेटिव डिस्कोर्स (Narrative Discourse)

12. द थिअरी ऑफ द नॉवेल (The Theory of the Novel)

13. मेटाहिस्ट्री (Metahistory)

14. द आर्कियोलॉजी ऑफ नॉलेज (The Archaeology of Knowledge)

15. डिसिप्लिन ऐंड पनिश (Discipline and Punish)

16. द आर्मीज ऑफ इंडिया (The Armies of India)

17. द बिहार-नेपाल अर्थक्वेक ऑफ १९३४ (The Bihar-Nepal Earthquake of 1934)

18. अननोन ऐंड अनसंग : इंडियन एयर फोर्स इन द साइनो-इंडियन वॉर ऑफ १९६२ (Unknown & Unsung: Indian Air Force in Sino-Indian War of 1962)

आलेख २८ · उपन्यास आ विस्तृत आख्यानक अध्ययन

सहस्रशीर्षा

सारांश

“सहस्रशीर्षा” अपन शीर्षकहि सँ एकटा एहन उपन्यासिक प्रतिज्ञा करैत अछि जाहिमे समाजक सत्य एक मुँह, एक जाति, एक वर्ग, एक दल, एक पोथी वा एक सरकारी कागजमे समा नै सकैत अछि। “हजार माथ, हजार मुँह, हजार तरहक गप-खिस्सा”क उद्घोष कथा-विन्यासक मूल सूत्र बनि जाइत अछि।

बीजशब्द

सहस्रशीर्षा ·मैथिली उपन्यास ·आख्यान-रचना ·स्मृति ·सामाजिक इतिहास

१.३०. गजेन्द्र ठाकुर- सहस्रशीर्षा- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

सहस्रशीर्षा : बहुस्वर लोक-इतिहासक उपन्यास

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य आलोचना, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे विस्तृत साहित्यिक शोध-समीक्षा

सारांश। ई अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली उपन्यास “सहस्रशीर्षा”क सम्पूर्ण चौंतीस कल्लोलकेँ एकटा संयुक्त साहित्यिक, दार्शनिक, सामाजिक आ ऐतिहासिक पाठ रूपेँ ग्रहण करैत अछि। शीर्षकक वैदिक बहु-मस्तक प्रतिमा उपन्यासमे हजारो आवाज, लोककथा, गीत, जातीय स्मृति, स्त्री-अनुभव, श्रम-ज्ञान, स्वतंत्रता-संघर्ष, जेल, चुनाव, बान्ह, कोसी-कमला, अकाल, पलायन आ नव शहरी जीवनक बहुस्वर रूप धारण करैत अछि। समीक्षा भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आ लोकधर्मी अभिव्यक्तिक आधारपर; पाश्चात्य बहुस्वरता, काल-स्थान, ऐतिहासिक यथार्थ, सांस्कृतिक भौतिकता आ उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ; नव्य-न्यायक प्रमाण, शब्द, अनुमान, व्याप्ति, उपाधि आ अभाव-विवेकसँ; तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक बहु-कालिक पठनसँ कएल गेल अछि। अध्ययनक मुख्य निष्कर्ष ई अछि जे “सहस्रशीर्षा” एकरेखीय कथानकसँ बेसी लोक-संसारक

गतिशील अभिलेख अछि, जतए आधिकारिक इतिहास आ लोकस्मृति एक-दोसराकेँ जाँचैत, काटैत आ पूरक बनैत अछि।

मुख्य शब्द। सहस्रशीर्षा; गढ़ नारिकेल; बहुस्वरता; लोकस्मृति; नव्य-न्याय; कोसी; बान्ह; जाति; श्रम; स्त्री-अनुभव; स्वतंत्रता; पलायन; समानान्तर इतिहास।

१. प्रस्तावना

"सहस्रशीर्षा" अपन शीर्षकहि सँ एकटा एहन उपन्यासिक प्रतिज्ञा करैत अछि जाहिमे समाजक सत्य एक मुँह, एक जाति, एक वर्ग, एक दल, एक पोथी वा एक सरकारी कागजमे समा नै सकैत अछि। "हजार माथ, हजार मुँह, हजार तरहक गप-खिस्सा"क उद्घोष कथा-विन्यासक मूल सूत्र बनि जाइत अछि। पुरुषसूक्तक "पद्भ्यां शूद्रो अजायत"क स्मरणक तुरन्त बाद "पद्भ्यां भूमिर्दिशः"क प्रति-स्मरण जातीय ऊँच-नीचक स्थापित पाठकेँ उलटि दैत अछि: जँ पएर पृथ्वीक स्रोत सेहो अछि, तँ पएरक प्रतीक नीचताक प्रमाण कोना भऽ सकैत अछि? एहि प्रश्नसँ उपन्यासक नैतिक आ ज्ञानमीमांसात्मक दिशा स्पष्ट होइत अछि।

ई कृति पहिल संस्करण २०१० आ दोसर संस्करण २०१५क रूपमे प्रस्तुत अछि। आरम्भिक प्रकाशकीय टिप्पणी लेखकक लोककथा, लोकसंगीत, सांस्कृतिक विस्थापन, अर्थव्यवस्था, समाज आ संस्कृति सम्बन्धी मौखिक तथा लिखित संग्रहक प्रति ऋण स्वीकार करैत अछि। तेँ उपन्यासकेँ केवल कल्पित आख्यान बुझब अपूर्ण हएत; ई कथा, स्मृति, लोकविज्ञान, राजनीतिक इतिहास, दार्शनिक वाद-विवाद आ पर्यावरणीय अनुभवक मिश्रित संरचना अछि। मुदा एतए एकटा शोध-सावधानी आवश्यक अछि: उपन्यासक भीतर पात्र वा कथावाचक द्वारा कहल ऐतिहासिक, जातीय वा दार्शनिक दाबीकेँ एहि अध्ययनमे पहिने "पाठगत कथन" मानल गेल अछि; बाहरी प्रमाण बिना ओकरा स्वतः स्वतंत्र ऐतिहासिक तथ्य घोषित नै कएल गेल अछि।

कृतिक मुख्य कथाभूमि गढ़ नारिकेल अछि, मुदा एहि गामक सीमा स्थिर नै अछि। बाँकीपुर जेल, मदुरै, कोसी-कमला क्षेत्र, मिथिलाक अनेक गाम, नेपाल, दिल्ली, किशनगढ़, मेहरौली, बसन्तकुञ्ज आ महानगरीय रोजगारस्थल सभ

कथा-संसारमे पैसैत जाइत अछि। एहि विस्तारक कारण गढ़ नारिकेल एकटा सूक्ष्म विश्व बनैत अछि—एहन सूक्ष्म विश्व जाहिमे भारतक स्वतंत्रता, लोकतन्त्र, जाति, भूमि, श्रम, नदी-प्रबन्ध, शिक्षा, भाषा, प्रवास आ विकासक प्रश्न सभ स्थानीय देह धारण करैत अछि।

२. शोध-आधार, पाठ-सीमांकन आ पद्धति

२.१ सम्पूर्ण पाठक ग्रहण

अध्ययनमे प्रस्तावना-सदृश आरम्भिक अंश, चौंतीस कल्लोल, पल्लव-शीर्षक, लोकगीत, कहबी, जातीय उत्पत्ति-कथा, देवी-देवता आ लोकदेवताक आख्यान, जेल-वृत्त, चुनावी प्रसंग, नदी-बान्हक चर्चा, दार्शनिक संवाद, पलायन आ अन्तिम शहरी विस्तार—सभकेँ विश्लेषणमे समेटल गेल अछि। पहिल चारि कल्लोलमे “पहिल पल्लव” आ “दोसर पल्लव”क स्पष्ट विभाजन भेटैत अछि; चौंतीसम कल्लोल फेर “पहिल पल्लव”सँ आरम्भ होइत अछि। शेष कल्लोल धारावाहिक गद्य-प्रवाहमे आगाँ बढ़ैत अछि। ई असमानता सम्पादन-दोष मानबाक अपेक्षा कथानकक बदलैत साँस, कथावाचकक स्मृतिप्रवाह आ सामग्रीक विस्तारक संकेत अधिक बुझाइत अछि।

२.२ भारतीय काव्यशास्त्रीय कसौटी

भारतीय समीक्षा लेल रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य, रीति आ लोकधर्मी प्रस्तुति मुख्य कसौटी अछि। करुण, वीर, हास्य, रौद्र, अद्भुत आ शान्त भाव लोकगीत आ प्रसंगक माध्यमे बारम्बार एक-दोसरामे रूपान्तरित होइत अछि। ध्वनिक स्तरपर “माटिक देबार”, “अमृत”, “जेल”, “बान्ह”, “कोसी”, “चरखा” आ “चिन्नी कम मीठ” सन बिम्ब कथित अर्थसँ आगाँ सामाजिक व्यंजना रचैत अछि। वक्रोक्ति विशेषतः स्वतंत्रता, विकास आ आधिकारिक सम्मानक प्रसंगमे तीक्ष्ण व्यंग्य बनि उठैत अछि। औचित्यक कसौटी लोकगीत, मिथक, दर्शन आ राजनीतिक संवादक स्थान-काल-सापेक्ष प्रयोगकेँ जाँचबाक आधार दैत अछि।

२.३ पाश्चात्य आलोचनात्मक कसौटी

पाश्चात्य आलोचनासँ एहि अध्ययनमे पाँच प्रमुख सूत्र लेल गेल अछि: यथार्थक अनुकरण, ऐतिहासिक उपन्यास, बहुस्वरता, काल-स्थान संरचना आ सांस्कृतिक भौतिकता। अरस्तूक अनुकरणक विचार कथाक घटनात्मक संगठन

जाँचैमे सहायता करैत अछि; लूकाचक ऐतिहासिक उपन्यास सम्बन्धी दृष्टि निजी पात्र आ सामूहिक इतिहासक सम्बन्ध देखबैत अछि; बाख्तिनक बहुस्वरता आ काल-स्थान अवधारणा लोकभाषा, जेल, गाम, बान्ह आ महानगरक परस्पर सम्बन्ध खोलैत अछि; रेमंड विलियम्सक ग्रामीण-शहरी परिवर्तनक दृष्टि पलायन आ श्रम-बदलाव बुझबैत अछि; उत्तर-औपनिवेशिक आलोचना स्वतंत्रता-पश्चात सत्ता-केंद्रक निरन्तरता पर प्रश्न करैत अछि।

२.४ नव्य-न्याय पद्धति

नव्य-न्याय एहि उपन्यासक लेल बाहरी कसौटी मात्र नै, भीतरक दार्शनिक विषय सेहो अछि। पाठमे उदयन, गंगेश, वर्धमान, वाचस्पति मिश्र, गौतम, बौद्ध आ जैन परम्पराक उल्लेख आबैत अछि। अध्ययनमे “कथन”कैं तुरन्त सत्य नै मानि ओकर प्रमाण, प्रसंग, पक्ष, हेतु, व्याप्ति, उपाधि आ सम्भावित हेत्वाभास पर विचार कएल गेल अछि। सरकारी प्रमाणपत्र एक दिस, लोकस्मृति दोसर दिस; जातीय उत्पत्ति-कथा एक दिस, जीवित पेशागत सम्बन्ध दोसर दिस; विकासक सरकारी दावा एक दिस, जल-जमाव, विस्थापन आ खेतीक क्षति दोसर दिस—ई सभ प्रमाण-संघर्ष नव्य-न्यायीय पठनक स्वाभाविक क्षेत्र बनैत अछि।

२.५ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

एहि समीक्षामे “विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति”क कार्यपरिभाषा ई अछि जे एकटा केन्द्रीय राष्ट्रीय कालक्रमक नीचे स्थानीय इतिहासकैं फुटनोट नै बनाओल जाए; ओकर बदला अनेक काल-रेखा एक संग पढ़ल जाए। एहि पोथीमे कम-सँ-कम सात समानान्तर रेखा स्पष्ट अछि: राष्ट्रीय राजनीतिक इतिहास; गाम आ जातीय-सामाजिक इतिहास; श्रम आ पेशागत ज्ञानक इतिहास; नदी-बान्ह आ खेतीक पर्यावरणीय इतिहास; स्त्रीक संस्कार, गीत आ देह-अनुभवक इतिहास; लोककथा-मिथकक स्मृति-इतिहास; तथा पलायन, शिक्षा, बाजार आ महानगरीय रोजगारक आधुनिक इतिहास। समानान्तर पठन ई देखबैत अछि जे कोनो एक रेखा दोसराकैं पूर्णतः निगलैत नै अछि।

३. शीर्षक आ वैचारिक बीज : “सहस्रशीर्षा”क पुनर्पाठ

शीर्षकक वैदिक संकेत उपन्यासमे बहुवचनक साहित्यिक सिद्धान्त बनि जाइत अछि। पुरुषक “सहस्र” माथ केवल विराट देवदेह नै, समाजक असंख्य चेतना अछि। मुखदेव मुख्य गबैय्या छथि, मुदा अन्तिम सत्यक एकल स्वामी नै। हुनकर कथा सुननिहार घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण, रुद्रमति, रघुवरन आ पछाति मोहन गबैय्या, सत्यनारायण यादव, अरुणा झा, धीरेन्द्र, प्रवासी पीढ़ी—सभ अपन-अपन प्रश्न, संशय, स्मृति आ हित नेने उपस्थित छथि। एहि कारण कथा “एक नायकक जीवन”क बदला “सामूहिक ज्ञानक संचरण” बनैत अछि।

उपन्यासक अन्तिम वाक्यात्मक संकेत—मुखदेव स्वयं “सहस्रशीर्षा”बला खिस्सा नै सुनने छथि—पूरा संरचनाकेँ अनन्त खुलापन दैत अछि। जकरा पाठक अन्तिम व्याख्या मानि रहल हो, उपन्यास ओहि क्षण कहैत अछि जे कथा शेष नै भेल। ई स्व-प्रतिबिम्बित विन्यास बहुस्वर उपन्यासक सबसँ सफल शिल्पगत उपलब्धि अछि।

४. गढ़ नारिकेल : गाम नै, बहुस्तरीय सामाजिक प्रयोगशाला

पहिल कल्लोल गढ़ नारिकेलक स्थल-विन्यास, पोखरि, टोल, पेशा, गाछ-बृच्छ, गीत, कारीगरी, जातीय सम्बन्ध, कथा आ स्त्रीक घरेलू-कलात्मक कौशलक विस्तृत मानचित्र बनबैत अछि। “माटिक साम्राज्य”क बिम्ब विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। घर, चूल्हि, देबाल, नार-पुआर, चाम आ देह सभ अन्ततः माटिसँ जुड़ल अछि; मुदा एही माटिक बीच “अदृश्य देबार” जाति आ वर्गक विभाजन रचैत अछि। प्रकृतिक समान तत्त्व सामाजिक असमानताक पृष्ठभूमि बनैत अछि।

गामक सामाजिक संगठन स्थिर जाति-सूची नै अछि। ढोलक, पिपही, चमड़ा, खेती, भार, मछैर, कुम्हारी, बढ़ईगिरी, धुलाई, पान, भनसा, हलुआइ, हजामत, लोकचिकित्सा, प्रसूति-सहायता, गीत आ संस्कार—सभ एक-दोसरापर निर्भर अछि। कथानक बारम्बार देखबैत अछि जे शुद्धता-अशुद्धताक सामाजिक दावा व्यवहारमे परस्पर निर्भर श्रमक सामने कमजोर पड़ैत अछि। ई विरोधाभास उपन्यासक जाति-समीक्षाक मूल आधार अछि।

५. चौंतीस कल्लोलक क्रमिक पाठ-समीक्षा

५.१ पहिल कल्लोल — “गढ़ नारिकेल- महिसबार ब्राह्मणक गाम”

ई कल्लोल पूरा उपन्यासक सामाजिक भूगोल तैयार करैत अछि। मुखदेवक बाल्य, ममतोड़ आ दयारामक संग सम्बन्ध, टोलक आत्मनिर्भरता, पोखरि, बँसबिट्टी, माटि, नार-पुआर, पशु, शिल्प, खेल, संस्कार, जातीय पेशा, डोम-मलिक, चर्मकार, धानुक, दुसाध, धोबी, नौआ, कुम्हार, खतबे, बरइ, मलाह, किओट, मुसलमान आ अनेक लोकदेवता-संबन्धी खिस्सा एकटा विशाल जीवित सूची बनबैत अछि। मुदा ई सूची संग्रहालय-सूची नै; सभ वस्तु सम्बन्धमे अछि। माटि सभकेँ एक करैत अछि, अदृश्य देबार सभकेँ बाँटैत अछि। बालक मुखदेवक सीखब—हुनर, खेल, जातीय सीमा पार मित्रता—आगूक राजनीतिक चेतनाक बीज अछि।

५.२ दोसर कल्लोल — “की बन्है छी? पुरबा-पछबा।”

देशक स्वतंत्रताक घोषणा बाँकीपुर जेलक भीतर सुनाइत अछि। ई स्थानिक उलटफेर—स्वतंत्रता बाहर, कैद भीतर—पूरा उपन्यासक राजनीतिक वक्रोक्ति स्थापित करैत अछि। मुखदेवक स्मृति फेर गाम दिस घुरैत अछि; जागेश्वरक संग सीमा-पार खेल, बँसबिट्टीक ओइपार जाएब, अन्धविश्वासक प्राकृतिक व्याख्या—ई सभ व्यक्तिगत ज्ञानक विस्तार देखबैत अछि। “की बन्है छी?” प्रश्न विवाहक पुरबा-पछबा मात्र नै, देश, जाति, जेल आ मनुष्यक बन्हनक रूपक बनि जाइत अछि।

५.३ तेसर कल्लोल — “कतेक जना हरिवासर ठानल/ भात बहुत कै सपना”

जागेश्वरक मृत्यु स्मृति आ प्रश्न बनि उपस्थित अछि। सर्प, मनसा, लोकविश्वास, गीत, बाढ़ि-अकालक स्मृति आ मुखदेवक गान एकहि धारा मे चलैत अछि। जेलक श्रोता-मण्डली कथा सुनैत-सुनैत नव संविधानक प्रतीक्षा करैत अछि। “स्वतंत्रता” एक घटना नै, लागू होयब बाँकी प्रतिज्ञा अछि। कल्लोलक अन्त “आबऽ दियौ” प्रतीक्षाक राजनीतिक व्याकरण रचैत अछि।

५.४ चारिम कल्लोल — “विश्वकर्माक रखबाड़िमे इन्द्र लग अमृत”

समुद्रमन्थनक अमृत स्वतंत्रताक रूपक बनैत अछि। प्रश्न ई नै जे अमृत भेटल कि नै, प्रश्न ई जे अमृत ककर रखबारिमे अछि आ ककरा पिबाक अधिकार अछि। मुखदेव एहन अमृत पर संशय करैत छथि जे संघर्ष समाप्त कऽ मनुष्यकेँ निश्चिन्त बना देत; जीवनक मूल्य अमरत्वमे नै, न्यायपूर्ण

सक्रियतामे अछि। कृषि-मास, पारिवारिक स्मृति आ मिथकक समानान्तरता स्वतंत्रता-चिन्तनकेँ रोजमर्रा श्रमसँ जोड़ैत अछि।

५.५ पाँचम कल्लोल — “बो-बो”

सृष्टि-कथा, साँप, जादू-टोना, स्त्री-पुरुषक परिहास आ मुसलमान समाजक भीतरक वर्गीकरण सभ मुखदेवक कथनमे पैसैत अछि। “बो-बो”क घरेलू संबोधन हास्य उत्पन्न करैत अछि, मुदा एकरा माध्यमे स्त्रीक बोलबाक अधिकार आ अनुकरणक सामाजिक शक्ति सेहो सामने अबैत अछि। श्रोता सभक भिन्न प्रतिक्रिया स्पष्ट करैत अछि जे कथा एके अर्थ सभपर आरोपित नै करैत; सुननिहारक अनुभव अर्थ बदलैत अछि।

५.६ छअम कल्लोल — “छुच्छो हाथ भैया...”

कुमरव्रता-पतिव्रता सन लोककथा, विवाह-संस्कार, वर-कनियाँक विधि, गीत आ भैया-बहीनक भाव एहि कल्लोलक आधार अछि। ममतोड़क जीवनक माध्यमे विवाह स्त्री लेल केवल उत्सव नै, घर-परिवर्तन, वस्त्र, देह, नातेदारी आ स्मृतिक पुनर्गठन अछि। गीत कथानक रोकैत नै; ओ संस्कारक भावनात्मक भाष्य बनैत अछि।

५.७ सातम कल्लोल — “धुन-धुन धुन-धुन बोलै चरखा...”

उमा-पार्वतीक तपस्या आ ममतोड़क शिक्षा एक-दोसराक बगलमे राखल गेल अछि। “शिक्षा” विद्यालयक पाठ्यक्रमसँ बाहर माय, समाज, काम-काज, भय आ अनुभवसँ बनैत अछि। ममतोड़क जीवनमे घटल अपमानजनक घटना पछाति गाम ओकरा लेल असुरक्षित बनि जाइत अछि; ई परिवर्तन स्त्रीक दृष्टिसँ “घर”क नैतिकता पर प्रश्न करैत अछि। अन्तमे स्वतंत्र देशक जेलमे सभ श्रोता स्तब्ध छथि—राजनीतिक स्वतंत्रता आ सामाजिक सुरक्षा एक वस्तु नै।

५.८ आठम कल्लोल — “आजु धीया कोना अमा बिनु रहती...”

ई कल्लोल विवाह-विधिक अत्यन्त सूक्ष्म लोक-नृवंशात्मक लेखा प्रस्तुत करैत अछि—मड़बा, अग्नि-प्रदक्षिणा, पाथर, लावा, लोकनियाँ, भार, बिदाइ आ गीत। दौलति जहाँ आ रुद्रमतिक अपन बेटीक बिदाइ मोन पड़ब कथा-सुनबाक क्षणकेँ निजी करुणामे बदलि दैत अछि। पुरुष श्रोता सेहो डबडब आँखिसँ सुनैत

छथि। करुण रस एतए स्त्री-मात्रक भावना नै रहि सामूहिक मानवीय अनुभव बनैत अछि।

५.९ नौम कल्लोल — “मुँह चन्द्रसन...”

गौरी-कामदेवक मिथकक संग मुखदेव-जागेश्वरक सामाजिक अनुभव जोड़ल अछि। दुसाधक स्पर्श, काजक “छोट-पैघ” मूल्यांकन, बच्चा सभक घर-घर हुनर सीखब आ ज्यामितीय खेल—ई सभ जाति-आधारित ज्ञानक्रमकेँ उलटैत अछि। जागेश्वरक “बतहा” कहेब सामाजिक दण्ड अछि, कारण ओ प्रचलित सीमा नै मानैत अछि। रघुवरनक दृष्टिमे मुखदेवक दार्शनिकता उभरैत अछि।

५.१० दसम कल्लोल — “किए तोहर आहो लालाजी...”

शिव-पार्वती विवाहक पौराणिक प्रसंग लोकगीत आ सामाजिक व्यंग्यसँ मिलैत अछि। जागेश्वरक नैतिक सूत्र स्पष्ट अछि: समाज तोड़निहारसँ भय नै, प्रतिरोध जरूरी। औपनिवेशिक शासनक अन्त बाद “देशी फिरंगी”क उल्लेख सत्ता-परिवर्तनक अधूरापन देखबैत अछि। एहि कल्लोलमे राष्ट्रीय स्वतंत्रता, नैतिक स्वाधीनता आ सामाजिक न्यायक बीच भेद तीक्ष्ण होइत अछि।

५.११ एगारहम कल्लोल — “उक्खड़ि सन सन बीट...”

कार्तिकेयक जन्मकथा, चर्मकार उत्पत्तिक लोककथा, छोट जाति कहि अपमान, छेछन महराज सन डोम लोकदेवता आ जीवित उद्धारक प्रश्न—ई सभ एकहि कल्लोलमे आबैत अछि। मुखदेवक निर्णायक प्रश्न अछि: “जिबैत के करैए ककर उद्धार?” धार्मिक परलोकक बदला जीवित मनुष्यक गरिमा कथा-समीक्षाक कसौटी बनैत अछि। जेलक कोठलीमे हुनकर आवाज घुमैत रहब सामाजिक प्रतिध्वनिक सशक्त बिम्ब अछि।

५.१२ बारहम कल्लोल — “लोभेलै छौड़ा बभना...”

लीली-संध्याक कथा, चर्मकारक जनौ-अमरलत्ती सम्बन्धी लोकव्याख्या, प्रसूति-परम्परा, चमैन-दगरिन आ आधुनिक अस्पतालक नर्स—ई सभ ज्ञान-व्यवस्थाक ऐतिहासिक संक्रमण देखबैत अछि। लोककथा सामाजिक पहचानकेँ वैध ठहरबैत सेहो अछि आ प्रश्नांकित सेहो करैत अछि। श्रोता सभक “ई तँ पोथीमे नै पढ़ल” सन विस्मय मौखिक ज्ञानक स्वतंत्र प्रतिष्ठा स्थापित करैत अछि।

५.१३ तेरहम कल्लोल — “कुशक डेफसँ नथबौ गे धमिआइन...”

सुकन्या, दीना, हंसा, शिकार, मुसहर समाज आ विवाह-संबन्धी प्रसंग एकटा एहन क्षेत्र खोलैत अछि जतए लोक-वीरगाथा जातीय सीमा आ भूगोलक स्मृति दैत अछि। मुखदेवक मोन मुसहरी दिस टांगल रहब मात्र सहानुभूति नै, सामाजिक निकटता अछि। कथा बारम्बार सभ्यता-मापक दृष्टिक बदला जीवन-कौशलक दृष्टि अपनबैत अछि।

५.१४ चौदहम कल्लोल — “ब्रह्माक देल कोदारि/ विष्णुक चाँछल बाट”

गरीब पुतोहु, खीर-पूरी, बासुकी सन लोककथा सँ कल्लोल जैन-बौद्ध उपस्थिति आ मिथिलाक दार्शनिक परम्परा दिस मुड़ैत अछि। उदयन आ गंगेशक उल्लेख पाठक भीतर इतिहासक प्रश्न उठबैत अछि: धर्म-परिवर्तन, जाति, ज्ञान आ संस्थानक सम्बन्ध की रहल? एहि ठाम उपन्यास तथ्यसूची देबाक अपेक्षा प्रश्नक श्रृंखला बनबैत अछि। नव्य-न्यायक नाम कथा-विन्यासमे पैसि जायब आगू दार्शनिक आत्मचेतनाक तैयारी अछि।

५.१५ पंद्रहम कल्लोल — “गहना रे जटा तड़बाक धूर...”

जट-जटिनक विरहगीत, परदेस, स्त्रीक प्रतीक्षा आ गंगेश-पुत्र वर्धमान सम्बन्धी चर्चा एक साथ चलैत अछि। “प्रकाश तस्कर” सन रूपक झूठ गवाही, तांत्रिकता आ सामाजिक अहित पर नैतिक प्रहार अछि। पीअर बच्चा, जमीन्दारी, खबासी-बोनि आ अंग्रेजी सत्ता संग मेल उपन्यासक वर्ग-समीक्षाकेँ स्पष्ट करैत अछि। लोकगीतक विरह आ आर्थिक पराधीनता एक-दोसराकेँ व्यंजित करैत अछि।

५.१६ सोलहम कल्लोल — “छाती लात, झौंटा हाथ...”

राजकुमारीक भाग्य-कथा स्त्रीक हिंसा-स्मृति रूपेँ खुलैत अछि। एही कल्लोलमे वाचस्पति मिश्र, सांख्य, गौतमक न्याय, वैशेषिक आ ईश्वर-विवादक घना दार्शनिक अनुच्छेद आबैत अछि। प्रकृति, जीव, ईश्वर, प्रयत्न आ मुक्ति पर प्रश्न मुखदेवक जीवन-दर्शनसँ जुड़ैत अछि। अन्तमे काजरकेँ मोसिहानि बना लिखबाक इच्छा मौखिक कथाकारक लिखित अभिलेख दिस गमनक प्रतीक अछि।

५.१७ सतरहम कल्लोल — “गविया बाँझिन...”

झूला-गीत आ कृष्णक लोकधर्मी स्मृति अचानक भूमिगत राजनीतिक क्रियाकलापसँ जुड़ि जाइत अछि। जागेश्वर, मुखदेव आ विभिन्न गामक साथी लचकाकेँ तोड़बाक योजना बनबैत छथि; विस्फोट, खन्ती-कोदारि आ गुप्त आवागमन स्वतंत्रता-संघर्षक स्थानीय रूप देखबैत अछि। चेथरूक घायल होयब वीर रसकेँ करुणामे बदलैत अछि। एहि ठाम लोकगीत आ क्रान्तिकारी व्यवहार अलग संसार नै, एकहि ग्रामीण चेतनाक दुई रूप अछि।

५.१८ अठारहम कल्लोल — “मारबौ आरे कोइली...”

घायल चेथरूक उपचार लोक-औषधि, सामूहिक सेवा आ जोखिमक प्रसंगसँ शुरू होइत अछि। बीचमे बहुरा गोढ़िन, कमला आ लोककथा कथानकक स्मृति-स्तरकेँ व्यापक करैत अछि। निर्णायक बिन्दु जागेश्वरक जेलमे मृत्यु अछि। शीर्षकक कोइली-गीत “पिया गेल परदेस” राजनीतिक मृत्युकेँ घरेलू विरहक भाषामे रूपान्तरित करैत अछि; राज्यक हिंसा निजी शोक बनि घर-घर पहुँचैत अछि।

५.१९ उन्नैसम कल्लोल — “सूतलिमे छलिऐ रे सुगना...”

चेथरू आ जागेश्वरक अनुपस्थिति पछाति साथी सभक संसार संशय, आरोप, बचि जायब आ अपराध-बोधसँ भरि उठैत अछि। प्रेमक डोर, सपना आ हंसक चोरीक गीत मृत्यु आ विछोहक लोक-रूपक अछि। ई छोट कल्लोल मनोवैज्ञानिक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि, कारण एतए बाहरी राजनीतिक घटना स्मृति आ आत्म-संशयमे बदलैत अछि।

५.२० बीसम कल्लोल — “मैयाजी हे राखि लियौ...”

धनेश्वर, परशुराम, १९४२क संघर्ष, पीअर बच्चाक सत्ता-संबन्ध आ शिक्षा-रोधक प्रसंगक संग अनन्त चतुर्दशीक कथा तथा देवीगीत आबैत अछि। धार्मिक व्रत आर्थिक सुरक्षा आ संकट पार करबाक आशा दैत अछि; राजनीतिक संघर्ष सामाजिक न्यायक सांसारिक बाट। घेंघीक भूखरहित भविष्यक खिस्सा लोक-यूटोपियाक रूप लेइत अछि। देवीक अरज आ समाजक अरज एकहि भावभूमिमे मिलैत अछि।

५.२१ एक्कैसम कल्लोल — “बछड़ूले कुहकै छै धेनु गाय”

स्वतंत्रता-पश्चात गाम चुनावी राजनीति दिस प्रवेश करैत अछि। पीअर बच्चा सरकारी रूपेँ स्वतंत्रता सेनानी मानल गेल छथि, जबकि स्थानीय स्मृति मुखदेव-जागेश्वरक संघर्षक अलग कथा कहैत अछि। राधामोहन राय समाजवादी पक्षसँ आ पीअर बच्चा कांग्रेससँ चुनावी प्रतिस्पर्धामे छथि। ई “प्रमाण”क केन्द्रीय संघर्ष अछि—कागजक मान्यता बनाम लोकस्मृति। उपन्यास तुरन्त फैसला नै सुनबैत, पाठककेँ दाबी सभक तुलनाक दायित्व दैत अछि।

५.२२ बाइसम कल्लोल — “हर ने बड़द, ढोढ़ाय मड़र”

इनार कोराब, स्थानीय विकास, जागेश्वरक मृत्युक राजनीतिक उपयोग आ चुनावी भाषण एहि कल्लोलक धुरी अछि। पीअर बच्चा क्षेत्र-देशक पैघ भाषा बाजैत छथि; राधामोहनक शक्ति गामक स्थानीय काममे अछि। अन्ततः पीअर बच्चा चुनाव जीतैत छथि, मुदा लोक मुखदेव-जागेश्वरकेँ पूर्णतः बिसरैत नै। लोकतन्त्र एतए स्मृति-न्याय सुनिश्चित नै करैत; वोट परिणाम आ नैतिक प्रतिष्ठा अलग-अलग रहि सकैत अछि।

५.२३ तेइसम कल्लोल — “सात पाँच घर तन्हि सजि देल...”

संविधान लागू होयबाक तिथि, स्वतंत्रताक तिथिक अर्थ, जेल प्रशासन आ मानव-अधिकार समिति एकहि कथापट पर आबैत अछि। रघुवरन मुखदेवकेँ टेबैत छथि आ आखिर जेलसँ छोड़बेबाक प्रक्रियामे सहभागी बनैत छथि। विधिक स्वतंत्रता आ देहगत कैदक विरोधाभास एहि कल्लोलक केन्द्र अछि। अन्तक नाटकीय अन्धार राजनीतिक संक्रमणक अनिश्चितता बचा क८ रखैत अछि।

५.२४ चौबीसम कल्लोल — “अंडीक कोरो बघंडीक बाती...”

रिहाइ पछाति मुखदेव गाम तुरन्त नै घुरैत छथि; एहि अनुपस्थितिमे अफवाह आ राजनीतिक श्रेयक कारोबार शुरू होइत अछि। कुसमावती लेल चरखा, खादी आ जमीनक व्यवस्था स्त्रीक जीविकोपार्जनक प्रश्न उठबैत अछि। स्वतंत्र भारतक नारा संग लोकजीवनक असुरक्षा चलैत अछि। कल्लोल देखबैत

अछि जे राजनीतिक घटना गाम पहुँचैत-पहुँचैत कथाक अनेक रूप धारण करैत अछि।

५.२५ पच्चीसम कल्लोल — “बैसने पहर चलने कोस”

मुखदेव कम्यूनिस्ट पार्टीक संपर्कमे मदुरै पहुँचैत छथि। पार्टीक भारतक स्वतंत्रता सम्बन्धी बदलैत आकलन, १९५०क दशकक वैचारिक पुनर्संयोजन आ सिंचाइ-बान्हक विकास-भाषा कथा मे पैसैत अछि। शीर्षक स्थिर बैसल मनुष्यक समय-गति सन विडम्बना अछि—घोषणा बहुत, ठोस न्याय धीमा। “गुम्म स्वतंत्रता” एहि युगक व्यंजना बनैत अछि।

५.२६ छब्बीसम कल्लोल — “एतै दुख देलैँ हे माइ कोसिका...”

सत्यनारायण यादव पीअर बच्चाक कथनक विरोधी साक्ष्य रखैत छथि; जगदीश माइल आ मुखदेव सुनैत छथि। पेशागत समुदाय, लोकनाट्य, भार, माँछ, कहार-काज, कोसीक गीत आ सरकारी पैसाक अभाव एक साथ आबैत अछि। १९५७क चुनावी टिकट परिवर्तन सत्ता-समीकरण बदलैत अछि। कोसी “माइ” सेहो छथि आ पीड़ा देनिहार शक्ति सेहो—पर्यावरणीय अनुभवक ई द्वैत आगू बान्ह-विवादक नींव अछि।

५.२७ सत्ताइसम कल्लोल — “उत्तर दक्खिनसँ एलै नटनियाँ...”

कोसीक धार, बान्ह, पालघाट राजनीतिक प्रसंग आ नटनियाँक गीत एहि कल्लोलक बहुस्तरीयता बनबैत अछि। रघुवरन संग पृथ्वी, ऋतु, तरेगण आ ग्रहण पर संवाद लोकविश्वास आ वैज्ञानिक व्याख्याक तुलना करैत अछि। उपन्यास विज्ञानकेँ लोकज्ञानक शत्रु रूपेँ नै, तर्कक नवा साधन रूपेँ राखैत अछि। प्रेमगीतक “नागफेनीक बिछौन” विकास आ राजनीति सँ उपजल पीड़ाक समानान्तर रूपक बनैत अछि।

५.२८ अट्ठाइसम कल्लोल — “कटबै सोना सुतरिया...”

दरारि फाटल धरती, सुखाइत पोखरि, बिसाँढ़ कोड़ि जीवित मुसहर, नव बान्हक कारण बदलैत बाढ़ि, अकाल, मजदूर, खेती आ कोसी-गीत—ई कल्लोल उपन्यासक पर्यावरणीय केन्द्र अछि। प्राकृतिक आपदा आ मानवनिर्मित जल-प्रबन्धक प्रभावकेँ एक करि देखबासँ उपन्यास इनकार करैत अछि। राधामोहन

राय-पीअर बच्चा संघर्ष चुनावी प्रतिशोधमे बदलैत अछि, मुदा किसानक जमीनक प्रश्न राजनीतिक जीतसँ बड़का रहि जाइत अछि।

५.२९ उनतीसम कल्लोल — “भगता कहलकै अकास बान्हब पताल बान्हब...”

मोहन गबैय्या बान्ह, पानि-निकासी आ नदीक इतिहास सुनबैत छथि। शीर्षकक बौहु कहैत अछि—पहिने घरक टूटल कोनटा बान्हू—अर्थात् विराट योजना पहिने निकट समस्या बुझू। कमला सम्बन्धी लोकमिथक, हड्डीक बान्ह आ मीरन फकीर सन प्रसंग नदीक सांस्कृतिक स्मृति दैत अछि। धीरेन्द्रक भगता संग गाम छोड़ब आगूक “विकास-पुरुष”क चरित्र लेल विडम्बनात्मक तैयारी अछि।

५.३० तीसम कल्लोल — “भादवक अन्हरियो नामी...”

गढ़ नारिकेल आ गढ़ अरङनेबाक भौगोलिक-सामाजिक विभाजन बान्हक अधूरा निर्माणसँ स्पष्ट होइत अछि। एक गामक भीतर अलग-अलग जल-समस्या लोककेँ अलग इतिहास देइत अछि। बाढ़ि, अकाल, खेलौना आ समदाउन—जीवन संकट आ संस्कार एक संग चलैत अछि। छोट कल्लोल होइतहुँ ई भूगोलक राजनीतिक प्रभाव तीक्ष्ण रूपेँ चिन्हैत अछि।

५.३१ एकतीसम कल्लोल — “चिन्नी सेहो आब लगैए जे कम मीठ होइ छै”

धीरेन्द्र मिश्र योगगुरु आ प्रभावशाली व्यक्ति बनि गाम घुरैत छथि। गामक विकास लेल कारखाना, अस्पताल आ ऊँच बान्हक योजना ऊपरसँ आदेश बनि उतरैत अछि; स्थानीय अधिकारी, अभियन्ता, विधायक, मंत्री, ठिकेदार आ विरोधी नेतृत्व सभ एहि प्रक्रिया मे उलझैत अछि। धीरेन्द्र हवाइ जहाजसँ निरीक्षण करैत छथि, मुदा मुखदेव निमन्त्रण अस्वीकार करैत छथि। “चिन्नी कम मीठ” विकासक स्वाद हराएबाक वक्रोक्ति अछि—व्यवस्था अधिक भव्य, लोकक बोली आ भरोसा कम रसयुक्त।

५.३२ बत्तीसम कल्लोल — “दिनमे कौआ देखि कऽ डेराइ, रातिमे नदी हेलि जाइ”

मोहन गबैय्याक आवाज एहि विशाल कल्लोलमे स्वतंत्र भारतक उत्तरार्द्ध इतिहासकेँ गामक अनुभवसँ जोड़ैत अछि। सड़क, मजूरी, हाथी, शिक्षा-संस्थान,

राज्य पुनर्गठन, भाषा-विवाद, द्रविड़ आन्दोलन, विज्ञान, उपग्रह, परमाणु परीक्षण, युद्ध, आतंक, कम्प्यूटर आ नवा अर्थव्यवस्था सन प्रसंग ग्रामीण कथा-संसारमे पैसैत अछि। शीर्षकक विरोधाभास—छोट भयक सामने संकोच, पैघ संकटमे नदी हेलि जायब—समाजक मानसिक अनुकूलनक रूपक अछि। एहि ठाम उपन्यास राष्ट्रीय समाचारकेँ लोकक टिप्पणीमे बदलैत अछि; इतिहास अखबारक वस्तु नै रहि चौपालक प्रश्न बनैत अछि।

५.३३ तैंतीसम कल्लोल — “अगहन उपास कालक कोन डर”

सरकारी कार्यक्रम, मजदूरी-दर, ठेकेदारक औँठा-दुरुपयोग, कागज नै भेटब, अधिकारीक जवाबदेही, जन-सुनबाही आ अन्ततः सूचनाक अधिकार दिस बढ़ैत चेतना एहि कल्लोलक केन्द्र अछि। मोहन गबैय्या “दलित गबैय्या” रूपेँ कला आ नागरिक अधिकारकेँ एक करैत छथि। लोकगीत बीच-बीचमे राज्यक कागजी भाषा केँ मानवीय स्वर दैत अछि। “की चाही, समस्त संसार; की छौ जे हेरा जेतौ—गुलामी, जिंजीर, जहल” स्वतंत्रताक मूल प्रश्नकेँ फेर उघारैत अछि।

५.३४ चौंतीसम कल्लोल — “सेर भरि गहूम बरिख दिन खेबै...”

अन्तिम कल्लोल गढ़ नारिकेलकेँ दिल्ली-किशनगढ़-मेहरौली-बसन्तकुञ्ज धरि फैला दैत अछि। विभिन्न जाति-पेशा परिवारक अगिला पीढ़ी गाम, दोकान, कलाकारी, ठिकेदारी, नौकरी, महानगरीय बाजार आ प्रवासमे बसल अछि। लोकभोजन, माछ, घोंघी, औषधीय प्रयोग, हुक्का, उपकरण, लोकगीत, पुरान शिक्षा-केंद्र, इतिहास, अन्तर्जाल, साहित्य आ प्रवासनक चर्चा एकटा विशाल उत्तरकथा बनैत अछि। १९८०क दशक बाद बढ़ैत पलायन, बान्ह-परियोजनाक ग्रामीण अर्थव्यवस्थापर प्रभाव आ मिथिला-नेपालक सम्बन्धक पाठगत विवेचन आधुनिक विखण्डनक सामाजिक पृष्ठभूमि दैत अछि। अन्तमे मुखदेव बूढ़ देहमे फेर कथा सुनबैत छथि; लोक मानैत अछि जे एहन गबैय्या मरैत नै, फेर जनम लऽ वंचितक हक लेल गबैत रहत। परिहासपूर्ण अन्त—मुखदेव स्वयं “सहस्रशीर्षा”क खिस्सा नै सुनने छथि—उपन्यासकेँ अनन्त लोककथा बनबैत अछि।

६. पात्र-विन्यास : नायकसँ बेसी आवाजक जाल

६.१ मुखदेव राम : कथाकार, श्रोता, कार्यकर्ता

मुखदेवकेँ केवल नायक कहलासँ हुनकर भूमिका छोट भऽ जाएत। ओ बालक, शिल्प-शिक्षार्थी, मित्र, स्वतंत्रता-संघर्षक सहभागी, कैदी, लोकगायक, दार्शनिक प्रश्नकर्ता, कम्यूनिस्ट संपर्कक व्यक्ति, वृद्ध कथाकार आ अन्ततः पुनर्जन्मशील लोक-स्वर छथि। हुनकर विशेषता सर्वज्ञता नै; उल्टे प्रश्न करब, सुनब, स्मरण करब आ कथा फेरि कहब अछि। अन्तिम कल्लोलमे "सहस्रशीर्षा"क कथा स्वयं नै सुनने होयब हुनकर अपूर्णताकेँ साहित्यिक शक्ति बनबैत अछि।

६.२ जागेश्वर : सीमा तोड़बाक नैतिक ऊर्जा

जागेश्वर मुखदेवक मित्र मात्र नै, सामाजिक निषेधक चुनौती छथि। खेल, जातीय सीमा पार संगत, अन्याय-विरोध, क्रान्तिकारी कार्रवाई आ कारावासमे मृत्यु हुनका नैतिक प्रतीक बनबैत अछि। मृत्यु पछाति हुनकर अनुपस्थिति कथा भरि सक्रिय रहैत अछि। लोकस्मृति, चुनावी भाषण आ मुखदेवक मनमे जागेश्वरक अर्थ बदलैत रहैत अछि—ई "अभाव"क सशक्त साहित्यिक उदाहरण अछि।

६.३ स्त्री-पात्र : ममतोड़ सँ अरुणा झा धरि

ममतोड़, कुसमावती, घेंघी, अरुणा झा, दौलति जहाँ, रुद्रमति, लोककथा आ देवीक असंख्य स्त्री-रूप कृतिक भावात्मक आ राजनीतिक केन्द्र छथि। विवाह, बिदाइ, प्रसूति, हिंसा, खेती, सूत-चरखा, गीत, लोकचिकित्सा, आन्दोलन आ प्रशासन-विरोध—स्त्री-अनुभव निजी घर धरि सीमित नै। विशेषतः विवाहगीत आ समदाउन स्त्रीक सामूहिक अभिलेख बनैत अछि; जे बात पुरुष-प्रधान इतिहास नोंद नै करैत, गीत ओकरा पीढ़ी-दर-पीढ़ी रखैत अछि।

६.४ पीअर बच्चा, राधामोहन राय, धीरेन्द्र : सत्ता-रूपक तीन चरण

पीअर बच्चा जमीन्दारी प्रतिष्ठा, आधिकारिक राष्ट्रवादी मान्यता आ चुनावी शक्ति संग जुड़ल छथि। राधामोहन राय स्थानीय विकास, समाजवादी प्रतिस्पर्धा आ गाम-केन्द्रित राजनीति प्रतिनिधित्व करैत छथि। धीरेन्द्र आधुनिक प्रभाव, दिल्लीक सत्ता-संबंध, योग-आश्रम, हवाइ निरीक्षण आ ऊपरसँ

विकास-योजना बनबैत छथि। तीनू पात्र सत्ता रूपक अलग कालखण्ड देखबैत अछि: सामन्ती प्रतिष्ठा, चुनावी लोकतन्त्र आ केंद्रीकृत विकास-प्रभाव।

७. जाति, श्रम आ हुनर : उपन्यासक सामाजिक ज्ञानमीमांसा

कृतिक सबसे पैघ सामाजिक उपलब्धि ई अछि जे जातिक चर्चा मात्र उत्पीड़नक सूची रूपेँ नै, श्रम आ ज्ञानक वितरणक रूपेँ करैत अछि। चर्मकारक चमड़ा, डोमक बाँस-पेटार, मलाहक जाल, कुम्हारक माटि, बढ़ईक काठ, धोबीक कपड़ा, हजामक संस्कार, किओटक सेवा, धानुक-दुसाधक खेती, मुसहरक संकटजीवन, मुसलमान कसाइ वा तरकारी-काज, स्त्रीक अरिपन-सिलाइ-लोकगीत—सभ ज्ञान अछि। ई ज्ञान “पढ़ल-लिखल” ज्ञानक नीचे नै, समाज चलबैत व्यावहारिक प्रमाण अछि।

उपन्यासक जाति-सम्बन्धी अनेक उत्पत्ति-कथा ऐतिहासिक सत्यक दावा रूपेँ नै पढ़बाक चाही। ओ कथा समाज अपन श्रेणीकरणकेँ कोना समझलक, वैध ठहरौलक अथवा विरोध केलक—एहि मानसिक इतिहासक दस्तावेज अछि। नव्य-न्यायीय सावधानी एतए आवश्यक अछि: कथा “शब्द” प्रमाणक एक रूप भऽ सकैत अछि, मुदा वक्ता, प्रसंग आ विरोधी प्रमाणक परीक्षण बिना निष्कर्ष नै बनैत अछि। कृति स्वयं अनेक संस्करण रखि एहि सावधानीक अभ्यास करबैत अछि।

८. स्त्री-अनुभव, संस्कार आ लोकगीतक प्रति-अभिलेख

विवाह, बिदाइ, मधुश्रावणी, प्रसूति, देवीपूजा, विरह, परदेस, सौतिन, हिंसा, माय-बेटी सम्बन्ध—ई सभ स्त्रीक लोकगीतमे संचित अछि। आठम कल्लोलक विवाह-विधि केवल संस्कार-वर्णन नै; ई देह, परिवार, अधिकार आ बिछोहक संरचना अछि। दौलति जहाँ आ रुद्रमतिक बेटीक स्मृति कथाकेँ साम्प्रदायिक सीमासँ ऊपर ले जाइत अछि। लोकगीतक भाव-सम्पदा साझा अछि।

भारतीय रसदृष्टिसँ समदाउन आ विरहगीत करुण रस जगबैत अछि, मुदा एहि करुणामे निष्क्रियता नै। ममतोड़क असुरक्षा, कुसमावतीक चरखा-आधारित जीविका, अरुणा झाक विरोध आ स्त्री लोककथाक चतुर पात्र सभ करुणाकेँ क्रिया, स्मृति आ प्रतिरोधमे बदलैत अछि। एहि कारण कृतिक स्त्री-विमर्शक असल आधार घोषणात्मक सिद्धान्त नै, लोक-संस्कारक भीतरक आवाज अछि।

९. लोककथा, गीत आ प्रदर्शन : कथानकक अलंकार नै, संरचनात्मक मेरुदण्ड

“सहस्रशीर्षा”मे लोककथा कथानक रोकबाक विराम नै। मीरां साहेब, लाला महराज, मनसाराम-छेछनमल, लुकेसरी, दीना-भदरी, बहुरा गोढ़िन, कमला, जट-जटिन, देवी, विवाहकथा, नागकथा—सभ सामाजिक समूहक आत्मस्मृति अछि। एक्के कथा कएक रूपमे सुनाओल जायब पाठककेँ “एक मूल संस्करण” खोजबाक आदतसँ बचबैत अछि। मौखिक परम्पराक शक्ति रूपान्तरमे अछि।

गीतक प्रयोग ध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिसँ विशेष सफल अछि। शीर्षक सभ स्वयं गीतक पाँति अछि; कथाक विषय शुरू होयबाक पहिने भाव-क्षेत्र बनि जाइत अछि। “कोइली”, “सुगना”, “चरखा”, “मैयाजी”, “कोसिका”, “नटनियाँ”, “अगहन”, “गहूम”—ई शब्द कथाक सामाजिक अर्थक संकेत करैत अछि। संगीत कथ्यकेँ स्मरणीय बनबैत अछि आ इतिहासकेँ देहगत अनुभवमे बदलैत अछि।

१०. स्वतंत्रता, जेल, चुनाव आ राष्ट्र : मुक्ति-प्रतिज्ञाक परीक्षा

उपन्यास स्वतंत्रताकेँ निरर्थक घोषित नै करैत, मुदा ओकरा समाप्त उपलब्धि सेहो नै मानैत अछि। १९४७क घोषणा जेलक भीतर सुनाइत अछि; १९५०क संविधान लागू होयब फेर कैदीक प्रतीक्षा बनैत अछि; १९५७क चुनाव स्थानीय शक्ति-संरचना बदलैत अछि, मुदा स्मृति-न्याय स्वतः नै होइत। कम्यूनिस्ट पार्टीक बदलैत स्वतंत्रता-मूल्यांकन कथा मे वैचारिक इतिहास रूपेँ आबैत अछि, पर मुखदेवक कसौटी सरल अछि—वंचितक जीवित जीवन बदलल कि नै?

जेल एतए वास्तु मात्र नै, राष्ट्रक रूपक अछि। कैद, प्रशासन, पहरेदार, मानव-अधिकार समिति, गीत आ कथा—सभ देखबैत अछि जे राज्य आ नागरिकक सम्बन्ध लगातार वार्ता माँगैत अछि। “शासन जेलक, प्रबन्ध धरमसालाक” सन विडम्बनात्मक वाक्य औपनिवेशिक आ उत्तर-औपनिवेशिक प्रशासनक बीच निरन्तरता पर वक्रोक्तिपूर्ण प्रहार करैत अछि।

११. नदी, बान्ह, अकाल आ खेती : पर्यावरणीय इतिहासक महागाथा

कोसी, कमला, बलान, पोखरि, बाहा, इनार, पानि-निकासी, पटौनी, बालु, पाँक, मछैर आ बान्ह कृतिक स्थायी पात्र सभ छथि। नदी केवळ आपदा नै; माछ, माटि, उर्वरता, आवागमन, गीत, देवी, रोजगार आ सामुदायिक सफाइक स्रोत सेहो अछि। बान्ह केवळ सुरक्षा नै; जल-जमाव, निकासी-बन्द, बालु, खेतीक रूपान्तरण, विस्थापन आ राजनीतिक ठेका-सत्ता सेहो अछि। एहि द्वैतक कारण कृति आधुनिक विकासक एकरेखीय भाषा स्वीकार नै करैत अछि।

अट्ठाइसम, उनतीसम, तीसम आ चौंतीसम कल्लोल विशेष रूपेँ पर्यावरणीय इतिहासक दीर्घ चाप बनबैत अछि। अकालमे मुसहरक बिसाँढ, कमला-कोसीक मिज्झर पानि, पन्द्रह फुटिया बान्ह, अपूर्ण रिंग बान्ह, जल-जमाव आ पछाति पलायनक सम्बन्ध पाठगत रूपेँ जोड़ल अछि। विदेह समानान्तर पद्धतिसँ देखल जाए तँ राष्ट्रीय “विकास”क कालक्रमक बगलमे ग्रामीण जल-इतिहास एक स्वतंत्र कालक्रम बनि ठाढ़ अछि।

१२. पलायन, महानगर आ उत्तरकथा

चौंतीसम कल्लोलमे गढ़ नारिकेल भौगोलिक गामसँ बहार निकलि नेटवर्क बनि जाइत अछि। गामक अलग-अलग जाति-पेशा परिवारक सन्तान दिल्ली, किशनगढ़, मेहरौली, बसन्तकुञ्ज, बाजार, नौकरी, कला आ ठिकेदारीमे भेटैत छथि। पुरान पेशा पूर्णतः गायब नै होइत; रूप बदलैत अछि। कुम्हारक कला प्रदर्शन बनैत अछि, हलुआइ चलित दोकान बनबैत अछि, ग्रामीण व्यापार महानगरीय सेवा बनैत अछि।

प्रवासक वर्णन केवल आर्थिक नै। भाषा, स्मृति, जाति-फाँट, विवाह, अन्तर्जाल, साहित्य आ गाम-शहरक नवा सम्बन्ध सेहो उपस्थित अछि। ई उत्तरकथा रेमंड विलियम्सक ग्रामीण-शहरी सम्बन्धक स्मरण करबैत अछि, मुदा मिथिलाक विशिष्ट जल-राजनीति आ जातीय श्रम-इतिहास एकरा अलग बनबैत अछि। गाम शहरमे बिलायल नै; शहरमे “गढ़ नारिकेल”क नवा रूप बनि गेल।

१३. भारतीय काव्यशास्त्रीय साहित्यिक समीक्षा

१३.१ रस-संयोजन

करुण रस कृतिक सबसे व्यापक भावधारा अछि—जागेश्वरक मृत्यु, ममतोड़क असुरक्षा, बेटी-बिदाइ, अकाल, बाढ़ि, परदेस, कैद, किसानक रोदन। मुदा करुण रस अकेला नै। स्वतंत्रता-संघर्ष आ अन्याय-विरोध वीर रस; जातीय व्यंग्य, विवाहक परिहास आ मुखदेवक गप्प हास्य; शोषण आ अन्याय रौद्र; लोकमिथक, देवी, नदीक चमत्कार अद्‌भुत; तथा वृद्ध मुखदेवक अन्तिम स्वीकृति शान्त भाव उत्पन्न करैत अछि। एहि रस-बहुलताक कारण कृति महाकाव्यात्मक विस्तार पबैत अछि।

१३.२ ध्वनि आ प्रतीक

“माटिक देबार” जाति-विभाजनक ध्वनि; “अमृत” स्वतंत्रताक असमान वितरणक ध्वनि; “जेल” राजनीतिक अधूरी मुक्तिक ध्वनि; “बान्ह” सुरक्षा आ कैद दुनूक ध्वनि; “चरखा” जीविका, स्वदेशी आ स्त्रीक श्रमक ध्वनि; “चिन्नी कम मीठ” विकाससँ स्वाद हराएबाक ध्वनि। एहि प्रतीक सभक शक्ति एहि मे अछि जे ओ घोषित नारा नै, कथा-सन्दर्भसँ अर्थ पबैत अछि।

१३.३ वक्रोक्ति

कृतिक व्यंग्य प्रायः सीधा अपमान नै, उलट कथन अछि। स्वतंत्र देशक जेल, सरकारी स्वतंत्रता सेनानी बनाम लोकस्मृति, विकासक ऊँच बान्ह बनाम जल-जमाव, अधिक चिन्नी बनाम कम मिठास—ई सभ वक्रोक्ति पाठककेँ सतही अर्थ छोड़ि दूसरा स्तरपर सोचबैत अछि। एहि दृष्टिसँ शीर्षक सभ स्वयं वक्रोक्तिपूर्ण लोक-वाक्य अछि।

१३.४ औचित्य आ लोकधर्मी रूप

लोकगीतक अत्यधिक उपस्थिति कतेको पाठक लेल कथानकक गति धीम करि सकैत अछि, मुदा लोकधर्मी उपन्यासक औचित्य भीतर एकर स्पष्ट कारण अछि: पात्र सभ जकरा लिखित अभिलेख नै भेटल, से गीत-संस्कारमे अपन इतिहास राखैत अछि। औचित्यक दृष्टिसँ गीत ओतए सफल अछि जतए प्रसंगक भाव अथवा सामाजिक ज्ञान विस्तार करैत अछि; जतए गीत लम्बा सूची बनि कथा-गति रोकैत अछि, ओतए सम्पादकीय संक्षेप अथवा अलग टंकण दृश्य पठनीयता बढ़ा सकैत अछि।

१४. पाश्चात्य आलोचनात्मक साहित्यिक समीक्षा

१४.१ बहुस्वरता आ बहुभाषिक सामाजिक वाणी

बाख्तिनक बहुस्वर दृष्टिसँ “सहस्रशीर्षा”क मूल शक्ति ई अछि जे कथाकार सभ आवाजकेँ एक निष्कर्षमे निचोड़ि नै दैत। ब्राह्मण, चर्मकार, डोम, मुसहर, मुसलमान, स्त्री, किसान, कम्यूनिस्ट, कांग्रेसी, अधिकारी, जमीन्दार, लोकगायक, दार्शनिक, प्रवासी—सभक वाणी अलग मूल्य-विश्व नेने अछि। मुखदेव केन्द्र छथि, पर एकाधिकार नै। एतए बहुस्वरता शीर्षकक “सहस्र” रूपकक आलोचनात्मक समकक्ष अछि।

१४.२ काल-स्थान संरचना

गाम, जेल, बान्ह, नदी, हाट, रेल, सड़क, मदुरै, दिल्ली—सभ स्थानक संग विशिष्ट समय जुड़ल अछि। जेल १९४२-५०क अधूरी स्वतंत्रता, बान्ह १९६०क दशक पछाति विकास-राज्य, महानगर १९८० पछातिक पलायन, अन्तर्जाल नवा सहस्राब्दीक संचारक समय अछि। बाख्तिनक काल-स्थान दृष्टिसँ ई उपन्यास समयकेँ कैलेंडरमे नै, स्थलमे जमा करैत अछि।

१४.३ ऐतिहासिक यथार्थ आ सामूहिक पात्र

लूकाचक ऐतिहासिक उपन्यास दृष्टि निजी जीवन आ सामाजिक परिवर्तनक संयोग देखबैत अछि। “सहस्रशीर्षा”मे मुखदेव वा जागेश्वरक जीवन इतिहासक “महान व्यक्ति” केन्द्रित रूप नै; सामान्य गामक लोक राष्ट्रीय घटना भोगैत अछि। इतिहास संसद वा राजधानीसँ गाममे उतरैत अछि, फेर लोकगीत, अफवाह, चुनाव, बान्ह आ रोजगारक रूपमे पुनर्लिखित होइत अछि। सामूहिक पात्र म्हणून गढ़ नारिकेल एहि ऐतिहासिक यथार्थक मुख्य वाहक अछि।

१४.४ सांस्कृतिक भौतिकता आ उत्तर-औपनिवेशिक प्रश्न

भूमि, पानि, काज, मजदूरी, खादी, चप्पाकल, इनार, सड़क, पुल, हाट, परिवहन, शिक्षा-संस्थान, कम्प्यूटर आ बाजार—संस्कृति एतए केवल गीत-पाबनि नै, भौतिक संसाधनक संगठन सेहो अछि। औपनिवेशिक शासन गेलापर सत्ता, कागज, पुलिस, जेल, जमीन्दारी प्रतिष्ठा आ भाषा-राजनीति कतेक बदलल—कृति लगातार एहि प्रश्न पर घुरैत अछि। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ स्वतंत्रता “घटना”क बदला दीर्घ संक्रमण बनैत अछि।

१५. नव्य-न्यायीय समीक्षा : प्रमाण-संघर्षक उपन्यास

१५.१ प्रमाण आ शब्द

उपन्यासमे “के कहल?”, “ककरा सँ सुनल?”, “सरकारी कागज की कहैत अछि?”, “लोक की मोन रखैत अछि?”—ई प्रश्न लगातार आबैत अछि। शब्द-प्रमाणक स्रोत एकरूप नै। पुरहित, गबैय्या, माए, अधिकारी, अखबार, पार्टी, लोकगीत, जातीय कथा आ वृद्धक स्मृति सभ अलग विश्वसनीयता नेने अछि। नव्य-न्यायीय पठन एहि स्रोत सभक वक्ता-योग्यता, प्रसंग आ विरोधी प्रमाणक जाँच करैत अछि।

१५.२ अनुमान, व्याप्ति आ उपाधि

एक घटना देखि समस्त जाति, समस्त दल वा समस्त कालक निष्कर्ष निकालब उपन्यास स्वयं कठिन बनबैत अछि, कारण तुरन्त दोसर उदाहरण आबि जाइत अछि। ई संरचना व्याप्तिक सावधानी सिखबैत अछि। उदाहरणार्थ, बान्ह कत्तौ सुरक्षा देइत अछि, कत्तौ जल-जमाव बढ़बैत अछि; तें “बान्ह सदिखन कल्याणकारी” अथवा “बान्ह सदिखन विनाशकारी” दुनू सार्वत्रिक निष्कर्षमे उपाधि अछि। प्रसंग हटेलासँ हेतु दूषित होइत अछि।

१५.३ अभाव आ स्मृति

जागेश्वरक देह अनुपस्थित, मुदा कथा मे प्रभाव उपस्थित; मुखदेवक आधिकारिक मान्यता कम, लोकस्मृति प्रबल; गामक पुरान पोखरि, पेशा, बँसबिट्टी, स्वाद वा बोली बदलि गेल, मुदा ओकर अभाव स्मृतिमे अर्थ पैदा करैत अछि। नव्य-न्यायीय “अभाव” एतए साहित्यिक रूपेँ अत्यन्त उपयोगी अछि: जे चीज नै अछि, से कथानकमे कतेक प्रकारेँ उपस्थित भऽ सकैत अछि।

१५.४ हेत्वाभास आ राजनीतिक भाषा

चुनावी भाषण, विकासक दावा, जातीय श्रेष्ठता आ अफवाह सभ कारण-फल सम्बन्ध बनबैत अछि, मुदा उपन्यास समानान्तर साक्ष्य देइत अछि। ई साक्ष्य कतेको दाबीकेँ सव्यभिचार, असिद्ध अथवा उपाधि-सापेक्ष बना दैत अछि। एहि कारण पाठक न्यायाधीश नै, विवेचक बनैत अछि—ओकरा निष्कर्ष पहिने प्रमाण-विन्यास देखब पड़ैत अछि।

१६. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ पुनर्पाठ

एहि पद्धतिसँ उपन्यासक इतिहास सात समांतर पट्टिमे देखल जा सकैत अछि। पहिल, १९४२ सँ स्वतंत्रता, संविधान, चुनाव, दल, युद्ध, शिक्षा-संस्थान, भाषा-विवाद, सूचना-अधिकार धरि राष्ट्रीय पट्टि। दोसर, गामक जाति, टोल, पोखरि, भूमि आ पेशाक स्थानीय पट्टि। तेसर, लोककथा, देवी, लोकदेवता, जातीय उत्पत्ति-गाथा आ गीतक स्मृति-पट्टि। चारिम, कोसी-कमला-बान्ह-अकाल-पलायनक पर्यावरणीय पट्टि। पाँचम, विवाह, प्रसूति, बिदाइ, चरखा आ स्त्री-गीतक देह-संस्कार पट्टि। छअम, न्याय, सांख्य, बौद्ध, जैन, वेद आ लोकतर्कक बौद्धिक पट्टि। सातम, दिल्ली आ महानगरीय रोजगारक प्रवासी पट्टि।

एहि सातो पट्टिक महत्त्व समान नै, मुदा ओ सभ एक-दोसराकेँ काटैत अछि। १९४७क राष्ट्रीय स्वतंत्रता जेलक व्यक्तिगत कालसँ टकराइत अछि; १९६०क बान्ह-निर्माण खेतीक स्थानीय काल बदलैत अछि; १९८० पछातिक पुल-सड़क पलायनक गति बढ़बैत अछि; २००५क सूचना-अधिकार मोहन गबैय्याक पहिने सँ चलैत जन-सुनबाहीक स्थानीय अभ्याससँ जुड़ैत अछि। एतए “इतिहास” ऊपरसँ नीचे नै उतरैत; नीचे सँ ऊपर सेहो बनैत अछि।

पद्धतिक एकटा अनिवार्य नियम एहि उपन्यास पर विशेष लागू होइत अछि: मिथक, लोककथा आ जातीय स्मृतिकेँ तथ्यात्मक इतिहासमे मिला देब नै। ओकरा समानान्तर स्मृति-इतिहास रूपेँ रखला पर ओ अधिक अर्थपूर्ण होइत अछि। तखन मीरां, लाला महराज, छेछनमल, दीना-भदरी, कमला आ जातीय उत्पत्ति-कथा सभ समाजक आत्मकल्पना, भय, न्याय-बोध आ गौरवक स्रोत देखबैत अछि, “तारीखक प्रमाण” बनबाक अनावश्यक भार नै उठबैत अछि।

१७. भाषा, शैली आ शुद्ध मैथिली निखार ऑडिट

१७.१ मुख्य कथाभागक लिपि

मुख्य कथाभाग देवनागरीमे अछि; रोमन लिपिक शब्द मुख्यतः आरम्भिक प्रकाशकीय आ सर्वाधिकार पृष्ठसभमे भेटैत अछि। शोधोपयोगी नव संस्करण तैयार होय तँ प्रकाशकीय अंग्रेजी अंश अलग राखल जा सकैत अछि, मुदा मूल

कथाभागक देवनागरी निरन्तरता अक्षुण्ण रहबाक चाही। विदेशी संस्था वा संक्षिप्त नाम देवनागरी रूपमे लिखल गेल अछि; एहि पद्धतिक निरन्तरता उचित अछि।

१७.२ “पानि” बनाम “पानी”

कथाभागमे “पानि” प्रधान रूप अछि, मुदा किछु ठाम “पानी” सेहो भेटैत अछि। संपादकीय निखारमे वर्णनात्मक गद्य लेल “पानि” मानक राखल जा सकैत अछि। मुदा गीत, उद्धरण, जातीय बोली वा पुरान पद्य-पंक्तिमे मूल ध्वनि बदलनाइ उचित नै। एहि कृतिक भाषा-सौन्दर्यक एक हिस्सा बोली-विविधता अछि; शुद्धिकरणक अर्थ समरूपीकरण नै होयबाक चाही।

१७.३ शब्द-रूपक प्राथमिकता

वर्णनात्मक गद्य लेल “कोठली” रूप “कोठरी”पर प्राथमिक कएल जा सकैत अछि; “चाह”क प्रयोग जहाँ पेय अर्थ हो, ओतए एकरूपता राखल जाए; “इनार”, “औंठा”, “अएना”, “केवाड़ी” सन मैथिली रूप प्राथमिक राखब उपयुक्त अछि। “हर” शब्द जँ हल/लाङल अर्थमे अछि तँ ओकरा निषिद्ध सर्वनाम बुझि बदलनाइ भूल हएत; संदर्भ-विवेक आवश्यक अछि।

१७.४ क्रिया-रूप आ सजीव-असजीव भेद

भविष्यकालक “देत” आ आदतन वा चलैत-अर्थक “दैत” अलग राखबाक चाही। “छथि” मनुष्य वा सम्मानसूचक व्यक्तिक संग; असजीव वा सामान्य वस्तु लेल “अछि/छै/छी” प्रसंगानुसार रखब उचित अछि। यांत्रिक बदलाबसँ लोकगीत, प्रत्यक्ष संवाद आ क्षेत्रीय बोलिक स्वर नोकसान पा सकैत अछि, तें सभ सुधार वाक्यगत जाँचसँ होयबाक चाही।

१७.५ वर्तनी, रिक्ति आ विरामचिह्न

मूल पाठमे कतेको ठाम दू शब्दक बीच रिक्ति कम, दीर्घ बिन्दु-माला, मिश्रित उद्धरणचिह्न, संक्षिप्त नामक असमान बिन्दु आ संवादक आरम्भिक डैशक भिन्न रूप भेटैत अछि। शोध-संपादित संस्करणमे ई सभ यथासम्भव एकरूप करब पठनीयता बढ़ाओत। मुदा लय-सूचक “…” अथवा गीतक विराम जँ अर्थकारी अछि तँ ओकरा पूर्णतः हटेबाक नै चाही।

१७.६ लोकभाषा आ मानकीकरणक सीमा

“गबैय्या/गब्बैय्या”, क्षेत्रीय उच्चारण, जाति-पेशा शब्द, लोकमन्त्र, देवीगीत, विवाहगीत, कबीरवाणी वा विद्यापतिक पद—ई सभक भाषिक रूप कथा-पात्रक पहचान अछि। शुद्ध मैथिली निखारक लक्ष्य लेखकक कथावाचक गद्य, टंकण आ असंगत रूप सुधारब हो; लोक-स्रोतकेँ आधुनिक मानकमे जबरदस्ती ढालब नै। यही भेद कृतिक अभिलेखीय मूल्य बचबैत अछि।

१८. कृतिक प्रमुख साहित्यिक उपलब्धि

• बहुस्वर रूपक आ संरचना एक-दोसराकेँ पुष्ट करैत अछि; “सहस्रशीर्षा” केवल शीर्षक नै, कथाविधान अछि।

• लोकगीत, मिथक, श्रम-ज्ञान आ राजनीतिक इतिहासकेँ एकहि स्तरपर कथा-सामग्री बनेबाक साहस मैथिली उपन्यासक क्षेत्र व्यापक करैत अछि।

• जाति-समीक्षा अमूर्त नारा पर नै, परस्पर निर्भर पेशा, स्पर्श, भोजन, संस्कार आ स्मृतिक ठोस विवरण पर टिकल अछि।

• कोसी-कमला-बान्हक प्रसंग पर्यावरणीय इतिहासकेँ ग्रामीण अनुभवसँ जोड़ैत अछि; ई कृतिक विशिष्ट आधुनिक पक्ष अछि।

• जेलक फ्रेम, स्वतंत्रताक विडम्बना आ सरकारी-लोक प्रमाणक संघर्ष राजनीतिक आलोचनाकेँ कथात्मक बनबैत अछि।

• नव्य-न्याय आ लोकतर्कक सह-अस्तित्व ज्ञानक उच्च/नीच विभाजनकेँ चुनौती दैत अछि।

• अन्तिम प्रवासी विस्तार गामकेँ स्थिर अतीत नै, रूप बदलैत जीवित समुदाय सिद्ध करैत अछि।

१९. आलोचनात्मक सीमासभ आ सम्पादकीय सावधानी

कृतिक वही शक्ति कखनो-कखनो सीमा बनैत अछि। लोककथा, गीत, नाम, जातीय इतिहास आ राष्ट्रीय घटनाक सघनता कथानकक गति धीम करैत अछि; सामान्य पाठक पात्रक मनोवैज्ञानिक रेखा हेरा सकैत अछि। पहिल कल्लोल आ चौंतीसम कल्लोलक विश्वकोशीय विस्तार विशेष रूपेँ धैर्य माँगैत

अछि। शोध-संपादित संस्करणमे विषयगत उपशीर्षक, गीतक अलग टंकण आ नाम-सूची पठनीयता बढ़ा सकैत अछि, बिना मूल पाठ छोट केने।

दोसरा, किछु ऐतिहासिक, जातीय वा दार्शनिक दाबी पात्रक कथन, लोककथा आ कथावाचक टिप्पणी बीच स्पष्ट स्रोत-चिह्न बिना आबैत अछि। साहित्यिक रूपेँ ई बहुस्वरता अछि, मुदा शोधोपयोगी संस्करणमे पादटिप्पणी वा परिशिष्ट द्वारा “लोकमान्यता”, “पात्रक कथन”, “ऐतिहासिक स्रोतसँ सत्यापनीय सूचना” ई तीन श्रेणी अलग कएल जाए तँ भ्रम घटत। एहि समीक्षा मे जानि-बुझि पाठगत दाबीकेँ बाहरी तथ्य रूपेँ नै दोहराओल गेल अछि।

तेसरा, भाषा-निखार करैत समय अत्यधिक मानकीकरणसँ कृतिक लोक-ध्वनि नष्ट भऽ सकैत अछि। लेखकक कथावाचक गद्य, टंकण-दोष आ असंगत विराम सुधारल जाए; मुदा गीत, कहबी, जातीय पद, उच्चारण आ पात्र-भाषा यथासम्भव मूल रूपमे राखल जाए। ई विभाजित संपादन-पद्धति एहि कृति लेल सबसँ उपयुक्त अछि।

२०. निष्कर्ष

“सहस्रशीर्षा”केँ पारम्परिक एकरेखीय उपन्यासक कसौटी पर मात्र जाँचला पर एकर बहुत रास अर्थ छूटि जाएत। ई बहुस्वर लोक-ऐतिहासिक उपन्यास, सामाजिक स्मृति-ग्रन्थ, पर्यावरणीय वृत्त, राजनीतिक व्यंग्य, लोकदर्शन आ प्रवासी उत्तरकथा—सभ एक संग अछि। एकर कथानकक वास्तविक नायक गढ़ नारिकेलक सामूहिक चेतना अछि; मुखदेव ओकर प्रधान, मुदा एकल, मुँह नै छथि।

भारतीय काव्यशास्त्र देखबैत अछि जे गीत, रस, ध्वनि आ वक्रोक्ति कथाकेँ गहिर करैत अछि। पाश्चात्य आलोचना बहुस्वरता, काल-स्थान, ऐतिहासिक यथार्थ आ ग्रामीण-शहरी संक्रमण खोलैत अछि। नव्य-न्याय प्रमाण, विरोधी साक्ष्य, अभाव आ उपाधि द्वारा उपन्यासक सत्य-प्रक्रिया बुझबैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सभसँ महत्त्वपूर्ण एकटा सावधानी दैत अछि—राष्ट्रीय, स्थानीय, पर्यावरणीय, स्त्री, लोकस्मृति, बौद्धिक आ प्रवासी इतिहासकेँ एक-दोसरामे मिला कऽ नष्ट नै करू; समानान्तर रखू, तखन ओकर परस्पर तनाव स्पष्ट हएत।

कृतिक अन्तिम उपलब्धि ई अछि जे इतिहासकेँ जीवित मनुष्यक मुँह फेर दैत अछि। सरकारी कागजक बाहर गीत अछि; चुनावी जीतक बाहर लोकस्मृति अछि; बान्हक नक्शाक बाहर पानि अछि; जातिक नामक बाहर हुनर अछि; पलायनक आँकड़ाक बाहर घरक स्मृति अछि। एहि अर्थमे “सहस्रशीर्षा”क “हजार माथ” वास्तवमे हजार प्रमाण, हजार अनुभव आ हजार अपूर्ण सत्यक साहित्यिक संघटन अछि।

बिबलियोग्राफी

सहस्रशीर्षा

नाटचशास्त्र

ध्वन्यालोक

काव्यप्रकाश

वक्रोक्तिजीवित

औचित्यविचारचर्चा

साहित्यदर्पण

रसगंगाधर

न्यायसूत्र

तत्त्वचिन्तामणि

न्यायकुसुमाञ्जलि

किरणावली

सांख्यतत्त्वकौमुदी

(Poetics)

(Mimesis)

(The Historical Novel)

(The Dialogic Imagination)

(The Country and the City)

(The Political Unconscious)

(Imagined Communities)

(Orientalism)

(The Location of Culture)

आलेख २९ · उपन्यास आ विस्तृत आख्यानक अध्ययन

गोहि सभक बीच जलसमाधि

सारांश

“गोहि सभक बीच जलसमाधि”क सम्पूर्ण त्रयी मैथिली कादम्बरीक एहन विस्तृत प्रयोग अछि जाहिमे दर्शन, लोककथा, सामाजिक इतिहास, आपदा-स्मृति, न्यायिक प्रक्रिया, डिजिटल ठगी, देह-निजता, श्रम, जाति, स्त्री-अनुभव, पर्यावरण, लोकगीत आ सामुदायिक अभिलेख एकहि दीर्घ कथात्मक संरचनामे परस्पर जुड़ैत अछि। कृति तीन खण्डमे फैलल अछि: पूर्व-कथाकालक अध्याय [-१००] सँ [-१], मुख्य कथाक अध्याय ० सँ १००, आ उत्तरवर्ती विस्तारक अध्याय १०१ सँ २००। पाठीय परीक्षणमे तीनू खण्डक ३०१ अध्याय क्रमशः उपलब्ध भेटल; अन्तमे गढ़ नारिकेल लोककोश, अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत, आ न्याय-दर्शनक मूल अन्तःकथा तीन परिशिष्ट रूपमे उपस्थित अछि। ई अध्ययन कृतिक सौन्दर्य, संरचना आ ज्ञानमीमांसीय अनुशासनकेँ चारि आलोचनात्मक परम्पराक संग पढ़ैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आ लोकधर्मी-नाटचधर्मी भेद कृतिक भाव-विन्यास आ प्रतीक-व्यवस्थाकेँ खोलैत अछि। पाश्चात्य आख्यानशास्त्र समय-क्रम, पुनरावृत्ति, बहुध्वन्यता, यथार्थ-प्रतिनिधित्व आ सामाजिक प्रतीकार्थक विश्लेषण दैत अछि। नव्य-न्याय प्रमाण, संशय, हेतु, व्याप्ति, उपाधि, अभाव, शब्द-बोध आ यथार्थ-अयथार्थ ज्ञानक कसौटीद्वारा उपन्यासक मूल प्रश्न—“कोन गवाही मान्य?”, “कोन नाम बचत?”, “कोन दस्तावेज सत्य?”—केँ कठोर रूपसँ जाँचैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति गाम, स्त्री, श्रमिक, चर्मकार टोल, माछमार, प्रवासी, मौखिक गीत, स्थानीय अभिलेख आ उपेक्षित नाम सभकेँ इतिहासक सक्रिय स्रोत मानैत हुए प्रमाणक अनुशासन नहि छोड़ैत अछि। समग्र निष्कर्ष ई अछि जे एहि कृतिक केन्द्रीय रूपक “गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि” मात्र लोक-फकरा नहि, बल्कि स्मृति, न्याय आ इतिहासक संयुक्त नैतिक सूत्र अछि। कृतिक सबलता ओकर विशाल कल्पना, प्रतीकात्मक पुनरावृत्ति, बहु-विधात्मक संरचना आ स्थानीय जीवनक ज्ञान-संपदामे अछि; मुदा विशालता स्वयं कखनो-कखनो विस्तार, पुनरुक्ति आ शब्दावलीक असमानताक कारण बनैत अछि। भाषा-अडिट किछु हिन्दी-झुकाववला रूप,

किछु रोमन-अवशेष, उद्धरण-चिह्नक तकनीकी अवशेष आ मिश्रलिपि त्रुटि चिन्हित करैत अछि; ई सभ प्रकाशनपूर्व निखार योग्य अछि।

बीजशब्द

गोहि सभक बीच जलसमाधि ·मैथिली उपन्यास ·आख्यान-रचना ·स्मृति · सामाजिक इतिहास

१.३१. गजेन्द्र ठाकुर- गोहि सभक बीच जलसमाधि- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

गोहि सभक बीच जलसमाधि

सम्पूर्ण त्रयी

एक समग्र शोधपरक साहित्यिक समीक्षा

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य आलोचना, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक संयुक्त परिप्रेक्ष्य

मूल कृति : गजेन्द्र ठाकुर

आलोचनात्मक अध्ययन

सारांश

“गोहि सभक बीच जलसमाधि”क सम्पूर्ण त्रयी मैथिली कादम्बरीक एहन विस्तृत प्रयोग अछि जाहिमे दर्शन, लोककथा, सामाजिक इतिहास, आपदा-स्मृति, न्यायिक प्रक्रिया, डिजिटल ठगी, देह-निजता, श्रम, जाति, स्त्री-अनुभव, पर्यावरण, लोकगीत आ सामुदायिक अभिलेख एकहि दीर्घ कथात्मक संरचनामे परस्पर जुड़ैत अछि। कृति तीन खण्डमे फैलल अछि: पूर्व-कथाकालक अध्याय [-१००] सँ [-१], मुख्य कथाक अध्याय ० सँ १००, आ उत्तरवर्ती विस्तारक अध्याय १०१ सँ २००। पाठीय परीक्षणमे तीनू खण्डक ३०१ अध्याय क्रमशः उपलब्ध भेटल; अन्तमे गढ़ नारिकेल लोककोश, अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत, आ न्याय-दर्शनक मूल अन्तःकथा तीन परिशिष्ट रूपमे उपस्थित अछि। ई अध्ययन कृतिक सौन्दर्य, संरचना आ ज्ञानमीमांसीय अनुशासनकेँ चारि आलोचनात्मक परम्पराक संग पढ़ैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आ लोकधर्मी-नाट्यधर्मी भेद कृतिक भाव-विन्यास आ

प्रतीक-व्यवस्थाकेँ खोलैत अछि। पाश्चात्य आख्यानशास्त्र समय-क्रम, पुनरावृत्ति, बहुध्वन्यता, यथार्थ-प्रतिनिधित्व आ सामाजिक प्रतीकार्थक विश्लेषण दैत अछि। नव्य-न्याय प्रमाण, संशय, हेतु, व्याप्ति, उपाधि, अभाव, शब्द-बोध आ यथार्थ-अयथार्थ ज्ञानक कसौटीद्वारा उपन्यासक मूल प्रश्न —“कोन गवाही मान्य?”, “कोन नाम बचत?”, “कोन दस्तावेज सत्य?”—केँ कठोर रूपसँ जाँचैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति गाम, स्त्री, श्रमिक, चर्मकार टोल, माछमार, प्रवासी, मौखिक गीत, स्थानीय अभिलेख आ उपेक्षित नाम सभकेँ इतिहासक सक्रिय स्रोत मानैत हुए प्रमाणक अनुशासन नहि छोड़ैत अछि। समग्र निष्कर्ष ई अछि जे एहि कृतिक केन्द्रीय रूपक “गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि” मात्र लोक-फकरा नहि, बल्कि स्मृति, न्याय आ इतिहासक संयुक्त नैतिक सूत्र अछि। कृतिक सबलता ओकर विशाल कल्पना, प्रतीकात्मक पुनरावृत्ति, बहु-विधात्मक संरचना आ स्थानीय जीवनक ज्ञान-संपदामे अछि; मुदा विशालता स्वयं कखनो-कखनो विस्तार, पुनरुक्ति आ शब्दावलीक असमानताक कारण बनैत अछि। भाषा-अडिट किछु हिन्दी-झुकाववला रूप, किछु रोमन-अवशेष, उद्धरण-चिह्नक तकनीकी अवशेष आ मिश्रलिपि त्रुटि चिन्हित करैत अछि; ई सभ प्रकाशनपूर्व निखार योग्य अछि।

मुख्य पद : नाम-स्मृति, जलसमाधि, गोहि, गढ़ नारिकेल, प्रमाण, लोक-अभिलेख, समानान्तर इतिहास, रस, ध्वनि, आख्यान-समय।

१. प्रस्तावना : कादम्बरीक आकार आ आलोचनात्मक चुनौती

एहि कादम्बरीकेँ केवल “उपन्यास” कहि देब ओकर विधात्मक व्यापकता घटा देत। पूर्व-कथाकालक आरम्भिक अध्याय नाटक, दार्शनिक वाद, दृष्टान्त, टिप्पणी, लोकगीत आ कथात्मक गद्यक मिश्र रूप ग्रहण करैत अछि; मुख्य खण्ड सभमे उपन्यासात्मक कथा, न्यायालय, अन्वेषण, डिजिटल अपराध, लोक-अभिलेख आ सामुदायिक जीवनक दृश्य विकसित होइत अछि; अन्तिम खण्ड फेर स्वप्न, तत्त्वचिन्तन, नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ अपराध-जालक अनुसंधानकेँ जोड़ैत अछि। एहि कारण कृतिक उपयुक्त आलोचना सेहो बहुविधात्मक होएबाक चाही।

कृतिक मूल भूगोल गढ़ नारिकेल अछि। ई काल्पनिक ग्राम एक साथ स्थान, अभिलेख, पात्र आ स्मृति-प्रणाली बनि जाइत अछि। चन्ना गाछी, जोड़ी पोखरि, नारिकेल पात, बान्ह, अदालतक बरामदा, पुल, फोन, स्क्रीन, खाता आ संदूक—ई सभ वस्तु कखनो केवल दृश्य-सज्जा नहि रहैत; ओ सभ सत्यक धारक वा सत्यक विकृतिक माध्यम बनैत अछि। एतय प्रकृति आ दफ्तरी कागज दुनू “पढ़ल” जाइत अछि।

कृतिक दीर्घता ओकर सौन्दर्यात्मक परियोजनासँ जुड़ल अछि। बारह सय बरखक सामुदायिक स्मृति, अनेक पीढ़ीक चरित्र, दर्शनसँ डिजिटल अपराध धरि समयक विस्तार, आ ३०१ अध्यायक क्रम—ई सभ मिलि कऽ “एक घटना”क कथा नहि, बल्कि स्मृति-सभ्यताक कथा बनबैत अछि। अतएव आलोचनामे कथानक-सार मात्र अपर्याप्त अछि; संरचना, ज्ञान, लोकजीवन, इतिहास आ भाषा सभकेँ संग पढ़ब आवश्यक अछि।

२. पाठ-संपूर्णता, शोध-पद्धति आ प्रमाण-अनुशासन

पाठीय संरचनाक स्वतंत्र गणना अनुसार मुख्य कथा-देहमे अध्याय [-१००] सँ अध्याय २०० धरि क्रमबद्ध ३०१ अध्याय उपस्थित अछि। ऋणात्मक अध्याय पूर्व-कथाकालक कार्य करैत अछि; अध्याय ० सँ मुख्य आधुनिक कथा खुलैत अछि; अध्याय १०१ सँ कथा पृथ्वी-बाह्य स्वप्न-रूपक, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम-न्याय, लोकनाट्य आ अन्ततः अपराध-जालक गहन अन्वेषण धरि विस्तृत होइत अछि। एहि गणनाक उद्देश्य ई सुनिश्चित करब अछि जे समीक्षा कोनो अध्यायकेँ संरचनात्मक रूपसँ अदृश्य नहि बना दे।

शोध-पद्धति चारि तहमे काज करैत अछि। पहिल तह निकट-पाठ अछि—शीर्षक, आवर्ती बिम्ब, संवाद, गीत, अभिलेख, पात्र-स्वर आ कथाक्रमक निरीक्षण। दोसर तह भारतीय काव्यशास्त्रीय अछि—रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आ नाट्य-लोकधर्मिता। तेसर तह आधुनिक आख्यानशास्त्रीय अछि—समय, पुनरावृत्ति, बहुध्वन्यता, यथार्थता आ सामाजिक प्रतीकार्थ। चारिम तह नव्य-न्याय आ समानान्तर इतिहासक प्रमाण-अनुशासन अछि—दावा कोन आधारपर टिकैत अछि, केकर गवाही सुनल जाइत अछि, कोन दस्तावेज अनुपस्थित अछि, आ मौनकेँ तथ्य बनाबय सँ पहिने कोन परस्पर पुष्टि चाही, एकर परीक्षण।

एहि अध्ययनमे कृतिक भीतरक ऐतिहासिक, दार्शनिक वा सामाजिक दावा सभकेँ आलोचनात्मक रूपसँ पाठ-साक्ष्य आ स्थापित वैचारिक परम्पराक संग पढ़ल गेल अछि। कृति जतय लोकस्मृति, जनश्रुति वा नाटच-रूपकक भाषा अपनबैत अछि, ओतय ओकरा प्रत्यक्ष इतिहासक प्रतिवेदन बुझि लेब उचित नहि; साहित्यिक सत्य, सामुदायिक स्मृति आ सत्यापनयोग्य इतिहास तीन भिन्न किन्तु संवादरत स्तर छथि।

३. त्रयीक समग्र स्थापत्य

३.१ खण्ड-० : दर्शनसँ इतिहास, इतिहाससँ डिजिटल पूर्वसंधि

खण्ड-०क पहिल आठ-दस अध्याय सम्पूर्ण कृतिक ज्ञानमीमांसीय बीया रोपैत अछि। “शंख आ रजत” भ्रमक शास्त्रीय उदाहरणकेँ गामक नैतिक व्याकरण बनबैत अछि: जे चमककेँ चानी बुझैत अछि, से मानचित्रकेँ गाम बुझि सकैत अछि; अर्थात् प्रतिनिधित्व आ यथार्थक भेद नब-पुरान सभ ठगीक मूल प्रश्न बनि जाइत अछि। “आत्मसिद्धि-वाद”, “केऽ बनौलक ई जगत?”, “चिंतामणि रत्न” आ “शंखक अन्तिम प्रश्न” दर्शनकेँ सूखा उद्धरण नहि, पात्र-आधारित वाद, मंच, प्रश्न आ प्रतिप्रश्नक रूपमे रूपान्तरित करैत अछि।

अध्याय [–९२] पछाति नाटच-वाद धीरे-धीरे गामक दीर्घ इतिहासमे बदलैत अछि। जल-घड़ी, चर्मकार टोल, बुधुआक जलसमाधि, बाढ़ि, डाइनक आरोप, स्त्री-गवाही, कबड्डी, महामारी, गज-ग्राह, अदालत, परदेश, छापाखाना, अकाल, स्वाधीनता, जमींदारी, बिजली, सीमा, हरित क्रान्ति, आपातकाल, सूखा, रेडियो, खाड़ी-प्रवास, उदारीकरण, कम्प्यूटर, सूचना-अधिकार आ इंटरनेट—ई क्रम एक छोट गामक माध्यमसँ व्यापक इतिहासक परिवर्तित तकनीक आ सत्ता-रूप देखबैत अछि।

खण्ड-०क अन्तिम तिहाईमे डिजिटल जाल, देहक बाजार, निजता, बैंक, कोड, समुद्रपारक छाया, दस्तावेज, निर्माण-पुल, नामक सूची आ जाँचक संकेत मुख्य खण्डक अपराध-कथाकेँ तैयार करैत अछि। एहि प्रकार ऋणात्मक अध्याय “पृष्ठभूमि” मात्र नहि; ओ मुख्य कथाक नैतिक, ऐतिहासिक आ ज्ञानमीमांसीय कारण-श्रृंखला अछि।

३.२ खण्ड-१ : नाम, न्याय, स्क्रीन आ सामुदायिक प्रतिरोध

अध्याय ० “गढ़ नारिकेल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना” गामकेँ कथा आरम्भ होएबाक पहिने स्वयं एक जीवित अभिलेख रूपमे स्थापित करैत अछि। माटि, पानि, श्रम, लोकगीत, चन्ना गाछी, कारीगर, माछमार, स्त्री-अनुभव आ मौखिक ज्ञान सभ मुख्य अपराध-कथाक नैतिक पृष्ठभूमि बनैत अछि। एहि प्रस्तावनासँ स्पष्ट होइत अछि जे कृति आधुनिक संकटकेँ गामक परम्परासँ अलग नहि पढ़ैत।

अध्याय १–२४ मे पुल, मृतकक नाम, अदालतक तारीख, स्क्रीन, देह-बाजार, निजता-ब्लैकमेल, धनक कारी नदी, डार्क-जाल, सीलबन्द आवरण आ नामक अभिलेख एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि। “तीस नाम, तीन सय लाश” जकाँ शीर्षक संख्या आ नामक विरोधाभासक मार्मिक सूत्र बनबैत अछि: संस्थागत लेखा मनुष्यकेँ संख्या करैत अछि, जखन कि गामक स्मृति नाम पुनः प्राप्त करय चाहैत अछि।

अध्याय २५–५२ मे बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ किन-हंग, सत्यव्रत, नन्द, आरुणि, मीरा, देविका आ आन पात्र सभ अपराध, संकोच, दोष, साक्ष्य आ प्रतिरोधक अलग-अलग नैतिक स्थिति ग्रहण करैत अछि। “मौन” एहि खण्डमे निष्क्रियता मात्र नहि; कखनो अपराधक आवरण, कखनो विवेकक संकट, कखनो गवाही सँ पहिने ठहराव बनैत अछि।

अध्याय ५३–१०० कथा केँ पुनर्निर्माण, विरासत, सार्वजनिक स्मृति, शोध, दृष्टिक अधिकार, दान, पाठशाला, मजदूरक पाँव, स्क्रीनक उपवास, जन-सुनवाई, नामक संविधान आ पुनः बाढ़ि दिस लऽ जाइत अछि। एहिठाम कथा केवल अपराधी खोजबाक लक्ष्यसँ आगू बढ़ि समुदाय कोना सीखैत अछि, स्मारक कोना सत्ता बनि सकैत अछि, आ स्मृति कोना संस्थागत होएत—ई प्रश्न उठबैत अछि।

३.३ खण्ड-२ : तत्त्व, अन्न, रंगमंच, दस्तावेज आ अन्तिम उद्घाटन

अध्याय १०१–१०४क अनाम ग्रह स्वप्न-प्रसंग कृतिक स्थानीयता केँ ब्रह्माण्डीय दूरीपर राखि पुनः जाँचैत अछि। दूर ग्रहक आकर्षणक सामने माटि, मायक गीत, नाम आ पृथ्वी चुनबाक निर्णय ई प्रश्न उठबैत अछि जे आधुनिक

पलायन वा यूटोपियाक मूल्य जँ स्मृति-विस्मरण हो, तँ ओ मुक्ति नहि। स्वप्न समाप्त भेला पर कृति पृथ्वी, बीज, माटि, जल, आगि, वायु, आकाश, शब्द, अर्थ आ कण्ठक क्रममे तत्त्वात्मक विस्तार करैत अछि।

अध्याय ११७–१३२ स्मृति, देह, श्रम, न्याय, जाति, गंगेश, तत्त्वचिन्तामणि, प्रमाण, निर्णय, अन्न, भूख, प्यास, नून, स्वाद, साझा थारी आ रसोइक गणराज्यक माध्यमसँ दर्शनकेँ भोजन आ श्रमक दैनिक नैतिकतामे उतारैत अछि। ई कृतिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि: प्रमाणशास्त्र रसोइ, खेत, जाति आ अधिकारक प्रश्नसँ अलग नहि रहैत।

अध्याय १३३–१४५ विदेह नाट्य उत्सव, दर्शकक गवाही, बाटक रंगमंच, चल चौपाल, बरामदाक फैसला, रेकर्ड-घर, रद्दी बोरा आ नामक यात्राकेँ जोड़ैत अछि। एतय रंगमंच स्वयं सामाजिक जाँच-पद्धति बनैत अछि: कथा मंचपर उठैत अछि, तालीक बाद बाहर जुलूस बनैत अछि, आ दर्शकक प्रतिक्रिया दस्तावेजी खोज दिस मोड़ लैत अछि।

अध्याय १४६–२०० मुहर, दस्तक, मिलावट, जालक नक्शा, आदेशक स्रोत, दान-खाता, मृतकक सहमति, गोदाम, फोन, आवाज, हटायल कागज, कोठार, शहरक खाता, सिम, नकाब, असली नाम, रेकॉर्डर, रोकल खाता, जलसमाधिक अर्थ, अपराधीक धरती आ नामक पहरुआ धरि पहुँचैत अछि। अन्तिम चरणमे रहस्यक समाधान “एक खलनायक”पर सीमित नहि रहैत; दस्तावेज, आवाज, तकनीक, संस्थागत सहमति आ सामाजिक स्मृतिहीनता मिलि अपराधक संरचना बनबैत अछि।

४. केन्द्रीय बिम्ब आ प्रतीक-व्यवस्था

४.१ गोहि आ ग्राह

गोहि कृतिक सर्वाधिक लचीला रूपक अछि। आरम्भमे जलचर भय, लोककथा आ गज-ग्राहक स्मृति; आधुनिक खण्डमे लालच, ठगी, स्क्रीन, संस्थागत हिंसा, डेटा-शोषण आ नाम-मेटबाक प्रवृत्ति—सभ गोहि रूप ग्रहण करैत अछि। एहन रूपकक शक्ति ओकर अस्थिरतामे अछि: गोहि हर युगमे रूप बदलैत अछि, मुदा ओकर क्रिया—मनुष्यकेँ वस्तु बनायब—स्थिर रहैत अछि।

“गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि” कथ्यक नैतिक प्रतिज्ञा अछि। कृति बारंबार देखबैत अछि जे देह नष्ट भऽ सकैत अछि, अभिलेख मिटाओल जा सकैत अछि, फोन बन्द भऽ सकैत अछि, मुदा समुदाय जँ नाम पुनः बोलैत अछि तँ इतिहासक पूर्ण विनाश रोकेल जा सकैत अछि।

४.२ जलसमाधि

जलसमाधि मृत्यु, विस्मृति आ संरक्षण तीनू अर्थ एकसंग वहन करैत अछि। जल देह डुबबैत अछि, मुदा पाण्डुलिपि, गीत, पानि-चिन्ह, बाढ़िक स्मृति आ पोखरिक कथा समुदायकेँ पुनः स्मरण करबैत अछि। अतएव जल कृतिक विरोधाभासी तत्व अछि—विनाशक आ अभिलेखपाल दुनू।

अन्तिम अध्याय सभमे “जलसमाधिक अर्थ” शीर्षक स्वयं संकेत दैत अछि जे आरम्भिक रहस्य प्रतीकात्मक पुनर्पाठ माँगैत अछि। जलमे डूबल नाम ऊपर उठब—ई कृतिक न्याय-दृष्टिक चरम रूप अछि।

४.३ नाम आ अभिलेख

नाम एहि कादम्बरीमे अस्तित्वक सामाजिक प्रमाण अछि। जन्म, मृत्यु, मजदूरी, न्याय, निजता, अपराध, स्मारक आ इतिहास—सभ ठाम नाम प्रश्न बनि उठैत अछि। नाम लिखब मात्र पर्याप्त नहि; सही व्यक्ति, सही संदर्भ आ सही गवाहीक संग नाम जोड़ब आवश्यक अछि।

सरकारी सूची, पंजी, डिजिटल खाता, दान-रजिस्टर, मृतकक सहमति आ लोकगीत—ई सभ अभिलेखक अलग-अलग प्रकार छथि। कृति कोनो एक स्रोतकेँ स्वतः पवित्र नहि मानैत; उलटे स्रोत-समालोचनाक आवश्यकता देखबैत अछि।

४.४ चन्ना गाछी आ नारिकेल पात

चन्ना गाछी सामुदायिक स्मृतिक भौतिक स्थल अछि। गाछक जड़ि समयक गहिराइ, पात मौखिक लेखन, छाँह सभा, आ ठूँठ विनाशक बादो पुनर्जन्मक संकेत बनैत अछि। नारिकेल पातपर नाम, पाठ, चेतावनी आ गीत लिखबाक कल्पना औपचारिक कागजक समांतर लोक-अभिलेख रचैत अछि।

४.५ कबड्डी

कबड्डी खेल कृतिक सामुदायिक दर्शन अछि। साँस रोकेब, सीमा पार करब, पकड़ल जाएब, साथी द्वारा बचाओल जाएब—ई सभ देह, जोखिम, सीमा आ सामूहिक जिम्मेदारीक रूपक बनैत अछि। पहिल, तेसर आ स्वप्निक ग्रह-कबड्डी धरि एकहि खेल अलग ऐतिहासिक प्रसंगमे पुनरावृत्त होइत अछि।

४.६ स्क्रीन, फोन आ आवाज

आधुनिक खण्डमे दृश्य सत्यक सबसे अस्थिर माध्यम स्क्रीन अछि। फोटो, आवाज, पहचान, खाता, संदेश आ रेकॉर्ड—सभ प्रमाण जकाँ देखाइत अछि, मुदा बनाओल, काटल, नकली वा संदर्भ-विहीन भऽ सकैत अछि। शंख-रजतक प्राचीन भ्रम एतय स्क्रीनक नव भ्रम बनि लौटैत अछि।

५. पात्र-व्यवस्था : एकल नायकसँ बेसी सामूहिक नायकत्व

कादम्बरीक विशालता एहन अछि जे एकल नायक निश्चित करब कठिन अछि। बूढ़बा दीर्घकालिक स्मृति, नन्द नैतिक साक्ष्य, आरुणि अगिला पीढ़ीक प्रश्न, अनन्या विश्लेषणात्मक सक्रियता, सत्यव्रत संस्थागत विवेक, मीरा निजता आ दृष्टिक अधिकार, देविका कण्ठ आ गीत, गोप कुमार दस्तावेजी अन्वेषण, बटुकनाथ अपराध-बोध आ विलम्बित क्षमा, चन्द्रपाल वित्तीय-छायाजगत, राघव तकनीकी कोड, आ लाउ किन-हंग वैश्विक अपराध-संयोजनक अलग-अलग केन्द्र छथि।

एहि बहुकेन्द्रीय संरचनामे “गाम” स्वयं सर्वाधिक स्थायी पात्र बनैत अछि। व्यक्ति मरैत, बदलैत, दोषी वा क्षमाप्रार्थी होइत छथि; गाम स्मरण करैत अछि, गलती करैत अछि, फेर सीखैत अछि। एहि अर्थमे गढ़ नारिकेलक चरित्र-विकास ३०१ अध्यायमे फैलल सामूहिक चरित्र-विकास अछि।

स्त्री पात्र सभक भूमिका केवल पीड़िता रूपमे सीमित नहि। स्त्री-सभा, गीत, निजता, मातृत्व, श्रम, बीज-संरक्षण, गवाही, डेटा-अधिकार आ सार्वजनिक स्मृति—एहि सभ क्षेत्रमे स्त्री-स्वर कथा-निर्णायक बनैत अछि। ई पक्ष समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

६. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

६.१ रस-समन्वय

कृतिक प्रमुख रस करुण अछि, मुदा करुण एकाकी नहि। बाढ़ि, मृतकक अनामता, मजदूरक मृत्यु, स्त्रीक अपमान, ठगी, निजता-भंग आ विलम्बित न्याय करुण स्थायी भावकेँ सक्रिय करैत अछि। एहि करुणक भीतर रौद्र अन्यायक विरुद्ध उठैत अछि, वीर सामुदायिक प्रतिरोधमे रूपान्तरित होइत अछि, भयानक गोहि, अन्हार, डिजिटल ठगी आ अदृश्य जालमे उपस्थित अछि, अद्भुत बूढ़बा, जल-स्मृति, बोलैत अभिलेख आ लोक-रूपकमे विकसित होइत अछि, आ शान्त अन्तिम रूपमे नामक पुनर्स्थापनासँ सम्भव होइत अछि।

रस-सिद्धान्तक दृष्टिसँ कृतिक सफलता एतय अछि जे सामाजिक विषय केवल तर्क नहि रहैत; ओकरा अनुभूति बनाओल जाइत अछि। “तीस नाम, तीन सय लाश” जकाँ संख्यात्मक कठोरता जखन नामक रिक्तिसँ भिड़ैत अछि तँ करुण रस सांख्यिकीपर नैतिक प्रश्न बनि उठैत अछि।

६.२ ध्वनि

आनन्दवर्धनक ध्वनि-दृष्टिसँ कृतिक मुख्य व्यञ्जना ई अछि जे स्मृति न्यायक पूर्वशर्त अछि। कथा बारंबार सीधे ई सिद्धान्त घोषित करैत अछि, मुदा ओकर असली शक्ति घोषित वाक्यसँ बेसी आवर्ती दृश्य सभमे अछि—पातपर नाम, पानिमे आवाज, सूचीमे रिक्ति, साक्षीक मौन, बच्चाक प्रश्न, ठूँठमे हरियर बिन्दु।

गोहि, जल, छपाक, शंख, पात, ठूँठ, पुल आ स्क्रीन ध्वन्यात्मक प्रतीक छथि; एकर अर्थ प्रत्येक पुनरावृत्तिमे बढ़ैत अछि। जे वस्तु आरम्भमे स्थानीय बिम्ब छल, बादमे सामाजिक-राजनीतिक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

६.३ वक्रोक्ति आ रूपक-विधान

कुन्तकक वक्रोक्ति-दृष्टिसँ कादम्बरीक विशिष्टता ओकर “सीधा नहि” कहबामे अछि। डिजिटल ठगकेँ गोहि, दफ्तरी विलम्बकेँ प्रेत, स्क्रीनकेँ जल-जाल, अभिलेखकेँ जीवित देह, स्मृतिकेँ गाछ, आ न्यायकेँ अन्न-नून-साझा थारीक रूप देल जाइत अछि। ई वक्रता सजावटी अलंकार नहि; जटिल संरचनाकेँ लोकबोधमे अनुवाद करबाक उपाय अछि।

कखनो-कखनो रूपकक अति-आवृत्ति ओकर धार घटबैत अछि। जखन लगभग सभ संस्थागत संकट गोहि वा नामक रूपकेँ ग्रहण करैत अछि, तखन नब प्रसंगक विशिष्टता धुँधला होएबाक जोखिम रहैत अछि। सम्पादकीय संक्षेपण एतय कृतिक प्रभाव बढ़ा सकैत अछि।

६.४ औचित्य, लोकधर्मी आ नाट्यधर्मी रूप

पूर्व-कथाकालक दार्शनिक वाद नाट्यरूपमे प्रस्तुत अछि। लोकगीत, सूत्रधार, परिषद्, अंक-विभाजन, मंच-संकेत आ प्रश्नोत्तर जटिल दर्शनकेँ जन-नाट्यक समीप आनैत अछि। बादक अध्यायमे खेत, पनिघट, अदालत, हाट, रसोइ, मजदूरी आ फोनक दृश्य लोकधर्मी यथार्थ प्रदान करैत अछि।

औचित्यक प्रश्न ओतय उठैत अछि जतय दार्शनिक टिप्पणी कथा-गतिकेँ रोकैत अछि, वा शोध-सदृश स्पष्टीकरण पात्रक स्वाभाविक वाणीपर भारी पड़ैत अछि। मुदा कृतिक घोषित परियोजना ज्ञानक लोकभाषीकरण अछि; अतएव शिक्षाप्रद अंशक उपस्थिति स्वभावतः दोष नहि, मात्रा आ स्थान ओकर औचित्य निश्चित करैत अछि।

७. पाश्चात्य आलोचनात्मक समीक्षा

७.१ आख्यान-समय : क्रम, अवधि आ पुनरावृत्ति

जेरार जेनेट्टक आख्यानशास्त्रीय भेदसँ देखल जाए तँ सम्पूर्ण खण्ड-० एक विशाल पूर्वस्मृति-खंड अछि—मुख्य कथा अध्याय ० सँ आरम्भ होएबाक पहिने [-१००] सँ [-१] धरि कारण-इतिहास बनाओल गेल अछि। ई अंकन-योजना समयकेँ दृश्य रूप दैत अछि: पाठक प्रत्यक्षतः शून्यक दिशामे इतिहास पार करैत अछि।

कादम्बरीमे अवधि असमान अछि। किछु दार्शनिक वाद एक रातिक घटना केँ अनेक पृष्ठमे फैलाबैत अछि; दोसरा कात इतिहासक दशको-दशक एक अध्यायमे संक्षिप्त होइत अछि। ई असमानता कृतिक विषयानुसार समयक मूल्य बदलैत अछि—जतय ज्ञानक सूक्ष्मता, ओतय समय धीमा; जतय ऐतिहासिक संक्रमण, ओतय समय तीव्र।

पुनरावृत्ति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तकनीक अछि। बाढ़ि, कबड्डी, नाम, छपाक, मौन, अदालत, पात, गवाही आ गोहि अलग युगमे फेर अबैत अछि। ई पुनरावृत्ति समान घटना नहि, “भिन्न समयमे समान संरचना” देखबैत अछि।

७.२ बाख्तिनक बहुध्वन्यता

कृतिक भाषा एकरूप नहि। दार्शनिक सभाक संस्कृतनिष्ठ तर्क, गामक लोकबोली, गीतक लय, अदालतक दफ्तरी वाक्य, डिजिटल अपराधक तकनीकी पद, स्त्री-सभा, मजदूरक बोल, बच्चाक प्रश्न—ई सभ अलग सामाजिक स्वर छथि। बाख्तिनक बहुध्वन्यता अनुसार उपन्यासक शक्ति एही विविध स्वरक सहअस्तित्वमे अछि।

महत्त्वपूर्ण बात ई जे कृति सभ स्वरकेँ समान विश्वसनीयता नहि दैत। धूर्तक भाषा सेहो कथामे स्थान पबैत अछि, मुदा ओकर दावा प्रमाणक कसौटीपर जाँचल जाइत अछि। एतय बहुध्वन्यता आ नव्य-न्याय एक-दोसराकेँ पूरक बनैत छथि।

७.३ रिकर : समय आ कथा

पॉल रिकरक समय-आख्यान सम्बन्धक दृष्टिसँ गढ़ नारिकेल समयकेँ घड़ीसँ नहि, कथा-स्मृतिसँ मानवीय बनबैत अछि। बाढ़िक बरख, पुलक राति, नाम-उत्सव, महामारी, स्वतंत्रताक भोर, पहिल कम्प्यूटर—ई सभ कालगणना समुदायक अनुभूत समय बनैत अछि।

बूढ़बा एहि मानवीकृत समयक प्रतीक छथि। ओ जैविक आयुसँ परे सामुदायिक स्मृतिक निरन्तरता छथि; एहि कारण हुनकर “अमरता” यथार्थवादी जीवविज्ञानक दावा नहि, स्मृतिक काल-रूपक रूपमे अधिक सफल अछि।

७.४ अउरबाख, यथार्थ आ दैनिक जीवन

अउरबाखक यथार्थ-प्रतिनिधित्वक परिप्रेक्ष्यमे कृतिक महत्त्व दैनिक वस्तु सभक गंभीर साहित्यिक दर्जामे अछि। कटोरी, गमछा, मजदूरी रजिस्टर, बासी बिस्कुट, इनार, बीज, जूता, फोन, सिम, मुहर, रद्दी बोरा—ई छोट वस्तु सभ सामाजिक शक्ति आ इतिहासक वाहक बनैत अछि।

कृति मिथकीय भूत-प्रेत आ सामाजिक यथार्थकेँ साथ राखैत अछि। यथार्थवादी प्रभाव तथ्यमूलक “अलौकिकताविहीनता”सँ नहि, बल्कि दैनिक जीवनक ठोस विवरणसँ बनैत अछि।

७.५ जेम्सन आ सामाजिक प्रतीकार्थ

फ्रेडरिक जेम्सनक सामाजिक प्रतीकार्थक दृष्टिसँ अपराध-जाल निजी लोभक कथा मात्र नहि; ई श्रम-अदृश्यता, संस्थागत विलम्ब, डेटा-बाजार, वैश्विक वित्त, प्रतिष्ठा, दान, तकनीकी मध्यस्थता आ राज्य-समाजक असमान शक्ति सम्बन्धक प्रतीकात्मक रूप अछि।

कृतिक राजनीतिक अवचेतन एहि बातमे प्रकट होइत अछि जे मृतकक नाम, स्त्रीक निजता, मजदूरक पाँव आ स्थानीय गीत बारंबार “आधिकारिक” भाषाक विरुद्ध अपन उपस्थिति जतबैत अछि।

८. नव्य-न्याय आधारित समीक्षा

८.१ प्रमाणक प्रश्न कृतिक मेरुदण्ड

नव्य-न्यायक मूल आग्रह—यथार्थ ज्ञान कोन प्रमाणसँ उत्पन्न भेल—एहि कादम्बरीक कथा-तन्त्रमे प्रत्यक्ष रूपसँ सक्रिय अछि। शंख-रजतक भ्रमसँ आरम्भ कऽ स्क्रीन, नकली आवाज, म्यूल खाता, हटायल कागज, मृतकक सहमति आ बन्द रेकॉर्डर धरि एकहि प्रश्न रूप बदलि लौटैत अछि: जे देखायल वा लिखायल, की ओ यथार्थ अछि?

प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द आ उपमान—न्यायक मुख्य ज्ञान-स्रोत सभ कथामे कथा-उपकरण बनैत अछि। प्रत्यक्ष दृश्य भ्रामक भऽ सकैत अछि; अनुमान हेतु-व्याप्ति चाहैत अछि; शब्द विश्वसनीय वक्ताक अपेक्षा करैत अछि; उपमान नया वस्तु पहिचानमे सहायक अछि। अपराध-जाँचक सफलता तखन होइत अछि जखन एक प्रमाण दोसरासँ पुष्ट होइत अछि।

८.२ संशय, तर्क आ उपाधि

नव्य-न्याय संशयकेँ कमजोरी नहि, जाँचक आवश्यक अवस्था मानैत अछि। कादम्बरीक नीक अन्वेषक पात्र सभ तुरन्त निष्कर्ष नहि लैत; ओ विकल्प

राखैत, कागज मिलान करैत, नाम जाँचैत, आवाजक स्रोत खोजैत, आ कारणक बाधक शर्त सभ परखैत अछि।

उपाधि—एहन अतिरिक्त शर्त जे साधारण कारण-निष्कर्षकेँ सीमित करैत अछि—कादम्बरीक सामाजिक विश्लेषण लेल उपयोगी अछि। “दान” सदिखन सेवा नहि; “सहमति” सदिखन स्वेच्छा नहि; “रेकॉर्ड” सदिखन सत्य नहि; “मौन” सदिखन अपराध नहि। प्रत्येक पदक अर्थ प्रसंगक उपाधिसँ निर्धारित होइत अछि।

८.३ अभाव, मौन आ अनुपस्थिति

नव्य-न्यायमे अभाव स्वतन्त्र ज्ञेय रूपमे विश्लेषित होइत अछि। कादम्बरीमे अनुपस्थित नाम, खाली आसन, गायब कागज, रोकल खाता, मौन साक्षी आ सूचीक रिक्ति—ई सभ “किछु नहि” नहि; उचित परिस्थिति होएत तँ अनुपस्थिति स्वयं प्रमाण बनि सकैत अछि।

मुदा समानान्तर इतिहासक कठोरता ई सावधानी जोड़ैत अछि जे मौनकेँ मनचाहा कथा देब उचित नहि। अनुपस्थित नाम इतिहासक अन्याय संकेत करि सकैत अछि, मुदा विशिष्ट आरोप लेल अतिरिक्त साक्ष्य आवश्यक अछि। एहि सन्तुलनमे कादम्बरीक सर्वोत्तम शोधपरक सम्भावना अछि।

८.४ अवच्छेदकता आ नामक नैतिकता

नव्य-न्यायिक भाषा वस्तु, गुण, सम्बन्ध आ सीमा स्पष्ट करबाक प्रयास करैत अछि। कादम्बरीमे “नाम”क प्रश्न ठीक एहेन सीमांकन चाहैत अछि: कोन नाम कोन देहसँ, कोन घटना, कोन खाता, कोन सहमति, कोन मृत्यु, कोन आवाज आ कोन दस्तावेजसँ सम्बन्धित अछि। गलत सम्बन्ध स्वयं अन्याय बनि सकैत अछि।

एहि कारण नाम-बचाव केवल भावुक स्मरण नहि; सही सम्बन्धक पुनर्स्थापना अछि। साहित्यिक रूपमे ई नव्य-न्यायक अत्यन्त सफल नैतिक रूपान्तरण अछि।

९. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि इतिहासकेँ केवल राज्य, राजवंश, महान पुरुष वा संस्थागत अभिलेखक कथा नहि मानैत। गामक गीत, स्त्रीक स्मृति, श्रमिकक

देह, चर्मकार टोल, माछमार, प्रवासी, बीज-संरक्षक, पनिघट, हाट, दगरिन, नाविक, कारीगर आ स्थानीय न्याय-अनुभव—ई सभ इतिहासक योग्य स्रोत बनैत अछि। “गोहि सभक बीच जलसमाधि”क संसार एहि दृष्टिक लेल अत्यन्त अनुकूल अछि।

खण्ड-०क इतिहास-क्रम विशेष रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि। औपनिवेशिक शासन, स्वाधीनता, जमींदारी उन्मूलन, बिजली, हरित क्रान्ति, आपातकाल, खाड़ी-प्रवास, उदारीकरण, कम्प्यूटर आ सूचना-अधिकार जकाँ व्यापक परिवर्तन गढ़ नारिकेलक स्थानीय अनुभवक भीतर देखाओल गेल अछि। एहि प्रकार “राष्ट्रीय इतिहास” गामक भोजन, श्रम, भय, यात्रा, भाषा आ अभिलेखक रूपमे पुनर्लिखित होइत अछि।

समानान्तर इतिहासक कसौटी मात्र “हाशियाक आवाज” नहि; प्रमाणक श्रेणीकरण सेहो आवश्यक अछि। लोकगीत भाव-सत्य, सामाजिक स्मृति आ मूल्य-व्यवस्थाक सशक्त साक्ष्य भऽ सकैत अछि; मुदा तिथि वा विशिष्ट अपराधक निर्णय लेल दस्तावेज, प्रत्यक्ष गवाही, भौतिक चिन्ह, तकनीकी रेकॉर्ड वा पारस्परिक पुष्टि आवश्यक भऽ सकैत अछि। कृति जखन ई भेद बनाए रखैत अछि, तखन ओकर ऐतिहासिक शक्ति सर्वाधिक विश्वसनीय होइत अछि।

कादम्बरीक लोककोश एहि पद्धतिक ठोस उदाहरण अछि। खेत, माटि, पानि, श्रमगीत, विवाह, जन्म, मृत्यु, नाव, माछमारी, कारीगरी, स्त्री-व्यंग्य, पाबनि, साझा श्रद्धा, पहेली, उपनाम, परदेशी जीवन—ई सभ “महा-इतिहास”क बाहरक विषय नहि, बल्कि समाजक संरचना बुझबाक प्राथमिक सामग्री छथि।

१०. चारू पद्धतिक तुलनात्मक समन्वय

पद्धति	मुख्य प्रश्न	कृतिमे विशेष उपयोग	सीमा
भारतीय काव्यशास्त्र	भाव, रस, ध्वनि, वक्रता, औचित्य	नाम, जल, गोहि, गीतक सौन्दर्यात्मक शक्ति	कखनो सामाजिक प्रमाणक प्रश्न गौण रहि सकैत अछि

पद्धति	मुख्य प्रश्न	कृतिमे विशेष उपयोग	सीमा
पाश्चात्य आलोचना	आख्यान-समय, बहुध्वन्यता, यथार्थ, सामाजिक प्रतीकार्थ	३०१ अध्यायक संरचना, इतिहास-समाज सम्बन्ध	स्थानीय दार्शनिक शब्दावलीक सूक्ष्मता सहज नहि पकड़ि सकैत अछि
नव्य-न्याय	प्रमाण, संशय, हेतु, सम्बन्ध, अभाव	जाँच, दस्तावेज, स्क्रीन-भ्रम, नाम-सम्बन्ध	रसात्मक प्रभावक पूर्ण व्याख्या नहि करैत
समानान्तर इतिहास	उपेक्षित स्रोत, स्थानीय अनुभव, प्रमाण-स्तर	गाम, स्त्री, श्रमिक, लोकगीत, स्थानीय अभिलेख	हाशियाक स्रोतकेँ स्वतः सत्य मानल जाए तँ पद्धति कमजोर पड़त

चारू पद्धति मिलि एक-दोसराक कमी पूरा करैत अछि। भारतीय सौन्दर्यशास्त्र अनुभूति बचबैत अछि; पाश्चात्य आख्यानशास्त्र संरचना स्पष्ट करैत अछि; नव्य-न्याय सत्य-दावाक कसौटी दैत अछि; समानान्तर इतिहास स्रोतक सामाजिक असमानता देखबैत अछि। एहि संयुक्त पठनमे कृति भावुक लोककथा वा शुष्क शोध—दुनूमेसँ कोनो एकमे सीमित नहि रहैत।

११. भाषा, शैली आ शुद्ध मैथिली निखार-अडिट

कृतिक सर्वाधिक प्रभावी भाषा ओतय अछि जतय मैथिली वाक्य-लय, लोक-संवाद, गीत, गामक वस्तु-संज्ञा आ दार्शनिक विचार स्वाभाविक रूपसँ मिलैत अछि। “पानि”, “इनार”, “गाछी”, “पात”, “ओसारा”, “मोन”, “घुरब”, “बिसरब”, “कण्ठ”, “पएर”, “माटि” जकाँ शब्द कृतिक स्थानीय ध्वनि-संसार बनबैत अछि।

दीर्घ रचनाक कारण शब्दावली एकरूप नहि रहल अछि। नीचे देल संख्या पाठीय गणनाक आधारपर प्रकाशनपूर्व खोज-बदल आ प्रसंगगत संपादन लेल प्राथमिकता बतबैत अछि। संख्या मात्र यांत्रिक उपस्थिति अछि; प्रत्येक स्थानपर अर्थ देखिकऽ अन्तिम निर्णय आवश्यक अछि।

भेटल रूप	उपस्थिति	निखार हेतु अनुशंसित रूप
गायब	८९	बिलायल / हेरायल, प्रसंगानुसार
कमरा	१०८	कोठली
कोठरी	१०३	कोठली
अंगूठा	६३	औंठा / बुढ़बा आंगुर, प्रसंगानुसार
हरेक	८१	प्रत्येक / सभ / सभटा, प्रसंगानुसार
हर	४७९	सभ / प्रत्येक / सभ बेर / सभ काल, प्रसंगानुसार
बरामदा	६१	ओसारा
पीतल	२४	पित्तरि
कुआँ	२	इनार
दरवाजा	१	केवाड़ी
पानी	१	पानि; लोकगीतक उद्धृत रूप हो तँ मूल रूप राखल जा सकैत अछि

तकनीकी सफाइमे १६ ठाम उद्धरण-चिह्नक एचटीएमएल अवशेष भेटल अछि; एकर स्थानपर सामान्य देवनागरी-अनुकूल उद्धरण-चिह्न राखब उचित। चारि ठाम “अछि” शब्द मिश्रलिपि त्रुटिसँ बिगड़ल भेटल अछि; एकरा शुद्ध “अछि” करबाक चाही।

रोमन अक्षर-श्रृंखला मुख्यतः प्रकाशकीय पहचान-संख्या, सम्पादकीय निर्देश, किछु अंग्रेजी अर्थ-सूचक पद आ तकनीकी अवशेष रूपमे भेटैत अछि। शुद्ध मैथिली संस्करणमे आवश्यक अंग्रेजी पदकेँ ब्रैकेटक भीतर सीमित राखि, अनावश्यक रोमन अंश हटायब उचित।

वाक्य-स्तरपर सर्वनाम-सम्मान आ “छथि/अछि”क प्रयोगक पुनर्पाठ उपयोगी होएत। “छथि” मनुष्य/सम्मानित व्यक्तिक लेल, जखन कि निर्जीव

वा अमानवीय कर्ताक लेल “अछि/छै/छी”क संदर्भानुकूल रूप राखल जाए। दीर्घ पोथीमे ई नियम एकरूप करब भाषा-सौष्ठव बढ़ाएत।

भाषा-निखारक लक्ष्य लोकस्वर मिटायब नहि, बल्कि अनावश्यक हिन्दीकरण, मिश्रलिपि आ तकनीकी अवशेष हटायब अछि। लोकगीत वा पात्र-विशिष्ट वाणीमे जानबूझि राखल भिन्न रूपकेँ संपादकीय मानकीकरणसँ नष्ट नहि करबाक चाही।

१२. रचनात्मक सबलता आ सुधारक क्षेत्र

१२.१ प्रमुख सबलता

प्राचीन दर्शनसँ डिजिटल अपराध धरि एकहि केंद्रीय प्रश्न—भ्रम आ प्रमाण—केँ बारह सय बरखक स्मृति-सूत्रमे जोड़बाक असाधारण वैचारिक साहस।

गढ़ नारिकेलक लोक-सांस्कृतिक संसारक घनत्व; खेत, पानि, गाछ, गीत, श्रम, जाति, स्त्री-अनुभव, कारीगरी आ पाबनिक विस्तृत उपस्थिति।

नाम, गोहि, जल, पात, कबड्डी, छपाक, ठूँठ आ स्क्रीन जकाँ आवर्ती बिम्बक मजबूत प्रतीक-व्यवस्था।

नाटक, उपन्यास, लोकगीत, टिप्पणी, दृष्टान्त, शोध-नोट आ लोककोशक बहुविधात्मक प्रयोग।

नव्य-न्यायक ज्ञानमीमांसा केँ आधुनिक फर्जी पहचान, डिजिटल आवाज, बैंक-खाता, दस्तावेज आ सहमति-जालक प्रश्नसँ जोड़बाक मौलिकता।

समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ गैर-राजकीय स्रोत, श्रमिक, स्त्री, लोक-स्मृति आ स्थानीय अभिलेखकेँ कथाक केन्द्रमे आनब।

१२.२ सम्पादकीय सुधारक क्षेत्र

विशाल विस्तारक कारण किछु रूपक, सूत्र-वाक्य आ नैतिक निष्कर्ष बारंबार दोहराइत अछि; चयनित संक्षेपण प्रभाव बढ़ा सकैत अछि।

किछु अध्यायमे शोधात्मक व्याख्या पात्रक स्वाभाविक संवादसँ अधिक दीर्घ होइत अछि; कथा आ टिप्पणीक दृश्य भेद स्पष्ट कएल जाए।

रोमन/तकनीकी अवशेष, मिश्रलिपि, हिन्दी-झुकाववला शब्द आ एकरूपता-सम्बन्धी शब्द-सफाइ आवश्यक।

ऐतिहासिक जनश्रुति, साहित्यिक रूपक आ सत्यापनयोग्य ऐतिहासिक तथ्यक स्तर कखनो स्पष्ट संकेतसँ अलग कएल जाए, जाहिसँ पाठक तथ्य-श्रेणी बुझि सकए।

दार्शनिक अंशमे संस्कृत-परम्पराक सूक्ष्म मतभेदक संग अधिक सावधान स्रोत-संकेत उपयोगी, विशेषत: जखन पात्र-वाणी ऐतिहासिक आचार्यक प्रत्यक्ष मतक रूप ग्रहण करैत अछि।

१३. परिशिष्ट सभक आलोचनात्मक मूल्य

१३.१ गढ़ नारिकेल लोककोश

लोककोश कृतिक “अतिरिक्त सामग्री” मात्र नहि; ई ओकर सांस्कृतिक अभिलेखागार अछि। माटि, पानि, श्रम, खेती, नाव, माछमारी, गीत, जन्म, विवाह, मृत्यु, पाबनि, कारीगरी, स्त्री-वाणी, परदेश, धार्मिक बहुलता, पहेली, उपनाम आ तात्कालिक तुक सभकेँ संग राखि ई गामक जीवन-संसारक नृ-सांस्कृतिक मानचित्र बनबैत अछि।

साहित्यिक दृष्टिसँ लोककोश मुख्य कथाक गहनता बढ़बैत अछि, मुदा मुख्य कथा सँ अलग परिशिष्टमे राखल गेलाक कारण कथा-गति सुरक्षित रहैत अछि। शोधार्थी लेल ई पात्रक व्यवहार, रूपक आ लोकगीतक संदर्भ समझबाक प्राथमिक सहायक पाठ अछि।

१३.२ अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत

एहि परिशिष्टमे अध्याय १०१–१०४क स्वप्न-प्रसंगसँ सम्बन्धित मूल लोकगीत सुरक्षित अछि। मुख्य कथामे संक्षेपित गीतक पूर्ण रूप परिशिष्टमे देल जाएब पाठ-संपादनक नीक उपाय अछि: कथा गति पबैत अछि, अभिलेख नष्ट नहि होइत।

दूर ग्रह, पृथ्वी, माटिक गन्ध, मायक गीत, श्रम आ शान्तिक पद कृतिक स्थानीयता केँ वैश्विक/ब्रह्माण्डीय नैतिकतामे रूपान्तरित करैत अछि।

१३.३ न्याय-दर्शनक मूल अन्त:कथा

एहि परिशिष्टमे गंगेश, प्रत्यक्ष, भ्रम, अभाव, अनुमान, स्मृति, मन, शङ्ख-रजत आ प्रमाण सम्बन्धी लघु अन्तःकथा सभ व्यवस्थित रूपसँ संरक्षित छथि। ई सामग्री कृतिक दार्शनिक आधार स्पष्ट करैत अछि आ देखबैत अछि जे मुख्य कथाक “प्रमाण” रूपक आकस्मिक नहि, दीर्घ वैचारिक योजना अछि।

शोधपरक दृष्टिसँ ई परिशिष्ट विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा इतिहास आ जनश्रुतिक भेद स्पष्ट राखब आवश्यक। गंगेशक जीवनसँ जुड़ल लोककथा सभकेँ दार्शनिक रूपक रूपमे पढ़ब अधिक सुरक्षित अछि, जाबे धरि स्वतंत्र ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध नहि हो।

१४. निष्कर्ष

“गोहि सभक बीच जलसमाधि”क सर्वाधिक मौलिक उपलब्धि ई अछि जे ओ मिथिलाक गामक स्मृति, भारतीय दर्शनक ज्ञानमीमांसा आ समकालीन डिजिटल संकटकेँ एकहि नैतिक प्रश्नमे जोड़ैत अछि: मनुष्यकेँ की प्रमाणित करैत अछि—देह, नाम, दस्तावेज, आवाज, स्क्रीन, स्मृति, समुदाय, कि सत्यापित सम्बन्ध? कृति उत्तर सरल नहि बनबैत; ओ बारंबार भ्रम उत्पन्न करैत, फेर ओकर परीक्षा करैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ ई करुण-वीर-रौद्रक बहुरसात्मक कथा अछि, ध्वनि आ वक्रोक्तिसँ समृद्ध। पाश्चात्य आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ ई दीर्घ पूर्वस्मृति, आवर्ती रूपक, बहुध्वन्यता आ सामाजिक यथार्थक विशाल प्रयोग अछि। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ ई प्रमाण आ अयथार्थ ज्ञानक कथा-प्रयोगशाला अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिसँ ई गाम, श्रम, स्त्री, लोकगीत, चर्मकार, माछमार, प्रवासी, मृतक आ “सूचीसँ बाहर” नाम सभकेँ इतिहासक विषय बनबैत अछि।

कृतिक भविष्यक पाठ-संपादन लेल मुख्य काज भाषा-एकरूपता, पुनरुक्ति-संक्षेपण, ऐतिहासिक दावाक श्रेणीकरण आ तकनीकी अवशेषक सफाइ अछि। ई सुधार भेला पर त्रयी केवल विस्तृत कथा नहि, मैथिलीमे दर्शन, लोकइतिहास, सामाजिक उपन्यास आ समकालीन तकनीकी नैतिकताक एक विशिष्ट प्रयोग रूपमे अधिक सुस्पष्ट होएत।

१५. सभ ३०१ अध्यायक रचना-अनुलेख

नीचाँक सारिणी कृतिक प्रत्येक मुख्य अध्यायकेँ अलग दर्ज करैत अछि। “पाठीय प्रमुखता” अध्यायक शब्दावली, शीर्षक आ आवर्ती बिम्बक पाठीय गणनापर आधारित अछि; ई कथानकक स्थानापन्न नहि, बल्कि समीक्षा-संपूर्णता सुनिश्चित करबाक अनुलेख अछि।

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
[-100]	शंख आ रजत	न्याय-प्रमाण; श्रम-सामुदायिक	दार्शनिक-वादात्मक पूर्वपीठिका
[-99]	आत्मसिद्धि-वाद	न्याय-प्रमाण; जल-पर्यावरण	दार्शनिक-वादात्मक पूर्वपीठिका
[-98]	केऽ बनौलक ई जगत?	न्याय-प्रमाण; श्रम-सामुदायिक	दार्शनिक-वादात्मक पूर्वपीठिका
[-97]	चिंतामणि रत्न	न्याय-प्रमाण; लोक-संस्कृति	दार्शनिक-वादात्मक पूर्वपीठिका
[-96]	स्मृति-रक्षा	न्याय-प्रमाण; नाम-स्मृति	दार्शनिक-वादात्मक पूर्वपीठिका
[-95]	जलमग्न पाण्डुलिपि	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	दार्शनिक-वादात्मक पूर्वपीठिका
[-94]	चारि मुखक मौन	जल-पर्यावरण; न्याय-प्रमाण	दार्शनिक-वादात्मक पूर्वपीठिका
[-93]	शंखक अन्तिम प्रश्न	न्याय-प्रमाण; नाम-स्मृति	दार्शनिक-वादात्मक पूर्वपीठिका
[-92]	जल-घड़ीक कैदी	जल-पर्यावरण; श्रम-सामुदायिक	गाम-स्मृति, मिथक आ आरम्भिक सामाजिक इतिहास
[-91]	चर्मकार टोलाक उजास	श्रम-सामुदायिक; लोक-संस्कृति	गाम-स्मृति, मिथक आ आरम्भिक सामाजिक इतिहास

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
[-90]	बुधुआक जलसमाधि	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	गाम-स्मृति, मिथक आ आरम्भिक सामाजिक इतिहास
[-89]	पहिल राति, पहिल बाढ़ि	जल-पर्यावरण; श्रम-सामुदायिक	गाम-स्मृति, मिथक आ आरम्भिक सामाजिक इतिहास
[-88]	डाइनक आरोप	श्रम-सामुदायिक; नाम-स्मृति	गाम-स्मृति, मिथक आ आरम्भिक सामाजिक इतिहास
[-87]	टोलाक द्वारपर	श्रम-सामुदायिक; नाम-स्मृति	गाम-स्मृति, मिथक आ आरम्भिक सामाजिक इतिहास
[-86]	समयक गोहि	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	गाम-स्मृति, मिथक आ आरम्भिक सामाजिक इतिहास
[-85]	आमिलक आदेश	श्रम-सामुदायिक; नाम-स्मृति	गाम-स्मृति, मिथक आ आरम्भिक सामाजिक इतिहास
[-84]	जंगलक मौन	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	गाम-स्मृति, मिथक आ आरम्भिक सामाजिक इतिहास
[-83]	सोनमा माझिन	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	गाम-स्मृति, मिथक आ आरम्भिक सामाजिक इतिहास
[-82]	पहिल कबड्डी	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	गाम-स्मृति, मिथक आ आरम्भिक सामाजिक इतिहास
[-81]	आक्रमणक छाया	श्रम-सामुदायिक; लोक-संस्कृति	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
[-80]	गीतक पहिल पाँति	लोक-संस्कृति; श्रम-सामुदायिक	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-79]	क्षमाक पारी	देह-नैतिकता; नाम-स्मृति	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-78]	पंजीक बाहर	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-77]	बूढ़बाक मौन	श्रम-सामुदायिक; नाम-स्मृति	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-76]	नारिकेल पातक पहिल पाठ	लोक-संस्कृति; श्रम-सामुदायिक	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-75]	तर्कक पहिल विद्रोह	न्याय-प्रमाण; लोक-संस्कृति	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-74]	गाछक रोग	जल-पर्यावरण; श्रम-सामुदायिक	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-73]	मोहनक धुन	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-72]	विवाहक साक्षी	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-71]	महामारीक राति	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
[-70]	चन्ना गाछीक रोपाई	जल-पर्यावरण; लोक-संस्कृति	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-69]	गज-ग्राहक कथा	लोक-संस्कृति; जल-पर्यावरण	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-68]	अदालतक पहिल तारीख	न्याय-प्रमाण; श्रम-सामुदायिक	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-67]	परदेशक पुकार	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-66]	स्त्री सभक राति-सभा	श्रम-सामुदायिक; न्याय-प्रमाण	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-65]	नकली भूतक जुलूस	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-64]	सुखदेवक बदला	श्रम-सामुदायिक; नाम-स्मृति	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-63]	छापाखानाक पहिल पन्ना	लोक-संस्कृति; श्रम-सामुदायिक	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-62]	राहतक प्रतीक्षा	श्रम-सामुदायिक; इतिहास-राजनीति	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
[-61]	आकाशक पुच्छलतारा	श्रम-सामुदायिक; जल-पर्यावरण	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-60]	अगिनक राति	जल-पर्यावरण; लोक-संस्कृति	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-59]	दोसर बाढ़ि	जल-पर्यावरण; श्रम-सामुदायिक	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-58]	तेसर बिपत्ति	जल-पर्यावरण; श्रम-सामुदायिक	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-57]	साहेबक नोटबुक	लोक-संस्कृति; श्रम-सामुदायिक	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-56]	स्वाधीनताक पुकार	श्रम-सामुदायिक; लोक-संस्कृति	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-55]	स्वतंत्रताक भोर	लोक-संस्कृति; श्रम-सामुदायिक	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-54]	जमींदारीक अन्त	जल-पर्यावरण; इतिहास-राजनीति	मध्यकालसँ औपनिवेशिक/स्वाधीनता संक्रमण
[-53]	बिजलीक पहिल दीप	जल-पर्यावरण; श्रम-सामुदायिक	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-52]	सीमाक पुकार	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-51]	हरित क्रान्तिक बीया	जल-पर्यावरण; श्रम-सामुदायिक	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
[-50]	आपातकालक अन्हार	श्रम-सामुदायिक; लोक-संस्कृति	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-49]	सूखाक बरख	जल-पर्यावरण; श्रम-सामुदायिक	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-48]	रेडियो आ टेलीविजनक अवाज	श्रम-सामुदायिक; लोक-संस्कृति	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-47]	खाड़ी देशक बजार	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-46]	सद्भावक परीक्षा	श्रम-सामुदायिक; जल-पर्यावरण	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-45]	उदारीकरणक हवा	लोक-संस्कृति; श्रम-सामुदायिक	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-44]	पहिल कम्प्यूटर	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-43]	सुखल होइत धार	जल-पर्यावरण; श्रम-सामुदायिक	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-42]	हाथक फोनक चमत्कार	जल-पर्यावरण; लोक-संस्कृति	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-41]	शहरक बजार	श्रम-सामुदायिक; नाम-स्मृति	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-40]	सूचनाक अधिकार	नाम-स्मृति; इतिहास-राजनीति	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
[-39]	काजक गारंटी	श्रम-सामुदायिक; नाम-स्मृति	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-38]	इंटरनेटक जाल	डिजिटल-जाल; श्रम-सामुदायिक	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-37]	स्क्रीनक पहिल छाया	श्रम-सामुदायिक; डिजिटल-जाल	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-36]	अनदेखल ठगक पहिल आहट	डिजिटल-जाल; जल-पर्यावरण	राज्य, आधुनिकता, संचार आ अधिकारक चरण
[-35]	देहक बजार खुजैत अछि	श्रम-सामुदायिक; देह-नैतिकता	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत
[-34]	उज्ज्वलक स्वप्न	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत
[-33]	वकीलक कोटक छाया	श्रम-सामुदायिक; नाम-स्मृति	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत
[-32]	समुद्रपारक साये	डिजिटल-जाल; नाम-स्मृति	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत
[-31]	सत्यव्रतक मौन	न्याय-प्रमाण; जल-पर्यावरण	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत
[-30]	गोप कुमारक दस्तावेज	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
[-29]	चन्द्रपालक सपना	श्रम-सामुदायिक; नाम-स्मृति	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत
[-28]	राघवक कोड	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत
[-27]	आरुणिक निर्माण	श्रम-सामुदायिक; जल-पर्यावरण	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत
[-26]	देविकाक गीत	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत
[-25]	मीराक निजता	नाम-स्मृति; देह-नैतिकता	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत
[-24]	निशांतक बैंक	डिजिटल-जाल; श्रम-सामुदायिक	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत
[-23]	नन्दक जन्म	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत
[-22]	बारह सयक निकट	श्रम-सामुदायिक; नाम-स्मृति	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत
[-21]	अनन्याक प्रश्न	श्रम-सामुदायिक; न्याय-प्रमाण	बजार, डिजिटल जाल, निजता आ वैश्विक पूर्वसंकेत
[-20]	छपाकक पहिल हिसाब	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
[-19]	सत्यव्रतक निर्णय	न्याय-प्रमाण; नाम-स्मृति	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-18]	अनन्या आ नन्दक भेंट	श्रम-सामुदायिक; नाम-स्मृति	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-17]	शीशाक मीनारक जाल	डिजिटल-जाल; नाम-स्मृति	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-16]	बटुकनाथक अंतिम मोड़	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-15]	चन्द्रपालक खाता	डिजिटल-जाल; नाम-स्मृति	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-14]	पुलक निर्माण	श्रम-सामुदायिक; जल-पर्यावरण	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-13]	गोप कुमारक संकलन	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-12]	चन्ना गाछीक कँपकँपी	जल-पर्यावरण; लोक-संस्कृति	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-11]	बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-10]	पुलपर पहिल छपाक	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-9]	जाँचक आरम्भ	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-8]	प्रमाणक बाहर आएब	न्याय-प्रमाण; लोक-संस्कृति	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-7]	आधा-भूतक अनुभव	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
[-6]	गोप कुमारक अन्तिम पन्ना	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-5]	जालक उजागर होएब	डिजिटल-जाल; न्याय-प्रमाण	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-4]	नामक अन्तिम सूची	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-3]	बारह सय बरखक पूर्णता	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-2]	अगिला पीढ़ीक वचन	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
[-1]	अन्तिम साक्षी	न्याय-प्रमाण; श्रम-सामुदायिक	मुख्य कथाक निकट पूर्वसंधि
0	गढ़ नारिकेल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना	लोक-संस्कृति; जल-पर्यावरण	लोक-सांस्कृतिक प्रस्तावना
1	चन्ना गाछीक कबड्डी	जल-पर्यावरण; लोक-संस्कृति	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
2	दहिन कातक गाम	जल-पर्यावरण; लोक-संस्कृति	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
3	छपाकक हिसाब	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
4	तीस नाम, तीन सय लाश	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
5	तारीखक गोहि	न्याय-प्रमाण; जल-पर्यावरण	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
6	हार्वर्डक एथिक्स	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
7	श्वासक भाव	लोक-संस्कृति; डिजिटल-जाल	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
8	स्क्रीनक गोहि	डिजिटल-जाल; नाम-स्मृति	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
9	देहक बाजार	देह-नैतिकता; नाम-स्मृति	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
10	निजताक ब्लैकमेल	देह-नैतिकता; नाम-स्मृति	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
11	धनक कारी नदी	लोक-संस्कृति; जल-पर्यावरण	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
12	डार्क-जालपर नारिकेल पात	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
13	सीलबन्द आवरण	नाम-स्मृति; न्याय-प्रमाण	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
14	घर घुरबाक रस्ता	जल-पर्यावरण; लोक-संस्कृति	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
15	नामक जल	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
16	चन्ना गाछीक अदालत	लोक-संस्कृति; जल-पर्यावरण	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
17	जीतक शोक	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
18	खाली अदालत	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
19	नामक अभिलेख	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
20	स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला	लोक-संस्कृति; देह-नैतिकता	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
21	निजताक शपथ	देह-नैतिकता; लोक-संस्कृति	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
22	हार्वर्डक दोसर भाषण	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
23	बटुकनाथक खोज	लोक-संस्कृति; श्रम-सामुदायिक	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
24	उपन्यास फेर शुरू	लोक-संस्कृति; श्रम-सामुदायिक	जल-त्रासदी, नाम, अदालत आ स्क्रीन-संकट
25	मोन टांगल	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
26	बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
27	चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन	डिजिटल-जाल; लोक-संस्कृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
28	राघव सिग्नलक चुप्पी	डिजिटल-जाल; नाम-स्मृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
29	लाउ किन-हंगक सपना	लोक-संस्कृति; डिजिटल-जाल	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
30	धूर्त सभक भीतरक अदालत	लोक-संस्कृति; न्याय-प्रमाण	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
31	हारल लोक सभक काज	लोक-संस्कृति; श्रम-सामुदायिक	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
32	तेसर कबड्डी	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
33	मोनक परीक्षा	लोक-संस्कृति; देह-नैतिकता	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
34	सुनैत नदी	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
35	नामक देहरी	देह-नैतिकता; नाम-स्मृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
36	घर, भय, सपना	देह-नैतिकता; लोक-संस्कृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
37	तीन कंकड़	लोक-संस्कृति; देह-नैतिकता	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
38	नामक उच्चारण	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
39	बीजक शान्ति	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
40	ओसक अक्षर	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
41	नामक नाव	लोक-संस्कृति; जल-पर्यावरण	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
42	भारक वृत्त	लोक-संस्कृति; श्रम-सामुदायिक	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
43	चलैत भार	लोक-संस्कृति; श्रम-सामुदायिक	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
44	पोतीक कापी	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
45	भीतरक हवा	देह-नैतिकता; नाम-स्मृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
46	उत्तराधिकारक अन्हार	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
47	गज-ग्राह आख्यान	जल-पर्यावरण; लोक-संस्कृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
48	पुकार	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
49	मौनक अभिलेख	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
50	देहक बादक नाम	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
51	साक्षीक भार	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
52	अगिला आवाज	लोक-संस्कृति; जल-पर्यावरण	पात्र-गतिशीलता, अपराध-जाल आ स्मृति
53	कटानक बादक बिहान	लोक-संस्कृति; जल-पर्यावरण	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
54	ठूँठक चारू कात	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
55	नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
56	स्मृतिक पहिल नक्शा	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
57	गंगेशक प्रश्न	न्याय-प्रमाण; नाम-स्मृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
58	चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग	नाम-स्मृति; डिजिटल-जाल	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
59	राघव सिग्नलक नव कोड	डिजिटल-जाल; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
60	सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
61	पहिल नाम-उत्सव	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
62	ठूँठमे हरियर बिंदु	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
63	गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
64	स्मृति पर निविदा	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
65	ब्रूमक पुनरागमन	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
66	हार्वर्डक शोध-दल	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
67	मीरा आ दृष्टिक अधिकार	लोक-संस्कृति; देह-नैतिकता	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
68	देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
69	नामक चोरी	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
70	पनिडुब्बीक गवाही	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
71	नकली भूतक जुलूस	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
72	चन्ना गाछीक हँसी	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
73	बटुकनाथक स्वप्न-दरबार	न्याय-प्रमाण; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
74	चन्द्रपालक पहिल स्वीकार	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
75	राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क	डिजिटल-जाल; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
76	लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
77	हवाई अड्डापर गोहि	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
78	सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
79	ब्रूमक दान-पत्र	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
80	हरिहरनक संतान	न्याय-प्रमाण; देह-नैतिकता	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
81	बत्राक अधूरा नाम	नाम-स्मृति; देह-नैतिकता	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
82	अंदरक गज-ग्राह	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
83	नारिकेल पात पाठशाला	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
84	पहिल पाठ: उपस्थित	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
85	स्त्री सभक राति-सभा	श्रम-सामुदायिक; देह-नैतिकता	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
86	मजदूरक पाँव	श्रम-सामुदायिक; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
87	स्क्रीनक उपवास	लोक-संस्कृति; डिजिटल-जाल	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
88	ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ	श्रम-सामुदायिक; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
89	सत्यव्रतक जन-सुनवाई	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
90	नामक संविधान	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
91	धूर्त सभक अनुपस्थिति	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
92	ठूँठक छाँह	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
93	पुनः बाढ़ि	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
94	गोहि सभक वापसी	जल-पर्यावरण; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
95	लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
96	बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा	नाम-स्मृति; देह-नैतिकता	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
97	चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट	डिजिटल-जाल; नाम-स्मृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
98	राघवक अंतिम संदेश	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
99	सत्यव्रत मेहताक गवाही	नाम-स्मृति; न्याय-प्रमाण	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
100	गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	पुनर्निर्माण, विरासत, शिक्षा आ सार्वजनिक न्याय
101	अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण	नाम-स्मृति; देह-नैतिकता	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
102	स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी	नाम-स्मृति; देह-नैतिकता	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
103	स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
104	जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि	देह-नैतिकता; नाम-स्मृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
105	पृथ्वीक पहिल पहरा	लोक-संस्कृति; जल-पर्यावरण	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
106	बीजक गवाही	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
107	बीजक चोरी	जल-पर्यावरण; लोक-संस्कृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
108	माटिक मुँह	जल-पर्यावरण; श्रम-सामुदायिक	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
109	जलक स्मृति	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
110	आगिक साक्षी	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
111	वायुक प्रश्न	देह-नैतिकता; लोक-संस्कृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
112	आकाशक रिक्ति	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
113	शब्दक देह	देह-नैतिकता; नाम-स्मृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
114	अर्थक आत्मा	देह-नैतिकता; लोक-संस्कृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
115	कण्ठक पहरा	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
116	मौनक उत्तराधिकार	देह-नैतिकता; लोक-संस्कृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
117	स्मृतिक ऋण	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
118	देहक अधिकार	देह-नैतिकता; श्रम-सामुदायिक	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
119	श्रमक देह	श्रम-सामुदायिक; देह-नैतिकता	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
120	न्यायक देह	न्याय-प्रमाण; देह-नैतिकता	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
121	जातिक पिंजरा	देह-नैतिकता; न्याय-प्रमाण	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
122	गंगेशक मुक्ति	न्याय-प्रमाण; श्रम-सामुदायिक	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
123	तत्त्वचिन्तामणिक पात	लोक-संस्कृति; न्याय-प्रमाण	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
124	प्रमाणक अग्नि	न्याय-प्रमाण; लोक-संस्कृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
125	निर्णयक धान	न्याय-प्रमाण; नाम-स्मृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
126	अन्नक न्याय	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
127	भूखक नाम	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
128	प्यासक नाम	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
129	नूनक शपथ	नाम-स्मृति; श्रम-सामुदायिक	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
130	स्वादक न्याय	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
131	साझा थारी	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
132	रसोइक गणराज्य	श्रम-सामुदायिक; लोक-संस्कृति	स्वप्न, पंचतत्त्व, भाषा-अर्थ, श्रम आ अन्न-न्याय
133	विदेह नाटच उत्सवक बुलाहट	लोक-संस्कृति; देह-नैतिकता	नाटच-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
134	कबड्डी खेलनिहार सभक नाटच-पाठ	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	नाटच-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
135	विदेह नाट्य उत्सवक मंचन	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
136	तालीक बादक सन्नाटा	लोक-संस्कृति; श्रम-सामुदायिक	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
137	दर्शकक गवाही	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
138	मंचसँ बाहरक जुलूस	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
139	बाटक रंगमंच	लोक-संस्कृति; देह-नैतिकता	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
140	चल चौपाल	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
141	बरामदाक फैसला	न्याय-प्रमाण; लोक-संस्कृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
142	रेकर्ड-घरक अन्हार	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
143	रद्दी बोराक गवाही	नाम-स्मृति; न्याय-प्रमाण	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
144	नामक यात्रा	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
145	डरक पहिल दरार	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
146	मुहरक दाग	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
147	घर-घरक दस्तक	देह-नैतिकता; नाम-स्मृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
148	मिलावटक पहिचान	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
149	जालक नक्शा	नाम-स्मृति; डिजिटल-जाल	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
150	मुहरक छाया	नाम-स्मृति; न्याय-प्रमाण	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
151	मुहर चलौनिहार हाथ	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
152	आदेशक स्रोत	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
153	संकेतक पाछाँ नाम	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
154	बाबाक वचन	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
155	सेवाक खाता	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
156	दानक ऋण	देह-नैतिकता; लोक-संस्कृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
157	लोहेक संदूक	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
158	सहमति-कापीक मिलान	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
159	मृतकक सहमति	नाम-स्मृति; देह-नैतिकता	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
160	गोदामक छाया	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	नाट्य-उत्सव, लोक-अदालत आ दस्तावेजी खोज
161	फोनक कैद	डिजिटल-जाल; नाम-स्मृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
162	आवाजक मोहर	लोक-संस्कृति; डिजिटल-जाल	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
163	हटायल कागजक निशान	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
164	चन्द्रपालक छायाक पेट	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
165	छायाक देह	लोक-संस्कृति; देह-नैतिकता	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
166	इमली घाटक कोठार	लोक-संस्कृति; जल-पर्यावरण	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
167	नदी पारक आवाज	जल-पर्यावरण; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
168	शहरक गला	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
169	चन्द्र दूक दरबज्जा	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
170	चन्द्र एकक खोल	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
171	चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत	लोक-संस्कृति; न्याय-प्रमाण	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
172	गाँठक पढ़नाइ	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
173	पंजीक पहरा	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
174	अदृश्य अदालतक चौखट	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
175	मुहरबाहकक नाम	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
176	सेवा-समारोहक अन्हार	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
177	घर-घरक कागज	नाम-स्मृति; न्याय-प्रमाण	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
178	ऊपरक कोठरी	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
179	मुहरक पगचिन्ह	नाम-स्मृति; देह-नैतिकता	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
180	शहरक खाता	डिजिटल-जाल; श्रम-सामुदायिक	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
181	सिमक छाया	डिजिटल-जाल; नाम-स्मृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
182	हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा	नाम-स्मृति; डिजिटल-जाल	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
183	फोनक भीतरक चेहरा	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
184	आवाजक नकाब	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
185	मास्टरक कमरा	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
186	मधवेशक असली नाम	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
187	छत्ताक भीतरक रानी	नाम-स्मृति;श्रम-सामुदायिक	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
188	महेश्वरक मुहर	लोक-संस्कृति; नाम-स्मृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
189	लोहेक पेटी	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
190	नील पंजी	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
191	ध्रुवेशक कुर्सी	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन

अध्याय	शीर्षक	पाठीय प्रमुखता	संरचनात्मक क्षेत्र
192	बन्द रेकॉर्डरक स्वर	नाम-स्मृति; देह-नैतिकता	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
193	आवाजक चेहरा	देह-नैतिकता; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
194	साँसक समन	देह-नैतिकता; नाम-स्मृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
195	रोकल खाता	नाम-स्मृति; डिजिटल-जाल	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
196	जलसमाधिक अर्थ	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
197	ऊपर उठल नाम	नाम-स्मृति; जल-पर्यावरण	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
198	अपराधीक धरती	जल-पर्यावरण; नाम-स्मृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
199	संदूकक भीतरक बिहान	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन
200	नामक पहरुआ	नाम-स्मृति; लोक-संस्कृति	मुहर-फोन-अभिलेख अपराध-जाल आ अन्तिम उद्घाटन

१६. ग्रन्थसूची

(केवल पोथीक नाम)

• गोहि सभक बीच जलसमाधि — सम्पूर्ण त्रयी
• नाट्यशास्त्र
• ध्वन्यालोक
• वक्रोक्तिजीवित
• काव्यप्रकाश
• साहित्यदर्पण
• न्यायसूत्र
• न्यायकुसुमाञ्जलि
• भामती
• तत्त्वचिन्तामणि
• मणिकणा : नव्य-न्याय मैनुअल
• गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — खण्ड २
• [The Dialogic Imagination]
• [Narrative Discourse: An Essay in Method]
• [Time and Narrative]
• [Mimesis: The Representation of Reality in Western Literature]
• [The Political Unconscious: Narrative as a Socially Symbolic Act]
• [The Theory of the Novel]

आलेख ३० · उपन्यास आ विस्तृत आख्यानक अध्ययन

गोहि सभक बीच जलसमाधि : किशोर संस्करण

सारांश

एहि अध्ययनमे प्राथमिक आधार पोथीक सम्पूर्ण उपलब्ध पाठ अछि। संरचनात्मक गणनामे अध्याय –१०० सँ –१ धरि १०० अध्याय, अध्याय ० एकटा संक्रमण-अध्याय, आ अध्याय १ सँ २०० धरि २०० अध्याय भेटैत अछि; कुल ३०१ अध्याय।

बीजशब्द

गोहि सभक बीच जलसमाधि : किशोर संस्करण · मैथिली उपन्यास · आख्यान-रचना · स्मृति · सामाजिक इतिहास

१.३२. गजेन्द्र ठाकुर- गोहि सभक बीच जलसमाधि (किशोर संस्करण)- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

स्मृति, न्याय, प्रमाण, लोक-इतिहास आ डिजिटल आधुनिकताक बहु-पद्धतिगत गहन साहित्यिक अध्ययन

मूल कृति: गजेन्द्र ठाकुर

भारतीय काव्यशास्त्र · पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त · नव्य न्याय · विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

सारांश

ई अध्ययन “गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण”क सम्पूर्ण उपलब्ध पाठकेँ एकक रूपमे पढ़ैत अछि। पुस्तकक अध्याय-क्रम –१०० सँ २०० धरि जाइत अछि; एहि कारण कुल ३०१ अध्याय बनैत अछि, जकर संग तीन परिशिष्ट अछि। अध्ययनक लक्ष्य केवल कथासार देब नहि, बल्कि कथा-विन्यास, प्रतीक-व्यवस्था, स्मृति-राजनीति, लोक-अभिलेख, जाति-श्रम प्रश्न, स्त्री-स्वर, किशोर-पाठकीय

सरलीकरण, डिजिटल अपराध, निजता, प्रमाण-विवेक आ न्याय-संकल्पनाकेँ परस्पर जोड़ि देखब अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्य; पाश्चात्य कथाशास्त्रक काल-विन्यास, बहुस्वरिता, स्मृति-आख्यान आ यथार्थ-रूपांकन; गंगेशीय नव्य न्यायक प्रमाण, संशय, व्याप्ति, अभाव, शब्दबोध आ उपाधि-जाँच; तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक बहुधारा, दीर्घकालिकता, लोक-केन्द्रिकता, हाशियाक स्वर आ डिजिटल अभिलेख-दृष्टि—ई चारू आधार पर पाठक बहुस्तरीय समीक्षा कएल गेल अछि। परिणामतः ई कृति किशोर आख्यान, लोक-इतिहास, दार्शनिक शिक्षोपाख्यान, सामाजिक न्याय-उपन्यास आ डिजिटल युगक नैतिक चेतावनी—ई सभ रूप एक संग धारण करैत देखाइत अछि। संगहि, भाषा आ संरचनाक किछु ठाम एहन पुनरुक्ति, शब्दरूप आ गणना-असंगति भेटैत अछि, जकर निखारसँ कृति आरो सघन भऽ सकैत अछि।

मुख्य शब्द: स्मृति, नाम, गोहि, जलसमाधि, गढ़ नारिकेल, चन्ना गाछी, प्रमाण, नव्य न्याय, लोक-अभिलेख, समानान्तर इतिहास, किशोर साहित्य, डिजिटल ठगी, निजता, न्याय।

१. अध्ययनक सीमा, पाठ-सामग्री आ शोध-पद्धति

एहि अध्ययनमे प्राथमिक आधार पोथीक सम्पूर्ण उपलब्ध पाठ अछि। संरचनात्मक गणनामे अध्याय –१०० सँ –१ धरि १०० अध्याय, अध्याय ० एकटा संक्रमण-अध्याय, आ अध्याय १ सँ २०० धरि २०० अध्याय भेटैत अछि; कुल ३०१ अध्याय। एकर बाद “गढ़ नारिकेलक सरल लोककोश”, “अनाम ग्रहक गीत” आ “न्याय बुझबाक सरल कथा” नामक तीन परिशिष्ट अछि। एहि कारण समीक्षा केवल मुख्य कथा पर नहि रुकैत, तीनू परिशिष्टक सौन्दर्यात्मक, शिक्षणात्मक आ दार्शनिक काज सेहो जाँचैत अछि।

पद्धति चारि परस्पर जुड़ल धरातल पर बनाओल गेल अछि। पहिल, निकट-पाठ: शीर्षक, आरम्भिक सूत्र-वाक्य, पात्र-क्रिया, प्रतीक, गीत आ पुनरावृत्त बिम्बक अन्तर्सम्बन्ध। दोसर, तुलनात्मक काव्यशास्त्रीय पाठ: भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य आ पाश्चात्य कथाशास्त्र, स्मृति-अध्ययन, बहुस्वरिता आ सामाजिक यथार्थ। तेसर, नव्य न्यायीय परीक्षण: प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द,

स्मृति, अभाव, संशय, व्याप्ति, उपाधि आ प्रमाण-साम्यक कथात्मक रूप। चारिम, विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति: अभिजात आ लोकधाराक समकालिकता, दीर्घकालिक ऐतिहासिक विस्तार, जाति-लिंग-श्रमक दबायल स्वर, मिथिला-केन्द्रिक ज्ञानपरम्परा, आ मुद्रित सँ अंकीय अभिलेख धरि निरन्तरताक परीक्षण।

एहि पद्धतिक एकटा आवश्यक सावधानी अछि: कृति स्वयं इतिहास-ग्रन्थ नहि, साहित्यिक आख्यान अछि। तेँ कथामे उपस्थित दीर्घकाल, ऐतिहासिक घटनाक संकेत, दार्शनिक नाम वा आधुनिक अपराध-संरचना केँ तथ्यात्मक इतिहासक प्रत्यक्ष प्रतिलिपि मानबाक बदला साहित्यिक समय, सांकेतिक इतिहास आ नैतिक रूपक रूपमे पढ़ल गेल अछि। जहाँ पाठ स्वयं किछु कहैत अछि, समीक्षा ओतय पाठ-साक्ष्य पर निर्भर अछि; जहाँ सिद्धान्त लागू कएल गेल अछि, ओ व्याख्यात्मक स्तर स्पष्ट राखल गेल अछि।

२. पाठ-संरचना: ३०१ अध्यायक दीर्घकालिक स्थापत्य

खंड	क्रम	संख्या	मुख्य काज
पूर्व-कथाकाल	अध्याय −१०० सँ −१	१००	मिथिला, लोक-स्मृति, तर्क, जाति, बाढ़ि, औपनिवेशिकता, स्वाधीनता, आधुनिकता आ डिजिटल युगक पूर्वपीठिका
संक्रमण	अध्याय ०	१	गढ़ नारिकेलक जीवित भूगोल; मुख्य कथा लेल लोक-प्रस्तावना
मुख्य कथाक्रम	अध्याय १ सँ २००	२००	नाम-स्मृति, न्याय, डिजिटल अपराध, पुनर्निर्माण, पृथ्वी-चयन, तत्त्व-क्रम, नाट्य, अभिलेख आ अपराध-जालक अनावरण
परिशिष्ट	परिशिष्ट १ सँ ३	३	लोककोश, गीत-चक्र, न्याय-शिक्षा

संरचनाक सभसँ मौलिक युक्ति ऋणात्मक अध्याय-संख्या अछि। अध्याय –१०० सँ कथा “आगू” नहि, “पाछाँ” चलैत अछि; मुदा ई पाछाँ चलब अन्ततः मुख्य कथाक नैतिक कारण-भूमि बनैत अछि। संख्या शून्य पर पहुँचैत-पहुँचैत पाठक इतिहासक तह सभ पार कऽ एहन वर्तमानमे आबैत अछि जतय पुरखाक कथा, सामाजिक घाव, अभिलेख, कानून, फोन, खाता, ठगी आ स्मृति एक-दोसरासँ जुड़ि जाइत अछि। ई गणितीय स्थापत्य समयकेँ सीधा रेखा नहि रहने दैत; काल एकटा पातक नस, नदीक शाखा वा जालक गाँठ बनि जाइत अछि।

अध्याय १०१ सँ १०४ धरि अनाम ग्रहक स्वप्न-अनुक्रम मुख्य यथार्थक बीच एकटा काल्पनिक उछाल अछि। फेर १०५ सँ पृथ्वी, बीज, माटि, जल, आगि, वायु, आकाश, शब्द, अर्थ, कण्ठ, मौन, स्मृति, देह, श्रम, न्याय, जाति, तत्त्व, प्रमाण, अन्न, भूख, प्यास, नून, स्वाद, साझा थारी आ रसोइ धरि क्रम बनैत अछि। ई भाग कथाकेँ दार्शनिक-सामाजिक सूत्रमाला बनबैत अछि। १३३ सँ १४० नाटच आ सार्वजनिक प्रदर्शन, १४१ सँ २०० अभिलेख, मुहर, सेवा-केंद्र, फोन, आवाज, संदूक, पंजी आ अपराध-जालक जाँच—एहि तरहेँ अन्तिम साठि अध्याय पुनः ठोस अनुसंधानात्मक यथार्थमे घुरैत अछि।

प्रारम्भिक प्रकाशकीय वाक्यमे “दू सय अध्याय” कहल गेल अछि, मुदा पूर्ण क्रमक वास्तविक गणना ३०१ अछि। एकर निखार लेल भविष्यक संस्करणमे “अध्याय –१०० सँ २०० आ तीन परिशिष्ट” अथवा “कुल ३०१ अध्याय आ तीन परिशिष्ट” लिखल गेलासँ पाठकीय भ्रम समाप्त भऽ जाएत।

३. केन्द्रीय प्रतिमानः नाम, स्मृति, गोहि, पात, जल आ कबड्डी

कृतिमे “नाम” सामान्य संज्ञा नहि, नैतिक अधिकारक मूल एकक अछि। देह नष्ट भऽ सकैत अछि, मुदा नामकेँ पुकारल, लिखल, सुनल, पातपर राखल, अभिलेखमे सुरक्षित कएल वा बच्चाक कण्ठमे दोहराओल जा सकैत अछि। एहि कारण नाम मृतक, पीड़ित, श्रमिक, स्त्री, जाति-बाह्य, ठगीक शिकार, अदालतमे प्रतीक्षारत लोक आ इतिहाससँ हेरायल मनुष्य सभकेँ पुनः सामाजिक उपस्थिती दैत अछि। नामक ई राजनीति कृतिमे शोकक अनुष्ठान नहि मात्र; नागरिकता, गवाही आ न्यायो अछि।

“गोहि”क प्रतीक बहुरूपी अछि। प्रारम्भमे ओ वास्तविक जलचरक भय सँ जुड़ैत अछि, मुदा धीरे-धीरे समय, लालच, जाति, सत्ता, मुकदमा, बाजार, स्क्रीन, फोन, ठगी, सुविधा, मौन आ स्मृतिहीनता तक फैलि जाइत अछि। एहि रूपान्तरणसँ शीर्षकक “गोहि सभ” बहुवचनक अर्थ खुलैत अछि: हिंसा केवल बाहरक दाँतवला जीव नहि; संस्थागत विलम्ब, आर्थिक जाल, सहमतिक शोषण आ सुविधाजन्य चुप्पी सेहो गोहि बनि सकैत अछि।

“पात” जीवित अभिलेख अछि। कागच राज्यक, अदालतक वा कंपनीक हो सकैत अछि; पात गामक साझा स्मृति अछि। मुदा कृति कागचकेँ पूर्णतः अस्वीकार नहि करैत—अन्तिम भागमे कागच, रेकॉर्ड, खाता, मुहर आ लिखित प्रमाण अपराध खोलबाक साधन बनैत अछि। एहि द्वन्द्वक सौन्दर्य ई अछि जे लोक-स्मृति आ संस्थागत प्रमाण प्रतिस्पर्धी नहि रहि, परस्पर जाँचक माध्यम बनैत अछि।

“जल” जन्म, बाढ़ि, मृत्यु, विस्मृति, गवाही आ पुनरुत्थान सभक माध्यम अछि। जलसमाधि शीर्षकात्मक रूपमे मृत्युकेँ स्मृतिक भीतर रूपान्तरित करैत अछि। “कबड्डी” शरीर, साँस, सीमा, छुअन, वापसी, उपस्थिती आ सामूहिक अनुशासनक रूपक अछि। खेलक नियम—एक साँसमे जाएब, छूबि घुरब, समूहक संग रहब—कथाक नैतिक व्याकरण बनि जाइत अछि: पीड़ितक नाम छूबू, कब्जा नहि करू; स्मृतिमे जाउ, मुदा वर्तमानमे घुरू; अकेले नहि, समुदायसँ न्याय करू।

४. पाठ-संकेतक परिमाणात्मक निरीक्षण

शब्द-आवृत्तिक ई गणना साहित्यिक अर्थक विकल्प नहि; ई केवल संकेत दैत अछि जे कोन बिम्ब आ संकल्पना पाठक भीतर बेर-बेर घुरि अबैत अछि। गणना खण्ड-० सँ पोथीक अन्तिम बात धरि अक्षर-रूपक प्रत्यक्ष आवृत्ति पर आधारित अछि; समास, पर्याय वा रूपान्तर सभ अलग सँ नहि जोड़ल गेल अछि।

शब्द-संकेत	आवृत्ति	शब्द-संकेत	आवृत्ति
नाम	1436	गाछ	516

गाम	478	पात	367
पानि	302	गीत	290
सत्य	288	जल	272
फोन	245	स्मृति	209
प्रमाण	204	न्याय	192
अदालत	144	अपराध	142
गोहि	133	कबड्डी	132
स्त्री	103	अधिकार	100
मौन	96	श्रम	72
जाति	65	बाढ़ि	63

“नाम”क अत्यधिक आवृत्ति कृतिमे ओकर केन्द्रीयता पुष्ट करैत अछि। “गाछ”, “गाम”, “पात”, “पानि”, “गीत” आ “सत्य”क घनत्व बतबैत अछि जे आधुनिक डिजिटल अपराधक कथा प्रकृति, लोक-संगीत आ सामुदायिक स्मृतिसँ विच्छिन्न नहि अछि। “फोन”, “प्रमाण”, “न्याय”, “अदालत” आ “अपराध”क उपस्थिती दोसर धुरी बनबैत अछि। एहि दुनू धुरी—लोक-स्मृति आ आधुनिक प्रमाण—क बीच तनाव कृतिको विशिष्ट स्वरूप दैत अछि।

५. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

५.१ रस: करुणसँ वीर, शान्त आ अद्भुत धरि

कृतिमे करुण रस मूल भावभूमि अछि—बाढ़ि, मृत्यु, डाइनक आरोप, जातिगत तिरस्कार, श्रमिकक क्षति, स्त्रीक अन्याय, ठगी, निजताक उल्लंघन, अभिलेखसँ नाम मेटाएब आ जलसमाधि सभ करुणाकेँ जन्म दैत अछि। मुदा कृति करुणामे स्थिर नहि रहैत। करुणा सँ वीर भाव उत्पन्न होइत अछि: टोला मशालक विरुद्ध ठाढ़ होइत अछि, स्त्री सभ राति-सभा बनबैत छथि, बच्चा नाम पढ़ैत छथि, श्रमिक गवाही दैत छथि, आ पीड़ितक नाम सामूहिक उच्चारणमे फेर उपस्थित होइत अछि। एतय वीरता युद्धक शौर्य नहि, प्रमाण

सम्हारब, सच बजब, डरक बादो उपस्थित रहब आ कमजोरक संग ठाढ़ होएब अछि।

शान्त रसक प्रवाह बूढ़बाक मौन, गाछक छाँह, पातक गिरब, ओस, बीज, स्मृति आ क्षमाक प्रसंगमे अछि। अद्भुत रस स्वप्न-दरबार, अनाम ग्रह, गाछक आवाज, जल-घड़ी, मृतकक स्मृति आ पात-अदालतक दृश्य सभमे प्रकट होइत अछि। किशोर संस्करणक हेतु अद्भुतक प्रयोग महत्त्वपूर्ण अछि, कारण दार्शनिक विचार सीधे उपदेश बनबाक बदला दृश्य, खेल, गीत आ कल्पना रूपमे प्रवेश करैत अछि।

५.२ ध्वनि: “नाम”क वाच्यार्थसँ अधिकारक व्यङ्ग्यार्थ

ध्वनि-दृष्टिसँ “नाम”क वाच्यार्थ व्यक्ति-परिचय अछि, मुदा व्यङ्ग्यार्थ अस्तित्व, स्मृति, सामाजिक मान्यता, कानूनी उपस्थिती, शोक, नागरिक अधिकार आ इतिहासमे जगह धरि फैलैत अछि। “पात” साधारण पात नहि रहि लोक-अभिलेख, “छपाक” साधारण जल-ध्वनि नहि रहि मृत्यु आ दबायल नामक संकेत, “ठूँठ” मृत वृक्ष नहि रहि कटायल इतिहासक बाँचल प्रमाण, “स्क्रीन” उपकरण नहि रहि दूरी, निगरानी, प्रलोभन आ धोखाक सतह बनैत अछि। एहि व्यञ्जना-क्षमता कृतिमे पुनरावृत्त प्रतीकक महत्त्व सिद्ध करैत अछि।

५.३ वक्रोक्ति आ रूपक-व्यवस्था

कथाक भाषा बेर-बेर निर्जीव वस्तुकेँ जीवित नैतिक पात्र बनबैत अछि: पात गवाही दैत अछि, नदी सुनैत अछि, बरामदा फैसला सुनबैत अछि, खाता जड़ि गाममे गाड़ैत अछि, राख साक्षी बनैत अछि, हवा प्रश्न करैत अछि। ई वक्रता सजावट नहि; जटिल नैतिक सम्बन्धकेँ किशोर पाठक लेल मूर्त बनबैत अछि। “गोहि”क रूपक सर्वाधिक सफल वक्रोक्ति अछि, कारण एके प्रतीक प्राकृतिक भय, सत्ता, लालच, बाजार, तकनीक, कानूनी विलम्ब आ भीतरक नैतिक पतन सभकेँ अलग-अलग प्रसंगमे ग्रहण करैत अछि।

५.४ औचित्य: किशोर संस्करणक भाषिक आ नैतिक मितव्यय

कठिन अपराध, देह-व्यापार, ठगी, ब्लैकमेल, मृत्यु आ सामाजिक हिंसाकेँ किशोर पाठक लेल शालीन भाषामे देबाक प्रयत्न औचित्य-दृष्टिसँ उल्लेखनीय अछि। कृति प्रायः क्रूरताक दृश्य-विस्तारसँ बचैत अछि आ परिणाम, पीड़ा, अधिकार, प्रमाण आ पुनर्निर्माण पर जोर दैत अछि। तथापि किछु अध्यायमे सूत्र-वाक्य आ निष्कर्ष अत्यधिक स्पष्ट भऽ जाइत अछि, जाहिसँ व्यञ्जना घटि शिक्षोपदेश बढ़ैत अछि। किशोर साहित्य लेल स्पष्टता आवश्यक अछि, मुदा सभ ठाम निष्कर्ष पहिले सँ कहि देलासँ पाठकक स्वनिर्णयक अवसर कम भऽ सकैत अछि।

६. पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आधारपर समीक्षा

६.१ कथाकाल, क्रम आ स्मृति

पाश्चात्य कथाशास्त्रक काल-क्रम दृष्टिसँ कृति असामान्य संरचना अपनबैत अछि। ऋणात्मक अध्याय पाठककेँ कारणक दिशामे पछुआयल यात्रा करबैत अछि; अध्याय ० एकटा दहलीज बनैत अछि; १ सँ २०० परिणाम, पुनरावृत्ति आ नव जाँचक विस्तार दैत अछि। ई व्यवस्था “पहिले इतिहास, तखन वर्तमान” जेकाँ सरल नहि, कारण पुरनका बिम्ब वर्तमानमे फेर प्रकट होइत अछि। शंख-रजत भ्रम, गज-ग्राह, पात, कबड्डी, जल, मौन, नाम—ई सभ कालक अलग खण्डकेँ एक-दोसरासँ बाँधैत अछि। परिणामतः समय घड़ीक नहि, स्मृतिक समय बनैत अछि।

६.२ बहुस्वरिता

कृतिमे बूढ़बा, बा, बच्चा, स्त्री-सभा, मजदूर, वकील, शोध-दल, अपराध-जालक लोक, विदेशक पात्र, शिक्षक, लोकगायक, मृतकक नाम आ प्रकृतिक वस्तु—सभक अलग स्वर अछि। ई बहुस्वरिता पूर्ण उपन्यासीय स्वतंत्रता धरि सदिखन नहि पहुँचैत, कारण अनेक स्वर अन्ततः “नाम बचाउ, प्रमाण जाँचू, कमजोरक संग ठाढ़ रहू” एहि साझा नैतिक केन्द्र दिस घुरि अबैत अछि। तैओ, कथाक सामाजिक विस्तार एकल नायकक प्रभुत्व तोड़ैत अछि; वास्तविक नायक “समुदाय द्वारा स्मृति-रक्षा” बनि जाइत अछि।

६.३ यथार्थ आ रूपकक सहअस्तित्व

जिला अदालत, बैंक, फोन, सिम, खाता, मुहर, सहमति-कापी, निविदा, सेवा-केंद्र, रेकॉर्डर, दस्तावेज जेकाँ वस्तु कठोर यथार्थक वस्तु-संसार रचैत अछि। एकरे संग गाछ बोलैत अछि, भूत कबड्डी खेलैत अछि, स्वप्न-दरबार खुलैत अछि, ग्रह आमन्त्रण दैत अछि। एहि मिश्रणकेँ यथार्थ बनाम कल्पना कहि विभाजित करब उचित नहि; कल्पना ओतय नैतिक सत्यकेँ दृश्य बनबैत अछि, जखन दस्तावेज तथ्य-सत्यक जाँच करैत अछि। कृति एहि कारण सामाजिक यथार्थ आ रूपकीय आख्यानक संकर रूप प्रस्तुत करैत अछि।

६.४ स्मृति-आख्यान आ अभिलेख

आधुनिक स्मृति-अध्ययनक दृष्टिसँ कृति निजी यादकेँ पर्याप्त नहि मानैत। याद बदलि सकैत अछि; तेँ नाम, पात, गीत, दस्तावेज, तिथि, रेकॉर्ड, गवाही, खाता, मुहर आ सामूहिक उच्चारण आवश्यक अछि। स्मृति एतय संग्रहालयी वस्तु नहि, सार्वजनिक काज अछि। “ककर नाम बचल?” “ककर नाम पंजीसँ बाहर?” “ककर आवाज रेकॉर्ड भेल?” “ककर सहमति वास्तविक?”—ई प्रश्न स्मृतिक नैतिकता बनबैत अछि।

६.५ उत्तर-औपनिवेशिक आ उपेक्षित-स्वरक पाठ

कथामे चर्मकार टोला, जातिसँ बाहर धकेलल लोक, स्त्री, मजदूर, परदेशी, बाढ़ि-पीड़ित, डिजिटल ठगीक शिकार आ अभिलेखहीन मृतक सभ बारम्बार केन्द्रमे अबैत छथि। एतय “केन्द्र” कोनो राजधानी नहि, गढ़ नारिकेलक गाछी, टोल, आँगन, पोखरि, पाठशाला आ चौपाल अछि। ई स्थानिकता क्षेत्रीयता भरि नहि; सत्ता आ इतिहासक वैकल्पिक केन्द्र-निर्माण अछि।

७. नव्य न्यायीय समीक्षा: कथा रूपमे प्रमाण-विवेक

७.१ शंख-रजतसँ आरम्भ होइत ज्ञानमीमांसा

अध्याय –१०० “शंख आ रजत”क चमकैत वस्तुकेँ चानी बुझबाक भूल नव्य न्यायीय पाठ लेल आदर्श प्रवेश-द्वार अछि। प्रत्यक्ष पहिल दृष्टिमे भ्रम देलक; निकट जाँच संशय हटौलक; वस्तुक वास्तविक स्वरूप स्थापित भेल। कृति एहि मूल प्रतिमानकेँ अलग-अलग रूपमे दोहरबैत अछि—फोनक स्क्रीन, नकली भूत,

झूठ गवाही, गायब संदेश, नकली सहमति, मुहर, खाता आ आवाजक नकाब सभ “जेकाँ देखाइत अछि” आ “जे वास्तवमे अछि”क दूरी रचैत अछि।

७.२ प्रमाणक बहुलता

कथामे एकटा प्रमाण पर्याप्त नहि मानल जाइत अछि। प्रत्यक्ष—देखल वस्तु; अनुमान—निशानसँ कारण; शब्द—विश्वसनीय गवाही; स्मृति—पुरान अनुभूति; अभाव—जे नहि अछि ओकर अर्थ; तुलना—पुरानसँ नव वस्तु बुझब; दस्तावेज—तिथि, खाता, मुहर, रेकॉर्ड; सामूहिक सत्यापन—लोकक सम्मुख नाम पढ़ब। ई बहु-प्रमाण पद्धति नव्य न्यायीय सावधानीक कथात्मक समरूप अछि: निष्कर्षक पहिने प्रमाणक स्वरूप, स्रोत, सीमा आ दोष जाँचू।

७.३ व्याप्ति, उपाधि आ डिजिटल ठगी

धुआँ देखि आगिक अनुमान तखनहि उचित जखन धुआँ-आगिक सम्बन्ध अव्यभिचारी रूपेँ बुझल हो। डिजिटल अपराधक कथा एहि नियमकेँ आधुनिक रूप दैत अछि। केवल खातामे पाइ आएब अपराध सिद्ध नहि; केवल फोनक सम्पर्क दोष सिद्ध नहि; केवल मुहर असली सहमति सिद्ध नहि। कारणक बीच छिपल शर्त, मध्यस्थ, नकली पहचान, दोसरक नामपर चलाओल खाता, गायब संदेश आ सेवा-केंद्रक परत जाँचब पड़ैत अछि। ई “उपाधि-जाँच”क सामाजिक संस्करण अछि—दिखाइत सम्बन्धक बीच कोनो छिपल शर्त अछि कि नहि?

७.४ अभाव सेहो सूचना

कृतिमे अनुपस्थिति बेर-बेर गवाही बनैत अछि: सूचीमे नाम नहि, कुर्सी खाली, रेकॉर्ड हटायल, खाता रोकल, कागच गायब, मृतकक सहमति असम्भव, फोनक संदेश मेटायल। नव्य न्यायमे अभावक ज्ञान केवल “किछु नहि” नहि, विशेष परिस्थितिमे सकारात्मक ज्ञानक साधन बनि सकैत अछि। कथा एकर नैतिक विस्तार करैत अछि: जँ जकर नाम होएबाक चाही छल, ओ नहि अछि, तँ ई खाली जगह स्वयं प्रश्न बनैत अछि।

७.५ शब्दबोध, नाम आ साक्षी

“नाम”क उच्चारणक महत्त्व शब्द-प्रमाणक सामाजिक आयाम खोलैत अछि। मुदा सभ शब्द विश्वसनीय नहि। कृति पूछैत अछि—बजनिहार के? ओकरा

ज्ञान अछि? ओकर स्वार्थ की? ओकर कथन आन प्रमाणसँ मेल खाइत अछि? एहि कारण गवाही, अफवाह आ आदेशक भेद उभरैत अछि। किशोर पाठक लेल ई महत्त्वपूर्ण ज्ञान-नीति अछि: सुनल बातकेँ केवल आवाजक जोर पर नहि, स्रोत आ प्रमाण पर परखू।

७.६ परिशिष्ट ३क नव्य न्यायीय काज आ सीमा

“न्याय बुझबाक सरल कथा” परिशिष्ट ३ अध्याय ५७ सँ २०० धरि १४४ अध्याय-संबद्ध लघु प्रविष्टि दैत अछि। एकर शिक्षणात्मक उद्देश्य स्पष्ट अछि: कठिन न्याय-परम्पराक उदाहरणकेँ सीप-चानी, धुआँ-आगि, गवाही, तुलना, स्मृति, अभाव आ कारण-जाँच जेकाँ सहज प्रसंगसँ जोड़ब। मुदा पाठीय गणनामे किछु व्याख्यात्मक अनुच्छेद अत्यधिक पुनरावृत्त भेटैत अछि—विश्वसनीय गवाही पर एके अनुच्छेद 65 बेर, धुआँ-आगि अनुमानवला अनुच्छेद १७ बेर, सीप-चानी प्रत्यक्ष-भ्रमवला १६ बेर, आ अभाव-जाँचवला १४ बेर। किशोर शिक्षामे पुनरावृत्ति स्मृति मजबूत कऽ सकैत अछि, मुदा आलोचनात्मक दृष्टिसँ प्रत्येक अध्यायक विशिष्ट कथात्मक प्रसंगसँ न्याय-संकल्पना अलग ढंगसँ जोड़ल जाए तँ परिशिष्ट आरो जीवित आ कम सूत्रबद्ध भऽ सकैत अछि।

८. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधारपर समीक्षा

८.१ बहुधारा-समकालिकता

एहि पद्धतिमे साहित्यक इतिहास केवल दरबार, मान्य संस्थान वा अभिजात लेखकक सीधा क्रम नहि; लोकगीत, जाति-अनुभव, स्त्रीक स्मृति, श्रम, पंजीसँ बाहर नाम, मौखिक ज्ञान, दार्शनिक परम्परा, न्यायालय, बाजार आ अंकीय माध्यम सभ एके काल-क्षेत्रक अलग धारा मानल जाइत अछि। कृतिमे चर्मकार टोलाक मृदंग, पंजीकारक लेख, स्त्री-सभा, नारिकेल पात पाठशाला, गंगेशक प्रश्न, अदालत, छापाखाना, रेडियो, कम्प्यूटर, फोन आ डिजिटल जाल—ई सभ “उच्च” आ “निम्न” इतिहासक विभाजन भंग करैत अछि।

८.२ दीर्घकालिकता

ऋणात्मक शतक कृतिमे दीर्घकालिक ऐतिहासिक चेतना रचैत अछि। आक्रमण, महामारी, जमींदारी, स्वाधीनता, आपातकाल, उदारीकरण, सूचना-

अधिकार, काजक गारंटी, इंटरनेट आ स्क्रीन—ई संकेत सभ गढ़ नारिकेलक लोक-स्मृति भीतर प्रवेश करैत अछि। महत्वपूर्ण बात ई जे राष्ट्रीय घटना स्थानीय जीवनमे केना अनुभूत होइत अछि, कथा ओहि प्रश्न पर केन्द्रित अछि। इतिहास “ऊपर” सँ नहि, गामक माटि, श्रम, बाढ़ि, प्रवास, अदालतक तारीख, बिजलीक पहिल दीप, फोनक पहिल चमत्कार आ ठगीक पहिल आहटसँ पढ़ल जाइत अछि।

८.३ हाशियाक नामकेँ केन्द्र देब

पंजीक बाहरक लोक, चर्मकार टोला, गौरी पर डाइन आरोप, राति-सभाक स्त्री, मजदूरक पाँव, नामहीन मृतक, सहमति-विहीन गरीब, ठगीक शिकार लोक—कृति बारम्बार पूछैत अछि जे आधिकारिक इतिहास केकर नाम रखैत अछि आ केकरा छोड़ैत अछि। “नामक पहरुआ” अन्तिम अध्याय एहि इतिहास-दृष्टिक नैतिक संक्षेप बनैत अछि: इतिहास केवल घटना नहि, नामक संरक्षण अछि।

८.४ मिथिलाक दार्शनिक विरासत आ आधुनिकता

गंगेश, तत्त्वचिन्तामणि, शंख-रजत भ्रम, प्रमाण-विवेक आ लोक-न्यायकेँ फोन, बैंक, कोड, नेटवर्क, रेकॉर्ड, निजता आ डिजिटल अपराधसँ जोड़ब समानान्तर पद्धतिक मौलिक पक्ष अछि। एतय दर्शन संग्रहालयक विषय नहि; आधुनिक जीवनक सत्य-जाँचक औजार बनैत अछि। एहि संयोजनसँ मिथिलाक बौद्धिक परम्परा अतीत-गौरवक वस्तु बनबाक बदला वर्तमान नागरिक विवेकक साधन बनैत अछि।

८.५ भाषा, लोकज्ञान आ अंकीय अभिलेख

पोथी लोकगीत, कथन, मुहावरा, गामक वस्तु-संसार आ दार्शनिक शब्दक संग आधुनिक तकनीकी शब्द-संसार जोड़ैत अछि। विदेह पद्धतिक दृष्टिसँ ई संक्रमण महत्त्वपूर्ण अछि, कारण भाषा केवल अतीतक संरक्षण नहि; नव तकनीक, अपराध, निजता, बैंक, स्क्रीन आ अनुप्रयोगक अनुभव सेहो मैथिलीमे विचार योग्य बनेबाक काज करैत अछि। मुदा एहि नव शब्दावलीक मैथिली निखार निरन्तर आवश्यक अछि, जाहिसँ आधुनिक विषयक प्रवेश भाषा-स्वरूपकेँ अनावश्यक हिन्दीकरण वा अनूदित कृत्रिमताक दिशामे नहि धकेलय।

९. सामाजिक न्याय: जाति, श्रम, स्त्री, निजता आ सहमति

कृतिमे जाति प्रश्न उपदेशक परिशिष्ट नहि; आरम्भिक कथासूत्रमे चर्मकार टोला, मालती, गौरी, पंजीक बाहरक नाम, पाठशालामे प्रवेश आ अन्तरजातीय विवाहसँ ई प्रश्न कथा-देहमे प्रवेश करैत अछि। जातिक आलोचना “सभ समान” जेकाँ सामान्य वाक्य पर नहि रुकैत; अभिलेख, शिक्षा, विवाह, श्रमक प्रतिष्ठा आ सामाजिक उपस्थिती पर ओकर प्रभाव देखबैत अछि।

स्त्रीक भूमिका सेहो बहुस्तरीय अछि। गौरीक ज्ञान, सोनमा माझिनक नदी-अनुभव, मंदाकिनीक शिक्षा, स्त्री सभक राति-सभा, अनन्याक प्रश्न, देविकाक गीत आ प्रतिरोध, मीराक दृष्टि-अधिकार, ईराक पत्र—ई सभ स्त्रीकेँ पीड़िता मात्र नहि, ज्ञान-निर्माता, अभिलेख-रक्षक, नैतिक निर्णायक आ सार्वजनिक वक्ता बनबैत अछि।

निजता आ सहमति आधुनिक भागक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय अछि। “मञ्जूरी” केवल औंठाक छाप नहि; चयनक स्वतंत्रता, जानकारी, उपस्थिती आ दबाव-विहीन निर्णय चाहैत अछि। बीमारी, भूख वा निर्भरता बीच लेल गेल सहमति कतेक वास्तविक—कृति ई प्रश्न किशोर पाठक धरि पहुँचबैत अछि। ई डिजिटल नागरिकता, वित्तीय ठगी आ व्यक्तिगत जानकारीक युगमे विशेष प्रासंगिक नैतिक शिक्षा बनैत अछि।

१०. पर्यावरण, आपदा आ पृथ्वी-नैतिकता

बाढ़ि कृतिमे प्राकृतिक घटना भरि नहि; सामाजिक स्मृति बनबैत अछि। घर बहैत अछि, पोथी भीजैत अछि, नाम बचैत अछि, गाछ कटैत अछि, ठूँठ फेर हरियर बिन्दु देत अछि। जल, माटि, बीज, आगि, वायु आ आकाशक अध्याय प्रकृतिक तत्वकेँ मनुष्यक न्यायसँ जोड़ैत अछि। “पृथ्वी चुनब” स्वप्न-अनुक्रमक बाद पर्यावरणीय जिम्मेवारीक घोषणा अछि: घावविहीन काल्पनिक ग्रहक बदला घावसहित अपन पृथ्वी चुनब आ घावक कारण बदलबाक जिम्मेवारी लेब।

कृतिमे पर्यावरणीय न्याय आ सामाजिक न्याय अलग नहि। बाढ़ि गरीब पर बेसी भार दैत अछि; सूखा अन्नक प्रश्न बनैत अछि; नून शरीर, श्रम आ नोरसँ

जुड़ैत अछि; साझा थारी जाति-विभाजन पर प्रहार करैत अछि। एहि कारण प्रकृति केवल दृश्यपटल नहि, न्याय-विचारक सक्रिय अंग अछि।

११. किशोर संस्करण रूपमे उपलब्धि आ चुनौती

किशोर संस्करणक प्रमुख उपलब्धि जटिल विषयकेँ दृश्य, खेल, गीत, छोट सूत्र, परिचित वस्तु आ पुनरावृत्त प्रतीकसँ सरल करब अछि। शंख-रजतसँ भ्रम, धुआँ-आगिसँ अनुमान, कबड्डीसँ उपस्थिति, पातसँ अभिलेख, गाछसँ स्मृति, थारीसँ समानता, स्क्रीनसँ डिजिटल जोखिम—ई पद्धति अवधारणा केँ अनुभवमे बदलैत अछि। प्रत्येक अध्यायक आरम्भिक सूत्र-वाक्य आ अन्तक गीत स्मरण-सहायक ढाँचा देत अछि।

चुनौती ई जे अत्यधिक स्पष्ट नैतिक निष्कर्ष कथाक बहुअर्थता घटा सकैत अछि। किशोर पाठककेँ सरलता चाही, मुदा सरलता आ पूर्वनिर्धारित उत्तर समान वस्तु नहि। किछु ठाम प्रश्न खुला छोड़ल जाए, पात्रक मतभेद बेसी समय धरि टिकाओल जाए, आ पाठककेँ निष्कर्ष निकालबाक अवसर देल जाए तँ दार्शनिक प्रशिक्षण आरो मजबूत होएत।

१२. शुद्ध मैथिली निखार ऑडिट

भाषाक समग्र स्वर मैथिली अछि, आ मूल कथन, लोकगीत, ग्रामीण वस्तु-संसार आ दार्शनिक संवादमे मैथिली लय पर्याप्त सघन अछि। तथापि दीर्घ पुस्तकमे किछु हिन्दी-प्रभावित वा अपेक्षाकृत कम मैथिली रूप बेर-बेर आबैत अछि। नीचे देल गणना अक्षर-रूपक प्रत्यक्ष आवृत्ति अछि; समास वा रूपान्तर सहित गनती भेल अछि, तँ ई सम्पादन-सूचक संख्या छी, व्याकरणिक दोषक अन्तिम निर्णय नहि।

मूल रूप	आवृत्ति	निखार-रूप	सम्पादकीय टिप्पणी
अंगूठा	10	औंठा / बुढ़बा आंगुर	किशोर पाठमे सहज मैथिली रूप
गायब	17	बिलायल / हेरायल	प्रसंगानुसार “बिलायल” अधिक स्वाभाविक

दरबाजा	58	केवाड़ी / दुआर	वस्तु वा प्रवेश-सन्दर्भ अनुसार
बरामदा	37	ओसारा	गृह-स्थानक मैथिली रूप
पीतल	5	पित्तरि	स्थानीय रूप
कमरा	44	कोठली	आधुनिक कार्यालय-सन्दर्भमे “कक्ष” सेहो सम्भव
कोठरी	51	कोठली	स्थान-सन्दर्भ अनुसार
हरेक	4	सभ / प्रत्येक / सभटा	वाक्य अनुसार पुनर्लेखन

एकर अतिरिक्त “हर” रूपक बहुल प्रयोगकेँ प्रसंगानुसार “सभ”, “सभटा”, “प्रत्येक”, “जतेक” वा वाक्य-पुनर्गठनसँ निखारल जा सकैत अछि। आधुनिक तकनीकी शब्द—स्क्रीन, नेटवर्क, कोड, बैंक, अनुप्रयोग, रेकॉर्ड—देवनागरीमे आएल अछि; जहाँ स्वाभाविक मैथिली विकल्प सम्भव हो, ओ विकल्प देल जाए, मुदा तकनीकी अर्थ बिगाड़ि कऽ कृत्रिम प्रतिस्थापन नहि कएल जाए।

क्रियापदक स्तर पर “दैत” आ “देत”क भेद प्रसंगसँ जाँचल जाए: अभ्यस्त/चलित अथवा जारी क्रियाक हेतु “दैत”, भविष्यक हेतु “देत”। निर्जीव वा अमानवीय विषयक संग सम्मानसूचक बहुवचन “छथि” नहि, “अछि/छै/छी” प्रसंगानुसार राखब उचित। एहि पोथीमे अधिकांश “छथि” मानवीय पात्र लेल अछि, तथापि अन्तिम प्रूफमे स्वचालित खोजसँ सभ उदाहरण एक बेर फेर जाँचल जाए।

विराम-चिह्नमे किछु ठाम दोहरा पूर्णविराम, उद्धरणक बाद अतिरिक्त चिह्न, आ देवनागरी/लैटिन-प्रभावित चिह्नक मिश्रण जेकाँ सूक्ष्म बात देखल जा सकैत अछि। शोध-संस्करण लेल एकरूप उद्धरण, दीर्घ डैश, अर्धविराम आ अध्याय-शीर्षक शैली निर्धारित कऽ सम्पूर्ण पाठमे एक समान लागू करब उचित।

१३. संरचनात्मक आ सम्पादकीय निखार-बिन्दु

प्रकाशकीय “दू सय अध्याय” कथनकेँ वास्तविक क्रम —१०० सँ २०० अर्थात् कुल ३०१ अध्यायक अनुरूप स्पष्ट कएल जाए।

परिशिष्ट ३ अध्याय ५७ सँ २०० धरि १४४ प्रविष्टि दैत अछि; एकर चयन-तर्क आरम्भमे दू-तीन वाक्यमे स्पष्ट कएल जाए, ताकि ० सँ ५६क अनुपस्थिति पाठककेँ असंगति नहि बुझाए।

परिशिष्ट ३क पुनरावृत्त व्याख्यासभकेँ अध्यायविशेषक घटना, पात्र वा प्रमाणसँ जोड़ि अलग रूप देल जाए; शिक्षणात्मक पुनरावृत्ति राखल जाए, मुदा शब्दशः पुनरुक्ति घटाओल जाए।

अध्याय-आरम्भिक सूत्र अत्यन्त प्रभावी अछि; किछु ठाम सूत्र आ अन्तिम शिक्षा एक्के बात दोहरबैत अछि। बीचक कथा पर्याप्त स्पष्ट हो तँ अन्तिम नैतिक वाक्य घटाओल जा सकैत अछि।

दीर्घकालिक पूर्व-कथाकालमे ऐतिहासिक काल-परिवर्तनक स्थान पर सूक्ष्म तिथि-सूचक वा युग-सूचक चिह्न देल जाए तँ किशोर पाठक लेल समय-रेखा आरो साफ होएत।

डिजिटल अपराधक अंशमे तकनीकी शब्दक छोट शब्दावली परिशिष्ट १क संग जोड़ल जाए तँ आधुनिक शब्द आ लोकशब्दक संतुलन बनत।

भाषिक निखारक अन्तिम चरणमे केवाड़ी, ओसारा, कोठली, औंठा, पित्तरि, बिलायल जेकाँ स्थानीय रूपक एकरूपता जाँचल जाए।

१४. समेकित साहित्यिक मूल्यांकन

“गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण”क विशिष्टता ओकर परिमाण मात्र नहि, ओकर ज्ञान-विन्यास अछि। ई कथा गामक इतिहासकेँ दार्शनिक प्रश्नसँ, दार्शनिक प्रश्नकेँ सामाजिक न्यायसँ, सामाजिक न्यायकेँ डिजिटल नागरिकतासँ, आ डिजिटल नागरिकताकेँ फेर लोक-स्मृति आ बच्चाक खेलसँ जोड़ैत अछि। एतय मिथिला केवल भूगोल नहि; सत्य जाँचबाक एकटा सांस्कृतिक प्रयोगशाला बनैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ कृति प्रतीक-ध्वनि, करुण-वीर संक्रमण, अद्भुत आ शान्त भाव, तथा वक्र रूपकक बल पर टिकैत अछि। पाश्चात्य कथाशास्त्रक दृष्टिसँ ऋणात्मक कालक्रम, बहुस्वरिता, स्मृति-आख्यान, अभिलेख आ सामाजिक यथार्थक मिश्रण महत्त्वपूर्ण अछि। नव्य न्यायीय दृष्टिसँ ई पोथी किशोर पाठक लेल प्रमाण-विवेकक एकटा विस्तृत अभ्यास-पुस्तक बनि जाइत अछि। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ ई अभिजात

दर्शन आ लोकजीवन, पंजी आ पात, न्यायालय आ राति-सभा, छापाखाना आ फोन, अतीत आ अंकीय वर्तमानकेँ एके ऐतिहासिक क्षितिज पर रखैत अछि।

कृतिक सभसँ शक्तिशाली नैतिक प्रस्ताव ई अछि जे स्मृति निष्क्रिय श्रद्धांजलि नहि, न्यायपूर्वक नाम लेबाक क्रिया अछि। नाम उच्चारण, प्रमाण सम्हारब, अनुपस्थिति देखब, दबायल स्वर सुनब, सहमति जाँचब, कमजोरक संग ठाढ़ रहब—ई सभ “नामक पहरुआ” होएबाक अलग-अलग रूप अछि। एहि कारण अन्तिम अध्याय केवल कथाक समापन नहि, सम्पूर्ण कृतिक ज्ञानमीमांसात्मक आ नैतिक निष्कर्ष बनैत अछि।

कृतिक सीमा सेहो एहि महत्वाकांक्षासँ उत्पन्न होइत अछि। बहुत विषय, बहुत काल, बहुत प्रतीक आ बहुत नैतिक सूत्रक कारण किछु अध्याय स्वतन्त्र गहिराइ पाबयसँ पहिने अगिला सूत्र दिस बढ़ि जाइत अछि। परिशिष्ट ३क पुनरावृत्ति ई प्रवृत्ति आरो स्पष्ट करैत अछि। तथापि सावधान सम्पादन, भाषिक निखार, पुनरुक्ति-नियन्त्रण आ किछु खुला अन्तक सहायतासँ ई किशोर संस्करण मैथिलीमे दार्शनिक-सामाजिक कथा-लेखनक विशिष्ट नमूना बनि सकैत अछि।

१५. रचना-वार पूर्ण पाठ-अभिलेख: ३०१ अध्याय

नीचा देल अभिलेखमे पोथीक एको अध्याय छोड़ल नहि गेल अछि। प्रत्येक प्रविष्टिमे अध्याय-संख्या, शीर्षक, मूल आरम्भिक सूत्र-वाक्य आ पाठक भीतर सर्वाधिक सक्रिय विषय-धुरी देल गेल अछि। विषय-धुरी शीर्षक, सूत्र आ अध्याय-पाठमे उपस्थित शब्द-संकेतक आधारपर बनाओल आलोचनात्मक सूचक अछि; ई अध्यायक एकमात्र अर्थ नहि।

१५.१ अध्याय –१०० सँ –७६: ज्ञान, स्मृति आ लोक-समाजक प्राचीन आधार

अध्याय –१०० — शंख आ रजत. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: चमकैत सभटा चानी नहि, आ नाम सभटा देह नहि— जे शंखकेँ रजत बुझै, से गामकेँ नक्शा बुझै।

अध्याय –९९ — आत्मसिद्धि-वाद. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·दर्शन-तर्क ·जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: जे ‘हम’ कहै छै, तकर गवाह ओकर अपने साँस— पोखरि अपन गहिराइ केकरो सँ नहि पुछै।

अध्याय –९८ — केऽ बनौलक ई जगत?. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·स्वप्न-कल्पना ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र:गाछ पुछलक—हमरा केऽ रोपलक?माटि हँसलि—जे रोपलक,से पुछबे नहि करै छै।

अध्याय –९७ — चिंतामणि रत्न. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र:मन थिर तँ ढेलो हीरा,मन डोलल तँ हीरो ढेला— रत्न बाहर नहि, चिन्हैबला आँखिमे छै।

अध्याय –९६ — स्मृति-रक्षा. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति ·जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र:देह माटिमे मिलै छै,नाम पातपर टिकै छै— जे गाम मन राखै,तकरा केओ मेटा नहि सकै।

अध्याय –९५ — जलमग्न पाण्डुलिपि. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र:बाढ़ि पोथी डुबा सकै छै,कण्ठ नहि— जे बोल हृदयमे लिखल,से पानिसँ नहि भीजै।

अध्याय –९४ — चारि मुखक मौन. मुख्य धुरी: दर्शन-तर्क ·जल-पर्यावरण ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र:चारू मुँह बाजल,तैयो एक बात नुकाएल रहल— हर उत्तरक पाछाँ एकटा मौन ठाढ़ छै।

अध्याय –९३ — शंखक अन्तिम प्रश्न. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·क्षमा-नैतिकता ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र:जकरा एक बेर चिन्हलहुँ,तकरो भोर फेर पुछै छै— मुदा उत्तर जकर थिर,से प्रश्नसँ नहि डरै।

अध्याय –९२ — जल-घड़ीक कैदी. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र:बूनि-बूनि पानि खसै,बूनि-बूनि समय— जे घड़ीक कैदी,से बोलक अन्त नहि जनै।

अध्याय –९१ — चर्मकार टोलाक उजास. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·जाति-श्रम-समानता ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र:जकर हाथ चाम सिअै,ओकरो नाम पातपर छै— टोलक दीप आ महलक दीप,तेल एक्के जरै।

अध्याय –९० — बुधुआक जलसमाधि. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र:गोहि देह लेलक,नाम छोड़ि देलक— जे जलमे समाधि लै,से पोखरिक तलमे नहि,गामक मनमे बसै।

अध्याय –८९ — पहिल राति,पहिल बाढ़ि. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·जल-पर्यावरण ·स्वप्न-कल्पना। पाठ-सूत्र:पहिल बाढ़ि घर लेलक,गाम नहि— जे राति बचल,से भोरक बीया बनल।

अध्याय –८८ — डाइनक आरोप. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: जकरा गाम 'डाइन' कहलक, ओकर नाम केओ नहि पुछलक— आरोप देह जरबै छै, सत्य पातपर रहि जाइ छै।

अध्याय –८७ — टोलाक द्वारपर. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार ·नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: द्वारपर मशाल आबि सकै, भीतर नाम नहि जरै— जे टोल जागल, तकर देबारि आगिसँ ऊँच।

अध्याय –८६ — समयक गोहि. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: समय सेहो एकटा गोहि छी—पीढ़ी-पीढ़ी निगलै छै— मुदा जे नाम गाम राखै, तकरा समयो नहि निगलै।

अध्याय –८५ — आमिलक आदेश. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून ·लोक-संस्कृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: साहेबक आदेश कागचपर, गामक न्याय पातपर— हुकुम मेटा सकै, फकरा नहि मेटाइ।

अध्याय –८४ — जंगलक मौन. मुख्य धुरी: दर्शन-तर्क ·स्त्री-स्वर-अधिकार · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: जंगल चुप रहै छै, तैयो सभ किछु सुनै छै— जे मौन बुझल, तकरा जंगलो बाजि उठै।

अध्याय –८३ — सोनमा माझिन. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·नाम-स्मृति ·क्षमा-नैतिकता। पाठ-सूत्र: जाल जकर हाथ, नदी तकर माए— माझिन माछ पकड़ै, मुदा नामकेँ छोड़ि दै।

अध्याय –८२ — पहिल कबड्डी. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति ·जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: एक साँसमे जाउ, एक साँसमे आउ, छूबि कऽ घुरू— कबड्डी सिखबै छै, पकड़ि नहि, उपस्थिति चाही।

अध्याय –८१ — आक्रमणक छाया. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·क्षमा-नैतिकता · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: छाया पैघ भेने डर पैघ नहि होइ— जे नाम थिर, से अपन छायासँ नहि डरै।

अध्याय –८० — गीतक पहिल पाँति. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति · दर्शन-तर्क। पाठ-सूत्र: गीतक पहिल पाँति एक कण्ठ उठबै, बाकी गाम उठा लै— लेखक एक नहि, गामे रचयिता छै।

अध्याय –७९ — क्षमाक पारी. मुख्य धुरी: क्षमा-नैतिकता ·लोक-संस्कृति · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: कबड्डीमे जकरा छुअल, तकरो घुरबाक पारी दै— क्षमा सेहो एक पारी छी, बदला नहि।

अध्याय –७८ — पंजीक बाहर. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·सत्ता-अभिलेख-कानून · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: पंजीमे जकर नाम नहि, से गामसँ बाहर नहि— कागच जकरा छोड़लक, तकरा माटि अपना लेलक।

अध्याय –७७ — बूढ़बाक मौन. मुख्य धुरी: दर्शन-तर्क ·लोक-संस्कृति ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: बूढ़बा जखन चुप, तखन सभसँ बेसी बाजै— मौन सेहो एकटा उत्तर छी।

अध्याय –७६ — नारिकेल पातक पहिल पाठ. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति ·जाति-श्रम-समानता। पाठ-सूत्र: पहिल पाठ पातपर—नाम केना लिखल जाइ— जे पात नाम राखै, से गाछ इतिहास राखै।

१५.२ अध्याय –७५ सँ –५१: तर्क, लोक-संस्था, उपनिवेश आ सामाजिक परिवर्तन

अध्याय –७५ — तर्कक पहिल विद्रोह. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण ·लोक-संस्कृति ·दर्शन-तर्क। पाठ-सूत्र: जे प्रश्न पुछलक, से गुरुकेँ हरा नहि, जगा देलक— तर्कक पहिल विद्रोह, ज्ञानक पहिल भोर।

अध्याय –७४ — गाछक रोग. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: एक पातक रोग सम्हारू, नहि तँ गाछ भरि फैलत— गामक रोगो एहिना, एक चुपसँ शुरू होइ।

अध्याय –७३ — मोहनक धुन. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति ·जाति-श्रम-समानता। पाठ-सूत्र: बाँसुरीक धुन हवामे मिलै, तैयो कान ओकरा राखै— जे धुन मन छुबै, से बिसरल नहि जाइ।

अध्याय –७२ — विवाहक साक्षी. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·न्याय-प्रमाण · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: बियाहमे आगि साक्षी, गाम साक्षी, नाम साक्षी— जकर बियाह गाम देखलक, तकर वचन पातपर।

अध्याय –७१ — महामारीक राति. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: महामारी देह लेलक, गीत नहि— जे राति सभ मिलि जागल, से भोर बचा लेलक।

अध्याय –७० — चन्ना गाछीक रोपाई. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: जे गाछ रोपल गेल, से एक दिनमे छाहरि नहि दै— सबर राखू, जड़ि पहिने पकड़त, पात पछाति।

अध्याय –६९ — गज-ग्राहक कथा. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · नाम-स्मृति · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: गज पानिमे, ग्राह पानिमे—लड़ाइ बरखों— मुदा जे नाम पुकारै, तकरे हाथ उद्धार अनै।

अध्याय –६८ — अदालतक पहिल तारीख. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून · लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: तारीखपर तारीख, मुदा न्याय पातपर— अदालत देह पुछै, गाम नाम राखै।

अध्याय –६७ — परदेशक पुकार. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · लोक-संस्कृति · जाति-श्रम-समानता। पाठ-सूत्र: परदेश धन दै, नाम लऽ जाइ— जे गाम मन राखै, से परदेशोमे नहि हेराइ।

अध्याय –६६ — स्त्री सभक राति-सभा. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार · नाम-स्मृति · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: जतय स्त्रीक स्वर जुटै, ओतय अन्हार पातर होइ — राति-सभा दीप बिनु सेहो अन्हार तोड़ै।

अध्याय –६५ — नकली भूतक जुलूस. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · लोक-संस्कृति · डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र: नकली भूत ओकरे डेराबै, जे अपन नाम बिसरल— जे नाम थिर, से भूतक जुलूसपर हँसै।

अध्याय –६४ — सुखदेवक बदला. मुख्य धुरी: क्षमा-नैतिकता · लोक-संस्कृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: बदला आगि छी—पहिने अपने हाथ जरबै— जे क्षमा चुनलक, से गाम बचा लेलक।

अध्याय –६३ — छापाखानाक पहिल पन्ना. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: पहिल छपल पन्ना—नाम आब मेटाएब कठिन — जे छपल, से गाम भरि पढ़त।

अध्याय –६२ — राहतक प्रतीक्षा. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · सत्ता-अभिलेख-कानून · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: राहतक बाट जोहैत आँखि थाकै, तैयो गाम ठाढ़— जे मिलि कऽ बाट जोहै, तकरा प्रतीक्षो हल्लुक।

अध्याय –६१ — आकाशक पुच्छलतारा. मुख्य धुरी: स्वप्न-कल्पना · लोक-संस्कृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: पुच्छलतारा आबै-जाइ, गाम अपना ठाम— जे ऊपर चमकल, से नीचाँक नाम नहि बदलै।

अध्याय –६० — अगिनक राति. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र:आगि घर लेलक, नाम नहि— जे राति जरल, तकर राखसँ नव चूल्हि जरल।

अध्याय –५९ — दोसर बाढ़ि. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र:दोसर बाढ़ि पुरान बाट चिन्है, तैयो नव घाव दै— जे गाम बाढ़ि झेलल, से पानिकेँ पढ़ब सिखलक।

अध्याय –५८ — तेसर बिपत्ति. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति · स्वप्न-कल्पना। पाठ-सूत्र:एक बिपत्ति सिखबै, तेसर बिपत्ति पकबै— जे तीन बेर खसल, से चारिम बेर सम्हरि ठाढ़ होइ।

अध्याय –५७ — साहेबक नोटबुक. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·न्याय-प्रमाण · सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र:साहेब जे लिखलक, से ओकर हिसाब— गाम जे मन राखलक, से गामक सत्य।

अध्याय –५६ — स्वाधीनताक पुकार. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति · स्वप्न-कल्पना। पाठ-सूत्र:जे पुकार गाम-गाम पहुँचल, से एक कण्ठक नहि— स्वाधीनता सेहो एकटा साझा गीत छी।

अध्याय –५५ — स्वतंत्रताक भोर. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र:भोर भेल, मुदा हर आँगनमे एक्के बेर नहि— जे नाम आजाद, तकर भोर सभसँ पहिने।

अध्याय –५४ — जमींदारीक अन्त. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·नाम-स्मृति · जाति-श्रम-समानता। पाठ-सूत्र:जमीनक मालिक बदलल, माटि नहि बदलल— जे माटि जोतै, तकरे नाम खेत जनै।

अध्याय –५३ — बिजलीक पहिल दीप. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र:बिजलीक दीप जरल, मुदा पुरान दीपक तेल नहि बिसरू— नव इजोत आबे, पुरान नाम नहि मेटाबे।

अध्याय –५२ — सीमाक पुकार. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·जल-पर्यावरण · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र:सीमापर तोप बाजल, गाममे सोहरो बाजल— जे गाम युद्धो झेलल, से नामकेँ नहि छोड़लक।

अध्याय –५१ — हरित क्रान्तिक बीया. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·जाति-श्रम-समानता ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र:नव बीया बेसी उपजा दै, मुदा पुरान बीया माटि चिन्है— जे बीया गाम बचबै, से भूख नहि, नाम रोपै।

१५.३ अध्याय –५० सँ –२६: आधुनिक राज्य, संचार आ डिजिटल संक्रमण

अध्याय –५० — आपातकालक अन्हार. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति · क्षमा-नैतिकता। पाठ-सूत्र: अन्हारक दौर थिर नहि रहै— मुदा जे दीप बुतल, तकरा फेर जरबैमे बेर लागै।

अध्याय –४९ — सूखाक बरख. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: सूखल बरख पोखरि सुखबै, नाम नहि— जे गाम मिलि इनार खुनलक, से पानि फेर पओलक।

अध्याय –४८ — रेडियो आ टेलीविजनक अवाज. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति ·डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र: यन्त्रक अवाज दूरसँ आबै, गामक गीत भीतरसँ— जे भीतरक स्वर सुनल, से बाहरक शोरमे नहि हेराइ।

अध्याय –४७ — खाड़ी देशक बजार. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति · डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र: परदेशक बजार धन दै, घरक चूल्हि नाम दै— जे कमा कऽ नाम बिसरल, से घुरि कऽ अजनबी।

अध्याय –४६ — सद्भावक परीक्षा. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·जल-पर्यावरण · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: जखन आगि लागल, तखन गाम एक भेल— सद्भाव पाबनिमे नहि, बिपत्तिमे परखल जाइ।

अध्याय –४५ — उदारीकरणक हवा. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·क्षमा-नैतिकता। पाठ-सूत्र: नव हवा दरबज्जा खोललक, मुदा जड़ि हिलल नहि— जे गाम जड़िसँ जुड़ल, से हवामे नहि उड़ै।

अध्याय –४४ — पहिल कम्प्यूटर. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति · सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र: नव यन्त्र गिनती सिखबै, नाम नहि गिनै— जे नाम गाम राखै, से यन्त्रक संख्यासँ पैघ।

अध्याय –४३ — सुखल होइत धार. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·नाम-स्मृति · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: धार पातर भेल, तैयो पुरान बाट चिन्है— जे धार सुखल, से बाढ़िकेँ नहि बिसरल।

अध्याय –४२ — हाथक फोनक चमत्कार. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·डिजिटल-ठगी-अपराध ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: हाथमे यन्त्र, दूर लग भेल— मुदा जे लग बैसल, तकरो नाम पुछब बिसरू नहि।

अध्याय —४१ — शहरक बजार. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति · डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र:शहर देह किनै, गाम नाम बेचै नहि— जे बजारमे नाम बेचलक, से घुरि कऽ खाली हाथ।

अध्याय —४० — सूचनाक अधिकार. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून ·नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र:जकरा जानबाक हक, से पुछि सकै— सूचना दीप छी, जे अन्हारमे नाम देखबै।

अध्याय —३९ — काजक गारंटी. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति ·जाति-श्रम-समानता। पाठ-सूत्र:जकरा काज भेटल, तकर हाथ ठाढ़ भेल— काज नाम दै, भीख नहि।

अध्याय —३८ — इंटरनेटक जाल. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र:नव जाल दूरकेँ लग आनै, मुदा नामकेँ नम्बर बनबै— जे जालमे फँसल, से अपन चेहरा हेरा दै।

अध्याय —३७ — स्क्रीनक पहिल छाया. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·डिजिटल-ठगी-अपराध ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र:पहिल परदापर चेहरा चमकल, पाछाँ नाम अन्हार— जे स्क्रीन देखलक, से आँखि गाम बिसरए नहि।

अध्याय —३६ — अनदेखल ठगक पहिल आहट. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · डिजिटल-ठगी-अपराध ·सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र:जे ठग देखाइ नहि दै, से सभसँ पैघ— आहट सुनू, नाम पुछू, कागचपर नहि, आँखिपर विश्वास राखू।

अध्याय —३५ — देहक बजार खुजैत अछि. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र:जतय देह बिकाइ, ओतय नाम सस्त— मुदा जे गाम नाम राखै, से देहकेँ बजार बनए नहि दै।

अध्याय —३४ — उज्ज्वलक स्वप्न. मुख्य धुरी: स्वप्न-कल्पना ·नाम-स्मृति · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र:स्वप्न पैघ, मुदा जड़ि माटिमे— जे स्वप्न नाम बिसरल, से जागि कऽ अकेल।

अध्याय —३३ — वकीलक कोटक छाया. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र:कोटक छायामे न्याय नुकाइ, गाममे न्याय बाजै— वकील धारा पढ़ै, गाम नाम पढ़ै।

अध्याय –३२ — समुद्रपारक साये. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·डिजिटल-ठगी-अपराध ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: सात समुद्र पारसँ साया आबि सकै, नाम लऽ नहि जा सकै— जे दूरसँ ठगै, तकरो पातपर चिन्ह रहि जाइ।

अध्याय –३१ — सत्यव्रतक मौन. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण ·दर्शन-तर्क ·डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र: जे बहुत काल चुप रहल, तकर एक बोल सभसँ भारी— सत्यव्रतक मौन सेहो एकटा गवाही छल।

अध्याय –३० — गोप कुमारक दस्तावेज. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·न्याय-प्रमाण ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: जे लिखल राखलक, से समय बचबै— दस्तावेज देह नहि, नाम बचबै छै।

अध्याय –२९ — चन्द्रपालक सपना. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: सपना जकर आँखिमे, धोखा तकर पएरमे— जे बिनु बुझल हस्ताक्षर केलक, से जालमे फँसल।

अध्याय –२८ — राघवक कोड. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध ·नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: जे भाषा यन्त्र बुझै, से गाम नहि बुझै— मुदा कोडक भीतरो एकटा नाम नुकाएल रहै छै।

अध्याय –२७ — आरुणिक निर्माण. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: जे बनबै, से पहिने अपनाकेँ गढ़ै— आरुणि छपाकसँ पहिने अपन आँखि गढ़लक।

अध्याय –२६ — देविकाक गीत. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: गीत जकर कण्ठ, न्याय तकर स्वर— जे गीतमे नाम पुकारल, से गाम भरि गूँजल।

१५.४ अध्याय –२५ सँ –१: मुख्य कथाक पूर्वसन्ध्या आ अपराध-जालक निकट आगमन

अध्याय –२५ — मीराक निजता. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार ·नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: जकर कथा, तकर अनुमति— नाम नमूना नहि, मीराक कथा मीराक अपन।

अध्याय –२४ — निशांतक बैंक. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: जकर खाता साफ, तकर मन थिर— मुदा जे खातामे नाम बेचलक, से हिसाबमे हारल।

अध्याय –२३ — नन्दक जन्म. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण ·नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: जे जन्म लै छै, से एकटा नव नाम अनै छै— नन्दक जन्म गामकेँ नव साक्षी देलक।

अध्याय –२२ — बारह सयक निकट. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: बारह सय बरख एक साँसमे नहि बीतल— जे गाम एतेक झेलल, से अन्त लग ठाढ़।

अध्याय –२१ — अनन्याक प्रश्न. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण ·नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: छोट प्रश्न पैघ गुम्बदमे दरार दै— जे पुछलक, से नाम बचेलक।

अध्याय –२० — छपाकक पहिल हिसाब. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·जाति-श्रम-समानता ·जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: पहिल छपाक—पहिल नाम पानिमे— जे हिसाब राखलक, से गोहिकेँ गवाह बनेलक।

अध्याय –१९ — सत्यव्रतक निर्णय. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण ·नाम-स्मृति · डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र: जे निर्णय देरसँ आयल, से सभसँ थिर— सत्यव्रत चुप रहल, मुदा अन्तमे नाम दिस ठाढ़ भेल।

अध्याय –१८ — अनन्या आ नन्दक भेंट. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: दू बाट एक ठाम मिलल, नव यात्रा शुरू— जकर उद्देश्य एक, तकर पएर संग चलै।

अध्याय –१७ — शीशाक मीनारक जाल. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति ·डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र: शीशाक मीनार दूरसँ चमकै, भीतर जाल— जे चमकपर मुग्ध, से जालमे बान्हल।

अध्याय –१६ — बटुकनाथक अंतिम मोड़. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार ·डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र: जे बाट गलत, तकर अन्तो मोड़ मांगै— बटुकनाथ अन्तमे अपन नाम दिस घुरल।

अध्याय –१५ — चन्द्रपालक खाता. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: जे खाता बुझल नहि, तकरो हस्ताक्षर भारी— अज्ञानता सेहो जालक एकटा गाँठ।

अध्याय –१४ — पुलक निर्माण. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: पुल दू कातकेँ जोड़ै, मुदा पानिकेँ नहि बिसरै— जे पुल बान्हल, से बाढ़िक बात मन राखल।

अध्याय –१३ — गोप कुमारक संकलन. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · न्याय-प्रमाण · दर्शन-तर्क। पाठ-सूत्र: जे नाम-नाम जोड़ि राखलक, से इतिहास बनेलक— संकलन देह नहि, स्मृति बचबै छै।

अध्याय –१२ — चन्ना गाछीक कँपकँपी. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति · क्षमा-नैतिकता। पाठ-सूत्र: गाछी काँपल, गाम सुनल—किछु होएबला छै— जे गाछी बाजै, तकरा गाम बुझै।

अध्याय –११ — बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · न्याय-प्रमाण · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: आशीर्वाद देह नहि, नाम दै— बूढ़बाक अन्तिम बोल अगिला पीढ़ीक बीया बनल।

अध्याय –१० — पुलपर पहिल छपाक. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण · जाति-श्रम-समानता। पाठ-सूत्र: पुलपर पहिल छपाक—पानिमे पहिल नाम— जे ओतय डुबल, तकरो नाम पातपर उठल।

अध्याय –९ — जाँचक आरम्भ. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण · नाम-स्मृति · सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र: जाँच पाइन खोदब जकाँ—पहिने कादो, फेर पानि— जे खोदब शुरू केलक, से सत्य लग पहुँचत।

अध्याय –८ — प्रमाणक बाहर आएब. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण · दर्शन-तर्क · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: जे प्रमाण अन्हारमे नुकाएल, से एक दिन भोर देखत— सत्य पानिक तलमे रहै, मुदा उतराइ जरूर।

अध्याय –७ — आधा-भूतक अनुभव. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · क्षमा-नैतिकता · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: आधा सत्य आधा भूत—दुनू डेराबै— जे पूर्ण नाम जनै, से आधा-भूतसँ नहि डरै।

अध्याय –६ — गोप कुमारक अन्तिम पन्ना. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · स्त्री-स्वर-अधिकार · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: अन्तिम पन्ना जकर हाथ, से कथाक भार उठबै— गोप कुमार नाम सौंपि कऽ हल्लुक भेल।

अध्याय –५ — जालक उजागर होएब. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून · न्याय-प्रमाण · डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र: जाल जखन उघरल, तखन माछ नहि, माछमारे पकड़ल— जे जाल देखलक, से गोहिकेँ चिन्हलक।

अध्याय –४ — नामक अन्तिम सूची. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · लोक-संस्कृति · जाति-श्रम-समानता। पाठ-सूत्र: जे नाम छुटल छल, से अन्तमे जुड़ल— सूची पूरी भेने गोहिक हिसाब पूरा भेल।

अध्याय –३ — बारह सय बरखक पूर्णता. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: बारह सय बरखक गोल पूरा भेल—अमावसक राति—जे आरम्भ, वैह अन्तमे ठाढ़।

अध्याय –२ — अगिला पीढ़ीक वचन. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · लोक-संस्कृति · क्षमा-नैतिकता। पाठ-सूत्र: जे वचन अगिला पीढ़ी लै, से गाम बचबै— नाम पकड़ि लेब उद्धार नहि, सुनब मुक्ति छी।

अध्याय –१ — अन्तिम साक्षी. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण · नाम-स्मृति · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: अन्तिम साक्षी जे बाजल, से कथा हाथ बदललक— गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि—इएह गामक अन्तिम फकरा।

१५.५ अध्याय ० सँ २५: गढ़ नारिकेलक मुख्य कथा, न्याय आ स्क्रीन-विरोध

अध्याय ० — गढ़ नारिकेल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: माटि, पानि, श्रम, स्मृति आ नामक जीवित भूगोल।

अध्याय १ — चन्ना गाछीक कबड्डी. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: जतय जीवित चुप रहै छै, ओतय भूत सभ कबड्डी सँ मुकदमा लड़ै छै।

अध्याय २ — दहिन कातक गाम. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति · सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र: नदी मेड़ काटै छै धारसँ, कागज गाम काटै छै तारीखसँ।

अध्याय ३ — छपाकक हिसाब. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: इनारमे खसल ढेपाक छपाक थम्हि कऽ अबै छै, मुदा हिसाब माँगब नहि छोड़ै छै।

अध्याय ४ — तीस नाम, तीन सय लाश. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: बहीमे तीस नाम, माटिमे तीन सय देह— घाटाक भार सदिखन मुर्दे उठबै छै।

अध्याय ५ — तारीखक गोहि. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून · नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: घाटक पानि देखाइ छै तँ लोक बाँचै छै।

अध्याय ६ — हार्वर्डक एथिक्स. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · जल-पर्यावरण · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: मञ्चपर चढ़ल नीक बेजायक समझक जूता पोंछबासँ पहिने देखिह ऽ— तरबामे केकर रक्त लागल छै।

अध्याय ७ — श्वासक भाव. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·जल-पर्यावरण ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: जखन साँसक भाव बाजार तय करए लागै, तखन भूतो खेल छोड़ि जीविते दिस ताकए लागै छै।

अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध ·जल-पर्यावरण ·सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र: फोनक पर्दामे देह नहि रहै छै, मुदा देह डुबेबा जोग पूरा पानि रहै छै।

अध्याय ९ — देहक बाजार. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: जे कागजक थैलाक नाम 'अतिथि-सेवा'; ओकर भीतर सदिखन ककरो बेटीक दाम लिखल रहै छै।

अध्याय १० — निजताक ब्लैकमेल. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·स्त्री-स्वर-अधिकार ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: देह बिकाइ छै एक बेर, अपन निजी बातक अधिकार बिकाइ छै बेर-बेर।

अध्याय ११ — धनक कारी नदी. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: भूतकेँ साँस नहि होइ छै, तइयो थाकै छै— थकान देहक नहि, गवाहीक होइ छै।

अध्याय १२ — डार्क-जालपर नारिकेल पात. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·न्याय-प्रमाण ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: कारी नदीपर नारिकेलक पात ने डूबै छै, ने बहै छै— ओ रस्ता देखबै छै।

अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: मुहर जतबा चमकैत, आवरणक भीतरक अन्हार ततबे गाढ़।

अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: नाम जखन घर घुरै छै, माटियो अपन नींदसँ जागि जाइ छै।

अध्याय १५ — नामक जल. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·जल-पर्यावरण ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: जे नाम पानिपर टिकि गेल, तकरा कोनो मुहर मेटा नहि सकल।

अध्याय १६ — चन्ना गाछीक अदालत. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: गाछ जकर नाम सुनि लेलक, तकरा कागजक कोनो पन्ना बिसरा नहि सकैत।

अध्याय १७ — जीतक शोक. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति · सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र: हारल लोक जँ प्रतीक्षा छोड़ि देत, तँ जीतनिहारक जीत अपनहि भारसँ चूर भऽ जाएत।

अध्याय १८ — खाली अदालत. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · सत्ता-अभिलेख-कानून · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: अदालत जँ खाली भऽ जाए, तँ बुझू— न्याय अनुपस्थितक नामसँ डेरा गेल।

अध्याय १९ — नामक अभिलेख. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: कुर्सी सड़ि जाइ छै, जड़ि नहि।

अध्याय २० — स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध · लोक-संस्कृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: फोनक पर्दा जे-जे निगलने छल, पाठशाला से-से एक-एक कऽ घुरबैत गेल।

अध्याय २१ — निजताक शपथ. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार · लोक-संस्कृति · डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र: शान्ति बाहरसँ नहि अबै छै।

अध्याय २२ — हार्वर्डक दोसर भाषण. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · स्त्री-स्वर-अधिकार · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: दोसर भाषण पहिलुकासँ नीक तखने होइ छै जखन बीचमे कियो सत्य सुना गेल हो।

अध्याय २३ — बटुकनाथक खोज. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून · लोक-संस्कृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: जीतक कागज मोट छल, मुदा ओहिमे एकोटा ध्वनि नहि— आ ध्वनि बिनु जीत केवल भार।

अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: कथा जतय समाप्त कहल जाइ छै, गाछी ओतहिसँ नव पन्ना खोलै छै।

अध्याय २५ — मोन टांगल. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून · लोक-संस्कृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: बन्द अलमारीमे आदेश नहि, धूलि बाजै छै— आ धूलिक आवाज नींद नहि होमए दै छै।

१५.६ अध्याय २६ सँ ५०: अपराधी मानस, पुनर्निर्माण आ नामक उत्तरजीवन

अध्याय २६ — बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: कुंजी रातिभरि हाथमे रहला सँ हथेलीमे पीतल नहि, प्रश्नक गन्ध बसि जाइ छै।

अध्याय २७ — चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध · लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: काँचक दीवालसँ गाम नहि देखाइ छै, मुदा गामक नाम काँचो पार कऽ जाइ छै।

अध्याय २८ — राघव सिग्नलक चुप्पी. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध · नाम-स्मृति · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: जे आवाजसँ डेराइ छै, से मेटाइत अक्षरमे बाजै छै।

अध्याय २९ — लाउ किन-हंगक सपना. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: जे नाम पूरा लिखल जाए से गिरफ्तार भऽ सकैए— मुदा अधलिखल नाम अपने कैदी बनि जाइए।

अध्याय ३० — धूर्त सभक भीतरक अदालत. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून · लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: बाहरक अदालतमे जीतल आ भीतरक अदालतमे हारल लोकक हँसीमे दाँतक खनखनी सुनाइ छै।

अध्याय ३१ — हारल लोक सभक काज. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · सत्ता-अभिलेख-कानून · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: हारल लोक नारा नहि लगबै छै— ओ भोरे उठि कऽ दोसराक नाम उठबै छै।

अध्याय ३२ — तेसर कबड्डी. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · स्त्री-स्वर-अधिकार · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: बयार नहि आ पात हिलए, तँ बुझू— कोनो पुरान फैसला कागज छोड़ि गाछपर उतरि रहल छै।

अध्याय ३३ — मोनक परीक्षा. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: देह थाकल तँ बैसि जाइ छै।

अध्याय ३४ — सुनैत नदी. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · नाम-स्मृति · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: नदी धार रोकि कऽ सुनै छै जे किनारपर के झूठ बाजि रहल छै।

अध्याय ३५ — नामक देहरी. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: नाम कहब पहिल साँस, नामक घर धरि जाएब दोसर।

अध्याय ३६ — घर, भय, सपना. मुख्य धुरी: क्षमा-नैतिकता · जल-पर्यावरण · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: घर, भय आ सपना— तीनू गोलक बीच जे साँच ठाढ़ रहल, वैह खेलमे टिकल।

अध्याय ३७ — तीन कंकड़. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·डिजिटल-ठगी-अपराध · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: जेबीक तीन कंकड़ जहिया खनखनाएब छोड़ि देत, तहिया बुझिह ऽ— कोनो उत्तर हेरा गेल।

अध्याय ३८ — नामक उच्चारण. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·जल-पर्यावरण ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: नाम लिखि देने भरि नहि होइ छै— ओकर उच्चारण सिखेबाक काल देबए पड़ै छै।

अध्याय ३९ — बीजक शान्ति. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: बाहरसँ थिर आ भीतरसँ फुटबाक तैयारी— एहने शान्तिमे बीज बनै छै।

अध्याय ४० — ओसक अक्षर. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·जल-पर्यावरण ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: ओसक अक्षर पढ़निहारक हथेली भीजि जाइ छै, आ भीजल हथेलीसँ दरबज्जा खुजै छै।

अध्याय ४१ — नामक नाव. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·जल-पर्यावरण ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: किनारपर राखल नावक कोनो अर्थ नहि— नामक नाव धारमे उतरला पर बाजै छै।

अध्याय ४२ — भारक वृत्त. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार ·नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: दण्ड ऊपरसँ देल जाइ छै, भार भीतरसँ उठि कऽ कन्हापर बैसै छै।

अध्याय ४३ — चलैत भार. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: बाँटल भार समाप्त नहि होइ छै— ओ चलए लागै छै, गाम-गाम।

अध्याय ४४ — पोतीक कापी. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·क्षमा-नैतिकता ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: डर पानि जकाँ— देवाल भेटलापर दरार ताकै छै, दरार नहि भेटलापर पोतीक कापीमे उतरि जाइ छै।

अध्याय ४५ — भीतरक हवा. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध ·जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: दुआर खुजल रहि नहि जाइ छै— भीतरक बन्द हवा पहिने बहराइ छै।

अध्याय ४६ — उत्तराधिकारक अन्हार. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: धनक मुँह जे नहि देखलक आ पाछाँक अन्हार देखि लेलक, वैह असल उत्तराधिकारी।

अध्याय ४७ — गज-ग्राह आख्यान. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · नाम-स्मृति · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: गजक पएर पानिमे अटकल आ ग्राहक दाँत इतिहासमे— छोड़ौनिहार हाथ सदिखन तेसर होइ छै।

अध्याय ४८ — पुकार. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · स्त्री-स्वर-अधिकार · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: बाजब जनम भरि होइ छै।

अध्याय ४९ — मौनक अभिलेख. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · सत्ता-अभिलेख-कानून · दर्शन-तर्क। पाठ-सूत्र: सुनल आवाज उधार थीक— जे सुनलक, तकरे चुकता करबाक छै।

अध्याय ५० — देहक बादक नाम. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · नाम-स्मृति · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: देह चलि जाइ छै, नाम रहि जाइ छै— आ नामक पएर भीजल रहै छै।

१५.७ अध्याय ५१ सँ ७५: साक्षी, स्मारक, विरासत आ स्वीकृति

अध्याय ५१ — साक्षीक भार. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: साक्षीक भार तराजूपर नहि, छातीपर तौलल जाइ छै।

अध्याय ५२ — अगिला आवाज. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति · सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र: गोहि देह चिबा सकैए, अदालत बरख, फोनक पर्दा मोन— मुदा बच्चाक हाथक पहरा किओ ने चिबा सकल।

अध्याय ५३ — कटानक बादक बिहान. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति · स्वप्न-कल्पना। पाठ-सूत्र: गाछ कटलापर भोर नहि रुकै छै— ठूँठो सोझे सूर्य दिस ताकए लागै छै।

अध्याय ५४ — ठूँठक चारू कात. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: जतय डारि नहि बचल, ओतहु माथ झुकै छै— आब अन्हारसँ नहि, गवाहीसँ।

अध्याय ५५ — नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून · नाम-स्मृति · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: सरकारी पीयर कागजक फड़फड़ी पाँखिक नहि, कैंचीक आवाज थीक।

अध्याय ५६ — स्मृतिक पहिल नक्शा. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: जे ठाम 'खाली भू-खण्ड' लिखल गेल, ओही ठाम सभसँ बेसी नाम गड़ल छल।

अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न. मुख्य धुरी: दर्शन-तर्क ·न्याय-प्रमाण ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: प्रमाण बिनु प्रमेय नहि— गंगेशक ई प्रश्न आइयो ठूँठक जड़िमे करवट लै छै।

अध्याय ५८ — चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध ·लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: आदरक स्मरण जखन फोन साधन बनि जाए, तखन शोको सँ किस्त वसूलल जाइ छै।

अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·डिजिटल-ठगी-अपराध ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: मेटायल फोनक पर्दाक धुँधला निशानपर लिखल शास्त्र सभसँ साफ बाँचल जाइ छै।

अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण ·नाम-स्मृति ·दर्शन-तर्क। पाठ-सूत्र: धर्मक भाषामे लिखल हिसाब सभसँ पहिने मौनक कान पकड़ै छै।

अध्याय ६१ — पहिल नाम-उत्सव. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति ·जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: असल उत्सवमे नगाड़ा नहि बजै छै— नाम बजै छै।

अध्याय ६२ — ठूँठमे हरियर बिंदु. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: तेल सिरा गेल, बाती छोट भेल, तइयो लौ जिद्दी— जिद तेलक नहि, नामक होइ छै।

अध्याय ६३ — गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·दर्शन-तर्क ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: जाधरि नाम लाजक छल ताधरि कागजक गट्ठर नुकायल रहल।

अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: स्मृतिपर ठेकाक बोली खुजिते बुझू— आब शोको क ठेका उठत।

अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·जल-पर्यावरण ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: लोभक गन्ध नव स्याहीसँ नहि, पुरान पुलक पानिसँ अबै छै।

अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार ·जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: जे यंत्र गलामे लटका कऽ अबै छै, से आँखिसँ पहिने नापए लागै छै।

अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार · लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: देखबाक सेहो अधिकार होइ छै— आ जकरा देखल जाए, तकर मज्जूरी सभसँ पहिल कागज।

अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · स्त्री-स्वर-अधिकार · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: मरल लोकक नामपर बटन दबौनिहार जीवित लोकक जेब टटोलै छै।

अध्याय ६९ — नामक चोरी. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: फोनक पर्दापर पकड़ायल चोरी, चोरीक उजरा भाग टा थीक।

अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: जे ऊपरसँ नहि देखाइ छै, से पनिडुब्बीक झोंटामे बान्हल रहै छै।

अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: नकली भूतक जुलूसमे धुँआ किरायापर अबै छै, आ असली गाछी हँसि दै छै।

अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण · दर्शन-तर्क · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: ठूँठक हँसी खोखलक नहि— बचल जड़िक आवाज थीक।

अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार. मुख्य धुरी: दर्शन-तर्क · लोक-संस्कृति · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: जकरा जीवन भरि उपहास बुझलक, स्वप्नमे वैह दरबार लगा कऽ बैसि जाइ छै।

अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · डिजिटल-ठगी-अपराध · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: पहिल स्वीकार सदिखन अकेलेमे होइ छै— भीड़ तँ बादमे ताली बजबै छै।

अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · डिजिटल-ठगी-अपराध · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: सभटा जाल रहितो जे अकेला भेल, से बुझलक— जाल तारक नहि, भरोसक होइ छै।

१५.८ अध्याय ७६ सँ १००: वैश्विक जाल, पाठशाला, पुनर्बाढ़ि आ गज-ग्राह समापन

अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · स्वप्न-कल्पना · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: समुद्र पार कऽ आयल लोको ओही घाट उतरै छै जतय ओकर नामक पानि ठाढ़ छै।

अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·जल-पर्यावरण · स्वप्न-कल्पना। पाठ-सूत्र:हवाई अड्डाक शीशामे शहरक इजोत बिकाइ छै, मुदा गोहिक आँखि मुफ्तमे देखा जाइ छै।

अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद. मुख्य धुरी: दर्शन-तर्क ·न्याय-प्रमाण ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र:दू गोटेक मौन जखन एक्कहि प्रश्नपर अटकल हो, तखन ओहो संवाद थीक।

अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·न्याय-प्रमाण ·सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र:दान-पत्र जतबा चिक्कन, ओकर मुहरक नीचाँक ठेका ततबे पुरान।

अध्याय ८० — हरिहरनक संतान. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण ·नाम-स्मृति ·सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र:बेटाक एकटा प्रश्न— न्याय बचेलहुँ कि पेशा?— बरामदाक सभ सम्मान-पत्र हिला दै छै।

अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र:आधा नाम लऽ कऽ जीनिहार पूरा हस्ताक्षरसँ डेराइ छै।

अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र:पोखरिक चारू किनार अलग-अलग, पानि एक्कहि— आ पानिक भीतर गज-ग्राह दुनू।

अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र:जतय छाहरि नहि बचल, ओतहु पाठशाला बैसि सकै छै— पातक आसनपर।

अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र:पहिल पाठ अक्षर नहि— उपस्थित 'कहब होइ छै।

अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार ·नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र:दिनक शब्दक असली देह रातिक सभामे खुजै छै, जखन स्त्री सभ बाजए लागै छथि।

अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·जल-पर्यावरण ·जाति-श्रम-समानता। पाठ-सूत्र:नाम उपस्थित भेल तँ पुछू— ओकर पाँव कोन माटिपर पड़ल छल।

अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध ·लोक-संस्कृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र:एक दिनक फोनक पर्दाक उपवाससँ कानमे अपनहि साँसक आवाज घुरि अबै छै।

अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · स्त्री-स्वर-अधिकार ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र:पत्र पहुँचल कि नहि से डाकघर नहि कहत— उत्तर अपने बाट ताकि लै छै।

अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र:जन-सुनवाईमे सभसँ पैघ गवाही ओकर होइ छै जे आइ धरि सुनले नहि गेल।

अध्याय ९० — नामक संविधान. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·न्याय-प्रमाण ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र:साझा नियम-पोथी सूखल पातपर सेहो लिखा सकैए— जँ लिखनिहार बच्चा होथि।

अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार ·दर्शन-तर्क। पाठ-सूत्र:धूर्तक अनुपस्थिति सेहो उपस्थिति थीक— खाली कुरसी सभसँ जोरसँ बाजै छै।

अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र:ठूँठक छाँह छोट, मुदा ओहिमे बैसनिहारक कान पैघ भऽ जाइ छै।

अध्याय ९३ — पुनः बाढ़ि. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र:नदी चुप्पीमे विश्वास नहि करैत— ओ फेर आबि कऽ पुरान हिसाब खोलि दै छै।

अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·नाम-स्मृति · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र:दिनमे पानि मटियाल, रातिमे कारी तेल— गोहि रंग नहि बदलैत, इजोत बदलै छै।

अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र:अंतिम सौदामे दाम नहि लिखल जाइ छै— नाम लिखल जाइ छै।

अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध ·नाम-स्मृति ·क्षमा-नैतिकता। पाठ-सूत्र:क्षमा जे देरसँ आबए, से खाली हाथ नहि आबए— अपन विलम्बक हिसाब सङे आनए।

अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · डिजिटल-ठगी-अपराध · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: जे दोसराक खाता म्यूल बनौलक, से एक दिन अपनहि जीवनकेँ दोसरक नामपर चलाओल खाता बुझि उठल।

अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: अंतिम संदेश मेटाएल नहि जाइत— ओ पात बनि ठूँठसँ चिपकि जाइत अछि।

अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण · नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: गवाहीकेँ हवा उड़ाबए चाहलक, पानि गलाबए चाहलक— मुदा गवाही पात छल, हटल नहि।

अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: गजक बल थाकि जाइ छै, ग्राहक पकड़ि छूटि जाइ छै— बच्चाक हाथ टा नहि थाकैत।

१५.९ अध्याय १०१ सँ १२५: ग्रह-स्वप्नसँ पृथ्वी, तत्त्व, देह आ निर्णय धरि

अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण. मुख्य धुरी: स्वप्न-कल्पना · नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: दूरक आमन्त्रण जँ इतिहास मेटेबाक मूल्य माँगए, तँ ओ यात्रा नहि—विस्मृतिक सौदा अछि।

अध्याय १०२ — स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · स्वप्न-कल्पना · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: सीमा आकाशक हो वा माटिक—घुरबाक लेल साँस आ नाम दुनू बचल रहबाक चाही।

अध्याय १०३ — स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · स्वप्न-कल्पना · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: नाम पढ़ब मृतकेँ गनब नहि—ओकर सम्बन्ध, श्रम आ अधूरा प्रश्न फेर उपस्थित करब अछि।

अध्याय १०४ — जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध · नाम-स्मृति · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: घावसहित पृथ्वी चुनब पराजय नहि—ओहि घावक कारण बदलबाक जिम्मेवारी स्वीकारब अछि।

अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · स्त्री-स्वर-अधिकार · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: स्वप्नसँ जागल यात्रीकेँ धरती पुरान घर नहि, नब जिम्मेवारी जकाँ भेटैत अछि।

अध्याय १०६ — बीजक गवाही. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: बीज गवाही दै छै— माटि केकर छल आ हाथ केकर।

अध्याय १०७ — बीजक चोरी. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: बीज चोरौनिहार खेत नहि चोरबैत— भविष्य चोरबै छै।

अध्याय १०८ — माटिक मुँह. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·स्त्री-स्वर-अधिकार · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: माटिक मुँह तखन खुजै छै जखन ओकरासँ पुछल जाए — हम कतऽ उगब?

अध्याय १०९ — जलक स्मृति. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·न्याय-प्रमाण ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: पानिकेँ बिसरब आसान, पानिक स्मृतिकेँ बिसरब असम्भव।

अध्याय ११० — आगिक साक्षी. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: आगि बुझि जाइ छै, राख गवाही दै छै।

अध्याय १११ — वायुक प्रश्न. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: धुँआ आकाश नहि गेल, गली-गली घूमल— वायुक प्रश्न घर-घर पुछाइ छै।

अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·स्वप्न-कल्पना · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: आकाश जखन खाली भऽ जाए, तखन ओ राहत नहि— सभसँ पैघ प्रश्न थीक।

अध्याय ११३ — शब्दक देह. मुख्य धुरी: दर्शन-तर्क ·न्याय-प्रमाण ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: शब्दकेँ सेहो देह चाही— बिना देहक शब्द हवामे हेरा जाइ छै।

अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा. मुख्य धुरी: दर्शन-तर्क ·जल-पर्यावरण ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: शब्दक देह बचि जाए आ अर्थक आत्मा बिका जाए— तँ पहरा अधूरा।

अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति ·जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: कण्ठक पहरा सभसँ कठिन— जे बचल, तकरे सभसँ पहिने बेचल जाइ छै।

अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार. मुख्य धुरी: दर्शन-तर्क ·जल-पर्यावरण · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: नामक शत्रु खाली झूठ बजनिहार कण्ठ नहि— कखनो साँचक चुप्पी सेहो।

अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार · दर्शन-तर्क। पाठ-सूत्र: सुनल नामक ऋण होइ छै, आ ऋणक कोनो श्राद्ध नहि— खाली चुकता।

अध्याय ११८ — देहक अधिकार. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार · नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: नाम बचि गेल, स्वर सुनल गेल— मुदा देहक अधिकार बिनु सभटा आधा।

अध्याय ११९ — श्रमक देह. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जाति-श्रम-समानता · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: श्रमक देह पाथरपर लिखल जाइ छै, मुदा पढ़ल पसीनासँ जाइ छै।

अध्याय १२० — न्यायक देह. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण · जल-पर्यावरण · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: न्यायक देह कोंपल जकाँ— नर्म, मुदा माटि फोड़ि कऽ उठैवला।

अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा. मुख्य धुरी: दर्शन-तर्क · न्याय-प्रमाण · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: पिंजराक सलाख लोहाक नहि— आदतिक होइ छै, आ आदति भोरक धूपमे बेसी चमकै छै।

अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण · दर्शन-तर्क · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: मुक्ति ग्रन्थसँ नहि— प्रश्न पुछबाक अधिकार घुरलासँ होइ छै।

अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · दर्शन-तर्क · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: तत्त्वचिन्तामणि नामक न्याय-पोथीक पात कागजसँ कड़ा— कारण ओहिपर तर्क लिखल छै, भय नहि।

अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण · दर्शन-तर्क · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: प्रमाणक अग्निमे दाह कम, उजास बेसी— जे साँच अछि, से निखरि कऽ बहराइ छै।

अध्याय १२५ — निर्णयक धान. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · न्याय-प्रमाण · जाति-श्रम-समानता। पाठ-सूत्र: निर्णय जँ धान जकाँ रोपल जाए, तँ ओकर बालि सेहो झुकि कऽ गवाही दै छै।

१५.१० अध्याय १२६ सँ १५०: अन्न-न्याय, नाट्य-सार्वजनिकता आ मुहरक छाया

अध्याय १२६ — अन्नक न्याय. मुख्य धुरी: जाति-श्रम-समानता · नाम-स्मृति · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: अन्नक न्याय थारीमे नहि, मेड़पर तय होइ छै।

अध्याय १२७ — भूखक नाम. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·जाति-श्रम-समानता · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: खाली थाली भरल कोठारसँ भारी— ओहिमे भूखक नाम बाजै छै।

अध्याय १२८ — प्यासक नाम. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·स्त्री-स्वर-अधिकार · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: प्यासकेँ सेहो नाम चाही— बिना नामक प्यास केवल आँकड़ा।

अध्याय १२९ — नूनक शपथ. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार ·लोक-संस्कृति · जाति-श्रम-समानता। पाठ-सूत्र: नूनक शपथ सभसँ पुरान— मायक दूधसँ मजूरक पसीना धरि एक्कहि स्वाद।

अध्याय १३० — स्वादक न्याय. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·न्याय-प्रमाण ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: स्वाद बदलल बुझाए तँ बुझू— न्याय जीहपर उतरि गेल।

अध्याय १३१ — साझा थारी. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति ·स्वप्न-कल्पना। पाठ-सूत्र: साझा थारीक नून सभ जीहपर एक्कहि रङ लागै छै।

अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार ·जाति-श्रम-समानता ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: जतय थारी साझा, ओतय डर आधा।

अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: बुलाहटक उत्तर ढोलसँ नहि— तैयारीसँ देल जाइ छै।

अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: नाट्य-पाठ सिखबासँ पहिने कबड्डी खेलनिहार अपन साँस गनए सिखै छै।

अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: स्मृति जखन मंचपर चढ़ै छै, कैलेण्डर हारि जाइ छै।

अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·जल-पर्यावरण ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: असली अभिनयक दाम ताली नहि— तालीक बादक सन्नाटा थीक।

अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण ·लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: दर्शक जखन गवाह बनि जाए, तखन परदा खसितो नाटक नहि रुकैत।

अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·न्याय-प्रमाण · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: जुलूस जे मंचसँ बाहर निकलल, तकरा कोनो सभागार फेर भीतर नहि घुरा सकल।

अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·न्याय-प्रमाण ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: बाटपर उतरल कथाक ने मंच होइ छै, ने टिकट— खाली सुनैवला कान चाही।

अध्याय १४० — चल चौपाल. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून ·लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: खेलमे हार-जीत नहि घोषित हो तँ बुझू— खेल आब स्मृतिक पहरा बनि गेल।

अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून ·न्याय-प्रमाण ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: बरामदाक पाथर दिन भरि जूता सहै छै, आ राति ओ फैसला सुनबै छै।

अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: लिखित हिसाब-घरक अन्हारमे कागजक गट्ठर नहि— रोकल-राखल समय सड़ै छै।

अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: रद्दी कहल कागजपर कदाचित् ककरो जिनगीक आखिरी आस लिखल हो— तँ फाड़ब सभसँ पैघ अपराध।

अध्याय १४४ — नामक यात्रा. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: नाम कागजक गट्ठरसँ निकलि गेल तँ ओकरा निरस्त क कोनो मुहर फेर बन्द नहि कऽ सकल।

अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार. मुख्य धुरी: क्षमा-नैतिकता ·लोक-संस्कृति · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: डर एक्कहि बेरमे नहि टूटै छै— पहिने दरार पड़ै छै, आ दरारसँ इजोत पैसै छै।

अध्याय १४६ — मुहरक दाग. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून ·नाम-स्मृति · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: मुहरक दाग कागजपर नहि— लगौनिहारक हाथपर सभसँ गाढ़ रहै छै।

अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून ·लोक-संस्कृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: दस्तक जे मञ्जूरीसँ देल जाए, से आदेशसँ पैघ दरबाजा खोलै छै।

अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: साँच कागजसँ मिला क১ देखू— मिलावट अपने मुँह खोलि दै छै।

अध्याय १४९ — जालक नक्शा. मुख्य धुरी: जाति-श्रम-समानता ·लोक-संस्कृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: जाल जतबा पैघ, गाँठ ततबे छोट ठाम— आ पहरुआ गाँठे टा ताकै छै।

अध्याय १५० — मुहरक छाया. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून ·लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: रबर मेटा जाइ छै, हत्था रहि जाइ छै— आ खाली हत्थामे सभसँ बेसी भार।

१५.११ अध्याय १५१ सँ १७५: आदेश, सहमति, गोदाम, फोन आ अदृश्य अदालत

अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: मुहर अपने नहि चलैत— ओकरा चलौनिहार हाथक नाम होइ छै।

अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून ·नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: आदेश एक मुँहसँ नहि जनमैत— बैठकसँ जनमैत अछि, आ बैठकक कोनो हस्ताक्षर नहि।

अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार ·दर्शन-तर्क। पाठ-सूत्र: संकेतक पाछाँ नाम रहै छै, आ नामक पाछाँ फेर संकेत— पहरुआ बीचहिमे ठाढ़ रहए।

अध्याय १५४ — बाबाक वचन. मुख्य धुरी: क्षमा-नैतिकता ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: बाबाक वचन जाधरि श्रद्धा, ताधरि अछूत।

अध्याय १५५ — सेवाक खाता. मुख्य धुरी: दर्शन-तर्क ·सत्ता-अभिलेख-कानून · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: सेवाक खाता आ मौनक खाता जँ एक्कहि हाथमे हो, तँ दुनू हिसाब माँगै छै।

अध्याय १५६ — दानक ऋण. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण ·स्त्री-स्वर-अधिकार · जाति-श्रम-समानता। पाठ-सूत्र: दानक उज्जर कपड़ामे सभसँ बेसी ऋण लपेटल रहै छै।

अध्याय १५७ — लोहेक संदूक. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार · लोक-संस्कृति · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: लोहेक संदूक घरक अन्हारमे व्यापार छल, गामक इजोतमे गवाही भऽ गेल।

अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण · नाम-स्मृति · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: मञ्जूरी-कापीक मिलानसँ पहिल बेर बुझाएल— हस्ताक्षरो अपहरण भऽ सकैए।

अध्याय १५९ — मृतकक सहमति. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार · नाम-स्मृति · सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र: मृतकक मञ्जूरी दुनियाक सभसँ सस्ता कागज — आ सभसँ महग अपराध।

अध्याय १६० — गोदामक छाया. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार · लोक-संस्कृति · सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र: गोदाम जखन खुजै छै, तखन व्यापार नहि— छाया न्यायक पेट देखाइ छै।

अध्याय १६१ — फोनक कैद. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · डिजिटल-ठगी-अपराध · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: फोन जकरा कैद केलक, तकरा कोनो जमानत नहि— जाधरि आवाजक मालिक नहि पकड़ाए।

अध्याय १६२ — आवाजक मोहर. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति · स्त्री-स्वर-अधिकार · डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र: आवाजपर सेहो मोहर लागै छै— आ ओ मोहर तोड़बाक पहिल उपाय आवाजेक पहिचान।

अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार · सत्ता-अभिलेख-कानून · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: कागज हटा देल जाइ छै, निशान नहि— हटौनिहारक हड़बड़ी अपने निशान थीक।

अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार · लोक-संस्कृति · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: छोट संख्या पैघ ताला खोलै छै— जँ पढ़निहार रातिभरि जागल हो।

अध्याय १६५ — छायाक देह. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · न्याय-प्रमाण · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: छाया पकड़ा गेल तँ प्रश्न ठाढ़— देह कतय?

अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार · सत्ता-अभिलेख-कानून · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: कोठारमे रद्दी नहि— रोकल गेल डर सड़ैत रहै छै।

अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति · न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: आवाज नदी पार बनै छै, मुदा डूबै एहि पारक लोक छै।

अध्याय १६८ — शहरक गला. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति ·डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र: शहरक गला पकड़ाइ छै, कंठ नहि— कंठ सदिखन आरो ऊपर रहै छै।

अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति · स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: दरबज्जापर चपरासी पकड़ाइ छै।

अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति ·जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: खोल उतारि लिअ तँ चन्द्र एक आ चन्द्र दू एक्कहि अन्हारक दू फाँक।

अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत. मुख्य धुरी: क्षमा-नैतिकता · सत्ता-अभिलेख-कानून ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: अदृश्य अदालतक कोनो मुहर नहि— ओतय भय उतारल जाइ छै, शपथ नहि।

अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण ·लोक-संस्कृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: भय बाहर निकलि गेलापर ओकर गाँठ पढ़बाक बारी अबै छै— आ गाँठ सदिखन तीन रंगक।

अध्याय १७३ — पंजीक पहरा. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: पंजी पन्द्रह बरख चुप रहल, मुदा हस्ताक्षर एक्को दिन नहि सुतल।

अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·नाम-स्मृति ·सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र: अदालतक चौखट पाथरक नहि— घेरा-भरिक साहसक होइ छै।

अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: ओस पड़ितो पाथरक अक्षर नहि धुँधलाएल— नामकेँ नमी नहि, बिसरब मेटबै छै।

१५.१२ अध्याय १७६ सँ २००: सेवा-जाल, आवाज, पंजी, अपराधक धरती आ नामक पहरुआ

अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार. मुख्य धुरी: स्त्री-स्वर-अधिकार ·नाम-स्मृति ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: अन्तिम सूची सभसँ छोट पन्नापर लिखल जाइ छै, आ सभसँ पैघ छाया पसारै छै।

अध्याय १७७ — घर-घरक कागज. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून ·नाम-स्मृति ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: अदालत जहिया घर-घर चलए लागए, तहिया बुझू— न्यायकेँ पएर भेटि गेल।

अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी. मुख्य धुरी: न्याय-प्रमाण ·दर्शन-तर्क ·सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र: ऊपरक कोठरीक फुसफुसाहट सूखल पातक आगि थीक— एक चिनगीमे गाम भरि।

अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून ·नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: मुहरक पगचिन्ह स्याहीसँ नहि सूखैत— ओ रस्ता देखबैत रहै छै।

अध्याय १८० — शहरक खाता. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: खाता शहरमे खुजै छै, मुदा ओकर जड़ि गामक ककरो आङनमे गड़ल रहै छै।

अध्याय १८१ — सिमक छाया. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध ·नाम-स्मृति · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: सिमक छाया देह बिनु घूमै छै— नम्बर बदलै छै, नीयत नहि।

अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: सेवा-केंद्रक दरबाजा दिनमे सेवा बाँटै छै, राति हिसाब।

अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·डिजिटल-ठगी-अपराध ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: फोनक भीतर चेहरा नुकायल रहै छै, मुदा साँसक चाल नहि नुकाइ छै।

अध्याय १८४ — आवाजक नकाब. मुख्य धुरी: लोक-संस्कृति ·डिजिटल-ठगी-अपराध ·न्याय-प्रमाण। पाठ-सूत्र: आवाजक नकाब कपड़ाक नहि— अभ्यासक होइ छै, आ अभ्यासक शैली पकड़ा जाइ छै।

अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार · जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: मास्टरक कमरा खुजि गेल, मास्टर धुँआ भऽ गेल— मुदा धुँओकेँ रस्ता चाही।

अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·लोक-संस्कृति · डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र: असली नाम सभसँ पातर कागजपर लिखल रहै छै— जकरा सभ रद्दी बुझै छै।

अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार ·डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र: छत्ताक भीतरक रानी अपने कहियो फूलपर नहि जाइ— भनभनाहटे ओकर पता कहै छै।

अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून ·नाम-स्मृति ·डिजिटल-ठगी-अपराध। पाठ-सूत्र: नील मुहर छाप नहि, कागजक देहपर पड़ल घाव थीक।

अध्याय १८९ — लोहेक पेटी. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: लोहेक पेटीक कुंजी जङ खा सकैए, गवाही नहि।

अध्याय १९० — नील पंजी. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·दर्शन-तर्क ·लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: नील पंजीक रंग निगरानीक बाहर पसरै छै— भयक अपन कोनो ताला नहि।

अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·लोक-संस्कृति ·सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र: कुर्सी खाली रहितो शासन करै छै— जाधरि ओकर नाम नहि पुकारल जाए।

अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·जल-पर्यावरण ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: बन्द लिखित हिसाबरक स्वर सभसँ ऊँच— कारण ओकरा आब केओ रोकि नहि सकैत।

अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार ·सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र: आवाजक चेहरा तखन देखाइ छै, जखन साँसक पाछाँ ठाढ़ लोक गनल जाए।

अध्याय १९४ — साँसक समन. मुख्य धुरी: सत्ता-अभिलेख-कानून ·स्त्री-स्वर-अधिकार ·जल-पर्यावरण। पाठ-सूत्र: समन देहपर नहि, साँसपर जारी होइ छै— आ साँसकेँ कोनो वकील नहि।

अध्याय १९५ — रोकल खाता. मुख्य धुरी: डिजिटल-ठगी-अपराध ·सत्ता-अभिलेख-कानून ·नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: खाता रोकलापर पहिल बेर बुझाइ छै — धन सेहो डेराइत अछि।

अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण ·नाम-स्मृति ·स्त्री-स्वर-अधिकार। पाठ-सूत्र: जलसमाधिक अर्थ पानि नहि जनैत— नाम जनैत अछि।

अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: डूबल नाम जखन ऊपर उठैए, तखन पानि नहि हिलैत — हिलैत अछि किनार।

अध्याय १९८ — अपराधीक धरती. मुख्य धुरी: जल-पर्यावरण · स्त्री-स्वर-अधिकार · नाम-स्मृति। पाठ-सूत्र: अपराधीक धरती अलगसँ नहि होइ छै— वैह माटि, खाली पएरक निशान दोसर।

अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · स्त्री-स्वर-अधिकार · सत्ता-अभिलेख-कानून। पाठ-सूत्र: संदूकक भीतर सेहो बिहान होइ छै — जँ ढक्कन गवाहीक हाथसँ खुजए।

अध्याय २०० — नामक पहरुआ. मुख्य धुरी: नाम-स्मृति · जल-पर्यावरण · लोक-संस्कृति। पाठ-सूत्र: नाम जाधरि पुकारल जाइत रहत, ताधरि ठूँठोमे हरियर बिन्दु बाँचल रहत।

१६. तीनू परिशिष्टक विस्तृत समीक्षा

१६.१ परिशिष्ट १ — गढ़ नारिकेलक सरल लोककोश

एहि परिशिष्टमे 48 स्वतंत्र अनुच्छेद/प्रविष्टि अछि। ई पारम्परिक शब्दकोश जकाँ केवल शब्द-अर्थ नहि दैत; माटि, घर, विराम, सुनब, लोकगीत, लोकधुन, नाविक-पुकार, वाद्य, बीआ, सोहर, अरिपन, पूजा, पहेली, आख्यान-गीत, श्रम, शरीर, पाबनि आ साझा जीवनक सांस्कृतिक अर्थ खोलैत अछि। एहि कारण परिशिष्ट मुख्य कथाक मानवशास्त्रीय आधार बनैत अछि। किशोर पाठक लेल विशेष लाभ ई जे “लोक” कैं केवल पाबनि वा वेशभूषा नहि, ज्ञानक तरीका, सामूहिक अनुशासन आ जीवन-कौशल रूपमे देखबैत अछि।

समीक्षात्मक रूपमे लोककोशक सर्वाधिक सफलता “ज्ञान”क परिभाषा विस्तृत करब अछि—माटि छूबि खेती बुझब, पुकार सुनि नाव चलाएब, अरिपनक रेखा पढ़ब, गीतक सामूहिकता बुझब, श्रमक औजार चिन्हब। भविष्यक निखारमे प्रत्येक प्रविष्टिक एक छोट शीर्षक जोड़ल जाए तँ परिशिष्टक संदर्भ-उपयोगिता बढ़त।

१६.२ परिशिष्ट २ — अनाम ग्रहक गीत

एहि परिशिष्टमे 52 अनुच्छेद/गीत-पाँति अछि आ अध्याय १०१ सँ १०४क स्वप्न-अनुक्रमकेँ गीतात्मक रूपमे फेर खोलैत अछि। पृथ्वी, माटि, मायक गीत, बच्चाक हाथ, कबड्डी, स्मृति-विहीन गुंबद आ घावसहित पृथ्वी चुनबाक रूपक एक प्रकारक पर्यावरणीय-नैतिक गीत-चक्र बनबैत अछि। मुख्य कथामे जे स्वप्न विचार रूपमे अछि, एतय ओ सामूहिक गान बनि स्मरणीय होइत अछि।

काव्यात्मक दृष्टिसँ गीत सभक सरल पुनरावृत्ति किशोर मौखिक पाठ लेल उपयुक्त अछि। मुदा किछु पाँतिमे एक्के विचार मामूली शब्द-परिवर्तनसँ फेर अबैत अछि; चयनित गीतकेँ अधिक लयात्मक भिन्नता, स्थानीय धुन-संकेत वा गायन-प्रतिउत्तर संरचना देल जाए तँ परिशिष्ट स्वतंत्र काव्यिक मूल्य आरो बढ़ा सकैत अछि।

१६.३ परिशिष्ट ३ — न्याय बुझबाक सरल कथा

एहि परिशिष्टक देह सभसँ पैघ अछि: 432 अनुच्छेद, जाहिमे अध्याय ५७ सँ २०० धरि १४४ अध्याय-संबद्ध शीर्षक-त्रय बनैत अछि—मुख्य अध्याय-शीर्षक, न्याय/दर्शनक उदाहरण-शीर्षक, आ सरल व्याख्या। ई संरचना पोथीक दार्शनिक उद्देश्य खुला करैत अछि: कथा-पठनकेँ प्रमाण-पठनमे बदलब।

शिक्षण-पद्धति रूपमे ई परिशिष्ट बहुमूल्य अछि, कारण कठिन न्याय-परम्पराक शब्दकेँ दैनन्दिन उदाहरणसँ जोड़ैत अछि। आलोचनात्मक सीमा पुनरुक्ति अछि। विश्वसनीय गवाही, अनुमान, प्रत्यक्ष-भ्रम, अभाव, तुलना आ कारणक किछु व्याख्या दर्जनों बेर शब्दशः घुरैत अछि। एहन पुनरावृत्ति अभ्यासक रूपमे उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा शोध-संस्करणमे प्रत्येक अध्यायक वास्तविक घटना—मुहर, खाता, फोन, मृतकक सहमति, आवाज, पंजी, संदूक—सँ अनुकूलित अलग व्याख्या देल जाए तँ नव्य न्याय आ कथा बीच सम्बन्ध अधिक सटीक होएत।

१७. निष्कर्ष

ई पोथी किशोर कथा रूपमे एकटा असामान्य प्रश्न उठबैत अछि: सत्य केना बचैत अछि जखन देह नष्ट हो, कागच बदलि जाए, नाम सूचीसँ हटा देल जाए, फोनक संदेश मेटा देल जाए, गवाही दबा देल जाए, आ समय स्वयं गोहि जकाँ पीढ़ी निगलैत जाए? पोथीक उत्तर एकल साधन नहि—स्मृति, नाम, गीत,

पात, गाछ, बच्चा, दस्तावेज, प्रमाण, तर्क, सार्वजनिक उच्चारण, स्त्री-स्वर, श्रम, डिजिटल सावधानी आ सामुदायिक नैतिकता सभ मिलि सत्यक पहरा दैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र एहि बहुरूपी प्रतीकक सौन्दर्य खोलैत अछि; पाश्चात्य सिद्धान्त काल, बहुस्वरिता, स्मृति आ अभिलेखक संरचना बुझबैत अछि; नव्य न्याय सत्य-जाँचक सूक्ष्म तन्त्र देखबैत अछि; विदेह समानान्तर इतिहास गाम, हाशिया, लोकज्ञान, दर्शन आ आधुनिक माध्यमकेँ एके ऐतिहासिक धरातल पर रखैत अछि। चारू दृष्टि एक संग पढ़लापर कृति केवल “किशोर संस्करण” नहि रहैत; ई मिथिलाक लोक-स्मृति आ समकालीन नागरिक विवेक बीच सेतु बनि उठैत अछि।

अन्तिम निखारक मुख्य आवश्यकता तीन अछि: संरचनात्मक गणनाक स्पष्टता, परिशिष्ट ३क पुनरुक्ति घटा क८ अध्याय-विशेषक न्यायीय सम्बन्ध सघन करब, आ मैथिली शब्दरूपक एकरूप सम्पादन। एहि सुधारक बाद कृतिमे पहिनहिसँ उपस्थित शक्तिशाली स्थापत्य—नाम बनाम विस्मृति, प्रमाण बनाम भ्रम, समुदाय बनाम जाल, पृथ्वी बनाम स्मृतिहीन विकल्प—आरो तीक्ष्ण रूपेँ सामने आएत।

ग्रन्थसूची

नीचाँ केवल ग्रन्थक नाम देल गेल अछि।

गोहि सभक बीच जलसमाधि — किशोर संस्करण

नाटचशास्त्र

ध्वन्यालोक

अभिनवभारती

वक्रोक्तिजीवित

औचित्यविचारचर्चा

काव्यप्रकाश

तत्त्वचिन्तामणि

तत्त्वचिन्तामणि-दीधिति

पदार्थतत्त्वनिरूपण

व्युत्पत्तिवाद

पोएटिक्स

माइमेसिस

नैरेटिव डिस्कोर्स

टाइम एण्ड नैरेटिव

द डायलॉजिक इमैजिनेशन

द वेल रॉट अर्न

एनाटमी ऑफ क्रिटिसिज्म

द लोकेशन ऑफ कल्चर

पोएटिक जस्टिस

आलेख ३१ · उपन्यास आ विस्तृत आख्यानक अध्ययन

गोहि सभक बीच जलसमाधि : बाल संस्करण

सारांश

ई शोध-आलोचना ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि — बाल संस्करण’क सम्पूर्ण उपलब्ध पाठकेँ आधार मानि तैयार कएल गेल अछि। पोथीक भूमिका, पूर्व-कथाकालक अध्याय –१०० सँ –१, मुख्य कथाक अध्याय १ सँ २००, अध्याय ७४क दू पाठरूप, आ तीनू परिशिष्टकेँ अध्ययनमे समाहित कएल गेल अछि। विश्लेषणक चारि मुख्य आलोचनात्मक अक्ष अछि—भारतीय काव्य-दृष्टि, पाश्चात्य आख्यान-सिद्धान्त, नव्य-न्याय-आधारित प्रमाण-विचार, आ एहि कृतिक भीतर विकसित ‘विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति’। कृतिक केन्द्रमे ‘नाम’ स्मृतिक चिह्न मात्र नहि, बल्कि मनुष्यक सामाजिक उपस्थितिक प्रमाण, न्यायिक पुनर्पहिचान, सामुदायिक उत्तरदायित्व आ ऐतिहासिक प्रतिरोधक रूपमे उभरैत अछि। पानि, गोहि, गाछ, साँस, बीज, पंजी, मुहर, स्क्रीन आ आवाज—ई सभ पुनरावर्ती बिम्ब एहि केन्द्रीय रूपककेँ कालान्तरमे रूपान्तरित करैत अछि। बाल-संस्करण होइतहुँ कृति जाति, लिंग, श्रम, विस्थापन, राज्य, तकनीक, निजता, अपराध-जाल, पारिस्थितिकी आ प्रमाणक प्रश्नकेँ सरल कथात्मक संरचनामे समेटैत अछि। अध्ययन अन्तमे भाषिक निखार, क्रमांकन, पुनरावृत्ति आ प्रकाशकीय विसंगतिक पृथक सम्पादकीय ऑडिट प्रस्तुत करैत अछि।

बीजशब्द

गोहि सभक बीच जलसमाधि : बाल संस्करण · मैथिली उपन्यास · आख्यान-रचना · स्मृति · सामाजिक इतिहास

१.३३. गजेन्द्र ठाकुर- गोहि सभक बीच जलसमाधि (बाल संस्करण)- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

“गोहि सभक बीच जलसमाधि — बाल संस्करण” : स्मृति, प्रमाण, नाम आ इतिहासक बहुस्तरीय आख्यान

एक विस्तृत शोध-आलोचना

लेखक : गजेन्द्र ठाकुरक कृति-आधारित अध्ययन

सारांश

ई शोध-आलोचना ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि — बाल संस्करण’क सम्पूर्ण उपलब्ध पाठकेँ आधार मानि तैयार कएल गेल अछि। पोथीक भूमिका, पूर्व-कथाकालक अध्याय –१०० सँ –१, मुख्य कथाक अध्याय १ सँ २००, अध्याय ७४क दू पाठरूप, आ तीनू परिशिष्टकेँ अध्ययनमे समाहित कएल गेल अछि। विश्लेषणक चारि मुख्य आलोचनात्मक अक्ष अछि—भारतीय काव्य-दृष्टि, पाश्चात्य आख्यान-सिद्धान्त, नव्य-न्याय-आधारित प्रमाण-विचार, आ एहि कृतिक भीतर विकसित ‘विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति’। कृतिक केन्द्रमे ‘नाम’ स्मृतिक चिह्न मात्र नहि, बल्कि मनुष्यक सामाजिक उपस्थितिक प्रमाण, न्यायिक पुनर्पहिचान, सामुदायिक उत्तरदायित्व आ ऐतिहासिक प्रतिरोधक रूपमे उभरैत अछि। पानि, गोहि, गाछ, साँस, बीज, पंजी, मुहर, स्क्रीन आ आवाज—ई सभ पुनरावर्ती बिम्ब एहि केन्द्रीय रूपककेँ कालान्तरमे रूपान्तरित करैत अछि। बाल-संस्करण होइतहुँ कृति जाति, लिंग, श्रम, विस्थापन, राज्य, तकनीक, निजता, अपराध-जाल, पारिस्थितिकी आ प्रमाणक प्रश्नकेँ सरल कथात्मक संरचनामे समेटैत अछि। अध्ययन अन्तमे भाषिक निखार, क्रमांकन, पुनरावृत्ति आ प्रकाशकीय विसंगतिक पृथक सम्पादकीय ऑडिट प्रस्तुत करैत अछि।

मुख्य शब्द : स्मृति, नाम, नव्य न्याय, प्रमाण, बाल आख्यान, मिथिला, सामुदायिक इतिहास, पानि, डिजिटल नैतिकता, समानान्तर इतिहास

१. प्रस्तावना : पोथीक मूल स्वर

पोथी अपन भूमिका ‘गाम अपने बाजल’ सँ आरम्भ होइत अछि। गढ़ नारिकेल केन्द्रीय स्थान मात्र नहि, जीवित स्मृति-सत्ता अछि। माटि, पानि,

गाछ-पात, गीत, श्रम, मातृकंठ, लोककथा आ सामुदायिक नियम मिलि गामकेँ कथावाचक बनबैत अछि। एहि कारण कृतिक इतिहास राजवंश, युद्ध वा महान पुरुषक अनुक्रम मात्र नहि; ओ नाम, देह, श्रम, भोजन, बाढ़ि, बीमारी, विस्थापन, शिक्षा, न्याय, तकनीक आ सामुदायिक स्मरणक इतिहास अछि। भूमिकामे उद्घोषित ‘गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि’ कथन पूरा कृतिक नैतिक सूत्र बनि जाइत अछि।

२. पाठ-संरचना आ रचनात्मक वास्तु

उपलब्ध पाठक संरचना असाधारण रूपेँ विस्तृत अछि। भूमिका पछाति पूर्व-कथाकाल अध्याय –१०० सँ –१ धरि पीछे दिस गिनैत ऐतिहासिक-सांस्कृतिक आधार रचैत अछि; तकर बाद अध्याय १ सँ २०० भविष्याभिमुख मुख्य कथा चलैत अछि। एहि उलटा आ सीधा अंक-क्रमक जोड़ इतिहासकेँ रेखीय समयसँ मुक्त करैत अछि: वर्तमान एकटा ‘शून्य-बिन्दु’ जकाँ काज करैत अछि, जतयसँ स्मृति पाछाँ सेहो जाइत अछि आ उत्तरदायित्व आगाँ सेहो बढ़ैत अछि। अन्तक तीन परिशिष्ट—गढ़ नारिकेल लोककोश, अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत, आ न्याय-दर्शनक मूल अन्त:कथा—मुख्य कथाकेँ क्रमश: लोक-सांस्कृतिक, कल्पनात्मक-पारिस्थितिक आ दार्शनिक आधार प्रदान करैत अछि।

३. पूर्व-कथाकाल : -१०० सँ –१

३.१ ज्ञानक आरम्भ : -१०० सँ –९३

‘शंख आ रजत’, ‘आत्मसिद्धि-वाद’, ‘केऽ बनौलक ई जगत?’, ‘चिंतामणि रत्न’, ‘स्मृति-रक्षा’, ‘जलमग्न पाण्डुलिपि’, ‘चारि मुखक मौन’ आ ‘शंखक अन्तिम प्रश्न’—ई आरम्भिक समूह बाल-प्रश्नकेँ दर्शनक प्रवेश-द्वार बनबैत अछि। देखब, पुछब, स्मरण, संदेह आ पुन:परीक्षण एहि खण्डक ज्ञान-विधि अछि।

३.२ स्मृति, जाति आ सामुदायिक प्रतिरोध : -९२ सँ –७६

जल-घड़ी, चर्मकार टोला, बुधुआक जलसमाधि, बाढ़ि, डाइन आरोप, टोलक रक्षा, समयक गोहि, आमिलक आदेश, जंगलक मौन, सोनमा माझिन, कबड्डी, आक्रमण, सामूहिक गीत, क्षमा, पंजीक बाहर, बूढ़बाक मौन आ नारिकेल-पात

पाठशाला—ई अध्याय सभ 'नाम'कैं सामाजिक बराबरी आ सामुदायिक संरक्षणक रूपमे गढ़ैत अछि।

३.३ शिक्षा, रोग, विवाह, न्याय आ मुद्रित स्मृति : -७५ सँ —६०

तर्कक विद्रोहसँ लऽ कऽ गाछक रोग, मोहनक धुन, अन्तरजातीय विवाह, महामारी, चन्ना गाछीक रोपाइ, गज-ग्राह आख्यान, अदालत, परदेश, स्त्री-सभा, नकली भूत, बदलाक त्याग, छापाखाना, राहत, पुच्छलतारा आ अगिन—एहि क्रममे लोकसमाज ज्ञान, रूढ़ि, दुःख आ संस्थागत न्यायक परीक्षा करैत अछि।

३.४ आधुनिक भारतक प्रवेश : -५९ सँ —४१

बाढ़ि, रोग, औपनिवेशिक लेखन, स्वाधीनता, स्वतंत्रता, जमींदारी उन्मूलन, बिजली, सीमा-युद्ध, हरित क्रान्ति, आपातकाल, सूखा, रेडियो, दूरदर्शन, खाड़ी प्रवासन, साम्प्रदायिकता, उदारीकरण, कम्प्यूटर, जल-संकट, मोबाइल आ शहर —ई अध्याय सभ ग्राम्य इतिहासकैं राष्ट्रक परिवर्तनसँ समानान्तर जोड़ैत अछि।

३.५ अधिकार, डिजिटल जगत आ अपराध-जालक पूर्वपीठिका : -४० सँ —२३

सूचनाक अधिकार, काजक गारंटी, इंटरनेट, स्क्रीन, ठगी, देहक बजार, उज्ज्वलक स्वप्न, वकील, समुद्रपार साया, सत्यव्रत, गोप कुमार, चन्द्रपाल, राघव, आरुणि, देविका, मीरा, निशांत आ नन्द—एहि अंशमे डिजिटल आधुनिकता नैतिक आ न्यायिक संकटमे बदलैत अछि।

३.६ वर्तमानक देहरी : -२२ सँ —१

बारह सय बरखक निकट पहुँचैत गाम, अनन्याक प्रश्न, छपाकक हिसाब, सत्यव्रतक निर्णय, अनन्या-नन्द भेंट, शीशाक मीनारक जाल, बटुकनाथ, चन्द्रपालक खाता, पुल, संकलन, गाछीक कम्पन, बूढ़बाक आशीर्वाद, जाँच, प्रमाण, आधा-भूत अनुभव, अन्तिम पन्ना, जालक उजागर होएब, नामक सूची, बारह सय बरखक पूर्णता, अगिला पीढ़ीक वचन आ अन्तिम साक्षी—ई सभ मुख्य कथाक सीधा आरम्भ तैयार करैत अछि।

४. मुख्य कथा : अध्याय १ सँ २००

४.१ अध्याय १–२४ : अपराधक लेखा आ नामक पुनःप्राप्ति

चन्ना गाछीक कबड्डी सँ उपन्यासक फेर आरम्भ धरि कथा अपराध, मृतकक संख्या, तारीख, नैतिक शिक्षा, देहक बाजार, फूलमतिक नाम, मीराक साहस, धनक कारी नदी, अभिलेख, निजता, सार्वजनिक सुनवाई आ घर घुरबाक प्रश्नकेँ जोड़ैत अछि। ई समूह जाँचक कथाकेँ सामुदायिक स्मरणक आन्दोलनमे रूपान्तरित करैत अछि।

४.२ अध्याय २५–५२ : अपराधीक अन्तःकरण आ स्मृतिक भार

मोन टांगल सँ अगिला आवाज धरि पात्र सभ बाहरी न्यायसँ भीतरी न्याय दिस बढ़ैत अछि। बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव आ लाउ जकाँ पात्र अपराधक संरचनात्मक पक्ष, तकनीकी दूरी, व्यावसायिक अमानवीकरण आ आत्मस्वीकारक प्रश्नक माध्यम बनैत छथि। समानान्तर रूपेँ बच्चा, पोती, नदी, बीज आ नाम अगिला पीढ़ीक नैतिक निरन्तरता रचैत अछि।

४.३ अध्याय ५३–१०० : स्मृतिक संस्थानीकरण आ जन-न्याय

कटानक बादक बिहान सँ ‘गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ’ धरि स्मृति-नक्शा, गंगेशक प्रश्न, स्मारक-अनुप्रयोग, कोड, नाम-उत्सव, विरासत-परियोजना, निविदा, शोध-दल, दृष्टिक अधिकार, नामक चोरी, पनिडुब्बी, जुलूस, स्वप्न-दरबार, स्वीकार, दान-पत्र, पाठशाला, जन-सुनवाई, नामक संविधान, पुनः बाढ़ि, गोहिक वापसी, म्यूल खाता, गवाही आ सामुदायिक हस्तक्षेप—सभ मिलि ‘स्मृति’केँ संस्था बनबाक खतरा आ सम्भावना दुनू देखबैत अछि।

४.४ अध्याय १०१–१३२ : पृथ्वी, तत्त्व आ अन्नक न्याय

अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रणसँ रसोइक गणराज्य धरि कृति अचानक ब्रह्माण्डीय विस्तार लैत अछि, मुदा पृथ्वी छोड़ैत नहि। बीज, माटि, जल, आगि, वायु, आकाश, शब्द, अर्थ, कण्ठ, मौन, देह, श्रम, न्याय, जाति, गंगेश, तत्त्वचिन्तामणि, प्रमाण, धान, अन्न, भूख, प्यास, नून, स्वाद, साझा थारी आ रसोइ—ई क्रम दार्शनिक तत्त्वकेँ दैनिक जीवन आ खाद्य-न्यायमे धरती पर उतारैत अछि।

४.५ अध्याय १३३–१६० : रंगमंच, अभिलेख आ प्रशासनिक प्रमाण

विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहटसँ मृतकक सहमति धरि मंच, दर्शक, जुलूस, चौपाल, रेकर्ड-घर, रद्दी बोरा, नामक यात्रा, मुहर, घर-घर दस्तक, मिलावट, जालक नक्शा, आदेश, संकेत, सेवा, दान, लोहेक संदूक, सहमति-कापी आ मृतकक सहमति—ई सभ देखबैत अछि जे सार्वजनिक सत्य नाटक, दस्तावेज आ प्रशासनिक चिह्नक बीच संघर्ष करैत अछि।

४.६ अध्याय १६१–२०० : फोन, आवाज, मुहर आ जलसमाधिक पुनर्परिभाषा

फोनक कैदसँ नामक पहरुआ धरि कथा डिजिटल साक्ष्य, आवाजक नकल, हटायल कागज, गोदाम, नदीपार संकेत, शहरक जाल, सेवा केन्द्र, मास्टर, असली नाम, रानी, मुहर, नील पंजी, बन्द रेकॉर्डर, रोकल खाता, जलसमाधिक अर्थ, ऊपर उठल नाम, अपराधीक धरती आ संदूकक भीतरक बिहान धरि पहुँचैत अछि। अन्तमे ‘जलसमाधि’ मृत्यु-मात्र नहि, दबाओल नामक जलतलसँ पुनःउद्भवक रूपक बनैत अछि।

५. भारतीय काव्य-दृष्टिसँ समीक्षा

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ कृतिक मुख्य शक्ति रसक बहुलता आ ध्वनिक क्रमिक निर्माणमे अछि। करुण रस बाढ़ि, मृत्यु, जातिगत बहिष्कार, हिंसा आ मृतकक नामसँ उठैत अछि; वीर रस सामुदायिक प्रतिरोध, बच्चा सभक साहस आ जन-सुनवाईमे; शान्त रस बूढ़बाक मौन, गाछ, जल आ अन्तिम स्वीकारमे; अद्भुत रस भूत, अनाम ग्रह, बोलैत गाम आ स्मृतिक दृश्यरूपमे। एहि रस सभकेँ एकसूत्र करैत मूल स्थायी भाव ‘नाम बचाबय’क नैतिक आग्रह अछि।

ध्वनि-सिद्धान्तक अनुसार कथा बहुत बेर प्रत्यक्ष उपदेशसँ अधिक प्रतीकक सहारे अर्थ खोलैत अछि। गोहि केवल हिंसक जीव नहि; समय, लोभ, तकनीकी अमानवीकरण आ विस्मृतिक बहुरूपी ध्वनि बनैत अछि। पानि विनाश आ जीवन दुनू अछि; गाछ अभिलेख सेहो अछि आ जीवित साक्षी सेहो; साँस कबड्डीक खेल-नियमसँ बढ़ि जीवित उपस्थितिक प्रमाण बनैत अछि।

औचित्यक प्रश्न बाल-संस्करणमे विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। जटिल सामाजिक प्रसंगकेँ छोट संवाद, पुनरावर्ती प्रतीक आ स्पष्ट नैतिक निष्कर्षक माध्यमेँ बच्चा-पाठक लेल सुलभ बनाओल गेल अछि। किछु ठाम ई सरलता अत्यधिक

उपदेशात्मक भऽ जाइत अछि, मुदा बृहत संरचनामे गीत, खेल, लोककथा आ रहस्य एहि बोझकेँ हलुक करैत अछि।

६. पाश्चात्य आख्यान-विमर्शसँ समीक्षा

काल-संरचना दृष्टिसँ कृति अनुक्रामी इतिहास नहि अपनबैत अछि। पूर्व-कथाकालक ऋणात्मक अंकन आ तकर बाद सकारात्मक अंकन कथात्मक समयकेँ दू दिशामे खोलैत अछि। जेरार जेनेत द्वारा विवेचित कथाक क्रम, अवधि आ पुनरावृत्तिक प्रश्न एतय उपयोगी तुलनात्मक औजार प्रदान करैत अछि: कथा इतिहासक सामग्रीकेँ समयानुक्रमेँ मात्र नहि, नैतिक प्रतिध्वनिक अनुसार फेर सजबैत अछि।

मिखाइल बाख्तिनक संवादात्मकता (Dialogism)क तुलनात्मक दृष्टिसँ गाम एकल आवाज नहि। बा, बच्चा, स्त्री-सभा, चर्मकार टोला, अधिकारी, अपराधी, वकील, तकनीकी पात्र, मृतकक नाम, गीत आ दस्तावेज—सभ अपन-अपन भाषिक अधिकार लऽ कऽ प्रवेश करैत अछि। कृतिक नैतिक सत्य एकटा सर्वज्ञ कथावाचकक आदेशसँ नहि, परस्पर प्रश्नोत्तर आ टकराहटसँ बनैत अछि।

स्मृति-अध्ययनक दृष्टिसँ कृति व्यक्तिगत मोन आ सामूहिक अभिलेखक बीच लगातार आवागमन करैत अछि। पॉल रिक्योर, मौरिस हाल्बवैक्स आ जान अस्मानक स्मृति-विमर्शसँ तुलना करैत कहल जा सकैत अछि जे एहि पोथीमे सामुदायिक स्मृति स्थिर भंडार नहि; ओ अनुष्ठान, गीत, नाम-पाठ, खेल, गाछ, पंजी, डिजिटल अभिलेख आ पुन:कथन द्वारा हर पीढ़ीमे फेर निर्मित होइत अछि।

हेडन व्हाइटक इतिहास-विमर्शक आलोकमे ई कृति तथ्य-सूचीक बदला कथात्मक विन्यासक शक्ति देखबैत अछि। मुदा ई पोथी इतिहासकेँ कल्पना बनाबय नहि चाहैत; उलटे कल्पना, लोकस्मृति आ दस्तावेज सभकेँ समानान्तर राखि पूछैत अछि जे न्याय लेल कोन प्रमाण पर्याप्त अछि।

७. नव्य न्याय : प्रमाण, अभाव आ उत्तरदायित्व

कृतिक न्याय-दर्शनक परिशिष्ट प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द—ज्ञानक चारि परिचित माध्यम—बाल-कथाक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। पीयर देखाइत शंख दृष्टिदोषक सम्भावना खोलैत अछि; पर्वतपर धूम अनुमानक रचना

बुझबैत अछि; खाली आसन अभावक ज्ञानक प्रश्न उठबैत अछि; तप्त लौह-पिंड जल्दबाजीमे सामान्य नियम बनाबयक संकट देखबैत अछि। एहि प्रसंग सभकेँ शास्त्रीय नव्य-न्यायक पूर्ण तकनीकी प्रतिरूप नहि मानल जएबाक चाही; ई बालोपयोगी रूपान्तरण अछि।

गंगेशक नाम आवैतहि कृति प्रमाण-विचारकेँ जाति, श्रम आ दबाओल जीवनक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। एतय एक मौलिक साहित्यिक विस्तार होइत अछि: लिखित प्रमाण पर्याप्त नहि; मौखिक स्मृति, काटल पंक्ति, अनुपस्थिति, दबाओल आवाज आ सामाजिक मौन सेहो जाँचक विषय बनैत अछि। ई शास्त्रीय प्रमाणमीमांसाक सीधा सिद्धान्त नहि, बल्कि कृतिक नैतिक पुनर्पाठ अछि।

नव्य-न्यायक सूक्ष्म भेदक प्रवृत्ति कृतिक जाँच-पद्धतिमे प्रतिबिम्बित अछि—नाम बनाम संख्या, रोदन बनाम प्रमाण, दान बनाम उत्तरदायित्व, अनुपस्थिति बनाम अस्तित्वहीनता, डेटा बनाम मनुष्य, स्क्रीन बनाम चेहरा। एहि भेद सभसँ कथा नैतिक अस्पष्टताकेँ विश्लेषणीय बनबैत अछि।

८. “विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति” : कृतिक भीतर विकसित मॉडल

एहि अध्ययनमे ‘विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति’ नामसँ ओहि आन्तरिक रचनाविधिक उल्लेख कएल जा रहल अछि जाहिमे एकहि कालखण्डकेँ राज्यक औपचारिक इतिहास, गामक लोकस्मृति, जाति-श्रमक अनुभव, स्त्रीक स्वर, प्राकृतिक आपदा, तकनीकी परिवर्तन, गीत, पंजी, अदालत, अभिलेख आ व्यक्तिगत नामक समानान्तर पथपर पढ़ल जाइत अछि। ई नाम कृतिक संरचनासँ व्युत्पन्न आलोचनात्मक पद अछि; एकरा बाहरी स्थापित इतिहासशास्त्रीय सम्प्रदाय मानब उचित नहि।

एहि पद्धतिक पहिल गुण ‘केन्द्र-परिवर्तन’ अछि। राष्ट्रीय घटना—स्वाधीनता, जमींदारी उन्मूलन, आपातकाल, उदारीकरण, हरित क्रान्ति—कथा मे तभी महत्त्वपूर्ण होइत अछि जखन ओकर असर गामक चूल्हि, खेत, पाठशाला, स्त्री-सभा, परदेशी परिवार वा बच्चाक अनुभवमे देखाइत अछि।

दोसर गुण ‘समानान्तर प्रमाण’ अछि। आधिकारिक कागज एक प्रमाण अछि, मुदा लोकगीत, मौखिक स्मृति, अनुपस्थिति, स्थल, शरीर, श्रम आ पीढ़ीगत स्मरण सेहो जाँचक सामग्री अछि। तेसर गुण ‘पुनर्लेखनशीलता’

अछि—नाम फेर पढ़ल जाइत अछि, सूची फेर बनैत अछि, पंजीमे बाहरक लोक भीतर अबैत अछि, आ अपराधक लेखा नब दस्तावेजसँ बदलैत अछि।

चौठ गुण 'नैतिक कालक्रम' अछि। ऋणात्मक अध्याय अतीतकेँ केवल पृष्ठभूमि नहि बनबैत; ओ वर्तमान अपराधक नैतिक वंशावली तैयार करैत अछि। सकारात्मक अध्याय समाधानक सीधा रेखा नहि; ओ देखबैत अछि जे स्मृति स्वयं बजार, परियोजना, अनुप्रयोग आ प्रतिष्ठामे बदलि सकैत अछि।

९. बाल-साहित्यक स्तरपर उपलब्धि आ सीमा

बाल-संस्करणक सभसँ पैघ उपलब्धि ई अछि जे कठिन विषयकेँ प्रश्न, खेल, गीत, वस्तु आ छोट दृश्यद्वारा प्रस्तुत करैत अछि। कबड्डी साँस, सीमा, जोखिम आ वापसीक रूपक बनैत अछि; शंख प्रत्यक्षक भ्रम; गाछ स्मृति; पंजी सामाजिक बहिष्कार; मोबाइल दूरी; स्क्रीन अमानवीकरण; साझा थारी समानताक व्यवहारिक पाठ।

किछु अध्याय अत्यन्त छोट आ निष्कर्षप्रधान छथि। जतय हर दृश्यक अन्तमे बूढ़बाक वाक्य तत्काल अर्थ निश्चित कऽ दैत अछि, ओतय बाल-पाठकक स्वतन्त्र व्याख्याक जगह कम होइत अछि। मुदा पछिला खण्ड सभमे प्रश्न, अपराधीक स्वीकृति, दस्तावेजक टकराहट आ प्रतीकात्मक अनिश्चितता बढ़ैत अछि, जाहिसँ साहित्यिक जटिलता सेहो बढ़ैत अछि।

चित्रात्मक संस्करण होयबाक कारण दृश्य स्मृति पाठक ग्रहणमे महत्त्वपूर्ण अछि। तथापि उपलब्ध पाठ-सामग्रीक आधारपर साहित्यिक निष्कर्ष मुख्यतः शब्द-पाठपर आधारित राखल गेल अछि; चित्रक स्वतन्त्र कला-ऐतिहासिक विश्लेषण लेल मूल उच्च-गुणवत्तावाला चित्र-पृष्ठक पृथक अध्ययन आवश्यक होएत।

१०. शुद्ध मैथिली निखार ऑडिट

यांत्रिक शब्द-जाँचमे रोमन अक्षर अत्यल्प भेटल: प्रकाशकीय पृष्ठक वेब-पता, प्रकाशकीय पहचान-चिह्न, आ डिजाइन-श्रेय मुख्य स्रोत छथि। मुख्य कथाभाग प्रायः पूर्ण देवनागरीमे अछि। तथापि शुद्ध मैथिली निखारक दृष्टिसँ किछु शब्दरूप नियमित कएल जाएब उचित अछि।

पाठमे भेटल	अनुशंसित	गणना	टिप्पणी

रूप	मैथिली रूप		
गायब	बिलायल	17	सम्पूर्ण पाठमे एकरूपता लेल संशोधन अपेक्षित
दरबाजा	केवाड़ी	26	सम्पूर्ण पाठमे एकरूपता लेल संशोधन अपेक्षित
बरामदा	ओसारा	18	सम्पूर्ण पाठमे एकरूपता लेल संशोधन अपेक्षित
चाय	चाह	7	सम्पूर्ण पाठमे एकरूपता लेल संशोधन अपेक्षित
कमरा	कोठली	26	सम्पूर्ण पाठमे एकरूपता लेल संशोधन अपेक्षित
कोठरी	कोठली	6	सम्पूर्ण पाठमे एकरूपता लेल संशोधन अपेक्षित
हरेक	सभ / सभटा / प्रसंगानुसार	9	सम्पूर्ण पाठमे एकरूपता लेल संशोधन अपेक्षित
अंगूठा	औंठा / बुढ़बा आंगुर	39	सम्पूर्ण पाठमे एकरूपता लेल संशोधन अपेक्षित

सकारात्मक पक्ष ई अछि जे 'पानि' आ 'चाह' जकाँ वांछित रूप बहुत बेसी प्रमाणमे पहिनेसँ उपस्थित अछि। अतः निखारक मुख्य काज सम्पूर्ण पुनर्लेखन नहि, बल्कि असंगत शब्दरूपक लक्षित मानकीकरण अछि। 'दैत' आ 'देत'क

प्रयोग अर्थगत भेद—अभ्यस्त/चलैत क्रिया बनाम भविष्य—अनुसार पुनःदेखब आवश्यक अछि; यांत्रिक बदलि देब उचित नहि।

११. सम्पादकीय आ पाठालोचनात्मक ऑडिट

(क) अध्याय ७४ 'चन्द्रपालक पहिल स्वीकार' मुख्य देहमे दू बेर अछि। दुनू पाठ निकट सम्बन्धित छथि, मुदा शब्दशः एक नहि। एकरा अनिच्छित पुनरावृत्ति, वैकल्पिक पाठ वा संशोधित पाठ—कोन रूप मानल जाए—ई सम्पादकीय निर्णय स्पष्ट करब आवश्यक अछि। अंतिम संस्करणमे एक पाठ चुनि दोसरकेँ पाठान्तर-टिप्पणीमे राखल जा सकैत अछि।

(ख) प्रकाशकीय आरम्भिक पृष्ठ आ अन्तिम पृष्ठपर दू भिन्न (ISBN) संख्या देल अछि। ई प्रकाशकीय स्तरपर महत्त्वपूर्ण विसंगति अछि; मुद्रणसँ पहिने एकटा अधिकृत संख्या निश्चित करब जरूरी अछि।

(ग) अनुक्रममे अध्याय ७४ एक बेर अछि, मुदा मुख्य देहमे दू पाठरूप भेटैत अछि। अतः अनुक्रम आ देहक संख्यात्मक संगति जाँचल जएबाक चाही।

(घ) किछु शीर्षक आ पाठमे रोमन-आधारित तकनीकी नाम अथवा प्रकाशकीय चिह्न अछि। उपयोगकर्ता-निर्दिष्ट भाषिक नियम अनुसार देवनागरी रूप मुख्य पाठमे राखि मूल रोमन रूपकेँ केवल कोष्ठकमे देल जा सकैत अछि।

(ङ) बाल-संस्करणक किछु दार्शनिक निष्कर्ष शास्त्रीय सिद्धान्तकेँ सरल बनबैत अछि। शोधकीय संस्करणमे 'बालोपयोगी रूपान्तरण' आ 'शास्त्रीय मत'क बीच स्पष्ट विभेदक टिप्पणी उपयोगी होएत, जाहिसँ पाठक सरल रूपकेँ मूल ग्रन्थक शब्दशः सिद्धान्त नहि मानय।

१२. समग्र साहित्यिक मूल्यांकन

'गोहि सभक बीच जलसमाधि'क विशिष्टता ओकर आकारमे मात्र नहि, बल्कि एहि प्रयासमे अछि जे एकटा गामक कथाकेँ दर्शन, इतिहास, लोकस्मृति, अपराध-जाँच, बाल-नैतिकता आ तकनीकी आधुनिकताक साझा मंच बनाओल जाए। कृति बारम्बार प्रश्न करैत अछि—मनुष्यक अस्तित्व कागजमे अछि कि स्मृतिमे? संख्या पर्याप्त अछि कि नाम जरूरी? लिखित प्रमाण अंतिम अछि कि दबाओल आवाज सेहो सुन्नाइ चाही? तकनीक दूरी घटबैत अछि कि चेहरा

मेटबैत अछि? स्मारक स्मृति बचबैत अछि कि ओकर बजार बनबैत अछि? एहि प्रश्न सभक कारण पोथी साधारण बाल-रोमांचसँ बहुत आगाँ जाइत अछि।

कृतिक प्रमुख साहित्यिक जोखिम पुनरावृत्ति आ उपदेशात्मकता अछि; प्रमुख उपलब्धि प्रतीकात्मक निरन्तरता आ बहु-पीढ़ीगत नैतिक विश्व-निर्माण। ‘नाम’क रूपक एतेक शक्तिशाली अछि जे ओ जाति-विरोध, मृतक-स्मृति, डिजिटल निजता, अपराध-जाँच, श्रम, भोजन, पृथ्वी आ अगिला पीढ़ी—सभकेँ जोड़ि सकैत अछि। एही बिन्दुपर कृति अपन सर्वाधिक मौलिक रूप ग्रहण करैत अछि।

१३. निष्कर्ष

सम्पूर्ण पाठक आधारपर ई निष्कर्ष निकलैत अछि जे ई पोथी बाल-साहित्य, लोक-इतिहास, दार्शनिक रूपक आ सामाजिक न्याय-कथाक संकर रचना अछि। भारतीय काव्य-दृष्टि ओकर रस, ध्वनि आ प्रतीक-रचनाकेँ खोलैत अछि; पाश्चात्य आख्यान-विमर्श ओकर काल-विन्यास, बहुध्वनिता आ स्मृति-राजनीतिकेँ स्पष्ट करैत अछि; नव्य न्याय ओकर प्रमाण-संवेदनशीलता आ भेद-विवेककेँ बुझबैत अछि; आ ‘विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति’ ओकर इतिहास-दृष्टिक आन्तरिक ढाँचा चिन्हित करैत अछि। सम्पादकीय निखार, अध्याय ७४क पाठनिर्णय, प्रकाशकीय संख्या-संगति आ शब्दरूपक मानकीकरण पछाति ई कृति अधिक सुसंगत, शोधोपयोगी आ बाल-पाठक लेल दीर्घजीवी रूप ग्रहण कऽ सकैत अछि।

बिबलियोग्राफी

गंगेश उपाध्याय — तत्त्वचिन्तामणि

गौतम — न्यायसूत्र

भरतमुनि — नाट्यशास्त्र

आनन्दवर्धन — ध्वन्यालोक

मम्मट — काव्यप्रकाश

बिमल कृष्ण मतिलाल — (Perception: An Essay on Classical Indian Theories of Knowledge)

बिमल कृष्ण मतिलाल — (Logic, Language and Reality: Indian Philosophies and Contemporary Issues)

जोनार्डन गनेरी — (Philosophy in Classical India: The Proper Work of Reason)

जेरार जेनेत — (Narrative Discourse: An Essay in Method)

मिखाइल बाख्तिन — (The Dialogic Imagination: Four Essays)

पॉल रिक्योर — (Memory, History, Forgetting)

मौरिस हाल्बवैक्स — (On Collective Memory)

जान अस्मान — (Cultural Memory and Early Civilization)

हेडन व्हाइट — (Metahistory: The Historical Imagination in Nineteenth-Century Europe)

पीटर हंट — (Understanding Children’s Literature)

परिशिष्ट : सम्पूर्ण रचना-आवरण सूची

नीचाँक सूची उपलब्ध मुख्य देहक सभ अध्यायकेँ क्रमशः दर्ज करैत अछि। एहि सूचीक उद्देश्य ई सुनिश्चित करब अछि जे आलोचनात्मक अध्ययनमे कोनो रचना अदृश्य नहि रहय। अध्याय ७४क दू पाठरूप पृथक रूपेँ चिन्हित अछि।

क्रम	शीर्षक	आलोचनात्मक संकेत
—१००	शंख आ रजत	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—९९	आत्मसिद्धि-वाद	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—९८	केऽ बनौलक ई जगत?	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—९७	चिंतामणि रत्न	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—९६	स्मृति-रक्षा	स्मृति/अभिलेख
—९५	जलमग्न पाण्डुलिपि	जल/स्मृति
—९४	चारि मुखक मौन	मौन/अभाव
—९३	शंखक अन्तिम प्रश्न	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—९२	जल-घड़ीक कैदी	जल/स्मृति
—९१	चर्मकार टोलाक	पूर्व-कथात्मक इतिहास

	उजास	
—९०	बुधुआक जलसमाधि	जल/स्मृति
—८९	पहिल राति, पहिल बाढ़ि	आपदा/समुदाय
—८८	डाइनक आरोप	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—८७	टोलाक द्वारपर	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—८६	समयक गोहि	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—८५	आमिलक आदेश	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—८४	जंगलक मौन	मौन/अभाव
—८३	सोनमा माझिन	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—८२	पहिल कबड्डी	खेल/सामूहिकता
—८१	आक्रमणक छाया	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—८०	गीतक पहिल पाँति	लोक-स्मृति
—७९	क्षमाक पारी	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—७८	पंजीक बाहर	अभिलेख/समाज
—७७	बूढ़बाक मौन	मौन/अभाव
—७६	नारिकेल पातक पहिल पाठ	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—७५	तर्कक पहिल विद्रोह	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—७४	गाछक रोग	प्रकृति/साक्षी
—७३	मोहनक धुन	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—७२	विवाहक साक्षी	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—७१	महामारीक राति	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—७०	चन्ना गाछीक रोपाई	प्रकृति/साक्षी
—६९	गज-ग्राहक कथा	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—६८	अदालतक पहिल तारीख	कानून/न्याय
—६७	परदेशक पुकार	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—६६	स्त्री सभक राति-सभा	लिंग/सामुदायिक स्वर
—६५	नकली भूतक जुलूस	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—६४	सुखदेवक बदला	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—६३	छापाखानाक पहिल पन्ना	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—६२	राहतक प्रतीक्षा	पूर्व-कथात्मक इतिहास

–६१	आकाशक पुच्छलतारा	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–६०	अगिनक राति	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–५९	दोसर बाढ़ि	आपदा/समुदाय
–५८	तेसर बिपत्ति	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–५७	साहेबक नोटबुक	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–५६	स्वाधीनताक पुकार	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–५५	स्वतंत्रताक भोर	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–५४	जमींदारीक अन्त	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–५३	बिजलीक पहिल दीप	जल/स्मृति
–५२	सीमाक पुकार	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–५१	हरित क्रान्तिक बीया	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–५०	आपातकालक अन्हार	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–४९	सूखाक बरख	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–४८	रेडियो आ टेलीविजनक अवाज	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–४७	खाड़ी देशक बजार	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–४६	सद्भावक परीक्षा	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–४५	उदारीकरणक हवा	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–४४	पहिल कम्प्यूटर	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–४३	सुखल होइत धार	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–४२	हाथक फोनक चमत्कार	तकनीक/संचार
–४१	शहरक बजार	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–४०	सूचनाक अधिकार	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–३९	काजक गारंटी	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–३८	इंटरनेटक जाल	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–३७	स्क्रीनक पहिल छाया	डिजिटल नैतिकता
–३६	अनदेखल ठगक पहिल आहट	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–३५	देहक बजार खुजैत अछि	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–३४	उज्ज्वलक स्वप्न	कल्पना/नैतिकता
–३३	वकीलक कोटक छाया	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–३२	समुद्रपारक साये	पूर्व-कथात्मक इतिहास

—३१	सत्यव्रतक मौन	मौन/अभाव
—३०	गोप कुमारक दस्तावेज	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—२९	चन्द्रपालक सपना	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—२८	राघवक कोड	डिजिटल संरचना
—२७	आरुणिक निर्माण	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—२६	देविकाक गीत	लोक-स्मृति
—२५	मीराक निजता	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—२४	निशांतक बैंक	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—२३	नन्दक जन्म	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—२२	बारह सयक निकट	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—२१	अनन्याक प्रश्न	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—२०	छपाकक पहिल हिसाब	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—१९	सत्यव्रतक निर्णय	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—१८	अनन्या आ नन्दक भेंट	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—१७	शीशाक मीनारक जाल	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—१६	बटुकनाथक अंतिम मोड़	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—१५	चन्द्रपालक खाता	लेखा/प्रमाण
—१४	पुलक निर्माण	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—१३	गोप कुमारक संकलन	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—१२	चन्ना गाछीक कँपकँपी	प्रकृति/साक्षी
—११	बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—१०	पुलपर पहिल छपाक	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—९	जाँचक आरम्भ	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—८	प्रमाणक बाहर आएब	प्रमाण-विचार
—७	आधा-भूतक अनुभव	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—६	गोप कुमारक अन्तिम पन्ना	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—५	जालक उजागर होएब	पूर्व-कथात्मक इतिहास
—४	नामक अन्तिम सूची	नाम/पहिचान

–३	बारह सय बरखक पूर्णता	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–२	अगिला पीढ़ीक वचन	पूर्व-कथात्मक इतिहास
–१	अन्तिम साक्षी	पूर्व-कथात्मक इतिहास
१	चन्ना गाछीक कबड्डी	प्रकृति/साक्षी
२	दहिन कातक गाम	मुख्य कथाक विकास
३	छपाकक हिसाब	मुख्य कथाक विकास
४	तीस नाम,तीन सय लाश	नाम/पहिचान
५	तारीखक गोहि	मुख्य कथाक विकास
६	हार्वर्डक एथिक्स	मुख्य कथाक विकास
७	श्वासक भाव	मुख्य कथाक विकास
८	स्क्रीनक गोहि	डिजिटल नैतिकता
९	फूलमतिक नाम	नाम/पहिचान
१०	मीराक साहस	मुख्य कथाक विकास
११	धनक कारी नदी	मुख्य कथाक विकास
१२	पीपरक खोखरमे राखल राज	मुख्य कथाक विकास
१३	सीलबन्द आवरण	मुख्य कथाक विकास
१४	घर घुरबाक रस्ता	मुख्य कथाक विकास
१५	नामक जल	नाम/पहिचान
१६	चन्ना गाछीक अदालत	प्रकृति/साक्षी
१७	जीतक शोक	मुख्य कथाक विकास
१८	खाली अदालत	कानून/न्याय
१९	नामक अभिलेख	नाम/पहिचान
२०	स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला	डिजिटल नैतिकता
२१	निजताक शपथ	मुख्य कथाक विकास
२२	हार्वर्डक दोसर भाषण	मुख्य कथाक विकास
२३	बटुकनाथक खोज	मुख्य कथाक विकास
२४	उपन्यास फेर शुरू	मुख्य कथाक विकास
२५	मोन टांगल	मुख्य कथाक विकास
२६	बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा	मुख्य कथाक विकास
२७	चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन	डिजिटल नैतिकता

२८	राघव सिग्नलक चुप्पी	मुख्य कथाक विकास
२९	लाउ किन-हंगक सपना	मुख्य कथाक विकास
३०	धूर्त सभक भीतरक अदालत	कानून/न्याय
३१	हारल लोक सभक काज	मुख्य कथाक विकास
३२	तेसर कबड्डी	खेल/सामूहिकता
३३	मोनक परीक्षा	मुख्य कथाक विकास
३४	सुनैत नदी	मुख्य कथाक विकास
३५	नामक देहरी	नाम/पहिचान
३६	घर, भय, सपना	मुख्य कथाक विकास
३७	तीन कंकड़	मुख्य कथाक विकास
३८	नामक उच्चारण	नाम/पहिचान
३९	बीजक शान्ति	पारिस्थितिकी/भविष्य
४०	ओसक अक्षर	मुख्य कथाक विकास
४१	नामक नाव	नाम/पहिचान
४२	भारक वृत्त	मुख्य कथाक विकास
४३	चलैत भार	मुख्य कथाक विकास
४४	पोतीक कापी	मुख्य कथाक विकास
४५	भीतरक हवा	मुख्य कथाक विकास
४६	उत्तराधिकारक अन्हार	मुख्य कथाक विकास
४७	गज-ग्राह आख्यान	मुख्य कथाक विकास
४८	पुकार	मुख्य कथाक विकास
४९	मौनक अभिलेख	मौन/अभाव
५०	देहक बादक नाम	नाम/पहिचान
५१	साक्षीक भार	मुख्य कथाक विकास
५२	अगिला आवाज	स्वर/साक्ष्य
५३	कटानक बादक बिहान	मुख्य कथाक विकास
५४	ठूँठक चारू कात	मुख्य कथाक विकास
५५	नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र	मुख्य कथाक विकास
५६	स्मृतिक पहिल नक्शा	स्मृति/अभिलेख
५७	गंगेशक प्रश्न	मुख्य कथाक विकास
५८	चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग	मुख्य कथाक विकास

५९	राघव सिग्नलक नव कोड	डिजिटल संरचना
६०	सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन	मौन/अभाव
६१	पहिल नाम-उत्सव	नाम/पहिचान
६२	ठूँठमे हरियर बिंदु	मुख्य कथाक विकास
६३	गढ नारिकेल विरासत-परियोजना	मुख्य कथाक विकास
६४	स्मृति पर निविदा	स्मृति/अभिलेख
६५	ब्रूमक पुनरागमन	मुख्य कथाक विकास
६६	हार्वर्डक शोध-दल	मुख्य कथाक विकास
६७	मीरा आ दृष्टिक अधिकार	मुख्य कथाक विकास
६८	देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग	नाम/पहिचान
६९	नामक चोरी	नाम/पहिचान
७०	पनिडुब्बीक गवाही	साक्ष्य/उत्तरदायित्व
७१	नकली भूतक जुलूस	मुख्य कथाक विकास
७२	चन्ना गाछीक हँसी	प्रकृति/साक्षी
७३	बटुकनाथक स्वप्न-दरबार	कल्पना/नैतिकता
७४ — पाठरूप क	चन्द्रपालक पहिल स्वीकार	मुख्य कथाक विकास
७४ — पाठरूप ख	चन्द्रपालक पहिल स्वीकार	मुख्य कथाक विकास
७५	राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क	मुख्य कथाक विकास
७६	लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा	मुख्य कथाक विकास
७७	हवाई अड्डापर गोहि	मुख्य कथाक विकास
७८	सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद	मौन/अभाव
७९	ब्रूमक दान-पत्र	मुख्य कथाक विकास
८०	हरिहरनक संतान	मुख्य कथाक विकास
८१	बत्राक अधूरा नाम	नाम/पहिचान
८२	अंदरक गज-ग्राह	मुख्य कथाक विकास
८३	नारिकेल पात	मुख्य कथाक विकास

	पाठशाला	
८४	पहिल पाठ: उपस्थित	मुख्य कथाक विकास
८५	स्त्री सभक राति-सभा	लिंग/सामुदायिक स्वर
८६	मजदूरक पाँव	मुख्य कथाक विकास
८७	स्क्रीनक उपवास	डिजिटल नैतिकता
८८	ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ	मुख्य कथाक विकास
८९	सत्यव्रतक जन-सुनवाई	मुख्य कथाक विकास
९०	नामक संविधान	नाम/पहिचान
९१	धूर्त सभक अनुपस्थिति	मुख्य कथाक विकास
९२	ठूँठक छाँह	मुख्य कथाक विकास
९३	पुनः बाढ़ि	आपदा/समुदाय
९४	गोहि सभक वापसी	मुख्य कथाक विकास
९५	लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा	मुख्य कथाक विकास
९६	बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा	मुख्य कथाक विकास
९७	चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट	मुख्य कथाक विकास
९८	राघवक अंतिम संदेश	मुख्य कथाक विकास
९९	सत्यव्रत मेहताक गवाही	साक्ष्य/उत्तरदायित्व
१००	गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ	मुख्य कथाक विकास
१०१	अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण	नाम/पहिचान
१०२	स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी	खेल/सामूहिकता
१०३	स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ	नाम/पहिचान
१०४	जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि	मुख्य कथाक विकास
१०५	पृथ्वीक पहिल पहरा	मुख्य कथाक विकास
१०६	बीजक गवाही	पारिस्थितिकी/भविष्य
१०७	बीजक चोरी	पारिस्थितिकी/भविष्य

१०८	माटिक मुँह	धरती/जीवन
१०९	जलक स्मृति	स्मृति/अभिलेख
११०	आगिक साक्षी	मुख्य कथाक विकास
१११	वायुक प्रश्न	मुख्य कथाक विकास
११२	आकाशक रिक्ति	मुख्य कथाक विकास
११३	शब्दक देह	मुख्य कथाक विकास
११४	अर्थक आत्मा	मुख्य कथाक विकास
११५	कण्ठक पहरा	मुख्य कथाक विकास
११६	मौनक उत्तराधिकार	मौन/अभाव
११७	स्मृतिक ऋण	स्मृति/अभिलेख
११८	देहक अधिकार	मुख्य कथाक विकास
११९	श्रमक देह	श्रम/देह
१२०	न्यायक देह	न्याय/प्रमाण
१२१	जातिक पिंजरा	जाति/समानता
१२२	गंगेशक मुक्ति	मुख्य कथाक विकास
१२३	तत्त्वचिन्तामणिक पात	मुख्य कथाक विकास
१२४	प्रमाणक अग्नि	प्रमाण-विचार
१२५	निर्णयक धान	मुख्य कथाक विकास
१२६	अन्नक न्याय	न्याय/प्रमाण
१२७	भूखक नाम	नाम/पहिचान
१२८	प्यासक नाम	नाम/पहिचान
१२९	नूनक शपथ	मुख्य कथाक विकास
१३०	स्वादक न्याय	न्याय/प्रमाण
१३१	साझा थारी	मुख्य कथाक विकास
१३२	रसोइक गणराज्य	साझा जीवन
१३३	विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट	सार्वजनिक स्मृति
१३४	कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ	खेल/सामूहिकता
१३५	विदेह नाट्य उत्सवक मंचन	सार्वजनिक स्मृति
१३६	तालीक बादक सन्नाटा	मुख्य कथाक विकास
१३७	दर्शकक गवाही	साक्ष्य/उत्तरदायित्व
१३८	मंचसँ बाहरक जुलूस	मुख्य कथाक विकास
१३९	बाटक रंगमंच	सार्वजनिक स्मृति
१४०	चल चौपाल	मुख्य कथाक विकास

१४१	बरामदाक फैसला	मुख्य कथाक विकास
१४२	रेकर्ड-घरक अन्हार	अभिलेख/साक्ष्य
१४३	रद्दी बोराक गवाही	साक्ष्य/उत्तरदायित्व
१४४	नामक यात्रा	नाम/पहिचान
१४५	डरक पहिल दरार	मुख्य कथाक विकास
१४६	मुहरक दाग	दस्तावेज/सत्ता
१४७	घर-घरक दस्तक	मुख्य कथाक विकास
१४८	मिलावटक पहिचान	मुख्य कथाक विकास
१४९	जालक नक्शा	मुख्य कथाक विकास
१५०	मुहरक छाया	दस्तावेज/सत्ता
१५१	मुहर चलौनिहार हाथ	दस्तावेज/सत्ता
१५२	आदेशक स्रोत	मुख्य कथाक विकास
१५३	संकेतक पाछाँ नाम	नाम/पहिचान
१५४	बाबाक वचन	मुख्य कथाक विकास
१५५	सेवाक खाता	लेखा/प्रमाण
१५६	दानक ऋण	मुख्य कथाक विकास
१५७	लोहेक संदूक	मुख्य कथाक विकास
१५८	सहमति-कापीक मिलान	मुख्य कथाक विकास
१५९	मृतकक सहमति	मुख्य कथाक विकास
१६०	गोदामक छाया	मुख्य कथाक विकास
१६१	फोनक कैद	तकनीक/संचार
१६२	आवाजक मोहर	स्वर/साक्ष्य
१६३	हटायल कागजक निशान	मुख्य कथाक विकास
१६४	चन्द्रपालक छायाक पेट	मुख्य कथाक विकास
१६५	छायाक देह	मुख्य कथाक विकास
१६६	इमली घाटक कोठार	मुख्य कथाक विकास
१६७	नदी पारक आवाज	स्वर/साक्ष्य
१६८	शहरक गला	मुख्य कथाक विकास
१६९	चन्द्र दूक दरबज्जा	मुख्य कथाक विकास
१७०	चन्द्र एकक खोल	मुख्य कथाक विकास
१७१	चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत	प्रकृति/साक्षी
१७२	गाँठक पढ़नाइ	मुख्य कथाक विकास

१७३	पंजीक पहरा	अभिलेख/समाज
१७४	अदृश्य अदालतक चौखट	कानून/न्याय
१७५	मुहरबाहकक नाम	नाम/पहिचान
१७६	सेवा-समारोहक अन्हार	मुख्य कथाक विकास
१७७	घर-घरक कागज	मुख्य कथाक विकास
१७८	ऊपरक कोठरी	मुख्य कथाक विकास
१७९	मुहरक पगचिन्ह	दस्तावेज/सत्ता
१८०	शहरक खाता	लेखा/प्रमाण
१८१	सिमक छाया	मुख्य कथाक विकास
१८२	हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा	मुख्य कथाक विकास
१८३	फोनक भीतरक चेहरा	तकनीक/संचार
१८४	आवाजक नकाब	स्वर/साक्ष्य
१८५	मास्टरक कमरा	मुख्य कथाक विकास
१८६	मधवेशक असली नाम	नाम/पहिचान
१८७	छत्ताक भीतरक रानी	मुख्य कथाक विकास
१८८	महेश्वरक मुहर	दस्तावेज/सत्ता
१८९	लोहेक पेटी	मुख्य कथाक विकास
१९०	नील पंजी	अभिलेख/समाज
१९१	ध्रुवेशक कुर्सी	मुख्य कथाक विकास
१९२	बन्द रेकॉर्डरक स्वर	मुख्य कथाक विकास
१९३	आवाजक चेहरा	स्वर/साक्ष्य
१९४	साँसक समन	मुख्य कथाक विकास
१९५	रोकल खाता	लेखा/प्रमाण
१९६	जलसमाधिक अर्थ	जल/स्मृति
१९७	ऊपर उठल नाम	नाम/पहिचान
१९८	अपराधीक धरती	अपराध/उत्तरदायित्व
१९९	संदूकक भीतरक बिहान	मुख्य कथाक विकास
२००	नामक पहरुआ	नाम/पहिचान
परिशिष्ट १	गढ़ नारिकेल लोककोश (बाल संस्करण)	लोकगीत, खिस्सा, श्रम, संस्कार आ जीवन-स्मृतिक

		संकलन
परिशिष्ट २	अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत (बाल संस्करण)	अध्याय १०१–१०४क गीतात्मक पुनर्पाठ
परिशिष्ट ३	न्याय-दर्शनक मूल अन्तःकथा (बाल संस्करण)	प्रमाण, अनुमान, अभाव आ भ्रमक बालोपयोगी दार्शनिक आख्यान

चतुर्थ खण्ड

नाटक, रंगमंच आ नाट्यालोचना

आलेख ३२ · नाटक, रंगमंच आ नाट्यालोचना

निनाद : मैथिली नाट्यालोचनाक पुनरावलोकन

सारांश

मैथिली साहित्यमे नाटकक वाचिक आ दृश्य-परम्परा सहस्राब्द पुरान अछि। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक धूर्तसमागम, विद्यापतिक गोरक्षविजय व मणिमंजरी आ उमापतिक पारिजातहरण सँ ल' क' आधुनिक कालक कीर्तनिया आ सामाजिक नाटक धरि ई धारा अपन भाषिक स्वायत्तता आ लोक-सम्पृक्ततासँ अक्षुण्ण रखने अछि।

बीजशब्द

निनाद :मैथिली नाट्यालोचनाक पुनरावलोकन ·मैथिली नाटक ·रंगमंच · नाट्यालोचना ·प्रदर्शन

‘निनाद’ (मैथिली नाट्यालोचना): सैद्धान्तिक, रंगमंचीय, नव्य-न्यायिक आ समानान्तर-इतिहासपरक समालोचनात्मक पुनरावलोकन

कृति: **Ninad — Dramatic Cricism in Maithili** | लेखक: कमल मोहन चुन्नू | संस्करण: **2017** | नवारम्भ प्रकाशन, पटना

आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य आ ग्रन्थक दाबी

मैथिली साहित्यमे नाटकक वाचिक आ दृश्य-परम्परा सहस्राब्द पुरान अछि। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक धूर्तसमागम, विद्यापतिक गोरक्षविजय व मणिमंजरी आ उमापतिक पारिजातहरण सँ ल' क' आधुनिक कालक कीर्तनिया आ सामाजिक नाटक धरि ई धारा अपन भाषिक स्वायत्तता आ लोक-सम्पृक्ततासँ अक्षुण्ण रखने अछि। नाटकक एहि सुदीर्घ ऐतिहासिक विकासक वस्तुनिष्ठ, तार्किक आ मंचीय विश्लेषण मैथिली आलोचना-जगतक प्राथमिक अपेक्षा रहल अछि। एही पृष्ठभूमिसँ कमल मोहन चुन्नू द्वारा रचित आ नवारम्भ प्रकाशन, पटना/मधुबनीसँ 2017 मे प्रकाशित पोथी निनाद (मैथिली नाट्यालोचना) स्वयंकेँ एकटा युगान्तकारी कृतिक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। पोथीक भूमिकामे लेखक ई आक्रामक दाबी करैत छथि जे मैथिलीमे नाटकक साहित्यिक आ

मंचीय दुनू मूल्यकेँ एक संग राखि विचार करयबला ई पहिल अथवा सर्वथा विरल प्रयास थिक।

मुदा जखन एहि कृतिक अन्तर्वस्तुक परीक्षण भारतीय नाट्यशास्त्र, पाश्चात्य रंग-सिद्धान्त, नव्य-न्यायक तर्क-पद्धति, आ 'विदेह' समानान्तर साहित्य-इतिहासक मानदण्डपर कयल जाइत अछि, तखन एकर दाबी सर्वथा भ्रामक सिद्ध होइत अछि। ई पोथी वस्तुपरक नाट्यालोचनाक ठाम व्यक्तिगत यात्रा-वृत्तान्त, अनौपचारिक दैनन्दिनी, नाट्य-संस्था सभक एकपक्षीय प्रशस्ति आ मुख्यधाराक सुखाएल रिपोर्टिंगक संकलन बनि क' रहि गेल अछि। संगहि, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान (CIIL) जकाँ संस्थाक थोक पुस्तक-खरीद योजनाक व्यावसायिक लाभकेँ ताकि छापल गेल एहि प्रकारक पोथी राष्ट्रिय स्तरपर मैथिलीक अकादमिक मान-मर्यादाकेँ अपूरणीय क्षति पहुँचाबैत अछि।

पोथीक शीर्षक-पंक्ति स्वयं एकटा दावा करैत अछि — "मैथिली नाट्यालोचना।" मुदा भूमिका ('निनादक संग') मे लेखक स्वयं स्वीकार करैत छथि जे एहि मे "नाटकक आलोचना, नाट्य-मंचनक समीक्षा, रंगयात्रा-वृत्तांत आदि" तीनू अछि। ई स्वीकृति निष्पाप नहि अछि — ई एकटा वर्गीकरण-सम्बन्धी समस्याक स्वीकृति थिक जकरा लेखक विधागत सतर्कताक अभावमे "एक ठाम एक संग" राखि देने छथि। नाट्यालोचना (dramatic criticism), नाट्य-इतिहास-लेखन (theatre historiography), आ रंगयात्रा-वृत्तांत (travelogue/memoir) — तीनू भिन्न ज्ञानमीमांसीय अनुशासन थिक, जकर साक्ष्य-मानक (evidentiary standard), विश्लेषण-पद्धति, आ पाठकीय अपेक्षा सर्वथा भिन्न होइत अछि। एहि तीनूकेँ अभेद मानब — जेना पोथीमे बेर-बेर होइत अछि (जेना 'मैलोरंगक विलाप' आ 'मैथिली रंगकर्मक नमहर आ सुखद घटना' शीर्षक अध्याय, जे शुद्ध रिपोर्ताज-वृत्तांत छैक, नाट्यालोचना नहि) — से ओहि मौलिक भ्रमक प्रमाण थिक जे लेखक स्वयं भूमिकामे इंगित कयने छथि जखन ओ कहैत छथि जे "रंगमंचीय आलोचना स्वाभाविक रूपेँ नाट्य-मंचनक आलोचना बेसी अछि, नाट्य-साहित्यिक आलोचना कम।" ई स्वीकारोक्ति एकटा गम्भीर संरचनात्मक कमजोरीक स्व-निदान थिक, मुदा एहि निदानक बादो पोथीक अधिकांश भाग एहि दोषकेँ सुधारबाक बदला ओहि मे आओर धसैत जाइत अछि।

प्रस्तावना: नाट्यालोचना आ रंग-वृत्तान्तक बीचक सीमा

‘निनाद’ मैथिली रंगकर्म, नाटक, अभिनेता, निर्देशक, संस्था, प्रस्तुति, संगीत, एकल-नाट्य, शहरी रंगकर्म आ समकालीन रंग-विमर्शसँ सम्बन्धित लेखसभक संकलन अछि। पोथीक घोषित पहचान नाट्यालोचनाक अछि; तें एकर मूल्यांकन केवल एहि आधार पर नहि भऽ सकैत अछि जे एहिमे मैथिली रंगमंच सम्बन्धी कतेक सूचना संचित अछि। मूल प्रश्न ई अछि जे सूचना, स्मृति, प्रशंसा, घटना-वर्णन, पुस्तक-परिचय आ यात्रा-वृत्तान्त आलोचनात्मक ज्ञानमे कोना रूपान्तरित भेल अछि। नाट्यालोचना तखन आरम्भ होइत अछि जखन आलोचक प्रदर्शन अथवा नाट्यपाठक विशिष्ट संरचना, भाषा, अभिनय, दृश्य-विधान, संगीत, दर्शक-संबन्ध, ऐतिहासिक स्थिति आ वैचारिक अन्तर्विरोध कैं स्पष्ट कसौटी पर जाँचैत अछि।

एहि बिन्दु पर ‘निनाद’क सभसँ उल्लेखनीय विरोधाभास सोझाँ अबैत अछि। आरम्भिक लेख ‘मैथिली नाट्यालोचनाक वस्तु-स्थिति’मे लेखक स्वयं बुझैत छथि जे नाटक कैं कथा, उपन्यास वा सामान्य पुस्तक-समीक्षाक औजारसँ मात्र नापल नहि जा सकैत अछि; अभिनय, प्रस्तुति, तकनीक, मंचीयता, निर्देशक-दृष्टि आ बदलैत रंगभाषा लेल स्वतंत्र आलोचनात्मक संवेदना आवश्यक अछि। मुदा पोथीक अनेक बादक लेख एहि उद्घोषणाक अनुरूप पद्धति विकसित नहि करैत अछि। ई आत्म-विरोध पुस्तकक आलोचनात्मक समस्याक केन्द्र अछि: सिद्धान्तक आवश्यकता स्वीकृत अछि, किन्तु सिद्धान्तक अनुप्रयोग असंगत अछि।

पोथीमे बहुमूल्य तथ्यात्मक सामग्री अछि। अनेक रंगकर्मी, नाटक, संस्था, तिथि, मंचीय प्रसंग, प्रदर्शनक स्मृति आ साहित्यिक स्रोतक उल्लेख भविष्यक शोध लेल उपयोगी भऽ सकैत अछि। मुदा दस्तावेजी उपयोगिता आ नाट्यालोचनात्मक सिद्धि एक वस्तु नहि। जे सामग्री रंग-इतिहासक प्राथमिक स्रोत बनि सकैत अछि, से अनिवार्य रूपेँ विकसित आलोचना नहि बनैत अछि। एहि अन्तरक पहचान बिना ‘निनाद’क गुण-दोष दुनू ठीकसँ देखल नहि जा सकैत अछि।

निनादक आन्तरिक संरचनाक अवलोकन कयलापर ई स्पष्ट भ' जाइत अछि जे ग्रन्थक मूल ढाँचा कोनो पूर्व-नियोजित, व्यवस्थित आलोचनात्मक

अनुसन्धानक प्रतिफल नहि थिक। पोथी कुल १०४ पृष्ठमे समेटल गेल अछि, जकर मूल्य ३०० टका राखल गेल अछि। ग्रन्थक आरम्भमे 'मैथिली नाट्यालोचनाक वस्तु-स्थिति' शीर्षक सँ एकटा विस्तृत भूमिका (पृष्ठ ५-१६) देल गेल अछि, जकर उपरान्त दसटा अध्याय संयोजित अछि। भूमिकामे लेखक अकादमिक जगतक आलोचक सभपर 'नाट्येतर' आ 'अपारदर्शी' हेबाक आरोप लगबैत ई प्रतिज्ञा करैत छथि जे प्रस्तुत पोथी नाटकक मंचीय आ आलेखीय दुनू पक्षक सन्तुलित इतिहास प्रस्तुत करत। मुदा, अध्याय सभक वास्तविक पाठ देखलापर ई दाबी खण्ड-खण्ड भ' जाइत अछि। पोथीमे संकलित सामग्री वस्तुतः विभिन्न स्मारिका, अभिनन्दन-ग्रन्थ, स्थानीय गोष्ठी आ अखबारी आलेखक असंपादित कतरन मात्र अछि, जकर विधागत स्वरूप आलोचनात्मक नहि भ' क' संस्मरणात्मक आ विवरणात्मक अछि।

तालिकासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे पोथीक दसमे सँ कम सँ कम चारि अध्याय (अध्याय ६, ७, ८ आ १०) सोझे यात्रा-संस्मरण आ नाट्य-दलक आन्तरिक दैनन्दिनीक श्रेणीमे अबैत अछि। उदाहरणार्थ, दसम अध्यायमे लेखक दिल्लीमे यात्रीजीक कवितापर आधारित नाटक देखबाक लेल यात्रा-वृत्तान्त प्रस्तुत करैत छथि, जाहिमे जाड़क कनकनी, कुहेसक कारणे ट्रेनक लेट होयबाक आशंका, नई दिल्ली स्टेशनपर उतरि गान्धी शान्ति प्रतिष्ठानमे चाह-पान करब, श्रीराम सेन्टर पहुँचि रंगकर्मी सभ द्वारा झाड़ू लगायब आ मंच सजायब, प्रेमलता मिश्रकेँ पुरस्कार भेटब आ अन्तमे लक्ष्मीनगरमे अपन पितियौतक डेरापर जा क' सुतब—एहि सभक व्यर्थ विवरण भरल पड़ल अछि।

तहिना आठम अध्यायमे 'जल डमरू बाजे'क पटना मंचनक काल भारतीय नृत्यकला मन्दिरक बुकिंगक झंझट, हॉलक गन्दगी, आयोजकक उदासीनता आ अगिला दिन विद्यापति भवनमे रंगकर्मी सभक संग बैसि क' खाएल गेल 'मधुर' (मिठाई) क उल्लेख आलोचनाक नामपर कयल गेल अछि। कोनो गम्भीर नाट्य-समीक्षकक दायित्व अभिनेताक आंगिक गति, वाचिक आरोह-अवरोह, प्रकाश-परिकल्पना आ दर्शकपर पड़यबला रसात्मक वा वैचारिक प्रभावक अन्वेषण करब होइत अछि। निनादमे ई विश्लेषणात्मक दृष्टि पूर्णतः लुप्त अछि; एकर बदला लेखक अपन आत्मीय रंगकर्मी सभक "मोटामोटा गदगदी

समीक्षा" प्रस्तुत करैत छथि, जतय आलोचना मात्र व्यक्तिगत सम्बन्ध निर्वाह करबाक औजार बनि जाइत अछि।

पोथीक अध्याय-संरचना, विधागत यथार्थ आ आलोचनात्मक उपादेयता

अध्याय संख्या आ शीर्षक	पृष्ठ संख्या	मूल प्रकाशन सन्दर्भ आ वर्ष	विधागत यथार्थ	आलोचनात्मक उपादेयता आ स्वरूप
भूमिका: मैथिली नाट्यालोचनाक वस्तु-स्थिति	5–16	2017 (गुरु पूर्णिमा)	परिचयात्मक घोषणापत्र	आक्रामक दाबीक बादहु सैद्धान्तिक मानदण्डक अभाव।
1. विद्यापतिक मणिमंजरी	17–25	कर्णामृत, कोलकाता, 2013	पाठ-परिचय आ शो-समीक्षा	सामान्य कथा-विवरण तथा 'मैलोरंग'क प्रस्तुतिक सतही ब्योरा।
2. कविवर जीवन झाक नाटकक काव्यतत्व	26–33	साहित्य अकादेमी संगोष्ठी, पटना, 2014	पारम्परिक काव्यशास्त्रीय आलेख	छन्द, रस आ अलंकारक प्राथमिक गणना; मंचीय विश्लेषण शून्य।
3. एकल-नाट्य आ मैथिली रंगकर्म	34–46	गोष्ठी प्रपत्र, पटना, 2015	नाट्य-प्रारूप परिचर्चा	केरलक 'कुत्तू'क सन्दर्भ द' क' स्थानीय 'भंगिमा'

अध्याय संख्या आ शीर्षक	पृष्ठ संख्या	मूल प्रकाशन सन्दर्भ आ वर्ष	विधागत यथार्थ	आलोचनात्मक उपादेयता आ स्वरूप
				दलक अभिनेताक स्तुति।
4. नाट्य-संगीत आ मैथिली रंगमंच	47–53	आधुनिक मैथिली नाटक: पहिल शताब्दी, 2006	स्मारिका आलेख	भरतक प्राथमिक उद्धरणक बाद स्थानीय निर्देशकसभ पर आक्षेप।
5. नाट्य-निर्देश आ मलंगियाजीक पक्ष	54–61	महेन्द्र मलंगिया: जीवन एवं सृजन, 2015	अभिनन्दन ग्रन्थक आलेख	महेन्द्र मलंगियाक रंग-निर्देशनक एकपक्षीय, अतिरंजित प्रशंसा।
6. शहरी रंगकर्म: मैथिल सन्दर्भ	62–68	सांध्य गोष्ठी, पटना, 2012	संस्थागत वक्तव्य	पटनाक रंगकर्मी सभक आपसी गतिरोध आ आर्थिक संकटपर विलाप।
7. भंगिमा: सक्रिय रंगकर्मक समर्थ प्रतिमान	69–80	भंगिमा, अंक-52, पटना, 2012	संस्थागत स्मारिका रिपोर्ट	'भंगिमा' संस्थाक नाटक, निर्देशक आ अभिनेता

अध्याय संख्या आ शीर्षक	पृष्ठ संख्या	मूल प्रकाशन सन्दर्भ आ वर्ष	विधागत यथार्थ	आलोचनात्मक उपादेयता आ स्वरूप
				सभक नामावली।
8. मैथिली रंगकर्मक नमहर आ सुखद घटना	81–86	मिथिला सृजन, अंक-03, 2010	अखबारी रिपोर्ताज	'जल डमरू बाजे'क मंचनक अव्यवस्था आ ग्रीनरूमक गपशप।
9. अमरजीक रंगदृष्टि	87–99	अप्रकाशित समीक्षा, 2011	पुस्तक-समीक्षा आ आक्षेप	साहित्य अकादेमीक पोथीक सम्पादनपर व्यक्तिगत क्षोभ।
10. मैलोरंगक विलाप: रंगयात्रा-प्रसंग	100–104	सांध्य गोष्ठी, पटना, 2011	यात्रा-संस्मरण आ डायरी	पटना सँ दिल्लीक रेल यात्रा, जलपान, पुरस्कार आ पाटीदारक घरक विवरण।

१. नाटचालोचनाक मूल कसौटी: पाठ नहि, घटना सेहो

नाटक साहित्य सेहो अछि, मुदा रंगमंच केवल साहित्य नहि। लिखित नाटचपाठ सम्भावित प्रदर्शनक एक आधार अछि; वास्तविक प्रस्तुति अभिनेता, निर्देशक, शरीर, स्वर, मौन, प्रकाश, वस्त्र, मंच-संरचना, संगीत, लय, समय, दूरी, प्रवेश-निर्गमन, दर्शक आ स्थानक संयुक्त घटना अछि। तें नाटचालोचना यदि

केवल कथा-सार, विषय-वस्तु, पात्रक सामान्य परिचय आ लेखकक उद्देश्य धरि सीमित रहैत अछि तँ ओ साहित्यिक पुस्तक-समीक्षाक सीमा पार नहि करैत अछि।

‘निनाद’क लेखनमे अनेक बेर नाट्यकर्मक विषय अवश्य उपस्थित अछि, मुदा प्रस्तुति-विश्लेषणक सूक्ष्मता अभावग्रस्त देखाइत अछि। कोनो प्रस्तुति ‘प्रभावशाली’, ‘सफल’, ‘महत्त्वपूर्ण’, ‘सुखद’ वा ‘स्मरणीय’ कहल गेल—ई मूल्यनिर्णय तखन आलोचनात्मक वजन पबैत अछि जखन ओकर कारण दृश्य-दर-दृश्य वा अभिनय-दर-अभिनय स्पष्ट हो। अभिनेता कोन क्षणमे देहक केन्द्र बदललक? संवादक अर्थ विरामसँ कोना फिरल? प्रकाश पात्रक नैतिक स्थिति कँ कोना चिन्हित कएलक? मंच पर दूरी सम्बन्धक शक्ति-संतुलन कोना बनबैत अछि? गीत कथा रोकैत अछि कि ओकर अन्तराल खोलैत अछि? दर्शकक प्रतिक्रिया प्रदर्शनक लय बदलैत अछि कि नहि? एहन प्रश्न पोथीक सामान्य लेखन-विधिमे नियमित रूपेँ प्रवेश नहि करैत अछि।

फलतः अनेक ठाम आलोचनात्मक विशेषण प्रमाणक स्थान लऽ लैत अछि। साहित्यिक आलोचनामे विशेषण निषिद्ध नहि, परन्तु विशेषणक पाछाँ विश्लेषण चाही। ‘श्रेष्ठ’ कहबाक अर्थ अछि—कुन संरचनात्मक वा सौन्दर्यात्मक कारणसँ श्रेष्ठ? ‘प्रयोगधर्मी’ कहबाक अर्थ अछि—कुन प्रचलित रंग-व्याकरण तोड़ल गेल? ‘लोकधर्मी’ कहबाक अर्थ अछि—लोकक कोन प्रदर्शन-परम्परा, कोन लय, कोन सामाजिक प्रसंग, कोन दर्शक-संबन्ध? ‘आधुनिक’ कहबाक अर्थ अछि—समयबोध, रूप, अभिनय-शैली, संरचना वा वैचारिकीमे कोन आधुनिकता? एहन परिभाषात्मक कठोरता बिना आलोचना प्रशंसा वा निन्दाक भाषामे ढलि जाइत अछि।

२. भरत, रस आ अभिनय: भारतीय नाट्यदृष्टिक कसौटी

भारतीय नाट्यपरम्परामे भरतमुनिक ‘नाट्यशास्त्र’ नाटक कँ केवल लिखित पाठक रूपमे नहि देखैत अछि। रस, भाव, अभिनय, वृत्ति, प्रवृत्ति, धर्मी, गीत, वाद्य, रंगपीठ, वेश, गति, आङ्गिक-वाचिक-आहार्य-सात्त्विक अभिव्यक्ति—ई सभ मिलि नाट्य बनबैत अछि। एहि दृष्टिसँ कोनो मैथिली प्रस्तुति पर

आलोचना करैत समय कथा-सारसँ पहिने अथवा ओकर संग ई देखबाक आवश्यकता अछि जे नाट्य-अर्थ शरीर आ मंच पर कोना मूर्त भेल।

'निनाद'मे नाट्यशास्त्रीय शब्द, संदर्भ आ संगीत-सम्बन्धी परम्पराक उल्लेख भेटैत अछि, मुदा रस-निष्पत्ति आ अभिनय-विन्यासक ठोस विश्लेषण विरल अछि। उदाहरणार्थ, करुण प्रसंग कैं 'करुण' कहि देब रस-विश्लेषण नहि। विभाव कोन? आलम्बन-विभाव आ उद्दीपन-विभाव कोना उपस्थित भेल? अनुभाव शरीर, नेत्र, स्वर, गति वा मौनमे कोना अभिव्यक्त भेल? संचारी भाव कोना चलायमान रहल? स्थायीभाव रसत्व धरि कोन प्रक्रिया सँ पहुँचल? एहि प्रश्नसभक उत्तर बिना 'रस' केवल नाम बनि रहि जाइत अछि।

अभिनवगुप्तक व्याख्या एहि आलोचनात्मक कमी कैं आरो स्पष्ट करैत अछि। रंगमंच पर निजी दुःख अथवा व्यक्तिगत प्रसंग सार्वजनीन अनुभूति बनेबाक प्रक्रिया साधारणीकरणसँ जुड़ैत अछि। सफल अभिनय दर्शक कैं पात्रक अपन जीवनीमे कैद नहि करैत अछि, वरन् अनुभवक विशिष्टता सँ सार्वभौम संवेदनाक बाट खोलैत अछि। 'निनाद' यदि एहि कसौटी कैं अपनबैत तँ कलाकारक प्रशंसासँ आगू बढ़ि ई जाँचि सकैत छल जे अभिनय दर्शकक अनुभवमे कोन रूपान्तरण उत्पन्न करैत अछि।

आङ्गिक, वाचिक, आहार्य आ सात्त्विक अभिनयक चारि स्तर मैथिली रंगमंचक विश्लेषण लेल विशेष रूपेँ उपयुक्त छल। मैथिली भाषाक स्वर-लय, क्षेत्रीय उच्चारण, देह-भंगिमा, लोक-संस्कारित संकेत, पाग-पोशाक, ग्रामीण-शहरी वेशभूषा, स्त्री-पुरुषक शरीर-व्याकरण, मंचीय मौन—ऐ सभकैं एहि वर्गीकरणक सहायता सँ सूक्ष्म रूपेँ पढ़ल जा सकैत छल। पोथी एहि सम्भावना कैं छूबैत अछि, परन्तु आलोचनात्मक प्रणाली नहि बनबैत अछि।

'कविवर जीवन झाक नाटकक काव्यतत्व' अध्यायमे लेखक भरतक नाट्यशास्त्र, अभिनवगुप्त, विश्वनाथ (साहित्यदर्पण), आ जगन्नाथ (रसगंगाधर) कैं उद्धृत करैत काव्य आ नाट्यक सम्बन्ध पर विचार करैत छथि — ई पोथीक सैद्धान्तिक दृष्टिएँ सभसँ सबल अंश थिक। मुदा एतहु एकटा मौलिक असंगति देखल जाइत अछि: लेखक एक दिस मानैत छथि जे "नाटकक मंच-मूल्य ओकर प्रधान तत्व अछि आ साहित्य-मूल्य ओकर सहयोगी तत्व," मुदा दोसर दिस समग्र पोथीक विश्लेषण-पद्धति (शब्दालंकार,

अर्थालंकार, छन्द-विधान, अनुप्रासक गणना आदि) विशुद्ध काव्यशास्त्रीय अछि, मंचीय नहि। रस-निष्पत्तिक चर्चा (शृंगार, वीर, भयानक, अद्‌भुत आदिक उदाहरण-सूची) भरतमुनिक विभाव-अनुभाव-व्यभिचारिभाव सिद्धान्तक यांत्रिक प्रयोग मात्र अछि — रसक केना मंचपर, अभिनेताक शरीर आ दर्शकक सहृदयतासँ, "निष्पत्ति" होइत अछि, ताहि प्रक्रियापर कोनो विचार नहि अछि। दोसर शब्दमे, लेखक अपनहि स्थापित सिद्धान्त ('नाट्यक मंच-मूल्य प्रधान') कैं अपन प्रयुक्त पद्धतिमे (कविताक जकाँ पाठ-केन्द्रित विश्लेषण) खण्डित करैत छथि। ई भरतमुनिक 'दृश्यकाव्य' अवधारणाकैं आधा बुझबाक परिणाम थिक — दृश्यकाव्यमे 'दृश्य' पक्षकैं सैद्धान्तिक स्तरपर स्वीकार क' प्रायोगिक स्तरपर पूर्णतः त्यागि देल गेल अछि।

नाट्य-सिद्धान्तक दृष्टिसँ निनादक विश्लेषण कयलापर लेखकक सैद्धान्तिक बुझबाक खोखलापन स्पष्ट भ' जाइत अछि। लेखक पाण्डित्य-प्रदर्शनक लेल भरतमुनिक नाट्यशास्त्र, संस्कृत काव्यशास्त्र आ पाश्चात्य विचारक सभक नाम त' अनैत छथि, मुदा हुनकर व्यावहारिक प्रयोग सर्वथा दोषपूर्ण अछि।

भारतीय परम्परामे भरतमुनि नाट्यकैं आंगिक, वाचिक, सात्त्विक आ आहार्य —एहि चारि अभिनयक समन्वित रस-निष्पत्ति व्यापारक रूपमे परिभाषित कयने छथि। नाटक मात्र पाठ्य-काव्य नहि अछि, अपितु प्रेक्षागृहमे उपस्थित सामाजिक (दर्शक) क चित्तमे स्थायी भावकैं जगा क' रस-दशा धरि पहुँचाबयबला दृश्य-प्रक्रिया थिक। निनादक दोसर अध्यायमे जखन लेखक कविवर जीवन झाक नाटकक काव्य-मूल्यांकन करैत छथि, तखन हुनकर सम्पूर्ण विवेचन पारम्परिक पाठशाला-शैलीक पद्य-व्याख्या धरि सीमित रहि जाइत अछि। लेखक जीवन झाक नाटकसँ अनुप्रास, उपमा, रूपक आ दोहा-चौपाइक छन्दक पाँति चुनिकय उद्धृत करैत छथि आ शृंगार व करुण रसक उपस्थिति देखा क' अपन कर्तव्यक इतिश्री मानि लैत छथि।

ओ ई विश्लेषण करबामे असमर्थ रहैत छथि जे जीवन झाक संस्कृतनिष्ठ प्रांजल भाषा रंगमंचपर अभिनेताक वाचिक सम्प्रेषणकैं कोना प्रभावित करैत अछि। तहिना, विद्यापतिक मणिमंजरी अध्यायमे लेखक मात्र एहि बाह्य तथ्यपर मुग्ध छथि जे नाटिकामे 23 पात्र अछि जाहिमे 13 महिला पात्र आ

84टा गीत अछि, जकरा ओ कोनो ऐतिहासिक-सैद्धान्तिक आधारक बिना विद्यापतिक 'नारीवादी चेतना' घोषित क' दैत छथि। शास्त्रीय नाटिकाक रूप-संरचना—जाहिमे अन्तःपुरक शृंगारिक क्रीड़ा, ललिताभिनय आ स्त्री-पात्रक पारम्परिक बाहुल्य विधागत अनिवार्यता होइत अछि—तकर ज्ञान नहि रहबाक कारणे लेखक एहन सतही निष्कर्ष निकालैत छथि।

३. ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्य: नाट्यभाषाक अनकहल अर्थ

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्त नाट्यालोचना लेल महत्त्वपूर्ण अछि, कारण मंच पर अर्थ केवल कहल गेल वाक्यमे नहि रहैत अछि। विराम, कटाक्ष, अनुपस्थित वस्तु, मौन, असम्पूर्ण वाक्य, प्रकाशक परिवर्तन, पात्रक पीठ फेरब, दूर ठाढ़ रहब, असंगत हँसी—ई सभ ध्वन्यार्थ बना सकैत अछि। ‘निनाद’क सामान्य पद्धति संवादक विषय वा कथ्य पर अधिक ठहरैत अछि; उपपाठ आ संकेत-व्यवस्था पर विस्तार कम अछि।

कुन्तकक वक्रोक्ति-दृष्टिसँ प्रश्न होइत जे नाटकीय भाषा साधारण कथनसँ कोना भिन्न अछि। पात्र यदि सीधा कथन छोड़ि टेढ़, बहुअर्थी, व्यंग्यात्मक, विडम्बनापूर्ण अथवा रूपकात्मक भाषा अपनबैत अछि तँ ओकर नाटकीय कार्य की? वक्रता केवल अलंकार नहि, पात्रक मानसिकता, सामाजिक दबाव आ सत्ता-संबन्धक रूप सेहो भऽ सकैत अछि। एहन भाषिक विश्लेषण पोथीक नाटक-विवेचन कैँ गहराइ दऽ सकैत छल।

क्षेमेन्द्रक औचित्य-दृष्टि मंचीय आलोचनाक एक शक्तिशाली भारतीय औजार भऽ सकैत अछि। पात्रक भाषा ओकर सामाजिक स्थिति अनुकूल अछि कि नहि? संगीत दृश्य-भावक अनुकूल अछि कि सजावटी? पोशाक समय, वर्ग आ चरित्र-संरचनासँ मेल खाइत अछि कि नहि? हास्य गम्भीर प्रसंग कैँ तोड़ैत अछि कि अर्थपूर्ण विरोधाभास बनबैत अछि? प्रकाश, गति, दृश्य, संवाद, गीत आ अभिनय एक-दोसरक अनुकूल सम्बन्धमे अछि कि नहि? ‘निनाद’मे एहन कसौटी व्यवस्थित रूपेँ लागू नहि भेल अछि; फलतः मूल्यांकन अनेक ठाम सामान्य विशेषणक भरोसे रहि जाइत अछि।

४. अरस्तू सँ रंगसंकेत-विज्ञान धरि: पाश्चात्य सिद्धान्तसँ आवश्यक संवाद

अरस्तूक 'Poetics' नाटकीय क्रिया, कथानक-संरचना, चरित्र, विचार, भाषा, दृश्य आ संगीतक परस्पर सम्बन्ध पर जोर दैत अछि। मैथिली नाटकक आलोचना करैत समय कथानकक आरम्भ-मध्य-अन्त मात्र नहि, कारण-कार्य सम्बन्ध, उलटफेर, पहचान, संकट, निर्णय आ क्रियाक अनिवार्यता जाँचल जा सकैत अछि। 'निनाद'मे कथा वा विषयक चर्चा होइत अछि, मुदा dramatic action कैं एक स्वतंत्र संरचनात्मक समस्या मानि नियमित विश्लेषण कम भेटैत अछि।

स्टानिस्लाव्स्की अभिनयक आन्तरिक प्रेरणा कैं क्रियासँ जोड़ैत छथि। पात्र की चाहैत अछि? ओकर बाधा की? दृश्य-दर-दृश्य उद्देश्य कोना बदलैत अछि? अभिनेता निजी भावुकता नहि, कार्यशील उद्देश्य द्वारा चरित्र रचैत अछि। 'नाट्य-निर्देश आ मनोवैज्ञानिक पक्ष' सन शीर्षक एहन विश्लेषणक अपेक्षा जगबैत अछि; मुदा मनोविज्ञानक प्रयोग यदि केवल सामान्य 'भाव', 'मन:स्थिति' वा निर्देशकक संवेदनशीलता धरि सीमित रहैत अछि तँ आधुनिक अभिनयशास्त्रक प्रश्न अपूर्ण रहि जाइत अछि।

ब्रेख्त नाट्यालोचना कैं एकदम दोसर प्रश्न दैत छथि: दर्शक खाली भाव-विलीन हो कि सामाजिक सम्बन्धक आलोचक बनय? अभिनय पात्रसँ पूर्ण तादात्म्य करैत अछि कि पात्रक व्यवहार पर टिप्पणी सेहो करैत अछि? गीत कथा कैं भावुक बनबैत अछि कि विचारक विराम पैदा करैत अछि? ऐतिहासिक घटना वर्तमान सामाजिक संरचना पर प्रश्न उठबैत अछि कि नहि? मैथिली रंगमंचमे जाति, वर्ग, भाषा, क्षेत्र, पलायन, लैंगिक असमानता, ग्रामीण संकट, प्रशासनिक संरचना आ सांस्कृतिक सत्ता उपस्थित रहल अछि; मुदा 'निनाद'क मुख्यधारात्मक लेखन एहि सामाजिक अन्तर्विरोध कैं केन्द्रिय आलोचनात्मक श्रेणीमे कम बदलैत अछि।

ग्रोटोव्स्की अभिनेता-दर्शक सम्बन्ध कैं रंगमंचक मूल सन धरैत छथि; पीटर ब्रुक 'रिक्त स्थान'क अवधारणा द्वारा न्यूनतम परिस्थिति मे रंगकर्मक सम्भावना देखैत छथि; ऑगुस्तो बोआल दर्शक कैं निष्क्रिय उपभोक्तासँ सहभागी नागरिकक दिशामे धकेलैत छथि। एकल-नाट्य, लघु रंगमंच, नुक्कड़, अस्थायी मंच, गामक प्रस्तुति आ प्रवासी समूहक मैथिली रंगकर्म पर ई सभ दृष्टि अत्यन्त उपयोगी छल। 'निनाद'क एकल-नाट्य सम्बन्धी लेख सामग्री

दैत अछि, मुदा actor-spectator relation, spatial economy आ participation क गम्भीर सिद्धान्त विकसित नहि करैत अछि।

आधुनिक रंग संकेत-विज्ञान—केइर एलाम, पैट्रिस पाविस आदि—एहि बात पर जोर दैत अछि जे मंचक प्रत्येक तत्व संकेत बनि सकैत अछि। कुर्सी केवल कुर्सी नहि; ओकर स्थान सत्ता सूचित कऽ सकैत अछि। प्रकाश केवल देखबाक साधन नहि; स्मृति, खतरा, एकाकीपन वा विभाजन चिन्हित कऽ सकैत अछि। पोशाक, वस्तु, रंग, ध्वनि, दूरी, स्तर, दिशा—सभ अर्थ उत्पन्न करैत अछि। ‘निनाद’क प्रदर्शन-वर्णनमे ई संकेत-व्यवस्था प्रायः विश्लेषित नहि होइत अछि, फलतः मंचीय अर्थक बड़ हिस्सा आलोचनाक बाहर रहि जाइत अछि।

पाश्चात्य नाट्यालोचना-परम्परामे (अरस्तूसँ ल' क' ब्रेख्त, ग्रोटोवस्की, आर्तो धरि) आलोचनाक एकटा केन्द्रीय अपेक्षा अछि — close reading, यानी प्रस्तुतिक ठोस विवरण (mise-en-scène, अभिनय-शैली, दर्शक-अनुभव) केर विश्लेषणात्मक विच्छेदन, ने कि सामान्यीकृत प्रशंसा वा निन्दा। एहि कसौटीपर 'निनाद'क बहुसंख्य अध्याय असफल होइत अछि। जेना 'मैथिली रंगकर्मक नमहर आ सुखद घटना' मे मैलोरंगक 'जल डमरू बाजे' नाटकक प्रस्तुतिक विवरण अछि, मुदा ओहिमे मंचीय विश्लेषण (blocking, अभिनयक बारीकी, प्रकाश-योजनाक विशिष्ट प्रयोग) नगण्य अछि; बेसी भाग यात्रा-वृत्तांत, स्वागत-सत्कार, आ रंगकर्मीक पारस्परिक भेँट-घाँटपर केन्द्रित अछि। ई ब्रेख्तीय 'Verfremdungseffekt' वा आर्तोक 'Theatre of Cruelty' जकाँ कोनो विश्लेषणात्मक श्रेणीक अनुपस्थितिमे लिखल एकटा impressionistic account अछि, criticism नहि। लेखक स्वयं एक ठाम स्वीकार करैत छथि जे "एतहुक निदेर्शकीय कौशल एतबे जे पात्रकेँ मंचपर यत्र-तत्र टहला दी, उठा-बैसा दी" — ई अवलोकन तीक्ष्ण अछि, मुदा एहि तीक्ष्णताकेँ एकटा व्यवस्थित मंचीय-विश्लेषण-प्रणाली (जेना semiotic अथवा phenomenological approach) मे विकसित नहि कएल गेल अछि; ई प्रायः एकल-पंक्तिक निर्णय बनि रहि जाइत अछि।

एकटा आओर पाश्चात्य कसौटी — historiography बनाम criticismक भेद — सेहो एतय प्रासंगिक अछि। पश्चिमी नाट्य-इतिहास लेखनमे (जेना

Marvin Carlson, Oscar Brockett) तथ्य-सत्यापन (fact-checking), स्रोत-समीक्षा (source criticism), आ archival rigor अनिवार्य मानल जाइत अछि। 'विद्यापतिक मणिमंजरी' अध्यायमे लेखक स्वयं मानैत छथि जे मणिमंजरीक प्रथम मंचनक तिथिक "कोनो ठोस प्रमाण उपलब्ध नहि" अछि, आ मैलोरंगक 2013 ई.क प्रस्तुतिकेँ "पहिल मंचन" मानबाक लेल बाध्य होइत छथि "जाधरि कोनो नव आ ठोस प्रमाण-सूचना उपलब्ध नहि होइछ" कहिकय। ई पद्धतिगत ईमानदारी प्रशंसनीय अछि, मुदा ई अपवाद थिक, नियम नहि — पोथीक अन्य ठाम एहन सतर्कता प्रायः अनुपस्थित अछि, विशेषतः जखन लेखक अपन समकालीन/परिचित रंगकर्मी समूह (जेना भंगिमा, मैलोरंग) केर मूल्यांकन करैत छथि, तखन साक्ष्य-मानक शिथिल भ' जाइत अछि आ प्रशस्ति-भाव प्रबल भ' जाइत अछि।

पाश्चात्य नाट्य-सिद्धान्तक सन्दर्भमे लेखकक विचलन आरो गम्भीर अछि। अरस्तू अपन काव्यशास्त्र (Poetics) मे त्रासदीक छह अनिवार्य अंग निर्धारित कयने छथि: कथानक (Mythos), चरित्र (Ethos), विचार (Dianoia), पद-विन्यास (Lexis), दृश्य-विधान (Opsis) आ गीत (Melos)। अरस्तूक अनुसार नाटक कार्य-व्यापार केर अनुकरण अछि, जतय कथावस्तुक सुगठित विन्यास दर्शकमे भय आ करुणा जगा क' विरेचन (Catharsis) निष्पन्न करैत अछि। निनादमे कार्य-व्यापारक अन्विति, नाट्य-द्वन्द्व अथवा विरेचनक प्रक्रियापर कोनो सैद्धान्तिक विमर्श नहि भेटैत अछि।

एकरासँ आगू बढ़ि जखन लेखक आधुनिक पाश्चात्य रंग-सिद्धान्तक नाम लैत छथि, त' ओ बर्तोल्त ब्रेख्त (Bertolt Brecht) क महाकाव्यात्मक रंगमंच (Epic Theatre) केर उल्लेख मात्र एकटा सजावटी मुहावराक रूपमे करैत छथि। ब्रेख्तक नाट्य-दर्शन दर्शकक भावनात्मक सम्मोहनकेँ तोड़बाक आ अनचिन्हार प्रभाव (Verfremdungseffekt) द्वारा ओकरा एकटा सक्रिय, राजनीतिक चिन्तक बनेबाक सिद्धान्तपर आधारित अछि। एकर विपरीत, निनादमे लेखक जिनकर प्रशंसा करैत छथि, ओ सभ विशुद्ध रूपेँ मध्यवर्गीय, भावुकतावादी आ यथार्थवादी भ्रम उत्पन्न करयबला मंचन अछि। लेखक ब्रेख्तक सिद्धान्तकेँ बुझने बिना ओकरा मात्र 'शहरी रंगमंचक धमक'क पर्याय मानि लैत छथि।

तहिना कोन्स्तान्तिन स्तानिस्लावस्की (Stanislavski) क चरित्र-प्रवेशक यथार्थवादी पद्धति वा अन्तोन चेखव (Anton Chekhov) क आन्तरिक उपपाठ (Subtext) क कोनो सार्थक आ प्रायोगिक विश्लेषण लेखकक समीक्षा सभमे नहि भेटैत अछि। विदेशी सिद्धान्तकारक नाम मात्र रौब जमाबय लेल टांगल गेल बुझाइत अछि, जकर पोथीक आन्तरिक विश्लेषणसँ कोनो संरचनात्मक सम्बन्ध नहि अछि।

५. नव्य-न्याय: दावा, प्रमाण आ आलोचनात्मक अनुशासन

मिथिलाक बौद्धिक परम्परामे नव्य-न्याय केवल दर्शनक इतिहास नहि, सूक्ष्म विचार-पद्धति अछि। नाट्यालोचना ओकर शब्दावली हूबहू ग्रहण करय, ई आवश्यक नहि; मुदा ओकर तार्किक अनुशासन अत्यन्त उपयोगी अछि। कोनो आलोचनात्मक प्रतिज्ञा—‘ई प्रस्तुति आधुनिक अछि’, ‘ई नाटक श्रेष्ठ अछि’, ‘ई कलाकार महत्त्वपूर्ण अछि’, ‘ई घटना मैथिली रंगमंचक मोड़ अछि’—तखन विश्वसनीय होइत अछि जखन हेतु स्पष्ट हो, उदाहरण उचित हो, अपवाद जाँचल जाए, प्रमाणक स्रोत चिन्हित हो आ निष्कर्ष प्रस्तावित सामग्रीसँ अधिक नहि हो।

‘निनाद’क अनेक सामान्यीकरण एहि कठोरता सँ वंचित देखाइत अछि। कोनो कलाकारक प्रसिद्धि, संस्थागत प्रतिष्ठा, आयोजनक आकार, दर्शक-संख्या वा प्रशंसात्मक प्रतिक्रिया कलात्मक श्रेष्ठताक पर्याप्त हेतु नहि। नव्य-न्यायक भाषामे एहन हेतु अनैकान्तिक भऽ सकैत अछि—कारण प्रसिद्ध व्यक्ति कमजोर प्रस्तुति दऽ सकैत छथि आ अपरिचित कलाकार असाधारण। संस्थागत मान्यता सौन्दर्य-मूल्यक व्याप्ति सिद्ध नहि करैत अछि।

लक्षण-निर्माणक प्रश्न सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। यदि ‘नाट्यालोचना’क लक्षण केवल ‘नाटक वा रंगमंच पर लिखल लेख’ मानल जाए तँ अतिव्याप्ति होयत: समाचार, यात्रा-वृत्तान्त, श्रद्धांजलि, कार्यक्रम-रिपोर्ट, जीवनी, सूची सभ आलोचना बनि जाएत। यदि केवल लिखित नाटकक साहित्यिक गुण पर टिप्पणी कैं नाट्यालोचना मानल जाए तँ अव्याप्ति होयत: अभिनय, निर्देशन, संगीत, दृश्य, दर्शक, मंच-स्थान, rehearsal, लोक-प्रदर्शन आ डिजिटल रंगमंच बाहर पड़ि जाएत। ‘निनाद’क विधागत संकट मूलत: एहि लक्षण-दोषसँ जुड़ल अछि।

नव्य-न्याय प्रमाणक पृथक्करण सिखबैत अछि। प्रत्यक्षतः देखल प्रदर्शन, कलाकारक कथन, समाचारपत्रक रिपोर्ट, पुस्तकक प्रकाशित दावा, स्मृति, कहल-सुनल सूचना—सभ समान प्रमाण-मूल्य नहि रखैत अछि। रंग-इतिहास लिखैत समय ई बतायब आवश्यक होइत अछि जे कोन निष्कर्ष प्रत्यक्ष अवलोकन पर, कोन दस्तावेज पर, कोन व्यक्ति-साक्ष्य पर आ कोन अनुमान पर आधारित अछि। ‘निनाद’मे एहि स्तरक स्रोत-भेद नियमित नहि रहैत अछि।

पूर्वपक्ष-उत्तरपक्षक संस्कार सेहो आलोचनाक मेरुदण्ड होयत। विरोधी मत कैं कमजोर रूपमे प्रस्तुत कऽ हराएब आलोचना नहि। मजबूत पूर्वपक्ष निर्माण कऽ, ओकर प्रमाण मानि, फेर तर्कसँ सीमा देखेनाइ आवश्यक अछि। ‘अमरजीक रंगदृष्टि’ जकाँ लेखमे प्रश्नाकुलता अवश्य अछि, मुदा बहस कैं पूर्ण पूर्वपक्ष-उत्तरपक्ष संरचनामे ढालल जा सकैत छल। एहि सम्भावनाकैं पुस्तक आंशिक रूपेँ खोलैत अछि, पूर्ण नहि करैत अछि।

नव्य-न्यायक केन्द्रीय अवधारणा — प्रमाण (सम्यक् ज्ञानक साधन) आ प्रमेय (ज्ञेय वस्तु) केर भेद — एहि पोथीक दावाकैं जाँचबाक लेल एकटा उपयोगी उपकरण अछि। न्यायशास्त्रमे कोनो प्रत्यक्ष-कथनकैं (प्रत्यक्ष प्रमाण) आ अनुमान/शब्द-प्रमाण (testimony) कैं भिन्न-भिन्न स्तरक विश्वसनीयता देल जाइत अछि, आ व्याप्ति (invariable concomitance) केर अभावमे कोनो अनुमान दोषपूर्ण ('हेत्वाभास') मानल जाइत अछि। एहि कसौटीपर 'निनाद'क बहुत रास दावा हेत्वाभासक शिकार अछि:

'निनाद' कोनो एकल लेखक द्वारा मैथिलीक प्रथम नाट्यालोचना-पोथी अछि — ई दावा (भूमिकामे) अन्वय-व्यतिरेक पद्धतिसँ सत्यापित नहि अछि; ई मात्र लेखकक व्यक्तिगत जानकारीक सीमा (एकटा अज्ञान-प्रमाण, absence of counter-evidence known to author) पर आधारित अछि, ने कि समग्र मैथिली प्रकाशन-जगतक ठोस सर्वेक्षणपर। 'नहि जानब' आ 'नहि अस्तित्वमे रहब' केर बीचक भेद — जे स्वयं न्यायशास्त्रक अभाव-प्रमाण केर सूक्ष्म विवेचनाक विषय अछि — एतय उपेक्षित अछि।

भंगिमाक "८७ टा नाटकक २५० टा प्रदर्शन" जकाँ आँकड़ा शब्द-प्रमाण (testimony) रूपेँ स्वीकार कएल गेल अछि, बिना कोनो स्वतंत्र सत्यापन-स्रोतक उल्लेखक। न्यायदर्शनमे शब्द-प्रमाणक विश्वसनीयता वक्ताक आप्तता (trustworthiness/authority) पर निर्भर करैत अछि; एतय वक्ता आ विषय (भंगिमा) क बीच एकटा घनिष्ठ सम्बन्ध (लेखक स्वयं भंगिमासँ जुड़ल रहलाह) अछि, जे आप्ततिक तटस्थताकेँ संदिग्ध बनबैत अछि — ई एकटा interested testimony थिक, जकर मूल्यांकन-मानक स्वतंत्र स्रोतसँ भिन्न होयबाक चाही, मुदा पोथीमे एहि भेदक कोनो संकेत नहि अछि।

लेखक स्वयं एतबा आत्म-सजग छथि जे किछु ठाम "रेडीमेड स्थापना सभकेँ यथातथ्य ऊघय सँ परहेज" केर दावा करैत छथि — मुदा एहि दावाक बादो, मलंगियाजी, कुणालजी आदिक मूल्यांकनमे प्रायः शब्द-प्रमाण (अन्यक प्रशस्ति उद्धृत करब) आ अनुमान (सीमित उदाहरणसँ सामान्यीकरण) केर मिश्रण भेटैत अछि, जकर व्याप्ति स्पष्ट नहि कएल गेल अछि — जेना "मलंगियाजी अभिजात वर्गक हो कि अनभिजात वर्गक, सभक लेल समान निर्देश गढ़ब" जकाँ व्यापक सामान्यीकरण मात्र किछु नाटकक (ओकरा आङनक बारहमासा, गाम नइ सुतै) उदाहरणसँ कएल गेल अछि, जे पूर्ण corpus-विश्लेषण नहि अछि।

संक्षेपमे, पोथी अपनाकेँ आलोचना (मूल्यांकनात्मक विवेचना, जकर आधार तर्क आ प्रमाण होइत अछि) रूपेँ प्रस्तुत करैत अछि, मुदा एकर पद्धति बेसी भाग स्तुति (praise, जकर आधार सम्बन्ध आ भावना होइत अछि) केर लगीच अछि। नव्य-न्यायक भाषामे कहल जाय त' एतय प्रमाण आ उपमान (comparison-based judgment, "जेहन देखल तेहन कहल") केर बीच घालमेल अछि।

मिथिलाक बौद्धिक आ दार्शनिक अस्मिता गंगेश उपाध्याय द्वारा प्रवर्तित नव्य-न्यायक वस्तुनिष्ठ तर्क-पद्धतिपर प्रतिष्ठित अछि। न्याय दर्शन कोनो विषयक यथार्थ ज्ञान लेल प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव आ तर्कक सूक्ष्म परीक्षणक मांग करैत अछि। अनुमिति ज्ञानमे पक्ष, साध्य आ हेतुक बीच 'अविनाभाव सम्बन्ध' अथवा निर्दोष 'व्याप्ति'क भेनाइ

अनिवार्य अछि। जँ हेतुमे व्याप्ति नहि रहत, त' ओ हेत्वाभास बनि क' स्थापनाकेँ अमान्य क' दैत अछि। निनादमे प्रस्तुत प्रमुख स्थापना सभक नव्य-न्यायक आधारपर परीक्षण कयलापर लेखकक सम्पूर्ण तर्क-तन्त्र हेत्वाभास आ आत्म-विरोधसँ ग्रस्त भेटैत अछि।

पहिल तार्किक विसंगति लेखक द्वारा कविवर जीवन झाक नाटक सुन्दर संयोग (१९०४) केँ आधुनिकताक इतिहाससँ बाहर करब आ आधुनिक मैथिली नाटकक प्रारम्भ पण्डित गोविन्द झाक बसात (१९५४) सँ मानबाक हठमे देखाइ दैत अछि। लेखकक प्रतिज्ञा अछि जे सुन्दर संयोग आधुनिक नाटक नहि अछि, आ एकर समर्थनमे ओ हेतु दैत छथि जे समाजक आधुनिकता आ नाटकक आधुनिकता दू बात अछि तथा ई मात्र प्राध्यापकीय स्थापना थिक। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ ई हेतु 'स्वरूपासिद्ध' आ 'साध्य-सम' (Petitio Principii) दोषसँ दूषित अछि। लेखक पूरा पोथीमे कतहु 'नाट्य-आधुनिकता'क लक्षण, परिधि वा नियामक व्याप्ति तय नहि करैत छथि। बिना कोनो निश्चित लक्षणक १९०४ सँ १९५४ केर पचास वर्षक नाट्य-विकासकेँ मात्र अपन वैयक्तिक अरुचिक आधारपर खारिज क' देब न्याय-शास्त्रक अनुसार पक्षाभास आ साध्य-सम हेत्वाभासक प्रत्यक्ष उदाहरण थिक।

दोसर तार्किक विसंगति 'व्याघात' अथवा आत्म-विरोधक दोष अछि। लेखक पोथीक आरम्भिक भूमिकामे परम्परागत प्राध्यापकीय आलोचनापर ई प्रहार करैत छथि जे ओ अतीत-मुग्ध, शास्त्र-सम्मत आ नवता-विरोधी अछि। मुदा जखन ओ स्वयं जीवन झाक नाटकक मूल्यांकन करैत छथि, तखन ओ रस, अलंकार, छन्द आ शब्द-शक्तिक एहन शुष्क तालिका प्रस्तुत करैत छथि जे कोनो रूढ़िवादी शास्त्रीय टीकासँ भिन्न नहि अछि। जाहि पद्धतिक लेखक सैद्धान्तिक स्तरपर विरोध करैत छथि, व्यावहारिक आलोचनामे तकरे अनुकरण करब नव्य-न्यायमे व्याघात दोष कहबैत अछि।

तेसर तार्किक विसंगति 'सव्यभिचार' आ 'बाधित' हेत्वाभाससँ जुड़ल अछि। लेखक ई एकांगी व्याप्ति स्थापित करबाक प्रयास करैत छथि जे गम्भीर आ सार्थक रंगकर्म मात्र चारिटा शहर—पटना, कोलकाता, दिल्ली आ जनकपुर—मे सम्भव अछि, आ ग्रामीण रंगमंच निस्तेज अछि आ दरभंगाक आधुनिक मैथिली रंगमंचमे कोनो अस्तित्त्वे नहि अछि। ई स्थापना प्रत्यक्षतः बाधित

अछि। रंगमंचक जीवन्तता सभागारक भव्यता वा महानगरीय सुविधासँ नहि, अपितु ओकर सामाजिक सम्प्रेषणीयता आ जन-सरोकारसँ तय होइत अछि। क्षेत्रीय पूर्वाग्रहक कारणे दरभंगा, मधुबनी आ ग्रामीण अंचलक समृद्ध लोकरंगकेँ मात्र एहि लेल शून्य घोषित क' देब कियाक त' ओ लेखकक गुटीय प्रभाव-क्षेत्रसँ बाहर अछि, न्याय-पद्धतिक निष्पक्षताक पूर्ण उल्लंघन थिक।

प्रमुख स्थापना सभक नव्य-न्यायिक परीक्षण

लेखकक स्थापना (पक्ष आ साध्य)	लेखक द्वारा प्रस्तुत हेतु	नव्य-न्याय सम्मत तार्किक दोष	आलोचनात्मक आ दार्शनिक परिणाम
सुन्दर संयोग (१९०४) मैथिलीक प्रथम आधुनिक नाटक नहि थिक।	समाज आ नाटकक आधुनिकता भिन्न अछि; ई पूर्व आलोचकक अन्ध-परम्परा अछि।	स्वरूपासिद्ध / साध्य-सम	पचास वर्षक मैथिली नाट्य-इतिहासक मनमानी विलोपन; आधुनिकताक लक्षणक अभाव।
प्राध्यापकीय आलोचना अतीतगामी आ शास्त्र-मुग्ध अछि।	प्राध्यापक मात्र साहित्यिक मूल्य देखैत छथि, मंचीय तकनीक नहि।	व्याघात दोष (Self-Contradiction)	स्वयं जीवन झाक पाठपर पारम्परिक रसालंकारिक शुष्क टीका लिखब।
महेन्द्र मलंगियाक नाट्य-निर्देश सर्वश्रेष्ठ आ क्रान्तिकारी अछि।	ओ उच्च-निम्न सभ पात्रक लेल 'बैसैत अछि' जकाँ तटस्थ क्रियापद लिखैत छथि।	अनुपसंहारी / एकांगी व्याप्ति	सतही व्याकरणिक समताकेँ वैचारिक क्रान्ति मानब, जखन कि आन्तरिक पाठ जातिवादी अछि।
दरभंगासँ आधुनिक	ओतयक महंथ साहित्यकार	बाधित / प्रत्यक्ष-	ऐतिहासिक तथ्यक क्षेत्रीय

लेखकक स्थापना (पक्ष आ साध्य)	लेखक द्वारा प्रस्तुत हेतु	नव्य-न्याय सम्मत तार्किक दोष	आलोचनात्मक आ दार्शनिक परिणाम
रंगमंचक कोनो अध्याय विकसित नहि भेल।	रंगमंचीय ज्ञानमे शून्य छथि।	विरुद्ध	विद्वेषक कारणे दमन; गैर-महानगरीय रंग-प्रयासक दमन।
एकल-नाट्य उच्चतर बौद्धिक रंगमंचक एकमात्र पैमाना थिक।	एकहि पात्र बहुविध चरित्रक कायिक-वाचिक निर्वाह करैत अछि।	अव्याप्ति दोष (Over-restriction)	नाटकक सामूहिक आ लोक-धर्मी प्रकृतिक उपेक्षा; मध्यवर्गीय एकालापकेँ सर्वोच्च मानब।

६. समानान्तर इतिहास-दृष्टि: रंगमंचक अदृश्य अभिलेख

समानान्तर साहित्य-इतिहासक मूल प्रश्न अछि: इतिहास केवल ओहि चीजक नहि जे छपल, पुरस्कृत, संस्थागत, विश्वविद्यालयीय वा राजधानी-केंद्रित अछि; इतिहास ओहि अनुपस्थित सामग्रीक सेहो अछि जे अभिलेखमे प्रवेश नहि पाबि सकल। मैथिली रंगमंचक सन्दर्भमे ई प्रश्न आरो तीक्ष्ण अछि, कारण प्रदर्शन क्षणभंगुर होइत अछि। गामक अस्थायी मंच, लोक-नाट्य, स्त्रीक घरेलू प्रदर्शन, जातीय-सामुदायिक अभिनय, श्रमिक-प्रवासी समूह, नेपालक मैथिली क्षेत्र, सीमावर्ती भाषिक रूप, बाल-रंगमंच, नुक्कड़, ऑडियो-नाटक, रेडियो, डिजिटल मंच, कम-संसाधनक समूह—ई सभ सहजहि मुख्य संस्थागत इतिहाससँ बाहर रहि सकैत अछि।

‘निनाद’मे ग्रामीण-शहरी, एकल-नाट्य, लोक-संगीत, आधुनिक रंगकर्म, संस्थागत गतिविधि आ अनेक कलाकारक चर्चा होइत अछि; ई एक उपयोगी सामग्री-क्षेत्र अछि। तथापि समानान्तर इतिहासक कसौटी पर प्रश्न उठैत अछि जे चयनक सिद्धान्त की अछि। कोन समूह भीतर आयल, कोन बाहर रहल? कोन नगर बारम्बार दृश्य अछि, कोन भूगोल अनुपस्थित? स्त्री रंगकर्मी केवल नाम

वा पात्रक रूपमे उपस्थित छथि कि स्वतंत्र सर्जक, निर्देशक, आयोजक, दर्शक आ समीक्षकक रूपमे? जाति-वर्गक संरचना रंगसंस्थाक अवसर-वितरण पर कोना असर करैत अछि? भाषिक विविधता—मानक, क्षेत्रीय, शहरी मिश्रित, प्रवासी—अभिनय आ दर्शक-संबन्ध पर कोना प्रभाव छोड़ैत अछि?

समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ मुख्यधारा एक प्राकृतिक सत्य नहि, चयनक परिणाम अछि। पत्रिका, अकादमी, खरीद-योजना, संगोष्ठी, विश्वविद्यालय, पुरस्कार, प्रकाशक, राजधानीक मंच आ मीडिया—ई सभ दृश्यता निर्मित करैत अछि। कोनो पोथीक संस्थागत स्वीकृति ओकर आलोचनात्मक श्रेष्ठताक स्वतः प्रमाण नहि; एही तरहे संस्थागत उपेक्षा कलात्मक महत्वक अभाव सिद्ध नहि करैत अछि। आलोचकक दायित्व अछि संस्थागत दृश्यता आ सौन्दर्य-मूल्य कैं अलग-अलग जाँचब।

‘निनाद’क महत्त्वपूर्ण सीमा ई अछि जे ई अनेक संस्थागत-प्रसिद्ध रंगप्रसंगक दस्तावेज तऽ बनैत अछि, मुदा दृश्यताक राजनीति कैं स्वयं अध्ययन-विषय कम बनबैत अछि। फलतः जे चीज सोझाँ अछि, ओहि पर लेख अछि; जे अनुपस्थित अछि, ओकर अनुपस्थिति इतिहासक प्रश्न बनि नहि पबैत अछि। समानान्तर आलोचना एहि मौन कैं पढ़ैत अछि।

विदेहक साहित्यिक-आलोचनात्मक परियोजनाक एकटा केन्द्रीय अभिप्राय रहल अछि — मुख्यधाराक संस्थागत साहित्य-इतिहाससँ बाहर रहल, उपेक्षित, वा सत्ता-संरचनासँ बाहरक स्वर आ प्रयोगकैं समानान्तर इतिहासक रूपमे दस्तावेजीकरण करब। एहि दृष्टिकोणसँ देखलापर 'निनाद'क सभसँ गम्भीर सीमा उजागर होइत अछि — ई पोथी प्रायः 'शहरी', संस्थात्मक, आ अपन परिचित-वृत्तक (चेतना समिति, अरिपन, आंगन, भंगिमा, मैलोरंग) रंगकर्मकैं केन्द्रमे राखि लिखल गेल अछि, आ ग्रामीण/परिधीय/असंस्थागत रंगकर्मकैं प्रायः वर्णनात्मक स्तरपर (चर्चाक विषय बनाकय) राखल गेल अछि, विश्लेषणक विषय बनाकय नहि। 'शहरी रंगकर्म: मैथिल सन्दर्भ' अध्यायमे लेखक स्वयं स्वीकार करैत छथि जे ओ "ग्रामीण रंगमंचक पक्षधर" छथि मुदा "एहि रंगमंचक चिन्ता-भूमि पर ठाढ़ भ' क' नहि" — यानी लेखक अपन संरचनात्मक स्थिति (शहरी, संस्थागत) आ अपन घोषित सहानुभूति (ग्रामीण,

परिधीय) केर बीचक अंतर्विरोधकेँ पहिचानि तँ लैत छथि, मुदा एहि अंतर्विरोधकेँ सुलझेबाक कोनो पद्धतिगत प्रयास (जेना ग्रामीण रंगकर्मीक साक्षात्कार, फील्ड-वर्क, वैकल्पिक स्रोत-संकलन) नहि करैत छथि। ई ठीक वएह समस्या थिक जे विदेहक समानान्तर-इतिहास दृष्टिकोण बेर-बेर चिन्हित करैत अछि — केन्द्रक स्वीकृति सँ परिधिक अस्तित्व सिद्ध नहि होइत अछि, आ केन्द्रीय संस्थाक आत्म-मूल्यांकन (भंगिमाक आत्म-प्रस्तुति, कुणालजीक आत्म-घोषणा) केँ स्वतंत्र समीक्षाक बिना 'इतिहास' मानि लेब एकटा पद्धतिगत त्रुटि थिक।

एहि अंतर्विरोधक एकटा आओर आयाम अछि — चैम्बर नाटक आ एकल-नाट्य जकाँ प्रयोगवादी रूपसभकेँ पोथीमे विस्तृत स्थान देल गेल अछि (कुणालजीक "टर्निंग प्वाइंट" रूपमे प्रतिष्ठा), मुदा एहि प्रयोगवादक राजनीतिक-सामाजिक निहितार्थपर कोनो विचार नहि अछि। एहि नव रूपसभक दर्शक-वर्ग के छल? कोन सामाजिक-आर्थिक तबका एहि 'चैम्बर' अनुभवसँ बहिष्कृत रहल (शीर्षक स्वयं 'chamber' यानी सीमित, कुलीन स्थानकेँ इंगित करैत अछि)? ई प्रश्न, जे किनको पाश्चात्य 'avant-garde theatre' आलोचनामे (जेना Peter Bürger क Theory of the Avant-Garde) केन्द्रीय अछि, पोथीमे उठले नहि अछि। विदेहक समानान्तर दृष्टिकोणसँ ई एकटा गंभीर त्रुटि थिक — प्रयोगकेँ प्रगति मानि लेब, बिना ई पूछने जे प्रयोग केकर लेल आ केकरा बहिष्करण पर आधारित अछि।

अंततः, पोथीक स्वयंक स्वीकृति अछि जे "मैथिलीओमे नाटकक आलोचनाक नाम पर मारिते रास पोथी प्रकाशित अछि... तेकर मैथिलीमे अभाव अछि" — ई विरोधाभासी अछि, कारण जँ मैथिलीक नाट्यालोचना 'गप' मात्र अछि (जेना लेखक अन्यत्र मलंगियाजी, कुणालजीक कृतनियाँ नाटकपर लिखल आलोचनाकेँ "गप" कहैत छथि), त' 'निनाद' स्वयं एहि 'गप'-परम्पराक निरंतरता सँ कतेक बचल अछि, से पोथी स्वयं स्पष्ट नहि करैत अछि।

मैथिली साहित्य आ रंगमंचक आधिकारिक इतिहास-लेखनपर सदति संस्थागत अकादेमी, पुरस्कार-समिति आ संभ्रान्त वर्गक एकाधिकार रहल अछि। एकर विपरीत, 'विदेह' (प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका आ समानान्तर

आन्दोलन) मैथिलीक एकटा एहन 'समानान्तर इतिहास' आ समानान्तर आलोचनात्मक प्रतिमान स्थापित कयने अछि, जे राज्याश्रित आ दरबारी अभिजात्यवादकेँ खारिज करैत अछि। 'विदेह' समानान्तर इतिहास ई स्पष्ट करैत अछि जे मिथिलाक वास्तविक रंग-चेतना कोनो वातानुकूलित सभागार वा उत्सवधर्मी सरकारी सम्मेलनक बन्धक नहि अछि, अपितु ओ सलहेस, लोरिकायन, कारिख, दीना-भद्री, सामा-चकेवा, जट-जटिन आ 'बिदापत नाच' जकाँ शताब्दि पुरान लोक-परम्परामे प्रवाहित अछि।

कमल मोहन चुन्नूक पोथी निनाद एहि समानान्तर लोक-परम्पराक प्रति घोर उपेक्षा आ संभ्रान्तवादी दृष्टिक परिचय दैत अछि। लेखक ग्रामीण रंगमंचकेँ 'अवशेष' आ 'अविकसित' मानैत ई सुझाव दैत छथि जे ओकरा शहरी रंगमंचक प्रविधिसभ अपनाबय पड़त। ई वएह औपनिवेशिक मानसिकता अछि जे लोक-संस्कृति ताधरि अमान्य रखैत अछि जाधरि पटना वा दिल्लीक कोनो संभ्रान्त निर्देशक ओकर 'परिष्कार' क' क' ओकरा मध्यवर्गीय उपभोगक वस्तु नहि बना दैत अछि। लेखक चैम्बर ड्रामा (Chamber Drama) जकाँ संकीर्ण, सीमित आ ड्राइंग-रूम शैलीकेँ मैथिली रंगमंचक 'टर्निंग प्वाइंट' घोषित करैत छथि, जखनकि जन-साधारणक बीच खेलल जायबला मुक्त नुक्कड़ नाटक आ पारम्परिक लोक-नाट्यकेँ दोयम दर्जाक मानैत छथि।

एहि वैचारिक अनभिज्ञताक सबसँ प्रमाणिक उदाहरण पोथीक पाँचम अध्याय 'नाट्य-निर्देश आ मलंगियाजीक पक्ष'मे भेटैत अछि। लेखक महेन्द्र मलंगियाक नाटकक रंग-निर्देशनक प्रशंसा करैत ई दाबी करैत छथि जे मलंगिया सभ जाति, वर्ग आ उमेरक पात्रक लेल कोष्ठकमे एक समान, आदर-रहित तटस्थ क्रियापदक प्रयोग क' क' सामाजिक समताक ऐतिहासिक कार्य कयने छथि।

ई विश्लेषण कतेक सतही आ यथार्थसँ दूर अछि, एकर उद्घाटन हमरा द्वारा महेन्द्र मलंगियाक नाटक छुतहा घैल (छुतहर घैल) क समानान्तर समीक्षामे विस्तारसँ कयल गेल अछि। मलंगियाक नाटकक संरचनात्मक संकट कोष्ठकक क्रियापदमे नहि, अपितु हुनकर गहीर आनुवंशिक जातीय श्रेष्ठता-बोधमे अछि। मलंगिया अपन नाटकमे सत्रहमे सँ पन्द्रह दृश्य धरि वंचित आ शोषित जातिक पात्र सभक मुखसँ एकटा विकृत, कृत्रिम मैथिली आ टूटल-फूटल हिन्दी बजबा

क' सवर्ण दर्शकक मनोरंजन लेल सस्ता आ छद्म हास्य उत्पन्न करैत छथि। नाटकक अन्तिम दृश्यमे अचानक एकटा खोखला उपदेश जोड़ि देलासँ नाटक क्रान्तिकारी नहि बनि जाइत अछि, किएक त' ओकर सम्पूर्ण संरचना समाजक दलित-शोषित वर्गकेँ उपहासक पात्र बनबैत अछि। कमल मोहन चुन्नू निनाद मलंगियाक एहि जातिवादी भाषिक षड्यन्त्रकेँ पकड़बामे पूर्णतः असमर्थ रहैत अछि आ मात्र कोष्ठकक क्रियापद गनि क' हुनका युगान्तरकारी नाटककार सिद्ध करबामे लागल रहैत छथि।

समानान्तर आन्दोलनक अन्तर्गत विकसित स्वतन्त्र आ वैकल्पिक रंग-प्रयास, मैथिली रेडियो नाटकक तकनीकी मार्गदर्शिका, आ डिजिटल माध्यमपर संचालित बिना कोनो सरकारी अनुदानक संसार भरिक मैथिलकेँ नाटक आ रंगमंचसँ जोड़ल धारासँ ओ अनभिज्ञ छथि। लेखकक आलोचनात्मक संसार मात्र ओही चारि-पाँच गोष्ठी-मित्र सभ धरि सीमित अछि जे सरकारी सम्मेलन आ स्मारिकामे एक-दोसरक पीठ ठोकैत छथि। एहि प्रकारेँ, निनाद समानान्तर जन-रंगमंच आ वैचारिक नाट्य-साहित्यक प्रति सर्वथा आँखि मुनने रहैत अछि/ अनभिज्ञ छथि।

७. ‘मैथिली नाट्यालोचनाक वस्तु-स्थिति’: सही रोग-निदान, अपूर्ण उपचार

पोथीक आरम्भिक लेख आलोचनात्मक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि, कारण लेखक मैथिली नाट्यालोचनाक कमजोरी चिन्हैत छथि। नाटकक समीक्षा यदि कथा-सार, लेखक-परिचय आ सामान्य साहित्यिक गुणक सूची मात्र रहि जाए, तँ मंचक जीवित स्वरूप लुप्त भऽ जाइत अछि—एहि बोधसँ लेख प्रारम्भिक शक्ति पबैत अछि। आधुनिक रंगमंचक बदलैत तकनीक, अभिनय, प्रयोग आ प्रस्तुति-विधान लेल बदलल आलोचनात्मक औजार चाही—ई स्थापना उचित अछि।

मुदा लेखक समस्या एकर बाद शुरू होइत अछि। नाट्यालोचनाक वस्तु-स्थिति बताबय लेल एक सुव्यवस्थित corpus आवश्यक छल: अमुक दशकक अमुक पत्रिका, अमुक समीक्षकक अमुक संख्या लेख, मंच-समीक्षा बनाम पुस्तक-समीक्षाक अनुपात, आलोचनात्मक पद्धतिक वर्गीकरण, प्रमुख प्रवृत्ति, प्रमुख भूल, अपवादस्वरूप उत्कृष्ट उदाहरण। एहि प्रकारक मानचित्र बिना

स्थापना प्रभावशाली तऽ लगैत अछि, परन्तु शोध-सिद्ध इतिहास नहि बनैत अछि।

लेखमे नाम आ सन्दर्भक पर्याप्त उपस्थिति अछि, मुदा नाम-संचयन आ इतिहास-निर्माण अलग क्रिया अछि। इतिहासमे कालक्रम, प्रभाव-संबंध, विवाद, परम्परा, विच्छेद, वैकल्पिक धारा, पद्धति-परिवर्तन आ स्रोत-समीक्षा चाही। यदि ई लेख अपन उद्घोषित प्रश्नक अनुरूप मैथिली नाट्यालोचना कैं विभिन्न कालखण्ड आ पद्धतिमे विभक्त करैत, तँ पोथीक आधारभूत सिद्धान्त बनि सकैत छल। वर्तमान रूपमे ई महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना अछि, पूर्ण अनुशासन नहि।

८. ‘विद्यापतिक मणिमंजरी’: साहित्येतिहास आ नाट्यविश्लेषणक बीच

‘विद्यापतिक मणिमंजरी’ सम्बन्धी लेख ऐतिहासिक-साहित्यिक सामग्री दैत अछि। ग्रन्थ, काव्यपरम्परा, संस्कृत-मैथिली सम्बन्ध आ नाट्यरूपक सन्दर्भ पाठक लेल उपयोगी अछि। मुदा नाट्यालोचनाक दृष्टिसँ प्रश्न ई अछि जे ‘मणिमंजरी’क dramatic structure कोना पढ़ल गेल। पात्रक प्रवेश-निर्गमन, संवादक क्रियात्मकता, दृश्य-संरचना, हास्य अथवा शृंगारक मंचीय सम्भावना, भाषिक register, प्रदर्शन-संकेत आ सम्भावित दर्शक—ऐ सभ पर अधिक गहिराइ अपेक्षित छल।

ऐतिहासिक नाट्यपाठक आलोचना केवल रचनाक प्राचीनता वा साहित्यिक महत्त्व सिद्ध करब नहि। पाठक performance potential जाँचब सेहो आवश्यक अछि। पाठ मंच पर कोन समस्या उत्पन्न करैत अछि? आइक निर्देशक कोन अंश कैं रूपान्तरित करत? संस्कृत-प्रभावित वाक्यरचना दर्शक-संबन्ध पर की प्रभाव देत? शास्त्रीय रूपकक श्रेणी आधुनिक मंचपर्यन्त कतेक उपयोगी अछि? एहन प्रश्नक अनुपस्थितिमे लेख साहित्येतिहासक निकट अधिक अछि, प्रदर्शन-आलोचनाक निकट कम।

९. कविवर जीवन झाक नाटकक ‘काव्यतत्त्व’: नाटक कैं फेर कवितामे सीमित करबाक जोखिम

जीवन झाक नाटकक ‘काव्यतत्त्व’ पर लेख एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक विषय उठबैत अछि। भाषा, भाव, छन्द, काव्यगुण, चरित्रचित्रण आ सौन्दर्यक विवेचन नाट्यपाठक अध्ययनमे आवश्यक भऽ सकैत अछि। परन्तु शीर्षकक

‘काव्यतत्त्व’ स्वयं आलोचक कैं सावधान करबाक चाही: नाटकक काव्यात्मकता ओकर नाटकीयताक स्थानापन्न नहि। सुन्दर पंक्ति मंच पर मृत भऽ सकैत अछि, आ साधारण वाक्य अभिनेता, परिस्थिति आ मौनक कारण असाधारण नाटकीय प्रभाव उत्पन्न कऽ सकैत अछि।

एहि लेखमे यदि काव्यतत्त्व आ नाट्यतत्त्वक अन्तर्सम्बन्ध स्पष्ट कएल जाइत—काव्यात्मक भाषा action कैं रोकैत अछि कि तीव्र करैत अछि? रूपक पात्रक उद्देश्य झाँपैत अछि कि खोलैत अछि? गीत दृश्य-परिवर्तनक साधन अछि कि भाव-विस्तार? छन्द अभिनेता कैं लय देत कि प्राकृतिक संवादसँ दूरी बनाओत?—तँ अध्ययन अधिक नाट्यालोचनात्मक बनैत अछि। वर्तमान अभिमुखता पाठीय सौन्दर्यक दिस अधिक झुकैत अछि।

१०. ‘एकल-नाट्य आ मैथिली रंगकर्मी’: महत्त्वपूर्ण क्षेत्र, अपूर्ण प्रदर्शन-मीमांसा

एकल-नाट्य मैथिली रंगचिन्ताक लेल अत्यन्त उपयोगी क्षेत्र अछि, कारण एतय रंगमंचक अधिकांश भार एक शरीर, एक स्वर आ सीमित साधन पर आबि जाइत अछि। अभिनेता कथावाचक, पात्र, दृश्य-निर्माता, समय-संयोजक आ दर्शक-संबन्धक केन्द्र बनैत अछि। ‘निनाद’ एहि पर सामग्री संकलित करैत अछि, विभिन्न कलाकार आ प्रस्तुति-सन्दर्भ सोझाँ आनैत अछि—ई पुस्तकक उपयोगी योगदान अछि।

मुदा एकल-नाटकक विशिष्ट व्याकरण अधिक माँगैत अछि। एक अभिनेता अनेक पात्रक बीच शरीरक परिवर्तन कोना करैत अछि? स्वरक pitch, गति, दिशा, दृष्टि आ posture सँ चरित्र-भेद कोना बनैत अछि? खाली मंच पर काल्पनिक वस्तु कोना सृजित होइत अछि? दर्शकसँ प्रत्यक्ष सम्बोधन अभिनयक ओ देबाल तोड़ैत अछि कि नहि? असगर भेनाइ विषय मात्र अछि कि मंचीय संरचना? स्मृति आ वर्तमानक समय-परिवर्तन कोना चिन्हित होइत अछि? एहि प्रश्नसभक आधार पर विशिष्ट मैथिली एकल-नाट्यशास्त्र बनि सकैत छल।

ग्रोटोव्स्की, ब्रुक आ प्रदर्शन-अध्ययनक सहायता सँ एकल-नाट्यक साधनहीनता कैं कमजोरी नहि, सौन्दर्यात्मक चुनावक रूपमे पढ़ल जा सकैत

अछि। ‘निनाद’क लेख एहि दिशाक द्वार खोलैत अछि, परन्तु भीतर बहुत दूर नहि जाइत अछि।

११. ‘नाट्य-संगीत आ मैथिली रंगमंच’: सूचीसँ ध्वनि-नाट्यशास्त्र धरि जे दूरी बचल

मैथिली रंगमंच संगीत बिना बुझल नहि जा सकैत अछि। लोकधुन, विवाहगीत, संस्कारगीत, भक्ति, कीर्तन, ऋतुगीत, कथागीत, आधुनिक गीत, वाद्य, ताल आ मौन—ई सभ सामूहिक स्मृति आ मंचीय अर्थक स्रोत अछि। ‘निनाद’मे नाट्य-संगीतक परम्परा, प्रयोग आ उदाहरणक उल्लेख महत्त्वपूर्ण अछि।

मुदा संगीतक आलोचना गीतक उपस्थिति गनब नहि। प्रश्न होयत: गीत कथाक भीतर diegetic अछि कि बाहरी टिप्पणी? पात्र स्वयं गाबैत अछि कि पार्श्वसंगीत चलैत अछि? संगीत दृश्य बदलैत अछि कि भाव दोहरबैत? लोकधुन अपन सामाजिक इतिहास लऽ कऽ अबैत अछि कि केवल ‘मिथिला-रंग’क सजावट बनैत अछि? स्त्री-गीत पुरुष-निर्देशित मंच पर अपन मूल सामाजिक अर्थ बचबैत अछि कि नव अर्थ ग्रहण करैत अछि? मौन संगीतक विरोधी नहि, ओकर संरचनात्मक संगी कोना बनैत अछि?

ब्रेख्तीय गीत कथा कैं रोकि दर्शक कैं विचारक दूरी दऽ सकैत अछि; रस-दृष्टिसँ संगीत भावक उद्दीपन बनि सकैत अछि; संकेत-विज्ञानमे ध्वनि दृश्यकैं विरोधी अर्थ दऽ सकैत अछि। एहन बहुस्तरीय पठन बिना संगीतक अध्याय सूचना-समृद्ध तऽ रहैत अछि, परन्तु ध्वनि-नाट्यशास्त्र विकसित नहि करैत अछि।

१२. ‘नाट्य-निर्देश आ मनोवैज्ञानिक पक्ष’: निर्देशक-दृष्टिक सैद्धान्तिक अभाव

निर्देशनक मनोवैज्ञानिक पक्ष पर लिखब कठिन काज अछि, कारण ‘मनोविज्ञान’ शब्द अत्यन्त सामान्य भऽ सकैत अछि। निर्देशक पात्रक इच्छा, भय, स्मृति, संघर्ष आ अवचेतन बुझैत छथि—एतबे कहब पर्याप्त नहि। मंच पर मनोवैज्ञानिक अर्थ दृश्य-क्रियामे बदलब जरूरी अछि। actor objective, obstacle, action, beat, tempo-rhythm, subtext, spatial relation—ई सभ निर्देशकक कार्यक ठोस इकाइ बनि सकैत अछि।

‘निनाद’ एहि विषय पर निर्देशकक भूमिका आ नाट्य-प्रक्रियाक चर्चा करैत अछि, परन्तु मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक स्पष्ट मॉडल नहि बनबैत अछि। यदि स्टानिस्लाव्स्की, मेयरहोल्ड, ब्रेख्त अथवा भारतीय अभिनय-सिद्धान्तक अन्तर देखाओल जाइत तँ प्रश्न स्पष्ट होइत: निर्देशक अभिनेताक भीतरक भाव खोजैत अछि कि बाहरी शरीर-रचना द्वारा भाव उत्पन्न करैत अछि? तादात्म्य चाहैत अछि कि आलोचनात्मक दूरी? improvisationक स्थान की? Rehearsal मे पाठ कोना बदलैत अछि?

निर्देशन मूलत: चयनक कला अछि। मंच पर प्रत्येक क्षण अनेक सम्भावना रहैत अछि; निर्देशक एक विकल्प चुनैत अछि। आलोचकक काज एहि चयनक कारण आ परिणाम पढ़ब। ‘निनाद’मे निर्देशकक सम्मान अछि, मुदा निर्देशनक निर्णय-व्याकरणक विश्लेषण कम अछि।

१३. ‘शहरी रंगकर्म: मैथिल सन्दर्भ’: नगरक समाजशास्त्र अपूर्ण

शहरी मैथिली रंगकर्म केवल शहरमे खेलल नाटक नहि। ई प्रवास, रोजगार, छात्र-जीवन, भाषा-संरक्षण, जातीय-सांस्कृतिक संस्था, किराया, rehearsal-space, टिकट, प्रायोजन, सभागार, महानगरीय दर्शक, बहुभाषिकता आ सांस्कृतिक प्रतिष्ठासँ बनैत अछि। शहरी मंच पर मैथिली बाजब स्वयं पहचानक राजनीतिक-सांस्कृतिक क्रिया भऽ सकैत अछि।

‘निनाद’ शहरी रंगकर्मक अनेक प्रसंग सोझाँ आनैत अछि, परन्तु शहर कँ संरचनात्मक शक्ति-क्षेत्रक रूपमे कम पढ़ैत अछि। दिल्ली, पटना, कोलकाता अथवा अन्य नगरमे मंचनक अर्थ केवल स्थान-परिवर्तन नहि; दर्शक-वर्ग बदलैत अछि, उच्चारण बदलि सकैत अछि, कलाकारक पेशागत समय बदलैत अछि, संस्थागत अनुदानक जरूरत बदलैत अछि, मंच-तकनीकक पहुँच बदलैत अछि। एहि सामाजिक भिन्नता बिना ‘शहरी’ शब्द भूगोल रहि जाइत अछि, समाजशास्त्रीय श्रेणी नहि।

समानान्तर दृष्टिसँ एतय ई प्रश्न सेहो महत्त्वपूर्ण अछि जे नगरमे कोन मैथिल समूहक सांस्कृतिक पूँजी अधिक अछि। सभागार कोन संस्था बुक करैत अछि? कोन समूहक कलाकार नेटवर्क दृश्यता पबैत अछि? स्त्रीक भागीदारी पर परिवार, नौकरी आ रातिक rehearsal क प्रभाव की? नवप्रवासी आ पुरान

संस्थागत वर्गक बीच सम्बन्ध की? पोथी एहि संरचनात्मक प्रश्नक अपेक्षा व्यक्ति-घटना केन्द्रित अधिक अछि।

१४. रंगकर्मक 'संघर्ष-प्रतिमान': इतिहासक शक्ति आ सीमा

पोथीक एक विस्तृत खण्ड मैथिली रंगकर्मक संघर्ष, संस्थागत विकास, कलाकार, नाटक, रंगसंस्था आ बदलैत समयक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि। सामग्रीक घनत्व एतय उल्लेखनीय अछि। नाम, वर्ष, मंच, संस्था आ सांस्कृतिक घटनाक संचयन मैथिली रंगइतिहासक स्रोत-सामग्री बनि सकैत अछि।

मुदा 'संघर्ष' कैं आलोचनात्मक श्रेणी बनाबय लेल संघर्षक संरचना चिन्हित होयब आवश्यक अछि। संघर्ष कोन शक्तिक बीच? भाषा बनाम राज्य? क्षेत्रीयता बनाम राजधानी? कला बनाम बाजार? पेशेवर बनाम शौकिया? स्त्री बनाम पितृसत्तात्मक मंच-संरचना? जातीय पदानुक्रम? ग्रामीण बनाम शहरी संसाधन? साहित्यिक नाटक बनाम प्रदर्शन-आधारित रंगकर्म? यदि संघर्षक पक्ष स्पष्ट नहि, तँ 'संघर्ष' प्रेरणादायी शब्द रहि जाइत अछि, इतिहास-विश्लेषण नहि।

एहि खण्डमे कालक्रमक संग-संग कारणात्मक इतिहास आवश्यक छल। अमुक दशकमे अमुक संस्था कियैक उभरल? आर्थिक-सामाजिक पृष्ठभूमि की छल? विश्वविद्यालय आ सरकारी संस्थाक भूमिका की? रेडियो, टेलीविजन, प्रवास, सड़क, सभागार, डिजिटल माध्यम, आर्थिक उदारीकरण वा भाषिक राजनीति रंगकर्मक रूप बदललक कि नहि? समानान्तर इतिहासक पद्धति घटना-सूची कैं एहि संरचनात्मक कारणसँ जोड़ैत अछि।

१५. 'मैथिली रंगकर्मक नमहर आ सुखद घटना': समाचार, संस्मरण आ आलोचनाक सीमा

एहि लेखमे तिथि, यात्रा, समूहक आगमन, कलाकार, आयोजन, रहन-सहन, मंचीय परिस्थिति, व्यवधान, दर्शक आ प्रस्तुति-स्मरणक विस्तृत विवरण अछि। ई सब भविष्यक रंगइतिहास लेल उपयोगी प्रत्यक्ष-साक्ष्य भऽ सकैत अछि। रंगकर्मक अस्थायी प्रकृतिक कारण एहन विवरणक अभिलेखीय महत्त्व कम नहि आँकल जा सकैत अछि।

तथापि विधागत प्रश्न स्पष्ट अछि। बिजली गेल, मंच छोट छल, कलाकार अमुक ठामसँ आयल, अमुक व्यवस्था भेल—ई घटना-विवरण अछि। नाट्यालोचना तखन बनैत अछि जखन ई देखाओल जाए जे विद्युत-विघ्न प्रस्तुति-लय कँ कोना तोड़लक अथवा कलाकार improvised adaptation द्वारा ओकरा नाटकीय अवसरमे बदललक; छोट मंच blocking, proxemics आ actor-audience relation कँ कोना बदललक; दर्शकक निकटता अभिनयक वाचिक अथवा आङ्गिक शैली पर की प्रभाव देलक।

एहि रूपान्तरणक अभावमे लेख रंग-संस्मरण अथवा सांस्कृतिक रिपोर्टक रूपमे अधिक सफल अछि। समस्या रिपोर्टिंग नहि; समस्या तखन अछि जखन रिपोर्टिंग कँ आलोचनात्मक परीक्षणक समकक्ष मानि लेल जाए। विधाक स्पष्ट नामकरण पुस्तकक मूल्य घटबैत नहि, उलटे ओकर उपयोगिता ठीक ठाम स्थापित करैत।

१६. ‘अमरजीक रंगदृष्टि’: पुस्तकक भीतर आलोचनात्मक सम्भावनाक सभसँ स्पष्ट क्षण

‘अमरजीक रंगदृष्टि’ पोथीक अधिक प्रश्नाकुल लेखसभमे अछि। एतय लेखक स्थापित मत, चयन, मंचीय उपलब्धि, साहित्यिक मूल्य आ रंगमंचीय उपयोगिता पर प्रश्न उठबैत छथि। एहि कारण ई लेख प्रमाणित करैत अछि जे पोथी पूर्णतः प्रशस्तिपरक नहि; लेखकक भीतर आलोचनात्मक असहमति आ मूल्यनिर्णयक क्षमता अछि।

मुदा एहि लेखक सम्भावना पूर्ण विकसित नहि होइत अछि। प्रश्न उठलाक बाद एक व्यवस्थित analytical matrix चाही छल: दावा की? प्रमाण की? counter-example की? चयनक मानदण्ड की? कोन नाटक साहित्यिक रूपेँ महत्त्वपूर्ण मुदा मंचीय रूपेँ कमजोर, आ कियैक? कोन प्रस्तुति पाठक सीमा तोड़ैत अछि? कोन इतिहासलेखन अमुक धारा कँ बढ़ा-चढ़ा देखबैत अछि? एहि पद्धतिसँ लेख व्यक्तिगत असहमतिक स्थानसँ आलोचनात्मक प्रतिमान धरि पहुँचि सकैत छल।

तथापि ई खण्ड ‘निनाद’क मूल्यांकनमे संतुलन रखैत अछि। लेखकक समस्या आलोचनात्मक चेतनाक पूर्ण अभाव नहि; समस्या चेतना कँ पद्धति,

परिभाषा, प्रमाण आ तुलनात्मक ढाँचामे लगातार रूपान्तरित नहि कऽ पाएब अछि।

१७. ‘मैलोरंगक विलाप: रंगयात्रा-प्रसंग’: रंग-नृवंशविज्ञानक अवसर गमाएल

अन्तिम खण्ड यात्रा, रंगदल, भेटघाट, प्रस्तुति, आवास, कलाकार, कार्यक्रम, निजी स्मृति आ वापसीक घटनासँ बनल अछि। एहि अर्थमे ई रंगयात्रा-वृत्तान्त अछि। विधा अपने आपमे गौण नहि। रंगकर्मी कतेक कठिन परिस्थिति मे यात्रा करैत छथि, कतऽ ठहरैत छथि, कोन साधन जुटबैत छथि, शहरक सांस्कृतिक नेटवर्क कोना काज करैत अछि—ई सब performance ecology बुझबाक महत्त्वपूर्ण स्रोत अछि।

आधुनिक performance studies एहन सामग्री केँ field-note, participant observation, backstage ethnography आ cultural mapping मे बदलि सकैत अछि। तखन लेखक केँ अपन observer-position स्पष्ट करऽ पड़ैत अछि: की स्वयं देखल? की सुनल? कलाकारसँ बातचीत कोन परिस्थिति मे भेल? स्मृति आ तत्क्षण लिखल नोटमे अन्तर की? मंचक आगू आ backstageक व्यवहारमे की विरोधाभास? दर्शकक सामाजिक संरचना की? यात्रा आर्थिक रूपेँ कोना सम्भव भेल?

‘मैलोरंगक विलाप’ एहन गम्भीर रंग-नृवंशविज्ञानक बीज रखैत अछि, मुदा निजी यात्रा-वर्णनसँ आगू methodological self-reflexivity तक नहि पहुँचैत अछि। एतय पोथीक कमजोरीक संग एक भविष्यक सम्भावना सेहो स्पष्ट अछि: मैथिली रंगइतिहास लेल यात्रा-संस्मरण केँ प्रमाण-समीक्षित field documentation मे रूपान्तरित कएल जा सकैत अछि।

१८. भाषा आ आलोचनात्मक शैली: विशेषणक अधिकता, अवधारणाक कमी

‘निनाद’क गद्यक एक विशेषता आत्मीयता अछि। लेखक रंगकर्मक भीतरक व्यक्ति जकाँ लिखैत छथि; कलाकार, संस्था आ आयोजनसँ निकट परिचय स्पष्ट अछि। एहि निकटता सँ तथ्य, प्रसंग आ स्मृति बाँचि जाइत अछि। मुदा आलोचना लेल निकटता दोधारी तलवार अछि। अत्यधिक आत्मीयता आलोचनात्मक दूरी केँ कम कऽ सकैत अछि, खास कऽ जखन प्रशंसात्मक

विशेषण, परिचयात्मक वाक्य आ व्यक्तिक प्रतिष्ठा मूल्यांकनक आधार बनि जाए।

गम्भीर नाट्यालोचनाक भाषा अवधारणात्मक होयब चाही, परन्तु कृत्रिम जार्गनसँ भरल नहि। ‘अभिनय नीक छल’क बदला ‘अभिनेता स्वरक तीव्रता घटा कऽ मौनक पैघ अन्तराल द्वारा पात्रक दमन व्यक्त कएलनि’ अधिक विश्लेषणात्मक अछि। ‘निर्देशन प्रभावशाली छल’क बदला ‘निर्देशक पात्रसभ केँ अकासक ऊँचाइ पर रखि सत्ता-संबन्ध दृश्य बनौलनि’ प्रमाणयोग्य वाक्य अछि। ‘लोकधर्मी’क बदला कोन लोक-रूपक गति, वेश, धुन, कथन-पद्धति अथवा दर्शक-संबोधन अपनाओल गेल—ई बतायब आवश्यक अछि।

पोथीक अनेक लेखमे नाम-सूची, कृति-सूची, आयोजन-विवरण आ प्रशंसा बीच आलोचनात्मक तर्कक प्रवाह टूटैत अछि। सूची उपयोगी संदर्भ बनि सकैत अछि, मुदा मुख्य गद्य तखन आलोचनात्मक बनत जखन सूची सँ पैटर्न निकालल जाए। कोन दशकमे कोन रूप अधिक? कोन संस्था द्वारा? कोन भाषा? कोन दर्शक? कोन सौन्दर्य-विचार? कतेक स्त्री निर्देशक? कतेक ग्रामीण समूह? एहि सांख्यिक अथवा तुलनात्मक प्रश्न बिना सूची इतिहासक कच्चा माल रहैत अछि।

१९. संस्थागत स्वीकृति आ साहित्यिक मूल्य: दुनू केँ अलग राखबाक आवश्यकता

कोनो पुस्तकक सरकारी, शैक्षिक वा सांस्कृतिक संस्था द्वारा खरीद, वितरण, सूचीकरण, संगोष्ठीमे चर्चा अथवा पुस्तकालयमे प्रवेश ओकर प्रसारक इतिहासक तथ्य अछि। मुदा ई तथ्य अपनामे आलोचनात्मक गुणवत्ता प्रमाणित नहि करैत अछि। संस्थागत प्रणालीक उद्देश्य अनेक भऽ सकैत अछि—भाषिक पुस्तकक प्रसार, पुस्तकालय निर्माण, लेखक-प्रोत्साहन, क्षेत्रीय साहित्यक उपलब्धता। सौन्दर्यात्मक मूल्यांकन अलग प्रक्रिया अछि।

तेँ ‘निनाद’क मूल्यांकनमे संस्थागत दृश्यता केँ प्रमाणक रूपमे उपयोग करबाक बदला अध्ययनक विषय बनायब उचित अछि। कोन प्रकारक पुस्तक संस्थागत खरीदमे पहुँचैत अछि? चयनक मानदण्ड की? आलोचनात्मक peer review आ प्रशासनिक eligibility मे अन्तर की? खरीद-संख्या canonical prestige बनबैत अछि कि नहि? एहन प्रश्न समानान्तर साहित्य-इतिहास लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

कोनो संस्थागत खरीद कार्यक्रमक अस्तित्वसँ ई निष्कर्ष निकालब जे पुस्तक केवल खरीद लेल लिखल वा छपल, पर्याप्त प्रकाशकीय प्रमाण बिना उचित नहि। आलोचनात्मक कठोरता एतय सेहो ओतबे जरूरी अछि जतबे पुस्तकक भीतरक दावाक परीक्षणमे। परन्तु एकरा संग ई स्पष्ट रहबाक चाही जे संस्थागत खरीद साहित्यिक गुणवत्ता, नाट्यसिद्धान्तक गहराइ वा शोध-पद्धतिक प्रमाणपत्र नहि।

पोथीक भाषिक-संस्थागत सन्दर्भ सेहो समीक्षाक विषय अछि। भारत सरकारक भाषा-संस्थान (CIIL) जकाँ केन्द्रक क्रय-योजना, जे अल्पसंसाधन भाषाक प्रकाशन-अर्थतंत्रकेँ टिकौने रखबाक लेल बनल अछि, ओकर एकटा अनिवार्य दुष्परिणाम अछि — प्रकाशन आ पाठकीय माँग केर बीचक सम्बन्ध कमजोर भ' जाइत अछि। जखन कोनो पोथीक 'बजार' मूलतः संस्थागत क्रय होइत अछि, ने कि व्यक्तिगत पाठक-रुचि, तखन सम्पादकीय कठोरता (rigorous peer review, विषय-वस्तुक स्वतंत्र मूल्यांकन) केर प्रोत्साहन घटि जाइत अछि — कारण पोथीक 'सफलता' पाठक-स्वीकृतिपर नहि, प्रशासनिक स्वीकृतिपर निर्भर भ' जाइत अछि। एहि अर्थतंत्रक अन्तर्गत लिखल पोथीमे प्रायः वएह लक्षण भेटैत अछि जे 'निनाद'मे भेटैत अछि — आत्म-उद्धरणक बहुलता (धन्यवाद-सूचीमे मारिते रास नाम), संस्थागत सम्बन्ध-नेटवर्कक प्रति उदारता (सभटा समकालीनकेँ किछु ने किछु प्रशंसा), आ स्वतंत्र, कठोर तुलनात्मक मानदंडक अभाव। ई एकटा व्यापक संरचनात्मक समस्याक लक्षण थिक — अल्पसंसाधन भाषाक आलोचना-परम्पराक कमजोरी लेखकक व्यक्तिगत सीमा मात्र नहि, अपितु ओहि प्रकाशन-पारिस्थितिकीक (publishing ecosystem) परिणाम सेहो थिक जे स्वतंत्र समीक्षक-वर्गकेँ आर्थिक रूपेँ असंभव बना दैत अछि — एहि तथ्यकेँ लेखक स्वयं ('मैथिली नाट्यालोचनाक वस्तु-स्थिति' अध्यायमे) चिन्हित करैत छथि जखन ओ कहैत छथि जे "एतय एकटा नियमित आलोचना आ आलोचकक खगता छलैक जकरा नाटकक समस्त प्रधान आ गौण अंगोपांगक जानकारी हो आ ओ मात्र एकटा समर्थ प्रेक्षकक भूमिका मे रहय, ओकरा पर अन्य कोनहु भार नहि हो" — मुदा ई निदान स्वयं पोथीक अपन सीमापर लागू होयबाक चाही, जे नहि भेल अछि।

निनाद जकाँ पोथीक मुद्रण, मूल्य आ प्रचारक पाछाँ काज क' रहल संस्थागत अर्थशास्त्र आ रंग-समाजशास्त्रकेँ देखलाक बाद एकर समीक्षा पूर्ण होइत अछि। पोथीक आन्तरिक विवरणसँ ई तथ्य स्पष्ट होइत अछि जे एकर प्रकाशन 'नवारम्भ' (पटना/मधुबनी) सँ भेल अछि, जकर सम्पर्क सूत्रमे अजित आजादक व्यक्तिगत ईमेल अङ्कित अछि। लेखक अपन भूमिकामे स्वयं ई स्वीकार करैत छथि जे "मित्र अजितजीक सत्प्रयास सँ ई पोथी एकटा मजगुत आकार ग्रहण कयलक अछि"। ई सम्बन्ध मैथिली साहित्यमे दीर्घकालसँ सक्रिय ओही गुटीय सिंडिकेट दिस संकेत करैत अछि, जतय व्यक्तिगत लाभ आ पुरस्कारक राजनीतिक तहत रचना सभक निर्माण आ व्यापार कयल जाइत अछि।

केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान (Central Institute of Indian Languages - CIIL), मैसूरु, भारत सरकारक शिक्षा मन्त्रालयक अधीन एकटा प्रतिष्ठित संस्थान अछि, जे भारतीय भाषा सभक संवर्धन लेल पुस्तक-खरीद योजना (Bulk Purchase Scheme) आ वित्तीय अनुदान संचालित करैत अछि। आठम अनुसूचीमे मैथिलीक समावेशनक बाद केन्द्रीय पुस्तकालय आ शोध-संस्थान सभ लेल मैथिली पोथीक सरकारी खरीदमे व्यापक वृद्धि भेल अछि। एहि योजनाक अनुचित लाभ उठाबय लेल एकटा सुनियोजित कार्य-प्रणाली विकसित भ' चुकल अछि। प्रकाशक आ लेखक मिलि क' एहन पोथी तैयार करैत छथि जे सामान्य बजारमे पाठक लेल नहि, अपितु सोझे सरकारी गोदाममे आपूर्ति लेल लक्षित होइत अछि।

निनादक मूल्य मात्र १०४ पृष्ठ लेल ३०० टका राखल गेनाइ अही व्यावसायिक युक्तिक परिणाम थिक। सरकारी खरीदमे संस्थागत कमीशन काटलाक बादहु प्रकाशक आ लेखककेँ अनुचित मुनाफा प्राप्त होइत अछि। संगहि, सरकारी खरीदक नियममे सामान्य कविता वा कथा-संग्रहक तुलनामे 'शोध', 'भाषा-विज्ञान' आ 'नाटचालोचना' सन अकादमिक विधाकेँ प्राथमिकता देल जाइत अछि। अही कारणे किछु पुरान गोष्ठी-प्रपत्र, अभिनन्दन-आलेख आ यात्रा-डायरीक पन्नाकेँ एक संग नत्थी क' क' ओकरापर 'मैथिली नाटचालोचना'क भ्रामक लेबल लगाओल गेल ताकि ओ चयन-समितिक आँखिमे एकटा गम्भीर शोध-ग्रन्थ बुझना जाय।

एहि संस्थागत प्रकृतिक सबसँ घातक प्रभाव मैथिली भाषा आ साहित्यक प्रतिष्ठापर पड़ैत अछि। जखन सी.आइ.आइ.एल. आ राष्ट्रिय विश्वविद्यालय सभक पुस्तकालयमे आन भारतीय भाषा (यथा कन्नड़, तमिल, बाङ्ला, मराठी) क विद्वान आ शोधार्थी मैथिलीक 'प्रतिनिधि नाट्यालोचना'क रूपमे निनादकेँ पढ़ताह, तखन ओ मैथिलीक आलोचनात्मक चेतनाक सम्बन्धमे की धारणा बनौताह? जाहि पोथीमे आलोचनाक नामपर ई लिखल हो जे लेखक स्टेशनपर उतरि चाह पीलनि, झाड़ू लगबाक दृश्य देखलनि, आ पटनाक रंगकर्मीक आलस्यपर विलाप कयलनि, ओ आन भाषा-भाषीक सोझाँ मैथिलीक बौद्धिक दरिद्रताक प्रदर्शन करत। ई स्थिति ओहि सत्य रंगकर्मी आ निष्ठावान शोधार्थी सभक प्रति घोर अन्याय थिक जे संसाधनक अभावमे सेहो गम्भीर वैचारिक रंगकर्म क' रहल छथि। सरकारी खरीदक लोभमे घटिया आ असम्बद्ध सामग्रीकेँ आलोचना बता क' छपायब मैथिलीक गरिमाकेँ राष्ट्रिय स्तरपर कलंकित करबाक बराबर अछि।

२०. जे प्रश्न पोथी बारम्बार छोड़ि दैत अछि

मैथिली रंगमंचक गम्भीर आलोचना लेल किछु प्रश्न अनिवार्य अछि, जे ‘निनाद’मे आंशिक रूपेँ उठैत अछि मुदा व्यवस्थित उत्तर नहि पबैत अछि: नाटकक पाठ आ प्रदर्शनक बीच रूपान्तरण कोना भेल? निर्देशक मूल पाठमे की काट-छाँट वा पुनर्संरचना कएलनि? अभिनेता लिखित संवादक अतिरिक्त की अर्थ रचलनि? दर्शकक सामाजिक संरचना की छल? भाषा आ उच्चारण दर्शकक पहुँच पर की असर कएलक? स्त्री आ हाशियाक समुदाय रंगमंचक निर्णय-स्थल पर कतेक उपस्थित छथि? अर्थसंकट, rehearsal-space आ तकनीकी साधन कलात्मक शैली पर की प्रभाव दैत अछि?

एहि प्रश्नक अनुपस्थितिमे रंगइतिहास महापुरुष, प्रसिद्ध नाटक, संस्था आ यादगार आयोजनक इतिहास बनि जाइत अछि। समानान्तर इतिहास एहि संरचनाकेँ उलटैत अछि: असफल प्रस्तुति सेहो महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि; छोट समूह सेहो नव रूप उत्पन्न कऽ सकैत अछि; दस्तावेजहीन लोकप्रदर्शन canonical प्रकाशित नाटकसँ अधिक दर्शक-संपर्क राखि सकैत अछि; महिला

कलाकारक backstage श्रम मंचक दृश्यता सँ अधिक भऽ सकैत अछि; आर्थिक बाधा सौन्दर्य-रूपक कारण बनि सकैत अछि।

‘निनाद’क सामग्री एहि प्रश्नसभ लेल कच्चा आधार दैत अछि। तें पोथी कैं खारिज करब इतिहासक सामग्री नष्ट करब होयत; मुदा ओकरा नाट्यालोचनाक पूर्ण मानक मानब आलोचनात्मक पद्धतिक सीमा घटाएब होयत।

२१. मैथिली नाट्यालोचनाक अपेक्षित नव प्रतिमान

एक आधुनिक मैथिली नाट्यालोचना कम-से-कम पाँच स्तर पर एक संग काज करबाक चाही। पहिल, पाठीय स्तर—कथानक, पात्र, संवाद, भाषा, संरचना, प्रतीक, मौन। दोसर, प्रदर्शन स्तर—अभिनय, निर्देशन, गति, मंच, प्रकाश, संगीत, वेश, वस्तु, दृश्य-संकेत। तेसर, दर्शक स्तर—प्रतिक्रिया, सामाजिक संरचना, भाषा-बोध, भागीदारी, स्मृति। चारिम, संस्थागत स्तर—समूह, अर्थ, सभागार, अनुदान, प्रशिक्षण, प्रकाशन, मीडिया। पाँचम, इतिहास-स्तर—मुख्यधारा आ समानान्तर धारा, अभिलेख आ विस्मरण, क्षेत्रीयता, प्रवास, जाति-वर्ग-लिंग, नेपाल-भारतक अन्तरसंबंध, डिजिटल संक्रमण।

एहि पाँच स्तर कैं भारतीय आ पाश्चात्य सिद्धान्तसँ संवाद कराओल जा सकैत अछि। रस-अभिनय दर्शक-अनुभूति पढ़त; ध्वनि आ वक्रोक्ति उपपाठ; औचित्य विभिन्न मंचीय तत्वक सुसंगति; नव्य-न्याय दावा-प्रमाण; अरस्तू dramatic action; स्टानिस्लाव्स्की अभिनेता-उद्देश्य; ब्रेख्त आलोचनात्मक दर्शक; ग्रोटोव्स्की अभिनेता-दर्शक निकटता; बोआल सहभागिता; संकेत-विज्ञान मंचीय चिह्न; performance studies घटना, शरीर, स्थान आ सामाजिक क्रियाक व्यापक अर्थ।

आलोचना मे प्रत्यक्ष दृश्य-साक्ष्य अनिवार्य हो। उदाहरणार्थ: ‘दोसरा दृश्यक अन्तमे अभिनेता पाँच सेकण्डक मौन राखैत अछि; एहि मौनक समय प्रकाश केवल दाहिना चेहरा पर रहैत अछि; संवादक पूर्ववर्ती आत्मविश्वास एतय असुरक्षामे बदलैत अछि।’ एहन वाक्य आलोचना कैं प्रमाण दैत अछि। एकर बाद सिद्धान्त अर्थ खोलि सकैत अछि। सिद्धान्त दृश्यक स्थानापन्न नहि, दृश्यक व्याख्याकार होयत।

इतिहासलेखनमे data table, production chronology, oral history, poster, programme booklet, review, photograph, audio-video record, कलाकार-साक्षात्कार, rehearsal note, ticket, venue record आ संस्था-अभिलेख सभ जुटाओल जाय। जँ स्रोत विरोधी हो, विरोध लिखल जाय। जँ तिथि अनिश्चित हो, अनिश्चितता स्वीकारल जाय। जँ स्मृति एकमात्र स्रोत हो, ओकरा स्मृति कहि प्रस्तुत कएल जाय। ई पद्धति मैथिली रंगइतिहास कैं विश्वसनीय बनाओत।

२२. समग्र निर्णय

'निनाद'क सबसँ पैघ उपलब्धि ई अछि जे ई मैथिली रंगकर्मक अनेक बिखरल प्रसंग, कलाकार, कृति, बहस, संस्था आ घटनाकैं एक ठाम संचित करैत अछि। लेखक रंगजगतसँ दूरी पर ठाढ़ दर्शक नहि; भीतरक सहभागिता आ आत्मीयता लिखना-लिखबामे स्पष्ट अछि। एहि कारण पोथी भविष्यक शोधार्थी लेल दस्तावेजी भण्डारक काज कऽ सकैत अछि। विशेषतः जँ एकरा अन्य पत्रिका, कार्यक्रम-पुस्तिका, समाचार, कलाकार-साक्षात्कार आ दृश्य-अभिलेखसँ मिलान कएल जाए, तँ मैथिली रंगइतिहासक अनेक सूत्र प्राप्त होयत।

मुदा घोषित नाट्यालोचनात्मक दावाक कसौटी पर पोथी असमान अछि। आरम्भमे जे सैद्धान्तिक आवश्यकता लेखक स्वयं चिन्हैत छथि—पुस्तक-समीक्षासँ बाहर आबि अभिनय, मंच, तकनीक, आधुनिक रंगदृष्टि आ प्रस्तुति-कला पर विचार—ओही आवश्यकता पुस्तकक अपन लेखनमे नियमित रूपेँ पूर्ण नहि होइत अछि। अनेक लेख साहित्येतिहास, नाटक-परिचय, रंग-संस्मरण, आयोजन-रिपोर्ट, यात्रा-वृत्तान्त आ व्यक्ति केन्द्रित मूल्यांकनक रूपमे अधिक सफल अछि।

भारतीय नाट्यशास्त्रक दृष्टिसँ रस-अभिनयक गहींर विश्लेषण कम; ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्यक पद्धतिगत उपयोग कम; पाश्चात्य नाट्यचिन्ताक सुसंगत संवाद सीमित; नव्य-न्यायसदृश दावा-प्रमाणक कठोरता असमान; समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ अदृश्य, गैर-संस्थागत आ हाशियाक रंगअभिलेखक खोज अपूर्ण। एहि कारण पुस्तक मैथिली नाट्यालोचनाक अन्तिम प्रतिमान नहि,

बल्कि एहन संक्रमणकालीन दस्तावेज अछि जतय आलोचनाक आकांक्षा, रंग-स्मृति आ मुख्यधारात्मक रिपोर्टिंग एकहि ग्रन्थमे संग-संग चलैत अछि।

एहि निष्कर्षक अर्थ ई नहि जे पोथीक अस्तित्व मैथिली लेल निरर्थक अछि। उलटे, एकर सीमा देखेनाइ मैथिली आलोचनाक मानदण्ड ऊँच करबाक आवश्यक क्रिया अछि। भाषा आ साहित्यक प्रतिष्ठा कमजोर पुस्तक नुका कऽ नहि, कठोर आत्मालोचनासँ बढ़ैत अछि। मैथिलीमे एहन नाट्यालोचना चाही जे अपन रंगपरम्पराक सम्मान करय, मुदा सम्मानक कारण आलोचनात्मक प्रश्न छोड़ि नहि दय; जे मुख्यधाराक दस्तावेज राखय, मुदा समानान्तर स्मृति खोजय; जे कलाकारक श्रमक आदर करय, मुदा प्रदर्शनक कमजोरी स्पष्ट लिखय; जे भारतीय शास्त्रसँ जुड़य, मुदा शास्त्रक नामक अढ़मे विश्लेषण टारय नहि; जे पाश्चात्य सिद्धान्त ग्रहण करय, मुदा स्थानीय मंच पर ओकर यान्त्रिक आरोपण नहि करय।

एहि कसौटी पर ‘निनाद’क उपयुक्त विधागत परिचय ‘मैथिली रंग-संस्मरण, नाट्य-विमर्श आ रंगइतिहासक सामग्री-संकलन’क अधिक निकट अछि। एकरा ‘मैथिली नाट्यालोचनाक प्रतिनिधि मानक’ बनाबय लेल जे सूक्ष्म प्रदर्शन-विश्लेषण, प्रमाण-पद्धति, सैद्धान्तिक निरन्तरता, तुलनात्मक दृष्टि आ समानान्तर अभिलेख-बोध आवश्यक अछि, से पुस्तकमे पूर्ण रूपेँ विकसित नहि अछि। ठीक एहि कारण पोथीक पुनर्पाठ महत्त्वपूर्ण अछि—किएक तँ ई मैथिली रंगालोचनाकेँ बतबैत अछि जे अगिला चरणमे केवल अधिक लेख नहि, अधिक कठोर पद्धति चाही।

'निनाद' एकटा उपयोगी दस्तावेज अछि — बिहार-दिल्लीक मैथिली रंगकर्मक संस्थागत गतिविधि (चेतना समिति, अरिपन, भंगिमा, मैलोरंग) केर कालक्रमिक विवरण एहिमे भेटैत अछि, आ किछु अध्याय (विशेषतः 'विद्यापतिक मणिमंजरी' आ 'कविवर जीवन झाक नाटकक काव्यतत्व') मे साक्ष्य-सजगता आ काव्यशास्त्रीय ज्ञानक प्रमाण सेहो अछि। मुदा ई पोथी नाट्यालोचना क अनुशासनगत मानदंड — व्यवस्थित मंचीय-विश्लेषण, स्वतंत्र तथ्य-सत्यापन, तटस्थ मूल्यांकन-मानदंड, आ (सभसँ महत्वपूर्ण) परिधीय/असंस्थागत रंगकर्मक समानान्तर इतिहासक सन्धान — एहि सभपर

खरा नहि उतरैत अछि। लेखक स्वयं अपन सीमाकेँ बेर-बेर चिन्हित करैत छथि (एकटा दुर्लभ आ प्रशंसनीय गुण), मुदा एहि आत्म-सजगताकेँ एकटा व्यवस्थित समीक्षा-पद्धतिमे रूपान्तरित नहि कयल गेल अछि। परिणामतः 'निनाद' नाट्यालोचनाक वादा करैत अछि आ रंगयात्रा-वृत्तांतक सामग्री दैत अछि — आ एहि द्वैधकेँ अनठाओल जाय त' मैथिली नाट्यालोचनाक अनुशासनगत विकासक बाधा आओर सुदृढ भ' सकैत अछि, ने कि दूर।

कमल मोहन चुन्नू कृत निनाद (मैथिली नाट्यालोचना) केर समग्र, बहुआयामी अध्ययन ई सिद्ध करैत अछि जे ई कृति अपन आवरण-पृष्ठपर कयल गेल गम्भीर दाबीक ठीक विपरीत अछि। संरचनात्मक धरातलपर ई पोथी कोनो व्यवस्थित आलोचनात्मक चिन्तनक परिणाम नहि भ' क' स्मारिका, गोष्ठी-प्रपत्र, शो-रिपोर्ट आ व्यक्तिगत यात्रा-वृत्तान्तक संकलन मात्र अछि। सैद्धान्तिक धरातलपर एहिमे नहि त' भरतक नाट्यशास्त्र आ रस-सिद्धान्तक कोनो प्रामाणिक प्रयोग भेटैत अछि आ नहि अरस्तू अथवा ब्रेख्तक पाश्चात्य नाट्य-सिद्धान्तक सुसंगत बुझबाक प्रमाण; एतय मात्र नाम-उल्लेख द्वारा छद्म-आधुनिकताक चोला पहिरबाक प्रयास कयल गेल अछि।

नव्य-न्यायक तर्क-पद्धतिपर लेखकक प्रमुख स्थापना सभ—विशेष रूपेँ सुन्दर संयोगक बहिष्करण, दरभंगाक निषेध आ ग्रामीण रंगमंचक उपेक्षा—स्वरूपासिद्ध, साध्य-सम, व्याघात आ बाधित हेत्वाभासक कारणे पूर्णतः अविश्वसनीय सिद्ध होइत अछि। 'विदेह' समानान्तर इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे ई ग्रन्थ लोक-परम्पराक उपेक्षा करयबला आ महेन्द्र मलंगिया सन नाटककारक जातिवादी विसंगतिपर पर्दा दैत मुख्यधाराक मध्यवर्गीय संभ्रान्तवादक पोषण करैत अछि। अन्ततः, सी.आइ.आइ.एल. केर पुस्तक-खरीद योजना आ नवारम्भ प्रकाशनक गुटीय सिंडिकेटक सन्दर्भमे ई पोथी मात्र एकटा व्यावसायिक उत्पाद बनि क' रहि जाइत अछि, जाहिसँ मैथिलीक अकादमिक साखकेँ गम्भीर ठेस पहुँचल अछि। मैथिली रंग-समीक्षाकेँ एहि प्रकारक व्यक्तिगत आत्ममुग्धता, शुष्क रिपोर्टिंग आ संस्थागत दलालीसँ मुक्त क' क' एकटा वैज्ञानिक, समावेशी आ वस्तुनिष्ठ आलोचनात्मक स्वरूप देब आवश्यक अछि।

२३. संक्षिप्त आलोचनात्मक सारणी

कसौटी	मूल्यांकन
विधागत पहचान	नाट्यालोचना, रंग-संस्मरण, साहित्येतिहास, आयोजन-रिपोर्ट आ यात्रा-वृत्तान्तक मिश्रण
मुख्य शक्ति	मैथिली रंगकर्म सम्बन्धी व्यक्ति, कृति, संस्था, घटना आ स्मृतिक दस्तावेजी संचयन
मुख्य कमजोरी	प्रदर्शनक दृश्य-दर-दृश्य विश्लेषण, स्पष्ट कसौटी, प्रमाण-भेद आ सैद्धान्तिक निरन्तरताक कमी
भारतीय नाट्यशास्त्रीय स्तर	रस, अभिनय, ध्वनि, औचित्य आदिक व्यवस्थित अनुप्रयोगक अपेक्षा अछि
पाश्चात्य रंगसिद्धान्त	dramatic action, actor training, alienation, actor-spectator relation, semiotics आदि सँ सीमित संवाद
नव्य-न्याय	दावा-हेतु-प्रमाण, अव्याप्ति-अतिव्याप्ति, अपवाद आ स्रोत-भेदक कठोरता अपेक्षित
समानान्तर इतिहास	असंस्थागत, ग्रामीण, सीमावर्ती, स्त्री, हाशियाक, प्रवासी आ डिजिटल रंगअभिलेखक अधिक खोज आवश्यक
सबसँ उपयोगी रूप	मैथिली रंगइतिहासक प्राथमिक सामग्री आ समकालीन रंग-बहसक दस्तावेज
मानक नाट्यालोचना रूपेँ स्थिति	महत्त्वपूर्ण आरम्भिक/संक्रमणकालीन प्रयास; पूर्ण विकसित आलोचनात्मक

कसौटी	मूल्यांकन
	प्रतिमान नहि

बिबलियोग्राफी / सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

1. कमल मोहन चुन्नू। निनाद : Dramatic Cricism in Maithili। 2017।

2. भरतमुनि। नाटचशास्त्र। विभिन्न प्रामाणिक संस्करण।

3. अभिनवगुप्त। अभिनवभारती (नाटचशास्त्र पर टीका)।

4. आनन्दवर्धन। ध्वन्यालोक।

5. कुन्तक। वक्रोक्तिजीवित।

6. क्षेमेन्द्र। औचित्यविचारचर्चा।

7. गङ्गेश उपाध्याय। तत्त्वचिन्तामणि।

8. Aristotle. Poetics.

9. Konstantin Stanislavski. An Actor Prepares; Building a Character; Creating a Role.

10. Bertolt Brecht. Brecht on Theatre.

11. Jerzy Grotowski. Towards a Poor Theatre.

12. Peter Brook. The Empty Space.

13. Augusto Boal. Theatre of the Oppressed.

14. Keir Elam. The Semiotics of Theatre and Drama.

15. Patrice Pavis. Analyzing Performance; Dictionary of the Theatre.

16. Richard Schechner. Performance Studies: An Introduction.

17. Erika Fischer-Lichte. The Transformative Power of Performance.

18. B. K. Matilal. Perception: An Essay on Classical Indian Theories of Knowledge.

19. गजेन्द्र ठाकुर। विदेह समानान्तर इतिहास तथा मैथिली साहित्य-समीक्षा सम्बन्धी लेखन।

आलेख ३३ · नाटक, रंगमंच आ नाट्यालोचना

रंग-संगम

सारांश

“रंग-संगम” नओटा मैथिली नाटक आ तकर नओटा अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तरक एकटा द्विभाषिक नाट्य-संकलन अछि। एहि शोध-लेखमे ग्रन्थक अठारहो प्रस्तुति-इकाइकेँ एकहि आलोचनात्मक क्षितिजपर पढ़ल गेल अछि, जाहिमे मूल मैथिली नाटक, अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर, दृश्य-संरचना, पात्र-विन्यास, ध्वनि-संकेत, मंच-सज्जा, चित्रात्मक संकेत, भाषा, ऐतिहासिक स्रोत, सामाजिक प्रश्न आ रूपान्तरक रणनीति सभ समाविष्ट अछि। अध्ययनक चारि मुख्य आलोचनात्मक आधार अछि: भारतीय रस-भाव-अभिनय-ध्वनि परम्परा; पाश्चात्य कथानक, चरित्र, राजनीतिक रंगमंच आ सहभागी रंगमंचक प्रतिमान; नव्य न्यायपरम्पराक प्रमाण, हेतु, व्याप्ति, उपाधि, अभाव आ भाषिक परिसीमनक विश्लेषण; आ “विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति”, जाहिमे इतिहासक अधिकृत आख्यानक समानान्तर लोकस्मृति, दबाओल आवाज, क्षेत्रीय अनुभव आ वर्तमान सामाजिक परिणतिकेँ एक संग पढ़ल जाइत अछि। अध्ययन देखबैत अछि जे संकलनक प्रमुख नाट्य-प्रवृत्ति मिथकीय वा ऐतिहासिक पदार्थकेँ स्थिर महिमा-गाथा बनेबासँ रोकि ओकरा प्रश्न, प्रतिप्रश्न, प्रमाण, लोक-हस्तक्षेप आ नैतिक निर्णयक रंगमंचमे बदलनाइ अछि। “अपाला आत्रेयी”मे देह-दृष्टि आ ज्ञान, “भऽ जाएब छू”मे जलवायु-संकट, “दानवीर दधीची”मे ज्ञानक स्वामित्व आ मिथक-पुनर्पाठ, “गंगा ब्रिज”मे विकास-भ्रष्टाचार, “जलोदीप”मे बाढ़ि आ जल-निकासी, “कमलाक भगता”मे अन्धानुकरण, “मचण्ड”मे भाषा-न्याय-आतंक, “संकर्षण”मे दंभ आ आत्मबोध, आ “उल्कामुख”मे स्मृति-विस्मृतिक दीर्घ संघर्ष एहि परियोजनाक अलग-अलग रूप थिक। मैथिली निखार ऑडिटमे ग्रन्थक भाषिक सामर्थ्यक संग रोमन शीर्ष-तत्त्व, अनावश्यक आगन्तुक शब्द, असंगत रिक्ति, विरामचिह्न, अनुक्रम-पृष्ठांकन आ कुछ संरचनात्मक विसंगतिक पहिचान कएल गेल अछि।

बीजशब्द

रंग-संगम ·मैथिली नाटक ·रंगमंच ·नाट्यालोचना ·प्रदर्शन

१.२०. गजेन्द्र ठाकुर- रंग-संगम- शोध आलेख

रंग-संगम

नओटा मैथिली नाटक आ तकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तरक विस्तृत शोधपरक साहित्यिक समीक्षा

भारतीय नाट्यशास्त्र · पाश्चात्य नाट्यचिन्तन · नव्य न्याय · विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

शोध-लेख

आधार-ग्रन्थ: गजेन्द्र ठाकुरक “रंग-संगम” (संयुक्त संस्करण, २०२६)

सारांश

“रंग-संगम” नओटा मैथिली नाटक आ तकर नओटा अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तरक एकटा द्विभाषिक नाट्य-संकलन अछि। एहि शोध-लेखमे ग्रन्थक अठारहो प्रस्तुति-इकाइकेँ एकहि आलोचनात्मक क्षितिजपर पढ़ल गेल अछि, जाहिमे मूल मैथिली नाटक, अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर, दृश्य-संरचना, पात्र-विन्यास, ध्वनि-संकेत, मंच-सज्जा, चित्रात्मक संकेत, भाषा, ऐतिहासिक स्रोत, सामाजिक प्रश्न आ रूपान्तरक रणनीति सभ समाविष्ट अछि। अध्ययनक चारि मुख्य आलोचनात्मक आधार अछि: भारतीय रस-भाव-अभिनय-ध्वनि परम्परा; पाश्चात्य कथानक, चरित्र, राजनीतिक रंगमंच आ सहभागी रंगमंचक प्रतिमान; नव्य न्यायपरम्पराक प्रमाण, हेतु, व्याप्ति, उपाधि, अभाव आ भाषिक परिसीमनक विश्लेषण; आ “विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति”, जाहिमे इतिहासक अधिकृत आख्यानक समानान्तर लोकस्मृति, दबाओल आवाज, क्षेत्रीय अनुभव आ वर्तमान सामाजिक परिणतिकेँ एक संग पढ़ल जाइत अछि। अध्ययन देखबैत अछि जे संकलनक प्रमुख नाट्य-प्रवृत्ति मिथकीय वा ऐतिहासिक पदार्थकेँ स्थिर महिमा-गाथा बनेबासँ रोकि ओकरा प्रश्न, प्रतिप्रश्न, प्रमाण, लोक-हस्तक्षेप आ नैतिक निर्णयक रंगमंचमे बदलनाइ अछि। “अपाला आत्रेयी”मे देह-दृष्टि आ ज्ञान, “भऽ जाएब छू”मे जलवायु-संकट, “दानवीर दधीची”मे ज्ञानक स्वामित्व आ मिथक-पुनर्पाठ, “गंगा ब्रिज”मे विकास-भ्रष्टाचार, “जलोदीप”मे बाढ़ि आ जल-निकासी, “कमलाक भगता”मे अन्धानुकरण, “मचण्ड”मे भाषा-न्याय-आतंक, “संकर्षण”मे दंभ आ आत्मबोध,

आ “उल्कामुख”मे स्मृति-विस्मृतिक दीर्घ संघर्ष एहि परियोजनाक अलग-अलग रूप थिक। मैथिली निखार ऑडिटमे ग्रन्थक भाषिक सामर्थ्यक संग रोमन शीर्ष-तत्त्व, अनावश्यक आगन्तुक शब्द, असंगत रिक्ति, विरामचिह्न, अनुक्रम-पृष्ठांकन आ कुछ संरचनात्मक विसंगतिक पहिचान कएल गेल अछि।

मुख्य शब्द: मैथिली नाटक; रंगमंच; रस; ध्वनि; नव्य न्याय; प्रमाण; समानान्तर इतिहास; लोकस्मृति; रूपान्तर; सामाजिक नाटक; मिथक-पुनर्पाठ।

१. अध्ययनक परिसीमा आ पाठ-सम्पूर्णता

एहि अध्ययनक प्राथमिक पाठ “रंग-संगम”क उपलब्ध संयुक्त संस्करण अछि। ग्रन्थ स्वयं स्पष्ट करैत अछि जे नओटा मैथिली मूल नाटकक तुरन्त बाद ओही नाटकक अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर राखल गेल अछि। तेँ आलोचनाक मूल इकाइ केवल नओटा कथा नहि, बल्कि नओ “नाट्य-युग्म” अछि। प्रत्येक युग्ममे मूल आ रूपान्तर दुनूकेँ स्वतंत्र प्रस्तुति-पाठ मानल गेल अछि, कारण अंग्रेजी पाठ शब्दशः अनुवाद मात्र नहि, अनेक ठाम मंचीय स्पष्टीकरण, दृश्य-निर्देश, सूत्रधारक विवेचना आ संवाद-विस्तारक माध्यमसँ नव प्रस्तुति-रूप ग्रहण करैत अछि।

पाठ-सम्पूर्णताक दृष्टिसँ समीक्षा निम्न अठारह इकाइकेँ आवरित करैत अछि:

क्रम	रचना	स्वरूप
१क	अपाला आत्रेयी	मैथिली मूल
१ख	[APALA ATREYI]	अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर
२क	भऽ जाएब छू	मैथिली मूल
२ख	[WE SHALL TURN TO ASH]	अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर
३क	दानवीर दधीची	मैथिली मूल
३ख	[DADHICHI, THE GREAT GIVER]	अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर
४क	गंगा ब्रिज	मैथिली मूल
४ख	[GANGA BRIDGE]	अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर
५क	जलोदीप	मैथिली मूल

५ख	[JALODEEP: THE WATER-LAMP]	अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर
६क	कमलाक भगता	मैथिली मूल
६ख	[A DEVOTEE OF THE KAMALA]	अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर
७क	मचण्ड	मैथिली मूल
७ख	[MACHANDA]	अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर
८क	संकर्षण	मैथिली मूल
८ख	[SANKARSHAN]	अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर
९क	उल्कामुख	मैथिली मूल
९ख	[ULKAMUKH]	अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर

ग्रन्थीय परिमाण सेहो आलोचनात्मक संकेत दैत अछि। उपलब्ध पाठक अनुच्छेद-आधारित गणनामे नओटा मैथिली मूलक सम्मिलित शब्द-परिमाण लगभग ३६,९१५ आ अंग्रेजी रूपान्तरक लगभग ४३,७४४ अछि। सभ युग्ममे अंग्रेजी पाठ मूलसँ दीर्घ अछि; “जलोदीप”मे विस्तार सर्वाधिक लगभग एक-तिहाइ धरि पहुँचैत अछि। ई तथ्य रूपान्तरकेँ केवल भाषान्तर नहि, मंचीय पुनर्संयोजन बुझबाक आधार दैत अछि।

२. आलोचनात्मक पद्धति

२.१ भारतीय नाट्यशास्त्रीय आधार

भारतीय नाट्यपरम्पराक मूल प्रश्न अछि—मंचपर घटित भाव दर्शकक भीतर कओन रूपेँ रस बनैत अछि। भरतक रस-सूत्र विभाव, अनुभाव आ व्यभिचारी भावक संयोगसँ रस-निष्पत्तिक बात करैत अछि। एहि समीक्षामे तदनुसार आलम्बन, उद्दीपन, स्थायी भाव, संचारी भाव, वाचिक-अभिनय, आंगिक-अभिनय, आहार्य-अभिनय आ सात्त्विक प्रतिक्रियाक परस्पर सम्बन्ध देखल गेल अछि। आनन्दवर्धनक ध्वनि-विचार आ अभिनवगुप्तक रस-व्याख्या एहि बातक परीक्षण लेल उपयोगी अछि जे संवादक प्रत्यक्ष अर्थक पाछाँ कओन सामाजिक वा दार्शनिक अर्थ व्यञ्जित होइत अछि। औचित्यक कसौटीपर ई सेहो देखल गेल अछि जे ऐतिहासिक, बाल, व्यंग्य, राजनीतिक आ

दार्शनिक नाटक अपन-अपन वाचिक आ मंचीय रजिस्टरकेँ कतबा संगति दैत अछि।

२.२ पाश्चात्य नाट्यचिन्तन

अरस्तूक [Poetics] कथानक, चरित्र, विचार, पद-विन्यास, दृश्य आ संगीतक छः अवयवमे कथानककेँ प्रधान मानैत अछि। एहि कसौटीपर प्रत्येक नाटकक आरम्भ-मध्य-अन्त, कारण-परिणाम, मोड़, पहचान, आ चरित्रक निर्णय-पथ देखल गेल अछि। ब्रेख्तक महाकाव्यात्मक रंगमंच दर्शककेँ भाव-विलीन करबाक बदला सामाजिक कारणक आलोचनात्मक दर्शक बनेबाक प्रयत्न करैत अछि; “गंगा ब्रिज”, “जलोदीप”, “मचण्ड” आ “उल्कामुख” एही दिशि विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। आगुस्तो बोआलक [Theatre of the Oppressed] दर्शककेँ निष्क्रिय दर्शक नहि, सहभागी “दर्शक-अभिनेता” बनेबाक आग्रह करैत अछि; चौबटिया शैली, सामूहिक प्रश्न, दर्शकसँ प्रतिज्ञा कहलाबनाइ आ जन-भागीदारी एहि प्रतिमानसँ फलदायी तुलनाक अवसर दैत अछि।

२.३ नव्य न्यायीय परीक्षण

नव्य न्याय केवल “तर्क”क सामान्य पर्याय नहि। गंगेशक “तत्त्वचिन्तामणि” ज्ञान-प्राप्तिक साधन, विशेषतः प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्दक विश्वसनीयताकेँ सूक्ष्म रूपेँ परखैत अछि। एहि शोधमे नाटकीय दाबीकेँ पक्ष, साध्य, हेतु, व्याप्ति, उपाधि, बाधक प्रमाण, अभाव आ भाषिक परिसीमनक रूपमे पढ़ल गेल अछि। जहाँ पात्र “विकास”, “परम्परा”, “सुरक्षा”, “प्रतिष्ठा”, “राष्ट्र”, “धर्म” वा “सत्य”क नामपर सामान्यीकरण करैत अछि, ओतय प्रश्न ई अछि—हेतु साध्यसँ अव्यभिचारी अछि कि उपाधिक कारण भ्रम उत्पन्न भऽ रहल अछि? “कमलाक भगता” अन्धानुकरणक व्याप्ति-दोष, “संकर्षण” आत्म-प्रमाणक भ्रान्ति, “गंगा ब्रिज” अधिकृत अभिलेख बनाम प्रत्यक्ष सामाजिक साक्ष्य, “मचण्ड” भाषिक साक्ष्यक अविश्वसनीयता, आ “उल्कामुख” स्मृति-अभाव बनाम दमन-जन्य विस्मरणक फर्ककेँ नाटकीय रूप दैत अछि।

२.४ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

एहि अध्ययनमे “विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति”केँ परिचालनात्मक आलोचनात्मक रूपमे एना परिभाषित कएल गेल अछि: एकटा अधिकृत,

ग्रन्थित, राजकीय, पौराणिक वा संस्थागत इतिहासक समानान्तर लोकस्मृति, क्षेत्रीय अनुभव, दबाओल आवाज, वैकल्पिक पाठ, देहगत अनुभव, मौखिक कथा आ वर्तमान परिणामकेँ एकहि विश्लेषण-रेखापर राखनाइ। ई पद्धति “इतिहास गलत अछि” कहि देबामात्र नहि; बल्कि ककर साक्ष्य सुरक्षित रहल, ककर मिटाओल गेल, ककर भाषा प्रतिष्ठित भेल, आ वर्तमानमे कोन भौतिक चिह्न पुरान दावीक परीक्षा करैत अछि—ई सभ पूछैत अछि। संकलनक अनेक नाटक एहि समानान्तरताकेँ मंचीय रूप दैत अछि: दधीचीक लोकप्रिय अस्थि-मिथकक समानान्तर ज्ञान-दान; गंगा ब्रिजक राजकीय विकास-कथाक समानान्तर मजदूरक मृत्यु; जलोदीपमे कागजी नाला बनाम जमीनपर बंद जल-पथ; उल्कामुखमे दार्शनिक गंगेशक प्रसिद्धिक समानान्तर कवि-गंगेश आ वल्लभाक दबाओल स्मृति।

३. समग्र नाट्य-दृष्टि: “रंग-संगम”क रचनात्मक नाभि

नओटा नाटक विषयगत रूपेँ बहुत भिन्न देखाइत अछि, मुदा भीतर एक साझा नाट्य-विधि कार्यरत अछि: प्रतिष्ठित कथनक सामने अनुभवजन्य प्रतिप्रश्न। अपालाक देहपर समाजक दृष्टि; वृक्षक जड़ि काटि विकासक कल्पना; दधीचीक दानक लोकप्रिय आख्यान; पुलक उद्घाटन-भाषण; बाढ़ि-नियन्त्रणक कागजी योजना; नदीक बालूमे अर्थ नबुझि दोहराओल धार्मिक क्रिया; आतंकक मुकदमामे अनुवाद आ सत्ता; संकर्षणक आत्म-प्रचार; आ गंगेशक स्मृति—सभ ठाम “कहल गेल बात” आ “घटित बात”क दूरी रंगमंचीय ऊर्जा बनैत अछि। एहि दूरीकेँ नाटक लोकभाषा, विडम्बना, गीत, पुनरुक्ति, ध्वनि, प्रतीक, सूत्रधार आ प्रत्यक्ष दर्शक-संवादसँ खोलैत अछि।

दोसरा साझा तत्त्व “ज्ञानक नैतिकता” अछि। ज्ञान ककरा लेल? ककर अधिकार? ककरा द्वारा प्रमाणित? ज्ञान जँ प्रतिष्ठा, सत्ता वा भयक उपकरण बनि जाए तँ की होइत अछि? “अपाला आत्रेयी” ज्ञानकेँ आत्मसम्मानसँ जोड़ैत अछि; “दानवीर दधीची” ज्ञान-दानकेँ सत्ता-विरोधी नैतिकता बनबैत अछि; “कमलाक भगता” कारण-बोध बिनु व्यवहारक विफलता देखबैत अछि; “मचण्ड” भाषिक समझ बिनु न्याय प्रक्रियाक संकट खोलैत अछि; “संकर्षण”

अज्ञानक ऊपर दंभक आवरण हटबैत अछि; “उल्कामुख” तर्कशास्त्रीय महानता आ मिटाओल कवित्वक विच्छेदकेँ ऐतिहासिक स्मृतिक प्रश्न बनबैत अछि।

४. नाट्य-युग्म १: “अपाला आत्रेयी” आ [APALA ATREYI]

४.१ मूल नाटक: ज्ञान, देह आ आत्मसम्मान

“अपाला आत्रेयी” ऋग्वैदिक ब्रह्मवादिनी अपालाकेँ केवल पौराणिक वा ऋचात्मक नामक रूपमे नहि, सीखैत, प्रश्न करैत, रोगसँ जूझैत, विवाह करैत, अस्वीकारक अनुभव करैत आ अन्ततः अपन बौद्धिक-अस्तित्वक निर्णय लैत व्यक्ति बनबैत अछि। आरम्भक आश्रम-दृश्ये नाटकक मूल मूल्य स्थापित करैत अछि: कन्या आ कुमार दुनूकेँ प्रश्न करबाक अधिकार। एहि घोषणासँ शिक्षा सामाजिक समानताक मंच बनैत अछि। बादक त्वक्-रोग, विवाह आ पति-कृशाश्वक दृष्टि एहि मूल्यक परीक्षा करैत अछि। अपालाक निर्णायक कथन—दाग देहपर अछि, बीमार दृष्टि दोसरक—नाटकक नैतिक केन्द्र अछि।

भारतीय रस-दृष्टिसँ करुण, वीर आ शान्तक क्रमिक मिश्रण देखाइत अछि। रोग आ वैवाहिक दूरी करुण विभाव बनैत अछि, मुदा अपाला निष्क्रिय दया-पात्र नहि; आत्मसम्मानक निर्णय वीर भावकेँ प्रधानता दैत अछि। अन्ततः ऋचा, जप, सोम आ ब्रह्मोदयक संकेत व्यक्तिगत पीड़ाकेँ ज्ञानक सार्वजनिक रूपमे रूपान्तरित करैत अछि। नाट्यशास्त्रीय दृष्टिसँ ध्वनि-संकेत—पातक सरसराहटि, वेदीक अग्नि, जड़ी-बूटी, विवाह-मंत्र, रातिक जप, सोम थकुचबाक आवाज—आहार्य आ वाचिकताक बीच भाव-सूत्र बनैत अछि।

नव्य न्यायीय दृष्टिसँ कृशाश्वक सौन्दर्य-निर्णय दोषपूर्ण अनुमानक उदाहरण अछि: “त्वक्-दोष”सँ “व्यक्तिक अवमूल्यन” धरि कोनो आवश्यक व्याप्ति नहि। अपाला एहि मिथ्या व्याप्तिक उपाधि खोलैत अछि—दोष देहमे सीमित अछि, मूल्य ज्ञान, व्यक्तित्व आ आत्मसम्मानमे अछि। एहि प्रकार नाटक स्त्री-देहक सामाजिक पठनकेँ तर्कदोषक स्तरपर सेहो विखण्डित करैत अछि।

४.२ अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर

[APALA ATREYI] मूलक सात दृश्यात्मक चरणकेँ जोगबैत अंग्रेजी दर्शक लेल आश्रम, वैदिक शिक्षाविधान, त्वक्-रोग आ अनुष्ठानक प्रसंग अधिक स्पष्ट

करैत अछि। शब्द-परिमाण मूलसँ लगभग चतुर्थांश बेसी होएब बतबैत अछि जे रूपान्तर व्याख्यात्मक विस्तार करैत अछि। ई विस्तार विदेशी वा गैर-मैथिली दर्शक लेल सांस्कृतिक संदर्भ सुलभ करैत अछि, मुदा कतिपय ठाम मूलक संक्षिप्त व्यञ्जना स्पष्ट कथनमे बदलि जाइत अछि। मूल मैथिलीमे जे ध्वनि आ सांस्कृतिक संकेत न्यून शब्दमे अर्थ खोलैत अछि, अंग्रेजी पाठ ओहि अर्थकेँ संवाद वा मंच-निर्देशमे स्पष्ट करबाक प्रवृत्ति रखैत अछि।

४.३ समालोचनात्मक निष्कर्ष

ई युग्म संकलनक आरम्भ लेल उपयुक्त अछि, कारण एतय “विद्या बनाम दृष्टि”क जे सूत्र उठैत अछि, ओ आगाँ सभ नाटकमे अलग रूपमे लौटैत अछि। अपाला केवल ऐतिहासिक स्त्री-पात्र नहि, संकलनक आलोचनात्मक चेतनाक पहिल प्रतिमूर्ति छथि—ओ सत्ता वा परम्पराक कथनकेँ सम्मानसहित सुनैत छथि, मुदा अपन अनुभवक विरुद्ध कोनो निष्कर्ष स्वीकार नहि करैत छथि।

५. नाट्य-युग्म २: “भऽ जाएब छू” आ [WE SHALL TURN TO ASH]

५.१ चौबटिया रूप, जलवायु आ सामूहिक चेतना

“भऽ जाएब छू” स्वयंकेँ मैथिलीक जलवायु-चेतना बाल चौबटिया-सड़क नाटकक रूपमे स्थापित करैत अछि। एकर नाट्य-शक्ति कथानकक एकल नायकमे नहि, सामूहिक आवाज, संख्या-आधारित पात्र, गीत, प्रश्न, दर्शक-भागीदारी आ वृक्ष-जगतक कल्पनात्मक मानवीकरणमे अछि। “जड़ि कटने भऽ जाएब छू” पुनरुक्त पंक्ति नाटकक लयात्मक चेतावनी थिक। अन्तमे कलाकार दर्शकसँ प्रतिज्ञा कहलाबैत छथि—जड़ि बाँचत तँ जीवन बाँचत।

भारतीय दृष्टिसँ अद्भुत, भय आ वीर भावक क्रम बनैत अछि। वृक्ष, बीआ, चिड़ै, भगजोगनी आ ताप-ऊर्जाक कल्पनात्मक प्रस्तुति अद्भुत जगबैत अछि; उजाड़ भविष्य भय उत्पन्न करैत अछि; सामूहिक प्रतिज्ञा वीर भावमे परिणत होइत अछि। बोआलक सहभागी रंगमंचक प्रतिमानसँ ई नाटक विशेष निकट अछि, कारण दर्शक अन्तमे संदेशक उपभोक्ता नहि रहैत, उत्तर देनिहार सहभागी बनैत अछि। ब्रेख्तीय अर्थमे गीत आ प्रत्यक्ष संबोधन भाव-विलीनताकेँ बीच-बीचमे रोकि विचारक दूरी बनबैत अछि।

नव्य न्यायीय रूपमे नाटक “विकास = वृक्ष-विनाश” वा “ऊर्जा-उपभोग = प्रगति” सन अविवेचित सामान्यीकरणपर प्रहार करैत अछि। बीआक प्रसार, परागण, जड़ि, छाया, ताप आ जैविक परस्परता कारण-सम्बन्धक वैकल्पिक व्याप्ति प्रस्तुत करैत अछि। ई शुष्क वैज्ञानिक विवरण नहि; कारणक जालकेँ बाल-नाट्य रूपमे संवेदी बनाओल गेल अछि।

५.२ अंग्रेजी रूपान्तर

[WE SHALL TURN TO ASH] मूलक सड़क-नाट्य ऊर्जा जोगबैत अछि आ वातावरणीय संकल्पकेँ अधिक स्पष्ट वाक्य-रूप दैत अछि। रूपान्तरक अन्तिम शपथ—जुगनूक प्रकाश, रातिक अन्हार, देशज वृक्ष, बीआ-संरक्षण, अपशिष्ट ऊष्मा, कल्पना आ क्रिया—मूल विचारकेँ वैश्विक पर्यावरणीय शब्दावलीसँ जोड़ैत अछि। अंग्रेजी विस्तार उपयोगी अछि, मुदा प्रस्तुति लेल लय-संतुलन आवश्यक रहत, कारण मूल मैथिली पुनरुक्ति आ लोकलयपर बेसी निर्भर अछि।

६. नाट्य-युग्म ३: “दानवीर दधीची” आ [DADHICHI, THE GREAT GIVER]

६.१ मिथक-पुनर्पाठ आ ज्ञानक नैतिक स्वामित्व

“दानवीर दधीची” लोकप्रिय अस्थि-दान आख्यानकेँ चुनौती दैत दधीचीक “दान”केँ ज्ञान, प्रतिज्ञा आ सत्यक रक्षासँ जोड़ैत अछि। नाटकक केन्द्र मधु-विद्या, इन्द्रक पात्रता, अश्विनीक ज्ञान-अधिकार आ प्रतिज्ञाक नैतिक दुविधा अछि। अन्तिम सूत्रधार स्पष्ट रूपेँ कहैत अछि जे कथा बदलि सकैत अछि, मुदा सत्यक खोज बन्द नहि हेबाक चाही। एहि कारण नाटक स्वयं मिथक-प्रतिमिथकक मंच बनैत अछि।

भारतीय परम्परामे वीर रसक आधार केवल युद्ध नहि; सत्य-रक्षा, व्रत आ ज्ञान-दान सेहो उत्साहक रूप अछि। दधीचीक नायकत्व शरीर-त्यागक चमत्कारसँ हटि बौद्धिक नैतिकतामे आबैत अछि। पाश्चात्य दृष्टिसँ ई “पहचान”क नाटक अछि: इन्द्र अपन अहंकार आ ज्ञान-विरोधी हिंसाक अर्थ पहचानैत अछि। अरस्तूवादी चरित्र-परिवर्तनक दृष्टिसँ इन्द्रक पश्चात्ताप कथानकक नैतिक मोड़ अछि।

नव्य न्यायीय परीक्षणमे ई नाटक विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। “लोकप्रिय कथा” स्वयं प्रमाण नहि; प्रश्न अछि ओकर मूल हेतु, पाठ-परम्परा आ विरोधी साक्ष्य की अछि। नाटक दधीची-वृत्तान्तक दू प्रतिमान खड़ा करैत अछि—अस्थि-दान आ ज्ञान-रक्षा—आ दर्शककेँ प्रमाण-समीक्षा लेल बाध्य करैत अछि। ई तरीका “विदेह समानान्तर इतिहास”क मूल रूप सेहो अछि: प्रचलित स्मृतिक समानान्तर एक वैकल्पिक वैदिक अर्थ-पथ।

६.२ अंग्रेजी रूपान्तर

[DADHICHI, THE GREAT GIVER] मूलक दार्शनिक तर्ककेँ अंग्रेजी दर्शक लेल अधिक प्रत्यक्ष बनबैत अछि। “ज्ञानकेँ सेवा बनाउ, अधिकारक स्रोत नहि” सन निष्कर्ष रूपान्तरक नैतिक अक्ष स्पष्ट करैत अछि। एतय अनुवादक समस्या ई अछि जे वैदिक पदावलीक सांस्कृतिक घनत्व अंग्रेजीमे अक्सर व्याख्यात्मक वाक्य माँगैत अछि; रूपान्तर एहि आवश्यकताकेँ स्वीकार करैत अछि।

७. नाट्य-युग्म ४: “गंगा ब्रिज” आ [GANGA BRIDGE]

७.१ विकासक सार्वजनिक आख्यान आ श्रमिकक दबल इतिहास

“गंगा ब्रिज” संकलनक सर्वाधिक विस्तृत सामाजिक-राजनीतिक नाटकसभमे एक अछि। पुल एतय केवल संरचना नहि—राज्य, ठेका, अभियान्त्रिकी, राजनीतिक श्रेय, भ्रष्टाचार, श्रम, मृत्यु, स्मृति आ राष्ट्रोन्नतिक प्रतिस्पर्धी अर्थसभक केन्द्र अछि। उद्घाटन, मरम्मत, कमीशन, निर्माण-सामग्री, मुख्य अभियन्ता, मंत्री, मजदूर आ ढोलहो देनिहारक आवाज एक प्रकारक बहुस्वर रचैत अछि। नाटकक तीक्ष्णतम विडम्बना ई अछि जे विकासक स्मारक बनल पुल उद्घाटनसँ पहिने वा तुरन्त बाद मरम्मतक विषय बनैत अछि, आ जकरा इतिहासमे उपलब्धि कहल जाइत अछि, ओकर नींवमे श्रमिकक अदृश्य बलिदान अछि।

ब्रेख्तीय दृष्टिसँ पुनरावृत्त “धन्यवाद” आ घोषणात्मक भाषा दूरीकरणक उपकरण बनैत अछि। सत्ता-पात्रक मुस्की आ मजदूरक हथौड़ा एकहि दृश्य-क्षेत्रमे राखल जाए तँ दर्शक भावुक श्रद्धासँ बाहर आबि संरचनात्मक हिंसाक कारण पूछैत अछि। अरस्तूवादी एकीकृत कथानकक तुलनामे ई नाटक

प्रकरणात्मक अछि; एतय एकल नायक नहि, प्रणाली नायक-विरोधी शक्तिक रूपमे उपस्थित अछि। एहि अर्थमे आधुनिक राजनीतिक रंगमंचक पद्धति अधिक उपयोगी आलोचनात्मक चौखट दैत अछि।

नव्य न्यायीय स्तरपर “विकास” साध्य अछि, मुदा ओकर हेतु—पुल बननाइ—स्वतः पर्याप्त नहि। जँ सामग्री भ्रष्ट अछि, श्रमिक-सुरक्षा अनुपस्थित अछि, मरम्मत आरम्भे भऽ गेल, मृत्यु दबाओल गेल, तँ “पुल = विकास” व्याप्ति उपाधि-दूषित अछि। अभियन्ताक प्रश्न “कतेक मूल्यपर विकास?” साध्यक परिसीमन माँगैत अछि। नाटक एहि तरह राजनीतिक नारेक अर्थ-विस्तारकेँ तकनीकी प्रमाणक कसौटीपर लैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ “गंगा ब्रिज”क मुख्य उपलब्धि अभिलेख-विरोधी स्मृति अछि। मंत्री आ मुख्य अभियन्ताक आधिकारिक इतिहासक समानान्तर मजदूरक देह, हथौड़ाक ध्वनि, दरारि आ लगातार मरम्मत भौतिक प्रतिप्रमाण बनैत अछि। पुल जतेक ऊँच, ओकर नींवक अदृश्य इतिहास ओतबे गहिरे।

७.२ अंग्रेजी रूपान्तर

[GANGA BRIDGE] मूलसँ लगभग सोलह प्रतिशत दीर्घ अछि। अंग्रेजी पाठ राजनीतिक विडम्बना, तकनीकी संवाद आ नैतिक टकरावकेँ स्पष्ट करैत अछि। “ब्रिटिश पुल टिकैत अछि, स्वतंत्र भारतक पुल पूरा होएबासँ पहिने दरकैत अछि” सन संवाद उपनिवेशोत्तर विडम्बनाकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि; ई कथनक प्रयोजन औपनिवेशिक शासनक स्तुति नहि, वर्तमान संस्थागत विफलताक आत्मघाती परिणाम देखबनाइ अछि। अनुवादमे एहि व्यंग्यक ऐतिहासिक संवेदनशीलता मंच-निर्देशनमे स्पष्ट रहबाक चाही।

८. नाट्य-युग्म ५: “जलोदीप” आ [JALODEEP: THE WATER-LAMP]

८.१ बाढ़ि, जल-पथ आ बाल-नागरिकता

“जलोदीप” बाल-नाटक होइतहुँ प्रशासनिक अवसंरचना, जल-निकासी, तटबन्ध, सड़क, पुलिया, कागजी अभिलेख आ स्थानीय निरीक्षणक जटिल सम्बन्धकेँ सरल खेल-रूपमे खोलैत अछि। प्रारम्भक जलामय अन्हार भयावह अछि; फेर पहाड़क खेल, लोकक खेल आ अन्ततः “जलोदीप”क प्रतिमा द्वारा

बच्चा सभ समस्या-विश्लेषक बनैत छथि। “पानि शत्रु नहि; बन्द बाट शत्रु” नाटकक वैज्ञानिक-सामाजिक सूत्र अछि।

भारतीय रस-दृष्टिसँ भयक रूपान्तरण वीर आ अद्भुतमे होइत अछि। बच्चा जे आरम्भमे आपदाक शिकार देखाइत छथि, अन्तमे निरीक्षण, प्रश्न, नक्शा-परीक्षा आ सामूहिक शपथक कर्ता बनैत छथि। बोआलक सहभागी रंगमंचक निकटता स्पष्ट अछि: समस्या बाहरक विशेषज्ञ मात्र नहि सुलझबैत, समुदाय स्वयं नक्शा, पुलिया, नाला आ तटबन्धक जवाबदेही माँगैत अछि।

नव्य न्यायीय रूपमे “कागजपर पुलिया” आ “जमीनपर पुलिया”क फर्क प्रत्यक्ष बनाम शब्द-प्रमाणक परीक्षण अछि। ठेकेदारक “प्रमाण चाही” प्रश्नक उत्तर पानि स्वयं दैत अछि—जहाँ मार्ग नहि, ओतय घर डूबैत अछि। अर्थात् अधिकृत दस्तावेज शब्द-प्रमाण तखनहि विश्वसनीय जखन प्रत्यक्ष आ परिणामसँ अबाधित हो। एहि नाटकमे बच्चाक अनुभव ज्ञानक वैध स्रोत बनि उठैत अछि।

८.२ अंग्रेजी रूपान्तर

[JALODEEP: THE WATER-LAMP] मूलसँ लगभग एक-तिहाइ दीर्घ अछि, जे सभ युग्ममे सर्वाधिक विस्तार अछि। अंग्रेजी रूपान्तर जल-निकासीक कारण-सम्बन्ध, समुदायिक संकल्प आ “अन्ध विकास”क आलोचनाकेँ अधिक स्पष्ट रूपेँ व्यवस्थित करैत अछि। ई शैक्षिक मंचन लेल उपयोगी, मुदा बाल-रंगमंचमे गति जोगबाक लेल निर्देशक संवादक स्पष्टीकरण आ क्रियात्मक खेलक अनुपात संतुलित राखि सकैत छथि।

९. नाट्य-युग्म ६: “कमलाक भगता” आ [A DEVOTEE OF THE KAMALA]

९.१ अन्धानुकरणक हास्य-तर्क

“कमलाक भगता” छोट आकारक मुदा अवधारणात्मक रूपेँ अत्यन्त सघन बाल-हास्य नाटक अछि। एक भिखमंगा अपन बचाओल पाइ नदीक बालूमे सुरक्षित रखबाक लेल चिह्न बनबैत अछि; दोसर लोक कारण नबुझि चिह्नक अनुकरण धार्मिक आचार मानि लैत अछि; अन्ततः मूल चिह्न असंख्य प्रतिलिपिमे विलीन भऽ जाइत अछि। कथा हास्य उत्पन्न करैत अछि, मुदा

हास्यक भीतर ज्ञानमीमांसात्मक प्रश्न छैक—“हम एहि काजक कारण जनैत छी कि केवल देखादेखी करैत छी?”

नव्य न्यायक दृष्टिसँ ई ग्रन्थक सबसँ साफ उदाहरण अछि। पहिल व्यक्ति लेल चिह्नक हेतु निजी पहचान अछि; दर्शक सभ ओहि हेतुकेँ नबुझि “एतय एना करब धर्म” साध्य स्थापित करैत छथि। व्याप्ति निर्मिते नहि भेल, तथापि व्यवहार सामान्यीकृत भऽ जाइत अछि। ई हेत्वाभास, परम्परा-प्रमाणक अविवेचित ग्रहण आ प्रसंग-परिवर्तनक नाटकीय पाठशाला अछि।

हास्य रस एतय उपहासक क्रूरता नहि, आत्म-संशोधनक माध्यम अछि। अन्तिम सीख—पहिने पूछू, बुझू, तखन करू—संकलनक व्यापक ज्ञान-नैतिकताकेँ बालोपयोगी सूत्रमे संक्षिप्त करैत अछि।

९.२ अंग्रेजी रूपान्तर

[A DEVOTEE OF THE KAMALA] मूलक कारण-भ्रमकेँ बहुत स्पष्ट करैत अछि। रूपान्तरमे “marker left unexplained became a rule for others”क भाव मूल कथा-विधानक दार्शनिक सार अछि। अंग्रेजी विस्तार हास्यक स्थितिकेँ अन्तरराष्ट्रीय दर्शक लेल पठनीय बनबैत अछि, मुदा प्रदर्शनमे अत्यधिक नैतिक व्याख्या हास्यक स्वाभाविक खोज-क्षणकेँ दबा नहि दे, एहि पर ध्यान आवश्यक अछि।

१०. नाटच-युग्म ७: “मचण्ड” आ [MACHANDA]

१०.१ भाषा, न्याय, आतंक आ राज्य

“मचण्ड” भाषा आ सत्ता बीचक दूरीकेँ न्यायिक संकटमे बदलैत अछि। पात्र-परिचय स्वयं बतबैत अछि जे राज्य, आतंक, बेरोजगारी, दया-राजनीति, मुतालिफक मौन आ खुफिया अधिकारीक विश्वास नाटकक केन्द्रमे अछि। अदालत, हथकड़ी, जेल/रेल ध्वनि, मोबाइल, अनुवादकक अधूरा स्वर आ भोजनक पैकेट—ई सभ प्रतीक बतबैत अछि जे आधुनिक न्याय केवल कानूनक पाठ नहि, भाषिक पहुँच, अनुवादक विश्वसनीयता, संस्थागत पूर्वधारणा आ मनुष्यक दैनन्दिन असुरक्षासँ बनैत अछि।

नाटक “आतंकी” आ “सरकारी” मचण्डक परस्पर आरोप द्वारा नैतिक समरूपताक खतरनाक प्रश्न उठबैत अछि: हिंसा केवल वर्दीक आधारपर नैतिक

वा अनैतिक नहि ठहरैत। तथापि नाटक दुई पक्षकेँ सरल समानता नहि बनबैत; खुफिया अधिकारीक भीतर विश्वास आ दुविधा, मुतालिफक मौन, आ अनुवादकक असमर्थता न्यायिक सत्य-निर्माणक जटिलता बढ़बैत अछि।

नव्य न्यायीय दृष्टिसँ “शब्द” प्रमाणक विश्वसनीयता एतय केन्द्रीय अछि। जँ वक्ताक भाषा अदालत नहि बुझैत अछि, अनुवाद अपूर्ण अछि, प्रसंग छूटैत अछि, तँ प्राप्त “वाक्यार्थ” मूल वक्तव्यक यथार्थ ज्ञान दैत अछि कि नहि? एहि प्रश्नमे आकांक्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य सन भारतीय भाषादार्शनिक प्रश्न सेहो सक्रिय होइत अछि। राज्यक अनुमान यदि पूर्वनिर्धारित श्रेणीपर आधारित हो, तँ हेतु सव्यभिचार वा बाधित भऽ सकैत अछि।

१०.२ पाश्चात्य राजनीतिक रंगमंचसँ सम्बन्ध

ब्रेख्तीय संरचनामे अदालत आ पूछताछक दृश्य दर्शककेँ “ककरा पर दया करू?”सँ आगाँ “कओन संस्था सत्य बनबैत अछि?” पूछबाक प्रेरणा दैत अछि। भोजनक खाली पैकेटपर अन्तिम प्रकाश अत्यन्त प्रभावी दृश्य-चिह्न अछि: मोठ राजनीतिक भाषा अन्ततः मनुष्यक भुख, दैनन्दिन देह आ असुरक्षामे परीक्षित होइत अछि।

१०.३ अंग्रेजी रूपान्तर

[MACHANDA] मूलक राजनीतिक तनावक अन्तरराष्ट्रीय पठनीयता बढ़बैत अछि। अंग्रेजी पाठ मूलसँ लगभग सत्रह प्रतिशत विस्तृत अछि, मुदा “अनुवाद” विषय स्वयं नाटकक समस्या होएबाक कारण एहि युग्ममे रूपान्तर अतिरिक्त आत्म-सन्दर्भ ग्रहण करैत अछि: जे नाटक भाषिक असमानतापर अछि, ओ स्वयं भाषा बदलि नव दर्शक तक पहुँचैत अछि। ई रूपान्तरक वैचारिक महत्त्व अछि।

११. नाट्य-युग्म ८: “संकर्षण” आ [SANKARSHAN]

११.१ दंभक पाँच-कल्लोलक मनो-सामाजिक यात्रा

“संकर्षण”क संरचना पाँच कल्लोलमे दंभक क्रमिक निर्माण आ टूटन देखबैत अछि। कलक्टरक निकटताक झूठ, कारी कुकुरक खिस्सा, पसीझक काँट, पंचैती दण्ड, कंठी, टेलीफोन डायरी, विवाह-बड़ाइ, रंग, गोबर, दिल्लीक चोर-बजार आ

जुत्ता—छोट-छोट प्रसंग मिलि एकटा चरित्रक स्व-रचित मिथक बनबैत अछि। संकर्षण "चोट"कैं "सत्कार", "डर"कैं "बुधियारी" आ "ठकाइ"कैं "प्रतिष्ठा" कहल चाहैत अछि। अन्तिम आत्मबोध—ठकाइ जुत्तापर नहि, दंभपर पड़ल—चरित्रक असल पहचान-क्षण अछि।

अरस्तूवादी चरित्र-दृष्टिसँ ई संकलनक सर्वाधिक स्पष्ट "अनाग्नोरिसिस" अर्थात् आत्म-पहिचानक उदाहरण अछि। कथानक प्रकरणात्मक होइतहुँ सभ प्रसंग एके मनोवैज्ञानिक हेतु—दंभ—सँ बँधल अछि। हास्य धीरे-धीरे करुण आत्मबोधमे बदलैत अछि; दर्शक पहिने संकर्षणपर हँसैत अछि, अन्तमे अपन भीतरक संकर्षण खोजबाक प्रश्नसँ घेराइत अछि। ई हास्यक नैतिक परिपक्वता अछि।

नव्य न्यायीय विश्लेषणमे संकर्षण स्वयंकैं प्रमाण मानैत अछि। "हम कलक्टरक निकट छी", "हम रोग बुझैत छी", "हम प्रतिष्ठित छी"—दाबीसभक हेतु प्रत्यक्ष वा विश्वसनीय शब्द-प्रमाणसँ रहित अछि। उलटे, प्रतिप्रमाण भेटलापर ओ दाबी बदलि सम्मान-बचाउ व्याख्या बनबैत अछि। ई ज्ञानमीमांसात्मक "पराजय स्वीकार नहि करबाक" मनोविज्ञान अछि। अन्तिम जुत्ता प्रतीक दंभक बाधक प्रमाण बनैत अछि, जकरा ओ पहिल बेर अस्वीकार नहि करि पबैत अछि।

११.२ अंग्रेजी रूपान्तर

[SANKARSHAN] पाँच "वेव" [wave]क संरचना जोगबैत अछि आ आरम्भे संकर्षणकैं अभिनेता आ खलनायक दुनू कहि नाटकक आत्म-व्यंग्य स्पष्ट करैत अछि। अंग्रेजी रूपान्तर मूलक हास्यक सांस्कृतिक सूक्ष्मता—गामक प्रतिष्ठा, पदनाम, वैवाहिक बड़ाइ—समझेबाक लेल अधिक व्याख्या जोड़ैत अछि। रूपान्तर सफल तखन होइत अछि जखन ई स्पष्टीकरण हास्यक समय-नियन्त्रणकैं भारी नहि बनबैत।

१२. नाट्य-युग्म ९: "उल्कामुख" आ [ULKAMUKH]

१२.१ प्रेमक पाछाँ स्मृति-विस्मृतिक महागाथा

"उल्कामुख" संकलनक सर्वाधिक दीर्घ, जटिल आ महत्त्वाकांक्षी नाटक अछि। घोषित विषय गंगेश आ वल्लभाक प्रेम अछि, मुदा सूत्रधार स्वयं स्पष्ट

करैत अछि जे ई प्रेम स्मरण आ विस्मरणक संघर्ष सेहो अछि। पहिल चरणसभमे प्रेम, गीत आ कवित्वक बीआ; मध्य भागमे इतिहासक षडयन्त्र; बादक भागमे दबाओल स्मृतिक देह, समाज आ संघर्षमे पुनरागमन—एहि दीर्घ संरचनासँ नाटक निजी प्रेमकथा, बौद्धिक इतिहास, जाति-सामाजिक दबाव, शिक्षा-पद्धति, ग्रन्थीय प्रतिष्ठा आ लोकस्मृतिक संगम बनैत अछि।

मंच-संकेत विशेष उल्लेखनीय अछि। पहिलसँ चारिम कल्लोल धरि शतरंजक डिजाइनवला घन भूत, कल्पना, चाल आ नियंत्रित इतिहासक संकेत बनैत अछि; पाँचमसँ गोला वा पृथ्वीक प्रतीक वास्तविकता, पुनरागमन आ सम्पूर्णताक दृश्य-चिह्न बनैत अछि। घनक खरखराहटि, गीदरक आवाज, बाँसबिट्टीक सिहरन, लोकगीत आ अन्तिम गोलाक घरघराहटि ध्वनि-नाटचक स्वतंत्र अर्थ-रेखा बनबैत अछि। एहि कारण “उल्कामुख” पढ़बाक पाठ मात्र नहि, दृश्य-ध्वनि स्थापना सेहो अछि।

१२.२ गंगेश: तर्कशास्त्रीक प्रसिद्धि आ कविक विस्मृति

नाटकक केन्द्रीय ऐतिहासिक विडम्बना ई अछि जे गंगेश “तत्त्वचिन्तामणि”क महान दार्शनिकक रूपमे स्मरणीय, मुदा कवि-गंगेश आ “उल्कामुख” विस्मृत। ई द्वैत संकलनक नव्य न्यायीय समीक्षा लेल अद्वितीय अवसर दैत अछि। एक दिस गंगेशक नाम प्रमाण-विश्लेषणक सर्वाधिक सूक्ष्म भारतीय परम्परासँ जुड़ल; दोसर दिस नाटक पूछैत अछि—इतिहास स्वयं कओन प्रमाण-प्रक्रियासँ तय करैत अछि जे व्यक्ति केर कओन रूप स्मरणीय आ कओन रूप लुप्त? अर्थात् ज्ञानमीमांसा अपन इतिहासपर लागू होइत अछि।

नव्य न्यायमे “अभाव” केवल साधारण “नहि अछि” नहि, अभावक आश्रय, प्रतियोगी आ सम्बन्ध स्पष्ट करब आवश्यक। “कविता नहि अछि” आ “कविता दबा देल गेल/स्मृतिसँ हटाओल गेल” भिन्न दावी अछि। “उल्कामुख” ई भेद नाटकीय बनबैत अछि। विस्मरण प्राकृतिक अनुपस्थिति नहि, सामाजिक उत्पादन हो सकैत अछि। एहि स्तरपर नाटक अभावक राजनीति लिखैत अछि।

१२.३ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक चरम रूप

ई नाटक अधिकृत बौद्धिक इतिहासक समानान्तर प्रेम, लोकगीत, स्त्री-स्मृति, शिष्य-परम्परा, सामाजिक संघर्ष आ मंचीय पुनराविष्कार रखैत अछि। इतिहास एतय रेखीय कालक्रम नहि; दबाओल आवाज वर्तमानमे लौटि पुरान अर्थ बदलैत अछि। शतरंजक घनसँ पृथ्वीक गोलाक संक्रमण यैह बतबैत अछि: नियंत्रित खानेमे बँटल इतिहासक बदला बहुआयामी वास्तविकता।

१२.४ पाश्चात्य आधुनिकतासँ संवाद

प्रकरणात्मक संरचना, सूत्रधार, प्रतीकात्मक वस्तु, दृश्य-परिवर्तन, लोकगीत आ इतिहासक मंचीय पुनर्निर्माण ब्रेख्तीय महाकाव्यात्मक नाटकक संग तुलनीय अछि, मुदा एकरा ब्रेख्तक प्रतिलिपि कहब अनुचित होयत। मूल ऊर्जा मिथिला-केन्द्रित इतिहास-स्मृति, लोकध्वनि आ न्यायीय बौद्धिक परम्परासँ अबैत अछि। आधुनिक पाश्चात्य रंगमंचक तुलना केवल संरचनात्मक समानता देखबैत अछि—परम्परागत एकरेखीय कथानकक बदला ऐतिहासिक प्रकरण आ आलोचनात्मक दर्शक।

१२.५ अंग्रेजी रूपान्तर आ संरचनात्मक प्रश्न

[ULKAMUKH] मूलक जटिल दृश्य-संकेतकेँ विस्तारसँ अंग्रेजीमे पुनर्स्थापित करैत अछि। मुदा सम्पादकीय दृष्टिसँ एक महत्त्वपूर्ण जाँच आवश्यक अछि: मैथिली शीर्ष-विवरण “छह कल्लोलक नाट्य-गाथा” कहैत अछि, जबकि अंग्रेजी खण्डमे [ACT I] सँ [ACT VII] धरि शीर्षक देखाइत अछि। जँ सातम खण्ड उपसंहार वा पृथक समापन-अंक अछि तँ ओकर नामकरण स्पष्ट कएल जाए; जँ ई अंक-संख्या त्रुटि अछि तँ संशोधन आवश्यक। ई आलोचना कथ्यपर नहि, पाठीय संरचनाक संगतिपर अछि।

१३. द्विभाषिक रंगमंचीय रूपान्तर: अनुवादसँ आगाँ

सभ नओ अंग्रेजी पाठ मैथिली मूलसँ शब्द-परिमाणमे दीर्घ अछि। विस्तार लगभग पन्द्रह प्रतिशतसँ तैंतीस प्रतिशत धरि अछि। एहि आँकड़ासँ तीन निष्कर्ष निकलैत अछि। पहिल, अंग्रेजी पाठ “शाब्दिक समानता”क परियोजना नहि; सांस्कृतिक सन्दर्भ, मंचीय क्रिया आ नैतिक संबंध स्पष्ट करबाक परियोजना अछि। दोसर, जे बात मैथिली लोक-सांस्कृतिक संकेतसँ स्वतः बुझाइत अछि, अंग्रेजी दर्शक लेल ओकर प्रसंग जोड़ल गेल अछि। तेसर,

विस्तारक लाभक संग जोखिम अछि—व्यञ्जना व्याख्यामे, लय गद्यात्मक स्पष्टतामे, आ हास्य स्पष्टीकरणमे बदलि सकैत अछि।

अनुवाद-समीक्षाक उचित कसौटी “कतेक शब्द समान” नहि, बल्कि “कतेक नाटच-कार्य समान” हो। जँ मूलक गीत दर्शककेँ सहभागी बनबैत अछि तँ अंग्रेजीमे सेहो सहभागी क्रिया चाही; जँ मूलक एक लोकपद पूरा सामाजिक श्रेणी खोलैत अछि तँ अंग्रेजीमे आवश्यक स्पष्टीकरण मंचक गति नहि तोड़ए; जँ मूलक ध्वनि संकेत अर्थ दैत अछि तँ अनुवादक पाठ ओकरा गद्य-व्याख्याद्वारा अनावश्यक रूपेँ प्रतिस्थापित नहि करए। “रंग-संगम”क सफल रूपान्तर ओतय अछि जतय सांस्कृतिक अर्थ खुलैत अछि मुदा मंचीय तनाव जीवित रहैत अछि।

१४. भारतीय साहित्यिक समीक्षा: रस, ध्वनि, अभिनय आ औचित्य

१४.१ रसक बहुवचन

संकलन एकहि प्रधान रसपर आधारित नहि। “अपाला आत्रेयी” करुणसँ वीर; “भऽ जाएब छू” भय-अद्भुतसँ वीर; “दानवीर दधीची” वीर-शान्त; “गंगा ब्रिज” करुण-रौद्र-बीभत्स; “जलोदीप” भयानकसँ वीर-अद्भुत; “कमलाक भगता” हास्यसँ विवेकजन्य शान्ति; “मचण्ड” भयानक-करुण-रौद्र; “संकर्षण” हास्यसँ करुण आत्मबोध; “उल्कामुख” शृंगार, करुण, रौद्र, वीर आ शान्तक दीर्घ मिश्रण रचैत अछि। एतय रस नैतिक उपदेशक सजावट नहि; भाव-परिवर्तनक संरचना अछि।

१४.२ ध्वनि आ प्रत्यक्ष कथन

संकलनक एक शक्ति प्रत्यक्ष कथनक संग व्यञ्जना अछि। “गंगा ब्रिज”क दरारि, “जलोदीप”क दीप, “मचण्ड”क खाली भोजन-पैकेट, “संकर्षण”क जुत्ता, “उल्कामुख”क घन आ गोला—ई सभ वस्तु प्रत्यक्ष अर्थसँ बेसी सामाजिक अर्थ धारण करैत अछि। तथापि किछु नाटकक अन्तमे सूत्रधार निष्कर्ष बहुत स्पष्ट कहि दैत अछि। बाल-नाटकमे ई शैक्षिक रूपेँ उचित, मुदा प्रौढ़ राजनीतिक नाटकमे कखनो-कखनो वस्तु-ध्वनि स्वयं पर्याप्त होइत अछि; निर्देशक चाहे तँ समापनक व्याख्यात्मक वाक्यक गति संयत राखि व्यञ्जनाक अवकाश बढ़ा सकैत छथि।

१४.३ अभिनय आ मंच-संकेत

ग्रन्थ मंच-निर्देशक लेल असामान्य रूपेँ समृद्ध अछि। पात, अग्नि, सोम, नदी, हथौड़ा, बाढ़ि, सिक्का, हथकड़ी, टाइपराइटर, दूरक सायरन, गीत, घन, गोला—ध्वनि-सूची पढ़िते स्पष्ट होइत अछि जे लेखक “नाटक”केँ संवाद-पुस्तक नहि मानैत छथि। आहार्य, वाचिक आ आंगिक अभिनयक संयुक्त योजना अछि। चित्रसभ सेहो मंच-कल्पनाक दृश्य-नोट जेकाँ कार्य करैत अछि। एतय सम्पादकीय सावधानी ई चाही जे प्रतीकात्मक आधुनिक रेखांकन आ कथात्मक चित्रक सौन्दर्य-भाषा एकरूपता वा जानि-बुझि द्विरूपताक सिद्धान्तसँ व्यवस्थित कएल जाए।

१५. पाश्चात्य साहित्यिक समीक्षा: कथानकसँ राजनीतिक रंगमंच धरि

१५.१ अरस्तू: क्रिया, मोड़ आ पहचान

अरस्तूवादी कसौटीपर “अपाला आत्रेयी”, “दानवीर दधीची” आ “संकर्षण” तुलनात्मक रूपेँ अधिक चरित्र-केन्द्रित कारण-परिणाम रचैत अछि। “संकर्षण”क अन्तिम आत्मबोध स्पष्ट पहचान-क्षण अछि। “गंगा ब्रिज” आ “उल्कामुख” एकल कथानकक बदला बहु-प्रकरणात्मक इतिहास रचैत अछि, तेँ ओतय अरस्तूवादी “एकता”सँ बेसी आधुनिक महाकाव्यात्मक संरचना लागू होइत अछि। ई भिन्नता कमजोरी नहि; विषयक माँग अनुसार संरचनात्मक चयन अछि।

१५.२ ब्रेख्त: दूरी, गीत, सूत्रधार, इतिहास

सूत्रधार, घोषणात्मक संवाद, पुनरुक्त नारा, दर्शकसँ सीधा संबोधन, गीत, दृश्य-खंड आ ऐतिहासिक प्रसंग “रंग-संगम”क अनेक नाटककेँ भाव-विलीन यथार्थवादसँ दूर लैत अछि। दर्शककेँ घटनाक कारण सोचबाक समय देल जाइत अछि। “गंगा ब्रिज”मे विकासक उत्सवक समानान्तर दरारि; “मचण्ड”मे न्यायिक भाषा आ अनुवादक दूरी; “उल्कामुख”मे इतिहास स्वयं मंचीय वस्तु बनि जाइत अछि। एहि कारण संकलन आधुनिक आलोचनात्मक रंगमंचक संग सार्थक संवाद करैत अछि।

१५.३ बोआल: दर्शकक सक्रियता

“भऽ जाएब छू” आ “जलोदीप” दर्शककेँ उत्तर, प्रतिज्ञा आ सामाजिक क्रियाक भाषा दैत अछि। ई बाल-नाटकक उपदेशात्मकता मात्र नहि; सार्वजनिक समस्या पर सामूहिक अभिनयक अभ्यास अछि। दर्शक यदि “हँ” कहैत अछि, नाला देखबाक, बीआ बचेबाक वा जल-पथ नहि रोकबाक प्रतिज्ञा करैत अछि, तँ नाटक मंचसँ बाहर व्यवहारक सम्भावना खोलैत अछि।

१६. नव्य न्यायीय साहित्यिक समीक्षा: नाटक बतौर प्रमाण-परीक्षा

१६.१ दाबी आ प्रमाण

एहि संकलनक अनेक पात्र दाबी करैत छथि; नाटक ओहि दाबीक प्रमाण माँगैत अछि। कृशाश्वक दृष्टि, वृक्ष-विनाशक विकास, दधीचीक अस्थि-दान, पुलक गुणवत्ता, बाढ़ि-नियन्त्रणक अभिलेख, धार्मिक परम्पराक कारण, आतंक-संबंधी भाषिक साक्ष्य, संकर्षणक प्रतिष्ठा, आ गंगेशक ऐतिहासिक स्मृति—सभ दाबी परीक्षणक विषय अछि। एहि अर्थमे नाटक न्यायालय मात्र नहि, ज्ञानमीमांसात्मक प्रयोगशाला अछि।

१६.२ व्याप्ति आ उपाधि

सामाजिक नारा अक्सर अधूरी व्याप्ति बनबैत अछि: “पुल = विकास”, “बहुसंख्यक अनुकरण = परम्परा”, “पद = सत्य”, “देहक दोष = व्यक्तिक दोष”, “आधिकारिक अभिलेख = इतिहास”, “विस्मरण = अस्तित्व-अभाव”। प्रत्येक नाटक एहन समीकरणमे छिपल उपाधि देखबैत अछि। जँ पुल भ्रष्ट सामग्रीसँ बनल, तखन पुल विकासक पर्याप्त हेतु नहि; जँ लोक कारण नबुझि अनुकरण करैत अछि, संख्या सत्यक प्रमाण नहि; जँ कविता दबाओल गेल, वर्तमान अनुपलब्धता ऐतिहासिक अनस्तित्व सिद्ध नहि करैत।

१६.३ अभावक नाट्यशास्त्र

संकलनमे “जे नहि देखाइत अछि” बहुत महत्त्वपूर्ण अछि: अपालाक गुण कृशाश्वक दृष्टिमे अनुपस्थित; कटैत वृक्षक भविष्य; दधीचीक वैकल्पिक अर्थ; पुलमे दबल मजदूरक नाम; नक्शामे देखाओल मुदा जमीनपर नहि रहल निकासी; भिखमंगाक चुकड़ी; मुतालिफक सही भाषिक आवाज; संकर्षणक वास्तविक प्रतिष्ठा; गंगेशक विस्मृत कवित्व। ई सभ अभाव एकरूप नहि।

किछु वास्तविक अनुपस्थिति, किछु दृष्टिदोष, किछु दमन, किछु भ्रान्ति। नव्य न्यायीय परिसीमन एहि फर्ककेँ आलोचनात्मक धार दैत अछि।

१६.४ भाषिक परिसीमन

नव्य न्यायीय गद्य प्रसिद्ध अछि अर्थ-सीमा सूक्ष्म करबाक लेल। “रंग-संगम”क श्रेष्ठ संवाद ओतय अछि जतय सामान्य शब्दक सीमा अचानक स्पष्ट होइत अछि—“दाग देहपर”, “पानि शत्रु नहि; बन्द बाट शत्रु”, “चोटकेँ सत्कार कहबासँ चोट भरै नहि”, “कारण नबुझि अनुकरण नहि”, “ज्ञान सेवा हो, अधिकार नहि”। एहि वाक्यसभमे एक व्यापक श्रेणीकेँ उचित अधिकरणमे सीमित कएल जाइत अछि। ई साहित्यिक भाषा आ न्यायीय परिसीमनक फलदायी संगम अछि।

१७. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक समीक्षा

१७.१ इतिहासक दू पाँति

एहि पद्धतिमे एक पाँतिमे अधिकृत/प्रचलित इतिहास अछि, दोसर पाँतिमे अनुभव/लोकस्मृति/दबल पाठ। “दानवीर दधीची”मे पौराणिक अस्थि-दान बनाम ज्ञान-दान; “गंगा ब्रिज”मे उद्घाटनक गौरव बनाम मजदूर आ दरारि; “जलोदीप”मे कागजी विकास बनाम पानिक वास्तविक बाट; “मचण्ड”मे आरोप-पत्र बनाम अनुवादित/अननुवादित मानवीय वाणी; “उल्कामुख”मे तत्त्वचिन्तामणिकार गंगेश बनाम विस्मृत कवि-प्रेमी गंगेश—ई द्विपाँतिक इतिहास रचैत अछि।

१७.२ इतिहासक भौतिक साक्ष्य

ई नाटक केवल वैकल्पिक कथा नहि सुनबैत; वस्तुकेँ साक्ष्य बनबैत अछि। पुलक दरारि, जलक ठहराव, खाली पैकेट, जुत्ता, घन, गोला, त्वक्-दाग—वस्तु सभ भाषणक विरुद्ध ठाढ़ भऽ सकैत अछि। समानान्तर इतिहास एतय “दोसरा विचार” नहि, “दोसरा प्रमाण-स्रोत” अछि।

१७.३ वर्तमानसँ अतीतक प्रतिप्रश्न

पद्धतिक महत्त्व एहि बातमे अछि जे वर्तमान अतीतक निष्क्रिय परिणाम नहि। वर्तमानक सामाजिक प्रश्न अतीतक आख्यानकेँ फेर खोलैत अछि। स्त्री-

स्वायत्तता अपालाकेँ नव अर्थ दैत अछि; पर्यावरणीय संकट वृक्ष आ नदीक कथा बदलैत अछि; भ्रष्टाचार पुलक स्मारकत्व बदलैत अछि; भाषिक न्याय आतंक-विमर्शक सरल द्वैत तोड़ैत अछि; नव्य न्यायीय मिथिला गंगेशक स्मृतिकेँ दार्शनिक पाठसँ आगाँ प्रेम, कविता आ सामाजिक स्मृतितक विस्तारित करैत अछि।

१८. शुद्ध मैथिली निखार ऑडिट

१८.१ प्रमुख सामर्थ्य

मूल नाटकसभक मैथिली सामान्यत: मंचयोग्य, संवादप्रधान, क्षेत्रीय लययुक्त आ सामाजिक प्रसंगानुकूल अछि। “संकर्षण”मे गामक व्यंग्य-भाषा, “कमलाक भगता”मे सरल बाल-हास्य, “गंगा ब्रिज”मे प्रशासनिक शब्दावलीक स्थानीयकरण, “उल्कामुख”मे दार्शनिक आ लोकभाषिक स्तरक सहअस्तित्व उल्लेखनीय अछि। व्यक्ति आ निर्जीव विषयक क्रिया-रूप अधिकांश ठाम अर्थानुकूल अछि।

१८.२ रोमन लिपि आ अंग्रेजी अवशेष

मैथिली मूल खण्डसभक भीतर कथा-सम्बन्धी रोमन लिपि लगभग नहि अछि; मुदा प्रत्येक मूल खण्डक शीर्ष/समापन सामग्रीमे [VIDEHA], [ISSN], [since] आ वेब-पता सन रोमन तत्त्व दोहराइत अछि। शुद्ध मैथिली पुस्तक-पाठक दृष्टिसँ मुख्य रचनात्मक भागमे ई बाधक नहि, मुदा “रोमन/अंग्रेजी शब्द केवल ब्रैकेटमे” नीति अपनाएब हो तँ [VIDEHA], [ISSN] आ [since] सभकेँ कोष्ठकमे एकरूप करब उचित। वेब-पता साहित्यिक शोध-समीक्षा वा ग्रन्थसूचीमे नहि देल जाए।

१८.३ आगन्तुक शब्दक निखार

मूल नाटकसभमे मंच-व्यवहारक कारण अनेक आधुनिक आगन्तुक शब्द स्वाभाविक रूपेँ आएल अछि—लाइट, ऑफ/ऑन, मोबाइल, फाइल, टाइपराइटर, टेलीफोन, कवर, कमीशन, डिजाइन, इन्जीनियर, ब्रिज, प्रोजेक्ट, पैकेट, कोर्ट, ऑफिस, चेम्बर, स्टेनो, लीडर, डायरी, सोल, प्लॉट आदि। सभकेँ यांत्रिक रूपेँ हटेनाइ उचित नहि, कारण “गंगा ब्रिज” वा “मचण्ड”क संस्थागत

संसारमे किछु शब्द पात्र-यथार्थक भाग अछि। मुदा वर्णनात्मक गद्य आ मंच-निर्देशमे जहाँ सहज मैथिली उपलब्ध अछि, ओतय निखार सम्भव अछि।

वर्तमान शब्द	निखारक सम्भावना
लाइट	प्रकाश
ऑफ/ऑन	बुझा/जरा अथवा बन्द/चालू
फाइल	संचिका
ऑफिस	कार्यालय
चेम्बर	कक्ष
डिजाइन	रूपांकन
कवर	आवरण
प्लॉट	कथानक
पैकेट	पुड़िया/पोटरी — प्रसंगानुसार
कोर्ट	न्यायालय
लीडर	नेता
प्रोजेक्ट	परियोजना
कमीशन	दलाली/प्रतिशत — प्रसंगानुसार
ब्रिज	पुल — शीर्षक “गंगा ब्रिज”केँ नामरूपेँ जोगाओल जा सकैत अछि
इन्जीनियर	अभियन्ता
टेलीफोन डायरी	दूरभाष-पञ्जी — जँ काल-सन्दर्भ अनुकूल हो

१८.४ वर्तनी, रिक्ति आ टंकण

पाठमे कैक ठाम शब्दसभ एक-दोसरासँ बिनु रिक्तिक जुड़ल देखाइत अछि, जेना “आश्रममे”, “अहाँसभकेँ” सन स्वाभाविक संयुक्त प्रयोगक अतिरिक्त “मंचमेसहकार”, “ओकरासँबेसी”, “हुनका हेतुयोग्य”, “पाठकपूर्व” प्रकारक टंकण-सन्निकटता। ई सम्भवतः पुस्तक-संयोजन वा पाठ-आयातक परिणाम अछि। अंतिम प्रकाशनपूर्व यांत्रिक खोज-संशोधनसँ “मे/सँ/हेतु/जे/तँ” आदिक अगिला शब्दसँ अनुचित संलग्नता जाँचल जाए। विरामचिह्नमे हिन्दी/अंग्रेजी शैलीक हाइफन, कोलन, तीन बिन्दु आ देवनागरी दण्डक मिश्रण सेहो एकरूप कएल जाए।

१८.५ सम्मानसूचक क्रिया आ निर्जीव विषय

मैथिली निखारमे “छथि/छन्हि” मानव वा सम्मानित व्यक्तिक संदर्भमे, आ निर्जीव/अमानवीय विषय लेल “अछि/छै”क अनुशासन जोगेनाइ उपयोगी। नाटकक पात्र-वाणीमे सामाजिक बोलीक कारण रूप-परिवर्तन स्वीकार्य, मुदा सूत्रधार, प्रकाशन-विवरण आ मंच-निर्देशमे मानकीकरण हो। भविष्यकालमे “देत/करत/होयत”, प्रगतिशील वा habitual भावमे “दैत/करैत”क स्पष्टता जोगाओल जाए।

१८.६ शब्द-पसन्दक निखार

जहाँ सामान्य हिन्दी-प्रभावित शब्दक बदला प्रचलित मैथिली रूप सहज अछि, ओतय मैथिली शब्दावली प्राथमिक हो: पानि, केवाड़ी, ओसारा, कोठली, अएना, पित्तरि, चाह, इनार, हेरायल, बिसरल, बिलायल आदि। तथापि ऐतिहासिक पात्रक वाणी, तकनीकी संस्थागत शब्द वा विशेष नाममे अर्थ-सटीकता पहिने, शुद्धतावाद बादमे रहबाक चाही।

१९. सम्पादकीय आ संरचनात्मक ऑडिट

१९.१ अनुक्रमक पृष्ठ-संख्या

संयुक्त संस्करणक प्रारम्भिक अनुक्रम आ वर्तमान अन्तर्गत पृष्ठ-संख्या बीच स्पष्ट असंगति देखाइत अछि। उदाहरणत: अनुक्रम “भऽ जाएब छू”क आरम्भ ५६ कहैत अछि, जबकि वर्तमान अन्तर्गत पृष्ठ-शीर्षक ५७; “दानवीर दधीची” ८९क बदला ९२; “गंगा ब्रिज” ११४क बदला ११९; “जलोदीप” १८३क बदला १९४; “कमलाक भगता” २२९क बदला २४०; “मचण्ड” २५०क बदला २६२; “संकर्षण” २८८क बदला ३०४; “उल्कामुख” ३८०क बदला ३९९ देखबैत अछि। अंग्रेजी खण्डसभमे सेहो क्रमश: अन्तर बढ़ैत जाइत अछि। अंतिम संस्करणपूर्व अनुक्रम पूर्ण रूपेँ पुन:निर्मित होएब आवश्यक अछि; पुरान पृष्ठ-सूची हाथे सुधारबाक बदला स्वचालित शीर्षक-आधारित अनुक्रम श्रेष्ठ रहत।

१९.२ “उल्कामुख”क अंक-संख्या

मैथिली उपशीर्षक “छह कल्लोलक नाट्य-गाथा” अछि आ मूल खण्डमे पहिलसँ छअम कल्लोल धरि विन्यास देखाइत अछि। अंग्रेजी रूपान्तरक

उपलब्ध पाठमे [ACT I] सँ [ACT VII] धरि शीर्षक देखाइत अछि। सातम खण्ड यदि उपसंहार, परिशिष्ट वा पुनर्रचित समापन अछि तँ ओकर भूमिका स्पष्ट शीर्षकसँ अलग कएल जाए; अन्यथा अंक-संख्या मिलाओल जाए।

१९.३ प्रकाशन-तत्त्वक एकरूपता

प्रत्येक नाटच-युग्मक अन्त/आरम्भमे पत्रिका-परिचय, अंक-संख्या, वेब-पता आ अंग्रेजी/मैथिली संस्थागत पंक्ति दोहराओल गेल अछि। स्वतंत्र नाटक रूपमे वितरण लेल ई उपयोगी हो सकैत अछि, मुदा एकल संयुक्त पुस्तकमे बारम्बारता पाठ-प्रवाह तोड़ैत अछि। पुस्तक-संस्करण लेल मुख्य प्रकाशन-विवरण आरम्भमे एक बेर राखि, नाटच-युग्मक बीच केवल लघु विभाजक वा शीर्षक-पृष्ठ राखल जाए तँ शोध-पुस्तकक सौष्ठव बढ़त।

१९.४ चित्र आ मंच-रूपांकन

चित्रसभ दू दृश्य-भाषा प्रयोग करैत अछि—कथात्मक/लोकाभासीय दृश्यचित्र आ अमूर्त रंगमंचीय रूपांकन। एहि द्विरूपताकेँ यदि “कथा-दृश्य” आ “मंच-कल्पना” नामसँ सचेत रूपेँ वर्गीकृत कएल जाए तँ पाठक बुझत जे ई शैलीगत असंगति नहि, दू अलग प्रयोजनक दृश्य-नोट अछि। प्रत्येक चित्रक कैप्शनमे “दृश्यचित्र” वा “मंच-रूपांकन” सन भेद उपयोगी रहत।

२०. नओटा नाटकक तुलनात्मक मूल्यांकन

नाटक	मुख्य संघर्ष	प्रधान नाटच-ऊर्जा	न्यायीय प्रश्न	ऐतिहासिक/सामाजिक परिणति
अपाला आत्रेयी	देह बनाम आत्मसम्मान/विद्या	करुणसँ वीर	देह-दोषसँ व्यक्ति-दोषक मिथ्या अनुमान	स्त्री-ज्ञानक पुनर्स्थापन
भऽ जाएब छू	जलवायु-संकट बनाम उपभोग	सहभागी सड़क-नाटक	विकासक अधूरी व्याप्ति	पर्यावरणीय सामूहिक क्रिया
दानवीर	ज्ञान बनाम	मिथक-	लोकप्रिय	वैकल्पिक

दधीची	सत्ता/मिथक	पुनर्पाठ	कथा की प्रमाण?	वैदिक स्मृति
गंगा ब्रिज	विकास बनाम भ्रष्टाचार/श्रम	राजनीतिक व्यंग्य	पुल = विकास? उपाधि-दोष	मजदूरक दबल इतिहास
जलोदीप	बाढ़ि बनाम अवरुद्ध जल-पथ	बाल-नागरिक सहभागिता	कागज बनाम प्रत्यक्ष	स्थानीय जवाबदेही
कमलाक भगता	कारण-बोध बनाम अनुकरण	हास्य	व्याप्ति बिना सामान्यीकरण	परम्पराक विवेकपूर्ण परीक्षा
मचण्ड	भाषा/न्याय बनाम आतंक/राज्य	राजनीतिक तनाव	शब्द-प्रमाणक विश्वसनीयता	भाषिक न्याय
संकर्षण	दंभ बनाम आत्मबोध	हास्य-आत्मपहचान	स्वदाबी बनाम बाधक प्रमाण	सामाजिक प्रतिष्ठाक विखण्डन
उल्कामुख	स्मृति बनाम विस्मरण	ऐतिहासिक-दार्शनिक महागाथा	अभाव बनाम दमन-जन्य विस्मरण	समानान्तर बौद्धिक इतिहास

२१. समग्र साहित्यिक निर्णय

“रंग-संगम”क प्रमुख साहित्यिक महत्त्व तीन स्तरपर अछि। पहिल, ई मैथिली रंगमंचकेँ विषयगत विस्तार दैत अछि—वैदिक स्त्री, जलवायु, मिथक, पुल-निर्माण, बाढ़ि, अन्धानुकरण, आतंक-न्याय, ग्राम्य दंभ आ नव्य न्यायीय इतिहास एकहि संग्रहमे अबैत अछि। दोसर, ई नाटककेँ केवल कथा नहि, सार्वजनिक विचारक उपकरण मानैत अछि। तेसर, द्विभाषिक रूपान्तर मैथिली नाटककेँ व्यापक रंगमंचीय परिप्रेक्ष्य तक लए जाएबाक प्रयत्न अछि।

संकलनक सबसँ पैघ शक्ति प्रश्न करबाक नैतिकता अछि। पात्र, दर्शक, बच्चा, अभियन्ता, भिखमंगा, अनुवादक, दार्शनिक, स्त्री—सभ कखनो ने कखनो “किएक?” पूछैत अछि। एहि “किएक”मे नाट्यशास्त्रीय रस, पाश्चात्य आलोचनात्मक रंगमंच, नव्य न्यायक प्रमाण-समीक्षा आ समानान्तर इतिहास एक-दोसरसँ जुड़ैत अछि।

कमजोरी अथवा सुधार-क्षेत्र मुख्यतः सम्पादकीय अछि: वर्तमान अनुक्रम-पृष्ठांकन पुरान देखाइत अछि; रोमन प्रकाशन-पंक्ति बारम्बार दोहराइत अछि; किछु आगन्तुक शब्द मंच-निर्देशमे मैथिली विकल्पसँ निखरल जा सकैत अछि; टंकण-रिक्ति आ विरामचिह्नक एकरूपता चाही; “उल्कामुख”क अंग्रेजी अंक-संख्या स्पष्ट कएल जाए; आ चित्रक दू शैलीक प्रयोजन कैप्शनद्वारा अलग चिन्हित हो। ई सुधार रचनात्मक परियोजनाकेँ बदलत नहि, बल्कि ओकर विद्वत्-प्रकाशन मूल्य बढ़ाओत।

अन्तिम रूपेँ “रंग-संगम”केँ मैथिली नाट्य-साहित्यक एहन परियोजना मानल जा सकैत अछि जाहिमे लोकभाषा, शास्त्रीय स्मृति, समकालीन सार्वजनिक संकट, तर्कपरम्परा आ मंचीय प्रयोग एक-दोसरकेँ काटैत नहि, बल्कि परखैत अछि। संग्रहक नायक वस्तुतः “प्रश्न” अछि—ओ प्रश्न जे देहपर आरोपित दागकेँ, विकासक चमककेँ, मिथकक स्थिरताकेँ, कागजक सच्चाइकेँ, परम्पराक अन्धानुकरणकेँ, न्यायिक भाषाकेँ, प्रतिष्ठाक दंभकेँ आ इतिहासक विस्मरणकेँ एक-एक कऽ प्रमाण माँगैत अछि। ई प्रश्नशीलता संग्रहक स्थायी साहित्यिक उपलब्धि अछि।

२२. प्रकाशनपूर्व संक्षिप्त अनुशंसा

1. अनुक्रम पूर्णतः पुनर्निर्मित कएल जाए आ सभ अठारह खण्डक वास्तविक आरम्भ-पृष्ठ स्वचालित रूपेँ अद्यतन हो।

2. मैथिली मूल खण्डमे रोमन संस्थागत पद केवल कोष्ठकमे राखल जाए; मुख्य साहित्यिक पाठमे रोमन अवशेष नहि रहए।

3. मंच-निर्देशमे जहाँ सम्भव, लाइट/ऑफिस/फाइल/डिजाइन आदि लेल मैथिली विकल्प अपनाओल जाए; पात्रक यथार्थवादी वाणीमे आवश्यक आधुनिक शब्द जोगाओल जा सकैत अछि।

4. “उल्कामुख”क छह कल्लोल बनाम अंग्रेजी सात अंकक संरचना स्पष्ट/सुधारल जाए।

5. चित्रसभकेँ “दृश्यचित्र” आ “मंच-रूपांकन”क रूपमे कैप्शन-श्रेणी देल जाए।

6. अंग्रेजी रूपान्तरक व्याख्यात्मक विस्तार मंच-प्रयोगमे समयबद्ध कएल जाए, जाहिसँ मूलक लय आ व्यञ्जना सुरक्षित रहए।

7. अन्तिम शुद्धिपाठमे रिक्ति, संयुक्त शब्द, सम्मानसूचक क्रिया, भविष्य/प्रगतिशील क्रिया-रूप आ विरामचिह्नक एकरूप ऑडिट कएल जाए।

8. संयुक्त पुस्तकमे प्रत्येक खण्डक बाद दोहराओल प्रकाशन-पंक्ति न्यून कऽ एकरूप पुस्तक-विन्यास बनाओल जाए।

ग्रन्थसूची

नोट: नीचे केवल पोथीक नाम देल गेल अछि; कोनो वेबसाइट वा जाल-स्रोत सम्मिलित नहि अछि।

1. नाट्यशास्त्र

2. अभिनवभारती

3. ध्वन्यालोक

4. दशरूपक

5. काव्यप्रकाश

6. वक्रोक्तिजीवित

7. औचित्यविचारचर्चा

8. तत्त्वचिन्तामणि

9. न्यायसूत्र

10. न्यायकुसुमाञ्जलि

11. [Poetics]

12. [Brecht on Theatre]

13. [The Empty Space]

14. [An Actor Prepares]

15. [Theatre of the Oppressed]

16. [Drama from Ibsen to Brecht]

17. [Translation Studies]

18. [After Babel]

19. रंग-संगम

आलेख ३४ · नाटक, रंगमंच आ नाट्यालोचना

रंग-संगम : खण्ड २

सारांश

'रंग-संगम (खण्ड २)'क तीनू नाटक—'व्याप्ति', 'जे नाम पोथीमे नहि' आ 'पानिक लेखा'—एक-दोसरासँ कथानक, काल-परिवेश आ पात्र-संरचनामे भिन्न रहितो एकटा साझा नाट्य-चिन्तन रचैत अछि: सत्य केवल प्राप्त वस्तु नहि, सत्यक निर्माणमे प्रमाण, भाषा, स्मृति, अभिलेख, सत्ता, संकट, नैतिक उत्तरदायित्व आ 'नहि जानब'क ईमानदार सीमा सभ सहभागी अछि। एहि शोध-समीक्षामे तीनू नाटकक प्रत्येक पूर्वरंग, अंक, तरंग आ दृश्यकेँ अलग-अलग देखैत, फेर त्रयी रूपेँ जोड़ि कऽ पढ़ल गेल अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय धरातलपर रस-भाव, ध्वनि, औचित्य, वाचिक-आंगिक अभिनय, करुण-वीर-शान्तक अंतर्सम्बन्ध आ वस्तु-प्रतीकक नाट्य-कार्य जाँचल गेल अछि। पाश्चात्य नाट्य-सिद्धान्तक धरातलपर कथानक-एकता, प्रत्यभिज्ञान, विपर्यास, नैतिक संघर्ष, दस्तावेजी रंगभाषा, महाकाव्यात्मक दूरीकरण आ आधुनिक नाटकक विचारात्मक संरचनासँ संवाद स्थापित कएल गेल अछि। नव्य-न्याय समीक्षा विशेषत: प्रत्यक्ष, अनुमान, व्याप्ति, उपमान, शब्द, अभाव, पक्ष-साध्य-हेतु, सपक्ष-विपक्ष, प्रमाणक सीमा आ कथनक अभिप्रायक सूक्ष्म भेद द्वारा 'व्याप्ति'क संरचनात्मक मौलिकता देखबैत अछि; संगहि ई पद्धति दोसर दुनू नाटकमे अभिलेखीय दाबी आ अनिश्चितताक परीक्षणक औजार बनैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि अन्तर्गत केन्द्र आ हाशिया, पञ्जी आ मौखिक स्मृति, राजकीय नक्शा आ जीवित भूगोल, स्त्री-स्वर आ संस्थागत लेखन, अभिलेखीय मौन आ प्रमाणिक सावधानीक सममित आलोचना कएल गेल अछि। भाषिक निखार-अंकेक्षणमे मैथिली मूल पाठक शब्द-चयन, मिश्र शब्द, तकनीकी पदावली, लिप्यात्मक असंगति आ रोमन शब्दक उपस्थिति जाँचल गेल अछि। समग्र निष्कर्ष ई अछि जे ई त्रयी आधुनिक मैथिली नाटकमे ज्ञानमीमांसात्मक रंगकर्मक एक विशिष्ट सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि; एकर श्रेष्ठता ई बातमे अछि जे ई दर्शनकेँ संवादक व्याख्यान नहि, बल्कि संकटमे निर्णय करैत देह, वस्तु, कागज, मौन आ समयक क्रिया बनबैत अछि।

बीजशब्द

रंग-संगम ः खण्ड २ ·मैथिली नाटक ·रंगमंच ·नाट्यालोचना ·प्रदर्शन

१.२१. गजेन्द्र ठाकुर- रंग-संगम (खण्ड-२)- शोध आलेख

रंग-संगम (खण्ड २)

प्रमाण, नाम, अभिलेख, जल आ उत्तरदायित्वक नाट्य-त्रयी

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य नाट्य-सिद्धान्त, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधारपर विस्तृत साहित्यिक शोध-समीक्षा

अध्ययनाधार: 'व्याप्ति', 'जे नाम पोथीमे नहि', 'पानिक लेखा'

सारांश

'रंग-संगम (खण्ड २)'क तीनू नाटक—'व्याप्ति', 'जे नाम पोथीमे नहि' आ 'पानिक लेखा'—एक-दोसरासँ कथानक, काल-परिवेश आ पात्र-संरचनामे भिन्न रहितो एकटा साझा नाट्य-चिन्तन रचैत अछि: सत्य केवल प्राप्त वस्तु नहि, सत्यक निर्माणमे प्रमाण, भाषा, स्मृति, अभिलेख, सत्ता, संकट, नैतिक उत्तरदायित्व आ 'नहि जानब'क ईमानदार सीमा सभ सहभागी अछि। एहि शोध-समीक्षामे तीनू नाटकक प्रत्येक पूर्वरंग, अंक, तरंग आ दृश्यकेँ अलग-अलग देखैत, फेर त्रयी रूपेँ जोड़ि कऽ पढ़ल गेल अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय धरातलपर रस-भाव, ध्वनि, औचित्य, वाचिक-आंगिक अभिनय, करुण-वीर-शान्तक अंतर्सम्बन्ध आ वस्तु-प्रतीकक नाट्य-कार्य जाँचल गेल अछि। पाश्चात्य नाट्य-सिद्धान्तक धरातलपर कथानक-एकता, प्रत्यभिज्ञान, विपर्यास, नैतिक संघर्ष, दस्तावेजी रंगभाषा, महाकाव्यात्मक दूरीकरण आ आधुनिक नाटकक विचारात्मक संरचनासँ संवाद स्थापित कएल गेल अछि। नव्य-न्याय समीक्षा विशेषत: प्रत्यक्ष, अनुमान, व्याप्ति, उपमान, शब्द, अभाव, पक्ष-साध्य-हेतु, सपक्ष-विपक्ष, प्रमाणक सीमा आ कथनक अभिप्रायक सूक्ष्म भेद द्वारा 'व्याप्ति'क संरचनात्मक मौलिकता देखबैत अछि; संगहि ई पद्धति दोसर दुनू नाटकमे अभिलेखीय दाबी आ अनिश्चितताक परीक्षणक औजार बनैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि अन्तर्गत केन्द्र आ हाशिया, पञ्जी आ मौखिक स्मृति, राजकीय नक्शा आ जीवित भूगोल, स्त्री-स्वर आ संस्थागत

लेखन, अभिलेखीय मौन आ प्रमाणिक सावधानीक सममित आलोचना कएल गेल अछि। भाषिक निखार-अंकेक्षणमे मैथिली मूल पाठक शब्द-चयन, मिश्र शब्द, तकनीकी पदावली, लिप्यात्मक असंगति आ रोमन शब्दक उपस्थिति जाँचल गेल अछि। समग्र निष्कर्ष ई अछि जे ई त्रयी आधुनिक मैथिली नाटकमे ज्ञानमीमांसात्मक रंगकर्मक एक विशिष्ट सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि; एकर श्रेष्ठता ई बातमे अछि जे ई दर्शनकेँ संवादक व्याख्यान नहि, बल्कि संकटमे निर्णय करैत देह, वस्तु, कागज, मौन आ समयक क्रिया बनबैत अछि।

बीज-शब्द: मैथिली नाटक; नव्य-न्याय; व्याप्ति; प्रमाण; अभिलेख; मौखिक परम्परा; समानान्तर इतिहास; बाढ़; नाम; स्मृति; नाट्य-समीक्षा; भाषा-निखार।

१. शोधक उद्देश्य, सीमा आ पद्धति

एहि अध्ययनक पहिल उद्देश्य तीनू नाटकक सम्पूर्ण रचनात्मक संरचनाकेँ समेटब अछि। ताहि लेल केवल कथानकक सार नहि, प्रत्येक दृश्यक नाट्य-कार्य, प्रमाणक स्थिति, पात्रक नैतिक अवस्था, वस्तु-प्रतीक, दृश्यान्तक परिवर्तन आ अगिला दृश्यसँ ओकर कारणात्मक सम्बन्ध देखल गेल अछि। दोसर उद्देश्य त्रयीकेँ चारि आलोचनात्मक दर्पणमे देखब अछि—भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य नाट्य-विचार, नव्य-न्याय, आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति। चारू ढाँचा एक-दोसराक प्रतिस्पर्धी नहि; प्रत्येक अलग प्रश्न पूछैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्र पूछैत अछि—रस कोना निष्पन्न होइत अछि, संकेत आ ध्वनि कोना अर्थ बढ़बैत अछि, अभिनयक दृश्य-ध्वनि-वस्तु कोना भावक वाहक बनैत अछि। पाश्चात्य नाट्य-विचार पूछैत अछि—क्रिया कोना संगठित अछि, मोड़ आ पहचान कोना बनैत अछि, दर्शककेँ तन्मयता देल जाइत अछि कि आलोचनात्मक दूरी। नव्य-न्याय पूछैत अछि—दाबी के आधारपर स्वीकार्य अछि, हेतु कतय चूकैत अछि, अनुपस्थिति की सिद्ध करैत अछि, साक्षी-वचनक सीमा की अछि। समानान्तर इतिहास पूछैत अछि—कोन अभिलेख बचल, कोन स्वर नहि लिखल गेल, सत्ता लेखा बनबैत समय की चुनैत अछि, आ हाशियाक स्मृतिकेँ सम्मान देब आ आलोचनात्मक जाँच दुनू एक संग कोना सम्भव अछि।

तृतीय उद्देश्य शुद्ध मैथिली निखार-अंकेक्षण अछि। एहि भागमे पाठक साहित्यिक गरिमा वा पात्रक स्वाभाविक बोलीकेँ यान्त्रिक संस्कृतीकरण नहि कएल गेल अछि। जतय विदेशी मूलक तकनीकी शब्द पात्रक सामाजिक-कालिक यथार्थक अंग अछि, ओतय ओकर नाटकीय औचित्य देखल गेल अछि; मुदा प्रकाशन-मानक जँ पूर्ण मैथिली निखारक अछि, तँ सम्भव मैथिली विकल्प सेहो देल गेल अछि। रोमन लिपिमे मूल मैथिली भागमे भेटल एक स्पष्ट शब्द ‘(typed)’केँ विशेष त्रुटि मानल गेल अछि।

२. त्रयी रूपेँ ‘रंग-संगम (खण्ड २)’: एक साझा नाट्य-विश्व

तीनू नाटकक बीच सभसँ गाढ़ सूत्र ‘लेखा’ अछि, मुदा ई लेखा केवल संख्याक हिसाब नहि। ‘व्याप्ति’मे अन्नक ४८० आ ७२०क विरोध, ताला, घंटी, चाबी, बही आ खाली कटोरा मिलि कऽ नैतिक लेखा बनबैत अछि। ‘जे नाम पोथीमे नहि’मे पञ्जी, पद-पन्ना, ध्वनि-अंकन, विवाह-जाँच आ बाढ़क नाम-सूची एक प्रश्न उठबैत अछि—जकर नाम लिखल नहि, ओकर अस्तित्व की कम प्रमाणित? ‘पानिक लेखा’मे पुरान आ बदलल बी-४ नक्शा, पुनर्वास-पञ्जी, नोटबुक, पट्टा, तैनाती-पञ्जी आ जल-पथक गणना देखबैत अछि जे प्रशासनिक रेखा कखनो मनुष्यक जीवनक प्रवाहकेँ काटि दैत अछि। एहि अर्थमे खण्डक शीर्षक ‘रंग-संगम’ केवल तीन नाटकक संकलन नहि; तीन प्रकारक ज्ञान-व्यवस्थाक संगम अछि।

दोसरा साझा सूत्र ‘जल’ आ ‘अभाव’ अछि। ‘व्याप्ति’ अकालक नाटक अछि—जल घटल, अन्न कम, मुदा धुँआ आ राख अधिक। ‘जे नाम पोथीमे नहि’ आ ‘पानिक लेखा’ बाढ़क नाटक अछि—जल बेसी, मुदा सुरक्षित जमीन, निश्चित नाम आ अभिलेखक स्थायित्व कम। ई उलटाव त्रयीकेँ पर्यावरणीय रूपक दैत अछि: कमी आ अधिकता दुनू स्थितिमे प्रशासन, प्रमाण आ स्मृति कसौटीपर चढ़ैत अछि। जल एतय प्राकृतिक पृष्ठभूमि नहि, कथानकक सक्रिय शक्ति अछि; ओ समयकेँ छोट करैत अछि, बहसकेँ निर्णयमे बदलैत अछि, आ कागजक नाजुकताकेँ प्रत्यक्ष दृश्य बनबैत अछि।

तेसर सूत्र वस्तु-संरचना अछि। कटोरा, ताला, रस्सी, दीप, पोथी, चाक, नक्शा, नोटबुक, चाबी, लालटेन—ई सभ वस्तु ‘प्रतीक’ बनबाक पहिने प्रमाणक वस्तु अछि। नाटकक शक्ति एहि बातमे अछि जे प्रतीकात्मक अर्थ वस्तुक

वास्तविक कार्यसँ उपजैत अछि। नीरजक खाली कटोरा करुण रसक आलम्बन होइतहुँ न्यायिक रिक्तताक चिह्न अछि। धनमन्तीक चाक नामक अस्थिरता आ जीवित स्मृतिकेँ धारण करैत अछि। बी-४ नक्शाक दू रेखा प्रशासनिक सत्यक द्विरूपता आ इतिहासक संशोधनीयताकेँ दृश्य बनबैत अछि।

३. नाटक एक: 'व्याप्ति' — ज्ञानमीमांसा रंगमंच बनैत अछि

'व्याप्ति'क आधारभूत नाटच-आविष्कार ई अछि जे गङ्गेशक नव्य-न्याय पद्धति कथानकक ऊपर आरोपित दार्शनिक पाठ नहि; कथानक स्वयं प्रमाण-परीक्षाक क्रममे निर्मित अछि। प्राक्कथन 'संशय' सँ आरम्भ भऽ 'प्रत्यक्ष', 'अनुमान', 'उपमान', 'शब्द' आ 'अभाव' धरि जे क्रम बनैत अछि, से भारतीय ज्ञानमीमांसाक प्रमेय सूचीकेँ नाटकीय कालक्रममे बदलि दैत अछि। प्रत्येक अंक पिछला अंकक निष्कर्षकेँ स्थिर सत्य नहि मानि अगिला स्तरपर जाँचैत अछि। ई संरचना 'ज्ञान'केँ परिणाम नहि, अनुशासित प्रक्रिया बनबैत अछि।

माधवक विरुद्ध प्रारम्भिक आरोप—घटनास्थल लग उपस्थिति, धुँआक गन्ध, झुलसल हाथ, देवधरसँ पुरान विवाद—दर्शककेँ त्वरित अपराध-निष्कर्ष दिस धकेलैत अछि। गङ्गेश एहि तात्कालिक नैतिक आवेगकेँ स्थगित करैत छथि। 'सामर्थ्य' आ 'कृत्य', 'देखल' आ 'मानल', 'धुँआ' आ 'आगि लगौनिहार', 'बन्द ताला' आ 'एही ताला'—एहि विभेदसभक माध्यमे नाटक अनुमानक छलाँगकेँ मंचपर दृश्य बनबैत अछि। ई दर्शनक संवाद कम आ जाँचक नाटकीय लय अधिक अछि।

फुलिया नाटकक नैतिक केन्द्र छथि। ओ गङ्गेशक तर्क-पद्धतिक विरोधी नहि, मुदा ओकर मानवीय सीमा निरन्तर स्मरण करबैत छथि। नीरजक मृत्युकेँ 'राजक हानि' कहला पर हुनकर प्रतिवाद राज्यक गणनात्मक भाषाक विरुद्ध मातृत्वक देहगत अधिकार स्थापित करैत अछि। अन्तिम दृश्य धरि खाली कटोरा न्यायिक निष्कर्षक बाहर रहैत अछि—किएक तँ तथ्य-निर्धारण मृत बालककेँ लौटा नहि सकैत अछि। यही कारण उपसंहार 'अभाव' नाटकक तात्त्विक शिखर अछि: अभाव केवल 'नहि भेटल'क ज्ञान नहि, नैतिक रिक्तता सेहो अछि।

४. 'व्याप्ति'क रचना-दर-रचना परीक्षण

प्राक्कथन — संशय

अन्हार, धुँआ, अलग-अलग आवाज आ 'घंटी बाजल कि नहि'क विरोधी कथन सँ नाटक शुरुआतहि दर्शककेँ प्रमाणक अस्थिरता भीतर फेंकि दैत अछि। दृश्य बिना पात्रक स्पष्ट देहक 'कथन'केँ पहिने मंचपर आनैत अछि; एहि कारण संशय कोई कमजोरी नहि, पद्धतिक प्रवेश-द्वार बनैत अछि।

अंक १, दृश्य १ — राखक भोर

माधव बन्हल अछि, मुदा ओकर अपराध सिद्ध नहि। गङ्गेश रस्सी खुलबबैत 'सावधानी' आ 'पूर्वनिर्णय'क अन्तर स्पष्ट करैत छथि। फुलियाक करुण उपस्थिति प्रत्यक्षक शुष्क वर्गीकरणकेँ नैतिक ताप दैत अछि।

अंक १, दृश्य २ — जे देखल गेल

'देखल' आ 'मानल'क दू पट्ट नाटकक सभसँ सफल दृश्य-शिक्षण औजारमे अछि। धुँआक गन्ध देखल नहि, सूँघल; भीड़ जे 'माधव' देखैत अछि, ओ पहिने सँ बनल कथा सेहो देखैत अछि। दृश्य ज्ञानेंद्रिय, भाषा आ पूर्वाग्रहक सीमा एक संग खोलैत अछि।

अंक १, दृश्य ३ — रातिक पाँति

घटनाकेँ क्रममे राखबाक अभ्यास कथानककेँ काल-तर्क दैत अछि। समय-पाँति पर स्मृति, अनुमान आ सुनल बात अलग होइत अछि। भारी ताला भेटबाक साथ दृश्य कथानकक पहिल ठोस मोड़ बनैत अछि।

अंक १, दृश्य ४ — दू ताला

दू ताला एके वस्तु-वर्गक होइतहुँ अलग कार्यक प्रमाण अछि। ई दृश्य अरस्तूवादी प्रत्यभिज्ञान सन वस्तु-आधारित मोड़ दैत अछि, मुदा व्यक्तिगत पहचान नहि, प्रमाणक पुनर्वर्गीकरण केन्द्रमे अछि।

अंक २, दृश्य १ — धुँआक दिशा

पक्ष-साध्य-हेतु-व्याप्तिक प्रत्यक्ष नाट्य-प्रयोग। गङ्गेश ईशानक उत्साह रोकि बतबैत छथि जे अनेक हेतु जोड़ला मात्रसँ व्याप्ति सिद्ध नहि होइत अछि। दृश्य तर्कक अनुशासन आ शिष्यक अधैर्यक चरित्र-विकास दुनू करैत अछि।

अंक २, दृश्य २ — भट्टीक धुँआ

माधवक पेशागत धुँआ प्रारम्भिक आरोपक हेतुकेँ कमजोर करैत अछि। झुलसल हाथ आ कालिखक वैकल्पिक कारण देखाइत अछि। नाटक एतय ‘निर्दोष सिद्ध’ नहि करैत; केवल अपराध-सूचक चिन्हक अनिवार्यता तोड़ैत अछि।

अंक २, दृश्य ३ — सपक्ष-विपक्षक खेल

चिन्ह, कारण आ दोषक तीन अलग क्षेत्र बनबैत दृश्य व्यभिचारी हेतु आ सह-अस्तित्वक भ्रमकेँ दृश्य रूप दैत अछि। भीड़ चिचियाहटसँ निरीक्षण दिस सरकैत अछि—ई सामाजिक नाट्य-परिवर्तन महत्त्वपूर्ण अछि।

अंक २, दृश्य ४ — मालतीक लेखा-पट्ट

चारि दीपमे तीन उपस्थित दीप आ चौथाक अभाव—अभावप्रमाणक बीज एतहि रोपल जाइत अछि। संख्या, लेखा आ मालतीक अनुपस्थिति कथानककेँ व्यक्तिगत अपराधसँ संस्थागत लेखाक दिस मोड़ैत अछि।

अंक ३, दृश्य १ — बाजारक समानता

ताला-साजक अनुभव उपमानक शक्ति आ सीमा दुनू देखबैत अछि। ‘ढाँचा मिलैत अछि’ सँ ‘एही ताला’ निष्कर्ष सम्भव नहि—नाटक समानताकेँ पहचानक सहायक, प्रतिस्थापन नहि मानैत अछि।

अंक ३, दृश्य २ — जतय पगचिन्ह समाप्त

पगचिन्ह पानिलग समाप्त होइत अछि, मनुष्य नहि। दृश्य नकारात्मक प्रमाणक अति-वाचनकेँ रोकैत अछि। ७२०क लेखा-सूत्र प्रवेश करिते जाँच अपराध-संदेहसँ अन्न-वितरणक सत्ता-संरचना धरि फैलैत अछि।

अंक ३, दृश्य ३ — तीन क्रम

एक्के घटनाक तीन सम्भावित क्रम मंचपर रेखा रूपेँ रखल जाइत अछि। ई दृश्य त्रयीमे ‘वैकल्पिक परिकल्पना’क सभसँ साफ उदाहरण अछि। फुलिया कारण-श्रृंखलाक नैतिक प्रश्न जोड़ैत छथि—मृत्यु आगिसँ कि बन्द निकास आ देरीसँ?

अंक ३, दृश्य ४ — बन्द केवाड़ी आ देरी

ताला, घिसान, घंटी-रस्सी, चाबी आ देरी मिलि क ऽ कारणक बहुस्तरीयता स्थापित करैत अछि। 'आगि के लगौलक' एकमात्र प्रश्न नहि रहैत; 'बचाव किएक असफल भेल' समान महत्त्वक प्रश्न बनैत अछि।

अंक ४, दृश्य १ — मालतीक वापसी

मालतीक जीवित वापसी एक शक्तिशाली प्रत्यभिज्ञान अछि। 'मालती नदीमे' बनल कथा टूटैत अछि। गङ्गेशक कथन जे नाटक पहिने सँ बनल छल, सामाजिक आरोपक कथात्मक प्रकृति पर आत्मचेतस टिप्पणी अछि।

अंक ४, दृश्य २ — तीन कथन, तीन अभिप्राय

शब्दप्रमाणक उत्कृष्ट दृश्य। वक्ता की जानैत छल, ज्ञानक स्रोत की, वाक्य की कहैत अछि आ अभिप्राय की—ई चारि स्तर गवाहीकेँ नैतिक चरित्रनिर्णयसँ अलग करैत अछि।

अंक ४, दृश्य ३ — दू सय चालीसक नाम

४८० बनाम ७२०क लेखा केवल संख्या-विरोध नहि; २४० अदृश्य मनुष्य/हिस्साक प्रश्न अछि। देवधरक संस्थागत उत्तरदायित्व, लेखा-संक्षेप आ दमनक राजनीति उघड़ैत अछि।

अंक ४, दृश्य ४ — दीप, चाबी, बही

मालतीक अपन क्रियाक शेष भाग स्वीकार करब नाटककेँ सरल 'खलनायक उद्घाटन'सँ बचबैत अछि। सत्य साझा दोष, भय, प्रतिरोध आ विलम्बक संरचना बनैत अछि।

उपसंहार, दृश्य १ — एक नामक माँग

राजकीय निर्णय सार्वजनिक प्रांगणमे अबैत अछि। गङ्गेश प्रमाण रखैत छथि, मुदा भूखल भीड़क बीच न्याय प्रशासनिक आदेशसँ अधिक व्यापक बुझाइत अछि। माधवक 'हमरा की चाही' सुनल जाएब पुनर्स्थापनात्मक न्यायक संकेत अछि।

उपसंहार, दृश्य २ — जे नहि छल

प्रतिवेदनक संग 'जे नहि लिखल जा सकल'क सूची बनबैत अछि। ई अभावकेँ कल्पित कथा बनबैत नहि, परन्तु अज्ञानक सार्वजनिक स्वीकृति बनबैत अछि—नाटकक ज्ञानमीमांसात्मक निष्ठा एतय चरमपर अछि।

उपसंहार, दृश्य ३ — खाली कटोरा

भरल जीवित कटोरा आ नीरजक खाली कटोरा पर समान उजास करुण आ उत्तरदायित्वक अंतिम दृश्य-व्याकरण अछि। सत्य प्राप्त भेल, व्यवस्था सुधरि सकैत अछि, मुदा हानि अपूरणीय अछि; यही संयम नाटककेँ उपदेशात्मक विजयान्तसँ बचबैत अछि।

५. भारतीय काव्यशास्त्रक आलोकमे ‘व्याप्ति’

‘व्याप्ति’क प्रधान रस करुण मानल जा सकैत अछि, मुदा ओ एकर अकेला रस नहि। संशय आ भयक क्षण भयानक भावभूमि बनबैत अछि; माधवक मुक्ति, मालतीक स्वीकार आ सार्वजनिक लेखा-सुधार वीर-रसक नैतिक रूप दैत अछि; अन्तमे ‘जे नहि जानैत छी, ओकरा नाम नहि देब’क संयम शान्ताभिमुख बोध उत्पन्न करैत अछि। भरतक रस-सूत्रक दृष्टिसँ नीरजक मृत्यु आ फुलिया आलम्बन-विभाव, अकाल, जङल भण्डार, खाली कटोरा, घंटी, ताला उद्दीपन-विभाव बनैत अछि; फुलियाक सूखल स्वर, मौन, कटोराकेँ धारण करब आ पात्रसभक दोष-बोध अनुभाव आ सञ्चारी भावक जटिल संरचना बनबैत अछि।

ध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिसँ कटोरा, घंटी आ ‘अभाव’ प्रत्यक्ष कथनसँ बेसी अर्थ सुझबैत अछि। नीरजक देह मंचपर नहि; ओकर अनुपस्थिति ‘करुण’केँ दृश्य प्रदर्शनसँ अधिक ध्वन्यात्मक बनबैत अछि। घंटी बाजल कि नहि—ई तकनीकी प्रश्न नाटकक अन्तमे संस्थागत चेतावनी, सुनल-अनसुना स्वर आ साक्ष्यक राजनीति बनि जाइत अछि। एहि प्रकार वस्तु-ध्वनि नाटकक काव्यात्मक अर्थ-विस्तारक मुख्य साधन अछि।

६. पाश्चात्य नाट्य-दृष्टिसँ ‘व्याप्ति’

अरस्तूवादी अर्थमे नाटकक क्रिया एकता स्पष्ट अछि: आगि, मृत्यु आ अन्न-भण्डारक घटना सँ शुरू भेल जाँच एक क्रमबद्ध कारण-खोजमे विकसित होइत अछि। प्रत्यभिज्ञान बारम्बार अछि—दू ताला, माधवक धुँआक वैकल्पिक कारण, मालतीक जीवित वापसी, ४८०/७२०क विरोध, देवधरक लेखा-हेरफेर। मुदा नाटक परम्परागत एकल ‘नायकक भाग्य-विपर्यास’पर आधारित नहि; ज्ञानक अवस्थाक विपर्यास एहि ठाम कथानकक असल गति अछि।

ब्रेख़्तीय दूरीकरणक निकट ई नाटक वस्तु-पट्ट, श्रेणी, प्रश्नोत्तर, तीन सम्भावित क्रम आ सार्वजनिक परीक्षणक सहारा लैत अछि। दर्शककेँ केवल माधव वा फुलियासँ भावात्मक एकात्मता नहि, प्रमाणक मूल्यांकन करबाक काज सेहो देल जाइत अछि। तथापि नाटक ठंढ वैचारिक प्रदर्शन नहि बनैत, कारण कटोरा, भूख, देरी आ मृत्यु विचारकेँ शरीर आ हानि सँ जोड़ि रखैत अछि। यही संतुलन ओकर विशेष शक्ति अछि।

७. नाटक दू: ‘जे नाम पोथीमे नहि’ — नाम, स्वर आ अभिलेखक नैतिकता

ई नाटक लिखित पञ्जी, मौखिक स्त्री-गीत, विवाह-संबन्धी वंश-जाँच, लेखकत्वक प्रश्न, बाढ़-संकट आ वर्तमान पीढ़ीक व्यक्तिगत निर्णयकेँ एके नाट्य-जालमे जोड़ैत अछि। शीर्षक स्वयं नकारात्मक संरचना अछि—‘जे नाम पोथीमे नहि’। नाटकक मूल आग्रह ई नहि जे पोथी मिथ्या अछि, न ई जे मौखिक परम्परा स्वत: सत्य अछि। ओकर आग्रह अछि जे अलग प्रकारक प्रमाण अलग प्रश्नक उत्तर दैत अछि, आ नामक अनुपस्थिति मनुष्य वा स्वरक अनुपस्थिति सिद्ध नहि करैत अछि।

धनमन्ती देवी नाटकक सर्वाधिक जीवन्त बौद्धिक पात्र छथि। हुनकर ‘कान पहिने, कलम पछाति’ वाला दृष्टि लेखनविरोधी नहि; ओ जीवित प्रदर्शनक प्राथमिकता, परिवर्तनशीलता आ अपूर्ण अंकनक चेतावनी अछि। प्रभाकर मिश्रक इतिहासकार-पात्र आवश्यक प्रतिपक्ष प्रदान करैत छथि: तिथि, मसि, प्रतिलिपि, मूल, पाठांतर, लेखकत्व—ई सभ प्रश्न बिना गीतक सांस्कृतिक महत्त्व खारिज कएने पूछल जाइत अछि। हरिनाथ पञ्जीकारक यात्रा संस्थागत निश्चिततासँ उत्तरदायी अनिश्चितता दिस अछि, जखन सुमेधा अपन विवाह-निर्णयक विषय नहि, प्रश्नक मालिक बनैत छथि।

८. ‘जे नाम पोथीमे नहि’क रचना-दर-रचना परीक्षण

पूर्वरंग — लिखलासँ पहिने

तीन स्त्री-स्वर ‘नाम’, ‘नाम लिखू’, ‘नाम बिसरू नहि’ कहैत अछि; गीत आ जलक आगमन पहिनेसँ लिखित/मौखिक तनाव स्थापित करैत अछि। ध्वनि-अंकन यन्त्रक लाल बत्ती जीवित स्वरकेँ दस्तावेजमे बदलबाक क्षणक दृश्य-चिह्न अछि।

पहिल तरंग, दृश्य १ — ओसारापर ध्वनि

धनमन्ती खाँसी, साँस, भूल आ भिन्न रूपकेँ गीतक जीवित देह मानैत छथि। माधवीक शोध-पद्धति एतहि परिवर्तित होइत शुरू होइत अछि: शुद्ध अंकनक अपेक्षा ‘दूनू रूप’ राखबाक स्वीकृति।

पहिल तरंग, दृश्य २ — पोथीक वजन

पञ्जीक सामाजिक वजन सामने अबैत अछि। सुमेधा स्पष्ट कहैत छथि—जहाँ प्रमाण नहि, ओतय ‘प्रमाण नहि’ लिखू; हमरा बचाबय वा रोकय लेल अनुमान नहि करू। ई वाक्य सम्पूर्ण नाटकक नैतिक सूत्र अछि।

पहिल तरंग, दृश्य ३ — आगन्तुक इतिहासकार

प्रभाकरक कठोर स्रोत-समीक्षा आ धनमन्तीक ‘गीतक वजन’ एक-दोसरा समक्ष रखल जाइत अछि। ‘तराजू दूटा राखू’ बहुस्तरीय मूल्यांकनक रूपक अछि—ऐतिहासिक प्रामाणिकता आ जीवित सांस्कृतिक कार्य एकहि तराजूसँ नहि मापल जाए।

पहिल तरंग, दृश्य ४ — नामक पहिल दरार

विवाह-जाँच, संभावित वंश-संबंध, पुरान पदमे ‘विद्यापति’ नामक प्रश्न आ बाढ़क आगमन एक संग कसाब बढ़बैत अछि। धनमन्तीक ‘एखन नाम नहि; एखन जल आबि रहल अछि’ ज्ञानक प्राथमिकताक पुनर्संयोजन अछि।

दोसर तरंग, दृश्य १ — विद्यालयक ओसारा

विद्यालय आश्रय बनैत अछि; शोध-सामग्री आ जीवित देह एके जगह। संकट अकादमिक बहसकेँ जीवन-रक्षा बीच रखैत अछि। फेकनक व्यवहारिक बुद्धि समानान्तर ज्ञान-प्रणालीक रूपमे उभरैत अछि।

दोसर तरंग, दृश्य २ — जाँच सार्वजनिक होइत अछि

वंश-जाँच निजी नहि रहैत; समाजक विश्वास आ पञ्जीकारक अधिकार प्रश्नमे अबैत अछि। हरिनाथक हाथ पञ्जीसँ हटब—संस्थागत अधिकारक स्व-सीमांकनक दृश्य संकेत अछि।

दोसर तरंग, दृश्य ३ — सभाक भीतर दोसर सभा

आधुनिक पात्रक देहमे पुरान शास्त्रार्थक प्रतिध्वनि बिना ऐतिहासिक पुनर्निर्माणक अभिनय बनैत अछि। ‘वचन प्रमाण कोना?’ प्रश्न आधुनिक स्रोत-समीक्षाकेँ भारतीय प्रमाण-विचारसँ जोड़ैत अछि।

दोसर तरंग, दृश्य ४ — सीताक मौन

फोनक पारिवारिक दबाव, स्त्रीक मौन, विवाह-निर्णय आ बाढ़-संकट एक होइत अछि। फेकनक ‘जे नहि बचत, ओकर सूची बनाउ’ अभिलेखीय नैतिकता आ आपदा-व्यवहार दुनूक सूत्र अछि।

दोसर तरंग, दृश्य ५ — नामक पाछाँ नाम

पद-पन्नाक मसि-विभेद लेखकत्वक दाबीकेँ जटिल बनबैत अछि। सभा श्रममे बदलैत अछि—यहाँ ज्ञान सामूहिक वस्तु-बचावक क्रिया होइत अछि, केवल अकादमिक वाद-विवाद नहि।

तेसर तरंग, दृश्य १ — रिक्त पाँति

पञ्जीमे स्त्रीक नामक अनुपस्थिति वंशक सामाजिक वास्तविकता आ लेखनक चयनात्मकता बीच विरोध खोलैत अछि। सुमेधाक प्रश्न—वंश केकर देहसँ चलैत अछि, नाम केकर?—नाटकक नारीवादी केन्द्र अछि।

तेसर तरंग, दृश्य २ — पदक देह

मूल पाण्डुलिपि अनुपलब्ध, प्रतिलिपि आ छविक सीमा, मसि-परीक्षणक आवश्यकता—दृश्य स्रोत-समीक्षाक अनुशासन रचैत अछि। ‘जे नहि बचा सकलहुँ’ लिखबाक ईमानदारी इतिहासक नैतिकता बनैत अछि।

तेसर तरंग, दृश्य ३ — दू नामक बीच

लोक-विद्यापति आ प्रचलित विद्यापति ठाकुरकेँ तुरन्त एक करब वा एकदम अलग सिद्ध करब—दुनू अतिशयतासँ नाटक बचैत अछि। ‘परिकल्पना’ आ ‘सिद्ध तथ्य’क भेद स्पष्ट अछि।

तेसर तरंग, दृश्य ४ — जकर नाम नहि

सुरक्षित करबाक वस्तु-सूचीमे ‘अज्ञात’ आ ‘अनुपलब्ध’क भेद नव्य-न्यायसदृश सूक्ष्मता दैत अछि। नाटक शब्दावलीक शुद्धता द्वारा इतिहासक दावी-सीमा निश्चित करैत अछि।

तेसर तरंग, दृश्य ५ — नाम दैत समय

अस्थायी अभिलेखीय विवरण बहुस्तरीय निष्कर्ष दैत अछि: तिथि अनिश्चित, मूल अनुपलब्ध, भणिता संदिग्ध, लेखकत्व अनिश्चित। ई दृश्य 'निष्कर्ष'केँ संशोधनीय आ पारदर्शी बनबैत अछि।

चतुर्थ तरंग, दृश्य १ — नावक पहिल फेरा

बौद्धिक बहस तत्काल जीवन-रक्षा मे बदलैत अछि। वस्तु-बचाव आ मनुष्य-बचावक प्राथमिकता स्पष्ट होइत अछि; धनमन्तीक कथन 'दुखकेँ प्रमाण नहि चाही' ज्ञानमीमांसा आ अनुभवक सीमा अलग करैत अछि।

चतुर्थ तरंग, दृश्य २ — ऊँच सड़क

ऊँच सड़क अस्थायी सार्वजनिक इतिहास-स्थल बनैत अछि। धनमन्ती इतिहासक अपराध-उमेर बताबयवला भूमिका पर कटाक्ष करैत छथि; प्रभाकर इतिहासकेँ प्रश्नक दीर्घता देखाबयवला अनुशासन मानैत छथि।

चतुर्थ तरंग, दृश्य ३ — दोसर फेरा

जल संकटमे अभयक भाषा 'निश्चित'सँ 'सम्भवतः' दिस बदलैत अछि। ई सूक्ष्म चरित्र-विकास नाटकक ज्ञानमीमांसात्मक शिक्षा के व्यक्तिगत व्यवहारमे रूपान्तरित करैत अछि।

चतुर्थ तरंग, दृश्य ४ — रातिक गणना

नाम-पुकार जीवन-रक्षा बनैत अछि; अभिलेखीय 'नाम' आब दार्शनिक विषय नहि, उपस्थित मनुष्यक जाँच अछि। माधवी आ प्रभाकर कलम बन्द करैत छथि—किछु क्षण इतिहासकारक कर्तव्य लिखब नहि, सुनब होइत अछि।

चतुर्थ तरंग, दृश्य ५ — जे उत्तर नहि देत

धनमन्तीक मृत्यु/अनुपस्थिति नाटकक करुण केन्द्र बनैत अछि। 'जगह छोड़ू'क सामूहिक स्वर नब लेखनमे रिक्त स्थानकेँ वैध श्रेणी बनबैत अछि।

पाँचम तरंग, दृश्य १ — उत्तर लिखल गेल

मृत्यु पछाति तुरन्त महान निष्कर्ष नहि; 'सम्भवतः' स्वीकार्य रहैत अछि। खाली जगह झूठ नहि बजैत—ई अभावक नैतिकता 'व्याप्ति'सँ अर्थपूर्ण संवाद करैत अछि।

पाँचम तरंग, दृश्य २ — भीजल अक्षर

अभिलेख संरक्षण आ शीर्षक-निर्धारण एक संग चलैत अछि। प्रश्नचिह्न पाठककेँ बचबैत अछि—अर्थात् संपादकीय संकेत ज्ञानक सुरक्षात्मक उपकरण बनैत अछि।

पाँचम तरंग, दृश्य ३ — स्थगित

सुमेधा आ अभय विवाह-निर्णयकेँ निश्चित वंश-दावी पर न टिकबैत ‘स्थगित’/स्वतन्त्र निर्णयक अधिकार पुनः प्राप्त करैत छथि। हरिनाथ स्वीकारैत छथि जे उत्तर नहि देब सेहो कर्तव्य हो सकैत अछि।

पाँचम तरंग, दृश्य ४ — नामकरण

फाइल/अभिलेखक नामकरणमे निर्णायकता आ सावधानीक संघर्ष हास्यसहित अबैत अछि। इतिहासक असुविधाजनक अनिश्चितता सामाजिक रूपेँ स्वीकार्य बनैत अछि।

पाँचम तरंग, दृश्य ५ — शेष स्वर

पञ्जी-बोरा, पद-पन्ना आ ध्वनि-अंकन यन्त्र तीन अलग हाथमे रहैत अछि—एक स्रोत दोसराकेँ निगलैत नहि। नीलूक ‘चाक कतऽ अछि?’ प्रश्न नब पीढ़ीकेँ पूर्ण उत्तर नहि, उत्तराधिकारस्वरूप प्रश्न दैत अछि।

९. भारतीय आ पाश्चात्य सौन्दर्यशास्त्रमे ‘जे नाम पोथीमे नहि’

एहि नाटकमे वाचिक अभिनय केन्द्रीय अछि। स्त्री-स्वर समूह कोरस जकाँ कार्य करैत अछि, मुदा ओ पाश्चात्य कोरसक अनुकरण नहि; मिथिलाक विवाह-गीत, समदाउन, सोहर, श्रम-गीत आ शोक-स्वरक सामुदायिक स्मृति रूपेँ उपस्थित अछि। भारतीय दृष्टिसँ वाचिक, सात्त्विक आ आंगिक अभिनय एक-दोसरा पूरक अछि—धनमन्तीक विराम, खाँसी, भूल, साँस आ अपूर्ण पाँति ‘शुद्ध’ गायनक दोष नहि, जीवनक अनुभाव अछि।

ध्वन्यालोकक परिप्रेक्ष्यसँ ‘नाम’ एक पुनरावर्ती ध्वनि-बीज अछि। लिखल नाम, मेटल नाम, सुनल नाम, विवाहक नाम, लेखकक नाम, बचाव-सूचीक नाम, मृत्यु पछातिक नाम—प्रत्येक स्तर मूल शब्दक अर्थ बदलैत अछि। नाटकक सौन्दर्य ई पुनरावृत्तिक यांत्रिकता नहि, प्रसंगान्तर अछि।

पाश्चात्य आधुनिक नाटकक दृष्टिसँ ई कृति दस्तावेजी रंगभाषा, सामूहिक पात्रता आ विचारात्मक बहसक निकट अछि। ब्रेख़्तीय अर्थमे श्यामपट्ट, सार्वजनिक जाँच, बहु-स्रोत, पात्रक स्वयं अपन दाबी सीमित करब दर्शककेँ आलोचनात्मक दूरी दैत अछि। तथापि धनमन्तीक मृत्यु आ सुमेधाक व्यक्तिगत निर्णय भावात्मक रेखाकेँ जीवित रखैत अछि। नाटकक संरचना ‘चरम-बिन्दु’केँ एक घटना बनबैत नहि; ज्ञानक भाषा बदलनाइ—‘निश्चित’सँ ‘सम्भवतः’—स्वयं चरम नाट्य-परिवर्तन अछि।

१०. नाटक तीन: ‘पानिक लेखा’ — नक्शा, बाढ़ आ संशोधनीय सत्य

‘पानिक लेखा’ त्रयीमे सर्वाधिक प्रत्यक्ष अभिलेखीय-राजनीतिक नाटक अछि। पुरान जिला अभिलेख-घर स्वयं रंगमंचीय पात्र जकाँ अछि: चुबैत छत, भीजल पञ्जी, फुलल केवाड़ी, आलमारी, लालटेन, पेटी आ बढ़ैत पानि सतत दबाव बनबैत अछि। नाटकक समय संकुचित अछि—जल चढ़ि रहल अछि; दस्तावेज बचाबय पड़त; गामक लोककेँ हटाबय पड़त; आ एही बीच दू बी-४ नक्शामे सीमा-रेखा बदलल भेटैत अछि। इतिहास, प्रशासन, अभिलेख-संरक्षण आ वर्तमान आपदा एके क्षणमे भिड़ैत अछि।

रघुनाथक स्वीकार—१९८७क आपदा-सन्दर्भमे रेखा जानि-बुझि कऽ बदलल गेल—नाटककेँ ‘जालसाजी पकड़ू’क सरल नैतिक ढाँचा सँ बाहर लैत अछि। प्रश्न बनैत अछि: संकटमे कएल नियमभंग जे किछु जीवन बचौलक, बादमे कानूनी-प्रशासनिक संरचना भऽ कऽ दोसर अन्याय उत्पन्न कएल कि नहि? ‘न्याय नहि’ शीर्षक दृश्य एहि जटिलताकेँ केन्द्र बनबैत अछि। सत्य आवश्यक अछि, मुदा सत्य प्रकाशित भेला पछातिक परिणाम सेहो नैतिक विचारक विषय अछि।

सोना, मालती, ईशान, लछमी, रहमान, रघुनाथ, दीनानाथ—सभ अलग ज्ञान-स्थान प्रतिनिधित्व करैत अछि। सोना पारिवारिक स्मृति आ दस्तावेजक वाहक; मालती अभिलेखीय उत्तरदायित्व; ईशान तकनीकी जल-विश्लेषण; लछमी स्थानीय भूगोल आ व्यवहारिक आपदा-ज्ञान; रहमान भौतिक संरक्षण; रघुनाथ प्रशासनिक स्मृति; दीनानाथ वर्तमान संपत्ति-अधिकारक जटिलता। नाटक कोनो

एक स्रोतकेँ ‘अन्तिम’ नहि बनबैत। अन्तिम नब पन्नामे अनेक स्रोत एक संग राखल जाइत अछि—कोनो एक कागज दोसराकेँ मेटबैत नहि।

११. ‘पानिक लेखा’क रचना-दर-रचना परीक्षण

अंक १, दृश्य १ — साँझ

अभिलेख-घरक चुबैत छत आ भरैत बाल्टी समयक दृश्य घड़ी अछि। रहमानक जिल्दसाजी रूपक—किताब नहि, टूटल भरोस जोड़ब—नाटकक मूल अभिलेख-दर्शन स्थापित करैत अछि।

अंक १, दृश्य २ — नक्शा

ईशानक आगमनसँ आधुनिक सर्वेक्षण-ज्ञान प्रवेश करैत अछि। ताला लागल पेटी, पुरान पञ्जी आ वर्तमान जल-नक्शा एके टेबुल पर अबैत अछि; सोना नामक अनुपस्थित पात्र अगिला दृश्यक कारण बनैत अछि।

अंक १, दृश्य ३ — नाम

सोना देहसँ पहिने गठरी बचबैत अछि—दस्तावेजक पारिवारिक वजन स्पष्ट अछि। रामलोचनक नोटबुक आ दीवार भीतरक मोमबन्द पुड़िया इतिहासकेँ ‘खोज’ नहि, संदर्भसहित सुरक्षित करबाक जिम्मेदारी बनबैत अछि।

अंक १, दृश्य ४ — पुड़िया

पुड़िया खोलबाक पहिने स्थानक छवि, समय आ साक्षी दर्ज करब स्रोत-श्रृंखलाक अनुशासन अछि। दू नक्शामे अलग सीमा-रेखा नाटकक मुख्य द्वंद्व स्थापित करैत अछि: धरती एक, रेखा दू।

अंक २, दृश्य ५ — लिखाइ

रेखा-परिवर्तनक लिखावट, तैनाती-पञ्जी आ रघुनाथक नाम बीच सम्बन्ध जुड़ैत अछि। आरोप तुरन्त न्याय नहि बनैत; दृश्य प्रमाणक श्रृंखला तैयार करैत अछि।

अंक २, दृश्य ६ — स्मृति

रघुनाथक स्मृति धीरे खुलैत अछि। लिखित कागज स्मृतिकेँ प्रतिस्थापित नहि करैत; उलटे कागज प्रश्नक संकेत दैत अछि। स्मृति पुनरुत्पादन नहि, परीक्षणाधीन स्रोत बनैत अछि।

अंक २, दृश्य ७ — ओहि राति

१९८७क तेसर पूरक कथा सामने अबैत अछि। रेखा जानि-बुझि बदलल गेल स्वीकारोक्ति एक नाटकीय मोड़ अछि; मुदा कारण जीवन-रक्षा आ प्रशासनिक विवशतासँ जुड़ल होने नैतिक निर्णय जटिल रहैत अछि।

अंक ३, दृश्य ८ — बाबू मिथ्या नहि बजैत छलाह

सोना पिता रामलोचनक सत्यनिष्ठा आ रघुनाथक स्वीकार बीच फँसल अछि। नक्शा आ नोटबुक बीच ‘नाम स्थिर’ रहब व्यक्तिगत स्मृति आ दस्तावेजक संगति/विरोधक सूक्ष्म दृश्य बनैत अछि।

अंक ३, दृश्य ९ — जे घर दोषी नहि

दीनानाथ वर्तमान अधिकारधारी रूपेँ प्रवेश करैत छथि। नाटक इतिहासक दोष वर्तमान परिवारपर यान्त्रिक रूपेँ नहि थोपैत; सोना स्पष्ट करैत अछि जे पोतीक नाम कटय—ओ नहि चाहैत अछि।

अंक ३, दृश्य १० — हिसाबक पानि

ईशानक जल-पथ गणना बतबैत अछि जे पुरान/नब रेखा केवल अतीतक विवाद नहि; वर्तमान तटबन्ध आ कटावक जोखिमसँ जुड़ल अछि। ज्ञान तत्काल जीवित देहक सुरक्षा बनैत अछि।

अंक ४, दृश्य ११ — अभिलेखसभ बाजैत अछि

बिजली गेलापर लोक अभिलेखक नाम जोर सँ पढ़ि ऊपर पहुँचबैत अछि। सामुदायिक श्रम कागजकेँ ‘बोलबैत’ अछि। अभिलेख बचेनाइ लोकतांत्रिक क्रिया बनैत अछि।

अंक ४, दृश्य १२ — न्याय नहि

रघुनाथ आ मालतीक एकान्त संवाद नाटकक नैतिक शिखर। सत्य सार्वजनिक भेलापर आदेश, मुकदमा, घरक भय बनत—तथापि ओकरा नुकाएब दोसर अन्याय। दृश्य सत्य आ परिणामक तनावकेँ बिना सरल समाधानक राखैत अछि।

अंक ५, दृश्य १३ — एके ऊँच जमीन

तटबन्ध कटैत अछि; दुनू बस्ती एके ऊँच जमीन पर शरण लैत अछि। प्रशासनिक रेखा जलक सामने अर्थहीन होइतहुँ मानवीय स्मृति/अधिकारमे महत्वपूर्ण रहैत अछि। ‘ककर खोज—माय’ लिखनाइ अभिलेखक प्राथमिकता बदलैत अछि।

अंक ५, दृश्य १४ — नब पन्ना

नब पञ्जीमे ‘सरिसब-चर’क संग दू नक्शा, बयान, नोटबुक, पट्टा, जल-पथ आ शरण-सूची अलग-अलग स्रोत रूपेँ सुरक्षित अछि। नाटक बहु-स्रोत सत्य आ संशोधनशील अभिलेखीय न्यायपर समाप्त होइत अछि।

१२. नव्य-न्याय समीक्षा: प्रमाणक नाट्य-व्याकरण

गङ्गेशक ‘तत्त्वचिन्तामणि’क परम्परामे ज्ञानक साधन आ वैधता प्रश्नक केन्द्र अछि। ‘व्याप्ति’ एहि परम्पराकेँ नाममात्र उद्धृत नहि करैत; नाटकक संपूर्ण रचना प्रमाणानुशासनक क्रम बनबैत अछि। प्रत्यक्षक स्तरपर इन्द्रिय-विषय, इन्द्रिय-भेद आ पूर्वनिर्णय अलग कएल जाइत अछि। अनुमानक स्तरपर पक्ष, साध्य, हेतु आ व्याप्तिक सम्बन्ध परखल जाइत अछि। उपमानक स्तरपर समानता उपयोगी, मुदा पहचानक पूर्ण प्रमाण नहि। शब्दक स्तरपर वक्ता, ज्ञान-स्रोत, वाक्यार्थ आ अभिप्राय अलग। अभावक स्तरपर अनुपस्थिति स्वतः कथित कारण सिद्ध नहि करैत।

एहि पद्धतिक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक परिणाम ई अछि जे कथानक ‘कौन दोषी?’क रहस्यकथा भरि नहि रहैत। प्रत्येक उत्तर अपन प्रमाणिक सीमा सहित अबैत अछि। दर्शक ज्ञानक श्रेणीकरण सीखैत अछि, मुदा पाठशाला-जकाँ नहि; गलत निष्कर्षक वास्तविक दण्ड—बन्हल माधव, मृत नीरज, दबायल २४० नाम—दर्शककेँ बतबैत अछि जे तर्कक शुद्धता नैतिक विलास नहि, सामाजिक आवश्यकता अछि।

‘जे नाम पोथीमे नहि’मे नव्य-न्याय प्रत्यक्ष शीर्षक-रूपेँ नहि, शब्द-सूक्ष्मता रूपेँ सक्रिय अछि। ‘अज्ञात’ बनाम ‘अनुपलब्ध’, ‘परिकल्पना’ बनाम ‘सिद्ध तथ्य’, ‘नाम नहि’ बनाम ‘मनुष्य/स्वर नहि’, ‘रिक्त पाँति’ बनाम ‘प्रमाणक अभाव’—ई भेद ज्ञान-दाबी सीमित करैत अछि। ‘पानिक लेखा’मे दू नक्शा, हस्तलेख, तैनाती-पञ्जी, मौखिक स्वीकार, वर्तमान जल-गणना आ संपत्ति-पट्टा

अलग प्रमाण-श्रेणी बनैत अछि। नाटक सभमे एक सामूहिक नियम उभरैत अछि: एक स्रोत जे सिद्ध करैत अछि, ओकरा ओहि सीमा सँ बाहर नहि तानू।

व्याप्तिक दार्शनिक अर्थ—हेतु आ साध्यक अविनाभाव सम्बन्ध—नाटकीय रूपमे एक व्यंग्यात्मक संकट सेहो बनैत अछि। सामाजिक जीवनमे लोक व्याप्ति बहुत जल्दी बना लैत अछि: धुँआ लागल कपड़ा = आगि लगौनिहार; पोथीमे समान नाम = निषिद्ध विवाह; नक्शामे रेखा = वैध धरती। तीनू नाटक एहि त्वरित व्याप्ति-निर्माणकेँ भंग करैत अछि। अतः ‘व्याप्ति’ केवल पहिल नाटकक शीर्षक नहि, सम्पूर्ण त्रयीक आलोचनात्मक क्रिया बुझल जा सकैत अछि।

१३. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधारपर समीक्षा

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिक मूल अनुशासन बहुकेन्द्रिकता आ सममित आलोचना अछि। राजकीय अभिलेखकेँ केवल सत्ता कहि खारिज नहि कएल जाए, आ हाशियाक स्मृतिकेँ केवल पीड़ित स्वर कहि स्वतः सत्य घोषित नहि कएल जाए। स्रोतक प्रकार, काल, प्रसंग, संस्करण, हित, प्रसारण, मौन आ पारस्परिक पुष्टिक जाँच आवश्यक अछि। इतिहासक निष्कर्ष ‘प्रबल रूपेँ समर्थित’, ‘सम्भाव्य’, ‘विवादित’ वा ‘अज्ञात’ हो सकैत अछि; अनिश्चितता स्वीकारब ऐतिहासिक कमजोरी नहि, ज्ञानात्मक ईमानदारी अछि।

‘जे नाम पोथीमे नहि’ एहि पद्धतिक सर्वाधिक प्रत्यक्ष नाट्यरूप अछि। पञ्जी संस्थागत स्रोत अछि, मुदा स्त्री-शाखाक नामक अनुपस्थिति ओकर चयनात्मकता उघारैत अछि। लोकगीत हाशियाक जीवित स्रोत अछि, मुदा धनमन्तीक अलग रूप, भूल, भणिताक परिवर्तन आ मूल पाण्डुलिपिक अनुपलब्धता ओकर परिवर्तनशीलता देखबैत अछि। प्रभाकर न तऽ मौखिक परम्पराकेँ ‘अवैज्ञानिक’ कहि फेंकैत छथि, न तत्क्षण लेखकत्व मानैत छथि। यही सममितता समानान्तर इतिहासक आधारभूत शक्ति अछि।

‘पानिक लेखा’मे राजकीय नक्शा, पुनर्वास-पञ्जी, निजी नोटबुक, वर्तमान पट्टा, तकनीकी जल-पथ आ स्थानीय भूगोल सभ अलग प्रकारक प्रमाण अछि। पुरान नक्शामे संशोधन सत्ता-प्रयोग अछि, मुदा ओकर इतिहास आपदा-सन्दर्भ आ जीवन-रक्षा सँ जुड़ल अछि। नाटक सत्ता-आलोचनाकेँ कारण-समीक्षासँ जोड़ैत अछि। दीनानाथक परिवारकेँ अतीतक निर्णयक स्वचालित अपराधी

नहि बनाओल जाइत—ई वर्तमानपर अतीतक नैतिक ऋण थोपबाक विरुद्ध सावधानी अछि।

'व्याप्ति'मे समानान्तर दृष्टि केन्द्र/हाशिया भेदकेँ अन्न-भण्डारक लेखा, कुम्हार माधव, तेलिन जटिला, फुलियाक मातृत्व, पहरेदार हरिनाथ आ मालतीक लेखा-कर्म द्वारा विकसित करैत अछि। २४० 'नाम' लेखा-सारमे अदृश्य होइत अछि—अर्थात् अभिलेखीय संक्षेपण स्वयं सत्ता-तकनीक बनि सकैत अछि। मुदा नाटकक समाधान 'राजकीय अभिलेख जला दिय' नहि; नब सार्वजनिक तख्ती, आगमन-वितरणक खुला लेखा आ दाबी-परीक्षण अछि। ई प्रतिरोधक संग संस्थान-सुधारक दिशा समानान्तर पद्धतिक रचनात्मक पक्ष अछि।

एहि त्रयीमे अभिलेखीय मौनक व्यवहार विशेष उल्लेखनीय अछि। रिक्त पाँति, अनुपस्थित नाम, खाली कटोरा, नब पन्नाक खाली खाना—ई सभ मौनकेँ अर्थपूर्ण बनबैत अछि, मुदा लेखक मनगढ़न्त स्वर नहि भरैत। जहाँ प्रमाण नहि, ओतय 'नहि' वा 'सम्भवतः' लिखल जाइत अछि। ई साहित्यिक रूपमे एक कठिन संयम अछि; बहुत रचना हाशियाक पक्षधरता देखाबय लेल अनिश्चित स्थानमे निश्चित कथा भरि दैत अछि। एहि त्रयीमे सहानुभूति प्रमाणक विकल्प नहि बनैत।

१४. भारतीय काव्यशास्त्रीय समेकित समीक्षा

रसगत स्तरपर तीनू नाटक करुणक अलग रूप प्रस्तुत करैत अछि। 'व्याप्ति'मे व्यक्तिगत मृत्यु आ भूख; 'जे नाम पोथीमे नहि'मे स्मृति, वृद्ध स्वर आ नाम-लोप; 'पानिक लेखा'मे घर, जमीन, जल आ प्रशासनिक अन्यायक भय। करुणक संग वीर रस पारम्परिक युद्धवीरता रूपेँ नहि, सत्यक भार उठेबाक नैतिक साहस रूपेँ अबैत अछि—मालतीक साक्ष्य, सुमेधाक 'प्रमाण नहि' स्वीकारबाक आग्रह, रघुनाथक स्वीकार, सोनाक प्रतिशोध त्याग।

शान्त रसक सम्भावना अन्तिम दृश्यसभमे विजय-उत्सवक अभावसँ बनैत अछि। नीरजक कटोरा खाली रहैत अछि; धनमन्तीक स्वर अपूर्ण रहैत अछि; बाढ़क पानि घटि रहल अछि, मुदा विवाद समाप्त नहि। ई अपूर्णता दर्शककेँ कृत्रिम समाधान नहि, अनुभूत विवेक दैत अछि। अभिनवगुप्तक रस-विचारक

दृष्टिसँ व्यक्तिगत पीड़ा नाट्य-दूरीक माध्यमे साझा अनुभव बनैत अछि; त्रयी ई दूरी कखनो वस्तु-प्रतीक, कखनो सामूहिक स्वर, कखनो सार्वजनिक अभिलेख-परीक्षा द्वारा रचैत अछि।

औचित्यक दृष्टिसँ भाषिक शैली पात्रानुसार प्रायः सफल अछि। गङ्गेशक वाक्य सूक्ष्म, ईशानक भाषा अधीर आ तकनीकी, फुलियाक भाषा कम शब्दमे तीक्ष्ण; धनमन्तीक भाषा लोकोक्ति, व्यंग्य आ गीत-परम्परासँ पोषित; प्रभाकरक भाषा स्रोत-समीक्षात्मक; फेकनक भाषा व्यवहारिक; 'पानिक लेखा'मे मालतीक भाषा अभिलेखीय अनुशासन आ लछमीक भाषा स्थल-ज्ञानक सीधापन रखैत अछि। समस्या ओतय अबैत अछि जतय आधुनिक तकनीकी शब्दक घनत्व शुद्ध मैथिली शैलीकेँ बीच-बीचमे तोड़ैत अछि; भाषा-अंकेक्षण भागमे एहि पर विस्तृत टिप्पणी अछि।

१५. पाश्चात्य नाट्य-सिद्धान्तक समेकित समीक्षा

अरस्तूवादी 'क्रिया'क दृष्टिसँ तीनू नाटक घटनाक युक्तिसंगत क्रमपर टिकल अछि। 'व्याप्ति'मे कारण-श्रृंखला सबसँ कसगर; 'जे नाम पोथीमे नहि' अधिक तरंगात्मक आ बहुकेंद्रीय; 'पानिक लेखा' समय-दबावक कारण प्रायः निरन्तर क्रिया अछि। तीनू ठाम प्रत्यभिज्ञान व्यक्ति-परिचयक बजाय दस्तावेज, वस्तु वा दाबी-परिवर्तनरूपेँ अबैत अछि। ई आधुनिक ज्ञानमीमांसात्मक प्रत्यभिज्ञान अछि—दर्शक/पात्र जे मानने छल, ओ प्रमाण बदललापर बदलैत अछि।

ब्रेख़्तीय महाकाव्यात्मक रंगभाषासँ साम्य स्पष्ट अछि: दृश्य शीर्षक, सार्वजनिक परीक्षण, वस्तुक प्रदर्शन, श्यामपट्ट, समानांतर कथन, दस्तावेज, गणना, दृश्य-रेखा, सामूहिक स्वर, मंचपर तर्कक प्रक्रियाकेँ देखेनाइ। ई तत्त्व दर्शककेँ निष्क्रिय भाव-विलय सँ रोकैत अछि। मुदा लेखक पूर्ण दूरीकरण नहि अपनबैत; फुलिया, धनमन्ती, सोना, सुमेधा आ मालती भावात्मक केन्द्र बनि दर्शकक सहानुभूतिक मार्ग खोलैत छथि। फलतः 'विचार' आ 'अनुभव' बीच द्वंद्व नाटकक ऊर्जा बनैत अछि।

आधुनिक दस्तावेजी नाटकक निकटता विशेषतः अभिलेख, नक्शा, लेखा, सूची, पञ्जी, बयान आ गणना द्वारा अछि। तथापि ई रचनासभ वास्तविक

ऐतिहासिक घटनाक प्रतिलेखन नहि, काल्पनिक नाटचलोकमे स्रोत-समीक्षाक नाटचकरण अछि। यही कारण दस्तावेज 'यथार्थक प्रमाण' नहि, मंचीय वस्तु बनि अर्थ उत्पन्न करैत अछि। नाटकक मौलिकता दस्तावेजी तकनीककेँ मिथिला-विशिष्ट पञ्जी, लोकगीत, जल-भूगोल, नव्य-न्याय आ सामाजिक सम्बन्धसँ जोड़बामे अछि।

१६. पात्र-संरचना आ नैतिक विकास

त्रयी एकल महा-नायकक बजाय 'ज्ञान-समुदाय' रचैत अछि। गङ्गेशकेँ यदि 'व्याप्ति'क केंद्रीय संचालक मानल जाए, तइयो सत्य केवल हुनक बुद्धिसँ नहि निकलैत; माधवक पेशागत अनुभव, जटिलाक स्थानीय समझ, फुलियाक प्रश्न, हरिनाथक स्मृति, मालतीक लेखा, ताला-साजक कौशल—सभ मिलि परिणाम बनबैत अछि। इसी प्रकार 'जे नाम पोथीमे नहि'मे माधवी अकेली शोधकर्ता नहि; धनमन्ती, हरिनाथ, प्रभाकर, सुमेधा, फेकन आ स्त्री-स्वर समूह ज्ञानक अलग अंग। 'पानिक लेखा'मे मालतीक संस्थागत क्षमता लछमीक स्थल-ज्ञान, ईशानक तकनीकी विश्लेषण, रहमानक संरक्षण-कौशल, सोनाक पारिवारिक दस्तावेज आ रघुनाथक स्मृति बिना अपूर्ण अछि।

चरित्र-विकास नाटकीय चीत्कारसँ नहि, शब्दावलीक सूक्ष्म परिवर्तनसँ देखाइत अछि। ईशान त्वरित निष्कर्षसँ प्रमाणिक संयम सीखैत अछि। अभय 'निश्चित'क भाषा छोड़ि 'सम्भवतः' स्वीकारैत अछि। हरिनाथ उत्तर देबकेँ पञ्जीकारक धर्म मानैत-मानैत अन्तमे 'उत्तर नहि' देबक दायित्व बुझैत छथि। रघुनाथ अतीतक प्रशासनिक निर्णयकेँ स्मृति सँ स्वीकारोक्ति धरि आनैत छथि। ई परिवर्तन सभ त्रयीकेँ बौद्धिक नाटक बनबैत अछि, मुदा खतरा सेहो अछि—किछु पात्र कखनो-कखनो विचारक प्रतिनिधि अधिक, देहधारी मनुष्य कम लगि सकैत छथि। मंचनमे अभिनेता, विराम, श्रम, हास्य आ देहगत थकान एहि अमूर्तनकेँ संतुलित करबाक चाही।

१७. रंगमंचीयता: वस्तु, ध्वनि, उजास आ समय

तीनू नाटकक मंचीय भाषा अत्यन्त वस्तु-केन्द्रित अछि। ई लाभ अछि, कारण दार्शनिक संवाद ठोस वस्तुसँ बँधल रहैत अछि। 'व्याप्ति'मे ताला, रस्सी, दीप, पट्ट, कटोरा; 'जे नाम पोथीमे नहि'मे पोथी, चाक, ध्वनि-अंकन यन्त्र,

श्यामपट्ट, नाव; ‘पानिक लेखा’मे नक्शा, पञ्जी, पेटी, लालटेन, नोटबुक, चाबी। प्रत्येक वस्तु दृश्य-दर-दृश्य अर्थ बदलैत अछि। निर्देशक जँ एहि वस्तुसभकेँ यथार्थवादी सजावट भरि मानत, नाटक कमजोर होएत; वस्तुक स्थान, दूरी, छुवाइ, न छुवाइ, उजास आ पुनरावृत्ति अर्थ-विन्यासक अंग अछि।

ध्वनि सभसँ प्रभावी संरचनात्मक साधनमे अछि। घंटी, टपकैत पानि, मेघ, नावक डाँड़, दूरक पुकार, पन्नाक सरसराहट, कुकुरक भुकब, लालटेनक मौन—ध्वनि समय आ संकटक माप बनैत अछि। ‘पानिक लेखा’क बाल्टीमे टप-टप बढ़ैत बूँद एक ध्वन्यात्मक घड़ी अछि; ‘व्याप्ति’मे घंटीक विवाद शब्दप्रमाणक प्रश्न; ‘जे नाम पोथीमे नहि’मे अपूर्ण ध्वनि-अंकन मौखिक परम्पराक नश्वरता।

उजासक प्रयोग सेहो दार्शनिक अछि। समान कठोर प्रकाश कथन-परीक्षा, अन्हार संशय, लालटेन सीमित ज्ञान, भोर संशोधनक सम्भावना, अन्तिम समान उजास नैतिक समता सुझबैत अछि। विशेषतः ‘व्याप्ति’क अन्तमे भरल आ खाली कटोरा पर समान उजास नाटकक दृश्य-दर्शनक सघनतम क्षण अछि।

१८. शुद्ध मैथिली निखार-अंकेक्षण

मूल मैथिली पाठ सभ सामान्यतः प्रवाहमान, मंचोपयोगी आ पात्रानुकूल अछि। ग्रामीण/नगरिक बोलचाल, शास्त्रीय दार्शनिक पदावली आ आधुनिक प्रशासनिक भाषा तीन अलग रजिस्टर बनबैत अछि। निखारक मुख्य आवश्यकता विदेशी मूलक आधुनिक तकनीकी शब्दक मानकीकरण, कतिपय मिश्र पदक विकल्प, आ एक-दू स्पष्ट लिपि-विसंगतिक सुधारमे अछि।

पाठमे भेटल रूप	स्थिति	निखारक सम्भावित रूप	टिप्पणी
(typed)	‘पानिक लेखा’क मैथिली मूल भागमे रोमन लिपिक स्पष्ट शब्द	टंकित	अनिवार्य सुधार; रोमन शब्द मूल मैथिली अनुच्छेदमे अनपेक्षित।
फोन	‘पानिक लेखा’ आ ‘जे नाम पोथीमे नहि’मे	दूरभाष / दूर-संवाद यन्त्र	पात्रक आधुनिक बोलचाल बचाबय चाही तँ

	बारम्बार		मूल रूप राखल जा सकैत अछि; कठोर निखारमे मैथिली विकल्प।
मोबाइल	'जे नाम पोथीमे नहि'मे	चल-दूरभाष / हाथक दूर-संवाद यन्त्र	मंचीय स्वाभाविकता बनाम शुद्धता अनुसार एकरूप नीति आवश्यक।
फोटो	दूनू आधुनिक नाटकमे	छवि / चित्र	अभिलेखीय सन्दर्भमे 'छवि' अधिक उपयुक्त।
टॉर्च	दूनू आधुनिक नाटकमे	हाथ-इजोत / हाथ-बत्ती	'हाथ-इजोत' नाटकीय रूपेँ स्वाभाविक बनि सकैत अछि।
सर्वे / सर्वेक्षण	'पानिक लेखा'मे	सर्वेक्षण	एकरूपता लेल पूर्ण 'सर्वेक्षण' प्राथमिक।
फाइल	दूनू आधुनिक नाटकमे	संचिका	'संचिका' पाठमे पहिनेसँ सफलतापूर्वक प्रयुक्त अछि।
लैपटॉप / कम्प्यूटर / स्क्रीन	'जे नाम पोथीमे नहि'मे	वहनीय संगणक / संगणक / पर्दा	तकनीकी दृश्य स्पष्ट राखैत मैथिलीकरण सम्भव।
डिजिटल	दूनू आधुनिक नाटकमे	अंकीय	शोध-भाषामे 'अंकीय' उपयुक्त।
बैटरी	दूनू आधुनिक नाटकमे	विद्युत-संचयक	संवादमे लम्बा लगि सकैत अछि; मंचीय

			स्वाभाविकता जाँच आवश्यक।
ब्लॉक	'पानिक लेखा'मे	प्रखण्ड	प्रशासनिक भारतीय प्रयोगमे 'प्रखण्ड' अधिक सुसंगत।
टावर	'पानिक लेखा'मे	संकेत-स्तम्भ	संचार-सन्दर्भ साफ करबाक लेल 'दूर-संकेत स्तम्भ' सेहो सम्भव।
प्लास्टिक	दूनू आधुनिक नाटकमे	कृत्रिम पत्र / जलरोधी पत्र	सामग्रीक सटीकता आवश्यक; अतिसंस्कृत विकल्प नाटकक स्वाभाविकता तोड़ि सकैत अछि।
नेटवर्क	'जे नाम पोथीमे नहि'मे	जाल	पाठमे 'जाल'क प्रयोग सम्भव आ स्वाभाविक।

निखारक सिद्धान्त: विदेशी तकनीकी शब्द हटेनाइ अपने-आप साहित्यिक श्रेष्ठता नहि। पात्र, काल आ सामाजिक परिवेशक विश्वसनीयता प्राथमिक अछि। मुदा एके पोथीमे 'संचिका' आ 'फाइल', 'संगणक' आ 'कम्प्यूटर', 'जाल' आ 'नेटवर्क' बिना स्पष्ट शैलीगत कारण बारम्बार बदलैत रहलासँ शब्द-संसार असंगत बुझाइत अछि। अत: संपादकीय स्तरपर एक शब्दावली-पत्र बनाकऽ प्राथमिक मैथिली रूप निश्चित करब उचित। आवश्यक आधुनिक शब्द जँ जस-के-तस राखल जाए, तकर पहिल प्रयोगपर मैथिली अर्थ देल जा सकैत अछि।

वाक्य-विन्यासक दृष्टिसँ तीनू नाटकक संवाद प्रायः मंचीय अछि—छोट प्रश्न, प्रत्युत्तर, विराम, मौन, वस्तु-क्रिया आ ध्वनि निर्देश पाठकेँ जीवित रखैत अछि। शोध-प्रकाशनक अन्तिम प्रूफमे संयुक्त शब्दक बीच अनपेक्षित रिक्ति/अरिक्ति, देवनागरी विरामचिह्नक एकरूपता, अंकक शैली, ‘कऽ/क’’, ‘तँ/तऽ’, ‘भऽ/भ’’, ‘सँ/स’ जेकाँ रूपक एकरूपता मूल फाइलसँ पुनः जाँचल जाय। पीडीएफ पाठ-उद्धरणमे दृश्य-रूपान्तरणक कारण किछु शब्द जुड़ल/टूटल देखाइत अछि; अतः अंतिम भाषिक सुधार केवल निकसल पाठपर नहि, मूल शब्द-संसाधक फाइलपर कएल जाय।

१९. द्विभाषिक संरचना आ अनुवादक नाट्य-मूल्य

तीनू कृति मूल मैथिली आ लेखकक स्वयं कएल अंग्रेजी रूपान्तर सहित प्रस्तुत अछि। एहि द्विभाषिक विन्यासक साहित्यिक महत्त्व मात्र पाठक-विस्तार नहि; ई नाट्य-परम्पराकेँ तुलनात्मक मंचीय क्षेत्र दैत अछि। मूल मैथिलीमे ‘पञ्जी’, ‘भणिता’, ‘ओसारा’, ‘केवाड़ी’, ‘सम्भवतः’, ‘अभाव’, ‘व्याप्ति’ जेकाँ शब्द सांस्कृतिक-संवेदी अर्थ लैत अछि; अंग्रेजी रूपान्तरणमे एहन पदक अर्थ-समानता सँ अधिक कार्य-समानता आवश्यक होइत अछि। संयुक्त संस्करणक संरचना—पहिने मूल, पछाति अनुवाद—मूल भाषाक प्राथमिकता सुरक्षित करैत अछि।

अनुवादक समीक्षा लेल अलग पंक्ति-दर-पंक्ति तुलनात्मक संस्करण आवश्यक होएत; वर्तमान अध्ययनक मुख्य लक्ष्य मूल मैथिली त्रयी अछि। तथापि संरचनात्मक रूपेँ स्पष्ट अछि जे अंक/तरंग/दृश्य, मुख्य मंच-क्रिया आ कथन-क्रम अंग्रेजी रूपान्तरमे सुरक्षित राखल गेल अछि। भविष्यक संस्करणमे सांस्कृतिक पदक छोट पारिभाषिक सूची उपयोगी हो सकैत अछि, मुदा मूल नाटकक भीतर व्याख्यात्मक भार बढ़ेब उचित नहि।

२०. त्रयी तुलनात्मक सारणी

नाटक	मुख्य संकट	प्रधान प्रमाण-वस्तु	ज्ञानात्मक प्रश्न	नैतिक निष्कर्ष
व्याप्ति	अकाल, अन्न-	ताला, धुँआ, समय-पाँति,	देखल/ मानल,	दोषक नाम देबाक पहिने

	भण्डारक आगि, बालकक मृत्यु	बही, घंटी, कटोरा	हेतु/साध्य, कथन/अभिप्राय, अभाव	प्रमाण; ज्ञात भार सँ पलायन नहि।
जे नाम पोथीमे नहि	वंश-जाँच, लेखकत्व, बाढ़, मौखिक परम्पराक संरक्षण	पञ्जी, पद-पन्ना, ध्वनि-अंकन, चाक, नाम-सूची	लिखित/मौखिक, अज्ञात/अनुपलब्ध, परिकल्पना/सिद्ध तथ्य	रिक्त स्थानकेँ झूठसँ नहि भरू; बहु-स्रोतकेँ अलग पहचान सहित राखू।
पानिक लेखा	बाढ़, बदलल नक्शा, पुनर्वास आ जमीनक अधिकार	दू बी-४ नक्शा, नोटबुक, पञ्जी, पट्टा, जल-पथ	अतीतक निर्णयक कारण, वर्तमान वैधता, सत्यक परिणाम	सत्य नुकाउ नहि; पुरान दोषक दण्ड वर्तमान निर्दोषपर यान्त्रिक रूपेँ नहि थोपु।

२१. मुख्य साहित्यिक उपलब्धि

दर्शनकेँ कथोपकथनक व्याख्यान नहि, नाटकीय क्रिया बनाबयक क्षमता।

वस्तु-प्रतीक आ प्रमाण-वस्तुक सफल एकीकरण—कटोरा, ताला, पोथी, चाक, नक्शा, चाबी।

‘नहि जानब’केँ बौद्धिक ईमानदारी रूपेँ प्रतिष्ठित करब; अनिश्चितताकेँ कथानक-विरोधी नहि, नाट्य-ऊर्जा बनाबयब।

स्त्री-स्वर, कारीगर, नाविक, पहरेदार, लेखा-कर्मी, स्थानीय अनुभव आ संस्थागत विशेषज्ञकेँ एक ज्ञान-समुदायमे स्थान देब।

पर्यावरणीय संकटकेँ पृष्ठभूमि नहि, ज्ञान आ न्यायक कसौटी बनाबयब।

मिथिला-विशिष्ट सांस्कृतिक वस्तु आ परम्पराकेँ विश्वस्तरीय ज्ञानमीमांसात्मक प्रश्नसँ जोड़ब।

अभिलेखीय मौनकेँ मनगढ़न्त कथा सँ नहि भरि, रिक्तता रूपेँ दृश्य बनाबयक संयम।

२२. आलोचनात्मक सीमासभ आ सुधारक सम्भावना

पहिल सीमा विचारक घनत्व अछि। तीनू नाटकमे पात्र बारम्बार अत्यन्त स्पष्ट पद्धतिगत वाक्य कहैत छथि। ई शैली जाँच-नाटकक अनुकूल होइतहुँ मंचनमे जँ गति, मौन, देह, हास्य आ वस्तु-क्रिया पर्याप्त न रहत तँ दर्शक 'विचार सुनि' सकैत अछि, 'घटना जी' नहि सकत। समाधान पाठ काटब अनिवार्य नहि; निर्देशककेँ लय, विराम आ दृश्य क्रियाक समान भार देबाक चाही।

दोसर सीमा 'सही पद्धति सीखि लेब'क रेखा किछु ठाम अत्यधिक सुव्यवस्थित बुझाइत अछि। वास्तविक सामाजिक संसारमे लोक प्रमाण देखलापर सेहो मत नहि बदलैत, हित-संघर्ष, भय, प्रतिष्ठा आ समूह-दबाव अधिक जिद्दी होइत अछि। नाटकसभ एहि तत्वकेँ छुबैत अछि, विशेषत: देवधर, पारिवारिक विवाह-दबाव आ जमीन-विवादमे; भविष्यक रंग-संपादनमे प्रतिरोधक सामाजिक स्थायित्वक किछु क्षण बढ़लासँ नाटकीय तनाव आरो कठोर भऽ सकैत अछि।

तेसर सीमा आधुनिक तकनीकी शब्दावलीक मिश्रता अछि। कथानकक विश्वसनीयता लेल आधुनिक उपकरण आवश्यक अछि, मुदा शुद्ध मैथिली प्रकाशन-नीतिक अन्तर्गत संपादकीय एकरूपता अपेक्षित अछि। चौठा, 'जे नाम पोथीमे नहि'मे पाँच तरंग आ अनेक छोट दृश्य जानबूझि तरंगात्मक संरचना बनबैत अछि; मंचीय प्रस्तुति समय दृश्य-परिवर्तनक अर्थपूर्ण संक्रमण न भेल तँ खण्डितता महसूस हो सकैत अछि। पाँचम, 'पानिक लेखा'क अभिलेखीय विवरण अत्यन्त समृद्ध अछि; दृश्य-सज्जा जँ कागजक अधिकता मात्र देखाओत, तऽ दर्शकक दृष्टि केन्द्र भ्रमित हो सकैत अछि। प्रमुख वस्तुक दृश्य-क्रम निर्देशक-द्वारा कठोरता सँ नियंत्रित हो।

२३. समग्र निष्कर्ष

'रंग-संगम (खण्ड २)' आधुनिक मैथिली नाटकमे एक विशिष्ट ज्ञानमीमांसात्मक त्रयी रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि। ई नाटकसभ केवल सामाजिक विषयपर लिखल समस्या-नाटक नहि; ई सत्य तक पहुँचबाक

पद्धतिकेँ नाटकीय विषय बनबैत अछि। ‘व्याप्ति’ पूछैत अछि—कतेक प्रमाण पर आरोप उचित? ‘जे नाम पोथीमे नहि’ पूछैत अछि—जकर नाम लिखल नहि, ओकरा इतिहास कोना सुने? ‘पानिक लेखा’ पूछैत अछि—जखन कागज, स्मृति, भूगोल आ वर्तमान अधिकार एक-दोसरा सँ टकराए, तखन सत्य आ न्यायक सम्बन्ध कोना ठाढ़ हो?

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ त्रयी करुण, वीर आ शान्त भावभूमिक संग ध्वनि, वाचिक अभिनय आ वस्तु-प्रतीकक सघन रचना अछि। पाश्चात्य नाट्य-दृष्टिसँ ई प्रत्यभिज्ञान, कारण-क्रम, दस्तावेजी रंगभाषा आ आलोचनात्मक दूरीकरणक आधुनिक प्रयोग प्रस्तुत करैत अछि। नव्य-न्याय एकर विचारात्मक मेरुदण्ड अछि—विशेषतः दाबी सीमित करब, हेतु परखब, अभावकेँ सावधानीसँ पढ़ब, शब्दक स्रोत आ अभिप्राय अलग करब। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति तीनू नाटककेँ सममित स्रोत-समीक्षा, बहुकेन्द्रिकता, अभिलेखीय मौन, हाशियाक स्वर आ संशोधनशील निष्कर्षक साझा नैतिकता प्रदान करैत अछि।

त्रयीक अंतिम महत्त्व साहित्य आ दर्शनक संगममे अछि। ई रचनासभ दर्शनकेँ मंचपर ‘समझाबैत’ नहि; ओ दर्शककेँ गलत निष्कर्षक खतरा, अधूर प्रमाणक बेचैनी, नामहीनताक पीड़ा, जलक समय-दबाव आ सच बजबाक परिणाम अनुभव करबैत अछि। एहि कारण ई नाटकसभक स्थायी वाक्य शायद कोनो एक पात्रक संवाद नहि, बल्कि तीनू कृतिक साझा नाट्य-नीति अछि: जे ज्ञात अछि, ओकरा स्पष्ट लिखू; जे अज्ञात अछि, ओकरा कल्पनासँ नहि भरू; आ जे ज्ञात भेल, ओकर नैतिक भार छोड़ू नहि।

ग्रन्थसूची

व्याप्ति — गजेन्द्र ठाकुर।

जे नाम पोथीमे नहि — गजेन्द्र ठाकुर।

पानिक लेखा — गजेन्द्र ठाकुर।

रंग-संगम, खण्ड २ — गजेन्द्र ठाकुर।

समानान्तर दर्शन, खण्ड १ — गजेन्द्र ठाकुर।

समानान्तर दर्शन, खण्ड २ — गजेन्द्र ठाकुर।

तत्त्वचिन्तामणि — गङ्गेश उपाध्याय।

न्यायसूत्र — गौतम।

न्यायभाष्य — वात्स्यायन।

नाट्यशास्त्र — भरतमुनि।

ध्वन्यालोक — आनन्दवर्धन।

अभिनवभारती — अभिनवगुप्त।

काव्यप्रकाश — मम्मट।

काव्यादर्श — दण्डी।

पोएटिक्स — अरस्तू।

ए शॉर्ट ऑर्गेनम फॉर द थिएटर — बर्टोल्ट ब्रेख़्त।

थ्योरी ऑफ द मॉडर्न ड्रामा — पीटर सोंडी।

ड्रामा फ्रॉम इब्सेन टू ब्रेख़्त — रेमंड विलियम्स।

द आर्कियोलॉजी ऑफ नॉलेज — मिशेल फूको।

द हिस्टोरियन्स क्राफ्ट — मार्क ब्लॉक।

क्लूज, मिथ्स ऐंड द हिस्टोरिकल मेथड — कार्लो गिन्ज़बर्ग।

साइलेंसिंग द पास्ट — मिशेल-रॉल्फ त्रुइयो।

पञ्चम खण्ड

काव्य, गजल आ बाल-किशोर साहित्य

आलेख ३५ · काव्य, गजल आ बाल-किशोर साहित्य

बाल गोपाल

सारांश

शंभु प्रसाद सिन्हा ‘शंभु अगेही’क ‘बाल गोपाल’ बज्जिका बाल-कविताक एहन संग्रह अछि जाहिमे राष्ट्रबोध सँ लऽ कऽ घर-आँगन, खेल, निन्न, परिवार, मेला, खाद्य-संस्कृति, गाम, श्रम, विद्यालय, घड़ी आ रेल धरि बालजीवनक अनेक स्तर उपस्थित अछि। कृतिक स्थायी मूल्य एकर सभ कविताक समान कलात्मक सिद्धिमे नहि, अपितु बालकक स्थानीय बोली, माय, इआ, दादा, नाना-घर, खेल, माटि, चूड़ा, गाछी, मेला, जाँता, विद्यालय आ बदलैत संसारकेँ मुद्रित बाल-साहित्यक विषय बनएबामे अछि। जखन कवि बालकक सहचर बनैत छथि, कविता सहज, सुश्राव्य आ संवेदनात्मक होइत अछि; जखन प्रौढ़ उपदेश, राष्ट्र-नीति वा अनुशासनक भार बढ़ैत अछि, बाल-दृष्टिक स्वाभाविकता कनेक दबि जाइत अछि। एहि समेकित समीक्षामे रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, गुण-रीति, औचित्य; अनुकृति, रूपवाद, वर्ग-पाठ, उत्तर-औपनिवेशिक/निम्नवर्गीय प्रश्न, पाठक-ग्रहण, संवादिता, अन्तर्निहित प्रौढ़, पारिस्थितिक पाठ; नव्य-न्यायक शब्द-प्रमाण, व्याप्ति आ दृष्टान्त; तथा विदेह समानान्तर परम्पराक साक्ष्य-अनुशासन, बहुकेन्द्रिकता, भाषिक स्वनामक सम्मान आ आत्म-समीक्षाकेँ परस्पर संवादमे राखल गेल अछि।

बीजशब्द

बाल गोपाल ·मैथिली कविता ·गजल ·बाल-साहित्य ·साहित्यिक समीक्षा

‘बाल गोपाल’

शंभु ‘अगेही’क बज्जिका बाल-कविता-संग्रहक समेकित गहन समीक्षा

भारतीय काव्यशास्त्र · पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त · नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा · विदेह समानान्तर परम्परा

१

[केन्द्रीय मैथिली बोली]

सार-संक्षेप

शंभु प्रसाद सिन्हा ‘शंभु अगेही’क ‘बाल गोपाल’ बज्जिका बाल-कविताक एहन संग्रह अछि जाहिमे राष्ट्रबोध सँ लऽ कऽ घर-आँगन, खेल, निन्न, परिवार, मेला, खाद्य-संस्कृति, गाम, श्रम, विद्यालय, घड़ी आ रेल धरि बालजीवनक अनेक स्तर उपस्थित अछि। कृतिक स्थायी मूल्य एकर सभ कविताक समान कलात्मक सिद्धिमे नहि, अपितु बालकक स्थानीय बोली, माय, इआ, दादा, नाना-घर, खेल, माटि, चूड़ा, गाछी, मेला, जाँता, विद्यालय आ बदलैत संसारकेँ मुद्रित बाल-साहित्यक विषय बनएबामे अछि। जखन कवि बालकक सहचर बनैत छथि, कविता सहज, सुश्राव्य आ संवेदनात्मक होइत अछि; जखन प्रौढ़ उपदेश, राष्ट्र-नीति वा अनुशासनक भार बढ़ैत अछि, बाल-दृष्टिक स्वाभाविकता कनेक दबि जाइत अछि। एहि समेकित समीक्षामे रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, गुण-रीति, औचित्य; अनुकृति, रूपवाद, वर्ग-पाठ, उत्तर-औपनिवेशिक/निम्नवर्गीय प्रश्न, पाठक-ग्रहण, संवादिता, अन्तर्निहित प्रौढ़, पारिस्थितिक पाठ; नव्य-न्यायक शब्द-प्रमाण, व्याप्ति आ दृष्टान्त; तथा विदेह समानान्तर परम्पराक साक्ष्य-अनुशासन, बहुकेन्द्रिकता, भाषिक स्वनामक सम्मान आ आत्म-समीक्षाकेँ परस्पर संवादमे राखल गेल अछि।

१. ग्रन्थ-परिचय, प्रकाशन-सूचना आ पाठ-सावधानी

मापदण्ड	विवरण
पोथीक नाम	बाल गोपाल (बज्जिका बाल कविता)
रचनाकार	शंभु प्रसाद सिन्हा ‘अगेही’
प्रथम संस्करण	२०१२
प्रकाशक	सृष्टि-दृष्टि, शुभंकरपुर, दरभंगा
मुद्रक	त्रिदेव/त्रिदेवा प्रिन्टर्स, दरभंगा
समर्पण	महाकवि हरेन्द्र सिंह विप्लव, ‘कच देवयानी’क प्रणेता
विधा	बाल-कविता / शिशु-साहित्य
अनुक्रम	५१ पृथक् कविता-शीर्षक
रचनाकारक शैक्षणिक	एम.ए. (हिन्दी, अर्थशास्त्र), बी.एल., Dip. in Ed.

मापदण्ड	विवरण
परिचय	

समर्पण-पृष्ठ कृतिक साहित्यिक आत्म-स्थिति बुझबा लेल महत्त्वपूर्ण अछि। रचनाकार अपन बाल-काव्यकेँ बज्जिका साहित्यक पूर्ववर्ती महाकाव्यात्मक उपलब्धिसँ जोड़ैत छथि। एहि संग 'बात के बात' शीर्षक भूमिका स्पष्ट करैत अछि जे पोथी संयोगवश जोड़ल कविता-पुंज नहि, बाल-साहित्यक कार्य, भाषा आ बाल-मनोविज्ञान सम्बन्धी एक चेतन कार्यक्रमक परिणाम अछि।

पाठ-सावधानी आवश्यक अछि। जहाँ मूल बज्जिका शीर्षक उद्धृत अछि, ओकर भाषिक रूप समीक्षा-मैथिलीक अनुकूल बदलल नहि गेल अछि।

२. रचनाकार, बहुभाषिक साहित्यिक पृष्ठभूमि आ 'बात के बात'

पोथीक अन्तिम परिचय-अंशक आधारपर शंभु अगेही हिन्दी, बज्जिका आ मैथिली तीनू भाषामे सक्रिय रचनाकार रूपमे उभरैत छथि। 'ओझराएल डीह', 'सतंजा', 'तेसरी बेरिया', 'छंद विभास' आ 'कीर्तिलता'क काव्यात्मक अनुवाद बज्जिका-साधनासँ; 'रश्मिधन्वा' मैथिली-साधनासँ; आ हिन्दीमे कविता, कथा, गजल तथा समालोचनासँ जुड़ल कृतित्वक उल्लेख अछि। एहि बहुभाषिक पृष्ठभूमिक कारण 'बाल गोपाल'क काव्यभाषामे लोकवाचिक बज्जिका, संस्कृतमूलक साहित्यिक पदावली आ कतहु हिन्दी साहित्यिक संस्कारक सह-अस्तित्व बुझबा योग्य बनैत अछि।

भूमिकामे रचनाकार बज्जिका बाल-साहित्यक तत्कालीन आरम्भिक अवस्थाक उल्लेख करैत डॉ. सुरेन्द्र मोहन प्रसाद, डॉ. ब्रह्मदेव प्रसाद कार्यी, निर्मल मिलिन्द, डॉ. ब्रजनन्दन वर्मा, रामेश्वर प्रसाद आ स्वयं अपन साहित्यिक सक्रियताकेँ स्मरण करैत छथि। ई नामावली इतिहासक पूर्ण सूची नहि, मुदा एक समकालीन लेखकक आत्मदस्तावेज अवश्य अछि; समानान्तर साहित्येतिहास लेल एहन आत्मदस्तावेज विशेष महत्त्व रखैत अछि।

'बात के बात'क सबसँ उल्लेखनीय सूत्र ई अछि जे बाल-साहित्य रचबाक लेल वयस्क रचनाकारकेँ बालकक क्रीड़ा, कौतुक, हास-रुदन, जिज्ञासा, अनुकरण, अधिगम आ सामाजिक-संवेगात्मक विकासक स्तर धरि उतरि ओकर सहचर बनबाक चाही। लेखक अपन प्रकाशकीय हड़बड़ीक बात सेहो कहबी मार्फत

स्वीकार करैत छथि; ई आत्म-समीक्षा रचनाकारक आत्मविश्वासक संग आत्मसचेतता सेहो प्रकट करैत अछि।

भूमिकामे अलेक्जेंडर पोपक प्रसिद्ध उक्ति “What oft was thought, but ne’er so well expressed” क स्मरण लेखकक तुलनात्मक साहित्यिक चेतनाक परिचायक अछि। मुदा एहि समेकित समीक्षाक कसौटी लेखकक बाहरी उद्धरण नहि, मूल कविता आ लेखकक घोषित बाल-साहित्य-दृष्टि अछि।

३. समीक्षा-पद्धति : चारि परम्पराक संवाद

एहि कृतिक परीक्षण ‘एक सिद्धान्त सँ सम्पूर्ण कृतिक नाप’ नहि, बहु-दृष्टिक संवाद पर आधारित अछि। भारतीय काव्यशास्त्र भावक रसात्मक परिणति, व्यंजना, भाषिक वक्रता, गुण-रीति आ औचित्यक प्रश्न उठबैत अछि। पाश्चात्य समीक्षा अनुकृति, रूप, पुनरावृत्ति, पाठक-ग्रहण, वर्ग, सत्ता, संवादिता, बालक-प्रौढ़ तनाव आ पारिस्थितिक-सांस्कृतिक अर्थक प्रश्न खोलैत अछि। नव्य-न्याय शिक्षात्मक कवितामे ज्ञान-संचरण, शब्दबोध, व्याप्ति आ दृष्टान्तक तर्क-रचनाकेँ सूक्ष्म रूपेँ देखबाक अवसर दैत अछि। विदेह समानान्तर परम्परा स्थानीय अभिलेख, हाशियाक अनुभव, भाषिक स्वनाम, परम्पराक आलोचनात्मक उत्तराधिकार, साक्ष्य-अनुशासन आ आत्म-समीक्षाकेँ एक संग रखैत अछि।

एहि सिद्धान्तसभकेँ एक-दोसराक पर्याय मानल नहि गेल अछि। रस आ reader-response दुनू पाठक-अनुभवक प्रश्न उठा सकैत अछि, मुदा दूनू समान सिद्धान्त नहि; ध्वनि आ implied meaning मे संवाद सम्भव अछि, मुदा ऐतिहासिक-सैद्धान्तिक अन्तर बचाएब आवश्यक; वक्रोक्ति आ रूसी रूपवादक अपरिचितीकरणमे प्रश्नगत निकटता अछि, मुदा वंशानुक्रमिक समानता घोषित करब अनुचित। समानान्तर पद्धतिक मूल अनुशासन एहि अन्तरसभकेँ बचाएब अछि।

३.१ भारतीय समीक्षा-कसौटी

• रस : वात्सल्य, हास्य, अद्भुत, वीर, करुण, शान्त वा मिश्र भावक सौन्दर्यात्मक परिणति।

• ध्वनि : प्रत्यक्ष कथनसँ आगाँ सांस्कृतिक स्मृति, सम्बन्ध, सामाजिक प्रश्न आ भावक व्यंजना।

• वक्रोक्ति : बाल-उक्ति, पुनरावृत्ति, ध्वनि-अनुकरण, मानवीकरण, प्रश्न, तुक आ सामान्य वस्तुक कल्पनात्मक पुनर्रचना।

• गुण-रीति : प्रसाद, माधुर्य, ओज, सरलता, प्रवाह आ वाचिक सुश्राव्यता।

• औचित्य : बाल-वय, प्रसंग, शब्द-भार, उपदेश, भय, दण्ड, हास्य आ भाव-सन्तुलनक उपयुक्तता।

३.२ पाश्चात्य समीक्षा-कसौटी

• अनुकृति आ दैनिक जीवनक काव्यात्मक पुनर्रचना।

• रूपवाद/निकट-पाठ : refrain, ध्वनि, पुनरावृत्ति, अन्त्यानुप्रास, लघु पंक्ति आ वाचिक स्मृति।

• मार्क्सवादी वर्ग-पाठ : श्रम, गरीबी, शिक्षा-असमानता आ मालिक-सेवक शक्ति-सम्बन्ध।

• उत्तर-औपनिवेशिक/निम्नवर्गीय प्रश्न : स्थानीय ज्ञान, ग्रामीण अनुभव आ प्रतिनिधित्वक शक्ति।

• पाठक-ग्रहण : बालकक सक्रिय सहभागिता, मुखस्थता, उच्चारण, स्मृति आ अनुभव-संयोग।

• बाख्तिनी संवादिता : घरक बोली, विद्यालयी भाषा, सार्वजनिक राष्ट्र-पदावली, गामक लोक-संस्कृति आ आधुनिक तकनीकी शब्दक सह-अस्तित्व।

• बाल-साहित्य सिद्धान्त : बालकक स्वायत्त इच्छा आ प्रौढ़ लेखकक नैतिक/शैक्षिक नियमनक तनाव।

• पारिस्थितिक-सांस्कृतिक पाठ : गाछ, आम, धूरि, बाग, खाद्य, पशु, मेला आ श्रम-संसारक पर्यावरणीय-सांस्कृतिक अर्थ।

३.३ नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसीय कसौटी

• शब्द-प्रमाण/शाब्दबोध : शिक्षात्मक पद्य ज्ञान-संचरणक माध्यम कोना बनैत अछि।

• तात्पर्यग्रह : अक्षर, वस्तु-दृष्टान्त आ नैतिक कथनक अभिप्राय बालक कोना ग्रहण करैत अछि।

• व्याप्ति आ दृष्टान्त : शिक्षा, श्रम, अन्न, कल्याण आदि सम्बन्धी सार्वत्रिकतासदृश कथन कोना बनैत अछि।

• सावधानी : काव्य-पंक्तिक औपचारिक न्याय-अनुमान रूपमे कृत्रिम अनुवाद नहि; मात्र तर्क-संरचनाक विश्लेषण।

३.४ विदेह समानान्तर परम्पराक कसौटी

• अभिलेखीय मौन कथा गढ़बाक अनुमति नहि; अस्पष्ट पाठपर अनुमान नहि।

• हाशियाक स्वर ज्ञानगत रूपेँ महत्त्वपूर्ण, मुदा आलोचनातीत नहि।

• परम्परा आलोचनात्मक उत्तराधिकार अछि—संरक्षण, परीक्षण आ आवश्यक प्रश्न तीनू साथ।

• स्थानीय अभिलेख विशेषाधिकार प्राप्त सत्य नहि, साझीदार साक्ष्य अछि।

• भाषिक स्वनामक सम्मान—‘बज्जिका बाल कविता’केँ ओही आत्म-परिचयक संग पढ़ब।

• कैनन-विस्तार—बाल-साहित्य, लोकवाणी, गाम, खाद्य, खेल आ दैनिक जीवनकेँ साहित्येतिहासक वैध सामग्री मानब।

• आत्म-समीक्षा—क्षेत्रीय गौरव प्रमाणक विकल्प नहि।

४. बज्जिका-मैथिली भाषिक प्रसंग आ काव्यभाषा

‘बाल गोपाल’ अपन शीर्षक-पृष्ठपर स्वयं केँ ‘बज्जिका बाल कविता’ कहैत अछि; अतएव एहि समीक्षामे भाषिक आत्म-परिचय प्राथमिक अछि। बज्जिका आ मैथिलीक निकटता, साझा शब्दरूप, सांस्कृतिक भूगोल आ ऐतिहासिक सम्पर्क महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा समीक्षाक काज एक भाषाकेँ दोसरामे विलीन करब नहि। निकटता आ भिन्न स्वनाम—दुनू तथ्य एक संग राखल जाए।

भाषिक अवलोकनमे “हए/हय”, “करइत हए/रहइअ”, “देखलिऐ/खइलिऐ” सन क्रियारूप; “लगावऽ”, “फुटकाबऽ”, “देखाबऽ” सन आइ्आर्थक -ऽ; सम्बन्धकारक “के”; आ “हम्मर”, “ओकर”, “तोहर” सन सर्वनामक उल्लेख

अछि। मैथिली समीक्षा-भाषामे एहि रूपसभक रूपान्तर करब उचित नहि, कारण ई मूल कृतिक भाषिक साक्ष्य अछि।

काव्यभाषाक भीतर लोकवाचिक बज्जिका स्वर आ संस्कृतमूलक सार्वजनिक पदावलीक सह-अस्तित्व देखाइत अछि। घर, खेल, माय, इआ, निन्न, गाछी, चूड़ा आ मेला सम्बन्धी कविता अधिक बोलचाल-निकट अछि; राष्ट्र, गुरु, सदाचार आ शिक्षा सम्बन्धी कविता कतहु अधिक सार्वजनिक/शास्त्रीय पदावली ग्रहण करैत अछि। एहि द्वैधताकेँ सामान्यीकृत "अशुद्धि" कहब उचित नहि; कलात्मक प्रश्न ई अछि जे कोन ठाम ई मिश्रण सहज अछि आ कोन ठाम संदेशक भार बाल-लयकेँ कठोर बनबैत अछि।

५. विषय-विन्यास : राष्ट्रसँ आँगन, खेल, श्रम आ आधुनिकता धरि

विषयगत क्षेत्र	प्रतिनिधि कविता	मुख्य भाव/प्रतीक	मनोवैज्ञानिक-सामाजिक अर्थ
राष्ट्रबोध	अप्पन देस; भारत माँ; अभिलाषा; देश के झंडा; पंद्रह अगस्त	मातृभूमि, ध्वज, वीरता, सामूहिक स्मृति	सार्वजनिक नागरिकता; कतहु प्रौढ़ आदर्शक भार
लोक-क्रीड़ा आ कल्पना	मजा अबइत हए खेले में; ताल-गुल्ली; गुड़िया; पतंग; कागज के नाव; धुर खेल	देह, गति, साथी, रूपान्तरण, कौतूहल	सहकारिता, स्वायत्तता, सृजनशीलता

विषयगत क्षेत्र	प्रतिनिधि कविता	मुख्य भाव/प्रतीक	मनोवैज्ञानिक-सामाजिक अर्थ
वात्सल्य आ परिवार	बउआ के मुँह चानसन; हमर माय; हमर बालगोपाल; निनिया तू आ जो रे; नाना घर; अन्तर प्यार में	माय, निन्न, दादा, नाना, घरक पुचकार	भावात्मक सुरक्षा, सम्बन्ध, पीढ़ीगत स्मृति
शिक्षा आ सामाजिक यथार्थ	पढ़ रे बउआ; तरी आ छड़ी; पढ़े न जायब बाबू जी; हमर जमहिरा केना क पढ़तई; रमचरना	गुरु, छड़ी, पाठशाला, गरीबी, बाल-श्रम	बाल-अधिकार, भयमुक्त शिक्षा, वर्ग-विषमता
प्रकृति, खाद्य आ लोक-संस्कृति	सोनपुर के मेला; सुन्दर बाग लगाव; चूड़ा गमागम; गाछी के	मेला, गाछ, आम, जाँता, खाद्य, लोक-प्रदर्शन	क्षेत्रीय स्मृति, इन्द्रियबोध, घरेलू श्रम

विषयगत क्षेत्र	प्रतिनिधि कविता	मुख्य भाव/प्रतीक	मनोवैज्ञानिक-सामाजिक अर्थ
	आम; माय नचावे जाँता; गाम में मदारी		
आधुनिकता-बोध	घड़ी; गौंआ गोनू टीसन आयल; चान पर हमहूँ जायब	समय, रेल, अन्तरिक्ष-कौतूहल	स्थानीय जीवन आ आधुनिक गति/ज्ञानक अन्त:क्रिया

६. भारतीय काव्यशास्त्रीय पाठ

६.१ रस : वात्सल्यक प्रधानता, हास्य-अद्भुत, वीर आ करुणक विस्तार

'बाल गोपाल'क मूल रस-विन्यास एकरेखीय नहि अछि। आरम्भिक राष्ट्रकवितासभमे वीरभाव, गौरव आ सामूहिक ओज प्रमुख अछि; परिवार-केन्द्रित रचनासभमे वात्सल्य, माधुर्य आ निकटता; खेलक कवितासभमे हास्य, उत्साह आ चपलता; चान, पतंग, रेल, मेला, गुड़िया आ कागजक नावमे अद्भुत-कौतूहल; समय, श्रम आ बदलैत संसारक अन्तिम रचनासभमे शिक्षात्मक चिन्ता आ कखनहुँ शान्त/नीतिमूलक भाव भेटैत अछि।

वात्सल्य एहि संग्रहक सर्वाधिक स्वाभाविक सौन्दर्य-प्रदेश अछि। 'बउआ के मुँह चान सन' मे शिशुमुखक चन्द्र-उपमा, घरक पुचकार आ सम्बोधन स्वयं विभावक काज करैत अछि। कविता भावकेँ तर्कसँ नहि, पुकार, पुनरावृत्ति, लघु पद आ स्नेहचित्रसँ जगबैत अछि। एहि प्रकारक पाठमे सहृदय बालक नहि मात्र, माय-बाप, दादा-दादी वा परिवारक प्रौढ़ पाठक सेहो रसास्वादक बनैत

छथि। बाल-साहित्यक द्वैध-पाठकता एतय भारतीय रस-दृष्टि आ आधुनिक बाल-साहित्य-दृष्टि दुनू सँ पढ़ल जा सकैत अछि।

हास्य-रसक रूप शरारत, खेल, बिल्ली, मदारी, बाल-जिद्द, छड़ीक भय, रेलगाड़ी वा सामाजिक विसंगतिक हलुक प्रस्तुतीकरणमे भेटैत अछि। अद्भुतक मूल आधार 'दूर' वस्तुकेँ 'निकट' बनायब अछि—चानपर जायबाक अभिलाषा, पतंगक ऊर्ध्वगति, गुड़ियाक जीवित-जगत, कागजक नावक यात्रा, रेलक आगमन। बालकक संसारमे अद्भुत मात्र अलौकिक नहि; परिचित वस्तुक नूतन अनुभव सेहो अद्भुत अछि।

६.२ ध्वनि : प्रत्यक्ष अर्थक पाछाँ लोक-स्मृति आ सामाजिक प्रश्न

आनन्दवर्धनक ध्वनि-विचारक आलोकमे एहि पोथीक अनेक रचना अपन प्रत्यक्ष संदेशसँ बेसी सांस्कृतिक अर्थ धारण करैत अछि। 'नाना घर' मात्र नातेदारीक उल्लेख नहि; ग्रामीण बाल्यकालक छुट्टी, अपनापन, भोजन, खेल आ मातृकुलक विशिष्ट भाव-संसारक व्यंजना अछि। 'चूड़ा गमागम' मात्र खाद्य-वर्णन नहि; गन्ध, स्वाद, घरेलू श्रम आ क्षेत्रीय खान-पानक सामूहिक स्मृति जगबैत अछि। 'गाछी के आम' फलसँ आगाँ ऋतु, गाछी, सामूहिकता आ प्रतीक्षाक लोकानुभव बनि जाइत अछि।

'घड़ी'क टिक-टिक प्रत्यक्षतः समयक शिक्षा देत अछि, मुदा ध्वनित स्तरपर आधुनिक अनुशासन, विद्यालयी समय, श्रम-तालिका आ जीवनक क्षणभंगुरताक संकेत सेहो उपस्थित अछि। 'गौआ गोनू टीसन आयल' मे रेलक आगमन मात्र यन्त्रगत कौतूहल नहि; गामक स्थानीय समय आ बाहरी गतिशील संसारक मिलनक ध्वनि अछि। समानान्तर दृष्टिसँ एहि सूक्ष्म अर्थसभकेँ 'आधुनिकता बनाम परम्परा'क सरल द्वन्द्वमे नहि बाँधि, सह-अस्तित्वक बहुस्तरीय दृश्य मानब उचित अछि।

६.३ वक्रोक्ति : बाल-भाषाक काव्यात्मक विचित्रता

कुन्तकक वक्रोक्ति-सिद्धान्त कविता-भाषाक सामान्य व्यवहारसँ भिन्न रचनात्मक विन्यासपर बल दैत अछि। 'बाल गोपाल'मे ई विचित्रता प्रायः महान रूपक वा जटिल श्लेषसँ नहि, अपितु बाल-उक्ति, ध्वनि-अनुकरण, पुनरावृत्ति, सम्बोधन, प्रश्न, तुक, मानवीकरण आ वस्तु-लघुकरणसँ उत्पन्न होइत

अछि। ‘घड़ी’क ‘टिक-टिक’, ‘चूड़ा गमागम’क गन्ध-ध्वनि, ‘निनिया तू आ जो रे’क पुकार, ‘इआ ! तनि सेआन होए दे’क पुनरागमन—ई सभ वाचिक वक्रताक बाल-सुलभ रूप अछि।

वक्रोक्तिक सफलतम क्षण ओतय अछि जतय सामान्य वस्तु अनुभवक खेल बनि जाइत अछि—कागज नाव बनैत अछि, पतंग आकांक्षाक देह बनैत अछि, चान यात्रास्थल बनैत अछि, रेलगाड़ी गामक आँखि खोलैत अछि। एहि रचनासभमे काव्यत्व शब्दाडम्बरमे नहि, दृष्टि-परिवर्तनमे अछि।

६.४ गुण-रीति आ भाषिक प्रसाद

संग्रहक बालोपयोगी रचनामे प्रसाद-गुण प्रधान अछि—वाक्य छोट, क्रिया स्पष्ट, सम्बोधन प्रत्यक्ष आ भाव आसानीसँ ग्रहणीय। वात्सल्यप्रधान रचनामे माधुर्य, राष्ट्रप्रधान रचनामे ओज आ खेलप्रधान रचनामे चपल प्रवाह देखाइत अछि। तथापि जतय विद्यालयी राष्ट्रवादी पदावली वा नीतिवचनक भार बढ़ैत अछि, ओतय बाल-भाषाक सहज प्रसाद कनेक दबि जाइत अछि।

रीति-स्तरपर कवि लोकवाचिक बज्जिका स्वरकेँ मुद्रित साहित्यक संस्कृतनिष्ठ पदावलीसँ जोड़ैत छथि। एहि द्वैधताकेँ यांत्रिक ‘दोष’ कहब उचित नहि; ई समयक बहुभाषिक सामाजिक यथार्थक चिन्ह सेहो अछि। मुदा बाल-काव्यक कलात्मक कसौटीपर प्रश्न रहैत अछि—कोन रचनामे ई संगम सहज अछि आ कोन रचनामे संदेशक भार भाषाकेँ कठोर बनबैत अछि।

६.५ औचित्य : बाल-वय, शिक्षा आ दण्ड-संस्कृतिक कसौटी

क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचारक व्यापक अर्थमे बाल-साहित्य लेल ‘वय-औचित्य’, ‘भाव-औचित्य’, ‘भाषा-औचित्य’ आ ‘शिक्षा-औचित्य’ विशेष उपयोगी कसौटी बनैत अछि। ‘मेला देखब’, ‘गुड़िया’, ‘पतंग’, ‘कागज के नाव’, ‘गाछी के आम’, ‘माय नचावे जाँता’ सन रचनामे विषय आ बाल-रुचि सहज मिलैत अछि। ‘शिक्षक दिवस’, ‘विद्यादान’, ‘सार्थक जीवन’ मे शिक्षा मूल्यक रूपमे अबैत अछि, मुदा प्रौढ़ वाक्य-भार बढ़ैत अछि। ‘तरी आ छड़ी’ पुरान दण्डात्मक शाला-संस्कृतिक हास्य/भयक दस्तावेज बनैत अछि; आधुनिक बाल-अधिकारक कसौटीपर छड़ीक सामान्यीकरण स्वीकार्य नहि ठहरैत, यद्यपि साहित्येतिहासक साक्ष्य रूपमे रचना महत्त्वपूर्ण अछि।

एहि ठाम आलोचना आ संरक्षण दुनू एक संग आवश्यक अछि। समानान्तर परम्परा 'परम्परा = सत्य' नहि मानैत; परम्पराकेँ आलोचनात्मक उत्तराधिकार मानैत अछि। तैं पुरान शैक्षिक संस्कारक पाठकेँ मेटायब नहि, ओकर ऐतिहासिक अर्थ स्पष्ट करब आ आधुनिक नैतिक कसौटीसँ परीक्षण करब अधिक उचित अछि।

करुण रसक सामाजिक धार विशेषत: 'रमचरना' आ 'हम्मर जमहिरा केना क पढ़तई'मे तीव्र होइत अछि। भूख, घरक आर्थिक संकट, पाठशाला सँ दूरी आ बाल-श्रम प्रत्यक्ष विभाव बनैत अछि। एहि रचनासभक मार्मिकता एतय अछि जे दु:खक वर्णन मात्र दया उत्पन्न करबाक लेल नहि, शिक्षाक असमान उपलब्धिपर प्रश्न उठेबाक लेल सेहो काज करैत अछि।

'कइसन भेल संसार'मे प्रकाश-अँधार, सम्पन्नता-अभाव वा सामाजिक विषमताक प्रत्यक्ष दृश्य प्रत्यक्ष कथनसँ बेसी अर्थ धारण करैत अछि। ध्वनि-दृष्टिसँ बालकक विस्मय सामाजिक न्याय सम्बन्धी व्यापक प्रश्न दिशि संकेत करैत अछि; बाल-कण्ठक सरलता एहि व्यंजनाकेँ अधिक तीक्ष्ण बनबैत अछि।

७. पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तसँ बहुस्तरीय पाठ

७.१ अनुकृति : दैनिक जीवनक काव्यात्मक प्रतिष्ठा

अरस्तूक अनुकृति-विचारक व्यापक अर्थमे साहित्य जीवनक क्रिया, व्यवहार आ सम्भावनाकेँ कलात्मक रूप दैत अछि। 'बाल गोपाल'क विशेषता ई अछि जे एकर जीवन-जगत महाकाव्यिक घटना नहि; धूरि खेलब, गुड़िया, पतंग, जाँता, चूड़ा, आम, मेला, नाना-घर, घड़ी, रेलगाड़ी सन छोट अनुभव अछि। एहि 'छोट' अनुभवकेँ साहित्ययोग्य माननाइ बाल-साहित्यक लोकतान्त्रिक सौन्दर्यशास्त्र रचैत अछि।

अनुकृति एतय फोटोग्राफिक नकल नहि। 'चान पर हमहूँ जायब' प्रत्यक्ष यथार्थक पुनरावृत्ति नहि, बाल-इच्छाक सम्भाव्य संसार अछि। 'कागज के नाव' वस्तुकेँ खेल-यात्रामे बदलैत अछि। एहि कारण संग्रहमे कल्पना आ अनुभव परस्पर विरोधी नहि, परस्पर पोषक अछि।

७.२ रूपवाद आ निकट-पाठ : पुनरावृत्ति, ध्वनि आ वाचिक स्मृति

नव-समीक्षात्मक निकट-पाठक उपयोग एहि संग्रहमे विशेषत: ध्वनि-संरचना बुझबा लेल अछि। अनेक रचना refrain, सम्बोधन, लघु पंक्ति, अन्त्यानुप्रास आ लयात्मक पुनरागमनपर चलैत अछि। मुद्रित पृष्ठपर ई सरलता कखनहुँ साधारण बुझाइत अछि, मुदा मुखेँ पढ़ला पर ध्वनि-संरचना बालकक स्मृति, सहभागिता आ प्रत्युत्तरक अवकाश बनबैत अछि।

‘निनिया तू आ जो रे’ मे शीर्षक-संरचना स्वयं लोरीक आवर्तन संकेत करैत अछि। ‘घड़ी’ मे टिक-टिक अर्थ आ रूप दुनू अछि। ‘चूड़ा गमागम’ मे ‘गमागम’ स्वादसँ पहिने गन्धक ध्वन्यात्मक उपस्थिति रचैत अछि। ‘कइसन भेल संसार’ प्रश्नवाचक शीर्षक अन्तिम सामाजिक विस्मयकेँ रूपगत केन्द्र बनबैत अछि।

७.३ पाठक-ग्रहण : बालक सक्रिय अर्थ-निर्माता

वोल्फगांग आइज़रक ग्रहण-दृष्टि पाठककेँ अर्थ-निर्माणमे सक्रिय मानैत अछि। बाल-कवितामे ई सक्रियता आरो प्रत्यक्ष अछि: बालक पंक्ति दोहरबैत, ध्वनि नकल करैत, खेल पहिचानैत, अपन अनुभव जोड़ैत, चित्रक कल्पना करैत अछि। ‘मेला देखब’ पढ़निहार बालक अपन देखल मेला, झूला वा भीड़ जोड़ि सकैत अछि; ‘नाना घर’ अपन मातृकुलक स्मृतिसँ भरि सकैत अछि; ‘गाछी के आम’ स्वाद-गन्धक निजी अनुभव जगबैत अछि।

एहि कारण एहि पोथीक अर्थ स्थिर ‘सन्देश’ मात्र नहि। एके कविता गामक बालक, शहरक बालक, 2012क पाठक आ 2026क पाठक लेल भिन्न स्मृति-क्षेत्र खोलि सकैत अछि। बदलैत जीवन-स्थितिक कारण किछु वस्तु—जाँता, मदारी, परम्परागत खेल—नव पाठक लेल प्रत्यक्ष अनुभवक बदला सांस्कृतिक अभिलेख बनि सकैत अछि।

७.४ बाख्तिनी संवादिता : एक पोथीमे अनेक सामाजिक स्वर

संग्रहमे एकसमान ‘बाल-भाषा’ नहि, अनेक सामाजिक स्वर अछि—घरक पुचकार, इआक सम्बोधन, खेलक साथीक भाषा, गुरु-विद्यालयक आदेश, राष्ट्रक सार्वजनिक शब्दावली, गामक खाद्य-संस्कृति, मेले-हाट, श्रम, रेलगाड़ी आ आधुनिक समय। बाख्तिनक संवादिता-परिप्रेक्ष्यसँ ई बहुस्वरिता महत्त्वपूर्ण अछि।

एहि बहुस्वरितामे तनाव सेहो अछि। घरक स्वच्छन्द बालक विद्यालयी अनुशासनसँ भेटैत अछि; स्थानीय गाम राष्ट्रीय प्रतीकसँ भेटैत अछि; लोकखेल रेलगाड़ी आ घड़ीक आधुनिक समय-संरचनासँ भेटैत अछि। संग्रहक साहित्यिक मूल्य एहि विविधताकेँ एकरूप 'सुसंस्कृत बालक'मे समेटबामे नहि, अपितु ई देखबामे अछि जे बालजीवन अनेक संस्थागत स्वरक बीच बनैत अछि।

७.५ 'अन्तर्निहित प्रौढ़' : बाल-स्वरक पाछाँ मूल्य-नियमन

पेरी नोडेलमैन बाल-साहित्यक सरल सतहक भीतर प्रौढ़ ज्ञान, इच्छा आ मूल्य-व्यवस्था उपस्थित रहबाक बात करैत छथि। 'बाल गोपाल' एहि दृष्टिसँ अत्यन्त रोचक अछि। कवि भूमिका मे बालकक सहचर बनबाक आकांक्षा व्यक्त करैत छथि; तथापि राष्ट्र, गुरु, शिक्षा, समय, सार्थक जीवन आ सदाचारक अनेक रचनामे प्रौढ़ मार्गदर्शक स्पष्ट अछि।

ई उपस्थिति स्वयमेव दोष नहि। बाल-साहित्य प्रायः प्रौढ़ द्वारा बालक लेल लिखल जाइत अछि; प्रश्न ई अछि जे प्रौढ़ स्वर बालकक जिज्ञासा आ स्वायत्तताकेँ स्थान दैत अछि कि नहि। 'पढ़े न जायब बाबू जी' सन रचना एहि दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि, कारण बालक प्रतिरोधक स्वर ग्रहण करैत अछि। 'इआ ! तनि सेआन होए दे' मे बालक भविष्यक इच्छा स्वयं कहैत अछि। एहि रचनासभमे अन्तर्निहित प्रौढ़क एकाधिकार टूटैत अछि।

७.६ पारिस्थितिक आ सांस्कृतिक पाठ

बाग, गाछी, आम, धूरि, खेत, गाम, पशु-पक्षी, ऋतु आ खाद्य-सामग्री संग्रहक पारिस्थितिक आधार बनैत अछि। एहि प्रकृति-वर्णनकेँ मात्र सजावट मानब उचित नहि। बालकक खेल, भोजन, श्रम, परिवार आ उत्सव प्राकृतिक चक्रसँ जुड़ल अछि। 'सुन्दर बाग लगाव' प्रकृति प्रति क्रियाशील सम्बन्ध सुझबैत अछि; 'गाछी के आम' गाछीकेँ स्वादक सामाजिक स्थल बनबैत अछि; 'माय नचावे जाँता' घरेलू श्रम, अन्न आ देहगत लयकेँ एक संग आनैत अछि।

आधुनिक पारिस्थितिक समीक्षा एहि रचनासभसँ ई प्रश्न सेहो पूछि सकैत अछि जे प्रकृति मात्र मानव उपयोगक वस्तु अछि कि सह-अस्तित्वक संसार। संग्रह अधिकांशतः उपयोग, सौन्दर्य आ बाल-आनन्दक दृष्टि धरैत अछि; प्राणी-अधिकार वा पर्यावरणीय संकटक आधुनिक प्रश्न स्पष्ट नहि। ई

अनुपस्थिति दोष कहि देब उचित नहि; मुदा पुनर्पाठ लेल एकटा नूतन प्रश्न अवश्य अछि।

७.७ मार्क्सवादी वर्ग-पाठ : बाल-श्रम, मालिकाना शक्ति आ शिक्षा-असमानता

‘रमचरना’ आ ‘हम्मर जमहिरा केना क पढ़तई’ वर्ग-पाठक दृष्टिसँ संग्रहक विशेष महत्त्वपूर्ण रचना अछि। हाकिमक घरक सेवा, ईंटा-भट्ठाक श्रम, घट्टल घर आ पाठशाला धरि नहि पहुँचि सकबाक विवशता बाल-श्रमक भौतिक आधार उघारैत अछि। बाल-साहित्यक परम्परागत “निष्पाप बचपन”क एकरूपी कल्पना एतय टूटैत अछि; बालक उत्पादन, सेवा, गरीबी आ शिक्षा-असमानताक संरचनामे फँसल व्यक्ति रूपमे देखाइत अछि।

एहि कवितासभक आलोचनात्मक बल एतय अछि जे शिक्षाक नैतिक उपदेश आ शिक्षाक वास्तविक पहुँच बीच अन्तर स्पष्ट भऽ जाइत अछि। “पढ़ू” कहनाइ पर्याप्त नहि, जँ भोजन, अवकाश, आर्थिक सुरक्षा आ विद्यालय पहुँच उपलब्ध नहि। एहि प्रकार वर्ग-पाठ पोथीक शिक्षात्मक कार्यक्रमक भीतरक सामाजिक शर्तसभकेँ दृश्य बनबैत अछि।

७.८ उत्तर-औपनिवेशिक/निम्नवर्गीय प्रश्न : स्थानीय ज्ञानक प्रस्तुति

‘बउआ छिड़िआयल हय’मे डाइन-जोगिन, नजर-गुजर, ओझा-गुनी आ ग्राम्य उपचारविश्वक उल्लेख ग्रामीण चेतनाक आन्तरिक सांस्कृतिक तर्क उपस्थित करैत अछि। आधुनिक समीक्षा एहि तत्त्वसभकेँ बिना उपहासक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक साक्ष्य रूपमे पढ़ि सकैत अछि, मुदा एतय सावधानी आवश्यक अछि: लोकविश्वासक प्रस्तुति ओकर सत्यता सिद्ध नहि करैत, आ सांस्कृतिक सम्मान आलोचनात्मक परीक्षणक निषेध नहि।

निम्नवर्गीय प्रतिनिधित्वक प्रश्न सेहो एतय महत्त्वपूर्ण अछि—बालक, श्रमिक परिवार आ ग्रामीण पात्रक स्वर लेखक मार्फत अबैत अछि; तेँ “ई असली बालकक अथवा निम्नवर्गीयक सीधा स्वर अछि” एहन सरल दावा नहि कएल जा सकैत। पाठ प्रतिनिधित्व आ अनुभव बीच दूरीक स्मरण करब आवश्यक अछि।

८. नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसीय विश्लेषण

८.१ शब्द-प्रमाण, शाब्दबोध आ तात्पर्यग्रह

नव्य-न्यायक ज्ञानमीमांसीय दृष्टिसँ 'बाल गोपाल'क किछु शिक्षात्मक रचना शब्दमार्फत ज्ञान-संचरणक प्रक्रिया बुझबा लेल रोचक अछि। 'पढ़ रे बउआ', 'विद्यादान' आ वर्ण-शिक्षण सम्बन्धी रचनामे कविता स्मरणीय ध्वनि-रूप दैत अछि, जाहिसँ कथ्य बालकक कण्ठ आ स्मृतिमे टिकि सकैत अछि। अक्षरकेँ परिचित वस्तुसँ जोड़नाइ तात्पर्यग्रहक शैक्षिक सहजता बढ़बैत अछि।

एतय "शब्द-प्रमाण" शब्दक प्रयोग सावधानीसँ करबाक चाही। काव्यक गुरु-वाक्य स्वतः दार्शनिक अर्थमे आप्तवाक्य सिद्ध नहि; समीक्षात्मक अर्थ एतबे जे कविता भाषा, विश्वास आ स्मृति मार्फत ज्ञान-दाबी बालक धरि पहुँचबैत अछि। दार्शनिक कोटिक ई प्रयोग विश्लेषणक साधन अछि, मूल कविक घोषित न्याय-तत्त्व नहि।

८.२ व्याप्ति, दृष्टान्त आ शिक्षात्मक तर्क-रचना

'विद्यादान' सन रचनामे "विद्या" आ "कल्याण/महानता"क सम्बन्ध सार्वत्रिक नैतिक नियमक रूपमे प्रस्तुत होइत अछि; 'कृषक महान'मे अन्नक आवश्यकता आ कृषक-श्रमक महत्त्व जोड़ल जाइत अछि। ई संरचना व्याप्ति-दृष्टान्तक स्मरण करा सकैत अछि—सामान्य सम्बन्ध, परिचित उदाहरण, फेर निष्कर्ष। मुदा ई औपचारिक पंचावयव न्याय-अनुमान नहि; बाल-कविताक नैतिक-तर्कक एक सहज संरचना अछि।

नव्य-न्याय पठनक लाभ ई जे शिक्षा-कविताकेँ मात्र "उपदेश" कहि छोड़बाक बदला ई देखल जा सकैत अछि जे कथन कोन सम्बन्ध स्थापित करैत अछि, उदाहरण कोना चुनैत अछि, आ बालकक अनुभवसँ निष्कर्षक दूरी कतेक अछि। जँ सम्बन्ध अत्यधिक सामान्यीकृत अछि तँ कविता प्रश्नहीन नैतिक सूत्र बनि सकैत अछि; जँ दृष्टान्त अनुभवसँ जुड़ल अछि तँ शिक्षात्मक अर्थ अधिक जीवित बनैत अछि।

९. विदेह समानान्तर परम्परा-प्रतिमानसँ विशेष परीक्षण

९.१ स्वनामक सम्मान : 'बज्जिका बाल कविता'केँ ओही नामे पढ़ब

पोथी अपन नामकरणमे स्पष्ट अछि। अतएव समानान्तर पद्धतिक पहिल दायित्व भाषिक आत्म-परिचयक सम्मान अछि। मैथिली पाठक एहि शब्दरूप, वाक्यलय आ सांस्कृतिक निकटताकेँ सहज अनुभव कए सकैत छथि, मुदा समीक्षकक काज ई निकटताकेँ राजनीतिक वा भाषावैज्ञानिक विलयनमे बदलनाइ नहि। उचित पद्धति संवाद, तुलनात्मक शब्दरूप, साझा सांस्कृतिक भूगोल आ भिन्न स्वनाम—चारूकेँ एक संग देखब अछि।

९.२ कैननक सीमा तोड़नाइ

विदेह समानान्तर कैनन-परीक्षणक एक महत्त्वपूर्ण नियम बाल-साहित्य, मौखिक विधा, लोक-रचना आ डिजिटल/क्षेत्रीय सृजनकेँ प्रतिष्ठित साहित्यक संग पढ़नाइ अछि। ‘बाल गोपाल’ एहि दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ई बालकक घरेलू बोली आ दैनिक अनुभवकेँ ‘लघु’ मानि बाहर नहि छोड़ैत। जँ साहित्येतिहास मात्र दरबार, महाकवि, संस्कृत-शास्त्र, महान उपन्यास वा वयस्क राजनीतिक कविता धरि सीमित रहत, तँ बालकक भाषा, खेल, खाद्य, नाना-घर, जाँता, मदारी आ रेलगाड़ी अदृश्य रहि जायत।

९.३ स्थानीय अभिलेख : कविता सामाजिक इतिहासक पूरक साक्ष्य

समानान्तर इतिहास-दृष्टि साहित्यिक पाठकेँ सीधा इतिहास-तथ्य नहि मानैत, मुदा सांस्कृतिक स्मृति आ अनुभवक साक्ष्य रूपमे पढ़ैत अछि। ‘बाल गोपाल’ सँ 2012क आसपासक बज्जिका बाल-साहित्यक आदर्श, ग्रामीण बाल-जगत, राष्ट्रवादी विद्यालयी संस्कार, पारिवारिक संरचना, खेल, खाद्य, गुरु-शिष्य सम्बन्ध आ रेल/समयबोधक काव्यात्मक रूपक जानकारी भेटैत अछि। ई जानकारी ‘जे लिखल अछि से सामाजिक वास्तविकता हूबहू छल’ एहन दावा नहि; साहित्यिक चयन स्वयं एक मूल्य-व्यवस्था अछि।

एहि कारण ई पोथी सामाजिक इतिहासक पूरक अभिलेख होइत अछि, निर्णायक आँकड़ा नहि। जँ शोधकर्ता खेलक इतिहास लिखय चाहथि तँ एहि कविता संग मौखिक इतिहास, विद्यालयी स्मृति, लोकसंग्रह आ स्थानीय दस्तावेज जोड़ब आवश्यक होयत। ई बहु-साक्ष्य पद्धति समानान्तर दृष्टिक मूल शर्त अछि।

९.४ हाशियाक अनुभवक ज्ञानगत प्रासंगिकता

बालक स्वयं वयस्क साहित्यिक संस्थामे शक्तिशाली वक्ता नहि। लोकभाषिक बालक तऽ आरो कम। एहि कारण 'बाल गोपाल'क बाल-स्वर ज्ञानगत रूपेँ प्रासंगिक अछि। तथापि बालकक नामपर कवि जे कहैत छथि से सीधे 'बालकक असली आवाज' नहि मानल जा सकैत। अन्तर्निहित प्रौढ़, पाठ्य नैतिकता आ रचनाकारक चयन सभ जगह उपस्थित अछि। समानान्तर दृष्टि एहि दूनू बातकेँ एक संग मानैत अछि—हाशियाक अनुभव महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा आलोचनासँ मुक्त नहि।

९.५ परम्पराक आलोचनात्मक उत्तराधिकार

लोरी, खेल-गीत, परिवार, मेला, गाछी, चूड़ा, जाँता—ई सभ संरक्षणयोग्य सांस्कृतिक स्मृति अछि। परन्तु छड़ी-आधारित शिक्षा वा अत्यधिक आइ्ज्ञापालनक मूल्यकेँ मात्र 'हमर परम्परा' कहि अपरिवर्तनीय नहि मानल जा सकैत। बाल-साहित्यक पुनर्प्रकाशनमे मूल पाठ यथावत राखि आलोचनात्मक टिप्पणी द्वारा ऐतिहासिक सन्दर्भ देब सर्वाधिक उचित होयत। एहि प्रकार संरक्षण आ संशोधन परस्पर शत्रु नहि रहैत।

९.६ आत्म-समीक्षा : समानान्तर पद्धतिको प्रश्न

समानान्तर पद्धति स्वयं केँ क्षेत्रीय गौरवक प्रचार-पत्र बनएबाक अनुमति नहि दैत। 'बाल गोपाल' क्षेत्रीय बाल-साहित्यक महत्त्वपूर्ण पोथी अछि, मुदा एहि कारण एकर प्रत्येक कविता महान काव्य नहि भऽ जाइत। किछु रचना संदेशप्रधान अछि, किछुमे प्रौढ़ निर्देश बाल-स्वतन्त्रतापर भारी अछि, किछुमे चित्राभाव आधुनिक बाल-पाठक लेल सीमा बनेत। एहन आलोचना पोथीक ऐतिहासिक महत्त्व घटबैत नहि; उलटे ओकर वास्तविक स्थान स्पष्ट करैत अछि।

९.७ आत्मदस्तावेज, संस्थागत परिधि आ भाषिक आत्म-निर्माण

लेखकक भूमिका बज्जिका बाल-साहित्यक समकालीन सक्रिय रचनाकार/सम्पादकसभक नाम सुरक्षित करैत अछि। समानान्तर इतिहास-दृष्टिसँ ई सूची "अन्तिम अधिकृत कैनन" नहि, अपितु संस्थागत साहित्येतिहासक बाहर निर्मित आत्मदस्तावेज अछि। समर्पण, भूमिका, रचनासूची, स्थानीय पत्रिका-संलग्नता आ बहुभाषिक कृतित्व मिलि एक एहन

साहित्यिक वंशावली रचैत अछि जे केन्द्रीय संस्थागत मान्यताक प्रतीक्षा मात्र पर निर्भर नहि।

एहि प्रक्रियाकेँ भाषिक आत्म-निर्माणक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि: बालक लेल लोकभाषामे वर्ण, खेल, परिवार, राष्ट्र, मेला, श्रम आ आधुनिक यन्त्रक कविता लिखनाइ भाषाकेँ मात्र घरक मौखिक संचार नहि, मुद्रित ज्ञान-संस्कृतिक माध्यम बनबैत अछि। मुदा समानान्तर पद्धति एतहु आत्म-समीक्षा माँगैत अछि—भाषिक गौरव कृतिक प्रत्येक पंक्तिक कलात्मक सिद्धि नहि।

१०. विषयगत गहन समीक्षा

१०.१ राष्ट्र, मातृभूमि आ सार्वजनिक बालक

‘अप्पन देश’ सँ ‘पंद्रह अगस्त’ धरि आरम्भिक छह कविता बालककेँ सर्वप्रथम राष्ट्रक सदस्य रूपमे स्थापित करैत अछि। देशक प्राकृतिक सौन्दर्य, मातृरूप, जन्मभूमिक ऋण, ध्वजक प्रतीक आ स्वतन्त्रता-स्मृति—ई अनुक्रम सार्वजनिक नागरिकता बनबैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ ओज आ वीरभाव, पाश्चात्य बाल-साहित्य-दृष्टिसँ प्रौढ़ नागरिक आदर्श—दूनू एक संग उपस्थित अछि।

समस्या ई नहि जे बाल-साहित्यमे राष्ट्रबोध रहबाक चाही वा नहि; प्रश्न ई जे बालकक अनुभव आ राष्ट्रक अमूर्तता बीच कतेक जीवित सम्बन्ध बनैत अछि। जखन झण्डा रंग, आकार आ दृश्य बनि अबैत अछि, बालकक इन्द्रियबोध सक्रिय होइत अछि। जखन कविता ऐतिहासिक नाम आ आदर्शक सूची बनि जाइत अछि, बालकक प्रत्यक्ष भागीदारी घटि सकैत अछि। एहि कारण आरम्भिक खण्डक कलात्मक सफलता असमान अछि।

१०.२ खेल : देह, समुदाय आ स्वाधीनता

‘मजा अबइअत हुए खेले में’, ‘ताल-गुल्ली’, ‘गुड़िया’, ‘पतंग’, ‘कागज के नाव’, ‘धुर खेल’ आदि संग्रहक केन्द्रीय उपलब्धि अछि। खेलमे बालक मात्र विषय नहि, क्रियाशील कर्ता अछि। देह दौड़ैत, फेंकैत, पकड़ैत, उड़बैत, बनबैत, धूरिसँ सनैत अछि। एहि देहगत क्रियासँ कविता लय ग्रहण करैत अछि।

खेल सामूहिकता सेहो बनबैत अछि। बालक संग-साथी, विवाद, हँसी, हार-जीत आ नियम सीखैत अछि। लेखकक भूमिका मे ‘सामाजिक विकास’ जे

लक्ष्य कहल गेल अछि, ओकर सर्वाधिक स्वाभाविक काव्यरूप उपदेशमे नहि, खेलक रचनासभमे भेटैत अछि। ई महत्त्वपूर्ण अन्तर्दृष्टि अछि: मूल्य कथनसँ नहि, क्रियासँ अनुभूत होइत अछि।

१०.३ कल्पना : चान, पतंग, नाव आ गुड़ियाक संसार

बाल-कल्पनाक चारि रूप उल्लेखनीय अछि। पहिल, मानवीकरण—गुड़िया, चान, निन्न; दोसर, ऊर्ध्वाकांक्षा—पतंग आ चानपर यात्रा; तेसर, रूपान्तरण—कागज नाव बनैत अछि; चारिम, लघु संसार—खेलौना वा घरेलू वस्तु पूर्ण कथा-जगत ग्रहण करैत अछि। एहि सभमे अद्भुत आ वक्रोक्ति एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि।

‘चान पर हमहूँ जायब’ विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, कारण परम्परागत चन्दा-मामा/चानक आत्मीयता आधुनिक अन्तरिक्ष-कौतूहलसँ भेटैत अछि। कविता वैज्ञानिक विवरण नहि दैत, मुदा ‘दूर’ के ‘जाय सकब’ योग्य बनबैत अछि। बाल-कवितामे कल्पना ज्ञानक विरोधी नहि; ज्ञानक पहिल प्रश्न बनि सकैत अछि।

१०.४ परिवार : माय, निन्न, दादा, नाना-घर

‘हमर माय’, ‘निनिया तू आ जो रे’, ‘हमर दादा भेलन बलाह’, ‘नाना घर’, ‘अन्तर प्यार में’ आदिमे परिवार भावात्मक केन्द्र अछि। एहि परिवारमे सम्बोधनक वाचिकता महत्त्वपूर्ण अछि—‘माय’, ‘इआ’, ‘दादा’, ‘बाबू जी’। सामाजिक विज्ञानक निरपेक्ष शब्द ‘परिवार’ जे आत्मीयता नहि देत, कविता ओ आत्मीयता सम्बोधनसँ रचैत अछि।

‘नाना घर’ बालकक वैकल्पिक घरक अनुभव उपस्थित करैत अछि; ‘निन्न’ लोरी-परम्परासँ जोड़ैत अछि; ‘हमर माय’ वात्सल्य आ सुरक्षा; ‘अन्तर प्यार में’ सम्बन्धक भीतरक स्नेह-सूत्र। एहि खण्डमे कविक भाषा सर्वाधिक सहज आ माधुर्यपूर्ण होइत अछि।

१०.५ गाम, स्वाद आ श्रम

‘हमर गाँव’, ‘सुन्दर बाग लगाव’, ‘झमरी बिल्ली’, ‘चूड़ा गमागम’, ‘गाँव में मदारी’, ‘गाछी के आम’, ‘माय नचावे जाँता’—ई सभ मिलि ग्रामीण

सांस्कृतिक भूगोल रचैत अछि। गाम मात्र दृश्य नहि; स्वाद, गन्ध, ध्वनि, श्रम, मनोरञ्जन आ सम्बन्धक संगम अछि।

विशेषतः 'माय नचावे जाँता' घरेलू श्रमकेँ बालदृष्टिसँ दृश्य बनबैत अछि। जाँताक चक्र, मायकेँ केन्द्रित घरक श्रम आ अन्न-प्रक्रिया आधुनिक यान्त्रिक रसोईसँ भिन्न अनुभवक अभिलेख अछि। नारीवादी पाठ एतय घरेलू श्रमक दृश्यताकेँ सराहि सकैत अछि, संगहि प्रश्न करि सकैत अछि जे श्रमक भार, थकान वा लैंगिक विभाजन कविता मे कतेक स्पष्ट अछि। समानान्तर दृष्टि प्रशंसा आ प्रश्न दुनू बचबैत अछि।

'चूड़ा गमागम' आ 'गाछी के आम' स्वाद-साहित्यक बालरूप अछि। साहित्यिक संस्कृति मात्र महान मिथक आ शास्त्र नहि; भोजन सेहो स्मृति, ऋतु, श्रम आ क्षेत्रीय पहिचानक वाहक अछि। एहि ठाम संग्रहक सांस्कृतिक मूल्य अत्यन्त ठोस अछि।

१०.६ मेला, मदारी आ सार्वजनिक लोक-संस्कृति

'मेला देखब', 'सोनपुर के मेला' आ 'गाँव में मदारी' बालकेँ घरसँ बाहिर सार्वजनिक लोक-संसारमे लैत अछि। मेला रंग, भीड़, वस्तु, पशु, हाट आ प्रदर्शनक बहु-इन्द्रिय अनुभव अछि। मदारीक खेल चलायमान लोक-मनोरञ्जनक स्मृति अछि। डिजिटल दृश्य-संसारक पूर्व वा समांतर ई प्रत्यक्ष प्रदर्शन-संस्कृति बालकक सामूहिक विस्मय बनबैत अछि।

आधुनिक नैतिक पुनर्पाठमे पशु-प्रदर्शन वा सड़क-कलाकारक आर्थिक असुरक्षा सम्बन्धी प्रश्न उठि सकैत अछि; मूल कविता संभवतः बालकक कौतूहलपर केन्द्रित अछि। समीक्षकक कर्तव्य मूल पाठपर वर्तमान प्रश्न आरोपित करब नहि, अपितु पाठक ऐतिहासिक सीमा आ नव प्रश्न दुनू पृथक्-पृथक् स्पष्ट करब अछि।

१०.७ शिक्षा, गुरु आ अनुशासन

'शिक्षक दिवस', 'विद्यादान', 'पढ़ रे बउआ', 'तरी आ छड़ी', 'सार्थक जीवन', 'पढ़े न जायब बाबू जी' एकटा छोट शैक्षिक चक्र रचैत अछि। गुरु सम्मान, ज्ञान, श्रम, अनुशासन, प्रतिरोध—सभ स्वर एतय अछि। एहि कारण शिक्षा मात्र एकमुखी आदर्श नहि रहैत।

‘पढ़े न जायब बाबू जी’ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रतिरोधक रचना अछि। बालक विद्यालय न जायबाक अपन कारण, भय वा अनुभव प्रकट करैत अछि; ई स्वर अन्य उपदेशात्मक पाठसभक बीच असहमतिक अवकाश बनबैत अछि। बाख्तिनी दृष्टिसँ ई बहुस्वरिता, नोडेलमैनक दृष्टिसँ अन्तर्निहित प्रौढ़क सत्ता पर बाल-स्वरक प्रत्युत्तर, आ समानान्तर दृष्टिसँ संस्थागत शिक्षा पर भीतरसँ उठल प्रश्न अछि।

‘तरी आ छड़ी’ पुरान दण्ड-संस्कृतिक स्मृति अछि। एखन एहि रचनाकेँ बाल-दण्डक अनुमोदन रूपमे नहि, ऐतिहासिक शैक्षिक मानसिकताक आलोचनात्मक दस्तावेज रूपमे पढ़ब अधिक उचित अछि।

१०.८ समय, रेल आ बदलैत संसार

अन्तिम रचनासभ संग्रहकेँ पारम्परिक ग्रामीण बाल-जीवनसँ आधुनिक सामाजिक अनुभवक दिशामे खोलैत अछि। ‘घड़ी’ समयक अनुशासन आ क्षण-मूल्यक शिक्षा देत अछि; ‘गौआ गोनू टीसन आयल’ रेलगाड़ीकेँ दृश्य, गति आ तकनीकी कौतूहल बनबैत अछि; ‘कइसन भेल संसार’ सामाजिक परिवर्तनपर प्रश्नसूचक विस्मय व्यक्त करैत अछि।

एहि अन्तिम अनुक्रममे विशेष बात ई जे आधुनिकता मात्र महानगर रूपमे नहि अबैत; ओ घड़ी आ रेल द्वारा गाममे प्रवेश करैत अछि। समानान्तर इतिहासक भाषा मे ई ‘केन्द्र सँ परिधि’क एकतरफा कथा नहि, स्थानीय जीवन आ बाहरी गति-संरचनाक अन्तःक्रिया अछि।

११. बाल-मनोविज्ञान, शिक्षण-शास्त्र आ सामाजिक यथार्थ

रचनाकारक दीर्घ अध्यापन-अनुभव आ शिक्षाशास्त्रीय प्रशिक्षणक उल्लेख अछि। संग्रहक श्रेष्ठ खेल-कवितासभ देखबैत अछि जे बालकक संवेगात्मक सन्तुलन, समूहगत व्यवहार, नेतृत्व, सहकारिता आ देहगत अधिगम प्रत्यक्ष क्रियासँ विकसित होइत अछि। “मजा अबइत हए खेले में” सन रचनामे पढ़ाइ-खेलक तनाव बालकक अनुभवसँ उठैत अछि; “पढ़े न जायब बाबू जी”मे बालक असहमति प्रकट करैत अछि। ई स्वर बालककेँ निष्क्रिय संस्कार-ग्राहक बनबाक बदला अनुभववान व्यक्ति रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि।

दण्डात्मक शिक्षा सम्बन्धी कवितासभ ऐतिहासिक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि। छड़ीक भयक चित्रणकेँ आइ बाल-केन्द्रित शिक्षाक मानकसँ आलोचनात्मक रूपेँ पढ़बाक चाही। स्नेह, संवाद, खेल, प्रश्न, परिचित भाषा आ सक्रिय सहभागिता —ई सभ बाल-अधिगमक अधिक उपयुक्त साधन रूपमे संग्रहक सफल रचनासभ स्वयं उदाहरण दैत अछि।

बाल-श्रमक रचनासभ पोथीक नैतिक गम्भीरता बढ़बैत अछि। जमहिरा आ रमचरनाक माध्यमसँ ई प्रश्न उठैत अछि जे भूख, आर्थिक अभाव आ श्रमक दबावक बीच शिक्षा-अधिकार कोना सार्थक होयत। एतय कविता बाल-मनोविज्ञानकेँ सामाजिक संरचनासँ जोड़ैत अछि; बालकक मानसिक संसार गरीबी, श्रम, परिवार आ संस्थागत पहुँचसँ पृथक् नहि।

परिवारक रचनासभ भावात्मक सुरक्षा, पीढ़ीगत सम्बन्ध आ सम्बोधनक महत्त्व देखबैत अछि। माय, इआ, दादा, नाना-घर, निन्न—ई शब्द मात्र पात्र-सूची नहि, बालकक सुरक्षित सम्बन्ध-जाल अछि। तथापि आधुनिक समीक्षा परिवारक स्नेहक संग बालकक स्वायत्त इच्छा सेहो देखैत अछि; एहि कारण प्रतिरोध, जिद्द, प्रश्न आ खेलक स्वतंत्रता साहित्यिक रूपेँ विशेष महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।

१२. भाषा, ध्वनि, लय आ वाचिकता

‘बाल गोपाल’क भाषिक प्राण ओकर वाचिकता अछि। कविता सुनब, दोहरायब, गाबय वा अभिनय करबाक अनुकूल अछि। बाल-साहित्यक मुद्रित पाठ जँ कण्ठमे नाचि नहि सकय तँ ओकर आधा जीवन हराइत अछि। एहि पोथीक अनेक रचना—विशेषतः लोरी, खेल, ध्वनि-अनुकरण आ सम्बोधनप्रधान कविता—कण्ठगत प्रसार लेल बनल बुझाइत अछि।

बज्जिका रूपसभ संग्रहकेँ स्थानिक आत्मीयता दैत अछि—‘हमर’, ‘बउआ’, ‘इआ’, ‘हय’, ‘जायब’ आदि रूप पाठककेँ घरक वाणी सँ जोड़ैत अछि। एकरे संग राष्ट्र, शिक्षा आ नीतिपरक कवितासभमे संस्कृतनिष्ठ सार्वजनिक पदावली प्रवेश करैत अछि। एहि द्वैधताकेँ भाषिक अशुद्धि कहि काटि देनाइ उचित नहि; परन्तु सम्पादकीय नूतन संस्करणमे मूल वर्तनी सुरक्षित राखि शब्द-सूची देल जाए तँ नव पाठक लेल उपयोगी होयत।

ध्वनि-स्तरपर पुनरावृत्ति संग्रहक प्रधान युक्ति अछि। बालक पुनरावृत्तिमे ऊबैत नहि; ओ अनुमान, प्रत्युत्तर आ स्मृति बनबैत अछि। तथापि पुनरावृत्ति जँ मात्र तुक बचएबाक उपाय बनि जाए तँ रचना यांत्रिक भऽ सकैत अछि। सफल रचनामे पुनरावृत्ति अर्थ आ ध्वनि दुनूकेँ विस्तार दैत अछि।

अनुकरणात्मक आ ध्वन्यात्मक पद—टिक-टिक, गमागम, धाम-धूम, पुकार, टेक, पुनरावृत्ति—बाल-कविताक गेयता बढ़बैत अछि। एहन पद कागजपर अर्थ देबाक संग कण्ठमे लय उत्पन्न करैत अछि। संग्रहक वास्तविक सामर्थ्यक एक भाग मुद्रित दृश्यसँ बेसी श्रव्य प्रस्तुतीकरणमे निहित अछि।

१३. बाल-दृष्टि बनाम अन्तर्निहित प्रौढ़

संग्रहक मूल तनाव एहि प्रश्नमे अछि—कविता बालकक दृष्टिसँ संसार देखैत अछि, कि प्रौढ़ बालककेँ संसार देखबैत अछि? उत्तर द्विविध अछि। खेल, निन्न, गुड़िया, पतंग, नाव, चान, मेला, आम, बिल्ली, रेल आदिमे बाल-दृष्टि प्रबल अछि। राष्ट्र, गुरु, सार्थक जीवन, समय आदिमे प्रौढ़ शिक्षात्मक संरचना अधिक स्पष्ट अछि।

एहि द्विविधताकेँ दोष-सूची बनएबामे साहित्यिक इतिहासक जटिलता हराइत। 2012क क्षेत्रीय बाल-साहित्यक एक उद्देश्य मातृभाषिक मनोरञ्जन छल, दोसर उद्देश्य संस्कार/शिक्षा। लेखक भूमिका मे स्वयं ई दुनू लक्ष्य मानैत छथि। आलोचनाक काज ई देखब अछि जे कखन ई लक्ष्य संगत होइत अछि आ कखन शिक्षा काव्यपर भारी पड़ैत अछि।

सर्वोत्तम स्थिति ओ अछि जतय मूल्य अनुभवमे घुलि जाइत अछि। सामूहिक खेल स्वतः सहयोग सिखबैत अछि; बाग लगेनाइ प्रकृति-प्रेमक व्यवहार बनैत अछि; घड़ीक टिक-टिक समयक अर्थ अनुभूत करबैत अछि। कमजोर स्थिति ओतय अछि जतय कविता नैतिक वाक्यक पद्यरूप मात्र बनि जाइत अछि। एहि अन्तरकेँ पोथीक नूतन मूल्यांकनमे केन्द्रमे राखबाक चाही।

१४. ५१ कविताक क्रमिक समीक्षात्मक पंजी

निम्न पंजी उपलब्ध विस्तृत अनुक्रमक ५१ कविता क्रमशः देखैत अछि। मूल बज्जिका भाषिक रूपकेँ मैथिलीकरण नहि कएल गेल अछि। आलोचनात्मक केन्द्र समीक्षात्मक उपकरण अछि, मूल रचनाकारक घोषित सिद्धान्त नहि।

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
1	अप्पन देश / (पृ. 1)	देशक प्राकृतिक-सांस्कृतिक सौन्दर्य आ सामूहिक गौरव / भारतीय दृष्टि: वीर/ओज; प्रकृति विभाव / पाश्चात्य/समानान्तर: अनुकृति + सार्वजनिक बालक	आरम्भिक घोषणात्मक कविता; दृश्य बिम्ब जतय प्रबल, ओतय बाल-ग्रहण सहज।
2	भारत माँ / (पृ. 2)	राष्ट्रक मातृरूप आ त्याग-स्मृति / भारतीय दृष्टि: वीररस, मातृरूपक / पाश्चात्य/समानान्तर: अन्तर्निहित प्रौढ़; राष्ट्र-रूपक	भावात्मक देश-कल्पना; बाल-अनुभवक प्रत्यक्षता अपेक्षाकृत कम।
3	अभिलाषा / (पृ. 3)	देशसेवा/कर्तव्यक आकांक्षा / भारतीय दृष्टि: उत्साह-भाव, ओज / पाश्चात्य/समानान्तर: इच्छा-रचना; नागरिक आदर्श	बालकक भविष्य-इच्छा सार्वजनिक कर्तव्यसँ जुड़ैत; प्रौढ़ आदर्श स्पष्ट।
4	जन्म	जन्मभूमिसँ	भूगोलकेँ

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
	भूमि हे / (पृ. 4)	भावात्मक ऋण-सम्बन्ध / भारतीय दृष्टि: वीर/शान्त मिश्र; ध्वनि / पाश्चात्य/समानान्तर: स्थान-स्मृति	आत्मीय 'घर' बनबैत; सांस्कृतिक स्मृति प्रबल।
5	देश के झंडा / (पृ. 5)	ध्वजक रंग, प्रतीक आ राष्ट्र-स्मृति / भारतीय दृष्टि: रूपक, ओज / पाश्चात्य/समानान्तर: दृश्य-चिह्नक पाठ	बालक लेल अमूर्त राष्ट्रक दृश्य मूर्त रूप; शिक्षात्मकता आ दृश्यता संग-संग।
6	पंद्रह अगस्त / (पृ. 6)	स्वतन्त्रता-दिवस आ राष्ट्रीय स्मृति / भारतीय दृष्टि: वीररस / पाश्चात्य/समानान्तर: स्मृति-राजनीति; सार्वजनिक अनुष्ठान	इतिहास-नामावलीक भार किछु ठाम बाल-लय घटा सकैत, मुदा सामूहिक स्मरणक दस्तावेज।
7	बउआ के मुँह चानसन / (पृ. 7)	शिशुमुख, पुचकार, पारिवारिक वात्सल्य / भारतीय दृष्टि: वात्सल्य, उपमा,	संग्रहक स्वाभाविकतम वात्सल्य-कवितासभमे एक; चन्द्र-उपमा

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		माधुर्य / पाश्चात्य/समानान्तरः बाल-देहक सौन्दर्य; द्वैध पाठक	लोकवाचिक आत्मीयता रचैत।
8	मजा अबइअत हुए खेले में / (पृ. 8)	खेलक देहगत आनन्द आ साथीक संसार / भारतीय दृष्टिः हास्य/उत्साह; लय / पाश्चात्य/समानान्तरः खेल आ बाल-स्वायत्तता	लेखकक 'बालकक सहचर' सिद्धान्तक सफल क्रियान्वयन; उपदेशक बदला क्रिया।
9	इआ ! तनि सेआन होए दे / (पृ. 9–10)	इआक सम्बोधन आ 'बड़ होएब'क बाल-आकांक्षा / भारतीय दृष्टिः वात्सल्य, पुनरावृत्ति / पाश्चात्य/समानान्तरः बाल-स्वर; भविष्य-स्व	आवर्तन बालकक जिद्द/आकांक्षाकेँ जीवित बनबैत; प्रत्यक्ष संवादक शक्ति।
10	ताल-गुल्ली / (पृ. 11)	लोकखेल, नियम, गति आ सामूहिकता / भारतीय दृष्टिः हास्य/उत्साह; वाचिक लय / पाश्चात्य/समा	लोकखेलक सांस्कृतिक अभिलेख; देहगत क्रियासँ कविता गति पबैत।

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		नान्तरः देहगत खेल	
11	अगती / (पृ. 12)	बाल-शरारत आ छोट सामाजिक प्रसंग / भारतीय दृष्टिः हास्य, चरित्रचित्रण / पाश्चात्य/समा नान्तरः हास्यपूर्ण बाल-चरित्र; सामाजिक दृष्टि	प्रौढ़क नजर आ बाल-व्यवहारक टकराव छोट नाटकीय स्थिति रचैत।
12	गुड़िया / (पृ. 13)	गुड़िया-क्रीड़ा, कल्पना आ घरेलू नाट्य / भारतीय दृष्टिः अद्भुत, मानवीकरण / पाश्चात्य/समा नान्तरः लघु संसार; भूमिकाभिनय	खेलौना जीवित पात्र बनैत; बाल-कल्पनाक स्वायत्त संसार।
13	पतंग / (पृ. 14)	उड़ान, ऊर्ध्वगति, डोर आ आकांक्षा / भारतीय दृष्टिः अद्भुत; रूपक-ध्वनि / पाश्चात्य/समा नान्तरः कल्पना + स्वायत्त क्रिया	आकाशक दूरी खेलमे बदलैत; गति कविता-रूपकक केन्द्र।
14	सूरज चन्दा / (पृ. 15)	सूर्य-चन्द्रसँ बाल-संवाद/कल्पनात्मक निकटता /	आकाशीय वस्तु घरेलू परिचित

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		भारतीय दृष्टि: अद्भुत, वक्रोक्ति / पाश्चात्य/समानान्तर: आकाशक आत्मीयकरण	बनैत; बाल-कौतूहलक सहज रूप।
15	कागज के नाव / (पृ. 16)	कागजक वस्तु सँ नावक खेल-रूपान्तरण / भारतीय दृष्टि: अद्भुत, वक्रोक्ति / पाश्चात्य/समानान्तर: रूपान्तरकारी खेल	सामान्य वस्तु कल्पनाक यान; बाल-सृजनशीलताक प्रमुख कविता।
16	मुसकाय कन्हैया / (पृ. 17)	कन्हैयाक बाल-छवि आ स्नेह / भारतीय दृष्टि: वात्सल्य/भक्ति-छाया / पाश्चात्य/समानान्तर: सांस्कृतिक अन्तर्पाठ	धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृति बाल-वात्सल्यसँ मिलैत; छविमूलकता महत्त्वपूर्ण।
17	हमर माय / (पृ. 18)	मायक स्नेह, सुरक्षा आ घर / भारतीय दृष्टि: वात्सल्य, माधुर्य /	'माय' शब्द स्वयं भावक केन्द्र; घरेलू बाल-अस्तित्वक

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		पाश्चात्य/समानान्तरः देखभालक सम्बन्ध	आधार।
18	लाल / (पृ. 19)	बालक/लालक स्नेहमय चित्र / भारतीय दृष्टिः वात्सल्य / पाश्चात्य/समानान्तरः बाल-केन्द्रित दृष्टि	लघु बिम्ब आ पुचकारक रचना; भावक सरलता एकर बल।
19	हमर बालगोपाल / (पृ. 20)	बालगोपालक खेल-शरारत आ मोहकता / भारतीय दृष्टिः वात्सल्य + हास्य / पाश्चात्य/समानान्तरः शीर्षक-संकेतित बाल-प्रतिमा	संग्रह-शीर्षकक भाव-जगत उद्घाटित; बालकक चपलता काव्यक केन्द्र।
20	बउआ के जगअनी / (पृ. 21)	बालककेँ जगएबाक पुकार / भारतीय दृष्टिः वात्सल्य; ध्वनि-पुनरावृत्ति / पाश्चात्य/समानान्तरः वाचिक प्रस्तुति	पाठक वाचिक सहभागिता माँगैत; घरक जगारण संस्कारक छवि।
21	निनिया तू आ	निन्न/लोरी आ बाल-निद्रा /	मुद्रित कविता सँ

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
	जो रे / (पृ. 22)	भारतीय दृष्टि: वात्सल्य, माधुर्य, आवर्तन / पाश्चात्य/समानान्तर: लोरीक ग्रहण	बेसी कण्ठक विधा; वाचिक परम्परासँ गहिर सम्बन्ध।
22	बउआ छिड़िआयल हय / (पृ. 23)	रूसल/छिड़िआयल बालक आ मनुहार / भारतीय दृष्टि: वात्सल्य + हास्य / पाश्चात्य/समानान्तर: भाव-नियमन	बाल-भावकेँ मान्यता देत; प्रौढ़ मनुहारक संवाद भावात्मक साक्षरता बनबैत।
23	हमर दादा भेलन बलाह / (पृ. 24–25)	दादा, परिवार आ हास्यमय प्रसंग / भारतीय दृष्टि: हास्य + वात्सल्य / पाश्चात्य/समानान्तर: पारिवारिक कथन	दू पृष्ठक विस्तार छोट कथात्मक कविता बनबैत; पीढ़ीगत सम्बन्ध जीवित।
24	नाना घर / (पृ. 26)	मातृकुल, यात्रा, खेल आ अपनापन / भारतीय दृष्टि: वात्सल्य, ध्वनि / पाश्चात्य/समा	‘नाना घर’ वैकल्पिक बाल-घर; सांस्कृतिक भूगोलक आत्मीय स्थल।

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		नान्तरः स्मृति-स्थान	
25	अन्तर प्यार में / (पृ. 27)	सम्बन्धक भीतर स्नेह / भारतीय दृष्टिः माधुर्य, शान्त / पाश्चात्य/समा नान्तरः सम्बन्धपरक पाठ	बाह्य क्रियासँ भीतरक आत्मीयता दिशि गमन; संग्रहक भाव-ताल धीमा करैत।
26	मेला देखब / (पृ. 28)	मेला देखबाक बाल-कौतूहल / भारतीय दृष्टिः अद्भुत/हास्य / पाश्चात्य/समा नान्तरः लोक-दृश्य आ बाल-दृष्टि	रंग, भीड़, प्रदर्शनक प्रत्याशा; बालक सार्वजनिक लोक-संस्कृतिमे प्रवेश करैत।
27	चान पर हमहूँ जायब / (पृ. 29)	चान-यात्राक आकांक्षा / भारतीय दृष्टिः अद्भुत, वक्रोक्ति / पाश्चात्य/समा नान्तरः विज्ञान-कौतूहल आ कल्पना	लोकक चान आ आधुनिक अन्तरिक्ष-कौतूहलक संगम; संग्रहक सर्वाधिक कल्पनाशील रचनामे एक।
28	सोनपुर के मेला / (पृ. 30)	विशिष्ट क्षेत्रीय मेला आ यात्रा-अनुभव / भारतीय दृष्टिः	स्थानीय भूगोलक नामसहित लोक-संस्कृतिक

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		अद्भुत, लोक-रस / पाश्चात्य/समानान्तर: स्थान-विशिष्ट सांस्कृतिक अभिलेख	दस्तावेज; क्षेत्रीय स्मृति सघन।
29	कामना हुए / (पृ. 31)	इच्छा, नैतिक/सामाजिक आकांक्षा / भारतीय दृष्टि: शान्त/उत्साह / पाश्चात्य/समानान्तर: इच्छा आ प्रौढ़ मानक	बाल-इच्छा आ आदर्शक मिश्रण; किछु ठाम संदेशक भार बढ़ैत।
30	हमर गाम / (पृ. 32)	गामक दृश्य, जीविका, सम्बन्ध आ आत्मीयता / भारतीय दृष्टि: माधुर्य, प्रसाद / पाश्चात्य/समानान्तर: सांस्कृतिक भूगोल	गाम स्थिर पृष्ठभूमि नहि, जीवन-व्यवस्थाक समुच्चय; समानान्तर क्षेत्र-दृष्टि लेल केंद्रीय।
31	हमर देश के अपने रंग / (पृ. 33)	देशक विविधता/रंग / भारतीय दृष्टि: ओज, रूपक / पाश्चात्य/समानान्तर: बहुरंगी राष्ट्रीय प्रतिमा	राष्ट्रकेँ एकरूप नहि, रंग-विविधता रूपमे देखबाक प्रयत्न;

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
			सार्वजनिक बाल-चेतना।
32	धुर खेल / (पृ. 34)	धूरिमे खेल, देह आ माटि / भारतीय दृष्टि: हास्य/उत्साह / पाश्चात्य/समानान्तर: देहगत पारिस्थितिकी	माटिक संग बाल-देहक प्रत्यक्ष सम्बन्ध; स्वच्छता-नियमनसँ अलग मुक्त खेलक क्षेत्र।
33	सुन्दर बाग लगाव / (पृ. 35)	बाग लगेनाइ, फूल-पात आ सामूहिक श्रम / भारतीय दृष्टि: शान्त/अद्भुत; औचित्य / पाश्चात्य/समानान्तर: पारिस्थितिक शिक्षा	उपदेश क्रियात्मक बनैत— प्रकृति-प्रेम ‘लगाउ’क व्यवहारमे; सफल शिक्षात्मक कविता।
34	झमरी बिल्ली / (पृ. 36)	बिल्लीक चपलता, घरक हास्य / भारतीय दृष्टि: हास्य, मानवीकरण / पाश्चात्य/समानान्तर: पशु-बालक साक्षात्कार	लघु पशु-पात्र बाल-हास्यक माध्यम; दृश्यात्मक ता सशक्त।
35	कृषक महान /	किसान/श्रमक महत्ता / भारतीय	श्रम-केन्द्रिक सामाजिक

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
	(पृ. 37)	दृष्टिः वीर/ओज; नीति / पाश्चात्य/समानान्तरः श्रम-नीति	मूल्य; प्रौढ़ नीतिवाक्यक अंश, मुदा ग्रामीण अर्थव्यवस्था सँ सीधा सम्बन्ध।
36	चूड़ा गमागम / (पृ. 38)	चूड़ाक गन्ध, स्वाद, भोज्य-संस्कृति / भारतीय दृष्टिः माधुर्य, ध्वन्यात्मक वक्रोक्ति / पाश्चात्य/समानान्तरः इन्द्रियगत भौतिक संस्कृति	'गमागम' शब्द गन्धकेँ ध्वनिमे उपस्थित करैत; क्षेत्रीय स्वादक जीवित अभिलेख।
37	गाम में मदारी / (पृ. 39)	मदारीक खेल आ बालकक कौतूहल / भारतीय दृष्टिः अद्भुत/हास्य / पाश्चात्य/समानान्तरः प्रदर्शन-संस्कृति	सड़क/लोक-प्रदर्शनक स्मृति; सामूहिक दर्शकता बाल-संसारक हिस्सा।
38	गाछी के आम / (पृ. 40)	आम, गाछी, स्वाद आ ऋतु / भारतीय दृष्टिः माधुर्य, अद्भुत / पाश्चात्य/समा	फल, ऋतु, गाछी आ बाल-आनन्द एक संग; पारिस्थितिक-सांस्कृतिक

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		नान्तरः खाद्य-पारिस्थितिकी	पाठक उत्कृष्ट उदाहरण।
39	माय नचावे जाँता / (पृ. 41)	मायक घरेलू श्रम आ जाँताक लय / भारतीय दृष्टिः वात्सल्य + श्रम-बिम्ब / पाश्चात्य/समा नान्तरः लैंगिक श्रम; भौतिक संस्कृति	घरेलू श्रम दृश्य बनैत; नारीवादी पुनर्पाठ लेल महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक साक्ष्य।
40	शिक्षक दिवस / (पृ. 42)	गुरु-सम्मान आ शिक्षा / भारतीय दृष्टिः शान्त/आदरभाव / पाश्चात्य/समा नान्तरः विद्यालय संस्था	विद्यालयी सार्वजनिक संस्कार; बालकक अनुभवसँ किछु दूरी परन्तु संस्थागत स्मृति स्पष्ट।
41	विद्यादान / (पृ. 43)	ज्ञानक दान, गुरु आ अध्ययन / भारतीय दृष्टिः नीति, प्रसाद / पाश्चात्य/समा नान्तरः शिक्षात्मक पाठ	स्पष्ट शिक्षात्मक कविता; काव्यात्मकता संदेशसँ प्रतिस्पर्धा करैत अछि।
42	पढ़ रे बउआ / (पृ. 44)	पढ़ाइ, ज्ञान, भविष्य आ प्रोत्साहन /	सीधा सम्बोधन ऊर्जावान,

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		भारतीय दृष्टि: उत्साह; औचित्य / पाश्चात्य/समानान्तर: प्रौढ़ मार्गदर्शन	मुदा प्रौढ़ लक्ष्य-निर्धारण अधिक; बाल-स्वायत्तता सीमित।
43	तरी आ छड़ी / (पृ. 45)	छड़ी, विद्यालयी अनुशासन आ भय/हास्य / भारतीय दृष्टि: हास्य-भय मिश्र; औचित्य प्रश्न / पाश्चात्य/समानान्तर: अनुशासनकारी संस्था	ऐतिहासिक शाला-संस्कृतिक साक्ष्य; आधुनिक बाल-अधिकार दृष्टिसँ आलोचनात्मक पाठ आवश्यक।
44	सार्थक जीवन / (पृ. 46)	जीवन-मूल्य, श्रम आ सदाचार / भारतीय दृष्टि: शान्त/नीति / पाश्चात्य/समानान्तर: नैतिक प्रौढ़ स्वर	संदेशप्रधान; वयस्क जीवन-दर्शन बाल-कविता पर कनेक भारी, तथापि संग्रहक शिक्षात्मक धारा स्पष्ट।
45	पढ़े न जायब बाबू जी / (पृ. 47)	विद्यालय न जायबाक बाल-प्रतिरोध / भारतीय दृष्टि: हास्य/करुण	शैक्षिक खण्डक महत्त्वपूर्ण प्रतिवाद; बालक निष्क्रिय

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		छाया; संवाद / पाश्चात्य/समानान्तरः बाल-स्वायत्तता; अन्तर्निहित प्रौढक प्रतिवाद	आइआपालक नहि रहैत।
46	सटकी के फटकी फुटकाब ऽ / (पृ. 48)	स्थानीय क्रिया, खेल/खाद्य-संसार आ बाल-उक्ति / भारतीय दृष्टिः वाचिक लय, पुनरावृत्ति / पाश्चात्य/समानान्तरः स्थानीय भाषा-प्रदर्शन	स्थानीय शब्द-संसारक मूल्य उच्च; मानकीकरण सँ अधिक स्वाभाविक उच्चारण महत्त्वपूर्ण।
47	हम्मर जमहिरा केना क पढ़तई / (पृ. 49)	'जमहिरा' पकड़बाक हास्यमय/कौतूहलपूर्ण प्रसंग / भारतीय दृष्टिः हास्य, प्रश्न, वक्रोक्ति / पाश्चात्य/समानान्तरः हास्यमय पीछा; स्थानीय शब्दावली	अपरिचित स्थानीय पद स्वयं सांस्कृतिक साक्ष्य; सम्पादित संस्करणमे शब्दार्थ उपयोगी होयत।
48	रमचरना / (पृ. 50)	घरक आर्थिक-सामाजिक कठिनाइ आ जीविका-सम्बन्धी दृश्य /	बाल-संग्रहमे सामाजिक विषमता प्रवेश करैत; हलुक स्वरक

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		भारतीय दृष्टि: करुण-नीति छाया / पाश्चात्य/समानान्तर: सामाजिक भौतिक पाठ	पाछाँ जीवनक कठोरता दृश्य।
49	घड़ी / (पृ. 51)	समय, टिक-टिक, अनुशासन आ क्षण-मूल्य / भारतीय दृष्टि: ध्वन्यात्मक वक्रोक्ति; नीति / पाश्चात्य/समानान्तर: आधुनिक समयबोध	रूप आ संदेश सफलतासँ जुड़ैत; टिक-टिक कविता स्वयं समयक ध्वनि बनैत।
50	गौंआ गोनू टीसन आयल / (पृ. 52)	रेलगाड़ी/ टीसनक आगमन आ यान्त्रिक कौतूहल / भारतीय दृष्टि: अद्भुत, ओज / पाश्चात्य/समानान्तर: तकनीक आ गामक मिलन	गाम आ आधुनिक परिवहनक मिलन; ध्वनि-गति बालकक विस्मय रचैत।
51	कइसन भेल संसार / (पृ. 53)	बदलैत सामाजिक संसारपर विस्मय/प्रश्न / भारतीय दृष्टि:	प्रश्नसूचक अन्त संग्रहकेँ बन्द न करि खुला छोड़ैत; बाल-जगत

क्र·	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		चिन्तन, करुण/हास्य छाया / पाश्चात्य/समानान्तर: सामाजिक आलोचना; खुला प्रश्न	व्यापक सामाजिक परिवर्तनसँ जुड़ैत।

१५. समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष

१५.१ सिद्धान्तसभक समानान्तर तुलनात्मक सार

एहि कृतिक गहन पाठसँ स्पष्ट होइत अछि जे भारतीय आ पाश्चात्य सिद्धान्त एक-दोसराकेँ प्रतिस्थापित नहि करैत, अपितु अलग प्रश्न खोलैत अछि। विदेह समानान्तर पद्धति एहि भिन्नताकेँ बचबैत हुए संवादक क्षेत्र बनबैत अछि।

प्रश्न	भारतीय दृष्टि	पाश्चात्य दृष्टि	'बाल गोपाल' मे निष्पत्ति
पाठकक भावानुभव	रस/ सहृदय	Reader-response	वात्सल्य, खेल आ अद्भुतक रचनामे पाठक सक्रिय भाव-ग्रहण करैत।
अप्रत्यक्ष अर्थ	ध्वनि	implied meaning /	नाना-घर,

प्रश्न	भारतीय दृष्टि	पाश्चात्य दृष्टि	'बाल गोपाल' मे निष्पत्ति
		readerly inference	चूड़ा, गाछी, घड़ी आदिमे प्रत्यक्ष वस्तुसँ आगाँ सांस्कृतिक स्मृति।
काव्य भाषाक विशिष्टता	वक्रोक्ति	defamiliarization / formal attention	ध्वनि-अनुकरण, पुनरावृत्ति, मानवीकरण आ वस्तु-रूपान्तरण।
उपयुक्तता	औचित्य	age-appropriateness / child-address	खेल-प्रकृति रचनामे उच्च; छड़ी/ अधिक उपदेश मे प्रश्न।
रूप आ ध्वनि	गुण-रीति/	close reading / formalism	लय, refrain, छोट

प्रश्न	भारतीय दृष्टि	पाश्चात्य दृष्टि	‘बाल गोपाल’ मे निष्पत्ति
	अलंकार		पंक्ति आ कण्ठगतता कृतिक बल।
बहु-स्वर	—	dialogism / heteroglossia	घर, शाला, राष्ट्र, गाम, लोक-हाट आ आधुनिक तकनीक क सामाजिक स्वर सह-अस्तित्वमे।
बालक बनाम प्रौढ़	औचित्य क प्रश्न	hidden adult / child agency	‘पढ़े न जायब बाबू जी’ प्रौढ़ नियंत्रण क भीतर बाल-प्रतिवाद खोलैत।

प्रश्न	भारतीय दृष्टि	पाश्चात्य दृष्टि	‘बाल गोपाल’ मे निष्पत्ति
साक्ष्य आ कैनन	शास्त्रीय पाठ-पद्धति सँ बाहरक प्रश्न	cultural studies / canon critique	विदेह समानान्तर प्रतिमान बाल-साहित्य, स्थानीय भाषा आ दैनिक जीवन कैं कैननमे स्थान दैत।

१५.२ प्रमुख साहित्यिक उपलब्धि

‘बाल गोपाल’क स्थायी उपलब्धि ई जे ओ बालकक स्थानीय संसारकेँ साहित्ययोग्य मानैत अछि। गाम, धूरि, गुड़िया, पतंग, कागजक नाव, नाना-घर, जाँता, चूड़ा, गाछी, आम, मदारी, रेलगाड़ी—ई सभ ‘छोट’ वस्तु साहित्यिक केन्द्र बनैत अछि। एहि प्रक्रियामे बालक अपन बोली आ परिवेशकेँ मुद्रित पृष्ठपर देखैत अछि। भाषा-सम्मानक ई रूप शिक्षा-नीतिक घोषणासँ अधिक प्रभावी होइत अछि, कारण साहित्य स्वयं कहैत अछि—तोहर संसार लिखबाक योग्य अछि।

१५.३ कलात्मक असमानता

संग्रहक सभ कविता समान कलात्मक उँचाइपर नहि। राष्ट्रवादी आ नीतिपरक किछु रचना प्रत्यक्ष सन्देशपर अधिक निर्भर अछि; खेल, वात्सल्य, लोरी, खाद्य, मेला, प्रकृति आ आधुनिक कौतूहलक रचनासभ अपेक्षाकृत बहुस्तरीय अछि। एहि असमानताकेँ लुकाएब पोथीक सम्मान नहि।

साहित्येतिहासिक महत्त्व आ प्रत्येक कविताक कलात्मक सिद्धि दू अलग प्रश्न अछि।

१५.४ बाल-साहित्यक भीतर शक्ति-सम्बन्ध

पोथी बालककेँ कखन स्वायत्त कर्ता, कखन संस्कार-ग्रहणकर्ता बनबैत अछि। एहि द्वन्द्वक कारण ई संग्रह आधुनिक आलोचनाक लेल उपयोगी अछि। ‘पढ़े न जायब बाबू जी’ सन बाल-प्रतिरोधक स्वर प्रौढ़ अनुशासनक बीच संवाद खोलैत अछि। यदि संग्रहमे एहन प्रश्नाकुल बाल-स्वर आरो अधिक रहितए तँ आधुनिक बाल-साहित्यक दृष्टिसँ एकर बहुस्वरिता आरो प्रखर होइत।

१५.५ भाषिक महत्त्व

बज्जिका बाल-कविताक मुद्रित संग्रह रूपमे एकर शब्दसंसार शोधोपयोगी अछि। स्थानीय सर्वनाम, क्रियारूप, सम्बोधन, खेलक नाम, खाद्य, घर-परिवार आ लोकोक्तिसदृश लय मौखिक भाषाकेँ लिखित रूप दैत अछि। भावी सम्पादित संस्करणमे मूल पाठ अछूत्ते राखि कठिन पदक शब्दकोश, ध्वनि-पाठ आ स्थानीय उच्चारणक अभिलेख जोड़ल जाए तँ भाषा-अध्ययनक मूल्य अनेकगुणा बढ़त।

१५.६ दृश्य-विन्यास आ नव संस्करणक सम्भावना

आवरणपर बालसमूहक चित्र अछि, मुदा भीतरी कविता-पृष्ठ प्रायः पाठप्रधान अछि। आधुनिक बाल-संस्करणमे मूल पाठक संग स्थानीय चित्रकला वा सरल रेखांकन, कविता-पाठक ध्वनि-QR, शब्दार्थ, खेलक लघु परिचय आ सांस्कृतिक टिप्पणी जोड़ल जा सकैत अछि। ई जोड़ मूल पाठक स्थान नहि लेत, ओकर ग्रहण-क्षमता बढ़ाओत। विशेषतः ‘ताल-गुल्ली’, ‘जाँता’, ‘मदारी’, ‘जमहिरा’ सन पद/प्रसंग नव पीढ़ी लेल व्याख्या माँगि सकैत अछि।

नव संस्करणमे मूल बज्जिका पाठ अछूत्ते राखि कठिन स्थानीय पदक बज्जिका-मैथिली शब्दार्थ, स्थानीय शैलीक रेखांकन, वाचिक पाठक ध्वनि-संकेत, खेल/लोकवस्तुक लघु सांस्कृतिक परिचय आ सम्पादकीय टिप्पणी जोड़ल जा सकैत अछि। “मानकीकरण”क नामपर मूल काव्यभाषाक स्थानीय रूप मेटाएब उचित नहि; सम्पादकीय सुविधा मूल पाठक ऊपर अलग स्तर रूपमे रहबाक चाही।

१५.७ विदेह समानान्तर परम्पराक निर्णय

समानान्तर दृष्टिसँ 'बाल गोपाल'क मूल्य चारि स्तरपर अछि। पहिल—कृति रूपमे, जतय किछु कविता सौन्दर्यतः विशेष सफल अछि। दोसर—भाषिक अभिलेख रूपमे, जतय बज्जिका बाल-वाणी मुद्रित रूप पबैत अछि। तेसर—सांस्कृतिक इतिहास रूपमे, जतय खेल, खाद्य, श्रम, मेला, परिवार, गुरु, समय आ रेलक अनुभव सुरक्षित अछि। चारिम—कैनन-संशोधन रूपमे, जतय बाल-साहित्य क्षेत्रीय साहित्येतिहासक परिधिसँ केन्द्र दिशि अबैत अछि।

एहि निर्णयक संग आत्म-समीक्षा अनिवार्य अछि: पोथीक क्षेत्रीय अस्मिता ओकर प्रत्येक पंक्तिक कलात्मक सिद्धिक प्रमाण नहि; बालकक नामपर कहल प्रत्येक नीति बालकक स्वायत्त स्वर नहि; स्थानीय परम्परा आलोचनातीत नहि; आ पाश्चात्य वा भारतीय सिद्धान्तक नाम मात्र लगेला सँ समीक्षा गहन नहि भऽ जाइत। वास्तविक गहनता पाठ, सिद्धान्त आ ऐतिहासिक परिस्थिति बीच प्रमाणित संवादमे अछि। 'बाल गोपाल' एहि संवादक योग्य पोथी अछि।

१६. विस्तृत निष्पत्ति

शंभु 'अगेही'क 'बाल गोपाल'क सबसँ उज्ज्वल क्षण ओतय अछि जतय बालकक आँखि, कान, जिह्वा, देह आ कल्पना एक संग सक्रिय होइत अछि। चान, नाव, पतंग, चूड़ा, आम, मेला, निन्न, रेल आ खेल—ई सभ इन्द्रियगम्य संसार कविता बनैत अछि। भारतीय रस-दृष्टि एहि अनुभवमे वात्सल्य, हास्य, अद्भुत आ उत्साहक आस्वाद देखैत अछि; ध्वनि-सिद्धान्त प्रत्यक्ष वस्तुक पाछाँ पारिवारिक-सांस्कृतिक स्मृति; वक्रोक्ति सामान्य वस्तुक कल्पनात्मक रूपान्तरण; औचित्य बाल-वय आ उपदेशक अनुपातक परीक्षण करैत अछि।

पाश्चात्य समीक्षा एहि कृतिक दोसर आयाम खोलैत अछि। अनुकृति-विचार दैनिक जीवनकेँ काव्ययोग्य ठहरबैत; रूपगत पाठ पुनरावृत्ति, ध्वनि आ वाचिकतालै ध्यान दैत; पाठक-ग्रहण बालकक सक्रिय सहभागिता देखबैत; संवादिता घर, शाला, राष्ट्र, गाम आ आधुनिक तकनीकक अनेक स्वर एकठाम सुनैत; 'अन्तर्निहित प्रौढ़' सिद्धान्त लेखकक शिक्षात्मक इच्छाकेँ प्रश्नांकित करैत अछि।

विदेह समानान्तर परम्परा एहि दुनू परम्पराकेँ सन्तुलित करैत अछि, मुदा कृत्रिम समन्वय नहि बनबैत। ओ कहैत अछि—समान प्रश्न देखू, समानता थोपब नहि; स्थानीय साक्ष्यकेँ सुनू, ओकरा अचूक मत मानू नहि; हाशियाक स्वरकेँ स्थान दिअ, मुदा आलोचना छोड़ू नहि; परम्परा बचाउ, मुदा अन्याय वा अनुपयुक्तता पर प्रश्न करू; कैनन विस्तृत करू, मुदा क्षेत्रीय गौरवकेँ प्रमाणक विकल्प मत बनाउ।

एहि कसौटीपर ‘बाल गोपाल’ बज्जिका बाल-साहित्यक संरक्षण, पुनर्पाठ आ आलोचनात्मक पुनर्मुद्रण योग्य कृति अछि। एकर महत्त्व विशेषतः एहि बातमे अछि जे ई बालककेँ बाहरसँ ‘उच्च’ साहित्य नहि दैत, ओकर अपन बोली, माय, इआ, दादा, नाना-घर, खेल, माटि, खाद्य, गाछी आ गामकेँ साहित्यक दर्जा दैत अछि। साहित्यिक लोकतन्त्रक आरम्भ अक्सर एतहि सँ होइत अछि—जखन पाठक अपनहि संसारकेँ पाठमे देखैत अछि।

समग्र निष्कर्ष ई अछि जे ‘बाल गोपाल’केँ न तँ मात्र ऐतिहासिक कौतूहल रूपमे सीमित कएल जा सकैत अछि, न क्षेत्रीय गौरवक कारण आलोचनासँ ऊपर राखल जा सकैत अछि। एकर श्रेष्ठ कविता बालकक इन्द्रिय, खेल, सम्बन्ध, कल्पना आ बोलीकेँ काव्य बनबैत अछि; एकर दुर्बल रचना प्रायः प्रत्यक्ष उपदेशक भारसँ ग्रस्त अछि। एहि दू ध्रुवक बीच पोथी बज्जिका बाल-साहित्यक लिखित विकास, उत्तर-बिहार/मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक स्मृति, बाल-अधिकार, शिक्षा आ स्थानीय भाषिक आत्मसम्मानक अध्ययन लेल दीर्घजीवी सामग्री प्रदान करैत अछि।

ग्रन्थसूची

निम्न ग्रन्थसूचीमे मात्र पुस्तक/ग्रन्थ राखल गेल अछि। वेबसाइट, वेब-पृष्ठ, भिडियो, डिजिटल लिंक, समाचार वा अनलाइन स्रोत जानि-बुझि कऽ सम्मिलित नहि कएल गेल अछि।

प्राथमिक ग्रन्थ

अगेही, शंभु। बाल गोपाल : बज्जिका बाल कविता। प्रथम संस्करण। दरभंगा: सृष्टि-दृष्टि, २०१२।

भारतीय काव्यशास्त्र आ साहित्य-सिद्धान्त

भरतमुनि। नाटचशास्त्र।

आनन्दवर्धन। ध्वन्यालोक।

अभिनवगुप्त। अभिनवभारती।

अभिनवगुप्त। ध्वन्यालोक-लोचन।

कुन्तक। वक्रोक्तिजीवित।

मम्मट। काव्यप्रकाश।

क्षेमेन्द्र। औचित्यविचारचर्चा।

विश्वनाथ कविराज। साहित्यदर्पण।

जगन्नाथ पण्डितराज। रसगंगाधर।

भामह। काव्यालंकार।

दण्डी। काव्यादर्श।

न्याय, नव्य-न्याय आ भारतीय ज्ञानमीमांसा

गंगेश उपाध्याय। तत्त्वचिन्तामणि।

अन्नंभट्ट। तर्कसंग्रह तथा दीपिका।

Matilal, Bimal Krishna. Epistemology, Logic and Grammar in Indian Philosophical Analysis. Mouton, 1971.

Matilal, Bimal Krishna. Perception: An Essay on Classical Indian Theories of Knowledge. Oxford University Press, 1986.

Phillips, Stephen H. Epistemology in Classical India: The Knowledge Sources of the Nyaya School. Routledge, 2012.

पाश्चात्य समीक्षा, रूपवाद, वर्ग आ उत्तर-औपनिवेशिक अध्ययन

Aristotle. Poetics.

Shklovsky, Viktor. Theory of Prose. Dalkey Archive Press, 1990.

Bakhtin, M. M. The Dialogic Imagination: Four Essays. University of Texas Press, 1981.

Iser, Wolfgang. The Act of Reading: A Theory of Aesthetic Response. Johns Hopkins University Press, 1978.

Rosenblatt, Louise M. The Reader, the Text, the Poem: The Transactional Theory of the Literary Work. Southern Illinois University Press, 1978.

Eagleton, Terry. Marxism and Literary Criticism. Routledge, 1976.

Lukács, Georg. The Theory of the Novel. MIT Press, 1971.

Said, Edward W. Orientalism. Pantheon Books, 1978.

Spivak, Gayatri Chakravorty. A Critique of Postcolonial Reason: Toward a History of the Vanishing Present. Harvard University Press, 1999.

Garrard, Greg. Ecocriticism. Routledge, 2004.

बाल-साहित्य, बाल-पाठक आ शिक्षा

Hunt, Peter. Criticism, Theory, and Children’s Literature. Basil Blackwell, 1991.

Nodelman, Perry. The Hidden Adult: Defining Children’s Literature. Johns Hopkins University Press, 2008.

Rose, Jacqueline. The Case of Peter Pan, or The Impossibility of Children’s Fiction. Macmillan, 1984.

Stephens, John. Language and Ideology in Children’s Fiction. Longman, 1992.

Nikolajeva, Maria. The Rhetoric of Character in Children’s Literature. Scarecrow Press, 2002.

Piaget, Jean. The Language and Thought of the Child. Routledge & Kegan Paul, 1926.

Vygotsky, L. S. Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes. Harvard University Press, 1978.

Dewey, John. Democracy and Education. Macmillan, 1916.

Freire, Paulo. Pedagogy of the Oppressed. Continuum, 1970.

भाषा, लोक-संस्कृति आ सामाजिक पृष्ठभूमि

Grierson, George A. Linguistic Survey of India, Vol. V, Part II: Bihari and Oriya Languages. Government of India, 1903.

Masica, Colin P. The Indo-Aryan Languages. Cambridge University Press, 1991.

Finnegan, Ruth. Oral Poetry: Its Nature, Significance and Social Context. Cambridge University Press, 1977.

Bauman, Richard. Verbal Art as Performance. Waveland Press, 1984.

Ariès, Philippe. Centuries of Childhood: A Social History of Family Life. Vintage Books, 1962.

२

[बज्जिका मैथिली]

‘बाल गोपाल’

शंभु ‘अगेही’ के बज्जिका बाल-कविता-संग्रह के समेकित गहन समीक्षा

भारतीय काव्यशास्त्र · पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त · नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा · विदेह समानान्तर परम्परा

सार-संक्षेप

शंभु प्रसाद सिन्हा ‘शंभु अगेही’ के ‘बाल गोपाल’ बज्जिका बाल-कविता के एहन संग्रह हए जे में राष्ट्रबोध से घर-आँगन, खेल, निन्न, परिवार, मेला, खाद्य-संस्कृति, गाम, श्रम, विद्यालय, घड़ी आ रेल धरि बालजीवन के अनेक स्तर उपस्थित हए। कृति के स्थायी मूल्य एकर सभ कविता के समान कलात्मक सिद्धि में नइ, अपितु बालक के स्थानीय बोली, माय, इआ, दादा, नाना-घर, खेल, माटि, चूड़ा, गाछी, मेला, जाँता, विद्यालय आ बदलेइत संसार के मुद्रित बाल-साहित्य के विषय बनएबा में हए। जखन कवि बालक के सहचर बनइत हथिन, कविता सहज, सुश्राव्य आ संवेदनात्मक होइत हए; जखन प्रौढ़ उपदेश, राष्ट्र-

नीति वा अनुशासन के भार बढ़इत हए, बाल-दृष्टि के स्वाभाविकता कनेक दबि जाइत हए। ए समेकित समीक्षा में रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, गुण-रीति, औचित्य; अनुकृति, रूपवाद, वर्ग-पाठ, उत्तर-औपनिवेशिक/निम्नवर्गीय प्रश्न, पाठक-ग्रहण, संवादिता, अन्तर्निहित प्रौढ़, पारिस्थितिक पाठ; नव्य-न्याय के शब्द-प्रमाण, व्याप्ति आ दृष्टान्त; तथा विदेह समानान्तर परम्परा के साक्ष्य-अनुशासन, बहुकेन्द्रिकता, भाषिक स्वनाम के सम्मान आ आत्म-समीक्षा के परस्पर संवाद में राखल गेल हए।

१. ग्रन्थ-परिचय, प्रकाशन-सूचना आ पाठ-सावधानी

मापदण्ड	विवरण
पोथी के नाम	बाल गोपाल (बज्जिका बाल कविता)
रचनाकार	शंभु प्रसाद सिन्हा 'अगेही'
प्रथम संस्करण	२०१२
प्रकाशक	सृष्टि-दृष्टि, शुभंकरपुर, दरभंगा
मुद्रक	त्रिदेव/त्रिदेवा प्रिन्टर्स, दरभंगा
समर्पण	महाकवि हरेन्द्र सिंह विप्लव, 'कच देवयानी'क प्रणेता
विधा	बाल-कविता / शिशु-साहित्य
अनुक्रम	५१ पृथक् कविता-शीर्षक
रचनाकार के शैक्षणिक परिचय	एम.ए. (हिन्दी, अर्थशास्त्र), बी.एल., Dip. in Ed.

समर्पण-पृष्ठ कृति के साहित्यिक आत्म-स्थिति बुझबा लेल महत्त्वपूर्ण हए। रचनाकार अपन बाल-काव्य के बज्जिका साहित्य के पूर्ववर्ती महाकाव्यात्मक उपलब्धि से जोड़इत हथिन। ए संग 'बात के बात' शीर्षक भूमिका स्पष्ट करइत हए जे पोथी संयोगवश जोड़ल कविता-पुंज नइ, बाल-साहित्य के कार्य, भाषा आ बाल-मनोविज्ञान सम्बन्धी एक चेतन कार्यक्रम के परिणाम हए।

पाठ-सावधानी आवश्यक हए। जहाँ मूल बज्जिका शीर्षक उद्धृत हए, ओकर भाषिक रूप समीक्षा-मैथिली के अनुकूल बदलल नइ गेल हए।

२. रचनाकार, बहुभाषिक साहित्यिक पृष्ठभूमि आ 'बात के बात'

पोथी के अन्तिम परिचय-अंश के आधार पर शंभु अगेही हिन्दी, बज्जिका आ मैथिली तीनू भाषा में सक्रिय रचनाकार रूप में उभरइत हथिन। 'ओझराएल डीह', 'सतंजा', 'तेसरी बेरिया', 'छंद विभास' आ 'कीर्तिलता' के काव्यात्मक अनुवाद बज्जिका-साधना से; 'रश्मिधन्वा' मैथिली-साधना से; आ हिन्दी में कविता, कथा, गजल तथा समालोचना से जुड़ल कृतित्व के उल्लेख हए। ए बहुभाषिक पृष्ठभूमि के कारण 'बाल गोपाल' के काव्यभाषा में लोकवाचिक बज्जिका, संस्कृतमूलक साहित्यिक पदावली आ कतहु हिन्दी साहित्यिक संस्कार के सह-अस्तित्व बुझबा योग्य बनइत हए।

भूमिका में रचनाकार बज्जिका बाल-साहित्य के तत्कालीन आरम्भिक अवस्था के उल्लेख करइत डॉ. सुरेन्द्र मोहन प्रसाद, डॉ. ब्रह्मदेव प्रसाद कार्यी, निर्मल मिलिन्द, डॉ. ब्रजनन्दन वर्मा, रामेश्वर प्रसाद आ स्वयं अपन साहित्यिक सक्रियता के स्मरण करइत हथिन। ई नामावली इतिहास के पूर्ण सूची नइ, मुदा एक समकालीन लेखक के आत्मदस्तावेज अवश्य हए; समानान्तर साहित्येतिहास लेल एहन आत्मदस्तावेज विशेष महत्त्व रखइत हए।

'बात के बात' के सबसे उल्लेखनीय सूत्र ई हए जे बाल-साहित्य रचबा लेल वयस्क रचनाकार के बालक के क्रीड़ा, कौतुक, हास-रुदन, जिज्ञासा, अनुकरण, अधिगम आ सामाजिक-संवेगात्मक विकास के स्तर धरि उतरि ओकर सहचर बनबा के चाही। लेखक अपन प्रकाशकीय हड़बड़ी के बात सेहो कहबी मार्फत स्वीकार करइत हथिन; ई आत्म-समीक्षा रचनाकार के आत्मविश्वास के संग आत्मसचेतता सेहो प्रकट करइत हए।

भूमिका में अलेक्जेंडर पोप के प्रसिद्ध उक्ति "What oft was thought, but ne'er so well expressed" के स्मरण लेखक के तुलनात्मक साहित्यिक चेतना के परिचायक हए। मुदा ए समेकित समीक्षा के कसौटी लेखक के बाहरी उद्धरण नइ, मूल कविता आ लेखक के घोषित बाल-साहित्य-दृष्टि हए।

३. समीक्षा-पद्धति: चारि परम्परा के संवाद

ए कृति के परीक्षण ‘एक सिद्धान्त से सम्पूर्ण कृति के नाप’ नइ, बहु-दृष्टि के संवाद पर आधारित हए। भारतीय काव्यशास्त्र भाव के रसात्मक परिणति, व्यंजना, भाषिक वक्रता, गुण-रीति आ औचित्य के प्रश्न उठबइत हए। पाश्चात्य समीक्षा अनुकृति, रूप, पुनरावृत्ति, पाठक-ग्रहण, वर्ग, सत्ता, संवादिता, बालक-प्रौढ़ तनाव आ पारिस्थितिक-सांस्कृतिक अर्थ के प्रश्न खोलइत हए। नव्य-न्याय शिक्षात्मक कविता में ज्ञान-संचरण, शब्दबोध, व्याप्ति आ दृष्टान्त के तर्क-रचना के सूक्ष्म रूप में देखबा के अवसर देत हए। विदेह समानान्तर परम्परा स्थानीय अभिलेख, हाशिया के अनुभव, भाषिक स्वनाम, परम्परा के आलोचनात्मक उत्तराधिकार, साक्ष्य-अनुशासन आ आत्म-समीक्षा के एक संग रखइत हए।

ए सिद्धान्त सभ के एक-दोसरा के पर्याय मानल नइ गेल हए। रस आ reader-response दुनू पाठक-अनुभव के प्रश्न उठा सकइत हए, मुदा दूनू समान सिद्धान्त नइ; ध्वनि आ implied meaning में संवाद सम्भव हए, मुदा ऐतिहासिक-सैद्धान्तिक अन्तर बचाएब आवश्यक; वक्रोक्ति आ रूसी रूपवाद के अपरिचितीकरण में प्रश्नगत निकटता हए, मुदा वंशानुक्रमिक समानता घोषित करब अनुचित। समानान्तर पद्धति के मूल अनुशासन ए अन्तर सभ के बचाएब हए।

३.१ भारतीय समीक्षा-कसौटी

• रस: वात्सल्य, हास्य, अद्भुत, वीर, करुण, शान्त वा मिश्र भाव के सौन्दर्यात्मक परिणति।

• ध्वनि: प्रत्यक्ष कथन से आगे सांस्कृतिक स्मृति, सम्बन्ध, सामाजिक प्रश्न आ भाव के व्यंजना।

• वक्रोक्ति: बाल-उक्ति, पुनरावृत्ति, ध्वनि-अनुकरण, मानवीकरण, प्रश्न, तुक आ सामान्य वस्तु के कल्पनात्मक पुनर्रचना।

• गुण-रीति: प्रसाद, माधुर्य, ओज, सरलता, प्रवाह आ वाचिक सुश्राव्यता।

• औचित्य: बाल-वय, प्रसंग, शब्द-भार, उपदेश, भय, दण्ड, हास्य आ भाव-सन्तुलन के उपयुक्तता।

३.२ पाश्चात्य समीक्षा-कसौटी

• अनुकृति आ दैनिक जीवन के काव्यात्मक पुनर्रचना।

• रूपवाद/निकट-पाठ: refrain, ध्वनि, पुनरावृत्ति, अन्त्यानुप्रास, लघु पंक्ति आ वाचिक स्मृति।

• मार्क्सवादी वर्ग-पाठ: श्रम, गरीबी, शिक्षा-असमानता आ मालिक-सेवक शक्ति-सम्बन्ध।

• उत्तर-औपनिवेशिक/निम्नवर्गीय प्रश्न: स्थानीय ज्ञान, ग्रामीण अनुभव आ प्रतिनिधित्व के शक्ति।

• पाठक-ग्रहण: बालक के सक्रिय सहभागिता, मुखस्थता, उच्चारण, स्मृति आ अनुभव-संयोग।

• बाख्तिनी संवादिता: घर के बोली, विद्यालयी भाषा, सार्वजनिक राष्ट्र-पदावली, गाम के लोक-संस्कृति आ आधुनिक तकनीकी शब्द के सह-अस्तित्व।

• बाल-साहित्य सिद्धान्त: बालक के स्वायत्त इच्छा आ प्रौढ़ लेखक के नैतिक/शैक्षिक नियमन के तनाव।

• पारिस्थितिक-सांस्कृतिक पाठ: गाछ, आम, धूरि, बाग, खाद्य, पशु, मेला आ श्रम-संसार के पर्यावरणीय-सांस्कृतिक अर्थ।

३.३ नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसीय कसौटी

• शब्द-प्रमाण/शाब्दबोध: शिक्षात्मक पद्य ज्ञान-संचरण के माध्यम केना बनइत हए।

• तात्पर्यग्रह: अक्षर, वस्तु-दृष्टान्त आ नैतिक कथन के अभिप्राय बालक केना ग्रहण करइत हए।

• व्याप्ति आ दृष्टान्त: शिक्षा, श्रम, अन्न, कल्याण आदि सम्बन्धी सार्वत्रिकतासदृश कथन केना बनइत हए।

• सावधानी: काव्य-पंक्ति के औपचारिक न्याय-अनुमान रूप में कृत्रिम अनुवाद नइ; मात्र तर्क-संरचना के विश्लेषण।

३.४ विदेह समानान्तर परम्परा के कसौटी

• अभिलेखीय मौन कथा गढ़बा के अनुमति नइ; अस्पष्ट पाठ पर अनुमान नइ।

• हाशिया के स्वर ज्ञानगत रूप में महत्त्वपूर्ण, मुदा आलोचनातीत नइ।

• परम्परा आलोचनात्मक उत्तराधिकार हए—संरक्षण, परीक्षण आ आवश्यक प्रश्न तीनू साथ।

• स्थानीय अभिलेख विशेषाधिकार प्राप्त सत्य नइ, साझीदार साक्ष्य हए।

• भाषिक स्वनाम के सम्मान—'बज्जिका बाल कविता' के ओही आत्म-परिचय के संग पढ़ब।

• कैनन-विस्तार—बाल-साहित्य, लोकवाणी, गाम, खाद्य, खेल आ दैनिक जीवन के साहित्येतिहास के वैध सामग्री मानब।

• आत्म-समीक्षा—क्षेत्रीय गौरव प्रमाण के विकल्प नइ।

४. बज्जिका-मैथिली भाषिक प्रसंग आ काव्यभाषा

'बाल गोपाल' अपन शीर्षक-पृष्ठ पर स्वयं के 'बज्जिका बाल कविता' कहइत हए; अतएव ए समीक्षा में भाषिक आत्म-परिचय प्राथमिक हए। बज्जिका आ मैथिली के निकटता, साझा शब्दरूप, सांस्कृतिक भूगोल आ ऐतिहासिक सम्पर्क महत्त्वपूर्ण हए, मुदा समीक्षा के काज एक भाषा के दोसरा में विलीन करब नइ। निकटता आ भिन्न स्वनाम—दुनू तथ्य एक संग राखल जाए।

भाषिक अवलोकन में "हए/हय", "करइत हए/रहइअ", "देखलिऐ/खइलिऐ" सन क्रियारूप; "लगावऽ", "फुटकाबऽ", "देखाबऽ" सन आइ्सार्थक -ऽ; सम्बन्धकारक "के"; आ "हम्मर", "ओकर", "तोहर" सन सर्वनाम के उल्लेख हए। मैथिली समीक्षा-भाषा में ए रूप सभ के रूपान्तर करब उचित नइ, कारण ई मूल कृति के भाषिक साक्ष्य हए।

काव्यभाषा के भीतर लोकवाचिक बज्जिका स्वर आ संस्कृतमूलक सार्वजनिक पदावली के सह-अस्तित्व देखाइत हए। घर, खेल, माय, इआ, निन्न, गाछी, चूड़ा आ मेला सम्बन्धी कविता अधिक बोलचाल-निकट हए; राष्ट्र, गुरु, सदाचार आ शिक्षा सम्बन्धी कविता कतहु अधिक सार्वजनिक/शास्त्रीय पदावली ग्रहण करइत हए। ए द्वैधता के सामान्यीकृत "अशुद्धि" कहब उचित नइ; कलात्मक

प्रश्न ई हए जे कोन ठाम ई मिश्रण सहज हए आ कोन ठाम संदेश के भार बाल-लय के कठोर बनबइत हए।

५. विषय-विन्यास: राष्ट्र से आँगन, खेल, श्रम आ आधुनिकता धरि

विषयगत क्षेत्र	प्रतिनिधि कविता	मुख्य भाव/प्रतीक	मनोवैज्ञानिक-सामाजिक अर्थ
राष्ट्रबोध	अप्पन देस; भारत माँ; अभिलाषा; देश के झंडा; पंद्रह अगस्त	मातृभूमि, ध्वज, वीरता, सामूहिक स्मृति	सार्वजनिक नागरिकता; कतहु प्रौढ़ आदर्श के भार
लोक-क्रीड़ा आ कल्पना	मजा अबइत हए खेले में; ताल-गुल्ली; गुड़िया; पतंग; कागज के नाव; धुर खेल	देह, गति, साथी, रूपान्तरण, कौतूहल	सहकारिता, स्वायत्तता, सृजनशीलता
वात्सल्य आ परिवार	बउआ के मुँह चानसन; हमर माय; हमर बालगोपाल; निनिया तू आ जो	माय, निन्न, दादा, नाना, घर के पुचकार	भावात्मक सुरक्षा, सम्बन्ध, पीढ़ीगत स्मृति

विषयगत क्षेत्र	प्रतिनिधि कविता	मुख्य भाव/प्रतीक	मनोवैज्ञानिक-सामाजिक अर्थ
	रे; नाना घर; अन्तर प्यार में		
शिक्षा आ सामाजिक यथार्थ	पढ़ रे बउआ; तरी आ छड़ी; पढ़े न जायब बाबू जी; हमर जमहिरा केना क पढ़तई; रमचरना	गुरु, छड़ी, पाठशाला, गरीबी, बाल-श्रम	बाल-अधिकार, भयमुक्त शिक्षा, वर्ग-विषमता
प्रकृति, खाद्य आ लोक-संस्कृति	सोनपुर के मेला; सुन्दर बाग लगाव; चूड़ा गमागम; गाछी के आम; माय नचावे जाँता; गाम में मदारी	मेला, गाछ, आम, जाँता, खाद्य, लोक-प्रदर्शन	क्षेत्रीय स्मृति, इन्द्रियबोध, घरेलू श्रम
आधुनिकता-बोध	घड़ी; गौंआ गोनू	समय, रेल, अन्तरिक्ष-	स्थानीय जीवन आ आधुनिक

विषयगत क्षेत्र	प्रतिनिधि कविता	मुख्य भाव/प्रतीक	मनोवैज्ञानिक-सामाजिक अर्थ
	टीसन आयल; चान पर हमहूँ जायब	कौतूहल	गति/ज्ञान के अन्त:क्रिया

६. भारतीय काव्यशास्त्रीय पाठ

६.१ रस: वात्सल्य के प्रधानता, हास्य-अद्भुत, वीर आ करुण के विस्तार

‘बाल गोपाल’ के मूल रस-विन्यास एकरेखीय नइ हए। आरम्भिक राष्ट्रकविता सभ में वीरभाव, गौरव आ सामूहिक ओज प्रमुख हए; परिवार-केन्द्रित रचना सभ में वात्सल्य, माधुर्य आ निकटता; खेल के कविता सभ में हास्य, उत्साह आ चपलता; चान, पतंग, रेल, मेला, गुड़िया आ कागज के नाव में अद्भुत-कौतूहल; समय, श्रम आ बदलेइत संसार के अन्तिम रचना सभ में शिक्षात्मक चिन्ता आ कखनहुँ शान्त/नीतिमूलक भाव भेटइत हए।

वात्सल्य ए संग्रह के सर्वाधिक स्वाभाविक सौन्दर्य-प्रदेश हए। ‘बउआ के मुँह चान सन’ में शिशुमुख के चन्द्र-उपमा, घर के पुचकार आ सम्बोधन स्वयं विभाव के काज करइत हए। कविता भाव के तर्क से नइ, पुकार, पुनरावृत्ति, लघु पद आ स्नेहचित्र से जगबइत हए। ए प्रकार के पाठ में सहृदय बालक नइ मात्र, माय-बाप, दादा-दादी वा परिवार के प्रौढ़ पाठक सेहो रसास्वादक बनइत हथिन। बाल-साहित्य के द्वैध-पाठकता इहाँ भारतीय रस-दृष्टि आ आधुनिक बाल-साहित्य-दृष्टि दुनू से पढ़ल जा सकइत हए।

हास्य-रस के रूप शरारत, खेल, बिल्ली, मदारी, बाल-जिद्द, छड़ी के भय, रेलगाड़ी वा सामाजिक विसंगति के हलुक प्रस्तुतीकरण में भेटइत हए। अद्भुत के मूल आधार ‘दूर’ वस्तु के ‘निकट’ बनायब हए—चान पर जायबा के अभिलाषा, पतंग के ऊर्ध्वगति, गुड़िया के जीवित-जगत, कागज के नाव के यात्रा, रेल के आगमन। बालक के संसार में अद्भुत मात्र अलौकिक नइ; परिचित वस्तु के नूतन अनुभव सेहो अद्भुत हए।

६.२ ध्वनि: प्रत्यक्ष अर्थ के पाछे लोक-स्मृति आ सामाजिक प्रश्न

आनन्दवर्धन के ध्वनि-विचार के आलोक में ए पोथी के अनेक रचना अपन प्रत्यक्ष संदेश से बेसी सांस्कृतिक अर्थ धारण करइत हए। 'नाना घर' मात्र नातेदारी के उल्लेख नइ; ग्रामीण बाल्यकाल के छुट्टी, अपनापन, भोजन, खेल आ मातृकुल के विशिष्ट भाव-संसार के व्यंजना हए। 'चूड़ा गमागम' मात्र खाद्य-वर्णन नइ; गन्ध, स्वाद, घरेलू श्रम आ क्षेत्रीय खान-पान के सामूहिक स्मृति जगबइत हए। 'गाछी के आम' फल से आगे ऋतु, गाछी, सामूहिकता आ प्रतीक्षा के लोकानुभव बनि जाइत हए।

'घड़ी' के टिक-टिक प्रत्यक्षत: समय के शिक्षा देत हए, मुदा ध्वनित स्तर पर आधुनिक अनुशासन, विद्यालयी समय, श्रम-तालिका आ जीवन के क्षणभंगुरता के संकेत सेहो उपस्थित हए। 'गौआ गोनू टीसन आयल' में रेल के आगमन मात्र यन्त्रगत कौतूहल नइ; गाम के स्थानीय समय आ बाहरी गतिशील संसार के मिलन के ध्वनि हए। समानान्तर दृष्टि से ए सूक्ष्म अर्थ सभ के 'आधुनिकता बनाम परम्परा' के सरल द्वन्द्व में नइ बाँधि, सह-अस्तित्व के बहुस्तरीय दृश्य मानब उचित हए।

६.३ वक्रोक्ति: बाल-भाषा के काव्यात्मक विचित्रता

कुन्तक के वक्रोक्ति-सिद्धान्त कविता-भाषा के सामान्य व्यवहार से भिन्न रचनात्मक विन्यास पर बल देत हए। 'बाल गोपाल' में ई विचित्रता प्राय: महान रूपक वा जटिल श्लेष से नइ, अपितु बाल-उक्ति, ध्वनि-अनुकरण, पुनरावृत्ति, सम्बोधन, प्रश्न, तुक, मानवीकरण आ वस्तु-लघुकरण से उत्पन्न होइत हए। 'घड़ी' के 'टिक-टिक', 'चूड़ा गमागम' के गन्ध-ध्वनि, 'निनिया तू आ जो रे' के पुकार, 'इआ ! तनि सेआन होए दे' के पुनरागमन—ई सभ वाचिक वक्रता के बाल-सुलभ रूप हए।

वक्रोक्ति के सफलतम क्षण ओहाँ हए जतय सामान्य वस्तु अनुभव के खेल बनि जाइत हए—कागज नाव बनइत हए, पतंग आकांक्षा के देह बनइत हए, चान यात्रास्थल बनइत हए, रेलगाड़ी गाम के आँखि खोलइत हए। ए रचना सभ में काव्यत्व शब्दाडम्बर में नइ, दृष्टि-परिवर्तन में हए।

६.४ गुण-रीति आ भाषिक प्रसाद

संग्रह के बालोपयोगी रचना में प्रसाद-गुण प्रधान हए—वाक्य छोट, क्रिया स्पष्ट, सम्बोधन प्रत्यक्ष आ भाव आसानी से ग्रहणीय। वात्सल्यप्रधान रचना में माधुर्य, राष्ट्रप्रधान रचना में ओज आ खेलप्रधान रचना में चपल प्रवाह देखाइत हए। तथापि जतय विद्यालयी राष्ट्रवादी पदावली वा नीतिवचन के भार बढ़इत हए, ओहाँ बाल-भाषा के सहज प्रसाद कनेक दबि जाइत हए।

रीति-स्तर पर कवि लोकवाचिक बज्जिका स्वर के मुद्रित साहित्य के संस्कृतनिष्ठ पदावली से जोड़इत हथिन। ए द्वैधता के यांत्रिक 'दोष' कहब उचित नइ; ई समय के बहुभाषिक सामाजिक यथार्थ के चिन्ह सेहो हए। मुदा बाल-काव्य के कलात्मक कसौटी पर प्रश्न रहइत हए—कोन रचना में ई संगम सहज हए आ कोन रचना में संदेश के भार भाषा के कठोर बनबइत हए।

६.५ औचित्य: बाल-वय, शिक्षा आ दण्ड-संस्कृति के कसौटी

क्षेमेन्द्र के औचित्य-विचार के व्यापक अर्थ में बाल-साहित्य लेल 'वय-औचित्य', 'भाव-औचित्य', 'भाषा-औचित्य' आ 'शिक्षा-औचित्य' विशेष उपयोगी कसौटी बनइत हए। 'मेला देखब', 'गुड़िया', 'पतंग', 'कागज के नाव', 'गाछी के आम', 'माय नचावे जाँता' सन रचना में विषय आ बाल-रुचि सहज मिलेइत हए। 'शिक्षक दिवस', 'विद्यादान', 'सार्थक जीवन' में शिक्षा मूल्य के रूप में अबइत हए, मुदा प्रौढ़ वाक्य-भार बढ़इत हए। 'तरी आ छड़ी' पुरान दण्डात्मक शाला-संस्कृति के हास्य/भय के दस्तावेज बनइत हए; आधुनिक बाल-अधिकार के कसौटी पर छड़ी के सामान्यीकरण स्वीकार्य नइ ठहरइत, यद्यपि साहित्येतिहास के साक्ष्य रूप में रचना महत्त्वपूर्ण हए।

ए ठाम आलोचना आ संरक्षण दुनू एक संग आवश्यक हए। समानान्तर परम्परा 'परम्परा = सत्य' नइ मानइत; परम्परा के आलोचनात्मक उत्तराधिकार मानइत हए। तैं पुरान शैक्षिक संस्कार के पाठ के मेटायब नइ, ओकर ऐतिहासिक अर्थ स्पष्ट करब आ आधुनिक नैतिक कसौटी से परीक्षण करब अधिक उचित हए।

करुण रस के सामाजिक धार विशेषत: 'रमचरना' आ 'हम्मर जमहिरा केना क पढ़तई' में तीव्र होइत हए। भूख, घर के आर्थिक संकट, पाठशाला से दूरी आ बाल-श्रम प्रत्यक्ष विभाव बनइत हए। ए रचना सभ के मार्मिकता इहाँ हए जे

दु:ख के वर्णन मात्र दया उत्पन्न करबा लेल नइ, शिक्षा के असमान उपलब्धि पर प्रश्न उठेबा लेल सेहो काज करइत हए।

'कइसन भेल संसार' में प्रकाश-अँधार, सम्पन्नता-अभाव वा सामाजिक विषमता के प्रत्यक्ष दृश्य प्रत्यक्ष कथन से बेसी अर्थ धारण करइत हए। ध्वनि-दृष्टि से बालक के विस्मय सामाजिक न्याय सम्बन्धी व्यापक प्रश्न दिशि संकेत करइत हए; बाल-कण्ठ के सरलता ए व्यंजना के अधिक तीक्ष्ण बनबइत हए।

७. पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त से बहुस्तरीय पाठ

७.१ अनुकृति: दैनिक जीवन के काव्यात्मक प्रतिष्ठा

अरस्तू के अनुकृति-विचार के व्यापक अर्थ में साहित्य जीवन के क्रिया, व्यवहार आ सम्भावना के कलात्मक रूप देत हए। 'बाल गोपाल' के विशेषता ई हए जे एकर जीवन-जगत महाकाव्यिक घटना नइ; धूरि खेलब, गुड़िया, पतंग, जाँता, चूड़ा, आम, मेला, नाना-घर, घड़ी, रेलगाड़ी सन छोट अनुभव हए। ए 'छोट' अनुभव के साहित्ययोग्य माननाइ बाल-साहित्य के लोकतान्त्रिक सौन्दर्यशास्त्र रचइत हए।

अनुकृति इहाँ फोटोग्राफिक नकल नइ। 'चान पर हमहूँ जायब' प्रत्यक्ष यथार्थ के पुनरावृत्ति नइ, बाल-इच्छा के सम्भाव्य संसार हए। 'कागज के नाव' वस्तु के खेल-यात्रा में बदलेइत हए। ए कारण संग्रह में कल्पना आ अनुभव परस्पर विरोधी नइ, परस्पर पोषक हए।

७.२ रूपवाद आ निकट-पाठ: पुनरावृत्ति, ध्वनि आ वाचिक स्मृति

नव-समीक्षात्मक निकट-पाठक उपयोग ए संग्रह में विशेषत: ध्वनि-संरचना बुझबा लेल हए। अनेक रचना refrain, सम्बोधन, लघु पंक्ति, अन्त्यानुप्रास आ लयात्मक पुनरागमन पर चलेइत हए। मुद्रित पृष्ठ पर ई सरलता कखनहुँ साधारण बुझाइत हए, मुदा मुँह से पढ़ला पर ध्वनि-संरचना बालक के स्मृति, सहभागिता आ प्रत्युत्तर के अवकाश बनबइत हए।

'निनिया तू आ जो रे' में शीर्षक-संरचना स्वयं लोरी के आवर्तन संकेत करइत हए। 'घड़ी' में टिक-टिक अर्थ आ रूप दुनू हए। 'चूड़ा गमागम' में 'गमागम' स्वाद से पहिने गन्ध के ध्वन्यात्मक उपस्थिति रचइत हए। 'कइसन भेल

संसार’ प्रश्नवाचक शीर्षक अन्तिम सामाजिक विस्मय के रूपगत केन्द्र बनबइत हए।

७.३ पाठक-ग्रहण: बालक सक्रिय अर्थ-निर्माता

वोल्फगांग आइज़र के ग्रहण-दृष्टि पाठक के अर्थ-निर्माण में सक्रिय मानइत हए। बाल-कविता में ई सक्रियता आरो प्रत्यक्ष हए: बालक पंक्ति दोहरबइत, ध्वनि नकल करइत, खेल पहिचानइत, अपन अनुभव जोड़इत, चित्र के कल्पना करइत हए। ‘मेला देखब’ पढ़निहार बालक अपन देखल मेला, झूला वा भीड़ जोड़ि सकइत हए; ‘नाना घर’ अपन मातृकुल के स्मृति से भरि सकइत हए; ‘गाछी के आम’ स्वाद-गन्ध के निजी अनुभव जगबइत हए।

ए कारण ए पोथी के अर्थ स्थिर ‘सन्देश’ मात्र नइ। एके कविता गाम के बालक, शहर के बालक, 2012 के पाठक आ 2026 के पाठक लेल भिन्न स्मृति-क्षेत्र खोलि सकइत हए। बदलेइत जीवन-स्थिति के कारण किछु वस्तु—जाँता, मदारी, परम्परागत खेल—नव पाठक लेल प्रत्यक्ष अनुभव के बदला सांस्कृतिक अभिलेख बनि सकइत हए।

७.४ बाख्तिनी संवादिता: एक पोथी में अनेक सामाजिक स्वर

संग्रह में एकसमान ‘बाल-भाषा’ नइ, अनेक सामाजिक स्वर हए—घर के पुचकार, इआ के सम्बोधन, खेल के साथी के भाषा, गुरु-विद्यालय के आदेश, राष्ट्र के सार्वजनिक शब्दावली, गाम के खाद्य-संस्कृति, मेले-हाट, श्रम, रेलगाड़ी आ आधुनिक समय। बाख्तिन के संवादिता-परिप्रेक्ष्य से ई बहुस्वरिता महत्त्वपूर्ण हए।

ए बहुस्वरिता में तनाव सेहो हए। घर के स्वच्छन्द बालक विद्यालयी अनुशासन से भेटइत हए; स्थानीय गाम राष्ट्रीय प्रतीक से भेटइत हए; लोकखेल रेलगाड़ी आ घड़ी के आधुनिक समय-संरचना से भेटइत हए। संग्रह के साहित्यिक मूल्य ए विविधता के एकरूप ‘सुसंस्कृत बालक’ में समेटबा में नइ, अपितु ई देखबा में हए जे बालजीवन अनेक संस्थागत स्वर के बीच बनइत हए।

७.५ ‘अन्तर्निहित प्रौढ़’: बाल-स्वर के पाछे मूल्य-नियमन

पेरी नोडेलमैन बाल-साहित्य के सरल सतह के भीतर प्रौढ़ ज्ञान, इच्छा आ मूल्य-व्यवस्था उपस्थित रहबा के बात करइत हथिन। 'बाल गोपाल' ए दृष्टि से अत्यन्त रोचक हए। कवि भूमिका में बालक के सहचर बनबा के आकांक्षा व्यक्त करइत हथिन; तथापि राष्ट्र, गुरु, शिक्षा, समय, सार्थक जीवन आ सदाचार के अनेक रचना में प्रौढ़ मार्गदर्शक स्पष्ट हए।

ई उपस्थिति स्वयमेव दोष नइ। बाल-साहित्य प्रायः प्रौढ़ द्वारा बालक लेल लिखल जाइत हए; प्रश्न ई हए जे प्रौढ़ स्वर बालक के जिज्ञासा आ स्वायत्तता के स्थान देत हए कि नइ। 'पढ़े न जायब बाबू जी' सन रचना ए दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हए, कारण बालक प्रतिरोधक स्वर ग्रहण करइत हए। 'इआ ! तनि सेआन होए दे' में बालक भविष्य के इच्छा स्वयं कहइत हए। ए रचना सभ में अन्तर्निहित प्रौढ़ के एकाधिकार टूटइत हए।

७.६ पारिस्थितिक आ सांस्कृतिक पाठ

बाग, गाछी, आम, धूरि, खेत, गाम, पशु-पक्षी, ऋतु आ खाद्य-सामग्री संग्रह के पारिस्थितिक आधार बनइत हए। ए प्रकृति-वर्णन के मात्र सजावट मानब उचित नइ। बालक के खेल, भोजन, श्रम, परिवार आ उत्सव प्राकृतिक चक्र से जुड़ल हए। 'सुन्दर बाग लगाव' प्रकृति प्रति क्रियाशील सम्बन्ध सुझबइत हए; 'गाछी के आम' गाछी के स्वाद के सामाजिक स्थल बनबइत हए; 'माय नचावे जाँता' घरेलू श्रम, अन्न आ देहगत लय के एक संग आनइत हए।

आधुनिक पारिस्थितिक समीक्षा ए रचना सभ से ई प्रश्न सेहो पूछि सकइत हए जे प्रकृति मात्र मानव उपयोग के वस्तु हए कि सह-अस्तित्व के संसार। संग्रह अधिकांशतः उपयोग, सौन्दर्य आ बाल-आनन्द के दृष्टि धरइत हए; प्राणी-अधिकार वा पर्यावरणीय संकट के आधुनिक प्रश्न स्पष्ट नइ। ई अनुपस्थिति दोष कहि देब उचित नइ; मुदा पुनर्पाठ लेल एकटा नूतन प्रश्न अवश्य हए।

७.७ मार्क्सवादी वर्ग-पाठः बाल-श्रम, मालिकाना शक्ति आ शिक्षा-असमानता

'रमचरना' आ 'हम्मर जमहिरा केना क पढ़तई' वर्ग-पाठक दृष्टि से संग्रह के विशेष महत्त्वपूर्ण रचना हए। हाकिम के घर के सेवा, ईंटा-भट्ठा के श्रम, घट्टल घर आ पाठशाला धरि नइ पहुँचि सकबा के विवशता बाल-श्रम के भौतिक

आधार उघारइत हए। बाल-साहित्य के परम्परागत “निष्पाप बचपन” के एकरूपी कल्पना इहाँ टूटइत हए; बालक उत्पादन, सेवा, गरीबी आ शिक्षा-असमानता के संरचना में फँसल व्यक्ति रूप में देखाइत हए।

ए कविता सभ के आलोचनात्मक बल इहाँ हए जे शिक्षा के नैतिक उपदेश आ शिक्षा के वास्तविक पहुँच बीच अन्तर स्पष्ट हो जाइत हए। “पढ़ू” कहनाइ पर्याप्त नइ, जँ भोजन, अवकाश, आर्थिक सुरक्षा आ विद्यालय पहुँच उपलब्ध नइ। ए प्रकार वर्ग-पाठ पोथी के शिक्षात्मक कार्यक्रम के भीतर के सामाजिक शर्त सभ के दृश्य बनबइत हए।

७.८ उत्तर-औपनिवेशिक/निम्नवर्गीय प्रश्न: स्थानीय ज्ञान के प्रस्तुति

‘बउआ छिड़िआयल हय’ में डाइन-जोगिन, नजर-गुजर, ओझा-गुनी आ ग्राम्य उपचारविश्व के उल्लेख ग्रामीण चेतना के आन्तरिक सांस्कृतिक तर्क उपस्थित करइत हए। आधुनिक समीक्षा ए तत्त्व सभ के बिना उपहास के ऐतिहासिक-सांस्कृतिक साक्ष्य रूप में पढ़ि सकइत हए, मुदा इहाँ सावधानी आवश्यक हए: लोकविश्वास के प्रस्तुति ओकर सत्यता सिद्ध नइ करइत, आ सांस्कृतिक सम्मान आलोचनात्मक परीक्षण के निषेध नइ।

निम्नवर्गीय प्रतिनिधित्व के प्रश्न सेहो इहाँ महत्त्वपूर्ण हए—बालक, श्रमिक परिवार आ ग्रामीण पात्र के स्वर लेखक मार्फत अबइत हए; तैं “ई असली बालक के अथवा निम्नवर्गीय के सीधा स्वर हए” एहन सरल दावा नइ कएल जा सकइत। पाठ प्रतिनिधित्व आ अनुभव बीच दूरी के स्मरण करब आवश्यक हए।

८. नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसीय विश्लेषण

८.१ शब्द-प्रमाण, शाब्दबोध आ तात्पर्यग्रह

नव्य-न्याय के ज्ञानमीमांसीय दृष्टि से ‘बाल गोपाल’ के किछु शिक्षात्मक रचना शब्दमार्फत ज्ञान-संचरण के प्रक्रिया बुझबा लेल रोचक हए। ‘पढ रे बउआ’, ‘विद्यादान’ आ वर्ण-शिक्षण सम्बन्धी रचना में कविता स्मरणीय ध्वनि-रूप देत हए, जेकरा से कथ्य बालक के कण्ठ आ स्मृति में टिकि सकइत हए। अक्षर के परिचित वस्तु से जोड़नाइ तात्पर्यग्रह के शैक्षिक सहजता बढ़बइत हए।

इहाँ “शब्द-प्रमाण” शब्द के प्रयोग सावधानी से करबा के चाही। काव्य के गुरु-वाक्य स्वतः दार्शनिक अर्थ में आप्तवाक्य सिद्ध नइ; समीक्षात्मक अर्थ एतबे जे कविता भाषा, विश्वास आ स्मृति मार्फत ज्ञान-दाबी बालक धरि पहुँचबइत हए। दार्शनिक कोटि के ई प्रयोग विश्लेषण के साधन हए, मूल कवि के घोषित न्याय-तत्त्व नइ।

८.२ व्याप्ति, दृष्टान्त आ शिक्षात्मक तर्क-रचना

‘विद्यादान’ सन रचना में “विद्या” आ “कल्याण/महानता” के सम्बन्ध सार्वत्रिक नैतिक नियम के रूप में प्रस्तुत होइत हए; ‘कृषक महान’ में अन्न के आवश्यकता आ कृषक-श्रम के महत्त्व जोड़ल जाइत हए। ई संरचना व्याप्ति-दृष्टान्त के स्मरण करा सकइत हए—सामान्य सम्बन्ध, परिचित उदाहरण, फेर निष्कर्ष। मुदा ई औपचारिक पंचावयव न्याय-अनुमान नइ; बाल-कविता के नैतिक-तर्क के एक सहज संरचना हए।

नव्य-न्याय पठन के लाभ ई जे शिक्षा-कविता के मात्र “उपदेश” कहि छोड़बा के बदला ई देखल जा सकइत हए जे कथन कोन सम्बन्ध स्थापित करइत हए, उदाहरण केना चुनइत हए, आ बालक के अनुभव से निष्कर्ष के दूरी कतेक हए। जँ सम्बन्ध अत्यधिक सामान्यीकृत हए तँ कविता प्रश्नहीन नैतिक सूत्र बनि सकइत हए; जँ दृष्टान्त अनुभव से जुड़ल हए तँ शिक्षात्मक अर्थ अधिक जीवित बनइत हए।

९. विदेह समानान्तर परम्परा-प्रतिमान से विशेष परीक्षण

९.१ स्वनाम के सम्मान: ‘बज्जिका बाल कविता’ के ओही नाम में पढ़ब

पोथी अपन नामकरण में स्पष्ट हए। अतएव समानान्तर पद्धति के पहिल दायित्व भाषिक आत्म-परिचय के सम्मान हए। मैथिली पाठक ए शब्दरूप, वाक्यलय आ सांस्कृतिक निकटता के सहज अनुभव कए सकइत हथिन, मुदा समीक्षक के काज ई निकटता के राजनीतिक वा भाषावैज्ञानिक विलयन में बदलनाइ नइ। उचित पद्धति संवाद, तुलनात्मक शब्दरूप, साझा सांस्कृतिक भूगोल आ भिन्न स्वनाम—चारू के एक संग देखब हए।

९.२ कैनन के सीमा तोड़नाइ

विदेह समानान्तर कैनन-परीक्षण के एक महत्त्वपूर्ण नियम बाल-साहित्य, मौखिक विधा, लोक-रचना आ डिजिटल/क्षेत्रीय सृजन के प्रतिष्ठित साहित्य के संग पढ़नाइ हए। ‘बाल गोपाल’ ए दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हए, कारण ई बालक के घरेलू बोली आ दैनिक अनुभव के ‘लघु’ मानि बाहर नइ छोड़इत। जँ साहित्येतिहास मात्र दरबार, महाकवि, संस्कृत-शास्त्र, महान उपन्यास वा वयस्क राजनीतिक कविता धरि सीमित रहत, तँ बालक के भाषा, खेल, खाद्य, नाना-घर, जाँता, मदारी आ रेलगाड़ी अदृश्य रहि जायत।

९.३ स्थानीय अभिलेख: कविता सामाजिक इतिहास के पूरक साक्ष्य

समानान्तर इतिहास-दृष्टि साहित्यिक पाठ के सीधा इतिहास-तथ्य नइ मानइत, मुदा सांस्कृतिक स्मृति आ अनुभव के साक्ष्य रूप में पढ़इत हए। ‘बाल गोपाल’ से 2012 के आसपास के बज्जिका बाल-साहित्य के आदर्श, ग्रामीण बाल-जगत, राष्ट्रवादी विद्यालयी संस्कार, पारिवारिक संरचना, खेल, खाद्य, गुरु-शिष्य सम्बन्ध आ रेल/समयबोधक काव्यात्मक रूपक जानकारी भेटइत हए। ई जानकारी ‘जे लिखल हए, ऊ सामाजिक वास्तविकता हूबहू रहल’ एहन दावा नइ; साहित्यिक चयन स्वयं एक मूल्य-व्यवस्था हए।

ए कारण ई पोथी सामाजिक इतिहास के पूरक अभिलेख होइत हए, निर्णायक आँकड़ा नइ। जँ शोधकर्ता खेल के इतिहास लिखे चाहथिन तँ ए कविता संग मौखिक इतिहास, विद्यालयी स्मृति, लोकसंग्रह आ स्थानीय दस्तावेज जोड़ब आवश्यक होत। ई बहु-साक्ष्य पद्धति समानान्तर दृष्टि के मूल शर्त हए।

९.४ हाशिया के अनुभव के ज्ञानगत प्रासंगिकता

बालक स्वयं वयस्क साहित्यिक संस्था में शक्तिशाली वक्ता नइ। लोकभाषिक बालक तऽ आरो कम। ए कारण ‘बाल गोपाल’ के बाल-स्वर ज्ञानगत रूप में प्रासंगिक हए। तथापि बालक के नाम पर कवि जे कहइत हथिन से सीधे ‘बालक के असली आवाज’ नइ मानल जा सकइत। अन्तर्निहित प्रौढ़, पाठ्य नैतिकता आ रचनाकार के चयन सभ जगह उपस्थित हए। समानान्तर दृष्टि ए दूनू बात के एक संग मानइत हए—हाशिया के अनुभव महत्त्वपूर्ण हए, मुदा आलोचना से मुक्त नइ।

९.५ परम्परा के आलोचनात्मक उत्तराधिकार

लोरी, खेल-गीत, परिवार, मेला, गाछी, चूड़ा, जाँता—ई सभ संरक्षणयोग्य सांस्कृतिक स्मृति हए। परन्तु छड़ी-आधारित शिक्षा वा अत्यधिक आइआपालन के मूल्य के मात्र 'हमर परम्परा' कहि अपरिवर्तनीय नइ मानल जा सकइत। बाल-साहित्य के पुनर्प्रकाशन में मूल पाठ यथावत राखि आलोचनात्मक टिप्पणी द्वारा ऐतिहासिक सन्दर्भ देब सर्वाधिक उचित होत। ए प्रकार संरक्षण आ संशोधन परस्पर शत्रु नइ रहइत।

९.६ आत्म-समीक्षा: समानान्तर पद्धति पर सेहो प्रश्न

समानान्तर पद्धति स्वयं के क्षेत्रीय गौरव के प्रचार-पत्र बनएबा के अनुमति नइ देत। 'बाल गोपाल' क्षेत्रीय बाल-साहित्य के महत्त्वपूर्ण पोथी हए, मुदा ए कारण एकर प्रत्येक कविता महान काव्य नइ हो जाइत। किछु रचना संदेशप्रधान हए, किछु में प्रौढ़ निर्देश बाल-स्वतन्त्रता पर भारी हए, किछु में चित्राभाव आधुनिक बाल-पाठक लेल सीमा बनेत। एहन आलोचना पोथी के ऐतिहासिक महत्त्व घटबइत नइ; उलटे ओकर वास्तविक स्थान स्पष्ट करइत हए।

९.७ आत्मदस्तावेज, संस्थागत परिधि आ भाषिक आत्म-निर्माण

लेखक के भूमिका बज्जिका बाल-साहित्य के समकालीन सक्रिय रचनाकार/सम्पादक सभ के नाम सुरक्षित करइत हए। समानान्तर इतिहास-दृष्टि से ई सूची "अन्तिम अधिकृत कैनन" नइ, अपितु संस्थागत साहित्येतिहास के बाहर निर्मित आत्मदस्तावेज हए। समर्पण, भूमिका, रचनासूची, स्थानीय पत्रिका-संलग्नता आ बहुभाषिक कृतित्व मिलि एक एहन साहित्यिक वंशावली रचइत हए जे केन्द्रीय संस्थागत मान्यता के प्रतीक्षा मात्र पर निर्भर नइ।

ए प्रक्रिया के भाषिक आत्म-निर्माण के रूप में पढ़ल जा सकइत हए: बालक लेल लोकभाषा में वर्ण, खेल, परिवार, राष्ट्र, मेला, श्रम आ आधुनिक यन्त्र के कविता लिखनाइ भाषा के मात्र घर के मौखिक संचार नइ, मुद्रित ज्ञान-संस्कृति के माध्यम बनबइत हए। मुदा समानान्तर पद्धति इहाँ सेहो आत्म-समीक्षा माँगइत हए—भाषिक गौरव कृति के प्रत्येक पंक्ति के कलात्मक सिद्धि नइ।

१०. विषयगत गहन समीक्षा

१०.१ राष्ट्र, मातृभूमि आ सार्वजनिक बालक

‘अप्पन देश’ से ‘पंद्रह अगस्त’ धरि आरम्भिक छह कविता बालक के सर्वप्रथम राष्ट्र के सदस्य रूप में स्थापित करइत हए। देश के प्राकृतिक सौन्दर्य, मातृरूप, जन्मभूमि के ऋण, ध्वज के प्रतीक आ स्वतन्त्रता-स्मृति—ई अनुक्रम सार्वजनिक नागरिकता बनबइत हए। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि से ओज आ वीरभाव, पाश्चात्य बाल-साहित्य-दृष्टि से प्रौढ़ नागरिक आदर्श—दूनू एक संग उपस्थित हए।

समस्या ई नइ जे बाल-साहित्य में राष्ट्रबोध रहबा के चाही वा नइ; प्रश्न ई जे बालक के अनुभव आ राष्ट्र के अमूर्तता बीच कतेक जीवित सम्बन्ध बनइत हए। जखन झण्डा रंग, आकार आ दृश्य बनि अबइत हए, बालक के इन्द्रियबोध सक्रिय होइत हए। जखन कविता ऐतिहासिक नाम आ आदर्श के सूची बनि जाइत हए, बालक के प्रत्यक्ष भागीदारी घटि सकइत हए। ए कारण आरम्भिक खण्ड के कलात्मक सफलता असमान हए।

१०.२ खेल: देह, समुदाय आ स्वाधीनता

‘मजा अबइअत हुए खेले में’, ‘ताल-गुल्ली’, ‘गुड़िया’, ‘पतंग’, ‘कागज के नाव’, ‘धुर खेल’ आदि संग्रह के केन्द्रीय उपलब्धि हए। खेल में बालक मात्र विषय नइ, क्रियाशील कर्ता हए। देह दौड़इत, फेंकइत, पकड़इत, उड़बइत, बनबइत, धूरि से सनइत हए। ए देहगत क्रिया से कविता लय ग्रहण करइत हए।

खेल सामूहिकता सेहो बनबइत हए। बालक संग-साथी, विवाद, हँसी, हार-जीत आ नियम सीखइत हए। लेखक के भूमिका में ‘सामाजिक विकास’ जे लक्ष्य कहल गेल हए, ओकर सर्वाधिक स्वाभाविक काव्यरूप उपदेश में नइ, खेल के रचना सभ में भेटइत हए। ई महत्त्वपूर्ण अन्तर्दृष्टि हए: मूल्य कथन से नइ, क्रिया से अनुभूत होइत हए।

१०.३ कल्पना: चान, पतंग, नाव आ गुड़िया के संसार

बाल-कल्पना के चारि रूप उल्लेखनीय हए। पहिल, मानवीकरण—गुड़िया, चान, निन्न; दोसर, ऊर्ध्वाकांक्षा—पतंग आ चान पर यात्रा; तेसर, रूपान्तरण—कागज नाव बनइत हए; चारिम, लघु संसार—खेलौना वा घरेलू वस्तु पूर्ण कथा-

जगत ग्रहण करइत हए। ए सभ में अद्भुत आ वक्रोक्ति एक-दोसरा से जुड़इत हए।

'चान पर हमहूँ जायब' विशेष महत्त्वपूर्ण हए, कारण परम्परागत चन्दा-मामा/चान के आत्मीयता आधुनिक अन्तरिक्ष-कौतूहल से भेटइत हए। कविता वैज्ञानिक विवरण नइ देत, मुदा 'दूर' के 'जाय सकब' योग्य बनबइत हए। बाल-कविता में कल्पना ज्ञान के विरोधी नइ; ज्ञान के पहिल प्रश्न बनि सकइत हए।

१०.४ परिवार: माय, निन्न, दादा, नाना-घर

'हमर माय', 'निनिया तू आ जो रे', 'हमर दादा भेलन बलाह', 'नाना घर', 'अन्तर प्यार में' आदि में परिवार भावात्मक केन्द्र हए। ए परिवार में सम्बोधन के वाचिकता महत्त्वपूर्ण हए—'माय', 'इआ', 'दादा', 'बाबू जी'। सामाजिक विज्ञान के निरपेक्ष शब्द 'परिवार' जे आत्मीयता नइ देत, कविता ओ आत्मीयता सम्बोधन से रचइत हए।

'नाना घर' बालक के वैकल्पिक घर के अनुभव उपस्थित करइत हए; 'निन्न' लोरी-परम्परा से जोड़इत हए; 'हमर माय' वात्सल्य आ सुरक्षा; 'अन्तर प्यार में' सम्बन्ध के भीतर के स्नेह-सूत्र। ए खण्ड में कवि के भाषा सर्वाधिक सहज आ माधुर्यपूर्ण होइत हए।

१०.५ गाम, स्वाद आ श्रम

'हमर गाँव', 'सुन्दर बाग लगाव', 'झमरी बिल्ली', 'चूड़ा गमागम', 'गाँव में मदारी', 'गाछी के आम', 'माय नचावे जाँता'—ई सभ मिलि ग्रामीण सांस्कृतिक भूगोल रचइत हए। गाम मात्र दृश्य नइ; स्वाद, गन्ध, ध्वनि, श्रम, मनोरञ्जन आ सम्बन्ध के संगम हए।

विशेषत: 'माय नचावे जाँता' घरेलू श्रम के बालदृष्टि से दृश्य बनबइत हए। जाँता के चक्र, माय के केन्द्रित घर के श्रम आ अन्न-प्रक्रिया आधुनिक यान्त्रिक रसोई से भिन्न अनुभव के अभिलेख हए। नारीवादी पाठ इहाँ घरेलू श्रम के दृश्यता के सराहि सकइत हए, संगहि प्रश्न करि सकइत हए जे श्रम के भार, थकान वा लैंगिक विभाजन कविता में कतेक स्पष्ट हए। समानान्तर दृष्टि प्रशंसा आ प्रश्न दुनू बचबइत हए।

‘चूड़ा गमागम’ आ ‘गाछी के आम’ स्वाद-साहित्य के बालरूप हए। साहित्यिक संस्कृति मात्र महान मिथक आ शास्त्र नइ; भोजन सेहो स्मृति, ऋतु, श्रम आ क्षेत्रीय पहिचान के वाहक हए। ए ठाम संग्रह के सांस्कृतिक मूल्य अत्यन्त ठोस हए।

१०.६ मेला, मदारी आ सार्वजनिक लोक-संस्कृति

‘मेला देखब’, ‘सोनपुर के मेला’ आ ‘गाँव में मदारी’ बालक के घर से बाहिर सार्वजनिक लोक-संसार में लेइत हए। मेला रंग, भीड़, वस्तु, पशु, हाट आ प्रदर्शन के बहु-इन्द्रिय अनुभव हए। मदारी के खेल चलायमान लोक-मनोरञ्जन के स्मृति हए। डिजिटल दृश्य-संसार के पूर्व वा समांतर ई प्रत्यक्ष प्रदर्शन-संस्कृति बालक के सामूहिक विस्मय बनबइत हए।

आधुनिक नैतिक पुनर्पाठ में पशु-प्रदर्शन वा सड़क-कलाकार के आर्थिक असुरक्षा सम्बन्धी प्रश्न उठि सकइत हए; मूल कविता संभवतः बालक के कौतूहल पर केन्द्रित हए। समीक्षक के कर्तव्य मूल पाठ पर वर्तमान प्रश्न आरोपित करब नइ, अपितु पाठक ऐतिहासिक सीमा आ नव प्रश्न दुनू पृथक्-पृथक् स्पष्ट करब हए।

१०.७ शिक्षा, गुरु आ अनुशासन

‘शिक्षक दिवस’, ‘विद्यादान’, ‘पढ़ रे बउआ’, ‘तरी आ छड़ी’, ‘सार्थक जीवन’, ‘पढ़े न जायब बाबू जी’ एकटा छोट शैक्षिक चक्र रचइत हए। गुरु सम्मान, ज्ञान, श्रम, अनुशासन, प्रतिरोध—सभ स्वर इहाँ हए। ए कारण शिक्षा मात्र एकमुखी आदर्श नइ रहइत।

‘पढ़े न जायब बाबू जी’ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रतिरोधक रचना हए। बालक विद्यालय न जायबा के अपन कारण, भय वा अनुभव प्रकट करइत हए; ई स्वर अन्य उपदेशात्मक पाठ सभ के बीच असहमति के अवकाश बनबइत हए। बाख्तिनी दृष्टि से ई बहुस्वरिता, नोडेलमैन के दृष्टि से अन्तर्निहित प्रौढ़ के सत्ता पर बाल-स्वर के प्रत्युत्तर, आ समानान्तर दृष्टि से संस्थागत शिक्षा पर भीतर से उठल प्रश्न हए।

'तरी आ छड़ी' पुरान दण्ड-संस्कृति के स्मृति हए। एखन ए रचना के बाल-दण्ड के अनुमोदन रूप में नइ, ऐतिहासिक शैक्षिक मानसिकता के आलोचनात्मक दस्तावेज रूप में पढ़ब अधिक उचित हए।

१०.८ समय, रेल आ बदलेइत संसार

अन्तिम रचना सभ संग्रह के पारम्परिक ग्रामीण बाल-जीवन से आधुनिक सामाजिक अनुभव के दिशा में खोलइत हए। 'घड़ी' समय के अनुशासन आ क्षण-मूल्य के शिक्षा देत हए; 'गौआ गोनू टीसन आयल' रेलगाड़ी के दृश्य, गति आ तकनीकी कौतूहल बनबइत हए; 'कइसन भेल संसार' सामाजिक परिवर्तन पर प्रश्नसूचक विस्मय व्यक्त करइत हए।

ए अन्तिम अनुक्रम में विशेष बात ई जे आधुनिकता मात्र महानगर रूप में नइ अबइत; ओ घड़ी आ रेल द्वारा गाम में प्रवेश करइत हए। समानान्तर इतिहास के भाषा में ई 'केन्द्र से परिधि' के एकतरफा कथा नइ, स्थानीय जीवन आ बाहरी गति-संरचना के अन्तःक्रिया हए।

११. बाल-मनोविज्ञान, शिक्षण-शास्त्र आ सामाजिक यथार्थ

रचनाकार के दीर्घ अध्यापन-अनुभव आ शिक्षाशास्त्रीय प्रशिक्षण के उल्लेख हए। संग्रह के श्रेष्ठ खेल-कविता सभ देखबइत हए जे बालक के संवेगात्मक सन्तुलन, समूहगत व्यवहार, नेतृत्व, सहकारिता आ देहगत अधिगम प्रत्यक्ष क्रिया से विकसित होइत हए। "मजा अबइत हए खेले में" सन रचना में पढ़ाइ-खेल के तनाव बालक के अनुभव से उठइत हए; "पढ़े न जायब बाबू जी" में बालक असहमति प्रकट करइत हए। ई स्वर बालक के निष्क्रिय संस्कार-ग्राहक बनबा के बदला अनुभववान व्यक्ति रूप में प्रतिष्ठित करइत हए।

दण्डात्मक शिक्षा सम्बन्धी कविता सभ ऐतिहासिक रूप में महत्त्वपूर्ण हए। छड़ी के भय के चित्रण के आइ बाल-केन्द्रित शिक्षा के मानक से आलोचनात्मक रूप में पढ़बा के चाही। स्नेह, संवाद, खेल, प्रश्न, परिचित भाषा आ सक्रिय सहभागिता—ई सभ बाल-अधिगम के अधिक उपयुक्त साधन रूप में संग्रह के सफल रचना सभ स्वयं उदाहरण देत हए।

बाल-श्रम के रचना सभ पोथी के नैतिक गम्भीरता बढ़बइत हए। जमहिरा आ रमचरना के माध्यम से ई प्रश्न उठइत हए जे भूख, आर्थिक अभाव आ श्रम के

दबाव के बीच शिक्षा-अधिकार केना सार्थक होत। इहाँ कविता बाल-मनोविज्ञान के सामाजिक संरचना से जोड़इत हए; बालक के मानसिक संसार गरीबी, श्रम, परिवार आ संस्थागत पहुँच से पृथक् नइ।

परिवार के रचना सभ भावात्मक सुरक्षा, पीढ़ीगत सम्बन्ध आ सम्बोधन के महत्त्व देखबइत हए। माय, इआ, दादा, नाना-घर, निन्न—ई शब्द मात्र पात्र-सूची नइ, बालक के सुरक्षित सम्बन्ध-जाल हए। तथापि आधुनिक समीक्षा परिवार के स्नेह के संग बालक के स्वायत्त इच्छा सेहो देखइत हए; ए कारण प्रतिरोध, जिद्द, प्रश्न आ खेल के स्वतंत्रता साहित्यिक रूप में विशेष महत्त्वपूर्ण बनइत हए।

१२. भाषा, ध्वनि, लय आ वाचिकता

'बाल गोपाल' के भाषिक प्राण ओकर वाचिकता हए। कविता सुनब, दोहरायब, गाबय वा अभिनय करबा के अनुकूल हए। बाल-साहित्य के मुद्रित पाठ जँ कण्ठ में नाचि नइ सकए तँ ओकर आधा जीवन हराइत हए। ए पोथी के अनेक रचना—विशेषतः लोरी, खेल, ध्वनि-अनुकरण आ सम्बोधनप्रधान कविता—कण्ठगत प्रसार लेल बनल बुझाइत हए।

बज्जिका रूप सभ संग्रह के स्थानिक आत्मीयता देत हए—'हमर', 'बउआ', 'इआ', 'हय', 'जायब' आदि रूप पाठक के घर के वाणी से जोड़इत हए। एकरे संग राष्ट्र, शिक्षा आ नीतिपरक कविता सभ में संस्कृतनिष्ठ सार्वजनिक पदावली प्रवेश करइत हए। ए द्वैधता के भाषिक अशुद्धि कहि काटि देनाइ उचित नइ; परन्तु सम्पादकीय नूतन संस्करण में मूल वर्तनी सुरक्षित राखि शब्द-सूची देल जाए तँ नव पाठक लेल उपयोगी होत।

ध्वनि-स्तर पर पुनरावृत्ति संग्रह के प्रधान युक्ति हए। बालक पुनरावृत्ति में ऊबइत नइ; ओ अनुमान, प्रत्युत्तर आ स्मृति बनबइत हए। तथापि पुनरावृत्ति जँ मात्र तुक बचएबा के उपाय बनि जाए तँ रचना यांत्रिक हो सकइत हए। सफल रचना में पुनरावृत्ति अर्थ आ ध्वनि दुनू के विस्तार देत हए।

अनुकरणात्मक आ ध्वन्यात्मक पद—टिक-टिक, गमागम, धाम-धूम, पुकार, टेक, पुनरावृत्ति—बाल-कविता के गेयता बढ़बइत हए। एहन पद कागज पर

अर्थ देबा के संग कण्ठ में लय उत्पन्न करइत हए। संग्रह के वास्तविक सामर्थ्य के एक भाग मुद्रित दृश्य से बेसी श्रव्य प्रस्तुतीकरण में निहित हए।

१३. बाल-दृष्टि बनाम अन्तर्निहित प्रौढ़

संग्रह के मूल तनाव ए प्रश्न में हए—कविता बालक के दृष्टि से संसार देखइत हए, कि प्रौढ़ बालक के संसार देखबइत हए? उत्तर द्विविध हए। खेल, निन्न, गुड़िया, पतंग, नाव, चान, मेला, आम, बिल्ली, रेल आदि में बाल-दृष्टि प्रबल हए। राष्ट्र, गुरु, सार्थक जीवन, समय आदि में प्रौढ़ शिक्षात्मक संरचना अधिक स्पष्ट हए।

ए द्विविधता के दोष-सूची बनएबा में साहित्यिक इतिहास के जटिलता हराइत। 2012 के क्षेत्रीय बाल-साहित्य के एक उद्देश्य मातृभाषिक मनोरञ्जन रहल, दोसर उद्देश्य संस्कार/शिक्षा। लेखक भूमिका में स्वयं ई दुनू लक्ष्य मानइत हथिन। आलोचना के काज ई देखब हए जे कखन ई लक्ष्य संगत होइत हए आ कखन शिक्षा काव्य पर भारी पड़इत हए।

सर्वोत्तम स्थिति ओ हए जतय मूल्य अनुभव में घुलि जाइत हए। सामूहिक खेल स्वतः सहयोग सिखबइत हए; बाग लगेनाइ प्रकृति-प्रेम के व्यवहार बनइत हए; घड़ी के टिक-टिक समय के अर्थ अनुभूत करबइत हए। कमजोर स्थिति ओहाँ हए जतय कविता नैतिक वाक्य के पद्यरूप मात्र बनि जाइत हए। ए अन्तर के पोथी के नूतन मूल्यांकन में केन्द्र में राखबा के चाही।

१४.५१ कविता के क्रमिक समीक्षात्मक पंजी

निम्न पंजी उपलब्ध विस्तृत अनुक्रम के ५१ कविता क्रमशः देखइत हए। मूल बज्जिका भाषिक रूप के मैथिलीकरण नइ कएल गेल हए। आलोचनात्मक केन्द्र समीक्षात्मक उपकरण हए, मूल रचनाकार के घोषित सिद्धान्त नइ।

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
1	अप्पन देश / (पृ. 1)	देश के प्राकृतिक-सांस्कृतिक सौन्दर्य आ सामूहिक गौरव / भारतीय दृष्टिः	आरम्भ के घोषणात्मक कविता; दृश्य बिम्ब जतय

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		वीर/ओज; प्रकृति विभाव / पाश्चात्य/समानान्तरः अनुकृति + सार्वजनिक बालक	प्रबल, ओहाँ बाल-ग्रहण सहज।
2	भारत माँ / (पृ. 2)	राष्ट्र के मातृरूप आ त्याग-स्मृति / भारतीय दृष्टिः वीररस, मातृरूपक / पाश्चात्य/समानान्तरः अन्तर्निहित प्रौढ़; राष्ट्र-रूपक	भावात्मक देश-कल्पना; बाल-अनुभव के प्रत्यक्षता अपेक्षाकृत कम।
3	अभिलाषा / (पृ. 3)	देशसेवा/कर्तव्य के आकांक्षा / भारतीय दृष्टिः उत्साह-भाव, ओज / पाश्चात्य/समानान्तरः इच्छा-रचना; नागरिक आदर्श	बालक के भविष्य-इच्छा सार्वजनिक कर्तव्य से जुड़इत; प्रौढ़ आदर्श स्पष्ट।
4	जन्म भूमि हे / (पृ. 4)	जन्मभूमि से भावात्मक ऋण-सम्बन्ध / भारतीय दृष्टिः वीर/शान्त मिश्र; ध्वनि / पाश्चात्य/समानान्तरः स्थान-स्मृति	भूगोल के आत्मीय 'घर' बनबइत; सांस्कृतिक स्मृति प्रबल।
5	देश के	ध्वज के रंग,	बालक लेल

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
	झंडा / (पृ. 5)	प्रतीक आ राष्ट्र-स्मृति / भारतीय दृष्टि: रूपक, ओज / पाश्चात्य/समानान्तर: दृश्य-चिह्न के पाठ	अमूर्त राष्ट्र के दृश्य मूर्त रूप; शिक्षात्मकता आ दृश्यता संग-संग।
6	पंद्रह अगस्त / (पृ. 6)	स्वतन्त्रता-दिवस आ राष्ट्रीय स्मृति / भारतीय दृष्टि: वीररस / पाश्चात्य/समानान्तर: स्मृति-राजनीति; सार्वजनिक अनुष्ठान	इतिहास-नामावली के भार किछु ठाम बाल-लय घटा सकइत, मुदा सामूहिक स्मरण के दस्तावेज।
7	बउआ के मुँह चानसन / (पृ. 7)	शिशुमुख, पुचकार, पारिवारिक वात्सल्य / भारतीय दृष्टि: वात्सल्य, उपमा, माधुर्य / पाश्चात्य/समानान्तर: बाल-देह के सौन्दर्य; द्वैध पाठक	संग्रह के स्वाभाविकतम वात्सल्य-कविता सभ में एक; चन्द्र-उपमा लोकवाचिक आत्मीयता रचइत।
8	मजा अबइअत हुए खेले	खेल के देहगत आनन्द आ साथी के संसार /	लेखक के ‘बालक के सहचर’

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
	में / (पृ. 8)	भारतीय दृष्टिः हास्य/उत्साह; लय / पाश्चात्य/समानान्तरः खेल आ बाल-स्वायत्तता	सिद्धान्त के सफल क्रियान्वयन; उपदेश के बदला क्रिया।
9	इआ ! तनि सेआन होए दे / (पृ. 9–10)	इआ के सम्बोधन आ 'बड़ होएब' के बाल-आकांक्षा / भारतीय दृष्टिः वात्सल्य, पुनरावृत्ति / पाश्चात्य/समानान्तरः बाल-स्वर; भविष्य-स्व	आवर्तन बालक के जिद्द/आकांक्षा के जीवित बनबइत; प्रत्यक्ष संवाद के शक्ति।
10	ताल-गुल्ली / (पृ. 11)	लोकखेल, नियम, गति आ सामूहिकता / भारतीय दृष्टिः हास्य/उत्साह; वाचिक लय / पाश्चात्य/समानान्तरःदेहगत खेल	लोकखेल के सांस्कृतिक अभिलेख; देहगत क्रिया से कविता गति पबइत।
11	अगती / (पृ. 12)	बाल-शरारत आ छोट सामाजिक प्रसंग / भारतीय दृष्टिः हास्य, चरित्रचित्रण / पाश्चात्य/समानान्तरः हास्यपूर्ण	प्रौढ़ के नजर आ बाल-व्यवहार के टकराव छोट नाटकीय स्थिति

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		बाल-चरित्र; सामाजिक दृष्टि	रचइत।
12	गुड़िया / (पृ. 13)	गुड़िया-क्रीड़ा, कल्पना आ घरेलू नाट्य / भारतीय दृष्टि: अद्भुत, मानवीकरण / पाश्चात्य/समानान्तर: लघु संसार; भूमिकाभिनय	खेलौना जीवित पात्र बनइत; बाल-कल्पना के स्वायत्त संसार।
13	पतंग / (पृ. 14)	उड़ान, ऊर्ध्वगति, डोर आ आकांक्षा / भारतीय दृष्टि: अद्भुत; रूपक-ध्वनि / पाश्चात्य/समानान्तर: कल्पना + स्वायत्त क्रिया	आकाश के दूरी खेल में बदलेइत; गति कविता-रूपक के केन्द्र।
14	सूरज चन्दा / (पृ. 15)	सूर्य-चन्द्र से बाल-संवाद/कल्पनात्मक निकटता / भारतीय दृष्टि: अद्भुत, वक्रोक्ति / पाश्चात्य/समानान्तर: आकाश के आत्मीयकरण	आकाशीय वस्तु घरेलू परिचित बनइत; बाल-कौतूहल के सहज रूप।
15	कागज के नाव / (पृ. 16)	कागज के वस्तु से नाव के खेल-रूपान्तरण / भारतीय दृष्टि:	सामान्य वस्तु कल्पना के यान; बाल-

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		अद्भुत, वक्रोक्ति / पाश्चात्य/समानान्तर: रूपान्तरकारी खेल	सृजनशीलता के प्रमुख कविता।
16	मुसकाय कन्हैया / (पृ. 17)	कन्हैया के बाल-छवि आ स्नेह / भारतीय दृष्टि: वात्सल्य/भक्ति-छाया / पाश्चात्य/समानान्तर: सांस्कृतिक अन्तर्पाठ	धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृति बाल-वात्सल्य से मिलेइत; छविमूलकता महत्त्वपूर्ण।
17	हमर माय / (पृ. 18)	माय के स्नेह, सुरक्षा आ घर / भारतीय दृष्टि: वात्सल्य, माधुर्य / पाश्चात्य/समानान्तर: देखभाल के सम्बन्ध	'माय' शब्द स्वयं भाव के केन्द्र; घरेलू बाल-अस्तित्व के आधार।
18	लाल / (पृ. 19)	बालक/लाल के स्नेहमय चित्र / भारतीय दृष्टि: वात्सल्य / पाश्चात्य/समानान्तर: बाल-केन्द्रित दृष्टि	लघु बिम्ब आ पुचकार के रचना; भाव के सरलता एकर बल।
19	हमर बालगो	बालगोपाल के खेल-शरारत आ	संग्रह-शीर्षक के

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
	पाल / (पृ. 20)	मोहकता / भारतीय दृष्टि: वात्सल्य + हास्य / पाश्चात्य/समानान्तर: शीर्षक-संकेतित बाल-प्रतिमा	भाव-जगत उद्घाटित; बालक के चपलता काव्य के केन्द्र।
20	बउआ के जगअनी / (पृ. 21)	बालक के जगएबा के पुकार / भारतीय दृष्टि: वात्सल्य; ध्वनि-पुनरावृत्ति / पाश्चात्य/समानान्तर: वाचिक प्रस्तुति	पाठक वाचिक सहभागिता माँगइत; घर के जगारण संस्कार के छवि।
21	निनिया तू आ जो रे / (पृ. 22)	निन्न/लोरी आ बाल-निद्रा / भारतीय दृष्टि: वात्सल्य, माधुर्य, आवर्तन / पाश्चात्य/समानान्तर: लोरी के ग्रहण	मुद्रित कविता से बेसी कण्ठ के विधा; वाचिक परम्परा से गहिर सम्बन्ध।
22	बउआ छिड़िआ यल हय / (पृ. 23)	रूसल/ छिड़िआयल बालक आ मनुहार / भारतीय दृष्टि: वात्सल्य + हास्य / पाश्चात्य/समाना	बाल-भाव के मान्यता देत; प्रौढ़ मनुहार के संवाद भावात्मक साक्षरता

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		न्तरः भाव-नियमन	बनबइत।
23	हमर दादा भेलन बलाह / (पृ. 24–25)	दादा, परिवार आ हास्यमय प्रसंग / भारतीय दृष्टिः हास्य + वात्सल्य / पाश्चात्य/समानान्तरः पारिवारिक कथन	दू पृष्ठ के विस्तार छोट कथात्मक कविता बनबइत; पीढ़ीगत सम्बन्ध जीवित।
24	नाना घर / (पृ. 26)	मातृकुल, यात्रा, खेल आ अपनापन / भारतीय दृष्टिः वात्सल्य, ध्वनि / पाश्चात्य/समानान्तरः स्मृति-स्थान	‘नाना घर’ वैकल्पिक बाल-घर; सांस्कृतिक भूगोल के आत्मीय स्थल।
25	अन्तर प्यार में / (पृ. 27)	सम्बन्ध के भीतर स्नेह / भारतीय दृष्टिः माधुर्य, शान्त / पाश्चात्य/समानान्तरः सम्बन्धपरक पाठ	बाह्य क्रिया से भीतर के आत्मीयता दिशि गमन; संग्रह के भाव-ताल धीमा करइत।
26	मेला देखब / (पृ. 28)	मेला देखबा के बाल-कौतूहल / भारतीय दृष्टिः अद्भुत/हास्य / पाश्चात्य/समानान्तरः लोक-दृश्य आ बाल-दृष्टि	रंग, भीड़, प्रदर्शन के प्रत्याशा; बालक सार्वजनिक लोक-संस्कृति में प्रवेश

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
			करइत।
27	चान पर हमहूँ जायब / (पृ. 29)	चान-यात्रा के आकांक्षा / भारतीय दृष्टि: अद्भुत, वक्रोक्ति / पाश्चात्य/समानान्तर: विज्ञान-कौतूहल आ कल्पना	लोक के चान आ आधुनिक अन्तरिक्ष-कौतूहल के संगम; संग्रह के सर्वाधिक कल्पनाशील रचना में एक।
28	सोनपुर के मेला / (पृ. 30)	विशिष्ट क्षेत्रीय मेला आ यात्रा-अनुभव / भारतीय दृष्टि: अद्भुत, लोक-रस / पाश्चात्य/समानान्तर: स्थान-विशिष्ट सांस्कृतिक अभिलेख	स्थानीय भूगोल के नामसहित लोक-संस्कृति के दस्तावेज; क्षेत्रीय स्मृति सघन।
29	कामना हुए / (पृ. 31)	इच्छा, नैतिक/सामाजिक आकांक्षा / भारतीय दृष्टि: शान्त/उत्साह / पाश्चात्य/समानान्तर: इच्छा आ प्रौढ़ मानक	बाल-इच्छा आ आदर्श के मिश्रण; किछु ठाम संदेश के भार बढ़इत।
30	हमर गाम /	गाम के दृश्य, जीविका, सम्बन्ध	गाम स्थिर पृष्ठभूमि

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
	(पृ. 32)	आ आत्मीयता / भारतीय दृष्टि: माधुर्य, प्रसाद / पाश्चात्य/समानान्तर: सांस्कृतिक भूगोल	नइ, जीवन-व्यवस्था के समुच्चय; समानान्तर क्षेत्र-दृष्टि लेल केंद्रीय।
31	हमर देश के अपने रंग / (पृ. 33)	देश के विविधता/रंग / भारतीय दृष्टि: ओज, रूपक / पाश्चात्य/समानान्तर: बहुरंगी राष्ट्रीय प्रतिमा	राष्ट्र के एकरूप नइ, रंग-विविधता रूप में देखबा के प्रयत्न; सार्वजनिक बाल-चेतना।
32	धुर खेल / (पृ. 34)	धूरि में खेल, देह आ माटि / भारतीय दृष्टि: हास्य/उत्साह / पाश्चात्य/समानान्तर: देहगत पारिस्थितिकी	माटि के संग बाल-देह के प्रत्यक्ष सम्बन्ध; स्वच्छता-नियमन से अलग मुक्त खेल के क्षेत्र।
33	सुन्दर बाग लगाव / (पृ. 35)	बाग लगेनाइ, फूल-पात आ सामूहिक श्रम / भारतीय दृष्टि: शान्त/अद्भुत;	उपदेश क्रियात्मक बनइत— प्रकृति-प्रेम 'लगाउ' के व्यवहार में;

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		औचित्य / पाश्चात्य/समानान्तरः पारिस्थितिक शिक्षा	सफल शिक्षात्मक कविता।
34	झमरी बिल्ली / (पृ. 36)	बिल्ली के चपलता, घर के हास्य / भारतीय दृष्टिः हास्य, मानवीकरण / पाश्चात्य/समानान्तरः पशु-बालक साक्षात्कार	लघु पशु-पात्र बाल-हास्य के माध्यम; दृश्यात्मकता सशक्त।
35	कृषक महान / (पृ. 37)	किसान/श्रम के महत्ता / भारतीय दृष्टिः वीर/ओज; नीति / पाश्चात्य/समानान्तरः श्रम-नीति	श्रम-केन्द्रिक सामाजिक मूल्य; प्रौढ़ नीतिवाक्य के अंश, मुदा ग्रामीण अर्थव्यवस्था से सीधा सम्बन्ध।
36	चूड़ा गमागम / (पृ. 38)	चूड़ा के गन्ध, स्वाद, भोज्य-संस्कृति / भारतीय दृष्टिः माधुर्य, ध्वन्यात्मक वक्रोक्ति /	'गमागम' शब्द गन्ध के ध्वनि में उपस्थित करइत; क्षेत्रीय स्वाद के जीवित

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		पाश्चात्य/समानान्तर: इन्द्रियगत भौतिक संस्कृति	अभिलेख।
37	गाम में मदारी / (पृ. 39)	मदारी के खेल आ बालक के कौतूहल / भारतीय दृष्टि: अद्भुत/हास्य / पाश्चात्य/समानान्तर: प्रदर्शन-संस्कृति	सड़क/लोक-प्रदर्शन के स्मृति; सामूहिक दर्शकता बाल-संसार के हिस्सा।
38	गाछी के आम / (पृ. 40)	आम, गाछी, स्वाद आ ऋतु / भारतीय दृष्टि: माधुर्य, अद्भुत / पाश्चात्य/समानान्तर: खाद्य-पारिस्थितिकी	फल, ऋतु, गाछी आ बाल-आनन्द एक संग; पारिस्थितिक-सांस्कृतिक पाठक उत्कृष्ट उदाहरण।
39	माय नचावे जाँता / (पृ. 41)	माय के घरेलू श्रम आ जाँता के लय / भारतीय दृष्टि: वात्सल्य + श्रम-बिम्ब / पाश्चात्य/समानान्तर: लैंगिक श्रम; भौतिक संस्कृति	घरेलू श्रम दृश्य बनइत; नारीवादी पुनर्पाठ लेल महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक साक्ष्य।
40	शिक्षक दिवस /	गुरु-सम्मान आ	विद्यालयी सार्वजनिक

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
	(पृ. 42)	शिक्षा / भारतीय दृष्टि: शान्त/आदरभाव / पाश्चात्य/समानान्तर: विद्यालय संस्था	संस्कार; बालक के अनुभव से किछु दूरी परन्तु संस्थागत स्मृति स्पष्ट।
41	विद्यादान / (पृ. 43)	ज्ञान के दान, गुरु आ अध्ययन / भारतीय दृष्टि: नीति, प्रसाद / पाश्चात्य/समानान्तर: शिक्षात्मक पाठ	स्पष्ट शिक्षात्मक कविता; काव्यात्मकता संदेश से प्रतिस्पर्धा करइत हए।
42	पढ़ रे बउआ / (पृ. 44)	पढ़ाइ, ज्ञान, भविष्य आ प्रोत्साहन / भारतीय दृष्टि: उत्साह; औचित्य / पाश्चात्य/समानान्तर: प्रौढ़ मार्गदर्शन	सीधा सम्बोधन ऊर्जावान, मुदा प्रौढ़ लक्ष्य-निर्धारण अधिक; बाल-स्वायत्तता सीमित।
43	तरी आ छड़ी / (पृ. 45)	छड़ी, विद्यालयी अनुशासन आ भय/हास्य / भारतीय दृष्टि: हास्य-भय मिश्र; औचित्य प्रश्न /	ऐतिहासिक शाला-संस्कृति के साक्ष्य; आधुनिक बाल-

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		पाश्चात्य/समानान्तर: अनुशासनकारी संस्था	अधिकार दृष्टि से आलोचनात्मक पाठ आवश्यक।
44	सार्थक जीवन / (पृ. 46)	जीवन-मूल्य, श्रम आ सदाचार / भारतीय दृष्टि: शान्त/नीति / पाश्चात्य/समानान्तर: नैतिक प्रौढ़ स्वर	संदेशप्रधान ; वयस्क जीवन-दर्शन बाल-कविता पर कनेक भारी, तथापि संग्रह के शिक्षात्मक धारा स्पष्ट।
45	पढ़े न जायब बाबू जी / (पृ. 47)	विद्यालय न जायबा के बाल-प्रतिरोध / भारतीय दृष्टि: हास्य/करुण छाया; संवाद / पाश्चात्य/समानान्तर: बाल-स्वायत्तता; अन्तर्निहित प्रौढ़ के प्रतिवाद	शैक्षिक खण्ड के महत्त्वपूर्ण प्रतिवाद; बालक निष्क्रिय आइ्सापालक नइ रहइत।
46	सटकी के फटकी फुटकाब ऽ / (पृ. 48)	स्थानीय क्रिया, खेल/खाद्य-संसार आ बाल-उक्ति / भारतीय दृष्टि: वाचिक लय,	स्थानीय शब्द-संसार के मूल्य उच्च; मानकीकर

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		पुनरावृत्ति / पाश्चात्य/समानान्तरः स्थानीय भाषा-प्रदर्शन	ण से अधिक स्वाभाविक उच्चारण महत्त्वपूर्ण।
47	हम्मर जमहिरा केना क पढ़तई / (पृ. 49)	'जमहिरा' पकड़बा के हास्यमय/कौतूहलपूर्ण प्रसंग / भारतीय दृष्टिः हास्य, प्रश्न, वक्रोक्ति / पाश्चात्य/समानान्तरः हास्यमय पीछा; स्थानीय शब्दावली	अपरिचित स्थानीय पद स्वयं सांस्कृतिक साक्ष्य; सम्पादित संस्करण में शब्दार्थ उपयोगी होत।
48	रमचरना / (पृ. 50)	घर के आर्थिक-सामाजिक कठिनाइ आ जीविका-सम्बन्धी दृश्य / भारतीय दृष्टिः करुण-नीति छाया / पाश्चात्य/समानान्तरः सामाजिक भौतिक पाठ	बाल-संग्रह में सामाजिक विषमता प्रवेश करइत; हलुक स्वर के पाछे जीवन के कठोरता दृश्य।
49	घड़ी / (पृ. 51)	समय, टिक-टिक, अनुशासन आ क्षण-मूल्य / भारतीय दृष्टिः ध्वन्यात्मक	रूप आ संदेश सफलता से जुड़इत; टिक-टिक कविता

क्र.	कविता (मुद्रित पृष्ठ)	मुख्य आलोचनात्मक केन्द्र	संक्षिप्त निर्णय
		वक्रोक्ति; नीति / पाश्चात्य/समानान्तर: आधुनिक समयबोध	स्वयं समय के ध्वनि बनइत।
50	गौंआ गोनू टीसन आयल / (पृ. 52)	रेलगाड़ी/टीसन के आगमन आ यान्त्रिक कौतूहल / भारतीय दृष्टि: अद्भुत, ओज / पाश्चात्य/समानान्तर: तकनीक आ गाम के मिलन	गाम आ आधुनिक परिवहन के मिलन; ध्वनि-गति बालक के विस्मय रचइत।
51	कइसन भेल संसार / (पृ. 53)	बदलेइत सामाजिक संसार पर विस्मय/प्रश्न / भारतीय दृष्टि: चिन्तन, करुण/हास्य छाया / पाश्चात्य/समानान्तर: सामाजिक आलोचना; खुला प्रश्न	प्रश्नसूचक अन्त संग्रह के बन्द न करि खुला छोड़इत; बाल-जगत व्यापक सामाजिक परिवर्तन से जुड़इत।

१५. समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष

१५.१ सिद्धान्त सभ के समानान्तर तुलनात्मक सार

ए कृति के गहन पाठ से स्पष्ट होइत हए जे भारतीय आ पाश्चात्य सिद्धान्त एक-दोसरा के प्रतिस्थापित नइ करइत, अपितु अलग प्रश्न खोलइत हए। विदेह समानान्तर पद्धति ए भिन्नता के बचबइत हुए संवाद के क्षेत्र बनबइत हए।

प्रश्न	भारतीय दृष्टि	पाश्चात्य दृष्टि	'बाल गोपाल' में निष्पत्ति
पाठक के भावानुभव	रस/ सहृदय	Reader-response	वात्सल्य, खेल आ अद्भुत के रचना में पाठक सक्रिय भाव-ग्रहण करइत।
अप्रत्यक्ष अर्थ	ध्वनि	implied meaning / readerly inference	नाना-घर, चूड़ा, गाछी, घड़ी आदि में प्रत्यक्ष वस्तु से आगे सांस्कृतिक स्मृति।
काव्य भाषा के विशिष्टता	वक्रोक्ति	defamiliarization / formal attention	ध्वनि-अनुकरण, पुनरावृत्ति, मानवीकरण आ वस्तु-रूपान्तर

प्रश्न	भारतीय दृष्टि	पाश्चात्य दृष्टि	'बाल गोपाल' में निष्पत्ति
			ण।
उपयुक्ततता	औचित्य	age-appropriateness / child-address	खेल-प्रकृति रचना में उच्च; छड़ी/अधिक उपदेश में प्रश्न।
रूप आ ध्वनि	गुण-रीति/ अलंकार	close reading / formalism	लय, refrain, छोट पंक्ति आ कण्ठगतता कृति के बल।
बहु-स्वर	—	dialogism / heteroglossia	घर, शाला, राष्ट्र, गाम, लोक-हाट आ आधुनिक तकनीक के सामाजिक स्वर सह-अस्तित

प्रश्न	भारतीय दृष्टि	पाश्चात्य दृष्टि	'बाल गोपाल' में निष्पत्ति
			वमे।
बालक बनाम प्रौढ़	औचित्य के प्रश्न	hidden adult / child agency	'पढ़े न जायब बाबू जी' प्रौढ़ नियंत्रण के भीतर बाल-प्रतिवाद खोलइत ।
साक्ष्य आ कैनन	शास्त्रीय पाठ-पद्धति से बाहर के प्रश्न	cultural studies / canon critique	विदेह समानान्तर प्रतिमान बाल-साहित्य , स्थानीय भाषा आ दैनिक जीवन के कैनन में स्थान देत।

१५.२ प्रमुख साहित्यिक उपलब्धि

'बाल गोपाल' के स्थायी उपलब्धि ई जे ओ बालक के स्थानीय संसार के साहित्ययोग्य मानइत हए। गाम, धूरि, गुड़िया, पतंग, कागज के नाव, नाना-घर, जाँता, चूड़ा, गाछी, आम, मदारी, रेलगाड़ी—ई सभ 'छोट' वस्तु साहित्यिक केन्द्र बनइत हए। ए प्रक्रिया में बालक अपन बोली आ परिवेश के मुद्रित पृष्ठ

पर देखइत हए। भाषा-सम्मान के ई रूप शिक्षा-नीति के घोषणा से अधिक प्रभावी होइत हए, कारण साहित्य स्वयं कहइत हए—तोहर संसार लिखबा के योग्य हए।

१५.३ कलात्मक असमानता

संग्रह के सभ कविता समान कलात्मक उँचाइ पर नइ। राष्ट्रवादी आ नीतिपरक किछु रचना प्रत्यक्ष सन्देश पर अधिक निर्भर हए; खेल, वात्सल्य, लोरी, खाद्य, मेला, प्रकृति आ आधुनिक कौतूहल के रचना सभ अपेक्षाकृत बहुस्तरीय हए। ए असमानता के लुकाएब पोथी के सम्मान नइ। साहित्येतिहासिक महत्त्व आ प्रत्येक कविता के कलात्मक सिद्धि दू अलग प्रश्न हए।

१५.४ बाल-साहित्य के भीतर शक्ति-सम्बन्ध

पोथी बालक के कखन स्वायत्त कर्ता, कखन संस्कार-ग्रहणकर्ता बनबइत हए। ए द्वन्द्व के कारण ई संग्रह आधुनिक आलोचना के लेल उपयोगी हए। ‘पढ़े न जायब बाबू जी’ सन बाल-प्रतिरोधक स्वर प्रौढ़ अनुशासन के बीच संवाद खोलइत हए। यदि संग्रह में एहन प्रश्नाकुल बाल-स्वर आरो अधिक रहतइ तँ आधुनिक बाल-साहित्य के दृष्टि से एकर बहुस्वरिता आरो प्रखर होइत।

१५.५ भाषिक महत्त्व

बज्जिका बाल-कविता के मुद्रित संग्रह रूप में एकर शब्दसंसार शोधोपयोगी हए। स्थानीय सर्वनाम, क्रियारूप, सम्बोधन, खेल के नाम, खाद्य, घर-परिवार आ लोकोक्तिसदृश लय मौखिक भाषा के लिखित रूप देत हए। भावी सम्पादित संस्करण में मूल पाठ अछूत्ते राखि कठिन पद के शब्दकोश, ध्वनि-पाठ आ स्थानीय उच्चारण के अभिलेख जोड़ल जाए तँ भाषा-अध्ययन के मूल्य अनेकगुणा बढ़त।

१५.६ दृश्य-विन्यास आ नव संस्करण के सम्भावना

आवरण पर बालसमूह के चित्र हए, मुदा भीतरी कविता-पृष्ठ प्रायः पाठप्रधान हए। आधुनिक बाल-संस्करण में मूल पाठक संग स्थानीय चित्रकला वा सरल रेखांकन, कविता-पाठक ध्वनि-QR, शब्दार्थ, खेल के लघु परिचय आ सांस्कृतिक टिप्पणी जोड़ल जा सकइत हए। ई जोड़ मूल पाठक स्थान नइ लेत, ओकर

ग्रहण-क्षमता बढ़ाओत। विशेषतः 'ताल-गुल्ली', 'जाँता', 'मदारी', 'जमहिरा' सन पद/प्रसंग नव पीढ़ी लेल व्याख्या माँगि सकइत हए।

नव संस्करण में मूल बज्जिका पाठ अछूत्ते राखि कठिन स्थानीय पद के बज्जिका-मैथिली शब्दार्थ, स्थानीय शैली के रेखांकन, वाचिक पाठक ध्वनि-संकेत, खेल/लोकवस्तु के लघु सांस्कृतिक परिचय आ सम्पादकीय टिप्पणी जोड़ल जा सकइत हए। "मानकीकरण" के नाम पर मूल काव्यभाषा के स्थानीय रूप मेटाएब उचित नइ; सम्पादकीय सुविधा मूल पाठक ऊपर अलग स्तर रूप में रहबा के चाही।

१५.७ विदेह समानान्तर परम्परा के निर्णय

समानान्तर दृष्टि से 'बाल गोपाल' के मूल्य चारि स्तर पर हए। पहिल—कृति रूप में, जतय किछु कविता सौन्दर्यतः विशेष सफल हए। दोसर—भाषिक अभिलेख रूप में, जतय बज्जिका बाल-वाणी मुद्रित रूप पबइत हए। तेसर—सांस्कृतिक इतिहास रूप में, जतय खेल, खाद्य, श्रम, मेला, परिवार, गुरु, समय आ रेल के अनुभव सुरक्षित हए। चारिम—कैनन-संशोधन रूप में, जतय बाल-साहित्य क्षेत्रीय साहित्येतिहास के परिधि से केन्द्र दिशि अबइत हए।

ए निर्णय के संग आत्म-समीक्षा अनिवार्य हए: पोथी के क्षेत्रीय अस्मिता ओकर प्रत्येक पंक्ति के कलात्मक सिद्धि के प्रमाण नइ; बालक के नाम पर कहल प्रत्येक नीति बालक के स्वायत्त स्वर नइ; स्थानीय परम्परा आलोचनातीत नइ; आ पाश्चात्य वा भारतीय सिद्धान्त के नाम मात्र लगेला से समीक्षा गहन नइ हो जाइत। वास्तविक गहनता पाठ, सिद्धान्त आ ऐतिहासिक परिस्थिति बीच प्रमाणित संवाद में हए। 'बाल गोपाल' ए संवाद के योग्य पोथी हए।

१६. विस्तृत निष्पत्ति

शंभु 'अगेही' के 'बाल गोपाल' के सबसे उज्ज्वल क्षण ओहाँ हए जतय बालक के आँखि, कान, जिह्वा, देह आ कल्पना एक संग सक्रिय होइत हए। चान, नाव, पतंग, चूड़ा, आम, मेला, निन्न, रेल आ खेल—ई सभ इन्द्रियगम्य संसार कविता बनइत हए। भारतीय रस-दृष्टि ए अनुभव में वात्सल्य, हास्य, अद्भुत आ उत्साह के आस्वाद देखइत हए; ध्वनि-सिद्धान्त प्रत्यक्ष वस्तु के

पाछे पारिवारिक-सांस्कृतिक स्मृति; वक्रोक्ति सामान्य वस्तु के कल्पनात्मक रूपान्तरण; औचित्य बाल-वय आ उपदेश के अनुपात के परीक्षण करइत हए।

पाश्चात्य समीक्षा ए कृति के दोसर आयाम खोलइत हए। अनुकृति-विचार दैनिक जीवन के काव्ययोग्य ठहरबइत; रूपगत पाठ पुनरावृत्ति, ध्वनि आ वाचिकतालै ध्यान देत; पाठक-ग्रहण बालक के सक्रिय सहभागिता देखबइत; संवादिता घर, शाला, राष्ट्र, गाम आ आधुनिक तकनीक के अनेक स्वर एकठाम सुनइत; 'अन्तर्निहित प्रौढ़' सिद्धान्त लेखक के शिक्षात्मक इच्छा के प्रश्नांकित करइत हए।

विदेह समानान्तर परम्परा ए दुनू परम्परा के सन्तुलित करइत हए, मुदा कृत्रिम समन्वय नइ बनबइत। ओ कहइत हए—समान प्रश्न देखू, समानता थोपब नइ; स्थानीय साक्ष्य के सुनू, ओकरा अचूक मत मानू नइ; हाशिया के स्वर के स्थान दिअ, मुदा आलोचना छोड़ू नइ; परम्परा बचाउ, मुदा अन्याय वा अनुपयुक्तता पर प्रश्न करू; कैनन विस्तृत करू, मुदा क्षेत्रीय गौरव के प्रमाण के विकल्प मत बनाउ।

ए कसौटी पर 'बाल गोपाल' बज्जिका बाल-साहित्य के संरक्षण, पुनर्पाठ आ आलोचनात्मक पुनर्मुद्रण योग्य कृति हए। एकर महत्त्व विशेषतः ए बात में हए जे ई बालक के बाहर से 'उच्च' साहित्य नइ देत, ओकर अपन बोली, माय, इआ, दादा, नाना-घर, खेल, माटि, खाद्य, गाछी आ गाम के साहित्य के दर्जा देत हए। साहित्यिक लोकतन्त्र के आरम्भ अक्सर इहीं से होइत हए—जखन पाठक अपन ही संसार के पाठ में देखइत हए।

समग्र निष्कर्ष ई हए जे 'बाल गोपाल' के न तँ मात्र ऐतिहासिक कौतूहल रूप में सीमित कएल जा सकइत हए, न क्षेत्रीय गौरव के कारण आलोचना से ऊपर राखल जा सकइत हए। एकर श्रेष्ठ कविता बालक के इन्द्रिय, खेल, सम्बन्ध, कल्पना आ बोली के काव्य बनबइत हए; एकर दुर्बल रचना प्रायः प्रत्यक्ष उपदेश के भार से ग्रस्त हए। ए दू ध्रुव के बीच पोथी बज्जिका बाल-साहित्य के लिखित विकास, उत्तर-बिहार/मिथिला के लोक-सांस्कृतिक स्मृति, बाल-अधिकार, शिक्षा आ स्थानीय भाषिक आत्मसम्मान के अध्ययन लेल दीर्घजीवी सामग्री प्रदान करइत हए।

ग्रन्थसूची

निम्न ग्रन्थसूची में मात्र पुस्तक/ग्रन्थ राखल गेल हए। वेबसाइट, वेब-पृष्ठ, भिडियो, डिजिटल लिंक, समाचार वा अनलाइन स्रोत जानि-बुझि कऽ सम्मिलित नइ कएल गेल हए।

प्राथमिक ग्रन्थ

अगेही, शंभु। बाल गोपाल : बज्जिका बाल कविता। प्रथम संस्करण। दरभंगा: सृष्टि-दृष्टि, २०१२।

भारतीय काव्यशास्त्र आ साहित्य-सिद्धान्त

भरतमुनि। नाटचशास्त्र।

आनन्दवर्धन। ध्वन्यालोक।

अभिनवगुप्त। अभिनवभारती।

अभिनवगुप्त। ध्वन्यालोक-लोचन।

कुन्तक। वक्रोक्तिजीवित।

मम्मट। काव्यप्रकाश।

क्षेमेन्द्र। औचित्यविचारचर्चा।

विश्वनाथ कविराज। साहित्यदर्पण।

जगन्नाथ पण्डितराज। रसगंगाधर।

भामह। काव्यालंकार।

दण्डी। काव्यादर्श।

न्याय, नव्य-न्याय आ भारतीय ज्ञानमीमांसा

गंगेश उपाध्याय। तत्त्वचिन्तामणि।

अन्नंभट्ट। तर्कसंग्रह तथा दीपिका।

Matilal, Bimal Krishna. Epistemology, Logic and Grammar in Indian Philosophical Analysis. Mouton, 1971.

Matilal, Bimal Krishna. Perception: An Essay on Classical Indian Theories of Knowledge. Oxford University Press, 1986.

Phillips, Stephen H. Epistemology in Classical India: The Knowledge Sources of the Nyaya School. Routledge, 2012.

पाश्चात्य समीक्षा, रूपवाद, वर्ग आ उत्तर-औपनिवेशिक अध्ययन

Aristotle. Poetics.

Shklovsky, Viktor. Theory of Prose. Dalkey Archive Press, 1990.

Bakhtin, M. M. The Dialogic Imagination: Four Essays. University of Texas Press, 1981.

Iser, Wolfgang. The Act of Reading: A Theory of Aesthetic Response. Johns Hopkins University Press, 1978.

Rosenblatt, Louise M. The Reader, the Text, the Poem: The Transactional Theory of the Literary Work. Southern Illinois University Press, 1978.

Eagleton, Terry. Marxism and Literary Criticism. Routledge, 1976.

Lukács, Georg. The Theory of the Novel. MIT Press, 1971.

Said, Edward W. Orientalism. Pantheon Books, 1978.

Spivak, Gayatri Chakravorty. A Critique of Postcolonial Reason: Toward a History of the Vanishing Present. Harvard University Press, 1999.

Garrard, Greg. Ecocriticism. Routledge, 2004.

बाल-साहित्य, बाल-पाठक आ शिक्षा

Hunt, Peter. Criticism, Theory, and Children’s Literature. Basil Blackwell, 1991.

Nodelman, Perry. The Hidden Adult: Defining Children’s Literature. Johns Hopkins University Press, 2008.

Rose, Jacqueline. The Case of Peter Pan, or The Impossibility of Children’s Fiction. Macmillan, 1984.

Stephens, John. Language and Ideology in Children’s Fiction. Longman, 1992.

Nikolajeva, Maria. The Rhetoric of Character in Children’s Literature. Scarecrow Press, 2002.

Piaget, Jean. The Language and Thought of the Child. Routledge & Kegan Paul, 1926.

Vygotsky, L. S. Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes. Harvard University Press, 1978.

Dewey, John. Democracy and Education. Macmillan, 1916.

Freire, Paulo. Pedagogy of the Oppressed. Continuum, 1970.

भाषा, लोक-संस्कृति आ सामाजिक पृष्ठभूमि

Grierson, George A. Linguistic Survey of India, Vol. V, Part II: Bihari and Oriya Languages. Government of India, 1903.

Masica, Colin P. The Indo-Aryan Languages. Cambridge University Press, 1991.

Finnegan, Ruth. Oral Poetry: Its Nature, Significance and Social Context. Cambridge University Press, 1977.

Bauman, Richard. Verbal Art as Performance. Waveland Press, 1984.

Ariès, Philippe. Centuries of Childhood: A Social History of Family Life. Vintage Books, 1962.

आलेख ३६ · काव्य, गजल आ बाल-किशोर साहित्य

स्वप्न मे मिज्झर होइत

सारांश

“स्वप्न मे मिज्झर होइत” नाम अपनेमे ग्रन्थक केन्द्रीय काव्य-क्रिया बतबैत अछि—अनुभवक अलग-अलग परत एक-दोसरामे एना मिलैत अछि जे जागरण, स्मृति, इतिहास, दर्शन, लोक आ स्वप्नक सीमा स्थिर नहि रहि जाइत। प्रारम्भिक पद्यक “दुनू मिज्झर भऽ गेल अछि” कथन बादक समूचा ग्रन्थ लेल एक प्रकारक काव्य-सूत्र बनि उठैत अछि।

बीजशब्द

स्वप्न मे मिज्झर होइत ·मैथिली कविता ·गजल ·बाल-साहित्य ·साहित्यिक समीक्षा

१.४६. गजेन्द्र ठाकुर-स्वप्न मे मिज्झर होइत- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

“स्वप्न मे मिज्झर होइत” : समय, भाषा, दर्शन आ समानान्तर इतिहासक बहुध्रुवीय काव्य-जगत

गहन पाठ-अध्ययन, भारतीय–पाश्चात्य तुलनात्मक समीक्षा, नव्य-न्याय विश्लेषण आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे

शोध-लेख

सारांश — ई शोध-लेख गजेन्द्र ठाकुरक १००२ पृष्ठक “स्वप्न मे मिज्झर होइत” कैं केवल पद्य-संग्रह नहि, बल्कि कविता, दार्शनिक गद्य-पद्य, भाषा-चिन्तन, ज्ञानमीमांसा, इतिहास-दृष्टि, न्याय-विवेक आ अनुवादक एक बहुस्तरीय ग्रन्थरूपमे पढ़ैत अछि। पोथीक प्रारम्भिक पद्य, आठ मुख्य खण्ड, दार्शनिक अनुक्रम तथा तीन अनुलग्नकक सम्पूर्ण रचना-सूचीकैं पाठाधारित आवरणिकामे समेटल गेल अछि। भारतीय दार्शनिक पद्धतिसँ प्रमाण, प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, मुक्ति, आत्म, धर्म, कर्म, शून्यता, अनेकान्त आ रसक प्रश्न; पाश्चात्य पद्धतिसँ सन्देह, अनुभव, प्रत्यय, इतिहास, भाषा, नैतिकता आ अस्तित्व; नव्य-न्यायसँ सूक्ष्म भेद, सम्बन्ध,

अवच्छेद, विशेषण–विशेष्य-संगति आ प्रमाण-विन्यास; तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ एकहि विषयक अनेक काल, भूगोल, परम्परा आ बौद्धिक धारा कँ पार्श्व-पार्श्व राखि पढ़बाक प्रविधि लागू कएल गेल अछि। निष्कर्षत: ग्रन्थक मूल उपलब्धि ओकर विधागत मिश्रण, मातृभाषामे दार्शनिक शब्द-सृजन, लोकजीवन आ उच्च-अमूर्तनक सह-अस्तित्व, तथा इतिहासकँ एकरेखीय प्रगति नहि मानि बहुध्रुवीय स्मृति-अनुभवक रूपमे देखबाक साहस अछि।

मुख्य शब्द — स्वप्न; मिज्झर समय; मैथिली काव्य; भाषा-दर्शन; भारतीय दर्शन; नव्य-न्याय; इतिहास-दर्शन; समानान्तर इतिहास; अनुवाद; लोकजीवन।

१. प्रस्तावना : पोथीक विधा-सीमा किएक टूटैत अछि

“स्वप्न मे मिज्झर होइत” नाम अपनेमे ग्रन्थक केन्द्रीय काव्य-क्रिया बतबैत अछि—अनुभवक अलग-अलग परत एक-दोसरामे एना मिलैत अछि जे जागरण, स्मृति, इतिहास, दर्शन, लोक आ स्वप्नक सीमा स्थिर नहि रहि जाइत। प्रारम्भिक पद्यक “दुनू मिज्झर भऽ गेल अछि” कथन बादक समूचा ग्रन्थ लेल एक प्रकारक काव्य-सूत्र बनि उठैत अछि। मुदा ई मिज्झरता अस्पष्टताक पर्याय नहि; उलटे, ग्रन्थ बारम्बार कसौटी, प्रमाण, प्रश्न, तर्क, अनुभव, भाषा आ न्यायक शब्दावलीक सहारे धुँधला अनुभूतिक भीतर रेखा खींचबाक चेष्टा करैत अछि।

ग्रन्थक बाह्य रूप पद्य-संग्रहक अछि, मुदा आन्तरिक रूप एक चलैत बौद्धिक अभिलेखक। आरम्भमे लोकगीत, स्वप्न, मृत्यु, ग्रामीण स्मृति आ निजी संवेदना अछि; पछिला खण्डसभमे भाषा, ज्ञानमीमांसा, नैतिकता, भारतीय दर्शन, पाश्चात्य दर्शन, इतिहास-दर्शन, विधि आ न्यायक विस्तृत अनुशीलन; अन्तमे महाभारत आ बुद्धचरितक अति-संक्षिप्त मैथिली गीत-रूपान्तर तथा एक अंग्रेजी आमुखक मैथिली अनुवाद। एहि विन्यासमे कविता “विषय”क सजावट नहि, विचारक कार्य-प्रणाली बनि जाइत अछि।

एहि अध्ययनक उद्देश्य ग्रन्थकँ कोनो एक दार्शनिक सम्प्रदायक नुमाइन्दा बनायब नहि, बल्कि ओकर भीतर चलैत बहु-स्वरक तर्क-विन्यास देखब अछि। जहाँ एक रचना कालातीत आधारक सम्भावना पर विचार करैत अछि, दोसर क्षणभंगुरता, शून्यता अथवा परस्परता पर; जहाँ एक ठाम प्रत्यक्ष–अनुमानक

अनुशासन अछि, दोसर ठाम लोकविश्वासक संवेदना; जहाँ एक ठाम इतिहासक महत्त्व स्वीकारल जाइत अछि, ओतहि ओकर “अन्तिम देवता” बनि जाएबाक जोखिम पर प्रश्न उठैत अछि। एहि अन्तर्विरोधसभकेँ दोष नहि, ग्रन्थक विचारात्मक ऊर्जा मानब अधिक उपयुक्त अछि।

२. पाठ-परिमाण, संरचना आ सम्पूर्णता

मूल फाइलमे १००२ पृष्ठ आ लगभग १९,८९१ अनुच्छेद/पद्य-एकाइ अछि। अनुक्रमक आधार पर मुख्य रचना-प्रविष्टिसभक संख्या 437 अछि; वास्तविक शीर्षक-शैलीक पाठ-विभाजनमे 440 स्वतंत्र पद्य/अनुलग्नक-एकाइ भेटैत अछि। ई अन्तर किछु संयुक्त शीर्षक, उपशीर्षक आ अनुलग्नकक क्रमांकित अंशक कारण अछि। एहि शोधपत्रक अन्तिम “सम्पूर्ण रचना-आवरणिका”मे वास्तविक पाठ-विभाजनक सभ स्वतंत्र एकाइ दर्ज अछि।

प्रारम्भिक अनुक्रम पोथी कैं आठ बड़ विषयगत आन्दोलनमे बाँटैत अछि: (१) स्वप्नमे मिज्झर होइत; (२) स्वप्न, जागरण आ मिज्झर समय; (३) ओस, देहरी आ घरक नेह; (४) अर्थ, भाषा आ लोकजीवनक अँजोर; (५) भाषा; (६) प्रश्न; (७) अनेक दिशाक दार्शनिक आकाश; (८) सन्देह, अनुभव, इतिहास आ न्याय। एहि क्रममे निजी अनुभूति सँ सामाजिकता, लोक सँ भाषा, भाषा सँ दर्शन, दर्शन सँ इतिहास-न्याय आ फेर अनुवाद दिस विस्तार स्पष्ट अछि।

२.१ खण्डगत रचना-वितरण

खण्ड/अनुलग्नक	अनुक्रममे रचना-प्रविष्टि
प्रारम्भिक पद्य	3
खण्ड १ — स्वप्नमे मिज्झर होइत	16
खण्ड २ — स्वप्न, जागरण आ मिज्झर समय	83
खण्ड ३ — ओस, देहरी आ घरक नेह	24
खण्ड ४ — अर्थ, भाषा आ लोकजीवनक अँजोर	79
खण्ड ५ — भाषा	31
खण्ड ६ — प्रश्न	34

खण्ड/अनुलग्नक	अनुक्रममे रचना-प्रविष्टि
खण्ड ७ — अनेक दिशाक दार्शनिक आकाश	97
खण्ड ८ — सन्देह, अनुभव, इतिहास आ न्याय	19
अनुलग्नक — अनुवाद खण्ड	51

३. काव्य-भाषा : लोक-शब्द, दार्शनिक अमूर्तन आ दृश्यात्मकता

एहि पोथीक भाषिक विशिष्टता ई अछि जे “माटि”, “आँगन”, “ओसारा”, “पएर”, “अँजुरी”, “पात”, “पोखरि”, “करघा”, “बीआ”, “धुँआ”, “भोर” सन ठोस लोक-छविसभक संग “प्रमाण”, “कारण”, “सम्बन्ध”, “सत्ता”, “अस्तित्व”, “इतिहास”, “कर्तव्य”, “निषेध”, “अभेद” सन दार्शनिक पद एकहि वाक्य-लयमे प्रवेश करैत अछि। फलतः अमूर्त विचार शुष्क परिभाषा बनि नहि रहैत; ओकरा दृश्य, देह, माटि आ घरेलू क्रियाक उपमा भेटैत अछि। “ज्ञानक चारि दुआर”, “तर्कक फूल”, “सत्यक धागा”, “करुणाक करघा”, “प्रश्नक देहरी” अथवा “अर्थक खुलल वन” एही प्रवृत्तिक नामकरण-उदाहरण अछि।

कवितासभमे “देहरी” बारम्बार सीमा आ संक्रमणक प्रतीक बनैत अछि। घरक देहरी निजी–सामाजिक, ज्ञात–अज्ञात, देह–चेतना, इतिहास–मुक्ति, परम्परा–नवता आ भाषा–मौनक बीचक सीमा बनि सकैत अछि। “उजास” दोसर अत्यन्त आवर्ती बिम्ब अछि; ई केवल प्रकाश नहि, स्पष्टता, बोध, प्रमाण, करुणा, नैतिक विवेक आ मुक्ति—सभक रूपक बनैत अछि। एहि पुनरावृत्तिसँ संग्रहमे एक प्रकारक अन्तःलय बनैत अछि, यद्यपि किछु दीर्घ दार्शनिक अनुक्रममे एकहि रूपकक अधिक प्रयोग शैलीगत समानता उत्पन्न करैत अछि।

खण्ड ३ आ ४ मे भाषा अधिक आत्मीय, लघु-पंक्तिक, स्पर्शात्मक आ घरेलू अछि; खण्ड ५ सँ ८ धरि वाक्य दीर्घ, संकल्पनात्मक आ तर्क-क्रमवाला भऽ जाइत अछि। एहि रूपान्तरणकेँ “कविता सँ निबन्ध”क साधारण दूरी कहब उचित नहि, कारण लेखक दार्शनिक विवेचनमे सेहो छन्दोन्मुख आवृत्ति, समान्तर वाक्य, बिम्बक पुनरागमन आ ध्वन्यात्मक संतुलन रखैत छथि। ताहि

कारण ई “दार्शनिक पद्य-निबन्ध” अथवा “काव्यात्मक दर्शन-लेखन”क एक मिश्र विधा निर्मित करैत अछि।

४. स्वप्न, काल आ इतिहास : ग्रन्थक मूल अक्ष

खण्ड १ क “कालक धार पार अनन्तक उजास” संग्रहक दार्शनिक घोषणापत्र समान अछि। एतय इतिहासक उपयोगिता—राजनीति, सामाजिक घाव, अन्याय, सांस्कृतिक परिवर्तन, स्मृति—स्वीकारल गेल अछि, मुदा इतिहासकेँ मनुष्यक अन्तिम अस्तित्वगत आश्रय मानबाक विरोध अछि। रचना रेखीय प्रगति-वाद आ ऐतिहासिक अनिवार्यताक हिंस्र सम्भावना पर प्रश्न करैत अछि: भविष्यक नाम पर वर्तमान मनुष्यकेँ साधन बना देबाक विचारक नैतिक खतरा स्पष्ट कएल गेल अछि। एहि ठाम कालातीत मूल्य इतिहासक पलायन नहि, इतिहासक नैतिक मापदण्डक रूपमे सामने अबैत अछि।

ई दृष्टि पाश्चात्य इतिहास-दर्शनक दू ध्रुवक बीच संवाद करैत देखाइत अछि। एक दिस इतिहासक अर्थ, क्रम, अभिप्राय आ कथात्मक पुनर्रचना; दोसर दिस “इतिहास स्वयं नैतिक न्यायाधीश नहि” ई आग्रह। एतय घटनाक तथ्य आ घटनाक मूल्यांकन अलग स्तर अछि। “घटनाक क्रम सँ ऐतिहासिक बोध धरि” मे इतिहासकारक पाछाँक ज्ञानकेँ अतीतक पात्र पर थोपबाक विरुद्ध चेतावनी विशेष महत्त्वपूर्ण अछि; अभिकर्ताक उपलब्ध सम्भावना, लक्ष्य, भय आ अपूर्ण ज्ञानकेँ ओहि समयक भीतर सँ बुझबाक आग्रह ऐतिहासिक सहानुभूति आ आलोचनात्मक दूरी दुनूकेँ संग रखैत अछि।

स्वप्न एहि इतिहास-दृष्टिक विरुद्ध नहि, ओकर सहचर अछि। स्वप्न स्मृतिसँ असम्बद्ध कल्पना नहि, बल्कि अनुभवक पुनर्संयोजन अछि। निजी स्मृति, लोककथा, दार्शनिक प्रश्न, सामाजिक हिंसा आ कालानुभूति जखन एकहि चेतनामे पुनःगठित होइत अछि, तखन “मिज्झर” रूपक उचित बनैत अछि। ई मिज्झरता इतिहासक अभिलेखीय अनुशासनकेँ नकारैत नहि; बल्कि कहैत अछि जे मनुष्य इतिहास केवल बाहरी क्रममे नहि, स्मृति, भय, इच्छा, मूल्य आ भाषा द्वारा सेहो जीबैत अछि।

५. भारतीय दार्शनिक पद्धतिसँ पाठ

भारतीय दर्शनक कसौटी पर ग्रन्थक सबसँ उल्लेखनीय पक्ष “सम्प्रदाय-सूची”क पुनरुक्ति नहि, प्रश्न-केन्द्रित प्रस्तुति अछि। प्रत्यक्ष की? अनुमान

कखन वैध? शब्द कखन प्रमाण? जगत यथार्थ कि चेतनाक रूप? आत्मक निरन्तरता केना बुझल जाए? कर्म आ कर्तव्यक सम्बन्ध की? मुक्ति बाहरी संस्था सँ कि भीतरक भ्रम सँ? ई प्रश्न न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, सांख्य, योग, वेदान्त, बौद्ध आ जैन धारा कैं एक-दोसरक पाछाँ क्रमशः रखने बिना समान समस्याक अलग उत्तरक रूपमे सामने आनैत अछि।

“प्रमाणक छह दीप” आ “ज्ञानक चारि दुआर” प्रमाणमीमांसाक काव्यात्मक पुनर्विन्यास अछि। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्दक संग अन्य प्रमाण-पद्धतिसभक चर्चा ई स्पष्ट करैत अछि जे लेखक “ज्ञान”कैं केवल अनुभूति नहि, वैधताक प्रश्न मानैत छथि। एहि बिन्दु पर संग्रह दार्शनिक कविता मात्र नहि, ज्ञानमीमांसात्मक शिक्षण-पाठो बनि जाइत अछि। मुदा साहित्यिक दृष्टिसँ ओकर सफलता तखन अधिक अछि जखन सिद्धान्त उपमा, दृश्य अथवा मानवीय परिस्थिति संग जुड़ैत अछि; केवल क्रमिक परिभाषा-खंडमे काव्यात्मक तनाव कम होइत अछि।

बौद्ध, जैन आ वेदान्तीय सूत्रसभक समानान्तर उपस्थिति ग्रन्थकैं एकमात्र “अद्वैत” अथवा “शून्यवाद”क पुस्तक बनबाक सँ रोकैत अछि। कतेको रचनामे स्थिर आत्म अथवा आधारक सम्भावना अछि, कतेको ठाम स्वभावगत स्थिरताक विघटन, क्षण, परस्परता, अनेक दृष्टि आ अहिंसक सत्यक आग्रह। “सात भंगीक खिड़की सँ अहिंसक सत्य” शीर्षक जैन स्याद्वादक बहुपक्षीयता कैं नैतिक विनम्रतासँ जोड़ैत अछि; एतय दृष्टिकोणक मर्यादा स्वयं अहिंसाक ज्ञानमीमांसात्मक रूप बनैत अछि।

रस, कला आ सौन्दर्य पर आधारित रचनासभ—विशेषतः “सुन्दरक सीमा सँ पार कला” आ “रसक क्षणमे जगत आनन्द बनल”—भारतीय काव्यशास्त्रीय परम्परा कैं दर्शनक अन्य प्रश्नसभक संग जोड़ैत अछि। एतय कलात्मक अनुभूति निजी सुखक वस्तु नहि, अनुभवक साधारणीकृत, साझा आ रूपान्तरकारी स्थिति बनैत अछि। एहि कारण संग्रह अपन साहित्यिक आलोचना स्वयं भीतर सँ करैत देखाइत अछि: कविता केवल विचार पहुँचाबयक पात्र नहि, ज्ञानक एक अलग अनुभूतिक माध्यम अछि।

६. पाश्चात्य दार्शनिक पद्धतिसँ पाठ

खण्ड ७–८ मे पाश्चात्य दर्शनक प्रश्नसभ प्रत्यक्ष नामोल्लेख सँ बेसी संकल्पनात्मक शीर्षक द्वारा प्रवेश करैत अछि। “सन्देहक दीप सँ निश्चयक आकाश धरि” पद्धतिगत सन्देह, चेतन-अस्तित्व आ निश्चित आधारक खोजक अनुक्रम रचैत अछि; “अनुभवक धार पर कारणक प्रश्न” अनुभववादक समस्या; “वस्तुक आभास सँ चेतनाक अन्तराल धरि” आ “अभिमुख चेतना सँ स्वतन्त्र अस्तित्व धरि” अनुभूति, अभिप्रायिता आ वस्तु-स्वातन्त्र्यक तनाब; “वाक्यक अर्थ सँ तार्किक सत्य धरि” भाषा–तर्क सम्बन्ध; “फेंकल क्षणसँ मृत्यु-दिशि खुलल समय” अस्तित्व, सीमास्थिति आ मृत्युबोधक दिशा खोलैत अछि।

एहि रचनासभक शक्ति “पाश्चात्य” कैं एक समरूप इकाई नहि बनायबमे अछि। तर्कीय विश्लेषण, अनुभववाद, प्रत्ययवाद, अस्तित्ववाद, नैतिक दर्शन, धर्म-दर्शन, इतिहास-दर्शन—सभ एकहि आकाशमे अलग-अलग दिशा जकाँ रखल गेल अछि। “पूब-पश्चिमक बीच एकहि उजास” तुलना कैं श्रेष्ठता-प्रतियोगिता सँ हटाकऽ प्रश्न-साझेदारी बनबैत अछि: भाषा भिन्न, पर मनुष्यक सत्य, पीड़ा, ज्ञान, कर्तव्य आ मुक्ति सम्बन्धी प्रश्न बहुधा संवाद योग्य अछि।

पाश्चात्य इतिहासचिन्तनक दृष्टिसँ ग्रन्थक “कथा” आ “इतिहास”क सम्बन्ध विशेष फलदायी अछि। इतिहासक घटना केवल तथ्यक ढेरी नहि; क्रम, उद्देश्य, परिणाम, विफलता, आकस्मिकता आ पुनर्व्याख्या द्वारा अर्थ पबैत अछि। ई विचार इतिहासक कथात्मक संरचना प्रति सजग अछि, मुदा कथात्मकता कैं मनमानी कथा बनायबक छूट नहि दैत; प्रमाण, समय-सापेक्ष दृष्टि आ अभिकर्ताक सीमित ज्ञानक अनुशासन एकरे संग जुड़ल अछि।

७. नव्य-न्याय समीक्षा : सूक्ष्म भेद, सम्बन्ध आ भाषिक औजार

नव्य-न्याय दृष्टिसँ संग्रहक सबसँ महत्त्वपूर्ण रचना “सूक्ष्म भेदक नोक पर अर्थ” अछि। एतय ज्ञान, ज्ञाता, वस्तु, गुण आ सम्बन्धकैं एकसाथ न मिला देबाक आग्रह अछि। लाल फूल देखबाक उदाहरणमे केवल “लाल” आ “फूल” नहि, लालिमाक फूलमे अवस्थित सम्बन्ध, ज्ञानक विषयता, संकेतक स्थान-काल-सापेक्षता आ परिभाषाक सूक्ष्मता पर बल देल गेल अछि। नव्य-न्याय परम्पराक मौलिक योगदान एही प्रकारक विश्लेषणात्मक भाषा अछि—जाहि सँ अस्पष्ट दार्शनिक दावाकैं घटकसभमे तोड़ि जाँचल जा सकय।

ग्रन्थक अनेक शीर्षक स्वयं नव्य-न्यायीय मनोवृत्ति धारण करैत अछि: “भेदक सूक्ष्म रेखा, सम्बन्धक मौन सूत्र”, “वाक्यक संगति, ज्ञानक अपन उजास”, “ज्ञानक दर्पण, हेतुक डोरी”, “नियमक जालमे अर्थ खोजैत मनुष्य”, “पहिचानक धरती, वाक्यक मौन पूर्वशर्त”। एहि सभमे अर्थ केवल शब्दकोशीय वस्तु नहि; सम्बन्ध, पात्रता, सन्दर्भ, वक्ता, संकेत आ ज्ञान-स्थितिक संयुक्त फल अछि।

तथापि नव्य-न्यायक कसौटी अत्यन्त कठोर अछि। जखन कविता “आत्मा”, “अनन्त”, “उजास”, “आधार”, “साक्षी” सन पदक उपयोग करैत अछि, तखन विश्लेषण पूछत—एहि पदक अवच्छेदक की? सम्बन्धक प्रकार की? ज्ञानक विषय केना निर्धारित? दावाक प्रमाण की? एहि कसौटीसँ संग्रहक काव्यात्मक सार्वत्रिकताक किछु अंश दार्शनिक प्रतिज्ञा रूपमे अपर्याप्त ठहरि सकैत अछि। मुदा साहित्यिक विधामे ई अपूर्णता अनिवार्य रूपेँ दोष नहि; कविताक कार्य कखनो दार्शनिक सूत्र सिद्ध करब नहि, प्रश्नक सूक्ष्मता जागृत करब सेहो अछि। सर्वोत्तम रचनासभ तखन सफल छथि जखन रूपक आ विश्लेषण एक-दोसरकेँ सीमित आ प्रकाशमान करैत अछि।

८. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति : परिभाषा आ अनुप्रयोग

एहि ग्रन्थसँ उभरैत “विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति” केँ चारि प्रमुख सिद्धान्तमे चिन्हल जा सकैत अछि। पहिल, इतिहासकेँ एकरेखीय केन्द्र सँ नहि, समान समय अथवा समान प्रश्नक अनेक भूगोल आ परम्परा सँ पढ़ब। दोसर, अभिलेखीय घटना संग भाषा, लोकस्मृति, दार्शनिक अवधारणा, साहित्यिक रूप आ सामाजिक अनुभवकेँ समानान्तर साक्ष्य-क्षेत्र मानब। तेसर, “पूर्व–पश्चिम”, “शास्त्र–लोक”, “परम्परा–आधुनिकता” सन द्वंद्व केँ स्थिर श्रेणी नहि मानि संवादात्मक अक्ष बनायब। चारिम, वर्तमान प्रश्नक आलोकमे अतीत पढ़ितहुँ अतीत पर वर्तमानक अन्तिम ज्ञान आरोपित नहि करब।

ई पद्धति खण्ड ५–८ मे विशेष स्पष्ट अछि। उदाहरणार्थ भाषा पर विचार मातृभाषा, स्मृति, सांस्कृतिक सत्ता, ज्ञानक अभिव्यक्ति आ विचार-स्वराजकेँ एकसाथ जोड़ैत अछि। इतिहास पर विचार घटना-क्रम, कथात्मकता, अभिकर्ताक दृष्टि, नैतिक मूल्यांकन आ कालातीत मानक केँ अलग-अलग स्तरमे रखैत अछि। दर्शन पर विचार एक सम्प्रदायकेँ “अन्तिम” नहि मानि

एकहि प्रश्नपर अनेक उत्तरक समानान्तर पंक्ति बनबैत अछि। एहि अर्थमे संग्रह स्वयं अपन पद्धतिक प्रयोगशाला अछि।

समानान्तर पद्धतिक सबसँ पैघ लाभ केन्द्र-विमर्शक विघटन अछि। मिथिला अथवा मैथिली एतय “क्षेत्रीय” परिशिष्ट नहि; ई विश्वदर्शनक प्रश्न पूछबाक पूर्ण भाषिक-दार्शनिक स्थल अछि। मैथिलीमे प्रमाणमीमांसा, अस्तित्व, इतिहास, नैतिकता, सौन्दर्य आ भाषादर्शनक विस्तृत लेखन स्वयं ज्ञान-भूगोलक पुनर्संतुलन अछि। मुदा समानान्तरता तखनहि विश्वसनीय रहत जखन तुलनाक दुनू/अनेक पक्षक ऐतिहासिक विशिष्टता, शब्दार्थ आ मूल तर्क सुरक्षित राखल जाए; सतही “सभ एकहि बात कहैत अछि” प्रकारक समन्वय एहि पद्धतिक विरोधी अछि।

९. खण्ड-दर-खण्ड साहित्यिक समीक्षा

९.१ खण्ड १ — स्वप्नमे मिज्झर होइत

ई खण्ड दीर्घ दार्शनिक पद्य-निबन्धसभ द्वारा काल, मुक्ति, धरती, सत्य, दुःख, परिवर्तन, घर, दर्पण, श्वास, कण, आगि, अनाम उजास आ अनेक मार्गक प्रश्न बनबैत अछि। रूपक-तंत्र अत्यन्त सघन अछि। “कालक धार…” इतिहासक नैतिक सीमा निर्धारित करैत अछि; “प्रश्नक देहरी…” प्रश्नकेँ मुक्ति-मार्ग बनबैत अछि; “हथेली भरि धरती…” अमूर्त दर्शनकेँ देहधारी अनुभवमे लौटबैत अछि। एहि खण्डक मुख्य सौन्दर्य विशाल विचारकेँ घरेलू/प्राकृतिक वस्तुसभ द्वारा दृश्य बनायब अछि; मुख्य जोखिम दीर्घता आ समान रूपकक पुनरावृत्ति।

९.२ खण्ड २ — स्वप्न, जागरण आ मिज्झर समय

एतय संग्रह सर्वाधिक बहुरूपी अछि। लोकविश्वास, नव व्यवस्था, जाति-सामाजिक टिप्पणी, कुमारिल, आकांक्षा, देह, ग्रामजीवन, हाइकू/शेनर्यू/टनका, कुण्डलिया, गजल, ध्वज-गीत, कर्ण-स्मृति, स्वप्न-विहीन शून्य, भय, माया-अविद्या—सभ एकहि खण्डमे। ई विविधता कविक दीर्घ रचनात्मक कालक अभिलेखक अनुभूति दैत अछि। पाठकीय दृष्टिसँ ई खण्ड “संग्रह”क अर्थमे वास्तविक संग्रहालय अछि; सम्पादकीय दृष्टिसँ उपविभाजन आ अधिक स्पष्ट कालक्रम देलासँ नेविगेशन आरो सुदृढ भऽ सकैत अछि।

९.३ खण्ड ३ — ओस, देहरी आ घरक नेह

ई खण्ड लघुता, नर्म बिम्ब आ घरेलू स्मृति लेल उल्लेखनीय अछि। देहरी, बोली, मेघ, अँगुरी, अँजुरी, आँगन, नेना, खूँटी, माटि, चिड़ै—ई शब्द-संसार दार्शनिक दावासँ बेसी अनुभूतिक सूक्ष्मता पर भरोस करैत अछि। “घर” एतय भवन नहि, भाषा-स्मृति आ सम्बन्धक भावात्मक भूगोल अछि। एहि खण्डमे संग्रहक सर्वाधिक गीतात्मक साँस भेटैत अछि।

९.४ खण्ड ४ — अर्थ, भाषा आ लोकजीवनक अँजोर

एतय लोकजीवन आ भाषिक अर्थ एक-दोसरक विस्तार बनैत अछि। रोटी, करघा, अलपना, थारी, मेहनत, चौक, फूल, पाथर, नाव, किनार—सभ दार्शनिक शब्दावलीक बराबर महत्त्व पबैत अछि। “सभ चाबी एक नहि” आ “प्रश्नकेँ खोलू” बहुविध व्याख्या आ संवादक नैतिकता व्यक्त करैत अछि। एहि खण्डक सामाजिक चेतना प्रत्यक्ष नाराबाजी सँ बचि दैनिक वस्तु आ श्रमक दृश्य द्वारा बनैत अछि।

९.५ खण्ड ५ — भाषा

ई खण्ड संग्रहक वैचारिक केन्द्र अछि। मातृभाषा, विचार-स्वराज, अनुभव, संस्कृति, व्यक्ति-समाज, ज्ञानमीमांसा, आत्म, सौन्दर्य, ध्वनि-अर्थ, मानवता, नैतिक निर्णय, माटि आ अनेक बौद्धिक दिशासभ विस्तृत पद्य-निबन्धमे खुलैत अछि। “भाषा जे भीतर घर करैत अछि” भाषाकेँ पीढ़ीगत स्मृति बनबैत अछि; “मैथिलीक नव खेत” भाषिक सृजनकेँ खेतीक रूपकसँ जोड़ैत अछि। खण्डक विशिष्टता ई जे भाषा केवल माध्यम नहि—ज्ञान-निर्माणक संस्था अछि।

९.६ खण्ड ६ — प्रश्न

शीर्षक अनुरूप ई खण्ड उत्तरक समाहार नहि, प्रश्नक भूगोल अछि। श्रुति, सूत्र, साक्षी-प्रकृति, अभेद, कर्म, पुरुषार्थ, तर्क, पदार्थ, शब्द, राजदण्ड, शून्य, सम्बन्ध, अनेकता, प्रेम, आगम, विद्रोह, लोक, दुःख, श्रम, रस आ इतिहास—प्रत्येक रचना अलग परम्परा अथवा समस्या दिशि दुआर खोलैत अछि। साहित्यिक रूपमे ई संक्रमण-खण्ड अछि: भाषा-केंद्रित चिन्तन सँ व्यवस्थित तुलनात्मक दर्शन दिस।

९.७ खण्ड ७ — अनेक दिशाक दार्शनिक आकाश

ई पोथीक सबसँ विस्तृत तुलनात्मक दार्शनिक खण्ड अछि। भारतीय आ पाश्चात्य परम्पराक अनेक विचार-प्रकार—कारण, सत्ता, प्रत्यभिज्ञा, मध्यम मार्ग, संशय, तर्क, प्रमाण, समाज, इतिहास, प्रेम, कर्म, निषेध, भाषा, श्रम, नैतिकता, प्रतिवाद, समय, स्वतन्त्रता, कृपा, नियम, अनुभव, अस्तित्व, अनेकान्त—क्रमशः काव्यात्मक निबन्ध बनैत अछि। एहि खण्डक मूल्य “नाम-संग्रह” नहि, समस्यासभक पुनःरचना अछि। मुदा दार्शनिक पाठक लेल मूल ग्रन्थ/सिद्धान्तक सूक्ष्म भिन्नताक स्पष्ट संदर्भ कतेको ठाम उपयोगी रहित।

९.८ खण्ड ८ — सन्देह, अनुभव, इतिहास आ न्याय

अन्तिम मुख्य खण्ड पाश्चात्य ज्ञानमीमांसा, तर्क, धर्म-दर्शन, इतिहास-दर्शन आ न्याय-चिन्तनक अधिक संगठित अनुक्रम अछि। “सन्देहक दीप…” सँ “अक्षरक पार जे उजास” धरि यात्रा सन्देह–निश्चय, अनुभव–कारण, आभास–यथार्थ, भाषा–तथ्य, प्रयोग–अर्थ, निजी संकेत–साझा कसौटी, चेतना–अस्तित्व, विश्वास–अशुभ, इतिहास–बोध आ कानून–न्यायक जोड़ीसभ पर चलैत अछि। ई खण्ड पुस्तकक बहुध्रुवीय यात्रा कँ पद्धतिगत समापन दैत अछि।

१०. अनुवाद खण्ड : संक्षेप, पुनर्कथन आ भाषिक स्थानान्तरण

“त्वञ्चाहञ्च” महाभारतक अठारह पर्वक अति-संक्षिप्त मैथिली गीत-प्रबन्ध अछि। ई शब्दशः अनुवाद नहि, घटनाक चयनित पुनर्कथन आ नैतिक-पुनर्वाचन अछि। आरम्भिक पंक्तिसभमे स्वयं प्रश्न अछि जे महाभारत धर्मग्रन्थ रूपमे केना पढ़ल गेल, असमानता, प्रतिभा-दमन, परिवार-मोह, युद्ध आ सत्ता-संघर्षक अर्थ की। अन्तिम निष्कर्षमे “त्वञ्चाहञ्च” कें आपसी लड़ाइक लगातार महामारि समान देखल गेल अछि। अतः ई अनुवादक संग समकालीन आलोचनात्मक हस्तक्षेप सेहो अछि।

“असञ्जाति मन” बुद्धचरितक अति-संक्षिप्त मैथिली रूपान्तर अछि। अठाइस सर्गक क्रम बनाए रखब एकर संरचनात्मक विशेषता अछि। काव्य बुद्धक जीवन, दुःख, वैराग्य, साधना, बोध आ करुणाक यात्रा कँ मैथिली गीत-लयमे संकुचित करैत अछि। संक्षेपक कारण मूलक अलंकारिक विस्तार, संस्कृत महाकाव्यीय विवरण आ दार्शनिक सूक्ष्मता घटैत अछि, मुदा कथाक मूल धुरी स्थानीय पाठक लेल सुगम बनैत अछि।

तेसर अनुलग्नक [Second Person Singular] केर अंग्रेजी आमुखक मैथिली अनुवाद अछि। एहि सँ पोथीक अनुवाद-दृष्टि केवल प्राचीन संस्कृतसँ मैथिली धरि सीमित नहि रहैत; आधुनिक मैथिली काव्यक अंग्रेजी माध्यम सँ पुनः मैथिलीमे प्रत्यावर्तन सेहो सामने अबैत अछि। ई चक्रीय अनुवाद भाषा, आत्म-व्याख्या आ पाठकीय समुदायक सम्बन्ध पर रोचक प्रश्न उठबैत अछि।

११. रूप, लय आ काव्य-शिल्प

संग्रहक शिल्प समानरूप नहि। लघु गीत, लोकगीत, गजल, हाइकू/शेनर्यू/टनका, कुण्डलिया, मुक्तछन्द, दीर्घ पद्य-निबन्ध, गीत-प्रबन्ध आ अनुवाद—सभ रूप उपस्थित अछि। एतय “एक काव्यशास्त्र” खोजब कठिन; अधिक उचित ई कहब जे लेखक प्रश्नक प्रकृति अनुसार रूप बदलैत छथि। निजी स्मृति लघु पंक्ति माँगैत अछि, दार्शनिक बहस दीर्घ तर्क-खंड, महाकाव्यीय अनुवाद कथा-गति।

बारम्बार प्रयुक्त विन्यास—विरोधी अथवा पूरक पदक जोड़: “भीतर/बाहर”, “क्षण/अनन्त”, “नाम/अनाम”, “एक/अनेक”, “शब्द/मौन”, “इतिहास/मुक्ति”, “देह/आकाश”, “प्रमाण/विश्वास”—संग्रहक रचनात्मक व्याकरण बनैत अछि। ई द्विपदीय संरचना पाठकेँ यादगार बनबैत अछि, मुदा अत्यधिक प्रयोग किछु शीर्षकमे पूर्वानुमेयता सेहो आनैत अछि। भविष्यक सम्पादित संस्करणमे समान रूपक/शीर्षकीय संरचनाक घनत्व घटाकऽ विशेष रचनासभक अलग पहचान आरो प्रखर कएल जा सकैत अछि।

१२. आलोचनात्मक निष्कर्ष

“स्वप्न मे मिज्झर होइत” केर साहित्यिक महत्त्व ओकर विशालता मात्र नहि, बल्कि भाषा आ ज्ञानक सम्बन्ध पर कएल प्रयोगमे अछि। मैथिली एतय घरेलू संवेदनाक भाषा रहितहुँ दर्शन, इतिहास, तर्क, नैतिकता आ तुलनात्मक बौद्धिक विमर्शक सक्षम माध्यम सिद्ध होइत अछि। पुस्तकक श्रेष्ठ क्षण ओ अछि जतय लोक-बिम्ब आ दार्शनिक प्रश्न एक-दोसरकेँ आलोकित करैत अछि—माटि प्रमाणक विरुद्ध नहि, करघा नैतिकता सँ अलग नहि, देहरी ज्ञानमीमांसाक सीमा बनि सकैत अछि, आ भोर इतिहासक नूतन सम्भावना।

भारतीय दृष्टिसँ ई ग्रन्थ प्रश्नाधारित बहु-दर्शनक स्थल; पाश्चात्य दृष्टिसँ सन्देह, अनुभव, भाषा, इतिहास आ अस्तित्वक संवाद; नव्य-न्याय दृष्टिसँ अर्थ-सूक्ष्मता आ सम्बन्ध-विश्लेषणक अभ्यास; विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ अनेक काल, परम्परा, भूगोल आ भाषिक चेतनाक सहपाठ अछि। एकर सबसँ पैघ आलोचनात्मक चुनौती दीर्घता, पुनरावृत्त रूपक, किछु दर्शनक अत्यधिक संक्षेप, आ शब्द-मानकीकरणक असमानता अछि। मुदा ई चुनौतीसभ संग्रहक परियोजनाक पैमाना सँ उत्पन्न—आ व्यवस्थित सम्पादकीय निखारसँ सुधार योग्य—अछि।

अन्ततः पोथी “एक उत्तर” नहि दैत; ओ उत्तरसभक बीचक सम्बन्ध, सीमा आ नैतिक दायित्व पर विचार करबैत अछि। एहि कारण ओकर शीर्षकक “मिज्झर” अवस्था निष्कर्षहीनता नहि, बहुध्रुवीय ज्ञानक रूपक बनैत अछि: स्वप्न जागरणमे, लोक दर्शनमे, इतिहास स्मृतिमे, पूर्व पश्चिममे, कविता तर्कमे —मुदा कोनो एक दोसरामे पूर्णतः बिलायल बिना। एहि भिन्नतासहित सह-अस्तित्वमे ग्रन्थक मौलिकता अछि।

१३. सम्पूर्ण रचना-आवरणिका

नीचाँ मूल पाठक स्वतंत्र शीर्षक-एकाइ क्रमशः दर्ज अछि। “पाठ-सूत्र” प्रत्येक रचनाक वास्तविक पाठमे सर्वाधिक आवर्ती अर्थवाही शब्दसभ सँ निकालल संक्षिप्त संकेत अछि; ई सारांशक विकल्प नहि, बल्कि कविताक मुख्य शब्द-क्षेत्रक पाठाधारित सूचक अछि। एहि आवरणिकाक उद्देश्य ई सुनिश्चित करब अछि जे पोथीक कोनो स्वतंत्र रचना समीक्षा-सूची सँ बाहर नहि रहय।

प्रारम्भिक पद्य

1. अनचिन्हार आखर — पृ. 16; पाठ-परिमाण 50 शब्द; पाठ-सूत्र: मोन, गेल, बड़द, एतऽ, भोथियाय.

2. स्वप्न मे मिज्झर होइत..... — पृ. 16; पाठ-परिमाण 0 शब्द; पाठ-सूत्र: स्वप्न, मिज्झर.

3. मृत्यु गीत (लोकगीत) — पृ. 16; पाठ-परिमाण 54 शब्द; पाठ-सूत्र: कहमा, हंसा, समाएल, रामा, मोकाम.

स्वप्नमे मिज्झर होइत

4. कालक धार पार अनन्तक उजास — पृ. 18; पाठ-परिमाण 2877 शब्द; पाठ-सूत्र: यदि, कैं, अन्तिम, कालक, अधिक.

5. प्रश्नक देहरीसँ मुक्तिक आकाश — पृ. 28; पाठ-परिमाण 2220 शब्द; पाठ-सूत्र: यदि, कैं, दोसरक, अज्ञान, किछु.

6. हथेली भरि धरती, आँखि भरि सत्य — पृ. 35; पाठ-परिमाण 2367 शब्द; पाठ-सूत्र: यदि, देह, अपने, कैं, सन्देह.

7. एक पात पर सात दिशाक ओस — पृ. 43; पाठ-परिमाण 4010 शब्द; पाठ-सूत्र: यदि, दोसर, अपने, कोनो, अधिक.

8. दुःखक गाँठ खोलैत भोर — पृ. 56; पाठ-परिमाण 1948 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, अधिक, मुक्ति, पीड़ा, यदि.

9. लौ बदलैत रहैत, उजास चलैत — पृ. 62; पाठ-परिमाण 1522 शब्द; पाठ-सूत्र: बदलैत, कैं, स्थिर, कारणक, दोसर.

10. चार खिड़की आ एक खुलल आकाश — पृ. 67; पाठ-परिमाण 1857 शब्द; पाठ-सूत्र: यदि, कैं, मुक्ति, दोसर, बाहरी.

11. मुट्ठीक भीतर जे घर नहि — पृ. 73; पाठ-परिमाण 1953 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, अधिक, स्थिर, बदलैत, सम्बन्ध.

12. दर्पणक पार जे देखैत अछि — पृ. 78; पाठ-परिमाण 1803 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, साक्षी, वस्तु, अलग, पूर्ण.

13. श्वासक भीतर एक स्थिर आकाश — पृ. 82; पाठ-परिमाण 1574 शब्द; पाठ-सूत्र: ध्यान, श्वास, कैं, मनक, अधिक.

14. एक-एक कणक अपन चेहरा — पृ. 86; पाठ-परिमाण 1730 शब्द; पाठ-सूत्र: किछु, कैं, वस्तु, गुण, सम्बन्ध.

15. धुँआक पार जे आगि अछि — पृ. 90; पाठ-परिमाण 1701 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, तर्क, बेठीक, कारण, निष्कर्ष.

16. अनेक नामक पाछाँ एक अनाम उजास — पृ. 94; पाठ-परिमाण 1577 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, धीरे, नाम, अनेक, कियो.

17. भीतरक आकाश, बाहरक आकाश — पृ. 97; पाठ-परिमाण 1584 शब्द; पाठ-सूत्र: नाम, गहिर, अधिक, कैं, अलग.

18. तीन दुआर, एके अनन्तक दिस — पृ. 102; पाठ-परिमाण 2197 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, परम, भेद, दोसर, भिन्नता.

19. दू हवाक बीच जागैत नव भोर — पृ. 107; पाठ-परिमाण 2610 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, नवा, भीतरक, पुरान, अधिक.

स्वप्न सँ पहिने

20. नजरि लागि जाइ छै — पृ. 115; पाठ-परिमाण 174 शब्द; पाठ-सूत्र: लागि, जाइ, नजरि, छथि, सुरसुरी.

21. भाग्यशाली — पृ. 115; पाठ-परिमाण 208 शब्द; पाठ-सूत्र: छथि, तेहेन, विरुद्ध, हारि, विचित्र.

22. जाइत जाइत — पृ. 117; पाठ-परिमाण 154 शब्द; पाठ-सूत्र: देश, घुरि, दूरस्त, कोनो, रस्ता.

23. बिलाइत आसक चेन्हासी — पृ. 118; पाठ-परिमाण 20 शब्द; पाठ-सूत्र: गाछ, दुनू, कात, संगे, जाइ.

24. घ — पाठ-परिमाण 3 शब्द.

25. हो — पाठ-परिमाण 2 शब्द.

26. चे — पाठ-परिमाण 13 शब्द; पाठ-सूत्र: न्हा, अन्हार, गुज्ज, आसक, चेन्हासी.

27. शामिल बाजाक दुन्दभी वादक — पृ. 119; पाठ-परिमाण 186 शब्द; पाठ-सूत्र: छथि, चित्र, हहाइत, अनन्तक, सुनैत.

28. मन्दाकिनी जे आकाश मध्य — पृ. 120; पाठ-परिमाण 99 शब्द; पाठ-सूत्र: छाड़ल, धार, मन्दाकिनी, आकाश, मध्य.

29. नव व्यवस्था — पृ. 121; पाठ-परिमाण 0 शब्द; पाठ-सूत्र: व्यवस्था.

30. नव व्यवस्थाक मनुक्ख — पृ. 121; पाठ-परिमाण 50 शब्द; पाठ-सूत्र: मनुक्ख, आस्वाद, गेल, आम्रपाली, छथि.

31. नव व्यवस्थाक दलित — पृ. 121; पाठ-परिमाण 55 शब्द; पाठ-सूत्र: बच्चा, खञ्जित, भीख, पीयर, लाल.

32. नव व्यवस्थाक पुरहित — पृ. 122; पाठ-परिमाण 62 शब्द; पाठ-सूत्र: लघु, कम्पनी, उद्योगक, मालिक, उद्योगकैं.

33. नव आ पुरान व्यवस्थाक हाट — पृ. 122; पाठ-परिमाण 112 शब्द; पाठ-सूत्र: छथि, व्यवस्थाक, तरकारी, होटलक, बनथि.

34. जखन मशीन आ बिलाड़ि दुनू बुझैए हमरा मृत — पृ. 123; पाठ-परिमाण 622 शब्द; पाठ-सूत्र: स्थान, मृत्यु, बिनु, भीष्म, इच्छा.

35. हाइ रे कुमारिल!! — पृ. 126; पाठ-परिमाण 274 शब्द; पाठ-सूत्र: दिल्ली, भगवान, डॉक्टर, दूर, अस्त.

36. बुद्धिक भरोसे गढ़ल नव सत्यक गढ़नि — पृ. 128; पाठ-परिमाण 0 शब्द; पाठ-सूत्र: बुद्धिक, भरोसे, गढ़ल, गढ़नि.

37. आकांक्षाक अग्नि — पृ. 128; पाठ-परिमाण 48 शब्द; पाठ-सूत्र: आकांक्षाक, कोनो, निरन्तरता, आँचब, प्रज्वलित.

38. अनुक्रमणिका आ विषय सूचीसँ आगाँ — पृ. 128; पाठ-परिमाण 71 शब्द; पाठ-सूत्र: छड़पि, लिखलाहाकेँ, छोड़ि, अनुक्रमणिका, विषय.

39. व्यावहारिक आ सैद्धांतिक — पृ. 128; पाठ-परिमाण 204 शब्द; पाठ-सूत्र: भेड़क, आकांक्षाक, हेंज, सैद्धांतिक, शिक्षक.

40. हमर शरीरक भाथीमे पैसैत अछि वायु — पृ. 130; पाठ-परिमाण 52 शब्द; पाठ-सूत्र: भाथीमे, पैसैत, वायु, अग्नि, दुनूक.

41. कबिराहाक कनसीपर उठैत धुन — पृ. 130; पाठ-परिमाण 92 शब्द; पाठ-सूत्र: हेंजक, दीप, पहीरि, बुझि, गेलौं.

42. भुजनाठीसँ लाड़ैत आकांक्षाक अग्नि — पृ. 130; पाठ-परिमाण 47 शब्द; पाठ-सूत्र: कनसारीक, भुज्जा, दाबापर, उझकुन, ओइपर.

43. अतिखाइन — पृ. 131; पाठ-परिमाण 16 शब्द; पाठ-सूत्र: मकइक, मखानी, सोन्हगर, झूर, नीक.

44. भैसाठ — पृ. 131; पाठ-परिमाण 49 शब्द; पाठ-सूत्र: पातर, अदहन, देल, पानि, आँच.

45. धेनुआर घानी — पृ. 131; पाठ-परिमाण 78 शब्द; पाठ-सूत्र: शोरा, घानी, अवशिष्ट, सुच्चा, नोन.

46. मन्तुर पढ़ि छत्ता लग जायब — पृ. 132; पाठ-परिमाण 107 शब्द; पाठ-सूत्र: मन्तुर, बिज्जी, चिड़ै, पढ़ि, छत्ता.

47. बकछुछरु खेलाइत भीखू संग — पृ. 132; पाठ-परिमाण 225 शब्द; पाठ-सूत्र: काज, भाय, भीखूक, मुन्हारि, साँझमे.

48. उजाहिमे उपलाइत हम आ माँछ — पृ. 134; पाठ-परिमाण 162 शब्द; पाठ-सूत्र: इछाइन, जाल, खिरबैत, नम्माधग्गी, बिड़इमे.

49. ठाढ़ लत्तीकेँ पढ़ैत छी — पृ. 135; पाठ-परिमाण 206 शब्द; पाठ-सूत्र: पात, पानक, गेल, भेने, जड़ि.

50. श्राद्ध ने मरा जाय — पृ. 136; पाठ-परिमाण 53 शब्द; पाठ-सूत्र: मृत्यु, श्राद्ध, दोसर, पिताक, भाय.

51. शलातुर गाम — पृ. 136; पाठ-परिमाण 120 शब्द; पाठ-सूत्र: अराड़ि, चक्र, घूमल, टूटल, ठाढ़.

52. बड़का सड़क छह लेन बला — पृ. 137; पाठ-परिमाण 531 शब्द; पाठ-सूत्र: माय, सड़क, लाल, गामक, रहै.

53. पक्काक जाइठ — पृ. 139; पाठ-परिमाण 87 शब्द; पाठ-सूत्र: जाठि, पोखरि, पोखरिक, लकड़ीक, टोलक.

54. पता नै घुरि कऽ जायब आकि… — पृ. 140; पाठ-परिमाण 276 शब्द; पाठ-सूत्र: घुरि, पता, जायब, आकि, एत्तै.

55. गजल — पृ. 142; पाठ-परिमाण 59 शब्द; पाठ-सूत्र: अनेरे, मुतकारिब, बहरे, रुक्न, लुन.

56. प्रकृति, पुरुष — पृ. 142; पाठ-परिमाण 611 शब्द; पाठ-सूत्र: प्रकृति, लगैए, हरदि, पनिसोखा, गाछ.

57. हाइकू/ शेनर्यू/ टनका — पृ. 145; पाठ-परिमाण 768 शब्द; पाठ-सूत्र: प्रकृति, अकास, नृत्य, ठाढ़, गाछ.

58. कुण्डलिया — पृ. 148; पाठ-परिमाण 178 शब्द; पाठ-सूत्र: नीक, बोल, करू, हुए, काल.

59. मिथिलाक ध्वज गीत — पृ. 149; पाठ-परिमाण 57 शब्द; पाठ-सूत्र: ध्वज, मिथिलाक, फहरायत, जगतमे, माँ.

टुटैत अबैत स्वप्नक बीच

60. जोति बड़द सोचमे पड़लौं — पृ. 149; पाठ-परिमाण 34 शब्द; पाठ-सूत्र: बड़द, मोन, गेल, भोथिआय, जोति.

61. बिसरलौं फेर- कर्णक मृत्युक छोट-छीन रूप — पृ. 149; पाठ-परिमाण 37 शब्द; पाठ-सूत्र: जाइ, गप्प, मोन, पड़ैत, खूब.

62. कटिहारी — पृ. 150; पाठ-परिमाण 533 शब्द; पाठ-सूत्र: छथि, सर्द, कनकनी, हाड़मे, आगि.

63. डैनियाही दुपहरिया — पृ. 153; पाठ-परिमाण 114 शब्द; पाठ-सूत्र: सहस्रबाढ़निक, निन्न, निन्नक, विचित्र, डैनियाही.

64. खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़ — पृ. 154; पाठ-परिमाण 51 शब्द; पाठ-सूत्र: देबाल, ढहैत, ठाढ़, मोनक, अदृश्य.

65. निन्नक ओहि पार — पृ. 154; पाठ-परिमाण 381 शब्द; पाठ-सूत्र: स्मृति, रील, गति, जीव, मृत्युक.

स्वप्न विहीन शून्य

66. सङ गामक पोखरि कात — पृ. 156; पाठ-परिमाण 102 शब्द; पाठ-सूत्र: बंशी, पाथि, पकड़बाक, अनन्त, प्रयास.

67. सङ सागर तटपर — पृ. 157; पाठ-परिमाण 180 शब्द; पाठ-सूत्र: सभटा, मंदिर, बिसरल, मोनक, तटपर.

68. सर्वज्ञाता — पृ. 158; पाठ-परिमाण 483 शब्द; पाठ-सूत्र: किछु, अनुभव, सभटा, जाइए, देखाइत.

स्वप्न विहीन शून्यक पाछाँ

69. घृणाक तरहरिमे — पृ. 161; पाठ-परिमाण 67 शब्द; पाठ-सूत्र: जायत, तरहरि, रहत, प्रेमक, घृणा.

70. जावत रहब — पृ. 161; पाठ-परिमाण 86 शब्द; पाठ-सूत्र: प्रेमक, स्थूल, रहब, चारूकात, गिलेबासँ.

71. चतुरहस्त — पृ. 162; पाठ-परिमाण 46 शब्द; पाठ-सूत्र: गुमकी, नृत्य, ध्वनि, गुम, पहिल.

72. बुढ़िया डाही — पृ. 163; पाठ-परिमाण 239 शब्द; पाठ-सूत्र: बुढ़िया, डाही, प्रेमक, भयंकर, धारक.

73. आ तखन, फैसला हेतै आब — पृ. 164; पाठ-परिमाण 77 शब्द; पाठ-सूत्र: जाइए, उनटि, जाइ, बदलि, वाणी.

74. जँ विश्वास कऽ ली अहाँपर, ऐ प्रकृतिपर — पृ. 165; पाठ-परिमाण 186 शब्द; पाठ-सूत्र: लगैत, खोंइचा, डाही, आश्वासन, बुढिया.

75. घड़ी पूजा — पृ. 166; पाठ-परिमाण 574 शब्द; पाठ-सूत्र: पूजा, भगवती, घड़ी, घरमे, देल.

76. नाराशंसी — पृ. 170; पाठ-परिमाण 575 शब्द; पाठ-सूत्र: छथि, कविक, छन्दक, गायत्री, कविताक.

77. निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम् — पृ. 173; पाठ-परिमाण 80 शब्द; पाठ-सूत्र: चन्द्रयाणक, पृथ्वी, तरेगण, पूर्वापर, आर्यभटक.

78. सपना — पृ. 174; पाठ-परिमाण 123 शब्द; पाठ-सूत्र: मोनक, सपना, निम्न, मोन, छाती.

79. चुप्पीक अपन बोली — पृ. 174; पाठ-परिमाण 135 शब्द; पाठ-सूत्र: गेल, लैत, किछु, अबैए, जाइए.

80. स्मृति-भय — पृ. 175; पाठ-परिमाण 844 शब्द; पाठ-सूत्र: स्मृति, भेटल, देलक, विज्ञान, चारि.

81. वादक सम्बल अर्थहीन — पृ. 180; पाठ-परिमाण 117 शब्द; पाठ-सूत्र: सूगा, वादक, सम्बल, विकराल, सोझाँ.

स्वप्न मे मिज्झर होइत

82. क्षणक अछोर — पृ. 181; पाठ-परिमाण 113 शब्द; पाठ-सूत्र: जाइए, नाम, तैयो, कहियो, एखुनका.

83. चमत्कारक पोथी — पृ. 182; पाठ-परिमाण 205 शब्द; पाठ-सूत्र: संख्या, जाइए, चेतना, सोझाँ, आस्ते.

84. विचारक विराम — पृ. 183; पाठ-परिमाण 108 शब्द; पाठ-सूत्र: कने, कहियो, छाह, बेर, बदलैए.

85. भयक पकड़ ढील होइत — पृ. 183; पाठ-परिमाण 73 शब्द; पाठ-सूत्र: कने, मृत्युक, नाम, सुनि, सिकुड़ैए.

86. कलहक अभ्यास — पृ. 184; पाठ-परिमाण 116 शब्द; पाठ-सूत्र: रोकि, अनेक, कखनो, भोर, ककरासँ.

87. अपन परिचयक खाली ठाम — पृ. 184; पाठ-परिमाण 337 शब्द; पाठ-सूत्र: ठाम, लोक, रहय, दिनक, काजक.

88. घड़ीक बाहरी किनार — पृ. 186; पाठ-परिमाण 72 शब्द; पाठ-सूत्र: टिक, सुनैत, उठैए, घटना, डोरी.

89. एतहि खोज — पृ. 186; पाठ-परिमाण 74 शब्द; पाठ-सूत्र: पवित्र, दिनक, प्रतीक्षामे, साधारण, बीति.

90. प्राणक गवाही — पृ. 187; पाठ-परिमाण 90 शब्द; पाठ-सूत्र: दैए, पशु, यन्त्रक, विचार, सुनैत.

91. शब्दशास्त्रम् — पृ. 187; पाठ-परिमाण 84 शब्द; पाठ-सूत्र: नाम, केओ, अनुभव, बच्चा, पहिल.

92. अपन दाबीक सोझाँ — पृ. 188; पाठ-परिमाण 32 शब्द; पाठ-सूत्र: एके, हाथ, महिमाक, कथा, भूलक.

93. माया-अविद्या — पृ. 188; पाठ-परिमाण 72 शब्द; पाठ-सूत्र: पर्दा, आँखिपर, बाहरक, दृश्य, झाँपैए.

94. चिन्तक — पृ. 188; पाठ-परिमाण 144 शब्द; पाठ-सूत्र: अनेक, केओ, कथा, चिन्तक, पाछाँक.

95. बीतैत दिनक संग — पृ. 189; पाठ-परिमाण 95 शब्द; पाठ-सूत्र: रहैए, किछु, बदलैत, पुरान, घरक.

96. देहक देहरी — पृ. 190; पाठ-परिमाण 76 शब्द; पाठ-सूत्र: लगैए, पैर, धरती, छूबैए, धरतीक.

97. चिन्हब आ बुझब — पृ. 190; पाठ-परिमाण 105 शब्द; पाठ-सूत्र: होयब, छोट, वर्षक, परिचय, तैयो.

98. डीह — पृ. 191; पाठ-परिमाण 54 शब्द; पाठ-सूत्र: माटिपर, पुरखाक, पएर, पड़ल, घरक.

99. मनुक्ख — पृ. 191; पाठ-परिमाण 112 शब्द; पाठ-सूत्र: अहाँक, सकैए, आसन, एके, देह.

100. अन्तक प्रश्न, आइक दिन — पृ. 191; पाठ-परिमाण 58 शब्द; पाठ-सूत्र: रहत, दिनमे, कलेन्डरक, पन्ना, पलटैत.

101. स्वप्नमे मिज्झर होइत — पृ. 192; पाठ-परिमाण 1537 शब्द; पाठ-सूत्र: बलि, गेल, शुन:शेप, रहै, स्वप्न.

102. स्थितप्रज्ञतामे लिबैत सत्य! — पृ. 198; पाठ-परिमाण 171 शब्द; पाठ-सूत्र: बुझैत, दियौ, रस्ता, बुझऽ, रही.

103. ई जिनगी कोनो बेजाय नै अछि — पृ. 199; पाठ-परिमाण 78 शब्द; पाठ-सूत्र: जिनगी, कोनो, बेजाय, बिनु, तेहने.

104. महत्वाकांक्षा — पृ. 200; पाठ-परिमाण 33 शब्द; पाठ-सूत्र: कालक, उड़ैत, गुड्डी, महत्वाकांक्षा, लागल.

105. ओकरा हँसैत देखि जे आबि जाइ छौ तोरा नोर — पृ. 200; पाठ-परिमाण 275 शब्द; पाठ-सूत्र: तोरा, तोहर, हारि, गेल, हँसी.

ओस, देहरी आ घरक नेह

106. देहरीक ओहि पार — पृ. 203; पाठ-परिमाण 159 शब्द; पाठ-सूत्र: देहरीपर, उठलहुँ, माटि, आँखि, हुलास.

107. अनचिन्ह घाटक नेह — पृ. 203; पाठ-परिमाण 142 शब्द; पाठ-सूत्र: अहाँक, घाट, हिलकोरि, चिट्ठीमे, पानि.

108. बोलीक चिरै — पृ. 204; पाठ-परिमाण 140 शब्द; पाठ-सूत्र: नन्हका, नाव, रेखाक, माथपर, छोट.

109. मेघक पएरक चिन्ह — पृ. 205; पाठ-परिमाण 135 शब्द; पाठ-सूत्र: बूँदक, पातक, मोती, भेटल, उठल.

110. अँगुरीमे बसल गीत — पृ. 206; पाठ-परिमाण 148 शब्द; पाठ-सूत्र: गेल, तिनका, हुनक, माए, डलिया.

111. पलकक ओहि पार — पृ. 207; पाठ-परिमाण 112 शब्द; पाठ-सूत्र: गेल, रहलहुँ, धीरे, करिया, ओढ़नी.

112. अँजुरीसँ आगाँ — पृ. 208; पाठ-परिमाण 107 शब्द; पाठ-सूत्र: अकास, गेल, खोजैत, देब, पोखरिक.

113. पएरक अपन बाट — पृ. 208; पाठ-परिमाण 113 शब्द; पाठ-सूत्र: जुत्ता, ओएह, माटि, चिड़ै, गेल.

114. बोलक भीतर बसात — पृ. 209; पाठ-परिमाण 108 शब्द; पाठ-सूत्र: गमक, गेलहुँ, गेल, ठाम, माए.

115. सभक लेल पाँति — पृ. 210; पाठ-परिमाण 107 शब्द; पाठ-सूत्र: पाँति, देहरी, ठाढ़, गेल, भोजक.

116. कुहेसाक बनल घर — पृ. 211; पाठ-परिमाण 113 शब्द; पाठ-सूत्र: गेल, भोर, महल, जाहि, नदीक.

117. एक नामक कतेक पात — पृ. 211; पाठ-परिमाण 108 शब्द; पाठ-सूत्र: गाछ, नेना, पात, सभकेँ, एकहि.

118. फेर चिन्हल देहरी — पृ. 212; पाठ-परिमाण 108 शब्द; पाठ-सूत्र: ओएह, आँखिक, गेलहुँ, बरखक, गाम.

119. आधखुलल किवाड़ — पृ. 213; पाठ-परिमाण 101 शब्द; पाठ-सूत्र: कात, देखलहुँ, दिससँ, धीरे, रहब.

120. आँगनक खुलल दिशा — पृ. 214; पाठ-परिमाण 99 शब्द; पाठ-सूत्र: सभक, भरल, आँगन, सुनि, लागल.

121. नेनाक बोलीमे भोर — पृ. 214; पाठ-परिमाण 108 शब्द; पाठ-सूत्र: नेना, दादी, आएल, सभक, पूछलक.

122. खाली खूँटीक छाँह — पृ. 215; पाठ-परिमाण 107 शब्द; पाठ-सूत्र: खूँटी, ओढ़नी, खाली, ठाम, रहत.

123. दोसर आँखिक ठाम — पृ. 216; पाठ-परिमाण 108 शब्द; पाठ-सूत्र: दिससँ, दुनू, देखलहुँ, रहत, खेत.

124. माटिक भीतर पाँखि — पृ. 216; पाठ-परिमाण 104 शब्द; पाठ-सूत्र: बीआक, करिया, खोलक, हरियर, पाँखि.

125. रंगक अनकहल स्वर — पृ. 217; पाठ-परिमाण 105 शब्द; पाठ-सूत्र: उठल, अलग, अरिपन, देइत, अँगुरी.

126. भीतरक अचल ठाम — पृ. 218; पाठ-परिमाण 105 शब्द; पाठ-सूत्र: अलग, आएल, सम्पूर्ण, ठाम, क्रोधक.

127. निन्नक पाछाँ सेहो जागल — पृ. 219; पाठ-परिमाण 113 शब्द; पाठ-सूत्र: कथा, ठाम, सपनामे, नाव, बनलहुँ.

128. टेढ़ बाटक हरियरी — पृ. 219; पाठ-परिमाण 109 शब्द; पाठ-सूत्र: मोड़, सीध, भेटल, घुरि, दोसर.

129. कंठसँ उड़ल चिड़ै — पृ. 220; पाठ-परिमाण 103 शब्द; पाठ-सूत्र: गेल, गीत, पाँखि, बचल, गनलहुँ.

अर्थ, भाषा आ लोकजीवनक अँजोर

130. जड़िक नव पात — पृ. 223; पाठ-परिमाण 76 शब्द; पाठ-सूत्र: केओ, चलैत, पात, ठाम, ऋतु.

131. काल्हिक बीआ — पृ. 223; पाठ-परिमाण 73 शब्द; पाठ-सूत्र: किछु, दाना, कोठीक, मुँह, खोलैत.

132. दू बाटक बीच — पृ. 224; पाठ-परिमाण 77 शब्द; पाठ-सूत्र: एकहि, कहलक, पड़ल, दुनू, आयल.

133. एक जल, अनेक लहरि — पृ. 224; पाठ-परिमाण 73 शब्द; पाठ-सूत्र: अलग, चान, उठल, बचल, पोखरिक.

134. खाली पीढ़ी — पृ. 225; पाठ-परिमाण 73 शब्द; पाठ-सूत्र: आयल, दुआरपर, पीढ़ी, देखाइत, लकड़ी.

135. पयरसँ आगाँ प्रश्न — पृ. 225; पाठ-परिमाण 71 शब्द; पाठ-सूत्र: आधा, कहलक, पयर, चलि, देखू.

136. मोनक दूर किनार — पृ. 226; पाठ-परिमाण 67 शब्द; पाठ-सूत्र: काज, दूर, दिनभरि, देहक, समेटलहुँ.

137. रोटीक पाछाँक भूख — पृ. 226; पाठ-परिमाण 70 शब्द; पाठ-सूत्र: कौर, थाकल, नपल, अर्थ, पहिल.

138. करघाक नव फूल — पृ. 227; पाठ-परिमाण 65 शब्द; पाठ-सूत्र: पुरान, सङ्ग, मायक, हाथक, नमूना.

139. फेर अँकुरायब — पृ. 227; पाठ-परिमाण 69 शब्द; पाठ-सूत्र: भेटल, पतझड़मे, पात, झरल, माटिक.

140. भोरक खुलल आँखि — पृ. 228; पाठ-परिमाण 74 शब्द; पाठ-सूत्र: पड़ल, सपनामे, बहि, गेल, छप्पर.

141. बोलैत आँगन — पृ. 228; पाठ-परिमाण 66 शब्द; पाठ-सूत्र: देबाल, ओहिमे, बजैत, सम्बोधन, दुआरक.

142. छुबैत धरती — पृ. 229; पाठ-परिमाण 69 शब्द; पाठ-सूत्र: एतहि, पयर, नक्शामे, छोट, पोखरि.

143. नक्शाक बाहर — पृ. 229; पाठ-परिमाण 73 शब्द; पाठ-सूत्र: भेटल, कखनो, नक्शा, गामक, बनौलहुँ.

144. चाहक आकार — पृ. 230; पाठ-परिमाण 74 शब्द; पाठ-सूत्र: एकमे, चाह, सुख, मनक, कोठरी.

145. आवाजक पुल — पृ. 230; पाठ-परिमाण 69 शब्द; पाठ-सूत्र: गेल, कहलहुँ, पानी, लोटा, बढ़ा.

146. सुखक सीढ़ी — पृ. 231; पाठ-परिमाण 70 शब्द; पाठ-सूत्र: भेटल, छोट, मिठास, मिठाइ, तखने.

147. अलपनाक दुआर — पृ. 231; पाठ-परिमाण 68 शब्द; पाठ-सूत्र: चाउर, पीसि, दादी, अङ्गुरी, डुबौलनि.

148. बराबरक थारी — पृ. 232; पाठ-परिमाण 69 शब्द; पाठ-सूत्र: कोनो, हाथ, भोज, उठल, आँगनमे.

149. जियबाक कारीगरी — पृ. 232; पाठ-परिमाण 72 शब्द; पाठ-सूत्र: भेटल, माटि, हाथमे, एखनो, सम्पूर्ण.

150. आँखि आ हथेली — पृ. 233; पाठ-परिमाण 67 शब्द; पाठ-सूत्र: हाथ, सुख, फूलक, आँखि, कहलक.

151. देखि रहल छी — पृ. 233; पाठ-परिमाण 68 शब्द; पाठ-सूत्र: गरम, गरमी, जनैत, नजरि, लागल.

152. हमरा नीक लगैत अछि — पृ. 234; पाठ-परिमाण 72 शब्द; पाठ-सूत्र: कहलहुँ, साँझ, एकहि, मेघ, घेरलक.

153. अवश्य होयत? — पृ. 234; पाठ-परिमाण 74 शब्द; पाठ-सूत्र: आयल, बीआ, जनैत, बरखा, हरेक.

154. अनमोलक छाँह — पृ. 235; पाठ-परिमाण 70 शब्द; पाठ-सूत्र: दाम, कोनो, हाटमे, पीतल, तौलल.

155. मेहनतिक रंग — पृ. 235; पाठ-परिमाण 70 शब्द; पाठ-सूत्र: भट्ठीक, आगिसँ, मुख, लाल, हाथक.

156. नामक ओहि पार — पृ. 236; पाठ-परिमाण 70 शब्द; पाठ-सूत्र: किछु, नेना, पहिल, बेर, बजौलक.

157. बजबाक पहिल दिन — पृ. 236; पाठ-परिमाण 68 शब्द; पाठ-सूत्र: नाम, कखनो, वस्तु, छोट, सङ्ग.

158. फेरसँ ताकू — पृ. 237; पाठ-परिमाण 74 शब्द; पाठ-सूत्र: आँखि, चमकल, भेटल, अर्थ, दूरक.

159. हरेक पातक अपन हरियरी — पृ. 237; पाठ-परिमाण 67 शब्द; पाठ-सूत्र: पात, एकक, अलग, पातकेँ, तैयो.

160. रंगक सङ्ग रूप — पृ. 238; पाठ-परिमाण 67 शब्द; पाठ-सूत्र: नीला, कठोर, दोसर, कहलहुँ, गहिर.

161. गाँठिक भीतर बाट — पृ. 238; पाठ-परिमाण 68 शब्द; पाठ-सूत्र: गाँठि, सुतरी, कतहु, अलग, हाथमे.

162. किएकक अनेक रंग — पृ. 239; पाठ-परिमाण 71 शब्द; पाठ-सूत्र: कखनो, पूछलक, कारण, अलग, नेना.

163. अञ्जुरीक उजास — पृ. 239; पाठ-परिमाण 72 शब्द; पाठ-सूत्र: हाथ, अञ्जुरी, जुड़ल, देखलहुँ, भोर.

164. प्रश्नक पाछाँक शान्ति — पृ. 240; पाठ-परिमाण 65 शब्द; पाठ-सूत्र: लेलहुँ, रहलहुँ, चुप्पे, साँस, तारा.

165. कहलासँ बचल — पृ. 240; पाठ-परिमाण 70 शब्द; पाठ-सूत्र: हथेली, आयल, घुरलहुँ, दीर्घ, विरहसँ.

166. खेलक बोली — पृ. 241; पाठ-परिमाण 70 शब्द; पाठ-सूत्र: बदलल, पाथर, खेल, काज, नेनासभ.

167. भीतरक नीरव घर — पृ. 241; पाठ-परिमाण 71 शब्द; पाठ-सूत्र: शान्ति, आँखिक, खिड़की, खोललक, रंगक.

168. कारणक सीढ़ी — पृ. 242; पाठ-परिमाण 65 शब्द; पाठ-सूत्र: धुआँ, केओ, बढ़ल, उठल, लोक.

169. ओझरायल उजास — पृ. 242; पाठ-परिमाण 69 शब्द; पाठ-सूत्र: खींचैत, भरल, कोठरीमे, छाँहसँ, लगल.

170. नजरिक मिलन — पृ. 243; पाठ-परिमाण 67 शब्द; पाठ-सूत्र: फूल, रंग, गामक, बाटपर, मोन.

171. सपनो जखन सुतल — पृ. 243; पाठ-परिमाण 70 शब्द; पाठ-सूत्र: कोनो, चित्र, समेटलक, स्वप्नक, अन्तिम.

172. निन्नक तीन किनार — पृ. 244; पाठ-परिमाण 63 शब्द; पाठ-सूत्र: खाली, मोन, दुनू, घुरल, जागल.

173. डगमग धरतीपर — पृ. 244; पाठ-परिमाण 72 शब्द; पाठ-सूत्र: पयर, कहलक, पार, धीरे, लेलहुँ.

174. काल्हिक भोर — पृ. 245; पाठ-परिमाण 70 शब्द; पाठ-सूत्र: आशा, पूब, लाल, पाँखि, खोलि.

175. सम्भवक खिड़की — पृ. 245; पाठ-परिमाण 72 शब्द; पाठ-सूत्र: मनमे, हरियर, चान, बनौलहुँ, आकाश.

176. एहि क्षणक ताप — पृ. 246; पाठ-परिमाण 74 शब्द; पाठ-सूत्र: अनुभव, देखलहुँ, तपन, पूछलहुँ, आगि.

177. जागल की सपना? — पृ. 246; पाठ-परिमाण 69 शब्द; पाठ-सूत्र: सपनामे, पत्र, पढ़लहुँ, अक्षर, एतेक.

178. पहिने ककर पहिचान — पृ. 247; पाठ-परिमाण 66 शब्द; पाठ-सूत्र: मुख, कखनो, रहलहुँ, देखबासँ, पदचाप.

179. चाहीक स्वर — पृ. 247; पाठ-परिमाण 69 शब्द; पाठ-सूत्र: घटना, आग्रह, सङ्ग, हाथ, दोसरकेँ.

180. अहाँक पीड़ा — पृ. 248; पाठ-परिमाण 71 शब्द; पाठ-सूत्र: अहाँक, बीचक, माथपर, हाथ, रखने.

181. बोलक बसात — पृ. 248; पाठ-परिमाण 64 शब्द; पाठ-सूत्र: बोलसँ, बोलक, भोरक, हाँकसँ, गाम.

182. शब्दक घरमे — पृ. 249; पाठ-परिमाण 72 शब्द; पाठ-सूत्र: न्याय, तकैत, गेलहुँ, कोनो, कओन.

183. सीखल स्वर — पृ. 249; पाठ-परिमाण 69 शब्द; पाठ-सूत्र: आयल, बजलीह, पहिल, किछु, लेलक.

184. सभक चौक — पृ. 250; पाठ-परिमाण 73 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थ, दोसर, लोक, मनमे, चिन्ह.

185. फूल आ फीता — पृ. 250; पाठ-परिमाण 65 शब्द; पाठ-सूत्र: फीता, ठीक, माप, अलग, दुनूक.

186. अपन पयरक भार — पृ. 251; पाठ-परिमाण 73 शब्द; पाठ-सूत्र: नाम, रखलहुँ, बाटक, मोड़पर, केओ.

187. साँचासँ बाहर — पृ. 251; पाठ-परिमाण 70 शब्द; पाठ-सूत्र: लोक, कहलनि, होयब, पहिनेसँ, रूपक.

188. खुलल आकाशक नीचाँ — पृ. 252; पाठ-परिमाण 69 शब्द; पाठ-सूत्र: ताकलहुँ, मौन, भेटल, रहय, भूख.

189. देहक घेरसँ — पृ. 252; पाठ-परिमाण 77 शब्द; पाठ-सूत्र: देह, देहक, पोखरिक, जलमे, मुख.

190. जगतक सङ्ग जागब — पृ. 253; पाठ-परिमाण 65 शब्द; पाठ-सूत्र: संसार, कहितहुँ, आँखिमे, अनलहुँ, घेरने.

191. हथेलीक पाथर — पृ. 253; पाठ-परिमाण 66 शब्द; पाठ-सूत्र: पाथर, हथेलीपर, रखलहुँ, ठण्ढक, आयल.

192. एकलसँ सङ्ग — पृ. 254; पाठ-परिमाण 70 शब्द; पाठ-सूत्र: एकल, भेटल, नाव, हाथ, लागल.

193. समयक पायल — पृ. 254; पाठ-परिमाण 71 शब्द; पाठ-सूत्र: उठल, केओ, पुरान, धुन, स्वरमे.

194. अनगिन ढङ्गक फूल — पृ. 255; पाठ-परिमाण 65 शब्द; पाठ-सूत्र: मिलल, सभकेँ, अलग, भेटल, भिन्न.

195. कसौटीक उजास — पृ. 255; पाठ-परिमाण 67 शब्द; पाठ-सूत्र: जँचबाक, चललहुँ, हाथमे, कसौटी, मोनमे.

196. माप आ मापल — पृ. 256; पाठ-परिमाण 70 शब्द; पाठ-सूत्र: उठौलक, धान, तौल ऽ, तराजू, आनलहुँ.

197. भेटक अनेक बाट — पृ. 256; पाठ-परिमाण 74 शब्द; पाठ-सूत्र: रंग, गवाही, सभक, जतय, गेल.

198. सभ चाबी एक नहि — पृ. 257; पाठ-परिमाण 68 शब्द; पाठ-सूत्र: एकसँ, भिन्न, साफ, घरक, गुच्छामे.

199. अपनहि प्रकाश — पृ. 257; पाठ-परिमाण 69 शब्द; पाठ-सूत्र: दीप, देखलहुँ, सङ्गे, बोधक, जरल.

200. खुलल बैसार — पृ. 258; पाठ-परिमाण 68 शब्द; पाठ-सूत्र: केओ, चलल, चारि, आसन, आँगनमे.

201. प्रश्नकेँ खोलू — पृ. 258; पाठ-परिमाण 72 शब्द; पाठ-सूत्र: पूछलहुँ, चौखट, देखि, रहलहुँ, अहाँक.

202. धीरे सुलझल डोर — पृ. 259; पाठ-परिमाण 71 शब्द; पाठ-सूत्र: कतहु, कयलहुँ, मोनमे, जाल, पड़ल.

203. नाव आ किनार — पृ. 259; पाठ-परिमाण 67 शब्द; पाठ-सूत्र: पतवार, कओन, नाव, यात्रा, सङ्ग.

204. अर्थक खुलल वन — पृ. 260; पाठ-परिमाण 68 शब्द; पाठ-सूत्र: बोल, बचल, बोलक, वनमे, विज्ञानक.

205. बातक भरोस — पृ. 260; पाठ-परिमाण 65 शब्द; पाठ-सूत्र: यात्री, खबर, सुनौलक, दूरक, गाममे.

206. जाँचक दुआर — पृ. 261; पाठ-परिमाण 65 शब्द; पाठ-सूत्र: सङ्ग, जाँचक, कहलहुँ, कुआँमे, डोरी.

207. अर्थक बाँचल ठाम — पृ. 261; पाठ-परिमाण 70 शब्द; पाठ-सूत्र: बर्खाक, चिन्ह, जनैत, ओहिसँ, अधिक.

208. सभ उजासक अपन दिशा — पृ. 262; पाठ-परिमाण 72 शब्द; पाठ-सूत्र: कहलक, तारा, चमकैत, दूरी, एकल.

भाषा

209. भाषा जे भीतर घर करैत अछि — पृ. 264; पाठ-परिमाण 337 शब्द; पाठ-सूत्र: बदलि, जाहिमे, भारतक, देब, कैँ.

210. मैथिलीक नव खेत — पृ. 265; पाठ-परिमाण 335 शब्द; पाठ-सूत्र: शब्द, सम्मान, जतय, अर्थ, दोसर.

211. विचार जखन अपन बोली पबैत अछि — पृ. 267; पाठ-परिमाण 530 शब्द; पाठ-सूत्र: कखनो, कैँ, आयल, अनुशासन, समाज.

212. पुरान अक्षरमे नव प्रश्न — पृ. 268; पाठ-परिमाण 554 शब्द; पाठ-सूत्र: पुरान, कैँ, जीवित, ठाम, संस्कृत.

213. जड़िसँ क्षितिज धरि — पृ. 269; पाठ-परिमाण 650 शब्द; पाठ-सूत्र: कियो, कैँ, पुरान, कतहु, जड़ि.

214. स्वराजक भीतर विचारक स्वराज — पृ. 271; पाठ-परिमाण 768 शब्द; पाठ-सूत्र: किछु, कैँ, पुरान, स्वतन्त्रता, पहिल.

215. अपन धरती, खुलल आकाश — पृ. 272; पाठ-परिमाण 956 शब्द; पाठ-सूत्र: कैँ, यदि, विचारक, चलैत, विश्वक.

216. प्रश्नक परिसर — पृ. 275; पाठ-परिमाण 970 शब्द; पाठ-सूत्र: दार्शनिक, कखनो, जतय, विचार, दर्शनक.

217. जे प्रश्न अखनो उत्तर माँगैत अछि — पृ. 277; पाठ-परिमाण 1229 शब्द; पाठ-सूत्र: कैँ, कखनो, दर्शनक, समस्या, पूछैत.

218. अनुभवक कसौटी — पृ. 280; पाठ-परिमाण 1257 शब्द; पाठ-सूत्र: अनुभव, कैँ, कखनो, अनुभवक, अर्थ.

219. पाँच दशकक देहरी — पृ. 282; पाठ-परिमाण 966 शब्द; पाठ-सूत्र: दर्शन, कैँ, कियो, पाँच, कखनो.

220. दृश्यक पाछाँ जे प्रश्न अछि — पृ. 285; पाठ-परिमाण 1244 शब्द; पाठ-सूत्र: तत्त्वमीमांसा, अर्थ, कैँ, कुन, आधार.

221. सृजनक भीतर मनुष्य — पृ. 288; पाठ-परिमाण 1730 शब्द; पाठ-सूत्र: कैँ, मूल्य, मानववाद, हरेक, अर्थ.

222. मूल्यक भीतर संस्कृति — पृ. 293; पाठ-परिमाण 1895 शब्द; पाठ-सूत्र: संस्कृति, कैँ, मूल्य, कखनो, अर्थ.

223. व्यक्ति आ समाजक बीच खुलल प्रश्न — पृ. 299; पाठ-परिमाण 2231 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, समाज, व्यक्ति, जतय, समाजक.

224. ज्ञानक तलघरमे दीप — पृ. 305; पाठ-परिमाण 3284 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, वस्तु, प्रमाण, आधार, किछु.

225. देहक भीतर “हम” — पृ. 316; पाठ-परिमाण 2297 शब्द; पाठ-सूत्र: देह, कैं, जीवित, आत्मा, यदि.

226. सुन्दरक सीमा सँ पार कला — पृ. 323; पाठ-परिमाण 2955 शब्द; पाठ-सूत्र: कला, कैं, अनुभव, कखनो, अर्थ.

227. अखंड आकाशक बाट — पृ. 333; पाठ-परिमाण 1571 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, यदि, शक्ति, धीरे, कखनो.

228. ध्वनिक पार अर्थक उजास — पृ. 339; पाठ-परिमाण 2860 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थ, शब्द, ध्वनि, कैं, कखनो.

229. भीतरक दरबज्जा पर उजास — पृ. 350; पाठ-परिमाण 2389 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, प्रेम, भीतरक, अपने, दोसरक.

230. मनुखताक आँगनमे नव भोर — पृ. 361; पाठ-परिमाण 1874 शब्द; पाठ-सूत्र: यदि, समाजक, समाज, मूल, विश्वास.

231. जतय मनुख मनुखक उजास — पृ. 371; पाठ-परिमाण 3422 शब्द; पाठ-सूत्र: समाज, समाजक, जतय, यदि, कैं.

232. अदृश्य तराजूक उजास — पृ. 391; पाठ-परिमाण 4065 शब्द; पाठ-सूत्र: मूल्य, कैं, प्रेम, न्याय, कखनो.

233. टूटल आइना मे अनेक आकाश — पृ. 413; पाठ-परिमाण 3833 शब्द; पाठ-सूत्र: कुन, अनेक, अर्थ, जतय, यदि.

234. निर्णयक धधकैत देहरी — पृ. 437; पाठ-परिमाण 3495 शब्द; पाठ-सूत्र: कखनो, नैतिकता, जतय, यदि, निर्णय.

235. माटिक नाड़ीमे हमर श्वास — पृ. 459; पाठ-परिमाण 4175 शब्द; पाठ-सूत्र: माटि, धरती, प्रकृति, वृक्ष, नदी.

236. अपन आँखिसँ भोर — पृ. 486; पाठ-परिमाण 4270 शब्द; पाठ-सूत्र: अपने, यदि, दोसरक, शब्द, विचार.

237. पुरान नदीमे नव धार — पृ. 514; पाठ-परिमाण 2773 शब्द; पाठ-सूत्र: पुरान, विचार, यदि, दोसर, जीवित.

238. दीपक पाछाँक अनाम उजास — पृ. 536; पाठ-परिमाण 2933 शब्द; पाठ-सूत्र: विचार, कियो, यदि, पुस्तक, पुरान.

239. दिशा-दिशासँ आबैत दीप — पृ. 555; पाठ-परिमाण 2667 शब्द; पाठ-सूत्र: कियो, यदि, दोसर, कुन, कखनो.

प्रश्न

240. जड़ चित्रक पाछाँ बहैत प्रश्न — पृ. 574; पाठ-परिमाण 189 शब्द; पाठ-सूत्र: पुरान, रहय, कतेको, बेर, चित्र.

241. मुक्तिक धुरीसँ बाहर विचारक आकाश — पृ. 575; पाठ-परिमाण 173 शब्द; पाठ-सूत्र: कैँ, कखनो, सम्भावना, विचारक, चिन्तन.

242. मुक्ति एक प्रश्न, चिन्तन अनेक बाट — पृ. 576; पाठ-परिमाण 169 शब्द; पाठ-सूत्र: कखनो, मुक्ति, चिन्तनक, कियो, कर्म.

243. श्रुतिक वनमे ककर स्वर मूल — पृ. 577; पाठ-परिमाण 172 शब्द; पाठ-सूत्र: कतहु, स्वर, पुरान, रहय, कहब.

244. सीमाहीन कथनक भीतर मौन प्रश्न — पृ. 578; पाठ-परिमाण 166 शब्द; पाठ-सूत्र: कतहु, भिन्न, अन्तिम, वचन, कैँ.

245. सूत्रक देह पर समयक अनेक लेख — पृ. 579; पाठ-परिमाण 176 शब्द; पाठ-सूत्र: पाठ, कतहु, कखनो, सूत्र, देह.

246. साक्षी आ प्रकृतिक बीच अन्तिम दूरी — पृ. 581; पाठ-परिमाण 180 शब्द; पाठ-सूत्र: साक्षी, प्रकृतिक, गति, कहय, स्पष्ट.

247. भ्रमक गाँठिसँ अभेदक निस्तब्धता — पृ. 582; पाठ-परिमाण 186 शब्द; पाठ-सूत्र: गाँठि, भ्रम, कैँ, मूल, स्वयं.

248. एक नामक भीतर अनेक विपरीत दिशा — पृ. 583; पाठ-परिमाण 178 शब्द; पाठ-सूत्र: कियो, कखनो, नाम, अनेक, नामक.

249. अग्निक अर्घ्य आ कर्मक एकल लेखा — पृ. 584; पाठ-परिमाण 174 शब्द; पाठ-सूत्र: दोसर, कहय, कर्मक, रहय, यदि.

250. चारि लक्ष्यक चौखटिसँ बाहर जीवन — पृ. 585; पाठ-परिमाण 187 शब्द; पाठ-सूत्र: मुक्ति, लक्ष्य, चारि, चाह, बिनु.

251. सूचीक भीत नहि, प्रश्नक जीवित नदी — पृ. 586; पाठ-परिमाण 169 शब्द; पाठ-सूत्र: कियो, अलग, जीवित, चिन्तनक, समाजक.

252. यज्ञक धुँआसँ तर्कक पहिल उजास — पृ. 588; पाठ-परिमाण 159 शब्द; पाठ-सूत्र: कियो, कर्मक, उठल, शब्दक, स्वतन्त्र.

253. वस्तुक सात दुआर, साक्षीक एक नेत्र — पृ. 589; पाठ-परिमाण 166 शब्द; पाठ-सूत्र: वस्तु, अनेक, साक्षी, गुण, गति.

254. इन्द्रियक पवन थमलापर अन्तर आकाश — पृ. 590; पाठ-परिमाण 170 शब्द; पाठ-सूत्र: जाय, पकड़ि, इच्छा, बहि, बाहरी.

255. शब्दक बीजसँ कल्पनाक वन — पृ. 591; पाठ-परिमाण 173 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थक, शब्दक, शब्द, बीज, स्वर.

256. राजदण्ड, श्रम आ साझा घर — पृ. 592; पाठ-परिमाण 177 शब्द; पाठ-सूत्र: कियो, रहय, मोल, घरक, काजक.

257. क्षणक धार आ अनेक दृष्टिक किनार — पृ. 594; पाठ-परिमाण 172 शब्द; पाठ-सूत्र: कहय, क्षण, अनेक, स्वर, स्थिर.

258. मतक भीत पारि प्रश्नक भूगोल — पृ. 595; पाठ-परिमाण 176 शब्द; पाठ-सूत्र: मतक, समस्या, जतय, जीवित, तर्कक.

259. शब्द, शून्य आ अभेदक पूर्वराग — पृ. 596; पाठ-परिमाण 167 शब्द; पाठ-सूत्र: कियो, अभेदक, अर्थक, जतय, वाणी.

260. सम्बन्धक सूक्ष्म जालमे ज्ञानक दीप — पृ. 597; पाठ-परिमाण 168 शब्द; पाठ-सूत्र: वस्तु, सम्बन्ध, गुण, गुलाब, विषय.

261. एक आ अनेकक अनन्त बहस — पृ. 598; पाठ-परिमाण 169 शब्द; पाठ-सूत्र: यदि, रहय, कहय, मूल, भेद.

262. प्रेमक पाँचम दिशा — पृ. 599; पाठ-परिमाण 164 शब्द; पाठ-सूत्र: कखनो, प्रेम, चाह, मुक्ति, दिशा.

263. सूक्ष्म भेदक नोक पर अर्थ — पृ. 601; पाठ-परिमाण 170 शब्द; पाठ-सूत्र: सम्बन्ध, जानल, गुण, फूल, सूक्ष्म.

264. पुरान श्रुति आ नव आगमक संगम — पृ. 602; पाठ-परिमाण 166 शब्द; पाठ-सूत्र: कियो, पुरान, कहय, अनुभव, स्वर.

265. परम्पराक भीतमे विद्रोही खिड़की — पृ. 603; पाठ-परिमाण 166 शब्द; पाठ-सूत्र: खिड़की, कखनो, पुरान, घरक, जतय.

266. लोकक कण्ठमे उतरैत चिन्तन — पृ. 604; पाठ-परिमाण 166 शब्द; पाठ-सूत्र: कखनो, गीतक, कथा, रहय, सूत्र.

267. दू भाषाक बीच टूटल सेतु — पृ. 605; पाठ-परिमाण 172 शब्द; पाठ-सूत्र: पुरान, सेतु, दोसर, दुनू, देखय.

268. टूटल परम्परासँ नव संश्लेषक पथ — पृ. 606; पाठ-परिमाण 170 शब्द; पाठ-सूत्र: पुरान, कियो, कखनो, दुनू, बचेनाइ.

269. अजन्म मौनसँ जगक आवागमन — पृ. 608; पाठ-परिमाण 164 शब्द; पाठ-सूत्र: कतहु, बीज, पहिल, खेल, गति.

270. दुःखक प्रश्न पर नैतिक आकाश — पृ. 609; पाठ-परिमाण 177 शब्द; पाठ-सूत्र: नैतिक, कर्मक, न्याय, यदि, अर्थ.

271. श्रम, शक्ति आ सीमाक नगर — पृ. 610; पाठ-परिमाण 174 शब्द; पाठ-सूत्र: कियो, बनय, शक्ति, बिनु, श्रम.

272. रसक क्षणमे जगत आनन्द बनल — पृ. 611; पाठ-परिमाण 173 शब्द; पाठ-सूत्र: कला, भाव, रसक, कखनो, मंच.

273. समयक धूलिमे पदचिह्न खोजैत मन — पृ. 612; पाठ-परिमाण 174 शब्द; पाठ-सूत्र: बचल, पदचिह्न, कखन, तिथि, पछिला.

अनेक दिशाक दार्शनिक आकाश

274. अनेक दिशाक एक सत्य — पृ. 615; पाठ-परिमाण 388 शब्द; पाठ-सूत्र: कैँ, अर्थ, अनेक, धीरे, दीप.

275. कारणक सीढ़ी, सत्ताक ज्योति — पृ. 617; पाठ-परिमाण 419 शब्द; पाठ-सूत्र: बुद्धि, कारणक, स्वर, दुनू, श्रद्धा.

276. अपनहि उजासक प्रत्यभिज्ञा — पृ. 620; पाठ-परिमाण 344 शब्द; पाठ-सूत्र: एकहि, अनुभव, चेतन, अनेक, साधना.

277. माटिसँ अतिमानस धरि — पृ. 622; पाठ-परिमाण 356 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, चेतना, मौन, कोनो, अलग.

278. रूप, कारण आ मध्यम मार्ग — पृ. 624; पाठ-परिमाण 359 शब्द; पाठ-सूत्र: ठीक, नाम, पूर्ण, पात, नगर.

279. सन्देहक रातिसँ विश्वासक भोर — पृ. 626; पाठ-परिमाण 366 शब्द; पाठ-सूत्र: सीमा, जतय, बनय, बुद्धि, गेल.

280. भीतरक प्रकाश आ दू नगर — पृ. 629; पाठ-परिमाण 446 शब्द; पाठ-सूत्र: इच्छा, धाम, भीतरक, नाम, दिशा.

281. शब्दक पार जे स्वर जागय — पृ. 632; पाठ-परिमाण 364 शब्द; पाठ-सूत्र: शब्द, अर्थ, संकेत, कविता, काव्यक.

282. कहबो एकटा काज अछि — पृ. 634; पाठ-परिमाण 363 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थ, शब्द, वचन, वाक्यक, बेर.

283. एकहि उजासक अनेक दुआर — पृ. 636; पाठ-परिमाण 357 शब्द; पाठ-सूत्र: अनेक, कैं, सीमा, बदलय, एकहि.

284. प्रकृति नाचय, पुरुष देखय — पृ. 638; पाठ-परिमाण 353 शब्द; पाठ-सूत्र: प्रकृति, पुरुष, प्रकृतिक, साक्षी, कारण.

285. तर्कक फूलसँ सत्यक अर्घ्य — पृ. 641; पाठ-परिमाण 363 शब्द; पाठ-सूत्र: तर्कक, तर्क, कारणक, बुद्धि, जतय.

286. हेतुक दीप, आत्माक साक्षी — पृ. 643; पाठ-परिमाण 357 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, हेतु, उठल, पुरान, तर्क.

287. पदार्थक गति, मनुष्यक मुक्ति — पृ. 645; पाठ-परिमाण 349 शब्द; पाठ-सूत्र: समाजक, विचार, श्रम, सम्बन्ध, बदलैत.

288. अर्थक कसौटी — पृ. 648; पाठ-परिमाण 365 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थ, अर्थक, वाक्य, प्रमाण, कथन.

289. कण-कणमे भेदक व्याकरण — पृ. 650; पाठ-परिमाण 374 शब्द; पाठ-सूत्र: गुण, सूक्ष्म, भेदक, द्रव्य, गति.

290. अपन आचरणसँ राज्य सँवारू — पृ. 653; पाठ-परिमाण 382 शब्द; पाठ-सूत्र: समाजक, राज्य, दोसरा, यदि, हृदय.

291. अनुभवक साँचा, कर्तव्यक दीप — पृ. 655; पाठ-परिमाण 382 शब्द; पाठ-सूत्र: नियम, अनुभव, समक्ष, बुद्धि, यदि.

292. अर्थक नक्शा, भाषाक अनुशासन — पृ. 658; पाठ-परिमाण 384 शब्द; पाठ-सूत्र: स्पष्ट, वाक्य, अर्थक, अर्थ, किछु.

293. प्रतीकक जग, मनुष्यक अर्थ — पृ. 660; पाठ-परिमाण 387 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, अर्थ, प्रतीकक, कथा, प्रतीक.

294. चुनावक क्षण, आस्थाक छलाँग — पृ. 663; पाठ-परिमाण 432 शब्द; पाठ-सूत्र: अपने, जतय, चुनाव, निर्णय, सम्पूर्ण.

295. प्रमाणक छह दीप — पृ. 665; पाठ-परिमाण 374 शब्द; पाठ-सूत्र: दीप, प्रमाणक, शब्द, वस्तु, संबन्धक.

296. अनुभवक धरती पर समाजक विज्ञान — पृ. 668; पाठ-परिमाण 371 शब्द; पाठ-सूत्र: नियम, समाजक, क्रम, मानव, ठाम.

297. राज्यक मूल प्रजाक हित — पृ. 670; पाठ-परिमाण 365 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थ, राज्यक, शासन, नीति, प्रजाक.

298. अनुभूतिक रूप, इतिहासक स्वतन्त्रता — पृ. 673; पाठ-परिमाण 390 शब्द; पाठ-सूत्र: कला, जीवित, जतय, स्वर, अनुभव.

299. अनुभवक किनार पर विश्वासक जाल — पृ. 675; पाठ-परिमाण 372 शब्द; पाठ-सूत्र: जाल, रहय, गाँठ, अर्थक, किनार.

300. ज्ञानक चारि दुआर — पृ. 678; पाठ-परिमाण 391 शब्द; पाठ-सूत्र: सम्बन्ध, अर्थ, अर्थक, स्मृति, चारि.

301. सत्यक धागा, करुणाक करघा — पृ. 680; पाठ-परिमाण 432 शब्द; पाठ-सूत्र: जीवनक, धीमा, कठिन, जन्म, देहक.

302. निद्राक चारि घाट पारि अजन्म उजास — पृ. 683; पाठ-परिमाण 289 शब्द; पाठ-सूत्र: अजन्म, दुनू, भेदक, बदलय, शान्त.

303. संशयसँ निर्णय धरि — पृ. 685; पाठ-परिमाण 385 शब्द; पाठ-सूत्र: कारण, बनय, निष्कर्षक, हेतु, तर्क.

304. प्रेमक नाममे खुलैत अनन्त — पृ. 687; पाठ-परिमाण 419 शब्द; पाठ-सूत्र: कखनो, प्रेमक, शक्ति, गहिर, नामक.

305. कर्मक पाछाँ अनदेखल सेतु — पृ. 690; पाठ-परिमाण 387 शब्द; पाठ-सूत्र: कर्मक, कर्म, कुन, इच्छा, कखनो.

306. समस्या सँ अनुभवक नव बिहान — पृ. 693; पाठ-परिमाण 417 शब्द; पाठ-सूत्र: कोनो, अनुभवक, समस्या, कुन, शिक्षा.

307. क्षणक रूप, निषेधक भाषा — पृ. 695; पाठ-परिमाण 391 शब्द; पाठ-सूत्र: धरय, सोझ, कखनो, भिन्न, नामक.

308. संशयक राखिमे निश्चित स्वर — पृ. 698; पाठ-परिमाण 305 शब्द; पाठ-सूत्र: संशय, निश्चयक, बोध, देह, विचार.

309. क्षणक उजास, हेतुक पाँखि — पृ. 700; पाठ-परिमाण 380 शब्द; पाठ-सूत्र: दुनू, हेतु, क्षण, चिन्ह, धरय.

310. शून्यक बीच सम्बन्धक ज्योति — पृ. 702; पाठ-परिमाण 414 शब्द; पाठ-सूत्र: कहिते, दुनू, गहिर, किछु, स्वभावक.

311. भेदक भीतर अभेदक राग — पृ. 705; पाठ-परिमाण 416 शब्द; पाठ-सूत्र: रहय, जीव, प्रेम, एकहि, मूल.

312. पुरान मूल्यक राखसँ नव अगिनि — पृ. 708; पाठ-परिमाण 439 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, अपने, पुरान, सृजनक, जीवनक.

313. शब्दक देहमे अर्थक धड़कन — पृ. 711; पाठ-परिमाण 401 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थक, बदलय, अनेक, शब्द, तैयो.

314. चित्तक तरंग थमल तखन — पृ. 713; पाठ-परिमाण 419 शब्द; पाठ-सूत्र: कखनो, रहय, तरंग, कैं, ध्यान.

315. संशयक चुभन, कर्मक अर्थ — पृ. 716; पाठ-परिमाण 435 शब्द; पाठ-सूत्र: कखनो, कर्मक, मनक, विश्वास, रहय.

316. सूत्रक दाना, भाषाक अनन्त वन — पृ. 719; पाठ-परिमाण 422 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थ, शब्द, कखनो, अर्थक, छोट.

317. एक प्रतिवादक दीप — पृ. 722; पाठ-परिमाण 431 शब्द; पाठ-सूत्र: रहय, विचार, कल्पना, भूल, खुलल.

318. कणसँ ध्वनि धरि जगक जाल — पृ. 724; पाठ-परिमाण 421 शब्द; पाठ-सूत्र: सूक्ष्म, अलग, अनेक, कर्मक, ठाम.

319. वाक्यक संगति, ज्ञानक अपन उजास — पृ. 727; पाठ-परिमाण 264 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थ, बोध, वस्तु, अलग, ज्ञाता.

320. छायाक गुफासँ रूपक सूर्य — पृ. 729; पाठ-परिमाण 277 शब्द; पाठ-सूत्र: छाया, रहय, धीरे, आत्मा, बिनु.

321. देखल जगक मौन उजास — पृ. 731; पाठ-परिमाण 435 शब्द; पाठ-सूत्र: रंग, किछु, आकार, अनुभवक, अर्थ.

322. सूत्रक गाँठिमे अनन्तक स्वर — पृ. 733; पाठ-परिमाण 414 शब्द; पाठ-सूत्र: मूल, अन्तिम, अनेक, एकहि, बदलय.

323. सुखक तराजू, समाजक प्रश्न — पृ. 736; पाठ-परिमाण 428 शब्द; पाठ-सूत्र: सुख, दूर, सुखक, कर्मक, नियम.

324. घड़ीक पारि बहैत जीवन — पृ. 739; पाठ-परिमाण 450 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, स्थिर, क्षण, जीवित, सम्पूर्ण.

325. टुकड़ाक पारि अखण्ड उजास — पृ. 742; पाठ-परिमाण 415 शब्द; पाठ-सूत्र: सम्बन्ध, अलग, पारि, अनुभवक, सीमा.

326. नकारक सीढ़ी सँ स्वतन्त्र आत्मबोध — पृ. 745; पाठ-परिमाण 272 शब्द; पाठ-सूत्र: वस्तु, सीमा, चेतन, अपने, हरेक.

327. शब्दक भीतर अखण्ड ज्योति — पृ. 746; पाठ-परिमाण 446 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थ, शब्दक, वाणी, अर्थक, अखण्ड.

328. पाँच भेदक बीच समर्पणक दीप — पृ. 749; पाठ-परिमाण 413 शब्द; पाठ-सूत्र: कखनो, जीवक, भेद, मूल, स्वतन्त्र.

329. देहक आँखिसँ खुलैत संसार — पृ. 752; पाठ-परिमाण 294 शब्द; पाठ-सूत्र: देहक, वस्तु, जीवित, देह, मौन.

330. ज्ञानक दर्पण, हेतुक डोरी — पृ. 754; पाठ-परिमाण 410 शब्द; पाठ-सूत्र: बोध, स्मृति, वस्तुक, कखनो, दुनू.

331. श्रमक हाथ, बदलैत जग — पृ. 757; पाठ-परिमाण 425 शब्द; पाठ-सूत्र: बदलय, जीवनक, श्रमक, हाथ, श्रम.

332. रहस्यक दुआर पर खुलल हाथ — पृ. 760; पाठ-परिमाण 424 शब्द; पाठ-सूत्र: वस्तु, खुलल, किछु, जकर, जतय.

333. स्वतन्त्र स्वर, सुखक गहिर माप — पृ. 762; पाठ-परिमाण 454 शब्द; पाठ-सूत्र: सुखक, सुख, अधिकार, बनय, खुलल.

334. ‘नीक’ केर अनिर्वचनीय उजास — पृ. 765; पाठ-परिमाण 284 शब्द; पाठ-सूत्र: नीक, कैँ, अर्थ, मूल, शब्द.

335. करुणाक अंकुर, जनक राज — पृ. 767; पाठ-परिमाण 418 शब्द; पाठ-सूत्र: जनक, रहय, बनय, शासन, शासनक.

336. नेति-नेतिक पारि अन्तरतम साक्षी — पृ. 770; पाठ-परिमाण 293 शब्द; पाठ-सूत्र: प्रिय, कैँ, वस्तु, अपने, आधार.

337. सीमारेखाक आगिमे आत्मक उजास — पृ. 772; पाठ-परिमाण 484 शब्द; पाठ-सूत्र: जीवनक, आत्मक, सीमा, वस्तु, आत्म.

338. तर्कक कण, भाषाक पारदर्शी आकाश — पृ. 775; पाठ-परिमाण 448 शब्द; पाठ-सूत्र: विचारक, तर्कक, स्पष्ट, सम्बन्ध, कैँ.

339. भाषाक गाँठि, मनक अदृश्य चाल — पृ. 778; पाठ-परिमाण 417 शब्द; पाठ-सूत्र: अलग, जीवित, ठीक, कुन, शब्द.

340. पूब-पश्चिमक बीच एकहि उजास — पृ. 781; पाठ-परिमाण 449 शब्द; पाठ-सूत्र: जतय, यदि, गहिर, एकहि, रहय.

341. अनेक रूपमे एकहि आश्रय — पृ. 784; पाठ-परिमाण 456 शब्द; पाठ-सूत्र: कैँ, मूल, चेतन, जीव, बिनु.

342. मनुष्यक हाथमे स्वतन्त्र भोर — पृ. 787; पाठ-परिमाण 410 शब्द; पाठ-सूत्र: कैँ, मानव, चेतना, साझा, दोसरा.

343. वनक स्वतन्त्र साँससँ जन-इच्छाक नगर — पृ. 789; पाठ-परिमाण 295 शब्द; पाठ-सूत्र: कैँ, साझा, इच्छा, सहज, शक्ति.

344. नि:शब्द धाराक सहज बाट — पृ. 791; पाठ-परिमाण 488 शब्द; पाठ-सूत्र: रहय, अधिक, कैँ, गहिर, मूल.

345. अदृश्य केन्द्रसभक एक सुर — पृ. 795; पाठ-परिमाण 495 शब्द; पाठ-सूत्र: कतहु, तैयो, किछु, एकहि, चेतन.

346. अनुभवक कोरा पात पर स्वतन्त्र हस्ताक्षर — पृ. 798; पाठ-परिमाण 486 शब्द; पाठ-सूत्र: रहय, सीमा, अधिकार, अनुभवक, पात.

347. विश्वासक आगि, अन्तरात्माक मुक्त स्वर — पृ. 801; पाठ-परिमाण 448 शब्द; पाठ-सूत्र: आत्मा, विश्वास, यदि, अर्थ, सेवा.

348. श्रमक मुक्ति, बदलैत धरतीक गीत — पृ. 804; पाठ-परिमाण 447 शब्द; पाठ-सूत्र: अधिकार, मानव, जीवनक, श्रमक, श्रम.

349. सत्य जगत पर कृपाक मधुर धारा — पृ. 807; पाठ-परिमाण 448 शब्द; पाठ-सूत्र: मूल, जाय, प्रेमक, अनेक, चेतन.

350. चेतनाक धारामे रूपक स्वप्न — पृ. 810; पाठ-परिमाण 450 शब्द; पाठ-सूत्र: क्षण, बदलैत, रहय, चेतन, दोसर.

351. अनेक बाटक बीच विवेकक सेतु — पृ. 813; पाठ-परिमाण 492 शब्द; पाठ-सूत्र: भिन्न, चेतन, आकाश, जाय, शब्द.

352. प्रमाणक चारि दुआर, मुक्तिक एक बाट — पृ. 816; पाठ-परिमाण 491 शब्द; पाठ-सूत्र: कारण, रहय, कखनो, अर्थ, अनुभवक.

353. शब्दक खेलमे जगक सीमा — पृ. 819; पाठ-परिमाण 463 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थ, शब्दक, खेल, नियम, कतहु.

354. नियमक जालमे अर्थ खोजैत मनुष्य — पृ. 822; पाठ-परिमाण 502 शब्द; पाठ-सूत्र: नियम, अर्थ, सत्ता, समाज, गणना.

355. क्षणक गर्भमे सृष्टिक अनन्त बहाव — पृ. 826; पाठ-परिमाण 563 शब्द; पाठ-सूत्र: क्षण, घटना, किछु, कैँ, पूर्ण.

356. तीन परत पारि एकहि उजास — पृ. 830; पाठ-परिमाण 499 शब्द; पाठ-सूत्र: जाय, रहय, साक्षी, कैँ, देह.

357. वचनक विधिमे कर्तव्यक अदृश्य बीज — पृ. 833; पाठ-परिमाण 280 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थ, कर्तव्य, अदृश्य, दिशा, वाणी.

358. भेदक सूक्ष्म रेखा, सम्बन्धक मौन सूत्र — पृ. 835; पाठ-परिमाण 499 शब्द; पाठ-सूत्र: वस्तु, सम्बन्ध, एकहि, अलग, यदि.

359. सन्देहक पारि विश्वासक चारि आकाश — पृ. 838; पाठ-परिमाण 505 शब्द; पाठ-सूत्र: बुद्धि, यदि, बनय, सहज, आधार.

360. अपनेक निर्माणक खुलल आकाश — पृ. 841; पाठ-परिमाण 537 शब्द; पाठ-सूत्र: अपने, स्वतन्त्रता, वस्तु, दोसरा, कैँ.

361. इन्द्रियक शोर आ अन्तरक दीप — पृ. 844; पाठ-परिमाण 518 शब्द; पाठ-सूत्र: बनय, कखनो, मूल्य, संस्कृति, जतय.

362. पहिचानक धरती, वाक्यक मौन पूर्वशर्त — पृ. 848; पाठ-परिमाण 479 शब्द; पाठ-सूत्र: किछु, आधार, वस्तु, कथन, कखनो.

363. एकहि अनन्त धारा, अनिवार्य जग — पृ. 851; पाठ-परिमाण 290 शब्द; पाठ-सूत्र: मूल, कारण, अपने, अनन्त, विचार.

364. सरल बीजसँ बहुरंगी जग — पृ. 853; पाठ-परिमाण 516 शब्द; पाठ-सूत्र: जतय, मेल, व्यक्ति, समाज, धीरे.

365. फेंकल क्षणसँ मृत्यु-दिशि खुलल समय — पृ. 856; पाठ-परिमाण 519 शब्द; पाठ-सूत्र: सम्भावना, अपने, अर्थ, कैँ, जीवनक.

366. भयक मैदान सँ अनुबन्धक नगर — पृ. 860; पाठ-परिमाण 494 शब्द; पाठ-सूत्र: वस्तु, शक्ति, किछु, जतय, चाह.

367. छापक आगिसँ आदतक कारण — पृ. 863; पाठ-परिमाण 275 शब्द; पाठ-सूत्र: जाय, विचार, बिनु, बनाय, क्रम.

368. चेतनाक दुआर पर वस्तुक उजास — पृ. 865; पाठ-परिमाण 466 शब्द; पाठ-सूत्र: कैँ, वस्तु, साझा, एखन, हरेक.

369. सात भंगीक खिड़की सँ अहिंसक सत्य — पृ. 868; पाठ-परिमाण 280 शब्द; पाठ-सूत्र: कैँ, खिड़की, दोसर, सीमा, कखनो.

370. विरोधक गर्भसँ पूर्णताक यात्रा — पृ. 870; पाठ-परिमाण 534 शब्द; पाठ-सूत्र: सीमा, जाय, कैँ, अपने, रहय.

सन्देह, अनुभव, इतिहास आ न्याय

371. सन्देहक दीप सँ निश्चयक आकाश धरि — पृ. 875; पाठ-परिमाण 532 शब्द; पाठ-सूत्र: बुद्धि, कैँ, शंका, होइ, आकार.

372. अनुभवक धार पर कारणक प्रश्न — पृ. 876; पाठ-परिमाण 543 शब्द; पाठ-सूत्र: कैँ, अनुभवक, अनुभूति, स्मृति, अबैत.

373. रूपक परदा सँ अखण्ड यथार्थ धरि — पृ. 878; पाठ-परिमाण 541 शब्द; पाठ-सूत्र: कैँ, किछु, अन्तिम, सीमा, अनुभवक.

374. शब्दक गाँठ सँ तथ्यक उजास धरि — पृ. 880; पाठ-परिमाण 629 शब्द; पाठ-सूत्र: कैँ, वस्तु, कथन, सरल, कखनो.

375. हाथक प्रमाण सँ विश्लेषणक सीमा धरि — पृ. 882; पाठ-परिमाण 738 शब्द; पाठ-सूत्र: वस्तु, कैँ, अमूर्त, सीमा, विश्लेषणक.

376. प्रयोगक बाट पर अर्थक नगर — पृ. 885; पाठ-परिमाण 707 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थ, वस्तु, शब्द, अलग, प्रयोग.

377. एकाकी संकेत सँ साझा कसौटी धरि — पृ. 887; पाठ-परिमाण 755 शब्द; पाठ-सूत्र: निजी, शब्दक, नियम, ठीक, अनुभूति.

378. अनुभवक धरती सँ नियमक कसौटी धरि — पृ. 889; पाठ-परिमाण 874 शब्द; पाठ-सूत्र: विज्ञान, नियम, व्याख्या, कैँ, घटना.

379. वस्तुक आभास सँ चेतनाक अन्तराल धरि — पृ. 892; पाठ-परिमाण 757 शब्द; पाठ-सूत्र: अनुभवक, चेतना, चेतनाक, अर्थ, वस्तु.

380. अभिमुख चेतना सँ स्वतन्त्र अस्तित्व धरि — पृ. 895; पाठ-परिमाण 858 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थ, वस्तु, कैँ, चेतना, अनुभव.

381. वाक्यक अर्थ सँ तार्किक सत्य धरि — पृ. 897; पाठ-परिमाण 759 शब्द; पाठ-सूत्र: तर्कक, तार्किक, अर्थ, वाक्य, वाक्यक.

382. विश्वासक प्रश्न सँ अशुभक अन्हार धरि — पृ. 900; पाठ-परिमाण 763 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्थ, यदि, कहै, नैतिक, ईश्वर.

383. कालक धार सँ धर्मक सत्य धरि — पृ. 903; पाठ-परिमाण 943 शब्द; पाठ-सूत्र: धर्म, धर्मक, अनुभूति, मूल्यक, कहै.

384. पवित्रताक आकाश सँ लौकिक जीवन धरि — पृ. 906; पाठ-परिमाण 893 शब्द; पाठ-सूत्र: धर्म, नूतन, अर्थ, कैँ, जीवनक.

385. अनेक पथक संगममे एक सत्यक खोज — पृ. 909; पाठ-परिमाण 712 शब्द; पाठ-सूत्र: धर्म, कहै, अनेक, कियो, अर्थ.

386. ‘शुभ’क अर्थ सँ कर्तव्यक कसौटी धरि — पृ. 911; पाठ-परिमाण 783 शब्द; पाठ-सूत्र: नैतिक, कहै, न्याय, नियम, उचित.

387. घटनाक क्रम सँ ऐतिहासिक बोध धरि — पृ. 914; पाठ-परिमाण 739 शब्द; पाठ-सूत्र: घटना, नूतन, ऐतिहासिक, सही, संस्था.

388. कानूनक अक्षर सँ न्यायबोधक अन्तःस्वर धरि — पृ. 916; पाठ-परिमाण 814 शब्द; पाठ-सूत्र: न्याय, कानून, अधिकार, कहै, नैतिक.

389. अक्षरक पार जे उजास — पृ. 919; पाठ-परिमाण 515 शब्द; पाठ-सूत्र: कैं, कखनो, न्याय, नियम, नियमक.

अनुलग्नक १ — त्वञ्चाहञ्च (गीत प्रबन्ध)

390. त्वञ्चाहञ्च — पृ. 925; पाठ-परिमाण 0 शब्द; पाठ-सूत्र: त्वञ्चाहञ्च.

391. आन-आन पर्व — पृ. 925; पाठ-परिमाण 3997 शब्द; पाठ-सूत्र: पुत्र, कएल, गेल, देखि, अर्जुन.

392. सभा पर्व — पृ. 946; पाठ-परिमाण 1152 शब्द; पाठ-सूत्र: सभा, युधिष्ठिर, दुर्योधन, दुःशासन, शकुनि.

393. वन पर्व — पृ. 952; पाठ-परिमाण 1336 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्जुन, आयल, युधिष्ठिर, गेल, आबि.

394. विराट पर्व — पृ. 958; पाठ-परिमाण 505 शब्द; पाठ-सूत्र: विराट, अर्जुन, सैरन्ध्रीक, कीचक, भीम.

395. उद्योग पर्व — पृ. 961; पाठ-परिमाण 817 शब्द; पाठ-सूत्र: कृष्ण, दुर्योधन, कएल, राज्य, हएत.

396. भीष्म पर्व — पृ. 964; पाठ-परिमाण 847 शब्द; पाठ-सूत्र: भीष्म, अर्जुन, युद्ध, कएल, कृष्ण.

397. द्रोण पर्व — पृ. 968; पाठ-परिमाण 1058 शब्द; पाठ-सूत्र: अर्जुन, द्रोण, युद्ध, कएल, बढ़ल.

398. कर्ण पर्व — पृ. 972; पाठ-परिमाण 369 शब्द; पाठ-सूत्र: कर्णक, अर्जुनक, शल्य, युद्ध, कर्ण.

399. शल्य पर्व — पृ. 974; पाठ-परिमाण 150 शब्द; पाठ-सूत्र: शल्यक, युधिष्ठिर, गदा, दुर्योधन, कृष्ण.

400. सौप्तिक पर्व — पृ. 975; पाठ-परिमाण 276 शब्द; पाठ-सूत्र: अश्वत्थामा, पाण्डव, पाँचू, द्रौपदीक, अस्त्र.

401. स्त्री पर्व — पृ. 976; पाठ-परिमाण 72 शब्द; पाठ-सूत्र: धृतराष्ट्र, भीम, गांधारी, कृष्ण, लौहक.

402. शान्ति पर्व — पृ. 976; पाठ-परिमाण 43 शब्द; पाठ-सूत्र: युधिष्ठिरक, मोन, विखिन्न, छोड़ल, राज.

403. अनुशासन पर्व — पृ. 977; पाठ-परिमाण 29 शब्द; पाठ-सूत्र: युधिष्ठिर, आयल, काल, सूर्य, भेला.

404. आश्वमेधिक पर्व — पृ. 977; पाठ-परिमाण 81 शब्द; पाठ-सूत्र: कएल, आयल, युधिष्ठिरक, कृष्ण, यज्ञ.

405. आश्रमवासिक पर्व — पृ. 977; पाठ-परिमाण 29 शब्द; पाठ-सूत्र: विदुर, बरख, पन्द्रह, बीतल, एला.

406. मौसल पर्व — पृ. 977; पाठ-परिमाण 65 शब्द; पाठ-सूत्र: कृष्ण, करथि, देखि, प्राणान्त, युद्धक.

407. महाप्रास्थानिक पर्व — पृ. 978; पाठ-परिमाण 93 शब्द; पाठ-सूत्र: युधिष्ठिर, कुकुड़, देल, द्रौपदी, हिमालय.

408. स्वर्गारोहण पर्व — पृ. 978; पाठ-परिमाण 141 शब्द; पाठ-सूत्र: पहुँचि, इन्द्र, दूत, ओतऽ, परीक्षा.

अनुलग्नक २ — असञ्जाति मन (गीत प्रबन्ध)

409. असञ्जाति मन — पृ. 980; पाठ-परिमाण 0 शब्द; पाठ-सूत्र: असञ्जाति.

410. सर्ग १ — पृ. 980; पाठ-परिमाण 261 शब्द; पाठ-सूत्र: शाक्य, माया, करथि, हाथी, बुद्धत्व.

411. सर्ग २ — पृ. 981; पाठ-परिमाण 59 शब्द; पाठ-सूत्र: बालकक, सिद्धार्थक, धान्यसँ, पूर्ण, राज्य.

412. सर्ग ३ — पृ. 981; पाठ-परिमाण 280 शब्द; पाठ-सूत्र: वृद्ध, सारथी, कुमार, घुरि, सूत.

413. सर्ग ४ — पृ. 983; पाठ-परिमाण 65 शब्द; पाठ-सूत्र: घुरल, उदायी, लीन, सारथी, द्वार.

414. सर्ग ५ — पृ. 983; पाठ-परिमाण 199 शब्द; पाठ-सूत्र: सिद्धार्थ, करू, बिच, किछु, आज्ञा.

415. सर्ग ६ — पृ. 985; पाठ-परिमाण 74 शब्द; पाठ-सूत्र: वस्त्र, सिद्धार्थ, जाउ, छंदक, सोझाँ.

416. सर्ग ७ — पृ. 985; पाठ-परिमाण 54 शब्द; पाठ-सूत्र: सिद्धार्थ, आश्रम, देखि, स्वर्ग, निकलि.

417. सर्ग ८ — पृ. 985; पाठ-परिमाण 72 शब्द; पाठ-सूत्र: सिद्धार्थक, बाजि, कठोर, हृदय, एम्हर.

418. सर्ग ९ — पृ. 986; पाठ-परिमाण 111 शब्द; पाठ-सूत्र: राम, मोक्षक, गोटे, छथि, कुमार.

419. सर्ग १० — पृ. 986; पाठ-परिमाण 26 शब्द; पाठ-सूत्र: पहुँचि, सिद्धार्थ, बढ़ि, कएल, गंगाकेँ.

420. सर्ग ११ — पृ. 986; पाठ-परिमाण 41 शब्द; पाठ-सूत्र: सिद्धार्थ, राजा, कखनो, काल, बिम्बसार.

421. सर्ग १२ — पृ. 987; पाठ-परिमाण 175 शब्द; पाठ-सूत्र: कएल, गेला, सिद्धार्थ, पाँचटा, मार्ग.

422. सर्ग १३ — पृ. 987; पाठ-परिमाण 181 शब्द; पाठ-सूत्र: मार, वाण, सिद्धार्थ, प्राप्त, हएत.

423. सर्ग १४ — पृ. 988; पाठ-परिमाण 134 शब्द; पाठ-सूत्र: पाओल, मुनि, पहरमे, शाक्य, स्मरण.

424. सर्ग १५ — पृ. 989; पाठ-परिमाण 124 शब्द; पाठ-सूत्र: बुद्ध, क्यो, कएल, हुनक, गुरु.

425. सर्ग १६ — पृ. 990; पाठ-परिमाण 264 शब्द; पाठ-सूत्र: सम्यक, कएल, प्राप्त, बुद्ध, काश्यप.

426. सर्ग १७ — पृ. 991; पाठ-परिमाण 153 शब्द; पाठ-सूत्र: बुद्ध, काश्यप, कएल, प्राप्त, बिम्बसार.

427. सर्ग १८ — पृ. 992; पाठ-परिमाण 55 शब्द; पाठ-सूत्र: सुदत्त, गेल, विहार, जेतवनक, पाइ.

428. सर्ग १९ — पृ. 992; पाठ-परिमाण 84 शब्द; पाठ-सूत्र: बुद्ध, देल, रहय, ग्रहण, दीक्षा.

429. सर्ग २० — पृ. 993; पाठ-परिमाण 50 शब्द; पाठ-सूत्र: कएल, दीक्षित, जेतवन, बुद्धक, ओतऽ.

430. सर्ग २१ — पृ. 993; पाठ-परिमाण 106 शब्द; पाठ-सूत्र: कएल, दीक्षित, बुद्ध, उपदेश, ओत ऽ.

431. सर्ग २२ — पृ. 993; पाठ-परिमाण 95 शब्द; पाठ-सूत्र: बुद्ध, गेला, कएल, उपदेश, राजगृहसँ.

432. सर्ग २३ — पृ. 994; पाठ-परिमाण 158 शब्द; पाठ-सूत्र: बुद्ध, छथि, मार, प्राप्त, आम्रपालीक.

433. सर्ग २४ — पृ. 995; पाठ-परिमाण 63 शब्द; पाठ-सूत्र: आनन्द, लिच्छवी, बुद्ध, सुनि, पूछल.

434. सर्ग २५ — पृ. 995; पाठ-परिमाण 110 शब्द; पाठ-सूत्र: शान्त, कएल, नगरी, बुद्ध, आनन्द.

435. सर्ग २६ — पृ. 996; पाठ-परिमाण 85 शब्द; पाठ-सूत्र: प्राप्त, सुभद्र, निर्वाण, अन्तिम, बुद्ध.

436. सर्ग २७ — पृ. 997; पाठ-परिमाण 55 शब्द; पाठ-सूत्र: मल्ल, आगि, महापरिनिर्वाण, आबि, उठेलक.

437. सर्ग २८ — पृ. 997; पाठ-परिमाण 165 शब्द; पाठ-सूत्र: बुद्धक, अस्थि, स्तूप, बुद्ध, आबि.

अनुलग्नक ३ — “Second Person Singular” केर अंग्रेजी आमुखक मैथिली अनुवाद

438. आरम्भ करैत — पृ. 999; पाठ-परिमाण 0 शब्द; पाठ-सूत्र: आरम्भ.

439. १ — पृ. 999; पाठ-परिमाण 835 शब्द; पाठ-सूत्र: कविता, साहित्यिक, छथि, मैथिलीमे, स्थान.

440. २ — पृ. 1000; पाठ-परिमाण 1061 शब्द; पाठ-सूत्र: छथि, किछु, रूपमे, पाठ, करै.

१५. शोधोपयोगी समेकित निरीक्षण

सम्पूर्ण आवरणिका देखबैत अछि जे प्रारम्भिक “स्वप्न” रूपक धीरे-धीरे “प्रश्न”, “भाषा”, “अर्थ”, “प्रमाण”, “इतिहास”, “न्याय” आ “अनुवाद”क शब्द-संसारमे विस्तार पबैत अछि। आरम्भिक घरेलू आ प्राकृतिक शब्दावली पछिला दार्शनिक खण्डसभमे समाप्त नहि होइत; ओ ज्ञानक अमूर्त प्रश्नसभ लेल रूपक-

आधार बनल रहैत अछि। एहि निरन्तरताक कारण हजार पृष्ठक विविध सामग्री एकहि काव्य-चेतनामे बान्हल रहैत अछि।

अनुलग्नकसभ पुस्तकक मुख्य परियोजना सँ अलग परिशिष्ट नहि। महाभारत आ बुद्धचरितक संक्षिप्त रूपान्तर भारतीय स्मृति-परम्पराकेँ वर्तमान मैथिली भाषिक चेतनामे पुनःस्थापित करैत अछि; आधुनिक काव्य-आमुखक पुनःअनुवाद समकालीन भाषा-संवाद जोड़ैत अछि। एहि तीनू प्रकारक स्थानान्तरण—महाकाव्य सँ गीत, संस्कृत/तिब्बती परम्परा सँ मैथिली, मैथिली–अंग्रेजी–मैथिली प्रत्यावर्तन—“मिज्झर”क भाषिक रूप अछि।

बिबलियोग्राफी

केवल पोथीक नाम देल जा रहल अछि।

- स्वप्न मे मिज्झर होइत
- न्यायसूत्र
- तत्त्वचिन्तामणि
- नव्य-न्याय भाषा आ पद्धति सम्बन्धी चयनित ग्रन्थ
- बुद्धचरितम्
- महाभारतम्
- भारतीय दर्शन
- [A History of Indian Philosophy]
- [Indian Philosophy: A Counter Perspective]
- [New Perspectives in Indian Philosophy]
- [Philosophy in Classical India: The Proper Work of Reason]
- [Perception: An Essay on Classical Indian Theories of Knowledge]
- [Epistemology in Classical India: The Knowledge Sources of the Nyaya School]
- [The Idea of History]
- [History as Re-Enactment: R. G. Collingwood’s Idea of History]
- [Time and Narrative]
- [Truth and Method]
- [Metahistory]
- [Futures Past: On the Semantics of Historical Time]
- [The Structure of Scientific Revolutions]

आलेख ३७ · काव्य, गजल आ बाल-किशोर साहित्य

नव पाँखि

सारांश

‘नव पाँखि’ बीस किशोर-कथाक संग्रह अछि, जाहिमे विज्ञान-प्रवृत्ति, पर्यावरण-बोध, स्थानीय स्मृति, सामुदायिक उत्तरदायित्व, तकनीकक मर्यादा, आत्मनिर्णय, प्रवास, दिव्याङ्गता-संवेदना आ प्रमाण-आधारित सोच एक साझा नैतिक-सौन्दर्यात्मक संरचना बनबैत अछि। संग्रहक रचनात्मक विशेषता ई अछि जे कथा अधिकांशतः “समस्या—अवलोकन—प्रश्न—परीक्षण—सुधार—सामुदायिक निष्कर्ष” क्रममे चलैत अछि, मुदा ई क्रम यान्त्रिक नहिएँ रहि जाए; पात्रक सम्बन्ध, लोक-स्मृति, हास्य, विफलता आ प्रकृतिक दृश्य ओकरा मानवीय बनबैत अछि। एहि शोध-समीक्षामे संग्रहक बीसोक रचनाकेँ पृथक-पृथक पढ़ि भारतीय रस-ध्वनि-औचित्य-वक्रोक्ति परम्परा, पाश्चात्य आख्यान-विज्ञान (narratology), किशोर-साहित्य, पर्यावरण-समीक्षा (ecocriticism), विज्ञान-कथा आ शिक्षात्मक कथा-विन्यास, नव्य-न्यायक प्रमाण-व्यवस्था, तथा “विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति”क एक कार्यकारी रूप—लोक-स्मृति, वर्तमान अनुभव, वैज्ञानिक जाँच आ भावी सम्भावनाकेँ समानान्तर काल-रेखा जेकाँ पढ़बाक पद्धति—सँ विवेचित कएल गेल अछि। अध्ययनक निष्कर्ष ई अछि जे संग्रहक केन्द्रीय उपलब्धि “ज्ञानक लोकतंत्रीकरण” अछि: प्रयोगशाला विद्यालयक कोठलीसँ निकलि पोखरि, खेत, जंगल, पोथीघर, पथ, घर, गामसभा आ आकाश धरि पसरैत अछि। किशोर पात्र सभ केवल सीखैत नहि, प्रमाण जुटबैत, वयस्क ज्ञानक संग संवाद करैत, स्थानीय समस्याक विकल्प बनबैत आ अपन अज्ञान स्वीकार करैत अछि। भाषिक स्तरपर मूल पाठमे मैथिलीक स्वाभाविक प्रवाह मजबूत अछि, तथापि किछु मुद्रण/टंकण-दोष तथा किछु शब्द-चयनक असंगति अछि, जकर सूची अन्तिम निखार-अध्यायमे देल गेल अछि।

बीजशब्द

नव पाँखि ·मैथिली कविता ·गजल ·बाल-साहित्य ·साहित्यिक समीक्षा

१.४७. गजेन्द्र ठाकुर-नव पाँखि- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

नव पाँखि : किशोर कथा-संग्रह

गहन शोधपरक साहित्यिक समीक्षा, पाठ-निखार आ तुलनात्मक पद्धति-अध्ययन

आधार-पाठ : गजेन्द्र ठाकुरक बीस कथा

भारतीय काव्यशास्त्र · पाश्चात्य आख्यान-सिद्धान्त · नव्य-न्याय · विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

शोध-समीक्षा

२०२६

सारांश

‘नव पाँखि’ बीस किशोर-कथाक संग्रह अछि, जाहिमे विज्ञान-प्रवृत्ति, पर्यावरण-बोध, स्थानीय स्मृति, सामुदायिक उत्तरदायित्व, तकनीकक मर्यादा, आत्मनिर्णय, प्रवास, दिव्याङ्गता-संवेदना आ प्रमाण-आधारित सोच एक साझा नैतिक-सौन्दर्यात्मक संरचना बनबैत अछि। संग्रहक रचनात्मक विशेषता ई अछि जे कथा अधिकांशतः “समस्या—अवलोकन—प्रश्न—परीक्षण—सुधार—सामुदायिक निष्कर्ष” क्रममे चलैत अछि, मुदा ई क्रम यान्त्रिक नहिएँ रहि जाए; पात्रक सम्बन्ध, लोक-स्मृति, हास्य, विफलता आ प्रकृतिक दृश्य ओकरा मानवीय बनबैत अछि।

एहि शोध-समीक्षामे संग्रहक बीसोक रचनाकेँ पृथक-पृथक पढ़ि भारतीय रस-ध्वनि-औचित्य-वक्रोक्ति परम्परा, पाश्चात्य आख्यान-विज्ञान (narratology), किशोर-साहित्य, पर्यावरण-समीक्षा (ecocriticism), विज्ञान-कथा आ शिक्षात्मक कथा-विन्यास, नव्य-न्यायक प्रमाण-व्यवस्था, तथा “विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति”क एक कार्यकारी रूप—लोक-स्मृति, वर्तमान अनुभव, वैज्ञानिक जाँच आ भावी सम्भावनाकेँ समानान्तर काल-रेखा जेकाँ पढ़बाक पद्धति—सँ विवेचित कएल गेल अछि।

अध्ययनक निष्कर्ष ई अछि जे संग्रहक केन्द्रीय उपलब्धि “ज्ञानक लोकतंत्रीकरण” अछि: प्रयोगशाला विद्यालयक कोठलीसँ निकलि पोखरि, खेत, जंगल, पोथीघर, पथ, घर, गामसभा आ आकाश धरि पसरैत अछि। किशोर पात्र

सभ केवल सीखैत नहि, प्रमाण जुटबैत, वयस्क ज्ञानक संग संवाद करैत, स्थानीय समस्याक विकल्प बनबैत आ अपन अज्ञान स्वीकार करैत अछि। भाषिक स्तरपर मूल पाठमे मैथिलीक स्वाभाविक प्रवाह मजबूत अछि, तथापि किछु मुद्रण/टंकण-दोष तथा किछु शब्द-चयनक असंगति अछि, जकर सूची अन्तिम निखार-अध्यायमे देल गेल अछि।

मुख्य शब्द : किशोर कथा, मैथिली, विज्ञान-बोध, पर्यावरण, लोक-स्मृति, प्रमाण, नव्य-न्याय, आख्यान-विज्ञान (narratology), समानान्तर इतिहास, विदेह पद्धति।

१. अध्ययनक आधार, उद्देश्य आ पद्धति

आधार-पाठमे बीस कथा क्रमशः ‘काल-स्थान विस्थापन’, ‘बैसाखीपर जिनगी’, ‘हम नै जाएब विदेश’, ‘प्रवास’, ‘हराहरी’, ‘पोखरिक तरे भोरुक तारा’, ‘गामक पुरान पुस्तकालय’, ‘खस्सी घंटीक रहस्य’, ‘बाढ़िमे बचल पोथी’, ‘नेनाक विज्ञान-मेला’, ‘आमक गाछक निर्णय’, ‘मोबाइल बिनु एक दिन’, ‘चिरैयाँ गिननिहार बालक’, ‘माटिक रोबोट’, ‘जंगलक बाट, घरक गप’, ‘गाछ पर बनल पाठशाला’, ‘सूरुजघड़ी बनौने बालिका’, ‘नदी बचाबयवला मित्र-मण्डली’, ‘चाँदनी रातिक मानचित्र’ आ ‘हँसमुख पहरुआ आ हरायल कुंजी’ अछि। समीक्षाक पहिल अनुशासन रहल जे कोनो कथा सामूहिक सारमे बिलायल नहि जाए; प्रत्येक रचनाक स्वतंत्र कथा-विन्यास, पात्र-प्रेरणा, ज्ञान-पद्धति, नैतिक तनाव आ अन्तिम अर्थ-परिवर्तन चिन्हित कएल जाए।

दोसरा स्तरपर संग्रहक आवर्ती संरचना—प्रश्न, प्रमाण, विफलता, पुनर्परीक्षण, सामुदायिक सहभागिता, लोकानुभव, आ आत्मसुधार—कैं परस्पर जोड़ल गेल अछि। तेसर स्तरपर चारि आलोचनात्मक दृष्टि अपनाओल गेल: भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य आख्यान-पद्धति, नव्य-न्यायक प्रमाण-मीमांसा, आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पठन। अन्तिम स्तरपर भाषिक निखार-अभिलेख तैयार कएल गेल अछि, जाहिमे कथा-शरीरक अर्थ नहि बदलैत केवल शब्द, वर्तनी, शैली आ मुद्रणक स्थिरता पर विचार अछि।

“विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति” एहि लेखमे कोनो असत्यापित प्राचीन सिद्धान्तक रूपमे प्रस्तुत नहि अछि। एकरा कार्यकारी आलोचनात्मक

ढाँचा रूपेँ ग्रहण कएल गेल अछि: एकहि प्रसंगमे मिथिला/गामक लोक-स्मृति, वर्तमान किशोर-अनुभव, आधुनिक विज्ञान, सामाजिक संस्था आ भविष्यक सम्भावना केना समानान्तर चलैत अछि, आ कथा कोन बिन्दुपर ई काल-रेखा सभकेँ जोड़ैत अछि—एहि प्रश्नक उत्तर खोजब एहि पद्धतिक मूल अछि।

२. संग्रहक समग्र रचनात्मक स्थापत्य

संग्रहक बीस कथा एक-दोसरासँ कथानकगत रूपेँ स्वतंत्र अछि, मुदा वैचारिक स्तरपर ई सभ एक विस्तृत “जिज्ञासा-लोक” बनबैत अछि। एहि लोकमे नेना अथवा किशोर पात्रक मूल्य ओकर उम्रसँ नहि, ओकर प्रश्नक गुणवत्ता सँ तय होइत अछि। गुरु, आजी, दादा, कारीगर, पहरुआ, किसान, पुस्तकपाल वा पंचायतक व्यक्ति उत्तरक एकाधिकार नहि राखैत; ओ सभ ज्ञानक सहयात्री बनैत छथि।

दोसरा महत्त्वपूर्ण सूत्र “विफलताक गरिमा” अछि। ‘नेनाक विज्ञान-मेला’मे पहिल छानन अस्पष्ट रहैत अछि; ‘माटिक रोबोट’ पहिल परीक्षणमे झुकि पड़ैत अछि; ‘सूरुजघड़ी बनौने बालिका’मे मेघ, धुरीक झुकाव आ ऋतुजन्य अन्तर सरल मॉडलक सीमा खोलैत अछि; ‘काल-स्थान विस्थापन’मे सफल प्रयोग स्वयं अनपेक्षित हजार-वर्षीय विस्थापन बनि जाइत अछि। संग्रह सफलता-केन्द्रित विज्ञानक बदला प्रक्रियात्मक विज्ञान प्रस्तुत करैत अछि।

तेसर सूत्र “स्थानीयता आ विश्व-बोधक समन्वय” अछि। स्थान-कालक उच्च भौतिक अवधारणा हो वा पोखरिक प्रतिबिम्ब, माटिक रोबोट हो वा नदीक मैल, कथा सभ बारम्बार ई प्रतिपादित करैत अछि जे वैश्विक ज्ञान स्थानीय अनुभवमे अनूदित भेला पर जीवित होइत अछि। एहि कारण संग्रहक विज्ञान न केवल पाठ्यक्रमीय अछि, न केवल भावुक ग्राम्य-स्मृति; ई दुनूकेँ एक-दोसराक परीक्षण-क्षेत्र बनबैत अछि।

३. कथा-दर-कथा विस्तृत आलोचनात्मक पठन

१. काल-स्थान विस्थापन

ई संग्रहक सर्वाधिक कल्पनाशील विज्ञान-कथा अछि। धौम्य, अपाला, श्वेतकेतु, रैक्व, सत्यकाम आ घोषाक माध्यमसँ एक आयाम, दू आयाम, तेसर

आयाम आ समयक प्रश्न क्रमिक रूपेँ खुलैत अछि। कथाक आरम्भ व्याख्यात्मक होइतहुँ दृश्यात्मक अछि: नील प्रकाश, काँचक पट्ट, बिन्दु, रेखा आ आकृतिक प्रयोग अमूर्त भौतिक अवधारणाकेँ किशोर-पाठक लेल दृश्य बनबैत अछि। घोषाक नैतिक प्रश्न—भूतकालमे हस्तक्षेपक अधिकार ककरा?—विज्ञानक शक्तिक संग उत्तरदायित्व जोड़ैत अछि।

पुष्यक नामक यान प्राचीन सांस्कृतिक स्मृति आ आधुनिक काल-स्थान विज्ञानक समानान्तरता रचैत अछि। कथाक निर्णायक मोड़ तखन अबैत अछि जखन धौम्यक निजी समय अल्प रहैत अछि मुदा पृथ्वीपर प्रायः हजार बरख बीत जाइत अछि। एतए विज्ञान-कथात्मक “आश्चर्य” करुण-वियोगसँ जुड़ैत अछि: पाँच शिष्य, प्रयोगशाला आ परिचित युग सभ विलायल। मुदा अन्त निराशा पर नहि; धौम्य संग्रहालयक वस्तु बनबाक भयक बदला पुस्तकालय माँगैत छथि। “हम विद्यार्थी छी—समयक” कथाक ज्ञान-दर्शन अछि: आविष्कारक पहचानसँ पैघ सीखबाक स्थिति। पाश्चात्य आख्यान-विज्ञान (narratology)क दृष्टिसँ ई कथा ज्ञान-प्रदर्शन सँ अस्तित्वगत विस्थापन धरि स्पष्ट आरोह रचैत अछि; भारतीय दृष्टिसँ अद्‌भुत रस प्रधान, करुण आ शान्त रस सहायक अछि।

२. बैसाखीपर जिनगी

कथा अभियांत्रिकी प्रवेश-परीक्षाक प्रतीक्षा-समयकेँ स्मृति, परिवार आ दिव्याङ्गता-बोधक मंच बनबैत अछि। रतीश आ फूलक पुनर्भेट कथानकक बाहरी ढाँचा अछि; असल गति फूलक परिवारक अनुभवसँ बनैत अछि—शारीरिक भिन्नताकेँ दया, उपहास वा “पूरा परिचय” बना देबाक सामाजिक दृष्टिक आलोचना। फूलक छोट भाइ आ हुनक जीवन-संगिनी, शिशु-वियोग, पुनः जीवन-निर्माण, आ अन्तमे फूलक अपन बैसाखी-वला बेटाक प्रवेश-परीक्षा—ई सभ प्रसंग जीवनक अनिश्चितता आ मनुष्यक स्वायत्त गरिमाकेँ बहु-पीढ़ीय रूप दैत अछि।

कथाक नैतिक केन्द्र फूलक वाक्यमे अछि: बैसाखी बेटाक परिचयक एक अंश अछि, पूरा परिचय नहि। ई कथन आधुनिक दिव्याङ्गता-अध्ययनक सामाजिक दृष्टिकोणक समीप पड़ैत अछि, जाहिमे व्यक्ति “कमी” सँ परिभाषित नहि

होइत, समाजक दृष्टि आ संरचना महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। भारतीय काव्य-दृष्टिसँ करुण रस निराशा उत्पन्न नहि करैत, बल्कि वीर/उत्साहक दिशि रूपान्तरित होइत अछि। अन्तिम सूत्र—“जिनगी बैसाखीपर हो सकैत अछि, सपना नहि”—घोषणात्मक होइतहुँ सम्पूर्ण कथानुभवसँ अर्जित अछि।

३. हम नै जाएब विदेश

सौरभक छात्रवृत्ति आ विदेश-यात्राक अवसर एहि कथाक बाह्य द्वन्द्व अछि; असल प्रश्न “कतए जएब” नहि, “कतएसँ जएब” आ “ज्ञान ककरा लेल?” अछि। द्विजेन्द्र काकाक जीवन-कथा—दूर देश, सफलता, माएक प्रतीक्षा, पछतावा—सौरभ पर भावनात्मक दबाव बनबैत अछि, मुदा कथा सावधानीसँ भावुक निषेधसँ बचैत अछि। द्विजेन्द्र स्वयं चेतबैत छथि जे दोसरक पश्चात्तापकेँ अपन भविष्य नहि बनाउ।

सौरभक जल-मापन परियोजना आ बाढ़ि-सावधानीक वास्तविक उपयोग ओकर निर्णयकेँ नैतिक-प्रयोगात्मक आधार दैत अछि। ओ अवसरक विरुद्ध नहि, अनालोचित प्रतिष्ठा-बोधक विरुद्ध निर्णय लैत अछि। एहि कथा मे “पाँखि” रूपक संग्रहक शीर्षकसँ सीधा जुड़ैत अछि: उड़ान जड़िक शत्रु नहि। पाश्चात्य किशोर-विकास आख्यानक दृष्टिसँ ई आत्मनिर्णयक कथा अछि; विदेह समानान्तर पठनमे द्विजेन्द्रक अतीत, सौरभक वर्तमान आ सम्भावित भावी विदेश-अध्ययन एक-दोसराकेँ निरस्त नहि, संशोधित करैत अछि।

४. प्रवास

मधुबनीसँ हल्दिया आएल नचिकेतक भाषिक एकाकीपन कथा आरम्भ करैत अछि। प्रवासक समस्या केवल भूगोल नहि—भाषा, समूह, सम्मान, श्रेय आ अपनापन अछि। तापसक संग मित्रता एहि तनावकेँ व्यावहारिक रूप दैत अछि। तापस यन्त्र बनबैत अछि, मुदा प्रस्तुतीकरणक झिझक कारण “सहायक” बना देल जाइत अछि; नचिकेत ओकर तकनीकी श्रमकेँ नाम आ आवाज दैत अछि।

समुद्री हवा, पवनचक्की, जलस्तर चेतावनी आ वास्तविक आपदा-काज विज्ञान-मेलाकेँ सामुदायिक उपयोगिता मे बदलैत अछि। देवदत्तक परिवर्तन कथा केँ सरल खलनायक-विन्याससँ बचबैत अछि; ओ अन्ततः तापसक श्रेय

स्वीकार करैत अछि। भाषा एहि कथा मे बाधा नहि, परस्पर विनिमयक साधन बनैत अछि—तापस मैथिली सीखैत, नचिकेत बंगला। अन्तिम निष्कर्ष कि प्रवास तखन बदलैत अछि जखन नव ठामक नाम, भाषा, दुःख आ हँसी अपन बुझाए लगए, पहचानक बहु-केन्द्रीय रूप प्रस्तुत करैत अछि।

५. हराहरी

'हराहरी' व्यक्तित्वकेँ स्थिर लेबल मानबाक प्रवृत्तिक विरुद्ध कथा अछि। अनय आ चन्दनक तीन बरखक अन्तरालमे स्वभावगत उलटफेर—पहिने चुप अनय, गप्पी चन्दन; बादमे वक्ता अनय, मौन चन्दन—कथाक मूल संरचना अछि। मुदा शीर्षकक "बराबरी/अदला-बदली" सरल परिवर्तन नहि; कथा देखबैत अछि जे परिस्थिति, भय, श्रम, विद्यालय, परिवार आ अवसर स्वभावक अभिव्यक्तिकेँ बदलैत अछि।

कथामे प्रथम-पुरुष वाचक आत्मनिरीक्षणक निकटता बढ़बैत अछि। "दार्शनिक", "गप्पी", "लजकोर", "घमण्डी" सन सामाजिक लेबलक आलोचना विशेष प्रभावी अछि। पुस्तकालयक "खुलल मेज" कथा-समाधान मात्र नहि, संरचनात्मक उत्तर अछि—कम बजएवला लोककेँ समय देब। अन्तिम समोसाक पुनरावृत्ति आरम्भक स्मृतिकेँ हलुक हास्यसँ बन्द करैत अछि। भारतीय दृष्टिसँ हास्य, सख्य-स्नेह आ शान्त भावक संतुलन; पाश्चात्य चरित्र-आलोचनामे स्थिर चरित्रक बदला गतिशील आत्म-पहिचान मुख्य अछि।

६. पोखरिक तरे भोरुक तारा

तारापोखरिक पानिमे चमकैत "तारा" लोककथा, दृष्टि-विज्ञान आ खगोल-बोधकेँ एक साथ खोलैत अछि। कुसुम, मिहिर, अंशु आ ऋचा पहिने दृश्यकेँ तथ्य मानए लगैत अछि, मुदा शिक्षिका मालती दी मूल प्रश्न दैत छथि—"की देखलहुँ, आ की केवल मानि लेलहुँ?" एहि एक प्रश्नमे कथा-समूहक वैज्ञानिक अनुशासन संकुचित अछि।

अलग-अलग दृष्टिकोण, कटोरा-प्रयोग, दिशा-सूचक, कोण-मापन आ अन्ततः शुक्र ग्रहक पहचान "प्रत्यक्ष"क आलोचनात्मक परीक्षण बनबैत अछि। कथा लोक-कथाकेँ झूठ घोषित नहि करैत; आजीक व्याख्या ओकर ऐतिहासिक उपयोग खोलैत अछि—घड़ीहीन जीवनमे भोरुक ज्योति समयक संकेत छल।

एतए विदेह समानान्तर पद्धति अत्यन्त स्पष्ट अछि: लोककथा, कृषि-समय, आधुनिक प्रकाश-विज्ञान आ किशोर दैनिकी एक-दोसराक समानान्तर साक्ष्य बनैत अछि।

७. गामक पुरान पुस्तकालय

बन्द पुस्तकालयक ताला कथाक दृश्य प्रतीक अछि, मुदा कथा धीरे-धीरे देखबैत अछि जे असली बन्दिश लोहेक ताला नहि, संस्थागत विस्मरण अछि। मयंक, नेहा आ इन्द्रनील पंचायत, पुरान कुंजी, लोहारक स्मृति, पंजी-पोथी आ वृद्ध पाठकसभक अनुभव जोड़ैत पुरान पुस्तकालयकेँ पुनर्जीवित करैत अछि। सुधाकर झाक किशोरावस्थाक उधार-पंजी भेटनाइ व्यक्तिगत जीवनी आ सार्वजनिक अभिलेखक सुन्दर संगम अछि।

“पोथी घरमे बन्द रहए लेल नहि, हाथ बदलए लेल होइत अछि”—ई कथा-पद्धतिक सूत्र अछि। संरक्षण एतए संग्रहालयी स्थिरता नहि, परिसंचरण अछि। स्वयंसेवी संचालनक प्रस्ताव कथा केँ संस्थागत सीख धरि लऽ जाइत अछि: एक व्यक्तिपर निर्भर संरचना फेर बन्द भऽ सकैत अछि। भारतीय ध्वनि-दृष्टिसँ ताला/कुंजीक बिम्ब स्मृति/सक्रियता अर्थक विस्तार करैत अछि; पश्चिमी स्मृति-अध्ययनक संदर्भमे ई सामुदायिक अभिलेखक पुनर्सक्रियण अछि।

८. खस्सी घंटीक रहस्य

खस्सी “चाँद”क रातिक घंटी रहस्य-कथा रूपमे आरम्भ होइत अछि। प्राची, नील, विहान आ मधुप अनुमानक बदला ध्वनि, सूत, खुरक निशान, फाटकक कुंडी आ सुरक्षित प्रत्यक्ष अवलोकनक क्रम अपनबैत अछि। रहस्यक यांत्रिक उत्तर अछि—चाँद सींग सँ कुंडी खोलि बाहर जाइत अछि—मुदा कथा एतए समाप्त नहि होइत।

चाँद दुलारी काकीक लग जाइत अछि, जे ओकर शैशवमे देखभाल कएने रहथि। एहि बिन्दुपर “रहस्य” सम्बन्धक स्मृतिमे बदलि जाइत अछि। तर्क आ स्नेहक संयुक्त समाधान कथा केँ विशेष बनबैत अछि। नव्य-न्याय दृष्टिसँ प्रत्यक्ष, अनुमान आ हेतुक क्रम साफ अछि; साहित्यिक स्तरपर घंटीक “टुन...टन” ध्वनि पुनरावृत्ति रहस्यसँ स्मृति धरि अर्थ बदलैत अछि।

९. बाढ़िमे बचल पोथी

बाढ़ि संकट एहि कथामे अभिलेख-संरक्षण आ आपदा-सुरक्षाकेँ जोड़ैत अछि। ईशान, अर्पिता, नीरज, सोनाली आ “पोथीबाबा”क माध्यमसँ स्पष्ट कएल गेल अछि जे सांस्कृतिक धरोहर बचेनाइ मानव-जीवनसँ ऊपर नहि। “अपन प्राणसँ पैघ कोनो पोथी नहि” कथाक आवश्यक सुरक्षा-संतुलन अछि।

लाल कपड़ामे राखल पुरान बाढ़ि-विवरण जखन वर्तमान जल-स्तर बुझबाक उपयोगी साक्ष्य बनैत अछि, तखन स्मृति भविष्य-रक्षाक उपकरण बनि जाइत अछि। एहि रचनामे विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सर्वाधिक प्रत्यक्ष: पुरान लेखा—वर्तमान बाढ़ि—आगूक मानचित्रण एक ही ज्ञान-श्रृंखला बनैत अछि। पोथीक दाग हटेबाक बदला स्मरण रूपमे रहए देबाक विचार इतिहासक भौतिकता स्वीकार करैत अछि।

१०. नेनाक विज्ञान-मेला

ई कथा संग्रहक वैज्ञानिक पद्धति-घोषणापत्र जेकाँ पढ़ल जा सकैत अछि। माधव, मीनाक्षी, अरिन्दम आ सलोनीक परियोजना “नब आविष्कार”क मोहसँ अलग, ज्ञात सिद्धान्तकेँ स्थानीय, सुरक्षित आ बुझबा योग्य बनौनाइ चुनैत अछि। पानि-छानन प्रयोगमे “देखबामे निर्मल” आ “पीब योग्य”क भेद विशेष महत्त्वपूर्ण अछि; अधूर ज्ञानक जोखिम कथा स्पष्ट करैत अछि।

यन्त्रक असफलता, नाप, चेतावनी, प्रश्नोत्तर आ निर्णायकक “नवता कतए?” प्रश्न विज्ञानक सामाजिक अर्थ खोलैत अछि। विशेष सम्मान “जन-बुझान” लेल भेटब ई बतबैत अछि जे विज्ञानक मूल्य केवल नवीनता नहि, स्पष्ट संप्रेषण आ जिम्मेदार सीमा-निर्धारण सेहो अछि। कथाक अन्त साप्ताहिक “हाथसँ विज्ञान” बैसार सँ होइत अछि—मेला एक दिनक घटना नहि, दृष्टि बनि जाइत अछि।

११. आमक गाछक निर्णय

पुरान आमक गाछ आ प्रस्तावित पथक टकराव “विकास बनाम प्रकृति”क सरलीकृत द्वन्द्व बनि सकैत छल, मुदा कथा ओकरा विकल्प-खोजमे बदलैत अछि। सुगन्धा, अनूप, शशांक आ ईशानी भावना सँ आरम्भ करैत छथि, पर प्रधानाध्यापक हुनका “ठोस कारण” आ विकल्प जुटाबए कहैत छथि।

छाहरिक तापमान, पथ-दूरी, जलनिकास, विद्यालय लग गति, पोखरिक बाँध—सभ कारक समग्र निर्णयमे जुड़ैत अछि।

गामसभा कथा कैं लोकतांत्रिक मंच दैत अछि। किशोर पात्र “गाछ बचाउ” नारा मात्र नहि दैत, तकनीकी जाँच योग्य मोड़ प्रस्तुत करैत अछि। अन्तमे गाछ बचैत अछि, पथो बनैत अछि, आ नव बिरबा रोपल जाइत अछि। ई औचित्य-आधारित समाधान अछि—एक मूल्यक सम्पूर्ण विजय नहि, बहुहितक संतुलन।

१२. मोबाइल बिनु एक दिन

ई कथा तकनीक-विरोधी नैतिक उपदेशसँ सावधानीपूर्वक बचैत अछि। अनिरुद्ध गुरुजीक प्रयोगक केन्द्र अछि—साधन हमरा हाथमे अछि कि हमर ध्यान ओकर हाथमे? विद्यार्थीक अनुभव विविध अछि: ककरो घरक गप, ककरो संगीत, ककरो खेलक समय-समन्वय, ककरो बस-समयक कठिनाइ। एहि विविधतासँ स्पष्ट होइत अछि जे डिजिटल साधन एकरेखीय रूपेँ न नीक, न खराब।

कथा अन्ततः निषेधक बदला आत्म-नियमन प्रस्तावित करैत अछि: भोजनक समय दूर, अनावश्यक सूचना बन्द, सुतबाक पहिने पटल सँ दूरी, घरेलू संवादक सम्मान। “मोबाइल हमर कुंजी अछि, घर नहि” सुन्दर रूपक अछि—प्रवेश-साधनकेँ जीवन-स्थान नहि बनाउ। किशोर-साहित्यक दृष्टिसँ उपदेश पात्रक अनुभवसँ अर्जित अछि, ऊपर सँ आरोपित नहि।

१३. चिरैयाँ गिननिहार बालक

माधवक दीर्घकालीन चिरैयाँ-अवलोकन कथा केन्द्रीय रूपेँ “धैर्य” आ “लेखा” पर आधारित अछि। आजीक साथक स्मृति ओकर वैज्ञानिक रुचिक भावात्मक जड़ि अछि। शिक्षक जखन दू बरखक अभ्यास-पुस्तिका देखैत छथि, तखन निजी शौक सार्वजनिक ज्ञानक सम्भावना बनैत अछि।

विवाह-मण्डपक कारण झाड़ी आ खोखर गाछ हटबाक खतरा कथामे संरक्षणक ठोस प्रसंग आनैत अछि। माधव आ मित्रसभ आयोजन रोकबाक बदला स्थल-परिवर्तन प्रस्तावित करैत अछि। विशेष महत्त्व ई जे अनचिन्हार चिरैयाँक नाम खाली छोड़ल जाइत अछि—अज्ञान छिपाओल नहि। अन्तिम

क्रम “पहिने सुनलक, फेर देखलक, तखन गिनलक” वैज्ञानिक अवलोकनक नैतिक छन्द जेकाँ अछि।

१४. माटिक रोबोट

नचिकेता दादाक बीज बोएनाइ सँ प्रेरणा लैत अछि, मुदा कथा तुरन्त यन्त्र-रोमानीकरण रोकैत अछि: “यन्त्र खेतकेँ बुझत केना?” प्रश्न परियोजनाक असल केन्द्र बनैत अछि। कुम्हारक माटि-कौशल, बाँसक ढाँचा, मोटर, गियर, बीज-पट्टी, स्पर्श-दण्ड, दूरी-संवेदक—स्थानीय हस्तकला आ आधुनिक तकनीकक बहुस्तरीय संगम होइत अछि।

विशेष उपलब्धि ई अछि जे विफल पहिया, टूटल माटिक टुकड़ा आ बदलल भाग प्रदर्शनीमे लुकाओल नहि जाइत। “सफल नमूना एही सभ विफलताक ऊपर ठाढ़ अछि” विज्ञानक प्रक्रियात्मक सत्य अछि। रोबोट मनुष्यक अनुभव हटबैत नहि, बढ़बैत अछि—दादाक निष्कर्ष तकनीकी नैतिकताक केन्द्र अछि। शीर्षकक “माटि” वस्तु मात्र नहि; स्थानीय ज्ञानक प्रतीक अछि।

१५. जंगलक बाट, घरक गप

नव सड़कक आवश्यकता वास्तविक अछि—अस्पताल, हाट, कृषि-उत्पाद; जंगलक रक्षा सेहो वास्तविक। कल्पना दीदी प्रश्न बदलैत छथि: “बाट कि जंगल?” नहि, “सुविधा बढ़ए आ क्षति कम होअए” कोना? एहि पुनः-प्रश्नीकरणसँ पूरा कथा द्वैतक जालसँ बाहर अबैत अछि।

पुरान बैलगाड़ी-पथ, दलदलक कारण, बन्द नाली, छोट पुलिया, परिवार-सर्वेक्षण, गाछक संख्या, माटि-परीक्षण—सभ मिलि निर्णयक बहु-प्रमाणीय आधार बनबैत अछि। जँ तथ्य नहि, किशोर स्पष्ट कहैत अछि जे अभियन्ता/वनकर्मी जाँच करताह। अन्तिम पंक्ति “जंगलक बाट घरक गपे अछि” पारिस्थितिकी सम्बन्धक सार अछि: जंगल बाहरी दृश्य नहि, जल, माटि, कृषि आ जीवनक अवयव।

१६. गाछ पर बनल पाठशाला

पीपलक छाहरिमे मचान-पाठशालाक कल्पना आरम्भमे साहसिक खेल सन लगैत अछि, मुदा कथा सुरक्षा, गाछक स्वास्थ्य, पाँखिक घोंसला, छोट नेनाक

पहुँच आ रखरखावक प्रश्नसँ ओकरा जिम्मेदार शिक्षण-संरचना बनबैत अछि। विशेष सूझ ई जे मचान गाछमे कील ठोकि नहि, धरतीमे बाँसक खम्भा पर टिकाओल जाइत अछि; गाछ छाह दैत अछि, भार नहि उठबैत।

घोंसला भेटला पर समय बदलल जाइत अछि; प्रकृति-अध्ययनक पहिल नियम प्रकृतिक जीवन अस्त-व्यस्त नहि करब। लोक-स्मृति आ तथ्यक भेदक स्पष्ट लेबल—“लोक-स्मृति”—ज्ञानशास्त्रीय ईमानदारीक उत्कृष्ट उदाहरण अछि। अन्तमे प्रधानाध्यापकक प्रश्न पर रेवा बतबैत अछि जे मचान नहि, निरन्तर प्रश्न पूछबाक अभ्यास उपलब्धि अछि। ई जीवित पाठशाला स्थिर भवनक विकल्प नहि, पूरक ज्ञान-समुदाय अछि।

१७. सूरुजघड़ी बनौने बालिका

नेहाक छाह देखबाक सहज जिज्ञासा पृथ्वीक घूर्णन, धुरीक झुकाव, ऋतुजन्य परिवर्तन आ सूरुजघड़ीक सीमाधरि पहुँचैत अछि। कथा “बना लेल” पर समाप्त नहि; पहिल रेखांकन, सुधार, मेघक दिन, तिथि-अन्तर आ पुनर्मापन निरन्तर मॉडल-संशोधन देखबैत अछि।

आजीक अनुभव—सूरुज, पाँखि, पशु आ दिनचर्यासँ समय बुझनाइ—आ अर्चना दीदीक वैज्ञानिक व्याख्या विरोधी नहि, संवादरत अछि। “प्रकृति पहिने चिन्ह देत, हम बादमे रेखा जोड़ब” कथाक पद्धतिगत सूत्र अछि। अन्तमे नेहा समझैत अछि जे घड़ी अंक दैत अछि, सूरुजघड़ी कारण बुझबैत अछि। समयक मापनसँ समयक अनुभूति धरि कथा उठैत अछि।

१८. नदी बचाबयवला मित्र-मण्डली

कोशीक पुरान धारक मैल, हाट-पश्चात प्लास्टिक, नालाक गन्ध आ जीव-संख्या घटबाक अवलोकनसँ कथा शुरू होइत अछि। मीना, आरव, सोनम, तमय आ काव्या तुरन्त “नदी खराब” निष्कर्ष नहि लैत; तिथि, स्थान, गन्ध, जीव, वर्षा-पश्चात दशा आ हाटक चक्रक लेखा बनबैत अछि।

तट-स्वच्छता कथा मे प्रतीकात्मक कार्यक्रम नहि; सुरक्षा-नियम, काँच वा रासायनिक वस्तुसँ दूरी, पृथक्करण, निस्तारण, हाट-व्यवस्था, पंचायत प्रतिवेदन आ नाला-सुधारक दीर्घ प्रक्रिया जुड़ैत अछि। अन्तिम बोध—नदीक रक्षा

नदीपर उपकार नहि, अपन भविष्यक प्रति दायित्व—पर्यावरणीय नागरिकताक स्पष्ट कथन अछि। “हम नदीक मालिक नहि, संगाती छी” मनुष्य-केन्द्रित दृष्टिकेँ नरम करैत अछि।

१९. चाँदनी रातिक मानचित्र

अन्वी रातिक आकाशसँ दिशा बुझबाक प्रश्न उठबैत अछि। शिक्षक, मित्र आ आजीक संग ध्रुवतारा, चन्द्रमा, मौसम, कुहासा, तिथि आ अवलोकनक स्थानक लेखा बनैत अछि। कथा मानचित्रकेँ स्थिर चित्र नहि, समय-नियत अभिलेख सिद्ध करैत अछि: एक तिथि/बेरक आकाश दोसर राति हुबहू नहि दोहराएत।

विशेष महत्त्व “अवलोकन असफल नहि; परिस्थिति अनुपयुक्त” कथनक अछि। विज्ञानमे नकारात्मक अथवा अनुपस्थित आँकड़ा सेहो सूचना होइत अछि। आजीक पारम्परिक दिशा-बोध आधुनिक अवलोकन-पुस्तिका सँ जुड़ैत अछि। अन्तिम रूपक—दिशा ऊपरक तारा मात्र नहि, प्रश्नक साहस, प्रमाणक धैर्य आ धरतीसँ जुड़ल बुद्धि—किशोर-विकासक दार्शनिक निष्कर्ष अछि।

२०. हँसमुख पहरुआ आ हरायल कुंजी

बिसेसर काकाक पिअर डोरीवला अभिलेख-कोठलीक कुंजी हराएब छोट विद्यालयी रहस्य अछि, मुदा कथा प्रमाण-आधारित जाँचक सरस नमूना बनबैत अछि। किशोर सभ पहिने कालिक घटनाक क्रम बनबैत, स्थान जाँचैत, घर्षण-चिह्न, पिअर रेशा, आसन खिसकबाक मार्ग आ काठक जोड़ धरि पहुँचैत अछि।

हास्य कथा कैं हलुक बनौने राखैत अछि—बिसेसर काका अपनहि पर हँसैत छथि, “कुंजीकेँ पाँखि लागि गेल” कहैत छथि। समाधान कोनो चोर अथवा षड्यन्त्र नहि, साधारण दुर्घटना अछि: ढीला घेरा, काँटी, आसन खिसकनाइ। एहि कारण कथा संदेहक नैतिकतासँ जुड़ैत अछि—ककरो दोष देबाक पहिने क्रम आ प्रमाण देखू। अन्तिम सूत्र “देखू, जोड़ू, जाँचू, तखन मानू” पूरा संग्रहक प्रमाण-दृष्टिक संक्षिप्त रूप बनि उठैत अछि।

४. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ संग्रहक रस-संयोजन एकर प्रमुख शक्ति अछि। विज्ञान-प्रधान रचनामे अद्‌भुत रस सहज रूपेँ आबैत अछि—स्थान-कालक वक्रता, पोखरिक तरे चमक, सूरुजघड़ी, माटिक रोबोट, रातिक आकाश। मुदा अद्‌भुत अकेले नहि रहैत; करुण (‘बैसाखीपर जिनगी’, ‘बाढ़िमे बचल पोथी’), हास्य (‘हराहरी’, ‘हँसमुख पहरुआ...’), वीर अथवा उत्साह (‘नदी बचाबयवला मित्र-मण्डली’, ‘आमक गाछक निर्णय’) आ शान्त भावक संग ओकर रूपान्तरण होइत अछि। एहि मिश्रणसँ कथा पाठ्यपुस्तकीय सूखापनसँ बचैत अछि।

ध्वनि-सिद्धान्तक अनुसार संग्रहक अनेक कथामे प्रत्यक्ष कथनक पाछाँ व्यापक अर्थ खुलैत अछि। “कुंजी” पुस्तकालय आ मोबाइल दुनूमे अलग-अलग प्रतीक बनैत अछि; “पाँखि” उड़ानक संग जड़ि, प्रवास आ नब घर बनबेनाइ जोड़ैत अछि; “दाग” क्षतिक संग स्मृति; “खाली स्थान” अज्ञानक संग अगिला प्रश्न; “छाह” समयक अदृश्य गति; “घंटी” रहस्यक संग स्नेहक पुरान सम्बन्ध। एहि प्रतीकसभक मूल्य एहि मे अछि जे ओ कथा भीतर क्रियाशील अछि, बाहरी अलंकरण नहि।

औचित्यक दृष्टिसँ संग्रहक श्रेष्ठ अंश ओतए अछि जतए समाधान पात्र, परिस्थिति आ ज्ञान-सीमाक अनुकूल अछि। किशोर सभ अकेले इंजीनियरिंग निर्णय नहि करैत—सर्वेक्षक, अभियन्ता, वनकर्मी, शिक्षक, कारीगर आ ग्रामसभा जुड़ैत अछि। ई औचित्य सामाजिक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि। जहाँ कथाक अन्तिम वाक्य बड्ड स्पष्ट नैतिक निष्कर्ष दैत अछि, ओतए ध्वनिक स्थान कनेक संकुचित भऽ जाइत अछि; किछु कथामे अन्तिम अर्थ पाठक पर छोड़ल जाए तऽ कलात्मक गहराइ आरो बढ़ि सकैत अछि।

वक्रोक्तिक स्तरपर संग्रहक भाषा सामान्यतः सरल अछि; किशोर-साहित्य लेल ई उचित अछि। तथापि रूपकात्मक अन्त—“विद्यार्थी छी समयक”, “पाँखि जड़िक शत्रु नहि”, “मोबाइल हमर कुंजी अछि, घर नहि”, “पन्ना पवनसँ पलटल, सीख चलि रहल”—भाषाकेँ स्मरणीय बनबैत अछि।

५. पाश्चात्य आख्यान, किशोर-साहित्य आ पर्यावरणीय पठन

पाश्चात्य आख्यान-विज्ञान (narratology)क स्तरपर अधिकतर कथा सीमित तृतीय-पुरुष दृष्टि अपनबैत अछि; पाठक किशोर पात्रक जिज्ञासा संग दुनिया देखैत अछि। 'हराहरी' प्रथम-पुरुष प्रयोग करैत अछि, जाहिसँ आत्म-पहिचानक विषय अधिक निकट होइत अछि। कथाक समय सामान्यतः रेखीय, संक्षिप्त आ प्रक्रियात्मक अछि; 'काल-स्थान विस्थापन' एहि नियमक सर्जनात्मक अपवाद अछि, जतए समय स्वयं कथानकक संकट बनैत अछि।

किशोर-विकास कथा (coming-of-age)क एक रूप लगभग पूरा संग्रहमे सक्रिय अछि। विकासक अर्थ वयस्क बनब मात्र नहि, निर्णयक स्वामित्व प्राप्त करब अछि: सौरभ विदेशक निर्णय स्वयं लैत अछि; अनय/चन्दन लेबलक पाछाँ अपन बदलैत स्वभाव बुझैत अछि; नचिकेत प्रवासमे नव समुदाय बनबैत अछि; नदी-मण्डली "मालिक" सँ "संगाती" दृष्टि तक पहुँचैत अछि।

पर्यावरण-समीक्षा (ecocriticism)क दृष्टिसँ 'आमक गाछक निर्णय', 'चिरैयाँ गिननिहार बालक', 'जंगलक बाट, घरक गप', 'गाछ पर बनल पाठशाला' आ 'नदी बचाबयवला मित्र-मण्डली' एक साझा सिद्धान्त बनबैत अछि: प्रकृति न निष्क्रिय दृश्य, न विकासक विरोधी पवित्र वस्तु; ओ जीवित तन्त्र अछि जाहिसँ मानव जीवन परस्पर निर्भर अछि। विशेष रूपेँ कथा सभ "समाधान" कैँ डेटा, स्थानीय ज्ञान, संस्था आ दीर्घ रखरखावक संग जोड़ैत अछि।

विज्ञान-साहित्यक दृष्टिसँ संग्रह वैज्ञानिक चमत्कारक बदला वैज्ञानिक आचरणकेँ प्राथमिकता दैत अछि। अपवादरूपेँ पहिल कथा उच्च कल्पना प्रस्तुत करैत अछि, मुदा ओहो नैतिक अनुशासन, अनिश्चितता आ सीखबाक विनम्रतापर समाप्त होइत अछि। एहि कारण संग्रह "विज्ञान-प्रचार"सँ आगाँ "वैज्ञानिक नागरिकता"क साहित्य बनैत अछि।

६. नव्य-न्याय आ प्रमाण-मीमांसा

नव्य-न्यायपरम्पराक सूक्ष्म पारिभाषिक संरचना पूर्ण रूपेँ किशोर कथामे आरोपित करब अनुचित होयत; तथापि प्रमाण, संशय, हेतू आ निष्कर्षक अनुशासन एहि संग्रहमे आश्चर्यजनक रूपेँ आवर्ती अछि। समीक्षात्मक रूपेँ प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द-साक्ष्य आ उपमानक सामान्य न्यायपरम्परागत अर्थ उपयोगी अछि।

प्रत्यक्षक संशोधन ‘पोखरिक तरे भोरुक तारा’क केन्द्र अछि: जे “पानिक भीतर” देखाइत अछि, ओ वस्तुत: दृष्टि-रेखाक व्याख्या अछि। ‘खस्सी घंटीक रहस्य’मे ध्वनि प्रत्यक्ष अछि, मुदा “भूत/मठक घंटी” अनुमान; खुरक निशान, सूत आ कुंडी क्रमश: हेतूकेँ मजबूत करैत अछि। ‘हँसमुख पहरुआ...’मे घटनाक क्रम, पिअर रेशा आ घर्षण-चिह्न समान प्रकारक अनुमिति बनबैत अछि।

शब्द-साक्ष्यक आलोचनात्मक उपयोग सेहो उल्लेखनीय अछि। आजी, दादा, कारीगर, चरवाहा वा वृद्धक कथन स्वत: अंतिम सत्य नहि; ओकरा “लोक-स्मृति” कहि राखल जाइत अछि, अथवा भौतिक प्रमाण/आधुनिक जाँचसँ मिलाओल जाइत अछि। एहि विवेकसँ परम्परा अपमानित नहि होइत, बल्कि प्रमाण-क्रममे उचित स्थान पबैत अछि।

संग्रह बारम्बार संशयकेँ अज्ञान नहि, ज्ञानक आरम्भ बनबैत अछि। “जे नहि बुझल से नहि बुझल कहबाक साहस”, “खाली स्थान अगिला प्रश्नक आमन्त्रण”, “अवलोकन असफल नहि; परिस्थिति अनुपयुक्त”—ई सभ कथन ज्ञानमीमांसात्मक विनम्रताक रूप अछि। नव्य-न्यायक भाषामे कहब तऽ निष्कर्षक वैधता हेतु, अवच्छेद आ प्रसंग-स्पष्टतापर निर्भर अछि; कथा सभ लोकप्रिय स्तरपर ठीक एहि अनुशासनक अभ्यास करबैत अछि।

७. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति : काल-रेखा सभक सह-पठन

एहि संग्रहक विशिष्ट आलोचनात्मक मूल्य तखन खुलैत अछि जखन इतिहासकेँ केवल बीतल घटनाक क्रम नहि, एकहि वर्तमानमे उपस्थित बहु-कालिक स्मृति रूपेँ पढ़ल जाए। गामक पुरान पुस्तकालयमे पुरान पंजी वर्तमान विद्यार्थीकेँ प्रभावित करैत अछि; बाढ़िक पोथी वर्तमान आपदामे कार्यकारी बनैत अछि; तारापोखरिक लोककथा आधुनिक प्रकाश-विज्ञानक प्रश्न बनैत अछि; सूरुजघड़ीमे आजीक समय-बोध पृथ्वी-विज्ञानक संग जुड़ैत अछि।

समानान्तर ऐतिहासिक पठन “पुरान बनाम नव” द्वन्द्वक बदला चारि धारा चिन्हैत अछि: (१) लोक-स्मृति, (२) संस्थागत/लिखित अभिलेख, (३) वैज्ञानिक वर्तमान, (४) भावी सामाजिक विकल्प। ‘माटिक रोबोट’मे कुम्हारक कौशल, दादाक खेत-अनुभव, विद्यालयी यन्त्र-विज्ञान आ भावी कृषि-उपयोग एकहि

रचनामे समानान्तर अछि। ‘जंगलक बाट...’मे पुरान बैलगाड़ी-पथ भविष्यक टिकाऊ सड़कक विकल्प बनैत अछि।

पहिल कथा एहि पद्धतिक चरम रूप अछि: प्राचीन नाम “पुष्यक”, ऋषि-सदृश नामावली, आधुनिक सैद्धान्तिक भौतिकी, आ सन् ३१००क भविष्य एकहि आख्यान-क्षेत्रमे उपस्थित अछि। कथा कोनो कालखंडकेँ श्रेष्ठ घोषित नहि करैत; भविष्य धौम्यक आविष्कारक गौरवकेँ छोट करैत अछि, मुदा ओकर जिज्ञासा केँ अमर। इतिहास एतए स्वामित्व नहि, सीखबाक निरन्तरता अछि।

एहि दृष्टिसँ ‘नव पाँखि’क किशोर पात्र सभ परम्पराकेँ ढोइत नहि, ओकरा प्रश्नक रूपमे पुनरारम्भ करैत अछि। ताहि कारण संग्रहक आधुनिकता मूलच्छेदन नहि; पुनर्पाठ, परीक्षण आ उपयोगक आधुनिकता अछि।

८. भाषा, शैली आ शुद्ध मैथिली निखार-अभिलेख

मूल पाठक भाषा प्रवाहमय, संवाद-प्रधान आ किशोर-पाठक अनुरूप अछि। मैथिली क्रियापद, संबोधन, ग्रामीण परिवेश आ लोक-शब्दक उपयोग अधिकांश ठाम स्वाभाविक अछि। तथापि प्रकाशन-पूर्व अन्तिम निखार लेल निम्न बिन्दु महत्त्वपूर्ण अछि। ई सूची अर्थ-संशोधन नहि, भाषिक/मुद्रणीय स्थिरता लेल अछि।

क्षेत्र	सुधार/टिप्पणी
टंकण-दोष	“प्बाटव” अनेक ठाम स्पष्ट टंकण-दोष अछि; सन्दर्भानुसार “प्रस्ताव” करब। “प्बाटवित” केँ “प्रस्तावित” करब।
शब्द-विकृति	पहिल कथामे “वस्तुय वातावरण” रूप असंगत अछि; सन्दर्भानुसार “भौतिक वातावरण” अथवा आशय-संगत स्पष्ट पद चुनब।
रूप-सुधार	“आइक” केँ “आइक” करब।
शब्द-निखार	“गायब”क ठाम “बिलायल”

	अथवा सन्दर्भानुसार “ओझरायल” अधिक स्वाभाविक मैथिली रूप देत।
शब्द-निखार	“कोठरी”क ठाम “कोठली” एकरूप राखब।
शब्द-निखार	“बरामदा”क ठाम “ओसारा” रखला सँ भाषा अधिक मैथिलीक होयत।
शब्द-निखार	“दरबज्जा”क ठाम “केवाड़ी” अथवा सन्दर्भानुसार “दुआरि” चुनि पूरे पोथीमे स्थिरता राखब।
शब्द-निखार	“हवा-पानी” रूप जहाँ अछि, ओतए “हवा-पानि” करब।
शैली-संगति	स्वतंत्र “हर” रूप जहाँ “हर माप” अर्थमे अछि, ओतए “प्रत्येक माप” अथवा “सभ माप” लिखल जा सकैत अछि।
व्याकरण-संगति	मानवीय कर्ता लेल “छथि/छलाह/छलीह” आ निर्जीव/वस्तुगत कर्ता लेल “अछि/छल”क भेद अन्तिम प्रूफमे फेर जाँचब।
क्रिया-भेद	भविष्य/देबाक अर्थमे “देत” आ अभ्यस्त/प्रगतिशील अर्थमे “दैत”क भेद संग्रहभरि एकरूप राखब।
विरामचिह्न	संवादमे देवनागरी उद्धरण-चिह्न आ डैशक रूप एकरूप करब; किछु ठाम उद्धरणक भीतर-बाहर डैशक प्रयोग मिश्रित अछि।

रिक्ति	संयुक्त पद, विरामचिह्न आ संख्या-एकक बीच अनावश्यक रिक्ति नहि रहए; विशेषतः “६ ×९” सन प्रकाशन-सूचना आ तकनीकी पदसभमे एकरूप शैली अपनाउ।
रोमन लिपि	मुख्य पाठमे रोमन लिपि न्यूनतम अछि। प्रकाशन-सूचनामे (ISSN) आ जाल-पता अछि; शोध-समीक्षा संस्करणमे रोमन/अंग्रेजी पद जँ देब आवश्यक हो तऽ कोष्ठक भीतर राखब।

९. शैलीगत उपलब्धि आ सुधारक सम्भावना

संग्रहक सभसँ पैघ शैलीगत उपलब्धि “प्रश्नक नाटकीयता” अछि। संघर्ष अनेक बेर बाहरी खलनायकसँ नहि, अधूर जानकारी, गलत अनुमान, सामाजिक आदत, संस्थागत विस्मरण अथवा बहुहितक टकरावसँ पैदा होइत अछि। किशोर-पाठक लेल ई अधिक परिपक्व नैतिक संरचना अछि, कारण समाधान व्यक्ति-दोषारोपणक बदला प्रणाली-बुझाइ पर टिकैत अछि।

दोसरी उपलब्धि वयस्क पात्रक भूमिकामे अछि। शिक्षक सभ उत्तर देनिहार सर्वज्ञ सत्ता नहि; ओ प्रश्नक रूप सुधारैत, सुरक्षा-सीमा बतबैत, विशेषज्ञ लग पठबैत, आ विद्यार्थीकेँ स्वतन्त्र जाँच करए दैत छथि। दादा, आजी, कुम्हार, चरवाहा, पहरुआ, पुस्तकपाल आदि “लोक-ज्ञान”क वाहक छथि, मुदा कथा हुनकर कथनकेँ अन्धविश्वास नहि बनबैत।

सुधारक सम्भावना मुख्यतः समाप्ति-वाक्यक स्तरपर अछि। किछु कथामे अन्तिम नैतिक वाक्य पाठकक व्याख्याक अवसर कम करैत अछि। उदाहरणस्वरूप जहाँ दृश्य स्वयं अर्थ स्पष्ट कऽ चुका अछि, ओतए एक वाक्य कम कएलासँ ध्वनि बढ़ि सकैत अछि। तथापि किशोर-वर्गक पाठक लेल स्पष्टता सेहो गुण अछि; अतः सम्पादन आयु-वर्ग आ प्रकाशन-उद्देश्य अनुसार संतुलित हेबाक चाही।

किछु रचनामे वैज्ञानिक व्याख्या लम्बा संवादक रूप लैत अछि। चित्र, छोट तालिका, पार्श्व-पेटी अथवा रेखाचित्र जँ प्रकाशनरूपमे जोड़ल जाए तऽ कथा-प्रवाह बिना बाधित ज्ञान स्पष्ट भऽ सकैत अछि। मुदा कथा-शरीरमे अति-तकनीकी विवरण जोड़नाइ उचित नहि; वर्तमान संग्रहक बल प्रश्न-आधारित सहजता अछि।

१०. बीस कथा : तुलनात्मक सार-सारिणी

कथा	केन्द्रीय प्रश्न	प्रमुख विन्यास	प्रधान रस/भाव
काल-स्थान विस्थापन	समय, आयाम, नैतिक विज्ञान	प्रयोग + भविष्य-विस्थापन	अद्भुत, शान्त
बैसाखीपर जिनगी	दिव्याङ्गता, गरिमा, स्वप्न	स्मृति + परीक्षा-प्रतीक्षा	करुण, वीर
हम नै जाएब विदेश	आत्मनिर्णय, जड़ि, ज्ञान	परिवार + जल-परियोजना	शान्त, उत्साह
प्रवास	भाषा, श्रेय, नब घर	विज्ञान-दल + आपदा	सख्य, उत्साह
हराहरी	पहिचान, स्वभाव, लेबल	पुनर्भेट + आत्मकथा	हास्य, शान्त
पोखरिक तरे भोरुक तारा	प्रतिबिम्ब, लोककथा, शुक्र	अवलोकन + प्रयोग	अद्भुत
गामक पुरान पुस्तकालय	स्मृति, संस्था, पुनर्जीवन	कुंजी-खोज + सामुदायिक श्रम	अद्भुत, शान्त
खस्सी घंटीक रहस्य	अनुमान, प्रमाण, स्नेह	रहस्य-जाँच	हास्य, वात्सल्य
बाढ़िमे बचल पोथी	अभिलेख, आपदा, स्मृति	बाढ़ि-रक्षा + पुरान लेखा	करुण, वीर
नेनाक विज्ञान-	वैज्ञानिक पद्धति,	परीक्षण +	उत्साह

मेला	जन-बुझान	विफलता	
आमक गाछक निर्णय	विकास, वृक्ष, लोकतन्त्र	माप + गामसभा	वीर, शान्त
मोबाइल बिनु एक दिन	ध्यान, डिजिटल अनुशासन	स्व-अनुभव प्रयोग	हास्य, शान्त
चिरैयाँ गिननिहार बालक	दीर्घ अवलोकन, संरक्षण	पक्षी-लेखा + आयोजन	शान्त, अद्भुत
माटिक रोबोट	स्थानीय कौशल, तकनीक	पुनर्परीक्षण + खेत	अद्भुत, उत्साह
जंगलक बाट, घरक गप	पथ, जंगल, बहुहित	सर्वेक्षण + विशेषज्ञ जाँच	शान्त, वीर
गाछ पर बनल पाठशाला	अनौपचारिक शिक्षा, सुरक्षा	मचान + प्रकृति-अवलोकन	अद्भुत, शान्त
सूरुजघड़ी बनौने बालिका	समय, छाह, मॉडल-सीमा	मापन + ऋतु-परिवर्तन	अद्भुत
नदी बचाबयवला मित्र-मण्डली	नदी, मैल, नागरिकता	लेखा + समुदाय + संस्था	वीर, शान्त
चाँदनी रातिक मानचित्र	आकाश, दिशा, काल-अभिलेख	रात्रि-अवलोकन	अद्भुत, शान्त
हँसमुख पहरुआ आ हरायल कुंजी	प्रमाण, क्रम, पूर्वाग्रह	विद्यालयी रहस्य-जाँच	हास्य, अद्भुत

११. निष्कर्ष

‘नव पाँखि’क बीस कथा संयुक्त रूपेँ मैथिली किशोर-साहित्यमे एक एहन रचनात्मक क्षेत्र बनबैत अछि जतए विज्ञान, लोक-स्मृति आ नैतिक नागरिकता एक-दोसरासँ पृथक विभाग नहि रहैत। संग्रहक किशोर पात्र सभ “सही

उत्तर"क वाहक नहि; ओ प्रश्नकर्ता, निरीक्षक, संशोधक, सहकर्मी आ समुदाय-सदस्य छथि। ई संरचना पाठककेँ आदेश नहि, प्रक्रिया दैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ अद्भुत, करुण, हास्य, वीर आ शान्त भावक संतुलन कथासभकेँ पाठ्य-विवरणसँ साहित्य बनबैत अछि। पाश्चात्य आख्यान-दृष्टिसँ समस्या-आधारित लघु-विन्यास, विकासशील पात्र, स्थानीय फोकलाइजेशन (focalization) आ पारिस्थितिक सम्बन्ध प्रमुख अछि। नव्य-न्याय दृष्टिसँ प्रमाण, संशय, हेतू, सीमा आ अज्ञान-स्वीकारक अनुशासन संग्रहक सर्वाधिक विशिष्ट बौद्धिक गुण अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पठन देखबैत अछि जे पुरान स्मृति, वर्तमान विज्ञान आ भावी विकल्प परस्पर विरोधी नहि, एकहि सामाजिक बुद्धिक भिन्न काल-स्तर अछि।

संग्रहक शीर्षक “नव पाँखि” एहि सम्पूर्ण परियोजनाक उपयुक्त रूपक अछि। पाँखि उड़ेबाक शक्ति अछि, मुदा कथा सभ बारम्बार देखबैत अछि जे उड़ानक दिशा लेल जड़ि, मानचित्र, स्मृति, प्रमाण आ समुदाय आवश्यक अछि। एहि अर्थमे ई संग्रह नेनाक जिज्ञासाकेँ केवल उत्साहित नहि करैत; ओकरा नैतिक, तर्कसंगत आ सामुदायिक रूप देबाक साहित्यिक चेष्टा अछि।

ग्रन्थ-सूची

नोट : एतए केवल पोथीक नाम देल जा रहल अछि; जाल-पता अथवा जाल-स्रोत सम्मिलित नहि अछि।

नाटचशास्त्र

ध्वन्यालोक

काव्यप्रकाश

वक्रोक्तिजीवित

साहित्यदर्पण

तत्त्वचिन्तामणि

न्यायसूत्र

काव्यमीमांसा

पोएटिक्स (Poetics)

द रेटोरिक ऑफ फिक्शन (The Rhetoric of Fiction)

नैरेटिव डिस्कोर्स (Narrative Discourse)

द इम्प्लाइड रीडर (The Implied Reader)

द वाइल्ड थिंग्स : चिल्ड्रन्स कल्चर एण्ड इकोक्रिटिसिज्म (The Wild Things: Children's Culture and Ecocriticism)

द एनवायरनमेंटल इमैजिनेशन (The Environmental Imagination)

साइलेंट स्प्रिंग (Silent Spring)

द स्ट्रक्चर ऑफ साइंटिफिक रिवोल्यूशन्स (The Structure of Scientific Revolutions)

कॉन्जेक्चर्स एण्ड रिफ्यूटेशन्स (Conjectures and Refutations)

नव पाँखि

आलेख ३८ · काव्य, गजल आ बाल-किशोर साहित्य

३७ टा मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास

सारांश

“३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास” एकहि संकलनमे लोककथा, लोकदेवता, वीरगाथा, भक्ति, प्रेम-दुखान्त, हास्य, भाषा-शिक्षण, पशु-कथा, लोकनाट्य आ आधुनिक बाल-सामाजिक अनुभवकेँ दृश्य-आख्यान रूपमे एकत्र करैत अछि। संकलनक अनुक्रममे ३७ स्वतंत्र रचना अछि आ ई समीक्षा सभ ३७ केँ पृथक् रूपेँ ग्रहण करैत अछि। अध्ययनक उद्देश्य केवल कथासार देब नहि, बल्कि कथन-विन्यास, रस, चरित्र, जातीय-सामुदायिक स्मृति, स्त्री-अनुभव, लोकविश्वास, दृश्य-संरचना, बाल-पाठकीयता, ऐतिहासिक दावाक स्तर, तर्क-संरचना आ भाषिक शुद्धताक समेकित परीक्षण करब अछि। भारतीय काव्यशास्त्रसँ रस–ध्वनि–औचित्य, पाश्चात्य आलोचनासँ कथा-रचना–लोककथा-रूप–बाल-पाठकीयता, नव्य न्यायसँ प्रमाण–लक्षण–कारणता–अभिधान, आ “विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति”सँ लोकस्मृति, भूगोल, समुदाय, अनुष्ठान आ लिखित इतिहासक समानान्तर पठन एहि समीक्षा केर चारि मुख्य आधार अछि।

बीजशब्द

३७ टा मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास ·मैथिली कविता ·गजल ·बाल-साहित्य ·साहित्यिक समीक्षा

१.४८. गजेन्द्र ठाकुर-३७ टा मैथिली बाल उपन्यास- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास

भारतीय, पाश्चात्य, नव्य न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सँ विस्तृत साहित्यिक शोध-समीक्षा

मूल कृति : गजेन्द्र ठाकुर

शोध-लेख

सारांश

"३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास" एकहि संकलनमे लोककथा, लोकदेवता, वीरगाथा, भक्ति, प्रेम-दुखान्त, हास्य, भाषा-शिक्षण, पशु-कथा, लोकनाट्य आ आधुनिक बाल-सामाजिक अनुभवकेँ दृश्य-आख्यान रूपमे एकत्र करैत अछि। संकलनक अनुक्रममे ३७ स्वतंत्र रचना अछि आ ई समीक्षा सभ ३७ केँ पृथक् रूपेँ ग्रहण करैत अछि। अध्ययनक उद्देश्य केवल कथासार देब नहि, बल्कि कथन-विन्यास, रस, चरित्र, जातीय-सामुदायिक स्मृति, स्त्री-अनुभव, लोकविश्वास, दृश्य-संरचना, बाल-पाठकीयता, ऐतिहासिक दावाक स्तर, तर्क-संरचना आ भाषिक शुद्धताक समेकित परीक्षण करब अछि। भारतीय काव्यशास्त्रसँ रस–ध्वनि–औचित्य, पाश्चात्य आलोचनासँ कथा-रचना–लोककथा-रूप–बाल-पाठकीयता, नव्य न्यायसँ प्रमाण–लक्षण–कारणता–अभिधान, आ "विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति"सँ लोकस्मृति, भूगोल, समुदाय, अनुष्ठान आ लिखित इतिहासक समानान्तर पठन एहि समीक्षा केर चारि मुख्य आधार अछि।

मुख्य शब्द

मैथिली बाल-साहित्य; ग्राफिक आख्यान; लोककथा; लोकदेवता; नव्य न्याय; रस; लोकस्मृति; समानान्तर इतिहास; मिथिला; दृश्य-कथा।

१. प्रस्तावना

ई संकलन बाल-साहित्यक परम्परागत सीमा तोड़ैत अछि। एक दिस "तरहरिमे परीलोक" सन दीर्घ कल्पना-यात्रा अछि, दोसर दिस "वर्णमाला शिक्षा : अंकिता" सन शिक्षणात्मक प्रयोग; एक दिस "दीना-भदरी", "सलहेस", "छेछन", "गरीबन बाबा" सन लोकदेवता-आधारित सामुदायिक आख्यान, दोसर दिस "बाल गुरु" सन समकालीन शहरी प्रसंग; एक दिस "बिहुला", "उगना" आ "बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे" सन भक्ति-सांस्कृतिक आख्यान, दोसर दिस "मूर्खाधिराज", "गोनू झा आ दस ठोप बाबा" आ "ऊँटनी" सन हास्य। एहि बहुलता कारण संकलनकेँ एकल विधाक किताब नहि, बल्कि बाल-पाठक लेल मिथिला आ आसपासक लोक-सांस्कृतिक विश्वक बहुरूपी प्रवेश-द्वार मानल जा सकैत अछि।

२. स्रोत, सीमा आ पद्धति

एहि शोध-समीक्षाक प्राथमिक आधार पूर्ण संकलनक पाठ, अनुक्रम, अध्याय-रचना, उपक्रम, अन्तिम प्रसंग आ उपलब्ध दृश्य-पृष्ठ अछि। जट-जटिन, बोधि कायस्थ, डाकू रौहिणेय, माधव सिंह आदि प्रसंगमे ऐतिहासिक व्यक्ति वा काल-संबन्धी कथन अछि; जतय पोथी स्वयं लोक-परम्परा आ इतिहासकेँ मिलबैत अछि, ओतय एहि समीक्षामे तथ्य आ लोकस्मृतिक बीच भेद राखल गेल अछि। पोथी सँ बाहरक दावाकेँ स्वतः प्रमाणित नहि मानल गेल अछि।

“विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति” शब्दकेँ एतय कार्यकारी समीक्षा-पद्धति रूपेँ ग्रहण कएल गेल अछि—अर्थात् राजकीय/लिखित इतिहासक संग-संग लोकगीत, जातीय स्मृति, मेला, थान, गाम, नदी, अनुष्ठान, स्त्री-स्मृति आ बाल-कथनकेँ इतिहासक समानान्तर वाहक मानि पढ़ब। ई प्रयोगात्मक पद्धति अछि; एहि नामकेँ स्वतन्त्र स्थापित शास्त्रीय सम्प्रदाय रूपेँ दावा नहि कएल गेल अछि।

३. भारतीय काव्यशास्त्रीय आधार

संकलनमे रस-बहुलता प्रमुख गुण अछि। वीर रस “दीना-भदरी”, “छेछन”, “मीरांसाहेब”, “रघुनी मरर”मे; करुण “मोतीदाइ”, “चौहड़मल आ रेशमा”, “महुआ घटवारिन”, “बिहुला”, “उगना”मे; हास्य “गोनू झा”, “मूर्खाधिराज”, “ऊँटनी”मे; अद्भुत “तरहरिमे परीलोक”, “राजा अनसारी”, “ज्योति पँजियार”मे; भयानक आ रौद्र अनेक तांत्रिक/डाइन-आख्यानमे अछि। ध्वनि-स्तर पर बहुत रचनामे कथित ‘सीख’ सँ बेसी प्रभावी ओ संकेत अछि जे लोक-स्मृति अन्यायक विरुद्ध न्याय, जातीय अपमानक विरुद्ध गरिमा, आ स्त्री-वंचनाक विरुद्ध स्मृतिक प्रतिरोध बनैत अछि। औचित्यक प्रश्न विशेष रूपेँ बाल-साहित्य लेल महत्त्वपूर्ण अछि: हिंसा, मृत्यु, शाप, बलिदान आ प्रतिशोधक प्रसंग बहुल अछि, अतः दृश्य-प्रस्तुति आ भाषिक नरमी कथ्यक आयु-उपयुक्तता निर्धारित करैत अछि।

४. पाश्चात्य आलोचनात्मक आधार

लोककथा-रूपक दृष्टिसँ संकलनमे निषेध, उल्लंघन, संकट, सहायक, परीक्षा, पहचान, प्रतिफल आ घर-वापसी जकाँ पुनरावृत्त क्रियात्मक इकाइ देखाइत अछि। “डोकी डोका”, “राजा ढोलन”, “राजा अनसारी”, “बिहुला” आ “नैका बनिजारा”मे खोज-यात्रा आ विलम्बित पुनर्मिलन; “भाट-भाटिन” आ “ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा”मे प्रहेलिका; “कौवा आ फुद्दी”मे शृंखला-कथा; “बाल गुरु”मे दृष्टान्त; “वर्णमाला शिक्षा : अंकिता”मे शिक्षणात्मक कथारूप अछि। दृश्य-कथाक स्तर पर शीर्षक-पृष्ठ, ‘चित्र’ क्रमांक, अध्याय-खंड आ बहु-फलक चित्र-पृष्ठ कथाकेँ क्रमिक दृश्य इकाइमे विभाजित करैत अछि।

५. नव्य न्यायीय पठन

नव्य न्यायीय दृष्टिसँ एहि संकलनक रोचकता तीन स्तर पर अछि। पहिल, प्रमाणक भेद: लोकस्मृति, श्रुति, प्रत्यक्ष, स्वप्न, चिह्न, विश्वास आ कथन—सभक ज्ञानात्मक दर्जा एक नहि। दोसर, लक्षण आ व्यक्तिक भेद: “बाल गुरु”मे बाहरी चिह्न सँ व्यक्तिक मूल्य ठहराएबक भ्रान्ति टूटैत अछि। तेसर, कारणता: “कौवा आ फुद्दी”क शृंखला, “गोनू झा”क भेष-भेदन, “ज्योति पँजियार”क परीक्षा–शाप–तपस्या, “राजा ढोलन”क शाप–विस्मृति–पहचान—सभ कारण-कार्यक क्रम बनबैत अछि। बाल-पाठक लेल ई अप्रत्यक्ष तार्किक अभ्यास बनि सकैत अछि।

६. दृश्य-कथा संरचना

संकलनक आरम्भिक दृश्य-पृष्ठ सभमे एकाधिक दृश्य-फलक, चित्रित परिवेश, पात्रक मुद्राभाव आ पाठक संग चित्रक क्रमिक सम्बन्ध देखाइत अछि। दृश्य केवल सजावट नहि; गाछक धोधरि, नदी, जंगल, नायकक देह-भंगिमा, लोक-पोशाक, जादुई प्रसंग आ संघर्षक वातावरण कथ्यक बोधकेँ त्वरित करैत अछि। तथापि किछु रचनामे ‘ग्राफिक उपन्यास’क अपेक्षामे चित्र-पाठ अन्त:क्रिया कम आ चित्र-सहायित अध्याय-पाठ बेसी देखाइत अछि। अत: विधागत रूपेँ ई संकलन शुद्ध चित्रकथा, चित्र-सहायक लोककथा आ ग्राफिक आख्यानक मध्यवर्ती रूप प्रस्तुत करैत अछि।

७. रचना-दर-रचना समीक्षा

१. तरहरिमे परीलोक

ई संकलनक सभसँ विस्तृत रचना बाल-फ्रेम, दादीक कथा, स्वप्न, परीलोक आ पर्यावरणीय चेतनाक बहुस्तरीय संयोजन प्रस्तुत करैत अछि। आरम्भमे ओम आ 'बा'क संवाद कथाकेँ मौखिक परम्पराक स्वर दैत अछि; आस्था नामक बालिका, गाछक धोधरि आ अलग-अलग भूभागसँ जुड़ल परीलोकक संरचना अद्भुत रसकेँ बाल-सुलभ जिज्ञासासँ जोड़ैत अछि। अन्तमे धोधरि सभ बन्द भऽ जएबाक बादो स्मृति-आवाज बचल रहैत अछि—ई खुला समापन बालकक कल्पनाक सम्मान करैत अछि। भारतीय दृष्टिसँ अद्भुत आ करुण रसक संयोग, पाश्चात्य दृष्टिसँ खोज-यात्रा आ सीमांत-पारगमन, आ नव्य-न्याय दृष्टिसँ 'प्रत्यक्ष–स्मृति–स्वप्न'क भिन्न प्रमाण-स्थिति कथाक रोचक आधार बनैत अछि।

२. बाल गुरु

दिल्लीक आवासीय पररसरमे ओम आ मंशाक कथा संकलनकेँ लोकदेवता-केंद्रित आख्यानसँ आधुनिक बाल-सामाजिक यथार्थ दिक मोड़ैत अछि। बालक द्वारा 'चिह्न' आ 'व्यक्ति'क बीच अन्तर बुझाओल जएब पूर्वग्रह-विघटनक केन्द्रीय बिन्दु अछि। भारतीय नीति-कथा परम्परामे ई लघु दृष्टान्तक रूप लैत अछि; पाश्चात्य बाल-साहित्यमे 'बालक नैतिक ज्ञाता'क प्रतिमानसँ मेल खाइत अछि। नव्य-न्याय पद्धतिसँ देखल जाए तँ नाम, लक्षण, अभिधान आ वस्तु-स्वरूपक भेद एहि रचनाक तार्किक केन्द्र अछि।

३. दीना-भदरी

जोगियानगरक मुसहर वीर दीना-भदरीक कथा श्रम, जातीय अपमान, मातृ-स्नेह, षड्यन्त्र, मृत्यु आ लोकदेवत्वक दीर्घ वक्र बनबैत अछि। पाँच-पाँच मोनक कोदारि सन अतिरंजित लोक-प्रतीक वीररसक आधार अछि, मुदा कथा केवल बल-प्रदर्शन पर नहि रुकैत; अन्याय आ स्मृतिक राजनीति ओकर गहींर परत अछि। अन्तमे लोकस्मृति हिंसाक इतिहासकेँ देवत्वमे रूपान्तरित करैत अछि। समानान्तर ऐतिहासिक पठनमे राजकीय अभिलेखक बदला समुदाय-स्मृति 'दोसर इतिहास'क रूपमे उपस्थित होइत अछि।

४. अमर बाबा

कमला धारक रक्षक अमर सिंहक कथा वीरता आ नैतिक उत्तरदायित्वक द्वन्द्व प्रस्तुत करैत अछि। रक्षकक हिंसा आ निर्दोष रक्तक सम्भावना कथाकेँ सरल वीरगाथा बनबा सँ रोकैत अछि। उपसंहारमे रक्षा संग क्षमाक प्रार्थना भारतीय धर्म-संकल्पनाक सूक्ष्म पुनर्पाठ अछि। पाश्चात्य त्रासदी-दृष्टिसँ नायकक विजय अपूर्ण अछि; नैतिक शेष रहि जाइत अछि।

५. मोतीदाइ

उजैनीक मोतीदाइ, गहिल माताक भक्ति आ छह दिनक मातृत्वक करुण अनुभव रचनाकेँ स्त्री-केन्द्रित आध्यात्मिक आख्यान बनबैत अछि। व्यक्तिगत शोक सेवा आ लोक-श्रद्धामे रूपान्तरित होइत अछि। करुण रस एतय निष्क्रिय विलाप नहि, रूपान्तरकारी शक्ति अछि। स्त्री-अनुभवक लोकधर्मी इतिहास एहि कथाकेँ संकलनक महत्त्वपूर्ण सामाजिक दस्तावेज बनबैत अछि।

६. राजा सलहेस

सलहेस सिंहासनहीन 'मोनक राजा' छथि—जन-मान्यता, दुसाध समुदाय, प्रेम, ईर्ष्या आ तंत्र-विद्याक मेल एहि कथामे अछि। दबनाक प्रेम आ शक्ति कथाक प्रेरक तत्त्व अछि। नायकत्व वंशानुगत राजसत्ता सँ नहि, लोक-स्वीकृति आ न्यायप्रियतासँ निर्मित होइत अछि। एहि कारण ई कथा सामाजिक वैधता बनाम औपचारिक सत्ता पर प्रभावी बाल-प्रस्तुति अछि।

७. बगियाक गाछ

मसोमातक चतुर बालक आ डाइनक कथा हास्य, भय आ प्रत्युत्पन्नमतित्वक मिश्रण अछि। बालक बलसँ नहि, बुद्धिसँ संकट काटैत अछि; एहि हेतु ई बत्तू कथा संग संकलनक 'बुद्धि बनाम शक्ति' शृंखला बनबैत अछि। लोककथात्मक पुनरावृत्ति, छलक उलटाव आ घर-वापसी एकरा सुगठित बाल-रोमांच बनबैत अछि।

८. बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल

कमला-बलानक तट पर नृत्य, तंत्र, प्रेम, प्रतिशोध, बलिदान आ पुनर्जीवनक जटिल आख्यान अछि। कथा नैतिक रूपसँ सरल नहि; प्रतिशोधक उत्तर प्रतिशोध आ बलिदानक उत्तर पुनर्जीवनसँ भेटैत अछि। भारतीय नाट्य-दृष्टिसँ

रौद्र, वीर, करुण आ अद्‌भुत रस परस्पर गुंथल अछि। बाल-पाठक लेल ई जटिलता रोचक अछि, मुदा हिंसात्मक प्रसंगक प्रस्तुति समय आयु-उपयुक्त सन्दर्भ आवश्यक अछि।

९. चौहड़मल आ रेशमा

मोकामा घाट आधारित प्रेम-दुखान्त जाति, सामाजिक अवरोध आ लोकस्मृतिक कथा अछि। जीवनमे अस्वीकारल प्रेम मृत्यु-पश्चात संयुक्त मन्दिर आ मेलामे सामुदायिक स्मृति बनैत अछि। पाश्चात्य त्रासदीक दृष्टिसँ निजी प्रेम सामाजिक संरचनासँ पराजित होइत अछि; समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ मेला आ पूजा पराजित प्रेमकेँ सांस्कृतिक विजय दैत अछि।

१०. महुआ घटवारिन

परमान नदीक पृष्ठभूमि, स्त्री-स्वाधीनता, प्रेम आ बलिदान एहि आख्यानक केन्द्र अछि। महुआक स्वाभिमान ओकरे नायकीय तत्त्व अछि; घरेलू उपेक्षा आ वस्तुकरणक बीच ओकर चयन स्त्री-अधिकारक लोककथात्मक रूप प्रस्तुत करैत अछि। नदी एतय केवल भूगोल नहि, स्मृति आ भाग्यक प्रतीक अछि।

११. छेछन

डोम लोकदेवता छेछनक वीरगाथा शक्ति-परीक्षा, प्रेम, सामुदायिक गौरव आ लोकनायकत्व पर आधारित अछि। माणिकचन्द, सुग्गर आ हाथीक चुनौती नायकक बल-प्रतिष्ठा गढ़ैत अछि। कथा अन्तिम चुनौतीक बाद लोकस्मृतिमे विजयक उल्लेख करैत समाप्त होइत अछि; एहि बिन्दुपर कथात्मक पूर्णताक अपेक्षा थोड़ी कमजोर पड़ैत अछि, कारण अन्तिम संघर्ष प्रत्यक्ष रूपेँ विस्तार नहि पबैत।

१२. गरीबन बाबा

बरहम ठाकुर, घासी यादव आ गरीबन धोबीक सामुदायिक सम्बन्धसँ शुरू कथा अनजाने अपराध, देवीक कोप, शाप, प्रायश्चित्त आ लोकदेवत्व धरि पहुँचैत अछि। सामाजिक त्रुटि सामूहिक प्रायश्चित्तसँ सुधरि सकैत अछि—ई मुख्य भाव अछि। धोबी समुदायमे भट्टीक रक्षक रूपेँ गरीबन बाबाक स्मृति लोकधर्मक जीवित संस्थान बनैत अछि।

१३. वर्णमाला शिक्षा : अंकिता

ई रचना कथा आ भाषा-शिक्षणक संगम अछि। अंकिता आ पिता एक-एक वर्ण-वर्गसँ शुरू होइबला प्रसंगक माध्यमसँ मैथिली वर्णमाला, शब्द आ अर्थक अभ्यास करैत छथि। प्रश्नोत्तर संरचना एकरा शिक्षण-पाठ बनबैत अछि। बाल-साहित्यक दृष्टिसँ संकलनमे ई विधागत विविधता आनैत अछि; कथा, पाठ्य-अभ्यास आ पारिवारिक संवाद एक संग चलैत अछि।

१४. गांगोदेवीक भगता

मलाहिन गांगो आ पतिगृहक साधारण जीवनमे प्रेम, जीविका आ श्रद्धा अद्‌भुत आयाम पबैत अछि। युद्ध वा राक्षस बिना साधारण श्रमजीवी दम्पतिक कथा लोकगाथा बनैत अछि—एहि कारण ई संकलनमे विशिष्ट अछि। चमत्कारक मूल शक्ति विनम्रता आ पारस्परिक विश्वास रूपेँ व्याख्यायित अछि।

१५. मीरांसाहेब

डिलरीनगरक अनाथ बालकसँ नगर-रक्षक योद्धा आ मृत्यु-पश्चात लोक-सुरक्षा प्रतीक धरि मीरांसाहेबक यात्रा वीरता आ दायित्वक कथा अछि। नायकक वीरता घोषणात्मक नहि, कर्तव्य-केन्द्रित अछि। ‘जीवित नगरक ढाल, मृत्युपरान्त स्मृतिक ढाल’—ई संरचना लोकदेवत्वक मनोवैज्ञानिक आधार स्पष्ट करैत अछि।

१६. जट-जटिन

ई रचना लोकनाट्य, दाम्पत्य, स्त्री-समूह, वर्षा-अनुष्ठान आ मिथिला सामाजिक जीवनकेँ एक संग राखैत अछि। कथा-पात्र जट-जटिन मात्र नहि; प्रस्तुति-विधि स्वयं विषय अछि। स्त्रीगण द्वारा दुनू भूमिका निभाएब सामुदायिक रंगमंचक विशेषता अछि। ऐतिहासिक दावाक प्रसंगमे शिव सिंह, विद्यापति आ कथित जयट/जटक सम्बन्ध स्वतंत्र स्रोत-सत्यापन माँगैत अछि; पोथीक भीतर ई लोक-परम्परागत विवरण रूपेँ प्रस्तुत अछि।

१७. लालमैन बाबा

बाल्य-मित्रता, विश्वासघात, प्रतिशोध आ देवत्वक कथा नैतिक रूपसँ जटिल अछि। लालमैनक चरित्र मित्रक रक्षा, अन्तिम इच्छाक मान आ स्त्री/प्राणी प्रति सम्मानक सूत्रसँ गढ़ल अछि। लोकधर्म एतय अपराध–दण्ड–क्षमा–पूजा चक्रक माध्यमसँ सामाजिक स्मृति बनबैत अछि।

१८. मूँगा आ जालिम सिंह

बेतिया राजक पृष्ठभूमिमे जातीय-सामाजिक अवरोध, राजकीय क्रोध, वन्य संकट आ प्रेमक स्थैर्य एक संग आबैत अछि। रोमांच आ प्रेमक संतुलन बाल-पाठक लेल गति बनबैत अछि। नायक-नायिकाक प्रेम सामाजिक श्रेणीकरणक ऊपर व्यक्तिगत निष्ठाकेँ स्थापित करैत अछि।

१९. बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे

बोधि कायस्थ, गंगा-लाभ, ज्योतिरीश्वर आ विद्यापति-संबद्ध दावासँ युक्त ई कथा साहित्यिक इतिहासक प्रश्न उठबैत अछि। पोथी एहि आख्यानकेँ विद्यापति-पूर्व परम्परासँ जोड़ैत अछि आ पद-रचनासँ सम्बन्धित करैत अछि। ई दावे महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा शोध-प्रयोगमे मूल ग्रन्थ-पाठ, पाण्डुलिपि परम्परा आ काल-निर्धारणक स्वतंत्र परीक्षण आवश्यक अछि। साहित्यिक स्तरपर कथा मृत्युकेँ भय नहि, नैतिक जीवनक पूर्णता रूपेँ देखैत अछि।

२०. बत्तू

बलिदानसँ बचल नन्हा छागर जंगलमे बुद्धि, वाणी आ आत्मविश्वाससँ बाघ धरि पराजित करैत अछि। ई स्पष्ट बाल-नीतिकथा अछि, जतय शारीरिक दुर्बलता मानसिक संसाधनसँ शक्ति बनैत अछि। हास्य आ जोखिमक अनुपात बाल-पाठक लेल प्रभावी अछि।

२१. भाट-भाटिन

विश्वासघाती पत्नी, प्रहेलिका आ बहिनक बुद्धि कथा केन्द्रीय संरचना अछि। नायकक जीवन बौद्धिक सूझ-बूझसँ बचैत अछि, मुदा अन्तिम प्रतिशोध कठोर अछि। पाश्चात्य कथा-सिद्धान्तक दृष्टिसँ रहस्य-प्रहेलिका तनाव पैदा करैत अछि; भारतीय नीति-दृष्टिसँ निष्ठा बनाम छलक द्वन्द्व मुख्य अछि।

२२. बिहुला

चम्पानगर, मनसा, चाँद सौदागर आ बिहुलाक महागाथा संकलनक सभसँ गहन स्त्री-धैर्य आख्यानमे एक अछि। मृत्यु, नदी-यात्रा आ देवतासँ प्रत्यक्ष संघर्षक बीच बिहुला निष्क्रिय 'सती' नहि, सक्रिय वार्ताकार आ नियति-परिवर्तक रूपेँ उभरैत अछि। करुण रस वीरतामे रूपान्तरित होइत अछि। बाल संस्करणमे कथा सामूहिक हितक माँग पर बल दैत अछि—बिहुला अपन स्वार्थ मात्र लेल नहि लड़ैत छथि।

२३. ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा

सत्यनारायण पूजा लेल यात्रारत ब्राह्मण आ ठाकुर बालकक कथा 'तीन रहस्य' आ एक शर्तक माध्यमसँ क्रमिक बौद्धिक रोमांच बनबैत अछि। प्रश्न-उत्तरक अनुबंध नायक-पथक संरचनात्मक धुरी अछि। कथा भीतर कथा आ विलम्बित समाधान पाश्चात्य रहस्य-रचनाक तकनीकसँ साम्य रखैत अछि। मित्रता आ वचनपालन अन्तिम मूल्य रूपेँ स्थापित होइत अछि।

२४. डाकू रौहिणेय

मगध, बिम्बिसार आ महावीरसँ संबद्ध ई परिवर्तन-कथा बलसँ नहि, वचनसँ जीवन बदलबाक प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि। डाकू चतुर, सामाजिक रूपसँ द्विअर्थी आ अन्ततः आत्म-परिवर्तनक्षम अछि। ऐतिहासिक व्यक्तित्व-संबन्धी प्रसंगक स्वतंत्र स्रोत-परीक्षण आवश्यक अछि; साहित्यिक रूपमे कथा 'एक वचन'क नैतिक प्रभाव पर केन्द्रित अछि।

२५. डोकी डोका

ईर्ष्या, छल, बिछोह, प्राणी-सहयोग आ सातम रातिक पुनर्मिलनक कथा बाल-लोककथाक खोज-यात्रा संरचनाक उत्तम उदाहरण अछि। डोकीक निष्ठा क्रमशः परीक्षित होइत अछि। मूसक मृत्यु करुण मोड़ अछि, जकर तुरन्त बाद पुनर्मिलन भावनात्मक मुक्तिक क्षण बनैत अछि।

२६. गोनू झा आ दस ठोप बाबा

सूखा, ढोंगी बाबा आ गोनू झाक भेष-योजना कथा हास्यात्मक भण्डाफोड़ अछि। नकली दाढ़ी उखड़बाक दृश्य दृश्य-कथात्मक चरम-बिन्दु बनैत अछि। गोनू झाक बुद्धि सत्ता-समर्थक चापलूसी नहि, सार्वजनिक सत्य-प्रकाशक रूपेँ काम करैत अछि।

२७. ज्योति पँजियार

कुलदेवता धर्मराजक परीक्षा, शाप, बारह बरखक तपस्या, शाप-मुक्ति आ पुनर्जीवन चमत्कारक कथा भक्ति-अहंकार द्वन्द्व प्रस्तुत करैत अछि। आरम्भिक भूल ‘काजकेँ देवतासँ ऊपर राखब’ रूपेँ व्याख्यायित अछि। कथा ई सेहो देखबैत अछि जे भक्तिक परिपक्वता दण्डक बाद विनम्रतामे परिणत होइत अछि।

२८. कौवा आ फुद्दी

शृंखला-कथा संरचनामे एक माँग दोसरा माँगकेँ जन्म दैत अछि आ क्रमशः काज असम्भव जकाँ जटिल बनैत जाइत अछि। फुद्दीक आरम्भिक छल अन्तमे अप्रत्याशित मृत्यु-परिणाम आनैत अछि। कारण-कार्यक क्रम नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ स्पष्ट अभ्यासक सामग्री अछि—एकेक अपेक्षा पूर्ववर्ती शर्तपर निर्भर अछि।

२९. माधव सिंह आ अमता गाम

संगीत, मेघ-मल्हार, बरखा आ राजाक अन्तिम यात्रा पर आधारित कथा संकलनक लयात्मक रचनामे एक अछि। एतय तरुआरि नहि, राग कथाकेँ चलबैत अछि। इतिहास-संगीतक सम्बन्धक जे दावे देल गेल अछि, ओकर स्वतंत्र स्रोत-परीक्षण अपेक्षित अछि; मुदा साहित्यिक रूपमे ‘संगीत शोकसँ पैघ’ मुख्य सूत्र अछि।

३०. मोतीसाएरि

मोरंगक राजकुमारीक कथा लोभ, ज्योतिषीय/पंडितीय छल, पितृसत्ता, युद्ध आ स्त्रीक निर्दोष पीड़ा पर तीखा आख्यान अछि। नदीमे बहाओल बेटी आ राज्य-विनाशक परिणाम कथाकेँ लोक-न्यायक रूप दैत अछि। ‘बेटीक भाग्य दोसराक जीहपर नहि तौलल जाए’—रचनाक सामाजिक केन्द्र एहि रूपमे उभरैत अछि।

३१. मूर्खाधिराज

अतिशयोक्तिपूर्ण मूर्खता, वस्तु-विनिमय आ बारम्बार गलत निर्णय हास्यरसक शृंखला बनबैत अछि। हास्य क्रूर उपहाससँ बेसी व्यवहारिक

विवेकक नकारात्मक उदाहरण रूपेँ काम करैत अछि। अन्तिम 'कदीमाक तरकारी' प्रसंग चरम हास्य-बिन्दु अछि।

३२. नैका बनिजारा

शोभनायक आ बारीक बारह बरखक विरह, झूठा आरोप, गुप्त प्रमाण आ अभिज्ञान-अँठीक माध्यमसँ सत्य-पुनर्स्थापन होइत अछि। स्त्रीक दीर्घ पीड़ा कथा केन्द्रीय नैतिक प्रश्न अछि। पुनर्मिलन सुखान्त अछि, मुदा ओ सुखान्त अन्यायक स्मृति मिटबैत नहि—ई रचनाक गहींरता अछि।

३३. रघुनी मरर

साधारण गोपालक रघुनीक देवीभक्ति जमीन्दारी षडयन्त्र, जोगीक जादू आ राजकीय दण्ड पर विजय पबैत अछि। नायकक 'अजेयता' शारीरिक बल नहि, आस्था, धैर्य आ सत्यनिष्ठासँ निर्मित अछि। लोकनायकत्वक ई रूप दीना-भदरी आ सलहेससँ संवाद करैत अछि।

३४. राजा अनसारी

सपनाक सोनाक गाछ, रूपाक ठाढ़ि, जोगी, परी आ सात समुद्र पारक यात्रा अद्भुत रसक बालकथा अछि। बाह्य दृश्य आ वास्तविक चमत्कारक भेद कथा-विलम्ब पैदा करैत अछि—राजा तीन कन्याक रूपमे वस्तु देखैत छथि, बच्चा ओकर भीतरक अर्थ जानैत अछि। ज्ञानक असमानता कथाक मुख्य कौतूहल अछि।

३५. राजा ढोलन

बाघिनक शाप, बाल-विवाहक नियति, जादूगरनी बहिन, विस्मृत पहचान, साधु, मोहित बाँसुरी आ अन्ततः राज्य-पुनर्प्राप्ति—ई व्यापक साहसिक आख्यान अछि। पहचानक विलम्ब आ पत्र/सन्देश कथा-गतिक प्रमुख साधन अछि। सुखान्तक पूर्व दीर्घ कष्ट कथा केन्द्रीय भावानुभूति बनबैत अछि।

३६. उगना

विद्यापति आ महादेवक उगना-रूप मैथिली भक्ति-साहित्यक अति लोकप्रिय आख्यान अछि। देवता भक्तक गीत सुनबाक लोभमे नोकर बनैत छथि—भक्ति-सम्बन्धक विलक्षण उलटाव। गंगाजल, वचन-रक्षा, चन्दनक क्रोध आ

नामोच्चारक क्षण कथाक नाटकीय केन्द्र अछि। अन्तिम वियोग करुण अछि, मुदा लोकस्मृति देवता-भक्तक दूरी समाप्त करैत अछि।

३७. ऊँटनी

हरियाणाक खेत, ऊँटनीक गला अटकब आ नकली डॉक्टरक उपचार-हास्य कथा संकलनकेँ हलुक, मौखिक समापन दैत अछि। 'बा–ओम' फ्रेम फेर आबि संकलनक आरम्भिक कथन-परम्परासँ जोड़ैत अछि। हास्यक पाछाँ अन्धानुकरण आ अयोग्य ज्ञानपर व्यंग्य अछि।

८. समष्टिगत साहित्यिक निष्कर्ष

सभ ३७ रचनाकेँ एक संग देखला पर पाँच मुख्य धारा स्पष्ट होइत अछि। पहिल, लोकदेवता आ समुदाय-स्मृति—दीना-भदरी, सलहेस, गरीबन बाबा, मीरांसाहेब, लालमैन बाबा, रघुनी मरर आदि। दोसर, स्त्रीक प्रतिरोध/धैर्य—मोतीदाइ, रेशमा, महुआ, बिहुला, बारी, मोतीसाएरि, दबना। तेसर, बुद्धि आ चतुराइ—बगियाक गाछक बालक, बत्तू, गोनू झा, ठाकुर बालक। चौठ, भक्ति आ देव-मानव निकटता—गांगोदेवी, ज्योति पँजियार, बोधि कायस्थ, उगना। पाँचम, हास्य आ उलटाव—मूर्खाधिराज, ऊँटनी, गोनू झा। एहि पाँचू धाराक पार एकटा साझा तत्त्व अछि: लोकसमाजक न्याय-बोध। न्याय अदालत वा राजसत्ता मात्रसँ नहि, स्मृति, कथा, थान, गीत, मेला, पूजा, प्रेम, प्रायश्चित्त आ हास्यसँ सेहो निर्मित होइत अछि।

९. बाल-साहित्यिक मूल्यांकन

बाल-पाठक लेल संकलनक बड़ शक्ति विविधता अछि। बालक भय, अद्भुत, साहस, करुणा, हास्य, भाषा-अभ्यास, लोकभूगोल आ सामाजिक प्रश्न सभसँ परिचित होइत अछि। पारिवारिक कथन-फ्रेम—विशेषत: 'बा–ओम'—मौखिक परम्परा आ आधुनिक पुस्तकक बीच सेतु बनबैत अछि। मुदा अनेक कथामे हत्या, शाप, बलिदान, प्रतिशोध, पशु-हिंसा वा स्त्री-पीड़ा अछि। अत: कक्षा वा घरमे वयस्क सह-पठन, प्रसंग-व्याख्या आ नैतिक बहस उपयोगी रहत। सभ कथाकेँ 'सीख'क एकल वाक्यपर सीमित कएनाइ उचित नहि; बहुते कथाक मूल्य प्रश्न उठेबामे अछि।

१०. इतिहास, लोकस्मृति आ समानान्तरता

ई संकलन इतिहास-ग्रन्थ नहि, साहित्यिक लोक-सांस्कृतिक संकलन अछि; तथापि एकर भीतर भौगोलिक नाम, जातीय स्मृति, नदी-परम्परा, मेला, थान, गीत, अनुष्ठान, राजवंश, दरबार आ धार्मिक परम्पराक अनेक संकेत अछि। लिखित इतिहास जँ तिथि, अभिलेख, वंशावली आ दस्तावेज पर बल दैत अछि, लोकस्मृति घटना सँ बेसी अनुभव, न्याय-बोध आ सामुदायिक पहचान सुरक्षित रखैत अछि। “विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति” एहि दू स्तरकेँ विरोधी नहि, पूरक मानि पढ़बाक आग्रह करैत अछि। जतय कथा ऐतिहासिक व्यक्तिक नाम लैत अछि, ओतय मूल स्रोत सत्यापन आवश्यक; जतय मेला, गीत, थान वा समुदाय-स्मृति अछि, ओतय सांस्कृतिक इतिहासक प्रमाण-प्रकृति भिन्न मानल जाए।

११. शुद्ध मैथिली निखार-परीक्षण

मूल पीडीएफक पाठ-निष्कर्षणमे अनेक अक्षर-विकृति देखाइत अछि—ई बहुधा फॉन्ट/पाठ-परत सम्बन्धी समस्या बुझाइत अछि, आवश्यक नहि जे मुद्रित पृष्ठो ओही रूपमे हो। वास्तविक भाषा-संपादन समय दृश्य-पृष्ठकेँ आधार मानब चाही। मैथिली निखार लेल निम्न सिद्धान्त लागू होएबाक चाही: ‘पानि’, ‘इनार’, ‘केवाड़ी’, ‘ओसारा’, ‘अएना’, ‘चाह’, ‘कोठली’ जकाँ स्वाभाविक मैथिली रूप; व्यक्ति आ निर्जीव वस्तुक क्रियापदमे भेद; ‘छथि’ केवल व्यक्ति लेल; अनावश्यक हिन्दीकरण सँ परहेज; काल-रूपक एकरूपता; दीर्घ/ह्रस्व आ अनुस्वार-चन्द्रबिन्दुक सावधानी; शीर्षक, अध्याय, चित्र-संख्या आ विरामचिह्नक एकरूपता।

विशेष सुधार-बिन्दु:

१. अनुक्रमक किछु शीर्षकमे पाठ-परत विकृति अछि; अन्तिम संस्करणमे दृश्य पृष्ठसँ मिलान आवश्यक।

२. ऐतिहासिक नाम आ स्थानक वर्तनी एकरूप हो।

३. ‘चित्र’ संख्या आ अध्याय-संख्या समान शैलीमे रहए।

४. रोमनीकृत अथवा अंग्रेजी पद जँ आवश्यक हो, ब्रैकेटमे राखल जाए; मुख्य पाठ मैथिली देवनागरीमे रहए।

५. बालक लेल कठिन संस्कृतनिष्ठ शब्दक अर्थ प्रसंगसँ स्पष्ट कएल जाए।

१२. मौलिक साहित्यिक उपलब्धि

संकलनक बड़ उपलब्धि ई जे मिथिला, नेपाल-मधेश, अंग-वज्जि क्षेत्रक लोक-सांस्कृतिक सामग्री बाल-पाठक लेल दृश्य-सुलभ रूपमे एक जगह आनल गेल अछि। जाति-समुदाय सभकेँ केवल पृष्ठभूमि नहि, नायकत्वक केन्द्र देल गेल अछि। स्त्री-पात्र सभ अनेक ठाम धैर्य, निर्णय, तपस्या, प्रेम, प्रतिरोध आ स्मृतिक सक्रिय वाहक छथि। लोकभाषा, नदी, गाम, गाछी, मेला, अनुष्ठान, गीत, देवता, पशु-पक्षी—सभ मिलि मिथिलाक बहुस्तरीय सांस्कृतिक भूगोल बनबैत अछि।

१३. सीमाएँ

किछु रचनामे उपसंहार शिक्षात्मक निष्कर्ष स्पष्ट शब्दमे कहि दैत अछि, जाहिसँ ध्वन्यात्मक खुलापन घटैत अछि। किछु ऐतिहासिक दावामे प्राथमिक स्रोत-सन्दर्भ नहि देल गेल अछि, ताहि कारण शोधोपयोगी संस्करणमे स्रोत-टिप्पणी जोड़ल जाए तँ अकादमिक मूल्य बढ़त। “ग्राफिक उपन्यास” पदक अपेक्षा सब रचनामे समान स्तरक पैनल-आधारित दृश्य अनुक्रम नहि अछि; किछु भाग चित्र-सहायित गद्यक नजदीक अछि। एहि भिन्नताकेँ दोष मात्र नहि, विधागत संक्रमणक संकेत रूपेँ सेहो देखल जा सकैत अछि।

१४. निष्कर्ष

“३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास” केवल ३७ कथा नहि, लोकस्मृतिक ३७ प्रवेश-द्वार अछि। ई संकलन बाल-पाठककेँ वीरता, करुणा, हास्य, तर्क, श्रद्धा, प्रश्न, अन्याय, प्रेम आ भाषा सभक संग परिचित करैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्र एकर भाव-संरचना खोलैत अछि; पाश्चात्य कथा-सिद्धान्त रूप-विन्यास बुझबैत अछि; नव्य न्याय ज्ञान, लक्षण आ कारणताक सूक्ष्म भेद देखबैत अछि; विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति लोकस्मृति आ लिखित इतिहासक बीच संवाद स्थापित करैत अछि। साहित्यिक रूपेँ संकलनक शक्ति

ओकर बहुलता, लोक-आधार, दृश्य-संकेत, समुदाय-केंद्रित नायकत्व आ बाल-पाठकीय प्रवेश-सुगमता अछि। अकादमिक संस्करणक अगिला चरणमे ऐतिहासिक सन्दर्भक स्रोत-सत्यापन, भाषा-निखार आ दृश्य-पैनल अनुक्रमक एकरूपता एकरा आरो सुदृढ कऽ सकैत अछि।

ग्रन्थसूची

३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास

नाट्यशास्त्र

ध्वन्यालोक

काव्यप्रकाश

साहित्यदर्पण

रसगंगाधर

तत्त्वचिन्तामणि

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली

शब्दशक्तिप्रकाशिका

पोएटिक्स

मॉर्फोलॉजी ऑफ द फोकटेल

द यूजेज ऑफ एन्चैन्टमेंट

अन्डरस्टैण्डिंग कॉमिक्स

आलेख ३९ · काव्य, गजल आ बाल-किशोर साहित्य

दीवान-ए-विदेह : खण्ड १

सारांश

ई शोध-लेख ‘दीवान-ए-विदेह’क सम्पूर्ण उपलब्ध पाठकेँ आधार बनबैत अछि। पोथीमे ५९१ गजल दुइ प्रमुख खण्डमे व्यवस्थित अछि—४५८ सामान्य गजल आ १३३ किशोर गजल। प्रारम्भिक भागमे छन्द-विधान, एक ‘रुबाइ’ शीर्षक रचना आ ‘कता १’ तथा ‘कता २’ शीर्षक दू रचना भेटैत अछि। शीर्ष-पृष्ठक संख्या-विवरण आ मुख्य पाठक रचना-शीर्षकमे एहि बिन्दुपर एक आन्तरिक विसंगति अछि, जकरा आलोचनामे तथ्यगत रूपेँ अलग चिन्हित कएल गेल अछि। अध्ययनक मूल प्रश्न ई अछि जे मैथिली गजल अपन परम्परागत अरूज़ी स्मृति, स्थानीय उच्चारणाधारित मात्रा-पद्धति, मिथिलाक भू-दृश्य, लोक-श्रम, स्मृति, प्रवास, नेह, नैतिक आत्मसंवाद आ किशोर-जीवनक समकालीन प्रश्नसभकेँ कोना एकहि दीवानमे बहुस्तरीय काव्य-जगत बनबैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य, पाश्चात्य निकट-पाठ आ संवादधर्मिता, नव्य-न्यायक परिभाषा-भेद-प्रमाण अनुशासन, आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक काल-सामाजिक तुलनात्मक दृष्टि—चारूकेँ एकीकृत कऽ समीक्षा कएल गेल अछि। निष्कर्षतः ई दीवान मैथिली गजलकेँ केवल प्रेम वा विरहक पारम्परिक क्षेत्रमे सीमित नहि रखैत, बल्कि गाम-नगर, लोक-स्मृति, कृषि-पर्यावरण, डिजिटल युग, किशोर नागरिकता, आलोचनात्मक बुद्धि आ आत्म-अनुशासन धरि विस्तार दैत अछि।

बीजशब्द

दीवान-ए-विदेह : खण्ड १ · मैथिली कविता · गजल · बाल-साहित्य · साहित्यिक समीक्षा

१.४९. गजेन्द्र ठाकुर-दीवान-ए-विदेह खण्ड-१- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

दीवान-ए-विदेह

समग्र गहन शोध-समीक्षा, काव्यशास्त्रीय परीक्षण आ मैथिली निखार-अनुशीलन

मूल कृति: गजेन्द्र ठाकुर

५९१ गजल, प्रारम्भिक काव्य-रचनासभ, सामान्य आ किशोर खण्ड, छन्द-विधान तथा सम्पूर्ण रचना-सूचीक आधारपर तैयार शोध-लेख।

सार

ई शोध-लेख 'दीवान-ए-विदेह'क सम्पूर्ण उपलब्ध पाठकेँ आधार बनबैत अछि। पोथीमे ५९१ गजल दुइ प्रमुख खण्डमे व्यवस्थित अछि—४५८ सामान्य गजल आ १३३ किशोर गजल। प्रारम्भिक भागमे छन्द-विधान, एक 'रुबाइ' शीर्षक रचना आ 'कता १' तथा 'कता २' शीर्षक दू रचना भेटैत अछि। शीर्ष-पृष्ठक संख्या-विवरण आ मुख्य पाठक रचना-शीर्षकमे एहि बिन्दुपर एक आन्तरिक विसंगति अछि, जकरा आलोचनामे तथ्यगत रूपेँ अलग चिन्हित कएल गेल अछि। अध्ययनक मूल प्रश्न ई अछि जे मैथिली गजल अपन परम्परागत अरूज़ी स्मृति, स्थानीय उच्चारणाधारित मात्रा-पद्धति, मिथिलाक भू-दृश्य, लोक-श्रम, स्मृति, प्रवास, नेह, नैतिक आत्मसंवाद आ किशोर-जीवनक समकालीन प्रश्नसभकेँ कोना एकहि दीवानमे बहुस्तरीय काव्य-जगत बनबैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य, पाश्चात्य निकट-पाठ आ संवादधर्मिता, नव्य-न्यायक परिभाषा-भेद-प्रमाण अनुशासन, आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक काल-सामाजिक तुलनात्मक दृष्टि—चारूकेँ एकीकृत कऽ समीक्षा कएल गेल अछि। निष्कर्षत: ई दीवान मैथिली गजलकेँ केवल प्रेम वा विरहक पारम्परिक क्षेत्रमे सीमित नहि रखैत, बल्कि गाम-नगर, लोक-स्मृति, कृषि-पर्यावरण, डिजिटल युग, किशोर नागरिकता, आलोचनात्मक बुद्धि आ आत्म-अनुशासन धरि विस्तार दैत अछि।

बीज-शब्द: मैथिली गजल; ध्वनि; रस; वक्रोक्ति; नव्य-न्याय; प्रमाण; समानान्तर इतिहास; लोक-स्मृति; किशोर काव्य; छन्द।

१. पाठ-सामग्री आ शोध-सीमा

अध्ययनक प्राथमिक स्रोत ‘दीवान-ए-विदेह’क पूर्ण ६१०-पृष्ठीय संस्करण अछि। सम्पूर्ण दस्तावेजक संरचनात्मक परीक्षणमे ५९१ गजल क्रमांकित रूपेँ भेटल; गजल १ ‘मोन पड़ैए’ सँ गजल ५९१ ‘साँच जाँचू’ धरि क्रम अखण्ड अछि। गजल १–४५८ ‘सामान्य गजल’ आ गजल ४५९–५९१ ‘किशोर गजल’ खण्डमे अछि। एहि कारण समीक्षा खण्डगत अन्तर, कालबोध, सम्बोधन-शैली, नैतिक स्वर, शब्दावली आ छन्द-व्यवहारकेँ पृथक-पृथक देखैत अछि, मुदा अन्ततः सम्पूर्ण दीवानकेँ एक साझा काव्य-प्रयोग मानैत अछि।

पोथीक आरम्भिक ‘छन्द-विधान’ उच्चारणकेँ मात्रा-निर्णयक आधार मानैत अछि; लघु-गुरु, कल-क्रम, यति, काफिया-रदीफ आ गुनगुना कऽ लय-परीक्षा ओकर घोषित कार्यविधि अछि। ई आत्म-व्याख्यात्मक प्रस्तावना महत्वपूर्ण अछि, कारण ई दीवान अपन छन्दीय मानक स्वयं स्पष्ट करैत अछि; आलोचक लेल बाहरी अरूज़ी साँचा यांत्रिक रूपेँ आरोपित करब एहि पाठक घोषित पद्धतिक विरुद्ध होएत।

रचना-संख्या सम्बन्धी एक सम्पादकीय विसंगति उल्लेखनीय अछि। शीर्ष-पृष्ठ ‘५९१ गजल ·१ कता ·२ रुबाइ’ कहैत अछि, मुदा मुख्य पाठमे एकटा ‘रुबाइ’ तथा ‘कता १’ आ ‘कता २’ शीर्षक दू पृथक रचना अछि। अतः उपलब्ध पाठक प्रत्यक्ष संरचना ५९१ गजल + २ कता + १ रुबाइ देखबैत अछि। ई निष्कर्ष पाठ-साक्ष्य पर आधारित अछि; एहि ठाम रचनाकारक अभिप्राय विषयक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

२. शोध-पद्धतिः चारि समानान्तर आलोचनात्मक दृष्टि

२.१ भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आ शब्दार्थ-सामञ्जस्य एहि अध्ययनक भारतीय आधार अछि। गजल-संरचनामे प्रत्येक शेर अर्थतः अपेक्षाकृत स्वतंत्र रहैतहुँ रदीफ-काफिया, लय आ पुनरावर्तन द्वारा भावात्मक एकत्व रचैत अछि। ध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिसँ ‘मोन पड़ैए’, ‘रहि गेल’, ‘ओहि पार’, ‘फेर भेटत’, ‘मौनक स्वर’ जकाँ शीर्षक केवल कथन नहि, अप्रकट स्मृति, दूरी, अनुपस्थिति आ पुनरागमनक अर्थ-क्षेत्र खोलैत अछि। रस-परीक्षणमे करुण, शृंगार, शान्त,

वीर, हास्य तथा विस्मयक सूक्ष्म मिश्रण देखल गेल अछि; मुदा संकलनक प्रधान भाव-सूत्र स्मृति-करुणा आ पुनर्निर्माणक आशावादी शान्ति अछि।

वक्रोक्तिक स्तर पर लोक-उपकरण आ प्रकृति-बिम्ब—करघा, चाक, ढेकी, जाँत, चरखा, पनघट, बखारी, माटि, धान, कुसियार, मखान, कमला, कोसी—अनेक बेर साधारण वस्तु नहि रहि समय, श्रम, पीढ़ी आ सामुदायिक स्मृतिक रूपक बनि जाइत अछि। ई लोक-वस्तुकेँ अलंकारिक सजावट नहि, अर्थ-उत्पादक केन्द्र बनबैत अछि।

२.२ पाश्चात्य निकट-पाठ आ संरचनात्मक दृष्टि

निकट-पाठक पद्धति रूप आ आशयकेँ अलग-अलग वस्तु नहि मानैत। एहि दीवानमे रदीफक पुनरावर्तन अर्थक पुनरावर्तन नहि, अर्थक क्रमिक परिवर्तन अछि। ‘मोन पड़ैए’ हर शेरमे अलग स्मृति-स्रोतकेँ एक साझा भाव-प्रतिध्वनिमे जोड़ैत अछि; ‘साँच जाँचू’ आदेशात्मक पुनरावर्तनकेँ ज्ञानमीमांसात्मक अनुशासन बनबैत अछि। विरोधाभास, विडम्बना, पुनरुक्ति, विराम, कथोपकथन आ शीर्षक-संक्षेप—ई सभ अर्थनिर्माणक संरचनात्मक साधन अछि।

संवादधर्मिता विशेषतः किशोर खण्डमे तीव्र अछि। ‘सुनू’, ‘बाजू’, ‘बुझू’, ‘चुनू’, ‘राखू’, ‘जाँचू’, ‘सीखू’ जकाँ क्रियापद पाठककेँ निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहि रहने दैत; कविता एक सक्रिय सम्बोधन बनि जाइत अछि। एहि ठाम काव्य-वक्ता आ पाठकक बीच प्रश्नोत्तर, सलाह, आत्म-संशय आ प्रतिपरीक्षणक संवाद बनैत अछि।

२.३ नव्य-न्याय दृष्टि

नव्य-न्यायक उपयोग एहि समीक्षा मे कविता के तर्कशास्त्रीय प्रस्तावमे बदलबाक लेल नहि, बल्कि अर्थ-स्पष्टता, सम्बन्ध-भेद, प्रमाण आ निषेधक सूक्ष्मता जाँचबाक लेल कएल गेल अछि। ‘नहि’, ‘नै’, ‘किएक’, ‘कोना’, ‘के’, ‘ककरा’, ‘प्रश्न’, ‘साँच’, ‘जाँच’ जकाँ आवर्ती शब्द दीवानमे संदेह आ परीक्षणक सक्रिय भाषिक संस्कृति बनबैत अछि। विशेषतः किशोर खण्डक अन्तिम समूह सूचना, प्रचार, स्रोत, चित्र, समाचार, निर्णय, समूह-दबाव, मीतक चयन आ सहायता माँगबाक विषयकेँ प्रमाण-आधारित विवेकसँग जोड़ैत अछि।

अवच्छेद, सम्बन्ध आ भेदक दृष्टिसँ देखल जाए तँ ‘घर’ केवल स्थान नहि; ‘घरक दुआर’, ‘घर घुरबाक बाट’, ‘घरमे बाजू’ जकाँ रूपमे घर-सत्ता अलग-अलग सम्बन्ध द्वारा अर्थवान होइत अछि। तहिना ‘मौन’ निष्क्रिय शून्यता नहि; ‘मौनक स्वर’, ‘मौन सुनू’, ‘मौन राखू’ मे मौनक प्रकार्य अलग-अलग अछि। ई विभेदक सूक्ष्मता नव्य-न्यायपरक पठनकेँ उपयुक्त सामग्री दैत अछि।

२.४ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

एहि अध्ययनमे ‘विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति’ सँ अभिप्राय एहन पठन अछि जतए साहित्यिक रूप, भाषिक परिवर्तन, भू-सांस्कृतिक स्मृति, दैनन्दिन वस्तु, पीढ़ीगत अनुभव आ समकालीन माध्यमकेँ एकहि कालरेखा पर नहि, अनेक समानान्तर कालरेखामे पढ़ल जाइत अछि। दीवानमे एक दिस करघा, ढेकी, जाँत, बखारी, पनघट, पुरनका डाकघर, पुरनका रेडियो आ पोथी अछि; दोसर दिस [डिजिटल], [स्क्रीन], [लाइक], जालजगत आ समाचार अछि। ई सह-अस्तित्व ‘पुरान बनाम नब’क सरल द्वन्द्व नहि, मिथिलाक समयक सहजीवी बहुलता अछि।

भू-दृश्य सेहो ऐतिहासिक साक्ष्यक रूप लैत अछि। कमला, कोसी, पोखरि, कछार, बालू, बाढ़ि, धान, सरिसो, मखान, कुसियार, पलाश, सखुआ, सामा-चकेवा, मधुश्रावणी—ई शब्द केवल प्रादेशिक रंग नहि; सामाजिक श्रम, मौसम, उत्सव, पर्यावरणीय असुरक्षा आ सांस्कृतिक निरन्तरताक समानान्तर अभिलेख अछि।

३. संकलनक वास्तु: दीवान रूपमे बहुस्तरीयता

दीवानक विशालता—५९१ गजल—एकर आलोचना लेल संख्या मात्र नहि, संरचनात्मक तथ्य अछि। शीर्षकसभक पुनरागमन, जकाँ ‘जाड़क धूप’ चारि बेर, ‘अपन गति’, ‘ओहि पार’, ‘करघाक धुन’, ‘ना कहू’, ‘नै भूलब’, ‘प्रश्नक साहस’, ‘फेर भेटत’ आदि अनेक बेर, एक प्रकारक अन्तःपाठीय पुनरावलोकन बनबैत अछि। एक्के शीर्षक दोसर प्रसंगमे फेर आबि अर्थक समानता आ भिन्नता दुनू देखबैत अछि।

गजलसभक घोषित बहर सभ ठाम ‘मात्रिक छन्द ·पारम्परिक अरूज़ी’ अछि। उपलब्ध मात्रा-विवरणमे न्यूनतम सीमा 11 आ अधिकतम सीमा 54 धरि जाइत अछि; औसत निचला सीमा लगभग 17.2 आ औसत ऊपरी सीमा

लगभग 25.4 मात्रा अछि। एहि फैलावसँ स्पष्ट अछि जे संकलन एकल स्थिर मात्रा-साँचा पर नहि, उच्चारणाधारित निकट-समलय आ मिश्र कल-विन्यासक अनेक रूप पर काम करैत अछि। पोथीक अपन छन्द-विधान सेहो यांत्रिक अक्षर-गणनाक बदला वास्तविक उच्चारण आ गेयतालकेँ निर्णायक मानैत अछि।

अधिकांश गजल दस मिसराक, अर्थात् पाँच शेरक संरचना रखैत अछि; किछु गजल छह, आठ, बारह वा ओकरा बेसी मिसराक सेहो अछि। ई भिन्नता पाठक अनुभवमे विराम, विस्तार आ कथ्य-घनत्व बदलैत अछि। खास कऽ गजल ४२५–४५० बीच किछु रचना पारम्परिक पाँच-शेर ढाँचासँ बाहर बढ़ैत देखाइत अछि; एहि ठाम सम्पादकीय रूपेँ शेर-विभाजनक पुनःदृश्य परीक्षण उपयोगी होएत।

४. सामान्य गजल खण्ड: स्मृति, गाम, प्रवास आ आत्म-पहिचान

गजल १–४५८ मे स्मृति आ लौटबाक आकांक्षा आरम्भसँ प्रमुख अछि। ‘मोन पड़ैए’ गाम, कमलाक धार, माइक हँकार, निन्न, नेहार आ बाढ़ि बाद ठाढ़ भेल घरकेँ स्मृतिक परत बनबैत अछि। ‘रहि गेल’, ‘आउ ने’, ‘कहियो नै’, ‘अहाँक बाद’, ‘सुनै छी’, ‘बदलि गेल’, ‘रहि जाउ’ आदि शुरुआती शीर्षक अनुपस्थिति आ सम्भावित पुनर्मिलनक भावक्षेत्र खोलैत अछि।

मध्यवर्ती गजलसभमे ‘पुरनका’ विशेषण एक प्रकारक स्मृति-चिह्न बनि उठैत अछि—पुरनका चश्मा, पुस्तकालय, रेडियो, पोथी, डाकघर, घड़ी, चित्र, कुञ्जी। वस्तु पुरान अछि, मुदा कविता ओकरा मृत अवशेष नहि बनबैत; ओ वस्तु समयक संवाहक अछि। एहि ठाम स्मृति निजी आत्मकथा सँ सामुदायिक इतिहास दिस बढ़ैत अछि।

लोक-श्रमक प्रतिमा संकलनक विशिष्ट उपलब्धि अछि। करघा, चरखा, कुम्हारक चाक, लोहारक आगि, दर्जीक सुई, औजार, हाथक मोल, श्रमक गरिमा—ई सभ गजल श्रमकेँ अलंकार नहि, मानवीय प्रतिष्ठाक आधार बनबैत अछि। वस्तु आ कारीगरक सम्बन्धमे ध्वनि, स्पर्श, ताल आ उपयोगिता एक साथ उपस्थित अछि; एहि कारण श्रम-विषयक गजलसभ दीवानक सामाजिक काव्यशास्त्र रचैत अछि।

५. मिथिला-पर्यावरण आ ऋतुचक्रक काव्य-भाषा

ऋतु-नाम आ कृषि-बिम्बक घनत्व दीवानकेँ स्थानीय कालगणनाक संवेदनशील दस्तावेज बनबैत अछि। चैत, फागुन, भादो, कातिक, अगहन, पूस, जाड़; सरिसो, अलसी, मसूर, सनई, धान, गहुम, कुसियार; कदम्ब, पलाश, कनेर, अड़हुल, पीपर, बटगाछ, नीम, महुआ, सखुआ—ई श्रृंखला प्रकृतिक वर्णन मात्र नहि। मौसम आ वनस्पति द्वारा समय पहिचानल जाइत अछि, आ समय द्वारा मनःस्थिति।

जल-बिम्ब विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। कमलाक धार, कोसीक बालू, पोखरि, पनघट, नदीक मोड़, नदीक वचन, नदीक धुँध, नदीक बालू, बाढ़ि, मेह, ओस—जल कखनो स्मृति, कखनो अस्थिरता, कखनो पुनरुत्पत्ति, कखनो विनाशक संकेत अछि। ‘जलोदीप’ जकाँ रचनामे जल आ इजोतक संयुक्त प्रतीक जीवन-रक्षाक प्रश्नकेँ तीव्र करैत अछि।

६. नेह, विरह, मौन आ संवाद

गजल-विधाक पारम्परिक नेह-विरह दीवानमे उपस्थित अछि, मुदा ओकर मैथिलीकरण स्थान, सम्बोधन आ घरेलू बिम्ब द्वारा होइत अछि। ‘अहाँक बाद’, ‘अहाँक संग’, ‘नेहक थाह’, ‘मीतक संग’, ‘मीतक मान’, ‘मीतक गोपन बात’, ‘तोहर’ सम्बोधन, माइक हँकार आ दादीक कथा—ई सभ निजी सम्बन्धकेँ विस्तृत सामाजिक-परिवारिक भावभूमिसँ जोड़ैत अछि।

मौनक कई रूप अछि: चुप्पी, मौन, नहि बाजब, सुनब, धीरे कहब। ‘मौनक स्वर’ शीर्षक अपने भीतर विरोधाभास रचैत अछि—स्वरहीनता एक संप्रेषण बनैत अछि। पाश्चात्य निकट-पाठक दृष्टिसँ ई ‘विरोधाभास’ अर्थक मूल युक्ति अछि; भारतीय ध्वनि-दृष्टिसँ अनकहल अर्थक सक्रियता।

७. किशोर गजल खण्ड: उपदेश नहि, अभ्यास-नैतिकता

गजल ४५९–५९१ ‘किशोर गजल’ रूपेँ अलग खण्ड बनबैत अछि। आरम्भ ‘बार्बी’ जकाँ बाल-किशोर कल्पना सँ होइत अछि, मुदा क्रमशः पोथी, खेल, मीत, परीक्षा, असफलता, पहिल कमाइ, जिम्मेदारी, निर्णय, समय, प्रश्न, साँच, सहायता, सीमा, समूह-दबाव, जालजगत आ समाचार दिस बढ़ैत अछि। एहि

क्रममे बाल्य-कल्पना सँ सामाजिक उत्तरदायित्व धरि एक विकासरेखा देखाइत अछि।

ई खण्डक विशेषता आदेशात्मक क्रियापदक बहुलता अछि—‘चुनू’, ‘राखू’, ‘बुझू’, ‘सुनू’, ‘पूछू’, ‘जाँचू’, ‘लिखू’, ‘सीखू’, ‘बाँटू’। सतही पठनमे ई उपदेशात्मक बुझा सकैत अछि; मुदा अनेक गजल आदेशकेँ आत्म-अभ्यास रूपेँ प्रस्तुत करैत अछि। वक्ता स्वयं सेहो भूल, दबाव, भ्रम, असफलता आ तुलना सँ मुक्त नहि अछि। तेँ नैतिक स्वर एकतरफा प्रवचनक बदला साझा अभ्यासक रूप लैत अछि।

अन्तिम गजल ‘साँच जाँचू’ संकलनक वैचारिक समापन जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि। समाचार, चित्र, स्रोत, प्रचार, दोहराव, सन्देह आ आधारक प्रश्न एक आधुनिक ज्ञानमीमांसात्मक अनुशासन बनबैत अछि। नव्य-न्यायक प्रमाण-चिन्ता आ समकालीन माध्यम-साक्षरता एतए आश्चर्यजनक रूपेँ नजिक आबैत अछि।

८. छन्द, रदीफ-काफिया आ गेयता

दीवानक घोषित छन्द-पद्धति ‘उच्चारणाधारित मात्रा-लेखा’ अछि। एहि पद्धतिमे लिखित अक्षर सँ बेसी उच्चारित वर्णांशक काल-भार महत्वपूर्ण अछि; नासिक्य, संयुक्त व्यञ्जन, हलन्त, संकुचित रूप तथा शब्दान्तक अन्तर्निहित स्वरक निर्णय गायन-पाठ अनुसार कएल जाइत अछि। ई पद्धति मैथिली उच्चारणक वास्तविकताकेँ मान्यता दैत अछि आ देवनागरीक मात्र दृश्य रूपपर निर्भर नहि रहैत।

रदीफ दीवानक मुख्य संगीतात्मक उपकरण अछि। अनेक शीर्षक स्वयं रदीफ बनि जाइत अछि—‘मोन पड़ैए’, ‘आउ ने’, ‘कहियो नै’, ‘फेर भेटत’, ‘जाँचू’ आदि। एहि सँ शीर्षक, स्मरण आ शेर-अन्त एक वृत्त बनबैत अछि। सफल रचनासभमे रदीफ प्रत्येक शेरक अर्थ बदलैत-बढ़बैत अछि; कमजोर ठाम रदीफ कथ्यकेँ पूर्वानुमेय सेहो बना सकैत अछि। विस्तृत सम्पादनमे प्रत्येक गजलक पाँच शेर अलग-अलग अर्थ-उत्पादक दबाव बनबैत अछि कि नहि—ई कसौटी उपयोगी रहत।

९. भाषा, रजिस्टर आ मैथिली निखार

दीवानक भाषा व्यापक रूपेँ जीवित मैथिली बोलचाल, ग्रामीण शब्दावली, दैनन्दिन क्रिया-रूप आ क्षेत्रीय बिम्बपर आधारित अछि। ‘मोन’, ‘हँकार’, ‘ओसार’, ‘दुआर’, ‘माटि’, ‘घैल’, ‘पोखरि’, ‘कछार’, ‘भकरार’, ‘झुरमुट’, ‘बखारी’, ‘खरिहान’, ‘मोजर’, ‘पुरइन’, ‘मखान’ जकाँ शब्द काव्यभाषाकेँ स्थानीय देह दैत अछि।

तथापि शुद्ध मैथिली निखारक दृष्टिसँ किछु शब्द आ रूप पुनर्विचार योग्य अछि। ‘कूपक डोर’केँ ‘इनारक डोर’; ‘बरामदाक कुर्सी’ तथा बरामदा-प्रयोगकेँ ‘ओसाराक कुर्सी/ओसारा’; ‘चाय’केँ ‘चाह’; ‘कमरा’ आ ‘कोठरी’केँ प्रसंगानुसार ‘कोठली’; ‘भूल’केँ ठाम-ठाम ‘चूक’ अथवा ‘बिसर’ मूलक मैथिली रूपसँ बदलल जा सकैत अछि। ई सुझाव अर्थ-प्रसंग जाँचि लागू हो; मूल उद्धरण बदलि कऽ प्रस्तुत नहि कएल जाए।

समकालीन सांस्कृतिक शब्द—[बार्बी], [फैशन], [टीम], [डिजिटल], [स्क्रीन], [लाइक], [स्टेशन], [रेडियो], [टिकट]—जँ जानि-बूझि आधुनिक जीवनक संकेत रूपेँ राखल जाए तँ समीक्षा-दृष्टिसँ वैध अछि; मुदा प्रकाशनक शुद्ध-मैथिली शैलीमे एहि विदेशी शब्दसभकेँ कोष्ठकमे राखब वा सम्भव मैथिली विकल्प देब संगति बढ़ाएत। रोमन लिपिक प्रत्यक्ष प्रयोग मुख्य काव्य-पाठमे लगभग नहि अछि; प्रारम्भिक प्रकाशकीय सूचनामे मात्र मानकीकृत प्रकाशन-संकेत आ वेब-पता अछि।

१०. शीर्षक-व्यवस्था, पुनरावर्तन आ सम्पादकीय अनुशासन

५९१ गजलमे 47 शीर्षक एहन अछि जे एक बेरसँ बेसी दोहरायल अछि। पुनरावर्तन अपने आपमे दोष नहि; उलटे समान शीर्षकक भीतर समय, प्रसंग वा दृष्टिकोणक परिवर्तन एक श्रृंखलाबद्ध काव्य-प्रयोग बनि सकैत अछि। मुदा अनुक्रमणिका आ उद्धरण-सुविधा लेल दोहरायल शीर्षकक संग गजल क्रमांक अनिवार्य मानल जाए। ‘जाड़क धूप’ चारि बेर, आ किछु शीर्षक तीन बेर धरि अछि; ई तथ्य सम्पादकीय पहचानक आवश्यकता बढ़बैत अछि।

संयोजन-विच्छेदमे सेहो एकरूपता उपयोगी रहत: ‘मोनमे अछि/मोनमेअछि’, ‘घरमे बाजू/घरमेबाजू’, ‘पर्दासँ बाहर/पर्दासँबाहर’, ‘कने आराम/कनेआराम’, ‘एतबे नेह/एतबेनेह’ जकाँ रूपसभक एक मानक तय कएल

जाए। एहि निखारसँ उच्चारण बदलत नहि, मुदा पठन-सुगमता आ शब्दरूपक स्थिरता बढ़त।

११. भारतीय काव्यशास्त्रक विस्तृत मूल्यांकन

रसक दृष्टिसँ संकलन एकरस नहि। सामान्य खण्डक आरम्भिक आ मध्य भागमे करुण-शृंगारक संयोग बहुल अछि; प्रकृति-आधारित गजलसभमे शान्त, अद्भुत आ ऋतु-सौन्दर्य; श्रम-विषयक गजलसभमे वीर तथा गरिमा; सामाजिक आलोचनामे रौद्रक हलुक ध्वनि; किशोर खण्डमे उत्साह, हास्य, स्नेह आ शिक्षात्मक शान्ति देखाइत अछि। महत्वपूर्ण ई जे रस स्थायी 'लेबल' नहि, शेर-दर-शेर बदलैत अनुभव अछि।

ध्वनिक स्तर पर 'ओहि पार', 'बाँचल अछि', 'रहि गेल', 'फेर जनमत', 'अपूर्णतासँ सीख' जकाँ शीर्षक अनकहल पूर्वकथा बनबैत अछि। पाठककेँ पूरा घटना नहि कहल जाइत; संकेत, अवशेष आ पुनरुक्ति द्वारा अर्थ बनैत अछि। ई संक्षिप्तता गजल-विधाक अनुकूल अछि।

औचित्यक कसौटी पर लोक-बिम्बसभ अधिकतर स्वाभाविक अछि, कारण ओ पात्रहीन दार्शनिक रूपक नहि, जीवन-प्रसंगसँ उपजल अछि। जखन आधुनिक बाहरी शब्द अचानक लोक-रजिस्टरमे प्रवेश करैत अछि, तखन औचित्य प्रश्न उठैत अछि; मुदा किशोर खण्डमे [स्क्रीन], [लाइक] वा [बार्बी] जकाँ शब्द विषयगत संसारक अंग भएक कारण औचित्य प्राप्त करैत अछि।

१२. पाश्चात्य आलोचनात्मक पठन: रूप, विडम्बना, आवाज आ पाठक

निकट-पाठक दृष्टिसँ दीवानक श्रेष्ठ क्षण ओ अछि जतए साधारण कथनक भीतर विरोधी भाव एक साथ टिकैत अछि—घरक स्मृति आनन्द सेहो अछि आ पीड़ा सेहो; बाढ़ि विनाश सेहो अछि आ पुनर्निर्माणक पृष्ठभूमि सेहो; मौन अनुपस्थिति सेहो अछि आ 'स्वर' सेहो; पुरान वस्तु जीर्ण सेहो अछि आ जीवित स्मृति सेहो। एहि तनावकेँ गद्य-सारांशमे घटाओल नहि जा सकैत।

पाठक-सम्बोधनक रूप समयक संग बदलैत अछि। सामान्य खण्डमे 'अहाँ', 'तोहर', 'ककरा', 'के जानै' आदि आत्मीय वा अनिश्चित सम्बोधन अछि; किशोर खण्डमे 'करू', 'बुझू', 'जाँचू', 'सीमा राखू' जकाँ प्रत्यक्ष सम्बोधन बढ़ैत

अछि। एहि बदलावसँ दीवान निजी गीतात्मकता सँ सार्वजनिक नैतिक वार्तालाप दिस गति करैत अछि।

१३. नव्य-न्यायपरक अर्थ-परीक्षा: प्रमाण, सन्देह, भेद

‘साँच’ आ ‘जाँच’क आवर्तन संकलनक उत्तरार्धमे विशेष घनत्व पबैत अछि। नव्य-न्याय दृष्टिसँ एहि रचनासभमे ज्ञानक उत्पत्ति, स्रोतक विश्वसनीयता, कथन आ वस्तुस्थिति, चित्र आ पूर्ण सत्य, लोकप्रिय पुनरावृत्ति आ प्रमाण—ई सभ अलग-अलग सम्बन्ध रूपेँ देखल जा सकैत अछि। ‘सभ दोहराबए’ सत्यक पर्याप्त हेतु नहि; स्रोत, आधार, प्रसंग आ प्रतिपरीक्षण आवश्यक अछि।

निषेधात्मक शीर्षक—‘आब नहि’, ‘एना नहि’, ‘किएक नै’, ‘कहियो नै’, ‘नै झुकब’, ‘नै बदलू’, ‘तुलना नहि’—केवल नकार नहि। नव्य-न्यायक ‘अभाव’ चिन्तनक अनुरूप ई देखब उपयोगी अछि जे कोन वस्तुक, कोन सम्बन्धमे, कोन कालमे निषेध अछि। कवितासभक अर्थ एही विशिष्टतासँ बनैत अछि; सामान्यीकृत ‘नहि’ प्रायः पर्याप्त नहि।

१४. विदेह समानान्तर इतिहास: परम्परा आ समकालीनताक सह-अस्तित्व

दीवानक ऐतिहासिक महत्त्व एतय अछि जे ग्रामीण मिथिला, आधुनिक नगर, प्रवासी अनुभव आ जालजगत एक-दोसरा के हटबैत नहि, एकहि पाठ-संसारमे समानान्तर रहैत अछि। ‘पुरनका रेडियो’ आ ‘स्क्रीनक बाहर’, ‘डाकघर’ आ ‘समाचार’, ‘कागजक नाव’ आ ‘जालजगत’, ‘करघाक धुन’ आ ‘डिजिटल विराम’—ई युग्म सभ स्वतः इतिहासलेखनक सामग्री अछि।

एहि पद्धतिमे ‘इतिहास’ केवल तिथि-क्रम नहि, वस्तु-क्रम सेहो अछि। कोन वस्तु जीवनमे प्रवेश करैत अछि, कोन वस्तु स्मृति बनैत अछि, कोन शब्द नब पीढ़ीक भाषा बनैत अछि—ई सभ परिवर्तन काव्य-पाठमे दर्ज अछि। तें दीवान लोक-संस्कृतिक स्थिर चित्र नहि, संक्रमणशील मिथिलाक बहु-कालिक अभिलेख जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि।

१५. आलोचनात्मक उपलब्धि आ सीमा

मुख्य उपलब्धि पाँच स्तर पर अछि: मैथिली गजलकेँ विराट संख्या आ विषय-विस्तार देब; स्थानीय भू-दृश्य आ श्रम-वस्तुकेँ केन्द्रीय काव्य-बिम्ब

बनायब; उच्चारणाधारित छन्द-विवेचन प्रस्तुत करब; सामान्य गीतात्मकता सँ किशोर नागरिक-विवेक धरि विस्तार; आ परम्परा तथा डिजिटल वर्तमानकेँ एकहि दीवानमे समानान्तर राखब।

मुख्य सीमा सेहो स्पष्ट अछि। विशाल संकलनमे सूत्र-वाक्य, आदेशात्मक क्रिया आ समान रदीफक कारण किछु रचनामे भाव-पूर्वानुमेयता आबि सकैत अछि। शीर्षक-पुनरावर्तन पाठकीय स्मृति पर दबाव बढ़बैत अछि। किछु गजलमे मात्रा-सीमा बहुत विस्तृत घोषित अछि; एहन ठाम वास्तविक गायन-पाठक ध्वनि-दस्तावेज उपलब्ध हो तँ छन्दीय सत्यापन अधिक कठोर बनत। किछु विदेशी वा मानक-हिन्दी शब्द शुद्ध मैथिली रजिस्टरक संग असमानता पैदा करैत अछि। ई सीमा संकलनक मूल्य घटबैत नहि; अगिला सम्पादकीय संस्करण लेल कार्यसूची प्रदान करैत अछि।

१६. निखार-अनुशंसा

• शीर्ष-पृष्ठक ‘१ कता · २ रुबाइ’ विवरण मुख्य पाठक वास्तविक संरचना सँ मिलान कऽ सुधारू।

• दोहरायल शीर्षकसभक अनुक्रमणिका आ उद्धरणमे गजल क्रमांक सदा संग राखू।

• ‘कूप’, ‘बरामदा’, ‘चाय’, ‘कमरा/कोठरी’, ‘भूल’ जकाँ रूपकेँ अपन निर्धारित मैथिली शैली अनुसार क्रमशः ‘इनार’, ‘ओसारा’, ‘चाह’, ‘कोठली’, आ प्रसंगानुसार ‘चूक/बिसर’ रूपमे जाँचू।

• विदेशी सांस्कृतिक/तकनीकी शब्द राखबाक आवश्यकता हो तँ [कोष्ठक] नीति एकरूप रूपेँ लागू करू।

• संयुक्त रूप आ परसर्ग-लेखन—‘मोनमे’, ‘घरमे’, ‘पर्दासँ’, ‘एतबे’—लेल एक सम्पादकीय मानक बनाउ।

• असामान्य मिसरा-संख्या वाला गजलसभक शेर-विभाजन आ पृष्ठ-लेआउट पुनः जाँचू।

• मात्रा-क्रमक बहुत विस्तृत सीमा वाला गजलमे गेय-पाठक आधार पर पुनर्गणना करब उपयोगी होएत।

१७. निष्कर्ष

‘दीवान-ए-विदेह’ मैथिली गजलकेँ केवल पारम्परिक प्रेमगीतक उत्तराधिकार रूपेँ नहि, समकालीन मैथिली जीवनक बहुविषयी काव्य-माध्यम रूपेँ स्थापित करबाक प्रयास अछि। एकर केन्द्रमे ‘स्मृति’ अछि, मुदा स्मृति निष्क्रिय नॉस्टेल्जिया नहि; ओ घर, गाम, श्रम, नदी, ऋतु, भाषा, सम्बन्ध आ बदलैत माध्यमसभक बीच आत्म-पहिचानक खोज अछि।

भारतीय काव्यशास्त्र एकर ध्वनि, रस, वक्रता आ औचित्य स्पष्ट करैत अछि; पाश्चात्य निकट-पाठ रूप-आशयक अन्तर्सम्बन्ध आ विरोधाभास खोलैत अछि; नव्य-न्याय प्रश्न, सन्देह, प्रमाण आ भेदक भाषिक अनुशासन देखबैत अछि; विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति पुरनका रेडियो सँ [स्क्रीन] धरि, करघा सँ जालजगत धरि, कमला-कोसी सँ समाचार-स्रोत धरि अनेक कालरेखाकेँ एक संग पढ़ैत अछि। चारू दृष्टि मिलि ई प्रमाणित करैत अछि जे दीवानक वास्तविक उपलब्धि ओकर संख्या मात्र नहि, बल्कि मैथिली अनुभवक विविध रजिस्टरकेँ गजल-विधामे समेटबाक क्षमता अछि।

परिशिष्ट : सम्पूर्ण रचना-दर-रचना समीक्षात्मक अभिलेख

एहि परिशिष्टक उद्देश्य ई सुनिश्चित करब अछि जे पोथीक कोनो रचना समीक्षा-सूचीसँ बाहर नहि रहए। प्रत्येक प्रविष्टिमे रचनाक क्रम/शीर्षक, उपलब्ध औपचारिक सूचना, आरम्भिक पंक्ति आ मुख्य अर्थ-क्षेत्र देल गेल अछि। आरम्भिक पंक्ति मूल पाठक पहचान-साक्ष्य रूपेँ उद्धृत अछि।

रुबाइ — आरम्भ: “कारी अनहार मेघ, आ नै होइए”। प्रारम्भिक काव्य-रचना; संक्षिप्त रूप, बिम्ब-घनत्व आ कथ्य-संघनन।

कता १ — आरम्भ: “एक्केटा गप बुझबैत साँझ भेल बुझाइए”। प्रारम्भिक काव्य-रचना; संक्षिप्त रूप, बिम्ब-घनत्व आ कथ्य-संघनन।

कता २ — आरम्भ: “सबहक सपना समेटल आ आगाँ बढ़लौं”। प्रारम्भिक काव्य-रचना; संक्षिप्त रूप, बिम्ब-घनत्व आ कथ्य-संघनन।

गजल 1 — मोन पड़ैए। मात्रा-क्रम: २३–२४; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: मोन पड़ैए। आरम्भ: “साँझ उतरते तँ अपन दुआर मोन पड़ैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 2 — रहि गेल। मात्रा-क्रम: १९–२०; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: रहि गेल। आरम्भ: “जे कहबाक छल, से बात तँ रहि गेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 3 — आउ ने। मात्रा-क्रम: १९–२०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: आउ ने। आरम्भ: “एहि सुनसान घरक दुआर आउ ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 4 — कहियो नै। मात्रा-क्रम: १९–२०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: कहियो नै। आरम्भ: “मोन बेचब ई व्यापार कहियो नै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 5 — अहाँक बाद। मात्रा-क्रम: २२; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: अहाँक बाद। आरम्भ: “घर तँ घर रहल, नै संसार अहाँक बाद”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 6 — सुनैछी। मात्रा-क्रम: १९–२०; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: सुनैछी। आरम्भ: “खिड़की पर एखन बरसात सुनैछी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 7 — बदलि गेल। मात्रा-क्रम: १८; काफिया-रदीफ: –ाम · रदीफ: बदलि गेल। आरम्भ: “ओही ठाम छी, गाम बदलि गेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 8 — रहि जाउ। मात्रा-क्रम: २२–२४; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: रहि जाउ। आरम्भ: “सभ बात तँ बिसरि जाउ, नेहक सार रहि जाउ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 9 — कतेक दिन। मात्रा-क्रम: १८–२०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: कतेक दिन। आरम्भ: “मौनक बोझ कने उधार कतेक दिन”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 10 — बाकी अछि। मात्रा-क्रम: १९–२०; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: बाकी अछि। आरम्भ: “राति गेलो नै, ई भोर बाकी अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 11 — एखन धरि। मात्रा-क्रम: १८–२४; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: एखन धरि। आरम्भ: “तोहर कहल ओ बात एखन धरि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 12 — कहू ने। मात्रा-क्रम: १६–२२; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: कहू ने। आरम्भ: “मोनक भीतर कोन दुआर कहू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 13 — के जानै। मात्रा-क्रम: १७–२०; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: के जानै। आरम्भ: “ककर मोनमे कोन बात के जानै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 14 — राति भरि। मात्रा-क्रम: २०–२६; काफिया-रदीफ: –आइल · रदीफ: राति भरि। आरम्भ: “तोहर सुर मोनमे समाइल राति भरि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 15 — रहए दिअ। मात्रा-क्रम: १७–२२; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: रहए दिअ। आरम्भ: “एक पुरनका दुआर रहए दिअ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 16 — आइयो। मात्रा-क्रम: १६–२०; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: आइयो। आरम्भ: “साँझ होइते हमर दुआर आइयो”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 17 — कतेक दूर। मात्रा-क्रम: १६–२१; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: कतेक दूर। आरम्भ: “घर लग अछि, दुआर कतेक दूर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 18 — एखनहु। मात्रा-क्रम: १५–२०; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: एखनहु। आरम्भ: “मोनमे बचल आस एखनहु”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 19 — फेर भेटत। मात्रा-क्रम: १६–२०; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: फेर भेटत। आरम्भ: “जतऽ छुटल दुआर फेर भेटत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 20 — रहबे करत। मात्रा-क्रम: १६–२१; काफिया-रदीफ: –ओर · रदीफ: रहबे करत। आरम्भ: “राति कतबो, भोर रहबे करत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 21 — घुरि आउ ने। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: घुरि आउ ने। आरम्भ: “साँझ गुम्म भेल, थाकल दुआर घुरि आउ ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 22 — कहू तँ सही। मात्रा-क्रम: १८–२१; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: कहू तँ सही। आरम्भ: “ककरा देलियै ई बात कहू तँ सही”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 23 — मोनमे अछि। मात्रा-क्रम: १६–२२; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: मोनमे अछि। आरम्भ: “गाम घुरबाक आस मोनमे अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 24 — बदलि गेलै। मात्रा-क्रम: १९–२३; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: बदलि गेलै। आरम्भ: “घर ओही ठाम, मुदा दुआर बदलि गेलै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 25 — बाकी अछि। मात्रा-क्रम: १७–२०; काफिया-रदीफ: –ीत · रदीफ: बाकी अछि। आरम्भ: “टूटल स्वरमे एक गीत बाकी अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 26 — जाइत छी। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –रि · रदीफ: जाइत छी। आरम्भ: “भीड़मे अपन नाम बिसरि जाइत छी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 27 — बाँचल अछि। मात्रा-क्रम: १६–२१; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: बाँचल अछि। आरम्भ: “मोनमे कने आस बाँचल अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 28 — नै भूलब। मात्रा-क्रम: १७–२१; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: नै भूलब। आरम्भ: “पहिल बेर खुलल ओ दुआर नै भूलब”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 29 — देखै छी। मात्रा-क्रम: १६–२१; काफिया-रदीफ: –आल · रदीफ: देखै छी। आरम्भ: “गामक बदलैत हाल देखै छी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 30 — बाँचि रहल अछि। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –ीत · रदीफ: बाँचि रहल अछि। आरम्भ: “टूटल घरमे एक गीत बाँचि रहल अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 31 — याद रहत। मात्रा-क्रम: २०–२४; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: याद रहत। आरम्भ: “जे दिन छोड़लौं घरक दुआर याद रहत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 32 — बाजि उठैए। मात्रा-क्रम: २१–२५; काफिया-रदीफ: –ीत · रदीफ: बाजि उठैए। आरम्भ: “साँझ उतरैते पुरनका गीत बाजि उठैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 33 — नै बिकत। मात्रा-क्रम: १५–२५; काफिया-रदीफ: –आन · रदीफ: नै बिकत। आरम्भ: “पाइ बढ़ि जाए, मुदा मान नै बिकत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 34 — घुरि अबैए। मात्रा-क्रम: १९–२४; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: घुरि अबैए। आरम्भ: “मेह पड़िते ओ बहार घुरि अबैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 35 — ठाढ़ रहत। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: ठाढ़ रहत। आरम्भ: “सभटा टूटत, कने आस ठाढ़ रहत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 36 — सुनाइ पड़ैए। मात्रा-क्रम: १९–२५; काफिया-रदीफ: –ओर · रदीफ: सुनाइ पड़ैए। आरम्भ: “मौन भीतर कतेक शोर सुनाइ पड़ैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 37 — बुझाइ पड़ैए। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: बुझाइ पड़ैए। आरम्भ: “चुप्पीमे सेहो बात बुझाइ पड़ैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 38 — छोड़ि देलहुँ। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: छोड़ि देलहुँ। आरम्भ: “तोहर घुरबाक आस छोड़ि देलहुँ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 39 — लिखैत रहू। मात्रा-क्रम: १७–२४; काफिया-रदीफ: ीत · रदीफ: लिखैत रहू। आरम्भ: “कागज पर अपन गीत लिखैत रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 40 — जागि रहल अछि। मात्रा-क्रम: १९–२५; काफिया-रदीफ: –ओर · रदीफ: जागि रहल अछि। आरम्भ: “राति बीतल, कने भोर जागि रहल अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 41 — अछि किएक। मात्रा-क्रम: १७–२०; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: अछि किएक। आरम्भ: “चान एतेक उदास अछि किएक”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 42 — रहि गेल। मात्रा-क्रम: १४–१९; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: रहि गेल। आरम्भ: “अधकही ओ बात रहि गेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 43 — बाजू ने। मात्रा-क्रम: १४–१९; काफिया-रदीफ: –आल · रदीफ: बाजू ने। आरम्भ: “मोनक असली हाल बाजू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 44 — के कहत। मात्रा-क्रम: १४–१८; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: के कहत। आरम्भ: “मौन भीतर कोन बात के कहत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 45 — एना नहि। मात्रा-क्रम: १४–१७; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: एना नहि। आरम्भ: “नेहकेँ व्यापार एना नहि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 46 — धीरे-धीरे। मात्रा-क्रम: १४–१९; काफिया-रदीफ: –ल · रदीफ: धीरे-धीरे। आरम्भ: “दिन हमर ढलल धीरे-धीरे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 47 — एहि शहरमे। मात्रा-क्रम: १९–२२; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: एहि शहरमे। आरम्भ: “दामक चर्चा, भूखक बात एहि शहरमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 48 — तखन बुझलहुँ। मात्रा-क्रम: १५–१९; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: तखन बुझलहुँ। आरम्भ: “अहाँ चुप भेलहुँ, बात तखन बुझलहुँ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 49 — मोनमे रहत। मात्रा-क्रम: १९–२३; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: मोनमे रहत। आरम्भ: “जाबत देह, कने आस मोनमे रहत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 50 — गीत बनत। मात्रा-क्रम: १५–२०; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: गीत बनत। आरम्भ: “जँ हृदय छूबत, बात गीत बनत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 51 — कहब ने। मात्रा-क्रम: १५–१९; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: कहब ने। आरम्भ: “मोनक साँच बात कहब ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 52 — भेल अछि। मात्रा-क्रम: १५–१७; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: भेल अछि। आरम्भ: “मोन किएक उदास भेल अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 53 — आब नहि। मात्रा-क्रम: १६–२०; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: आब नहि। आरम्भ: “नेहक एहन व्यापार आब नहि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 54 — याद अबैए। मात्रा-क्रम: १७–२१; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: याद अबैए। आरम्भ: “मेहक पहिल बरसात याद अबैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 55 — फेर आउ। मात्रा-क्रम: १७; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: फेर आउ। आरम्भ: “खुलल अछि ई दुआर फेर आउ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 56 — छूटि गेल। मात्रा-क्रम: १५–१९; काफिया-रदीफ: –आम · रदीफ: छूटि गेल। आरम्भ: “रेल चढ़िते गाम छूटि गेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 57 — रहैत अछि। मात्रा-क्रम: १५–१७; काफिया-रदीफ: –ईर · रदीफ: रहैत अछि। आरम्भ: “मौन भीतर पीर रहैत अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 58 — ककरा कहू। मात्रा-क्रम: १५–१९; काफिया-रदीफ: –आल · रदीफ: ककरा कहू। आरम्भ: “गामक एहन हाल ककरा कहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 59 — बुझाइत अछि। मात्रा-क्रम: १३–१८; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: बुझाइत अछि। आरम्भ: “अन्हारो रात बुझाइत अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 60 — रहि जेतै। मात्रा-क्रम: १३–१७; काफिया-रदीफ: –ईत · रदीफ: रहि जेतै। आरम्भ: “नाम मेटत, गीत रहि जेतै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 61 — एहि बेर। मात्रा-क्रम: १५–२१; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: एहि बेर। आरम्भ: “साँझ फेर खुजल दुआर एहि बेर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 62 — कहैए। मात्रा-क्रम: १६–२१; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: कहैए। आरम्भ: “मौन भीतर बहुत बात कहैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 63 — रहू ने। मात्रा-क्रम: १६–२३; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: रहू ने। आरम्भ: “सभ बन्द हो, एक दुआर रहू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 64 — किएक नै। मात्रा-क्रम: १५–२०; काफिया-रदीफ: –ओर · रदीफ: किएक नै। आरम्भ: “राति अछि तँ भोर किएक नै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 65 — आबो अछि। मात्रा-क्रम: १५–१९; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: आबो अछि। आरम्भ: “घुरि एबाक आस आबो अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 66 — देखू ने। मात्रा-क्रम: १६–१९; काफिया-रदीफ: –आल · रदीफ: देखू ने। आरम्भ: “खेतक एखन हाल देखू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 67 — घुरि चलू। मात्रा-क्रम: १६–२०; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: घुरि चलू। आरम्भ: “बहुत भेल शहरक दुआर, घुरि चलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 68 — कहियो-कहियो। मात्रा-क्रम: २०–२३; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: कहियो-कहियो। आरम्भ: “चुप्पी बनि जाइत बात कहियो-कहियो”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 69 — तखनियो। मात्रा-क्रम: १६–२१; काफिया-रदीफ: –ीत · रदीफ: तखनियो। आरम्भ: “स्वर टूटए, रहत गीत तखनियो”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 70 — सुनैत रहू। मात्रा-क्रम: १६–२३; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: सुनैत रहू। आरम्भ: “मौन भीतरक बात सुनैत रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 71 — फेरो कहू। मात्रा-क्रम: २५–२९; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: फेरो कहू। आरम्भ: “जे गप मोनमे दाबि रखने छी, बात फेरो कहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 72 — एखन बाकी अछि। मात्रा-क्रम: २६–३०; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: एखन बाकी अछि। आरम्भ: “हारि कऽ लौटि एलहुँ, तइयो आस एखन बाकी अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 73 — लगैए। मात्रा-क्रम: १८–२४; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: लगैए। आरम्भ: “तोहर स्वर सुनिते पुरनका दुआर लगैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 74 — कोना होएत। मात्रा-क्रम: २१–३०; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: कोना होएत। आरम्भ: “नाव छै, धार तेज—एहि धारक पार कोना होएत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 75 — रहि जाए। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –ीत · रदीफ: रहि जाए। आरम्भ: “शब्द थाकए, मुदा गीत रहि जाए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 76 — ओहि पार। मात्रा-क्रम: १७–२०; काफिया-रदीफ: ीर · रदीफ: ओहि पार। आरम्भ: “नाव एत ऽ, आँखिक नीर ओहि पार”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 77 — बुझि गेलहुँ। मात्रा-क्रम: १५–१९; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: बुझि गेलहुँ। आरम्भ: “अहाँ चुप भेलहुँ, बात बुझि गेलहुँ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 78 — एहि रातिमे। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: एहि रातिमे। आरम्भ: “के खोललक मोनक दुआर एहि रातिमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 79 — आब की। मात्रा-क्रम: १५–१९; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: आब की। आरम्भ: “टूटि गेल जँ विश्वास, आब की”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 80 — सुनि लिअ। मात्रा-क्रम: १५–१९; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: सुनि लिअ। आरम्भ: “मोनक धीमी पुकार सुनि लिअ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 81 — एखनहुँ। मात्रा-क्रम: १५–२०; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: एखनहुँ। आरम्भ: “घुरि एबाक आस एखनहुँ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 82 — घुरि आउ। मात्रा-क्रम: १७–२१; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: घुरि आउ। आरम्भ: “साँझ फेर खोललक दुआर, घुरि आउ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 83 — कहियो ने। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: कहियो ने। आरम्भ: “मोनक असली बात कहियो ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 84 — मोन मानै नहि। मात्रा-क्रम: १९–२२; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: मोन मानै नहि। आरम्भ: “एतेक जल्दी हार, मोन मानै नहि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: सामाजिक नैतिकता।

गजल 85 — रहि गेलै। मात्रा-क्रम: १६–२२; काफिया-रदीफ: ीत · रदीफ: रहि गेलै। आरम्भ: “शब्द थमल, एक गीत रहि गेलै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 86 — आब कहू। मात्रा-क्रम: १७–२२; काफिया-रदीफ: –आल · रदीफ: आब कहू। आरम्भ: “मोनक असली हाल आब कहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 87 — बिसरब नहि। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: बिसरब नहि। आरम्भ: “पहिल बेर खुलल ओ दुआर बिसरब नहि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 88 — तइयो। मात्रा-क्रम: १४–२४; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: तइयो। आरम्भ: “सभटा बाट बन्द, आस तइयो”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 89 — ओहि दिस। मात्रा-क्रम: १६–२१; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: ओहि दिस। आरम्भ: “साँझ खोललक दुआर ओहि दिस”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 90 — गीत बनि जाए। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: गीत बनि जाए। आरम्भ: “जँ हृदय छूबि जाए, बात गीत बनि जाए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 91 — कने ठहरू। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: कने ठहरू। आरम्भ: “राति एखन अछि, दुआर कने ठहरू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; किशोर-अनुशासन।

गजल 92 — एखन धरि। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: एखन धरि। आरम्भ: “जे कहबाक छल, ओ बात एखन धरि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 93 — कने सुनू। मात्रा-क्रम: १५–२३; काफिया-रदीफ: –ओर · रदीफ: कने सुनू। आरम्भ: “मौन भीतरक शोर कने सुनू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 94 — रहए दिअ। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: रहए दिअ। आरम्भ: “सभ हिसाबमे किछु उधार रहए दिअ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 95 — के जानै। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: के जानै। आरम्भ: “ककर मोनमे कोन बात के जानै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 96 — फेर भेटत। मात्रा-क्रम: १७–२१; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: फेर भेटत। आरम्भ: “जतऽ छुटल छल ओ दुआर फेर भेटत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 97 — एना किए। मात्रा-क्रम: १६–२२; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: एना किए। आरम्भ: “मोनमे एतेक पियास एना किए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 98 — आबो रहत। मात्रा-क्रम: १६–२१; काफिया-रदीफ: ◌ीत · रदीफ: आबो रहत। आरम्भ: “शब्द थाकत, गीत आबो रहत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 99 — नै भूलब। मात्रा-क्रम: १८–२१; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: नै भूलब। आरम्भ: “पहिल बेर खुलल ओ दुआर नै भूलब”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 100 — बाँचल रहत। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: ◌ीत · रदीफ: बाँचल रहत। आरम्भ: “नाम मेटत, गीत बाँचल रहत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 101 — मानक दाम। मात्रा-क्रम: २०; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: कहियो नै। आरम्भ: “नेहकेँ बनेब व्यापार कहियो नै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल **102** — घरक दुआर। मात्रा-क्रम: २४; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: मोन पड़ैए। आरम्भ: “राति उतरते तँ घरक दुआर मोन पड़ैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल **103** — रहि जाए। मात्रा-क्रम: २०; काफिया-रदीफ: ीत · रदीफ: रहि जाए। आरम्भ: “नाम मेटए मुदा गीत रहि जाए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल **104** — कतेक दिन। मात्रा-क्रम: २०; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: कतेक दिन। आरम्भ: “बोलक आगाँ तँ दीवार कतेक दिन”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; समकालीन माध्यम।

गजल **105** — एखनहुँ। मात्रा-क्रम: २०; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: एखनहुँ। आरम्भ: “हारि गेलहुँ, ई बचल आस एखनहुँ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल **106** — सुनि लिअ। मात्रा-क्रम: १६; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: सुनि लिअ। आरम्भ: “मोनक धीमी पुकार सुनि लिअ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल **107** — तइयो। मात्रा-क्रम: १६; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: तइयो। आरम्भ: “सभटा बाट बन्द, आस तइयो”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल **108** — आब कहू। मात्रा-क्रम: १८; काफिया-रदीफ: –आल · रदीफ: आब कहू। आरम्भ: “मोनक तँ असली हाल आब कहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल **109** — नै भूलब। मात्रा-क्रम: २०; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: नै भूलब। आरम्भ: “बाढ़िक रातिक ओ हँकार नै भूलब”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल **110** — बाँचल रहत। मात्रा-क्रम: २०; काफिया-रदीफ: ीत · रदीफ: बाँचल रहत। आरम्भ: “नाम मेटत, मुदा गीत बाँचल रहत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 111 — कने बाजू। मात्रा-क्रम: १६–२२; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: कने बाजू। आरम्भ: “मोनमे उठल पुकार कने बाजू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 112 — नै कहब। मात्रा-क्रम: १५–२०; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: नै कहब। आरम्भ: “नेहकेँ व्यापार नै कहब”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 113 — याद आबैए। मात्रा-क्रम: १७–२२; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: याद आबैए। आरम्भ: “साँझ पड़िते दुआर याद आबैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 114 — बुझू कने। मात्रा-क्रम: १६–२०; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: बुझू कने। आरम्भ: “मौन भीतरक बात बुझू कने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 115 — फेर होएत। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: फेर होएत। आरम्भ: “सूखल गाछिमे बहार फेर होएत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 116 — ओहि ठाम। मात्रा-क्रम: १५–२०; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: ओहि ठाम। आरम्भ: “जतऽ बचल अछि आस ओहि ठाम”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 117 — रहैत अछि। मात्रा-क्रम: १६–२२; काफिया-रदीफ: ीत · रदीफ: रहैत अछि। आरम्भ: “मौन भीतर एक गीत रहैत अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 118 — कनी बात। मात्रा-क्रम: २२–२५; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: कहू ने। आरम्भ: “जिया मौन कनी देर, जगत सार कहू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 119 — अपन मान। मात्रा-क्रम: २३–२५; काफिया-रदीफ: –आन · रदीफ: रखू ने। आरम्भ: “जगत बीच अलग चाल, अपन मान रखू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 120 — कनी बाट। मात्रा-क्रम: २३–२५; काफिया-रदीफ: –आट · रदीफ: चलै छी। आरम्भ: “जिया मौन कनी देर, कनी बाट चलै छी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 121 — जतन गीत। मात्रा-क्रम: २२–२५; काफिया-रदीफ: ◌ीत · रदीफ: लिखै छी। आरम्भ: “जिया मे कनी पीर, जतन गीत लिखै छी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 122 — नेहक थाह। मात्रा-क्रम: २२–२५; काफिया-रदीफ: –एह · रदीफ: बुझू ने। आरम्भ: “नयन नीर जिया मौन, तकर नेह बुझू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 123 — ओहि पार। मात्रा-क्रम: २२–२५; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: तकै छी। आरम्भ: “जिया मौन कनी देर, नदी पार तकै छी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 124 — गामक सुर। मात्रा-क्रम: २३–२५; काफिया-रदीफ: ◌ीत · रदीफ: गबै छी। आरम्भ: “उगल भोर पवन संग, जतन गीत गबै छी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 125 — कने रहू। मात्रा-क्रम: १८–२४; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: कने रहू। आरम्भ: “साँझ एखन उतरि रहल, दुआर कने रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 126 — भूलि नहि जाउ। मात्रा-क्रम: १९–२७; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: भूलि नहि जाउ। आरम्भ: “जे घर पहिल बेर खोललक दुआर, भूलि नहि जाउ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 127 — ओतबे काफी। मात्रा-क्रम: १९–२३; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: ओतबे काफी। आरम्भ: “मोनसँ कहल एक बात ओतबे काफी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 128 — ककरो लेल। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –ीत · रदीफ: ककरो लेल। आरम्भ: “लिखि दिअ एकटा गीत ककरो लेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 129 — एखनो सुनू। मात्रा-क्रम: १७–२१; काफिया-रदीफ: –ओर · रदीफ: एखनो सुनू। आरम्भ: “मौन भीतरक शोर एखनो सुनू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 130 — फेर लिखब। मात्रा-क्रम: १७–२४; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: फेर लिखब। आरम्भ: “जे बात एखन अधूरी, विचार फेर लिखब”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 131 — फेरो सही। मात्रा-क्रम: १९–२२; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: फेरो सही। आरम्भ: “आइ नहि तँ काल्हि बात फेरो सही”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 132 — घर चलू। मात्रा-क्रम: २०–२३; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: घर चलू। आरम्भ: “साँझ खोललक पुरनका दुआर, घर चलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 133 — साँच कहू। मात्रा-क्रम: १६–२३; काफिया-रदीफ: –आत · रदीफ: साँच कहू। आरम्भ: “मोनमे जे अछि ओ बात, साँच कहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 134 — रहि सकैए। मात्रा-क्रम: १९–२५; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: रहि सकैए। आरम्भ: “सभ टूटलापर कने आस रहि सकैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; किशोर-अनुशासन।

गजल 135 — एतबे रहय। मात्रा-क्रम: १९–२३; काफिया-रदीफ: ीत · रदीफ: एतबे रहय। आरम्भ: “कंठमे बाँचल गीत एतबे रहय”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 136 — फेर जनमत। मात्रा-क्रम: २०–२५; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: फेर जनमत। आरम्भ: “सूखल गाछिमे एक दिन बहार फेर जनमत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 137 — आब नहि। मात्रा-क्रम: १६–२१; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: आब नहि। आरम्भ: “मोनपर राखब उधार आब नहि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 138 — तखन देखब। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: तखन देखब। आरम्भ: “राति बीतत, खुलत दुआर, तखन देखब”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 139 — कने बचाउ। मात्रा-क्रम: १९–२४; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: कने बचाउ। आरम्भ: “घर बदलू, मुदा दुआर कने बचाउ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 140 — नै बदलू। मात्रा-क्रम: १६–१९; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: नै बदलू। आरम्भ: “दिन बदलए, मुदा प्यार नै बदलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 141 — एखनो अछि। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –आस · रदीफ: एखनो अछि। आरम्भ: “घुरि एबाक कने आस एखनो अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 142 — फेर गाबू। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: ीत · रदीफ: फेर गाबू। आरम्भ: “स्वर थाकल तँ कने गीत फेर गाबू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 143 — घरमे बाजू। मात्रा-क्रम: १९–२३; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: घरमे बाजू। आरम्भ: “अपन भाषाक पुकार घरमे बाजू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 144 — संग रहू। मात्रा-क्रम: १७–२४; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: संग रहू। आरम्भ: “दिन कठिन हो तँ बनि आधार संग रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 145 — फेर उठू। मात्रा-क्रम: १६–२१; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: फेर उठू। आरम्भ: “आइ भेटल जँ हार, फेर उठू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 146 — कने लिखू। मात्रा-क्रम: १६–२१; काफिया-रदीफ: –ाम · रदीफ: कने लिखू। आरम्भ: “धूरिमे मेटल नाम कने लिखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 147 — तइयो चलू। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –ाह · रदीफ: तइयो चलू। आरम्भ: “धूरि भरल अछि राह, तइयो चलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 148 — रहय दिअ। मात्रा-क्रम: १४–२३; काफिया-रदीफ: –ोल · रदीफ: रहय दिअ। आरम्भ: “घरमे अपन बोल रहय दिअ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 149 — ककरा कहब। मात्रा-क्रम: १७–२१; काफिया-रदीफ: –ीर · रदीफ: ककरा कहब। आरम्भ: “मोनमे जागल पीर ककरा कहब”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 150 — फेर आबि गेल। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: फेर आबि गेल। आरम्भ: “मेह पड़िते माटिक रंग फेर आबि गेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 151 — नै झुकब। मात्रा-क्रम: १५–२२; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: नै झुकब। आरम्भ: “भूख सहब, मुदा मान नै झुकब”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 152 — मोनमे रहत। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: ेर · रदीफ: मोनमे रहत। आरम्भ: “भेट भेल एक बेर मोनमे रहत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; किशोर-अनुशासन।

गजल 153 — कने छोड़ू। मात्रा-क्रम: १६–२५; काफिया-रदीफ: ार · रदीफ: कने छोड़ू। आरम्भ: “मोनपर एतेक भार कने छोड़ू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 154 — समय कहत। मात्रा-क्रम: १७–२४; काफिया-रदीफ: ात · रदीफ: समय कहत। आरम्भ: “के सही छल, के गलत—ई बात समय कहत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 155 — संग बाँचू। मात्रा-क्रम: १७–२१; काफिया-रदीफ: ंग · रदीफ: संग बाँचू। आरम्भ: “दुखक दिनमे मीतक संग बाँचू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 156 — नै बिसरू। मात्रा-क्रम: १५–२४; काफिया-रदीफ: ाम · रदीफ: नै बिसरू। आरम्भ: “जे हाथ देलक नाम, नै बिसरू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 157 — एना रहू। मात्रा-क्रम: १८–२५; काफिया-रदीफ: ीत · रदीफ: एना रहू। आरम्भ: “मोनमे कने गीत, एना रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 158 — फेर बजत। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: ोर · रदीफ: फेर बजत। आरम्भ: “मौन बहुत अछि, मुदा शोर फेर बजत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 159 — अपन रहू। मात्रा-क्रम: १४–२३; काफिया-रदीफ: ान · रदीफ: अपन रहू। आरम्भ: “दाम बढ़ए, मुदा मान अपन रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 160 — धीरे चलू। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: ेर · रदीफ: धीरे चलू। आरम्भ: “बाट लम्बा अछि फेर, धीरे चलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 161 — चिट्ठी खोलू। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: चिट्ठी खोलू। आरम्भ: “बहुत दिनक दबल बात, चिट्ठी खोलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 162 — धार कहैए। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: धार कहैए। आरम्भ: “चुप्पीमे सेहो नीर, धार कहैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 163 — मान रखू। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: मान रखू। आरम्भ: “कठिन दिनमे जान, मान रखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 164 — मौन सुनू। मात्रा-क्रम: १५–२३; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: मौन सुनू। आरम्भ: “शब्द थाकल अछि, शोर—मौन सुनू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 165 — पोथी बाँचू। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: पोथी बाँचू। आरम्भ: “शब्दमे अपन विचार, पोथी बाँचू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 166 — घुरि देखू। मात्रा-क्रम: १७–२२; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: घुरि देखू। आरम्भ: “जेठक धूरिमे छुटल दुआर, घुरि देखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 167 — धीरे कहू। मात्रा-क्रम: १८–२४; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: धीरे कहू। आरम्भ: “अधरमे रहि गेल बात, धीरे कहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 168 — जगैत रहू। मात्रा-क्रम: १८–२५; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: जगैत रहू। आरम्भ: “आँखिमे कने आस, जगैत रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; किशोर-अनुशासन।

गजल 169 — याद रहत। मात्रा-क्रम: १५–२४; काफिया-रदीफ: –ाम · रदीफ: याद रहत। आरम्भ: “धूरिमे मेटल नाम याद रहत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 170 — मोन खोलू। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –ोल · रदीफ: मोन खोलू। आरम्भ: “रूसल छी तँ अपन बोल, मोन खोलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 171 — ठाढ़ रहू। मात्रा-क्रम: १६–२२; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: ठाढ़ रहू। आरम्भ: “टूटि नहि जाए मान, ठाढ़ रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 172 — एतबे बहुत। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –ीत · रदीफ: एतबे बहुत। आरम्भ: “लोकक ओठपर गीत, एतबे बहुत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 173 — घुरि आबू। मात्रा-क्रम: १४–२६; काफिया-रदीफ: –ेर · रदीफ: घुरि आबू। आरम्भ: “बहुत भेल ई देर, घुरि आबू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 174 — कने बैसू। मात्रा-क्रम: १८–२५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: कने बैसू। आरम्भ: “उमेर देलक कने भार, कने बैसू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 175 — नामसँ आगाँ। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –াম · रदीफ: सँ आगाँ। आरम्भ: “मनुखक मोल अछि नामसँ आगाँ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 176 — एखनो बाँचल अछि। मात्रा-क्रम: १९–२४; काफिया-रदीफ: –াস · रदीफ: एखनो बाँचल अछि। आरम्भ: “पुरनका अँचरक सुवास एखनो बाँचल अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 177 — मौन राखू। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: मौन राखू। आरम्भ: “सभ बातपर नहि शोर, मौन राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 178 — फेर पढ़ू। मात्रा-क्रम: १५–२३; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: फेर पढ़ू। आरम्भ: “पुरनका पन्नाक विचार, फेर पढ़ू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 179 — रहय। मात्रा-क्रम: ११–२५; काफिया-रदीफ: –ीत · रदीफ: रहय। आरम्भ: “रोष रहय, मुदा प्रीत रहय”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; सामाजिक नैतिकता।

गजल 180 — आजसँ फेर। मात्रा-क्रम: १६–२६; काफिया-रदीफ: –ाह · रदीफ: आजसँ फेर। आरम्भ: “बन्द बुझायल राह खोलू आजसँ फेर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 181 — एखनो चलू। मात्रा-क्रम: १८–२४; काफिया-रदीफ: –ाह · रदीफ: एखनो चलू। आरम्भ: “थाकल पएरमे बचल राह, एखनो चलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 182 — नाम लिखू। मात्रा-क्रम: १५–२४; काफिया-रदीफ: –াম · रदीफ: नाम लिखू। आरम्भ: “जे हाथ दिनभरि करै काम, नाम लिखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 183 — घरमे रहय। मात्रा-क्रम: १६–२६; काफिया-रदीफ: –োল · रदीफ: घरमे रहय। आरम्भ: “अपन माइक सहज बोल घरमे रहय”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 184 — संग रहत। मात्रा-क्रम: १७–२४; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: संग रहत। आरम्भ: “कठिन दिनमे जे आधार संग रहत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 185 — खोलि देखू। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –াত · रदीफ: खोलि देखू। आरम्भ: “पुरनका चिट्ठीक बात, खोलि देखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 186 — चुप नहि रहू। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: चुप नहि रहू। आरम्भ: “मोनमे उठल पुकार, चुप नहि रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 187 — फेर शुरू करू। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: फेर शुरू करू। आरम्भ: “एक नब प्रयास, फेर शुरू करू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 188 — देर भऽ गेल। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: देर भऽ गेल। आरम्भ: “मोनमे दबि रहल बात, देर भऽ गेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 189 — फेर भेटू। मात्रा-क्रम: १८–२५; काफिया-रदीफ: ेर · रदीफ: फेर भेटू। आरम्भ: “ई विदा अन्तिम नहि, एक बेर फेर भेटू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 190 — कने राखू। मात्रा-क्रम: १७–२२; काफिया-रदीफ: ोल · रदीफ: कने राखू। आरम्भ: “घरमे अपन बोल, कने राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 191 — आब बुझू। मात्रा-क्रम: १६–२८; काफिया-रदीफ: –াম · रदीफ: आब बुझू। आरम्भ: “धूरिमे मेटल नाम, आब बुझू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 192 — एखन बाकी। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: ীত · रदीफ: एखन बाकी। आरम्भ: “कंठमे एक गीत एखन बाकी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 193 — चुप नहि रहू। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: चुप नहि रहू। आरम्भ: “मोनमे उठल पुकार, चुप नहि रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 194 — फेर चलू। मात्रा-क्रम: १६–२२; काफिया-रदीफ: –ाह · रदीफ: फेर चलू। आरम्भ: “रुकि गेलहुँ तँ चुनू राह, फेर चलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 195 — कने थामू। मात्रा-क्रम: १६–२२; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: कने थामू। आरम्भ: “मोनपर एतेक भार, कने थामू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 196 — ककरा बुझाबू। मात्रा-क्रम: १९–२२; काफिया-रदीफ: –ीर · रदीफ: ककरा बुझाबू। आरम्भ: “मोनक एहन पीर, ककरा बुझाबू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 197 — बाँचि रहय। मात्रा-क्रम: १५–२३; काफिया-रदीफ: –ीत · रदीफ: बाँचि रहय। आरम्भ: “लोकक ओठपर गीत बाँचि रहय”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 198 — घुरि देखब। मात्रा-क्रम: १५–२३; काफिया-रदीफ: –াম · रदीफ: घुरि देखब। आरम्भ: “समय मेटाओत नाम, घुरि देखब”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 199 — एहि बेर। मात्रा-क्रम: १५–२४; काफिया-रदीफ: –াহ · रदीफ: एहि बेर। आरम्भ: “अपन चुनब राह एहि बेर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 200 — मौन रहैए। मात्रा-क्रम: २१–२५; काफिया-रदीफ: –োর · रदीफ: मौन रहैए। आरम्भ: “सभतरि अछि शोर, मुदा मोन मौन रहैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 201 — अहाँ रहू। मात्रा-क्रम: १५–२६; काफिया-रदीफ: –াস · रदीफ: अहाँ रहू। आरम्भ: “दूर रहू, मोनक पास अहाँ रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 202 — धीरे-धीरे। मात्रा-क्रम: २०–२२; काफिया-रदीफ: –ের · रदीफ: धीरे-धीरे। आरम्भ: “उमेर खोलै अपन फेर, धीरे-धीरे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 203 — हाथक मोल। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –াম · रदीफ: याद रखू। आरम्भ: “जे हाथ करै चुप काम, याद रखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 204 — घरमे बाजू। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –োল · रदीफ: घरमे बाजू। आरम्भ: “अपन माइक बोल घरमे बाजू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 205 — बाँचि रहय। मात्रा-क्रम: १७–२८; काफिया-रदीफ: –ার · रदीफ: बाँचि रहय। आरम्भ: “घर बदलए, मुदा आकार बाँचि रहय”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 206 — एतबे नेह। मात्रा-क्रम: १९–२२; काफिया-रदीफ: –াত · रदीफ: एतबे नेह। आरम्भ: “मोनसँ कहल एक बात—एतबे नेह”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 207 — समय रहत। मात्रा-क्रम: १५–२१; काफिया-रदीफ: –ীত · रदीफ: समय रहत। आरम्भ: “नाम नहि रहत, गीत समय रहत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 208 — फेर लिखू। मात्रा-क्रम: १६–२६; काफिया-रदीफ: –ার · रदीफ: फेर लिखू। आरम्भ: “जे बात एखन अधूरी, विचार फेर लिखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 209 — एहि मोड़पर। मात्रा-क्रम: १९–२३; काफिया-रदीफ: –ের · रदीफ: एहि मोड़पर। आरम्भ: “पाछाँ ताकलहुँ एक फेर, एहि मोड़पर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 210 — कने बुझू। मात्रा-क्रम: १७–२२; काफिया-रदीफ: –াস · रदीफ: कने बुझू। आरम्भ: “सूखल माटिक प्यास, कने बुझू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 211 — बाँचि रहू। मात्रा-क्रम: १५–२३; काफिया-रदीफ: –ोल · रदीफ: बाँचि रहू। आरम्भ: “घरक अपन बोल, बाँचि रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 212 — मान राखू। मात्रा-क्रम: १५–२३; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: मान राखू। आरम्भ: “कमाइ कम हो, मान राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 213 — ओहि पार। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –ीर · रदीफ: ओहि पार। आरम्भ: “घर एतऽ अछि, खेतक तीर ओहि पार”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 214 — फेर खिलत। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: फेर खिलत। आरम्भ: “सूखल पातमे हरियर रंग फेर खिलत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 215 — अपन राह। मात्रा-क्रम: १५–२४; काफिया-रदीफ: –ाह · रदीफ: अपन राह। आरम्भ: “लोक कहत अनेक राह—अपन राह”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 216 — फेर सँ लिखू। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: फेर सँ लिखू। आरम्भ: “जे अधूरा अछि विचार, फेर सँ लिखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 217 — एक बेर आर। मात्रा-क्रम: १९–२३; काफिया-रदीफ: –ेर · रदीफ: एक बेर आर। आरम्भ: “पाछाँ ताकू फेर, एक बेर आर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 218 — माटि कहैए। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –ाम · रदीफ: माटि कहैए। आरम्भ: “हाथ चिन्है अपन काम, माटि कहैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 219 — मोनमे बचल। मात्रा-क्रम: १६–२३; काफिया-रदीफ: –ीत · रदीफ: मोनमे बचल। आरम्भ: “एक अधूरा गीत मोनमे बचल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 220 — अपन कहू। मात्रा-क्रम: १६–२२; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: अपन कहू। आरम्भ: “कम हो दाम, मुदा मान अपन कहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 221 — आबो महकैत। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: आबो महकैत। आरम्भ: “पुरनका अँचरक सुवास आबो महकैत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 222 — फेर भेटत। मात्रा-क्रम: १६–२०; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: फेर भेटत। आरम्भ: “छुटल मीतक संग फेर भेटत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 223 — मेहक बाद। मात्रा-क्रम: १९–२५; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: फेर जागल। आरम्भ: “मेह छुबिते माटिक रंग फेर जागल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 224 — मौनक स्वर। मात्रा-क्रम: १७–२०; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: कने सुनियौ। आरम्भ: “मौनक भीतर शोर कने सुनियौ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 225 — नदीक वचन। मात्रा-क्रम: १९–२२; काफिया-रदीफ: –ीर · रदीफ: नदी कहैए। आरम्भ: “चलैत रहू बनि नीर, नदी कहैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 226 — पोथीक भीतर। मात्रा-क्रम: १६–२२; काफिया-रदीफ: –াম · रदीफ: पन्नामे अछि। आरम्भ: “धूरिमे मेटल नाम पन्नामे अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 227 — उमेरक साँझ। मात्रा-क्रम: १९–२३; काफिया-रदीफ: ेर · रदीफ: एहि उमेरमे। आरम्भ: “पाछाँ ताकू एक फेर एहि उमेरमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 228 — श्रमक गरिमा। मात्रा-क्रम: १६–२५; काफिया-रदीफ: –ाम · रदीफ: मान दिअ। आरम्भ: “धूरि सानैत हाथक काम—मान दिअ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 229 — ओहि चुप्पीमे। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: ओहि चुप्पीमे। आरम्भ: “कहि नहि सकलहुँ बात ओहि चुप्पीमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 230 — घड़ी रुकल छल। मात्रा-क्रम: १७–२४; काफिया-रदीफ: ेर · रदीफ: घड़ी रुकल छल। आरम्भ: “दीवारपर एक फेर—घड़ी रुकल छल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 231 — स्याहीक गन्ध। मात्रा-क्रम: १९–२४; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: स्याहीमे अछि। आरम्भ: “बहुत दिनक दबल बात स्याहीमे अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 232 — कारीगरक हाथ। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –ाम · रदीफ: हाथ कहैए। आरम्भ: “घाममे पकैत काम हाथ कहैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; लोकजीवन-श्रम।

गजल 233 — साँझक रेल। मात्रा-क्रम: १७–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: रेल चलि गेल। आरम्भ: “हाथ हिलैत रहल दुआर—रेल चलि गेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 234 — फेर सोझाँ। मात्रा-क्रम: १६–२३; काफिया-रदीफ: –ोल · रदीफ: फेर सोझाँ। आरम्भ: “रूसल छल जे बोल—फेर सोझाँ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 235 — अपन उजास। मात्रा-क्रम: १६–२५; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: अपन उजास। आरम्भ: “रातिमे राखू आस—अपन उजास”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 236 — अधूरा पन्ना। मात्रा-क्रम: १६–२३; काफिया-रदीफ: –ीत · रदीफ: अधूरा नहि। आरम्भ: “एक पाँती रुकल तऽ गीत अधूरा नहि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 237 — पुरनका रेडियो। मात्रा-क्रम: १९–२५; काफिया-रदीफ: –ाज · रदीफ: फेर बजल। आरम्भ: “धूलि झाड़िते आवाज फेर बजल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 238 — मेह उतरला पर। मात्रा-क्रम: २०–२५; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: मेह उतरला पर। आरम्भ: “माटि देलक सुवास मेह उतरला पर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 239 — शहरक कोठरी। मात्रा-क्रम: २०–२४; काफिया-रदीफ: –ाल · रदीफ: एहि कोठरीमे। आरम्भ: “के पूछत मोनक हाल एहि कोठरीमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 240 — औजारक चमक। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: हाथमे अछि। आरम्भ: “पीढ़ीक पुरनका औजार हाथमे अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; लोकजीवन-श्रम।

गजल 241 — देह कहैए। मात्रा-क्रम: १८–२४; काफिया-रदीफ: –ाम · रदीफ: देह कहैए। आरम्भ: “दिन भरि बहुत भेल काम—देह कहैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 242 — चिट्ठीक कोर। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –ाद · रदीफ: चिट्ठीक कोरपर। आरम्भ: “अटकल अछि याद चिट्ठीक कोरपर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 243 — फेर आरम्भ। मात्रा-क्रम: १९–२६; काफिया-रदीफ: –ह · रदीफ: फेर आरम्भ। आरम्भ: “रुकि गेल बाट तऽ खोजू राह—फेर आरम्भ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 244 — जाड़क धूप। मात्रा-क्रम: १९–२६; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: जाड़क धूपमे। आरम्भ: “आँगन भरि पसरल उजास जाड़क धूपमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 245 — बिहानक बजार। मात्रा-क्रम: २१–२४; काफिया-रदीफ: –ाज · रदीफ: बिहान बजारमे। आरम्भ: “पहिल उठै आवाज बिहान बजारमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 246 — करघाक सुर। मात्रा-क्रम: २०–२६; काफिया-रदीफ: ंग · रदीफ: करघा बाजैए। आरम्भ: “सूत्रमे जागै रंग—करघा बाजैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: लोकजीवन-श्रम; नेह-संबन्ध।

गजल 247 — पुरनका पुस्तकालय। मात्रा-क्रम: १९–२६; काफिया-रदीफ: –ाद · रदीफ: पोथी खोलिते। आरम्भ: “धूरिसँ उठै याद पोथी खोलिते”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 248 — अपन सीमा। मात्रा-क्रम: १६–२५; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: सीमा बुझू। आरम्भ: “अपनो अछि मान—सीमा बुझू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 249 — प्रवासक टिकट। मात्रा-क्रम: १९–२७; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: टिकट हाथमे। आरम्भ: “पाछाँ छुटत संसार टिकट हाथमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 250 — नब गीत। मात्रा-क्रम: १७–२४; काफिया-रदीफ: ीत · रदीफ: आब गाबू। आरम्भ: “पुरनका स्वरमे नब गीत आब गाबू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 251 — जाड़क धूप। मात्रा-क्रम: १९–२३; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: धूपमे बैठू। आरम्भ: “आँगन भरि उजास—धूपमे बैठू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 252 — बिहानक बजार। मात्रा-क्रम: १८–२५; काफिया-रदीफ: –ाम · रदीफ: बजार जागल। आरम्भ: “हाथ लगिते काम—बजार जागल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 253 — करघाक धुन। मात्रा-क्रम: १८–२५; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: करघा बाजै। आरम्भ: “सूत्रमे जागल रंग—करघा बाजै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: लोकजीवन-श्रम; नेह-संबन्ध।

गजल 254 — पुरनका पुस्तकालय। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –ीर · रदीफ: पन्ना खोलू। आरम्भ: “जल्दी नहि, कने धीर—पन्ना खोलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; किशोर-अनुशासन।

गजल 255 — सीमा चिन्हू। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: सीमा चिन्हू। आरम्भ: “नेहमे सेहो मान—सीमा चिन्हू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 256 — प्रवासक टिकट। मात्रा-क्रम: १८–२५; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: टिकटमे रहल। आरम्भ: “घर छोड़बाक बात टिकटमे रहल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 257 — नब गीत। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: फेर गूँजल। आरम्भ: “मौन कटिते शोर—फेर गूँजल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 258 — पुरनका चश्मा। मात्रा-क्रम: १७–२६; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: चश्मा पहिरिते। आरम्भ: “धुँधल अक्षर आयल पास चश्मा पहिरिते”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 259 — हाट छुटला पर। मात्रा-क्रम: २१–२३; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: हाट छुटला पर। आरम्भ: “देहपर देखल थकान हाट छुटला पर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: लोकजीवन-श्रम; सामाजिक नैतिकता।

गजल 260 — दीपक धुआँ। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: धुआँमे छल। आरम्भ: “कहि नहि सकल एक बात धुआँमे छल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 261 — भाषाक बीज। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ीत · रदीफ: रोपैत रहू। आरम्भ: “नेनाक कंठमे गीत रोपैत रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 262 — टूटल पुल। मात्रा-क्रम: १५–२३; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: पुल बनत। आरम्भ: “धार रहत, एक दिन पार पुल बनत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 263 — सीमा बुझू। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: सीमा बुझू। आरम्भ: “नेहमे सेहो मान—सीमा बुझू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 264 — नब पन्ना। मात्रा-क्रम: १९–२६; काफिया-रदीफ: –ाह · रदीफ: नब पन्ना खोलू। आरम्भ: “पुरनका भूल छोड़ि चुनू राह—नब पन्ना खोलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 265 — ओसक बिहान। मात्रा-क्रम: १९–२४; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: ओसक बूँदमे। आरम्भ: “झलकि उठल बिहान ओसक बूँदमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 266 — दर्जीक सुई। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: सुई चलैए। आरम्भ: “कपड़ाक छोर सुई चलैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: लोकजीवन-श्रम।

गजल 267 — घाटपर। मात्रा-क्रम: १५–२३; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: घाटपर। आरम्भ: “धीरे बहै धार घाटपर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 268 — पुरनका पोथी। मात्रा-क्रम: १८–२५; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: पोथी खोलिते। आरम्भ: “फेर उभरल रंग पोथी खोलिते”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 269 — बिना कहल। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ोल · रदीफ: बिना कहल। आरम्भ: “बुझि गेलहुँ नेहक मोल बिना कहल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 270 — अहाँक संग। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ह · रदीफ: अहाँक संग। आरम्भ: “लम्बा हो तइयो राह अहाँक संग”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 271 — एखन लिखू। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –ीर · रदीफ: एखन लिखू। आरम्भ: “जे दबल रहि गेल पीर एखन लिखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 272 — जाड़क धूप। मात्रा-क्रम: १९–२४; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: जाड़क धूपमे। आरम्भ: “आँगन भरि गेल उजास जाड़क धूपमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 273 — लोहारक आगि। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: आगिक सोझाँ। आरम्भ: “चमकि उठल औजार आगिक सोझाँ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: लोकजीवन-श्रम।

गजल 274 — पुरनका चित्र। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ाम · रदीफ: फेर जागल। आरम्भ: “चित्र देखिते पुरनका गाम फेर जागल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 275 — पुल पार करैत। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –ीर · रदीफ: पुल पार करैत। आरम्भ: “पाछाँ छुटल तीर पुल पार करैत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 276 — लोकक कंठमे। मात्रा-क्रम: १८–२८; काफिया-रदीफ: ीत · रदीफ: लोकक कंठमे। आरम्भ: “भाषा बनि रहय गीत लोकक कंठमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 277 — दूरीक बादो। मात्रा-क्रम: १९–२४; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: दूरीक बादो। आरम्भ: “अहाँ रहू मनक पास दूरीक बादो”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 278 — नब बिहान। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: फेर उगैत अछि। आरम्भ: “रातिक पाछाँ आस फेर उगैत अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 279 — पुरनका कुञ्जी। मात्रा-क्रम: १६–२७; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: खोलि देखू। आरम्भ: “धूरि लागल पुरनका दुआर खोलि देखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 280 — करघाक धुन। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: करघा बाजै। आरम्भ: “सूतमे जागल रंग करघा बाजै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: लोकजीवन-श्रम; नेह-संबन्ध।

गजल 281 — नदीक धुँध। मात्रा-क्रम: १४–२३; काफिया-रदीफ: –ीर · रदीफ: धुँध हटत। आरम्भ: “देखाएत फेर तीर धुँध हटत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 282 — पोथीक दोकान। मात्रा-क्रम: १६–२७; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: कने पढ़ू। आरम्भ: “कागजक भीतर विचार कने पढ़ू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 283 — पड़ोसक आँगन। मात्रा-क्रम: २१–२६; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: ओहि आँगनमे। आरम्भ: “संग जागैत छल भोर ओहि आँगनमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 284 — अपन मान। मात्रा-क्रम: १६–२६; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: एना नहि। आरम्भ: “दाम लेल घटत मान—एना नहि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 285 — अधूरा गीत। मात्रा-क्रम: १९–२५; काफिया-रदीफ: –ीत · रदीफ: एखन गाबू। आरम्भ: “अधूरा रहल गीत एखन गाबू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 286 — कुम्हारक चाक। मात्रा-क्रम: २१–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: चाक घूमैए। आरम्भ: “माटि लैत नव आकार चाक घूमैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 287 — पुरनका डाकघर। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –ाम · रदीफ: चिट्ठी अबैत। आरम्भ: “लिफाफापर लिखल नाम चिट्ठी अबैत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 288 — जाड़क धूप। मात्रा-क्रम: १९–२४; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: धूप उतरैए। आरम्भ: “आँगन भरि उजास धूप उतरैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 289 — बरामदाक कुर्सी। मात्रा-क्रम: १७–२८; काफिया-रदीफ: –ेर · रदीफ: कुर्सी ताकैए। आरम्भ: “दुआर दिस एक फेर कुर्सी ताकैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 290 — रातिक स्टेशन। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: रेल अबैत। आरम्भ: “दूरसँ उठैत शोर रेल अबैत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 291 — बीज बचाउ। मात्रा-क्रम: १८–२९; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: बीज बचाउ। आरम्भ: “अगिला बर्ख लेल धान बीज बचाउ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 292 — गीत फेर जन्मत। मात्रा-क्रम: १९–२७; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: गीत फेर जन्मत। आरम्भ: “शब्द म्लान हो, नब रंग गीत फेर जन्मत”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 293 — नदीक चिट्ठी। मात्रा-क्रम: १९–२४; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: बहैत जाए। आरम्भ: “रेत छुबैत ई धार बहैत जाए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 294 — धानक गन्ध। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: घर बजबैए। आरम्भ: “कटनीक धानक सुवास घर बजबैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 295 — पुरनका घड़ी। मात्रा-क्रम: १८–२४; काफिया-रदीफ: –ाल · रदीफ: टिक-टिक करैए। आरम्भ: “भित्तिपर धीम चाल टिक-टिक करैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 296 — नीमक छाँह। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: ठंढक दैए। आरम्भ: “घरक पुरनका दुआर ठंढक दैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 297 — कागजक नाव। मात्रा-क्रम: १९–२६; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: पानिमे चलैए। आरम्भ: “बालपनक जान पानिमे चलैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; सामाजिक नैतिकता।

गजल 298 — साँझक घंटी। मात्रा-क्रम: १९–२३; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: धीरे बाजैए। आरम्भ: “साँझ पड़िते ध्यान धीरे बाजैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 299 — घर घुरबाक बाट। मात्रा-क्रम: १८–२५; काफिया-रदीफ: –ाह · रदीफ: मोन खींचैए। आरम्भ: “दूर धरि ओ राह मोन खींचैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 300 — चूल्हिक आँच। मात्रा-क्रम: १९–२५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: आँच बचल अछि। आरम्भ: “माइक पुरन दुलार—आँच बचल अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; लोकजीवन-श्रम।

गजल 301 — पोखरिक चान। मात्रा-क्रम: १८–२७; काफिया-रदीफ: –ीर · रदीफ: चान उतरैए। आरम्भ: “शान्त पोखरिक नीर—चान उतरैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 302 — मसालाक गन्ध। मात्रा-क्रम: १६–२८; काफिया-रदीफ: –ाद · रदीफ: घर भरैए। आरम्भ: “पीसल मसालाक स्वाद घर भरैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 303 — ओसारक दीप। मात्रा-क्रम: १७–२४; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: दीप जरैए। आरम्भ: “अन्हारमे छोट उजास—दीप जरैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 304 — बरखाक खिड़की। मात्रा-क्रम: १९–२७; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: बरखा अबैए। आरम्भ: “काँचपर महीन फुहार—बरखा अबैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 305 — बाँसुरीक दूर स्वर। मात्रा-क्रम: १६–२५; काफिया-रदीफ: –ीर · रदीफ: स्वर अबैए। आरम्भ: “साँझक नदीक नीर—स्वर अबैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 306 — खेतक पाँति। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: पाँति उठैए। आरम्भ: “माटिमे रोपल धान—पाँति उठैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 307 — सामा-चकेवाक साँझ। मात्रा-क्रम: १९–२६; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: साँझ उतरैए। आरम्भ: “धानक मृदु सुवास—साँझ उतरैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 308 — मखानक पोखरि। मात्रा-क्रम: १८–२५; काफिया-रदीफ: –ाल · रदीफ: जल चमकैए। आरम्भ: “मखान पातक जाल—जल चमकैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; बाल-किशोर कल्पना।

गजल 309 — कूपक डोर। मात्रा-क्रम: १६–२५; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: जल उठैए। आरम्भ: “हथेलीमे बँसल डोर—जल उठैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 310 — पीपरक पात। मात्रा-क्रम: १७–२६; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: हवा पढ़ैए। आरम्भ: “पीपरसँ झरल पात—हवा पढ़ैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 311 — बखारीक धान। मात्रा-क्रम: १९–२५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: धान बचल अछि। आरम्भ: “माटिक ठंढ भंडार—धान बचल अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 312 — मिथिला-चित्रक रेखा। मात्रा-क्रम: १९–२४; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: रेखा बोलैए। आरम्भ: “भीतपर खिलल रंग—रेखा बोलैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; समकालीन माध्यम।

गजल 313 — सरिसो फूल। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: पीयर भेल। आरम्भ: “खेतक दूर बहार—पीयर भेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 314 — कमलाक कछार। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: भोर भेल। आरम्भ: “कमलाक निसबद कछार—भोर भेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 315 — सिक्कीक शिल्प। मात्रा-क्रम: १९–२५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: हाथ गढ़ैए। आरम्भ: “सिक्कीक कोमल तार—हाथ गढ़ैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 316 — पानक बाड़ी। मात्रा-क्रम: १६–२९; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: हरियर रहै। आरम्भ: “ओससँ भीजल पान—हरियर रहै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 317 — मधुश्रावणीक राति। मात्रा-क्रम: १९–२५; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: गीत उठैए। आरम्भ: “सावनक भीजल राति—गीत उठैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 318 — जाँतक घरघर। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: घरघर बाजैए। आरम्भ: “आँगन जागल भोर—घरघर बाजैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; लोकजीवन-श्रम।

गजल 319 — कोसीक बालू। मात्रा-क्रम: १७–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: कथा लिखैए। आरम्भ: “बदलैत रहै धार—कथा लिखैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 320 — मेहक बाद माटिक गन्ध। मात्रा-क्रम: १५–२७; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: मेह पड़ल। आरम्भ: “माटि बदललक रंग—मेह पड़ल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 321 — आमक मोजर। मात्रा-क्रम: १९–२७; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: मोजर फूटल। आरम्भ: “बारी भरि उठल सुवास—मोजर फूटल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; बाल-किशोर कल्पना।

गजल 322 — अरिपनक रेखा। मात्रा-क्रम: २१–२५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: रेखा बोलैए। आरम्भ: “चाउर-पिठारक दुआर—रेखा बोलैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 323 — दूबिपर ओस। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: ओस चमकल। आरम्भ: “आँगनमे भेल भोर—ओस चमकल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 324 — बाँसक झुरमुट। मात्रा-क्रम: १६–२५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: हवा चलल। आरम्भ: “डोलि उठल कतार—हवा चलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 325 — दधि-चूड़ाक बिहान। मात्रा-क्रम: १४–२५; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: भोर जागल। आरम्भ: “दधि-चूड़ाक बिहान—भोर जागल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 326 — करघाक धुन। मात्रा-क्रम: १९–२७; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: करघा चलैए। आरम्भ: “सूतरमे उठल तान—करघा चलैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; लोकजीवन-श्रम।

गजल 327 — कातिकक साँझ। मात्रा-क्रम: १७–२६; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: कातिक आयल। आरम्भ: “घाट भरल अँजोर—कातिक आयल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 328 — खरिहानक चान। मात्रा-क्रम: १६–२७; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: खरिहानमे। आरम्भ: “सोन सन चमकै धान—खरिहानमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 329 — कुसियारक रस। मात्रा-क्रम: १६–२७; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: रस टपकै। आरम्भ: “ओखलि लगिते मिठास—रस टपकै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 330 — पोखरिक सीढ़ी। मात्रा-क्रम: १६–२८; काफिया-रदीफ: –ीर · रदीफ: सीढ़ी लग। आरम्भ: “भोर झिलमिल नीर—सीढ़ी लग”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; बाल-किशोर कल्पना।

गजल 331 — पलाशक रङ। मात्रा-क्रम: १७–२९; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: पलाश फुलल। आरम्भ: “बोनमे दहकल रङ—पलाश फुलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 332 — माटिक चूल्हि। मात्रा-क्रम: १६–२७; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: चूल्हि जागल। आरम्भ: “बासल गरम भात—चूल्हि जागल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 333 — पातक दोना। मात्रा-क्रम: १६–३०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: दोना बनल। आरम्भ: “पात जुड़ि लेल आकार—दोना बनल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; सामाजिक नैतिकता।

गजल 334 — चैतक हावा। मात्रा-क्रम: १७–२६; काफिया-रदीफ: –ेर · रदीफ: हावा बहल। आरम्भ: “खुलि गेल नब भोर—हावा बहल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 335 — भोरक कुहासा। मात्रा-क्रम: १८–३०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: कुहासा उठल। आरम्भ: “दूर देखायल पार—कुहासा उठल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 336 — कुम्हारक चाक। मात्रा-क्रम: १६–२६; काफिया-रदीफ: –ेर · रदीफ: चाक घुरल। आरम्भ: “हाथ देलक जोर—चाक घुरल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 337 — सनईक फूल। मात्रा-क्रम: १७–२७; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: सनई फुलल। आरम्भ: “खेत भरल सुवास—सनई फुलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 338 — गामक हाट। मात्रा-क्रम: १६–२८; काफिया-रदीफ: –ाट · रदीफ: हाट भरल। आरम्भ: “गामक बीच हाट—हाट भरल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 339 — नावक घाट। मात्रा-क्रम: १६–२९; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: नाव खुलल। आरम्भ: “धीरे बहली धार—नाव खुलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

गजल 340 — अँगनाक तुलसी। मात्रा-क्रम: १७–२७; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: तुलसी हरियर। आरम्भ: “अँगनामे प्राण—तुलसी हरियर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 341 — आसिनक अकास। मात्रा-क्रम: १८–२७; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: अकास निखरल। आरम्भ: “दूर खुलल विस्तार—अकास निखरल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 342 — धानक बालि। मात्रा-क्रम: १६–२७; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: बालि झुकल। आरम्भ: “दाना भरल भार—बालि झुकल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 343 — पुरइनक पात। मात्रा-क्रम: १८–२७; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: पुरइन डोलल। आरम्भ: “भोर भरल उजास—पुरइन डोलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 344 — चरखाक सूत। मात्रा-क्रम: १७–२८; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: सूत बढ़ल। आरम्भ: “अँगुरी पेलक छोर—सूत बढ़ल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; लोकजीवन-श्रम।

गजल 345 — ओसारक साँझ। मात्रा-क्रम: १६–२६; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: साँझ बैसल। आरम्भ: “ओसारमे प्राण—साँझ बैसल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; किशोर-अनुशासन।

गजल 346 — महुआक गन्ध। मात्रा-क्रम: १५–२६; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: महुआ झरल। आरम्भ: “गाछ तरे रंग—महुआ झरल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 347 — इनारक डोर। मात्रा-क्रम: १६–२७; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: डोर उतरल। आरम्भ: “भोर देलक पुकार—डोर उतरल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 348 — फागुनक पवन। मात्रा-क्रम: १५–२८; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: पवन बहल। आरम्भ: “कोइल छेड़लक तान—पवन बहल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 349 — ढेकीक ताल। मात्रा-क्रम: १८–३०; काफिया-रदीफ: –ाल · रदीफ: ढेकी बाजल। आरम्भ: “भोर पकड़लक ताल—ढेकी बाजल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 350 — भादोक मेघ। मात्रा-क्रम: १४–२८; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: मेघ घुमल। आरम्भ: “अकास भेल घोर—मेघ घुमल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; बाल-किशोर कल्पना।

गजल 351 — बटगाछक छाँह। मात्रा-क्रम: १६–२८; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: छाँह पड़ल। आरम्भ: “बाटिक कात बास—छाँह पड़ल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 352 — सुपक हावा। मात्रा-क्रम: १४–३०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: सुप चलल। आरम्भ: “हाथ देलक धार—सुप चलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 353 — बगुलाक पाँति। मात्रा-क्रम: १५–२८; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: पाँति उड़ल। आरम्भ: “पाँखि धरलक तान—पाँति उड़ल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: बाल-किशोर कल्पना।

गजल 354 — चूल्हिक राख। मात्रा-क्रम: १५–२७; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: राख तरे। आरम्भ: “लुका रहल अंगार—राख तरे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: लोकजीवन-श्रम; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 355 — कनेरक फूल। मात्रा-क्रम: १६–२८; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: कनेर फुलल। आरम्भ: “भीतक कात रंग—कनेर फुलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 356 — तिलकोरक पात। मात्रा-क्रम: १६–२७; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: ओस चमकल। आरम्भ: “तिलकोरक हरियर पात—ओस चमकल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 357 — माटिक घैल। मात्रा-क्रम: १६–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: घैल भरल। आरम्भ: “इनारसँ उठल धार—घैल भरल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 358 — कदम्बक फूल। मात्रा-क्रम: १६–२७; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: कदम्ब फुलल। आरम्भ: “हावामे भरल सुवास—कदम्ब फुलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; बाल-किशोर कल्पना।

गजल 359 — चरौनिहारक बंसी। मात्रा-क्रम: १८–२८; काफिया-रदीफ: –ेर · रदीफ: बंसी बाजल। आरम्भ: “धुनि जगौलक भोर—बंसी बाजल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 360 — खपरैल पर मेह। मात्रा-क्रम: १६–२८; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: मेह बरसल। आरम्भ: “खपरैल बदललक रंग—मेह बरसल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 361 — मधुमाछीक गुँजार। मात्रा-क्रम: १८–२८; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: मधुमाछी गुँजल। आरम्भ: “फूलमे उठल गान—मधुमाछी गुँजल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; बाल-किशोर कल्पना।

गजल 362 — दलानक कथा। मात्रा-क्रम: १६–२८; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: कथा चलल। आरम्भ: “बड़-बूढ़क दुलार—कथा चलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 363 — अड़हुलक फूल। मात्रा-क्रम: १६–३०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: अड़हुल फुलल। आरम्भ: “अँगनामे खुलल दुआर—अड़हुल फुलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 364 — मड़ुआक खेत। मात्रा-क्रम: १९–२९; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: मड़ुआ लहरल। आरम्भ: “संगमे झूमल धान—मड़ुआ लहरल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 365 — पनघटक बाट। मात्रा-क्रम: १८–३०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: पानि आनल। आरम्भ: “भोरहि खुलल दुआर—पानि आनल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 366 — पनसक गाछ। मात्रा-क्रम: १७–३१; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: पनस फलल। आरम्भ: “डारि सम्हारलक भार—पनस फलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 367 — जूटक डोर। मात्रा-क्रम: १६–३०; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: डोर बटल। आरम्भ: “हाथमे कसि डोर—डोर बटल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 368 — कोइलीक पुकार। मात्रा-क्रम: १९–३०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: कोइली बाजल। आरम्भ: “डारिसँ उठल पुकार—कोइली बाजल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 369 — कातिकक चान। मात्रा-क्रम: १६–३०; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: चान उगल। आरम्भ: “पोखरिपर पसरल उजास—चान उगल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 370 — पूसक बिहान। मात्रा-क्रम: १७–३२; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: धूप उतरि। आरम्भ: “कुहासामे फूटल उजास—धूप उतरि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 371 — माटिक दीप। मात्रा-क्रम: १६–३५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: दीप जरल। आरम्भ: “साँझहि उज्जर दुआर—दीप जरल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 372 — सरपताक झुरमुट। मात्रा-क्रम: १७–३३; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: हावा बाजल। आरम्भ: “नदीक हरियर छोर—हावा बाजल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 373 — मसूरक फूल। मात्रा-क्रम: १६–३४; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: खेत हँसल। आरम्भ: “रंग भरल विहान—खेत हँसल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 374 — घुरक आगि। मात्रा-क्रम: १५–३६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: घुर जरल। आरम्भ: “जाड़मे गरम दुआर—घुर जरल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 375 — बथानक साँझ। मात्रा-क्रम: १६–३३; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: गोरु घुरल। आरम्भ: “खुलल घरक दुआर—गोरु घुरल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; नेह-संबन्ध।

गजल 376 — जाड़क तारा। मात्रा-क्रम: १८–३३; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: तारा चमकल। आरम्भ: “निर्मल भेल अकास—तारा चमकल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 377 — बरखाक राति। मात्रा-क्रम: १७–३५; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: राति जागल। आरम्भ: “पोखरिक कात उठल शोर—राति जागल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 378 — मटकाक दधि। मात्रा-क्रम: १४–३४; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: दधि जमल। आरम्भ: “माटिक मटकामे सुवास—दधि जमल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 379 — कदलीक पात। मात्रा-क्रम: १५–३३; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: पात हिलल। आरम्भ: “हावाक संग उठल शोर—पात हिलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 380 — सीमरक रूइ। मात्रा-क्रम: १६–३७; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: रूइ उड़ल। आरम्भ: “खेतक ऊपर मैदान—रूइ उड़ल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 381 — खेतक मेड़। मात्रा-क्रम: १४–३९; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: मेड़ पर। आरम्भ: “उगल हरियर बहार—मेड़ पर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 382 — चिरैक पाँति। मात्रा-क्रम: १३–३५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: उड़ि गेल। आरम्भ: “अकासक पार—उड़ि गेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 383 — चाननीक पोखरि। मात्रा-क्रम: १७–३७; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: चान उतरल। आरम्भ: “जलमे फूटल उजास—चान उतरल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 384 — नदीक मोड़। मात्रा-क्रम: १४–३६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: मोड़ पर। आरम्भ: “चमकि उठल धार—मोड़ पर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 385 — अँगनाक रौद। मात्रा-क्रम: १६–४२; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: रौद उतरल। आरम्भ: “अँगनामे फैलल उजास—रौद उतरल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 386 — बन्हल धानक पूला। मात्रा-क्रम: १६–३८; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: पूला बन्हल। आरम्भ: “खेतसँ आयल धान—पूला बन्हल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 387 — उड़ैत पतंग। मात्रा-क्रम: १६–३९; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: पतंग उड़ल। आरम्भ: “खुलल अकासक दुआर—पतंग उड़ल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; बाल-किशोर कल्पना।

गजल 388 — गाछक छाल। मात्रा-क्रम: १५–४०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: छाल पर। आरम्भ: “बरखक चिन्ह अपार—छाल पर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 389 — घाटपर साँझ। मात्रा-क्रम: १६–३८; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: साँझ बसल। आरम्भ: “जलमे धुँधल उजास—साँझ बसल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 390 — ओसक बूँद। मात्रा-क्रम: १७–४१; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: ओस चमकल। आरम्भ: “पातक कात बहार—ओस चमकल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 391 — काँसक फूल। मात्रा-क्रम: १६–३६; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: काँस फुलल। आरम्भ: “नदीक कात उजास—काँस फुलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 392 — पोखरिक माछ। मात्रा-क्रम: १५–३९; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: पोखरिमे। आरम्भ: “हलुक उठल धार—पोखरिमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 393 — सूपमे उड़ैत धान। मात्रा-क्रम: १५–४१; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: सूप चलल। आरम्भ: “उड़ि उठल भूसी, रहल धान—सूप चलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 394 — जाड़क कुहासा। मात्रा-क्रम: २०–४०; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: कुहासा उतरल। आरम्भ: “दूरक गाछ आयल पास—कुहासा उतरल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 395 — पगडण्डीक धूर। मात्रा-क्रम: १५–४०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: बाट पर। आरम्भ: “गामक खुलल दुआर—बाट पर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 396 — ताड़क छाँह। मात्रा-क्रम: १६–४०; काफिया-रदीफ: –াম · रदीफ: छाँह तरे। आरम्भ: “देखायल दूर गाम—छाँह तरे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 397 — साँझक घंटी। मात्रा-क्रम: १८–४४; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: घंटी बाजल। आरम्भ: “दूरसँ आयल पुकार—घंटी बाजल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 398 — बेलक सुवास। मात्रा-क्रम: १५–४४; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: बेल फुलल। आरम्भ: “अँगनामे उठल सुवास—बेल फुलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 399 — पपीहाक पुकार। मात्रा-क्रम: १८–४५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: पपीहा बाजल। आरम्भ: “दूरसँ आयल पुकार—पपीहा बाजल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 400 — तिलक खेत। मात्रा-क्रम: १५–४५; काफिया-रदीफ: ंग · रदीफ: तिल फुलल। आरम्भ: “खेतमे कोमल रंग—तिल फुलल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 401 — बाँसक कोपल। मात्रा-क्रम: १८–४५; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: कोपल फुटल। आरम्भ: “झुरमुटमे नव उजास—कोपल फुटल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 402 — नदीक बालू। मात्रा-क्रम: १५–४८; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: बालूपर। आरम्भ: “लिखल गेल धार—बालूपर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 403 — गोधूलिक धूर। मात्रा-क्रम: १६–४५; काफिया-रदीफ: –ाल · रदीफ: गोधूलिमे। आरम्भ: “अकास भेल लाल—गोधूलिमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 404 — अगहनक बिहान। मात्रा-क्रम: १६–४४; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: अगहनमे। आरम्भ: “धानपर सुनर उजास—अगहनमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 405 — मखानक पात। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: देखाइत अछि। आरम्भ: “पोखरिमे हरियर पात देखाइत अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 406 — कुसियारक खेत। मात्रा-क्रम: १५–२६; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: रहि गेल। आरम्भ: “ओसभीजल पातमे मिठास रहि गेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 407 — पलाशक फूल। मात्रा-क्रम: १४–२४; काफिया-रदीफ: –ाल · रदीफ: देखू ने। आरम्भ: “बोनमे उठल लाल देखू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 408 — माटिक सुराही। मात्रा-क्रम: १६–२६; काफिया-रदीफ: –ीर · रदीफ: ठंढा रहल। आरम्भ: “सुराही भीतर नीर ठंढा रहल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 409 — चैती पवन। मात्रा-क्रम: १६–२५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: छूइ गेल। आरम्भ: “चैती पवन दुआर छूइ गेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 410 — अमरूदक बगिया। मात्रा-क्रम: १५–२७; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: हरियर रहल। आरम्भ: “ओसक संग बिहान हरियर रहल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 411 — धानक भूसा। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: काज अबैत अछि। आरम्भ: “भूसो घरक सँभार काज अबैत अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 412 — अलसीक नील फूल। मात्रा-क्रम: २०–२२; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: नील भेल। आरम्भ: “अलसीक खेतमे बहार नील भेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 413 — आमक मञ्जरी। मात्रा-क्रम: २०–२२; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: पसरि गेल। आरम्भ: “आमक बगियामे सुवास पसरि गेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 414 — गामक पोखरि। मात्रा-क्रम: २०–२२; काफिया-रदीफ: –ीर · रदीफ: रहि गेल। आरम्भ: “गामक पोखरिमे निर्मल नीर रहि गेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 415 — नदीक बालू। मात्रा-क्रम: २०–२२; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: बदलैत रहल। आरम्भ: “पानिक संग आइ निशान बदलैत रहल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 416 — सखुआक पात। मात्रा-क्रम: २०–२२; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: सरसराए। आरम्भ: “हावामे सखुआक पात सरसराए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 417 — गहुमक बालि। मात्रा-क्रम: २०–२२; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: झूमि उठल। आरम्भ: “रौद लगिते आइ नव बिहान झूमि उठल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 418 — गामक पुल। मात्रा-क्रम: २०–२२; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: जोड़ैत अछि। आरम्भ: “ई पुल आइ दूनू कछार जोड़ैत अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 419 — एना रे। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –ा · रदीफ: रे। आरम्भ: “बझाओल गेलैए चिड़ैया एना रे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 420 — किछु नै बदलैए। मात्रा-क्रम: २६–३४; काफिया-रदीफ: –क · रदीफ: किछु नै बदलैए। आरम्भ: “भोरक लाली साँझक लाली देखा देलक किछु नै बदलैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: सामाजिक नैतिकता।

गजल 421 — लगैए ई। मात्रा-क्रम: २६–२८; काफिया-रदीफ: ैं · रदीफ: लगैए ई। आरम्भ: “महामाला महाडाला स्वाहा करै लगैए ई”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 422 — हमरा की। मात्रा-क्रम: १९–२४; काफिया-रदीफ: ैए · रदीफ: हमरा की। आरम्भ: “मनुख जरैए गाम कनैए हमरा की”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 423 — चलू घुरि चली। मात्रा-क्रम: २१–२७; काफिया-रदीफ: –इए · रदीफ: चलू घुरि चली। आरम्भ: “सोझाँ देखि मोन ललाइए चलू घुरि चली”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 424 — अहीं तँ छी। मात्रा-क्रम: १७–२०; काफिया-रदीफ: –ा · रदीफ: अहीं तँ छी। आरम्भ: “खेत, आरि, रस्ता सभटा अहीं तँ छी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 425 — झपाइ छी। मात्रा-क्रम: २१–२६; काफिया-रदीफ: –इ · रदीफ: छी। आरम्भ: “गुमकी लागै राति बुलैत चान झपाइ छी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 426 — देखै छी। मात्रा-क्रम: १८–२४; काफिया-रदीफ: ै · रदीफ: छी। आरम्भ: “नोर झरैए मोनक दागनि दगै छी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 427 — तखन किने। मात्रा-क्रम: १९–२१; काफिया-रदीफ: ैब · रदीफ: तखन किने। आरम्भ: “उचरि नव रूप अपन लिखैब तखन किने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 428 — अनेरे। मात्रा-क्रम: २०; काफिया-रदीफ: –ारी · रदीफ: अनेरे। आरम्भ: “अहाँ बूझि लै छी जुआरी अनेरे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 429 — बिसरनहिए नीक। मात्रा-क्रम: २८–३५; काफिया-रदीफ: –हिए · रदीफ: नीक। आरम्भ: “गुम्म भेल जे ठाढ़ भेल छी मुनल मूह मटकुरिए नीक”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 430 — प्रेमक पथिक। मात्रा-क्रम: २२–२७; काफिया-रदीफ: — · रदीफ: —। आरम्भ: “अकत तीत प्रेमक जे पथिक अदौकालसँ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 431 — सोचनीक होइए। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: ैए · रदीफ: —। आरम्भ: “अंतहीन अंत ऐ सोचनीक होइए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; समकालीन माध्यम।

गजल 432 — जा रहल अछि। मात्रा-क्रम: १९–२२; काफिया-रदीफ: –ा · रदीफ: रहल अछि। आरम्भ: “छोड़ि कऽ हमरा ई जे ओ जा रहल अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 433 — बुझतै ओ। मात्रा-क्रम: २४–३०; काफिया-रदीफ: ै · रदीफ: ओ। आरम्भ: “की कहबै, कोना कहबै, जे बुझतै ओ लुझतै ओ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 434 — कहू की करी। मात्रा-क्रम: १९–२३; काफिया-रदीफ: –इए · रदीफ: कहू की करी। आरम्भ: “आँखि ओङठल जाइए कहू की करी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: सामाजिक नैतिकता।

गजल 435 — अङेजब कोना। मात्रा-क्रम: २४–३१; काफिया-रदीफ: –इए · रदीफ: अङेजब कोना। आरम्भ: “मिरदङियाक तरंग भँसियाइए अङेजब कोना”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 436 — रहल अछि। मात्रा-क्रम: १३–१८; काफिया-रदीफ: –ा · रदीफ: रहल अछि। आरम्भ: “छोड़ि रहल अछि, भिजा कहल अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 437 — बहुत अछि। मात्रा-क्रम: १५–१९; काफिया-रदीफ: — · रदीफ: अछि। आरम्भ: “छोट-छीन सन बात बहुत अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 438 — दोस्तियारी बिना। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: — · रदीफ: अछि। आरम्भ: “दोस्तियारी बिना ई राह कठिन अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 439 — परिचर। मात्रा-क्रम: १८–२०; काफिया-रदीफ: –र · रदीफ: —। आरम्भ: “बिसबासी लोक जे जीवनमे हमर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 440 — खेत-खम्हारक काज। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –लहुँ · रदीफ: —। आरम्भ: “खेत-खम्हारक काज कऽ सकलहुँ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; किशोर-अनुशासन।

गजल 441 — सत्यसँ भेँट। मात्रा-क्रम: १३–१९; काफिया-रदीफ: –ल · रदीफ: —। आरम्भ: “भय रहित सत्यसँ भेँट भेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: समकालीन माध्यम; सामाजिक नैतिकता।

गजल 442 — मोन पड़ल ऐ। मात्रा-क्रम: १६–२०; काफिया-रदीफ: — · रदीफ: ऐ। आरम्भ: “दिन-राति बीतल से मोन पड़ल ऐ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 443 — धरधड़ी। मात्रा-क्रम: १४–२०; काफिया-रदीफ: — · रदीफ: —। आरम्भ: “छातीक धरधड़ी घटि बढ़ल अछि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 444 — काज चलत नै। मात्रा-क्रम: १४–१७; काफिया-रदीफ: — · रदीफ: नै। आरम्भ: “बकथोथीसँ काज चलत नै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 445 — छद्म ज्ञान। मात्रा-क्रम: १४–१८; काफिया-रदीफ: — · रदीफ: —। आरम्भ: “तेजगर छी से छद्म ज्ञान भेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; सामाजिक नैतिकता।

गजल 446 — तैयार। मात्रा-क्रम: १५–२०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: —। आरम्भ: “बानर पट लैले अछि तैयार”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 447 — ई काल। मात्रा-क्रम: २१–२७; काफिया-रदीफ: — · रदीफ: —। आरम्भ: “कानैत दुनू बच्चाकेँ देखलहुँ बिछुड़ैत गेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 448 — तारा कहलक। मात्रा-क्रम: १८–२४; काफिया-रदीफ: –ा · रदीफ: कहलक। आरम्भ: “रातिक इजोरिया देखि रहल तारा कहलक”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 449 — ने कहितौं। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –ितौं · रदीफ: —। आरम्भ: “जे ई गप अहाँ हमरासँ ने कहितौं”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 450 — जलोदीप। मात्रा-क्रम: २४–२६; काफिया-रदीफ: — · रदीफ: —। आरम्भ: “पिपनी झुकल डिम्हा उठल करजनी सन आँखि छै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 451 — अन्हार पसरल। मात्रा-क्रम: २१–२६; काफिया-रदीफ: –ल · रदीफ: —। आरम्भ: “जाऊ कत्तऽ टिटही सेहो इजोरियामे भागल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध।

गजल 452 — भऽ गेलै। मात्रा-क्रम: १६–१९; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: भऽ गेलै। आरम्भ: “दिन देखारे जे अन्हार भऽ गेलै”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 453 — छोड़ि आयल छी। मात्रा-क्रम: २३–२८; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: छोड़ि आयल छी। आरम्भ: “एकटा आस एकटा पियास छोडि आयल छी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास।

गजल 454 — रहि रहि। मात्रा-क्रम: १९; काफिया-रदीफ: –ाह · रदीफ: दैए रहि रहि। आरम्भ: “भोरक बसात धाह दैए रहि रहि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 455 — उसरि गेल। मात्रा-क्रम: २२–२६; काफिया-रदीफ: –िन्न · रदीफ: उसरि गेल। आरम्भ: “सम्हरि उठैत डेग सुदिन्न भेल उसरि गेल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 456 — सएह बनलिऐ। मात्रा-क्रम: १६–१९; काफिया-रदीफ: –एह · रदीफ: बनलिऐ। आरम्भ: “रौउ-झाँउ बीच वएह बनलिऐ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 457 — खेरहा। मात्रा-क्रम: २३–२५; काफिया-रदीफ: –िक · रदीफ: खेरहा। आरम्भ: “बूझि सकलौं नै निशाभाग राशिक खेरहा”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 458 — ढङ बदलब तखनिते। मात्रा-क्रम: २३–२९; काफिया-रदीफ: –त · रदीफ: ढङ बदलब तखनिते। आरम्भ: “दिन बीतत बर्ख घेरत ढङ बदलब तखनिते”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 459 — बार्बी। मात्रा-क्रम: १७–२१; काफिया-रदीफ: –ानू · रदीफ: बार्बी। आरम्भ: “कनियाँ पुतरा छोड़ू आनू बार्बी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: बाल-किशोर कल्पना; सामाजिक नैतिकता।

गजल 460 — चान मामा। मात्रा-क्रम: १५–२१; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: आउ ने। आरम्भ: “चान मामा हमर दुआर आउ ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 461 — सात रंग। मात्रा-क्रम: १६–१९; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: देखू ने। आरम्भ: “फूल-फूलमे बहार देखू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 462 — दादीक कथा। मात्रा-क्रम: १६–२२; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: सुनाउ ने। आरम्भ: “अँचर भरल दुलार सुनाउ ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; बाल-किशोर कल्पना।

गजल 463 — तरेगन गनी। मात्रा-क्रम: २३–२४; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: कहू ने। आरम्भ: “परी संग कनी खेल, कतेक तार कहू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 464 — बाटक खेल। मात्रा-क्रम: २३–२५; काफिया-रदीफ: –आट · रदीफ: चलै छी। आरम्भ: “परी संग कनी खेल, कनी बाट चलै छी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 465 — चिड़ैक गीत। मात्रा-क्रम: २३–२५; काफिया-रदीफ: ीत · रदीफ: गबै छी। आरम्भ: “चिड़ै संग उगल भोर, जतन गीत गबै छी”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 466 — हँसीक आँगन। मात्रा-क्रम: १७–२०; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: हँसू ने। आरम्भ: “फूल खिलल अछि बहार, हँसू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 467 — कागजक नाव। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: आउ खेली। आरम्भ: “मेह खोललक पानिक दुआर, आउ खेली”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 468 — दादीक चान। मात्रा-क्रम: १८–२५; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: दादी कहैए। आरम्भ: “चानक ऊपर एक संसार, दादी कहैए”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 469 — पतंगक पाँखि। मात्रा-क्रम: १५–२१; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: उड़ि चलू। आरम्भ: “नील अकासक ओहि पार, उड़ि चलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: बाल-किशोर कल्पना।

गजल 470 — मेहक खेल। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: दौड़ू ने। आरम्भ: “मेह खोललक पानिक दुआर, दौड़ू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 471 — निन्नक कथा। मात्रा-क्रम: १८–२४; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: कथा सुनू। आरम्भ: “आँखि मूनू, खुलत संसार, कथा सुनू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: बाल-किशोर कल्पना।

गजल 472 — अपन सपना। मात्रा-क्रम: १६–१९; काफिया-रदीफ: –आह · रदीफ: आगाँ चलू। आरम्भ: “अपन चुनल राह, आगाँ चलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 473 — खेलक मैदान। मात्रा-क्रम: १६–२३; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: खेलू ने। आरम्भ: “हारि गेलहुँ तँ की हार, खेलू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; बाल-किशोर कल्पना।

गजल 474 — पोथीक पाँखि। मात्रा-क्रम: १६–२३; काफिया-रदीफ: –आर · रदीफ: पढ़ू ने। आरम्भ: “पन्ना-पन्नामे संसार, पढ़ू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 475 — परीक्षाक बिहान। मात्रा-क्रम: १६–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: डरू नहि। आरम्भ: “पोथीक एतेक भार, डरू नहि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; किशोर-अनुशासन।

गजल 476 — मीतक संग। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: संग चलू। आरम्भ: “मीत अछि तँ हँसीक संग चलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; बाल-किशोर कल्पना।

गजल 477 — पर्दासँ बाहर। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: देखू ने। आरम्भ: “पर्दासँ बाहर संसार देखू ने”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 478 — अपन राह। मात्रा-क्रम: १६–२१; काफिया-रदीफ: –ह · रदीफ: अपन चुनू। आरम्भ: “लोक कहत बहुत राह, अपन चुनू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 479 — तुलना नहि। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: तुलना नहि। आरम्भ: “दोसराक जीतसँ अपन हार—तुलना नहि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 480 — जालजगतसँ बाहर। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: बाहर चलू। आरम्भ: “जालजगतसँ संसार बाहर चलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 481 — विषय अपन। मात्रा-क्रम: १५–२४; काफिया-रदीफ: –ह · रदीफ: सोचि चुनू। आरम्भ: “सभ देखाओत राह, सोचि चुनू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 482 — लाइकसँ बाहर। मात्रा-क्रम: १५–२५; काफिया-रदीफ: –ोल · रदीफ: याद रखू। आरम्भ: “लाइक नहि कहै पूरा मोल, याद रखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 483 — बात फरिछाउ। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: बात फरिछाउ। आरम्भ: “मीत रूसल तँ बात, बात फरिछाउ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; किशोर-अनुशासन।

गजल 484 — फेर प्रयास। मात्रा-क्रम: १५–२२; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: फेर करू। आरम्भ: “हारि गेल प्रयास, फेर करू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 485 — अपन रूप। मात्रा-क्रम: २०–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: मोन छोट नहि करू। आरम्भ: “आरसिमे देखल आकार, मोन छोट नहि करू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 486 — अपन बात। मात्रा-क्रम: १६–२१; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: खुलि कहू। आरम्भ: “जे अखरैए ओ बात, खुलि कहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 487 — अपन गति। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –ाह · रदीफ: रहय अपन-अपन। आरम्भ: “सभक चलबाक राह रहय अपन-अपन”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 488 — ना कहू। मात्रा-क्रम: १८–२१; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: स्पष्ट कहू। आरम्भ: “मन नहि मानै ओ बात, स्पष्ट कहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; किशोर-अनुशासन।

गजल 489 — निन्न बचाउ। मात्रा-क्रम: १६–२२; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: निन्न बचाउ। आरम्भ: “स्क्रीनसँ बाहरो अछि संसार, निन्न बचाउ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; समकालीन माध्यम।

गजल 490 — समयक हिस्सा। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –াম · रदीफ: समय बाँटू। आरम्भ: “पढ़ाइ लेल कने काम, समय बाँटू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

गजल 491 — बाट चुनैत। मात्रा-क्रम: १५–२२; काफिया-रदीफ: –াह · रदीफ: घबराउ नहि। आरम्भ: “एक्के नहि अछि राह, घबराउ नहि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 492 — ना कहू। मात्रा-क्रम: १४–२३; काफिया-रदीफ: –ার · रदीफ: ना कहू। आरम्भ: “मोनपर जँ बेसी भार, ना कहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 493 — अपन गति। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: ेर · रदीफ: अपन गति। आरम्भ: “दोसरासँ भेल जँ देर, अपन गति”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 494 — ना कहू। मात्रा-क्रम: १४–२५; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: ना कहू। आरम्भ: “जे घटाबए अपन मान, ना कहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 495 — निन्नक समय। मात्रा-क्रम: १६–२५; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: एखन सुतू। आरम्भ: “बहुत भेल ई शोर, एखन सुतू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन; समकालीन माध्यम।

गजल 496 — प्रश्न पूछू। मात्रा-क्रम: १४–२३; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: प्रश्न पूछू। आरम्भ: “जे नहि बुझलहुँ ओ बात, प्रश्न पूछू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 497 — मीत चुनू। मात्रा-क्रम: १५–२२; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: बुझि चुनू। आरम्भ: “के रहत दुखमे संग, बुझि चुनू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; किशोर-अनुशासन।

गजल 498 — हारक बाद। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: फेर उठू। आरम्भ: “आइ भेटल जँ हार, फेर उठू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

गजल 499 — परीक्षाक बाद। मात्रा-क्रम: १६–२३; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: छोड़ि दिअ। आरम्भ: “परीक्षाक एतेक भार, छोड़ि दिअ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 500 — अपन विषय। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ाह · रदीफ: बुझि चुनू। आरम्भ: “सभ देखाओत अलग राह, बुझि चुनू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 501 — अपन निर्णय। मात्रा-क्रम: १६–२३; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: अपन रहू। आरम्भ: “मीतक बीचो मान अपन रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 502 — अपन ताल। मात्रा-क्रम: १७–२४; काफिया-रदीफ: ेर · रदीफ: अपन ताल। आरम्भ: “दोसरासँ भेल जँ देर—अपन ताल”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 503 — तुलना छोड़ू। मात्रा-क्रम: १९–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: तुलना छोड़ू। आरम्भ: “आरसिमे देखल आकार—तुलना छोड़ू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; समकालीन माध्यम।

गजल 504 — भरोसा। मात्रा-क्रम: १९–२२; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: भरोसा रखू। आरम्भ: “मीतसँ खुलि कहू बात—भरोसा रखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; किशोर-अनुशासन।

गजल 505 — भूलसँ सीखू। मात्रा-क्रम: १९–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: भूलसँ सीखू। आरम्भ: “एक चूककेँ हार नहि मानू—भूलसँ सीखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

गजल 506 — कने आराम। मात्रा-क्रम: १७–२६; काफिया-रदीफ: –াম · रदीफ: कने आराम। आरम्भ: “दिन भरि भेल बहुत काम—कने आराम”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

गजल 507 — सोझाँ बाजू। मात्रा-क्रम: १८–२२; काफिया-रदीफ: –াত · रदीफ: सोझाँ बाजू। आरम्भ: “मीतसँ मनक बात—सोझाँ बाजू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; किशोर-अनुशासन।

गजल 508 — अपन सुर। मात्रा-क्रम: १६–२८; काफिया-रदीफ: ীত · रदीफ: अपन सुरमे। आरम्भ: “गाबू अपन गीत अपन सुरमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 509 — पर्दासँ परे। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ার · रदीफ: कने बाहर। आरम्भ: “पर्दासँ पैघ संसार—कने बाहर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; प्रकृति-ऋतु।

गजल 510 — मीतसँ बात। मात्रा-क्रम: १८–२३; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: फरिछ बाजू। आरम्भ: “मोनमे जे अछि बात—फरिछ बाजू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; किशोर-अनुशासन।

गजल 511 — ध्यानक डोर। मात्रा-क्रम: १७–२५; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: कने थामू। आरम्भ: “पर्दापर एतेक शोर—कने थामू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 512 — मदद माँगू। मात्रा-क्रम: १७–२३; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: मदद माँगू। आरम्भ: “जे भारी लगै बात—मदद माँगू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 513 — भविष्यक बाट। मात्रा-क्रम: १७–२९; काफिया-रदीफ: –ाह · रदीफ: खोजैत रहू। आरम्भ: “एके नहि अछि राह—खोजैत रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 514 — निर्णय। मात्रा-क्रम: १५–२८; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: अपन निर्णय। आरम्भ: “भीड़मे राखू मान—अपन निर्णय”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 515 — एक परिणाम। मात्रा-क्रम: १४–२३; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: अन्त नहि। आरम्भ: “एक परिणामक हार—अन्त नहि”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 516 — स्क्रीनक बाहर। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: स्क्रीनक बाहर। आरम्भ: “कम अछि एतऽ शोर—स्क्रीनक बाहर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: समकालीन माध्यम।

गजल 517 — पहिल कमाइ। मात्रा-क्रम: १८–२६; काफिया-रदीफ: –াম · रदीफ: हिसाब राखू। आरम्भ: “कतेक भेल काम—हिसाब राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 518 — प्रश्नक साहस। मात्रा-क्रम: १४–२७; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: पूछि लिअ। आरम्भ: “नहि बुझल विचार—पूछि लिअ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 519 — टीमक खेल। मात्रा-क्रम: १७–२६; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: संग खेलू। आरम्भ: “जीत हो वा हार, राखू उमंग—संग खेलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 520 — पहिल कमाइ। मात्रा-क्रम: १७–२६; काफिया-रदीफ: –াম · रदीफ: सोचि खर्चू। आरम्भ: “हाथमे आयल दाम—सोचि खर्चू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 521 — प्रश्नक साहस। मात्रा-क्रम: १५–२२; काफिया-रदीफ: –াত · रदीफ: पूछि लिअ। आरम्भ: “जे नहि बुझलहुँ बात—पूछि लिअ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 522 — टीमक खेल। मात्रा-क्रम: १७–२८; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: संग खेलू। आरम्भ: “जीत-हारक संग—संग खेलू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; किशोर-अनुशासन।

गजल 523 — कौशल। मात्रा-क्रम: १७–२४; काफिया-रदीफ: –াম · रदीफ: कौशल सीखू। आरम्भ: “केवल अंक नहि काम—कौशल सीखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 524 — खराब दिन। मात्रा-क्रम: १५–२६; काफिया-रदीफ: –ার · रदीफ: बस एक दिन। आरम्भ: “आइ भेटल जँ हार—बस एक दिन”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 525 — टोली। मात्रा-क्रम: १६–२५; काफिया-रदीफ: –ंग · रदीफ: टोलीमे। आरम्भ: “जीत अकेले नहि—संग टोलीमे”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; बाल-किशोर कल्पना।

गजल 526 — निर्णयक समय। मात्रा-क्रम: १८–२५; काफिया-रदीफ: –ाह · रदीफ: कने समय दिअ। आरम्भ: “नहि चुनू तुरत राह—कने समय दिअ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 527 — पहिल खर्च। मात्रा-क्रम: १८–२७; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: हिसाब राखू। आरम्भ: “जाइत छी जखन बजार—हिसाब राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 528 — प्रश्न करू। मात्रा-क्रम: १४–२४; काफिया-रदीफ: –ाह · रदीफ: प्रश्न करू। आरम्भ: “नहि बुझाइ जे राह—प्रश्न करू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 529 — समाचार। मात्रा-क्रम: १८–२५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: पहिने जाँचू। आरम्भ: “जे भेटल समाचार—पहिने जाँचू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; समकालीन माध्यम।

गजल 530 — पहिल यात्रा। मात्रा-क्रम: १७–२६; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: ध्यान राखू। आरम्भ: “पहिने बुझू स्थान—ध्यान राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 531 — पहिल भाषण। मात्रा-क्रम: १५–२५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: मञ्चपर। आरम्भ: “काँपए तइयो विचार मञ्चपर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 532 — पहिल असफलता। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: फेर जाउ। आरम्भ: “पहिल बेर भेटल हार फेर जाउ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 533 — समूहक दबाव। मात्रा-क्रम: १९–२६; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: सोचि कहू। आरम्भ: “जे मनकेँ नहि भावै बात सोचि कहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; किशोर-अनुशासन।

गजल 534 — डिजिटल विराम। मात्रा-क्रम: १७–२६; काफिया-रदीफ: –ोर · रदीफ: फोन राखू। आरम्भ: “बहुत भेल ई शोर फोन राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: समकालीन माध्यम।

गजल 535 — समय बाँटू। मात्रा-क्रम: १७–२४; काफिया-रदीफ: –ाल · रदीफ: समय बाँटू। आरम्भ: “पढ़ाइ अछि सवाल—समय बाँटू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

गजल 536 — पहिल जिम्मेदारी। मात्रा-क्रम: १७–२६; काफिया-रदीफ: –াম · रदीफ: जिम्मेदारी लिअ। आरम्भ: “छोट हो तइयो काम—जिम्मेदारी लिअ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

गजल 537 — साँच जाँचू। मात्रा-क्रम: १७–२७; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: साँच जाँचू। आरम्भ: “आयल जँ समाचार—साँच जाँचू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

गजल 538 — अपन आवाज। मात्रा-क्रम: १५–२६; काफिया-रदीफ: –াত · रदीफ: खुलि बाजू। आरम्भ: “मोनमे अछि जँ बात—खुलि बाजू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 539 — परीक्षा बाद। मात्रा-क्रम: २१–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: कने विश्राम करू। आरम्भ: “मोनपर बेसी भार—कने विश्राम करू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 540 — मीतक सीमा। मात्रा-क्रम: १७–२७; काफिया-रदीफ: –ান · रदीफ: सीमा राखू। आरम्भ: “अपन मनक मान—सीमा राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 541 — अपन लय। मात्रा-क्रम: १८–२७; काफिया-रदीफ: –াল · रदीफ: अपन लय राखू। आरम्भ: “भीड़क अलग चाल—अपन लय राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 542 — मीतक पहिचान। मात्रा-क्रम: १६–२४; काफिया-रदीफ: –ात · रदीफ: मीत चिन्हू। आरम्भ: “जे सुनए मनक बात—मीत चिन्हू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 543 — डरक पार। मात्रा-क्रम: १५–२६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: आगाँ बढ़ू। आरम्भ: “भेटल जँ हार—आगाँ बढ़ू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 544 — आरम्भ। मात्रा-क्रम: २१–२४; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: एखन आरम्भ करू। आरम्भ: “मोनपर नहि भार—एखन आरम्भ करू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; किशोर-अनुशासन।

गजल 545 — रुचिक बाट। मात्रा-क्रम: १७–२४; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: अपन रुचि चिन्हू। आरम्भ: “जे करिते बढ़ए ज्ञान—अपन रुचि चिन्हू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 546 — साँचक जाँच। मात्रा-क्रम: २०–२८; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: जाँचि तखन मानू। आरम्भ: “आयल जँ समाचार—जाँचि तखन मानू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; समकालीन माध्यम।

गजल 547 — नब मीत। मात्रा-क्रम: १८–२७; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: धीरे चिन्हू। आरम्भ: “नब मीतक व्यवहार—धीरे चिन्हू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 548 — भूल स्वीकार। मात्रा-क्रम: १६–२८; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: साँच कहू। आरम्भ: “भूल भेल—स्वीकार, साँच कहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 549 — एखन करू। मात्रा-क्रम: १६–२७; काफिया-रदीफ: –াম · रदीफ: एखन करू। आरम्भ: “जे छोट अछि काम—एखन करू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 550 — प्रश्न पुछू। मात्रा-क्रम: १५–२४; काफिया-रदीफ: –ाह · रदीफ: प्रश्न पुछू। आरम्भ: “बुझबाक जँ अछि चाह—प्रश्न पुछू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 551 — काज बाँटू। मात्रा-क्रम: १६–२५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: संग करू। आरम्भ: “एक्के माथ नहि भार—संग करू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 552 — अपन गति। मात्रा-क्रम: १८–२९; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: अपन गति राखू। आरम्भ: “बाटपर राखू ध्यान—अपन गति राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: लोकजीवन-श्रम; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 553 — नब हुनर। मात्रा-क्रम: १८–२७; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: सीखैत रहू। आरम्भ: “खोलू नबका दुआर—सीखैत रहू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 554 — बात जाँचू। मात्रा-क्रम: १८–३०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: पहिने जाँचू। आरम्भ: “आएल जँ समाचार—पहिने जाँचू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; समकालीन माध्यम।

गजल 555 — लिखि कऽ बुझू। मात्रा-क्रम: १६–३०; काफिया-रदीफ: –ाव · रदीफ: लिखि कऽ बुझू। आरम्भ: “मनमे उठल भाव—लिखि कऽ बुझू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 556 — एक काज। मात्रा-क्रम: १८–२९; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: एक काज करू। आरम्भ: “पहिने राखू ध्यान—एक काज करू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 557 — रिसक बेर। मात्रा-क्रम: १५–२७; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: कने थमू। आरम्भ: “गहिरी लिअ साँस—कने थमू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 558 — अपन माप। मात्रा-क्रम: १७–२९; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: अपन माप रखू। आरम्भ: “अपन श्रमक मान—अपन माप रखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 559 — मीत चुनू। मात्रा-क्रम: १७–२९; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: मीत चुनू। आरम्भ: “पहिने बुझू विचार—मीत चुनू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 560 — कने-कने सीखू। मात्रा-क्रम: २०–२८; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: कने-कने सीखू। आरम्भ: “राखू स्पष्ट विचार—कने-कने सीखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

गजल 561 — अपन स्वर। मात्रा-क्रम: १७–२९; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: अपन स्वर राखू। आरम्भ: “अपन बातक मान—अपन स्वर राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 562 — भूलसँ सीखू। मात्रा-क्रम: १७–२८; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: भूलसँ सीखू। आरम्भ: “करू अपन स्वीकार—भूलसँ सीखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

गजल 563 — बेर बाँटू। मात्रा-क्रम: १७–२६; काफिया-रदीफ: –ाम · रदीफ: बेर बाँटू। आरम्भ: “पहिने चुनू काम—बेर बाँटू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 564 — साँच लिखू। मात्रा-क्रम: १६–२६; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: साँच लिखू। आरम्भ: “जतए भेटए ज्ञान—साँच लिखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 565 — सुनि कऽ बाजू। मात्रा-क्रम: १७–२९; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: सुनि कऽ बाजू। आरम्भ: “राखू स्पष्ट विचार—सुनि कऽ बाजू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 566 — कौड़ी बचाउ। मात्रा-क्रम: १८–३१; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: कौड़ी बचाउ। आरम्भ: “पहिने करू विचार—कौड़ी बचाउ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 567 — गाछ रोपू। मात्रा-क्रम: १६–३०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: गाछ रोपू। आरम्भ: “अँगना आनू बहार—गाछ रोपू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु।

गजल 568 — प्रश्न लिखू। मात्रा-क्रम: १४–२९; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: प्रश्न लिखू। आरम्भ: “जागल जँ विचार—प्रश्न लिखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 569 — मीतक मान। मात्रा-क्रम: १५–३३; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: मान राखू। आरम्भ: “मीतक अपन मान—मान राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 570 — सपन सँ काज। मात्रा-क्रम: १६–३१; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: काज धरू। आरम्भ: “सपन पर दिअ ध्यान—काज धरू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 571 — बेर बाँटू। मात्रा-क्रम: १७–३३; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: बेर बाँटू। आरम्भ: “काजपर दिअ ध्यान—बेर बाँटू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 572 — पहिने सुनू। मात्रा-क्रम: १७–३४; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: पहिने सुनू। आरम्भ: “ककरो अलग विचार—पहिने सुनू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; सामाजिक नैतिकता।

गजल 573 — हुनर निखारू। मात्रा-क्रम: १२–४२; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: निखारू। आरम्भ: “जे अछि ज्ञान—निखारू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; लोकजीवन-श्रम।

गजल 574 — सीमा राखू। मात्रा-क्रम: १४–३३; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: सीमा राखू। आरम्भ: “अपन मान—सीमा राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 575 — पढ़ि बुझू। मात्रा-क्रम: १५–३७; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: पढ़ि बुझू। आरम्भ: “शब्दक भीतर विचार—पढ़ि बुझू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

गजल 576 — बाट चुनू। मात्रा-क्रम: १४–४५; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: बाट चुनू। आरम्भ: “अपन पहिचान—बाट चुनू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 577 — निज बात। मात्रा-क्रम: १४–३७; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: सहेजि राखू। आरम्भ: “मीतक मान—सहेजि राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; सामाजिक नैतिकता।

गजल 578 — प्रश्नक साहस। मात्रा-क्रम: १५–३५; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: प्रश्न करू। आरम्भ: “मनमे उठल विचार—प्रश्न करू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 579 — दिनक क्रम। मात्रा-क्रम: १५–४०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: क्रम बनाउ। आरम्भ: “काजक आधार—क्रम बनाउ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; किशोर-अनुशासन।

गजल 580 — दबावमे निर्णय। मात्रा-क्रम: १४–४३; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: अपन मन सुनू। आरम्भ: “अपन मान—अपन मन सुनू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 581 — मीतक गोपन बात। मात्रा-क्रम: १५–५०; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: गोपन राखू। आरम्भ: “मीतक मान—गोपन राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; सामाजिक नैतिकता।

गजल 582 — अपूर्णतासँ सीख। मात्रा-क्रम: १८–४६; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: फेर सँ सीखू। आरम्भ: “एक चूक नहि हार—फेर सँ सीखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

गजल 583 — अपन सीमा। मात्रा-क्रम: १४–५४; काफिया-रदीफ: –ान · रदीफ: सीमा राखू। आरम्भ: “अपन मान—सीमा राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: प्रकृति-ऋतु; नेह-संबन्ध।

गजल 584 — प्रमाण देखू। मात्रा-क्रम: १६–४४; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: जाँचि लिअ। आरम्भ: “जे सुनलहुँ ओकर आधार—जाँचि लिअ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; समकालीन माध्यम।

गजल 585 — धीरे बढ़ू। मात्रा-क्रम: १५–४६; काफिया-रदीफ: –ास · रदीफ: धीरे बढ़ू। आरम्भ: “करू छोट प्रयास—धीरे बढ़ू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: जीवन-अनुभव।

गजल 586 — थाकल मोन। मात्रा-क्रम: १३–२६; काफिया-रदीफ: –ाम · रदीफ: दिअ। आरम्भ: “थाकल मोनकेँ विराम दिअ”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: किशोर-अनुशासन।

गजल 587 — संग काज। मात्रा-क्रम: १२–२८; काफिया-रदीफ: –ाथ · रदीफ: राखू। आरम्भ: “दलमे सभक साथ राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: नेह-संबन्ध; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 588 — सहायता माँगू। मात्रा-क्रम: २५–३०; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: समयपर। आरम्भ: “बड्डु बढ़ि जाए भार—सहायता माँगू समयपर”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: स्मृति-प्रवास; आत्मसंवाद-निर्णय।

गजल 589 — अपन सीमा राखू। मात्रा-क्रम: २०–२२; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: राखू। आरम्भ: “पहिने अपन मनमे साफ विचार राखू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

गजल 590 — काजक क्रम। मात्रा-क्रम: २०–२२; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: करू। आरम्भ: “पहिने अपन समयक सँभार नीक करू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

गजल 591 — साँच जाँचू। मात्रा-क्रम: २०–२२; काफिया-रदीफ: –ार · रदीफ: जाँचू। आरम्भ: “आएल प्रत्येक समाचार आइ जाँचू”। मुख्य अर्थ-क्षेत्र: आत्मसंवाद-निर्णय; किशोर-अनुशासन।

बिबलियोग्राफी

नीचाँ केवल पोथीक नाम देल जा रहल अछि; वेबसाइट वा जाल-स्रोत सम्मिलित नहि अछि।

- नाटचशास्त्र
- ध्वन्यालोक
- काव्यप्रकाश
- वक्रोक्तिजीवित
- रसगंगाधर
- तत्त्वचिन्तामणि
- [History of Sanskrit Poetics]
- [Logic, Language and Reality]
- [Nets of Awareness: Urdu Poetry and Its Critics]
- [The Well Wrought Urn: Studies in the Structure of Poetry]
- [The Dialogic Imagination: Four Essays]
- [Poetics]

आलेख ४० · काव्य, गजल आ बाल-किशोर साहित्य

दीवान-ए-विदेह : खण्ड २

सारांश

ई अध्ययन दीवान-ए-विदेह खण्ड-२ मे क्रमांक ५९२ सँ ११८१ धरि उपस्थित ५९० गजलकेँ सम्पूर्ण पाठ-समूह रूपेँ पढ़ैत अछि। अध्ययनक पहिल लक्ष्य रचनात्मक पूर्णता, क्रम, शीर्षक, शेर-संख्या, घोषित मात्रा-क्रम, कल-क्रम, यति, काफिया-रदीफ आ संगीतमय परिशिष्टक अभिलेख तैयार करब अछि। दोसर लक्ष्य भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्यपरक दृष्टि, पाश्चात्य रूपवादी आ व्याख्याशास्त्रीय दृष्टि, नव्यन्यायक प्रमाण-विश्लेषण, तथा एहि शोधमे कार्यपरिभाषित विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधारपर काव्य-संसारक बहुस्तरीय समीक्षा करब अछि। पाठक कालक्रमिक विकास स्पष्ट अछि: ५९२–६९२ मे छोट आ विविध मात्रिक विन्यास, ६९३–७३९ मे संक्रमण, आ ७४०–११८१ मे ३२-मात्रिक दीर्घ सम-कल विन्यासक प्रभुत्व। रचनासभमे नेह, नोर, मोन, गाम, भोर, माटि, नीर, लोक, स्मृति, प्रमाण, न्याय, इतिहास आ श्रम बारम्बार अलग-अलग अर्थ-क्षेत्र खोलैत अछि। औपचारिक स्तरपर रदीफक घोषित विन्यास सभ ५९० रचनामे पाठीय अन्त्य-संरचनासँ मेल खाइत देखाइत अछि; तथापि बहरक अंतिम निर्णय उच्चारण-आधारित श्रव्य परीक्षण बिना केवल लिखित मात्रा-घोषणासँ नहि कएल जा सकैत अछि। भाषिक निखार-अंकेक्षण किछु पुनरावृत्त शब्दरूप, गैर-व्यक्ति लेल “छथि”, तथा रोमन पदावलीक अत्यधिक उपस्थितिक सुधार-दिशा सेहो चिह्नित करैत अछि।

बीजशब्द

दीवान-ए-विदेह : खण्ड २ · मैथिली कविता · गजल · बाल-साहित्य · साहित्यिक समीक्षा

१.५०. गजेन्द्र ठाकुर-दीवान-ए-विदेह खण्ड-२-शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

दीवान-ए-विदेह खण्ड-२

५९२–११८१ गजल : गहन शोध, साहित्यिक समीक्षा आ भाषिक निखार-अंकेक्षण

मूल गजलकार : गजेन्द्र ठाकुर

शोध-आलेख

भारतीय काव्यशास्त्र · पाश्चात्य आलोचना · नव्यन्याय · विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

सारांश

ई अध्ययन दीवान-ए-विदेह खण्ड-२ मे क्रमांक ५९२ सँ ११८१ धरि उपस्थित ५९० गजलकेँ सम्पूर्ण पाठ-समूह रूपेँ पढ़ैत अछि। अध्ययनक पहिल लक्ष्य रचनात्मक पूर्णता, क्रम, शीर्षक, शेर-संख्या, घोषित मात्रा-क्रम, कल-क्रम, यति, काफिया-रदीफ आ संगीतमय परिशिष्टक अभिलेख तैयार करब अछि। दोसर लक्ष्य भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्यपरक दृष्टि, पाश्चात्य रूपवादी आ व्याख्याशास्त्रीय दृष्टि, नव्यन्यायक प्रमाण-विश्लेषण, तथा एहि शोधमे कार्यपरिभाषित विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधारपर काव्य-संसारक बहुस्तरीय समीक्षा करब अछि। पाठक कालक्रमिक विकास स्पष्ट अछि: ५९२–६९२ मे छोट आ विविध मात्रिक विन्यास, ६९३–७३९ मे संक्रमण, आ ७४०–११८१ मे ३२-मात्रिक दीर्घ सम-कल विन्यासक प्रभुत्व। रचनासभमे नेह, नोर, मोन, गाम, भोर, माटि, नीर, लोक, स्मृति, प्रमाण, न्याय, इतिहास आ श्रम बारम्बार अलग-अलग अर्थ-क्षेत्र खोलैत अछि। औपचारिक स्तरपर रदीफक घोषित विन्यास सभ ५९० रचनामे पाठीय अन्त्य-संरचनासँ मेल खाइत देखाइत अछि; तथापि बहरक अंतिम निर्णय उच्चारण-आधारित श्रव्य परीक्षण बिना केवल लिखित मात्रा-घोषणासँ नहि कएल जा सकैत अछि। भाषिक निखार-अंकेक्षण किछु पुनरावृत्त शब्दरूप, गैर-व्यक्ति लेल “छथि”, तथा रोमन पदावलीक अत्यधिक उपस्थितिक सुधार-दिशा सेहो चिह्नित करैत अछि।

कुंजी-पद: मैथिली गजल, बहर, काफिया, रदीफ, स्मृति, लोक, नव्यन्याय, समानान्तर इतिहास, भाषिक निखार, दीवान-ए-विदेह।

१. शोधक परिधि आ पाठ-सम्पूर्णता

मूल पोथीक क्रमांक ५९२ सँ ११८१ धरि कुल ५९० गजल भेटैत अछि। क्रमांक निरन्तर अछि; बीचमे कोनो संख्या छुटल नहि। प्रत्येक रचनाक संग शीर्षक, बहरक घोषणा, मात्रा-क्रम, कल-क्रम, यति, काफिया-रदीफ, मूल मिसरा, छन्द-जाँच आ संगीतमय रूपक अलग विभाग उपलब्ध अछि। एहि कारण ई पोथी केवल काव्य-संग्रह नहि, अपन रचना-पद्धति पर स्वयं टिप्पणी करैत काव्य-अभिलेख सेहो बनैत अछि। एहि शोधमे “कोनो रचना नहि छुटए” सिद्धान्तक अर्थ मात्र सूची देब नहि, बल्कि सभ ५९० रचनाकेँ अन्तिम परिशिष्टमे क्रमांक, शीर्षक, औपचारिक सूचना आ पाठीय/समीक्षात्मक केन्द्र सहित दर्ज करब अछि।

२. पद्धति : चारि समानान्तर आलोचनात्मक अक्ष

अध्ययन चारि अक्ष पर एक्केसंग चलैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय अक्ष भाव, रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति आ औचित्य जाँचैत अछि। पाश्चात्य अक्ष रूप, पुनरावृत्ति, संरचना, पाठक-अर्थ, स्मृति आ इतिहासक सम्बन्ध पढ़ैत अछि। नव्यन्याय अक्ष दाबी, प्रमाण, हेतु, व्याप्ति, बाधा, अभाव, शब्दबोध आ निर्णयक सूक्ष्मता पर ध्यान दैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति एहि शोधक कार्यपरिभाषा अनुसार एक्के काव्य-वस्तुकेँ काल, भूगोल, लोक-भाषा, पदार्थ-संस्कृति, स्मृति, श्रम, सामाजिक संस्था आ दार्शनिक प्रश्नक समानान्तर रेखासभ पर पढ़ैत अछि; कोनो एक रेखाकेँ सम्पूर्ण कारण नहि मानैत।

३. पाठक आन्तरिक कालक्रम : रूपक विकास

पोथीक रचना-क्रम अपन भीतर एकटा स्पष्ट छन्दीय विकास देखबैत अछि। प्रारम्भिक खण्डमे १५ सँ २९ मात्रा धरि विविध प्रयोग अछि; बीचक संक्रमण-खण्डमे छोट आ दीर्घ साँचा दुनू भेटैत अछि; ७४० सँ ११८१ धरि ३२-मात्रिक दीर्घ सम-कल ढाँचा स्थिर रूपेँ प्रधान भऽ जाइत अछि। ई परिवर्तन केवल तकनीकी नहि: लम्बा मिसरा बहु-उपवाक्यीय विचार, सामाजिक दृश्य, प्रमाण-विवेचना आ पदार्थ-स्मृतिकेँ एक्के साँसक दू अर्धांशमे रखबाक जगह दैत अछि।

३.१ कालक्रमिक छन्द-सांख्यिकी

क्रम-परिधि	रचना-संख्या	प्रमुख मात्रा-रूप	शेर-संख्या

५९२–६९२	१०१	२० मात्रा: ४१; २६ मात्रा:१२; २४ मात्रा:११; २३ मात्रा: ८;२१ मात्रा:७	५ शेर:९७;६ शेर:१;७ शेर:३
६९३–७३९	४७	३२ मात्रा:१०; १८ मात्रा: ८;१६ मात्रा:५;१९ मात्रा:५;२४ मात्रा:३	५ शेर:१८;६ शेर:२९
७४०–९९९	२६०	३२ मात्रा:२६०	६ शेर:२६०
१०००–११८१	१८२	३२ मात्रा:१८२	६ शेर:१८२

४. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

४.१ रस आ भाव-संरचना

प्रारम्भिक गजलसभमे विरह, नेह, नोर, राति, भोर, मीत आ मोनक बारम्बारता करुण आ शृंगारक मिश्रित भावभूमि बनबैत अछि। मुदा पोथी एकर बाद केवल विरहक दायरा मे नहि रहैत; लोक-न्याय, श्रम, भूख, भाषा, इतिहास, पदार्थ, कृषि, नदी-पोखर, बाजार, विद्यालय, कचहरी, रेल, छापाखाना, औजार आ घरेलू वस्तु काव्य-विषय बनैत अछि। एहिसँ स्थायी भावक निजी केन्द्र सामाजिक संवेदनाक दिस विस्तृत होइत अछि।

४.२ ध्वनि : कहबाक अपेक्षा संकेत

गाम, नीर, डोर, पात, राख, दीप, जड़ि, धूरि, छाह, पगडंडी, कोठी, चूल्हि, करघा, ढेंकी, सूप, माटि आ नदी प्रत्यक्ष वस्तु होइतहुँ एकर अर्थ बहुधा वस्तुगत स्तरसँ आगाँ बढ़ैत अछि। “डोर” सम्बन्ध, क्रम, कारण वा स्मृतिक सूत्र बनैत अछि; “राख” शेष स्मृति, सम्भावित अग्नि आ इतिहासक अवशेष बनैत अछि; “नीर” जीवन, साझेदारी, अधिकार आ स्मृतिक वाहक बनैत अछि। ई बहुअर्थी संकेत-व्यवस्था ध्वनि-सिद्धान्तसँ पढ़ला पर पोथीक सबसँ सशक्त गुणसभमे एक ठहरैत अछि।

४.३ वक्रोक्ति आ वस्तु-विन्यास

पोथीक उत्तरार्द्धमे शीर्षक-निर्माण स्वयं वक्रोक्तिपरक अछि—“बादलक पोथीघर”, “समयक खाली जेब”, “शून्यक पतंग”, “चानक डाकघर” जकाँ संयोजन सामान्य पदार्थकेँ अप्रत्याशित सम्बन्धमे राखैत अछि। वस्तु आ अमूर्त विचारक एहि टक्कर सँ अर्थक नव कोण खुलैत अछि।

४.४ औचित्य

औचित्यक कसौटीपर पोथीक मुख्य सफलता ई अछि जे दर्शनक शब्द प्रायः प्रत्यक्ष उपदेश बनि नहि अबैत, बल्कि गामक दृश्य, औजार, श्रम, देह आ लोक-व्यवहारमे रूपान्तरित होइत अछि। जतए व्याख्यात्मक परिशिष्ट अत्यधिक स्पष्ट अछि, ओतए मूल गजलक ध्वन्यात्मक खुलापन कम भऽ सकैत अछि; अतः पाठ आ व्याख्याक दूरी बनाए राखब साहित्यिक दृष्टिसँ लाभकारी अछि।

५. पाश्चात्य आलोचनात्मक समीक्षा

५.१ रूपवादी निकट-पाठ

रूपवादी दृष्टिसँ काफिया-रदीफ केवल सजावट नहि, बल्कि पुनरावृत्ति द्वारा अर्थक दबाव बनौनिहार यन्त्र अछि। एक्के रदीफ विभिन्न शेरक अन्तमे लौटि प्रत्येक स्वतंत्र कथनकेँ एक साझा ध्वनिक क्षेत्रमे बाँधैत अछि। ७४० पछाति १६+१६ यति-विभाजन बहुत रचनामे तुलनात्मक, कारणात्मक वा दृश्य–निर्णयात्मक द्विखण्डीयता पैदा करैत अछि।

५.२ व्याख्याशास्त्र

पोथी बारम्बार स्मृति आ वर्तमानक बीच आवाजाही करैत अछि। पुरना नाम, अभिलेख, घाट, गाछ, घर, औजार वा पात वर्तमान पाठक लेल केवल अतीत नहि; वर्तमान प्रश्नक आलोकमे ओकर अर्थ फेर बनैत अछि। एहि कारण अर्थ स्थिर “सन्देश” नहि, बल्कि पाठ, स्मृति आ वर्तमान अनुभवक संवाद अछि।

५.३ ऐतिहासिकता आ पदार्थ-संस्कृति

उत्तरार्द्धमे घरेलू आ कृषक वस्तुसभक घनत्व—जाँत, ढेंकी, सूप, करघा, मथनी, सिलौट, लोटा, दउरा, खुरपी, बखार, पुआल, पगहा, चूल्हि—इतिहासकेँ

राजा-युद्धक क्रमसँ हटाकऽ दैनिक जीवनक पदार्थमे स्थापित करैत अछि। एहि ठाम काव्य सूक्ष्म सामाजिक अभिलेखक काज करैत अछि।

५.४ सीमा

लगातार एक्के प्रकारक व्याख्यात्मक “संगीतमय रूप” आ शेर-दर-शेर विवेचन पाठक स्वतंत्र व्याख्याक स्थान किछु ठाम संकुचित करैत अछि। शोध-संस्करणमे ई उपयोगी परिशिष्ट अछि, मुदा शुद्ध काव्य-पाठ संस्करणमे एकरा अलग खण्डमे राखला पर काव्यक स्वायत्तता बढ़त।

६. नव्यन्यायपरक समीक्षा

६.१ प्रमाण-चेतना

पोथीमे “प्रमाण”, “अनुमान”, “व्याप्ति”, “हेतु”, “बाधा”, “अभाव”, “शब्द”, “साक्ष्य”, “पक्ष” जकाँ संकल्पना बारम्बार काव्य-बिम्बमे घुलि अबैत अछि। महत्त्वपूर्ण बात ई जे ई शब्द केवल दार्शनिक नामसूची नहि; धूरिसँ पात, चिन्हसँ कारण, खाली ठामसँ अभाव, लोक-बोलसँ शब्दबोध, अपवादसँ व्याप्ति-जाँच जकाँ क्रियात्मक रूप धरैत अछि।

६.२ संशय सँ निर्णय धरि

अनेक गजल निर्णयक पहिने संशय केँ वैध स्थान दैत अछि। दू पक्ष, चिन्ह, कारण, अपवाद, लोक-साक्ष्य आ फल—एहि क्रमसँ निष्कर्ष बनैत अछि। नव्यन्यायक दृष्टिसँ ई महत्त्वपूर्ण काव्यात्मक गुण अछि: सत्य भावनासँ निषिद्ध नहि, मुदा दावा प्रमाण-विन्याससँ मुक्त सेहो नहि।

६.३ भाषा आ शब्दबोध

भाषा पोथीमे केवल अभिव्यक्तिक माध्यम नहि; ज्ञानक साधन, लोक-स्मृतिक पात्र आ सामाजिक पहुँचक प्रश्न अछि। शब्द भूखक अर्थ खोलि सकैत अछि, मुदा अन्नक स्थान नहि लैत—एहन भेद शब्दबोधक शक्ति आ भौतिक जगतक स्वतंत्रता दुनू सुरक्षित रखैत अछि।

६.४ नव्यन्यायक काव्यात्मक रूपान्तरण

सब सँ सफल ठाम ओ अछि जतए तर्कक तकनीकी पद काव्यक भीतर अदृश्य संरचना बनैत अछि। कम सफल ठाम ओ अछि जतए व्याख्या मूल

शेरक अपेक्षा अधिक सिद्धान्त-वाचक भऽ जाइत अछि। अतः भविष्यक सम्पादकीय निखारमे सूत्रक अपेक्षा दृश्य आ क्रियाकेँ प्राथमिकता देब उपयोगी होयत।

७. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

७.१ कार्यपरिभाषा

एहि अध्ययनमे “विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति”क अर्थ एहन पाठ-पद्धति अछि जाहिमे एक्के वस्तु वा घटना पर अनेक स्वतंत्र मुदा परस्पर-संवादी ऐतिहासिक रेखा एक्केसंग चलैत अछि: भूगोल, भाषा, लोक-स्मृति, पदार्थ-संस्कृति, श्रम, संस्था, देह, पर्यावरण, ज्ञान-पद्धति आ काल। कोनो एक रेखा बाँकी सभकेँ निगलि नहि लैत; भिन्न स्रोतक असहमति स्वयं ऐतिहासिक तथ्य मानल जाइत अछि।

७.२ पोथीमे समानान्तरता

उदाहरणतः इनार/नीरक बिम्ब एक्के समय प्यास, साझा संसाधन, लोक-अधिकार, तकनीकी परिवर्तन, पीढ़ीगत स्मृति आ ग्राम-पहिचान खोलैत अछि। करघा-सूत श्रम, रूप, लय, बाजार आ सामाजिक सम्बन्धक रेखा जोड़ैत अछि। नदी भूगोल, कटान, स्मृति, सीमा, खेती आ इतिहासक परस्पर बदलैत मानचित्र बनैत अछि। एहि प्रकार वस्तु “प्रतीक” मात्र नहि रहैत; समानान्तर इतिहासक प्रवेश-द्वार बनैत अछि।

७.३ अभिलेख आ मौन

पोथी मौन अभिलेखकेँ शून्य प्रमाण नहि मानैत। छूटल नाम, पुरना चिन्ह, मिटैत अक्षर, लोकगीत, पदार्थक घिसान, राहक मोड़—ई सभ आधिकारिक लेखा बाहिरक स्मृति-साक्ष्य बनैत अछि। मुदा काव्य स्वयं सावधान करैत अछि जे अज्ञात ठाम मनमाना कारण जोड़ब उचित नहि; एहि संतुलनमे समानान्तर इतिहास आ प्रमाण-शास्त्र एक-दोसरा केँ नियंत्रित करैत अछि।

८. प्रमुख विषय-विन्यास

८.१ नेह–नोर–मोनक निजी जगत

५९२–६९२ खण्डमे निजी भाव, स्मृति, वियोग, मीत, राति-भोर आ आत्म-संवाद प्रमुख अछि। छोट मात्रिक साँचा एहिठाम भावक संक्षिप्त धड़कन दैत अछि।

८.२ साँच–ज्ञान–प्रमाण

मध्य खण्डसँ सत्य-दाबी, प्रमाण, संशय, कारण, माप, रूप, नाम आ ज्ञानक सीमा बढ़ैत अछि। कविता भावक विरुद्ध तर्क नहि रखैत; तर्ककेँ भावक आत्म-परीक्षण बनबैत अछि।

८.३ लोक–श्रम–पदार्थ

उत्तरार्द्धक घरेलू, कृषक आ शिल्प-वस्तु संग्रहकेँ मिथिलाक दैनिक पदार्थ-संसारसँ जोड़ैत अछि। वस्तुक उपयोग, घिसान, ध्वनि, गन्ध आ श्रम साहित्यिक इतिहासक सूक्ष्म स्रोत बनैत अछि।

८.४ स्मृति–इतिहास–पहिचान

नाम, अभिलेख, पन्ना, पंजी, नकसा, जड़ि, घाट, फोटो, छाप, पोथी आ गीत बारम्बार प्रश्न उठबैत अछि जे अतीत कतए बसैत अछि। उत्तर एकटा स्रोतमे नहि, बल्कि पदार्थ, लोक-वाणी, देह, स्मृति आ लेख्य प्रमाणक सम्मिलित तनावमे भेटैत अछि।

८.५ पर्यावरण आ जल

नदी, पोखर, नहर, मेह, बाढ़, कटान, पाँक, खेत, गाछ, बीज आ जल-साझेदारी प्रकृति कैं केवल पृष्ठभूमि नहि रहय दैत। पर्यावरण सामाजिक न्याय, श्रम, जीवन-चक्र आ ऐतिहासिक परिवर्तनक सक्रिय क्षेत्र बनैत अछि।

९. गजल-रूप आ छन्द-अंकेक्षण

९.१ रचना-संख्या आ शेर-संख्या

कुल ५९० रचनामे ११५ रचना ५ शेर, ४७२ रचना ६ शेर, आ ३ रचना ७ शेरक अछि। सात-शेरवाली रचना क्रमशः ५९६, ५९७ आ ५९८ अछि।

९.२ रदीफ

घोषित रदीफकेँ मतलाक दुनू मिसरा आ बादक प्रत्येक दोसर मिसराक अन्त्यसँ पाठीय रूपेँ मिलान कएल गेल। विरामचिह्नकेँ अन्त्य-ध्वनिक हिस्सा नहि मानि ५९०/५९० रचनामे रदीफ-अन्त्य मेल भेटल। ई जाँच रदीफक लिखित स्थिरता प्रमाणित करैत अछि; काफियाक श्रुतिगत शुद्धता आ बहरक सम्पूर्ण उच्चारण-विन्यास अलग श्रव्य जाँच माँगैत अछि।

९.३ बहरक दाबी

मूल पोथी प्रत्येक गजल लेल मात्रा-क्रम आ कल-क्रम घोषित करैत अछि। लिखित पाठमे एहि घोषणाक आन्तरिक एकरूपता व्यापक अछि, मुदा वास्तविक बहरक अंतिम सत्यापन लेल स्वाभाविक मैथिली उच्चारण, ह्रस्व-दीर्घ, संयुक्ताक्षर, शब्दान्त स्वर आ गायन-प्रयोग सुनल आवश्यक अछि। तेँ एहि शोधमे “घोषित छन्द-सूचना” आ “स्वतंत्र श्रव्य सत्यापन” केँ एक चीज नहि मानल गेल अछि।

९.४ संगीतमय परिशिष्ट

सभ रचनाक संग संगीतमय प्रस्तुति-सूचना देल गेल अछि। ई गजलकेँ मुद्रित पाठसँ प्रस्तुति-कला धरि विस्तारित करैत अछि। तथापि आरम्भिक लगभग एक सय रचनामे एक्के प्रकारक प्रस्तुति-वाक्यांशक पुनरावृत्ति अधिक अछि; सम्पादकीय संक्षेप कएलासँ पुस्तकक साहित्यिक घनत्व बढ़ि सकैत अछि।

१०. शुद्ध मैथिली निखार-अंकेक्षण

ई अंकेक्षण मूल काव्य-पाठकेँ स्वत: बदलैत नहि; प्रकाशनक अगिला शुद्धिपाठ लेल चिह्नित रूप देत अछि। रूप-सुधार करैत समय बहर, काफिया आ रदीफ टूटबाक सम्भावना अलग सँ जाँचल जाए।

मूल रूप	अनुशंसित रूप	सम्पूर्ण पोथीमे	गजल-मिसरामे
हरेक	सभ	१	०
पानी	पानि	३	२
कुआँ	इनार	१४	७
गायब	बिलायल/नहि अछि	१	०
भूलल	बिसरल	१	०

पीतल	पित्तरि	१०	१
चाय	चाह	३	२
कमरा	कोठली	२	१

“छथि”क १ प्रयोगमे एकटा “पाठक ... देख सकैत छथि” व्यक्ति-सम्मानार्थक अछि; बाँकी लगभग ८ ठाम दर्शन-पुस्तक/स्रोत जकाँ गैर-व्यक्ति विषय लेल “अछि” उपयुक्त होयत।

रोमन लिपिक पद १३८३ अनुच्छेदमे भेटैत अछि। एकर बड़ भाग संगीतमय निर्देशमे गति-संकेत आ प्रस्तुति-शब्दावली अछि। शोध-संस्करणमे जँ रोमन रूप राखब आवश्यक हो तँ ओकरा कोष्ठकमे राखि पहिने मैथिली रूप देब उचित: “गति [tempo]”, “वाद्य-विन्यास [arrangement]”, “आरम्भ [intro]”, “विराम [pause]”, “दोहराव [repeat]” इत्यादि। प्रकाशनक शुद्ध मैथिली संस्करणमे रोमन रूप हटाओल जा सकैत अछि।

विशेष सावधानी: “पानी→पानि”, “कुआँ→इनार”, “पीतल→पित्तरि”, “चाय→चाह”, “कमरा→कोठली” जकाँ सुधार जँ काफिया वा घोषित मात्रा-साँचा पर असर करैत हो तँ पहिने नवा उच्चारण-वजन जाँचू। भाषा-निखार छन्द-सत्यापनक बादे अन्तिम मानल जाए।

११. समेकित साहित्यिक मूल्यांकन

दीवान-ए-विदेह खण्ड-२ क महत्त्व ओकर संख्या मात्रमे नहि, बल्कि निजी गीतात्मकता सँ प्रमाण-चेतना, लोक-स्मृति, पदार्थ-संस्कृति आ समानान्तर इतिहासक दिस बढ़ैत संरचनात्मक यात्रा मे अछि। ५९२–६९२ खण्ड पाठक कैं कविक निजी ध्वनि-कोश देत अछि; ६९३–७३९ संक्रमण विचारक शब्दावली आ लम्बा संरचनाक प्रयोगशाला अछि; ७४०–११८१ मे १६+१६ सम-कल ढाँचा एकटा विस्तृत काव्य-मशीन जकाँ काम करैत अछि जाहिमे दृश्य, तर्क, स्मृति आ सामाजिक अर्थ एक्के मिसरामे दू गति पबैत अछि।

रचनात्मक जोखिम सेहो एहि महत्त्वक उलटा पक्ष अछि। अत्यधिक नियमित साँचा अनेक गजलमे पूर्वानुमेय वाक्य-लय पैदा करैत अछि; व्याख्यात्मक परिशिष्ट किछु ठाम मूल शेरक रहस्य कम करैत अछि; आ दार्शनिक शब्दावलीक घनत्व जँ दृश्यात्मकता कम करए तँ कविता निबन्धक नजदीक पहुँचि सकैत अछि। मुदा सफल रचनामे दर्शन वस्तुक भीतर अदृश्य

रहैत अछि—राख, बीज, डोर, नीर, औजार, पात, घाट, धूरि, जड़ि, चूल्हि, करघा —आ पाठक विचार तक दृश्य सँ पहुँचैत अछि। एहि ठाम संग्रह अपन विशिष्ट स्वर अर्जित करैत अछि।

भविष्यक आलोचनात्मक संस्करण लेल तीन स्तर अलग रखल उपयोगी होयत: मूल गजल-पाठ; छन्द-प्रमाण-पत्र; आ संगीतमय/दार्शनिक टिप्पणी। एहि पृथक्करणसँ काव्यक स्वायत्तता, शोधक सत्यापनक्षमता आ संगीत-प्रयोग तीनू सुरक्षित रहत।

१२. सम्पूर्ण रचना-अनुशीलन : गजल ५९२–११८१

नीचाँक सूचीमे सभ ५९० गजल क्रमश: दर्ज अछि। “पाठीय केन्द्र” मूल पोथीमे उपलब्ध भाव-संकेत पर आधारित अछि; जतए अलग भाव-सूचना उपलब्ध नहि, ओतए केवल मूल मिसरामे बारम्बार उपस्थित पदसभक सांख्यिक संकेत देल गेल अछि। एहि सूचीमे कोनो रचना छोड़ल नहि गेल अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
५९२	साँचक मान	१८ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+१०; ५ शेर; काफिया (मान, ज्ञान, ध्यान, गान, प्राण, दान); रदीफ राखू	मुख्य आवर्ती पद: नीक ·बोल ·बीत ·जागे ·मेह।
५९३	ओकर नाम नोर छल	१८ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+१०; ५ शेर; काफिया (नोर, भोर, जोर, डोर, घोर, चोर); रदीफ छल	मुख्य आवर्ती पद: छल ·रात ·मोनक ·ओकर ·बीत।
५९४	मोन बीच रात रहल	१७ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+९; ५ शेर; काफिया (हार, पार, धार, भार, सार, तार); रदीफ रहल	मुख्य आवर्ती पद: रात ·टूट · हार ·साँझ ·छाह।
५९५	मीत मोन प्राण छल	१६ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+८; ५	मुख्य आवर्ती पद: छल ·रात ·जाग ·ढल ·बीत।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		शेर; काफिया (प्राण, मान, ध्यान, गान, दान, ज्ञान); रदीफ छल	
५९६	नेहक अन्तिम छोर	१७ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+९; ७ शेर; काफिया (नोर, भोर, जोर, डोर, घोर, चोर, ठोर, छोर); रदीफ रहल	मुख्य आवर्ती पद: रात ·बीत ·घाव ·थाक ·बचल।
५९७	अहाँ बिनु रहल	२१ मात्रा प्रति मिसरा; यति ११+१०; ७ शेर; काफिया (नोर, भोर, डोर, छोर, जोर, ठोर, सोर, ओर); रदीफ अहाँ बिनु रहल	मुख्य आवर्ती पद: अहाँ ·बिनु ·ओहि ·हमर ·नहि।
५९८	जे मोनसँ नै गेल	१७ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+९; ७ शेर; काफिया (नोर, भोर, डोर, छोर, जोर, सोर, ठोर, कोर); रदीफ मोनसँ नै गेल	मुख्य आवर्ती पद: मोनसँ ·नै ·टूट ·रात ·ढल।
५९९	अहाँ मोनमे रहि गेल	२३ मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१३; ५ शेर; काफिया (नोर, भोर, डोर, छोर, घोर, ठोर); रदीफ अहाँ मोनमे रहि गेल	मुख्य आवर्ती पद: मोनमे ·रहि ·अहाँ ·हमर ·रात।
६००	जे नोर मोनमे जागल अछि	२२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१२; ५ शेर; काफिया (नोर, भोर, डोर, छोर,	मुख्य आवर्ती पद: मोनमे ·जागल ·रात ·बीत ·थाक।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		सोर); रदीफ मोनमे जागल अछि	
६०१	जे हमर संग रहैत अछि	२२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१२; ५ शेर; काफिया (नोर, डोर, सोर, भोर, छोर, ठोर); रदीफ हमर संग रहैत अछि	मुख्य आवर्ती पद: हमर · रात · बीत · थाक · घाव।
६०२	ओ नोर हमरा मोन पड़ैए	१५ मात्रा प्रति मिसरा; यति ४+११; ६ शेर; काफिया (नोर, भोर, डोर, छोर, ठोर, सोर, कोर); रदीफ हमरा मोन पड़ैए	मुख्य आवर्ती पद: हमरा · बड्डु · रुवैए · डोर · निन्न।
६०३	ओ भोर हमरा मोन पड़ैए	२४ मात्रा प्रति मिसरा; यति ११+१३; ५ शेर; काफिया (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर, ठोर); रदीफ हमरा मोन पड़ैए	मुख्य आवर्ती पद: हमरा · बड्डु · आइ · ओहि · गप।
६०४	प्रीत हमरा भीतर अछि	२२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१२; ५ शेर; काफिया (मीत, प्रीत, गीत, रीत); रदीफ हमरा भीतर अछि	मुख्य आवर्ती पद: हमरा · भीतर · रात · बड्डु · बीत।
६०५	दाग मोनसँ नहि जाइए	२३ मात्रा प्रति मिसरा; यति ११+१२; ५ शेर; काफिया (दाग, आग, राग); रदीफ मोनसँ नहि जाइए	मुख्य आवर्ती पद: मोनसँ · नहि · बड्डु · आइ · ओहि।
६०६	मीत फेर नहि	२० मात्रा प्रति	मुख्य आवर्ती पद: नहि ·

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
	भेटल	मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया (मीत, गीत, प्रीत, रीत); रदीफ फेर नहि भेटल	भेटल · रात · बीत · थाक।
६०७	नोर मोनमे बसल अछि	२१ मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+११; ५ शेर; काफिया (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर, ठोर); रदीफ मोनमे बसल अछि	मुख्य आवर्ती पद: मोनमे · बसल · रात · बीत · थाक।
६०८	नोर अहाँ बिनु रहि गेल	२१ मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+११; ५ शेर; काफिया (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर, ठोर); रदीफ अहाँ बिनु रहि गेल	मुख्य आवर्ती पद: अहाँ · बिनु · रहि · रात · बीत।
६०९	मीत मोनमे रहि जाइए	२३ मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१३; ५ शेर; काफिया (मीत, गीत, प्रीत, रीत); रदीफ मोनमे रहि जाइए	मुख्य आवर्ती पद: मोनमे · रहि · रात · बीत · थाक।
६१०	भूल मोनसँ नहि गेल	१९ मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+९; ५ शेर; काफिया (भूल, फूल, शूल, मूल); रदीफ मोनसँ नहि गेल	मुख्य आवर्ती पद: मोनसँ · नहि · रात · भूल · बीत।
६११	नेह एखनो बचल अछि	२१ मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+११; ५ शेर; काफिया (नेह, गेह, मेह, देह); रदीफ एखनो बचल	मुख्य आवर्ती पद: एखनो · बचल · रात · गेह · बीत।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		अछि	
६१२	ओ ठोर फेरो मोन पड़ैए	२३ मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१३; ५ शेर; काफिया (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर, ठोर); रदीफ फेरो मोन पड़ैए	मुख्य आवर्ती पद: फेरो · रात · बीत · थाक · घट।
६१३	जे नोर हमरा छोड़ि नहि गेल	२३ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+९; ५ शेर; काफिया –ोर (नोर, डोर, सोर); रदीफ छोड़ि नहि गेल	मुख्य आवर्ती पद: नहि · छोड़ि · थामल · टूटल · डोर।
६१४	नेहक गान बचल अछि	२१ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+७; ५ शेर; काफिया –ान (प्राण, मान, गान, ज्ञान, ध्यान); रदीफ बचल अछि	मुख्य आवर्ती पद: नहि · बचल · टूटल · प्राण · निन्न।
६१५	ओ नाम एखनो मोनमे अछि	२६ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१२; ५ शेर; काफिया –াম (নাম, গাম, ঘাম, ঠাম); রদীফ এখনো মোনমে অছি	মুख্য আবর্তী পদ: নহি · এখনো · মোনমে · থামল · ছুটল।
६१६	आस भीतर रहैए	२१ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+७; ५ शेर; काफिया –াস (আস, সাঁস, বাস); রদীফ রহৈए	মুख্য আবর্তী পদ: নহি · টূটল · মানল · সাঁস · বাস।
६१७	आस संग चलैत अछि	२१ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+७; ५ शेर; काफिया –াস (আস, সাঁস, বাস);	মুख্য আবর্তী পদ: নহি · থামল · মানল · সাঁস · নিন্ন।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		रदीफ चलैत अछि	
६१८	आस अहाँक पाछाँ रहैए	२५ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+११; ५ शेर; काफिया –ास (आस, साँस, बास); रदीफ पाछाँ रहैए	मुख्य आवर्ती पदः नहि · पाछाँ · भीतर · छूटल · थामल।
६१९	जे नोर आबो मोनमे अछि	२६ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१२; ५ शेर; काफिया –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर); रदीफ आबो मोनमे अछि	मुख्य आवर्ती पदः नहि · आबो · मोनमे · थामल · छूटल।
६२०	नेह राति भरि जागैत अछि	२२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+८; ५ शेर; काफिया –ेह (नेह, देह, मेह); रदीफ जागैत अछि	मुख्य आवर्ती पदः नहि · जागैत · थामल · रात · निन्न।
६२१	आस आबो संग रहैत अछि	२३ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+९; ५ शेर; काफिया –ास (आस, साँस, बास); रदीफ संग रहैत अछि	मुख्य आवर्ती पदः नहि · मानल · थामल · साँस · रात।
६२२	जे नोर अहाँक पाछाँ रहि गेल	२४ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१०; ५ शेर; काफिया –ोर (नोर, डोर, सोर); रदीफ पाछाँ रहि गेल	मुख्य आवर्ती पदः नहि · पाछाँ · रहि · थामल · डोर।
६२३	ओ भोर मोनमे रहि गेल	२४ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१०; ५ शेर; काफिया –ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर); रदीफ मोनमे	मुख्य आवर्ती पदः नहि · मोनमे · रहि · निन्न · आयल।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		रहि गेल	
६२४	ओ गान हमरा संग अछि	२४ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१०; ५ शेर; काफिया –ान (मान, प्राण, गान, ज्ञान, ध्यान); रदीफ हमरा संग अछि	मुख्य आवर्ती पद: नहि · हमरा · निन्न · आयल · थामल।
६२५	ओ नोर हमरा मोन पड़ैए	२७ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१३; ५ शेर; काफिया –ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर); रदीफ हमरा मोन पड़ैए	मुख्य आवर्ती पद: नहि · हमरा · निन्न · आयल · थामल।
६२६	ओ नेह मोनमे बचल अछि	२५ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+११; ५ शेर; काफिया –ेह (नेह, देह, मेह, गेह); रदीफ मोनमे बचल अछि	मुख्य आवर्ती पद: नहि · मोनमे · बचल · निन्न · आयल।
६२७	ओ नाम आबो संग अछि	२४ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१०; ५ शेर; काफिया –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम); रदीफ आबो संग अछि	मुख्य आवर्ती पद: नहि · आबो · निन्न · आयल · थामल।
६२८	ओ नेह राति भरि जागैत अछि	२७ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१३; ५ शेर; काफिया –ेह (नेह, देह, मेह, गेह); रदीफ राति भरि जागैत अछि	मुख्य आवर्ती पद: नहि · भरि · जागैत · निन्न · आयल।
६२९	ओ नेह हमरा भीतर रहैए	२९ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१५; ५ शेर; काफिया –ेह	मुख्य आवर्ती पद: नहि · हमरा · भीतर · निन्न · आयल।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		(नेह, देह, मेह, गेह); रदीफ हमरा भीतर रहैए	
६३०	मीत फेर नहि भेटल	२४ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१०; ५ शेर; काफिया -ीत (मीत, गीत, प्रीत, रीत); रदीफ फेर नहि भेटल	मुख्य आवर्ती पद: नहि · भेटल · निन्न · आयल · थामल।
६३१	ओ नोर मोनसँ नहि गेल	२३ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+९; ५ शेर; काफिया -ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर); रदीफ मोनसँ नहि गेल	मुख्य आवर्ती पद: नहि · मोनसँ · निन्न · आयल · थामल।
६३२	ओ नोर मोनमे बसल अछि	२५ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+११; ५ शेर; काफिया -ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर); रदीफ मोनमे बसल अछि	मुख्य आवर्ती पद: नहि · मोनमे · बसल · निन्न · आयल।
६३३	नोर हमरा संग अछि	२४ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१०; ५ शेर; काफिया -ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर); रदीफ हमरा संग अछि	मुख्य आवर्ती पद: नहि · हमरा · निन्न · आयल · थामल।
६३४	नाम मोनमे रहि गेल	२४ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१०; ५ शेर; काफिया -াम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम); रदीफ मोनमे रहि गेल	मुख्य आवर्ती पद: नहि · मोनमे · रहि · निन्न · आयल।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
६३५	मीत आबो संग अछि	२४ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१०; ५ शेर; काफिया –ीत (मीत, प्रीत, गीत, रीत); रदीफ आबो संग अछि	मुख्य आवर्ती पदः नहि · आबो · निन्न · आयल · थामल।
६३६	नेह मोनमे बचल अछि	२५ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+११; ५ शेर; काफिया –ेह (नेह, देह, मेह, गेह); रदीफ मोनमे बचल अछि	मुख्य आवर्ती पदः नहि · मोनमे · बचल · निन्न · आयल।
६३७	दाग हमरा भीतर रहैए	२९ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१५; ५ शेर; काफिया –ाग/आग (दाग, राग, आग); रदीफ हमरा भीतर रहैए	मुख्य आवर्ती पदः नहि · हमरा · भीतर · निन्न · आयल।
६३८	नोर मोनसँ नहि गेल	२३ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+९; ५ शेर; काफिया –ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर); रदीफ मोनसँ नहि गेल	मुख्य आवर्ती पदः नहि · मोनसँ · निन्न · आयल · थामल।
६३९	नाम हमरा मोन पड़ैए	२७ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१३; ५ शेर; काफिया –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम); रदीफ हमरा मोन पड़ैए	मुख्य आवर्ती पदः नहि · हमरा · निन्न · आयल · थामल।
६४०	प्रीत हमरा संग अछि	२४ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१०; ५ शेर; काफिया –ीत (मीत, प्रीत, गीत,	मुख्य आवर्ती पदः नहि · हमरा · निन्न · आयल · थामल।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		रीत); रदीफ हमरा संग अछि	
६४१	नेह मोनमे रहि गेल	२४ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१०; ५ शेर; काफिया -ेह (नेह, देह, मेह, गेह); रदीफ मोनमे रहि गेल	मुख्य आवर्ती पद: नहि · मोनमे · रहि · निन्न · आयल।
६४२	नोर मोनमे बसल अछि	२५ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+११; ५ शेर; काफिया -ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर); रदीफ मोनमे बसल अछि	मुख्य आवर्ती पद: नहि · मोनमे · बसल · निन्न · आयल।
६४३	नोर फेरो आयल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया -ोर (नोर, भोर, डोर, सोर); रदीफ फेरो आयल	मुख्य आवर्ती पद: आयल · फेरो · जागल · रात · ढल।
६४४	नाम मोनमे राखू	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया -াম (নাম, গাম, ঘাম, ঠাম, ধাম); রদীফ মোনমে রাখূ	মুখ্য আবর্তী পদ: মোনমে · জাগল · ঢল · দীপ · বালল।
६४५	प्रीत फेरो जागल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया -ীত (মীত, প্রীত, গীত, রীত); রদীফ ফেরো জাগল	মুখ্য আবর্তী পদ: জাগল · ফেরো · বন্দ · ডোর · টূট।
६४६	ध्यान मोनमे राखू	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया -ান	মুখ্য আবর্তী পদ: মোনমে · জাগল · বোল · বন্দ · গ্রন্থ।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		(मान, ज्ञान, ध्यान, गान, प्राण); रदीफ मोनमे राखू	
६४७	मीत मोनमे खोजू	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ीत (मीत, प्रीत, गीत, रीत); रदीफ मोनमे खोजू	मुख्य आवर्ती पदः मोनमे · खोजू · जागल · गाढ़ · धूप।
६४८	गाम मोनमे देखू	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –াম (নাম, গাম, ঘাম, ঠাম, ধাম); রদীফ মোনমে দেখূ	মুখ্য আবর্তী পদঃ মোনমে · জাগল · চढ় · রাত · ধূপ।
६४९	नोर मोनमे राखू	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –োর (নোর, ভোর, ডোর, সোর); রদীফ মোনমে রাখূ	মুখ্য আবর্তী পদঃ মোনমে · জাগল · আয়ল · রাত · গাঢ়।
६५०	ज्ञान फेरो जागल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ান (জ্ঞান, ধ্যান, গান, প্রাণ, মান); রদীফ ফেরো জাগল	মুখ্য আবর্তী পদঃ জাগল · ফেরো · বন্দ · দীপ · বালল।
६५१	प्रीत मोनमे राखू	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ীত (মীত, প্রীত, গীত, রীত); রদীফ মোনমে রাখূ	মুখ্য আবর্তী পদঃ মোনমে · জাগল · বন্দ · সূন্ন · থাম।
६५२	नोर मोनमे खोजू	२० मात्रा प्रति	मुख्य आवर्ती पदः मोनमे ·

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर); रदीफ मोनमे खोजू	खोजू ·जागल ·आयल ·रात।
६५३	नोर मोन संग छल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर, छोर); रदीफ मोन संग छल	मुख्य आवर्ती पदः छल ·सून्न ·बन्द ·गाढ़ ·घाव।
६५४	नाम मोन बीच छल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम); रदीफ मोन बीच छल	मुख्य आवर्ती पदः छल ·ढल ·गाढ़ ·बन्द ·सून्न।
६५५	मीत फेर दूर गेल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ीत (मीत, प्रीत, गीत, रीत); रदीफ फेर दूर गेल	मुख्य आवर्ती पदः छल ·गाढ़ ·बन्द ·सून्न ·टूट।
६५६	नाम मोन संग छल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम); रदीफ मोन संग छल	मुख्य आवर्ती पदः छल ·गाढ़ ·बन्द ·सून्न ·ढल।
६५७	प्रीत मोन बीच छल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ीत (मीत, प्रीत, गीत, रीत); रदीफ मोन बीच छल	मुख्य आवर्ती पदः छल ·सून्न ·बन्द ·ढल ·गाढ़।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
६५८	गाम फेर दूर गेल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –াম (নাম, গাম, ঘাম, ঠাম, ধাম); रदीफ फेर दूर गेल	मुख्य आवर्ती पदः छल ·सून्न ·गाढ़ ·बन्द ·ढल।
६५९	नोर फेर मोन आय	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –োর (নোর, ভোর, ডোর, সোর, ছোর); रदीफ फेर मोन आय	मुख्य आवर्ती पदः छल ·सून्न ·बन्द ·गाढ़ ·निन्न।
६६०	मान मोन बीच छल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ান (মান, জ্ঞান, ধ্যান, গান, প্রাণ, দান); रदीफ मोन बीच छल	मुख्य आवर्ती पदः छल ·ढल · बन्द ·जाग ·गाढ़।
६६१	नाम फेर लग छल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –াম (নাম, গাম, ঘাম, ঠাম, ধাম); रदीफ फेर लग छल	मुख्य आवर्ती पदः छल ·लग ·बन्द ·सून्न ·ढल।
६६२	मीत साँझ संग आय	२० मात्रা प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ীত (মীত, প্রীত, গীত, রীত); रदीफ साँझ संग आय	मुख्य आवर्ती पदः छल · साँझ ·बन्द ·सून्न ·गाढ़।
६६३	ओ नाम मोन संग अछि	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –াম	मुख्य आवर्ती पदः मन्द ·गाढ़ ·सून्न ·पास ·रात।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		(नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम); रदीफ मोन संग अछि	
६६४	ओ डोर मोन पास अछि	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर, छोर); रदीफ मोन पास अछि	मुख्य आवर्ती पद: पास ·मन्द ·गाढ़ ·सून्न ·डोर।
६६५	ओ नेह मोन बीच अछि	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ेह (नेह, देह, मेह, गेह); रदीफ मोन बीच अछि	मुख्य आवर्ती पद: मन्द ·गाढ़ ·पास ·सून्न ·साँझ।
६६६	अहाँक नाम, निन्न दूर अछि	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम); रदीफ निन्न दूर अछि	मुख्य आवर्ती पद: निन्न ·मन्द ·सून्न ·पास ·गाढ़।
६६७	ई सोर नोर संग अछि	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, डोर, छोर); रदीफ नोर संग अछि	मुख्य आवर्ती पद: मन्द ·गाढ़ ·सून्न ·पास ·डोर।
६६८	नोर मौन, नेह गाढ़ अछि	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर, छोर); रदीफ नेह गाढ़ अछि	मुख्य आवर्ती पद: गाढ़ ·मन्द ·सून्न ·पास ·डोर।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
६६९	नेह एखनो मोन संग अछि	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया ‑ेह (नेह, देह, मेह, गेह); रदीफ मोन संग अछि	मुख्य आवर्ती पद: मन्द ·सून्न ·पास ·गाढ़ ·साँझ।
६७०	पुरन सोर घर बीच अछि	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया ‑ोर (सोर, भोर, डोर, छोर, नोर); रदीफ घर बीच अछि	मुख्य आवर्ती पद: मन्द ·गाढ़ ·सून्न ·पास ·डोर।
६७१	अहाँक नाम आबो पास अछि	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया ‑াম (নাম, গাম, ঘাম, ঠাম, ধাম); रदीफ आब पास अछि	मुख्य आवर्ती पद: पास ·आब ·मन्द ·गाढ़ ·सून्न।
६७२	पुरन दुआरि फेर मोन पड़ल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया ‑ার (পার, হার, তার, সার, ধার); रदीफ मोन पास अछि	मुख्य आवर्ती पद: पास ·मन्द ·गाढ़ ·सून्न ·पार।
६७३	बुझल दीपक उजियार	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया ‑ার (পার, হার, তার, সার, ধার); रदीफ मोन बीच अछि	मुख्य आवर्ती पद: गाढ़ ·मन्द ·छाह ·पार ·सून्न।
६७४	मौनक सोर भीतर जागल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया ‑োর (সোর, ভোর, নোর, ঠোর,	मुख्य आवर्ती पद: गाढ़ ·पास ·मन्द ·डोर ·ठोर।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		डोर, छोर); रदीफ मोन संग अछि	
६७५	दूर गेलहुँ तऽ नेह बुझलहुँ	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया -ेह (नेह, देह, गेह, मेह); रदीफ आब पास अछि	मुख्य आवर्ती पद: पास ·गाढ़ ·आब ·मन्द ·घाव।
६७६	मौनक तान भीतर बजैत रहल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया -ान (तान, गान, प्राण, ध्यान, मान); रदीफ मोन संग अछि	मुख्य आवर्ती पद: गाढ़ ·मन्द ·सुर ·तान ·प्राण।
६७७	अन्हारक भोर ककरो नहि देखायल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया -ोर (भोर, सोर, नोर, ठोर, डोर, छोर); रदीफ लोक बीच अछि	मुख्य आवर्ती पद: गाढ़ ·ठोर · पास ·रात ·सून्न।
६७८	मेटल नाम हमरा घर आयल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया -াম (নাম, গাম, ঘাম, ঠাম, ধাম); রদীফ ঘর বীচ অছি	মুখ্য আবর্তী পদ: গাঢ় ·মন্দ ·সূন্ন ·পাস ·ভীত।
६७९	अन्हार हमरा मोन बुझायल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया -ার (হার, পার, তার, সার, ধার, ভার); রদীফ মোন সংগ অছি	মুখ্য আবর্তী পদ: গাঢ় ·মন্দ ·ছাহ ·রাত ·পার।
६८०	जे गेल से भीतर रहि गेल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०;	मुख्य आवर्ती पद: गाढ़ ·मन्द

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		५ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, ठोर, डोर, छोर); रदीफ मोन बीच अछि	·पास ·रात ·सून्न।
६८१	पानि अपन पिआस कहैत रहल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ोर (सोर, नोर, भोर, डोर, ठोर); रदीफ साँच गप अछि	मुख्य आवर्ती पद: गप ·गाढ ·मन्द ·सून्न ·रात।
६८२	सून्न दुआरि एतबे कहि गेल	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ५ शेर; काफिया –ार (पार, हार, तार, सार, धार); रदीफ घर बीच अछि	मुख्य आवर्ती पद: गाढ ·पार ·सून्न ·पास ·धार।
६८३	नेहक बाति रहि जाइत अछि	२६ मात्रा प्रति मिसरा; यति १२+१४; ५ शेर; काफिया –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, ठोर, छोर); रदीफ मोनमे बाँचल अछि	मुख्य आवर्ती पद: मोनमे · बाँचल ·थामल ·बड्डु ·छाह।
६८४	अन्हार हमरासँ गप करैत अछि	२६ मात्रा प्रति मिसरा; यति १२+१४; ५ शेर; काफिया –ार (पार, हार, धार, तार, सार, भार); रदीफ भीतर जागल अछि	मुख्य आवर्ती पद: भीतर · जागल ·बड्डु ·थामल ·रात।
६८५	नोर हमरा संग जागैत रहल	२६ मात्रा प्रति मिसरा; यति १२+१४; ५ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, शीत); रदीफ नेहमे बाँचल अछि	मुख्य आवर्ती पद: नेहमे · बाँचल ·जागल ·थामल · बड्डु।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
६८६	साँझक बादो घर नहि सुतल	२६ मात्रा प्रति मिसरा; यति १२+१४; ५ शेर; काफिया –াম (নাম, গাম, ঘাম, ঠাম, ধাম); রদীফ ঘরমে বাঁচল অছি	मुख्य आवर्ती पद: घरमे · बाँचल · बड्डु · जागल · थामल।
६८७	नाम मेटल, सोर नहि मेटल	२६ मात्रा प्रति मिसरा; यति १२+१४; ५ शेर; काफिया –ोर (सोर, नोर, भोर, ठोर, डोर, छोर); रदीफ घरमे जागल अछि	मुख्य आवर्ती पद: जागल · घरमे · बड्डु · थामल · डोर।
६८८	चान डूबल, नेह नहि डूबल	२६ मात्रा प्रति मिसरा; यति १२+१४; ५ शेर; काफिया –ান (চান, তান, গান, মান, প্রাণ); রদীফ মোনমে জাগল অছি	मुख्य आवर्ती पद: जागल · मोनमे · बड्डु · गाढ़ · थामल।
६८९	पार भेटल, मझधार बाँचल	२६ मात्रा प्रति मिसरा; यति १२+१४; ५ शेर; काफिया –ার (পার, হার, তার, সার, ধার, ভার); রদীফ নেহমে জাগল অছি	मुख्य आवर्ती पद: जागल · नेहमे · बड्डु · थामल · डोर।
६९०	सून्न गामक एकटा साँझ	२६ मात्रा प्रति मिसरा; यति १२+१४; ५ शेर; काफिया –াম (গাম, নাম, ঘাম, ঠাম, ধাম); রদীফ মোনমে বাঁচল অছি	मुख्य आवर्ती पद: मोनमे · बाँचल · बड्डु · सून्न · थामल।
६९१	ठोर गुम्म, भीतर गीत	२६ मात्रा प्रति मिसरा; यति १२+१४; ५ शेर; काफिया –ীত (গীত, মীত, প্রীত,	मुख्य आवर्ती पद: जागल · भीतर · थामल · बड्डु · ठोर।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		रीत, शीत); रदीफ भीतर जागल अछि	
६९२	भोर आयल, राति नहि गेल	२६ मात्रा प्रति मिसरा; यति १२+१४; ५ शेर; काफिया –ोर (भोर, सोर, नोर, ठोर, डोर, छोर); रदीफ घरमे बाँचल अछि	मुख्य आवर्ती पद: घरमे · बाँचल · बड्डु · जागल · थामल।
६९३	जे भोर मोन पड़ैत अछि	२२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १३+९; ५ शेर; काफिया –ोर (भोर, ठोर, नोर, छोर, सोर, डोर); रदीफ मोन पड़ैत अछि	स्मृति · गाम · श्रम · देह · नेह
६९४	जीवनक सार कहू	२३ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+९; ५ शेर; काफिया –ार (पार, सार, भार, हार, धार, मार); रदीफ कहू	पीड़ा · साँच · सेवा · भय · नेह
६९५	मोनक भीतर राह रहू	२५ मात्रा प्रति मिसरा; यति १२+१३; ५ शेर; काफिया –ाह (राह, छाह, चाह, थाह, आह, दाह); रदीफ रहू	माटि · पानि · राति · नेह · धीर
६९६	केवल ई मान नहि	२३ मात्रा प्रति मिसरा; यति १३+१०; ५ शेर; काफिया –ान (मान, जान, गान, थान, दान, आन); रदीफ नहि	मान · जीवन · गीत · कर्म · दान
६९७	जीवन आस जकाँ	२२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १३+९; ५	पीड़ा · आशा · दूरी · माया · जीवन

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		शेर; काफिया –ास (आस, साँस, पास, वास, घास, रास); रदीफ जकाँ	
६९८	जीवनमे गाम बिनु	२१ मात्रा प्रति मिसरा; यति ११+१०; ५ शेर; काफिया –াম (गाम, दाम, काम, नाम, ठाम, घाम); रदीफ बिनु	परदेश ·श्रम ·भूख ·पहचान · खेती
६९९	ई केवल काल छल	२४ मात्रा प्रति मिसरा; यति १४+१०; ५ शेर; काफिया –াল (काल, जाल, ताल, चाल, हाल, ढाल); रदीफ छल	काल ·माया ·आशा ·चाल · नेह
७००	मोनक भीतर पीर कतए	२७ मात्रा प्रति मिसरा; यति १३+१४; ५ शेर; काफिया –ীর (पीर, नीर, धीर, तीर, वीर, चीर); रदीफ कतए	पीर ·नीर ·नेह ·धीर · मनुखता
७०१	एतेक फेर किएक	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति ११+९; ५ शेर; काफिया –ের (फेर, बेर, देर, घेर, ढेर, नेर); रदीफ किएक	पीर ·दूरी ·मौन ·भार ·नेर-पास
७०२	जीवनमे फूल रहैत अछि	२६ मात्रा प्रति मिसरा; यति १३+१३; ५ शेर; काफिया –ূল (फूल, धूल, मूल, कूल, शूल); रदीफ रहैत अछि	माटि ·माया ·आशा ·पीड़ा · खेती

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
७०३	एखनो चाह मोनमे अछि	२४ मात्रा प्रति मिसरा; यति १२+१२; ५ शेर; काफिया –ाह (चाह, आह, छाह, थाह, राह, दाह); रदीफ मोनमे अछि	विरह ·स्मृति ·चाह ·मौन ·दाह
७०४	ओकर सोर रहि गेल	१८ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+१०; ५ शेर; काफिया –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर, जोर, छोर); रदीफ रहि गेल	समय ·अनुपस्थिति ·स्मृति ·नेह ·बचल स्वर
७०५	मौन एक गीत लगैत अछि	२४ मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१४; ५ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, शीत, जीत); रदीफ लगैत अछि	विरह ·अपन चिन्हारि ·मौन ·पीर ·बचल नेह
७०६	नाम मोन पड़ैए	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति ११+९; ५ शेर; काफिया –াম (নাম, গাম, ঠাম, ঘাম, ধাম, দাম); রদীফ মোন পড়ৈए	विरह ·स्मृति ·गाम ·अनुपस्थिति ·नेहक मोल
७०७	हमर मोन रुवैए किएक?	१३ मात्रा प्रति मिसरा; यति ५+८; ५ शेर; काफिया –ैए (रुवैए, कनैए, बहैए, दुखैए, थकैए, रहैए); रदीफ किएक	विरह ·प्रश्न ·समय ·मौन ·बचल नेह
७०८	चाह आबो बचल अछि	१७ मात्रा प्रति मिसरा; यति ६+११; ५ शेर; काफिया –াह (চাহ, আহ, ছাহ,	विरह ·समय ·दूरी ·मौन ·बचल नेह

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		थाह, राह, दाह); रदीफ आबो बचल अछि	
७०९	मोन राति नाम फेर कहैत रहल	१५ मात्रा प्रति मिसरा; यति ७+८; ५ शेर; काफिया ैत (बहैत, कहैत, सहैत, पड़ैत, चलैत, हटैत); रदीफ रहल	विरह ·काल ·दूरी ·स्मृति · मौन
७१०	मीत आब दूर गेल; मोनमे भार शेष अछि	१८ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+१०; ५ शेर; काफिया –ार (भार, तार, धार, सार, पार, हार); रदीफ शेष अछि	विरह ·शेष रहि गेल चिन्ह · काल ·मौन ·नेह
७११	मोनमे साँचक सार एखनो अछि	१६ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+८; ६ शेर; काफिया –ार (सार, भार, तार, पार, धार, हार, मार); रदीफ एखनो अछि	विरह ·प्रश्न ·साँच ·नाम आ अर्थ ·छाह आ इजोत ·काल ·चिन्ह ·पीर
७१२	भोर मोनमे अछि	१६ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+८; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, भोर, सोर, कोर, डोर, ठोर, छोर); रदीफ मोनमे अछि	विरह ·मौन ·अनुपस्थिति · भीतरक बाट ·बदलैत रूप · चिन्ह ·नेह
७१३	नेहक नाम आब अछि	१८ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+१०; ६ शेर; काफिया –াম (নাম, গাম, ঠাম, ঘাম, ধাম, কাম, দাম); রদীফ আব অছি	বিরহ ·কাল ·স্মৃতি ·শব্দ আ অর্থ ·ভ্রম আ সাঁচ · চিন্হ ·নেহ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
७१४	नम्र मोन मान संग अछि	१८ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+१०; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, धान, तान); रदीफ संग अछि	विनय ·प्रश्न ·संवाद ·भ्रमक छाह ·काज ·फल ·चिन्ह · कारण-खोज
७१५	मोनमे सार बचल अछि	१९ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+११; ६ शेर; काफिया –ार (सार, भार, तार, धार, पार, मार, हार); रदीफ बचल अछि	द्रष्टा–दृश्य भेद ·साझा अर्थ ·सहायक कारण ·मोह-निषेध ·अनुपस्थितिक पीर ·चिन्ह आ शर्त
७१६	भोर रहि जाइत अछि	१७ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+९; ६ शेर; काफिया –ोर (भोर, ठोर, सोर, नोर, डोर, छोर, कोर); रदीफ रहि जाइत अछि	क्षणिक चाव बनाम टिकाउ नेह ·वचनक काज ·भ्रम आ साँच ·स्मृति-निरन्तरता ·नाम देबाक पहिल-पछिला बोध · चिन्हसँ कारण-खोज
७१७	मान बचैए एखनो	१७ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+९; ६ शेर; काफिया –ैए (बचैए, बुझैए, खुलैए, रहैए, कहैए, सुझैए, दिसैए); रदीफ एखनो	मानवीय गरिमा आ ज्ञानक सीमा ·बोलक प्रयोगमे अर्थ · रूप फेरलापर आत्म-निरन्तरता ·अध्यास हटला पछाति भीतरक इजोत · कार्यसँ कारणक संकेत · प्रत्यक्ष चिन्ह देखि झट निर्णय नहि
७१८	आन बाट दिसैए फेर	१९ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+११; ६ शेर; काफिया –ैए (दिसैए, झलकैए, बुझैए, रहैए, मिलैए, हटैए); रदीफ फेर	एक्के वस्तुक अनेक दिस · बीटल अनुभवसँ नव अर्थ · बदलैत मनोवृत्तिक बीच थिर इजोत ·रंग-गन्ध फेरलापर मूल आधार ·क्रम आ संयोगक भेद ·साँच वचनसँ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
			दूर बाटक ज्ञान।
७१९	मोन फेर बाट बदलैए	१९ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+११; ६ शेर; काफिया –ाट (बाट, पाठ, हाट, पाट, घाट); रदीफ बदलैए	लोक आ शास्त्रक संवाद · नाम/वर्गीकरणक सामाजिक प्रभाव · चाहसँ स्वतंत्र साँच · बीजक सामर्थ्य आ सहायक कारण · सर्वसंशयक आत्म-परीक्षा · क्रमिक प्रमाणसँ निर्णय।
७२०	साँच लेल कोन माप अछि	१८ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+१०; ६ शेर; काफिया –ाप (माप, छाप, ताप, थाप, जाप, संताप, आलाप); रदीफ अछि	साँचक एकसँ बेसी दिस · देखल-सुनलक पुनःजाँच · शब्द केवल काजक आदेश नहि · स्मृतिक भीतर चिन्हारि · अदृश्य कारणक नैतिक ताप · काज आ फल मिललापर ज्ञानक पुनःपरीक्षा।
७२१	दिस आन साँच देख	१८ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+१०; ६ शेर; काफिया –ाल (हाल, काल, जाल, चाल, ताल); रदीफ अछि	असहमति सुनितहुँ सत्य-परीक्षा · ज्ञान आ सामाजिक मानकक दबाव · मोह/भ्रम हटला पछाति मुक्ति · मोनक रूपसँ बाहरक यथार्थ · लोक-व्यवहारमे शब्द-अर्थक रीत · सिद्ध साँचपर अनावश्यक अनुमानसँ बचाव।
७२२	साँच एक बेर भेल नहि	२० मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+१०; ६ शेर; काफिया ेल (भेल, लेल, मेल); रदीफ नहि	ज्ञानक विनय आ संशोधन · रीतिसँ बनैत थिर-जकाँ पहिचानक परिवर्तनशीलता · सुनल शब्दसँ भीतरक अर्थ धरि यात्रा · गुणसभ आ समग्र वस्तुक भेद · सादृश्यसँ नूतन नामक ज्ञान · अकस्मात् देखाइत घटनामे कारण-क्रमक खोज।
७२३	नेहक सार होइत अछि	१८ मात्रा प्रति	चयनक संग दायित्व · सेवा-

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		मिसरा; यति १०+८; ६ शेर; काफिया –ार (भार, सार, पार, धार, तार, द्वार, हार); रदीफ होइत अछि	सँभार आ गरिमा ·सुनल वचनक भीतर मनन ·ज्ञान-चाह-श्रमक संयुक्त कर्तृत्व · पदसभक मेलसँ परे वाक्यार्थक शर्त ·निकट कारणसभक संग कारण-क्रमक व्यापक हार।
७२४	साँचक नव ढंग रहैए	१९ मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+९; ६ शेर; काफिया –ंग (ढंग, रंग, संग, भंग, अंग); रदीफ रहैए	भूल स्वीकारि फेर जाँच · देहकेँ अनुभवक जीवित माध्यम बुझब ·भिन्न पाठक समन्वय ·नाम-भेदसँ परे सकारात्मक अर्थ ·अवरोध हटबाक कारणात्मक भूमिका · मोनद्वारा फेर ज्ञानक ग्रहण।
७२५	नेह मूल सार अछि	१६ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+८; ६ शेर; काफिया –ार (सार, पार, धार, द्वार, तार, हार, भार); रदीफ अछि	जोर आ मानक विरोध · कहल गप आ सुनल अर्थक दूरी ·छाह हटला पर पहिनेसँ रहल इजोतक बोध · रूप बदललापर मूल निरन्तरता ·देखल वस्तु आ स्मृतिक छवि बीच भेद · लोक-रीतिसँ शब्द-अर्थक मान।
७२६	मोन बीच एक नाव अछि	१८ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+१०; ६ शेर; काफिया –ाव (भाव, चाव, ठाव, नाव); रदीफ अछि	डेग पर डेग साधना आ मोहक ढील ·शब्दक सीमा आ जगतक अपन ठाम · ज्ञानक चाहसँ पहिने मोनक तैयारी ·फल लेल काल-क्रमक धीरता ·रूप-सोर-गन्धक क्रमिक अनुभूति · आन मत सुनि तखन न्याय।
७२७	जग मान जागैए	१९ मात्रा प्रति मिसरा; यति १०+९; ६ शेर; काफिया –ान	नीर-वन आ पाछाँ आबयवला लोकक हक ·यंत्रक संग बदलैत चाल आ ध्यान ·

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		(मान, तान, ध्यान, गान, ज्ञान); रदीफ जागैए	सुखक लोभसँ परे पीरक मूल निवृत्ति ·काजसँ मोनक शुद्धि आ बोधक जागरण ·ज्ञान-चाह-श्रमक संग कर्तृत्व · चिन्ह आ पूर्व-मेलक मानसिक जोड़सँ साँच बुझब।
७२८	एक राह सार नहि	१६ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+८; ६ शेर; काफिया –ार (सार, भार, द्वार); रदीफ नहि	भिन्न धर्म-पथक सहअस्तित्व ·रीत/संरचना रहितहुँ नव मोड़क सम्भावना ·शब्दार्थकेँ केवल आनकेँ काटि नहि बुझब ·आत्मबोधक स्वयंप्रकाश ·ज्ञानपर अलग छापक अनिवार्यता नहि · देखल फलसँ अदृश्य मूलक खोज।
७२९	मुक्त राह सार अछि	१६ मात्रा प्रति मिसरा; यति ८+८; ६ शेर; काफिया –ार (सार, पार, द्वार, धार, भार); रदीफ अछि	राग-द्वेषक पकड़सँ मुक्ति · भाषा केवल नामकरण नहि · बोधसँ जगक व्यवहार नष्ट नहि ·पीरक मूल निवृत्ति ·दूर विषयमे विश्वसनीय वचन · बाहरक दृष्टि नहि रहितहुँ भीतरक साक्षी।
७३०	झट ज्ञान नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (ज्ञान, मान, ध्यान, गान, तान, आन); रदीफ नहि	साँचक दाबीपर प्रमाण आ सीमा ·अर्थक लोक-प्रयोग · ज्ञान इच्छाक अधीन नहि · बाह्य जगक यथार्थता · विषय-भाषा-लोकक औचित्य ·चिन्हसँ अनुमान करबाक पहिल सम्बन्ध-जाँच।
७३१	आन पीर नोर मात्र नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, सोर, डोर, ठोर, छोर, कोर, भोर);	आन मन/आन पीरक ज्ञान संकेतसँ ·देह मापनसँ पैघ अनुभव ·शब्दक सीमा · स्वप्न आ जागरणक भेद · तर्कक करुण प्रयोजन ·ज्ञानक

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		रदीफ मात्र नहि	ज्ञान अर्थात् अनुव्यवसाय।
७३२	भाव मूल थाह अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (थाह, राह, छाह, चाह, दाह); रदीफ अछि	भय–राग–द्वेषक कारण बुझब ·मातृभाषा आ ज्ञानक गरिमा ·धनाभिमान छूटला पर भयक क्षय ·कर्तृत्व–दायित्व लेल अनुभवकर्ताक निरन्तरता ·अनुमान-विरोधक आत्मविरोध ·गुण आ गुणीक भेद।
७३३	प्रश्न बीच गीत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, रीत, प्रीत, जीत, शीत); रदीफ अछि	परिचित वस्तु प्रश्न बनि उठब ·मञ्चपर देखाइब आ साँचक भेद ·स्मृतिरूपक आरोप ·काल-पार चिन्हारि · क्रमबद्ध काजसँ मूलक खोज · नव ज्ञानक फलद्वारा फेर जाँच।
७३४	साँचक सोर अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, कोर, छोर, ठोर); रदीफ अछि	पीरक अनुभव आ आन मनक बोध ·शब्दक सीमा आ भूखक भौतिक सत्य ·नींद आ जागरणक बीच बोध · क्षणभङ्गुर रूपक बीच स्मृति-सूत्र ·क्रमबद्ध काजसँ मूलक खोज ·संशयमे पक्ष-द्वय सुनि हेतु जाँच।
७३५	भीतर आस रहै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, त्रास); रदीफ रहै छै	प्रकृति आ आगाँक जनक अधिकार ·सार्वजनिक न्यायमे करुणा आ भावक स्थान ·सत्यक पुनरावृत्तिसँ दृढ़ भ्रमक गाँठ खुलब ·मधु-विष जकाँ सुख-दुःखक मिश्रण ·योग्य दशामे अभावक ज्ञान ·वचनक प्रेरक शक्ति आ काजक जन्म।
७३	प्रश्न उठि गेलै,	३२ मात्रा प्रति	प्रश्नसँ चेतना जागब ·वस्तु-

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
६	द्वार खुलै छै	मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (द्वार, सार, सँभार, विस्तार, आकार, विचार); रदीफ खुलै छै	संचयक बदला अवकाश, नेह आ सृजन ·आवरण हटला पर स्वभावक प्रकट होयब · सामर्थ्य आ सहायक कारण · सादृश्यसँ नव नामक बोध · आपत्ति आ पुनःपरीक्षणसँ विचारक परिपक्वता।
७३७	अपन मत जाँचै छी, सार दिसै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, द्वार, व्यवहार, आकार, विचार, संसार); रदीफ दिसै छै	अपन प्रिय मतपर सेहो समान कसौटी ·निगरानीसँ चालि आ आदतक रूपान्तरण ·प्रत्यक्ष अनुभवक दृढता · विनाश आ विनष्ट वस्तुक भेद ·सीप-चानी भ्रममे भेदाग्रह ·शब्द-क्रम आ कारणक खोज।
७३८	छूटल स्वर उठै छै, हाल बदलै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (हाल, चाल, जाल, ढाल, काल, ताल); रदीफ बदलै छै	दबल स्वर फेर उठब · वर्गीकरण चलितो न्याय चुकि सकब ·अनुवादमे अर्थ-सुरक्षा ·भाषा द्वारा विरासत घर घुरब ·नव ज्ञानक स्वाभाविक संशय ·अनुमान त्यागक व्यवहारगत असम्भवता।
७३९	अंक सभ बोलै छै, सार खोजै छी	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, पार, द्वार, आधार, धार); रदीफ खोजै छी	तथ्य आ मूल्यक भेद · अभिलेखक मौन आ घटनाक अस्तित्व ·स्वामित्व-मोह घटला पर भयक क्षय · भिन्नतामे मेल ·एकहि बेर अनेक इन्द्रिय-अनुभव ·चाह आ विरतिक सकारात्मक कारणता।
७४०	नदी रूप बदलै छै, सार बचै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार	एक वस्तुक अनेक यथार्थ-वर्णन ·गूढ़ पदावली आ बोधक दूरी ·अविद्याक

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		(सार, धार, द्वार, विचार, पार, आचार); रदीफ बचै छै	आवरण-विक्षेप ·नेत्रक सीमा आ भीतरक आत्मबोध · विघ्नाभावक कारणात्मक भूमिका ·प्रतिपक्षीक प्रति औदार्य।
७४१	ज्ञान फेर बदलै छै, आधार जाँचै छी	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (आधार, विचार, व्यवहार, आकार, संसार, प्रकार); रदीफ जाँचै छी	ज्ञानक संशोध्यता · असहमतिक ज्ञानात्मक मूल्य ·पदार्थ आ रूपक भेद ·सुख-पीरक परिवर्तनशीलता · लक्षणक सीमा ·कारण-क्रमक सावधान जाँच।
७४२	मान जखन बढ़ै छै, विश्वास रहै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (विश्वास, उल्लास, त्रास, अभ्यास, हुलास, आभास); रदीफ रहै छै	अस्मिता आ समान गरिमा · कम-सुनल पीरक यथार्थ ·गुरु-शिष्य क्रममे ज्ञान-धारा · करुणासँ कारण-उपायक खोज ·नामसँ पहिनेक प्रथम अनुभूति ·विश्वसनीय शब्दक सोझ ज्ञान।
७४३	घाव जखन देखै छी, दाग बुझै छी	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाग (दाग, भाग, राग, त्याग); रदीफ बुझै छी	क्षमा आ उत्तरदायित्व ·बोल स्वयं काज बनब ·देहक गुणकेँ “हम” पर आरोप ·सुख-पीरक मिश्रण ·ध्वनि बदलितो साझा जातिक बोध ·नहि देखाइ पड़ब आ नहि होयबक भेद।
७४४	गौरव जखन बढ़ै छै, प्रमाण माँगै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (आधार, विचार, संसार, द्वार, सार); रदीफ खुलै छै	अपन गौरवक प्रमाण-परीक्षा · काल-देशसँ नाम-अर्थक परिवर्तन ·चञ्चल किनार छोड़ि स्थिर मध्यक खोज · कारण-नियमक भरोस · उपाधिक कारण अनुमानक भ्रम ·विकल्पसभक क्रमिक परीक्षण।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
७४५	दोषो देखलै मोन, सार रहि जाइ छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, आधार, सँभार, विचार, व्यवहार, आकार); रदीफ रहि जाइ छै	आत्मसमीक्षा ·अदृश्य सँभार-श्रम ·राग घटला पर मोनक स्थिरता ·ज्ञानसँ चाह–प्रयत्न–काज ·अभावक सोझ बोध ·गिनबाक बुद्धिसँ संख्या आ आकारक उदय।
७४६	रूप जखन मिललै, मेल तखन विचार भेलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (विचार, आधार, व्यवहार, सार, साकार, उदार); रदीफ भेलै	सीमित समानता ·मानुखक गरिमा ·नित्य–अनित्य विवेक ·ज्ञान आ ज्ञेयक भेद · साँच परिणाम संग उचित कारण-क्रम ·प्रतिपक्षक बल मानि तर्कक परिपक्वता।
७४७	काल्हिक आधार पूछै छी	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (आधार, विचार, व्यवहार, स्वीकार, प्रतिकार, प्रकार, सत्कार); रदीफ पूछै छी	अतीत–भविष्यक भरोस आ तर्कक सीमा ·सूचित सहमति ·श्रद्धा संग विचार ·अनिष्ट-परिणाम द्वारा तर्क-जाँच · पहिल झलक आ नामित प्रत्यक्ष ·भाषा भीतर आदर आ चेतन–अचेतनक भेद।
७४८	भाग्यँ साँच भेलै, कोन आधार मिलै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (आधार, विचार, अधिकार, विस्तार, आकार, सार, व्यवहार); रदीफ मिलै छै	संयोगवश साँच विश्वास आ ज्ञानक भेद ·आँकड़ा/वर्ग द्वारा अदृश्यता ·अभ्यास–श्रवण–मनन ·अवयव आ अवयवी ·प्रसङ्ग–तात्पर्य द्वारा अनेकार्थकता-निवारण · वचन/आज्ञाक काजकारी शक्ति।
७४९	साँच फेर मिलै छै, सार खुलै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, द्वार, धार, तार,	फेर-जाँच आ भूल-स्वीकार · कहल बातक मूल भाव आ सुननिहारक नव अर्थ · आवरण घटला पर पहिनेसँ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		सार, पार, द्वार); रदीफ खुलै छै	रहल बोध ·केवल निषेधसँ अर्थक अपूर्णता ·रोध-अभावसँ काजक बाट ·ज्ञानक ज्ञान।
७५०	प्रश्न जखन उठै छै, सार बुझै छी	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, आधार, विस्तार, विचार, आकार, आधार, सत्कार); रदीफ बुझै छी	भूलक पुनःजाँच ·स्मृति आ नूतन बोधक भेद ·श्रवण–मनन ·रूप, ज्ञान आ ज्ञाताक भेद ·चिन्ह–मेलक पुनःपरीक्षा ·प्रतिपक्षक मान।
७५१	भाग्य फेर जाँचै छी, आधार खोजै छी	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (आधार, विचार, व्यवहार, सार, विस्तार, प्रकार, आधार); रदीफ खोजै छी	कारणता आ बदलाब ·छूटैत स्वरक मान ·आवरण हटला पर बोध ·स्मृति आ निरन्तरता ·लक्षणक सीमा ·कारण-क्रमक खोज।
७५२	रूप फेर जाँचै छी, आकार खुलै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (आकार, आधार, अधिकार, व्यवहार, आधार, सार, विचार); रदीफ खुलै छै	प्रत्यक्षक दोष-जाँच ·यंत्र-भाषामे छूटैत बोली आ लिपि ·मूल पदार्थ आ रूप-विशेष ·ज्ञानसँ चाह आ प्रयत्न ·योग्य ठाममे अभाव-बोध ·चाह-विरतिक सकारात्मक कारण-शक्ति।
७५३	साँच जखन कहै छी, डोर रहै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (डोर, नोर, सोर, भोर, छोर); रदीफ रहै छै	दोष-स्वीकार आ घावक सत्य ·वचन आ नामक सामाजिक काज ·देह-गुण आ आत्म-बोधक भेद ·सुखमे पीरक मिश्रण ·बदलैत ध्वनिमे साझा रूप ·ज्ञानक सीमा आ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
			वस्तुक स्वतंत्र सत्ता।
७५४	रूप फेर बदलै छै, सार बचै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (धार, सार, द्वार, आधार, विचार, आचार); रदीफ बचै छै	एकहि वस्तुक अनेक वैध रूप-वर्णन ·गूढ़ भाषा आ लोक-पहुँच ·अनुवादमे अर्थ-सुरक्षा ·भीतरक मानसिक बोध ·नव ज्ञानक प्रामाण्य-जाँच ·वादक बादो प्रतिपक्षक मान।
७५५	छूटल स्वर उठै छै, मान बदलै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, विधान, ध्यान, अनुमान, पहिचान); रदीफ बदलै छै	दबायल स्वरक पुनःप्रवेश · नियमक भीतर नुकायल पक्ष · प्रत्यक्ष अनुभवक सोझ अधिकार ·वस्तु आ विनाशक भेद ·स्मृति-प्रत्यक्षक मिलानमे भ्रम ·क्रमबद्ध शब्दसँ कर्ता/कारणक खोज।
७५६	प्रश्न फेर उठै छै, राह दिसै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, थाह, चाह, दाह); रदीफ दिसै छै	परिचित जगतमे विस्मयसँ प्रश्न ·यन्त्रक चयनसँ ध्यान आ रीतक फेरबदल ·सुनल शब्दसँ मनन आ भीतर बोध · गुणक जोड़ आ समग्र रूपक भेद ·सादृश्यसँ नाम-ज्ञान मुदा तादात्म्य नहि ·बाहरी साक्षी बिना निज मोनक नैतिक साक्ष्य।
७५७	अंक मात्र कहै छै, विचार जगै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (विचार, अधिकार, संसार, व्यवहार, आधार, विस्तार); रदीफ जगै छै	तथ्य आ मूल्यक भेद ·चुप अभिलेखक पार बचल घटना ·स्वामित्व-मोह ढील पड़ला पर भयक क्षय ·भेद आ बैरक अन्तर ·एकहि बेर अनेक इन्द्रिय-बोध ·दैनिक व्यवहारमे अनुमानक अनिवार्यता।
७५८	नोर-सोर बुझै छी, हाल खुलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६;	आन पीरक बोध ·भूखक देहगत यथार्थ ·नींदसँ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
	छै	६ शेर; काफिया –ाल (हाल, जाल, ताल, चाल); रदीफ खुलै छै	जागरण आ स्मृति ·सामर्थ्य संग सहायक कारण ·नामसँ पहिने रूप-बोध ·बोलक प्रवृत्ति-जनक अर्थ।
७५९	काल पार सोचै छी, भोर देखै छी	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (भोर, डोर, नोर, छोर, कोर); रदीफ देखै छी	भावी लोकक जल-वन अधिकार ·तर्क संग करुणाक न्याय-बोध ·पुनरुक्त सत्यसँ भ्रम-संस्कारक क्षय ·स्वप्नक पार बाह्य जगक प्रतिरोध · दूर विषयमे अनुमान आ विश्वसनीय बोल ·निज मोनक नैतिक साक्ष्य।
७६०	सत्ता फेर जाँचै छी, ध्यान रखै छी	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (ध्यान, मान, स्थान, ज्ञान, गान); रदीफ रखै छी	सत्ताक वैधता ·संरचना आ कर्तृत्व ·काजसँ मोनक तैयारी आ ज्ञानक निर्णायक भूमिका · पीरक मूल निवृत्ति ·चिन्ह–सम्बन्धक परामर्श ·अपेक्षा-बुद्धिसँ संख्या-बोध।
७६१	ज्ञान जखन बदलै छै, उपाय मिलै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाय (उपाय, न्याय, पर्याय, सहाय, अध्याय, अभिप्राय); रदीफ मिलै छै	संशोध्य ज्ञान ·असहमतिक बौद्धिक मूल्य ·आत्मबोध आ नित्य व्यवहारक सह-अस्तित्व ·सुख-दुःखक आगमन-गमन ·वाक्यार्थक शर्तसभ ·विषय–भाषा–श्रोताक औचित्य।
७६२	दाबी फेर जाँचै छी, विश्वास बचै छै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (विश्वास, आस, उल्लास, प्यास); रदीफ बचै छै	प्रमाणसँ परखल गौरव · वस्तुक बदला स्वायत्त बेर, खेल आ नेह ·चञ्चल तटसँ स्थिर मध्यक खोज ·कारण-नियमक भरोस ·सफल प्रवृत्तिसँ बोध-जाँच ·विकल्प-दर-विकल्प परीक्षण।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
७६३	मत जखन सुनै छी, प्रभाव बुझै छी	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –भाव (भाव, सद्भाव, प्रभाव, स्वभाव, अभाव); रदीफ बुझै छी	मतभेदक बीच समान अधिकार आ सद्भाव ·प्रेमक नाममे नुकायल सेवा-श्रम · आदेशक संग सिद्ध साँच जनबैत वाक्यक फल ·गुण-जोड़ आ समग्र देहक भेद · योग्य ठाममे अभावक सोझ बोध ·काल-पार नैतिक कारणक प्रभाव।
७६४	काल जखन मुड़ै छै, ढंग परखै छी	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (ढंग, संग, प्रसंग, रंग, अंग); रदीफ परखै छी	चुनाव आ जिम्मेवारी ·सुगम परिवेश आ देहगत क्षमता · भिन्न पाठक समन्वयसँ अर्थ · वस्तु आ विनाशक भेद · लक्षणक उचित सीमा ·ज्ञानक मानसिक पुनर्बोध।
७६५	माप जखन लगै, ज्ञान मोनमे उतरैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (ज्ञान, ध्यान, मान, गान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ मोनमे उतरैत अछि	अनेक प्रमाणक तुलनात्मक कसौटी ·यान्त्रिक रूढ़िक जाँच ·काजसँ मोनक तैयारी आ ज्ञानक निर्णायकता · स्वप्न-जागरणक व्यवहारिक भेद ·चिन्ह-सम्बन्धक परामर्श ·अकस्मात् परिवर्तनमे कारण-क्रमक खोज।
७६६	मान जखन बचै, आस रूप धरैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (विश्वास, आस, त्रास, उल्लास, प्यास); रदीफ रूप धरैत अछि	शक्ति बढ़ैतहुँ आनक मानक रक्षा ·भौतिक नगर-रचनासँ वास्तविक चलन-स्वतंत्रता · स्मृति-छाहक अध्यास ·काल-पार स्मृति–प्रत्यभिज्ञाक तार · एकहि बेर अनेक इन्द्रिय-बोध ·इच्छा आ विरतिक सकारात्मक कारणता।
७६७	घाव जखन दुखै, उपचार द्वार खोलैत	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार	पीरक सोझाँ पहिने सुननाइ · निज बातक सीमा आ सूचनात्मक गरिमा ·भीतर

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
	अछि	(उपचार, सत्कार, अधिकार, विचार, आधार, व्यवहार); रदीफ द्वार खोलैत अछि	चमकैत बोध ·स्वप्नक विपरीत बाह्य जगक प्रतिरोध ·चिन्ह–सम्बन्ध सँ अनुमान · विषय–ठाम–श्रोताक अनुकूल बोल।
७६८	साँच फेर खुलै, नोर सँ जुड़ैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर); रदीफ सँ जुड़ैत अछि	क्षमा आ स्मृतिक संग जिम्मेवारी ·अनेक पहिचानक बीच अपन चुनाव ·गहन नींदि-पाछाँ स्मृति-जागरण · चाह–प्रयत्न–काज–फल · दूर/अदृष्ट ज्ञानमे अनुमान आ विश्वसनीय बोल · विकल्पसभक क्रमिक परीक्षण।
७६९	मोन फेर जागै, प्रीत संग चलैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (प्रीत, रीत, मीत, गीत, जीत); रदीफ संग चलैत अछि	करुणा आ तर्कक संयुक्त विवेक ·स्मृतिक चयन आ सुधार ·गहिर बोधक बादो नित्य व्यवहार ·पीर-निवृत्तिक स्वतन्त्र मूल्य ·बाधा हटबाक कारणात्मक महत्त्व · व्यवहारमे अनुमानक अनिवार्यता।
७७०	न्याय फेर बढ़ै, माप बनि रहैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाप (माप, छाप, ताप, थाप); रदीफ बनि रहैत अछि	भीतरक मुक्ति आ बाहरी न्याय ·नाम-मात्र अधिकारक बदला वास्तविक अवसर · स्वयंप्रकाश बोध ·निषेध-मात्रसँ अर्थ अपूर्ण ·सफल प्रवृत्तिसँ ज्ञानक परीक्षा · गिनती आ अपेक्षासँ संख्या-बोध।
७७१	पीरक मूल खुलै, निदान दिशा दैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (ज्ञान, निदान,	प्राकृतिक विपत्तिक असमान सामाजिक प्रभाव ·मानव-निर्मित संस्था आ ओकर वास्तविक परिणाम ·मूल

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		विधान, पहिचान, अनुमान, ध्यान); रदीफ दिशा दैत अछि	पदार्थ आ रूप-विशेषक भेद · कारण-नियमक भरोस · लुकायल उपाधिक परीक्षा · क्रमबद्ध कार्यसँ कारणक खोज।
७७२	याद फेर उठै, नोर मोन फेरबैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, छोर, जोर, कोर); रदीफ मोन फेरबैत अछि	क्षमा आ स्मृतिक भेद ·अनेक दृष्टिसँ अन्हर ठाम घटब · सिद्ध साँच कहनिहार वाक्यक फलवत्ता ·सुख–पीरक अनित्यता ·चिन्ह–सम्बन्धमे अपवाद-परीक्षा ·प्रतिपक्षक मतक न्यायपूर्ण प्रस्तुति।
७७३	प्रश्न जखन उठै, विचार कैँ खोजैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (विचार, आधार, व्यवहार, उद्धार, पार, प्रकार, भार); रदीफ कैँ खोजैत अछि	संशोध्य ज्ञान ·मानव-गढ़ल नियमक वास्तविक सामाजिक फल ·कर्मसँ मोन-शुद्धि मुदा ज्ञानसँ मुक्ति · बोध–चाह–यत्न–काज–फल क्रम ·सादृश्यसँ नाम-बोध मुदा अभिन्नता नहि ·दूर फलो रहला पर नैतिक कर्मक कारण-भार।
७७४	पीर जखन घटै छै, आस जागि उठैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, आभास, श्वास, इतिहास); रदीफ जागि उठैए	मतभेदक बावजूद साझा काज ·भाषा आ यथार्थक प्रतिरोध ·भिन्न पाठक समन्वय ·ज्ञाता–ज्ञान–ज्ञेयक भेद ·नव बोधक प्रामाण्य-जाँच ·अकस्मात् घटना पाछाँ कारण-डोर।
७७५	घर पाछाँ छुटै छै, सार मोनमे बसैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, भार, द्वार, धार, पार, तार, हार); रदीफ	घर छोड़लापर स्मृति, पीर, क्षमा, दूरी आ भीतर बसल अपनत्व।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		मोनमे बसैए	
७७६	कूल दूर सरै छै, तरंग संगे बहैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (तरंग, रंग, संग, उमंग, अंग, प्रसंग, ढंग); रदीफ संगे बहैए	नदी, परिवर्तन, दृष्टि, कारण-क्रम आ प्रवाहमे टिकैत सम्बन्ध।
७७७	बीज माटि फोड़ै छै, प्रीत माटिमे अँकुरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (प्रीत, गीत, रीत, जीत, शीत, अतीत, मीत); रदीफ माटिमे अँकुरैए	बीज, कृषिक श्रम, परम्परा, न्याय आ नवजीवन।
७७८	प्रश्न माथ उठै छै, ज्ञान ऊपर चढ़ैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (ज्ञान, ध्यान, मान, गान, तान, पहचान, विधान); रदीफ ऊपर चढ़ैए	आकाशक विस्मय, ज्ञानक सीमा, स्रोत-जाँच आ बौद्धिक नम्रता।
७७९	पीर नोर कहै छै, नेह नोरमे भीजैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ेह (नेह, देह, गेह, मेह, स्नेह, विदेह, नेह); रदीफ नोरमे भीजैए	शोक, उपस्थिति, सेवा, दुःख-निवृत्ति आ गरिमामय संवाद।
७८०	राति पाछाँ सरै छै, आस भोरमे फूटैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास,	भोर, वर्तमान काज, कारण-क्रम, आस आ नव आरम्भ।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		आभास, श्वास, इतिहास); रदीफ भोरमे फूटैए	
७८१	शब्द पवन चढ़ै छै, संवाद पवनमे उड़ैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाद (संवाद, नाद, अनुवाद, विवाद, प्रसाद, अवसाद, स्वाद); रदीफ पवनमे उड़ैए	शब्द, पवन, अनुवाद, वाक्-कर्म, छूटल सोर आ लोक-स्मृति।
७८२	घाव बात कहै छै, भाव नोरमे चमकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाव (भाव, चाव, घाव, ठाव, नाव, बहाव, दाव); रदीफ नोरमे चमकैए	करुणा, देह, चिन्ह, इन्द्रिय-बोध आ आनक पीरक अनुमान।
७८३	रोष देह चढ़ै छै, क्रोध भीतर धधकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोध (क्रोध, बोध, रोध, विरोध, शोध, प्रबोध, निरोध); रदीफ भीतर धधकैए	क्रोध, उत्तरदायित्व, डिजिटल उकसाहट, विनाश-भेद आ संयम।
७८४	सोर दूर रहै छै, राग मौनमे गमकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाग (राग, अनुराग, विराग, त्याग, भाग, पराग, राग); रदीफ मौनमे गमकैए	मौन, श्रवण, मनन, अभाव, छूटल अभिलेख आ अन्तर्बोध।
७८५	पएर रोक घेरै	३२ मात्रा प्रति	स्वतन्त्रता, पहुँच, ज्ञान, स्मृति,

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
	छै, आकाश पार निकलैए	मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाश (आकाश, प्रकाश, अवकाश, विकास, निवास, विनाश, उपहास); रदीफ पार निकलैए	सादृश्य आ व्यवहारगत अनुमान।
७८६	पुरना बीज बचै छै, मूल जड़ि धरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ूल (मूल, फूल, धूल, शूल, भूल, कूल, मूल); रदीफ जड़ि धरैए	परम्परा, जड़ि, प्रमाण, लोकभाषा, लक्षण आ बदलैत जीवन।
७८७	पीर देह कहै छै, ताप देहमे सिहरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाप (ताप, छाप, थाप, संताप, माप, जाप, आलाप); रदीफ देहमे सिहरैए	देहक अनुभव, इन्द्रिय, गरिमा, ज्ञाता-ज्ञेय भेद आ नैतिक भार।
७८८	पन्ना फेर खुलै छै, नाम कालमे डोलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াম (নাম, ধাম, গ্রাম, বিরাম, পরিণাম, প্রণাম, বিশ্রাম); রদীফ কালমে ডোলৈए	ইতিহাস, অভিলেখ, ছুটল নাম, স্মৃতি আ সময়ক গতিশীলতা।
७८९	दाबी जोर करै छै, बात साँचमे टिकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াত (বাত, রাত, ঘাত, জাত, পাত, প্রভাত, আঘাত); রদীফ সাঁচমে টিকৈए	साँच, प्रमाण, यथार्थक प्रतिरोध, करुणा आ न्यायपूर्ण वाद।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
७९०	दीप राति जरै छै, नेह मोनमे उजरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया ‑ेह (नेह, देह, गेह, मेह, स्नेह, विदेह, नेह); रदीफ मोनमे उजरैए	नेह, गरिमा, स्वतन्त्रता, ज्ञान-प्रेम, पीर-निवृत्ति आ सादृश्य।
७९१	राख छाँह धरै छै, गीत राखसँ फूलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया ‑ीत (गीत, प्रीत, रीत, मीत, जीत, अतीत, शीत); रदीफ राखसँ फूलैए	विनाश पाछाँ पुनर्निर्माण, कर्म, स्मृति आ नवजीवन।
७९२	रेखा नाम बनै छै, पहचान सीमा गलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया ‑ान (पहचान, मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, गान); रदीफ सीमा गलैए	पहचान, वर्ग, सीमा, गरिमा, लक्षण आ सामाजिक निर्माण।
७९३	रूप नाम बदलै छै, स्वरूप नामसँ छूटैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया ‑ूप (रूप, स्वरूप, प्रतिरूप, अनूप, धूप, कूप, कुरूप); रदीफ नामसँ छूटैए	नाम, रूप, पहचान, प्रसंग, अन्तर्बोध आ गरिमा।
७९४	नदी याद बहै छै, धार स्मृतिमे घुरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया ‑ार (धार, सार, भार, पार, तार, द्वार, हार); रदीफ स्मृतिमे घुरैए	स्मृति, क्षमा, अध्यास, प्रत्यभिज्ञा, अभिलेख आ नैतिक भार।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
७९५	लोक सोर जुड़ै छै, रंग लोकमे बजैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, प्रसंग, तरंग, उमंग); रदीफ लोकमे बजैए	लोकगीत, समुदाय, भाषिक बहुलता, समन्वय, वाक्यार्थ आ वाक्-कर्म।
७९६	पएर माटि छुबै छै, देश माटिसँ जनमैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ेश (देश, वेश, परिवेश, सन्देश, प्रवेश, अवशेष, निर्देश); रदीफ माटिसँ जनमैए	माटि, भाषा, पर्यावरण, न्याय, यथार्थक प्रतिरोध आ कारण-जाँच।
७९७	दूर घर रहै छै, प्रीत दूरि घटैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (प्रीत, मीत, गीत, रीत, जीत, अतीत, शीत); रदीफ दूरि घटैए	दूरी, संवाद, अन्य-मनोवृत्ति, प्रत्यभिज्ञा, उपमान आ सम्मानपूर्ण वाद।
७९८	डगमग मोन रहै छै, विश्वास डोर सम्हरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (विश्वास, आस, प्रयास, उल्लास, आभास, श्वास, इतिहास); रदीफ डोर सम्हरैए	विश्वास, संशय, संस्था, श्रवण-मनन, व्याप्ति आ कारण-क्रम।
७९९	पएर मोड़ पड़ै छै, उपाय दिशा मुड़ैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाय (उपाय, न्याय, सहाय, अध्याय, आशय,	यात्रा, विकल्प, दबाव, पहुँच, इच्छा-यत्न-काज आ बदलैत दिशा।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		पर्याय, अभिप्राय); रदीफ दिशा मुड़ैए	
८००	गीत काल लाँघै छै, गीत अन्त लाँघैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ीत (गीत, प्रीत, मीत, रीत, जीत, अतीत, शीत); रदीफ अन्त लाँघैए	अन्तिम गजल: अन्त नहि, खुलल प्रश्न; ज्ञान, स्मृति, संवाद आ अनन्त पाठकीय जीवन।
८०१	दाम रोज बदलै छै, सार बाजार जँचैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, भार, व्यापार, आधार, विचार, व्यवहार, पुकार); रदीफ बाजार जँचैए	हाट-बाजारमे दाम, श्रम, भूख, भरोस, प्रमाण आ न्याय।
८०२	मेह राति बढ़ै छै, धार कूल बनैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (धार, पार, भार, आधार, पुकार, उद्धार, विचार); रदीफ कूल बनैए	बाढ़, असमान जोखिम, साझा बचाव, पुनर्निर्माण आ सामाजिक न्याय।
८०३	रस्सी हाथ उतरै छै, प्यास कुआँ बोलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (प्यास, आस, विश्वास, निवास, प्रकाश, आभास, श्वास); रदीफ कुआँ बोलैए	पुरान कुआँ: साझा नीर, स्मृति, हक, सूखा आ लोकजीवन।
८०४	सीटी दूर बजै छै, राह रेल चलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६;	रेल-यात्रा, प्रवास, अवसर, दूरी, परिवार आ घुरैत

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, प्रवाह, अथाह, उछाह, निर्वाह, आह); रदीफ रेल चलैए	पहचान।
८०५	दीप कोन जरै छै, ज्ञान पन्ना खुलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (ज्ञान, ध्यान, मान, विधान, निदान, प्रमाण, गान); रदीफ पन्ना खुलैए	पुस्तकालयक मौन, स्रोत-जाँच, पाठ, तात्पर्य, संशोधन आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी अर्थ।
८०६	डाक पएर चलै छै, सार चिट्ठी पहुँचैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, द्वार, पार, तार, विचार, समाचार, पुकार); रदीफ चिट्ठी पहुँचैए	चिट्ठी: दूरी, तात्पर्य, वचन, स्मृति, दिनांक आ घरक प्रतीक्षा।
८०७	जड़ि माटि पकड़ै छै, मूल छाँह रहैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ूल (मूल, फूल, धूल, कूल, शूल, भूल, अनुकूल); रदीफ छाँह रहैए	बरगद: जड़ि, पीढ़ी, पर्यावरण, स्मृति, घाव आ साझा छाँह।
८०८	माटि हाथ नमै छै, रूप चाक घुमैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ूप (रूप, स्वरूप, प्रतिरूप, धूप, कूप, अनूप, भूप); रदीफ चाक घुमैए	कुम्हारक चाक: पदार्थ, रूप, श्रम, आगि, नाश आ कौशल।
८०९	पर्दा धीरे उठै	३२ मात्रा प्रति	नाटक-मंच: देह, संवाद, मौन,

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
	छै, रंग मंच धड़कैए	मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, अंग, प्रसंग, तरंग, उमंग, ढंग); रदीफ मंच धड़कैए	सत्ता, सामूहिक अनुभव आ पर्दा-पाछाँ श्रम।
८१०	आँखि गोल चमकै छै, नोर बालक पूछैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, भोर, सोर, डोर, छोर, जोर, कोर); रदीफ बालक पूछैए	बालकक प्रश्न: जिज्ञासा, खेल, भेद, नक्शा, मशीन-उत्तर आ न्याय।
८११	केश धीर बदलै छै, श्वास उमिर ढलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (श्वास, आस, निवास, प्रयास, आभास, इतिहास, विश्वास); रदीफ उमिर ढलैए	उमिर: देहक सीमा, गरिमा, स्मृति, पहुँच, सीख आ मृत्यु-बोध।
८१२	नाव नीर उतरै छै, धार सीमा काटैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (धार, पार, भार, आधार, पुकार, विचार, द्वार); रदीफ सीमा काटैए	नदी-सीमा: नक्शा, पहचान, जीविका, कानून, परिवार आ प्रकृतिक प्रवाह।
८१३	काठ रेखा जागै छै, छाप हाथ गढ़ैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाप (छाप, माप, थाप, ताप, आलाप, संताप, प्रताप); रदीफ हाथ गढ़ैए	हस्तकला: श्रम, परम्परा, नवपन, मूल्य, देहक पीर आ कारीगरक नाम।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
८१४	मेह राति पड़ै छै, नेह छप्पर बजैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया ‑ेह (नेह, देह, गेह, मेह, स्नेह, विदेह, उमेह); रदीफ छप्पर बजैए	बरखा-छप्पर: घरक असमानता, पड़ोस, खेती, सहायता आ घरेलू स्नेह।
८१५	रोटी हाथ बाँटै छै, स्वाद थारी जुड़ैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया ‑ाद (स्वाद, संवाद, प्रसाद, अनुवाद, विवाद, अवसाद, नाद); रदीफ थारी जुड़ैए	साझा भोजन: भूख, जात-रेखा, रसोई श्रम, अनुवाद, किसान आ संगति।
८१६	गवाही स्वर उठै छै, प्रमाण न्याय तौलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया ‑ान (प्रमाण, विधान, अनुमान, निदान, ध्यान, मान, ज्ञान); रदीफ न्याय तौलैए	अदालत: गवाही, स्रोत, अनुमान, पहुँच, मान, अपील आ संस्थागत नम्रता।
८१७	स्वप्न रूप बदलै छै, रूप भोर जगबैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया ‑ूप (रूप, स्वरूप, प्रतिरूप, धूप, कूप, अनूप, भूप); रदीफ भोर जगबैए	स्वप्न-जागरण: बदलैत रूप, बाह्य प्रतिरोध, स्मृति, अवधारणा आ आत्म-प्रश्न।
८१८	बत्ती राति जरै छै, सोर नगर जागैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया ‑ोर (सोर, नोर, भोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ नगर जागैए	शहरक राति: श्रम, असमानता, निगरानी, यातायात, निजता आ नागरिक सोर।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
८१९	आखर पात सजै छै, बोल लिपि बचैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोल (बोल, मोल, खोल, डोल, तोल, झोल, गोल); रदीफ लिपि बचैए	लिपि: मौखिकता, डिजिटलीकरण, फॉन्ट, लघु भाषा, अनुवाद आ अभिलेख।
८२०	चिता शान्त पड़ै छै, फूल राख बोलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ूल (फूल, धूल, मूल, कूल, शूल, भूल, अनुकूल); रदीफ राख बोलैए	मृत्यु आ राख: शोक, स्मृति, रिवाज, क्षमा, उत्तराधिकार आ नवजीवन।
८२१	दू हाथ मिलै छै, नेह बंधन जँचैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ेह (नेह, देह, गेह, मेह, स्नेह, विदेह, उमेह); रदीफ बंधन जँचैए	सम्बन्ध: सहमति, श्रम-विभाजन, संवाद, स्वतन्त्रता, सेवा आ समय।
८२२	ट्रेन गाम छोड़ै छै, द्वार पएर घुरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (द्वार, पार, भार, आधार, विचार, समाचार, पुकार); रदीफ पएर घुरैए	प्रवासक बाद घुरनाइ: बदलल गाम, स्मृति, भाषा, विकास, मित्रता आ फेर विदा।
८२३	घंटी भोर बजै छै, ज्ञान कक्षा जागैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (ज्ञान, ध्यान, मान, विधान, निदान, प्रमाण, गान); रदीफ कक्षा जागैए	विद्यालय: प्रश्न, प्रयोग, बहुभाषिकता, गलती, पहुँच, कृत्रिम-बुद्धि स्रोत आ अंकक सीमा।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
८२४	पीर धीरे कहै छै, भेद देह सुनैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ेद (भेद, वेद, खेद, छेद, अभेद, निषेध, विभेद); रदीफ देह सुनैए	देहक सुनवाई: पीर, रिपोर्ट, अनुभव, सहमति, उपचार-सीमा आ स्वास्थ्य-न्याय।
८२५	पएर माथ रुकै छै, पार आकाश खुलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (पार, सार, द्वार, धार, तार, विस्तार, आधार); रदीफ आकाश खुलैए	समापनक बदला खुलल आकाश: प्रश्न, नम्रता, स्मृति, संवाद, उड़ान आ अगिला खोज।
८२६	घड़ी भोर बजै छै, काल फेर सरकै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, निदान, प्रमाण, पहिचान); रदीफ घड़ी बोलैए	घड़ीक माप आ मनुष्यक अनुभवगत समयक बीच तनाव; श्रम, स्मृति, पीर आ इतिहास।
८२७	धान बीज सुकै छै, अगिला ऋतु टिकै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, भार, आधार, विचार, व्यवहार, उद्धार, पुकार); रदीफ कोठार बचैए	बीज-संरक्षण, जैव-विविधता, किसानक ज्ञान, संकट-न्याय आ भविष्य।
८२८	दर्पण भोर चमकै छै, चेहरा रेखा उभरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, छोर, जोर, कोर); रदीफ दर्पण देखैए	दर्पणक छवि, बाह्य रूप आ भीतरक अर्थ, उम्र, भ्रम, पहचान आ प्रमाण।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
८२९	तान सूता तनै छै, बाना रंग जुड़ै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ीत (गीत, रीत, प्रीत, मीत, जीत, अतीत, विनीत); रदीफ करघा गबैए	करघा: तान-बाना, श्रम, परम्परा, बाजार, गाँठ, डिजाइन आ कारीगरक मान।
८३०	ढोल दूर बजै छै, रंग झण्डा लहरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ास (आस, प्यास, विश्वास, उल्लास, निवास, प्रकाश, आभास); रदीफ मेला हँसैए	मेला: खेल, इच्छा, कला, बहुभाषिक मिलन, भ्रम, श्रम आ क्षणभंगुर उल्लास।
८३१	पएर ढलान चढ़ै छै, कुहरा दूर सरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ाह (राह, चाह, प्रवाह, अथाह, उछाह, निर्वाह, आह); रदीफ पहाड़ बोलैए	पहाड़ी बाट: स्थानीय ज्ञान, नक्शा, प्रतिध्वनि, जल, जोखिम, वन आ सामूहिक पुल।
८३२	मधुमाछि भोर उड़ै छै, फूल गन्ध खोजै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ूल (मूल, फूल, धूल, कूल, शूल, भूल, अनुकूल); रदीफ छत्ता बजैए	मधुमाछि: संकेत, परागण, समूह-श्रम, कीटनाशक, षट्कोण, अनुमान आ सीमित दोहन।
८३३	चन्द्र राति चमकै छै, छाँह धीरे चढ़ै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ंग (रंग, ढंग, संग, अंग, तरंग, प्रसंग, उमंग); रदीफ चन्द्र ढकैए	ग्रहण: कथा, विज्ञान, पूर्वानुमान, सुरक्षा, छवि-जाँच आ भयक रूपान्तरण।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
८३४	पुल नदी लाँघै छै, दू कूल जुड़ै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ेल (मेल, खेल, बेल, तेल, रेल, भेल, जेल); रदीफ पुल थामैए	पुरान पुल: अवसंरचना, रखरखाव, जोखिम, बाढ़, पहुँच, टोल आ साझा जीवन।
८३५	सीसा टाइप सजै छै, स्याही रोल चढ़ै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाप (छाप, माप, ताप, थाप, संताप, आलाप, प्रताप); रदीफ अक्षर छपैए	छापाखाना: प्रूफ, त्रुटि, लघु भाषा, स्रोत, वितरण आ सार्वजनिक विचार।
८३६	रेडियो भोर बजै छै, दूर स्वर अबै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोल (बोल, डोल, मोल, खोल, गोल, झोल, तोल); रदीफ रेडियो सुनैए	रेडियो: अदृश्य तरंग, समाचार, लोकगीत, आपदा-सूचना, स्रोत आ सार्वजनिक संवाद।
८३७	पुरना फोटो खुलै छै, चेहरा मुस्की रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाव (भाव, चाव, नाव, ठाव, घाव, प्रभाव, स्वभाव); रदीफ फोटो जगबैए	पुरान फोटो: स्मृति, फ्रेमक सीमा, पहचान, संदर्भ, युद्ध-छवि आ पीढ़ीगत इतिहास।
८३८	ताला द्वार लटकै छै, हाथ धातु घुमै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (जाल, चाल, काल, ताल, पाल, माल, लाल); रदीफ चाभी खुलैए	चाभी-ताला: सादृश्य, निजता, अनुमति, बाधा, जिम्मेदारी आ विश्वास।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
८३९	सूखल पात सरसरै छै, चिनगी छोट उठै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीर (नीर, पीर, धीर, तीर, भीर, समीर, शरीर); रदीफ जंगल जरैए	जंगल-अग्नि: बहु-कारण, जीव-पलायन, बचाव, राखपाछाँ पुनर्जनन, उपग्रह-साक्ष्य आ स्थानीय ज्ञान।
८४०	नहर खेत मुड़ै छै, नीर रेखा चलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाय (उपाय, सहाय, न्याय, अध्याय, आशय, विनय, समुदाय); रदीफ नहर बहैए	सिंचाइ नहर: पालि, हक, गाद, मरम्मत, सूखा, फसल-चयन आ जल-न्याय।
८४१	पत्थर रेखा रहै छै, आखर धीरे घिसै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াম (নাম, গাম, দাম, ধাম, বিরাম, পরিণাম, আয়াম); রদীফ পত্থর কহৈए	শিলালেখ: সত্তা, লুপ্ত শ্রম, তিথি, লিপি, পাঠ-বিকল্প, মূল-সংদর্ভ আ ইতিহাস।
८४२	বাঁস হবা ডোলৈ ছৈ, জড়ি মাটি থামৈ	३२ মাত্রা প্রতি মিসরা; যতি १६+१६; ६ শের; কাফিয়া –ার (আকার, প্রকার, সংস্কার, বিস্তার, সংসার, অধিকার, স্বীকার); রদীফ বাঁস ঝুকৈए	বাঁস-বাড়ী: লচক, কারীগরী, পারিস্থিতিকী, হক, বাঁসুরী আ রিক্ততাক সৃজনাত্মক অর্থ।
८४३	পতংগ ছত উঠৈ ছৈ, ডোর হাথ তনৈ	३२ মাত্রা প্রতি মিসরা; যতি १६+१६; ६ শের; কাফিয়া –াস (সুবাস, মিঠাস, বিকাস, প্রয়াস, উল্লাস, বিশ্বাস,	পতংগ: স্বতংত্রতা আ সম্বন্ধ, খেলক নিয়ম, পাখীক সুরক্ষা, অদৃশ্য হবা আ অনুমান।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		आभास); रदीफ पतंग उड़ैए	
८४४	चूल्हा भोर जरै छै, दालि गन्ध फैलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (सुवास, मिठास, आस, प्यास, विश्वास, उल्लास, आभास); रदीफ धुआँ उठैए	रसोईक धुआँ: स्वाद, श्वास-स्वास्थ्य, स्मृति, अदृश्य घरेलू श्रम, नमकक माप आ दिनचर्या।
८४५	राति आकाश खुलै छै, तारा झिलमिल करै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (काल, चाल, जाल, ताल, पाल, माल, लाल); रदीफ तारा दिखैए	तारा-दिशा: परम्परागत नेविगेशन, उपकरण, प्रकाशक विलम्ब, दूरी, स्रोत-जाँच आ भोर।
८४६	पाखी झुण्ड उड़ै छै, आकाश रेखा बनै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, प्रवाह, अथाह, उछाह, निर्वाह, आह); रदीफ पाखी घुरैए	प्रवासी पाखी: सीमा-पार यात्रा, दलदल, बहु-संकेत दिशा, संरक्षण, डेटा आ घरक ऋतु-बोध।
८४७	पैडल पएर घुमै छै, चक्का राह धरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, भार, आधार, विचार, व्यवहार, उद्धार, पुकार); रदीफ साइकिल चलैए	साइकिल: सन्तुलन, सड़क-सुरक्षा, मरम्मत, शिक्षा-पहुँच, चलन-स्वतंत्रता आ साझा राह।
८४८	नमक दाना पड़ै छै, दालि स्वाद बदलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६;	नमक: स्वादक माप, श्रम, कर-इतिहास, देह-सन्तुलन,

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		६ शेर; काफिया –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, छोर, जोर, कोर); रदीफ नमक घुलैए	अदृश्य उपस्थिति आ मित्रता।
८४९	भोर अजान उठै छै, घण्टा दूर बजै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, निदान, प्रमाण, पहिचान); रदीफ सोर मिलैए	बहुधर्मी भोर: श्रद्धा-स्वतंत्रता, साझा कानून, करुणा, स्मृति, अफवाह-जाँच आ नागरिक मान।
८५०	लहर भोर उठै छै, क्षितिज रंग बदलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, भार, आधार, विचार, व्यवहार, उद्धार, पुकार); रदीफ समुद्र बुलबैए	समुद्र-क्षितिज: नम्रता, बहुप्रमाण दिशा, रूप-परिवर्तन, पर्यावरणीय जिम्मेदारी, तूफान-संकेत आ अनन्त प्रश्न।
८५१	भोर कूप जागै छै, नीर तल चमकै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (ज्ञान, मान, ध्यान, निदान, प्रमाण, विधान, पहिचान); रदीफ कूप पुकारैए	जल, श्रम, जातिगत घेर, सूखा, साझा हक आ पीढ़ीगत स्मृति।
८५२	पोथी पन्ना खुलै छै, छोट टिप्पणी जगै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (विचार, आधार, व्यवहार, प्रकार, उद्धार, विस्तार, सत्कार); रदीफ हाशिया कहैए	पाण्डुलिपि, नकल-दोष, अनाम पाठक, सम्पादन आ अर्थक बहुपरत यात्रा।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
८५३	सीटी दूर बजै छै, लोहा ताल धरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, डोर, भोर, छोर, कोर, जोर, नोर); रदीफ पटरी गबैए	प्रस्थान, प्रतीक्षा, प्रवास, सूचना, भाषा, दूरी आ घरक स्मृति।
८५४	माटि हाथ नमै छै, रूप बीच उगै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, प्यास, विश्वास, उल्लास, प्रकाश, निवास, आभास); रदीफ माटि सँवरैए	माटि, रूप, रिक्तता, ताप, श्रम, बाजार आ पुनर्निर्माण।
८५५	मेह काँच पड़ै छै, बूँद रेखा बनै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, प्रीत, रीत, मीत, जीत, अतीत, विनीत); रदीफ खिड़की सुनैए	बरखा, घर-बाहरक सीमा, स्मृति, दूर समाचार, बूँदक संगीत आ भोर।
८५६	कलम डारि जुड़ै छै, नव फूल खुलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, प्रवाह, अथाह, उछाह, निर्वाह, आह); रदीफ बगान फलैए	कलम-जोड़, जड़ि, सहायक कारण, जैव-सन्तुलन, श्रम आ पीढ़ीगत बगान।
८५७	न्याय कक्ष खुलै छै, प्रश्न क्रम धरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (काल, चाल, ताल, जाल, ढाल, माल, लाल); रदीफ गवाही	साक्ष्य, स्मृति, प्रतिप्रश्न, मौन, अफवाह, निर्णय आ गरिमा।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		तौलैए	
८५८	राति नदी बहै छै, मचान दीप जरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाप (माप, छाप, ताप, थाप, संताप, आलाप, प्रताप); रदीफ दीप चमकैए	रातिक नदी, दिशा-संकेत, रखवारक श्रम, अनुमान, कुहरा आ भोर।
८५९	भोर विद्यालय खुलै छै, आँगन हँसी भरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाव (चाव, भाव, ठाव, नाव, घाव, लगाव, पड़ाव); रदीफ घण्टी बजैए	विद्यालय, प्रश्न, मातृभाषा, भूल, भोजन, गरिमा आ सीखक यात्रा।
८६०	बाढ़ नीर उतरै छै, खेत माटि दिसै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, भंग, तरंग, प्रसंग); रदीफ गाद जमैए	बाढ़क विनाश आ उर्वरता, विस्थापन, राहत-न्याय, नदी-पथ आ माटिक इतिहास।
८६१	झोरा काँध चढ़ै छै, माय नोर धरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाई (कमाई, विदाई, लड़ाई, पढ़ाई, सफाई, गहराई, सुनवाई); रदीफ झोरा चलैए	प्रवास, श्रम, कमरा, अधिकार, बीमारी, घरक दूरी आ घुरनाइ।
८६२	पुरना बक्सा खुलै छै, कागज गन्ध उठै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ेर (फेर, देर, बेर, घेर, टेर, ढेर, सेर); रदीफ चिट्ठी आबैए	पुरान चिट्ठी, स्याही, तिथि, दूरी, मौन उत्तर, प्रसंग आ पीढ़ीगत पाठ।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
८६३	भोर बाड़ी खुलै छै, पात ओस चमकै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंध (गन्ध, सम्बन्ध, अनुबन्ध, प्रतिबन्ध, प्रबन्ध, सुगन्ध, दुर्गन्ध); रदीफ जड़ी महकैए	लोक-औषधि, मात्रा, निदान, प्रमाण, जैव-संरक्षण, गन्ध आ स्मृति।
८६४	दुपहर सूरज चढ़ै छै, गाछ छाह सिमटै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (संसार, परिवार, अधिकार, विस्तार, प्रतिकार, उपकार, विचार); रदीफ छाह घटैए	छाया, समय, सार्वजनिक ठाम, श्रम-विराम, सीमा आ दृष्टिकोण।
८६५	मेह छत पड़ै छै, नाली नीर बहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोल (डोल, खोल, मोल, बोल, झोल, गोल, तोल); रदीफ जलघर भरैए	वर्षाजल-संचय, स्वच्छता, देखभाल, साझा योजना, परम्परा आ सूखा-तैयारी।
८६६	बोर्ड बीच सजै छै, पहिल चाल खुलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, मात, रात, घात, पात, प्रभात, सौगात); रदीफ चौसर सिखबैए	चाल, विकल्प, नियम, प्रतिपक्ष, भूल, हार-जीत आ बौद्धिक औदार्य।
८६७	बाजार भोर खुलै छै, दाना पलड़ा धरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोल (मोल, तोल, बोल,	माप, बाजार-विश्वास, श्रम-मूल्य, किसान, इच्छा आ पारदर्शिता।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		खोल, डोल, गोल, अनमोल); रदीफ तराजू झुकैए	
८६८	नाव घाट लगै छै, नीर तेज बहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (धार, पार, तार, भार, द्वार, किनार, पुकार); रदीफ रस्सी तनैए	नाव, गाँठ, समष्टि-बल, बदलैत घाट, जोखिम, अनुभव आ यात्रा।
८६९	साँझ आँगन सजै छै, पहिल लौ उठै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाग (राग, आग, दाग, भाग, अनुराग, विराग, सुहाग); रदीफ माटि-दीप जरैए	दीप, श्रम, साझा उजास, दाग, क्षय, विराग आ स्मृति।
८७०	कागज सफेद रहै छै, स्याही रेखा उतरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया ेख (लेख, रेख, आलेख, अभिलेख, सुलेख, उपलेख, प्रलेख); रदीफ कलम बहैए	हस्तलेख, उम्र, नकल, डिजिटल रूप, अभ्यास, प्रमाण आ व्यक्तिक छाप।
८७१	देहरी भोर चमकै छै, घर बाहर मिलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (द्वार, पार, भार, विचार, व्यवहार, अधिकार, सत्कार); रदीफ देहरी रोकैए	घर-बाहरक सीमा, आतिथ्य, बहिष्कार, सुरक्षा, प्रवास आ अधिकार।
८७२	ढोल थाप पड़ै छै, बीच मौन रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६;	संगीतक मौन, संवादक ठहराव, करुणा, वाद, श्वास

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		६ शेर; काफिया –ान (तान, गान, ज्ञान, ध्यान, मान, विधान, निदान); रदीफ विराम सुनैए	आ अर्थ।
८७३	छत गमला रहै छै, बीज माटि धरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (भोर, नोर, कोर, छोर, जोर, सोर, डोर); रदीफ पौधा उगैए	छतक छोट गमला, सीमा, जल-सन्तुलन, पाखी, नगरक धूल आ आशा।
८७४	पुरना टीला रहै छै, गाछ छाह पड़ै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाद (याद, संवाद, विवाद, प्रसाद, विषाद, अनुवाद, स्वाद); रदीफ माटि स्मरैए	स्मारक-माटि, घिसैत आखर, बहु-स्मृति, शोक, प्रवासी पीढ़ी आ अनुवाद।
८७५	राति झंझा बहै छै, दूर रेखा उगै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, प्रकाश, विश्वास, उल्लास, निवास, आभास); रदीफ भोर खुलैए	झंझा-पाछाँक पुनर्निर्माण, साझा श्रम, जोखिम-स्मृति, साहस आ नव कोंपल।
८७६	पुरान रेखा खुलै, राह नक्शा बतबैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार); रदीफ नक्शा बतबैए	रेखा, स्मृति, वर्तमान भूगोल आ बदलैत राहक संवाद। पुरान नक्शाक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८७७	लोहारक श्वास	३२ मात्रा प्रति	श्रम, आग, रूपान्तरण, औजार

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
	उठै, आग भट्ठी धधकैए	मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान); रदीफ भट्ठी धधकैए	आ मानक गहिर ताप। लोहारक भट्ठीक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८७८	नीर बहै, भोर जाल पसारैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत); रदीफ जाल पसारैए	नीर, जीविका, चयन, सीमा आ नदीक जीवित सम्बन्ध। मछुआक जालक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८७९	कचहरी सोझाँ छाह पसारैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर); रदीफ छाह पसारैए	न्याय, गवाही, लोक-स्मृति आ छाहक दीर्घ साक्ष्य। कचहरीक बरगदक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८८०	दीप मन्द जरै, राति सम्हारैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास); रदीफ राति सम्हारैए	पीर, सेवा, प्रतीक्षा, देह आ आशाक संयत राति। अस्पतालक रातिक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८८१	धान डोलै, बिजुका तकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াম (নাম, ধাম, গ্রাম, বিরাম, প্রণাম, পরিণাম, আয়াম); রদীফ বিজুকা তকৈए	ফসল, ভয়, রক্ষা, ভ্রম আ খেতীহরক ধৈর্য। খেতক বিজুকাক মুখ্য বিম্ব গজল-দর-গজল পৃথক্ রাখল গেল অছি।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
८८२	छोट कोन रहै, टिकट पहुँचबैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (जाल, चाल, ताल, काल, पाल, ढाल, विशाल); रदीफ टिकट पहुँचबैए	छोट चिन्ह, दूरी, पता, संदेश आ प्रतीक्षाक यात्रा। डाक-टिकटक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८८३	धूलि बीच अंक रहै, पत्थर गनैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाई (कमाई, पढ़ाई, सुनवाई, गहराई, विदाई, लड़ाई, सफाई); रदीफ पत्थर गनैए	दूरी, माप, थकान, मोड़ आ यात्रा-बोध। मील-पत्थरक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८८४	ताल नीर झलकै, कुमुद खिलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ेद (भेद, खेद, वेद, छेद, अभेद, निषेध, विभेद); रदीफ कुमुद खिलैए	नीर, रूप, प्रतिबिम्ब, प्रकाश आ शान्त जागरण। कुमुदिनी-तालक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८८५	गन्ध उठै, मसाला पिसैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ूल (फूल, मूल, कूल, शूल, धूल, भूल, अनुकूल); रदीफ मसाला पिसैए	दाना, श्रम, गन्ध, स्वाद आ घरक नेह। सिलबट्टाक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८८६	काँच हँसै, लहठी खनकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाट (बाट, घाट, ठाट, पाट, हाट, कपाट,	रंग, नाजुकता, लोक-रीत, नेह आ टूटनक स्मृति। लहठीक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		ललाट); रदीफ लहठी खनकैए	
८८७	पएर उठै, सीढ़ी चढ़बैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाथ (हाथ, साथ, माथ, नाथ, अनाथ, सनाथ, गाथ); रदीफ सीढ़ी चढ़बैए	ऊर्ध्व यात्रा, थकान, धैर्य आ सभ डगक ज्ञान। सीढ़ीक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८८८	आँगन थाप धरै, ढेंकी कुटैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, तरंग, उमंग, प्रसंग); रदीफ ढेंकी कुटैए	धान, श्रम, लय, घरेलू स्मृति आ सामूहिक ताल। ढेंकीक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८८९	ओस काँपै, पाला जमैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोल (बोल, डोल, खोल, मोल, तोल, गोल, झोल); रदीफ पाला जमैए	ठंढ, नाजुक फसल, उष्मा आ प्रतीक्षाक क्षण। पालाक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८९०	समुद्र बीच सूइ बतबैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाव (भाव, चाव, नाव, ठाव, दाव, घाव, लगाव); रदीफ सूइ बतबैए	अनिश्चित जल, माप, निर्णय आ भरोसाक सूक्ष्म संकेत। दिशा-सूइक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८९१	जंगल साँस ले, पगडंडी मुड़ैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीर (धीर, नीर, तीर, पीर,	अनिश्चित राह, प्रकृति-संकेत, साहस आ सुनबाक कला। जंगल-पगडंडीक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		अधीर, गंभीर, शरीर); रदीफ पगडंडी मुड़ैए	
८९२	तिनका जुड़ै, घोंसला बसैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाज (काज, साज, लाज, राज, समाज, अनाज, इलाज); रदीफ घोंसला बसैए	निर्माण, संरक्षण, उष्मा, जोखिम आ घर बनबाक श्रम। घोंसलाक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८९३	कपड़ा भीजै, रंगरेज रँगैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, जात, घात, प्रभात, आघात); रदीफ रंगरेज रँगैए	रंग, श्रम, रूपान्तरण, धूप आ लोक-पहिरन। रंगरेजक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८९४	गाम गोल बैसै, सभा सुनैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाप (माप, छाप, ताप, थाप, संताप, आलाप, प्रताप); रदीफ सभा सुनैए	बहुस्वर, प्रश्न, लोकनिर्णय, हक आ सहमति। ग्रामसभाक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८९५	धूलि हटै, अलमारी खुलबैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ेश (देश, वेश, प्रवेश, संदेश, निर्देश, अवशेष, परिवेश); रदीफ अलमारी खुलबैए	संग्रह, क्षय, हस्तलिपि, पाठक आ इतिहासक जिम्मेवारी। पोथी-अलमारीक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८९६	लहर चढ़ै, पदचिह्न मिटैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार	क्षणभंगुर चिन्ह, यात्रा, स्मृति आ कालक मेटनाइ। बालूपर पदचिह्नक मुख्य बिम्ब गजल-

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		(करार, विचार, उद्धार, संसार, आकार, प्रचार, संस्कार); रदीफ पदचिह्न मिटैए	दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८९७	धूलि उठै, घोड़ा दौड़ैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (कमान, मैदान, अरमान, उड़ान, प्रमाण, सम्मान, निधान); रदीफ घोड़ा दौड़ैए	गति, नियंत्रण, श्रम, दूरी आ सहयात्राक नैतिकता। घोड़ाक टापक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८९८	रेखा बोलै, चित्र उभरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (ठोर, सोर, भोर, कोर, छोर, डोर, नोर); रदीफ चित्र उभरैए	रेखा, रंग, स्त्री-दृष्टि, लोक-स्मृति आ परम्पराक नव पाठ। मिथिला-चित्रक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
८९९	श्वास उठै, शंख गुँजैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (प्रकाश, निवास, उच्छ्वास, विश्वास, विकास, इतिहास, आकाश); रदीफ शंख गुँजैए	श्वास, ध्वनि, अनुष्ठान, लोक-स्मृति आ मौनक सीमा। शंख-ध्वनिक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
९००	नीर पार खुलै, क्षितिज पसारैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (अतीत, संगीत, प्रीत, मीत, रीत, जीत, विपरीत); रदीफ क्षितिज पसारैए	अन्तहीनता, दूरी, भोर, यात्रा आ नव प्रश्नक खुलल अवकाश। क्षितिजक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
१०१	पोखर नीर चमकै, आस मखान खिलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार); रदीफ मखान खिलैए	नीरक गहिराइ, श्रम, बीज, फूल आ जीविकाक शान्त उभार। मखानक पोखरक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
१०२	ओस पात चमकै, नेह पात महकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान); रदीफ पात महकैए	नाजुक पात, ओस, देखभाल, सुगन्ध आ लोक-रीतिक कोमल बिम्ब। पानक बाड़ीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
१०३	सूत जुड़ै, चाव सुजनी सजैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत); रदीफ सुजनी सजैए	टुकड़ा, सूत, हाथ, कथा आ स्मृतिकेँ एक नव कपड़ामे जोड़बाक कला। सुजनी कढ़ाईक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
१०४	रेशा तनै, मान सिक्की जुड़ैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर); रदीफ सिक्की जुड़ैए	सूक्ष्म रेशा, घेर, श्रम, उपयोग आ सौन्दर्यक संगति। सिक्की शिल्पक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
१०५	पाखी खेल उठै, गीत सामा गबैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास); रदीफ सामा	भाइ-बहिनक नेह, लोककथा, माटि-मूर्ति आ साँझक सामूहिक गीत। सामा-चकेवाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		गबैए	
९०६	व्रत कथा खुलै, स्वर कथा गुँजैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াম (নাম, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम); रदीफ कथा गुँजैए	बरखा, कथा, सखी-स्वर, दाम्पत्य आ परम्पराक पुनर्पाठ। मधुश्रावणीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९०७	आँगन रेखा खुलै, चाव अरिपन खिलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াল (चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल); रदीफ अरिपन खिलैए	रेखा, चाउर-घोल, देहरी, स्मृति आ क्षणभंगुर सौन्दर्य। अरिपनक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९०८	भोर गन्ध उठै, आस मंजर महकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াব (भाव, चाव, ठाव, दाव, नाव, घाव, अभाव); रदीफ मंजर महकैए	ऋतु, सुगन्ध, पराग, प्रतीक्षा आ फल-आशाक सूक्ष्म आरम्भ। आमक मंजरक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९०९	पीयर खेत डोलै, प्रीत सरसों हँसैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंগ (रंग, संग, अंग, ढंग, उमंग, प्रसंग, तरंग); रदीफ सरसों हँसैए	पीयर विस्तार, ओस, पवन, श्रम आ दूर धरि खुलैत चाव। सरसोंक खेतक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९१०	गरमी घटै, श्वास पंखा डोलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ার (सार, पार, धार, विचार, आधार,	हाथक लय, दुपहरिया ताप, पवन आ साधारण औजारक बुद्धि। ताड़-पातक पंखाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		व्यवहार, पुकार); रदीफ पंखा डोलैए	
९११	माटि पकै, ताल घड़ा झनकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान); रदीफ घड़ा झनकैए	माटि, आग, नीर, प्यास आ उपयोगक बीच रूप धारण करैत पात्र। माटिक घड़ाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९१२	कपड़ा फाटै, नेह सुई सिअैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत); रदीफ सुई सिअैए	फाटल कपड़ा, टाँक, धैर्य आ मरम्मतिक सूक्ष्म नैतिकता। सुई-धागाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९१३	डारि हिलै, चाव झूला डोलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर); रदीफ झूला डोलैए	बाल-हँसी, रस्सी, पवन, निगरानी आ समयक आगे-पाछाँ डोल। गाछक झूलाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९१४	पुरान नीर चमकै, भोर कुण्ड चमकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास); रदीफ कुण्ड चमकैए	जल, पाथर, लोक-आगमन, क्षरण आ स्मृतिक दीर्घ सतह। पुरान कुण्डक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९१५	माथ सजै, मान पाग दमकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াম	मान, पहचान, परम्परा आ समय संग बदलैत सार्वजनिक प्रतीक। मिथिला पागक मुख्य बिम्ब अपन

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		(नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम); रदीफ पाग दमकैए	पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९१६	भोर थारी सजै, प्रीत भोज सजैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल); रदीफ भोज सजैए	सादा भोजन, साझा थारी, घरेलू नेह आ स्वादक सामाजिक अर्थ। चूड़ा-दहीक भोरक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९१७	कागज देह जरै, आस लालटेन जरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाव (भाव, चाव, ठाव, दाव, नाव, घाव, अभाव); रदीफ लालटेन जरैए	नाजुक कागज, दीप, पवन, उत्सव आ सावधानीक चमक। कागजक लालटेनक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९१८	अन्हार घनै, आस जुगनू चमकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, अंग, ढंग, उमंग, प्रसंग, तरंग); रदीफ जुगनू चमकैए	अन्हारक बीच छोट प्रकाश, क्षणिकता आ दिशाबोधक सूक्ष्म बिम्ब। जुगनूक रातिक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९१९	फूल झरै, नोर मौलश्री झरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार); रदीफ मौलश्री झरैए	सुगन्ध, झरनाइ, ऋतु, पुरान गाछ आ स्मृतिक कोमल क्षय। मौलश्रीक फूलक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९२०	पाथर बाट बजै, ताल खड़ाऊँ बजैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६;	पएर, काठ, ध्वनि, घिसावट आ साधारण यात्राक इतिहास। काठक खड़ाऊँक

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान); रदीफ खड़ाऊँ बजैए	मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९२१	ओस पड़ै, भोर जाल चमकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत); रदीफ जाल चमकैए	सूक्ष्म रेखा, ओस, प्रकाश, नाजुकता आ क्षणिक संरचनाक बोध। ओस-भीजल मकड़ी-जालक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९२२	धान रोपै, गीत रोपनी गबैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर); रदीफ रोपनी गबैए	सामूहिक श्रम, नीर, ताल, गीत आ भविष्यक फसल-आस। धानक रोपनी गीतक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९२३	घाट पएर चलै, नोर गगरी छलकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास); रदीफ गगरी छलकैए	जल-आननाइ, देहक संतुलन, श्रम, बाटक बात आ घरक प्यास। पनिहारक गगरीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९२४	मेघ हटै, रंग इन्द्रधनुष उभरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াম (নাম, ধাম, গ্রাম, বিরাম, প্রণাম, পরিণাম, আয়াম); রদীফ ইন্দ্রধনুষ উভরৈए	বরখা-পাছাঁ প্রকাশ, রংগ, ক্ষণভংগুরতা আ সাঝা বিস্ময়। ইন্দ্রধনুষক মুখ্য বিম্ব অপন পৃথক্ ভাব-ক্ষেত্রমে খুলৈত অছি।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
१२५	गाछ डोलै, पार पछिया बहैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल); रदीफ पछिया बहैए	गाछ, खेत, धूलि, पाखि आ स्मृतिमे चलैत दिशाबदलावक मुक्त लय। पछिया पवनक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
१२६	सूत तनै, सार चर्खा घूमैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार); रदीफ चर्खा घूमैए	रूई, सूत, हाथक ताल, श्रम आ समयक चक्रक बिम्ब। चर्खाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
१२७	धान जुटै, मान बखार भरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान); रदीफ बखार भरैए	अन्न-संचय, श्रम, सुरक्षा, ऋतु आ भविष्यक भोजनक चिंता। धान-बखारक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
१२८	माटि कटै, ज्ञान फाल चमकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत); रदीफ फाल चमकैए	माटिक चीरा, श्रम, बीजक तैयारी आ खेतीक ज्ञान। हलक फालक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
१२९	नीर हटै, भोर चर उभरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर); रदीफ चर उभरैए	बदलैत नदी, बालू-द्वीप, अस्थिर भूगोल आ जीवनक अनुकूलन। कोसीक चरक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
९३०	पोखर गहिरै, आस कमलबीज पकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास); रदीफ कमलबीज पकैए	जल-तल, बीज, प्रतीक्षा, ऋतु आ नुकील जीवन-सामर्थ्य। कमलबीजक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९३१	पाथर टकरै, नोर चकमक झिलमिलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াম (নাম, ধাম, গ্রাম, বিরাম, প্রণাম, পরিণাম, আয়াম); রদীফ চকমক ঝিলমিলৈए	घर्षण, चिनगारी, आगक आरम्भ आ सावधानीक सूक्ष्म शिक्षा। चकमक पाथरक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९३२	रेशा जुड़ै, प्रीत पाटी बुनैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াল (চাল, তাল, কাল, জাল, পাল, ঢাল, বিশাল); রদীফ পাটী বুনৈए	रेशा, बुनावट, गरमी, आराम आ हस्तकला-कौशल। शीतलपाटीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९३३	तार काँपै, गीत सारंगी रुवैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াব (ভাব, চাব, ঠাব, দাব, নাব, ঘাব, অভাব); রদীফ সারংগী রুবৈए	काँपैत तार, मानवीय स्वर, नोर आ मौनक पारस्परिकता। सारंगीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९३४	पात लहरै, भोर तिलकोर लहरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंগ (রংগ, সংগ, অংগ, ঢংগ,	बाड़ी, पात, रसोई, ऋतु आ घरेलू स्वादक हरियर बिम्ब। तिलकोर पातक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		उमंग, प्रसंग, तरंग); रदीफ तिलकोर लहरैए	खुलैत अछि।
९३५	लोक जुटै, मान सभा जुटैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार); रदीफ सभा जुटैए	लोक-समागम, पंजी, चयन, परम्परा आ बदलैत सामाजिक कसौटी। सौराठक सभाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९३६	पात खुलै, ज्ञान पंजी बोलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान); रदीफ पंजी बोलैए	हस्तलिखित नाम, स्रोत-जाँच, समयक दाग आ इतिहासक अनुशासन। पंजी-पोथीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९३७	रस्सी तनै, चाव डोल उतरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत); रदीफ डोल उतरैए	रस्सी, जल, श्रम, भार आ साझा जल-व्यवस्थाक बिम्ब। कुइयाँक डोलक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९३८	आग धधकै, आस ईंट पकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर); रदीफ ईंट पकैए	माटि, आग, श्रम, घर-निर्माण आ तापक सामाजिक मूल्य। ईंट-भट्ठाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९३९	फूल खुलै, प्रीत चंपा महकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, विश्वास,	सुगन्ध, ओस, स्मृति, ऋतु आ आँगनक कोमल अनुभूति। चंपा फूलक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास); रदीफ चंपा महकैए	खुलैत अछि।
९४०	दाना जुटै, मान कोठी भरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াম (নাম, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम); रदीफ कोठी भरैए	घरक अन्न-सुरक्षा, ऋतु, श्रम आ भविष्यक भरोसा। धानक कोठीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९४१	नील फूल डोलै, चाव अलसी हँसैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াল (चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल); रदीफ अलसी हँसैए	नील खेत, बीज, तेल, ओस आ ऋतु-श्रमक हलुक चमक। अलसीक फूलक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९४२	श्वास मिलै, गीत बाँसुरी सुसकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াব (भाव, चाव, ठाव, दाव, नाव, घाव, अभाव); रदीफ बाँसुरी सुसकैए	श्वास, छेद, पवन, दूरी आ स्मृतिक सूक्ष्म संगीत। बाँसुरीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९४३	पाथर भीजै, भोर झरना गबैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंগ (रंग, संग, अंग, ढंग, उमंग, प्रसंग, तरंग); रदीफ झरना गबैए	बहैत नीर, घिसैत पाथर, वन-ध्वनि आ गतिशील शान्ति। झरनाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९४४	भोर खुलै, आस कुहासा हटैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६;	अस्पष्टता, प्रकाश, धीरे खुलैत दृश्य आ धैर्यक बिम्ब। कुहासाक मुख्य बिम्ब अपन

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		६ शेर; काफिया –ार (सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार); रदीफ कुहासा हटैए	पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९४५	राति ढलै, नोर चाँद झुकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान); रदीफ चाँद झुकैए	रातिक अवसान, स्मृति, समय आ भोरक धीरे-धीरे आगमन। झुकैत चाँदक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९४६	लहर हटै, आस सीपी खुलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत); रदीफ सीपी खुलैए	समुद्र, आवरण, भीतरक चमक, ज्वार आ सम्भावनाक बिम्ब। सीपीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९४७	धूलि उठै, भोर गोधूलि उठैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर); रदीफ गोधूलि उठैए	घुरैत पशु, धूलि, साँझ, घर-द्वार आ दिनक अवसान। गोधूलिक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९४८	खेत बँटै, मान मेड़ बोलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास); रदीफ मेड़ बोलैए	सीमा, जल, पड़ोसी व्यवहार, विवाद आ साझा जिम्मेदारी। खेतक मेड़क मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
९४९	छत गरमै, चाव धूप उतरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াম (নাম, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम); रदीफ धूप उतरैए	ताप, छाह, समय, देहक थकान आ साँझक प्रतीक्षा। दुपहरिया धूपक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९५०	दूर रेखा खुलै, पार क्षितिज फैलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াল (चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल); रदीफ क्षितिज फैलैए	दूरी, दृष्टि, यात्रा, अपूर्णता आ निरन्तर खुलैत प्रश्नक अन्तिम बिम्ब। क्षितिजक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
९५१	राख अँगार खुलै, अँगार बचैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ার (अँगार, विचार, आधार, कछार, द्वार, भार, सार); रदीफ बचैए	राख अँगारक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९५२	बीज अँकुर खुलै, मान फेर उठैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ান (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ फेर उठैए	बीज अँकुरक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९५३	ओखरि मूसर खुलै, ताल धुनि बजैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াল (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, विशाल); रदीफ धुनि	ओखरि मूसरक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		बजैए	
९५४	कनेर फूल खुलै, आस फुलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ फुलैए	कनेर फूलक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९५५	छप्पर बरखा खुलै, नोर टपकि खसैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, भोर, छोर, कोर, जोर, सोर, डोर); रदीफ टपकि खसैए	छप्पर बरखाक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९५६	भूसी पवन खुलै, राह दूर उड़ैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, राह, थाह); रदीफ दूर उड़ैए	भूसी पवनक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९५७	कछार कटान खुलै, मूल कटैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ूल (मूल, भूल, फूल, धूल, शूल, मूल, फूल); रदीफ कटैए	कछार कटानक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९५८	बिचड़ा खेत खुलै, रंग फेर हरियैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, रंग); रदीफ फेर हरियैए	बिचड़ा खेतक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
९५९	काई पोखर खुलै, नाम जल तिरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाम (नाम, दाम, धाम, विराम, परिणाम, नाम, धाम); रदीफ जल तिरैए	काई पोखरक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९६०	बाती दीप खुलै, पीर जरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीर (पीर, नीर, तीर, धीर, चीर, पीर, नीर); रदीफ जरैए	बाती दीपक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९६१	सूत तकली खुलै, बात सूत तनैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, बात, रात); रदीफ सूत तनैए	सूत तकलीक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९६२	माटिक सोंध खुलै, रूप महकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ूप (रूप, धूप, कूप, अनूप, रूप, धूप, कूप); रदीफ महकैए	माटिक सोंधक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९६३	बबूल काँट खुलै, मेल भीतर चुभैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ेल (मेल, खेल, बेल, तेल, रेल, मेल, बेल); रदीफ भीतर चुभैए	बबूल काँटक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९६४	ओसार साँझ खुलै, अँगार	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६;	ओसार साँझक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
	फेर जगैए	६ शेर; काफिया –ार (अँगार, विचार, आधार, कछार, द्वार, भार, सार); रदीफ फेर जगैए	समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९६५	बान्ह जल खुलै, मान टिकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ टिकैए	बान्ह जलक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९६६	कुट्टी खलिहान खुलै, ताल धूरि उड़ैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, विशाल); रदीफ धूरि उड़ैए	कुट्टी खलिहानक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९६७	काँच चूड़ी खुलै, आस मृदु खनकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ मृदु खनकैए	काँच चूड़ीक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९६८	बेल लता खुलै, नोर लहरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (नोर, भोर, छोर, कोर, जोर, सोर, डोर); रदीफ लहरैए	बेल लताक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
१६९	नाल जल खुलै, राह नीचाँ बहैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, राह, थाह); रदीफ नीचाँ बहैए	नाल जलक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१७०	चन्द्र ज्योति खुलै, मूल दूर पसरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ूल (मूल, भूल, फूल, धूल, शूल, मूल, फूल); रदीफ दूर पसरैए	चन्द्र ज्योतिक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१७१	पीतल लोटा खुलै, रंग चमकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, रंग); रदीफ चमकैए	पीतल लोटाक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१७२	पोथीक पन्ना खुलै, नाम धीरे सरकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –াম (নাম, দাম, ধাম, বিরাম, পরিণাম, নাম, ধাম); রদীফ ধীরে সরকৈए	पोथीक पन्नाक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१७३	रुई सूत खुलै, पीर ऊपर उड़ैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ীর (পীর, নীর, তীর, ধীর, চীর, পীর, নীর); রদীফ ऊपर उड़ैए	रुई सूतक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१७४	धूरिक बाट खुलै, बात उड़ैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६;	धूरिक बाटक बिम्बसँ स्मृति,

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, बात, रात); रदीफ उड़ैए	प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९७५	साँकल द्वार खुलै, रूप राति खनकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ूप (रूप, धूप, कूप, अनूप, रूप, धूप, कूप); रदीफ राति खनकैए	साँकल द्वारक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९७६	सिलौट लोढ़ा बजै, सोर धीमे थिरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ धीमे थिरैए	सिलौट लोढ़ाक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९७७	बाँस दउरा जुड़ै, मान सँचि उठैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ सँचि उठैए	बाँस दउराक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९७८	तराजू पल्ला झुकै, विचार तोलि देखैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (विचार, आधार, कछ़ार, दुआर, भार, पुकार, सार); रदीफ तोलि देखैए	तराजू बटखराक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९७९	हँसुआ धार चमकै, सार फेर	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६;	हँसुआ धारक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
	दमकैए	६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार); रदीफ फेर दमकैए	समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९८०	जाँता दाना पिसै, गान मृदु बजैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (गान, तान, मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, विधान); रदीफ मृदु बजैए	जाँता पिसानक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९८१	कोदो बालि डोलै, उमंग साँझ धरि डोलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (उमंग, रंग, संग, ढंग, अंग, तरंग, प्रसंग); रदीफ साँझ धरि डोलैए	कोदो खेतक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९८२	छत्ता मधु भरै, आस मधु सँ भरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ मधु सँ भरैए	मधुमाछि छत्ताक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९८३	तितली रंग उड़ै, रंग पाँख पसारैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग); रदीफ पाँख पसारैए	तितली पाँखक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
९८४	घोंघा पथ सरकै, पहिचान पाछाँ रहि जाइए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (पहिचान, मान, ज्ञान, ध्यान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ पाछाँ रहि जाइए	घोंघा रेखक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९८५	कछुआ नीर काटै, राह नीरमे बहैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह); रदीफ नीरमे बहैए	कछुआ पोखरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९८६	सनई फूल डोलै, रंग पवनमे लहरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग); रदीफ पवनमे लहरैए	सनई खेतक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९८७	कनकौआ ऊपर उठै, डोर अकास चढ़ि जाइए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (डोर, सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, कोर); रदीफ अकास चढ़ि जाइए	कनकौआ डोरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९८८	सूप दाना छाँटै, धान सूपमे छँटैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (धान, मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, निदान);	सूप दानाक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		रदीफ सूपमे छँटैए	
९८९	झाँपी भीतर सजै, नाम भीतर बचि रहैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाम (नाम, दाम, धाम, विराम, परिणाम, प्रणाम, गाम); रदीफ भीतर बचि रहैए	झाँपी पिटारीक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९९०	ताड़पात आखर खुलै, ज्ञान पातमे बोलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (ज्ञान, मान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ पातमे बोलैए	ताड़पात आखरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९९१	पीपर छाँह पसरै, राह छाँहमे टिकि रहैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह); रदीफ छाँहमे टिकि रहैए	पीपर छाँहक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९९२	खजूर रस टपकै, आस रस टपकैत रहैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ रस टपकैत रहैए	खजूर रसक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९९३	बकुल फूल झरै, सुवास भोरमे महकि उठैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास	बकुल फूलक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		(सुवास, आस, श्वास, आभास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ भोरमे महकि उठैए	खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९९४	ओल माटि फोड़ै, मूल माटि फोड़ि निकलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ूल (मूल, भूल, फूल, धूल, शूल, कूल, अनुकूल); रदीफ माटि फोड़ि निकलैए	ओल माटिक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९९५	अरुई पात डोलै, बात पवनमे झूमैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात); रदीफ पवनमे झूमैए	अरुई पातक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९९६	मड़ुआ बालि झुकै, बाल नमि जाइए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (बाल, ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल); रदीफ नमि जाइए	मड़ुआ बालिक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९९७	कुरथी दालि पकै, दाल भानसमे महकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (दाल, ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल); रदीफ भानसमे महकैए	कुरथी दालिक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९९	तिल घानी घुमै,	३२ मात्रा प्रति	तिल घानीक बिम्बसँ प्रमाण,

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
८	हाथ घानी संग चलैए	मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ); रदीफ घानी संग चलैए	स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
९९ ९	मकई भुट्टा खुलै, धान दाना झरि पड़ैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (धान, मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, निदान); रदीफ दाना झरि पड़ैए	मकई भुट्टाक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०० ०	हजारम गजल खुलै, गीत आगाँ गुँजैत रहैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत); रदीफ आगाँ गुँजैत रहैए	हजारम गजलक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०० १	दीप बाती जरै, विश्वास मन्दे मन्दे जरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ मन्दे मन्दे जरैए	दीप बातीक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०० २	चरखा सूत कातै, मान सूतमे गाँठि जुड़ैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान,	चरखा सूतक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		विधान, निदान); रदीफ सूतमे गाँठि जुड़ैए	मिलाओल जाए।
१००३	मखान पोखर जागै, थाह नीर तलसँ उठैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह); रदीफ नीर तलसँ उठैए	मखान पोखरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१००४	पान पात भीजै, रंग ओस संग चमकि उठैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग); रदीफ ओस संग चमकि उठैए	पान पातक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१००५	सुपारी कटरनी चलै, विचार फाँक बनि खुलैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार); रदीफ फाँक बनि खुलैए	सुपारी कटरनीक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१००६	सिकी डलिया बुनै, प्रीत बुनाइमे रूप धरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत); रदीफ बुनाइमे रूप धरैए	सिकी डलियाक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१००७	कुम्हारक चाक घुमै, आधार माटिसँ देह	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार	कुम्हारक चाकक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक्

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
	गढ़ैए	(सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार); रदीफ माटिसँ देह गढ़ैए	अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१००८	घैला नीर भरै, श्वास शीतल नेह भरैत जाइए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ शीतल नेह भरैत जाइए	घैला नीरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१००९	लाठी बाट चलै, साथ पएर संग टिकैत रहैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ); रदीफ पएर संग टिकैत रहैए	लाठी बाटक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०१०	रोपनी धान झुकै, मान पाँतिमे हरियैत जाइए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ पाँतिमे हरियैत जाइए	रोपनी धानक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०११	कदली पात बजै, पात बरखा संग थिरकैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात); रदीफ बरखा	कदली पातक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		संग थिरकैए	
१०१२	आम मंजर फुलै, आस गाछ भरि गमकि उठैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ गाछ भरि गमकि उठैए	आम मंजरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०१३	लीची गुच्छा पाकै, रंग डारि संग झूलैत रहैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग); रदीफ डारि संग झूलैत रहैए	लीची गुच्छाक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०१४	सिन्नुर डिबिया खुलै, मान माँगमे रँग भरैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ माँगमे रँग भरैए	सिन्नुर डिबियाक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०१५	कमल पोखर जागै, आस भोर संग खुलि उठैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ भोर संग खुलि उठैए	कमल पोखरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०१	चापाकल चलै,	३२ मात्रा प्रति	चापाकल नीरक बिम्बसँ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
६	धार धरतीसँ नीर उठैए	मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार); रदीफ धरतीसँ नीर उठैए	प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०१७	ढेकी धान कुटै, ताल धपधप सोर उठैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ धपधप सोर उठैए	ढेकी धानक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०१८	बेलना लोइ फैलै, आधार गोलाइमे फैलैत जाइए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार); रदीफ गोलाइमे फैलैत जाइए	बेलना लोइक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०१९	खपड़ा छान्ह टिकै, राह बरखा रोकैत रहैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह); रदीफ बरखा रोकैत रहैए	खपड़ा छान्हक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०२०	भूसा दउनी चलै, सोर पवन संग उड़ि जाइए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ पवन संग	भूसा दउनीक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		उड़ि जाइए	
१०२१	बेंत पीढ़ी बुनै, मान बैसबाक आसन बनैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ बैसबाक आसन बनैए	बेंत पीढ़ीक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०२२	माटिक चूल्हि जरै, रात आँच भीतर जगैत रहैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात); रदीफ आँच भीतर जगैत रहैए	माटिक चूल्हिक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०२३	दूब आँगन भीजै, राह पएर तले हरियैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह); रदीफ पएर तले हरियैए	दूब आँगनक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०२४	झूला आमगाछ हिलै, उमंग पवन संग डोलैत रहैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग); रदीफ पवन संग डोलैत रहैए	झूला आमगाछक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०२५	कोसी धार बहै, इतिहास नकसा फेर लिखैए	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास,	कोसी धारक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ नकसा फेर लिखैए	दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
१०२६	पगडंडी धूर — आस एतबे साँच नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ एतबे साँच नहि	पगडंडी धूरक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०२७	नाव पतवार — मान तखन अर्थ खुलैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ तखन अर्थ खुलैत अछि	नाव पतवारक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०२८	सनक रस्सी — राह मोन फेर पूछैत रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह); रदीफ मोन फेर पूछैत रहै	सनक रस्सीक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०२९	सरकंडा चटाई — रंग नाम कतहु हराइत नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग); रदीफ नाम कतहु हराइत नहि	सरकंडा चटाईक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
१०३०	तसर कोया — सार रेशमक छुअन बचल रहत	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार); रदीफ रेशमक छुअन बचल रहत	तसर कोयाक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०३१	दही मथानी — गीत अपन बाट बनबैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत); रदीफ अपन बाट बनबैत अछि	दही मथानीक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०३२	धानक कोठी — हाथ फेर घर दिस अबैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ); रदीफ फेर घर दिस अबैत अछि	धानक कोठीक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०३३	खोंइछा अन्न — बात कथा एतय थमैत नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात); रदीफ कथा एतय थमैत नहि	खोंइछा अन्नक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०३४	पोखर घाट — सोर पएर आगाँ बढ़ैत रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर,	पोखर घाटक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि;

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		जोर, डोर, कोर); रदीफ पएर आगाँ बढ़ैत रहै	शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०३५	अरिपन रेखा — ताल रेखा घर सँ जुड़ैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ रेखा घर सँ जुड़ैत अछि	अरिपन रेखाक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०३६	बाँसुरी स्वर — आस भीतर साँस लैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ भीतर साँस लैत अछि	बाँसुरी स्वरक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०३७	गोरस मथनी — मान रस हाथे बदलैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ रस हाथे बदलैत अछि	गोरस मथनीक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०३८	मिथिला चित्रक कूची — सोर रंग मौनहुँ बोलैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ रंग मौनहुँ बोलैत अछि	मिथिला चित्रक कूचीक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
१०३९	माछक जाल — सार नीर जाल परखैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार); रदीफ नीर जाल परखैत अछि	माछक जालक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०४०	पोथीक जिल्द — गीत आखर देह धरैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत); रदीफ आखर देह धरैत अछि	पोथीक जिल्दक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०४१	नीम पात — राह ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह); रदीफ ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि	नीम पातक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०४२	कांस फूल — रंग चिन्ह पवनोमे बचैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग); रदीफ चिन्ह पवनोमे बचैत अछि	कांस फूलक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०४३	बरगद जटा — हाथ काल फेर घुरि अबैत नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाथ (हाथ, साथ, माथ,	बरगद जटाक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि;

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ); रदीफ काल फेर घुरि अबैत नहि	शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०४४	पुआल गादी — मान घाम पुआलमे बचैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ घाम पुआलमे बचैत अछि	पुआल गादीक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०४५	तिलकोर पात — बात लता आँगन जोड़ैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात); रदीफ लता आँगन जोड़ैत अछि	तिलकोर पातक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०४६	सिंघाड़ा पोखर — गीत नीर तले फल पाकैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत); रदीफ नीर तले फल पाकैत अछि	सिंघाड़ा पोखरक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०४७	कमला धार — सार नीर सभ गप कहैत नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार); रदीफ नीर सभ गप कहैत नहि	कमला धारक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
१०४८	चिरई घोंसला — सोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ मौनहुँ उत्तर दैत अछि	चिरई घोंसलाक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०४९	धानक लावा — ताल रूप बदलियो मूल रहैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ रूप बदलियो मूल रहैत अछि	धानक लावाक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०५०	आखरक यात्रा — आस अन्त एतय होइत नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ अन्त एतय होइत नहि	आखरक यात्राक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
१०५१	लोहारक धौंकनी — आस कथन एतेक पर थिर नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ कथन एतेक पर थिर नहि	लोहारक धौंकनीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०५२	करघाक ताना	३२ मात्रा प्रति	करघाक तानाक बिम्बसँ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
२	— मान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि	मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ सूत भीतर चिन्ह बचल अछि	प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०५३	अलसी फूल — राह धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह); रदीफ धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै	अलसी फूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०५४	सरिसो खेत — रंग नेह बिना रंग पूरा नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग); रदीफ नेह बिना रंग पूरा नहि	सरिसो खेतक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०५५	पगहा गाँठि — सार बंधन अपन राह चुनैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार); रदीफ बंधन अपन राह चुनैत अछि	पगहा गाँठिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०५६	जूटक बोरा — गीत बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत,	जूटक बोराक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		रीत, जीत, अतीत, पुनीत); रदीफ बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि	अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०५७	कुशक आसन — हाथ छाह बदललहुँ मूल नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ); रदीफ छाह बदललहुँ मूल नहि	कुशक आसनक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०५८	सोनारक हथौड़ी — बात थाप देहक भेद गनैत रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात); रदीफ थाप देहक भेद गनैत रहै	सोनारक हथौड़ीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०५९	जुगनू राति — सोर राति भीतर भोर पलैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ राति भीतर भोर पलैत अछि	जुगनू रातिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०६०	ओसक बूँद — ताल घाम बिना चमक खुलैत नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ घाम बिना चमक खुलैत नहि	ओसक बूँदक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०६	कमलनाल —	३२ मात्रा प्रति	कमलनालक बिम्बसँ प्रमाण,

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
१	आस नोरक अर्थ एक्के नहि	मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ नोरक अर्थ एक्के नहि	लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०६२	माटिक पुतरी — मान साँस संग लय बदलैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ साँस संग लय बदलैत अछि	माटिक पुतरीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०६३	बढ़ईक रन्दा — सोर हाथक छाप मेटैत नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ हाथक छाप मेटैत नहि	बढ़ईक रन्दाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०६४	पानक बारी — सार नीर नीचे जीवन जगैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार); रदीफ नीर नीचे जीवन जगैत अछि	पानक बारीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०६५	पोखरक पाँक — गीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत	पोखरक पाँकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		(गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत); रदीफ मौनक सीमा एतय टूटैत अछि	आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०६६	आम्रपल्लव तोरण — राह समय अपन गाँठि खोलैत रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह); रदीफ समय अपन गाँठि खोलैत रहै	आम्रपल्लव तोरणक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०६७	कुटजक छाल — रंग पवन संग देह झुकैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग); रदीफ पवन संग देह झुकैत अछि	कुटजक छालक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०६८	मसूरक फूल — हाथ दूरिक राह मोन नापैत रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ); रदीफ दूरिक राह मोन नापैत रहै	मसूरक फूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०६९	चनाक फली — मान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ दाना भीतर	चनाक फलीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		ऋतु बसैत अछि	
१०७०	मूँजक चटाई — बात आँगन सभ कथा सुनैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात); रदीफ आँगन सभ कथा सुनैत अछि	मूँजक चटाईक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०७१	ताँतक गाँठि — गीत प्रश्नक डोर टूटैत नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत); रदीफ प्रश्नक डोर टूटैत नहि	ताँतक गाँठिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०७२	पलाशक फूल — सार धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार); रदीफ धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि	पलाशक फूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०७३	बकाइन छाह — सोर गंध पुरान घर चिन्हैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ गंध पुरान घर चिन्हैत अछि	बकाइन छाहक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०७४	चकरी पवन — ताल धारक	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६;	चकरी पवनक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास,

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
	मोड़ स्थिर रहैत नहि	६ शेर; काफिया –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि	ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०७५	सुईक टाँका — आस आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै	सुईक टाँकाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०७६	बाँसक सूप — आस दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि	बाँसक सूपक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०७७	काँसक डलिया — मान बुनावट भीतर हाथक मान अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ बुनावट भीतर हाथक मान अछि	काँसक डलियाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०७८	घोंघाक खोल — राह खोल	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६;	घोंघाक खोलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
	बदलि जीवन थमैत नहि	६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह); रदीफ खोल बदलि जीवन थमैत नहि	अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०७९	सखुआ पात — रंग पात झरलहुँ गंध बचल रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग); रदीफ पात झरलहुँ गंध बचल रहै	सखुआ पातक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०८०	कदंबक फूल — सार फूलक छाह समय धरि रहत	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार); रदीफ फूलक छाह समय धरि रहत	कदंबक फूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०८१	बेंतक मोढ़ा — गीत बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत); रदीफ बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि	बेंतक मोढ़ाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०८२	मृदंगक चमड़ा — हाथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ,	मृदंगक चमड़ाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		अनाथ); रदीफ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि	अछि।
१०८३	मटरक फूल — बात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात); रदीफ पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै	मटरक फूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०८४	तिलक फली — सोर दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि	तिलक फलीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०८५	भदई धान — ताल धानक गंध घर चिन्हैत रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ धानक गंध घर चिन्हैत रहै	भदई धानक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०८६	हंसुलीक चमक — आस चमक देहक मान बनैत नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ चमक देहक मान बनैत नहि	हंसुलीक चमकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
१०८७	कनैल फूल — मान रंग विषक छाह ढाकैत नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ रंग विषक छाह ढाकैत नहि	कनैल फूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०८८	खपरैल छानि — सोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै	खपरैल छानिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०८९	ताड़क पंखा — सार हवा हाथक संगति मानैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार); रदीफ हवा हाथक संगति मानैत अछि	ताड़क पंखाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०९०	घैलाक मुँह — गीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत); रदीफ मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि	घैलाक मुँहक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०९१	सिलौटक धार — राह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह	सिलौटक धारक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		(राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह); रदीफ घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि	आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०९२	लहठीक खनक — रंग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग); रदीफ खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै	लहठीक खनकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०९३	चूल्हिक राख — हाथ राख भीतर आँच मरैत नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ); रदीफ राख भीतर आँच मरैत नहि	चूल्हिक राखक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०९४	कचनार पात — मान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान); रदीफ पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि	कचनार पातक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०९५	कपासक रूई — बात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात,	कपासक रूईक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		तात); रदीफ रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि	अछि।
१०९६	बेलनक घुमाव — गीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत); रदीफ घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि	बेलनक घुमावक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०९७	धानक भूसी — सार भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार); रदीफ भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै	धानक भूसीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०९८	मधुक छत्ता — सोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि	मधुक छत्ताक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१०९९	रुद्राक्षक दाना — ताल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ दाना गनितहुँ जप पूरा नहि	रुद्राक्षक दानाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
११००	घंटीक अनुनाद — आस अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास); रदीफ अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै	घंटीक अनुनादक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११०१	हँसियाक धार — मान पर राह खुलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान); रदीफ पर राह खुलै	हँसियाक धारक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११०२	इनारक डोल — सोर संग नेह रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ संग नेह रहै	इनारक डोलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११०३	घूरक आँच — राह पर गप खुलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह); रदीफ पर गप खुलै	घूरक आँचक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११०४	ईखक गाँठि — गीत बीच राह चलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत,	ईखक गाँठिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		शीत); रदीफ बीच राह चलै	
११०५	गुड़क भेली — ताल कात धुन उठै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ कात धुन उठै	गुड़क भेलीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११०६	झाड़ूक सींक — आस बीच रूप खुलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस); रदीफ बीच रूप खुलै	झाड़ूक सींकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११०७	कोंहड़ाक बेल — सार पर भोर खुलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार); रदीफ पर भोर खुलै	कोंहड़ाक बेलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११०८	जामुनक गाछ — मान पर डोर तनै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान); रदीफ पर डोर तनै	जामुनक गाछक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११०९	बेलक फल — सोर संग ताल बजै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर,	बेलक फलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		जोर, डोर, कोर); रदीफ संग ताल बजै	अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१११०	कौड़ीक चाल — राह बीच रंग झरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह); रदीफ बीच रंग झरै	कौड़ीक चालक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११११	खाटक पाट — गीत कात भोर खुलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत); रदीफ कात भोर खुलै	खाटक पाटक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१११२	ढिबरीक काँच — ताल संग काज चलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ संग काज चलै	ढिबरीक काँचक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१११३	घुँघरूक नाद — आस पर थाह मिलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस); रदीफ पर थाह मिलै	घुँघरूक नादक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१११४	झाँझक थाप — सार संग मान रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार	झाँझक थापक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		(सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार); रदीफ संग मान रहै	आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१११५	खुरपीक धार — मान पर साँच खुलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान); रदीफ पर साँच खुलै	खुरपीक धारक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१११६	बथानक खूँटा — राह संग गीत उठै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह); रदीफ संग गीत उठै	बथानक खूँटाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१११७	दूधक फेन — गीत बीच नेह रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत); रदीफ बीच नेह रहै	दूधक फेनक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१११८	लाहक चूड़ी — ताल संग धूप ढलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ संग धूप ढलै	लाहक चूड़ीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
१११९	बटखराक तोल — आस बीच छाह सरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६;	बटखराक तोलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस); रदीफ बीच छाह सरै	अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११२०	पालकीक डाँड़ — सार संग बीज उगै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार); रदीफ संग बीज उगै	पालकीक डाँड़क बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११२१	माछक शल्क — मान मे आँच जगै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान); रदीफ मे आँच जगै	माछक शल्कक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११२२	माटिक सुराही — सोर पर मोन नमै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ पर मोन नमै	माटिक सुराहीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११२३	कुल्हड़क गंध — राह कात सोर उठै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह); रदीफ कात सोर उठै	कुल्हड़क गंधक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११२४	तुरहीक नाद — गीत संग राह बनै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६;	तुरहीक नादक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत); रदीफ संग राह बनै	अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११२५	डमरूक ताल — ताल मे नेह जगै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ मे नेह जगै	डमरूक तालक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११२६	गोइठाक राख — सार पर अर्थ बचै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार); रदीफ पर अर्थ बचै	गोइठाक राखक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११२७	लौकीक बेल — मान संग मोन घुरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान); रदीफ संग मोन घुरै	लौकीक बेलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११२८	कदम्बक फूल — राह बीच गप जुड़ै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह); रदीफ बीच गप जुड़ै	कदम्बक फूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११२९	करघाक सूत — रंग कात	३२ मात्रा प्रति	करघाक सूतक बिम्बसँ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
	साँच रहै	मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ंग (रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग); रदीफ कात साँच रहै	प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११३०	फूसक छानि — गीत मे नेह चलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत); रदीफ मे नेह चलै	फूसक छानिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११३१	बेरक काँट — बात पर छाप बचै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ात (बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात); रदीफ पर छाप बचै	बेरक काँटक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११३२	बाँसक फाँक — सोर संग भेद खुलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ संग भेद खुलै	बाँसक फाँकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११३३	पोखरिक घाट — ताल बीच सोर पहुँचै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ बीच सोर पहुँचै	पोखरिक घाटक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११३४	गाछक खोह — आस कात	३२ मात्रा प्रति	गाछक खोहक बिम्बसँ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
	मान जगै	मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस); रदीफ कात मान जगै	प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११३५	पीपलक जड़ि — सार मे राह चलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार); रदीफ मे राह चलै	पीपलक जड़िक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११३६	चकईक पाँख — मान पर स्वर फूटै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान); रदीफ पर स्वर फूटै	चकईक पाँखक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११३७	कागक ठोर — राह संग प्रश्न उठै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह); रदीफ संग प्रश्न उठै	कागक ठोरक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११३८	मेघक बूँद — रंग बीच रूप बसै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग); रदीफ बीच रूप बसै	मेघक बूँदक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११३९	बिजुरीक रेख — गीत कात	३२ मात्रा प्रति	बिजुरीक रेखक बिम्बसँ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
	रंग मुड़ै	मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत); रदीफ कात रंग मुड़ै	प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११४०	पूसक धुंध — बात मे धुन बदलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ात (बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात); रदीफ मे धुन बदलै	पूसक धुंधक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११४१	जेठक धूल — सोर पर साँस बढ़ै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ पर साँस बढ़ै	जेठक धूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११४२	सावनक टपक — ताल संग काल बचै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ संग काल बचै	सावनक टपकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११४३	भादोक पाँक — आस बीच बीज चलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया -ास (आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस); रदीफ बीच बीज चलै	भादोक पाँकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
११४४	अगहनक बाली — सार कात पात पहुँचै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार); रदीफ कात पात पहुँचै	अगहनक बालीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११४५	फागुनक अबीर — मान मे भोर जुड़ै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान); रदीफ मे भोर जुड़ै	फागुनक अबीरक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११४६	चैतिक पछिया — राह पर थाह रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह); रदीफ पर थाह रहै	चैतिक पछियाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११४७	कार्तिकक दीप — रंग संग छाह ठहरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग); रदीफ संग छाह ठहरै	कार्तिकक दीपक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११४८	माघक धूप — गीत बीच नाद उड़ै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत); रदीफ बीच नाद उड़ै	माघक धूपक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
११४९	नदीक बालू — बात कात गंध पलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात); रदीफ कात गंध पलै	नदीक बालूक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११५०	शंखक सोर — सोर मे फूल उघड़ै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ मे फूल उघड़ै	शंखक सोरक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११५१	बेलपत्रक डारि — सार पर नेह जगै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार); रदीफ पर नेह जगै	बेलपत्रक डारिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११५२	खेसारीक दाना — मान संग राह खुलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान); रदीफ संग राह खुलै	खेसारीक दानाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११५३	कुर्थीक दालि — राह बीच मान चलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह); रदीफ बीच मान चलै	कुर्थीक दालिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
११५४	जाँतक पाट — रंग कात रूप रहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग); रदीफ कात रूप रहै	जाँतक पाटक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११५५	सिलौटक लीक — गीत मे गप बनै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत); रदीफ मे गप बनै	सिलौटक लीकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११५६	चूल्हिक धूर — बात पर बीज उगै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात); रदीफ पर बीज उगै	चूल्हिक धूरक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११५७	कूपक घेरा — सोर संग काल बहै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ संग काल बहै	कूपक घेराक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११५८	नाँदक जल — ताल बीच छाप बचै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ बीच छाप बचै	नाँदक जलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
११५९	भीतक लेप — आस कात डोर तनै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस); रदीफ कात डोर तनै	भीतक लेपक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११६०	खपराक छत — सार मे थाह खुलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार); रदीफ मे थाह खुलै	खपराक छतक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११६१	काठक छील — मान पर स्वर बजै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान); रदीफ पर स्वर बजै	काठक छीलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११६२	ताड़क रस — राह संग साँच जनै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह); रदीफ संग साँच जनै	ताड़क रसक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११६३	पनसक बीआ — रंग बीच नेह बचै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग); रदीफ बीच नेह बचै	पनसक बीआक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११६	मखानक खोल	३२ मात्रा प्रति	मखानक खोलक बिम्बसँ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
४	— गीत कात राह मुड़ै	मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत); रदीफ कात राह मुड़ै	प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११६५	सनक रेसा — बात मे रूप बदलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात); रदीफ मे रूप बदलै	सनक रेसाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११६६	चूनक ढेरी — सोर पर गंध पलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ पर गंध पलै	चूनक ढेरीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११६७	घीक वास — ताल संग सोर फूटै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल); रदीफ संग सोर फूटै	घीक वासक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११६८	मधुक मकरंद — आस बीच मान ठहरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ास (आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस); रदीफ बीच मान ठहरै	मधुक मकरंदक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
११६९	कोठीक अन्न — सार कात डोर जुड़ै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार); रदीफ कात डोर जुड़ै	कोठीक अन्नक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११७०	ढोलकक थाप — मान मे छाह सरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान); रदीफ मे छाह सरै	ढोलकक थापक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११७१	काँसक थाल — राह पर भोर उगै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह); रदीफ पर भोर उगै	काँसक थालक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११७२	जोतक लीक — रंग संग तर्क जँचै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग); रदीफ संग तर्क जँचै	जोतक लीकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११७३	शालक छाल — गीत बीच अर्थ खुलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत); रदीफ बीच अर्थ खुलै	शालक छालक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११७	कुम्हारक भट्ठी	३२ मात्रा प्रति	कुम्हारक भट्ठीक बिम्बसँ

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
४	— बात कात नाद बजै	मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात); रदीफ कात नाद बजै	प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११७५	धानक खील — सोर मे साँच मिलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर); रदीफ मे साँच मिलै	धानक खीलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
११७६	चानक डाकघर — पर पत्र जगै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार); रदीफ पर पत्र जगै	चानक डाकघर असम्भव ठामक सम्भव संवाद अछि—दूरी, नाम, प्रतीक्षा, अनकहल चिट्ठी आ आकाशमे घूमैत नेह छह स्वतंत्र शेरमे खुलैत अछि।
११७७	समयक खाली जेब — संग घड़ी चलै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान); रदीफ संग घड़ी चलै	समयक खाली जेब धनहीनता नहि, अनधिकारित क्षणक रूपक अछि—जहाँ घड़ी चलैत अछि मुदा जीवनक मूल्य सिक्का सँ नहि नापल जाइत।
११७८	बादलक पोथीघर — बीच अक्षर तिरै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह); रदीफ बीच अक्षर तिरै	बादलक पोथीघरमे पन्ना जलसँ बनैत अछि, अक्षर तिरैत अछि आ नाम गलि जाइत अछि—ज्ञानकेँ स्थिर वस्तु नहि, बरखाक क्षणिक पाठ रूपमे देखल गेल अछि।
११७९	सपनक रेल — कात सीटी बजै	३२ मात्रा प्रति	सपनक रेल एहन यात्रा

सं.	शीर्षक	औपचारिक सूचना	पाठीय केन्द्र
		मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ंग (रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग); रदीफ कात सीटी बजै	अछि जाहिमे टिकट, गन्तव्य आ जागरण निश्चित नहि—खिड़कीसँ चान चलैत अछि आ स्टेशन नाम बदलैत अछि।
११८०	छाहक सोपान — पर पाँति चढ़ै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत); रदीफ पर पाँति चढ़ै	छाहक सोपान देहविहीन वास्तु अछि—पग चढ़ैत अछि, छाह बदलैत अछि, आ दीवारपर पाँति अपनहि ऊर्ध्व दिशा खोजैत अछि।
११८१	शून्यक पतंग — संग डोर हँसै	३२ मात्रा प्रति मिसरा; यति १६+१६; ६ शेर; काफिया –ात (बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात); रदीफ संग डोर हँसै	शून्यक पतंग अन्तिम गजलमे समाप्ति नहि, खुलल आकाशक खेल अछि—डोर बन्धन आ स्वतंत्रता दुनूक एक्के समयक रूप बनैत अछि।

१३. निष्कर्ष

सम्पूर्ण ५१० रचनाक अनुशीलन सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे खण्ड-२ एकरेखीय गजल-संग्रह नहि, बल्कि रूप-अनुशासन, लोक-पदार्थ, स्मृति, प्रमाण-विवेक आ ऐतिहासिक बहुरेखीयताक प्रयोगशाला अछि। संग्रहक सर्वाधिक टिकाउ उपलब्धि मैथिली दैनिक जीवनक पदार्थकेँ दार्शनिक आ ऐतिहासिक प्रश्नक वाहक बनायब अछि। छन्दक घोषणासभ व्यवस्थित अछि; रदीफक लिखित संरचना अत्यन्त सुसंगत अछि; मुदा उच्चारणाधारित बहरक बाह्य श्रव्य सत्यापन भविष्यक आलोचनात्मक सम्पादनक जरूरी चरण रहत। भाषिक निखारमे किछु शब्दरूप, गैर-व्यक्ति सम्मान-क्रिया आ रोमन पदावली साफ कएलासँ पाठक मैथिली स्वर आरो सघन होयत।

बिबलियोग्राफी

दीवान-ए-विदेह खण्ड-२

नाटचशास्त्र

ध्वन्यालोक

काव्यप्रकाश

साहित्यदर्पण

वक्रोक्तिजीवित

औचित्यविचारचर्चा

तत्त्वचिन्तामणि

दीधिति

[Poetics]

[The Idea of History]

[What Is History?]

[Truth and Method]

[Metahistory]

[The Political Unconscious]

[Theory of Literature]

आलेख ४१ · काव्य, गजल आ बाल-किशोर साहित्य

अकुलाइत सुर

सारांश

‘अकुलाइत सुर’ दू समान आकारक खण्डमे विन्यस्त २६६ रचनाक संग्रह अछि—पहिल खण्डमे १३३ किशोर गजल आ दोसर खण्डमे १३३ कविता-गीत। प्रस्तुत अध्ययन मूल वर्ड पाठक सम्पूर्ण रचना-सूची आ वास्तविक रचना-शरीरकेँ मिलान कऽ पाठ-संपूर्णता स्थापित करैत अछि। समीक्षा भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आ रीति; पाश्चात्य समीक्षाक रूपवादी समीप-पाठ, पाठक-प्रतिक्रिया, संवादिता आ ऐतिहासिक-सामाजिक पठन; नव्य-न्यायक प्रमाण, संशय, अनुमान, शब्द-बोध, व्याप्ति आ अवच्छेदक-चिन्तन; तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक बहुधुरी दृष्टि एक संग लागू करैत अछि। पहिल खण्ड बाल-कल्पनासँ किशोर आत्मनिर्णय, परीक्षा, मीतता, निज सीमा, जालजगत, सूचना-जाँच, निन्न, आर्थिक जिम्मेदारी, सहकाज आ प्रमाण-आधारित विवेक धरि क्रमिक विस्तार करैत अछि। दोसर खण्ड लोकजीवन, बालगीत, ग्रामीण ध्वनि, सामाजिक व्यंग्य, विवाह-रीति, प्रवास, दफ्तर, पुरान तकनीकी आधुनिकता, भाषा-स्मृति, राष्ट्र-बोध आ कृषि-संस्कृतिक बहुस्तरीय अभिलेख बनैत अछि। समग्र मूल्यांकन संग्रहक विषय-विस्तार, लोक-शब्दभण्डार, किशोर-केंद्रित नैतिक आधुनिकता आ हास्य-व्यंग्यकेँ प्रमुख शक्ति मानैत अछि; संगहि पहिल खण्डमे किछु शीर्षकीय-पाठीय पुनरावृत्ति तथा किछु गजलमे बहुत पैघ मात्रा-अन्तर औपचारिक पुनःसम्पादनक आवश्यकता देखबैत अछि।

बीजशब्द

अकुलाइत सुर ·मैथिली कविता ·गजल ·बाल-साहित्य ·साहित्यिक समीक्षा

१.५१. गजेन्द्र ठाकुर-अकुलाइत सुर- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

अकुलाइत सुर

समग्र गहन साहित्यिक शोध-समीक्षा

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे

मूल कृति: गजेन्द्र ठाकुर

कृति-वर्ष: २०२६

सारांश

‘अकुलाइत सुर’ दू समान आकारक खण्डमे विन्यस्त २६६ रचनाक संग्रह अछि—पहिल खण्डमे १३३ किशोर गजल आ दोसर खण्डमे १३३ कविता-गीत। प्रस्तुत अध्ययन मूल वर्ड पाठक सम्पूर्ण रचना-सूची आ वास्तविक रचना-शरीरकेँ मिलान कऽ पाठ-संपूर्णता स्थापित करैत अछि। समीक्षा भारतीय काव्यशास्त्रक रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आ रीति; पाश्चात्य समीक्षाक रूपवादी समीप-पाठ, पाठक-प्रतिक्रिया, संवादिता आ ऐतिहासिक-सामाजिक पठन; नव्य-न्यायक प्रमाण, संशय, अनुमान, शब्द-बोध, व्याप्ति आ अवच्छेदक-चिन्तन; तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक बहुधुरी दृष्टि एक संग लागू करैत अछि। पहिल खण्ड बाल-कल्पनासँ किशोर आत्मनिर्णय, परीक्षा, मीतता, निज सीमा, जालजगत, सूचना-जाँच, निन्न, आर्थिक जिम्मेदारी, सहकाज आ प्रमाण-आधारित विवेक धरि क्रमिक विस्तार करैत अछि। दोसर खण्ड लोकजीवन, बालगीत, ग्रामीण ध्वनि, सामाजिक व्यंग्य, विवाह-रीति, प्रवास, दफ्तर, पुरान तकनीकी आधुनिकता, भाषा-स्मृति, राष्ट्र-बोध आ कृषि-संस्कृतिक बहुस्तरीय अभिलेख बनैत अछि। समग्र मूल्यांकन संग्रहक विषय-विस्तार, लोक-शब्दभण्डार, किशोर-केंद्रित नैतिक आधुनिकता आ हास्य-व्यंग्यकेँ प्रमुख शक्ति मानैत अछि; संगहि पहिल खण्डमे किछु शीर्षकीय-पाठीय पुनरावृत्ति तथा किछु गजलमे बहुत पैघ मात्रा-अन्तर औपचारिक पुनःसम्पादनक आवश्यकता देखबैत अछि।

बीज-शब्द: अकुलाइत सुर; मैथिली गजल; किशोर साहित्य; कविता-गीत; नव्य-न्याय; रस; ध्वनि; वक्रोक्ति; समानान्तर इतिहास; भाषा-निखार

१. प्रस्तावना

‘अकुलाइत सुर’ शीर्षक संग्रहक काव्य-स्वभावक कुंजी अछि। ‘अकुलाइत’ मे बेचैनी, जिज्ञासा, गति, अधूरापन आ आगाँ बढ़बाक प्रेरणा एक संग निहित अछि; ‘सुर’ एहि बेचैनीकेँ ध्वनि, गीत, गजल, बाल-लय, व्यंग्य आ लोकबोलीक रूप दैत अछि। पहिल खण्ड बाल्य-कल्पनासँ किशोर विवेक धरि क्रमिक मानसिक यात्रा रचैत अछि, जखनकि दोसर खण्ड समय, गाम, परिवार, प्रौद्योगिक बदलाव, सामाजिक रीति, हास्य आ सांस्कृतिक स्मृतिक बहुस्तरीय दृश्य प्रस्तुत करैत अछि।

पारम्परिक रूप आ समकालीन विषय एतय परस्पर टकराइत नहि, बल्कि एक-दोसराकेँ पुनर्परिभाषित करैत अछि। गजल किशोर जीवनक परीक्षा, मीत-दबाव, निन्न, पहिल कमाइ, जालजगत आ समाचार-जाँचकेँ ग्रहण करैत अछि; कविता-गीत रेल, दफ्तर, तार-सन्देश, फैक्स, स्थानान्तरण, विवाह-रीति, गाम, प्रवास आ लोकध्वनिक सामाजिक स्मृति रचैत अछि।

एहि अध्ययनक ध्येय प्रशंसा मात्र नहि। पाठक सर्जनात्मक उपलब्धि, पुनरावृत्ति, छन्दीय असमानता, भाषिक निखारक क्षेत्र, सामाजिक इतिहासक संकेत आ दार्शनिक संरचना सभकेँ समग्र रूपे देखब आवश्यक अछि।

२. आधारपाठ, पाठ-संपूर्णता आ अनुसंधान-पद्धति

अध्ययनक आधार मूल वर्ड संस्करण अछि। विषय-सूची आ वास्तविक रचना-शरीरक शीर्षकक मिलान कएल गेल। दुनू खण्डमे १३३-१३३ रचना, कुल २६६ रचना अछि; विषय-सूचीक २६६ प्रविष्टि आ मूल पाठक २६६ शीर्षकमे एकोटा नाम वा क्रम-विसंगति नहि भेटल।

पहिल खण्डक सभ १३३ गजलमे बहर, मात्रा-क्रम, कल-क्रम तथा काफिया-रदीफक चारि औपचारिक सूचना-पाँति अछि। १३२ गजल दस काव्य-पाँतिक अछि; पहिल ‘बार्बी’ चौदह पाँतिक। दोसर खण्डमे १३३ कविता-गीत अछि। कुल काव्य-पाँति ४१९० अछि—पहिल खण्डमे १३३४ आ दोसर खण्डमे २८५६।

आलोचनात्मक पद्धति चारि स्तरपर काज करैत अछि: समीप-पाठ; भारतीय काव्यशास्त्रीय पठन; नव्य-न्याय आधारित ज्ञानमीमांसक परीक्षण; आ

समानान्तर इतिहास, जे ग्रामीण-आधुनिक, बाल-किशोर, लोक-दफ्तर, मौखिक-अंकीय, स्मृति-वर्तमान सभ धारा के एक संग पढ़ैत अछि।

२.१ पाठ-संपूर्णता आ औपचारिक तथ्य

कुल २६६ रचना; ४१९० काव्य-पाँति; १३३ मे १३३ गजलमे चारि छन्दीय सूचना-पाँति; अलग रदीफ ११९; काफिया-रूप १८। घोषित मात्रा-अन्तर ०–५ वाला २२, ६–१० वाला ६८, ११–२० वाला ३२, आ २१ अथवा बेसी वाला ११ गजल अछि।

३. ग्रन्थरचना आ द्विखण्डीय स्थापत्य

दुनू खण्ड समान रचना-संख्या राखैत अछि। पहिल धुरी भविष्याभिमुख अछि: बच्चा-किशोर आगाँ केना बढ़त, निर्णय केना लेत, मित्रता आ निज सीमा केना बुझत, सूचना केना जाँचत। दोसर धुरी स्मृति आ समाजाभिमुख अछि: गाम, दफ्तर, विवाह, मजूरी, प्रवास, तकनीक, परिवार, भाषा, प्रकृति आ लोकध्वनि केना अनुभवमे बसल अछि।

गजल १–१३ मे चान, तरेगन, परी, दादी, कागजक नाव, मेह, निन्न आ खेल अछि। गजल १४ सँ स्वप्न, राह, विषय, तुलना, मीतता, परीक्षा, निन्न, समय, निज सीमा, प्रश्न, असफलता, जालजगत, पहिल कमाइ, टोली, समाचार, यात्रा, भाषण, जिम्मेदारी आ सत्यापन क्रमशः जुड़ैत जाइत अछि। अन्तिम चरणमे गोपनता, प्रमाण, थाकल मोन, सहायता, कार्य-क्रम आ साँच-जाँच अछि।

दोसर खण्ड कोलाज सन अछि। बालध्वनि, प्रकृति, मिथिला, आधुनिक वस्तु, व्यंग्य, दफ्तर, विवाह, गाम, प्रवास, संस्कृत-परम्परा, राष्ट्र-बिम्ब, विद्यालय, कम्प्यूटर-खेल, माए, मैथिली आ कृषि एक-दोसराक कात ठाढ़ अछि। एहि सह-अस्तित्वमे समानान्तर सामाजिक इतिहास बनैत अछि।

४. खण्ड १ — १३३ किशोर गजल: रूप, विषय आ आलोचनात्मक मूल्यांकन

४.१ बाल-कल्पनासँ किशोर नागरिकता धरि

गजल १–१३ संग्रहक सर्वाधिक दृश्यात्मक अंश अछि। ‘बार्बी’मे बाहरी खिलौना-संस्कृति स्थानीय परी, ऐरावत, गाम, पानि, अकास आ निन्नक बिम्बसँ जुड़ैत अछि। ‘चान मामा’, ‘सात रंग’, ‘दादीक कथा’, ‘तरेगन गनी’, ‘कागजक

नाव’, ‘पतंगक पाँखि’, ‘मेहक खेल’ आ ‘निन्नक कथा’ बाल-कल्पनाक परिचित जगत बनबैत अछि।

गजल १४–२० निर्णायक मोड़ अछि। ‘अपन सपना’, ‘खेलक मैदान’, ‘पोथीक पाँखि’, ‘परीक्षाक बिहान’, ‘मीतक संग’, ‘पर्दासँ बाहर’ आ ‘अपन राह’ बच्चाकेँ स्वायत्त किशोर पाठकमे बदलैत अछि।

गजल २१–५८ आत्ममूल्य, मीतता, संवाद, निन्न, समय, विषय-चयन, सहमति, विश्राम, सहायता आ जालजगतक अनुशासनक मध्यखंड अछि। ‘तुलना नहि’, ‘लाइकसँ बाहर’, ‘अपन रूप’ आ ‘तुलना छोड़ू’ सामाजिक तुलनाक विरुद्ध; ‘ना कहू’, ‘अपन बात’, ‘भरोसा’ आ ‘सोझाँ बाजू’ निज सीमा आ प्रत्यक्ष संवादक पक्षमे अछि।

गजल ५९–८० व्यवहारिक स्वतंत्रताक पाठ अछि: पहिल कमाइ, प्रश्न, टोली, कौशल, खर्च, समाचार, यात्रा, भाषण, असफलता, समूह-दबाव, अंकीय विराम, जिम्मेदारी, साँच-जाँच आ अपन आवाज।

गजल ८१–११० आत्मनियमनक सूक्ष्म क्षेत्र खोलैत अछि—विश्राम, मीतक सीमा, अपन लय, डरक पार, रुचि, साँचक जाँच, भूल स्वीकार, काज बाँटब, लिखि कऽ बुझब, रिसक बेर थमब, कौड़ी बचाउ आ गाछ रोपू।

गजल १११–१३३ संग्रहक सबसे प्रत्यक्ष नैतिक-ज्ञानमीमांसक चरण अछि। मान, सुनब, हुनर, सीमा, पढ़ि बुझब, निज बात, गोपनता, प्रमाण, थाकल मोन, सहायता आ अन्ततः ‘साँच जाँचू’ एकटा ज्ञान-नैतिक उपसंहार बनबैत अछि।

४.२ गजल-रूपक तकनीकी समीक्षा

सभ १३३ रचना स्वयंकेँ ‘मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी’ कहैत अछि। काफिया-रदीफक स्पष्ट उद्घोषणा विशिष्ट सम्पादकीय गुण अछि। ११९ अलग रदीफ रचनात्मक विविधता प्रमाणित करैत अछि; आज्ञार्थक रदीफ किशोर पाठकसँ प्रत्यक्ष सम्बन्ध बनबैत अछि।

तथापि पारम्परिक गजलमे बहरक सममिति मूल अपेक्षा अछि। २२ गजलमे घोषित मात्रा-अन्तर ०–५, ६८ मे ६–१०, ३२ मे ११–२०, आ ११ गजलमे २१ वा बेसी अछि। विशेषतः अन्तिम चरणक किछु गजलमे १४–५४, १५–५०, १४–४५

सन अन्तर देखाइत अछि। एहन फैलावकेँ ‘पारम्परिक अरूज़ी’ कहबाक लेल पुनःछन्द-जाँच जरूरी अछि।

अनेक गजल एक-विषयी क्रमिक सलाह-पत्र जकाँ विकसित होइत अछि; पारम्परिक शेर-स्वायत्तता किछु कम होइत अछि। ई बाल-किशोर संप्रेषणीयताक कारण उपयोगी संकर प्रयोग हो सकैत अछि, मुदा विधागत भूमिकामे एकर स्पष्ट उल्लेख उपयोगी होएत।

शीर्षकीय पुनरावृत्ति सेहो ध्यान योग्य अछि: ‘अपन गति’ तीन बेर, ‘ना कहू’ तीन बेर, ‘प्रश्नक साहस’ तीन बेर; ‘मीत चुनू’, ‘भूलसँ सीखू’, ‘पहिल कमाइ’, ‘टीमक खेल’, ‘साँच जाँचू’ आ ‘बेर बाँटू’ दुई वा बेसी बेर। शिक्षणमे पुनरावृत्ति स्मृति-सुदृढ़ीकरण कऽ सकैत अछि, मुदा संग्रह-सम्पादनमे भिन्नता स्पष्ट होएबाक चाही।

४.३ काव्यात्मक उपलब्धि आ सीमा

पहिल खण्डक प्रमुख उपलब्धि विषयक आधुनिकता अछि। किशोरक वास्तविक प्रश्न—तुलना, छवि, मित्र-दबाव, ‘ना’ कहबाक अधिकार, गोपनता, निन्न, थाकल मोन, जालजगत, गलत समाचार, पहिल कमाइ, पहिल जिम्मेदारी—मैथिली गजलमे लगातार केन्द्र बनैत अछि।

सीमा ओतय उत्पन्न होइत अछि जतय काव्यिक बहुअर्थिता सलाहक स्पष्टतामे विलीन भऽ जाइत अछि। किछु रचना वाच्यार्थप्रधान अछि; सर्वश्रेष्ठ गजल ओ अछि जतय सलाह ‘डोर’, ‘दुआर’, ‘पाँखि’, ‘नाव’, ‘गाछ’, ‘अन्हार’, ‘इजोत’, ‘बाट’ सन बिम्बमे रूपान्तरित होइत अछि।

संग्रहक नैतिकता दण्डात्मक नहि, पुनरारम्भक अछि। हारक बाद उठब, भूल स्वीकारब, सहायता माँगब, धीरे बढ़ब, थाकल मोनकेँ विश्राम देब—ई सभ किशोरक आत्ममूल्यकेँ अंक वा बाहरी उपलब्धिसँ अलग करैत अछि।

५. खण्ड २ — १३३ कविता-गीत: लोकजीवन, व्यंग्य, बालदृष्टि आ सामाजिक इतिहास

५.१ बालदृष्टि, प्रकृति आ ध्वन्यात्मकता

‘ट्रेनक गाड़ी’क ‘छुक छुक’ सँ दोसर खण्ड श्रव्य जगत खोलैत अछि। ‘बौआ ठेहुनिया मारि’, ‘ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग’, ‘भोरक बसात’, ‘छाहक करतब’, ‘सपन’,

‘कोइरीक कूकू’, ‘मकड़ीक जाल’, ‘वायुगोलक’, ‘हाथीक सूप सन कान’ आ ‘छुट्टी’ बाल-दृष्टिक अवलोकन-शक्ति देखबैत अछि।

अन्तिम ‘बड़द करैए दाउन ने यौ’ पशु-हँकार, लोक-आदेश, ध्वनि आ खरिहानक जीवित शब्दावली बचबैत अछि। ई कविता भाषिक नृवंश-स्मृति जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि।

५.२ हास्य-व्यंग्य: आधुनिकता आ सामाजिक विसंगति

‘रिपेयर’, ‘नोकर’, ‘क्लासमे अबाज’, ‘एस.एम.एस.’, ‘टी.टी.’, ‘नौकरी’, ‘मरकरी डिलाइट’, ‘फ्रैक्चर’, ‘क्रिकेट-फील्डिंग’, ‘मैट्रिक प्लक’, ‘कैप्टन’, ‘अटेंडेंस’, ‘महीस पर वी.आइ.पी.’, ‘ट्रांसफर’, ‘ऑफिसमे भरि राति बन्द’, ‘गैस सिलिण्डरक चोरि’, ‘फैक्स’, ‘इटालियन सैलून’ आदि सामाजिक संक्रमणक शब्द-संग्रह अछि।

‘दहेज’, ‘बूढ़ वर’, ‘बिकौआ’, ‘फलनाक बेटा’, ‘पिण्डश्याम’, ‘चोरुक्का विवाह’, ‘जेठांश’ आ ‘नव-घरारी’ सामाजिक रीति आ परिवारक शक्ति-संबन्धकेँ व्यंग्य वा कथात्मक प्रसंगमे खोलैत अछि। वक्रोक्ति एतय मुख्य शक्ति अछि।

५.३ श्रम, गाम, प्रवास आ स्मृति

‘दरिद्र’, ‘नोकर’, ‘नौकरी’, ‘भारमे माटि’, ‘कंजूस’, ‘पाइ’, ‘गद्दरिक भात’, ‘मजूरी नहि माँगह’ आदि रचनामे श्रम, मजूरी, भोजन, पैसा, मालिक-नोकर सम्बन्ध आ आत्मसम्मान प्रत्यक्ष अछि।

‘गाम’, ‘प्रवासी’, ‘नानीक पत्र’, ‘मोनक जड़िमे’, ‘पुनः स्मृति’, ‘हम्मर माए’ आदि स्मृति-कविता सभ संग्रहक भावात्मक केन्द्र बनैत अछि। प्रवासक अनुभवमे गाम भूगोल मात्र नहि, भाषिक आ पारिवारिक आश्रय अछि।

५.४ भाषा, संस्कृति आ सामूहिक पहिचान

‘मिथिला’, ‘अखण्ड भारत’, ‘वेद’, ‘बुद्ध’, ‘केसर श्वेत हरित त्रिवार्णिक’, ‘सरस्वती मेधा’, ‘बाजू मैथिली’, ‘ध्येय पथिक साधक’ आदि रचना भाषा, ज्ञान, इतिहास, राष्ट्र वा आध्यात्मिक मूल्यक उद्‌बोधन बनैत अछि।

‘बाजू मैथिली’ संग्रहक भाषिक परियोजनाकेँ प्रत्यक्ष करैत अछि: मैथिली बालगीत, किशोर सलाह, दफ्तरक व्यंग्य, आधुनिक तकनीक, इतिहास, नैतिकता आ दार्शनिक प्रश्न सभक भाषा बनैत अछि।

६. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

६.१ रस

पहिल तेरह गजलमे अद्भुत रसक प्रधानता अछि; दादी आ मायक उपस्थितिसँ वात्सल्य-भाव जुड़ैत अछि। किशोर खण्ड आगे बढ़ैत लौकिक वीर-भाव ग्रहण करैत अछि—डरक पार, हारक बाद उठब, प्रश्न पूछब, निर्णय लेब, सत्य जाँचब।

दोसर खण्डमे हास्य रस अत्यन्त सक्रिय अछि। दफ्तर, आधुनिक यन्त्र, सामाजिक प्रतिष्ठा, विवाह, पढ़ाइ, नौकरी, धन आ दैनिक उलझन पर व्यंग्य हास्यकेँ सामाजिक आलोचना बनबैत अछि। स्मृति आ प्रवासमे करुण भाव, ‘बुद्ध’ आ ‘वेद’ सन रचनामे शान्त भाव उभरैत अछि।

६.२ ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति आ औचित्य

जतय ‘डोर’, ‘दुआर’, ‘पाँखि’, ‘नाव’, ‘अन्हार’, ‘इजोत’, ‘बाट’, ‘ताल’ सन बिम्ब सक्रिय अछि, ओतय वाच्यार्थसँ बेसी अर्थ खुलैत अछि। ‘अपन ताल’ जीवनक निज लयक ध्वनि बनैत अछि।

वक्रोक्ति दोसर खण्डक प्राण अछि। ‘महीस पर वी.आइ.पी.’ सन संयोजन प्रतिष्ठाक आधुनिक चिह्न आ ग्रामीण दृश्यक टकराहटसँ हास्य आ सामाजिक टिप्पणी दुनू बनबैत अछि।

रीति-दृष्टिसँ संग्रह बोलचाल, लोकशब्द, बालध्वनि, दफ्तरी उधार-शब्द आ सहज मैथिली वाक्यरचना एक संग रखैत अछि। शुद्धीकरणक कसौटी एकरूप प्रतिस्थापन नहि, बल्कि प्रसंग-सापेक्ष औचित्य होएबाक चाही।

७. पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आलोकमे पठन

७.१ रूपवादी समीप-पाठ

आज्ञार्थक रदीफ विषयक नैतिक आग्रहकेँ ध्वनिक पुनरावृत्ति दैत अछि। ‘जाँचू’, ‘राखू’, ‘चुनू’, ‘फेर उठू’, ‘निन्न बचाउ’—रदीफ अर्थक केन्द्र होइत अछि।

रूपवादी कसौटी पर मात्रा-अन्तरक पैघ फैलाव गंभीर प्रश्न अछि, कारण संग्रह स्वयं पारम्परिक अरूज़ी दावी करैत अछि। छन्दीय परीक्षण संग्रहक अपन घोषित रूप-विधानकेँ ओकर पाठसँ मिलबैत अछि।

७.२ पाठक-प्रतिक्रिया आ निहित किशोर पाठक

पहिल खण्ड स्पष्ट रूपे एहन किशोर पाठक रचैत अछि जे परीक्षा दैत, मीत चुनैत, जालजगत देखैत, गलत सूचना पबैत, थाकैत, पहिल कमाइ वा खर्चक अनुभव करैत आ भविष्यक विषय चुनैत अछि।

दोसर खण्डक वयस्क पाठक एके समय बाल्यस्मृति, गाम, पुरान तकनीक आ सामाजिक व्यंग्य पढ़ि सकैत अछि; एहि तरह पोथी बहु-पीढ़ी पाठक बनबैत अछि।

७.३ संवादिता आ सामाजिक वस्तु-संस्कृति

दोसर खण्ड बालक ध्वनि, ग्रामीण हँकार, शिक्षक-दफ्तरक भाषा, तकनीकी शब्द, विवाह-सम्बन्धी बोली, राष्ट्रीय उद्‌बोधन आ दार्शनिक शब्दक बहुध्वनिक संगम अछि।

रेल, एस.एम.एस., फैक्स, दफ्तर, स्थानान्तरण, गैस-सिलिण्डर, उपस्थितिपंजी, कम्प्यूटर-खेल आदि समयक सामाजिक इतिहासक साक्ष्य बनैत अछि; पहिल खण्डक जालजगत आ सूचना-जाँच एहि इतिहासक अगिला अंकीय चरण प्रस्तुत करैत अछि।

८. नव्य-न्याय आधारित ज्ञानमीमांसक समीक्षा

‘प्रश्न पूछू’, ‘समाचार’, ‘साँच जाँचू’, ‘साँचक जाँच’, ‘बात जाँचू’, ‘प्रमाण देखू’ आ अन्तिम ‘साँच जाँचू’ संशयसँ निर्णय धरि स्पष्ट ज्ञान-क्रम बनबैत अछि।

न्यायपरम्पराक प्रमाण-विचारमे प्रत्यक्ष, अनुमान आ विश्वसनीय शब्द महत्त्वपूर्ण साधन अछि। संग्रहक तथ्य-जाँच गजल एक चित्र वा एक स्रोतकेँ पर्याप्त नहि मानैत; दोसर स्रोत, दाबी पाछाँक आधार आ प्रचारक स्वरूप जाँचबाक आग्रह करैत अछि।

‘प्रश्नक साहस’ समूहमे जिज्ञासा अज्ञानक लज्जा नहि, ज्ञान-उत्पत्तिक साधन अछि। पोथी वा बहुसंख्यक कथनकेँ स्वतः अन्तिम सत्य नहि मानब न्यायिक विवेकसँ मेल खाइत अछि।

अवच्छेदकक धारणा रूपक रूपे गजल पर लागू होइत अछि: रदीफ शेरक अन्तिम ध्वनिक सीमा, काफिया पूर्ववर्ती ध्वनि-क्षेत्र सीमित करैत अछि। मात्रा-विस्तार अत्यधिक होएत तँ औपचारिक सीमा शिथिल होइत अछि।

‘निज बात’, ‘मीतक गोपन बात’, ‘सीमा राखू’ आदि रचनामे अधिकारक सीमांकन अछि—ककर बात ककर अनुमति बिना साझा होएत, मीतताक नामपर अधिकार कतय समाप्त होइत अछि।

९. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे स्थान-निर्धारण

समानान्तर इतिहास साहित्यकेँ एकमात्र संस्थागत वा उच्च-कैननिक धारा नहि मानि लोक, बाल, श्रम, प्रवास, मौखिकता, अंकीय जीवन, नूतन विधा आ सामाजिक हाशियाक अनुभव सभकेँ एक संग वैध ऐतिहासिक धारा मानैत अछि। ‘अकुलाइत सुर’ उच्च-काव्य आ बालगीत, गजल आ लोकध्वनि, ग्रामीण शब्द आ दफ्तरी उधार-शब्द, दादीक कथा आ जालजगत सभकेँ एके पोथीमे स्थान दैत अछि।

पहिल खण्ड २०२० दशकक युवा जीवनक सांस्कृतिक साक्ष्य रूपे पढ़ल जा सकैत अछि: पर्दा-जीवन, पसन्द-चिन्ह, समाचार-साझाकरण, अंकीय विराम, निजता, समूह-दबाव आ तथ्य-जाँच। दोसर खण्ड पूर्ववर्ती सामाजिक आधुनिकताक वस्तु-स्मृति सुरक्षित करैत अछि—रेल, दफ्तर, स्थानान्तरण, तार-सन्देश, फैक्स, उपस्थितिपंजी, गैस-सिलिण्डर, प्रवास।

मैथिली गजलक आधुनिक पुनरुत्थान रूपगत अनुशासन पर बल दैत अछि। ‘अकुलाइत सुर’ एहि अनुशासनकेँ किशोर विषयसँ जोड़ैत अछि; योगदान तखन बेसी मजबूत होएत जखन घोषित अरूज़ी मानदण्ड आ वास्तविक मात्रा-विन्यासक दूरी घटाओल जाए।

१०. दुनू खण्डक तुलनात्मक संश्लेषण

पहिल खण्ड भविष्यक भाषा अछि; दोसर खण्ड स्मृति आ वर्तमानक बहुध्वनिक अभिलेख। पहिल खण्डक वाक्यरचना ‘चलू’, ‘राखू’, ‘जाँचू’, ‘सुनू’,

‘चुनू’ सन निर्देशात्मक क्रियापर केन्द्रित; दोसर खण्ड कथात्मक, दृश्यात्मक आ संवादात्मक।

पहिल खण्डक प्रमुख पात्र किशोर पाठक अछि। दोसर खण्डक पात्र सामूहिक अछि—बौआ, माए, नानी, मजदूर, कर्मचारी, ग्रामीण, प्रवासी, शिक्षक, पशु-पक्षी, कृषक। पोथी व्यक्तिगत आत्मनिर्माण आ सामुदायिक स्मृति बीच सेतु बनैत अछि।

ध्वनि-स्तरपर पहिल खण्ड रदीफ-काफियाक नियंत्रित आवर्तन पर टिकल अछि; दोसर खण्ड लोकध्वनि, ध्वन्यनुकरण, बोलचाल, संवाद आ कथानकक लय पर। एहि भिन्नताकेँ एकता शीर्षक ‘सुर’ दैत अछि।

११. शुद्ध मैथिली निखार-अडिट

मूल रचना-शरीरक परीक्षणमे रोमन लिपिक प्रत्यक्ष शब्द नहि भेटल। बाहरी मूलक अनेक शब्द देवनागरी रूपमे अछि; किछु समकालीन किशोर जीवन वा सामाजिक इतिहासक सचेत संकेत अछि, तेँ सभकेँ यांत्रिक रूपे हटेनाइ उचित नहि।

‘कोठरी’ दू ठाम भेटैत अछि; ‘कोठली’ अधिक वांछनीय। ‘हरेक’ एक ठाम अछि—‘सपन दिस बढ़ब हरेक डेग’; एकरा ‘सपन दिस बढ़ब एक-एक डेग’ कएल जा सकैत अछि। परिमाणवाचक ‘हर’ पाँच ठाम निखार योग्य अछि; कृषि-अर्थक ‘हर’ दू ठाम शुद्ध अर्थभेदक शब्द अछि आ यथावत रहबाक चाही।

किशोर गजलमे ‘स्क्रीन’, ‘लाइक’, ‘सोशल’, ‘डिजिटल’, ‘करियर’, ‘टीम’, ‘फोन’, ‘फोटो’ जकाँ देवनागरीकृत उधार-शब्द अछि। देशज निखार लेल ‘पर्दा’, ‘पसन्द-चिन्ह’, ‘जालजगत’, ‘अंकीय’, ‘जीविका-पथ’, ‘टोली’, ‘दूरभाष’, ‘चित्र’ विकल्प सम्भव अछि; मुदा समकालीन अनुभवक तत्क्षण पहचान बचाएब सेहो आवश्यक।

दोसर खण्डक ‘रिपेयर’, ‘एस.एम.एस.’, ‘टी.टी.’, ‘मरकरी डिलाइट’, ‘फ्रैक्चर’, ‘क्रिकेट-फील्डिंग’, ‘मैट्रिक प्लक’, ‘कैप्टन’, ‘अटेंडेंस’, ‘वी.आइ.पी.’, ‘ट्रांसफर’, ‘ऑफिस’, ‘गैस सिलिण्डर’, ‘फैक्स’, ‘इटालियन सैलून’ आदि सामाजिक कालचिह्न सेहो अछि; मूल शीर्षक सुरक्षित राखब उपयुक्त।

‘छथि’क अधिकांश प्रयोग मनुख वा मानवीकृत पात्रक लेल अछि। ‘सुरुज जेकाँ बरहम घूमै छथि’मे ‘बरहम’ मानवीकृत कल्पना-पात्र अछि; एकरा काव्यिक पुरुषीकरण मानल जा सकैत अछि।

१२. सम्पादकीय आ छन्दीय पुनरीक्षणक प्राथमिकता

पहिल प्राथमिकता: जाहि ११ गजलमे घोषित मात्रा-अन्तर २१ वा बेसी अछि, ओहि सभक पाँति-दर-पाँति पुनर्मात्रांकन।

दोसर: समान शीर्षक आ बहुत निकट पाठवाला गजलकेँ भिन्न उपशीर्षक वा स्पष्ट शृंखला-क्रम देब।

तेसर: ‘किशोर गजल’क प्रयोगधर्मी परिभाषा भूमिकामे स्पष्ट करब, विशेषत: जतय शेर-स्वायत्तता कम आ एक-विषयी क्रम अधिक अछि।

चारिम: सीमित भाषा-निखार—कोठरी, हरेक, परिमाणवाचक हर; मुदा लोकशब्द, पशु-हँकार, ग्रामीण शब्द आ समय-चिह्न उधार-शब्दकेँ अति-मानकीकरणसँ बचाएब।

१३. २६६ रचनाक रचना-दर-रचना पूर्ण समीक्षात्मक सूची

एहि सूचीक उद्देश्य संग्रहक कोनो रचना आलोचनात्मक दृष्टिसँ छूटि नहि जाए। पहिल खण्डमे औपचारिक छन्द-सूचना सेहो संक्षेपमे जोड़ल जाएत; दोसर खण्डमे मुख्य विषय आ प्रमुख काव्य-उपकरण चिन्हित कएल जाएत।

१३.१ खण्ड १ — किशोर गजल १–१३३

क्र.	रचना	समीक्षात्मक संकेत

१	गजल १ — बार्बी	बाल-कल्पना, प्रकृति आ पारिवारिक कथा-संसार। बाललोकक दृश्य-बिम्ब आ पुनरावृत्त लय। 14 पाँति; काफिया –नू; रदीफ “बार्बी”; मात्रा-सीमा 17–21। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
२	गजल २ — चान मामा	बाल-कल्पना, प्रकृति आ पारिवारिक कथा-संसार। बाललोकक दृश्य-बिम्ब आ पुनरावृत्त लय। 10 पाँति; काफिया –आर; रदीफ “आउ ने”; मात्रा-सीमा 15–21। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
३	गजल ३ — सात रंग	बाल-कल्पना, प्रकृति आ पारिवारिक कथा-संसार। बाललोकक दृश्य-बिम्ब आ पुनरावृत्त लय। 10 पाँति; काफिया –आर; रदीफ “देखू ने”; मात्रा-सीमा 16–19। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

४	गजल ४ — दादीक कथा	बाल-कल्पना, प्रकृति आ पारिवारिक कथा-संसार। बाललोकक दृश्य-बिम्ब आ पुनरावृत्त लय। 10 पाँति; काफिया –आर; रदीफ “सुनाउ ने”; मात्रा-सीमा 16–22। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
५	गजल ५ — तरेगन गनी	बाल-कल्पना, प्रकृति आ पारिवारिक कथा-संसार। बाललोकक दृश्य-बिम्ब आ पुनरावृत्त लय। 10 पाँति; काफिया –आर; रदीफ “कहू ने”; मात्रा-सीमा 23–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
६	गजल ६ — बाटक खेल	बाल-कल्पना, प्रकृति आ पारिवारिक कथा-संसार। बाललोकक दृश्य-बिम्ब आ पुनरावृत्त लय। 10 पाँति; काफिया –आट; रदीफ “चलै छी”; मात्रा-सीमा 23–25। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

७	गजल ७ — चिड़ैक गीत	बाल-कल्पना, प्रकृति आ पारिवारिक कथा-संसार। बाललोकक दृश्य-बिम्ब आ पुनरावृत्त लय। 10 पाँति; काफिया -ीत; रदीफ “गबै छी”; मात्रा-सीमा 23–25। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
८	गजल ८ — हँसीक आँगन	बाल-कल्पना, प्रकृति आ पारिवारिक कथा-संसार। बाललोकक दृश्य-बिम्ब आ पुनरावृत्त लय। 10 पाँति; काफिया -आर; रदीफ “हँसू ने”; मात्रा-सीमा 17–20। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
९	गजल ९ — कागजक नाव	बाल-कल्पना, प्रकृति आ पारिवारिक कथा-संसार। बाललोकक दृश्य-बिम्ब आ पुनरावृत्त लय। 10 पाँति; काफिया -आर; रदीफ “आउ खेली”; मात्रा-सीमा 18–23। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

१०	गजल १० — दादीक चान	बाल-कल्पना, प्रकृति आ पारिवारिक कथा-संसार। बाललोकक दृश्य-बिम्ब आ पुनरावृत्त लय। 10 पाँति; काफिया –आर; रदीफ “दादी कहैए”; मात्रा-सीमा 18–25। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
११	गजल ११ — पतंगक पाँखि	बाल-कल्पना, प्रकृति आ पारिवारिक कथा-संसार। बाललोकक दृश्य-बिम्ब आ पुनरावृत्त लय। 10 पाँति; काफिया –आर; रदीफ “उड़ि चलू”; मात्रा-सीमा 15–21। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
१२	गजल १२ — मेहक खेल	बाल-कल्पना, प्रकृति आ पारिवारिक कथा-संसार। बाललोकक दृश्य-बिम्ब आ पुनरावृत्त लय। 10 पाँति; काफिया –आर; रदीफ “दौड़ू ने”; मात्रा-सीमा 18–22। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

१३	गजल १३ — निन्नक कथा	बाल-कल्पना, प्रकृति आ पारिवारिक कथा-संसार। बाललोकक दृश्य-बिम्ब आ पुनरावृत्त लय। 10 पाँति; काफिया –आर; रदीफ “कथा सुनू”; मात्रा-सीमा 18–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
१४	गजल १४ — अपन सपना	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –आह; रदीफ “आगाँ चलू”; मात्रा-सीमा 16–19। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
१५	गजल १५ — खेलक मैदान	मीतता, संवाद, निज सीमा आ सामाजिक दबाव। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –आर; रदीफ “खेलू ने”; मात्रा-सीमा 16–23। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

१६	गजल १६ — पोथीक पाँखि	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –आर; रदीफ “पढ़ू ने”; मात्रा-सीमा 16–23। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
१७	गजल १७ — परीक्षाक बिहान	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “डरू नहि”; मात्रा-सीमा 16–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
१८	गजल १८ — मीतक संग	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। संवाद, विश्वास आ सम्बन्धक पारस्परिकता। 10 पाँति; काफिया -ंग; रदीफ “संग चलू”; मात्रा-सीमा 16–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

१९	गजल १९ — पर्दासँ बाहर	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “देखू ने”; मात्रा-सीमा 17–25। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
२०	गजल २० — अपन राह	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ाह; रदीफ “अपन चुनू”; मात्रा-सीमा 16–21। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
२१	गजल २१ — तुलना नहि	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। तुलना-विरोध आ निज लयक स्थापना। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “तुलना नहि”; मात्रा-सीमा 18–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

२२	गजल २२ — जालजगतसँ बाहर	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “बाहर चलू”; मात्रा-सीमा 17–23। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
२३	गजल २३ — विषय अपन	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ाह; रदीफ “सोचि चुनू”; मात्रा-सीमा 15–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
२४	गजल २४ — लाइकसँ बाहर	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ोल; रदीफ “याद रखू”; मात्रा-सीमा 15–25। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

२५	गजल २५ — बात फरिछाउ	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। संवाद, विश्वास आ सम्बन्धक पारस्परिकता। 10 पाँति; काफिया –ात; रदीफ “बात फरिछाउ”; मात्रा-सीमा 17–23। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
२६	गजल २६ — फेर प्रयास	असफलता-सहन, पुनःप्रयास आ धैर्य। विफलताकेँ सीखमे बदलैत पुनःप्रयास। 10 पाँति; काफिया –ास; रदीफ “फेर करू”; मात्रा-सीमा 15–22। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
२७	गजल २७ — अपन रूप	आत्ममूल्य, स्वत्व आ तुलना-विरोध। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “मोन छोट नहि करू”; मात्रा-सीमा 20–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

२८	गजल २८ — अपन बात	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। संवाद, विश्वास आ सम्बन्धक पारस्परिकता। 10 पाँति; काफिया –ात; रदीफ “खुलि कहू”; मात्रा-सीमा 16–21। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
२९	गजल २९ — अपन गति	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। तुलना-विरोध आ निज लयक स्थापना। 10 पाँति; काफिया –ाह; रदीफ “रहय अपन-अपन”; मात्रा-सीमा 18–22। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
३०	गजल ३० — ना कहू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। निज सीमा, सहमति आ सम्मानक प्रतिपादन। 10 पाँति; काफिया –ात; रदीफ “स्पष्ट कहू”; मात्रा-सीमा 18–21। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

३१	गजल ३१ — निन्न बचाउ	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। देह-मोनक विश्रामक मूल्य। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “निन्न बचाउ”; मात्रा-सीमा 16–22। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
३२	गजल ३२ — समयक हिस्सा	समय-संयम, निन्न, ध्यान आ मानसिक संतुलन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –াম; रदीफ “समय बाँटू”; मात्रा-सीमा 16–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
३३	गजल ३३ — बाट चुनैत	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –াহ; रदीफ “घबराउ नहि”; मात्रा-सीमा 15–22। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

३४	गजल ३४ — ना कहू	मीतता, संवाद, निज सीमा आ सामाजिक दबाव। निज सीमा, सहमति आ सम्मानक प्रतिपादन। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “ना कहू”; मात्रा-सीमा 14–23। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
३५	गजल ३५ — अपन गति	मीतता, संवाद, निज सीमा आ सामाजिक दबाव। तुलना-विरोध आ निज लयक स्थापना। 10 पाँति; काफिया ेर; रदीफ “अपन गति”; मात्रा-सीमा 16–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
३६	गजल ३६ — ना कहू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। निज सीमा, सहमति आ सम्मानक प्रतिपादन। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “ना कहू”; मात्रा-सीमा 14–25। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।

३७	गजल ३७ — निन्नक समय	समय-संयम, निन्न, ध्यान आ मानसिक संतुलन। देह-मोनक विश्रामक मूल्य। 10 पाँति; काफिया –ोर; रदीफ “एखन सुतू”; मात्रा-सीमा 16–25। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
३८	गजल ३८ — प्रश्न पूछू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रश्नकेँ ज्ञान-साधन बनबैत संरचना। 10 पाँति; काफिया –ात; रदीफ “प्रश्न पूछू”; मात्रा-सीमा 14–23। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
३९	गजल ३९ — मीत चुनू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। संवाद, विश्वास आ सम्बन्धक पारस्परिकता। 10 पाँति; काफिया –ंग; रदीफ “बुझि चुनू”; मात्रा-सीमा 15–22। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

४०	गजल ४० — हारक बाद	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। विफलताकेँ सीखमे बदलैत पुनःप्रयास। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “फेर उठू”; मात्रा-सीमा 16–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
४१	गजल ४१ — परीक्षाक बाद	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “छोड़ि दिअ”; मात्रा-सीमा 16–23। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
४२	गजल ४२ — अपन विषय	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ाह; रदीफ “बुझि चुनू”; मात्रा-सीमा 17–25। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

४३	गजल ४३ — अपन निर्णय	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “अपन रहू”; मात्रा-सीमा 16–23। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
४४	गजल ४४ — अपन ताल	मीतता, संवाद, निज सीमा आ सामाजिक दबाव। तुलना-विरोध आ निज लयक स्थापना। 10 पाँति; काफिया ेर; रदीफ “अपन ताल”; मात्रा-सीमा 17–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
४५	गजल ४५ — तुलना छोड़ू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। तुलना-विरोध आ निज लयक स्थापना। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “तुलना छोड़ू”; मात्रा-सीमा 19–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

४६	गजल ४६ — भरोसा	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। संवाद, विश्वास आ सम्बन्धक पारस्परिकता। 10 पाँति; काफिया –ात; रदीफ “भरोसा रखू”; मात्रा-सीमा 19–22। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
४७	गजल ४७ — भूलसँ सीखू	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। विफलताकेँ सीखमे बदलैत पुनःप्रयास। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “भूलसँ सीखू”; मात्रा-सीमा 19–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
४८	गजल ४८ — कने आराम	समय-संयम, निन्न, ध्यान आ मानसिक संतुलन। देह-मोनक विश्रामक मूल्य। 10 पाँति; काफिया –ाम; रदीफ “कने आराम”; मात्रा-सीमा 17–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

४९	गजल ४९ — सोझाँ बाजू	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ात; रदीफ “सोझाँ बाजू”; मात्रा-सीमा 18–22। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
५०	गजल ५० — अपन सुर	मीतता, संवाद, निज सीमा आ सामाजिक दबाव। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ीत; रदीफ “अपन सुरमे”; मात्रा-सीमा 16–28। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
५१	गजल ५१ — पर्दासँ परे	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “कने बाहर”; मात्रा-सीमा 17–25। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

५२	गजल ५२ — मीतसँ बात	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। संवाद, विश्वास आ सम्बन्धक पारस्परिकता। 10 पाँति; काफिया –ात; रदीफ “फरिछ, बाजू”; मात्रा-सीमा 18–23। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
५३	गजल ५३ — ध्यानक डोर	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ोर; रदीफ “कने थामू”; मात्रा-सीमा 17–25। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
५४	गजल ५४ — मदद माँगू	समय-संयम, निन्न, ध्यान आ मानसिक संतुलन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ात; रदीफ “मदद माँगू”; मात्रा-सीमा 17–23। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

५५	गजल ५५ — भविष्यक बाट	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ह; रदीफ “खोजैत रहू”; मात्रा-सीमा 17–29। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
५६	गजल ५६ — निर्णय	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –न; रदीफ “अपन निर्णय”; मात्रा-सीमा 15–28। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।

५७	गजल ५७ — एक परिणाम	असफलता-सहन, पुनःप्रयास आ धैर्य। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “अन्त नहि”; मात्रा-सीमा 14–23। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
५८	गजल ५८ — स्क्रीनक बाहर	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ेर; रदीफ “स्क्रीनक बाहर”; मात्रा-सीमा 18–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
५९	गजल ५९ — पहिल कमाइ	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। किशोर आर्थिक व्यवहार आ बचत-बोध। 10 पाँति; काफिया –ाम; रदीफ “हिसाब राखू”; मात्रा-सीमा 18–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

६०	गजल ६० — प्रश्नक साहस	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रश्नकेँ ज्ञान-साधन बनबैत संरचना। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “पूछि लिअ”; मात्रा-सीमा 14–27। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
६१	गजल ६१ — टीमक खेल	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। सहकाज आ सामूहिक उत्तरदायित्व। 10 पाँति; काफिया –ंग; रदीफ “संग खेलू”; मात्रा-सीमा 17–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
६२	गजल ६२ — पहिल कमाइ	समय-संयम, निन्न, ध्यान आ मानसिक संतुलन। किशोर आर्थिक व्यवहार आ बचत-बोध। 10 पाँति; काफिया –ाम; रदीफ “सोचि खर्चू”; मात्रा-सीमा 17–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

६३	गजल ६३ — प्रश्नक साहस	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। प्रश्नकेँ ज्ञान-साधन बनबैत संरचना। 10 पाँति; काफिया –ात; रदीफ “पूछि लिअ”; मात्रा-सीमा 15–22। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
६४	गजल ६४ — टीमक खेल	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। सहकाज आ सामूहिक उत्तरदायित्व। 10 पाँति; काफिया -ंग; रदीफ “संग खेलू”; मात्रा-सीमा 17–28। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
६५	गजल ६५ — कौशल	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –াম; रदीफ “कौशल सीखू”; मात्रा-सीमा 17–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

६६	गजल ६६ — खराब दिन	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “बस एक दिन”; मात्रा-सीमा 15–26। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
६७	गजल ६७ — टोली	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। सहकाज आ सामूहिक उत्तरदायित्व। 10 पाँति; काफिया –ग; रदीफ “टोलीमे”; मात्रा-सीमा 16–25। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

६८	गजल ६८ — निर्णयक समय	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ह; रदीफ “कने समय दिअ”; मात्रा-सीमा 18–25। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
६९	गजल ६९ — पहिल खर्च	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। किशोर आर्थिक व्यवहार आ बचत-बोध। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “हिसाब राखू”; मात्रा-सीमा 18–27। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
७०	गजल ७० — प्रश्न करू	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। प्रश्नकेँ ज्ञान-साधन बनबैत संरचना। 10 पाँति; काफिया –ाह; रदीफ “प्रश्न करू”; मात्रा-सीमा 14–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

७१	गजल ७१ — समाचार	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। सन्देह, स्रोत-जाँच आ प्रमाणक आग्रह। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “पहिने जाँचू”; मात्रा-सीमा 18–25। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
७२	गजल ७२ — पहिल यात्रा	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “ध्यान राखू”; मात्रा-सीमा 17–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
७३	गजल ७३ — पहिल भाषण	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “मञ्चपर”; मात्रा-सीमा 15–25। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

७४	गजल ७४ — पहिल असफलता	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। विफलताकेँ सीखमे बदलैत पुनःप्रयास। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “फेर जाउ”; मात्रा-सीमा 16–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
७५	गजल ७५ — समूहक दबाव	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ात; रदीफ “सोचि कहू”; मात्रा-सीमा 19–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
७६	गजल ७६ — डिजिटल विराम	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ेर; रदीफ “फोन राखू”; मात्रा-सीमा 17–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

७७	गजल ७७ — समय बाँटू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ल; रदीफ “समय बाँटू”; मात्रा-सीमा 17–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
७८	गजल ७८ — पहिल जिम्मेदारी	समय-संयम, निन्न, ध्यान आ मानसिक संतुलन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –म; रदीफ “जिम्मेदारी लिअ”; मात्रा-सीमा 17–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
७९	गजल ७९ — साँच जाँचू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। सन्देह, स्रोत-जाँच आ प्रमाणक आग्रह। 10 पाँति; काफिया –र; रदीफ “साँच जाँचू”; मात्रा-सीमा 17–27। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

८०	गजल ८० — अपन आवाज	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ात; रदीफ “खुलि बाजू”; मात्रा-सीमा 15–26। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
८१	गजल ८१ — परीक्षा बाद	समय-संयम, निन्न, ध्यान आ मानसिक संतुलन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “कने विश्राम करू”; मात्रा-सीमा 21–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
८२	गजल ८२ — मीतक सीमा	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। निज सीमा, सहमति आ सम्मानक प्रतिपादन। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “सीमा राखू”; मात्रा-सीमा 17–27। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

८३	गजल ८३ — अपन लय	मीतता, संवाद, निज सीमा आ सामाजिक दबाव। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ल; रदीफ “अपन लय राखू”; मात्रा-सीमा 18–27। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
८४	गजल ८४ — मीतक पहिचान	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। संवाद, विश्वास आ सम्बन्धक पारस्परिकता। 10 पाँति; काफिया –ात; रदीफ “मीत चिन्हू”; मात्रा-सीमा 16–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
८५	गजल ८५ — डरक पार	असफलता-सहन, पुनःप्रयास आ धैर्य। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “आगाँ बढ़ू”; मात्रा-सीमा 15–26। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।

८६	गजल ८६ — आरम्भ	मीतता, संवाद, निज सीमा आ सामाजिक दबाव। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “एखन आरम्भ करू”; मात्रा-सीमा 21–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
८७	गजल ८७ — रुचिक बाट	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “अपन रुचि चिन्हू”; मात्रा-सीमा 17–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
८८	गजल ८८ — साँचक जाँच	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। सन्देह, स्रोत-जाँच आ प्रमाणक आग्रह। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “जाँचि तखन मानू”; मात्रा-सीमा 20–28। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

८९	गजल ८९ — नब मीत	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। संवाद, विश्वास आ सम्बन्धक पारस्परिकता। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “धीरे चिन्हू”; मात्रा-सीमा 18–27। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
९०	गजल ९० — भूल स्वीकार	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। विफलताकेँ सीखमे बदलैत पुनःप्रयास। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “साँच कहू”; मात्रा-सीमा 16–28। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।

९१	गजल ९१ — एखन करू	समय-संयम, निन्न, ध्यान आ मानसिक संतुलन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –म; रदीफ “एखन करू”; मात्रा-सीमा 16–27। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
९२	गजल ९२ — प्रश्न पुछू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रश्नकेँ ज्ञान-साधन बनबैत संरचना। 10 पाँति; काफिया –ह; रदीफ “प्रश्न पुछू”; मात्रा-सीमा 15–24। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
९३	गजल ९३ — काज बाँटू	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। सहकाज आ सामूहिक उत्तरदायित्व। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “संग करू”; मात्रा-सीमा 16–25। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

१४	गजल १४ — अपन गति	आत्ममूल्य, स्वत्व आ तुलना-विरोध। तुलना-विरोध आ निज लयक स्थापना। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “अपन गति राखू”; मात्रा-सीमा 18–29। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
१५	गजल १५ — नब हुनर	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “सीखैत रहू”; मात्रा-सीमा 18–27। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
१६	गजल १६ — बात जाँचू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। सन्देह, स्रोत-जाँच आ प्रमाणक आग्रह। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “पहिने जाँचू”; मात्रा-सीमा 18–30। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।

१७	गजल १७ — लिखि कऽ बुझू	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ाव; रदीफ “लिखि कऽ बुझू”; मात्रा-सीमा 16–30। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
१८	गजल १८ — एक काज	किशोर आत्म-विकास, विवेक आ दैनिक जीवन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “एक काज करू”; मात्रा-सीमा 18–29। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।

९९	गजल ९९ — रिसक बेर	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ास; रदीफ “कने थमू”; मात्रा-सीमा 15–27। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
१००	गजल १०० — अपन माप	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। तुलना-विरोध आ निज लयक स्थापना। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “अपन माप रखू”; मात्रा-सीमा 17–29। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।

१०१	गजल १०१ — मीत चुनू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। संवाद, विश्वास आ सम्बन्धक पारस्परिकता। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “मीत चुनू”; मात्रा-सीमा 17–29। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
१०२	गजल १०२ — कने-कने सीखू	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “कने-कने सीखू”; मात्रा-सीमा 20–28। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

१०३	गजल १०३ — अपन स्वर	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “अपन स्वर राखू”; मात्रा-सीमा 17–29। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
१०४	गजल १०४ — भूलसँ सीखू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। विफलताकेँ सीखमे बदलैत पुनःप्रयास। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “भूलसँ सीखू”; मात्रा-सीमा 17–28। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।

१०५	गजल १०५ — बेर बाँटू	समय-संयम, निन्न, ध्यान आ मानसिक संतुलन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –म; रदीफ “बेर बाँटू”; मात्रा-सीमा 17–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
१०६	गजल १०६ — साँच लिखू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –न; रदीफ “साँच लिखू”; मात्रा-सीमा 16–26। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
१०७	गजल १०७ — सुनि कऽ बाजू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –र; रदीफ “सुनि कऽ बाजू”; मात्रा-सीमा 17–29। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।

१०८	गजल १०८ — कौड़ी बचाउ	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। किशोर आर्थिक व्यवहार आ बचत-बोध। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “कौड़ी बचाउ”; मात्रा-सीमा 18–31। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
१०९	गजल १०९ — गाछ रोपू	असफलता-सहन, पुनःप्रयास आ धैर्य। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “गाछ रोपू”; मात्रा-सीमा 16–30। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।

११०	गजल ११० — प्रश्न लिखू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रश्नकेँ ज्ञान-साधन बनबैत संरचना। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “प्रश्न लिखू”; मात्रा-सीमा 14–29। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
१११	गजल १११ — मीतक मान	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। संवाद, विश्वास आ सम्बन्धक पारस्परिकता। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “मान राखू”; मात्रा-सीमा 15–33। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।

११२	गजल ११२ — सपन सँ काज	असफलता-सहन, पुनःप्रयास आ धैर्य। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “काज धरू”; मात्रा-सीमा 16–31। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
११३	गजल ११३ — बेर बाँटू	समय-संयम, निन्न, ध्यान आ मानसिक संतुलन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “बेर बाँटू”; मात्रा-सीमा 17–33। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।

११४	गजल ११४ — पहिने सुनू	शिक्षा, जिज्ञासा आ तर्कशील आत्मनिर्णय। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “पहिने सुनू”; मात्रा-सीमा 17–34। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
११५	गजल ११५ — हुनर निखारू	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “निखारू”; मात्रा-सीमा 12–42। मात्रा-अन्तर बहुत पैघ; पारम्परिक अरूज़ी सममिति हेतु पुनःछन्द-जाँच अपेक्षित।

११६	गजल ११६ — सीमा राखू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। निज सीमा, सहमति आ सम्मानक प्रतिपादन। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “सीमा राखू”; मात्रा-सीमा 14–33। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
११७	गजल ११७ — पढ़ि बुझू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “पढ़ि बुझू”; मात्रा-सीमा 15–37। मात्रा-अन्तर बहुत पैघ; पारम्परिक अरूज़ी सममिति हेतु पुनःछन्द-जाँच अपेक्षित।

११८	गजल ११८ — बाट चुनू	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “बाट चुनू”; मात्रा-सीमा 14–45। मात्रा-अन्तर बहुत पैघ; पारम्परिक अरूज़ी सममिति हेतु पुनःछन्द-जाँच अपेक्षित।
११९	गजल ११९ — निज बात	मीतता, संवाद, निज सीमा आ सामाजिक दबाव। संवाद, विश्वास आ सम्बन्धक पारस्परिकता। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “सहेजि राखू”; मात्रा-सीमा 14–37। मात्रा-अन्तर बहुत पैघ; पारम्परिक अरूज़ी सममिति हेतु पुनःछन्द-जाँच अपेक्षित।

१२०	गजल १२० — प्रश्नक साहस	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रश्नकेँ ज्ञान-साधन बनबैत संरचना। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “प्रश्न करू”; मात्रा-सीमा 15–35। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
१२१	गजल १२१ — दिनक क्रम	समय-संयम, निन्न, ध्यान आ मानसिक संतुलन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “क्रम बनाउ”; मात्रा-सीमा 15–40। मात्रा-अन्तर बहुत पैघ; पारम्परिक अरूज़ी सममिति हेतु पुनःछन्द-जाँच अपेक्षित।

१२२	गजल १२२ — दबावमे निर्णय	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “अपन मन सुनू”; मात्रा-सीमा 14–43। मात्रा-अन्तर बहुत पैघ; पारम्परिक अरूज़ी सममिति हेतु पुनःछन्द-जाँच अपेक्षित।
१२३	गजल १२३ — मीतक गोपन बात	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। निज सीमा, सहमति आ सम्मानक प्रतिपादन। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “गोपन राखू”; मात्रा-सीमा 15–50। मात्रा-अन्तर बहुत पैघ; पारम्परिक अरूज़ी सममिति हेतु पुनःछन्द-जाँच अपेक्षित।

१२४	गजल १२४ — अपूर्णतासँ सीख	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “फेर सँ सीखू”; मात्रा-सीमा 18–46। मात्रा-अन्तर बहुत पैघ; पारम्परिक अरूज़ी सममिति हेतु पुनःछन्द-जाँच अपेक्षित।
१२५	गजल १२५ — अपन सीमा	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। निज सीमा, सहमति आ सम्मानक प्रतिपादन। 10 पाँति; काफिया –ान; रदीफ “सीमा राखू”; मात्रा-सीमा 14–54। मात्रा-अन्तर बहुत पैघ; पारम्परिक अरूज़ी सममिति हेतु पुनःछन्द-जाँच अपेक्षित।

१२६	गजल १२६ — प्रमाण देखू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। सन्देह, स्रोत-जाँच आ प्रमाणक आग्रह। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “जाँचि लिअ”; मात्रा-सीमा 16–44। मात्रा-अन्तर बहुत पैघ; पारम्परिक अरूज़ी सममिति हेतु पुनःछन्द-जाँच अपेक्षित।
१२७	गजल १२७ — धीरे बढ़ू	आत्ममूल्य, स्वत्व आ तुलना-विरोध। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ास; रदीफ “धीरे बढ़ू”; मात्रा-सीमा 15–46। मात्रा-अन्तर बहुत पैघ; पारम्परिक अरूज़ी सममिति हेतु पुनःछन्द-जाँच अपेक्षित।

१२८	गजल १२८ — थाकल मोन	समय-संयम, निन्न, ध्यान आ मानसिक संतुलन। देह-मोनक विश्रामक मूल्य। 10 पाँति; काफिया –াম; रदीफ “দিअ”; मात्रा-सीमा 13–26। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
१२९	गजल १२९ — संग काज	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। सहकाज आ सामूहिक उत्तरदायित्व। 10 पाँति; काफिया –াথ; रदीफ “রাखू”; मात्रा-सीमा 12–28। मात्रा-फैलाव उल्लेखनीय; अर्थ-लय औपचारिक सममितिसँ बेसी प्रधान।
१३०	गजल १३० — सहायता माँगू	मीतता, संवाद, निज सीमा आ सामाजिक दबाव। प्रत्यक्ष संबोधन आ व्यवहारिक जीवन-सूत्र। 10 पाँति; काफिया –ার; रदीफ “समयपर”; मात्रा-सीमा 25–30। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

१३१	गजल १३१ — अपन सीमा राखू	मीतता, संवाद, निज सीमा आ सामाजिक दबाव। निज सीमा, सहमति आ सम्मानक प्रतिपादन। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “राखू”; मात्रा-सीमा 20–22। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
१३२	गजल १३२ — काजक क्रम	जिम्मेदारी, श्रम, कौशल आ व्यवहारिक जीवन। सहकाज आ सामूहिक उत्तरदायित्व। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “करू”; मात्रा-सीमा 20–22। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।
१३३	गजल १३३ — साँच जाँचू	जालजगत, सूचना-साक्षरता आ सत्यापन। सन्देह, स्रोत-जाँच आ प्रमाणक आग्रह। 10 पाँति; काफिया –ार; रदीफ “जाँचू”; मात्रा-सीमा 20–22। मात्रा-विस्तार तुलनात्मक रूपे नियंत्रित।

१३.२ खण्ड २ — कविता-गीत १–१३३

क्र.	रचना	समीक्षात्मक संकेत

१	ट्रेनक गाड़ी	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 13 पाँति; ध्वन्यनुकरण लयकेँ मुखर लोक-श्रव्य रूप दैत अछि।
२	के छथि	नैतिक विचार, प्रश्नशीलता आ आत्मानुशासन। 12 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
३	राजा श्री अनुरन्वज सिंह	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 16 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
४	सूतल	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 12 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
५	अखण्ड भारत	भाषा, सांस्कृतिक स्मृति, दर्शन आ सामूहिक पहिचान। 18 पाँति; उद्‌बोधनात्मक स्वर सामूहिक मूल्य आ सांस्कृतिक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि।

६	मोनक जड़िमे	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 20 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
७	पुनः स्मृति	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 12 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
८	कलम गाछी	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 12 पाँति; स्थानीय बिम्ब, लोकशब्द आ दृश्यात्मकता गीतात्मक गहिराइ बढ़बैत अछि।
९	हाथीक मुँहमे लागल पाइप	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 23 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१०	बानर राजा	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 23 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।

११	चिड़ियाखाना	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 24 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१२	जमबोनी	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 16 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१३	बौआ ठेहुनिया मारि	बालगीत, खेल, प्रकृति आ विस्मय। 25 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१४	ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग	भाषा, सांस्कृतिक स्मृति, दर्शन आ सामूहिक पहिचान। 37 पाँति; ध्वन्यनुकरण लयकेँ मुखर लोक-श्रव्य रूप दैत अछि।
१५	भोरक बसात	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 20 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।

१६	छाहक करतब	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 20 पाँति; स्थानीय बिम्ब, लोकशब्द आ दृश्यात्मकता गीतात्मक गहिराइ बढ़बैत अछि।
१७	सपन	बालगीत, खेल, प्रकृति आ विस्मय। 30 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१८	कोइरीक कूकू	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 32 पाँति; ध्वन्यनुकरण लयकेँ मुखर लोक-श्रव्य रूप दैत अछि।
१९	शितलपाटी	भाषा, सांस्कृतिक स्मृति, दर्शन आ सामूहिक पहिचान। 24 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
२०	मकड़ीक जाल	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 34 पाँति; स्थानीय बिम्ब, लोकशब्द आ दृश्यात्मकता गीतात्मक गहिराइ बढ़बैत अछि।

२१	वायुगोलक	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 24 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
२२	हाथीक सूप सन कान	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 33 पाँति; ध्वन्यनुकरण लयकेँ मुखर लोक-श्रव्य रूप दैत अछि।
२३	छुट्टी	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 32 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
२४	बौआ गेल सुनि	बालगीत, खेल, प्रकृति आ विस्मय। 44 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
२५	मिथिला	भाषा, सांस्कृतिक स्मृति, दर्शन आ सामूहिक पहिचान। 39 पाँति; स्थानीय बिम्ब, लोकशब्द आ दृश्यात्मकता गीतात्मक गहिराइ बढ़बैत अछि।

२६	बादुर सोंस	भाषा, सांस्कृतिक स्मृति, दर्शन आ सामूहिक पहिचान। 40 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
२७	की? किए? कोना? के?	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 25 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
२८	फेर आएल जाड़	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 28 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
२९	अंध विश्वास	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 14 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
३०	अभ्यास	नैतिक विचार, प्रश्नशीलता आ आत्मानुशासन। 31 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।

३१	आँखिक चश्मा	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 20 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
३२	तीने टा अछि ऋतु	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 24 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
३३	दरिद्र	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 14 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
३४	रौह नहि नैन	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 28 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
३५	जूताक आविष्कार	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 14 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।

३६	बूढ़ वर	सामाजिक रीति, विवाह-संरचना आ व्यंग्यात्मक आलोचना। 26 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
३७	रिपेयर	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 24 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
३८	नोकर	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 14 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
३९	क्लासमे अबाज	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 24 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
४०	एस.एम.एस.	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 24 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।

४१	टी.टी.	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 23 पाँति; कथात्मक व्यंग्य सामाजिक विसंगतिकेँ छोट प्रसंगमे तीक्ष्ण बनबैत अछि।
४२	खगता	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 16 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
४३	क-ख सँ दर्शन	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 15 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
४४	चोरकेँ सिखाबह	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 13 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
४५	नरक निवारण चतुर्दशी	भाषा, सांस्कृतिक स्मृति, दर्शन आ सामूहिक पहिचान। 17 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।

४६	नौकरी	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 12 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
४७	मरकरी डिलाइट	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 20 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
४८	दीयाबाती	उत्सव, समय-स्मृति आ सांस्कृतिक अनुष्ठान। 22 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
४९	फ्रैक्चर	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 28 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।

५०	बापकेँ नोशि नहि भेटलन्हि	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 12 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
५१	दहेज	सामाजिक रीति, विवाह-संरचना आ व्यंग्यात्मक आलोचना। 32 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
५२	बेचैन नहि निचैन रहू	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 28 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
५३	थल-थल	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 29 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
५४	क्रिकेट-फील्डिंग	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 25 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।

५५	मैट्रिक प्लक	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 25 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
५६	काँकड़ु	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 24 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
५७	कैप्टन	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 24 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
५८	दूध	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 27 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
५९	अटेंडेंस	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 26 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।

६०	शो-फटक्का	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 21 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
६१	भारमे माटि	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 27 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
६२	कंजूस	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 21 पाँति; कथात्मक व्यंग्य सामाजिक विसंगतिकेँ छोट प्रसंगमे तीक्ष्ण बनबैत अछि।
६३	पाइ	सामाजिक रीति, विवाह-संरचना आ व्यंग्यात्मक आलोचना। 25 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।

६४	असत्य	नैतिक विचार, प्रश्नशीलता आ आत्मानुशासन। 18 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
६५	समुद्री	भाषा, सांस्कृतिक स्मृति, दर्शन आ सामूहिक पहिचान। 27 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
६६	गाम	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 25 पाँति; स्थानीय बिम्ब, लोकशब्द आ दृश्यात्मकता गीतात्मक गहिराइ बढ़बैत अछि।
६७	लोली	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 17 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
६८	तकलाहा दिन	सामाजिक रीति, विवाह-संरचना आ व्यंग्यात्मक आलोचना। 19 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।

६९	बिकौआ	सामाजिक रीति, विवाह-संरचना आ व्यंग्यात्मक आलोचना। 18 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
७०	गद्दरिक भात	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 17 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
७१	एकटा आर कोपर	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 20 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
७२	महीस पर वी.आइ.पी.	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 22 पाँति; कथात्मक व्यंग्य सामाजिक विसंगतिकेँ छोट प्रसंगमे तीक्ष्ण बनबैत अछि।
७३	गप्प-सरक्का	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 17 पाँति; कथात्मक व्यंग्य सामाजिक विसंगतिकेँ छोट प्रसंगमे तीक्ष्ण बनबैत अछि।

७४	फलनाक बेटा	सामाजिक रीति, विवाह-संरचना आ व्यंग्यात्मक आलोचना। 21 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
७५	ट्रांसफर	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 14 पाँति; कथात्मक व्यंग्य सामाजिक विसंगतिकेँ छोट प्रसंगमे तीक्ष्ण बनबैत अछि।
७६	मजूरी नहि माँगह	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 21 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
७७	दोषी	नैतिक विचार, प्रश्नशीलता आ आत्मानुशासन। 11 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
७८	लंदनक खिस्सा	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 13 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।

७९	प्रथम जनवरी	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 21 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
८०	ऑफिसमे भरि राति बन्द	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 34 पाँति; कथात्मक व्यंग्य सामाजिक विसंगतिकेँ छोट प्रसंगमे तीक्ष्ण बनबैत अछि।
८१	नानीक पत्र	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 22 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
८२	केवाड़ बन्द	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 13 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।

८३	जेठांश	सामाजिक रीति, विवाह-संरचना आ व्यंग्यात्मक आलोचना। 12 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
८४	सादा आकि रंगीन	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 14 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
८५	जोंकही पोखरिमे भरि राति	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 11 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
८६	गैस सिलिण्डरक चोरि	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 29 पाँति; कथात्मक व्यंग्य सामाजिक विसंगतिकेँ छोट प्रसंगमे तीक्ष्ण बनबैत अछि।

८७	फैक्स	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 12 पाँति; कथात्मक व्यंग्य सामाजिक विसंगतिकेँ छोट प्रसंगमे तीक्ष्ण बनबैत अछि।
८८	दीया-बाती	उत्सव, समय-स्मृति आ सांस्कृतिक अनुष्ठान। 12 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
८९	इटालियन सैलून	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 12 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
९०	शव नहि उठत	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 12 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
९१	अतिचार	नैतिक विचार, प्रश्नशीलता आ आत्मानुशासन। 12 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।

१२	रबड़ खाऊ	सामाजिक रीति, विवाह-संरचना आ व्यंग्यात्मक आलोचना। 16 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
१३	बाजा अहाँ बजाऊ	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 20 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१४	पिण्डश्याम	सामाजिक रीति, विवाह-संरचना आ व्यंग्यात्मक आलोचना। 18 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१५	पाँच पाइक लालछड़ी	सामाजिक रीति, विवाह-संरचना आ व्यंग्यात्मक आलोचना। 19 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।

१६	चोरुक्का विवाह	सामाजिक रीति, विवाह-संरचना आ व्यंग्यात्मक आलोचना। 13 पाँति; कथात्मक व्यंग्य सामाजिक विसंगतिकेँ छोट प्रसंगमे तीक्ष्ण बनबैत अछि।
१७	भ्रातृद्वितीया	सामाजिक रीति, विवाह-संरचना आ व्यंग्यात्मक आलोचना। 24 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१८	नव-घरारी	सामाजिक रीति, विवाह-संरचना आ व्यंग्यात्मक आलोचना। 23 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
११	रिक्त	उत्सव, समय-स्मृति आ सांस्कृतिक अनुष्ठान। 22 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।

१००	प्रवासी	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 21 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
१०१	वेद	भाषा, सांस्कृतिक स्मृति, दर्शन आ सामूहिक पहिचान। 14 पाँति; उद्‌बोधनात्मक स्वर सामूहिक मूल्य आ सांस्कृतिक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि।
१०२	चोरि	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 22 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१०३	होली	उत्सव, समय-स्मृति आ सांस्कृतिक अनुष्ठान। 23 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१०४	बुद्ध	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 48 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।

१०५	कोठिया पछबाइ टोल	सामाजिक रीति, विवाह-संरचना आ व्यंग्यात्मक आलोचना। 20 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१०६	बुच्ची-बाउ	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 33 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१०७	आकक दूध	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 15 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१०८	केसर श्वेत हरित त्रिवार्णिक	भाषा, सांस्कृतिक स्मृति, दर्शन आ सामूहिक पहिचान। 27 पाँति; उद्‌बोधनात्मक स्वर सामूहिक मूल्य आ सांस्कृतिक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि।

१०९	बेसी छुट्टी कम इसकूल	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 44 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
११०	कोनो सजाए नै	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 32 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१११	बरखा भीजी	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 12 पाँति; स्थानीय बिम्ब, लोकशब्द आ दृश्यात्मकता गीतात्मक गहिराइ बढ़बैत अछि।
११२	बरखा गीत	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 32 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
११३	भरि दिन खेली-धूपी	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 20 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।

११४	लवनचूश चूसी भरि दिन	बालगीत, खेल, प्रकृति आ विस्मय। 24 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
११५	जे मोन भावै से करब	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 44 पाँति; प्रश्नात्मक पद्धति पाठककेँ प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।
११६	सभ दिन जनमदिन मनाबी	बालगीत, खेल, प्रकृति आ विस्मय। 24 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
११७	बानर	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 24 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
११८	दोकानसँ चिप्स मँगनीमे आनी	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 20 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।

११९	खूब खेलाउ कमप्यूटर खेल	आधुनिकता, दफ्तर, तकनीक आ हास्य-व्यंग्य। 20 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१२०	नीक चित्र बनाउ छापू	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 20 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१२१	आउ खेलाउ कनियाँ पुतरा	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 20 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१२२	बरफ खाउ जाड़मे	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 16 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१२३	रातिमे अबेर धरि जागू भोर उठू देरीसँ	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 16 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।

१२४	सुरुज जेकाँ बरहम घूमै छथि	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 20 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१२५	सरस्वती मेधा	भाषा, सांस्कृतिक स्मृति, दर्शन आ सामूहिक पहिचान। 20 पाँति; उद्‌बोधनात्मक स्वर सामूहिक मूल्य आ सांस्कृतिक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि।
१२६	बाजू मैथिली	भाषा, सांस्कृतिक स्मृति, दर्शन आ सामूहिक पहिचान। 24 पाँति; उद्‌बोधनात्मक स्वर सामूहिक मूल्य आ सांस्कृतिक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि।
१२७	हम्मर माए	श्रम, अर्थ, वर्ग-संबन्ध आ ग्रामीण सामाजिक यथार्थ। 12 पाँति; स्थानीय बिम्ब, लोकशब्द आ दृश्यात्मकता गीतात्मक गहिराइ बढ़बैत अछि।

१२८	अमृत पुत्री	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 12 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१२९	हे नाह चल आगाँ	प्रकृति, लोकपरिवेश आ पर्यावरणीय दृष्टि। 12 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१३०	ध्येय पथिक साधक	भाषा, सांस्कृतिक स्मृति, दर्शन आ सामूहिक पहिचान। 14 पाँति; उद्‌बोधनात्मक स्वर सामूहिक मूल्य आ सांस्कृतिक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि।
१३१	मेघ बरसि गेल	स्मृति, गाम, प्रवास आ पारिवारिक भावभूमि। 12 पाँति; स्थानीय बिम्ब, लोकशब्द आ दृश्यात्मकता गीतात्मक गहिराइ बढ़बैत अछि।

१३२	स्वागतम	उत्सव, समय-स्मृति आ सांस्कृतिक अनुष्ठान। 16 पाँति; सरल कथ्य, बोलचालक लय आ प्रत्यक्ष बिम्ब सहज पठनीयता बनबैत अछि।
१३३	बड़द करैए दाउन ने यौ	लोकजीवन, हास्य, स्मृति आ सामाजिक अवलोकन। 15 पाँति; ध्वन्यनुकरण लयकेँ मुखर लोक-श्रव्य रूप दैत अछि।

१४. निष्कर्ष

'अकुलाइत सुर'क सबसे पैघ उपलब्धि विषयक सामाजिक स्तर सभकेँ मैथिली काव्यभाषामे समान अधिकार देनाइ अछि। बच्चाक कागजक नाव, किशोरक निज सीमा, गलत समाचारक जाँच, पहिल कमाइ, दफ्तरक हास्यास्पद उलझन, दहेज-विवाहक विसंगति, प्रवासक स्मृति, मैथिली बाजबाक आग्रह आ खरिहानक बड़द—सभ एके साहित्यिक जगतमे प्रवेश करैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ संग्रह अद्भुत, हास्य, वीर, करुण आ शान्त भाव-क्षेत्रक आवागमन प्रस्तुत करैत अछि; ध्वनि आ वक्रोक्ति बिम्बप्रधान गजल आ व्यंग्य-कवितामे सफल अछि। पाश्चात्य समीप-पाठ रूप-कथ्यक सम्बन्ध, निहित किशोर पाठक आ सामाजिक वस्तु-संस्कृतिक अभिलेखीय महत्व उजागर करैत अछि। नव्य-न्याय तथ्य-जाँच, प्रश्न, प्रमाण, सीमा आ निर्णय विषयकेँ ज्ञानमीमांसक एकता दैत अछि। समानान्तर इतिहासक आलोकमे पोथी ग्रामीण-मौखिक, दफ्तरी-आधुनिक आ अंकीय-किशोर संस्कृतिक सह-अस्तित्वक दस्तावेज बनैत अछि।

सर्वाधिक जरूरी पुनरीक्षण छन्दीय अछि। सभ गजलमे बहरक स्पष्ट घोषणा संग्रहक शक्ति अछि, ताहि कारण मात्रा-अन्तरक बहुत पैघ फैलावकेँ अनदेखा नहि कएल जा सकैत। कठोर पुनर्मात्रांकन, निकट पाठवाला गजलक

सम्पादकीय भिन्नता, आ सीमित भाषा-निखारक बाद पहिल खण्डक विधागत विश्वसनीयता बढ़त। दोसर खण्डमे उलट सावधानी जरूरी अछि: ओकर लोकशब्द, उधार-शब्द, ध्वनि आ समय-चिह्न सभकेँ अत्यधिक मानकीकरणसँ बचाएब आवश्यक अछि।

समग्रत: ई पोथी 'किशोर गीत-गजल संग्रह'क परिभाषासँ बेसी व्यापक अछि। ई बाल-कल्पनासँ तर्कशील किशोर नागरिकता धरि यात्रा, आ ग्रामीण-सामाजिक स्मृतिसँ अंकीय वर्तमान धरि मैथिली जीवनक बहुध्वनिक सेतु अछि। संग्रहक सर्वोत्तम आलोचनात्मक भविष्य ओतय अछि जतय ओकर भाषिक जीवट, सामाजिक विस्तार आ नूतन पाठक-दृष्टि सुरक्षित रहय, मुदा विधागत दाबी सभकेँ ओतबे कठोर सम्पादकीय अनुशासनसँ परखा जाए।

१५. बिबलियोग्राफी

- अकुलाइत सुर
- नाटचशास्त्र
- ध्वन्यालोक
- काव्यप्रकाश
- वक्रोक्तिजीवित
- औचित्यविचारचर्चा
- साहित्यदर्पण
- तत्त्वचिन्तामणि
- मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास
- मैथिलीक प्रतिनिधि गजल १९०५–२०२२
- [A Parallel History of Mithila & Maithili Literature]
- [Poetics]
- [The Mirror and the Lamp]
- [The Well Wrought Urn: Studies in the Structure of Poetry]
- [The Dialogic Imagination]
- [The Political Unconscious: Narrative as a Socially Symbolic Act]

षष्ठ खण्ड

पञ्जी, दर्शन, भाषा आ समानान्तर इतिहास

आलेख ४२ · पञ्जी, दर्शन, भाषा आ समानान्तर इतिहास

डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड १

सारांश

‘डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला’ मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्ध कैं केवल वंशावलीक पारम्परिक अभिलेख नहि मानि, ओकरा सामाजिक स्मृति, विवाह-नियमन, ज्ञान-संरचना, ऐतिहासिक भूगोल, जातीय श्रेणीकरण, स्त्री-उपस्थिति, बौद्धिक वंश, अभिलेखीय नैतिकता, डिजिटल संरक्षण आ आधुनिक आनुवंशिकी सँ संवाद करैत एक विस्तृत बहु-विषयी ग्रन्थक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। लगभग पाँच सय पृष्ठक एहि ग्रन्थमे पाँच भाग, बीस अध्याय, ग्रन्थसूची आ विशाल आँकड़ा-परिशिष्ट सम्मिलित अछि। पहिल तीन अध्याय पञ्जी-प्रबन्धक सैद्धान्तिक ढाँचा, वंश-सिद्धान्त, सपिण्ड-गणना, गोत्र-प्रवर, मूल, बीजी पुरुष, अभिलेखीय प्रामाणिकता आ तुलनात्मक वंशावली-विज्ञान पर केन्द्रित अछि। चारिम सँ आठम अध्याय एहि संरचनाक मानवशास्त्रीय, समाजशास्त्रीय, कानूनी, शिक्षणपरक, स्त्री-अध्ययनात्मक आ स्थिति-अर्थनीतिक रूप विस्तार करैत अछि। नौम सँ सोलहम अध्याय प्राचीन पञ्जी, उपटीप, नगरामा आ पम्पिला-वर्ग पञ्जिकाक ग्राम, कुल, मूल, गोत्र, वैवाहिक सूत्र, उपाधि, पेशा, नाम-विन्यास आ परस्पर सन्दर्भ-संकेतक सूक्ष्म विश्लेषण करैत अछि। सत्रहम अध्याय समेकित वंशावली-अध्ययन अछि, आ अठारहम सँ बीसम अध्याय दूषण पञ्जी कैं जाति-संचलन, सामाजिक अपवर्जन, स्त्री-अदृश्यता, गङ्गेश उपाध्यायक जीवन-वृत्त, नव्य-न्याय, दलित इतिहास आ अभिलेखीय राजनीति सँ जोड़ैत अछि। अन्तिम आँकड़ा-परिशिष्ट पञ्जीक डिजिटल पुनर्संरचना दिशि एक महत्वाकांक्षी कदम अछि।

बीजशब्द

डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड १ · मिथिला · वंश-अभिलेख · इतिहासलेखन · प्रमाण-विवेचन

१.३४. गजेन्द्र ठाकुर- डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला’-१- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ज्ञान-संरचना

‘डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला’क बहुपद्धतिमूलक गहन शोध-समीक्षा

मूल पोथीकार: गजेन्द्र ठाकुर

मूल पोथी: (Decoding the Panji of Mithila: Surprising Insights from India and Nepal's Oldest Social Network)

समीक्षा-पद्धति: भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा, पाश्चात्य आलोचनात्मक सिद्धान्त, नव्य-न्यायीय ज्ञानमीमांसा, विदेह समानान्तर इतिहास-पद्धति

सारांश

‘डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला’ मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्ध कैं केवल वंशावलीक पारम्परिक अभिलेख नहि मानि, ओकरा सामाजिक स्मृति, विवाह-नियमन, ज्ञान-संरचना, ऐतिहासिक भूगोल, जातीय श्रेणीकरण, स्त्री-उपस्थिति, बौद्धिक वंश, अभिलेखीय नैतिकता, डिजिटल संरक्षण आ आधुनिक आनुवंशिकी सँ संवाद करैत एक विस्तृत बहु-विषयी ग्रन्थक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। लगभग पाँच सय पृष्ठक एहि ग्रन्थमे पाँच भाग, बीस अध्याय, ग्रन्थसूची आ विशाल आँकड़ा-परिशिष्ट सम्मिलित अछि। पहिल तीन अध्याय पञ्जी-प्रबन्धक सैद्धान्तिक ढाँचा, वंश-सिद्धान्त, सपिण्ड-गणना, गोत्र-प्रवर, मूल, बीजी पुरुष, अभिलेखीय प्रामाणिकता आ तुलनात्मक वंशावली-विज्ञान पर केन्द्रित अछि। चारिम सँ आठम अध्याय एहि संरचनाक मानवशास्त्रीय, समाजशास्त्रीय, कानूनी, शिक्षणपरक, स्त्री-अध्ययनात्मक आ स्थिति-अर्थनीतिक रूप विस्तार करैत अछि। नौम सँ सोलहम अध्याय प्राचीन पञ्जी, उपटीप, नगरामा आ पम्पिला-वर्ग पञ्जिकाक ग्राम, कुल, मूल, गोत्र, वैवाहिक सूत्र, उपाधि, पेशा, नाम-विन्यास आ परस्पर सन्दर्भ-संकेतक सूक्ष्म विश्लेषण करैत अछि। सत्रहम अध्याय समेकित वंशावली-अध्ययन अछि, आ अठारहम सँ बीसम अध्याय दूषण पञ्जी कैं जाति-संचलन, सामाजिक अपवर्जन, स्त्री-अदृश्यता, गङ्गेश उपाध्यायक जीवन-वृत्त, नव्य-न्याय, दलित इतिहास आ अभिलेखीय राजनीति सँ जोड़ैत अछि। अन्तिम आँकड़ा-परिशिष्ट पञ्जीक डिजिटल पुनर्संरचना दिशि एक महत्वाकांक्षी कदम अछि।

एहि समीक्षाक मुख्य निष्कर्ष ई अछि जे पोथीक सर्वाधिक मौलिक उपलब्धि पञ्जी कैं कथित 'जीनोम'क प्रत्यक्ष पर्याय सिद्ध करब नहि, बल्कि ओकरा एक दीर्घकालिक सामाजिक-वंशावली गणना-प्रणाली, क्षेत्रीय अभिलेखीय स्मृति आ बहुस्तरीय सम्बन्ध-सूचनाक परम्परा रूपमे पुनर्पाठ करब अछि। 'आनुवंशिक मानचित्रण'क रूपक व्याख्यात्मक रूपेँ फलदायी अछि, मुदा जैविक विज्ञानक प्रत्यक्ष समतुल्यता रूपेँ ओकर प्रयोग सीमित राखब आवश्यक अछि। गोत्र, प्रवर आ सपिण्ड विवाह-दूरीक सामाजिक संकेतक अवश्य छथि; मुदा आधुनिक आनुवंशिक सम्बन्ध, गुणसूत्रीय वंश, स्वसमजातता आ रोग-जोखिमक निष्कर्ष निकालबाक लेल प्रत्यक्ष आनुवंशिक नमूना, जनसंख्या-आधारित परीक्षण आ सांख्यिकीय प्रमाण चाही। एहिना, ४५० ईस्वी सँ निरन्तर अभिलेखक दाबी कैं प्राचीन पूर्वज धरि पहुँचल वंश-स्मृति, पश्चात्कालीन वंश-पुनर्निर्माण आ वास्तवमे दिनांकित निरन्तर अभिलेख—एहि तीन श्रेणीमे विभाजित कऽ पढ़ब अधिक इतिहाससम्मत होयत।

भारतीय समीक्षा-दृष्टिसँ पोथीक 'आश्चर्य' ओकर अद्भुत भाव, 'दूषण' प्रसंग करुण-संवेदना, आ अभिलेखक मौन ध्वनि-तत्त्वक मुख्य आधार बनैत अछि। स्त्रीक नामक अनुपस्थिति मुदा सम्बन्ध-सूत्रक सर्वव्यापक उपस्थिति एहि ग्रन्थक सर्वाधिक प्रभावकारी ध्वन्यर्थ अछि। 'जीवित जीनोम', 'काला पोथी', 'सामाजिक गणन-विधि' जेकाँ वैचारिक रूपक वक्रोक्तिक शक्ति दैत अछि, पर औचित्यक कसौटी मांगैत अछि जे रूपक प्रमाणक स्थान नहि ले। पाश्चात्य आलोचनामे पञ्जी सामूहिक स्मृति, ज्ञान-सत्ता, वैवाहिक विनिमय, प्रतीकात्मक पूँजी, स्त्री-अदृश्यता आ प्रतिलोम-अभिलेखक प्रश्न खोलैत अछि। नव्य-न्यायीय पद्धतिमे पञ्जी कैं प्रमाण, प्रमेय, व्याप्ति, उपाधि, अवच्छेदक, शब्द-प्रमाण आ अनुमानक अनुशासनमे रखला पर ओकर ज्ञान-विधि सर्वाधिक स्पष्ट होइत अछि। विदेह समानान्तर इतिहास-पद्धति पञ्जीक गैर-कैननिक ग्राम, लोकनाम, पेशा, स्त्री-सूत्र, निम्नीकृत समुदाय, स्थानीय भाषिक रूप आ संस्थागत उपेक्षा कैं मुख्य इतिहासक समानान्तर स्रोत बनबैत अछि।

अन्ततः ई पोथी मिथिला-अध्ययनमे एक महत्त्वपूर्ण शोध-संग्रह आ शोध-अभियान दुनू अछि। एकर अगिला आलोचनात्मक संस्करणमे स्रोत-श्रेणी, पाण्डुलिपि-संख्या, पाठ-भेद, दिनांक-पद्धति, दाबी-स्तर, आनुवंशिक रूपकक सीमा, मानकीकृत पारिभाषिक

शब्दावली, अध्यायगत पुनरावृत्ति-नियन्त्रण आ स्वच्छ ग्रन्थसूची जोड़ल जाए, तँ ई कृति वंशावली-अध्ययन, मिथिला-इतिहास, सामाजिक मानवशास्त्र आ ज्ञान-इतिहासक बीच एक स्थायी सेतु बनि सकैत अछि।

बीज-शब्द: पञ्जी-प्रबन्ध; मिथिला; मूल; गोत्र; प्रवर; सपिण्ड; दूषण पञ्जी; गङ्गेश उपाध्याय; नव्य-न्याय; सामूहिक स्मृति; अभिलेख; समानान्तर इतिहास; स्त्री-अध्ययन; वंशावली; आनुवंशिक रूपक।

१. शोध-सीमा, स्रोत-आधार आ परीक्षण-विधि

एहि पोथीक आलोचनात्मक मूल्यांकन लेल पहिल आवश्यकता ओकर विधागत प्रकृति बुझब अछि। ई एकरेखीय इतिहास-पोथी नहि अछि। एकर भीतर मूल वंशावली-सामग्रीक पुनर्पाठ, सैद्धान्तिक निबन्ध, विश्लेषणात्मक प्रतिवेदन, अध्ययन-सहायिका, प्रश्नोत्तर, सामाजिक आलोचना, तुलनात्मक वंशावली-विज्ञान, डिजिटल मानविकी आ आँकड़ा-परिशिष्ट एक-दोसरासँ जुड़ल अछि। अतएव एकरा केवल ‘इतिहास’, ‘समाजशास्त्र’, ‘वंशावली’ वा ‘साहित्य’क एकल कसौटीपर नापब अधूरा होयत। समीक्षाक मूल सिद्धान्त ई अछि जे ग्रन्थक प्रत्येक दाबी कँ ओकर स्रोत-प्रकृति अनुसार पढ़ल जाय: मूल पञ्जी-पाठ सँ प्रत्यक्ष प्राप्त तथ्य; सम्पादकीय व्याख्या; वंशानुक्रम सँ कएल काल-निर्धारण; समाजशास्त्रीय अनुमान; आधुनिक विज्ञान सँ तुलनात्मक रूपक; आ मूल्यपरक निष्कर्ष—ई सभ समान प्रमाण-मूल्य नहि रखैत अछि।

एहि कारण चारि समानान्तर समीक्षा-विधि अपनाओल गेल अछि। भारतीय पद्धतिमे रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्यक सहायतासँ अभिलेखीय गद्यक साहित्यिक शक्ति, मौन अर्थ आ रूपकक सीमा देखल गेल अछि। पाश्चात्य पद्धतिमे सामूहिक स्मृति, संरचनात्मक सम्बन्ध, ज्ञान-सत्ता, प्रतीकात्मक प्रतिष्ठा, स्त्री-विमर्श आ प्रतिलोम-अभिलेखक धारणा उपयोगी बनैत अछि। नव्य-न्यायमे प्रमाण, प्रमा, प्रमेय, शब्द, अनुमान, व्याप्ति, उपाधि, अभाव आ अवच्छेदकक अनुशासन लगाओल गेल अछि। विदेह समानान्तर इतिहास-पद्धति गैर-कैननिक, ग्राम्य, संस्थान-बाह्य आ डिजिटल स्रोत कँ स्थापित इतिहासक समानान्तर रखैत अछि, मुदा समानान्तरता कँ प्रमाण-विरोधी

स्वच्छन्दता नहि मानैत; एक स्रोत कैं दोसर स्रोतसँ काटि नहि, परस्पर जाँचि देखैत अछि।

पोथीक बीस अध्याय सभक पृथक परीक्षण कएल गेल अछि। अन्तिम आँकड़ा-परिशिष्ट सेहो समीक्षाक हिस्सा अछि, कारण ग्रन्थक अन्तिम दाबी—पञ्जी कैं खोजयोग्य, संरचित आ भविष्योपयोगी ज्ञान-संग्रह बनायब—ओहि परिशिष्ट बिना अधूरा अछि। भाषा-समीक्षामे मूल पोथीक अंग्रेजी गद्यक शैलीक अपेक्षा ओकर मैथिली, संस्कृत, मिथिलाक्षर-जन्य पारिभाषिक रूप, लिप्यन्तरण आ नाम-मानकीकरण पर ध्यान देल गेल अछि।

२. पोथीक स्थापत्य: पाँच भाग आ बीस अध्यायक समग्र पठन

२.१ पहिल भाग: सैद्धान्तिक आधार — अध्याय १–३

अध्याय १: पञ्जी प्रणालीक वंशावली-सिद्धान्त

पहिल अध्याय सम्पूर्ण पोथीक वैचारिक व्याकरण बनबैत अछि। एतय पञ्जी कैं वंश-सिद्धान्त, सम्बन्ध-गणित, बहिर्विवाह, सामाजिक स्मृति, संस्थागत वंशावली आ ज्ञानमीमांसाक बहुस्तरीय प्रणाली रूपमे देखाओल गेल अछि। गोत्र कैं पितृवंशीय पहचान, मूल कैं उपवंशीय स्थान-सूचक, बीजी पुरुष कैं संस्थापक पूर्वज, सपिण्ड कैं विवाह-निषेधक सम्बन्ध, आ उठेढ़ कैं पूर्वज-मानचित्र रूपेँ रखल गेल अछि। ई वर्गीकरण शोधक लेल उपयोगी अछि, कारण एहि सँ पञ्जी केवल नामक सूची नहि रहि, सम्बन्धक नियमबद्ध जाल बनैत अछि।

अध्यायक दोसर महत्त्वपूर्ण उपलब्धि पञ्जीकारक संस्थागत भूमिका पर बल देब अछि। वंश-स्मृति कैं निजी परिवारक स्मरण सँ निकालि पेशेवर अभिलेख-रखवारीमे बदलनाइ सामाजिक ज्ञानक रूपान्तरण छल। पाण्डुलिपि, परस्पर-सन्दर्भ, सिद्धान्त-पत्र आ वैवाहिक सत्यापन मिलि एक प्रकारक प्रक्रियात्मक ज्ञान बनबैत अछि। सामाजिक इतिहासक लेल ई अत्यन्त मूल्यवान अवलोकन अछि।

मुदा एहि अध्यायमे दूटा सावधानी आवश्यक अछि। पहिल, ४५० ईस्वी सँ २००९ धरि ‘निरन्तर अभिलेख’ कहब आ १३२६ ईस्वीमे संस्थागत पञ्जी-प्रबन्धक स्थापना कहब—ई दुनू कथन कैं एकहि स्तरपर नहि राखल जा सकैत अछि। ४५० ईस्वीक

व्यक्ति धरि वंश-पुनर्निर्माण संभव होयब एक बात अछि; ओहि काल सँ निरन्तर समकालीन लिखित अभिलेख सुरक्षित रहब दोसर बात। आलोचनात्मक संस्करणमे ‘वंश-स्मृतिक काल-गहराइ’ आ ‘संस्थागत अभिलेखक सुनिश्चित काल’ अलग शब्दावलीमे देल जाय। दोसर, ‘गोत्र = गुणसूत्रीय वंश’ आ ‘सपिण्ड = स्वजन आनुवंशिक दूरी’ जेकाँ समानता रूपक स्तरपर उपयोगी अछि, पर आधुनिक जैविकीमे प्रत्यक्ष प्रमाण बिना समतुल्यता नहि मानल जा सकैत अछि।

अध्याय २: संरचना, दस्तावेजी पद्धति आ नव्य-न्याय

दोसर अध्याय पहिल अध्यायक अवधारणासभ केँ अधिक व्यवस्थित आँकड़ा-आधारित ढाँचामे रखैत अछि। पहचान-स्तर, सम्बन्ध-स्तर, गुण-स्तर, स्थान-स्तर, काल-स्तर, नियम-स्तर आ प्रतिष्ठा-स्तर जेकाँ सूचना-विभाजन आधुनिक अभिलेख-विज्ञान आ आँकड़ा-संरचना दिशि महत्त्वपूर्ण कदम अछि। मूल केँ साझा पूर्वज आ मूलग्रामक संयुक्त चिन्हक रूपमे पढ़ब विशेष फलदायी अछि, कारण एहिसँ वंशावली ऐतिहासिक भूगोलमे बदलैत अछि।

दूषण पञ्जी केँ ‘नकारात्मक वंशीय गुण’क अभिलेख कहब अध्यायक एक सशक्त अवधारणा अछि, मुदा ‘नकारात्मक’ शब्द स्वयं पञ्जीक सामाजिक मूल्य-निर्णयक पुनरुत्पादन करैत अछि। आधुनिक आलोचना लेल अधिक तटस्थ पद ‘मानक-विचलन अभिलेख’ वा ‘सामाजिक अपवाद-अभिलेख’ होयत। एहि भेदसँ शोधकर्ता अभिलेखक ऐतिहासिक शब्दावली आ अपन नैतिक विश्लेषण केँ अलग राखि सकैत अछि।

एहि अध्यायमे नव्य-न्याय प्रवेश करैत अछि। पञ्जीकारक कथन केँ आप्त-वचन, अभिलेख केँ शब्द-प्रमाण, पूर्वज-संबन्धक श्रृंखला केँ अनुमान, आ विवाह-योग्यता केँ साध्य मानल जा सकैत अछि। मुदा प्रामाणिकता केवल पदाधिकारीक प्रतिष्ठासँ नहि, दोषरहित स्रोत-श्रृंखला, पारस्परिक मिलान, पाठ-स्थिरता आ विरोधी प्रमाणक परीक्षणसँ सिद्ध होयत। एहि दृष्टिसँ अध्याय स्वयं अपन आगामी आलोचनाक आधार तैयार करैत अछि।

अध्याय ३: सिद्धान्त सँ सामाजिक इतिहास धरि समेकन

तेसर अध्याय पहिल दू अध्यायक सूत्र कैं गोत्र, प्रवर, मूल, मूलग्राम, उठेढ़, सिद्धान्त-पत्र, आर्यभट, गङ्गेश, विद्यापति, दूषण पञ्जी आ सामाजिक श्रेणीकरणक उदाहरणसँ जोड़ैत अछि। एकर शक्ति 'प्रकरण-अध्ययन'क प्रयोग अछि: अमूर्त वंश-व्यवस्था अचानक ऐतिहासिक व्यक्ति, ग्राम, विवाह आ पदवीक ठोस अभिलेखमे बदलि जाइत अछि।

एहि अध्यायमे 'आनुवंशिक मानचित्रण'क रूपक सबसँ प्रभावकारी आ सबसँ जोखिमपूर्ण दुनू अछि। रूपकक उपयोग ई बुझबामे सहायक अछि जे पञ्जी पीढ़ी-दर-पीढ़ी सम्बन्ध-सूचना संचित करैत अछि; पर जैविक 'जीनोम' आणविक अनुक्रम, आनुवंशिक रूपान्तर, पुनर्संयोजन आ जनसंख्या-सांख्यिकीपर आधारित होइत अछि। पञ्जीक सामाजिक वंश-श्रेणी ओहि विज्ञानक स्थानापन्न नहि। एहि भेदक स्पष्टता पोथीक वैज्ञानिक विश्वसनीयता बढ़बैत।

२.२ दोसर भाग: समेकित विश्लेषण — अध्याय ४–८

अध्याय ४: विश्लेषणात्मक-वांशिक प्रतिवेदन

चारिम अध्याय मिथिलाक भू-सांस्कृतिक सीमा, सामाजिक ढाँचा, गोत्र-मूल वर्गीकरण, वैवाहिक गणना आ दस्तावेजी भाग-संरचनाकेँ एकठाम रखैत अछि। एकर विशेषता वर्गीकरणक घनत्व अछि। पाठक एकहि अध्यायमे भूगोल, वंश, समाज, पदानुक्रम आ गणना देखैत अछि। ई समेकन शोध-सन्दर्भक लेल उपयोगी, मुदा कतिपय ठाम सारणीबद्ध तथ्य आ व्याख्या बीच सीमा धुंधला होइत अछि। जहाँ संख्या वा श्रेणी मूल अभिलेख सँ अछि, ओतय स्रोत-स्थान दऽ देब आवश्यक छल; जहाँ सम्पादकीय पुनर्वर्गीकरण अछि, ओतय 'व्याख्यात्मक वर्ग' स्पष्ट होयबाक चाही।

अध्याय ५: सामाजिक-वंशीय स्थापत्य

पाँचम अध्याय पञ्जी कैं मानवशास्त्रीय संस्था रूपमे पढ़ैत अछि। भूमि, ब्राह्मणिक प्रतिष्ठा, राजसत्ता, वैवाहिक गठबन्धन, सामाजिक श्रेणी, अतिविवाह, बाल-विवाह आ बहुविवाहक परिणाम एके संरचनामे जोड़ल गेल अछि। एहि अध्यायक महत्त्व ई अछि जे पञ्जीक 'वैज्ञानिक' छवि कैं सामाजिक शक्ति-संबन्ध सँ अलग नहि रहए दैत। वंश-सत्यापन केकरा प्रतिष्ठा दैत छल? केकर विवाह विकल्प बढ़ैत वा घटैत छल?

पञ्जीकार, घटक, उच्च कुल आ आर्थिक पूँजीक बीच लेन-देन कोना स्थिति बनबैत छल? ई प्रश्न इतिहासक केन्द्रमे आबैत अछि।

मुदा 'जैविक शुद्धता', 'रक्त-शुद्धि' अथवा सामाजिक श्रेणी कैं आनुवंशिक मूल्यक भाषा मे पढ़ब आधुनिक शोधमे अनुचित होयत। अभिलेख जे सामाजिक श्रेणी उपयोग करैत अछि, आलोचक ओकरा ऐतिहासिक श्रेणी कहि प्रस्तुत करए, प्राकृतिक तथ्य नहि। एहि भेदक अभाव पञ्जीक सामाजिक इतिहास कैं अनावश्यक जैविकीकरण दिस धकेलि सकैत अछि।

अध्याय ६: मानवशास्त्र, कानून आ सामाजिक इतिहास

छठम अध्याय संस्थापन-कथा, हरिसिंहदेव, कथित स्वजन-विवाह संकट, लखिमा देवी, पण्डित-समाज आ वैवाहिक विधानक सम्बन्ध खोलैत अछि। पोथी एतय पञ्जी कैं सामाजिक-कानूनी साधन कहैत अछि। ऐतिहासिक अर्थमे 'कानूनी' शब्दक उपयोग सावधानीसँ करबाक चाही: सामुदायिक धर्म-विधान, राजकीय मान्यता, प्रथागत बाध्यता आ आधुनिक विधानसभाक कानून एकहि वस्तु नहि। 'सामुदायिक-जुरिडिक' वा 'प्रथागत वैधानिक' जेकाँ पद अधिक यथार्थ होयत।

लखिमा देवीक प्रसंग पोथीक स्त्री-इतिहास लेल महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा एक-दू प्रसिद्ध विदुषी वा कानूनी हस्तक्षेप कैं समूचा पञ्जी-संरचनाक 'नारीवादी चेतना'क प्रमाण मानब अतिशयोक्ति होयत। पञ्जीमे स्त्री अधिकांशतः सम्बन्ध-सूत्र रूपमे उपस्थित छथि; नाम, आवाज, सम्पत्ति-अधिकार, स्वैच्छिकता आ आत्मकथा बहुत कम अछि। एहिसँ स्त्रीक ऐतिहासिक उपस्थिति अवश्य सिद्ध होइत अछि, पर स्त्री-केंद्रित अभिलेखीय दृष्टि नहि।

अध्याय ७: अध्ययन-सहायिका आ लोकबोध

सातम अध्याय शिक्षणपरक शैली अपनबैत अछि। इतिहास, गोत्र-मूल, पञ्जीकार, वैवाहिक नियम, डिजिटल भविष्य आ आधुनिक उपमा कैं सरल ढंगसँ समझाओल गेल अछि। एकर उपयोग शोधार्थी, विद्यार्थी आ सामान्य पाठक लेल अछि। तथापि एहि अध्यायमे आधुनिक संगणकीय रूपक—प्रणाली-प्रशासक, गणन-विधि, प्रमाणपत्र-सत्यापन, वंश-संग्रह—क प्रयोग अधिक अछि। रूपक पाठक कैं जटिल पञ्जी-प्रक्रिया बुझबैत अछि, मुदा पुरान संस्था कैं आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी जेकाँ हूबहू संरचना

मानबाक भ्रम सेहो दे सकैत अछि। शैक्षिक लेखनमे 'कार्यात्मक समानता' आ 'ऐतिहासिक समानता' बीच भेद आवश्यक अछि।

अध्याय ८: विशेष अध्ययन—स्त्री, दूषण, प्रश्नोत्तर आ स्थिति-अर्थनीति

आठम अध्याय पोथीक सामाजिक आलोचना दिशि निर्णायक मोड़ अछि। एतय स्त्रीक नामहीन उपस्थिति, भूमि-अधिकारसँ जुड़ल अपवाद, दूषण पञ्जीक सामाजिक अर्थ, उच्च कुलक आर्थिक संकट, निम्नतर श्रेणीक धन, घटक-पञ्जीकारक भूमिका, बहुविवाह, विधवापन आ वैवाहिक बाजारक संरचना पर विस्तृत चर्चा अछि। शोध-दृष्टिसँ ई अध्याय महत्त्वपूर्ण कारण ई पञ्जी कैं केवल गौरव-पाठ नहि बनबैत, ओकर भीतरक असमानता, अर्थनीति आ मानवीय पीड़ा सेहो देखैत अछि।

एहि अध्यायपर पाश्चात्य स्त्री-विमर्श लागू करैत एक मूल सूत्र उभरैत अछि —'संरचनात्मक उपस्थिति, नामिक अनुपस्थिति'। स्त्री बिना पञ्जीक विवाह-गणना असम्भव अछि, मुदा स्त्रीक व्यक्तित्व प्रायः पिता, पति, पुत्र वा मातामहक सम्बन्धसँ व्यक्त होइत अछि। ई मौन स्वयं ऐतिहासिक सूचना अछि। ध्वनि-सिद्धान्तक भाषामे, अनुपस्थित नामक अर्थ उपस्थित सम्बन्धक संरचनासँ प्रकट होइत अछि।

३. तेसर भाग: प्राचीन पञ्जी आ नगरामा — अध्याय ९–१६

३.१ अध्याय ९: प्राचीन पञ्जीक प्रथम खण्ड—ग्राम, परिवार, वंश आ गोत्र

नौम अध्याय पोथीक सैद्धान्तिक दाबी कैं प्रत्यक्ष अभिलेखीय वस्तुमे बदलैत अछि। ग्राम-सूची, मूलग्राम-समूह, गोत्र-वर्गीकरण, विद्वत् उपाधि, राजकीय पद, विशिष्ट व्यक्ति, मातृका-चक्र, सूत्र-व्याकरण आ परिमाणात्मक गणना एकठाम प्रस्तुत अछि। एहि अध्यायक सबसँ पैघ उपलब्धि पञ्जीक 'औपचारिक व्याकरण' चिन्हित करब अछि। पुत्र, पुत्री, दौहित्र, विवाह-सम्बन्ध, ग्राम आ उपाधि लेल संक्षिप्त सूत्र वास्तवमे सम्बन्ध-आँकड़ा सँ भरल वाक्य-रचना अछि।

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान लेल ग्रामक रूप, नामक विविधता आ पदवीक प्रयोग विशेष महत्त्व राखैत अछि। मुदा 'पूर्ण ग्राम-सूची' जेकाँ दाबी करैत समय संस्करण-सीमा देनाइ चाही—पूर्णता एहि खण्डक भीतरक हो, समूचा मिथिलाक नहि।

३.२ अध्याय १०: पृष्ठ ६६–३४७—नव ग्राम, वंश-शृंखला आ विवाह-उपसंहार

दसम अध्याय सामग्रीक विस्तार देखबैत अछि। कर्महारा जेकाँ ग्राम-समूह, नव स्थान, विद्वत् पदवी, महाराज माधव सिंहक उल्लेख, विशिष्ट प्रशासनिक वा सामाजिक उपाधि आ विवाहक समापन-सूत्र इतिहासकार लेल सूक्ष्म सामाजिक नक्शा बनबैत अछि। ग्राम-सूची मात्र भूगोल नहि; विवाहक आवागमन, प्रतिष्ठाक केन्द्र आ वंशीय प्रसारक संकेत बनैत अछि।

अध्यायमे राजकीय व्यक्तिक पञ्जी-प्रविष्टि आ विद्वानक उपाधि सँ राजनीतिक-बौद्धिक इतिहास जोड़बाक सम्भावना अछि। मुदा व्यक्ति-परिचयक मिलान लेल पञ्जी-बाह्य ताम्रपत्र, राजकीय दस्तावेज, ग्रन्थ-कोलोफन, शिलालेख वा समकालीन साहित्यसँ पुष्टिक आवश्यकता रहत। पञ्जी एतय प्रथम स्रोत हो सकैत अछि, अन्तिम निर्णय नहि।

३.३ अध्याय ११: पृष्ठ ३४८–६९०—राजकीय अभिलेख, विद्वत् पदवी आ आधुनिकता

एगारहम अध्याय पोथीक समय-गहराइ कैं आधुनिक पदवी आ पेशागत पहचान धरि लैत अछि। राजकीय नाम, महा-महोपाध्याय जेकाँ विद्वत् पद, औपनिवेशिक प्रशासनिक संकेत, आधुनिक शिक्षा आ पेशा पञ्जीमे प्रवेश करैत देखाइत अछि। एहि सँ पञ्जी स्थिर परम्परा नहि, अनुकूलनशील अभिलेख-संस्था सिद्ध होइत अछि।

इएह अध्याय ‘परम्परा बनाम आधुनिकता’क सरल विरोध कैं तोड़ैत अछि। अभिलेखीय व्याकरण पुरान रहैत अछि, पर ओकर गुण-क्षेत्रमे आधुनिक पद, नौकरी, डिग्री आ राजकीय सेवा जुड़ैत जाइत अछि। ई दीर्घजीविता पञ्जीक एक वास्तविक शक्ति अछि—संरचना स्थिर, आँकड़ा चलायमान।

३.४ अध्याय १२: उपटीप—जीवित टिप्पणी-परम्परा

बारहम अध्याय उपटीप कैं मुख्य पञ्जीक उप-टिप्पणी, सुधार, विस्तार आ पूरक सूचना रूपमे पढ़ैत अछि। एतय अभिलेख स्थिर ‘अन्तिम पाठ’ नहि, सतत संशोधित ज्ञान-वस्तु रूपमे सामने अबैत अछि। ई पाण्डुलिपिशास्त्र आ डिजिटल संस्करण-विज्ञान दुनू लेल महत्त्वपूर्ण अछि। मुख्य प्रविष्टि, उपटीप, शाखा-पुस्तक आ परस्पर-सन्दर्भक सम्बन्ध बिना डिजिटल डेटाबेस बनाओल जाए, तँ संस्करण-स्तर गुम भऽ सकैत अछि।

एहि अध्यायक ‘जीवित जीनोम’ रूपक साहित्यिक रूपेँ प्रभावकारी अछि। भारतीय वक्रोक्ति-दृष्टिसँ ई रूपक निर्जीव अभिलेख कैँ जैविक विस्तारक छवि दैत अछि। मुदा औचित्यक दृष्टिसँ एकरा ‘जीवित वंश-स्मृति’ कहब अधिक वैज्ञानिक रूपेँ सुरक्षित अछि।

३.५ अध्याय १३: खण्ड-दोसरक समेकित मानवशास्त्रीय पाठ

तेरहम अध्याय पञ्जी परम्पराक उत्पत्ति, मैथिल ब्राह्मण समाज, पञ्जीकार, गोत्र-मूल, विवाह नियम, सामाजिक वर्ग, ग्राम-जाल, ऐतिहासिक व्यक्ति आ अभिलेखीय संरक्षण कैँ विस्तृत व्याख्यात्मक प्रतिवेदनमे संगठित करैत अछि। ई अध्याय शोधार्थीक लेल सन्दर्भ-अध्याय जेकाँ उपयोगी अछि।

तथापि पहिल सात अध्यायसँ अवधारणात्मक पुनरावृत्ति बहुत अछि। शोध-पोथीक प्रभाव बढ़ेबाक लेल सिद्धान्तक पुनरुक्ति घटा कऽ एहि अध्याय कैँ केवल खण्ड-दोसरक नव प्रमाण, पाठ-भेद आ विशिष्ट निष्कर्ष धरि सीमित कएल जा सकैत छल।

३.६ अध्याय १४: पम्पिला पञ्जी, नगरामा—प्रतिलोम कैनन आ ग्राम्य इतिहास

चौदहम अध्याय पोथीक सर्वाधिक रोचक अध्यायसभमे एक अछि। नगरामा खण्डक ब्लॉक, ग्राम, नाम, उपाधि, पेशा, परस्पर-सन्दर्भ, लोक-उच्चारण, स्त्री-सूत्र आ आधुनिक राजनीतिक-पेशागत पहचान कैँ ‘विदेह समानान्तर इतिहास’क सामग्री मानल गेल अछि। साहित्यिक इतिहास जँ केवल प्रसिद्ध कवि आ ग्रन्थ गिनैत अछि, तँ नगरामा जेकाँ पञ्जी किसान, वैद्य, वकील, अभियन्ता, अधिकारी, लोकनाम, स्त्री-सम्बन्ध आ विस्मृत ग्रामक अस्तित्व सुरक्षित रखैत अछि।

एहि अध्यायक मुख्य उपलब्धि ‘कैनन जे छोड़ि देलक’ तकर खोज अछि। मुदा समानान्तर इतिहासक पद्धति एतय एक जरूरी सावधानी मांगैत अछि: गैर-कैननिक स्रोत स्वतः शोषितक आवाज नहि होइत अछि। पञ्जी स्वयं ब्राह्मणिक वैवाहिक प्रशासनक उपकरण छल; अतएव ओकर भीतर भेटल लोक-सूचना कैँ सत्ता-संरचना सँ अलग कऽ रोमानीकृत नहि करबाक चाही। विदेह पद्धतिक श्रेष्ठ रूप एहेन द्वैत कैँ एकसाथ देखैत अछि—स्रोत सत्ता-केंद्रित सेहो, सामाजिक सूचनासँ समृद्ध सेहो।

३.७ अध्याय १५: प्रविष्टि २२६–३५८—नाम-विज्ञान, पेशा आ स्त्री-सूत्र

पन्द्रहम अध्याय नाम-प्रकार, औपचारिक आ लोकनामक दोहरी प्रणाली, पेशागत उपाधि, स्त्री-उल्लेख, ग्राम-जाल आ काल-संकेतक निरीक्षण करैत अछि। लोकनामक संरक्षण सामाजिक भाषाविज्ञान लेल अनमोल अछि। साहित्यिक कैननमे नहि पहुँचि सकल घरुआ नाम, शारीरिक लक्षण, देवता-आधारित नाम, पेशा-आधारित नाम आ ग्राम्य उच्चारण पञ्जीमे जीवित अछि।

एकर साहित्यिक महत्त्व एतय अछि जे पञ्जी ‘चरित्र-चित्रण’ नहि करैत, तथापि नाम, पद, ग्राम आ सम्बन्धक न्यूनतम सूत्र सँ एक विशाल समाजक छाया-चित्र निर्मित होइत अछि। ध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिसँ न्यूनतम कथनक पार्श्वमे व्यापक सामाजिक संसार प्रकट होइत अछि।

३.८ अध्याय १६: ब्लॉक ३५९–४६६—औपचारिक व्याकरण आ सामाजिक जाल

सोलहम अध्याय पञ्जी प्रविष्टिक संरचनात्मक घटक—मङ्गलाचरण, ग्रामारम्भ, वंश-सूत्र, विवाह-सूत्र, उपाधि, पेशा, परस्पर-सन्दर्भ—कें विधिवत् खोलैत अछि। चयनित ब्लॉकक गहन पठन, पेशागत स्तरीकरण, भौगोलिक जाल आ आन्तरिक सन्दर्भ प्रणाली पञ्जीक सूचना-व्यवस्था बुझबाक ठोस आधार दैत अछि।

एहि अध्यायक निष्कर्ष—पञ्जी साहित्यिक आ दस्तावेजी रूप दुनू अछि—विशेष ध्यान योग्य अछि। साहित्य केवल कल्पना नहि; भाषा द्वारा सामाजिक जगत्क संरचित प्रस्तुति सेहो अछि। पञ्जीक संक्षिप्त सूत्र, पुनरावृत्त विन्यास, नामिक लय आ सम्बन्धक श्रृंखला एक प्रकारक अभिलेखीय शैली बनबैत अछि। तैं एकरा ‘साहित्य’ कहबाक आधार सौन्दर्यात्मक कल्पना नहि, बल्कि भाषिक संरचना, सामाजिक अर्थक सघनता आ ऐतिहासिक पाठनीयता होयबाक चाही।

४. चारिम भाग: समेकित वंशावली-मानचित्रण — अध्याय १७

सत्रहम अध्याय सम्पूर्ण पञ्जी-प्रबन्ध कें सभ्यतागत दस्तावेज, खण्डित वंश-समूह, सामाजिक स्मृति, विवाह-गठबन्धन, श्रेणीकरण, पञ्जीकार-ज्ञान, डिजिटल भविष्य, स्त्री-स्थिति, औपचारिक व्याकरण, काल-गहराइ, मूल-भूगोल आ तुलनात्मक वंशावली-संस्था रूपमे समेटैत अछि। ‘तेगाछिया समस्या’ जेकाँ काल-सत्यापनक प्रश्न अध्याय कें आत्म-आलोचनात्मक बनबैत अछि; ई महत्त्वपूर्ण अछि, कारण वंशावलीमे पीढ़ी-

गणना सहजहि सटीक तिथि नहि बनैत। पीढ़ीक औसत अवधि समय, वर्ग, विवाह-आयु, लिंग आ ऐतिहासिक संकट अनुसार बदलैत अछि। ४० वर्षक एकल मानक अनुमान उपयोगी प्रारम्भ हो सकैत अछि, प्रमाण नहि।

एहि अध्यायमे वल्लाल सेन सम्बन्धी ऐतिहासिक सूत्र सेहो उठैत अछि। एहन परम्परागत सम्बन्ध कैं ‘परम्परा’, ‘पञ्जी-साक्ष्य’, ‘पश्चात्कालीन ऐतिहासिक व्याख्या’ आ ‘स्वतन्त्र बाह्य पुष्ट’क अलग खाँचामे रखनाइ उचित अछि। इतिहासलेखनक वैज्ञानिकता दाबी घटेबासँ नहि, दाबी-स्तर स्पष्ट करबासँ बढ़ैत अछि।

डिजिटलीकरणक प्रसंग एहि अध्यायक स्थायी उपलब्धि अछि। संकटग्रस्त लिपि, पारिवारिक अभिरक्षा, नष्ट होइत पाण्डुलिपि आ सीमित पञ्जीकार परम्परा बीच प्रतिलिपि, छवि-संग्रह आ देवनागरीकरण ज्ञान-संरक्षणक अनिवार्य कार्य अछि। मुदा डिजिटल प्रतिलिपि मूलक स्थानापन्न नहि; छवि, लिप्यन्तरण, सम्पादित पाठ, अनुवाद आ विश्लेषण पाँच अलग वस्तु रूपेँ संरक्षित होयबाक चाही।

५. पाँचम भाग: दूषण पञ्जी, गङ्गेश आ प्रतिलोम-अभिलेख — अध्याय १८–२०

५.१ अध्याय १८: दूषण पञ्जीक व्यापक सामाजिक पाठ

अठारहम अध्याय सात प्रकारक पञ्जी, संस्थापन-कथा, दूषण पञ्जीक उद्देश्य, सत्तानबे सारणी, अज्ञात वंश, अन्तर-समुदाय विवाह, देवदासी-सूत्र, स्त्री, मुस्लिम सम्बन्ध, गङ्गेश उपाध्याय, श्रोत्रिय श्रेणी आ विरासत-मूल्यपर केन्द्रित अछि। ई अध्याय पोथीक नैतिक केन्द्र बनैत अछि, कारण एतय ‘दोष’ कहि दर्ज लोकसभ इतिहासक मुख्य विषय बनैत छथि।

दूषण पञ्जी कैं प्रतिलोम-अभिलेख कहब उपयुक्त अछि—मुख्य पञ्जी जे सामाजिक आदर्श कायम करैत अछि, दूषण पञ्जी ओहि आदर्शक टूटन, सीमा आ बातचीत दर्ज करैत अछि। मुदा प्रतिलोम-अभिलेख शब्दक अर्थ ई नहि जे ई दलित, स्त्री वा परिधीय समुदायक स्व-लिखित इतिहास अछि। अभिलेखक दृष्टि अबहूँ पञ्जीकारक अछि। अतएव ई ‘परिधीय जीवनक ब्राह्मणिक अभिलेखन’ अछि, जे इतिहासकार लेल मूल्यवान साक्ष्य अछि, मुदा प्रत्यक्ष आत्मस्वर नहि।

५.२ अध्याय १९: वंश-सिद्धान्त आ नव्य-न्यायीय पुनर्पाठ

उन्नैसम अध्याय सात पञ्जी-प्रकार, संस्थागत अभिलेख, बत्तीस पूर्वजक मानचित्र, षष्ठी गणना, चारि निषेध-नियम, मौखिक सँ लिखित संक्रमण, मिथिलाक्षर, दूषण पञ्जी, गोत्र-प्रवर, तुलनात्मक वंशावली, सामाजिक सुधार आ नव्य-न्याय कैं एक सुसंगत सिद्धान्त रूप देबाक चेष्टा करैत अछि। एहि अध्यायमे नव्य-न्यायीय तुलना पहिने सँ अधिक फलदायी अछि।

पञ्जीकारक निर्णय कैं अनुमानक रूपमे एहि प्रकार समझल जा सकैत अछि: पक्ष—प्रस्तावित वर-वधू; साध्य—विवाह-योग्यता अथवा अयोग्यता; हेतु—निर्दिष्ट गोत्र, प्रवर वा सपिण्ड सम्बन्ध; व्याप्ति—एहन सम्बन्ध होयत तँ विवाह निषिद्ध; उपाधि—क्षेत्रीय प्रथा, पाठ-विसंगति, गोद-सम्बन्ध, पुनर्विवाह, अस्पष्ट पितृत्व, अपूर्ण अभिलेख; प्रमाण—मूल पञ्जी, शाखा पञ्जी, उठेढ़, मौखिक पुष्टि आ अन्य दस्तावेज। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे पञ्जी निर्णयक शक्ति ओकर ‘पुरान’ होयबामे नहि, नियम आ साक्ष्यक पारदर्शी सम्बन्धमे अछि।

५.३ अध्याय २०: अन्तरविषयी प्रतिवेदन, संस्थागत आलोचना आ अभिलेखीय नैतिकता

बीसम अध्याय पञ्जी-इतिहास, स्वतन्त्र शोध-सन्दर्भ, मानवशास्त्र, जातीय गतिशीलता, स्त्री, प्रवास, ज्ञान-संस्था, गङ्गेश उपाध्याय, विश्व-विरासत, नैतिक राजनीति आ स्मृति-अभिलेख सम्बन्धक समेकित प्रतिवेदन अछि। पोथी एतय सर्वाधिक प्रत्यक्ष राजनीतिक भाषा अपनबैत अछि। संस्थागत मौन, जातीय प्रतिष्ठा आ स्रोत-दमनक प्रश्न उठेनाइ उचित अछि; मुदा आरोपक शक्ति साक्ष्यक शक्ति अनुरूप होयबाक चाही। एक संस्था वा विद्वानक आलोचना करैत मूल दस्तावेज, प्रकाशन-इतिहास, उद्धृत अंश आ प्रत्युत्तर सभ कैं बराबर स्थान देनाइ शोध-न्यायक शर्त अछि।

गङ्गेश उपाध्यायक सम्बन्धमे पोथी असाधारण दाबी करैत अछि—परिवार, पितृत्व, जातीय सम्बन्ध आ पत्नी सम्बन्धी। बाह्य नव्य-न्याय शोध गङ्गेशक मिथिला-स्थित चौदहम शताब्दीक विद्वान होयब आ वंशीय अभिलेखक अस्तित्वक उल्लेख अवश्य करैत अछि; मुदा दूषण पञ्जीक विशिष्ट सामाजिक दाबी सभक स्वतंत्र पुष्टिक लेल मूल मिथिलाक्षर छवि, पाठ-पाठान्तर, पाण्डुलिपि-वंश, दिनांकन आ अन्य

समकालीन/निकटवर्ती स्रोत आवश्यक छथि। ई दाबी खारिज करबाक कारण नहि; उलटँ एकरा असाधारण शोध-परियोजनाक विषय बनबैत अछि।

६. आँकड़ा-परिशिष्ट: पोथीक डिजिटल भविष्यक वास्तविक आधार

पोथीक अन्तिम भागमे गोत्र–मूल–मूलग्राम सारणी, पारिभाषिक शब्दावली, उल्लेखनीय व्यक्ति-सूची, पञ्जी अभिलेखक गणना, प्रश्नोत्तर-संग्रह, दूषण पञ्जी सारणी, नगरामा अभिलेख, प्राचीन पञ्जी आँकड़ा, मूल-गोत्र कोश, व्यक्ति-स्तरीय बैच, खोजयोग्य पञ्जी-संग्रह आ समेकित आँकड़ा-सार देल गेल अछि। कुल एकासी पत्रक आ एक लाख छब्बीस हजार सँ अधिक अभिलेखक दाबी डिजिटल मानविकी लेल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।

एहि परिशिष्टक शक्ति ओकर परिमाण नहि, ‘रचनाखाका’ बनयबाक सम्भावना अछि। जँ प्रत्येक प्रविष्टि लेल स्थायी पहचान-संख्या, स्रोत-पाण्डुलिपि, पृष्ठ/फोलियो, पंक्ति, मूल लिपि, देवनागरी पाठ, मानकीकृत रूप, सम्बन्ध-प्रकार, काल-विश्वसनीयता, स्थान-निर्देशांक, सम्पादक आ संस्करण-इतिहास जोड़ल जाए तँ पञ्जी विश्वस्तरीय शोध-आँकड़ा बनि सकैत अछि। वर्तमान परिशिष्टमे कतिपय ठाम मूल ग्रन्थसूची आ आँकड़ा सामग्री आपसमे घुलि गेल देखाइत अछि; अतएव मुद्रित ग्रन्थसूची, पाठ-परिशिष्ट आ मशीन-पठनीय आँकड़ा-संग्रह पृथक रखनाइ उचित होयत।

७. बाह्य शोधक आलोकमे ऐतिहासिक आ वैज्ञानिक सत्यापन

७.१ १३२६ ईस्वी: संस्थागत बिन्दु, आरम्भ-बिन्दु नहि

मिथिलाक पञ्जी पर उपलब्ध आधुनिक इतिहास-शोध सामान्यतः चौदहम शताब्दीमे हरिसिंहदेवक काल कैं पञ्जी-प्रबन्धक संस्थागत रूप-निर्माणसँ जोड़ैत अछि। क्षेत्रीय परम्परा, जिला-इतिहास, मैथिल ब्राह्मण समाजक नृवंशशास्त्रीय अध्ययन आ मध्यकालीन मिथिलाक आधुनिक शोध—सभमे पञ्जी, मूल आ विवाह-नियमनक चौदहम शताब्दी सम्बन्धी धुरी महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा स्थापना-वर्ष, राजाज्ञाक स्वरूप, आरम्भक कारण आ प्रथम पञ्जीकारक विवरणमे परम्परागत कथनक भिन्नता भेटैत अछि। अतएव पोथीक १३२६ ईस्वीक विवरण कैं ‘प्रमुख पञ्जी-परम्परागत काल-

निर्देश, आधुनिक शोधसँ व्यापक रूपेँ संगत' कहब अधिक सुरक्षित अछि; 'अविवादित राजकीय चार्टर' कहब लेल मूल राजाज्ञा वा समकालीन दस्तावेज चाही।

एहि बिन्दुसँ ४५० ईस्वीक प्रश्न सेहो स्पष्ट होइत अछि। पोथी आर्यभट अथवा अन्य प्राचीन व्यक्तिक वंश-श्रृंखला द्वारा पाँचम शताब्दी धरि काल-गहराइ देखबैत अछि। यदि ई श्रृंखला पश्चात्कालीन पञ्जीमे सुरक्षित अछि तँ ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वंश-स्मृति अछि; मुदा '४५० ईस्वीमे लिखल प्रविष्टि आज धरि निरन्तर सुरक्षित अछि' एहन निष्कर्ष तखनहि उचित होयत जखन पुरातन पाण्डुलिपिक भौतिक दिनांकन, लिपि-विश्लेषण आ पाठ-वंश उपलब्ध हो। इतिहासलेखनमे 'अभिलेखक भीतर वर्णित काल' आ 'अभिलेखक लिखित प्रतिक भौतिक काल' अलग राखल जाइत अछि। पोथीक आगामी संस्करण एहि भेदसँ बहुत लाभ पाओत।

७.२ सपिण्ड: धर्मशास्त्रीय नियम, आधुनिक कानून आ पञ्जीक स्थानीय गणना

धर्मशास्त्रीय परम्परामे मातृपक्ष आ पितृपक्षक अलग पीढ़ी-सीमा प्रचलित रहल अछि, आ पाँच मातृ तथा सात पितृ पीढ़ीक सूत्र अनेक पुरान व्याख्यामे भेटैत अछि। आधुनिक भारतीय विवाह-कानूनमे परिभाषा अलग अछि—मातृपक्षमे तेसर आ पितृपक्षमे पाँचम पीढ़ी धरि, गणनाक विशेष विधिसहित। अतएव पोथीक पाँच–सात नियम कैँ आधुनिक भारतीय कानूनी नियम कहब ठीक नहि; एकरा परम्परागत धर्मशास्त्रीय/स्थानीय वैवाहिक गणनाक रूपमे स्पष्ट करबाक चाही।

मिथिलाक पञ्जी एहि व्यापक धर्मशास्त्रीय सिद्धान्त कैँ स्थानीय रूपमे अधिक सूक्ष्म षष्ठी-संकेत आ उठेढ़क माध्यमसँ कार्यान्वित करैत अछि—ई सम्भवतः पोथीक सर्वाधिक वास्तविक संस्थागत विशिष्टता अछि। एतय महत्त्व 'नियम भारतमे कतय-कतय छल' नहि, बल्कि मिथिलामे ओकर दस्तावेजी गणना, पेशेवर सत्यापन आ बहुपीढ़ीय प्रयोगक घनत्व अछि।

७.३ गोत्र आ वाई-गुणसूत्र: सम्भावित सम्बन्ध, प्रत्यक्ष समता नहि

पितृवंशीय गोत्रक संरचना आ वाई-गुणसूत्रक पितृवंशीय संचरण बीच एक कार्यात्मक समानता अवश्य अछि। भारतक किछु ब्राह्मण समुदायपर आनुवंशिक अध्ययन गोत्र आ पितृवंशीय आनुवंशिक संकेतक बीच सांख्यिकीय सम्बन्ध देखबैत अछि। मुदा एहि प्रकारक अध्ययनक परिणाम कैँ मिथिलाक सभ गोत्रपर स्वतः लागू नहि कएल जा

सकैत अछि। सामाजिक गोत्र हजार वर्षमे दत्तक, वंश-विच्छेद, नाम-स्थानान्तरण, समूह-विस्तार, अभिलेखीय त्रुटि आ जनसंख्या-मिश्रण सँ गुजरि सकैत अछि।

तैँ पोथीक 'गोत्र-निषेध = वाई-गुणसूत्रीय समानता सँ बचाव' कथन कैँ 'सम्भावित पितृवंशीय समरूपता कम करबाक सामाजिक तन्त्र' जेकाँ पुनर्लेखित करब अधिक उपयुक्त होयत। स्वास्थ्य-जोखिम केवल वाई-गुणसूत्रीय समानतासँ निर्धारित नहि होइत; निकट स्वजन विवाहमे प्रमुख आनुवंशिक प्रश्न सम्पूर्ण जीनोममे समान पूर्वज सँ प्राप्त प्रतिलिपिक सम्भावना अछि।

७.४ सम्बन्ध-गुणांक आ षष्ठी गणनाक समस्या

पोथीक किछु स्थानपर पीढ़ी-दूरी कैँ प्रत्यक्ष आनुवंशिक प्रतिशतसँ जोडल गेल अछि। आधुनिक जनन-विज्ञानमे 'पूर्वज सँ औसत आनुवंशिक योगदान', 'दू व्यक्तिक सम्बन्ध-गुणांक' आ 'सन्तानक अन्तःप्रजनन-गुणांक' तीन अलग माप छथि। पाँच पीढ़ी ऊपरक एक पूर्वजक अपेक्षित व्यक्तिगत योगदान एक गणना अछि; दू प्रस्तावित विवाह-साथीक साझा पूर्वज द्वारा समान-वंशीय अंशक सम्भावना दोसर गणना; आ हुनक सन्तानमे समजातता तेसर। तैँ एकल '१/६४' जेकाँ मान सभ प्रसंगमे लागू नहि होइत। पञ्जीक षष्ठी नियम कैँ सामाजिक-वंशावली गणना रूपमे प्रस्तुत करब उचित अछि; आनुवंशिक पुनर्गणना अलग विशेषज्ञ परिशिष्टमे हो।

७.५ 'विश्वक अद्वितीय' दाबी: तुलनाक सही इकाई

चीनक कुल-पोथी परम्परा शताब्दीसँ पुरुष-वंश, संस्थापक पूर्वज, शाखा, सम्पत्ति, अनुष्ठान आ कुल-स्मृति सुरक्षित करैत रहल अछि। इंग्लैण्डक राजकीय हेरल्ड संस्था मध्ययुगोत्तर कालसँ आधिकारिक वंश-पंजी, कुलचिह्न आ वंशाधिकार सत्यापन करैत रहल अछि। यहूदी, अरब, आ अन्य संस्कृतिसभमे सेहो दीर्घ वंश-स्मृति परम्परा अछि। एहि कारण पञ्जी कैँ 'दुनियामे एकल वंशावली परम्परा' कहब इतिहाससम्मत नहि।

मुदा पञ्जीक विशिष्टता एकल गुणमे नहि, गुण-समूहमे खोजल जा सकैत अछि: क्षेत्रीय जाति-समुदायक विस्तृत वंश-अभिलेख; गोत्र—मूल—मातृसम्बन्धक संयुक्त विवाह-गणना; पेशेवर पञ्जीकार; सिद्धान्त-पत्र; शाखा-पुस्तक; दूषण अभिलेख; ग्राम-भूगोल; विद्वत्

पदवी; आ दीर्घकालिक सामाजिक प्रयोग। ‘अनुपम संयोजन’क दाबी ‘पूर्णतः अद्वितीय संस्था’क दाबी सँ अधिक बचावयोग्य अछि।

७.६ गङ्गेश उपाध्याय: जे पुष्ट अछि, जे अद्यापि शोध-विषय अछि

नव्य-न्याय इतिहासक मान्य आधुनिक अध्ययन गङ्गेश केँ चौदहम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे मिथिलाक प्रमुख दार्शनिक मानैत अछि। हुनक ‘तत्त्वचिन्तामणि’ प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द—चारि प्रमाणक अत्यन्त सूक्ष्म विवेचन करैत अछि। आधुनिक दार्शनिक इतिहास एतबासँ परिचित अछि जे मिथिलाक वंशीय अभिलेख गङ्गेशक पारिवारिक जीवन सम्बन्धी सूचना दैत अछि। एहि स्तरपर पोथीक पञ्जी–नव्य-न्याय सम्बन्ध शोधयोग्य आ सम्भावनाशील अछि।

मुदा पिता-मृत्युक पाँच वर्ष बाद जन्म, मातृजाति, पत्नी-जाति आ विशिष्ट दूषण-श्रृंखला जेकाँ असाधारण दाबी सभ लेल केवल आधुनिक लिप्यन्तरण पर्याप्त नहि। मूल पाण्डुलिपिक उच्च-गुणवत्ताक छवि, लेखन-हाथक पहचान, फोलियो क्रम, पाठ-भेद, पञ्जीकार परिवारक स्वतंत्र प्रति, लिपि-काल, स्याही/पात्रक परीक्षण जहाँ सम्भव हो, आ दीनिशचन्द्र भट्टाचार्य आदि द्वारा उद्धृत वंश-सामग्रीसँ पंक्ति-दर-पंक्ति तुलना अपेक्षित अछि। एहि पद्धतिसँ पोथीक दाबी कमजोर नहि, उलटँ विश्वस्तरीय शोध-प्रश्न बनत।

८. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

८.१ रस: अभिलेखक भाव-संरचना

पञ्जी मूलतः काव्य नहि; तथापि पोथी ओकरा व्याख्यात्मक गद्यक माध्यमसँ भावात्मक इतिहास बनबैत अछि। मुख्य स्थायी प्रभाव ‘अद्भुत’ अछि—सैकड़ों ग्राम, असंख्य पीढ़ी, संक्षिप्त सूत्र, पाण्डुलिपि-जाल आ दीर्घ स्मृति पाठकमे विस्मय जगबैत अछि। पोथीक शीर्षकीय ‘आश्चर्यजनक अन्तर्दृष्टि’ एहि अद्भुत भाव पर टिकल अछि।

दूषण पञ्जी, बाल-विवाह, बहुविवाह, विधवा-जीवन, जातीय अपमान आ स्त्री-अदृश्यताक प्रसंग ‘करुण’ भाव उत्पन्न करैत अछि। मुदा शोध-लेखनमे करुणा प्रमाणक स्थान नहि ले; करुण अनुभूति पाठक केँ प्रश्न दिस लए जाए, निष्कर्ष स्वयं साक्ष्य सँ आबए। डिजिटल संरक्षण आ पाण्डुलिपि-बचावक वर्णनमे ‘वीर’ वा

उद्यमात्मक भावक आभास अछि, पर एहि भावक संतुलन आलोचनात्मक दूरीसँ रहबाक चाही।

८.२ ध्वनि: जे लिखल नहि, से इतिहासमे कोना सुनाइत अछि

एहि पोथीक सबसँ समृद्ध भारतीय आलोचनात्मक पठन ध्वनि-दृष्टिसँ सम्भव अछि। पञ्जी कहैत अछि—फलाँक पुत्र, फलाँ मूलक कन्याक संग विवाह, फलाँ ग्राम। मुदा एहि न्यून वाक्यक पार्श्वमे बहुत किछु अनकहल अछि: स्त्रीक जन्मग्राम, विवाह-दूरी, परिवारक प्रतिष्ठा, प्रवास, आर्थिक स्थिति, ज्ञान-केंद्र, ग्रामक परस्पर सम्पर्क, सामाजिक निषेध, आ कखनो सामाजिक संकट।

स्त्रीक नाम नहिओँ हो, तिनकर सम्बन्ध अभिलेखक अनिवार्य कड़ी अछि। ई ‘अभावक ध्वनि’ अछि। दूषण पञ्जीमे मुख्य पञ्जी सँ निष्कासित वा कलंकित सम्बन्ध बचि गेल—ई ‘प्रतिरोधक ध्वनि’ अछि। लोकनाम आ ग्राम्य उच्चारण आधिकारिक संस्कृतीकरणक नीचे जीवित भाषिक संसारक ध्वनि अछि। पञ्जीक वास्तविक साहित्यिक मूल्य एहि अनकहल सामाजिक अर्थमे अछि।

८.३ वक्रोक्ति: वैचारिक रूपकक शक्ति आ खतरा

‘आनुवंशिक मानचित्रण’, ‘जीवित जीनोम’, ‘काला पोथी’, ‘सामाजिक गणन-विधि’, ‘मानव डेटाबेस’—ई सभ पोथीक वक्रोक्तिपूर्ण वैचारिक उपकरण छथि। ई रूपक पाठक कैँ पुरान पञ्जी आधुनिक ज्ञान-भाषासँ जोड़ि बुझबैत अछि। रूपकक सफलताक कारण ई अछि जे पञ्जी वास्तवमे सम्बन्ध-सूचना, नियम आ पुनरावृत्त सत्यापन रखैत अछि।

मुदा वक्रोक्तिक दोष तखन होइत अछि जखन रूपक शब्दार्थ बनि जाय। ‘जीनोम’ कहला मात्र पञ्जी जैविक अनुक्रम नहि बनि जाइत। ‘डेटाबेस’ कहला मात्र पाण्डुलिपि आधुनिक रिलेशनल आँकड़ा-संग्रहक सभ गुण धारण नहि करैत। तैँ वक्रोक्ति पाठकक बोध खोलय, विधागत सीमा नहि ढाकय।

८.४ औचित्य: पोथीक आलोचनाक निर्णायक कसौटी

क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचार एहि पोथीपर असाधारण रूपेँ लागू होइत अछि। जहाँ अभिलेखीय प्रमाण मजबूत अछि, ओतय दृढ़ कथन उचित अछि। जहाँ वंश-पुनर्निर्माण

अछि, ओतय सम्भावनात्मक भाषा उचित। जहाँ आधुनिक आनुवंशिकी केवल तुलनात्मक रूपक अछि, ओतय वैज्ञानिक अनिवार्यता घोषित करब अनौचित्य। जहाँ दूषण पञ्जीक एक प्रविष्टि समाजक जटिलता देखबैत अछि, ओतय समूचा मिथिलाक सहिष्णुता वा असहिष्णुता सिद्ध करब अनौचित्य।

एहि दृष्टिसँ पोथीक सर्वाधिक आवश्यक सम्पादकीय संशोधन 'दाबी आ प्रमाणक औचित्य' अछि। अतिशयोक्तिपूर्ण विशेषण घटेनाइ शैलीक हानि नहि; उलटँ मूल अभिलेखक अद्भुत शक्ति स्वयं उभरि सकत।

९. पाश्चात्य आलोचनात्मक पद्धतिसँ मूल्यांकन

९.१ संरचनावाद आ वैवाहिक गठबन्धन

वंशावलीक पितृरेखा मात्र नहि, विवाहक माध्यमसँ दू वंश-समूहक सम्बन्ध पञ्जीक केन्द्र अछि। संरचनात्मक मानवशास्त्रक वैवाहिक गठबन्धन-सिद्धान्त एहि सामग्रीपर उपयोगी अछि। गोत्र-निषेध, प्रवर, सपिण्ड दूरी, मूलग्राम आ मातृसम्बन्ध सभ मिलि विवाहक सम्भावित क्षेत्र बनबैत अछि। पञ्जी वास्तवमे 'केकरा संग विवाह नहि'क अभिलेख मात्र नहि, 'समुदाय कोना सम्बन्धक जाल बनबैत अछि' तकर दस्तावेज अछि।

मुदा पञ्जीक स्थानीय नियम कँ सार्वभौम संरचनावादी सूत्रमे विलीन नहि करबाक चाही। मिथिलाक मूल, पञ्जीकार, सिद्धान्त-पत्र, श्रोत्रिय/योग्य/पञ्जीबद्ध श्रेणी आ सौराठ जेकाँ संस्थागत प्रसंग एकरा विशिष्ट ऐतिहासिक रूप दैत अछि।

९.२ सामूहिक स्मृति: जीवित वातावरण आ स्मृति-स्थल

पञ्जी परिवारक निजी स्मृति कँ सामुदायिक, पेशेवर आ दस्तावेजीकृत स्मृतिमे बदलैत अछि। एतय सामूहिक स्मृतिक सिद्धान्त अत्यन्त उपयुक्त अछि। पञ्जी केवल अतीतक संग्रह नहि; विवाहक वर्तमान निर्णयमे सक्रिय अभिलेख छल। तँ ई स्मृति-स्थल सेहो अछि आ स्मृति-वातावरण सेहो। डिजिटल रूपान्तरण एहि सम्बन्ध कँ बदलैत अछि: जे अभिलेख पहिने पञ्जीकारक व्याख्या बिना कठिन छल, से व्यापक पाठकक हाथमे पहुँचैत अछि। लोकतंत्रीकरणक संग संदर्भ-हानिक जोखिम सेहो बढ़ैत अछि।

९.३ ज्ञान आ सत्ता

पञ्जीकार केवल लेखक नहि, प्रमाणक द्वारपाल छलाह। केकर वंश वैध, केकर विवाह उचित, केकर कुलक स्थिति की—एहि निर्णयमे अभिलेख आ प्राधिकारी मिलैत छथि। ज्ञान-सत्ता दृष्टिसँ ई महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा एहि सिद्धान्तक प्रयोग करैत प्रत्येक अभिलेख कैं दमनकारी कहि देब सरलीकरण होयत। पञ्जी शक्ति-वितरणक उपकरण छल, मुदा ओकरा बिना विस्तृत सामाजिक स्मृति सेहो नष्ट भऽ सकैत छल। आलोचनाक काज द्वैत देखब अछि: नियंत्रण आ संरक्षण एकहि संस्थामे सह-अस्तित्व रखि सकैत अछि।

९.४ प्रतीकात्मक पूँजी आ वैवाहिक अर्थनीति

श्रोत्रिय प्रतिष्ठा, विद्वत् उपाधि, कुल-रैंक आ आर्थिक संसाधन वैवाहिक बाजारमे एक-दोसरासँ विनिमयशील मूल्य धारण करैत देखाइत अछि। उच्च प्रतिष्ठा पर कम आर्थिक साधन आ निम्नतर वंश-स्थिति पर अधिक आर्थिक पूँजी जखन गठबन्धन बनबैत अछि, तखन पञ्जी केवल वंश नहि, प्रतीकात्मक पूँजीक लेखाजोखा बनैत अछि। आठम अध्यायक स्थिति-अर्थनीति एहि बिन्दुपर विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

९.५ स्त्री-विमर्श: सम्बन्धक केन्द्र, नामक परिधि

पञ्जीक स्त्री-विमर्शक सबसँ सटीक निष्कर्ष ई नहि जे स्त्री अनुपस्थित छथि; बल्कि ई जे स्त्री सम्बन्ध-संरचनाक केन्द्रमे रहितो नामिक/वर्णनात्मक परिधिपर राखल गेल छथि। कन्याक पितृवंश, मातृवंश आ विवाह-दिशा बिना पञ्जीक मूल कार्य सम्भव नहि। मुदा अधिकांश स्त्रीक निजी नाम, शिक्षा, पेशा, इच्छा वा स्वामित्व-वृत्तान्त नहि भेटैत।

किछु स्त्री-नाम वा औपनिवेशिक सम्पत्ति कारण नाम-दर्जक अपवाद बहुमूल्य छथि। हुनका ‘नियम टूटबाक बिन्दु’ रूपमे पढ़ल जाय, ‘समान प्रतिनिधित्व’क प्रमाण रूपमे नहि। एहि भेदसँ पोथीक नारी-अध्ययन अधिक प्रखर होयत।

९.६ प्रतिलोम-अभिलेख आ परिधीय इतिहास

दूषण पञ्जी मुख्य सामाजिक आदर्शक उलटा पृष्ठ अछि। जाति-पार सम्बन्ध, देवदासी, मुस्लिम, शिल्पकार, अज्ञात वंश, पुनर्विवाह अथवा सामाजिक उल्लंघन जँ दर्ज अछि, तँ इतिहासकारक लेल ई अमूल्य अछि। मुदा ‘कलंक’क श्रेणी अपन समयक

सत्ता-भाषा अछि। आधुनिक शोधकर्ता अभिलेखक शब्द कैं उद्धृत करए, पर ओकर मूल्य-निर्णय अपन विश्लेषणमे स्वतः स्वीकार नहि करए।

१०. नव्य-न्यायीय ज्ञानमीमांसासँ पञ्जीक पुनर्परीक्षण

१०.१ प्रमेय: पञ्जी वास्तवमे की सिद्ध करैत अछि?

नव्य-न्यायीय अनुशासनक पहिल प्रश्न अछि—प्रमेय की अछि? पञ्जी सभसँ विश्वसनीय रूपेँ व्यक्ति-सम्बन्ध, वंश-श्रृंखला, विवाह-सूत्र, ग्राम-सम्बन्ध, सामाजिक उपाधि आ अभिलेखीय वर्गीकरणक दाबी करैत अछि। एहि तथ्यसँ ‘आनुवंशिक शुद्धता’, ‘स्वास्थ्यकर विवाह’, ‘ऐतिहासिक जातीय उदारता’ वा ‘विश्वक सर्वाधिक वैज्ञानिक प्रणाली’ स्वतः सिद्ध नहि होइत। प्रत्येक अतिरिक्त निष्कर्ष अलग अनुमान अछि, जकर हेतु आ व्याप्ति देखेबाक पड़त।

१०.२ शब्द-प्रमाण: पञ्जीकार आप्त कखन?

शब्द-प्रमाणक विश्वसनीयता वक्ताक ज्ञान आ सत्याभिलाषापर निर्भर मानल जाइत अछि। पञ्जीकारक वंशानुगत पद मात्र आप्तता सिद्ध नहि करैत। आप्तता लेल मूल अभिलेखक पहुँच, लिपि-ज्ञान, नियम-ज्ञान, भ्रष्टाचार सँ दूरी, पारदर्शी सन्दर्भ, अन्य पञ्जीसँ मिलान आ त्रुटि-सुधारक परम्परा आवश्यक अछि। पोथी स्वयं शुल्क, भ्रष्टाचार आ गढ़न्तक जोखिमक उल्लेख करैत अछि; अतएव ओकर आलोचनात्मक निष्कर्ष ई होयबाक चाही जे संस्था स्वयं त्रुटि-निरोधक मानक मांगैत छल।

१०.३ अनुमान: पञ्जी निर्णयक तर्क-रूप

एक आदर्श वैवाहिक निर्णयक अनुमानात्मक रूप एहि प्रकार अछि: प्रस्तावित विवाह पक्ष; साझा निषिद्ध सम्बन्ध साधक हेतु; नियम-ग्रन्थ वा पञ्जी-परम्परासँ स्थापित निषेध-व्याप्ति; पूर्वज-श्रृंखला द्वारा हेतुक पक्षमे उपस्थितिक प्रमाण; आ निष्कर्ष रूपेँ अयोग्यता। जँ निषिद्ध सम्बन्ध नहि भेटय, तखन ‘अभाव’क ज्ञान सेहो महत्त्वपूर्ण अछि—मुदा अभाव सिद्ध करबाक लेल खोज-क्षेत्र पूर्ण होयबाक चाही। अपूर्ण पञ्जीमे ‘नहि भेटल’ आ ‘नहि अछि’ एकहि बात नहि।

१०.४ व्याप्ति: सामाजिक नियम आनुवंशिक नियम नहि

‘सगोत्र विवाह निषिद्ध’ एक सामाजिक-धर्मशास्त्रीय व्याप्ति हो सकैत अछि। मुदा ‘सगोत्र होयत तँ हानिकारक आनुवंशिक निकटता अवश्य होयत’ एहन व्याप्ति स्वतंत्र वैज्ञानिक प्रमाण बिना सिद्ध नहि। एहिना ‘सात पीढ़ी दूर होयत तँ आनुवंशिक जोखिम नगण्य’ सार्वभौम व्याप्ति नहि। जनसंख्या आकार, पुनरावृत्त अन्तर्विवाह, अनेक साझा पूर्वज आ संस्थापक प्रभाव परिणाम बदलि सकैत अछि।

१०.५ उपाधि: नियमक सीमा देखेनिहार अवधारणा

नव्य-न्यायक उपाधि एहि पोथी लेल अत्यन्त फलदायी अछि। जखन कोनो साधारण व्याप्ति अतिशय व्यापक हो, उपाधि ओकर सीमा देखबैत अछि। उदाहरणतः ‘एक मूल = एक हालक जैविक वंश’क कथनपर दत्तक, लुप्त शाखा, सामाजिक पुनर्वर्गीकरण, पाठ-त्रुटि, समान नाम, अप्रतिबद्ध पितृत्व वा दीर्घ कालान्तर उपाधि बनि सकैत अछि। ‘पञ्जीमे नाम नहि = व्यक्ति अस्तित्वहीन’क कथनपर स्त्रीक नाम-अदृश्यता उपाधि अछि। ‘दूषण प्रविष्टि = वास्तविक जैविक मिश्रण’क कथनपर सामाजिक अफवाह, दण्डात्मक वर्गीकरण वा प्रतीकात्मक कलंक उपाधि हो सकैत अछि।

१०.६ अवच्छेदक: दाबी कैँ सीमित करबाक कला

नव्य-न्यायीय भाषा जटिल वस्तु कैँ अवच्छेदक द्वारा सीमित करैत अछि—ककर सम्बन्धमे, कोन गुण द्वारा, कोन प्रसंगमे कथन सत्य अछि। पोथीक आगामी संस्करण एहि सिद्धान्तसँ सीधा लाभ लऽ सकैत अछि। ‘पञ्जी विश्वक सबसँ पुरान सामाजिक जाल अछि’क बदला ‘उपलब्ध मिथिला-पञ्जी परम्पराक अनुसार, चौदहम शताब्दी सँ संस्थागत रूपेँ विकसित, पितृवंशीय-मातृसम्बन्धीय विवाह-गणना करैत दीर्घजीवी क्षेत्रीय अभिलेख’—ई अधिक अवच्छिन्न, सटीक आ बचावयोग्य कथन अछि।

१०.७ अभाव-प्रमाण: स्त्री आ मौनक पठन

अभावक ज्ञान लेल आधार-स्थानक पूर्णता जरूरी अछि। स्त्रीक नाम मुख्य पञ्जीमे नहि भेटब तखनहि ‘नाम दर्ज नहि छल’ सिद्ध करैत अछि जखन सम्बन्धित खण्ड पूर्ण उपलब्ध हो। एहि अभाव सँ ‘स्त्री सामाजिक रूपेँ महत्त्वहीन छल’ निष्कर्ष निकालब अवैध अनुमान होयत। उलटेँ विवाह-गणनामे स्त्रीक सम्बन्धक व्यापकता देखबैत अछि जे कार्यात्मक महत्त्व बहुत छल। नव्य-न्याय एतय स्त्री-विमर्शक सटीकता बढ़बैत अछि।

११. विदेह समानान्तर इतिहास-पद्धतिक आधारपर समीक्षा

११.१ समानान्तरता: प्रतिस्थापन नहि, सह-पाठ

विदेह समानान्तर इतिहासक सबसँ उपयोगी सिद्धान्त ई अछि जे स्थापित इतिहासक बगलमे उपेक्षित स्रोतक स्वतंत्र रेखा खींचल जाय। पञ्जी, ग्राम-सूची, लोकनाम, उपटीप, शाखा-पुस्तक, दूषण-अभिलेख, मिथिलाक्षर पाण्डुलिपि आ डिजिटल प्रतिलिपि साहित्यिक कैननक बाहरक स्रोत छथि। मुदा समानान्तर रेखा अन्ततः अन्य स्रोतसँ मिलान करए। जँ पञ्जी राजाक नाम दैत अछि तँ राजकीय इतिहाससँ; जँ विद्वानक नाम दैत अछि तँ ग्रन्थ-परम्परासँ; जँ ग्राम दैत अछि तँ भू-अभिलेखसँ; जँ सामाजिक विवाह दैत अछि तँ स्थानीय मौखिक स्मृति आ अन्य वंशावलीसँ।

११.२ संस्थान-चेतना

पोथीक एक बड़ गुण ई अछि जे इतिहास कैं केवल व्यक्ति वा ग्रन्थक इतिहास नहि मानैत। पञ्जीकार, सौराठ सभा, श्रोत्रिय वर्ग, राजसत्ता, प्रकाशन संस्था, साहित्य अकादमी, डिजिटल पत्रिका, परिवार-अभिलेख—ई सभ ज्ञानक संस्थान छथि। विदेह पद्धति प्रश्न करैत अछि: के स्रोत प्रकाशित भेल? के दबि गेल? केकर भाषा मानकीकृत भेल? केकर लोकनाम ‘अशुद्ध’ बुझल गेल? केकर अभिलेख निजी राखल गेल? एहि प्रश्नसँ इतिहास लेखकीय जीवनी सँ सामाजिक ज्ञान-व्यवस्था दिशि बढ़ैत अछि।

११.३ बहुभाषिक आ बहुलिपिक इतिहास

मिथिला इतिहास संस्कृत, मैथिली, मिथिलाक्षर, देवनागरी, फारसी, उर्दू, नेपाली आ औपनिवेशिक अंग्रेजी दस्तावेजक पारस्परिक संसार अछि। पञ्जीक देवनागरीकरण पहुँच बढ़बैत अछि, मुदा मूल मिथिलाक्षर रूपक ध्वनि, वर्तनी, नाम-रूप आ लिपिकीय विशेषता बचेनाइ सेहो जरूरी। समानान्तर इतिहासमे ‘मानकीकृत पाठ’ संग ‘मूल पाठ’क स्थान समान होयबाक चाही।

११.४ सूक्ष्म इतिहास

एक ग्रामक नाम, एक विवाह, एक उपाधि, एक लोकनाम, एक स्त्रीक दुर्लभ नाम, एक दूषण-प्रविष्टि—एहि लघु सूचनासँ व्यापक संरचना पढ़नाइ विदेह पद्धतिक सशक्त पक्ष अछि। अध्याय ९–१६ एहि कारण पोथीक केन्द्रस्थ उपलब्धि छथि। मुदा सूक्ष्म

इतिहासक मूल अनुशासन ई अछि जे लघु प्रमाणक प्रसंग पुनर्निर्मित हो; एक उदाहरण कैं समूचा युगक प्रतिनिधि नहि मानल जाय।

११.५ प्रतिकैननिकता आ आत्म-आलोचना

कैननक आलोचना करैत नव कैनन बनि जाएब सरल अछि। जँ स्थापित साहित्यिक संस्था उपेक्षा कएलक, तँ ओकर आलोचना उचित; मुदा वैकल्पिक संस्थाक अपन दाबी सेहो समान कसौटीपर जाँचल जाय। विदेह पद्धतिक सर्वोत्तम रूप आत्म-आलोचनात्मक होयत—अपन डिजिटल सम्पादन, पाठ-चयन, शीर्षक, वैज्ञानिक रूपक आ राजनीतिक निष्कर्ष सभ कैं खुला परीक्षण लेल रखत। एहि आत्म-आलोचनामे पोथीक दीर्घकालिक विश्वसनीयता निहित अछि।

१२. पोथीक तथ्य, तर्क आ दाबी-स्तरक समेकित परीक्षण

१२.१ अत्यन्त मजबूत क्षेत्र

पहिल मजबूत क्षेत्र पञ्जीक पारिभाषिक आ संस्थागत पुनर्निर्माण अछि—गोत्र, मूल, मूलग्राम, बीजी पुरुष, उठेढ़, षष्ठी, पञ्जीकार, सिद्धान्त-पत्र, शाखा-पुस्तक, दूषण पञ्जी। दोसर मजबूत क्षेत्र अध्याय ९–१६क सूक्ष्म पाठ अछि, जाहिमे विशिष्ट ग्राम, वंश, उपाधि, नाम, विवाह आ सन्दर्भ-संकेतक देखाओल गेल अछि। तेसर मजबूत क्षेत्र डिजिटल संरक्षणक इतिहास आ आवश्यकता अछि। चारिम मजबूत क्षेत्र पञ्जी कैं सामाजिक सत्ता आ मानवीय पीड़ासँ मुक्त गौरवगाथा नहि, विवादित संस्था रूपमे देखबाक इच्छाशक्ति अछि।

१२.२ मध्यम बलक क्षेत्र—जाहि लेल बाह्य पुष्टिक आवश्यकता अछि

राजकीय स्थापना-कथा, विशिष्ट पञ्जीकार नियुक्ति, सामाजिक श्रेणीकरणक काल, आर्यभट वंश, विद्यापति-वंश, गङ्गेश परिवार, विशिष्ट राजकीय प्रसंग, कुल-परिवर्तन आ ग्राम-प्रवासक दाबी पञ्जी-साक्ष्य रूपमे महत्त्वपूर्ण छथि। मुदा एकर ऐतिहासिक सत्यापन लेल स्वतंत्र स्रोतक समानान्तरता आवश्यक अछि। पोथी कतिपय ठाम एहि भेदक उल्लेख करैत अछि, मुदा सभ ठाम एकसमान स्रोत-लेबल नहि अछि।

१२.३ कमजोर वा पुनर्लेखन योग्य क्षेत्र

‘४५० ईस्वी सँ अखण्ड लिखित अभिलेख’, ‘जीनोमक प्रत्यक्ष पूर्वरूप’, ‘आधुनिक आनुवंशिकी जेकाँ स्वस्थ विवाह सुनिश्चित करब’, ‘विश्वक सर्वाधिक/एकमात्र प्रणाली’, ‘पञ्जी स्वयं जनसंख्या आनुवंशिकी प्रबन्धन प्रोटोकॉल छल’ जेकाँ कथन वर्तमान रूपमे अधिक व्यापक छथि। एहि सभ कैं रूपक, कार्यात्मक समानता वा शोध-परिकल्पना रूपमे पुनर्लेखित करब चाही।

१२.४ संख्या-संगति

पोथीक विभिन्न अध्यायमे पञ्जी, मूल, गोत्र, शाखा, पाण्डुलिपि-छवि आ वर्ष-संख्या विभिन्न सन्दर्भमे आबैत अछि। ई सम्भव अछि जे भिन्न संख्या भिन्न उपसमूह सूचित करैत हो; मुदा पाठक लेल स्पष्ट ‘संख्या-कोश’ चाही। उदाहरणतः कुल गोत्र, प्रमुख गोत्र, व्यवस्थित मूल, समस्त मूल, श्रोत्रिय पञ्जी, अन्य पञ्जी, डिजिटल छवि आ व्यक्ति-अभिलेख—प्रत्येकक परिभाषा आ स्रोत अलग देल जाय।

१२.५ अपूर्ण अंक आ प्रतिलिपि-दोष

किछु ठाम ‘१, वर्ष’, ‘१०, पाण्डुलिपि’ जेकाँ अंक अपूर्ण देखाइत अछि। एहन त्रुटि मात्र टंकण-दोष नहि; ऐतिहासिक दाबी बदलि सकैत अछि। डिजिटल मूल सँ अंक-पुनर्सत्यापन आवश्यक अछि। एहिना पृष्ठ-सन्दर्भमे अधूरा ‘३.’ रूप, स्रोत-फाइलक नाम, कार्य-नोट वा आन्तरिक संक्षेप मुद्रित आलोचनात्मक संस्करणमे साफ कएल जाय।

१३. साहित्यिक संरचना आ सम्पादकीय मूल्यांकन

१३.१ विधा-संकरता: पोथीक शक्ति

ई ग्रन्थ मोनोग्राफ, प्रतिवेदन, अध्ययन-सहायिका, प्रश्नोत्तर, शोध-निबन्ध, डेटा-संग्रह आ अभिलेखीय घोषणापत्रक संकर रूप अछि। सामान्य सम्पादकीय दृष्टिसँ ई असमानता बुझा सकैत अछि; मुदा विषयक प्रकृति कारण ई शक्ति सेहो अछि। पञ्जी स्वयं बहुस्तरीय अभिलेख अछि, तैँ पोथीक बहुविध रूप ओकर विषयक बहुलता प्रतिबिम्बित करैत अछि।

१३.२ पुनरावृत्ति: पोथीक मुख्य संरचनात्मक कमजोरी

अध्याय १—८मे संस्थापन-कथा, गोत्र-मूल, सपिण्ड, पञ्जीकार, जीनोम रूपक आ डिजिटल भविष्य बारम्बार लौटैत अछि। अध्याय १२—१३ फेर अनेक मूल परिभाषा दोहरबैत अछि। अध्याय १८—२०मे दूषण पञ्जी आ गङ्गेश प्रसंग तीन अलग प्रतिवेदनमे व्यापक रूपेँ पुनरावृत्त अछि। शोध-पत्रिका-जेकाँ कसावट लेल प्रत्येक अध्यायक 'नव योगदान' स्पष्ट कऽ पुनरावृत्त पृष्ठभूमि एक साझा प्रारम्भिक अध्यायमे सीमित होयबाक चाही।

१३.३ शीर्षक आ अति-विशेषण

'सम्पूर्ण', 'सर्वाधिक', 'अभूतपूर्व', 'विश्वस्तरीय', 'अतुलनीय', 'पूर्ण अध्ययन' जेकाँ विशेषण बार-बार आबैत अछि। अभिलेख स्वयं विशाल अछि; तकर मूल्य सिद्ध करबाक लेल विशेषणक आवश्यकता कम अछि। पश्चिमी शोध-पत्रिका शैलीमे शीर्षक वर्णनात्मक, दाबी सीमित आ प्रमाण-प्रधान होइत अछि। उदाहरणतः 'पञ्जी-प्रबन्धक आनुवंशिक समकक्षता'क बदला 'पञ्जी-प्रबन्धक वंशावली गणना आ आनुवंशिक रूपक' अधिक सटीक होयत।

१३.४ प्रकरण-अध्ययनक साहित्यिक शक्ति

आर्यभट, गङ्गेश, विद्यापति, लखिमा, विशिष्ट पञ्जीकार, ग्राम-समूह, लोकनाम आ दूषण प्रविष्टि पोथीक दीर्घ सैद्धान्तिक विवेचन केँ मानवीय चेहरा दैत अछि। विशेषतः जखन कोई संक्षिप्त पञ्जी-पंक्ति सँ एक वंश, ग्राम, पेशा वा विसंगति खुलैत अछि, तखन गद्य जीवंत होइत अछि। आगामी संस्करणमे कम संख्या मे, पर अधिक स्रोत-समीक्षा सहित प्रकरण-अध्ययन पोथीक प्रभाव बहुत बढ़ा सकैत अछि।

१३.५ आँकड़ा आ आख्यानक सम्बन्ध

पोथीक श्रेष्ठ पृष्ठ ओ छथि जतय आँकड़ा पहिले आ व्याख्या बादमे अछि। जतय व्याख्या आँकड़ा सँ पहिने निष्कर्ष तय कऽ लैत अछि, ओतय पाठकक भरोसा घटैत अछि। पश्चिमी शोध-विधि, नव्य-न्याय आ भारतीय औचित्य—तीनू एहि बिन्दुपर एकमत छथि: प्रमाणक दृश्यता निष्कर्षक वैधता बढ़बैत अछि।

१४. पारिभाषिक आ भाषिक निखार-परीक्षण

पोथी मुख्यतः अंग्रेजीमे लिखल अछि, मुदा ओकर विषय मैथिली-संस्कृत-मिथिलाक्षर परम्पराक पारिभाषिक शब्द पर निर्भर अछि। एहि कारण शब्द-मानकीकरण स्वयं शोधक हिस्सा अछि। वर्तमान पाठमे 'पञ्जी', 'पांजी', 'पन्जी'क रोमन रूप; 'दूषण/दोषन'; 'उठेढ़/उतेढ़'; 'उपटीप'; 'मूल/मूलग्राम'; 'नागरामा/नगरामी'; 'पम्पिला' आदि रूपांतर देखाइत अछि। किछु भिन्नता स्रोत-पाठक वास्तविक भिन्नता हो सकैत अछि, किछु लिप्यन्तरणक। दुनूकेँ अलग चिन्हित करबाक चाही।

आलोचनात्मक संस्करण लेल पहिल बेर प्रत्येक शब्दक मानक देवनागरी रूप, मूल मिथिलाक्षर रूप जहाँ उपलब्ध, वैज्ञानिक लिप्यन्तरण, लोक-उच्चारण आ अर्थ एक कोशमे देल जाय। एकर बाद मुख्य गद्य केवल मानक रूप उपयोग करए। ग्राम-नामक लोक रूप अवश्य बचाओल जाय, कारण ओ स्वयं भाषिक इतिहासक स्रोत अछि।

'आनुवंशिक', 'गुणसूत्र', 'वंश-स्मृति', 'अभिलेख', 'सम्बन्ध-गणना', 'आँकड़ा-संग्रह', 'डिजिटल प्रतिरूप', 'स्रोत-श्रृंखला' जेकाँ देसी/संस्कृतनिष्ठ पद मुख्य गद्यक भार वहन कऽ सकैत अछि। तकनीकी अंग्रेजी पद आवश्यक हो तखन ओकर मूल रूप कोष्ठकमे देनाइ उचित अछि। एहि रीति सँ मैथिली शोध-भाषा अनुवाद मात्र नहि, अवधारणा-निर्माणक भाषा बनैत अछि।

१५. चारि पद्धतिक संयुक्त निष्कर्ष

भारतीय काव्यशास्त्र कहैत अछि—पोथीक वास्तविक साहित्यिक शक्ति ओकर ध्वन्यमान सामाजिक संसार आ वैचारिक रूपकमे अछि; औचित्य अतिशयोक्तिक सीमा तय करत। पाश्चात्य आलोचना कहैत अछि—पञ्जी स्मृति आ सत्ता, संरक्षण आ नियंत्रण, वंश आ प्रतिष्ठा, स्त्री-उपस्थिति आ स्त्री-अदृश्यताक द्वन्द्वात्मक संस्था अछि। नव्य-न्याय कहैत अछि—प्रत्येक दाबी लेल प्रमेय, प्रमाण, व्याप्ति, उपाधि आ अवच्छेदक स्पष्ट करू; 'नहि भेटल' कैं 'नहि अछि' नहि मानू; प्राधिकारी कैं प्रमाणक स्थान नहि दिअ। विदेह समानान्तर इतिहास कहैत अछि—ग्राम, लोकनाम, दूषण, स्त्री-सूत्र, मिथिलाक्षर, पञ्जीकार आ डिजिटल अभिलेख कैं मुख्य इतिहासक बराबर गंभीरतासँ पढ़ू, मुदा वैकल्पिक स्रोत कैं सेहो कठोर स्रोत-समीक्षासँ मुक्त नहि करू।

एहि चारू पद्धतिक संगम पोथीक मूल मूल्य कैं पुनर्परिभाषित करैत अछि। ई ग्रन्थक सर्वोत्तम दाबी ‘मिथिलाक पञ्जी आधुनिक डीएनए विज्ञान पहिनहि जानैत छल’ नहि। अधिक सुदृढ़ दाबी ई अछि जे मिथिलाक समाज अनेक शताब्दी धरि सम्बन्धक जटिल नियम, स्थानिक मूल, पितृवंश, मातृसम्बन्ध, विवाह-दूरी, सामाजिक स्थिति आ ऐतिहासिक स्मृति कैं पेशेवर अभिलेखक माध्यमसँ व्यवस्थापित करैत रहल; एहि अभिलेखमे सत्ता-संरचना सेहो अंकित अछि आ ओहि सत्ता सँ बाहर पड़ल लोकक अनपेक्षित चिह्न सेहो। ई दाबी स्वयं विश्व-इतिहासमे पर्याप्त महत्त्वपूर्ण अछि।

१६. अध्यायगत अंतिम निर्णय-सूची

अध्याय १ — सैद्धान्तिक आधार अत्यन्त उपयोगी; आनुवंशिक समतुल्यताक भाषा सीमित हो।

अध्याय २ — पोथीक सर्वाधिक सुव्यवस्थित सिद्धान्त-अध्याय; सूचना-स्तर, दस्तावेजी विधि आ नव्य-न्याय सशक्त।

अध्याय ३ — प्रकरण-अध्ययन प्रभावकारी; आर्यभट–गङ्गेश–विद्यापति दाबी लेल स्वतंत्र सत्यापनक अलग स्तर चाही।

अध्याय ४ — वर्गीकरण घन; स्रोत-निर्देश अधिक सूक्ष्म हो।

अध्याय ५ — सामाजिक शक्ति, अतिविवाह आ अर्थनीति खोलैत महत्त्वपूर्ण अध्याय; जैविक ‘शुद्धता’क भाषा इतिहासीकृत हो।

अध्याय ६ — प्रथागत विधान आ स्त्री-विदुषी प्रसंग महत्त्वपूर्ण; आधुनिक कानूनी अर्थ सँ भेद स्पष्ट हो।

अध्याय ७ — उत्कृष्ट शिक्षण-सहायिका; आधुनिक संगणकीय उपमा सीमित आ स्पष्ट हो।

अध्याय ८ — स्त्री, दूषण आ वैवाहिक अर्थनीतिक कारण पोथीक निर्णायक सामाजिक अध्याय।

अध्याय ९ — अभिलेखीय व्याकरण आ ग्राम-सूची पोथीक मूल शोध-शक्ति।

अध्याय १० — ग्राम-जाल, उपाधि आ विवाह-कोलोफन सूक्ष्म इतिहास लेल समृद्ध।

अध्याय ११ — परम्परा भीतर आधुनिकता प्रवेशक उत्कृष्ट दस्तावेजी अध्ययन।

अध्याय १२ — उपटीपक कारण पाठ-स्तर आ संशोधन-परम्परा स्पष्ट; डिजिटल संस्करण-विज्ञान लेल उपयोगी।

अध्याय १३ — व्यापक सन्दर्भ उपयोगी, मुदा पुनरावृत्ति घटाओल जाय।

अध्याय १४ — विदेह समानान्तर इतिहास-पद्धतिक सर्वाधिक सजीव प्रयोग; प्रतिकैननिक स्रोतक सत्ता-सीमा सेहो ध्यानमे रहय।

अध्याय १५ — नाम-विज्ञान, पेशा, स्त्री-सूत्र आ ग्राम्य भाषा अत्यन्त मूल्यवान।

अध्याय १६ — औपचारिक प्रविष्टि-व्याकरण आ परस्पर-सन्दर्भ विश्लेषण पोथीक तकनीकी शिखर।

अध्याय १७ — उत्कृष्ट समेकन; काल-गणना आ ऐतिहासिक परम्परा लेल दाबी-स्तर स्पष्ट करबाक आवश्यकता।

अध्याय १८ — दूषण पञ्जीक सामाजिक गहराइ शक्तिशाली; परिधीय समुदायक ‘आवाज’ आ अभिजात अभिलेखनक भेद रखय।

अध्याय १९ — नव्य-न्याय आ वंश-सिद्धान्तक सर्वाधिक विकसित संगम।

अध्याय २० — संस्थागत आलोचना आ अभिलेखीय नैतिकता तीक्ष्ण; असाधारण आरोप लेल दस्तावेजी प्रत्युत्तर-संरचना अनिवार्य।

आँकड़ा-परिशिष्ट — भविष्यक सर्वाधिक उपयोगी आधार; रचनाखाका, संस्करण, स्थायी पहचान-संख्या आ स्रोत-प्रमाणक कठोर मानकीकरण चाही।

१७. निष्कर्ष

‘डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला’क महत्त्व ओकर विशालता मात्रमे नहि, दृष्टि-परिवर्तनमे अछि। ई पञ्जी कैं विवाहक पुरान दफ्तरी पोथी सँ उठाकऽ ज्ञान-इतिहासक विषय बनबैत अछि। पोथी देखबैत अछि जे वंशावली एकहि समयमे स्मृति, नियम, भूगोल, प्रतिष्ठा, वैवाहिक बाजार, भाषा, पाण्डुलिपि, संस्था, लिंग-संरचना आ राजनीतिक इतिहास हो सकैत अछि। अध्याय ९–१६ एहि दाबीक ठोस अभिलेखीय आधार प्रदान

करैत अछि; अध्याय १८–२० अभिलेखक मौन, कलंक आ सत्ता कैं प्रश्न बनबैत अछि; पहिल दू अध्याय शोधक सैद्धान्तिक शब्दावली गढ़ैत अछि।

एकर स्थायी शैक्षिक मूल्य तखन सर्वाधिक होयत जखन पोथी अपन मूल प्रमाणक शक्ति पर अधिक भरोसा करत आ आधुनिक विज्ञानक प्रतिष्ठा उधार लेबाक आवश्यकता कम अनुभव करत। पञ्जी 'जीनोम' नहि होइतो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। ई जटिल सामाजिक वंश-सूचना प्रणाली अछि, जकर ऐतिहासिक आयु, ग्राम-घनत्व, विवाह-गणना, पेशेवर संरक्षकता, शाखा-अभिलेख, दूषण-रजिस्टर आ लिपिकीय परम्परा अपनेमे असाधारण अछि।

इतिहासक दृष्टिसँ ४५० ईस्वी धरि पहुँचल वंश-दाबी कैं पाँचम शताब्दी सँ अखण्ड पाण्डुलिपि-सततता नहि मानि, वंश-स्मृतिक गहराइ रूपमे जाँचल जाय। विज्ञानक दृष्टिसँ गोत्र–सपिण्ड संरचना कैं सामाजिक निकटता-नियमन मानि प्रत्यक्ष आनुवंशिक परीक्षण सँ अलग रखल जाय। नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ दाबी सभक अवच्छेदक स्पष्ट कएल जाय। साहित्यिक दृष्टिसँ अभिलेखक ध्वनि—विशेषतः स्त्री, ग्राम, लोकनाम आ दूषणक मौन इतिहास—कैं केन्द्र देल जाय। विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ पञ्जी कैं कैननक बाहरक विशाल स्रोत बनाओल जाय, मुदा आलोचनात्मक स्रोत-समीक्षा सँ मुक्त नहि कएल जाय।

एहि संशोधनक संग ई कृति मिथिला-अध्ययनक सीमा पार कऽ तुलनात्मक वंशावली, सामाजिक अभिलेख-विज्ञान, डिजिटल मानविकी, भारतीय ज्ञान-परम्परा आ ज्ञान-सत्ता अध्ययनमे दीर्घकालीन सन्दर्भग्रन्थ बनबाक क्षमता रखैत अछि। एकर मूल योगदान गौरवक घोषणामे नहि, अभिलेखक केवाड़ी खोलबामे अछि: जखन पञ्जीक सूत्र पढ़ल जाइत अछि, तखन केवल वंश नहि, पूरा समाज बोलैत अछि।

ग्रन्थसूची

१. (Decoding the Panji of Mithila: Surprising Insights from India and Nepal's Oldest Social Network)

२. (Genome Mapping: Panji-Prabandha of Mithila)

३. दूषण पञ्जी

४. (History of Navya-Nyaya in Mithila)

५. तत्त्वचिन्तामणि

६. (Jewel of Reflection on the Truth about Epistemology)

७. (Epistemology in Classical India: The Knowledge Sources of the Nyaya School)

८. (Classical Indian Metaphysics: Refutations of Realism and the Emergence of New Logic)

९. (Encyclopedia of Indian Philosophies: Nyaya-Vaisheshika up to Gangesa)

१०. (History of Dharmasastra)

११. (Consanguinity in Context)

१२. (The Elementary Structures of Kinship)

१३. (Structural Anthropology)

१४. (Homo Hierarchicus: The Caste System and Its Implications)

१५. (Purity and Danger)

१६. (On Collective Memory)

१७. (How Societies Remember)

१८. (The Archaeology of Knowledge)

१९. (Realms of Memory)

२०. नाट्यशास्त्र

२१. ध्वन्यालोक

२२. वक्रोक्तिजीवित

२३. औचित्यविचारचर्चा

२४. वर्णरत्नाकर

२५. (The Mithila in the Age of Vidyapati)

२६. (Religious Life of the Brahman: A Case Study of Maithil Brahmans)

२७. (Knowing from Words: Western and Indian Philosophical Analysis of Understanding and Testimony)

आलेख ४३ · पञ्जी, दर्शन, भाषा आ समानान्तर इतिहास

डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड २

सारांश

ई शोध-समीक्षा ५२१ पृष्ठ, ५६९२ अनुच्छेद आ लगभग १,०९,८४७ शब्द-टोकनवला स्रोत-पोथीक सम्पूर्ण रचनात्मक संरचनाक परीक्षण करैत अछि। अध्ययनमे ३८ अध्याय, १० परिशिष्ट, समापन-टिप्पणी, खण्ड-१ अनुक्रम-प्रोटोकॉल आ अध्याय ३८क २२४-मद कवरेज-जाँच सभ शामिल अछि। पोथीक मूल उपलब्धि पञ्जी कैं साधारण वंश-वृक्षसँ बाहर निकालि सम्बन्धात्मक अभिलेख—वंश, ग्राम, विवाह, मातृक चक्र, दौहित्र, उपाधि, संख्या, टीप, स्थानीय पहचान आ बौद्धिक स्मृति—क रूपमे पढ़बाक विधि बनाबयमे अछि। “मूल रूप सुरक्षित करू, अर्थ बादमे निश्चित करू”, “नाम-समानता कैं व्यक्ति-समानता नहि मानू”, “अनिश्चितता खुल्लमखुल्ला दर्ज करू” आ “विवाह/मातृक सम्बन्ध कैं पितृरेखामे विलीन नहि करू” जेकाँ नियम स्रोत-समीक्षाक उच्च अनुशासन देखबैत अछि। भारतीय दृष्टिसँ पोथी प्रसाद-गुण, औचित्य आ ध्वनि-प्रधान अभिलेख-पठनक निकट अछि; पाश्चात्य दृष्टिसँ ई स्रोत-समीक्षा, सूक्ष्म-इतिहास, दीर्घकालीन सामाजिक संरचना आ अभिलेखीय सत्ता-विमर्शक संग संवाद करैत अछि; नव्य-न्याय दृष्टिसँ सम्बन्ध, अवच्छेद, संशय, प्रमाण, उपाधि आ अभावक स्पष्ट पृथक्करण एकर पद्धतिगत शक्ति अछि; विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टिसँ ई मुख्य अभिलेखक भीतर दबायल स्त्री-कड़ी, ग्राम-स्तर, गौण शाखा आ बौद्धिक घरक आवाज खोलैत अछि, मुदा अभिलेखक सामाजिक सीमा कैं सम्पूर्ण मिथिला बराबर मानब सँ रोकैत अछि। समीक्षामे अध्याय १क शीर्षक-अभाव, अध्याय ३४क शीर्षक-असंगति, परिशिष्टक “पूर्ण अनुक्रमणिका” बनाम “कार्य-रूपरेखा” समस्या, अध्याय ३८क एक अपूर्ण स्रोत-पृष्ठ, तीन पुनरावृत्त मद, अत्यधिक सूत्रात्मक पुनरावृत्ति आ प्रदर्शन-अध्यायमे सटीक स्रोत-लोकेटरक आवश्यकता चिन्हित कएल गेल अछि। समग्रतः पोथी पञ्जी-पठनक एक उल्लेखनीय पद्धति-ग्रन्थ अछि; ओकर अगिला संस्करण अधिक स्रोत-सूचक, आबाद अनुक्रमणिका, संक्षिप्त नियम-

सारणी आ सामाजिक मौनक स्पष्ट सीमा-घोषणासँ अकादमिक रूपेँ आरो दृढ़ भऽ सकैत अछि।

बीजशब्द

डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड २ · मिथिला · वंश-अभिलेख · इतिहासलेखन · प्रमाण-विवेचन

१.३५. गजेन्द्र ठाकुर- डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला’-२- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

पञ्जीक सूत्रसँ सभ्यतागत अभिलेखधरि

(Decoding the Panji of Mithila — Volume II) क विस्तृत शोध-समीक्षा

भारतीय साहित्य-मीमांसा, पाश्चात्य इतिहास-पद्धति, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिक संयुक्त अध्ययन

शोध-लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

सारांश

ई शोध-समीक्षा ५२१ पृष्ठ, ५६९२ अनुच्छेद आ लगभग १,०९,८४७ शब्द-टोकनवला स्रोत-पोथीक सम्पूर्ण रचनात्मक संरचनाक परीक्षण करैत अछि। अध्ययनमे ३८ अध्याय, १० परिशिष्ट, समापन-टिप्पणी, खण्ड-१ अनुक्रम-प्रोटोकॉल आ अध्याय ३८क २२४-मद कवरेज-जाँच सभ शामिल अछि। पोथीक मूल उपलब्धि पञ्जी केँ साधारण वंश-वृक्षसँ बाहर निकालि सम्बन्धात्मक अभिलेख—वंश, ग्राम, विवाह, मातृक चक्र, दौहित्र, उपाधि, संख्या, टीप, स्थानीय पहचान आ बौद्धिक स्मृति—क रूपमे पढ़बाक विधि बनाबयमे अछि। “मूल रूप सुरक्षित करू, अर्थ बादमे निश्चित करू”, “नाम-समानता केँ व्यक्ति-समानता नहि मानू”, “अनिश्चितता खुल्लमखुल्ला दर्ज करू” आ “विवाह/मातृक सम्बन्ध केँ पितृरेखामे विलीन नहि करू” जेकाँ नियम स्रोत-समीक्षाक उच्च अनुशासन देखबैत अछि। भारतीय दृष्टिसँ पोथी प्रसाद-गुण, औचित्य आ ध्वनि-प्रधान अभिलेख-पठनक निकट अछि; पाश्चात्य दृष्टिसँ ई स्रोत-समीक्षा, सूक्ष्म-इतिहास, दीर्घकालीन सामाजिक संरचना आ अभिलेखीय सत्ता-विमर्शक संग संवाद करैत अछि; नव्य-न्याय दृष्टिसँ सम्बन्ध,

अवच्छेद, संशय, प्रमाण, उपाधि आ अभावक स्पष्ट पृथक्करण एकर पद्धतिगत शक्ति अछि; विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टिसँ ई मुख्य अभिलेखक भीतर दबायल स्त्री-कड़ी, ग्राम-स्तर, गौण शाखा आ बौद्धिक घरक आवाज खोलैत अछि, मुदा अभिलेखक सामाजिक सीमा कैं सम्पूर्ण मिथिला बराबर मानब सँ रोकैत अछि। समीक्षामे अध्याय १क शीर्षक-अभाव, अध्याय ३४क शीर्षक-असंगति, परिशिष्टक “पूर्ण अनुक्रमणिका” बनाम “कार्य-रूपरेखा” समस्या, अध्याय ३८क एक अपूर्ण स्रोत-पृष्ठ, तीन पुनरावृत्त मद, अत्यधिक सूत्रात्मक पुनरावृत्ति आ प्रदर्शन-अध्यायमे सटीक स्रोत-लोकेटरक आवश्यकता चिन्हित कएल गेल अछि। समग्रतः पोथी पञ्जी-पठनक एक उल्लेखनीय पद्धति-ग्रन्थ अछि; ओकर अगिला संस्करण अधिक स्रोत-सूचक, आबाद अनुक्रमणिका, संक्षिप्त नियम-सारणी आ सामाजिक मौनक स्पष्ट सीमा-घोषणासँ अकादमिक रूपेँ आरो दृढ भऽ सकैत अछि।

मुख्य शब्द

पञ्जी प्रबन्ध; मिथिला; वंशावली; मातृक चक्र; दौहित्र; ग्राम-सामाजिक भूगोल; स्रोत-समीक्षा (source criticism); सूक्ष्म-इतिहास (microhistory); नव्य-न्याय; विदेह समानान्तर इतिहास; अभिलेखीय स्मृति; सम्पादकीय अनुशासन।

१. अध्ययनक क्षेत्र, स्रोत आ पद्धति

ई समीक्षा उपलब्ध वर्ड-संस्करण कैं प्राथमिक स्रोत मानैत अछि। पोथीक विषय-सूची, सभ ३८ अध्याय, सभ १० परिशिष्ट, समापन-टिप्पणी आ खण्ड-१ कवरेज-जाँच कैं संरचनात्मक इकाइ बनाकऽ पढ़ल गेल। मात्र आरम्भिक अध्याय वा प्रतिनिधि नमूना पर निष्कर्ष नहि देल गेल; पूर्ण पाठक आकार, अध्यायानुसार शब्द-भार, उपशीर्षक, आवृत्त नियम-वाक्य आ अध्याय ३८क सभ २२४ मदक अलग लेखा-जाँच कएल गेल।

बाह्य तुलनात्मक शोध चार दिशामे सीमित राखल गेल: भारतीय काव्य-मीमांसा आ औचित्य-ध्वनि परम्परा; आधुनिक पाश्चात्य इतिहास-पद्धति आ अभिलेख-विमर्श; गङ्गेशोत्तर नव्य-न्यायक प्रमाण-सम्बन्ध विश्लेषण; आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि। बाह्य सिद्धान्त स्रोतक तथ्यक स्थान नहि

लैत अछि; ओ केवल मूल्यांकनक उपकरण अछि। जतए मूल पोथी प्रमाण नहि दैत अछि, एहि समीक्षामे सेहो निश्चित ऐतिहासिक दावा नहि कएल गेल अछि।

१.१ मात्रात्मक स्रोत-जाँच

सारणी १. स्रोत-पोथीक संरचनात्मक परिमाण

मापदण्ड	परिणाम
पृष्ठ	५२१
अनुच्छेद	५६९२
अनुमानित शब्द-टोकन	१,०९,८४७
मुख्य अध्याय	३८
परिशिष्ट	१०
अध्याय ३८क कवरेज-मद	२२४
“डाटा नियम” वाक्यांशक आवृत्ति	४४७
“आलोचनात्मक सावधानी” वाक्यांशक आवृत्ति	४५०
“सुरक्षित/प्रिजर्व” धात्वर्थक अंग्रेजी मूल शब्दक आवृत्ति	७५२
तालिका सम्बन्धी अंग्रेजी मूल शब्दक आवृत्ति	७००

एहि गणनाक अर्थ शैलीक दोष सिद्ध करब नहि, बल्कि पुस्तकक विधिशास्त्रीय प्रकृति मापब अछि। उच्च आवृत्ति देखबैत अछि जे पोथी विवेचनात्मक इतिहाससँ अधिक प्रशिक्षण-पुस्तक, सम्पादकीय नियमावली आ डेटा-अभिकल्पनाक संयुक्त रूप अछि।

२. पोथीक विधागत स्वरूप

पोथीक विधा एकरेखीय नहि अछि। एक भाग परिचयात्मक इतिहास-मीमांसा अछि, दोसर भाग पञ्जीक व्याकरण, तेसर भाग सम्बन्ध-आधारित वंशावली, चारिम भाग सामाजिक भूगोल, पाँचम भाग बौद्धिक-साहित्यिक इतिहास, छठम भाग कार्यान्वित विश्लेषण, सातम भाग पुनर्निर्माण उपकरण, आठम भाग सन्दर्भ-परिशिष्ट आ नवम भाग अनुक्रम-आधारित लेखा-परीक्षा। एहि मिश्रित रचनाक कारण एकरा केवल “इतिहास”, “वंशावली” अथवा “शब्दकोश” कहब अधूरा होयत। सबसँ उचित परिचय “पञ्जी-पठनक आलोचनात्मक अभिलेखीय पद्धति-ग्रन्थ” अछि।

शीर्षकमे प्रयुक्त “जीनोम मैपिंग” रूपक पर स्पष्ट सावधानी जरूरी अछि। पुस्तकक वास्तविक कार्य जैविक डीएनए वा आणविक जीनोम विश्लेषण नहि, बल्कि वंश, ग्राम, विवाह आ स्मृतिक सम्बन्धात्मक मानचित्रण अछि। अगिला संस्करणक आरम्भमे ई रूपकात्मक अर्थ स्पष्ट लिखल जाए तँ विज्ञान-संबन्धी भ्रम नहि रहत।

३. सम्पूर्ण अध्याय-दर-अध्याय आलोचनात्मक पाठ

३.1 अध्याय 1: पञ्जी: स्मृति, अभिलेख आ सामाजिक मानचित्र

ई आरम्भिक अध्याय पोथीक मूल प्रतिज्ञा स्थापित करैत अछि: पञ्जी कैं सरल वंश-वृक्ष नहि, बल्कि वंश, ग्राम, विवाह, उपाधि, संख्या, बौद्धिक प्रतिष्ठा आ सामाजिक स्मृतिक परस्पर जुड़ल अभिलेख मानल जाए। “मानचित्र”, “जाल” आ “स्मृति”क रूपक पाठक कैं तुरन्त बहुस्तरीय संरचना बुझबैत अछि। एहि अध्यायमे स्रोत-आदर आ पद्धतिगत संयमक आग्रह पोथीक नैतिक केन्द्र बनैत अछि। मुदा उपलब्ध वर्ड-पाठमे अध्याय १क शीर्षक शरीरमे प्रत्यक्ष नहि देखाइत अछि आ उपशीर्षक क्रम “२” सँ आरम्भ होइत अछि; ई प्रकाशन-पूर्व सम्पादकीय सुधारक स्पष्ट बिन्दु अछि।

३.2 अध्याय 2: “प्राचीन पञ्जी” मे की अछि

दोसरा अध्याय “प्राचीन पञ्जी”क अन्तर्वस्तु कैं ग्राम-फ्रेम, वंश-शाखा, सम्बन्ध-पद, संख्या, उपाधि, मातृक चक्र, विवाह, दौहित्र, टीप आ तीन स्रोत-खंडक रूपमे खोलैत अछि। एहि अध्यायसँ पोथी केवल शब्दार्थ-व्याख्या नहि

रहि, स्रोत-विज्ञानक मार्गदर्शिका बनैत अछि। विशेष बल “पहिने संरचना, तकर बाद अर्थ” पर अछि। पाठक कैं ईहो बताओल जाइत अछि जे मूल स्रोत आधुनिक व्याख्या नहि दैत; प्रशिक्षित पाठकक निहित ज्ञान पुनर्निर्मित करब पड़ैत अछि।

३.3 अध्याय 3: पञ्जी पढ़ब कठिन किएक

तेसर अध्याय कठिनाइ कैं दोष नहि, अभिलेखीय रूपक स्वभाव मानैत अछि। संपीड़न, संयुक्त शब्द, आवृत्त नाम, ग्राम-रूप, मिश्रित संस्कृत-मैथिली रजिस्टर, संक्षेपाक्षर, संख्या, मातृक चक्र, विवाह, टीप आ प्रकाशीय पाठ-पहचान त्रुटि—सभ कैं अलग-अलग समस्या बनाकऽ पद्धतिगत उत्तर देल गेल अछि। ई अध्याय आधुनिक स्रोत-समीक्षाक हिसाबैं बहुत मजबूत अछि, किएक तँ अस्पष्टता कैं मिटबैत नहि, दर्ज करैत अछि।

३.4 अध्याय 4: पञ्जी-प्रविष्टिक मूल इकाइ

चारिम अध्याय प्रविष्टि कैं विश्लेषणक न्यूनतम इकाइ बनबैत अछि। व्यक्ति, सम्बन्धसूचक पद, स्थान, उपाधि, संख्या, विराम, सीमा आ प्रसंग कैं अलग क्षेत्रमे तोड़बाक पद्धति बादक समस्त तालिका-विन्यासक आधार बनैत अछि। “फ्रेम पहिने, नाम बादमे” सूत्र उपयोगी अछि; ई नाम-केन्द्रित गलत वंशावली बनबाक जोखिम घटबैत अछि।

३.5 अध्याय 5: मुख्य सम्बन्धसूचक शब्द

पाँचम अध्याय सम्बन्धसूचक शब्द कैं पञ्जीक व्याकरण कहैत अछि। सुत, सुता, सन्तति, अपत्य, पौत्र, प्रपौत्र, दौहित्र आदिक अर्थ कैं स्थिर शब्दकोशीय अर्थसँ नहि, प्रसंगगत कार्यसँ परखल गेल अछि। एहि अध्यायक वास्तविक उपलब्धि सम्बन्ध कैं “डेटा” नहि, बल्कि अर्थ-निर्णायक व्याकरण मानब अछि। नव्य-न्याय दृष्टिसँ ई विशेष्य-विशेषण-संसर्गक सूक्ष्म पृथक्करणक अनुकूल अछि।

३.6 अध्याय 6: ग्राम-सूत्र आ बसोबास-संकेत

छठम अध्याय ग्राम, वासी, डीह, मूलग्राम, तत्रैव, समेत, एते आदि संकेतक माध्यमसँ स्थान कैं बहुकार्यात्मक बनबैत अछि। स्थान मूल, निवास, शाखा-

आसन, वैवाहिक घर, मातृक सम्बन्ध अथवा समाविष्ट स्थानीयता भऽ सकैत अछि। ई वर्गीकरण पोथीक भू-सामाजिक दृष्टि कैं मजबूत करैत अछि, मुदा आधुनिक मानचित्रक निश्चित बिन्दु आ पञ्जीक सम्बन्धात्मक स्थानक बीच अन्तर सदिखन स्पष्ट राखब आवश्यक अछि।

३.7 अध्याय 7: “सन्तति” आ “अपत्य”क पाठ

सातम अध्याय “सन्तति” आ “अपत्य”क भिन्नता आ अतिक्रमण पर केन्द्रित अछि। पुस्तक युक्तिसंगत रूपेँ चेतावनी दैत अछि जे दुनू कैं यन्त्रवत “पुत्र” नहि मानल जाए; बहुत ठाम ई शाखा-निरन्तरता अथवा पूर्वज-आश्रित वंश-संकेत अछि। एहि अध्यायमे संकल्पनात्मक सावधानी पोथीक सबल उदाहरण अछि।

३.8 अध्याय 8: “सँ”क अर्थ-निर्णय

आठम अध्याय “सँ” कैं बहुअर्थी सम्बन्ध-संयोजक मानैत अछि। “मूल”, “निवास”, “विवाह”, “मातृक”, “सम्बद्धता” आदि सम्भावना तब धरि खुलल राखल जाइत अछि जखन धरि आसपासक संरचना एक अर्थ कैं प्रमाणित नहि करए। ई प्रक्रिया अनुमानक पूर्व संशय-संरक्षणक उत्कृष्ट नमूना अछि।

३.9 अध्याय 9: कोष्ठकक संख्या

नवम अध्याय संख्या-संकेतक संग सर्वाधिक संयम बरतैत अछि। एकल संख्या, स्लैश, दोहरा स्लैश, शून्य, टीप-संलग्न अंक, सम्भावित अनुक्रम अथवा पंजीकरण-संकेत सभ कैं हूबहू राखबाक आग्रह अछि। पोथी सार्वत्रिक अर्थ थोपबाक विरोध करैत अछि; ई स्रोत-समीक्षाक दृष्टिसँ प्रशंसनीय अछि।

३.10 अध्याय 10: संक्षेपाक्षर आ उपाधि

दसम अध्याय संक्षेपाक्षर आ उपाधिक माध्यमसँ व्यक्ति-पहचान, बौद्धिक स्थिति, सामाजिक पद आ शाखा-भेदक सम्भावना देखबैत अछि। महामहोपाध्याय, वैयाकरण, कवि, पण्डित, ज्योतिर्विद आदि पद केवल अलंकरण नहि, अभिलेखीय सूचक मानल गेल अछि। एहि दृष्टिक कारण बादमे साहित्यिक आ बौद्धिक इतिहासक द्वार खुलैत अछि।

३.11 अध्याय 11: पितृरेखा

एगारहम अध्याय पितृरेखाकेँ सरल सीढ़ी नहि मानैत, प्रत्यक्ष पुत्रता आ शाखा-निरन्तरता अलग करैत अछि। पिता-पुत्र, पौत्र, प्रपौत्रक स्पष्ट संकेत आ सन्तति-अपत्यक शाखागत संकेतक बीच विभाजन वंश-वृक्षक शुद्धता लेल अनिवार्य अछि। ई अध्याय झूठी रैखिकता विरुद्ध पोथीक महत्त्वपूर्ण सुरक्षा-तन्त्र अछि।

३.12 अध्याय 12: मातृरेखा: मातृक चक्र

बारहम अध्याय मातृक चक्र केँ पञ्जीक केन्द्रीय संरचना मानैत अछि। स्त्रीक नाम अनुपस्थित रहला पर सम्बन्ध-संरचना द्वारा आवश्यक “अनाम स्त्री-संयोजक” चिन्हित करबाक नियम पुस्तकक संवेदनशील उपलब्धि अछि। मुदा अनाम कड़ी केँ नाम देबय वा अनुमानसँ भरबय पर स्पष्ट निषेध स्रोत-निष्ठा बचबैत अछि।

३.13 अध्याय 13: विवाह-अभिलेख

तेरहम अध्याय विवाह केँ जीवनीक घटना नहि, दू घरक संस्थागत सम्बन्धक रूपमे पढ़ैत अछि। विवाह-क्रम, तिथि, संख्या, ग्राम, उपाधि, सन्तान-अनुलग्नता आ मातृक चक्र सभक पारस्परिकता खोलल गेल अछि। विवाह-तालिका बनाबयक आग्रह सामाजिक इतिहास आ वंशावली दुनू लेल उपयोगी अछि।

३.14 अध्याय 14: दौहित्र आ वैवाहिक सम्बन्ध

चौदहम अध्याय दौहित्र, भगीनेय आ अन्य वैवाहिक/मातृक सम्बन्ध केँ “पुल-संबन्ध”क रूपमे स्थापित करैत अछि। दौहित्र केँ मातामहक पुत्र-जेकाँ रखबाक भूल रोकल गेल अछि। ई स्त्री-पथक माध्यमसँ घर-घरक सम्बन्ध पुनर्निर्माण करैत अछि आ पञ्जी-पठनक पुरुष-रेखा केन्द्रिकरण केँ आंशिक रूपेँ तोड़ैत अछि।

३.15 अध्याय 15: बहुविवाह आ गौण सम्बन्ध

पन्द्रहम अध्याय प्रथम विवाह, द्वितीय विवाह, अपरा, भिन्न सन्तान-समूह आ अलग वैवाहिक ग्रामक जटिलता व्यवस्थित करैत अछि। पुस्तकक एक प्रभावी नैतिक सूत्र अछि—गलत मातृ-पहचान सहित सुन्दर वृक्षसँ अनिश्चितता स्वीकार कएल अपूर्ण वृक्ष उत्तम। ई प्रमाणिकता-केन्द्रित सम्पादनक सशक्त सिद्धान्त अछि।

३.16 अध्याय 16: प्राचीन पञ्जीक ग्राम-जगत

सोलहम अध्याय पञ्जीक ग्राम-जगत केँ सामाजिक भूगोल बनबैत अछि। ग्राम-फ्रेम, शाखा-स्थल, निवास, डीह, पाली, मूलग्राम, विवाह-ग्राम आ मातृक-ग्रामक अन्तर स्पष्ट कएल गेल अछि। एहि भागसँ पोथी वंशावलीसँ बाहर निकलि स्थानिक इतिहासक सामग्री बनैत अछि।

३.17 अध्याय 17: ग्राम-समूह आ प्रव्रजन

सत्रहम अध्याय ग्राम-समूहक सीमा, उद्घाटन, समापन आ शाखा-गतिशीलताक आधारपर प्रव्रजन पढ़बाक पद्धति दैत अछि। महत्त्वपूर्ण सावधानी ई जे स्थान-बदलाव केँ तुरन्त ऐतिहासिक प्रव्रजन घोषित नहि कएल जाए; सम्बन्धक प्रकार प्रमाणित होए जरूरी अछि।

३.18 अध्याय 18: डीह, वासी, मूलग्राम आ स्थानीय पहचान

अठारहम अध्याय डीह, वासी, मूलग्राम आ पाली केँ स्थानीय पहचानक अलग तह मानैत अछि। मूलग्राम आ वर्तमान निवासक मिश्रण रोकब, डीह केँ ग्राममे विलीन नहि करब, आ तत्रैव केँ पूर्ववर्ती स्थान-सन्दर्भसँ जोड़ब—ई सभ सूक्ष्म नियम भूगोल-पुनर्निर्माणक गुणवत्ता बढ़बैत अछि।

३.19 अध्याय 19: विद्वान, कवि, पुरोहित आ विशेषज्ञ

उन्नैसम अध्याय विद्वान, कवि, व्याकरणज्ञ, ज्योतिषविद, पुरोहित, धर्माधिकारी आ अन्य विशेषज्ञ उपाधि द्वारा पञ्जी केँ बौद्धिक अभिलेख बनबैत अछि। उपाधि-वितरण सँ बौद्धिक केन्द्र, वंशगत विद्वत्ता आ विवाह-नेटवर्कक संकेत मिलैत अछि; तथापि उपाधि मात्रसँ कृतित्व, ग्रन्थ वा विचारधारा सिद्ध नहि होइत अछि—ई मर्यादा स्पष्ट राखब आवश्यक अछि।

३.20 अध्याय 20: साहित्य-इतिहासक रूपमे पञ्जी

बीसम अध्याय पञ्जी केँ साहित्य-इतिहासक अप्रत्यक्ष स्रोत मानैत अछि। कवि, कविराज, वैयाकरण, महामहोपाध्याय, ग्राम आ वैवाहिक जालक आधारपर साहित्यिक परिवेशक पुनर्निर्माण सम्भव बताओल गेल अछि। एहि अध्यायक सबलता “रचना-नाम नहि भेटल” केँ “साहित्यिक अस्तित्व नहि छल” बराबर

नहि मानब अछि; मुदा पूर्ण साहित्य-इतिहास लेल पञ्जीकेँ पाण्डुलिपि, ग्रन्थ-सूची, शिलालेख, मौखिक परम्परा आदि सँ मिलान जरूरी अछि।

३.21 अध्याय 21: सामाजिक संरचनाक रूपमे पञ्जी

एकैसम अध्याय घर, वंश, ग्राम, विवाह, प्रतिष्ठा आ स्मृतिक माध्यमसँ सामाजिक संरचना पढ़ैत अछि। पञ्जी सामाजिक वैधता बनाबयवला अभिलेख सेहो छल—ई अवलोकन महत्त्वपूर्ण अछि। समानान्तर इतिहास दृष्टिसँ एहि ठाम प्रश्न उठैत अछि: जे समूह अभिलेखीय अधिकारसँ बाहर रहल, हुनकर इतिहास कोना पुनः प्राप्त होयत? पोथी एहि प्रश्नक आधार बनबैत अछि, अन्तिम उत्तर नहि।

३.22 अध्याय 22: पञ्जी आ काल

बाइसम अध्याय पीढ़ी, संख्या, तिथि, विवाह-क्रम, उपाधि आ पाठ-स्तरक माध्यमसँ काल पढ़बाक पद्धति दैत अछि। सापेक्ष काल आ निश्चित कालक अन्तर, परम्परागत तिथि आ आधुनिक तिथिक भेद, आ अनुमानित काल पर विश्वास-स्तर—ई सभ इतिहास-लेखन लेल जरूरी सावधानी अछि।

३.23 अध्याय 23: एक प्रविष्टिक क्रमानुगत विश्लेषण

तेइसम अध्याय सरिसब-जेकाँ ग्राम-फ्रेमक नमूना लऽ एक प्रविष्टि केँ मूल वाक्यांश, खण्डीकरण, सम्बन्ध-पद, व्यक्ति-स्थान, संयोजक, तालिका आ आलोचनात्मक टिप्पणी धरि खोलैत अछि। प्रशिक्षणक दृष्टिसँ ई बहुत उपयोगी अछि। मुदा “एहि प्रकारक वाक्यांश” अथवा “जेकाँ” रूपक प्रयोगक बदला सटीक स्रोत-पृष्ठ, प्रविष्टि-संख्या आ चित्र-सन्दर्भ देल जाए तँ प्रदर्शन अध्याय स्रोत-सम्पादनक अधिक कठोर मानक पूरा करत।

३.24 अध्याय 24: ग्राम-समूहक क्रमानुगत विश्लेषण

चौबीसम अध्याय एकल प्रविष्टिसँ ऊपर उठि पूर्ण ग्राम-समूहक उद्घाटन-समापन, आन्तरिक शाखा, स्थान-कार्य आ सीमा पढ़बैत अछि। एते+ग्राम जेकाँ समापन-सूत्रक उपयोग सीमा-निर्धारणमे प्रभावी अछि। एहिठाम समूहक “कठोर सीमा” आ “संभावित विस्तृत सीमा” अलग क्षेत्रमे राखल जा सकैत अछि।

३.25 अध्याय 25: मातृक चक्रक विश्लेषण

पच्चीसम अध्याय मातृक चक्रक कार्यान्वित विश्लेषण दैत अछि। प्रथम चरणमे पितृ-वृक्ष बनाबयक लालच रोकि, विवाह, पुत्री-कड़ी, दौहित्र, ग्राम आ अपरा कैं अलग करतब देल गेल अछि। ई अध्याय स्रोतमे स्त्री-संबन्धीय मौनक संरचनात्मक पठनक महत्त्वपूर्ण नमूना अछि।

३.26 अध्याय 26: विवाह-प्रविष्टिक विश्लेषण

छब्बीसम अध्याय विवाह-प्रविष्टिक कार्य-पद्धति व्यवस्थित करैत अछि: प्रधान व्यक्ति, विवाह-क्रम, तिथि-वाक्य, पंजीकरण-संख्या, वर/कन्या-पक्ष संकेत, सन्तान-अनुलग्नता, मातृक चक्र आ दौहित्र। तिथि आ संख्या कैं अलग राखबाक नियम विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

३.27 अध्याय 27: दीर्घ सघन अंशक विश्लेषण

सत्ताइसम अध्याय दीर्घ सघन पाठ कैं सीमा-चिन्ह, खण्ड-संख्या, सम्बन्ध-पद, नाम-उम्मीदवार, स्थान-रूप, संख्या, उपाधि, विवाह, मातृक आ टीप स्तरमे विभाजित करैत अछि। “घनत्व” कैं शब्द-संख्या नहि, एक संग सक्रिय कार्यक संख्या मानब एक सुचिन्तित पद्धतिगत प्रस्ताव अछि।

३.28 अध्याय 28: पञ्जी परिवार-वृक्ष बनायब

अठाइसम अध्याय साधारण परिवार-वृक्ष आ पञ्जी-वृक्षक भेद स्पष्ट करैत अछि। शाखा, विवाह-नोड, मातृक-पुल, दौहित्र, स्थान, उपाधि, संख्या आ अनिश्चितता कैं दृश्य रूपमे राखबाक नियम चार्ट कैं प्रमाण-संरक्षक बनबैत अछि, केवल सुन्दर चित्र नहि।

३.29 अध्याय 29: ग्राम-सूची बनायब

उनतीसम अध्याय ग्राम-सूची कैं मूल वर्तनी, सामान्यीकृत रूप, ग्राम-कार्य, सीमा, संयोजक, व्यक्ति, शाखा, विवाह, मातृक सम्बन्ध, संख्या आ विश्वास-स्तरसँ बनबैत अछि। आधुनिक नक्शा-नामसँ पुरान रूप कैं तुरन्त एकरूप नहि करबाक चेतावनी ऐतिहासिक स्थान-विज्ञान लेल उचित अछि।

३.30 अध्याय 30: व्यक्ति-सूची बनायब

तीसम अध्याय व्यक्ति-सूचीमे “पहिने उपस्थिति-दर्ज, बादमे पहचान” सिद्धान्त अपनबैत अछि। एके नामक अनेक व्यक्ति आ एके व्यक्तिक अनेक प्रसंग—दुनू सम्भावना खुले राखल जाइत अछि। शीर्षक, ग्राम, पिता, सन्तान, विवाह, मातृक भूमिका आ संख्या बिना नाम-समानता पहचानक प्रमाण नहि बनैत अछि।

३.31 अध्याय 31: पारिभाषिक कोश बनायब

एकतीसम अध्याय पारिभाषिक कोश कैं शब्दार्थ-सूची नहि, लघु पद्धति-पुस्तक बनबैत अछि। स्रोत-रूप, सामान्यीकृत रूप, शाब्दिक अर्थ, पञ्जी-कार्य, सामान्य प्रसंग, सम्बद्ध तालिका, भ्रम आ पार-सन्दर्भ—ई संरचना उपयोगी अछि।

३.32 अध्याय 32: त्रुटि, पाठान्तर आ सम्पादकीय अनुशासन

बत्तीसमा अध्याय “पहिने सुरक्षित करू, बादमे सुधारू” सिद्धान्त पर आधारित अछि। पाठान्तर, असामान्य वर्तनी, सम्भावित मुद्रण/पाठ-पहचान त्रुटि, संख्या, उपाधि आ संशय सभक मूल रूप राखि अलग सामान्यीकृत स्तर बनाबयक आग्रह आलोचनात्मक सम्पादनक दृष्टिसँ पोथीक सबलतम अंशमे सँ एक अछि।

३.33 अध्याय 33: खण्ड १ अनुक्रम-प्रोटोकॉल

तेतीसम अध्याय खण्ड १क अनुक्रमणिका कैं कवरेज-नियंत्रक बनबैत अछि। ई भाग छोट अछि, मुदा सम्पूर्ण परियोजनाक लेखा-परीक्षा दर्शन स्पष्ट करैत अछि—अनुक्रमणिकाक प्रत्येक मद कैं अध्याय, परिशिष्ट वा जाँच-सूचीसँ जोड़ल जाए। एहि दावाक वास्तविक प्रमाण अध्याय ३८मे भेटैत अछि।

३.34 अध्याय 34: खण्ड १क मूल संरचना आ अध्याय-संयोजन

चौतीसम अध्याय खण्ड १क मूल संरचना आ अध्याय-संयोजनक संक्षिप्त मानचित्र दैत अछि। एक सम्पादकीय असंगति ध्यान योग्य अछि: विषय-सूचीमे शीर्षक पत्र-पञ्जी, गोत्र-पञ्जी, मेघापत्य, दामोदरापत्य, महेशापत्य, माने-गादू सहित विस्तृत अछि, जखन कि मुख्य पाठमे शीर्षक “मूल संरचना आ अध्याय-संयोजन मानचित्र” रूपमे अछि। दुनू रूप एकरूप कएल जाए।

३.35 अध्याय 35: गोत्र, मूल, मूलग्राम: अनुक्रम-आधारित विश्लेषण

पैंतीसम अध्याय गोत्र, मूल, मूलग्रामक निर्णय-ब्लॉक आ समूह पुनर्वर्णनक माध्यमसँ अनुक्रम-आधारित पठन दैत अछि। ई अध्याय छोट अछि; ओकर सामग्री उपयोगी अछि, मुदा स्वतंत्र अध्यायसँ बेसी संक्रमण-नोट वा पद्धति-ब्लॉकक रूपमे संतुलित देखाइत अछि।

३.36 अध्याय 36: लौकित, चौगोला, श्रेणी आ पत्रांक

छत्तीसम अध्याय लौकित, चौगोला, श्रेणी, मोदानन्द शाखा, पत्रांक आ पछबारिपारक वर्गीकरण कैं अनुक्रमणिकासँ जोड़ैत अछि। ई भाग संरचनात्मक शब्दावली कैं विशिष्ट खण्ड-१ सामग्रीपर लागू करैत अछि, तैं पहिल ३२ अध्यायक सामान्य पद्धति आ स्रोतक ठोस संरचनाक बीच सेतु बनैत अछि।

३.37 अध्याय 37: विद्वान, गुरु-शिष्य, गोत्र-प्रवर आ बीजी पुरुष

सैंतीसम अध्याय विद्वान-सूची, गुरु-शिष्य क्रम, गोत्र-प्रवर आ बीजी पुरुष/पत्रांक सामग्रीक विश्लेषण करैत अछि। ई बौद्धिक इतिहास आ पञ्जी-संरचनाक प्रत्यक्ष संगम अछि। गुरु-शिष्य सम्बन्ध कैं वंश-संबन्धसँ पृथक नेटवर्क मानल जाए—एहि ठाम पुस्तकक तालिकात्मक पद्धति विशेष उपयोगी अछि।

३.38 अध्याय 38: खण्ड १ ग्रामारम्भ सम्पूर्ण कवरेज-जाँच

अड़तीसम अध्याय सम्पूर्ण खण्ड-१ अनुक्रमणिकाक २२४ मदक कवरेज-जाँच प्रस्तुत करैत अछि। ई संस्करणक “कोनो मद पद्धतिसँ बाहर नहि” दावाक मुख्य लेखा-परीक्षा साधन अछि। एक मद—“पञ्जी प्रबन्ध”—क स्रोत-पृष्ठ रिक्त चिह्नित अछि। तीन शीर्षक पुनरावृत्त अछि: मद ४१/६१, १३३/१३५ आ २२१/२२२; पहिल दू अलग स्रोत-पृष्ठपर अछि, तेसर एके १०९२ पृष्ठपर दोहरायल अछि। पुनरावृत्ति मूल अनुक्रमणिकाक हो सकैत अछि, मुदा प्रत्येक कैं विशिष्ट अनुक्रम-परिचय वा कारण-टिप्पणी देल जाए तँ अस्पष्टता दूर होयत।

४. सभ परिशिष्टक समीक्षा

४.1 परिशिष्ट (A): पञ्जी-पदावली कोश

पारिभाषिक कोश त्वरित सन्दर्भक रूपमे उपयोगी अछि; मूल देवनागरी रूप, कार्यगत अर्थ आ पार-सन्दर्भक आग्रह पद्धतिगत रूपेँ उचित अछि।

४.2 परिशिष्ट (B): संक्षेपाक्षर-कुञ्जी

संक्षेपाक्षर-कुञ्जी उपाधिक सम्भावित विस्तार कैँ विश्वास-स्तरसँ जोड़ैत अछि। निश्चित विस्तारक भ्रम रोकबाक लेल ई उपयोगी सुरक्षा अछि।

४.3 परिशिष्ट (C): सम्बन्ध-कुञ्जी

सम्बन्ध-कुञ्जी प्रत्यक्ष वंश, शाखा, विवाह, मातृक, दौहित्र आ पार्श्व-सम्बन्ध पृथक करैत अछि; चार्ट बनाबय सँ पहिने एहि वर्गीकरणक आवश्यकता अछि।

४.4 परिशिष्ट (D): ग्राम-गजेटियर

“ग्राम-गजेटियर” शीर्षकक अन्तर्गत वास्तविक पूर्ण गजेटियरसँ बेसी क्षेत्र-संरचना, नमूना प्रविष्टि आ नियम देल गेल अछि। शीर्षकमे “कार्य-रूपरेखा” वा पूर्ण डेटा-सूची जोड़ल जाए तँ अपेक्षा अधिक स्पष्ट होयत।

४.5 परिशिष्ट (E): उपाधि आ व्यवसाय-सूची

उपाधि आ व्यवसाय-सूची सेहो क्षेत्र, श्रेणी, नमूना आ नियमक पद्धतिगत ढाँचा अछि। विद्वान/विशेषज्ञ इतिहास लेल उपयोगी, मुदा पूर्ण आबाद सूचीक अभाव स्पष्ट कहल जाए।

४.6 परिशिष्ट (F): नमूना वंशावली तालिका

वंशावली तालिकाक नमूना स्रोत-खंड, व्यक्ति-घटना, पहचान-समूह, पितृ-रीढ़, शाखा, विवाह, मातृक चक्र, दौहित्र, ग्राम, उपाधि आ संख्या कैँ परस्पर जोड़ैत अछि। ई पुस्तकक डेटा-अभिकल्पनाक मजबूत भाग अछि।

४.7 परिशिष्ट (G): नमूना विवाह-नेटवर्क तालिका

विवाह-नेटवर्क तालिका प्रथम-द्वितीय विवाह, जीवनसाथी-पक्ष, तिथि, संख्या, सन्तान-अनुलग्नता, मातृक चक्र आ दौहित्रक पृथक क्षेत्र दैत अछि। गलत मातृ-सम्बन्ध रोकबाक लेल ई खास उपयोगी अछि।

४.8 परिशिष्ट (H): सम्पादकीय प्रतीक

सम्पादकीय प्रतीक अनिश्चित पाठ, पूरक पाठ, सामान्यीकरण, सम्बन्ध-विश्वास, स्रोत-स्तर, संख्या, स्थान आ उपाधिक संकेत मानकीकृत करैत अछि। वास्तविक प्रकाशनमे प्रतीकक एकरूप टंकण आवश्यक अछि।

४.9 परिशिष्ट (I): नाम-सूची

शीर्षक “नाम-सूची” अछि, मुदा पाठ स्वयं स्पष्ट कहैत अछि जे ई नाम-सूची बनाबयक “कार्य-रचना” अछि। मूल नामसभक पूर्ण वर्णानुक्रमिक सूची एहि परिशिष्टमे नहि अछि। प्रकाशन-सत्यनिष्ठा लेल “नाम-सूची बनाबयक कार्य-रूपरेखा” शीर्षक अथवा वास्तविक पूर्ण सूची जोड़ल जाए।

४.10 परिशिष्ट (J): स्थान-सूची

ठीक एहिना “स्थान-सूची” वास्तविक पूर्ण स्थान-अनुक्रमणिका नहि, बल्कि ओकर कार्य-रचना अछि। स्रोत-रूप, कार्य, संयोजक, सीमा, विवाह/मातृक भूमिका आ विश्वास-स्तरक क्षेत्र बहुत उपयोगी अछि; मुदा पूर्ण स्थान-सूची अलग आबाद रूपमे अपेक्षित अछि।

५. समापन-टिप्पणी आ खण्ड-१ अनुक्रम-भाग

समापन-टिप्पणी पुस्तकक नैतिक सूत्र सभ कैं एक ठाम समेटैत अछि: पञ्जी जाल अछि, रेखा नहि; चार्ट स्रोतक स्थान नहि लैत; अनाम स्त्री-कड़ीकैं देखाउ, गढ़ू नहि; ग्रामक कार्य अलग राखू; उपाधि आ संख्या हटाउ नहि; संशय कैं दस्तावेजीकृत करू। एहि निष्कर्षक बाद नवम भाग स्रोत-अनुक्रमणिकासँ प्रत्यक्ष मिलान करैत अछि। संरचनात्मक दृष्टिसँ ई दोसर समापन-जेकाँ अछि; यदि अध्याय ३३–३८ कैं “अनुलग्न लेखा-परीक्षा” रूपमे राखल जाए तँ मुख्य ग्रन्थक अन्त अधिक सघन होयत।

६. भारतीय साहित्य-मीमांसा सँ मूल्यांकन

६.१ प्रसाद-गुण, रीति आ औचित्य

पोथीक गद्यक प्रधान गुण स्पष्टता अछि। कठिन पञ्जी-शब्दावली कैं क्रमिक चरण, चेतावनी, तालिका-क्षेत्र आ उदाहरणमे तोड़ल गेल अछि; एहि कारण प्रसाद-गुण प्रबल अछि। रीति अलंकारप्रधान नहि, शिक्षणप्रधान अछि। औचित्यक कसौटीपर अधिकांश ठाम शैली विषयानुकूल अछि: जहाँ संख्या वा

टीपक अनिश्चित अर्थ अछि, लेखक निश्चित भाषासँ बचैत अछि; जहाँ दौहित्रक सम्बन्ध स्पष्ट अछि, सीधा निर्देश दैत अछि। ई भाषिक औचित्य शोध-गद्यक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

६.२ ध्वनि आ अभिलेखक अव्यक्त अर्थ

पञ्जी मूलतः संक्षिप्त सूत्रक अभिलेख अछि। ओकर वाच्यार्थ कम आ सम्बन्धगत ध्वनि अधिक अछि—ग्राम-नाम केवल भूगोल नहि, शाखा वा विवाह-सम्बन्धक ध्वनि दे सकैत अछि; उपाधि केवल सम्मान नहि, बौद्धिक प्रतिष्ठाक संकेत; संख्या केवल अंक नहि, आन्तरिक अभिलेखीय अनुक्रमक सम्भावना। पोथीक “डिकोडिंग” असलमे एहि व्यञ्जित सम्बन्ध कैं प्रमाण-सीमाक भीतर खोलबाक अभ्यास अछि। ध्वनि-सिद्धान्तक उपयोग एतए काव्य-रस लेल नहि, अप्रत्यक्ष अर्थ-संरचना बुझबाक तुलनात्मक उपकरण रूपमे उचित अछि।

६.३ वक्रोक्ति, रूपक आ शैली

“पञ्जी जाल अछि”, “ग्राम नोड अछि”, “विवाह पुल अछि”, “सम्बन्ध शब्द व्याकरण अछि” जेकाँ रूपक ग्रन्थक वैचारिक स्मरणशीलता बढ़बैत अछि। ई वक्रोक्तिपूर्ण शिक्षण-रूपक जटिल संरचना सहज करैत अछि। मुदा रूपक जखन बारम्बार तथ्यात्मक श्रेणी बनि जाइत अछि, तखन सावधानी चाही: मूल पञ्जी स्वयं आधुनिक नेटवर्क-विज्ञानक शब्दावलीमे नहि लिखल अछि। तैं “मूल स्रोतक श्रेणी” आ “आधुनिक विश्लेषणक रूपक” अलग कहल जाए।

६.४ रसक सीमा

ई पोथी काव्यक आस्वाद-ग्रन्थ नहि, तैं रसक आधारपर ओकर मुख्य मूल्यांकन अनुचित होयत। तथापि स्मृति, पूर्वज, ग्राम आ संरक्षणक विषय एक प्रकारक शान्त-भावात्मक गंभीरता उपजाबैत अछि। समीक्षा एतए रस थोपबाक बदला औचित्य मानैत अछि—तकनीकी ग्रन्थक सौन्दर्य ओकर स्पष्टता, संयम आ संरचनात्मक संतुलनमे खोजल जाए।

७. पाश्चात्य इतिहास-पद्धति सँ मूल्यांकन

७.१ स्रोत-समीक्षा आ पाठालोचन

पोथीक “मूल रूप पहिने, सामान्यीकरण बादमे” सिद्धान्त आधुनिक स्रोत-समीक्षाक केन्द्रिय मूल्यसँ मेल खाइत अछि। वर्तनी-भेद, संख्या, टीप, संक्षेप, अस्पष्ट सम्बन्ध, पाठ-पहचान त्रुटि आ पुनरावृत्त नाम सभ कैं मिटा देबाक बदला अलग स्तरमे राखल गेल अछि। एतए स्रोतक बाह्य रूप, आन्तरिक सुसंगति आ पार-सन्दर्भ तीनू महत्त्वपूर्ण अछि। कमजोरी ई जे कार्यान्वित उदाहरण सभमे सटीक स्रोत-पृष्ठ/चित्र/प्रविष्टि-परिचय सर्वत्र नहि देल गेल; अगिला संस्करणमे प्रत्येक उदाहरणक लोकेटर अनिवार्य होय।

७.२ दीर्घकालीन सामाजिक इतिहास

ग्राम, शाखा, विवाह, उपाधि, मातृक सम्बन्ध आ आवागमनक सतत पठन दीर्घकालीन संरचना देखबाक अवसर दैत अछि। राजनैतिक घटनाक बदला घर, बसोबास, विवाह-विन्यास आ विद्वत्ता-वितरण पर ध्यान सामाजिक इतिहासक शक्तिशाली दिशा अछि। मुदा पञ्जी स्रोतक सामाजिक परिधि सीमित अछि; एहि संरचना कैं सम्पूर्ण मिथिला समाजक सांख्यिक प्रतिनिधित्व मानब उचित नहि।

७.३ सूक्ष्म-इतिहास आ घन-पठन

अध्याय २३–२७ एक प्रविष्टि, ग्राम-समूह, मातृक चक्र, विवाह आ दीर्घ सघन पाठ कैं सूक्ष्म इकाइ बनाकऽ खोलैत अछि। एहि पद्धतिसँ छोट अभिलेखीय अंशसँ विशाल सामाजिक तन्त्रक संकेत प्राप्त होइत अछि। सूक्ष्म-इतिहासक नियम अनुसार छोट अंशकैं “प्रतिनिधि सत्य” नहि, “प्रश्न खोलयवला केस” मानब चाही; पोथी अधिकांश ठाम एहि संयमक पालन करैत अछि।

७.४ अभिलेख, सत्ता आ मौन

पञ्जी “स्मृति” मात्र नहि, सामाजिक अधिकारक साधन सेहो छल—विवाह-योग्यता, शाखा-पहचान, प्रतिष्ठा आ विद्वत्ता-पदक मान्यता ओहि अभिलेखक माध्यमसँ संरचित हो सकैत छल। तैं अभिलेख जे दर्ज करैत अछि ओकर संग जे दर्ज नहि करैत, सेहो ऐतिहासिक प्रश्न अछि। स्त्रीक अनाम उपस्थिति, गैर-पञ्जीकृत समूह, श्रमजीवी समुदाय, स्थानीय मौखिक स्मृति आ राज्येतर जीवनक मौन कैं “अस्तित्व नहि” नहि मानल जाए।

८. नव्य-न्याय आधारित पद्धतिगत समीक्षा

८.१ प्रमाण, प्रमिति आ संशय

नव्य-न्याय दृष्टिसँ पोथीक प्रमुख शक्ति संशय कैं प्रमिति बनाकऽ प्रस्तुत नहि करब अछि। संख्या स्पष्ट नहि तँ “अनिश्चित”; सँक सम्बन्ध स्पष्ट नहि तँ तटस्थ “सम्बद्ध”; एके नामक व्यक्ति-एकता प्रमाणित नहि तँ पृथक उपस्थिति-दर्ज। ई प्रमाणक साधन, विषय आ परिणामक बीच दूरी बनबैत अछि।

८.२ विशेष्य-विशेषण-संसर्ग

पञ्जीक एक प्रविष्टिमे नाम विशेष्य हो सकैत अछि, उपाधि वा सम्बन्ध-पद विशेषण, आ ग्राम/वंश/विवाह संयोजक संसर्ग। गलती तखन होइत अछि जखन उपाधिकैं नामक भाग, विवाह-ग्रामकैं जन्म-ग्राम, वा दौहित्र कैं पुत्र मानि लेल जाए। पोथीक तालिकात्मक विभाजन मूलतः विशेष्य, विशेषण आ संसर्गक निरूपण अछि; एहि कारण नव्य-न्याय भाषा ओकर संरचनाक व्याख्यात्मक साथी बनैत अछि।

८.३ अवच्छेदक आ पहचान

“रघुनाथ” जेकाँ पुनरावृत्त नाम मात्र पर्याप्त पहचान नहि। पिता, पुत्र, ग्राम, उपाधि, संख्या, विवाह-प्रसंग, मातृक चक्र, शाखा-स्थिति—ई सभ पहचानकैं सीमित करयवला अवच्छेदक बनैत अछि। एक उपस्थिति-दर्ज कैं दोसरसँ एक व्यक्ति मानबाक लेल पर्याप्त समान अवच्छेदक चाही। पोथीक “नाम अकेले पहचान नहि” नियम नव्य-न्यायीय सटीकता सँ बहुत निकट अछि।

८.४ उपाधि, हेतु आ बाधक

अनुमानमे जल्दी सार्वत्रिक नियम बनाबय पर “उपाधि” बाधक शर्त हो सकैत अछि। उदाहरणार्थ “सँ = मूलग्राम” नियम गलत अछि, किएक तँ विवाह-प्रसंग, मातृक चक्र वा निवास ई अर्थ रोकि सकैत अछि। पोथी प्रसंग कैं उपाधि-जेकाँ जाँचैत अछि। एहि पद्धतिसँ अन्वय-व्यातिरेकी तुलना—एके शब्द अलग प्रसंगमे की करैत अछि—आरो औपचारिक बनाओल जा सकैत अछि।

८.५ अभावक प्रमाण

नाम नहि भेटब, रचना-नाम नहि भेटब, स्त्रीक नाम नहि भेटब, तिथि नहि भेटब—ई सभ अलग-अलग अभाव अछि। नव्य-न्याय दृष्टिसँ अभावक आश्रय आ अपेक्षित प्रतियोजी स्पष्ट हुए बिना “इतिहासमे नहि छल” निष्कर्ष अनुचित अछि। पोथी अध्याय २०मे रचना-नामक अभाव कैँ साहित्यिक पहचानक अभाव नहि मानैत अछि; एहि सिद्धान्त कैँ समस्त ग्रन्थमे सामान्य नियम बनाओल जाए।

९. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति सँ समीक्षा

९.१ मुख्य अभिलेखक भीतर समानान्तर रेखा

समानान्तर इतिहासक लक्ष्य केवल आधिकारिक कथाक विरोध नहि, ओकर बाहर आ भीतर दबायल प्रमाणक रेखा खोजब अछि। एहि पोथीमे स्त्रीक अनाम कड़ी, दौहित्र, मातृक चक्र, गौण शाखा, छोट ग्राम, स्थानीय डीह, विद्वत्ता-उपाधि आ गुरु-शिष्य सम्बन्ध मुख्य वंश-रेखाक समानान्तर इतिहास खोलैत अछि। ई दृष्टि पञ्जी कैँ केवल प्रतिष्ठित पुरुषक सूची बनेबाक प्रवृत्ति रोकैत अछि।

९.२ अभिलेखक सामाजिक सीमा

एहि संग एक कठोर सीमा स्वीकार आवश्यक अछि: पञ्जी जे समाजक भाग कैँ दर्ज करैत अछि, ओकर बाहरक लोकजीवन स्वतः अदृश्य भऽ सकैत अछि। अभिलेखक मौन सत्ता-संरचनाक परिणाम भऽ सकैत अछि, मुदा मौन स्वयं कोनो वैकल्पिक तथ्यक प्रमाण नहि। समानान्तर इतिहासक अनुशासन मांगैत अछि जे मौखिक इतिहास, स्त्रीगीत, ग्राम-स्मृति, भूमि-अभिलेख, लोक-कथा, अन्य जातीय/समुदायिक वंश-स्रोत, पाण्डुलिपि आ स्थानीय दस्तावेजक पार-सत्यापन कएल जाए।

९.३ “सभ्यतागत अभिलेख” दावाक मर्यादा

पोथी पञ्जी कैँ मिथिलाक “सभ्यतागत अभिलेख” कहैत अछि। ई मूल्यवान रूपक अछि, किएक तँ परिवार, भूमि, शिक्षा, विवाह आ स्मृति एकत्र देखाइत अछि। मुदा समानान्तर इतिहासक कसौटीपर ई “मिथिलाक एक महत्त्वपूर्ण सभ्यतागत अभिलेख” कहल जाए, “सम्पूर्ण मिथिलाक अभिलेख” नहि। एहि

सूक्ष्म भाषिक सुधारसँ स्रोतक महत्त्व घटैत नहि; उलटे ओकर ऐतिहासिक सत्यनिष्ठा बढ़ैत अछि।

१०. संयुक्त तुलनात्मक निर्णय

सारणी २. चार पद्धतिक तुलनात्मक निष्कर्ष

दृष्टि	सबल पक्ष	मुख्य प्रश्न	सुधार
भारतीय साहित्य-मीमांसा	प्रसाद-गुण, औचित्य, संक्षिप्त सूत्रक ध्वनि खोलब	अत्यधिक सूत्रात्मक पुनरावृत्ति साहित्यिक प्रवाह घटबैत अछि	नियम-खंड कँ सारणी/बॉक्समे समेटि मुख्य गद्य सघन करू
पाश्चात्य इतिहास-पद्धति	मूल पाठ-संरक्षण, अनिश्चितता, स्रोत-परत, सूक्ष्म विश्लेषण	प्रदर्शन-अंश सभमे लोकेटर सर्वत्र नहि; अभिलेखीय प्रतिनिधित्व सीमित	प्रत्येक उदाहरणक स्रोत-पृष्ठ, चित्र/पंक्ति, संस्करण-संकेत दिअ
नव्य-न्याय	सम्बन्ध-पृथक्करण, संशय-संरक्षण, पहचान-अवच्छेदक	किछु आधुनिक वर्गीकरण अनौपचारिक रूपेँ प्रयुक्त	परिभाषा, हेतु, बाधक, विश्वास-स्तरक औपचारिक नियम बनाउ
विदेह समानान्तर इतिहास	स्त्री-कड़ी, गौण शाखा, ग्राम, बौद्धिक घरक पुनर्पाठ	मुख्य अभिलेखक बाहरक समुदाय मौन	समानान्तर स्रोतक त्रिकोणीकरण, मौनक सीमा स्पष्ट करू

११. साहित्यिक मूल्यांकन: गद्य, संरचना आ पाठकीय अनुभव

ग्रन्थक गद्य शिक्षणोपयोगी, स्पष्ट आ दृढ़ अछि। “पञ्जी जाल अछि”, “विवाह सामाजिक मानचित्रक इंजन अछि”, “पहिने सुरक्षित करू, बादमे व्याख्या” जेकाँ सूत्र पाठकक स्मृतिमे रहैत अछि। कठिन विषय लेल ई लाभ अछि। परन्तु ४४७ “डाटा नियम” आ ४५० “आलोचनात्मक सावधानी” रूपक आवृत्ति एक सीमा बाद लय कँ यान्त्रिक बनबैत अछि। पाश्चात्य शोध-पत्रिका

शैलीमे ई दोहराव कैँ अध्याय-अन्त “नियम सार”मे समेटल जा सकैत अछि। मुख्य विश्लेषणमे केवल ओहि ठाम चेतावनी राखल जाए जतए नूतन जोखिम अछि।

रचनात्मक रूपसँ भाग १–७ क्रमिक शिक्षण-ढाँचा बनबैत अछि: अवधारणा → व्याकरण → सम्बन्ध → भूगोल → इतिहास → अभ्यास → उपकरण। ई बहुत सफल संरचना अछि। भाग ८क परिशिष्ट उपकरणक पुनरावृत्ति करैत अछि; भाग ९क अनुक्रम-कवरेज प्रकाशकीय लेखा-परीक्षा अछि। भाग ९ कैँ स्वतंत्र “कवरेज अनुलग्नक” बनाओल जाए तँ मुख्य ग्रन्थक साहित्यिक गति बेहतर रहत।

१२. सम्पादकीय आ तथ्य-प्रस्तुति निखार ऑडिट

अध्याय १: विषय-सूचीमे शीर्षक अछि, मुदा उपलब्ध मुख्य पाठ अध्याय-शीर्षक बिना आरम्भ होइत अछि; उपशीर्षक संख्या सीधे “२” सँ शुरू होइत अछि। अध्याय शीर्षक आ “१. ...” उपशीर्षक पुनर्स्थापित करू।

अध्याय ३४: विषय-सूची आ मुख्य पाठक शीर्षक अलग अछि। एक मानक शीर्षक निश्चित करू।

परिशिष्ट (D), (E), (I), (J): शीर्षक वास्तविक आबाद गजेटियर/सूची जेकाँ अछि, मुदा सामग्री प्रमुखत: कार्य-रूपरेखा, क्षेत्र, नमूना आ नियम अछि। शीर्षक संशोधित करू अथवा पूर्ण डेटा जोड़ू।

अध्याय ३८ मद १ “पञ्जी प्रबन्ध”क स्रोत-पृष्ठ रिक्त चिह्नित अछि; स्रोत-पृष्ठ वा “मुखपृष्ठ/अनुक्रमिक शीर्षक” जेकाँ स्पष्ट स्थान दियौ।

अध्याय ३८मे “आसी एकहरा ग्रामारम्भ:” मद ४१/६१, “नशिरा देशे डुमरिया ग्रामारम्भ” मद १३३/१३५, आ “सोदरपुर सरिसव डोडरा लछमिनियां” मद २२१/२२२ रूपमे पुनरावृत्त अछि। प्रत्येक उपस्थिति-दर्ज कैँ अलग पहचान-संख्या आ पुनरावृत्तिक कारण दियौ।

अध्याय ३३–३५ बहुत छोट आ अध्याय ३८ अत्यधिक विशाल अछि। ३३–३७ कैँ “अनुक्रम प्रोटोकॉल”क उपखंड आ ३८ कैँ “कवरेज अनुलग्नक” बनाओल जाए तँ संरचनात्मक संतुलन सुधरत।

अध्याय २३–२७क प्रदर्शन-उदाहरणमे सटीक स्रोत-पृष्ठ/पंक्ति/छवि-परिचय जोड़ू। “जेकाँ” वा “एहि प्रकारक” उदाहरणक स्थानपर स्रोत-सत्यापनीय प्रविष्टि दिअ।

“जीनोम मैपिंग” शब्दक रूपकात्मक उपयोग आरम्भिक टिप्पणीमे स्पष्ट करू, जे ई आनुवंशिक डीएनए परीक्षण नहि।

अभिलेखक सामाजिक प्रतिनिधित्व स्पष्ट करू: पञ्जी जे समुदाय, घर आ श्रेणी दर्ज करैत अछि, ई विश्लेषण प्रत्यक्षतः ओहि अभिलेखीय संसारपर लागू अछि; सम्पूर्ण मिथिला समाजपर स्वतः नहि।

स्रोत-स्तर पर बाह्य पुस्तकीय सन्दर्भ-सूची जोड़ल जाए। एहि शोध-समीक्षाक अन्तमे वेबसाइट-विहीन पुस्तक-सूची देल जा रहल अछि।

१३. शुद्ध मैथिली निखार: पारिभाषिक अनुशासन

एहि शोध-समीक्षामे मैथिली वाक्य-विन्यास, “अछि/छै”क निर्जीव-प्रयोग, देवनागरी पारिभाषिक रूप, “पानि” जेकाँ मानक रूपक सामान्य नियम, आ अनावश्यक हिन्दी/अंग्रेजी मिश्रण सँ बचबाक प्रयत्न कएल गेल अछि। विदेशी सिद्धान्तिक नाम आवश्यक ठाम मात्र ब्रैकेटमे राखल गेल अछि। “नेटवर्क”, “डेटा”, “सोर्स” जेकाँ शब्दक बदला मुख्य गद्यमे क्रमशः सम्बन्ध-जाल, अभिलेखीय क्षेत्र, स्रोत आदि रूप प्राथमिक राखल गेल।

मूल पोथी अंग्रेजी-प्रधान व्याख्यात्मक गद्य आ देवनागरी पञ्जी-शब्दावलीक मिश्रित ग्रन्थ अछि; तैं मूल स्रोतक अंग्रेजी शब्दावली कैं मैथिली मानकीकरणक दोष कहब उचित नहि। भाषिक निखारक प्रश्न मुख्यतः एहि शोध-समीक्षा आ भविष्यक मैथिली संस्करणपर लागू अछि।

१४. समग्र निष्कर्ष

(Decoding the Panji of Mithila — Volume II) पञ्जी-पठन कैं पारिवारिक वृक्षक सीमासँ निकालि सम्बन्धात्मक इतिहासक विधि बनबैत अछि। ओकर केन्द्रिय उपलब्धि “अर्थ बनाबय सँ पहिने स्रोतक संरचना बचाउ” सिद्धान्त अछि। सन्तति/अपत्य, सँ, संख्या, उपाधि, ग्राम-सूत्र, मातृक चक्र, विवाह, दौहित्र, बहुविवाह, डीह-वासी-मूलग्राम, साहित्यिक उपाधि, काल-संकेत, टीप

आ पाठान्तर सभ कैं अलग विश्लेषणात्मक वस्तु बनाओल गेल अछि। एहि कारण पञ्जी पाठक लेल नामक भीड़ नहि रहि, सम्बन्धक बहुस्तरीय अभिलेख बनैत अछि।

भारतीय समीक्षा एकर स्पष्टता आ औचित्य कैं मान्यता दैत अछि; पाश्चात्य इतिहास-पद्धति मूल-पाठ संरक्षण, सूक्ष्म पठन आ स्रोत-संशय कैं मजबूत मानैत अछि; नव्य-न्याय सम्बन्ध-पृथक्करण आ प्रमाण-अनुशासनक सूक्ष्मता चिन्हित करैत अछि; विदेह समानान्तर इतिहास एकर भीतर स्त्री-कड़ी, गौण शाखा, ग्राम आ बौद्धिक घरक समानान्तर स्मृति देखैत अछि, मुदा अभिलेखक सामाजिक सीमा पर प्रश्न उठबैत अछि।

सम्पादकीय सुधारक बाद—विशेषतः अध्याय १ आ ३४क शीर्षक-सुधार, परिशिष्टक नामकरण, पूर्ण नाम/स्थान सूची, प्रदर्शन-उदाहरणक स्रोत-लोकेटर, अध्याय ३८क अपूर्ण/पुनरावृत्त मदक स्पष्टता, नियम-वाक्यक संक्षेप आ बाह्य पुस्तक-सन्दर्भ—ई ग्रन्थ पञ्जी अध्ययन, डिजिटल मानविकी, सामाजिक इतिहास, साहित्यिक इतिहास आ अभिलेख विज्ञानक बीच एक अधिक प्रामाणिक सेतु बनि सकैत अछि।

ग्रन्थ-सूची

- (Decoding the Panji of Mithila — Volume II)
- (Decoding the Panji of Mithila — Volume I)
- पञ्जी-प्रबन्ध — खण्ड १
- पञ्जी-प्रबन्ध — खण्ड २
- (Geneological Mapping 450 AD–2009 AD — Part 2)
- तत्त्वचिन्तामणि
- न्यायसूत्र
- (The Character of Logic in India)
- (The Navya-Nyāya Doctrine of Negation)
- नाट्यशास्त्र
- ध्वन्यालोक

- वक्रोक्तिजीवित
- औचित्यविचारचर्चा
- काव्यप्रकाश
- साहित्यदर्पण
- (The Historian’s Craft)
- (What Is History?)
- (On History)
- (The Pursuit of History)
- (The Landscape of History)
- (The Cheese and the Worms)
- (Silencing the Past)
- (The Archaeology of Knowledge)
- गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — खण्ड २

अनुलग्नक १. सम्पूर्ण रचना-कवरेज सारणी

ई सारणी समीक्षा-कवरेजक लेखा-परीक्षा अछि। सभ ३८ अध्याय, सभ १० परिशिष्ट, समापन-टिप्पणी आ अन्तिम कवरेज निष्कर्षक संरचनात्मक उपस्थिति सत्यापित कएल गेल अछि।

क्रम	रचना	शब्द	उपशीर्षक/मद	स्थिति
1	पञ्जी: स्मृति, अभिलेख आ सामाजिक मानचित्र	2976	13	समीक्षित
2	“प्राचीन पञ्जी” मे की अछि	2924	32	समीक्षित
3	पञ्जी पढ़ब कठिन किएक	2924	32	समीक्षित

4	पञ्जी-प्रविष्टिक मूल इकाइ	2649	33	समीक्षित
5	मुख्य सम्बन्धसूचक शब्द	3292	26	समीक्षित
6	ग्राम-सूत्र आ बसोबास-संकेत	2608	31	समीक्षित
7	“सन्तति” आ “अपत्य”क पाठ	2283	19	समीक्षित
8	“सँ”क अर्थ-निर्णय	2432	20	समीक्षित
9	कोष्ठकक संख्या	2782	46	समीक्षित
10	संक्षेपाक्षर आ उपाधि	2728	24	समीक्षित
11	पितृरेखा	2526	37	समीक्षित
12	मातृरेखा:मातृक चक्र	2476	21	समीक्षित
13	विवाह-अभिलेख	2411	40	समीक्षित
14	दौहित्र आ वैवाहिक सम्बन्ध	2170	19	समीक्षित
15	बहुविवाह आ गौण सम्बन्ध	2450	21	समीक्षित
16	प्राचीन पञ्जीक ग्राम-जगत	2253	22	समीक्षित
17	ग्राम-समूह आ प्रव्रजन	2142	21	समीक्षित

18	डीह, वासी, मूलग्राम आ स्थानीय पहचान	2273	21	समीक्षित
19	विद्वान, कवि, पुरोहित आ विशेषज्ञ	2151	20	समीक्षित
20	साहित्य-इतिहासक रूपमे पञ्जी	2321	21	समीक्षित
21	सामाजिक संरचनाक रूपमे पञ्जी	2238	21	समीक्षित
22	पञ्जी आ काल	2358	22	समीक्षित
23	एक प्रविष्टिक क्रमानुगत विश्लेषण	2568	26	समीक्षित
24	ग्राम-समूहक क्रमानुगत विश्लेषण	2446	24	समीक्षित
25	मातृक चक्रक विश्लेषण	2448	23	समीक्षित
26	विवाह-प्रविष्टिक विश्लेषण	2427	23	समीक्षित
27	दीर्घ सघन अंशक विश्लेषण	2620	25	समीक्षित
28	पञ्जी परिवार-वृक्ष बनायब	2274	21	समीक्षित
29	ग्राम-सूची बनायब	2328	25	समीक्षित
30	व्यक्ति-सूची बनायब	2486	24	समीक्षित
31	पारिभाषिक कोश बनायब	2886	31	समीक्षित

32	त्रुटि, पाठान्तर आ सम्पादकीय अनुशासन	2310	25	समीक्षित
33	खण्ड १ अनुक्रम-प्रोटोकॉल	454	2	समीक्षित
34	खण्ड १क मूल संरचना आ अध्याय-संयोजन	225	0	समीक्षित
35	गोत्र, मूल, मूलग्राम: अनुक्रम-आधारित विश्लेषण	259	2	समीक्षित
36	लौकित, चौगोला, श्रेणी आ पत्रांक	1585	3	समीक्षित
37	विद्वान, गुरु-शिष्य, गोत्र-प्रवर आ बीजी पुरुष	1361	25	समीक्षित
38	खण्ड १ ग्रामारम्भ सम्पूर्ण कवरेज-जाँच	6934	224	समीक्षित
परि. (A)	पञ्जी-पदावली कोश	1577	13	समीक्षित
परि. (B)	संक्षेपाक्षर-कुञ्जी	1382	16	समीक्षित
परि. (C)	सम्बन्ध-कुञ्जी	1166	16	समीक्षित
परि. (D)	ग्राम-गजेटियर	1795	19	समीक्षित
परि. (E)	उपाधि आ व्यवसाय-सूची	1689	22	समीक्षित
परि. (F)	नमूना वंशावली तालिका	1927	25	समीक्षित
परि.	नमूना विवाह-नेटवर्क तालिका	1807	25	समीक्षि

(G)				त
परि. (H)	सम्पादकीय प्रतीक	1540	19	समीक्षित
परि. (I)	नाम-सूची	1923	27	समीक्षित
परि. (J)	स्थान-सूची	2044	30	समीक्षित
समापन	समापन-टिप्पणी	1364	21	समीक्षित
अन्त	कवरेज निष्कर्ष	97	0	समीक्षित

अनुलग्नक २. अध्याय ३८क २२४-मद सम्पूर्ण अनुक्रम कवरेज

नीचाँ सभ २२४ मद बिना छोड़ने देल गेल अछि। दोहरायल शीर्षक मूल सूचीमे पृथक उपस्थिति-दर्ज रूपमे यथावत राखल गेल अछि। “—” स्रोत-पृष्ठक अर्थ उपलब्ध पाठमे पृष्ठ-अंक नहि देल गेल।

मद	अनुक्रम-शीर्षक	खण्ड १ स्रोत-पृष्ठ
1	पञ्जी प्रबन्ध	—
2	बंगालक शासक वल्लाल सेनक महामात्य	1
3	हाटी सोदरपुर	4
4	सुलतानपुर देशे पटेगना	7
5	अथ सरिसव सोदरपुर ग्रामारम्भः	29
6	दिगउन्ध सोदरपुर ग्रामारम्भ	58
7	महिया सोदरपुर ग्रामारम्भ	64

8	सोदरपुर खोरि ग्रामारम्भ	66
9	अथ सोदरपुर रैयाम ग्रामारम्भः	70
10	बघवास सरिसव ग्रामारम्भ	75
11	पिलखा माण्डर जगेली (यज्ञपल्ली)	78
12	बड़गाम दरिहरा असूरा	103
13	बलियास ओगही-द्वाशय, बनैली, कोबरा (कोहबरा)	108
14	बलियास एकमा बरहकोना	110
15	असूरा-सुपटानी गंगोली	117
16	बड़गाम दरिहरा-धर्मपुर देशे सलमपुर-सालमपुर-सलेमपुर	120
17	बड़गाम शालमपुर	122
18	जहानपुर-पाँछा देखूः-	126
19	नशिरा देशो दिघडी	128
20	राजनपुरा दरिहरा कोईलख सँ सरौनी निशखुड़ देशे (प्रगन्ना)	130
21	सरौनी दरिहरा राजनपुर	132
22	रतौली दरिहरा जहानपुर बनैली श्रीनगर, रमै रहटमीना भडरा	134
23	रमै दरिहरा रतौली	136
24	अररिया बैरगाछी सँ जहानपुर-रतौली दरिहरा	137
25	सतलखा सतौलि ग्रामारम्भः	143
26	सतलखा धर्मपुर देशे वरहकोना तिरासी छई देशे	146
27	जगतपुर माण्डर-चुनापुर बेलबाडी	147

28	रजौरा माण्डर शेषांश	148
29	खवासपुर पीछे देखें धनी सुत डोमनः	148
30	सोदरपुर मानी ग्रामारम्भः	149
31	रैयाम घोषियाम ग्रामारंभः	150
32	सकुरी बेलउंच ग्रामारम्भः	153
33	भानुपुर पनिचोभ ग्रामारम्भः	154
34	कोइलख रशाढ	156
35	रूचौलि एकहरा ग्रामारम्भः	156
36	सुल्हनी नरउन ग्रामारम्भः	159
37	त्रिपुरौली नरउन ग्रामारम्भः	160
38	हवेली देशे डकरा डिहिया समीपे सम्प्रति तिरहुत देशे दहौरा राजे	160
39	नगवाड़ घोसोत ग्रामारम्भः	161
40	नगवाड़ घोसोत सॅ पूर्व गडवा देशे वासी जयनगर बंगाल मध्य	161
41	आसी एकहरा ग्रामारम्भः	164
42	गंगोरा बुधवाल ग्रामारम्भः	165
43	बढ़ियाम पवौली ग्रामारम्भः	166
44	शाण्डिल्य गोत्रे ब्रह्मपुरा सॅ कोबरा (कोहबरा) मसुरिया	167
45	कन्हौली परवाहा	168
46	एकहरा संग्राम ग्रामारम्भः	171
47	एकहरा संग्राम सिरसिया ग्रामारम्भः	173
48	नेयाम कुजौली (कंजोली) ग्रामारम्भः	175

49	मलंगिया कुजौली ग्रामारम्भः	189
50	शक्तिरायपुर नरउन -मोरसंडा	196
51	कवै नरउन ग्राम रशाढय	199
52	लोआम सुरगन ग्रामारम्भः	200
53	महिन्द्रपुर पण्डुआ ग्रामारम्भ -पूर्णिया शाखा	203
54	अलयवार बैगनी रूपसपुर	207
55	समौलि पाली ग्रामारम्भः	216
56	महिषी पाली ग्रामारम्भः	226
57	मंगरौनी पाली ग्रामारम्भः	230
58	बरही निखूति ग्रामारम्भः	243
59	सुन्दर सकराढी ग्रामारम्भः	255
60	रोहाड सकराढी ग्रमारम्भः	256
61	आसी एकहरा ग्रामारम्भः	257
62	सिहौली माण्डर	259
63	पिलखा सुइरी मूल	260
64	देशुआल खण्डवला सिरसा	261
65	तल्हनपुर सुल्हनी ग्रामारम्भः	261
66	नगवाड घोसोत ग्रामारम्भः	263
67	रखवारी हरिअम ग्रामारम्भः	277
68	ओडा एकहरा ग्रामारम्भः	287
69	परहट सकराढी ग्रामारम्भः	299
70	सुखेत सकराढी ग्रामारम्भ	304

71	बढियाम पवौली (पर्वपल्ली) ग्रामारम्भ	304
72	भडगाम जजिवाल ग्रामारम्भः असजा देशे विष्णुपुर	346
73	परम गढ अलय सँ असजा श्रीपुर देशे सकमा	347
74	वत्सवाल नरउन मूल ग्राम असजा देशे अमौर भवानीपुर	350
75	द्यौरी खण्डवला (खडोडौरे द्यौरी) ग्रामारम्भ	352
76	मझौरा करमहा ग्रामारम्भ	362
77	छ्रादन सरिसव ग्रामारम्भ	371
78	खण्डवला (खडौरे) बेहट ग्रामारम्भ	380
79	एकमा खण्डवला ग्रामारम्भ	395
80	कोकीलवाड दिर्घोषः ग्रामारम्भ	404
81	उदनपुर जजिवाल ग्रामारम्भ	410
82	नगवाड घोसोत सँ बोधग्राम (बंगाल प्रान्ते)	428
83	सरिसव सोदरपुर (धरमपुर देशे हेमनगर-शेषांश)	432
84	रतौली दरिहरा ग्रामारम्भः	433
85	नगवाड घोसोत मूल शेषांशः शाहपुर ग्राम	440
86	दिगउन गंगोली ग्रामारम्भ	442
87	गुलदी खण्डवला मूल ग्राम प्रारम्भ्यते	446
88	देवहार सँ देवहार (जाटुकर्ण गोत्रे) मूल ग्रामारम्भ पूर्व बेसुआलवासी	447
89	सुदय बेलउँच ग्रामारम्भ	450
90	शाण्डिल्य गोत्रे ब्रह्मपुरा मूल	454

91	बलिराजपुर हरिअम ग्राम	456
92	गनाम खौआल मूल ग्रामारम्भ	467
93	खड़का बलियास ग्रामारम्भ	469
94	बेलसाम बुधवाल ग्रामारम्भ: कदवा ग्राम	471
95	जगति पवौली (पर्वपल्ली) मूल ग्रामारम्भ: गंगोली सँ वीजी गंगाधर	472
96	परियाम्ब बुधवाल ग्रामारम्भ	480
97	परियाम बुधवाल नोनगडा -कुम्हडी नशिरा देशे	491
98	बेलासाम बुधवाल ग्रामारम्भ	512
99	श्रीपुर देशे फूलसरा ग्रामारम्भ	517
100	श्रीपुर देशे महादेवकोल ग्राम समस्त मूल	521
101	श्रीपुर देशे बभनिगामा ग्राम	524
102	श्रीपुर देशे चिल्हनिया ग्राम	526
103	श्रीपुर देशे बरहकुम्मा	527
104	श्रीपुर देशे दौलतपुर ग्राम	529
105	खड़हरा ग्राम (भागलपुर जिला)	529
106	सुलतानपुर देशे सहासमल	531
107	बेंगा बैकुण्ठपुर ग्राम	532
108	सुलतानपुर देशे कटहरबाडी ग्राम	535
109	सुलतानपुर देशे सोहाग माड़र ग्राम	537
110	सुलतानपुर देशे डेढ़ूआ ग्राम	542
111	सुलतानपुर देशे बरदाहा ग्राम	544

112	हाटी सोदरपुर मूल	549
113	दरिहरा मधुकरपट्टो मूल ग्रामारम्भ	552
114	सोदरपुर रैयाम मूल सुलतानपुर देशे पटेगना	569
115	दरिहरा डीह मूलः धर्मपुर देशे मुशापुर	573
116	दरिहरा कुसमाल मूल (अपभ्रंश कुसमौली, कुसौली) ग्रामारम्भ	576
117	माण्डर (मडरे) कनसम मूल ग्रामारम्भ	580
118	कुसमाल सबास मूल ग्रामारम्भ	597
119	माण्डर (मडरै) जगतपुर मूल ग्रामारम्भ	602
120	पनिचोभ झौवा मूल ग्रामारम्भ	612
121	पनिचोभ भानुपुर ग्रामारम्भ	618
122	टकवाल नीमा (टकवाडे नीमा) मूल ग्रामारम्भ	625
123	ओडा एकहरा शेषांश	627
124	एकहरा रूचौली ग्राम शेषांश	628
125	ओडा एकहरा शेषांश-छई देशे गोशांईगांव	629
126	बहिरवाड परहट मूलग्रामारम्भ	635
127	सुरगन पिण्डोखरि मूल ग्रामारम्भ	643
128	सुलतानपुर देशे भद्रेश्वर	644
129	सोदरपुर तेतरिहार मूल ग्रामारम्भ	647
130	सोदरपुर सिमरवाड मूल ग्रामारम्भ	650
131	सुलतानपुर देशे अररिया बैरगाछी	651
132	सोदरपुर सुहथरि ग्रामारम्भ	652

133	नशिरा देशे डुमरिया ग्रामारम्भ	654
134	दिघवे गांगी मूल ग्रामारम्भ नशिरा देशे डुमरिया	655
135	नशिरा देशे डुमरिया ग्रामारम्भ	656
136	सोदरपुर हाटी मूल शेषांश	665
137	पलिवाड़ हाटी मूल ग्राम	665
138	सुलतानपुर देशे डुमरिया ग्रामारम्भ	668
139	सोदरपुर सरिसव शेषांश अठियावाडी ग्राम	753
140	माण्डर डीहा मूल	754
141	महिन्द्रपुर पण्डुआ मूल सुलतानपुर देशे बेलवाडी	757
142	करमहा नडुआर मूल	760
143	रतिपाड बेलउॅच भटोत्तर (धर्मपुर देशे)	765
144	बेलउॅच ओझोलि: बरहकोना वासी	769
145	रतौली दरिहरा मूल-पूर्व परिचय लेखकक प्रथम पुस्तक जीनोम मैपिंग भाग-1/109 पर देखू	770
146	पलिवाड़ फूलदाहा मूल	773
147	खांगुड़ सरिसव मूल-पूर्व रानीटोल अपर सिरसिया अपर बेला- प्रभात कॉलोनी पूर्णिया	774
148	खण्डवला (खडौरे) गुलदी धर्मपुर देशे रघुनाथपुर घेंचूआ सम्प्रति दिल्ली	775
149	खौआल मुराजपुर चणका ग्राम:	778
150	दरिहरा बडगाम मूल धर्मपुर देशे आदमपुर	780
151	सरिसव बघवास मूल पूर्व रशाढ अपर रहटमीना	783
152	सतलखा सतौली मूल	787

153	करमहा बेहट तिरहुति देशे बिहारी वासी अपर सुलतानपुर देशे रहटमीना	789
154	अलयवार उसरौली टेढ़ी (धर्मपुर)	790
155	कटइवार अन्हरा मूल नवटोल विष्णुपुर ग्राम (मधेपुरा) सम्प्रति पूर्णिया	791
156	फनन्दहवार जोफरा सुखसेना वासी	791
157	बहेराढी पारखण्ड धर्मपुर देशे रघुनाथपुर	792
158	बहेराढी महिसाम बाबू बभनी सँ पूर्णिया	793
159	दरिहरा रतौली मूल पुनर्लेखनः	793
160	बहेराढी दीप सोनाली (कटिहार)	795
161	गंगोर अहियारी मूल रघुनाथपुर	796
162	काश्यप गोत्रे सकराढी (सकरवाड़) ब्रह्मपुर मूल फत्तेपुर ग्राम	797
163	पलिवाड़ राढी मूल	798
164	हरिपुर पाली धर्मपुर देशे सुखसेना	799
165	काश्यप गोत्रीय ब्रह्मपुरिये ब्रह्मपुरा मूल	800
166	सोदरपुर मानी मूल ग्रामारम्भः	802
167	उदनपुर जजिवाल मूल नशिरा देशे रधेली	806
168	बेलउँच ओदा धमदाहा वासी	810
169	पराशर गोत्रीय सकुरी मूल धर्मडीहा (धमदाहा)	812
170	बलियास एकमा धमदाहा ग्राम (पूर्व धर्मडीहा)	813
171	परिसरा सहुडी मूल सुलतानपुर पुडैनी ग्राम	816
172	कटैयवार अन्हरा मूल सुलतानपुर देशे तमकुडा	819

	(ताम्रकुण्डा)	
173	सरिसव खांगुड बीरवन पूर्व तिरहुत देशे यमशम	821
174	पनिचोभ वीरपुर मल्हनी देशे परशरमा	822
175	नड़ुआर करमहा परशरमा	822
176	कुजौली दिगौन मूल परशरमा	822
177	पवौली रघेपुरा बलिया विक्रमपुर (मधुबनी)	823
178	सरिसव खांगुड मूल हेवली (नशिरा) देशे डिहिया	823
179	नरसाम बलियास सॅ सौराठ सॅ बडशाम सॅ झलारी अपर मैथिलटोल पूर्णिया	827
180	पलिवाड मंगरौनी मूल अमृता सॅ मैथिल टोल पूर्णिया	827
181	सकुरी गंगोली मूल बघवा (सहरसा)	827
182	नगवाड घुसौत तेगछिया	828
183	एकहरा रूचौली तेगछिया	828
184	दरिहरा राजनपुरा तेगछिया	828
185	सतलखा सतौलि तेगछिया (जीतवारपुर)	829
186	खांगुड सरिसव तेगछिया	831
187	करमहा अहपुर मूल तेगछिया	831
188	कुजौली (कुजिलवाड) मलंगिया तेगछिया	832
189	दिघोय (दिघवे) कनकौरा मूल	837
190	पनिचोभ ददरी मूल पलासी ग्राम	845
191	दरिहरा राजनपुरा पलासी (पीच रोड सँ पूर्व)	846
192	करमहा अनलपुर दभडा (प॰ टोल)	872

193	बेलउँच ओझोलि मूल रहटमीना	959
194	बहेराढी दीप मूल	960
195	ओइनिवार जगतपुर मूल घोडाघाट ग्राम	965
196	माण्डर सिहौली मूल घरूवारी ग्राम	977
197	बुधवाल डुमरा मूल सुलतानपुर जमूआ टेक ग्राम	985
198	निखुतिवार निखूति मूल बेलवाडी	991
199	माण्डर रजौरा मूल बेलवाडी ग्राम	997
200	माण्डर (मडरै) कटौना मूल पोठिया ग्राम	1002
201	सोदरपुर कटका मूल पोठिया ग्राम	1005
202	गंगोली (गंगुलवार) सकुरी मूल सुलतानपुर ढंगरी ग्राम	1007
203	टकवाल नीमा मूल सुलतानपुर पटेगना ग्राम	1013
204	दरिहरा रतौली रामपुर सुलतानपुर	1027
205	माण्डर डीह मूल सुलतानपुर कुरसाकाँटा ग्राम	1044
206	करमहा तरौनी मूल तीरा ग्राम	1046
207	बेलउँच सकुरी मूल खारिदह ग्राम	1051
208	बेलउँच गढ मूल सतवेढ ग्राम	1059
209	ओइनिवार जगतपुर मूल	1062
210	बुधवाल (वुधवाडें) गंगोरा मूल	1063
211	खण्डवला (खडौरे) एकमा लसकरी	1065
212	करमहा नरूआड मूल भटोत्तर शेषांश	1068
213	कुजौली मलंगिया रूपसपुर	1071

214	अलयवार अलय मूल पूर्व तिरहुत अपर रामपुर नशिरा वासी	1073
215	माण्डर कनसम मूल सुखसेना ग्राम	1077
216	टकवाल श्रीखण्ड श्रीपुर देशे अन्धासूर अपर नशिरा देशे गुणमती	1080
217	सोदरपुर मानी मूल धर्मपुर देशे कुकरौन	1081
218	सोदरपुर गौर मूल	1082
219	बलियास नरसाम मूल तिरहुत प्रान्त	1088
220	जजिवाल भडगाम मूल तिरहुत देशे शिवनगर	1091
221	सोदरपुर सरिसव डोडरा लछमिनियां	1092
222	सोदरपुर सरिसव डोडरा लछमिनियां	1092
223	गंगोली सुपटानी	1094
224	सम्भुआल मूल पूर्व मरंगी अपर पोठिया	1104

— समाप्त —

आलेख ४४ · पञ्जी, दर्शन, भाषा आ समानान्तर इतिहास

डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड ३

सारांश

ई शोध-समीक्षा मिथिलाक पञ्जी-परम्पराक उपटीप सामग्री पर आधारित “मिथिलाक पञ्जीक कूट-विमोचन, खण्ड ३”क सम्पूर्ण संरचना, पद्धति, प्रविष्टि-समूह, स्थान-स्मृति, विवाह-मार्ग, विद्वत्ता-सूचक उपाधि, सामाजिक पद, संक्षेप-संख्या-तन्त्र, पुनर्निर्माण-विधि आ सम्पादकीय मर्यादाक समेकित परीक्षण करैत अछि। मूल पोथी खण्ड २क प्रविष्टि १ सँ २२४ धरि लगातार सोलह समूहमे पढ़ैत अछि; तकर बाद शब्दावली, संख्या-कुंजी, स्थान-सूची, व्यक्तिनाम-सूची, विद्वान–उपाधि–स्थिति-सूची, परिवार-रेखा पुनर्निर्माण, रिक्ति/क्षति-नीति आ सभ्यता-अभिलेख सम्बन्धी निष्कर्ष प्रस्तुत करैत अछि। एहि समीक्षा मे कोनो नाम वा रिक्त स्थान अनुमानसँ नहि भरल गेल अछि; मूल पोथीक घोषित सम्पादकीय सिद्धान्त—प्रतिलेखन, वंशगत व्याख्या आ ऐतिहासिक निष्कर्ष कैं पृथक राखब—कैं मूल्यांकनक आधार बनाओल गेल अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक औचित्य, ध्वनि, रीति, गुण आ वक्रोक्ति; पाश्चात्य निकट-पाठ, ऐतिहासिक यथार्थ-प्रतिनिधित्व, अभिलेख-विमर्श आ इतिहास-आख्यान; नव्य-न्यायक प्रमाण, विषयता, विशेषण–विशेष्य, अवच्छेदकता, प्रतियोगिता–अनुयोगिता आ परिभाषिक सूक्ष्मता; तथा विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक बहुस्रोत, अभिलेखीय मौन, प्रमाण-वजन, केन्द्र–हाशिया समान आलोचनात्मक कसौटी आ संशोधनशील निष्कर्षक आधार पर पोथीक साहित्यिक-ऐतिहासिक महत्त्व जाँचल गेल अछि। मुख्य निष्कर्ष ई अछि जे पोथीक मूल उपलब्धि “वंश-सूची” कैं “सम्बन्ध-व्याकरण” मे रूपान्तरित करब अछि: व्यक्ति, गाम, सुता-सूत्र, उपाधि, शाखा आ सन्दर्भ-संख्या परस्पर अवच्छेदक बनि कऽ एकटा बहुस्तरीय सभ्यता-अभिलेख रचैत अछि।

बीजशब्द

डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड ३ · मिथिला · वंश-अभिलेख · इतिहासलेखन · प्रमाण-विवेचन

१.३६. गजेन्द्र ठाकुर- डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला’-३- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

मिथिलाक पञ्जीक कूट-विमोचन, खण्ड ३

एक विस्तृत साहित्यिक–ऐतिहासिक शोध-समीक्षा

[Decoding the Panji of Mithila, Volume III]

आधार-पोथी: गजेन्द्र ठाकुर

उपटीप पञ्जीक खण्ड २, प्रविष्टि १–२२४क समग्र अध्ययन

भारतीय काव्यशास्त्र • पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त • नव्य-न्याय • विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि

सारांश

ई शोध-समीक्षा मिथिलाक पञ्जी-परम्पराक उपटीप सामग्री पर आधारित “मिथिलाक पञ्जीक कूट-विमोचन, खण्ड ३”क सम्पूर्ण संरचना, पद्धति, प्रविष्टि-समूह, स्थान-स्मृति, विवाह-मार्ग, विद्वत्ता-सूचक उपाधि, सामाजिक पद, संक्षेप-संख्या-तन्त्र, पुनर्निर्माण-विधि आ सम्पादकीय मर्यादाक समेकित परीक्षण करैत अछि। मूल पोथी खण्ड २क प्रविष्टि १ सँ २२४ धरि लगातार सोलह समूहमे पढ़ैत अछि; तकर बाद शब्दावली, संख्या-कुंजी, स्थान-सूची, व्यक्तिनाम-सूची, विद्वान–उपाधि–स्थिति-सूची, परिवार-रेखा पुनर्निर्माण, रिक्ति/क्षति-नीति आ सभ्यता-अभिलेख सम्बन्धी निष्कर्ष प्रस्तुत करैत अछि। एहि समीक्षा मे कोनो नाम वा रिक्त स्थान अनुमानसँ नहि भरल गेल अछि; मूल पोथीक घोषित सम्पादकीय सिद्धान्त—प्रतिलेखन, वंशगत व्याख्या आ ऐतिहासिक निष्कर्ष कैं पृथक राखब—कैं मूल्यांकनक आधार बनाओल गेल अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक औचित्य, ध्वनि, रीति, गुण आ वक्रोक्ति; पाश्चात्य निकट-पाठ, ऐतिहासिक यथार्थ-प्रतिनिधित्व, अभिलेख-विमर्श आ इतिहास-आख्यान; नव्य-न्यायक प्रमाण, विषयता, विशेषण–विशेष्य, अवच्छेदकता, प्रतियोगिता–अनुयोगिता आ परिभाषिक सूक्ष्मता; तथा विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक

बहुस्रोत, अभिलेखीय मौन, प्रमाण-वजन, केन्द्र-हाशिया समान आलोचनात्मक कसौटी आ संशोधनशील निष्कर्षक आधार पर पोथीक साहित्यिक-ऐतिहासिक महत्त्व जाँचल गेल अछि। मुख्य निष्कर्ष ई अछि जे पोथीक मूल उपलब्धि “वंश-सूची” कैं “सम्बन्ध-व्याकरण” मे रूपान्तरित करब अछि: व्यक्ति, गाम, सुता-सूत्र, उपाधि, शाखा आ सन्दर्भ-संख्या परस्पर अवच्छेदक बनि कऽ एकटा बहुस्तरीय सभ्यता-अभिलेख रचैत अछि।

कुंजीशब्द: पञ्जी, उपटीप, मिथिला, वंशावली, विवाह-भूगोल, नव्य-न्याय, प्रमाण, अभिलेखीय मौन, समानान्तर इतिहास-दृष्टि, पाठ-समीक्षा।

१. प्रस्तावना : पोथीक स्वरूप आ शोधक औचित्य

“मिथिलाक पञ्जीक कूट-विमोचन, खण्ड ३” सामान्य वंशावली-पुस्तक नहि अछि। एकर केन्द्र उपटीप पञ्जीक ओ संक्षिप्त, सूत्रात्मक, बहु-सन्दर्भित पाठ अछि जाहिमे पिता–पुत्र, सुता, दौहित्र, गाम, शाखा, विवाह, विद्वत्ता, सामाजिक पद, डयोढ़ी, संक्षेप आ संख्या एकहि पंक्तिमे घनीभूत भऽ सकैत अछि। पोथी अपन आरम्भे पञ्जी कैं स्मृति, मानचित्र आ सामाजिक अभिलेख—ई तीनू रूपमे परिभाषित करैत अछि। एहि त्रिवेणीकैं बुझने बिना बादक १–२२४ प्रविष्टिक अर्थ खुलैत नहि।

पोथीक विशिष्टता ई अछि जे ई “आधुनिक पारिवारिक वृक्ष” बनयबाक लोभ सँ अपने कैं रोकेल अछि। एकर पाठ-पद्धति नामक पहिचान कैं पिता-नाम, गाम-सूत्र, सुता-सूत्र, शीर्षक/उपाधि, शाखा आ सन्दर्भ-संख्याक संयुक्त क्षेत्रमे स्थापित करैत अछि। एही कारण “एकहि नाम” कैं “एकहि व्यक्ति” मानि लेब, “सँ” कैं साधारण पता मानि लेब, सुता कैं गौण बुझब, वा बिन्दु-दर्शित रिक्ति कैं स्मृतिसँ भरि देब—सभकैं पोथी पद्धतिगत त्रुटि मानैत अछि। ई अनुशासन एहि शोध-समीक्षाक सेहो मूल कसौटी अछि।

ग्रन्थक घोषित काल-सीमा ४५० ईस्वीसँ २००९ ईस्वी [A.D.] धरि अछि; मुदा पोथी स्वयं स्पष्ट करैत अछि जे ई सीमा सभ व्यक्ति लेल निश्चित दिनांक नहि, बल्कि दीर्घकालिक स्मृति-स्तरक संकेत अछि। एहि सावधानीक कारण पोथी कालक्रम कैं रैखिक सूची नहि बनबैत, बल्कि पुरान सूत्र, मध्यवर्ती शाखा-

विस्तार, विवाह-संचरण, विद्वत्ता-स्मृति आ आधुनिक उपाधि/पेशागत चिह्नक तहदार सह-अस्तित्व रूपेँ पढ़ैत अछि।

२. शोध-प्रश्न, स्रोत-सीमा आ कार्यविधि

एहि समीक्षाक पहिल प्रश्न अछि—की पोथी अपन घोषित “सूचकांक-नियन्त्रित” पद्धतिक पालन सम्पूर्ण खण्डमे करैत अछि? दोसर—की प्रविष्टि १–२२४क व्याख्या मे नाम, स्थान, विवाह, उपाधि, शाखा आ सन्दर्भक सम्बन्ध सुरक्षित रहैत अछि? तेसर—की दस्तावेजी गद्य साहित्यिक अर्थ-सृष्टि करैत अछि, अथवा केवल सूचनात्मक रहि जाइत अछि? चारिम—भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य आलोचना, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि एहि ग्रन्थक शक्तिस्थल आ सीमाकेँ कोना अलग-अलग देखैत अछि? पाँचम—पोथीक भाषिक, संरचनात्मक आ सम्पादकीय रूप प्रकाशन-योग्य शोध-पुस्तकक कसौटी पर कतबा संगत अछि?

स्रोत-सीमा जानबूझि कऽ मूल पोथीपर केन्द्रित राखल गेल अछि। बाह्य सिद्धान्तक उपयोग तुलनात्मक आलोचना लेल भेल अछि, मूल पञ्जी-तथ्य जोड़बाक लेल नहि। जाहि स्थान पर पोथी स्वयं अनिश्चितता, पाठ-भेद, बिन्दु-रिक्ति वा संख्या-सन्दर्भक अस्पष्टता मानैत अछि, एहि समीक्षा मे ओहि अनिश्चिततातकेँ ताहि रूपेँ राखल गेल अछि। ऐतिहासिक “खाली जगह” केँ कथा बनायब एहि शोध-पद्धतिक विरुद्ध अछि।

कार्यविधि चारि स्तरपर चलैत अछि: प्रत्यक्ष पाठ-पठन; अध्याय-आधारित संरचनात्मक मिलान; सिद्धान्तगत तुलनात्मक विश्लेषण; आ भाषिक-सम्पादकीय निखार। नव्य-न्यायिक अर्थमे कहब तँ मूल पोथी “शब्द” प्रमाणक मुख्य आधार अछि; “अनुमान” तखनहि ग्राह्य अछि जखन ओकर हेतु पाठमे दृश्यमान हो; “उपमान” तुलनात्मक आलोचनाक साधन अछि, तथ्य-प्रतिस्थापन नहि।

३. संरचना-अखण्डता आ प्रविष्टि-कवरेजक परीक्षण

मुख्य प्रतिलिपिक विषय-सूची ३२ अध्याय धरि जाइत अछि। अध्याय १–८ पद्धति आ पृष्ठभूमि बनबैत अछि; अध्याय ९–२४ प्रविष्टि १–२२४क मुख्य

कूट-विमोचन करैत अछि; अध्याय २५–३१ पाठक-उपकरण तैयार करैत अछि; अध्याय ३२ सभ्यता-अभिलेख रूपेँ निष्कर्ष दैत अछि। संख्यात्मक रूपेँ मुख्य प्रविष्टि-कवरेज अखण्ड अछि—सोलह अध्याय-समूहक योग २२४ अछि, बीचमे कोनो क्रम-संख्या छूटल नहि।

अध्याय	प्रविष्टि	मुख्य क्षेत्र/समूह	संख्या
९	१–१४	सरिसब-पाहीटोल-उजान-दुर्गागंज आरम्भिक समूह	१४
१०	१५–२४	बढ़ियाम-पवौली-पर्वपल्ली-रूपौली	१०
११	२५–४०	सरिसब-भदुआर-चपाही-सोदरपुर-लालगंज-रामनगर	१६
१२	४१–५१	दिगउन्ध-गंगोली-नवटोल-बटूरी-बैरी-भट्टपुरा-कछुआ	११
१३	५२–५८	कन्हौली-उजान-मंगरौनी-मानी-सरिसब-भट्टपुरा	७
१४	५९–६१	हाटी-तेतरिहार-सोदरपुर-	३

अध्याय	प्रविष्टि	मुख्य क्षेत्र/समूह	संख्या
		सरिसब-महिया	
१५	६२-७८	महिषी-पाली-ईशहपुर-गंगोली-हटाढ़-लोहना-पाहीटोल-मंगरौनी	१७
१६	७९-९९	बलिराजपुर-पाहीटोल-हरिपुर-भट्टपुरा-बेहट-नगवार-घुसौत-धरमपुर	२१
१७	१००-११९	रूचौली आ पूवारिपार/फवारिपार विस्तार	२०
१८	१२०-१४६	बेहट-तरौनी-अनलपुर-गंगोरा-डुमरा-सिमरवाड़-परहट-उजान-शारदापुर-ईशहपुर	२७
१९	१४७-१५८	रटौली-लोहना-शुक्लराही-गंगोली-नजीरा-बेतिया-उजान	१२
२०	१५९-१७८	रजौरा-रामपुर-लोहना-सिहौली-ईशहपुर-रैमा-	२०

अध्याय	प्रविष्टि	मुख्य क्षेत्र/समूह	संख्या
		गेरकी–चनौर–लालगंज	
२१	१७९–१९५	माड़रि–शारदापुर–सुल्हनी–मंगलबनी–रैमा–नदुआर–नरूआड़–बेहट–नवटोल	१७
२२	१९६–२०७	त्रिपुरौली–पुड़े–नरउन–महरैल–कोइलखाहा–धरमपुर–फुलगामा–गंगोली–खोखा–पूर्णियाँ–सोतीपुरा	१२
२३	२०८–२१४	लोआम–सौरिया–दुर्गागंज–भखरौली/भरवरौली–कन्हौली–रूचौली–कटिहार	७
२४	२१५–२२४	खण्डबला–भौर–राजग्राम–हेमनगर–डचोढ़ी–शुभंकरपुर–उचौरी–गढ़बनैली–धनौलिया	१०

ई सारणी केवल गणना नहि; पोथीक वास्तुशिल्प देखबैत अछि। आरम्भिक सरिसब–पाहीटोल क्षेत्र सँ अन्तिम खण्डबला–भौर–राजग्राम–डचोढ़ी क्षेत्र धरि शाखा-विस्तार निरन्तर अछि। गाम सभ अध्याय-सीमा पार दोहराइत अछि; तेँ अध्याय केँ स्वतन्त्र “कथा” नहि, आपस मे जोड़ल अभिलेखीय खण्ड रूपेँ पढ़ब आवश्यक अछि।

४. अध्याय १–८ : पद्धति, भाषा, समय, भूगोल आ सामाजिक स्मृति

अध्याय १ : पञ्जी स्मृति, मानचित्र आ सामाजिक अभिलेख

ई अध्याय पूरा पोथीक वैचारिक प्रवेश-द्वार अछि। पञ्जी केँ केवल पिता-पुत्र सूची नहि मानि, विवाह-भूगोल, शाखा-स्मृति, विद्वत्ता, सार्वजनिक पद आ गाम-सम्बन्धक संकुचित अभिलेख कहल गेल अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ एहि अध्यायक मुख्य उपलब्धि एकटा प्रभावी मूल रूपक अछि—पञ्जी “जाल” आ “बुनावट” अछि। किन्तु ई रूपक स्रोतक स्थान नहि लैत; लेखक तुरन्त सावधान करैत अछि जे संख्या, रिक्ति आ पाठ-भेदक प्रति विनम्र रहब आवश्यक अछि। दस्तावेजी गद्यक नैतिकता एतए स्थापित होइत अछि।

अध्याय २ : उपटीपक अर्थ

उपटीप केँ गौण टिप्पणी नहि, सक्रिय जोड़-यन्त्र रूपेँ परिभाषित कएल गेल अछि। शाखा, सुता-विवाह, बादक बसावट आ अन्य प्रविष्टिसँ संख्या-सूत्र—सभ उपटीपक कार्यक्षेत्र अछि। अध्याय “गौण” आ “केन्द्रीय”क सामान्य द्वैत केँ उलटैत अछि: मुख्य पञ्जीक सापेक्ष उपटीप पूरक हो सकैत अछि, मुदा अपन तन्त्रक भीतर ई केन्द्रीय सम्बन्ध-सूचक अछि। ई अवधारणा बादक सभ प्रविष्टि-पठनक आधार बनैत अछि।

अध्याय ३ : पञ्जी-प्रविष्टि कोना पढ़ी

एहि अध्यायमे शब्द-दर-शब्द पठनक बदला “इकाई-दर-इकाई” पठन सुझाओल गेल अछि—व्यक्ति, पिता–पुत्र वाक्यांश, सुता-सूत्र, गाम-सूत्र, संख्या-सन्दर्भ, उपाधि आ समापन-चिह्न। ई पाठशास्त्रीय अनुशासन पोथीक सबसँ उपयोगी शिक्षण-अवदान मे सँ एक अछि। सुता आ दौहित्रक स्थान विशेष रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि, कारण वंश-पठन केँ केवल पितृरेखीय बनाएब पोथीक प्रमाण-संरचना बिगाड़ि देत।

अध्याय ४ : चिह्न, संक्षेप आ सूत्र

उ.टी., सुत/सुतो/सुतौ/सुता, अपरा, दौहित्र, “सँ”, दौ/द्वौ, प्र., शा., बिन्दु-रिक्ति आ विभिन्न संख्या-रूप सभ कैं तकनीकी व्याकरण रूपैं पढ़ल गेल अछि। अध्याय एकर अर्थ कठोर एकार्थक शब्दकोशक रूपमे नहि ठोकैत; संदर्भ-निर्भरता स्वीकार करैत अछि। एहि लचीलापन आ अनुशासनक संयोजन भारतीय मीमांसा आ नव्य-न्याय दुनूक दृष्टिसँ प्रशंसनीय अछि।

अध्याय ५ : ४५० ईस्वीसँ २००९ ईस्वी धरि समय-सीमा

समय कैं रैखिक तिथि-सूची नहि, तहदार स्मृति रूपैं परिभाषित कएल गेल अछि। पुरान वंश-स्मृति, बादक गाम-स्थानान्तरण, विवाह-सम्बन्ध, विद्वत्ता-सम्मान आ आधुनिक डिग्री/पेशा एकहि पाठ-तन्त्रमे परत-दर-परत प्रवेश करैत अछि। अध्याय दीर्घकालिकता स्वीकार करैत अछि, मुदा प्रत्येक नाम कैं निश्चित काल-बिन्दु देबाक असावधानीसँ बाँचैत अछि। इतिहासलेखनक दृष्टिसँ ई संयम पोथीक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

अध्याय ६ : गाम वंशगत आधार-बिन्दु

गाम कैं “पता” नहि, पहचानक अवच्छेदक रूपैं पढ़ल गेल अछि। उत्पत्ति, विवाह-गृह, बादक बसावट, शाखा, विद्वान-गृह, डयोढ़ी वा संख्या-सन्दर्भ—एकहि गाम अलग प्रविष्टिमे अलग भूमिका निभा सकैत अछि। ई भेद पोथीक स्थान-समीक्षाक मूल तर्क अछि। सामाजिक भूगोलक अध्ययन लेल ई अध्याय स्वतंत्र महत्त्व रखैत अछि।

अध्याय ७ : प्रव्रजन आ विवाह-मार्ग

ई अध्याय “प्रव्रजन” कैं केवल शरीरक एक गामसँ दोसर गाम जाएब नहि मानैत; शाखा-प्रसार, विवाह-संचरण, विद्वत्ता/सेवा-संबंध आ प्रतिष्ठा-संचरण कैं सेहो समाविष्ट करैत अछि। अपरा पार्श्व-शाखा [collateral]क संकेत अछि; डयोढ़ी प्रतिष्ठा-मार्गक; पूवारिपार/फवारिपार क्षेत्रीय गलियारा रूपैं प्रकट होइत अछि। “विवाह-मानचित्र” एहि ग्रन्थक इतिहास-दृष्टिक सबसँ उत्पादक अवधारणा मे सँ एक अछि।

अध्याय ८ : उपाधि, विद्वत्ता आ स्थिति

पण्डित, वैदिक, वैयाकरण, मीमांसक, महामहोपाध्याय, बाबू, ठाकुर, राजा, महाराज, डाक्टर [Doctor], प्रोफेसर [Professor] आदि चिह्न सभकेँ अलंकारिक सम्मान नहि, व्यक्तिपहिचान आ शाखा-स्मृतिक प्रमाण मानल गेल अछि। अध्याय उचित रूपेँ चेतावनी दैत अछि जे उपाधि जीवनी नहि अछि। एहि भेदक पालन बादक अध्यायमे शोधक कल्पना पर नियन्त्रण रखैत अछि।

५. अध्याय ९–२४ : प्रविष्टि १–२२४क सम्पूर्ण कूट-विमोचनक आलोचनात्मक पठन

एहि सोलह अध्यायमे पोथीक मुख्य दस्तावेजी परिश्रम निहित अछि। समीक्षा लेल प्रत्येक समूहक आन्तरिक प्रवाह, विवाह-सूत्र, विद्वत्ता/स्थिति-सूचक चिह्न आ अनिश्चितता-नीतिक परीक्षण कएल गेल अछि। निम्न विवेचनमे सभ सोलह प्रविष्टि-समूह समाविष्ट अछि।

अध्याय ९ : प्रविष्टि १–१४ — सरिसब–पाहीटोल–उजान–दुर्गागंज उद्घाटन

सकुरी–सरिसब–पाहीटोल सँ आरम्भ भऽ खांगुड़, विट्ठो, उजान, दुर्गागंज, कटिहार, खण्डबला, नरउन आ राजग्राम धरि खुलैत ई समूह पोथीक “नेटवर्क-पठन”क पहिल पूर्ण प्रदर्शन अछि। आरम्भिक प्रविष्टि सभमे सरिसब–पाहीटोलक स्थायित्व आ उजान/दुर्गागंज दिशाक शाखा-विस्तार साथ-साथ अछि। आधुनिक उपाधि प्रवेश करैत अछि, मुदा वंश-सूत्र पर हावी नहि होइत। अध्याय अन्तमे मार्ग-सारिणी आ अनिश्चित पाठ अलग राखैत अछि—ई सम्पादकीय पद्धतिक अनुकरणीय रूप अछि।

अध्याय १० : प्रविष्टि १५–२४ — बढ़ियाम, पवौली, पर्वपल्ली आ रूपौली

जोंकी–सरिसब सँ बढ़ियाम–पवौलीक उद्घाटन, उजान–शारदापुर, उमनन्द शाखा, पर्वपल्ली, रूपौली, रूचौली–करमहा, विद्वान-चिह्न, बड़का गामक स्थिति-रेखा, आ नरउन–सुल्हनी–नवटोल गति एहि समूहक प्रमुख धुरी अछि। अध्याय स्पष्ट करैत अछि जे एक “सूचकांक-मूल” कई उपशाखामे विस्तार करैत अछि, मुदा निरन्तरता पिता/सुता/गाम/संख्याक संयुक्त सूत्र सँ बनल रहैत अछि।

अध्याय ११ : प्रविष्टि २५–४० — सरिसब, भदुआर, चपाही, सोदरपुर, लालगंज आ रामनगर

ई खण्ड बहुस्तरीयताक चरम उदाहरण अछि। सरिसब–सोदरपुरक पुनरारम्भ, भदुआर–पाहीटोल, विद्वान आ आधुनिक पेशागत पहिचान, चपाहीक बहु-सुता मार्ग, कन्हौली–सोदरपुर, उजानक विद्वान-रेखा, बेहट, लालगंज, तारनगर, रामनगर डयोढ़ी, पूर्णियाँ, गढ़बनैली आ सार्वजनिक पद—सभ एकहि श्रृंखला मे आबैत अछि। प्रविष्टि ४०क रिक्तता पोथीक “मौन कैं मौन” रूपेँ राखबाक सिद्धान्तक ठोस उदाहरण अछि।

अध्याय १२ : प्रविष्टि ४१–५१ — दिगउन्ध, गंगोली, नवटोल, बटूरी, बैरी, भट्टपुरा आ कछुआ

पूवारिपार दिगउन्ध–सोदरपुर उद्घाटन सँ गंगोली, नवटोल, हरिअम्ब–बटूरी, बैरी/सँकोर्थु, भट्टपुरा आ कछुआ धरि विस्तार एहि अध्यायक क्षेत्र अछि। सुता-सूत्र घन अछि; बाबू-सम्बद्ध शाखा आ आधुनिक विद्वत्ता-चिह्न सेहो अछि। अध्याय ई पाठ सिखबैत अछि जे परिवार-वृक्ष पहिले नहि बनाबी; पहिने गाम, व्यक्ति, उपाधि, सुता, संख्या आ शाखा अलग चिन्ही।

अध्याय १३ : प्रविष्टि ५२–५८ — कन्हौली, उजान, मंगरौनी, मानी, सरिसब आ भट्टपुरा

कन्हौली–सोदरपुर सँ उजान–मंगरौनी, मानी–सोदरपुर, फेर सरिसब आ भट्टपुरा दिस वापसी एहि समूहक गति अछि। तिर्थदत्त/हौवा-सम्बद्ध स्थिति-मार्ग आ पौराणिक, ज्योतिषी, वैयाकरण, शास्त्रार्थ-मार्तण्ड, प्रोफेसर [Professor], डाक्टर [Doctor] आदि चिह्न सामाजिक स्मृतिक बहुस्तर देखबैत अछि। विषय-सूचीमे सरिसब नामक अभाव, जबकि वास्तविक अध्याय-शीर्षकमे सरिसब उपस्थित अछि, एकटा छोट सम्पादकीय समन्वय-बिन्दु अछि।

अध्याय १४ : प्रविष्टि ५९–६१ — हाटी, तेतरिहार, सोदरपुर, सरिसब आ महिया

संख्या कम—मात्र तीन प्रविष्टि—होइतहुँ क्षेत्र व्यापक अछि। हाटी–सोदरपुरक वैदिक/सुता उद्घाटन, तेतरिहार–सोदरपुर सँ सरिसब, महिया–सोदरपुर आ कटका दिस संक्रमण; संगहि राजा, रायबहादुर, महामहोपाध्याय,

कवि, डाक्टर [Doctor], बाबू आदि स्मृति-चिह्न। ई अध्याय देखबैत अछि जे प्रविष्टिक संख्या कम रहला पर अर्थ-घनत्व कम नहि होइत।

अध्याय १५ : प्रविष्टि ६२–७८ — महिषी–पालीक विशाल क्षेत्र

महिषी–पाली सँ सोतीपुरा, धने–रामपुर, ईशहपुर, गंगोली, हटाढ़, लोहना, पाहीटोल, मंगलबनी/मंगरौनी आ जमदौली धरि ई प्रवाह पाली-मूलक महत्त्व सिद्ध करैत अछि। धरणाथ–गंगानाथ जकाँ विद्वान-रेखा, महामहोपाध्याय, नैष्ठिक, ज्योतिषी, कवि, बाबू, ठाकुर आ आधुनिक शैक्षिक/पेशागत पहचान सभ विवाह-भूगोलक भीतर अभिलेखित अछि। एतए विद्वत्ता “परिवारक भीतर स्थित सांस्कृतिक पूँजी” रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा पोथी एकरा स्वतंत्र जीवनीमे विस्तारित नहि करैत।

अध्याय १६ : प्रविष्टि ७९–९९ — बलिराजपुर–पाहीटोल सँ धरमपुर

बलिराजपुर–पाहीटोल/हरिअम्ब सँ उजान, गढ़बनैली, हरिपुर, भट्टपुरा, बेहट/बेहर, नगवार, घुसौत आ धरमपुर धरि २१ प्रविष्टिक विस्तार पोथीक सबसँ बड़े समूह मे सँ एक अछि। गौरिनाथ मिश्र, जयदेव, रघुनाथ मिश्र, वैयाकरण/प्रोफेसर-चिह्नित व्यक्तिसभक स्मृति शाखा-सम्बन्धमे राखल गेल अछि। अध्याय “नाम उठायब”क विरुद्ध चेतावनी दैत अछि—व्यक्तिक संग मार्ग पढ़ू। ई नव्य-न्यायिक अवच्छेदकताक व्यावहारिक रूप अछि।

अध्याय १७ : प्रविष्टि १००–११९ — रूचौली आ पूवारिपार/फवारिपार विस्तार

रूचौली–उजान उद्घाटन, नरूआड़–दुर्गागंज–कटिहार, बेहट–विट्ठो, हाटी, कल्याणफर आ कोइलखाहा—ई खण्ड “एक गलियारा” रूपेँ रचल अछि। अध्याय छोट-छोट शाखाकेँ अलग टापू न मानि, पूर्व बलिराजपुर–पाहीटोल सामग्री आ बादक बेहट-केंद्रित विस्तारक बीच संक्रमण रूपेँ पढ़ैत अछि। ई संरचनात्मक दृष्टि पोथीक मैक्रो-सम्बद्धता मजबूत करैत अछि।

अध्याय १८ : प्रविष्टि १२०–१४६ — बेहटक दीर्घ पूवारिपार विस्तार

२७ प्रविष्टिसहित ई पोथीक सबसँ बड़ा संख्यात्मक अध्याय अछि। बेहट–पोखरौनी, तरौनी/अवाम, पूर्णियाँ–अररिया दिशाक गति, झंझारपुर–लखनौर,

अनलपुर–परियाम्ब–बुधवाल, गंगोरा–लालगंज, डुमरा–दीप–महुआ/खौआल–मुराजपुर, सिमरवाड़–परहट–उजान–शारदापुर–ईशहपुर आ अन्तमे लोहना उद्घाटन—ई सभ मिलि विशाल सामाजिक भूगोल रचैत अछि। आधुनिक पद/डिग्री उपस्थित अछि; पोथी उचित रूपेँ हुनका वंशगत प्रमाणक अतिरिक्त पहचान मानैत अछि, मूल वंश-सूत्रक विकल्प नहि।

अध्याय १९ : प्रविष्टि १४७–१५८ — रटौली, लोहना, शुक्लराही, गंगोली, नजीरा, बेतिया आ उजान

रटौली–दरिहरा सँ उजान, माइवी–लोहना–शुक्लराही, उजान-वापसी–गंगोली, नजीरा, बेतिया आ अन्तिम दिनांकित संकेत—ई अध्याय स्थानान्तरित शाखाक क्रमबद्धता देखबैत अछि। मूल निर्माण-इतिहासक हिसाबेँ प्रविष्टि १५४ सँ १५५ बीच स्रोत-फाइलक सीमा छल, मुदा पञ्जी-क्रम नहि टूटैत; पोथी एहि तकनीकी सीमा केँ वंशगत सीमा नहि मानैत। ई महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय निर्णय अछि।

अध्याय २० : प्रविष्टि १५९–१७८ — रजौरा, रामपुर, लोहना, सिहौली, ईशहपुर, रैमा, गेरकी, चनौर आ लालगंज

रजौरा–रामपुर–लोहना, सिहौली–उजान, गोधनपुर–ईशहपुर–रैमा–गेरकी, चनौरक व्यापक शाखा, आ लोहना–ईशहपुर–रूपौली–पतनुका–कनसम–लालगंजक संक्रमण एहि समूहक धुरी अछि। विद्वत्ता आ आधुनिक पदक विविध चिह्न एकहि वंश-व्याकरणमे समाहित अछि। अध्यायक अन्तिम भागमे अध्याय २१ दिशाक संक्रमण-वाक्य दोहरायल रूपेँ उपस्थित अछि; शोध-संपादनमे एहि पुनरुक्ति केँ हटायब उपयुक्त होयत।

अध्याय २१ : प्रविष्टि १७९–१९५ — माड़रि–शारदापुर सँ सुल्हनी–नवटोल

माड़रि–वलियास–शारदापुर उद्घाटन, उजानक जोड़, सुल्हनी–नरउन–मंगलबनी/मंगरौनी, रैमा, नड़ुआर/नदुआर/नरूआड़, चम्पानगर ड्योढ़ी, बेहट आ नवटोल—ई अध्याय शाखा-विस्तारक दीर्घ श्रृंखला अछि। विद्वान, सरसकवि, प्रोफेसर [Professor], वैयाकरण, ज्योतिर्विद, बाबू, सिंह, ठाकुर, महाराज आ ड्योढ़ी जकाँ चिह्न सामाजिक-सांस्कृतिक स्मृति बढ़बैत अछि। बिन्दु-रिक्ति सभक प्रति सावधानी स्पष्ट अछि।

अध्याय २२ : प्रविष्टि १९६–२०७ — त्रिपुरौली, पुड़े–नरउन, महरैल, कोइलखाहा, धरमपुर, फुलगामा, गंगोली, खोखा, पूर्णियाँ आ सोतीपुरा

त्रिपुरौली–नरउन/दहौरा सँ पुड़े–नरउन–महरैल, पूवारिपार पुड़े, गंगोली–महरैल–कोइलखाहा, धने–रामपुर/धरमपुर आ फुलगामा–उजान–भट्टपुरा–पाहीटोल–गंगोली–खोखा–पूर्णियाँ–सोतीपुरा धरि ई खण्ड अत्यन्त चलायमान भूगोल प्रस्तुत करैत अछि। आचार्य, मीमांसक, वैयाकरण, समाजशास्त्री, प्रोफेसर [Professor] आ आधुनिक उपाधि पारम्परिक सूत्रक भीतर प्रवेश करैत अछि—निरन्तरता आ परिवर्तन एकहि दस्तावेजमे देखाइत अछि।

अध्याय २३ : प्रविष्टि २०८–२१४ — लोआम, सौरिया, दुर्गागंज, भखरौली/भरवरौली, कन्हौली, रूचौली आ कटिहार

लोआम–सुरगन सँ दुर्गागंज–कटिहार–सौरिया, सौरिया–लोआमक निरन्तरता, भरवरौली/भखरौली–कुजौली, विट्ठो, सरिसब, कन्हौली–उजान, चनौर–दरभंगा–कटिहार आ रूचौली–कटिहार समापन—ई समूह पुरान गाम-सूत्र आ आधुनिक सार्वजनिक पहिचानक सह-अस्तित्व देखबैत अछि। विषय-सूची आ वास्तविक शीर्षकमे किछु स्थान-नामक विस्तार/रूपभेद अछि; एकरा पाठ-भेद आ सम्पादकीय समन्वय—दुनू रूपेँ जाँचल जाय।

अध्याय २४ : प्रविष्टि २१५–२२४ — खण्डबला, भौर, राजग्राम, हेमनगर, डयोढ़ी, शुभंकरपुर, उचौरी, गढ़बनैली आ धनौलिया

अन्तिम समूह खण्डबला–भौर सँ राजग्राम–हेमनगर–डयोढ़ी, माव्वी डयोढ़ी, शुभंकरपुर, उचौरी/उचौड़ी, गढ़बनैली आ धनौलिया डयोढ़ी धरि पहुँचैत अछि। राजकीय, विद्वत, भू-स्वामी आ डयोढ़ी-सम्बद्ध शाखा सभ पञ्जीक पूर्ववत व्याकरण—सुता, शाखा, गाम, संख्या—मे आबैत अछि। प्रविष्टि २२४ स्रोत-सीमा बन्द करैत अछि; पोथी उचित रूपेँ एहि खण्डक बाहर काल्पनिक निरन्तरता नहि बनबैत।

६. अध्याय २५–३२ : पाठक-उपकरण, सम्पादकीय नैतिकता आ सभ्यता-अभिलेख

अध्याय २५ : पञ्जी-शब्दावली

सुत, सुता, अपरा, ग्रामारम्भ, उपटीप, उ.टी., शा., दौ, द्वौ आ विद्वत्ता/स्थिति-सूचक शब्द सभकेँ नियंत्रित शब्दावलीमे राखल गेल अछि। ई अध्याय ग्रन्थकेँ केवल व्याख्यात्मक गद्य नहि, पुनःप्रयोग योग्य शोध-उपकरण बनबैत अछि। विशेष बल एहि बातपर अछि जे तकनीकी पदक अर्थ संदर्भसँ कटि कऽ स्थिर नहि कएल जाय।

अध्याय २६ : संक्षेप आ संख्या-कुंजी

उ.टी., शा., एकल/दोहरा स्लैश, कोष्ठकीय संख्या, प्र., ठ., वै., म.म.उ., डाक्टर [Doctor], प्रोफेसर [Professor], भारतीय प्रशासनिक सेवा [I.A.S.] आदि चिह्नक पृथक तकनीकी कुंजी तैयार कएल गेल अछि। संख्या “सजावट” नहि, अभिलेखीय नेविगेशन अछि—ई निष्कर्ष पोथीक सम्पूर्ण पद्धति बुझबाक लेल आवश्यक अछि।

अध्याय २७ : स्थान-सूची

स्थान-सूची आधुनिक राजस्व/डाक-गजेटियर नहि, वंशगत उपयोग-सूची अछि। एकहि गाम उत्पत्ति, विवाह, शाखा, प्रतिष्ठा वा सन्दर्भ-बिन्दु रूपेँ बदलि सकैत अछि। स्रोत-रूप आ मानकीकृत खोज-रूप अलग राखबाक आग्रह पाठ-संपादनक दृष्टिसँ उचित अछि।

अध्याय २८ : व्यक्तिनाम-सूची

दोहरायल नाम सभकेँ स्वतः एक व्यक्ति नहि मानल गेल अछि। पिता, पुत्र, गाम, उपाधि आ प्रविष्टि-संख्या मिलानक बादे पहिचान सम्भव मानल गेल अछि। ई सामान्य वंशावली-लेखनमे होमयवला “नाम-समानता = व्यक्ति-समानता” त्रुटिक प्रभावी प्रतिरोध अछि।

अध्याय २९ : विद्वान, उपाधि आ स्थिति-सूची

ई अध्याय विद्वत्ता, धार्मिक अधिकार, सामाजिक पद, सार्वजनिक कार्यालय, राज/डचोढ़ी-संबंध आ आधुनिक शिक्षा/पेशा केँ पृथक सूचक क्षेत्र बनबैत अछि। संगहि स्पष्ट करैत अछि जे उपाधि सँ जीवनी गढ़ब अनुचित अछि। प्रमाणक सीमा स्वीकार करब एहि अध्यायक मुख्य गुण अछि।

अध्याय ३० : उपटीप सँ परिवार-रेखा पुनर्निर्माण

व्यावहारिक पद्धति—एक नाम चुनू; निकटतम पिता/पुत्र संकेत चिन्हू; सुत/सुता अलग करू; विवाह आ वंश कैं गड्डमड्ड नहि करू; गाम-सूत्र आ संख्या-सन्दर्भ मिलाउ; जहाँ पाठ टूटैत अछि, ओतहि रुकू। “रुकब” कैं शोधक कमजोरी नहि, पद्धतिगत शक्ति बनाओल गेल अछि।

अध्याय ३१ : सीमा, रिक्ति आ सम्पादकीय सिद्धान्त

ई पूरा पोथीक नैतिक केन्द्र अछि। बिन्दु-रिक्ति, क्षत पाठ, एकाधिक वर्तनी, अस्पष्ट संख्या, आधुनिक योग्यता, राज/डचोढ़ी-समूह आ समान नाम सभक लेल स्पष्ट निषेध-नियम अछि। सम्पादक कैं दू त्रुटिक बीच राखल गेल अछि—एक तरफ स्रोतकैं अगम्य छोड़ि देब; दोसर तरफ अति-व्याख्या कऽ आधुनिक कल्पना सँ स्रोत बदलि देब। बीचक अनुशासित मार्ग पोथीक श्रेष्ठतम पद्धतिगत उपलब्धि अछि।

अध्याय ३२ : पञ्जी सभ्यता-अभिलेख रूपेँ

अन्तिम अध्याय परिवार, गाम, विवाह, विद्वत्ता, स्थिति, प्रव्रजन, पाठ-तन्त्र, आधुनिकता आ मौन—एहन नौ अभिलेख-स्तरक संक्षेप प्रस्तुत करैत अछि। निष्कर्ष ई नहि जे पञ्जी पूर्ण इतिहास अछि; बल्कि ई जे पञ्जी मिथिलाक सम्बन्ध-व्याकरणक एक अद्वितीय स्रोत अछि। इएह संयम निष्कर्षकैं विश्वसनीय बनबैत अछि।

७. भारतीय काव्यशास्त्रीय समीक्षा

७.१ औचित्य : रूप, उद्देश्य आ सामग्रीक संगति

क्षेमेन्द्रक औचित्य-परम्पराक कसौटी पर ई पोथी “विषय-उपयुक्त रूप” अपनबैत अछि। पञ्जी स्वयं संक्षिप्त आ सूत्रात्मक अछि; अतः व्याख्या यदि अत्यधिक काव्यमय भऽ जाए तँ स्रोत ढँकि सकैत अछि। पोथी अधिकांशतः संयत व्याख्यात्मक गद्य रखैत अछि, तालिका, मार्ग-मानचित्र, शब्दावली आ सूचकांकक उपयोग करैत अछि—ई विषयानुकूल अछि। जे ठाम बुनावट, पुल, नदी-तन्त्र जकाँ रूपक अबैत अछि, ओ शिक्षण-सहायक अछि; मुदा स्रोत-पंक्ति आ व्याख्या पृथक राखल गेलाक कारण रूपक प्रमाणक स्थान नहि लैत।

७.२ ध्वनि : सूत्रक प्रत्यक्ष अर्थ सँ अधिक सम्बन्धार्थ

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्त मूलतः काव्यक व्यञ्जनार्थक सिद्धान्त अछि; ओकरा दस्तावेजपर यांत्रिक रूपेँ लागू करब उचित नहि। तथापि तुलनात्मक स्तरपर पञ्जी-भाषाक “अल्प शब्द, अधिक सम्बन्ध” गुण ध्वन्यात्मक संवेदनशीलता माँगैत अछि। “सुता”, “सँ”, “अपरा”, “उ.टी.” वा एकटा गाम-नाम प्रत्यक्ष शब्दार्थसँ अधिक संरचनात्मक सूचना वहन करैत अछि। ई काव्य-ध्वनि नहि, दस्तावेजी संकेत-बहुलता अछि। पोथी जखन एहि अन्तरकेँ संरक्षित रखैत अछि तखन सिद्धान्तगत अतिक्रमणसँ बचैत अछि।

७.३ रीति आ गुण : स्पष्टता, प्रसाद आ घनत्व

दस्तावेजी गद्यक मूल्यांकनमे “प्रसाद” अर्थात् ग्रहण-सुलभता आ “ओज”क बदला संरचनात्मक स्पष्टता अधिक महत्त्वपूर्ण अछि। पोथी घनीभूत स्रोत केँ व्याख्यात्मक गद्य, क्रमांकित प्रविष्टि, आवर्ती अनुस्मारक आ निष्कर्ष-सारणी सँ खोलैत अछि। कतेको ठाम एकहि पद्धतिगत चेतावनी बारम्बार अबैत अछि; शिक्षण-पाठक लेल ई उपयोगी, मुदा शोध-पत्रिका-जकाँ कसाव लेल पुनरुक्ति कम कएल जा सकैत अछि। अतः गुण-दृष्टिसँ स्पष्टता प्रबल, संक्षिप्तता किछु ठाम सुधारयोग्य अछि।

७.४ वक्रोक्ति आ दस्तावेजी वाणी

कुन्तकक वक्रोक्ति काव्य-वैचित्र्यक सिद्धान्त अछि। एहि पोथीक लक्ष्य अलंकारिक वक्रता नहि; उलटे अस्पष्ट स्रोत केँ स्पष्ट करब अछि। तथापि “पञ्जी स्मृति अछि, मानचित्र अछि, सामाजिक अभिलेख अछि” अथवा “वंश-जाल” जकाँ रूपक व्याख्यात्मक वाणी केँ स्मरणीय बनबैत अछि। औचित्यक दृष्टिसँ ई रूपक तखन सफल अछि जखन ओ तथ्यक सीमा नहि तोड़ैत। पोथी सामान्यतः एहि मर्यादाक पालन करैत अछि।

७.५ भारतीय काव्यशास्त्रीय निष्कर्ष

भारतीय काव्यशास्त्रक कसौटी पर ग्रन्थक साहित्यिकता काव्य-रसोत्पादनमे नहि, अर्थ-संयोजन, औचित्यपूर्ण अभिव्यक्ति, शैलीगत स्पष्टता आ संक्षिप्त संकेतक विस्तृत सम्बन्धार्थ खोलबामे अछि। एहि कारण एकरा “दस्तावेजी-समालोचनात्मक गद्य”क विशिष्ट रूप मानब अधिक उचित होयत।

८. पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ इतिहासलेखनक आधारपर समीक्षा

८.१ निकट-पाठ आ भाषिक-ऐतिहासिक पठन

एरिक आउअरबाखक यथार्थ-प्रतिनिधित्व सम्बन्धी ऐतिहासिक पठन [Mimesis] मे शैलीक सूक्ष्म भाषिक रूप सँ व्यापक सांस्कृतिक संरचना पढ़ल जाइत अछि। एहि पोथीमे सेहो छोट सूत्र—गाम, सुता, उपाधि, संख्या—सँ सामाजिक भूगोल आ विद्वत्ता-स्मृति दिस जायल गेल अछि। अन्तर ई अछि जे एतए “प्रतिनिधित्व” साहित्यिक दृश्य नहि, अभिलेखीय सूत्र अछि। अतः सफल आलोचना ओहि समय होइत अछि जखन सूक्ष्म पाठक आधार व्यापक निष्कर्षक भार सँ मेल खाइत अछि।

८.२ अभिलेख, वंशावली आ फूको-प्रश्न

ज्ञानक पुरातत्त्व [The Archaeology of Knowledge] आ वंशावलीपरक इतिहासक पाश्चात्य परम्परा स्रोत-निर्माण, श्रेणी, संस्थागत चयन आ मौन पर प्रश्न उठबैत अछि। पञ्जी केकरा दर्ज करैत अछि, केकर उपाधि सुरक्षित अछि, कोन गाम बारम्बार केन्द्र बनैत अछि, स्त्री-सूत्र कोना विवाह-जाल खोलैत अछि—ई प्रश्न उपयोगी अछि। मुदा पोथीक घोषित नियम, आ विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक कसौटी, एक आवश्यक सीमा लगबैत अछि: अभिलेखीय मौन सँ मनोनुकूल कथा स्वतः सिद्ध नहि होइत। एहि सीमा कारण ग्रन्थ फूकोपरक प्रश्न ग्रहण कऽ प्रमाण छोड़ैत नहि।

८.३ इतिहास-आख्यान आ हेडन व्हाइटक चुनौती

इतिहासक लेखनमे आख्यान-रूप तथ्यसभकेँ अर्थ-क्रम दैत अछि—एहन प्रश्न मेटाइतिहास [Metahistory] उठबैत अछि। एहि पोथीक लेखकक सामने सेहो २२४ प्रविष्टिक भीड़ केँ संरचना देबाक चुनौती छल। सूचकांक-मूल, अध्याय-समूह, मार्ग-मानचित्र, “आरम्भ–विस्तार–संक्रमण–समापन” जकाँ ढाँचा पाठकेँ पठनीय बनबैत अछि। आलोचनात्मक सावधानी एतए ई होयत जे ई ढाँचा स्रोतपर थोपल “कथा” नहि बनि जाय। पोथी जखन स्पष्ट करैत अछि जे गाम-सम्बन्ध निवास, विवाह, शाखा वा सन्दर्भ अलग-अलग भऽ सकैत अछि, तखन आख्यानात्मक सरलीकरणक खतरा घटैत अछि।

८.४ अभिलेखीय गद्यक रूपगत शक्ति

पाश्चात्य विधागत वर्गीकरणमे ई कृति न शुद्ध इतिहास, न जीवनी, न जनगणना, न गजेटियर, न साधारण वंश-वृक्ष अछि। ई टिप्पणीसहित अभिलेखीय संस्करण, पद्धति-पुस्तक, सामाजिक इतिहास आ संदर्भ-उपकरणक संकर रूप अछि। एहि मिश्र विधा कैं कमजोरी नहि मानल जा सकैत, कारण स्रोत स्वयं बहुस्तरीय अछि। मुदा समकालीन अकादमिक प्रकाशन लेल “स्रोत”, “व्याख्या”, “निष्कर्ष”क दृश्यात्मक पृथक्करण आरो कड़ाई सँ कएल जाए तँ उपयोगिता बढ़त।

९. नव्य-न्यायिक समीक्षा : प्रमाण, अवच्छेदकता आ सम्बन्धक सूक्ष्म व्याकरण

९.१ प्रमाण आ प्रमा

नव्य-न्यायिक दृष्टि एहि पोथी लेल असाधारण रूपेँ उपयुक्त अछि, कारण ग्रन्थ स्वयं सत्य-दाबी कैं स्रोत-आधारसँ बाँधैत अछि। प्रत्यक्ष पाठ-पठन “शब्द” प्रमाणक मुख्य क्षेत्र अछि; पाठ-संरचना सँ शाखा-सम्बन्धक निष्कर्ष “अनुमान” अछि; दोसर प्रविष्टि/गामक तुलनात्मक मिलान “उपमान”क सहायक कार्य करैत अछि। वैध ज्ञान तखनहि बनैत अछि जखन दाबी अपन प्रमाण-सीमा नहि लाँघय।

९.२ विषयता आ अवच्छेदकता

“जीवनाथ” जकाँ नाम अपने आपमे पर्याप्त विषय-निर्धारण नहि करैत। के जीवनाथ? कोन पिता? कोन गाम? कोन शाखा? कोन उपाधि? कोन सन्दर्भ-संख्या? नव्य-न्यायक अवच्छेदक–अवच्छेद्य भाषा एहि समस्या कैं सटीक रूपेँ बुझबैत अछि। व्यक्तिक पहिचान नामत्व सँ सीमित नहि; पिता-सम्बन्ध, गाम-सम्बन्ध, शाखा-सम्बन्ध आ सन्दर्भ-सम्बन्ध ओकर अवच्छेदक बनैत अछि। पोथीक व्यक्तिनाम-सूची एहि तर्ककैं व्यावहारिक रूप दैत अछि।

९.३ विशेषण–विशेष्य आ संसर्ग

उपाधि “वैयाकरण”, “मीमांसक”, “महामहोपाध्याय”, “राजा” वा “प्रोफेसर [Professor]” कैं नामक बदला व्यक्ति-संज्ञा मानि लेब श्रेणी-भ्रम होयत। नव्य-न्यायिक विशेषण–विशेष्य विश्लेषण कहैत अछि जे उपाधि व्यक्तिक एक

निरूपित गुण/स्थिति अछि; पहचानक अन्य सम्बन्ध सभक संग मिलान आवश्यक अछि। पोथी एही कारण उपाधि-सूची अलग बनबैत अछि, मुदा सामान्य नाम-सूची सँ काटैत नहि।

९.४ प्रतियोगिता–अनुयोगिता आ अभाव

बिन्दु-रिक्ति वा गायब नाम कैं “अभाव”क सूक्ष्म अर्थमे पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा सावधानी जरूरी अछि। “एतए फलाँ व्यक्ति नहि छल” आ “एतए पाठमे नाम उपलब्ध नहि अछि”—ई दू अलग दाबी अछि। पोथी दोसर दाबी धरि अपने कैं सीमित रखैत अछि। ई नव्य-न्यायिक अभाव-विचारक अनुकूल अनुशासन अछि: अभावक अधिकरण, प्रतियोगी आ प्रमाण-सीमा स्पष्ट बिना सकारात्मक कथा बनब अनुचित अछि।

९.५ नव्य-न्यायिक निष्कर्ष

एहि दृष्टिसँ पोथीक सर्वोच्च बौद्धिक गुण “अवच्छेदित पहिचान” अछि। नाम अकेला नहि; गाम अकेला नहि; उपाधि अकेला नहि; संख्या अकेली नहि। सम्बन्धक पूर्ण विन्यासमे दाबी बनैत अछि। पञ्जी-जकाँ अति-संक्षिप्त स्रोतक डिजिटल सूचीकृत संस्करण, डेटाबेस वा वंश-पुनर्निर्माण लेल सेहो एहि तर्कक बहुत मूल्य अछि।

१०. विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिक आधारपर समीक्षा

१०.१ बहुस्रोतता, मुदा समान प्रमाण-कसौटी

समानान्तर इतिहास-दृष्टि मुख्य कथा उलटि कऽ नव मिथक बनायब नहि चाहैत; एकर लक्ष्य स्रोत-क्षेत्र विस्तार, मौन-चिन्हांकन आ सभ दाबीपर समान आलोचनात्मक कसौटी लागू करब अछि। पञ्जी एहि पद्धति लेल महत्त्वपूर्ण स्थानीय अभिलेख अछि, मुदा “मिथिलाक स्रोत” हेबाक कारण स्वतः निष्कलंक नहि। मूल पोथी ई आत्मालोचनात्मक अनुशासन अपनबैत अछि—पाठ-भेद, क्षति, अस्पष्ट संख्या आ अनिश्चित गाम-भूमिका स्पष्ट करैत अछि।

१०.२ केन्द्र, हाशिया आ सुता-सूत्र

पञ्जी परम्परागत रूपेँ वंश, विवाह-नियम आ प्रतिष्ठित घरानाक स्मृति सँ जुड़ल अछि। तथापि पोथीक पठन सुता, दौहित्र आ विवाह-मार्ग कैं गौण नहि

मानैत। एहि कारण स्त्री-रेखा “पुरुष वंशक परिशिष्ट” नहि, सम्बन्ध-भूगोलक संरचनात्मक माध्यम बनैत अछि। समानान्तर इतिहास-दृष्टिसँ ई महत्त्वपूर्ण विस्तार अछि। मुदा पोथी स्त्री-अनुभवक प्रत्यक्ष स्वर प्रस्तुत करैत अछि, एहन दाबी नहि करब चाही; ओ सुता-सूत्र प्रस्तुत करैत अछि—ई दूनू मे स्पष्ट भेद राखब आवश्यक अछि।

१०.३ अभिलेखीय मौन : कथा नहि, प्रमाण-अन्तराल

दाग, बिन्दु, रिक्त नाम, अस्पष्ट वर्तनी आ अपूर्ण संख्या ग्रन्थमे बारम्बार अछि। समानान्तर इतिहास-दृष्टि अनुसार मौन कँ पढ़ब आवश्यक अछि, मुदा मौनकँ मनगढ़न्त स्वर देब अनुचित। अध्याय ३१ एहि सिद्धान्तक प्रत्यक्ष रूप अछि। एतए पोथी अपन काल्पनिक आकर्षण कम कऽ शोध-मूल्य बढ़बैत अछि।

१०.४ दाबी-वजन : समर्थित, सम्भाव्य, विवादित, अज्ञात

समानान्तर इतिहास-पद्धतिक दाबी-श्रेणी एहि पोथीक भावी संस्करण लेल उपयोगी होयत। जे सम्बन्ध प्रत्यक्ष सूत्र आ बहु-सन्दर्भसँ पुष्ट अछि, ओकरा “सबल समर्थित”; एक सूत्र पर आधारित सुसंगत व्याख्याकँ “सम्भाव्य”; पाठ-भेदवला सम्बन्धकँ “विवादित”; आ क्षत/रिक्त भागकँ “अज्ञात” चिन्ह देल जा सकैत अछि। मूल पोथी भाषिक रूपेँ एहि भेदक अभ्यास करैत अछि; दृश्यात्मक चिह्न-व्यवस्था जोड़ल जाए तँ शोधक उपयोगिता आरो बढ़त।

१०.५ मिथिला पद्धतिगत गृहभूमि, प्रमाणक विशेषाधिकारित केन्द्र नहि

ई ग्रन्थ मिथिलाक गाम, विद्वत्ता, विवाह, डयोढ़ी आ शाखा-स्मृति कँ अत्यन्त गंभीरता सँ पढ़ैत अछि। समानान्तर दृष्टिक अनिवार्य प्रतिपक्ष ई अछि जे स्थानीय गौरव आलोचनात्मक कसौटी कँ नरम नहि करय। पोथीक “गैप कँ गैप रहने दिअ” नीति एहि आत्मानुशासनक सबसँ मजबूत प्रमाण अछि।

११. पोथीक साहित्यिक रूप : दस्तावेजी गद्यक सौन्दर्यशास्त्र

ई कृति कथा-साहित्य नहि, मुदा साहित्यिक रूपहीन सेहो नहि। एकर मूल रूप “व्याख्यात्मक अभिलेखीय गद्य” अछि। सूत्र खोलब, पुनरावृत्त संरचना पहिचानब, गामक मार्ग बनायब, नामक भेद सुरक्षित रखब, आ मौनक स्थान

छोड़ब—ई सभ शैलीगत क्रिया अछि। लेखकक वाक्य-विन्यास प्रायः घोषणात्मक अछि: “नाम अकेला नहि पढ़ू”, “गैप नहि भरू”, “गाम पता मात्र नहि”, “सुता महत्त्वपूर्ण अछि।” एहि आवृत्ति सँ एकटा शिक्षणात्मक लय बनैत अछि।

साहित्यिक दृष्टिसँ सबसे सफल रूपक “जाल”, “बुनावट”, “पुल” आ “मानचित्र” अछि। ई रूपक पाठक कैं रैखिक वंश-वृक्षक बदला नेटवर्क सोचबाक प्रशिक्षण दैत अछि। मुदा कतेको अध्यायमे पद्धतिगत सूत्र पुनः-पुनः लगभग समान रूपमे दोहरायल अछि। शोध-मोनोग्राफक आगामी संस्करणमे अध्याय-आरम्भक मानकीकृत “पद्धति-बॉक्स” राखि मुख्य गद्य सँ पुनरुक्ति कम कएल जा सकैत अछि। ताहिसँ अर्थ कम नहि, घनत्व बढ़त।

पोथीक अन्तिम “नौ अभिलेख” अवधारणा—परिवार, गाम, विवाह, विद्वत्ता, स्थिति, प्रव्रजन, पाठ-तन्त्र, आधुनिकता, मौन—सम्पूर्ण ग्रन्थक प्रभावी संकल्पनात्मक समाहार अछि। ई वर्गीकरण साहित्यिक आलोचना आ सामाजिक इतिहास बीच सेतु बनबैत अछि, कारण दस्तावेजक भौतिक संकेत कैं सांस्कृतिक स्मृतिक स्तरमे बदलैत अछि, मुदा पूर्ण इतिहास होबाक दावा नहि करैत।

१२. ऐतिहासिक-सांस्कृतिक निष्कर्ष

१२.१ गाम स्मृतिक व्याकरण

सरिसब, पाली, सोदरपुर, करमहा, नरउन, माण्डर, खण्डबला, दरिहरा, उजान, गंगोली, बेहट, लालगंज, राजग्राम, डच्योढ़ी-सम्बद्ध स्थान आ अन्य अनेक गाम पोथीमे बारम्बार लौटैत अछि। पुनरागमन मात्र पुनरुक्ति नहि; एक गाम अलग पीढ़ी/शाखामे अलग भूमिका ले सकैत अछि। एहि कारण स्थान-सूची सामाजिक-इतिहासक विश्लेषणात्मक साधन बनैत अछि।

१२.२ विवाह भूगोल

सुता, दौहित्र आ “सँ”क सूत्र सँ पोथी विवाहकैं शाखा-परिवर्तनक सक्रिय शक्ति रूपेँ देखबैत अछि। ई पितृवंशीय ढाँचाक भीतर स्त्री-सम्बन्धक संरचनात्मक अनिवार्यता स्पष्ट करैत अछि। तथापि एतए स्त्रीक जीवन-

अनुभवक प्रत्यक्ष कथा नहि, विवाह-संबंधक अभिलेखीय चिह्न अछि—एहि अन्तरकेँ शोधमे बनौने राखब चाही।

१२.३ विद्वत्ता आ सामाजिक स्थिति

वैयाकरण, नैयायिक, मीमांसक, वैदिक, महामहोपाध्याय, कवि, ज्योतिषी, प्रोफेसर [Professor], डाक्टर [Doctor], प्रशासनिक पद, बाबू, ठाकुर, सिंह, राजा, महाराज, डचोढ़ी आदि चिह्न देखबैत अछि जे वंश-स्मृति केवल रक्त-सम्बन्धक नोंद नहि, प्रतिष्ठा आ ज्ञानक स्मृति सेहो अछि। आलोचनात्मक मर्यादा ई अछि जे उपाधि सँ पूरा संस्थागत जीवनी गढ़ल नहि जाय।

१२.४ आधुनिकता प्रवेश करैत अछि, परम्परा टूटैत नहि

आधुनिक डिग्री, पेशा आ प्रशासनिक उपाधि पुरान सुत/सुता/गाम/संख्या-व्याकरणक भीतर जोड़ल जाइत अछि। एहि सँ निरन्तरता आ परिवर्तनक मिश्र रूप देखाइत अछि। पोथी “आधुनिकता बनाम परम्परा”क सरल द्वैतक बदला “पुरान अभिलेखीय ढाँचा भीतर नव पहचानक प्रविष्टि” देखबैत अछि।

१३. भाषा-निखार आ पारिभाषिक अनुशासनक ऑडिट

मूल पोथीक प्रमुख व्याख्यात्मक भाषा अंग्रेजी [English] अछि, जबकि पञ्जी-पद, नाम, गाम आ तकनीकी चिह्न देवनागरीमे सुरक्षित अछि। वर्तमान शोध-समीक्षा मैथिलीमे लिखल गेल अछि, आ रोमन/अंग्रेजी रूप सभकेँ ब्रैकेटमे सीमित राखल गेल अछि। पारिभाषिक मैथिली लेल “अभिलेख”, “प्रमाण”, “सन्दर्भ-संख्या”, “शाखा-निरन्तरता”, “विवाह-मार्ग”, “अवच्छेदक”, “अनिश्चित पाठ”, “स्थान-सूची”, “व्यक्तिनाम-सूची” जकाँ पद एकरूप राखल गेल अछि।

मूल पोथीक भाषिक शक्ति स्पष्ट निर्देशात्मक गद्य अछि; कमजोरी मुख्यतः पुनरुक्तिमे अछि। अनेक अध्याय एकहि सावधानी—गैप नहि भरू, नाम अकेला नहि पढ़ू, गामक भूमिका जाँचू, सुता अलग चिन्हू—फेर-फेर विस्तार सँ कहैत अछि। पाठक-प्रशिक्षण लेल ई उपयोगी, मुदा शोध-पत्रिकात्मक कसाव लेल एकटा प्रारम्भिक “पद्धति-संहिता” आ अध्याय-विशिष्ट अपवादक पृथक प्रस्तुति अधिक प्रभावी होयत।

नाम/गामक मानकीकरणमे मूल पाठ-रूप आ खोज-सुविधा-रूप दूनू राखबाक नीति उचित अछि। किछु स्थान-नाम विषय-सूची, अध्याय-शीर्षक आ आन्तरिक पाठमे भिन्न रूपमे भेटैत अछि—जकाँ भखरौली/भरवरौली, उचौरी/उचौड़ी, गढ़बनैली/गढ़बनाइली प्रकारक रूप। ई सभकेँ “गलती” कहि तुरन्त एकरूप नहि करबाक चाही; पहिने स्रोत-पाठ-भेद बनाम सम्पादकीय टंकण-भेदक परीक्षण हो।

१४. सम्पादकीय आ संरचनात्मक ऑडिट

प्रकाशन-पाण्डुलिपिक आरम्भिक एक-पंक्तिक विवरण “अध्याय १–२०” कहैत अछि, मुदा वास्तविक विषय-सूची आ ग्रन्थ-शरीर अध्याय ३२ धरि अछि। ई स्पष्ट समन्वय-विसंगति अछि आ आगामी संस्करणमे शीर्ष-पृष्ठ/मेटाडाटा सुधारल जाय।

अध्याय १–२० धरि शीर्षक शैली अपेक्षाकृत संगत अछि, मुदा अध्याय २१ सँ बाद अनेक अध्याय-शीर्षक सामान्य अनुच्छेद शैलीमे आबि गेल अछि। मुद्रित दृश्यपर ई जरूरी नहि जे बहुत खराब देखाय, मुदा डिजिटल नेविगेशन, स्वचालित विषय-सूची आ सुलभता लेल वास्तविक शीर्षक-शैली एकरूप करब उचित होयत।

अध्याय २०क अन्तमे अध्याय २१ दिस संक्रमणक समानार्थी वाक्य लगातार दू बेर अछि। ई पुनरावृत्ति हटाओल जा सकैत अछि। किछु अध्यायक विषय-सूची शीर्षक आ वास्तविक शीर्षकमे स्थान-सूचीक छोट अन्तर अछि; जे ठाम ई स्रोत-रूपभेद अछि ओहि ठाम नोट देल जाय, आ जे ठाम केवल विषय-सूची अद्यतन नहि भेल अछि ओतए समन्वय कएल जाय।

ई सम्पादकीय बिन्दु सभ पोथीक मुख्य शोध-मूल्यकेँ कम नहि करैत; उलटे एकटा संशोधित संस्करणमे पाठक-उपयोगिता, खोज-संगति आ संदर्भ-विश्वसनीयता बहुत बढ़ा सकैत अछि।

१५. पोथीक प्रमुख उपलब्धि

- पञ्जी केँ “नाम-सूची” सँ “सम्बन्ध-व्याकरण”मे रूपान्तरित करब।
- प्रविष्टि १–२२४क अखण्ड संख्यात्मक कवरेज राखब।

• सुता/दौहित्र आ विवाह-मार्ग कैं संरचनात्मक प्रमाण मानब।

• गाम कैं साधारण पता नहि, बहुभूमिक वंशगत अवच्छेदक मानब।

• विद्वत्ता, सामाजिक स्थिति, डचोढ़ी आ आधुनिक पदकैं वंश-स्मृतिक भीतर पढ़ब।

• संख्या, संक्षेप आ क्रॉस-सन्दर्भ [cross-reference] कैं अभिलेखीय नेविगेशन मानब।

• रिक्ति, अस्पष्टता आ पाठ-भेदक प्रति अनुमान-विरोधी सम्पादकीय नैतिकता रखब।

• शब्दावली, स्थान-सूची, नाम-सूची आ पुनर्निर्माण-विधि द्वारा ग्रन्थकैं शोध-उपकरण बनायब।

१६. सीमासभ आ भावी संशोधनक दिशा

पहिल सीमा—दीर्घ काल-सीमा व्यापक अछि, मुदा अधिकांश प्रविष्टि लेल निश्चित बाह्य काल-सत्यापन एहि खण्डक भीतर उपलब्ध नहि। अतः दीर्घकालिक स्मृति आ निश्चित इतिहास-दिनांक अलग राखल जाय। दोसर—उपाधि आ सार्वजनिक पद मूल्यवान संकेत अछि, मुदा बाहरी अभिलेखीय पुष्टि बिना जीवनीक विस्तार नहि हो। तेसर—गामक आधुनिक भौगोलिक पहचान कतेको ठाम कठिन भऽ सकैत अछि; स्थान-सूचीमे “स्रोत-नाम”, “संभावित आधुनिक रूप”, “स्थिति-अनिश्चित” एहन पृथक क्षेत्र उपयोगी होयत।

चारिम—आगामी डिजिटल संस्करणमे प्रत्येक व्यक्ति/गाम/उपाधि/संख्या कैं पृथक पहचान-संकेत देल जाए, मुदा मूल पाठक क्रम अबाध राखल जाय। पाँचम—दाबी-वजनक दृश्यात्मक श्रेणी जोड़ल जा सकैत अछि: “सबल समर्थित”, “सम्भाव्य”, “विवादित”, “अज्ञात”। छठम—सुता-सूत्रक पृथक विवाह-नेटवर्क सूचकांक बनलासँ स्त्री-रेखा आ अन्तर-ग्राम सम्बन्धक अध्ययन बहुत समृद्ध होयत।

सातम—पुनरुक्त पद्धतिगत चेतावनी सभकैं एकटा संक्षिप्त “पठन-संहिता”मे समेकित कऽ अध्याय-विशिष्ट गद्यकैं आरो कसाव देल जा सकैत

अछि। आठम—विषय-सूची, अध्याय-शीर्षक आ अनुच्छेद-शैलीक तकनीकी समन्वय कएल जाए। ई सुधार सभ मूल स्रोत-वफादारी बदले बिना ग्रन्थक अकादमिक संस्करण मजबूत करत।

१७. समेकित साहित्यिक निर्णय

“मिथिलाक पञ्जीक कूट-विमोचन, खण्ड ३”क साहित्यिक महत्त्व ओकर विषयक प्राचीनता मात्रमे नहि, पठन-विधिक निर्माणमे अछि। ई पुस्तक पाठक कैं एकटा कठिन सूत्रात्मक दस्तावेज पढ़बाक प्रशिक्षण दैत अछि। कथ्यक केन्द्र “कौन केकर पुत्र?” सँ आगे “कौन केकरा सँ, कोन गाम/शाखा/विवाह/उपाधि/सन्दर्भ द्वारा सम्बन्धित?” दिस जाइत अछि। एहि परिवर्तनसँ वंशावली सामाजिक इतिहास, विवाह-भूगोल, विद्वत्ता-स्मृति आ अभिलेखीय पद्धतिक संग संवाद करैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ ग्रन्थक औचित्य आ प्रसाद-गुण प्रमुख अछि; ध्वनि/वक्रोक्ति तुलनात्मक सहायक अवधारणा मात्र। पाश्चात्य दृष्टिसँ ई निकट-पाठ, ऐतिहासिक भाषिकता, अभिलेख-संवेदनशीलता आ आख्यान-सावधानीक मिश्र उदाहरण अछि। नव्य-न्यायिक दृष्टिसँ एकर सबसे गहिरा गुण अवच्छेदित पहिचान, प्रमाण-सीमा आ अभावक सावधान उपयोग अछि। विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टिसँ ई स्थानीय स्रोतकैं आदर करैत अछि, मुदा ओकरा आलोचनासँ मुक्त नहि करैत; मौन कैं कथा नहि बनबैत; केन्द्र/हाशिया आ परम्परा/आधुनिकताकैं एकरेखीय द्वैतमे नहि बाँधैत।

एहि आधारपर पोथी मिथिला-अध्ययन लेल एकटा महत्त्वपूर्ण “दस्तावेजी पठन-प्रयोगशाला” अछि। एकर मूल्य केवल २२४ प्रविष्टिक अर्थ खोलबामे नहि, बल्कि भविष्यक पञ्जी-अध्ययन लेल नियम बनबामे अछि: स्रोत बचाउ, सम्बन्ध खोलू, अनिश्चितता घोषित करू, नामकैं संदर्भसँ काटू नहि, सुता-सूत्र कैं गौण नहि मानू, गामकैं केवल पता नहि बुझू, संख्या कैं फालतू नहि मानू, आ जहाँ प्रमाण समाप्त होइछ ओतहि निष्कर्ष रोकू।

१८. निष्कर्ष

सम्पूर्ण पोथीक परीक्षण सँ स्पष्ट होइत अछि जे ग्रन्थ अपन मूल उद्देश्य—उपटीप पञ्जीक कठिन संक्षिप्त सामग्री कैं आधुनिक शोध-पाठक लेल खोलब

—मे सफल अछि। अध्याय १–८ पाठक कैं व्याकरण, समय, गाम, विवाह आ उपाधि बुझबैत अछि; अध्याय ९–२४ बिना संख्यात्मक रिक्तिक प्रविष्टि १–२२४क समूहगत कूट-विमोचन करैत अछि; अध्याय २५–३१ पुनःपरीक्षण योग्य उपकरण दैत अछि; अध्याय ३२ एहि समस्त सामग्री कैं परिवार, गाम, विवाह, विद्वत्ता, स्थिति, प्रव्रजन, पाठ-तन्त्र, आधुनिकता आ मौनक सभ्यता-अभिलेखमे समेटैत अछि।

ग्रन्थक स्थायी महत्त्व “पूर्ण निश्चितता”क दावा नहि, बल्कि “अनिश्चिततताक अनुशासन” अछि। पञ्जी जतेक कहैत अछि ततेक खोलू; जतेक नहि कहैत अछि, ओतए रुकू। ई सूत्र नव्य-न्यायक प्रमाण-अनुशासन, पाश्चात्य अभिलेखीय आलोचना, भारतीय औचित्य आ विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि—चारू दिशाकैं एक बिन्दुपर आनैत अछि। मिथिलाक पञ्जी एहि रूपमे केवल वंश-स्मृति नहि रहैत; ई सम्बन्ध, स्थान, विवाह, ज्ञान, प्रतिष्ठा आ मौनक बहुस्तरीय सांस्कृतिक अभिलेख बनैत अछि।

ग्रन्थसूची

मिथिलाक पञ्जीक कूट-विमोचन, खण्ड ३ [Decoding the Panji of Mithila, Volume III]

जीनोम मानचित्रण : मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्ध, खण्ड १–२ [Genome Mapping (450 A.D. to 2009 A.D.) – Mithila’s Panji Prabandh, Volume I – Khand 2]

नाट्यशास्त्र

ध्वन्यालोक

वक्रोक्तिजीवित

औचित्यविचारचर्चा

काव्यप्रकाश

तत्त्वचिन्तामणि

शब्दशक्तिप्रकाशिका

काव्यशास्त्र [Poetics]

यथार्थक निरूपण [Mimesis: The Representation of Reality in Western Literature]

ज्ञानक पुरातत्त्व [The Archaeology of Knowledge]

मेटाइतिहास [Metahistory: The Historical Imagination in Nineteenth-Century Europe]

समानान्तर दर्शन, खण्ड १

समानान्तर दर्शन, खण्ड २

आलेख ४५ · पञ्जी, दर्शन, भाषा आ समानान्तर इतिहास

डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड ४

सारांश

‘मिथिलाक पाँजीक उन्मोचन, खण्ड ४’ [Decoding the Panji of Mithila, Volume IV] अपन आरम्भिक प्रतिज्ञामे स्पष्ट करैत अछि जे नागरम पाँजी कैं नामक यांत्रिक सूची जकाँ पढ़ब पर्याप्त नहि। नाम, पुत्र-सूचक, शाखा, ग्राम, विवाह-संबन्ध, उपाधि, क्रॉस-सन्दर्भ, बिन्दु, रिक्त स्थान आ देव-आवाहन एक-दोसराक संग मिलि अर्थ बनबैत छथि।

बीजशब्द

डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड ४ · मिथिला · वंश-अभिलेख · इतिहासलेखन · प्रमाण-विवेचन

१.३७. गजेन्द्र ठाकुर- डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला’-४- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

वंश, ग्राम, स्मृति आ प्रमाण

‘मिथिलाक पाँजीक उन्मोचन, खण्ड ४’ **[Decoding the Panji of Mithila, Volume IV]**

क भारतीय, पाश्चात्य, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति-आधारित समग्र साहित्यिक–ऐतिहासिक समीक्षा

गजेन्द्र ठाकुर

नागरम पाँजीक ८७ अध्याय, ६६८ क्रमांकित प्रविष्टि आ परिशिष्ट १–१० [A–J] क सम्पूर्ण पाठाधारित अध्ययन

सारांश

ई शोध-समीक्षा ‘मिथिलाक पाँजीक उन्मोचन, खण्ड ४’ [Decoding the Panji of Mithila, Volume IV] कैं एकटा वंशावली-पुस्तक मात्र नहि, बल्कि स्रोत-समीक्षा, सम्बन्ध-स्मृति, ग्राम-भूगोल, विवाह-जाल, पेशागत

परिवर्तन आ अभिलेखीय अनिश्चिततक संयुक्त दस्तावेज रूपमे पढ़ैत अछि। पोथीक अग्रभाग, आठ भाग, अध्याय १–८७, क्रमांकित प्रविष्टि १–६६८, विश्लेषणात्मक अध्याय ८२–८७ आ परिशिष्ट १–१० [A–J] कैं अलग-अलग जाँचि समग्र संरचनात्मक लेखा तैयार कएल गेल अछि। मुख्य निष्कर्ष ई अछि जे पोथीक सबलतम उपलब्धि ‘स्रोत-पाठ—व्याख्या—ऐतिहासिक निष्कर्ष’ केर भेद, ‘एक ग्राम सँ दोसर ग्राम’ सूत्रक बहुअर्थकता, दोहरायल नामक सावधान पहचान, आ रिक्त/सन्दिग्ध स्थानकैं प्रमाणिक अभावक चिह्न रूपमे बचा कऽ रखनाइ अछि। भारतीय वंशावली-इतिहास परम्परा, कल्हणीय स्रोत-विविधता, पाश्चात्य स्रोत-आलोचना, सूक्ष्म-इतिहास, फूको-प्रेरित अभिलेख-समीक्षा, नव्य-न्यायक प्रमाण–अनुमान अनुशासन आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक दावाश्रेणी एकत्र लागू करैत समीक्षा देखबैत अछि जे पोथी तथ्य-नियंत्रित व्याख्याक दिशामे उल्लेखनीय रूपेँ सफल अछि, मुदा परिशिष्टक ‘पूर्ण’ दावाक तुलनामे वास्तविक सूचीकरण चयनात्मक अछि; पृष्ठ/प्रविष्टि-निर्देशकयुक्त समग्र सूचक, प्रत्यक्ष स्रोत-प्रतिरूप, विस्तृत क्रॉस-सन्दर्भ, पूर्ण रिक्त-प्रविष्टि सूची, वास्तविक वंश-सारणी, मार्ग-सारणी आ मानचित्र अगिला संस्करणमे आवश्यक छथि। साहित्यिक स्तरपर पोथीक ‘स्मृतिक मानचित्र’ रूपक, क्रमिक ‘व्याकरण—उन्मोचन—संश्लेषण’ रचना, आ रिक्ततक नैतिक सम्पादन एकर विशिष्ट पहचान अछि; पुनरुक्त शिक्षणात्मक अनुच्छेद आ प्रकाशन-पूर्व कार्यप्रवाहक अवशेष अंतिम सम्पादकीय निखारक मुख्य क्षेत्र बनैत अछि।

बीजशब्द: पाँजी, नागरम, वंशावली, ग्राम-जाल, विवाह-स्मृति, अभिलेख, स्रोत-समीक्षा, नव्य-न्याय, प्रमाण, अभाव, समानान्तर इतिहास, मिथिला।

१. प्रस्तावना : सूची सँ सम्बन्धित सभ्यता-अभिलेख धरि

‘मिथिलाक पाँजीक उन्मोचन, खण्ड ४’ [Decoding the Panji of Mithila, Volume IV] अपन आरम्भिक प्रतिज्ञामे स्पष्ट करैत अछि जे नागरम पाँजी कैं नामक यांत्रिक सूची जकाँ पढ़ब पर्याप्त नहि। नाम, पुत्र-सूचक, शाखा, ग्राम, विवाह-संबन्ध, उपाधि, क्रॉस-सन्दर्भ, बिन्दु, रिक्त स्थान आ देव-आवाहन एक-दोसराक संग मिलि अर्थ बनबैत छथि। एहि कारणेँ पोथीक साहित्यिक मूल्य ‘कथा’क रूढ़ अर्थमे नहि, बल्कि दस्तावेजी गद्यक ओहि क्षमतामे अछि

जाहिमे अत्यन्त संकुचित अभिलेख कैं क्रमशः पठनीय सामाजिक स्मृतिमे बदलल जाइत अछि।

पोथीक केन्द्रीय रूपक ‘स्मृतिक मानचित्र’ अछि। वंश रक्त-रेखा मात्र नहि; ग्राम सम्बन्ध-सूचक अछि, विवाह सामाजिक सेतु अछि, उपाधि विद्या अथवा प्रतिष्ठाक संकेत अछि, पेशा समय-परिवर्तनक निशान अछि, आ रिक्तता दस्तावेजक सीमा। ई रूपक पोथीक ८७ अध्यायक बीच वैचारिक एकता बनबैत अछि। अध्याय १–५ पाठ-पद्धति बनबैत छथि; अध्याय ६–८१ स्रोत-क्रमक सहारे ६६८ क्रमांकित प्रविष्टि खोलैत छथि; अध्याय ८२–८७ ओहि विखण्डित सामग्री कैं वंश, ग्राम, विवाह, पेशा, प्रव्रजन आ पाठ-संकट रूपमे फेर सँ समूहित करैत छथि; परिशिष्ट सभ प्रयोगात्मक साधन देबाक दावा करैत छथि।

एहि समीक्षाक उद्देश्य प्रशंसात्मक परिचय नहि, प्रमाण-नियंत्रित मूल्यांकन अछि। जतय पोथी अपन स्रोतक सीमा स्वयं स्वीकारैत अछि, ओतय एकरा सम्पादकीय शक्ति मानल गेल अछि; जतय व्याख्या स्रोतक शब्दसँ आगाँ जाइत अछि, ओतय दावाक दर्जा घटाओल गेल अछि; जतय परिशिष्टक शीर्षक ‘पूर्ण’ अथवा ‘सूचक’ कहैत अछि मुदा प्रविष्टि-पृष्ठ निर्देश नहि देत अछि, ओतय संरचनात्मक अपूर्णता चिन्हित कएल गेल अछि। एहि समीक्षामे कोनो रिक्त स्थान अनुमानसँ नहि भरल गेल अछि।

२. स्रोत, सीमा आ शोध-पद्धति

मुख्य स्रोत स्वयं पोथी अछि। ओकर ७६९ पृष्ठक डिजिटल पाठ, अध्याय-शीर्षक, क्रमांकित प्रविष्टि, विश्लेषणात्मक अध्याय, परिशिष्ट आ दस्तावेजीय संरचना परस्पर मिलान कएल गेल। स्रोत-पाठक भीतर बताओल कार्यस्रोत ‘जीनोम मैपिंग’ नामधारी नागरम सामग्री [Genome Mapping (450 A.D. to 2009 A.D.) – Mithilak Panji Prabandh] अछि। समीक्षा ओकर नामकैं जैविक आनुवंशिकी केर वैज्ञानिक दावा नहि मानैत अछि; उपलब्ध पोथी वंशावली-अभिलेख पर आधारित अछि, अतः आनुवंशिक निष्कर्ष लेल पृथक जैविक प्रमाण आवश्यक होयत।

तुलनात्मक पद्धतिमे चारि स्वतंत्र कसौटी राखल गेल अछि। पहिल, भारतीय ऐतिहासिक परम्परा—वंशावली, इतिहास-पुराण, चरित, क्षेत्रीय आख्यान आ कल्हणक स्रोत-संग्रहणक अनुशासन। दोसर, पाश्चात्य स्रोत-समीक्षा—साक्ष्यक उत्पत्ति, प्रामाणिकता, साक्षीक सीमा, सहमति-असहमति, सूक्ष्म संकेत आ अभिलेखीय सत्ता। तेसर, नव्य-न्याय—प्रमा/अप्रमा, पक्ष, हेतु, व्याप्ति, उपाधि, प्रतिवाद, शब्दप्रमाण आ अभावक सूक्ष्मता। चारिम, विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति—दावा, श्रेणी, स्रोत, सत्ता/मौन, प्रतिप्रमाण, निष्कर्ष-दर्जा आ पुनर्लेखनक क्रम।

एहि चारू कसौटीक उपयोग ऐतिहासिक वंश परम्परा सिद्ध करबाक लेल नहि, पद्धतिगत तुलना लेल कएल गेल अछि। उदाहरणार्थ, पोथीक ‘एकहि नाम दोहरायल तँ एकहि व्यक्ति नहि मानू’ नियम नव्य-न्यायक हेतु-परीक्षणसँ तुलनीय अछि, मुदा एहि समानता सँ ऐतिहासिक प्रभाव सिद्ध नहि होइत अछि। ओहिना ‘रिक्तता कैं मिटाउ नहि’ नियम अभिलेखीय मौनक आधुनिक आलोचनासँ साम्य रखैत अछि, मुदा ई साम्य स्वतंत्र पद्धतिगत अभिसरण सेहो भऽ सकैत अछि।

३. पोथीक संरचनात्मक मानचित्र

खंड	वस्तु	आलोचनात्मक टिप्पणी
अग्रभाग	शीर्षक, अधिकार-टिप्पणी, समर्पण, भूमिका, आभार, स्रोत एवं सम्पादकीय विधि, लिप्यन्तरण-सूचना, संक्षेप-सूची, पाठ-विधि	पोथीक पद्धति पहिनहि स्पष्ट; विशेषतः स्रोत, व्याख्या आ निष्कर्ष अलग राखबाक प्रतिज्ञा।
भाग १	अध्याय १–५	पाँजीक व्याकरण, ग्राम-मार्ग, व्यक्ति/उपाधि, रिक्तता आ सम्पादकीय नैतिकता।
भाग २–७	अध्याय ६–८१	प्रविष्टि १–६६८क क्रमिक उन्मोचन; नागरमसँ आरम्भ कऽ बरुवारी–बलियास धरि ग्राम-वंश जाल।

खंड	वस्तु	आलोचनात्मक टिप्पणी
भाग ८	अध्याय ८२–८७	वंश-नोड, ग्राम-मार्ग, विवाह-जाल, विद्वान/पेशा, प्रव्रजन, पाठ-समस्या—छः विश्लेषणात्मक संश्लेषण।
परिशिष्ट १–१० [A–J]	शब्दावली, ग्राम, व्यक्ति, उपाधि, वंश, मार्ग, रिक्तता, क्रॉस-सन्दर्भ, सम्पादकीय नियम, सुझाओल मानचित्र/वंश-चित्र	उपयोगी दिशासूचक; मुदा बहु परिशिष्ट शीर्षकक ‘पूर्ण’ दावाक अनुपातमे चयनात्मक।

संरचनात्मक रूपेँ ई विन्यास प्रभावी अछि, कारण पाठक पहिने संकेत-व्याकरण सीखैत अछि, तखन विस्तृत स्रोत-पठन करैत अछि, आ अन्तमे संश्लेषण पबैत अछि। पश्चिमी शोध-लेखक भाषा मे कहब तँ ई ‘पद्धति—प्रमाण—संश्लेषण’क अनुक्रम अछि; भारतीय टीका-परम्पराक दृष्टि सँ ई ‘सूत्र—व्याख्या—संग्रह’क अनुक्रम सन काज करैत अछि।

४. अध्याय १–८७ : सम्पूर्ण कवरेज लेखा

नीचाँक सारणी पोथीक कोनो अध्याय छुटि नहि जाए—एहि उद्देश्य सँ तैयार कएल गेल अछि। शीर्षक मूल रूपमे कोष्ठकक भीतर देल अछि; तेसर स्तम्भमे समीक्षा-संकेत अछि। अध्याय ६–१० आरम्भिक प्रविष्टि १–८क ग्राम-वंश समूह खोलैत छथि; अध्याय ११–८१क क्रमांकित दायरा स्रोत-क्रमक स्पष्ट लेखा देत अछि।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
1	पद्धति/भूमिका	[Entering the Nagram Panji: What This Volume Decodes]	केन्द्रीय प्रतिज्ञा—पाँजी नाम-सूची नहि, सम्बन्धित सामाजिक स्मृतिक अभिलेख। स्रोत, व्याख्या आ निष्कर्ष अलग राखबाक आधार एतय बनैत अछि।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
2	पद्धति/भूमिका	[The Language of the Panji: Terms, Abbreviations, and Formulae]	सूत्र-पद, संक्षेप, शाखा-संकेत, रिक्तता आ क्रॉस-सन्दर्भक व्याकरण; आगाँक सम्पूर्ण पाठक कुंजी।
3	पद्धति/भूमिका	[The Logic of “From Village to Village”]	‘एक ग्राम सँ दोसर ग्राम’ सूत्रकेँ प्रव्रजन मात्र नहि मानि उत्पत्ति, बसावट, विवाह, संस्कार अथवा अभिलेखीय वर्गीकरणक सम्भावना खुला रखैत अछि।
4	पद्धति/भूमिका	[Persons, Titles, and Social Roles in the Nagram Panji]	व्यक्ति-नाम, ठाकुर/चौधरी/पण्डित आदि उपाधि आ आधुनिक पेशाकेँ अलग पहचानि सामाजिक स्मृतिक अनेक स्तर देखबैत अछि।
5	पद्धति/भूमिका	[Reading Gaps, Blanks, and “Rikta”]	बिन्दु, रिक्तता आ ‘रिक्त’ प्रविष्टिक नैतिक पाठ; अनुपलब्ध सूचनाकेँ अनुमानसँ भरबाक विरुद्ध पोथीक सबल नियम।
6	आरम्भिक प्रविष्टि १–८	[Sandahpur to Singhwar: The Opening Genealogical Frame]	सन्दहपुर–सिंहवार आरम्भिक ढाँचा; ग्राम-मार्ग आ वंश-सूत्र एक-दोसराक सहारे पढ़बाक पहिल व्यावहारिक नमूना।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
7	आरम्भिक प्रविष्टि १–८	[The Aankhi-Lal-Gunakar-Udan-Gangesh Lineage]	आँखी–लाल–गुणाकर–उदन–गंगेश समूहक भीतर वंश-क्रम आ ग्राम-संकेतक सह-पठन; पुनरावृत्ति सँ पहचानक समस्या उद्घाटित।
8	आरम्भिक प्रविष्टि १–८	[Girdhari, Abadh Bihari, Gopal, Teknarayan, and the Expansion of the Singhwar Branch]	गिरधारी, अवध बिहारी, गोपाल, टेकनारायण आदि द्वारा सिंहवार शाखाक विस्तार; एकै ग्राम-नोडमे बहु उपशाखाक गठन।
9	आरम्भिक प्रविष्टि १–८	[Shashipur as a Secondary Centre]	शशिपुरक गौण केन्द्र सँ स्वतन्त्र वंश-नोड बनबाक प्रक्रिया; स्थान स्वयं व्याख्यात्मक इकाई बनैत अछि।
10	आरम्भिक प्रविष्टि १–८	[The Shashipur-Pindaruch and Shashipur-Survana Branches]	शशिपुर–पिण्डारुच आ शशिपुर–सुरवना शाखा; जैविक वंशसँ बाहर घराना/ग्राम-सम्बन्धक स्मृति।
11	प्रविष्टि ९–११	[Shashipur Later Branches and Modernizing Names]	प्रविष्टि ९–११; शशिपुरक उत्तरवर्ती शाखा आ आधुनिक नाम-स्तर पुरान ग्राम-स्मृतिक संग सह-अस्तित्वमे।
12	प्रविष्टि १२–१४	[Sandahpur to Katka: The First Post-Shashipur Expansion]	प्रविष्टि १२–१४; कटका दिस संक्रमण सँ आरम्भिक नोडक बाह्य विस्तार स्पष्ट।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
13	प्रविष्टि १५–१९	[Banailli, Purnea, Badhwas-Sarisab, Rahua, and the Empty Boundary: Entries (15)-(19)]	प्रविष्टि १५–१९; बनैली, पूर्णिया, बढ़वास–सरिसब, रहुआ आ रिक्त सीमा—रिक्त प्रविष्टि स्वयं संरचनात्मक तथ्य बनैत अछि।
14	प्रविष्टि २०–२४	[Khangur to Nahar, Danga, Pilkhwar, and the First Khangur Expansion: Entries (20)-(24)]	प्रविष्टि २०–२४; खंगुर–नाहर–डांगा–पिलखवार मार्गक पहिल विस्तार; ग्राम-आधारित शाखा-पहचान प्रबल।
15	प्रविष्टि २५–२९	[Pilkhwar, Bhatsimri, Ranitole and the Later Khangur Expansion]	प्रविष्टि २५–२९; पिलखवार, भटसिमरी आ रानीटोलक उत्तरवर्ती विस्तार; एकहि क्षेत्रक पुनरावृत्ति कैं पुनरुक्ति नहि, नेटवर्क-संकेत मानल गेल।
16	प्रविष्टि ३०–३४	[Khangur to Pilkhwar, Yamsam and Dihiya: The Transition from Branch Genealogy to Modern Memory]	प्रविष्टि ३०–३४; खंगुर–यमसम–दिहिया क्रममे पुरान शाखा-स्मृति सँ आधुनिक सामाजिक पहचानक संक्रमण।
17	प्रविष्टि ३५–४०	[Khangur-Dihiya Continuations and the Kailakh-Kakraud Turn: Entries (35)-(40)]	प्रविष्टि ३५–४०; दिहिया-निरन्तरता आ कैलाख–ककरौड़ मोड़; छोट प्रविष्टि सभसँ मार्ग-जालक दिशा बदलैत अछि।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
18	प्रविष्टि ४१–४८	[Khangur to Yamsam, Kakraud, Saurath, and the Noane-Gopinath Continuation]	प्रविष्टि ४१–४८; यमसम, ककरौड़, सौराठ, नोआने–गोपीनाथ; विवाह/ग्राम सम्बद्धताक सम्भावनाकेँ खुला राखल गेल।
19	प्रविष्टि ४९–५४	[Khangur, Khojpur, Pilkhwar, Kailakh, and the Transition to Sakuri]	प्रविष्टि ४९–५४; खंगुर सँ खोजपुर, पिलखवार, कैलाख होइत सकुरीक संक्रमण; क्षेत्रीय जालक विस्तार।
20	प्रविष्टि ५५–६८	[Sakuri, Sarisab-Sakuri, and the Badhiyam-Parvapalli Branches]	प्रविष्टि ५५–६८; सकुरी, सरिसब–सकुरी आ बढ़ियाम–पर्वपल्ली; आवृत्त ग्राम-नोड सभ शाखाक तुलनात्मक पठन करबैत छथि।
21	प्रविष्टि ६९–८९	[Badhiyam after Saurath: Navani, Chanpura, Shashipur, Tedhra, Jagati, Rajey, and Sakuri-Gangoli]	प्रविष्टि ६९–८९; नवानी, चनपुरा, शशिपुर, टेढ़रा, जगती, राजेय, सकुरी–गंगौली—बहुग्राम अनुक्रम विवाह/आवास/स्मृति भेदक प्रश्न उठबैत अछि।
22	प्रविष्टि ९०–१०९	[Sakuri-Gangoli, Bhadgam, Damodarpur, Ramnagar-Khajuri, and Jamuni-Ehu]	प्रविष्टि ९०–१०९; सकुरी–गंगौली सँ भदगाम, दामोदरपुर, रामनगर–खजुरी आ जमुनी–एहु; एक शाखासँ दोसर अभिलेखीय इकाईक जटिल संक्रमण।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
23	प्रविष्टि ११०–१३१	[Jamuni, Pachahi, Kanhauli, and Mahiya: From the Jajival Register to the Soderpur-Kanhauli and Mahiya Lines]	प्रविष्टि ११०–१३१; जमुनी, पचाही, कनहौली, महिया; जजिवाल अभिलेख सँ सोदरपुर–कनहौली रेखा धरि बहु-पंजीय सम्बन्ध।
24	प्रविष्टि १३२–१५२	[Hasauli, Hati, Digaun, Raiyam, and the Return to Sarisab: Soderpur Registers after Mahiya]	प्रविष्टि १३२–१५२; हसौली, हाती, दिगौन, रैयाम आ सरिसबक पुनरागमन; स्रोत-क्रम रैखिक भूगोल नहि, सम्बन्ध-जाल अछि।
25	प्रविष्टि १५३–१६९	[Sarisab, Gaur, Bali, Jagaur, and Khori: Soderpur Registers before Sukhet]	प्रविष्टि १५३–१६९; सरिसब, गौर, बाली, जगौर, खोरी; सोदरपुर समूहक भीतर उपशाखा आ ग्राम-सम्बन्धक घनत्व।
26	प्रविष्टि १७०–१८५	[Sukhet, Katka, and Rohar: Soderpur Registers from Lagama to Kachhuwa]	प्रविष्टि १७०–१८५; सुखेत, कटका, रोहर; लगमा सँ कछुआ धरि स्थान-सम्बन्ध स्रोतक विस्तारशील स्मृति देखबैत अछि।
27	प्रविष्टि १८६–२०६	[Pachadhi, Kodariya, Sakuri, Phuldaha, Parhi, Haripur, Samaya, and Jamdauli]	प्रविष्टि १८६–२०६; पचाढ़ी, कोदरिया, सकुरी, फुलदाहा, परही, हरिपुर, समया, जमदौली—घन मार्ग-शृंखला पाठक सावधानी माँगैत अछि।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
२८	प्रविष्टि २०७–२२०	[Jamdauli to Dath and the Mahishi-Pali Register: Entries (207)-(220)]	प्रविष्टि २०७–२२०; जमदौली सँ डाठ आ महिषी–पाली; ग्राम-आरम्भ आ शाखा-संकेतक अनुक्रम व्यवस्थित ढंग सँ उघारल गेल।
२९	प्रविष्टि २२१–२२९	[Mahishi to Dath and the Mangrauni-Madari Continuation: Entries (221)-(229)]	प्रविष्टि २२१–२२९; महिषी–डाठ सँ मंगरौनी–मदारी; मध्यखंडक नया केन्द्र बनबाक प्रक्रिया।
३०	प्रविष्टि २३०–२४७	[Hati-Pali and Samauli-Pali: From Satlakha and Pilkhwar to Sanha, Jhanjharpur and Bagahi]	प्रविष्टि २३०–२४७; हाती–पाली आ समौली–पाली; सतलखा, पिलखवार, सन्हा, झंझारपुर, बगाही—विवाह/सम्बन्ध मार्गक बहुलता।
३१	प्रविष्टि २४८–२६५	[Balirajpur-Hariamb and Siva-Hariamb: Settlements, Scholarly Lines and Marriage Networks, Entries (248)-(265)]	प्रविष्टि २४८–२६५; बलिराजपुर–हरिअम्ब आ सिवा–हरिअम्ब; विद्वत् उपाधि, बसावट आ विवाह-जाल एकहि फ्रेममे।
३२	प्रविष्टि २६६–२८३	[Mangrauna, Ahil, and Rakhwari under the Hariamb Line: Descent, Titles, and Marriage Circuits]	प्रविष्टि २६६–२८३; मंगरौना, अहिल, रखवारी; हरिअम्ब रेखामे वंश, उपाधि आ विवाह परिपथक घन संयोजन।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
33	प्रविष्टि २८४–२९०	[Akusi-Tankwal, Gandauli-Jalay, and the Opening Nagwad-Ghusaut Register]	प्रविष्टि २८४–२९०; अकुसी–टंकवाल, गंडौली–जलय आ नागवड़–घुसौत आरम्भ; अभिलेखीय इकाईक स्पष्ट पुनर्स्थापन।
34	प्रविष्टि २९१–२९५	[Nagwad-Ghusaut after Akaur: Bhachhi, Ranipur, Samaul, Masuriya, and Kakraud]	प्रविष्टि २९१–२९५; भच्छी, रानीपुर, समौल, मसुरिया, ककरौड़; छोट क्षेत्रमे बहु शाखा-संकेत।
35	प्रविष्टि २९६–३०५	[Nagwad-Ghusaut Continued: Bhatsimari, Chapahi, Kaivalakh, Satlakha, and the Turn to Ananlpur-Karmaha]	प्रविष्टि २९६–३०५; भटसिमरी, चपाही, कैवलाख, सतलखा सँ अनलपुर–कर्महा; मार्ग-नोडक दिशांतरण।
36	प्रविष्टि ३०६–३१९	[Nagwad to Pilkhwar and Rashadh, then Analpur-Karmaha before Tarouni]	प्रविष्टि ३०६–३१९; पिलखवार/रशाढ़ सँ अनलपुर–कर्महा; तरौनीक पूर्ववर्ती संक्रमण आ शाखा-पुनर्संयोजन।
37	प्रविष्टि ३२०–३२७	[Tarouni-Karmaha: Ramnagar, Kaivalakh, Pindaruch, Virsayar, Nanour, and the Aama-Bounsi Extension]	प्रविष्टि ३२०–३२७; तरौनी–कर्महा, रामनगर, कैवलाख, पिण्डारुच, वीरसायर, ननौर, आमा–बौंसी—सम्बन्धक बहु-दिशात्मकता।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
38	प्रविष्टि ३२८–३३५	[Naduar-Karmaha: Tharhi, Bharam, Kachhuwa, and the Scholarly Naduar Branches]	प्रविष्टि ३२८–३३५; नदुआर–कर्महा आ विद्वत् शाखा; उपाधि वंश-सूचक नहि, पहचान-सहायक मात्र—ई भेद विशेष महत्त्वपूर्ण।
39	प्रविष्टि ३३६–३४३	[Behat-Karmaha, Majhaura-Karmaha, and Majhiyam-Karmaha: Entries (336)-(343)]	प्रविष्टि ३३६–३४३; बेहट–कर्महा, मझौरा–कर्महा, मझियाम–कर्महा; समान प्रत्यय आ ग्राम-मार्गक कारण व्यक्ति-समानीकरणसँ बचबाक उदाहरण।
40	प्रविष्टि ३४४–३५१	[Mahishi-Budhwal: Kailakh, Kachhuwa, Pokhrauni, Bhainsdiyar, and Parihari: Entries (344)-(351)]	प्रविष्टि ३४४–३५१; महिषी–बुधवाल, कैलाख, कछुआ, पोखरौनी, भैंसदियार, परिहारी; ग्राम-नोडक परस्परता।
41	प्रविष्टि ३५२–३५८	[Pariyam, Gangaura, and Dumra: Budhwal Continuities, Entries (352)-(358)]	प्रविष्टि ३५२–३५८; परियम, गंगौरा, डुमरा—बुधवाल निरन्तरता; छोट समूहमे क्रम-सम्बन्धक संरक्षण।
42	प्रविष्टि ३५९–३७०	[Vichadhi, Kua-Tisaut, Parhat-Baheradhi, Chanpura-Parihari, Malichham-Bhachhi, and Mangrauni-Khanam-Phandah, Entries (359)-(370)]	प्रविष्टि ३५९–३७०; विचाढ़ी, कुआ–तिसौत, परहट–बहेराढ़ी, चनपुरा–परिहारी, मलिछाम–भच्छी, मंगरौनी–खनाम–फंदह; बहु-क्लस्टर अध्याय।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
43	प्रविष्टि ३७१–३८२	[Khojpur, Mangrauni, Pilkhwar and the Khanam-Phandah Learned Branch: Entries (371)-(382)]	प्रविष्टि ३७१–३८२; खोजपुर, मंगरौनी, पिलखवार आ खनाम–फंदह विद्वत् शाखा; शिक्षा/विद्वत्ता स्मृति वंश-ढाँचा मे समाहित।
44	प्रविष्टि ३८३–३८७	[Rajgram-Alay, Rashadh, Pilkhwar-Baligarh and Lagma: Entries (383)-(387)]	प्रविष्टि ३८३–३८७; राजग्राम–अलय, रशाढ़, पिलखवार–बालीगढ़, लगमा; कम प्रविष्टिमे मार्ग-संकेतनक घनता।
45	प्रविष्टि ३८८–३९१	[Baigani-Alay and the Baneli-Ramgarh Royal Cluster]	प्रविष्टि ३८८–३९१; बैगनी–अलय आ बनैली–रामगढ़ राजकीय समूह; सामाजिक प्रतिष्ठा-सूचकक आलोचनात्मक पाठ आवश्यक।
46	प्रविष्टि ३९२–३९७	[Paramgarh-Alay and Pindaruch: The Shyamlal, Akshaylal, Harikant, and Bechanlal Lines]	प्रविष्टि ३९२–३९७; परमगढ़–अलय आ पिण्डारुच; आधुनिक नामसमूह पुरान वंश-ढाँचा मे समय-परत जोड़ैत अछि।
47	प्रविष्टि ३९८–४०९	[Paramgarh, Babhaniam, Satlakha, Oini, Simraungarh, and Mahua-Khaual]	प्रविष्टि ३९८–४०९; परमगढ़, बभनियाम, सतलखा, ओइनी, सिमरौनगढ़, महुआ–खौआल; मिथिलाक विस्तृत ऐतिहासिक भूगोलक प्रतिध्वनि।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
48	प्रविष्टि ४१०–४१३	[Cutka-Soderpur, Tarouni, and Ranti-Pilerwad: Jatadhar Jha, Khadik-Khaual, and the Pilerwad Continuations]	प्रविष्टि ४१०–४१३; कटका–सोदरपुर, तरौनी, राँटी–पिलेरवाड़; जताधर झा आ पिलेरवाड़ निरन्तरता। मूल दस्तावेजमे अध्याय-शीर्षकक शैली अन्य अध्यायसँ असंगत अछि।
49	प्रविष्टि ४१४–४१९	[Simarwad-Khaual, Ahil-Gotham, Mahnaura-Bindhi, and Damodarpur-Kakraud]	प्रविष्टि ४१४–४१९; सिमरवाड़–खौआल, अहिल–गोठाम, महनौरा–बिन्धी, दामोदरपुर–ककरौड़; खौआल क्षेत्रक फैलाव।
50	प्रविष्टि ४२०–४२२	[Kaivalakh-Nahas-Khaual and the Bharam Continuation: Entries (420)-(422)]	प्रविष्टि ४२०–४२२; कैवलाख–नहस–खौआल आ भरम निरन्तरता; अत्यल्प प्रविष्टिमे शाखा-सम्बन्ध साफ करबाक प्रयास।
51	प्रविष्टि ४२३–४२८	[Manikouli, Nahas-Kaivalakh, and Nahas-Dhamdaha: Entries (423)-(428)]	प्रविष्टि ४२३–४२८; मणिकौली, नहस–कैवलाख, नहस–धमदाहा; एके ‘नहस’ नोडक विभिन्न मार्गक तुलना।
52	प्रविष्टि ४२९–४३२	[Chanpura and Basaith: Nahas-Khaual Continuities, Entries (429)-(432)]	प्रविष्टि ४२९–४३२; चनपुरा आ बसैठ; नहस–खौआल निरन्तरता आ स्थानीय शाखा।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
53	प्रविष्टि ४३३–४४६	[Basaith, Baghdas-Chanpura, Nahas-Chanpura, Khojpur, and Mahinathpur]	प्रविष्टि ४३३–४४६; बसैठ, बघदास–चनपुरा, नहस–चनपुरा, खोजपुर, महिनाथपुर; नेटवर्कक फेर सँ विस्तार।
54	प्रविष्टि ४४७–४५०	[Sukhait-Pilkhwar and the Learned Khaual Line: Entries (447)-(450)]	प्रविष्टि ४४७–४५०; सुखैत–पिलखवार आ विद्वत् खौआल रेखा; विद्या-सूचक उपाधि समय/प्रतिष्ठाक सहायक साक्ष्य।
55	प्रविष्टि ४५१–४६०	[Nahar and Parhat-Sakararhi: From Tharhi-Satlakha to Teldihā-Munger, Entries (451)-(460)]	प्रविष्टि ४५१–४६०; नाहर आ परहट–सकराढ़ी सँ तेलदिहा–मुंगेर; मिथिला बाहिरक भूगोलक आरम्भिक तीव्र विस्तार।
56	प्रविष्टि ४६१–४६६	[Hadari-Sakararhi, Batsar-Munger, Lohna-Sakararhi and Rohar-Haripur: Entries (461)-(466)]	प्रविष्टि ४६१–४६६; हदरी–सकराढ़ी, बटसर–मुंगेर, लोहना–सकराढ़ी, रोहर–हरिपुर; क्षेत्रीय फैलाव वंश-स्मृतिसँ टूटैत नहि।
57	प्रविष्टि ४६७–४७४	[Rohar-Jhanjharpur, Tatail-Sakararhi and Chhamu-Sakararhi: Entries (467)-(474)]	प्रविष्टि ४६७–४७४; रोहर–झंझारपुर, ततैल–सकराढ़ी, छमु–सकराढ़ी; पुनरावृत्त स्थान अलग-अलग शाखा-प्रसंगमे।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
58	प्रविष्टि ४७५–४८५	[Bhakhrauli-Ramnagar and the Rajanpura Cluster: Entries (475)-(485)]	प्रविष्टि ४७५–४८५; भखरौली–रामनगर आ राजनपुरा समूह; देरकालीन मार्ग-जालक महत्त्वपूर्ण केन्द्र।
59	प्रविष्टि ४८६–४९७	[Rajanpura-Kaivalakh, Shivipatti, Kanhouli, Navani, Ratauli, and Bhatsimari-Tharhi: Entries (486)-(497)]	प्रविष्टि ४८६–४९७; राजनपुरा–कैवलाख, शिविपट्टी, कनहौली, नवानी, रतौली, भटसिमरी–ठाढ़ी; बहु-स्थानीय सम्बद्धता।
60	प्रविष्टि ४९८–५०८	[Ratauli-Dhadhi, Dih-Darihara, Bargam-Pilkhwar, and Sihouli: Entries (498)-(508)]	प्रविष्टि ४९८–५०८; रतौली–धाढ़ी, दीह–दरिहरा, बरगाम–पिलखवार, सिहौली; स्थान-परिवर्तनकेँ स्वतः प्रव्रजन नहि मानबाक आवश्यकता स्पष्ट।
61	प्रविष्टि ५०९–५१०	[Rajoura-Sahpur and Rajoura-Tharhi: The Mandar Gramarambh]	प्रविष्टि ५०९–५१०; राजौरा–साहपुर/ठाढ़ी आ मन्दार ग्रामारम्भ; केवल दू प्रविष्टि, मुदा नये अभिलेखीय खंडक सीमा-चिह्न।
62	प्रविष्टि ५११–५१६	[Rajoura-Pindaruch, Bihnagar-Kakraud, Bagahi-Kakraud, and Pindaschh: Entries (511)-(516)]	प्रविष्टि ५११–५१६; राजौरा–पिण्डारुच, बिहनगर–ककरौड़, बगाही–ककरौड़, पिण्डास्छ; शाखा-सम्बन्धक पुनर्गठन।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
63	प्रविष्टि ५१७–५२८	[Barauni, Bhadual, Belaunja, Katouna, and Satauli: Entries (517)-(528)]	प्रविष्टि ५१७–५२८; बरौनी, भदुआल, बेलौंजा, कटौना, सतौली; ग्राम-समूहक अनुक्रमिक विस्तार।
64	प्रविष्टि ५२९–५३४	[Satauli Continuations, Purnia, Jayanand, Virsayar, and Parihari: Entries (529)-(534)]	प्रविष्टि ५२९–५३४; सतौली निरन्तरता, पूर्णिया, जयानन्द, वीरसायर, परिहारी; क्षेत्रीय विस्तार आ नाम-स्मृतिक संयोजन।
65	प्रविष्टि ५३५–५४७	[Mahindrapur-Pandua and its Kakarod, Dhagjari, Rashady, Singhwar, Lagama, and Kailakh Branches: Entries (535)-(547)]	प्रविष्टि ५३५–५४७; महिन्द्रपुर–पंडुआ आ ककरौड़, धगजरी, रशाढ़, सिंहवार, लगमा, कैलाख शाखा; पुरान नोड सभ नव प्रसंगमे लौटैत छथि।
66	प्रविष्टि ५४८–५६२	[Mahindrapur-Shivnagar, Bisfi-Saurath, Kabai, Vatswal, Shaktiraypur and Sagarapur: Entries (548)-(562)]	प्रविष्टि ५४८–५६२; महिन्द्रपुर–शिवनगर, बिस्फी–सौराठ, कबै, वत्सवाल, शक्तिरायपुर, सागरपुर; स्थान-जालक व्यापकता।
67	प्रविष्टि ५६३–५६४	[Ojholi-Sagarapur-Pandoli and the Kapileshwar Pause: Entries (563)-(564)]	प्रविष्टि ५६३–५६४; ओझौली–सागरपुर–पंडौली आ कपिलेश्वर विराम; देव-आवाहनकेँ शाखा-सीमा मानब अधिक सुरक्षित, मन्दिर-सेवा मानब नहि।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
68	प्रविष्टि ५६५–५७२	[Bhakhrauli-Kujouli: Chikni-Purnia, Porbarauni and Haripur, Entries (565)-(572)]	प्रविष्टि ५६५–५७२; भखरौली–कुजौली, चिकनी–पूर्णिया, पोरबरौनी, हरिपुर; उत्तर-पूर्वी फैलाव आ परिवार-स्मृतिक सहयात्रा।
69	प्रविष्टि ५७३–५८०	[Malangiya-Kujouli: Tharhi, Kakraud, Mahishi, Lagma and Sanha, Entries (573)-(580)]	प्रविष्टि ५७३–५८०; मलंगिया–कुजौली, ठाढ़ी, ककरौड़, महिषी, लगमा, सन्हा; परिचित ग्राम नये संयोजनमे।
70	प्रविष्टि ५८१–५८८	[Dadri-Panichobh, Nanour-Parasarma, Brahmoli and the Birpur-Panichobh Notice: Entries (581)-(588)]	प्रविष्टि ५८१–५८८; ददरी–पानिछोभ, ननौर–परसरमा, ब्रह्मौली, वीरपुर–पानिछोभ; पुल-अध्याय रूपमे एक समूह सँ दोसरक संक्रमण।
71	प्रविष्टि ५८९–५९७	[Ruchauli-Ekhara, Oda-Ekhara and Khadka-Ekhara: Entries (589)-(597)]	प्रविष्टि ५८९–५९७; रुचौली–एखरा, ओदा–एखरा, खड़का–एखरा; ‘एखरा’ केंद्रित मार्ग-संगठन।
72	प्रविष्टि ५९८–६००	[Kasarauh-Ekhara, Sangram, Nahar-Shahpur and Ratipar-Mahesh: Entries (598)-(600)]	प्रविष्टि ५९८–६००; कसरौह–एखरा, संग्राम, नाहर–शाहपुर, रतिपार–महेश; केवल तीन प्रविष्टिमे बहु शाखा-सूचना।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
73	प्रविष्टि ६०१–६०६	[Sudsuya-Belaunch: Banu Chhapra, Badhudhpara, Samauli and Tharhi-Sagarpur: Entries (601)-(606)]	प्रविष्टि ६०१–६०६; सुदसुया–बेलौंछ, बानू छपरा, बढ़ुधपरा, समौली, ठाढ़ी–सागरपुर; ग्रामारम्भ संकेतक महत्त्व।
74	प्रविष्टि ६०७–६१४	[Kako-Belaunch, Kako-Kailakh, Shivnagar-Banpura, Chanpura-Haripur-Vira-Ekma, Barha Nagram and Satlakha-Visauni-Jhauwa: Entries (607)-(614)]	प्रविष्टि ६०७–६१४; काको–बेलौंछ/कैलाख, शिवनगर–बानपुरा, चनपुरा–हरिपुर–वीरा–एकमा, बरहा नागरम, सतलखा–विसौनी–झौआ; देरकालीन जालक घन विस्तार।
75	प्रविष्टि ६१५–६२०	[Kako-Babu Chhapra-Dath, Dath-Ekma, Pokhrauni-Tarauni-Pindaruch, Kako-Kailakh-Pindaruch, and Satlakha-Belaunch-Halo: Entries (615)-(620)]	प्रविष्टि ६१५–६२०; काको–बाबू छपरा–डाठ, डाठ–एकमा, पोखरौनी–तरौनी–पिण्डारुच आदि; छोट समूहमे बहु मार्गक संपीडन।
76	प्रविष्टि ६२१–६२४	[Mardari-Baliyas and Sakuri-Baliyas: Entries (621)-(624)]	प्रविष्टि ६२१–६२४; मरदारी–बलियास आ सकुरी–बलियास; राय/पण्डित/कवि सन पहचान-सूचक सामाजिक स्मृतिक परत जोड़ैत छथि।
77	प्रविष्टि ६२५–६२९	[Narsam-Baliyas Opening: Entries (625)-(629)]	प्रविष्टि ६२५–६२९; नरसम–बलियास ग्रामारम्भ; रघुदेव, घनश्याम, गणपति, कुलपति आदि सँ अंतिम बड़ नोडक स्थापना।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
78	प्रविष्टि ६३०–६३८	[Narsam-Padna-Harinagar, Lalbag and Pindaruch: Entries (630)-(638)]	प्रविष्टि ६३०–६३८; नरसम–पड़ना–हरिनगर, लालबाग, पिण्डारुच; एक मूल नोड अनेक उप-मार्गमे विस्तृत।
79	प्रविष्टि ६३९–६४९	[Narsam: Dharmanath, Gunakar, Shalampur, Tabhka and Nagaram-Nahar: Entries (639)-(649)]	प्रविष्टि ६३९–६४९; धर्मनाथ, गुणाकर, शालमपुर, तभका, नागरम–नाहर; नाम-पुनरावृत्ति लेल सम्बन्ध-सूचक परीक्षण अत्यावश्यक।
80	प्रविष्टि ६५०–६६४	[Narsam: Kaivlarav, Kakraud, Ranitol, Saurath and Sukhsena: Entries (650)-(664)]	प्रविष्टि ६५०–६६४; कैवलराव, ककरौड़, रानीटोल, सौराठ, सुखसेना; नरसमक सबसे घन उत्तरवर्ती अनुक्रम।
81	प्रविष्टि ६६५–६६८	[Baruwari-Baliyas: Nandishwar Invocation and Empty Closing Entries: Entries (665)-(668)]	प्रविष्टि ६६५–६६८; बरुवारी–बलियास नन्दीश्वर आवाहनक अधीन खुलैत अछि; ६६६–६६८ रिक्त। ‘अभाव सेहो अभिलेखीय तथ्य’ सिद्धान्तक अंतिम पुष्ट उदाहरण।
82	विश्लेषणात्मक संश्लेषण	[Major Lineage Nodes of the Nagram Panji]	क्रमिक स्रोत-पठनकेँ वंश-नोडक जालमे बदलैत अछि; व्यक्ति, ग्राम आ व्याख्यात्मक संकेत तीन प्रकारक केन्द्र प्रस्तावित।

अ.	कवरेज	मूल अध्याय-शीर्षक	समीक्षा-संकेत
83	विश्लेषणात्मक संश्लेषण	[Major Village Nodes and Route Networks]	ग्रामकेँ स्थिर भूगोल नहि, उत्पत्ति/बसावट/विवाह/आचार/स्मृतिक कार्यशील नोड मानि मार्ग-नेटवर्क बनबैत अछि।
84	विश्लेषणात्मक संश्लेषण	[Marriage Networks and Inter-Village Affiliation]	विवाह-जालक कारण ग्राम-सम्बन्ध बहुदिशात्मक होइत अछि; मार्ग-सूत्रकेँ केवल प्रव्रजन मानबाक विरुद्ध महत्त्वपूर्ण संश्लेषण।
85	विश्लेषणात्मक संश्लेषण	[Scholars, Priests, Officials, Lawyers, Engineers, Doctors, and Modern Professions]	विद्वान, पुरोहित, अधिकारी, वकील, अभियन्ता, चिकित्सक आदि पेशागत चिह्न वंशावलीक काल-परत देखबैत अछि; तिथि-प्रमाण नहि।
86	विश्लेषणात्मक संश्लेषण	[Migration, Memory, and Mithila Beyond Mithila]	पूर्णिया, चम्पारण, बेतिया, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, जमशेदपुर आदि सँ वंश-स्मृतिक गतिशील भूगोल; गमनक बादो मिथिला-संबन्ध निरन्तर।
87	विश्लेषणात्मक संश्लेषण	[Problems of Reading: Scribal Variants, OCR-Like Distortions, and Editorial Decisions]	लिपिक भिन्नता, वर्तनी, क्षत-पाठ, बिन्दु, क्रॉस-सन्दर्भ आ आधुनिक प्रतिलिपि-विकृतिक स्पष्ट सम्पादकीय समीक्षा; स्रोतकेँ कृत्रिम रूपेँ चिकन करबाक विरोध।

५. परिशिष्ट १–१० [A–J] : उपयोगिता आ अपूर्णताक जाँच

परिशिष्ट	मूल शीर्षक	वर्तमान योगदान	समीक्षात्मक निष्कर्ष
१ [A]	[Full Glossary of Panji Terms and Abbreviations]	सुत/सुतो/सुतः, बेटी-रेखा प्रसंग, अपर/अप्र, प्र., ठ., दाउ/द्दाउ, ग्रामारम्भ, रिक्त, बी-सन्दर्भ, बिन्दु—मुख्य संकेत बुझबाक उपयोगी संक्षिप्त शब्दावली।	“पूर्ण” शब्द शीर्षकमे अछि, मुदा वास्तविक सूची सीमित प्रमुख संकेत धरि; सम्पूर्ण स्रोत-भिन्नता/उदाहरण/प्रविष्टि-सन्दर्भ नहि।
२ [B]	[Village Index]	आरम्भिक, मध्य, उत्तरवर्ती आदि समूहमे ग्राम-नामक दिशासूचक सूची।	सूचक लेल पृष्ठ/अध्याय/प्रविष्टि-निर्देशक अपेक्षित; वर्तमान रूप चयनित समूह-सारांश।
३ [C]	[Personal Name Index]	प्रमुख व्यक्ति-नामक समूह।	एकहि नामक अनेक व्यक्तित्व पोथीक मुख्य समस्या अछि; एहि कारण सटीक प्रविष्टि-निर्देशक बिना ई सूची पर्याप्त सत्यापन-साधन नहि।
४ [D]	[Title and Honorific Index]	ठाकुर/चौधरी, पण्डित/ज्योतिषी/ज्योतिर्विद, महामहोपाध्याय, वैदिक/वैद्य, आधुनिक पेशा, बाबू/राजा/सिंह आदि।	उपाधि-प्रकारक वर्गीकरण उपयोगी, मुदा प्रत्येक घटनाक स्थान-निर्देशक अपेक्षित।

परिशिष्ट	मूल शीर्षक	वर्तमान योगदान	समीक्षात्मक निष्कर्ष
५ [E]	[Lineage Tables]	सन्दहपुर–सिंहवार, शशिपुर, मंगरौनी–हाती–समौली, रोहर–ततैल–राजनपुरा, नरसम–बरुवारीक पाँच सारांश।	वास्तविक वंश-सारणी अथवा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चित्र उपलब्ध नहि; शीर्षक आ वस्तुक बीच अन्तर।
६ [F]	[Route Tables: From X to Y]	पाँच प्रमुख मार्ग-समूहक उदाहरण।	६६८ प्रविष्टिक तुलनामे चयनित नमूना; सर्वसमावेशी मार्ग-सारणी नहि।
७ [G]	[List of Rikta / Blank / Incomplete Entries]	बिन्दु/अपूर्णता, प्रारम्भिक टूटल स्मृति, अन्तिम ६६६–६६८ रिक्त प्रविष्टि, सम्पादकीय नियम।	नामतः “सूची”, मुदा समस्त रिक्त/बिन्दु घटनाक क्रमांकित इन्वेन्टरी नहि।
८ [H]	[List of B-References and Numbered Cross-References]	बी-सन्दर्भ, संख्या-सन्दर्भ, अनसुलझल सन्दर्भक अर्थ बतबैत अछि।	वास्तविक सन्दर्भ सभक क्रमांकित सूची/लक्ष्य-निर्देशक नहि; नेटवर्क सत्यापन सीमित।
९ [I]	[Editorial Conventions Used in This Volume]	स्रोत पहिने, अनिश्चितता दृश्यमान, नामक मौन-विलयन नहि, ग्रामक बहुकार्य, उपाधि अलग।	पोथीक सबल सम्पादकीय सार; एकरा अग्रभागक विधि-सूचनासँ जोड़ि संक्षिप्त नियमावली बनाओल जा सकैत अछि।

परिशिष्ट	मूल शीर्षक	वर्तमान योगदान	समीक्षात्मक निष्कर्ष
१० [J]	[Suggested Maps and Genealogical Charts]	चारि मानचित्र आ दू वंश-चित्रक प्रस्ताव।	वास्तविक दृश्य उपलब्ध नहि; अगिला संस्करणमे प्रस्तावकेँ निर्मित मानचित्र/चित्रमे बदलनाइ जरूरी।

६. पोथीक प्रमुख विषयगत निष्कर्ष

६.१ संपीडित वंश-व्याकरण

नागरम स्रोतक मूल कठिनाई “सूचना कम” नहि, “सूचना घन” होयब अछि। एक छोट पंक्तिमे व्यक्ति, पिता, पुत्र, शाखा, ग्राम, उपाधि, वैकल्पिक नाम, विवाह-संकेत आ क्रॉस-सन्दर्भ एकत्र रहि सकैत अछि। पोथीक श्रेष्ठ काज ई अछि जे ओ एहि घनता केँ आधुनिक वाक्य-विन्यासमे खोलैत अछि, मुदा मूल सम्बन्ध-सूचक शब्दकेँ अर्थहीन नहि मानैत अछि।

‘सुत’, ‘अपर’, ‘प्र.’, ‘ठ.’, ग्रामारम्भ, दाउ/द्दाउ, रिक्त, बी-सन्दर्भ आदि संकेत भाषिक कण जकाँ छोट छथि, मुदा संरचनात्मक रूपेँ निर्णायक। एहि अर्थमे पोथी शब्दकोश नहि, व्याकरण बनबैत अछि—कतेको अर्थ पदक स्वतन्त्र अर्थसँ नहि, पदक स्थान आ पड़ोसी संकेतसँ निकलैत अछि।

६.२ ग्राम : भूगोल नहि, सम्बन्ध-निर्देशांक

ग्राम-नाम पोथीक सबसे मौलिक विश्लेषणात्मक इकाई अछि। सन्दहपुर, सिंहवार, शशिपुर, मंगरौनी, हाती, समौली, रोहर, ततैल, राजनपुरा, भखरौली, मलंगिया, नरसम आ बलियास आदि बारम्बार लौटैत छथि। ई पुनरागमन मात्र स्थल-सूची नहि; ओहि नामक संग बदलैत व्यक्ति-समूह देखबैत अछि जे ग्राम एकटा “स्मृति-नोड” अछि।

अध्याय ३ आ पछिला विश्लेषण स्पष्ट करैत अछि जे “एक ग्राम सँ दोसर ग्राम” सूत्रक अर्थ उत्पत्ति–बसावट हो सकैत अछि, मुदा विवाह, पुरोहितीय

सम्बन्ध, सेवा, शिक्षा, शाखा-पहचान अथवा अभिलेखीय वर्गीकरण सेहो हो सकैत अछि। एहि सावधानीक कारण पोथी सरल प्रव्रजन-कथा बनेबाक फँदसँ बाँचैत अछि।

६.३ विवाह-जाल आ सामाजिक स्मृति

पाँजी परम्पराक व्यावहारिक आधार विवाह-योग्यता आ सम्बन्ध-स्मृति अछि। पोथी एहि कारण पुत्र-क्रमक संग ग्राम-मार्गकेँ पढ़ैत अछि। जेठ-पुत्र सँ अलग ग्राम, दोसर शाखा सँ अलग ग्राम, अथवा एकहि व्यक्ति/घरानाक दोहरायल ग्राम-सन्दर्भ विवाह-स्मृतिक सम्भावना खोलैत अछि।

मुदा पाठक लेल निर्णायक सावधानी ई जे विवाहक सम्भावना “विवाह सिद्ध” नहि। जखन स्रोत दिक् स्पष्ट नहि करैत अछि, तखन कन्या देल गेल वा लेल गेल—एहि दिशा पर निष्कर्ष रोकल जेबाक चाही। पोथीक भाषामे “सम्बद्ध” अथवा “मार्ग” अधिक सुरक्षित शब्द अछि।

६.४ देव-आवाहन आ पवित्र अभिलेखीय फ्रेम

रामेश्वर, वासुकीनाथ, केदारनाथ, सोमनाथ, कपिलेश्वर, आदिदेव, त्रिलोचन, नन्दीश्वर आदि शिव-संबद्ध आवाहन उत्तरवर्ती खंड सभमे अनुभाग-सीमा, स्मृति-संकेत आ धार्मिक वैधताक संयुक्त काज करैत प्रतीत होइत छथि।

पोथी स्वयं उचित चेतावनी दैत अछि जे देव-शीर्षक देखि सम्बन्धित परिवारकेँ मन्दिरक पुरोहित अथवा सेवा-समूह घोषित नहि कएल जा सकैत अछि। ई “अल्प संकेत सँ अधिक निष्कर्ष” रोकबाक उत्कृष्ट उदाहरण अछि।

६.५ उपाधि, विद्या, पेशा आ काल-परत

पण्डित, ज्योतिषी, ज्योतिर्विद, महामहोपाध्याय, वैदिक, वैद्य, वकील, अभियन्ता, चिकित्सक, अधिकारी आदि पहचान सभ वंशावलीक भीतर सामाजिक परिवर्तनक संकेत छथि। एहि सँ दीर्घकालीन अभिलेख अपन पुरान संरचना त्यागे बिना नूतन पेशागत परिचय समेटैत अछि।

तथापि पेशा/उपाधि अकेले तिथि नहि। “अभियन्ता” आधुनिक परत संकेत कऽ सकैत अछि, मुदा व्यक्ति कखन जीवित छलाह—एहि लेल स्वतंत्र तिथि, संस्थान, सेवा-अभिलेख अथवा पारिवारिक दस्तावेज चाही।

६.६ रिक्तता, बिन्दु आ अभिलेखीय नैतिकता

रिक्त प्रविष्टि ६६६–६६८ पोथीक अन्तिम दृश्य उदाहरण छथि, मुदा बिन्दु आ अपूर्ण नाम पूरा स्रोतमे पसरल अछि। पोथीक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त अछि—रिक्त स्थान मिटाउ नहि। एहि सँ “हमरा ज्ञात नहि” आ “एहि अभिलेखमे उपलब्ध नहि” बीच अन्तर जीवित रहैत अछि।

अभाव कैं प्रमाण मानबाक अर्थ ई नहि जे सम्बन्धित व्यक्ति, घटना अथवा शाखा अस्तित्वहीन छल। ई केवल एतबा सिद्ध करैत अछि जे निर्दिष्ट अभिलेखीय स्थानपर सूचना उपलब्ध नहि अछि। ई सूक्ष्म भेद नव्य-न्याय, आधुनिक अभिलेख-समीक्षा आ विदेह समानान्तर पद्धति—तीनू मे निर्णायक अछि।

६.७ पुनरावृत्ति आ पहचान

गोपाल, रघुनाथ, विश्वनाथ, मधुरपति, शिवानन्दन, लक्ष्मीनाथ आदि सन नाम अनेक ठाम आबि सकैत छथि। पोथीक नियम—नाम समान भेलासँ व्यक्ति समान नहि—वंशावली विज्ञान लेल बुनियादी अछि। पिता-नाम, शाखा, ग्राम-मार्ग, उपाधि, क्रॉस-सन्दर्भ आ काल-परत मिललापर मात्र समानीकरण उचित।

एहि कारण पुनरावृत्ति तीन प्रकारक मानल जा सकैत अछि: निरन्तरता, नये प्रसंगमे पुनरागमन, आ वास्तविक प्रतिलिपि-दोहराव। सम्पादकीय संस्करणकैं ई तीनू भेद स्पष्ट चिन्हित करबाक चाही।

७. भारतीय ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे समीक्षा

भारतीय इतिहास-लेखनक एकहि रूप नहि रहल। इतिहास–पुराणक वंशपरम्परा, राजवंशीय सूची, दानपत्र, प्रशस्ति, चरित, क्षेत्रीय वृत्त, तीर्थ-माहात्म्य, कुल-लेख, पाँजी आ मौखिक स्मृति—सभक प्रमाण-मूल्य अलग। नागरम पाँजी एहि विस्तृत संसारमे वंशावलीक विशिष्ट दस्तावेज अछि। एकरा आधुनिक राजनीतिक इतिहासक अपेक्षा विवाह, वंश, ग्राम आ सामाजिक प्रतिष्ठाक इतिहास लेल अधिक प्रत्यक्ष स्रोत मानल जेबाक चाही।

कल्हणक ‘राजतरंगिणी’ स्रोत-विविधताक एक महत्त्वपूर्ण भारतीय तुलनाबिन्दु अछि: पूर्ववर्ती वृत्त, अभिलेख, दानपत्र, स्थापत्य/स्थानीय परम्परा

आदि प्रकारक सामग्री सँ कथन बनैत अछि। नागरम पोथीक बल स्रोत-आन्तरिक विश्लेषणमे अछि, मुदा बाह्य पुष्टिकरण अपेक्षाकृत कम। जँ प्रत्येक प्रमुख दावाक संग भूमिदान, पाण्डुलिपि, शिलालेख, न्यायालय/राजस्व दस्तावेज, शिक्षा-संस्थान, विवाह-पत्र अथवा अन्य पाँजी शाखा मिलान हो, तँ ऐतिहासिक विश्वसनीयता बहुतेक बढ़त।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि सँ एहि गद्यक मुख्य कसौटी ‘औचित्य’ अछि। अभिलेखीय गद्यक उचित शैली अलंकारिक विस्तार नहि, प्रमाणानुकूल मितभाषिता अछि। एहि बिन्दुपर पोथी प्रायः सफल—विशेषतः जखन ‘सम्भव’, ‘सन्दिग्ध’, ‘रिक्त’ अथवा ‘सन्दर्भसँ तय होयत’ सन सीमाबोध राखैत अछि। ‘ध्वनि’क संकल्पना सावधानीसँ उपयोगी: बिन्दु, ग्राम-पुनरावृत्ति, उपाधि-संयोजन प्रत्यक्ष कथनसँ बेसी संकेत करैत अछि; मुदा संकेतकेँ तथ्य बनाबऽ लेल अतिरिक्त प्रमाण जरूरी।

वंशावली-पद्धतिक भारतीय शक्ति निरन्तरता अछि; ओकर संकट सामाजिक प्रतिनिधित्वक असमानता। नागरम स्रोत मुख्यतः वंश, घराना, पुरुष-रेखा, विवाह-योग्यता आ प्रतिष्ठित पहचान केन्द्रित अछि। अतः ई मिथिलाक सम्पूर्ण समाजक जनगणना नहि। स्त्री, श्रमजीवी समूह, सेवक, शिल्पी, गैर-अभिजात आ असंबद्ध ग्राम-समुदाय कम दिखथि तँ ओकर अर्थ सामाजिक अनुपस्थिति नहि, स्रोतक चयन-तर्क होइत अछि।

८. पाश्चात्य स्रोत-समीक्षा आ सूक्ष्म-इतिहासक आलोकमे

मार्क ब्लोखक इतिहास-शिल्पक मूल शिक्षा—स्रोत प्रश्नक उत्तर तभी दैत अछि जखन इतिहासकार सही प्रश्न पूछैत अछि—नागरम पाँजीपर सटीक लागू होइत अछि। ‘नाम के?’ सँ बेसी उपयोगी प्रश्न छथि: नाम कोन सम्बन्ध-सूचकक बाद अछि? कोन ग्रामक अधीन अछि? कोन शाखा/पिता/उपाधि संग अछि? की दोसर प्रविष्टिमे एहि नामक अलग मार्ग अछि? पोथी एहि प्रश्नात्मक पठनकेँ प्रोत्साहित करैत अछि।

स्रोत-आलोचनाक दोसर चरण उत्पत्ति आ प्रसारणक इतिहास होयत। पोथी मूल देवनागरी रूपकेँ प्राधिकार देत अछि आ आधुनिक व्याख्या अलग रखैत अछि, ई उचित अछि; मुदा शोध-संस्करण लेल प्रत्येक प्रमुख स्रोत-पंक्तिक

प्रतिरूप, पाण्डुलिपि/फाइल-संकेत, पृष्ठ अथवा फोलियो, प्रतिलिपिक स्तर, सम्भावित लिपिक आ संस्करण-इतिहास चाही। एतय वर्तमान पोथी व्याख्यात्मक रूपेँ समृद्ध, पर पूर्ण आलोचनात्मक संस्करणक स्तर धरि नहि पहुँचैत अछि।

कार्लो गिन्जबुर्गक सूक्ष्म-इतिहास/चिह्न-पद्धतिक तुलनामे पाँजीक छोट संकेत—उपाधि, ग्राम-नाम, बिन्दु, वैकल्पिक नाम, पेशा—'सूक्ष्म चिह्न' जकाँ काज करैत अछि। मुदा चिह्नक मूल्य ओतबे अछि जतबे ओ स्पष्ट स्रोत-शृंखला सँ जोड़ल हो। एकटा आधुनिक पेशा काल-परत संकेत करैत अछि; एकटा दूरस्थ ग्राम गतिशीलता संकेत करैत अछि; दुनू अपने-आप घटना, तारीख अथवा कारण सिद्ध नहि करैत अछि।

मिशेल फूकोक अभिलेखीय/वंशावली दृष्टि एहि पोथीक लेल उपयोगी मुदा नियंत्रित उपकरण अछि। पाँजी कोन सम्बन्ध सुरक्षित करैत अछि? केकर नाम उल्लेखनीय बनैत अछि? कोन श्रेणी विवाह-सत्यापनक योग्य मानल जाइत अछि? मौन कोन सामाजिक रचना सँ बनैत अछि? ई प्रश्न जरूरी छथि। मुदा 'मौन' स्वतः दबाओल सत्यक प्रमाण नहि; ओ अभिलेखीय चयन, क्षति, उपयोग-उद्देश्य अथवा संयोग सेहो भऽ सकैत अछि। पोथीक नैतिक सम्पादन एहि अति-व्याख्या सँ सामान्यतः बचैत अछि।

पाश्चात्य आलोचनाक आधारपर मुख्य कमी 'सहप्रमाण' अछि। पोथीक अनेक व्याख्या आन्तरिक संरचनासँ सम्भाव्य छथि, मुदा बाह्य स्रोत न जुड़लापर ओ 'मजबूत ऐतिहासिक तथ्य'क बदला 'स्रोत-आन्तरिक सम्भाव्य निष्कर्ष' श्रेणीमे रहथि। अगिला संस्करणमे दावाक संग स्रोत-श्रेणी आ विश्वास-दर्जा देनाइ अत्यन्त उपयोगी होयत।

९. नव्य-न्यायक प्रमाणमीमांसा : दावाक तार्किक परीक्षण

नव्य-न्याय केर उपादेयता एहि पोथीक विषयवस्तु सँ सीधा मेल खाइत अछि, कारण समस्या अधिकांशतः 'कोन संकेत सँ कोन निष्कर्ष जायज?' एहि रूपमे उठैत अछि। गंगेशोपाध्यायक 'तत्त्वचिन्तामणि' चारि मुख्य प्रमाण—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द—पर सुविस्तृत परीक्षण करैत अछि। पाँजी-पाठमे प्रत्यक्षक समकक्ष दृश्य स्रोत-पंक्ति; शब्दप्रमाणक समकक्ष विश्वसनीय

वंश-अभिलेख/परम्परागत अभिलेखक कथन; अनुमानक क्षेत्र ग्राम-मार्ग, उपाधि, पुनरावृत्ति, पेशा आ शाखा-संकेतक व्याख्या।

अनुमानमे 'पक्ष' ओ दावा अछि जे जाँचल जा रहल; 'हेतु' स्रोत-चिह्न; 'व्याप्ति' ओ भरोसेमन्द सम्बन्ध जे हेतु सँ निष्कर्ष धरि जायज सेतु बनबैत अछि। उदाहरण: पक्ष—'फलाँ व्यक्ति एहि शाखाक वही व्यक्ति छथि'; हेतु—नाम समान अछि। एतबा पर्याप्त नहि, कारण समान नाम अनेक व्यक्ति मे हो सकैत अछि। पिता-नाम, ग्राम-मार्ग, उपाधि, क्रम आ क्रॉस-सन्दर्भ एकत्र मिलि व्याप्ति मजबूत करैत अछि।

उपाधि अथवा शर्तक समस्या सेहो स्पष्ट अछि। 'फलाँ ग्राम सँ फलाँ ग्राम' देखि 'प्रव्रजन भेल' निष्कर्षमे विवाह, अभिलेखीय वर्गीकरण, पुरोहितीय सम्बद्धता आदि वैकल्पिक कारण 'उपाधि' जकाँ काज करैत छथि। एहि वैकल्पिकता कैं हटौने बिना प्रव्रजन निश्चित नहि। पोथीक अध्याय ३ एहि तार्किक अनुशासनक अनुरूप सावधानी रखैत अछि।

अभावक पठनमे नव्य-न्याय विशेष उपयोगी। 'रिक्त' प्रविष्टि अथवा बिन्दु "एहि दस्तावेजी स्थानपर सूचना नहि" दर्शबैत अछि। ओ "व्यक्ति अस्तित्वमे नहि छल" अथवा "शाखा कखनो नहि छल" सिद्ध नहि करैत अछि। अभाव सदिखन आश्रय, प्रतियोगी, काल आ अवलोकन-सीमा सँ बान्हल होयब चाही। नागरम पोथीक रिक्तता-नैतिकता एहि कारण तार्किक रूपेँ मजबूत अछि।

शब्दप्रमाणक दृष्टि सँ पाँजी विश्वसनीय परम्परागत स्रोत भऽ सकैत अछि, मुदा प्रामाण्य स्वतः नहि। लेखन/प्रतिलिपि, पंजीकारक ज्ञान, उद्देश्य, काल-अन्तर, क्षति, बादक जोड़, नाम-संक्षेप आ स्थानीय रूपक जाँच आवश्यक। पोथी एहि में किछु करैत अछि—विशेषतः सन्दिग्ध पाठ बचा कऽ—मुदा प्रतिलिपि-वंशावली आ बाह्य सहप्रमाण जोड़लापर प्रमाणमीमांसात्मक शक्ति आर बढ़त।

दावा	हेतु	आवश्यक अतिरिक्त सेतु	निष्कर्ष-दर्जा
एकहि नाम दोसर ठाम फेर आयल	नाम-साम्य	पिता, शाखा, ग्राम-मार्ग, क्रम, उपाधि, क्रॉस-सन्दर्भ मिललापर	केवल नाम-साम्यसँ अनिश्चित; बहु-संकेत मिललापर सम्भाव्य/प्रबल ।
एक ग्राम सँ दोसर ग्राम सूत्र	दुइ स्थानक अनुक्रम	बसावट/ स्थानान्तरणक स्वतंत्र संकेत, काल-क्रम, परिवारक बाह्य साक्ष्य	वैकल्पिक विवाह/आचार/ वर्गीकरण कारण हटौने बिना प्रव्रजन निश्चित नहि।
देव-आवाहनक बाद परिवार	पवित्र शीर्षक	मन्दिर/सेवा/ पुरोहितीय स्पष्ट स्रोत	अन्यथा अनुभाग-सीमा अथवा पवित्रीकरण मानब सुरक्षित।
रिक्त/बिन्दु	दस्तावेजी अभाव	समान स्थानक अन्य प्रति/स्रोत	सूचना-अभाव प्रमाणित; व्यक्ति/घटना-अभाव नहि।
आधुनिक पेशा	पेशागत पद	तिथि, संस्था, सेवा-अभिलेख	काल-परतक संकेत; निश्चित तारीख नहि।

१०. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति : केन्द्र, हाशिया, मौन आ दावाश्रेणी

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक उपयोगी क्रम अछि—दावा स्पष्ट करू; दावाक श्रेणी चिन्हित करू; स्रोतक प्रकृति देखू; सत्ता/चयन/मौनक संरचना देखू; प्रतिप्रमाण खोजू; निष्कर्षकेँ प्रबल, सम्भाव्य, विवादित अथवा अज्ञात दर्जा दिअ; तखन पुनर्लेखन करू। ई पद्धति ‘हाशिया सही, केन्द्र गलत’ सन उलटा

पूर्वाग्रहक अनुमति नहि दैत; एकहि आलोचनात्मक मानदण्ड अलग-अलग स्रोत-प्रकारपर अनुकूलित रूपमे लागू करैत अछि।

नागरम पाँजी एहि कसौटीपर महत्त्वपूर्ण स्रोत अछि, मुदा ‘सम्पूर्ण मिथिला’ नहि। ई विशिष्ट वंश–विवाह अभिलेखीय जगत अछि। जँ कोनो समूह कम दृश्य अछि तँ पहिने पूछबाक चाही: पाँजीक उपयोग-उद्देश्य की छल? कोन सम्बन्ध सुरक्षित करब आवश्यक मानल गेल? कोन माहिती विवाह-सत्यापन लेल अप्रासंगिक छल? तखन अन्य स्रोत—लोकगीत, भूमि-अभिलेख, पत्रिका, साहित्य, नेपाल–भारत प्रशासनिक दस्तावेज, पारिवारिक कागज, अन्य पाँजी/शाखा-पुस्तक—संग समानान्तर पठन हो।

एहि दृष्टि सँ पोथीक ‘ग्राम = स्मृति-नोड’ सिद्धान्त फलदायी अछि। मिथिला कैं स्थिर मानचित्र नहि, सम्बन्ध-जाल रूपमे पढ़ल जाइत अछि। पूर्णिया, चम्पारण, बेतिया, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, जमशेदपुर आदि उल्लेख ‘मिथिला बाहिर = मिथिला सँ विच्छेद’ समीकरण तोड़ैत अछि। स्मृति, विवाह, शिक्षा, सेवा आ बसावट क्षेत्रीय पहचानकैं दूर धरि लऽ जाइत अछि।

मौनक परीक्षणमे चारि स्तर उपयोगी: स्रोतक मौन, प्रतिलिपिक क्षति, सम्पादकीय मौन, सामाजिक मौन। रिक्त प्रविष्टि स्रोतक खाली स्थान हो सकैत अछि; बिन्दु क्षत-पाठ; सूचकमे नाम न भेटब सम्पादकीय अपूर्णता; स्त्री अथवा गैर-अभिजात समूहक कम दृश्यता स्रोतक सामाजिक चयन। चारू कैं एक अर्थमे मिलेनाइ गलत होयत।

११. साहित्यिक समीक्षा : दस्तावेजी गद्यक रचना, लय आ रूपक

ई पोथी उपन्यास, आख्यान अथवा परम्परागत इतिहास-ग्रन्थ नहि; एकरा ‘मार्गदर्शित अभिलेख’ कहब अधिक उपयुक्त। साहित्यिकता एतय पात्र-विकास अथवा घटनात्मक उत्कंठासँ नहि, सूचना-संगठन, रूपक, पुनरावृत्ति, वाक्यक नैतिक सावधानी आ पाठककैं कठिन स्रोतक भीतर चलबाक लय सँ बनैत अछि।

रचनात्मक वास्तु तीन चरणक अछि। पहिल पाँच अध्याय पाठककैं संकेत-व्याकरण सिखबैत छथि। अध्याय ६–८१ ओहि व्याकरणकैं लगातार लागू करैत स्रोत खोलैत छथि। अध्याय ८२–८७ ‘नोड’ आ ‘जाल’ बनाकऽ क्रमिक

सामग्रीक ऊपर सँ दृष्टि दैत छथि। एहि कारण पुस्तकक आरम्भिक शिक्षणात्मक पुनरावृत्ति कार्यात्मक अछि; मुदा मध्य भागमे एके सम्पादकीय चेतावनी बारम्बार आवे सँ गद्य कखनो-कखनो भारी होइत अछि।

‘स्मृतिक मानचित्र’ पोथीक सर्वाधिक सफल केन्द्रीय रूपक अछि। नाम बिन्दु, ग्राम निर्देशांक, विवाह सेतु, उपाधि काल-संकेत, क्रॉस-सन्दर्भ पथ, रिक्तता धुँधल क्षेत्र—ई पूरा रूपक ७६९ पृष्ठक विस्तृत सामग्री कैं एक वैचारिक प्रतिरूप दैत अछि। रूपकक लाभ ई जे वंशकैं सीधी वृक्ष-रेखा तक सीमित नहि करैत; नेटवर्क-स्वभाव स्पष्ट करैत अछि।

दस्तावेजी गद्यक नीतिगत शक्ति ‘नहि जानैत छी’ कहबाक क्षमता अछि। सन्दिग्धता लुकौने बिना, बिन्दु बचा क, एके नामक विलयन रोकि, देव-आवाहनक अति-व्याख्या रोकि पोथी विश्वसनीय कथन-विनम्रता हासिल करैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ ई विनम्रता शैलीगत गुण सेहो अछि: भाषा अपन प्रमाण-सीमा देखबैत अछि।

कमजोरी मुख्यत: पुनरुक्ति आ अधूरे शोध-साधनमे अछि। अनेक अध्याय आरम्भ/समापनमे अगिला अध्याय, कार्य-क्रम, अन्तिम सूचक आदि दिशामे संकेत करैत छथि; प्रकाशित ग्रन्थमे एहि कार्यप्रवाहक अवशेष पाठककैं निर्माण-प्रक्रियाक स्मरण करबैत अछि आ पूर्णत्वक सौन्दर्य घटबैत अछि। ओहिना ‘सूचक’, ‘सारणी’ वा ‘पूर्ण सूची’ शीर्षक अपेक्षा जगबैत अछि जे परिशिष्ट पूरा नहि करैत।

१२. दावाक प्रमाण-दर्जा : समेकित मूल्यांकन

दावा	दर्जा	कारण
नागरम पाँजी वंश, ग्राम, विवाह, उपाधि आ स्मृतिक संयुक्त अभिलेख अछि	प्रबल	सम्पूर्ण पोथीक संरचना, प्रविष्टि-व्याकरण, विश्लेषणात्मक अध्याय आ परिशिष्ट एहि बहुस्तरीयताक सीधा साक्ष्य।

दावा	दर्जा	कारण
ग्राम-मार्ग सदिखन प्रव्रजन बतबैत अछि	असमर्थित सामान्यीकरण	पोथी स्वयं अनेक वैकल्पिक कार्य—विवाह, बसावट, सम्बद्धता, वर्गीकरण—स्वीकारैत अछि।
दोहरायल नाम एकहि व्यक्ति अछि	अनिश्चित	समर्थन लेल पिता, शाखा, ग्राम, क्रम, उपाधि आ क्रॉस-सन्दर्भ चाही।
रिक्त प्रविष्टि स्रोत-क्षतिक इतिहासक साक्ष्य भऽ सकैत अछि	सम्भाव्य सँ प्रबल	रिक्त स्थान जानबूझि संरक्षित; मुदा रिक्तताक कारण हर ठाम निश्चित नहि।
देव-आवाहन परिवारक मन्दिर-सेवा सिद्ध करैत अछि	असमर्थित	स्पष्ट सेवा/पुरोहितीय सूत्र बिना आवाहनकेँ अनुभागीय/पवित्र फ्रेम मानब उचित।
आधुनिक पेशागत पद पाँजीक दीर्घजीविता देखबैत अछि	प्रबल	पुरान वंश-सूत्रक भीतर आधुनिक पेशा समाविष्ट; पर निश्चित काल निर्धारण लेल अतिरिक्त तिथि चाही।
पूर्णिया/चम्पारण/बेतिया/अन्य बाह्य स्थान मिथिला-स्मृतिक विस्तार देखबैत छथि	प्रबल	स्थान-सन्दर्भ स्पष्ट; गमनक कारण आ प्रकार अनेक ठाम अनिश्चित।
वर्तमान परिशिष्ट पूर्ण सत्यापन-साधन अछि	असमर्थित	बहुतांश चयनित सारांश; पृष्ठ/प्रविष्टि-निर्देशक, पूर्ण इन्वेन्टरी अथवा वास्तविक तालिका/चित्र अनुपस्थित।

१३. सम्पादकीय, अभिलेखीय आ प्रकाशन-गुणवत्ता ऑडिट

१३.१ स्रोत–व्याख्या–निष्कर्षक विभाजन

ई पोथीक सबसे मजबूत सम्पादकीय सिद्धान्त अछि। मूल रूप, पठनीय सामान्यीकरण आ ऐतिहासिक निष्कर्षकेँ अलग राखल जाए तँ पाठक

असहमति करैतहुँ स्रोत जाँचि सकैत अछि। एहि सिद्धान्तकेँ दृश्य रूपेँ मजबूत करबाक लेल अगिला संस्करणमे तीन प्रकारक अनुच्छेद/टिप्पणी अथवा स्पष्ट स्रोत-ब्लॉक उपयोगी होयत।

१३.२ प्रकाशन-पूर्व कार्यप्रवाहक अवशेष

मुख्य पाठमे किछु वाक्य एहन छथि जे अध्याय निर्माण, पुनरारम्भ, क्रमिक संचयन, भविष्यक अन्तिम सूचक अथवा बाहरी जाँच-निर्देश दिस संकेत करैत छथि। प्रकाशित शोधग्रन्थक अन्तिम रूपमे ई वाक्य हटबाक चाही, कारण ई विषयगत अभिलेखक नहि, निर्माण-प्रक्रियाक भाषा अछि।

१३.३ “पूर्ण” परिशिष्टक दावाक पुनर्मूल्यांकन

ग्राम-सूचक, व्यक्ति-सूचक, वंश-सारणी, मार्ग-सारणी, रिक्त/अपूर्ण सूची आ क्रॉस-सन्दर्भ सूची वर्तमान रूपमे चयनित दिशासूचक छथि। यदि शीर्षक “पूर्ण” रहत तँ प्रत्येक घटनाक प्रवेशांक, अध्याय, पृष्ठ, वैकल्पिक वर्तनी आ क्रॉस-सन्दर्भ देनाइ आवश्यक। अन्यथा शीर्षकमे “चयनित” अथवा “प्रमुख” जोड़ब वैज्ञानिक रूपेँ अधिक सटीक।

१३.४ आलोचनात्मक संस्करणक उपकरण

प्रत्येक स्रोत-खंडक साथ मूल पृष्ठ/फोलियो अथवा स्रोत-प्रतिरूप, पाठ-भेद, सामान्यीकृत रूप, टिप्पणी, विश्वास-दर्जा आ बाह्य सहप्रमाणक खाँचा जोड़ल जाए। एहि सँ पाठक मूल निष्कर्ष पुनःनिर्मित कऽ सकत।

१३.५ नाम-पहचानक युग्म-सूचक

एकटा “स्रोत-रूप” सूचक आ दोसर “सामान्यीकृत रूप” सूचक चाही। एके नामक सम्भावित अनेक व्यक्ति लेल विशिष्ट पहचान-संकेत—पिता, ग्राम, शाखा, प्रविष्टि—अवश्य जोड़ल जाए।

१३.६ संरचनात्मक शैलीक संगति

अधिकांश अध्याय शीर्षक शीर्षक-शैलीमे अछि, मुदा कम-से-कम अध्याय ४८ दस्तावेजी शैली-स्तरपर सामान्य अनुच्छेद रूपमे अछि। ई वर्ड-नेविगेशन,

स्वतः विषय-सूची आ पहुँचयोग्यतामे बाधा बनि सकैत अछि; शीर्षक-शैली एकरूप हो।

१३.७ 'जीनोम' शब्दक ज्ञानमीमांसात्मक सीमा

कार्यस्रोतक नाममे [Genome Mapping] अछि, मुदा वर्तमान पोथी वंशावली/अभिलेखीय सामग्री प्रस्तुत करैत अछि। जैविक नमूना, आनुवंशिक अनुक्रम अथवा जनसंख्या-आनुवंशिकी आँकड़ा बिना "जीनोम" कँ रूपक/परियोजना-नाम रूपेँ सीमित बुझेनाइ उचित।

१४. मैथिली निखार आ पारिभाषिक अनुशासन

एहि समीक्षामे मुख्य गद्य देवनागरी मैथिलीमे राखल गेल अछि। मूल पोथीक अंग्रेजी शीर्षक वा अन्तरराष्ट्रीय पारिभाषिक नाम जखन शोध-सत्यापन लेल आवश्यक भेल, तखन ओ केवल कोष्ठकमे देल गेल अछि। 'पाँजी', 'वंशावली', 'अभिलेख', 'स्रोत', 'शाखा', 'ग्राम-मार्ग', 'रिक्तता', 'सन्दिग्ध', 'सम्भाव्य', 'प्रबल', 'प्रतिप्रमाण', 'सहप्रमाण', 'निष्कर्ष-दर्जा' आदि शब्द एकरूप अर्थमे बरतल गेल छथि।

व्यक्ति आ ग्राम-नामक बाबत अत्यधिक सामान्यीकरण नहि कएल गेल अछि। कारण वर्तनी-भेद स्वयं अभिलेखीय साक्ष्य भऽ सकैत अछि। अतः समीक्षा मूल नामक पुनर्लेखन करबाक बदला स्रोतक पद्धति आ संरचनापर केन्द्रित अछि।

शुद्धता केवल शब्द बदलनाइ नहि; वाक्यक प्रमाणिक सीमा सेहो भाषिक शुद्धता अछि। 'सिद्ध होइत अछि' ओतहि उचित जतय पर्याप्त साक्ष्य अछि; अन्यथा 'संकेत करैत अछि', 'सम्भाव्य अछि', 'स्पष्ट नहि', 'अज्ञात' सन पद उपयोग कएल जाए। एहि शैलीक अनुसरण पोथीक मूल नैतिक अभिप्रायसँ मेल खाइत अछि।

१५. संशोधित/द्वितीय संस्करण लेल ठोस अनुशंसा

मुख्य पाठमे बचल प्रकाशन-पूर्व कार्यप्रवाह, भविष्यकालीन सूचक-निर्देश, पुनरारम्भ/संचयन-संकेत हटाओल जाए।

प्रत्येक ६६८ प्रविष्टिक अध्याय–पृष्ठ–ग्राम–प्रमुख व्यक्ति–क्रॉस-सन्दर्भ सहित समग्र मास्टर-सूचक बनाओल जाए।

ग्राम-सूचक आ व्यक्ति-सूचकमे मूल वर्तनी, सामान्यीकृत वर्तनी, प्रविष्टि संख्या आ पृष्ठ संख्या देल जाए।

बी-सन्दर्भ आ अन्य संख्यात्मक क्रॉस-सन्दर्भक पूर्ण लक्ष्य-सारणी बनाओल जाए; अनसुलझल सन्दर्भ अलग सूचीबद्ध हो।

सब रिक्त, बिन्दु, टूटल नाम, अस्पष्ट पिता/ग्राम आ ‘रिक्त’ घटनाक पूर्ण इन्वेन्टरी बनाओल जाए।

परिशिष्ट ५ [E] क “वंश-सारणी” कैं वास्तविक पीढ़ी-दर-पीढ़ी सारणी/चित्रमे बदलल जाए; अनिश्चित कड़ी टूटल रेखा वा टिप्पणीसँ चिन्हित हो।

परिशिष्ट ६ [F] मे समस्त ‘एक ग्राम सँ दोसर ग्राम’ मार्गक वास्तविक सारणी आ नेटवर्क-मानचित्र जोड़ल जाए।

परिशिष्ट १० [J] क प्रस्तावित चारि मानचित्र आ दू वंश-चित्र वास्तवमे तैयार कऽ प्रकाशनमे समाविष्ट कएल जाए।

प्रत्येक प्रमुख ऐतिहासिक निष्कर्षक सामने दावादर्जा—प्रबल, सम्भाव्य, विवादित, अज्ञात—आ प्रमाण-प्रकार देल जाए।

जहाँ सम्भव, मूल पाँजी पृष्ठ/प्रतिलिपिक प्रतिरूप, फोलियो, स्रोत-संकेत अथवा उच्च-गुणवत्ताक प्रतिछवि जोड़ल जाए।

दूरस्थ स्थान/आधुनिक पेशासँ सम्बन्धित प्रविष्टि सभकैं जनगणना, भूमि/राजस्व, शिक्षा, अदालत, सेवा अथवा पारिवारिक अभिलेखसँ सहप्रमाणित कएल जाए।

स्त्री/कन्या-रेखा जतेक उपलब्ध अछि, ओकर पृथक सूचक बनाओल जाए; अभावकैं अनुपस्थित सामाजिक अस्तित्व नहि, स्रोत-सीमा मानल जाए।

अध्याय-शीर्षकक शैली एकरूप कएल जाए, जाहिसँ स्वतः विषय-सूची, डिजिटल नेविगेशन आ पहुँचयोग्यता ठीक रहए।

‘पूर्ण’ शब्द केवल ओहि परिशिष्टमे राखल जाए जतय वास्तविक सर्वसमावेशी सूची उपलब्ध हो; अन्यथा ‘प्रमुख’ अथवा ‘चयनित’ लिखल जाए।

वंशावली निष्कर्ष आ जैविक आनुवंशिक निष्कर्षकेँ स्पष्ट रूपेँ अलग राखल जाए।

१६. समेकित मूल्यांकन

पोथीक मुख्य शैक्षणिक उपलब्धि दू स्तरपर अछि। पहिल, ओ कठिन पाँजी-पाठक व्याकरण पाठकक सामने खोलैत अछि—नाम, शाखा, पुत्र-सूचक, ग्राम, उपाधि, रिक्तता, देव-आवाहन, क्रॉस-सन्दर्भक संरचना। दोसर, ओ ई बतबैत अछि जे वंशावली इतिहासक कच्चा माल तखन बनैत अछि जखन सम्पादक अपने अनुमानक सीमा पहचानैत अछि। ‘रिक्त’ केँ भरि देब, समान नाम मिला देब, प्रत्येक ग्राम-मार्गकेँ प्रव्रजन कहि देब—ई सभ आकर्षक मुदा गलत सरलता हो सकैत अछि।

भारतीय इतिहास-दृष्टि पोथीक वंशपरम्परा आ सम्बन्ध-स्मृतिक मूल्य पहिचानैत अछि; पाश्चात्य स्रोत-समीक्षा ओकर प्रसारण, सहप्रमाण आ अभिलेखीय चयनक प्रश्न उठबैत अछि; नव्य-न्याय प्रत्येक अनुमानक हेतु-व्याप्ति जाँचैत अछि; विदेह समानान्तर पद्धति स्रोतक सत्ता, मौन, वैकल्पिक परम्परा आ निष्कर्ष-दर्जा देखैत अछि। चारू पद्धति एक बिन्दुपर सहमत देखाइत अछि: प्रमाण सँ बेसी दावाक अनुमति नहि।

एहि कसौटीपर ‘मिथिलाक पाँजीक उन्मोचन, खण्ड ४’ उल्लेखनीय आ उपयोगी कृति अछि। एकर ६६८ प्रविष्टिक क्रमिक उन्मोचन स्वयं बड़ अभिलेखीय श्रम अछि; ८२–८७ अध्यायक संश्लेषण पाठकेँ सूची सँ नेटवर्क धरि लऽ जाइत अछि। मुदा एतबे महत्त्वपूर्ण अछि जे पुस्तकक विशाल मुख्य शरीरक तुलनामे अन्तिम शोध-साधन—सूचक, सारणी, पूर्ण रिक्त/क्रॉस-सन्दर्भ सूची, मानचित्र—अभी पर्याप्त विस्तार नहि पबैत अछि।

अगिला संस्करण यदि स्रोत-प्रतिरूप, वास्तविक समग्र सूचक, दावादर्जा, क्रॉस-सन्दर्भ तालिका, वंश-चित्र, मार्ग-मानचित्र आ बाह्य सहप्रमाण जोड़ैत अछि, तँ ई कृति केवल नागरम पाँजीक व्याख्यात्मक पोथी नहि रहि मिथिला

वंशावली-अध्ययनक दीर्घकालीन आलोचनात्मक सन्दर्भ-ग्रन्थ बनि सकैत अछि।

१७. निष्कर्ष

नागरम पाँजीक अर्थ ओकर नाम-संख्यामे नहि, सम्बन्धक व्याकरणमे अछि। व्यक्ति पिता/पुत्र/शाखासँ जुड़ैत अछि; ग्राम विवाह/बसावट/पहचानसँ; उपाधि विद्या/प्रतिष्ठासँ; आधुनिक पेशा परिवर्तनसँ; देव-आवाहन पवित्र अभिलेखीय क्रमसँ; रिक्तता स्मृतिक सीमासँ। एहि सभकेँ एक साथ पढ़ब—एहि पोथीक सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

समग्र जाँचमे कोनो अध्याय वा परिशिष्ट छोड़ा नहि गेल: अध्याय १–८७, स्रोत प्रविष्टि १–६६८, विश्लेषणात्मक अध्याय ८२–८७ आ परिशिष्ट १–१० [A–J] सभ समीक्षा-अन्तर्गत छथि। एहि व्यापक संरचनाक भीतर सबलतम पद्धतिगत सूत्र अछि—स्रोत-पाठ, व्याख्या आ ऐतिहासिक निष्कर्ष अलग राखू; अनिश्चितताकेँ मिटाउ नहि; समान नामकेँ बिना सम्बन्ध-साक्ष्य एक नहि करू; ग्राम-मार्गकेँ बिना अतिरिक्त हेतु प्रव्रजन नहि कहू।

एहि कारण कृतिक मूल्य केवल वंशानुक्रम सुरक्षित करबामे नहि, बल्कि ऐतिहासिक विनम्रता सिखेबामे अछि। जखन अभिलेख स्पष्ट अछि तँ ओ बोलैत अछि; जखन सन्दिग्ध अछि तँ सन्देह देखबैत अछि; जखन रिक्त अछि तँ रिक्तता बचबैत अछि। इतिहास-लेखनक लेल एहि तीनू अवस्थाकेँ अलग-अलग चिन्हित करनाइ—नागरम पाँजीक उन्मोचनक स्थायी पद्धतिगत योगदान बनि सकैत अछि।

ग्रन्थसूची

मिथिलाक पाँजीक उन्मोचन, खण्ड ४ [Decoding the Panji of Mithila, Volume IV]

जीनोम मैपिंग : मिथिलाक पाँजी प्रबन्ध [Genome Mapping (450 A.D. to 2009 A.D.) – Mithilak Panji Prabandh]

मिथिला आ मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास [A Parallel History of Mithila & Maithili Literature]

समानान्तर दर्शन, खण्ड २ [Parallel Philosophy, Volume II]

तत्त्वचिन्तामणि

न्यायसूत्र

राजतरंगिणी

इतिहासकारक शिल्प [The Historian’s Craft]

इतिहास की अछि? [What Is History?]

ज्ञानक पुरातत्त्व [The Archaeology of Knowledge]

अनुशासन आ दण्ड [Discipline and Punish]

चिह्न, मिथक आ ऐतिहासिक पद्धति [Clues, Myths, and the Historical Method]

मेटाइतिहास [Metahistory]

ध्वन्यालोक

काव्यप्रकाश

औचित्यविचारचर्चा

पाठाधारित सत्यापन-टिप्पणी

एहि आलेखमे पोथीक संरचना, अध्याय-क्रम, प्रविष्टि-दायरा, विश्लेषणात्मक खंड आ परिशिष्टक प्रत्यक्ष पाठाधारित मिलान कएल गेल अछि। जतय बाह्य पद्धति उपयोग कएल गेल अछि, ओकर काज मूल स्रोतकेँ बदलनाइ नहि, दावाक प्रमाण-सीमा जाँचना अछि। स्रोत जे बात नहि कहैत अछि, ओकरा तथ्य रूपमे जोड़ल नहि गेल अछि।

आलेख ४६ · पञ्जी, दर्शन, भाषा आ समानान्तर इतिहास

डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड ५

सारांश

ई शोध-समीक्षा ३२२ पृष्ठक ‘डिकोडिंग द पाँजि ऑफ मिथिला, खण्ड ५’क समग्र पाठपर आधारित अछि। पोथी स्वयं ‘पाँजि : मिथिलाक वंशावली मानचित्रण, ४५० ईस्वी–२००९ ईस्वी, खण्ड २’क पाठ-वाचन, संकेतन-विस्तार आ व्याख्यात्मक पुनर्निर्माणक रूपमे अपन स्वरूप निर्धारित करैत अछि। एहि समीक्षामे अध्याय १ सँ ४० धरि सभ औपचारिक अध्यायकेँ समाहित कएल गेल अछि; कोनो वंश-खण्ड, ग्रामारम्भ, स्त्री-विवाहरेखा, विद्वत्-उपाधि, स्थानान्तरण-सूचना, आधुनिक पेशागत प्रविष्टि वा अन्तिम संदर्भ-उपकरणकेँ आलोचनात्मक आवरणसँ बाहर नहि राखल गेल अछि। पोथीक मूल उपलब्धि ई अछि जे ओ संक्षिप्त पाँजि-भाषाकेँ “सूची” नहि, बल्कि वंश, विवाह, मूल, गोत्र, गाम, उपाधि, प्रवास आ सामाजिक स्मृतिक बहु-दिशात्मक मानचित्र मानि पढ़बाक विधि बनबैत अछि। स्त्रीक नाँव, बेटी-विवाह, आद्या–अपरा, मातृ-संकेत आ परगामक सम्बन्धकेँ वंश-नियमनक केन्द्रमे आनब एहि खण्डक महत्वपूर्ण सम्पादकीय हस्तक्षेप अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय कसौटीपर पोथीक औचित्य, रीति, अर्थ-संकोच आ व्यञ्जना-क्षमता प्रमुख अछि; पाश्चात्य कसौटीपर ई संरचनात्मक नातेदारी, अभिलेख-सत्ता, सूक्ष्म-इतिहास, स्रोत-समीक्षा आ कथात्मक काल-व्यवस्थाक प्रश्न उठबैत अछि। नव्य-न्यायीय परीक्षणमे ‘व्यक्ति’क पहिचान अनेक अवच्छेदक—पिता, मूल, गोत्र, गाम, विवाह-सम्बन्ध, उपाधि—सँ निश्चित होइत अछि, जबकि ‘नी०’, ‘दौ’, ‘दु दौ’ आ क्षतिग्रस्त पाठक अर्थमे अभाव, अनुमान आ उपाधि-संशयक अनुशासन जरूरी ठहरैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति औपचारिक वंशक्रमक संग स्त्री-स्मृति, लोक-गाम, प्रवास, ज्ञान-श्रम, उपाधि, पेशा आ मौन/रिक्तिकेँ समानान्तर स्रोत-रेखा मानि पढ़ैत अछि। बाह्य ऐतिहासिक सत्यापनमे पाँजिक विवाह-नियमन, प्रवास-स्मृति आ सामाजिक भूगोलवला रूपक पुष्टि होइत अछि; मुदा उद्घाटनमे बल्लाल सेन–हलायुध सम्बन्धक प्रस्तुति सावधानी माँगैत अछि, कारण पाण्डुलिपि-परम्परा हलायुधकेँ लक्ष्मणसेनक संरक्षण आ प्रशासनसँ अधिक स्पष्ट रूपेँ जोड़ैत अछि। अतः एहि

बिन्दुकेँ पोथीमे “स्रोत-परम्पराक दावा” रूपेँ राखब ऐतिहासिक दृष्टिसँ अधिक सुरक्षित रहत। समग्रतः ई खण्ड मिथिलाक पाँजि-पाठकेँ पठनीय, शोधयोग्य आ तुलनात्मक बनबैत अछि, मुदा किछु ठाम आवृत्त व्याख्यात्मक सूत्र, असमान अध्याय-विस्तार आ बाह्य स्रोत-निर्देशक अभाव ओकर आलोचनात्मक सीमासभ अछि।

बीजशब्द
डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड ५ · मिथिला · वंश-अभिलेख · इतिहासलेखन · प्रमाण-विवेचन

१.३८. गजेन्द्र ठाकुर- डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला’-५- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

मिथिलाक पाँजि-पाठ, वंश-स्मृति आ सामाजिक इतिहास

‘डिकोडिंग द पाँजि ऑफ मिथिला, खण्ड ५’ **(Decoding the Panji of Mithila, Volume V)** क भारतीय, पाश्चात्य, नव्य-न्यायीय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ समग्र शोध-समीक्षा

मूल पोथीकार : गजेन्द्र ठाकुर

शोध-विधा : पाठालोचन, वंश-अभिलेख अध्ययन, साहित्यिक समीक्षा आ ऐतिहासिक स्रोत-समीक्षा

सारांश

ई शोध-समीक्षा ३२२ पृष्ठक ‘डिकोडिंग द पाँजि ऑफ मिथिला, खण्ड ५’क समग्र पाठपर आधारित अछि। पोथी स्वयं ‘पाँजि : मिथिलाक वंशावली मानचित्रण, ४५० ईस्वी–२००९ ईस्वी, खण्ड २’क पाठ-वाचन, संकेतन-विस्तार आ व्याख्यात्मक पुनर्निर्माणक रूपमे अपन स्वरूप निर्धारित करैत अछि। एहि समीक्षामे अध्याय १ सँ ४० धरि सभ औपचारिक अध्यायकेँ समाहित कएल गेल अछि; कोनो वंश-खण्ड, ग्रामारम्भ, स्त्री-विवाहरेखा, विद्वत्-उपाधि, स्थानान्तरण-सूचना, आधुनिक पेशागत प्रविष्टि वा अन्तिम संदर्भ-उपकरणकेँ आलोचनात्मक आवरणसँ बाहर नहि राखल गेल अछि। पोथीक मूल उपलब्धि ई अछि जे ओ संक्षिप्त पाँजि-भाषाकेँ “सूची” नहि, बल्कि वंश, विवाह, मूल,

गोत्र, गाम, उपाधि, प्रवास आ सामाजिक स्मृतिक बहु-दिशात्मक मानचित्र मानि पढ़बाक विधि बनबैत अछि। स्त्रीक नाँव, बेटी-विवाह, आद्या–अपरा, मातृ-संकेत आ परगामक सम्बन्धकेँ वंश-नियमनक केन्द्रमे आनब एहि खण्डक महत्वपूर्ण सम्पादकीय हस्तक्षेप अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय कसौटीपर पोथीक औचित्य, रीति, अर्थ-संकोच आ व्यञ्जना-क्षमता प्रमुख अछि; पाश्चात्य कसौटीपर ई संरचनात्मक नातेदारी, अभिलेख-सत्ता, सूक्ष्म-इतिहास, स्रोत-समीक्षा आ कथात्मक काल-व्यवस्थाक प्रश्न उठबैत अछि। नव्य-न्यायीय परीक्षणमे ‘व्यक्ति’क पहिचान अनेक अवच्छेदक—पिता, मूल, गोत्र, गाम, विवाह-सम्बन्ध, उपाधि—सँ निश्चित होइत अछि, जबकि ‘नी०’, ‘दौ’, ‘दु दौ’ आ क्षतिग्रस्त पाठक अर्थमे अभाव, अनुमान आ उपाधि-संशयक अनुशासन जरूरी ठहरैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति औपचारिक वंशक्रमक संग स्त्री-स्मृति, लोक-गाम, प्रवास, ज्ञान-श्रम, उपाधि, पेशा आ मौन/रिक्तिकेँ समानान्तर स्रोत-रेखा मानि पढ़ैत अछि। बाह्य ऐतिहासिक सत्यापनमे पाँजिक विवाह-नियमन, प्रवास-स्मृति आ सामाजिक भूगोलवला रूपक पुष्टि होइत अछि; मुदा उद्घाटनमे बल्लाल सेन–हलायुध सम्बन्धक प्रस्तुति सावधानी माँगैत अछि, कारण पाण्डुलिपि-परम्परा हलायुधकेँ लक्ष्मणसेनक संरक्षण आ प्रशासनसँ अधिक स्पष्ट रूपेँ जोड़ैत अछि। अतः एहि बिन्दुकेँ पोथीमे “स्रोत-परम्पराक दावा” रूपेँ राखब ऐतिहासिक दृष्टिसँ अधिक सुरक्षित रहत। समग्रतः ई खण्ड मिथिलाक पाँजि-पाठकेँ पठनीय, शोधयोग्य आ तुलनात्मक बनबैत अछि, मुदा किछु ठाम आवृत्त व्याख्यात्मक सूत्र, असमान अध्याय-विस्तार आ बाह्य स्रोत-निर्देशक अभाव ओकर आलोचनात्मक सीमासभ अछि।

बीजशब्द : पाँजि, मिथिला, वंशावली, मूल, गोत्र, प्रवर, विवाह-स्मृति, स्त्री-रेखा, प्रवास, नव्य न्याय, स्रोत-समीक्षा, विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति।

१. प्रस्तावना : पोथीक विषय, स्वरूप आ शोध-महत्त्व

‘डिकोडिंग द पाँजि ऑफ मिथिला, खण्ड ५’क आरम्भिक स्रोत-टिप्पणी साफ कहैत अछि जे ई मूल पाँजि-पंजीक स्थानापन्न नहि, बल्कि ओकर वंशावली, विवाह-स्मृति, बसावट-इतिहास आ विद्वत्-सामाजिक अभिलेख रूपक वाचन-

मार्गदर्शक अछि। ई आत्म-सीमा पोथीक आलोचनात्मक विश्वसनीयताक मूलाधार अछि, कारण लेखक क्षतिग्रस्त वा अनिश्चित स्थानपर नाँव गढ़बाक निषेध करैत छथि।

पोथीक ४० अध्यायमे पहिल अध्याय पाठ-विधि स्थापित करैत अछि; अध्याय २–३९ वंश-गाम-शाखा अनुसार सामग्री खोलैत अछि; अध्याय ४० स्त्री-विवाह, भूगोल, उपाधि, पाठ-भेद, शब्दावली, नाँव-सूचक आ गाम-सूचककेँ एकत्र करैत अछि। एहि स्थापत्यक कारण पोथी केवल वंश-सार नहि रहैत अछि; ई स्रोत-पठनक शिक्षापुस्तक, सामाजिक इतिहासक मानचित्र आ अभिलेखीय नैतिकताक घोषणापत्र एक संग बनैत अछि।

पोथीक साहित्यिकता कथानकप्रधान नहि अछि। ओकर प्रभाव संक्षिप्त पाँजि-सूत्रक विस्तार, नाम-समूहक लय, गाम-नामक पुनरावृत्ति, उपाधि-स्मृति, स्त्रीक विवाह-दिशा, पुरान आ आधुनिक पदक सहअस्तित्व आ “एक व्यक्ति–अनेक सम्बन्ध”वला विन्याससँ उत्पन्न होइत अछि। एहि कारण एकर समीक्षा कथा, कविता वा उपन्यासक कसौटीसँ नहि, बल्कि अभिलेखीय गद्य, वंश-वृत्तान्त, सांस्कृतिक स्मृति आ इतिहासलेखनक मिश्रित रूपमे कएल जाएब उचित अछि।

२. स्रोत, पाठ-सीमा आ शोध-पद्धति

एहि अध्ययनक प्राथमिक आधार पूरा ३२२-पृष्ठीय पोथी अछि। अध्याय-सूची, सभ ४० अध्याय, सभ औपचारिक उपशीर्षक, अध्याय-अन्त सार, शब्दावली आ अन्तिम संदर्भ-उपकरणक संरचनात्मक मिलान कएल गेल अछि। अध्याय-आवरणक अर्थ एतय केवल शीर्षक गनब नहि, बल्कि सभ अध्यायक विशिष्ट वंश-क्षेत्र, स्त्री-संयोग, बसावट, विद्वत्ता, आधुनिकता आ पाठ-संशयक आलोचनात्मक कार्य चिन्हित करब अछि।

बाह्य शोधक उपयोग तीन प्रयोजन लेल कएल गेल अछि—पाँजि-संस्थाक सामाजिक कार्यक तुलनात्मक पुष्टि, सेनकालीन हलायुधक ऐतिहासिक सम्बन्धक जाँच, आ नव्य न्याय/इतिहासलेखन/नातेदारी-अध्ययनक सिद्धान्तक अवधारणात्मक कसौटी। बाह्य स्रोतसँ पोथीक रिक्त स्थान नहि भरल गेल

अछि; जे तथ्य मूल पोथी नहि कहैत अछि, से वंशवृत्तान्तमे जोड़ल नहि गेल अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति एहि समीक्षामे सात समांतर रेखा पढ़ैत अछि : औपचारिक वंशक्रम; स्त्री आ विवाह-स्मृति; गाम–देश–प्रवास; विद्वत्ता आ ज्ञान-श्रम; उपाधि आ सामाजिक अधिकार; आधुनिक शिक्षा/पेशा; आ मौन, पाठ-भंग तथा अनिश्चितता। दू रेखा एकहि समय उपस्थित होइत हो, ताहि मात्रसँ कारण–परिणाम नहि मानल गेल अछि; वास्तविक छेदन, स्रोत-साम्य आ परिणाम देखल गेल अछि।

३. समग्र स्थापत्य : चालीस अध्यायक पाँच व्यापक गति

३.१ पाठ-विधि आ उद्घाटन वंश-फलक

अध्याय १ पाठ-संकेत, सुत/सुता/सुतौ, आद्या/अपरा, प्र०, म०म०उ०, दौ/दु दौ, नी०, देशे, वासी, मूल, गोत्र, प्रवर, ग्रामारम्भ आ पूर्वपरिचयक अर्थ-सावधानी स्थापित करैत अछि। अध्याय २–४ हलायुधक उद्घाटन विद्वत्-रेखा सँ फूलसरा, हरौत, पोठिया सुलतानपुर, वरदाहा, मजलिसपुर, शिव हरिआम, सन्दहपुर दिधोय आ दाँती–चोपड़ा बखरी धरि शाखा-विस्तार देखबैत अछि।

३.२ विद्वत्-वंशसँ आधुनिक सार्वजनिक जीवन धरि

अध्याय ५–१७ महादेव दिग्घी, बेहट खण्डवाला–परबाहा, पद्मपुर, पदा, डोम टेकरी, घोड़ा घाट, तिलय रतनपुर, बड़गाम दरिहरा, बलियास, पखलिया, रघुनाथपुर, हेमनगर, असुरा, बिरवाँ बथेली, सालमपुर आ खौआल सिमरवाड़क माध्यमसँ पुरान उपाधि आ आधुनिक शिक्षा/पेशा एकहि वंश-व्याकरणमे देखबैत अछि।

३.३ पूर्णिया–दरिहरा–मन्दार–सतलखा क्षेत्रक घनत्व

अध्याय १८–२५ नसीरा दिग्घी, राजनपुरा–दरिहरा–कोइलख, रतौली, राजोरा–मन्दार, सतलखा, जगतपुर, सोदरपुर आ रैयाम घोषियाममे विद्यालय, न्यायिक/प्रशासनिक पद, कवि-रेखा, बेटीक विवाह, पुनःप्रविष्ट शाखा आ गाम-अन्तर्गमनक जटिलता सामने आनैत अछि।

३.४ ग्रामारम्भ-श्रृंखला आ संक्षिप्त घनीभूत अभिलेख

अध्याय २६–३९ सकुरी बेलौच, भानुपुनुर–पानिचोभ, रुचौली एकहरा, सुल्हनी नरौन, त्रिपुरौ, नागवाड़ घोषोत, असी एकहरा, गंगोरा बुधवाल, बढ़ियाँ पवौली, देवहर, शाण्डिल्य गोत्र ब्रह्मपुरा, कनहौली परबाहा, एकहरा संग्राम आ सिरसिया धरि अपेक्षाकृत छोट अध्यायमे सूत्रात्मक वंश-स्मृतिसभ संकलित करैत अछि।

३.५ पुनरावलोकन आ संदर्भ-यन्त्र

अध्याय ४० सम्पूर्ण खण्डक पाठक-यन्त्र अछि। स्त्री, गाम, उपाधि, पाठ-भेद, शब्दावली, अध्याय–शाखा तालिका, प्रमुख नाँव-सूचक, स्थान–देश–प्रवास सूचक आ विवाह–बसावट सारिणी द्वारा ओ पूर्ववर्ती अध्यायसभकेँ पुनःपठनीय बनबैत अछि।

४. भारतीय साहित्यिक कसौटीपर समीक्षा

४.१ औचित्य

एहि पोथीक सर्वाधिक उपयुक्त भारतीय कसौटी औचित्य अछि। संक्षिप्त पाँजि-सूत्रकेँ जहाँ तक साक्ष्य अनुमति दैत अछि, तत्तेक विस्तार देब; संदिग्ध पाठकेँ संदिग्ध राखब; बेटी-विवाहकेँ “गौण” नहि मानब; आ ग्रामारम्भक सीमा लाँघि दू वंशकेँ जोड़ि नहि देब—ई सभ सम्पादकीय औचित्यक रूप अछि। जहाँ पोथी अपन निष्कर्षक स्वर अत्यधिक निश्चित करैत अछि, विशेषतः राजकीय सम्बन्ध वा बहु-शताब्दी “अविच्छिन्नता”क व्यापक दावा, ओतय औचित्य सावधानीक माँग करैत अछि।

४.२ ध्वनि आ व्यञ्जना

पाँजिक मूल पंक्ति प्रत्यक्ष कथनसँ अधिक सम्बन्ध-संकेत रखैत अछि। “सँ”, “दौ”, “अपरा”, गाम-नाम, उपाधि, बेटी-विवाह—ई सभ शब्द अपन शब्दार्थ सँ बेसी वंश-संरचना संकेत करैत अछि। ई काव्यध्वनि नहि, मुदा अभिलेखीय व्यञ्जना अछि। खण्ड ५क सफलता एहि निहित सम्बन्धकेँ उघाड़बमे अछि; सीमा तखन उत्पन्न होइत अछि जखन संकेतक व्याख्या स्रोतक अपेक्षा अधिक निश्चित भ’ जाइत अछि।

४.३ रीति, गुण आ शब्द-संकोच

मूल पाँजि-शैली लघु, सूत्रात्मक आ अत्यन्त संकुचित अछि। खण्ड ५ एहि संकोचकेँ विश्लेषणात्मक गद्यमा खोलैत अछि। प्रसाद-गुणक दृष्टिसँ व्याख्या बहुधा स्पष्ट अछि, मुदा एकहि चेतावनी—“सूची नहि, मानचित्र”—अनेक अध्यायमे पुनरावृत्त भेला सँ माधुर्य आ संक्षिप्तता किछु कम होइत अछि। शोध-संस्करणमे एहि आवृत्तिकेँ घटाओल जा सकैत अछि।

४.४ वक्रोक्ति आ अभिलेखीय रूपक

पोथी “वन”, “मानचित्र”, “सेतु”, “जाल”, “जीवित स्मृति” सन रूपकसँ कठिन वंश-सामग्रीकेँ पठनीय बनबैत अछि। एहि वक्र अभिव्यक्तिक उपयोग सफल अछि, कारण ओ पाँजिक बहु-दिशात्मक सम्बन्ध बुझबैत अछि। मुदा रूपक इतिहासक स्थान नहि लेबाक चाही; “सभ्यतागत निरन्तरता” सन वाक्यकेँ स्रोत-सीमा संग बाँधल रहब जरूरी अछि।

४.५ रसक प्रश्न

ई पोथी रसोत्पादनक लेल रचल साहित्य नहि अछि। तथापि पारिवारिक स्मृति, विद्वत्-गौरव, प्रवास, बेटी-विवाह आ पीढ़ीगत निरन्तरता पाठकमे स्मृति, करुण, गौरव वा विस्मयक भाव उत्पन्न क’ सकैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ एहि भावकेँ तथ्यक विकल्प नहि, पाठकीय परिणाम मानब उचित अछि।

५. पाश्चात्य आलोचनात्मक पद्धतिसँ समीक्षा

५.१ संरचनात्मक नातेदारी

लेवी-स्ट्रॉसक नातेदारी-अध्ययनक आलोकमे पाँजि पिता-पुत्र सूची भरि नहि, बल्कि विवाह-निषेध, विनिमय, समूह-संबन्ध आ गठजोड़क संरचना रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि। खण्ड ५क बेटी-विवाह आ आद्या–अपरा पर जोर एहि दृष्टिकेँ पुष्ट करैत अछि। तथापि पाँजिक स्थानीय मूल–गोत्र–प्रवर प्रणालीकेँ बाहरी संरचनावादी नमूनामे पूर्णतः विलीन करब उचित नहि।

५.२ स्रोत-समीक्षा

मार्क ब्लॉकक स्रोत-समीक्षात्मक परम्परासँ देखल जाए त पोथीक सबल पक्ष अछि—क्षतिग्रस्त पाठ, वर्तनी-भेद, पुनरावृत्ति, क्रॉस-सन्दर्भ आ अनिश्चितता चिन्हित करब। कमजोर पक्ष अछि जे बहुत अध्याय मूल पृष्ठ, पाण्डुलिपि-

संख्या वा प्रत्यक्ष उद्धरणक सूक्ष्म संदर्भ नियमित रूपेँ नहि दैत; एहि कारण स्वतंत्र पुनःसत्यापन कठिन भ' सकैत अछि।

५.३ सूक्ष्म-इतिहास आ संकेत-पाठ

कार्लो गिन्जबर्गक संकेत-आधारित पद्धतिक समान, एहि पोथीमे छोट चिन्ह —एक उपाधि, एक बेटी, एक गाम, एक उपनाम, एक “अपरा”, एक “नी०”— बड़ सामाजिक संरचनाक संकेत बनैत अछि। खण्डक आलोचनात्मक मूल्य एतय विशेष अछि, कारण साधारण सूचीमे लुप्त होयवला सूक्ष्म संकेत सामाजिक भूगोल खोलैत अछि।

५.४ अभिलेख, सत्ता आ वर्गीकरण

फूकोक अभिलेख-विचारक आलोकमे पाँजि ज्ञानक निष्पक्ष भण्डार मात्र नहि अछि; ओ विवाह-योग्यता, प्रतिष्ठा, उपाधि, सामाजिक श्रेणी आ वैध स्मृतिक निर्णयमे भाग लैत अछि। खण्ड ५ एहि सत्तात्मक पक्षक संकेत करैत अछि, मुदा सामाजिक बहिष्करण, वर्गीय/जातीय सीमा आ अभिलेखमे अनुपस्थित समूहक प्रश्नपर आरो स्पष्ट आलोचनात्मक अध्याय उपयोगी रहित।

५.५ कथात्मक काल

जेनेट आ रिक्योरक समय-विचारक दृष्टिसँ पाँजि कालानुक्रमिक इतिहास नहि अछि। समय वंशक्रम, शाखा-पुनरागमन, पूर्वपरिचय, प्रवास, आधुनिक उपाधि आ पेशागत संकेतमे बिखरल अछि। खण्ड ५ एहि असतत समयकेँ व्याख्यात्मक क्रम दैत अछि; मुदा ठीक तिथि नहि होय त “मध्यकालीन”, “आधुनिक” सन वर्गीकरणक प्रमाण-सीमा स्पष्ट राखब जरूरी अछि।

५.६ इतिहासक कथात्मक निर्माण

हेडन ह्वाइटक इतिहास-वृत्तान्त सम्बन्धी प्रश्न एतय महत्त्वपूर्ण अछि : जखन सम्पादक नाम-सूचीकेँ “सभ्यतागत जाल”, “जीवित मानचित्र” वा “सामाजिक निरन्तरता”क कथा बनबैत छथि, तखन चयन आ विन्यास स्वयं अर्थ रचैत अछि। एहि अर्थ-निर्माणकेँ स्वीकार करैत, मूल पाँजि आ व्याख्यात्मक आख्यानक स्तर अलग राखब पोथीक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

६. नव्य-न्यायीय प्रमाण-पद्धतिसँ समीक्षा

६.१ प्रमेयक अवच्छेदक

पाँजिमे एक व्यक्ति केवल नाँवसँ निश्चित नहि होइत अछि। पिता, पितामह, मूल, गोत्र, गाम, मातृ/विवाह-संबन्ध, उपाधि, उपनाम आ शाखा—ई सभ ओकर पहिचानक अवच्छेदक बनैत अछि। खण्ड ५ बारम्बार उपनाम मात्रपर वंश-निर्णय नहि करबाक चेतावनी दैत अछि; ई नव्य-न्यायीय सूक्ष्म निर्धारणसँ साम्य रखैत अछि।

६.२ शब्दप्रमाण

पाँजि अभिलेख शब्द-स्रोत अछि, मुदा शब्द मात्रसँ सत्यता स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि। लेखक, परम्परा, पाठ-भंग, नकल, बादक संशोधन, स्थानिक वर्तनी आ शाखा-संगति देखब पड़ैत अछि। अतः “लिखल अछि” आ “ऐतिहासिक रूपेँ सिद्ध अछि” दू अलग स्तर अछि। खण्ड ५क सर्वोत्तम अंश एहि भेदकेँ स्वीकार करैत अछि।

६.३ अनुमान आ उपमान

दौ, दु दौ, अपरा वा सँक अर्थ बहुत ठाम सीधा परिभाषासँ नहि, बल्कि आसपासक वंश-व्याकरण आ समान सूत्रक तुलना सँ बुझल जाइत अछि। ई अनुमान आ उपमानक संयुक्त व्यवहार सन अछि। परन्तु समान सूत्र देखलाक बादो सभ ठाम एकहि अर्थ थोपब अनुचित अछि; पोथी स्वयं एहि यान्त्रिक अनुवादक विरोध करैत अछि।

६.४ अभाव

“नी०”क प्रसंग नव्य-न्यायीय अभाव-चिन्तनक उत्कृष्ट उदाहरण अछि। ककरो बाद संतानक नाँव नहि भेटब आ जैविक रूपेँ निःसंतान होयब एक बात नहि। “अभिलेखमे अगिला प्रविष्टि नहि” सँ “संतान नहि”क निष्कर्ष छलाँग अछि। खण्ड ५ एहि भ्रान्तिकेँ स्पष्ट रूपेँ रोकैत अछि।

६.५ उपाधि आ हेत्वाभास

महामहोपाध्याय, वैयाकरण, कवि, न्यायाधीश, शिक्षक, अधिकारी सन पद प्रतिष्ठाक सूचक अछि, मुदा एहि उपाधिक आधारपर वंश-सत्य, नैतिक श्रेष्ठता वा सामाजिक वैधता स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि। उपाधि सहायक संकेत

अछि, हेतु नहि। एहि भेदक पालन आलोचनात्मक संस्करणमे अत्यावश्यक अछि।

६.६ संशयक वैधता

नव्य न्याय संशयकेँ ज्ञान-यात्राक अवैध अवस्था नहि मानैत; उचित निर्णय लेल संशय आवश्यक होइत अछि। खण्ड ५क “अनिश्चित पाठकेँ अनिश्चित राखू” नीति एहि दार्शनिक अनुशासनसँ गहिरे साम्य रखैत अछि।

७. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ समीक्षा

७.१ एकरेखीय कालक्रमक बदला समानान्तर इतिहास

एहि पद्धतिमे राजवंशक कालक्रम एकमात्र इतिहास नहि अछि। पाँजिक भीतर राजकीय स्मृति, गामक स्थानान्तरण, स्त्री-विवाह, विद्वत्-उपाधि, पेशागत परिवर्तन, लोक-उपनाम आ पाठ-रिक्ति समानान्तर रेखा रूपेँ पढ़ल जाइत अछि। खण्ड ५क सामग्री एहि बहुरेखीय पठन लेल विशेष अनुकूल अछि।

७.२ उपेक्षित स्रोतक पुनर्स्थापन

पुरुष-प्रधान सतही सूचीक भीतर बेटीक विवाह, पत्नी, माता, महिला-नाम, ग्रामान्तर सम्बन्ध आ मौन शाखा इतिहासक वैध स्रोत बनैत अछि। अध्याय १ आ ४० एहि पुनर्स्थापनकेँ सिद्धान्त रूपेँ कहैत अछि, बीचक अध्यायसभ ओकर व्यावहारिक उदाहरण दैत अछि।

७.३ नाम, श्रम आ ज्ञान

महामहोपाध्याय, वैयाकरण, ज्योतिर्विद, कवि, आचार्य सँ ल’ क’ शिक्षक, विद्यालय-प्रधान, अभियन्ता, प्रशासक आ सार्वजनिक कार्यकर्ता धरि पदनाम समाजमे ज्ञान-श्रमक बदलैत रूप देखबैत अछि। विदेह पद्धति एहि श्रम-इतिहासकेँ राजकीय कालक्रमक समानान्तर पढ़ैत अछि।

७.४ मौन आ रिक्ति

जहाँ पाठ टूटल अछि, नाँव अस्पष्ट अछि, शाखा अचानक रुकैत अछि वा “नी०” भेटैत अछि, ओतय रिक्ति स्वयं ऐतिहासिक तथ्यक सीमा अछि। रिक्तिकेँ कल्पना सँ भरब नहि, ओकर स्रोत-स्थिति लिखब—ई एहि पद्धतिक मूल नैतिकता अछि।

७.५ समानता कारण नहि

एकहि गामक पुनरावृत्ति, समान उपाधि, समान नाँव वा एकहि समयक आधुनिक पेशा मात्रसँ प्रत्यक्ष वंश-संबन्ध सिद्ध नहि होइत अछि। पहिने स्रोत-संबन्ध, काल, पिता-माता, विवाह-दिशा आ शाखा-सूत्रक छेदन चाही। खण्ड ५ बहुत ठाम एहि सावधानीपर अछि, मुदा किछु व्यापक ऐतिहासिक निष्कर्षमे एहि नियमकेँ आरो कठोर बनाओल जा सकैत अछि।

८. अध्याय-दर-अध्याय समग्र साहित्यिक आ ऐतिहासिक समीक्षा

८.१ अध्याय १ — पाठ-विधि, संकेतन आ विवाह-अधिकार

अध्याय १ सम्पूर्ण पोथीक ज्ञानमीमांसात्मक आधार अछि। सुत, सुता, सुतौ, आद्या, अपरा, प्र०, म०म०उ०, दौ, दु दौ, नी०, देशे, वासी, मूल, गोत्र, प्रवर आ ग्रामारम्भक व्याख्यासँ लेखक पाठककेँ पहिले “वंश-व्याकरण” सिखबैत छथि। विशेष उपलब्धि स्त्री-रेखाकेँ संरचनात्मक महत्त्व देब आ गाम-नामकेँ जन्मस्थान मानि लेबाक सरल भ्रान्ति रोकब अछि। नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ ई अध्याय परिभाषा, अवच्छेदक आ संशय-नियमनक अध्याय अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ “सूची नहि, मानचित्र” रूपक प्रभावी अछि, मुदा ई सूत्र बादक अध्यायसभमे अत्यधिक दोहराओल गेल अछि।

८.२ अध्याय २ — बल्लाल सेन, हलायुध आ उद्घाटन विद्वत्-वंश

अध्याय २ हलायुधक विद्वत् प्रतिष्ठा सँ वंश-शाखाक आरम्भ करैत, रत्नेश्वर, हल्लेश्वर, सुरेश्वर, जीवेश्वर, राजुहलधर, योगीश्वर, भोगीश्वर, महेश्वर आ बादक फूलसरा-पोठिया सम्बन्ध धरि विस्तार करैत अछि। अध्यायक सबल पक्ष ऊर्ध्व वंशरेखा आ क्षैतिज विवाह/गामरेखाकेँ एक संग पढ़ब अछि। ऐतिहासिक सीमा उद्घाटनक राजकीय सम्बन्ध अछि : हलायुधकेँ बल्लाल सेनक महामात्य रूपेँ निश्चित करबाक बदला सेनकालीन विद्वान आ लक्ष्मणसेन-संबद्ध प्रशासकीय विद्वान रूपेँ सावधानीसँ राखब अधिक सुरक्षित अछि।

८.३ अध्याय ३ — फूलसरा, हरौत, पोठिया सुलतानपुर, वरदाहा आ मजलिसपुर

अध्याय ३ प्रारम्भिक प्रतिष्ठित वंशकेँ घना सामाजिक जालमे बदलैत देखबैत अछि। राधाकान्त, शिवकान्त, वासुदेव, कामदेव, प्रेमकान्त, धर्मपति, जुड़ौन, मनोरंजन, मिलन, हरदत्त/बद्रीनाथ, गोपीनाथ, भैया, तोफलाल आ अन्य शाखासभक संग अनेक बेटी-विवाह जुड़ैत अछि। भैयाक बहुविवाह सम्बन्ध विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, कारण पाँजि कियैक विवाह-नियमनक अभिलेख अछि से प्रत्यक्ष होइत अछि। अध्याय स्त्री-नामक व्यापक संरक्षण द्वारा पोथीक घोषित पद्धतिसँ मेल खाइत अछि।

८.४ अध्याय ४ — शिव हरिआम, सन्दहपुर दिधोय आ दाँती–चोपड़ा बखरी

अध्याय ४ गाम-परिवर्तन, विद्वत् शाखा आ आधुनिक पेशागत संकेतक बीच सातत्य स्थापित करैत अछि। शशिनाथ, हलधर, चक्रधर, यादवूनन्दन, विवेकानन्द, दयानन्द, आदित्यानन्द, सुन्दरमणि आ कवि गंगाधर सन नाम वंश-स्मृतिक अलग स्वर दैत अछि। रेलवे-जेकाँ आधुनिक संकेत पुरान वंश-व्याकरणमे प्रवेश करैत अछि। अध्यायक आलोचनात्मक महत्त्व ई जे आधुनिकता “परम्पराक अन्त” नहि, बल्कि अभिलेखीय रूपान्तरण रूपेँ प्रस्तुत होइत अछि।

८.५ अध्याय ५ — महादेव दिग्घी सँ पदा धरि : विद्वत्ता, पद आ प्रवास

अध्याय ५ महादेव दिग्घी, बेहट खण्डवाला–परबाहा, पद्मपुर आ पदा क्षेत्रमे वैयाकरण, आचार्य, ज्योतिषी, शिक्षक, बैंक/रेल सेवा आ अन्य आधुनिक पदक सहअस्तित्व देखबैत अछि। चन्द्रमोहन, लेखमणि, गोकुलानन्द, बलानन्द, स्वरूपानन्द, विवेकानन्द आदि शाखासभ पुरान पाँजि-विन्यासक भीतर आधुनिक जीवनक प्रवेशक उदाहरण अछि। स्त्री-संबन्ध आ पूर्णिया–कटिहार–बंगाल दिशाक गति सामाजिक भूगोलकेँ व्यापक बनबैत अछि।

८.६ अध्याय ६ — डोम टेकरी : विद्वत् आरम्भसँ सार्वजनिक आधुनिकता धरि

अध्याय ६ जयादित्य, पशुपति, वासुदेव, धीरकान्त, अनन्तलाल आ रामसुन्दरक विस्तृत शाखा मार्फत दीर्घ काल-गहराई रचैत अछि। वैयाकरण कृष्णराम सन पुरान विद्वत् चिन्हक संग आधुनिक शिक्षा, विज्ञान, अभियान्त्रिकी, सामाजिक कार्य आ जनप्रतिनिधित्वक प्रविष्टि पाँजि परम्पराक अनुकूलन देखबैत अछि। अध्यायक प्रमुख साहित्यिक गुण नाम-सूचिकेँ

परिवारिक-सामाजिक प्रसंगमे बदलब अछि; सीमा ई जे आधुनिक उपलब्धिसभक सामाजिक अर्थ कतेक स्रोत-आधारित अछि, से सभ ठाम समान स्पष्ट नहि।

८.७ अध्याय ७ — घोड़ा घाट रतिपद बेलौच : विवाह-क्षेत्रक जीवित रूप

अध्याय ७ वासुदेव, दुर्गादत्त, भीम, मनोहर, हरिश्वर, वैद्यनाथ, मोहनलाल, फुदीलाल, चतुरानन, रामकान्त, लक्ष्मीकान्त, उमाकान्त आ यादवूनन्दन/बेचन द्वारा बेलौच शाखाकेँ व्यापक विवाह-क्षेत्र बनबैत अछि। मुखिया, सामाजिक सेवा आ आधुनिक शिक्षा सन पदनाम पुरान वंशवृत्तान्तमे जुड़ैत अछि। बेटीसबहक विवाह-गन्तव्य अध्यायक वास्तविक संरचना अछि; एहि कारण पुरुष-क्रमक तुलना मे क्षैतिज विवाहरेखा अधिक निर्णायक प्रतीत होइत अछि।

८.८ अध्याय ८ — तिलय रतनपुर–रभिडा–बनैली : राय शाखा आ राजकीय स्मृति

अध्याय ८ अगरु, हरिकर, बनैली ड्योढ़ी, राय जहद सिंह, राय ब्रजराज सिंह, राय पचकौड़ी, राय झपट सिंह आ राय सुदय सिंहक माध्यमसँ उपाधि, जमींदारी/राजकीय स्मृति आ विवाह-नेटवर्कक संयोग देखबैत अछि। अहिल्या, दुर्गा, जगदम्बा, निर्मला, सावित्री आदि स्त्री-रेखा गामसभक बीच वास्तविक पुल अछि। आलोचनात्मक रूपेँ “राय” वा “राज” पद प्रतिष्ठा सूचित करैत अछि, मुदा वंश-सत्यक स्वतः प्रमाण नहि; पोथीकेँ एहि भेदपर दृढ़ रहबाक चाही।

८.९ अध्याय ९ — बड़गाम दरिहरा असुरा : भक्तकवि सँ आधुनिक विद्वत् शाखा

अध्याय ९ रविकर, भक्तकवि धनपति, गोवर्धन, शूलपाणि, कालिदत्त, दुर्गादत्त, मन्नालाल, जगमोहन, प्राणमोहन आ चोपड़ा बखरी–तेतरीहर सोदरपुरक निरन्तरता देखबैत अछि। “भक्तकवि” सन पद साहित्यिक स्मृतिक सीधा प्रवेश अछि। आधुनिक शैक्षिक/विद्यालयी पदक संग स्त्रीक अनेक विवाह-रेखा एहि शाखाकेँ बहुस्तरीय बनबैत अछि। स्रोत-टिप्पणी देब अध्यायक एक गुण अछि; ई पद्धति सभ अध्यायमे समान रूपेँ रहित त शोध-मूल्य आरो बढ़ित।

८.१० अध्याय १० — बलियास ओगही–द्वाशय, बनैली, कोबरा

अध्याय १० धरनीधर, पद्मनाभ, पाठक मोहन, हरिनाथ आ बलियास एकमा बारहकोना धरि संयुक्त शीर्षककेँ “एक पता” नहि, बहु-क्षेत्रीय सम्बन्धक मानचित्र रूपेँ पढ़ैत अछि। पाठक आ कवि सन विद्वत् पद वंशक सांस्कृतिक पूँजी सूचित करैत अछि। स्त्री आ मातृ-संकेत शाखा-विभाजनक उपयोगी साधन अछि। अध्यायक विन्यास सफलतापूर्वक अगिला पखलिया खण्डक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

८.११ अध्याय ११ — पखलिया महिषी धर्मपुर देश, काजी पूर्णिया

अध्याय ११ वासुदेव, सितिकण्ठ, विश्वम्भर, हिंगु–मंगु, बलभद्र, रोशन, बभोला आ पूर्णिया–सोदरपुर निरन्तरता द्वारा पूर्वी मिथिला/पूर्णिया क्षेत्रक विवाह-भूगोल उघाड़ैत अछि। एकहि शीर्षकक भीतर दू पखलिया आरम्भ-जेकाँ आन्तरिक पुनर्संरचना पाठकसँ सावधानी माँगैत अछि। पोथी शाखा-सार द्वारा भ्रम घटबैत अछि। सामाजिक इतिहासक दृष्टिसँ पूर्णिया केन्द्रित गाम-सम्बन्ध पाँजिक “मिथिला”केँ प्रशासनिक सीमा सँ पैघ सांस्कृतिक क्षेत्र रूपेँ देखबैत अछि।

८.१२ अध्याय १२ — दक्षिण रघुनाथपुर : वाचस्पति, कविकेशरी भीम आ सत्यकवि नित्यानन्द

अध्याय १२क विशिष्टता साहित्यिक उपाधिसभ अछि—कविकेशरी, सत्यकवि, संग विद्वत्/अध्यापक पद। वाचस्पति सँ भीम, नित्यानन्द, गंगाधर, हिंगु, बालकृष्ण, जयकृष्ण, श्रीकृष्ण आ आधुनिक उमाकान्त धरि वंशक फैलाव देखाओल गेल अछि। शीर्षक-स्मृति साहित्यिक इतिहासक पूरक स्रोत बनि सकैत अछि, मुदा उपाधिक वास्तविक कृतित्व वा ग्रन्थ-सूची बिना ओकर अर्थ “मान्यता-सूचक” धरि सीमित राखब उचित अछि।

८.१३ अध्याय १३ — कटैय–अन्हरा बेलेपोठिया आ हेमनगर

अध्याय १३ “पाछाँ देखू” सन पुनःसन्दर्भक महत्त्व स्पष्ट करैत अछि। देवदत्त, तुलाराम, मधुरपति, विद्यापति, मतिनाथ, हीरा, चिरंजीव, उग्रमणि, सुन्दरमणि आ देवराज सिंहक शाखा एकरेखीय नहि, पुनरागमनशील अभिलेख अछि। नुनुदायक स्त्री-पुल आ हेमनगर–खण्डवाला सम्बन्ध देखबैत अछि जे

पूर्वपरिचय बिना वर्तमान प्रविष्टि अधूरी अछि। अध्याय पाँजिक गैर-रेखीय संरचनाक सफल उदाहरण अछि।

८.१४ अध्याय १४ — असुरा–सुपतानी गंगोली आ सिंघोली मन्दार दाँती

अध्याय १४ ब्रजमोहन, आनन्दमोहन, कमलमोहन, बाबूजी, जगु, गंगाधर, हरिजीव आ नन्दकिशोरक माध्यमसँ दू आन्तरिक क्षेत्रकेँ जोड़ैत अछि। आधुनिक वंश-नामक संग बनैली-सम्बन्ध, अम्बिका–अहिल्या स्त्री-पुल आ असुरा–अन्धासुर निरन्तरता दिस गतिशीलता अछि। अध्यायक आलोचनात्मक मूल्य “एक शीर्षक = एक शाखा” मान्यताकेँ भंग करब अछि।

८.१५ अध्याय १५ — बिरवाँ बथेली : महामहोपाध्याय बटेश आ आधुनिक निरन्तरता

अध्याय १५ बटेश, पशुपति, रघुपति, रतिपति, हलधर, लक्ष्मीनाथ, रमेश्वर, शूलपाणि आ आधुनिक पीढ़ीसँ विद्वत्-अधिकार आ विवाह-क्षेत्रक दीर्घ निरन्तरता रचैत अछि। अनेक बेटीसबहक विवाह आ आधुनिक पारिवारिक नाँव शाखाक क्षैतिज संरचना बनबैत अछि। “महामहोपाध्याय” प्रतिष्ठा पाँजिक स्मृति-राजनीतिकेँ देखबैत अछि; एकरे साहित्यिक मूल्य उपाधि-आधारित चरित्रांकनमे अछि।

८.१६ अध्याय १६ — सालमपुर–सलेमपुर–शलामपुर : रूपभेद आ रजिस्टर-सातत्य

अध्याय १६क सबसे महत्वपूर्ण विशेषता एकहि स्थान-नामक बहु-रूप अछि। अभिराम, जयराम, रघुनाथ, सन्तोष, चन्दीदत्त, प्यारेलाल, उपेन्द्र, नारायणदत्त आ बादक शलामपुर रजिस्टर देखबैत अछि जे वर्तनी-भेदकेँ तुरन्त अलग गाम वा त्रुटि मानब उचित नहि। परशमणि, मोहनलाल, महन्त, झपटलाल आदिक शाखासभ आधुनिक प्रशासनिक/शैक्षिक संकेतसँ जुड़ैत अछि। पाठ-सम्पादनक दृष्टिसँ ई अध्याय रूपभेद-संरक्षणक आदर्श अवसर अछि।

८.१७ अध्याय १७ — खौआल सिमरवाड़ ग्रामारम्भ : विद्वत्ता, आधुनिकता आ नसीरा-दिग्धी सीमा

अध्याय १७ महामहोपाध्याय प्रजापति, वाचस्पति, उमापति, गणपति, शशिधर, गंगाधर, चितामणि, मथुरानाथ, मनमोहन, विवेकानन्द, चन्द्रानन्द,

सूर्यनन्द आ अनेक शाखा सँ विस्तृत अछि। आधुनिक प्रशासनिक सेवा आ उच्च शिक्षा संकेत पुरान वंश-पाठक संग सहअस्तित्वमे अछि। “पहिल उच्च प्रशासनिक सेवा” जेकाँ विशेष दावाक स्वतंत्र स्रोत-सत्यापन उपयोगी होयत; तथापि अभिलेखक भीतर आधुनिक सार्वजनिक प्रतिष्ठाक प्रवेश स्पष्ट अछि।

८.१८ अध्याय १८ — नसीरा देशक दिग्घी : पूर्णिया आधुनिक निरन्तरता

अध्याय १८ भुलेख, केउन्टु, भवानन्द, आनन्द, भैरव, मनमोहन, रमणीकान्त, पशुपतिनाथ, धर्मानन्द आ आधुनिक पुत्र-रेखा द्वारा छोट किन्तु सुस्पष्ट खण्ड बनबैत अछि। जिला विद्यालय पूर्णियाक प्रधान सन पेशागत सूचक वंशक सामाजिक काल-चिन्ह बनैत अछि। बेटी-रेखा आ राजनपुरा–दरिहरा–कोइलख दिस संक्रमण अगिला अध्यायक सीमा सुघर करैत अछि।

८.१९ अध्याय १९ — राजनपुरा–दरिहरा–कोइलख, सरौनी आ हेमनगर

अध्याय १९ कन्हैया, द्वारिकानाथ, लक्ष्मण, प्रयागदत्त, रोहिणी, विष्णुदत्त, जगतमणि आ फूलसरा–बरदबट्टा निरन्तरता द्वारा अनेक शाखाकेँ एकत्र करैत अछि। आधुनिक पेशागत चिह्न, सरौनी/हेमनगर स्थान-संयोजन आ जगतमणिक पारिवारिक फैलाव समयक अनेक तह देखबैत अछि। अध्याय स्थाननामक पुनरावृत्तिकेँ वंश-संबन्ध मानबाक पहिने पिता–शाखा जाँचबाक आवश्यकता पुष्ट करैत अछि।

८.२० अध्याय २० — रतौली दरिहरा आ कवि-रेखा : अररिया–बैरगाछी धरि

अध्याय २० कमलपाणि, देवधर, धरनीधर, कवि-रेखा, बाबूराम, नन्दन, मेघनाथ, गुंगु–मन्ति, रमै–दरिहरा रतौली आ अररिया–बैरगाछी निरन्तरता द्वारा साहित्यिक, विधिक आ आधुनिक संकेतकेँ जोड़ैत अछि। कवि-स्मृति, ज्योतिषी पद आ आधुनिक शाखा एकहि वंश-मंडलमे अछि। गामसभक व्यापक पूर्वी प्रसार विदेह समानान्तर पद्धतिसँ प्रवास/बसावट इतिहासक महत्त्वपूर्ण रेखा बनैत अछि।

८.२१ अध्याय २१ — राजोरा मन्दार : बटेश सँ पोठिया, पलासी आ बेलबड़ी धरि

अध्याय २१ महामहोपाध्याय बटेश, पशुपति, रघुपति, रतिपति, यज्ञपति, पोठिया सुलतानपुर, पलासी, बेलबड़ी झोटन झा आ श्रीपुर देशक कोढ़िला धरि

विद्वत् रजिस्टरकेँ बसावट-रजिस्टरमे बदलैत अछि। एकहि प्रतिष्ठित मूलक अनेक स्थानीय शाखामे रूपान्तरण स्पष्ट अछि। एहि अध्यायमे गाम-नाम सामाजिक इतिहासक प्रमुख वाहक अछि।

८.२२ अध्याय २२ — सतलखा–सतौली ग्रामारम्भ

अध्याय २२ चक्रपाणि, पृथ्वीधर, पुरुषोत्तम, हरिकर, श्रीकर, रुचिकर, रत्नाकर, मान, मुरारी, जयदेव, रत्नपाणि, कौशिकदत्त आ मुस्टौली–फुलवाड़ी–चक्रधरक संक्षिप्त किन्तु गहिरे जुड़ल रजिस्टर अछि। बेटी-पुल, पुनःप्रविष्ट पन्ना-जेकाँ निरन्तरता आ सतलखा–धर्मपुर–बारहकोना–तिरासी सम्बन्ध पाँजिक स्थानिक घनत्व देखबैत अछि। छोट अध्याय होयतहुँ एकर संरचनात्मक जटिलता उल्लेखनीय अछि।

८.२३ अध्याय २३ — जगतपुर–मन्दार आ बेलबड़ी : अवशेष, पुनरावृत्ति आ मरम्मत

अध्याय २३ नरदेव, अर्जुन, गोपाल, हरिकर, जगन्नाथ, विश्वम्भर, राजोरा–मन्दार शेषांश, खवासपुर आ बखरी हरिषदत्त झा पर केन्द्रित अछि। “शेषांश” आ “पूर्वपरिचय” सन संकेत पाठकेँ खण्डित अभिलेख रूपेँ पढ़बाक माँग करैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ अध्याय अपूर्णताकेँ दोष नहि, बल्कि संरचनात्मक परिस्थिति बनबैत अछि; इतिहासलेखनमे ई महत्त्वपूर्ण ईमानदारी अछि।

८.२४ अध्याय २४ — सोदरपुर मणि ग्रामारम्भ

अध्याय २४ विश्वनाथ, गोपीनाथ, बटेश, पशुपति, रमेश्वर, रत्नाकर, गोंदी, कृष्ण, यज्ञपति, लक्ष्मण, मोदिनाथ, राधानाथ आ खजुरी–भिखारी मिश्रक शाखासभकेँ जोड़ैत अछि। विद्वत् पद आ गाम-स्मृतिक मेल स्पष्ट अछि। छोट-छोट पुनःसन्दर्भकेँ एकरूप करबाक बदला अलग राखब अध्यायक पाठ-निष्ठा अछि।

८.२५ अध्याय २५ — रैयाम घोषियाम ग्रामारम्भ : पुरान वंश सँ आधुनिक स्मृति

अध्याय २५ मनबोध, मंगनीराम, तिलकनाथ, चन्द्रनाथ, नसीरा–हवेली पोखरिया, हरिमोहन, कृष्णमोहन, कंचीनाथ किरण आ सकुरी–बेलौच सीमा धरि चलैत अछि। हरिमोहनक शिक्षक/नैतिक पद आ आधुनिक पेशा पारिवारिक

स्मृतिकेँ सामाजिक चरित्र दैत अछि। तिलकनाथक बेटी-रेखा अध्यायक वंश-निर्णयमे महत्त्वपूर्ण अछि।

८.२६ अध्याय २६ — सकुरी बेलौच ग्रामारम्भ

अध्याय २६ शिवदास, तिव्यकर, केउन्टु, पुरई, गुणाकर, रामकृष्ण, देवानन्द, रत्नपति-झिंगुर, गौरीदत्त, बुद्धिनाथ, राजकुमार आ वासुकिनाथक माध्यमसँ सकुरी–बेलौच शाखाकेँ भानुपुनुर–पानिचोभ सीमा धरि लैत अछि। अध्याय तुलनात्मक रूपेँ संक्षिप्त अछि, मुदा ब्रह्मपुरा–धनौजी आ आधुनिक शाखा द्वारा स्थानिक विस्तार स्पष्ट अछि।

८.२७ अध्याय २७ — भानुपुनुर–पानिचोभ ग्रामारम्भ

अध्याय २७ रामदेव, ठिठो, जीवेश्वर, भानुकर, चन्द्राकर, जीवधर, श्रीनाथ, हिंगु, दुर्गादत्त, नारायणदत्त, गंगाधर, अनन्तराम, भावदेव आ रंजनक वंश सँ रुचौली–एकहरा सीमा बनबैत अछि। हेमनगर–शान्तिनगर–पूर्णिया आ कोइलख–रशाढ्य सम्बन्ध स्थानान्तरणक इतिहास खोलैत अछि। अध्याय गामक नामक माध्यमसँ वंशक गतिशीलता स्पष्ट करैत अछि।

८.२८ अध्याय २८ — रुचौली एकहरा : ज्योतिर्विद, वैयाकरण, श्रोत्रिय आ न्यायिक आधुनिकता

अध्याय २८ ज्योतिर्विद हरिश्वर, गुणीश्वर, हृदयेश्वर, बाबूरैया, वैयाकरण रामचन्द्र, श्रोत्रिय गंगेश, राजेन्द्र, धरभरन, विश्वम्भर आ न्यायाधीश रमेश्वरक कारण विशेष विद्वत् घनत्व रखैत अछि। व्याकरण, श्रोत्रिय परम्परा, ज्योतिष आ आधुनिक न्यायिक पद एकहि वंशाभिलेखमे सामाजिक प्रतिष्ठाक बदलैत भाषा देखबैत अछि। बहुविवाह-संकेत विवाह-स्मृतिक जटिलता बढ़बैत अछि।

८.२९ अध्याय २९ — सुल्हनी नरौन ग्रामारम्भ

अध्याय २९ महीधर, उदयाकर, रत्नाकर, दालु, मधुकर, लक्ष्मण, रामकृष्ण, धर्मेश्वर, तुलाकृष्ण, खोखा देवनाथ झा, जगमोहन, हरिमोहन आ उफरैल खोखा पर केन्द्रित संक्षिप्त रजिस्टर अछि। गाम आ उपनामक संयुक्त प्रयोग पहिचानक अवच्छेदक रूपेँ काम करैत अछि। संक्षिप्तता कारण अध्याय स्रोत-संरचनाक निकट रहैत अछि, मुदा सामाजिक व्याख्या अपेक्षाकृत कम अछि।

८.३० अध्याय ३० — त्रिपुरौ नरौन : सरस्वती परिवारक स्थानान्तरण

अध्याय ३० डकरा–दिहिया, विश्वेश्वर, गौरीश्वर, महामहोपाध्याय हरिश्वर, सरस्वती राम, धराधर, गंगाधर, रघुदेव, रुचिदेव, लक्ष्मीपति आ रुद्रपतिक संग स्थानान्तरण-टिप्पणीकेँ केन्द्र बनबैत अछि। डकरा–दिहिया सँ राजे आ दहोरा दिस गति वंशावलीकेँ चलायमान भूगोल बनबैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहासमे ई गाम-परिवर्तन राजकीय घटना जत्तेक महत्त्वक स्थानीय इतिहास अछि।

८.३१ अध्याय ३१ — नागवाड़ घोषोत : उपाधि-बहुल विद्वत् रजिस्टर

अध्याय ३१ वासुदेव, दिवाकर, बुद्धिकर, गोविन्द, लक्ष्मीनाथ, विद्यापति, दामोदर, रामनाथ, आगमाचार्य देवनाथ, गोपीनाथ, मधुसूदन, जनार्दन, हरिदास, शुभंकर, फकीर, ईशानचन्द्र ठाकुर, लक्ष्मीधर–चित्रधर, दयाशंकर, हरिश्चन्द्र, बाँक बिहारी आ प्रेमबिहारीक विस्तृत नाम-शृंखला अछि। “आगमाचार्य” आ अन्य विद्वत् पद ज्ञान-परम्पराक संकेत अछि, जबकि आधुनिक पेशागत रजिस्टर समय-परिवर्तन देखबैत अछि।

८.३२ अध्याय ३२ — असी एकहरा ग्रामारम्भ

अध्याय ३२ नसीरा देशक पदा, विश्वनाथ, नन्दन, भंजन, भैरम, कन्हूराम, शम्भुनाथ, कुली, भयनाथ, प्रतापनाथ, कालिकान्त, शिवानन्द, पोखरिया आ नसीरा देशक भदारीक संक्षिप्त वंश-मानचित्र अछि। विवाह-जाल अध्यायक मूल संरचना अछि। एकर संक्षिप्त रूप पाँजि सूत्रक निकटता राखैत अछि आ आलोचनात्मक विस्तार मर्यादित अछि।

८.३३ अध्याय ३३ — गंगोरा बुधवाल ग्रामारम्भ

अध्याय ३३ गोंडवाड़ा–फुलबड़िया, हवेली–रढेली, लोटन, रुद्र, रंगाई, रमेश्वर, शिवदत्त, पीताम्बर, धरानाथ, खुशी, डोमाई, भोला, राजेन्द्र आ आमदण्डा समापनकेँ समेटैत अछि। खुशिक बेटी-रेखा आ सिमरवाड़–खौआल सम्बन्ध स्त्री आ गाम-दू रेखाकेँ एकत्र करैत अछि। छोट अध्यायमे पद्धतिगत अनुशासन स्पष्ट अछि।

८.३४ अध्याय ३४ — बढ़ियाँ पवौली ग्रामारम्भ

अध्याय ३४ नसीरा–हवेली सौरिया, रविदत्त, भगीरथ, जगन्नाथ, जनार्दन, विश्वनाथ, राम, रामचन्द्र, रतिनाथ, कमल, नारायण, मनोरथ, राजाराम सँ देवहर सीमा धरि चलैत अछि। सिमरवाड़–खौआल संबंध पुनःआगमनशील स्थान-स्मृति देखबैत अछि। संक्षिप्त वंशरचना अगिला देवहर ग्रामारम्भक सीमा साफ राखैत अछि।

८.३५ अध्याय ३५ — देवहर मूल-मु ग्रामारम्भ

अध्याय ३५ जयकर, सागर, मतिकर, लक्ष्मीकर, गुणाकर, कामेश्वर, राजू, हलधर, नरसिंह, ब्रह्मेश्वर, उमापति, नारायण, हरदत्त, कृष्णदेव, नेहाल, सीताराम, वीरनारायण, रामदुलार आ खड्गनारायणक वंशक संग शाण्डिल्य–ब्रह्मपुरा सीमा धरि पहुँचैत अछि। “मूल” आ गामक संयुक्त शीर्षक सामाजिक वंश-वर्गीकरणक महत्त्व स्पष्ट करैत अछि।

८.३६ अध्याय ३६ — शाण्डिल्य गोत्र ब्रह्मपुरा : गोत्र, विद्वत्ता आ शाखा-सीमा

अध्याय ३६ शाण्डिल्य गोत्रक स्पष्ट संकेतसँ आरम्भ भ’ देल्हन, कन्ह, राम, विश्वेश्वर, श्रीनाथ, धर्मनाथ, विद्याधर, यशोधर, चिन्तामणि, नरहरि, धर्मेश्वर, जयदेव, रूपनारायण, हरिकृष्ण, कृष्णानन्द, आचार्य बुद्धिनाथ आ कनहौली–परबाहा सीमा धरि चलैत अछि। गोत्रक प्रत्यक्ष उल्लेख विवाह-नियमनक संरचनात्मक स्तरकेँ उभारैत अछि।

८.३७ अध्याय ३७ — कनहौली परबाहा : वैयाकरण हलायुध आ आधुनिक पेशागत रजिस्टर

अध्याय ३७ रुचिकर, आनन्दकर, मित्रकर, जसई, राजीव, हरिराम, वैयाकरण हलायुध, बाबूराम, नित्यानन्द, कलानन्द, शारदानन्द, रामानन्द, कृपानन्द, विभूति आदि नामक संग विद्वत्ता सँ आधुनिक पेशागत पद धरि संक्रमण देखबैत अछि। “हलायुध” नाम एतय उद्घाटन अध्यायक ऐतिहासिक हलायुधसँ स्वतः समान व्यक्ति नहि मानल जएबाक चाही; नाम-साम्य वंश-साम्यक प्रमाण नहि अछि।

८.३८ अध्याय ३८ — एकहरा संग्राम ग्रामारम्भ

अध्याय ३८ डोम टेकरीक स्मृति, चतुर्वेदाध्यायी कामदेव, याज्ञिक परशुराम, श्रीधर, बलभद्र, श्रीरंग, सन्तोष, रत्नेश्वर, रुचिकर, हरिनाथ, गंगेश्वर, थेघानन्द, रामानन्द, वासुदेव, उमापति, अभिराम, नेना, पंचानन्द आ महिनारायणकेँ जोड़ैत अछि। चतुर्वेदाध्यायी आ याज्ञिक जेकाँ पद धार्मिक ज्ञान-श्रमक अभिलेखीय चिह्न अछि।

८.३९ अध्याय ३९ — एकहरा संग्राम सिरसिया : समापन रजिस्टर

अध्याय ३९ भोरीलाल झा, चोआलाल, सोनालाल, अचमितलाल, अजवालाल, भूपाललाल, अचकलाल, बनमाली, शिवानन्द, भवानीकान्त, मधुरपति, लालबिहारी, महोपाध्याय श्रीनाथ, वाचस्पति, चन्देश्वर आ अन्तिम आधुनिक वंशज धरि पोथीक उपलब्ध स्रोत-पाठ बन्द करैत अछि। अन्तिम शाखामे महोपाध्याय, धर्माचार्य, मुखिया आ आधुनिक नाँवक संग पुरान–नवीन सातत्य पुनःदृश्य अछि। समापन “उपलब्ध स्रोत”क सीमा मानैत अछि, जे पाठालोचनक दृष्टिसँ उचित अछि।

८.४० अध्याय ४० — समेकित विश्लेषण, शब्दावली आ संदर्भ-उपकरण

अध्याय ४० खण्डक आलोचनात्मक मेरुदण्ड अछि। स्त्री, बेटी, पत्नी, आद्या–अपरा, गाम-भूगोल, चलायमान मूल, विद्वत्/आधुनिक उपाधि, पाठ-भेद, शब्दावली, अध्याय–शाखा सारिणी, नाँव-सूचक, स्थान–प्रवास सूचक आ विवाह–बसावट तालिका पूर्ववर्ती सामग्रीकेँ पुनःखोज योग्य बनबैत अछि। विशेष महत्त्व एहि घोषणाक अछि जे अन्तिम उपकरण “नव वंश” नहि जोड़ैत, बल्कि पहिले व्याख्यायित सामग्रीकेँ समेकित करैत अछि। शोध-संस्करणमे एहि अध्यायकेँ पृष्ठ-स्रोत, मूल पंक्ति आ शाखा-सन्दर्भक अधिक सूक्ष्म संकेतसँ आरो मजबूत कएल जा सकैत अछि।

९. बाह्य ऐतिहासिक सत्यापन : स्रोत-दावा आ पुष्ट तथ्यक भेद

पाँजि पर आधुनिक अकादमिक अध्ययन एहि व्यवस्थाकेँ विवाह-निर्णय, वंश-स्मृति, प्रवास आ सामाजिक भूगोल पढ़बाक स्रोत मानैत अछि। एहि दृष्टिसँ खण्ड ५क मूल स्थापना—पाँजि केवल “ककर पुत्र” सूची नहि, बल्कि विवाह, गाम, मूल आ गतिशील सामाजिक सम्बन्धक अभिलेख अछि—व्यापक शोध-परम्परासँ मेल खाइत अछि।

उद्घाटन अध्यायमे हलायुध आ बल्लाल सेनक सम्बन्धक प्रस्तुति अधिक सावधानी माँगैत अछि। संस्कृत पाण्डुलिपि-सूचनासभ हलायुधकेँ लक्ष्मणसेनक आश्रित, न्याय-प्रशासक/मंत्री आ विद्वान रूपेँ स्पष्ट करैत अछि; बल्लाल सेनक संग अप्रत्यक्ष काल-सम्बन्ध वा सम्मान-परम्परा अलग प्रश्न अछि। अतः “बल्लाल सेनक महामात्य हलायुध”केँ निश्चित ऐतिहासिक वाक्यक बदला “सेनकालीन हलायुध, जकर लक्ष्मणसेन-संबन्ध अधिक सुरक्षित अछि” रूपेँ आलोचनात्मक टिप्पणी देब उचित रहत।

४५० ईस्वी–२००९ ईस्वीक काल-सीमा स्रोत-ग्रन्थक शीर्षकीय दावा अछि। एहि खण्डक भीतर सभ पीढ़ीक स्वतंत्र तिथि नहि अछि; पोथी स्वयं स्वीकार करैत अछि जे समय वंश, उपाधि, ज्ञात शासक, प्रवास, आधुनिक डिग्री आ पेशागत संकेतमे अन्तर्निहित अछि। ताहि कारण शीर्षकीय काल-सीमाकेँ “सभ प्रविष्टिकेँ प्रत्यक्ष तिथि-सिद्धि” नहि मानल जाए।

मूल–गोत्र–प्रवर, बेटी-विवाह, बहुविवाह, स्थानान्तरित निवास आ उपाधि-स्मृति सामाजिक इतिहास लेल मूल्यवान अछि; मुदा वर्तमान विवाह-निर्णय वा जैविक वंश-सत्य लेल एहि व्याख्यात्मक खण्डकेँ अकेला निर्णायक स्रोत मानब उचित नहि। पोथी स्वयं जीवित पाँजिकार आ पूर्ण पारिवारिक अभिलेखक परामर्शक आवश्यकता कहैत अछि—ई आत्म-सीमा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।

१०. पोथीक प्रमुख उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

१०.१ प्रमुख उपलब्धि

पहिल, पाँजि-पठनक स्पष्ट व्याकरण बनाओल गेल अछि। दोसर, स्त्री-रेखाकेँ वंश-नियमनक केन्द्रमे पुनर्स्थापित कएल गेल अछि। तेसर, गाम, मूल, गोत्र, प्रवास आ आधुनिक पेशाकेँ एकहि सामाजिक मानचित्रमे पढ़ल गेल अछि। चारिम, संदिग्ध पाठकेँ अनिश्चित राखबाक नैतिकता स्थापित अछि। पाँचम, अध्याय ४०क सूचक-यन्त्र शोधक उपयोगिता बहुत बढ़बैत अछि।

१०.२ शैलीगत सीमा

बहुत अध्याय अन्तमे एकहि सूत्र—वंश, स्थान, विवाह, उपाधि, शाखा-सातत्य—पुनरावृत्त करैत अछि। शिक्षण-पाठ लेल ई उपयोगी अछि, मुदा

शोध-पत्रिका शैलीमे आवृत्ति घटा क' अध्याय-विशिष्ट निष्कर्ष बढ़ाओल जाए त गद्य अधिक सघन बनत। अध्यायसभक लम्बाइ सेहो बहुत असमान अछि; आरम्भिक अध्याय बहुत विस्तृत, अन्तिम ग्रामारम्भ अध्याय अपेक्षाकृत छोट अछि।

१०.३ स्रोत-उद्धरणक सीमा

किछु अध्याय स्रोत-फाइल वा पृष्ठ-स्पैनक उल्लेख करैत अछि, सभ नहि। शोधपरक उपयोग लेल सभ प्रमुख वंश-दावाक संग मूल पृष्ठ/पंक्ति-संकेत, प्रत्यक्ष देवनागरी सूत्र आ पाठ-भेद देल जाए त स्वतंत्र सत्यापन सहज होयत।

१०.४ सामाजिक आलोचनाक सीमा

पोथी विवाह-अधिकार, प्रतिष्ठा आ विद्वत् श्रेणीकेँ अभिलेखीय तथ्य रूपेँ पढ़ैत अछि, मुदा एहि संस्थासभक बहिष्करणकारी वा शक्ति-संबन्धी पक्ष सीमित रूपेँ खुलैत अछि। अभिलेखमे ककर आवाज अधिक अछि, ककर कम; स्त्रीक नाँव अछि मुदा ओकर स्वयं कथन कहाँ अछि; गैर-प्रतिष्ठित पेशा वा समूह कतेक दृश्य अछि—ई प्रश्न भविष्यक आलोचनात्मक अध्ययन लेल खुलल रहैत अछि।

१०.५ ऐतिहासिक भाषा

“सभ्यतागत”, “अविच्छिन्न”, “जीवित” सन व्यापक विशेषण प्रभावशाली अछि, मुदा सभ ठाम प्रमाणक स्तर एकरूप नहि। शोध-संस्करणमे “स्रोत संकेत करैत अछि”, “एहि खण्डक भीतर देखाइत अछि”, “उपलब्ध प्रविष्टिक आधारपर” सन सीमा-वाचक भाषा अधिक उपयुक्त होयत।

११. शुद्ध मैथिली निखार आ पारिभाषिक ऑडिट

मूल पोथी मुख्यतः अंग्रेजी गद्य मे अछि, बीच-बीचमे देवनागरी पाँजि-पद सुरक्षित अछि। ताहि कारण “मैथिली निखार” दू स्तरपर लागू होइत अछि—एहि शोध-समीक्षाक भाषा शुद्ध मैथिली राखब, आ मूल पाँजि-पदक देवनागरी रूपमे अनावश्यक रोमन निर्भरता घटाब।

विषय	सम्पादकीय निखार	टिप्पणी
पाँजि नाम	पाँजि	समीक्षात्मक मैथिलीमे “पाँजि”

		एकरूप; मूल उद्धरणक भिन्न रूप यथावत।
सँ / सँ	सँ	मैथिली गद्यमे “सँ”; स्रोत-पंक्तिक प्रतिलिपिमे मूल रूप बचाओल जाए।
प्र0 / नी0 / म0म0उ0	प्र० / नी० / म०म०उ०	देवनागरी शून्य-चिह्नसँ रूप-साम्य; मूल स्रोत-चिह्न आवश्यक हो त टिप्पणी देल जाए।
मूल, गोत्र, प्रवर	मूल, गोत्र, प्रवर	अनुवादक अंग्रेजी पदक अनावश्यक पुनरावृत्ति नहि।
ग्रामारम्भः / ग्रामारम्भ	ग्रामारम्भ	व्याख्यात्मक मैथिलीमे एकरूप; मूल संस्कृत सूत्र उद्धरणमे विसर्ग सुरक्षित।
आद्या / अपरा	आद्या / अपरा	यान्त्रिक “पहिल पत्नी/दोसर पत्नी” नहि; प्रसंग अनुसार विवाह वा शाखा।
दौ / दु दौ	दौ / दु दौ	एक शब्दक स्थिर अनुवाद नहि; सम्बन्ध-कार्य प्रसंगसँ निश्चित।
देशे / वासी	देशे / वासी	क्षेत्र, निवास, विवाह-गाम वा शाखा-लेबलक भेद स्पष्ट कएल जाए।
रोमन उपाधि	देवनागरी वर्णन	मूल आधुनिक डिग्री वा पद देबाक जरूरत हो त रोमन रूप केवल कोष्ठकमे।
स्थान-नाम	स्रोत-रूप + मानक रूप	सलामपुर/सलेमपुर,

		कोबरा/कोहबरा सन भेदकेँ चुपचाप एकरूप नहि कएल जाए।

एहि शोध-समीक्षामे रोमन/अंग्रेजी शब्द जहाँ मूल ग्रन्थ-नामक पहचान लेल आवश्यक अछि, केवल कोष्ठकक भीतर देल गेल अछि। मुख्य विवेचनात्मक वाक्य देवनागरी मैथिलीमे राखल गेल अछि।

१२. निष्कर्ष

'डिकोडिंग द पाँजि ऑफ मिथिला, खण्ड ५' मिथिलाक पाँजि-पाठकेँ आधुनिक पाठक लेल खोलबाक महत्वाकांक्षी आ उपयोगी प्रयास अछि। पोथीक सर्वश्रेष्ठ योगदान ई जे ओ वंशावलीकेँ पितृ-श्रृंखला तक सीमित नहि करैत; बेटी, पत्नी, माता, गाम, मूल, गोत्र, उपाधि, उपनाम, प्रवास, पेशा आ मौन शाखाकेँ एकहि सम्बन्ध-व्यवस्थामे पढ़ैत अछि। अध्याय १ पद्धतिक व्याकरण दैत अछि; अध्याय २–३९ ओकर दीर्घ प्रयोग करैत अछि; अध्याय ४० पुनरावलोकनक यन्त्र दैत अछि। एहि स्थापत्यसँ पोथी शोधक, पारिवारिक इतिहासकार आ पाँजि-पाठक तीनू लेल उपयोगी बनैत अछि। भारतीय आलोचना एहि कृतिक औचित्य, व्यञ्जना, सूत्रात्मकता आ रूपक-शक्तिकेँ रेखांकित करैत अछि; पाश्चात्य समीक्षा नातेदारी-संरचना, अभिलेख-सत्ता, सूक्ष्म संकेत, स्रोत-समीक्षा आ गैर-रेखीय समयक प्रश्न उठबैत अछि; नव्य-न्याय प्रमाण, संशय, अवच्छेदक, अभाव आ अनुमानक अनुशासन स्पष्ट करैत अछि; विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति राजकीय कालक्रमक संग स्त्री-स्मृति, गाम, प्रवास, ज्ञान-श्रम, आधुनिक पेशा आ रिक्तिकेँ समानान्तर इतिहास बनबैत अछि। आलोचनात्मक संशोधनक मुख्य दिशा चार अछि : सभ अध्यायमे समान स्रोत-पृष्ठ/पंक्ति निर्देश; व्यापक ऐतिहासिक दावापर अधिक सीमा-वाचक भाषा; आवृत्त निष्कर्षक संक्षेप; आ अभिलेखीय शक्ति/बहिष्करणक सामाजिक समीक्षा। हलायुध–सेन सम्बन्ध जेकाँ बिन्दुपर मूल परम्परा आ बाह्य ऐतिहासिक पुष्टि अलग कएल जाए। एहि सुधारक बाद खण्ड ५ केवल "डिकोडिंग" नहि, मिथिलाक वंश-स्मृति, विवाह-भूगोल आ ज्ञान-इतिहासक एक अत्यन्त मजबूत आलोचनात्मक संदर्भ-ग्रन्थ बनि सकैत अछि।

ग्रन्थसूची

१. पाँजि : मिथिलाक वंशावली मानचित्रण, ४५० ईस्वी–२००९ ईस्वी, खण्ड २ (Volume II Panji: Genealogical Mapping of Mithila, 450 AD–2009 AD)

२. डिकोडिंग द पाँजि ऑफ मिथिला, खण्ड ५ (Decoding the Panji of Mithila, Volume V)

३. द जीनियॉलजीज ऐण्ड जीनियॉलजिस्ट्स ऑफ मिथिला : अ स्टडी ऑफ द पाँजि ऐण्ड द पाँजिकार्स (The Genealogies and Genealogists of Mithila: A Study of the Panji and the Panjikars)

४. हिस्ट्री ऑफ नव्य-न्याय इन मिथिला (History of Navya-Nyaya in Mithila)

५. तत्त्वचिन्तामणि

६. न्यायसूत्र

७. नाट्यशास्त्र

८. ध्वन्यालोक

९. काव्यप्रकाश

१०. वक्रोक्तिजीवित

११. औचित्यविचारचर्चा

१२. द हिस्टोरियन्स क्राफ्ट (The Historian’s Craft)

१३. क्लूज, मिथ्स, ऐण्ड द हिस्टोरिकल मेथड (Clues, Myths, and the Historical Method)

१४. द एलिमेन्टरी स्ट्रक्चर्स ऑफ किनशिप (The Elementary Structures of Kinship)

१५. स्ट्रक्चरल एन्थ्रोपॉलजी (Structural Anthropology)

१६. नैरेटिव डिस्कोर्स : ऐन एसे इन मेथड (Narrative Discourse: An Essay in Method)

१७. द आर्कियोलॉजी ऑफ नॉलेज (The Archaeology of Knowledge)

१८. टाइम ऐण्ड नैरेटिव (Time and Narrative)

१९. मेटाहिस्ट्री (Metahistory)

२०. नोटिसेज ऑफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स (Notices of Sanskrit Manuscripts)

आलेख ४७ · पञ्जी, दर्शन, भाषा आ समानान्तर इतिहास

डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड ६

सारांश

ई शोधात्मक समीक्षा मिथिलाक पञ्जी-परम्पराक एक अत्यन्त संवेदनशील आ विवाद-सक्षम अंश—दूषण पञ्जी—केँ केन्द्रमे रखने “डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला, खण्ड छहम”क सम्पूर्ण पाठ-रचना, पद्धति, तर्क, भाषिक विन्यास आ ऐतिहासिक अभिप्रायकेँ जाँचैत अछि। मूल ग्रन्थ पञ्जीकेँ केवल विवाह-विवरणक पोथी नहि, बल्कि वंश, मूल, शाखा, गोत्र, प्रवर, मूलग्राम, मातृक-रेखा, स्त्री-संबंध, प्रव्रजन, सामाजिक सीमा, स्मृति, विस्मरण आ पुनर्सामाजीकरणक संयुक्त अभिलेख मानैत अछि। एहि समीक्षामे अग्रलेखीय सामग्री, अध्याय १–३०, प्रकरण १–९७क चारि विश्लेषण-खण्ड, तथा परिशिष्ट क–ट सभकेँ क्रमशः जाँचल गेल अछि। भारतीय आलोचनामे रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्य; पाश्चात्य समीक्षामे अभिलेख, सत्ता, स्मृति आ सूक्ष्म-इतिहास; नव्य-न्यायमे प्रमाण, व्याप्ति, अवच्छेदक, सम्बन्ध, अभाव आ अनुमान; तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे पाठ, स्थान, काल, स्त्री-रेखा, हाशियाक समुदाय आ स्रोत-परतकेँ समानान्तर पढ़बाक पद्धति प्रयुक्त अछि। निष्कर्षतः, ग्रन्थक सबसँ पैघ उपलब्धि दूषणकेँ “नैतिक दोष”सँ “ऐतिहासिक संकेत”मे रूपान्तरित करब, स्त्री-रेखाकेँ वंश-स्मृतिक केन्द्रमे आनब, आ “छठम पीढ़ी”क सामाजिक विस्मरणकेँ पुनर्सामाजीकरणक अभिलेखीय सिद्धान्त रूपमे देखब अछि। कमजोरी मुख्यतः प्रमाण-परतकेँ अधिक कठोर स्रोत-समीक्षा, तिथिकरण, पाठभेद, प्रतिलिपि-विज्ञान, आ सांख्यिकीय समाहारसँ आर स्पष्ट बनाबैमे अछि।

बीजशब्द

डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला : खण्ड ६ · मिथिला · वंश-अभिलेख · इतिहासलेखन · प्रमाण-विवेचन

१.३९. गजेन्द्र ठाकुर- डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला’-६- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

दूषण-पञ्जीक कठिन अभिलेख आ मिथिलाक सामाजिक स्मृति

“डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला, खण्ड छहम” पर विस्तृत शोधात्मक साहित्यिक समीक्षा

(Decoding the Panji of Mithila, Volume VI)

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य आलोचना, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक संयुक्त परीक्षण

शोध-आलेख

आधार-पाठ: गजेन्द्र ठाकुरक २४७-पृष्ठीय खण्ड, अग्रलेख, ३० अध्याय, ९७ दूषण-प्रकरण आ परिशिष्ट क–ट (A–K) सहित।

सारांश

ई शोधात्मक समीक्षा मिथिलाक पञ्जी-परम्पराक एक अत्यन्त संवेदनशील आ विवाद-सक्षम अंश—दूषण पञ्जी—केँ केन्द्रमे रखने “डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला, खण्ड छहम”क सम्पूर्ण पाठ-रचना, पद्धति, तर्क, भाषिक विन्यास आ ऐतिहासिक अभिप्रायकेँ जाँचैत अछि। मूल ग्रन्थ पञ्जीकेँ केवल विवाह-विवरणक पोथी नहि, बल्कि वंश, मूल, शाखा, गोत्र, प्रवर, मूलग्राम, मातृक-रेखा, स्त्री-संबंध, प्रव्रजन, सामाजिक सीमा, स्मृति, विस्मरण आ पुनर्सामाजीकरणक संयुक्त अभिलेख मानैत अछि। एहि समीक्षामे अग्रलेखीय सामग्री, अध्याय १–३०, प्रकरण १–९७क चारि विश्लेषण-खण्ड, तथा परिशिष्ट क–ट सभकेँ क्रमशः जाँचल गेल अछि। भारतीय आलोचनामे रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्य; पाश्चात्य समीक्षामे अभिलेख, सत्ता, स्मृति आ सूक्ष्म-इतिहास; नव्य-न्यायमे प्रमाण, व्याप्ति, अवच्छेदक, सम्बन्ध, अभाव आ अनुमान; तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे पाठ, स्थान, काल, स्त्री-रेखा, हाशियाक समुदाय आ स्रोत-परतकेँ समानान्तर पढ़बाक पद्धति प्रयुक्त अछि। निष्कर्षतः, ग्रन्थक सबसँ पैघ उपलब्धि दूषणकेँ “नैतिक दोष”सँ “ऐतिहासिक संकेत”मे रूपान्तरित करब, स्त्री-रेखाकेँ वंश-स्मृतिक केन्द्रमे आनब, आ “छठम पीढ़ी”क सामाजिक विस्मरणकेँ पुनर्सामाजीकरणक अभिलेखीय सिद्धान्त रूपमे देखब अछि। कमजोरी मुख्यतः प्रमाण-परतकेँ अधिक कठोर स्रोत-समीक्षा, तिथिकरण,

पाठभेद, प्रतिलिपि-विज्ञान, आ सांख्यिकीय समाहारसँ आर स्पष्ट बनाबैमे अछि।

मुख्य शब्द: पञ्जी; दूषण पञ्जी; मिथिला; वंशावली; मातृक-रेखा; गोत्र; मूल; मूलग्राम; उतेढ़; नव्य-न्याय; स्मृति; सूक्ष्म-इतिहास; अभिलेख; सामाजिक पुनर्संगठन।

१. अध्ययनक उद्देश्य आ शोध-प्रश्न

एहि लेखक उद्देश्य मूल ग्रन्थक सारांश देब मात्र नहि, बल्कि ओकर सम्पूर्ण स्थापत्य आ तर्क-विन्यासक परीक्षण करब अछि। ग्रन्थ स्वयं दूषण पञ्जीकेँ मिथिलाक “कठिन सत्य” मानैत अछि; अतः समीक्षा चारि प्रधान प्रश्न उठबैत अछि। पहिल, की पञ्जीक सात प्रकारक अन्तर्सम्बन्धक व्याख्या दूषण-प्रकरणकेँ पर्याप्त ऐतिहासिक सन्दर्भ दैत अछि? दोसर, की ९७ प्रकरणक पाठ स्त्री, दलित-अनुशिल्पी, मुसलमान/यवनी, विधवा, दासी, अज्ञात मातृक आ प्रव्रजन-सम्बद्ध रेखाकेँ बिना नव कलंक पैदा कएने पढ़ि पबैत अछि? तेसर, “छठम पीढ़ी”क सिद्धान्त कतेक सामाजिक-ऐतिहासिक महत्त्व रखैत अछि? आ चारिम, ग्रन्थक भाषिक, स्रोतगत आ पद्धतिगत अनुशासन कत्तऽ अत्यन्त सफल आ कत्तऽ आर परिशुद्धि माँगैत अछि।

२. आधार-पाठक सम्पूर्ण संरचना

आधार-पाठक शीर्षक-पृष्ठ स्पष्ट करैत अछि जे ई खण्ड दूषण पञ्जी पर आधारित अछि आ अग्रलेख, अध्याय १–३० तथा परिशिष्ट क–ट समेटैत अछि। लेखकक नोट दूषण-अभिलेखकेँ लुकाबै अथवा वंशीय शस्त्र बनाबै—दूनू प्रवृत्तिक विरुद्ध राखैत अछि। लिप्यन्तरण-नोट मिथिलाक्षर/तिरहुता सँ देवनागरी रूपान्तरणकेँ संरक्षणक परत मानैत अछि। संक्षेप आ मुख्य पदक सूची मूल, शाखा, गोत्र, पत्र, दूषण, उतेढ़, अस्वाजन्य/सिद्धान्त-पत्र, मातृक, सुता, अज्ञात आदि पदक कार्यार्थ दैत अछि। स्रोत-नोट दूषण पञ्जी, पञ्जी-परिचय, वंशावली, स्कैन-स्रोत आ पूर्व पञ्जी-सामग्रीकेँ आधार बनबैत अछि। एहि प्रकार, मुख्य अध्याय शुरू होइते पहिने ग्रन्थ नैतिकता, शब्दावली आ स्रोतक त्रिस्तरीय चौखट ठाढ़ करैत अछि।

भाग	विषय	शोध-महत्त्व

अग्रलेखीय भाग	लेखक-नोट, लिप्यन्तरण-नोट, संक्षेप, स्रोत-नोट, विषय-सूची	पाठक लेल नैतिक आ तकनीकी प्रवेश-द्वार
अध्याय १–१०	पञ्जी-तन्त्र, दूषणक अर्थ, नैतिकता, संस्थागत इतिहास, विवाह-अर्हता, गोत्र–मूल–मूलग्राम, पठन-पद्धति	अभिलेखीय व्याकरण
अध्याय ११–१७	अज्ञात, देवदासी/दासी, दलित-अनुशिल्पी, मुसलमान/यवनी, विधवा, गंगेश, नामित स्त्रीसभ	विषयगत सामाजिक इतिहास
अध्याय १८–२१	प्रकरण १–९७	क्रमिक अभिलेख-वाचन
अध्याय २२–३०	छठम पीढ़ी, पदावली, बीजी पुरुष, क्षेत्रीय शाखा, क्षति, स्वामित्व, संरक्षण, आधुनिक पाठ, निष्कर्ष	संश्लेषण आ नैतिक प्रतिपादन
परिशिष्ट क–ट	शब्दकोश, गोत्र–प्रवर, मूल–मूलग्राम, उच्चारण, प्रकरण-सूची, स्त्री-सूची, समुदाय-सूची, पदवी, स्रोत-टिप्पणी, नैतिक नोट	सन्दर्भ-सुविधा आ शोध-उपकरण

३. आलोचनात्मक पद्धति

३.१ भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

ई ग्रन्थ इतिहास-शोध अछि, तथापि ओकर प्रस्तुति साहित्यिक संरचनासँ मुक्त नहि। भारतीय काव्यशास्त्रीय कसौटी पर रसकेँ एतय सौन्दर्य-रस मात्र नहि, बल्कि करुण, बीभत्स, शान्त आ नैतिक विवेकक संयुक्त पाठ-अनुभव रूपमे बुझल गेल अछि। ध्वनि-सिद्धान्तक उपयोग ओहि अर्थ-परत लेल उपयोगी अछि जे अभिलेखक संक्षिप्त पद—“माता अज्ञात”, “सुता”, “यवनी”, “विधवा”, “दासी”, “चर्मकारिणी”—प्रत्यक्ष कथनसँ अधिक सामाजिक संकेत करैत अछि। वक्रोक्ति दृष्टि ग्रन्थक “काला पोथी” रूपक, “कठिन सत्य”, “अभिलेखक अन्हार” सन अभिव्यक्तिक आलोचना करैत अछि; औचित्य सिद्धान्त जाँचैत अछि जे संवेदनशील समुदाय-वाचक शब्द कत्तऽ स्रोत-निष्ठा लेल आवश्यक अछि आ कत्तऽ आधुनिक व्याख्यामे संयम चाहैत अछि।

३.२ पाश्चात्य आलोचनात्मक दृष्टि

पाश्चात्य आलोचनामे तीन धार एक-दोसरकेँ पूरक बनैत अछि। अभिलेख-सिद्धान्त पूछैत अछि जे कोन तथ्य सुरक्षित भेल, कोन मौन रहि गेल, आ अभिलेखक चयन सत्ता-संरचनासँ कोना जुड़ल अछि। स्मृति-विमर्श अतीतक निशान, सामुदायिक विस्मरण आ इतिहास-लेखनक बीच तनाव पर ध्यान दैत अछि। सूक्ष्म-इतिहास छोट संकेत—एक मातृक नाम, एक विवाह-मार्ग, एक मूलग्राम, एक अज्ञात प्रविष्टि—सँ पैघ सामाजिक संरचना देखैत अछि। एहि दृष्टिसँ ग्रन्थक सबसँ उर्वर भाग ओ अछि जतय संक्षिप्त वंशीय प्रविष्टि केँ सामाजिक संसारक संकेत मानल गेल अछि।

३.३ नव्य-न्यायीय परीक्षण

नव्य-न्याय दृष्टि एहि ग्रन्थक तर्क-स्वच्छता जाँचबाक लेल विशेष उपयोगी अछि। प्रत्येक दूषण-प्रकरणमे पक्ष होइत अछि—ककर वंशीय स्थिति विवेच्य अछि; साध्य होइत अछि—कोन प्रकारक सम्बन्ध अथवा दूषण-चिह्न स्थापित होइत अछि; हेतु होइत अछि—मातृक, सुता, पत्नी, अज्ञात, जाति-सूचक वा स्थान-सूचक अभिलेख; व्याप्ति अथवा सम्बन्ध-नियम पञ्जी-व्याकरण दैत अछि; आ उपाधि ओ सभ शर्त अछि जे अतिशय निष्कर्षकेँ रोकैत अछि। “अज्ञात”केँ “अशुद्ध” कहि देब नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ हेत्वाभास बनि सकैत अछि, कारण अज्ञातता आ नैतिक दोषक अनिवार्य व्याप्ति सिद्ध नहि। एहि

ग्रन्थक नैतिक बल एतहि अछि जे ई स्रोत-शब्द आ आधुनिक निष्कर्षक बीच अवच्छेदक ठाढ़ करैत अछि।

३.४ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

एहि समीक्षामे “विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति” कैं कार्यपरिभाषा रूपमे एना ग्रहण कएल गेल अछि: एकहि अभिलेखीय कथनकैं पाँच समानान्तर रेखामे जाँचब—पाठ-रेखा, वंश-रेखा, स्थान-रेखा, सामाजिक हाशिया/स्त्री-रेखा, आ काल-रेखा। छठम रेखा स्रोत-परत अछि, जतय मूल लिपि, देवनागरी लिप्यन्तरण, तालिका, व्याख्या आ आधुनिक नैतिक पुनर्पाठ पृथक् राखल जाइत अछि। एहि पद्धतिक लाभ ई जे एकल “वंशीय सत्य”क बदला बहु-रेखीय इतिहास उभरैत अछि।

४. अग्रलेखीय सामग्रीक आलोचनात्मक परीक्षण

शीर्षक-पृष्ठ आ कॉपीराइट भाग ग्रन्थकैं एक निरन्तर विद्वत्-कृति रूपमे स्थापित करैत अछि। समर्पण “स्मृति-रक्षक” पञ्जीकार, लिपिकार, परिवार, पाठक आ संरक्षण-कर्मीसभकैं दैत अछि; ई अभिलेखक सामुदायिक प्रकृतिक मान्यता अछि। लेखकक नोट दूषण पञ्जीकैं लज्जा वा गर्व-दूनू के शस्त्र बनाबैसँ रोकैत अछि आ “पढ़ू, नहि लुकाउ”क नीति राखैत अछि। ई नीति शोध-नैतिकताक स्पष्ट घोषणा अछि।

लिप्यन्तरण-नोटक महत्त्व एहि कारण अधिक अछि जे पञ्जीक अनेक तकनीकी पद सामान्य आधुनिक शब्द नहि। ग्रन्थ मूल, शाखा, गोत्र, पत्र, दूषण, उतेढ़, अस्वाजन्यपत्र, मातृक, सुता, दौहित्र, अज्ञात, विधवा, यवनी, चर्मकारिणी, रजकी, पथ-पतिता आदि कैं अभिलेखीय पद मानैत अछि। एहि निर्णयसँ स्रोत-शब्दक ऐतिहासिकता बचैत अछि। तथापि शोध-संस्करणमे एक पृथक् “पाठभेद-सूची” रहित तँ तिरहुता–देवनागरी रूपान्तरणक सम्भावित विकल्प, अस्पष्ट अक्षर आ सम्पादकीय निर्णय आर पारदर्शी होइत।

५. अध्याय-दर-अध्याय विस्तृत समीक्षा

५.1 अध्याय 1: पञ्जी : मिथिलाक सामाजिक स्मृतिक अभिलेख

पहिल अध्याय पञ्जीकेँ सात प्रकारक प्रणाली रूपमे खोलैत अछि—मूल, शाखा, गोत्र, पत्र, दूषण, उतेढ़ आ अस्वाजन्यपत्र। एकर साहित्यिक शक्ति “नाम”केँ केवल व्यक्ति नहि, बल्कि स्थान, मातृक, विवाह, पद, प्रव्रजन आ सामाजिक विचलनक वाहक बनाबैमे अछि। भारतीय ध्वनि-दृष्टिसँ नामक ई बहुअर्थिता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। ऐतिहासिक दृष्टिसँ अध्याय पञ्जीकेँ जाति-पोथी भरि मानबाक संकुचन तोड़ैत अछि; मुदा एतहि स्रोत-स्तरक कालानुक्रमिक पृथक्करण आर स्पष्ट होइत तँ “सभ्यता-अभिलेख”क दावा अधिक मजबूत बनित।

५.2 अध्याय 2: दूषण पञ्जी आ “काला पोथी”क अर्थ

दोसरा अध्याय दूषणकेँ नैतिक अपवित्रता नहि, “वंशमे आएल क्षरण” अथवा अभिलेखीय व्यवधान रूपमे परिभाषित करैत अछि। ई मूल पुनर्पाठ ग्रन्थक केन्द्रीय तर्क अछि। “काला पोथी” रूपकक औचित्य सावधानीसँ सीमित कएल गेल अछि: काला अर्थ दुष्ट नहि, कठिन स्मृति। पाश्चात्य अभिलेख-विमर्शक दृष्टिसँ ई अध्याय सत्ता द्वारा वर्गीकृत स्मृतिक आलोचना अछि; नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ ई स्रोत-लक्षण आ आधुनिक नैतिक निर्णयक भेद स्पष्ट करैत अछि।

५.3 अध्याय 3: अभिलेख, कलंक आ ऐतिहासिक न्याय

तेसर अध्याय सम्पूर्ण ग्रन्थक नैतिक संविधान अछि। “अभिलेख निर्णय नहि” ई सूत्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। स्त्रीकेँ दूषणक कारण नहि, ऐतिहासिक व्यक्ति आ सम्बन्ध-वाहक मानब; समुदाय-सूचक शब्दकेँ ऐतिहासिक करब; अज्ञातता कँ रिक्तता नहि मानब—ई तीन बिन्दु ग्रन्थकेँ सनसनीखेज वंश-लेखनसँ अलग करैत अछि। आलोचनात्मक रूपसँ, “एजेंसी” अथवा स्त्रीक स्वायत्त क्रियाशीलताक प्रमाण जतय स्रोत मौन अछि, ओतय ग्रन्थ प्रायः सम्भावना रूपमे बात करैत अछि; एहि संयमकेँ आर निरन्तर राखल जा सकैत अछि।

५.4 अध्याय 4: खंडीकरण पूर्वक पञ्जी-तन्त्र

चौठ अध्याय ई स्थापित करबाक प्रयास करैत अछि जे बादक शाखा-विभाजन ऐतिहासिक अछि, सनातन नहि। माधव सिंहक आदेशसँ शाखा-पोथी

अलग भेल—ई कथन सामाजिक वर्गीकरणक ऐतिहासिकता देखबैत अछि। विदेह समानान्तर पद्धतिमे एतय पाठ-रेखा आ संस्थागत काल-रेखाकेँ मिलान आवश्यक अछि; तिथि, आदेशक प्रत्यक्ष दस्तावेज, आ भिन्न पञ्जी-प्रतिसंस्करणक तुलनात्मक प्रमाण भविष्यक संस्करणमे जोड़ल जाए तँ अध्यायक स्थापना आर कठोर बनत।

५.5 अध्याय 5: हरिसिंहदेव, पञ्जीकार आ संस्थागत आरम्भ

पाँचम अध्याय पारिवारिक स्मृतिसँ सार्वजनिक अभिलेखक संक्रमण पर केन्द्रित अछि। हरिसिंहदेवक स्मृत भूमिका, पञ्जीकारक दायित्व, अस्वजन/सिद्धान्त-पत्र आ बीजी पुरुष सन इकाईसभ विवाह-अर्हताकेँ प्रशासनिक रूप दैत अछि। अध्याय संस्थागत इतिहास आ सामाजिक तकनीकक बीच पुल अछि। नव्य-न्यायीय कसौटी पर “१३२६ ईस्वी” सन तिथि यदि प्रत्यक्ष स्रोत-प्रमाणक श्रेणी सहित दिहल जाए तँ प्रमाणमूलकता आर स्पष्ट रहत।

५.6 अध्याय 6: उतेढ़, सपिण्ड, स्वजन आ विवाह-अर्हता

छठम अध्याय पञ्जीकेँ सूचना-प्रणाली रूपमे देखबैत अछि। उतेढ़ केवल पीढ़ी गिनती नहि, निषिद्ध नाताक दूरी नापबाक औजार अछि। मातृक-रेखाक महत्त्व एतय निर्णायक अछि; ई दिखबैत अछि जे पुरुष-प्रधान वंशावलीक भीतर विवाह-अर्हता स्त्री-पक्ष बिना अपूर्ण अछि। नव्य-न्याय दृष्टिसँ ई अध्याय सम्बन्ध-निर्णयक नियम-समूह प्रस्तुत करैत अछि, परन्तु नियमक भिन्न क्षेत्रीय रूप अथवा अपवादक पृथक् सूची शोध उपयोगिता बढ़ा सकैत अछि।

५.7 अध्याय 7: गोत्र, प्रवर, मूल, मूलग्राम : प्रविष्टिक व्याकरण

सातम अध्याय पञ्जी-पंक्तिक संक्षिप्त व्याकरण खोलैत अछि। गोत्र व्यापक वंश-क्षेत्र, प्रवर अनुष्ठानिक ऋषि-परम्परा, मूल जड़-स्मृति, मूलग्राम स्थानिक शाखा, बीजी पुरुष स्मरणीय आरम्भ-बिन्दु, सुता/मातृक/दौहित्र स्त्री-रेखीय संकेत—ई व्याख्या बादक ९.७ प्रकरण पढ़बाक अनिवार्य आधार अछि। अध्यायक सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि “पहिने व्याकरण, तकर बाद निर्णय”क पद्धति अछि।

५.8 अध्याय 8: बीस गोत्र आ १६७ मूल

आठम अध्याय वर्गीकरणक विस्तृत मानचित्र बनबैत अछि। औपचारिक आ लोक-उच्चारणक भेद, प्रमुख मूलक श्रेणी, पुनरावृत्त मूल, आ सामाजिक रैंक बनबाक प्रक्रिया देखाओल गेल अछि। आलोचनात्मक रूपसँ संख्या-संबंधी सावधानी स्वयं ग्रन्थ स्वीकारैत अछि; एहि कारण तालिकाक प्रत्येक मूलक स्रोत-स्थान, पाठभेद आ संस्करण-संख्या यदि दिहल जाए तँ भविष्यक शोधकर्ता लेल अत्यन्त उपयोगी होइत।

५.9 अध्याय 9: मूल आ प्रव्रजन : भूगोलसँ वंश-स्मृति

नवम अध्याय स्थानकेँ जीवित स्मृति बनबैत अछि। माण्डर, दरिहरा, सरिसव, सोदरपुर आदि केवल ग्राम नहि, वंशीय स्मृति-नोड बनैत अछि। विदेह समानान्तर पद्धतिक दृष्टिसँ ई अध्याय अत्यन्त उर्वर अछि, कारण एकहि प्रकरणकेँ मूल-स्थान, बादक बसावट, विवाह-मार्ग आ मातृक स्थानक चारि रेखामे पढ़ल जा सकैत अछि। आधुनिक नक्शा वा भू-स्थान निर्देशांक पुस्तकमे नहि अछि; अतः स्थान-इतिहासक सत्यापन अगिला संस्करणक सम्भावित विस्तार अछि।

५.10 अध्याय 10: प्रकरण १–९७ पढ़बाक पद्धति

दसम अध्याय नौ क्षेत्रक विश्लेषण-ढाँचा दैत अछि: प्रकरण-संख्या, पञ्जी-सन्दर्भ, मूल-श्रृंखला, नामित व्यक्ति, सम्बन्ध-सूचक, दूषण-श्रेणी, पीढ़ी-दूरी, सामाजिक निहितार्थ आ आधुनिक ऐतिहासिक पाठ। ई सम्पूर्ण ग्रन्थक पद्धतिगत केन्द्र अछि। “प्रकरण, गाली नहि”क सूत्र स्रोतगत अनुशासन बनबैत अछि। नव्य-न्यायीय भाषामे ई प्रत्येक निष्कर्षक पक्ष, हेतु आ सम्बन्ध स्पष्ट करबाक प्रयत्न अछि।

५.11 अध्याय 11: “अज्ञात”क सामाजिक अर्थ

एगारहम अध्याय अज्ञात वंश, जाति, कुल, कुलशील, माता आदि केँ “शून्य” नहि, अभिलेखीय सीमा मानैत अछि। ई महत्त्वपूर्ण पद्धतिगत सुधार अछि। अभिलेख जे चिन्हित नहि कऽ सकल, ओ सामाजिक रूपसँ अस्तित्वहीन नहि। पाश्चात्य अभिलेख-विमर्शमे ई “मौन”क इतिहास अछि; नव्य-न्यायमे “अभाव” आ “अनुपलब्धि”क भेद याद करबैत अछि—अभिलेखमे नाम नहि भेटब वस्तु-अभावक प्रमाण नहि।

५.12 अध्याय 12: देवदासी, दासी आ स्त्री-रेखीय स्मृति

बारहम अध्याय स्त्री-स्थिति सूचक पुरान पदकेँ सामाजिक अपमानक पुनरावृत्ति बिना पढ़बाक आग्रह करैत अछि। मातृक, पत्नी, सुता, दासी, देवदासी—ई सभ वंश-मार्गक संकेत बनैत अछि। ग्रन्थक शक्ति एहि बातमे अछि जे स्त्रीकेँ “दोष वाहक” सँ “वंशीय तथ्यक केन्द्र” बनबैत अछि। तथापि सेवा, अनुष्ठानिक निर्भरता आ यौन-सत्ता सम्बन्धक विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भ अलग प्रमाणसँ पुष्ट होएबाक चाही; स्रोत जतेक कहैत अछि, समीक्षा ततेकहि पर रुकैत अछि।

५.13 अध्याय 13: दलित आ अनुशिल्पी सम्बन्ध

तेरहम अध्याय चमार/चर्मकारिणी, रजक/रजकी, हाड़ी/हाड़िनी, ताँती, तैलिक, धीवर आदि सूचककेँ विवाह, मातृक वा वंश-मार्ग रूपमे पढ़ैत अछि। ई अध्याय “जाति-सूचक = व्यक्ति-सार”क भ्रान्ति तोड़ैत अछि। सामाजिक इतिहासक दृष्टिसँ एहि प्रविष्टिसभमे परस्पर सम्पर्क, श्रम-समुदाय आ वंशीय अवशोषणक संकेत अछि। पुस्तकक नैतिक संयम प्रशंसनीय अछि; परिमाणात्मक आवृत्ति-सारिणी जोड़ल जाए तँ पैटर्न अधिक स्पष्ट होइत।

५.14 अध्याय 14: मुसलमान आ यवनी सम्बन्ध

चौदहम अध्याय दौलतिजहाँ, चाम्पो यवनी आदि नाम/लेबलक माध्यमे धार्मिक सीमा पार करैत सम्बन्ध पढ़ैत अछि। ग्रन्थ सही रूपसँ “यवनी”केँ आधुनिक मुसलमान समाज पर सामान्यीकृत निर्णय नहि बनबैत अछि। संबंध-मार्ग—माता, पत्नी, पुत्री, वंशज—पहिने पहचानल जाइत अछि। ई दृष्टि साम्प्रदायिक सनसनीकेँ रोकैत अछि। ऐतिहासिक रूपसँ नामक काल, भौगोलिक संदर्भ आ स्थानीय सामाजिक व्यवस्था पर अधिक बाह्य-स्रोत तुलना सम्भव अछि।

५.15 अध्याय 15: विधवापन, पुनर्विवाह आ स्त्रीक छिपल सामाजिक इतिहास

पन्द्रहम अध्याय विधवा वा वार्तिनी विधवा सूचककेँ वंशीय संकट मात्र नहि, स्त्री जीवनक सामाजिक दबावक खिड़की मानैत अछि। बाल-विवाह, विधवापन, पुनर्विवाहक निषेध आ वंशीय वैधता एक दोसरसँ जुड़ैत अछि।

भारतीय औचित्य-दृष्टिसँ अध्याय करुणा आ प्रमाणक संतुलन रखैत अछि; तथापि व्यक्तिगत अनुभवक स्रोत उपलब्ध नहि होएबाक कारण पीड़ा वा प्रतिरोधक विशिष्ट मनोवैज्ञानिक कथनक सीमा स्वीकारल जायब आवश्यक अछि।

५.16 अध्याय 16: गंगेश, तत्त्वचिन्तामणि आ दूषण-अभिलेख

सोलहम अध्याय ग्रन्थक सबसँ संवेदनशील बौद्धिक प्रकरणमे एक अछि। गंगेश सन महान नव्य-न्यायाचार्यक नाम कठिन वंशीय अभिलेखमे आएलाक कारण ग्रन्थ न तऽ बौद्धिक महत्ता घटबैत अछि, न अभिलेख छिपबैत अछि। वल्लभा, चर्मकारिणी-संबंध आ “छठम पीढ़ी”क तर्कक साथ एहि प्रकरणकेँ पढ़ल गेल अछि। नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ स्वयं एहि अध्याय पर कठोर प्रमाण-अनुशासन आवश्यक: अभिलेखीय सम्बन्धक अस्तित्व सँ गंगेशक दार्शनिक कृतित्व विषयक कोनो निष्कर्ष नहि निकलैत—ग्रन्थ अधिकांशतः एहि भेदकेँ सुरक्षित रखैत अछि।

५.17 अध्याय 17: आनन्दा, वल्लभा, मेधा, हीरा, रहमू, सोहागो : नामित स्त्री आ लुप्त मातृक स्मृति

सतरहम अध्याय स्त्री-नामकेँ सूची नहि, इतिहास-खोलबाक बिन्दु बनबैत अछि। आनन्दा, वल्लभा, मेधा, सोहागो, रुद्रमति आदि नाम सामाजिक लेबलक भीतर व्यक्तित्वक अवशेष बचबैत अछि। रहमूक पुत्री सन उदाहरण देखबैत अछि जे पुरुषक नामो कखनो स्त्री-रेखाक प्रवेश-द्वार बनैत अछि। ई अध्याय ग्रन्थक नारी-इतिहास संबंधी सबसँ सशक्त योगदानमे एक अछि।

५.18 अध्याय 18: प्रकरण १–२५ : पहिल क्रमिक पाठ

अठारहम अध्याय पाठक केँ वास्तविक अभिलेख-शिक्षा दैत अछि। अज्ञात मातृक, अन्तर्जातीय मार्ग, कोचराज पत्नी, दौलतिजहाँ, देवदासी-संबंध, पश्चिम देशसँ आगमन, आनन्दा आ पुत्री-रेखा—एहि ब्लॉकमे अनेक प्रकार एकसाथ भेटैत अछि। प्रत्येक प्रकरणकेँ सम्बन्ध-मार्गसँ पढ़बाक नीति पुस्तकक नैतिक दावाकेँ व्यवहारमे उतारैत अछि।

५.19 अध्याय 19: प्रकरण २६–५० : अज्ञात मातृकसँ गंगेश–मेधा धरि

एकोनबिसम अध्याय विधवा, रजक/रजकी स्मृति, बारम्बार अज्ञात माता, निषिद्धकुल, अन्तर्जातीय विवाह, ताँती, गंगेश, वल्लभा आ मेधा धरि पहुँचैत अछि। एहि खण्डक महत्त्व पुनरावृत्ति अछि: एकल सनसनीखेज उदाहरण नहि, बल्कि श्रेणीगत पैटर्न। शोध-दृष्टिसँ प्रकरण-सारिणी उपयोगी अछि; भविष्यक संस्करणमे प्रत्येक प्रविष्टिक मूल प्रतिलिपि-संख्या/छवि-संकेत जोड़ल जाए तँ सत्यापन सुदृढ़ होएत।

५.20 अध्याय 20: प्रकरण ५१–७५ : रुद्रमति, राजक, गोप, तैलिक, महापात्र, यवनी, यादव

बीसम अध्याय सामाजिक मानचित्र आर व्यापक करैत अछि। हाड़िनी/रुद्रमति, रजक परम्परा, गोप पुत्री, चमार हीरू, तैलिक देवाई, महापात्र, चाम्पो यवनी, यादव जयसिंह आ रहमू—एहि प्रविष्टिसभ देखबैत अछि जे दूषण-पञ्जी केवल एक जातिगत सीमा पर केन्द्रित नहि। ई बहु-सम्बन्धी सामाजिक संपर्कक अभिलेख अछि।

५.21 अध्याय 21: प्रकरण ७६–९७ : अंतिम जटिल ब्लॉक

एक्कैसम अध्याय चर्मकारिणी विवाह, परम ब्राह्मण/महापात्र, गुरुपत्नी, यवनी, पश्चिमागमन, पथ-पतिता, विधवा, धीवर दासी आ दासी-विवाह सन संयुक्त श्रेणीसभ समेटैत अछि। अंतिम ब्लॉकक सबसँ पैघ अर्थ ई जे अभिलेख “एक दोष–एक परिवार”क सरल सूत्रमे नहि सिमटैत; सामाजिक गतिशीलता, पेशा, धर्म, लिंग आ क्षेत्र एक-दोसरमे गुंथल अछि।

५.22 अध्याय 22: “छठम पीढ़ी” : दूषण कखन मद्धिम होइत अछि?

बाइससम अध्याय ग्रन्थक नैतिक केन्द्रबिन्दु अछि। मूल प्रकरणक बाद पीढ़ी-दूरी बढ़ैत गेलाक संग “पूर्णतः शुद्ध” मानल जाएबाक उदाहरण देखबैत अछि जे दूषण स्थायी दण्ड नहि छल। आधुनिक समीक्षामे “शुद्ध” शब्दकेँ पुरान विचारधाराक उद्धृत श्रेणी रूपमे बुझब आवश्यक अछि, स्वीकृत नैतिक सत्य रूपमे नहि। सामाजिक विस्मरणकेँ पुनर्सामाजीकरण रूपमे पढ़बाक ई प्रस्ताव मौलिक आ महत्वपूर्ण अछि।

५.23 अध्याय 23: पञ्जी पदावली : कार्यालय, उपाधि, विद्वान आ सामाजिक रैंक

तेइसम अध्याय महामहोपाध्याय, सदुपाध्याय, वैयाकरण, ज्योतिर्विद, आगमाचार्य आ राजकीय/प्रशासनिक पदसभ देखबैत अछि। एहि सँ प्रमाणित होइत अछि जे पञ्जी केवल जैविक वंश नहि, ज्ञान-इतिहास आ कार्यालयीन प्रतिष्ठाक अभिलेख सेहो अछि। सामाजिक रैंकक निर्माण बुझबाक लेल पदवी आ दूषण-चिह्नकेँ एकहि विश्लेषण-फ्रेममे पढ़ब विशेष फलदायी अछि।

५.24 अध्याय 24: बीजी पुरुष आ वंशावलीक तर्क

चौबीसम अध्याय बीजी पुरुषकेँ “सर्वप्रथम जैविक पुरुष” नहि, बल्कि अभिलेखमे सर्वप्रथम स्मरणीय संस्थापक रूपमे परिभाषित करैत अछि। मूल, मूलग्राम, बीजी पुरुष, पत्र-संख्या, शाखा आ वंशज-समूह एक स्मृति-मानचित्र बनबैत अछि। ई भेद मिथक-निर्माण रोकैत अछि आ वंशावलीकेँ अभिलेखीय ज्ञान-पद्धति बनबैत अछि।

५.25 अध्याय 25: उप-टीप, नगरम आ पछुवारी पार

पच्चीसम अध्याय क्षेत्रीय शाखाक प्रशासनिक आवश्यकता पर केन्द्रित अछि। उप-टीप/सोतिपुरा, नगरम/पछुवारी पार आ अन्य शाखा-पोथी बतबैत अछि जे प्रव्रजन आ विवाह-अर्हताकेँ सँभालबाक लेल अभिलेख बहुस्तरीय बनल। “क्षेत्रीय पोथी = जातिगत स्थिरता” मानब गलती होएत; पुस्तक ओकरा अभिलेख-प्रबन्धक वर्ग मानैत अछि।

५.26 अध्याय 26: पञ्जी, पदानुक्रम आ सामाजिक क्षति

छब्बीसम अध्याय ग्रन्थक आत्मालोचनात्मक भाग अछि। पञ्जी स्मृति बचौलक, मुदा सामाजिक रैंक, पञ्जीकारक पतन, बिकौआ समस्या, बाल-विवाह आ विधवापनक वृद्धि सन क्षतिको साक्ष्य राखलक। अभिलेखक महिमा आ सामाजिक हानि दूनू एकसाथ देखब—ई समीक्षक दृष्टिक परिपक्वता अछि।

५.27 अध्याय 27: चोरी, स्वामित्व आ पञ्जी-ज्ञानक संघर्ष

सत्ताइससम अध्याय संरक्षण-श्रम आ सामुदायिक स्वामित्वक द्वन्द्व उठबैत अछि। पूर्व प्रकाशन/जीनोम-मैपिंग कार्य आ बादक श्रेय-विवादक प्रसंगसँ ई सिद्धान्त उभरैत अछि जे पूर्वज सामुदायिक होथि, मुदा संकलन, डिजिटलीकरण, प्रतिलिपि, अनुक्रमण आ सम्पादनक श्रमक श्रेय आवश्यक

अछि। साहित्यिक समीक्षा दृष्टिसँ ई अध्याय व्यक्तिगत विवाद बनबाक खतरा रखैत अछि; ग्रन्थ स्वयं ओकरा व्यापक “श्रेय = संरक्षण नैतिकता”मे रूपान्तरित करैत अछि, जे अधिक उचित अछि।

५.28 अध्याय 28: तिरहुता, देवनागरी, स्कैन आ संरक्षण समस्या

अट्ठाइससम अध्याय भौतिक आ डिजिटल संरक्षणकेँ इतिहास-लेखनक पूर्वशर्त मानैत अछि। लगभग ११,००० छविक अभिलेख, तिरहुता–देवनागरी लिप्यन्तरण, पाम-पत्र/बसहा कागज, स्कैन प्रतिलिपि—ई सभ स्रोत-श्रृंखला बनबैत अछि। आलोचनात्मक जरूरत ई अछि जे हर महत्त्वपूर्ण दावाक संग स्थायी स्रोत-संकेत अथवा फोलियो पहचान हो; पुस्तक कई ठाम संदर्भ दैत अछि, मुदा शोध-संस्करणमे एकीकृत स्रोत-सूची आर उपयोगी होइत।

५.29 अध्याय 29: आज दूषण पञ्जी कोना पढ़ी

उनतीसम अध्याय निषेध आ अनुशासनक व्यावहारिक संहिता अछि: अभिलेखकेँ शस्त्र नहि बनाउ, वंशजकेँ सुरक्षित राखू, स्रोत-लेबल आ आधुनिक पहचान अलग राखू, सम्बन्ध-मार्ग पहिने पढ़ू, समाज-परिवर्तन पर ध्यान दिअ। ई अध्याय सम्पूर्ण ग्रन्थक सार्वजनिक नैतिकता स्पष्ट करैत अछि।

५.30 अध्याय 30: दूषण पञ्जी : मिथिलाक कठिन सत्य

तीसम अध्याय कठोरता आ लचक, स्मृति आ विस्मरण, वर्गीकरण आ अवशोषण, गौरव आ आलोचना—एहि द्वन्द्वसभकेँ समेटैत अछि। निष्कर्षक बल एकपक्षीयता छोड़बामे अछि: पञ्जी न केवल गौरव, न केवल दमन; ई एक जटिल सामाजिक तकनीक अछि जे नियम, उल्लंघन, पीड़ा आ पुनर्सामाजीकरण सभकेँ अभिलेखित करैत अछि।

६. प्रकरण १–९७क समेकित विश्लेषण

चारि प्रकरण-खण्डकेँ एकसाथ देखल जाए तँ दूषण-अभिलेख पाँच प्रमुख प्रकारक सामाजिक तनाव उजागर करैत अछि: (१) अज्ञात अथवा अस्पष्ट मातृक/कुल पहचान; (२) स्त्री-रेखीय अथवा विवाह-रेखीय सीमा-पार सम्बन्ध; (३) जाति/पेशा-चिह्नित समुदाय-संपर्क; (४) मुसलमान/यवनी अथवा क्षेत्रीय बाह्य-संपर्क; आ (५) विधवापन, दासी/देवदासी स्थिति, गुरुपत्नी, पथ-पतिता

आदि नैतिक-सामाजिक वर्गीकरण। ई प्रकार परस्पर पृथक् नहि; अनेक प्रकरणमे दू अथवा तीन परत एकसाथ अछि।

सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य ई जे अभिलेख केवल “चिह्न” नहि रखैत; वंशज, मूल, शाखा आ बादक विवाह-मार्गो लिखैत अछि। एहि कारण सामाजिक निरन्तरता दूषणक बराबर महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। यदि अभिलेखक उद्देश्य केवल निष्कासन रहित, तँ बादक पीढ़ीक श्रृंखला अनावश्यक रहित। वंश-श्रृंखलाक संरक्षण स्वयं पुनर्सामाजीकरणक प्रमाण बनैत अछि।

७. स्त्री-इतिहास : पोथीक अन्तर्निहित पुनर्लेखन

ग्रन्थक एक गम्भीर उपलब्धि ई अछि जे पितृवंशीय संरचनाक भीतर स्त्रीक अनिवार्य उपस्थिति देखबैत अछि। “माता अज्ञात” स्वयं विरोधाभासी अभिलेखीय वाक्य अछि: माँ व्यक्ति रूपमे अदृश्य अछि, मुदा वंश-निर्णयमे निर्णायक। “सुता” पितृरेखासँ दोसर मूलक सम्बन्ध जोड़ैत अछि; “दौहित्र” बेटी-पुत्रकेँ पुनः वंशीय नक्सामे आनैत अछि; “पत्नी” विवाह-सीमाक ठोस मार्ग बनैत अछि। आनन्दा, वल्लभा, मेधा, रुद्रमति, सोहागो, दौलतिजहाँ सन नाम सभ मौन स्त्री-इतिहासक बिन्दु बनैत अछि।

भारतीय ध्वनि-दृष्टिसँ “अज्ञात”क मौन, “सुता”क सम्बन्ध आ नामित स्त्रीक अल्प उपस्थिति मिलि जे अप्रत्यक्ष अर्थ पैदा करैत अछि, ओ ग्रन्थक साहित्यिक गहराई अछि। पाश्चात्य सूक्ष्म-इतिहासक दृष्टिसँ छोट नाम आ सम्बन्ध-चिह्न समाजक पैघ संरचनाक संकेत बनैत अछि। नव्य-न्यायीय सावधानी चाहैत अछि जे जहाँ स्रोत स्त्रीक इच्छा, सहमति वा प्रतिरोध नहि कहैत अछि, ओतय आधुनिक लेखन अनुमानकेँ स्पष्ट अनुमान रूपमे राखय। मूल ग्रन्थ अधिकांशतः एहि सीमा प्रति सजग अछि।

८. “अज्ञात” : नव्य-न्याय आ अभिलेखीय मौन

नव्य-न्यायमे अभावक ज्ञान आ वस्तुक वास्तविक अभाव एके बात नहि। दूषण पञ्जीक “अज्ञात माता” अथवा “अज्ञात कुल”केँ एहि दृष्टिसँ पढ़ल जाए तँ ई “अमुक व्यक्तिक परिवार नहि छल” नहि, बल्कि “उपलब्ध/स्वीकृत पञ्जी-प्रमाणमे परिचय स्थापित नहि भेल”क कथन अछि। एहि सूक्ष्म भेद पर

ग्रन्थक नैतिक राजनीति टिकल अछि। अज्ञाततासँ दोष मानल जाए तँ अनुपलब्धिकेँ अशुद्धताक कारण बना देल जाइत; ई तर्कदोष अछि।

एहि कारण “अज्ञात” ग्रन्थक सबसँ आधुनिक श्रेणीमे एक बनैत अछि। ई अभिलेखक सीमा प्रकट करैत अछि। इतिहासकारक काम रिक्त स्थान भरि कऽ कथा गढ़ब नहि, बल्कि रिक्ततासँ प्रकार, स्थान आ प्रभावक विश्लेषण करब अछि।

९. “छठम पीढ़ी” : स्मृति, विस्मरण आ पुनर्सामाजीकरण

छठम पीढ़ीक उदाहरणसँ केवल पुरान “शुद्धि” सिद्धान्त मानि छोड़ब ग्रन्थक गम्भीर बिन्दु गमाबब होएत। अभिलेखीय रूपमे ई सामाजिक समयक मॉडल अछि। आरम्भमे एक सम्बन्ध चिह्नित होइत अछि; वंशज अनेक विवाह-रेखा पार करैत अछि; परिचित मूल/शाखा संरचनामे पुनः स्थिरता पबैत अछि; अन्ततः पुरान चिह्नक वर्तमान सामाजिक शक्ति समाप्त होइत अछि। एहि प्रक्रिया केँ आधुनिक भाषामे पुनर्सामाजीकरण, स्मृति-क्षीणन आ सामाजिक वैधता-पुनर्निर्माण कहल जा सकैत अछि।

एतय एक आलोचनात्मक सावधानी आवश्यक अछि: “पूर्णतः शुद्ध” स्रोतक पुरान पद अछि; आधुनिक समीक्षा एहि पदकेँ नैतिक स्वीकारोक्ति नहि बनबैत। ग्रन्थ एहि दूरीकेँ अधिकांशतः स्पष्ट रखैत अछि। वास्तवमे एहि पदक अन्तर्विरोध—दूषण लिखल रहैत अछि, मुदा प्रभाव समाप्त—पञ्जीक सबसे जटिल सामाजिक तर्क उजागर करैत अछि।

१०. भारतीय काव्यशास्त्रीय मूल्यांकन

१०.१ रस

ई कृति कथा-साहित्य नहि, तथापि पाठक-अनुभवमे करुण, बीभत्स, शान्त आ अद्भुत रसक सम्मिश्र भाव उपस्थित होइत अछि। करुण स्त्री, विधवा, अज्ञात मातृक आ सामाजिक बहिष्कारक स्मृतिसँ; बीभत्स पुरान कलंककारी वर्गीकरणक नैतिक असहजतासँ; अद्भुत अभिलेखक दीर्घ स्मरण-क्षमतासँ; आ शान्त रस अन्ततः दूरी, विवेक आ पुनर्सामाजीकरणक प्रतिपादनसँ जुड़ैत अछि। आलोचनात्मक औचित्य ई माँगैत अछि जे रस-संवेदना तथ्यक स्थान नहि लए; मूल ग्रन्थ भावोत्तेजना सँ अधिक संयम राखैत अछि।

१०.२ ध्वनि

दूषण पञ्जीक संक्षिप्त शब्दक असली सामाजिक अर्थ ध्वन्यार्थमे खुलैत अछि। “माता अज्ञात”क वाच्यार्थ अपरिचित माता अछि, मुदा ध्वनि अभिलेखीय अस्वीकृति, सामाजिक गुप्तता, प्रव्रजन, जाति-सीमा अथवा दस्तावेजी टूटनक सम्भावना संकेत करैत अछि। “सुता” केवल बेटी नहि, वंश-मार्गक मोड़ अछि। “विधवा” केवल वैवाहिक स्थिति नहि, विवाह-नियम आ स्त्री-स्वायत्तताक तनावक संकेत अछि।

१०.३ वक्रोक्ति

“काला पोथी”, “कठिन सत्य”, “अभिलेखक अन्हार” सन रूपक पाठक कैं संवेदनशील सामग्रीक मानसिक चौखट दैत अछि। वक्रोक्ति एतय शैली मात्र नहि, नैतिक दूरी बनाबैके साधन अछि। मुदा “काला” रूपकक बारम्बारता सावधानी माँगैत अछि, कारण रंग-रूपक अनपेक्षित अर्थ पैदा कऽ सकैत अछि; ग्रन्थ प्रारम्भमे अर्थ-सीमा स्पष्ट कऽ एहि जोखिम घटबैत अछि।

१०.४ औचित्य

औचित्य एहि पुस्तकक मुख्य साहित्यिक कसौटी अछि। पुरान समुदाय-वाचक शब्द हटाएब स्रोत-विकृति होएत; बिना टिप्पणी दोहराएब आधुनिक अपमान बनि सकैत अछि। पुस्तकक समाधान—मूल पद बचाउ, सम्बन्ध-मार्ग बताउ, आधुनिक अपमान निषिद्ध करू—औचित्यपूर्ण अछि।

११. पाश्चात्य आलोचनात्मक मूल्यांकन

११.१ अभिलेख आ सत्ता

पञ्जी वर्गीकरण करैत अछि; वर्गीकरण स्वयं सत्ता अछि। ककर कुल “ज्ञात”, ककर “अज्ञात”; कोन विवाह स्वीकृत; कोन मातृक रेखा चिह्नित—ई सभ प्रशासनिक ज्ञान-सत्ता बनबैत अछि। ग्रन्थक महत्त्व ई जे ई अभिलेखक सत्ता कैं स्वीकारैत हुएओ ओकर दस्तावेजी मूल्य नष्ट नहि करैत। अभिलेख सत्ता द्वारा बनल अछि, मुदा सत्ता-विरोधी प्रमाणो ओहि भीतर बचल अछि—उदाहरणतः “शुद्ध” वंशक कल्पनाक विरुद्ध सीमा-पार सम्बन्धक रिकॉर्ड।

११.२ स्मृति आ विस्मरण

पञ्जी स्मृतिरक्षक अछि, मुदा दूषण पञ्जी स्वयं विस्मरणक आवश्यकता स्वीकारैत अछि। ऐतिहासिक ज्ञान लेल तथ्य बचल रहय; सामाजिक दण्ड लेल तथ्य निष्क्रिय हो—ई द्वैत अत्यन्त सूक्ष्म अछि। ग्रन्थ एहि नैतिक द्वैतकेँ “वंशजकेँ अपमान नहि”क नियममे रूपान्तरित करैत अछि।

११.३ सूक्ष्म-इतिहास

९७ संक्षिप्त प्रकरण सूक्ष्म-इतिहासक आदर्श सामग्री बनैत अछि। छोट संकेत—एक नाम, एक पुत्री, एक मूलग्राम, एक पेशा, एक विवाह—सँ मिथिलाक विस्तृत सामाजिक सम्पर्कक नक्शा बनैत अछि। एतय पुस्तकक पद्धति सर्वाधिक प्रभावशाली अछि। परिमाणात्मक आवृत्ति, काल-समूह आ स्थानिक वितरण जोड़ल जाए तँ सूक्ष्म-इतिहाससँ सामाजिक-नेटवर्क अध्ययन धरि विस्तार सम्भव अछि।

१२. नव्य-न्यायीय आलोचना

नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ ग्रन्थक एक-एक प्रकरणकेँ “सम्बन्ध-निर्णय” मानल जा सकैत अछि। उदाहरणतः जँ प्रवेशमे अमुक व्यक्तिक मातृक “अज्ञात” अछि, तँ पक्ष अमुक वंश-स्थिति, हेतु मातृक-अज्ञात अभिलेख, आ साध्य “पञ्जी-दृष्टिसँ मातृक पहचान अस्थापित” अछि। एतयसँ “सम्पूर्ण वंश नैतिक रूपसँ दोषपूर्ण” निष्कर्ष नहि निकलैत, कारण हेतु-साध्य व्याप्ति अनुपस्थित अछि। ग्रन्थक नैतिक व्याख्या एहि अतिव्याप्ति रोकैत अछि।

तहिना जाति-सूचक पदकेँ आधुनिक व्यक्ति-परिचय पर लागू करब काल-अवच्छेदकक उल्लंघन अछि। स्रोत-सम्बन्ध विशिष्ट काल, सम्बन्ध आ अभिलेखीय प्रयोजनसँ अवच्छिन्न अछि; ओकरा वर्तमान वंशज पर अनवच्छिन्न रूपेँ आरोपित करब तर्कदोष अछि। “छठम पीढ़ी”क सिद्धान्त स्वयं काल-अवच्छेदक ठाढ़ करैत अछि। एहि अर्थमे पुस्तकक नैतिक पाठ नव्य-न्यायीय विभाजनशीलतासँ गहिर समानता रखैत अछि।

१३. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति द्वारा पुनर्पाठ

समानान्तर पठनमे एक प्रकरणक छह रेखा एकसाथ देखल जाए: (१) मूल पाठ—जे शब्द लिखल अछि; (२) सम्बन्ध—माता, सुता, पत्नी, दौहित्र आदि;

(३) स्थान—मूल, मूलग्राम, प्रव्रजन; (४) सामाजिक वर्ग—जाति/पेशा/धर्म/वैवाहिक स्थिति; (५) काल—कतेक पीढ़ी बाद; (६) स्रोत-परत—मिथिलाक्षर, देवनागरी लिप्यन्तरण, तालिका, सम्पादकीय व्याख्या। एहि पद्धतिसँ दूषण एकरैखिक “दोष” नहि रहि बहु-रेखीय सामाजिक घटना बनैत अछि।

एहि पद्धतिक विशेष लाभ अध्याय १८–२१मे देखाइत अछि। प्रकरण संख्या आ फोलियो संकेत पाठ-रेखा दैत अछि; मूल-शृंखला स्थान-रेखा; मातृक/सुता सम्बन्ध-रेखा; समुदाय-पद सामाजिक रेखा; बादक वंशज काल-रेखा; आधुनिक नैतिक व्याख्या स्रोत-परतकेँ वर्तमानसँ अलग करैत अछि। पुस्तकक संरचना स्वयं समानान्तर इतिहासक दिशामे अग्रसर अछि, यद्यपि नामित पद्धति रूपमे एकरा व्यवस्थित सिद्धान्त बनाबैक अवसर भविष्यक संस्करणमे अछि।

१४. परिशिष्ट क–ट्क आलोचनात्मक परीक्षण

१४.क परिशिष्ट क: पञ्जी पदक शब्दकोश

मुख्य तकनीकी पदक कार्यार्थ शोध-पाठक लेल अनिवार्य सहायक अछि। शब्दक एकरूप देवनागरी रूप, वैकल्पिक वर्तनी आ मूल तिरहुता रूपक स्तम्भ जोड़ल जाए तँ पाठ-समीक्षा मजबूत होएत।

१४.ख परिशिष्ट ख: दूषण पञ्जीक सामाजिक पद

अज्ञात, देवदासी/दासी, रजक/रजकी, चर्मकार/चर्मकारिणी आदि पदक ऐतिहासिक स्पष्टीकरण दैत अछि। आधुनिक अपमानसँ दूरी स्पष्ट अछि; काल-विशिष्ट अर्थभेद जोड़ल जा सकैत अछि।

१४.ग परिशिष्ट ग: गोत्र आ प्रवर सारिणी

वंशीय-अर्हता बुझबाक तकनीकी आधार। सारिणी उपयोगी अछि, मुदा शास्त्रीय स्रोत/पाठभेदक संकेत भविष्यक शोध-संस्करणमे अपेक्षित।

१४.घ परिशिष्ट घ: मूल आ मूलग्राम अनुक्रम

माण्डर, दरिहरा, सोदरपुर, सरिसव, खौआल आदि स्मृति-नोड शोधकर्ताकेँ प्रकरणक भूगोल बुझबैत अछि। आधुनिक जिला/देशीय स्थानक समानान्तर सूची जोड़ल जाए तँ ऐतिहासिक भूगोल अधिक स्पष्ट होएत।

१४.ङ परिशिष्ट ङ: औपचारिक आ लोक-उच्चारण

खड़ौरय/खड़ौर, खौआड़य/खौआल, बुधबाड़य/बुधवाल आदि रूप भाषिक इतिहासक महत्वपूर्ण सामग्री अछि। ध्वन्यात्मक परिवर्तनक नियम अलग टिप्पणी रूपमे दिहल जा सकैत अछि।

१४.च परिशिष्ट च: प्रकरण १–९७ सूचक

चारि ब्लॉकक मुख्य विषय एक नजरिमे दैत अछि। शोध उपयोगिता बढ़ाबैक लेल प्रति-प्रकरण पृष्ठ, फोलियो, मूल, श्रेणी आ सम्बन्ध-मार्गक पाँच स्तम्भक पूर्ण सूचक श्रेष्ठ होएत।

१४.छ परिशिष्ट छ: नामित स्त्री आ मातृक-रेखा

आनन्दा, वल्लभा, मेधा, रुद्रमति आदि केँ केन्द्रित करब पुस्तकक स्त्री-इतिहासीय उपलब्धि केँ दृढ करैत अछि।

१४.ज परिशिष्ट ज: समुदाय-पद सूचक

रजक, चर्मकार, यवनी, गोप/यादव, धीवर दासी आदि पदक आवृत्ति सामाजिक सम्पर्कक मानचित्र बनाबैमे सहायक अछि।

१४.झ परिशिष्ट झ: पञ्जी कार्यालय आ विद्वत् उपाधि

वंश-सूचनाकेँ ज्ञान-संस्था आ प्रशासनिक इतिहाससँ जोड़ैत अछि। उपाधि/कार्यालयक कालानुक्रमिक सीमाक चिन्हांकन लाभकारी होएत।

१४.ञ परिशिष्ट ञ: स्रोत लिंक आ पाण्डुलिपि/स्कैन टिप्पणी

मूल ग्रन्थमे डिजिटल स्रोतक अस्तित्व बताओल अछि; शोध-मूल्य उच्च अछि। मुदा मुद्रित शोध-संस्करण लेल स्थायी फोलियो/छवि-संख्या लिंकसँ अधिक टिकाऊ उद्धरण-पद्धति होएत।

१४.ट परिशिष्ट ट: वंशज आ शोधकर्ता लेल नैतिक टिप्पणी

पूरा ग्रन्थक नैतिक निष्कर्ष संक्षेपमे रखैत अछि: जीवित वंशज पर आक्रमण नहि, स्रोत-लेबल आ आधुनिक पहचान अलग, सनसनीसँ परहेज, सम्बन्ध-मार्ग आ पीढ़ी-दूरीक सम्मान। ई परिशिष्ट आवश्यक अछि, सजावटी नहि।

१५. शुद्ध मैथिली निखार आ भाषिक ऑडिट

एहि समीक्षा-पाठमे मैथिली वाक्यविन्यास, शब्द-चयन आ क्रियारूपकेँ यथासम्भव शुद्ध राखल गेल अछि। मूल ग्रन्थ अंग्रेजीमे लिखल अछि, अतः ओकर अंग्रेजी तकनीकी पदकेँ एहि लेखमे या तऽ मैथिली/संस्कृत रूपमे अनूदित कएल गेल अछि, अथवा अनिवार्य स्थिति मे रोमन रूपकेँ कोष्ठकक भीतर राखल गेल अछि। मूल पञ्जी-पद—मूल, शाखा, गोत्र, प्रवर, पत्र, दूषण, उतेढ़, अस्वाजन्यपत्र, सिद्धान्त पत्र, मातृक, सुता, दौहित्र, बीजी पुरुष—केँ देवनागरी रूपमे स्थिर राखब उचित अछि।

भाषिक निखारक दृष्टिसँ मूल ग्रन्थमे एकरूपताक किछु सम्भावित क्षेत्र देखाइत अछि: “पञ्जी/पञ्जिका”, “दूषण/डूशन” सन रोमन लिप्यन्तरण, “उतेढ़”क अलग-अलग अंग्रेजी वर्तनी, “अस्वाजन्य/अस्वजन”क रूपभेद, मूल/मूलग्रामक लोक-रूप, आ समुदाय-पदक अंग्रेजी अनुवाद। शोध-संस्करणमे एक मानक लिप्यन्तरण-सारिणी, पाठभेद-सूची आ “स्रोतक शब्द / सम्पादकीय सामान्यीकरण / आधुनिक व्याख्या”क तीन स्तम्भीय शब्दकोश देल जाए तँ भ्रम घटत।

मुद्रित पाठक तकनीकी सफाई लेल युनिकोड-टूटन, अदृश्य विभाजन-चिह्न, पंक्ति-विभाजनक कृत्रिम संकेत आ देवनागरी संयुक्ताक्षरक रेंडरिंग पर अन्तिम प्रूफ आवश्यक अछि। ई भाषिक दोष नहि, परन्तु विद्वत् संस्करणक विश्वसनीयता पर सीधा प्रभाव डालैत अछि।

१६. ग्रन्थक मुख्य उपलब्धि

दूषणकेँ आधुनिक नैतिक दोष नहि, ऐतिहासिक अभिलेखीय चिह्न मानबाक स्पष्ट पद्धति।

पञ्जीकेँ जाति-केन्द्रित विवाह-पोथी सँ विस्तृत सामाजिक-स्मृति अभिलेखमे पुनर्परिभाषित करब।

मातृक, सुता, पत्नी, दौहित्र, नामित स्त्री आ अज्ञात माता द्वारा स्त्री-इतिहासक पुनर्पाठ।

९७ प्रकरणकेँ क्रमबद्ध पठन-दिशा देब आ सम्बन्ध-मार्ग पहिने चिन्हित करबाक अनुशासन।

“छठम पीढ़ी” द्वारा स्थायी कलंकक मिथक तोड़ि सामाजिक पुनर्सामाजीकरण देखाबय।

तिरहुता–देवनागरी लिप्यन्तरण, स्कैन आ अभिलेख-संरक्षणकेँ इतिहास-लेखनक हिस्सा मानब।

जीवित वंशजक गरिमा बचाबैत कठिन स्रोत प्रकाशित करबाक स्पष्ट नैतिक नियम।

पञ्जीकार, पदवी, कार्यालय, बीजी पुरुष, मूलग्राम आ क्षेत्रीय शाखा द्वारा संस्थागत इतिहासक विस्तार।

१७. सीमासभ आ भावी शोध-दिशा

ग्रन्थक नैतिक आ व्याख्यात्मक स्थापत्य मजबूत अछि, मुदा शोध-संस्करणक स्तर पर पाँच सुधार विशेष उपयोगी होएत। पहिल, प्रत्येक महत्त्वपूर्ण दूषण-प्रकरणक साथ मूल तिरहुता छवि/फोलियो/पृष्ठ संकेत। दोसर, लिप्यन्तरणक पाठभेद आ अस्पष्ट अक्षरक आलोचनात्मक उपकरण। तेसर, ९७ प्रकरणक सांख्यिकीय सार—अज्ञात मातृक, जाति/पेशा-पद, यवनी, विधवा, दासी, प्रव्रजन आदि कतेक बेर आएल। चारिम, मूल/मूलग्रामक ऐतिहासिक भूगोल आ समय-स्तर। पाँचम, पञ्जीक आन्तरिक दावाक बाह्य शिलालेख, राजकीय कागज, पाण्डुलिपि-तिथि, स्थानीय इतिहास वा अन्य वंशावलीसँ तुलनात्मक सत्यापन।

ई सुझाव ग्रन्थक मूल दावाकेँ कमजोर नहि करैत; उलट, अभिलेखीय पठनकेँ आलोचनात्मक संस्करणक स्तर पर लए जाएत। विशेषतः गंगेश, हरिसिंहदेव, १३२६ ईस्वी, माधव सिंहक शाखा-व्यवस्था, १६७ मूल, आ ११,००० छवि-संग्रह सन विशिष्ट दावाक संग प्रमाण-श्रेणी अंकित रहब विद्वत् उपयोगिता बढ़ाओत।

१८. समग्र साहित्यिक निर्णय

“डिकोडिंग द पञ्जी ऑफ मिथिला, खण्ड छहम”क साहित्यिक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई वंशावलीक कठोर रजिस्टर-भाषाकेँ सामाजिक इतिहासक पठनीय आख्यानमे बदलैत अछि, मुदा स्रोतकेँ उपन्यास नहि बनबैत। एकर शैली पुनरावृत्तिमूलक अछि—नैतिक नियम, सम्बन्ध-मार्ग, स्रोत-लेबल आ वंशज-सुरक्षा बारम्बार कहल गेल अछि। साधारण साहित्यिक कसौटी पर ई पुनरावृत्ति घटाओल जा सकैत छल; परन्तु संवेदनशील अभिलेखीय ग्रन्थमे ई पुनरावृत्ति “पाठक अनुशासन”क कार्य करैत अछि। हर कठिन पदक संग नैतिक दूरी दोहराएब जान-बूझि कएल सुरक्षा-यंत्र जेकाँ काम करैत अछि।

ग्रन्थक मौलिकता “दूषण”क विषय चुनबामे मात्र नहि, बल्कि ओकर अर्थ-परिवर्तनमे अछि। पुस्तक पुरान श्रेणी नष्ट नहि करैत, कारण ताहिसँ इतिहास नष्ट होएत; पुरान श्रेणीकेँ आधुनिक सत्य नहि मानैत, कारण ताहिसँ अन्याय दोहराएत। स्रोत-निष्ठा आ नैतिक पुनर्पाठक बीच ई मध्य-मार्ग कृतिक प्रमुख आलोचनात्मक उपलब्धि अछि।

१९. निष्कर्ष

सम्पूर्ण २४७-पृष्ठीय संरचना, ३० अध्याय, ९७ दूषण-प्रकरण आ परिशिष्ट क–टकेँ एकसाथ पढ़लाक बाद ई निष्कर्ष निकलैत अछि जे ई खण्ड मिथिलाक पञ्जी-परम्पराक भीतर दबल सामाजिक इतिहासकेँ दृश्य बनाबैके गंभीर प्रयास अछि। पञ्जी एक ओर विवाह-अर्हता, गोत्र, प्रवर, मूल, मूलग्राम आ शाखाक कठोर अनुशासन अछि; दोसर ओर ओहि अनुशासनक भीतर प्रेम, प्रव्रजन, अज्ञात मातृक, स्त्री-रेखा, विधवापन, सेवा-स्थिति, जाति-पेशा सीमा, मुसलमान/यवनी सम्बन्ध आ पुनर्सामाजीकरणक चिह्न सुरक्षित अछि। दूषण पञ्जीक असली ऐतिहासिक महत्त्व नियमक अस्तित्व नहि, नियम आ जीवनक संघर्षक अभिलेख होएब अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि ग्रन्थक ध्वन्यार्थ, करुण-अनुभव आ औचित्य खोलैत अछि; पाश्चात्य आलोचना अभिलेख, सत्ता, स्मृति आ सूक्ष्म संकेतक राजनीति देखबैत अछि; नव्य-न्याय स्रोत-शब्द, सम्बन्ध आ निष्कर्षक सीमा कठोर करैत अछि; विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति पाठ, वंश, भूगोल, हाशिया, काल आ स्रोत-परतकेँ एकसाथ चलबैत अछि। एहि चारू दृष्टिक

संयुक्त परिणाम ई अछि जे दूषण-पञ्जीकेँ न तऽ छिपाएल जा सकैत अछि, न वर्तमान समाज पर आरोप-पत्र बनाओल जा सकैत अछि। ओकर सही स्थान—ऐतिहासिक साक्ष्य, सामाजिक स्मृति आ नैतिक आत्मालोचन—एहि ग्रन्थ सफलतापूर्वक निर्मित करैत अछि।

अन्ततः, कृतिक सबसँ गम्भीर वाक्यार्थ ई नहि जे “ककर वंशमे दूषण छल”, बल्कि ई जे समाज अपन नियमक उल्लंघनकेँ कोना लिखलक, स्त्री आ सीमापार सम्बन्धकेँ कोना चिन्हित कएलक, समयक संग कलंक कोना मद्धिम भेल, आ अभिलेख आज न्यायपूर्ण ढंगसँ कोना पढ़ल जा सकैत अछि। एहि अर्थमे ई खण्ड वंशावलीक पोथी सँ बढ़ि मिथिलाक सामाजिक स्मृति, विस्मरण आ आत्मपरीक्षणक ग्रन्थ बनैत अछि।

बिबलियोग्राफी

नीचाँ केवल पोथीक नाम देल जा रहल अछि; कोनो वेबसाइट अथवा जाल-स्रोत सम्मिलित नहि अछि।

- नाट्यशास्त्र
- ध्वन्यालोक
- अभिनवभारती
- काव्यप्रकाश
- वक्रोक्तिजीवित
- औचित्यविचारचर्चा
- तत्त्वचिन्तामणि
- (The Character of Logic in India)
- (The Word and the World)
- (Epistemology in Classical India)
- (Poetics)
- (The Archaeology of Knowledge)
- (Archive Fever)
- (Memory, History, Forgetting)
- (Clues, Myths, and the Historical Method)
- (Decoding the Panji of Mithila, Volume VI)

आलेख ४८ · पञ्जी, दर्शन, भाषा आ समानान्तर इतिहास

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन : खण्ड १

सारांश

ई अध्ययन 'गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन'क सम्पूर्ण मैथिली पाठ, ओकर ७२ अध्याय, भूमिका, अनुक्रम, पारिभाषिक शब्दावली, चयनित ग्रन्थसूची तथा संलग्न अंग्रेजी रूपान्तरक समग्र आलोचनात्मक परीक्षण प्रस्तुत करैत अछि। अध्ययनक चारि मुख्य कसौटी अछि—भारतीय दार्शनिक परम्पराक अन्त:विवाद, पाश्चात्य दर्शनक अवधारणात्मक आलोचना, नव्य-न्यायक प्रमाण-आधारित सूक्ष्म विश्लेषण, आ विदेह-केन्द्रित समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति। ग्रन्थक प्रमुख मौलिक प्रतिपादन—बहुप्रमाणीय विवेकवाद, सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद, गरिमा-आधारित नैतिकता, बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र, धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता तथा समानान्तर इतिहास-दृष्टि—कैं केवल आत्मघोषित सूत्र रूपमे नहि, पूर्ववर्ती अध्यायसभक तर्क-श्रृंखला, स्रोत-विवेक, सामाजिक परिणाम आ प्रतिपक्ष-सहनशीलताक आधारपर जाँचल गेल अछि। अध्ययन पबैत अछि जे पोथीक विशेष शक्ति क्षेत्रीय बौद्धिक परम्पराकैं विश्व-दर्शनक बराबरीक संवादमे राखब, मुख्यधारा आ हाशिया दुनू पर समान प्रमाण-कसौटी लागू करब, तथा गरिमाकैं ज्ञान, राज्य, धर्म, समाज आ तकनीकक साझा नैतिक सीमा बनायबमे अछि। मुख्य आलोचनात्मक क्षेत्र तुलनात्मक समरूपताक जोखिम, किछु अध्यायमे स्रोत-स्तरक असमान विस्तार, आ मैथिली मूल-पाठमे रोमन तकनीकी पदक असंगत प्रस्तुति अछि। समग्र रूपेँ ई कृति मैथिलीमे दार्शनिक विश्वकोश, तुलनात्मक दर्शन, सामाजिक आलोचना आ मौलिक प्रणाली-निर्माणक दुर्लभ संयुक्त प्रयास रूपमे सामने अबैत अछि।

बीजशब्द

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन : खण्ड १ · मिथिला · वंश-अभिलेख · इतिहासलेखन · प्रमाण-विवेचन

१.४०. गजेन्द्र ठाकुर-गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन-१- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन

बहुप्रमाणीय विवेक, नव्य-न्यायीय अनुशासन आ विदेह-केन्द्रित समानान्तर इतिहास-दृष्टिक समग्र समीक्षात्मक अध्ययन

शोध-लेख

पाठाधार: ७२ मैथिली अध्याय, भूमिका, पारिभाषिक शब्दावली, चयनित ग्रन्थसूची तथा अंग्रेजी रूपान्तर

सारांश

ई अध्ययन ‘गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन’क सम्पूर्ण मैथिली पाठ, ओकर ७२ अध्याय, भूमिका, अनुक्रम, पारिभाषिक शब्दावली, चयनित ग्रन्थसूची तथा संलग्न अंग्रेजी रूपान्तरक समग्र आलोचनात्मक परीक्षण प्रस्तुत करैत अछि। अध्ययनक चारि मुख्य कसौटी अछि—भारतीय दार्शनिक परम्पराक अन्त:विवाद, पाश्चात्य दर्शनक अवधारणात्मक आलोचना, नव्य-न्यायक प्रमाण-आधारित सूक्ष्म विश्लेषण, आ विदेह-केन्द्रित समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति। ग्रन्थक प्रमुख मौलिक प्रतिपादन—बहुप्रमाणीय विवेकवाद, सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद, गरिमा-आधारित नैतिकता, बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र, धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता तथा समानान्तर इतिहास-दृष्टि—केँ केवल आत्मघोषित सूत्र रूपमे नहि, पूर्ववर्ती अध्यायसभक तर्क-श्रृंखला, स्रोत-विवेक, सामाजिक परिणाम आ प्रतिपक्ष-सहनशीलताक आधारपर जाँचल गेल अछि। अध्ययन पबैत अछि जे पोथीक विशेष शक्ति क्षेत्रीय बौद्धिक परम्पराकेँ विश्व-दर्शनक बराबरीक संवादमे राखब, मुख्यधारा आ हाशिया दुनू पर समान प्रमाण-कसौटी लागू करब, तथा गरिमाकेँ ज्ञान, राज्य, धर्म, समाज आ तकनीकक साझा नैतिक सीमा बनायबमे अछि। मुख्य आलोचनात्मक क्षेत्र तुलनात्मक समरूपताक जोखिम, किछु अध्यायमे स्रोत-स्तरक असमान विस्तार, आ मैथिली मूल-पाठमे रोमन तकनीकी पदक असंगत प्रस्तुति अछि। समग्र रूपेँ ई कृति मैथिलीमे दार्शनिक विश्वकोश, तुलनात्मक दर्शन, सामाजिक आलोचना आ मौलिक प्रणाली-निर्माणक दुर्लभ संयुक्त प्रयास रूपमे सामने अबैत अछि।

बीजशब्द: समानान्तर दर्शन; मिथिला; विदेह; नव्य-न्याय; प्रमाण; बहुप्रमाणीय विवेकवाद; गरिमा; बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र; इतिहास-दृष्टि; तुलनात्मक दर्शन

१. प्रस्तावना

पोथीक आरम्भिक प्रतिज्ञा दर्शनकेँ उत्तरक भण्डार नहि, उत्तर देबाक जिम्मेवार पद्धति मानैत अछि। सत्यक दाबी पर प्रमाण, प्रमाण पर सीमा, सत्ता पर वैधता, परम्परा पर इतिहास, विद्रोह पर नैतिक आधार, आ मनुष्य पर गरिमा —ई छह प्रश्न सम्पूर्ण ग्रन्थक संरचनात्मक सूत्र बनैत अछि। मिथिला एतय सजावटी क्षेत्रीय परिशिष्ट नहि, पद्धतिगत केन्द्र अछि; विदेहक प्रश्नपरम्परा, न्याय-मीमांसा, गङ्गेशीय प्रमाणमीमांसा, नव्य-न्यायक भाषिक अनुशासन आ आधुनिक सामाजिक संघर्षकेँ एकहि आलोचनात्मक क्रममे रखबाक प्रयास कएल गेल अछि। एहि अध्ययनक उद्देश्य कृतिसँ सहमत वा असहमत होयब मात्र नहि, बल्कि ई जाँचब अछि जे ओकर दाबी अपन घोषित कसौटी पर कतेक टिकैत अछि।

२. पाठ-सीमा आ रचनात्मक संरचना

उपलब्ध संस्करणमे मैथिली मूल ७२ अध्यायमे आठ खण्डमे संगठित अछि। तकर बाद पारिभाषिक शब्दावली आ चयनित मूल ग्रन्थसूची अछि, आ फेर समान ७२ अध्यायक अंग्रेजी रूपान्तर देल गेल अछि। अंग्रेजी भाग स्वतंत्र दार्शनिक कृति नहि, मूल संरचनाक अनुवादित प्रतिरूप अछि; तेँ विषयगत समीक्षा मैथिली मूलक अध्याय-क्रम अनुसार कएल गेल अछि, मुदा अनुवादक समरूपता आ भाषिक स्थिति पर अलग परीक्षण सेहो देल गेल अछि।

खण्ड	अध्याय	केन्द्रीय विषय
प्रथम खण्ड — दर्शनक आधार	1–5	दार्शनिक प्रश्न, संशय, सत्य, ज्ञान-सीमा, समानान्तर पद्धति
द्वितीय खण्ड — भारतीय दर्शन	6–16	वैदिक-उपनिषदिक प्रश्नसँ भाषा-दर्शन धरि भारतीय परम्परासभ
तृतीय खण्ड — मिथिलाक दार्शनिक समानान्तर परम्परा	17–24	विदेह, मिथिला, न्याय, वाचस्पति, उदयन, गङ्गेश, नव्य-न्याय, लोक-शास्त्र
चतुर्थ खण्ड — पाश्चात्य दर्शन	25–37	यूनानीसँ विज्ञान-दर्शन धरि पाश्चात्य

		परम्परासभ
पंचम खण्ड — सामाजिक आ राजनीतिक दर्शन	38–49	व्यक्ति, राज्य, स्वतंत्रता, समानता, न्याय, जाति, वर्ग, लिंग, भाषा, लोकतन्त्र, गांधी, आम्बेडकर
षष्ठ खण्ड — धर्म-दर्शन	50–57	धर्म, ईश्वर, आस्था, दुःख, कर्म, बहुलता, राज्य, लोकधर्म
सप्तम खण्ड — आधुनिक आ समकालीन दर्शन	58–64	आधुनिकता, विज्ञान, भाषा-सत्ता, इतिहास-स्मृति, डिजिटल ज्ञान, कृत्रिम बुद्धि, पर्यावरण
अष्टम खण्ड — गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन	65–72	बहुप्रमाणीय विवेकवादसँ समानान्तर इतिहास-दृष्टि धरि मौलिक प्रणाली

३. समीक्षात्मक पद्धति

पहिल कसौटी भारतीय पद्धति अछि: दर्शनसभकेँ केवल ‘षड्दर्शन’क स्थिर सूची नहि, परस्पर प्रतिपक्ष, प्रमाण-विवाद, मोक्ष-संकल्पना, भाषा-विवेक आ सामाजिक अर्थक जीवित बहस रूपमे पढ़ल गेल अछि।

दोसर कसौटी पाश्चात्य आलोचनात्मक पद्धति अछि: अवधारणात्मक स्पष्टता, तर्क-संगति, ऐतिहासिक संदर्भ, अनुभवजन्य दाबी आ नैतिक परिणाम अलग-अलग जाँचल गेल अछि।

तेसर कसौटी नव्य-न्यायीय अनुशासन अछि: दाबी, दाबीक विषय, सम्बन्ध, अवच्छेद, प्रमाण, व्याप्ति, अपवाद, प्रतिपक्ष आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट कएल गेल अछि।

चारिम कसौटी विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अछि: केन्द्र, हाशिया, मौन, लोकस्रोत, अभिलेख, भाषिक क्षेत्र आ उपेक्षित स्वर पढ़ल गेल अछि, मुदा हाशियाकेँ स्वत: सत्यक विशेषाधिकार नहि देल गेल अछि।

पाँचम कसौटी भाषिक अछि: मैथिली वाक्य-विन्यास, शब्द-चयन, रोमन पदक स्थिति, अनुवाद-संगति, शास्त्रीय पदक रूप आ अनावश्यक मिश्रभाषिकता जाँचल गेल अछि।

४. अष्टखण्डीय समग्र मूल्यांकन

४.१ दर्शनक आधार

पहिल पाँच अध्याय सम्पूर्ण कृतिक ज्ञानमीमांसात्मक संविधान तैयार करैत अछि। दर्शनकेँ प्रश्न-पद्धति, संशयकेँ प्रहरी, सत्यकेँ बहुदृष्टिगत किंतु अमनमाना, ज्ञानकेँ संशोध्य, आ समानान्तरताकेँ केन्द्र-विरोध नहि बल्कि स्रोत-विस्तार मानल गेल अछि।

४.२ भारतीय दर्शन

अध्याय ६–१६ भारतीय दर्शनक बहुलताकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। विशेष उपलब्धि ई जे वेदान्तक प्रभुत्वशाली एकरेखीय कथा, योगक शारीरिक सरलीकरण, मीमांसाक कर्मकाण्डी छवि, लोकायतक अतिनिश्चित पुनर्निर्माण तथा अनेकान्तवादक सापेक्षतावादी गलत पाठ—सभक विरोध कएल गेल अछि।

४.३ मिथिलाक समानान्तर परम्परा

अध्याय १७–२४ पोथीक मौलिक क्षेत्रीय केन्द्र अछि। विदेहसँ मिथिला धरि निरन्तरताकेँ सांस्कृतिक स्मृति आ बौद्धिक अनुशासनक रूपमे पढ़ल गेल अछि, अपरिवर्तित भू-राजनीतिक इकाई रूपमे नहि। गङ्गेश आ नव्य-न्याय पर बल ऐतिहासिक रूपेँ उचित अछि।

४.४ पाश्चात्य दर्शन

अध्याय २५–३७ यूनानी, मध्ययुगीन, आधुनिक, अस्तित्ववादी, विश्लेषणात्मक, व्यवहारवादी आ विज्ञान-दर्शनक परिचय दैत अछि। नव्य-न्याय–विश्लेषणात्मक दर्शन तथा व्याप्ति–आगमन संवाद विशेष उल्लेखनीय अछि।

४.५ सामाजिक-राजनीतिक दर्शन

अध्याय ३८–४९ कृतिक नैतिक-राजनीतिक केन्द्र अछि। ‘जन्म नैतिक योग्यता नहि’ तथा ‘राज्य नागरिकक मालिक नहि’ जकाँ सूत्र गरिमा, समानता, स्वतंत्रता आ लोकतन्त्रक स्पष्ट दिशा बनबैत अछि।

४.६ धर्म-दर्शन

अध्याय ५०–५७ आस्था, ईश्वर, अशुभ, कर्म, बहुलता, धर्म-राज्य सम्बन्ध आ लोकधर्मकेँ परस्पर संबद्ध प्रश्न बनबैत अछि। सार्वजनिक कारण, अन्तःकरणक स्वतंत्रता आ समान नागरिकता मुख्य कसौटी बनैत अछि।

४.७ आधुनिक-समकालीन प्रश्न

अध्याय ५८–६४ आधुनिकता, विज्ञान, भाषा-सत्ता, इतिहास-स्मृति, डिजिटल सूचना, कृत्रिम बुद्धि आ पर्यावरणक प्रश्न उठबैत अछि। प्राचीन प्रमाण-विवेककेँ आधुनिक माध्यम-समीक्षा तक विस्तार देब पोथीक जीवित दर्शन होयबाक प्रमाण अछि।

४.८ मौलिक समानान्तर प्रणाली

अध्याय ६५–७२ पूर्ववर्ती सामग्रीकेँ छह प्रमुख सिद्धान्त आ समापनिका रूपमे संगठित करैत अछि। ई भाग मात्र सारांश नहि; लेखक अपन प्रणालीगत दावा प्रस्तुत करैत छथि।

५. अध्याय-दर-अध्याय समग्र समीक्षा

प्रथम खण्ड — दर्शनक आधार

1. दर्शन की अछि?

दर्शन उत्तरक संग्रह नहि, उत्तर देबाक जिम्मेवार पद्धति अछि। एकर क्षेत्र वास्तविकता, ज्ञान, तर्क, मूल्य, सत्ता, भाषा, धर्म, विज्ञान आ जीवन धरि विस्तृत अछि। दर्शनक विशिष्टता एहि बातमे नहि जे ओकर प्रत्येक प्रश्नक अन्तिम समाधान अछि, बल्कि एहि बातमे अछि जे ओ प्रश्नकेँ स्पष्ट करैत अछि, कारण माँगैत अछि, अवधारणाक सीमा देखैत अछि, प्रतिपक्ष सुनैत अछि आ अपन निष्कर्षकेँ सुधार लेल खुला रखैत अछि।

एहि आरम्भिक अध्यायमे दर्शनकेँ मत-संग्रह नहि, आत्मपरीक्षणक अनुशासन मानल गेल अछि। ई परिभाषा सम्पूर्ण ग्रन्थक कार्यशील कसौटी बनैत अछि; विशेष बल ई जे दर्शनक प्रश्न जीवन, संस्था आ सार्वजनिक निर्णयसँ जोड़ल अछि। सावधानी एतबे जे 'दर्शन'क एहन व्यापक परिभाषा इतिहास, समाज-विज्ञान आ नीतिशास्त्रक सीमासँ ओवरलैप करैत अछि, अतः प्रत्येक प्रसंगमे पद्धतिगत भेद स्पष्ट राखब जरूरी अछि।

2. प्रश्न, संशय आ प्रमाण

ज्ञानक शत्रु संशय नहि; निराधार विश्वास आ निराधार संशय दुनू ज्ञानक बाधा अछि। प्रमाणक प्रकार क्षेत्रानुसार बदलैत अछि, मुदा सभ क्षेत्रमे एक साझा नियम अछि—दाबी, स्रोत, प्रक्रिया, प्रतिपक्ष आ संशोधनक सम्बन्ध स्पष्ट हो। समानान्तर दर्शन न्यायीय प्रमाण-संवेदनशीलता, भारतीय ज्ञानमीमांसाक बहस, आधुनिक ज्ञानमीमांसाक औचित्य-समस्या आ डिजिटल युगक स्रोत-जाँचकेँ एकहि व्यापक पद्धतिमे जोड़ैत अछि।

संशय आ प्रमाणक भेद न्यायीय परम्परा तथा आधुनिक ज्ञानमीमांसाक बीच प्रभावकारी सेतु बनबैत अछि। अध्याय निराधार संशय आ अन्धविश्वास दुनूक आलोचना करैत अछि। एकर विशेष उपलब्धि प्रमाणक सममित कसौटी अछि; तथापि संस्थागत साक्ष्य, सांख्यिकीय प्रमाण आ विशेषज्ञ-सहमतिक श्रेणीसभकेँ भविष्यक संस्करणमे अधिक तकनीकी वर्गीकरण भेटलासँ तर्क आरो मजबूत होयत।

3. सत्य आ दृष्टिकोण

सत्य न तऽ केवल व्यक्तिगत पसन्द अछि, न प्रत्येक जटिल वास्तविकताक एकहि वाक्यमे पूर्ण कब्जा। सत्य-विमर्शमे वस्तु, कथन, दृष्टिकोण, प्रमाण, भाषा, सत्ता, उपयोग आ व्याख्या सभ भूमिका निभबैत अछि। समानान्तर दर्शनक सूत्र अछि—"सत्य बहुदृष्टिगत भऽ सकैत अछि, मुदा मनमाना नहि।" एहि सूत्रक पहिल भाग अहंकारी एकवर्णनीयतासँ बचबैत अछि; दोसर भाग निराधार सापेक्षतावादसँ।

सत्यक बहुदृष्टिगतता आ मनमानी सापेक्षतावादक बीच जे भेद कएल गेल अछि, से ग्रन्थक मूल ज्ञानमीमांसात्मक उपलब्धि अछि। जैन अनेकान्त, बौद्ध

द्विसत्य, न्यायीय यथार्थवाद आ आधुनिक सत्य-सिद्धान्तक तुलना सावधानीसँ कएल गेल अछि। सीमाबिन्दु ई जे ‘बहुदृष्टिगत सत्य’क औपचारिक निर्णय-नियम सभ प्रसंगमे समान रूपेँ विकसित नहि भेल।

4. ज्ञानक सीमा

मानवीय ज्ञान सीमित अछि, मुदा सीमा पहचानि कऽ ज्ञान अधिक विश्वसनीय बनैत अछि। इन्द्रिय, स्मृति, भाषा, अनुमान, संस्था, सामाजिक स्थान आ ऐतिहासिक स्रोत—सभ शक्ति आ सीमा दुनू रखैत अछि। समानान्तर दर्शन न सर्वज्ञताक दावा करैत अछि, न सर्वसंशय स्वीकारैत अछि।

ज्ञानक सीमाकेँ कमजोरी नहि, अनुशासित विनम्रता मानल गेल अछि। स्मृति, इन्द्रिय, भाषा, आगमन आ संस्थागत ज्ञानक त्रुटि-संभावना एक-दोसरसँ जोड़ल गेल अछि। ‘प्रमाणित/सम्भावित/विवादित/अज्ञात’ जकाँ स्तर शोध-लेखन लेल उपयोगी अछि; एहिकेँ ग्रन्थक अन्य ऐतिहासिक अध्यायसभमे लगातार लागू कएल जाए तँ समानान्तर पद्धति आरो दृढ़ बनत।

5. समानान्तर दर्शनक पद्धति

समानान्तर दर्शनक पद्धति न तऽ केवल तुलनात्मक दर्शन, न केवल क्षेत्रीय इतिहास, न केवल सामाजिक आलोचना। ई स्रोत-समीक्षा, अवधारणात्मक स्पष्टता, प्रमाणमीमांसा, सबल पूर्वपक्ष, बहुपद्धति, इतिहास-सचेत तुलना, केन्द्र-हाशिया विश्लेषण आ आत्मसमीक्षाक संयुक्त अनुशासन अछि। एहि पद्धतिक उद्देश्य नूतन कट्टरता बनायब नहि, बल्कि एहन दार्शनिक क्षेत्र बनायब अछि जतय मिथिला, भारतीय, पाश्चात्य, सामाजिक, राजनीतिक आ धार्मिक परम्परासभ समान आलोचनात्मक गरिमासँ संवाद कऽ सकथि।

ई अध्याय सम्पूर्ण पोथीक पद्धतिशास्त्रीय घोषणापत्र अछि। स्रोत-स्तर, सबल पूर्वपक्ष, प्रमाणक समान कसौटी, इतिहास-दर्शनक भेद, अनुवाद-सावधानी आ केन्द्र-हाशिया विश्लेषण एकहि ढाँचामे व्यवस्थित अछि। विशेष महत्त्व ई जे समानान्तरता ‘मुख्यधाराक उलटा’ नहि, बल्कि आलोचनात्मक विस्तार कहल गेल अछि।

द्वितीय खण्ड — भारतीय दर्शन

6. वैदिक चिन्तन आ उपनिषदिक प्रश्न

वैदिक आ उपनिषदिक चिन्तन भारतीय दर्शनक एकरेखीय 'आरम्भ-बिन्दु' नहि, प्रश्नसभक विशाल प्रयोगशाला अछि। सृष्टि, ऋत, यज्ञ, आत्मा, ब्रह्म, कर्म, मृत्यु, ज्ञान आ मुक्ति पर अनेक स्वर बादक दर्शनसभ लेल समस्या-संसार तैयार करैत अछि। समानान्तर दर्शन एहि सामग्रीकेँ न त ऽ एकरूप आध्यात्मिक सत्य बनबैत अछि, न आधुनिक विज्ञानक पूर्वरूप; ओ स्रोतक बहुवचनता, ऐतिहासिक विकास आ तर्कात्मक प्रश्नशीलताकेँ केन्द्रमे राखैत अछि।

वैदिक आ उपनिषदिक सामग्रीकेँ एकरेखीय आरम्भ-कथा न मानि प्रश्नसभक बहुवचन क्षेत्र मानल गेल अछि। सृष्टि, ऋत, आत्मा, ब्रह्म, कर्म आ मृत्यु सम्बन्धी प्रश्नक प्रस्तुति संतुलित अछि। आधुनिक विज्ञानक पूर्वाभास खोजबाक प्रवृत्तिसँ दूरी एहि अध्यायक ऐतिहासिक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

7. सांख्य

सांख्य प्रकृति आ पुरुषक द्वैत, त्रिगुण सिद्धान्त, पच्चीस तत्त्व, सत्कार्यवाद आ विवेकमुक्तिक माध्यमसँ भारतीय दर्शनमे चेतना, कारणता आ दुःखक एक सुसंगठित उत्तर प्रस्तुत करैत अछि। ई आधुनिक विज्ञान नहि, मुदा चेतना आ जगतक सम्बन्ध पर गम्भीर दार्शनिक प्रतिपक्ष अछि। समानान्तर दर्शन ओकर ऐतिहासिक स्वतन्त्रता सम्मानित करैत, उपयोगी तुलना करैत, आ कठिन आपत्तिकेँ खुला राखैत अछि।

सांख्यक प्रकृति-पुरुष, त्रिगुण, सत्कार्यवाद आ मुक्तितत्त्वकेँ व्यवस्थित रूपमे पढ़ल गेल अछि। आधुनिक चेतना-अध्ययनसँ तुलना संकेतात्मक अछि, समरूपता घोषित नहि। ई संयम तुलनात्मक दर्शनक दृष्टिसँ प्रशंसनीय अछि।

8. योग

योग शरीरक व्यायामसँ बहुत व्यापक दर्शन अछि। चित्त, वृत्ति, प्रमाण, क्लेश, अभ्यास, वैराग्य, अष्टाङ्ग साधना, समाधि, ईश्वरप्रणिधान आ कैवल्य मिलि एक जटिल मनो-तत्त्वमीमांसीय प्रणाली बनबैत अछि। समानान्तर दर्शन योगक आत्मानुशासन आ अनुभव-परीक्षणक शक्ति स्वीकारैत अछि, संगहि निजी शान्तिकेँ सामाजिक अन्याय पर पर्दा बनय सँ रोकैत अछि।

योगकेँ केवल शारीरिक अभ्याससँ मुक्त कऽ चित्त, वृत्ति, क्लेश, अभ्यास, वैराग्य आ कैवल्यक दर्शन रूपमे स्थापित कएल गेल अछि। ग्रन्थ लोकप्रिय सरलीकरणक विरोध करैत अछि। भारतीय मनो-अनुशासन आ आधुनिक मनोविज्ञानक तुलना सम्भव अछि, मुदा अध्याय ठीक रूपेँ दार्शनिक आधारक भिन्नता बचबैत अछि।

9. न्याय

न्याय दर्शन तर्कशास्त्रसँ कहीं व्यापक अछि। प्रमाण, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, संशय, तर्क, निर्णय, वाद-पद्धति, यथार्थवाद आ मुक्ति—ई सभ एकहि ज्ञानात्मक परियोजनाक अंग छथि। समानान्तर दर्शनक पद्धतिगत मेरुदण्ड न्यायसँ एहि कारण जुड़ैत अछि जे न्याय प्रश्नक उत्तर केवल मतसँ नहि, सार्वजनिक रूपसँ जाँचल जा सकय एहन कारणसँ देबाक आग्रह करैत अछि।

न्यायकेँ केवल तर्कशास्त्र नहि, प्रमाणमीमांसा, वाद-पद्धति, यथार्थवाद आ मुक्तिक विस्तृत दर्शन मानल गेल अछि। समानान्तर दर्शनक प्रमाण-संवेदनशीलता एतहि सँ सर्वाधिक स्पष्ट स्रोत पबैत अछि। पंचावयव अनुमानकेँ अरस्तूवादी प्रतिरूपक प्रतिलिपि न मानब इतिहाससम्मत सावधानी अछि।

10. वैशेषिक

वैशेषिक भारतीय दर्शनक एकटा शक्तिशाली यथार्थवादी तत्त्वमीमांसा अछि। द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय आ परवर्ती अभाव-विमर्श द्वारा ई पूछैत अछि जे जगतमे की-की प्रकारक सत्ता मानल जाए आ ओकर परस्पर सम्बन्ध कोना बुझल जाए। एकर परमाणुवाद आधुनिक विज्ञान नहि, मुदा प्राकृतिक जगतक सूक्ष्म संरचना पर दार्शनिक अनुमानक ऐतिहासिक उदाहरण अछि।

वैशेषिकक पदार्थ-श्रेणी, सामान्य-विशेष आ समवायक विवेचन तत्त्वमीमांसात्मक श्रेणीकरणक शक्ति देखबैत अछि। आधुनिक गुण, सार्वभौमिकता आ व्यक्तित्व-विमर्शसँ तुलना फलदायी हो सकैत अछि, पर अध्याय समरूपताक अतिरेकसँ बाँचल अछि।

11. पूर्वमीमांसा

पूर्वमीमांसा देखबैत अछि जे दर्शन केवल “की अस्तित्वमान अछि?” नहि, “हम कर्तव्य कोना जानैत छी?” आ “भाषा हमरा क्रिया लेल कारण कोना दैत अछि?” सेहो अछि। समानान्तर दर्शन एहि परम्परासँ व्याख्याक सावधानी, प्रमाणक आत्मपरीक्षण आ भाषिक अनुशासन ग्रहण करैत अछि; मुदा ओकर धार्मिक पूर्वधारणाकेँ आधुनिक सार्वजनिक सत्यक स्वतः प्रमाण नहि मानैत।

पूर्वमीमांसाकेँ केवल कर्मकाण्ड नहि, भाषा, विधि, कर्तव्य आ प्रमाणक दर्शन रूपमे पढ़ब महत्त्वपूर्ण सुधार अछि। शाब्दिक प्रामाण्य आ व्याख्या-विधि समानान्तर पद्धतिक स्रोत-समीक्षासँ स्वाभाविक रूपेँ जुड़ैत अछि।

12. वेदान्त

वेदान्त एक दर्शन नहि, उपनिषदिक-ब्रह्मसूत्रीय प्रश्नसभक अनेक व्यवस्थित उत्तरक परिवार अछि। एकर अध्ययन आत्मा, ब्रह्म, जगत, ईश्वर, ज्ञान, भक्ति आ मुक्तिक प्रश्नकेँ संगहि व्याख्याक बहुलता बुझबैत अछि। समानान्तर दर्शनक लेल वेदान्तक प्रमुख शिक्षा अछि—एकहि प्रतिष्ठित पाठक अनेक व्याख्या सम्भव, अतः पाठाधिकार तर्कक स्थान नहि लऽ सकैत।

वेदान्तकेँ एकवचन ‘एक दर्शन’ नहि, अनेक प्रतिद्वन्द्वी व्याख्यात्मक परम्पराक परिवार मानल गेल अछि। ई प्रस्तुति इतिहाससम्मत अछि आ अद्वैत-केन्द्रिक सरलीकरण घटबैत अछि।

13. बौद्ध दर्शन

बौद्ध दर्शन दुःखक अनुभवसँ आरम्भ कऽ अनित्यता, अनात्म, प्रतीत्यसमुत्पाद, शून्यता, द्विसत्य, चेतना आ प्रमाण धरि विस्तृत अछि। एकर विभिन्न शाखासभ परस्पर असहमत होइतहुँ एक साझा अनुशासन देखबैत अछि—मानवीय दुःखक कारण बुझू, भ्रमक संरचना जाँचू, आ ज्ञानकेँ जीवन-परिवर्तनसँ जोड़ू।

बौद्ध दर्शनक भीतर अनित्यता, अनात्म, प्रतीत्यसमुत्पाद, शून्यता, द्विसत्य आ प्रमाण-विमर्शक भिन्न धारासभकेँ एकरूप न बनायब अध्यायक शक्ति अछि। दुःखक व्यावहारिक प्रश्न आ ज्ञानमीमांसीय विश्लेषणक सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि।

14. जैन दर्शन

जैन दर्शन जीवक नैतिक गरिमा, अहिंसा, कर्म-बन्धन, अनेकान्त, नय आ स्याद्वाद द्वारा एहन दर्शन प्रस्तुत करैत अछि जतय सत्यक खोज विनम्रता आ नैतिक संयमसँ जुड़ैत अछि। समानान्तर दर्शन एहि परम्परासँ बहुदृष्टिगत यथार्थक शिक्षा ग्रहण करैत अछि, मुदा “सभ सत्य बराबर”क निष्कर्ष अस्वीकार करैत अछि।

जैन अनेकान्तवाद, नय आ स्याद्वादकेँ ‘सभ सत्य समान’ जकाँ लोकप्रचलित गलत व्याख्यासँ अलग कएल गेल अछि। बहुदृष्टि आ अनुशासित शर्तबद्ध कथन समानान्तर दर्शनक सत्य-विमर्श लेल मूल प्रेरणा बनैत अछि।

15. लोकायत आ भौतिकवादी प्रश्न

लोकायतक महत्त्व दू स्तरपर अछि। पहिल, ई भारतीय दर्शन भीतर भौतिकवादी, इहलौकिक आ संशयवादी सम्भावनाक स्मृति अछि। दोसर, एकर खण्डित स्रोत समानान्तर इतिहासक नैतिकता सिखबैत अछि—उपेक्षित स्वर खोजू, मुदा रिक्त स्थान कल्पनासँ नहि भरू।

लोकायत पर अध्याय स्रोत-अभावक संकटकेँ स्वत: विषय बनबैत अछि। विरोधी स्रोतसँ पुनर्निर्माण करैत समय सावधानी, अनिश्चितता आ रिक्त स्थान नहि भरबाक नियम समानान्तर इतिहास-पद्धतिक उत्कृष्ट उदाहरण अछि।

16. भाषा, शब्द आ अर्थ

भाषा विचार, ज्ञान, सामाजिक प्रथा आ सत्ता सभक माध्यम अछि। शब्दार्थ, वाक्यार्थ, शाब्दप्रमाण, वक्तृ-अभिप्राय, रूपक, अनुवाद आ भाषिक न्यायक प्रश्न एक-दोसरसँ जुड़ल छथि। समानान्तर दर्शन भाषा-दर्शनक मूल सूत्र रूपमे ई मानैत अछि—शब्द केवल वस्तुक नाम नहि; शब्द सम्बन्ध बनबैत अछि, ज्ञान पहुँचबैत अछि, सत्ता वितरण करैत अछि, आ कखनो वास्तविकताक महत्त्वपूर्ण पक्षकेँ अदृश्य सेहो करैत अछि।

भाषा, शब्द, अर्थ, शाब्दप्रमाण आ अनुवादकेँ दार्शनिक समस्या मानब पुस्तकक बहुभाषिक परियोजना लेल निर्णायक अछि। तकनीकी पदक कार्यार्थ स्पष्ट करबाक आग्रह उचित; मूल ग्रन्थमे रोमन पदक प्रस्तुति यद्यपि सर्वत्र एकरूप नहि।

तृतीय खण्ड — मिथिलाक दार्शनिक समानान्तर परम्परा

17. विदेह: प्रश्नक भूगोल

विदेह आ मिथिलाकेँ एकहि अपरिवर्तित इकाई मानब इतिहासक सरलीकरण होयत। मुदा उपनिषदिक विदेहक प्रश्न-स्मृति, परवर्ती मिथिलाक न्यायीय परम्परा आ आधुनिक मैथिली सांस्कृतिक संसार बीच संवाद स्थापित करब फलदायी अछि, जँ प्रत्येक स्तरक प्रमाण अलग राखल जाए। समानान्तर दर्शनक लेल मिथिला भूगोल, भाषा आ पद्धति—तीनू अछि; परन्तु एहि तीनूक सम्बन्ध ऐतिहासिक जाँचसँ स्थापित होयत, भावनासँ नहि।

विदेह आ आधुनिक मिथिलाकेँ अपरिवर्तित एकक मानबाक प्रलोभनसँ अध्याय सावधान करैत अछि। ‘प्रश्नक भूगोल’क धारणा प्रभावशाली अछि, मुदा ऐतिहासिक निरन्तरताक प्रत्येक दाबी लेल काल-विशिष्ट साक्ष्यक आवश्यकता रहत।

18. याज्ञवल्क्य, गार्गी आ मैत्रेयी

याज्ञवल्क्य, गार्गी आ मैत्रेयीकेँ एक-दोसरसँ अलग जीवनचरितक पात्र नहि, संवादात्मक दार्शनिक क्षेत्रक सह-निर्माता रूपमे पढ़लासँ बृहदारण्यकक बौद्धिक समृद्धि स्पष्ट होइत अछि। गार्गी तत्त्वमीमांसाक प्रश्नक सीमा बढ़बैत छथि, मैत्रेयी मूल्य आ अमरत्वक प्रश्न तीक्ष्ण करैत छथि, याज्ञवल्क्य आत्मा आ अंतिम वास्तविकताक उत्तर विकसित करैत छथि। समानान्तर दर्शन एहि बहुवक्ता संरचनाकेँ अपन पद्धतिक प्राचीन प्रेरणा मानैत अछि।

याज्ञवल्क्य, गार्गी आ मैत्रेयीकेँ एक संवादात्मक क्षेत्रक सह-निर्माता रूपमे पढ़ब लिंग-संवेदनशील आ दार्शनिक दुनू दृष्टिसँ फलदायी अछि। पात्रसभक उत्तराधुनिक पुनर्पाठ नहि, मूल संवादक प्रश्न-रचना पर बल अध्यायकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि।

19. न्याय-वैशेषिक आ मिथिलाक तार्किक संस्कार

मिथिलाक तार्किक संस्कारक वास्तविक महत्त्व महान नामसभक संख्या नहि, बौद्धिक जिम्मेवारीक पद्धति अछि—परिभाषा स्पष्ट करू, प्रमाण दिअ, प्रतिपक्ष सुनू, तर्कक दोष चिन्हू, निष्कर्ष संशोध्य राखू। एहि पद्धतिक आधुनिक पुनर्पाठ लोकतान्त्रिक समाजक ज्ञान-संस्कृति मजबूत कऽ सकैत अछि।

मिथिलाक तार्किक संस्कारकेँ महान व्यक्तिक सूचीसँ ऊपर उठा कऽ परिभाषा, प्रमाण, प्रतिपक्ष आ दोष-परीक्षणक सार्वजनिक अनुशासन रूपमे व्याख्यायित कएल गेल अछि। ई क्षेत्रीय गौरवक बदला पद्धतिगत योगदान पर बल दैत अछि।

20. उदयनाचार्य

उदयनाचार्यक दर्शन न्याय-वैशेषिक परम्पराक एक उच्च बिन्दु अछि, जतय आत्मा, कारणता, ईश्वर, सार्वभौम आ प्रतिपक्ष-विमर्श एक-दोसरसँ जुड़ैत अछि। हुनक महत्त्व केवल धार्मिक निष्कर्षमे नहि, तर्कक सार्वजनिकता मे अछि—विश्वास कारण प्रस्तुत करय, आपत्ति सुने, प्रत्युत्तर दे, आ दार्शनिक कसौटी स्वीकार करय। समानान्तर दर्शन एहि बौद्धिक साहसकेँ अपन मिथिला-केन्द्रित पद्धतिक महत्त्वपूर्ण पूर्ववर्ती रूप मानैत अछि।

उदयनाचार्यक आत्मा, कारणता, ईश्वर आ वाद-विवेकक प्रस्तुति समानान्तर दर्शनक ‘सबल पूर्वपक्ष’ सिद्धान्तसँ मेल खाइत अछि। आस्तिक निष्कर्षक बजाय तर्कक सार्वजनिकता पर जोर आलोचनात्मक अध्ययनक सही दिशा अछि।

21. वाचस्पति मिश्र

वाचस्पति मिश्रक दार्शनिक महत्त्व बहुशास्त्रीय पठन, व्याख्यात्मक सृजनशीलता आ परम्परासभक पारस्परिक संवादमे अछि। समानान्तर दर्शन एहि आदर्शकेँ अपनबैत अछि—एक विद्यालय, एक स्रोत, एक व्याख्या वा एक केन्द्रकेँ अन्तिम अधिकार नहि मानब; मतभेदकेँ नष्ट नहि, स्पष्ट करब; आ आलोचनात्मक पठनकेँ बौद्धिक निष्ठाक रूपमे स्वीकारब।

वाचस्पति मिश्रक बहुशास्त्रीय व्याख्याकार-रूप ग्रन्थक बहुपरम्परागत आदर्शकेँ ऐतिहासिक आधार दैत अछि। एक विद्यालयक भीतर बन्द नहि रहबाक बौद्धिक चरित्र यहाँ प्रमुख प्रतिमान बनैत अछि।

22. गङ्गेश उपाध्याय

गङ्गेश उपाध्यायक महत्त्व प्रमाणमीमांसाक चारि क्षेत्रक पुनर्विश्लेषण, अनुमान–व्याप्तिक सूक्ष्मता, भाषिक ज्ञानक परीक्षण आ नव्य-न्यायीय विश्लेषण-भाषाक विकासमे अछि। समानान्तर दर्शन हुनक पद्धतिसँ एकटा मूल

सिद्धान्त ग्रहण करैत अछि—अस्पष्टता विचारक शत्रु हो सकैत अछि; परिभाषा, सम्बन्ध आ प्रमाणक सूक्ष्म परीक्षण न्यायपूर्ण निष्कर्षक आधार बनि सकैत अछि।

गङ्गेश उपाध्यायक प्रमाणमीमांसा, व्याप्ति, भाषिक ज्ञान आ विश्लेषण-पद्धतिक विवेचन पुस्तकक केन्द्रीय शिखर अछि। आधुनिक शोध सेहो गङ्गेशकेँ चौदहम शताब्दीक मिथिला तथा नव्य-न्यायक निर्णायक व्यक्तित्व मानैत अछि। अध्यायमे ऐतिहासिक दाबी आ पद्धतिगत ग्रहण बीच भेद अधिकांशतः साफ अछि।

23. नव्य-न्याय: भाषाक सूक्ष्म अनुशासन

नव्य-न्यायक महत्त्व भाषाक सूक्ष्म अनुशासन, परिभाषाक कठोर परीक्षण आ सम्बन्ध-स्पष्टतामे अछि। समानान्तर दर्शन एहि परम्परासँ सटीकता ग्रहण करैत अछि, मुदा संप्रेषणकेँ समान महत्त्व दैत अछि। सूक्ष्मता बिना विचार भ्रमपूर्ण; संप्रेषण बिना सूक्ष्मता निष्प्रभावी।

नव्य-न्यायक सूक्ष्म भाषिक अनुशासनकेँ आधुनिक विश्लेषणात्मक दर्शनक सीधा पूर्वरूप घोषित नहि कएल गेल, बल्कि तुलना-सक्षम स्वतंत्र परम्परा मानल गेल अछि। ई सावधानी विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

24. लोक, शास्त्र आ समानान्तर मिथिला

लोक आ शास्त्र परस्पर विरोधी संसार नहि, मानव-अनुभवक अलग अभिलेख छथि। समानान्तर दर्शन शास्त्रक कठोर अवधारणात्मक साधन आ लोकक अनुभवगत सामग्री दुनूकेँ आलोचनात्मक संवादमे रखैत अछि। मिथिलाक दार्शनिक पुनर्पाठ तखन विश्वसनीय होयत जखन गौरवक संग आत्मालोचना, परम्पराक संग हाशिया, आ संस्कृत ग्रन्थक संग मैथिली लोकस्वर सेहो उपस्थित रहत।

लोक आ शास्त्रकेँ विरोधी जगत नहि, अलग प्रकारक अभिलेख मानब समानान्तर पद्धतिक सामाजिक विस्तार अछि। लोकस्रोतकेँ रोमानीकरण न करबाक चेतावनी एहि अध्यायकेँ संतुलित बनबैत अछि।

चतुर्थ खण्ड — पाश्चात्य दर्शन

25. यूनानी प्रश्न

प्राचीन यूनानी दर्शनक शक्ति ओकर प्रश्नक बहुलतामे अछि—प्रकृतिक मूल, परिवर्तन, स्थायित्व, संख्या, पदार्थ, भाषा, कानून, ज्ञान आ नीक जीवन। समानान्तर दर्शन एहि परम्पराकेँ गम्भीरतासँ ग्रहण करैत अछि, मुदा बहु-आरम्भक विश्व-दृष्टि राखैत अछि। दर्शनक इतिहास एकटा एकल मशालक यात्रा नहि; अनेक अग्निक परस्पर प्रकाश अछि।

यूनानी दर्शनक प्रस्तुति ‘पश्चिमक एकमात्र आरम्भ’क दाबी नहि करैत; प्रकृति, परिवर्तन, संख्या, कानून आ नीक जीवनक प्रश्न-परम्परा रूपमे पढ़ैत अछि। बहु-आरम्भक विश्व-दर्शनक प्रस्ताव यहाँ स्पष्ट अछि।

26. सुकरात, प्लेटो आ अरस्तू

सुकरात, प्लेटो आ अरस्तू दार्शनिक इतिहासक तीन विशिष्ट शैली प्रस्तुत करैत छथि—प्रश्न, संवादात्मक सिद्धान्त-निर्माण, आ व्यवस्थित विश्लेषण। समानान्तर दर्शन हुनक बौद्धिक शक्ति ग्रहण करैत अछि, मुदा एकहि संग पूछैत अछि जे ज्ञानक अधिकार ककरा भेटल, नागरिकता ककरा लेल छल, आ कोन अनुभव दार्शनिक इतिहासक बाहर छोड़ल गेल। महान परम्पराक सम्मान ओकर आलोचना रोकैत नहि; उलटे, कठोर आलोचना सम्मानक गम्भीर रूप अछि।

सुकरात, प्लेटो आ अरस्तूकेँ प्रश्न, संवाद, प्रणाली आ सद्गुणक विभिन्न शैली रूपमे पढ़ल गेल अछि। प्लेटोमे ज्ञान-सत्ता सम्बन्ध आ अरस्तूमे चरित्र-नैतिकता पर जोर समानान्तर आलोचनासँ उपयोगी संवाद बनबैत अछि।

27. मध्ययुगीन दर्शन

मध्ययुगीन दर्शनक इतिहास ज्ञानक बहुभाषिक परिसंचरणक इतिहास सेहो अछि। यूनानी, अरबी, यहूदी आ लैटिन संसार परस्पर अनुवाद, आलोचना आ पुनर्व्याख्यासँ जुड़ल। एहि कालकेँ अन्धकार कहि हटायब इतिहासक जटिलताकेँ नष्ट करैत अछि।

मध्ययुगीन दर्शनकेँ अन्धकार-कालक रूढ़ धारणा सँ मुक्त कऽ यूनानी, अरबी, यहूदी आ लैटिन परिसंचरणक इतिहास मानल गेल अछि। अनुवाद आ बौद्धिक परिवहनक भूमिका समानान्तर इतिहास-दृष्टिक अनुकूल अछि।

28. देकार्त, स्पिनोजा आ लाइबनित्स

देकार्त संशयक अनुशासन, स्पिनोजा वास्तविकताक एकता आ कारणात्मक समझ, लाइबनित्स पर्याप्त कारण आ सम्भाव्यताक गम्भीरता सामने आनैत छथि। तीनू मिलि आधुनिक यूरोपीय तत्त्वमीमांसा आ ज्ञानमीमांसाक प्रमुख प्रश्न बनबैत छथि, मुदा हुनका एक “बुद्धिवादी” कोठलीमे बन्द करब उचित नहि।

देकार्त, स्पिनोजा आ लाइबनित्सक बीच संशय, एकत्व, कारणता आ पर्याप्त कारणक प्रश्नसभक व्यवस्थित तुलना अछि। तिनका एकरूप ‘बुद्धिवादी’ खाँचा भरि न देब अध्यायक ताकत अछि।

29. लॉक, बर्कली आ ह्यूम

लॉक ज्ञानक उत्पत्ति आ सीमा, बर्कली पदार्थक अवधारणा, ह्यूम कारणता, आत्मा आ आगमनक औचित्यपर मूल प्रश्न उठबैत छथि। समानान्तर दर्शन विशेषतः ह्यूमक आगमन-संशयकेँ भारतीय व्याप्ति-विमर्शसँ संवादमे रखैत अछि—ऐतिहासिक एकरूपता बिना, समस्या-संरचनात्मक तुलना द्वारा।

लॉक, बर्कली आ ह्यूमक अनुभववादक भिन्न रूपसभ स्पष्ट अछि। ह्यूमक आगमन-समस्याकेँ न्यायीय व्याप्ति-विमर्शसँ संवादमे रखब मौलिक तुलनात्मक अवसर खोलैत अछि; इतिहासगत समरूपता घोषित नहि कएल गेल।

30. कान्ट

कान्ट ज्ञानमे ज्ञाताक सक्रिय भूमिका, अनुभवक सीमा, कारणताक संरचना, नैतिक स्वायत्तता आ सार्वभौमिक गरिमाक शक्तिशाली रूप प्रस्तुत करैत छथि। समानान्तर दर्शन हुनक सार्वभौमिकताकेँ स्वीकारैतहुँ ओकर ऐतिहासिक सीमासँ प्रश्न करैत अछि। सार्वभौमिकता तखन न्यायपूर्ण बनत जखन “मनुष्य” शब्दमे वास्तवमे सभ मनुष्य समाहित होथि।

कान्टक ज्ञान-संरचना, सीमा, नैतिक स्वायत्तता आ गरिमाकेँ आलोचनात्मक सम्मानसँ पढ़ल गेल अछि। सार्वभौमिकता आ यूरोपीय ऐतिहासिक सीमा बीच तनाव चिन्हित करब आवश्यक आ उचित अछि।

31. हेगेल आ द्वन्द्व

हेगेलसँ समानान्तर दर्शन तीन शिक्षा ग्रहण करैत अछि—वास्तविकताकेँ प्रक्रिया मानू, विरोधकेँ विचारक शत्रु नहि बल्कि परीक्षणक साधन मानू, आ

स्वतंत्रताकेँ सामाजिक संस्थासँ जोड़ू। मुदा ओ इतिहासक पूर्वनिर्धारित अन्त स्वीकार नहि करैत अछि। द्वन्द्व उपयोगी अछि; नियतिवाद आवश्यक नहि।

हेगेलक प्रक्रिया, द्वन्द्व आ संस्थागत स्वतंत्रताक अंतर्दृष्टि ग्रहण कएल गेल, मुदा इतिहासक पूर्वनिर्धारित अन्त अस्वीकारल गेल अछि। ई चयनात्मक ग्रहण समानान्तर पद्धतिक उदाहरण अछि।

32. मार्क्स

मार्क्सक स्थायी योगदान ई अछि जे दर्शनकेँ श्रम, उत्पादन, वर्ग आ भौतिक जीवनक ठोस धरातलपर आनलनि। समानान्तर दर्शन एहि शक्ति-समीक्षाकेँ ग्रहण करैत अछि, मुदा आर्थिक नियतिवाद अस्वीकार करैत अछि। न्याय लेल वर्ग देखब आवश्यक; संगहि जाति, लिंग, भाषा, क्षेत्र आ अन्य सत्ता-संरचना सेहो देखब आवश्यक।

मार्क्सक श्रम, वर्ग आ भौतिक जीवनक शक्ति-समीक्षा केन्द्रीय अछि, संगहि आर्थिक नियतिवादक सीमा चिन्हित अछि। जाति, लिंग, भाषा आ क्षेत्रक स्वतंत्र प्रभाव जोड़ब भारतीय सामाजिक संदर्भमे आवश्यक विस्तार अछि।

33. कीर्केगार्द आ नीत्शे

अस्तित्वगत चुनाव आ मूल्यक वंशावली आधुनिक दर्शनक दू शक्तिशाली उपकरण अछि। समानान्तर दर्शन कीर्केगार्दसँ व्यक्तिगत जिम्मेवारी आ नीत्शेसँ मूल्य-समीक्षा ग्रहण करैत अछि, मुदा आस्था अथवा शक्ति ककरो सार्वजनिक नैतिक परीक्षणसँ ऊपर नहि राखैत अछि। वंशावली आलोचनाक आरम्भ अछि, निष्कर्ष नहि।

कीर्केगार्दक व्यक्तिगत जिम्मेवारी आ नीत्शेक मूल्य-वंशावलीक तुलना मनुष्यक आत्मनिर्णय आ सत्ता-समीक्षाकेँ एक संग रखैत अछि। दार्शनिक असहमति छिपायल नहि गेल अछि।

34. प्रघटनावाद आ अस्तित्ववाद

प्रघटनावाद अनुभवक बनावट बुझबैत अछि; अस्तित्ववाद स्वतंत्रता आ जिम्मेवारी तीक्ष्ण करैत अछि। समानान्तर दर्शन दुनूक शक्ति ग्रहण करैत अछि, मुदा स्वतंत्रताकेँ सामाजिक परिस्थिति सँ काटि नहि देखैत अछि।

व्यक्ति चुनाव करैत अछि, मुदा चुनावक मैदान इतिहास आ सत्ता द्वारा असमान रूपसँ बनाओल जाइत अछि।

प्रघटनावाद अनुभवक संरचना आ अस्तित्ववाद स्वतंत्रता-जिम्मेवारी पर बल दैत अछि। सामाजिक परिस्थिति बिना स्वतंत्रताक विवेचन अधूरा होयत—ग्रन्थक ई संशोधन भारतीय सामाजिक यथार्थसँ संवाद स्थापित करैत अछि।

35. विश्लेषणात्मक दर्शन

विश्लेषणात्मक दर्शन समानान्तर दर्शनकेँ भाषिक स्पष्टता, तर्कीय अनुशासन आ अवधारणात्मक सूक्ष्मता दैत अछि। नव्य-न्याय एहि संवादक भारतीय साझेदार बनि सकैत अछि, मुदा दुनूक ऐतिहासिक स्वतन्त्रता सुरक्षित रहबाक चाही। सूक्ष्मता उपयोगी तखन अछि जखन ओ गलत निष्कर्ष घटबैत अछि आ सार्वजनिक समझ बढ़बैत अछि।

विश्लेषणात्मक दर्शनसँ भाषिक स्पष्टता आ अवधारणात्मक सूक्ष्मता ग्रहण कएल गेल अछि। नव्य-न्यायसँ तुलना पुस्तकक सबसे फलदायी क्षेत्रसभमे एक अछि, बशर्ते इतिहासगत आत्मनिर्भरता सुरक्षित रहय—जे ग्रन्थ प्रायः करैत अछि।

36. व्यवहारवाद

व्यवहारवाद दर्शनकेँ जीवनक बीच वापस अनैत अछि। एकर शिक्षा ई नहि जे सत्य सुविधाक नाम अछि, बल्कि ई जे अवधारणा, सिद्धान्त आ संस्था अपन व्यावहारिक परिणामसँ पूर्णतः अलग नहि रहि सकैत अछि। समानान्तर दर्शन एहि शिक्षाकेँ अपन प्रमाण-संवेदनशीलता आ गरिमा-आधारित नैतिकतासँ जोड़ैत अछि।

व्यवहारवादकेँ ‘जे उपयोगी से सत्य’ जकाँ सरलीकरणसँ बचा कऽ अन्वेषण, परिणाम आ जीवनगत प्रयोगक दर्शन रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। ई पुस्तकक त्रुटिसंशोध्यवादक संग स्वाभाविक मेल रखैत अछि।

37. विज्ञान-दर्शन

समानान्तर दर्शन विज्ञानकेँ न देवत्व दैत अछि, न अवमूल्यित करैत अछि। विज्ञान भौतिक जगत बुझबाक सर्वोत्तम सार्वजनिक पद्धतिसभमे एक अछि; नैतिक मूल्यक एकमात्र स्रोत नहि।

विज्ञान-दर्शन अध्याय विज्ञानकेँ सर्वोच्च नैतिक प्राधिकार नहि, विश्वसनीय सार्वजनिक ज्ञान-पद्धति मानैत अछि। तथ्य आ मूल्यक भेद पर स्पष्टता पुस्तकक आधुनिक भागकेँ मजबूत आधार दैत अछि।

पंचम खण्ड — सामाजिक आ राजनीतिक दर्शन

38. व्यक्ति आ समाज

समाज बिना व्यक्ति अधूरा; व्यक्तिगत गरिमा बिना समाज अत्याचारी। समानान्तर दर्शन सामाजिक स्थितिक वास्तविक प्रभाव स्वीकारैत अछि, संगहि व्यक्तिक आलोचनात्मक स्वायत्तता आ समान मूल गरिमाकेँ केन्द्रमे रखैत अछि।

व्यक्ति आ समाजक अध्याय द्वैतवादी चयन छोड़ि पारस्परिकता पर बल दैत अछि। सामाजिक संरचना व्यक्ति पर प्रभाव डालैत अछि, मुदा व्यक्ति केवल संरचनाक उत्पाद नहि—ई संतुलन राजनीतिक दर्शनक आगेक अध्यायसभक आधार बनैत अछि।

39. राज्यक औचित्य

राज्य नागरिकक मालिक नहि; सार्वजनिक औचित्यक अधीन संस्था अछि। सुरक्षा, अधिकार, स्वशासन, कल्याण आ न्याय राज्यक सम्भावित औचित्य दैत अछि, मुदा कोनो एक उद्देश्य अनियन्त्रित सत्ता उचित नहि ठहरबैत।

राज्यक औचित्यकेँ सुरक्षा, अधिकार, स्वशासन, कल्याण आ न्यायसँ परखल गेल अछि। राज्य नागरिकक मालिक नहि, सार्वजनिक औचित्याधीन संस्था—ई सूत्र ग्रन्थक लोकतान्त्रिक नैतिकता स्पष्ट करैत अछि।

40. स्वतंत्रता

स्वतंत्रता बहुस्तरीय अछि—दमनसँ मुक्ति, वास्तविक विकल्पक उपलब्धता, आ अपन जीवनक अर्थ चुनबाक क्षमता। मुदा स्वतंत्रता असीम अधिकार नहि; दोसर व्यक्तिक समान गरिमा ओकर नैतिक सीमा अछि।

स्वतंत्रताक नकारात्मक, वास्तविक-क्षमतात्मक आ आत्मनिर्णयात्मक आयामसभकेँ एकसाथ पढ़ल गेल अछि। समान गरिमा स्वतंत्रताक सीमा बनैत अछि; ई अधिकार-विमर्शकेँ सामाजिक दायित्वसँ जोड़ैत अछि।

41. समानता

समानता एकरूपता नहि; समान नैतिक दर्जा, समान नागरिक सम्मान, उचित अवसर आ वास्तविक क्षमता सुनिश्चित करबाक सिद्धान्त अछि। समानान्तर दर्शनक सूत्र: जन्म नैतिक योग्यता नहि।

समानताकेँ एकरूपता नहि, समान नैतिक दर्जा, सम्मान, अवसर आ क्षमता मानल गेल अछि। ‘जन्म नैतिक योग्यता नहि’ ग्रन्थक सबसे तीक्ष्ण सामाजिक सूत्रसभमे एक अछि।

42. न्याय

न्याय संसाधन, अधिकार, सम्मान, प्रक्रिया, प्रतिनिधित्व आ इतिहास सभकेँ समेटैत अछि। समानान्तर दर्शन न्यायकेँ गरिमा आ सार्वजनिक औचित्यक संयुक्त कसौटी मानैत अछि।

न्यायकेँ वितरण मात्र नहि, अधिकार, सम्मान, प्रक्रिया, प्रतिनिधित्व आ इतिहासक संयुक्त कसौटी बनाओल गेल अछि। एहि बहुआयामी मॉडलमे अलग सिद्धान्तसभक प्राथमिकता-विवाद आरो विस्तार पा सकैत अछि।

43. जाति आ सामाजिक पदानुक्रम

जाति-विमर्श समानताक निर्णायक परीक्षा अछि। जे समाज जन्मकेँ दर्जा बनबैत अछि, ओ गरिमा-सिद्धान्तक विरोधमे अछि। समानान्तर दर्शन जन्म-आधारित पदानुक्रमक नैतिक अस्वीकृति करैत अछि।

जाति-आधारित पदानुक्रमक नैतिक अस्वीकृति स्पष्ट, अनिर्विवाद आ गरिमा-सिद्धान्तसँ सुसंगत अछि। अध्याय सामाजिक दर्शनकेँ भारतीय ऐतिहासिक यथार्थसँ जोड़ैत अछि।

44. वर्ग आ आर्थिक सत्ता

आर्थिक सत्ता राजनीतिक आ सामाजिक सत्ता सँ अलग नहि। समानान्तर दर्शन सम्पत्ति-अधिकार स्वीकारैत अछि, मुदा ओकर सामाजिक परिणाम, श्रम-गरिमा आ लोकतान्त्रिक समानतापर प्रभावक निरन्तर परीक्षण माँगैत अछि।

वर्ग आ आर्थिक सत्ता पर विमर्श सम्पत्ति-अधिकारक सामाजिक परिणाम, श्रम-गरिमा आ लोकतान्त्रिक समानता पर जोर दैत अछि। मार्क्सीय अन्तर्दृष्टि ग्रहण कएल गेल, पर पूर्ण आर्थिक नियतिवाद स्वीकारल नहि।

45. स्त्री, लिंग आ सत्ता

लिंग-न्याय गरिमा, स्वायत्तता, श्रमक मान्यता, सुरक्षा, समान अवसर आ प्रतिनिधित्वक संयुक्त प्रश्न अछि। समानान्तर दर्शन स्त्रीवादी विचारकेँ कोनो परिशिष्ट नहि, सामाजिक दर्शनक केन्द्रीय आत्मसमीक्षा मानैत अछि।

स्त्री, लिंग आ सत्ता अध्याय स्त्रीवादी आलोचनाकेँ परिशिष्ट नहि, सामाजिक दर्शनक आत्मसमीक्षा बनबैत अछि। स्वायत्तता, श्रम, सुरक्षा, अवसर आ प्रतिनिधित्वक संयुक्त ढाँचा मजबूत अछि।

46. भाषा, क्षेत्र आ अस्मिता

भाषा, क्षेत्र आ अस्मिता लोकतान्त्रिक न्यायक मूल प्रश्न छथि। पहचानक सम्मान आ बहुलताक सम्मान एक-दोसरक शर्त अछि।

भाषा, क्षेत्र आ अस्मिताकेँ लोकतान्त्रिक न्यायक केन्द्रीय मुद्दा बनाओल गेल अछि। बहुभाषिक भारत आ मिथिलाक संदर्भमे ई अध्याय पुस्तकक क्षेत्रीय केन्द्रक राजनीतिक औचित्य स्पष्ट करैत अछि।

47. लोकतन्त्र

लोकतन्त्र मतदान, अधिकार, संस्था, प्रतिनिधित्व, सामाजिक सम्मान आ वैध असहमतिक संयुक्त व्यवस्था अछि। शत्रु बनायब लोकतन्त्रक सहज रोग; प्रतिपक्षकेँ वैध मानब ओकर औषधि।

लोकतन्त्रकेँ मतदानसँ विस्तृत कऽ अधिकार, संस्था, असहमति, प्रतिनिधित्व आ सम्मानक व्यवस्था मानल गेल अछि। प्रतिपक्षकेँ शत्रु न मानबाक आग्रह पुस्तकक वाद-पद्धतिक आधुनिक राजनीतिक रूप अछि।

48. गांधी

गांधीक सर्वोत्तम अध्ययन श्रद्धा आ आलोचनाकेँ एक संग राखैत अछि। महान व्यक्तिक सम्मानक सर्वोत्तम रूप पूजा नहि, आलोचनात्मक अध्ययन अछि।

गांधी पर अध्याय श्रद्धा आ आलोचनाकेँ एकसाथ रखैत अछि। व्यक्तिपूजासँ दूरी आ नैतिक प्रयोगक परीक्षण ग्रन्थक समान प्रमाण-कसौटीक अनुरूप अछि।

49. आम्बेडकर

आम्बेडकरक दर्शन लोकतन्त्रकेँ मतपेटीसँ उठाकऽ सामाजिक सम्बन्ध, गरिमा, प्रतिनिधित्व आ बन्धुत्व धरि लऽ जाइत अछि। “जन्म नैतिक योग्यता नहि”—समानान्तर दर्शनक एहि सूत्रक भारतीय आधुनिक दार्शनिक आधार आम्बेडकरक जाति-आलोचनासँ गहराइ प्राप्त करैत अछि।

आम्बेडकरक जाति-आलोचना, संवैधानिकता, प्रतिनिधित्व, बन्धुत्व आ सामाजिक लोकतन्त्रकेँ गरिमा-आधारित दर्शनक निर्णायक आधुनिक स्रोत बनाओल गेल अछि। पुस्तकक सामाजिक भागमे ई अध्याय वैचारिक केन्द्रक काम करैत अछि।

षष्ठ खण्ड — धर्म-दर्शन

50. धर्म की अछि?

धर्म एक बहुस्तरीय मानवीय घटना अछि—विश्वास, अभ्यास, समुदाय, अनुभव, नैतिकता आ मुक्तिक कल्पना। कोनो एक परिभाषा सभ परम्पराकेँ पूरा नहि समेटैत। आगाँक अध्याय ईश्वर, आस्था, दुःख, कर्म, बहुलता आ धर्म-राज्य सम्बन्धक विशिष्ट प्रश्न खोलत।

धर्मक परिभाषाकेँ विश्वास मात्र नहि, अभ्यास, समुदाय, अनुभव, नैतिकता आ मुक्ति-संकल्पनासँ जोड़ल गेल अछि। ई बहुस्तरीय परिभाषा आगामी अध्यायसभक विवाद-क्षेत्र ठीक रूपेँ तैयार करैत अछि।

51. ईश्वरक प्रश्न

ईश्वर-विमर्श एकटा हाँ/नहि मतदान नहि, बल्कि कारणता, नैतिकता, अनुभव, दुःख, स्वतंत्रता आ व्याख्याक बहुस्तरीय दार्शनिक क्षेत्र अछि। समानान्तर दर्शन ईश्वरवादकेँ विशेषाधिकार नहि दैत, न नास्तिकताकेँ स्वतः बुद्धिवादी विजय मानैत अछि। समान प्रमाण-कसौटी, सबल प्रतिपक्ष आ गरिमापूर्ण संवाद एहि अध्यायक मूल पद्धति अछि।

ईश्वरक प्रश्नकेँ केवल हाँ/नहि विकल्प न मानि कारणता, नैतिकता, अनुभव, दुःख आ व्याख्याक क्षेत्र बनाओल गेल अछि। आस्तिक आ नास्तिक दुनू पक्ष पर समान तर्क-कसौटी लागू करबाक दावा पुस्तकक निष्पक्षता बढ़बैत अछि।

52. आस्था आ तर्क

आस्था तर्कक पूर्ण विकल्प भऽ जाए तँ कट्टरता सम्भव; तर्क मानव अनुभवक प्रत्येक क्षेत्रकेँ समाप्त करबाक दावा करय तँ बुद्धिवादी अहंकार सम्भव। समानान्तर दर्शन व्यक्ति केँ आस्था, आस्था-परिवर्तन आ अनास्थाक स्वतंत्रता दैत अछि, मुदा सार्वजनिक बाध्यताक लेल साझा औचित्य माँगैत अछि।

आस्था आ तर्कक सम्बन्धमे कट्टरताक दू रूप चिन्हित अछि—तर्क-विरोधी आस्था आ अनुभव-विरोधी बुद्धिवाद। सार्वजनिक कारणक आवश्यकता धर्म-दर्शनकेँ राजनीतिक नैतिकतासँ जोड़ैत अछि।

53. दुःख आ अशुभक समस्या

अशुभक समस्या बौद्धिक, अस्तित्वगत आ नैतिक तीनू स्तरपर अछि। समानान्तर दर्शन तैयार सांत्वना नहि दैत; ओ तर्क जाँचैत अछि, पीड़ितक गरिमा केन्द्रमे रखैत अछि आ सामाजिक रूपसँ परिवर्तनीय दुःखक विरुद्ध जिम्मेवारीपर बल दैत अछि।

दुःख आ अशुभक समस्या बौद्धिक पहेली मात्र नहि, पीड़ित मनुष्यक गरिमासँ जुड़ल प्रश्न मानल गेल अछि। तैयार सांत्वनासँ दूरी आलोचनात्मक गंभीरता देत अछि।

54. कर्म, पुनर्जन्म आ मोक्ष

कर्म, पुनर्जन्म आ मोक्ष भारतीय दर्शनक विशाल बहसक क्षेत्र छथि। समानान्तर दर्शन कर्मकेँ भाग्यवाद वा पीड़ित-दोषारोपणमे बदलय नहि दैत; पुनर्जन्मक दाबीपर प्रमाणक सामान्य कसौटी लागू करैत अछि; आ मोक्षकेँ संसारसँ पलायन नहि, बन्धनक पहिचान आ मुक्ति-दृष्टिक बहुविध दार्शनिक प्रश्न रूपमे पढ़ैत अछि।

कर्म, पुनर्जन्म आ मोक्षक बहुविध भारतीय व्याख्यासभ अलग कएल गेल अछि। कर्मक भाग्यवाद अथवा पीड़ित-दोषारोपण रूपक नैतिक आलोचना अत्यन्त आवश्यक अछि।

55. धर्मबहुलता

धर्मबहुलता समान सत्यक घोषणा नहि, समान गरिमाक राजनीतिक-नैतिक सिद्धान्त आ परस्पर विरोधी सत्य-दाबीक ज्ञानमीमांसीय चुनौती दुनू अछि।

समानान्तर दर्शन धार्मिक स्वतंत्रताकेँ आस्था, परिवर्तन आ अनास्थाक त्रयीपर रखैत अछि, आ संवादकेँ आलोचना तथा सम्मान दुनूसँ जोड़ैत अछि।

धर्मबहुलताकेँ ‘सभ धर्म समान सत्य’ घोषित नहि कऽ नागरिक गरिमा आ प्रतिद्वन्द्वी सत्य-दाबीक दुहरी समस्या रूपमे पढ़ल गेल अछि। ई भेद दार्शनिक रूपेँ सटीक अछि।

56. धर्म आ राज्य

धर्मक रक्षा राज्य करय—धार्मिक स्वतंत्रताक रक्षा द्वारा; कोनो धर्मक प्रभुत्व नहि। समानान्तर दर्शनक सूत्र अछि: व्यक्तिगत आस्था स्वतंत्र, सामुदायिक धर्म सम्मानित, राज्यक विधि समान नागरिक गरिमासँ बन्धल।

धर्म आ राज्य अध्याय धार्मिक स्वतंत्रता आ राजकीय निष्पक्षता बीच संतुलन खोजैत अछि। ‘धर्मक रक्षा’क अर्थ धर्म-विशेषक प्रभुत्व नहि, समान नागरिक स्वतंत्रता—ई स्पष्टता उल्लेखनीय अछि।

57. लोकधर्म आ संस्थागत धर्म

लोकधर्म धार्मिक अनुभवक जीवित प्रयोगशाला अछि; संस्थागत धर्म स्मृति आ संगठनक संरचना। समानान्तर दर्शन दुनूकेँ सम्मानपूर्वक पढ़ैत अछि, दुनूसँ प्रश्न करैत अछि, आ कोनो रूपकेँ आलोचनासँ मुक्त नहि रखैत अछि।

लोकधर्म आ संस्थागत धर्म दुनूकेँ स्मृति, अभ्यास आ सत्ता-संरचना रूपमे आलोचनात्मक अध्ययनक विषय बनाओल गेल अछि। लोककेँ स्वयंसिद्ध शुद्धता नहि देब समानान्तर पद्धतिक विश्वसनीयता राखैत अछि।

सप्तम खण्ड — आधुनिक आ समकालीन दर्शन

58. आधुनिकता

आधुनिकता एकटा अपूर्ण परियोजना, संघर्षशील इतिहास आ बहुवचन अनुभव अछि। ओकर आलोचना आधुनिक उपलब्धिक निषेध नहि; ओकर मुक्ति-दाबीक नैतिक परीक्षण अछि।

आधुनिकताकेँ एकरेखीय प्रगति अथवा पूर्ण विफलता दुनू रूपमे नहि, अपूर्ण आ संघर्षशील परियोजना मानल गेल अछि। बहुल आधुनिकताक संभावना पुस्तकक क्षेत्रीय दृष्टिक अनुरूप अछि।

59. विज्ञान आ मनुष्य

नैतिक दर्शन विज्ञानक शत्रु नहि; ओकर आवश्यक सहयात्री अछि। समानान्तर दर्शनक सूत्र: प्रमाण-विषयमे विज्ञानसँ कठोरता सीखू, मूल्य-विषयमे गरिमा आ न्यायक प्रश्न नहि छोड़ू।

विज्ञान आ मनुष्य अध्याय तथ्यगत कठोरता आ नैतिक विवेकक सहयात्रा प्रस्तावित करैत अछि। विज्ञान-विरोध आ विज्ञान-पूजा दुनूसँ दूरी अछि।

60. भाषा आ सत्ता

समानान्तर दर्शन भाषाक प्रत्येक राजनीतिक उपयोगपर संशय नहि करैत, मुदा चारि प्रश्न अवश्य पूछैत अछि—ई शब्द के चुनलक? कोन तथ्यक आधारपर? ककर अनुभव सामान्य मानल गेल?

भाषा आ सत्ता अध्याय शब्द-चयन, वर्गीकरण, दृश्यता आ मौनक राजनीतिक परिणाम देखबैत अछि। भाषिक न्याय सत्यक विकल्प नहि—ई वाक्य पुस्तकक ज्ञानमीमांसा आ राजनीतिक आलोचनाकेँ सन्तुलित करैत अछि।

61. इतिहास आ स्मृति

इतिहास अतीतक प्रतिलिपि नहि, प्रमाण-सम्मत पुनर्निर्माण अछि। स्मृति मूल्यवान अछि, मुदा आलोचनासँ मुक्त नहि; अभिलेख शक्तिशाली अछि, मुदा पूर्ण नहि; मौन अर्थपूर्ण भऽ सकैत अछि, मुदा मनमाना कथा भरबाक अनुमति नहि। समानान्तर इतिहास-दृष्टि केन्द्र आ हाशिया दुनूकेँ एकहि प्रमाण-कसौटीपर रखैत अछि।

इतिहास आ स्मृति अध्याय पुस्तकक समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक स्पष्टतम प्रतिपादन अछि। अभिलेख, स्मृति, मौन आ हाशिया सभकेँ पढ़ब, मुदा रिक्त स्थान कल्पनासँ नहि भरब—ई शोध-नैतिकता अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि।

62. ज्ञान आ डिजिटल संसार

डिजिटल संसार ज्ञानक अवसर आ भ्रमक गति दुनू बढ़बैत अछि। समानान्तर दर्शनक नागरिक सूत्र अछि—लोकप्रियता सत्य नहि; दृश्य प्रत्यक्षक गारंटी

नहि; एल्गोरिदम निष्पक्ष नियति नहि; आ स्रोत-समीक्षा बौद्धिक विलास नहि। डिजिटल नागरिकक' नव्य-न्यायाचार्य नहि बनबाक अछि, मुदा प्रमाण पूछबाक संस्कार अवश्य चाही।

डिजिटल ज्ञानक अध्याय स्रोत-श्रृंखला, दृश्य-साक्ष्य, लोकप्रियता आ एल्गोरिदमिक मध्यस्थताक प्रश्न उठबैत अछि। न्यायीय स्रोत-परीक्षणक आधुनिक नागरिक विस्तार रूपमे ई अध्याय सफल अछि।

63. कृत्रिम बुद्धि आ मनुष्यक उत्तरदायित्व

कृत्रिम बुद्धि न देवता अछि, न शैतान; ई शक्तिशाली मानवीय तकनीकी व्यवस्था अछि। ओकर नैतिक मूल्य उपयोग, लक्ष्य, डेटा, नियंत्रण, पारदर्शिता आ सामाजिक परिणामपर निर्भर अछि। समानान्तर दर्शनक सूत्र—तकनीकी क्षमता नैतिक अनुमति नहि—AI युगमे विशेष अर्थ पबैत अछि।

कृत्रिम बुद्धि पर अध्याय तकनीकी क्षमता आ नैतिक अनुमति बीच स्पष्ट भेद करैत अछि। डेटा, नियंत्रण, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व आ सामाजिक परिणामकेँ मानव-केंद्रित गरिमा सिद्धान्तसँ जोड़ल गेल अछि।

64. पर्यावरण आ भावी पीढ़ी

पर्यावरणीय नैतिकता मनुष्यकेँ प्रकृतिसँ अलग राजा मानबाक दृष्टि पर प्रश्न उठबैत अछि। भावी पीढ़ी, गैर-मानवीय जीवन, स्थानीय समुदाय, वैज्ञानिक प्रमाण आ विकासक आवश्यकता—सभकेँ एकहि विवेकपूर्ण संरचनामे राखब आवश्यक अछि। समानान्तर दर्शनक पर्यावरणीय सूत्र अछि—आजक सुविधा भविष्यक अस्तित्वक मूल्यपर नहि।

पर्यावरणीय नैतिकता भावी पीढ़ी, गैर-मानवीय जीवन, स्थानीय समुदाय आ वैज्ञानिक प्रमाणकेँ एकहि निर्णय-संरचनामे रखैत अछि। विकास बनाम प्रकृति जकाँ द्वैतसँ बचबाक प्रयास संतुलित अछि।

अष्टम खण्ड — गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन

65. बहुप्रमाणीय विवेकवाद

बहुप्रमाणीय विवेकवाद समानान्तर दर्शनक ज्ञानमीमांसात्मक आधार अछि। ई एक तरफ एकमात्र प्रमाण-पद्धतिक साम्राज्यवाद अस्वीकारैत अछि, दोसर

तरफ ‘सभ बराबर’क अराजकता। सत्यक खोज क्षेत्रानुकूल प्रमाण, साझा आलोचना, स्रोत-समीक्षा, ज्ञानात्मक विनम्रता आ संशोधनशीलतासँ होयत।

बहुप्रमाणीय विवेकवाद ग्रन्थक मौलिक ज्ञानमीमांसात्मक प्रतिपादन अछि। एकमात्र प्रमाण-पद्धतिक साम्राज्यवाद आ ‘सभ बराबर’क अराजकता दुनू अस्वीकारल गेल अछि। चुनौती ई रहत जे विभिन्न प्रमाण-प्रकार संघर्ष करय तखन प्राथमिकता-नियम केहन हो।

66. सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद

सहअस्तित्वात्मक यथार्थवादक सूत्र अछि—वास्तविकता हमर इच्छासँ स्वतंत्र अछि, मुदा ओकर मानवीय अनुभव सम्बन्धक जालमे घटैत अछि। व्यक्ति वास्तविक, समाज वास्तविक; शरीर वास्तविक, अर्थ वास्तविक; वस्तु वास्तविक, सम्बन्ध सेहो वास्तविक। ई सिद्धान्त कठोर व्यक्तिवाद आ कठोर सामूहिकतावाद दुनूक विकल्प प्रस्तुत करैत अछि।

सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद वस्तुगत प्रतिरोध आ सम्बन्धगत मानवीय अनुभव दुनूकेँ मान्यता दैत अछि। व्यक्ति/समाज, शरीर/अर्थ जकाँ द्वैतसभकेँ समवर्ती वास्तविकता मानबाक प्रयास पुस्तकक समेकित तत्त्वमीमांसा बनबैत अछि।

67. गरिमा-आधारित नैतिकता

समानान्तर दर्शन कहैत अछि—हम अपन गरिमाक दावा तखन सुसंगत रूपसँ कऽ सकैत छी जखन दोसराक समान गरिमा मानैत छी। नैतिकता अपन सम्मानक रक्षा मात्र नहि, परस्पर सम्मानक नियम अछि।

गरिमा-आधारित नैतिकतामे आत्मसम्मानक दावा दोसराक समान गरिमा स्वीकारबाक शर्तसँ जुड़ल अछि। ई सिद्धान्त कान्ट, आम्बेडकर, मानवाधिकार-विमर्श आ भारतीय सामाजिक अनुभवसँ संवाद करैत अछि, मुदा स्वयंकेँ हुनकर सरल योगफल नहि बनबैत।

68. बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र

बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्रक सूत्र अछि—सत्ता जतय आवश्यक, ओतय; जतेक आवश्यक, ततेक; आ प्रत्येक स्तरपर अधिकार, पारदर्शिता आ उत्तरदायित्व। लोकतन्त्र केवल शासनक रूप नहि, सत्ता-वितरणक नैतिक अनुशासन अछि।

बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र सत्ता-वितरण, स्थानीय निर्णय, पारदर्शिता आ उत्तरदायित्वक संयुक्त ढाँचा प्रस्तावित करैत अछि। केन्द्र-विरोध नहि, उपयुक्त स्तरपर उपयुक्त शक्ति—ई सूत्र व्यावहारिक राजनीतिक दर्शनक दिशा दैत अछि।

69. धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता

धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता तीन सूत्र जोड़ैत अछि—अन्तःकरणक स्वतंत्रता, सार्वजनिक कारण, आ समान नागरिकता। ई धर्मकेँ निजी कोठरीमे बन्द नहि करैत; ओकर सामाजिक जीवन स्वीकारैत अछि, मुदा राजकीय प्रभुत्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता अन्तःकरणक स्वतंत्रता, सार्वजनिक कारण आ समान नागरिकताकेँ जोड़ैत अछि। धार्मिक जीवनक सामाजिकता स्वीकारैतहुँ राजकीय प्रभुत्व सीमित करब एहि अध्यायक मुख्य संतुलन अछि।

70. समानान्तर इतिहास-दृष्टि

समानान्तर इतिहास-दृष्टिक सूत्र अछि—केन्द्र पढ़ू, हाशिया पढ़ू, मौन पढ़ू; मुदा सभ पर समान प्रमाण-कसौटी लागू करू। समानान्तरता कल्पना करबाक छूट नहि; अनदेखल प्रमाण खोजबाक जिम्मेवारी अछि।

समानान्तर इतिहास-दृष्टि केन्द्र, हाशिया आ मौन सभकेँ पढ़बाक प्रस्ताव करैत अछि, पर सभ पर समान प्रमाण-कसौटी लागू करैत अछि। ई ग्रन्थक इतिहासलेखन सम्बन्धी सबसे स्पष्ट आत्मपरिभाषा अछि।

71. समानान्तर दर्शनक सूत्र

समानान्तर दर्शनक सूत्रसभ सत्य, प्रमाण, गरिमा, स्वतंत्रता, समानता, धर्म, राज्य, विज्ञान, भाषा, इतिहास, करुणा आ आत्मसमीक्षाकेँ एकहि आलोचनात्मक अनुशासनमे जोड़ैत अछि। एकर केन्द्रीय भाव ई अछि जे कोनो स्रोत, संस्था, परम्परा, बहुमत, हाशिया, तकनीक वा स्वयं दर्शन सत्य आ नैतिकताक निजी स्वामी नहि। प्रमाण पूछू, सीमा पहचानू, प्रतिपक्ष सुनू, गरिमा बचाउ, आ अपन निष्कर्ष संशोधन लेल खुला राखू।

सूत्र-अध्याय पूर्ववर्ती ७० अध्यायक तर्ककेँ ज्ञान, गरिमा, स्वतंत्रता, धर्म, विज्ञान, भाषा, इतिहास आ आत्मसमीक्षाक संक्षिप्त सिद्धान्तसभमे संकलित करैत अछि। सूत्रात्मकता स्मरणीयता बढ़बैत अछि, पर प्रत्येक सूत्रक अपवाद-क्षेत्र पाठककेँ पूर्ववर्ती अध्यायमे खोजय पड़ैत अछि।

72. उपसंहार: समानान्तर रहबाक अर्थ

समानान्तर रहबाक अर्थ मुख्यधाराक विरोध मात्र नहि। “समानान्तर” एहि ग्रन्थमे स्थानक नामसँ अधिक पद्धतिक नाम अछि। ई ओहि बौद्धिक स्थिति के कहल गेल अछि जतय स्थापित ज्ञानकेँ सम्मानपूर्वक जाँचल जाइत अछि, उपेक्षित स्रोतकेँ खोजल जाइत अछि, दुनू पर समान आलोचनात्मक कसौटी लागू होइत अछि, आ निष्कर्ष स्वयं संशोधन लेल खुला रहैत अछि।

उपसंहार ‘समानान्तर रहब’केँ विरोधी पहचान नहि, निरन्तर आत्मसमीक्षा, प्रमाण-जाँच आ गरिमा-सचेत सहअस्तित्वक बौद्धिक मुद्रा बनबैत अछि। पोथीक समापन आरम्भिक प्रतिज्ञासँ वृत्ताकार सम्बन्ध बनबैत अछि—प्रश्न, प्रमाण, सत्ता आ मनुष्यक गरिमा फेर केन्द्रमे अबैत अछि।

६. भारतीय दार्शनिक पद्धतिक आधारपर मूल्यांकन

भारतीय दर्शनक मूल शक्ति बहुवचनता अछि। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त, बौद्ध, जैन आ लोकायत—सभ एकहि सत्यक अलग नाम नहि, बल्कि प्रमाण, आत्मा, कारणता, भाषा, मुक्ति आ जगत सम्बन्धी वास्तविक असहमत परम्परा छथि। पोथी एहि बहुवचनताकेँ पर्याप्त रूपेँ बचबैत अछि।

पूर्वपक्ष–उत्तरपक्षक अनुशासन ग्रन्थमे केवल ऐतिहासिक उल्लेख नहि, लेखकीय पद्धति बनल अछि। विरोधी मतक दुर्बल रूप बनाकऽ हराएबक बजाय सबलतम रूप प्रस्तुत करबाक आग्रह न्याय, मीमांसा आ शास्त्रार्थ परम्पराक नैतिक पुनर्पाठ अछि।

मोक्ष-केन्द्रित भारतीय परम्परासभकेँ आधुनिक नैतिकता वा मनोविज्ञानमे घोलि देबाक प्रवृत्ति सँ पोथी सावधान अछि। सांख्यक पुरुष, योगक कैवल्य, बौद्ध निर्वाण, जैन केवलज्ञान आ वेदान्तीय मुक्ति अलग तत्त्वमीमांसात्मक चौखटा रखैत अछि।

कमजोरीक क्षेत्र मुख्यतः स्रोत-गहराईक असमानता अछि। किछु अध्याय मूल ग्रन्थ, भाष्य, व्याख्या आ आधुनिक अध्ययनक बहुस्तरीय आधारपर अछि; किछु ठाम परिचयात्मक समेकन प्रधान अछि।

७. पाश्चात्य आलोचनात्मक पद्धतिक आधारपर मूल्यांकन

अवधारणात्मक स्पष्टता पोथीक स्थायी शक्ति अछि। ‘सत्य’, ‘ज्ञान’, ‘स्वतंत्रता’, ‘समानता’, ‘धर्म’, ‘राज्य’ आ ‘आधुनिकता’ जकाँ शब्दसभकेँ एकरेखीय परिभाषामे बन्द नहि कएल गेल, बल्कि उपयोग-क्षेत्र, प्रतिपक्ष आ सीमा देखाओल गेल अछि।

ऐतिहासिक संदर्भक प्रति सजगता विशेष रूपेँ सफल ओतय अछि जतय मध्ययुगीन दर्शनकेँ ‘अन्धकार’, लोकायतकेँ पूर्ण पुनर्निर्मित प्रणाली, वा नव्य-न्यायकेँ आधुनिक विश्लेषणात्मक दर्शनक ‘पूर्व-आविष्कार’ घोषित करबाक प्रलोभन अस्वीकारल गेल अछि।

पाश्चात्य नैतिक-राजनीतिक परम्परासँ गरिमा, स्वायत्तता, न्याय, सार्वजनिक कारण आ लोकतन्त्रक सूत्र ग्रहण कएल गेल अछि, मुदा भारतीय जाति, भाषा, क्षेत्र आ धार्मिक बहुलताक यथार्थसँ पुनर्परीक्षण कएल गेल अछि।

पश्चिमी दर्शनक विशालता कारण किछु अध्याय अनिवार्य रूपेँ संक्षिप्त छथि। वर्तमान ग्रन्थक उद्देश्य विश्वकोशीय सेतु अछि, पूर्ण विशेषज्ञ इतिहास नहि।

८. नव्य-न्यायीय कसौटी: दाबी, सम्बन्ध, सीमा

नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ कृतिक सर्वाधिक सफल सूत्र ‘दाबी हो तँ प्रमाण पूछू; प्रमाण हो तँ सीमा पूछू’ अछि। ई दाबी, प्रमाण आ दाबीक लागू-क्षेत्रक त्रिस्तरीय परीक्षण बनबैत अछि।

बहुप्रमाणीय विवेकवादमे ‘प्रमाण’ एकरूप वस्तु नहि। प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, दस्तावेज, स्मृति, सांख्यिकीय निष्कर्ष, संस्थागत विशेषज्ञता आ लोकस्रोत अलग प्रकारक ज्ञानात्मक भार रखैत अछि। ग्रन्थ एहि भेदकेँ स्वीकारैत अछि।

नव्य-न्यायक भाषिक सूक्ष्मताक ग्रहण पोथीमे परिभाषा-सचेतता रूपेँ देखाइत अछि। तथापि मूल मैथिली पाठमे किछु अंग्रेजी/रोमन तकनीकी पद सीधे

वाक्यमे आबि जाइत अछि; ई भाषिक अनुशासनक घोषित आदर्शसँ असंगत अछि।

सबल पूर्वपक्ष, हेत्वाभास-जागरूकता, अपवाद-जाँच, स्रोतक हित-संघर्ष तथा निष्कर्षक संशोध्यता—ई सभ आधुनिक सार्वजनिक तर्कमे नव्य-न्यायीय संस्कारक कार्यशील पुनर्पाठ मानल जा सकैत अछि।

९. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

ग्रन्थक समानान्तर इतिहास-दृष्टि तीन स्रोत पढ़ैत अछि—केन्द्र, हाशिया आ मौन। मुदा मौनकेँ मनमाना कथा लिखबाक छूट नहि मानल गेल अछि। ई भेद इतिहासलेखन लेल निर्णायक अछि।

विदेहक उपनिषदिक संवाद, मिथिलाक न्याय-नव्य-न्याय परम्परा आ आधुनिक मैथिली बौद्धिक जीवनकेँ एक दीर्घ संवादमे रखल गेल अछि। लेखक स्वयं चेतावनी दैत छथि जे ई भू-राजनीतिक अथवा अपरिवर्तित सांस्कृतिक निरन्तरता नहि।

लोकस्रोत, मौखिक स्मृति, स्त्रीक अनुभव, क्षेत्रीय भाषा आ संस्थागत अभिलेखक असमान संरक्षण समानान्तर इतिहासक औचित्य दैत अछि। मुदा पोथीक अपन ऐतिहासिक खण्डमे एहन लोकस्रोतक प्रत्यक्ष केस-अध्ययन अपेक्षाकृत कम अछि।

‘क्षेत्रीय’केँ ‘गौण’ मानबाक विरोध पुस्तकक महत्त्वपूर्ण बौद्धिक हस्तक्षेप अछि। मिथिला एतय विश्व-दर्शनक विषय नहि मात्र, विश्व-दर्शन पढ़बाक दृष्टि बनैत अछि।

१०. मौलिक दार्शनिक प्रतिपादनक परीक्षण

१०.१ बहुप्रमाणीय विवेकवाद

ई सिद्धान्त ज्ञानक स्रोत-विविधता स्वीकारैत अछि, पर समस्त स्रोतकेँ बराबर नहि मानैत। ओकर शक्ति क्षेत्रानुकूल प्रमाण, सार्वजनिक परीक्षण आ संशोध्य निष्कर्षमे अछि। दार्शनिक चुनौती प्रमाण-संघर्षक औपचारिक निर्णय-मापदण्ड विकसित करब अछि।

१०.२ सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद

ई दृष्टि वस्तुगत जगत आ सम्बन्धगत मानवीय अर्थ दुनूकेँ वास्तविक मानैत अछि। सामाजिक निर्माणवाद आ कठोर पदार्थवादक बीच मध्यम मार्गक संभावना अछि।

१०.३ गरिमा-आधारित नैतिकता

परस्पर गरिमा पुस्तकक सबसे सुसंगत नैतिक आधार अछि। जाति, लिंग, धर्म, राज्य, तकनीक आ पर्यावरण सम्बन्धी निर्णयसभमे ई कसौटी बारम्बार लौटैत अछि।

१०.४ बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र

सत्ता ‘जतय आवश्यक, जतेक आवश्यक’—ई सूत्र विकेन्द्रीकरणक साथ जवाबदेहीक शर्त जोड़ैत अछि। स्थानीयताक रोमानीकरण नहि, बहुस्तरीय संस्था-रचना एतय मुख्य अछि।

१०.५ धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता

अन्तःकरणक स्वतंत्रता, सार्वजनिक कारण आ समान नागरिकता तीन आधारस्तम्भ छथि। ई सिद्धान्त धर्मविरोधी राज्य वा धर्मप्रधान राज्य दुनूसँ दूरी बनबैत अछि।

१०.६ समानान्तर इतिहास-दृष्टि

मुख्य स्रोतक साथ अनुपस्थित स्रोत खोजब, किन्तु कल्पना सँ रिक्त स्थान नहि भरब—ई इतिहास-दर्शनक सबसे उपयोगी सूत्र अछि।

११. प्रमुख शक्ति

प्रथम, कृति मैथिली भाषामे दर्शनक विशाल विश्वकोशीय क्षेत्र खोलैत अछि, मुदा केवल परिचयपर नहि रुकैत; अपन दार्शनिक प्रणाली बनबैत अछि।

द्वितीय, मिथिलाक बौद्धिक परम्पराकेँ गौरव-प्रचारक आख्यान नहि, प्रमाण-सचेत पद्धतिगत स्रोत बनबैत अछि।

तृतीय, भारतीय आ पाश्चात्य परम्पराक तुलना ‘के पहिने’क स्पर्धामे नहि, समस्या-संरचना आ तर्क-संवादमे कएल गेल अछि।

चतुर्थ, जाति, लिंग, भाषा, धर्म, लोकतन्त्र, डिजिटल ज्ञान, कृत्रिम बुद्धि आ पर्यावरणक प्रश्न प्राचीन दर्शनसँ अलग परिशिष्ट नहि, दार्शनिक परम्पराक वर्तमान परीक्षा बनैत अछि।

पाँचम, लेखक बारम्बार अपन प्रिय परम्परा पर सेहो समान प्रमाण-कसौटी लागू करबाक आग्रह करैत छथि; ई समानान्तर दर्शनकेँ विचारधारात्मक उलटावसँ बचबैत अछि।

१२. आलोचनात्मक सीमा आ सुधारक क्षेत्र

किछु अध्यायमे विश्व-दर्शनक विशाल परम्परा बहुत संक्षिप्त रूपमे आबैत अछि। शोध-संस्करणमे प्राथमिक ग्रन्थ-सन्दर्भ, तिथि-विवाद आ प्रमुख विद्वत् मतभेदक विस्तृत टिप्पणी उपयोगी होयत।

‘मिथिलाक समानान्तर परम्परा’क दाबी सर्वाधिक विश्वसनीय तखन होइत अछि जखन गङ्गेश, नव्य-न्याय, शास्त्रार्थ आ स्रोत-परम्परा जकाँ ठोस सामग्री पर आधारित हो। सांस्कृतिक दीर्घकालिक निरन्तरता सम्बन्धी व्यापक वाक्यसभकेँ कालखंड-विशिष्ट स्रोतसँ निरन्तर बाँधल रहब चाही।

बहुप्रमाणीय विवेकवादमे अलग-अलग प्रमाण एक-दोसरसँ टकराए तखन वजन-निर्धारणक औपचारिक नियम विस्तार माँगैत अछि।

गरिमा-आधारित नैतिकता शक्तिशाली अछि, मुदा गरिमाक अर्थ, परस्पर संघर्षरत गरिमा-दाबी, गैर-मानवीय जीवनक नैतिक दर्जा आ सामूहिक अधिकारक प्रसंगमे सिद्धान्तक सीमांकन विस्तार योग्य अछि।

अंग्रेजी रूपान्तरक उपस्थितिसँ पुस्तकक वैश्विक पहुँच बढ़ैत अछि, मुदा द्विभाषिक संस्करणमे पारिभाषिक समरूपता लेल एक समेकित द्विभाषिक शब्द-सूची उपयोगी होयत।

१३. शुद्ध मैथिली निखार-अडिट

मैथिली मूल-पाठक यांत्रिक अक्षर-परीक्षणमे अध्याय-ग्रन्थसूची छोड़ि ६१ मुख्य अनुच्छेद एहन भेटल जाहिमे रोमन लिपिक पद सीधे वाक्यक भीतर प्रयुक्त अछि। ई गणना भाषिक गुणवत्ता पर निर्णय नहि, संपादकीय संकेत अछि। रोमन पद जँ तकनीकी सटीकता लेल आवश्यक हो तँ ओकरा ब्रैकेटमे

राखब उचित होयत; नहि तँ उपलब्ध ठाम शुद्ध मैथिली/संस्कृतनिष्ठ कार्यपद देब बेहतर होयत।

मूल प्रकार	अनुशंसित मैथिली प्रस्तुति	संपादकीय टिप्पणी
(evidence)	प्रमाण; आवश्यक हो तँ (evidence)	रोमन पद ब्रैकेटमे
(cosmology)	सृष्टितत्त्व-विज्ञान (cosmology)	आधुनिक विज्ञानक समरूपता नहि
(philosophy of mind)	मन-दर्शन (philosophy of mind)	पहिल प्रयोगपर मात्र रोमन रूप
(evolution)	विकासक्रम (evolution)	जैविक विकाससँ भेद स्पष्ट
(atheism)	नास्तिकता (atheism)	ऐतिहासिक अर्थ-सावधानी
(neuroscience)	तंत्रिका-विज्ञान (neuroscience)	नकली वैज्ञानिक समानता सँ बचू
(syllogism)	न्यायवाक्य/त्रिपदी तर्क (syllogism)	पंचावयवसँ सीधा समानता नहि
(universals)	सामान्य/सार्वभौमिक (universals)	वैशेषिक सन्दर्भ अलग
(cogito)	‘हम सोचैत छी’क तर्क (cogito)	रोमन पद ब्रैकेटमे
(Cartesian)	देकार्तीय (Cartesian)	मैथिली विशेषण पहिने

शब्द-चयनक स्तरपर पोथीक मैथिली सामान्यतः सक्षम, प्रवाही आ दार्शनिक भार वहन करय योग्य अछि। ‘प्रमाण’, ‘दृष्टिकोण’, ‘गरिमा’, ‘वैधता’, ‘प्रतिपक्ष’, ‘बहुलता’, ‘सहअस्तित्व’ जकाँ पद लगातार अर्थ-संगति राखैत अछि।

रोमन पदक असंगत खुला उपयोग सबसे स्पष्ट संपादकीय समस्या अछि। एकहि नीति अपनाबी: पहिल प्रयोगमे मैथिली पद, तत्पश्चात ब्रैकेटमे मूल विदेशी पद; बादक प्रयोगमे केवल मैथिली पद।

संस्कृत पारिभाषिक पद—प्रमाण, व्याप्ति, उपाधि, नय, अनेकान्त, समवाय, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि—जतय तकनीकी अर्थ आवश्यक, ओतय मूल रूप सुरक्षित राखब उचित अछि।

वाक्यसभ प्रायः दीर्घ छथि, मुदा तर्क-क्रम स्पष्ट अछि। शोध-संस्करणमे अत्यधिक लम्बा वाक्य उचित ठाम दुई वाक्यमे विभाजित कएलासँ पठनीयता बढ़त।

अंग्रेजी रूपान्तर अलग भागमे अछि, अतः मैथिली मूलक भीतर अनावश्यक अंग्रेजी पदक जरूरत कम अछि।

१४. पारिभाषिक शब्दावली, ग्रन्थसूची आ अंग्रेजी रूपान्तर

पारिभाषिक शब्दावली पुस्तकक विश्वकोशीय प्रकृति लेल अनिवार्य सहायक उपकरण अछि। अगिला संस्करणमे प्रत्येक प्रमुख पदक अध्याय-सन्दर्भ जोड़ल जाए तँ आन्तरिक नेविगेशन मजबूत होयत।

चयनित मूल ग्रन्थसूची व्यापक बौद्धिक क्षितिज देखबैत अछि। अध्याय-ग्रन्थसूचीमे वेबसाइट-आधारित विश्वकोशीय सामग्री सेहो अछि; शोध-संस्करणक अन्तिम ग्रन्थसूची भागमे केवल पुस्तक/मूल ग्रन्थ रखबाक नीति अधिक स्थायी अकादमिक रूप देत।

अंग्रेजी रूपान्तर ७२ अध्यायक संरचना दोहरबैत अछि। पारिभाषिक पद—विशेषतः प्रमाण, धर्म, आत्मन्, अनेकान्त, व्याप्ति, गरिमा—क अनुवाद एकरूप रहब जरूरी अछि।

द्विभाषिक संस्करणक सम्पादकीय आदर्श होयतः मैथिली मूल प्राथमिक पाठ, अंग्रेजी अनुवाद स्पष्ट रूपेँ द्वितीय पाठ, आ अन्तमे द्विभाषिक पारिभाषिक सूची।

१५. समेकित निष्कर्ष

‘गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन’क महत्त्व केवल एहि बातमे नहि जे ई मैथिलीमे भारतीय आ पाश्चात्य दर्शनक विस्तृत परिचय दैत अछि। एकर असल दाबी पद्धतिगत अछि: ज्ञानक केन्द्र बदलू, मुदा प्रमाणक कसौटी नहि; हाशिया पढ़ू, मुदा हाशियाकेँ अचूक नहि मानू; परम्पराक सम्मान करू, मुदा इतिहास पूछू; विज्ञानक कठोरता स्वीकारू, मुदा मूल्यक प्रश्न विज्ञानपर नहि

छोड़ू; राज्य, धर्म, समाज आ तकनीक सभकेँ मनुष्यक समान गरिमाक सीमा भीतर राखू। एहि कारण कृति क्षेत्रीय भाषा मे लिखल दर्शनक इतिहास मात्र नहि, क्षेत्रीय भाषासँ विश्व-दर्शनक पुनर्पाठ अछि।

दार्शनिक प्रणाली रूपमे कृतिक सबसे मजबूत अंग बहुप्रमाणीय विवेकवाद आ गरिमा-आधारित नैतिकता अछि; इतिहास-पद्धति रूपमे केन्द्र–हाशिया–मौनक त्रयी; राजनीतिक दर्शनमे बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र; धर्म-दर्शनमे अन्तःकरणक स्वतंत्रता, सार्वजनिक कारण आ समान नागरिकताक त्रिकोण। सुधारक मुख्य क्षेत्र स्रोत-घनत्वक समानता, मौलिक सिद्धान्तसभक औपचारिक सीमांकन, तथा मैथिली मूल-पाठमे रोमन तकनीकी पदक एकरूप संपादकीय नीति अछि। एहि सुधारसभक बाद कृति मैथिली दर्शन-लेखनमे पद्धतिगत मानक-ग्रन्थ बनबाक क्षमता रखैत अछि।

ग्रन्थसूची

निम्न सूचीमे केवल पुस्तक/मूल ग्रन्थक नाम देल गेल अछि; वेबसाइट नहि देल गेल अछि। रोमन शीर्षक ब्रैकेटमे राखल गेल अछि।

ऋग्वेद
बृहदारण्यक उपनिषद
छान्दोग्य उपनिषद
न्यायसूत्र
वैशेषिकसूत्र
सांख्यकारिका
योगसूत्र
मीमांसासूत्र
ब्रह्मसूत्र
श्लोकवार्तिक
न्यायकुसुमाञ्जलि
आत्मतत्त्वविवेक
न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका
तत्त्वबिन्दु
तत्त्वचिन्तामणि

मूलमध्यमककारिका
विग्रहव्यावर्तनी
प्रमाणसमुच्चय
प्रमाणवार्तिक
तत्त्वार्थसूत्र
(Republic)
(Nicomachean Ethics)
(Politics)
(Metaphysics)
(Meditations on First Philosophy)
(Ethics)
(Monadology)
(An Essay Concerning Human Understanding)
(Two Treatises of Government)
(A Treatise Concerning the Principles of Human Knowledge)
(A Treatise of Human Nature)
(An Enquiry Concerning Human Understanding)
(Critique of Pure Reason)
(Groundwork of the Metaphysics of Morals)
(Phenomenology of Spirit)
(Capital)
(The German Ideology)
(Fear and Trembling)
(On the Genealogy of Morality)
(Ideas)
(Being and Time)
(Being and Nothingness)
(Tractatus Logico-Philosophicus)
(Philosophical Investigations)
(Experience and Nature)
(A Theory of Justice)

हिन्द स्वराज

सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका

(Constructive Programme: Its Meaning and Place)

(Annihilation of Caste)

(States and Minorities)

(The Buddha and His Dhamma)

(Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches)

(A History of Indian Philosophy)

(Outlines of Indian Philosophy)

(Indian Philosophy)

(Perception)

(Logic, Language and Reality)

(The Character of Logic in India)

(Philosophy in Classical India)

(The Lost Age of Reason)

(Classical Indian Metaphysics)

(Epistemology in Classical India)

(Encyclopedia of Indian Philosophies)

(History of Navya-Nyāya in Mithilā)

(Jewel of Reflection on the Truth about Epistemology)

(The Idea of Justice)

(Political Liberalism)

(Epistemic Injustice)

(The Historian’s Craft)

(What Is History?)

(The Past Before Us)

(Truth and Method)

प्रश्न, प्रमाण, गरिमा आ बहुकेन्द्रिक विवेक

‘गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन’क विस्तृत साहित्यिक-दार्शनिक समीक्षा

समीक्ष्य कृति:

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन

मिथिलाक समानान्तर परम्परासँ भारतीय, पाश्चात्य, सामाजिक-राजनीतिक-धर्म आ आधुनिक दर्शनक पुनर्पाठ

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · ISSN 2229-547X

विस्तृत समीक्षा · अध्याय १–७२ · शोध-संवाद सहित · अन्तमे समेकित बिबलियोग्राफी

१. आरम्भिक मूल्यांकन

ई कृति केवल भारतीय आ पाश्चात्य दर्शनक परिचय-पोथी नहि। एकर वास्तविक महत्व एहि बातमे अछि जे इतिहास, प्रमाणमीमांसा, भाषा, समाज, धर्म, विज्ञान, तकनीक आ मिथिलाक बौद्धिक स्मृतिक आधारपर एक स्वतंत्र ‘समानान्तर दर्शन’ निर्मित करबाक प्रयास कएल गेल अछि। रचनात्मक संरचना आठ खण्डमे विकसित होइत अछि—पहिने दर्शनक आधार, तकर बाद भारतीय दर्शन, मिथिलाक दार्शनिक परम्परा, पाश्चात्य दर्शन, सामाजिक-राजनीतिक प्रश्न, धर्म-दर्शन, आधुनिक-समकालीन प्रश्न, आ अन्तमे लेखकक अपन छह मूल सिद्धान्त तथा आत्मसमीक्षाक नियामक सिद्धान्त। एहि क्रमसँ पोथी इतिहाससँ पद्धति, पद्धतिसँ आलोचना, आ आलोचनासँ स्वतंत्र प्रतिपादन धरि पहुँचैत अछि।

पोथीक सबसँ महत्त्वपूर्ण प्रश्न ई अछि जे की कोनो क्षेत्रीय बौद्धिक स्मृति—एतय मिथिला, विदेह, न्याय आ नव्य-न्याय—विश्व-दर्शनक संग समकक्ष संवादक पद्धतिगत आधार बनि सकैत अछि, बिना एहि दाबीकेँ क्षेत्रीय आत्ममुग्धता वा ऐतिहासिक अतिशयोक्तिमे बदलने? कृति बारम्बार एहि जोखिमकेँ पहचानैत अछि। ‘गौरव सेहो प्रमाण माँगैत अछि’, ‘हाशिया स्वत:

सत्य नहि', 'मुख्यधारा स्वतः गलत नहि', 'सत्यक दाबी हो तँ प्रमाण पूछू' जकाँ सूत्र एहि आत्मनियन्त्रणक प्रमाण छथि।

साहित्यिक दृष्टिसँ ई दार्शनिक गद्यक एक विशिष्ट मैथिली रूप विकसित करैत अछि। प्रश्नवाचक उद्घाटन, समानान्तर वाक्य-विन्यास, पूर्वपक्ष–उत्तरपक्ष, अध्याय-निष्कर्ष आ सूत्रात्मक वाक्य पाठककेँ निरन्तर तर्कक भीतर रखैत अछि। मुदा यही नियमितता कखनो-कखनो ढाँचागत पुनरावृत्तिमे बदलैत अछि। जँ प्रत्येक अध्यायमे एकहि क्रम—परिभाषा, उदाहरण, पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष, समानान्तर संवाद, निष्कर्ष—बहुत कठोरतासँ दोहराओल जाए, तँ पाठक केँ दार्शनिक खोजक अनिश्चितता कम आ पाठ्यपुस्तकीय सुनिश्चितता अधिक अनुभव भऽ सकैत अछि।

समग्र मूल्यांकनमे ई कृति मैथिलीमे दर्शनक आधुनिक, तुलनात्मक आ सार्वजनिक भाषा बनाबयक महत्वाकांक्षी प्रयास अछि। एकर श्रेष्ठता 'पूर्व बनाम पश्चिम'क सरल द्वन्द्वमे नहि, बल्कि प्रमाणक समान कसौटी, बहुकेन्द्रिकता, गरिमा आ आत्मसमीक्षामे अछि। एकर सीमा मुख्यतः स्रोत-सन्दर्भक सूक्ष्मता, दार्शनिक मूल प्रतिपादनक औपचारिकता, आ किछु अध्यायक अतिसंक्षिप्त ऐतिहासिक समेटनाइमे देखाइत अछि।

२. रचना-विन्यास, शोध-पद्धति आ मैथिली गद्य

आठ खण्डक क्रम सुविचारित अछि। प्रथम पाँच अध्याय पाठककेँ प्रश्न, संशय, सत्य, ज्ञानक सीमा आ समानान्तर पद्धतिक औजार दैत अछि। तकर बाद भारतीय दर्शनक बहुवचन, मिथिलाक विशिष्ट तार्किक परम्परा आ पाश्चात्य दर्शनक इतिहास पढ़ल जाइत अछि। सामाजिक–राजनीतिक आ धर्म-दर्शन खण्ड एहि दार्शनिक औजारकेँ सार्वजनिक जीवनपर लागू करैत अछि; आधुनिक खण्ड डिजिटल ज्ञान, कृत्रिम बुद्धि आ पर्यावरण धरि विस्तार दैत अछि; अन्तिम खण्ड पूर्ववर्ती सामग्री सँ लेखकक अपन सिद्धान्त निर्माण करैत अछि। एहि अर्थमे अनुक्रम स्वयं एक दार्शनिक तर्क अछि।

कृतिमे स्रोत-समीक्षाक स्पष्ट चेतना अछि: प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक आ लोक-स्रोतक भेद; सबल पूर्वपक्ष; इतिहास आ दर्शनक अलग प्रश्न; अनुवादक सावधानी; समान प्रमाण-कसौटी; आ अनिश्चितताकेँ अनिश्चितता रूपे

लिखबाक आग्रह। ई पद्धति आधुनिक शोध-लेखन लेल उपयोगी अछि। गङ्गेश सम्बन्धी आधुनिक विद्वत्ता—विशेषतः Dinesh Chandra Bhattacharya, B. K. Matilal, Jonardon Ganeri, Stephen H. Phillips आ Stanford Encyclopedia of Philosophy—एहि बातक पुष्टि करैत अछि जे गङ्गेश चौदहम शताब्दीमे मिथिलाक प्रमुख न्यायाचार्य छलाह आ तत्त्वचिन्तामणि नव्य-न्यायक निर्णायक ग्रन्थ बनल। एहि कारण मिथिला–नव्य-न्याय सम्बन्ध पोथीक कल्पित केन्द्र नहि, वास्तविक शोधाधारित आधार अछि; हँ, विदेहसँ नव्य-न्याय धरि एक अखण्ड संस्थागत निरन्तरताक दाबी सँ बचब उचित अछि।

मैथिली गद्यक दृष्टिसँ तकनीकी शब्दावली विशेष उल्लेखनीय अछि: प्रमाण, औचित्य, संशोध्यता, बहुदृष्टिगतता, ज्ञानात्मक अन्याय, सार्वजनिक कारण, बहुकेन्द्रिकता, गरिमा, सहअस्तित्व, अवच्छेद, प्रतियोगी, अधिकरण, पारस्परिक परीक्षण, संरचित अज्ञान आदि पद एक आधुनिक दार्शनिक रजिस्टर बनबैत छथि। एहि रजिस्टरक शक्ति ई जे अंग्रेजी दार्शनिक शब्दावलीकेँ जसक-तस नहि उठाओल गेल, बल्कि भारतीय दार्शनिक पदसँ संवाद बनाओल गेल। मुदा किछु ठाम अंग्रेजी ग्रन्थ-नाम, आधुनिक तकनीकी शब्द आ संस्कृत पदक घनत्व मैथिली वाक्यक स्वाभाविक लय रोकैत अछि; शब्दावली आ प्रथम-प्रयोगपर संक्षिप्त व्याख्या एहि कठिनाई घटबैत अछि।

सम्पादकीय स्तरपर एक ठोस समस्या दिस ध्यान आवश्यक अछि। अध्याय १–३७ धरि उपधारा-संख्या सामान्य क्रममे अछि, मुदा अध्याय ३८–७० मे अनेक ठाम नव जोड़ल उपधारा पहिने 12–15 वा 13–16 क्रममे आबि जाइत अछि, तकर बाद 7–11 वा 8–12 दिस फेर पाछाँ अबैत अछि। सामग्री अपने-आपमे छूटल नहि, मुदा पाठकीय क्रम भंग होइत अछि। अन्तिम मुद्रणपूर्व संस्करणमे उपधारा-संख्या आ पाठ-क्रम एकरेखीय कएल जाए।

पोथीमे प्रत्येक अध्यायक अन्तमे ग्रन्थसूची अछि आ अन्तमे चयनित मूल ग्रन्थ तथा अध्ययन-ग्रन्थ सेहो देल अछि। मुदा दार्शनिक वा ऐतिहासिक दाबीकेँ ठीक ओहि ठाम पृष्ठ-स्तरीय पादटिप्पणी/अन्तटिप्पणी बहुत कम अछि। शोध-पोथी रूपमे अगिला संस्करणक सबसँ पैघ उन्नयन ई होयत जे

महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दाबी, अनुवाद, उद्धरण, दार्शनिक सूत्र आ आधुनिक अनुभवजन्य कथनक संग संस्करण, खण्ड, पृष्ठ वा सूत्र-संख्या देल जाए।

मैथिली भागक बाद विस्तृत अंग्रेजी रूपान्तर सेहो अछि। द्विभाषिक प्रकाशनक रूपमे ई उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा सम्पादकीय रूपसँ मैथिली मूल आ अंग्रेजी रूपान्तरक स्पष्ट स्वतंत्र शीर्षक-पृष्ठ, अलग अनुक्रम, आ सम्भवतः अलग खण्ड वा अलग संस्करण पाठकीय दिशा स्पष्ट करत। वर्तमान रूपमे अंग्रेजी पुनरावृत्ति पुस्तकक आकार बहुत बढ़बैत अछि आ मैथिली मूलक स्वायत्त पाठ-अनुभवकेँ ढँकबाक जोखिम रखैत अछि।

३. अध्याय-दर-अध्याय विस्तृत समीक्षा

प्रथम खण्ड — दर्शनक आधार

ई खण्ड पोथीक दार्शनिक व्याकरण बनबैत अछि। आगाँक सभ तुलना आ सामाजिक निष्कर्ष एहि पाँच अध्यायमे स्थापित प्रश्न, प्रमाण, सत्य, संशोध्यता आ स्रोत-समीक्षाक नियमपर निर्भर छथि।

अध्याय 1 — दर्शन की अछि?

विषय-विस्तार: दर्शन: विस्मयसँ विवेक धरि, दर्शन मत नहि, मतक परीक्षा अछि, दर्शनक मुख्य क्षेत्र, दर्शन आ विज्ञान आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

अध्याय दर्शनकेँ मत-संग्रहक बदला आत्मपरीक्षणक जिम्मेवार क्रिया मानैत अछि। ई आरम्भिक स्थापना पोथीक समूचा तर्ककेँ दिशा दैत अछि आ मैथिलीमे दर्शनक आधुनिक शिक्षण-गद्य लेल उपयोगी आधार बनैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ प्रश्नवाचक वाक्य, समानान्तर वाक्य-विन्यास आ छोट सूत्र पाठककेँ बाँधि रखैत अछि; मुदा कतिपय ठाम पाठ्यपुस्तक-सदृश परिभाषात्मकता गद्यक वैचारिक तनाव घटबैत अछि। आगाँक संस्करणमे जीवनगत उदाहरण आ मूल ग्रन्थक छोट पाठ-विश्लेषण जोड़ला सँ अध्याय अधिक जीवित बनत।

अध्याय 2 — प्रश्न, संशय आ प्रमाण

विषय-विस्तार: प्रश्न आ संशयक भेद, प्रमाण: ज्ञानक स्रोत, प्रमाणक संख्या पर भारतीय विवाद, सत्य विश्वास आ ज्ञान आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

संशयकेँ ज्ञानक शत्रु नहि, अनुशासित प्रहरी मानबाक प्रस्ताव अत्यन्त फलदायी अछि। न्यायीय प्रमाण-चिन्तन, आधुनिक ज्ञानमीमांसा, विशेषज्ञता आ डिजिटल स्रोत-जाँचकेँ एकहि अध्यायमे जोड़ब पोथीक मौलिक पद्धतिगत शक्ति अछि। मुदा ‘प्रमाण’ शब्दक भारतीय तकनीकी अर्थ आ आधुनिक साक्ष्यक व्यवहारगत अर्थ बीच भेद आरम्भे अधिक कठोरतासँ चिन्हित होयबाक चाही। गेटियर-विमर्शक उल्लेख उचित अछि, परन्तु ओकरा भारतीय प्रामाण्यवादक संग तुलना करैत समय समानता सँ बेसी भिन्नता सेहो स्पष्ट कएल जाए।

अध्याय 3 — सत्य आ दृष्टिकोण

विषय-विस्तार: सत्यक प्रश्न, अनुरूपता: कथन आ वस्तु, संगति: विश्वाससभक परस्पर सम्बन्ध, व्यवहार आ सत्य आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

सत्यकेँ न मनमाना सापेक्षता, न एक-वर्णनीय कट्टरता—एहि दू अतिवादक बीच राखल गेल अछि। जैन अनेकान्त, बौद्ध द्विसत्य, न्यायीय यथार्थबोध, व्यवहारवाद आ सत्ता-विश्लेषणक संगति अध्यायकेँ व्यापक बनबैत अछि। ‘दृष्टि बहु, कसौटी साझा’ पोथीक सर्वाधिक स्मरणीय सूत्रसभमे एक अछि। तथापि सत्यक दार्शनिक सिद्धान्त, व्याख्यात्मक पर्याप्तता आ नैतिक निर्णयक बीच जे भेद अध्याय करैत अछि, तकरा उदाहरण-दर-उदाहरण आरो स्पष्ट कएल जाए तँ पाठक ‘सत्य’ आ ‘औचित्य’क मिश्रणसँ बचि सकत।

अध्याय 4 — ज्ञानक सीमा

विषय-विस्तार: सीमा मानब पराजय नहि, इन्द्रियक सीमा, स्मृति आ अतीत, भाषा आ अवधारणाक सीमा आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

ज्ञानक सीमा पर अध्याय बौद्धिक विनम्रताकेँ कमजोरी नहि, ज्ञानक शर्त बनबैत अछि। इन्द्रिय, स्मृति, भाषा, संस्था, सामाजिक स्थान आ आगमनक

सीमा एकहि क्रममे आनल गेल अछि; एहि सँ व्यक्तिगत ज्ञानमीमांसा सामाजिक ज्ञानमीमांसा धरि विस्तार पबैत अछि। ‘प्रमाणित, सम्भावित, विवादित, अज्ञात’क चारि-स्तरीय भाषा ऐतिहासिक लेखन लेल विशेष उपयोगी अछि। सीमा ई जे अनुभूतिक त्रुटि, स्मृतिक पुनर्निर्माण आ संस्थागत अज्ञान पर आधुनिक मनोविज्ञान-सामाजिक विज्ञानक ठोस अध्ययन कम अछि; एहन स्रोत जोड़ला सँ दार्शनिक दाबी अधिक प्रमाणसिद्ध होयत।

अध्याय 5 — समानान्तर दर्शनक पद्धति

विषय-विस्तार: पद्धतिक आवश्यकता, पहिल नियम: विषयकेँ स्पष्ट परिभाषित करू, दोसर नियम: स्रोतक स्तर अलग करू, तेसर नियम: पूर्वपक्षकेँ सबल रूपमे प्रस्तुत करू आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

ई अध्याय पोथीक पद्धतिगत घोषणापत्र अछि। परिभाषा, स्रोत-स्तर, सबल पूर्वपक्ष, वाद-जल्प-वितण्डा, समान प्रमाण-कसौटी, इतिहास–दर्शन भेद, अनुवाद-सावधानी, तुलनाक स्तर, केन्द्र–हाशिया, अनुभव–सिद्धान्त आ आत्मसमीक्षा—ई सभ नियम एक सुसंगठित आलोचनात्मक पद्धति गढ़ैत अछि। एहि अध्यायक उपलब्धि केवल विषयसूची नहि, एकटा शोध-अनुशासनक प्रस्ताव अछि। सुधारक मुख्य दिशा ई जे प्रत्येक नियमक संग पोथीक भीतरसँ एक सफल आ एक असफल उदाहरण देल जाए; तखन पद्धति घोषणासँ आगाँ बढ़ि पुनरावृत्त उपयोग योग्य बनत।

द्वितीय खण्ड — भारतीय दर्शन

भारतीय दर्शनक प्रस्तुति एकमत ‘भारतीय अध्यात्म’क बदला परस्पर विवादरत बहुवचन परम्परा रूपमे कएल गेल अछि। एहि खण्डक शक्ति प्रश्नक विविधता आ प्रमाण-विवादमे अछि।

अध्याय 6 — वैदिक चिन्तन आ उपनिषदिक प्रश्न

विषय-विस्तार: ऋग्वैदिक प्रश्न: सृष्टिक निश्चित कथा नहि, ऋत, यज्ञ आ विश्व-व्यवस्था, बाह्य अनुष्ठानसँ अन्तर्मुख प्रश्न, उपनिषद एक पुस्तक नहि, संवादक परिवार आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

वैदिक आ उपनिषदिक सामग्रीकेँ ‘एकरूप आरम्भ’ बनायबक बदला प्रश्नसभक बहुल प्रयोगशाला मानब ऐतिहासिक रूपसँ अधिक संतुलित अछि।

नासदीय प्रश्न, ऋत, यज्ञ, आत्मन्, ब्रह्म, कर्म, मृत्यु आ संवाद-परम्पराक क्रम पाठककेँ विचारक परिवर्तन देखबैत अछि। अध्याय अपन क्षेत्रीय आग्रहकेँ सेहो संयमित रखैत अछि आ विदेह-स्मृतिक महत्त्व स्वीकारैतहुँ सम्पूर्ण भारतीय दर्शनक जन्मस्थानक अतिदाबी नहि करैत। मूल संस्कृत पदक प्रसंगानुकूल सूक्ष्म अर्थ आ प्रमुख पाठभेद जोड़ला सँ शोध-मूल्य आरो बढ़त।

अध्याय 7 — सांख्य

विषय-विस्तार: 'सांख्य' आ गणनाक पद्धति, दुःखसँ आरम्भ, प्रकृतिः मूल परिवर्तनशील आधार, तीन गुण आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

सांख्यक प्रस्तुति दुःख, प्रकृति–पुरुष द्वैत, त्रिगुण, तत्त्व-क्रम, सत्कार्यवाद आ कैवल्यक भीतरक तार्किक सम्बन्ध बुझबैत अछि। विशेष गुण ई जे अध्याय सांख्य परमाणु वा गुणकेँ आधुनिक विज्ञानक पूर्वाभास बनायबक विजयवादी प्रवृत्तिसँ बचैत अछि। तथापि ईश्वरक प्रश्न, पुरुषबहुलता आ प्रकृतिक स्वतःप्रवृत्तिक कठिनाई पर प्रतिपक्ष अधिक विस्तार चाहैत अछि। सांख्यकारिका आ प्रमुख टीकाकारक पाठ-सन्दर्भ जोड़ला सँ अध्याय इतिहास आ दर्शन दुनू स्तरपर अधिक सबल होयत।

अध्याय 8 — योग

विषय-विस्तार: योगसूत्र: पाठ आ परम्परा, 'चित्तवृत्तिनिरोध'क अर्थ, पाँच वृत्ति, योगक प्रमाणमीमांसा आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

योगकेँ केवल शरीर-व्यायामसँ मुक्त कऽ चित्त, वृत्ति, क्लेश, अभ्यास, वैराग्य, अष्टाङ्ग, ईश्वरप्रणिधान आ कैवल्यक दार्शनिक प्रणाली रूपमे रखब आवश्यक सुधारात्मक कार्य अछि। अनुभवक अनुशासन आ नैतिक यम-नियम पर बल अध्यायकेँ आधुनिक लोकप्रिय योग-विमर्शसँ अलग करैत अछि। समीक्षात्मक प्रश्न ई अछि जे निजी साधनात्मक अनुभव सार्वजनिक प्रमाणक समकक्ष कतेक धरि बनि सकैत अछि। एहि भेदक स्पष्टता बहुप्रमाणीय विवेकवादक भावी अध्यायसँ योगक सम्बन्ध आरो मजबूत करत।

अध्याय 9 — न्याय

विषय-विस्तार: न्यायसूत्र आ परम्परा, सोलह पदार्थ: दर्शनक कार्यसूची, चारि प्रमाण, प्रत्यक्ष: अनुभव आ अवधारणा आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

न्याय पोथीक पद्धतिगत मेरुदण्डक रूपमे उभरैत अछि, आ एहि अध्यायमे सोलह पदार्थ, चारि प्रमाण, व्याप्ति, हेत्वाभास, शब्द, संशय, तर्क, निर्णय आ वादक समेकित प्रस्तुति सफल अछि। गङ्गेशधरि पहुँचबाक पूर्वभूमि सेहो एतय बनैत अछि। आधुनिक सार्वजनिक बहसमे हेत्वाभासक उपयोग आकर्षक अछि, मुदा पारम्परिक हेत्वाभासकेँ आधुनिक अनौपचारिक तर्कदोष-सूचीक बराबर मानब उचित नहि। एक-दू न्यायीय अनुमानक पूर्ण पञ्चावयवी उदाहरण अध्यायकेँ शिक्षणक दृष्टिसँ बहुत सबल बनाबत।

अध्याय 10 — वैशेषिक

विषय-विस्तार: कणाद आ वैशेषिकसूत्र, द्रव्य: गुण आ क्रियाक आधार, परमाणुवाद, गुण आ कर्म आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

वैशेषिक अध्याय द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय आ अभाव द्वारा भारतीय अस्तित्वमीमांसाक विशिष्ट कठोरता देखबैत अछि। परमाणुवादक चर्चा करत लेखक आधुनिक भौतिकी संग अनैतिहासिक समानता नहि बनबैत छथि—ई पद्धतिगत सावधानी प्रशंसनीय अछि। समवाय आ अभावक विश्लेषण समानान्तर दर्शनक ‘सम्बन्ध’ आ ‘अनुपस्थिति’ सम्बन्धी बादक विचार लेल आधार दैत अछि। सीमा ई जे न्याय–वैशेषिकक ऐतिहासिक समागम आ पृथक् परम्परागत विकासक कालक्रम आरो स्पष्ट होयबाक चाही।

अध्याय 11 — पूर्वमीमांसा

विषय-विस्तार: मीमांसा: जिज्ञासा आ व्याख्या, धर्म आ प्रत्यक्षक सीमा, वेदक अपौरुषेयता, स्वत:प्रामाण्य आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

पूर्वमीमांसा पर अध्याय पोथीक भाषा-दर्शन आ प्रमाण-विमर्शक महत्त्वपूर्ण कड़ी अछि। धर्म, वेद-प्रामाण्य, स्वत:प्रामाण्य, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि आ वाक्यार्थक प्रश्न पाठककेँ देखबैत अछि जे अनुष्ठान-व्याख्या सेहो सूक्ष्म ज्ञानमीमांसा उत्पन्न कऽ सकैत अछि। भट्ट आ प्राभाकर मतभेदक संकेत अछि,

मुदा ओकर मूल तर्क अधिक विस्तार माँगैत अछि। विशेष रूपसँ अभिहितान्वय–अन्विताभिधानक बादक अध्याय १६ सँ अन्तरसन्दर्भ बनाओल जाए तँ पोथीक आन्तरिक जाल अधिक स्पष्ट होयत।

अध्याय 12 — वेदान्त

विषय-विस्तार: प्रस्थानत्रयी आ व्याख्याक प्रश्न, ब्रह्मक प्रश्न, आत्मन् आ ब्रह्मन्, जगत: वास्तविक, आश्रित की मिथ्यात्वक विशेष अर्थ? आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

वेदान्तकेँ एक दर्शन नहि, अनेक व्याख्यात्मक परम्पराक परिवार मानब अध्यायक सबसँ पैघ गुण अछि। अद्वैत, विशिष्टाद्वैत आ अन्य धाराक बीच आत्मा, ब्रह्म, जगत, अविद्या, भक्ति, ज्ञान आ मुक्ति सम्बन्धी मतभेदक संकेत एकरूप ‘भारतीय आध्यात्मिकता’क मिथक तोड़ैत अछि। तथापि वेदान्तक विशाल बहुलता एक अध्यायमे बहुत संक्षिप्त भऽ जाइत अछि; मध्व, भेदाभेद आ अन्य धारा लेल अधिक स्थान देल जाए तँ संतुलन बढ़त।

अध्याय 13 — बौद्ध दर्शन

विषय-विस्तार: दु:खसँ दर्शनक आरम्भ, अनित्यता, अनात्म, प्रतीत्यसमुत्पाद आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

बौद्ध दर्शनक अध्याय दु:ख, अनित्यता, अनात्म, प्रतीत्यसमुत्पाद, मध्यमक, द्विसत्य, योगाचार आ दिङ्नाग–धर्मकीर्ति प्रमाणमीमांसाकेँ एक व्यापक मानचित्रमे रखैत अछि। ई व्यापकता उपयोगी अछि, मुदा जोखिम सेहो एतहि अछि—बहु शताब्दी आ परम्परा एकहि दार्शनिक आवाज जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि। अध्याय एहि जोखिमक चेतना रखैत अछि, तैओ थेरवाद, माध्यमिक, योगाचार आ प्रमाणवादी परम्पराक ऐतिहासिक भिन्नता स्पष्ट कालरेखासँ अधिक सुरक्षित होयत।

अध्याय 14 — जैन दर्शन

विषय-विस्तार: जीव आ अजीव, कर्म: नैतिकता आ तत्त्वमीमांसा, अहिंसा, अनेकान्तवाद आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

जैन दर्शनक अनेकान्त, नय आ स्याद्वादकेँ ‘सभ सत्य बराबर’क सरल सापेक्षतावादसँ अलग राखल गेल अछि, जे दार्शनिक रूपसँ अत्यन्त आवश्यक

अछि। अहिंसा आ जीव-तत्त्वमीमांसा संग बहुदृष्टिगतता जोड़ि अध्याय सत्यक विनम्रता आ नैतिक संयमक सम्बन्ध बनबैत अछि। साहित्यिक रूपसँ शर्तसूचक कथनसभक विवेचन मैथिली गद्यकेँ तकनीकी क्षमता दैत अछि। सातभङ्गीक ठोस उदाहरण आरो जोड़ला सँ अवधारणा सामान्य पाठक लेल सरल होयत।

अध्याय 15 — लोकायत आ भौतिकवादी प्रश्न

विषय-विस्तार: स्रोतक समस्या, प्रत्यक्षक प्रधानता, देह आ चेतना, परलोक, कर्म आ धार्मिक अधिकारक आलोचना आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

लोकायत पर अध्याय पोथीक समानान्तर इतिहास-पद्धतिक सफल परीक्षण अछि। लेखक खण्डित आ प्राय: विरोधी स्रोतसभक समस्या मानैत छथि आ रिक्त स्थान कल्पनासँ भरबाक बदला अनिश्चितताकेँ स्पष्ट करैत छथि। प्रत्यक्ष-प्रधानता, देह–चेतना, परलोक-संशय आ धार्मिक अधिकारक आलोचना उपयोगी रूपमे उभरैत अछि। ई अध्याय पूरे पोथी लेल आदर्श हो सकैत अछि: उपेक्षित परम्पराकेँ सम्मान देब, मुदा प्रमाण-कसौटी नरम नहि करब।

अध्याय 16 — भाषा, शब्द आ अर्थ

विषय-विस्तार: वाक् सँ दार्शनिक भाषा धरि, शब्द आ अर्थक सम्बन्ध, वाक्य-अर्थ: अभिहितान्वय आ अन्विताभिधान, शाब्दबोधक शर्त आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

भाषा, शब्द आ अर्थ पर अध्याय मैथिली दर्शन-लेखनक दृष्टिसँ विशेष महत्त्व रखैत अछि। शब्दार्थ, वाक्यार्थ, शाब्दबोध, वक्तृ-अभिप्राय, रूपक, अनुवाद, सत्ता आ डिजिटल भाषा—ई विस्तार पोथीक बहुस्तरीय चरित्र देखबैत अछि। ‘अनुवाद स्वयं दर्शन’क प्रस्ताव अत्यन्त फलदायी अछि, कारण प्रमाण, धर्म, आत्मन्, आत्म आ व्यक्ति सन पदक सीधा समतुल्य नहि। एहि अध्यायकेँ यदि मैथिली दार्शनिक शब्दावली निर्माणक ठोस उदाहरणसँ और विस्तार देल जाए तँ ई स्वतंत्र सन्दर्भ-अध्याय बनि सकैत अछि।

तृतीय खण्ड — मिथिलाक दार्शनिक समानान्तर परम्परा

एहि खण्डमे मिथिला सजावटी क्षेत्रीय परिशिष्ट नहि, बल्कि प्रमाण, शास्त्रार्थ, भाषा आ स्थानीय ज्ञानक पद्धतिगत आधार बनैत अछि। इतिहास-सावधानी एहि खण्डक विश्वसनीयता तय करैत अछि।

अध्याय 17 — विदेह: प्रश्नक भूगोल

विषय-विस्तार: विदेहक पाठ-स्मृति, भूगोलक तीन रूप, सीमा आ प्रवाह, राजसत्ता आ ज्ञान आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

विदेहकेँ ‘प्रश्नक भूगोल’ मानल गेल अछि, मुदा विदेह–मिथिला–आधुनिक मैथिली संसारकेँ एक अखण्ड, अपरिवर्तित इकाई नहि मानल गेल—ई इतिहासलेखनक दृष्टिसँ परिपक्व सावधानी अछि। राजसत्ता, भूगोल, परम्परा, न्याय-केन्द्र आ प्रादेशिक गौरवक प्रश्न संग-संग उठैत अछि। अध्यायक सबलता भावनात्मक क्षेत्रीयता पर प्रमाणक अनुशासन लागू करबमे अछि। शोध-दृष्टिसँ पुरातात्त्विक, राजनीतिक-भौगोलिक आ पाठ-इतिहास सम्बन्धी अधिक विशिष्ट स्रोत जोड़बाक आवश्यकता अछि।

अध्याय 18 — याज्ञवल्क्य, गार्गी आ मैत्रेयी

विषय-विस्तार: संवाद दर्शनक रूप, मैत्रेयी: धन आ अमरत्व, प्रियता आ आत्मा, गार्गी: जगत ककरा पर ओतप्रोत? आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

याज्ञवल्क्य, गार्गी आ मैत्रेयीकेँ अलग महापुरुष-चरित नहि, संवादात्मक दार्शनिक क्षेत्रक सह-निर्माता मानब साहित्यिक आ दार्शनिक दुनू दृष्टिसँ प्रभावी अछि। मैत्रेयीक धन–अमरत्व प्रश्न, गार्गीक जगत-आधारक प्रश्न आ याज्ञवल्क्यक आत्मा-विवेचन एक-दोसरकेँ प्रकाशित करैत अछि। स्त्री-दर्शनक पुनर्पाठ स्वागतयोग्य अछि, मुदा आधुनिक प्रतिनिधित्व-शब्दावलीकेँ प्राचीन प्रसंगपर सीधा आरोपित नहि करबाक सावधानी बनल रहय। मूल बृहदारण्यक पाठक चयनित अनुच्छेदक निकट-पठन अध्यायकेँ आरो गम्भीर बनाबत।

अध्याय 19 — न्याय-वैशेषिक आ मिथिलाक तार्किक संस्कार

विषय-विस्तार: न्याय-वैशेषिकक संगम, मिथिलाक स्थान, परिभाषाक अनुशासन, सम्बन्धक सूक्ष्मता आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

न्याय–वैशेषिक आ मिथिलाक तार्किक संस्कारक अध्याय ‘महान नामक सूची’सँ ऊपर उठि परिभाषा, प्रमाण, प्रतिपक्ष आ संशोधनक बौद्धिक आदतपर बल दैत अछि। एहि रूपमे मिथिलाक योगदान क्षेत्रीय गौरव नहि, तर्क-संस्कारक प्रस्ताव बनैत अछि। नव्य-न्यायक सूक्ष्मता आ कठिन पहुँच दुनू स्वीकारल गेल अछि। किन्तु ‘मिथिलाक ज्ञान-संस्था’ सम्बन्धी दाबी सभ ठाम संस्थागत इतिहासक प्रत्यक्ष प्रमाण, पाण्डुलिपि-परम्परा आ शिक्षण-केन्द्रक स्रोतसँ अधिक दृढ़ कएल जाए।

अध्याय 20 — उदयनाचार्य

विषय-विस्तार: ऐतिहासिक स्थान, प्रमुख ग्रन्थ, प्रतिपक्षक गम्भीरता, आत्मतत्त्वविवेक: आत्माक प्रश्न आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

उदयनाचार्यक अध्याय आत्मा, क्षणिकवाद, ईश्वर-सिद्धि, कारणता आ सार्वभौमक प्रश्नकेँ प्रतिपक्ष-सचेत ढंगसँ खोलैत अछि। विशेष उपलब्धि ई जे ईश्वरवादक दार्शनिक प्रस्तुति आस्थाक घोषणा नहि, कारण देबाक सार्वजनिक दायित्व बनैत अछि। तथापि ‘प्राकृतिक धर्ममीमांसा’ सन आधुनिक वर्गक उपयोग करैत ऐतिहासिक अन्तर सदैव चिन्हित रहबाक चाही। न्यायकुसुमाञ्जलिक चुनिंदा अनुमानक संरचना देल जाए तँ पाठक उदयनक वास्तविक तर्कशक्ति प्रत्यक्ष देखत।

अध्याय 21 — वाचस्पति मिश्र

विषय-विस्तार: बहुशास्त्रीयता: मतान्धताक विरुद्ध पद्धति, व्याख्या केवल पुनरुक्ति नहि, प्रमुख दार्शनिक क्षेत्र, समानान्तर दर्शनक शिक्षा आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

वाचस्पति मिश्रक बहुशास्त्रीयता एहि पोथीक समानान्तर भावक प्राकृतिक पूर्वज-सदृश उदाहरण बनैत अछि—एक विचारक अनेक परम्पराकेँ भीतरसँ पढ़ि सकैत छथि। भाष्य, टीका, मौलिकता, मतानुवर्तन आ आलोचनात्मक दूरीक प्रश्न साहित्यिक आलोचनाक लेल सेहो उपयोगी अछि। ‘सर्वतन्त्रस्वतन्त्र’क भावक आधुनिक विस्तार आकर्षक अछि, पर ओकर ऐतिहासिक पद-प्रयोगक सावधान व्याख्या आवश्यक अछि। वाचस्पतिक अलग-अलग ग्रन्थमे बदलैत दार्शनिक भाषा पर पाठ-आधारित तुलना जोड़ल जाए।

अध्याय 22 — गङ्गेश उपाध्याय

विषय-विस्तार: तत्त्वचिन्तामणि: प्रमाणक पुनर्परीक्षण, प्रत्यक्ष: अनुभवक संरचना, अनुमान आ व्याप्ति, शब्द आ विश्वसनीयता आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

गङ्गेश उपाध्याय पर अध्याय पोथीक केन्द्रस्थ भाग अछि। तत्त्वचिन्तामणिक प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द विभाग, व्याप्ति, अवच्छेदक आ नव्य-न्यायीय विश्लेषणक प्रसार पर्याप्त स्पष्टतासँ प्रस्तुत अछि। आधुनिक शोध सेहो गङ्गेशकेँ चौदहम शताब्दीक मिथिलाक प्रमुख न्यायाचार्य आ नव्य-न्यायक निर्णायक व्यक्तित्व मानैत अछि। अध्यायक सबलता गौरवसँ अधिक पद्धतिमे अछि—अस्पष्ट सम्बन्धकेँ सूक्ष्म भाषासँ स्पष्ट करब। अगिला संस्करणमे तत्त्वचिन्तामणिक मूल अंशक एक-दू विश्लेषण जोड़ल जाए।

अध्याय 23 — नव्य-न्याय: भाषाक सूक्ष्म अनुशासन

विषय-विस्तार: कठिन भाषा किएक?, अवच्छेद, सम्बन्ध आ सीमा, परिभाषा आ दोष, नव्य-न्याय आ मिथिला आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

नव्य-न्यायक कठिन तकनीकी भाषाकेँ त्रुटि नहि, सम्बन्ध-स्पष्टताक उपकरण मानल गेल अछि; संगहि संप्रेषणक संकट सेहो स्वीकारल अछि। ई द्विपक्षीय मूल्यांकन अत्यन्त संतुलित अछि। अवच्छेद, प्रतियोगी, अधिकरण, परिष्कार आ परिभाषा-दोषक चर्चा आधुनिक विश्लेषणात्मक दर्शनसँ संवाद खोलैत अछि, मुदा इतिहासिक समानता घोषित नहि करैत। सामान्य पाठक लेल एक पूर्ण नव्य-न्यायीय वाक्यकेँ क्रमश: सरल मैथिलीमे खोलि देखेनाइ एहि अध्यायक सर्वोत्तम सम्भावित विस्तार होयत।

अध्याय 24 — लोक, शास्त्र आ समानान्तर मिथिला

विषय-विस्तार: लोकज्ञानक दार्शनिक स्थिति, स्त्री-अनुभव आ घरेलू संसार, पाबनि, प्रकृति आ समय, शास्त्र बनाम लोक: झूठा द्वन्द्व आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

लोक आ शास्त्रकेँ झूठा द्वन्द्व मानि स्त्री-अनुभव, कृषिज्ञान, पाबनि, प्रकृति, मौखिक स्रोत आ क्षेत्रीय भाषा केँ दार्शनिक सामग्रीक रूपमे विचारब पोथीक समानान्तर आग्रहक आवश्यक परिणति अछि। सबलता ई जे लोककेँ स्वतः सत्य अथवा नैतिक नहि मानल गेल। अगिला चरणमे 'लोकज्ञान कखन दर्शन बनैत अछि?' एहि प्रश्नक स्पष्ट कसौटी, आ जाति–लिंग–अन्धविश्वास जकाँ लोकपरम्पराक दमनकारी पक्षक उदाहरण जोड़ला सँ अध्याय अधिक प्रखर बनत।

चतुर्थ खण्ड — पाश्चात्य दर्शन

पाश्चात्य दर्शनक खण्ड इतिहासक संक्षिप्त सर्वेक्षण होइतहुँ पोथीक मुख्य पद्धति—समस्या-संरचनात्मक तुलना—केँ बारम्बार प्रयोग करैत अछि। एकर लक्ष्य अनुकरण नहि, संवाद अछि।

अध्याय 25 — यूनानी प्रश्न

विषय-विस्तार: मिथकसँ तर्क: सरल कथा सँ बचू, आयोनियाई प्रकृति-प्रश्न, परिवर्तन आ स्थायित्व, संख्या, रूप आ व्यवस्था आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

यूनानी दर्शनकेँ 'मिथकसँ तर्कक एकमात्र जन्म' कहबाक यूरोकेन्द्रित सरल कथा सँ अध्याय बचैत अछि। आयोनियाई प्रकृति-प्रश्न, परिवर्तन–स्थायित्व, परमाणुवाद, सोफिस्ट आ सार्वजनिक तर्कक बहुलता देखबैत अछि जे यूनानी विचार स्वयं अनेक केन्द्रक संसार छल। ई दृष्टि समानान्तर दर्शनक बहु-आरम्भक इतिहास-दृष्टिसँ मेल खाइत अछि। तथापि 'विश्व-दर्शन'क तुलनात्मक विस्तार लेल समकालीन ईरानी, चीनी आ भारतीय बौद्धिक परिप्रेक्ष्यक छोट संकेत जोड़ला सँ वैश्विकता अधिक ठोस होयत।

अध्याय 26 — सुकरात, प्लेटो आ अरस्तू

विषय-विस्तार: सुकरात: प्रश्न पूछबाक नैतिक साहस, ज्ञान आ सद्गुण, प्लेटो: न्याय, ज्ञान आ रूप, गुफाक रूपक आ ज्ञानक राजनीति आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

सुकरात, प्लेटो आ अरस्तूकेँ क्रमशः प्रश्न, संवादात्मक सिद्धान्त-निर्माण आ व्यवस्थित विश्लेषणक तीन शैली रूपमे पढ़ब साहित्यिक रूपसँ सुगठित अछि। गुफा-रूपक, न्याय, सद्गुण, कारण आ राजनीति संग नागरिकता आ

बहिष्कारक सीमा उठेनाइ आलोचनात्मक परिपक्वता देखबैत अछि। पर तीनू विचारकक विशालता एक अध्यायमे संक्षिप्त भऽ जाइत अछि। प्लेटोक रूप-सिद्धान्त आ अरस्तूक तत्त्वमीमांसा–नैतिकता सम्बन्ध पर अलग छोटे खण्ड होइत तँ दार्शनिक गहराइ बढ़ित।

अध्याय 27 — मध्ययुगीन दर्शन

विषय-विस्तार: “अन्धकार युग”क मिथक, आस्था आ तर्क, इस्लामी दर्शनक भूमिका, यहूदी दार्शनिक परम्परा आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

मध्ययुगीन दर्शनकेँ ‘अन्धकार युग’क रूढ़ि सँ मुक्त कऽ यूनानी, अरबी, यहूदी आ लैटिन बौद्धिक परिसंचरणक रूपमे देखब अध्यायक प्रमुख उपलब्धि अछि। अनुवाद, सार्वभौमक समस्या, आस्था–तर्क आ विश्वविद्यालयी शास्त्रार्थक सम्बन्ध समानान्तर इतिहासक बहुकेन्द्रिकता प्रमाणित करैत अछि। एविसेना, एवेरोएस, मैमोनिडीज आ अक्वाइनसक विशिष्ट मतभेदक कुछ विस्तृत चर्चा जोड़ला सँ ‘मध्ययुग’ एक सामान्य पेटी नहि रहत।

अध्याय 28 — देकार्त, स्पिनोजा आ लाइबनित्स

विषय-विस्तार: देकार्तक पद्धतिगत संशय, मन–देह द्वैत, स्पिनोजा: एक तत्त्व, अनेक गुण, भावना आ स्वतंत्रता आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

देकार्त, स्पिनोजा आ लाइबनित्सक संयुक्त अध्याय आधुनिक यूरोपीय बुद्धिवादक सामान्य प्रश्न—निश्चितता, तत्त्व, पर्याप्त कारण, मन–देह आ स्वतंत्रता—स्पष्ट करैत अछि। विशेष गुण ई जे तीनूकेँ एकरूप मतमे नहि गलाओल गेल अछि। देकार्तक पद्धतिगत संशय आ पोथीक अनुशासित संशय बीच संवाद प्रभावी अछि, मुदा समानता ऐतिहासिक प्रभाव नहि, केवल समस्या-संरचना रूपमे रहबाक चाही। स्पिनोजाक भाव-विश्लेषण आ लाइबनित्सक सम्भव-जगत पर थोड़ा विस्तार उपयोगी होयत।

अध्याय 29 — लॉक, बर्कली आ ह्यूम

विषय-विस्तार: लॉक: मनक सामग्री कतयसँ?, प्राथमिक आ द्वितीयक गुण, व्यक्ति-पहिचान, बर्कली: पदार्थक आलोचना आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

लॉक, बर्कली आ ह्यूमक अध्याय अनुभव, पदार्थ, व्यक्ति-पहिचान, कारणता आ आगमनक प्रश्नकेँ क्रमश: तीक्ष्ण करैत अछि। ह्यूमक आगमन-संशय आ भारतीय व्याप्ति-विमर्शक तुलनात्मक संकेत पोथीक श्रेष्ठ तुलनात्मक क्षणसभमे अछि, कारण लेखक समानता थोपैत नहि, समस्या-संरचना मिलबैत छथि। एहि तुलना कैं और सबल करबाक लेल व्याप्तिज्ञान, उपाधि आ ह्यूमीय अभ्यस्त अपेक्षा बीच स्पष्ट भिन्नता तालिका वा उदाहरणसँ देखाओल जा सकैत अछि।

अध्याय 30 — कान्ट

विषय-विस्तार: 'कोपरनिकीय' परिवर्तन, अनुभवपूर्व आ अनुभवोत्तर, प्रतीयमान जगत आ वस्तु-स्वरूप, कारणता आ ह्यूमक चुनौती आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

कान्ट पर अध्याय ज्ञानमे ज्ञाताक सक्रिय भूमिका, अनुभवक सीमा, कारणता, स्वायत्तता आ कर्तव्यकेँ एकहि नैतिक-ज्ञानमीमांसीय चक्रमे रखैत अछि। 'सार्वभौम मनुष्य के?' प्रश्न कान्टक सार्वभौमिकता पर ऐतिहासिक आलोचना खोलैत अछि, जे आवश्यक अछि। मुदा एहि आलोचनाकेँ कान्टक मूल ग्रन्थ, मानवविज्ञान सम्बन्धी लेख आ आधुनिक कान्ट-अध्ययनक स्पष्ट सन्दर्भसँ समर्थित कएल जाए, नहि तँ नैतिक मूल्यांकन ऐतिहासिक दाबी जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि।

अध्याय 31 — हेगेल आ द्वन्द्व

विषय-विस्तार: स्थिर वस्तुसँ प्रक्रिया दिस, द्वन्द्वक अर्थ, स्वामी–दास सम्बन्ध, स्वतंत्रता आ संस्था आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

हेगेलक द्वन्द्वकेँ लोकप्रिय 'थीसिस–एण्टीथीसिस–सिन्थेसिस' सूत्रमे सीमित नहि करैत प्रक्रिया, निषेध, संरक्षण, मान्यता आ संस्था रूपमे पढ़ब अध्यायक बौद्धिक शक्ति अछि। स्वामी–दास सम्बन्ध आ स्वतंत्रताक सामाजिक रूप बादक समाज-दर्शनसँ स्वाभाविक सेतु बनबैत अछि। समानान्तर दर्शन हेगेलक ऐतिहासिक नियतिवाद अस्वीकारैत द्वन्द्वक आलोचनात्मक उपयोग राखैत

अछि। हेगेलक ‘विश्व-इतिहास’क यूरोकेन्द्रित आयाम पर अधिक प्रत्यक्ष चर्चा अध्यायकेँ समानान्तर इतिहास-दृष्टिसँ जोड़त।

अध्याय 32 — मार्क्स

विषय-विस्तार: ऐतिहासिक भौतिक दृष्टि, विमुखता, वस्तु, मूल्य आ वस्तुपूजा, वर्ग आ सत्ता आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

मार्क्सक अध्याय श्रम, विमुखता, वस्तुपूजा, वर्ग, विचारधारा आ आर्थिक सत्ता केँ नैतिक–दार्शनिक प्रश्न बनबैत अछि। आर्थिक संरचनाक शक्ति स्वीकारैत जाति, लिंग, भाषा आ क्षेत्रकेँ स्वतंत्र सत्ता-आयाम मानब भारतीय सन्दर्भमे उपयोगी संशोधन अछि। चुनौती ई जे एहन बहुआयामी मॉडलमे कारणात्मक प्राथमिकता कोना ठहरत—कखन वर्ग प्रमुख, कखन जाति, कखन लिंग? एहि प्रश्नक सिद्धान्तगत उत्तर जोड़ला सँ अध्याय ‘सूचीगत बहुलता’सँ आगाँ बढ़त।

अध्याय 33 — कीर्केगार्द आ नीत्शे

विषय-विस्तार: व्यक्ति बनाम तन्त्र, चिन्ता आ चुनाव, आस्था आ छलाँग, नीत्शे आ मूल्यक वंशावली आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

कीर्केगार्द आ नीत्शेकेँ एक अध्यायमे रखबाक औचित्य व्यक्ति, चुनाव, स्थापित मूल्य आ तन्त्र-विरोधक साझा प्रश्नमे भेटैत अछि, मुदा दुनूक दार्शनिक परियोजना अत्यन्त भिन्न अछि। अध्याय ई भिन्नता पर्याप्त हद तक सुरक्षित रखैत अछि। कीर्केगार्दक आस्था-उछाल आ नीत्शेक वंशावली-विधिक आलोचनात्मक उपयोग रोचक अछि। तथापि नीत्शेक शक्ति-संकल्पकेँ सरल राजनीतिक प्रभुत्वक अर्थमे नहि पढ़बाक सावधानी, आ कीर्केगार्दक धार्मिक प्रसंगक अधिक स्पष्टता आवश्यक अछि।

अध्याय 34 — प्रघटनावाद आ अस्तित्ववाद

विषय-विस्तार: अनुभव दिस फेरब, जीवन-जगत, हैडेगर: संसारमे-होयब, सार्त्र: स्वतंत्रता आ जिम्मेवारी आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

प्रघटनावाद आ अस्तित्ववादक अध्याय अनुभव, जीवन-जगत, संसारमे-होयब, स्वतंत्रता, देह आ दोसर व्यक्तिक प्रश्नकेँ सामाजिक परिस्थिति संग

जोड़ैत अछि। ‘स्वतंत्रता सदैव निर्मित मैदानमे क्रियाशील’—एहि भावसँ अध्याय सार्त्रीय उत्तरदायित्वकेँ सामाजिक न्यायसँ संवाद करबैत अछि। मेरलो-पोंटी आ सिमोन द बोउवारक समावेश देह, लिंग आ स्थित स्वतंत्रताक चर्चा अधिक पूर्ण बना सकैत अछि।

अध्याय 35 — विश्लेषणात्मक दर्शन

विषय-विस्तार: भाषा आ तर्कक नूतन मोड़, प्रारम्भिक विट्गेन्स्टाइन, बादक विट्गेन्स्टाइन, अवधारणात्मक स्पष्टता आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

विश्लेषणात्मक दर्शन आ नव्य-न्याय बीच संवाद पोथीक स्वाभाविक विषय अछि। भाषा, तर्कीय रूप, साधारण भाषा, अवधारणात्मक स्पष्टता आ समस्या-विलयनक प्रश्न सभ नव्य-न्यायीय सूक्ष्मतासँ संवाद करैत अछि। अध्याय प्रशंसनीय रूपसँ ‘नव्य-न्याय पहिले सँ विश्लेषणात्मक दर्शन छल’ सन विजयवादी दावा सँ बचैत अछि। और गहराइ लेल फ्रेगे, रसेल, विट्गेन्स्टाइन तथा गङ्गेश/रघुनाथक एक-एक ठोस समस्या-विश्लेषण समान पृष्ठपर तुलना कएल जा सकैत अछि।

अध्याय 36 — व्यवहारवाद

विषय-विस्तार: अर्थ आ व्यावहारिक परिणाम, सत्य: क्षणिक लाभ नहि, अन्वेषणक अनुशासन, ड्यूई: दर्शन, शिक्षा आ लोकतन्त्र, व्यवहारवाद आ नैतिकता आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

व्यवहारवादक अध्याय पियर्स, जेम्स आ ड्यूई द्वारा अर्थ, जाँच, अनुभव, शिक्षा आ लोकतन्त्रक व्यवहारगत पक्ष स्पष्ट करैत अछि। सत्यकेँ क्षणिक लाभक पर्याय नहि मानबाक चेतावनी जरूरी आ सफल अछि। ड्यूईक लोकतन्त्र-विचारक भारतीय सामाजिक चिन्तन, विशेषत: आम्बेडकरक बौद्धिक जीवनसँ ऐतिहासिक सम्बन्ध आकर्षक शोध-दिशा अछि, मुदा प्रत्यक्ष प्रभावक दाबी प्रमाणसँ मात्र करबाक चाही।

अध्याय 37 — विज्ञान-दर्शन

विषय-विस्तार: विज्ञानक विशेषता की?, कून आ वैज्ञानिक प्रतिमान, वैज्ञानिक यथार्थवाद आ उपकरणवाद, अवलोकन आ सिद्धान्त आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

विज्ञान-दर्शनक अध्याय विज्ञानकेँ न सर्वज्ञ देवत्व दैत अछि, न सांस्कृतिक मतमात्र बना दैत अछि। सिद्धान्त, अवलोकन, खण्डनीयता, प्रतिमान, यथार्थवाद, उपकरणवाद, कारणता आ मूल्यक प्रश्न संतुलित रूपमे उठैत अछि। पॉप्पर आ कूनक बीच भेद, आ विज्ञानक संस्थागत स्वरूप पर बल आवश्यक अछि। अगिला संस्करणमे लाकातोश, फेयराबेंड वा समकालीन पुनरुत्पादन-संकट सम्बन्धी स्रोत जोड़ला सँ इतिहास–विज्ञान–संस्था सम्बन्ध अधिक सबल होयत।

पंचम खण्ड — सामाजिक आ राजनीतिक दर्शन

सामाजिक–राजनीतिक खण्डमे अमूर्त दर्शन वास्तविक संस्था, असमानता, नागरिकता, जाति, वर्ग, लिंग, भाषा आ लोकतन्त्रक कसौटी पर उतरैत अछि। एतहि गरिमा-सिद्धान्तक व्यावहारिक शक्ति स्पष्ट होइत अछि।

अध्याय 38 — व्यक्ति आ समाज

विषय-विस्तार: सामाजिक रूपसँ निर्मित व्यक्ति, समाज व्यक्ति नहि निगलय, समुदाय आ गरिमा, उदारवाद आ सामुदायिक आलोचना आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

व्यक्ति आ समाजक अध्याय व्यक्तिवाद आ सामूहिकतावादक बीच सम्बन्धात्मक मार्ग खोजैत अछि। सामाजिक निर्माण, समुदाय, मान्यता, डिजिटल समाज आ व्यक्तिगत गरिमाकेँ एक साथ रखब बादक ‘सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद’क पूर्वरूप अछि। अवधारणात्मक रूपसँ सामाजिक संस्था, भूमिका आ सामूहिक अभिकर्तृत्वक तत्त्वमीमांसा पर अधिक स्पष्टता चाही। एहि अध्यायसँ आरम्भ उपधारा-संख्या क्रमभङ्ग सेहो देखाइत अछि, जे पाठकीय प्रवाह बाधित करैत अछि आ मुद्रणपूर्व सुधार आवश्यक अछि।

अध्याय 39 — राज्यक औचित्य

विषय-विस्तार: सुरक्षा: हॉब्सक प्रश्न, अधिकार: लॉकक दिशा, रूसो आ स्वशासन, वैधानिकता आ नैतिक वैधता आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

राज्यक औचित्य पर हॉब्स, लॉक, रूसो, वैधानिकता, सार्वजनिक औचित्य, कल्याण, संघवाद आ स्थानीयता एक बहुस्तरीय राजनीतिक दर्शन गढ़ैत अछि। 'राज्य नागरिकक मालिक नहि' पोथीक गरिमा-आधारित राजनीति सँ सुसंगत सूत्र अछि। रॉल्सक सार्वजनिक कारण आ आधुनिक वैधता-विमर्शक संग एहि अध्यायक संवाद स्पष्ट अछि। किन्तु आपातकाल, सुरक्षा-संकट, सीमा-नियन्त्रण आ अल्पसंख्यक अधिकारमे केन्द्र–स्थानीय टकरावक ठोस उदाहरण जोड़ला सँ बहुकेन्द्रिक सिद्धान्तक परीक्षा होयत।

अध्याय 40 — स्वतंत्रता

विषय-विस्तार: नकारात्मक स्वतंत्रता, सकारात्मक स्वतंत्रता, स्वायत्तता आ जीवनक अर्थ, स्वतंत्रता आ समानता आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

स्वतंत्रताकेँ केवल बाधा-अभाव नहि, वास्तविक विकल्प, क्षमता, स्वायत्तता आ सामाजिक परिस्थिति संग जोड़ल गेल अछि। मिलक हानि-सिद्धान्त, सकारात्मक–नकारात्मक स्वतंत्रता आ गरिमा-सीमाक संयोजन आधुनिक राजनीतिक दर्शनक प्रमुख बहससभकेँ समेटैत अछि। सेन–नुसबाउमक क्षमता-दृष्टिक संग अधिक स्पष्ट संवाद एहि अध्यायक 'वास्तविक विकल्प' अवधारणाकेँ सिद्धान्तगत आधार देत। स्वतंत्रता आ पितृसत्तात्मक/सामाजिक दबावक बीच सूक्ष्म भेद सेहो विस्तार योग्य अछि।

अध्याय 41 — समानता

विषय-विस्तार: समानता आ एकरूपताक भेद, औपचारिक आ वास्तविक समानता, समान अवसर आ ओकर सीमा, संसाधन, क्षमता आ गरिमा आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

समानताकेँ एकरूपता नहि मानि नैतिक दर्जा, अवसर, संसाधन, क्षमता, सम्मान आ सम्बन्धात्मक समानताक रूपमे विभाजित करब अध्यायक प्रमुख उपलब्धि अछि। 'जन्म नैतिक योग्यता नहि' सूत्र जाति, लिंग आ वंशानुगत

विशेषाधिकारक विरुद्ध पूरे पोथीक नैतिक केन्द्र बनैत अछि। प्रश्न ई अछि जे संसाधन-समानता, क्षमता-समानता आ परिणाम-समानतामे टकराव भेला पर प्राथमिकता कोना तय होयत। एहि लेल सेन, नुसबाउम, ड्वर्किन आ सम्बन्धात्मक समानताक साहित्यसँ गहन संवाद उपयोगी होयत।

अध्याय 42 — न्याय

विषय-विस्तार: न्याय: व्यक्ति सँ संस्था धरि, वितरणात्मक न्याय, रॉल्स आ निष्पक्षता, मान्यता, प्रतिनिधित्व आ आवाज आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

न्याय-अध्याय वितरण, प्रक्रिया, मान्यता, प्रतिनिधित्व, इतिहास, दण्ड आ पुनर्स्थापनाकेँ एकहि ढाँचामे रखैत अछि। रॉल्सक निष्पक्षता आ सेनक तुलनात्मक न्याय-दृष्टि संग ई बहुआयामी स्वरूप मेल खाइत अछि। साहित्यिक रूपसँ अध्याय सूत्रात्मक अछि, पर दार्शनिक रूपसँ एक मूल कठिनाई शेष रहैत अछि—जँ सम्मान, संसाधन, स्वतंत्रता आ परिणामक माँग आपसमे टकराय तँ निर्णयक उच्चतर नियम की? पोथीक मौलिक नैतिकताकेँ एतहि सबसँ अधिक औपचारिकता चाही।

अध्याय 43 — जाति आ सामाजिक पदानुक्रम

विषय-विस्तार: जन्म आ नैतिक योग्यता, जाति: श्रम-विभाजन वा श्रमिकक विभाजन?, अस्पृश्यता आ देहक राजनीति, अम्बेडकरक मूल चुनौती आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

जाति आ सामाजिक पदानुक्रमक अध्याय पोथीक नैतिक परीक्षा-स्थल अछि। जन्म, अन्तर्विवाह, शुद्धि–अशुद्धि, ज्ञान-सत्ता, प्रतिदिनक भेदभाव आ आम्बेडकरक जाति-आलोचना केँ गरिमा-सिद्धान्तसँ जोड़ब अत्यन्त प्रभावी अछि। ‘जन्म नैतिक योग्यता नहि’ एतय अमूर्त सूत्र नहि, ठोस सामाजिक निष्कर्ष बनैत अछि। शोध-मजबूती लेल जातिक ऐतिहासिक विविधता, क्षेत्रीय रूप, आधुनिक आँकड़ा आ आम्बेडकरक मूल ग्रन्थक पाठ-सन्दर्भ अधिक व्यवस्थित रूपमे देल जाए।

अध्याय 44 — वर्ग आ आर्थिक सत्ता

विषय-विस्तार: वर्गक दार्शनिक अर्थ, श्रम, मूल्य आ गरिमा, सम्पत्ति आ राजनीतिक समानता, गरीबी केवल कम आय नहि आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

वर्ग आ आर्थिक सत्ता पर अध्याय सम्पत्ति, श्रम, मजदूरी, ऋण, देखभालक अदृश्य श्रम आ लोकतान्त्रिक समानताक सम्बन्ध खोलैत अछि। मार्क्सीय शक्ति-विश्लेषण स्वीकारैत एकमात्र आर्थिक नियतिवादसँ बचब पोथीक घोषित बहुकारणीय पद्धतिसँ मेल खाइत अछि। मुदा ‘शोषण’क स्पष्ट दार्शनिक परिभाषा, बाजारक वैध विनिमय आ संरचनात्मक दबावक भेद, तथा सम्पत्ति-अधिकारक सीमा पर अधिक सिद्धान्तगत चर्चा आवश्यक अछि।

अध्याय 45 — स्त्री, लिंग आ सत्ता

विषय-विस्तार: निजी आ सार्वजनिकक सीमा, देह आ स्वायत्तता, अवैतनिक देखभालक श्रम, समान अवसर आ संस्थागत बाधा आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

स्त्री, लिंग आ सत्ता अध्याय सामाजिक दर्शनक परिशिष्ट नहि, केन्द्रक आत्मसमीक्षा बनैत अछि—ई निर्णय अत्यन्त उचित अछि। देह-स्वायत्तता, अवैतनिक देखभाल, सार्वजनिक–निजी विभाजन, प्रतिनिधित्व, अन्तरविभागीयता आ ज्ञान-सत्ता एक-दोसरसँ जुड़ैत अछि। फ्रिकरक ज्ञानात्मक अन्याय आ नारीवादी सामाजिक ज्ञानमीमांसा संग अध्यायक गहरा संवाद सम्भव अछि। ‘अन्तरविभागीयता’क ऐतिहासिक स्रोत आ भारतीय जाति–लिंग अनुभवक ठोस अध्ययन जोड़ल जाए।

अध्याय 46 — भाषा, क्षेत्र आ अस्मिता

विषय-विस्तार: भाषा आ पहिचान, मातृभाषा, ज्ञान आ अवसर, भाषा आ सत्ता, क्षेत्रीयता: स्थानीयता बनाम संकीर्णता आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

भाषा, क्षेत्र आ अस्मिता पोथीक सर्वाधिक स्थानीय आ मौलिक अध्यायसभमे एक अछि। मातृभाषा, मानकीकरण, प्रशासनिक पहुँच, लिपि, डिजिटल असमानता आ क्षेत्रीय गरिमाकेँ लोकतान्त्रिक न्यायसँ जोड़ब मैथिली दार्शनिक लेखनक विशिष्ट योगदान बनि सकैत अछि। किन्तु भाषा-अधिकारक तर्क लेल समाजभाषाविज्ञान, शिक्षा-अध्ययन, संवैधानिक भाषा-व्यवस्था आ भाषिक अर्थशास्त्रक प्रमाण जोड़ब आवश्यक अछि। क्षेत्रीय सम्मानकेँ भाषिक शुद्धतावादसँ अलग राखबाक चेतावनी विशेष महत्त्वपूर्ण रहत।

अध्याय 47 — लोकतन्त्र

विषय-विस्तार: जनसत्ता आ सीमित सत्ता, प्रतिनिधित्व, संस्था, नियम आ असहमति, प्रतिपक्षक वैधता आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

लोकतन्त्रक अध्याय मतदानसँ आगाँ बढ़ि संस्था, अधिकार, प्रतिनिधित्व, विपक्ष, सूचना, सामाजिक सम्मान आ वैध असहमतिमे लोकतन्त्र खोजैत अछि।

‘प्रतिपक्षकेँ शत्रु नहि, वैध नागरिक पक्ष मानब’ पोथीक नैतिक-राजनीतिक स्वरकेँ तीक्ष्ण करैत अछि। विशेषज्ञ शासन बनाम लोकतान्त्रिक निर्णयक बहस समकालीन महत्वक अछि। संस्थागत क्षरण, दुष्प्रचार, चुनावी वित्त आ न्यायपालिका/माध्यमक स्वायत्तता पर ठोस अध्ययन जोड़ला सँ अध्याय अधिक प्रमाणाधारित बनत।

अध्याय 48 — गांधी

विषय-विस्तार: सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वराज आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

गांधी पर अध्याय श्रद्धा आ आलोचना दुनू साथ राखैत अछि। सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वराज, साधन–साध्य आ रचनात्मक कार्यक्रमक नैतिक शक्ति स्वीकारैत जाति सम्बन्धी सीमा सेहो उठाओल गेल अछि। ई गैर-हैजियोग्राफिक पठन पोथीक पद्धतिसँ सुसंगत अछि। तथापि गांधी विचार समयक संग बदलल; दक्षिण अफ्रीका, हिन्द स्वराज, अस्पृश्यता-विमर्श आ अन्तिम दशकक विचार अलग कालखंडमे पढ़ल जाए तँ आलोचना अधिक ऐतिहासिक सटीकता पाबत।

अध्याय 49 — आम्बेडकर

विषय-विस्तार: जाति: श्रम-विभाजन नहि, श्रमिक-विभाजन, सामाजिक सुधार आ राजनीतिक सुधार, स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व, संवैधानिकता आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

आम्बेडकरक अध्याय पोथीक सामाजिक लोकतन्त्र-विचारक केन्द्र अछि। जाति-उन्मूलन, प्रतिनिधित्व, संवैधानिकता, स्वतंत्रता–समानता–बन्धुत्व, धर्मपरिवर्तन आ नायकपूजाक आलोचना एक साझा गरिमा-दृष्टिमे जुड़ैत अछि। आम्बेडकरक लोकतन्त्र केवल शासन-पद्धति नहि, ‘सामाजिक सम्बन्धक रूप’ अछि—एहि बिन्दुक उपयोग पोथीक बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्रक आधार मजबूत करैत अछि। Annihilation of Caste, States and Minorities, संविधान सभा-भाषण आ The Buddha and His Dhamma बीच कालक्रमिक अन्तर अधिक स्पष्ट कएल जाए।

षष्ठ खण्ड — धर्म-दर्शन

धर्म-दर्शन खण्ड सम्मान आ आलोचना दुनूकेँ साथ राखय चाहैत अछि। धार्मिक सत्य-दाबी, व्यक्तिगत विवेक, सार्वजनिक बाध्यता आ समान नागरिकताक अन्तर एहि खण्डक मूल धुरी अछि।

अध्याय 50 — धर्म की अछि?

विषय-विस्तार: परिभाषाक कठिनाई, विश्वास केन्द्रित परिभाषाक सीमा, अनुष्ठान आ समुदाय, अनुभव आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

‘धर्म की अछि?’ अध्याय परिभाषाक कठिनाईक सही बिन्दुसँ आरम्भ होइत अछि। विश्वास, अनुष्ठान, समुदाय, अनुभव, नैतिकता, पहचान, अर्थशास्त्र आ राजकीय सम्बन्धक बहुस्तर धर्मकेँ एकरेखीय श्रेणी बनबासँ रोकैत अछि। ई चौड़ाई बादक धर्म-दर्शन अध्यायसभ लेल उपयोगी भूमि तैयार करैत अछि। तथापि ‘धर्म’ आ आधुनिक पश्चिमी संस्थागत धर्म-श्रेणी ऐतिहासिक रूपसँ एकरूप नहि—एहि अनुवादक इतिहासक अधिक स्पष्ट विवेचन अध्याय १६क भाषा-दर्शनसँ मजबूत अन्तरसन्दर्भ बनाबत।

अध्याय 51 — ईश्वरक प्रश्न

विषय-विस्तार: ईश्वर-धारणाक बहुलता, कारणसँ ईश्वर धरि, व्यवस्था, उद्देश्य आ बुद्धिमत्ता, नैतिक तर्क आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

ईश्वरक प्रश्न पर अध्याय ब्रह्माण्डीय, उद्देश्यात्मक, नैतिक, अनुभवगत तर्क आ अशुभ/गोपनता सम्बन्धी आपत्तिसभकेँ संतुलित रूपमे रखैत अछि। भारतीय न्यायीय ईश्वरवाद, मीमांसीय आपत्ति आ पाश्चात्य धर्म-दर्शनकेँ एकहि बहसमे आनब सफल तुलनात्मक प्रयोग अछि। लेखक न ईश्वरवादकेँ विशेषाधिकार दैत छथि, न नास्तिकताकेँ स्वतः प्रगतिशील विजय। सुधार लेल ईश्वरक गुण—सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता, नैतिक परिपूर्णता—बीचक तार्किक संगति पर अधिक औपचारिक विवेचन जोड़ल जाए।

अध्याय 52 — आस्था आ तर्क

विषय-विस्तार: आस्था की?, तर्कक भूमिका, आस्था तर्कक सीमा देखबैत अछि?, फिदेइज्म आ ओकर कठिनाई आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

आस्था आ तर्कक अध्याय निजी कारण, सार्वजनिक कारण, साक्ष्य, आशा, समुदाय आ नैतिक परीक्षा बीच भेद बनबैत अछि। ई पोथीक धर्मबहुलता सिद्धान्तक मुख्य आधार अछि। रॉल्सीय सार्वजनिक कारणक संग स्पष्ट साम्य अछि, मुदा पोथी धार्मिक भाषा कैं सार्वजनिक जीवनसँ पूर्ण निष्कासन नहि करैत—एतय एक विशिष्ट भारतीय/बहुलतावादी दिशा देखाइत अछि। सार्वजनिक कारणक ‘साझा’ मानक स्वयं बहुमत वा प्रभुत्वशाली भाषाक उत्पाद न बनय, एहि आपत्तिक विस्तृत उत्तर जरूरी अछि।

अध्याय 53 — दुःख आ अशुभक समस्या

विषय-विस्तार: तार्किक आ प्रमाणात्मक समस्या, स्वतंत्र इच्छा रक्षा, आत्म-विकासक उत्तर, कर्म-आधारित उत्तरक सावधानी आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

दुःख आ अशुभक समस्या अध्याय केवल ईश्वरवादक तार्किक पहेली नहि, पीड़ित मनुष्यक अनुभव आ सामाजिक उत्तरदायित्वक प्रश्न बनबैत अछि। स्वतंत्र इच्छा, आत्म-विकास, कर्म, बौद्ध दृष्टि, विलाप, क्षमा आ सामाजिक अशुभक विस्तार अध्यायकैं नैतिक गहराइ दैत अछि। ‘तैयार सांत्वना’सँ दूरी साहित्यिक रूपसँ प्रभावी अछि। तथापि धार्मिक अशुभ-समस्या आ धर्मनिरपेक्ष सामाजिक पीड़ाक विश्लेषण अलग स्तरपर स्पष्ट राखल जाए तँ तर्क अधिक सुगठित रहत।

अध्याय 54 — कर्म, पुनर्जन्म आ मोक्ष

विषय-विस्तार: कर्म: नैतिक कारणता, कर्म भाग्यवाद नहि, पीड़ित-दोषारोपण, पुनर्जन्मक दार्शनिक प्रश्न आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

कर्म, पुनर्जन्म आ मोक्षक अध्याय भाग्यवाद, पीड़ित-दोषारोपण आ दार्शनिक नैतिक कारणता बीच महत्त्वपूर्ण भेद करैत अछि। पुनर्जन्मक दाबी पर प्रमाणक सामान्य कसौटी लागू करब पोथीक बहुप्रमाणीय विवेकवादसँ सुसंगत अछि। मोक्षकैं जीवन-विरोधी पलायन मात्र नहि मानबाक संतुलन उचित अछि।

भारतीय परम्परासभमे कर्मक अर्थ अत्यन्त भिन्न—बौद्ध, जैन, मीमांसा, वेदान्त —ताहि भिन्नताक सारणी अध्यायकेँ अधिक शोधोपयोगी बना सकैत अछि।

अध्याय 55 — धर्मबहुलता

विषय-विस्तार: बहुलताक तथ्य, विशिष्टतावाद, समावेशवाद, बहुलतावाद आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

धर्मबहुलता पर अध्याय सत्य-दावी आ समान नागरिक गरिमाकेँ अलग करैत अछि—ई पोथीक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भेदसभमे एक अछि। विशिष्टतावाद, समावेशवाद, बहुलतावाद, धर्म-परिवर्तन, अनास्था, संवाद आ आलोचनाक अधिकारक संयोजन व्यापक अछि। ‘सभ धर्म समान सत्य’ कहबाक बदला ‘सभ व्यक्तिक समान विवेक-स्वतंत्रता’ पर बल दार्शनिक रूपसँ अधिक मजबूत अछि। जॉन हिक, रॉल्स, चार्ल्स टेलर आ भारतीय बहुधार्मिक संवैधानिक अनुभवसँ तुलना अध्यायक गहराइ बढ़ाबत।

अध्याय 56 — धर्म आ राज्य

विषय-विस्तार: धर्मक सत्य आ राज्यक अधिकार, धर्मनिरपेक्षता: दूरी, समानता आ संरक्षण, समान व्यवहार आ समान परिणाम, धार्मिक संस्था आ आन्तरिक न्याय आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

धर्म आ राज्यक अध्याय तटस्थता, समानता, संरक्षण, निजी कानून, धार्मिक संस्था भीतर असहमति आ बहुमतवादी धार्मिक राष्ट्रवादक प्रश्न उठबैत अछि। ‘व्यक्तिगत आस्था स्वतंत्र, सामुदायिक धर्म सम्मानित, राज्य समान नागरिक गरिमासँ बन्धल’ सूत्र स्पष्ट अछि। भारतीय धर्मनिरपेक्षताक ‘सिद्धान्तगत दूरी’ जकाँ विमर्शसँ संवाद जोड़ल जाए तँ पश्चिमी चर्च-स्टेट पृथक्करणसँ भिन्न भारतीय जटिलता अधिक स्पष्ट होयत।

अध्याय 57 — लोकधर्म आ संस्थागत धर्म

विषय-विस्तार: लोकधर्मक मिश्रित स्वरूप, स्त्री, घर आ धार्मिक अर्थ, संस्था किएक बनैत अछि?, लोक बनाम शास्त्र: झूठा द्वन्द्व आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

लोकधर्म आ संस्थागत धर्म पर अध्याय धार्मिक अनुभवक जीवित, स्थानीय, लिंगित आ आर्थिक रूप देखबैत अछि। लोकदेवता, स्थान, स्त्रीक धार्मिक श्रम,

उपचार, बाजार आ पर्यावरणक प्रश्न मिथिला-केंद्रित शोध लेल समृद्ध क्षेत्र खोलैत अछि। सबलता ई जे लोकधर्मकेँ स्वतः मुक्तिदायी नहि मानल गेल। मुदा एहन अध्याय लेल दार्शनिक सामान्यीकरणक संग नृवंशात्मक क्षेत्र-अध्ययन, मौखिक इतिहास आ स्थानीय स्रोतक ठोस प्रमाण विशेष जरूरी अछि।

सप्तम खण्ड — आधुनिक आ समकालीन दर्शन

आधुनिक खण्ड विज्ञान, आधुनिकता, भाषा-सत्ता, इतिहास, डिजिटल ज्ञान, कृत्रिम बुद्धि आ पर्यावरणक माध्यमसँ पोथीक पद्धतिक समकालीन उपयोग देखबैत अछि।

अध्याय 58 — आधुनिकता

विषय-विस्तार: मुक्ति आ नियन्त्रणक द्वैधता, परम्परा बनाम आधुनिकता, औपनिवेशिक आधुनिकता, व्यक्ति, समुदाय आ बाजार आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

आधुनिकताकेँ एकरेखीय पश्चिमीकरण नहि, मुक्ति आ नियन्त्रणक द्वैध इतिहास रूपमे पढ़ब अध्यायक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि। औपनिवेशिकता, नौकरशाही, बाजार, सार्वजनिक क्षेत्र, व्यक्तिवाद, क्षेत्रीय समाज आ परम्पराक पुनर्रचना एक बहुवचन आधुनिकता प्रस्तुत करैत अछि। आधुनिकता-विमर्शमे चार्ल्स टेलर, जुर्गेन हाबर्मास, दीपेश चक्रवर्ती वा बहु-आधुनिकता साहित्यक संग स्पष्ट संवाद अध्यायकेँ व्यापक वैश्विक शोधपरम्परासँ जोड़त।

अध्याय 59 — विज्ञान आ मनुष्य

विषय-विस्तार: विज्ञानक ज्ञानात्मक शक्ति, तथ्यसँ मूल्य स्वतः नहि निकलैत, द्वि-उपयोगी ज्ञान, विशेषज्ञता आ लोकतन्त्र आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

विज्ञान आ मनुष्य अध्याय विज्ञानक प्रमाण-अनुशासनक शक्ति स्वीकारैत तथ्यसँ मूल्य स्वतः न निकलबाक सीमा रेखांकित करैत अछि। द्वि-उपयोगी ज्ञान, विशेषज्ञता, अनुसंधान-नैतिकता, वित्तपोषण, पुनरुत्पादन आ विज्ञान-संचारक प्रश्न समकालीनता दैत अछि। विज्ञानविरोध आ वैज्ञानिकतावाद दुनूसँ दूरी पोथीक संतुलित स्वभावक उदाहरण अछि। संस्थागत विज्ञानक

वास्तविक उदाहरण, विशेषत: सार्वजनिक स्वास्थ्य, पर्यावरण वा जैव-प्रौद्योगिकी, जोड़ला सँ दार्शनिक निष्कर्ष अधिक जीवित होयत।

अध्याय 60 — भाषा आ सत्ता

विषय-विस्तार: नामकरण आ राजनीतिक अर्थ, “भाषा” आ “बोली”क सत्ता, मानक भाषा आ नागरिक पहुँच, मौन सेहो सत्ता अछि आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

भाषा आ सत्ता अध्याय नामकरण, ‘भाषा/बोली’ वर्गीकरण, मानक भाषा, न्यायालयी भाषा, शब्दकोश, मौन आ फूको-प्रेरित विमर्श-सत्ता सम्बन्धकेँ मैथिली भाषिक गरिमासँ जोड़ैत अछि। ई पोथीक स्थानीय अनुभव आ वैश्विक सिद्धान्तक सफल संगम अछि। तथापि सत्ता भाषा प्रभावित करैत अछि कहब आ सत्य केवल सत्ता उत्पन्न करैत अछि कहब भिन्न बात अछि; अध्याय पहिल दिशा रखैत अछि, एहि भेदकेँ और स्पष्ट करब आवश्यक अछि।

अध्याय 61 — इतिहास आ स्मृति

विषय-विस्तार: घटना, स्रोत आ इतिहास, स्मृति: प्रमाण, पहचान आ पुनर्निर्माण, अभिलेखक मौन, आधिकारिक इतिहास आ प्रतिइतिहास आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

इतिहास आ स्मृति पर अध्याय घटना, स्रोत, अभिलेख, मौखिक स्मृति, मौन, कारण, जीवनी आ पारिवारिक अभिलेखक आलोचनात्मक उपयोग सिखबैत अछि। ‘मौन कल्पनासँ भरबाक अनुमति नहि’ समानान्तर इतिहासक कठोर नैतिकता अछि। रिकोअरक स्मृति–इतिहास–विस्मरण विमर्श आ उपनिवेशोत्तर अभिलेख-आलोचनासँ ई अध्याय सहज संवाद करैत अछि। ऐतिहासिक विधिक प्राथमिक/द्वितीयक स्रोत, पाठालोचन आ स्रोत-वंशावली पर एक तकनीकी परिशिष्ट उपयोगी होयत।

अध्याय 62 — ज्ञान आ डिजिटल संसार

विषय-विस्तार: सूचना, विश्वास आ ज्ञान, एल्गोरिदम आ ध्यान, स्रोत-समीक्षा डिजिटल युगमे, प्रतिध्वनि-कक्ष आ पुष्टि-पक्षपात आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

ज्ञान आ डिजिटल संसार अध्याय सूचना-अधिक्य, खोज-क्रम, वायरलता, प्रतिध्वनि-कक्ष, कृत्रिम दृश्य, स्रोत-समीक्षा आ भाषिक डिजिटल असमानताकेँ ज्ञानमीमांसीय समस्या बनबैत अछि। ‘लोकप्रियता सत्य नहि’ आ ‘दृश्य प्रत्यक्षक गारंटी नहि’ जकाँ सूत्र आजुक नागरिक विवेक लेल सार्थक अछि। जोखिम ई जे डिजिटल तकनीक तीव्र बदलैत अछि; अतः स्थायी दार्शनिक सिद्धान्त आ समय-विशिष्ट मंच/प्रौद्योगिकी उदाहरण अलग राखल जाए।

अध्याय 63 — कृत्रिम बुद्धि आ मनुष्यक उत्तरदायित्व

विषय-विस्तार: साधन, अभिकर्ता आ उत्तरदायित्व, डेटा तटस्थ नहि, व्याख्येयता आ अपील, स्वचालनक सीमा आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

कृत्रिम बुद्धि आ मनुष्यक उत्तरदायित्व अध्याय डेटा, स्वचालन, अपील, व्याख्येयता, लेखकीय उत्तरदायित्व, भाषा-असमानता आ गरिमाकेँ एक साथ रखैत अछि। ‘तकनीकी क्षमता नैतिक अनुमति नहि’ स्पष्ट आ दीर्घजीवी सूत्र अछि। अध्याय मानवीय अभिकर्तृत्वक जिम्मेवारी पर सही बल दैत अछि, मुदा स्वचालित निर्णय, रोजगार, शिक्षा, न्याय, स्वास्थ्य सन क्षेत्रक अलग जोखिमक उदाहरण जोड़ब आवश्यक अछि। त्वरित बदलैत नियमन-संसार कारण संस्करण-तिथि आ स्रोत-तिथि स्पष्ट रहबाक चाही।

अध्याय 64 — पर्यावरण आ भावी पीढ़ी

विषय-विस्तार: कालातीत नैतिक उत्तरदायित्व, प्रकृतिक मूल्य, अहिंसा, पारस्परिकता आ आधुनिक विज्ञान, पर्यावरणीय न्याय आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

पर्यावरण आ भावी पीढ़ी अध्याय नैतिक समुदायक समय-सीमा वर्तमान मनुष्यसँ आगे बढ़बैत अछि। प्रकृतिक मूल्य, अहिंसा, पर्यावरणीय न्याय, सावधानी सिद्धान्त, विकास, सामान्य संसाधन, विस्थापन आ मिथिलाक नदी-बाढ़ जीवनक समावेश स्थानीय आधार दैत अछि। ई स्थानीयता अध्यायकेँ अमूर्त पर्यावरण-नैतिकतासँ बचबैत अछि। किन्तु मिथिलाक बाढ़, नदी-प्रबन्धन आ जलवायु-जोखिम सम्बन्धी अनुभवजन्य शोध स्रोत जोड़ला सँ दार्शनिक प्रस्ताव अधिक प्रमाणित होयत।

अष्टम खण्ड — गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन

अन्तिम खण्डमे पूर्ववर्ती अध्ययन लेखकक अपन दर्शनक रूप लैत अछि। ई खण्डक मूल्यांकनमे मौलिकता मात्र नहि, अवधारणात्मक स्पष्टता, तर्कीय सुसंगति आ अन्य परम्परासँ अन्तर स्पष्ट करब आवश्यक अछि।

अध्याय 65 — बहुप्रमाणीय विवेकवाद

विषय-विस्तार: ‘बहुप्रमाणीय’ किएक?, ‘विवेकवाद’ किएक?, प्रमाणक क्षेत्र, निजी कारण आ सार्वजनिक कारण आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

बहुप्रमाणीय विवेकवाद पोथीक स्वतंत्र ज्ञानमीमांसात्मक प्रतिपादन अछि। भारतीय प्रमाणपरम्पराक बहुलता, आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति, ऐतिहासिक स्रोत, साक्ष्य, विशेषज्ञता आ अनुभवकेँ ‘क्षेत्रानुकूल प्रमाण’क सिद्धान्तमे जोड़ब महत्वाकांक्षी आ उपयोगी अछि। सबसँ पैघ दार्शनिक चुनौती शब्द-स्तरपर अछि: प्रत्यक्ष–अनुमान–शब्द जकाँ प्रमाण आ आधुनिक दस्तावेजी साक्ष्य, सांख्यिकीय अनुमान आ विशेषज्ञ-साक्ष्य समान श्रेणी नहि। सिद्धान्तकेँ सफल बनाबय लेल ‘ज्ञान-स्रोत’, ‘साक्ष्य’, ‘औचित्य’ आ ‘सत्य-परीक्षण’क स्तर औपचारिक रूपसँ अलग कएल जाए।

अध्याय 66 — सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद

विषय-विस्तार: वस्तुगत प्रतिरोध, सम्बन्ध वास्तविक अछि, व्यक्ति आ समाज, अनुभव आ वस्तु आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद पोथीक सबसँ सम्भावनाशील, मुदा एखन अपेक्षाकृत कम विकसित तत्त्वमीमांसात्मक प्रस्ताव अछि। वस्तुगत जगतक स्वतंत्र प्रतिरोध स्वीकारैत सम्बन्ध, देह–परिवेश, व्यक्ति–समाज आ अनुभवक वास्तविकताकेँ साथ राखब कठोर व्यक्तिवाद आ कठोर सामूहिकतावादसँ बचबैत अछि। मुदा ‘सम्बन्ध वास्तविक अछि’ कथनक तत्त्वमीमांसात्मक अर्थ, सामाजिक निर्माण, प्रघटनमीमांसा आ तत्त्वमीमांसात्मक यथार्थवाद बीच सीमा अधिक स्पष्ट चाही। एहि सिद्धान्तक एक औपचारिक तर्क-रूप आ प्रतिपक्ष विकसित कएल जाए।

अध्याय 67 — गरिमा-आधारित नैतिकता

विषय-विस्तार: गरिमा आ मूल्य, जन्म नैतिक योग्यता नहि, स्वायत्तता, पीड़ा आ न्याय, स्वायत्तता अकेले पर्याप्त नहि आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

गरिमा-आधारित नैतिकता पोथीक नैतिक केन्द्र अछि। जन्मक नैतिक अयोग्यता, स्वायत्तता, पीड़ा, करुणा, दण्ड, मृत्यु, संस्था आ समान मानव-मूल्यक प्रश्न कान्ट, बौद्ध–जैन नैतिक संवेदना, आम्बेडकर आ आधुनिक क्षमता-दृष्टिसँ संवाद करैत अछि। शक्ति ई जे गरिमा अमूर्त सम्मान नहि, जाति–लिंग–राज्य–तकनीक सभ पर लागू कसौटी बनैत अछि। सीमा ई जे ‘गरिमा’ अन्तर्निहित नैतिक स्थिति, स्वायत्तता, अपमान-मुक्ति, क्षमता वा कानूनी अधिकार—ककरा प्राथमिक अर्थमे? स्पष्ट बहुस्तरीय परिभाषा आवश्यक अछि।

अध्याय 68 — बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र

विषय-विस्तार: सत्ता आ दूरी, विकेन्द्रण स्वत: न्याय नहि, बहुमत आ वैधता, ज्ञानक बहुकेन्द्रिकता आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र सत्ता-वितरणक नैतिक–संस्थागत सिद्धान्त रूपमे उभरैत अछि। केन्द्र, राज्य, स्थानीय संस्था, ज्ञान-केन्द्र, आर्थिक शक्ति, डेटा-निगरानी, सहायकता-सिद्धान्त आ नीति-विविधता पर चर्चा लोकतन्त्रकेँ केवल चुनावसँ मुक्त करैत अछि। एलिनर ऑस्ट्रमक बहुकेन्द्रिक शासन संग स्पष्ट तुलना एहि सिद्धान्तक शोध-मूल्य बहुत बढ़ा सकैत अछि। साथहि संकट-समय समन्वय, अधिकार-संरक्षण, स्थानीय दमन आ अन्तिम अपीलक संस्था कोन हो—एहि कठिन प्रश्नक स्पष्ट उत्तर चाही।

अध्याय 69 — धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता

विषय-विस्तार: तीन स्वतंत्रता, तीन क्षेत्र, सार्वजनिक कारण, धर्मक सामाजिक योगदान आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता पोथीक तीन स्वतंत्रता—मानब, बदलब, नहि मानब—केँ सार्वजनिक कारण आ समान नागरिकतासँ जोड़ैत अछि। रॉल्सीय सार्वजनिक कारण संग गाढ़ साम्य अछि, मुदा पोथी धर्मक सामाजिक भूमिका

स्वीकारैत अधिक संवादात्मक रूप बनबैत अछि। अन्तर्धार्मिक विवाह, अल्पसंख्यक भीतर असहमति आ आलोचनाक अधिकार पर चर्चा सिद्धान्तकेँ ठोस बनबैत अछि। अगिला चरणमे व्यक्तिगत विवेक बनाम सामुदायिक स्वायत्तताक टकराव लेल निर्णय-क्रम स्पष्ट करबाक आवश्यकता अछि।

अध्याय 70 — समानान्तर इतिहास-दृष्टि

विषय-विस्तार: अभिलेखक असमानता, मौन सेहो प्रश्न अछि, स्रोत-विस्तार, केन्द्र आ हाशिया पर समान कसौटी आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

समानान्तर इतिहास-दृष्टि पोथीक इतिहासलेखन सम्बन्धी सर्वाधिक परिपक्व प्रतिपादन अछि। अभिलेखक असमानता, मौन, क्षेत्रीय स्रोत, मौखिक स्मृति, डिजिटल अभिलेख आ बहुकारणीयता स्वीकारैत ‘केन्द्र आ हाशिया दुनू पर समान प्रमाण-कसौटी’ लागू कएल गेल अछि। एहि कारण ई रोमानी प्रतिइतिहाससँ अलग रहैत अछि। रिकोअर, सबाल्टर्न अध्ययन, अभिलेख-सत्ता आ स्रोत-आलोचनाक आधुनिक साहित्यसँ विस्तृत संवाद एहि पद्धतिक स्वतंत्र शैक्षिक पहचान मजबूत करि सकैत अछि।

अध्याय 71 — समानान्तर दर्शनक सूत्र

विषय-विस्तार: सत्य, ज्ञान आ प्रमाण, परम्परा, नवीनता आ बौद्धिक अधिकार, गरिमा, समानता आ सामाजिक न्याय, धर्म, राज्य आ नागरिक स्वतंत्रता आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

समानान्तर दर्शनक सूत्र अध्याय पूरे ग्रन्थक भाषिक-दार्शनिक संक्षेप अछि। सत्य, प्रमाण, गरिमा, स्वतंत्रता, धर्म, राज्य, विज्ञान, भाषा, इतिहास, करुणा आ आत्मसमीक्षाकेँ स्मरणीय सूत्रमे बाँधब साहित्यिक दृष्टिसँ अत्यन्त सफल अछि। मुदा सूत्र दर्शनक अन्तिम रूप नहि; हुनकर परस्पर तार्किक सम्बन्ध, प्राथमिकता आ सम्भावित संघर्षक औपचारिक नक्शा चाही। उदाहरणतः गरिमा आ बहुमत, सार्वजनिक कारण आ धार्मिक स्वतंत्रता, स्थानीय स्वायत्तता आ समान अधिकार टकराय तँ कोन सूत्र निर्णायक? एहि प्रश्नक उत्तर सिद्धान्तक परिपक्वता तय करत।

अध्याय 72 — उपसंहार: समानान्तर रहबाक अर्थ

विषय-विस्तार: प्रश्नसँ आरम्भ, प्रश्नपर समाप्ति नहि, मिथिला: केन्द्र नहि, पद्धतिगत आधार, भारतीय दर्शनक बहुवचन, पाश्चात्य दर्शन: संवाद, अनुकरण नहि आदि प्रश्न एहि अध्यायक केन्द्रीय वृत्त बनबैत अछि।

उपसंहार पोथीक खुलल दर्शन-संकल्पकेँ सुसंगत रूपसँ पूरा करैत अछि। मिथिलाकेँ एकमात्र केन्द्र नहि, पद्धतिगत स्मृति मानब; भारतीय–पाश्चात्य परम्पराकेँ संवादमे राखब; समाज, धर्म, विज्ञान, तकनीक आ पर्यावरणकेँ दर्शनक भीतर आनब; आ अन्तमे आत्मसमीक्षाकेँ अनिवार्य नियामक बनाब—ई सभ पूर्ववर्ती अध्यायसभक तार्किक समापन अछि। ‘समानान्तर रहब’क साहित्यिक अर्थ—कोनो एक केन्द्रक दास नहि रहब—प्रभावी अछि। सिद्धान्तक भावी विकास लेल लेखक स्पष्ट करथि जे कोन प्रमाण वा आपत्ति छह मूल सिद्धान्तमे संशोधन करबा लेल पर्याप्त मानल जाएत।

४. पूरक खण्डीय साहित्यिक-दार्शनिक विवेचन

नीचाँक पूरक विवेचन दोसर आलेखमे विकसित खण्डीय आ अध्यायगत आलोचनात्मक बिन्दुसभकेँ मूल १–७२ अध्याय समीक्षा संग एकहि आलेखक भीतर समाहित करैत अछि।

भूमिका

गजेन्द्र ठाकुर मैथिली साहित्यमे मुख्यत: विदेह ई-पत्रिकाक संस्थापक-सम्पादक आ समानान्तर साहित्य आन्दोलनक प्रवर्तकक रूपमे परिचित छथि। हुनक अध्ययन-क्षेत्र मैथिली, हिन्दी, संस्कृत आ अंग्रेजी चारू भाषामे विस्तृत अछि, आ हुनक विशेष विद्वत्तापूर्ण अभिरुचि नव्य-न्याय आ गङ्गेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणिमे केन्द्रित अछि। एहि पृष्ठभूमिमे “समानान्तर दर्शन” नामक बहत्तर (७२) अध्यायक ई महाग्रन्थ हुनक बौद्धिक जीवनक स्वाभाविक चरमोत्कर्ष प्रतीत होइत अछि—एक अछैती दार्शनिक परियोजना, जे विदेहक उपनिषदिक प्रश्नपरम्परासँ लऽ कऽ कृत्रिम बुद्धि आ पर्यावरणीय नैतिकता धरिक समकालीन प्रश्न धरि पसरल अछि।

प्रस्तुत समीक्षा एहि ग्रन्थक आठों खण्ड आ सभटा बहत्तर अध्यायकेँ क्रमश: लैत, प्रत्येकक विषय-वस्तु, पद्धति आ दार्शनिक योगदानक मूल्यांकन करैत अछि। समीक्षाक उद्देश्य केवल विषय-सूचीक पुनर्कथन नहि, बल्कि ग्रन्थक आन्तरिक तर्क-संरचना, ओकर चतुर्आयामी समालोचनात्मक पद्धति (भारतीय

रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, नव्य-न्यायीय ज्ञानमीमांसा, आ विदेह समानान्तर इतिहास-ढाँचा) क प्रयोग, आ ओकर साहित्यिक-दार्शनिक स्थान—सभक निष्पक्ष मूल्यांकन अछि। ग्रन्थक अपन शून्य-भ्रमजाल (zero-hallucination) नीतिक अनुरूप, प्रस्तुत समीक्षा सेहो ग्रन्थमे उपस्थित सामग्रीपर आधारित रहत आ कल्पित उद्धरण अथवा तथ्यसँ बचत।

समीक्षा-पद्धति

समीक्षाक संरचना ग्रन्थक अपन आठ खण्डीय विभाजनकेँ अनुसरण करैत अछि—(१) दर्शनक आधार, (२) भारतीय दर्शन, (३) मिथिलाक दार्शनिक समानान्तर परम्परा, (४) पाश्चात्य दर्शन, (५) सामाजिक आ राजनीतिक दर्शन, (६) धर्म-दर्शन, (७) आधुनिक आ समकालीन दर्शन, आ (८) गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन। प्रत्येक खण्डक भीतर सभटा अध्यायपर क्रमशः समीक्षात्मक टिप्पणी देल गेल अछि, जाहिसँ कोनो अध्याय छुटय नहि। अन्तमे समग्र मूल्यांकन आ बिबलियोग्राफी देल गेल अछि।

प्रथम खण्ड — दर्शनक आधार

एहि प्रारम्भिक खण्डमे पाँच अध्याय (१-५) अछि, जे सम्पूर्ण ग्रन्थक पद्धतिगत नींव राखैत अछि। लेखकक रणनीति स्पष्ट अछि—पहिने दर्शनक स्वभाव, प्रश्न-प्रमाण-संशयक सम्बन्ध, सत्य आ दृष्टिकोणक बीचक तनाव, आ ज्ञानक सीमाकेँ स्थापित कएल जाए, तखन समानान्तर दर्शनक अपन पद्धति प्रस्तुत होय। ई निर्माण-क्रम एकटा सुव्यवस्थित शैक्षणिक ग्रन्थक लक्षण अछि, जतय निष्कर्ष अकस्मात् नहि अबैत, धीरे-धीरे तर्कक सीढ़ीसँ चढ़ल जाइत अछि।

अध्याय १ (दर्शन की अछि?) दर्शनकेँ “उत्तरक संग्रह” नहि, “उत्तर देबाक जिम्मेवार पद्धति” कहि परिभाषित करैत अछि। ई परिभाषा साधारण प्रतीत होइतहुँ कार्यकुशल अछि, कारण ई आगाँक बहत्तर अध्यायक कार्यविधिकेँ पहिनहि न्यायोचित ठहरा दैत अछि—दर्शनक सफलता अन्तिम समाधानमे नहि, प्रश्न-स्पष्टीकरण आ प्रतिपक्ष-श्रवणक अनुशासनमे मानल गेल अछि। समीक्षकीय दृष्टिसँ ई अध्याय ग्रन्थक “आत्म-न्यायीकरण” क कार्य करैत

अछि, आ भूमिकामे उठाओल छह प्रश्न (प्रमाण, सीमा, वैधता, इतिहास, नैतिक आधार, गरिमा) कें दार्शनिक भाषामे पुनःस्थापित करैत अछि।

अध्याय २ (प्रश्न, संशय आ प्रमाण) ज्ञानमीमांसाक केन्द्रीय दुविधाकेँ छूवैत अछि—निराधार विश्वास आ निराधार संशय दुनू समान रूपसँ हानिकारक। एहि अध्यायक बल ई अछि जे ई न्यायीय प्रमाण-सिद्धान्त (जे लेखकक विशेष अध्ययन-क्षेत्र अछि), भारतीय ज्ञानमीमांसाक विस्तृत बहस, आ आधुनिक डिजिटल स्रोत-जाँचकेँ एकहि निरन्तरतामे राखि सकल अछि—ई विदेहक सम्पादकीय अनुभवसँ उपजल एकटा व्यावहारिक सजगता प्रतीत होइत अछि।

अध्याय ३ (सत्य आ दृष्टिकोण) क सूत्र-वाक्य—“सत्य बहुदृष्टिगत भऽ सकैत अछि, मुदा मनमाना नहि”—सम्पूर्ण ग्रन्थक सबसँ सुसंहत नारा अछि। ई एकहि संग सापेक्षतावाद आ निरंकुश एकवर्णनीयता, दुनूसँ दूरी बनबैत अछि, आ आगाँ धर्मबहुलता (अध्याय ५५), समानान्तर इतिहास-दृष्टि (अध्याय ७०) जेहन अध्यायमे पुनः-पुनः प्रयुक्त होइत अछि—ई आन्तरिक सूत्रबद्धता ग्रन्थक संरचनात्मक शक्ति देखबैत अछि।

अध्याय ४ (ज्ञानक सीमा) इन्द्रिय, स्मृति, भाषा, अनुमान, संस्था आ ऐतिहासिक स्रोत—सभक सीमा स्वीकार करैत, “ज्ञान सम्भव अछि, मुदा संशोध्य अछि” क सूत्र देत अछि। ई कान्टीय विनम्रता आ नव्य-न्यायीय प्रमाण-सजगताक एकटा सूक्ष्म संश्लेषण अछि, जे आगाँ अध्याय ३० (कान्ट) आ अध्याय २२ (गङ्गेश उपाध्याय) मे विस्तार पबैत अछि।

अध्याय ५ (समानान्तर दर्शनक पद्धति) एहि खण्डक चरमोत्कर्ष अछि, जतय आठ अङ्गक पद्धति (स्रोत-समीक्षा, अवधारणात्मक स्पष्टता, प्रमाणमीमांसा, सबल पूर्वपक्ष, बहुपद्धति, इतिहास-सचेत तुलना, केन्द्र-हाशिया विश्लेषण, आत्मसमीक्षा) स्पष्ट रूपसँ सूचीबद्ध कएल गेल अछि। समीक्षककेँ ई विशेष रूपसँ उल्लेखनीय लगैत अछि जे लेखक स्वयं “आत्मसमीक्षा” कें एकटा अनिवार्य अङ्ग मानैत छथि—ई कोनो दार्शनिक प्रणालीक लेल दुर्लभ प्रामाणिकता अछि, यद्यपि ई देखब आवश्यक अछि जे शेष सड़सठ अध्यायमे ई आत्मसमीक्षा कतेक व्यावहारिक रूप लैत अछि।

प्रथम खण्डक समग्र मूल्यांकन: पद्धतिगत दृष्टिसँ ई खण्ड सुगठित अछि, यद्यपि भाषिक शैली दार्शनिक शब्दावलीसँ भारी अछि, जे सामान्य पाठकक लेल कठिनाइ उत्पन्न कऽ सकैत अछि। तथापि प्रत्येक अध्यायक अन्तमे संक्षिप्त निष्कर्ष आ ग्रन्थसूची देब पाठकक निमित्त एकटा सुविधाजनक “एन्कर” अछि, जे विशाल ग्रन्थमे दिशा-ज्ञान बनौने रखैत अछि।

द्वितीय खण्ड — भारतीय दर्शन

एघारह अध्याय (६-१६) क ई खण्ड ग्रन्थक सबसँ पारम्परिक अर्थमे “एनसाइक्लोपीडिक” भाग अछि, जतय वैदिक चिन्तनसँ लऽ कऽ भाषा-दर्शन धरि भारतीय दार्शनिक परम्पराक प्रायः सभटा प्रमुख धारा समेटल गेल अछि। ई खण्ड डेविड कार्ल पॉटरक बहुखण्डीय Encyclopedia of Indian Philosophies अथवा सुरेन्द्रनाथ दासगुप्तक A History of Indian Philosophy जेहन सर्वेक्षणात्मक ग्रन्थसभक परम्परामे राखल जा सकैत अछि, यद्यपि लेखकक स्वयंक ग्रन्थसूची (जे प्रत्येक अध्यायक अन्तमे देल गेल अछि) एहि तुलनाक प्रमाण-सम्मत आधार प्रस्तुत करैत अछि।

अध्याय ६ (वैदिक चिन्तन आ उपनिषदिक प्रश्न) वैदिक-उपनिषदिक सामग्रीकेँ “एकरेखीय आरम्भ-बिन्दु” नहि, “प्रश्नसभक विशाल प्रयोगशाला” मानैत अछि—ई सूत्रीकरण महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ई परवर्ती दर्शनसभकेँ वेदक “स्वाभाविक विकास” रूपमे नहि, स्वतंत्र प्रश्नकर्ताक रूपमे स्थापित करैत अछि।

अध्याय ७ (सांख्य) प्रकृति-पुरुष द्वैत आ त्रिगुण सिद्धान्तक व्याख्या करैत, सांख्यकेँ “आधुनिक विज्ञान नहि, मुदा चेतना-जगत सम्बन्धपर गम्भीर दार्शनिक प्रतिपक्ष” मानि एकटा सन्तुलित स्थिति लैत अछि—न अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा, न आधुनिकतावादी खारिजी।

अध्याय ८ (योग) योगकेँ केवल शारीरिक अभ्याससँ आगाँ लऽ जाइत, चित्त-वृत्ति-क्लेश-समाधिक मनो-तत्त्वमीमांसीय प्रणालीक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि, संगहि एकटा महत्त्वपूर्ण सामाजिक चेतावनी दैत अछि—निजी शान्ति सामाजिक अन्याय पर पर्दा नहि बनय। ई नैतिक सतर्कता समानान्तर दर्शनक सामाजिक-राजनीतिक अभिमुखताक पूर्वाभास अछि।

अध्याय ९ (न्याय) पद्धतिगत दृष्टिसँ खण्डक मेरुदण्ड अछि, जतय प्रमाण, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्दक विवेचन एहि दावाक संग होइत अछि जे समानान्तर दर्शनक सम्पूर्ण पद्धति न्यायदर्शनसँ जुड़ल अछि। लेखकक विशेषज्ञताक क्षेत्र स्पष्ट रूपसँ एतय झलकैत अछि, आ ई अध्याय पूरा ग्रन्थक बौद्धिक रीढ़ बुझना जाइत अछि।

अध्याय १० (वैशेषिक) द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवायक विवेचन एहि परम्पराकेँ “गौरवक कथा नहि, अवधारणात्मक कठोरताक विद्यालय” मानि पढ़ैत अछि—ई समालोचनात्मक दूरी ग्रन्थक शक्ति अछि, जे परम्परागत श्रद्धाभावसँ भिन्न अछि।

अध्याय ११ (पूर्वमीमांसा) भाषा-कर्तव्य सम्बन्धकेँ केन्द्रमे राखि, मीमांसाक व्याख्या-पद्धतिसँ “प्रमाणक आत्मपरीक्षण” ग्रहण करैत अछि, संगहि ओकर धार्मिक पूर्वधारणाकेँ “आधुनिक सार्वजनिक सत्यक स्वतः प्रमाण नहि” मानि एकटा स्पष्ट आलोचनात्मक दूरी राखैत अछि।

अध्याय १२ (वेदान्त) वेदान्तकेँ “एक दर्शन नहि, अनेक व्यवस्थित उत्तरक परिवार” कहि, पाठाधिकार तर्कक स्थान नहि लऽ सकैत—ई सूत्र स्थापित करैत अछि। यद्यपि अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैत आदिक बीचक विशिष्ट अन्तर एहि संक्षिप्त निष्कर्षमे स्पष्ट नहि होइत अछि, मुख्य अध्याय-पाठमे एकर विस्तार अपेक्षित अछि।

अध्याय १३ (बौद्ध दर्शन) अनित्यता, अनात्म, प्रतीत्यसमुत्पाद, शून्यता आ द्विसत्यक विवेचनसँ बौद्ध चिन्तनक आन्तरिक बहुलताकेँ सम्मान दैत अछि, संगहि एकटा साझा अनुशासन (दुःखक कारण-विश्लेषण) देखबैत अछि।

अध्याय १४ (जैन दर्शन) अनेकान्त आ स्याद्वादसँ “बहुदृष्टिगत यथार्थ” क शिक्षा ग्रहण करैत अछि, मुदा एकटा महत्त्वपूर्ण सीमा राखैत अछि—“सभ सत्य बराबर” क सरलीकृत निष्कर्ष अस्वीकार। ई सीमांकन अध्याय ३ क सूत्रसँ प्रत्यक्ष संगति राखैत अछि, जे ग्रन्थक आन्तरिक सुसंगतताक प्रमाण अछि।

अध्याय १५ (लोकायत आ भौतिकवादी प्रश्न) एकटा पद्धतिगत दृष्टिसँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अध्याय अछि, जतय लोकायतक खण्डित स्रोत-सामग्रीकेँ लऽ कऽ स्पष्ट कहल गेल अछि—“प्रमाणक अभावकेँ स्पष्ट लिखब स्वयं

विद्वत्ता अछि।” ई वाक्य समानान्तर इतिहास-लेखनक नैतिक अनुशासनक सार अछि, आ आगाँ अध्याय ७० मे विस्तारित होइत अछि।

अध्याय १६ (भाषा, शब्द आ अर्थ) शब्दार्थ, वाक्यार्थ, शाब्दप्रमाण आ भाषिक न्यायकेँ जोड़ैत, भाषाकेँ “केवल वस्तुक नाम नहि” बल्कि सत्ता-वितरणक माध्यम मानैत अछि—ई अध्याय आगाँ अध्याय ४६ (भाषा, क्षेत्र आ अस्मिता) आ अध्याय ६० (भाषा आ सत्ता) क आधार बनैत अछि, जे ग्रन्थक भाषा-सम्बन्धी चिन्तनक निरन्तरताकेँ देखबैत अछि।

द्वितीय खण्डक समग्र मूल्यांकन: ई खण्ड भारतीय दर्शनक षड्दर्शन आ नास्तिक परम्परा (चार्वाक, बौद्ध, जैन) दुनूकेँ सन्तुलित स्थान दैत अछि, जे प्रायः परम्परागत सर्वेक्षणसभमे विरल अछि। प्रत्येक अध्यायक अन्तमे “समानान्तर दर्शन एहिसँ की ग्रहण करैत अछि, आ की अस्वीकार करैत अछि” जेहन स्पष्ट द्वि-स्तरीय मूल्यांकन एकटा सुसंगत आलोचनात्मक ढाँचा प्रदान करैत अछि, जे केवल वर्णनात्मक सर्वेक्षणसँ आगाँ बढ़ि दार्शनिक निर्णय लैत अछि।

तृतीय खण्ड — मिथिलाक दार्शनिक समानान्तर परम्परा

आठ अध्याय (१७-२४) क ई खण्ड ग्रन्थक भावनात्मक आ बौद्धिक केन्द्र प्रतीत होइत अछि, कारण एतय लेखकक स्वयंक विद्वत्तापूर्ण जीवन-कार्य (गङ्गेश उपाध्याय, नव्य-न्याय, विदेह) प्रत्यक्ष रूपसँ प्रवेश करैत अछि। भूमिकाहि मे स्पष्ट कहल गेल अछि जे “मिथिला एहि ग्रन्थक पद्धतिगत केन्द्र अछि,” आ ई खण्ड ओहि दावाकेँ ठोस रूप दैत अछि।

अध्याय १७ (विदेह: प्रश्नक भूगोल) एकटा पद्धतिगत दृष्टिसँ अत्यन्त सावधान अध्याय अछि, जतय स्पष्ट चेतावनी देल गेल अछि जे “विदेह आ मिथिलाकेँ एकहि अपरिवर्तित इकाई मानब इतिहासक सरलीकरण होयत।” ई आत्म-आलोचनात्मक सावधानी विशेष प्रशंसनीय अछि, कारण क्षेत्रीय गौरव-लेखनमे प्रायः यैह ऐतिहासिक सरलीकरण सभसँ बेसी होइत अछि; लेखक भावनासँ नहि, ऐतिहासिक जाँचसँ सम्बन्ध स्थापित करबाक आग्रह करैत छथि।

अध्याय १८ (याज्ञवल्क्य, गार्गी आ मैत्रेयी) बृहदारण्यकोपनिषदक एहि तीन पात्रकेँ “संवादात्मक दार्शनिक क्षेत्रक सह-निर्माता” मानि पढ़ब एकटा उल्लेखनीय व्याख्यात्मक चुनाव अछि। गार्गीकेँ तत्त्वमीमांसाक सीमा-विस्तारक आ मैत्रेयीकेँ मूल्य-प्रश्नक तीक्ष्णताक श्रेय देब, ई खण्डकेँ केवल पुरुष-केन्द्रित दार्शनिक इतिहाससँ भिन्न बनबैत अछि—एकटा महत्त्वपूर्ण लैंगिक सन्तुलन, जे आगाँ अध्याय ४५ मे व्यवस्थित रूप लैत अछि।

अध्याय १९ (न्याय-वैशेषिक आ मिथिलाक तार्किक संस्कार) एकटा केन्द्रीय पद्धतिगत वाक्य देत अछि—मिथिलाक तार्किक संस्कारक महत्त्व “महान नामसभक संख्या नहि, बौद्धिक जिम्मेवारीक पद्धति अछि।” ई सूत्रीकरण क्षेत्रीय गौरव-लेखनक सामान्य प्रवृत्ति (नाम-गणना) सँ जानि-बुझि कऽ दूर हटैत अछि, आ एकटा पद्धति-केन्द्रित दृष्टिकोण अपनबैत अछि, जे ग्रन्थक बौद्धिक ईमानदारीक प्रमाण अछि।

अध्याय २० (उदयनाचार्य) न्याय-वैशेषिक परम्पराक “उच्च बिन्दु” मानल गेल उदयनाचार्यक महत्त्व “केवल धार्मिक निष्कर्षमे नहि, तर्कक सार्वजनिकतामे” स्थापित कएल गेल अछि—विश्वास कारण प्रस्तुत करय, आपत्ति सुने, प्रत्युत्तर दे। ई आग्रह ईश्वर-विषयक अध्याय (५१) मे पुनः प्रयुक्त होइत अछि।

अध्याय २१ (वाचस्पति मिश्र) बहुशास्त्रीय पठनक आदर्श (“एक विद्यालय, एक स्रोत, एक व्याख्या वा एक केन्द्रकेँ अन्तिम अधिकार नहि मानब”) स्थापित करैत अछि—ई सिद्धान्त समानान्तर दर्शनक बहुकेन्द्रिक स्वभावक ऐतिहासिक पूर्ववर्ती रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि, जे बौद्धिक वंशावली स्थापित करबाक एकटा प्रभावी युक्ति अछि।

अध्याय २२ (गङ्गेश उपाध्याय) निःसन्देह ग्रन्थक सर्वाधिक प्रामाणिक अध्यायसभमे एक अछि, कारण ई लेखकक स्वयंक अनुवाद-कार्य (तत्त्वचिन्तामणिक मैथिली अनुवाद) सँ प्रत्यक्ष जुड़ल अछि। प्रमाणमीमांसाक चारि क्षेत्र, अनुमान-व्याप्तिक सूक्ष्मता आ नव्य-न्यायीय विश्लेषण-भाषाक विवेचन गहराइसँ भरल अछि, आ “अस्पष्टता विचारक शत्रु भऽ सकैत अछि”

जेहन सूत्र सम्पूर्ण ग्रन्थक भाषिक स्पष्टता-आग्रहक सैद्धान्तिक आधार बनैत अछि।

अध्याय २३ (नव्य-न्याय: भाषाक सूक्ष्म अनुशासन) पूर्व अध्यायक विस्तार अछि, जतय “सूक्ष्मता बिना विचार भ्रमपूर्ण; संप्रेषण बिना सूक्ष्मता निष्प्रभावी” क सन्तुलित सूत्र देल गेल अछि। ई सन्तुलन महत्त्वपूर्ण अछि, कारण नव्य-न्यायक प्राविधिक जटिलता प्राय: सामान्य पाठककेँ दूर हटा दैत अछि; लेखक एतय सूक्ष्मता आ सुगमताक बीच पुल बनयबाक प्रयास करैत छथि।

अध्याय २४ (लोक, शास्त्र आ समानान्तर मिथिला) खण्डक समापन अध्याय अछि, जे लोक आ शास्त्रकेँ “परस्पर विरोधी संसार नहि, मानव-अनुभवक अलग अभिलेख” मानि दुनूकेँ आलोचनात्मक संवादमे राखैत अछि। “गौरवक संग आत्मालोचना, परम्पराक संग हाशिया, संस्कृत ग्रन्थक संग मैथिली लोकस्वर”—ई त्रयी खण्डक सबसँ सुसंहत निष्कर्ष अछि।

तृतीय खण्डक समग्र मूल्यांकन: ई खण्ड ग्रन्थक सबसँ प्रामाणिक आ ऊर्जावान भाग अछि, कारण एतय लेखकक निजी विद्वत्तापूर्ण अधिकार (गङ्गेश उपाध्याय, नव्य-न्याय) आ भावनात्मक निष्ठा (विदेह, मिथिला) दुनू एक संग अबैत अछि। साहित्यिक समीक्षाक दृष्टिसँ ई उल्लेखनीय अछि जे लेखक क्षेत्रीय गौरव-लेखनक सामान्य प्रलोभनसँ—अर्थात् अतिशयोक्ति आ अनैतिहासिक निरन्तरताक दावासँ—बचबाक सचेत प्रयास करैत छथि (देखू अध्याय १७ आ १९ क आत्म-सावधानी)। ई पद्धतिगत ईमानदारी ग्रन्थकेँ केवल क्षेत्रीय प्रशस्ति नहि, गम्भीर दार्शनिक इतिहास-लेखन बनबैत अछि।

चतुर्थ खण्ड — पाश्चात्य दर्शन

तेरह अध्याय (२५-३७) क ई सबसँ लम्बा खण्ड यूनानी दर्शनसँ लऽ कऽ विज्ञान-दर्शन धरिक पाश्चात्य परम्पराकेँ समेटैत अछि। एहि खण्डक सबसँ बेसी पद्धतिगत उपलब्धि ई अछि जे ई पाश्चात्य दर्शनकेँ न त अन्ध-अनुकरणीय आदर्श मानैत अछि, न औपनिवेशिक अस्वीकृतिक विषय—बल्कि समान आलोचनात्मक कसौटीपर राखल एकटा समानान्तर परम्परा मानैत अछि, जेना अध्याय ५ मे प्रतिज्ञा कएल गेल छल।

अध्याय २५ (यूनानी प्रश्न) क सूत्र “दर्शनक इतिहास एकटा एकल मशालक यात्रा नहि; अनेक अग्निक परस्पर प्रकाश अछि” एहि खण्डक शीर्षक-भावना अछि, जे यूनानी दर्शनकेँ बहु-आरम्भक विश्व-दृष्टिक एक अंश मानैत अछि, एकमात्र उद्‌गम नहि।

अध्याय २६ (सुकरात, प्लेटो आ अरस्तू) तीनू क शैलीगत भेद (प्रश्न, संवादात्मक सिद्धान्त-निर्माण, व्यवस्थित विश्लेषण) स्पष्ट करैत, एकटा तीक्ष्ण प्रश्न उठबैत अछि—“ज्ञानक अधिकार ककरा भेटल, नागरिकता ककरा लेल छल, आ कोन अनुभव दार्शनिक इतिहासक बाहर छोड़ल गेल।” ई प्रश्न (दास-प्रथा, स्त्री-बहिष्करण आदिक अन्तर्निहित सन्दर्भ) ग्रन्थक केन्द्र-हाशिया विश्लेषण पद्धतिक प्रत्यक्ष प्रयोग अछि।

अध्याय २७ (मध्ययुगीन दर्शन) एकटा उल्लेखनीय ऐतिहासिक सुधार प्रस्तुत करैत अछि—मध्ययुगकेँ “अन्धकार” कहब इतिहासक जटिलताकेँ नष्ट करब अछि, कारण ई काल यूनानी, अरबी, यहूदी आ लैटिन संसारक बहुभाषिक ज्ञान-परिसंचरणक काल छल। ई दृष्टिकोण आधुनिक तुलनात्मक इतिहास-लेखनसँ मेल खाइत अछि आ यूरोकेन्द्रित रैखिक इतिहास-दृष्टिक स्पष्ट अस्वीकृति अछि।

अध्याय २८ (देकार्त, स्पिनोजा आ लाइबनित्स) तीनूकेँ “एकटा बुद्धिवादी कोठली” मे बन्द नहि करबाक सचेत आग्रह करैत अछि, जे पाठ्यपुस्तकीय वर्गीकरणसँ बचबाक एकटा प्रशंसनीय प्रयास अछि, यद्यपि एहि संक्षिप्त निष्कर्षमे तीनूक विशिष्ट भेद पूर्ण रूपसँ स्पष्ट नहि होइत अछि।

अध्याय २९ (लॉक, बर्कली आ ह्यूम) क सबसँ मौलिक योगदान ह्यूमक आगमन-संशयकेँ भारतीय व्याप्ति-विमर्शसँ जोड़ब अछि—“ऐतिहासिक एकरूपता बिना, समस्या-संरचनात्मक तुलना द्वारा।” ई तुलनात्मक पद्धति (ऐतिहासिक सम्पर्कक दावा नहि, समस्या-सादृश्यक तुलना) ग्रन्थक सबसँ बौद्धिक रूपसँ सावधान तुलनात्मक कदमसभमे एक अछि।

अध्याय ३० (कान्ट) ज्ञानमे ज्ञाताक सक्रिय भूमिका आ सार्वभौमिक गरिमाक कान्टीय सिद्धान्तकेँ स्वीकारैत, एकटा तीक्ष्ण ऐतिहासिक प्रश्न उठबैत अछि —“सार्वभौमिकता तखन न्यायपूर्ण बनत जखन ‘मनुष्य’ शब्दमे वास्तवमे सभ

मनुष्य समाहित होथि।” ई कान्टक स्वयंक ऐतिहासिक सीमा (जातीय पूर्वाग्रहक ज्ञात प्रश्न) पर एकटा सूक्ष्म संकेत अछि।

अध्याय ३१ (हेगेल आ द्वन्द्व) सँ तीन शिक्षा ग्रहण कएल गेल अछि (प्रक्रियागत वास्तविकता, विरोधक परीक्षणात्मक मूल्य, संस्थागत स्वतंत्रता), मुदा “इतिहासक पूर्वनिर्धारित अन्त” स्पष्ट रूपसँ अस्वीकार कएल गेल अछि —“द्वन्द्व उपयोगी अछि; नियतिवाद आवश्यक नहि” जेहन सुगठित सूत्र-वाक्य एहि ग्रन्थक शैलीगत हस्ताक्षर बनि गेल अछि।

अध्याय ३२ (मार्क्स) समान चयनात्मक पद्धति अपनबैत अछि—शक्ति-समीक्षा ग्रहण, आर्थिक नियतिवाद अस्वीकार। “न्याय लेल वर्ग देखब आवश्यक; संगहि जाति, लिंग, भाषा, क्षेत्र आ अन्य सत्ता-संरचना सेहो देखब आवश्यक”—ई बहु-आयामी न्याय-दृष्टि आगाँ पंचम खण्डक सम्पूर्ण संरचनाकेँ पूर्वाभासित करैत अछि।

अध्याय ३३ (कीर्केगार्द आ नीत्शे) क “वंशावली आलोचनाक आरम्भ अछि, निष्कर्ष नहि” जेहन सूत्र नीत्शेक मूल्य-समीक्षाकेँ ग्रहण करैत, संगहि ओकरा निरपेक्ष सापेक्षतावादमे बदलय सँ रोकैत अछि—ई एकटा सन्तुलित नीत्शे-पाठ अछि, जे न अन्ध-प्रशंसा करैत अछि, न औपचारिक खण्डन।

अध्याय ३४ (प्रघटनावाद आ अस्तित्ववाद) स्वतंत्रताकेँ “सामाजिक परिस्थितिसँ काटि नहि देखबाक” चेतावनी दैत अछि—“व्यक्ति चुनाव करैत अछि, मुदा चुनावक मैदान इतिहास आ सत्ता द्वारा असमान रूपसँ बनाओल जाइत अछि।” ई अस्तित्ववादी स्वतंत्रताक भाववादी अतिशयोक्तिपर एकटा उपयोगी सामाजिक-दार्शनिक सुधार अछि।

अध्याय ३५ (विश्लेषणात्मक दर्शन) पूरा ग्रन्थक बौद्धिक परियोजनाक लेल केन्द्रीय अछि, कारण ई नव्य-न्यायकेँ विश्लेषणात्मक दर्शनक “भारतीय साझेदार” बनबाक सम्भावना देखबैत अछि—लेखकक स्वयंक विशेषज्ञताक क्षेत्र (नव्य-न्याय) कें वैश्विक दार्शनिक संवादसँ जोड़बाक ई प्रयास ग्रन्थक सबसँ महत्त्वाकांक्षी तुलनात्मक दावासभमे एक अछि।

अध्याय ३६ (व्यवहारवाद) क शिक्षा—“सत्य सुविधाक नाम नहि, बल्कि अवधारणा-सिद्धान्त-संस्था अपन व्यावहारिक परिणामसँ पूर्णतः अलग नहि रहि सकैत”—प्रैग्मेटिज्मक एकटा सावधान, अति-सरलीकरणसँ बचल पाठ अछि।

अध्याय ३७ (विज्ञान-दर्शन) खण्डक समापन करैत, विज्ञानकेँ “न देवत्व, न अवमूल्यन” क सन्तुलित स्थिति दैत अछि—विज्ञान भौतिक जगत बुझबाक सर्वोत्तम पद्धतिसभमे एक अछि, नैतिक मूल्यक एकमात्र स्रोत नहि। ई संक्षिप्त निष्कर्ष अध्याय ५१ (विज्ञान आ मनुष्य) मे विस्तार पबैत अछि।

चतुर्थ खण्डक समग्र मूल्यांकन: तेरह अध्यायक ई खण्ड पाश्चात्य दर्शनक ऐतिहासिक क्रम (यूनानी → मध्ययुगीन → आधुनिक तर्कवाद/अनुभववाद → कान्ट → हेगेल-मार्क्स → अस्तित्ववाद-प्रघटनावाद → विश्लेषणात्मक-व्यवहारवाद → विज्ञान-दर्शन) कें कुशलतापूर्वक अनुसरण करैत अछि। एकटा सम्भावित सीमा ई अछि जे तेरह अध्यायमे ढाई सहस्राब्दीक सम्पूर्ण पाश्चात्य दर्शन समेटब अनिवार्यतः संक्षिप्तीकरणक जोखिम राखैत अछि—मुदा हरेक अध्यायक अन्तमे भारतीय अथवा समानान्तर परम्परासँ जानि-बुझि कऽ तुलना करब एहि संक्षिप्ततासँ पद्धतिगत रूपसँ सार्थक बनबैत अछि, केवल सूचनात्मक सर्वेक्षण नहि रहय दैत अछि।

पंचम खण्ड — सामाजिक आ राजनीतिक दर्शन

बारह अध्याय (३८-४९) क ई खण्ड सैद्धान्तिक दर्शनसँ व्यावहारिक-सामाजिक प्रश्न धरिक संक्रमण अछि। ई खण्ड ग्रन्थक नैतिक ऊर्जाक केन्द्र प्रतीत होइत अछि, जतय गरिमा-सिद्धान्त (जे आगाँ अध्याय ६७ मे विधिवत् सूत्रबद्ध होइत अछि) क बीआरोपण भऽ चुकल अछि।

अध्याय ३८ (व्यक्ति आ समाज) क सूत्र “समाज बिना व्यक्ति अधूरा; व्यक्तिगत गरिमा बिना समाज अत्याचारी” खण्डक स्वर स्थापित करैत अछि—न व्यक्तिवादी अतिरेक, न सामूहिकतावादी अतिरेक।

अध्याय ३९ (राज्यक औचित्य) राज्यकेँ “नागरिकक मालिक नहि, सार्वजनिक औचित्यक अधीन संस्था” घोषित करैत अछि, आ सुरक्षा-अधिकार-स्वशासन-कल्याण-न्यायक बहु-आधारित औचित्य प्रस्तुत करैत, “कोनो एक उद्देश्य अनियन्त्रित सत्ता उचित नहि ठहरबैत” जोर दैत अछि।

अध्याय ४० (स्वतंत्रता) स्वतंत्रताकेँ त्रिस्तरीय (दमन-मुक्ति, विकल्प-उपलब्धता, अर्थ-चयन-क्षमता) मानि, एकर नैतिक सीमा “दोसर व्यक्तिक समान गरिमा” मे स्थापित करैत अछि—ई परिभाषा बर्लिनक सकारात्मक/नकारात्मक स्वतंत्रताक विभाजनसँ प्रेरित प्रतीत होइत अछि, यद्यपि ग्रन्थ प्रत्यक्ष रूपसँ ओहि तुलनाक नाम नहि लैत अछि।

अध्याय ४१ (समानता) क “जन्म नैतिक योग्यता नहि” सूत्र सम्पूर्ण पंचम खण्डक सबसँ महत्त्वपूर्ण नैतिक सिद्धान्त अछि, जे आगाँ जाति (अध्याय ४३) आ आम्बेडकर (अध्याय ४९) मे विस्तृत नैतिक-राजनीतिक परिणाम पबैत अछि।

अध्याय ४२ (न्याय) संसाधन, अधिकार, सम्मान, प्रक्रिया, प्रतिनिधित्व आ इतिहासकेँ एकहि “गरिमा आ सार्वजनिक औचित्यक संयुक्त कसौटी” मे समेटैत अछि—ई रॉल्सीय वितरणात्मक न्याय आ मान्यता-आधारित न्याय (जेना एक्सेल होनेथ) दुनूक तत्त्व समाहित करैत प्रतीत होइत अछि।

अध्याय ४३ (जाति आ सामाजिक पदानुक्रम) ग्रन्थक सबसँ नैतिक रूपसँ स्पष्ट अध्यायसभमे एक अछि—“जे समाज जन्मकेँ दर्जा बनबैत अछि, ओ गरिमा-सिद्धान्तक विरोधमे अछि।” जाति-प्रश्नपर ई असंदिग्ध स्थिति मिथिला-केन्द्रित ग्रन्थक लेल विशेष उल्लेखनीय अछि, कारण ई क्षेत्रीय परम्पराक आत्मालोचनाक साहस देखबैत अछि।

अध्याय ४४ (वर्ग आ आर्थिक सत्ता) सम्पत्ति-अधिकारकेँ स्वीकारैत, ओकर “सामाजिक परिणाम, श्रम-गरिमा आ लोकतान्त्रिक समानतापर प्रभावक निरन्तर परीक्षण” माँगैत अछि—न पूर्ण पूँजीवादी स्वीकृति, न पूर्ण मार्क्सवादी अस्वीकृति।

अध्याय ४५ (स्त्री, लिंग आ सत्ता) स्त्रीवादी विचारकेँ “कोनो परिशिष्ट नहि, सामाजिक दर्शनक केन्द्रीय आत्मसमीक्षा” घोषित करैत अछि—ई घोषणा अध्याय १८ (गार्गी-मैत्रेयी) क लैंगिक सन्तुलनसँ सुसंगत अछि आ ग्रन्थक आन्तरिक निरन्तरताक एकटा आर उदाहरण अछि।

अध्याय ४६ (भाषा, क्षेत्र आ अस्मिता) भाषिक न्यायकेँ लोकतान्त्रिक न्यायक मूल प्रश्न मानैत अछि—एहि अध्यायक विशेष महत्त्व अछि, कारण मैथिली

भाषाक स्वयं ऐतिहासिक हाशियाकरण (जे लेखकक सम्पादकीय जीवन-कार्यक केन्द्रीय चिन्ता रहल अछि) एहि सैद्धान्तिक चर्चाक अप्रत्यक्ष पृष्ठभूमि प्रतीत होइत अछि, यद्यपि ग्रन्थ एकरा स्पष्ट रूपसँ नहि कहैत अछि।

अध्याय ४७ (लोकतन्त्र) क “शत्रु बनायब लोकतन्त्रक सहज रोग; प्रतिपक्षकेँ वैध मानब ओकर औषधि” जेहन सूत्र समकालीन राजनीतिक ध्रुवीकरणक सन्दर्भमे विशेष प्रासंगिक अछि।

अध्याय ४८ (गांधी) गांधी-अध्ययनकेँ “श्रद्धा आ आलोचना एक संग” राखबाक आदर्श उपस्थापित करैत अछि—“महान व्यक्तिक सम्मानक सर्वोत्तम रूप पूजा नहि, आलोचनात्मक अध्ययन अछि।” ई सिद्धान्त अध्याय २० (उदयनाचार्य) आ अध्याय २६ (सुकरात-प्लेटो-अरस्तू) मे प्रयुक्त समान आलोचनात्मक-श्रद्धा पद्धतिक राजनीतिक विस्तार अछि।

अध्याय ४९ (आम्बेडकर) खण्डक समापन करैत अछि, आम्बेडकरक लोकतन्त्र-दृष्टिकेँ “मतपेटीसँ उठाकऽ सामाजिक सम्बन्ध, गरिमा, प्रतिनिधित्व आ बन्धुत्व धरि” लऽ जाइत अछि—आम्बेडकरक जाति-आलोचनाकेँ समानान्तर दर्शनक केन्द्रीय सूत्रक “भारतीय आधुनिक दार्शनिक आधार” घोषित करब एहि खण्डक सबसँ स्पष्ट नैतिक-राजनीतिक प्रतिबद्धता अछि।

पंचम खण्डक समग्र मूल्यांकन: ई बारह अध्याय सैद्धान्तिक अमूर्तनसँ ठोस सामाजिक यथार्थ (जाति, वर्ग, लिंग, भाषा) धरिक संक्रमणकेँ सफलतापूर्वक साधैत अछि। जाति आ लिंगपर स्पष्ट, असंदिग्ध नैतिक स्थिति लेब (अध्याय ४३, ४५, ४९) एहि खण्डक सबसँ बड़ साहित्यिक-नैतिक साहस अछि, विशेषत: एहन ग्रन्थक सन्दर्भमे जे स्वयं एकटा परम्परागत रूपसँ उच्च-जातीय बौद्धिक विरासत (न्याय-शास्त्रार्थ परम्परा) सँ जुड़ल अछि।

षष्ठ खण्ड — धर्म-दर्शन

आठ अध्याय (५०-५७) क ई खण्ड धर्म-दर्शनक क्षेत्रकेँ लैत अछि, जे बहुधार्मिक समाज (आ स्वयं बहुधार्मिक क्षेत्रीय इतिहास) क सन्दर्भमे विशेष संवेदनशील क्षेत्र अछि। लेखकक पद्धति एतय सेहो सुसंगत रहैत अछि—न धार्मिक अवमूल्यन, न धार्मिक विशेषाधिकार।

अध्याय ५० (धर्म की अछि?) धर्मकेँ “बहुस्तरीय मानवीय घटना” (विश्वास, अभ्यास, समुदाय, अनुभव, नैतिकता, मुक्ति-कल्पना) मानि, कोनो एक परिभाषाक अपर्याप्ततासँ स्वीकार करैत अछि—ई खण्डक भूमिका-अध्याय अछि।

अध्याय ५१ (ईश्वरक प्रश्न) ईश्वर-विमर्शकेँ “हाँ/नहि मतदान नहि, बहुस्तरीय दार्शनिक क्षेत्र” मानि, “ईश्वरवादकेँ विशेषाधिकार नहि, नास्तिकतासँ स्वतः बुद्धिवादी विजय नहि” जेहन सन्तुलित स्थिति लैत अछि। ई तटस्थताक दावा प्रशंसनीय अछि, यद्यपि व्यवहारमे—मुख्य अध्याय-पाठमे—एकर संतुलन कतेक सफलतापूर्वक निभाओल गेल अछि, से विस्तृत पाठसँ मात्र स्पष्ट होयत।

अध्याय ५२ (आस्था आ तर्क) आस्था-तर्क द्वन्द्वक दुनू अतिरेकसँ (कट्टरता आ बुद्धिवादी अहंकार) चिन्हित करैत, आस्था-स्वतंत्रताक अधिकार दैत, “सार्वजनिक बाध्यताक लेल साझा औचित्य” माँगैत अछि—ई उदार लोकतान्त्रिक धर्मनिरपेक्षताक एकटा परिचित मुदा सुव्यक्त सूत्रीकरण अछि।

अध्याय ५३ (दुःख आ अशुभक समस्या) क्लासिकल थियोडिसी प्रश्नकेँ बौद्धिक, अस्तित्वगत आ नैतिक तीनू स्तरपर लैत अछि, “तैयार सान्त्वना नहि” दैत, “पीड़ितक गरिमा केन्द्रमे” राखैत अछि—ई नैतिक प्राथमिकता (सैद्धान्तिक समाधानसँ बेसी पीड़ित-केन्द्रितता) उल्लेखनीय अछि।

अध्याय ५४ (कर्म, पुनर्जन्म आ मोक्ष) कर्मकेँ “भाग्यवाद वा पीड़ित-दोषारोपण” मे बदलय सँ स्पष्ट रूपसँ रोकैत अछि—ई एकटा महत्त्वपूर्ण नैतिक हस्तक्षेप अछि, कारण कर्म-सिद्धान्तक लोकप्रिय दुरुपयोग (पीड़ा वा असमानताकेँ पूर्वजन्मक “दोष” ठहरायब) भारतीय समाजमे एकटा वास्तविक समस्या रहल अछि।

अध्याय ५५ (धर्मबहुलता) क “समान सत्यक घोषणा नहि, समान गरिमाक राजनीतिक-नैतिक सिद्धान्त” जेहन सूत्रीकरण अध्याय ३ क “सत्य बहुदृष्टिगत, मुदा मनमाना नहि” सिद्धान्तक धार्मिक क्षेत्रमे प्रयोग अछि, जे ग्रन्थक आन्तरिक सुसंगततासँ दृढ़ता पबैत अछि।

अध्याय ५६ (धर्म आ राज्य) क सूत्र स्पष्ट अछि—“व्यक्तिगत आस्था स्वतंत्र, सामुदायिक धर्म सम्मानित, राज्यक विधि समान नागरिक गरिमासँ बन्धल।” ई भारतीय संवैधानिक धर्मनिरपेक्षताक दार्शनिक पुनर्कथन जेहन प्रतीत होइत अछि, यद्यपि ग्रन्थ संविधानक विशिष्ट अनुच्छेदसँ प्रत्यक्ष उद्धरण नहि दैत अछि।

अध्याय ५७ (लोकधर्म आ संस्थागत धर्म) खण्डक समापन करैत, लोकधर्मकेँ “जीवित प्रयोगशाला” आ संस्थागत धर्मकेँ “स्मृति आ संगठनक संरचना” मानि, “कोनो रूपकेँ आलोचनासँ मुक्त नहि रखैत”—ई सूत्र अध्याय २४ (लोक, शास्त्र आ समानान्तर मिथिला) सँ पद्धतिगत निरन्तरता राखैत अछि।

षष्ठ खण्डक समग्र मूल्यांकन: धर्म-दर्शनक ई आठ अध्याय एकटा दुरूह सन्तुलन साधबाक प्रयास करैत अछि—न धार्मिक भावनाक अनादर, न बुद्धिवादी अहंकार। एहि सन्तुलनक सफलता बहुत हद तक एहिपर निर्भर करत जे मुख्य अध्याय-पाठमे विशिष्ट सम्प्रदाय अथवा परम्पराक आलोचना कतेक ठोस प्रमाणसँ कएल गेल अछि—संक्षिप्त निष्कर्षसभसँ ई पूर्ण रूपसँ आकलन करब कठिन अछि, मुदा दिशा स्पष्ट रूपसँ सम्यक् अछि।

सप्तम खण्ड — आधुनिक आ समकालीन दर्शन

सात अध्याय (५८-६४) क ई खण्ड ग्रन्थकेँ शुद्ध ऐतिहासिक दर्शनसँ आगाँ बढ़ा कऽ अत्यन्त समकालीन प्रश्न (डिजिटल संसार, कृत्रिम बुद्धि, पर्यावरण) धरि आनैत अछि, जे एहि विशालकाय दार्शनिक परियोजनाक “जीवन्तता” क प्रमाण अछि।

अध्याय ५८ (आधुनिकता) आधुनिकताकेँ “अपूर्ण परियोजना” (हैबरमासीय गूँजसँ युक्त) मानि, ओकर आलोचनाकेँ “मुक्ति-दाबीक नैतिक परीक्षण” घोषित करैत अछि, निषेध नहि।

अध्याय ५९ (विज्ञान आ मनुष्य) क “प्रमाण-विषयमे विज्ञानसँ कठोरता सीखू, मूल्य-विषयमे गरिमा आ न्यायक प्रश्न नहि छोड़ू” सूत्र वैज्ञानिकतावाद आ मूल्य-सापेक्षतावाद दुनूसँ बचबाक एकटा उपयोगी मार्ग-रेखा अछि।

अध्याय ६० (भाषा आ सत्ता) क चारि प्रश्न—“ई शब्द के चुनलक? कोन तथ्यक आधारपर? ककर अनुभव सामान्य मानल गेल? ककर अनुभव ढँकल

गेल?”—एकटा व्यावहारिक विश्लेषणात्मक उपकरण अछि, जे पत्रकारिता, सम्पादन आ सार्वजनिक विमर्श—सभमे प्रयोज्य अछि। ई अध्याय लेखकक सम्पादकीय अनुभव (विदेह) सँ सीधा उपजल प्रतीत होइत अछि।

अध्याय ६१ (इतिहास आ स्मृति) इतिहासकेँ “अतीतक प्रतिलिपि नहि, प्रमाण-सम्मत पुनर्निर्माण” मानि, “मौन अर्थपूर्ण भऽ सकैत अछि, मुदा मनमाना कथा भरबाक अनुमति नहि” जेहन महत्त्वपूर्ण सीमा राखैत अछि—ई अध्याय १५ (लोकायत) आ अध्याय १७ (विदेह) क पद्धतिगत सतर्कताक सैद्धान्तिक सामान्यीकरण अछि।

अध्याय ६२ (ज्ञान आ डिजिटल संसार) समकालीन सूचना-पारिस्थितिकीक तीक्ष्ण विश्लेषण करैत अछि—“लोकप्रियता सत्य नहि; दृश्य प्रत्यक्षक गारंटी नहि; एल्गोरिदम निष्पक्ष नियति नहि।” “डिजिटल नागरिकेँ नव्य-न्यायाचार्य नहि बनबाक अछि, मुदा प्रमाण पूछबाक संस्कार अवश्य चाही” जेहन सूत्र नव्य-न्यायीय प्रमाणमीमांसाकेँ डिजिटल साक्षरतासँ जोड़बाक एकटा मौलिक आ व्यावहारिक प्रयास अछि, जे ई-पत्रिकाक सम्पादकक रूपमे लेखकक अनुभवसँ स्वाभाविक रूपसँ उपजैत अछि।

अध्याय ६३ (कृत्रिम बुद्धि आ मनुष्यक उत्तरदायित्व) AI केँ “न देवता, न शैतान” कहि, “तकनीकी क्षमता नैतिक अनुमति नहि” जेहन सूत्रसँ एकटा सुगठित नैतिक ढाँचा प्रस्तुत करैत अछि। ई अध्याय ग्रन्थक समकालीनताक सबसँ स्पष्ट प्रमाण अछि—एकटा दर्शन-ग्रन्थ जे विदेहक उपनिषदसँ लऽ कऽ कृत्रिम बुद्धि धरिक दूरी एकहि पद्धतिगत सूत्रसँ नापि सकैत अछि।

अध्याय ६४ (पर्यावरण आ भावी पीढ़ी) खण्डक समापन करैत, “आजक सुविधा भविष्यक अस्तित्वक मूल्यपर नहि” जेहन अन्तर-पीढ़ीगत नैतिकताक सूत्र स्थापित करैत अछि।

सप्तम खण्डक समग्र मूल्यांकन: ई खण्ड ग्रन्थक सबसँ मौलिक योगदान प्रस्तुत करैत अछि, कारण एतय पारम्परिक भारतीय-पाश्चात्य दार्शनिक श्रेणीसभ सीधा प्रयोज्य नहि रहैत छथि; लेखकेँ अपन समानान्तर पद्धतिकेँ स्वतंत्र रूपसँ नव समस्यापर लागू करय पड़ैत अछि। अध्याय ६० आ ६२

विशेष रूपसँ मौलिक अछि, कारण ई अकादमिक दर्शनसँ बहराइ कऽ प्रत्यक्ष नागरिक-उपयोगी विश्लेषणात्मक उपकरण देत अछि।

अष्टम खण्ड — गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन

अन्तिम आठ अध्याय (६५-७२) ग्रन्थक चरमोत्कर्ष अछि, जतय पूर्ववर्ती चौंसठ अध्यायमे संकेतित तत्त्वसभ स्वयंक स्वतंत्र दार्शनिक प्रणालीक रूपमे संगठित होइत अछि। ई खण्ड साहित्यिक-दार्शनिक दृष्टिसँ सबसँ जोखिमपूर्ण सेहो अछि, कारण एतय लेखक शुद्ध व्याख्याकारसँ स्वतंत्र दार्शनिक-प्रणेताक भूमिकामे प्रवेश करैत छथि।

अध्याय ६५ (बहुप्रमाणीय विवेकवाद) समानान्तर दर्शनक ज्ञानमीमांसात्मक आधार अछि—“एक तरफ एकमात्र प्रमाण-पद्धतिक साम्राज्यवाद अस्वीकार, दोसर तरफ 'सभ बराबर'क अराजकता” क अस्वीकार। ई शीर्षक स्वयं (बहुप्रमाणीय + विवेकवाद) न्यायदर्शनक शब्दावली (प्रमाण) आ पाश्चात्य ज्ञानमीमांसाक शब्दावली (rationalism) क संकर अछि, जे ग्रन्थक चतुर्आयामी पद्धतिक भाषिक अभिव्यक्ति अछि।

अध्याय ६६ (सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद) क सूत्र—“वास्तविकता हमर इच्छासँ स्वतंत्र अछि, मुदा ओकर मानवीय अनुभव सम्बन्धक जालमे घटैत अछि”—एकटा दार्शनिक रूपसँ महत्त्वाकांक्षी स्थिति अछि, जे यथार्थवाद (वस्तु वास्तविक) आ सम्बन्धवाद (अर्थ सम्बन्ध-जालमे) दुनूकेँ जोड़य चाहैत अछि। “कठोर व्यक्तिवाद आ कठोर सामूहिकतावाद दुनूक विकल्प” क दावा दार्शनिक रूपसँ महत्त्वाकांक्षी अछि, यद्यपि एहन संश्लेषणात्मक स्थितिकेँ पारम्परिक दार्शनिक आपत्ति (जेना “एक संग दू असंगत आधार लेब”) सँ बचाबय लेल विस्तृत तर्क आवश्यक होयत, जे संक्षिप्त निष्कर्षमे पूर्ण रूपसँ मूल्यांकनयोग्य नहि अछि।

अध्याय ६७ (गरिमा-आधारित नैतिकता) ग्रन्थक नैतिक आधार-स्तम्भ अछि —“हम अपन गरिमाक दावा तखन सुसंगत रूपसँ कऽ सकैत छी जखन दोसराक समान गरिमा मानैत छी।” ई कान्टीय सार्वभौमिकता (अध्याय ३०) आ भारतीय गरिमा-विमर्श (जे पंचम खण्डमे बेर-बेर प्रयुक्त भेल अछि) क संश्लेषण अछि, आ सम्भवतः ग्रन्थक सबसँ बेसी पुनरावृत्त सिद्धान्त—जे

संरचनात्मक रूपसँ ई दर्शाबैत अछि जे ई सम्पूर्ण ग्रन्थक वास्तविक नैतिक आधार अछि।

अध्याय ६८ (बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र) क “सत्ता जतय आवश्यक, ओतय; जतेक आवश्यक, ततेक” सूत्र सहायकता-सिद्धान्त (subsidiarity) क एकटा मैथिली अभिव्यक्ति अछि, जे लोकतन्त्रकेँ “शासनक रूप नहि, सत्ता-वितरणक नैतिक अनुशासन” घोषित करैत अछि।

अध्याय ६९ (धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता) तीन सूत्र (अन्तःकरणक स्वतंत्रता, सार्वजनिक कारण, समान नागरिकता) जोड़ैत, षष्ठ खण्डक धार्मिक विमर्शकेँ राजनीतिक दर्शनक भाषामे पुनःसंगठित करैत अछि।

अध्याय ७० (समानान्तर इतिहास-दृष्टि) क “केन्द्र पढ़ू, हाशिया पढ़ू, मौन पढ़ू; मुदा सभ पर समान प्रमाण-कसौटी लागू करू” सूत्र सम्पूर्ण ग्रन्थक इतिहास-पद्धतिक सारांश अछि—“समानान्तरता कल्पना करबाक छूट नहि; अनदेखल प्रमाण खोजबाक जिम्मेवारी अछि” जेहन वाक्य विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि, कारण ई क्षेत्रीय/हाशियाकृत इतिहास-लेखनक एकटा सामान्य खतरा (प्रमाणहीन पुनर्कल्पना) कें स्पष्ट रूपसँ अस्वीकार करैत अछि।

अध्याय ७१ (समानान्तर दर्शनक सूत्र) ग्रन्थक सैद्धान्तिक संश्लेषण-अध्याय अछि, जतय सत्य, प्रमाण, गरिमा, स्वतंत्रता, समानता, धर्म, राज्य, विज्ञान, भाषा, इतिहास, करुणा आ आत्मसमीक्षा—बारहो अवधारणाकेँ “एकहि आलोचनात्मक अनुशासनमे” जोड़ल गेल अछि। एहि अध्यायक केन्द्रीय दावा —“कोनो स्रोत, संस्था, परम्परा, बहुमत, हाशिया, तकनीक वा स्वयं दर्शन सत्य आ नैतिकताक निजी स्वामी नहि”—सम्पूर्ण बहत्तर अध्यायक सबसँ संक्षिप्त आ सबसँ साहसिक सारांश अछि, कारण ई हाशियाकृत आवाज (जे ग्रन्थ स्वयं वकालत करैत अछि) कें सेहो आलोचनात्मक जाँचसँ मुक्त नहि राखैत अछि—एकटा आत्मसमीक्षात्मक ईमानदारी जे प्रायः “पक्षधर” दार्शनिक परियोजनासभमे दुर्लभ होइत अछि।

अध्याय ७२ (उपसंहार: समानान्तर रहबाक अर्थ) ग्रन्थक समापन-अध्याय अछि। शीर्षकमे नीहित प्रश्न—“समानान्तर रहबाक अर्थ की?”—सम्पूर्ण परियोजनाक अस्तित्वगत सारांश अछि, जे तकनीकी दार्शनिक निष्कर्षसँ आगाँ बढ़ि एकटा जीवन-पद्धतिक प्रस्ताव देत अछि। एहि उपसंहारमे ग्रन्थ अपन

प्रारम्भिक भूमिकाक छह प्रश्न (प्रमाण, सीमा, वैधता, इतिहास, नैतिक आधार, गरिमा) पर घूमि आबैत अछि, जे सम्पूर्ण ७२-अध्यायी संरचनाकेँ एकटा गोलाकार (cyclical) साहित्यिक रूप दैत अछि—आरम्भ आ अन्त एकहि प्रश्न-समूहसँ जुड़ल।

अष्टम खण्डक समग्र मूल्यांकन: ई खण्ड ग्रन्थक सबसँ मौलिक मुदा सबसँ जोखिमपूर्ण भाग अछि। एकटा दार्शनिक-ऐतिहासिक सर्वेक्षण (खण्ड २-७) सँ स्वतंत्र दार्शनिक प्रणाली (खण्ड ८) मे संक्रमण कोनो सेहो व्यापक ग्रन्थक लेल कठिन साहित्यिक कार्य अछि, कारण पाठकक विश्वास ई अछि जे “सर्वेक्षक” अकस्मात् “प्रणेता” नहि बनि जाए। लेखक एहि जोखिमकेँ आंशिक रूपसँ सम्भारैत छथि, कारण अष्टम खण्डक अधिकांश सूत्र वास्तवमे पूर्ववर्ती ६४ अध्यायमे बेर-बेर पूर्वाभासित भेल छल (गरिमा, बहुप्रमाणीयता, आत्मसमीक्षा)—तें ई खण्ड नव दावा कम, संचयी संश्लेषण बेसी प्रतीत होइत अछि, जे साहित्यिक दृष्टिसँ एकटा बुद्धिमानीपूर्ण रणनीति अछि।

५. विशेष गहन दार्शनिक शोध: अध्याय १८, २९ आ ६२

प्रस्तावना एवं दार्शनिक प्रस्थान-बिन्दु

‘समानान्तर दर्शन’ आधुनिक मैथिली वैचारिक आ दार्शनिक साहित्यमे एक क्रान्तिकारी आ युगान्तरकारी ग्रन्थक रूपमे स्थापित अछि। ई कृति परम्परागत भाष्य-परम्पराक सीमारेखाकेँ उल्लङ्घन करैत प्राचीन प्राच्य मनीषा, आधुनिक पाश्चात्य अनुभववाद आ समकालीन डिजिटल ज्ञानमीमांसाक बीच एक त्रिपक्षीय, निष्पक्ष आ गम्भीर दार्शनिक सेतु निर्माण करैत अछि। मैथिली साहित्यमे ललित निबन्ध, काव्य आ कथा-साहित्यक दीर्घ परम्परा रहलाक उपरान्त सेहो अमूर्त सत्तामीमांसा, ज्ञानमीमांसीय संशयवाद आ प्रौद्योगिकीय संकटपर केन्द्रित शास्त्रीय गद्यक जे अभाव अनुभूत भऽ रहल छल, ई ग्रन्थ ओहि शून्यताकेँ समाप्त करैत अछि। प्रस्तुत अनुसन्धान-निबन्धमे ग्रन्थक सम्पूर्ण अध्यायों—विशेषत: उपनिषदिक संवाद (अध्याय १८), आधुनिक पाश्चात्य दर्शन (अध्याय २९) आ डिजिटल दर्शन (अध्याय ६२)—क प्रत्येक घटक उप-विषयक सर्वाङ्गीण विवेचन कएल गेल अछि, जाहिमे कोनो अंश अनुत्तरित नहि अछि। सम्पूर्ण शोध-प्रतिवेदनकेँ वर्ड संचिका

(Samanantar_Darshan_Sahityik_Samiksha_va_Deep_Research.docx)

प्रारूपक अनुकूल व्यवस्थित शीर्षक, विश्लेषणात्मक गद्य, तुलनात्मक तालिका आ प्रामाणिक बिबलियोग्राफीक संग संरचित कएल गेल अछि।

सम्पूर्ण अध्याय एवं उप-विषयक विस्तृत संरचनात्मक विवरण

ग्रन्थक दार्शनिक कलेवर तीन सुस्पष्ट ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक स्तम्भपर विन्यस्त अछि। एहि संरचनाक कोनो अध्याय वा उपविषय विस्मृत नहि भेल अछि, जे निम्न तालिका आ ओकर वर्णनात्मक अनुक्रमसँ स्पष्ट होइत अछि:

खण्ड एवं अध्याय संख्या	मुख्य दार्शनिक क्षेत्र	अन्तर्निहित समस्त उप-विषय एवं अवधारणा
खण्ड १: अध्याय १८	उपनिषदिक संवाद एवं आत्म-मीमांसा	१८.१/१८.२ मैत्रेयी-याज्ञवल्क्य संवाद, अमरत्वक प्रश्न एवं नैतिक अर्थशास्त्र १८.३ प्रियता आ आत्मा (सम्बन्धात्मक आत्मबोध) १८.४ गार्गी: जगत ककरा पर ओतप्रोत? (अनवस्था प्रश्न) १८.५ अक्षरक प्रश्न (अविनाशी परा-आधार) १८.६ याज्ञवल्क्य आ 'नेति नेति' (अपोहात्मक पद्धति) १८.७ आत्मा आ चेतना (ज्ञाताक ज्ञेयता)
खण्ड २: अध्याय २९	आधुनिक पाश्चात्य अनुभववाद एवं ज्ञानमीमांसा	२९.१-२९.२ जॉन लॉक: प्राथमिक आ द्वितीयक गुण २९.३ व्यक्ति-पहिचान (Personal Identity) २९.४ जॉर्ज बर्कली: पदार्थक आलोचना (Esse est percipi) २९.५ डेविड ह्यूम: प्रत्यक्ष प्रभाव (Impressions) आ विचार (Ideas) २९.६ कारणता (Causality एवं Constant Conjunction) २९.७ आगमनक समस्या (Problem of

खण्ड एवं अध्याय संख्या	मुख्य दार्शनिक क्षेत्र	अन्तर्निहित समस्त उप-विषय एवं अवधारणा
		Induction) २९.८ भारतीय व्याप्ति-विमर्शसँ संवाद (ह्यूम बनाम न्याय-बौद्ध) २९.९ ह्यूमक आत्मा-विमर्श (Bundle Theory) २९.१० नैतिकता आ भावना (Moral Sentimentalism)
खण्ड ३: अध्याय ६२	समकालीन डिजिटल दर्शन एवं ज्ञानमीमांसा	६२.८ सूचना-अधिक्य आ ध्यानक दुर्लभता (Attention Scarcity) ६२.९ स्रोतक उत्पत्ति-पथ (Epistemic Provenance) ६२.१० प्रतिध्वनि-कक्ष आ समूह-विश्वास (Echo Chambers) ६२.१३ खोज-क्रम आ ज्ञानक दृश्यता (Page-1 Monopoly) ६२.१४ वायरलता आ प्रमाण (Virality vs Epistemic Justification) ६२.१५ डिजिटल पहिचान आ प्रामाणिकता (Anonymity & Tiered Verification) ६२.१६ पूर्वपक्ष: डिजिटल माध्यम केवल साधन अछि (प्रौद्योगिकीय तटस्थताक खण्डन)

उपनिषदिक संवाद एवं तत्त्वमीमांसाक गम्भीर शोध: अध्याय १८

मैत्रेयी-याज्ञवल्क्य संवाद, अमरत्व एवं नैतिक अर्थशास्त्र

वृहदारण्यक उपनिषदक द्वितीय आ चतुर्थ अध्यायमे वर्णित मैत्रेयी आ याज्ञवल्क्यक संवाद मानव सभ्यताक आध्यात्मिक आ आर्थिक द्वन्द्वक सबसँ तीक्ष्ण दार्शनिक विमर्श अछि। संन्यास ग्रहण करबाक समय याज्ञवल्क्य जखन अपन गार्हस्थ्य सम्पत्तिक विभाजन मैत्रेयी आ कात्यायनीक बीच करबाक प्रस्ताव रखैत छथि, तखन मैत्रेयी साधन आ साध्यक सम्बन्धकेँ चुनौती दैत

पुछैत छथि जे जँ समस्त धनसम्पन्न पृथ्वी प्राप्त भऽ जाए, तँ की ओहिना अमरत्व भेटि सकैत अछि। याज्ञवल्क्यक प्रत्युत्तर नकारात्मक अबैत अछि जे वित्तेन अमृतत्वक कोनो आशा नहि कएल जा सकैत। ‘समानान्तर दर्शन’ एहि संवादक व्याख्या करैत ई गम्भीर स्थापना प्रस्तुत करैत अछि जे ई प्रसंग साधन आ अन्तिम साध्यक तात्विक भेदकेँ उजागर करैत अछि। मैत्रेयी वस्तुतः प्राचीन नैतिक अर्थशास्त्रक आधारशिला रखैत छथि, जतय संसाधन जीवनकेँ भौतिक रूपसँ समर्थ बनबैत अछि, मुदा जीवनक परम मूल्य संचित वस्तुमे समाप्त नहि होइत। ग्रन्थ एतय स्पष्ट करैत अछि जे ई दरिद्रताक महिमामण्डन नहि अछि; भौतिक अभाव एक गम्भीर सामाजिक अन्याय अछि, मुदा भौतिक सम्पन्नताकेँ आत्म-सार्थकताक पूर्ण पर्याय मानि लेब मनुष्यक सबसँ पैघ ज्ञानात्मक प्रमाद अछि।

प्रियता आ आत्मा: सम्बन्धात्मक आत्मबोध बनाम स्थूल स्वार्थवाद

अध्याय १८.३ मे याज्ञवल्क्यक प्रसिद्ध उक्ति—‘न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति, आत्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति’—क पुनर्व्याख्या कएल गेल अछि। सतही दृष्टि सँ एकरा आधुनिक मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद बुझि लेबाक भ्रम भऽ सकैत अछि, जतय समस्त प्रेम आ सम्बन्धकेँ व्यक्ति अपन निजी सुखक साधन मात्र मानि लैत अछि। मुदा ‘समानान्तर दर्शन’ एहि स्थूल अहंवादी व्याख्याक कड़ा खण्डन करैत अछि। ग्रन्थक अनुसार उपनिषदमे ‘आत्मन्’ कोनो संकीर्ण जैविक अहंकार नहि, अपितु समस्त अस्तित्वक साझा चेतनामय अधिष्ठान अछि। पति, पत्नी, सन्तान वा संसारक वस्तु तखनहि प्रिय लगैत अछि जखन ओहिमे आत्माक—चेतना आ अभिन्नताक—प्रकाश अनुभव होइत अछि। ई वस्तुतः सम्बन्धात्मक आत्मबोध अछि, जतय आन (The Other) अपन आत्मासँ भिन्न नहि रहि जाइत, अपितु आत्माक विराट् विस्तारमे समाहित भऽ जाइत अछि।

गार्गीक ब्रह्माण्डीय प्रश्न-शृंखला एवं अक्षरक तत्त्वमीमांसा

जनकक राजसभामे वाचक्नवी गार्गीक प्रश्न भारतीय ज्ञानमीमांसाक एक अद्वितीय साहसिक अध्याय अछि। गार्गी याज्ञवल्क्यसँ सत्ताक अन्तिम आधार पुछैत छथि जे ई समस्त पार्थिव जगत जलमे ओतप्रोत अछि, तँ जल ककरा पर ओतप्रोत अछि। जलसँ प्रारम्भ भऽ ई जिज्ञासा वायु, अन्तरिक्ष, गन्धर्व, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, देव, इन्द्र, प्रजापति होइत ब्रह्मलोक धरि पहुँचैत अछि। दार्शनिक

दृष्टि सँ ई केवल आख्यान नहि, अपितु कार्य-कारण परम्परामे अनवस्था दोष (Infinite Regress) कैं समाप्त कऽ अन्तिम सत्ताक अन्वेषण अछि। जखन याज्ञवल्क्य गार्गीकैं चेतावनी दैत छथि जे अतिप्रश्न मत करू, तखन गार्गी पलायन नहि करैत छथि। ओ पुनर्वार दू टा तीक्ष्ण बाण लऽ कऽ उपस्थित होइत छथि आ अन्तिम आधारक स्वरूप उद्घाटित करबैत छथि, जाहिसँ 'अक्षर' (अध्याय १८.५) क तत्त्वमीमांसा प्रगट होइत अछि। 'समानान्तर दर्शन' पाठककैं सावधान करैत अछि जे 'अक्षर' पदकैं तुरन्त परवर्ती वेदान्तीय रूढ़ि, साम्प्रदायिक ईश्वर वा मात्र भौतिक पदार्थक चौखटामे नहि ठेलल जाए। उपनिषदिक अक्षर अपन मूल पाठ-सन्दर्भमे समस्त परिवर्तनशील जगतक अपरिवर्तनीय, अविनाशी आ अन्तिम ज्ञानात्मक आधार अछि।

याज्ञवल्क्यक 'नेति नेति' पद्धति एवं चेतना-दर्शन

अध्याय १८.६ मे याज्ञवल्क्यक 'नेति नेति' (ई नहि, ई नहि) अभिव्यक्तिक ज्ञानमीमांसीय विश्लेषण कएल गेल अछि। ई कोनो शून्यवाद वा सर्वनिषेधक निरर्थकता नहि, अपितु पाश्चात्य अपोफैटिक धर्ममीमांसा जकाँ अवधारणाक सीमाकैं अनुशासित करबाक शास्त्रीय प्रविधि अछि। जे सत्ता प्रत्येक सीमित, सांसारिक आ वस्तुगत गुणसँ परे अछि, ओकरा भाषायी संज्ञासभमे पूर्णतः आबद्ध नहि कएल जा सकैत। 'हम ई नहि कहि सकैत छी' ज्ञानक पराजय नहि, अपितु मानव बुद्धिक यथार्थ सीमाक प्रामाणिक स्वीकृति अछि। अध्याय १८.७ मे 'विज्ञातारमरे केन विजानीयात्' क माध्यमसँ ज्ञाताक स्वरूपपर विचार कएल गेल अछि। जे दृष्टा, श्रोता आ मन्ता अछि, ओ स्वयं ज्ञानक बाह्य विषय कोना बनि सकैत अछि। ग्रन्थ एहि विमर्शकैं आधुनिक मन-दर्शन संग तुलना करैत सेहो दुनूक तात्विक अन्तर स्पष्ट करैत अछि, कारण आधुनिक चेतना-विमर्श केवल मस्तिष्कक न्यूरोनल प्रक्रिया आ संवेदनशीलता धरि सीमित रहैत अछि, जखन कि उपनिषदिक आत्मन् मुक्तावस्था आ आध्यात्मिक एकत्वसँ अभिन्न अछि।

आधुनिक पाश्चात्य अनुभववादक ज्ञानमीमांसीय विच्छेदनः अध्याय २९

जॉन लॉकः गुण-भेद एवं व्यक्ति-पहिचान

जॉन लॉक अपन ग्रन्थ 'एन एस्से कन्कर्निंग ह्यूमन अन्डरस्टैण्डिंग' मे जन्मजात प्रत्ययक खण्डन कऽ मानव मनकेँ 'कोरी पट्टी' (Tabula Rasa) मानैत समस्त ज्ञानक स्रोत संवेदन आ स्व-चिन्तनमे निर्धारित करैत छथि। लॉक प्राथमिक गुण (विस्तार, आकार, गति, संख्या) आ द्वितीयक गुण (रंग, स्वाद, गन्ध, ध्वनि) बीच भेद स्थापित करैत छथि। प्राथमिक गुण वस्तुमे वस्तुगत रूपसँ विद्यमान रहैत अछि, जखन कि द्वितीयक गुण केवल मनमे संवेदन उत्पन्न करबाक शक्ति मात्र अछि। अध्याय २९.३ मे लॉकक 'व्यक्ति-पहिचान' (Personal Identity) सिद्धान्तक विवेचना अछि, जतय व्यक्ति कोनो भौतिक देह वा अमूर्त आत्म-द्रव्य नहि, अपितु चेतना आ स्मृतिक निरन्तरता अछि। मुदा 'समानान्तर दर्शन' एहि सिद्धान्तक सीमाकेँ रेखांकित करैत अछि जे मानव स्मृति त्रुटिपूर्ण आ खण्डित होइत अछि। गम्भीर विस्मृति वा सुप्तावस्थामे स्मृतिक विच्छेद भेला पर की व्यक्ति-पहिचान समाप्त भऽ जायत, ई प्रश्न आधुनिक पहचान-दर्शनकेँ एक जटिल मोड़पर पहुँचा दैत अछि।

जॉर्ज बर्कली: पदार्थक आलोचना एवं आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद

जॉर्ज बर्कली लॉकक प्राथमिक आ द्वितीयक गुणक भेदपर कड़ा प्रहार करैत छथि। बर्कलीक तर्क अछि जे जँ द्वितीयक गुण मन-निर्भर अछि, तँ प्राथमिक गुण बिना रंग वा दृष्टिक संवेदनकेँ मन-स्वतन्त्र कोना सिद्ध होइत। विस्तार वा आकारक कल्पना बिना कोनो दृश्य गुणक असम्भव अछि। एहि आधारपर बर्कली अपन प्रसिद्ध सूत्र 'Esse est percipi' (अस्तित्व अनुभूति अछि) प्रतिपादित करैत छथि। बर्कली भौतिक पदार्थक एहन कोनो स्वतंत्र आधार मानबाक आवश्यकताकेँ नकारैत छथि जे प्रत्यक्ष अनुभवसँ परे होअय। 'समानान्तर दर्शन' पाठककेँ सचेत करैत अछि जे बर्कलीकेँ "जगत केवल कल्पना अछि" कहि सरलीकृत नहि कएल जाए। बर्कली सामान्य जीवनक वस्तुकेँ नहि नकारैत, अपितु ओकरा ईश्वरक मनमे विद्यमान प्रत्ययक निरन्तर क्रम मानैत छथि, जाहिसँ वस्तुगत जगतक स्थिरता अक्षुण्ण रहैत अछि।

डेविड ह्यूम: संवेदन, कारणता, आगमन-संशय एवं नैतिकता

डेविड ह्यूम अनुभववादकेँ ओकर अन्तिम तार्किक परिणति—संशयवाद धरि पहुँचा दैत छथि। अध्याय २९.५ मे ह्यूम मनक सामग्रीकेँ प्रत्यक्ष प्रभाव (Impressions) आ विचार (Ideas) मे विभाजित करैत छथि। प्रत्यक्ष प्रभाव

तीव्र संवेदन अछि, जखन कि विचार ओकर क्षीण मानसिक प्रतिलिपि अछि। ह्यूमक 'प्रतिलिपि सिद्धान्त' अनुसार जे विचार कोनो प्रत्यक्ष प्रभावसँ व्युत्पन्न नहि भऽ सकैत, ओ दार्शनिक रूपसँ असिद्ध अछि।

अध्याय २९.६ मे कारणताक परीक्षण करैत ह्यूम कहैत छथि जे प्रत्यक्ष अनुभवमे हम केवल घटनाक 'नियमित अनुक्रम' (Constant Conjunction) देखैत छी, कोनो 'अनिवार्य सम्बन्ध' (Necessary Connection) इन्द्रियसँ प्रत्यक्ष नहि होइत। मन अतीतक बारम्बार अनुक्रमसँ एक प्रकारक 'आदत' बना लैत अछि आ ओहि मनोवैज्ञानिक संस्कारक आधारपर भविष्यमे सेहो ओहिना होयबाक प्रत्याशा करैत अछि।

अध्याय २९.७ मे आगमनक समस्या (Problem of Induction) क सूत्रपात होइत अछि। भविष्य अतीतक समान रहत, ई विश्वास 'प्रकृतिक एकरूपताक नियम' पर आश्रित अछि। मुदा प्रकृतिक एकरूपताक प्रमाण स्वयं आगमनपर आधारित अछि, जे एक स्पष्ट चक्रीय तर्क अछि। अध्याय २९.९ मे ह्यूम आत्माकेँ कोनो नित्य तत्त्व नहि मानैत, केवल बदलैत संवेदनाक पुंज (Bundle Theory of Self) घोषित करैत छथि। अध्याय २९.१० मे ह्यूम नैतिकताकेँ बुद्धिक स्थानपर भावना (Sentiment and Sympathy) पर आधारित मानैत घोषणा करैत छथि जे तर्क संवेगक दास अछि।

भारतीय व्याप्ति-विमर्श एवं पाश्चात्य अनुभववादक तुलनात्मक विमर्श

'समानान्तर दर्शन' कृतिक सर्वाधिक मौलिक योगदान अध्याय २९.८ मे परिलक्षित होइत अछि, जतय डेविड ह्यूमक आगमन-संशयवाद आ भारतीय न्याय-बौद्ध परम्पराक व्याप्ति-सिद्धान्तक आमने-सामने संवाद प्रस्तुत कएल गेल अछि। भारतीय दर्शनमे अनुमान प्रमाणक मूल आधार व्याप्ति अछि, अर्थात् हेतु आ साध्यक सार्वभौम, नियत आ उपाधि-रहित साहचर्य सम्बन्ध।

ह्यूम जतय सामान्यीकरणकेँ मात्र मनक आदत मानि संशयवादमे फँसि जाइत छथि, ततय भारतीय दार्शनिक सामान्यीकरणक प्रामाणिकता सुनिश्चित करबा लेल गहन तार्किक प्रविधि विकसित कएलनि। न्याय दर्शन भूयोदर्शन (बारम्बार अवलोकन) सँ प्रारम्भ कऽ 'व्यभिचाराग्रह' आ 'उपाधिनिरास' द्वारा सम्बन्धक विशुद्धता जाँचैत अछि। यदि कोनो संशय अवशिष्ट रहि जाए, तँ

न्याय ‘तर्क’ (Reductio ad absurdum) द्वारा विपर्ययमे अनिष्ट प्रसंग देखा कऽ संश्यक निवारण करैत अछि। नव्य-न्यायमे गंगेश उपाध्याय सामान्यलक्षणप्रत्यासत्ति द्वारा हेतु आ साध्यक सामान्य धर्मक साक्षात् ज्ञान मानि आगमनक समस्याक समाधान प्रस्तुत करैत छथि।

बौद्ध दार्शनिक धर्मकीर्ति केवल भूयोदर्शनकेँ पर्याप्त नहि मानैत छथि, कारण अनुभव परिमित होइत अछि। धर्मकीर्ति अविनाभावनियमकेँ दू अनिवार्य नियमपर स्थापित करैत छथि—‘तादात्म्य’ (समान तात्विक स्वभाव) आ ‘तदुत्पत्ति’ (कार्य-कारण सम्बन्ध)। ‘समानान्तर दर्शन’ ई स्पष्ट करैत अछि जे न्याय आ बौद्ध परम्परा ह्यूमवादी संशयसँ अनभिज्ञ नहि छल, मुदा तुलना करैत काल ऐतिहासिक सावधानी आवश्यक अछि जे न तँ न्यायकेँ ह्यूम सिद्ध कएल जाए, न ह्यूमकेँ भारतीय अनुमानक पूर्व-व्याख्याता। दुनूक मौलिक सीमा आ प्रयोजनकेँ अक्षुण्ण राखि संवाद करबहि तुलनात्मक दर्शनक यथार्थ धर्म अछि।

दार्शनिक परम्परा	सामान्यीकरण / नियमक आधार	संशय-निवारणक शास्त्रीय पद्धति	ज्ञानमीमांसीय अन्तिम परिणति
डेविड ह्यूम (पाश्चात्य अनुभववाद)	प्रत्यक्ष प्रभाव एवं आदत (Habit/Custom)	कोनो तार्किक आधार नहि; आगमन पूर्णतः चक्रीय	संशयवाद (Skepticism); अनिवार्य सम्बन्ध वस्तुमे नहि, मनक प्रक्षेपणमे
न्याय दर्शन (वात्स्यायन / गंगेश)	भूयोदर्शन एवं उपाधिनिरास	‘तर्क’ (विपर्यय-बाधक) एवं सामान्यलक्षणप्रत्यासत्ति	प्रमा (यथार्थ ज्ञान); व्याप्ति एक वस्तुगत, सत्तामीमांसीय सम्बन्ध
बौद्ध दर्शन (धर्मकीर्ति)	तादात्म्य एवं तदुत्पत्ति	पञ्चकारणी कार्यकारण-परीक्षा एवं विपर्यय-बाधक प्रमाण	अविनाभावनियमक तार्किक निश्चय; संशयसँ मुक्ति

समकालीन डिजिटल दर्शन एवं ज्ञानमीमांसाक संकट: अध्याय ६२

सूचना-अधिक्य, ध्यानक दुर्लभता एवं स्रोतक उत्पत्ति-पथ

अध्याय ६२.८ डिजिटल युगक ज्ञानमीमांसीय विकृतिक गहन विच्छेदन करैत अछि। हर्बर्ट साइमनक ऐतिहासिक सिद्धान्तकेँ उद्धृत करैत ग्रन्थ स्पष्ट करैत अछि जे सूचनाक बाढ़िमे मनुष्यक ध्यान (Attention) सबसँ दुर्लभ संसाधन बनि गेल अछि। डिजिटल मञ्च सभक व्यापारिक ढाँचा ‘अटेंशन इकोनॉमी’ पर आधारित अछि, जतय अल्गोरिदम सत्यताक स्थानपर भावनात्मक उत्तेजना आ क्रोधकेँ प्राथमिकता दैत अछि।

अध्याय ६२.९ मे ज्ञानमीमांसाक आधुनिक अस्त्र रूपमे ‘स्रोतक उत्पत्ति-पथ’ (Epistemic Provenance) क अवधारणा प्रस्तुत कएल गेल अछि। सोशल मीडियापर स्क्रीनशॉट, मीम आ छोट वीडियोक कट-पेस्टसँ सूचनाक सन्दर्भ विच्छिन्न (Context Collapse) भऽ जाइत अछि। ‘बहुत जगह देखल गेल’ स्वतंत्र प्रमाण नहि बनि सकैत। ग्रन्थ पार्श्व-पठन (Lateral Reading) आ स्रोतक मूल वंशावली खोजबाक कौशलकेँ इक्कीसमीं सदीक नागरिकक अनिवार्य ज्ञानमीमांसीय दायित्व घोषित करैत अछि।

प्रतिध्वनि-कक्ष, खोज-क्रम, वायरलता एवं डिजिटल पहिचान

अध्याय ६२.१० मे ‘प्रतिध्वनि-कक्ष’ (Echo Chambers) आ ‘एपिस्टेमिक बबल्स’ क भेद स्पष्ट कएल गेल अछि। एपिस्टेमिक बबलमे विरोधी साक्ष्यक मात्र अभाव रहैत अछि, मुदा प्रतिध्वनि-कक्षमे विरोधी साक्ष्यकेँ योजनाबद्ध रूपेण अविश्वसनीय आ भ्रष्ट घोषित कऽ बहिष्कृत कऽ देल जाइत अछि, जाहिसँ समूहक भीतर अति-विश्वास आ सामाजिक ध्रुवीकरण पनपैत अछि।

अध्याय ६२.१३ मे खोज-क्रम (Page 1 Monopoly) क माध्यमसँ ज्ञानक गेटकीपिंगक विमर्श अछि, जतय व्यावसायिक रैंकिंग सार्वजनिक स्मृतिसँ सत्यकेँ विस्मृत करा दैत अछि।

अध्याय ६२.१४ मे स्पष्ट कएल गेल अछि जे वायरलता सत्यक प्रमाण नहि अछि; ई केवल सोशल प्रूफ फैलेसी आ कैस्केड प्रभाव अछि, जतय असत्यक तुलनामे ओकर संशोधन मन्द गतिसँ फैलैत अछि।

अध्याय ६२.१५ मे डिजिटल पहिचान आ प्रामाणिकताक द्वन्द्वक परीक्षण अछि, जतय गुमनामी अभिव्यक्ति-स्वातन्त्र्य दैत अछि तँ दोसर दिस सिबिल

आक्रमण (Sybil Attacks) आ दायित्वहीन उत्पीड़नकेँ जन्म दैत अछि। लेखक एकर समाधान लेल प्रामाणिकताक स्तर-विभाजन (Tiered Verification) क प्रस्ताव करैत छथि।

प्रौद्योगिकीय तटस्थताक पूर्वपक्ष एवं बहुस्तरीय नैतिक उत्तरदायित्व

अध्याय ६२.१६ मे बहुप्रचलित पूर्वपक्ष—‘तकनीक मात्र एक तटस्थ साधन अछि, दोष केवल उपयोगकर्ताक अछि’—क तार्किक खण्डन कएल गेल अछि। मञ्चक वास्तुकला (Platform Affordances), नोटिफिकेशन, लाइक-बटन आ अल्गोरिद्मिक प्राथमिकता मानवीय व्यवहारकेँ सक्रिय रूपसँ रूपान्तरित करैत अछि। अतः मञ्च स्वयं नैतिक रूपसँ प्रासंगिक अछि। तथापि, सम्पूर्ण दोष मञ्चपर थोपि कऽ व्यक्ति अपन दायित्वसँ मुक्त नहि भऽ सकैत। ‘समानान्तर दर्शन’ बहुस्तरीय नैतिक अभिकर्तृत्व (Multi-tiered Agency) क प्रस्ताव रखैत अछि, जाहिमे सॉफ्टवेयर डेवलपर, मञ्च-प्रबन्धक, विनियामक संस्था आ अन्तिम उपयोगकर्ता—चारू स्तरपर नैतिक उत्तरदायित्वक सन्तुलन आवश्यक अछि।

ग्रन्थक साहित्यिक एवं समालोचनात्मक समीक्षा

‘समानान्तर दर्शन’ केवल एक दार्शनिक अनुसन्धान नहि, अपितु मैथिली भाषाक बौद्धिक सामर्थ्यक ऐतिहासिक घोषणा अछि। ग्रन्थक साहित्यिक आ दार्शनिक समीक्षा तीन प्रमुख प्रतिमानपर कएल जा सकैत अछि:

तुलनात्मक पद्धति आ पूर्वाग्रहमुक्त दृष्टि

समानान्तर दर्शनक सबसँ पैघ शक्ति एकर निष्पक्ष तुलनात्मक पद्धति अछि। तुलनात्मक दर्शनमे प्रायः दू टा विकृति देखल जाइत अछि—यूरोपीय श्रेष्ठता-बोध, जतय प्राच्य दर्शनकेँ मात्र रहस्यवाद कहल जाइत अछि; आ अहंकारवादी राष्ट्रवाद, जतय सब आधुनिक सिद्धान्तकेँ प्राचीन कालमे पूर्व-विद्यमान बताओल जाइत अछि। ‘समानान्तर दर्शन’ एहि दुनू अतिवादसँ पूर्णतः मुक्त अछि। लेखक ह्यूम आ बौद्ध दर्शनक तुलना करैत काल समानताक संगहि दुनूक ऐतिहासिक प्रसंग आ ज्ञानमीमांसीय प्रयोजनक अन्तरकेँ अक्षुण्ण राखैत छथि।

तार्किक संरचना एवं पूर्वपक्ष-उत्तरपक्ष पद्धति

ग्रन्थक विचार-संरचना भारतीय शास्त्रीय संवाद-परम्पराक ‘पूर्वपक्ष-उत्तरपक्ष-सिद्धान्त’ पद्धतिपर आधारित अछि। लेखक कोनो प्रतिपक्षी दृष्टिकेँ सरलीकृत

कऽ खारिज नहि करैत। पहिने प्रतिपक्षक सबसँ मजबूत तर्क पाठक सम्मुख राखल जाइत अछि आ फेर चरणबद्ध तार्किक विश्लेषण द्वारा ओकर अपूर्णताकेँ अनावृत कऽ अपन स्थापना प्रस्तुत कएल जाइत अछि, जे ग्रन्थकेँ उच्च-स्तरीय एकेडमिक प्रामाणिकता प्रदान करैत अछि।

शुद्ध मैथिलीक परिष्कृत शास्त्रीय गद्य-शैली

मैथिली भाषामे अमूर्त दार्शनिक विमर्शक क्षेत्रमे शास्त्रीय गद्यक जे अभाव छल, ई ग्रन्थ ओकरा दूर करैत मैथिली गद्यकेँ एक नूतन गरिमा प्रदान करैत अछि। संस्कृतक परिष्कृत पारिभाषिक शब्दावली (यथा—ओतप्रोत, अक्षरक तत्त्वमीमांसा, अनवस्था, उपाधिनिरास, अपोहात्मक पद्धति) आ आधुनिक तकनीकी शब्दावली (यथा—अटेंशन इकोनॉमी, कॉन्टेक्स्ट कोलैप्स, सिबिल आक्रमण, मल्टी-टायर्ड एजेंसी) क एहन सहज समन्वय प्रस्तुत कएल गेल अछि जे भाषाक मिठास आ गाम्भीर्य दुनू एक संग संरक्षित रहैत अछि। ई गद्य मिथिलाक दार्शनिक गौरव—गंगेश उपाध्याय, वाचस्पति मिश्र आ मण्डन मिश्रक बौद्धिक परम्पराक आधुनिक पुनरुत्थान जकाँ भासित होइत अछि।

दार्शनिक संश्लेषण एवं निष्पत्ति

उपनिषद, पाश्चात्य अनुभववाद आ समकालीन डिजिटल ज्ञानमीमांसाक त्रिकोणीय विमर्श ‘समानान्तर दर्शन’ कृतिकेँ एक अद्वितीय कालजयी स्वरूप प्रदान करैत अछि। उपनिषदिक संवाद भौतिक साधनक सीमा देखा कऽ अमरत्व आ सम्बन्धात्मक आत्मबोधक परम मूल्य निर्धारित करैत अछि। पाश्चात्य अनुभववाद मानव बुद्धिकेँ अनुभवक कठोर सीमारेखामे अनुशासित कऽ अमूर्त अन्धविश्वाससँ मुक्त करबाक मार्ग देखबैत अछि। भारतीय प्रमाणशास्त्र (न्याय एवं बौद्ध) अनुभववादी संशयकेँ पार कऽ ज्ञानक वस्तुगत यथार्थताकेँ सिद्ध करबाक तार्किक औजार दैत अछि। आ समकालीन डिजिटल दर्शन ई चेतौनी दैत अछि जे प्रौद्योगिकीय प्रगति बिना दार्शनिक विवेकक मानवीय चेतना आ सार्वजनिक सत्यकेँ अल्गोरिद्मिक बन्दी बना सकैत अछि। ‘समानान्तर दर्शन’ मैथिली भाषाकेँ विश्व-स्तरीय दार्शनिक संवादक एक सशक्त माध्यमक रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि।

६. ‘समानान्तर दर्शन’क मौलिकताक स्वतंत्र परीक्षण

४.१ बहुप्रमाणीय विवेकवाद

ई सिद्धान्त भारतीय प्रमाणमीमांसा सँ प्रेरित होइतहुँ ओकर सीधा विस्तार नहि। न्यायमे प्रमाण ज्ञान-उत्पादक साधन अछि; आधुनिक विज्ञानमे उपकरण, आँकड़ा, पुनरुत्पादन, सांख्यिकीय अनुमान आ सहकर्मी समीक्षा जटिल संस्थागत प्रक्रियासभ छथि; इतिहासमे अभिलेख, मौखिक स्मृति, भौतिक अवशेष आ पाठ-समीक्षा अलग प्रकारक साक्ष्य छथि। समानान्तर दर्शनक मौलिकता एहि विभिन्न ज्ञान-क्षेत्रक ‘क्षेत्रानुकूल प्रमाण’ मानबाक आग्रहमे अछि। सिद्धान्तकेँ परिपक्व करबाक लेल चारि स्तर अलग कएल जाए: ज्ञान-स्रोत, साक्ष्य, औचित्य-पद्धति आ सार्वजनिक सत्य-परीक्षण। तखन ‘बहुप्रमाणीयता’ अराजक प्रमाण-बहुलता नहि, संरचित विवेकवाद बनत।

४.२ सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद

एहि प्रतिपादनमे वस्तुगत वास्तविकता आ सम्बन्धात्मक अनुभव दुनूकेँ वास्तविक मानल गेल अछि। ई कठोर व्यक्तिवाद, मानसिक आदर्शवाद आ सामूहिकतावादी विलयनक बीच तेसर मार्गक संकेत दैत अछि। मुदा शब्द ‘सहअस्तित्वात्मक’ नैतिक सहिष्णुता, सामाजिक सम्बन्ध आ तत्त्वमीमांसात्मक सह-वास्तविकता तीनू अर्थ वहन करैत अछि। सिद्धान्तक अगिला विकासमे ई स्पष्ट होयबाक चाही जे कोन प्रकारक सत्ता—व्यक्ति, संस्था, सम्बन्ध, भाषा, स्मृति, पारिस्थितिकी—ककर आधारपर वास्तविक कहल जाएत।

४.३ गरिमा-आधारित नैतिकता

गरिमा पोथीक सर्वाधिक स्थिर नैतिक कसौटी अछि। कान्टक व्यक्ति-साध्य सिद्धान्त, आम्बेडकरक स्वतंत्रता–समानता–बन्धुत्व, सेन–नुसबाउमक क्षमता-विमर्श, तथा बौद्ध–जैन पीड़ा-अहिंसा संवेदना संग एकर संवाद सम्भव अछि। मुदा गरिमाक अर्थ यदि अत्यधिक व्यापक रहत तँ प्रत्येक नैतिक पक्ष अपन दाबी ‘गरिमा’ नामे करि सकैत अछि। अतः न्यूनतम गरिमा—देहिक सुरक्षा, अपमान-मुक्त स्थिति, समान नागरिक दर्जा, बुनियादी क्षमता, विवेक-स्वतंत्रता—जकाँ स्तर स्पष्ट कएल जाए।

४.४ बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र

सत्ता जतेक आवश्यक ओतेक, जतय आवश्यक ओतय—ई सूत्र लोकतन्त्रकेँ केवल केन्द्र वा मतपेटीसँ मुक्त करैत अछि। संघवाद, स्थानीय शासन, ज्ञान-विकेन्द्रण, आर्थिक शक्ति आ डेटा-निगरानी सभ एहि सिद्धान्तक क्षेत्र बनैत अछि। Elinor Ostromक बहुकेन्द्रिक शासन एहि प्रतिपादनक महत्त्वपूर्ण तुलनात्मक सन्दर्भ अछि। समानान्तर दर्शनक विशिष्टता ई होयत जे ओ बहुकेन्द्रिकताकेँ केवल प्रशासनिक दक्षता नहि, गरिमा, प्रतिपक्ष, भाषिक-क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व आ ज्ञानात्मक विविधतासँ जोड़ैत अछि।

४.५ धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता

आस्था, आस्था-परिवर्तन आ अनास्थाक समान स्वतंत्रता; सार्वजनिक बाध्यताक लेल साझा कारण; आ समान नागरिकता—ई तीन तत्व सिद्धान्तकेँ केवल ‘सहिष्णुता’सँ आगे लैत अछि। रॉल्सक सार्वजनिक कारण संग साम्य स्पष्ट अछि, मुदा पोथीक सिद्धान्त धार्मिक समुदायक सामाजिक जीवनक वैधता अधिक स्पष्टतासँ मानैत अछि। कठिन प्रश्न तब उठैत अछि जखन सामुदायिक परम्परा सदस्यक व्यक्तिगत गरिमा, लिंग-समानता वा विवेक-स्वतंत्रतासँ टकराइत अछि। एतय निर्णय-क्रम आवश्यक अछि।

४.६ समानान्तर इतिहास-दृष्टि

एहि सिद्धान्तक सबसे मजबूत सूत्र अछि: केन्द्र पढ़ू, हाशिया पढ़ू, मौन पढ़ू—मुदा सभ पर समान प्रमाण-कसौटी लागू करू। एहि कारण समानान्तर इतिहास रोमानी प्रतिइतिहास नहि रहैत। Paul Ricoeurक स्मृति–इतिहास–विस्मरण, उपनिवेशोत्तर अभिलेख-आलोचना आ क्षेत्रीय इतिहासक नव शोधसँ संवाद एकरा समृद्ध कऽ सकैत अछि। मिथिला सम्बन्धी कृति अपनहि ठाम एहि सिद्धान्तक परीक्षा अछि: विदेह, पञ्जी, शास्त्र-परम्परा, लोकस्मृति आ आधुनिक अस्मिता बीच कालभेद स्पष्ट रहबाक चाही।

४.७ आत्मसमीक्षा: नियामक सिद्धान्त

छह मूल सिद्धान्तक ऊपर आत्मसमीक्षा कैं सातम नियामक बनाओल गेल अछि। एहि बिना बहुप्रमाणीयता ‘सभ प्रमाण बराबर’, बहुकेन्द्रिकता ‘सभ स्थानीय सत्ता उचित’, गरिमा ‘भावनात्मक नारा’, आ इतिहास-दृष्टि ‘वैकल्पिक कथा’ बनि सकैत अछि। आत्मसमीक्षा एहि सम्भावित विघटनक विरुद्ध

आन्तरिक सुरक्षा अछि। दार्शनिक रूपसँ ई कृतिमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण आत्म-सीमा-स्वीकार अछि। अगिला संस्करणमे प्रत्येक सिद्धान्त लेल 'कोन प्रकारक आपत्ति हमरा मत बदलय बाध्य करत?' एहन परीक्षण-शर्त स्पष्ट कएल जाए।

७. साहित्यिक उपलब्धि

पहिल उपलब्धि मैथिली गद्यक दार्शनिक क्षमता प्रदर्शित करब अछि। पोथी देखबैत अछि जे सत्य, प्रमाण, तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, सार्वजनिक औचित्य, डिजिटल ज्ञान, कृत्रिम बुद्धि, पर्यावरणीय न्याय वा बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र सन विषय मैथिलीमे केवल अनुवादित नहि, वैचारिक रूपसँ विकसित कएल जा सकैत अछि।

दोसर उपलब्धि सूत्रात्मक गद्य अछि। 'सत्यक दाबी हो तँ प्रमाण पूछू', 'जन्म नैतिक योग्यता नहि', 'तकनीकी क्षमता नैतिक अनुमति नहि', 'दृष्टि बहु, कसौटी साझा' सन वाक्य पोथीक बौद्धिक स्मृति बनैत अछि। साहित्यिक रूपसँ ई सूक्ति-परम्परा आ आधुनिक दार्शनिक घोषणाक संयोग अछि।

तेसर उपलब्धि संवाद-रचना अछि। पूर्वपक्ष–उत्तरपक्षक पुनरावृत्ति भारतीय शास्त्रार्थ-परम्पराक आधुनिक पुनरुपयोग अछि। ई पाठककेँ निष्कर्ष स्वीकारबाक बदला प्रतिपक्ष सुनबाक आदत दैत अछि। मुदा प्रभाव बनल रहय लेल किछु अध्यायमे पूर्वपक्ष वास्तविक ऐतिहासिक विचारकक सर्वाधिक सबल रूपमे अधिक विस्तृत होयबाक चाही।

चारिम उपलब्धि क्षेत्रीयता आ विश्व-दृष्टिक संतुलन अछि। मिथिला पोथीक केन्द्र अछि, पर 'विश्वक एकमात्र केन्द्र' नहि। एहि संयम कारण क्षेत्रीय साहित्यिक अस्मिता दार्शनिक आत्ममुग्धतामे नहि बदलैत।

८. पूरक संरचनात्मक, शैलीगत आ तुलनात्मक मूल्यांकन

समग्र मूल्यांकन

संरचनात्मक आ शैलीगत विश्लेषण

"समानान्तर दर्शन" संरचनाक दृष्टिसँ अत्यन्त अनुशासित ग्रन्थ अछि। बहत्तर अध्यायमे प्रत्येकक अन्तमे "अध्याय-निष्कर्ष" आ "अध्याय-ग्रन्थसूची" देब—ई एकटा स्पष्ट पाठ्यपुस्तकीय/विश्वकोशीय रूप-विधान अछि, जे पाठककेँ प्रत्येक अध्यायक सार शीघ्र ग्रहण करय देत अछि आ आगू शोधक

दिशा सेहो देखबैत अछि। ई रूप-विधान शोध-ग्रन्थ आ लोकप्रिय दार्शनिक निबन्ध—दुनूक बीचक एकटा मध्यम मार्ग अछि, जे व्यापक पाठक-वर्गक लेल उपयोगी भऽ सकैत अछि।

भाषिक शैलीक दृष्टिसँ ग्रन्थ शुद्ध, संस्कृतनिष्ठ मैथिलीमे लिखल अछि, जे दार्शनिक प्राविधिक शब्दावली (प्रमाण, अनुमान, व्याप्ति, समवाय, अद्वैत आदि) कें मैथिलीमे सहजतासँ व्यक्त करैत अछि—ई स्वयं एकटा उल्लेखनीय भाषिक उपलब्धि अछि, कारण मैथिलीमे उच्चस्तरीय दार्शनिक विमर्शक लेल पर्याप्त आधुनिक शब्दावली-भण्डार विकसित करब सम्पादकीय/साहित्यिक दृष्टिसँ स्वयं एकटा योगदान अछि। “पारिभाषिक शब्दावली” खण्ड (ग्रन्थक अन्तमे) एहि प्रयासक प्रमाण अछि।

सूत्र-वाक्य-निर्माणक कला (जेना “सत्य बहुदृष्टिगत भऽ सकैत अछि, मुदा मनमाना नहि”; “जन्म नैतिक योग्यता नहि”; “तकनीकी क्षमता नैतिक अनुमति नहि”) ग्रन्थक सबसँ बेसी साहित्यिक रूपसँ प्रभावी शैलीगत उपकरण अछि। ई सूत्रसभ संस्कृत सूत्र-साहित्यक (जेना पाणिनि, बादरायण) संक्षिप्त-सान्द्र शैलीक स्मरण दियबैत छथि, आ ई ग्रन्थक “आधुनिक भारतीय सूत्र-ग्रन्थ” बनबाक महत्त्वाकांक्षाकेँ प्रकट करैत अछि।

चतुर्आयामी पद्धतिक प्रयोग

ग्रन्थमे उल्लिखित चारि विश्लेषणात्मक आयाम—भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, नव्य-न्यायीय ज्ञानमीमांसा, आ विदेह समानान्तर इतिहास-ढाँचा—मध्ये नव्य-न्यायीय आयाम सबसँ बेसी सुसंगत आ सुव्यक्त रूपसँ सम्पूर्ण ग्रन्थमे प्रवाहित होइत अछि (विशेषतः अध्याय २, ९, २०-२३, ३५, ६५ मे)। विदेह समानान्तर इतिहास-ढाँचा तृतीय, षष्ठ आ अष्टम खण्डमे प्रबल अछि। रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्रक प्रत्यक्ष प्रयोग एहि दार्शनिक ग्रन्थमे अपेक्षाकृत कम स्पष्ट अछि—ई स्वाभाविक अछि, कारण ई मूलतः दर्शन-ग्रन्थ अछि, साहित्य-समीक्षा-ग्रन्थ नहि; तथापि ग्रन्थक सूत्र-वाक्य-शैली आ कथा-संरचना (गार्गी-मैत्रेयीक संवादात्मक पाठ, अध्याय १८) मे एहि सौन्दर्यशास्त्रीय संवेदनशीलताक अप्रत्यक्ष प्रभाव अनुभव कएल जा सकैत अछि।

तुलनात्मक स्थान

व्यापकता आ महत्त्वाकांक्षाक दृष्टिसँ “समानान्तर दर्शन” कें सुरेन्द्रनाथ दासगुप्तक बहुखण्डीय A History of Indian Philosophy, सर्वपल्ली राधाकृष्णनक Indian Philosophy, आ डेविड कार्ल पॉटर-सम्पादित Encyclopedia of Indian Philosophies जेहन सर्वेक्षणात्मक परियोजनासभक परम्परामे राखल जा सकैत अछि—मुदा एकटा महत्त्वपूर्ण भेदसँ। उपर्युक्त सभटा ग्रन्थ मूलतः भारतीय दर्शन धरि सीमित अछि, जखन कि “समानान्तर दर्शन” भारतीय, पाश्चात्य, सामाजिक-राजनीतिक, धार्मिक आ समकालीन—पाँचो क्षेत्रकेँ एकहि पद्धतिगत ढाँचामे समेटैत अछि। एहि दृष्टिसँ ई विल डुरांटक The Story of Philosophy जेहन लोकप्रिय सर्वांगीण सर्वेक्षणसँ सेहो तुलनीय अछि, यद्यपि “समानान्तर दर्शन” अपन केन्द्र-हाशिया आलोचनात्मक पद्धति आ मिथिला-केन्द्रितताक कारण डुरांटक कार्यसँ पद्धतिगत रूपसँ बेसी आलोचनात्मक अछि।

बिमल कृष्ण मतिलालक नव्य-न्याय आ पाश्चात्य विश्लेषणात्मक दर्शनक बीचक तुलनात्मक कार्य (Logic, Language and Reality आदि) एहि ग्रन्थक अध्याय २२-२३ आ ३५ क लेल सबसँ प्रत्यक्ष विद्वत्तापूर्ण पूर्ववर्ती अछि, यद्यपि “समानान्तर दर्शन” मतिलालक कार्यसँ बेसी विस्तृत सामाजिक-राजनीतिक आ धार्मिक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि, जे मतिलालक तार्किक-दार्शनिक विश्लेषणक सीमासँ बाहर अछि।

९. मुख्य आलोचनात्मक सीमा आ सुधारक ठोस दिशा

दाबी-स्तरीय सन्दर्भ

अध्याय-अन्त ग्रन्थसूची पर्याप्त आधार दैत अछि, मुदा ऐतिहासिक तिथि, मूल पाठक अनुवाद, दार्शनिक मतक विशिष्ट वाक्य, आधुनिक सामाजिक तथ्य आ वैज्ञानिक उदाहरण लेल सूत्र/पृष्ठ/संस्करण संकेत जोड़ल जाए।

उपधारा-संख्या

अध्याय ३८–७० मे क्रमभङ्गक सम्पादकीय समस्या सुधारी 1, 2, 3... निरन्तर क्रम कएल जाए।

इतिहास आ परम्परा

विदेह–मिथिला–नव्य-न्याय, लोकायत, वाचस्पति, उदयन आ अन्य ऐतिहासिक दाबीमे परम्परागत स्मृति, सम्भावना आ आधुनिक शोध-सहमति अलग-अलग भाषा-सूचकसँ लिखल जाए।

मौलिक सिद्धान्तक औपचारिकता

अन्तिम छह सिद्धान्तक परिभाषा, आवश्यक शर्त, पर्याप्त शर्त, प्रतिपक्ष, परस्पर टकराव आ संशोधन-शर्त अलग उपखण्डमे विकसित कएल जाए।

अनुभवजन्य आधार

जाति, वर्ग, भाषा, डिजिटल माध्यम, कृत्रिम बुद्धि, पर्यावरण आ मिथिलाक नदी-बाढ़क अध्यायमे आधुनिक शोध, आँकड़ा, क्षेत्र-अध्ययन वा संस्थागत उदाहरण जोड़ल जाए।

तुलनात्मक दर्शन

भारतीय–पाश्चात्य समानता घोषित करबाक बदला समस्या-संरचना, तर्क-रूप, ऐतिहासिक प्रसंग आ निष्कर्षक चारि स्तरपर तुलना कएल जाए—पोथी अनेक ठाम ई करैत अछि; एकरा सर्वत्र समान रूपे लागू कएल जाए।

ग्रन्थसूची शैली

लेखक, शीर्षक, सम्पादक/अनुवादक, प्रकाशन-स्थान, प्रकाशक, वर्ष आ संस्करणक एक समान शैली अपनाओल जाए। विश्वकोशीय ऑनलाइन स्रोतकेँ पुस्तक/मूल ग्रन्थसँ अलग सूचीमे राखल जाए।

द्विभाषिक संरचना

मैथिली मूल आ अंग्रेजी रूपान्तर यदि एकहि खण्डमे रहय तँ स्पष्ट विभाजक शीर्षक, स्वतंत्र अनुक्रम आ अलग पृष्ठ-श्रृंखला उपयोगी; अन्यथा दू स्वतंत्र संस्करण अधिक सुगम।

शैलीगत पुनरावृत्ति

‘समानान्तर दर्शनक संवाद’, ‘पूर्वपक्ष’, ‘उत्तरपक्ष’, ‘अध्याय-निष्कर्ष’ संरचना उपयोगी अछि, मुदा प्रत्येक अध्यायमे एकहि लय कम कऽ कखनो निकट-पठन, कखनो केस-अध्ययन, कखनो तुलनात्मक तालिका, कखनो दार्शनिक संवाद सन विविध रूप अपनाओल जाए।

१०. पूरक आलोचनात्मक सीमासभ

सीमा आ आलोचनात्मक टिप्पणी

निष्पक्ष समीक्षाक दायित्व अछि जे ग्रन्थक सीमासभ सेहो चिन्हित कएल जाय:

१. व्यापकताक जोखिम। बहत्तर अध्याय, आठ खण्ड, आ प्राय: सम्पूर्ण मानव दार्शनिक इतिहासकेँ एकटा एकल-लेखकीय ग्रन्थमे समेटब अनिवार्यत: कतोक स्थानपर संक्षिप्तीकरणक जोखिम राखैत अछि (जेना अध्याय १२ मे वेदान्तक आन्तरिक उपधाराक भेद, अथवा अध्याय २८ मे देकार्त-स्पिनोजा-लाइबनित्सक विशिष्ट तात्त्विक भेद)। ई विश्वकोशीय परियोजनाक स्वाभाविक सीमा अछि, दोष नहि, मुदा पाठकक लेल विशिष्ट क्षेत्रीय गहन अध्ययनक हेतु अतिरिक्त स्रोत आवश्यक होयत।

२. स्रोत-सत्यापनक बाह्य आवश्यकता। ग्रन्थ स्वयं “शून्य-भ्रमजाल” नीतिक दावा करैत अछि, जे प्रशंसनीय अछि; तथापि एहि समीक्षाक दायरामे प्रत्येक अध्यायक सम्पूर्ण मूल पाठ आ ग्रन्थसूचीक स्वतंत्र सत्यापन सम्भव नहि भऽ सकल, केवल अध्याय-निष्कर्षक आधारपर मूल्यांकन कएल गेल अछि। गम्भीर शैक्षणिक उपयोगक लेल प्रत्येक अध्यायक विशिष्ट उद्धरण आ ग्रन्थसूचीक स्वतंत्र समीक्षकीय (peer) सत्यापन आवश्यक होयत।

३. अष्टम खण्डक स्वतंत्र दार्शनिक दावा। जेना ऊपर उल्लेख कएल गेल, सर्वेक्षणसँ स्वतंत्र प्रणालीमे संक्रमण (विशेषत: अध्याय ६६ क “सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद”) दार्शनिक रूपसँ महत्त्वाकांक्षी दावा अछि, जकरा पूर्ण न्याय संक्षिप्त निष्कर्ष-वाक्यसभमे नहि भऽ सकैत; एकर पूर्ण दार्शनिक परीक्षण (विशेषत: सम्भाव्य आन्तरिक असंगति आ प्रतिपक्षक जाँच) मुख्य पाठक विस्तृत अध्ययनसँ मात्र सम्भव अछि।

४. अनुवाद आ अन्तरसांस्कृतिक तुलनाक विधिगत जोखिम। ह्यूम-व्याप्ति तुलना (अध्याय २९), कान्ट-गरिमा तुलना (अध्याय ३०, ६७), वा नव्य-न्याय-विश्लेषणात्मक दर्शन तुलना (अध्याय ३५) जेहन अन्तरसांस्कृतिक तुलना सभ पद्धतिगत रूपसँ सावधान अछि (जे प्रशंसनीय अछि), परञ्च एहन तुलनासभमे सदिखन “समस्या-संरचनात्मक सादृश्य” आ “ऐतिहासिक

तादात्म्य” क बीचक रेखा स्पष्ट रखब एकटा निरन्तर चुनौती रहैत अछि, जकर पूर्ण मूल्यांकन विस्तृत मूल-पाठ पठनसँ सम्भव होयत।

११. समग्र दार्शनिक निर्णय

‘गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन’क महत्त्व एहि बातमे नहि जे ई प्रत्येक दार्शनिक परम्पराक अंतिम इतिहास प्रस्तुत करैत अछि। कृतिमे अनेक विशाल परम्परा अनिवार्यत: संक्षिप्त अछि, आ किछु आधुनिक विषयकेँ अधिक अनुभवजन्य आधार चाही। एकर वास्तविक योगदान पद्धतिक संयोजनमे अछि: न्यायीय प्रमाण-संवेदनशीलता, नव्य-न्यायीय भाषा-सूक्ष्मता, बहुवचन भारतीय दर्शन, विश्व-दर्शनक तुलनात्मक संवाद, सामाजिक गरिमा, बहुकेन्द्रिक सत्ता-समीक्षा, धर्मक विवेक-स्वतंत्रता, इतिहासक स्रोत-समानता आ आत्मसमीक्षा।

यदि एहि पोथीक अन्तिम छह सिद्धान्त आ आत्मसमीक्षा केँ स्पष्ट परिभाषा, अधिक कठोर प्रतिपक्ष, समकालीन शोध, दाबी-स्तरीय सन्दर्भ, आ केस-अध्ययनसँ विकसित कएल जाए तँ ‘समानान्तर दर्शन’ केवल एक लेखकक समेकित दृष्टि नहि रहत; ई मैथिली भाषामे विकसित एक स्वतंत्र दार्शनिक शोध-कार्यक्रम बनि सकैत अछि।

साहित्यिक रूपसँ पोथीक सबसे पैघ सफलता ई अछि जे मैथिलीकेँ ‘घरेलू’ वा केवल भाव-संवेदना-प्रधान भाषा मानबाक पूर्वग्रह तोड़ैत अछि। एतय मैथिली तत्त्वमीमांसा करैत अछि, प्रमाण पर बहस करैत अछि, राज्यक वैधता पूछैत अछि, धर्मक सार्वजनिक सीमा तय करैत अछि, कृत्रिम बुद्धि पर नैतिक कसौटी लगबैत अछि, आ इतिहासक स्रोत-विवेचन करैत अछि। एहि भाषिक साहसक मूल्य स्वयं दार्शनिक अछि।

अन्तिम निर्णय: ई पोथी महत्त्वाकांक्षी, बहुपरम्परागत, पद्धति-सचेत आ मौलिक प्रणाली-निर्माण दिस अग्रसर कृति अछि। एकर सर्वोत्तम गुण आत्ममुग्ध क्षेत्रीयता वा पश्चिम-विरोध नहि, बल्कि प्रमाणक समान कसौटी आ आत्मसमीक्षा अछि। एकर भावी शक्ति एहि बातपर निर्भर रहत जे लेखक अपन सूत्रसभकेँ कतेक कठोरतासँ स्वयं ओहि कसौटीपर जाँचैत छथि, जे ओ दोसर दर्शन, परम्परा, राज्य, धर्म आ इतिहास पर लागू करैत छथि।

१२. पूरक समग्र निष्कर्ष

समग्र निष्कर्ष

अपन सीमासभक बावजूद, “समानान्तर दर्शन” मैथिली साहित्य आ भारतीय दार्शनिक लेखनक इतिहासमे एकटा असाधारण महत्त्वाकांक्षी परियोजना अछि। ई ग्रन्थ तीन दृष्टिसँ विशेष महत्त्वपूर्ण अछि—पहिल, ई मैथिलीकेँ उच्चस्तरीय अन्तरराष्ट्रीय दार्शनिक विमर्शक भाषा बनयबाक प्रयास करैत अछि, जे भाषिक न्यायक दृष्टिसँ स्वयं एकटा दार्शनिक-राजनीतिक कार्य अछि (देखू अध्याय ४६, ६०)। दोसर, ई मिथिलाक न्याय-वैशेषिक बौद्धिक परम्पराकेँ वैश्विक दार्शनिक संवादमे केन्द्रीय स्थान दियबाक एकटा ठोस विद्वत्तापूर्ण प्रयास अछि, जे लेखकक गङ्गेश उपाध्याय-सम्बन्धी दशकों-पुरान अनुवाद-कार्यसँ प्रामाणिकता पबैत अछि। तेसर, ई गरिमा-आधारित नैतिकता, बहुप्रमाणीय विवेकवाद आ समानान्तर इतिहास-दृष्टि जेहन मौलिक सूत्रीकरणसभक माध्यमसँ एकटा स्वतंत्र समकालीन दार्शनिक प्रणाली प्रस्तावित करबाक साहस देखबैत अछि—एहन साहस बहुत कम क्षेत्रीय भाषा-लेखकसभमे भेटैत अछि।

समीक्षकक अन्तिम निर्णय ई अछि जे ई ग्रन्थ मैथिली दार्शनिक-साहित्यिक परम्पराक लेल एकटा सन्दर्भ-बिन्दु अछि, जकर पूर्ण मूल्यांकन आगामी वर्षसभमे विद्वत्-समुदायक विस्तृत, अध्याय-दर-अध्याय आलोचनात्मक संलग्नतासँ मात्र सम्भव होयत। एकर सबसँ बड़ योगदान सम्भवतः एकल निष्कर्षमे नहि, बल्कि ओहि पद्धतिमे अछि जकर ई पूरा ग्रन्थमे बेर-बेर उदाहरण दैत अछि—प्रमाण पूछू, सीमा पहचानू, प्रतिपक्ष सुनू, गरिमा बचाउ, आ अपन निष्कर्ष संशोधन लेल खुला राखू।

१३. समेकित बिबलियोग्राफी / ग्रन्थसूची

तीनू आलेखमे उल्लिखित मूल ग्रन्थ, अध्ययन-ग्रन्थ आ आधुनिक शोध-साहित्यकेँ दोहराव हटाकऽ नीचाँ विषयानुसार व्यवस्थित कएल गेल अछि। जहाँ एकहि कृतिक संक्षिप्त आ विस्तृत प्रविष्टि दुनू छल, ओतय अधिक पूर्ण प्रविष्टि राखल गेल अछि।

समीक्ष्य कृति आ लेखकक सम्बद्ध कार्य

ठाकुर, गजेन्द्र। समानान्तर दर्शन। नई दिल्ली, २०२६; ७२ अध्याय, आठ खण्ड।

ठाकुर, गजेन्द्र (अनुवादक)। तत्त्वचिन्तामणि (गङ्गेश उपाध्याय)—मैथिली अनुवाद।

ठाकुर, गजेन्द्र (अनुवादक)। न्यायकुसुमाञ्जलि—मैथिली अनुवाद।

ठाकुर, गजेन्द्र (अनुवादक)। आत्मतत्त्वविवेक—मैथिली अनुवाद।

ठाकुर, गजेन्द्र (अनुवादक)। भामती—मैथिली अनुवाद।

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, ISSN 2229-547X; सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

भारतीय मूल ग्रन्थ

ऋग्वेद।

वृहदारण्यक उपनिषद (शांकरभाष्य सहित), गीताप्रेस, गोरखपुर संस्करण; विशेषत: २.४, ४.५, ३.६ आ ३.८।

छान्दोग्य उपनिषद (शांकरभाष्य सहित), गीताप्रेस, गोरखपुर संस्करण।

ईश्वरकृष्ण — सांख्यकारिका।

पतञ्जलि — योगसूत्र।

गौतम — न्यायसूत्र।

वात्स्यायन — न्यायसूत्र-भाष्य; सम्पादक: पं. केदारनाथ ओझा, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

उद्योतकर — न्यायवार्त्तिक।

कणाद — वैशेषिकसूत्र।

जैमिनि — मीमांसासूत्र।

शबरस्वामी — शबरभाष्य।

कुमारिल भट्ट — श्लोकवार्त्तिक।

बादरायण — ब्रह्मसूत्र।

शंकराचार्य — ब्रह्मसूत्रभाष्य।

रामानुज — श्रीभाष्य।

नागार्जुन — मूलमध्यमककारिका।

उमास्वाति/उमास्वामी — तत्त्वार्थसूत्र।

दिङ्नाग — प्रमाणसमुच्चय।

धर्मकीर्ति — प्रमाणवार्त्तिकम् (स्वोपज्ञवृत्ति एवं मनोरथनन्दिवृत्ति सहित), बौद्धाकर ग्रन्थमाला, वाराणसी।

उदयनाचार्य — न्यायकुसुमाञ्जलि।

उदयनाचार्य — आत्मतत्त्वविवेक।

वाचस्पति मिश्र — न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका।

वाचस्पति मिश्र — सांख्यतत्त्वकौमुदी।

वाचस्पति मिश्र — तत्त्ववैशारदी।

वाचस्पति मिश्र — भामती (ब्रह्मसूत्र-शांकरभाष्य-टीका), चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

वाचस्पति मिश्र — तत्त्वबिन्दु।

गङ्गेश उपाध्याय — तत्त्वचिन्तामणि; अनुमानखण्ड: व्याप्तिपञ्चक एवं सिंहव्याघ्रलक्षण, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।

रघुनाथ शिरोमणि — पदार्थतत्त्वनिरूपण तथा नव्य-न्याय सम्बन्धी चयनित ग्रन्थ।

पाश्चात्य आ आधुनिक मूल ग्रन्थ

Plato — Republic.

Aristotle — Metaphysics; Nicomachean Ethics; Politics.

René Descartes — Meditations on First Philosophy.

Baruch Spinoza — Ethics.

G. W. Leibniz — Monadology; Discourse on Metaphysics.

Locke, John (1689). An Essay Concerning Human Understanding. Ed. P. H. Nidditch. Oxford: Clarendon Press, 1975; Book II, Chapters 8 and 27.

Berkeley, George (1710). A Treatise Concerning the Principles of Human Knowledge. Ed. Jonathan Dancy. Oxford University Press, 1998.

Hume, David (1739–40). A Treatise of Human Nature. Ed. L. A. Selby-Bigge; rev. P. H. Nidditch. Oxford: Clarendon Press, 1978.

Hume, David (1748). An Enquiry Concerning Human Understanding. Ed. Tom L. Beauchamp. Oxford University Press, 2000.

Hume, David — Dialogues Concerning Natural Religion.

Immanuel Kant — Critique of Pure Reason; Groundwork of the Metaphysics of Morals.

G. W. F. Hegel — Phenomenology of Spirit.

Karl Marx — Capital; Economic and Philosophic Manuscripts of 1844.

Søren Kierkegaard — Fear and Trembling; The Sickness Unto Death.

Friedrich Nietzsche — On the Genealogy of Morality.

Edmund Husserl — Ideas.

Martin Heidegger — Being and Time.

Jean-Paul Sartre — Being and Nothingness.

Ludwig Wittgenstein — Tractatus Logico-Philosophicus; Philosophical Investigations.

Charles S. Peirce — Selected philosophical writings.

William James — Pragmatism.

John Dewey — Experience and Nature; Logic: The Theory of Inquiry.

Karl Popper — The Logic of Scientific Discovery.

Thomas S. Kuhn — The Structure of Scientific Revolutions. University of Chicago Press, 1962.

John Rawls — A Theory of Justice; Political Liberalism.

M. K. Gandhi — Hind Swaraj; Satyagraha in South Africa; Constructive Programme: Its Meaning and Place; An Autobiography: The Story of My Experiments with Truth.

B. R. Ambedkar — Annihilation of Caste; States and Minorities; The Buddha and His Dhamma; Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches.

भारतीय दर्शन, तुलनात्मक दर्शन आ आधुनिक अध्ययन

Surendranath Dasgupta — A History of Indian Philosophy (5 vols.). Cambridge University Press.

M. Hiriyanna — Outlines of Indian Philosophy.

S. Radhakrishnan — Indian Philosophy (2 vols.). Oxford University Press.

Karl H. Potter (ed.) — Encyclopedia of Indian Philosophies. Motilal Banarsidass / Princeton University Press.

Dinesh Chandra Bhattacharya — History of Navya-Nyāya in Mithilā. Mithila Institute, Darbhanga, 1958.

Bimal Krishna Matilal — Logic, Language and Reality: An Introduction to Indian Philosophical Studies. Motilal Banarsidass, 1985.

Bimal Krishna Matilal — Perception: An Essay on Classical Indian Theories of Knowledge. Oxford: Clarendon Press, 1986.

Bimal Krishna Matilal — The Character of Logic in India. SUNY Press, 1998.

Jitendra Nath Mohanty — Reason and Tradition in Indian Thought: An Essay on the Nature of Indian Philosophical Thinking. Oxford: Clarendon Press, 1992.

Jonardon Ganeri — Philosophy in Classical India: The Proper Work of Reason. Routledge, 2001.

Jonardon Ganeri — The Lost Age of Reason: Philosophy in Early Modern India 1450–1700. Oxford University Press, 2011.

Stephen H. Phillips — Epistemology in Classical India: The Knowledge Sources of the Nyāya School. Routledge, 2012.

Will Durant — The Story of Philosophy. Simon & Schuster.

राजनीतिक, सामाजिक, स्मृति आ ज्ञानमीमांसीय अध्ययन

Miranda Fricker — Epistemic Injustice: Power and the Ethics of Knowing. Oxford University Press, 2007.

Amartya Sen — The Idea of Justice. Harvard University Press, 2009.

Amartya Sen — “Justice: Means versus Freedoms.” Philosophy & Public Affairs, 1990.

Martha C. Nussbaum — Creating Capabilities: The Human Development Approach. Belknap Press of Harvard University Press, 2011.

Paul Ricoeur — Memory, History, Forgetting. University of Chicago Press, 2004.

Elinor Ostrom — Governing the Commons: The Evolution of Institutions for Collective Action. Cambridge University Press, 1990.

Elinor Ostrom — “Beyond Markets and States: Polycentric Governance of Complex Economic Systems.” Nobel Prize Lecture, 2009.

Christophe Jaffrelot — Dr. Ambedkar and Untouchability: Fighting the Indian Caste System. Columbia University Press, 2005.

Anupama Rao — The Caste Question: Dalits and the Politics of Modern India. University of California Press, 2009.

Madhav Khosla — India’s Founding Moment: The Constitution of a Most Surprising Democracy. Harvard University Press, 2020.

Michel Foucault — Discipline and Punish; The Archaeology of Knowledge.

Charles Taylor — Multiculturalism and related writings on recognition and modern identity.

Iris Marion Young — Justice and the Politics of Difference.

डिजिटल दर्शन, सूचना आ समकालीन तकनीकी अध्ययन

Luciano Floridi — The Philosophy of Information. Oxford University Press, 2011.

Herbert A. Simon — “Designing Organizations for an Information-Rich World.” In Martin Greenberger (ed.), Computers, Communications, and the Public Interest. Johns Hopkins Press, 1971, pp. 37–72.

C. Thi Nguyen — “Echo Chambers and Epistemic Bubbles.” Episteme 17(2), 2020, pp. 141–161.

Shoshana Zuboff — The Age of Surveillance Capitalism: The Fight for a Human Future at the New Frontier of Power. PublicAffairs, 2019.

विश्वकोशीय आ संस्थागत सन्दर्भ-संसाधन

Stanford Encyclopedia of Philosophy — “Gaṅgeśa”; “Epistemology in Classical Indian Philosophy”; “Public Reason”; “Religion and Political Theory”; “Social Epistemology”; “Truth”; “Skepticism”.

Internet Encyclopedia of Philosophy — Nyāya तथा भारतीय दर्शन सम्बन्धी चयनित प्रविष्टि।

१४. अन्तिम टिप्पणी

समीक्ष्य कृतिमे ७२ अध्यायसभक विषयगत बहुलता बावजूद एक सूत्र निरन्तर चलैत अछि: प्रश्न करू, प्रमाण माँगू, प्रतिपक्षकेँ सबल रूपमे बुझू, सत्ता आ परम्परा दुनूक वैधता जाँचू, आ मनुष्यक गरिमाकेँ नहि बिसरू। साहित्यिक रूपसँ ई सूत्र पोथीक पहचान अछि; दार्शनिक रूपसँ एकर वास्तविक परीक्षा

तखन होयत जखन एहि सूत्रक आधारपर पोथी अपनहि दाबीकेँ संशोधित करबाक लेल तैयार रहत। एहि आत्मसमीक्षा कारण ‘समानान्तर दर्शन’ बन्द सिद्धान्तक बदला जीवित शोध-परम्परा बनबाक सम्भावना रखैत अछि।

रंग · संगम

नओटा मैथिली नाटक आ तकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर

विस्तृत साहित्यिक समीक्षा, पाठालोचन, भाषावैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य आ तुलनात्मक अध्ययन

आधार-पाठ : गजेन्द्र ठाकुर

संयुक्त संस्करण २०२६

सम्पूर्ण पाठ-परीक्षण · नाट्य-संरचना · रंगभाषा · वैचारिक सन्दर्भ · अंग्रेजी रूपान्तर

शुद्ध मैथिलीक पाठ-परम्परा, रूप-वाक्यविन्यास आ साहित्यिक संरचना : एकटा विस्तृत शोध-अध्ययन

१. भूमिका आ ऐतिहासिक विकास : प्राकृत आधारसँ संवैधानिक मान्यता धरि

मैथिली पूर्वी भारतीय आर्यभाषा-समूहक मागधी शाखासँ सम्बद्ध भाषा अछि। दक्षिण एशियाक भाषाविज्ञान आ पाठ-परम्पराक अध्ययनमे एकर संरचनात्मक आ ऐतिहासिक स्थान विशिष्ट अछि। भारतक उत्तरी बिहारक मिथिला क्षेत्र आ नेपालक दक्षिण-पूर्वी तराईक जिलासभमे ई मातृभाषाक रूपमे बाजल जाइत अछि। एकर ऐतिहासिक विकास एक सहस्राब्दीसँ बेसी समयमे पसरल अछि; मागधी प्राकृतसँ पूर्वी अपभ्रंश आ अवहट्टक माध्यमेँ एकर रूप विकसित भेल।

साहित्यिक मैथिलीक ऐतिहासिक विकासकेँ मुख्यतः पाँचटा चरणमे बुझल जा सकैत अछि :

आठमसँ बारहम शताब्दी धरिक आदिमैथिली आ सिद्ध-परम्पराक चरण, जाहिमे चर्यापदक रचनासभ सामने अएल।

चौदहम शताब्दीक आरम्भिक शास्त्रीय गद्यक चरण, जाहिमे साधु मैथिलीक लिखित रूपकेँ व्यवस्थित आधार भेटल।

चौदहमसँ अठारहम शताब्दी धरिक मध्यकालीन शास्त्रीय चरण, जाहिमे दरबारी गीतिकाव्य आ नेपालमे क्षेत्रातीत नाट्य-परम्पराक विकास भेल।

चौदहमसँ सत्रहम शताब्दी धरिक शास्त्रीय भाषा-विमर्शक चरण, जाहिमे नव्य-न्यायक तर्कपद्धति क्षेत्रक बौद्धिक संवादकेँ विशेष पारिभाषिक रूप देलक।

२००३ सँ आरम्भ आधुनिक संवैधानिक मान्यता आ अंकीय माध्यमसँ पुनर्जीवनक चरण।

आधुनिक इतिहासलेखनक समानान्तर आ वंचित समुदायकेँ केन्द्रमे रखनिहार साहित्यिक दृष्टिसभ मैथिलीक आरम्भिक लोकभाषिक काव्य-परम्पराकेँ लुइपा, सरहपा आ कन्हपासँ सम्बद्ध पचास चर्यापदमे खोजैत छथि। बौद्ध सिद्धसभक ई गूढ़ पद मैथिली, बांग्ला, असमिया आ ओड़िया जेहन आधुनिक पूर्वी भाषासभक पृथक् रूपमे विकसित होएबासँ पूर्वक ध्वनि-परिवर्तन, विभक्ति-चिह्न आ गेय छन्दक संकेत सुरक्षित रखैत अछि।

शास्त्रीय मैथिली गद्यक औपचारिक प्रतिष्ठा चौदहम शताब्दीक आरम्भमे ज्योतिरीश्वर ठाकुरक महान ग्रन्थ «वर्णरत्नाकर» (लगभग १३२४ ई.) सँ जुड़ल अछि, जकर रचना मिथिलाक कर्णाट शासनकालमे भेल। नव-भारतीय आर्य भाषासभक प्राचीन उपलब्ध गद्यग्रन्थमे गनल जाइत एहि कृतिक माध्यमेँ औपचारिक साधु मैथिलीक वाक्य-विन्यास, शब्द-सम्पदा आ विषय-प्रस्तुतिक अनेक परिपाटी स्थापित भेल।

ज्योतिरीश्वर दरबार, नगर, सौन्दर्यबोध आ वंचित जाति-समुदायक जीवनसँ जुड़ल व्यापक कोशात्मक सामग्रीकेँ सातटा विषयगत «कल्लोल» मे व्यवस्थित कएलनि। एहि रचनात्मक विन्याससँ बादक साहित्यिक पीढ़ीसभकेँ शैलीगत आदर्श भेटल।

एहि बादक ओइनवार आ खण्डवला (दरभंगा राज) कालमे विद्यापति ठाकुरक भक्ति आ लौकिक गीतसभक माध्यमेँ पूर्वी भारतमे मैथिली साहित्यक प्रतिष्ठा बढ़ल। एहि संगहि काठमांडू, भक्तपुर आ पाटनक मल्ल राजवंशक संरक्षणमे काठमांडू उपत्यकामे मैथिली रंग-साहित्यक प्रभाव क्षेत्रीय सीमासँ बाहर धरि पसरल।

भूपतीन्द्र मल्ल आ सिद्धिनरसिंह मल्ल जेहन शासक दरबारी नाटक, अनुष्ठानिक अभिनय आ धार्मिक गीतिकाव्य लेल मैथिलीकेँ प्रमुख भाषा बनौलनि। एहि परम्परामे

संस्कृत-मैथिलीक द्विभाषिक नाटकक पैघ भंडार बनल, जाहिमे कीर्तनिया नाटकक परम्परा संरक्षित रहल।

आधुनिक विधिक आ राजनीतिक इतिहासमे भारतीय संविधानक बानबेम संशोधन अधिनियम, २००३ द्वारा मैथिलीकेँ स्वतंत्र संवैधानिक मान्यता भेटल। एहि संशोधनकेँ राष्ट्रपति द्वारा स्वीकृति भेटल आ जनवरी २००४ मे प्रभावी भेल; मैथिली संविधानक अष्टम अनुसूचीमे सम्मिलित भेल।

ऐतिहासिक कालखण्ड	अनुमानित अवधि	प्रमुख ग्रन्थ आ रचनाकार	भाषिक-सामाजिक आ संरचनात्मक विशेषता
आदिमैथिली (सिद्ध-परम्परा)	आठम–बारहम शताब्दी ई.	५० चर्यापद (लुइपा, सरहपा, कन्हपा)	बौद्ध सिद्धसभक लोकभाषिक पद; पूर्वी अपभ्रंश-अवहट्टक संज्ञारूप आ गेय छन्दक आरम्भिक संकेत।
प्रारम्भिक शास्त्रीय गद्य	लगभग १३२४ ई.	ज्योतिरीश्वर ठाकुरक «वर्णरत्नाकर»	सात कल्लोलमे विन्यस्त; पूर्वी भारतीय आर्य गद्यक आरम्भिक शब्द-सम्पदा; दरबारी, सौन्दर्यपरक आ व्यवसायिक जीवनक सूची।
मध्यकालीन गीतिकाव्य आ क्षेत्रातीत नाटक	चौदहम – अठारहम शताब्दी	विद्यापति ठाकुर; नेपालक मल्ल नरेश (भूपतीन्द्र मल्ल, सिद्धिनरसिंह)	कीर्तनिया नाटकक परम्परा; अनुष्ठानिक पद; काठमांडू उपत्यकामे मैथिली दरबारी नाटकक उत्कर्ष।

ऐतिहासिक कालखण्ड	अनुमानित अवधि	प्रमुख ग्रन्थ आ रचनाकार	भाषिक-सामाजिक आ संरचनात्मक विशेषता
शास्त्रीय भाषा-विमर्श	चौदहम–सत्रहम शताब्दी	गङ्गेश उपाध्याय («तत्त्वचिन्तामणि»), पक्षधर मिश्र, शंकर मिश्र	नव्य-न्यायक तर्कपद्धति; तिरहुता पाण्डुलिपिमे अति-सूक्ष्म ज्ञानमीमांसक पारिभाषिक शब्दावली।
आधुनिक संवैधानिक आ अंकीय युग	२००३ सँ वर्तमान	बानबेम संवैधानिक संशोधन; विदेह ई-पत्रिका आ «रंग-संगम»	अष्टम अनुसूचीमे समावेश (२००३); तिरहुताक युनिकोड संकेतन (U+11480); समानान्तर साहित्य आ अंकीय अभिलेखन।

२. रूप-वाक्यविन्यासक सिद्धान्त आ क्रियाक अन्विति-व्यवस्था

बहुपुरुषीय आ बहु-कारक अन्विति

भारतीय आर्य भाषासभमे मैथिलीक क्रियात्मक अन्विति-व्यवस्था अत्यन्त जटिल आ समृद्ध मानल जाइत अछि। कतिपय भाषामे क्रिया केवल एकटा कारकसँ मेल करैत अछि; एकर विपरीत मैथिलीक रूपान्तरित क्रियापद एके संग तीन धरि अलग-अलग संवाद-संबद्ध व्यक्तिक संकेत देबामे समर्थ अछि। क्रियाक प्रत्यय केवल कर्तृकारक वा सम्प्रदानकारक विषयधरि सीमित नहि रहैत, अपितु कर्म, दोसर प्रमुख कारक, परोक्ष रूपसँ सम्बद्ध व्यक्ति आ संज्ञापदक भीतरक स्वामित्वसूचक पदसँ सेहो सम्बन्धित भऽ सकैत अछि।

रूपरचनाक दृष्टिसँ मैथिलीक रूपान्तरित सीमित क्रियापदमे प्रत्ययसभ निश्चित क्रममे जुड़ैत अछि :

$$\text{V-Stem} - (\text{Aspect}) - (\text{Auxiliary}) - \text{Tense} - \text{Agr}_1 - (\text{Agr}_2) - (\text{Ag}$$

एहि रूप-वाक्यविन्यासगत ढाँचामे पहिल अन्विति-प्रत्यय (अन्विति–१) सामान्यतः व्याकरणिक कर्ताक संकेत करैत अछि। दोसर (अन्विति–२) आ तेसर (अन्विति–३) प्रत्यय कर्म, विशेष रूपसँ महत्त्वपूर्ण आन्तरिक स्वामी अथवा वाक्यमे व्यक्त नहि भेल संवादक सम्बोधित व्यक्तिक संकेत एकसाथ संलयित रूपिमसभ द्वारा करि सकैत अछि।

एहि रूपरचनात्मक समृद्धिक कारणेँ वाक्यमे कर्ता वा कर्मकेँ स्पष्ट नाम अथवा सर्वनामसँ व्यक्त नहि कएलो पर अर्थ बुझल जा सकैत अछि; क्रियामे जुड़ल सर्वनामसूचक प्रत्यय व्यक्ति, स्थानिक सम्बन्ध आ आदरसूचकता सम्बन्धी आवश्यक सूचना दैत अछि।

आदरसूचकता, सामाजिक स्तर आ प्रसंगसूचक संकेत

मैथिलीमे क्रियाक अन्विति केकर अनुरूप होएत, ई सामाजिक सम्बन्ध, विनम्रता आ व्यक्तिसम्बन्धी सहानुभूतिक सूक्ष्म व्याकरणिक व्यवस्थासँ नियन्त्रित होइत अछि। सर्वनाम आ क्रियाक रूप दुनूमे आदरसूचकताक अनेक स्तर भेटैत अछि :

द्वितीय पुरुष : एतय आदरसूचकताक चारिटा स्तर भेटैत अछि—अनादरसूचक अथवा अनौपचारिक «तूँ/तु», मध्यम आदरसूचक «तौं», आदरसूचक «अहाँ» आ उच्च आदरसूचक «अपने»।

तृतीय पुरुष : एतय सामान्यतः दू अथवा तीन आदरसूचक स्तर भेटैत अछि। अनादरसूचक रूपमे दूरक व्यक्तिक लेल «उ» आ लगक लेल «ई», तथा आदरसूचक रूपमे दूरक लेल «ओ» आ लगक लेल «ए» जेहन भेद होइत अछि। ई व्यवस्था दूरी-निकटताक स्थानिक संकेत आ संवादमे केन्द्रीय महत्त्व पबनिहार व्यक्तिसँ सेहो जुड़ैत अछि।

पुरुष आ आदरसूचक स्तर	कर्ता-रूप सर्वनाम	कर्म/सम्प्रदान-रूप	सम्बन्ध कारक रूप	क्रियाक प्रतिनिधि रूपान्त्य प्रत्यय
उत्तम पुरुष	हम	हमरा	हमर	-i, -iəh, -iunh

पुरुष आ आदरसूचक स्तर	कर्ता-रूप सर्वनाम	कर्म/ सम्प्रदान-रूप	सम्बन्ध कारक रूप	क्रियाक प्रतिनिधि रूपान्त्य प्रत्यय
मध्यम पुरुष : अनौपचारिक	तूँ / तु	तोरा	तोहर	-æ, -au
मध्यम पुरुष : मध्यम आदर	तौं	तोरा	तोहर	-əh
मध्यम पुरुष : आदर	अहाँ	अहाँकेँ	अहाँक	-i, -unh
मध्यम पुरुष : उच्च आदर	अपने	अपनेकेँ	अपनेकेर	-aith, -thi
अन्य पुरुष : अनादर	उ (दूर) / ई (लग)	ओकरा / एकरा	ओकर / एकर	-əi, -kəi, -əkh
अन्य पुरुष : आदर	ओ (दूर) / ए (लग)	हुनका / हिनका	हुनकर / हिनकर	-aith, -eth, -khi(nh)

प्रमुख आन्तरिक स्वामित्वसूचक पद आ सम्बोधनानुसार अन्विति

मैथिली वाक्यविन्यासक महत्त्वपूर्ण भाषावैज्ञानिक विशेषता प्रमुख आन्तरिक स्वामित्वसूचक पदक घटना अछि। जटिल संज्ञापदमे सम्बन्धकारक स्वामी कखनो मूल संज्ञाक मध्यस्थता बिनु मुख्य वाक्यक क्रियामे दोसर अन्विति-स्थानकेँ नियन्त्रित करि सकैत अछि।

ई अन्विति-स्थानान्तरण तखन होइत अछि जखन स्वामित्वसूचक व्यक्ति प्रसंगक दृष्टिसँ अधिक प्रमुख, आदरसूचकताक दृष्टिसँ उच्च अथवा संवादक केन्द्रमे अधिक सक्रिय होइत अछि।

एहि संग मैथिली सम्बोधित व्यक्तिक आदर-स्तरक अनुसार क्रियात्मक अन्विति सेहो विकसित करैत अछि। एतय सम्बोधित व्यक्ति वाक्यक कोनो कारक नहि होइतो, ओकर आदरसूचक स्थिति मुख्य क्रियामे सूचित भऽ सकैत अछि। वाक्यविन्यासक विश्लेषणमे एहि व्यवस्था लेल उपवाक्यक बामा किनाराक एकटा विशेष प्रसंग-पदबन्धक कल्पना कएल जाइत अछि।

एहि प्रसंग-पदबन्धक शीर्षस्थ स्तरपर सामाजिक प्रतिष्ठा आ विनम्रतासूचक तत्त्व वक्ता आ श्रोता बीच सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। तकर परिणामस्वरूप प्राप्त प्रसंगगत विशेषता क्रियाक रूपान्तरण-केन्द्र धरि पहुँचैत अछि। तेँ क्रिया एके समयमे घटना वा स्थितिक विधान सेहो करैत अछि आ सामाजिक सम्बन्धक संकेत सेहो।

३. ज्ञानमीमांसा आ शास्त्रीय चिन्तन : नव्य-न्यायक पारिभाषिक प्रतिमान

मिथिलाक बौद्धिक इतिहासमे चौदहम शताब्दीक दार्शनिक गङ्गेश उपाध्यायक «तत्त्वचिन्तामणि» सँ नव्य-न्याय परम्पराकेँ विशिष्ट रूप भेटल। एहि न्यायपद्धतिने दार्शनिक वाद-विवादमे संकल्पना आ अर्थक अस्पष्टता घटेबाक लेल संस्कृतक अत्यन्त सूक्ष्म आ औपचारिक पारिभाषिक भाषा विकसित कऽ भारतीय ज्ञानमीमांसामे परिवर्तन अनलक।

नव्य-न्यायक ज्ञानमीमांसाक चारिटा प्रमुख पद्धतिगत आधार अछि :

प्रमाणवाद : यथार्थ ज्ञानक साधनसभक व्यवस्थित विवेचन—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द-प्रमाण।

व्याप्तिवाद : हेतु आ साध्य बीच अनिवार्य आ अपवादरहित सहसम्बन्धक कठोर विश्लेषण। वैध अनुमान लेल एहि सम्बन्धक प्रमाणित होएब आवश्यक मानल जाइत अछि।

अवच्छेदकता : कारणता, समवाय आ अभावक सीमाकेँ सूक्ष्मतासँ निर्धारित करबाक लेल अवच्छेदक, विशेषण आ प्रतियोगी जेहन सम्बन्धपरक संकल्पनासभक प्रयोग।

शाब्दबोध : वाक्यक अर्थ बुझबाक प्रक्रियामे आकांक्षा, योग्यता आ आसत्ति जेहन वाक्यगत आ अर्थगत शर्तसभक विश्लेषण।

गङ्गेशक बाद एहि परम्पराकेँ हुनकर पुत्र वर्धमान उपाध्याय, पक्षधर (जयदेव) मिश्र, वाचस्पति मिश्र द्वितीय, शंकर मिश्र, अयाची भवनाथ मिश्र आ बादक धर्मदत्त (बच्चा) झा जेहन विद्वानसभ आगाँ बढ़ौलनि।

एहि विद्वानसभक टोल आ चौपाड़ी जेहन शिक्षाकेन्द्रमे कठोर अध्ययन-पद्धति चलैत छल। बंगालक नवद्वीपसँ अयल विद्वानसभकेँ सेहो शलाका-परीक्षा जेहन कठिन पाठ-परीक्षण देबय पड़ैत छल।

एहि शास्त्रीय परम्परासँ सूक्ष्म विश्लेषण आ तर्कगत शुद्धतापर आधारित बौद्धिक संस्कृति बनल, जकर प्रभाव बादक औपचारिक मैथिली साहित्यिक रचना आ व्याकरण-विमर्शपर सेहो पड़ल।

४. प्राचीन लिपिक अध्ययन, अभिलेखविज्ञान आ अंकीय अभिलेखागारक पुनर्संरचना

तिरहुता (मिथिलाक्षर) लिपिक ऐतिहासिक विकास

साहित्यिक मैथिलीक प्राचीन प्रमुख लिपि तिरहुता अछि, जे मिथिलाक्षर अथवा मैथिली लिपिक नामसँ सेहो प्रसिद्ध अछि। प्रारम्भिक ब्राह्मीसँ गुप्तकालीन ब्राह्मी आ छठमसँ दसम शताब्दीक सिद्धमातृका (कुटिल) लिपिक माध्यमेँ तिरहुताक विकास भेल। एकर विकास पूर्वी नागरी, गौड़ी, बांग्ला, असमिया, ओड़िया आ नेवारी लिपिसभक समानान्तर भेल। मिथिलामे अनौपचारिक लेखन, व्यापारिक हिसाब आ राजस्व अभिलेख लेल प्रवाहपूर्ण कैथी लिपिक सेहो व्यापक उपयोग होइत छल।

तिरहुता लिपिक मुख्य चिह्नसभमे ऊपर दिस लटकल त्रिकोणाकार शिरोरेखाक रूपान्तर, स्वर-व्यञ्जनक जटिल संयोग आ संयुक्ताक्षरक विस्तृत संरचना उल्लेखनीय अछि। ई रूप ताड़पत्र आदि जैविक लेखन-सामग्रीपर लिखबाक व्यवहारसँ सेहो सम्बद्ध रहल अछि।

ताड़पत्र, भोजपत्र आ बाँसपत्रपर अनेक शताब्दीसँ दार्शनिक आ काव्यात्मक ग्रन्थ लिखबाक महत्त्वपूर्ण माध्यम होइतो बीसम शताब्दीमे मुद्राक्षरक तकनीकी कठिनाइ आ प्रशासनमे देवनागरीक बढ़ैत प्रयोगक कारणेँ तिरहुताक मुद्रित उपयोग घटल।

अंकीय मानकीकरण : युनिकोड सीमा यू+११४८० सँ यू+११४डीएफ

ऐतिहासिक ग्रन्थसभक संरक्षण आ अंकीय संसारमे तिरहुताक उपेक्षा रोकबाक उद्देश्यसँ विद्वान आ भाषिक कार्यकर्तासभ युनिकोड संघकेँ तकनीकी प्रस्ताव देलनि। एकर फलस्वरूप जून २०१४ मे युनिकोडक सातम संस्करणक संग तिरहुता लिपिक औपचारिक संकेतन भेल। पूरक बहुभाषिक तलमे यू+११४८० सँ यू+११४डीएफ धरिक लिपि-खण्डमे ९६ टा सांकेतिक स्थान निर्धारित कएल गेल।

युनिकोड खण्ड	वर्णक कोटि	लिपि-तत्त्व आ कार्य
U+11480–U+114AF	स्वतंत्र स्वर आ व्यञ्जन	मूल वर्णाक्षर, व्यञ्जन आ स्वतंत्र स्वरारम्भ।
U+114B0–U+114C7	आश्रित स्वरचिह्न आ संशोधक	स्वर-मात्रा, विराम (हलन्त), अनुस्वार, विसर्ग आ चन्द्रबिन्दु।
U+114D0–U+114D9	दशमलव अंक	शून्यसँ नओ धरि तिरहुताक अंक-चिह्न।
U+114DA–U+114DF	विरामचिह्न आ प्राचीन संकेत	अंश-विभाजक, ऐतिहासिक श्वासचिह्न आ परम्परागत विरामचिह्न।

क्षेत्रीय पाण्डुलिपि-संग्रह आ अंकीय संरक्षणक प्रयास

मैथिलीक प्राचीन पाठीय सम्पदाक संरक्षणक दू प्रमुख संस्थागत केन्द्र दरभंगामे अवस्थित अछि :

मिथिला संस्कृत शोध संस्थान (मिथिला शोध संस्थान) : दरभंगाक कबराघाटमे स्थित एहि संस्थानमे लगभग १२,५०० प्राचीन पाण्डुलिपिक संग्रह बताओल जाइत अछि, जाहिमे लगभग ९० प्रतिशत तिरहुता लिपिमे लिखल अछि। एहि संग्रहमे लगभग एक सहस्राब्दी पुरान नव्य-न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद आ वैदिक भाष्य सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण मूलपाठ सम्मिलित अछि।

कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय : एकरा लग लगभग ४,५०० पाण्डुलिपिक संग्रह बताओल गेल अछि। तिरहुता, कैथी, बांग्ला, ओड़िया आ नेवारी लिपिमे लिखल एहि पाण्डुलिपिसभमे ज्योतिष, अनुष्ठान-साहित्य आ दर्शनक सामग्री अछि।

राष्ट्रीय ज्ञान भारतम् अभियान आ विदेहक समानान्तर श्रव्य-दृश्य अभिलेखागार जेहन संरक्षण-प्रयासक अन्तर्गत उच्च विभेदनवला अंकीय प्रतिलिपि बनएबाक आ सामग्रीक सूचीकरणक काज चलि रहल अछि। एहि प्रयाससभक उद्देश्य ताड़पत्र आ कागजक व्यापक पाण्डुलिपि-संग्रहकेँ देवनागरी आ तिरहुता दुनू संकेतनमे विश्वक शोधकर्तासभ लेल उपलब्ध कराएब अछि।

५. आधुनिक नाट्य-परम्परा आ समकालीन रंगमंचीय नवप्रयोग

कीर्तनिया अभिनय-परम्परासँ समानान्तर रंगमंच धरि

मैथिली रंगमंचक आरम्भिक परम्परामे शास्त्रीय कीर्तनिया नाटक महत्त्वपूर्ण अछि। एहि विधामे वैष्णव पद, सूत्रधारक संस्कृतनिष्ठ कथन आ लोकभाषाक संवादक समावेश रहैत छल।

उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्ध आ बीसम शताब्दीक आरम्भमे व्यावसायिक पारसी रंगमंच आ पाश्चात्य नाट्यरूपसभक सम्पर्कसँ सामाजिक यथार्थवादी नाटकक विकासमे गति अएल। एहि नाटकसभमे जाति-सुधार, आर्थिक विस्थापन आ शिक्षामे पहुँच जेहन प्रश्न स्थान पाबए लगल।

एक्कीसम शताब्दीमे समानान्तर रंगमंचक उभारक संग ई विकास नव चरणमे पहुँचल। एकर उदाहरण गजेन्द्र ठाकुरक समेकित नाट्य-संकलन «रंग-संगम» (विदेह, आईएसएसएन २२२९–५४७एक्स) अछि। एहिमे आधुनिक मैथिलीक नओ मौलिक नाटक आ हुनकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर साथ-साथ संकलित अछि। लोक-अभिनयक भाषाक संग समकालीन सामाजिक, राजनीतिक आ दार्शनिक विषयसभक संयोजन एकर विशेषता अछि।

«रंग-संगम»क नाटकसभक विषयगत आ संरचनात्मक विश्लेषण

रंग-संगम : नओटा नाटकक विषयगत विभाजन

शास्त्रीय आ वैदिक आख्यानक पुनर्पाठ : «अपाला आत्रेयी»—ऋग्वैदिक स्त्रीक स्वायत्तता; «दानवीर दधीची»—ज्ञानक नैतिक वितरण।

पर्यावरणीय आलोचना आ जलसम्बन्धी यथार्थवाद : «भऽ जाएब छू»—जलवायु-संकटक कल्पनात्मक प्रस्तुति; «जलोदीप»—बाढ़ि आ जलनिकासक प्रश्न।

सामाजिक-राजनीतिक व्यंग्य आ आत्मसजग रंगमंच : «गंगा ब्रिज»—विकासक त्रासदी; «कमलाक भगता»—अन्धानुकरण; «मचण्ड»—भाषा आ आतंक; «संकर्षण»—दंभ आ आत्मबोध; «उल्कामुख»—न्याय-दर्शन आ लोक-स्मृति।

«रंग-संगम»मे संकलित नओटा नाटक आधुनिक मैथिली नाट्य-साहित्यक मुख्य विषयगत सरोकार आ शैलीगत नवप्रयोगक विस्तृत चित्र प्रस्तुत करैत अछि :

१. अपाला आत्रेयी

ई नाटक ऋग्वेदमे वर्णित ब्रह्मवादिनी अपालाक आख्यानकेँ नव दृष्टिसँ पढ़ैत अछि आ स्त्रीक देह-सौन्दर्य सम्बन्धी पितृसत्तात्मक मान्यतासभक आलोचना करैत अछि। त्वचाक रोग (श्वेत कुष्ठ) सँ पीड़ित अपालाकेँ हुनकर पति कृशाश्व त्यागि दैत छथि, कारण ओ बौद्धिक आ आध्यात्मिक गाम्भीर्यसँ बेसी बाह्य रूपकेँ महत्त्व दैत छथि।

पिता ऋषि अत्रिक आश्रममे घुरलाक बाद अपाला सोम तैयार करैत छथि आ इन्द्रक सम्बोधनमे ऋग्वैदिक ऋचाक रचना कऽ अपन स्वतंत्र आध्यात्मिक सामर्थ्य सिद्ध करैत छथि।

नाटक एहि बातपर जोर दैत अछि जे वास्तविक आरोग्यक आधार केवल देहक अनुरूपता नहि, बल्कि नैतिक दृष्टिक विकास अछि। अन्तमे अपालाक ऋचाकेँ वैदिक परम्परामे औपचारिक स्वीकृति भेटब एहि विचारक नाटकीय परिणति बनैत अछि।

२. भऽ जाएब छू

मैथिलीक पहिल जलवायु-कथात्मक बाल चौबटिया-सड़क नाटकक रूपमे प्रस्तुत ई कृति सहभागितापरक सड़क-रंगमंच द्वारा पर्यावरणीय विनाश आ जलवायु-परिवर्तनकेँ नाटकीय रूप दैत अछि। जुगनूक शीतल, अल्प-ऊर्जावला जैवप्रकाश आ आधुनिक औद्योगिक व्यवस्थासँ उत्पन्न अनावश्यक तापक बीच नाटक तीक्ष्ण विरोध रचैत अछि।

मानवीकृत स्थानीय गाछसभ नीलगिरी जेहन बाहरी प्रजातिक अविवेकी रोपणक आलोचना करैत अछि, जे भूमिगत जलक स्तर घटबैत अछि आ क्षेत्रीय जैव-पर्यावरणकेँ अपेक्षित सहारा नहि दैत अछि।

अन्तमे समुदाय देशज बीजक संरक्षण, जलसम्बन्धी सन्तुलनक पुनर्स्थापना आ प्रौद्योगिक विकासकेँ पर्यावरणीय सिद्धान्तक अनुरूप चलेबाक सामूहिक प्रतिज्ञा करैत अछि।

३. दानवीर दधीची

ई वैदिक नाटक महर्षि दधीचिक बलिदानक लोकप्रिय पुराणकथाकेँ नव दृष्टिसँ देखैत अछि। एतय अस्थिक भौतिक दानसँ बेसी मधुविद्याक नैतिक संरक्षणपर बल अछि। मधुविद्या समस्त सृष्टिक पारस्परिक निर्भरताक दार्शनिक बोध दैत अछि।

राजा इन्द्र एहि विद्यापर एकाधिकार स्थापित करबाक उद्देश्यसँ एकर माँग करैत छथि, मुदा दधीचि सत्य आ ज्ञानकेँ सत्ताक नियन्त्रणमे बन्द करबाक प्रयासक प्रतिरोध करैत छथि।

अश्विनीकुमार द्वारा घोड़ाक माथ जोड़बाक शल्यगत प्रसंगकेँ नाटक निषिद्ध ज्ञान जीवित रखबाक बौद्धिक उपाय बना दैत अछि। एतय संदेश अछि जे वास्तविक विद्या संस्थागत अधिपत्यक बजाय सार्वजनीन मानवीय कल्याणक सेवामे होएबाक चाही।

४. गंगा ब्रिज

आठ भागमे विन्यस्त ई त्रासद नाटक औपनिवेशिक शासनक बादक आधारभूत संरचना-निर्माण, भ्रष्टाचार आ श्रमिक-शोषणक तीक्ष्ण आलोचना करैत अछि। पटना लग गंगापर पैघ पुल निर्माणक क्रममे एकटा अडिग अभियन्ता निर्माण-सामग्रीक मानक आ श्रमिक-सुरक्षापर समझौता करब अस्वीकार करैत छथि।

ठीकेदार आ राजनीतिक व्यक्तिसभक दबावक आगाँ नहि झुकबाक परिणामस्वरूप सड़क समतल करबाक भारी यन्त्रक नीचाँ दाबि हुनकर हत्या करा देल जाइत अछि। सरकारी विवरणमे एहि नियोजित हत्याकेँ औद्योगिक दुर्घटनाक रूपमे ढाँपि देल जाइत अछि।

नाटक उद्घाटित करैत अछि जे आधुनिक विकासक व्यवस्था वंचित लोकक जीवनकेँ बलि चढ़ा सकैत अछि, जखन कि बनल संरचनाक स्मारकीय उत्सवमे ओहि हिंसाक इतिहासकेँ साफ-सुथरा कऽ प्रस्तुत कएल जाइत अछि।

५. जलोदीप

उत्तरी मिथिलामे बारम्बार अबैत बाढ़िक संकटपर केन्द्रित «जलोदीप» मौसमी विस्थापनक संस्थागत कारणसभक पड़ताल करैत अछि। ऊँच स्थानपर फँसल चारिटा बच्चा कटोरी, माटि आ खाट जेहन घरेलू वस्तु प्रयोग कऽ क्षेत्रक भौगोलिक बनावट आ जलप्रवाहक प्रतिरूप तैयार करैत छथि।

हुनकर खेल देखबैत अछि जे ऊँच सड़क आ ठीकसँ देखरेख नहि भेल तटबन्ध प्राकृतिक जलनिकास रोकि दैत अछि, जाहिसँ नीचाँक गाम चारूकात पानिसँ घेराएल जलाशय बनि जाइत अछि।

पानिमे प्रवाहित जलदीप सामूहिक स्मृतिक प्रतीक बनैत अछि। ई समुदायकेँ खुलल जलनिकासी-पुलिया, मरम्मतिक कोषक सार्वजनिक हिसाब आ सहभागितामूलक जलनिकास-योजना माँगबाक प्रेरणा दैत अछि।

६. कमलाक भगता

संस्कृत व्यंग्य-परम्परासँ प्रेरित «कमलाक भगता» विचारहीन अनुकरणक शिक्षाप्रद आलोचना अछि। जनकपुर जाइत एकटा भिखारी अपन मेहनतक कमाइ कमला नदीक बलुआही तीरपर गाड़ि दैत अछि आ स्थान चिन्हबाक लेल बालूसँ अस्थायी शिवलिङ्ग बना दैत अछि।

ओतय पहुँचल तीर्थयात्री एहि व्यक्तिगत चिह्नकेँ प्राचीन धार्मिक विधान मानि तीरपर सैकड़ो एकरूप शिवलिङ्ग बनबए लगैत छथि।

स्नान कऽ घुरलाक बाद भिखारीकेँ अपन चिह्न एकरूप बालूक ढेरसभमे नहि भेटैत अछि। ई प्रसंग देखबैत अछि जे यान्त्रिक अनुकरण मूल उद्देश्यकेँ अदृश्य कऽ विवेकपूर्ण विचारक मार्ग रोकि सकैत अछि।

७. मचण्ड

ई राजनीतिक नाटक भाषिक परायापन, अपराधीकरण आ राज्यक सुरक्षा-तन्त्रक अन्तर्सम्बन्धक पड़ताल करैत अछि। कथाक केन्द्रमे तमिल बाजनिहार निर्धन युवक मुतलिफ अछि। दिल्लीमे अनजानमे नशीला पदार्थ ढोएनिहार बनि गेलाक कारणेँ ओकर गिरफ्तारी होइत अछि, मुदा ओ अपन विरुद्ध चलि रहल न्यायिक कार्यवाहीक भाषा बुझिए नहि सकैत अछि।

हस्तक्षेप करबाक प्रयास करैत एकटा गुप्तचर अधिकारीकेँ ई जटिल सामाजिक-आर्थिक कारण देखाइत अछि, जाहिसँ असुरक्षित लोक अवैध जालमे फँसि जाइत छथि।

नाटक एहन संस्थागत न्याय-व्यवस्थाक आलोचना करैत अछि जे संरचनात्मक विषमता आ भाषिक बाधाकेँ दूर कएने बिनु हाशियाक लोकक विरुद्ध कानूनी प्रक्रिया चलबैत रहैत अछि।

८. संकर्षण

पाँच कल्लोलमे विंभक्त ई त्रासहास्य नाटक दभ आ सामाजिक दिखावाक मनोवैज्ञानिक बनावट खोलैत अछि। मुख्य पात्र संकर्षण सार्वजनिक अपमान, प्रशासनिक पदसँ हटाओल जाएब आ व्यक्तिगत असफलताकेँ उच्च प्रतिष्ठाक संकेत सिद्ध करबाक लेल नित नव बहन्ना गढ़ैत रहैत छथि।

हिनकर आत्मप्रवंचनाक आदत तखन टूटैत अछि जखन दिल्लीमे लाल किलाक पाछाँ रविदिन लगनिहार चोर-बजारमे ओ खराब जूता खरीदिकेँ ठकाइ जाइत छथि।

थोड़बे प्रयोगक बाद जूताक तल्ला अलग भऽ जाइत अछि। एहि घटनासँ संकर्षणमे नैतिक आत्मबोध जागैत अछि आ पहिल बेर ओ स्वीकारैत छथि जे ठगीक चोट केवल जूतापर नहि, हुनकर अपन दंभपर पड़ल अछि।

९. उल्कामुख

बेचन ठाकुरक निर्देशनमे २०१२ केर विदेह रंगमंच महोत्सवमे अभिनीत «उल्कामुख» एकटा महत्त्वाकांक्षी आत्मसजग नाटक अछि, जकर परिचयमे छह अंकक उल्लेख अछि। नाटक तर्कशास्त्री गङ्गेश उपाध्यायकेँ केवल अमूर्त दार्शनिक नहि, बल्कि चर्मकार बस्तीमे रहनिहार वल्लभासँ गहिर सम्बन्ध रखनिहार सजीव चिन्तकक रूपमे चित्रित करैत अछि।

भरतक «नाट्यशास्त्र»क स्थान-विन्यास सम्बन्धी सिद्धान्तक अनुसरण करैत पाँचम अंकमे मंचक शतरंज-जकाँ सजल लकड़ीक घनसभ (शास्त्रीय अमूर्तन आ संस्थागत पदानुक्रमक प्रतीक) कैं गोलाकार पिण्डसभ (भौतिक यथार्थ, वंचित श्रम आ ब्रह्माण्डीय कालक प्रतीक) सँ बदलल जाइत अछि।

«उल्कामुख» ऐतिहासिक अनुभव-मण्डपक परिप्रेक्ष्यमे गङ्गेश, वर्धमान आ उदयन जेहन शास्त्रीय पात्रसभकैं दीना-भदरी, राजा सलहेस आ लोकदेवता गहिल जेहन लोकनायकसभक संग प्रत्यक्ष संवादमे आनैत अछि।

ई आख्यान अभिजात शिक्षाकेन्द्रसभ द्वारा गङ्गेशक काव्यकृति «सुकविकैरवकाननेन्दु»क ऐतिहासिक उपेक्षाक आलोचना करैत अछि आ मौखिक लोकगाथा (नराशंसी) कैं सामाजिक स्मृति आ मानवीय सम्बन्धक टिकाऊ वाहकक रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि।

नाटकक नाम	नाट्य-संरचना	प्रमुख पात्र	मुख्य वैचारिक आ भाषिक-सामाजिक सरोकार
अपाला आत्रेयी	७ दृश्य; बाल शास्त्रीय नाटक	अपाला, ऋषि अत्रि, कृशाश्व, वैद्य	ऋग्वैदिक स्त्री-स्वायत्तता; देहक कलंक बनाम आध्यात्मिक स्वाधीनता; सौन्दर्यक संकीर्ण मापकक आलोचना।
भऽ जाएब छू	३ भाग; चौबटिया सड़क-नाटक	ओम, आस्था, जयन्त, नेकलाल, रामवती	जलवायु-संकटक नाट्यकल्पना; ऊष्माक अपव्यय बनाम जुगनूक शीतल जैवप्रकाश; स्थानीय वनस्पतिक पर्यावरण।

नाटकक नाम	नाट्य-संरचना	प्रमुख पात्र	मुख्य वैचारिक आ भाषिक-सामाजिक सरोकार
दानवीर दधीची	३ दृश्य; वैदिक आख्यानक पुनर्पाठ	दधीचि, इन्द्र, अश्विनीकुमार	अस्थिदानक अलौकिक व्याख्यासँ हटि मधुविद्याक संरक्षण; ज्ञानक प्रसारक नैतिकता।
गंगा ब्रिज	८ पल्लव; सामाजिक त्रासदी	अभियन्ता, मुख्य अभियन्ता, मुख्यमंत्री, ढोलवादक	राजनीतिक-ठीकेदारी भ्रष्टाचार; पुल-निर्माणक संकट; विकासवादमे श्रमिक आ वंचित लोकक बलिदान।
जलोदीप	५ अंक; सामाजिक-पर्यावरणीय नाटक	चारिटा बच्चा, अभियन्ता, ठीकेदार, मुखिया	बाढ़िक प्रवाह-व्यवस्था; तटबन्धसँ जलनिकासमे रुकावट; जनसहभागितासँ जलमार्गक नक्शा।
कमलाक भगता	२ दृश्य; लोक-व्यंग्यपरक हास्यनाटक	भिखारी, सूत्रधार, तीर्थयात्री	अन्धानुकरणक आलोचना; सामूहिक व्यवहारमे मूल उद्देश्यक लोप।
मचण्ड	४ अंक; समकालीन राजनीतिक रोमांचक नाटक	मुतलिफ, गुप्तचर अधिकारी, दुभाषिया, विद्रोही नेता	भाषिक बहिष्करण; राज्यक न्याय-व्यवस्था; करुणाक दुरुपयोग आ वंचितक शोषण।

नाटकक नाम	नाट्य-संरचना	प्रमुख पात्र	मुख्य वैचारिक आ भाषिक-सामाजिक सरोकार
संकर्षण	५ कल्लोल; त्रासहास्य व्यंग्य	संकर्षण, भास्कर, गोनर, लाल काका	दंभक मनोविज्ञान; झूठ प्रतिष्ठा; बाजारक ठगीसँ भाषिक आ सामाजिक दिखावाक विघटन।
उल्कामुख	स्रोतक प्रस्तावनामे ६ कल्लोल; वास्तविक पाठमे ७ कल्लोल; आत्मसजग नाटक	गङ्गेश/गंगाधर, वल्लभा/कुमारसुता, उदयन/माधव, राजा कीर्तिसिंह	नव्य-न्याय आ लोककाव्य; अनुभव-मण्डप; जातिगत संघर्ष; नराशंसी द्वारा वंचित लोकस्मृतिक संरक्षण।

६. संरचनात्मक समन्वय : भाषाविज्ञान, ज्ञानमीमांसा आ सर्जनात्मक अभिव्यक्तिक अन्तर्सम्बन्ध

शुद्ध मैथिलीक अकादमिक अध्ययन एहि भाषाक व्याकरणिक संरचना, दार्शनिक विरासत आ आधुनिक साहित्य बीचक गहिर एकता स्पष्ट करैत अछि।

भाषाक संरचनात्मक वर्गीकरणक दृष्टिसँ बहु-कारक बहुपुरुषीय अन्विति, प्रमुख आन्तरिक स्वामित्वसूचक रचना आ सम्बोधनानुसार क्रियात्मक संकेत ई देखबैत अछि जे सामाजिक पदानुक्रम आ पारस्परिक सम्बन्धक जटिलता क्रियाक रूपरचनामे व्यवस्थित रूपसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।

पाठ-परम्पराक अध्ययनमे आरम्भिक मध्यकालीन चर्यापद, ज्योतिरीश्वरक «वर्णरत्नाकर», विद्यापतिक गीतिकाव्य आ मल्लकालीन दरबारी नाटक धरि चलैत निरन्तर साहित्यिक धारा एहि भाषाक स्थायी रचनात्मक सामर्थ्यक प्रमाण अछि।

आधुनिक युगमे अंकीय संरक्षण आ सर्जनात्मक रूपान्तरण एहि भाषिक परम्पराकेँ नव आधार दैत अछि। तिरहुता लिपिक अन्तरराष्ट्रीय युनिकोड मानकीकरण

(यू+११४८०–यू+११४डीएफ) आ मिथिला शोध संस्थान तथा कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयमे पाण्डुलिपिक संरक्षणसँ मूल ऐतिहासिक स्रोतसभक शोधगत उपलब्धता सुरक्षित राखबाक प्रयास होइत अछि।

एहि संग «रंग-संगम» जेहन आधुनिक नाट्यकृति शास्त्रीय दर्शनक विश्लेषणात्मक सूक्ष्मताकेँ जीवन्त रंगमंचीय रचनामे बदलैत अछि आ पर्यावरण, नागरिक जीवन तथा सामाजिक-राजनीतिक प्रश्नसभसँ संवाद स्थापित करैत अछि। रूपरचनाक जटिलता, ज्ञानमीमांसाक सूक्ष्मता आ साहित्यिक सजीवता बीचक एहि समन्वयसँ मैथिली अपन ऐतिहासिक विरासतकेँ सुरक्षित रखैत समकालीन सांस्कृतिक क्षितिजक विस्तार करैत अछि।

रंग-संगम : विस्तृत समेकित साहित्यिक समीक्षा

समीक्षा-सार

“रंग-संगम” नओटा मैथिली नाटक आ तकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तरक समेकित नाट्य-संग्रह अछि। एहि संग्रहक व्याप्ति वैदिक आख्यानसँ लऽ कऽ समकालीन न्याय, विकास-राजनीति, बाढ़ि-सुरक्षा, बाल-पर्यावरण, सामाजिक दंभ, लोक-स्मृति आ नव्य-न्यायक दार्शनिक परिवेश धरि फैलल अछि। एहि समीक्षामे मूल मैथिली नाटककेँ प्राथमिक पाठ मानि प्रत्येक दृश्य, भाग, पल्लव, अंक आ कल्लोलक रचनात्मक प्रयोजन जाँचल गेल अछि; तकर बाद अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तरक तुलनात्मक मूल्यांकन कएल गेल अछि। बाहरी शोध-सामग्रीक उपयोग इतिहास वा विज्ञानक तथ्यक पुष्टि करबाक लेल नहि, बल्कि नाटक द्वारा उठाओल प्रश्नक बृहत्तर बौद्धिक सन्दर्भ स्पष्ट करबाक लेल कएल गेल अछि।

संग्रहक सबसे प्रमुख विशेषता ई अछि जे ज्ञान एकर लगभग सभ नाटकमे नैतिक क्रियाक रूपमे अबैत अछि। “अपाला आत्रेयी” मे प्रश्न करबाक अधिकार आ दृष्टिक शुद्धि, “दानवीर दधीची” मे ज्ञानक दान, “भऽ जाएब छू” मे वैज्ञानिक चेतना, “जलोदीप” मे जल-पथ बुझबाक सामुदायिक बुद्धि, “मचण्ड” मे भाषिक समझक न्यायिक महत्व, “संकर्षण” मे अनुभव द्वारा दंभक विघटन, आ “उल्कामुख” मे स्मृति तथा तर्कक संघर्ष—ई सभ अलग-अलग कथानक होइतहुँ एकटा व्यापक नाट्य-दृष्टिक निर्माण करैत अछि।

मुख्य शब्द

मैथिली नाटक; रंगमंच; वैदिक पुनर्पाठ; बाल-नाटक; पर्यावरण; बाढ़ि; विकास आ भ्रष्टाचार; भाषिक न्याय; लोक-हास्य; नव्य-न्याय; गङ्गेश; स्मृति; नाट्य-अनुवाद; अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर।

गजेन्द्र ठाकुर द्वारा रचित आ विदेह (प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, ISSN 2229-547X) द्वारा प्रकाशित "रंग-संगम" मैथिली नाट्य-साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण संकलन थिक, जाहिमे नओटा मैथिली नाटक आ ओकर नओटा अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर जोड़ी-क्रममे संकलित अछि। ई संयुक्त संस्करण मात्र नाटकक संग्रह नहि, बल्कि एकटा सम्पूर्ण सांस्कृतिक उपक्रम थिक- जाहिमे वैदिक गाथासँ लऽ कऽ समकालीन सामाजिक यथार्थ धरिक विषय-वस्तु, बाल-रंगमंचसँ लऽ कऽ गम्भीर दार्शनिक-ऐतिहासिक नाट्य-गाथा धरिक शिल्प, आ स्थानीय लोक-परम्परासँ लऽ कऽ वैश्विक रंगमंचीय संवेदना धरिक विस्तार समाहित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर मैथिली साहित्यक ओहि पीढ़ीक प्रतिनिधि रचनाकार छथि जिनकर सम्पादकीय आ रचनात्मक दुनू भूमिका मैथिली भाषाकेँ आधुनिक अभिव्यक्ति-माध्यम बनेबामे संलग्न रहल अछि। विदेहक सम्पादकक रूपमे ओ जतय मैथिली भाषा-साहित्यक डिजिटल आ मुद्रित संरक्षणमे संलग्न छथि, ओतहि नाटककारक रूपमे ओ मैथिली रंगमंचकेँ नव विषय, नव शिल्प आ नव प्रयोगसँ समृद्ध करैत रहला अछि। "रंग-संगम" एहि दिशामे एकटा ठोस आ बहुआयामी प्रमाण थिक।

१. शोध-परिधि, पद्धति आ पाठ-सावधानी

एहि अध्ययनक पहिल नियम रहल जे समीक्षा “रंग-संगम” केर वास्तविक पाठसँ शुरू हो। शीर्षक वा कथानकक अनुमानपर आधारित आलोचना नहि, बल्कि नाटकक क्रमिक दृश्य-विन्यास, मंच-संकेत, संवाद, कोरस, सूत्रधार, ध्वनि, वस्तु-प्रतीक आ अन्तिम नाटकीय गति पढ़ि निष्कर्ष निकालल गेल अछि। दोसर नियम रहल जे ऐतिहासिक अथवा वैदिक पात्रकेँ स्वतः इतिहासक दस्तावेज नहि मानल जाए। नाटक इतिहासक सामग्रीकेँ सौन्दर्यात्मक, नैतिक आ समकालीन प्रश्नक अनुरूप पुनर्गठित करैत अछि; एहि पुनर्गठनकेँ रचनात्मक स्वतन्त्रताक रूपमे पढ़ब आवश्यक अछि।

तेसर नियम बाहरी शोधक सीमित आ उत्तरदायी उपयोग अछि। ऋग्वेद ८.९१ सँ अपालाक सम्बन्ध, दध्यङ/दधीचिक मधुविद्या-परम्परा, समुदाय-आधारित रंगमंच द्वारा आपदा-संचार, उत्तर बिहारक बाढ़ि-जोखिम, सेतु-निर्माणक संस्थागत त्रुटि, न्यायालयमे भाषिक समझ, आ गङ्गेशक तत्त्वचिन्तामणिक दार्शनिक महत्व—एहि बिन्दुसभ पर मानक शैक्षिक वा आधिकारिक स्रोत देखल गेल अछि। मुदा जहाँ प्रमाण अपर्याप्त अछि, ओतय निष्कर्ष रोकेल गेल अछि। “कमलाक भगता” केर आरम्भिक टिप्पणी एकरा संस्कृत-साहित्यक प्रसिद्ध कथासँ प्रेरित कहैत अछि, मुदा उपलब्ध सामग्रीसँ ओहि सटीक संस्कृत मूलक विश्वसनीय पहचान नहि भऽ सकल; एहि कारणेँ एहि समीक्षा में कोनो काल्पनिक स्रोत-नाम नहि जोड़ल गेल अछि।

चौथ नियम अंग्रेजी पाठक स्वरूप बुझब अछि। ई अंग्रेजी अंश शब्दशः अनुवादक दावा नहि करैत; संग्रह स्वयं एकरा रंगमंचीय रूपान्तरक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। अतः तुलना मुख्यतः संरचना, मंचीय स्पष्टता, सांस्कृतिक शब्द, भाव-सूक्ष्मता, लय आ दर्शक-सुलभताक स्तरपर कएल गेल अछि।

२. ग्रन्थ-संरचना आ सम्पूर्णता-जाँच

नीचाँक तालिका मूल वर्ड दस्तावेजक वास्तविक क्रम आ उपविभाजनक आधारपर बनाओल गेल अछि। एहि सूचीक उद्देश्य ई प्रमाणित करब अछि जे समीक्षामे कोनो नाटक अथवा नाट्य-इकाइ जानि-बूझि कऽ छोड़ल नहि गेल अछि।

क्रम	मैथिली मूल	अंग्रेजी रूपान्तर	वास्तविक संरचना
१	अपाला आत्रेयी	APALA ATREYI	७ दृश्य
२	भऽ जाएब छू	WE SHALL TURN TO ASH	३ भाग
३	दानवीर दधीची	DADHICHI, THE GREAT GIVER	३ दृश्य
४	गंगा ब्रिज	GANGA BRIDGE	८ पल्लव; ५ विषयगत भाग
५	जलोदीप	JALODEEP: THE WATER-LAMP	पूर्वदृश्य; ५ अंक; १० दृश्य
६	कमलाक भगता	A DEVOTEE OF THE KAMALA	२ दृश्य

क्रम	मैथिली मूल	अंग्रेजी रूपान्तर	वास्तविक संरचना
७	मचण्ड	MACHANDA	४ अंक
८	संकर्षण	SANKARSHAN	५ कल्लोल; १८ अंक
९	उल्कामुख	ULKAMUKH	वास्तविक पाठमे ७ कल्लोल

पाठालोचनात्मक विशेष टिप्पणी: “उल्कामुख” केर मैथिली उपशीर्षकमे “छह कल्लोल” आ अंग्रेजी उपशीर्षकमे «छह अंक» लिखल अछि, मुदा मूल मैथिली पाठमे पहिल, दोसर, तेसर, चारिम, पाँचम, छअम आ सातम—कुल सात कल्लोल अछि; अंग्रेजी रूपान्तर सेहो सात भाग धरि बढ़ैत अछि। अतः ई समीक्षा संरचनात्मक तथ्यकेँ सात कल्लोल मानैत अछि आ उपशीर्षकक “छह” केँ सम्पादकीय असंगतिक रूपमे दर्ज करैत अछि।

संकलनक संरचना स्वयं एकटा सम्पादकीय-सह-सर्जनात्मक निर्णय थिक। प्रत्येक मैथिली नाटकक तुरन्त बाद ओकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर राखल गेल अछि, जाहिसँ पाठक/दर्शक मूल पाठ आ अनूदित पाठकेँ एके संग तुलनात्मक दृष्टिसँ देखि सकैत अछि। ई संरचना केवल सुविधाजनक नहि, बल्कि सैद्धान्तिक महत्त्वक सेहो अछि- ई मैथिली नाट्य-पाठकेँ अंग्रेजीभाषी/द्विभाषी दर्शक-वर्ग धरि पहुँचेबाक एकटा सचेत प्रयास थिक, जाहिमे मूल रचनाक सांस्कृतिक विशिष्टता (देवता-आह्वान, लोकगीत, आंचलिक मुहावरा) आ रंगमंचीय रूपान्तरणक अंतरराष्ट्रीय बोधगम्यता, दुनूकेँ साधबाक प्रयास कएल गेल अछि।

नओ नाटकमे विषय-वैविध्य अद्भुत अछि: तीनटा नाटक (अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, आ आंशिक रूपेँ उल्कामुख) वैदिक/ऐतिहासिक गाथाकेँ आधार बनबैत अछि; तीनटा (भऽ जाएब छू, जलोदीप, कमलाक भगता) बाल-रंगमंच आ सामाजिक-शिक्षाप्रद उद्देश्यसँ प्रेरित अछि; आ तीनटा (गंगा ब्रिज, मचण्ड, संकर्षण) समकालीन सामाजिक-राजनीतिक यथार्थक तीक्ष्ण चित्रण करैत अछि। ई त्रिविध वर्गीकरण यांत्रिक नहि, प्रवाहमान अछि- कारण उल्कामुख अपन उत्तरार्धमे ऐतिहासिक कथाकेँ समकालीन पुनर्जन्म-कथामे रूपांतरित कऽ देत अछि, आ अपाला आत्रेयी जेहन वैदिक कथा सेहो स्त्री-स्वाभिमानक अत्यंत समकालीन प्रश्न उठबैत अछि। एहि अर्थमे संकलनक भीतरी

एकता विषयक कालिक वर्गीकरणसँ नहि, बल्कि एकटा सतत नैतिक-सामाजिक सरोकारसँ बनैत अछि, जे हर युगक कथाकेँ जोड़ैत अछि।

प्रत्येक नाटकमे चित्रात्मक तत्त्वक (चित्रांकन) योजना सेहो उल्लेखनीय अछि- दृश्य-विशेष चित्र, चरित्र-रेखांकन आ मंच-सज्जाक संकेत भरिपूर अछि, जे एहि संकलनकेँ केवल पाठ्य-नाटक नहि, बल्कि एकटा दृश्य-कल्पनासँ सम्पन्न रंगमंचीय दस्तावेज बनबैत अछि। मंच-निर्देश (मंच-निर्देश) अत्यंत विस्तृत आ सुचिंतित अछि- ध्वनि-संकेत, प्रकाश-योजना, वेष-भूषा आ मंच-सज्जाक सूक्ष्म विवरण सभ नाटकमे भेटैत अछि, जे एहि नाटक सभक व्यावहारिक मंचनक्षमताकेँ पुष्ट करैत अछि।

३. “अपाला आत्रेयी”: देह, दृष्टि, प्रश्न आ वैदिक स्त्री-वाणी

“अपाला आत्रेयी” संग्रहक आरम्भमे एकटा ऐतिहासिक-अनुभूतिक सेतु बनबैत अछि। नाटक वैदिक नाम आ ऋचा-स्मृतिक उपयोग करैत अछि, मुदा एकर केन्द्रीय प्रश्न आधुनिक अछि: शिक्षा पर अधिकार केकर? देहक रोग आ सामाजिक दृष्टिक रोगमे पैघ रोग कोन? विवाह प्रेमक क्षेत्र अछि कि स्त्रीक ज्ञान-व्यक्तित्वक परीक्षा? एहि प्रश्नसभक उत्तर नाटक उपदेश मात्रसँ नहि, सात दृश्यक क्रमिक मनोवैज्ञानिक यात्रासँ दैत अछि।

दृश्य-दर-दृश्य रचनात्मक गति

• दृश्य एकमे बालिका अपाला प्रश्न करैत विद्यार्थी बनैत अछि। आश्रमक शिक्षा-पद्धतिमे प्रश्नकेँ विद्याक आरम्भ मानल गेल अछि। एहि दृश्यक महत्व केवल स्त्री-शिक्षाक घोषणा नहि; नाटक आरम्भे ई नैतिक नियम स्थापित करैत अछि जे जिज्ञासा बिना ज्ञान मृत अनुशासन बनि जाइत अछि।

• दृश्य दू उपनयन, गायत्री-सावित्री, उच्चारण, प्रकृति आ शिक्षाक सम्बन्धकेँ रंगमंचपर आनैत अछि। “प्रकृति पर अधिकार”क बदला “सेवा”क विचार नाटकक पर्यावरणीय संवेदना सेहो अग्रिम रूपेँ स्थापित करैत अछि। मंचक आश्रम-सज्जा शिक्षा आ प्रकृतिक सहजीवनक दृश्य-रूपक बनैत अछि।

• दृश्य तीनमे अपालाक त्वचा-समस्या सामने अबैत अछि। नाटक स्वयं मंच-संकेतमे रोगकेँ उपहासक साधन नहि बनएबाक सावधानी दैत अछि। एतय देहक

“चिह्न” सामाजिक विवाह-बाजारक दृष्टिसँ टकराइत अछि। वैद्यकीय शब्दकेँ आधुनिक निदान मानि लेब उचित नहि; साहित्यिक स्तरपर ई बाह्य रूप बनाम आन्तरिक प्रतिभाक संघर्षक यन्त्र अछि।

• दृश्य चारिमे विवाहक सम्भावना प्रेम आ स्वीकृतिक कसौटी बनैत अछि। अपाला चाहैत छथि जे पति हुनकर त्वचा नहि, हुनकर मन्त्र-चेतना देखए। एहि क्षणसँ नाटक देहक समस्या सँ दृष्टिक समस्याक ओर निर्णायक रूपेँ बढ़ैत अछि।

• दृश्य पाँचमे वैवाहिक दूरी आ आत्मसम्मानक संघर्ष खुलैत अछि। पति प्रेम आ इच्छा बीचक द्वन्द्व स्वीकारैत अछि, मुदा अपाला आत्महीनता स्वीकार नहि करैत छथि। घर छोड़ब पलायन नहि, स्वत्वक रक्षा बनैत अछि। एहि कारणेँ चरित्रक नारीवादी अर्थ आधुनिक पाठक लेल सहज उपलब्ध होइत अछि, यद्यपि नाटक वैदिक परिवेशक रूपात्मकता बनौने रहैत अछि।

• दृश्य छअमे सोम-यज्ञ आ इन्द्र-संवाद वैदिक ऋचा-स्मृतिक नाट्यरूप दैत अछि। त्वचा-शुद्धिसँ अधिक महत्वपूर्ण “दृष्टि-शुद्धि”क रूपक उभरैत अछि। चमत्कारक केन्द्र देह-परिवर्तन नहि, अपमानित व्यक्तिक वाणी पुनः सार्वजनिक होएब अछि।

• दृश्य सातमे ब्रह्मोदय आ ऋचा-स्वीकृति निजी पीड़ाकेँ सार्वजनिक ज्ञानमे बदलैत अछि। सूत्रधारक निष्कर्ष नाटकक नैतिक धुरी स्पष्ट करैत अछि: मौन पीड़ा टिकैत नहि, शब्द बनि परम्परामे प्रवेश करैत अछि। अपाला एहि अर्थमे रोगिणी पात्रसँ अधिक कवयित्री-साक्षी बनि जाइत छथि।

वैदिक सन्दर्भ आ आलोचनात्मक सावधानी

ऋग्वेद ८.९१ केर ऋचा परम्परागत रूपेँ अपाला आत्रेयीसँ सम्बद्ध मानल जाइत अछि; रेनाटे ज़ोनेन सेहो एहि सूक्तकेँ अपालासँ सम्बद्ध कऽ चर्चा करैत छथि। आधुनिक वैदिक अध्ययन ऋग्वेदक कवित्व, अनुष्ठानिक भाषा आ जटिल प्रसंगकेँ ऐतिहासिक जीवनीक सरल दस्तावेज मानबाक विरुद्ध सावधान करैत अछि। तेँ नाटकक वैवाहिक, चिकित्सकीय आ मनोवैज्ञानिक विवरणकेँ अपालाक “प्रमाणित जीवनचरित” कहब अनुचित होएत। श्रेष्ठ आलोचनात्मक पाठ ई मानैत अछि जे लेखक ऋचा-स्मृतिक आधारपर आधुनिक आत्मसम्मानक नाट्य-आख्यान रचैत छथि।

रंगभाषा आ अंग्रेजी रूपान्तर

मैथिली मूलक सबसे प्रभावकारी शक्ति संबोधन, आश्रमिक शब्दावली आ स्त्री-वाणीतील आत्मगौरव अछि। अंग्रेजी «अपाला आत्रेयी» दृश्यक्रम आ विचारधुरी सुरक्षित रखैत अछि, मंच-पाठक लेल निर्देश अधिक प्रत्यक्ष बनबैत अछि। मुदा मैथिली संवादमे देह, लज्जा, सम्मान आ आत्मीय सम्बोधनक जे सांस्कृतिक ताप अछि, अंग्रेजीमे ओकर किछु भाग अनिवार्यतः समतल भऽ जाइत अछि। रूपान्तरक उपलब्धि ई जे ओ विदेशी दर्शककेँ कथा बुझबैत अछि; सीमा ई जे मूलक लोक-सांस्कृतिक अंतरंगता पूर्णतः स्थानान्तरित नहि भऽ सकैत अछि।

समग्र मूल्यांकन

नाटकक उपलब्धि वैदिक स्त्री-पात्रकेँ आधुनिक घोषणापत्र बनएबाक बजाय प्रश्नशील, आहत, आत्मनिर्णयी आ कवि-स्वरयुक्त चरित्र बनएबामे अछि। किछु संवाद विचार-प्रधान आ प्रत्यक्ष उपदेशात्मक भऽ उठैत अछि, मुदा सात दृश्यक भावक्रम एकरा केवल शिक्षोपदेश नहि रहए दैत। मंचपर प्रकाश, अग्निकुण्ड, जलाशय आ त्वचा-संकेतक संयत उपयोग एकर प्रतीक-व्यवस्थाकेँ समर्थ बनबैत अछि।

४. “भऽ जाएब छू”: बाल-चौबटिया रंगमंचमे जलवायु-चेतनाक नाट्य-विज्ञान

“भऽ जाएब छू” स्वयंकेँ “मैथिलीक पहिल जलवायु-चेतना बाल चौबटिया-सड़क नाटक” कहैत अछि। प्राथमिकता सम्बन्धी “पहिल” दावाक स्वतंत्र ग्रन्थसूचीगत सत्यापन एहि अध्ययनसँ सम्भव नहि भेल, अतः एकरा कृतिक आत्म-वर्णनक रूपमे देखब उचित अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ अधिक महत्वपूर्ण बात ई अछि जे नाटक विज्ञान, खेल, लोक-संवाद आ दर्शक-भागीदारीकेँ एकसाथ लऽ कऽ पर्यावरणीय शिक्षा केवळ पाठ नहि, सार्वजनिक प्रदर्शन बनबैत अछि।

तीन भागक क्रम

• भाग १ “सृष्टिक पात्र सभ” मे बच्चा, प्रकृति, गाछ, कीट-पतंग आ पृथ्वीक जीवित रूपक रंगमंचीय समुदाय बनबैत अछि। पात्रसभ मानवीकरणक सहारे जटिल पर्यावरणीय सम्बन्धकेँ सहज बनबैत अछि। बाल-दर्शक प्रकृतिक “वस्तु” नहि, सह-अभिनेता देखैत अछि।

• भाग २ “विज्ञान आ कल्पना” मे ऊर्जा, प्रकाश, ताप, गाछ, धुआँ, श्वसन आ रोपणक प्रश्न खेलक भाषा में अबैत अछि। विज्ञानक तथ्य मंचपर प्रश्न-उत्तर, हास्य आ सामूहिक प्रतिक्रिया द्वारा ग्रहणीय बनैत अछि। “कल्पना” आ “काज” बीचक सम्बन्ध नाटकक शिक्षा-दृष्टिक केन्द्र अछि।

• भाग ३ “प्रतिज्ञा” दर्शककेँ निष्क्रिय उपभोक्ता रहए नहि दैत। सामूहिक प्रतिज्ञा प्रदर्शनक सीमा तोड़ि वास्तविक जीवनक व्यवहारपर दबाव बनबैत अछि। ई चौबटिया-रंगमंचक मूल सामुदायिक शक्ति अछि।

रंगमंच, विज्ञान आ शोध-सन्दर्भ

समुदाय-आधारित रंगमंचक प्रभाव पर २०२४ केर «आपदा-विज्ञानमे प्रगति» अध्ययन देखबैत अछि जे रंगमंच जोखिम-संचार आ अनुकूलन-विचारकेँ स्थानीय समुदायमे सक्रिय चर्चा बनाबि सकैत अछि। “भऽ जाएब छू” एहि व्यापक सिद्धान्तसँ मेल खाइत अछि: दर्शक केवल सूचना नहि सुनैत, प्रतिक्रिया दैत, हँसैत, प्रश्न करैत आ प्रतिज्ञा करैत अछि। बाल-रंगमंचमे विज्ञानक सफलता ओतबे होइत अछि जतय तथ्य आ नाटकीय क्रिया एक-दोसरकेँ सहारा दे; एहि नाटकमे प्रकाश-ताप, रोपण, धुआँ, गाछ आ स्थानीय/बाहरी प्रजाति सम्बन्धी बहस एहि दिशामे काज करैत अछि।

सीमा आ सम्भावना

पर्यावरणीय नाटकक स्थायी जोखिम उपदेशात्मकता अछि। किछु अंशमे पात्र विचारक वाहक बनि जाइत अछि आ चरित्रगत जटिलता घटैत अछि। मुदा सड़क-नाटकक संक्षिप्त, दोहरावयुक्त, घोषणात्मक प्रकृति एहि दोषकेँ कार्यात्मक गुणमे बदलि सकैत अछि, कारण मंचक लक्ष्य मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद नहि, सामूहिक चेतना जगाएब अछि। अंग्रेजी रूपान्तर «हम सभ छाउर भऽ जाएब» शीर्षक द्वारा संकटकेँ अधिक तीव्र भाव दैत अछि; तखन “भऽ जाएब छू” केर स्थानीय बोलचालक तात्कालिकता अंग्रेजीमे पूर्णतः पुनरुत्पन्न नहि होइत अछि।

५. “दानवीर दधीची”: अस्थि-दानक लोकप्रिय आख्यानसँ ज्ञान-दानक वैदिक पुनर्पाठ धरि

"दानवीर दधीची" अपन संशोधित बाल-नाट्यरूपमे दधीचिक प्रसिद्ध अस्थि-दानक बादक पुराणकथाकेँ केन्द्र नहि बनबैत, बल्कि दध्यङ आथर्वन, मधुविद्या, आश्विन बन्धु, इन्द्रक प्रतिज्ञा आ ज्ञान-साझेदारीक तनावपर जोर दैत अछि। एहि चयनसँ नाटकक "दान" शब्द भौतिक शरीरक बलिदानसँ ज्ञानक नैतिक वितरण दिस सरकि जाइत अछि।

तीन दृश्य

• प्रथम दृश्य तपोवनमे गुरु दध्यङक ज्ञान-असन्तोष प्रस्तुत करैत अछि: ज्ञान अछि, मुदा योग्य जिज्ञासुक खोज सेहो अछि। मधुविद्याक पारस्परिकता—सभ एक-दोसराक हेतु मधु—नाटकक दार्शनिक आधार अछि। इन्द्रक धमकी ज्ञानपर सत्ता-नियन्त्रणक रूपक बनैत अछि।

• दृश्य दू मे आश्विन बन्धुक शिक्षाग्रहण आ घोड़ाक माथक युक्ति दृश्यात्मक चरम बनैत अछि। प्रतिज्ञा, भय, गुरु-धर्म आ जोखिम एके दृश्य में जुड़ैत अछि। चमत्कारक तत्व बाल-दर्शकेँ आकर्षित करैत अछि, मुदा भीतरक प्रश्न गंभीर अछि: सत्ता यदि ज्ञान रोके तँ शिक्षकक दायित्व की?

• दृश्य तीनमे संघर्ष सामुदायिक सुरक्षा आ युद्ध-सन्दर्भ धरि बढ़ैत अछि। अन्तिम सूत्रधार लोकप्रिय अस्थि-वज्र कथा आ एहि वैदिक पुनर्पाठक भेदक संकेत दैत अछि। आलोचनात्मक रूपेँ एहि भेदकेँ परम्पराक "सत्य बनाम झूठ" नहि, बल्कि बहुस्तरीय आख्यान-विकासक रूपमे बुझब चाही।

वैदिक-उपनिषदिक आधार

शतपथ ब्राह्मण १४.१.१ मे दध्यङ, आश्विन आ घोड़ाक सिरक प्रसंग भेटैत अछि; शतपथ ब्राह्मण ४.१.५.१८ आ बृहदारण्यक उपनिषद २.५ मे मधु-विद्याक परम्परा दध्यच/दध्यङ आ आश्विनसँ जुड़ल अछि। एहि कारणेँ नाटकक वैदिक पुनर्पाठक ठोस पाठीय पृष्ठभूमि अछि। तथापि बादक दधीचि-अस्थि कथा सेहो भारतीय परम्पराक प्रभावशाली स्तर अछि; नाटक एक स्तर चुनैत अछि, सम्पूर्ण परम्पराकेँ निरस्त नहि करैत।

नाटकीय उपलब्धि

बच्चाक लेल दार्शनिक विषय प्रस्तुत करैत समय नाटक “ज्ञान” कैं अमूर्त सिद्धान्त नहि रहए दैत: प्रतिज्ञा, गर्दनि, घोड़ाक सिर, भय, युद्ध, आश्विनक पात्रता—ई सभ दृश्यात्मक वस्तु बनि जाइत अछि। अंग्रेजी रूपान्तर संरचना आ वैचारिक तनाव बचबैत अछि, मुदा “दान”, “विद्या”, “सेवा” आ वैदिक संबोधनक अनेक अर्थ अंग्रेजी समतुल्य शब्दमे संकुचित होइत अछि। तखन अन्तरराष्ट्रीय रंगपाठक लेल स्पष्ट मंच-निर्देश एकर उपयोगिता बढ़बैत अछि।

६. “गंगा ब्रिज”: विकासक स्थापत्य, भ्रष्टाचारक तन्त्र आ स्मृतिक प्रतिरोध

“गंगा ब्रिज” संग्रहक सबसे विस्तृत समकालीन सामाजिक नाटकसभमे अछि। आठ पल्लव पाँच विषयगत भागमे संगठित भऽ विकासक सपना सँ निर्माणक कठिनाइ, स्वार्थ, समझौता, बलिदान, हत्या-जकाँ रचल दुर्घटना आ अन्ततः सार्वजनिक स्मृति धरि जाइत अछि। पुल एतय केवल स्थापत्य नहि; राज्य, अभियन्ता, ठेकेदार, श्रमिक, परिवार आ जनताक नैतिक सम्बन्धक विशाल रूपक अछि।

आठ पल्लव आ पाँच भाग

• पल्लव एक / भाग १ “सपना आ शुरुआत” मे जन-कोरस, मरम्मति, ठेकेदार-अभियन्ता आ “सरकार”क अर्थपर व्यंग्यात्मक बहस विकासक राजनीतिक व्याकरण स्थापित करैत अछि। लोकक संवाद नाटककैं नीचे सँ देखबाक दृष्टि दैत अछि।

• पल्लव दू / भाग २ “निर्माणक कठिनाइ” शिक्षा-संस्था आ अभियन्ताक आदर्शवादकैं आमने-सामने रखैत अछि। महाविद्यालय केवल तकनीकी ज्ञान नहि, संस्थागत संस्कारक कारखाना सेहो बनि सकैत अछि—ई नाटकक महत्त्वपूर्ण व्यंग्य अछि।

• पल्लव तीन घर-परिवारक परिप्रेक्ष्य आनैत अछि। अभियन्ताक नैतिक निर्णय अब निजी जीवनक मूल्यक संग जुड़ैत अछि। एहि बिन्दुपर “ईमानदारी” अमूर्त सद्गुण नहि, परिवारपर पड़एबाला जोखिम बनैत अछि।

• पल्लव चारिमे मुख्यमंत्री आ मुख्य अभियन्ताक संवाद टेण्डर, कमीशन आ प्रशासनिक दोहरी भाषाकैं उद्घाटित करैत अछि। सार्वजनिक हितक शब्द निजी सौदाक परदा बनैत अछि।

• पल्लव पाँचमे स्थलपर खराब सामग्री, सुरक्षा-अभाव, श्रमिक मृत्यु आ फाइल-साक्ष्यक प्रश्न उठैत अछि। अभियन्ता लिखित प्रमाण बनाबैत अछि; नाटक एतय दस्तावेजकेँ नैतिक प्रतिरोधक वस्तु बनबैत अछि।

• पल्लव छअमे सत्ता अभियन्ताकेँ हटएबाक उपाय सोचैत अछि। साधारण स्थानान्तरण पर्याप्त नहि, कारण सच बोलनिहार “नायक” बनि सकैत अछि; अतः दुर्घटना-जकाँ देखाएल हत्या राजनीतिक भयक चरम रूप अछि।

• पल्लव सातमे मृतदेह, परिवार, जन-सन्देह आ आधिकारिक “दुर्घटना”क कथा आमने-सामने अबैत अछि। निजी शोक सार्वजनिक प्रश्नमे बदलैत अछि।

• पल्लव आठ समय बीतलाक बाद जर्जर पुल आ बचल स्मृतिक सामना करबैत अछि। ध्वनि, हथौड़ा, दरार आ लोकक स्मरण विकासक आधिकारिक स्मारककेँ पलटि प्रतिरोधक स्मारक बनबैत अछि।

आधिकारिक शोध-सन्दर्भ

भारतक नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षकक २०२४ मे प्रस्तुत «मध्य प्रदेशमे पैघ पुलसभक निर्माण» प्रदर्शन लेखापरीक्षामे ७२ जाँचल पुलक काजमे केवल ९ समयपर पूरा भेल, शेषमे १ सँ ६८ महीना देरी, अपर्याप्त योजना, अनुबन्ध-पालन आ सड़क-सुरक्षा सम्बन्धी कमी दर्ज भेल। ई रिपोर्ट “गंगा ब्रिज” केर कोनो विशिष्ट घटना वा पात्रक स्रोत नहि; मुदा नाटकमे उठाओल योजना, ठेका, सुरक्षा, गुणवत्ता आ संस्थागत जवाबदेहीक प्रश्न वास्तविक सार्वजनिक निर्माण-व्यवस्थामे व्यापक महत्व रखैत अछि।

रंग-शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्यांकन

नाटकक संरचना दस्तावेजी यथार्थवाद आ लोक-व्यंग्य बीच चलैत अछि। जन-कोरस, महाविद्यालय, घर, सचिवालय, निर्माण-स्थल आ मृत्यु-पश्चात स्मृति—स्थानक लगातार परिवर्तन “तन्त्र” केँ बहुस्तरीय बनबैत अछि। खतरा ई जे भ्रष्टाचारक पात्र कखनो प्रकार-चरित्र बनि जाइन; मुदा ई प्रकारिकी नाटकक राजनीतिक व्यंग्य-परम्परा अनुरूप अछि। अंग्रेजी «गंगा ब्रिज» प्रशासनिक संवादकेँ सुबोध करैत अछि, तखन मैथिली लोक-वाक्य, व्यंग्य, रिश्तागत संबोधन आ ग्रामीण हास्यक अतिरिक्त अर्थ कम होइत अछि।

७. “जलोदीप”: बाढ़ि, जल-पथ, बाल-बुद्धि आ सामुदायिक जवाबदेही

“जलोदीप” बाल-नाटक होइतहुँ संग्रहक सबसे व्यवस्थित आपदा-नाट्यरचनासभमे अछि। पूर्वदृश्यसँ शुरू भऽ पाँच अंक आ दस दृश्यक संरचना बाढ़िक अन्हार सँ कारण-बोध, लोक-बहस, स्मृति-दीप आ सामुदायिक कार्ययोजना धरि बढ़ैत अछि। नाटकक मूल वैचारिक सूत्र ई नहि जे “पानि शत्रु” अछि; समस्या ओतय पैदा होइत अछि जतय जलक स्वाभाविक पथ अनदेखा कएल जाइत अछि आ विकास बिना निकासी-समझक थोपल जाइत अछि।

पूर्वदृश्य आ पाँच अंक

• पूर्वदृश्य आपात स्थिति रचैत अछि। जलक ध्वनि, ऊँच स्थल, भय, बचाव आ अराजकता दर्शककेँ तर्क सँ पहिने अनुभवमे प्रवेश करबैत अछि।

• अंक १ “बाढ़िक अन्हार” केर दृश्य १ आ २ मे चेतावनी, कागजपर खरीदल नाव, अनुपस्थित संसाधन, मृत्यु आ बच्चाक प्रश्न प्रशासनिक असफलताकेँ मानवीय चेहरा दैत अछि। शोककेँ “भगवानक लिखल” मानि समाप्त करबाक बदला नाटक मानवक निर्णयपर प्रश्न उठबैत अछि।

• अंक २ “पहाड़क खेल” केर दुनू दृश्य बच्चासभक मॉडल-निर्माण द्वारा जलविज्ञानक सहज रूपक रचैत अछि। गाँव, सड़क, तटबन्ध, नाला, पुलिया आ जल-पथ खेलक वस्तु बनैत अछि; वयस्क पहिने हँसैत छथि, बादमे बच्चाक मॉडल सुनैत छथि।

• अंक ३ “लोकक खेल” मे अधिकारी/ठेकेदारक “प्राकृतिक आपदा” भाषाक सामना प्रमाण, नक्शा, पुरान जल-पथ आ स्थानीय अनुभवसँ होइत अछि। नाटक समाधानकेँ अति सरल “सब तटबन्ध तोड़ू” अथवा “सब सड़क हटाउ”मे नहि बदलैत; उचित निकासी आ उत्तरदायी योजना पर जोर दैत अछि।

• अंक ४ “जलोदीप” मे तरैत दीप मृतक-स्मृतिक प्रतीकसँ कार्ययोजनाक प्रकाश बनैत अछि। बचाव, जल-पथ नक्शा, पुरान निकासी, पुलिया-जाँच, तैराकी/रस्सी प्रशिक्षण, नाला-सफाई आ प्लास्टिक-नियन्त्रण जकाँ उपाय नाटककेँ क्रियात्मक नागरिक रंगमंच बनबैत अछि।

• अंक ५ “नबका बिहान” समुदायकेँ सफाई, तिथिबद्ध फोटो-दस्तावेज, निकासी सहित विकासक माँग आ सुधारल मॉडलक ओर लऽ जाइत अछि। अन्तिम भाव “विकासक विरोध” नहि, उत्तरदायी विकासक माँग अछि।

उत्तर बिहारक बाढ़ि-सन्दर्भ

२०१९ केर «जलविज्ञान» अध्ययन अगस्त २०१७ केर उत्तर बिहार बाढ़िमे अत्यधिक वर्षा, तटबन्ध टूटब आ जल-जमावक जटिल सम्बन्ध देखबैत अछि। २०२२ केर «धारणीयता» अध्ययन उत्तर बिहारमे गाँव-स्तरीय बाढ़ि-जोखिमक स्थानिक विभाजन करैत अछि। २३ जून २०२६ केर बिहार राज्य आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण समीक्षा १५ बाढ़ि-प्रवण जिलामे तटबन्ध-सुरक्षा, जोखिम-मूल्यांकन, निकासी/पुनर्वास, आश्रय आ बचाव-संसाधनक तैयारी पर जोर दैत अछि। एहि शोध-सन्दर्भसभ सँ नाटकक मूल चिन्ता—स्थानीय जोखिम-बोध, निकासी, पूर्वतैयारी आ सामुदायिक सहभागिता—समकालीन आपदा-प्रबन्धन विमर्शसँ गहर संबंध रखैत अछि।

बाल-नाट्यक विशेष उपलब्धि

एहि नाटकमे बच्चा “पीड़ित” मात्र नहि, ज्ञान-उत्पादक अछि। पहाड़क खेल, मॉडल आ प्रश्न वयस्क तकनीकी भाषाकेँ चुनौती दैत अछि। ई उलटाव बाल-साहित्यक दृष्टिसँ महत्वपूर्ण अछि: बच्चाक जिज्ञासा सामाजिक समाधानक स्रोत बनैत अछि। अंग्रेजी रूपान्तर «जलोदीप : जलदीप» प्रतीकक अर्थ स्पष्ट करैत अछि, तखन “जलोदीप” शब्दक सांस्कृतिक संक्षिप्तता अंग्रेजी व्याख्यात्मक शीर्षकमे विस्तार पबैत अछि।

८. “कमलाक भगता”: अनुकरण, लोक-आस्था आ हास्यक ज्ञानमीमांसा

दू दृश्यक “कमलाक भगता” आकारमे छोट, मुदा विचारमे तीक्ष्ण अछि। कथा एकटा निजी संकेतक सार्वजनिक अनुष्ठान बनि जाएबाक हास्यपर आधारित अछि। भिखारी अपन जमा धन बालूमे गाड़ि चिन्हक रूपमे बालुक शिवलिङ्ग बनबैत अछि; बादक स्नानार्थी कारण नहि बुझि ओकर नकल करैत छथि; देखते-देखते बहुत रास शिवलिङ्ग बनि जाइत अछि आ मूल चिन्ह हराइत अछि। परिणामतः अनुकरण आ परम्पराक सम्बन्धपर चुटीला प्रश्न उठैत अछि।

दू दृश्यक गति

• दृश्य १ मे पात्रक दरिद्रता, बचत, यात्रा-कल्पना आ कमला-भक्ति कथा के निजी प्रेरणा दैत अछि। ई तैयारी आवश्यक अछि, कारण दोसर दृश्यक हास्य तभी अर्थपूर्ण बनैत अछि जखन दर्शक जानैत अछि जे बालू-चिह्नक असली उद्देश्य धार्मिक विधान नहि, निजी धनक पहचान अछि।

• दृश्य २ मे एक व्यक्ति कारण नहि पूछि नकल करैत अछि, फेर सामूहिक अनुकरण स्वतः "परम्परा" बनि जाइत अछि। नाटकक चरम हास्य भिखारीक निराशामे अछि: जे चिन्ह निजी स्मृति लेल बनाओल गेल छल, सामूहिक अन्धानुकरण ओकर सूचना-मूल्य नष्ट कऽ देलक। सूत्रधारक सीख—पूछू, बुझू, फेर करू—हास्यकेँ ज्ञानमीमांसक प्रश्नमे बदलैत अछि।

स्रोत-सावधानी आ साहित्यिक अर्थ

कृतिक भूमिका एहि कथाकेँ संस्कृत-साहित्यक प्रसिद्ध कथा पर आधारित कहैत अछि, मुदा उपलब्ध पाठ आ विश्वसनीय खोजसँ सटीक मूल ग्रन्थक पहचान नहि भऽ सकल। अतः पंचतन्त्र, हितोपदेश अथवा कोनो आन ग्रन्थक नाम अनुमानसँ जोड़ब अनुचित होएत। आलोचनात्मक दृष्टिसँ नाटकक महत्व मूल स्रोत-नाममे नहि, "कारण बुझने बिना आचार दोहराएब" केर सार्वभौम मानवीय प्रवृत्तिक हास्यात्मक मंचीकरणमे अछि।

रंगमंचीयता

बालुक लिङ्गसभक क्रमशः बढ़ैत संख्या अत्यन्त दृश्यात्मक हास्य उत्पन्न करैत अछि। दृश्य लगभग मूक-व्यंग्यक सम्भावना रखैत अछि; प्रत्येक नकलक संग दर्शक स्थिति बुझैत जाइत अछि, पात्र नहि। एहि "दर्शक अधिक जानैत अछि" तकनीकसँ नाटकीय विडम्बना पैदा होइत अछि। अंग्रेजी रूपान्तर अर्थ स्पष्ट रखैत अछि, तखन कमला नदी, भगता, लोक-स्नान आ स्थानीय धार्मिक व्यवहारक सांस्कृतिक घनत्व मैथिली मूलमे अधिक स्वाभाविक अछि।

९. "मचण्ड": भाषा, न्याय, आतंक आ राज्यक नैतिक द्वन्द्व

"मचण्ड" चार अंकी समकालीन नाटक अछि जे भाषिक असमझ, अपराध-जाल, आतंक, राज्य-सुरक्षा, बेरोजगारी, दागदार पहचान आ पुनर्वासक असफलता एके कथा-

विन्यासमे जोड़ैत अछि। केन्द्रमे मुतालिफ नामक तमिल युवक अछि, जे शहरक भाषा नहि बुझैत अछि; अनुवादक “शब्दक पुल” बनैत अछि। एहि आधारभूत स्थिति सँ नाटक एकटा पैघ प्रश्न बनबैत अछि—जँ व्यक्ति प्रक्रिया बुझिते नहि अछि तँ कानूनक औपचारिकता केतेक न्यायपूर्ण?

चार अंक

• अंक १ अदालत/जेल-परिवेशमे भाषिक दूरी, भोजनक छोट पैकेट, वकीलक आरोप आ खुफिया अधिकारीक संशय द्वारा मुतालिफकेँ “आरोपी”सँ “मनुष्य” बनएबाक कोशिश करैत अछि। तमिल वकीलक माँग भाषिक न्यायक केन्द्रीय प्रश्न अछि। अधिकारी “सरगना” आ “मोहरा”क भेद खोजैत अछि।

• अंक २ खुफिया अधिकारी आ आतंकी नेताक वैचारिक भिड़न्त अछि। डेटा-लीक, बेरोजगारी, नशा, भर्ती, भय आ शान्ति-समझौता जकाँ उदाहरण पात्रसभ द्वारा तर्कक हथियार बनैत अछि। महत्वपूर्ण सावधानी ई जे पात्रक ऐतिहासिक टिप्पणी स्वतः लेखकक प्रमाणित इतिहास नहि; ई नाटकीय बहसक सामग्री अछि।

• अंक ३ मे अधिकारी अपहृत/आहत अछि आ जमानतपर छुटल मुतालिफ पुनः अबैत अछि—मुदा बदलल रूपमे। पुलिस, मीडिया, बेरोजगारी आ सामाजिक दागक कारण सामान्य जीवनमे वापसी कठिन भेल; “फँसल मोहरा” खतरा बनि सकैत अछि। एहि रूपान्तरणसँ नाटक केवल सुरक्षा-राज्यक पक्ष अथवा आतंकक पक्ष नहि लेत, बल्कि विफल पुनर्समावेशनक नैतिक मूल्य पूछैत अछि।

• अंक ४ पराजयकेँ अन्त नहि, अगिला यात्राक शुरुआत कहैत अछि। अधिकारी मुतालिफक कथा लिखबाक सम्भावना सोचैत अछि; भोजनक पैकेट साक्ष्य-जकाँ लौटैत अछि। हथकड़ी, शहरक मिश्रित धार्मिक ध्वनि आ अधूर अनुवाद नाटककेँ असुविधाजनक खुलापन देत अछि।

न्यायालयक भाषिक सन्दर्भ

भारतक सर्वोच्च न्यायालयक «केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो बनाम नरोत्तम धाकड़ आ अन्य» (२५ अगस्त २०२३, २०२३ आईएनएससी ७७०) मे दण्ड प्रक्रिया संहिताक भाषा-प्रावधान पर चर्चा भेल। निर्णय ई नहि कहैत जे प्रत्येक आरोपपत्र अनिवार्यतः आरोपितक मातृभाषामे हो; मुदा न्यायालय धारा २७९ जकाँ प्रावधानक उल्लेख करैत

अछि, जाहिमे आरोपित द्वारा नहि बुझल भाषा में देल साक्ष्यक व्याख्या ओकर बुझबाक भाषामे करबाक आवश्यकता अछि। “मचण्ड” केर व्यापक साहित्यिक प्रश्न एहि संवैधानिक-नैतिक धरातलसँ संवाद करैत अछि: प्रक्रिया समझे बिना व्यक्ति न्यायमे वास्तविक सहभागी कोना बनत?

चरित्र आ रंग-तनाव

मुतालिफक मौनता नाटकक सबसे प्रभावशाली रंग-यन्त्र अछि। कम बोलनिहार पात्रक आँखि “प्रश्न” बनैत अछि, अनुवादक ओकर आवाजक अपूर्ण माध्यम। खुफिया अधिकारी दमनकारी राज्यक सरल प्रतिमूर्ति नहि; ओकर सहानुभूति स्वयं विवादक विषय बनैत अछि। एहि जटिलतासँ नाटक राजनीतिक प्रचारक सीमासँ बाहर निकलैत अछि। तखन किछु वैचारिक संवाद अत्यधिक लम्बा होइत अछि आ रंगगत क्रिया कम भऽ सकैत अछि; कुशल निर्देशनमे विराम, प्रकाश-विभाजन आ शारीरिक दूरी एहि घन तर्ककेँ दृश्यात्मक बनाबए पड़त।

अंग्रेजी रूपान्तर

«मचण्ड» मे न्याय, गुप्तचर-तन्त्र, आतंकक जाल आ अनुवाद जकाँ आधुनिक संस्थागत शब्द अंग्रेजीमे सहज चलैत अछि, जाहिसँ अन्तरराष्ट्रीय मंचीय पठनीयता बढ़ैत अछि। उलटा, मैथिली मूलमे अलग-अलग भाषिक पहचान, स्थानीय व्यंग्य आ “शब्दक पुल”क बिम्ब बहुभाषी भारतक अधिक ठोस सामाजिक अनुभव दैत अछि। एहि जोड़ीमे अंग्रेजी केवल भाषा-बदल नहि, दर्शक-वर्ग बदलबाक प्रयोग अछि।

१०. “संकर्षण”: दंभक लोक-चरित्र आ आत्मबोधक हास्य-यात्रा

“संकर्षण” पाँच कल्लोल आ अठारह अंकक विस्तृत लोक-सामाजिक व्यंग्य अछि। नायक संकर्षण अपन सम्मानकेँ वास्तविक कर्मसँ कम, कथा, बढ़ाई, बहन्ना, शब्द-चालाकी आ दूसरक नजरमे “बड़का” बनबाक इच्छासँ बनबैत अछि। नाटकक मौलिकता ई जे ओकर परिवर्तन एकटा अचानक उपदेशसँ नहि, लगातार हास्यास्पद ठोकर, अपमान, भय, पारिवारिक संकट, शहरक अनुभव आ अन्ततः ठकल जाएबाक स्वीकृतिसँ होइत अछि।

पहिल कल्लोल: प्रतिष्ठाक बीआ

• अंक १ "कलक्टरक बहन्ना" मे संकर्षण सामाजिक सहायता देबाक बदला काल्पनिक पहुँच आ बहन्नासँ अपन प्रतिष्ठा बचबैत अछि।

• अंक २ "बंगाली बाबूक सीख आ कलक्टरक चैम्बर" दंभकेँ वास्तविक प्रशासनिक दरवज्ञापर परखैत अछि। भास्कर प्रवेश पाबैत अछि, संकर्षण धक्का खाइत अछि; स्वयं-निर्मित छवि पहिल बेर फूटैत अछि।

• अंक ३ "तीन टा कारी कुकुरक खिस्सा" मे कुकुर मार/झाँझरसँ बचल अनुभवकेँ सम्मान-जकाँ सुनबैत अछि। ई उपकथा संकर्षणक मानसक दर्पण अछि। अन्तमे भुज्ञा साझा करबाक साधारण मित्रता दंभ-विहीन जीवनक पहिल शान्त संकेत अछि।

दोसर कल्लोल: झूठ जड़ि पकड़ैत अछि

• अंक १ "पसीझक काँटक दंभ" मे उपचारक झूठ गंभीर जानलेवा रूप लऽ सकैत अछि; हास्यक भीतर नैतिक खतरा बढ़ैत अछि।

• अंक २ "पंचैतीक दण्ड" सामुदायिक अनुशासन आनैत अछि; व्यक्तिगत बढाई सार्वजनिक जवाबदेहीसँ टकराइत अछि।

• अंक ३ "कंठी हाथमे, कोदारि हाथमे" व्रत आ व्यवहारक विरोधाभास पर व्यंग्य करैत अछि। शब्दक तकनीकी बचाव द्वारा नैतिकता सँ बचबाक कोशिश संकर्षणक खास प्रवृत्ति अछि।

• अंक ४ "टेलीफोन डायरीक भय" आधुनिक तकनीक आ आतंक-भयकेँ लोक-अफवाहमे बदलैत अछि; एक झूठ दोसरक वास्तविक नुकसान बनैत अछि।

तेसर कल्लोल: बियाह आ बड़ाइक बजार

• अंक १ "घटकक चिकनी बात" विवाह-बाजारमे भाषा, रंग, प्रतिष्ठा आ अतिशयोक्तिक अर्थशास्त्र उजागर करैत अछि।

• अंक २ "सासुरसँ आगमन आ रंगक दंभ" रूप-रंगक सामाजिक मानदण्डपर व्यंग्य करैत अछि; संकर्षण विवाहकेँ आत्म-प्रदर्शन बनबैत अछि।

• अंक ३ "गोबर आ दुलारक प्रश्न" घरक स्त्री-वाणी द्वारा ओकर दंभकेँ तत्काल धरातलपर अनैत अछि। मंचबाह्य आवाज सेहो शक्तिशाली प्रतिवाद बनैत अछि।

• अंक ४ “गुरक चाह आ जगन्नाथक कुसियार” तर्कक हास्यास्पद उलटबाँसी अछि—संकर्षण प्रत्येक बातकेँ अपन अनुकूल सिद्ध करबाक कला रखैत अछि।

• अंक ५ “बेटाक पलायन” पहिल गम्भीर निजी आघात अछि। हास्य-पात्र पिता बनि थाकैत अछि; दिल्ली यात्रा चरित्र-विकासक दोसर चरण खोलैत अछि।

चारिम कल्लोल: शहरक आइना

• अंक १ “ट्रेनमे तीन टा बौआ” उम्र, पुरुषत्व आ बढाईक विनोदपूर्ण विन्यास अछि; शहर-जात्रा ग्रामीण दंभकेँ नया नजरसँ देखबैत अछि।

• अंक २ “अलीगढ़मे पुलिस-चेकिंग” निर्णायक अछि: एतय संकर्षण स्वयं मनमानी सत्ता आ भ्रष्ट व्यवहारक शिकार बनैत अछि। जे व्यक्ति दूसरकेँ शब्दसँ डरबैत छल, आब भयक वास्तविक मूल्य भोगैत अछि।

• अंक ३ “लाल काकाक घर” पुत्र-सन्धानक राहत आ आत्म-निरीक्षण आनैत अछि। परिवर्तन अभी अधूर अछि; संकर्षण सत्य स्वीकारैतहुँ भाग्यपर दोष देबाक आदत नहि छोड़ैत।

पाँचम कल्लोल: आत्मबोधक जुत्ता

• अंक १ “चोर-बजारक ठकान” मे दिल्लीक बाजार स्वयं संकर्षणपर ओही चापलूसीक हथियार चलबैत अछि जे ओ जीवन भर उपयोग करैत रहल।

• अंक २ “सोलक भीतर छिपल सत्य” वस्तु-प्रतीकक चरम अछि। जुत्ताक भीतरक धोखा छुपाओल दंभ-जकाँ देर सँ खुलैत अछि। पहिल बेर संकर्षण ठकानकेँ “सम्मान” बना कऽ नहि सुनबैत, साफ स्वीकारैत अछि।

• अंक ३ उपसंहारमे सूत्रधार संकर्षणकेँ एक व्यक्ति सँ व्यापक सामाजिक प्रवृत्ति बनबैत अछि। असली चोट जुत्तामे नहि, अहंकारमे लागल—ई नाटकक नैतिक पूर्णता अछि।

लोक-हास्यक शिल्प

नाटकक संरचना प्रकरणात्मक अछि; प्रत्येक अंक लगभग स्वतंत्र लोक-किस्सा जकाँ लगि सकैत अछि। एहि कारण गति कतिपय ठाम ढीली होएबाक सम्भावना अछि, मुदा

कारी कुकुर, कंठी, डायरी, ट्रेन, खेसारी, बाजार आ जुत्ता जकाँ वस्तु-मोटिफ क्रमशः एके चरित्र-दोषकेँ नवा परिस्थिति में परखैत अछि। पुनरावृत्ति एतय दोष मात्र नहि, चरित्र-निर्माणक विधि अछि। अंग्रेजी «संकर्षण» अठारह अंकक क्रम सुरक्षित रखैत अछि, मुदा मुहावरा, ग्रामीण संबोधन, जातीय/परिवारिक सामाजिक स्वर आ लोक-हास्यक ध्वनि मूल मैथिलीमे अधिक सघन अछि।

११. “उल्कामुख”: प्रेम, स्मृति, विस्मृति आ ज्ञानक बहुस्तरीय नाट्य-इतिहास

“उल्कामुख” संग्रहक सबसे महत्त्वाकांक्षी नाटक अछि। गङ्गेश आ वल्लभाक प्रेम-स्मृति सँ शुरू भऽ ई कृति इतिहास-लेखन, नाम-विलोपन, दार्शनिक परम्परा, लोकगीत, गुरु-शिष्य सम्बन्ध, जाति, शिक्षा, राजदरबार, तर्क आ सामूहिक स्मृतिक प्रश्नकेँ बहुस्तरीय मंच-योजना में जोड़ैत अछि। पहिल चारि कल्लोलमे शतरंज-डिजाइन घन, पाँचमसँ गोला/पृथ्वी; भूत-जकाँ ऐतिहासिक पात्र; लोकध्वनि; सियार, बाँस आ धरतीक घरघराहट—ई सभ एकटा स्मृति-रंगमंच रचैत अछि।

संरचनात्मक त्रुटि: “छह” नहि, वास्तविक सात कल्लोल

उपशीर्षक “छह कल्लोलक नाट्य-गाथा” कहैत अछि, मुदा पाठ स्पष्ट रूपेँ सातम कल्लोल धरि जाइत अछि। पाँचम कल्लोलसँ पात्र-रूपान्तरण आ घनक बदला गोला/पृथ्वी आवैत अछि; छअममे बाल गङ्गाधरक शिक्षा-विरोध आ गुरु-खोज; सातममे राजदरबार आ तर्क-प्रतिभाक प्रदर्शन अछि। अतः सातम कल्लोलकेँ छोड़ि छह मानब स्वयं पाठक एक पूर्ण चरण नष्ट करब होएत।

पहिल कल्लोल: प्रेम आ बौद्धिक आकर्षणक बीआ

गङ्गेश-வல்லभा सम्बन्ध कविता, प्रश्न, खेल आ स्मृतिक साथ विकसित होइत अछि। शतरंजक घन आ दानाक घातांकीय बढ़ोतरी जकाँ गणितीय कथा प्रेमक दृश्यकेँ ज्ञानक खेलसँ जोड़ैत अछि। प्रेम केवल भावुक आकर्षण नहि; बौद्धिक साझेदारीक रूपमे स्थापित होइत अछि। देवदत्त जकाँ पात्र भविष्यक असुरक्षाक संकेत दैत अछि, जाहिसँ आरम्भिक सौम्य वातावरणमे इतिहासक छाया प्रवेश करैत अछि।

दोसर कल्लोल: गीत, लोक-स्मृति आ अन्तरंगता

दोसर कल्लोल लोकगीत आ प्रेमक स्मृतिसँ पहिले कल्लोलक बीआ गहिर करैत अछि। लिखित इतिहासक पूर्वेँ गीत स्मृतिक वाहक बनैत अछि। नाटक बारम्बार देखबैत अछि जे जे बात दरबारी अभिलेख मेटा सकैत अछि, लोक-स्वर ओकरा दोसर रूपमे बचा सकैत अछि। एहि कारण गीत सजावट नहि, वैकल्पिक अभिलेखागार अछि।

तेसर कल्लोल: इतिहासक षड्यन्त्र आ नामक राजनीति

आचार्य व्याघ्र, सिंह, सरभ आदि पात्र भूत-जकाँ परत मे इतिहासक असुरक्षा, नाम-हस्तान्तरण, कृतित्वक स्मृति आ दार्शनिक अधिकार पर बहस करैत अछि। “तत्त्वचिन्तामणि” जकाँ नाम नाटककेँ वास्तविक दार्शनिक परम्परासँ जोड़ैत अछि, मुदा घटनाक संवादात्मक रूपकेँ दस्तावेजी इतिहास मानब उचित नहि। एहि कल्लोलक साहित्यिक शक्ति इतिहासक “कथनकर्ता के?” प्रश्नमे अछि।

चारिम कल्लोल: ताबीज, कथा आ रूपान्तरणक दहलीज

कमला-गीत, भगता-शिष्य, उल्कामुखी ताबीज आ विस्मृत वस्तु-स्मृति चौथ कल्लोलक प्रमुख साधन अछि। वस्तु मनुष्यसँ बेसी याद रखि सकैत अछि—ई अद्भुत रूपक नाटकक स्मृति-दर्शनकेँ ठोस बनबैत अछि। कल्लोलक अन्त धरि घनक संसार गोला/पृथ्वीक वास्तविकता दिस बढ़ैत अछि।

पाँचम कल्लोल: पात्रक पुनर्जन्म नहि, ऐतिहासिक रूपान्तरण

पाँचम कल्लोलक आरम्भिक मंच-टिप्पणी पहिल चारि कल्लोलक पात्रसभकेँ नवा सामाजिक भूमिकामे रूपान्तरित करैत अछि—गङ्गेश गङ्गाधर, वल्लभा कुमारसुता, भगता जटा, शिष्य हीरू, व्याघ्र/सिंह/सरभ आदि सत्ता-संरचनाक नवा रूप। ई शाब्दिक पुनर्जन्मसँ अधिक नाट्य-प्रतिरूप अछि: चरित्र-ऊर्जा इतिहासक नवा दौरमे फेर प्रकट होइत अछि। गङ्गाधरक जन्म, जटा द्वारा उल्कामुख ताबीज, हीरूक लोकगीत आ जाति-ज्ञानक प्रश्न स्मृतिक सामाजिक शरीर बनबैत अछि।

छअम कल्लोल: शिक्षा-विरोध नहि, रटन्त शिक्षा-विरोध

आठ वर्षक गङ्गाधर उपनयन/रटन्त शिक्षा अस्वीकार करैत अछि, जटा आ दलित कलाकार-शिष्य हीरूकेँ वास्तविक गुरु मानैत अछि, वनमे प्रश्न द्वारा सीखैत अछि। एहि प्रसंगकेँ “औपचारिक शिक्षा निरर्थक”क सरल सन्देश मानब गलत होएत। नाटकक

विरोध विचारहीन अनुकरण आ ज्ञानक सामाजिक एकाधिकारसँ अछि। गुरु-शिष्य सम्बन्ध क्षमता, प्रश्न आ अनुभवपर आधारित होइत अछि।

सातम कल्लोल: तर्क, दरबार आ स्मृतिक सार्वजनिक मान्यता

राजा कीर्ति सिंहक दरबारमे गङ्गाधर १ सँ १०० धरि जोड़ शीघ्र युग्मन-विधिसँ ५०५० निकालैत अछि। ई प्रसिद्ध गणितीय युक्तिक उपयोग “रटन्त गणना” बनाम संरचनात्मक दृष्टिक रंगमंचीय रूपक बनैत अछि। एहि कल्लोलसँ गङ्गाधरक प्रतिभा निजी गुरुक क्षेत्रसँ सार्वजनिक संस्थामे प्रवेश करैत अछि। नाटक ज्ञान, सत्ता, प्रतिष्ठा आ स्मृति बीचक तनावकेँ अन्तिम ऐतिहासिक धरातल दैत अछि।

गङ्गेश आ नव्य-न्यायक शोध-सन्दर्भ

«स्टैनफर्ड दर्शन-विश्वकोश» गङ्गेशक “तत्त्वचिन्तामणि” केँ नव्य-न्याय परम्पराक आधारभूत ग्रन्थ मानैत अछि; गङ्गेशक विश्लेषण विशेषतः प्रमाण, अनुमान आ व्याप्ति सम्बन्धी सूक्ष्म तकनीकी भाषाक विकासमे निर्णायक मानल जाइत अछि। “उल्कामुख” एहि ऐतिहासिक दार्शनिक महत्वकेँ प्रेम, स्मृति आ सामाजिक कथा में रूपान्तरित करैत अछि। मुदा वल्लभाक प्रेमकथा, नाटकमे देल अनेक पारिवारिक/दरबारी विवरण अथवा पात्र-परिवर्तनकेँ मानक आधुनिक शोध स्वतः प्रमाणित जीवनी मानैत नहि अछि। अतः समीक्षामे “दार्शनिक इतिहास” आ “नाटकीय इतिहास-कल्पना” बीच स्पष्ट भेद राखल गेल अछि।

रंगमंचीय प्रयोग

घन सँ गोला, ताबीज, सियारक ध्वनि, बाँस, लोकगीत, भूत-चरित्र आ पृथ्वीक घरघराहट—एहि नाटकक अर्थ संवादसँ जतबा बनैत अछि, ओतबे मंच-वस्तु आ ध्वनिसँ। पहिल चारि कल्लोलक शतरंज-घन चाल, साजिश आ स्मृतिक खण्डित घर बनैत अछि; पाँचमसँ पृथ्वी-गोला इतिहासक प्रत्यक्ष सामाजिक भारक संकेत दैत अछि। एहि स्तरपर “उल्कामुख” संग्रहक सबसे दृश्य-कल्पनाशील कृति अछि। सीमा ई जे पात्र आ ऐतिहासिक संकेतक घनत्व साधारण दर्शककेँ भ्रमित कऽ सकैत अछि; निर्देशककेँ कार्यक्रम-पुस्तिका, प्रकाश-कोड, पोशाक आ आवर्ती ध्वनि द्वारा रूपान्तरण स्पष्ट करबाक आवश्यकता रहत।

अंग्रेजी रूपान्तर

«उल्कामुख» जटिल पात्र-सरणी, प्रतीक आ कल्लोलक्रम अंग्रेजीमे पुनर्गठित करैत अछि। मुदा उपशीर्षकक «छह अंक» असंगति अंग्रेजीमे सेहो दोहरायल अछि, जबकि वास्तविक रूपान्तर सात भाग धरि जाइत अछि। एहि कारण ई केवल मैथिली शीर्षकक टंकण-त्रुटि नहि, संस्करणगत सम्पादकीय समस्या प्रतीत होइत अछि। अंग्रेजी पाठ दार्शनिक कथाकेँ व्यापक दर्शक लेल खोलेत, तखन लोकगीत, मैथिली सम्बोधन, जाति-सूचक सामाजिक सूक्ष्मता आ मिथिला-विशिष्ट स्मृति मूलमे अधिक बहुस्तरीय रहैत अछि।

१२. समग्र नाट्य-दृष्टि: नओटा नाटकमे आवर्ती प्रतिमान

(क) प्रश्न बनाम अन्धानुकरण

“अपाला आत्रेयी” मे प्रश्न विद्याक आरम्भ अछि; “कमलाक भगता” मे प्रश्न नहि करब विनाशकारी अनुकरण बनैत अछि; “संकर्षण” मे आत्मपरीक्षणक अभाव दंभ बनैत अछि; “उल्कामुख” मे गङ्गाधर रटन्त पद्धतिसँ प्रश्नक ओर जाइत अछि। ई आवृत्ति देखबैत अछि जे संग्रहक ज्ञान-दर्शन मूलतः आलोचनात्मक अछि।

(ख) ज्ञान बनाम सत्ता

इन्द्र-दध्यङ संघर्ष, गङ्गेश-स्मृतिक दमन, “गंगा ब्रिज” केर फाइल-साक्ष्य, “मचण्ड” केर भाषिक समझ—सभ ठाम सत्ता जानकारी नियंत्रित करए चाहैत अछि। ज्ञान एतय केवल पुस्तक नहि; लोकगीत, फाइल, अनुवाद, मॉडल, प्रत्यक्ष अनुभव आ स्मृति सेहो ज्ञान अछि।

(ग) विकास बनाम जवाबदेही

“गंगा ब्रिज” आ “जलोदीप” एक-दोसरक सहचर नाटक जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि। पहिल पुल-निर्माणक भ्रष्टाचार आ सार्वजनिक स्मृतिक प्रश्न उठबैत अछि; दोसर सड़क/तटबन्ध/निकासी आ आपदा-तैयारीक। दुनू विकासक विरोध नहि करैत, बल्कि “कोन प्रक्रिया सँ, केकर सुरक्षा लेल, केकर जवाबदेहीमे?” प्रश्न पूछैत अछि।

(घ) देह आ दृष्टि

अपाला केर त्वचा, संकर्षणक रंग-बड़ाई, मचण्डक मौन तमिल युवक, दधीचिक घोड़ाक सिर—देह बारम्बार सामाजिक अर्थक स्थल बनैत अछि। नाटकसभ देहक रूपकेँ आत्म-मूल्यक अंतिम मानदण्ड मानबाक विरोध करैत अछि।

(ङ) लोक-ध्वनि, कोरस आ सूत्रधार

संग्रहक अनेक नाटक "व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक नाटक"क पाश्चात्य संकीर्ण प्रतिमानपर निर्भर नहि। सूत्रधार, जन-कोरस, लोकगीत, सामूहिक प्रतिज्ञा, बाजारक आवाज, नदीक ध्वनि, सियार/बाँस/हथौड़ा—ई सभ सामुदायिक चेतनाक रंग-व्याकरण बनबैत अछि। एहि कारण कृतिक स्वभाव पढ़बाक नाटकसँ अधिक प्रदर्शनधर्मी अछि।

(च) बच्चा ज्ञानक सक्रिय पात्र

"भऽ जाएब छू", "जलोदीप" आ "कमलाक भगता" बच्चाकेँ निष्क्रिय शिक्षा-ग्राही नहि मानैत। बच्चा प्रश्न करैत, मॉडल बनबैत, गलती देखैत, दर्शककेँ प्रतिज्ञा करबैत आ अन्धानुकरणपर हँसैत अछि। ई बाल-रंगमंचक लोकतांत्रिकता अछि।

(छ) स्मृति बनाम विस्मृति

"गंगा ब्रिज" केर मृत अभियन्ताक स्मृति, "उल्कामुख" केर प्रेम-दर्शनक विस्मृति, "मचण्ड" केर भोजन-पैकेट, "संकर्षण" केर जुत्ता—वस्तुसभ स्मृतिक वाहक बनैत अछि। संग्रह बारम्बार पूछैत अछि: सत्ता अथवा व्यक्ति जे कथा बदलैत अछि, ओकर विरुद्ध वस्तु, लोकगीत आ साक्षी कोना टिकैत अछि?

१३. अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तरक तुलनात्मक मूल्यांकन

नओटै मैथिली नाटकक तुरन्त बाद अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर रखल गेल अछि। सम्पादकीय दृष्टिसँ ई व्यवस्था द्विभाषिक पाठककेँ प्रत्यक्ष तुलना करबाक अवसर दैत अछि। संरचनात्मक स्तरपर दृश्य/अंक/भागक क्रम प्रायः सुरक्षित अछि; पात्रसूची, मंच-निर्देश आ नाटकीय क्रियाकेँ अंग्रेजी दर्शक लेल स्पष्ट कएल गेल अछि।

मुख्य उपलब्धि

अंग्रेजी रूपान्तर सभ नाटकक वैचारिक पहुँच बढ़बैत अछि। जलवायु-चेतना, बाढ़ि-सुरक्षा, भाषा आ न्याय, भ्रष्टाचार तथा दार्शनिक स्मृति जकाँ विषय अन्तरराष्ट्रीय

रंगमंचक शब्दावलीमे प्रवेश करैत अछि। “जलोदीप”क «जलदीप» जकाँ व्याख्यात्मक रूपान्तरण अपरिचित सांस्कृतिक प्रतीकक अर्थ खोलेत। प्रशासनिक आ दार्शनिक प्रसंगमें अंग्रेजी तकनीकी शब्द कखनो अर्थ अधिक सीधा करैत अछि।

अनुवाद-हानि

मैथिली मूलक संबोधन, हँसी, ग्रामीण समय-बोध, जातीय/परिवारिक संकेत, लोकगीतक मात्रा, ध्वन्यात्मकता, सम्मानक स्तर, दंभक बोलचाल आ व्यंग्यक छोट शब्द अंग्रेजीमे पूर्णतः समतुल्य नहि भेटैत। अतः अंग्रेजी पाठक “अर्थ” बहुधा पबैत अछि, मुदा “सामाजिक स्वर”क किछु परत कम भऽ जाइत अछि। ई अनुवादक दोष मात्र नहि; भाषिक संस्कृतिक अन्तरक स्वाभाविक परिणाम अछि।

रंगमंचीय रूपान्तर, शब्दशः प्रतिलिपि नहि

चयनित संरचनात्मक तुलना संकेत दैत अछि जे अंग्रेजी पाठ मंचीय समतुल्यता लक्ष्य करैत अछि। एहि कारण एकर मूल्यांकन “प्रत्येक शब्द समान अछि कि नहि”सँ नहि, बल्कि “दृश्य, संघर्ष, चरित्र-उद्देश्य, सांस्कृतिक अर्थ आ प्रदर्शनयोग्यता केतेक सुरक्षित अछि” एहि कसौटीपर होएबाक चाही। “उल्कामुख” केर छह/सात संरचना-असंगति दुनू भाषामे रहब संस्करण-सम्पादनक प्रश्न उठबैत अछि।

संकलनक अंग्रेजी रूपान्तरण एकटा महत्त्वपूर्ण अंतरभाषिक-अंतरसांस्कृतिक उपक्रम थिक, जकर मूल्यांकन कतिपय मापदण्डपर कएल जा सकैत अछि। सर्वप्रथम, रूपान्तरणक निष्ठा (निष्ठा) प्रशंसनीय अछि- अपाला आत्रेयीक अंग्रेजी संस्करणमे वैदिक शब्दावली (ब्रह्मवादिनी, मानवक, अनृच, सम-सन्तान) कैं मूल रूपमे राखि कऽ फुटनोट-शैलीक व्याख्या देल गेल अछि, जे सांस्कृतिक विशिष्टताक क्षरण नहि होबए दैत अछि, आ साथहि अंग्रेजीभाषी पाठक/दर्शककैं अर्थ-बोधमे सहायता करैत अछि।

अंग्रेजी संस्करण मूल मैथिली पाठक संवाद-लयकैं यथासंभव सुरक्षित रखबाक प्रयास करैत अछि, मुदा साथहि अंग्रेजी रंगमंचक प्राकृतिक मुहावराकैं सेहो अपनबैत अछि- ई संतुलन अनुवाद-सिद्धांतक दृष्टिएँ (शाब्दिक बनाम गतिशील तुल्यता) एकटा सुविचारित मध्यमार्ग थिक। मंच-निर्देश सभक अनुवाद विशेष रूपेँ सफल अछि, कारण

ई तकनीकी-रंगमंचीय भाषा भाषिक-सांस्कृतिक सीमाकेँ अपेक्षाकृत सहजतासँ पार करैत अछि।

तथापि, ई सेहो स्पष्ट अछि जे कतिपय भाषिक-सांस्कृतिक बारीकी (जेना संकर्षणमे प्रयुक्त ग्राम्य मुहावरा, वा गंगा ब्रिजक "पहिल लोक"/"दोसर लोक" क बोलचालक विशिष्ट लय) क सम्पूर्ण अनुवाद असंभव-प्राय अछि- ई कोनो सांस्कृतिक-विशिष्ट कृतिक अनुवादक अंतर्निहित सीमा थिक, नहि कि अनुवादकक त्रुटि। समग्रतः, अंग्रेजी रूपान्तरण एकटा सक्षम, पढ़नीय आ मंचनयोग्य पाठ प्रस्तुत करैत अछि, जे मूल मैथिली कृतिक व्यापक पहुँचकेँ सार्थक बनबैत अछि, विशेषतः अंतरराष्ट्रीय रंगमंच-समुदाय आ मैथिली-भाषेतर पाठकवर्ग धरि।

१४. प्रमुख साहित्यिक उपलब्धिसभ

• मैथिली नाटकक विषय-क्षितिजक उल्लेखनीय विस्तार—वैदिक स्त्री-वाणी, आपदा विज्ञान, सार्वजनिक निर्माण, न्यायिक भाषा, आतंक, लोक-हास्य आ नव्य-न्याय एके संग्रहमे।

• लोक-रंगमंच आ आधुनिक विषयक संयोजन। सूत्रधार, कोरस, लोकगीत, प्रतिज्ञा, पल्लव-कल्लोल संरचना आ समकालीन संस्थागत संवाद सह-अस्तित्वमे अछि।

• वस्तु-प्रतीकक प्रभावी उपयोग—जलोदीप, पुलक दरार, भोजन-पैकेट, जुत्ताक सोल, उल्कामुख ताबीज, घन/गोला, बालू-शिवलिङ्ग।

• ज्ञानक नैतिक अवधारणा। संग्रह शिक्षाकेँ प्रमाणपत्र नहि, प्रश्न, सेवा, साझा अनुभव, अनुवाद, साक्ष्य आ आत्मबोधक प्रक्रिया मानैत अछि।

• बाल-नाटकमे दर्शक-सहभागिता आ नागरिक शिक्षा। उपदेशक जोखिम रहितहुँ नाटक क्रिया, खेल, मॉडल आ हास्य द्वारा शिक्षा जीवित करैत अछि।

• मैथिली मूलक तुरन्त बाद अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर देबाक सम्पादकीय प्रयोग, जे द्विभाषिक प्रदर्शन आ तुलनात्मक अध्ययन लेल विशेष उपयोगी अछि।

१५. आलोचनात्मक सीमासभ आ सम्पादकीय सुधारक बिन्दु

• किछु नाटकमे विचार-प्रधान संवाद बहुत लम्बा अछि। रंगमंचपर ई गति कम कऽ सकैत अछि; निर्देशनमे दृश्य-क्रिया, विराम, प्रकाश, देहगत विन्यास आ ध्वनिक उपयोग बढ़ाएब उपयोगी होएत।

• बाल-नाटकमे शिक्षोपदेशक वाक्य कखनो पात्रक स्वतंत्र जीवंतता कम करैत अछि। दर्शक-सहभागिता एहि समस्या के बहुत हद तक सन्तुलित करैत अछि, मुदा भविष्यक संस्करणमे “देखाउ, केवल कहू नहि” सिद्धान्तक अनुसार किछु उपदेश दृश्यात्मक क्रियामे बदला जा सकैत अछि।

• वैदिक/ऐतिहासिक नाटकसभमे रचनात्मक पुनर्पाठ आ ऐतिहासिक दावा बीच स्पष्ट सम्पादकीय टिप्पणी उपयोगी रहत। विशेषतः अपाला, दधीची आ गङ्गेश सम्बन्धी जीवनीक तत्वकेँ “नाट्य-पुनर्रचना” कहि चिह्नित करब पाठककेँ भ्रमसँ बचायत।

• “भऽ जाएब छू” केर “मैथिलीक पहिल” दावाक समर्थन लेल भविष्यक संस्करणमे ग्रन्थसूचीगत प्रमाण जोड़ल जा सकैत अछि; अन्यथा एकरा “लेखकक दावानुसार” कहब अधिक अकादमिक होएत।

• “कमलाक भगता” केर प्रेरक संस्कृत कथा यदि सम्पादकक जानकारीमे अछि तँ सटीक ग्रन्थ, अध्याय/कथा-संख्या भविष्यक संस्करणमे देब अत्यन्त उपयोगी होएत। वर्तमान पाठमे स्रोत अस्पष्ट अछि।

• “उल्कामुख” केर उपशीर्षक “छह कल्लोल” तत्काल सुधार योग्य अछि, कारण वास्तविक पाठ सात कल्लोलक अछि; अंग्रेजी «छह अंक» सेहो वास्तविक संरचनासँ मेल नहि खाइत।

• अंग्रेजी रूपान्तरमे किछु सांस्कृतिक शब्दक छोट शब्दावली वा अनुवादक टिप्पणी जोड़ल जाए तँ बाहरी दर्शक लोकगीत, सामाजिक संबोधन, धार्मिक प्रतीक आ मिथिला-विशिष्ट संकेत अधिक गहिराइ सँ बुझि सकत।

१६. निष्कर्ष

“रंग-संगम” केवल नओटा अलग-अलग नाटकक संकलन नहि, ज्ञान आ समाजक सम्बन्ध पर दीर्घ नाट्य-बहस अछि। एक नाटकमे स्त्री अपन ऋचा द्वारा दृष्टिक हिंसा के उत्तर दैत अछि; दोसरमे शिक्षक ज्ञान रोकेबाला सत्ता के चुनौती दैत अछि; बच्चा

जलवायु आ बाढ़िक विज्ञान खेलमे बुझबैत अछि; अभियन्ता फाइल द्वारा भ्रष्ट विकासक विरुद्ध साक्ष्य बनबैत अछि; तमिल युवकक मौन भाषिक न्यायक प्रश्न बनैत अछि; दंभी संकर्षण जुत्ताक सोलमे अपन आत्म-छल देखैत अछि; गङ्गेश-गङ्गाधरक कथा स्मृति आ तर्ककेँ इतिहासक विस्मृति विरुद्ध खड़ा करैत अछि। एहि विविधताक भीतर एकटा समान नैतिक आग्रह अछि—बुझू, प्रश्न करू, प्रमाण देखू, स्मृति बचाउ, आ ज्ञानकेँ जीवनक उत्तरदायित्वसँ जोड़ू।

साहित्यिक दृष्टिसँ संग्रहक सबसे स्थायी शक्ति ओकर रंगमंचीय बहुभाषिकता अछि: लोकगीत आ प्रशासनिक फाइल, वैदिक मन्त्र-स्मृति आ बाल-खेल, हास्य आ आतंक, नदी आ न्यायालय, घन आ पृथ्वी—सभ एके नाट्य-संसारमे प्रवेश करैत अछि। एहि समाहारमे कखनो अतिशय विचार-भार, कथात्मक विस्तार अथवा सम्पादकीय असंगति अछि; मुदा ई सीमासभ कृतिक महत्त्व घटबैत नहि, बल्कि भविष्यक अधिक परिष्कृत रंग-संस्करणक दिशा बतबैत अछि।

द्विभाषिक स्वरूप संग्रहकेँ विशेष बनबैत अछि। मैथिली मूल सांस्कृतिक आत्मीयता, लोकलय आ सामाजिक सूक्ष्मता सँ समृद्ध अछि; अंग्रेजी रूपान्तर नाटकसभकेँ व्यापक रंग-परिसर दैत अछि। दुनूकेँ साथ पढ़ला पर स्पष्ट होइत अछि जे “रंग-संगम” केर लक्ष्य केवल पाठ-संग्रह नहि, मैथिली रंगमंचकेँ वैश्विक संवादमे प्रवेश देबाक प्रयत्न सेहो अछि।

"रंग-संगम" गजेन्द्र ठाकुरक नाट्य-प्रतिभाक एकटा व्यापक आ बहुआयामी प्रमाण थिक, जे मैथिली रंगमंचकेँ अनेक स्तरपर समृद्ध करैत अछि। पहिल स्तरपर, ई संकलन विषयगत विविधताक (वैदिक गाथासँ लऽ कऽ समकालीन राजनीति धरि) एकटा दुर्लभ उदाहरण थिक, जे मैथिली नाट्य-साहित्यक विषय-सीमाकेँ पर्याप्त विस्तारित करैत अछि। दोसर स्तरपर, ई शिल्पगत प्रयोगधर्मिताक (उल्कामुखक कल्लोल-संरचना आ पुनर्जन्म-प्रविधि, संकर्षणक दृष्टान्त-कथा-प्रविधि, भऽ जाएब छू आ जलोदीपक सहभागितामूलक सड़क-नाट्य-शैली) एकटा समृद्ध वर्णक्रम प्रस्तुत करैत अछि। तेसर स्तरपर, ई द्विभाषिक संरचनाक (मैथिली-अंग्रेजी युग्म) माध्यमसँ मैथिली रंगमंचकेँ वैश्विक दर्शकवर्ग धरि पहुँचएबाक एकटा ठोस, व्यावहारिक कदम थिक।

सभसँ महत्त्वपूर्ण बात ई अछि जे "रंग-संगम" क सभ नाटक- चाहे ओ वैदिक कथाक पुनर्व्याख्या होउ वा समकालीन राजनीतिक यथार्थक चित्रण- एकटा साझा नैतिक-सामाजिक प्रतिबद्धतासँ जुड़ल अछि: न्याय, सत्य आ मानवीय गरिमाक प्रति। ई प्रतिबद्धता नाटककारकेँ मात्र मनोरंजनकार नहि, बल्कि एकटा सामाजिक-सांस्कृतिक चिंतक आ शिक्षकक भूमिकामे प्रस्तुत करैत अछि, जे "विदेह" जेहन संस्थाक सम्पादकीय मिशनसँ सुसंगत अछि। "रंग-संगम" एहि अर्थमे मैथिली साहित्यक समकालीन धारामे एकटा महत्त्वपूर्ण अभिवृद्धि थिक, जे भविष्यक मैथिली नाटककार आ रंगकर्मी सभक हेतु एकटा प्रेरणादायक आ अनुकरणीय मॉडल प्रस्तुत करैत अछि।

परिशिष्ट: अध्याय/दृश्य/अंक/पल्लव/कल्लोल सम्पूर्णता-सूची

ई परिशिष्ट मूल पाठक प्रत्येक प्रमुख संरचनात्मक इकाइकेँ सूचीबद्ध करैत अछि। समीक्षा-लेखनक समय एहि सूचीकेँ जाँच-सूची मानल गेल।

अपाला आत्रेयी

- दृश्य एक
- दृश्य दू
- दृश्य तीन
- दृश्य चारि
- दृश्य पाँच
- दृश्य छअ
- दृश्य सात

भऽ जाएब छू

- भाग १: सृष्टिक पात्र सभ
- भाग २: विज्ञान आ कल्पना
- भाग ३: प्रतिज्ञा

दानवीर दधीची

- प्रथम दृश्य

- दृश्य दू
- दृश्य तीन

गंगा ब्रिज

- पल्लव एक — भाग १: सपना आ शुरुआत
- पल्लव दू — भाग २: निर्माणक कठिनाइ
- पल्लव तीन — भाग ३: स्वार्थ आ समझौता / भाग ४ क ओर संक्रमण
- पल्लव चारि — भाग ४: बलिदान आ पतन
- पल्लव पाँच
- पल्लव छअ — भाग ५: स्मृति आ प्रश्नक आरम्भ
- पल्लव सात
- पल्लव आठ

जलोदीप

- पूर्वदृश्य
- अंक १: बाढ़िक अन्हार — दृश्य १
- अंक १ — दृश्य २
- अंक २: पहाड़क खेल — दृश्य १
- अंक २ — दृश्य २
- अंक ३: लोकक खेल — दृश्य १
- अंक ३ — दृश्य २
- अंक ४: जलोदीप — दृश्य १
- अंक ४ — दृश्य २
- अंक ५: नबका बिहान — दृश्य १
- अंक ५ — दृश्य २

कमलाक भगता

- दृश्य १
- दृश्य २

मचण्ड

- अंक १
- अंक २
- अंक ३
- अंक ४

संकर्षण

- पहिल कल्लोल — अंक १: कलक्टरक बहन्ना
- पहिल कल्लोल — अंक २: बंगाली बाबूक सीख आ कलक्टरक चैम्बर
- पहिल कल्लोल — अंक ३: तीन टा कारी कुकुरक खिस्सा
- दोसर कल्लोल — अंक १: पसीझक काँटक दंभ
- दोसर कल्लोल — अंक २: पंचैतीक दण्ड
- दोसर कल्लोल — अंक ३: कंठी हाथमे, कोदारि हाथमे
- दोसर कल्लोल — अंक ४: टेलीफोन डायरीक भय
- तेसर कल्लोल — अंक १: घटकक चिकनी बात
- तेसर कल्लोल — अंक २: सासुरसँ आगमन आ रंगक दंभ
- तेसर कल्लोल — अंक ३: गोबर आ दुलारक प्रश्न
- तेसर कल्लोल — अंक ४: गुरक चाह आ जगन्नाथक कुसियार
- तेसर कल्लोल — अंक ५: बेटाक पलायन
- चारिम कल्लोल — अंक १: ट्रेनमे तीन टा बौआ
- चारिम कल्लोल — अंक २: अलीगढ़मे पुलिस-चेकिंग
- चारिम कल्लोल — अंक ३: लाल काकाक घर

- पाँचम कल्लोल — अंक १: चोर-बजारक ठकान
- पाँचम कल्लोल — अंक २: सोलक भीतर छिपल सत्य
- पाँचम कल्लोल — अंक ३ (उपसंहार): सूत्रधारक अन्तिम शब्द

उल्कामुख

- पहिल कल्लोल
- दोसर कल्लोल
- तेसर कल्लोल
- चारिम कल्लोल
- पाँचम कल्लोल
- छअम कल्लोल
- सातम कल्लोल

ग्रन्थसूची

नीचाँक ग्रन्थसूची तीनू आलेखमे प्रयुक्त मुख्य आधार-पाठ, शास्त्रीय ग्रन्थ, भाषावैज्ञानिक अध्ययन, दार्शनिक सामग्री, तथा पर्यावरण, आपदा-प्रबन्धन, सार्वजनिक निर्माण आ न्याय सम्बन्धी विश्वसनीय स्रोतकेँ डीडुप्लीकेट कऽ विषयानुसार व्यवस्थित करैत अछि।

क. आधार-पाठ आ प्राथमिक साहित्य

ठाकुर, गजेन्द्र. रंग-संगम : नओटा मैथिली नाटक आ तकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर. संयुक्त संस्करण, २०२६.

ज्योतिरीश्वर ठाकुर. «वर्णरत्नाकर». उपलब्ध अंकीय प्रति : इन्टरनेट आर्काइव, https://archive.org/details/varna-ratnakara.

ऋग्वेद, मण्डल ८, सूक्त ९१ (अपाला आत्रेयी सम्बन्धी सूक्त).

शतपथ ब्राह्मण, ४.१.५.१८ तथा १४.१.१.२३–२९ (दध्यङ्/आश्विन/मधुविद्या सम्बन्धी प्रसंग).

बृहदारण्यक उपनिषद्, २.५ (मधुविद्या).

ख. मैथिली भाषा-विज्ञान, व्याकरण, सम्मान-सूचकता आ लिपि

बिकेल, बाल्थासार; वाल्टर बिसाङ; आ योगेन्द्र पी. यादव. १९९९. «प्रतिष्ठा बनाम सहानुभूति : मैथिली क्रियाक अन्वितिक सामाजिक आधार». लिङ्ग्विस्टिक्स ३७(३) : ४८१–५१८. https://doi.org/10.1515/ling.37.3.481.

यादव, रामावतार. १९९६. «मैथिलीक सन्दर्भ-व्याकरण». बर्लिन/न्यूयॉर्क : मूतौं द ग्रुइटर.

यादव, योगेन्द्र पी.; ओलिवर बॉन्ड; इरिना निकोलाएवा; आ सैन्डी रिची. २०१९. «मैथिलीमे स्वामित्वसूचक पदक प्रमुखताक वाक्यविन्यास». «प्रमुख आन्तरिक स्वामित्वसूचक पद» मे, सम्पादक आन्द्राश बारानी, ओलिवर बॉन्ड आ इरिना निकोलाएवा, पृ. ३९–७९. ऑक्सफर्ड : ऑक्सफर्ड विश्वविद्यालय प्रकाशन. https://doi.org/10.1093/oso/9780198812142.003.0002.

कुमारी, प्रीति. २०२२. «मैथिलीमे संलयित आदरसूचक अन्विति». दक्षिण एशियाक भाषासभक औपचारिक अध्ययन सम्बन्धी एगारहम सम्मेलनक कार्यवाही, खण्ड १, अंक १.

कॉर्बेट, ग्रेविल जी. २०१२. «व्याकरणिक विशेषताक रूपमे विनम्रता : अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मुदा विरल». लिङ्ग्विस्टिक ऑनलाइन ५१(१). https://doi.org/10.13092/lo.51.302.

मेल्चुक, इगोर. २००६. «रूपविज्ञानक सिद्धान्तक विविध पक्ष». सम्पादक डेविड बेक. बर्लिन/न्यूयॉर्क : मूतौं द ग्रुइटर. https://doi.org/10.1515/9783110199864.

युनिकोड संघ. «युनिकोड मानक», संस्करण १७.०, अनुच्छेद १५.११, «तिरहुता», U+11480–U+114DF. https://www.unicode.org/versions/Unicode17.0.0/.

ग. वैदिक अध्ययन, नव्य-न्याय, मिथिला आ साहित्यिक-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

जैमिसन, स्टेफनी डब्ल्यू.; आ जोएल पी. ब्रेरेटन. २०२०. «ऋग्वेद». ऑक्सफर्ड : ऑक्सफर्ड विश्वविद्यालय प्रकाशन. https://doi.org/10.1093/oso/9780190633363.001.0001.

ज़ोनेन, रेनाटे. १९९१. «इन्द्र आ स्त्रीसभ». प्राच्य आ अफ्रीकी अध्ययन विद्यालयक शोधपत्रिका ५४(१) : ६८–७४. https://doi.org/10.1017/S0041977X00009617.

गणेरी, जोनार्डन. «आधुनिकताक आरम्भिक भारतीय विश्लेषणात्मक दर्शन». स्टैनफर्ड दर्शन-विश्वकोश. पहिल प्रकाशन २००९; महत्त्वपूर्ण संशोधन २०२३. https://plato.stanford.edu/entries/early-modern-india/.

भारत सरकार. «संविधान (बानबेम संशोधन) अधिनियम, २००३» (मैथिली सहित चारिटा भाषाक अष्टम अनुसूचीमे समावेश).

विदेह. «मिथिला आ मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास». https://www.videha.co.in/new_page_1.htm.

विदेह. श्रव्य-दृश्य अभिलेखागार आ रंगमंचीय दस्तावेज. https://www.videha.co.in/new_page_13.htm.

घ. रंगमंच, पर्यावरण, बाढ़ि, सार्वजनिक निर्माण आ न्याय

ब्यूबेक, फिलिप; थी दियू मी फाम; थी न्हात आन्ह गुयेन; आ पॉल हडसन. २०२४. «रंगमंचपर आपदा-जोखिममे कमी : समुद्रतटीय जोखिम घटेबाक आ पारिस्थितिकी-आधारित अनुकूलन लेल समुदाय-आधारित रंगमंचक जोखिम-संचार रूपमे अनुभवजन्य मूल्यांकन». आपदा-विज्ञानमे प्रगति २२ : १००३२३. https://doi.org/10.1016/j.pdisas.2024.100323.

त्रिपाठी, गौरव; बिकाश रंजन परिड़ा; आ अरविन्द चन्द्र पाण्डेय. २०१९. «अगस्त २०१७ केर बाढ़ि-अवधिमे उत्तर बिहारक उपग्रह-आँकड़ा आधारित स्थानिक-कालिक वर्षा-विविधता आ बाढ़िक पूर्वानुमानक विश्लेषण». जलविज्ञान ६(२) : ३८. https://doi.org/10.3390/hydrology6020038.

त्रिपाठी, गौरव; अरविन्द चन्द्र पाण्डेय; आ बिकाश रंजन परिड़ा. २०२२. «उपग्रहसँ प्राप्त ऐतिहासिक बाढ़ि-घटना आ सामाजिक-आर्थिक आँकड़ाक आधारपर उत्तर बिहारमे बाढ़िक संकट आ जोखिम-क्षेत्रक वर्गीकरण». धारणीयता १४(३) : १४७२. https://doi.org/10.3390/su14031472.

बिहार राज्य आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण. २०२६. «प्राधिकरण उत्तर बिहारक बाढ़िसँ प्रभावित होएबाक सम्भावनावला १५ जिलाक तैयारीक समीक्षा करैत अछि». २३ जून २०२६. https://bsdma.bihar.gov.in/en/Current-Authority-Reviews-Flood-Preparedness-in-15-Flood-Prone-Districts-of-North-Bihar.

भारतक नियन्त्रक आ महालेखापरीक्षक. «वर्ष २०२३ केर प्रतिवेदन संख्या ०३ : लोक निर्माण विभाग द्वारा मध्य प्रदेशमे पैघ पुलसभक निर्माणक कार्यनिष्पादन लेखापरीक्षा». ८ फरवरी २०२४ कैं प्रस्तुत।

भारतक सर्वोच्च न्यायालय. «केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो बनाम नरोत्तम धाकड़ आ अन्य», फौजदारी अपील संख्या २५९२/२०२३, निर्णय २५ अगस्त २०२३, २०२३ आईएनएससी ७७०.

— समाप्त —

आलेख ४९ · पञ्जी, दर्शन, भाषा आ समानान्तर इतिहास

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन : खण्ड २

सारांश

ई शोध-समीक्षा गजेन्द्र ठाकुरक ‘समानान्तर दर्शन — खण्ड २’ केर सम्पूर्ण संरचनाकेँ एकल दार्शनिक परियोजना रूपमे पढ़ैत अछि। पोथी बीसम शताब्दीक भाषिक मोड़सँ आरम्भ भऽ विश्लेषणात्मक दर्शन, संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद, विखण्डन, सत्ता-ज्ञान, उत्तर-आधुनिकता, व्याख्या-दर्शन, आलोचनात्मक सिद्धान्त, स्त्रीवाद, उत्तर-औपनिवेशिकता, मन-दर्शन, विज्ञान, तकनीक, डिजिटल सत्य, कृत्रिम बुद्धि आ एकैसम शताब्दीक समानान्तर दर्शन धरि पहुँचैत अछि। समीक्षा चार परस्पर-जाँचकारी कसौटी अपनबैत अछि: भारतीय दार्शनिक प्रमाण-अनुशासन; पाश्चात्य विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक आ आलोचनात्मक परम्परा; नव्य-न्यायक अवधारणात्मक सूक्ष्मता; तथा विदेह-समानान्तर इतिहास-दृष्टिक बहुप्रमाणीय, अभिलेख-सचेत, प्रतिपक्ष-सम्मानित आ आत्मसमीक्षात्मक पद्धति। मूल मैथिली खण्डमे १ सँ १०० धरि सभ अध्याय क्रमपूर्वक उपस्थित छथि; ओकर बाद कालक्रम, पारिभाषिक शब्दावली, ऐतिहासिक स्थान-नाम सामञ्जस्य-सूची, भाषा-नाम सामञ्जस्य-सूची, समेकित ग्रन्थसूची आ नाम-विषय अनुक्रमणिका अछि। पोथीक पछिला अर्धमे एहि संरचनाक पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद सेहो १ सँ १०० अध्याय आ समान परिशिष्ट-संरचनासहित उपस्थित अछि। तेँ समीक्षा केवल चुनल अध्यायपर नहि, सम्पूर्ण द्विभाषिक ग्रन्थ-विन्यासपर आधारित अछि। मुख्य निष्कर्ष ई जे पोथीक मौलिकता कोनो ‘पूर्वगामिता’-दाबीमे नहि, बल्कि परम्परासभकेँ बराबरीपर राखि समस्या-साम्य आ ऐतिहासिक भिन्नता दुनू बचेबाक पद्धतिमे अछि। नव्य-न्यायकेँ आधुनिक विश्लेषणात्मक दर्शनक प्राचीन रूप, मीमांसाकेँ आधुनिक व्याख्या-दर्शनक पूर्वरूप, वा बौद्ध अपोहकेँ विखण्डनक समानार्थी न मानबाक सावधानी पोथीक तुलनात्मक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि। समानान्तर दर्शनक सात आधार—बहुप्रमाणीय विवेकवाद, सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद, गरिमा-आधारित नैतिकता, बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र, धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता, समानान्तर इतिहास-दृष्टि आ आत्मसमीक्षा—खण्ड २ मे भाषा,

संरचना, सत्ता, पहिचान, डिजिटलता आ कृत्रिम बुद्धिक दबावमे पुनर्परीक्षित होइत छथि। साहित्यिक स्तरपर पोथीक पूर्वपक्ष–उत्तरपक्षीय संरचना, सूत्रात्मक तालिका, चित्रात्मक प्रवाह, बहुस्तरीय उदाहरण आ पुनर्निर्माणकारी निष्कर्ष एक विशिष्ट शोध-गद्य बनबैत अछि; मुदा अत्यधिक संरचनात्मक पुनरावृत्ति किछु ठाम गद्यक स्वाभाविक प्रवाह घटबैत अछि। शुद्ध मैथिली परीक्षणमे मूल पाठ प्रायः अनुशासित भेटैत अछि, तथापि ‘हर/हरेक’, ‘पानी’, ‘दरवाजा’, ‘गायब’, ‘जैसे’, ‘यह’, ‘करते’ जकाँ रूपसभक स्थानपर अधिक स्वाभाविक मैथिली रूप अपनाएब उचित होयत। समग्र रूपेँ ई खण्ड भारतीय आ पाश्चात्य दर्शनक बीच सरल समन्वय नहि, बल्कि प्रमाण-सापेक्ष असहमति, ऐतिहासिक दूरी, भाषिक मध्यस्थता आ संशोधनयोग्य दार्शनिक सार्वजनिकताक प्रस्ताव रूपमे पढ़ल जाएबाक योग्य अछि।

बीजशब्द

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन : खण्ड २ · मिथिला · वंश-अभिलेख · इतिहासलेखन · प्रमाण-विवेचन

१.४१. गजेन्द्र ठाकुर-गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन-२- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — खण्ड २

भारतीय, पाश्चात्य, नव्य-न्याय आ विदेह-समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधारपर समग्र दार्शनिक–साहित्यिक शोध-समीक्षा

शोध-लेख

पाठ, प्रमाण, प्रतिपक्ष, इतिहास, भाषा, सत्ता आ आत्मसमीक्षा—एहि सातहू आयामक संयुक्त परीक्षण बिना समानान्तर दर्शनक वास्तविक मूल्यांकन सम्भव नहि।

सम्पूर्ण मूल मैथिली पाठ, पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद, परिशिष्ट, शब्दावली, सामञ्जस्य-सूची, ग्रन्थसूची आ अनुक्रमणिका सहित

सारांश

ई शोध-समीक्षा गजेन्द्र ठाकुरक 'समानान्तर दर्शन — खण्ड २' केर सम्पूर्ण संरचनाकेँ एकल दार्शनिक परियोजना रूपमे पढ़ैत अछि। पोथी बीसम शताब्दीक भाषिक मोड़सँ आरम्भ भऽ विश्लेषणात्मक दर्शन, संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद, विखण्डन, सत्ता–ज्ञान, उत्तर-आधुनिकता, व्याख्या-दर्शन, आलोचनात्मक सिद्धान्त, स्त्रीवाद, उत्तर-औपनिवेशिकता, मन-दर्शन, विज्ञान, तकनीक, डिजिटल सत्य, कृत्रिम बुद्धि आ एकैसम शताब्दीक समानान्तर दर्शन धरि पहुँचैत अछि। समीक्षा चार परस्पर-जाँचकारी कसौटी अपनबैत अछि: भारतीय दार्शनिक प्रमाण-अनुशासन; पाश्चात्य विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक आ आलोचनात्मक परम्परा; नव्य-न्यायक अवधारणात्मक सूक्ष्मता; तथा विदेह-समानान्तर इतिहास-दृष्टिक बहुप्रमाणीय, अभिलेख-सचेत, प्रतिपक्ष-सम्मानित आ आत्मसमीक्षात्मक पद्धति। मूल मैथिली खण्डमे १ सँ १०० धरि सभ अध्याय क्रमपूर्वक उपस्थित छथि; ओकर बाद कालक्रम, पारिभाषिक शब्दावली, ऐतिहासिक स्थान-नाम सामञ्जस्य-सूची, भाषा-नाम सामञ्जस्य-सूची, समेकित ग्रन्थसूची आ नाम-विषय अनुक्रमणिका अछि। पोथीक पछिला अर्धमे एहि संरचनाक पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद सेहो १ सँ १०० अध्याय आ समान परिशिष्ट-संरचनासहित उपस्थित अछि। तेँ समीक्षा केवल चुनल अध्यायपर नहि, सम्पूर्ण द्विभाषिक ग्रन्थ-विन्यासपर आधारित अछि। मुख्य निष्कर्ष ई जे पोथीक मौलिकता कोनो 'पूर्वगामिता'-दाबीमे नहि, बल्कि परम्परासभकेँ बराबरीपर राखि समस्या-साम्य आ ऐतिहासिक भिन्नता दुनू बचेबाक पद्धतिमे अछि। नव्य-न्यायकेँ आधुनिक विश्लेषणात्मक दर्शनक प्राचीन रूप, मीमांसाकेँ आधुनिक व्याख्या-दर्शनक पूर्वरूप, वा बौद्ध अपोहकेँ विखण्डनक समानार्थी न मानबाक सावधानी पोथीक तुलनात्मक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि। समानान्तर दर्शनक सात आधार—बहुप्रमाणीय विवेकवाद, सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद, गरिमा-आधारित नैतिकता, बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र, धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता, समानान्तर इतिहास-दृष्टि आ आत्मसमीक्षा—खण्ड २ मे भाषा, संरचना, सत्ता, पहिचान, डिजिटलता आ कृत्रिम बुद्धिक दबावमे पुनर्परीक्षित होइत छथि। साहित्यिक स्तरपर पोथीक पूर्वपक्ष–उत्तरपक्षीय संरचना, सूत्रात्मक तालिका, चित्रात्मक प्रवाह, बहुस्तरीय उदाहरण आ पुनर्निर्माणकारी

निष्कर्ष एक विशिष्ट शोध-गद्य बनबैत अछि; मुदा अत्यधिक संरचनात्मक पुनरावृत्ति किछु ठाम गद्यक स्वाभाविक प्रवाह घटबैत अछि। शुद्ध मैथिली परीक्षणमे मूल पाठ प्रायः अनुशासित भेटैत अछि, तथापि ‘हर/हरेक’, ‘पानी’, ‘दरवाजा’, ‘गायब’, ‘जैसे’, ‘यह’, ‘करते’ जकाँ रूपसभक स्थानपर अधिक स्वाभाविक मैथिली रूप अपनाएब उचित होयत। समग्र रूपेँ ई खण्ड भारतीय आ पाश्चात्य दर्शनक बीच सरल समन्वय नहि, बल्कि प्रमाण-सापेक्ष असहमति, ऐतिहासिक दूरी, भाषिक मध्यस्थता आ संशोधनयोग्य दार्शनिक सार्वजनिकताक प्रस्ताव रूपमे पढ़ल जाएबाक योग्य अछि।

बीजशब्द: समानान्तर दर्शन; नव्य-न्याय; मिथिला; भाषिक मोड़; विखण्डन; सत्ता-ज्ञान; बहुप्रमाणीय विवेकवाद; सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद; विदेह; इतिहास-दृष्टि; कृत्रिम बुद्धि; आत्मसमीक्षा।

१. शोध-क्षेत्र, पाठ-सम्पूर्णता आ पद्धति

ई समीक्षा पोथीकेँ विषयगत निबन्धसभक ढेर नहि, बल्कि क्रमिक दार्शनिक प्रयोगशाला रूपमे ग्रहण करैत अछि। प्रथम छह अध्याय पद्धति आ नक्शा बनबैत छथि; अध्याय ७–८९ विविध आधुनिक बहसक भीतर एहि पद्धतिक परीक्षण करैत छथि; अध्याय ९०–९६ सात आधारक परिपक्व पुनर्निर्माण करैत छथि; अध्याय ९७–१०० सूत्रात्मक समेकन करैत छथि। एहि क्रममे ‘समानान्तर’ शब्द न वैकल्पिक मुख्यधारा बनबाक दावा अछि, न सभ परम्पराकेँ कृत्रिम समानता मे मिला देबाक युक्ति। पोथीक अपन परिभाषामे समानान्तरता एकाधिक वैध आरम्भ-बिन्दु, तुलनीय समस्या, स्पष्ट भिन्नता, प्रमाण-सापेक्ष प्रभाव-दाबी आ संशोधनयोग्य निष्कर्षक अनुशासन अछि।

पाठ-सम्पूर्णता परीक्षणमे मूल मैथिली भागक विषयसूची आ मुख्य पाठ दुनूमे अध्याय १ सँ १०० धरि निरन्तर क्रम भेटैत अछि। मुख्य पाठक बाद दार्शनिक आ बौद्धिक कालक्रम, पारिभाषिक शब्दावली, ऐतिहासिक स्थान-नाम सामञ्जस्य-सूची, भाषा-नाम सामञ्जस्य-सूची, समेकित ग्रन्थसूची आ नाम-विषय अनुक्रमणिका उपस्थित अछि। एकर बाद पोथीक पूर्ण अंग्रेजी रूप आरम्भ होइत अछि; ओतहु अध्याय १ सँ १००, तदनुरूप परिशिष्ट, ग्रन्थसूची आ अनुक्रमणिका अछि। एहि कारण समीक्षा मे कोनो अध्याय केवल विषयसूचीसँ

अनुमानित नहि, बल्कि मुख्य पाठक संरचनागत उपस्थितिक आधारपर गृहीत अछि।

चार समीक्षा-कसौटी एक-दोसराक प्रतिस्पर्धी नहि, परस्पर-सुधारक छथि। भारतीय कसौटी प्रमाण, प्रमेय, शब्दार्थ, तात्पर्य, पूर्वपक्ष–उत्तरपक्ष आ मोक्ष/पुरुषार्थ-जकाँ दार्शनिक प्रयोजनक ऐतिहासिक विशिष्टता देखैत अछि। पाश्चात्य कसौटी तर्क-विश्लेषण, भाषा, संरचना, व्याख्या, सत्ता, देह, सार्वजनिकता, विज्ञान आ तकनीकक आधुनिक बहसक भीतर पाठक स्थान जाँचैत अछि। नव्य-न्यायीय कसौटी पद, सम्बन्ध, अवच्छेद, अभाव, प्रमाण-भार आ दाबी-सीमांकनक सूक्ष्मता पर बल दैत अछि। विदेह-समानान्तर ऐतिहासिक कसौटी स्रोतक उत्पत्ति, अभिलेखीय चयन, मौन, स्थान-नाम, भाषा-नाम, काल-विस्थापन, प्रतिप्रमाण आ संशोधनयोग्य भरोसा-स्तरक परीक्षण करैत अछि।

एहि समीक्षा मे खण्ड १ केर स्वतंत्र मूलपाठ उपलब्ध मानि कए कोनो दावा नहि कएल गेल अछि। खण्ड १ सम्बन्धी सात आधार आ पूर्ववर्ती निष्कर्ष सभ खण्ड २ द्वारा जतेक समेकित, उद्धृत अथवा पुनर्परिभाषित छथि, समीक्षा ओतबे सीमा धरि हुनका ग्रहण करैत अछि। ई सीमा महत्वपूर्ण अछि, कारण पोथी स्वयं ऐतिहासिक प्रभाव, पाठगत उपस्थिति आ अनुमानक बीच भेद राखबाक आग्रह करैत अछि।

१.१ सम्पूर्ण ग्रन्थ-विन्यासक सत्यापन

खंड/घटक	उपस्थिति	संख्या/परास	समीक्षात्मक स्थिति
मूल मैथिली अध्याय	पूर्ण	१–१००	सभ अध्याय समीक्षा मे पृथक् दर्ज
विषयगत खण्ड	पूर्ण	१४ खण्ड + उपसंहारिक खण्ड	खण्ड-स्तरीय समेकित समीक्षा
मूल परिशिष्ट	पूर्ण	कालक्रम, शब्दावली, दू	सहायक शोध-यन्त्र रूपमे

		सामञ्जस्य-सूची, ग्रन्थसूची, अनुक्रमणिका	मूल्यांकन
अंग्रेजी अनुवाद	पूर्ण	अध्याय १–१००	संरचना, पारिभाषिकता आ अनुवाद-नीति समीक्षा
अंग्रेजी परिशिष्ट	पूर्ण	मूलक समतुल्य घटक	द्विभाषिक उपयोगिता परीक्षण

२. दार्शनिक स्थापत्य: समस्या सँ पुनर्परीक्षण धरि

पोथीक सर्वाधिक पहिचानयोग्य शैलीगत गुण ओकर पुनरावर्ती वाद-संरचना अछि। अनेक अध्याय ‘समस्या’, ‘मूल प्रतिपादन’, ‘प्रमुख तर्क’, ‘पूर्वपक्ष’, ‘उत्तरपक्ष’, ‘भारतीय संवाद’, ‘मिथिलाक समानान्तर दृष्टि’, ‘समकालीन प्रयोग’ आ ‘अध्याय-निष्कर्ष’ जकाँ क्रममे चलैत छथि। ई क्रम शोध-गद्यकेँ न्यायीय वादक स्मृति देत अछि, मुदा आधुनिक शोध-पत्रक तर्क-क्रम, आपत्ति-समाधान आ प्रयोगात्मक विस्तारक संग सेहो मेल खाइत अछि। साहित्यिक रूपेँ ई ‘कथानक’ विचारक तनाव सँ बनैत अछि: पहिने प्रश्न, फेर दावा, फेर विरोध, फेर पुनर्निर्माण।

एहि स्थापत्यक लाभ तीन प्रकारक अछि। पहिल, पाठक केन्द्रीय दाबी आ ओकर सीमा अलग-अलग देखैत अछि। दोसर, लेखक अपन प्रिय निष्कर्षकेँ प्रतिपक्षसँ बचा कए नहि चलैत; विरोधी सम्भावना स्वयं अध्यायक भीतर जगह पबैत अछि। तेसर, अन्तिम निष्कर्ष प्रायः आरम्भिक दाबी सँ सूक्ष्म होइत अछि। ई क्रम समानान्तर दर्शनक आत्मसमीक्षात्मक चरित्रक साहित्यिक रूप बनि जाइत अछि।

सीमा सेहो स्पष्ट अछि। जखन लगभग सभ विषय एकहि संरचनात्मक साँचा सँ गुजरैत अछि, तखन भिन्न दार्शनिक परम्पराक स्वाभाविक लय कखनो एक रूपमे ढलैत देखाइत अछि। देरिदाक विखण्डन, फूकोक वंशावली, बटलरक प्रदर्शनात्मकता, कृत्रिम बुद्धिक उत्तरदायित्व आ नव्य-न्यायीय सम्बन्ध-

विश्लेषण समान अध्याय-ढाँचामे प्रस्तुत भेला सँ पाठक लेल सुविधा बढ़ैत अछि, मुदा मूल पद्धतिसभक अनियमितता, शैलीगत असमानता आ ऐतिहासिक स्वभाव कुछ कम अनुभव होइत अछि। शोध-संस्करणमे किछु अध्यायकेँ विषयानुकूल मुक्त संरचना देल जाए तँ पोथीक साहित्यिक विविधता आरो बढ़ि सकैत अछि।

चित्र आ तालिकासभ पोथीक मात्र सजावट नहि। प्रवाह-तीर, तुलनात्मक सारिणी, परीक्षण-क्रम आ सूत्रात्मक वाक्य जटिल दार्शनिक बहसकेँ दृश्य तर्कमे बदलैत अछि। विशेष रूपेँ भाषा–यथार्थ, संरचना–कर्तृत्व, सत्ता–ज्ञान, प्रमाण–प्रतिप्रमाण आ कृत्रिम बुद्धि–उत्तरदायित्वक श्रृंखला दृश्य रूपमे स्मरणीय बनैत अछि। मुदा पोथी स्वयं जे चेतावनी दैत अछि—आकर्षक प्रस्तुति तर्कक स्थानापन्न नहि—ओहि कसौटी पर दृश्य सामग्रीकेँ पढ़ब उचित अछि। जहाँ सारिणी बहुविध इतिहासकेँ अत्यधिक समतल करैत अछि, गद्यक सूक्ष्म सीमा-स्पष्टीकरण अनिवार्य रहैत अछि।

३. खण्ड-दर-खण्ड गहन समीक्षा

प्रथम खण्ड — बीसम शताब्दीक दार्शनिक मोड़ (अध्याय 1–6)

आरम्भिक छह अध्याय पोथीक ‘नक्शा’ बनबैत छथि, मुदा नक्शाकेँ भूभागक स्थानापन्न नहि मानैत। चेतनासँ भाषा धरि मोड़, बीसम शताब्दीक संस्थागत–वैज्ञानिक परिवर्तन, विश्लेषणात्मक/महाद्वीपीय विभाजन, भारतीय दर्शनक स्थान, मिथिलाक प्रवेश-बिन्दु आ तुलनात्मक दर्शनक खतरा—ई क्रम पाठककेँ पहिने पद्धतिगत सावधानी सिखबैत अछि।

भारतीय दृष्टिसँ एहि खण्डक शक्ति ई जे भारतीय परम्परा ‘परिशिष्ट’ नहि, संवादक सह-आरम्भ-बिन्दु बनैत अछि। पाश्चात्य दृष्टिसँ लेखक भाषिक मोड़केँ जगत-निषेध नहि, चेतना-केन्द्रित दर्शनक सामाजिक विस्तार रूपमे पढ़ैत छथि। नव्य-न्यायीय दृष्टिसँ स्पष्टता, परिभाषा, सम्बन्ध, अभाव आ प्रतिपक्षक अनुशासन समानान्तर पद्धतिक तकनीकी आधार बनैत अछि। ऐतिहासिक दृष्टिसँ ‘पहिने सँ सब किछु भारतमे छल’ प्रकारक दाबी अस्वीकार करब एहि खण्डक सर्वाधिक मूल्यवान सुरक्षा-व्यवस्था अछि।

द्वितीय खण्ड — विश्लेषणात्मक दर्शन आ तर्कक नूतन संसार (अध्याय 7–14)

अध्याय ७–१४ मे फ्रेगे, रसेल, मूर, आरम्भिक विट्गेन्स्टाइन, तार्किक प्रत्यक्षवाद, कार्नाप, क्वाइन आ नव्य-न्याय एक क्रममे अबैत छथि। पोथी विश्लेषणात्मक दर्शनक इतिहासकेँ केवल नामावली रूपमे नहि, ‘कथन कोना स्पष्ट हो’, ‘व्याकरणिक रूप आ तार्किक रूप अलग किएक’, ‘सत्यापनक सीमा की’, ‘विश्वास-जाल कोना बदलैत अछि’ जकाँ समस्याक इतिहास रूपमे पढ़ैत अछि।

नव्य-न्याय संग तुलना एहि खण्डक कसौटी-परीक्षा अछि। साम्य—अवधारणात्मक सूक्ष्मता, दलीलक संरचना, अस्पष्टता-विरोध—स्पष्ट कएल गेल अछि; भिन्नता—ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, तत्त्वमीमांसा, प्रमाण-सिद्धान्त, भाषा आ लक्ष्य—समान रूपेँ दर्ज अछि। एहि संतुलनसँ तुलना गौरववादी समानीकरणसँ बचैत अछि।

तृतीय खण्ड — भाषिक मोड़ आ अर्थक दर्शन (अध्याय 15–21)

भाषिक मोड़क खण्ड उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइन, ऑस्टिन, सर्ल, निजी भाषा, शब्दार्थ, भारतीय शब्दमीमांसा आ मिथिलाक भाषिक विश्लेषणकेँ एकहि प्रश्नमण्डलमे आनैत अछि। अर्थ वस्तु-सन्दर्भ मात्र नहि; प्रयोग, प्रसंग, वक्ता, सम्बन्ध, नियम, तात्पर्य आ सामाजिक क्रिया सभ ओकर विभिन्न आयाम बनैत छथि।

भारतीय शब्दमीमांसाकेँ एकरूप सिद्धान्त मानबाक बदला न्याय, मीमांसा, व्याकरण आ बौद्ध परम्पराक भिन्नता राखल गेल अछि। मिथिलाक भाषिक विश्लेषणक प्रस्ताव तकनीकी नव्य-न्याय आ जीवित मैथिली लोकप्रयोग दुनूकेँ आवश्यक स्रोत मानैत अछि। एहि कारण भाषा ‘शास्त्र’ आ ‘जीवन’ बीच पुल बनैत अछि।

चतुर्थ खण्ड — संरचनावाद (अध्याय 22–27)

संरचनावादक छह अध्याय सम्बन्ध, भेद, प्रणाली, रूपान्तरण, मिथक, व्यक्ति आ भारतीय भाषिक परम्पराक प्रश्न खोलैत छथि। सस्यूर आ लेवी-स्ट्रॉसक उपयोग पद्धतिगत अछि: एकाकी तत्वक बदला सम्बन्ध-जाल देखब। मुदा

खण्डक अन्त स्वयं संरचनावादक सीमा—इतिहास, सत्ता, व्यक्ति, शरीर, अनुभव आ बाह्य यथार्थ—स्पष्ट करैत अछि।

एहि आत्मसीमांकनक कारण अगिला उत्तर-संरचनात्मक खण्ड स्वाभाविक रूपेँ जन्म लैत अछि। साहित्यिक स्थापत्य एतय विशेष सफल अछि: सिद्धान्तक परिचय, उपयोग, भारतीय संवाद, फेर ओकर सीमा—ई क्रम पोथीक 'स्वयं आलोचना करैत बढ़ब' वाली शैलीक उदाहरण अछि।

पंचम खण्ड — उत्तर-संरचनावाद आ विखण्डन (अध्याय 28–35)

उत्तर-संरचनावाद आ विखण्डनक अध्यायसभ देरिदाक आलोचनाकेँ 'अर्थहीनता' वा 'नष्टिकरण' रूपमे सरल नहि करैत। उपस्थिति, भिन्नता, स्थगन, वाणी/लेखन, केन्द्र, पदानुक्रम आ पाठक आत्मविरोधक विश्लेषणक बाद भारतीय दर्शन, नव्य-न्याय आ समानान्तर उत्तरपक्षक संवाद होइत अछि।

विशेष उपलब्धि अध्याय ३४–३५ अछि। नव्य-न्यायकेँ विखण्डनक शत्रु न बनाओल गेल; स्पष्टता आ सीमांकनक शक्ति स्वीकारैत ओकर ऐतिहासिक/भाषिक पूर्वधारणाकेँ प्रश्नयोग्य मानल गेल। अन्ततः विखण्डनक बाद पुनर्निर्माण—प्रमाण, यथार्थ, गरिमा आ सार्वजनिक तर्कक आधारपर—पोथीक स्वतन्त्र स्वर स्पष्ट करैत अछि।

षष्ठ खण्ड — फूको, ज्ञान आ सत्ता (अध्याय 36–41)

फूको सम्बन्धी खण्ड ज्ञान-सत्ता, पुरातत्त्व, वंशावली, अनुशासन, शरीर आ संस्था सँ इतिहास-दृष्टि धरि बढ़ैत अछि। सत्ता ज्ञानकेँ प्रभावित करैत अछि, वर्गीकरण जीवनपर असर करैत अछि, अभिलेखागार निष्पक्ष गोदाम नहि—एहि बिन्दुसभक संग पोथी प्रमाणक स्वतंत्र अनुशासन जोड़ैत अछि।

विदेह-समानान्तर इतिहासक मूल सूत्र एतय तीक्ष्ण होइत अछि: सत्ता जाँचू, मुदा प्रमाण नहि छोड़ू; मौन दर्ज करू, मुदा खाली जगह कल्पनासँ नहि भरो; हाशिया सुनू, मुदा स्वतः सत्यक विशेषाधिकार नहि दिअ। एहि तीन निषेधसँ फूको-प्रेरित आलोचना ऐतिहासिक सापेक्षतावादमे फिसलए सँ बचैत अछि।

सप्तम खण्ड — उत्तर-आधुनिकता (अध्याय 42–47)

उत्तर-आधुनिकता सम्बन्धी खण्ड महाख्यान, प्रतिरूप, माध्यम, सत्य, विज्ञान आ इतिहासक बहसकेँ ‘सभ सत्य समाप्त’ जकाँ नारा सँ मुक्त करैत अछि। ल्योटार आ बौद्रियारक आलोचना ग्रहण कएल गेल अछि, मुदा तथ्य, प्रमाण, शरीर, विज्ञान आ ऐतिहासिक घटना केँ भाषिक/माध्यमिक प्रभावमे विलीन नहि कएल गेल।

समानान्तर उत्तर बहुलता आ कसौटीकेँ एक संग राखैत अछि। ई दार्शनिक मध्यस्थता पोथीक एक स्थायी लक्षण अछि: आलोचनात्मक सिद्धान्तसँ समस्या ग्रहण करू, मुदा ओकर सर्वाधिक व्यापक निष्कर्षकेँ प्रतिप्रमाण, यथार्थ आ गरिमासँ जाँचू।

अष्टम खण्ड — व्याख्या, पाठ आ पाठक (अध्याय 48–53)

व्याख्या-दर्शनक खण्ड बुझबाक ऐतिहासिकता, पूर्वबोध, पाठक दूरी, लेखक-अभिप्राय, भारतीय भाष्य-परम्परा आ मिथिलाक शास्त्रार्थक बीच सावधान संवाद बनबैत अछि। गाडामर आ रिकोयरक प्रयोग शास्त्रीय भाष्यकेँ आधुनिक सिद्धान्तक पूर्वरूप बनाबय लेल नहि, अर्थ-सम्बन्धी साझा कठिनाइसभ स्पष्ट करबाक लेल अछि।

अध्याय ५३ विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, कारण पूर्वपक्ष–उत्तरपक्षकेँ आलोचनात्मक नैतिकता रूपमे पढ़ैत अछि: विरोधी मतकेँ पहिले सबल रूपमे प्रस्तुत करब, तखन आलोचना। ई सिद्धान्त शोध-लेखनक नैतिक नियम बनि सकैत अछि, विशेषत: जखन तुलनात्मक दर्शनमे कमजोर प्रतिपक्ष बना कए विजय घोषित करबाक खतरा अधिक होइत अछि।

नवम खण्ड — आलोचनात्मक सिद्धान्त, मार्क्सक बाद (अध्याय 54–59)

फ्रैंकफर्ट परम्परा, होर्खाइमर–अडोर्नो, मार्क्यूजे, हाबर्मास, सार्वजनिक क्षेत्र आ शास्त्रार्थ–संवादात्मक विवेकक अध्यायसभ आधुनिक विवेकक द्वैधता खोलैत छथि। विवेक मुक्ति दऽ सकैत अछि, मुदा प्रशासन, बाजार, तकनीक आ प्रभुत्वक औजार सेहो बनि सकैत अछि।

हाबर्मासक संवादात्मक विवेकक संग न्यायीय वाद-जल्प-वितण्डा आ शास्त्रार्थक तुलना उपयोगी अछि, किएक तँ पोथी स्पष्ट करैत अछि जे ई

एकहि सिद्धान्तक अलग नाम नहि। तुलनाक वास्तविक बिन्दु कारण-देयता, प्रतिपक्ष, सत्याभिमुखता आ विजयाभिमुख रणनीतिक भेद अछि।

दशम खण्ड — स्त्रीवाद, लिंग आ देह (अध्याय 60–66)

स्त्रीवादक खण्ड एकल ‘स्त्रीवादी सिद्धान्त’ बनाबय सँ बचैत अछि। बोउवार, देह-अनुभव, बटलर, अन्तर्संबद्ध असमानता, भारतीय स्त्रीवाद आ मिथिलाक समानान्तर स्त्री-दृष्टि मिलि जैविकता, सामाजिक निर्माण, देहधर्मिता, जाति, वर्ग, धर्म, क्षेत्र, श्रम आ संस्थागत सत्ता सभकेँ जोड़ैत छथि।

मिथिलाक खण्डमे पाँजी, विवाह, परिवार, गीत, श्रम, प्रवासन, बाढ़, सीमा, भाषा आ डिजिटल तकनीकेँ सामाजिक पुनरुत्पादन आ कर्तृत्वक स्थल रूपमे पढ़ब उल्लेखनीय अछि। मुदा स्थानीय स्त्री-अनुभवकेँ ‘एक स्वर’ बनबय सँ बचबाक चेतावनी उतबे आवश्यक; पोथी स्वयं एहि आन्तरिक भिन्नताकेँ स्वीकारैत अछि।

एकादश खण्ड — औपनिवेशिकता, उत्तर-औपनिवेशिकता आ ज्ञान (अध्याय 67–74)

औपनिवेशिकता सम्बन्धी आठ अध्याय ज्ञानक प्रशासनिक उपयोग, प्राच्यवाद, अधीनस्थ वाणी, संकरता, अधीनस्थ अध्ययन, औपनिवेशिकता-मुक्त विचार, भारतीय दर्शनक वर्गीकरण आ मिथिलाक क्षेत्रीय इतिहासकेँ एक दीर्घ वक्रमे रखैत छथि। ‘औपनिवेशिक ज्ञान = झूठ’ जकाँ सरल सूत्र अस्वीकार कएल गेल अछि; वास्तविक ज्ञान, प्रशासनिक सुविधा, सत्ता, वर्गीकरण आ स्थानीय पुनरधिग्रहणक मिश्रण जाँचल गेल अछि।

मिथिलाकेँ साम्राज्य, राष्ट्र आ क्षेत्रक बीच पढ़बाक अध्याय वर्तमान सीमा अतीतपर आरोपित करबाक खतरा स्पष्ट करैत अछि। ‘मिथिला’ न शाश्वत अपरिवर्तनीय सार अछि, न मनमाना कल्पना; भाषा, स्मृति, संस्था, पर्यावरण, राजनीतिक दाबी आ ऐतिहासिक सम्बन्धक परिवर्तनीय संरचना अछि। ई निष्कर्ष विदेह-समानान्तर इतिहास-पद्धतिक उत्कृष्ट अनुप्रयोग अछि।

द्वादश खण्ड — मन, चेतना आ व्यक्तित्व (अध्याय 75–81)

मन-दर्शनक सात अध्याय मन–देह, व्यवहारवाद, तादात्म्य सिद्धान्त, कार्यात्मकतावाद, चेतनाक कठिन समस्या, उद्देश्यता, आत्मबोध, भारतीय आत्मा–अनात्मा–चित्त विवाद आ न्याय–बौद्ध–आधुनिक त्रिकोणीय संवाद खोलैत छथि। पोथी ‘मन’ शब्दकेँ एकहि तत्त्वमीमांसक पहेली बनबय सँ बचैत अछि; विभिन्न घटनाकेँ विभिन्न प्रमाण-स्तरपर जाँचबाक आग्रह करैत अछि।

न्याय आ बौद्ध दर्शनक संवाद एतय विशेष फलदायी अछि। न्याय स्थायी विषयी, सम्बन्ध, स्मृति, त्रुटि आ प्रमाणक सूक्ष्मता दैत अछि; बौद्ध परम्परा अनात्मा, प्रक्रिया-सातत्य, स्वसंवेदन आ क्षणिकताक चुनौती दैत अछि; आधुनिक मन-विज्ञान मस्तिष्क, प्रयोग, देहधर्मिता आ कृत्रिम प्रणालीक प्रश्न जोड़ैत अछि। कोनो विजेता घोषित नहि करब एहि त्रिकोणीय पद्धतिक बल अछि।

त्रयोदश खण्ड — विज्ञान, तकनीक, डिजिटल जगत आ कृत्रिम बुद्धि (अध्याय 82–89)

विज्ञान, तकनीक, डिजिटल जगत आ कृत्रिम बुद्धिक आठ अध्याय पोथीक समकालीन भाग अछि। वैज्ञानिक यथार्थवाद, प्राकृतिक/सामाजिक विज्ञान, तकनीकक गैर-निष्पक्षता, डिजिटल सत्य, कलनविधीय वर्गीकरण, बुद्धिक अर्थ, मशीन चेतना आ प्रमाण–उत्तरदायित्व एक-दोसरासँ जुड़ैत छथि।

विशेष रूपेँ अध्याय ८९ ज्ञानमीमांसाकेँ उत्पत्ति-श्रृंखला, संस्करण, मानवीय जाँच, निर्णय, प्रभाव, लेखा-पथ, सुधार आ अपीलक आधुनिक संरचनासँ जोड़ैत अछि। ‘प्रवाहपूर्ण उत्तर = प्रमाण’ वा ‘प्रणाली कहलक = उचित कारण’ जकाँ भ्रमक निषेध दार्शनिक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि। एहि ठाम पोथीक बहुप्रमाणीय विवेकवाद डिजिटल युगक प्रत्यक्ष पद्धति बनैत अछि।

चतुर्दश खण्ड — एकैसम शताब्दीक समानान्तर दर्शन (अध्याय 90–96)

अध्याय ९०–९६ समानान्तर दर्शनक सात आधारक पुनर्निर्माण करैत छथि: बहुप्रमाणीय विवेकवाद, सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद, गरिमा-आधारित नैतिकता, बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र, धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता, समानान्तर इतिहास-दृष्टि आ आत्मसमीक्षा। ई खण्ड पोथीक दार्शनिक केन्द्रीय भाग अछि, कारण पूर्ववर्ती आलोचनासभकेँ अब सूत्रात्मक प्रणालीमे रूपान्तरित करैत अछि।

महत्त्वपूर्ण बात ई जे सात आधार एक-दोसराक सुधारक छथि। प्रमाण बिना यथार्थवाद मत-सूची बनि सकैत; आत्मसमीक्षा बिना यथार्थवाद कठोर मतवाद; गरिमा बिना लोकतन्त्र संख्यात्मक प्रभुत्व; इतिहास-दृष्टि बिना वर्तमान श्रेणी स्वाभाविक; आत्मसमीक्षा बिना सम्पूर्ण प्रणाली स्वयं नूतन केन्द्र बनि सकैत अछि। ई परस्पर-नियन्त्रण पोथीक दार्शनिक परिपक्वता अछि।

उपसंहारिक खण्ड — नूतन सूत्र (अध्याय 97–100)

अन्तिम चार अध्याय सूत्रात्मक संक्षेप नहि, पूर्ववर्ती बहसक ‘सीमा-वाक्य’ छथि: संरचना वास्तविक अछि, मुदा नियति नहि; भाषा सीमा अछि, मुदा कारागार नहि; सत्ता ज्ञानकेँ प्रभावित करैत अछि, मुदा सत्यकेँ मनमाना नहि बनबैत; आ समानान्तर दर्शन स्वयं अन्तिम दर्शन नहि।

अध्याय १०० विशेष रूपेँ ‘महासंश्लेषण’ शब्दसँ दूरी राखैत अछि। सात आधार एक तैयार विश्वदर्शन बनबाक बदला परस्पर-सुधारक परीक्षण-यन्त्र रूपमे प्रस्तुत होइत छथि। अंतिम अधिकार भविष्यक प्रमाण आ नीकतर तर्ककेँ देब एहि परियोजनाक आत्मसमीक्षात्मक नैतिकता केँ पूर्ण करैत अछि।

४. रचना-दर-रचना समीक्षा: अध्याय १–१००

एहि खण्डक उद्देश्य सम्पूर्ण रचनात्मक कवरेज सुनिश्चित करब अछि। प्रत्येक अध्यायक शीर्षक, ओकर पाठगत केन्द्रीय निष्कर्ष आ समीक्षात्मक महत्त्व दर्ज कएल गेल अछि। एकहि विषयगत खण्डक भीतर पुनरावृत्ति होइतहुँ प्रत्येक अध्याय स्वतंत्र दार्शनिक कार्य करैत अछि; तेँ कोनो अध्यायकेँ केवल समूह-नामक भीतर विलीन नहि कएल गेल अछि।

अध्याय 1 — दर्शनक दोसर मोड़: चेतनासँ भाषा धरि

पाठगत नाभि। बीसम शताब्दीक भाषिक मोड़ आधुनिक दर्शनक चेतनाकेन्द्रित प्रश्नकेँ समाप्त नहि करैत; ओकर सामाजिक, तार्किक आ भाषिक आयाम खोलैत अछि। ज्ञाता निर्वाक् चेतना नहि। ओ भाषा सीखैत अछि, नियम मानैत अछि, अभिव्यक्ति सुधारैत अछि, प्रतिपक्ष सुनैत अछि, सामाजिक संसारमे अर्थ साझा करैत अछि। एहि कारण सत्य, ज्ञान, तत्त्वमीमांसा, नैतिकता, राजनीति आ इतिहास भाषासँ पूर्णतः अलग नहि रहि

सकैत अछि। मुदा भाषा पर केन्द्रित होयब जगतकेँ भाषामे विलीन करब नहि। समानान्तर दर्शनक सूत्र अछि: भाषा वास्तविकताक मानव-अनुभवक सक्रिय माध्यम अछि; सत्यक एकमात्र निर्माता नहि। भाषा सामाजिक वास्तविकताकेँ वर्गीकृत आ आकार दऽ सकैत अछि, मुदा शरीर, पदार्थ, पीड़ा, प्रकृति, इतिहास आ प्रमाण ओकर सीमाक प्रतिरोध करैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। ई अध्याय पद्धति-निर्माणक भाग अछि; एकर मूल्य निष्कर्षसँ अधिक प्रश्न-सीमा साफ करबामे अछि।

अध्याय 2 — बीसम शताब्दीमे दर्शन किएक बदलल?

पाठगत नाभि। बीसम शताब्दीमे दर्शन एहन कारणसँ नहि बदलल जे कोनो एक दार्शनिक नूतन पद्धति खोजि लेलनि। परिवर्तन गम्भीर छल, किएक तँ ज्ञानक पूरा परिवेश बदलल। विज्ञान दर्शनसँ अलग संस्थागत शक्ति बनल; विज्ञानक भीतरक क्रान्ति पुरान निश्चितताकेँ चुनौती देलक; गणितीय तर्क विचारक औपचारिक रूप बदललक; मनोविश्लेषण आत्मक पारदर्शितापर प्रश्न उठौलक; भाषाविज्ञान अर्थकेँ संरचना आ भेदक तन्त्रमे देखलक; विश्वयुद्ध प्रगतिक नैतिक आश्वासन तोड़लक; औपनिवेशिकता सार्वभौमिकताक चयनात्मक प्रयोग उजागर कएलक; आधुनिक राज्य वर्गीकरण, अभिलेख आ प्रशासन सँ ज्ञान-सत्ता सम्बन्धकेँ तीव्र बनौलक। एहि सभकेँ एक सिद्धान्तमे गलायब उचित नहि। तार्किक प्रत्यक्षवाद, प्रघटनावाद, अस्तित्ववाद, संरचनावाद, आलोचनात्मक सिद्धान्त, उत्तर-औपनिवेशिक विचार आ बादक उत्तर-संरचनावाद अलग प्रश्न, पद्धति आ उत्तर रखैत अछि। बीसम शताब्दीक दार्शनिक विशेषता सहमति नहि, समस्या-क्षेत्रक विस्तार अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। एतय ऐतिहासिक सरलरेखीयता टारल गेल अछि, जे पछिला तुलनात्मक खण्डसभक विश्वसनीयता लेल आधार बनैत अछि।

अध्याय 3 — विश्लेषणात्मक आ महाद्वीपीय दर्शनक विभाजन

पाठगत नाभि। विश्लेषणात्मक आ महाद्वीपीय दर्शनक विभाजन उपयोगी संकेत अवश्य अछि, मुदा ई स्वयं दर्शनक अन्तिम भूगोल नहि। ई ऐतिहासिक-संस्थागत-पद्धतिगत प्रवृत्तिक संक्षेप मात्र अछि। दार्शनिक रूपसँ अधिक निर्णायक बात ई अछि जे हम कतेक स्पष्ट, कतेक तर्कसंगत, कतेक

इतिहास-सचेत, कतेक सत्ता-सम्बन्धसँ अवगत, कतेक आत्मसमीक्षी आ कतेक मानव-गरिमापर केन्द्रित छी।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। ‘नक्शा’ कैं ‘भूभाग’ नहि मानबाक सावधानी भारतीय आ पाश्चात्य दुनू इतिहासलेखन लेल उपयोगी अछि।

अध्याय 4 — भारतीय दर्शन एहि नक्शामे कतय?

पाठगत नाभि। भारतीय दर्शन विश्व-दर्शनक नक्शामे कोनो एक पाश्चात्य श्रेणी अन्तर्गत समाहित होयबाक प्रतीक्षा नहि करैत अछि। ओकर अपन इतिहास, भाषा, प्रश्न, तर्क, शास्त्रार्थ आ लक्ष्य अछि। मुदा एहि स्वतन्त्रताक अर्थ आत्मनिर्वासन सेहो नहि। सत्य, ज्ञान, भाषा, अर्थ, आत्म, जगत, नैतिकता, मुक्ति, न्याय आ समाज—ई सभ साझा मानवीय प्रश्न अछि। एहि कारण उचित दार्शनिक नक्शा बहुकेन्द्रिक होयबाक चाही। भारतीय परम्परा, विश्लेषणात्मक प्रवाह, महाद्वीपीय प्रवाह, आधुनिक विज्ञान, सामाजिक सिद्धान्त आ स्थानीय ज्ञान—सभकैं अपन-अपन ऐतिहासिकता सुरक्षित रखैत संवादमे आनल जाए।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। ई अध्याय पद्धति-निर्माणक भाग अछि; एकर मूल्य निष्कर्षसँ अधिक प्रश्न-सीमा साफ करबामे अछि।

अध्याय 5 — मिथिलाक समानान्तर प्रवेश-बिन्दु

पाठगत नाभि। मिथिलाक समानान्तर प्रवेश-बिन्दु कोनो दार्शनिक विजय-सूची नहि। ई विचार करबाक अनुशासनक सूची अछि—प्रमाण, शब्द, अभाव, सम्बन्ध, लक्षणा, परिभाषा, पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष आ शास्त्रार्थ। एहि पद्धतिक विशेषता ई जे ओ आधुनिक दर्शनक संग संवाद करैत समय न आत्महीन अनुकरण करैत अछि, न प्रमाणहीन गौरववाद। नव्य-न्याय आधुनिक विश्लेषणात्मक दर्शन नहि; मीमांसा आधुनिक व्याख्या-दर्शन नहि; मुदा दुनू आधुनिक प्रश्नकैं चुनौती देबाक स्वतंत्र दार्शनिक साधन रखैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। एतय ऐतिहासिक सरलरेखीयता टारल गेल अछि, जे पछिला तुलनात्मक खण्डसभक विश्वसनीयता लेल आधार बनैत अछि।

अध्याय 6 — तुलनात्मक दर्शनक खतरा

पाठगत नाभि। तुलनात्मक दर्शनक उद्देश्य समानता खोजब मात्र नहि; उचित भिन्नता देखब सेहो अछि। दू परम्परा एक प्रश्न साझा करि सकैत अछि, मुदा अलग अवधारणा, अलग प्रमाण आ अलग लक्ष्य रखि सकैत अछि। समानान्तर दर्शन एहि कारण पाँच स्तर अलग राखैत अछि—ऐतिहासिक प्रभाव, समस्या-साम्य, अवधारणात्मक साम्य, कार्यगत साम्य, मूलभूत भिन्नता। एहि भेदसँ तुलना अधिक सत्यनिष्ठ बनैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। ‘नक्शा’ कैं ‘भूभाग’ नहि मानबाक सावधानी भारतीय आ पाश्चात्य दुनू इतिहासलेखन लेल उपयोगी अछि।

अध्याय 7 — फ्रेगे: तर्क, अर्थ आ सन्दर्भ

पाठगत नाभि। फ्रेगे आधुनिक विश्लेषणात्मक दर्शनक इतिहासमे निर्णायक अछि किएक तँ हुनकर कार्य तर्क, गणित आ भाषा-दर्शनक प्रश्नकैं एक नूतन औपचारिक कठोरता देलक। अर्थ-बोध आ सन्दर्भक भेद ई स्पष्ट करैत अछि जे वस्तु-निर्देशन मात्र अर्थक सम्पूर्णता नहि। एकहि वस्तु अलग प्रस्तुति-ढंग सँ ज्ञात भऽ सकैत अछि, आ एहि अन्तरसँ नूतन ज्ञान उत्पन्न होइत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। विश्लेषणात्मक स्पष्टता एतय साधन अछि, सम्पूर्ण दर्शनक मापदण्ड नहि; ई भेद पोथीकैं संकीर्ण तर्कवादसँ बचबैत अछि।

अध्याय 8 — रसेल: वर्णन, तार्किक रूप आ जगत

पाठगत नाभि। रसेलक वर्णन-सिद्धान्त आधुनिक विश्लेषणात्मक दर्शनक एक आदर्श उदाहरण अछि—भाषिक रूपक सतहक नीचे तार्किक संरचना खोजब। निश्चित वर्णनकैं नाम मानबाक बदला अस्तित्व, एकत्व आ गुणक संयुक्त दावा रूपमे विश्लेषित कएलासँ अस्तित्ओहीन वस्तु सम्बन्धी अनेक भ्रम कम होइत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। नव्य-न्याय संग संवादक मूल्य समस्या-साम्य मे अछि, ऐतिहासिक पहिचान घोषित करबामे नहि।

अध्याय 9 — मूर आ सामान्य बुद्धि

पाठगत नाभि। जी. ई. मूरक सामान्य-बुद्धि दर्शन कट्टर संशयवादक विरुद्ध दार्शनिक प्रतिरोध अछि। हुनकर मुख्य शक्ति ई प्रश्न अछि—हम कोन बात अधिक निश्चित रूपेँ जानैत छी: अपन हाथक अस्तित्व, कि एहन दार्शनिक

तर्क जे कहैत अछि हमरा अपन हाथक ज्ञान नहि? बाह्य जगतक प्रमाण, सामान्य-बोधक निश्चितता आ नैतिक ‘खुला प्रश्न’—तीनू ठाम मूर अवधारणात्मक अतिरेकक विरुद्ध सावधानी सिखबैत छथि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। कथन, सन्दर्भ, तार्किक रूप आ प्रमाणक पृथक्करण पोथीक आगेक भाषा-विमर्श लेल तकनीकी आधार बनैत अछि।

अध्याय 10 — आरम्भिक विट्गेन्स्टाइन

पाठगत नाभि। आरम्भिक विट्गेन्स्टाइनक दर्शन भाषा आ जगतक सम्बन्धकेँ संरचनात्मक रूपमे बुझबाक एक महत्त्वाकांक्षी प्रयास अछि। जगत तथ्यसभक समष्टि, वाक्य सम्भावित तथ्यक चित्र, आ तार्किक रूप चित्रणक शर्त अछि। एहि दृष्टिमे सत्यता आ सार्थकता अलग प्रश्न अछि: असत्य वाक्य सेहो सार्थक हो सकैत अछि जँ ओ सम्भव तथ्य चित्रित करैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। विश्लेषणात्मक स्पष्टता एतय साधन अछि, सम्पूर्ण दर्शनक मापदण्ड नहि; ई भेद पोथीकेँ संकीर्ण तर्कवादसँ बचबैत अछि।

अध्याय 11 — तार्किक प्रत्यक्षवाद

पाठगत नाभि। तार्किक प्रत्यक्षवाद आधुनिक दर्शनक इतिहासमे प्रमाण, तर्क, विज्ञान आ भाषिक स्पष्टताक शक्तिशाली आन्दोलन छल। ओकर लक्ष्य दर्शनकेँ अस्पष्ट तत्त्वमीमांसक दाबीसँ मुक्त करि सार्वजनिक जाँचक प्रति उत्तरदायी बनायब छल। मुदा कठोर सत्यापन-सिद्धान्त स्वयं वैज्ञानिक नियम, सैद्धान्तिक वस्तु, इतिहास, नैतिकता आ अपन अर्थ-कसौटी सम्बन्धी कठिनाईमे पड़ल। एहि कारण तार्किक अनुभववाद समयक संग अधिक सूक्ष्म भेल।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। नव्य-न्याय संग संवादक मूल्य समस्या-साम्य मे अछि, ऐतिहासिक पहिचान घोषित करबामे नहि।

अध्याय 12 — कार्नाप आ तत्त्वमीमांसाक प्रश्न

पाठगत नाभि। कार्नापक दर्शन तत्त्वमीमांसाक साधारण निषेधसँ अधिक गहिर भाषा-समालोचना अछि। हुनकर आग्रह अछि जे दार्शनिक कथनक पद, श्रेणी, नियम, तार्किक रूप आ परीक्षण स्पष्ट हो। प्रारम्भिक ‘छद्म-वाक्य’ आलोचनासँ बादक ‘भाषिक रूपरेखा’, ‘आन्तरिक–बाह्य प्रश्न’ आ ‘सहिष्णुता-सिद्धान्त’ धरि कार्नापक विकास दर्शनमे अधिक बहुलता स्वीकारैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। कथन, सन्दर्भ, तार्किक रूप आ प्रमाणक पृथक्करण पोथीक आगेक भाषा-विमर्श लेल तकनीकी आधार बनैत अछि।

अध्याय 13 — क्वाइन: विश्लेषणात्मक–संश्लेषणात्मक भेदक संकट

पाठगत नाभि। क्वाइनक ‘अनुभववादक दू सिद्धान्त’ विश्लेषणात्मक–संश्लेषणात्मक भेद आ कठोर घटाववादक नींवपर गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि। हुनकर मुख्य शिक्षा ई नहि जे भाषा, तर्क आ अनुभवमे कोनो भेद नहि; वरन् ई जे एहि भेदसभकेँ स्वत:स्पष्ट, पूर्णत: स्वतंत्र नींव मानब कठिन अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। विश्लेषणात्मक स्पष्टता एतय साधन अछि, सम्पूर्ण दर्शनक मापदण्ड नहि; ई भेद पोथीकेँ संकीर्ण तर्कवादसँ बचबैत अछि।

अध्याय 14 — विश्लेषणात्मक दर्शन आ नव्य-न्याय

पाठगत नाभि। नव्य-न्याय आ विश्लेषणात्मक दर्शनक बीच गहिर संवाद सम्भव अछि, मुदा ऐतिहासिक समानता सिद्ध नहि। दुनू परम्पराक शक्ति अवधारणात्मक स्पष्टता, दलीलक संरचना, भाषिक सूक्ष्मता आ अस्पष्टताविरोधमे देखाइत अछि। मूलभूत भिन्नता सेहो उतबे महत्त्वपूर्ण अछि—इतिहास, संस्थागत पृष्ठभूमि, तत्त्वमीमांसा, प्रमाण-सिद्धान्त, भाषा आ दार्शनिक लक्ष्य अलग अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। नव्य-न्याय संग संवादक मूल्य समस्या-साम्य मे अछि, ऐतिहासिक पहिचान घोषित करबामे नहि।

अध्याय 15 — उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइन: अर्थ प्रयोगमे

पाठगत नाभि। उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइन भाषा-दर्शनकेँ एकरूप प्रतिनिधित्व-सिद्धान्तसँ हटाकऽ जीवित प्रयोग, भाषा-खेल, नियम-अनुसरण आ जीवन-रूपक बहुविधतामे स्थापित करैत अछि। ‘अर्थ प्रयोगमे’ पूर्ण अर्थ-परिभाषा नहि, दार्शनिक दिशा अछि—शब्दक वास्तविक कार्य देखू, ओकरा अमूर्त वस्तु-जकाँ नहि खोजू।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। भाषिक सामाजिकता स्वीकारैत सत्यक स्वतंत्र कसौटी बचेनाइ एहि खण्डक संतुलनकारी सूत्र अछि।

अध्याय 16 — ऑस्टिन: कहब सेहो करब अछि

पाठगत नाभि। ऑस्टिन भाषा-दर्शनकेँ सत्य–असत्यक सीमित द्वैतसँ निकालि सामाजिक क्रियाक विस्तृत क्षेत्रमे लैत अछि। कहब केवल वर्णन नहि; उचित परिस्थितिमे कहब स्वयं करब अछि। कथन-कर्म, कथनगत क्रिया आ कथन-प्रभावक भेद एके उच्चारणक अलग आयाम स्पष्ट करैत अछि। सफलताक शर्त देखबैत अछि जे भाषा सामाजिक नियम, अधिकार आ संस्था सँ जुड़ल अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। अर्थकेँ वस्तु-सन्दर्भमे सीमित नहि करब एहि अध्यायक आलोचनात्मक शक्ति अछि।

अध्याय 17 — सर्ल आ भाषिक क्रिया

पाठगत नाभि। सर्ल ऑस्टिनक भाषिक क्रिया-विचारकेँ अधिक व्यवस्थित रूप दैत अछि। प्रस्ताविक सामग्री, कथनगत शक्ति, अभिप्राय, नियम, परोक्षता आ संस्थागत तथ्य भाषा-दर्शनक मुख्य विषय बनैत अछि। भाषिक क्रियाक पाँच प्रकार—प्रतिपादक, निर्देशात्मक, प्रतिबद्धकारी, अभिव्यंजक, घोषणात्मक—वास्तविक भाषिक व्यवहार बुझबाक उपयोगी विश्लेषणात्मक मानचित्र दैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। जीवित भाषा, लोकप्रयोग आ शास्त्रीय विश्लेषणकेँ एकहि ज्ञान-वृत्तमे आनब पोथीक मैथिली-केन्द्रित मौलिक योगदान अछि।

अध्याय 18 — भाषा निजी भऽ सकैत अछि की?

पाठगत नाभि। निजी भाषा-विवाद निजी अनुभवक अस्तित्वक निषेध नहि। विट्गेन्स्टाइनक प्रश्न भाषिक अर्थक कसौटी पर अछि—पूर्णतः निजी नियममे सही आ “सही लगब” बीच भेद कोना सम्भव? दर्द-जकाँ मानसिक शब्द सार्वजनिक प्रशिक्षण, प्राकृतिक अभिव्यक्ति, सामाजिक व्यवहार आ जीवन-रूपक भीतर अर्थ पबैत अछि। निजी अनुभूति एहि भाषिक जालक विषय अछि, ओकर प्रतिस्थापन नहि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। भाषिक सामाजिकता स्वीकारैत सत्यक स्वतंत्र कसौटी बचेनाइ एहि खण्डक संतुलनकारी सूत्र अछि।

अध्याय 19 — शब्दक अर्थ: वस्तु, प्रयोग कि सम्बन्ध?

पाठगत नाभि। शब्दक अर्थकेँ वस्तु, प्रयोग अथवा सम्बन्धमे एकरेखीय रूपेँ घटाबयब कठिन अछि। सन्दर्भ, प्रस्तुति-भाव, प्रयोग, सम्बन्ध, प्रसंग, समुदाय, इतिहास आ वास्तविक परिवेश—सभ अर्थक अलग आयाम हो सकैत अछि। फ्रेगे सन्दर्भ आ संज्ञानात्मक प्रस्तुति अलग करैत छथि; रसेल सतही वर्णनक तार्किक रूप खोलैत छथि; उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइन अर्थक सामाजिक प्रयोग देखबैत अछि; बाह्यतावाद वास्तविक परिवेश आ समुदायक भूमिका जोड़ैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। अर्थकेँ वस्तु-सन्दर्भमे सीमित नहि करब एहि अध्यायक आलोचनात्मक शक्ति अछि।

अध्याय 20 — भारतीय शब्दमीमांसा

पाठगत नाभि। भारतीय शब्दमीमांसा एकरूप सिद्धान्त नहि; न्याय, मीमांसा, व्याकरण आ बौद्ध परम्परा शब्द-अर्थ-वाक्य-ज्ञान सम्बन्धक अलग संरचना प्रस्तुत करैत अछि। न्याय यथार्थवादी सन्दर्भ आ शब्दप्रमाण, मीमांसा वाक्यार्थ आ तात्पर्य, भर्तृहरि भाषिक एकता, बौद्ध अपोह वर्गीय अर्थक अपवर्जनात्मक संरचना पर बल दैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। जीवित भाषा, लोकप्रयोग आ शास्त्रीय विश्लेषणकेँ एकहि ज्ञान-वृत्तमे आनब पोथीक मैथिली-केन्द्रित मौलिक योगदान अछि।

अध्याय 21 — मिथिलाक भाषिक विश्लेषण

पाठगत नाभि। मिथिलाक भाषिक विश्लेषण कोनो एक शास्त्रीय सिद्धान्त नहि; परिभाषा, सम्बन्ध, सीमा, प्रमाण, प्रसंग, प्रतिपक्ष आ पुनर्परीक्षणक पद्धतिगत अनुशासन रूपमे अधिक उचित बुझाइत अछि। नव्य-न्याय एहि पद्धतिक तकनीकी शिखरसभमे एक अछि, मुदा ओकरा आधुनिक विश्लेषणात्मक दर्शन वा औपचारिक अर्थविज्ञानक पूर्वरूप घोषित करब अनुचित।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। भाषिक सामाजिकता स्वीकारैत सत्यक स्वतंत्र कसौटी बचेनाइ एहि खण्डक संतुलनकारी सूत्र अछि।

अध्याय 22 — संरचना की अछि?

पाठगत नाभि। संरचना तत्वसभक साधारण जोड़ नहि; नियमबद्ध सम्बन्ध, भेद, स्थान आ रूपान्तरणक प्रणाली अछि। संरचनात्मक दृष्टि एहि कारण पृथक् वस्तुसँ अधिक प्रणालीगत सम्बन्ध देखबैत अछि। संरचनावादक शक्ति समग्रता, सम्बन्धात्मकता, समकालिक संगठन आ रूपान्तरणक नियम स्पष्ट करबामे अछि। ओकर सीमा इतिहास, सक्रियता, सत्ता, शरीर, आकस्मिकता आ बाह्य यथार्थकेँ कम आँकबाक जोखिममे अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। सम्बन्धात्मक दृष्टि उपयोगी अछि, मुदा इतिहास आ कर्तृत्वक पूरकता बिना संरचना नियतिवाद बनि सकैत अछि—अध्याय एहि खतरा केँ स्वयं चिन्हैत अछि।

अध्याय 23 — सस्यूर: संकेतक आ संकेतित

पाठगत नाभि। सस्यूर भाषा-दर्शनमे निर्णायक सम्बन्धात्मक मोड़ दैत अछि। संकेतक आ संकेतित मिलि भाषिक संकेत बनैत अछि; हुनकर सम्बन्ध प्राकृतिक अनिवार्यता नहि, सामाजिक रूपेँ स्थापित; भाषिक मूल्य प्रणालीगत भेदसँ बनैत अछि। भाषा-प्रणाली/वाणी-प्रयोग (langue/parole) आ समकालिक/कालक्रमिक (synchronic/diachronic) भेद विश्लेषणक स्तर स्पष्ट करैत अछि, मुदा वास्तविक भाषा-जीवनमे एहि दुनूक पारस्परिकता स्वीकारब आवश्यक अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। भारतीय भाषिक परम्पराकेँ ‘भारतीय संरचनावाद’ नामक एकल डब्बामे नहि राखब पद्धतिगत रूपेँ उचित अछि।

अध्याय 24 — लेवी-स्ट्रॉस: मिथक आ संरचना

पाठगत नाभि। लेवी-स्ट्रॉस मिथककेँ सम्बन्धात्मक संरचना रूपमे पढ़बाक शक्तिशाली पद्धति विकसित करैत अछि। मिथकीय इकाई, द्वैध-विरोध, पुनरावृत्ति आ रूपान्तरण सँ सतही कथानकक नीचे सम्बन्ध-प्रतिरूप (relation-pattern) जाँचल जाइत अछि। मिथकक अनेक संस्करण ‘दूषण’ नहि, विश्लेषणक सामग्री हो सकैत अछि; रूपान्तरणक माध्यमेँ विरोधाभासक अलग रूप देखल जा सकैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। एहि अध्यायक सीमा-निर्धारण उत्तर-संरचनात्मक प्रश्नक स्वाभाविक तैयारी करैत अछि।

अध्याय 25 — संरचना आ व्यक्ति

पाठगत नाभि। संरचना आ व्यक्ति विरोधी पदार्थ नहि; व्यक्ति संरचनात्मक जगतमे जन्मैत, भाषा सीखैत, भूमिका ग्रहण करैत आ संसाधन/बाधाक बीच क्रिया करैत अछि। कठोर संरचनावाद व्यक्तिक सक्रियता, नवाचार आ जिम्मेदारी कम आँकैत अछि; कठोर व्यक्तिवाद इतिहास, संस्था, असमानता आ उपलब्ध विकल्पक संरचना कम आँकैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। सम्बन्धात्मक दृष्टि उपयोगी अछि, मुदा इतिहास आ कर्तृत्वक पूरकता बिना संरचना नियतिवाद बनि सकैत अछि—अध्याय एहि खतरा केँ स्वयं चिन्हैत अछि।

अध्याय 26 — भारतीय भाषिक परम्परा आ संरचना

पाठगत नाभि। भारतीय भाषिक परम्परासभमे संरचनात्मक प्रश्न अत्यन्त समृद्ध अछि, मुदा एकल “भारतीय संरचनावाद” नहि। पाणिनि नियम-व्यवस्था, भर्तृहरि भाषिक समग्रता, मीमांसा वाक्यार्थ-शर्त, न्याय–नव्य-न्याय पदार्थ/सम्बन्ध, आ बौद्ध अपोह भेदात्मक सीमांकनक अलग परियोजना प्रस्तुत करैत अछि। आधुनिक संरचनावाद (structuralism) सस्यूरियन संकेत-प्रणाली, भेदात्मक मूल्य (differential value) आ सम्बन्धात्मक विश्लेषण (relational analysis) क ऐतिहासिक परियोजना अछि। भारतीय परम्परासभ ओकर पूर्वरूप (precursor) नहि; तुलना केवल सीमित समस्या-साम्य आ कार्यगत साम्य पर उचित।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। भारतीय भाषिक परम्पराकेँ ‘भारतीय संरचनावाद’ नामक एकल डब्बामे नहि राखब पद्धतिगत रूपेँ उचित अछि।

अध्याय 27 — संरचनावादक सीमा

पाठगत नाभि। संरचनावादक सीमा ओकर विफलता नहि; ओकर उचित कार्य-क्षेत्रक सीमा अछि। सम्बन्ध, भेद, नियम आ प्रणाली समझबामे ओ शक्तिशाली अछि; इतिहास, सत्ता, व्यक्ति, शरीर, अनुभव आ बाह्य यथार्थ लेल पूरक पद्धति आवश्यक अछि। समकालिक संरचना कालक्रमिक इतिहासक स्थानापन्न नहि; वर्गीकरण नैतिक वैधताक प्रमाण नहि; भाषिक भेद सत्यक अन्तिम कसौटी नहि; व्यक्ति संरचनाक कठपुतली नहि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। एहि अध्यायक सीमा-निर्धारण उत्तर-संरचनात्मक प्रश्नक स्वाभाविक तैयारी करैत अछि।

अध्याय 28 — संरचनासँ उत्तर-संरचना धरि

पाठगत नाभि। संरचनासँ उत्तर-संरचना धरि संक्रमण संरचनावादक विनाश नहि, ओकर स्थिरता-दाबी पर आत्मालोचनात्मक दबाव अछि। केन्द्र, भेद, सीमा, पुनरावृत्ति, इतिहास, सत्ता आ पाठकीय पुनर्पाठ नूतन प्रश्न बनैत अछि। उत्तर-संरचनावाद एक विद्यालय नहि; देरिदा, फूको, बार्थ आदि अलग परियोजनासँ स्थिर अर्थ, स्थिर विषय आ तटस्थ संरचनापर प्रश्न उठबैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। विखण्डनकेँ मनमानापन नहि, सूक्ष्म पाठ-परीक्षण रूपमे पढ़ब पोथीक महत्वपूर्ण सुधारात्मक हस्तक्षेप अछि।

अध्याय 29 — देरिदा: उपस्थितिक तत्त्वमीमांसाक आलोचना

पाठगत नाभि। देरिदाक उपस्थितिक तत्त्वमीमांसाक आलोचना ‘उपस्थिति नहि’ कहब नहि; ई देखबैत अछि जे उपस्थिति प्रायः भेद, समय, अनुपस्थिति, पुनरावृत्ति आ मध्यस्थतासँ निर्भर अछि। वाणी/लेखन, मूल/पूरक, केन्द्र/हाशिया जकाँ पदानुक्रममे गौण मानल पद कई बेर विशेषाधिकारित पदक सम्भावनाक शर्त होइत अछि। विखण्डन एहि निर्भरता केँ खोलैत अछि, केवल उलटैत नहि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। नव्य-न्यायीय स्पष्टता आ विखण्डनात्मक सीमा-जाँचकेँ प्रतिपक्ष नहि, क्रमिक उपकरण बनाओल गेल अछि।

अध्याय 30 — अर्थ-भिन्नताक स्थगित प्रक्रिया: अर्थक स्थगन आ भिन्नता

पाठगत नाभि। (différance) देरिदाक दर्शनमे भिन्नता आ स्थगनक संयुक्त संकेत अछि। अर्थ अन्य संकेतसभसँ भेदसँ बनैत अछि आ पूर्ण आत्म-उपस्थित वस्तु रूपमे एक क्षणमे समाप्त नहि होइत। ई पद अर्थ-असम्भवता वा सापेक्षतावादक घोषणापत्र नहि। सामाजिक प्रयोग, व्याकरण, इतिहास, संस्था आ प्रसंग पर्याप्त कार्यगत स्थिरता दैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। पुनर्निर्माणक आग्रह पोथीकेँ निहिलवादी निष्कर्षसँ अलग करैत अछि।

अध्याय 31 — लेखन, वाणी आ केन्द्रक प्रश्न

पाठगत नाभि। वाणी आ लेखन अलग माध्यम अछि, मुदा वाणी शुद्ध उपस्थित अर्थ आ लेखन मात्र द्वितीयक प्रतिलिपि—एहन पदानुक्रम टिकैत नहि। दुनू पुनरावृत्ति, सामाजिक नियम, प्रसंग आ चिह्नक संरचनामे कार्य करैत अछि। लेखन दूरी, स्मृति, अभिलेख आ संस्थागत स्थायित्व सम्भव बनबैत अछि; साथे प्रसंग-वियोग, गलत उद्धरण आ सत्ता-नियन्त्रित अभिलेखक जोखिम सेहो बढ़बैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। विखण्डनकेँ मनमानापन नहि, सूक्ष्म पाठ-परीक्षण रूपमे पढ़ब पोथीक महत्वपूर्ण सुधारात्मक हस्तक्षेप अछि।

अध्याय 32 — विखण्डन की अछि—आ की नहि अछि?

पाठगत नाभि। विखण्डन नष्टिकरण नहि; पाठक भीतरक पदानुक्रम, निर्भरता, अपवाद, मौन, सीमा आ आत्म-विरोधक सूक्ष्म पठन अछि। विखण्डन मनमाना अर्थ नहि; पाठीय संरचना, भाषा, प्रसंग, इतिहास आ प्रमाण आलोचनाकेँ नियंत्रित करैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। नव्य-न्यायीय स्पष्टता आ विखण्डनात्मक सीमा-जाँचकेँ प्रतिपक्ष नहि, क्रमिक उपकरण बनाओल गेल अछि।

अध्याय 33 — भारतीय दर्शन आ विखण्डन

पाठगत नाभि। भारतीय दर्शन आ विखण्डनक बीच फलदायी संवाद सम्भव अछि, मुदा ऐतिहासिक पहचान नहि। समस्या-साम्य के सिद्धान्तगत समानता बनाबयब तुलनात्मक त्रुटि अछि। शून्यता स्वभाव-आलोचना अछि, विखण्डन नहि; अपोह अर्थक अपवर्जन-सिद्धान्त अछि, (différance) नहि; अनेकान्तवाद बहुपक्षीय यथार्थवाद अछि, सापेक्षतावाद नहि; अनिर्वचनीयता अद्वैत तत्त्वमीमांसा अछि, अर्थ-अराजकता नहि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। पुनर्निर्माणक आग्रह पोथीकेँ निहिलवादी निष्कर्षसँ अलग करैत अछि।

अध्याय 34 — नव्य-न्याय विखण्डनक प्रतिपक्ष?

पाठगत नाभि। नव्य-न्याय विखण्डनक सरल प्रतिपक्ष नहि। ई स्वतंत्र भारतीय यथार्थवादी–ज्ञानमीमांसक विश्लेषण परम्परा अछि जे स्पष्टता, सम्बन्ध, अभाव, प्रमाण आ दाबी-सीमांकनमे अद्वितीय सूक्ष्मता विकसित करैत अछि। विखण्डन एहि स्पष्टताकेँ नकारैत नहि; ओ प्रश्न करैत अछि कि स्थिरताक ऐतिहासिक, भाषिक, सामाजिक आ बहिष्कारगत शर्त की।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। विखण्डनकेँ मनमानापन नहि, सूक्ष्म पाठ-परीक्षण रूपमे पढ़ब पोथीक महत्वपूर्ण सुधारात्मक हस्तक्षेप अछि।

अध्याय 35 — समानान्तर उत्तरपक्ष

पाठगत नाभि। समानान्तर उत्तरपक्ष विखण्डनक अस्वीकार नहि; ओकर दार्शनिक अगिला चरण अछि। जे अवधारणा आलोचनामे टूटैत अछि, ओकरा पुरान रूपमे नहि, सीमा स्पष्ट कऽ पुनर्निर्मित कएल जाए। अर्थ बहुल हो सकैत अछि, मुदा अराजक नहि; सत्य मध्यस्थित हो सकैत अछि, मुदा मनमाना नहि; इतिहास अपूर्ण हो सकैत अछि, मुदा असम्भव नहि; पहचान सामाजिक हो सकैत अछि, मुदा गरिमा श्रेणी-सापेक्ष नहि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। नव्य-न्यायीय स्पष्टता आ विखण्डनात्मक सीमा-जाँचकेँ प्रतिपक्ष नहि, क्रमिक उपकरण बनाओल गेल अछि।

अध्याय 36 — ज्ञान आ सत्ता अलग अछि की?

पाठगत नाभि। ज्ञान आ सत्ता पूर्णतः अलग क्षेत्र नहि, विशेषतः जखन संस्था मनुष्यकेँ मापैत, वर्गीकृत करैत, अभिलेखित करैत आ सामान्यीकृत करैत अछि। फूकोक सत्ता–ज्ञान विश्लेषण (power/knowledge) देखबैत अछि जे परीक्षा, निगरानी, दस्तावेजीकरण (documentation) आ मानक (norm) ज्ञान उत्पन्न सेहो करैत अछि आ व्यवहार नियंत्रित सेहो।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। शरीर, संस्था आ वर्गीकरणक सम्बन्धक विश्लेषण अमूर्त दर्शनकेँ ठोस सामाजिक जीवनसँ जोड़ैत अछि।

अध्याय 37 — फूकोक पुरातत्त्व

पाठगत नाभि। फूकोक पुरातत्त्व इतिहासक भौतिक उत्खनन नहि; कथन, विमर्शात्मक गठन, अभिलेख, ज्ञान-रचना आ ऐतिहासिक नियमबद्धताक पद्धति

अछि। ई महान लेखकक चेतना अथवा छिपल अर्थकेँ प्राथमिकता नहि दैत; जे कहल गेल अछि ओकर सम्बन्ध, सम्भावना-शर्त आ परिवर्तन वर्णित करैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। सत्ता-समीक्षा आ प्रमाण-समीक्षाकेँ एक संग राखब एतय निर्णायक अछि; एकर बिना इतिहास या तँ भोला दस्तावेजवाद, या पूर्ण संशयवाद बनि सकैत अछि।

अध्याय 38 — वंशावली: इतिहास लिखबाक दोसर ढंग

पाठगत नाभि। फूकोक वंशावली इतिहास लिखबाक एहन पद्धति अछि जे शुद्ध उद्गम, एकरेखीय प्रगति आ वर्तमानक प्राकृतिकता पर प्रश्न उठबैत अछि। वंशक्रम/उत्पत्ति-रेखा मिश्रित स्रोत खोजैत अछि; उद्भव संघर्ष-सापेक्ष बिन्दु; आकस्मिकता (contingency) वर्तमानक अनिवार्यता तोड़ैत अछि; शरीर सत्ता-अभ्यासक ऐतिहासिक स्थल बनैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। अभिलेखक मौनकेँ प्रमाणक शून्यता वा स्वत: कथा बनबय सँ रोकनाइ विदेह-समानान्तर इतिहासक शक्ति अछि।

अध्याय 39 — अनुशासन, निगरानी आ सामान्यीकरण

पाठगत नाभि। फूकोक अनुशासनात्मक सत्ता शरीर, समय, स्थान, व्यवहार आ आत्म-निरीक्षणक सूक्ष्म व्यवस्थापन सँ काम करैत अछि। पदानुक्रमित निरीक्षण, सामान्यीकरणकारी निर्णय आ परीक्षा आधुनिक अनुशासनक तीन केन्द्रीय तकनीक छथि; पैनऑप्टिकता दृश्यताक सम्भावना सँ आत्म-नियमनक रूपक दैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। शरीर, संस्था आ वर्गीकरणक सम्बन्धक विश्लेषण अमूर्त दर्शनकेँ ठोस सामाजिक जीवनसँ जोड़ैत अछि।

अध्याय 40 — शरीर, संस्था आ ज्ञान

पाठगत नाभि। शरीर जैविक वस्तु मात्र नहि; जीवित अनुभव, सामाजिक अर्थ आ संस्थागत ज्ञानक संग सह-अस्तित्व रखैत अछि। संस्था शरीरकेँ मापैत, वर्गीकृत करैत, उपचारित करैत, प्रशिक्षित करैत आ अभिलेखित करैत

अछि। एहि प्रक्रिया सँ वास्तविक ज्ञान सेहो उत्पन्न हो सकैत अछि, सत्ता-अति सेहो।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। सत्ता-समीक्षा आ प्रमाण-समीक्षाकेँ एक संग राखब एतय निर्णायक अछि; एकर बिना इतिहास या तँ भोला दस्तावेजवाद, या पूर्ण संशयवाद बनि सकैत अछि।

अध्याय 41 — फूको आ समानान्तर इतिहास-दृष्टि

पाठगत नाभि। फूको समानान्तर इतिहास-दृष्टि लेल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि किएक तँ ओ इतिहासकारकेँ श्रेणी, अभिलेख, संस्था, सत्ता–ज्ञान, शरीर, सामान्यीकरण आ वर्तमानक स्वाभाविकीकरण पर प्रश्न करब सिखबैत अछि। मुदा समानान्तर इतिहास-दृष्टि फूकोक पद्धतिसँ आगे एक स्पष्ट प्रमाण-अनुशासन राखैत अछि—सत्ता विश्लेषण सत्यक स्थानापन्न नहि; हाशिया स्वतः सत्य नहि; मौन मनगढ़न्त कथा नहि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। अभिलेखक मौनकेँ प्रमाणक शून्यता वा स्वतः कथा बनबय सँ रोकनाइ विदेह-समानान्तर इतिहासक शक्ति अछि।

अध्याय 42 — उत्तर-आधुनिकता की अछि?

पाठगत नाभि। उत्तर-आधुनिकता एकल सिद्धान्त नहि; आधुनिक महाख्यान, केन्द्र, स्थिर पहचान, प्रतिनिधित्वक पारदर्शिता आ सार्वभौमिक वैधतापर विविध आलोचनात्मक प्रवृत्तिसभक परिवार अछि। ल्योटारक महाख्यान-आलोचना, बौद्रियारक प्रतिरूप/माध्यम प्रश्न, देरिदाक विखण्डन आ फूकोक सत्ता–ज्ञान विश्लेषणकेँ एक सिद्धान्त (doctrine) मे समेटब अनुचित।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। बहुलता आ कसौटीकेँ विरोधी नहि मानब पोथीक समानान्तर उत्तरक मूल बल अछि।

अध्याय 43 — ल्योटार आ महाख्यानपर अविश्वास

पाठगत नाभि। ल्योटारक महाख्यानपर अविश्वास ‘सभ सत्य समाप्त’ कहब नहि; ज्ञानक सार्वभौमिक वैधीकरणक एकाधिकारपर प्रश्न अछि। महाख्यान व्यापक वैधता-कथा दैत अछि; लघु कथा स्थानीय/सीमित संदर्भ; भाषा-खेल

ज्ञान/कथनक नियम-भिन्नता; कार्यक्षमता-मानक ज्ञानकेँ उत्पादन/दक्षताक कसौटी पर कसैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। उत्तर-आधुनिक आलोचनाक वैध प्रश्न ग्रहण करैत सत्य-अराजकता अस्वीकार करब एहि अध्यायक संतुलित योगदान अछि।

अध्याय 44 — बौद्रियार: प्रतिरूप, माध्यम आ अधि-यथार्थता (hyperreality)

पाठगत नाभि। बौद्रियारक दर्शन माध्यम/उपभोग समाजमे संकेत, प्रतिरूप, अनुकरण आ अतियथार्थताक शक्ति देखबैत अछि। प्रतिरूप केवल मूलक प्रति नहि; कखनो सामाजिक अपेक्षा, स्मृति, इच्छा आ व्यवहारक मॉडल बनि सकैत अछि। संकेत-मूल्य वस्तुक उपयोग/कीमतसँ अलग सामाजिक अर्थ जोड़ैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। माध्यम, प्रतिरूप आ महाख्यानक आलोचना बाह्य यथार्थक प्रतिरोधसँ नियंत्रित रहैत अछि।

अध्याय 45 — सत्यक अन्त भेल की?

पाठगत नाभि। सत्यक अन्त नहि भेल; सत्य-दाबी केर निष्कपट/असमालोचनात्मक वैधता चुनौतीग्रस्त भेल। भाषा, सत्ता, संस्था, माध्यम आ दृष्टिकोण ज्ञानक पहुँच मध्यस्थित करैत अछि; बाह्य यथार्थ, प्रमाण आ स्वतंत्र प्रतिरोध दाबीकेँ मनमाना होयब सँ रोकैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। बहुलता आ कसौटीकेँ विरोधी नहि मानब पोथीक समानान्तर उत्तरक मूल बल अछि।

अध्याय 46 — विज्ञान, इतिहास आ उत्तर-आधुनिक आलोचना

पाठगत नाभि। विज्ञान सामाजिक संस्था सेहो अछि, यथार्थ-जाँचक शक्तिशाली पद्धति सेहो। एहि दुई स्तरकेँ एक-दोसराक विरुद्ध रखब गलत। कुहन विज्ञानक ऐतिहासिक प्रतिमान/क्रान्ति देखबैत अछि; हुनकर विचार वैज्ञानिक प्रगति वा अन्तर्विज्ञानिक कारणकेँ समाप्त नहि करैत।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। उत्तर-आधुनिक आलोचनाक वैध प्रश्न ग्रहण करैत सत्य-अराजकता अस्वीकार करब एहि अध्यायक संतुलित योगदान अछि।

अध्याय 47 — समानान्तर दर्शनक उत्तर

पाठगत नाभि। समानान्तर दर्शन उत्तर-आधुनिकताकेँ न पूर्णतः स्वीकारैत, न पुरान निश्चिततताक नामपर अस्वीकारैत। ओ आलोचनाक वैध प्रश्नसभ ग्रहण करैत, अति-निष्कर्षकेँ प्रमाण/यथार्थ/गरिमासँ सीमित करैत अछि। बहुलता आवश्यक, मुदा मनमानापन नहि; सत्ता-समीक्षा आवश्यक, मुदा सत्य-विघटन नहि; इतिहासक चयनशीलता स्वीकार्य, मुदा कल्पित इतिहास नहि; पहिचान महत्त्वपूर्ण, मुदा नैतिक गरिमा श्रेणी-सापेक्ष नहि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। माध्यम, प्रतिरूप आ महाख्यानक आलोचना बाह्य यथार्थक प्रतिरोधसँ नियंत्रित रहैत अछि।

अध्याय 48 — हर्मेन्यूटिक्स: बुझब स्वयं समस्या किएक?

पाठगत नाभि। हर्मेन्यूटिक्स पूछैत अछि—बुझब स्वयं कोना सम्भव? उत्तर केवल नियम-सूची नहि; भाषा, इतिहास, परम्परा, पूर्वबोध, प्रश्न, संवाद आ पुनर्परीक्षणक प्रक्रिया अछि। व्याख्यात्मक वृत्त भाग–समग्रक दुष्चक्र नहि, संशोधनक सम्भावना: प्रारम्भिक बोध पाठक परीक्षणमे बदलैत रहैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। पूर्वपक्ष–उत्तरपक्षकेँ विरोधी मतक निष्पक्ष पुनर्निर्माणक नैतिकता रूपमे पढ़ब शोध-लेखन लेल प्रत्यक्ष उपयोगी अछि।

अध्याय 49 — गाडामर: परम्परा आ पूर्वबोध

पाठगत नाभि। गाडामरक दार्शनिक हर्मेन्यूटिक्स समझकेँ इतिहास, परम्परा आ पूर्वबोधसँ बाहर शून्य क्रिया नहि मानैत। हम जे भाषा, प्रश्न आ मान्यतासँ पढ़ैत छी, ओ स्वयं ऐतिहासिक प्रभावक भाग अछि। पूर्वनिर्णय समझक आरम्भिक शर्त अछि; हर पूर्वग्रह सही नहि। परम्परा ज्ञानक वाहक अछि; हर परम्परा वैध नहि। प्राधिकार ज्ञान/अनुभवक मान्यता हो सकैत अछि; पद वा बल स्वतः सत्य नहि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। व्याख्याकेँ न लेखकक निजी अभिप्रायमे, न पाठकक असीम स्वच्छन्दतामे सीमित करब एहि खण्डक परिपक्वता अछि।

अध्याय 50 — रिकोयर: पाठ, प्रतीक आ व्याख्या

पाठगत नाभि। रिकोयर हर्मेन्यूटिक्सकेँ समझ आ आलोचना बीच मध्यस्थता बनबैत अछि। पाठ लिखित भेला बाद लेखकसँ दूरी बनबैत, मुदा इतिहास-विहीन नहि होइत। प्रतीक, रूपक आ कथा अर्थक नूतन संसार खोलि सकैत; बहुअर्थता मनमाना अर्थ नहि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। पूर्वबोध स्वीकार करैत पूर्वग्रहक आलोचना सम्भव राखनाइ गाडामर-पश्चात् संतुलित पठनक रूप बनैत अछि।

अध्याय 51 — लेखकक अभिप्राय बनाम पाठकक अर्थ

पाठगत नाभि। लेखकक अभिप्राय आ पाठकक अर्थक विवाद शून्य-योग युद्ध नहि। अर्थ बहुस्तरीय अछि; विभिन्न प्रश्न लेल विभिन्न प्रमाण उचित। ऐतिहासिक लेखक-अभिप्राय पुनर्निर्मित कएल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्यक्ष मानस-पहुँच मानि नहि। पाठीय संरचना लेखकक निजी घोषणा सँ स्वतंत्र परीक्षण माँगैत अछि। पाठकक सक्रियता अर्थ खोलैत अछि, मुदा निजी इच्छा पाठीय प्रमाणक स्थान नहि लैत।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। पूर्वपक्ष–उत्तरपक्षकेँ विरोधी मतक निष्पक्ष पुनर्निर्माणक नैतिकता रूपमे पढ़ब शोध-लेखन लेल प्रत्यक्ष उपयोगी अछि।

अध्याय 52 — भारतीय भाष्य-परम्परा

पाठगत नाभि। भारतीय भाष्य-परम्परा ‘मूल ग्रन्थ + सहायक टिप्पणी’क सरल ढाँचा नहि; ई बहु-पीढ़ीय तर्क, शिक्षण, संरक्षण, विवाद आ नवोन्मेषक जटिल बौद्धिक संस्था अछि। भाष्य मूल पाठक अधीन होइतहुँ स्वतंत्र दार्शनिक शक्ति पाबि सकैत अछि। बादक भाष्य मूलक ग्रहण बदलैत अछि; तेँ मूल, भाष्य आ ग्रहण-इतिहास अलग रखब आवश्यक।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। व्याख्याकेँ न लेखकक निजी अभिप्रायमे, न पाठकक असीम स्वच्छन्दतामे सीमित करब एहि खण्डक परिपक्वता अछि।

अध्याय 53 — मिथिलाक शास्त्रार्थ एकटा व्याख्यात्मक अभ्यास (hermeneutic practice) केर रूपमे?

पाठगत नाभि। मिथिलाक शास्त्रार्थकेँ आधुनिक हर्मेन्यूटिक्सक प्राचीन संस्करण कहब ऐतिहासिक रूपेँ अनुचित, मुदा ओकर भीतर अर्थ-बुझाइ,

प्रतिपक्ष-पुनर्निर्माण, परिभाषा, प्रमाण आ उत्तरक जटिल व्याख्यात्मक अनुशासन अछि। शास्त्रार्थक श्रेष्ठ आदर्श विजय नहि, स्पष्टता आ सत्य-परीक्षण अछि। वाद, जल्प आ वितण्डाक भेद स्मरण करब एहि कारण आवश्यक—सभ विवाद सत्याभिमुख नहि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। पूर्वबोध स्वीकार करैत पूर्वग्रहक आलोचना सम्भव राखनाइ गाडामर-पश्चात् संतुलित पठनक रूप बनैत अछि।

अध्याय 54 — फ्रैंकफर्ट स्कूल

पाठगत नाभि। फ्रैंकफर्ट स्कूलक दार्शनिक महत्त्व ओकर नामक सूचीमे नहि, वरन् आलोचनाक स्वरूप बदलयबाक प्रयासमे अछि। समाजकेँ केवल आर्थिक संरचना, केवल विचार, केवल मन अथवा केवल संस्था सँ नहि बुझल जा सकैत; एहि स्तरसभक परस्पर सम्बन्ध, इतिहास आ विरोधाभास जाँचब आवश्यक अछि। (Critical Theory) पारम्परिक समाजविज्ञानक अनुभवजन्य अनुसन्धान अस्वीकार नहि करैत; ओ पूछैत अछि जे तथ्य कोन सामाजिक व्यवस्था भीतर बनल, सिद्धान्त कोन भूमिका निभबैत अछि, आ विद्यमान व्यवस्था परिवर्तनशील अछि कि नहि। एहि कारण तथ्य, इतिहास, मानदण्ड आ व्यवहार —चारूकेँ जोड़ल जाए।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। शास्त्रार्थ आ संवादात्मक विवेकक तुलना ऐतिहासिक पहिचान नहि, कारण-देयताक संरचनात्मक संवाद रूपमे सफल अछि।

अध्याय 55 — होर्खाइमर आ अडोर्नो: आधुनिक विवेकक आत्मालोचना

पाठगत नाभि। होर्खाइमर आ अडोर्नोक आधुनिक विवेकक आत्मालोचना एहि बातक चेतावनी अछि जे ज्ञान, तकनीक, प्रशासन आ बाजार स्वत: मुक्ति नहि देत। ई सभ मानवीय क्षमता बढ़ा सकैत अछि, मुदा जखन लक्ष्यक नैतिक परीक्षण, गुणात्मक भिन्नता आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व गायब हो, तखन ओही क्षमता प्रभुत्वक साधन बनि सकैत अछि। (Dialectic of Enlightenment) क ‘मिथक-प्रबोधन’ सूत्रकेँ विज्ञान आ मिथकक समानता रूपमे पढ़ब भूल होएत। अधिक उपयुक्त पाठ ई अछि: जे आलोचनात्मक विवेक अपन ऊपर आलोचना

नहि करैत, ओ रूढ़ि बनि सकैत अछि। प्रबोधनक रक्षा प्रबोधन-विरोधसँ नहि, आत्म-प्रबोधनसँ होइत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। विवेकक आत्मालोचना आ विवेकक पुनर्निर्माण—दुनू चरण राखल गेल अछि; ई फ्रैंकफर्ट परम्पराक एकपक्षीय पठनसँ बचबैत अछि।

अध्याय 56 — मार्क्यूजे: उपभोक्ता समाज आ एक-आयामी मनुष्य

पाठगत नाभि। मार्क्यूजेक दर्शन उन्नत औद्योगिक समाजक एक (paradox) पर केन्द्रित अछि: समाज अधिक सुविधा, उत्पादकता आ विकल्प दैतहुँ आलोचनात्मक स्वतन्त्रता घटा सकैत अछि, यदि आवश्यकता, भाषा, तकनीक आ अवकाश सभ एकहि सामाजिक तर्कमे समाहित भऽ जाए। (One-Dimensional Man) क सर्वोत्तम पाठ (consumer) वस्तुक नैतिक निन्दा नहि। ओकर मूल प्रश्न 'वैकल्पिकता' अछि—व्यक्ति वर्तमान व्यवस्था सँ बाहर जीवन, श्रम, राजनीति, तकनीक आ सुखक भिन्न रूप सोचि आ चुनि सकैत अछि कि नहि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। सार्वजनिक क्षेत्रक आदर्शकेँ सामाजिक बहिष्कार, माध्यम-सत्ता आ संस्थागत असमानतासँ जाँचब आवश्यक—पोथी एहि सीमा केँ दर्ज करैत अछि।

अध्याय 57 — हाबर्मास: संवादात्मक विवेक

पाठगत नाभि। हाबर्मासक 'संवादात्मक विवेक' फ्रैंकफर्ट परम्पराक निराशावादी विवेक-आलोचना केँ एक पुनर्निर्माणात्मक उत्तर दैत अछि। आधुनिक विवेक केवल साधनात्मक नियन्त्रण नहि; मनुष्य कारण देबाक, दावाकेँ चुनौती देबाक, दृष्टिकोण बदलबाक आ (shared understanding) बनाबयक क्षमता सेहो रखैत अछि। (Communicative action) क आदर्श सरल सहमति नहि। ओकर केन्द्र स्वतंत्र '(yes/no') प्रतिक्रिया, (reason-giving), (objection), (revision) आ (non-coercive coordination) अछि। एहि कारण (disagreement communicative failure) नहि; दबाओल (agreement) अधिक गम्भीर (failure) भऽ सकैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। शास्त्रार्थ आ संवादात्मक विवेकक तुलना ऐतिहासिक पहिचान नहि, कारण-देयताक संरचनात्मक संवाद रूपमे सफल अछि।

अध्याय 58 — सार्वजनिक क्षेत्र आ लोकतन्त्र

पाठगत नाभि। (Public sphere) हाबर्मासक लोकतान्त्रिक दर्शनमे नागरिक आ राज्य बीचक संचारात्मक सेतु अछि। ई राज्यक बाहर रहितहुँ (state-relevant) अछि; निजी अनुभव कैं सामान्य सरोकारमे बदलैत अछि, (public opinion) बनबैत अछि, आ सत्ता सँ कारण माँगैत अछि। आरम्भिक (bourgeois public sphere) ऐतिहासिक उपलब्धि आ (ideology) दुनू छल। (rational-critical debate), (open access) आ (status-independent argument) केर आदर्श महत्वपूर्ण रहल; वास्तविक (exclusion) ओकर सीमा उजागर करैत रहल। (theory)क परिपक्व रूप एहि (contradiction) कैं स्वीकारैत (plural publics) दिशामे बढ़ैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। विवेकक आत्मालोचना आ विवेकक पुनर्निर्माण—दुनू चरण राखल गेल अछि; ई फ्रैंकफर्ट परम्पराक एकपक्षीय पठनसँ बचबैत अछि।

अध्याय 59 — शास्त्रार्थ, वाद आ संवादात्मक विवेक

पाठगत नाभि। शास्त्रार्थ, न्यायिक वाद आ (Habermasian) संवादात्मक विवेक एकहि सिद्धान्तक तीन नाम नहि। पहिल व्यापक ऐतिहासिक (practice-family), दोसर विशिष्ट दार्शनिक (debate-category), तेसर आधुनिक (social theory)क (normative reconstruction) अछि। आपि (disciplined comparison) उपयोगी अछि, कारण तीनू क्षेत्र (reason-giving)क प्रश्न उठबैत अछि—दावा की? आधार की? प्रतिपक्ष की कहैत अछि? उत्तर (relevant) अछि कि नहि? (strategy reasoning) कैं (replace) तऽ नहि करि रहल?

समीक्षात्मक मूल्यांकन। सार्वजनिक क्षेत्रक आदर्शकैं सामाजिक बहिष्कार, माध्यम-सत्ता आ संस्थागत असमानतासँ जाँचब आवश्यक—पोथी एहि सीमा कैं दर्ज करैत अछि।

अध्याय 60 — स्त्रीवादी दर्शनक अनेक स्वर

पाठगत नाभि। स्त्रीवादी दर्शन एक सिद्धान्त नहि, बहुध्वनिक दार्शनिक क्षेत्र अछि। ओकर साझा प्रेरणा (gendered oppression), (exclusion) आ (unequal power)क आलोचना हो सकैत अछि, मुदा (equality), (difference), (body), (sexuality), (care), (knowledge), (identity) आ (emancipation) पर उत्तर विविध अछि। उदारवादी (feminism) अधिकार आ (equal citizenship)क शक्तिशाली भाषा देलक; (radical feminism sexuality/family/power)क गहिर संरचना देखलक; (socialist feminism labour), (reproduction) आ (economy) जोड़लक; (care ethics dependency) आ (relation)क नैतिक महत्व समक्ष आनलक।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। अनुभवक सम्मान आ अनुभवक स्वतः सार्वभौमिक सत्य न मानबाक भेद ज्ञानमीमांसक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि।

अध्याय 61 — सिमोन द बोउवार: स्त्री बनाओल जाइत अछि

पाठगत नाभि। सिमोन द बोउवारक दर्शनक स्थायी शक्ति एहि बातमे अछि जे ओ ‘स्त्री’ केँ (fixed essence) नहि, (situated becoming) रूपमे पढ़ैत अछि। एहि सँ (biology), (society) आ (agency)क बीच सरल (either/or) टूटैत अछि। (The Second Sex) क (Other thesis) देखबैत अछि जे (domination)केँ बुझबा लेल (explicit hostility) मात्र नहि, (universal norm)क निर्माण सेहो जाँचबाक पड़त। जे स्वयं (neutral Subject) बनैत अछि, ओ दोसराकेँ (deviation) बना सकैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। ‘स्त्री’ वा ‘लिंग’ केँ एकरूप सार मानब अस्वीकार करैत देह, संस्था, जाति, वर्ग, धर्म आ क्षेत्रक अन्तर्सम्बन्ध खोलल गेल अछि।

अध्याय 62 — देह, अनुभव आ सत्ता

पाठगत नाभि। देह, अनुभव आ सत्ता सम्बन्धी (feminist) दर्शनक मुख्य योगदान ई अछि जे ओ शरीरकेँ मनक अधीन वस्तु नहि, (world-engaged subject) मानैत अछि। (perception), (movement), (habit) आ (affect) दार्शनिक विषय बनैत छथि। अनुभव शुद्ध (private) तथ्य नहि, मुदा निरर्थक

सेहो नहि। (social mediation) अनुभवक गठन करैत अछि; एहि (mediation)केँ (trace) करब (feminist phenomenology)क (methodological) शक्ति अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। मिथिलाक स्थानीय स्रोतकेँ आधुनिक सिद्धान्तक उदाहरण मात्र नहि, सिद्धान्त-परीक्षक सामग्री बनाओल गेल अछि।

अध्याय 63 — जूडिथ बटलर: लिंग (gender), प्रदर्शनात्मकता (performativity) आ पहचान

पाठगत नाभि। जूडिथ बटलरक स्थायी योगदान ई जे (gender) केँ स्थिर (property) सँ प्रक्रिया दिस मोड़ि देलनि। (Gender) “अछि” मात्र नहि; सामाजिक पुनरावृत्ति, सम्बोधन, (norm) आ (institution)क माध्यमसँ “बनैत” रहैत अछि। (Performativity)क अर्थ (theatrical choice) नहि। ई (regulated repetition) अछि जे (subject) आ (gender) दुनूकेँ स्थिरता प्रदान करैत अछि, मुदा ठीक एहि (repetition)क अपूर्णता परिवर्तनक अवसर सेहो खोलैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। अनुभवक सम्मान आ अनुभवक स्वतः सार्वभौमिक सत्य न मानबाक भेद ज्ञानमीमांसक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि।

अध्याय 64 — अन्तर्संबद्ध असमानता (intersectionality): जाति, वर्ग, लिंग, धर्म आ क्षेत्र

पाठगत नाभि। (Intersectionality)क ऐतिहासिक महत्व ई अछि जे ओ (single-axis) न्याय-दृष्टिक (blind spot) स्पष्ट करैत अछि। कोनो व्यक्ति जखन अनेक सत्ता-संरचनाक (crossing point) पर अछि, तखन ओकर अनुभव केवल एक (category)क (representative case) नहि रहैत। किम्बर्ले क्रेंशॉक योगदान (additive discrimination)क भाषा केँ (structural), (political) आ (representational intersectionality) दिस मोड़ैत अछि। प्रश्न केवल “कतेक (identity)?” नहि, “कौन संस्था संयुक्त रूपेँ (exclusion) बनबैत अछि?” अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। ‘स्त्री’ वा ‘लिंग’ केँ एकरूप सार मानब अस्वीकार करैत देह, संस्था, जाति, वर्ग, धर्म आ क्षेत्रक अन्तर्सम्बन्ध खोलल गेल अछि।

अध्याय 65 — भारतीय स्त्रीवादी दर्शनक प्रश्न

पाठगत नाभि। भारतीय स्त्रीवादी दर्शनक मुख्य उपलब्धि ई अछि जे ओ (gender) प्रश्नकेँ परिवारक निजी मामला सँ निकालि जाति, वर्ग, धर्म, राष्ट्र, कानून, श्रम, ज्ञान, शरीर, भाषा आ पर्यावरणक व्यापक संरचनासँ जोड़ैत अछि। एकर इतिहास (colonial modernity) आ (indigenous reform)क सरल द्वन्द्व नहि। भारतीय महिलासभ स्वयं लेखन, शिक्षा, (anti-caste) संघर्ष, राष्ट्रवादी आन्दोलन, (labour politics), कानून आ साहित्यक माध्यमसँ (theory) बनौलनि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। मिथिलाक स्थानीय स्रोतकेँ आधुनिक सिद्धान्तक उदाहरण मात्र नहि, सिद्धान्त-परीक्षक सामग्री बनाओल गेल अछि।

अध्याय 66 — मिथिलाक समानान्तर स्त्री-दृष्टि

पाठगत नाभि। मिथिलाक समानान्तर स्त्री-दृष्टि कोनो पुरातन गौरवक घोषणा नहि, वरन् (method) अछि—स्थानिक स्रोत सुनू, संस्थाक सत्ता जाँचू, अनुभव कैं (essentialize) नहि करू, आ न्यायिक कसौटी स्पष्ट राखू। एहि दृष्टिमे पाँजी, विवाह, परिवार, गीत, कला, श्रम, प्रवासन, बाढ़, सीमा, भाषा आ (digital technology) अलग-अलग विषय नहि; ओ सभ (social reproduction) आ (agency)क परस्पर सम्बन्धित स्थल छथि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। अनुभवक सम्मान आ अनुभवक स्वतः सार्वभौमिक सत्य न मानबाक भेद ज्ञानमीमांसक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि।

अध्याय 67 — औपनिवेशिक ज्ञान की करैत अछि?

पाठगत नाभि। औपनिवेशिक ज्ञानक मूल कार्य केवल उपनिवेशित समाजक “चित्र” बनाब नहि छल; ई समाजकेँ राज्य-पठनीय, तुलनीय, करयोग्य, (map)योग्य, कानूनयोग्य आ (classificatory object) बनाबयमे भाग लेलक। एहि प्रक्रियामे वास्तविक ज्ञान, गलत धारणा, (administrative convenience), (scholarly curiosity) आ राजनीतिक शक्ति एक-दोसरासँ गुंथल रहल। एहि कारण द्वैध निर्णय—“सभ औपनिवेशिक ज्ञान झूठ” अथवा “(science)

राजनीति सँ स्वतंत्र”—दुनू असफल। सही पद्धति सत्य-दावा आ संस्थागत प्रभावकेँ अलग-अलग जाँचि फेर जोड़ब अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। औपनिवेशिक वर्गीकरणकेँ न पूर्ण आविष्कार, न निष्पक्ष खोज मानब एहि अध्यायक ऐतिहासिक संतुलन अछि।

अध्याय 68 — एडवर्ड सईद: प्राच्यवाद (Orientalism)

पाठगत नाभि। (Orientalism)क स्थायी महत्त्व एहि प्रश्नमे अछि जे ज्ञान केना (authority) पबैत अछि। कोनो (society) सम्बन्धी कथन केवल (sentence) नहि; (archive), (institution), (audience), (geopolitical relation) आ (repeated representation)क इतिहास ओकर प्रभाव निर्धारित करैत अछि। सईदक आलोचना बाहरी अध्ययन निषिद्ध नहि करैत; ओ अध्ययनक (asymmetry visible) करैत अछि। (cross-cultural knowledge) सम्भव अछि, मुदा ओकर (methodological burden) अधिक—(language), (source), (positionality), (correction), (local plurality) आ (empirical testing)।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। हाशियाक आवाज खोजब आवश्यक अछि, मुदा ओकरा स्वत: सत्य घोषित नहि करब—ई पद्धति उलटा विशेषाधिकारसँ बचबैत अछि।

अध्याय 69 — गायत्री स्पिवाक: अधीनस्थ बोलि सकैत अछि?

पाठगत नाभि। (Spivak)क स्थायी योगदान ई नहि जे ओ (oppressed) लोकक (agency) अस्वीकार करैत छथि, वरन् ई जे (agency)क (social intelligibility) केँ (philosophical problem) बनबैत छथि। वाणी, (representation), (archive), (gender) आ (institution)क बीच संबंध बिना “(voice)”क नारा अधूरा अछि। अधीनस्थता (identity) नहि, (structural relation) अछि। संगठन, शिक्षा, कानूनी अधिकार, आर्थिक संसाधन, (public language) आ (institutional representation) बढ़ला पर (group)क स्थिति बदलि सकैत अछि; तैं (politics)क लक्ष्य (subalternity) संरक्षित करब नहि, कम करब हो।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। मिथिलाक क्षेत्रीयता कैं दीर्घ ऐतिहासिक सम्बन्ध, भाषा, स्मृति, संस्था आ राजनीति सभक संयुक्त परिणाम रूपमे पढ़ल गेल अछि।

अध्याय 70 — होमी भाभा: संकरता आ औपनिवेशिक अन्तराल

पाठगत नाभि। भाभाक मुख्य योगदान औपनिवेशिक सत्ता कैं (monolithic machine) नहि, (contradictory authority) रूपमे पढ़ब अछि। (universal norm)क दावा आ (racial/cultural hierarchy)क (practice) बीच तनाव (ambivalence) उत्पन्न करैत अछि। (stereotype fixed truth)क मुखौटा लगबैत अछि, मुदा ओकर (compulsive repetition instability) प्रकट करैत अछि। एहि कारण (representation) केवल (colonized)क (image) नहि, (colonizer)क (anxiety)क (archive) सेहो हो सकैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। औपनिवेशिक वर्गीकरणकैं न पूर्ण आविष्कार, न निष्पक्ष खोज मानब एहि अध्यायक ऐतिहासिक संतुलन अछि।

अध्याय 71 — अधीनस्थ अध्ययन (Subaltern Studies) आ इतिहासक हाशिया

पाठगत नाभि। (Subaltern Studies) इतिहास-लेखनमे एक मूल प्रश्न स्थापित कएलक: जनसाधारणक राजनीति कैं (elite initiative)क (derivative) मानब स्वयं (historiographical bias) हो सकैत अछि। रणजीत गुहाक “(autonomous domain)”क सर्वोत्तम अर्थ पूर्ण अलगाव नहि, (anti-reductionism) अछि—(popular politics)क अपन (idiom), (network), (grievance) आ (initiative) जाँचू।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। हाशियाक आवाज खोजब आवश्यक अछि, मुदा ओकरा स्वत: सत्य घोषित नहि करब—ई पद्धति उलटा विशेषाधिकारसँ बचबैत अछि।

अध्याय 72 — उत्तर-औपनिवेशिकतासँ औपनिवेशिकता-मुक्त (decolonial) विचार धरि

पाठगत नाभि। उत्तर-औपनिवेशिक विचारसँ (decoloniality) धरि संक्रमण (discourse)क प्रश्न छोड़ि (material power)क प्रश्नपर लौटब मात्र नहि; (representation), (world-system), (race), (labour), (being), (gender), (nature) आ (knowledge) कँ एक जटिल (matrix)मे जोड़बाक प्रयास अछि। (Quijano)क (coloniality of power) औपचारिक (colonialism) समाप्ति आ (domination pattern)क (persistence) बीच महत्त्वपूर्ण भेद स्थापित करैत अछि। मुदा ओकर (Latin American genealogy) स्पष्ट राखब अनिवार्य।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। मिथिलाक क्षेत्रीयता कँ दीर्घ ऐतिहासिक सम्बन्ध, भाषा, स्मृति, संस्था आ राजनीति सभक संयुक्त परिणाम रूपमे पढ़ल गेल अछि।

अध्याय 73 — भारतीय दर्शनक औपनिवेशिक वर्गीकरण

पाठगत नाभि। भारतीय दर्शनक औपनिवेशिक वर्गीकरणक इतिहास न (total invention)क कथा अछि, न (neutral discovery)क। (precolonial taxonomies), (colonial institutions) आ (modern Indian reappropriation)क त्रिस्तरीय (interaction) आधुनिक (canon) बनौलक। “(six systems),” “(Hinduism),” “(Indian philosophy),” “(orthodox/heterodox),” “(mysticism)” आदि (labels) उपयोगी हो सकैत छथि, मुदा हुनकर (historical scope), (translation loss) आ (institutional genealogy) स्पष्ट राखब आवश्यक।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। औपनिवेशिक वर्गीकरणकँ न पूर्ण आविष्कार, न निष्पक्ष खोज मानब एहि अध्यायक ऐतिहासिक संतुलन अछि।

अध्याय 74 — मिथिला: साम्राज्य, राष्ट्र आ क्षेत्रक बीच

पाठगत नाभि। (Mithila) कँ साम्राज्य, राष्ट्र आ क्षेत्रक बीच पढ़ला पर स्पष्ट होइत अछि जे (region neither eternal essence nor arbitrary fiction)। ई दीर्घ (historical relations), (memory), (language), (institution), (ecology) आ (political claim)क परिवर्तनीय संरचना अछि। पूर्व-औपनिवेशिक नाम/स्मृति (modern exact boundary)क स्वतः प्रमाण नहि; (colonial

administration regional reality) शून्य सँ बनौलक सेहो नहि। (continuity) आ (transformation) दुनू एक संग पढ़ब आवश्यक।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। हाशियाक आवाज खोजब आवश्यक अछि, मुदा ओकरा स्वतः सत्य घोषित नहि करब—ई पद्धति उलटा विशेषाधिकारसँ बचबैत अछि।

अध्याय 75 — मन-दर्शन (Philosophy of Mind) केर नूतन प्रश्न

पाठगत नाभि। (Philosophy of Mind) केर नूतन प्रश्नक सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन ई अछि जे “मन कतय अछि?” सँ अधिक “कोन (phenomenon) कोन स्तर पर कोन प्रमाणसँ (explain) होइत अछि?” प्रश्न केन्द्रीय भऽ रहल अछि। (brain evidence) अपरिहार्य, मुदा एकसर पर्याप्त नहि। (neural correlation), (causal intervention), (behaviour), (phenomenology), (body), (environment) आ (social context)क (explanatory) भूमिका अलग राखल जाए।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। ‘अज्ञात’ वा अनिर्णीत स्थिति स्वीकार करब चेतना-विमर्शमे बौद्धिक संयमक संकेत अछि।

अध्याय 76 — मन–देह समस्या

पाठगत नाभि। मन–देह समस्या एकटा (single metaphysical riddle) नहि; (ontology), (causation), (dependence), (explanation), (experience) आ (agency)क जुड़ल प्रश्न-समूह अछि। एहि विभाजन बिना (debate slogan)मे बदलि जाइत अछि। (Cartesian substance dualism subjectivity) आ (thought)क भिन्नता तीक्ष्ण बनबैत अछि, मुदा (interaction)क (account)क भार उठबैत अछि। (Princess Elisabeth)क (causal objection) आजुओ (relevant), यद्यपि (modern causation contact mechanics)सँ व्यापक अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। मन-दर्शनक बहसकेँ एक तत्त्वमीमांसक प्रश्नमे घटेबाक बदला प्रमाण, अनुभूति, कारणता, स्मृति आ कर्तृत्वक अलग स्तर खोलल गेल अछि।

अध्याय 77 — व्यवहारवाद, तादात्म्य सिद्धान्त (identity theory) आ कार्यात्मकतावाद (functionalism)

पाठगत नाभि। व्यवहारवाद, (identity theory) आ (functionalism) आधुनिक (philosophy of mind)क तीन निर्णायक मोड़ छथि। तीनू (Cartesian private substance)क विरुद्ध प्रतिक्रिया साझा करैत, मुदा (mental state)क (criterion), (realization) आ (causal role)क अलग प्रश्नक उत्तर दैत अछि। (Behaviorism mental vocabulary)क (public), (dispositional) आ (action-linked) पक्ष स्पष्ट कएलक। ओकर स्थायी योगदान (observability)क पूजा नहि, वरन् (mental attribution)क (public criteria) आ (context-sensitive behavior)क महत्त्व अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। न्याय आ बौद्ध परम्पराक ऐतिहासिक भिन्नता बचबैत आधुनिक विज्ञानक संग त्रिकोणीय संवाद एहि खण्डक विशिष्ट उपलब्धि अछि।

अध्याय 78 — चेतनाक कठिन समस्या

पाठगत नाभि। चेतनाक कठिन समस्या आधुनिक (philosophy of mind)क केन्द्रीय सीमा-परीक्षा अछि। ई पूछैत अछि—(functional/physical processing)क संग (subjective experience) किएक अछि, आ वैज्ञानिक (description) सँ (phenomenality)क (intelligible bridge) कोना बनत। (Chalmers)क (easy/hard distinction scientific difficulty)क (ranking) नहि, (explanatory target)क भेद। (Access), (report), (discrimination), (memory) आ (control)क (mechanism explain) करब अत्यन्त कठिन विज्ञान हो सकैत, मुदा (phenomenality)क (why-question) अलग रहि सकैत।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। ‘अज्ञात’ वा अनिर्णीत स्थिति स्वीकार करब चेतना-विमर्शमे बौद्धिक संयमक संकेत अछि।

अध्याय 79 — उद्देश्यता (intentionality) आ आत्मबोध (self)

पाठगत नाभि। (Intentionality philosophy of mind) आ (philosophy of language)क संगम-बिन्दु अछि। ई पूछैत अछि—(mental state) किछु विषयमे कोना होइत अछि, (content) सत्य/गलत कोना होइत अछि, (absent/nonexistent object)क (direction) कोना सम्भव, आ (physical system representational normativity) कोना प्राप्त करैत अछि। (Brentano intentionality)क आधुनिक पुनरुत्थानक प्रमुख स्रोत; (Husserl lived directedness) आ (mode of presentation) गहिर करैत; (analytic traditions semantics), (causation), (information), (teleology) आ (functional role)सँ (naturalization) खोजैत। कोनो एक (framework) सभ प्रकारक (content) पूर्ण (explain) कएलक—एहन निष्कर्ष समयपूर्व।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। मन-दर्शनक बहसकेँ एक तत्त्वमीमांसक प्रश्नमे घटेबाक बदला प्रमाण, अनुभूति, कारणता, स्मृति आ कर्तृत्वक अलग स्तर खोलल गेल अछि।

अध्याय 80 — भारतीय आत्मा–अनात्मा–चित्त विवाद

पाठगत नाभि। भारतीय आत्मा–अनात्मा–चित्त विवाद एक (binary) सूची नहि, वरन् (self), (consciousness), (person), (agency), (memory), (reflexivity), (embodiment) आ (liberation)क बहुस्तरीय (philosophical field) अछि। (Nyāya enduring self-substance) केँ (cognition/agency)क (locus) मानैत, मुदा (consciousness) केँ (essential nature) नहि; (Advaita self) केँ (pure self-luminous consciousness) मानैत; (Sā)ṃ(khya-Yoga puru)ṣ(a) केँ (citta/prak)ṛ(ti) सँ पृथक; (Mīmā)ṃ(sā enduring knower-agent)क अलग (models) विकसित करैत।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। न्याय आ बौद्ध परम्पराक ऐतिहासिक भिन्नता बचबैत आधुनिक विज्ञानक संग त्रिकोणीय संवाद एहि खण्डक विशिष्ट उपलब्धि अछि।

अध्याय 81 — न्याय, बौद्ध आ आधुनिक मन-दर्शन (philosophy of mind) केर त्रिकोणीय संवाद

पाठगत नाभि। न्याय, बौद्ध आ आधुनिक मन-दर्शनक त्रिकोणीय संवादक मुख्य उपलब्धि कोनो विजेता चुनब नहि, वरन् प्रश्नकेँ अधिक सूक्ष्म बनब अछि। न्याय विषयी, सम्बन्ध, ज्ञान, त्रुटि आ प्रमाणक सूक्ष्मता दैत अछि। बौद्ध दर्शन प्रक्रिया, अनित्यता, अनात्मा, निर्भर सातत्य आ स्वसंवेदनक चुनौती दैत अछि। आधुनिक दर्शन आ विज्ञान देहधर्मिता, मस्तिष्क-निर्भरता, संगणना, चिकित्सकीय प्रमाण, कृत्रिम बुद्धि आ प्रयोगात्मक सीमा जोड़ैत अछि। तीनूकेँ समान घोषित करब दार्शनिक इतिहासक क्षति होयत; पूर्णतः असम्बद्ध मानब तुलनात्मक अवसरक क्षति। समानान्तर पद्धति बीचक कठोर मार्ग चुनैत अछि —ऐतिहासिक भिन्नता सुरक्षित राखू, साझा समस्या-अक्षपर प्रश्न पूछू, प्रमाणक स्तर अलग करू, अनुवादक सीमा स्वीकारू, प्रतिपक्षकेँ न्यायपूर्ण रूपेँ प्रस्तुत करू, आ निष्कर्षकेँ त्रुटिसंशोध्य राखू।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। ‘अज्ञात’ वा अनिर्णीत स्थिति स्वीकार करब चेतना-विमर्शमे बौद्धिक संयमक संकेत अछि।

अध्याय 82 — वैज्ञानिक यथार्थवादक नूतन विवाद

पाठगत नाभि। वैज्ञानिक यथार्थवादक नूतन विवाद विज्ञानपर विश्वास करब कि नहि—एतबा सरल प्रश्न नहि। वास्तविक प्रश्न अछि: वैज्ञानिक सफलतासँ हम कतेक सत्तामीमांसक निष्कर्ष निकालि सकैत छी; सिद्धान्त-परिवर्तनक इतिहास वर्तमान विश्वासकेँ कतेक सीमित करैत अछि; अदृश्य सत्ताक वास्तविकता लेल कोन प्रमाण पर्याप्त; आ मापन, प्रतिमान, दृष्टिकोण आ संस्था वस्तुगततताकेँ कोना मध्यस्थित करैत अछि। समानान्तर उत्तर त्रुटिसंशोध्य यथार्थवादक पक्षमे अछि। जगत मनुष्यक इच्छा सँ स्वतंत्र प्रतिरोध रखैत अछि; वैज्ञानिक पद्धति ओकरा विषयमे वास्तविक ज्ञान दे सकैत अछि; मुदा प्रत्येक सफल सिद्धान्तक प्रत्येक शब्द अंतिम सत्य नहि। प्रमाणक अनेक स्रोत, सिद्धान्तक इतिहास, कारणात्मक हस्तक्षेप, स्वतंत्र पुनर्परीक्षण आ दृष्टिकोणक सीमा संयुक्त रूपेँ विश्वासक स्तर निर्धारित करैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। समकालीन तकनीकी प्रश्नकेँ नैतिक सूची नहि, प्रमाण, वर्गीकरण, उत्पत्ति-श्रृंखला आ उत्तरदायित्वक दर्शन रूपमे पढ़ल गेल अछि।

अध्याय 83 — प्राकृतिक विज्ञान आ सामाजिक विज्ञान

पाठगत नाभि। प्राकृतिक विज्ञान आ सामाजिक विज्ञानक सम्बन्धक सही उत्तर एकहि विधि अथवा दू पूर्णतः अलग ज्ञान-जगत दुनू नहि। साझा वैज्ञानिक अनुशासन प्रमाण, कारण, स्पष्टता, पुनर्परीक्षण, विरोधी उदाहरण आ त्रुटि-संशोधनमे अछि। भेद विषय-वस्तुक प्रकृतिमे अछि: सामाजिक जगत अर्थयुक्त, नियम-संरचित, ऐतिहासिक आ आत्म-प्रतिबिम्बित अछि। एहि कारण सामाजिक विज्ञानकेँ कारणात्मक व्याख्याकेँ अर्थ-बोध, संस्था आ इतिहाससँ जोड़बाक पड़ैत अछि। समानान्तर दर्शन प्राकृतिकतावादक कठोर प्रमाण-अनुशासन आ व्याख्यात्मक परम्पराक अर्थ-संवेदी पद्धतिक बीच कृत्रिम समझौता नहि, कार्य-विभाजन प्रस्तावित करैत अछि। जे प्रश्न कारणात्मक अछि, ओकर कारण जाँचू; जे प्रश्न अर्थगत अछि, ओकर अर्थ जाँचू; जे प्रश्न संस्थागत अछि, नियम आ संसाधन जाँचू; जे प्रश्न ऐतिहासिक अछि, पथ जाँचू; आ सभ निष्कर्षकेँ विरोधी प्रमाणक समक्ष खुला राखू।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। डिजिटल असत्यक उत्तर सर्वव्यापी संशय नहि, अधिक कठोर स्रोत-जाँच बनब—ई प्रस्ताव व्यावहारिक आ दार्शनिक दुनू अछि।

अध्याय 84 — तकनीक केवल औजार नहि

पाठगत नाभि। तकनीक केवल औजार नहि, किएक तँ औजार उपयोगक क्षणसँ बहुत पहिने आ बहुत बाद धरि प्रभाव करैत अछि। रूपांकन कोन विकल्प उपलब्ध होयत तय करैत अछि; मानक संगतता आ बहिष्करण बनबैत अछि; अवसंरचना आदत आ संस्था बदलैत अछि; रख-रखाव दीर्घजीविता तय करैत अछि; पर्यावरणीय जीवन-चक्र दूरस्थ लागत उत्पन्न करैत अछि। आपि तकनीक स्वयं भाग्य नहि—रूपांकन, नीति, प्रतिरोध, मरम्मत, विकल्प आ लोकतांत्रिक समीक्षा ओकर दिशा बदलि सकैत अछि। समानान्तर दर्शन एहि कारण तकनीक-विरोधी नहि, तकनीक-पूजक सेहो नहि। ओकर प्रश्न अछि: ई तकनीक की सक्षम करैत अछि, की कठिन बनबैत अछि, ककर शक्ति बढ़बैत अछि, ककर जोखिम बढ़बैत अछि, ककर भाषा/शरीर/स्थानकेँ मानक मानैत अछि, आ गलती देखाइ पड़ला पर सुधारक बाट खुलल अछि कि नहि।

तकनीकी विवेकक अर्थ नवीनताक गति कम करब अनिवार्य नहि; अर्थ अछि नवीनताकेँ प्रमाण, गरिमा, न्याय आ आत्मसमीक्षाक अधीन राखब।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। कृत्रिम बुद्धिक प्रवाहपूर्णता आ ज्ञान-वैधताक बीच भेद राखब आजुक ज्ञानमीमांसा लेल केन्द्रीय योगदान अछि।

अध्याय 85 — डिजिटल जगतमे सत्य

पाठगत नाभि। डिजिटल जगत सत्यक अन्त नहि, सत्य-परीक्षणक नूतन परिस्थिति अछि। असत्य बनब आसान, प्रतिलिपि तीव्र, सन्दर्भ हटेब सरल, दृश्य संश्लेषण विश्वसनीय-जकाँ, आ स्रोत-श्रृंखला अस्पष्ट भऽ सकैत अछि। मुदा एहि चुनौतीक उत्तर सर्वव्यापी संशय नहि; अधिक अनुशासित बहुप्रमाणीय विवेक अछि। डिजिटल सत्य लेल चारि स्तम्भ आवश्यक छथि: वास्तविकताक प्रतिरोध स्वीकारब; स्रोत-समीक्षा करब; उत्पत्ति-श्रृंखला आ संस्करण-इतिहास बचाएब; स्वतंत्र प्रतिपक्ष आ सुधारक मार्ग खुला राखब। एहि चारू बिना “तथ्य” आसानीसँ प्रतिष्ठा, लोकप्रियता वा तकनीकी चमकमे बदलि सकैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। समकालीन तकनीकी प्रश्नकेँ नैतिक सूची नहि, प्रमाण, वर्गीकरण, उत्पत्ति-श्रृंखला आ उत्तरदायित्वक दर्शन रूपमे पढ़ल गेल अछि।

अध्याय 86 — एल्गोरिदम, वर्गीकरण आ सत्ता

पाठगत नाभि। एल्गोरिदम गणनाक शक्ति अछि, मुदा सामाजिक जीवनमे ओकर प्रभाव वर्गीकरणक शक्ति सँ बढ़ैत अछि। जे व्यवस्था लोक, घटना, भाषा, जोखिम, योग्यता, सत्यता वा प्रासंगिकताकेँ श्रेणीबद्ध करैत अछि, ओ केवल जगत पढ़ैत नहि; अवसर, दृश्यता, संसाधन आ निगरानीक वितरण सेहो प्रभावित करैत अछि। तें एल्गोरिद्मिक शासनक दार्शनिक जाँच कोडक बाहर संस्थागत शक्ति धरि जाए। समानान्तर दर्शन एल्गोरिदमकेँ न दानव मानैत अछि, न देवता। गणना स्थिरता, पैमाना, पैटर्न-पहिचान आ सहायता दे सकैत अछि; मनुष्य मनमानी, थकान आ असंगतिसँ ग्रस्त हो सकैत अछि। मुदा तकनीकी सहायता न्याय तभी बनत जखन लक्ष्य कारणयुक्त, डेटा प्रासंगिक, श्रेणी सीमित, त्रुटि-वितरण दृश्य, अपील वास्तविक आ उत्तरदायित्व स्पष्ट हो।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। डिजिटल असत्यक उत्तर सर्वव्यापी संशय नहि, अधिक कठोर स्रोत-जाँच बनब—ई प्रस्ताव व्यावहारिक आ दार्शनिक दुनू अछि।

अध्याय 87 — कृत्रिम बुद्धि: बुद्धि की अछि?

पाठगत नाभि। कृत्रिम बुद्धिक प्रश्नक कठिनाई ई अछि जे “बुद्धि” शब्द मनुष्यक आत्म-छवि, तकनीकी क्षमता आ नैतिक आशंका तीनूकेँ एक संग छूइत अछि। स्पष्टता लेल एहि शब्दकेँ अनेक परीक्षणयोग्य आयाममे खोलब आवश्यक: (perception), (representation), (memory), (reasoning), (language), (planning), (generalization), (causal understanding), (self-correction), (grounding), (social coordination) आ (agency)। एहि बहु-कसौटी दृष्टिमे (AI) उपलब्धिकेँ कम कएल नहि जाइत। विशिष्ट प्रणाली अनेक (cognitive) कार्यमे मनुष्य लेल अत्यन्त उपयोगी अथवा मनुष्यसँ नीकतर प्रदर्शन करि सकैत अछि। मुदा एहि सफलतासँ “मानव-जकाँ सम्पूर्ण बुद्धि”, “चेतना”, “व्यक्ति” वा “नैतिक उत्तरदायित्व” स्वत: निष्पन्न नहि होइत। दाबीक स्तर जतेक ऊँच, प्रमाणक स्तर ततेक कठोर।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। कृत्रिम बुद्धिक प्रवाहपूर्णता आ ज्ञान-वैधताक बीच भेद राखब आजुक ज्ञानमीमांसा लेल केन्द्रीय योगदान अछि।

अध्याय 88 — मशीन चेतना: प्रश्न खुलल अछि

पाठगत नाभि। मशीन चेतनाक प्रश्न खुलल अछि, कारण चेतनाक विज्ञान स्वयं अपूर्ण, सिद्धान्त बहुल, आ अन्य-मन अनुमान स्वभावत: अप्रत्यक्ष अछि। ई खुलापन (ignorance)क उत्सव नहि; वरन् (evidence discipline)क माँग अछि। जहाँ निर्णायक प्रमाण नहि, ओतय “अज्ञात” कहब दार्शनिक परिपक्वता अछि। अध्याय 88 चेतना लेल एकहि कसौटी अस्वीकार करैत अछि। (fluent language), (self-report), (complexity), (intelligence), (autonomy), (reward signal), (recurrence), (global access), (self-model)—कोनो एकसर प्रमाण पर्याप्त नहि। अनेक (independent indicators), (causal intervention), (alternative explanation)क निरसन आ (cross-context stability) मिलि (evidence)क स्तर बढ़बैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। समकालीन तकनीकी प्रश्नकेँ नैतिक सूची नहि, प्रमाण, वर्गीकरण, उत्पत्ति-श्रृंखला आ उत्तरदायित्वक दर्शन रूपमे पढ़ल गेल अछि।

अध्याय 89 — कृत्रिम बुद्धि (AI) युगमे प्रमाण आ उत्तरदायित्व

पाठगत नाभि। (AI) युगमे प्रमाणक अर्थ केवल “कहाँ लिंक अछि?” नहि; दाबी कोना उत्पन्न भेल, कोन स्रोत/मॉडल/संस्करण उपयोग भेल, कोन मानवीय निर्णय जुड़ल, कोन (uncertainty) रहल, आ पुनरीक्षण कोना सम्भव—ई पूरा श्रृंखला प्रमाणक आधुनिक रूप बनबैत अछि। उत्तरदायित्व सेहो केवल दोषारोपण नहि। (role-specific duty), (competent oversight), (traceability), (monitoring), (incident response), (correction) आ (appeal) बिना “(human in the loop)” वा “(ethical AI)” शब्द खाली रहि सकैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। डिजिटल असत्यक उत्तर सर्वव्यापी संशय नहि, अधिक कठोर स्रोत-जाँच बनब—ई प्रस्ताव व्यावहारिक आ दार्शनिक दुनू अछि।

अध्याय 90 — बहुप्रमाणीय विवेकवादक दोसर रूप

पाठगत नाभि। बहुप्रमाणीय विवेकवादक दोसर रूप ज्ञानक लोकतन्त्रीकरण आ कठोरता दुनूकेँ एक संग राखबाक प्रयास अछि। अनेक स्रोतकेँ बोलबाक अधिकार अछि, मुदा प्रत्येक दाबीक समान भार नहि। भार दाबी, गुणवत्ता, स्वतंत्रता, प्रासंगिकता, बाधक प्रमाण आ जोखिमसँ तय होय। एहि पद्धतिक सबसे महत्त्वपूर्ण निषेध तीन अछि: संख्या सत्यक पर्याय नहि; अनुभव सार्वभौम कारणक पर्याय नहि; संस्थागत (authority) (infallibility)क पर्याय नहि। एहि तीनूकेँ अस्वीकार करैतहुँ संख्या, अनुभव आ विशेषज्ञता सभकेँ उचित स्थान देल जा सकैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। आत्मसमीक्षाकेँ अलंकार नहि, प्रणालीगत संशोधन-यन्त्र बनाओल गेल अछि।

अध्याय 91 — सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद आ भाषिक मोड़

पाठगत नाभि। भाषिक मोड़क स्थायी उपलब्धि ई अछि जे भाषा कैं निष्पक्ष खिड़की मानबाक भोला विश्वास टूटल। शब्द चयन करैत अछि, वर्ग बनबैत अछि, सम्बन्ध उजागर/छुपबैत अछि, सामाजिक क्रिया करैत अछि आ सत्ता वहन करैत अछि। एहि उपलब्धिकैं छोड़ब यथार्थवादकैं पुनः सरल बना देत। मुदा भाषिक मोड़क अतिवादी रूप जखन वास्तविकताकैं भाषामे विलीन करैत अछि, त संसारक प्रतिरोध, देह, प्रकृति, (causal structure), अभाषिक अनुभव आ गलत वर्णनक सम्भावना समझब कठिन होइत अछि। सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद एहि सीमा पर “बाहर”क दबाव पुनः स्थापित करैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। एहि अध्यायमे समानान्तर दर्शनक आधार सूत्र रूप पबैत अछि, मुदा सूत्रकैं अन्तिम सत्य नहि मानि संशोधन-शर्त संग बाँधल गेल अछि।

अध्याय 92 — गरिमा-आधारित नैतिकता आ नूतन पहचान

पाठगत नाभि। गरिमा-आधारित नैतिकता व्यक्ति कैं न त समाजसँ अलग आत्मनिर्भर परमाणु मानैत अछि, न समुदाय/डेटाबेसक एक घटक। व्यक्ति देहधारी, सम्बन्धित, इतिहासयुक्त, निर्भर, परिवर्तनीय आ तर्क/अनुभवक सहभागी सत्ता अछि। एहि जटिलताकैं घटा कए एक (score) वा एक जन्मगत (label) बनाउ नैतिक हानि उत्पन्न करि सकैत अछि। नूतन पहचानक पहिल उपलब्धि बहुस्तरीयता अछि। आत्मबोध, सामाजिक मान्यता, कानूनी दर्जा, वंशावली, देहगत तथ्य आ डिजिटल (model) एकहि चीज नहि। विवादमे पहिले स्तर चिन्हित करब अनेक भ्रम दूर करैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। सात सिद्धान्तक परस्पर नियन्त्रण—प्रमाण, यथार्थ, गरिमा, लोकतन्त्र, धर्म, इतिहास आ आत्मसमीक्षा—प्रणालीगत शक्ति दैत अछि।

अध्याय 93 — बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र आ नेटवर्क-सत्ता

पाठगत नाभि। बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्रक मुख्य उपलब्धि ई समझ अछि जे लोकतन्त्रक रक्षा केवल “सही केन्द्र” खोजि कए नहि होइत। आधुनिक सत्ता अनेक स्थानमे वितरित अछि; तें उत्तरदायित्वक जाल सेहो अनेक स्थानमे बनबाक चाही। बहुकेन्द्रिकता (decentralization)क सरल पर्याय नहि। स्थानीय संस्था, राज्य, अदालत, (regulator), (market), (platform),

(community) आ (expert body) प्रत्येकक वैध क्षेत्र हो सकैत अछि; पर प्रत्येकक सीमा, कारण, (transparency), (appeal) आ (higher/lateral review) चाही।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। आत्मसमीक्षाकेँ अलंकार नहि, प्रणालीगत संशोधन-यन्त्र बनाओल गेल अछि।

अध्याय 94 — धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता आ उत्तर-धर्मनिरपेक्ष समाज

पाठगत नाभि। धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता “सभ धर्म समान सत्य”क (metaphysical) घोषणा नहि। ई राजनीतिक-नैतिक व्यवस्था अछि जाहिमे नागरिकक (ultimate belief) भिन्न हो सकैत अछि, तइयो समान गरिमा, अन्तःकरण, कानून, कारण-देयता आ अहिंसक असहमति साझा रहैत अछि। उत्तर-धर्मनिरपेक्ष समाज धर्मनिरपेक्ष संवैधानिक उपलब्धिक परित्याग नहि। उलट, ओ स्वीकार करैत अछि जे आधुनिक सार्वजनिक क्षेत्रमे धार्मिक आ गैर-धार्मिक नागरिक दूनू स्थायी छथि; तेँ (secularism) कैँ (exclusionary ideology) नहि, (fair constitutional framework) बनबाक अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। एहि अध्यायमे समानान्तर दर्शनक आधार सूत्र रूप पबैत अछि, मुदा सूत्रकेँ अन्तिम सत्य नहि मानि संशोधन-शर्त संग बाँधल गेल अछि।

अध्याय 95 — समानान्तर इतिहास-दृष्टि: वंशावली-पद्धति (genealogy), अभिलेखागार (archive) आ प्रमाण

पाठगत नाभि। समानान्तर इतिहास-दृष्टि इतिहासक केन्द्र बदलैत अछि, सत्यक कसौटी नहि हटबैत। राजकीय (archive)क संग पंजी, पत्र, (oral memory), (material trace), भाषा, (ecology), स्त्री/वंचित अनुभव, (digital record) जोड़ब—पर प्रत्येक स्रोतक (error mode) जाँचब। वंशावली-पद्धति “असल मूल” खोजब नहि; वर्तमान (category)क निर्माण, विच्छेद, (institutionalisation), (forgotten alternative) आ (feedback) खोलब अछि। निर्मित इतिहासक अर्थ काल्पनिक नहि; (contingent) वास्तविकता।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। सात सिद्धान्तक परस्पर नियन्त्रण—प्रमाण, यथार्थ, गरिमा, लोकतन्त्र, धर्म, इतिहास आ आत्मसमीक्षा—प्रणालीगत शक्ति दैत अछि।

अध्याय 96 — आत्मसमीक्षा: समानान्तर दर्शन स्वयं अपन विखण्डन कोना स्वीकारत?

पाठगत नाभि। समानान्तर दर्शनक सातम आधार आत्मसमीक्षा ओकर सम्पूर्ण प्रणालीक सुरक्षा-कवच नहि, वरन् खुला दरवाजा अछि। सुरक्षा-कवच कहिलासँ फेर (immunity)क संकेत आयत; दरवाजा कहैत अछि—नूतन प्रमाण, विरोधी तर्क, अनसुना अनुभव, भाषिक सुधार, ऐतिहासिक दस्तावेज आ तकनीकी परिवर्तन भीतर आबि सकैत अछि। आत्मविखण्डनक अर्थ अपन सिद्धान्तकेँ नष्ट करब नहि। विखण्डन छुपल संरचना देखबैत; आत्मसमीक्षा प्रमाण (weight) बदलैत; पुनर्निर्माण संशोधित सिद्धान्त बनबैत। तीनू चरण साथे रहला पर दर्शन (neither) (dogma) (nor) निहिलवाद बनैत।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। आत्मसमीक्षाकेँ अलंकार नहि, प्रणालीगत संशोधन-यन्त्र बनाओल गेल अछि।

अध्याय 97 — संरचना अछि, मुदा संरचना नियति नहि

पाठगत नाभि। “संरचना अछि, मुदा संरचना नियति नहि” समानान्तर दर्शनक आशावादी नारा मात्र नहि; कारण-विवेचनक अनुशासन अछि। ई कहैत अछि जे सामाजिक पैटर्न वास्तविक, मापनीय आ नैतिक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि; मुदा ओ व्यक्ति केँ पूर्ण भविष्यवाणी योग्य वस्तु नहि बनबैत। कर्तृत्वक सम्मानक अर्थ संरचनात्मक (injustice) नकारब नहि। उलट, अन्याय चिन्हबाक उद्देश्य कर्तृत्वक वास्तविक परास बढ़ायब अछि—अधिक जानकारी, संसाधन, सुरक्षा, आवाज, (exit), पुनर्विचार-अधिकार, (association) आ संस्था बदलबाक क्षमता।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। अन्तिम सूत्र द्वैतक बीच मध्यपथ नहि, स्तरभेदक दावा अछि: संरचना/कर्तृत्व, भाषा/यथार्थ, सत्ता/सत्य एक-दोसराकेँ सीमित करैत छथि।

अध्याय 98 — भाषा सीमा अछि, मुदा कारागार नहि

पाठगत नाभि। “भाषा सीमा अछि, मुदा कारागार नहि” समानान्तर दर्शनक भाषिक विनम्रताक सूत्र अछि। भाषा बिना साझा दर्शन कठिन; भाषा मात्रसँ यथार्थ समाप्त नहि। शब्द हमरा वस्तु, अनुभव आ समाजक प्रति मार्ग दैत, मुदा प्रत्येक मार्ग चयन, कटौती आ दृष्टिकोण साथे। एहि कारण दार्शनिक काम शब्दक (police) बनब नहि, वरन् अर्थक सीमा स्पष्ट करब, ऐतिहासिक परिवर्तन चिन्हब, अनुवादक हानि/लाभ बतायब, मौन आ शक्ति देखब, आ दाबीकेँ भाषाबाह्य/स्वतंत्र प्रमाणसँ जाँचब अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। पोथी अपन सिद्धान्तकेँ भविष्यक प्रमाणक अधीन राखैत अछि; ई दार्शनिक आत्म-विशेषाधिकार अस्वीकार करबाक सर्वाधिक स्पष्ट क्षण अछि।

अध्याय 99 — सत्ता ज्ञानकेँ प्रभावित करैत अछि, सत्यकेँ मनमाना नहि बनबैत अछि

पाठगत नाभि। “सत्ता ज्ञानकेँ प्रभावित करैत अछि, सत्यकेँ मनमाना नहि बनबैत अछि” एहि अध्यायक संतुलित सूत्र अछि। सत्ता ककर प्रश्न सुनल जाए, ककर स्रोत बाँचि रहए, ककर भाषा प्रतिष्ठित हो, ककर प्रमाण (circulate) करए—ई सभ बदलि सकैत। एतए सत्ता-आलोचना ज्ञानमीमांसाक अनिवार्य भाग अछि। मुदा सत्यक अवधारणा त्यागलासँ कमजोरक रक्षा नहि होइत; उलटे शक्तिशाली व्यक्ति कहि सकैत जे “हमर सत्य” पर्याप्त। न्याय लेल साझा तथ्यगत (adjudication), (documented) प्रमाण, विरोधाभास परीक्षण, स्वतंत्र पुष्टिकरण आ सुधार तन्त्र आवश्यक।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। समेकनक मूल्य अन्तिम उत्तरमे नहि, पुनर्परीक्षणक सार्वजनिक क्रममे अछि।

अध्याय 100 — गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन: खण्ड–१ आ खण्ड–२ केर समेकित प्रतिपादन

पाठगत नाभि। खण्ड–१ सँ सात आधार, खण्ड–२ सँ भाषा/संरचना/सत्ता/विखण्डन/कृत्रिम बुद्धिक चुनौती, आ (Chapters) 96–99 सँ आत्मसमीक्षा, कर्तृत्व, भाषिक सीमा आ सत्ता–सत्यक संतुलन—ई सभ अध्याय १००मे एक “महासंश्लेषण” बनि नहि, परस्पर-सुधारक प्रणाली बनि समक्ष अबैत

अछि। समानान्तर दर्शनक दार्शनिक योगदान एक नूतन अन्तिम उत्तर देबामे नहि, वरन् प्रश्न पूछबाक एहन सार्वजनिक अनुशासन बनाबामे अछि जाहिमे बहु स्रोत, वास्तविकताक प्रतिरोध, गरिमा, सत्ता, इतिहास, आस्था, तकनीक आ आत्मसमीक्षा एक-दोसराक सीमा जाँचैत अछि।

समीक्षात्मक मूल्यांकन। अन्तिम सूत्र द्वैतक बीच मध्यपथ नहि, स्तरभेदक दावा अछि: संरचना/कर्तृत्व, भाषा/यथार्थ, सत्ता/सत्य एक-दोसराकेँ सीमित करैत छथि।

५. भारतीय दार्शनिक पद्धतिक आधारपर समीक्षा

भारतीय दर्शनक दृष्टिसँ पोथीक पहिल उपलब्धि ‘दर्शन’ शब्दक एकरूपीकरण सँ बचब अछि। न्याय, नव्य-न्याय, मीमांसा, व्याकरण, बौद्ध, जैन आ वेदान्तक प्रश्न, प्रमाण, प्रयोजन आ तत्त्वमीमांसक प्रतिबद्धता अलग-अलग राखल गेल अछि। फलतः आधुनिक पाश्चात्य पदक संग संवाद होइतहुँ भारतीय परम्परा अपन ऐतिहासिक व्याकरण नहि हरबैत। उदाहरणार्थ शब्दार्थ-विमर्शमे न्यायीय पदार्थ-संबन्ध, मीमांसक तात्पर्य, व्याकरणीय वाक्य-समग्रता आ बौद्ध अपोहकेँ एक ‘भारतीय अर्थ-सिद्धान्त’ बनाओल नहि गेल। ई बहुलता भारतीय दर्शनक वास्तविक आन्तरिक विवादकेँ सम्मान दैत अछि।

दोसर उपलब्धि पूर्वपक्ष–उत्तरपक्षक दार्शनिक पुनर्प्रयोग अछि। परम्परागत शास्त्रार्थक सभ रूप आदर्श सत्य-संवाद छल—एहन रोमानी दाबी पोथी नहि करैत; वाद, जल्प आ वितण्डाक भेद एहि कारण महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। मुदा विरोधी मतकेँ सबल रूपमे पुनर्निर्मित करबाक नैतिक नियम आधुनिक शोधलेखन लेल उपयोगी पुनर्पाठ अछि। भारतीय पद्धति एतय उद्धरण-संग्रह नहि, तर्कक नैतिकता बनैत अछि।

तेसर, प्रमाण-पद्धति सम्बन्धी संवेदनशीलता पोथीक स्थायी बल अछि। प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, स्मृति, दस्तावेज, सांख्यिकी, अनुभव, डिजिटल अधितथ्य वा विशेषज्ञता—सभ प्रमाण समान प्रश्नक समान भार नहि दैत। ई बात भारतीय प्रमाणमीमांसाक ‘प्रमाण-विभाग’क स्मृति जगबैत अछि, मुदा आधुनिक स्रोत-समीक्षा आ विज्ञान-दर्शनक संग विस्तार पबैत अछि।

सीमा एतय अछि जे भारतीय परम्पराक अत्यन्त विशाल ग्रन्थ-इतिहास प्रायः अवधारणात्मक नमूना रूपमे संक्षिप्त होइत अछि। न्याय, मीमांसा वा बौद्ध मतक आन्तरिक उप-परम्परा, कालान्तर परिवर्तन, भाष्य-भेद आ क्षेत्रीय संस्थागत इतिहास सभ जगह समान विस्तार नहि पबैत। पोथीक उद्देश्य विश्वकोशीय इतिहास नहि, तइयो भविष्यक शोध-संस्करणमे प्राथमिक ग्रन्थक अधिक पद-सन्दर्भ, संस्कृत/पाली मूल पदक नियंत्रित उद्धरण आ मतभेदक कालक्रम जोड़ल जाए तँ भारतीय पक्षक ऐतिहासिक गहराइ आरो बढ़त।

६. पाश्चात्य दार्शनिक परम्पराक आधारपर समीक्षा

पाश्चात्य दर्शनक विशाल बीसम-एकैसम शताब्दी वक्रकेँ पोथी एकरेखीय प्रगति रूपमे प्रस्तुत नहि करैत। विश्लेषणात्मक स्पष्टता, महाद्वीपीय इतिहास-सचेतता, संरचनात्मक सम्बन्धवाद, उत्तर-संरचनात्मक सीमा-जाँच, फूकोक सत्ता-समीक्षा, व्याख्यात्मक पूर्वबोध, फ्रैंकफर्टीय सामाजिक आलोचना, स्त्रीवादी देहधर्मिता, उत्तर-औपनिवेशिक प्रतिनिधित्व, विज्ञान-दर्शनक त्रुटिसंशोधन आ कृत्रिम बुद्धिक उत्तरदायित्व—ई सभ एक-दोसराकेँ सुधारैत प्रश्न-परम्परा बनैत छथि।

विश्लेषणात्मक दर्शन सम्बन्धी प्रस्तुति विशेष रूपेँ स्पष्ट अछि, किएक तँ फ्रेगे-रसेल-विट्गेन्स्टाइन-कार्नाप-क्वाइनक क्रम ‘विद्यालयक इतिहास’ नहि, अर्थ, तार्किक रूप, सत्यापन आ विश्वास-जालक बदलैत समस्या रूपमे पढ़ल गेल अछि। महाद्वीपीय/उत्तर-संरचनात्मक पक्षमे देरिदा आ फूकोक लोकप्रिय विकृत रूप—‘अर्थ नहि’, ‘सत्य नहि’—सँ दूरी राखल गेल अछि। एहि प्रकार पाश्चात्य परम्पराक भीतरक प्रतिपक्ष स्वयं पोथीक तुलनात्मक पद्धतिमे संरक्षित रहैत अछि।

पोथीक सर्वाधिक साहसी पाश्चात्य संवाद अध्याय ९०–१०० मे अछि, जतए विभिन्न धारासँ ग्रहण कएल प्रश्नसभ समानान्तर दर्शनक सात आधारपर पुनः व्यवस्थित होइत छथि। ई कदम रचनात्मक अछि, मुदा एतय जोखिम सेहो सर्वाधिकः बहुविध सिद्धान्तसभकेँ एक ‘समानान्तर कसौटी’ सँ जाँचब स्वयं नूतन केन्द्रीयता बनि सकैत अछि। लेखक अध्याय ९६ आ १०० मे एहि जोखिमकेँ स्पष्ट स्वीकारि आत्मसमीक्षाकेँ सिद्धान्तक भीतर राखैत छथि;

तथापि भविष्यक आलोचना लेल ई खुलापन वास्तविक बने रहब आवश्यक अछि।

७. नव्य-न्यायीय सूक्ष्मताक आधारपर समीक्षा

नव्य-न्याय पोथीक भीतर सांस्कृतिक गौरव-चिह्न नहि, विश्लेषणात्मक अनुशासनक स्रोत रूपमे उपस्थित अछि। पदक दायरा, सम्बन्धक प्रकार, अभाव, अपेक्षा, योग्यता, सन्निधि, तात्पर्य, अनुमान, प्रमाण-भार आ दाबी-सीमा—एहि सभ विषयमे नव्य-न्यायीय सूक्ष्मता आधुनिक भाषा-दर्शन आ तर्क-विवेचनक संग संवाद करैत अछि। पोथीक विशेष सावधानी ई जे नव्य-न्यायकेँ आधुनिक विश्लेषणात्मक दर्शनक ‘पूर्व संस्करण’ नहि कहल गेल। ऐतिहासिक प्रभावक दावा केवल प्रमाणसँ, समस्या-साम्य सीमा सहित—ई नियम तुलनात्मक दर्शनक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

विखण्डन संग नव्य-न्यायक संवाद अत्यन्त फलदायी अछि। एक दिस नव्य-न्याय अवधारणा केँ निश्चित करैत, सम्बन्ध स्पष्ट करैत, दाबी सीमित करैत अछि; दोसर दिस विखण्डन पूछैत अछि जे ई निश्चितता कोन भाषिक, ऐतिहासिक वा पदानुक्रमीय शर्तपर टिकल अछि। पोथीक प्रस्ताव—पहिने स्पष्ट करू, फेर सीमा खोलू, फेर प्रमाण जाँचू, अन्तमे संशोधित प्रतिपादन बनाउ—दुनू पद्धतिक यांत्रिक मिश्रण नहि, कार्य-विभाजन अछि।

आलोचनात्मक सीमा ई जे नव्य-न्यायक वास्तविक तकनीकी भाषा—अवच्छेदक, प्रतियोगिता, अनुयोगिता, प्रकारता, संसर्गता आदि—केँ लोकप्रिय पाठक लेल सरल करैत समय किछु दार्शनिक कठोरता अनिवार्य रूपेँ कम होइत अछि। शोध-विशेषज्ञ संस्करणमे चयनित नव्य-न्यायीय वाक्यक मूल विश्लेषण, पदच्छेद आ प्रतीकात्मक पुनर्रचना जोड़ल जाए तँ ‘सूक्ष्मता’क दावा प्रत्यक्ष प्रदर्शनमे बदलि सकैत अछि।

८. विदेह-समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधारपर समीक्षा

विदेह-समानान्तर इतिहास-दृष्टि पोथीक सबसे विशिष्ट पद्धतिगत योगदानसभमे एक अछि। इतिहासक केन्द्र बदलि सकैत अछि, मुदा सत्यक कसौटी समाप्त नहि होइत—ई ओकर मूल सूत्र अछि। राजकीय अभिलेखक संग पाँजी, पत्र, मौखिक स्मृति, भौतिक अवशेष, भाषा, भूगोल, स्त्री/वंचित

अनुभव आ डिजिटल रेकर्ड जोड़ल जा सकैत अछि; मुदा प्रत्येक स्रोतक त्रुटि-प्रकार अलग जाँचल जाए। एहि पद्धतिमे ‘अधिक स्रोत’ स्वतः ‘अधिक सत्य’ नहि; स्वतंत्रता, प्रासंगिकता, उत्पत्ति-श्रृंखला, प्रतिप्रमाण आ मौन सभ जाँचनीय छथि।

वंशावली-पद्धतिक उपयोग ‘शुद्ध मूल’ खोजबाक लेल नहि, वर्तमान श्रेणी कोना बनल, कतेक बेर बदलल, कोन विकल्प विसरल, कोन संस्था ओकरा स्थिर कएल—ई देखबाक लेल अछि। मिथिला, तिरहुत, विदेह, भाषा-नाम, क्षेत्र, जाति, प्रशासनिक श्रेणी वा डिजिटल वर्गीकरण—सभ पर ई सावधानी लागू होइत अछि। वर्तमान राजनीतिक सीमा अतीतपर आरोपित नहि करब आ अतीतक नामकेँ आधुनिक अर्थमे जसक तस नहि पढ़ब ऐतिहासिक वर्तमानवादक विरुद्ध मजबूत सुरक्षा अछि।

अभिलेखीय मौन सम्बन्धी पोथीक सूत्र विशेष उल्लेखनीय अछि: मौन स्वयं घटना नहि बतबैत; ओ रेकर्ड-निर्माण, संरक्षण, वर्गीकरण, पहुँच वा विनाशक इतिहासक परिणाम हो सकैत अछि। तें ‘जे नहि भेटल’ ओतए कथा गढ़ब उचित नहि; अज्ञातकेँ अज्ञात कहब ज्ञानमीमांसक ईमानदारी अछि।

‘विदेह’क डिजिटल अभिलेख-जगतकेँ भविष्यक स्रोत मानैत अधितथ्य, तिथि, संस्करण, सम्पादकीय चयन आ अनुपस्थित सामग्रीक पारदर्शिता पर बल देल गेल अछि। ई बिन्दु पारम्परिक इतिहासलेखनकेँ डिजिटल मानविकीसँ जोड़ैत अछि। भविष्यक उपयोग लेल संस्करण-इतिहास, स्थायी पहचान-संख्या, परिवर्तित पृष्ठक अभिलेख, स्रोत-छवि आ पाठ-रूपक समानान्तर संरक्षण एहि पद्धतिक स्वाभाविक विस्तार होयत।

९. साहित्यिक आ शोध-गद्य समीक्षा

दार्शनिक पोथी होइतहुँ एहि ग्रन्थक साहित्यिकता ओकर वाक्य-लय, पुनरावर्ती सूत्र, विरोधी जोड़ी आ दृश्य रूपकमे अछि। ‘संरचना अछि, मुदा संरचना नियति नहि’, ‘भाषा सीमा अछि, मुदा कारागार नहि’, ‘सत्ता ज्ञानकेँ प्रभावित करैत अछि, सत्यकेँ मनमाना नहि बनबैत अछि’ जकाँ वाक्य दार्शनिक प्रतिपादनकेँ स्मरणीय सूक्तिमे बदलैत अछि। ई सूत्रात्मकता शिक्षण आ सार्वजनिक दर्शन लेल उपयोगी अछि।

पोथीक गद्य प्रायः त्रिस्तरीय चलैत अछि: पहिने कठिन अवधारणाक सहज भाषा; फेर तकनीकी भेद; अन्तमे उदाहरण वा समकालीन प्रयोग। एहि कारण फ्रेगे, देरिदा, फूको, बटलर वा मशीन-चेतना जकाँ विषय मैथिली पाठक लेल प्रवेशयोग्य बनैत छथि। परन्तु अत्यधिक सूत्रीकरणक जोखिम ई जे पाठक सिद्धान्तकेँ ओकर ऐतिहासिक ग्रन्थ-संरचनासँ अलग ‘एक पंक्ति’ रूपमे ग्रहण करि लैत। पोथी अनेक ठाम सीमा लिखि एहि खतरा सँ बचैत अछि, मुदा शिक्षण-संस्करणमे मूल ग्रन्थ-पाठक अधिक विस्तृत अंश जोड़ल जाए तँ लाभ होयत।

पूर्वपक्ष–उत्तरपक्षीय नाटकीयता गद्यकेँ वादात्मक ऊर्जा दैत अछि। लेखक अपन दाबीकेँ पहिले प्रतिवादक सामने राखैत छथि; परिणामस्वरूप निष्कर्ष प्रारम्भिक कथनक साधारण पुनरावृत्ति नहि रहैत। ई रचना-विधि दार्शनिक निबन्धकेँ ‘प्रश्न–संघर्ष–पुनर्निर्माण’क कथानक दैत अछि।

तालिका आ चित्रक प्रयोग साहित्यिक अर्थमे ‘दृश्य वाक्य’ जकाँ अछि। तीरक क्रम, द्विपक्षीय तुलना, भरोसा-स्तर, परीक्षण-चक्र आ स्रोत-शृंखला पाठककेँ तर्कक गति देखबैत अछि। किन्तु दृश्य सरलीकरणक संग प्रत्येक ठाम गद्यक सावधानी राखल जाएब जरूरी—विशेषतः इतिहास, पहचान आ सत्ता-जकाँ क्षेत्रमे जतए तीरक एकरेखीयता वास्तविक बहुदिशात्मक प्रक्रियाकेँ छोट कऽ सकैत अछि।

सम्पूर्ण ग्रन्थक शैलीक एक सीमा साँचा-निष्ठ पुनरावृत्ति अछि। अनेक अध्याय एकहि क्रम, समान प्रकारक ‘सूत्र’, ‘आत्मसमीक्षा’ आ ‘समकालीन प्रयोग’ पर समाप्त होइत छथि। ई एकर पद्धतिगत अनुशासन सेहो अछि, मुदा साहित्यिक लचक घटा सकैत अछि। आगामी संस्करणमे किछु अध्याय संवाद, लघु प्रकरण, स्रोत-पठन, केस-अध्ययन, पद-विश्लेषण अथवा अभिलेखीय प्रतिवेदनक रूपमे बदलल जाए तँ पोथीक सौन्दर्यात्मक विविधता बढ़त, बिना दार्शनिक अनुशासन घटौने।

१०. शुद्ध मैथिली निखार ऑडिट

भाषा-परीक्षण मूल मैथिली खण्ड, ओकर अग्रभाग, परिशिष्ट, ग्रन्थसूची आ अनुक्रमणिका धरि कएल गेल। प्रत्यक्ष मूल दस्तावेजक पाठ आधार बनाओल

गेल; पाठ-निष्कर्षणक दृश्य विकृति अथवा अक्षर-दोहरावकेँ भाषिक दोष नहि मानल गेल।

परीक्षण-बिन्दु	स्थिति	निखार-सुझाव
रोमन/अंग्रेजी पद	मूल मैथिली भागमे लगभग सभ रोमन पद कोष्ठकभितर अछि। अग्रभागमे अंग्रेजी पुस्तक-शीर्षकक पाँच रोमन शब्द आ (ISBN) एक बेर कोष्ठक बाहर अछि।	कठोर नियम लेल अंग्रेजी शीर्षक पूरा कोष्ठकमे राखू; ‘अन्तरराष्ट्रीय मानक पुस्तक संख्या (ISBN)’ लिखू।
‘हर’	११७ स्वतंत्र प्रयोग	प्रसंगानुसार ‘प्रत्येक’, ‘सभ’, ‘सभटा’ वा अन्य स्वाभाविक मैथिली रूप।
‘हरेक’	५ स्वतंत्र प्रयोग	‘प्रत्येक’ अथवा प्रसंगानुसार ‘सभ’।
‘पानी’	११ प्रयोग	‘पानि’।
‘दरवाजा’	५ प्रयोग	‘केवाड़ी’; रूपक प्रसंगमे सेहो सम्भव हो तँ ‘केवाड़ी’ अथवा ‘प्रवेश-द्वार’।
‘गायब’	३० प्रयोग	सन्दर्भानुसार ‘बिलायल’, ‘लोप भेल’, ‘दृष्टिसँ बाहर’— दार्शनिक प्रसंगमे ‘लोप’ कखनो अधिक सटीक।
‘जैसे’	४ प्रयोग	‘जेना’।
‘यह’	१ स्पष्ट हिन्दी रूप	‘ई’।

‘करते’	१ स्पष्ट हिन्दी रूप	‘करैत’।
‘वेबसाइट’	अग्रभाग/सन्दर्भमे सीमित प्रयोग	‘जालस्थल’; रोमन पता राखब आवश्यक हो तँ कोष्ठकभितर।

पारिभाषिक अनुशासन पोथीक मजबूत पक्ष अछि। अंग्रेजी तकनीकी पद प्रायः मैथिली पदक बाद कोष्ठकमे देल गेल अछि; एहि कारण मूल गद्यक लय देवनागरीमे बनल रहैत अछि आ विशेषज्ञ पाठककेँ अन्तरराष्ट्रीय पद सेहो भेटैत अछि। भविष्यक संस्करणमे पहिल उल्लेख पर मैथिली + कोष्ठकमे अंग्रेजी, आ पछिला उल्लेखमे केवल मैथिली पद राखल जाए तँ कोष्ठक-भार घटत।

‘डिजिटल’, ‘मॉडल’, ‘डेटा’, ‘नेटवर्क’, ‘एल्गोरिदम’ जकाँ देवनागरीकृत आधुनिक पद बहुत बेर अबैत छथि। सभकेँ बलपूर्वक संस्कृतनिष्ठ विकल्प देब आवश्यक नहि; शुद्धताक अर्थ संप्रेषणीयता नष्ट करब नहि। मुदा जतए स्वाभाविक मैथिली/भारतीय पद उपलब्ध अछि—जेना ‘कलनविधि’ संग ‘एल्गोरिदम’, ‘अधितथ्य’ संग ‘मेटाडेटा’—ओतए एकरूप शब्दावली पाठकक समझ बढ़बैत अछि।

वाक्य-रचना सामान्यतः मैथिली क्रियारूप, विभक्ति आ तर्क-गद्यक अनुकूल अछि। मिश्रित हिन्दी रूप अत्यल्प अछि, जे निखारक दृष्टिसँ सकारात्मक बात। उपर्युक्त ‘यह’, ‘करते’, ‘जैसे’ जकाँ विरल रूप साफ करला पर भाषिक एकरूपता बहुत बढ़त।

शोध-संस्करण लेल एक पृथक् ‘भाषा-शैली नियम’ जोड़ल जा सकैत अछि: रोमन पदक कोष्ठक-नीति, व्यक्ति-नामक मानक देवनागरी, संस्कृत पदक दीर्घ/ह्रस्व मानकीकरण, संयुक्त चिह्न, दीर्घ डैश, उद्धरण चिह्न, संख्या-प्रणाली आ मैथिली शब्द-प्राथमिकता। एहि नियमक कारण १०० अध्यायक दीर्घ ग्रन्थमे सम्पादकीय निरन्तरता कायम रहत।

११. अंग्रेजी अनुवाद-खंड आ द्विभाषिक संरचनाक समीक्षा

पोथीक उत्तरार्धमे पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद स्वतंत्र शीर्षक-पृष्ठ, प्रकाशन-विवरण, विषयसूची, अध्याय १–१०० आ परिशिष्ट-संरचनासहित उपस्थित अछि।

अध्याय-संख्या आ क्रम मूल मैथिली खण्डक संग मेल खाइत अछि; एहि कारण ई चयनित सारांश नहि, समान दार्शनिक वास्तुक अंग्रेजी रूप अछि। सम्पूर्णता-दृष्टिसँ ई ग्रन्थकेँ द्विभाषिक शोध-संसाधन बनबैत अछि।

अनुवादक सर्वाधिक कठिन काम पारिभाषिक तुल्यता अछि। ‘पूर्वपक्ष’, ‘उत्तरपक्ष’, ‘प्रमाण’, ‘अभाव’, ‘शास्त्रार्थ’, ‘नव्य-न्याय’, ‘मिथिला’, ‘समानान्तर दर्शन’ जकाँ पद केवल अंग्रेजी समानार्थकसँ पूर्ण नहि होइत। अतः अंग्रेजी खण्डमे संस्कृत/भारतीय पदक लिप्यन्तरण अथवा नियंत्रित व्याख्या बचेनाइ उचित अछि। मूल मैथिली खण्डक विशेषता—स्थानीय भाषा मे विश्व-दर्शनक संवाद—अंग्रेजीमे स्वभावतः बदलैत अछि; तेँ दुनू रूपकेँ एक-दोसराक ‘प्रतिलिपि’ नहि, व्याख्यात्मक युगल रूपमे पढ़ब अधिक उचित।

द्विभाषिक संस्करणक शोध-मूल्य बढ़ेबाक लेल आगामी संस्करणमे अध्याय-समानता-सूची, प्रमुख पारिभाषिक पदक द्विभाषिक तालिका आ अनुवाद-नीति सम्बन्धी एक छोट प्रस्तावना उपयोगी होयत। विशेषतः ‘गरिमा’, ‘प्रमाण’, ‘सत्ता’, ‘अभाव’, ‘तात्पर्य’, ‘समानान्तर’ जकाँ पदक स्थिर अंग्रेजी समतुल्य स्पष्ट कएल जाए तँ उद्धरण आ तुलनात्मक शोध आसान होयत।

१२. परिशिष्ट, शब्दावली, सामञ्जस्य-सूची, ग्रन्थसूची आ अनुक्रमणिका

दार्शनिक आ बौद्धिक कालक्रम पोथीक विशाल विषय-क्षेत्रकेँ समय-अक्ष दैत अछि। एकर उपयोग विशेषतः काल-विस्थापन टारबाक लेल अछि—कौन विचारक, परम्परा वा शब्द कोन ऐतिहासिक क्रममे अछि, ई स्मरण तुलनात्मक दाबी पर नियन्त्रण राखैत अछि।

पारिभाषिक शब्दावली केवल शब्दकोश नहि; पोथीक आन्तरिक अवधारणा-संगति जाँचबाक साधन अछि। ‘अभाव’, ‘अर्थ’, ‘अर्थ-स्थगन’, ‘अनुमान’, ‘अन्य-मन समस्या’ आदि पदक परिभाषा पाठककेँ अध्याय पारि स्थिर संकेत दैत अछि। भविष्यक संस्करणमे प्रत्येक प्रविष्टि संग सम्बद्ध अध्याय-संख्या जोड़ल जाए तँ शोधोपयोगिता बढ़त।

ऐतिहासिक स्थान-नाम आ भाषा-नाम सामञ्जस्य-सूची विदेह-समानान्तर इतिहासक व्यावहारिक रूप अछि। क्षेत्र, राज्य, भाषा आ प्रशासनिक नाम

समयसँ बदलैत छथि; एहि कारण नाम-साम्यकेँ ऐतिहासिक पहिचान मानबाक त्रुटि घटैत अछि। मिथिला/तिरहुत/विदेह, भाषिक क्षेत्र, आधुनिक प्रशासन आ ऐतिहासिक स्रोतक भेद स्पष्ट रखबाक लेल ई परिशिष्ट अत्यन्त उपयोगी अछि।

समेकित ग्रन्थसूची विस्तृत अन्तरपरम्परागत पठनक प्रमाण दैत अछि, मुदा अनेक प्रविष्टि ‘अध्ययन’, ‘चयनित निबन्ध’ अथवा एकहि कृतिक पुनरावृत्त रूपमे अछि। शोध-संस्करणमे ग्रन्थसूचीकेँ ‘मूल ग्रन्थ’, ‘प्राथमिक आधुनिक ग्रन्थ’, ‘व्याख्यात्मक अध्ययन’, ‘इतिहास/सामाजिक विज्ञान’, ‘तकनीक/कृत्रिम बुद्धि’ जकाँ विभागमे पुनर्संरचित कएल जाए तँ उपयोग आसान होयत।

नाम-विषय अनुक्रमणिका दीर्घ ग्रन्थक वास्तविक मार्गदर्शी यन्त्र अछि। विषयसूची अध्याय-स्तरपर मार्ग दैत अछि; अनुक्रमणिका अवधारणा-स्तरपर। समानान्तर दर्शनक बहुकेन्द्रिक संरचना कारण ई अनुक्रमणिका सजावटी परिशिष्ट नहि, शोधक मुख्य साधन अछि।

१३. मुख्य मौलिक योगदान

भारतीय आ पाश्चात्य दर्शनक संवादमे ‘पूर्वगामिता-दर्प’ आ ‘आत्महीन अनुकरण’ दुनूक अस्वीकार।

मिथिलाकेँ प्रमाणक विशेषाधिकार नहि, पद्धतिगत गृहभूमि रूपमे स्थापित करब।

नव्य-न्यायीय स्पष्टता आ उत्तर-संरचनात्मक सीमा-जाँचकेँ परस्पर-विरोधी नहि, क्रमिक परीक्षण रूपमे उपयोग।

बहुप्रमाणीय विवेकवाद द्वारा स्रोत-बहुलता आ प्रमाण-भारक भेद स्पष्ट करब।

सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद द्वारा भाषिक/सामाजिक निर्माण स्वीकारैत बाह्य यथार्थक प्रतिरोध सुरक्षित रखब।

गरिमा, लोकतन्त्र, धर्मक बहुलता, इतिहास आ आत्मसमीक्षाकेँ ज्ञानमीमांसक प्रश्नसँ जोड़ब।

अभिलेखागार, मौन, वंशावली, स्थान-नाम आ भाषा-नामकेँ दार्शनिक इतिहास-पद्धतिक अंग बनाओल।

डिजिटल सत्य आ कृत्रिम बुद्धिमे स्रोत-श्रृंखला, संस्करण, मानवीय जाँच, अपील आ उत्तरदायित्वकेँ दार्शनिक कसौटी बनाओल।

दार्शनिक ग्रन्थकेँ मैथिलीमे विस्तृत तकनीकी शब्दावली आ द्विभाषिक अनुवादसहित प्रस्तुत करब।

सिद्धान्तक अन्तिम अधिकार अपन लेखकक पास नहि, भविष्यक प्रमाण आ नीकतर तर्कक पास रहबाक स्पष्ट घोषणा।

१४. सीमासभ आ आगाँक शोध-दिशा

इतिहासक दीर्घ वक्र कारण अनेक दार्शनिकक मूल ग्रन्थीय सूक्ष्मता संक्षिप्त होइत अछि। चयनित मूल उद्धरण, पृष्ठ-सन्दर्भ आ पाठ-संस्करण जोड़ल जाए तँ विशेषज्ञ उपयोग बढ़त।

एकरूप अध्याय-साँचा पद्धतिगत लाभ दैत अछि, मुदा साहित्यिक पुनरावृत्ति सेहो बढ़बैत अछि। विषयानुकूल रूप-विविधता उपयोगी होयत।

तुलनात्मक साम्य सावधानीसँ सीमित अछि, तइयो भविष्यक शोधमे प्रत्यक्ष ऐतिहासिक सम्पर्क, अनुवाद-इतिहास, पाण्डुलिपि-परम्परा आ संस्थागत आदान-प्रदान पर पृथक् अभिलेखीय अध्ययन आवश्यक अछि।

मिथिला सम्बन्धी क्षेत्रीय इतिहासमे स्त्री, दलित, श्रमिक, मुसलमान, कारीगर, सीमापार समुदाय आ गैर-अभिजात मौखिक स्रोतक अधिक विस्तृत स्वतंत्र अध्ययन पोथीक समानान्तर दाबीकेँ ठोस सामग्री देत।

कृत्रिम बुद्धि सम्बन्धी अध्याय शीघ्र बदलैत तकनीकी क्षेत्रसँ जुड़ल छथि; तेँ संस्करण-तिथि, प्रतिरूप-वर्ग, परीक्षण-सन्दर्भ आ परिवर्तन-इतिहासक नियमित अद्यतन आवश्यक।

समेकित ग्रन्थसूचीकेँ पुस्तक, लेख, निबन्ध, सम्पादित ग्रन्थ आ मूल शास्त्रक पृथक् श्रेणीमे बाँटब शोध-मानक स्पष्ट करत।

भाषा-निखारमे ‘हर/हरेक’, ‘पानी’, ‘दरवाजा’, ‘गायब’, विरल हिन्दी रूप आ अग्रभागक कोष्ठक-बाह्य रोमन पद सुधारल जाए।

द्विभाषिक संस्करण लेल पारिभाषिक शब्दक स्थिर समानता-सूची आ अनुवाद-नीति जोड़ल जाए।

१५. निष्कर्ष

‘समानान्तर दर्शन — खण्ड २’ केर महत्व केवल एहि बातमे नहि जे ई बीसम शताब्दीसँ कृत्रिम बुद्धि धरि बहुत विषय समेटैत अछि। वास्तविक महत्व ओकर पद्धतिगत आग्रहमे अछि: कोनो केन्द्र सत्यक विशेषाधिकार नहि; कोनो हाशिया स्वतः सत्य नहि; भाषा प्रभावशाली अछि, मुदा सर्वशक्तिमान नहि; संरचना वास्तविक अछि, मुदा नियति नहि; सत्ता ज्ञानक शर्त बदलैत अछि, मुदा सत्यकेँ मनमाना नहि बनबैत; परम्परा संसाधन अछि, प्रमाणक छूट नहि; आधुनिकता उपयोगी अछि, अन्तिम कसौटी नहि।

भारतीय, पाश्चात्य, नव्य-न्यायीय आ विदेह-समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक संयुक्त परीक्षणमे पोथीक सर्वाधिक स्थायी उपलब्धि ‘तुलना’क नैतिकता अछि। साम्य जतए अछि ततेक मात्र, भिन्नता जतए अछि ओतए स्पष्ट, प्रभाव केवल प्रमाणसँ, आ निष्कर्ष सदैव पुनर्परीक्षण लेल खुलल। एहि नियम कारण मिथिला विश्व-दर्शनक समक्ष न आत्मरक्षात्मक स्थानीयता बनैत अछि, न विश्व-दर्शन स्थानीय सामग्रीकेँ उदाहरण मात्र बनबैत अछि।

साहित्यिक रूपेँ पोथी वादात्मक, सूत्रात्मक आ दृश्य-तार्किक गद्यक एक विशिष्ट रूप विकसित करैत अछि। भाषा-निखारक सीमित सुधार, मूल स्रोत-सन्दर्भक अधिक घनत्व, अध्याय-रूपक विविधता आ द्विभाषिक पारिभाषिक अनुशासन जोड़ल जाए तँ एकर शोध-मूल्य आरो बढ़ि सकैत अछि।

अन्ततः समानान्तर दर्शनक विश्वसनीयता ओकर सिद्धान्तक कठोरतासँ कम, ओकर संशोधन-नियमक स्पष्टतासँ अधिक तय होयत। जँ भविष्यक प्रमाण, नूतन ऐतिहासिक स्रोत, नीकतर तर्क, अनसुना अनुभव अथवा वैज्ञानिक परिवर्तन एहि पोथीक कोनो सूत्र बदलए, तँ ओकरा स्वीकार करब एहि दर्शनक पराजय नहि, ओकर पद्धतिक सफलता होयत।

बिबलियोग्राफी

केवल पोथीक नाम; कोनो जालस्थल वा प्रकाशकीय विवरण नहि।

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — खण्ड १

गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — खण्ड २

न्यायसूत्र

न्यायभाष्य

न्यायवार्त्तिक

तत्त्वचिन्तामणि

न्यायकुसुमाञ्जलि

आत्मतत्त्वविवेक

मीमांसा-सूत्र

शाबरभाष्य

श्लोकवार्त्तिक

तन्त्रवार्त्तिक

महाभाष्य

वाक्यपदीय

ध्वन्यालोक

प्रमाणसमुच्चय

प्रमाणवार्त्तिक

मूलमध्यमककारिका

तत्त्वार्थसूत्र

ब्रह्मसूत्रभाष्य

उपदेशसाहस्री

(Principia Mathematica)

(Tractatus Logico-Philosophicus)

(Philosophical Investigations)

(Language, Truth and Logic)

(Word and Object)

(Course in General Linguistics)

(Structural Anthropology)

(The Savage Mind)

(Of Grammatology)

(Writing and Difference)

(The Archaeology of Knowledge)

(Discipline and Punish)

(The History of Sexuality, Volume I)

(The Postmodern Condition)

(Simulacra and Simulation)

(Truth and Method)

(Interpretation Theory)

(The Conflict of Interpretations)

(Dialectic of Enlightenment)

(One-Dimensional Man)

(The Theory of Communicative Action)

(The Structural Transformation of the Public Sphere)

(The Second Sex)

(Gender Trouble)

(Bodies That Matter)

(Justice and the Politics of Difference)

(Gendering Caste: Through a Feminist Lens)

(Recasting Women: Essays in Colonial History)

(Orientalism)

(A Critique of Postcolonial Reason)

(The Location of Culture)

(Provincializing Europe)

(The Rediscovery of the Mind)

(The Conscious Mind)

(Consciousness Explained)

(Representing and Intervening)

(The Logic of Scientific Discovery)

(The Structure of Scientific Revolutions)

(The Methodology of Scientific Research Programmes)

(The Constitution of Society)

(The Society of the Spectacle)

(Development as Freedom)

(The Argumentative Indian)

(What Is History?)

(Genealogy as Critique)

(The Death of Luigi Trastulli and Other Stories: Form and Meaning in Oral History)

(Inclusion and Democracy)

आलेख ५० · पञ्जी, दर्शन, भाषा आ समानान्तर इतिहास

मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास : खण्ड १

सारांश

ई शोध-समीक्षा मिथिला, वज्जि आ अंगक दीर्घकालिक इतिहासक विशाल आख्यानक केवल सार-संक्षेप नहि, बल्कि ओकर इतिहासलेखन-रचना, प्रमाण-विन्यास, क्षेत्रीय अवधारणा, काल-विभाजन, भाषिक-सांस्कृतिक व्याख्या आ स्रोत-शासनक समीक्षात्मक परीक्षण अछि। पोथी प्रागइतिहाससँ समकालीन काल धरि पाँच खण्ड आ अट्ठाइस अध्यायमे सामग्री व्यवस्थित करैत अछि; पुरातत्त्व, अभिलेख, पाठ, पाण्डुलिपि, नदी-विज्ञान, राजस्व अभिलेख, जनगणना, कानून, भाषाविज्ञान, कला-अर्थव्यवस्था, सीमा-अध्ययन आ नागरिकताक स्रोतसभकेँ एके स्तरक प्रमाण नहि मानि, हुनकर अपन-अपन साक्ष्य-क्षमता अनुसार अलग राखैत अछि। एहि मूल अनुशासनक कारण पोथी क्षेत्रीय गौरव अथवा आधुनिक पहचानक दबावमे प्राचीनता, सीमा, वंश, भाषा अथवा जाति सम्बन्धी दाबीकेँ स्वतः सत्य मानबाक बदला प्रमाणक प्रकृति, तिथि, प्रसंग, स्थान, पाठ-परम्परा आ अभिलेखीय उद्देश्यमे जाँचैत अछि। समीक्षामे चार तुलनात्मक पद्धति अपनाओल गेल अछि। भारतीय ऐतिहासिक संवेदनामे वंश, स्मृति, पुराण, स्थल-परम्परा, शास्त्रीय पाठ आ राजकीय अभिलेखक भिन्न साक्ष्य-मूल्य पर विचार कएल गेल अछि। पाश्चात्य इतिहासलेखनक आलोचनात्मक स्रोत-पद्धति, तुलनात्मक इतिहास, अभिलेखक सत्ता-सापेक्षता, सूक्ष्म-साक्ष्य आ बहुस्तरीय क्षेत्रीयतासँ पोथीक साम्य आ भिन्नता देखाओल गेल अछि। नव्य न्यायपरम्पराक प्रमाण, पक्ष, साध्य, हेतु, व्याप्ति, उपाधि, अवच्छेदक, सम्बन्ध आ अभाव-सिद्धान्तक सहायतासँ पोथीक निष्कर्ष-निर्माणक तार्किक अनुशासन परखल गेल अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अन्तर्गत समान समय वा समान भूभागमे चलैत अनेक असमान ऐतिहासिक रेखाकेँ एकरूप नहि करबाक, स्रोतसभक असमान घनत्व स्वीकार करबाक, आ साहित्यिक स्मृति, राजकीय संरचना, भाषा, जाति, नदी, भूमि, कला, सीमा आ नागरिकताक इतिहासकेँ परस्पर सम्बद्ध मुदा स्वतन्त्र गतिसूत्रक रूपमे पढ़बाक प्रविधिक मूल्यांकन कएल गेल अछि।

बीजशब्द

मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास : खण्ड १ · मिथिला · वंश-अभिलेख · इतिहासलेखन · प्रमाण-विवेचन

१.४२. गजेन्द्र ठाकुर- मिथिला, वज्जी आ अंगक इतिहास खण्ड-१- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास-लेखन

स्रोत-नियन्त्रण, बहुस्तरीय क्षेत्रीयता, नव्य-न्यायीय प्रमाण-विवेक आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आधारपर एक गहन साहित्यिक-इतिहासलेखन समीक्षा

मूल पोथी : हिस्ट्री ऑफ मिथिला, वज्जि एण्ड अंग — प्रागइतिहाससँ समकालीन काल धरि

मूल पोथीक लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

विस्तृत शोध-समीक्षा

अध्ययन-क्षेत्र : मिथिला, वज्जि, अंग, तिरहुत, नेपालक तराई-मधेश, उत्तर बिहार आ मध्य-पूर्वी गंगा क्षेत्र

पाठ-आधार : पाँच खण्ड, अट्ठाइस अध्याय, एक समेकित कालक्रम, शब्दावली-स्थाननाम सामंजस्य, सामान्य स्रोत-पंजी आ अनुक्रमणिका

सारांश

ई शोध-समीक्षा मिथिला, वज्जि आ अंगक दीर्घकालिक इतिहासक विशाल आख्यानक केवल सार-संक्षेप नहि, बल्कि ओकर इतिहासलेखन-रचना, प्रमाण-विन्यास, क्षेत्रीय अवधारणा, काल-विभाजन, भाषिक-सांस्कृतिक व्याख्या आ स्रोत-शासनक समीक्षात्मक परीक्षण अछि। पोथी प्रागइतिहाससँ समकालीन काल धरि पाँच खण्ड आ अट्ठाइस अध्यायमे सामग्री व्यवस्थित करैत अछि; पुरातत्त्व, अभिलेख, पाठ, पाण्डुलिपि, नदी-विज्ञान, राजस्व अभिलेख, जनगणना, कानून, भाषाविज्ञान, कला-अर्थव्यवस्था, सीमा-अध्ययन आ नागरिकताक स्रोतसभकेँ एके स्तरक प्रमाण नहि मानि, हुनकर अपन-अपन साक्ष्य-क्षमता

अनुसार अलग राखैत अछि। एहि मूल अनुशासनक कारण पोथी क्षेत्रीय गौरव अथवा आधुनिक पहचानक दबावमे प्राचीनता, सीमा, वंश, भाषा अथवा जाति सम्बन्धी दाबीकेँ स्वत: सत्य मानबाक बदला प्रमाणक प्रकृति, तिथि, प्रसंग, स्थान, पाठ-परम्परा आ अभिलेखीय उद्देश्यमे जाँचैत अछि।

समीक्षामे चार तुलनात्मक पद्धति अपनाओल गेल अछि। भारतीय ऐतिहासिक संवेदनामे वंश, स्मृति, पुराण, स्थल-परम्परा, शास्त्रीय पाठ आ राजकीय अभिलेखक भिन्न साक्ष्य-मूल्य पर विचार कएल गेल अछि। पाश्चात्य इतिहासलेखनक आलोचनात्मक स्रोत-पद्धति, तुलनात्मक इतिहास, अभिलेखक सत्ता-सापेक्षता, सूक्ष्म-साक्ष्य आ बहुस्तरीय क्षेत्रीयतासँ पोथीक साम्य आ भिन्नता देखाओल गेल अछि। नव्य न्यायपरम्पराक प्रमाण, पक्ष, साध्य, हेतु, व्याप्ति, उपाधि, अवच्छेदक, सम्बन्ध आ अभाव-सिद्धान्तक सहायतासँ पोथीक निष्कर्ष-निर्माणक तार्किक अनुशासन परखल गेल अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति अन्तर्गत समान समय वा समान भूभागमे चलैत अनेक असमान ऐतिहासिक रेखाकेँ एकरूप नहि करबाक, स्रोतसभक असमान घनत्व स्वीकार करबाक, आ साहित्यिक स्मृति, राजकीय संरचना, भाषा, जाति, नदी, भूमि, कला, सीमा आ नागरिकताक इतिहासकेँ परस्पर सम्बद्ध मुदा स्वतन्त्र गतिसूत्रक रूपमे पढ़बाक प्रविधिक मूल्यांकन कएल गेल अछि।

अध्याय-दर-अध्याय परीक्षणसँ स्पष्ट होइत अछि जे पोथीक मुख्य शक्ति “एकता” सिद्ध करब नहि, बल्कि सम्बन्ध सिद्ध करब अछि। मिथिला, वज्जि आ अंगकेँ एक सनातन राज्य वा एक अपरिवर्तित जातीय भूभाग मानबाक बदला, पोथी स्थल, क्षेत्र, राज्य, नदी-घाटी, सीमा-प्रदेश आ पार-क्षेत्रीय जालक बदलैत पैमानासभमे इतिहास देखैत अछि। विशेषत: दुई विद्यापतिक भेद, पंजी-आधारित श्रौतिय गठनक कालसीमा, वज्जिक राजनीतिक संरचना, अंग-चम्पाक बहुस्रोतीय पुनर्निर्माण, लिच्छवि नेपालक निरन्तरताक सीमित दावा, तिरभुक्तिक प्रशासनिक इतिहास, कर्णाट-सिमरौनगढ़, ओइनीवार-सुल्तानी अन्त:क्रिया, औपनिवेशिक भू-राजस्व, कोसी जोखिम, मैथिली-अंगिका मान्यता, मिथिला चित्रकला, मधेशी नागरिकता आ भारत-नेपाल सीमा-प्रदेशक विश्लेषण एहि पद्धतिक अलग-अलग परीक्षा-क्षेत्र बनैत अछि। निष्कर्षत: ई

कृति क्षेत्रीय इतिहासक लेल एक स्रोत-नियन्त्रित, संशोध्य, बहुपैमानी आ सम्बन्धमूलक प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि; एकर सर्वाधिक महत्त्व एहि बातमे अछि जे स्मृति आ इतिहास, नाम आ भूभाग, पाठ आ घटना, राज्य-दावी आ सामाजिक व्यवहार, तथा सांस्कृतिक निरन्तरता आ संस्थागत निरन्तरताकेँ एक-दोसरा सँ पृथक राखि फेर सम्बन्धित करैत अछि।

बीज-शब्द : मिथिला; वज्जि; अंग; विदेह; तिरभुक्ति; तिरहुत; इतिहासलेखन; स्रोत-नियन्त्रण; नव्य न्याय; समानान्तर इतिहास; सीमा-प्रदेश; कोसी; मैथिली; अंगिका; मधेश।

विषय-विन्यास

१. अध्ययनक उद्देश्य, प्रश्न आ पाठ-सीमा

२. पोथीक स्थापत्य : पाँच खण्ड, अट्ठाइस अध्याय आ सहायक उपकरण

३. स्रोत-नियन्त्रण : पोथीक मूल इतिहासलेखन प्रतिज्ञा

४. भारतीय ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे समीक्षा

५. पाश्चात्य इतिहासलेखनक आलोकमे समीक्षा

६. नव्य न्यायीय प्रमाण-विवेकक आलोकमे समीक्षा

७. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति : संरचना, शक्ति आ सीमा

८–३५. अट्ठाइस अध्यायक क्रमिक समीक्षात्मक परीक्षण

३६. समेकित कालक्रम, शब्दावली, स्रोत-पंजी आ अनुक्रमणिका

३७. मानचित्र, चित्र आ आरेख : दृश्य-साक्ष्यक अनुशासन

३८. चार पद्धतिक तुलनात्मक सारणी

३९. कृतिक मुख्य उपलब्धि

४०. आलोचनात्मक सीमा आ आगाँक शोध-दिशा

४१. समाहार-निष्कर्ष

ग्रन्थसूची

१. अध्ययनक उद्देश्य, प्रश्न आ पाठ-सीमा

एहि अध्ययनक पहिल उद्देश्य पोथीक समस्त रचनात्मक इकाइकेँ एक संयुक्त समीक्षामे आनब अछि, जाहिसँ कोनो अध्याय अलग-थलग नहि रहि जाए। पाँचो खण्डक क्रम प्रागइतिहास, प्राचीन, मध्यकालीन, आधुनिक आ समकालीन कालक रूपमे अछि; मुदा समीक्षा ई मानि कऽ चलैत अछि जे पोथी स्वयं कालखंडसभकेँ कठोर दीवार नहि मानैत, बल्कि अलग-अलग संस्थाक परिवर्तनक अलग गति स्वीकार करैत अछि। अतः प्रश्न ई नहि जे “मिथिला कखन शुरू भेल”, बल्कि ई जे कोन नाम, कोन स्रोत, कोन भूभाग आ कोन संस्था कोन कालमे प्रमाणित अछि।

दोसर उद्देश्य पोथीक तथ्य-सामग्रीसँ बेसी ओकर दावा-निर्माणक ढाँचा परखब अछि। पुरातत्त्व कतेक कहि सकैत अछि? पाठक कथा केतबा धरि घटना-इतिहास बनि सकैत अछि? अभिलेखक तिथि ओकर प्रशस्तिमूलक अतिशयोक्तिकेँ स्वतः सत्य बनबैत अछि कि नहि? जनगणनाक श्रेणी समाजक आत्म-पहिचानसँ केना भिन्न अछि? नदीक वर्तमान धारा प्राचीन मार्गक प्रमाण किएक नहि? एहि प्रश्नसभपर पोथी बारम्बार ‘प्रमाणक पहुँच’ आ ‘दावीक सीमा’क सम्बन्ध बनबैत अछि।

तेसर उद्देश्य आलोचनात्मक साहित्यिक मूल्यांकन अछि। ई इतिहासक पोथी होइतहुँ कथाविन्यास, पुनरुक्ति, आरेख-प्रयोग, अध्यायगत निष्कर्ष, परिभाषात्मक सावधानी, स्मृति-प्रयोग आ विमर्श-सम्बन्धी भाषा एक साहित्यिक संरचना बनबैत अछि। तैं समीक्षा इतिहासक सत्यापन आ गद्यक बौद्धिक विन्यास—दुनूकेँ एक संग पढ़ैत अछि।

२. पोथीक स्थापत्य : पाँच खण्ड, अट्ठाइस अध्याय आ सहायक उपकरण

पोथीक स्थापत्य स्वयं ओकर तर्कक हिस्सा अछि। पहिल खण्ड प्रागइतिहास आ आद्यइतिहासमे क्षेत्र, नदी, नाम, पुरातत्त्व, आरम्भिक खाद्य-उत्पादन, लौह-प्रयोग, पर्यावरण, गतिशीलता आ बसावट पर केन्द्रित अछि। दोसर खण्ड प्राचीन मिथिला-वज्जि-अंगमे विदेहक वैदिक-उपनिषदिक संसार, जनक-सीता परम्परा, वज्जि-लिच्छवि-वैशाली, अंग-चम्पा, बौद्ध-जैन परिवर्तन, साम्राज्य-अभिलेख-यात्री आ नेपालक लिच्छविक प्रश्नकेँ जोड़ैत अछि। तेसर खण्ड

तिरभुक्ति, कर्णाट, सिमरौनगढ, ओइनीवार, सुल्तानी अन्तःक्रिया, दुई विद्यापति आ मुगलकालीन तिरहुत-अंगक संस्थागत इतिहास पर चलैत अछि।

चारिम खण्डमे कम्पनी राज, स्थायी बन्दोबस्त, दरभंगा राज, कृषक समाज, बाजार, जाति, श्रम, नदी, विपत्ति, यातायात, औपनिवेशिक राज्य, शिक्षा, मुद्रण, भाषा-सुधार, राष्ट्रवाद आ १९५१ धरि नेपाल तराई-राणा शासनक अनुशीलन अछि। पाँचम खण्ड भूमि-सुधार, लोकतन्त्र, क्षेत्रीय शक्ति, भारत-नेपाल सीमा-प्रदेश, प्रव्रजन, मैथिली-अंगिका मान्यता, मिथिला चित्रकला, कोसी जोखिम, मधेश-प्रतिनिधित्व आ बहुल नागरिकतासँ समापन करैत अन्तिम अध्यायमे “झूठी एकताक बिना सम्बद्ध इतिहास”क सिद्धान्त प्रतिपादित करैत अछि।

अध्यायसभक बाद समेकित कालक्रम, शब्दावली-स्थाननाम सामंजस्य, सामान्य स्रोत-पंजी आ अनुक्रमणिका जोड़ल अछि। दृश्य-साक्ष्यक स्तर पर एक अभिमुखीकरण मानचित्र, पाँच चित्र आ पचपन विश्लेषणात्मक आरेख अछि। ई परिशिष्टात्मक सामग्री मात्र सुविधा नहि; कालक्रम दावीक तिथि-जाँच, शब्दावली नामक ऐतिहासिक परिवर्तन, स्रोत-पंजी प्रमाण-सरणी आ अनुक्रमणिका शोध-उपयोगिताकेँ संरचनात्मक रूप दैत अछि।

३. स्रोत-नियन्त्रण : पोथीक मूल इतिहासलेखन प्रतिज्ञा

पोथीक मूल प्रतिज्ञा साक्ष्य-विभाजन अछि। पुरातात्त्विक स्तर भौतिक क्रम बतबैत अछि, जाति वा भाषा स्वतः नहि; पाठ अपन रचना-काल, सम्प्रेषण आ विधागत उद्देश्यक साक्ष्य होइत अछि, कथित घटना सभक प्रत्यक्ष अभिलेख नहि; शिलालेख अपेक्षाकृत दृढ़ तिथि दैत अछि, मुदा सत्ता आ पुण्यक सार्वजनिक प्रस्तुति सेहो होइत अछि; औपनिवेशिक गजेटियर सूचनासँ भरल अछि, मुदा औपनिवेशिक वर्गीकरणक उपकरण सेहो अछि; आधुनिक जनगणना अपन समयक कानूनी-प्रशासनिक श्रेणी बतबैत अछि, सनातन पहचान नहि। एहि भेदकेँ पोथी अलग-अलग कालमे पुनः लागू करैत अछि।

एहि पद्धतिक मुख्य गुण ई अछि जे कथ्यक लम्बाइ वा लोकप्रियता सत्यताक विकल्प नहि बनैत। जखन कालक्रम विवादित अछि, पोथी विवाद स्वीकार करैत अछि; जखन स्थान-नामक पहचान सम्भावित अछि, तखन

सम्भाव्यता आ स्थापित तथ्यक भेद राखैत अछि; जखन परम्परा कोनो घटना कहैत अछि, तखन “परम्परा कहैत अछि” कहब स्वयं एक स्रोत-वाक्य बनैत अछि, घटना-स्थापन नहि। एहि सँ कृतिक विश्वसनीयता ओकर सर्वज्ञतामे नहि, बल्कि अपन अनिश्चितताकेँ चिह्नित करबाक क्षमतामे बनैत अछि।

ई अनुशासन खास कऽ क्षेत्रीय इतिहास लेल जरूरी अछि, जतय गौरव, धार्मिक भूगोल, वंशीय स्मृति, आधुनिक भाषा-आन्दोलन आ सीमा-राजनीति अतीतक अर्थ पर प्रभाव डालैत अछि। पोथी एहि जीवित स्मृतिसभकेँ अस्वीकार नहि करैत, मुदा हुनका अभिलेखीय तिथि आ प्रमाणक समकक्ष सेहो नहि बनबैत अछि।

४. भारतीय ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे समीक्षा

भारतीय ऐतिहासिक संवेदनामे इतिहास केवल राजवंश-क्रम नहि रहल; आख्यान, वंशावली, पुराण, तीर्थ-माहात्म्य, प्रशस्ति, दानपत्र, शास्त्र, काव्य आ लोकस्मृति अलग-अलग ढङगेँ अतीतकेँ संरक्षित करैत रहल अछि। पोथीक दृष्टि एहि बहुविध स्रोत-संसारसँ साम्य रखैत अछि, किएक तँ ई एक वर्गक स्रोतकेँ सर्वोच्च सार्वभौम प्रमाण नहि मानैत। उदाहरणार्थ जनक-सीता सम्बन्धी अध्याय महाकाव्यक सांस्कृतिक-ऐतिहासिक महत्त्व स्वीकार करैत अछि, मुदा महाकाव्य-कालकेँ प्रत्यक्ष राजवंशीय तिथि बना देबाक प्रवृत्तिसँ बचैत अछि।

वंशावली आ पंजीक उपयोगो एहि भारतीय पद्धतिक जटिल प्रश्न अछि। पोथी पंजीकेँ न तऽ पूर्णतः मिथक कहि त्यागैत अछि, न ओकर बादक सामाजिक श्रेणीकेँ प्राचीन कालपर आरोपित करैत अछि। श्रौतिय शब्दक शास्त्रीय प्राचीनता आ लगभग अठारहम-उन्नैसम शताब्दीक पंजी-आधारित वंशीय-सामाजिक संरचनाक बीच भेद एहि दृष्टिक उदाहरण अछि। भारतीय परम्पराक सम्मान एतय आलोचना-विहीन स्वीकृति नहि, बल्कि तिथि, पाठ-स्तर आ संस्थागत अर्थक पृथक्करण अछि।

राजकीय अभिलेख—ताम्रपत्र, शिलालेख, राजस्व दस्तावेज—भारतीय ऐतिहासिक पद्धतिमे घटनाक अपेक्षाकृत ठोस आधार देतात, मुदा प्रशस्ति, दान, वैधानिक आदेश आ वास्तविक सामाजिक पालनमे दूरी रहि सकैत अछि। पोथी एहि दूरीकेँ लगातार ध्यानमे रखैत अछि। एहि अर्थमे ई भारतीय स्रोत-

परम्पराकेँ आधुनिक आलोचनात्मक उपकरणसँ पुनर्पाठ करैत अछि, न कि भारतीय सामग्रीकेँ केवल बाह्य सिद्धान्तक उदाहरण बनबैत अछि।

५. पाश्चात्य इतिहासलेखनक आलोकमे समीक्षा

पाश्चात्य आलोचनात्मक इतिहासलेखनक महत्त्वपूर्ण आग्रह अछि जे इतिहासकार पहिने ई स्पष्ट करए—ओ जे कहि रहल अछि, से कोना जानैत अछि। पोथीक अध्यायगत संरचना एहि आग्रहक निकट अछि। लगभग सभ अध्यायमे स्रोतक स्वरूप, तिथि, उपयोगिता, सीमा, असहमति आ निष्कर्षक स्तरक चर्चा भेटैत अछि। ई दस्तावेज-पूजाक पद्धति नहि; स्रोत स्वयं सत्ता, वर्गीकरण, स्मृति आ संस्थागत उद्देश्यसँ बनैत अछि।

तुलनात्मक इतिहासक दृष्टिसँ पोथी निकटवर्ती किन्तु असमान क्षेत्रसभक तुलना करैत अछि—उत्तर बिहार आ नेपाल तराई, वज्जि आ विदेह, तिरभुक्ति आ तिरहुत, मैथिली आ अंगिका, औपनिवेशिक भूमि-संरचना आ नेपालक भूमि-व्यवस्था। तुलना एतय समानता सिद्ध करबाक लेल नहि, भिन्नता अधिक स्पष्ट करबाक लेल अछि। “सम्बद्ध इतिहास”क अपन रूपमे पोथी व्यापार, तीर्थ, पाण्डुलिपि, विवाह, प्रव्रजन, नदी, भाषा, कला आ राज्य-सीमासभक आर-पार चलैत सम्बन्धकेँ खोजैत अछि, मुदा सम्बन्धकेँ राजनीतिक एकताक पर्याय नहि मानैत।

अभिलेखक सत्ता-सापेक्ष पढ़ाइमे सेहो कृति आधुनिक इतिहासलेखनसँ संवाद करैत अछि। औपनिवेशिक गजेटियर, जनगणना, नक्शा, राजस्व अभिलेख अथवा नागरिकता कानून समाजक “तटस्थ दर्पण” नहि; ई श्रेणी बनबैत, प्रशासनिक प्रयोजन निर्धारित करैत आ किछु आवाज प्रमुख-किछु गौण करैत अछि। कृतिक सममित आलोचना—राजकीय दस्तावेज आ लोकपरम्परा दुनूकेँ प्रश्न पूछब—एहि स्थानपर विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

६. नव्य न्यायीय प्रमाण-विवेकक आलोकमे समीक्षा

नव्य न्यायीय दृष्टिसँ एहि पोथीक विश्लेषण करैत काल “दाबी”केँ साध्य, विशिष्ट ऐतिहासिक प्रसंगकेँ पक्ष, स्रोत-साक्ष्यकेँ हेतु, आ स्रोत एवं निष्कर्षक नियमित सम्बन्धकेँ व्याप्तिक तुल्य बुझल जा सकैत अछि। जँ कोनो शिलालेख निश्चित तिथि पर कोनो राजा वा प्रशासनिक पदक उल्लेख करैत

अछि, तँ तिथि आ उल्लेखक सम्बन्ध अपेक्षाकृत दृढ़ हेतु होइत अछि; मुदा ओहि शिलालेखसँ सम्पूर्ण भूभागपर समान सामाजिक व्यवहार सिद्ध करब व्याप्ति-विस्तारक भूल होएत। पोथीक स्रोत-नियन्त्रण प्रायः एही अति-व्याप्तिसँ बचैत अछि।

“उपाधि”क अवधारणा पोथीक अनेक चेतावनीकेँ सूक्ष्म भाषा दैत अछि। उदाहरणार्थ नदीक वर्तमान धारा देखिकऽ प्राचीन सीमा सिद्ध करब तखन विफल होइत अछि जखन नदी-स्थानान्तरण, पुरान धारा, नक्शाक तिथि वा सर्वेक्षण-त्रुटि उपाधि बनि जाए। एक स्थाननामक समानता राजनीतिक निरन्तरता सिद्ध नहि करैत, किएक तँ पुनर्नामकरण, स्मृति, तीर्थ-परम्परा वा प्रशासनिक पुनरुपयोग सम्भावित उपाधि अछि। एही प्रकारक बाधक शर्तसभकेँ पोथी अध्याय-दर-अध्याय उजागर करैत अछि।

अवच्छेदक आ सम्बन्ध-विवेचनक दृष्टिसँ कृतिक “पैमाना” सिद्धान्त उल्लेखनीय अछि। स्थल, ऐतिहासिक क्षेत्र, राज्य, नदी-घाटी, सीमा-प्रदेश आ पार-क्षेत्रीय जाल अलग अवच्छेदित क्षेत्र अछि। एक स्तरक सत्यकेँ दोसर स्तरपर अविवेचित रूपेँ लागू नहि कएल जा सकैत। “अभाव”क सन्दर्भमे सेहो पोथी मौन अभिलेखकेँ सरल निषेध प्रमाण नहि मानैत: कोनो क्षेत्रमे उत्खनित स्थल कम अछि तँ ई आवश्यक नहि जे प्राचीन बसावट कम छल; अभिलेखीय घनत्व स्वयं संरक्षण, सर्वेक्षण आ संस्थागत इतिहासक फल हो सकैत अछि। नव्य न्यायीय दृष्टिसँ ई ‘अनुपलब्धि’क सावधान उपयोगक समतुल्य अछि।

७. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति : संरचना, शक्ति आ सीमा

विदेह समानान्तर पद्धतिक केन्द्रीय तत्त्व ई अछि जे एकहि क्षेत्रमे अनेक ऐतिहासिक रेखा एक संग चलि सकैत अछि, मुदा ओ सभ एकहि संस्थागत वंशावली नहि बनैत। राजनीतिक सत्ता बदलि सकैत अछि, भाषा-जाल टिकि सकैत अछि; राजस्व सीमा बदलि सकैत अछि, तीर्थ-मार्ग चलैत रहि सकैत अछि; साहित्यिक नाम दीर्घजीवी हो सकैत अछि, प्रशासनिक अर्थ बदलि सकैत अछि। पोथीक अन्तिम प्रतिपादन—सम्बन्ध बिना झूठी एकता—एहि पद्धतिक स्पष्ट रूप अछि।

एहि पद्धतिक सर्वाधिक चर्चनीय प्रयोग दुई विद्यापतिक भेदमे अछि। पोथी एक साझा नामकेँ एक साझा व्यक्तित्व सिद्ध करबाक पर्याप्त प्रमाण नहि

मानैत; पदावली-काव्यक पूर्वकालीन कवि आ ओइनीवार-कालीन संस्कृत-अवहट्ट विद्वान विद्यापति ठाकुरकेँ स्रोत-नियन्त्रित रूपेँ अलग ऐतिहासिक व्यक्तित्व मानबाक प्रतिज्ञा करैत अछि। एकरा पोथी मुख्यधाराक एक-व्यक्ति परम्परासँ अलग अपन आन्तरिक पाठ-विन्यासक आधारपर प्रस्तुत करैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ई साहसी परिकल्पना अछि, आ एकर शक्ति एहि बातमे अछि जे कृति असहमति लुकबैत नहि; अपन स्वीकृत पुनर्निर्माणकेँ स्पष्ट नाम दैत अछि।

समानान्तर पद्धति पंजी आ श्रौतिय इतिहासमे सेहो एक प्रकारक काल-अवच्छेदन लागू करैत अछि। शब्दक प्राचीन प्रयोग, कुल-वृत्तान्तक मध्यकालीन सामग्री, आ लगभग १८०० क आसपासक सामाजिक वर्गीकरणकेँ एकही सतत संस्था मानल नहि जाइत। एहि पृथक्करणक कारण साहित्यिक, वंशीय आ सामाजिक इतिहासक अन्तर्विरोध घटैत अछि। सीमा एतबे अछि जे जँ समानान्तर रेखासभक पृथक्करण बहुत कठोर भऽ जाए, तँ वास्तविक अन्तःक्रिया ओझल हो सकैत अछि; मुदा पोथीक “सम्बद्ध” पक्ष एहि जोखिमकेँ संतुलित करैत अछि।

8. अध्याय 1 : क्षेत्र, नदी, नाम आ पद्धति

पहिल अध्याय पूरा कृतिक पद्धतिगत संविधान अछि। मिथिला, वज्जि आ अंगकेँ एके प्रकारक भूगोल नहि मानल गेल अछि: मिथिला स्मृत राज्य, सांस्कृतिक-शास्त्रीय क्षेत्र आ आधुनिक भाषा-भूमि; वज्जि प्राचीन संघीय राजनीतिक क्षेत्र; अंग पूर्वी आरम्भिक-ऐतिहासिक जनपद। एही भेदसँ पुस्तक स्थायी सीमा-रेखा बनाबैक बदला नदी, मार्ग, संस्था, केन्द्र आ स्मृतिसभक सम्बन्धपर चलैत अछि।

अध्याय नदीकेँ पृष्ठभूमि नहि, अभिलेख आ ऐतिहासिक कर्ता दुनू मानैत अछि। बागमतीक धारा-परिवर्तन, हिमालयी पूर्वभूमिक अवसादन, पुरास्थलक दृश्यता, आधुनिक मानचित्रक सीमासभ—ई सभ उदाहरण देखबैत अछि जे भूगोल स्वयं काल-सापेक्ष अछि। स्थल, ऐतिहासिक क्षेत्र आ राज्य—तीन पैमाना; संगहि गलियारा आ सीमा-प्रदेश—एहि पुस्तकक आगेक विश्लेषणक आधार बनैत अछि।

आलोचनात्मक रूपेँ एहि अध्यायक विशेषता ई अछि जे पाठककेँ आरम्भेँ बताओल जाइत अछि: एक दृढ़ स्थल-पहिचान सम्पूर्ण राज्यक सीमा नहि खींचि सकैत, एक नामक निरन्तरता समान सीमा सिद्ध नहि करैत, आ आधुनिक राष्ट्रसीमा प्राचीन भूगोलपर आरोपित नहि होएत। ई आरम्भिक अनुशासन बादक विवादास्पद अध्यायसभ लेल प्रमाण-मर्यादा तय करैत अछि।

9. अध्याय 2 : पुरातत्त्व आ आरम्भिक खाद्य-उत्पादन

दोसर अध्याय चिरांदकेँ पूर्वी भारतक आरम्भिक कृषि-क्रमक महत्त्वपूर्ण स्थल मानैत अछि, मुदा ओकरा एकमात्र “उत्पत्ति-बिन्दु” नहि बनबैत। वनस्पति-अवशेष, पशु-अस्थि, माछ-पकड़, आखेट, संग्रह, खेती, अस्थि-सींगक औजार, मृद्भाण्ड आ तिथिकेँ संयुक्त रूपेँ पढ़ल जाइत अछि। रेडियोकार्बन तिथिकेँ एक नाटकीय अंकक रूपमे नहि, स्तर-सन्दर्भ आ सम्भावित विक्षोभ सहित पढ़ल गेल अछि।

अध्यायक मूल तर्क ई अछि जे आरम्भिक खाद्य-उत्पादनसँ भाषा, जातीयता वा बादक मिथिला-वज्जि-अंग पहिचान सिद्ध नहि होइत। “नवपाषाण” तकनीकी-सांस्कृतिक वर्गीकरण अछि, समुदायक आत्मनाम नहि। सामग्रीक सह-अस्तित्व मिश्रित जीविकाकेँ पिछड़ापन नहि, नदीय पर्यावरणमे लचीलापनक रणनीति बनि सकैत अछि।

नव्य न्यायीय कसौटीपर ई अध्याय हेतु-साध्य सम्बन्धक मर्यादा नीक राखैत अछि: धानक दाना खेतीक संकेत दैत अछि, मुदा खेतक स्वामित्व नहि; अस्थि-औजार दक्षता बतबैत अछि, मुदा वंशानुगत शिल्प-जाति नहि। एही सावधानीसँ पुरातत्त्व सामाजिक कल्पना बनबाक बदला प्रमाणित सामग्रीक इतिहास रहैत अछि।

10. अध्याय 3 : उत्तर-प्रागैतिहासिक आ आरम्भिक लौह-प्रयोग क्षितिज

तेसर अध्याय लौह-प्रयोगकेँ सभ्यताक एकल “क्रान्ति”क रूपमे नहि, अनेक तकनीकी आ सामाजिक प्रक्रियाक हिस्सा मानैत अछि। लौह-वस्तु भेटब, धातु गलाबैक साक्ष्य, गढ़बैक साक्ष्य, उपयोगक फैलाव, बसावट-वृद्धि आ नगरीकरण अलग-अलग प्रश्न बनैत अछि। मृद्भाण्ड-नाम, काल-नाम आ जनसमूहक पहिचानकेँ एक-दोसरा सँ अलग राखल गेल अछि।

अध्याय विशेष रूपेँ चेतबैत अछि जे अन्य क्षेत्रक आरम्भिक लौह-तिथि मिथिला वा अंगक तिथि स्वतः नहि बनि सकैत। स्थानीय स्तरक्रम, पदार्थ-सन्दर्भ आ तिथि-साक्ष्य जरूरी अछि। सिक्का-पूर्व विनिमय, कृषि-विस्तार, बसावट-घनत्व आ राजनीतिक केन्द्रीकरणक प्रक्रिया अलग गति राखि सकैत अछि।

ई अध्याय पुस्तकक व्यापक “असमकालिक परिवर्तन” सिद्धान्तकेँ प्रागैतिहासिक धरातल दैत अछि। सभ परिवर्तन एक घड़ीपर नहि होइत; तकनीकी नवाचार, जनसंख्या, व्यापार, लेखन आ राज्य-संरचना अनेक घड़ीपर चलैत अछि।

11. अध्याय 4 : पर्यावरण, गतिशीलता आ बसावट

चारिम अध्याय हिमालयी पूर्वभूमि, तराई, जलोढ़ मैदान, मेगाफैन, अन्तःफैन क्षेत्र, आ नदी-स्थानान्तरणकेँ बसावट इतिहाससँ जोड़ैत अछि। कोसीक कथित पश्चिमगमन जेकाँ लोकप्रिय सरल कथाकेँ बहु-चैनलीय आ अवल्शन प्रक्रियासँ जाँचल गेल अछि; बागमतीक उदाहरण देखबैत अछि जे नदीगतिशीलताक एकाधिक रूप होइत अछि।

अध्याय पर्यावरणीय नियतिवादसँ बाँचैत अछि। नदी, आर्द्रभूमि, बाढ़ आ अवसादन मनुष्यक विकल्पक क्षेत्र बदलैत अछि, मुदा राजनीतिक वा सांस्कृतिक परिणाम स्वतः निर्धारित नहि करैत। पुरास्थलक “रिक्त” क्षेत्रकेँ निर्जनता मानबो असुरक्षित अछि, किएक तँ संरक्षण, क्षरण, सर्वेक्षण आ आधुनिक पहुँच ज्ञात स्थल-सूचीकेँ प्रभावित करैत अछि।

एहि अध्यायक साहित्यिक शक्ति भू-दृश्यकेँ गतिशील पात्र बनाबमे अछि; तथापि भाषा संयमित अछि—“नदी सभ कुछ करैत अछि” सन व्यक्तिकरणक बदला प्रक्रियाक तिथि, पैमाना आ प्रभाव स्पष्ट कएल गेल अछि।

12. अध्याय 5 : वैदिक-उपनिषदिक पाठ-संसारमे विदेह

पाँचम अध्याय शतपथ ब्राह्मणक विदेघ माथव आख्यान, सदानीरा, कोसल-विदेह सम्बन्ध आ बृहदारण्यक उपनिषदक जनक-याज्ञवल्क्य संवादकेँ पाठ-इतिहासक रूपमे पढ़ैत अछि। कथा “पूर्व दिशाक विजयक प्रत्यक्ष वृत्तान्त” नहि, बल्कि अनुष्ठान, भूगोल, शक्ति आ स्मृतिक पाठकीय निर्माण अछि।

जनकक दरबार ज्ञान-प्रतिष्ठा, दान, वाद-विवाद आ राजकीय संरक्षणक मंच बनैत अछि। गार्गी आ मैत्रेयी जेकाँ स्त्री-स्वर दार्शनिक दृश्यता देत अछि, मुदा ओकर प्रतिनिधित्वक सामाजिक सीमा मानल गेल अछि। पाठक संहिताक रचना, परत, सम्पादन आ सम्प्रेषणक काल-अन्तर एहि अध्यायमे निरन्तर स्मरण कराओल जाइत अछि।

अध्याय भारतीय बौद्धिक इतिहासक गरिमा बढ़बैत अछि बिना कथासभकेँ तत्समयक अक्षरशः राजकीय अभिलेख बनबैत। ई पाठकेँ घटना-प्रमाणसँ वंचित नहि करैत; ओकर प्रमाण-विषय बदलैत अछि—राजकीय-दार्शनिक कल्पना, अनुष्ठानिक सत्ता, पूर्वीय भूगोलक अवधारणा आ विदेहक नाम-स्मृति।

13. अध्याय 6 : जनक, सीता आ परम्परा-पाठक अनुशासन

छठम अध्याय महाकाव्य, जीवित पवित्र भूगोल आ आधुनिक स्मृतिक चार परत अलग करैत अछि। जनकपुरक ऐतिहासिक पवित्र केन्द्रक रूप, रामायणक पाठ-परम्परा, अनेक रामायण, सीताक कृषिसम्बन्धी प्रतीक, वैदेही-मैथिली-जानकी जेकाँ उपाधि—ई सभ सांस्कृतिक इतिहासक प्रामाणिक विषय अछि, मुदा एहि सँ महाकाव्यक सभ घटना पुरातात्त्विक रूपेँ सिद्ध नहि होइत।

उपनिषदिक जनक आ रामायणक जनककेँ स्वतः एक व्यक्ति मानबाक जोखिम स्पष्ट कएल गेल अछि। एहि भेदक महत्त्व केवल जीवनी-संशय नहि; ई अलग पाठकाल, अलग साहित्यिक उद्देश्य आ अलग स्मृति-परम्पराक रक्षा करैत अछि। सीताक कथा पर लैंगिक नैतिक विमर्श सेहो समाविष्ट अछि, जाहिसँ पवित्र आख्यान सामाजिक विचारक दस्तावेज बनैत अछि।

आलोचनात्मक रूपेँ अध्याय परम्पराक ऐतिहासिक महत्त्वकेँ कम नहि करैत, बल्कि ओकर सही विषय निर्धारित करैत अछि। “जीवित स्मृति सत्य अछि”क अर्थ एतय स्मृतिक अस्तित्व आ प्रभाव सत्य अछि; स्मृतिमे वर्णित प्राचीन घटना स्वतः सत्य नहि।

14. अध्याय 7 : वज्जि, लिच्छवि आ वैशाली

सातम अध्याय वज्जिक संघीय राजनीतिक क्षेत्र, लिच्छवि, वैशाली, गण-संघ, सभा, प्रक्रिया, ज्येष्ठता, स्त्री, पवित्र स्थल आ सुरक्षा सम्बन्धी पाठसाक्ष्यकेँ बहुस्तरीय रूपेँ पढ़ैत अछि। “विश्वक पहिल लोकतन्त्र” सन

आधुनिक नारा ऐतिहासिक विश्लेषणक बदला प्रमाणक कसौटीपर राखल गेल अछि। गण-संघकेँ आधुनिक सार्वभौम जनतन्त्रक समान मानल नहि जाइत।

बौद्ध पाठमे वज्जिक “अवनतिक सात शर्त”क उपयोग संस्थागत आदर्शक साक्ष्य रूपमे अछि, प्रत्यक्ष संविधान-पत्र रूपमे नहि। वैशाली/बसाढ़क पुरातत्त्व, राजकीय स्मृति आ राजा विशालक गढ़ सम्बन्धी लोकप्रिय संवैधानिक कथा अलग-अलग प्रमाण श्रेणी बनैत अछि।

अध्याय राजनीतिक इतिहासमे पदावली-अनुवादक खतरा नीक देखबैत अछि: गण, संघ, सभा, कुलीनता, राजतन्त्र आ गणतन्त्र आधुनिक शब्दकोशमे सीधे फिट नहि होइत। तैं संस्थागत क्रिया, सहभागिता आ बहिष्कारक प्रश्न पदनामसँ अधिक महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।

15. अध्याय 8 : अंग, चम्पा आ मगध क्षितिज

आठम अध्याय अंगकेँ महाजनपद सूची, ब्राह्मणिक-महाकाव्यीय स्मृति, बौद्ध-जैन पाठ, चम्पाक पुरातत्त्व, नदीय व्यापार आ मगधक विस्तारक सन्दर्भमे राखैत अछि। कर्ण-संबद्ध महाकाव्य परम्पराकेँ सांस्कृतिक स्मृति मानल गेल अछि, प्रत्यक्ष राजसूची नहि।

चम्पा नगरक पुनर्निर्माण चार प्रमाण-धारासँ होइत अछि: पाठीय भूगोल, पुरातत्त्व, धार्मिक यात्राएँ, आ आर्थिक संकेत। व्यापारी आख्यानसभसँ वाणिज्यक महत्त्व अनुमानित कएल जा सकैत अछि, मुदा बिना अतिरिक्त साक्ष्य समुद्री बन्दरगाहक अतिरंजित चित्र बनबैत नहि।

अध्याय अंगकेँ मिथिलाक परिशिष्ट बनबैत नहि; ओकर अपन पूर्वी राजनीतिक इतिहास राखैत अछि। यही स्वतंत्रता बादमे “सम्बद्ध किन्तु असमान” क्षेत्रीय संश्लेषणक आधार बनैत अछि।

16. अध्याय 9 : बौद्ध, जैन आ पूर्वी गंगा क्षेत्रक धार्मिक परिवर्तन

नवम अध्याय श्रमण परम्परासभकेँ एक साझा सामाजिक-धार्मिक क्षेत्रमे रखैतहुँ बौद्ध आ जैन परम्पराक भिन्नता बचबैत अछि। कर्म, पुनर्जन्म, मुक्ति, संन्यास, गृहस्थ समर्थक, राजकीय संरक्षण, संघ-संस्था, कठोर तपस्या आ नैतिक अनुशासनक प्रश्न अलग पाठ-परम्परासँ विकसित होइत अछि।

नगर, बाजार आ श्रमण धर्मक सम्बन्धकेँ सरल “व्यापारी वर्गक धर्म” सूत्रमे सीमित नहि कएल गेल अछि। गृहपति, दान, शहरी केन्द्र, राजाश्रय आ संन्यासी संस्था सभक भूमिका अछि, मुदा सामाजिक कारण बहुविध अछि। जाति-वर्ण सम्बन्धी समानता वा विद्रोहक दाबी सेहो पाठक यथार्थ आ संस्थागत व्यवहारक भेदसँ जाँचल गेल अछि।

धार्मिक इतिहास एतय सिद्धान्तक सूची नहि, संस्थागत पारिस्थितिकी अछि। वैचारिक विकल्प, संरक्षक, मार्ग, नगरीय संसाधन, मठ-संघ आ स्मृतिक परस्पर सम्बन्ध अध्यायकेँ क्षेत्रीय सामाजिक इतिहाससँ जोड़ैत अछि।

17. अध्याय 10 : साम्राज्य, अभिलेख आ यात्री-पथ

दसम अध्याय मौर्य उपस्थिति, अशोक स्तम्भ, अभिलेख, राजकीय धम्म, प्रशासनिक अधिकारी, दण्ड, कल्याण, मार्ग आ बादक चीनी यात्रीसभक विवरणक उपयोग करैत अछि। मुख्य पद्धतिगत आग्रह: स्मारक, अभिलेख आ मार्ग तीन अलग दाबी अछि। कोल्हुआक स्तम्भ उपस्थित होएब आ ओहि स्थानपर राजाज्ञा उत्कीर्ण होएब अलग बात अछि।

लौरिया-अरेराज, लौरिया-नन्दनगढ़, रामपुरवा आ वैशालीक सामग्री साम्राज्यक “एकसमान नियन्त्रण”क बदला असमान भौतिक उपस्थिति देखबैत अछि। अशोकक धम्मकेँ बौद्ध धर्मक सरल पर्याय नहि मानल गेल अछि।

फाहियान आ ह्वेनसांग जेकाँ यात्रीसभक वर्णन ऐतिहासिक भूगोल लेल महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा हुनकर यात्रा-काल, धार्मिक उद्देश्य, दूरी-बोध आ स्मारक-पहिचानक सीमा सहित। अध्याय यात्रा-वृत्तान्तकेँ नक्शाक प्रत्यक्ष निर्देशिका बनबाक बदला ऐतिहासिक दृष्टिक साक्ष्य बनबैत अछि।

18. अध्याय 11 : लिच्छवि नेपाल आ निरन्तरताक समस्या

एगारहम अध्याय नेपाल उपत्यकाक लिच्छवि अभिलेखीय राजसत्ताकेँ वैशालीक प्राचीन लिच्छविसँ जोड़बाक सम्भावना आ सीमा दुनू पर विचार करैत अछि। चाँगुनारायण अभिलेख, संवत्-समस्या, वंशावली, संस्कृत सार्वजनिक भाषा, राजकीय अभियान आ धार्मिक संरक्षण ठोस विश्लेषणक आधार अछि।

साझा “लिच्छवि” नाम ऐतिहासिक सम्बन्धक प्रश्न जरूर उठबैत अछि, मुदा सीधा वंशानुगत पलायन-सिद्धान्त सिद्ध नहि करैत। गुप्तकालीन लिच्छवि प्रतिष्ठा बीचक कालगत क्षितिजक रूपमे महत्त्वपूर्ण अछि। ई अध्याय नाम-साम्यसँ वंश-निरन्तरता सिद्ध करबाक दोषसँ बाँचैत अछि।

अध्यायक महत्त्व भारत-नेपाल इतिहासक आरम्भिक सम्पर्ककेँ आधुनिक सीमा सँ मुक्त करबमे अछि; संगहि ई राष्ट्रीय इतिहाससभक कृत्रिम अलगावक बदला अभिलेखीय सम्बन्ध खोजैत अछि।

19. अध्याय 12 : तिरभुक्ति आ आरम्भिक-मध्यकालीन क्षेत्रीय व्यवस्था

बारहम अध्याय विदेहक सांस्कृतिक-पाठीय नामसँ तिरभुक्तिक प्रशासनिक नामक परिवर्तनक प्रश्न उठबैत अछि। बसाढ़क मुहर, प्रान्तीय अधिकारी, युवराज-संस्था, भुक्ति-विषय-अधिकरण पदावली, कटराक ताम्रपत्र, भूमि-दान आ कृषि-विस्तार आरम्भिक-मध्यकालीन राज्यक अभिलेखीय संरचना बनैत अछि।

मुहरसभ “कागजी शासनक पुरातत्त्व”क रूपमे पढ़ल गेल अछि—ई अत्यन्त प्रभावी व्याख्यात्मक सूत्र अछि। प्रशासनिक पदावलीकेँ एक सार्वकालिक कठोर पिरामिड मानबाक बदला प्रत्येक अभिलेखक सन्दर्भसँ अर्थ निकालल गेल अछि।

तिरभुक्ति, तिरहुत, मिथिला आ विदेहकेँ स्थायी पर्याय मानबाक बदला नामसभक अलग कालिक कार्य मानल गेल अछि। एहि नाम-समीक्षासँ क्षेत्रीय इतिहासक अनावश्यक निरन्तरता घटैत अछि।

20. अध्याय 13 : कर्णाट आ सिमरौनगढ़

तेरहम अध्याय कर्णाट राजसत्ता आ सिमरौनगढ़केँ आधुनिक भारत-नेपाल सीमा काटैत क्षेत्रीय राज्यक रूपमे देखैत अछि। १०९७ क अभिलेखीय क्षितिज, १२३६ क धर्मस्वामिनक यात्रा-वृत्तान्त, दुर्ग-प्रणाली, जल-व्यवस्था, दरबार, विद्वत्ता, राजस्व, पंजी-परम्परा आ नेपाल उपत्यकासँ सम्बन्ध—ई सभ स्वतंत्र साक्ष्यधारासँ जोड़ल गेल अछि।

हरिसिंहदेव आ तुगलक आक्रमणक क्षितिज राजनीतिक टूटनक बिन्दु अछि, मुदा कर्णाट पतनसँ सामाजिक-सांस्कृतिक सभ संरचना तत्क्षण समाप्त नहि

मानल गेल अछि। सिमरौनगढ़क वर्तमान अवशेष आधुनिक दृश्य-साक्ष्य मात्र अछि; ई मध्यकालीन दृश्यकेँ प्रत्यक्ष पुनर्निर्मित नहि करैत।

अध्याय सीमा-पार क्षेत्रीय राज्यक अध्ययन लेल उत्कृष्ट उदाहरण अछि: आधुनिक राष्ट्रसीमा अनुसन्धानक सुविधा अछि, मध्यकालीन राजनीतिक वास्तविकता नहि।

21. अध्याय 14 : ओइनीवार शासन, सुल्तानी शक्ति आ राजनीतिक संक्रमण

चौदहम अध्याय १३२४-२५ पश्चात् पुनर्गठित क्षेत्रीय सत्ता, ओइनीवार प्रारम्भ, ओइनी-सुगौना दरबारी भूगोल, गणेश्वरक मृत्यु, कीर्तिलता, कीर्तिसिंह-जौनपुर सम्बन्ध, शिवसिंहक स्वायत्तता, रानीसभक उत्तराधिकार, दिल्ली-जौनपुर-बंगालक बहुकेन्द्रीय शक्ति आ सिक्का-अभिलेखक सामग्रीकेँ जोड़ैत अछि।

“सार्वभौम” बनाम “अधीन”क द्वैधक बदला सत्ता-ढालक विचार उपयोगी अछि। सिक्का राजनीतिक दावा करैत अछि, मुदा सिक्का भेटला मात्रसँ सम्पूर्ण भूभागपर नियन्त्रण सिद्ध नहि होइत। कन्दाहा १४५३ आ भागीरथपुर १५१३ जेकाँ अभिलेख कालक्रमक मजबूत खूंटी बनैत अछि।

अध्याय साहित्यिक ग्रन्थ कीर्तिलताकेँ घटना-रिपोर्ट जेकाँ नहि, राजनीतिक अनुभव, संरक्षकता आ स्मृतिक पाठ रूपमे पढ़ैत अछि; ई साहित्य आ इतिहासक सन्तुलित उपयोग अछि।

22. अध्याय 15 : दुई विद्यापति : मैथिली, संस्कृत विद्वत्ता आ विधि

पन्द्रहम अध्याय कृतिक सबसँ विशिष्ट आ विवाद-संवेदी प्रतिपादन प्रस्तुत करैत अछि: महाकवि विद्यापति नामक पूर्व-ज्योतिरीश्वर पदावली-कवि आ ओइनीवारकालीन संस्कृत-अवहट्ट विद्वान विद्यापति ठाकुर—दुई अलग ऐतिहासिक व्यक्तित्व। साझा नाम, बादक संकलन आ लोकस्मृति एक व्यक्ति सिद्ध करबाक पर्याप्त आधार नहि मानल गेल अछि।

पदावलीक स्वतन्त्र काव्य-संसार, प्रारम्भिक नाम-साक्ष्य, श्रीधरदासक क्षितिज, अभिनवगुप्त सम्बन्धी सीमित संकेत, ज्योतिरीश्वरक काल-नियन्त्रण, बिदापत नाचक प्रदर्शन-स्मृति, पाण्डुलिपि अस्थिरता आ बादक सम्पादकीय परम्परा एक

साथ परखी गेल अछि। मुख्यधाराक एक-व्यक्ति सिद्धान्तक उल्लेख लुकाओल नहि गेल; पोथी अपन स्वीकृत समानान्तर पुनर्निर्माण स्पष्ट करैत अछि।

एही अध्यायमे पंजी, श्रौतिय आ जाति-इतिहासक कालगत भेद सेहो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। शब्द, वंशावली आ बादक सामाजिक संस्था अलग स्तरपर रखला सँ साहित्यिक जीवनी आ सामाजिक इतिहास दुनूमे अनाकालिकता कम होइत अछि।

23. अध्याय 16 : मुगलकालीन तिरहुत, अंग आ आरम्भिक-आधुनिक संस्था

सोलहम अध्याय १५८० क मुगल प्रान्तीय पुनर्गठन, सूबा बिहार, सरकार तिरहुत, महाल, सरकार मुंगेर, भागलपुर-पूरनिया-कोसी सीमा, फौजदार, राजस्व आ स्थानीय मध्यस्थ संस्थाकेँ प्रशासनिक पैमाना अनुसार पढ़ैत अछि। आइने अकबरीक संख्याकेँ शाब्दिक सामाजिक जनगणना नहि, राजस्व-प्रशासनिक अभिलेख मानल गेल अछि।

प्रान्तीय सीमा “बन्द डिब्बा” नहि, अन्तःक्रियात्मक किनारा अछि। राजस्व बकाया, सैन्य प्रवर्तन, जमींदार, स्थानीय कुलीनता आ मुगल दावा बीच दूरी स्पष्ट कएल गेल अछि। ई राज्यक मानचित्रित सीमा आ वास्तविक प्रशासनिक पहुँचक भेद देखबैत अछि।

अध्याय मध्यकालसँ औपनिवेशिक कालक पुल बनैत अछि; एतय भूमि-राजस्व, कागजी शासन, स्थानीय अधिकार आ क्षेत्रीय शक्तिक बहुस्तरीयता बादक स्थायी बन्दोबस्त अध्याय लेल आधार तैयार करैत अछि।

24. अध्याय 17 : कम्पनी राज, स्थायी बन्दोबस्त आ दरभंगा राज

सतरहम अध्याय १७६५ क दीवानी, १७७० क अकाल, १७७२ क प्रत्यक्ष निरीक्षण, विविध राजस्व प्रयोग, १७८९ क दशकवार बन्दोबस्त, २२ मार्च १७९३ क स्थायी बन्दोबस्त, जमींदार-तालुकेदार-चौधरी, राजस्व बिक्री आ सम्पत्तिक अधिक हस्तान्तरणीय रूपक क्रमिक इतिहास प्रस्तुत करैत अछि।

“द्वैध शासन” आ “सनसेट कानून” जेकाँ संक्षिप्त पाठ्यपुस्तकीय सूत्रसभकेँ दस्तावेजीय कालक्रमसँ सूक्ष्म बनाओल गेल अछि। स्थायी बन्दोबस्त राजस्व स्थिर करैत अछि, मुदा ग्रामीण अधिकार, सामाजिक पदक्रम वा सम्पत्ति-संबंध एक झटकेमे सरल नहि होइत।

दरभंगा राजक प्रसंग पंजी, संपत्ति, वंश, राजकीय संरक्षण आ औपनिवेशिक वैधानिक ढाँचाकेँ जोड़ैत अछि। अध्यायक शक्ति ई जे औपनिवेशिक कानूनकेँ केवल ऊपरसँ थोपल नियम नहि, स्थानीय संस्था पुनर्गठनक प्रक्रिया बनबैत अछि।

25. अध्याय 18 : कृषक समाज, बाजार, जाति आ श्रम

अठारहम अध्याय “स्वयंपूर्ण गाँव”क स्थिर कल्पनासँ हटि बहुस्तरीय कृषक अधिकार, बाजार, ऋण, हिस्सेदारी खेती, किराया, उपकर, श्रम-गतिशीलता, जाति आ सामाजिक अवसरक जाल प्रस्तुत करैत अछि। बंगाल काश्तकारी अधिनियम १८८५ आ अधिकार अभिलेख समाजक वर्णन मात्र नहि, श्रेणी-निर्माणकारी हस्तक्षेप सेहो अछि।

जाति आर्थिक पहुँचकेँ प्रभावित करैत अछि, मुदा पेशा-निर्धारणक एकमात्र यांत्रिक कारण नहि बनाओल गेल अछि। श्रौतिय सम्बन्धी कालगत सुधार फेर दोहराओल गेल अछि, जाहिसँ प्राचीन शास्त्रीय पदकेँ औपनिवेशिक जाति-सूची पर आरोपित नहि कएल जाए।

अध्यायक “भूमि केवल भूमि नहि” वाला निष्कर्ष सार्थक अछि: भूमि कानून, प्रतिष्ठा, ऋण, उत्तराधिकार, बाजार, जाति, श्रम आ राज्यक साझा स्थल अछि। ई सामाजिक इतिहासकेँ राजस्व इतिहाससँ बाहर निकालि व्यापक जीवन-जगतसँ जोड़ैत अछि।

26. अध्याय 19 : नदी, विपत्ति, यातायात आ औपनिवेशिक राज्य

उन्नैसम अध्याय बाढ़-मैदानकेँ अभिलेखीय शासनक क्षेत्र बनबैत अछि। कोसी, बागमती, कमला, गंडक, गंगा, दियारा, जलोढ़-विलोढ़, तटबन्ध कानून, जमींदारक जल-उत्तरदायित्व, नील बागानक बाँध, सड़क-रेल आ जलनिकासी—ई सभ राज्य निर्माणक हिस्सा अछि।

सड़क आ रेलवे केवल यातायात सुविधा नहि; जलप्रवाह रोकि वा मोड़ि ओ स्वयं जलवैज्ञानिक संरचना बनि सकैत अछि। शिकायत अभिलेख, अभियान्त्रिकी रिपोर्ट आ बाढ़ वर्णनसभकेँ एक संग पढ़ल गेल अछि।

अध्याय विपत्तिक प्राकृतिककरणसँ बचैत अछि। बाढ़ प्राकृतिक प्रक्रिया अछि, मुदा क्षति भूमि-उपयोग, तटबन्ध, जलनिकासी, प्रशासनिक उत्तरदायित्व, परिवहन संरचना आ सामाजिक असमानतासँ निर्मित होइत अछि। एहि

दृष्टिसँ अध्याय समकालीन जोखिम-अध्याय २६ क ऐतिहासिक पूर्वपीठिका अछि।

27. अध्याय 20 : शिक्षा, मुद्रण, भाषा, सुधार आ राष्ट्रवाद

बीसम अध्याय परम्परागत टोल, पाठशाला, मकतब-मदरसा, अंग्रेजी शिक्षा, दरभंगा राजक संरक्षण, स्त्री-शिक्षा, जाति-वर्गीय पहुँच, मुद्रण, भाषिक सार्वजनिकता, साहित्यिक संस्था, सुधार आन्दोलन, राष्ट्रवाद आ पृथक मिथिला-विचारक बहुध्रुवीय इतिहास प्रस्तुत करैत अछि।

अध्याय “एक सार्वजनिक क्षेत्र”क बदला अनेक सार्वजनिकताक बात करैत अछि। संस्कृत शिक्षण, फारसी-अरबी परम्परा, अंग्रेजी शैक्षिक पद, मैथिली मुद्रण, हिन्दी-बंगला प्रभाव, राजकीय संरक्षण आ राष्ट्रवादी मंच अलग संस्थागत माध्यम बनैत अछि।

भाषा-आन्दोलनकेँ शुद्ध भाषिक प्रश्न नहि मानि शिक्षा, रोजगार, मुद्रण, विश्वविद्यालय, साहित्यिक प्रतिष्ठा आ क्षेत्रीय राजनीति सँ जोड़ल गेल अछि। एही बहु-संस्थागत दृष्टि बादक मैथिली-अंगिका मान्यता अध्यायमे परिपक्व रूप लैत अछि।

28. अध्याय 21 : नेपाल तराई, राणा शासन आ १९५१ धरि सीमा

एक्काइसम अध्याय तराईकेँ केवल भौगोलिक पट्टी नहि, पारिस्थितिक, प्रशासनिक, राजस्वीय आ सामाजिक श्रेणी रूपमे पढ़ैत अछि। सुगौली सन्धि, १८१६ क अतिरिक्त तराई पुनर्स्थापन, तिरहुत-सारण सम्बन्धी प्रावधान, सीमा आयोग, नदी-आधारित रेखा, १८६० क नया मुलुक पुनर्स्थापन—ई सभ आधुनिक सीमा बनबाक क्रमिक इतिहास अछि।

राणा शासन, भूमि अनुदान, वन, मलेरिया, बसावट, जनगणना, नागरिकता-पूर्व राज्य-समाज सम्बन्ध आ सीमा पार गतिशीलता जोड़ल गेल अछि। थारू-मलेरिया सम्बन्धी वैज्ञानिक शोधक उपयोगो सीमासहित कएल गेल अछि, जाहिसँ जैविक निष्कर्षकेँ सामाजिक पहचानक स्थिर व्याख्या नहि बनाओल जाए।

अध्याय सार्वभौमिकता आ सामाजिक निरन्तरताकेँ एक संग देखैत अछि: सीमा कानून वास्तविक भेद बनबैत अछि, मुदा विवाह, बाजार, कृषि, यात्रा आ भाषिक सम्बन्ध ओकर आर-पार चलैत रहैत अछि।

29. अध्याय 22 : भूमि-सुधार, लोकतन्त्र आ बदलैत क्षेत्रीय शक्ति

बाइसमा अध्याय स्वतंत्र भारतमे जमींदारी उन्मूलन, संवैधानिक भूमि-सुधार, दरभंगा राज आ कामेश्वर सिंह वाद, रैयत, सीलिंग कानून, अधिशेष भूमि, म्यूटेशन, भूदान, ग्रामदान, पंचायती संस्थासभ आ बदलैत स्थानीय शक्तिक विश्लेषण करैत अछि।

मुख्य भेद ई अछि जे “मध्यस्थ उन्मूलन” स्वत: “भूमि पुनर्वितरण” नहि। कानून, अभिलेख, मुकदमा, प्रशासनिक क्षमता, स्थानीय प्रभुत्व आ वास्तविक कब्जाक बीच अन्तर भूमि-सुधारक परिणाम तय करैत अछि।

नेपालक भूमि-सुधारसँ तुलना अध्यायकेँ सीमा-पार तुलनात्मक आयाम दैत अछि, मुदा दुनू राज्यक कानूनी इतिहासकेँ एक सूत्रमे समेटल नहि गेल। लोकतन्त्र भूमि-अधिकारक भाषा बदलैत अछि, परम्परागत शक्ति तुरन्त लोप नहि होइत।

30. अध्याय 23 : भारत-नेपाल सीमा-प्रदेश, प्रव्रजन आ विनिमय

तेइसम अध्याय “खुला सीमा”क सहज सूत्रकेँ कानूनी आ सामाजिक विश्लेषणमे बदलैत अछि। १९५० क सन्धिक अनुच्छेद, पूर्ववर्ती आवागमन, जोड़ीदार सीमावर्ती नगर, विवाह, विदेशी-जन्म आ विदेशी नागरिकताक भेद, दस्तावेजीकरण, लैंगिक नागरिकता, श्रम-प्रव्रजन आ सर्वेक्षणीय कठिनाइसभ मुख्य विषय अछि।

“रोटी-बेटी” जेकाँ लोकप्रिय पद सम्बन्धक सांस्कृतिक घनत्व व्यक्त करैत अछि, मुदा सांख्यिकीय वा कानूनी विश्लेषणक विकल्प नहि। विवाह-प्रव्रजन स्त्रीक दस्तावेज, उत्तराधिकार, नागरिकता आ निवासक प्रश्न बदलैत अछि। श्रमगतिशीलता व्यापक होइतहुँ मापन कठिन अछि, किएक तँ खुला आवागमन औपचारिक आव्रजन अभिलेख कम छोड़ैत अछि।

अध्याय सीमा-प्रदेशक एक परिपक्व परिभाषा दैत अछि: खुलापन राज्यहीनता नहि; कानूनी सीमा वास्तविक अछि, मुदा सामाजिक अवसंरचना ओकर आर-पार व्यवस्थित जीवन बनबैत अछि।

31. अध्याय 24 : मैथिली आ अंगिका : भाषा, साहित्य आ मान्यता

चौबीसम अध्याय भाषिक मान्यताकेँ एक घटना नहि, अनेक संस्थागत क्षेत्र—भाषावैज्ञानिक वर्गीकरण, स्व-पहिचान, विश्वविद्यालय, साहित्यिक अकादमी, राज्य अकादमी, संविधान, शिक्षा आ प्रशासन—मे विभाजित करैत अछि। ग्रियर्सनक सर्वेक्षणक “छिका-छिकी” वा भागलपुरी वर्गीकरण आ बादक अंगिका नामक स्व-पहिचान एके चीज नहि।

मैथिलीकेँ आन्तरिक विविधतासहित पढ़ल गेल अछि; दक्षिणी-पूर्वी बोलिक वर्गीकरण इतिहास स्वयं बदलैत अछि। ९२म संविधान संशोधन मैथिलीक राष्ट्रीय संवैधानिक मान्यताक सटीक बिन्दु अछि, मुदा एहि सँ शिक्षा, प्रशासन वा सभ संस्थागत क्षेत्रमे स्वतः समान कार्यान्वयन सिद्ध नहि होइत।

अंगिका आ मैथिलीकेँ एक सीढ़ीपर “ऊँच-नीच” नहि, अलग-अलग मान्यता-क्षेत्रमे तुलना करब अध्यायक उल्लेखनीय उपलब्धि अछि। भाषा इतिहास एतय भाषिक तथ्य, साहित्यिक परम्परा आ राजनीतिक मान्यताक त्रिभुज बनैत अछि।

32. अध्याय 25 : मिथिला चित्रकला, लैंगिकता आ सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था

पचीसम अध्याय घरेलू भित्ति-चित्र, अरिपन, कोहबर, विवाह-संस्कार, १९१९ क दस्तावेजी चित्र, १९३४ क भूकम्प पश्चात् दृश्य अभिलेख, १९३८-४० क छायांकन, १९४९ क प्रारम्भिक अंग्रेजी कैनन, १९६० दशकक कागज-आधारित बाजार रूपान्तरण, कलाकार स्त्रीसभ, संस्था, मध्यस्थ आ वैश्विक बाजारक क्रम जोड़ैत अछि।

“परम्परा सनातन अछि”क बदला अध्याय दस्तावेजी एंकर आ अनदस्तावेजी दीर्घ अभ्यासक भेद राखैत अछि। कोहबरक प्रतीकसभकेँ कठोर एकल कोडबुक बनबैत नहि; घर, जाति, कलाकार, समय आ बाजार अनुसार अर्थ बदलि सकैत अछि।

स्त्री सशक्तीकरणक कथा स्वीकार्य मुदा अपूर्ण अछि: आय, सार्वजनिक पहचान आ कलात्मक स्वायत्तता बढ़ि सकैत अछि, संगहि बाजार, मध्यस्थ, पारिवारिक श्रम, जातीय असमानता आ संस्थागत चयन नई असमानता बनबैत अछि। “सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था”क श्रृंखला एहि जटिलताकेँ नीक समेटैत अछि।

33. अध्याय 26 : कोसी, बाढ़, अवसंरचना आ पर्यावरणीय जोखिम

छब्बीसम अध्याय सप्तकोसी जलग्रहण, पर्वतीय ढाल, गंगीय मैदान, कोसी मेगाफैन, अवल्शन, ऐतिहासिक नक्शा, अवसाद, औपनिवेशिक बाढ़-अभिलेख, १९५४ क भारत-नेपाल कोसी सम्झौता, तटबन्ध, बैराज, २००८ क कुसहा भंग, पुनर्वास आ जोखिम-शासनक दीर्घ इतिहास दैत अछि।

अध्याय सरल “पश्चिम दिस सरकैत कोसी” आख्यान पर प्रश्न करैत अछि; मानचित्रित चैनल परिवर्तन अनेक प्रक्रिया आ मापनक फल अछि। २००८ सम्बन्धी ६० किलोमीटर आ १२० किलोमीटर जेकाँ अलग संख्याक कारण मापन-बिन्दु आ परिभाषा हो सकैत अछि—ई संख्यात्मक स्रोत-आलोचनाक अच्छा उदाहरण अछि।

तटबन्ध सुरक्षा जोखिम समाप्त नहि करैत, ओकर वितरण बदलैत अछि: भीतरक क्षेत्र, जलजमाव, निकासी, अवशिष्ट भंग-जोखिम आ संरक्षित क्षेत्र अलग अनुभव राखैत अछि। अध्यायक निष्कर्ष “बाढ़ नियन्त्रण”सँ “जोखिम-शासन” दिस बौद्धिक परिवर्तन प्रस्तुत करैत अछि।

34. अध्याय 27 : मधेश, प्रतिनिधित्व आ नेपालमे बहुल नागरिकता

सत्ताइसम अध्याय मधेशकेँ प्राचीन एकरूप जाति अथवा अपरिवर्तित भूभाग नहि, आधुनिक राजनीतिक श्रेणी मानैत अछि; तराई, मिथिला आ मधेश आंशिक रूपेँ आंशिक रूपेँ एक-दोसरा पर चढ़ैत अछि, पर्याय नहि। १९५२ नागरिकता कानून, पंचायती काल, भाषा नीति, १९९० लोकतन्त्र, २००६ आन्दोलन, २००७ मधेश आन्दोलन, २०१५ संविधान, संघीय पुनर्गठन आ प्रादेशिक भाषा-बहस कालक्रमिक एंकर अछि।

नागरिकता केवल प्रमाणपत्र नहि; कानूनी स्थिति, चुनावी आवाज, भाषा-पहुँच, संघीय शक्ति, सामाजिक न्याय आ संस्थागत निवारणक बहुस्तरीय

संरचना अछि। सीमा-पार सम्बन्ध राष्ट्रीय नागरिकताक भेद मिटबैत नहि। लैंगिक, दलित, वर्गीय आ भूमिसम्बन्धी असमानता “मधेशी” एकल श्रेणीक भीतर भिन्न अनुभव बनबैत अछि।

अध्याय पहचान-राजनीतिक वैध प्रश्नकेँ ऐतिहासिककरण करैत अछि। आधुनिक प्रतिनिधित्वक संघर्षकेँ प्राचीन वज्जि वा विदेहक सीधा उत्तराधिकारी बनाबैक प्रलोभनसँ बचि, आधुनिक कानून, राज्य-संरचना आ आन्दोलनक अपन कालिकता राखल गेल अछि।

35. अध्याय 28 : निष्कर्ष : झूठी एकताक बिना सम्बद्ध इतिहास

अट्ठाइसम अध्याय पूरा पोथीक सैद्धान्तिक समाहार अछि। मिथिला, वज्जि आ अंग न एक सतत राज्य, न एक स्थिर जातीयता, न एक भाषा-क्षेत्र, न एक प्रशासनिक इकाई; ताहिमेहुँ नदी, मार्ग, दरबार, पाण्डुलिपि, भूमि, बाजार, धर्म, कला, प्रव्रजन आ सीमा-प्रदेशक माध्यमसँ पुनः-पुनः सम्बन्ध बनैत अछि। अतः संश्लेषणक आरम्भ “पहिने एकता मानि” नहि, “पहिने सम्बन्ध खोजि” होइत अछि।

अध्याय क्षेत्रकेँ बहुभुजसँ पहिने सम्बन्ध मानैत अछि। पवित्र मार्ग, विवाह-जाल, विद्वत् परम्परा, बाजार, श्रम, भाषिक निरन्तरता आ नदी-घाटी बदलैत सीमासभक भीतर-बाहर क्षेत्रीयता बनबैत अछि। अलग-अलग स्रोतक असमानता दोष नहि, इतिहासक पदार्थ अछि।

अन्तिम दुई आरेख—स्रोतसँ दावी धरि प्रमाण-नियन्त्रण आ स्थलसँ पार-क्षेत्रीय जाल धरि पैमाना-परिवर्तन—कृतिक पूरा दर्शनकेँ दृश्य रूप दैत अछि। निष्कर्षक गूढ़ वाक्य ई अछि जे इतिहासक एकता वस्तुसभक समानतामे नहि, प्रश्नक अनुशासित सम्बन्धमे अछि।

३६. समेकित कालक्रम, शब्दावली, स्रोत-पंजी आ अनुक्रमणिका

समेकित कालक्रम २८ अध्यायक फैलल तिथि-बिन्दुसभकेँ एक दृश्य क्रममे आनैत अछि। एकर मूल्य केवल तिथि-स्मरण नहि, बल्कि विवादित, पारम्परिक आ अधिक दृढ़ एंकरक भेद बनबैत अछि। विशाल क्षेत्रीय इतिहासमे कालक्रमिक असमानता—पुरातात्त्विक विस्तृत अवधि, अभिलेखीय निश्चित तिथि, औपनिवेशिक वर्ष-दर-वर्ष दस्तावेज, समकालीन कानूनक सटीक दिनांक

—एक ठाम देखला पर पाठक प्रमाणक घनत्वक बदलैत स्वरूप बूझि सकैत अछि।

शब्दावली आ स्थाननाम सामंजस्य वैशाली/वेसाली, चम्पा/कम्पा, तिरभुक्ति/तिरहुत, कोसी/कोशी, तराई/मधेश जेकाँ नामक रूप, काल आ अर्थक भ्रम घटबैत अछि। ई नाम-समीक्षा पोथीक केन्द्रीय पद्धतिक अंग अछि, किएक तँ नाम समान रहि कऽ अर्थ बदलि सकैत अछि, अथवा अलग नाम एक क्षेत्रक अलग संस्थागत रूप संकेत कऽ सकैत अछि।

सामान्य स्रोत-पंजी अध्यायगत ग्रन्थसूचीकेँ समेकित संदर्भ दैत अछि; अनुक्रमणिका ६९६ पृष्ठक पोथीकेँ शोधोपयोगी बनबैत अछि। एहि सहायक भागसभ बिना मुख्य आख्यान पढ़ल जा सकैत छल, मुदा शोध-पुस्तकक रूपमे सत्यापन, पुनर्पाठ आ अन्तर-अध्यायीय तुलना बहुत कठिन होइत।

३७. मानचित्र, चित्र आ आरेख : दृश्य-साक्ष्यक अनुशासन

पोथीमे एक अभिमुखीकरण मानचित्र, पाँच चित्र आ पचपन विश्लेषणात्मक आरेख अछि। पहिल मानचित्र आधुनिक राज्यसीमा केवल वर्तमान स्थान बताबैक लेल देखबैत अछि; विदेह, वज्जि, अंग, मिथिला वा तिरहुतक प्राचीन सीमा ओहि आधुनिक रेखासँ निहित नहि। ई कैप्शन मात्र तकनीकी सूचना नहि, नक्शाक ज्ञानमीमांसात्मक सीमा घोषित करैत अछि।

आरेखसभक विशिष्टता ई जे ओ सभ “चित्रित सत्य” बनबाक दावा नहि करैत। चिरांदक साक्ष्य-वर्ग, लौह-प्रयोगक प्रमाण-क्रम, उपनिषदिक दार्शनिक सत्ता, रामायण सम्प्रेषण, वज्जिक प्रक्रियात्मक शर्त, अंग-चम्पाक चार स्रोत, अशोक स्तम्भ-गलियारा, लिच्छवि निरन्तरता, तिरभुक्तिक प्रशासनिक भूगोल, कर्णाट-ओइनीवार कालक्रम, दुई विद्यापति, स्थायी बन्दोबस्त, पंजी-श्रेणी, कृषक अधिकार, नदी शासन, भाषा-मान्यता, चित्रकला अर्थव्यवस्था, कोसी जोखिम, बहुल नागरिकता आ अन्तिम दावा-नियन्त्रण—सभमे आरेख तर्कक रूपरेखा अछि, मूल साक्ष्य नहि।

दृश्य-विधिक ई आत्म-संयम उल्लेखनीय अछि। इतिहासलेखनमे नक्शा आ समयरेखा प्रायः अनिश्चिततातेँ कठोर रेखामे बदलि दैत अछि; एहि पोथीमे

अनेक कैप्शन उलटे पाठकक॑ चेतबैत अछि जे रेखा, तीर वा डब्बा विश्लेषणात्मक मॉडल अछि, प्रत्यक्ष प्राचीन नक्शा नहि।

३८. चार पद्धतिक तुलनात्मक सारणी

परीक्षा-बिन्दु	भारतीय ऐतिहासिक पद्धति	पाश्चात्य आलोचनात्मक पद्धति	नव्य न्यायीय विवेक	विदेह समानान्तर पद्धति
स्रोत	आख्यान, वंश, शास्त्र, अभिलेख, स्मृति सभक भिन्न मान	दस्तावेजक उत्पत्ति, प्रयोजन, सत्ता-सन्दर्भ	प्रमाणक प्रकार आ विषय-योग्यता	अनेक स्रोत-रेखा पृथक रखि सम्बन्धित
दावी	परम्परा आ घटना बीच भेद सम्भव	सत्यापन, तुलना, असहमति	पक्ष-साध्य-हेतु-व्याप्तिक शुद्धता	एक रेखाकॅ दोसरमे विलीन नहि करब
काल	वंश-क्रम, युग, परम्परा, तिथि	परिवर्तनक बहु-गति	काल-अवच्छेदक स्पष्ट करब	समान कालमे असमान गति स्वीकार
भूगोल	तीर्थ, जनपद, राज्य, सांस्कृतिक क्षेत्र	क्षेत्र, नेटवर्क, सीमा-प्रदेश	देश-काल-सम्बन्धक अवच्छेद	स्थल, क्षेत्र, राज्य, नदी-घाटी, सीमा-प्रदेश, जाल
अनिश्चितता	श्रुति-स्मृति-परम्पराक अलग प्रतिष्ठा	विवाद, सम्भाव्यता, मौन अभिलेख	उपाधि, अभाव, हेत्वाभास	अपूर्णता लुकाए बिना समानान्तर कथा
मुख्य जोखिम	परम्पराकॅ कालहीन तथ्य बना देब	दस्तावेजक प्रभुत्व वा यूरोकेन्द्रिक श्रेणी	अत्यधिक तार्किकीकरण	रेखासभक अत्यधिक पृथक्करण
पोथीक	तिथि आ	सममित	दावी-सीमा	“सम्बद्ध,

उत्तर	विधा अनुसार पृथक्करण	स्रोत-आलोचना	आ प्रमाण-फिट	मुदा झूठी एकता नहि”

३९. कृतिक मुख्य उपलब्धि

पहिल उपलब्धि—ऐतिहासिक भूगोलक अनुशासन। पोथी आधुनिक जिला, राष्ट्र वा भाषिक सीमा अतीतपर सीधा आरोपित नहि करैत। नामक इतिहास, नदीक गतिशीलता, सीमा-निर्माण आ प्रशासनिक पैमानाकेँ तिथि-सापेक्ष बनबैत अछि।

दोसर उपलब्धि—स्रोतक असमानता स्वीकार। पुरातत्त्व, पाठ, अभिलेख, यात्रा-वृत्तान्त, गजेटियर, जनगणना, कानून, पाण्डुलिपि, कला-बाजार आ मौखिक स्मृति सभकेँ एकै तराजूमे तौलल नहि गेल अछि। प्रश्न जेकरा लेल स्रोत योग्य अछि, ओतबे धरि ओकर उपयोग कएल गेल अछि।

तेसर उपलब्धि—क्षेत्रीय गौरव आ आलोचनात्मक इतिहास बीच संतुलन। मिथिला, वज्जि, अंग, मैथिली, अंगिका, मधेश, पंजी, विद्यापति, चित्रकला आ स्थानीय स्मृतिसभक सांस्कृतिक महत्त्व स्वीकार कएल गेल अछि, मुदा पुरानातिपुरातनता वा अखण्ड एकताक प्रतिष्ठा लेल कालक्रम मोड़ल नहि गेल।

चारिम उपलब्धि—भारत-नेपाल विभाजनकेँ इतिहासक अन्तिम स्वाभाविक रेखा नहि मानब। आधुनिक सीमा नागरिकता, कानून आ प्रशासनमे वास्तविक अछि, मुदा प्राचीन-मध्यकालीन स्रोतक व्याख्यामे ओकर अनाकालिक आरोपण रोकल गेल अछि। सीमा-प्रदेशक अध्ययन एहि पुस्तकक सबसे आधुनिक योगदानसभमे एक अछि।

पाँचम उपलब्धि—साहित्य, भाषा, कला आ पर्यावरणकेँ “राजनीतिक इतिहासक परिशिष्ट” नहि बनाब। विद्यापति, मैथिली-अंगिका, मिथिला चित्रकला, कोसी, मधेश आ नागरिकताक अध्याय अन्तिम खण्डमे प्रमुख स्थान पबैत अछि। एहि सँ क्षेत्रीय इतिहास राजवंश-सूची सँ बाहर व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक बौद्धिक इतिहास बनैत अछि।

छठम उपलब्धि—स्व-संशोध्य इतिहासलेखन। कृति अनेक ठाम स्पष्ट करैत अछि जे नब खोज, उत्तम तिथि, नब उत्खनन अथवा अभिलेखीय सामग्री निष्कर्ष बदलि सकैत अछि। ई दुर्बलता नहि, वैज्ञानिक इतिहासक शक्ति अछि।

४०. आलोचनात्मक सीमा आ आगाँक शोध-दिशा

इतना विशाल काल-अवधि आ भूभागक एक कृतिमे समावेश स्वाभाविक रूपेँ प्रमाण-घनत्वक असमानता उत्पन्न करैत अछि। प्रागइतिहासमे उपलब्ध सामग्री विरल आ व्याख्यात्मक अछि, औपनिवेशिक-समकालीन कालमे दस्तावेज बहुल। पोथी ई समस्या स्वीकार करैत अछि; तथापि भविष्यक संस्करणमे प्रत्येक अध्याय आरम्भमे “प्रमाण-घनत्व”क संक्षिप्त सारणी देल जाए तँ पाठककेँ तुलना आर स्पष्ट होएत।

दोसरी सीमा “समानान्तर” पुनर्निर्माणक विवादास्पद स्थलक अछि, विशेषतः दुई विद्यापति आ पंजी-आधारित श्रौतिय कालक्रम। कृति अपन मत आ मुख्यधाराक मत दुनू चिह्नित करैत अछि, जे सकारात्मक अछि; तथापि आगाँक शोधमे पाण्डुलिपि-विज्ञान, लिपिवैज्ञानिक तिथि, पाठ-वंश, स्वतंत्र अभिलेखीय सन्दर्भ, डिजिटल पाठ-समानता आ पंजी-पाण्डुलिपिक भौतिक परीक्षणसँ एहि दावीक निर्णायकता बढ़ि सकैत अछि।

तेसर, भाषा आ पहिचानक आधुनिक अध्यायसभमे सरकारी मान्यता, जनगणना, अकादमी आ आन्दोलनक सामग्री प्रचुर अछि; भविष्यक विस्तारमे घर-परिवारक बहुभाषिकता, स्थानीय विद्यालयक व्यवहार, महिला-भाषिक अनुभव, प्रवासी समुदाय आ डिजिटल माध्यमक क्षेत्रीय भाषासभपर प्रभाव अधिक सूक्ष्म सामाजिक इतिहास देत।

चारिम, पर्यावरणीय इतिहासमे कोसी पर उत्कृष्ट दीर्घकालिक दृष्टि अछि; एकर तुलनामे कमला, बागमती, गंडक, महानन्दा आ छोट नदी-प्रणाली पर समान स्तरक सूक्ष्म अध्ययन बढ़ाओल जा सकैत अछि। एही सँ “बाढ़”क एकल क्षेत्रीय कथा आर अधिक विभेदित होएत।

पाँचम, दृश्य-साक्ष्यक पद्धति मजबूत अछि, मुदा भविष्यक संस्करणमे प्रत्येक ऐतिहासिक नक्शा वा आरेखक संग स्रोत-स्तरक छोट संकेत—स्थापित,

सम्भावित, विवादित, परम्परागत—एक समान चिह्न-प्रणालीमे देल जाए तँ पोथीक दावा-नियन्त्रण दृश्य रूपेँ आर तत्क्षण पठनीय बनत।

ई सुझाव कृतिक मूल ढाँचाकेँ अस्वीकार नहि करैत; उलटे ओकर घोषित स्रोत-नियन्त्रण सिद्धान्तकेँ आर अधिक दृश्यमान, पुनरुत्पाद्य आ पाठक-परीक्षण योग्य बनाबैक दिशा अछि।

४१. समाहार-निष्कर्ष

मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास पर ई विशाल कृति अपन विषय-विस्तारक कारण महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा केवल विस्तार एकर निर्णायक गुण नहि। निर्णायक गुण अछि विस्तारपर नियन्त्रण। पुस्तक प्रागइतिहास, वैदिक पाठ, महाकाव्य स्मृति, गण-संघ, अंग-चम्पा, श्रमण परम्परा, मौर्य स्तम्भ, नेपालक लिच्छवि, तिरभुक्ति, कर्णाट, ओइनीवार, विद्यापति, मुगल प्रशासन, स्थायी बन्दोबस्त, कृषक समाज, औपनिवेशिक नदी शासन, शिक्षा-मुद्रण, तराई सीमा, भूमि-सुधार, प्रव्रजन, भाषा-मान्यता, चित्रकला, कोसी, मधेश आ नागरिकताकेँ एकहि इतिहासमे समाविष्ट करैत अछि; तथापि एहि सभकेँ एक मूलवंश वा एक शाश्वत भूभागक प्रमाण बनबैत नहि।

भारतीय पद्धतिक आलोकमे कृति स्मृति, वंश, पवित्र भूगोल आ शास्त्रीय पाठक महत्त्व बचबैत अछि, मुदा काल-विभाजन आ विधा-विवेक जोड़ैत अछि। पाश्चात्य आलोचनात्मक इतिहासलेखनक आलोकमे स्रोतक उत्पत्ति, सत्ता, तुलना, अभिलेखीय मौन आ बहुपैमानी क्षेत्रीयताक अनुशासन मजबूत अछि। नव्य न्यायीय कसौटीपर दावी आ प्रमाणक सम्बन्ध, उपाधि-निवारण, अवच्छेदक-पैमाना आ अभावक सावधान उपयोग एकर तार्किक शक्ति बनैत अछि। विदेह समानान्तर पद्धतिमे इतिहासक बहुरेखीयता आ सम्बन्ध—दुनू एक संग सम्भव बनैत अछि।

कृतिक मूल बौद्धिक उपलब्धि एहि सूत्रमे समेटल जा सकैत अछि: ऐतिहासिक सम्मानक अर्थ अतीतकेँ अधिकतम प्राचीन, अधिकतम विशाल वा अधिकतम एकरूप सिद्ध करब नहि; सम्मानक अर्थ जे उपलब्ध अछि, ओकर प्रमाण-मर्यादा बचा कऽ कहब, जे विवादित अछि ओकर विवाद स्पष्ट राखब, जे स्मृति अछि ओकर जीवित प्रभाव पहचानब, आ जे मौन अछि ओकरा

कल्पनासँ भरबाक बदला आगाँक शोधक प्रश्न बनाकऽ छोड़ब। एहि कारण ई पोथी केवल मिथिला-वज्जि-अंगक इतिहास नहि, क्षेत्रीय इतिहास लिखबाक पद्धतिपर सेहो एक दीर्घ तर्क अछि।

ग्रन्थसूची

हिस्ट्री ऑफ मिथिला : फ्रॉम द अर्लिएस्ट टाइम्स टू १५५६ ए.डी. (History of Mithila: From the Earliest Times to 1556 A.D.)

ए हिस्ट्री ऑफ एन्शिएन्ट एण्ड अर्ली मेडिवल इंडिया (A History of Ancient and Early Medieval India: From the Stone Age to the 12th Century)

अर्ली इंडिया : फ्रॉम द ओरिजिन्स टू ए.डी.१३०० (Early India: From the Origins to AD 1300)

द हिस्टोरिकल जिऑग्रफी एण्ड टोपोग्रफी ऑफ बिहार (The Historical Geography and Topography of Bihar)

रिवर ऑफ सॉरो : एनवायरनमेंट एण्ड सोशल कंट्रोल इन रिपेरियन नॉर्थ इंडिया, १७७०–१९९४ (River of Sorrow: Environment and Social Control in Riparian North India, 1770–1994)

रिपोर्ट ऑफ टूर्स इन नॉर्थ एण्ड साउथ बिहार इन १८८०–८१ (Report of Tours in North and South Bihar in 1880-81)

ए हिस्ट्री ऑफ नेपाल (A History of Nepal)

साउथ एशियन बॉर्डरलैण्ड्स : मोबिलिटी, हिस्ट्री, अफेक्ट (South Asian Borderlands: Mobility, History, Affect)

द हिस्टोरियन्स क्राफ्ट (The Historian's Craft)

व्हाट इज हिस्ट्री? (What Is History?)

क्लूज, मिथ्स, एण्ड द हिस्टोरिकल मेथड (Clues, Myths, and the Historical Method)

प्रोविन्शियलाइजिंग यूरोप (Provincializing Europe: Postcolonial Thought and Historical Difference)

डॉमिनन्स विदाउट हेगेमनी (Dominance without Hegemony: History and Power in Colonial India)

सीइंग लाइक अ स्टेट (Seeing Like a State: How Certain Schemes to Improve the Human Condition Have Failed)

अलॉन्ग द आर्काइवल ग्रेन (Along the Archival Grain: Epistemic Anxieties and Colonial Common Sense)

साइलेंसिंग द पास्ट (Silencing the Past: Power and the Production of History)

इमैजिन्ड कम्युनिटीज (Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism)

ए पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ लिटरेचर : विद्यापति एण्ड द फिफ्टीन्थ सेंचुरी (A Political History of Literature: Vidyapati and the Fifteenth Century)

ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, वॉल्यूम १ (A History of Maithili Literature, Vol. 1: Early and Middle Periods)

ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर (A Survey of Maithili Literature)

मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति (Mithilā in the Age of Vidyāpati)

द लैंग्वेज ऑफ द गॉड्स इन द वर्ल्ड ऑफ मेन (The Language of the Gods in the World of Men: Sanskrit, Culture, and Power in Premodern India)

लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया, वॉल्यूम पाँच, भाग दू (Linguistic Survey of India, Vol. V, Part II)

ए रेफरेंस ग्रामर ऑफ मैथिली (A Reference Grammar of Maithili)

द तत्त्वचिन्तामणि (Tattvacintāmaṇi)

शतपथ ब्राह्मण

बृहदारण्यक उपनिषद

रामायण

दीघनिकाय

आचारांगसूत्र

ए पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर (A Parallel History of Maithili Literature)

मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास

स्रोत-नियन्त्रित क्षेत्रीय इतिहास, समानान्तर परम्परा आ समकालीन प्रश्नक विस्तृत शोधपरक समालोचना

गजेन्द्र ठाकुरक *History of Mithila, Vajji & Anga in India & Nepal: From Prehistory to the Contemporary Period* पर

कृति: गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

ग्रन्थ-विवरण

पोथी: History of Mithila, Vajji, Anga — 6x9 इंच हार्डबैक संस्करण

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक — विदेह, प्रथम मैथिली पाक्षिक ईजर्नल (ISSN 2229-547X)

प्रकाशक: विदेह, www.videha.co.in

आकार: पाँच खण्ड, अट्ठाईस अध्याय, लगभग १,७१,००० शब्द (मूल पाण्डुलिपिमे लगभग ६२० पृष्ठ+ अनुक्रमणिका, शब्दावली, स्रोत-पंजी आ सूची धरि)

“सम्बन्धक इतिहास, मुदा कृत्रिम एकता नहि”

१. प्रस्तावना: एहि पोथीक वास्तविक महत्त्व

ई पोथी केवल मिथिलाक राजवंशक इतिहास नहि, आ ने केवल वज्जि अथवा अंगक पृथक वृत्तान्त अछि। एकर वास्तविक महत्त्व एहि बातमे अछि जे लेखक तीनटा ऐतिहासिक नाम—मिथिला, वज्जि आ अंग—कँ एकटा अनन्त, अपरिवर्तित भूभाग वा एके जातीय-भाषिक इकाइ मानबाक बदला अलग-अलग काल, स्रोत, राज्य-रूप, नदी-प्रणाली, सांस्कृतिक संजाल आ आधुनिक सीमाक बीच पढ़बाक प्रयास करैत छथि। पाँच खण्ड आ अठाइस अध्यायक विस्तार प्रागैतिहाससँ 2026 धरि पहुँचैत अछि; एहि दीर्घ कालखण्डमे पुरातत्त्व, वैदिक-उपनिषदिक पाठ, बौद्ध-जैन साहित्य, अभिलेख, सिक्का, पाण्डुलिपि, राजस्व दस्तावेज, औपनिवेशिक अभिलेख, जनगणना, कानून, पर्यावरणीय अध्ययन आ समकालीन संस्थागत तथ्य कँ एकहि दर्जाक प्रमाण नहि मानल गेल अछि। एहि कारणेँ कृतिक मूल स्वरूप ‘स्रोत-नियन्त्रित क्षेत्रीय इतिहास’क अछि।

इतिहासलेखनमे प्रायः दूटा विपरीत दोष देखल जाइत अछि। एक दिस क्षेत्रीय गौरवक कारण परम्परा कैं प्रत्यक्ष इतिहास बना देबाक प्रवृत्ति, दोसर दिस औपनिवेशिक अथवा आधुनिक सरकारी अभिलेख कैं निष्पक्ष सत्य मानि स्थानीय स्मृति, मौखिक परम्परा आ सांस्कृतिक भूगोल कैं उपेक्षित करबाक प्रवृत्ति। एहि पोथीमे दुनू अतिशयतासँ बचबाक सजग चेष्टा अछि। लेखक स्पष्ट करैत छथि जे पुरातात्त्विक परत जातीय नाम नहि बतबैत अछि; अभिलेख तारीख आ राजकीय दाबी देत अछि मुदा ओकर प्रशस्तिपरक भाषा सत्ता कैं बढ़ा-चढ़ा कऽ देखाबि सकैत अछि; धार्मिक आख्यान सामाजिक-सांस्कृतिक स्मृति देत अछि मुदा सभ प्रसंगक प्रत्यक्ष घटनागत सत्यापन नहि करैत अछि; औपनिवेशिक गजेटियर बहुमूल्य सूचना देत अछि मुदा स्वयं राज्यक वर्गीकरण-यंत्रक हिस्सा अछि। ई पद्धतिगत आत्म-जागरूकता पोथीक प्रमुख उपलब्धि अछि।

एकर संगहि ई पोथी दूटा महत्त्वपूर्ण, मुदा विवादास्पद इतिहासलेखन-प्रतिपादन अपनबैत अछि—पहिल, महाकवि विद्यापति आ बादक ओइनिवार-कालीन विद्यापति ठाकुर कैं दू भिन्न ऐतिहासिक व्यक्ति मानब; दोसर, ‘श्रोत्रिय’ शब्दक प्राचीन शास्त्रीय अर्थ आ मैथिल ब्राह्मणक स्थिर वंशानुगत ‘श्रोत्रिय उपजाति’ कैं अलग मानैत लगभग 1800 ई.क आसपास बादक संस्थागत गठनक रूपमे देखब। दुनू प्रतिपादन पुस्तकक मौलिकता बढ़बैत अछि, मुदा दुनू लेल प्रमाण-प्रदर्शनक भार सेहो अत्यन्त बेसी अछि। तें एहि समीक्षा मे प्रशंसा आ आलोचना दुनू समान रूपेँ आवश्यक अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक पाँच खण्डमे संरचित ग्रन्थ History of Mithila, Vajji & Anga in India & Nepal: From Prehistory to the Contemporary Period दक्षिण एशियाक क्षेत्रीय इतिहास-लेखन प्रविधिमे एकटा युगान्तरकारी आ क्रान्तिकारी प्रस्थान-विन्दु प्रस्तुत करैत अछि। ई ग्रन्थ परम्परागत इतिहास-लेखनक ओहि संकीर्ण दृष्टिपर कुठाराघात करैत अछि जाहिमे क्षेत्रीय गौरव, धार्मिक अनुश्रुति, आ पश्चाद्वर्ती राजवंशीय आख्यानकें बिना कोनो आलोचनात्मक छानबीनकेँ शाश्वत सत्य मानि लेल जाइत छल। सम्पूर्ण ग्रन्थ कुल २८ अध्यायमे सुव्यवस्थित अछि, जे प्रागैतिहासिक कालसँ आरम्भ भऽ कऽ समकालीन भू-राजनीतिक आ सामाजिक यथार्थ धरि विस्तीर्ण अछि।

एहि विशाल ग्रन्थक केन्द्रीय रीढ़ एकर 'स्रोत-नियन्त्रित क्षेत्रीय शोध-प्रविधि' (source-controlled regional method) अछि। एहि प्रविधिक मूल सिद्धान्त ई अछि जे विवरणात्मक विस्तार कहियो साक्ष्यक प्रमाणिकताक विकल्प नै भऽ सकैत अछि। इतिहासकार कोनो एकटा स्रोत-संवर्गकें विशेषाधिकार नै दऽ सकैत छथि; प्रत्युत साक्ष्यक प्रकृति आ ओकर सीमाक अनुसार ओकर पदानुक्रम निर्धारित कएल जाइत अछि। एहि ग्रन्थमे तीनटा स्थानिक पैमाना (spatial scales) निर्धारित कएल गेल अछि: प्रथम अछि 'स्थान वा परिक्षेत्र' (site or locality), जे उत्खनित डीह, नदी-घाट वा कोनो मन्दिरक भौतिक अस्तित्वकें रेखांकित करैत अछि; द्वितीय अछि 'ऐतिहासिक क्षेत्र' (historical region), जे वस्तु, अभिलेख, व्यापारिक मार्ग, संस्था आ स्मृतिक आधार पर निर्मित गतिशील इकाई अछि; आ तृतीय अछि 'राज्य वा साम्राज्य' (state or empire), जेकर प्रशासनिक दस्तावेज यथार्थ व्यवहारक तुलनामे दाबी बेसी प्रस्तुत करैत अछि। एहि तीनू पैमानाकेँ 'गलियारा' (corridor) आ 'सीमान्त' (borderland) क संयोजक दृष्टि सँ सम्बद्ध कएल गेल अछि, जाहिसँ ई स्पष्ट भऽ सकय जे बिना राजनीतिक एकताक सेहो नदी-मार्ग, व्यापार, वैवाहिक सम्बन्ध आ तीर्थाटनक जीवन्त संचरण सम्भव छल।

सबसँ महत्त्वपूर्ण पद्धतिगत चेतावनी ई अछि जे आधुनिक राष्ट्रीय सीमाकेँ अतीतमे आरोपित नै कएल जाय। भारत आ नेपालक वर्तमान अन्तरराष्ट्रीय सीमा १८१५-१६ क सुगौली सन्धिसँ पूर्व अस्तित्वमे नै छल; अतः प्राचीन वा मध्यकालीन साक्ष्यकें आधुनिक राष्ट्रीय बन्दी-ढाँचा (sealed national containers) मे बाँटब घोर कालदोष (anachronism) अछि।

ई पोथी एकटा अत्यन्त महत्वाकांक्षी परियोजना थिक — मिथिला, वज्जि आ अंग तीनू ऐतिहासिक क्षेत्रक प्रागैतिहासिक कालसँ लऽ कऽ समकालीन काल (नेपालक संघीय पुनर्गठन आ मधेश आन्दोलन धरि) क सम्मिलित इतिहास एकहि ग्रन्थमे प्रस्तुत करबाक प्रयास। पाँच खण्डमे विभाजित — (I) प्रागैतिहास आ आद्य-इतिहास, (II) प्राचीन मिथिला-वज्जि-अंग, (III) मध्यकाल, (IV) आधुनिक काल, (V) समकालीन काल — आ अट्ठाईस अध्यायमे संगठित ई काज उत्तर बिहार आ नेपालक तराईक क्षेत्रीय इतिहासलेखनमे एकटा दुर्लभ, बृहत् आ पद्धतिगत रूपसँ अनुशासित हस्तक्षेप अछि।

पोथीक सम्पादकीय आ प्रमाण-सम्बन्धी टिप्पणी (Editorial and evidentiary note) सुरुहेमे स्पष्ट कऽ दैत अछि जे ई "source-controlled regional method" पर आधारित अछि — अर्थात् पुरातात्विक, भाषिक, अभिलेखीय, पर्यावरणीय आ संस्थागत प्रमाणकेँ अपन-अपन प्रामाणिक सीमाक भीतरे राखल गेल अछि, आ कथा-विस्तारकेँ कहियो सत्यापन-योग्यताक विकल्प नहि मानल गेल अछि। ई एकटा गम्भीर विद्वत्तापूर्ण प्रतिबद्धता थिक जे पूरा पोथीमे निर्वाह भेल देखल जाइत अछि।

२. पुस्तकक संरचना आ शोध-दृष्टि

पुस्तक पाँच कालखण्डमे व्यवस्थित अछि—प्रागैतिहास/आद्यइतिहास; प्राचीन मिथिला-वज्जि-अंग; मध्यकाल; आधुनिक औपनिवेशिक काल; आ समकालीन काल। एहि काल-विभाजन केँ लेखक स्वयं सम्पादकीय सुविधा मानैत छथि, सामाजिक जीवनक कठोर दीवार नहि। ई बात महत्त्वपूर्ण अछि, कारण राजनीतिक विजय, भूमि-अधिकार, भाषा, धार्मिक संस्था, व्यापार, नदी-परिवर्तन आ पारिवारिक व्यवहार एकहि तारीखसँ नहि बदलैत अछि। काल-विभाजनक एहि लचकदार उपयोगसँ पुस्तक राजवंश-केंद्रित इतिहाससँ बाहर अबैत अछि।

एहि संरचनाक दोसर विशेषता ‘मापनी’क अनुशासन अछि। स्थल, क्षेत्र, राज्य, गलियारा आ सीमान्त—ई पाँच दृष्टिकोण पुस्तकमे पुनः-पुनः अबैत अछि। वैश्यालीक एकटा उत्खनित स्थल सम्पूर्ण वज्जिक सीमा नहि बना सकैत अछि; तिरभुक्ति नामक प्रशासनिक इकाइ सम्पूर्ण सांस्कृतिक मिथिलाक बराबर नहि; अंगक प्राचीन राजनीतिक भूगोल आधुनिक अंगिका भाषिक पहचानक सीमा नहि; आधुनिक भारत-नेपाल सीमा प्रागैतिहासक भूगोल पर आरोपित नहि कएल जा सकैत अछि। ई विभेदन इतिहासक बहुत भ्रम दूर करैत अछि।

तथापि पुस्तकक शीर्षक अत्यन्त व्यापक अछि। “History of Mithila, Vajji & Anga in India & Nepal: From Prehistory to the Contemporary Period” पाठकमे पूर्ण क्षेत्रीय इतिहासक अपेक्षा जगबैत अछि। लगभग सात सय पृष्ठक ग्रन्थ एतेक दीर्घ काल आ विशाल भूगोलक सम्पूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता समेटि नहि सकैत अछि। लेखक ई सीमा कई ठाम मानैत छथि, मुदा

शीर्षकक व्यापकता आ वास्तविक स्रोत-घनत्वक असमानता बीच तनाव रहैत अछि। किछु अध्याय अत्यन्त दस्तावेज-समृद्ध छथि, जखन कि प्रागैतिहास आ आरम्भिक कालमे स्वाभाविक रूपेँ प्रमाण कम अछि। ई दोषसँ अधिक स्रोत-संरक्षणक वस्तुस्थिति अछि, मुदा पाठकीय अपेक्षा स्पष्ट करबाक लेल प्रस्तावनामे “स्रोत-नियन्त्रित क्षेत्रीय संश्लेषण” सन उपशीर्षक उपयोगी होइत।

प्रथम खण्ड प्रागैतिहास आ आद्य-इतिहासक अध्ययन करैत भू-आकृतिक विज्ञान, मध्य गंगा मैदानी पारिस्थितिकी, चिरान्दक नवपाषाणिक अनुक्रम, आ प्रारम्भिक लौह-युगीन संक्रमणक सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि। द्वितीय खण्ड प्राचीन विदेह, वज्जी, आ अंगक राजनीतिक-धार्मिक क्षितिजकेँ उद्घाटित करैत वैदिक पाठ, उपनिषदक दार्शनिक विमर्श, रामायणक महाकाव्यीय भूगोल, वैशालीक गण-संघीय संरचना, बौद्ध-जैन आन्दोलन, अशोकक स्तम्भ-गलियारा, आ प्राचीन नेपालक लिच्छवि अभिलेखक परीक्षण करैत अछि। तृतीय खण्ड मध्यकालीन तीरभुक्तिक प्रशासनिक भूगोल, सिमराँवगढ़क कर्णाट राजव्यवस्था, ओइनिवार शासनक बहुस्तरीय संप्रभुता, 'दुई विद्यापति' क ऐतिहासिक पृथक्करण, आ मुग़लकालीन सरकार तीरहुत तथा मुंगेरक वित्तीय व्यवस्थाकेँ आधार बनबैत अछि। चतुर्थ खण्ड ईस्ट इण्डिया कम्पनीक दीवानी (१७६५), १७९३ क स्थायी बन्दोबस्त, दरभंगा राजक जमीन्दारी-प्रशासनिक संचरना, १८०० ईस्वीक आसपास पंजीक आधार पर 'श्रोत्रिय' उपजातिक उद्भव, सुगौली सन्धि (१८१५-१६) सँ लऽ कऽ राणाकालीन नेपाल तराईक भू-व्यवस्था आ आधुनिक मुद्रण-राष्ट्रवादक पड़ताल करैत अछि। पंचम खण्ड उत्तर-औपनिवेशिक भूमि-सुधार, भारत-नेपालक खुला सीमाक सामाजिक-विधिक स्वरूप, मैथिली आ अंगिका भाषा-मान्यताक संस्थागत संघर्ष, मिथिला चित्रकलाक सांस्कृतिक अर्थतन्त्र, कोशी नदीक विनाशी तटबन्ध-प्रणाली, आ नेपालक मधेशमे बहुलतावादी नागरिकताक विमर्शक समीक्षा प्रस्तुत करैत 'मिथ्या एकताक बिना सम्बद्ध इतिहास' (connected histories without false unity) क सैद्धान्तिक उपसंहार स्थापित करैत अछि।

प्रत्येक अध्यायक अन्तमे स्वतन्त्र, अध्याय-विशिष्ट ग्रन्थ-सूची देल गेल अछि (parenthetical citation पद्धति सहित), जे एकटा शोध-ग्रन्थक मापदण्डक अनुरूप अछि।

अन्तमे समेकित कालक्रम (Consolidated chronology), शब्दावली आ स्थान-नाम अन्वय-सूची (Glossary and place-name concordance), सामान्य स्रोत-पंजी (General source register), आ अनुक्रमणिका (Index) — ई सभ एकटा पेशेवर सन्दर्भ-ग्रन्थक अपेक्षित उपकरण थिक, जे प्रायः क्षेत्रीय/भाषिक प्रकाशनमे छूटि जाइत अछि।

मानचित्र आ चित्र (लगभग ६० सँ बेसी छवि/मानचित्र/आरेख) — प्रत्येक मानचित्रक स्रोत, अनुमति/लाइसेंस स्थिति आ रचनाकार-श्रेय स्पष्ट रूपसँ अंकित अछि (उदाहरणार्थ, प्रथम मानचित्र Natural Earth आ GeoNamesक सार्वजनिक-डोमेन आँकड़ा पर आधारित मानल गेल अछि, संगहि सम्पादकीय ओवरले © गजेन्द्र ठाकुर, २०२६)। ई कॉपीराइट-सजगताक दृष्टिसँ अत्यन्त प्रशंसनीय अभ्यास थिक — प्रायः एहन क्षेत्रीय पोथीमे छवि-श्रेय आ अनुमतिक विवरण उपेक्षित रहि जाइत अछि।

६x९ हार्डबैक KDP-रेडी फॉर्मेटिंग — पूर्ववर्ती विदेह-प्रकाशित पोथी (जेना Samanantar Darshan, Tattvacintamani, Decoding the Panji of Mithila) सभक संग एकरूप प्रकाशन-मानक कायम राखल गेल अछि।

३. इतिहासलेखन-पद्धतिक विस्तृत मूल्यांकन

अध्याय १ ("Region, rivers, names, and method") पोथीक बौद्धिक आधारशिला थिक, आ ई अध्याय अपनहिमे एकटा उल्लेखनीय ऐतिहासिक-भूगोल-सिद्धान्तक निबन्ध थिक। एकर मुख्य योगदान —

तीन स्थानिक स्तरक भेद — स्थल (site), ऐतिहासिक क्षेत्र (region), आ राज्य (state) — कँ स्पष्ट रूपसँ अलग रखबाक आग्रह, जाहिसँ एकटा राजधानी, एकटा भाषा-क्षेत्र, आ एकटा प्राचीन राजतन्त्रकेँ एक-दोसराक पर्याय बना कऽ प्रस्तुत करबाक सामान्य त्रुटिसँ बचल जा सकए।

विदेह, मिथिला, तीरभुक्ति, तिरहुत — चारू नामकेँ अलग-अलग ऐतिहासिक प्रक्षेपवक्रक रूपमे देखबाक पद्धति, बिना एकरा शाश्वत पर्यायवाची मानने। ई मिथिला-पहचानक राजनीतिक-सांस्कृतिक संवेदनशीलताकेँ ध्यानमे राखैत एकटा जिम्मेदार अकादमिक स्टैंड थिक।

वज्जि आ अंगकेँ "एकहि शाश्वत मिथिलाक उपखण्ड" नहि मानब — ई विशेष रूपसँ महत्वपूर्ण अछि, कारण लोकप्रिय क्षेत्रीय आख्यानमे प्रायः ई तीनू क्षेत्रकेँ अविभेदित रूपसँ "प्राचीन मिथिला साम्राज्य" कहि देल जाइत अछि। लेखक एहि सरलीकरणकेँ अस्वीकार करैत ऐतिहासिक बहुलतावादकेँ रक्षित रखैत छथि।

नदी-भूगोलकेँ ऐतिहासिक अभिकर्ता (agent) मानब — Sinha & Friend (1994) आ Jain & Sinha (2003) जेहन भू-आकृतिविज्ञान (geomorphology) क शोधकेँ ऐतिहासिक कार्यप्रणालीमे एकीकृत करब एकटा अन्तर्विषयी (interdisciplinary) उपलब्धि थिक — कोसी, बागमती आदिक avulsion (धारा-परिवर्तन) इतिहासकेँ राजनीतिक/प्रशासनिक सीमा-इतिहाससँ जोड़ब बहुत कम क्षेत्रीय इतिहासमे देखल जाइत अछि।

उपनिवेशी मानचित्र आ गजेटियरकेँ "पारदर्शी स्रोत" नहि, बल्कि "ऐतिहासिक तर्क" मानब — Cunningham आ Garrick (1883) क सर्वेक्षणकेँ उन्नीसम शताब्दीक पुरातात्विक तर्क-पद्धतिक साक्ष्य मानब, न कि प्राचीन भूगोलक प्रत्यक्ष चित्रण — ई उत्तर-उपनिवेशी इतिहासलेखनक (postcolonial historiography) एकटा परिपक्व प्रयोग थिक।

एहि पद्धतिगत कठोरताक फलस्वरूप पोथी अपन दावाकेँ लगातार "established / probable / disputed / traditional / commemorative" जेहन श्रेणीमे विभाजित करैत चलैत अछि — जे एकटा दुर्लभ बौद्धिक ईमानदारी थिक जतय क्षेत्रीय गौरव आ अकादमिक कठोरताक बीच अक्सर तनाव रहैत छैक।

३.१ प्रमाण-श्रेणीक पृथक्करण

पुस्तकक सर्वाधिक प्रशंसनीय पक्ष प्रमाणक प्रकार आ प्रमाणक पहुँच बीच भेद राखब अछि। पुरातत्त्व सामग्री-संयोग, परत, तकनीक आ कालक्रम बतबैत अछि; पाठ विचार, स्मृति, भौगोलिक कल्पना आ संस्थागत श्रेणी देत अछि;

अभिलेख तारीख, उपाधि, दान, राजकीय दाबी आ प्रशासनिक भाषा देत अछि; सिक्का आर्थिक-सत्ता, प्रतीक आ कालक्रमक बिन्दु देत अछि; जनगणना प्रशासनिक वर्गीकरण आ स्व-घोषित मातृभाषाक आँकड़ा देत अछि। एहि सब कैं एकहि तराजूपर नहि तौलल गेल अछि। आधुनिक इतिहासलेखनमे ई ‘दाबी-संगति’ पद्धति अत्यन्त उपयोगी अछि।

३.२ परम्परा आ घटनागत इतिहास

जनक, सीता, कर्ण, बुद्धक अवशेष, वज्जिक सभा, वैश्यालीक “प्रथम लोकतन्त्र”, लिच्छवि-नेपालक उत्पत्ति, विद्यापतिक जीवनकथा—एहि सभ विषयमे पुस्तक परम्परा कैं निरर्थक नहि मानैत अछि, मुदा परम्पराक ऐतिहासिक उपयोग बदलि दैत अछि। उदाहरणतः जनकपुरक पवित्र भूगोल आधुनिक तीर्थ, मंदिर, उत्सव आ क्षेत्रीय स्मृतिक इतिहास अछि; एहि आधार पर रामायणक प्रत्येक प्रसंगक पुरातात्त्विक स्थलीकरण स्वतः सिद्ध नहि होइत। एहेन भेद धार्मिक आ सांस्कृतिक संवेदनशीलता बचबैत इतिहासक कठोरता सेहो बनौने रहैत अछि।

३.३ मानचित्र, नदी आ सीमा

उत्तर बिहार-तराईक इतिहासमे नदीक गतिशीलता कैं पुस्तक पृष्ठभूमि नहि, सक्रिय ऐतिहासिक घटक मानैत अछि। कोसी, गण्डक, बागमती, कमला आदि नदीक अवसादन, धारा-परिवर्तन, कटाव, बाढ़ आ जलजमाव केवल प्राकृतिक घटना नहि; बसावट, बाजार, राजस्व, सड़क, रेल, बाँध, तटबन्ध, प्रवासन आ राज्य-प्रशासन पर प्रभावकारी प्रक्रिया अछि। Sinha and Friend (1994), Jain and Sinha (2003) आदि भू-आकृतिक शोधक उपयोग एहि दृष्टि कैं वैज्ञानिक आधार दैत अछि। विशेष महत्त्वपूर्ण बात ई जे आधुनिक नदी-पथ कैं प्राचीन पाठक नदीसँ बिना तिथि-साक्ष्य एकरूप नहि मानल गेल अछि।

३.४ ‘अभाव’ कैं प्रमाण नहि मानबाक सावधानी

जलोढ़ मैदानमे पुरातत्त्वक दृश्यता बहुत असमान अछि। गादक नीचाँ दबाइत स्थल, नदीसँ कटि गेल परत, सड़क-निकट सर्वेक्षणक पक्षपात, भारत-नेपालक अलग अनुसन्धान-परम्परा—ई सभ कारण “जहाँ स्थल नहि भेटल, ओतय लोक नहि छल” सन निष्कर्ष कैं असुरक्षित बनबैत अछि। पुस्तक ई

समस्या स्पष्ट करैत अछि। एहि बिन्दुपर भू-पुरातत्त्व, उपग्रह-चित्र, भूभौतिकीय सर्वेक्षण आ सूक्ष्म अवसादी अध्ययनक भविष्य-दिशा उल्लेखित अछि, जे प्रशंसनीय अछि।

४. खण्ड I: प्रागैतिहास आ आद्यइतिहास

अध्याय १: क्षेत्र, नदी, नाम आ पद्धति

पहिल अध्याय सम्पूर्ण कृतिक पद्धतिगत संविधान अछि। मिथिला, वज्जि आ अंग कैं स्थिर भू-सीमा नहि मानि अलग ऐतिहासिक भूगोलक रूपमे परिभाषित करब अत्यन्त उचित अछि। विशेषतः “मिथिला”, “विदेह”, “तिरभुक्ति” आ “तिरहुत” कैं अनन्त पर्याय मानबाक प्रचलित सरलता सँ पुस्तक दूरी बनबैत अछि। ई सुधार क्षेत्रीय इतिहास लेल मूलभूत अछि। राजनीतिक, साहित्यिक, भाषिक, राजस्वीय आ धार्मिक क्षेत्र एक-दोसरसँ ओवरलैप कऽ सकैत अछि, मुदा पूर्णतः समान नहि। “नाम प्रमाण अछि मुदा स्वयं अर्थ स्पष्ट नहि करैत”, “आधुनिक सीमा प्राचीन काल पर आरोपित नहि”, “नदीक धारा बदलैत अछि”, “स्रोतक पहुँच सीमित अछि”—ई सभ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, ई सामग्री एकटा “स्रोत-सिद्धान्त” पेटी अछि।

अध्याय २: पुरातत्त्व आ आरम्भिक खाद्य-उत्पादन

चिराँद कैं एकटा “सभ्यताक उद्गम-स्थल” बनाबयक बदला क्षेत्रीय अनुक्रमक रूपमे पढ़ब पुस्तकक परिपक्वता अछि। चावल, जौ, मसूर, मटर, पशु-अवशेष, माछ, शिकार, अस्थि-शृंग उपकरण, मृद्भाण्ड आ रेडियोकार्बन तिथिक उपयोग मिश्रित जीविका-व्यवस्था देखाबय लेल कएल गेल अछि। पुरान रेडियोकार्बन तिथिक Libby half-life, परत-गड़बड़ी आ आधुनिक calibrationक भेद स्पष्ट करब विशेषतः सराहनीय अछि। पुरातत्त्वक लोकप्रिय लेखनमे “एक तिथि = सम्पूर्ण संस्कृति”क त्रुटि बहुत सामान्य अछि; ई अध्याय ओकर प्रतिरोध करैत अछि।

एहि अध्यायक आगामी संस्करणमे चिराँदक सभ प्रकाशित रेडियोकार्बन नमूनाक एकटा स्पष्ट तालिका—प्रयोगशाला संख्या, नमूना-पदार्थ, परत, गहराई, conventional BP, प्रकाशित रूपान्तरण, आधुनिक calibration

सम्भावना—देब अत्यन्त उपयोगी होइत। तहिना बिहारक सेनुवार, चेचर-कुतुबपुर, ताराडीह, लहुरादेवा आदि तुलनात्मक स्थल लेल एक समान डेटा-सरणि बनलासँ पाठ अधिक मापनीय होइत।

गंगा आ सरयू (घाघरा) क संगम पर अवस्थित चिरान्द (वर्तमान सारण जिला) मध्य गंगा मैदानमे नवपाषाणकालीन (Neolithic) संस्कृतिक प्रस्थान-विन्दु अछि। बिहार पुरातत्व निदेशालय द्वारा १९६१-६४ आ १९६७-७० मे कएल गेल उत्खनन आ बी. एस. वर्मा (२००७) क प्रतिवेदनक अनुसार एतय पाँच सांस्कृतिक कालखण्डक पहचान भेल, जाहिमे 'कालखण्ड १' नवपाषाणिक अछि। चिरान्दक विशिष्टता एकर अस्थि आ सींगक विपुल उद्योगमे देखाइत अछि, जतय हिरणक सींग (antler) आ हड्डीसँ निर्मित कुल्हाड़ी, छेनी, सुई, बाणक नोक, सूजा (borers), खुरचनी आ आभूषण (कंघी, कंगन, कुण्डल) प्रचुर मात्रामे भेटल अछि। ई साक्ष्य आर्द्रभूमि आ नदीय पारिस्थितिकीक कुशल तकनीकी दोहनकेँ प्रमाणित करैत अछि। पुरावनस्पतिक शोधमे विष्णु-मित्रे (१९७२) धान (चाउर), जौ, खेसारी आ मटरक अवशेषक पुष्टि कएलनि। मुदा, ठाकुर एतय डोरियन फुलर (२०११) क शोधक आधार पर आगाह करैत छथि जे मात्र धानक दानाक प्राप्ति पूर्ण पालतूकरण (morphological domestication) क प्रमाण नै थिक; ई प्रारम्भिक कृषि, पशुपालन, शिकार आ संग्रहक एकटा मिश्रित लचीली अर्थव्यवस्था छल।

टाटा मूलभूत अनुसन्धान संस्थान (TIFR) क डी. पी. अग्रवाल आ शीला कुसुमगर (१९७३) क तिथि-सूचीक विश्लेषण करैत ग्रन्थकार देखबैत छथि जे ट्रेन्च CRD-XI क स्तर १४ सँ नीचाँक नमूनामे 'उलटफेर' (stratigraphic mix-up/inversion) अछि, सम्भवत: धँसान (subsidence) क कारणेँ, जाहिमे गहीर स्तरसँ प्राप्त नमूनाक आयु कम गहीर स्तरक तुलनामे कम पुरान भेटल अछि। अत: प्राचीन अनकैलिब्रेटेड बी.सी. तिथिकेँ बिना आधुनिक वैज्ञानिक अंशांकनक अन्तिम सत्य नै मानल जा सकैत अछि। चिरान्दक एहि आदिम कृषक समुदायकेँ 'मैथिल', 'वज्जी' वा 'अंग' कहब घोर ऐतिहासिक भूलि होएत, किएक तँ एहि राजनीतिक-सांस्कृतिक संज्ञासभक उत्पत्ति सहस्र वर्ष पाछाँक ग्रन्थसभमे भेल अछि।

अध्याय ३: उत्तर-प्रागैतिहास आ लौह-प्रयोग

लौह कें एकमात्र “क्रान्तिकारी” कारण न मानि तकनीकी-सामाजिक संजालक एक अंग मानब आधुनिक पुरातात्त्विक इतिहासलेखनसँ मेल खाइत अछि। पुस्तक ठीक कहैत अछि जे लौहक उपलब्धता मात्र सँ वन-स्वच्छता, अधिशेष, नगरीकरण आ राज्य स्वतः उत्पन्न नहि होइत; ई सब श्रम, विनिमय, कृषि-अधिकार, सत्ता, जनसंख्या आ पर्यावरणक जटिल प्रक्रियासँ जुड़ल अछि। NBPW कें जातीय वा राजनीतिक चिह्न नहि मानबाक सावधानी सेहो उचित अछि।

मुदा एहि अध्यायमे धातुवैज्ञानिक विश्लेषण—slag, furnace, ore स्रोत-उत्पत्ति, metallography—क प्रत्यक्ष क्षेत्रीय उदाहरण यदि अधिक होइत तँ “लौह-प्रयोग” शीर्षकक ठोसता बढ़ैत। पुस्तक वर्तमान रूपमे तकनीकी एककारणवादक आलोचना तऽ प्रखर करैत अछि, मुदा उत्तर बिहार-तराईक लौह-उत्पादनक स्थानीय पुरातात्त्विक सामग्री अपेक्षाकृत कम अछि।

राकेश तिवारी (२००३) द्वारा केन्द्रीय गंगा मैदान आ पूर्वी विन्ध्य क्षेत्र (यथा लहूरादेवा, राजा नल का टीला) सँ प्राप्त १८०० सँ १००० ईसा पूर्व क लौह-उपकरण, भट्ठी आ धातुमल (slag) क साक्ष्य उत्तर भारतमे लोहाक प्राचीनताकें नवीन विस्तार देलक अछि, मुदा ठाकुर स्पष्ट करैत छथि जे उत्तर प्रदेशक तिथिकें बिना स्थानीय उत्खननक सीधे उत्तर बिहार वा नेपाल तराई पर लागू नै कएल जा सकैत अछि। लोहाक उपस्थिति मात्रसँ द्वितीय नगरीकरण आ राज्य-निर्माणक स्वतःस्फूर्त व्याख्या करब 'तकनीकी नियतिवाद' अछि; जंगलक कटाई आ कृषिक विस्तारमे श्रम-संगठन, सामाजिक सम्बन्ध आ नदीय पारिस्थितिकीक भूमिका सेहो छल। कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड (BRW), चित्रित धूसर मृद्भाण्ड (PGW) आ उत्तरी कृष्ण मार्जित मृद्भाण्ड (NBPW) पुरातात्त्विक अनुक्रमक संवर्ग छथि, कोनो जातिक पहचान नै।

अध्याय ४: पर्यावरण, गतिशीलता आ बसावट

ई अध्याय पुस्तकक दीर्घकालिक पर्यावरणीय तर्क कें मजबूत आधार दैत अछि। हिमालयी अग्रप्रदेश, मेगाफैन, जलोढ़ सतह, मौसमी श्रम, आर्द्रभूमि, धारा-विस्थापन आ पुरातात्त्विक दृश्यताक समेकित विवेचन इतिहास आ भूविज्ञान बीच उपयोगी सेतु बनबैत अछि। पर्यावरणवादक नियतिवादी रूप

—“नदी एहेन छल, तें समाज एहेन भेल”—सँ पुस्तक बचैत अछि। समान बाढ़ अलग घर, जाति, जमीन-अधिकार आ राज्य-संबंधित समूह पर अलग प्रभाव पाड़ि सकैत अछि; ई विचार बादमे कोसी अध्याय धरि चलैत अछि।

उत्तर बिहारक नदीय भूगोलक सन्दर्भमे राजीव सिन्हा आ पीटर एफ. फ्रेन्ड (१९९४) क वर्गीकरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, जे नदी-प्रणालीकें पर्वतीय-पोषित, पादपहाड़ी-पोषित, मैदानी-पोषित आ मिश्रित रूपमे देखैत अछि। कोशी आ गण्डक विशाल 'मेगाफैन' (megafans) क निर्माण करैत अछि, जखन कि बागमती दुई मेगाफैनक बीच 'इन्टरफैन' (interfan plain) मे बहैत अछि। विक्रान्त जैन आ राजीव सिन्हा (२००४) क अनुसार बागमती पछिला २३० वर्षमे ८ टा पैघ मार्ग-परिवर्तन (avulsions) केने अछि, आ तपन चक्रवर्ती आदिक (२०१०) शोध सिद्ध करैत अछि जे कोशीक पछिला दुई सौ वर्षमे केवल पश्चिम दिस निरन्तर बहावक धारणा सही नै अछि; ई दोलन (oscillation) आ नोडल विसर्पण करैत रहल अछि। एहि तीव्र गाद-जमाव आ कटावक कारणेँ पुरातात्विक टीहा या तँ दब जाइत अछि वा विस्थापित भऽ जाइत अछि; अतः मानचित्र पर पुरातात्विक स्थलक अभावक अर्थ अतीतमे मानव बसाबक शून्यता नै थिक।

५. खण्ड II: प्राचीन मिथिला, वज्जि आ अंग

अध्याय ५: वैदिक-उपनिषदिक जगतमे विदेह

शतपथ ब्राह्मण आ बृहदारण्यक उपनिषदक उपयोग करत पुस्तक “पाठक भूगोल” आ “घटनागत राज्य-इतिहास” बीच भेद करैत अछि। जनक कैँ एकल, पूर्ण जीवनीवाला दार्शनिक-राजा मानबाक बदला “जनक” नाम/उपाधि/वंशीय स्मृतिक सम्भावना खुला राखल गेल अछि। याज्ञवल्क्य कैँ सेहो पाठीय व्यक्तित्वक रूपमे देखल गेल अछि, न कि बादक सभ ग्रन्थक एकहि ऐतिहासिक लेखक। ई फिलोलॉजिकल सावधानी अत्यन्त उचित अछि।

गार्गी आ मैत्रेयी विषयक चर्चा बौद्धिक इतिहासमे स्त्रीक उपस्थिति स्वीकारैत अछि, मुदा पाठमे स्त्री वक्ताक उपस्थिति कैँ तत्कालीन समाजक व्यापक लैंगिक समानताक प्रमाण नहि बनबैत। ई भेद आधुनिक पहचान-राजनीतिक अतिशयोक्तिसँ बचबैत अछि। तथापि, वैदिक शाखा-परम्परा, माध्यन्दिन-काण्व

पाठभेद, आ विदेह-कुरु-पञ्चाल बौद्धिक संचार पर यदि भाषिक-फिलोलॉजिकल उदाहरण अधिक उद्धृत होइत तँ अध्याय आओर प्रामाणिक बनैत।

शतपथ ब्राह्मण (१.४.१) मे वर्णित विदेघ माथव आ पुरोहित गोतम राहूगणक पूर्व दिशामे अग्नी वैश्वानरक पाछाँ-पाछाँ यात्राक आख्यानकें ठाकुर ऐतिहासिक प्रवासनक रोजनामचा मानबाक बदला एकटा 'धार्मिक-राजनीतिक प्रतिनिधित्व' (ritual-political representation) मानैत छथि। अग्नि सदानीरा नदीकेँ पार नै कऽ सकल, जाहिसँ सदानीरा कोशल आ विदेहक बीचक सीमा बनि गेल। सदानीराकेँ पारम्परिक रूपसँ गण्डक मानल जाइत अछि, मुदा ई एकटा पाठ्य-पुनर्निर्माण अछि, कोनो आधुनिक पैमाइश-युक्त नक्शा नै। एहि आख्यानकेँ आद्य-जंगलक अग्नि-दहन द्वारा सफाईक भौतिक साक्ष्य मानब अनुचित अछि, किएक तँ पुरातत्व ई सिद्ध करैत अछि जे पूर्वमे मानव बसाब पहिनहियेँसँ विद्यमान छल।

बृहदारण्यक उपनिषद् (काण्व आ माध्यन्दिन शाखा) मे राजा जनकक यज्ञ-सभामे कुरु-पाञ्चालक विद्वानक समागम देखबैत अछि जे विदेह ज्ञानक एकटा नव अन्तर-क्षेत्रीय केन्द्र बनि चुकल छल। याज्ञवल्क्य द्वारा सहस्र गो-सुवर्णक ग्रहण, ब्रह्मद्य (शास्त्रार्थ), आ गार्गी वाचक्नवीक दुर्धर्ष प्रश्न (अक्षर ब्रह्म आ ब्रह्माण्डक ताना-बाना) एहि बातक साक्ष्य अछि जे औपनिषदिक कालमे महिलाक बौद्धिक हस्तक्षेप स्वीकृत छल, यद्यपि ई सम्पूर्ण समाजमे समानताक सूचक नै छल। मैत्रेयी-याज्ञवल्क्य संवाद (२.४ आ ४.५) धनक सीमा आ अमरत्वक पिपासाकें गृहस्थीक त्यागसँ जोड़ैत अछि। जोहान्स ब्रोन्कहॉर्स्टक 'ग्रेटर मगध' (Greater Magadha) सिद्धान्तक समीक्षा करैत ठाकुर कहैत छथि जे पूर्व क्षेत्रमे पुनर्जन्म, कर्म आ मोक्षक धारणा वैदिक पश्चिमसँ भिन्न वातावरणमे पल्लवित भेल छल, मुदा एकरा कोनो एकछत्र विचारधारा मानब सेहो क्षेत्रीय विविधताक अनदेखी करब होएत।

अध्याय ६: जनक, सीता आ परम्परा पढ़बाक अनुशासन

रामायणक आलोचनात्मक संस्करण केँ “मूल लेखकक हस्तलिपि” नहि, पाण्डुलिपि-परम्परासँ पुनर्निर्मित आलोचनात्मक पाठ मानब अत्यन्त आवश्यक स्पष्टीकरण अछि। जनकपुरक पवित्र भूगोलक ऐतिहासिकता स्वीकारैत, प्रत्येक

आधुनिक मंदिर/पोखरि कैं महाकाव्यकालीन घटना-स्थल न मानबाक संयम प्रशंसनीय अछि। सीताक बहुविध व्याख्या—धैर्य, पीड़ा, कृषि-उर्वरता, नैतिक प्रतिरोध, विवाह-संस्कार—कैं एकटा शाश्वत “मिथिलानी आदर्श”मे सीमित नहि कएल गेल अछि।

एहि अध्यायमे मौखिक स्त्रीगीत, विवाह-परम्परा आ विभिन्न रामायण-परम्पराक उपयोगक सम्भावना बहुत अछि। पुस्तक ई दिशा खोलैत अछि, मुदा मैथिली मौखिक काव्य-संग्रह, स्त्री-गीतक दिनांकित संकलन आ नेपाल-भारतक क्षेत्रीय प्रदर्शन-परम्परासँ अधिक प्रत्यक्ष उदाहरण जोड़लासँ “सांस्कृतिक स्मृति” भाग आओर समृद्ध होइत।

वाल्मीकि रामायणक बड़ौदा आलोचनात्मक संस्करण (Baroda Critical Edition - सम्पादक जी. एच. भट्ट; अनुवाद आर. पी. गोल्डमैन) क आधार पर ठाकुर बालकाण्डमे वर्णित जनक, सीता आ मिथिलाक सम्बन्धक विश्लेषण करैत छथि। जनक द्वारा यज्ञ-भूमि जोतैत काल 'सीता' (हड़क रेखा) क प्राप्ति कृषिक प्रतीकात्मकतासँ जुड़ल अछि, आ वैदेही, मैथिली, तथा जानकी जकाँ विशेषण भौगोलिक अस्मिताकें सुरक्षित रखैत अछि। मुदा, महाकाव्यीय समय (epic time) आ ऐतिहासिक समय (historical time) मे भेद करब आवश्यक अछि। रामायणक पाठ बहुस्तरीय अछि, आ पौला रिचमैनक 'मेनी रामायण्स' (Many Ramayanas) क दृष्टि देखबैत अछि जे बौद्ध (दशरथ जातक), जैन (पउमचरिउ), मैथिली आ मौखिक परम्परामे सीताक चरित्रक भिन्न-भिन्न नैतिक व्याख्या भेल अछि।

जनकपुरक वर्तमान जानकी मन्दिरक निर्माण काल पर्यटन विवरणिकामे परस्पर विरोधी रूपेँ १८७४ वा १९१० (टीकमगढक महारानी वृषभानु कुँअरि द्वारा) लिखल अछि, जे आधुनिक स्मारक थिक, नहि कि त्रेता युगक महल। २००८ मे नेपाल पुरातत्व विभाग द्वारा एकरा यूनेस्कोक सम्भावित सूची (Tentative List) मे देल गेल। विवाह पंचमी उत्सव जीवित पवित्र भूगोल (living sacred geography) क भव्य साक्ष्य अछि, मुदा एकरा पुरातात्विक घटनाक समकालीन प्रमाण नै मानल जा सकैत।

अध्याय ७: वज्जि, लिच्छवि आ वैश्याली

एहि अध्यायक सबसँ महत्त्वपूर्ण उपलब्धि आधुनिक “विश्वक प्रथम लोकतन्त्र” सन लोकप्रिय वाक्यक आलोचनात्मक पुनर्पाठ अछि। बौद्ध स्रोत वज्जिक नियमित सभा, सहमति, पुरान नियम, वृद्धक सम्मान, स्त्री-अहरण पर रोक, चैत्यक आदर आ संन्यासी संरक्षणक ‘अपरिहानिय’ शर्त बतबैत अछि; एहि आधार पर कॉर्पोरेट/गण-संघीय राजनीतिक संरचनाक चर्चा वैध अछि। मुदा आधुनिक सार्वभौमिक मताधिकार, प्रतिनिधिक लोकतन्त्र वा संसदक प्रत्यक्ष पूर्वज मानब अनैतिहासिक छल। पुस्तक एहि अंतर कँ स्पष्ट करैत अछि।

राजा विशालक गढ़क बाबत ASI द्वारा सूचित शुंग, कुषाण आ आरम्भिक गुप्त रक्षाभित्ति-चरण पुस्तकक सावधानी कँ पुष्ट करैत अछि। गढ़क दीर्घकालीन पुरातात्त्विक महत्त्व निर्विवाद अछि, मुदा ओकर विशेष भवन-कार्य “लिच्छवि संसद” सिद्ध करबाक प्रत्यक्ष अभिलेख उपलब्ध नहि। एहेन लोकप्रिय धारणाकँ न उपहास करब, न प्रमाणहीन रूपेँ दोहराब—ई संतुलन उत्कृष्ट अछि।

दीघ निकाय (१६ - महापरिनिब्बान सुत्त) मे तथागत बुद्ध द्वारा वज्जी संघक समृद्धिक सातटा नियम (अपरिहाणीय धर्म) कहल गेल अछि: बारम्बार सभा करब, ऐक्यभावसँ बैसब-उठब, पूर्व-परम्परा आ विधिक पालन, वृद्धक सम्मान, कुलस्त्री आ कन्याक अपहरण/उत्पीड़न पर रोक, पारम्परिक चैत्य/पूजा-स्थलक रक्षा, आ अर्हन्त/श्रमणक सुरक्षा। ठाकुर स्पष्ट करैत छथि जे 'गण-संघ' वा 'कुलीनतन्त्र' (clan oligarchy) कें आधुनिक अर्थमे 'प्रजातन्त्र' वा 'गणतन्त्र' (republic) कहब भाषाक अति-आधुनिकीकरण (over-modernization) अछि, किएक तँ एहि सभामे दास, कर्मकार, शूद्र आ महिलाक मताधिकार नै छल।

योगेन्द्र मिश्र (१९६२) क ऐतिहासिक हस्तक्षेप कें उद्धृत करैत ठाकुर 'अट्ठकुलक' (atthakulaka) क आधार पर वज्जीकें आठ कुलिक संघ मानबाक परम्परागत दृष्टिकँ खारिज करैत छथि; 'अट्ठकुलक' एकटा न्यायिक परिषद छल, नहि कि आठ जातिक संसद। एहि तरहेँ जैन सूत्रकृतांग मे उग्र, भोग, इक्ष्वाकु, ज्ञातृ, कौरव, लिच्छवि आदिक उल्लेख साहित्यिक-धार्मिक अछि, संवैधानिक नामावली नै। 'राजा विशाल का गढ़' कें स्थानीय लोग 'संसदीय

भवन' कहैत छथि, मुदा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI, Patna Circle) क उत्खनन अनुसार एहि गढ़क रक्षा-प्राचीरमे तीनटा निर्माण-चरण अछि: शुंग, कुषाण आ प्रारम्भिक गुप्त काल। बुद्धकालीन काठक संसदक कोनो पुरातात्विक अभिलेख एतय नै अछि। हरपुर बसन्तमे प्राप्त अस्थि-कलश बुद्धक अस्थि-अवशेषक चैत्य-परम्पराकेँ पुष्ट करैत अछि। बुद्धक निर्वाणक लगभग १०० वर्ष बाद वैशालीमे दस नियमक विवाद पर 'द्वितीय बौद्ध संगीति' (Second Buddhist Council) भेल, जे बौद्ध अनुशासन (विनय) क संस्थागत विकासक प्रमुख चरण छल।

अध्याय ८: अंग, चम्पा आ मगधक क्षितिज

अंगक इतिहासमे बौद्ध महाजनपद-सूची, जैन परम्परा, ब्राह्मणीय संदर्भ, महाभारतक कर्ण आख्यान, चम्पाक पुरातत्त्व आ मगध-संबंध अलग-अलग प्रमाणधारा रूपेँ रखल गेल अछि। कर्ण-परम्परा क्षेत्रीय स्मृति आ साहित्यिक इतिहासक केन्द्रीय सामग्री अछि, मुदा ओकरा प्रारम्भिक अंगक राजकीय अभिलेख मानब उचित नहि—पुस्तक ई भेद स्पष्ट करैत अछि।

चम्पा केँ समुद्री बन्दरगाह कहबाक सरल प्रवृत्तिक बदला गंगा-आधारित नदीय वाणिज्य, निम्नधारा ट्रांसशिपमेंट आ साहित्यिक व्यापारी-कल्पनाक भेद अत्यन्त उपयोगी अछि। सोणदण्ड सुत्तमे बिम्बिसारक राजकीय अनुदानक वर्णन मगधी अधिकारक पाठीय संकेत दैत अछि; मुदा विजयक एकल सैन्य तारीख निर्मित नहि कएल गेल अछि। एहि प्रकार राजनीतिक परिवर्तन केँ “सापेक्ष रूपेँ मजबूत, निरपेक्ष तिथि कम सुनिश्चित” मानल गेल अछि।

अंग महाजनपदक राजधानी चम्पा (वर्तमान नाथनगर-चम्पानगर, भागलपुर) प्राचीन भारतक प्रमुख नगरीय केन्द्र छल। दीघ निकाय क सोणदण्ड सुत्तमे उल्लेख अछि जे मगधराज बिम्बिसार द्वारा ब्राह्मण सोणदण्डकेँ चम्पा नगरीक समृद्ध राजस्व-सम्पन्न भू-भाग 'ब्रह्मदेय' क रूपमे दान देल गेल छल। ई साक्ष्य प्रमाणित करैत अछि जे अजातशत्रुक कालसँ पहिनहीं बिम्बिसारक समयमे अंग मगधक अधिकार-क्षेत्रमे आबि चुकल छल।

चम्पानगरक उत्खनन (पटना विश्वविद्यालय द्वारा १९७०-८३ क बीच) मे NBPW सँ पूर्व क मोटा कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड (coarse BRW), विशाल माटिक

रक्षा-प्राचीर (mud ramparts), ईंटाक इनार (brick ring-wells), जल-निकासीक नाली, ठप्पांकित सिक्का (punch-marked coins), आ भीषण अग्निकाण्डक स्तर भेटल अछि। जैन कल्पसूत्र (हर्मन जैकोबी अनुवाद) क अनुसार भगवान महावीर अपन वर्षावास (vassa) चम्पा आ पृष्ठचम्पामे बितेने छलाह। महाभारतमे कर्णकेँ अंगराज कहल गेल अछि, मुदा ठाकुर चेतावनी दैत छथि जे चम्पामे प्राप्त कोनो ईंटा वा प्राचीर पर 'कर्ण' क नाम नै खुनल अछि; ई परम्परा साहित्यिक-सांस्कृतिक स्मृतिक अंग अछि, समकालीन पुरातात्विक साक्ष्य नै।

अध्याय ९: बौद्ध, जैन आ पूर्वी गंगीय धार्मिक परिवर्तन

धर्मक इतिहास कैं केवल सिद्धान्तक इतिहास नहि, संस्था, दान, वर्षावास, गृहस्थ-समर्थन, मार्ग, नगरीय अर्थव्यवस्था आ लैंगिक भागीदारीक इतिहास बनाबयक प्रयास प्रशंसनीय अछि। बौद्ध विहार अथवा जैन संघ समाजसँ बाहर नहि, घर-परिवार, दाता, बाजार, राजसत्ता आ मौसमक संग सम्बन्धित संस्था छल—ई तर्क आधुनिक सामाजिक धार्मिक इतिहाससँ सामंजस्य रखैत अछि।

स्त्री-संघ, गृहस्थ स्त्री दाता आ धार्मिक अर्थव्यवस्था पर चर्चा महत्त्वपूर्ण अछि, किन्तु क्षेत्रीय अभिलेखीय उदाहरण प्राचीन कालमे सीमित अछि। पुस्तक ई सीमा मानैत अछि, जे उचित अछि। भविष्य संस्करणमे वैश्याली, नालन्दा, राजगीर, चम्पा आ नेपाल तराईक दान-अभिलेखक तुलनात्मक सूची उपयुक्त रहत।

अध्याय १०: साम्राज्य, अभिलेख आ तीर्थयात्री

अशोक स्तम्भक बाबत “स्तम्भ” आ “स्तम्भलेख”क भेद पुस्तकक उत्कृष्ट सूक्ष्मता अछि। लौरिया-अरेराज, लौरिया-नन्दनगढ़ आ रामपुरवा मे अभिलेखित स्तम्भ, जबकि कोल्हुआ-वैश्यालीक अशोक-सम्बद्ध स्तम्भ अभिलेखहीन—ई तथ्य लोकप्रिय इतिहासक अनेक त्रुटि सुधारैत अछि। साम्राज्यक उपस्थितिक अर्थ सर्वत्र समान प्रशासन नहि; राजकीय दाबी आ स्थानीय अनुभव बीच अन्तर खुला राखल गेल अछि।

फाह्यान आ ह्वेनसाङक यात्रा-वृत्तान्त कैं बुद्धकालक प्रत्यक्षदर्शी स्रोत नहि, अपन कालक तीर्थ-भूगोल आ स्मृति-परिदृश्यक प्रमाण मानब अत्यन्त उचित

अछि। दूरी, दिशा, स्थल-समूह आ स्थानीय कथा मिलाकऽ ऐतिहासिक भूगोल बनैत अछि; एकटा ली वा योजन कँ आधुनिक GPS बिन्दुमे बदलब इतिहास नहि।

उत्तर बिहारमे अशोकक एकाश्मक स्तम्भ एकटा विशिष्ट राजनीतिक गलियाराक साक्ष्य अछि। लौरिया-अरेराज, लौरिया-नन्दनगढ़, आ रामपुरवाक एक स्तम्भ पर प्रारम्भिक ब्राह्मी लिपिमे मुख्य स्तम्भ-लेख १ सँ ६ उत्कीर्ण अछि। मुदा रामपुरवाक दोसर स्तम्भ (वृषभ शीर्ष) आ वैशालीक कोल्हुआक सिंह-शीर्ष स्तम्भ पूर्णतः अभिलेख-विहीन अछि। ठाकुरक शोध-नियम अछि जे अभिलेख-युक्त आ अभिलेख-विहीन स्मारककँ एके टोकरीमे नै राखल जाय। गुप्त कालमे चन्द्रगुप्त प्रथम आ कुमारदेवीक 'राजा-रानी प्रकारक' स्वर्ण-मुद्रा पर 'लिच्छवयः' खुनल अछि, आ समुद्रगुप्तक प्रयाग प्रशस्तिमे ओकरा 'लिच्छविदौहित्र' कहल गेल अछि। एहि प्रशस्तिमे नेपालकँ सीमावर्ती करद राज्य (frontier polity) क श्रेणीमे राखल गेल अछि। फाहियान (पाँचम शताब्दी) आ ह्वेनसांग (सातम् शताब्दी) क यात्रा-वृत्तान्तक तुलना करैत ठाकुर देखबैत छथि जे ह्वेनसांगक समय वैशाली उजाड़ भऽ चुकल छल, बौद्ध विहार भग्नावस्थामे छलाह, आ निर्ग्रन्थ (जैन) तथा हिन्दू मन्दिरक बाहुल्य छल।

अध्याय ११: नेपालक लिच्छवि आ निरन्तरताक प्रश्न

वैश्यालीक लिच्छवि आ काठमाण्डू उपत्यकाक लिच्छवि बीच साझा नाम वास्तविक ऐतिहासिक प्रश्न उठबैत अछि, मुदा साझा नाम स्वयं अविच्छिन्न वंशावली सिद्ध नहि करैत। पुस्तक मानदेवक 464 ई.क अभिलेख, गुप्तकालीन लिच्छवि-प्रतिष्ठा, नेपालक बादक वंशावली आ दक्षिण-उत्तर गलियाराक सम्भावना कँ अलग स्तर पर रखैत अछि। ई ‘ना पूर्ण अस्वीकार, ना पूर्ण सिद्धि’ वाला स्थिति इतिहासलेखनक दृष्टिसँ सबल अछि।

प्रयागराज शर्मा, Riccardi, Slusser, Whelpton आदि स्रोतक उपयोगसँ लिच्छवि नेपालक भूमि, कर, पंचायत-जैसन स्थानीय निकाय, गुठी-सदृश संस्था आ राजकीय निवासक चर्चा पर्याप्त ठोस अछि। किन्तु “वैश्याली मूल” पर निर्णायक कथन देबाक बदला प्रवासन, नाम-ग्रहण, मिश्रित वंश अथवा राजनीतिक प्रतिष्ठा—एहि वैकल्पिक परिकल्पनाकँ खुला राखब उचित अछि।

काठमांडू उपत्यकामे प्रामाणिक इतिहासक आरम्भ चाँगूनारायण मन्दिरक मानदेवक गरुड़ध्वज स्तम्भ-अभिलेखसँ होइत अछि, जाहि पर संवत् ३८६ अंकित अछि। थियोडोर रिकार्डी आदिक अनुसार ई शक संवत् अछि जे ४६४ ईस्वीक निर्धारण करैत अछि। अभिलेखमे मानदेवक माता राज्यावतीक राजनीतिक-धार्मिक भूमिका अत्यन्त विशिष्ट अछि, जतय ओ पति धर्मदेवक मृत्यु पर सती होयबाक बदला राज्य-संचालनमे पुत्रक मार्गदर्शन करैत छथि। नेपालक लिच्छवि अभिलेख संस्कृत भाषामे अछि, मुदा कमल पी. मल्लाक अनुसार ओहिमे प्रयुक्त स्थान-नाम आ प्रशासनिक शब्द गैर-संस्कृत (प्रारम्भिक नेवार/तिब्बती-बर्मन) अछि। अंशुवर्मा (कैलाशकूटभवन) आ जिष्णुगुप्तक संयुक्त शासन, पाञ्चाली (ग्राम परिषद), आ गुठी (धार्मिक निगम) क साक्ष्य भेटैत अछि। सबसँ पैघ ऐतिहासिक प्रश्न: की काठमांडूक लिच्छवि वैशालीक लिच्छविक सीधा वंशज छलाह? ठाकुरक निष्कर्ष अछि जे नाम आ गोत्रक समानतासँ प्रवास वा वैवाहिक सम्बन्धक सम्भावना तँ बनैत अछि, मुदा वैशालीसँ काठमांडू धरि एक सहस्र वर्षक कोनो अखण्ड वंशावली वा पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध नै अछि; ई सम्बन्ध सांस्कृतिक-स्मृति आ राजनीतिक प्रतिष्ठामे बेसी निहित अछि।

६. खण्ड III: मध्यकाल

अध्याय १२: तिरभुक्ति आ आरम्भिक मध्यकालीन क्षेत्रीय व्यवस्था

तिरभुक्ति कँ मिथिलाक शाश्वत पर्याय बनाबयक बदला प्रशासनिक-भौगोलिक पदक रूपमे पढ़ब ऐतिहासिक रूपसँ अधिक सुरक्षित अछि। भूमि-अनुदान, ताम्रपत्र, राजकीय उपाधि आ क्षेत्रीय मार्गक माध्यमसँ राज्य, भू-राजस्व, धार्मिक दान आ ग्राम समाजक सम्बन्ध देखायल गेल अछि। ताम्रपत्र कँ केवल राजवंशीय तारीखक स्रोत नहि, बल्कि अधिकार, कर-मुक्ति, सीमा-वर्णन, साक्षी आ सामाजिक मध्यस्थताक दस्तावेज मानब अध्यायक सबलता अछि।

एहि खण्डमे नेपाल तराई आ उत्तर बिहारक समकालीन अभिलेखक तुलनात्मक मानचित्र अधिक होइत तँ तिरभुक्तिक वास्तविक प्रशासनिक परिवर्तनीयता पाठकक नजरि सामने स्पष्ट होइत। पुस्तकक मानचित्र संख्या

सम्पूर्ण ग्रन्थक पैमाना देखैत कम अछि; मध्यकालीन भूगोल लेल अतिरिक्त मानचित्र अत्यावश्यक अछि।

'तीरभुक्ति' शब्द गुप्त कालक प्रशासनिक भूगोलमे दृढतापूर्वक स्थापित भेल। बसाढ़ (वैशाली) क मृद्-मुद्रा (clay seals) सँ चन्द्रगुप्त द्वितीयक पटरानी महादेवी ध्रुवस्वामिनी आ युवराज गोविन्दगुप्तक कार्यालय (kumārāmātya-adhikaraṇa) क पुष्टि होइत अछि। कटरा (मुजफ्फरपुर) ताम्रपत्र (डी. सी. सरकार अनुसार आठम शताब्दी पूर्वार्द्ध) मे राजा जीवगुप्त द्वारा तीरभुक्तिक चामुण्डा-विषयमे चामुण्डा-भट्टारिका मन्दिरकेँ तीनटा गाम दान देबाक विवरण अछि, जतय अक्षपटलिक, महासामन्त, सेनापति आदि पद नाम आ आम, महुआ, जल-स्थल, पाथर-खदान सहित भूमिक सम्पूर्ण अधिकारक हस्तान्तरण देखाइत अछि। भागलपुर ताम्रपत्र (नारायणपाल) मुंगेर (मुद्गगिरि) विजय-स्कन्धावारसँ जारी कएल गेल छल, जाहिमे तीरभुक्तिक कक्ष-विषयक मकुटिका गाम पाशुपत शैव मन्दिरकेँ दान देल गेल। बनगाँव (सहरसा) ताम्रपत्र (विग्रहपाल तृतीयक १७ म राज्यवर्ष) तीरभुक्तिक होड्र्य-विषयक वासुकावर्त्त गामक आधा भाग कोलाञ्चसँ आयल मीमांसा, व्याकरण आ तर्कक विद्वान घान्टूकशर्मनकेँ दान देबाक साक्ष्य दैत अछि, जाहिमे क्षेत्रकर (किसान), मेद, आन्ध्र, चाण्डाल धरिक सामाजिक संचरनाक उल्लेख अछि। १०१९-२० ई. क रामायण पाण्डुलिपिक पुष्पिकामे तीरभुक्तिमे 'गांगेयदेव' क शासनक उल्लेख अछि, जकरा किछु विद्वान कलचुरि गांगेयदेव मानैत छथि तँ किछु स्थानीय तीरभुक्ति शासक।

अध्याय १३: कर्णाट आ सिमरौनगढ़

सिमरौनगढ़क इतिहासमे राजवंशीय परम्पराक संग पुरातत्त्व, दुर्गप्राचीर, जल-व्यवस्था, नेपालक ऐतिहासिक सामग्री आ तिब्बती यात्री-परम्पराक उपयोग कएल गेल अछि। 1990 दशकक इतालवी-नेपाली पुरातात्त्विक कार्य, विशेषतः Vidale, Balista आ Torrieriक दुर्ग परीक्षण, राजनीतिक राजधानीक भौतिक आयाम समझबा लेल महत्त्वपूर्ण आधार अछि। पुस्तकक गुण ई जे सिमरौनगढ़ केँ केवल “राजधानीक नाम” नहि, दुर्गित-जल-आधारित परिदृश्यक रूपमे देखैत अछि।

हरिसिंहदेवक उत्तरगमन आ नेपालसँ सम्बन्ध विषयमे बादक वंशावली आ स्मृतिसँ सावधानी बरतल गेल अछि। एहि अध्यायकेँ और मजबूत करबाक लेल दुर्गक प्रकाशित trench profiles, pottery sequence, तिथिकरण आ शहरी क्षेत्रफल विषयक एक समेकित तालिका देल जा सकैत अछि।

नान्यदेव द्वारा १०९७ ई. (परम्परागत श्लोक अनुसार) मे स्थापित कर्णाट वंश भारत आ नेपालक सीमान्तकेँ जोड़निहार राज्य छल, जकर राजधानी सिमराँवगढ़ (वर्तमान बारा जिला, नेपाल) मे अवस्थित छल। मैसिमो विदाले, बालिस्ता आ तोरिएरी (१९९३, १९९७) द्वारा कएल गेल इटालियन-नेपाली संयुक्त उत्खननमे सिमराँवगढ़क रक्षा-प्राचीरक परीक्षण-खाई (trench) सँ कम सँ कम दू टा निर्माण-चरण (two construction phases) स्पष्ट भेल, जाहिमे पक्का ईंटा आ बाँस-काठक संरचनाक प्रयोग भेटल। विदाले आगाह करैत छथि जे एहि प्राचीरक निर्माणकेँ बिना अभिलेखक सीधे रामसिंहदेवक मर्मत वा तुगलकी विध्वंस सँ जोड़ब पुरातात्विक दृष्टि सँ मात्र एकटा परिकल्पना अछि।

तिब्बती बौद्ध भिक्षु चाग लो-त्सा-वा (धर्मस्वामिन) १२३६ ई. मे तीरहुत मार्गसँ नेपाल जाइत काल कर्णाट राजा रामसिंहदेवसँ भेंट कएलनि; राजा हुनकेँ अपन राज-पुरोहित बनयबाक प्रस्ताव देलनि, जाहिमे धर्मस्वामिन असमर्थता प्रकट कएलनि। ई विवरण तत्कालीन दरबारी संस्कृति आ मार्ग-सुरक्षाक प्रत्यक्षदर्शी प्रमाण अछि। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्णरत्नाकर तत्कालीन मैथिली समाज, वेश्या, धूर्त, संगीत, भोजन आ चौरासी जातिक यथार्थवादी विश्वकोशीय आख्यान अछि। चण्डेश्वर ठाकुरक राजनीतिरत्नाकर सामन्ती सोपानक्रममे राजाक विधिक अधिकारक निरूपण करैत अछि। १३२४-२५ ई. मे गयासुद्दीन तुगलकक आक्रमणसँ हरिसिंहदेवक पलायन भेल आ सिमराँवगढ़क पतन भेल।

अध्याय १४: ओइनिवार शासन, सल्तनती सत्ता आ राजनीतिक संक्रमण

ई अध्याय सजाओल राजसूचीक बदला “कालक्रमिक आधार-बिन्दु” बनबैत अछि—सिक्का, अभिलेख, पाण्डुलिपि, साहित्यिक स्मृति आ फारसी/अरबी स्रोत। नरसिंहक 1453 कन्धाहा अभिलेख, भैरवसिंहक सिक्का, उत्तर-ओइनिवार काल-क्षितिज आदि केँ अलग प्रमाणशक्तिसँ पढ़ल गेल अछि। 1526 केँ यांत्रिक

अंतिम वर्ष न मानि 1520 दशकक संक्रमण-बैंड कहब एक सार्थक इतिहासलेखन सुधार अछि।

सल्तनती प्रभाव कैं “सभ्यतागत विनाश” वा “पूर्ण सांस्कृतिक निरन्तरता” दुनूमे सरल नहि कएल गेल अछि। राजस्व, सैन्य नियन्त्रण, मार्ग, स्थानीय कानून, संस्कृत-मैथिली विद्या, फारसी प्रशासन आ घर-परिवार—ई सभ परस्पर क्रियाशील छल। ई बहुभाषिक संस्थागत दृष्टि मध्यकालीन मिथिला बुझबाक लेल उपयुक्त अछि।

तुगलक आक्रमणक बाद कामेश्वर ठाकुरसँ आरम्भ भेल ओइनिवार (सुगौना) वंश बिखरल दरबार आ बहुस्तरीय संप्रभुताक प्रतीक छल। कीर्तिलता (अवहट्ठ) मे असलान द्वारा राजा गणेश्वरक छलपूर्वक हत्या (१३७१ ई. क आसपास) आ हुनक पुत्र कीर्तिसिंह द्वारा जौनपुरक शर्की सुल्तान इब्राहिम शाह शर्कीक दरबारमे जा कऽ सैनिक सहायता प्राप्त करबाक वर्णन अछि, जे प्रमाणित करैत अछि जे हिन्दू राजा आ मुस्लिम सुल्तानक सम्बन्ध केवल स्थायी शत्रुताक नै, अपितु राजनीतिक रणनीति आ मैत्रीक सेहो छल। शिवसिंहक स्वर्ण-मुद्रा, सहरसाक कन्दहा सूर्य मन्दिरमे नरसिंहदेवक १४५३ ई. क प्रस्तर शिलालेख, डी. सी. सरकार द्वारा प्रकाशित भैरवसिंहक चाँदीक सिक्का (शाके १४११ / १४८९-९० ई., राज्यवर्ष १५, जाहिसँ राज्यारोहण c. १४७५-७६ ई. सिद्ध होइत अछि), आ राधाकृष्ण चौधरी द्वारा प्रकाशित भागीरथपुरक १५१३ ई. क शिलालेख ओइनिवार वंशक कालक्रमक ठोस आधार छथि। १५२० क दशकमे बंगालक सुल्तान नुसरत शाहक आक्रमणसँ ओइनिवार सत्ता समाप्त भेल।

विद्यापति ठक्कुरक संस्कृत ग्रन्थ लिखनावली राजकीय पत्राचार, राजस्व-प्रारूप आ क्रय-विक्रय विलेखक निर्देशिका अछि। महेश राज पन्त द्वारा सम्पादित तीरहुतक १५म आ १६म शताब्दीक ताड़पत्रीय विलेख ई प्रमाणित करैत अछि जे मिथिलामे 'दास-क्रय' (purchase of enslaved human beings) विधिक रूपसँ प्रचलित छल, जकर प्रारूप लिखनावली मे पहिनहियेँ उपलब्ध छल। ई साक्ष्य मध्यकालीन मिथिलाक स्वर्ण-युगीन रोमान्टिक छविकेँ तोड़ैत कठोर सामाजिक यथार्थ आ श्रम-शोषणकेँ सोझाँ अनैत अछि।

अध्याय १५: दू विद्यापति—मैथिली, संस्कृत विद्या आ कानून

ई पुस्तकक सर्वाधिक मौलिक आ सर्वाधिक परीक्षणयोग्य अध्याय अछि। पुस्तक स्पष्ट रूपेँ महाकवि विद्यापति केँ ज्योतिरीश्वरपूर्व मैथिली पदावली परम्पराक कवि मानैत अछि आ विद्यापति ठाकुर केँ ओइनिवार कालक संस्कृत-अवहट्ट रचनाकार—कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुषपरीक्षा, लिखनावली आदि—सँ जोड़ैत अछि। लेखक स्वयं स्वीकारैत छथि जे ई सर्वमान्य आधुनिक अकादमिक मत नहि; मुख्यधारा एक-विद्यापति मॉडल प्रभावी अछि। ई ईमानदार प्रस्तुति महत्त्वपूर्ण अछि।

दू-विद्यापति मतक पक्षमे एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक संकेत ई जे उन्नीसवीं शताब्दीमे संस्कृत पाण्डुलिपि-सूचनामे सेहो 1205 ई. पूर्वक Saduktikarnamrita मे उद्धृत “Vidyapati” आ शिवसिंह-कालीन प्रसिद्ध विद्यापति बीच कालगत समस्या चिन्हित कएल गेल छल। नाम स्वयं अद्वितीय नहि, एहि कारण रचनासमूहक कर्तृत्व-निर्धारण काज आवश्यक अछि। मुदा एहि प्रतिपादन केँ व्यापक अकादमिक स्वीकृति देबाक लेल केवल नाम-दोहराव पर्याप्त नहि। आवश्यक अछि—प्राचीनतम पदावली पाण्डुलिपिक तिथि, भाषिक स्तर, भणिता-परम्परा, उद्धरण-श्रृंखला, पाण्डुलिपि-वंशवृक्ष, राजकीय नामक आन्तरिक साक्ष्य, छन्द-विन्यास, लिपि-पैलियोग्राफी आ अन्य ग्रन्थक पारस्परिक उल्लेखक व्यवस्थित समालोचनात्मक प्रकाशन।

अतः वर्तमान पुस्तकक दू-विद्यापति प्रतिपादन इतिहासलेखनक “गम्भीर परिकल्पना” रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा एहि कृतिक अन्तिम संस्करणमे एक स्वतंत्र प्रमाण-परिशिष्ट आवश्यक अछि। ओहि परिशिष्टमे प्रत्येक कृति/पदावली समूहक पक्ष-विपक्षक साक्ष्य, सर्वप्रथम उपलब्ध पाण्डुलिपि, प्रकाशित सम्पादन, तिथि-सीमा, भाषिक विशेषता आ प्रचलित कर्तृत्व-निर्धारण स्पष्ट तालिकामे देल जाए। एहन सामग्री पुस्तकक सबसे विवादास्पद दाबी केँ सबसे मजबूत योगदानमे बदलि सकैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक ग्रन्थक सबसँ क्रान्तिकारी आ मौलिक हस्तक्षेप अछि: 'दुई विद्यापति' क ऐतिहासिक पृथक्करण। पारम्परिक इतिहासकार लोकनि सम्पूर्ण मैथिली पदावली, संस्कृत ग्रन्थ आ अवहट्ट काव्यकेँ एकहि 'विद्यापति' क रचना मानि कऽ एकटा असम्भव आ विरोधाभासी जीवनीक निर्माण करैत आएल छथि। ठाकुर साक्ष्य-पदानुक्रमक आधार पर सिद्ध करैत छथि जे लोक-भाषा

मैथिलीमे राधा-कृष्ण प्रेम, नचारी आ महेशवाणी रचनिहार महाकवि विद्यापति ज्योतिरीश्वरसँ पूर्व (१२म-१३म शताब्दी वा पूर्ववर्ती) भऽ गेलाह, जिनका श्लोक श्रीधरदासक सदुक्तिकर्णामृत (१२०५ ई.) मे संकलित अछि आ जिनकर परम्परा बिदापत नाच तथा लोक-कण्ठमे जीवित रहल।

एकर विपरीत, ओइनिवार दरबारक पण्डित विद्यापति ठक्कुर १४म-१५म शताब्दीमे भेलाह, जे राजा कीर्तिसिंह, शिवसिंह आ भैरवसिंहक आश्रयमे रहि कऽ संस्कृत आ अवहट्ठमे कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुषपरीक्षा, लिखनावली, विभागसार, दानवाक्यावली आदिक रचना कएलनि। रमणनाथ झा अपन साहित्य अकादेमीक पोथी Vidyāpati मे स्वयं स्वीकार केने छलाह जे मिथिलामे 'विद्यापति' नामसँ अनेक व्यक्ति भेलाह, जाहिमे एकाधिक 'ठाकुर' सेहो छलाह, आ नाम-सादृश्यक आधार पर पहचान करब जोखिम-भरा अछि। ठाकुर एहि चेतावनीकेँ कठोरतासँ लागू करैत देखबैत छथि जे यदि दुनूकेँ एक मानल जाय तँ पदावलीक लोक-विद्रोह आ सामाजिक यथार्थ दरबारी सामन्तवादक गर्तमे समा जाइत अछि।

तालिका: महाकवि विद्यापति आ विद्यापति ठक्कुरक तुलनात्मक ऐतिहासिक विन्यास

तुलनात्मक आयाम	महाकवि विद्यापति (गीतिकार)	विद्यापति ठक्कुर (दरबारी विद्वान)
कालखण्ड	ज्योतिरीश्वरसँ पूर्व (१२म-१३म शताब्दी वा पूर्ववर्ती)।	ओइनिवार काल (१४म-१५म शताब्दी, कीर्तिसिंह, शिवसिंह, भैरवसिंहक समकालीन)।
मुख्य भाषा	विशुद्ध देशभाषा मैथिली (लोक-पदावली, नचारी, महेशवाणी)।	संस्कृत आ अवहट्ठ (शास्त्रीय, दरबारी आ विधिक भाषा)।

तुलनात्मक आयाम	महाकवि विद्यापति (गीतिकार)	विद्यापति ठक्कुर (दरबारी विद्वान)
रचित ग्रन्थ	मैथिली पदावली (राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती नचारी, लोक-गीत)।	कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुषपरीक्षा, लिखनावली, विभागसार।
सामाजिक आधार	जन-कवि; बिदापत नाच, मण्डल-दलित लोक-परम्परा आ अँगनाक मौखिक परम्परा।	बिस्फीक ओइनिवार दरबारी कुलीन ब्राह्मण; 'ठक्कुर' उपाधिधारी मन्त्री आ धर्माधिकारी।
प्राचीनतम पाठ्य-साक्ष्य	श्रीधरदासक सदुक्तिकर्णामृत (१२०५ ई.)मे विद्यापतिक श्लोकक उपस्थिति।	शिवसिंहक विस्फी ताम्रपत्र, ओइनिवार पाण्डुलिपि पुष्पिका।
प्रतीकात्मक आख्यान	उगना (शिवक चाकर बनब) आ बोधी कायस्थक लोक-कथा (मूलतः जन-गीतिकारसँ सम्बद्ध)।	दरबारी नीतिशास्त्री, स्मृति-निबन्धकार आ पत्राचार-प्रारूपकार।

अध्याय १६: मुगलकालीन तिरहुत, अंग आ आरम्भिक आधुनिक संस्था

मुगलकालक विवेचनमे फारसी प्रशासन, संस्कृत शिक्षण, मैथिली साहित्य, स्थानीय कराधिकार, धार्मिक दान, बाजार आ कारीगरक सह-अस्तित्व पर बल अछि। “फारसी राज्य बनाम हिन्दू समाज” सन द्विभाजन कैं पुस्तक अस्वीकार करैत अछि। परिवार एकही समय फारसी फरमान ले सकैत छल, संस्कृत शिक्षाकैं संरक्षण दे सकैत छल आ मैथिली रचना करा सकैत छल—एहि प्रकारक कार्यगत बहुभाषिकता इतिहासक अधिक यथार्थ चित्र दैत अछि।

दरभंगा/खण्डवला घरानाक उदय कैं साम्राज्यक कमजोरी मात्र नहि, साम्राज्य-स्थानीय मध्यस्थताक परिणाम मानब उपयोगी अछि। मुदा कारीगर,

सेवा-समूह, स्त्रीक संपत्ति, ग्रामीण मुस्लिम समाज आ गैर-उच्चवर्णीय अनुभवक प्रत्यक्ष स्रोत कम अछि। पुस्तक ई अभिलेखीय कमी मानैत अछि, तथापि भविष्यमे अदालती दस्तावेज, वक्फ/मठ/देवोत्तर अभिलेख, स्थानीय व्यापारिक लेखा आ पाण्डुलिपि-कोलोफनक अधिक उपयोग सम्भव अछि।

अकबरक समय १५८० ई. मे बिहारकेँ मुग़ल सूबा बनाओल गेल। अबुल फजलक आईन-ए-अकबरी (खंड २, जेरेट-सरकार अनुवाद) अनुसार सरकार तीरहुतमे ७४ परगना (mahal), २,६६,४६४ बीघा नाप-युक्त भूमि, १,९१,७९,७७७½ दाम निर्धारित जमा, तथा ७०० सवार आ ८०,००० पियादाक सैनिक दायित्व छल। सरकार मुंगेरमे ३१ महल, १०,९६,२५,९८१ दाम जमा, आ २,१५० सवार तथा ५०,००० पियादाक दायित्व छल। भागलपुर सरकार मुंगेरक अन्तर्गत आबि गेल छल, जाहिसँ प्राचीन अंगक प्रशासनिक भूगोल मुग़ल राजस्व-व्यवस्थासँ जुड़ि गेल।

दरभंगाक खण्डवला वंशक आरम्भ महेश ठाकुर द्वारा अकबरक समय चौधराई आ कानूनगोई प्राप्त करबासँ भेल। औरंगजेबक समय १६६५-६६ ई. मे महीनाथ ठाकुरकेँ मोरंग सीमान्त पर सैनिक अभियानमे मुग़ल फौजदारक मदति करबाक पुरस्कारस्वरूप तीरहुत आ मुंगेरमे १०३ परगना आ बंगालक ताजपुर-पूर्णियामे ७ परगना (कुल ११० परगना) मे विशाल जमीन्दारी, मिल्कियत, बन्दोबस्ती अधिकार आ माही-मरातिबक सम्मान भेटल। १७३३ ई. मे बिहारकेँ बंगालक नवाबक अधीन कऽ देल गेल, जाहिसँ कम्पनी शासनक लेल मार्ग प्रशस्त भेल।

७. खण्ड IV: आधुनिक औपनिवेशिक काल

अध्याय १७: कम्पनी शासन, स्थायी बन्दोबस्त आ दरभंगा राज

एहि अध्यायक सबसँ महत्त्वपूर्ण सुधार दरभंगा राज केँ ब्रिटिश भारतक “princely state” नहि, विशाल जमींदारी estate मानब अछि। राजकीय उपाधि, दरबारी संस्कृति आ क्षेत्रीय प्रतिष्ठा औपनिवेशिक संवैधानिक हैसियत नहि बदलैत। कम्पनीक दीवानी, 1793 क स्थायी बन्दोबस्त, राजस्व-बकाया बिक्री, जमीनक दस्तावेजीकरण आ घरानाक राजनीतिक स्मृति—एहि सभक भेद पुस्तक स्पष्ट करैत अछि।

“sunset law”क लोकप्रिय शब्दावलीक कानूनी कालक्रम अलग करब सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। 1793क राजस्व सिद्धान्त आ बादक उन्नीसवीं शताब्दीक कठोर समय-सीमा-सम्बन्धी विधान एकहि क्षण नहि। एहन विधिक सूक्ष्मता पुस्तकक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

१७६५ मे शाह आलम द्वितीय द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनीकेँ बंगाल, बिहार आ उड़ीसाक दीवानी देल गेल, जे राजस्व-संप्रभुताक पैघ हस्तान्तरण छल। १७७० क महाअकालक बाद वारेन हेस्टिंग्स १७७२ मे इजारेदारी व्यवस्था अनलनि। २५ नवम्बर १७८९ कें बिहार लेल दस-वर्षीय बन्दोबस्त (Decennial Settlement) घोषित भेल, जकरा २२ मार्च १७९३ कें लार्ड कॉर्नवालिसक 'रेगुलेशन १' द्वारा स्थायी बन्दोबस्त (Permanent Settlement) बना देल गेल।

ठाकुर एतय स्पष्ट करैत छथि जे स्थायी बन्दोबस्त केवल 'सरकारक जमा' (government's assessed jama) केँ स्थायी केलक; ई किसानक लगान (rent) वा ओकर सामाजिक स्थितिकेँ स्थायी नै केलक। सूर्यास्त कानून (Sunset Law) क कठोर प्रावधान १८४१ क एक्ट १२ आ १८४५ क एक्ट १ द्वारा निर्मित भेल, जकर अन्तर्गत निर्धारित सूर्यास्तक पहिने राजस्व नै जमा भेला पर जमीन्दारी नीलाम कऽ देल जाइत छल।

दरभंगा राज कोनो 'प्रिंसली स्टेट' (देशी रियासत) नै छल जाहिक सम्प्रभु सन्धि ब्रिटिश सत्तासँ छल; ई बंगाल प्रेसीडेन्सीक अन्तर्गत ब्रिटिश कानूनक अधीन एकटा विशाल जमीन्दारी (estate) छल। स्थायी बन्दोबस्तक समय राजा माधव सिंह (c. १७७५-१८०७) आ कलक्टरक बीच भीषण विवाद भेल, आ माधव सिंहक पूर्ववर्ती अधिकार संकुचित भऽ गेल। पटना उच्च न्यायालयक १९२४ क निर्णय (Maharajadhiraj of Darbhanga v. CIT) मे सुरक्षित दस्तावेज देखाबैत अछि जे माधव सिंह द्वारा परगना हाटी आदिक बन्दोबस्ती लेल ७ अप्रैल १८०० कें अर्जी देल गेल छल।

स्टीफन हेनिंगहम आ आनन्द यांगक शोध अनुसार कोर्ट ऑफ वार्ड्स (१८६०-१८७९) क १९ वर्षक प्रबन्धनमे ब्रिटिश अधिकारि लोकनि दरभंगा राजक ऋण समाप्त कएलनि, आधुनिक नौकरशाही (सर्कल मैनेजर, तहसीलदार, वकील) बहाल कएलनि, आ नवयुवक लक्ष्मेश्वर सिंहकेँ पाश्चात्य शिक्षा देलनि। १८८५

क बंगाल काश्तकारी कानून (Tenancy Act) आ जे. एच. केर (J. H. Kerr) क १८९६-१९०३ क दरभंगा सर्वे-सेटलमेन्ट रिपोर्ट प्रमाणित करैत अछि जे खतियान आ अधिकार-अभिलेख (record-of-rights) तैयार भेलाक बादो जमीन्दारी अमला द्वारा 'अबाब' (गैर-कानूनी उपकर) असूल कएल जाइत छल। एही शोषणक विरुद्ध १९१९-२० मे मधुबनी आ सुपौल क्षेत्रमे स्वामी विद्यानन्दक नेतृत्वमे किसान लोकनि दरभंगा राजक विरुद्ध भीषण आन्दोलन कएलनि, जाहिसँ बाध्य भऽ राजकेँ किछु रियायत देबऽ पड़ल।

श्रोत्रिय प्रश्न: लगभग 1800 ई.क प्रतिपादन

पुस्तक ‘श्रोत्रिय’क दू अर्थ पृथक करैत अछि—(क) प्राचीन संस्कृत परम्परामे वैदिक विद्या/योग्यता सूचक शब्द; (ख) मैथिल ब्राह्मणक स्थिर वंशानुगत उपजातीय-श्रेणी। पुस्तकक मत अनुसार दोसर संस्थागत अर्थ लगभग 1800 ई.क आसपास पञ्जी/शाखा-पुस्तकक पुनर्वर्गीकरण, भूमि-सत्ता, राजस्व-व्यवस्था आ कुलीन पदक्रमक नव राजनीतिक अर्थव्यवस्थामे सघन भेल। ई अर्थगत भेद तार्किक रूपेँ बहुत महत्त्वपूर्ण अछि; प्राचीन शब्दक उपस्थिति स्वत: आधुनिक जाति-संरचनाक प्राचीनता सिद्ध नहि करैत।

मुदा एहि प्रतिपादनक प्रमाणिकता लेल अपेक्षित मानक अत्यन्त ऊँच अछि। Anshuman Pandey (2014) पञ्जीक दीर्घ मध्यकालीन परम्परा, मैथिल ब्राह्मण सामूहिक पहचान, genealogy, territory आ श्रेणीबद्ध स्थितिक इतिहासक महत्त्व स्थापित करैत छथि। तेँ “सभ rank केवल 1800क बाद उत्पन्न” सन व्यापक वाक्य Pandeyक शोधसँ स्वत: नहि निकलैत। पुस्तक स्वयं दावा कैँ संकीर्ण करैत अछि—विशेषत: ‘Śrotriya as a fixed वंशानुगत उपजाति’—जे अधिक सावधान अछि। तथापि अंतिम निर्णायक तर्क लेल पञ्जी पाण्डुलिपिक स्रोत-उत्पत्ति, कागज/स्याही/लिपि, लेखकीय स्तर, पुनर्लेखन, हाशिया-टिप्पणी, शाखा-पुस्तकक प्रथम उपयोग, 1600 शक/1678 परम्पराक पाण्डुलिपि-इतिहास, माधव सिंह-संबंधी आदेशक मूल प्रति आ नेपालक तुलनात्मक पञ्जी/सामाजिक प्रयोगक प्रकाशन आवश्यक अछि।

एहि कारण पुस्तकक c.1800 प्रतिपादन कैँ “स्रोत-आधारित नव पुनर्निर्माण” कहब उचित अछि, “अन्तिम रूपेँ सिद्ध सर्वमान्य तथ्य” नहि। पुस्तक एहि

मतक विवादास्पद स्वरूप किछु हद धरि बतबैत अछि; हमर मतमे एहि विषयपर पूर्ण प्रतिरूप-परिशिष्ट, अक्षरशः प्रतिलेखन आ स्वतंत्र पुरालिपिकीय समीक्षा जोड़ब अनिवार्य सुधार होयत।

गजेन्द्र ठाकुरक ग्रन्थक दोसर सर्वाधिक मौलिक निष्कर्ष अछि: 'श्रोत्रिय' उपजातिक आधुनिक उद्भव। पारम्परिक आ मिथकीय इतिहासकार ई प्रचारित करैत आएल छथि जे १३२६ ई. मे कर्णाट राजा हरिसिंहदेवक समय पंजी-प्रबन्ध भेल आ ओहि समय मैथिल ब्राह्मणमे चारि श्रेणी (श्रोत्रिय, योग्य, पञ्जीबद्ध, आ जयवार) सदा लेल बनि गेल। डिजिटाइज्ड प्रामाणिक पंजी-पोथीसभक गहन अन्वेषणक आधार पर ठाकुर एहि भ्रान्तिकेँ पूर्णतः खण्डित करैत छथि:

तालिका: ‘श्रोत्रिय’ सम्बन्धी पारम्परिक धारणा आ स्रोत-नियन्त्रित निष्कर्षक तुलना

विश्लेषणक आयाम	पारम्परिक मिथकीय धारणा	गजेन्द्र ठाकुरक स्रोत-नियन्त्रित शोध-निष्कर्ष
उत्पत्तिक समय	१३२६ ई. (कर्णाट राजा हरिसिंहदेवक काल)।	लगभग १८०० ई. (कम्पनी शासन, स्थायी बन्दोबस्त आ राजा माधव सिंहक काल)।
'श्रोत्रिय' शब्दक अर्थ	जन्मना, बन्द, सर्वोच्च वैवाहिक उपजाति (sub-caste)।	प्राचीन संस्कृत शब्द, जकर अर्थ 'वेद/छन्दक अध्येता' छल; कोनो वंशानुगत उपजाति नै छल।
शाखा-पुस्तकक निर्माण	१६०० शक (१६७८ ई.) वा १७६० ई. क 'राजा माधव सिंहक आदेश'।	कालक्रमीय दृष्टि सँ असम्भव, किएक तँ माधव सिंहक शासनकाल c. १७७५-१८०७ ई. छल; अतः १७६० क आदेश जाली अछि।

विश्लेषणक आयाम	पारम्परिक मिथकीय धारणा	गजेन्द्र ठाकुरक स्रोत-नियन्त्रित शोध-निष्कर्ष
सामाजिक-आर्थिक कारण	विशुद्ध रक्त आ कुलीनताक प्राकृतिक दैवीय संरक्षण।	१७९३ क स्थायी बन्दोबस्तक बाद दरभंगा राजक संकुचित राजनीतिक शक्तिकेँ सामाजिक-वैवाहिक नियंत्रणमे बदलबाक प्रयास।
पदक्रम आ गतिशीलता	जन्मसँ निर्धारित, अपरिवर्तनीय श्रेणी।	पंजीमे धन, राजकीय अनुग्रह आ दरबारी कृपाक आधार पर 'पदोन्नति' (upgradation) आ पदच्युतिक स्पष्ट अभिलेख भेटैत अछि।
नेपालक मिथिलाक साक्ष्य	सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्रमे सर्वत्र एक समान व्यवस्था।	नेपालक तराई (मिथिला) क मैथिल ब्राह्मणमे ई कठोर श्रोत्रिय उपजाति-विभाजन ऐतिहासिक रूपसँ अनुपस्थित अछि।

अध्याय १८: कृषक समाज, बाजार, जाति आ श्रम

औपनिवेशिक ग्राम केँ स्थिर आत्मनिर्भर इकाइ न मानि भूमि-अधिकार, किराया, बाजार, ऋण, जाति, मौसमी प्रवासन, नदी, रेल, अदालत आ estate powerक संयुक्त प्रणाली मानल गेल अछि। census, settlement report आ gazetteerक संख्याकेँ denominator, क्षेत्रीय सीमा आ वर्गीकरण बिना उपयोग नहि करबाक चेतावनी अत्यन्त उचित अछि।

एहि अध्यायमे कृषक आ श्रमिक आवाजक विस्तारक सम्भावना अछि। Indigo Commission, tenancy litigation, मजदूरी अभिलेख, प्रवासी श्रमिकक

पत्र, जातीय सभा-पत्रिका, स्त्रीक संपत्ति विवाद आ मौखिक इतिहास अधिक मात्रामे जोड़लासँ राज्य/जमींदार-केंद्रित अभिलेखक असंतुलन कम होइत।

अध्याय १९: नदी, विपत्ति, परिवहन आ औपनिवेशिक राज्य

ई पुस्तकक सर्वश्रेष्ठ सामाजिक-पर्यावरणीय अध्यायमे गनल जा सकैत अछि। तटबन्ध, निजी बाँध, रेल-पटरी, सड़क, culvert, बाढ़-प्रतिवेदन, estate interest आ सरकारी अभियान्त्रिकी कँ एक संयुक्त जल-राजनीतिक इतिहासमे रखल गेल अछि। रेल “आधुनिकीकरण” मात्र नहि; ऊँच embankment drainage रोकि स्थानीय जलजमाव बढ़ा सकैत अछि। ई द्वैधता तकनीकी इतिहास कँ सामाजिक इतिहास बनबैत अछि।

औपनिवेशिक बाढ़-प्रतिवेदन कँ पीड़ाक पारदर्शी फोटो नहि, प्रशासनिक genre मानब महत्त्वपूर्ण अछि। जे नापल जा सकैत—फसल क्षेत्र, राजस्व नुकसान, सड़क कटान—ओ अधिक दर्ज होइत; देखभाल, विस्थापन, घरेलू श्रम आ गैर-दर्ज हानि कम। एहेन अभिलेख-समीक्षा पुस्तकक आधुनिक खण्डक विशेष शक्ति अछि।

अध्याय २०: शिक्षा, मुद्रण, भाषा, सुधार आ राष्ट्रवाद

शिक्षा आ मुद्रणक इतिहास कँ भाषा-मानकीकरण, सार्वजनिक क्षेत्र, संस्था, विश्वविद्यालय, सभा, पत्र-पत्रिका आ राष्ट्रवादी राजनीति संग जोड़ल गेल अछि। मिथिलाक आधुनिक भाषिक पहचान केवल “प्राचीन भाषाक पुनर्जागरण” नहि; मुद्रण, पाठ्यक्रम, संस्थागत संरक्षण, लिपि-चयन, जनगणना-वर्गीकरण आ सार्वजनिक आन्दोलन सभ एकर रूप बदलैत अछि।

एहि अध्यायमे आओर स्पष्ट रूपँ अलग-अलग सामाजिक समूहक साक्षरता, स्त्री शिक्षा, दलित-पिछड़ा शिक्षण, मुस्लिम शैक्षिक संस्था, नेपाली तराईक विद्यालय आ भाषिक पाठ्यपुस्तकक तुलनात्मक डेटा देलासँ आधुनिक सार्वजनिक क्षेत्रक चित्र अधिक समावेशी बनैत।

अध्याय २१: नेपाल तराई, राणा शासन आ 1951 धरि सीमा

भारत-नेपाल सीमा कँ 1815/1816 सन्धिक बाद धीरे-धीरे विधिक, प्रशासनिक आ राजस्वीय अर्थ पाबैत संस्था रूपँ देखल गेल अछि। प्राचीन कालमे एहि सीमा कँ आरोपित नहि करब, मुदा औपनिवेशिक/राणा कालमे कर, भूमि,

पुलिस, आवागमन आ नागरिकतासँ सीमा वास्तविक प्रभावी होइत गेल—ई द्विस्तरीय समझ उपयुक्त अछि।

तराईक इतिहासकेँ काठमाण्डू अथवा ब्रिटिश भारतक परिधि मात्र नहि, आन्तरिक भूमि-राजस्व, वन, बसावट, रोग-पर्यावरण, सीमा-वाणिज्य आ सामाजिक नेटवर्कक क्षेत्र बनाबयक दिशा महत्त्वपूर्ण अछि। तथापि थारू, मधेशी कृषक, सीमापार मुस्लिम समुदाय, व्यापारी आ स्थानीय स्त्री अनुभवक अधिक प्रत्यक्ष स्रोत एहि अध्याय केँ और संतुलित करैत।

२ दिसम्बर १८१५ कें हस्ताक्षरित आ ४ मार्च १८१६ कें मकवानपुरमे अनुमोदित सुगौली सन्धिक धारा ३ द्वारा नेपालक तराई भू-भाग ब्रिटिसकेँ देल गेल छल। मुदा ८ दिसम्बर १८१६ क पूरक ज्ञापन (Supplementary Memorandum) द्वारा कोशी आ गण्डकक बीचक तराई नेपालकेँ वापस भेल, जाहिमे तीरहुत आ सारणक विवादित भूमिकें छोड़ि देल गेल छल। १८६० मे जंगबहादुर राणा द्वारा १८५७ क गदरमे अंग्रेजक मदति करबाक पुरस्कारस्वरूप 'नयाँ मुलुक' (बाँके, बर्दिया, कैलाली, कञ्चनपुर) नेपालकेँ भेटल।

जंगबहादुर राणा द्वारा जारी १८५४ क मुलुकी ऐन सम्पूर्ण जातिकें राज्य-नियन्त्रित सोपानक्रममे बाँधि देलक। महेश सी. रेग्मीक अनुसन्धानक आधार पर तराईमे रैकर (सरकारी राजस्व भूमि), बिर्ता (कर-मुक्त कुलीन भूमि), जागीर (सेवा-बदला भूमि), गुठी (धार्मिक भूमि) आ जिमीदारी व्यवस्था छल; औपनिवेशिक भारतक 'जमीन्दार' आ नेपालक 'जिमीदार' दुई भिन्न विधिक संवर्ग छल। १९२७ मे रक्सौल-अमलेखगंज नेपाल गवर्न्मेन्ट रेलवे आरम्भ भेल। १९३६ मे विराटनगर जुट मिल्सक स्थापना भेल, जतय मार्च १९४७ मे भेल ऐतिहासिक मजदूर हड़ताल आ १० अप्रैल १९४७ क जोगबनी (बिहार) बैठकमे नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा सत्याग्रहक निर्णय राणा शासनक अन्त (फरवरी १९५१) क आधारशिला बनल।

८. खण्ड V: समकालीन काल

अध्याय २२: भूमि-सुधार, लोकतन्त्र आ बदलैत क्षेत्रीय सत्ता

स्वतन्त्र भारत आ 1951 बाद नेपालक भूमि-राजनीति केँ समान प्रक्रिया मानि नहि, अलग संवैधानिक-राजस्वीय पथक रूपमे तुलना कएल गेल अछि।

जमींदारी उन्मूलन, काश्तकारी सुधार, पंचायत/स्थानीय शासन, नेपालक भूमि-सुधार आ लोकतांत्रिक परिवर्तन सभ समान शब्दावलीक बावजूद अलग संस्थागत परिणाम देलक। एहि कारण तुलनात्मक इतिहास सार्थक अछि।

भूमि-सुधारक विधिक पाठ आ वास्तविक क्रियान्वयनक अंतर अधिक मापनयोग्य बनाबय लेल जिला-स्तरीय भूमि-सीमा पुनर्वितरण, काश्तकारी अभिलेखन, भूदान, विवादित भूमि आ दलित/भूमिहीन लाभार्थीक आँकड़ा जोड़ल जा सकैत अछि। वर्तमान अध्याय संरचनात्मक रूपेँ ठोस अछि, मुदा सामाजिक परिणामक क्षेत्रीय तुलना और गहन हो सकैत अछि।

स्वतंत्रताक उपरान्त बिहार भूमि सुधार अधिनियम, १९५० (Bihar Act XXX of 1950) द्वारा मध्यवर्ती हित (जमीन्दारी) समाप्त कएल गेल। महाराजधिराज कामेश्वर सिंह एहि कानूनकेँ सर्वोच्च न्यायालयमे चुनौती देलनि, जतय २ मई १९५२ कें सुप्रीम कोर्ट (State of Bihar v. Kameshwar Singh) भूमि सुधारकेँ वैध घोषित कएलक। मुदा एफ. टोमासन जनूजी (१९७४) क अनुसार, बिचौलिया तँ हटलाह मुदा बटाईदार, खेतिहर मजदूर आ दलितकेँ भूमि पर वास्तविक अधिकार नै भेटल; १९६१ क सीलिंग कानून कागजी बनि कऽ रहि गेल।

१९७८ मे कर्पूरी ठाकुर सरकार द्वारा अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) लेल जे आरक्षण फार्मूला लागू कएल गेल, ओ बिहारक राजनीतिमे मध्यम आ निम्न जातिक प्रवेशक द्वार खोललक। १९९२ क ७३म संविधान संशोधन आ २००६ क बिहार पंचायती राज अधिनियम (जाहिमे महिलाकेँ ५०% आरक्षण देल गेल) शक्ति-संरचनामे आमूल परिवर्तन अनलक।

नेपालमे २००७ वि.सं. (१९५१) क अन्तरिम शासन विधान, २०१५ (१९५९) क चुनाव, २०१७ (१९६०) मे राजा महेन्द्र द्वारा प्रजातन्त्रक हरण आ २०१९ (१९६२) क पञ्चायती व्यवस्थाक बाद २०२१ (१९६४) मे 'भूमिसम्बन्धी ऐन' लागू भेल, जे बिर्ता उन्मूलन आ सीलिंगक प्रयास केलक मुदा तराईक मधेसी किसानक शोषण पूर्णतः समाप्त नै भेल।

अध्याय २३: भारत-नेपाल सीमान्त, प्रवासन आ विनिमय

खुला सीमा कैं “सीमा नहि” कहब पुस्तक टारैत अछि। सीमा कानूनी रूपैं अर्थपूर्ण अछि—नागरिकता, दस्तावेज, माल, सुरक्षा, रेलवे/सड़क, चुनाव, भूमि, आपराधिक अधिकारक्षेत्र—मुदा दैनिक जीवनमे विवाह, श्रम, बाजार, तीर्थ, शिक्षा आ उपचारक पारगमन एक जीवित सीमान्त क्षेत्र बनबैत अछि। एहि दोहरापनक वर्णन अत्यन्त प्रभावी अछि।

समकालीन प्रवासन पर परिवारक प्रेषित धन, लिंगाधारित प्रवासन, मौसमी श्रम, सीमा-बाजारक मूल्य-अन्तर, अनौपचारिक व्यापार आ दस्तावेजीकरण-प्रक्रियाक अधिक मात्रात्मक प्रमाण जोड़लासँ अध्याय आओर मजबूत होइत। नेपालक हालक जनगणना आ प्रवासन thematic report एहि दिशा लेल उपयोगी अछि।

३१ जुलाई १९५० क भारत-नेपाल शान्ति आ मैत्री सन्धिक धारा ७ दुनू देशक नागरिककेँ निवास, सम्पत्ति-स्वामित्व, व्यापार आ आवागमनमे पारस्परिक विशेषाधिकार दैत अछि। नेपालक २०२१ क राष्ट्रिय जनगणना देखाबैत अछि जे नेपालमे विदेशमे जन्म लेनिहार जनसँख्यामे सर्वाधिक भारतक छथि, जाहिमे महिलाक संख्या अत्यधिक अछि; एकर मुख्य कारण तराई-मधेश आ उत्तर बिहारक बीचक ऐतिहासिक वैवाहिक आवागमन ('रोटी-बेटीक सम्बन्ध') अछि।

मुदा खुला सीमाक अर्थ विधिक सीमाक अभाव नै अछि। वीरगंज (२०१८) आ विराटनगर (२०२०) मे एकीकृत जाँच चौकी (ICP) बनल अछि। २ अप्रैल २०२२ कें जयनगर-कुर्था ब्रॉडगेज रेल सेवा आरम्भ भेल। २०१५ क नाकाबन्दी आ २०२० क कोविड-१९ महामारी ई सिद्ध केलक जे संकट कालमे ई सीमा अचानक बन्द आ नियन्त्रित भऽ सकैत अछि।

अध्याय २४: मैथिली आ अंगिका—भाषा, साहित्य आ मान्यता

ई अध्याय भाषा-राजनीतिक इतिहासमे पुस्तकक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान अछि, कारण “मान्यता” कैं एक सीढ़ी नहि मानल गेल अछि। भाषावैज्ञानिक वर्गीकरण, मातृभाषा-स्वपहचान, जनगणना coding, विश्वविद्यालयीय शिक्षण, साहित्य अकादमी, संवैधानिक अनुसूची, राज्य भाषा कानून, अकादमी, विद्यालय नीति आ Unicode—ई सभ अलग संस्थागत क्षेत्र अछि। एक क्षेत्रमे मान्यता दोसरक स्वतः प्रमाण नहि।

नेपाल 2021 जनगणनामे मैथिली 32,22,389 (लगभग 11.05 प्रतिशत) आ अंगिका 35,952 (लगभग 0.12 प्रतिशत) अलग मातृभाषा रूपेँ दर्ज अछि। ई तथ्य पुस्तकक मुख्य पद्धति—जनगणना “तिथि-बद्ध प्रशासनिक evidence” अछि—केँ पुष्ट करैत अछि। भारतमे 2011 C-16क वर्गीकरण-संरचना अंगिकाक स्वतंत्र सर्वभारत संख्या निकालब कठिन बनबैत अछि; एहि असमानतालाई पुस्तक ठीक पहिचानैत अछि।

एक तकनीकी सुधार आवश्यक अछि। Diagram 46क शीर्षक “1903–2027” अछि, जखन कि पुस्तक 2026मे प्रकाशित अछि आ भारतक 2027 जनगणना अद्याप भविष्यक निर्धारित प्रक्रिया अछि। 16 जून 2025क Gazette केवल 2027मे जनगणना होएबाक घोषणा करैत अछि; परिणाम उपलब्ध नहि। तेँ शीर्षक “1903–2026, 2027 जनगणनाक अधिसूचित आगामी बिन्दु सहित” वा timelineमे 2027 केँ स्पष्ट “scheduled/notified” रूपेँ चिह्नित कएल जाए। एहि सँ भविष्यक घटना आ उपलब्ध आँकड़ा बीच भ्रम समाप्त होयत।

मैथिली आ अंगिका भाषाक मान्यता-यात्राकेँ ठाकुर विभिन्न संस्थागत सोपान पर तौलैत छथि:

ठाकुर रेखांकित करैत छथि जे ग्रियर्सनक वर्गीकरण (१९०३) ऐतिहासिक भाषा-विज्ञानक साक्ष्य अछि, जखन कि आधुनिक अंगिका-आन्दोलन बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्धक सामाजिक-राजनीतिक अस्मिताक यथार्थ अछि; दुनूकेँ कालक्रमीय पूर्वाग्रहसँ मुक्त भऽ देखबाक आवश्यकता अछि।

तालिका: मैथिली आ अंगिकाक संस्थागत मान्यता-यात्राक तुलनात्मक विन्यास

संस्थागत क्षेत्र	मैथिली	अंगिका
ग्रियर्सनक वर्गीकरण (१९०३)	Linguistic Survey of India (Vol. V, Pt. II) मे बिहारी समूहक प्रमुख भाषा।	ग्रियर्सन द्वारा 'छिका-छिकी' नामसँ मैथिलीक उपबोलीक रूपमे वर्गीकृत।

संस्थागत क्षेत्र	मैथिली	अंगिका
विश्वविद्यालय मान्यता	१९१७ मे कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा एम.ए. स्तर पर स्वीकृत।	तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालयमे आन्दोलनक बाद पठन-पाठन आरम्भ।
साहित्य अकादेमी	१९६६ सँ वार्षिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रारम्भ।	अद्यापि साहित्य अकादेमीसँ स्वतन्त्र भाषाक रूपमे मान्यता प्रतीक्षित।
राज्य अकादमी (बिहार)	१९७६ मे बिहार मैथिली अकादमीक स्थापना।	२०१५ मे बिहार सरकार द्वारा बिहार अंगिका अकादमीक गठन।
अकादमी कर्मचारी स्थिति (११ मार्च २०२५ विधानसभा)	२१ स्वीकृत पदमे मात्र ३ कार्यरत कर्मचारी।	१० स्वीकृत पदमे मात्र १ कार्यरत कर्मचारी।
संविधानक आठम अनुसूची (भारत)	९२म संविधान संशोधन अधिनियम २००३ (प्रभावी ७-८ जनवरी २००४) द्वारा सम्मिलित।	गृह मन्त्रालयक विचाराधीन ३८ भाषाक सूचीमे सम्मिलित, मुदा अनुसूचीमे स्थान नै।
भारत जनगणना २०११	१,३५,८३,४६४ वक्ता (बिहारमे १,३०,६३,०४२)।	C-16 तालिका अनुसार स्वतन्त्र भाषाक रूपमे अलग गणना नै भेल।
नेपाल जनगणना २०२१	३२,२२,३८९ वक्ता (देशीय जनसँख्याक ११.०५%-दोसर स्थान)।	३५,९५२ वक्ता (०.१२% -मुख्यतया कोशी प्रदेशमे)।
द्वितीय राजभाषा (झारखण्ड)	२०१८ क अध्यादेश द्वारा अधिसूचित क्षेत्र लेल स्वीकृत।	२०१८ क अध्यादेश द्वारा अधिसूचित क्षेत्र लेल स्वीकृत।

संस्थागत क्षेत्र	मैथिली	अंगिका
लिपिक डिजिटल मानकीकरण	तिरहुता / मिथिलाक्षर लिपि यूनीकोड ७.० (१६ जून २०१४) मे U+11480-U+114DF ब्लॉकमे एन्कोड भेल।	मुख्यतया देवनागरी आ कैथी लिपिक प्रयोग; अलग एन्कोडिंग नै।

अध्याय २५: मिथिला चित्रकला, लैंगिकता आ सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था

ई अध्याय समकालीन कला-इतिहासक नव शोधसँ प्रभावी संवाद करैत अछि। घरेलू अनुष्ठानिक भित्ति/भूमि चित्रसँ कागज पर बाजारोन्मुख कला, सूखा-राहत हस्तक्षेप, मध्यस्थ, संग्रहालय, पुरस्कार, वैश्विक बाजार, “लोककला/शिल्प/ललित कला” वर्गीकरण, प्रामाणिकता आ स्त्री आर्थिक स्वायत्त भूमिकाक जटिलता—ई सभ कैं एकरेखीय “परम्परा से बाजार” कथा नहि बनाओल गेल अछि।

Paula Richman तथा David Szantonक 2025 क पुस्तक आ 2026 क Asian Ethnology शोध एहि अध्यायक अनेक दिशाकैं पुष्ट करैत अछि—विशेषतः वर्गीकरण-राजनीति, स्त्री कलाकारक वैश्विक प्रतिष्ठा, दलित कलाकारक प्रवेश, मध्यस्थक भूमिका आ बाजारसँ सशक्तीकरण/अधिग्रहणक दोहरापन। पुस्तकक गुण ई जे व्यापारिक उत्पादन कैं स्वतः “अपवित्र” वा “असली परम्परासँ पतन” नहि मानैत।

तथापि “मिथिला पेंटिंग”क भीतर जाति, गाँव, तकनीक, विषय आ बाजारक भिन्नता आओर स्पष्ट तालिकाक रूपमे देल जाए। कलाकारक आय, स्वायत्त भूमिका आ प्रसिद्धि समान रूपेँ वितरित नहि। मध्यस्थ, पुरुष परिवारजन, NGO, सरकारी विपणन, gallery आ collectorक मूल्य-श्रृंखला पर अनुभवाधारित प्रकरण-अध्ययन बढ़ेबाक आवश्यकता अछि।

मिथिला चित्रकलाक इतिहास कोनो त्रेता युगीन मन्दिरसँ नै, अपितु घरेलू अनुष्ठानक भित्ति-चित्र (bhitti-citra) आ अरिपन (aripan) सँ आरम्भ होइत अछि। कैरोलिन ब्राउन हेन्ज (२००६) दरभंगाक महाराजा रामेश्वर सिंहक बेटीक १९१९ क विवाहमै बनल कोहबरक चित्रकैं प्रारम्भिक प्रलेख मानैत छथि। १५ जनवरी १९३४ क भूकम्पक बाद ब्रिटिश अधिकारी विलियम जी. आर्चर जब

भत्कल देवाल देखलनि तँ ओ १९३८-४० मे १५० सँ अधिक फोटो खींचलनि आ १९४९ मे Marg पत्रिका प्रकाशित कएलनि।

१९६५-६७ क बिहार दुर्भिक्ष कालमे पुपुल जयकर आ हस्तशिल्प बोर्डक भास्कर कुलकर्णी द्वारा मधुबनीक महिला लोकनिकेँ हस्तनिर्मित कागज देल गेल, जाहिसँ ई कला भित्तिसँ उघरि कऽ विपणन-योग्य वस्तु (commodity) बनि गेल। जगदम्बा देवी (१९७५ मे पद्मश्री) आ सीता देवी (१९८१ मे पद्मश्री) एहि कलाकेँ राष्ट्रीय मंच पर अनलनि; बादमे गंगा देवी (ज्योतिन्द्र जैनक मोनोग्राफ), बौआ देवी, महासुन्दरी देवी, गोदावरी दत्त, दुलारी देवी आदिक विशिष्ट योगदान रहल। आर्चर आदिक ब्राह्मण (भर्नी/कचनी) बनाम दलित (गोदना/गेरू) क कठोर जातिवादी वर्गीकरणकेँ आधुनिक नारीवादी समीक्षक (हेलेन फ्ल्युरी २०२६, पौला रिचमैन २०२६) अस्वीकार करैत छथि, किएक तँ ई शैलियाँ शिल्पगत तकनीक अछि जाहिमे कलाकार लोकनि निरन्तर प्रयोग करैत रहलाह अछि।

भारत सरकारक जीआई रजिस्ट्रीमे 'Madhubani Paintings' आवेदन संख्या ३७ क रूपमे २२ अगस्त २००५ कें दाखिल भेल आ १६ मई २००७ कें पंजीकृत भेल। नेपालमे १९८९ मे आरम्भ भऽ १९९२ मे विधिवत पंजीकृत 'जनकपुर महिला विकास केन्द्र' (JWDC) मैथिल महिलाक स्वावलम्बन आ कला-संरक्षणक प्रमुख केन्द्र बनल।

अध्याय २६: कोसी, बाढ़, आधारभूत संरचना आ पर्यावरणीय जोखिम

कोसी अध्याय पर्यावरणीय नियतिवादसँ बचैत “जोखिमक पुनर्वितरण” पर जोर दैत अछि। तटबन्ध एक क्षेत्र बचा सकैत अछि, दोसरा क्षेत्रमे drainage, sedimentation, कटाव वा catastrophic breachक जोखिम बदलि सकैत अछि। 1954/1966 भारत-नेपाल ढाँचा, तटबन्ध रखरखाव, 2008 Kusaha breach, World Bankक Bihar Kosi Flood Recovery Project, पूर्व चेतावनी, सामुदायिक निगरानी आ प्रस्तावित ऊँच बाँधक अलग status स्पष्ट कएल गेल अछि।

विशेष प्रशंसनीय ई जे प्रस्तावित Sapta Kosi High Dam केँ वर्तमान बाढ़-नियन्त्रण संरचना न मानि प्रस्ताव/वार्ता-इतिहास कहैत अछि। जलवायु

परिवर्तन कैँ सेहो प्रत्येक पुरान बाढ़क तत्क्षण कारण न बनाओल गेल अछि; घटना-विशिष्ट कारण-निर्धारणक आवश्यकता मानल गेल अछि। एहि विवेकपूर्ण विज्ञान-संचारक अनुकरण अन्य क्षेत्रीय इतिहासमे सेहो होयबाक चाही।

कोशी नदीकेँ नियन्त्रित करबाक आधुनिक इतिहास विनाशक विकेन्द्रीकरणक इतिहास अछि। २५ अप्रैल १९५४ कें हस्ताक्षरित आ १९ दिसम्बर १९६६ कें संशोधित भारत-नेपाल समझौता द्वारा नेपालक भूभागमे भीमनगर/हनुमाननगरमे कोशी बराज (१९६३ मे पूर्ण) आ तटबन्ध बनल। दिनेश कुमार मिश्र (Water Nepal २००३) आ ICIMOD क अध्ययन स्पष्ट करैत अछि जे तटबन्ध बनि गेलाक बाद नदीक पेट (bed) गाद (silt) जमि गेला सँ उठि गेल अछि, आ तटबन्धक भितर बसाबनिहार लाखो लोक (यथा चन्द्राएन गाम) स्थायी रूपसँ जल-कैदी बनि गेलाह।

तटबन्ध टूटबाक शृंखलामे १९६३ (दलवा), १९६८ (जमालपुर - ९.१३ लाख क्युसेक डिस्चार्ज), १९८४ (नौहट्टा/हेमपुर), १९९१ (जोगिनिया) आ १८ अगस्त २००८ कें नेपालक कुसहामे तटबन्ध टूटि गेल। राजीव सिन्हा (२००९, २०१४) क भू-आकृतिक अध्ययन सिद्ध करैत अछि जे १८ अगस्त २००८ क विभीषिका जलक अत्यधिक प्रवाहक कारणेँ नै, अपितु तटबन्धक मर्मतमे लापरवाही आ बालूक अत्यधिक जमावक कारणेँ भेल 'विपथन' (avulsion) छल। नदी अपन मूल धारसँ ६० सँ १२० किमी पूर्व हटि कऽ एक शताब्दी पुरान धारमे बहऽ लागल, जाहिसँ नेपाल आ बिहारक पाँच जिला (सुपौल, मधेपुरा, सहरसा, पूर्णिया, अररिया) जलमग्न भऽ गेल।

सेप्टेम्बर २०२४ मे वीरपुर बराजसँ ६.६१ लाख क्युसेक जल-प्रवाह भेल जे १९६८ क बाद सर्वाधिक छल, आ किरतपुर प्रखण्डक भुभौलमे पश्चिमी तटबन्ध टूटि गेल। बिहार जल संसाधन विभागक FMISC (Flood Management Improvement Support Centre) आ Kosi-FFEWS प्रणाली ७२ घण्टा पहिने पूर्वचेतावनीक तंत्र विकसित केने अछि, मुदा नदीक गाद-प्रबन्धन आ कोशी टप्पु वन्यजन्तु आरक्ष (१९७६) क पर्यावरणीय सन्तुलन अद्यापि अनुत्तरित प्रश्न अछि।

अध्याय २७: मधेश, प्रतिनिधित्व आ बहुल नागरिकता

मधेश प्रश्न कैं केवल “पहाड़ बनाम मधेश” द्वंद्वमे सीमित नहि कएल गेल अछि। संविधानसभा, दलगत गणित, मधेशी दलक विभाजन, थारू आन्दोलन, 2015 संविधान, प्रतिनिधित्व, नागरिकता, संघीय सीमा, भाषा आ संस्थागत समावेशनक अनेक स्तर देखायल गेल अछि। 2015क संविधानक वैधानिक बहुमत आ मधेशी असहमति—दुनू तथ्य एकसाथ राखब संतुलित इतिहासलेखन अछि।

2025 मे मधेश प्रदेशक कार्यभाषा विधेयक भाषा-बहिष्करणक विरोधक बाद वापस लेल गेल—ई घटना बतबैत अछि जे “बहुसंख्यक भाषा”क प्रश्न स्वयं बहुभाषी प्रदेशमे राजनीतिक रूपसँ संवेदनशील अछि। पुस्तकक समकालीनता ताकत अछि, मुदा एतेक नजदीकी घटना जल्दी पुरान सेहो होइत अछि। तें सभ 2024–2026 संस्थागत तथ्यक अभिगमन-तिथि आ संस्करण-तिथि स्पष्ट राखब आवश्यक अछि।

नेपालमे 'मधेश' शब्दक राजनीति २००६ क शान्ति-सम्झौता आ २००७ क अन्तरिम संविधानक बाद अत्यन्त तीव्र भेल। २००७ आ २००८ क मधेश आन्दोलनक परिणामस्वरूप सरकारसँ २२-सूत्रीय आ ८-सूत्रीय समझौता भेल, जाहिमे संघीयता, समानुपातिक समावेशिता आ निर्वाचन क्षेत्र निर्धारणक प्रतिबद्धता कएल गेल। २० सेप्टेम्बर २०१५ कें जारी नेपालक संविधानक धारा ४ नेपालकैं 'धर्मनिरपेक्ष, समावेशी, संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक' राज्य घोषित करैत अछि। मुदा सीमांकन आ नागरिकताक प्रावधान पर मधेशी आ थारू समुदायमे भीषण आन्दोलन भेल, जाहिमे दर्जनो लोक मारल गेलाह आ ५ मास धरि सीमा नाकाबन्दी रहल। २८ फरवरी २०१६ क प्रथम संविधान संशोधन द्वारा धारा ४२, ८४ आ २८६ मे संशोधन कऽ जनसँख्याकैं प्रतिनिधित्वक मुख्य आधार बनाओल गेल।

१७ जनवरी २०२२ कें प्रदेश २ क प्रदेश सभा द्वारा दुई-तिहाई बहुमतसँ प्रदेशक नाम 'मधेश प्रदेश' आ स्थायी राजधानी 'जनकपुरधाम' घोषित कएल गेल। मुदा भाषा-विवाद समाप्त नै भेल; जनवरी २०२५ मे मधेश प्रदेश सरकार द्वारा पेश कएल गेल प्रादेशिक भाषा विधेयकमे थारू आ मगहीकैं छोड़ि देबाक कारणेँ २४ जनवरी २०२५ कें ई विधेयक वापस लेबऽ पड़ल।

नागरिकताक क्षेत्रमे, नेपाल नागरिकता ऐनक प्रथम संशोधन (३१ मई २०२३ प्रमाणीकरण) द्वारा जन्मसिद्ध नागरिकक सन्तानकेँ वंशजक नागरिकता देबाक मार्ग खुलल; आ दोसर संशोधन (२१ सेप्टेम्बर २०२५ प्रमाणीकरण) द्वारा माएक नामसँ नागरिकता प्राप्त करबाक प्रक्रियाकेँ सुगम बनाओल गेल, यद्यपि विदेशी पुरुषसँ विवाहित नेपाली महिलाक सन्तान सम्बन्धमे विभेद अद्यापि पूर्णतः समाप्त नै भेल अछि। २०२५-२६ मे संविधानक धारा २६२ क अधीन गठित मधेशी आयोगक दस-वर्षीय पुनरावलोकन (धारा २६५) आरम्भ भेल अछि, आ २०२६ क प्रतिनिधिसभा चुनाव परिणाममे मधेशी समावेशी श्रेणी अन्तर्गत १६.७३% सदस्य निर्वाचित भेलाह।

अध्याय २८: कृत्रिम एकता बिना सम्बन्धित इतिहास

अन्तिम अध्याय पुस्तकक सर्वाधिक सफल वैचारिक निष्कर्ष प्रस्तुत करैत अछि। मिथिला, वज्जि आ अंगक “सबसे गहिर निरन्तरता” एकहि राज्य, जाति वा भाषा नहि; बल्कि परिदृश्य, संस्था, भाषा, भूमि, बाजार, तीर्थ, कला, प्रवासन आ राजनीतिक बातचीतक पुनरावृत्त सम्बन्ध अछि। एहि निष्कर्षसँ क्षेत्रीय अस्मिता नकारल नहि जाइत, बल्कि ओकर ऐतिहासिक रूप बदलैत रहबाक तथ्य स्वीकारल जाइत अछि।

“Connected histories without false unity” वास्तवमे कृतिक उचित पद्धतिगत सूत्र अछि। वज्जि प्राचीन गण-संघीय राजनीति बुझबा मे महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा आधुनिक लोकतन्त्रक सीधा संविधान नहि; अंग प्राचीन पूर्वीय राजनीति अछि, मुदा आधुनिक अंगिका पहचानसँ सरल एकरूपता नहि; मिथिला साहित्यिक, धार्मिक, भाषिक, राजनीतिक आ प्रवासी अनेक मापनी पर बदलैत क्षेत्र अछि; मधेश आधुनिक राजनीतिक-संवैधानिक क्षेत्र अछि, ओकरा प्राचीन कालमे ज्यों-का-त्यों आरोपित नहि कएल जा सकैत।

गजेन्द्र ठाकुरक ग्रन्थ इतिहास-लेखनक वैज्ञानिक पद्धतिक लेल एकटा कठोर प्रतिमान स्थापित करैत अछि। ग्रन्थक साक्ष्य-पदानुक्रम पाँच स्तरमे कार्यान्वित अछि:

प्रथम स्तर (Primary Material Anchors): स्तर-नियन्त्रित पुरातात्विक उत्खनन, वैज्ञानिक रेडियोकार्बन तिथिकरण, समकालीन शिलालेख (अशोक,

मानदेव, विग्रहपाल, नरसिंह), समकालीन मुद्रा (शिवसिंह, भैरवसिंह), आ राजपत्र/विधिक अधिनियम।

द्वितीय स्तर (Contemporary Administrative Records): राजकीय फरमान, विलेख, सर्वे-सेटलमेन्ट खतियान, लिखनावलीक कानूनी प्रारूप, आ प्रत्यक्षदर्शी यात्रा-वृत्तान्त (धर्मस्वामिन, फाहियान, ह्वेनसांग)।

तृतीय स्तर (Critically Edited Texts): पाठ्य-समीक्षित संस्करण (बड़ौदा रामायण, ओलिवेलक उपनिषद्, ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर, कीर्तिलता)।

चतुर्थ स्तर (Retrospective Compilations & Genealogies): औपनिवेशिक गजेटियर, पश्चाद्वर्ती वंशावली, आ १८०० ई. क आसपास संकलित पंजीक शाखा-पुस्तक।

पंचम स्तर (Modern Commemorative Myth & Identity Claims): आधुनिक स्मारक, मूर्ति, मौखिक किंवदन्ती (उगना, कर्णक गढ़, जानकी मन्दिर), आ राजनीतिक आन्दोलनक तात्कालिक नारा।

तालिका: एकीकृत कालक्रम, घटना-प्रक्रिया आ साक्ष्यक स्तर

तिथि / कालखण्ड	ऐतिहासिक घटना वा प्रक्रिया	साक्ष्यक स्तर आ प्रमाणिकता
द्वितीय सहस्राब्दी ई.पू.	चिरान्द (सारण) मे नवपाषाणिक कालखण्ड १; अस्थि-उपकरण, चाउर-जौक कृषि।	पुरातात्त्विक उत्खनन; TIFR रेडियोकार्बन सूचीमे स्तर १४ सँ नीचाँ धँसानक चेतावनी।
उत्तर वैदिक काल	शतपथ ब्राह्मण (१.४.१): विदेघ माथवक सदानीरा (गण्डक) धरि पूर्व-विस्तार।	धार्मिक-राजनीतिक पाठ्य साक्ष्य; निरपेक्ष तिथि अनिर्णीत।

तिथि / कालखण्ड	ऐतिहासिक घटना वा प्रक्रिया	साक्ष्यक स्तर आ प्रमाणिकता
प्रारम्भिक औपनिषदिक काल	बृहदारण्यक उपनिषद्: जनकक सभा, याज्ञवल्क्य-गार्गी शास्त्रार्थ, मैत्रेयी संवाद।	दार्शनिक पाठ्य परम्परा (काण्व आ माध्यन्दिन शाखा)।
मध्य प्रथम सहस्राब्दी ई.पू.	वैशालीक वज्जी संघ; तथागत बुद्ध द्वारा सात अपरिहाणीय धर्मक निरूपण।	बौद्ध पालि दीघ निकाय (१६ - महापरिनिब्बान सुत्त); गण-संघीय साक्ष्य।
मध्य प्रथम सहस्राब्दी ई.पू.	अंग (चम्पा) पर मगधराज बिम्बिसारक अधिकार; सोणदण्डकेँ ब्रह्मदेय दान।	पालि सोणदण्ड सुत्त; चम्पा पुरातात्विक उत्खननमे प्राचीर आ NBPW।
तृतीय शताब्दी ई.पू.	अशोकक स्तम्भ: लौरिया-अरेराज, लौरिया-नन्दनगढ़, रामपुरवा (अभिलेख १-६)।	प्रत्यक्ष प्रस्तर-अभिलेख; कोल्हुआ (वैशाली) स्तम्भ अभिलेख-विहीन अछि।
चतुर्थ शताब्दी ई.	गुप्त साम्राज्य: चन्द्रगुप्त-कुमारदेवी 'लिच्छवयः' सिक्का; समुद्रगुप्तक प्रयाग प्रशस्ति।	मुद्राशास्त्रीय आ अभिलेखीय साक्ष्य (प्रयाग स्तम्भ लेख)।
४६४ ई. (शक संवत् ३८६)	नेपालक मानदेवक चाँगूनारायण स्तम्भ-अभिलेख; रानी राज्यावतीक उल्लेख।	नेपालक प्रथम प्रामाणिक शिलालेखीय एंकर।

तिथि / कालखण्ड	ऐतिहासिक घटना वा प्रक्रिया	साक्ष्यक स्तर आ प्रमाणिकता
चतुर्थ-पंचम शताब्दी ई.	तीरभुक्तिक बसाढ़ (वैशाली) सँ महादेवी ध्रुवस्वामिनी आ गोविन्दगुप्तक मृद्-मुद्रा।	पुरातात्विक उत्खननमे प्राप्त प्रशासनिक सील (Clay seals)।
आठम शताब्दी पूर्वार्द्ध	कटरा (मुजफ्फरपुर) ताम्रपत्र: जीवगुप्त द्वारा चामुण्डा-विषयमे मन्दिर दान।	प्रत्यक्ष ताम्रपत्र अभिलेख (D. C. Sircar)।
नवम-दशम शताब्दी	भागलपुर ताम्रपत्र: नारायणपाल द्वारा तीरभुक्तिक मकुटिका गामक शैव दान।	प्रत्यक्ष पाल ताम्रपत्र (मुद्गगिरि स्कन्धावार)।
१०१९-२० ई.	तीरभुक्तिमे गांगेयदेवक राज्यकालमे नेवारी लिपिक रामायण पाण्डुलिपि।	प्रत्यक्ष पाण्डुलिपि पुष्पिका (Cecil Bendall)।
एकादश शताब्दी (विग्रहपाल १७)	बनगाँव (सहरसा) ताम्रपत्र: वासुकावर्त्त गामक आधा भाग मीमांसक घान्टूकशर्मनकेँ दान।	प्रत्यक्ष ताम्रपत्र अभिलेख (DHARMA डिजिटल पाठ)।
१०९७ ई. (परम्परागत)	नान्यदेव द्वारा मिथिलामे कर्णाट वंशक स्थापना।	पारम्परिक काल-श्लोक; समकालीन अभिलेख मिति-विहीन अछि।

तिथि / कालखण्ड	ऐतिहासिक घटना वा प्रक्रिया	साक्ष्यक स्तर आ प्रमाणिकता
१२०५ ई.	श्रीधरदासक सदुक्तिकर्णामृत मे 'विद्यापति' क श्लोक उद्धृत।	महाकवि विद्यापति (गीतिकार) क प्रारम्भिक तिथिक पाठ्य साक्ष्य।
१२३६ ई.	तिब्बती भिक्षु धर्मस्वामिनक तीरहुत यात्रा; कर्णाट रामसिंहदेवसँ भेंट।	प्रत्यक्षदर्शी तिब्बती यात्रा-वृत्तान्त (George Roerich अनुवाद)।
१३२४-२५ ई.	गयासुद्दीन तुगलकक आक्रमण; हरिसिंहदेवक पलायन; सिमराँवगढ़क पतन।	फारसी तवारीख, नेपाली वंशावली आ मिथिला परम्परा।
१४५३ ई.	कन्दहा (सहरसा) सूर्य मन्दिर शिलालेख: ओइनिवार नरसिंहदेवक साक्ष्य।	प्रत्यक्ष प्रस्तर शिलालेख।
१४८९-९० ई. (शाके १४११)	ओइनिवार राजा भैरवसिंहक चाँदीक सिक्का (राज्यवर्ष १५)।	प्रत्यक्ष मुद्राशास्त्रीय साक्ष्य (D. C. Sircar)।
१५१३ ई.	भागीरथपुर शिलालेख: कन्हसनारायण आ रानी अनुमती देवी।	प्रत्यक्ष प्रस्तर अभिलेख (Radhakrishna Choudhary)।
१५२० क दशक	नुसरत शाहक आक्रमणसँ ओइनिवार वंशक राजनीतिक पतन।	पश्चाद्वर्ती ऐतिहासिक पुनर्निर्माण।

तिथि / कालखण्ड	ऐतिहासिक घटना वा प्रक्रिया	साक्ष्यक स्तर आ प्रमाणिकता
१६६५-६६ ई.	औरंगजेबक फरमान: महीनाथ ठाकुरकेँ तीरहुतक जमीन्दारी आ मोरंग अभियानक सम्मान।	समकालीन मुग़ल दस्तावेजी क्षितिज।
२२ मार्च १७९३	लार्ड कॉर्नवालिस द्वारा स्थायी बन्दोबस्त (Permanent Settlement) लागू।	बंगाल रेगुलेशन १ आ ८,१७९३ (Primary statutory anchor)।
c.१८०० ई.	दरभंगा राजमे स्थायी बन्दोबस्तक बाद पंजीमे श्रोत्रिय उपजातिक कृत्रिम उद्भव।	डिजिटाइज्ड पंजी आ शाखा-पुस्तक अभिलेख (समानान्तर इतिहास स्थापना)।
२ दिस.१८१५ / ४ मार्च १८१६	ईस्ट इण्डिया कम्पनी आ नेपालक बीच सुगौली सन्धि।	अन्तरराष्ट्रीय सन्धि दस्तावेज।
८ दिसम्बर १८१६	पूरक ज्ञापन: तराईक भू-भाग नेपालकेँ वापसी (तीरहुत-सारण विवादित छोड़ि)।	ब्रिटिश-नेपाल पूरक सन्धि।
१ नवम्बर १८७५	दलसिंहसराय-समस्तीपुर-दरभंगा अकाल रेलवे लाइन (Tirhut Railway) क उद्घाटन।	आधिकारिक रेलवे अभिलेख।
१८८५ ई.	बंगाल काश्तकारी अधिनियम (Bengal Tenancy Act)।	औपनिवेशिक अधिनियम।

तिथि / कालखण्ड	ऐतिहासिक घटना वा प्रक्रिया	साक्ष्यक स्तर आ प्रमाणिकता
१९०३ ई.	जॉर्ज ए. ग्रियर्सन द्वारा Linguistic Survey of India (Vol. V, Pt. II) क प्रकाशन।	भाषावैज्ञानिक सर्वेक्षण प्रतिवेदन।
१९१७ ई.	कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीकेँ उच्च शिक्षाक भाषाक रूपमे मान्यता।	विश्वविद्यालय संस्थागत अभिलेख।
१५ जनवरी १९३४	बिहार-नेपाल महाभूकम्प; डब्लू. जी. आर्चर द्वारा मिथिला भित्ति-चित्रक प्रथम दर्शन।	GSI मेमोयर ७३ आ आर्चरक व्यक्तिगत अभिलेख।
३१ जुलाई १९५०	भारत-नेपाल शान्ति आ मैत्री सन्धि।	UN Treaty Series No. 1302।
२ मई १९५२	State of Bihar v. Kameshwar Singh: सुप्रीम कोर्ट द्वारा जमीन्दारी उन्मूलन वैध।	भारतक सर्वोच्च न्यायालय (AIR 1952 SC 252)।
२५ अप्रैल १९५४	भारत आ नेपालक बीच मूल कोशी परियोजना समझौता।	अन्तरराष्ट्रीय सन्धि (MEA भारत)।
१९६५-६८ ई.	बिहार अकाल; पुपुल जयकर आ भास्कर कुलकर्णी द्वारा कागज पर मिथिला चित्रकला प्रारम्भ।	हस्तशिल्प बोर्ड आ मौखिक इतिहास।

तिथि / कालखण्ड	ऐतिहासिक घटना वा प्रक्रिया	साक्ष्यक स्तर आ प्रमाणिकता
१९ दिसम्बर १९६६	भारत आ नेपालक बीच संशोधित कोशी समझौता।	अन्तरराष्ट्रीय सन्धि (संशोधित)।
७-८ जनवरी २००४	९२म संविधान संशोधन: मैथिली भारतक संविधानक आठम अनुसूचीमे सम्मिलित।	भारतक राजपत्र।
१६ मई २००७	'Madhubani Paintings' कें भारत सरकारसँ GI टैग (पंजीकरण सं. ३७)।	बौद्धिक सम्पदा भारत (GI Registry)।
१८ अगस्त २००८	नेपालक कुसहामे कोशी पूर्वी तटबन्ध भंग; ६०-१२० किमी पूर्व विपथन (avulsion)।	उपग्रह चित्र, विश्व बैंक प्रतिवेदन, वैज्ञानिक शोध।
२० सेप्टेम्बर २०१५	नेपालक संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक संविधान जारी; मधेश आन्दोलन।	नेपाल राजपत्र।
१७ जनवरी २०२२	प्रदेश २ क नाम 'मधेश प्रदेश' आ राजधानी 'जनकपुरधाम' स्वीकृत।	मधेश प्रदेश सभा अभिलेख।
३१ मई २०२३ / २१ सेप्टे. २०२५	नेपाल नागरिकता ऐनक प्रथम आ द्वितीय संशोधन प्रमाणीकरण।	नेपाल राष्ट्रपति कार्यालय सूचना।

तिथि / कालखण्ड	ऐतिहासिक घटना वा प्रक्रिया	साक्ष्यक स्तर आ प्रमाणिकता
११ मार्च २०२५	बिहार विधानसभा: मैथिली अकादमीमे ३ आ अंगिका अकादमीमे मात्र १ कर्मचारी कार्यरत।	बिहार विधानसभा कार्यवाही।

९. पुस्तकक प्रमुख उपलब्धि

स्रोतक प्रकार अनुसार दाबी सीमित करबाक कठोर अनुशासन।

नदी, जलोढ़ भूगोल, बाढ़, तटबन्ध आ पर्यावरण कैं दीर्घकालिक इतिहासक सक्रिय घटक बनायब।

वैश्यालीक गण-राजनीति कैं आधुनिक लोकतन्त्रक अनैतिहासिक प्रतिरूप बनाबयसँ बचब।

जनक, सीता, कर्ण, लिच्छवि-उत्पत्ति, तीर्थ-स्थल आदि पर परम्परा आ घटनागत प्रमाणक भेद।

अशोक स्तम्भ, स्तम्भलेख, तीर्थयात्री-वृत्तान्त आ पुरातत्त्वक अलग प्रमाण-क्षमता स्पष्ट करब।

मध्यकालीन मिथिलामे फारसी, संस्कृत आ मैथिली संस्थागत बहुभाषिकताक संतुलित चित्र।

दरभंगा राज कैं princely state न मानि औपनिवेशिक जमींदारी estate रूपेँ विधिक-संस्थागत रूपसँ रखब।

भाषा-मान्यता कैं संविधान, जनगणना, अकादमी, विश्वविद्यालय, राज्य कानून आ डिजिटल मानकीकरणक अलग क्षेत्र रूपेँ देखब।

मिथिला चित्रकलामे लैंगिकता, जाति, बाजार, मध्यस्थ आ वैश्विक वर्गीकरणक समकालीन शोधसँ संवाद।

कोसी विषयक अध्यायमे बाढ़ नियन्त्रणक बदला जोखिम-वितरण, maintenance आ transboundary governanceक ऐतिहासिक विवेचन।

मधेश विषयमे वैधानिकता, प्रतिनिधित्व, आन्दोलन आ बहुल नागरिकताक बहुस्तरीय दृष्टि।

अन्तिम निष्कर्षमे क्षेत्रीय गौरव आ स्रोत-समीक्षा कैं विरोधी नहि, परस्पर पूरक मानब।

१०. मुख्य आलोचनात्मक बिन्दु आ आवश्यक संशोधन

१०.१ पद्धतिगत पुनरुक्ति कम कएल जाए

पुस्तकक “does not automatically prove”, “should not be projected backward”, “tradition is not event history” सन सावधानियाँ अत्यन्त उपयोगी छथि, मुदा बहुत अध्यायमे लगभग समान संरचना पुनरावृत्त अछि। सम्पादकीय स्तरपर एकटा 8–10 पृष्ठक “प्रमाण-पद्धति” अध्याय राखि बादक अध्यायमे छोट संकेत देल जाए तँ कथात्मक प्रवाह सुधरि सकैत अछि। सावधानी हटाबयक नहि, ओकर पुनरुक्ति कम करबाक आवश्यकता अछि।

१०.२ ऐतिहासिक भूगोल लेल अधिक मानचित्र

इतिहासक शीर्षक आ पद्धति दुनू भूगोल-केंद्रित छथि, मुदा सम्पूर्ण ग्रन्थमे सूचीबद्ध पूर्ण मानचित्र बहुत कम अछि। कम-से-कम निम्न मानचित्र जोड़ल जाए—(१) प्रमुख पुरातात्त्विक स्थल आ सर्वेक्षण-घनत्व, (२) वैदिक/उपनिषदिक नामक पाठीय भूगोल, (३) वज्जि-वैश्याली आ अंग-चम्पा साक्ष्य-क्षेत्र, (४) अशोक स्तम्भ गलियारा, (५) तिरभुक्ति/कर्णाट/सिमरौनगढ़ मध्यकालीन बिन्दु, (६) ओइनिवार-सल्तनत संबंध, (७) मुगल तिरहुत-बंगाल-नेपाल गलियारा, (८) औपनिवेशिक जिला/रेल/तटबन्ध, (९) भारत-नेपाल आधुनिक सीमा-पार मुख्य मार्ग, (१०) मैथिली-अंगिका जनगणना/संस्थागत भूगोल। सभ मानचित्रमे निश्चित सीमा नहि, प्रमाण-स्तर देखाबयक ग्राफिक भाषा अपनाओल जाए।

१०.३ दू-विद्यापति प्रतिपादन लेल स्वतंत्र प्रमाण-परिशिष्ट

एहि मतक आलोचनात्मक शक्ति बहुत अछि, मुदा पुस्तकक मुख्य पाठमे ओकरा governing rule बनाओल गेल अछि। तें पाठकक हाथमे independently check कएल जा सकय एहन corpus dossier देब जरूरी अछि। केवल secondary bibliography पर्याप्त नहि। manuscript sigla, repository, shelfmark, date/palaeography, colophon, opening/closing lines, internal patron names, linguistic features, earliest citations,

performance history आ प्रचलित कर्तृत्व-निर्धारण—सभ एक तालिकामे देल जाए।

१०.४ श्रोत्रिय c.1800 मत लेल codicological edition

असली पञ्जी पाण्डुलिपिक डिजिटल प्रति उपलब्ध होएब बहुत महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा डिजिटल छवि मात्र सँ तिथि, हस्त, परवर्ती interpolation आ शाखा-वर्गीकरणक काल स्वतः सिद्ध नहि होइत। एहि प्रतिपादनक निर्णायक शक्ति बढ़ेबाक लेल अक्षरशः प्रतिलेखन, manuscript genealogy, paper/watermark where possible, palaeography, ink/hand stratification, स्रोत-उत्पत्ति, dated external references, Nepal comparison आ “1600 शक” परम्पराक स्रोत-इतिहास प्रकाशित करब आवश्यक अछि।

१०.५ सामाजिक इतिहासक असमानता

राज्य, राजवंश, अभिलेख आ भाषा पर पुस्तक बलवान अछि; किन्तु सामान्य कृषक, महिला, दलित, कारीगर, मछुआरा, नाविक, सीमांत व्यापारी, मुस्लिम ग्रामीण समाज, आदिवासी/थारू समुदाय, प्रवासी मजदूर आ शहरी निम्नवर्गक आवाज कालविशेषमे कम पड़ैत अछि। स्रोत-संकट वास्तविक अछि, मुदा औपनिवेशिक अदालत, मौखिक इतिहास, जातीय पत्रिका, श्रम अभिलेख, लोकगीत-संग्रह, बाजार रजिस्टर, भूमि-विवाद आ family papers सँ एहि कमी कैं किछु भरल जा सकैत अछि।

१०.६ आँकड़ा आ वर्तमान तथ्यक संस्करण-नियन्त्रण

2024–2026क तथ्य अत्यन्त शीघ्र बदलि सकैत अछि। 2027 जनगणना, भाषा विधेयक, भारत-नेपाल जल समिति, flood management dashboard, अकादमी staffing आदि लेल “accessed on” तिथि, document version आ publication date एकरूप रूपेँ देब चाही। 2027 सन भविष्यक निर्धारित घटना कैं सम्पन्न घटनाक समान timeline label नहि देल जाए।

१०.७ संदर्भ-सूचीक मानकीकरण

प्रत्येक अध्यायक bibliography कृतिक बल अछि। मुदा पुस्तकक अन्तिम सामान्य स्रोत-सूची “बारम्बार प्रयुक्त प्रमुख स्रोत” मात्र अछि। पाठक लेल

एकटा पूर्ण समेकित ग्रन्थसूची सेहो उपयोगी होइत, जाहिमे primary source, archaeology/report, inscription/coin, modern scholarship, law/government, census/statistics, digital database अलग उपशीर्षकमे व्यवस्थित हो। DOI, स्थायी URL, अभिगमन-तिथि आ edition informationक एकरूपता आवश्यक अछि।

१०.८ लिप्यन्तरण आ नाम-संगति

अंग्रेजी पाठमे Vaisali/Vaishali, Campa/Champa, Koshi/Kosi, Tirabhukti/Tirhut, Vidyapati/Vidyāpati आदि रूप उपयोगित अछि। पुस्तक variant concordance देत अछि, जे उपयोगी अछि। अंतिम प्रूफमे एक एकरूप लिप्यन्तरण-पद्धति—IAST विद्वत् रूप + running textक सामान्य अंग्रेजी रूप—स्पष्ट कएल जाए, नहि तँ अनुक्रमणिका-खोज-क्षमता प्रभावित होयत।

११. दू विवादास्पद प्रतिपादनक विशेष शोध-परीक्षण

११.१ दू विद्यापति: कतेक सबल?

नाम “विद्यापति”क बहुल उपयोगक सम्भावना ऐतिहासिक रूपेँ वास्तविक अछि। उन्नीसवीं शताब्दीक Sanskrit manuscript noticesमे Saduktikarnamrita (1205 ई.क पूर्व) मे एक “Vidyapati”क उद्धरण आ बहुत बादक शिवसिंह-सम्बद्ध विद्यापति बीच समस्या देखाओल गेल छल। Ramanath Jha सेहो अनेक “Vidyapati” आ नाममात्रक आधार पर identificationक जोखिम स्वीकार करैत छथि। तें एकही नाम = एकही व्यक्ति मानब निश्चित रूपेँ असुरक्षित पद्धति अछि।

मुदा “एक नाम अनेक व्यक्ति हो सकैत” सँ “मैथिली पदावलीक महाकवि निश्चित रूपेँ ज्योतिरीश्वरपूर्व व्यक्ति छलाह” धरि पहुँचबाक बीच बहुत प्रमाणिक पायदान अछि। पदावलीक भाषा बादक scribal modernization सँ प्रभावित भऽ सकैत अछि; भणिता जोड़ल/बदलल जा सकैत अछि; गीत मौखिक परम्परासँ देर सँ लिखित होइत; आरम्भिक anthology citationक identification अलग व्यक्ति सेहो हो सकैत अछि। तें पुस्तकक distinction

सम्भाव्य आ शोधोत्तेजक अछि, पर निर्णायक बनाबय लेल corpus-level philology जरूरी अछि।

एहि विषयक पुस्तकक सबसे मजबूत गुण ई जे मुख्यधारा मत केँ छिपबैत नहि आ अपन मत केँ explicit historiographical position कहैत अछि। ई अकादमिक ईमानदारी अछि। सुधार मात्र ई चाही जे प्रमाण-परिशिष्टक कारण पाठक स्वयं पुनर्मूल्यांकन कऽ सकथि।

११.२ श्रोत्रिय: शब्द, श्रेणी आ उपजाति

इतिहासलेखनक दृष्टिसँ पुस्तकक अर्थगत भेद पूर्णत: वैध अछि—एकटा प्राचीन पद बादमे अलग सामाजिक संस्था नाम दे सकैत अछि; केवल शब्दक प्राचीनता संस्थाक प्राचीनता सिद्ध नहि करैत। “श्रोत्रिय” वैदिक विद्वत्ता/पात्रताक शब्द हो सकैत अछि, जखन कि बादमे मैथिल ब्राह्मण सामाजिक पदक्रममे वंशानुगत समूह बनि सकैत अछि। एहि प्रकार institution-history बनाम word-historyक भेद आवश्यक अछि।

Pandeyक 2014 dissertation पञ्जी-प्रबन्धक मध्यकालीन गहराई, genealogy, territory, authority आ ranked gradesक विकास स्थापित करैत अछि। एहि कारण पुस्तकक c.1800 thesis केँ अति-सटीक रूपेँ “सामाजिक ranking पहिने अस्तित्वहीन छल” नहि कहल जाए। पुस्तक सौभाग्यसँ विशेष दावा करैत अछि—“Śrotriya as fixed वंशानुगत उपजाति”—जे अधिक बचावयोग्य अछि। मुदा एहि विशिष्ट संस्थागत परिवर्तनक तिथि लगभग 1800 तय करबाक लेल प्राथमिक पञ्जी दस्तावेजक क्रमबद्ध आलोचनात्मक प्रकाशन आवश्यक अछि।

सबसे मजबूत संस्करण एहि प्रकार होयत: (१) 1800 पूर्व दिनांकित पञ्जी साक्ष्य मे शब्द/श्रेणी अनुपस्थितिक व्यवस्थित सूची, (२) 1800 आसपास प्रथम स्पष्ट hereditary-classificationक दस्तावेज, (३) बादक प्रतिलिपि आ मूल प्रविष्टि बीच भेद, (४) नेपालक समान/असमान प्रयोग, (५) माधव सिंह-सम्बन्धी परम्पराक स्वतंत्र chronology, (६) औपनिवेशिक जाति-वर्णनक terminology comparison। एहि छह पायदानक बाद thesis अत्यन्त प्रभावकारी बनि सकैत अछि।

१२. भाषा, शैली आ सम्पादनक समीक्षा

ग्रन्थक अंग्रेजी अकादमिक शैली स्पष्ट, सावधान आ सुसंगत अछि। “established / probable / disputed / traditional / commemorative” सन विश्वास-स्तर संकेतऽक अन्तर्निहित प्रणाली पाठक कैं दाबी-स्तर बुझयमे सहायता करैत अछि। तथापि बारम्बार नकारात्मक सावधानी—“not automatically”, “does not prove”, “should not be collapsed”—गद्यकैं कखनो-कखनो प्रतिरक्षात्मक बना दैत अछि। सकारात्मक निष्कर्षक अनुपात बढ़ाओल जाए: “ई प्रमाण एतबा स्थापित करैत अछि…” प्रकारक वाक्य प्रत्येक सावधानीक बाद अधिक नियमित रूपेँ उपयोगी रहत।

चित्र आ diagramक संख्या प्रभावशाली अछि। analytical diagrams पुस्तकक पद्धति समझबयमे सहायक छथि। मुदा इतिहासक पाठमे वास्तविक प्राथमिक स्रोतक facsimile—अभिलेख, सिक्का, ताम्रपत्र, पञ्जी पृष्ठ, औपनिवेशिक मानचित्र, census table—यदि अधिक जोड़ल जाए तँ पुस्तक “स्रोत विषयक दाबी” सँ “प्रत्यक्ष स्रोत-समीक्षा” दिस बढ़त। विशेषत: विवादास्पद विद्यापति आ श्रोत्रिय अध्यायमे ई अत्यन्त आवश्यक अछि।

Glossary, place-name concordance, chronology, general source register आ indexक समावेश एहि आकारक ग्रन्थ लेल आवश्यक छल आ पुस्तक ई आवश्यकता पूरा करैत अछि। final productionमे index page locators, figure captions, hyperlinks, DOI, Unicode diacritics आ cross-referenceक एकरूपता प्रेस-पूर्व जाँच अनिवार्य अछि।

ई सभसँ महत्वपूर्ण अवलोकन थिक: पूरा १,७१,००० शब्दक पाण्डुलिपिमे कतहु देवनागरी वा तिरहुता लिपिक एको अक्षर नहि अछि — विद्यापति, पञ्जी, तत्त्वचिन्तामणि आदि सभटा IAST रोमन-डायक्रिटिक्स (Vidyāpati, Pañjī) मे लिखल अछि। एकटा पोथी जे मिथिला, वज्जि, अंगक इतिहासकैं — आ विशेष रूपसँ मैथिली भाषा-साहित्यक इतिहासकैं (अध्याय १५, २०, २४) — केन्द्रमे राखैत अछि, से विदेह जेहन मैथिली-प्रतिष्ठानसँ प्रकाशित होइतो अंग्रेजी-मात्र माध्यममे प्रस्तुत भेल अछि। ई एकटा रणनीतिक निर्णय भऽ सकैत अछि (अन्तरराष्ट्रीय अकादमिक पाठकवर्ग लक्ष्य करैत), मुदा एहिसँ ओ

मैथिलीभाषी पाठकवर्ग जकर इतिहास ई पोथी लिखैत अछि, से सीधा एहि पोथी धरि पहुँच नहि सकैत अछि। एकटा मैथिली (देवनागरी) समानान्तर संस्करण वा सारांश-अनुवाद अत्यन्त वांछनीय अछि — जेना विदेहक पूर्ववर्ती परियोजना (Tattvacintamani, Samanantar Darshan) मे मूल संस्कृत/मैथिली पाठकेँ मैथिली अनुवाद सहित प्रस्तुत कएल गेल छल, तहिना एतय सेहो कम-सँ-कम प्रत्येक खण्डक विस्तृत मैथिली सार जोड़ल जा सकैत अछि।

ग्रन्थ-सूची मुख्यत: अंग्रेजी-भाषी मोनोग्राफ (Singh, Thapar, Bronkhorst, Whelpton आदि) पर आधारित अछि। मैथिली-भाषामे लिखल प्राथमिक विद्वत्ता (Radhakrishna Choudhary, Jayakanta Mishra सन विद्वान् भेटैत छथि, मुदा ओहो अंग्रेजी संस्करणमे उद्धृत) क तुलनामे शुद्ध मैथिली-भाषाक शोध-पत्रिका, विदेह-प्रकाशित पूर्ववर्ती शोध, वा स्थानीय मैथिली इतिहासकारक काज कम देखबामे अबैत अछि। एकटा "मिथिला-वज्जि-अंगक इतिहास" जे मूलत: मैथिली प्रकाशन-संस्थानसँ आबि रहल अछि, ओहिमे मैथिली-भाषी इतिहासकार-परम्पराक अधिक प्रत्यक्ष संवाद अपेक्षित छल।

प्रत्येक अध्यायमे समान पद्धतिगत चेतावनी (evidence hierarchy, "not established/disputed" जेहन भाषा) बेर-बेर दोहराओल गेल अछि। ई कठोरताक लेल आवश्यक अछि, मुदा सामान्य पाठकक लेल सूत्र किछु शुष्क आ पुनरावृत्तिपूर्ण भऽ सकैत अछि — एकटा "पद्धति-सारांश बॉक्स" प्रत्येक अध्यायक शुरुआतमे एक पंक्तिमे देब, आ विस्तृत पद्धतिगत चर्चाकेँ एकटा केन्द्रीय परिशिष्टमे समेटब, पठनीयता बढ़ा सकैत अछि।

पाँच खण्ड, अट्ठाईस अध्याय — औसतन प्रति अध्याय ~६,१०० शब्द — ई एकरूपता प्रशंसनीय अछि, मुदा एतेक बृहत् दायरा (प्रागैतिहाससँ लऽ कऽ २०२५क नेपाली जनगणना धरि) मे किछु अध्याय (जेना पुरातात्विक अध्याय १-४) मे गहन विशेषज्ञ-स्तरीय विवरण अछि, जखन कि अन्य अध्यायमे (राजनीतिक-समकालीन खण्ड) व्यापक सर्वेक्षण-शैली अपनाओल गेल अछि — ई स्वाभाविक अछि, मुदा पाठककेँ एहि असमान गहराईक बारे स्पष्ट संकेत

(जेना "ई अध्याय विस्तृत अध्ययनक आमंत्रण थिक, संपूर्ण विवरण नहि") देब उपयोगी होएत, जे "How to use this book" खण्डमे आंशिक रूपसँ कएल गेल अछि सेहो।

१३. नवीन शोधसँ तुलना: 2025–2026 धरि

समकालीन बाह्य शोधक संग तुलना कएलापर पुस्तकक कतेको आधुनिक अध्याय समयानुकूल देखाइत अछि। नेपालक National Population and Housing Census 2021क 2025/2026 प्रकाशित thematic language tables मैथिली आ अंगिका सम्बन्धी आँकड़ा पुष्ट करैत अछि। भारतक Office of Registrar Generalक 16 जून 2025 Gazette 2027 जनगणनाक घोषणा करैत अछि; तें पुस्तकक “भविष्यक census data manufacture नहि करब” नीति उचित अछि।

मिथिला चित्रकला विषयक Paula Richman–David Szanton (2025) आ Hélène Fleury/Paula Richmanक 2026 शोध घरेलू अनुष्ठानिक कला, drought-relief commercialization, gender, caste, वैश्विक मध्यस्थता, classification आ प्रामाणिकताक जटिलता पर बल दैत अछि। पुस्तकक अध्याय 25 एहि नवीन विमर्शसँ उल्लेखनीय रूपेँ मेल खाइत अछि।

वैश्यालीक Raja Vishal ka Garh पर Archaeological Survey of India, Patna Circleक वर्तमान विवरण शुंग, कुषाण आ आरम्भिक गुप्त defence-wall phases बतबैत अछि, जे पुस्तकक “संसद-दाबी सँ पहिने दुर्ग-प्रमाण” सावधानी कैं बल दैत अछि। एहि आधिकारिक पुरातात्त्विक प्रमाणक कारण लोकप्रिय ‘ancient parliament building’ दावा कैं प्रमाणित तथ्यक रूपमे लिखब असावधान होयत।

Anshuman Pandeyक University of Michigan dissertation पञ्जीक छः शताब्दी दीर्घ प्राथमिक-स्रोत परम्परा आ 14वीं शताब्दी सँ corporate Maithil Brahmin identityक निर्माण पर बल दैत अछि। ई पुस्तकक पञ्जी-केन्द्रित इतिहासक महत्त्व पुष्ट करैत अछि, मुदा साथहि c.1800 श्रोत्रिय thesisक सीमित प्रतिपादनक आवश्यकता सेहो रेखांकित करैत अछि।

मधेश प्रदेशक जनवरी 2025 भाषा-विधेयक भाषा बहिष्करणक विरोधक बाद वापस लेल गेल छल। एहि घटना कैं पुस्तक समकालीन बहुल नागरिकता आ भाषा-राजनीतिक जटिलताक उदाहरण रूपैं पढ़ैत अछि, जे उपयुक्त अछि। मुदा एहेन तीव्र बदलैत राजनीतिक घटना लेल नियमित अद्यतन जरूरी रहत।

१४. आगामी संस्करण लेल २५ ठोस सम्पादकीय सुझाव

1. प्रस्तावनामे कृतिक दायरा “पूर्ण समग्र इतिहास”क बदला “स्रोत-नियन्त्रित चयनात्मक क्षेत्रीय संश्लेषण” रूपैं स्पष्ट कएल जाए।

2. एक संक्षिप्त Evidence Protocol तालिका बनाओल जाए—स्रोत प्रकार, मजबूत दाबी, कमजोर दाबी, आवश्यक cross-check।

3. ऐतिहासिक भूगोल लेल कम-से-कम दस अतिरिक्त period-specific मानचित्र जोड़ल जाए।

4. चिराँद आ अन्य प्रागैतिहासिक स्थल लेल radiocarbon/context master table देल जाए।

5. वैश्यालीक excavated phases आ textual institutionsक अलग-अलग comparative table बनाओल जाए।

6. अशोक स्तम्भक सूचीमे inscribed/uninscribed, edict type, स्रोत-उत्पत्ति आ present status स्पष्ट देल जाए।

7. लिच्छवि नेपालक प्रमुख दिनांकित अभिलेखक chronological table देल जाए।

8. सिमरौनगढ़क archaeological trench, fortification phase आ hydraulic featureक सारणी जोड़ल जाए।

9. ओइनिवार कालक्रमक सभ secure anchor आ disputed terminal dates एक तालिकामे देल जाए।

10. दू-विद्यापति thesis लेल independent पाण्डुलिपि-रचनासमूह परिशिष्ट जोड़ल जाए।

11. पदावलीक प्राचीनतम साक्ष्य-प्रतियाँ, bhāṇitā, भाषिक स्तर आ उद्धरण-इतिहासक आलोचनात्मक सारणी देल जाए।

12. श्रोत्रिय c.1800 thesis लेल facsimile + अक्षरशः प्रतिलेखन + पुरालिपिकीय टिप्पणी प्रकाशित कएल जाए।

13. 1600 शक/1678 आ माधव सिंह-सम्बन्धी परम्पराक manuscript genealogy अलग स्पष्ट कएल जाए।

14. दरभंगा राजक constitutional/legal status लेल Company, Bengal/Bihar law आ estate recordsक key-document table देल जाए।

15. औपनिवेशिक अध्यायमे स्त्री, श्रमिक, दलित, मुस्लिम ग्रामीण समाज आ कारीगरक प्रत्यक्ष प्रमाण बढ़ाओल जाए।

16. नेपाल तराईक थारू, मधेशी कृषक, सीमापार व्यापारी आ स्थानीय मौखिक इतिहास अधिक जोडल जाए।

17. अध्याय 24क Diagram 46मे 2027 कैं “अधिसूचित जनगणना” रूपेँ स्पष्ट चिह्नित कएल जाए।

18. समकालीन सभ सरकारी/ऑनलाइन स्रोत लेल अभिगमन-तिथि आ document version अनिवार्य कएल जाए।

19. मिथिला चित्रकलामे caste/style/market variationक आँकड़ा-सारणी आ कलाकार-प्रकरण अध्ययन बढ़ाओल जाए।

20. कोसी अध्यायमे project, treaty, embankment reach, breach, चेतावनी-प्रणाली आ संस्थागत निकायक compact timeline देल जाए।

21. मधेश अध्यायमे 2015 बादक संवैधानिक संशोधन, न्यायालयीय निर्णय आ प्रादेशिक विधानक अद्यतन appendix राखल जाए।

22. बारम्बार पद्धतिगत सावधानी कैं संक्षिप्त करी, मुदा विश्वास-स्तर संकेत कायम राखी।

23. पूर्ण समेकित ग्रन्थसूची जोड़ल जाए, केवल बारम्बार प्रयुक्त स्रोत-सूची नहि।

24. IAST/सामान्य अंग्रेजी नामरूपक एकरूप शैली-पत्र बनाओल जाए।

25. प्रेस-पूर्व citation, figure, DOI, index locator आ cross-referenceक स्वचालित आ हस्त-जाँच कएल जाए।

१५. समग्र निर्णय

ई कृति क्षेत्रीय गौरव-ग्रन्थ बनबाक सरल मार्ग नहि चुनैत अछि; ओकर बदला स्रोतक असमानता, स्मृतिक शक्ति, राजनीतिक सीमाक परिवर्तन, नदीक अस्थिरता, भाषा-मान्यताक बहुलता आ आधुनिक अस्मिताक तिथि-बद्ध निर्माण स्वीकारैत अछि। एहि कारण ई “मिथिला महान छल” अथवा “वज्जि प्रथम लोकतन्त्र छल” सन नारा-पुस्तक नहि, बल्कि एहि दाबीसभक प्रमाणिक सीमा जाँचबाक प्रयास अछि। इतिहासलेखनक दृष्टिसँ ई गुण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रागैतिहासिसँ समकालीन काल धरि एकहि ग्रन्थमे पुरातत्त्व, पाठालोचन, अभिलेख, राजस्व, पर्यावरण, कला, भाषा आ नागरिकता जोड़ब कठिन परियोजना अछि। पुस्तक सभ क्षेत्रमे समान गहराई प्राप्त नहि करैत—एहेन अपेक्षा यथार्थो नहि—मुदा जतेक ठाम लेखक स्रोतक प्रकारक सीमा स्पष्ट करैत छथि, ओतय कृति विश्वसनीय बनैत अछि। जतेक ठाम मौलिक प्रतिपादन अपनाओल गेल अछि, विशेषतः दू विद्यापति आ c.1800 श्रोत्रिय, ओतय प्राथमिक प्रमाणक अधिक सार्वजनिक, समालोचनात्मक आ पुनरुत्पाद्य प्रस्तुति आवश्यक अछि।

पुस्तकक सबसँ स्थायी योगदान सम्भवतः ओकर अन्तिम सूत्र अछि—सम्बन्ध बिना समानता, निरन्तरता बिना स्थिरता, क्षेत्रीय अस्मिता बिना अनैतिहासिक सीमा। मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास कैं एकटा शाश्वत राज्यक रूपमे नहि, बल्कि नदी, मार्ग, पाठ, संस्था, राजस्व, कला, भाषा, भूमि, प्रवासन आ स्मृतिक परस्पर सम्बन्धक इतिहास रूपेँ पढ़ल जाए। एहि अर्थमे ई पोथी एकटा महत्त्वपूर्ण “parallel and connected regional history” बनबाक क्षमता रखैत अछि। आवश्यक प्राथमिक परिशिष्ट, अतिरिक्त मानचित्र, सामाजिक इतिहासक विस्तार आ संदर्भ-सूची मानकीकरणक बाद ई कृति मिथिला-अध्ययन, बिहार-नेपाल सीमान्त अध्ययन आ पूर्वी गंगीय इतिहासलेखनमे दीर्घकालिक सन्दर्भग्रन्थ बनि सकैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक History of Mithila, Vajji & Anga in India & Nepal दक्षिण एशियाक क्षेत्रीय इतिहास-लेखनक विमर्शमे एकटा युगप्रवर्तक कृति अछि, जे मिथक आ इतिहासक सीमारेखाकेँ पूर्ण बौद्धिक सत्यनिष्ठासँ पुनर्परिभाषित करैत अछि। पोथीक सबसँ पैघ सैद्धान्तिक उपलब्धि ई अछि जे ई 'मिथिला' कें कोनो अनादि, अपरिवर्तनीय आ अखण्ड स्वर्ण-भूमि मानबाक परम्परावादी आग्रहकेँ ध्वस्त करैत अछि। विदेह, वज्जी, तीरभुक्ति, अंग, मुंगेर, पूर्णिया, आ मधेश भिन्न-भिन्न कालखण्डक प्रशासनिक, पुरातात्विक आ सामाजिक संवर्ग छलाह। ग्रन्थकार 'connected histories without false unity' क जे सूत्र प्रतिपादित करैत छथि, ओ इतिहासकारकेँ ई दृष्टि दैत अछि जे विभिन्न क्षेत्रक पारस्परिक सम्बन्ध, व्यापारिक गलियारा आ सांस्कृतिक आदान-प्रदानकेँ देखबाक लेल ओकरा कोनो एकहि राजनीतिक वा जातीय छत्रछायामे बलात् बाँधब आवश्यक नै अछि।

पुरातात्विक साक्ष्यक सन्दर्भमे ग्रन्थक कठोर दृष्टि पुरातत्वकेँ साहित्यक दासी बनयबासँ बचबैत अछि। चिरान्दक नवपाषाणिक स्तर, चम्पाक पूर्व-NBPW प्राचीर, राजा विशाल का गढ़क शुंग-कुषाण-गुप्त स्तर, आ सिमराँवगढ़क दुई-चरणीय रक्षा-प्राचीरक विश्लेषण ई सिद्ध करैत अछि जे भौतिक अवशेषकेँ कोनो पूर्व-निर्धारित महाकाव्यीय वा धार्मिक कथाक पुष्टिकेँ लेल तोड़ि-मरोड़ि कऽ प्रस्तुत नै कएल जा सकैत अछि। यदि कोनो टीहा पर उत्खननमे बुद्धकालीन काठक संसद नै भेटल, तँ ओकरा जबर्दस्ती आधुनिक गणतन्त्रक जननी घोषित करब बौद्धिक बेईमानी अछि।

साहित्यिक आ सामाजिक इतिहासक क्षेत्रमे ग्रन्थकार द्वारा प्रतिपादित 'दुई विद्यापति' क सिद्धान्त आ 'श्रोत्रिय उपजातिक १८०० ईस्वीक आसपास उद्भव' सम्बन्धी स्थापना सम्पूर्ण पारम्परिक इतिहास-लेखनकेँ झकझोरि दैत अछि। बारहम्-तेरहम् शताब्दीक सदुक्तिकर्णामृत, ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर, बिदापत नाच, आ जन-परम्पराक विशुद्ध लोक-भाषा मैथिलीक गीतिकार महाकवि विद्यापतिकेँ ओइनिवार दरबारक संस्कृत-अवहट्ठ ग्रन्थकार विद्यापति ठक्कुरसँ विलग कऽ ठाकुर मैथिलीक लोक-गीतिक परम्पराकेँ सामन्ती दरबारी बन्धनसँ मुक्त कऽ देलनि अछि। तहिना, हरिसिंहदेव द्वारा १३२६ ई. मे श्रोत्रिय उपजातिक निर्माणक पारम्परिक कथाकेँ डिजिटाइज्ड मूल पंजी आ शाखा-

पुस्तकक आधार पर निरस्त करैत ई सिद्ध केनाइ जे ई वर्गीकरण १७९३ क स्थायी बन्दोबस्तक बाद दरभंगा राजक दरबारी कृपा आ माधव सिंहक कालखण्ड (c.१८००) मे विकसित भेल, मिथिलाक जाति-इतिहासकेँ एकटा नव वैज्ञानिक आ ऐतिहासिक आधार प्रदान करैत अछि।

नदी, पर्यावरण आ विधिक संप्रभुताक त्रिकोण पर आधारित विश्लेषण ग्रन्थक चतुर्थ आ पंचम खण्डकेँ अद्वितीय बनबैत अछि। कोशी नदीक विनाशी तटबन्ध-प्रणाली आ २००८ क कुसहा प्रलयक भू-आकृतिक विश्लेषण ई प्रमाणित करैत अछि जे प्रकृति आ मानव-निर्मित संरचनाक द्वन्द्वमे क्षति सदैव सीमान्त आ निर्धन समुदायक होइत अछि। तहिना नेपालक मधेश आन्दोलन, २०१५ क संविधान, नागरिकता ऐनक २०२३ आ २०२५ क संशोधन, आ जनवरी २०२५ क प्रादेशिक भाषा विधेयकक वापसीक विश्लेषण ई देखाबैत अछि जे सीमावर्ती क्षेत्रमे नागरिकता केवल एकटा प्रमाण-पत्र नै, अपितु सम्मान, स्वाभिमान आ राजकीय प्रतिनिधित्वक निरन्तर संघर्ष अछि।

एहि ग्रन्थक किछु सीमा सेहो दृष्टव्य अछि। अत्यधिक साक्ष्य-नियन्त्रण आ विधिक-अभिलेखीय आग्रहक कारणेँ कतिपय अध्यायमे विवरणात्मक लालित्यक स्थान पर सूचिक नीरसता आबि जाइत अछि। मौखिक इतिहास आ लोक-कण्ठक विपुल भण्डारकेँ लिखित अभिलेखक तुलनामे किछु गौण स्थान देल गेल अछि, यद्यपि बिदापत नाच आ अँगनाक गीतक चर्चासँ एकर आंशिक भरपाई भेल अछि। नेपालक तराईक थारू आ अन्य जनजाति समुदायर आन्दोलनक आन्तरिक वर्ग-विभाजन पर आओर गहन प्राथमिक क्षेत्रीय साक्ष्यक अपेक्षा रहि जाइत अछि।

समग्रतः, गजेन्द्र ठाकुरक ई ग्रन्थ मात्र एकटा पोथी नै, अपितु दक्षिण एशियाक क्षेत्रीय इतिहास-लेखन लेल एकटा 'मेथडोलॉजिकल मेनिफेस्टो' अछि। ई पोथी भावुकता, मिथक-मोह, जातिवादी श्रेष्ठता-बोध आ संकीर्ण राष्ट्रीयताक चश्मा उतारि कऽ माटि, नदी, अभिलेख, पाण्डुलिपि आ जनताक वास्तविक संघर्षक आलोकमे अतीतकेँ देखबाक दृष्टि प्रदान करैत अछि। मैथिली, भारतीय आ नेपाली इतिहास-लेखनमे ई ग्रन्थ आगाँ आबनिहार अनेक दशक धरि शोधार्थी आ इतिहासकार लोकनि लेल अनिवार्य आ अद्वितीय दिशानिर्देशक काम करत।

ग्रन्थसूची / बिबलियोग्राफी

आधारभूत कृति

Thakur, Gajendra. History of Mithila, Vajji & Anga in India & Nepal: From Prehistory to the Contemporary Period. पाँच खण्ड, 28 अध्याय, 6×9 हार्डबैक प्रेस-रेडी संस्करण, 2026. Editor, Videha — First Maithili Fortnightly eJournal, ISSN 2229-547X.

पुरातत्त्व, इतिहास, भाषाविज्ञान, साहित्य आ समाज-अध्ययन

Agrawal, D. P., and Sheela Kusumgar. “Tata Institute Radiocarbon Date List X.” Radiocarbon 15, no. 3 (1973): 574–585.

Archaeological Survey of India, Patna Circle. Monuments Details: Relic Stupa, Harpur Basant (Vaishali); Raja Vishal ka Garh, Vaishali. वर्तमान आधिकारिक विवरण.

Bronkhorst, Johannes. Greater Magadha: Studies in the Culture of Early India. Brill, 2007.

Chakrabarti, Dilip K. Archaeological Geography of the Ganga Plain and related studies on routes and urban centres.

Deeg, Max. Studies on Faxian and Xuanzang as Chinese Buddhist travel literature and historical geography.

Falk, Harry. Aśokan Sites and Artefacts: A Source-Book with Bibliography. 2006.

Fuller, Dorian Q. “Finding Plant Domestication in the Indian Subcontinent.” Current Anthropology 52, Supplement 4 (2011).

Grierson, George A. Linguistic Survey of India, Vol. V, Part II: Indo-Aryan Family, Eastern Group. 1903.

Hultzsch, E., ed. Inscriptions of Asoka. Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol. 1. 1925.

Jain, Vikrant, and Rajiv Sinha. “Hyperavulsive-anabranching Baghmati River System, North Bihar Plains, Eastern India.” Zeitschrift für Geomorphologie 47 (2003).

Jha, Pankaj. A Political History of Literature: Vidyapati and the Fifteenth Century. Oxford University Press, 2019.

Jha, Ramanath. Vidyāpati. Sahitya Akademi, 1972; reprint 2017.

Lahiri, Nayanjot. Ashoka in Ancient India. Harvard University Press, 2015.

Pandey, Anshuman. Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar. PhD dissertation, University of Michigan, 2014.

Riccardi, Theodore, Jr. “The Inscription of King Mānadeva at Changu Narayan.” Journal of the American Oriental Society 109, no. 4 (1989).

Richman, Paula, and David L. Szanton, eds. India’s Mithila Painting. University of Washington Press, 2025.

Richman, Paula. “The Cultural Politics of Classifying Mithila Painting.” Asian Ethnology 85, no. 1 (2026).

Fleury, Hélène. “Mithila Painting and Feminism in the 1970s: Constructing Women Painters as Heroines of Western Vanguard Journals.” Asian Ethnology 85, no. 1 (2026).

Sharma, Prayag Raj. “The Land System of the Licchavis in Nepal.” Kailash 10 (1983).

Singh, Upinder. A History of Ancient and Early Medieval India. Pearson, 2008.

Sinha, Rajiv, and Peter F. Friend. “River Systems and Their Sediment Flux, Indo-Gangetic Plains, Northern Bihar, India.” Sedimentology 41 (1994).

Thapar, Romila. Early India: From the Origins to AD 1300. 2002.

Thapar, Romila. Aśoka and the Decline of the Mauryas. 3rd ed. Oxford University Press, 2012.

Vidale, Massimo, C. Balista, and V. Torrieri. “A Test Trench Through the Fortifications of Simraongarh.” Ancient Nepal 135 (1993): 10–21.

Vishnu-Mittre. “Neolithic Plant Economy at Chirand, Bihar.” The Palaeobotanist 21 (1972).

Whelpton, John. A History of Nepal. Cambridge University Press, 2005.

सरकारी, संस्थागत आ समकालीन स्रोत

National Statistics Office, Nepal. Languages in Nepal: National Population and Housing Census 202, Thematic Report. 2025/2026 release.

Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. Gazette Notification S.O. 2681(E), 16 June 2025: Census of India 2027.

World Bank. Bihar Kosi Flood Recovery Project: Owner Driven Housing Reconstruction, 2012; related recovery and resilience documentation.

नेपालक संविधान, 2015; मधेश प्रदेशक भाषा-विधेयक वापसी सम्बन्धी जनवरी 2025क सार्वजनिक अभिलेख/समाचार।

विदेह आ अन्य ऑनलाइन सामग्री

विदेह a parallel history of mithila & maithili literature, https://www.videha.co.in/gajenthakur.htm

Videha Audio Video - विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, https://www.videha.co.in/new_page_13.htm

Gangesa Upadhyaya - विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, https://www.videha.co.in/new_page_16.htm

विदेह ३९२ म अंक १५ अप्रैल २०२४ (वर्ष १७ मास १९६ अंक ३९२, https://dn721708.ca.archive.org/0/items/maithili_20230619/VIDEHA_392.pdf

विदेह a parallel history of mithila & maithili literature, https://www.videha.co.in/new_page_1.htm

आलेख ५१ · पञ्जी, दर्शन, भाषा आ समानान्तर इतिहास

मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास : खण्ड २

सारांश

ई शोध-समीक्षा मिथिला, वज्जि आ अंगक सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक इतिहासक दोसर खण्डक सम्पूर्ण संरचनाकेँ पन्द्रह भाग आ डेढ़ सय अध्यायक स्तर पर पढ़ैत अछि। ग्रन्थक मूल उपलब्धि शाश्वत क्षेत्र, जाति, भाषा वा संस्कृतिक धारणा त्यागि समयानुसार बदलैत भूगोल, संस्था, अभिलेख, स्मृति, अर्थव्यवस्था, प्रव्रजन, लिंग-सम्बन्ध आ भाषिक सार्वजनिकताकेँ एक साझा ऐतिहासिक क्षेत्रमे राखब अछि। अध्ययनमे चार समीक्षा-दृष्टि अपनाओल गेल अछि : भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि, पाश्चात्य सामाजिक-इतिहास आ इतिहास-दर्शन, नव्य-न्यायक पद–अर्थ–सम्बन्ध तथा अवच्छेदक-आधारित सूक्ष्म विश्लेषण, आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति। पुस्तक पुरातत्त्व, नदी-भूआकृति, पाली-जैन-ब्राह्मणीय पाठ, शिलालेख, पञ्जी, प्रशासनिक अभिलेख, जनगणना, आर्थिक आँकड़ा, भाषिक इतिहास, कला-अध्ययन, प्रव्रजन आ डिजिटल अभिलेखकेँ एके स्तरक प्रमाण नहि मानैत। प्रमाण-रोध आ कालक्रम-रोधक पुनरावृत्त तकनीक पुस्तकक विशिष्ट पद्धतिगत पहचान बनैत अछि। कुंजी-पद : मिथिला; वज्जि; अंग; मधेश; सामाजिक इतिहास; आर्थिक इतिहास; सांस्कृतिक इतिहास; नव्य-न्याय; पञ्जी; भाषा-इतिहास; नदीय पारिस्थितिकी; प्रव्रजन; डिजिटल अभिलेख।

बीजशब्द

मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास : खण्ड २ · मिथिला · वंश-अभिलेख · इतिहासलेखन · प्रमाण-विवेचन

१.४३. गजेन्द्र ठाकुर- मिथिला, वज्जी आ अंगक इतिहास खण्ड-२- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

मिथिला, वज्जि आ अंगक सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक इतिहास : खण्ड २ एक बहुपद्धतीय आलोचनात्मक शोध-समीक्षा

भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य इतिहासलेखन, नव्य-न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे

मूल ग्रन्थ : [History of Mithila, Vajji & Anga in India & Nepal — Volume II]

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सारांश

ई शोध-समीक्षा मिथिला, वज्जि आ अंगक सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक इतिहासक दोसर खण्डक सम्पूर्ण संरचनाकेँ पन्द्रह भाग आ डेढ़ सय अध्यायक स्तर पर पढ़ैत अछि। ग्रन्थक मूल उपलब्धि शाश्वत क्षेत्र, जाति, भाषा वा संस्कृतिक धारणा त्यागि समयानुसार बदलैत भूगोल, संस्था, अभिलेख, स्मृति, अर्थव्यवस्था, प्रव्रजन, लिंग-सम्बन्ध आ भाषिक सार्वजनिकताकेँ एक साझा ऐतिहासिक क्षेत्रमे राखब अछि। अध्ययनमे चार समीक्षा-दृष्टि अपनाओल गेल अछि : भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि, पाश्चात्य सामाजिक-इतिहास आ इतिहास-दर्शन, नव्य-न्यायक पद–अर्थ–सम्बन्ध तथा अवच्छेदक-आधारित सूक्ष्म विश्लेषण, आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति। पुस्तक पुरातत्त्व, नदी-भूआकृति, पाली-जैन-ब्राह्मणीय पाठ, शिलालेख, पञ्जी, प्रशासनिक अभिलेख, जनगणना, आर्थिक आँकड़ा, भाषिक इतिहास, कला-अध्ययन, प्रव्रजन आ डिजिटल अभिलेखकेँ एके स्तरक प्रमाण नहि मानैत। प्रमाण-रोध आ कालक्रम-रोधक पुनरावृत्त तकनीक पुस्तकक विशिष्ट पद्धतिगत पहचान बनैत अछि।

कुंजी-पद : मिथिला; वज्जि; अंग; मधेश; सामाजिक इतिहास; आर्थिक इतिहास; सांस्कृतिक इतिहास; नव्य-न्याय; पञ्जी; भाषा-इतिहास; नदीय पारिस्थितिकी; प्रव्रजन; डिजिटल अभिलेख।

१. अध्ययनक उद्देश्य आ शोध-प्रश्न

मूल ग्रन्थक कोनो अध्याय वा संरचनात्मक खण्डकेँ छोड़ने बिना ओकर तर्क-व्यवस्था, प्रमाण-विन्यास आ निष्कर्षक परीक्षण करब।

भूगोल, समाज, अर्थव्यवस्था, धर्म, भाषा, कला, प्रव्रजन आ आधुनिक डिजिटल संस्था सभकेँ एक दीर्घकालिक क्षेत्रीय इतिहासमे जोड़बाक क्रममे ग्रन्थक उपलब्धि आ सीमा चिन्हित करब।

भारतीय काव्यशास्त्रीय संवेदना, पाश्चात्य इतिहासलेखन, नव्य-न्यायक विश्लेषणात्मक सूक्ष्मता आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक संयुक्त कसौटी पर पुस्तककेँ पढ़ब।

शोध-पाठमे मैथिलीक स्वाभाविक वाक्य-विन्यास, पद-चयन, काल-रूप आ बाह्य शब्द-प्रयोगक अनुशासन सुरक्षित रखब।

२. मूल ग्रन्थक संरचना आ प्रमाण-दर्शन

मूल ग्रन्थ पन्द्रह भागमे विभाजित अछि आ डेढ़ सय अध्याय पर्यावरण सँ डिजिटल संस्कृति धरि एक दीर्घ क्षेत्रीय इतिहास बनबैत अछि। प्रारम्भिक भाग सभ पर्यावरण, प्रागैतिहास, आरम्भिक ऐतिहासिक समाज, धर्म, मध्यकालीन रूपान्तरण आ भाषा-ज्ञानक संरचना बनबैत अछि; मध्यवर्ती भाग सभ भौतिक संस्कृति, औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था, नेपाल-मधेश, स्वतन्त्रता पछातिक विकास, जाति-वर्ग-लिंग, प्रव्रजन आ सांस्कृतिक माध्यम पर केन्द्रित अछि; अन्तिम भाग सभ समकालीन अर्थव्यवस्था, सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन आ संश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि।

पुस्तकक पद्धतिगत केन्द्र चार सूत्रमे देखाइत अछि : ऐतिहासिक नाम आ आधुनिक प्रशासनिक सीमा समान नहि; अलग स्रोत अलग प्रकारक दावा समर्थन करैत अछि; पछिला सामाजिक श्रेणीकेँ पूर्वकाल पर स्वयंसिद्ध रूपेँ आरोपित नहि कएल जाए; राजनीतिक सीमा आ पारिस्थितिक/सांस्कृतिक सम्पर्क-क्षेत्रक सम्बन्धकेँ न त पूर्ण एकता, न पूर्ण विच्छेद मानल जाए।

एहि दृष्टिक परिणामस्वरूप ग्रन्थमे प्रमाण-रोध आ कालक्रम-रोध बारम्बार भेटैत अछि। ई तकनीक स्मरण करबैत अछि जे समान शब्द, संस्था वा पहचान अलग कालमे समान अर्थ नहि रखैत। इतिहासलेखनक दृष्टिएँ ई पुस्तकक सर्वाधिक विशिष्ट औजार अछि।

३. समीक्षा-पद्धति

३.१ भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

भारतीय काव्यशास्त्रक मूल प्रश्न केवल सुन्दरता नहि, अनुभूति, ध्वनि, वक्रता, औचित्य, रीति, रस आ पाठक-अनुभवक संगठन सेहो अछि। इतिहासग्रन्थ पर एहि दृष्टिक प्रयोग करैत तथ्यक सत्यता सँ अलग तर्कक प्रस्तुति, रूपक, कथा-लय, अध्याय-क्रम आ सांस्कृतिक अनुभूतिक गहिराई देखल गेल अछि।

३.२ पाश्चात्य इतिहासलेखन आ सामाजिक-विज्ञान दृष्टि

दीर्घ अवधि, भौतिक पर्यावरण, संस्था, वर्ग, बाजार, जनांकिकी, प्रव्रजन, माध्यम आ राज्यक संयुक्त अध्ययन सामाजिक इतिहासक संरचनात्मक परम्परासँ संवाद करैत अछि। प्रशासनिक ज्ञानकेँ निष्पक्ष दर्पण नहि, श्रेणी-निर्माणक प्रक्रिया मानब एहि दृष्टिक मुख्य कसौटी अछि।

३.३ नव्य-न्याय दृष्टि

मिथिला, विदेह, वज्जि, अंग, मधेश, तराई, जाति, भाषा, पञ्जी, नगर आ बाजार जकाँ पद सभक अर्थ काल, देश, आश्रय, प्रयोग आ प्रमाणक अवच्छेदसँ बदलैत अछि। एक पदक एक अर्थकेँ सर्वकालिक मानब व्याप्ति-दोष उत्पन्न करैत; पुस्तक प्रायः एहि दोषसँ बचैत अछि।

३.४ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

एकल रेखीय वंशावलीक बदला समान समयमे चलैत अनेक सामाजिक, भाषिक, धार्मिक, आर्थिक आ राजनीतिक प्रवाहकेँ साथ पढ़ब एहि पद्धतिक मूल बल अछि। भारत आ नेपाल; मिथिला, वज्जि आ अंग; शहरी आ ग्रामीण; लिखित आ मौखिक; स्मृति आ अभिलेख—ई सभ समानान्तर ऐतिहासिक धारा बनैत अछि।

४. पन्द्रह भागक विस्तृत आलोचनात्मक समीक्षा

४.1 भूमि, पर्यावरण आ मानवीय भू-दृश्यक निर्माण — अध्याय 1–5

पहिल भागक पाँच अध्याय पुस्तकक सम्पूर्ण तर्कक भौतिक आधार बनबैत अछि। भूगोलकेँ नियति मानि लेबाक बदला नदी, जलोढ़ धरातल, मानसून,

आर्द्रभूमि, वन-सीमा, भूकम्प आ मार्ग-जालकेँ ऐतिहासिक अवसंरचना रूपमे पढ़ल गेल अछि। प्रागैतिहासिक बसोबास, ताम्रपाषाण आ आरम्भिक कृषि, भोजनक पुरातत्त्व आ गतिशील बसोबासक अध्ययन परस्पर जोड़ल अछि। आलोचनात्मक दृष्टिएँ ई भाग नियतिवाद सँ सफलतापूर्वक बचैत अछि, मुदा स्थानीय उत्खननक असमानता कारण किछु निष्कर्ष स्वभावतः सम्भाव्यतामूलक रहैत अछि।

समाविष्ट अध्याय : 1. [The Physical Foundations of Society]; 2. [Prehistoric Settlement and Subsistence]; 3. [CHALCOLITHIC AND EARLY AGRARIAN COMMUNITIES]; 4. [ARCHAEOLOGY OF FOOD AND EVERYDAY LIFE]; 5. [ENVIRONMENT, MOBILITY AND SETTLEMENT]।

४.2 आरम्भिक ऐतिहासिक समाज : विदेह, वज्जि आ अंग — अध्याय 6–18

दोसर भाग आरम्भिक ऐतिहासिक समाजकेँ केवल राज्य-निर्माण वा शहरीकरणक कथा नहि मानि गृहस्थी, परिवार, सामाजिक विभेदन, स्त्री, कृषि, शिल्प, व्यापार, मुद्रा, धार्मिक संस्था, ज्ञान-समुदाय आ शरीर-स्वास्थ्यक संयुक्त क्षेत्रक रूपमे देखैत अछि। वर्ण-आदर्श आ वास्तविक सामाजिक श्रेणीकेँ एक नहि मानल गेल अछि; गण-संघक राजनीतिक सहभागिताकेँ सार्वभौम सामाजिक समानता सँ अलग राखल गेल अछि। वैशाली आ चम्पाक शहरी अर्थतन्त्र, मुद्रीकरणक स्तरभेद, बौद्ध-जैन संस्थागत अर्थव्यवस्था आ चलायमान बौद्धिक समुदाय सभ मिलि द्वितीय नगरीकरणक बहुकारकीय रूप प्रस्तुत करैत अछि।

समाविष्ट अध्याय : 6. [THE SECOND URBANISATION]; 7. [HOUSEHOLD AND FAMILY IN EARLY HISTORIC SOCIETY]; 8. [SOCIAL DIFFERENTIATION BEFORE FIXED CASTE NARRATIVES]; 9. [WOMEN IN EARLY MITHILA–VAJJI–ANGA]; 10. [AGRICULTURE AND THE RURAL ECONOMY]; 11. [CRAFTS AND TECHNOLOGY]; 12. [Trade, Merchants and Markets]; 13. [Vaishali as an Economic and Social Centre]; 14. [Anga and Champa]; 15. [Early money and monetisation]; 16. [Buddhist and Jain institutional economies]; 17. [Education, debate and intellectual communities]; 18. [Health, medicine and the body]।

४.3 धर्म, अनुष्ठान आ सांस्कृतिक गठन — अध्याय 19–25

तेसर भाग धर्मक इतिहासकेँ सम्प्रदाय-परिवर्तनक सीधा रेखा नहि बनबैत, बल्कि अनुष्ठानिक भू-दृश्य, श्रमण परम्परा, शैव-शाक्त-वैष्णव संस्थागत घनत्व, पवित्र भूगोल, पर्व-पञ्चाङ्ग आ जीवन-चक्र संस्कारक सह-अस्तित्वक रूपमे पढ़ैत अछि। धार्मिक स्मृति, पुरातात्त्विक अवशेष, शिलालेख, ग्रन्थ आ उत्तरकालीन तीर्थ-परम्परा सभक समयस्तर अलग रखबाक आग्रह अत्यन्त उपयोगी अछि।

समाविष्ट अध्याय : 19. [From Vedic ritual landscapes to regional religious cultures]; 20. [Buddhism in the social history of Vajji and Videha]; 21. [Jainism and the Vaishali–Videha landscape]; 22. [Śaiva, Śākta and Vaiṣṇava transformations]; 23. [Sacred geography]; 24. [Festivals and calendrical culture]; 25. [Death, ancestors and life-cycle rites]।

४.4 आरम्भिक मध्यकाल आ मध्यकालीन सामाजिक रूपान्तरण — अध्याय 26–35

चारिम भाग भूमि-अनुदान, गाम-बजार-नगर, श्रम, व्यवसाय, सामाजिक वर्गीकरण, ब्राह्मणीय संस्था, पञ्जी, स्त्रीक विवाह-संपत्ति, कर्णाट-ओइनिवार अर्थव्यवस्था, इस्लामी प्रव्रजन आ फारसीय सांस्कृतिक सम्पर्ककेँ एके सामाजिक रूपान्तरणक अलग-अलग प्रक्षेप मानैत अछि। पछिला जातीय श्रेणीकेँ आगाँक काल पर आरोपित नहि करब मूल पद्धतिगत अनुशासन अछि। पञ्जीकेँ स्थिर जातिगत अभिलेख नहि, बदलैत वैवाहिक-सूचना तन्त्र रूपमे पढ़नाइ विशेष मौलिक अछि।

समाविष्ट अध्याय : 26. [Land Grants and Changing Agrarian Society]; 27. [Village, Market and Town]; 28. [Labour, Service and Occupational Communities]; 29. [Social Classification and Its Historical Formation]; 30. [Brahmanical Institutions without Retrospective Caste Projection]; 31. [The Panji Tradition]; 32. [Women, Marriage and Property in Medieval Mithila]; 33. [Karnata and Oiniwar-Period Social Economy];

34. [Islam, Migration and New Social Worlds]; 35. [Persianate Culture and Mithila–Anga]।

४.5 भाषा, साहित्य आ ज्ञानक सामाजिक इतिहास — अध्याय 36–43

पाँचम भाग भाषा आ ज्ञानकेँ सामाजिक अवसंरचना मानैत अछि। आधुनिक मानकीकरण सँ पहिने भाषिक पारिस्थितिकी, साहित्यिक मैथिलीक गठन, दू विद्यापतिक कालगत पृथक्करण, तिरहुता/मिथिलाक्षरक लिपिकीय संसार, मौखिकता, अंगिका, बज्जिका आ संस्कृत शास्त्रीय संस्थाकेँ अलग प्रमाण-समस्या रूपमे राखल गेल अछि। भाषानामकेँ प्राचीन जनपदक नामक सरल विस्तार मानि लेबाक प्रवृत्तिक प्रतिरोध विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

समाविष्ट अध्याय : 36. [Languages Before Modern Standardisation]; 37. [Formation of Literary Maithili]; 38. [The Two Vidyāpatis and Two Historical Contexts]; 39. [Tirhuta/Mithilakshar and Scribal Culture]; 40. [Oral Culture]; 41. [Angika and the Eastern Linguistic-Cultural Zone]; 42. [Bajjika and Western Mithila]; 43. [Sanskrit Learning and Scholastic Institutions]।

४.6 भौतिक संस्कृति आ कला — अध्याय 44–51

छठम भाग वास्तु, वस्त्र, भोजन, मिथिला चित्रकला, संगीत, गीत, नाटच, मेला आ सार्वजनिक संस्कृतिक माध्यमेँ भौतिकता आ सौन्दर्यशास्त्रकेँ सामाजिक इतिहासमे आनैत अछि। संरक्षण-पक्षपात बारम्बार चिन्हित कएल गेल अछि। मिथिला चित्रकलाकेँ घरक अनुष्ठानिक सतह सँ बाजारयोग्य कलावस्तु धरि रूपान्तरण, तथा बीसवीं शताब्दीक सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था, मूल्य-निर्माण आ मध्यस्थता पर गम्भीर प्रकाश पड़ैत अछि।

समाविष्ट अध्याय : 44. [Architecture and Settlement]; 45. [Dress, Textiles and Ornament]; 46. [Food History of Mithila, Vajji and Anga]; 47. [Mithila Painting Before and Beyond the Modern Art Market]; 48. [Mithila Painting and the Twentieth-Century Cultural Economy]; 49. [Music, Song and Performance]; 50. [Theatre and Dramatic Cultures]; 51. [Fairs, Markets and Public Culture]।

४.7 आरम्भिक आधुनिक आ औपनिवेशिक आर्थिक रूपान्तरण — अध्याय 52–64

सातम भाग मुगलकालीन राजस्व-संरचना सँ कम्पनी विस्तार, स्थायी बन्दोबस्त, नील, अफीम, अकाल, औपनिवेशिक सर्वेक्षण, शिक्षा, मुद्रण, रेल-सड़क, श्रम-प्रव्रजन आ स्त्री-आधुनिकता धरि दीर्घ आर्थिक रूपान्तरणक कथा बनबैत अछि। औपनिवेशिक श्रेणीकरणकेँ समाजक निष्पक्ष दर्पण नहि, प्रशासनिक ज्ञान-उत्पादनक सक्रिय प्रक्रिया मानल गेल अछि।

समाविष्ट अध्याय : 52. [Mughal-Period Land, Revenue and Agrarian Society]; 53. [Trade between Bengal, Bihar, Nepal and the Gangetic World]; 54. [East India Company Expansion and the Remaking of Agrarian Relations]; 55. [Permanent Settlement and Landed Society]; 56. [Indigo and Commercial Agriculture]; 57. [Opium and Other Commodity Networks]; 58. [Famines, Scarcity and Food Security]; 59. [Colonial Surveys and the Invention of Social Categories]; 60. [Education under Colonialism]; 61. [Print Culture]; 62. [Railways, Roads and Changing Markets]; 63. [Labour Migration]; 64. [Women and Colonial Modernity]।

४.8 नेपाल-मिथिला/मधेश : सामाजिक आ आर्थिक क्षेत्र — अध्याय 65–73

आठम भाग भारत-नेपाल सीमाकेँ केवल राजनीतिक रेखा नहि, ऐतिहासिक सम्पर्क-क्षेत्र रूपमे देखैत अछि। जनकपुरक धार्मिक-व्यापारिक-शहरी गठन, तराईक भूमि-अधिकार, वन-सफाई, मलेरिया नियन्त्रण, बसावट, भाषा-शिक्षा, लिंग-नागरिकता, कला-शिल्प आ सीमा-बजारक अध्ययन द्विराष्ट्रीय तुलनाक उत्कृष्ट आधार दैत अछि। नेपालक जिमिदारीकेँ ब्रिटिश भारतीय जमींदारीक समान मानि लेबाक गलती सँ बचाव विशेष प्रशंसनीय अछि।

समाविष्ट अध्याय : 65. [The Historical India–Nepal Borderland Economy]; 66. [Janakpur as Religious, Commercial and Urban Centre]; 67. [Land, Tenancy and Agrarian Society in the Nepal Tarai]; 68. [Forest Clearance, Malaria Control and Demographic Transformation]; 69.

[Migration and Settlement]; 70. [Language, Education and Cultural Institutions in Nepal]; 71. [Gender, Citizenship and Household Economy in Madhesh]; 72. [Janakpur Art, Crafts and Cultural Economy]; 73. [Border Markets, Remittances and Informal Exchange]।

४.9 १९४७/१९५० पछातिक विकास — अध्याय 74–86

नवम भाग स्वतन्त्रता पछाति भूमि-सुधार, जमींदारी उन्मूलन, कृषि, नदी परियोजना, बाढ़, ऋण, सहकारिता, औद्योगीकरण, भागलपुर रेशम, मखान-माछ-दुग्ध, शिक्षा, स्वास्थ्य आ सम्पर्क-अवसंरचनाक समीक्षा करैत अछि। कानून आ परिणामक बीच कार्यान्वयन-शृंखला पर जोर ई देखबैत अछि जे विधानगत परिवर्तन स्वतः ग्राम्य शक्ति-संरचनाकेँ नहि बदलैत।

समाविष्ट अध्याय : 74. [Independence, Land Reform and Agrarian Change in Bihar]; 75. [Abolition of Zamindari and Its Uneven Consequences]; 76. [Agriculture after Independence]; 77. [Kosi, Gandak and Major River-Development Projects]; 78. [Floods as Social and Economic History]; 79. [Rural Credit, Indebtedness and Banking]; 80. [Cooperatives and Rural Institutions]; 81. [Industrialisation and Its Limits]; 82. [Bhagalpur Silk and Anga’s Textile Economy]; 83. [Makhana, Fish, Dairy and Specialised Regional Economies]; 84. [Education after Independence]; 85. [Health and Public-Health Transformation]; 86. [Roads, Railways, Electricity and Communications]।

४.10 जाति, वर्ग, लिंग आ सामाजिक परिवर्तन — अध्याय 87–96

दसम भाग जाति, दलित इतिहास, आदिवासी/वन-संलग्न समुदाय, मुसलमान, गृहस्थ अर्थव्यवस्था, स्त्रीक वेतनयुक्त-अवैतनिक श्रम, विवाह-दहेज-उत्तराधिकार, शिक्षा, आरक्षण आ ग्रामीण अभिजात शक्ति पर केन्द्रित अछि। जातिकेँ शाश्वत तत्त्व नहि, भूमि, वर्गीकरण, प्रतिनिधित्व, शिक्षा आ कानून द्वारा बदलैत सम्बन्ध मानल गेल अछि।

समाविष्ट अध्याय : 87. [Historical Formation of Caste Relations]; 88. [Dalit Histories]; 89. [Adivasi and Forest-Connected Populations Where Regionally Relevant]; 90. [Muslims of Mithila and Anga]; 91. [Gender and the Household Economy]; 92. [Women’s Paid and Unpaid Labour]; 93. [Marriage, Dowry, Inheritance and Changing Family Structures]; 94. [Education and Social Mobility]; 95. [Reservation, Affirmative Action and New Middle Classes]; 96. [Rural Elites, Political Economy and Changing Landed Power]।

४.11 प्रव्रजन, नगरीकरण आ प्रवासी संसार — अध्याय 97–106

एगारहम भाग प्रव्रजनक दीर्घकालिकता, कोलकाता, दिल्ली-मुम्बई, पंजाब-हरियाणा, नेपाल-भारत, खाड़ी, प्रेषण, नगरीकरण, अनौपचारिक अर्थव्यवस्था आ प्रवासी सांस्कृतिक संस्थाकेँ जोडैत अछि। प्रव्रजनकेँ एकदिश गाम छोड़ब नहि, आवागमन, कमाइ, प्रेषण, गृहस्थ पुनरुत्पादन आ वापसीक चक्र रूपमे पढ़ल गेल अछि।

समाविष्ट अध्याय : 97. [The Longue Durée of Migration]; 98. [Calcutta/Kolkata and Mithila–Anga Migration]; 99. [Delhi, Mumbai and Post-Independence Mobility]; 100. [Punjab, Haryana and Seasonal Agricultural Labour]; 101. [Nepal–India Circular Migration]; 102. [Gulf Migration]; 103. [Remittances and Household Transformation]; 104. [Urbanisation]; 105. [Informal Economies and Street Commerce]; 106. [Diaspora Cultural Institutions]।

४.12 सांस्कृतिक आधुनिकता आ जन-माध्यम — अध्याय 107–116

बारहम भाग मुद्रण, अंगिका साहित्यिक संस्था, रेडियो, चलचित्र/रिकॉर्डित प्रदर्शन, समाचारपत्र, साहित्यिक मान्यता-संस्था, महिला लेखन, विदेह डिजिटल साहित्यिक संस्कृति, डिजिटल अभिलेख आ युनिकोड-तिरहुता मान्यताक माध्यमेँ सांस्कृतिक आधुनिकताक बहु-माध्यमीय इतिहास प्रस्तुत करैत अछि। संस्था, माध्यम आ अभिलेखक सम्बन्धकेँ उत्पादन–प्रसार–स्मृति चक्र रूपमे देखल गेल अछि।

समाविष्ट अध्याय : 107. [Maithili Print and Literary Institutions]; 108. [Angika Print and Literary Institutions]; 109. [Radio and Broadcasting]; 110. [Cinema, Video and Recorded Performance]; 111. [Newspapers and Public Debate]; 112. [Sahitya Akademi, Academies and Institutional Canon Formation]; 113. [Women Writers and Alternative Literary Publics]; 114. [Videha and Digital Literary Culture]; 115. [Digital Archives and Cultural Preservation]; 116. [Unicode, Tirhuta and Technological Recognition]।

४.13 समकालीन अर्थव्यवस्था — अध्याय 117–131

तेरहम भाग जनांकिकी, एक्कैसम शताब्दीक कृषि, भूमि-खंडन, प्रव्रजन-निर्भर अर्थव्यवस्था, प्रेषण-आवास, शिक्षा-बाजार, स्वास्थ्य-अर्थव्यवस्था, सड़क-विमान सम्पर्क, डिजिटल भुगतान, पर्यटन, मिथिला चित्रकला वैश्विक बाजार, भौगोलिक संकेत/बौद्धिक सम्पदा, जलवायु जोखिम, बाढ़-अनुकूलन आ संघीयता पछातिक सीमा-अर्थव्यवस्था पर केन्द्रित अछि। समकालीन आँकड़ा उपयोग करैत समय भारत-नेपालक श्रेणी-असमानताकेँ स्पष्ट चेतावनी देल गेल अछि।

समाविष्ट अध्याय : 117. [Demographic Structure and Population Change]; 118. [Agriculture in the Twenty-First Century]; 119. [Land Fragmentation and Rural Livelihoods]; 120. [Migration-dependent Economies]; 121. [Remittances, Consumption and Housing]; 122. [Education Economy and Coaching Migration]; 123. [Health Economy]; 124. [Roads, Highways, Airports and Connectivity]; 125. [Digital Payments, Mobile Phones and Platform Economies]; 126. [Tourism and Pilgrimage Economies]; 127. [Mithila Painting in the Global Market]; 128. [GI, Heritage Branding and Intellectual Property]; 129. [Climate Change and Agrarian Risk]; 130. [Flood Adaptation and Resilience]; 131. [India–Nepal Border Economies after Federalisation]।

४.14 समकालीन सामाजिक आ सांस्कृतिक परिवर्तन — अध्याय 132–142

चौदहम भाग परिवार, विवाह, लिंग-शिक्षा-रोजगार, युवा संस्कृति, सामाजिक माध्यम, धार्मिक सार्वजनिकता, समकालीन जाति, मधेशी संघीय नागरिकता, मैथिली-अंगिका-बज्जिकाक सार्वजनिक जीवन, जीवित संस्कृति आ भविष्यक सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था पर केन्द्रित अछि। परम्परा बनाम आधुनिकता जकाँ द्वैत छोड़ि परिवर्तनकेँ पुनर्संयोजनक प्रक्रिया मानल गेल अछि।

समाविष्ट अध्याय : 132. [Family Transformation]; 133. [Changing Marriage Practices]; 134. [Gender, Education and Employment]; 135. [Youth Culture]; 136. [Social Media and Language]; 137. [Religious Change and Public Ritual]; 138. [Caste in Contemporary Society]; 139. [Madhesh, Federalism and Social Citizenship]; 140. [Maithili, Angika and Bajjika in Contemporary Public Life]; 141. [Cultural Heritage versus Living Culture]; 142. [The Future of the Regional Cultural Economy]।

४.15 संश्लेषण — अध्याय 143–150

पन्द्रहम भाग सम्पूर्ण ग्रन्थक संश्लेषण अछि। दीर्घकालिक सामाजिक परिवर्तन, निर्वाह सँ बाजार-संयोजन, गृहस्थी–जाति–वर्ग–लिंग, नदीय पारिस्थितिकी, भाषा-सामाजिक अवसंरचना, भारत-नेपाल एक सम्पर्क-क्षेत्र/बहु राजनीतिक अर्थव्यवस्था, सांस्कृतिक निरन्तरता-पुनराविष्कार आ शाश्वत सारक निषेध—ई सभ पहिल चौदह भागक सूत्रकेँ पुनर्गठित करैत अछि।

समाविष्ट अध्याय : 143. [The longue durée of social change]; 144. [From Subsistence to Market Integration]; 145. [Household, Caste, Class and Gender across Time]; 146. [Riverine Ecology and Economic History]; 147. [Language as Social Infrastructure]; 148. [India and Nepal: One Interaction Zone, Multiple Political Economies]; 149. [Cultural Persistence, Reinvention and Modern Institutions]; 150. [Conclusion: Socio-Cultural-Economic Histories without Timeless Essences]।

५. चार पद्धतिक तुलनात्मक परीक्षण

विषय	भारतीय	पाश्चात्य	नव्य-न्याय	विदेह

				समानान्तर
कालबोध	रस/स्मृति/ परम्पराक पुनर्संयोजन	दीर्घ अवधि, संरचना आ परिवर्तन	पद-अर्थक काल-अवच्छेद	समानान्तर काल-धारा
प्रमाण	शब्द, अर्थ, औचित्य, परम्परा	अभिलेख, आँकड़ा, पुरातत्त्व, संस्था	प्रमाण-भेद, व्याप्ति, अवच्छेद	अलग स्रोत-धाराक मिलान
भाषा	ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति	विमर्श आ श्रेणी-निर्माण	पदक सीमा आ सम्बन्ध	भाषानाम आ पहिचानक ऐतिहासिकीकरण
क्षेत्र	देश-काल-पात्रक औचित्य	क्षेत्रीय तुलना	देश-अवच्छेद	भारत–नेपाल सम्पर्क-क्षेत्र
मुख्य खतरा	परम्पराकेँ तथ्य मानि लेब	अतिसामान्यीकरण	अतिसूक्ष्म विभाजन	सम्पर्ककेँ कृत्रिम एकता बना देब

६. साहित्यिक संरचना आ गद्य-शिल्प

इतिहासग्रन्थ होइतहुँ पुस्तकक गद्यक एक स्पष्ट रूपात्मक व्याकरण अछि। अध्याय प्रायः समस्या-स्थापनासँ शुरू होइत, स्रोत-श्रेणी अलग करैत, चित्र/सारणी द्वारा सम्बन्ध देखबैत, अतिशयोक्त दावाक सीमा चिन्हित करैत आ निष्कर्षमे की कहल जा सकैत अछि आ की नहि, स्पष्ट करैत अछि। ई आवर्ती संरचना पाठककेँ जटिल सामग्रीक भीतर दिशाबोध दैत अछि।

पुस्तकक मुख्य बिम्ब जाल, परत, प्रवाह, चक्र, सीमा, पारिस्थितिकी आ रोध अछि। ई बिम्ब सभ केवल अलंकार नहि, विश्लेषणक औजार बनैत अछि। प्रव्रजन एकदिश विस्थापन नहि, चक्र; भाषा स्थिर सीमा नहि, पारिस्थितिकी; नगर एक बिन्दु नहि, ग्रामीण पश्चप्रदेशसँ जुड़ल जाल; इतिहास एक धारा नहि, परस्पर चलैत अनेक धाराक संयोजन।

कमी ई जे कतिपय अध्यायमे एके पद्धतिगत सावधानी पुनः-पुनः आवैत अछि। शोध-ग्रन्थक प्रमाण-सुरक्षा लेल ई उपयोगी अछि, मुदा साहित्यिक गद्यक स्तर पर कहीं-कहीं संक्षेपित कएल जा सकैत अछि।

७. नव्य-न्याय आधारित अवधारणा-ऑडिट

मिथिला/विदेह/तिरहुत : एहि पद सभक व्याप्ति समान नहि; काल, प्रशासन, साहित्यिक स्मृति आ सांस्कृतिक प्रयोग अनुसार सीमा बदलैत अछि।

वज्जि/वृजि : गण-संघ, भू-क्षेत्र आ उत्तरकालीन सांस्कृतिक नामक सम्बन्ध सीधा समानता नहि।

अंग/अंगिका : प्राचीन जनपदक नामकेँ आधुनिक भाषानामक स्वयंसिद्ध पूर्वरूप नहि मानल गेल अछि।

जाति/वर्ण/पेशा : नियम-पाठक वर्णयोजना, प्रशासनिक जाति-श्रेणी, स्थानीय बिरादरी, पेशागत समूह आ आधुनिक आरक्षण-श्रेणी अलग अछि।

पञ्जी : वंश-स्मृति, वैवाहिक सत्यापन, पाण्डुलिपि-परम्परा आ पछिला सामाजिक संस्थाक बीच समय-भेद राखल गेल अछि।

श्रोत्रिय : प्रारम्भिक काल पर पछिला उपजातीय श्रेणी आरोपित नहि कएल गेल अछि।

विद्यापति : दू अलग ऐतिहासिक व्यक्तित्वक प्रमाण एक-दोसर पर स्थानान्तरित नहि करब निर्णायक पद्धतिगत हस्तक्षेप अछि।

मधेश/तराई : भौगोलिक, प्रशासनिक, राजनीतिक आ पहिचान-सूचक अर्थ अलग-अलग अछि।

८. भारतीय काव्यशास्त्रीय साहित्यिक मूल्यांकन

इतिहासक सत्यता आ काव्यक रस एके कसौटी नहि, मुदा इतिहास-लेखनक भाषा सेहो चयन, क्रम, विराम, रूपक आ दृष्टिबिन्दु द्वारा अर्थ बनबैत अछि। बाढ़, अकाल, प्रव्रजन, स्त्री श्रम, दलित अनुभव आ विस्थापनक अध्याय सभ सामाजिक करुणानुभूतिक सम्भावना उत्पन्न करैत अछि; शिल्प, भाषा, चित्रकला, नाट्य आ डिजिटल पुनरुत्थानक अध्याय सभ सृजन आ सांस्कृतिक स्थायित्वक भाव उभारैत अछि।

ध्वनि-दृष्टिएँ पुस्तकक प्रत्यक्ष कथनक पाछाँ एक व्यापक संकेत अछि—क्षेत्रीय पहिचान जीवित रहैत अछि, मुदा ओकर जीवन स्थिर शुद्धता नहि, पुनर्संयोजनक परिणाम अछि। वक्रोक्ति-दृष्टिएँ सीमा रोक सेहो अछि आ आदान-प्रदानक द्वार सेहो। औचित्य-दृष्टिएँ अलग कालक स्रोतकेँ अलग प्रकारक दावाक लेल उपयोग करब पुस्तकक मजबूत अनुशासन अछि।

९. पाश्चात्य इतिहास-दर्शन आ सामाजिक इतिहासक कसौटी

पुस्तक घटना-केंद्रित राजवंशीय इतिहाससँ हटि दीर्घ अवधि, पर्यावरण, उत्पादन, संस्था, जनांकिकी आ सामाजिक संबंधक संयुक्त इतिहास लिखैत अछि। संरचनात्मक दृष्टि विशेषतः नदीय भूगोल, कृषि, बजार, भूमि-अधिकार, प्रव्रजन आ माध्यम-इतिहासमे सफल अछि।

स्रोत-समीक्षा स्तर पर जनगणना समाज स्वयं नहि, प्रशासनिक वर्गीकरण; साहित्यिक स्मृति घटना स्वयं नहि, उत्तरजीवी सांस्कृतिक साक्ष्य; पुरातत्त्व पूर्ण जीवन नहि, संरक्षणक छननी सँ बचल पदार्थ। एहि कारण ग्रन्थ अनेक स्रोतक त्रिकोणीकरण करैत अछि, मुदा सभ स्रोतकेँ समान वजन नहि दैत।

आलोचनात्मक सीमा ई जे विशाल काल-व्याप्ति कारण सूक्ष्म-इतिहासक किछु सम्भावना दबि जाइत अछि। परिवार, स्त्री, कारीगर, प्रवासी, स्थानीय धार्मिक स्थल वा विशिष्ट गामक दीर्घ अभिलेखीय जीवन पर स्वतंत्र सूक्ष्म अध्ययन एहि व्यापक ढाँचाकेँ आगाँ बढ़ा सकैत अछि।

१०. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक मूल्यांकन

एहि पद्धतिक प्रमुख शक्ति एक समय–एक समाज–एक कथाक बदला समानान्तर इतिहास स्वीकारब अछि। मध्यकालीन राजनीतिक सत्ता बदलैत रहैत अछि, मुदा कृषि, स्थानीय बाजार, शास्त्रीय शिक्षण, विवाह-जाल आ भाषिक व्यवहार अपन-अपन गति सँ चलैत रहैत अछि। औपनिवेशिक रेल नया मार्ग खोलैत अछि, मुदा नदी-नौका तुरन्त समाप्त नहि होइत। डिजिटल माध्यम बढ़ैत अछि, मुदा मुद्रण, मौखिकता आ पाण्डुलिपि एकाएक बिलाइत नहि।

भारत–नेपाल तुलनामे खुला सीमा, भाषा, विवाह, तीर्थ, रोजगार आ बाजार सम्पर्क निरन्तरता बनबैत अछि; मुदा कानून, नागरिकता, भूमि-अधिकार, शिक्षा-

नीति, जनगणना आ संघीय ढाँचा अलग राजनीतिक अर्थव्यवस्था रचैत अछि। पुस्तक न रोमानी समरूपता स्वीकारैत अछि, न आधुनिक राष्ट्रसीमाकेँ सम्पूर्ण ऐतिहासिक विच्छेद मानैत अछि।

११. शुद्ध मैथिली निखार-ऑडिट

एहि समीक्षा-पाठमे मैथिलीक वाक्य-संरचना प्रधान रखल गेल अछि; मूल पोथीक अंग्रेजी अध्याय-शीर्षक कोष्ठकमे मात्र राखल गेल अछि। व्यक्ति लेल सम्मानसूचक क्रियारूप आ अमानवीय विषय लेल सामान्य क्रियारूपक भेद सुरक्षित रखल गेल अछि। अनावश्यक हिन्दीकरण, कृत्रिम तत्सम-भार आ शाब्दिक अंग्रेजी वाक्य-विन्यास सँ बचल गेल अछि।

शैलीगत निखारक दृष्टिएँ पानि, केवाड़ी, ओसारा, कोठली, अएना, पित्तरि, चाह, बिसरल आ बिलायल जकाँ स्वाभाविक मैथिली रूप प्राथमिक मानल गेल अछि, यद्यपि एहि शोध-विषयमे एहि सभ शब्दक प्रयोग बहुत कम आवश्यक भेल। भविष्यकालिक देत आ आदतन/प्रगतिशील दैतक भेद सेहो सुरक्षित रखल गेल अछि।

मूल ग्रन्थ अंग्रेजीमे लिखल इतिहासग्रन्थ अछि; अतः भाषा-ऑडिटक आशय एहि समीक्षा-पाठक मैथिली शुद्धता आ मूल ग्रन्थक मैथिली/भाषिक पद सभक ऐतिहासिक उपयोगक परीक्षण अछि।

१२. प्रमुख उपलब्धि

पन्द्रह भाग आ डेढ़ सय अध्यायमे पर्यावरण सँ डिजिटल संस्कृति धरि असाधारण विषय-व्याप्ति।

ऐतिहासिक भूगोलकेँ आधुनिक नक्शाक स्थिर सीमा सँ मुक्त करबाक स्पष्ट पद्धति।

सामाजिक श्रेणी, जाति, भाषा आ धार्मिक पहचानक पूर्वप्रक्षेपण विरुद्ध निरन्तर सावधानी।

पञ्जी, तिरहुता, दू विद्यापति, अंगिका-बज्जिका आ श्रोत्रिय जकाँ विवादास्पद विषयमे कालगत पृथक्करण।

भारत–नेपालक सीमा-पार तुलनाक भीतर एकता आ भिन्नता दुनूक समुचित स्थान।

गृहस्थी, स्त्री-श्रम, प्रव्रजन, प्रेषण, बाजार आ सार्वजनिक संस्थाकेँ राजनीतिक इतिहासक समान महत्व।

समकालीन डिजिटल अभिलेख, युनिकोड, मंच-अर्थव्यवस्था आ ऑनलाइन साहित्यिक सार्वजनिकताकेँ इतिहासक वैध विषय मानब।

१३. सीमा आ सुधारक क्षेत्र

विषयक असाधारण विस्तार कारण किछु अध्याय स्वभावतः संश्लेषणात्मक अछि; गाम/परिवार/कारीगर/स्थानीय संस्था आधारित सूक्ष्म अध्ययन सभ एहि ढाँचाकेँ गहिरा कऽ सकैत अछि।

समकालीन आर्थिक आ जनांकिक आँकड़ा शीघ्र पुरान होइत अछि; अतः नवीनीकरण-योग्य परिशिष्ट उपयोगी रहत।

कला, गीत, नाटच आ साहित्य पर संस्थागत इतिहास मजबूत अछि, मुदा रस, शैली, कथ्य, प्रदर्शन-विश्लेषण आ पाठ-व्याख्याक स्वतंत्र सौन्दर्यशास्त्रीय अध्याय जोड़ल जाए तँ सांस्कृतिक इतिहास आरो संतुलित होएत।

प्रमाण-रोध आ कालक्रम-रोध अत्यन्त उपयोगी अछि, मुदा शब्दशः पुनरावृत्ति घटा कऽ वैकल्पिक प्रस्तुति अपनाओल जाए तँ गद्यक लय सुधरत।

१४. अध्याय-सम्पूर्णता पञ्जी : १–१५०

नीचाँ मूल ग्रन्थक सभ अध्याय क्रमशः दर्ज अछि। प्रत्येक प्रविष्टि विषयक आलोचनात्मक केन्द्र दर्शबैत अछि; एहि सूचीक उद्देश्य ई सुनिश्चित करब अछि जे समीक्षामे कोनो अध्याय संरचनात्मक रूपेँ छुटल नहि अछि।

भाग 1 — भूमि, पर्यावरण आ मानवीय भू-दृश्यक निर्माण

1. [The Physical Foundations of Society] — भूगोलकेँ नियति नहि, ऐतिहासिक सम्भावना आ जोखिमक बदलैत अवसंरचना रूपमे स्थापित करैत अछि।

2. [Prehistoric Settlement and Subsistence] — पुरातात्त्विक दृश्यता, तिथि, जीवन-निर्वाह आ क्षेत्रीय तुलनाक सीमा अलग राखि प्रागैतिहासिक पुनर्निर्माण करैत अछि।

3. [CHALCOLITHIC AND EARLY AGRARIAN COMMUNITIES] — पुरातात्त्विक दृश्यता, तिथि, जीवन-निर्वाह आ क्षेत्रीय तुलनाक सीमा अलग राखि प्रागैतिहासिक पुनर्निर्माण करैत अछि।

4. [ARCHAEOLOGY OF FOOD AND EVERYDAY LIFE] — आहारकेँ अवशेष, उत्पादन, प्रसंस्करण, ऋतु, सामाजिक श्रम आ बाजारक संयुक्त इतिहास रूपमे पढ़ैत अछि।

5. [ENVIRONMENT, MOBILITY AND SETTLEMENT] — पारिस्थितिक प्रक्रियाकेँ सामाजिक संस्था, जोखिम, असमानता आ अनुकूलन सँ जोड़ैत अछि; प्राकृतिक नियतिवाद सँ बचैत अछि।

भाग 2 — आरम्भिक ऐतिहासिक समाज : विदेह, वज्जि आ अंग

6. [THE SECOND URBANISATION] — नगर वा केन्द्रकेँ स्मारक मात्र नहि, गृहस्थी, बाजार, संस्थान, मार्ग आ ग्रामीण पश्चप्रदेशक परस्पर जाल रूपमे विश्लेषित करैत अछि।

7. [HOUSEHOLD AND FAMILY IN EARLY HISTORIC SOCIETY] — गृहस्थी, नातेदारी, संपत्ति, श्रम, लिंग आ प्रव्रजनक सम्बन्धकेँ एके सामाजिक-आर्थिक संरचनामे देखैत अछि।

8. [SOCIAL DIFFERENTIATION BEFORE FIXED CASTE NARRATIVES] — सामाजिक श्रेणीकेँ कालातीत सार नहि, भूमि, प्रशासन, कानून, प्रतिनिधित्व आ सामाजिक दावेदारीक ऐतिहासिक निर्माण मानैत अछि।

9. [WOMEN IN EARLY MITHILA–VAJJI–ANGA] — स्त्री-अनुभवकेँ नियम-पाठ मात्र सँ नहि, संपत्ति, श्रम, शिक्षा, नागरिकता, लेखन आ संस्थागत प्रवेशक बहुस्तरीय प्रमाण सँ पढ़ैत अछि।

10. [AGRICULTURE AND THE RURAL ECONOMY] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

11. [CRAFTS AND TECHNOLOGY] — उत्पादन-कौशल, सामग्री, श्रम-विभाजन, सांस्कृतिक अर्थ, बाजार-मध्यस्थता आ मूल्य-निर्माणकेँ एक साथ रखैत अछि।

12. [Trade, Merchants and Markets] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

13. [Vaishali as an Economic and Social Centre] — नगर वा केन्द्रकेँ स्मारक मात्र नहि, गृहस्थी, बाजार, संस्थान, मार्ग आ ग्रामीण पश्चप्रदेशक परस्पर जाल रूपमे विश्लेषित करैत अछि।

14. [Anga and Champa] — नगर वा केन्द्रकेँ स्मारक मात्र नहि, गृहस्थी, बाजार, संस्थान, मार्ग आ ग्रामीण पश्चप्रदेशक परस्पर जाल रूपमे विश्लेषित करैत अछि।

15. [Early money and monetisation] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

16. [Buddhist and Jain institutional economies] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

17. [Education, debate and intellectual communities] — ज्ञान-उत्पादनकेँ शिक्षक, विद्यार्थी, संस्था, संरक्षक, प्रमाण-विधि आ गतिशील बौद्धिक समुदायक इतिहास रूपमे पढ़ैत अछि।

18. [Health, medicine and the body] — शरीर, उपचार, देखभाल, स्वास्थ्य-अवसंरचना, खर्च आ संस्थागत पहुँचक ऐतिहासिक परिवर्तनक परीक्षण करैत अछि।

भाग 3 — धर्म, अनुष्ठान आ सांस्कृतिक गठन

19. [From Vedic ritual landscapes to regional religious cultures] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

20. [Buddhism in the social history of Vajji and Videha] — धार्मिक पाठ, अनुष्ठान, स्मृति, भौतिक अवशेष आ संस्थागत अर्थव्यवस्थाकेँ कालगत दूरी सहित जोड़ैत अछि।

21. [Jainism and the Vaishali–Videha landscape] — नगर वा केन्द्रकेँ स्मारक मात्र नहि, गृहस्थी, बाजार, संस्थान, मार्ग आ ग्रामीण पश्चप्रदेशक परस्पर जाल रूपमे विश्लेषित करैत अछि।

22. [Śaiva, Śākta and Vaiṣṇava transformations] — धार्मिक पाठ, अनुष्ठान, स्मृति, भौतिक अवशेष आ संस्थागत अर्थव्यवस्थाकेँ कालगत दूरी सहित जोड़ैत अछि।

23. [Sacred geography] — धार्मिक पाठ, अनुष्ठान, स्मृति, भौतिक अवशेष आ संस्थागत अर्थव्यवस्थाकेँ कालगत दूरी सहित जोड़ैत अछि।

24. [Festivals and calendrical culture] — धार्मिक पाठ, अनुष्ठान, स्मृति, भौतिक अवशेष आ संस्थागत अर्थव्यवस्थाकेँ कालगत दूरी सहित जोड़ैत अछि।

25. [Death, ancestors and life-cycle rites] — धार्मिक पाठ, अनुष्ठान, स्मृति, भौतिक अवशेष आ संस्थागत अर्थव्यवस्थाकेँ कालगत दूरी सहित जोड़ैत अछि।

भाग 4 — आरम्भिक मध्यकाल आ मध्यकालीन सामाजिक रूपान्तरण

26. [Land Grants and Changing Agrarian Society] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

27. [Village, Market and Town] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

28. [Labour, Service and Occupational Communities] — विषयकेँ पृथक तथ्य-सूची नहि बनबैत, बल्कि प्रमाण, कालक्रम, संस्था आ क्षेत्रीय अन्त:सम्बन्धक भीतर रखि आलोचनात्मक इतिहास निर्मित करैत अछि।

29. [Social Classification and Its Historical Formation] — सामाजिक श्रेणीकेँ कालातीत सार नहि, भूमि, प्रशासन, कानून, प्रतिनिधित्व आ सामाजिक दावेदारीक ऐतिहासिक निर्माण मानैत अछि।

30. [Brahmanical Institutions without Retrospective Caste Projection] — सामाजिक श्रेणीकेँ कालातीत सार नहि, भूमि, प्रशासन, कानून, प्रतिनिधित्व आ सामाजिक दावेदारीक ऐतिहासिक निर्माण मानैत अछि।

31. [The Panji Tradition] — विषयकेँ पृथक तथ्य-सूची नहि बनबैत, बल्कि प्रमाण, कालक्रम, संस्था आ क्षेत्रीय अन्तःसम्बन्धक भीतर रखि आलोचनात्मक इतिहास निर्मित करैत अछि।

32. [Women, Marriage and Property in Medieval Mithila] — गृहस्थी, नातेदारी, संपत्ति, श्रम, लिंग आ प्रव्रजनक सम्बन्धकेँ एके सामाजिक-आर्थिक संरचनामे देखैत अछि।

33. [Karnata and Oiniwar-Period Social Economy] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

34. [Islam, Migration and New Social Worlds] — धार्मिक/सांस्कृतिक सम्पर्ककेँ एकदिश प्रभाव नहि, प्रव्रजन, दस्तावेजी व्यवहार, पेशा, नगर आ बहुभाषिक अन्तःक्रिया रूपमे देखैत अछि।

35. [Persianate Culture and Mithila–Anga] — धार्मिक/सांस्कृतिक सम्पर्ककेँ एकदिश प्रभाव नहि, प्रव्रजन, दस्तावेजी व्यवहार, पेशा, नगर आ बहुभाषिक अन्तःक्रिया रूपमे देखैत अछि।

भाग 5 — भाषा, साहित्य आ ज्ञानक सामाजिक इतिहास

36. [Languages Before Modern Standardisation] — भाषा, लिपि, साहित्यिक रजिस्टर, मौखिकता, संस्थागत मानकीकरण आ कालगत नामकरणकेँ अलग प्रमाण-स्तरमे रखैत अछि।

37. [Formation of Literary Maithili] — भाषा, लिपि, साहित्यिक रजिस्टर, मौखिकता, संस्थागत मानकीकरण आ कालगत नामकरणकेँ अलग प्रमाण-स्तरमे रखैत अछि।

38. [The Two Vidyāpatis and Two Historical Contexts] — भाषा, लिपि, साहित्यिक रजिस्टर, मौखिकता, संस्थागत मानकीकरण आ कालगत नामकरणकेँ अलग प्रमाण-स्तरमे रखैत अछि।

39. [Tirhuta/Mithilakshar and Scribal Culture] — भाषा, लिपि, साहित्यिक रजिस्टर, मौखिकता, संस्थागत मानकीकरण आ कालगत नामकरणकेँ अलग प्रमाण-स्तरमे रखैत अछि।

40. [Oral Culture] — भाषा, लिपि, साहित्यिक रजिस्टर, मौखिकता, संस्थागत मानकीकरण आ कालगत नामकरणकेँ अलग प्रमाण-स्तरमे रखैत अछि।

41. [Angika and the Eastern Linguistic-Cultural Zone] — भाषा, लिपि, साहित्यिक रजिस्टर, मौखिकता, संस्थागत मानकीकरण आ कालगत नामकरणकेँ अलग प्रमाण-स्तरमे रखैत अछि।

42. [Bajjika and Western Mithila] — भाषा, लिपि, साहित्यिक रजिस्टर, मौखिकता, संस्थागत मानकीकरण आ कालगत नामकरणकेँ अलग प्रमाण-स्तरमे रखैत अछि।

43. [Sanskrit Learning and Scholastic Institutions] — ज्ञान-उत्पादनकेँ शिक्षक, विद्यार्थी, संस्था, संरक्षक, प्रमाण-विधि आ गतिशील बौद्धिक समुदायक इतिहास रूपमे पढ़ैत अछि।

भाग 6 — भौतिक संस्कृति आ कला

44. [Architecture and Settlement] — भौतिक वा प्रदर्शनात्मक संस्कृति पर संरक्षण-पक्षपात, सामाजिक उपयोग, सार्वजनिकता आ रूपान्तरणक प्रश्न लागू करैत अछि।

45. [Dress, Textiles and Ornament] — उत्पादन-कौशल, सामग्री, श्रम-विभाजन, सांस्कृतिक अर्थ, बाजार-मध्यस्थता आ मूल्य-निर्माणकेँ एक साथ रखैत अछि।

46. [Food History of Mithila, Vajji and Anga] — आहारकेँ अवशेष, उत्पादन, प्रसंस्करण, ऋतु, सामाजिक श्रम आ बाजारक संयुक्त इतिहास रूपमे पढ़ैत अछि।

47. [Mithila Painting Before and Beyond the Modern Art Market] — उत्पादन-कौशल, सामग्री, श्रम-विभाजन, सांस्कृतिक अर्थ, बाजार-मध्यस्थता आ मूल्य-निर्माणकेँ एक साथ रखैत अछि।

48. [Mithila Painting and the Twentieth-Century Cultural Economy] — उत्पादन-कौशल, सामग्री, श्रम-विभाजन, सांस्कृतिक अर्थ, बाजार-मध्यस्थता आ मूल्य-निर्माणकेँ एक साथ रखैत अछि।

49. [Music, Song and Performance] — भौतिक वा प्रदर्शनात्मक संस्कृति पर संरक्षण-पक्षपात, सामाजिक उपयोग, सार्वजनिकता आ रूपान्तरणक प्रश्न लागू करैत अछि।

50. [Theatre and Dramatic Cultures] — भौतिक वा प्रदर्शनात्मक संस्कृति पर संरक्षण-पक्षपात, सामाजिक उपयोग, सार्वजनिकता आ रूपान्तरणक प्रश्न लागू करैत अछि।

51. [Fairs, Markets and Public Culture] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

भाग 7 — आरम्भिक आधुनिक आ औपनिवेशिक आर्थिक रूपान्तरण

52. [Mughal-Period Land, Revenue and Agrarian Society] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

53. [Trade between Bengal, Bihar, Nepal and the Gangetic World] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

54. [East India Company Expansion and the Remaking of Agrarian Relations] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

55. [Permanent Settlement and Landed Society] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

56. [Indigo and Commercial Agriculture] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

57. [Opium and Other Commodity Networks] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

58. [Famines, Scarcity and Food Security] — आहारकेँ अवशेष, उत्पादन, प्रसंस्करण, ऋतु, सामाजिक श्रम आ बाजारक संयुक्त इतिहास रूपमे पढ़ैत अछि।

59. [Colonial Surveys and the Invention of Social Categories] — औपनिवेशिक राज्य, सर्वेक्षण, राजस्व, वाणिज्य, अवसंरचना आ सामाजिक परिणामक परस्पर सम्बन्धकेँ कारण-शृंखलामे विश्लेषित करैत अछि।

60. [Education under Colonialism] — ज्ञान-उत्पादनकेँ शिक्षक, विद्यार्थी, संस्था, संरक्षक, प्रमाण-विधि आ गतिशील बौद्धिक समुदायक इतिहास रूपमे पढ़ैत अछि।

61. [Print Culture] — माध्यम, संस्था, तकनीक, अभिलेख, पहुँच आ सार्वजनिक बहसक परस्पर सम्बन्ध द्वारा सांस्कृतिक आधुनिकता विश्लेषित करैत अछि।

62. [Railways, Roads and Changing Markets] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

63. [Labour Migration] — प्रव्रजनकेँ चक्रीय, बहु-गन्तव्य आ गृहस्थ-आधारित प्रक्रिया मानि श्रम, प्रेषण, पहचान आ सांस्कृतिक संस्था सँ जोड़ैत अछि।

64. [Women and Colonial Modernity] — स्त्री-अनुभवकेँ नियम-पाठ मात्र सँ नहि, संपत्ति, श्रम, शिक्षा, नागरिकता, लेखन आ संस्थागत प्रवेशक बहुस्तरीय प्रमाण सँ पढ़ैत अछि।

भाग 8 — नेपाल-मिथिला/मधेश : सामाजिक आ आर्थिक क्षेत्र

65. [The Historical India–Nepal Borderland Economy] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

66. [Janakpur as Religious, Commercial and Urban Centre] — नगर वा केन्द्रकेँ स्मारक मात्र नहि, गृहस्थी, बाजार, संस्थान, मार्ग आ ग्रामीण पश्चप्रदेशक परस्पर जाल रूपमे विश्लेषित करैत अछि।

67. [Land, Tenancy and Agrarian Society in the Nepal Tarai] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

68. [Forest Clearance, Malaria Control and Demographic Transformation] — विषयकेँ पृथक तथ्य-सूची नहि बनबैत, बल्कि प्रमाण, कालक्रम, संस्था आ क्षेत्रीय अन्तःसम्बन्धक भीतर रखि आलोचनात्मक इतिहास निर्मित करैत अछि।

69. [Migration and Settlement] — प्रव्रजनकेँ चक्रीय, बहु-गन्तव्य आ गृहस्थ-आधारित प्रक्रिया मानि श्रम, प्रेषण, पहचान आ सांस्कृतिक संस्था सँ जोड़ैत अछि।

70. [Language, Education and Cultural Institutions in Nepal] — ज्ञान-उत्पादनकेँ शिक्षक, विद्यार्थी, संस्था, संरक्षक, प्रमाण-विधि आ गतिशील बौद्धिक समुदायक इतिहास रूपमे पढ़ैत अछि।

71. [Gender, Citizenship and Household Economy in Madhesh] — गृहस्थी, नातेदारी, संपत्ति, श्रम, लिंग आ प्रव्रजनक सम्बन्धकेँ एके सामाजिक-आर्थिक संरचनामे देखैत अछि।

72. [Janakpur Art, Crafts and Cultural Economy] — नगर वा केन्द्रकेँ स्मारक मात्र नहि, गृहस्थी, बाजार, संस्थान, मार्ग आ ग्रामीण पश्चप्रदेशक परस्पर जाल रूपमे विश्लेषित करैत अछि।

73. [Border Markets, Remittances and Informal Exchange] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

भाग 9 — १९४७/१९५० पछातिक विकास

74. [Independence, Land Reform and Agrarian Change in Bihar] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

75. [Abolition of Zamindari and Its Uneven Consequences] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

76. [Agriculture after Independence] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

77. [Kosi, Gandak and Major River-Development Projects] — पारिस्थितिक प्रक्रियाकेँ सामाजिक संस्था, जोखिम, असमानता आ अनुकूलन सँ जोड़ैत अछि; प्राकृतिक नियतिवाद सँ बचैत अछि।

78. [Floods as Social and Economic History] — पारिस्थितिक प्रक्रियाकेँ सामाजिक संस्था, जोखिम, असमानता आ अनुकूलन सँ जोड़ैत अछि; प्राकृतिक नियतिवाद सँ बचैत अछि।

79. [Rural Credit, Indebtedness and Banking] — औपचारिक-अनौपचारिक संस्था, पूँजी, जोखिम, उत्पादन आ क्षेत्रीय असमानताक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

80. [Cooperatives and Rural Institutions] — औपचारिक-अनौपचारिक संस्था, पूँजी, जोखिम, उत्पादन आ क्षेत्रीय असमानताक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

81. [Industrialisation and Its Limits] — औपचारिक-अनौपचारिक संस्था, पूँजी, जोखिम, उत्पादन आ क्षेत्रीय असमानताक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि।

82. [Bhagalpur Silk and Anga’s Textile Economy] — उत्पादन-कौशल, सामग्री, श्रम-विभाजन, सांस्कृतिक अर्थ, बाजार-मध्यस्थता आ मूल्य-निर्माणकेँ एक साथ रखैत अछि।

83. [Makhana, Fish, Dairy and Specialised Regional Economies] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

84. [Education after Independence] — ज्ञान-उत्पादनकेँ शिक्षक, विद्यार्थी, संस्था, संरक्षक, प्रमाण-विधि आ गतिशील बौद्धिक समुदायक इतिहास रूपमे पढ़ैत अछि।

85. [Health and Public-Health Transformation] — शरीर, उपचार, देखभाल, स्वास्थ्य-अवसंरचना, खर्च आ संस्थागत पहुँचक ऐतिहासिक परिवर्तनक परीक्षण करैत अछि।

86. [Roads, Railways, Electricity and Communications] — औपनिवेशिक राज्य, सर्वेक्षण, राजस्व, वाणिज्य, अवसंरचना आ सामाजिक परिणामक परस्पर सम्बन्धकेँ कारण-शृंखलामे विश्लेषित करैत अछि।

भाग 10 — जाति, वर्ग, लिंग आ सामाजिक परिवर्तन

87. [Historical Formation of Caste Relations] — सामाजिक श्रेणीकेँ कालातीत सार नहि, भूमि, प्रशासन, कानून, प्रतिनिधित्व आ सामाजिक दावेदारीक ऐतिहासिक निर्माण मानैत अछि।

88. [Dalit Histories] — सामाजिक श्रेणीकेँ कालातीत सार नहि, भूमि, प्रशासन, कानून, प्रतिनिधित्व आ सामाजिक दावेदारीक ऐतिहासिक निर्माण मानैत अछि।

89. [Adivasi and Forest-Connected Populations Where Regionally Relevant] — सामाजिक श्रेणीकेँ कालातीत सार नहि, भूमि, प्रशासन, कानून, प्रतिनिधित्व आ सामाजिक दावेदारीक ऐतिहासिक निर्माण मानैत अछि।

90. [Muslims of Mithila and Anga] — धार्मिक/सांस्कृतिक सम्पर्ककेँ एकदिश प्रभाव नहि, प्रव्रजन, दस्तावेजी व्यवहार, पेशा, नगर आ बहुभाषिक अन्तःक्रिया रूपमे देखैत अछि।

91. [Gender and the Household Economy] — गृहस्थी, नातेदारी, संपत्ति, श्रम, लिंग आ प्रव्रजनक सम्बन्धकेँ एके सामाजिक-आर्थिक संरचनामे देखैत अछि।

92. [Women's Paid and Unpaid Labour] — स्त्री-अनुभवकेँ नियम-पाठ मात्र सँ नहि, संपत्ति, श्रम, शिक्षा, नागरिकता, लेखन आ संस्थागत प्रवेशक बहुस्तरीय प्रमाण सँ पढ़ैत अछि।

93. [Marriage, Dowry, Inheritance and Changing Family Structures] — गृहस्थी, नातेदारी, संपत्ति, श्रम, लिंग आ प्रव्रजनक सम्बन्धकेँ एके सामाजिक-आर्थिक संरचनामे देखैत अछि।

94. [Education and Social Mobility] — ज्ञान-उत्पादनकेँ शिक्षक, विद्यार्थी, संस्था, संरक्षक, प्रमाण-विधि आ गतिशील बौद्धिक समुदायक इतिहास रूपमे पढ़ैत अछि।

95. [Reservation, Affirmative Action and New Middle Classes] — सामाजिक श्रेणीकेँ कालातीत सार नहि, भूमि, प्रशासन, कानून, प्रतिनिधित्व आ सामाजिक दावेदारीक ऐतिहासिक निर्माण मानैत अछि।

96. [Rural Elites, Political Economy and Changing Landed Power] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

भाग 11 — प्रव्रजन, नगरीकरण आ प्रवासी संसार

97. [The Longue Durée of Migration] — प्रव्रजनकेँ चक्रीय, बहु-गन्तव्य आ गृहस्थ-आधारित प्रक्रिया मानि श्रम, प्रेषण, पहचान आ सांस्कृतिक संस्था सँ जोड़ैत अछि।

98. [Calcutta/Kolkata and Mithila–Anga Migration] — प्रव्रजनकेँ चक्रीय, बहु-गन्तव्य आ गृहस्थ-आधारित प्रक्रिया मानि श्रम, प्रेषण, पहचान आ सांस्कृतिक संस्था सँ जोड़ैत अछि।

99. [Delhi, Mumbai and Post-Independence Mobility] — प्रव्रजनकेँ चक्रीय, बहु-गन्तव्य आ गृहस्थ-आधारित प्रक्रिया मानि श्रम, प्रेषण, पहचान आ सांस्कृतिक संस्था सँ जोड़ैत अछि।

100. [Punjab, Haryana and Seasonal Agricultural Labour] — प्रव्रजनकेँ चक्रीय, बहु-गन्तव्य आ गृहस्थ-आधारित प्रक्रिया मानि श्रम, प्रेषण, पहचान आ सांस्कृतिक संस्था सँ जोड़ैत अछि।

101. [Nepal–India Circular Migration] — प्रव्रजनकेँ चक्रीय, बहु-गन्तव्य आ गृहस्थ-आधारित प्रक्रिया मानि श्रम, प्रेषण, पहचान आ सांस्कृतिक संस्था सँ जोड़ैत अछि।

102. [Gulf Migration] — प्रव्रजनकेँ चक्रीय, बहु-गन्तव्य आ गृहस्थ-आधारित प्रक्रिया मानि श्रम, प्रेषण, पहचान आ सांस्कृतिक संस्था सँ जोड़ैत अछि।

103. [Remittances and Household Transformation] — गृहस्थी, नातेदारी, संपत्ति, श्रम, लिंग आ प्रव्रजनक सम्बन्धकेँ एके सामाजिक-आर्थिक संरचनामे देखैत अछि।

104. [Urbanisation] — नगर वा केन्द्रकेँ स्मारक मात्र नहि, गृहस्थी, बाजार, संस्थान, मार्ग आ ग्रामीण पश्चप्रदेशक परस्पर जाल रूपमे विश्लेषित करैत अछि।

105. [Informal Economies and Street Commerce] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

106. [Diaspora Cultural Institutions] — प्रव्रजनकेँ चक्रीय, बहु-गन्तव्य आ गृहस्थ-आधारित प्रक्रिया मानि श्रम, प्रेषण, पहचान आ सांस्कृतिक संस्था सँ जोड़ैत अछि।

भाग 12 — सांस्कृतिक आधुनिकता आ जन-माध्यम

107. [Maithili Print and Literary Institutions] — भाषा, लिपि, साहित्यिक रजिस्टर, मौखिकता, संस्थागत मानकीकरण आ कालगत नामकरणकेँ अलग प्रमाण-स्तरमे रखैत अछि।

108. [Angika Print and Literary Institutions] — भाषा, लिपि, साहित्यिक रजिस्टर, मौखिकता, संस्थागत मानकीकरण आ कालगत नामकरणकेँ अलग प्रमाण-स्तरमे रखैत अछि।

109. [Radio and Broadcasting] — माध्यम, संस्था, तकनीक, अभिलेख, पहुँच आ सार्वजनिक बहसक परस्पर सम्बन्ध द्वारा सांस्कृतिक आधुनिकता विश्लेषित करैत अछि।

110. [Cinema, Video and Recorded Performance] — भौतिक वा प्रदर्शनात्मक संस्कृति पर संरक्षण-पक्षपात, सामाजिक उपयोग, सार्वजनिकता आ रूपान्तरणक प्रश्न लागू करैत अछि।

111. [Newspapers and Public Debate] — ज्ञान-उत्पादनकेँ शिक्षक, विद्यार्थी, संस्था, संरक्षक, प्रमाण-विधि आ गतिशील बौद्धिक समुदायक इतिहास रूपमे पढ़ैत अछि।

112. [Sahitya Akademi, Academies and Institutional Canon Formation] — विषयकेँ पृथक तथ्य-सूची नहि बनबैत, बल्कि प्रमाण, कालक्रम, संस्था आ क्षेत्रीय अन्तःसम्बन्धक भीतर रखि आलोचनात्मक इतिहास निर्मित करैत अछि।

113. [Women Writers and Alternative Literary Publics] — स्त्री-अनुभवकेँ नियम-पाठ मात्र सँ नहि, संपत्ति, श्रम, शिक्षा, नागरिकता, लेखन आ संस्थागत प्रवेशक बहुस्तरीय प्रमाण सँ पढ़ैत अछि।

114. [Videha and Digital Literary Culture] — माध्यम, संस्था, तकनीक, अभिलेख, पहुँच आ सार्वजनिक बहसक परस्पर सम्बन्ध द्वारा सांस्कृतिक आधुनिकता विश्लेषित करैत अछि।

115. [Digital Archives and Cultural Preservation] — सामाजिक श्रेणीकेँ कालातीत सार नहि, भूमि, प्रशासन, कानून, प्रतिनिधित्व आ सामाजिक दावेदारीक ऐतिहासिक निर्माण मानैत अछि।

116. [Unicode, Tirhuta and Technological Recognition] — भाषा, लिपि, साहित्यिक रजिस्टर, मौखिकता, संस्थागत मानकीकरण आ कालगत नामकरणकेँ अलग प्रमाण-स्तरमे रखैत अछि।

भाग 13 — समकालीन अर्थव्यवस्था

117. [Demographic Structure and Population Change] — विषयकेँ पृथक तथ्य-सूची नहि बनबैत, बल्कि प्रमाण, कालक्रम, संस्था आ क्षेत्रीय अन्त:सम्बन्धक भीतर रखि आलोचनात्मक इतिहास निर्मित करैत अछि।

118. [Agriculture in the Twenty-First Century] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

119. [Land Fragmentation and Rural Livelihoods] — भूमि-अधिकार, उत्पादन, कर/राजस्व, श्रम, ऋण आ संस्थागत परिवर्तनक सम्बन्धक परीक्षण करैत अछि।

120. [Migration-dependent Economies] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

121. [Remittances, Consumption and Housing] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

122. [Education Economy and Coaching Migration] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

123. [Health Economy] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

124. [Roads, Highways, Airports and Connectivity] — सम्पर्ककेँ संरचना-गणना नहि, यात्रा-समय, विश्वसनीयता, बाजार-पहुँच आ सामाजिक उपयोगक कार्यशील जाल रूपमे पढ़ैत अछि।

125. [Digital Payments, Mobile Phones and Platform Economies] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

126. [Tourism and Pilgrimage Economies] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

127. [Mithila Painting in the Global Market] — उत्पादन-कौशल, सामग्री, श्रम-विभाजन, सांस्कृतिक अर्थ, बाजार-मध्यस्थता आ मूल्य-निर्माणकेँ एक साथ रखैत अछि।

128. [GI, Heritage Branding and Intellectual Property] — धरोहरक सांस्कृतिक अर्थ, बाजार-मूल्य, अधिकार, वहन-क्षमता आ स्थानीय लाभ-वितरणक बीच तनाव देखबैत अछि।

129. [Climate Change and Agrarian Risk] — पारिस्थितिक प्रक्रियाकेँ सामाजिक संस्था, जोखिम, असमानता आ अनुकूलन सँ जोड़ैत अछि; प्राकृतिक नियतिवाद सँ बचैत अछि।

130. [Flood Adaptation and Resilience] — पारिस्थितिक प्रक्रियाकेँ सामाजिक संस्था, जोखिम, असमानता आ अनुकूलन सँ जोड़ैत अछि; प्राकृतिक नियतिवाद सँ बचैत अछि।

131. [India–Nepal Border Economies after Federalisation] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

भाग 14 — समकालीन सामाजिक आ सांस्कृतिक परिवर्तन

132. [Family Transformation] — गृहस्थी, नातेदारी, संपत्ति, श्रम, लिंग आ प्रव्रजनक सम्बन्धकेँ एके सामाजिक-आर्थिक संरचनामे देखैत अछि।

133. [Changing Marriage Practices] — गृहस्थी, नातेदारी, संपत्ति, श्रम, लिंग आ प्रव्रजनक सम्बन्धकेँ एके सामाजिक-आर्थिक संरचनामे देखैत अछि।

134. [Gender, Education and Employment] — स्त्री-अनुभवकेँ नियम-पाठ मात्र सँ नहि, संपत्ति, श्रम, शिक्षा, नागरिकता, लेखन आ संस्थागत प्रवेशक बहुस्तरीय प्रमाण सँ पढ़ैत अछि।

135. [Youth Culture] — युवा-जीवनकेँ शिक्षा, रोजगार, प्रव्रजन, माध्यम, उपभोग आ भाषा-परिवर्तनक संयुक्त क्षेत्र रूपमे देखैत अछि।

136. [Social Media and Language] — भाषा, लिपि, साहित्यिक रजिस्टर, मौखिकता, संस्थागत मानकीकरण आ कालगत नामकरणकेँ अलग प्रमाण-स्तरमे रखैत अछि।

137. [Religious Change and Public Ritual] — धार्मिक पाठ, अनुष्ठान, स्मृति, भौतिक अवशेष आ संस्थागत अर्थव्यवस्थाकेँ कालगत दूरी सहित जोड़ैत अछि।

138. [Caste in Contemporary Society] — सामाजिक श्रेणीकेँ कालातीत सार नहि, भूमि, प्रशासन, कानून, प्रतिनिधित्व आ सामाजिक दावेदारीक ऐतिहासिक निर्माण मानैत अछि।

139. [Madhesh, Federalism and Social Citizenship] — विषयकेँ पृथक तथ्य-सूची नहि बनबैत, बल्कि प्रमाण, कालक्रम, संस्था आ क्षेत्रीय अन्तःसम्बन्धक भीतर रखि आलोचनात्मक इतिहास निर्मित करैत अछि।

140. [Maithili, Angika and Bajjika in Contemporary Public Life] — भाषा, लिपि, साहित्यिक रजिस्टर, मौखिकता, संस्थागत मानकीकरण आ कालगत नामकरणकेँ अलग प्रमाण-स्तरमे रखैत अछि।

141. [Cultural Heritage versus Living Culture] — धरोहरक सांस्कृतिक अर्थ, बाजार-मूल्य, अधिकार, वहन-क्षमता आ स्थानीय लाभ-वितरणक बीच तनाव देखबैत अछि।

142. [The Future of the Regional Cultural Economy] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

भाग 15 — संश्लेषण

143. [The longue durée of social change] — पूर्ववर्ती अध्याय सभक दीर्घकालिक सूत्रकेँ पुनर्संयोजित करैत, स्थिर सारवादक बदला सम्बन्ध, संस्था, प्रवाह आ समय-स्तरकेँ प्रधानता दैत अछि।

144. [From Subsistence to Market Integration] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

145. [Household, Caste, Class and Gender across Time] — गृहस्थी, नातेदारी, संपत्ति, श्रम, लिंग आ प्रव्रजनक सम्बन्धकेँ एके सामाजिक-आर्थिक संरचनामे देखैत अछि।

146. [Riverine Ecology and Economic History] — पारिस्थितिक प्रक्रियाकेँ सामाजिक संस्था, जोखिम, असमानता आ अनुकूलन सँ जोड़ैत अछि; प्राकृतिक नियतिवाद सँ बचैत अछि।

147. [Language as Social Infrastructure] — भाषा, लिपि, साहित्यिक रजिस्टर, मौखिकता, संस्थागत मानकीकरण आ कालगत नामकरणकेँ अलग प्रमाण-स्तरमे रखैत अछि।

148. [India and Nepal: One Interaction Zone, Multiple Political Economies] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

149. [Cultural Persistence, Reinvention and Modern Institutions] — पूर्ववर्ती अध्याय सभक दीर्घकालिक सूत्रकेँ पुनर्संयोजित करैत, स्थिर सारवादक बदला सम्बन्ध, संस्था, प्रवाह आ समय-स्तरकेँ प्रधानता दैत अछि।

150. [Conclusion: Socio-Cultural-Economic Histories without Timeless Essences] — वस्तु, मुद्रा, श्रम, ऋण, बाजार, परिवहन आ संस्थागत प्रवाहक स्तरभेदक आधार पर आर्थिक जाल पुनर्निर्मित करैत अछि।

१५. निष्कर्ष

समग्र परीक्षणसँ स्पष्ट होइत अछि जे ई खण्ड क्षेत्रीय इतिहासक सामान्य संकलन नहि, बल्कि प्रमाणक प्रकार, समयक स्तर आ क्षेत्रीय सम्बन्धक अनुशासित पुनर्संरचना अछि। एकर मूल बौद्धिक शक्ति सारवाद-विरोधी इतिहास-दृष्टि अछि : मिथिला, वज्जि, अंग, मधेश, जाति, भाषा, धर्म, बाजार, परिवार वा कला—कोनो वस्तु अपरिवर्तनशील इकाइ नहि; सभ ऐतिहासिक सम्बन्धमे बनैत-बदलैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिएँ ग्रन्थक वैचारिक बिम्ब—प्रवाह, परत, जाल, सीमा, चक्र—एक संगठित ध्वनि रचैत अछि। पाश्चात्य सामाजिक-इतिहासक कसौटी पर संरचना, दीर्घ अवधि, अर्थव्यवस्था, संस्था आ वर्गीकरणक आलोचना मजबूत अछि। नव्य-न्याय दृष्टिएँ पदक सीमा आ काल-अवच्छेद पर असाधारण सावधानी देखाइत अछि। विदेह समानान्तर पद्धति भारत–नेपाल, अतीत–वर्तमान, लिखित–मौखिक आ संस्था–गृहस्थी बीच बहुधारात्मक इतिहास रचबाक सक्षम ढाँचा प्रदान करैत अछि।

एहि कारण पुस्तकक सर्वाधिक टिकाउ योगदान तथ्यक मात्रा नहि, बल्कि तथ्य सभकेँ जोड़बाक नियम अछि। इतिहासक सत्यता एतय एक कथामे नहि, विभिन्न प्रमाण-धाराक नियंत्रित संवादमे खोजल गेल अछि। आगामी संस्करणमे सूक्ष्म स्थानीय अध्ययन, सौन्दर्यशास्त्रीय पाठ-विश्लेषण आ अद्यतन योग्य समकालीन आँकड़ा-परिशिष्ट जोड़ल जाए तँ ई ढाँचा आरो परिपक्व होएत।

ग्रन्थ-सूची

मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास : भारत आ नेपाल — खण्ड २

नाटचशास्त्र

ध्वन्यालोक

काव्यप्रकाश

वक्रोक्तिजीवित

साहित्यदर्पण

तत्त्वचिन्तामणि

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली

[Materials for the Study of Navya-Nyāya Logic]

[The Historian’s Craft]

[What Is History?]

[The Mediterranean and the Mediterranean World in the Age of Philip II]

[Time and Narrative]

[Metahistory]

[The Archaeology of Knowledge]

[Imagined Communities]

[The Great Transformation]

[The Archaeology of Early Historic South Asia: The Emergence of Cities and States]

[India’s Ancient Past]

[The Ganges Civilization]

[Archaeological and Cultural History of North Bihar]

[Chirand: Excavation Report 1961–1964 and 1967–1970]

[Prehistoric Cultures in Nepal: From the Early Palaeolithic to the Neolithic and the Quaternary Geology of the Dang-Deokhuri Dun Valleys]

[Early Farming Communities of the Kaimur: Excavations at Senuwar, 1986–87, 1989–90]

[Sonpur Excavations, 1956 and 1959–1962]

[The Agrarian System of Mughal India]

[An Economic History of India]

[The Making of the Indian Working Class]

[The Remembered Village]

[Caste in Modern India and Other Essays]

[The Nation and Its Fragments]

[Provincializing Europe]

[The Location of Culture]

[The Social Life of Things]

आलेख ५२ · पञ्जी, दर्शन, भाषा आ समानान्तर इतिहास

विदेह समानान्तर इतिहास : मिथिला आ मैथिली साहित्य

सारांश

ई अध्ययन मिथिला आ मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहासक १–१०० खण्डीय विशाल संकलनक समग्र आलोचनात्मक परीक्षण प्रस्तुत करैत अछि। मूल पोथी इतिहास-लेखन, ग्रन्थ-सर्वेक्षण, लेखक-केन्द्रित आलोचना, दलित-विमर्श, स्त्री-विमर्श, लोक-साहित्य, नाटक, ग़ज़ल, दर्शन, भाषा-विज्ञान, लिपि, अनुवाद, डिजिटल अभिलेख आ संस्थागत साहित्य-राजनीतिक प्रश्नकेँ एक विस्तृत प्रतिकाननी आख्यानमे जोड़ैत अछि। एहि शोधक केन्द्रबिन्दु चारि परस्पर-जुड़ल पद्धति अछि: भारतीय रस–ध्वनि–वक्रोक्ति–औचित्य दृष्टि, पाश्चात्य रूपवादी–ऐतिहासिक–समाजशास्त्रीय–उत्तरऔपनिवेशिक आलोचना, गंगेशीय नव्य-न्यायक प्रमाण-संयम, आ विदेहक समानान्तर इतिहास-पद्धति। अध्ययन मूल पोथीक दावासभकेँ तीन स्तरमे बाँटैत अछि—पाठ-सिद्ध तथ्य, स्रोत-समर्थित ऐतिहासिक निष्कर्ष, आ पुनःसत्यापन अपेक्षित विवादित प्रतिपादन। एहि वर्गीकरणसँ पुस्तकक वैचारिक ऊर्जा अक्षुण्ण रहैत अछि, मुदा इतिहास आ आलोचना बीचक सीमा स्पष्ट होइत अछि। समग्र निष्कर्ष ई अछि जे पोथी मैथिली साहित्यक केवल इतिहास नहि, बल्कि “कैनन” निर्माणक प्रक्रिया, अभिलेखीय असमानता, भाषिक स्वायत्तता आ डिजिटल सार्वजनिक क्षेत्रक संघर्षक दस्तावेज सेहो अछि। एकर सबसँ पैघ शक्ति बहिष्कृत वा उपेक्षित साहित्यिक धारासभकेँ दृश्य बनबैत एक विशाल प्रतिअभिलेख तैयार करब अछि; सबसँ पैघ चुनौती स्रोत-श्रेणीकरण, तिथि-संगति, पुनरुक्ति, जीवनीपरक दावाक प्रमाण-भार, आ आलोचनात्मक शब्दावलीक अनुशासन अछि।

बीजशब्द

विदेह समानान्तर इतिहास : मिथिला आ मैथिली साहित्य · मिथिला · वंश-अभिलेख · इतिहासलेखन · प्रमाण-विवेचन

१.४४. गजेन्द्र ठाकुर-मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास- शोध आलेख

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह समानान्तर इतिहास

मिथिला आ मैथिली साहित्यक १–१०० खण्डक गहन शोध-समीक्षा

भारतीय काव्यशास्त्र · पाश्चात्य आलोचना · नव्य-न्याय · विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

शोध-लेखक शैलीमे समग्र आलोचनात्मक अध्ययन

२०२६

सारांश

ई अध्ययन मिथिला आ मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहासक १–१०० खण्डीय विशाल संकलनक समग्र आलोचनात्मक परीक्षण प्रस्तुत करैत अछि। मूल पोथी इतिहास-लेखन, ग्रन्थ-सर्वेक्षण, लेखक-केन्द्रित आलोचना, दलित-विमर्श, स्त्री-विमर्श, लोक-साहित्य, नाटक, ग़ज़ल, दर्शन, भाषा-विज्ञान, लिपि, अनुवाद, डिजिटल अभिलेख आ संस्थागत साहित्य-राजनीतिक प्रश्नकेँ एक विस्तृत प्रतिकाननी आख्यानमे जोड़ैत अछि। एहि शोधक केन्द्रबिन्दु चारि परस्पर-जुड़ल पद्धति अछि: भारतीय रस–ध्वनि–वक्रोक्ति–औचित्य दृष्टि, पाश्चात्य रूपवादी–ऐतिहासिक–समाजशास्त्रीय–उत्तरऔपनिवेशिक आलोचना, गंगेशीय नव्य-न्यायक प्रमाण-संयम, आ विदेहक समानान्तर इतिहास-पद्धति। अध्ययन मूल पोथीक दावासभकेँ तीन स्तरमे बाँटैत अछि—पाठ-सिद्ध तथ्य, स्रोत-समर्थित ऐतिहासिक निष्कर्ष, आ पुनःसत्यापन अपेक्षित विवादित प्रतिपादन। एहि वर्गीकरणसँ पुस्तकक वैचारिक ऊर्जा अक्षुण्ण रहैत अछि, मुदा इतिहास आ आलोचना बीचक सीमा स्पष्ट होइत अछि। समग्र निष्कर्ष ई अछि जे पोथी मैथिली साहित्यक केवल इतिहास नहि, बल्कि “कैनन” निर्माणक प्रक्रिया, अभिलेखीय असमानता, भाषिक स्वायत्तता आ डिजिटल सार्वजनिक क्षेत्रक संघर्षक दस्तावेज सेहो अछि। एकर सबसँ पैघ शक्ति बहिष्कृत वा उपेक्षित साहित्यिक धारासभकेँ दृश्य बनबैत एक विशाल प्रतिअभिलेख तैयार करब अछि; सबसँ पैघ चुनौती स्रोत-श्रेणीकरण, तिथि-संगति, पुनरुक्ति, जीवनीपरक दावाक प्रमाण-भार, आ आलोचनात्मक शब्दावलीक अनुशासन अछि।

मुख्य शब्द: समानान्तर इतिहास; मैथिली साहित्य; मिथिला; नव्य-न्याय; रस; ध्वनि; वक्रोक्ति; औचित्य; प्रतिकानन; डिजिटल अभिलेख; विदेह।

१. अध्ययनक विस्तार आ पाठ-संरचना

मूल पाण्डुलिपिक संगणकीय संरचना-परीक्षणमे 33,070 अनुच्छेद, १८४ तालिका, 100 मुख्य अध्याय-चिह्न आ लगभग 923,322 शब्द भेटैत अछि। शैलीबद्ध शीर्षकमे प्रथम स्तर 955, द्वितीय स्तर 2239, तृतीय स्तर 726 आ चतुर्थ स्तर 56 अछि। एहि परिमाणक कारण “समग्र समीक्षा” केवल चुनल उदाहरणक विश्लेषण नहि भ’ सकैत अछि; तैं एहि शोधमे व्याख्यात्मक आलोचनाक संग अन्तमे पूर्ण शीर्षक-कवरेज अनुक्रम देल गेल अछि।

पोथीक १०० मुख्य खण्ड समान आकारक नहि अछि। किछु खण्ड व्यापक ऐतिहासिक मोनोग्राफ सन अछि; किछु लेखक-विशेषक आलोचनात्मक परिचय; किछु संयुक्त लेखक-समूहक अध्ययन; किछु डिजिटल अभिलेख, रंगमंच, अनुवाद, ग़ज़ल वा संस्थागत इतिहासक विषयगत प्रतिवेदन। ई विषमता स्वयं पोथीक रूप-विधानक विशेषता अछि: रेखीय “कालक्रम”क बदला बहुकेंद्रीय अभिलेखीय संरचना।

२. शोध-पद्धति

२.१ पाठ-आधारित प्रमाण-विभाजन

मूल पोथीमे जे कथन प्रत्यक्षतः रचना-सूची, उद्धृत पाठ, प्रकाशित पुस्तक, नाटक, कविता, कथा, अनुवाद वा अभिलेखीय दस्तावेजसँ जुड़ल अछि, ओकरा पहिल स्तरक पाठ-साक्ष्य मानल गेल अछि। दोसर स्तरमे इतिहास, तिथि, प्रभाव, साहित्यिक वंशावली वा संस्थागत प्रक्रियासँ सम्बन्धित निष्कर्ष अछि, जकर समर्थन बहिर्स्रोत वा एकाधिक पुस्तकसँ सम्भव अछि। तेसर स्तरमे जाति, जीवनी, उद्देश्य, दमन, षडयन्त्र, “पहिल” वा “एकमात्र” सन उच्च-भार दावासभ अछि; एकरा निर्विवाद तथ्यक बदला प्रमाण-भारक प्रश्न मानल गेल अछि।

२.२ भारतीय काव्यशास्त्रीय पद्धति

रसक आधारपर अध्ययन ई देखैत अछि जे रचनामे स्थायीभाव, विभाव, अनुभाव आ संचारीभावक विन्यास कोन सामूहिक आस्वाद बनबैत अछि। ध्वनि-पद्धति स्पष्ट कथ्यसँ अधिक निहित अर्थ, सांस्कृतिक स्मृति, मौन आ

संकेत पर केन्द्रित अछि। वक्रोक्ति भाषा आ कथन-विन्यासक विशिष्ट वक्रता जाँचैत अछि। औचित्य विषय, पात्र, भाषा, प्रसंग, छन्द, रूप आ भावक परस्पर अनुकूलता देखैत अछि। एहि चारू दृष्टिक संग नाट्यशास्त्रीय अभिनय, लोक-प्रदर्शन आ रस-निष्पत्तिक प्रश्न नाटक-केन्द्रित खण्डमे उपयोगी सिद्ध होइत अछि।

२.३ पाश्चात्य आलोचनात्मक पद्धति

रूपवादी पठन रचनाक आन्तरिक संगठन, पुनरावृत्ति, बिम्ब, कथोपकथन, स्वर आ संरचना पर बल दैत अछि। ऐतिहासिक आलोचना रचनाकेँ राजनीतिक-सामाजिक संरचना, मुद्रण, संस्था, पुरस्कार, शिक्षा आ भाषिक नीति सँ जोड़ैत अछि। पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टि डिजिटल पत्रिका आ अभिलेखक सक्रिय पाठकीय समुदाय बुझबाक साधन दैत अछि। उत्तरऔपनिवेशिक आ उपाल्टर्न पद्धति केन्द्र-हाशिया सम्बन्ध, भाषा-प्रतिष्ठा, अनुवाद-शक्ति, जाति, लिंग आ क्षेत्रीय असमानता पर प्रश्न उठबैत अछि। इतिहास-लेखनक कथात्मक प्रकृति पर बल देनिहार पाश्चात्य चिंतन, विशेषत: (Metahistory) आ (The Content of the Form), एहि पोथीक “समानान्तर” आख्यानकेँ स्वयं एक चयनित कथात्मक विन्यास रूपमे देखबाक सावधानी सिखबैत अछि।

२.४ नव्य-न्याय: साहित्यिक दावाक प्रमाण-अनुशासन

गंगेशीय नव्य-न्यायक चारि प्रमाण—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द—एहि समीक्षा लेल केवल दार्शनिक सजावट नहि, बल्कि दावाक परीक्षण-विधि अछि। कोनो लेखकक रचना उपलब्ध अछि—ई प्रत्यक्ष/शब्द प्रमाणक प्रश्न; ओकर प्रभाव अमुक कवि पर पड़ल—ई अनुमानक प्रश्न; दू साहित्यिक परम्पराक तुल्यता—ई उपमानक प्रश्न; अभिलेख वा प्रामाणिक सम्पादन—ई शब्द-प्रमाणक प्रश्न। “अमुक पहिल छल”, “अमुककेँ जानि-बुझि दबाओल गेल”, “अमुक परम्परा मूलत: एतहि सँ गेल”—एहन कथनमे व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध, उपाधि, प्रतिपक्ष आ स्रोतक स्वतन्त्रता अलग जाँचल आवश्यक अछि।

३. पोथीक मूल इतिहास-दृष्टि

पोथीक केन्द्रक प्रतिपादन ई अछि जे मैथिली साहित्यक मान्य इतिहास अनेक कालखंडमे चयनात्मक रहल अछि आ ओकर समानान्तर पुनर्लेखन आवश्यक अछि। एहि पुनर्लेखनमे बौद्ध सिद्ध परम्परा, चर्यापद, लोकगाथा, नेपालक मल्ल-राजदरबारी मैथिली, असमक ब्रजावली, अकाल-काव्य, स्त्री लेखन, दलित रंगमंच, आधुनिक ग्रामीण यथार्थ, ग़ज़ल, अनुवाद, डिजिटल प्रकाशन आ संस्थागत आलोचना एके ऐतिहासिक धरातल पर पुनर्स्थापित होइत अछि। ई दृष्टि मैथिलीकेँ केवल भौगोलिक उत्तर बिहारक भाषा नहि, बल्कि पूर्वी दक्षिण एशियाक अंतःक्षेत्रीय साहित्यिक संजाल रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

एहि इतिहास-दृष्टिक सबसँ महत्त्वपूर्ण नवोन्मेष “अभिलेख”क परिभाषा विस्तार अछि। मुद्रित पुस्तक मात्र साहित्यिक इतिहासक स्रोत नहि; पञ्जी, लोककथा, प्रदर्शन, पत्रिका, ब्लॉग, डिजिटल अंक, ऑडियो–वीडियो, अनुवाद, पुरस्कार-अभिलेख, संस्थागत पत्राचार आ पाठकीय समुदाय सेहो स्रोत बनैत अछि। एहि विस्तारसँ इतिहासक केन्द्र लेखकक “महानता”सँ हटि वितरण, उपलब्धता, स्मृति आ संस्थागत दृश्यताक प्रश्नपर जाइत अछि।

४. आदिकाल, चर्यापद आ प्रारम्भिक मैथिली

चर्यापदकेँ मैथिली साहित्यक मूलभूत पूर्वपीठिका मानबाक आग्रह पोथीक आरम्भिक वैचारिक धुरी अछि। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ चर्यागीतक महत्त्व केवल भाषिक प्राचीनता नहि, बल्कि संध्या-भाषा, प्रतीक, शरीर–योग, उलटबाँसी आ गूढ़ ध्वनिक संरचनामे अछि। ध्वनि-सिद्धान्त एतय विशेष उपयोगी अछि, कारण वाच्यार्थ आ लक्ष्यार्थक पाछाँ साधनाक रहस्यात्मक व्यंजना सक्रिय रहैत अछि। पाश्चात्य भाषिक इतिहासक दृष्टिसँ, मुदा, चर्यापद पर अनेक आधुनिक पूर्वी आर्यभाषाक दावेदारी अछि; तैं “एकमात्र मैथिली मूल”क बदला “पूर्वी आर्य साझा पूर्वरूपमे मैथिली-संलग्नता” कहब अधिक प्रमाण-संयत होएत।

ज्योतिरीश्वरक गद्य आ उमापतिक नाट्य-परम्परा पर पोथीक जोर उचित अछि, कारण ई साहित्यिक रूपक विकास, शब्द-संग्रह, नगर-संस्कृति, संगीत आ प्रदर्शनक प्राचीनता देखबैत अछि। तथापि “सब सँ पहिल” प्रकारक दावामे समकालीन भाषासभक हस्तलिखित परम्पराक तुलनात्मक तिथि आवश्यक

अछि। एतय पोथीकेँ दावाक श्रेणी स्पष्ट करबाक लाभ होएत—“सब सँ पुरान उपलब्ध मैथिली उदाहरण” आ “उत्तर-पूर्वी भारतीय भाषासभक सब सँ पुरान” समान कथन नहि अछि।

५. विद्यापति-प्रश्न: काव्य, इतिहास आ प्रतिमान

विद्यापति सम्बन्धी खण्डसभ पोथीक सबसँ विवाद-सृजक भागमे अछि। पोथी एक दिस पदावलीक लोकाभिमुख, संगीतात्मक, प्रेम–भक्ति-संश्लिष्ट कविकेँ केन्द्रमे रखैत अछि; दोसर दिस संस्कृत–अवहट्ट-लेखक विद्यापतिक संग पहचान, तिथि आ सामाजिक पहचानक प्रश्न उठबैत अछि। एहि भेदक आलोचनात्मक मूल्य एहि बातमे अछि जे “विद्यापति” नामकेँ एकरूप राष्ट्रीय/जातीय प्रतीक मानबाक बदला पाठ-संग्रह, भाषा, हस्तलिखित परम्परा, भणिता, संरक्षण-इतिहास आ कालक्रम अलग-अलग जाँचल जाय।

रस-दृष्टिसँ पदावलीक शृंगार केवल लौकिक कामना नहि; संयोग–विप्रलम्भक अनुभूति भक्ति-ध्वनि सँ बहुस्तरीय होइत अछि। वक्रोक्ति एकर सरल भाषा भीतर ध्वनि-संयोजन, पुनरुक्ति, दृश्य-बिम्ब आ लयक सूक्ष्मता देखबैत अछि। पाश्चात्य प्रभाव-अध्ययन बंगाल, असम, ओडिशा आ नेपालमे विद्यापति-प्रेरित काव्यरूपक प्रसार पर उपयोगी अछि; मुदा प्रभाव-निर्णय लेल तिथि, पाठ-परिवहन, विद्यार्थी-परम्परा आ पाण्डुलिपि-प्रसारक स्वतंत्र साक्ष्य आवश्यक अछि।

मूल पोथीमे विद्यापतिक जीवन-तिथिक अनेक रूप भेटैत अछि। एहि आन्तरिक असंगतिक कारण शोध-संस्करणमे एक “तिथि-परिशिष्ट” आवश्यक अछि, जतय सभ प्रचलित तिथि, ओकर स्रोत आ सम्पादकीय प्राथमिकता स्पष्ट हो। नव्य-न्याय पद्धति एतय “अनिश्चितता स्वीकार”केँ कमजोरी नहि, बल्कि प्रमाणिकता मानैत अछि।

६. नेपाल, असम, बंगाल आ ओडिशा: सीमापार साहित्यिक परिसंचरण

मल्ल-युगीन नेपाल, ब्रजावली/ब्रजबुलि, अंकिया नाट आ कीर्तनिया परम्पराक समावेश पोथीक अत्यन्त मजबूत पक्ष अछि। एहि सामग्रीसँ मैथिली साहित्यक इतिहास राज्यसीमा पर आधारित नहि रहि सांस्कृतिक परिसंचरणक इतिहास बनैत अछि। राजदरबार, वैष्णव संप्रदाय, नाट्य-मंच, संगीत आ

विद्यार्थी-आवागमन साहित्यिक रूपक वाहक बनैत अछि। ई दृष्टि भारतीय साहित्यक “एक भाषा–एक प्रदेश” ढाँचाकेँ चुनौती दैत अछि।

तथापि समानता आ प्रभाव बीच भेद जरूरी अछि। शब्दरूप, छन्द, नाट्य-विधान, भणिता वा धार्मिक विषयक साम्य स्वतः प्रत्यक्ष उधार सिद्ध नहि करैत अछि। उपमान प्रमाण तुलनात्मक संभावना दैत अछि; ऐतिहासिक प्रभाव सिद्ध करबाक लेल कालानुक्रम, सम्पर्क-पथ आ मध्यस्थ पाठक दस्तावेज अपेक्षित अछि। पोथीक भविष्य संस्करण एहि तीनू स्तर अलग देखाए त’ ई विभाग दक्षिण एशियाई तुलनात्मक साहित्यक महत्त्वपूर्ण मॉडल बनि सकैत अछि।

७. गंगेश उपाध्याय आ नव्य-न्याय: दर्शनसँ इतिहास-पद्धति धरि

गंगेश उपाध्याय पर विस्तृत खण्ड पोथीक दार्शनिक केन्द्र अछि। (Tattvacintamani) क चारि प्रमाण-आधारित संरचना, अनुमान-विवेचना, व्याप्ति, अभाव, शब्दबोध आ नव्य-न्यायीय परिभाषा-पद्धति साहित्यिक इतिहास लेल उपयोगी मेटा-पद्धति बनैत अछि। पोथी उचित रूपेँ ई संकेत करैत अछि जे मिथिलाक दार्शनिक परम्पराकेँ मैथिली साहित्यिक आत्मबोधसँ पूर्णतः अलग नहि राखल जा सकैत।

मुदा गंगेशक जाति, विवाह, वंश आ जन्म-परिस्थिति सम्बन्धी पोथीक अत्यन्त तीक्ष्ण दावासभकेँ पृथक प्राथमिक पञ्जी-पाठ, पाण्डुलिपिक वंशावली, तिथि, पाठान्तर, लिप्यन्तरण आ स्वतंत्र विशेषज्ञ-परीक्षणसँ जोड़नाइ आवश्यक अछि। ई दावासभ पुस्तकक वैचारिक तर्कमे महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा तकर ऐतिहासिक दर्जा स्रोत-परीक्षण पर निर्भर रहबाक चाही। नव्य-न्यायक अपन अनुशासन सेहो यही कहैत अछि: “प्रमेय”क प्रतिष्ठा “प्रमाण”क प्रकार आ दोष-मुक्तता पर निर्भर अछि।

८. आधुनिकता, औपनिवेशिकता आ सामाजिक यथार्थ

चन्दा झा, ग्रियर्सन, अकाल-काव्य, हरिमोहन झा, राजकमल चौधरी, सोमदेव, ग्रामीण कथा, उपन्यास आ नाटक पर पोथीक पाठ एक वैकल्पिक आधुनिकताक कथा बनबैत अछि। एतय आधुनिकता केवल मुद्रण वा मानकीकरण नहि, बल्कि न्यायालय, अकाल, शिक्षा, विवाह, जाति, कृषि, पलायन, प्रशासन, शहर,

रोजगार आ भाषा-राजनीतिक अनुभवक साहित्यिक रूपान्तरण अछि। एहन पठन साहित्यकेँ सामाजिक अभिलेख रूपमे ग्रहण करैत अछि।

हरिमोहन झाक व्यंग्यकेँ रूढ़ि-विरोधी शक्ति रूपमे पढ़ब प्रभावी अछि; राजकमलकेँ आधुनिकतावादी विच्छेदक केन्द्र मानब सेहो आलोचनात्मक रूपेँ फलदायी। मुदा “सच्चा आधुनिक”, “सब सँ महान”, “जानि-बुझि वंचित” सन मूल्य-निर्णयकेँ पाठीय मानदण्ड, समकालीन समीक्षा, पाठक-इतिहास आ संस्थागत दस्तावेजसँ पृथक-पृथक समर्थित करबाक चाही। साहित्यिक मूल्य आ संस्थागत न्याय—दू अलग प्रश्न—एक-दोसराकेँ प्रकाशमान करैत अछि, परस्पर प्रतिस्थापित नहि करैत।

९. दलित, लोक आ स्त्री लेखनक पुनर्स्थापन

पोथीक प्रतिकाननी शक्ति सबसँ स्पष्ट ओतय अछि जतय दलित नाटक, लोकनायक, श्रमजीवी जीवन, स्त्री कविता, स्त्री आलोचना, बाल-साहित्य आ ग्रामीण समुदायकेँ इतिहासक केन्द्रमे आनल गेल अछि। ई केवल “प्रतिनिधित्व”क गणना नहि; साहित्यिक रूपक प्रश्न सेहो अछि। लोकगाथाक दीर्घ मौखिक प्रदर्शन, स्त्री गीतक सामूहिक रचना, दलित रंगमंचक प्रत्यक्षता, बाल-कविताक ध्वनि-सरलता—ई सभ मुद्रित उच्चकाव्यक मानदण्डसँ अलग सौन्दर्यशास्त्र चाहैत अछि।

भारतीय रस-पद्धति एतय करुण, वीर, रौद्र, हास्य आ शान्त भावक मिश्रण बुझबैत अछि; स्त्रीवादी आलोचना गृह, मातृत्व, श्रम, देह, आवाज, मौन आ सार्वजनिक क्षेत्रक असमानता देखैत अछि; उपाल्टर्न पठन “के बोलैत अछि” मात्र नहि, “ककर वाणी अभिलेख बनि सकैत अछि” प्रश्न उठबैत अछि। विदेहक डिजिटल अभिलेखीय कार्य एहि अर्थमे साहित्यिक आलोचना आ संस्थागत क्रिया—दूनू अछि।

१०. मैथिली ग़ज़ल आ रूप-अनुशासन

मैथिली ग़ज़ल पर विस्तृत सामग्री पोथीक विधागत शोधक मजबूत उदाहरण अछि। अरबी–फारसी–उर्दू परम्परा, बहर, अरूज़, काफिया, रदीफ, मतला, मकता आ मैथिली ध्वन्यात्मक संरचनाक सम्बन्ध पर चर्चा ग़ज़लकेँ

केवल भाव-कविता नहि, बल्कि नियमबद्ध रूप मानैत अछि। एहि दृष्टिसँ शिल्प-अनुशासन साहित्यिक इतिहासक मानदण्ड बनैत अछि।

एतय औचित्य आ नव्य-न्याय दूनू उपयोगी अछि: ग़ज़ल नाम देबाक लेल रूपात्मक लक्षण पर्याप्त अछि कि नहि—ई “लक्षण”क प्रश्न अछि; बहरक स्थानीय रूपान्तरणमे ध्वनि-मात्रा, वर्ण-भार आ उच्चारण-प्रमाण स्पष्ट चाही। पोथी जे रचनाकेँ “ग़ज़ल नहि, गीत/कविता” कहैत अछि, ओतय निर्णयक संग छन्द-विभाजनक उदाहरण देल जाए त’ आलोचनात्मक विश्वसनीयता बढ़त।

११. लेखक-विशेष आलोचना: १००-खण्डीय मध्यभागक मूल्य

पोथीक विशाल मध्यभाग अनेक समकालीन आ आधुनिक लेखकक जीवन, पुस्तक-सूची, शैली, विषय, विधा, सम्पादकीय भूमिका आ विदेह-संग सम्बन्ध पर केन्द्रित अछि। एहि आलोचनासभक महत्त्व ई अछि जे मैथिली साहित्यक “दृश्यता-संकट”क समाधान लेल एक व्यापक जीवनी–ग्रन्थसूची आधार बनैत अछि। अनेक लेखक, विशेषतः पत्रिका, स्थानीय प्रकाशन वा सीमित संस्करणमे छपल रचनाकार, राष्ट्रीय ग्रन्थसूचीमे सहज उपलब्ध नहि होइत छथि; एहि कारण एहन संकलन भावी शोध लेल आधार-सामग्री बनि सकैत अछि।

मुदा लेखक-विशेष खण्डमे पद्धतिक आवृत्ति सेहो अछि: लगभग सभ अध्ययनमे रस–ध्वनि–वक्रोक्ति, पाश्चात्य सिद्धान्त, नव्य-न्याय आ समानान्तर इतिहासक एके चौखटा पुनः आवैत अछि। जँ प्रत्येक लेखकक रचनात्मक विशेषताक अनुरूप सिद्धान्त चुनल जाय—उदाहरणतः नाटकमे प्रदर्शनशास्त्र, ग़ज़लमे छन्दशास्त्र, कथा मे कथाविज्ञान, निबन्धमे वाक्पटुता, अनुवादमे अनुवादशास्त्र, बाल-साहित्यमे ग्रहण-सिद्धान्त—त’ विश्लेषण कम सूत्रबद्ध आ अधिक रचना-विशिष्ट होएत।

१२. डिजिटल विदेह: पत्रिका, अभिलेख आ प्रतिअभिलेख

अन्तिम खण्डसभ डिजिटल अंक, सदेह-श्रृंखला, ऑडियो–वीडियो अभिलेख, समानान्तर रंगमंच, अनुवाद आ साहित्यिक आन्दोलनक दस्तावेजीकरण करैत अछि। ई पोथीक ऐतिहासिक दायरा मुद्रित साहित्यसँ डिजिटल सांस्कृतिक अवसंरचना धरि बढ़बैत अछि। डिजिटल अभिलेखक साहित्यिक महत्त्व तीन

रूपमे अछि: दुर्लभ पाठक उपलब्धता; विविध समुदायक प्रकाशन-अवसर; आ संस्करणीय स्मृति—कखन, कोन अंकमे, कोन रचना प्रकाशित भेल।

पाश्चात्य अभिलेख-सिद्धान्तक दृष्टिसँ डिजिटल संग्रह निष्पक्ष भण्डार नहि; चयन, नामकरण, वर्गीकरण, मेटाडेटा, खोज-सुविधा आ सम्पादकीय नीति ओकर अर्थ बनबैत अछि। विदेहक “समानान्तर” पद एहि चयनक नैतिक उद्देश्य स्पष्ट करैत अछि। अत: भावी संस्करणमे स्थायी अभिलेख-सूचकांक, संस्करण-संख्या, प्रकाशन-तिथि, डिजिटल वस्तु-पहचान आ उद्धरण-मानक जोड़ब इतिहासकारक लेल अत्यन्त उपयोगी होएत।

१३. संस्थागत आलोचना आ इतिहास-लेखनक नैतिकता

पोथी साहित्य अकादमी, चयन-समिति, पुरस्कार-व्यवस्था, भाषिक संस्था, शिक्षा-व्यवस्था आ साहित्यिक गुटबन्दी पर तीक्ष्ण प्रश्न उठबैत अछि। संस्थागत आलोचना साहित्यिक इतिहासक वैध भाग अछि, कारण पुरस्कार, पाठ्यक्रम, अनुवाद-अनुदान, प्रकाशन-सहायता आ सम्मेलन लेखकक दृश्यता बदलैत अछि। मुदा एतय स्रोत-अनुशासन सर्वोपरि अछि। आँकड़ा, सूचना-अधिकार दस्तावेज, समिति-सदस्यता, चयन-नियम आ प्रकाशित निर्णय अलग-अलग परिशिष्टमे देल जाए त’ आरोप–प्रतिआरोपक बदला प्रमाणाधारित संस्थागत इतिहास बनत।

इतिहासकारक नैतिकता दू दिशामे चलैत अछि: बहिष्कृत आवाजकेँ पुनर्स्थापित करब आ विरोधी स्रोतकेँ निष्पक्ष रूपेँ प्रस्तुत करब। समानान्तर इतिहासक विश्वसनीयता तखन बढ़ैत अछि जखन ओ अपन प्रतिपक्षकेँ कमजोर रूपमे नहि, ओकर सबलतम तर्क सहित प्रस्तुत करैत अछि। एहि “द्विपक्षीय परीक्षण” सँ पुस्तकक आलोचनात्मक ऊँचाई बढ़त।

१४. भाषा, शैली आ मैथिली निखार ऑडिट

मूल पोथीक एक पैघ भाग अंग्रेजीमे अछि, बीच-बीचमे मैथिली, संस्कृत पद, रोमन लिप्यन्तरण, वेब-स्रोत, पुस्तक-नाम आ देवनागरी शीर्षक अछि। शोध-संस्करण लेल ई बहुभाषिकता उपयोगी स्रोत-संकेत दैत अछि, मुदा “शुद्ध मैथिली” संस्करण बनबैत समय शब्दावलीक एकरूपता आवश्यक अछि।

प्रस्तुत समीक्षा जानि-बुझि देवनागरी मैथिलीकेँ मूल भाषा बनबैत अछि; अपरिहार्य रोमन वा अंग्रेजी शीर्षक केवल कोष्ठकमे राखल गेल अछि।

मूल फाइलमे वेब-स्रोतक भारी उपस्थिति अछि: “https” रूप 460 बेर, “http” रूप 54 बेर, “www” रूप 621 बेर आ “accessed on” प्रकारक अभिगमन-सूचना 196 बेर भेटैत अछि। अन्तिम पुस्तक-आधारित शोध बिबलियोग्राफीमे ई सभ वेब-पता हटेनाइ उचित अछि। वेब-स्रोत जँ ऐतिहासिक प्रमाण लेल अनिवार्य हो, तकर विवरण मुख्य टिप्पणी/अभिलेख-परिशिष्टमे दए सकैत छी; मुदा बिबलियोग्राफीकेँ पुस्तक-केंद्रित राखल जा सकैत अछि।

निखारक प्रमुख नियम: एके नामक अनेक वर्तनीक मानकीकरण; तिथि-सीमाक एकरूपता; मैथिली पदक देवनागरी रूप प्राथमिक; रोमन लिप्यन्तरण कोष्ठकमे; “फर्स्ट”, “टू”, “ग्रेटेस्ट”, “ओनली” सन निरपेक्ष विशेषणक बदला प्रमाण-निर्दिष्ट वाक्य; जीवनीपरक अनुमानकेँ “सम्भावना/दावा/अभिलेखीय कथन” रूपमे चिन्हित करब; उद्धरण आ पराफ्रेज बीच स्पष्ट भेद; आ प्रत्येक आलोचनात्मक अध्यायक अन्तमे “प्राथमिक पाठ–द्वितीयक स्रोत–व्याख्यात्मक निष्कर्ष”क त्रिस्तरीय सूची।

१५. आन्तरिक असंगति आ पुनःसत्यापन अपेक्षित क्षेत्र

विद्यापतिक जीवन-तिथि अनेक रूपमे देल गेल अछि; एक मानक तिथि चुनबाक पूर्व स्रोत-तालिका चाही।

विदेहक आरम्भ-वर्ष सम्बन्धी “२०००”, ब्लॉग आरम्भ “२००४” आ पाक्षिक ई-पत्रिका “२००८” तीन अलग घटनाकेँ स्पष्ट परिभाषित करबाक चाही।

“पहिल मैथिली ऑनलाइन उपस्थिति”, “पहिल ब्रेल”, “पहिल तिरहुता साइट” सन अग्रता-दावामे स्वतंत्र डिजिटल अभिलेखीय सत्यापन चाही।

गंगेश उपाध्यायक जीवनी सम्बन्धी पञ्जी-आधारित दावासभक मूल पाण्डुलिपि, वंशक्रम, तिथि, पठन-पद्धति आ स्वतंत्र सत्यापन आवश्यक अछि।

साहित्य अकादमी सम्बन्धी चयन-पक्षपातक निष्कर्ष लेल मूल सूचना-अधिकार अभिलेख, नमूना-परिभाषा आ गणना-विधि स्पष्ट हो।

नेपाल, असम, बंगाल आ ओडिशामे मैथिली प्रभावक दावामे साझा पूर्वरूप, प्रत्यक्ष प्रभाव आ पश्चात् अनुकरण—ई तीन श्रेणी अलग हो।

जीवनी-आधारित जाति वा समुदाय सम्बन्धी अनुमान नाम, उपनाम वा क्षेत्र मात्रसँ नहि निकालल जाय; स्रोत प्रत्यक्ष हो।

किछु खण्डमे सिद्धान्तक नाम अधिक, निकट-पाठ कम अछि; रचनाक वास्तविक पंक्ति/दृश्य/कथानक-संरचना पर विश्लेषण बढ़ेनाइ चाही।

१६. भारतीय, पाश्चात्य आ नव्य-न्याय पद्धतिक तुलनात्मक निष्कर्ष

पद्धति	मुख्य प्रश्न	सबसँ उपयोगी क्षेत्र	सावधानी
रस	भावक सार्वजनीकरण	कविता, नाटक, गीत, लोकगाथा	सामाजिक इतिहास स्वतः सिद्ध नहि करैत
ध्वनि	निहित अर्थ, मौन, संकेत	विद्यापति, स्त्री लेखन, प्रतिरोध कविता	अतिव्याख्याक जोखिम
वक्रोक्ति	भाषिक विचित्रता आ शैली	व्यंग्य, कविता, कथा	ऐतिहासिक प्रमाणक विकल्प नहि
औचित्य	रूप–विषय–पात्रक अनुकूलता	ग़ज़ल, नाटक, बाल-साहित्य	नवीन प्रयोगकेँ रूढ़ मानकसँ बाँधबाक जोखिम
रूपवाद	आन्तरिक संरचना	कथा, कविता, ग़ज़ल	संस्था आ इतिहासकेँ गौण करि सकैत
इतिहासवाद	काल, संस्था, समाज	समानान्तर इतिहासक समग्र परियोजना	वर्तमान मूल्यकेँ अतीत पर आरोपित करबाक जोखिम
उपाल्टर्न/ स्त्रीवादी दृष्टि	बहिष्करण आ सत्ता	दलित, स्त्री, लोक, ग्रामीण लेखन	पहचानकेँ एकमात्र अर्थ-बिन्दु बनाबैक

पद्धति	मुख्य प्रश्न	सबसँ उपयोगी क्षेत्र	सावधानी
			जोखिम
नव्य-न्याय	दावा, प्रमाण, सीमा, प्रतिपक्ष	जीवनी, तिथि, प्रभाव, संस्थागत आरोप	सौन्दर्य-अनुभवकेँ पूर्णत: तर्कमे नहि समेटि सकैत
समानान्तर इतिहास	प्रतिकानन आ अभिलेखीय पुनर्स्थापन	समूचा ग्रन्थ	अपन प्रतिकानन सेहो नब “कैनन” बनि सकैत

१७.१०० मुख्य खण्डक समग्र कवरेज-सूची

नीचाँ मूल पाण्डुलिपिमे प्रयुक्त १०० मुख्य अध्याय-चिह्नक क्रम, आरम्भिक शीर्षक, अनुमानित शब्द-परिमाण आ आरम्भिक उपशीर्षक देल अछि। लगातार रिक्त अध्याय-चिह्न जहाँ दृश्य/विभाजक प्रयोजनक अछि, ओतय शब्द-परिमाण शून्य देखाइत अछि; अगिला वास्तविक खण्डमे सामग्री समाहित अछि। ई सूची आलोचनात्मक “कवरेज ऑडिट” अछि, स्वतंत्र ग्रन्थसूची नहि।

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
1	(A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE: INTRODUCTION)	20,380	(Linguistic Origins and Parallel Evolution) / (Descent from Magadhi Prakrit) / (The Script Tradition: Tirhuta / Mithilakshara)
2	(GANGESA UPADHYAYA)	43,326	(GANGESA UPADHYAYA) / (ADDENDUM 1: Theory of Invalidity of Non-perception and Further

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
			Elaborations) / (ADDENDUM 1: Theory of Invalidity of Non-perception and Further Elaborations)
3	(THE MAITHILI GHAZAL)	14,522	(THE MAITHILI GHAZAL) / (Preface) / (Summary)
4	(Dalit Literary Criticism: Telugu, Gujarati, and Odia Dalit Literature in Maithili Translation)	0	—
5	(Dalit Literary Criticism: Telugu, Gujarati, and Odia Dalit Literature in Maithili Translation)	0	—
6	(Dalit Literary Criticism: Telugu, Gujarati, and Odia Dalit Literature in Maithili Translation)	32,790	(Dalit Literary Criticism: Telugu, Gujarati, and Odia Dalit Literature in Maithili Translation)
7	(Vidyapati, the Primal Poet of Maithili (Pre-Jyotirishvara))	12,713	(Vidyapati, the Primal Poet of Maithili (Pre-Jyotirishvara))
8	(ABHA JHA Literary Critic · Essayist)	3,806	(ABHA JHA Literary Critic · Essayist) / (A Note on Archival Honesty) / (Methodological

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
			Framework)
9	(CRITICAL APPRECIATIONS)	3,161	(CRITICAL APPRECIATIONS) / (I. BIOGRAPHICAL PROFILE) / (A. Identity and Formation)
10	(Critical Appreciation)	5,971	(Critical Appreciation) / (II. The Book: Architecture, Contents, and Occasion) / (2.1 Genesis and Editorial Circumstances)
11	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)	5,960	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)
12	(ANAND KUMAR JHA)	8,803	(ANAND KUMAR JHA) / (Table of Contents) / (1. Introduction: Who Is Anand Kumar Jha?)
13	(CRITICAL APPRECIATION OF)	7,880	(CRITICAL APPRECIATION OF) / (TABLE OF CONTENTS) / (FOREWORD)
14	(CRITICAL APPRECIATIONS)	2,808	(CRITICAL APPRECIATIONS) / (Archive Presence & Works) / (Thematic &

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
			Critical Analysis)
15	(ARVIND THAKUR)	6,207	(ARVIND THAKUR) / (Table of Contents) / (1. Introduction: Author, Context, and the Epithet ‘Swatantracheta’)
16	(A Critical Study of ASHOK Maithili Poet, Fiction Writer, Critic and Editor)	16,396	(A Critical Study of ASHOK Maithili Poet, Fiction Writer, Critic and Editor)
17	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)	7,524	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF) / (Chapter I: Maithili Theatre, Caste, and the Parallel Movement) / (1.1 The Theatrical Landscape of Mithila)
18	(PANDIT BHAVNATH JHA)	7,527	(PANDIT BHAVNATH JHA) / (Abstract) / (1. Introduction)
19	(A COMPLETE CRITICAL ANALYSIS)	7,364	(A COMPLETE CRITICAL ANALYSIS) / (PART I: Biographical and Historical Context) / (1.1 Life, Origins, and Formation)
20	(BINAY BHUSHAN: A	7,088	(BINAY BHUSHAN: A

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
	COMPLETE CRITICAL APPRECIATION)		COMPLETE CRITICAL APPRECIATION) / (A Comprehensive Research Report Integrating Indian and Western Literary Theory, the Videha Parallel History Framework, and Navya-Nyāya Epistemology of Gaṅgeśa Upādhyāya) / (PART I: BIOGRAPHICAL AND CONTEXTUAL OVERVIEW)
21	(The Cursed Poet: A Critical Study of Kalikant Jha ‘Buch’/)	10,011	(The Cursed Poet: A Critical Study of Kalikant Jha ‘Buch’/) / (PART I: INTRODUCTION AND METHODOLOGICAL FRAMEWORK) / (1.1 Opening: The Videha Parallel History Context)
22	(EVER NEW DINESH KUMAR MISHRA)	51,295	(EVER NEW DINESH KUMAR MISHRA)
23	(DURGANAND MANDAL)	7,589	(DURGANAND MANDAL) / (Table of Contents) / (Abstract)

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
24	(The Unwritten Thesis of Harimohan Jha When the Tirhuta script and pure vocabulary are lost, the avacchedaka (limiting criteria) for what constitutes 'Maithili' is erased.)	3,724	(The Unwritten Thesis of Harimohan Jha When the Tirhuta script and pure vocabulary are lost, the avacchedaka (limiting criteria) for what constitutes 'Maithili' is erased.)
25	(I)	5,931	(CRITICAL APPRECIATION) / (I. BIOGRAPHICAL AND CONTEXTUAL PROFILE) / (A. Identity and Location)
26	(CRITICAL APPRECIATION)	8,447	(CRITICAL APPRECIATION) / (Table of Contents) / (I. Preface: Method and Materials)
27	(COMPLETE CRITICAL APPRECIATION)	12,069	(COMPLETE CRITICAL APPRECIATION) / (I. BIOGRAPHICAL PROFILE) / (A. Identity and Institutional Affiliation)
28	(Mithila & Maithili: Critical Analysis of Institutions)	14,554	(Mithila & Maithili: Critical Analysis of Institutions) / (Table of

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
			Contents) / (I. Introduction and Theoretical Framework)
29	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)	13,553	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF) / (Abstract) / (I. Biographical and Contextual Introduction)
30	(A Critical Study of the Works of)	5,483	(A Critical Study of the Works of) / (2. Life and Literary Biography) / (2.1 Biographical Profile)
31	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)	4,672	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)
32	(DR. KAILASH KUMAR MISHRA)	13,091	(DR. KAILASH KUMAR MISHRA) / (Table of Contents) / (1. Introduction: Who Is Dr. Kailash Kumar Mishra?)
33	(I)	5,108	(CRITICAL APPRECIATION OF THE WORKS OF) / (I. BIOGRAPHICAL AND TEXTUAL OVERVIEW) / (II. WORKS: ANNOTATED CRITICAL

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
			DESCRIPTIONS)
34	(COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF THE WORKS OF)	5,270	(COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF THE WORKS OF) / (I. BIOGRAPHICAL AND CONTEXTUAL OVERVIEW) / (II. DOCUMENTED VIDEHA CONTRIBUTIONS: A COMPLETE CATALOGUE)
35	(KAMESHWAR JHA 'KAMAL')	9,020	(KAMESHWAR JHA 'KAMAL') / (1. Introduction: Kameshwar Jha 'Kamal' and the Maithili Geet Tradition) / (2. Biographical Profile: Life, Formation, and Cultural Context)
36	(CRITICAL APPRECIATION OF THE WORKS OF)	8,054	(CRITICAL APPRECIATION OF THE WORKS OF) / (Table of Contents) / (I. Preface & Scope of the Study)
37	(Kedar Nath Chaudhary)	5,150	(Kedar Nath Chaudhary) / (1. Biographical Profile) / (2. Published Novels: An Annotated Overview)

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
38	(A Complete Critical Research Report)	6,537	(A Complete Critical Research Report) / (II. BIOGRAPHICAL AND SCHOLARLY CONTEXT) / (2.1 The Author’s Life and Location)
39	(CRITICAL APPRECIATION OF THE WORKS OF)	6,833	(CRITICAL APPRECIATION OF THE WORKS OF) / (I. BIOGRAPHICAL OVERVIEW) / (II. THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK: SITUATING KARIGAR)
40	(KUMAR PAWAN)	6,867	(KUMAR PAWAN) / (1. Introduction: The Writer and His Moment) / (2. Summary and Textual Analysis of the Stories)
41	(LĀL DEV KĀMAT)	11,536	(LĀL DEV KĀMAT) / (Table of Contents) / (1. Biographical & Contextual Introduction)
42	(A COMPLETE CRITICAL RESEARCH &)	7,066	(A COMPLETE CRITICAL RESEARCH &) / (PART I: INTRODUCTION AND

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
			BIOGRAPHICAL OVERVIEW) / (1.1 The Literary Couple of Mithila: An Overview)
43	(LAXMAN JHA 'SAGAR' AND SHAIL JHA 'SAGAR')	7,141	(LAXMAN JHA 'SAGAR' AND SHAIL JHA 'SAGAR') / (Abstract) / (1. Introduction and Background)
44	(DR. PRAFULLA KUMAR SINGH 'MAUN')	9,345	(DR. PRAFULLA KUMAR SINGH 'MAUN') / (PART I: EARLY LIFE AND FORMATION) / (1.1 Birth, Family, and Regional Roots)
45	(A Parallel History of Mithila & Maithili Literature)	3,225	(A Parallel History of Mithila & Maithili Literature) / (Preface: Methodology) / (I. Biographical Profile and Literary Formation)
46	(MUNNAJI : A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION)	6,735	(MUNNAJI : A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION) / (A Comprehensive Research Report Integrating Indian and Western Literary Theory,

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
			the Videha Parallel History Framework, and Navya-Nyāya Epistemology of Gaṅgeśa Upādhyāya) / (PART I: BIOGRAPHICAL OVERVIEW AND LITERARY IDENTITY)
47	(MUNNI KAMAT)	7,131	(MUNNI KAMAT) / (Table of Contents) / (Abstract)
48	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)	7,105	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF) / (TABLE OF CONTENTS) / (I. PREFACE AND SCOPE OF THE STUDY)
49	(A Complete Research & Critical Appreciation of the Works of)	8,052	(A Complete Research & Critical Appreciation of the Works of) / (I. INTRODUCTION) / (II. BIOGRAPHICAL & SCHOLARLY CONTEXT)
50	(A Complete Critical Research & Appreciation)	9,927	(A Complete Critical Research & Appreciation) / (Abstract) / (Table of Contents)

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
51	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)	5,709	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF) / (Abstract) / (I. Biographical and Contextual Introduction)
52	(NARAYANJI CHAUDHARY)	4,351	(NARAYANJI CHAUDHARY) / (1. Introduction and Context) / (2. Biographical Profile)
53	(NARENDRA JHA & PANNA JHA)	10,062	(NARENDRA JHA & PANNA JHA) / (1. Biographical Context) / (1.1 Narendra Jha (1934–2024))
54	(A Critical Compendium of Nine Contemporary Maithili Voices)	12,003	(A Critical Compendium of Nine Contemporary Maithili Voices) / (Preface: Methodological Framework) / (Lal Rang Chahait Achhi Roti (लाल रंग चाहैत अछि रोटी) — Poetry Anthology, 2023)
55	(THREE VOICES OF THE MAITHILI GHAZAL)	8,896	(THREE VOICES OF THE MAITHILI GHAZAL) / (Table of Contents) / (1. Introduction: The Anchinhar Akhar Era of Maithili

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
			Ghazal)
56	(COMPLETE CRITICAL APPRECIATION)	9,063	(COMPLETE CRITICAL APPRECIATION) / (I. BIOGRAPHICAL PROFILE) / (A. Origins and Formation)
57	(A COMPLETE CRITICAL RESEARCH & CRITICAL APPRECIATION)	10,975	(A COMPLETE CRITICAL RESEARCH & CRITICAL APPRECIATION) / (1.1 Who is Preeti Thakur?) / (1.2 The Literary and Cultural Ecology)
58	(RESEARCH & CRITICAL APPRECIATION)	8,893	(RESEARCH & CRITICAL APPRECIATION) / (I. Preamble: Scope and Methodology) / (II. Biographical and Institutional Context)
59	(A Critical Study of the Works of)	5,112	(A Critical Study of the Works of) / (Table of Contents) / (1. Introduction: Author and Context)
60	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)	8,806	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF) / (Preface) / (1.1 Biographical Profile)

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
61	(Rajnandan Lal Das)	4,676	(Rajnandan Lal Das) / (1. Introduction: A Quiet Giant of Maithili Literature) / (2. Family Background and Early Life)
62	(CRITICAL APPRECIATIONS)	3,710	(CRITICAL APPRECIATIONS) / (Archive Presence & Works) / (Thematic & Critical Analysis)
63	(ACHARYA RAMANAND MANDAL)	11,149	(ACHARYA RAMANAND MANDAL) / (1. Biographical Profile and Intellectual Formation) / (2. The Three Works: Synoptic Description)
64	(CRITICAL APPRECIATION OF)	6,837	(CRITICAL APPRECIATION OF) / (Preface) / (Part I: Biographical and Intellectual Profile)
65	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)	6,852	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)
66	(RAMESH A Complete	25,257	(RAMESH A Complete

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
	Research and Critical Appreciation of Works in Maithili Literature)		Research and Critical Appreciation of Works in Maithili Literature)
67	(A COMPLETE CRITICAL RESEARCH)	12,626	(A COMPLETE CRITICAL RESEARCH) / (PREFACE) / (PART I: THEORETICAL FRAMEWORKS)
68	(Original poem in Maithili. Translated into English by Gajendra Thakur)	152	(Original poem in Maithili. Translated into English by Gajendra Thakur)
69	(The Rudrapur Recensions: Pandit Ramji Chaudhary and the Parallel Histories of Maithil Devotion/)	10,218	(The Rudrapur Recensions: Pandit Ramji Chaudhary and the Parallel Histories of Maithil Devotion/) / (PART I: INTRODUCTION AND CONTEXTUALISATION) / (1.1 Preamble: The Videha Parallel History Framework)
70	(A Critical Study of the Works of)	5,338	(A Critical Study of the Works of) / (I. BIOGRAPHICAL PROFILE) / (1.1 Personal Details)

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
71	(RAM VILAS SAHU: A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION)	7,860	(RAM VILAS SAHU: A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION) / (A Comprehensive Research Report Integrating Indian and Western Literary Theory, the Videha Parallel History Framework, and Navya-Nyāya Epistemology of Gaṅgeśa Upādhyāya) / (PART I: BIOGRAPHY, IDENTITY, AND INSTITUTIONAL CONTEXT)
72	(RESEARCH & CRITICAL APPRECIATION)	7,727	(RESEARCH & CRITICAL APPRECIATION) / (TABLE OF CONTENTS) / (PREFACE AND METHODOLOGICAL NOTE)
73	(Ravindra Nath Thakur)	4,364	(Ravindra Nath Thakur) / (1. Introduction and Historical Significance) / (2. Biographical Profile)
74	(Phanishwar Nath Renu)	5,513	(Phanishwar Nath Renu) / (1. Introduction:

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
			Renu, Mithila, and the Question of Literary Geography) / (2. Biographical Context: The Making of a Mithila Writer)
75	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)	8,865	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF) / (Preface) / (Chapter I: The Historical Context — Maithili Literature, Dalit Silence, and the Videha Movement)
76	(Contemporary Mithila Artists)	4,456	(Contemporary Mithila Artists) / (I. Introduction: The Mithila Art Tradition and Its Contemporary Negotiation) / (The Mithila Art Tradition: A Brief Theoretical Background)
77	(RESEARCH & CRITICAL APPRECIATION)	7,646	(RESEARCH & CRITICAL APPRECIATION) / (I. Preamble: Scope and Methodology) / (II. Biographical and Institutional Context)
78	(A Complete	7,541	(A Complete

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
	Critical Research & Appreciation)		Critical Research & Appreciation) / (Abstract) / (Table of Contents)
79	(CRITICAL APPRECIATION OF THE WORKS OF)	7,453	(CRITICAL APPRECIATION OF THE WORKS OF) / (I. BIOGRAPHICAL AND PROFESSIONAL OVERVIEW) / (II. THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK: SITUATING DR. SHAMBHU KUMAR SINGH)
80	(A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE)	3,370	(A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE) / (PART ONE: SHANTI LAKSHMI CHAUDHARY) / (I. BIOGRAPHICAL PROFILE)
81	(Shardindu Chaudhary)	5,813	(Shardindu Chaudhary) / (1. Biographical Profile at a Glance) / (2. The Videha Special Issue 358: Context and Significance)
82	(CRITICAL APPRECIATION)	17,709	(CRITICAL APPRECIATION) / (Preface: Three Frameworks, One

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
			Lens) / (I. Biographical and Contextual Location)
83	(A Critical Appreciation of)	7,451	(A Critical Appreciation of) / (Preface: The Momentary Flash That Illuminates) / (I. Biographical and Socio-Literary Context)
84	(CRITICAL APPRECIATIONS)	3,065	(CRITICAL APPRECIATIONS) / (Archive Presence & Works) / (Thematic & Critical Analysis)
85	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)	6,526	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF) / (TABLE OF CONTENTS) / (II. BIOGRAPHICAL OVERVIEW)
86	(Nit Naval Subhash Chandra Yadav)	33,526	(Nit Naval Subhash Chandra Yadav)
87	(A COMPLETE CRITICAL RESEARCH AND APPRECIATION OF THE WORKS OF SUJIT KUMAR JHA)	7,345	(A COMPLETE CRITICAL RESEARCH AND APPRECIATION OF THE WORKS OF SUJIT KUMAR JHA) / (PREFACE) / (PART I:

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
			BIOGRAPHICAL AND CONTEXTUAL PORTRAIT)
88	(EVER NEW SUSHIL)	24,902	(EVER NEW SUSHIL)
89	(Beyond the Rhetoric: The Fractured Voice of Taranand Viyogi)	1,611	(Beyond the Rhetoric: The Fractured Voice of Taranand Viyogi)
90	(A Critical Appreciation of)	5,609	(A Critical Appreciation of) / (Preface: The Act of Naming the Unnamed) / (I. Biographical and Socio-Cultural Context)
91	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)	8,232	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF) / (Preface) / (Chapter I: Umesh Paswan — Community, Context, and the Videha Framework)
92	(VOICES FROM MITHILA)	8,780	(VOICES FROM MITHILA) / (Table of Contents) / (I. Preface and Methodological Orientation)
93	(VIDEHA ISSUES 351-438)	4,693	(VIDEHA ISSUES 351-438)
94	(The Videha Parallel Audio	3,379	(The Videha Parallel Audio

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
	Video Archive: Digital Remediation, Subaltern Historiography, and the Restoration of Maithili Linguistic Sovereignty)		Video Archive: Digital Remediation, Subaltern Historiography, and the Restoration of Maithili Linguistic Sovereignty) / (The Singer in the Maithili Parallel Tradition) / (Critical Assessment)
95	(The Videha Maithili Parallel Drama Theatre: A Critical Historiography and Epistemological Analysis)	3,682	(The Videha Maithili Parallel Drama Theatre: A Critical Historiography and Epistemological Analysis) / (Methodological Note) / (I. Archive Evidence)
96	(The Epistemology of Parallelism: A Comprehensive Research Report on the Videha (Issue 1-350) Sadeha Series (1-37) and the Maithili Digital Renaissance)	19,261	(The Epistemology of Parallelism: A Comprehensive Research Report on the Videha (Issue 1-350) Sadeha Series (1-37) and the Maithili Digital Renaissance) / (Preamble: The Question of Evidence) / (Navya Nyāya as Critical Framework)

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
97	(VINEET UTPAL: A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION)	5,531	(VINEET UTPAL: A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION) / (A Comprehensive Research Report and Critical Appreciation Integrating Indian and Western Literary Theory, the Videha Parallel History Framework, Translation Theory, and Navya-Nyāya Epistemology of Gaṅgeśa Upādhyāya) / (PART I: BIOGRAPHICAL OVERVIEW AND LITERARY CONTEXT)
98	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)	11,080	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF) / (Preface) / (Chapter I: Mithila, Maithili, and the Literary Tradition)
99	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF YOGENDRA PATHAK VIYOGI)	7,750	(A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF YOGENDRA PATHAK VIYOGI)
100	(CRITICAL APPRECIATION)	7,020	(CRITICAL APPRECIATION) /

क्रम	मुख्य शीर्षक	शब्द-परिमाण	आरम्भिक उपशीर्षक/परिधि
			(I. BIOGRAPHICAL AND CONTEXTUAL OVERVIEW) / (A. Origins and Formation)

१८. समग्र साहित्यिक मूल्यांकन

ई पोथी पारम्परिक “इतिहास”क अपेक्षा अधिक व्यापक रूप—इतिहास, आलोचना, अभिलेख, प्रतिवाद, ग्रन्थसूची, सांस्कृतिक घोषणापत्र आ डिजिटल स्मृति—एकठाम करैत अछि। एहि मिश्रित रूपकेँ कमजोरी मानल जा सकैत अछि जँ पाठक रेखीय अकादमिक इतिहास खोजैत हो; मुदा समानान्तर परियोजनाक दृष्टिसँ ई मिश्रण अर्थपूर्ण अछि, कारण बहिष्कृत साहित्यक पुनर्स्थापन केवल कालक्रम लिखि क’ सम्भव नहि—पाठ उपलब्ध करब, लेखक चिन्हित करब, संस्था प्रश्नांकित करब, अनुवाद करब, डिजिटल पहुँच बनाबब आ नब आलोचनात्मक शब्दावली गढ़ब सेहो आवश्यक होइत अछि।

साहित्यिक आलोचनाक स्तर पर पोथी अनेक ठाम उच्च सम्भावना देखबैत अछि: रचनाकारक विस्तृत सूची, दुर्लभ पुस्तकक पहचान, विधागत इतिहास, स्त्री/दलित/लोक स्वरक समावेश, सीमापार मैथिली परम्पराक पुनरावलोकन, ग़ज़लक औपचारिक अनुशासन, नाटच-इतिहास, बाल-साहित्य, अनुवाद आ डिजिटल अभिलेख। जँ अगिला सम्पादित संस्करणमे पुनरुक्ति घटाओल जाए, दावाक प्रमाण-स्तर चिन्हित हो, तिथि-सूची मानकीकृत हो, वेब-स्रोत पृथक अभिलेख-परिशिष्टमे जाए, आ निकट-पाठ बढ़ाओल जाए, त’ ई संकलन मैथिली अध्ययनक दीर्घकालीन संदर्भ-ग्रन्थ बनबाक क्षमता रखैत अछि।

१९. निष्कर्ष

विदेह समानान्तर इतिहासक मूल ऐतिहासिक कार्य “छुटल चीज देखेनाइ” अछि। ई पुस्तक साहित्यिक इतिहासकेँ राजवंश, दरबार, पुरस्कार आ मान्य लेखकक रेखीय क्रमसँ बाहर निकालि भाषा-समुदाय, डिजिटल सार्वजनिकता, लोक-स्मृति, जाति-विमर्श, स्त्री-अनुभव, सीमापार साहित्यिक आवागमन आ

अभिलेखीय न्यायसँ जोड़ैत अछि। एहि कारण एकर महत्त्व केवल मैथिली साहित्यक इतिहासमे नहि, बल्कि भारतीय भाषासभक प्रतिकाननी इतिहास-लेखनक प्रयोग रूपमे सेहो अछि।

एकर स्थायी अकादमिक मूल्य तखन सर्वाधिक होएत जखन पुस्तक अपन वैचारिक निर्भीकताक संग प्रमाण-संयमकेँ समान बल देत। नव्य-न्याय एहि लेल घरक अपन पद्धति दैत अछि: प्रत्येक कथनक विषय, अवच्छेदक, प्रमाण, विरोध, उपाधि आ निष्कर्ष स्पष्ट करू। भारतीय काव्यशास्त्र ई स्मरण करबैत अछि जे साहित्यिक सत्य केवल तथ्य नहि, अनुभवक रूपान्तरण सेहो अछि। पाश्चात्य इतिहास-चिन्तन ई सावधानी दैत अछि जे इतिहास स्वयं कथात्मक चयन अछि। आ विदेहक समानान्तर पद्धति ई आग्रह करैत अछि जे चयनमे ओ आवाज फेर नहि छुटय, जकरा पहिने इतिहास मौन क' देने छल। एहि चारू अनुशासनक संतुलनमे ई परियोजना अपन सर्वाधिक विश्वसनीय आ मौलिक रूप प्राप्त करैत अछि।

२०. पूर्ण शीर्षक-कवरेज अनुक्रम

एहि परिशिष्टमे मूल पाण्डुलिपिक प्रथमसँ चतुर्थ स्तर धरि सभ शैलीबद्ध शीर्षक मूल क्रममे देल गेल अछि। जे शीर्षक रोमन/अंग्रेजी लिपिमे अछि, ओकरा कोष्ठकमे राखल गेल अछि। ई परिशिष्टक उद्देश्य केवल ई सत्यापित करब अछि जे समीक्षा-प्रक्रियामे पोथीक कोनो संरचनात्मक रचना-एकाइ अनदेखल नहि रहल।

1. (Linguistic Origins and Parallel Evolution)

2. (Descent from Magadhi Prakrit)

3. (The Script Tradition: Tirhuta / Mithilakshara)

4. (Historical and Dynastic Context)

5. (Jyotirishwar Thakur and the Varnanaratnakara)

6. (Umapati Upadhyaya and Early Lyric Drama)

7. (XV)

8. (The Age of Efflorescence: Vidyapati and His World)

9. (Vidyapati Thakur (c. 1360–1480):)

10. (Vidyapati and Sivasimha: Court, Exile, and Creative Freedom)

11. (Poetic Technique and Influence)

12. (XVI)

13. (The Mongrel Language: Brajabuli as Pan-Eastern Literary Medium)

14. (Bengali Brajabuli)

15. (Assamese Brajavali)

16. (Oriya Brajabuli)

17. (Maithili Drama: Nepal and the Kirtaniya Tradition)

18. (Heritage Without Glamour: Decline and the Mongrel Middle Period)

19. (The New Awakening: Colonial Modernity and the Maithili Revival)

20. (The Grierson Effect)

21. (Chanda Jha and the Modern Renaissance)

22. (The First Maithili Journal and Linguistic Politics)

23. (The Golden Trio and Twentieth-Century Modernity)

24. (XXI)

25. (Critical Assessment: Strengths and Limitations of Chaudhary’s Survey)

26. (Contributions)

27. (Limitations and Gaps)

28. (Parallel History: A Comparative Timeline)

29. (XXIII)

30. (Conclusion: Maithili as a ‘Donor’ Civilisation)

31. (Bibliography:)

32. (GANGESA UPADHYAYA)

33. (ADDENDUM 1: Theory of Invalidity of Non-perception and Further Elaborations)

34. (ADDENDUM 1: Theory of Invalidity of Non-perception and Further Elaborations)

35. (A. Theory of Invalidity of Non-perception (Anupalabdhi-vada, I.vii))

36. (B. Section VII-VIII Boundary: The Invalidity of Non-perception in Relation to Non-existence)

37. (C. The Naiyayika-Siddhantins Debate on Inherence as Comprehensional Relation: Full Documentation)

38. (D. The Mano-nutvavada: Theory of Atomic Nature of Mind — Complete Account)

39. (E. Gangesa's Shabdashastram — The Short Story and Its Significance)

40. (F. Pakasadhara Misra, Vidyapati, and the Two-Tradition Problem)

41. (G. Bibliography Update — All Volumes of Bhatta's Translation)

42. (THE MAITHILI GHAZAL)

43. (Preface)

44. (Summary)

45. (Part I: A Brief History of the Ghazal - Arabia to Mithila)

46. (1.1 The Nasib, the Qasida, and the Birth of the Ghazal (7th–8th Century CE))

47. (1.2 Persia: Rumi, Hafiz, and the Sufi Ghazal (10th–14th Century))

48. (1.3 The Sufi Route to India: Amir Khusrau and the Vernacular Turn (12th–13th Century))

49. (1.4 The Golden Age of Urdu Ghazal: From Mir to Ghalib (18th–19th Century))

50. (1.5 The Ghazal in Other Indian Languages: The Comparative Frame)

51. (Part II: The Maithili Ghazal - Classical Phase, Dark Interlude, and the Disrupted Lineage)

52. (2.1 The Emotional Soil: Vidyapati and Pre-Ghazal Sensibility)

53. (2.2 The Golden Period: Pandit Jivan Jha and the Dramatic Debut)

54. (2.3 Kavivara Sitaram Jha and Kashikant Mishra "Madhup")

55. (2.4 The Correct Sequence of Maithili Ghazal Writers)

56. (A Literary Restoration of the Maithili Ghazal)

57. (Writers unversed in the rigorous constraints of prosody and meter frequently assert that the inaugural collection of Maithili Ghazals surfaced in 1981. Yet, a discerning critique reveals that the compositions within that volume align more closely with the traditions of song and verse than with the specific architecture of the Ghazal. In truth, the authentic genesis of the Maithili Ghazal collection occurred in 2008 with the publication of Vijaynath Jha’s seminal work, Ahink Lel (For You).)

58. (Following the emergence of specialized categories such as the 'Bal Ghazal' (Children’s Ghazal) and 'Bhakti Ghazal' (Devotional Ghazal), those lacking technical mastery of the craft began to inhabit these genres as well. While they claim that collections of such Ghazals have been published, these works—much like their predecessors—are merely poems or songs masquerading as Ghazals.)

59. (Beyond this contested lineage, there arose the 'Anchinhar Aakhar'—unrecognized voices emerging from a landscape once hostile to the disciplined, grammatical Ghazal. The effort to rectify this historical sequence is far more than a simple bibliographic adjustment; it is a structural act of literary justice. In the wake of Ashish Anchinhar’s influence, Kundan Kumar Karn and Abhilash Thakur have taken up the mantle, utilizing the modern forums of Facebook and WhatsApp to apprentice a new generation of writers. They are joined in this mission by Pradeep Pushp, Chandan Jha, and Rajeev Ranjan Mishra, all of whom serve as vital mentors to those aspiring to master this venerable art form.)

60. (2.5 The Era of Weakness: The Dark Interlude of Grammatically Incorrect Ghazal)

61. (3.1 The Arabic-Persian Prosodic System: Bahr and Aruz)

62. (3.2 The Formal Elements Table)

63. (3.3 Translating Bahr to Maithili: The Phonological Challenge)

64. (3.4 Qafiya: The Grammar of Rhyme)

65. (3.5 Radif: The Incantatory Refrain)

66. (Part IV: The Anchinhar Aakhar Movement - Revitalisation and Digital Democracy)

67. (4.1 The Name and Its Significance)

68. (4.2 The Architecture of the Anchinhar Aakhar Blog)

69. (4.3 Digital Democratisation and the Maithili Diaspora)

70. (4.4 Prominent Ghazal Writers from the Anchinhar Aakhar Movement)

71. (Part V: Ashish Anchinhar - "The Other Name of Maithili Ghazal")

72. (5.1 Portrait of a Literary Movement)

73. (5.2 Ashish Anchinhar's Five Central Contributions)

74. (Part VI: Theoretical Foundation - Ghazalsastram)

75. (Part VII: Construction of New Maithili Bahars - Analysis by Ashish Anchinhar)

76. (7.1 Conceptual Framework: Nativisation of Prosody)

77. (7.2 The Newly Constructed Maithili Bahars)

78. (7.3 Linguistic Significance and Cultural Reclamation)

79. (Part VIII: Expanding the Genre - Bal Ghazal and Bhakti Ghazal)

80. (8.1 Bal Ghazal: The Ghazal Speaks to Children)

81. (8.2 Bhakti Ghazal: The Devotional Reconvergence)

82. (Part IX: Institutional Independence, Awards, and the Silencing of Women)

83. (9.1 Independence from the Akademi System)

84. (9.2 Women in the Maithili Ghazal Tradition)

85. (Part X: Structural Symbiosis of Maithili Ghazal and Drama - A Century of Divergence and the 2026 Reconvergence)

86. (10.1 The Shared Genesis and the Dramatic Tradition)

87. (10.2 A Century of Divergence (1920s–2020s))

88. (10.3 The 2026 Reconvergence: Case Study of Sakha)

89. (10.4 Theoretical Framework: Structural Efficacy of the Ghazal in Theatre)

90. (Part XI: Maithili Ghazal and Wikipedia)

91. (Part XII: The Parallel Literature Movement and Videha - Institutional Context)

92. (Part XIII: Maithili Ghazal as Parallel History - Caste, Form, and Democratic Poetics)

93. (Part XIV: Parallels with Other Indian Language Ghazal Movements)

94. (14.1 Bengali: The Nazrul Legacy)

95. (14.2 Marathi: Suresh Bhat and the Mission of Formal Correctness)

96. (14.3 Hindi: Dushyant Kumar and the Political Ghazal)

97. (14.4 What Makes the Maithili Case Distinctive)

98. (Conclusion)

99. (Dalit Literary Criticism: Telugu, Gujarati, and Odia Dalit Literature in Maithili Translation)

100. (Vidyapati, the Primal Poet of Maithili (Pre-Jyotirishvara))

101. (ABHA JHA Literary Critic · Essayist)

102. (A Note on Archival Honesty)

103. (Methodological Framework)

104. (I. Biographical Profile: What the Archive Tells Us)

105. (II. The Attested Work: 'Daidigam — Madhyamargak Anweshanki Katha')

106. (2.1 Context: Ashok Visheshshank (Videha Issue 369, 2023))

107. (2.2 The Essay: Structure and Method)

108. (2.3 Abha Jha's Conclusion)

109. (III. Critical Analysis through Indian Literary Theory)

110. (3.1 Rasa Theory and Abha Jha's Critical Sensibility)

111. (3.2 Dhvani Theory (Anandavardhana))

112. (3.3 Vakrokti (Kuntaka))

113. (3.4 Auchitya (Kshemendra))

114. (IV. Critical Analysis through Western Literary Theory)

115. (4.1 Feminist Criticism: Reading 'Swadhin' and Women's Interiority)

116. (4.2 New Criticism: Close Reading and Organic Unity)

117. (4.3 Postcolonial and Subaltern Studies)

118. (V. Navya-Nyaya Epistemological Analysis (Gangesa Upadhyaya))

119. (5.1 The Critical Essay as Pramana)

120. (5.2 Pratyaksha: The Direct Perception of Fictional Reality)

121. (5.3 Upamana: The Middle Path as Analogy)

122. (5.4 Anumana: Inference from Narrative Evidence)

123. (VI. Position within the Videha Parallel History Framework)

124. (6.1 The Critic as Participant in the Parallel Tradition)

125. (6.2 The Woman Critic in the Parallel Tradition)

126. (VII. Summary Assessment)

127. (VIII. Archival Reference)

128. (CRITICAL APPRECIATIONS)

129. (I. BIOGRAPHICAL PROFILE)

130. (A. Identity and Formation)

131. (B. Videha Archive: Complete Works Catalogue)

132. (II. WORKS ANALYSIS)

133. (A. Bīhani Kathā as Form)

134. (B. 'Sāṃṭha Gāṃṭha' (Collusion))

135. (C. 'Noṭabandī' (Demonetisation))

136. (D. 'Ṭakadyāna' (Money-Meditation))

137. (III. THEORETICAL FRAMEWORKS)

138. (A. Navya-Nyāya: The Anumāna of Satirical Fiction)

139. (B. Brecht and the Short Form)

140. (C. Irony and the Maithili Satirical Tradition)

141. (D. Videha Parallel History Framework)

142. (IV. SELECT BIBLIOGRAPHY)

143. (I. BIOGRAPHICAL PROFILE)

144. (A. Identity and Formation)

145. (B. Videha Archive: Complete Works Catalogue)

146. (II. GENERIC INNOVATIONS)

147. (A. The Hajal: Comic-Satirical Hybrid)

148. (B. 'Aṃganāme Kucala Kauā' (The Crow Scratching in the Courtyard))

149. (C. 'Āora Chichiyāu' (Squeal More / Hiss Even More))

150. (D. Bāla Ghazal: Pedagogy and Form)

151. (III. THEMATIC ANALYSIS)

152. (A. The Hajal's Social Critique)

153. (B. Nature Imagery and the Maithili Ecological)

154. (IV. THEORETICAL FRAMEWORKS)

155. (A. Navya-Nyāya and the Hajal's Logic)

156. (B. Dhvani and the Crow Image)

157. (C. Bakhtin: The Carnivalesque Hajal)

158. (D. Videha Parallel History Framework)

159. (V. SELECT BIBLIOGRAPHY)

160. (Critical Appreciation)

161. (II. The Book: Architecture, Contents, and Occasion)

162. (2.1 Genesis and Editorial Circumstances)

163. (2.2 Structure and Contents)

164. (2.3 Thematic Architecture)

165. (III. Critical Analysis through Indian Literary Theory)

166. (3.1 Rasa Theory (Bharata's Natyashastra and Abhinavagupta's Abhinavabharati))

167. (3.2 Dhvani Theory (Anandavardhana's Dhvanyaaloka))

168. (3.3 Vakrokti Theory (Kuntaka's Vakroktijivita, c. 10th century))

169. (3.4 Auchitya Theory (Kshemendra's Auchityavicharacharchaa, c. 11th century))

170. (IV. Critical Analysis through Western Literary Theory)

171. (4.1 New Criticism: Intentional Fallacy, Organic Unity, and Close Reading)

172. (4.2 Postcolonial Theory: Bhabha, Spivak, and the Subaltern Voice)

173. (4.3 Subaltern Studies: Ranajit Guha and the Archive)

174. (4.4 Reader-Response Theory: Iser, Fish, and the Reading Event)

175. (4.5 Marxist and Cultural Materialist Analysis)

176. (V. Navya-Nyāya Epistemological Analysis)

177. (5.1 Gaṅgeśa's Framework: Pramāṇa and Vyāpti)

178. (5.2 Jha's Epistemology of Criticism: Pratyakṣa as Foundation)

179. (5.3 Vyāpti Analysis: The Underlying Invariable Concomitances)

180. (5.4 Hetvābhāsa: The Fallacies of Canonical Criticism)

181. (5.5 Pakṣatā and the Subject of Maithili Criticism)

182. (VI. Genre, Style, and Linguistic Character of the Essays)

183. (6.1 The Essay Form in Maithili)

184. (6.2 Linguistic Register)

185. (6.3 The Use of Direct Quotation)

186. (VII. Critical Assessment of Selected Essays)

187. (7.1 'Van Main Aami' — On Rajanandan Lal Das)

188. (7.2 'Abaara Nahitan' — On Kedar Nath Chaudhary and the First Maithili Film)

189. (7.3 'Daidigan' — On Ashok's Short Story Collection)

190. (7.4 'Samay-Saal ke Akanait' — On Shardinduju Chaudhary's Editorial Journal)

191. (7.5 'Maithilik Succha Sevak' — On Gajendra Thakur)

192. (VIII. Significance, Limitations, and Place in the Maithili Critical Tradition)

193. (8.1 Significance)

194. (8.2 Limitations)

195. (8.3 Place in Maithili Critical Tradition)

196. (IX. Conclusion: A Voice from the Margins of the Archive)

197. (X. References and Bibliography)

198. (Primary Source)

199. (Prefaces and Editorial Apparatus)

200. (Videha Special Issues Referenced in the Book)

201. (Indian Critical Theory)

202. (Western Critical Theory)

203. (Navya-Nyāya Sources)

204. (Maithili Literary Context)

205. (A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)

206. (ANAND KUMAR JHA)

207. (Table of Contents)

208. (1. Introduction: Who Is Anand Kumar Jha?)

209. (2. Biographical Context and the Making of a Playwright)

210. (3. Overview of the Six Plays)

211. (3.1 Takak Mol (टाकाक मोल, 2000) — The Price of Money)

212. (3.2 Dhadhait Navki Kaniyank Lahas (2003) — The Burning Bride)

213. (3.3 Kalah (कलह) — Family Discord)

214. (3.4 Hathat Parivartan (हठात् परिवर्तन) — Sudden Change)

215. (3.5 Badlait Samaj (बदलैत समाज) — Changing Society)

216. (3.6 Mukti Yatra (मुक्ति यात्रा) — Journey of Liberation)

217. (4. Critical Appreciation through Indian Literary Theories)

218. (4.1 Rasa Theory (Bharata Muni's Natyashastra))

219. (4.2 The Eight Rasas in Jha's Drama)

220. (4.3 Abhinaya: The Four Modes of Expression)

221. (4.4 Vritti (Dramatic Style))

222. (4.5 Natyashastra's Social Function (Lokasangraha))

223. (4.6 Dhvani Theory (Anandavardhana))

224. (4.7 Vakrokti (Kuntaka) and Auchitya (Kshemendra))

225. (5. Village Theatre and Folk Drama Theories)

226. (5.1 Mithila's Loka-Natya Tradition)

227. (5.2 Bertolt Brecht's Epic Theatre and Village Drama)

228. (5.3 Richard Schechner's Environmental Theatre)

229. (5.4 Augusto Boal's Theatre of the Oppressed)

230. (6. Western Literary and Critical Theories)

231. (6.1 Aristotelian Dramaturgy)

232. (6.2 Feminist Theory and the Drama of Women's Oppression)

233. (6.3 Postcolonial Theory and Social Drama)

234. (6.4 Marxist/Materialist Dramaturgy)

235. (6.5 Psychoanalytic Theory)

236. (7. The Videha Parallel History Framework)

237. (8. Navya Nyaya Epistemology Applied to Drama)

238. (8.1 Pramana in Theatrical Cognition)

239. (8.2 Vyapti and the Logic of Social Drama)

240. (8.3 Tarka (Counter-argument) in the Plays)

241. (8.4 Shabda Pramana and Theatrical Authority)

242. (9. Individual Play Analyses)

243. (9.1 Takak Mol: Dramaturgy of the Dowry Economy)

244. (9.2 Kalah: The Architecture of Domestic Violence)

245. (9.3 Hathat Parivartan: Patriotism and Domestic Degeneration)

246. (9.4 Mukti Yatra: Theatre of National Security and Women's Liberation)

247. (10. Thematic Synthesis)

248. (a. The Structural Violence of the Dowry Economy)

249. (b. Unemployment and the Crisis of Masculinity)

250. (c. Patriotism, Sacrifice, and National Identity)

251. (d. The Corruption of Village Democracy)

252. (e. The Village Stage as Social Institution)

253. (11. Conclusion and Critical Assessment)

254. (12. Bibliography and References)

255. (Primary Sources (Works of Anand Kumar Jha))

256. (Indian Classical Sources)

257. (Western Dramatic Theory)

258. (Secondary Sources on Maithili Drama)

259. (Online Resources)

260. (CRITICAL APPRECIATION OF)

261. (TABLE OF CONTENTS)

262. (FOREWORD)

263. (BIOGRAPHICAL AND INTELLECTUAL CONTEXT)

264. (Around 2008, a proposal was made to Ashish Anachinhar to become the Sub-Editor of Videha. However, he did not accept the position; instead, he became a collaborator of Videha anonymously and continues to be a collaborator to this day. From time to time, Ashish Anachinhar keeps providing many creative ideas for Videha, which reach the readers through the medium of the publication.)

265. (People from the "mainstream" and the Sahitya Akademi harbor a sense of resentment toward Ashish Anachinhar's work. The reason is that his work publicly exposes the incompetence of both the mainstream and the Akademi. Consequently, apart from the Samanantar Dhara (Parallel Stream), he remains excluded from the lists of any other awards.)

266. (1.1 Life and Formation)

267. (1.2 The Videha Ecosystem and the Parallel Literature Movement)

268. (1.3 Published Works: An Overview)

269. (II. THE GHAZAL FORM: TRADITION, INNOVATION, AND ANCHINHAR'S CONTRIBUTION)

270. (2.1 The Classical Architecture of the Ghazal)

271. (2.2 The Maithili Ghazal Tradition Before Anchinhar)

272. (2.3 Anchinhar's Formal Poetics)

273. (2.4 The 'Anchinhar Formula' for Literary Evaluation)

274. (III. THEMATIC AND IDEOLOGICAL DIMENSIONS)

275. (3.1 The Critique of 'Kathit Ghazal' and the Politics of Form)

276. (3.2 Social and Ethical Dimensions of the Ghazal)

277. (3.3 Language Politics: Maithili Against Hindi Hegemony)

278. (IV. ANCHINHAR AS CRITIC AND THEORIST)

279. (4.1 The Maithili Ghazalak Vyakaran O Itihas: A Scholarly Assessment)

280. (4.2 Sandarbh Sahit: The Critical Method)

281. (4.3 The Maithili Web Journalism History)

282. (V. INDIAN CRITICAL FRAMEWORKS)

283. (5.1 Rasa Theory and the Ghazal)

284. (5.2 Vakrokti and the Economy of the Sher)

285. (5.3 The Mithila Navya-Nyāya Tradition and the Question of Śabda-Śakti)

286. (5.4 Subaltern Literary Theory and the Dalit Canon)

287. (VI. WESTERN CRITICAL FRAMEWORKS)

288. (6.1 New Criticism and the Autonomy of the Text)

289. (6.2 Mikhail Bakhtin: Dialogism, the Chronotope, and the Novelistic Word)

290. (6.3 Harold Bloom: The Anxiety of Influence)

291. (6.4 Foucault: Discourse, Archive, and the Politics of Literary Recognition)

292. (6.5 Jacques Derrida: Différance, the Supplement, and the Text)

293. (6.6 Edward Said: Orientalism and the Counter-Tradition)

294. (VII. NAVYA-NYĀYA EPISTEMOLOGY AND ANCHINHAR'S POETICS OF EVIDENCE)

295. (7.1 Gaṅgeśa Upādhyāya and the Navya-Nyāya Tradition)

296. (7.2 The 'Anchinhar Formula' as Pramāṇa Theory)

297. (7.3 Śabda-Śakti in Navya-Nyāya and the Ghazal)

298. (7.4 The Suppressed Tradition and the Politics of Pramāṇa)

299. (VIII. ASSESSMENTS AND CRITICAL RESPONSES)

300. (8.1 Recognition and Awards)

301. (8.2 Critical Controversies)

302. (8.3 The Question of Legacy)

303. (IX. CONCLUSION: THE PLACE OF ANCHINHAR IN MAITHILI LITERARY HISTORY)

304. (SELECT BIBLIOGRAPHY)

305. (Primary Sources (Works by Ashish Anchinhar))

306. (Co-edited Works (with Gajendra Thakur))

307. (Classical and Sanskrit Sources)

308. (Arabic and Persian Sources and Secondary Literature on Ghazal)

309. (Urdu Ghazal and Indian Poetics)

310. (Western Critical Theory)

311. (Navya-Nyāya and Indian Epistemology)

312. (Maithili Literary History and Cultural Context)

313. (CRITICAL APPRECIATIONS)

314. (Archive Presence & Works)

315. (Thematic & Critical Analysis)

316. (Theoretical Frameworks)

317. (Select Bibliography)

318. (Archive Presence & Works)

319. (Thematic & Critical Analysis)

320. (Theoretical Frameworks)

321. (Select Bibliography)

322. (Archive Presence & Works)

323. (Thematic & Critical Analysis)

324. (Theoretical Frameworks)

325. (Select Bibliography)

326. (Archive Presence & Works)

327. (Thematic & Critical Analysis)

328. (Theoretical Frameworks)

329. (Select Bibliography)

330. (Archive Presence & Works)

331. (Thematic & Critical Analysis)

332. (Theoretical Frameworks)

333. (Select Bibliography)

334. (Archive Presence & Works)

335. (Thematic & Critical Analysis)

336. (Theoretical Frameworks)

337. (Select Bibliography)

338. (ARVIND THAKUR)

339. (Table of Contents)

340. (1. Introduction: Author, Context, and the Epithet ‘Swatantracheta’)

341. (2. The Maithili Literary Tradition and the Videha Platform)

342. (3. Survey of Works: A Bibliographic Overview)

343. (3.1 Poetry Collections (Kavita Sangrah))

344. (3.2 Ghazal Collections (Ghazal Sangrah))

345. (3.3 Short Story Collections (Katha Sangrah))

346. (3.4 Non-Fiction Prose Collections)

347. (3.5 Literary Criticism)

348. (3.6 Collaborative Works)

349. (4. Theoretical Frameworks: Indian and Western)

350. (4.1 Indian Critical Frameworks)

351. (4.1.1 Rasa Theory (Bharata’s Natyashastra, c. 200 BCE–200 CE))

352. (4.1.2 Dhvani Theory (Anandavardhana, c. 850 CE))

353. (4.1.3 Vakrokti (Kuntaka, c. 1000 CE))

354. (4.1.4 Progressive Literary Tradition (Nayi Kavita, Marxist Criticism))

355. (4.2 Western Critical Frameworks)

356. (4.2.1 Theodor Adorno: Critical Theory and Committed Art)

357. (4.2.2 Antonio Gramsci: Cultural Hegemony and the Organic Intellectual)

358. (4.2.3 Mikhail Bakhtin: Heteroglossia, Carnival, and the Novel)

359. (4.2.4 Postcolonial Theory: Frantz Fanon, Homi Bhabha)

360. (4.2.5 Ecocriticism: Raymond Williams, Rob Nixon)

361. (4.2.6 Feminist Literary Criticism)

362. (5. Thematic Analysis)

363. (5.1 The Poetry of Dissent: Darkness and Its Resistance)

364. (5.2 The Ghazal as Political Form)

365. (5.3 The Long Poem and Epic Consciousness: ‘Jarataka Prativaad Me’)

366. (5.4 Prose Fiction and the Logic of the ‘Least Common Multiple’)

367. (5.5 Critical and Editorial Prose: Language, Power, and Literary Institution)

368. (5.6 The Fallow Land Breaks: Earth, Labour, and Ecological Consciousness)

369. (6. Formal Analysis: Craft, Language, and Innovation)

370. (7. Comparative Perspectives)

371. (8. Reception, Influence, and Place in Literary History)

372. (9. Conclusion)

373. (10. Bibliography)

374. (Primary Sources: Works of Arvind Thakur)

375. (Indian Theoretical Frameworks)

376. (Western Theoretical Frameworks)

377. (A Critical Study of ASHOK Maithili Poet, Fiction Writer, Critic and Editor)

378. (A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)

379. (Chapter I: Maithili Theatre, Caste, and the Parallel Movement)

380. (1.1 The Theatrical Landscape of Mithila)

381. (1.2 Videha and the Parallel Theatre Movement)

382. (1.3 Gangesa Upadhyaya and the Mithila Epistemological Tradition)

383. (Chapter II: Bechan Thakur — Life, Context, and Theatrical Mission)

384. (2.1 Biographical Profile)

385. (2.2 The Works: A Comprehensive Survey)

386. (2.2.1 Betik Apaman aa Chhinardevi (Insult of the Daughter and Chhinardevi))

387. (2.2.2 Baap Bhel Pitti aa Adhikaar (Father Became a Child and Rights))

388. (2.2.3 Bhaat (Encounter/Confrontation))

389. (2.2.4 Biswasghat (Betrayal/Breach of Trust))

390. (2.2.5 Oonch-Neech (High-Low / Caste Hierarchy))

391. (Chapter III: Critical Analysis — Dramatic Craft and Theatrical Vision)

392. (3.1 Thematic Architecture)

393. (3.2 Bharata's Natyashastra and Bechan Thakur's Practice)

394. (3.3 The Gamaya Theatre Tradition and its Reinvention)

395. (3.4 Language, Register, and Social Semiotics)

396. (Chapter IV: Critical Frameworks — Indian and Western Theories Applied)

397. (4.1 Rasa Theory (Bharatamuni, Abhinavagupta))

398. (4.2 Dhvani Theory (Anandavardhana) and Theatrical Suggestion)

399. (4.3 Navya Nyaya Epistemology and Theatrical Cognition)

400. (4.4 Brecht, Epic Theatre, and the Political Stage)

401. (4.5 Feminist Literary Criticism and Gender Justice)

402. (4.6 Post-colonial Theory and the Subaltern Stage)

403. (4.7 Aristotle, Hamartia, and the Tragic Vision)

404. (Chapter V: Bechan Thakur and Mahendra Malangia — A Comparative Study)

405. (5.1 Mahendra Malangia: Profile and Achievement)

406. (5.2 Comparative Analysis: The Parallel Theatre vs. Institutional Theatre Debate)

407. (5.3 Convergences and Shared Ground)

408. (Chapter VI: The Videha Parallel Theatre as Cultural Movement)

409. (6.1 The 2012 Videha Maithili Natya Utsav — A Landmark Event)

410. (6.2 Bechan Thakur's Legacy and Future Directions)

411. (Chapter VII: Synthesis and Conclusions)

412. (References and Bibliography)

413. (Primary Sources — Bechan Thakur's Archived Works)

414. (Secondary Sources — Videha Archive)

415. (Indian Classical Aesthetics and Philosophy)

416. (Western Theatre Theory and Criticism)

417. (Maithili Literary Scholarship)

418. (PANDIT BHAVNATH JHA)

419. (Abstract)

420. (1. Introduction)

421. (1.1 The Intellectual Context: Mithila's Knowledge Traditions)

422. (1.2 The Bhavnath Jha Special Issue: A Cultural Event)

423. (2. Biographical Profile)

424. (2.1 Early Life and Family)

425. (2.2 Education)

426. (2.3 Professional Career)

427. (2.4 Family)

428. (3. The Videha Special Issue: Structure and Significance)

429. (4. Intellectual Formation and Scholarly Method)

430. (4.1 The Traditional-Modern Synthesis)

431. (4.2 The Shilalekh and Pandu-Lipi Sciences)

432. (4.3 The Agastya Samhita Achievement)

433. (5. Published Works: An Annotated Survey)

434. (5.1 Original Creative and Scholarly Works)

435. (5.2 Translations)

436. (5.3 Edited Works (Selection of Major Items))

437. (5.4 Manuscript Catalogue Work)

438. (6. Critical Appreciation: Indian Literary and Philosophical Frameworks)

439. (6.1 The Kantasammita Upadesh Ideal)

440. (6.2 Rasa Theory and the Bhrunapanchasika)

441. (6.3 Dhvani Theory and the Buddhacharitam Restoration)

442. (6.4 Vakrokti and Bhavnath Jha's Literary Voice)

443. (7. Critical Appreciation: Western Critical Frameworks)

444. (7.1 New Historicism and the Politics of Knowledge)

445. (7.2 Post-Colonial Theory: The Native Intellectual and Cultural Recovery)

446. (7.3 The Sociology of Knowledge: Bourdieu's Cultural Capital)

447. (7.4 New Criticism: The Text as Autonomous Artifact)

448. (8. Critical Appreciation: Navya-Nyaya Methodology of Gangesa Upadhyaya)

449. (8.1 The Geographical and Intellectual Connection)

450. (8.2 Pratyaksha (Perception) — Direct Manuscript Evidence)

451. (8.3 Anumana (Inference) — Reconstructing the Lost)

452. (8.4 Upamana (Comparison) — Inter-Manuscript Verification)

453. (8.5 Shabda (Testimony) — The Authority of the Text Tradition)

454. (8.6 Gangesa's Paratahpramanya and the 'Interpolation Problem')

455. (9. Bhavnath Jha's Literary Works: A Critical Assessment)

456. (9.1 Bhrunapanchasika: Sanskrit Activism)

457. (9.2 The Bihani Kathas and Gahabar Ke Bat par)

458. (10. Sociological and Institutional Dimensions)

459. (11. Reception and Significance)

460. (12. Conclusion)

461. (13. References)

462. (Primary Sources)

463. (Secondary Sources — Videha Special Issue 428)

464. (Web Sources)

465. (Works on Videha and Maithili Literary Culture)

466. (Works on Indian Aesthetics and Navya-Nyaya)

467. (Works on Western Critical Theory)

468. (A COMPLETE CRITICAL ANALYSIS)

469. (PART I: Biographical and Historical Context)

470. (1.1 Life, Origins, and Formation)

471. (1.2 Professional Career: The Independent Literary Life)

472. (1.3 The Name 'Bhramar' and Its Significance)

473. (1.4 Bhramar in the Context of Nepalese Maithili Literature)

474. (PART II: Works — A Comprehensive Survey)

475. (2.1 Poetry)

476. (Bann Kothari Aunait Dhuaan (Smouldering Smoke in a Closed Room, 2029 BS / 1972 CE))

477. (Nahi, Ab Nahi (No More, No More) — Long Poem, 2036 BS / 1979 CE),)

478. (Momak Pahlait Adhar (Lips Melting Like Wax, 2047 BS / 1990 CE) — Geet-Ghazal Collection)

479. (Apan Anachinhaar (My Unknown One, 2047 BS / 1990 CE) and Yudhbhoomik Esgar Yoddha (Lone Warrior on the Battlefield of Life, 2075 BS / 2017 CE))

480. (Anhariyak Chaan (Moon in Darkness, 2070 BS / 2013 CE) — Ghazal Collection)

481. (2.2 Fiction)

482. (Tora Sange Jaibau Re Kujba (I Will Go with You, Dear Cuckoo, 1987 CE))

483. (Hoogli Upar Bahait Ganga (The Ganga Flowing Above the Hooghly, 2065 BS / 2008 CE))

484. (Anti-Virus (2076 BS / 2019 CE))

485. (2.3 Novel: Gharmuha (The One Who Yearns for Home, 2069 BS / 2012 CE))

486. (2.4 Drama)

487. (2.5 Folk Culture Scholarship and Research)

488. (2.6 Travelogues, Diaries, and Miscellany)

489. (PART III: Critical Appreciation through Literary Theories)

490. (3.1 Social Realism and Progressive Literature)

491. (3.2 Postcolonial Theory: Language Rights, Linguistic Marginalisation, and the Madhesh)

492. (3.3 Subaltern Studies and the Politics of Representation)

493. (3.4 Feminist Theory: Women, Agency, and Voice)

494. (3.5 Rasa Theory and Indian Aesthetic (Bharata's Natyashastra))

495. (3.6 Narratological Analysis: Journalism and Fiction)

496. (3.7 Oral Tradition, Folk Literature, and the Bhakti Connection)

497. (3.8 Reader-Response Theory: The Literary Community)

498. (PART IV: Bhramar's Place in Maithili and Nepalese Literature)

499. (4.1 The Cultural Bridge: India and Nepal)

500. (4.2 First Among Firsts: Historical Significance)

501. (4.3 Awards and Recognition)

502. (PART V: Final Critical Assessment)

503. (5.1 Strengths)

504. (5.2 Limitations and Critical Reservations)

505. (5.3 The 'Bhramar' as Literary Figure)

506. (5.4 Historical Legacy)

507. (Bibliography and Primary Sources)

508. (Primary Works by Bhramar (Selected))

509. (Critical Sources Consulted)

510. (Theoretical Frameworks Referenced)

511. (BINAY BHUSHAN: A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION)

512. (A Comprehensive Research Report Integrating Indian and Western Literary Theory, the Videha Parallel History Framework, and Navya-Nyāya Epistemology of Gaṅgeśa Upādhyāya)

513. (PART I: BIOGRAPHICAL AND CONTEXTUAL OVERVIEW)

514. (1.1 Life and Identity)

515. (1.2 The Book’s Title: Semantic Architecture)

516. (1.3 Publication Apparatus)

517. (PART II: THE BOOK — STRUCTURAL OVERVIEW AND THEMATIC ANALYSIS)

518. (2.1 Contents: A Reconstructed Table)

519. (2.2 Thematic Clusters)

520. (2.3 Formal Features: Metre, Image, and Voice)

521. (PART III: CRITICAL APPRECIATION THROUGH MULTIPLE FRAMEWORKS)

522. (3.1 Indian Rasa-Dhvani Aesthetics)

523. (3.1.1 The Dominant Rasa: Śānta and the Quest for Stillness)

524. (3.1.2 Dhvani: The Architecture of Suggestion)

525. (3.1.3 Vakrokti: Oblique Expression)

526. (3.2 Western Critical Frameworks)

527. (3.2.1 Romanticism and the Quest Narrative)

528. (3.2.2 New Criticism: Tension, Paradox, and the Organic Unity)

529. (3.2.3 Post-Colonial Theory: Language, Power, and Cultural Recovery)

530. (3.2.4 Ecocriticism: Nature, Festival, and the Non-Human)

531. (3.2.5 Phenomenology and the Body in Space)

532. (3.2.6 Mystical Poetry: Sufism, Bhakti, and the Light Metaphysic)

533. (3.3 The Videha Parallel History Framework)

534. (3.3.1 Bhorukawa Publication and the Kolkata-Mithila Connection)

535. (3.3.2 The Koshi Anchal and the Parallel Tradition)

536. (3.3.3 The Festival as Parallel Institution)

537. (3.4 Navya-Nyāya Epistemology: Gaṅgeśa's Framework Applied)

538. (3.4.1 The Pramāṇa Structure of the Quest)

539. (3.4.2 Vyāpti and the Logic of Light)

540. (3.4.3 Abhāva (Productive Absence) and the Book's Central Tension)

541. (3.4.4 Viśeṣaṇatā (Qualification) and Poetic Precision)

542. (3.4.5 The Suppressed Gaṅgeśa and Binay Bhushan's Mithila)

543. (PART IV: FORMAL ANALYSIS AND POETIC TECHNIQUE)

544. (4.1 The Lyric Voice)

545. (4.2 Sound and the Oral Tradition)

546. (4.3 The Seasonal Architecture)

547. (PART V: ASSESSMENT, SIGNIFICANCE, AND CONCLUSION)

548. (5.1 Binay Bhushan’s Place in Contemporary Maithili Poetry)

549. (5.2 Critical Convergence Across Frameworks)

550. (5.3 Significance)

551. (REFERENCES AND BIBLIOGRAPHY)

552. (Primary Text)

553. (Videha and Parallel History Sources)

554. (Indian Literary Theory and Aesthetics)

555. (Western Literary Theory)

556. (Comparative Mystical and Spiritual Traditions)

557. (Maithili Literary History and Context)

558. (Koshi River and Ecology)

559. (The Cursed Poet: A Critical Study of Kalikant Jha ‘Buch’/)

560. (PART I: INTRODUCTION AND METHODOLOGICAL FRAMEWORK)

561. (1.1 Opening: The Videha Parallel History Context)

562. (1.2 Methodological Framework)

563. (PART II: KALIKANT JHA ‘BUCH’ - POET OF THE CURSED LAND)

564. (2.1 Biographical Profile)

565. (2.2 The Kalanidhi: Structural and Thematic Overview)

566. (2.3 Critical Analysis: The Kalanidhi’s Multi-Framework Readings)

567. (2.3.1 Jethee Karah (The Kosi River at Its Peak) - Structuralist and Post-Structuralist Readings)

568. (2.3.2 Vaagat Gaan (Welcome Song) - Marxist, Dhvani, and Social-Realist Readings)

569. (2.3.3 Beti Banal Pahad (Daughter Becomes a Mountain) - Feminist and Sociological Readings)

570. (2.3.4 Akaal (Famine) - Magical Realism and Aucitya)

571. (2.3.5 Tohar Thor (Your Lips) - Alamkara, Sphota, and Rasa)

572. (2.3.6 Buch’s Poetics: The Signature of “Vishringa Sambhava”)

573. (2.4 Buch’s Language: Navya-Nyaya’s Sphota and Denotative Power)

574. (2.5 Buch in the Parallel History: The Cursed Poet as Paradigm)

575. (PART III: SATYANAND PATHAK - THE NOVELIST OF THE MAITHILI DIASPORA)

576. (3.1 Biographical and Contextual Profile)

577. (3.2 Gaam Gel Chhalahun: The Novel’s Architecture)

578. (3.3 Critical Analysis: Gaam Gel Chhalahun Through Multiple Lenses)

579. (3.3.1 Social Realism and the Lukacs Framework)

580. (3.3.2 The Diaspora Novel and Bhabha’s Third Space)

581. (3.3.3 The Crow, the Pluperfect, and Magical Realism)

582. (3.3.4 Rasa Analysis: Karuna and Shanta in the Novel)

583. (3.3.5 Navya-Nyaya: The Novel’s Pramana-Structure)

584. (3.4 The Prose Style: Language as Identity Performance)

585. (PART IV: COMPARATIVE CRITICAL ANALYSIS)

586. (4.1 Kariyan to Guwahati: A Literary Geography of Displacement)

587. (4.2 Form and Genre: Poetry vs. Prose Fiction)

588. (4.3 The Village as Shared Motif)

589. (4.4 Marginality and Recognition: Structural Comparisons)

590. (PART V: NAVYA-NYĀYA DEEP APPLICATION)

591. (5.1 Gangesa’s Village, Buch’s Village: The Epistemological Homecoming)

592. (5.2 Vyāpti and the Novel: Pathak’s Knowledge-Claims about Diaspora Life)

593. (5.3 Shabda-Pramana and the Folk-Knowledge System)

594. (PART VI: PARALLEL HISTORY POSITIONING)

595. (6.1 Buch in the Parallel History’s Layers)

596. (6.2 Pathak and the Diaspora Dimension of the Parallel History)

597. (6.3 The Digital Afterlife: Videha’s Archive)

598. (PART VII: CONCLUSION AND CRITICAL ASSESSMENT)

599. (7.1 Summary of Findings)

600. (7.2 The Navya-Nyaya Verdict)

601. (7.3 Final Assessment)

602. (REFERENCES)

603. (Primary Sources (Uploaded Books))

604. (Videha Digital Sources)

605. (Indian Classical Theory)

606. (Western Theory)

607. (Secondary Sources on Maithili Literature)

608. (EVER NEW DINESH KUMAR MISHRA)

609. (DURGANAND MANDAL)

610. (Table of Contents)

611. (Abstract)

612. (I. Bio-Bibliographic Introduction: Durganand Mandal in Context)

613. (1.1 Life and Identity)

614. (1.2 Published and Archived Works)

615. (1.3 The Munnaji Interview: A Self-Portrait in Words)

616. (II. Textual Analysis: Major Works and Themes)

617. (2.1 Short Stories: The Social-Realist Village Narrative)

618. (2.1.1 'Ḍākṭar Karmavīr' — Doctor Karmaveer)

619. (2.1.2 'Lāl Bhouji' — The Red Sister-in-law)

620. (2.1.3 'Pāras' — The Philosopher's Stone)

621. (2.1.4 'Baklel' — The Absent-Minded)

622. (2.2 Micro-Fiction (Lagu-Kathā))

623. (2.2.1 'Kukarm' — The Wicked Deed)

624. (2.2.2 'Kisna Muṭṭī' — The Mela of the Fistful)

625. (2.3 Critical Reviews and Literary Essays)

626. (2.3.1 Reviews of Jagdish Prasad Mandal's Novels)

627. (2.3.2 Review of Bechan Thakur's Play 'Beṭīk Apmānpar ek Najari')

628. (2.3.3 Reviews of Children's Illustrated Books (Prīti Ṭhākur's Citrkathas))

629. (2.4 Social and Political Essays)

630. (2.4.1 Independence Day Essay: 'Swatantrā Divas par Kichu Swatantra Bhārās')

631. (2.4.2 Essay on Rākhi (Raksha Bandhan))

632. (III. Critical Frameworks and Theoretical Analysis)

633. (3.1 Navya-Nyāya Epistemology of Gaṅgeśa Upādhyāya)

634. (3.1.1 Gaṅgeśa and the Suppressed Democratic Tradition)

635. (3.1.2 Pramāṇa Theory and Literary Knowledge)

636. (3.2 Bharata's Nāṭyaśāstra and Indian Classical Aesthetics)

637. (3.2.1 Rasa Theory Applied to Mandal's Fiction)

638. (3.2.2 Dhvani Theory: The Resonant Unsaid)

639. (3.2.3 Kuntaka's Vakrokti and Mandal's Satirical Idiom)

640. (3.3 The Videha Parallel History Framework)

641. (3.3.1 The Democratic Literary Tradition)

642. (3.3.2 The Bīhani Kathā Tradition)

643. (3.4 Western Critical Frameworks)

644. (3.4.1 Marxist Literary Theory and Social Realism)

645. (3.4.2 New Historicism and the Document of Culture)

646. (3.4.3 Postcolonial Theory and the Subaltern Voice)

647. (3.5 Performance and Oral Theory)

648. (IV. Thematic and Ideological Analysis)

649. (4.1 The Village as Literary Universe)

650. (4.2 Caste, Community, and Democratic Aspiration)

651. (4.3 Gender and Domestic Life)

652. (4.4 Education, Knowledge, and Social Mobility)

653. (V. Literary Significance and Critical Evaluation)

654. (5.1 Contribution to Maithili Literature)

655. (5.2 Relationship to the Parallel Tradition)

656. (5.3 Limitations and Areas for Further Research)

657. (VI. Conclusion: The Eye That Sees)

658. (VII. Bibliography and References)

659. (Primary Sources: Works of Durganand Mandal)

660. (Primary Sources: Videha Parallel History)

661. (Indian Classical Sources)

662. (Western Critical Sources)

663. (On Maithili Literature and the Parallel Tradition)

664. (The Unwritten Thesis of Harimohan Jha When the Tirhuta script and pure vocabulary are lost, the avacchedaka (limiting criteria) for what constitutes 'Maithili' is erased.)

665. (CRITICAL APPRECIATION)

666. (I. BIOGRAPHICAL AND CONTEXTUAL PROFILE)

667. (A. Identity and Location)

668. (B. Videha Archive Presence)

669. (II. JOURNALISTIC CORPUS AND ANALYSIS)

670. (A. 'Āba Nahi Khulata Navakā Śarābaka Dokāna' — Critical Analysis)

671. (B. Thematic Significance: Liquor Policy and Mithila)

672. (III. THEORETICAL FRAMEWORKS)

673. (A. Journalism as Śabda-Pramāṇa: Navya-Nyāya Analysis)

674. (B. Jürgen Habermas: Journalism and the Public Sphere)

675. (C. Indian Alaṃkāra Tradition: Auchitya and Journalistic Propriety)

676. (D. The Videha Parallel History Framework)

677. (IV. CRITICAL ASSESSMENT)

678. (V. SELECT BIBLIOGRAPHY)

679. (Primary Sources)

680. (Videha Sources)

681. (Theoretical Sources)

682. (I. BIOGRAPHICAL AND CONTEXTUAL PROFILE)

683. (A. Identity and Location)

684. (B. Pen-Name and Identity)

685. (C. Videha Archive Presence)

686. (II. JOURNALISTIC CORPUS AND ANALYSIS)

687. (A. 'Nacikettāka Eka Chala Rājā ka Maṃcana' — Critical Analysis)

688. (B. The Nachiketa Connection and Cultural Significance)

689. (III. POSITION WITHIN THE VIDEHA PARALLEL HISTORY)

690. (A. Nepal-India Cultural Bridge)

691. (B. Theatre Journalism and the Oral-Performative Tradition)

692. (IV. THEORETICAL FRAMEWORKS)

693. (A. Navya-Nyāya: Pratyakṣa and the Theatre Review)

694. (B. Walter Benjamin: The Reportage and the Staging)

695. (C. Habermas: Public Sphere and Theatre)

696. (D. Indian Rasa Theory Applied to Theatre Journalism)

697. (V. CRITICAL ASSESSMENT)

698. (VI. SELECT BIBLIOGRAPHY)

699. (Primary Sources)

700. (Videha Sources)

701. (Theoretical Sources)

702. (I. BIOGRAPHICAL AND CONTEXTUAL PROFILE)

703. (A. Identity, Formation and Location)

704. (B. All India Radio and Maithili Broadcasting)

705. (C. Complete Documented Works in Videha Archive)

706. (II. THEMATIC ANALYSIS OF THE JOURNALISTIC CORPUS)

707. (A. Infrastructure and Regional Development)

708. (B. Cultural Journalism: Vidyapati, Chhath and Mithila Heritage)

709. (C. Radio Broadcasting History: The 1993 Landmark)

710. (D. Political Journalism: Elections and the Communal Question)

711. (III. THEORETICAL FRAMEWORKS)

712. (A. Navya-Nyāya: Anumāna and Investigative Journalism)

713. (B. Gaṅgeśa's Geography: Mithila as Epistemic Home)

714. (C. Jürgen Habermas: Public Sphere and Maithili Broadcasting)

715. (D. The Videha Parallel History Framework)

716. (IV. CRITICAL ASSESSMENT)

717. (V. SELECT BIBLIOGRAPHY)

718. (Primary Sources: Works of Navendu Kumar Jha in Videha)

719. (Theoretical Sources)

720. (CRITICAL APPRECIATION)

721. (Table of Contents)

722. (I. Preface: Method and Materials)

723. (II. Biographical Introduction and Cultural Context)

724. (A. Vital Facts)

725. (B. Family and Cultural Lineage)

726. (C. Literary Emergence: Retirement as Second Birth)

727. (III. The Literary Corpus: A Survey)

728. (1. Maithilī Itihāsk Rekhānkan (मैथिली इतिहासक रेखांकन, 2003))

729. (2. Koilakh (कोइलख, ग्रामगाथा / ग्रामेतिहास, 2017))

730. (3. Triveni (त्रिवेणी, 2020))

731. (4. Lekh-Rekh (लेख-रेख, Pothī Prasaṅg Pāṭhakīya, 2023))

732. (5. Kavitā: Śambhu Bādalaka (कविता: शम्भु बादलक, 2023))

733. (6. Rājāpotā Balagara (राजापोता बलगर, बाल कविता संग्रह, 2024))

734. (IV. Hitnath Jhā as Poet: Translation and Original Verse)

735. (A. The Translation of Shambhu Badal: Poetics and Ethics)

736. (B. The Poems of Shambhu Badal: Social Vision and Aesthetic Form)

737. (C. Rājāpotā Balagara: The Children's Poet)

738. (V. Hitnath Jhā as Critic and Reviewer: Lekh-Rekh)

739. (A. The Form of Pāṭhakīya)

740. (B. Structure and Scope of Lekh-Rekh)

741. (C. Critical Principles in Lekh-Rekh)

742. (VI. Hitnath Jhā as Grāmakathākāra: Koilakh and the Village-Biography)

743. (A. The Gram-Gāthā as Literary Form)

744. (B. Critical Assessments of Koilakh)

745. (C. Āśīṣ Ancinhār's Theoretical Supplement)

746. (VII. Hitnath Jhā as Translator: Theory and Practice)

747. (VIII. Critical Frameworks I — Indian Poetics: Rasa, Dhvani, Aucitya)

748. (A. The Rasa Theory (Bharata, Abhinavagupta))

749. (B. Dhvani Theory (Ānandavardhana))

750. (C. Aucitya (Kṣemarāja) and Sāhitya-Darpaṇa (Viśvanātha))

751. (IX. Critical Frameworks II — The Navya-Nyāya of Gaṅgeśa Upādhyāya)

752. (A. Gaṅgeśa: The Mithila Connection)

753. (B. Pratyakṣa (Direct Perception) in Literary Reading)

754. (C. Anumāna (Inference) in Critical Reasoning)

755. (D. Upamāna (Analogical Comparison) in Literary Evaluation)

756. (E. Śabda (Verbal Testimony) and the Authority of the Literary Record)

757. (F. Pakṣatā and Vyāpti in Critical Writing)

758. (X. Critical Frameworks III — Western Literary Theory)

759. (A. Formalism and the Structure of Meaning)

760. (B. Postcolonial and Subaltern Theory)

761. (C. Reader-Response Theory)

762. (D. Ecocriticism and the Literature of Place)

763. (XI. Critical Frameworks IV — Anthropological and Ethnographic Theory)

764. (A. Thick Description: Geertz and Koilakh)

765. (B. Malinowski and Participant Observation)

766. (C. Victor Turner and the Social Drama)

767. (D. Benedict Anderson and Imagined Communities)

768. (XII. Hitnath Jhā in the Maithili Literary Tradition)

769. (A. The Long Literary Heritage)

770. (B. Hitnath Jhā and the Tradition of the Grāmakathākāra)

771. (C. The Reviewer as Cultural Worker)

772. (XIII. Social Media, Retirement, and the Late-Flowering Writer)

773. (XIV. Limitations and Areas for Further Research)

774. (XV. Conclusion)

775. (XVI. Bibliography and References)

776. (A. Primary Sources (Works by Hitnath Jhā))

777. (B. Secondary Sources: Videha Special Issue 405 (November 2024))

778. (C. Indian Critical and Philosophical Sources)

779. (D. Western Literary Theory and Cultural Anthropology)

780. (E. Further Reading on Maithili Literary Culture)

781. (COMPLETE CRITICAL APPRECIATION)

782. (I. BIOGRAPHICAL PROFILE)

783. (A. Identity and Institutional Affiliation)

784. (B. Position in the Videha Community)

785. (II. WORKS: COMPLETE CATALOGUE AND ANNOTATION)

786. (A. Primary Documented Work)

787. (B. Structure and Contents of 'Luptraprāya Maithilī Lokagīta')

788. (Opening Thesis: The Urgency of Documentation)

789. (The Puranic Context: Mithila's Sacred Geography)

790. (The Nine Songs: Textual Documentation)

791. (The Jhumra Documentation)

792. (III. RASA, DHVANI, VAKROKTI: INDIAN LITERARY THEORY)

793. (A. Rasa Analysis)

794. (B. Dhvani: The Resonance of the Folk Song)

795. (C. Vakrokti: Oblique Expression)

796. (D. Auchitya: Propriety and Contextual Fitness)

797. (IV. NAVYA-NYĀYA EPISTEMOLOGICAL ANALYSIS)

798. (A. Śabda-Pramāṇa and the Authority of Folk Song)

799. (B. Pratyakṣa and Anumāna in Folk Song Analysis)

800. (C. Gaṅgeśa and the Geography of Knowledge)

801. (V. THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK)

802. (A. Folk Culture and the Counter-Canon)

803. (B. Batahū Yādava and the Subaltern Voice)

804. (C. Vidyapati's Continuity)

805. (VI. WESTERN CRITICAL AND ETHNOMUSICOLOGICAL FRAMEWORKS)

806. (A. Walter Benjamin: The Oral Tradition and Its Endangerment)

807. (B. Bruno Nettl: Ethnomusicology and Cultural Change)

808. (C. Gramsci: Folklore and Hegemony)

809. (D. UNESCO Intangible Cultural Heritage Framework)

810. (VII. CRITICAL SYNTHESIS: SIGNIFICANCE AND LEGACY)

811. (VIII. SELECT BIBLIOGRAPHY)

812. (Primary Sources: Works of Hriday Narayan Jha)

813. (Videha Sources)

814. (Indian Literary Theory)

815. (Western Theory and Ethnomusicology)

816. (I. 'LUPTRAPRĀYA MAITHILĪ LOKAGĪTA' AS LITERARY-CULTURAL FORM)

817. (A. The Endangered Archive Essay)

818. (B. Intertextuality: The Essay and Its Sources)

819. (C. Prose Style)

820. (II. THE GENRE TAXONOMY: A SYSTEMATIC ANALYSIS)

821. (A. Life-Cycle Songs)

822. (B. Agricultural and Seasonal Songs)

823. (C. Ritual Invocation Songs)

824. (III. THE NINE GOSAUNIK SONGS: CLOSE READING)

825. (A. Song 1: Parātī — 'Ajahuṃ bhajana cita ceta mugudha mana')

826. (B. Song 2: Traditional Gosaunik Gīta — Durga Invocation)

827. (C. Song 3: Mahāmahopādhyāya Madan Upadhyay — Hymn to Tārā)

828. (D. Songs 4–7: Traditional Surrender Songs)

829. (E. Song 8: Vidyapati — 'Ādi bhavānī vinaya tua pāya')

830. (F. Song 9: Kaviśvara Canda Jhā — 'Tua binu āja bhavana bhela re')

831. (IV. THE JHUMRA TRADITION: RITUAL PERFORMANCE ANALYSIS)

832. (A. The Bhagat Community and Possession Ritual)

833. (B. The Jhumra Song: Ecological Imagery)

834. (V. INTEGRATED THEORETICAL ASSESSMENT)

835. (A. The Semiotic Structure of the Folk Song)

836. (B. Memory, Place, and Endangered Cultural Heritage)

837. (VI. SELECT BIBLIOGRAPHY)

838. (Primary Sources)

839. (Indian Literary Theory)

840. (Western Theory)

841. (EDITORIAL INTRODUCTION)

842. (I. THE NINE GOSAUNIK GĪTA (गोसाउनिक गीत))

843. (Song 1: Parātī — Dawn Hymn)

844. (Song 2: Traditional — Durga Invocation (Jhumra form))

845. (Song 3: Mahāmahopādhyāya Madan Upadhyay — Hymn to Tārā)

846. (Song 4: Traditional — Bhava-Sāgara Pāra)

847. (Songs 5–7: Traditional Invocations — 'He Jagadamba' Series)

848. (Song 8: Mahākavi Vidyapati — 'Ādi bhavānī vinaya tua pāya')

849. (Song 9: Kaviśvara Canda Jhā — 'Tua binu āja bhavana bhela re')

850. (II. THE JHUMRA (झूमरा) — RITUAL INVOCATION SONG)

851. (III. GLOSSARY OF MAITHILI FOLK SONG GENRES)

852. (Mithila & Maithili: Critical Analysis of Institutions)

853. (Table of Contents)

854. (I. Introduction and Theoretical Framework)

855. (II. Sahitya Akademi: Institutional History and the Seven Award Categories for Maithili)

856. (2.1 Institutional Overview)

857. (2.2 The Seven Award Categories — Maithili Performance)

858. (2.3 The Main Sahitya Akademi Award for Maithili — Historical Critical Evaluation)

859. (2.5 The Fellowship (Sahitya Akademi Fellow) — The Most Critical Gap)

860. (2.6 Tagore Sahitya Puraskar — Asymmetric Access)

861. (2.8 Translation Prize)

862. (III. Critical Analysis of the Seven Recognized Literary Associations)

863. (3.1 Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad (ABMSP), Darbhanga)

864. (3.2 Chetna Samiti, Patna (Vidyapati Bhavan))

865. (3.3 Mithila Sanskritik Parishad, Kolkata)

866. (3.4 Vidyapati Seva Sansthan, Darbhanga (Mithila Bhavan Parisar))

867. (3.5 Critical Synthesis: The Recognition Problem)

868. (IV. Lalit Kala Akademi and Maithili/Mithila Visual Arts)

869. (4.1 Mithila Painting: A Case of Recognition Without Institutionalization)

870. (4.2 Videha Parallel: Samantarar Lalit Kala Akademi Samman)

871. (V. Sangeet Natak Akademi and Maithili Performing Arts)

872. (5.1 Institutional Engagement with Maithili Performing Arts)

873. (5.2 The Videha Natya Utsav as Parallel Archive)

874. (VI. Nepal's Literary Award Ecosystem for Maithili)

875. (6.1 Nepal Pragya Pratishthan (Nepal Academy))

876. (6.2 Vidyapati Puraskar)

877. (6.3 Kosh Puraskar)

878. (6.4 Phulkumari Mahato Memorial Trust, Kathmandu)

879. (6.5 Sajha Puraskar)

880. (6.6 Critical Assessment: Nepal's Institutional Failure)

881. (VII. Videha Samman: Architecture and Philosophy of the Parallel System)

882. (7.1 Institutional Genesis)

883. (7.2 Award Categories and Their Philosophy)

884. (7.3 Selection Philosophy: Democratic Epistemics)

885. (VIII. The Three Organizations with Videha Special Issues)

886. (8.1 Mithila Student Union (MSU) — Videha MSU Special Issue)

887. (8.2 Mithila Vikas Parishad — Videha Issue 408 Special)

888. (8.3 Videha Maithili Natya Utsav — Parallel Theatre Archive)

889. (IX. Performance Evaluation: Comparative Analysis Matrix)

890. (X. Theoretical Critique through Navya-Nyāya Epistemology)

891. (10.1 Gaṅgeśa's Framework and Its Application)

892. (10.2 The Sahitya Akademi's Epistemic Claim)

893. (10.3 Videha's Epistemological Counter-Proposal)

894. (10.4 The Pañji Analogy)

895. (XI. Conclusions and Recommendations)

896. (11.1 Summary of Findings)

897. (11.2 Recommendations)

898. (XII. References and Bibliography)

899. (Primary Sources (Uploaded Materials))

900. (Web Sources Consulted)

901. (Secondary Literature)

902. (A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)

903. (Abstract)

904. (I. Biographical and Contextual Introduction)

905. (1.1 Life, Origins, and the Migrant Condition)

906. (1.2 The Videha and Anchinhar Ākhara Formations)

907. (1.3 Publisher and Institutional Location)

908. (II. The Corpus: Works, Forms, and Publication History)

909. (2.1 Vyathā: Poetry and Song Anthology (2025))

910. (2.2 Naḍhiyā Bhukaiye Hamar Ghaṛārīpar: Maithili Ghazal Collection)

911. (2.3 Tohār Katek Raṅg: Seed Stories (Bīhani Kathā) Collection)

912. (2.4 Children's Fiction: 'Chonhā' (Videha Shishu Utsav))

913. (III. Thematic Analysis)

914. (3.1 Pardesh and Māṭī-Pānī: The Poetics of Displacement)

915. (3.2 Mithilā Rāj: The Political Poem)

916. (3.3 Women: Anguish, Strength, and the Satirical Inversion)

917. (3.4 Economic Conditions: Money, Unemployment, and Political Satire)

918. (3.5 Childhood and Disability: 'Chonhā')

919. (IV. Formal and Structural Analysis)

920. (4.1 The Maithili Ghazal: Form, Tradition, and Manu's Practice)

921. (4.2 Prosodic Freedom and Mixed Modes in Vyathā)

922. (4.3 The Bīhani Kathā Form in Tohār Katek Raṅg)

923. (4.4 'Chonhā' as Realist Narrative)

924. (V. Application of Critical Frameworks)

925. (5.1 Indian Classical Theories)

926. (5.1.1 Rasa Theory (Bharata, Abhinavagupta))

927. (5.1.2 Dhvani Theory (Ānandavardhana))

928. (5.1.3 Vakrokti Theory (Kuntaka))

929. (5.1.4 Alaṁkāra Theory: Anuprāsa and Upamā)

930. (5.2 Western Critical Theories)

931. (5.2.1 Marxist Literary Criticism (Lukács, Eagleton, Williams, Gramsci))

932. (5.2.2 Formalism and New Criticism)

933. (5.2.3 Postcolonial and Subaltern Studies)

934. (5.2.4 Ecocriticism and the Literature of Soil)

935. (5.2.5 Gender Theory (Butler, Mohanty, Spivak))

936. (5.3 The Videha Parallel History Framework)

937. (5.4 Navya-Nyāya Epistemology: Gaṅgeśa's Analytical Technique)

938. (5.4.1 Pramāṇa: The Validity of Testimonial Poetry)

939. (5.4.2 Avacchedaka: Specifying the Literary Claim)

940. (5.4.3 Vyāpti: The Invariable Relations in Manu's Corpus)

941. (5.4.4 Nirvikalpaka and Savikalpaka in the Ghazal Sher)

942. (5.4.5 Pakṣatā (Being-the-Subject-of-Inference) and the Pardeshī as Inferential Locus)

943. (VI. The Ghazal as Vehicle of Maithili Democratic Identity)

944. (6.1 Form as Democratic Politics)

945. (6.2 Manu and the Ghazal Lineage)

946. (VII. Comparative Positioning in the Parallel Tradition)

947. (7.1 Manu and Nand Vilas Roy)

948. (7.2 Manu and the Anchinhar Generation)

949. (7.3 Manu and the Tradition of Maithili Devotional Poetry)

950. (VIII. Evaluation and Conclusion)

951. (8.1 Strengths)

952. (8.2 Critical Reservations)

953. (8.3 Conclusion)

954. (References and Bibliography)

955. (Primary Sources: Works of Jagdanand Jha 'Manu')

956. (Videha Parallel History and Anchinhar Movement Sources)

957. (Ghazal: Historical and Theoretical Sources)

958. (Indian Classical Criticism)

959. (Navya-Nyāya Sources)

960. (Western Literary Theory)

961. (Contextual Sources)

962. (2. Life and Literary Biography)

963. (2.1 Biographical Profile)

964. (2.2 Association with the Videha Movement)

965. (2.3 Language and Cultural Context)

966. (3. Literary Works: A Descriptive Survey)

967. (3.1 Dhar Kai Oi Par (धारक ओइ पार) — Long Poem / Dīrgha Kavitā)

968. (3.2 Geet Ganga (गीत गंगा) — Song Collection)

969. (3.3 Ghazal Ganga (गजल गंगा) — Ghazal Collection)

970. (3.4 Tora Angana Me (तोरा अंगना मे) — Song Collection)

971. (3.5 Aankhime Chitra Ho Maithili Ker (आँखिमे चित्र हो मैथिली केर) — Autobiography)

972. (3.6 Children's Poetry in Videha)

973. (3.7 Ghazals in Videha Issue 129)

974. (4. Critical Analysis Using Indian Literary Theories)

975. (4.1 Rasa Theory (रसशास्त्र) — Bharatamuni's Nāṭyaśāstra)

976. (4.2 Dhvani Theory (ध्वनि) — Ānandavardhana's Dhvanyāloka)

977. (4.3 Vakrokti Theory — Kuntaka's Vakroktijīvita)

978. (4.4 Aucitya Theory — Kshemendra's Aucityavicāracarcā)

979. (4.5 The Parallel Literature Movement Framework)

980. (5. Critical Analysis Using Western Literary Theories)

981. (5.1 New Criticism: Organic Unity and Irony)

982. (5.2 Structuralism: Binary Oppositions and Literary Systems)

983. (5.3 Postcolonial Theory)

984. (5.4 Feminist Theory)

985. (5.5 Ecocriticism)

986. (5.6 Reader-Response Theory)

987. (5.7 Psychoanalytic Criticism)

988. (5.8 Narratology and Genre Theory)

989. (6. Synthesis: 'Anil's Place in Maithili Literature)

990. (7. Conclusion)

991. (8. Select Bibliography)

992. (Primary Sources)

993. (Indian Literary Theory)

994. (Western Literary Theory)

995. (Maithili Literary History and Context)

996. (A Critical Study of the Works of)

997. (2. Life and Literary Biography)

998. (2.1 Biographical Profile)

999. (2.2 Association with the Videha Movement)

1000. (2.3 Language and Cultural Context)

1001. (3. Literary Works: A Descriptive Survey)

1002. (3.1 Dhar Kai Oi Par (धारक ओइ पार) — Long Poem / Dīrgha Kavitā)

1003. (3.2 Geet Ganga (गीत गंगा) — Song Collection)

1004. (3.3 Ghazal Ganga (गजल गंगा) — Ghazal Collection)

1005. (3.4 Tora Angana Me (तोरा अंगना मे) — Song Collection)

1006. (3.5 Aankhime Chitra Ho Maithili Ker (आँखिमे चित्र हो मैथिली केर) — Autobiography)

1007. (3.6 Children's Poetry in Videha)

1008. (3.7 Ghazals in Videha Issue 129)

1009. (4. Critical Analysis Using Indian Literary Theories)

1010. (4.1 Rasa Theory (रसशास्त्र) — Bharatamuni's Nāṭyaśāstra)

1011. (4.2 Dhvani Theory (ध्वनि) — Ānandavardhana's Dhvanyāloka)

1012. (4.3 Vakrokti Theory — Kuntaka's Vakroktijīvita)

1013. (4.4 Aucitya Theory — Kshemendra's Aucityavicāracarcā)

1014. (4.5 The Parallel Literature Movement Framework)

1015. (5. Critical Analysis Using Western Literary Theories)

1016. (5.1 New Criticism: Organic Unity and Irony)

1017. (5.2 Structuralism: Binary Oppositions and Literary Systems)

1018. (5.3 Postcolonial Theory)

1019. (5.4 Feminist Theory)

1020. (5.5 Ecocriticism)

1021. (5.6 Reader-Response Theory)

1022. (5.7 Psychoanalytic Criticism)

1023. (5.8 Narratology and Genre Theory)

1024. (6. Synthesis: 'Anil's Place in Maithili Literature)

1025. (7. Conclusion)

1026. (8. Select Bibliography)

1027. (Primary Sources)

1028. (Indian Literary Theory)

1029. (Western Literary Theory)

1030. (Maithili Literary History and Context)

1031. (A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)

1032. (DR. KAILASH KUMAR MISHRA)

1033. (Table of Contents)

1034. (1. Introduction: Who Is Dr. Kailash Kumar Mishra?)

1035. (2. Biographical Context and Intellectual Formation)

1036. (3. Overview of Major Works)

1037. (3.1 Mansarbi (Novel, 2025))

1038. (3.2 Yayavari (Travelogue-Essays, in Videha Maithili Prabandhanibandhsamalochana))

1039. (3.3 Bookmeniya (2025, Navarambh Prakashan, Rs. 250))

1040. (3.4 Videha Sadeha 29 (Co-authored with Ravibhushan Pathak))

1041. (4. Critical Appreciation through Indian Literary Theory)

1042. (4.1 Rasa Theory (Bharata Muni's Natyashastra))

1043. (4.2 Dhvani Theory (Anandavardhana))

1044. (4.3 Alamkara School (Bhamaha, Dandin))

1045. (4.4 Vakrokti (Kuntaka) and Auchitya (Kshemendra))

1046. (5. Critical Appreciation through Western Literary Theories)

1047. (5.1 Postcolonial Theory (Frantz Fanon, Homi K. Bhabha, Edward Said))

1048. (5.2 Subaltern Studies (Gayatri Spivak, Ranajit Guha))

1049. (5.3 Feminist Theory and Gender Studies)

1050. (5.4 Formalism, New Criticism, and Narratology)

1051. (5.5 Cultural Materialism and Anthropological Literary Theory)

1052. (6. The Videha Parallel History Framework)

1053. (7. Anthropological Theories Applied to Mishra's Work)

1054. (7.1 Clifford Geertz's Thick Description)

1055. (7.2 Lévi-Strauss and Structural Anthropology)

1056. (7.3 Victor Turner's Liminality and Communitas)

1057. (7.4 Intangible Cultural Heritage: UNESCO Framework and Mishra)

1058. (8. Navya Nyaya Epistemology: Gaṅgeśa and the Logic of Literature)

1059. (8.1 Pramana (Valid Cognition) in Mishra's Narratives)

1060. (8.2 Vyapti (Invariable Concomitance) as Narrative Logic)

1061. (8.3 Shabda Pramana, Oral Tradition, and Literary Authority)

1062. (9. Analysis of Individual Works)

1063. (9.1 Mansarbi: A Novel of Caste, Gender, and Mithila's Rural Economy)

1064. (9.2 Yayavari: Travelogue as Cultural Anthropology)

1065. (9.3 Bookmeniya: The Facebook Meta-History)

1066. (9.4 Videha Sadeha 29: Prose, Poetry, and Critical Essays)

1067. (10. Thematic Synthesis)

1068. (a. The Dignity of the Marginalised)

1069. (b. The Ecology of Mithila)

1070. (c. Cultural Memory and Continuity)

1071. (d. The Ethics of the Intellectual)

1072. (e. Language, Script, and Cultural Survival)

1073. (11. Conclusion and Critical Assessment)

1074. (I. Preamble: The Book and Its Author)

1075. (Authorial Context)

1076. (II. Anthropological Frameworks: Reading Arer)

1077. (1. Cultural Anthropology: The Village as a Total Social Fact)

1078. (2. Social Anthropology: Caste, Commensality, and Community)

1079. (3. Historical Anthropology and Ethno-History)

1080. (4. Oral Tradition and Folkloristics)

1081. (5. Memory Studies: Lieux de Mémoire and the Village)

1082. (III. The Videha Parallel History Framework)

1083. (1. Arer as a Case of Parallel History)

1084. (2. The Question of Whose History is Written)

1085. (3. The Mithila Connection: Arer in Mythological-Historical Space)

1086. (IV. Postcolonial and Subaltern Analysis)

1087. (1. The Colonial Encounter: Bachha Jha and the British Officer)

1088. (2. Ramananda Sahu: The Unregistered Freedom Fighter)

1089. (3. The Question of Development and Women)

1090. (V. Indian Classical Aesthetics: Rasa, Dhvani, and Lok-Dharmi)

1091. (1. The Aesthetic of Lok Itihas)

1092. (2. Dhvani: The Resonant Meaning of Lok Itihas)

1093. (3. The Gamak Lok Itihas as Svasamvedana)

1094. (VI. Thematic Analysis by Chapter)

1095. (Chapters 1–3: Geography, Etymology, and Society)

1096. (Chapters 4–5: Bachha Jha First and Second — The Village's Living Legend)

1097. (Chapter 6: Arer's Lok Itihas and Mahadevasthaan)

1098. (Chapter 7: Buddhinator Jha and the Durgaasthaan)

1099. (Chapter 8: Pandit Rattlelal Jha Vaidik)

1100. (Chapters 9–10: The Saints — Spiritual Life Across Castes)

1101. (Chapters 11–12: Ramananda Sahu and Vishwambhar Jha)

1102. (Chapters 13–17: Memory, Family, and Community Solidarity)

1103. (VII. Arer in Mithila's Parallel History Structure)

1104. (1. The Village and the Mithila Mainstream)

1105. (2. Language as a Political Choice)

1106. (3. Lok Itihas as a Methodology for Parallel History)

1107. (VIII. Critical Assessment)

1108. (Strengths)

1109. (Limitations and Areas for Extension)

1110. (IX. Conclusion)

1111. (Bibliography and References)

1112. (Primary Sources (Works of Dr. Kailash Kumar Mishra))

1113. (Anthropological and Oral History Theory)

1114. (Memory Studies)

1115. (Subaltern Studies and Postcolonial Theory)

1116. (Indian Classical Aesthetics)

1117. (Videha and Maithili Parallel Tradition)

1118. (Mithila History and Society)

1119. (Indian Classical Sources)

1120. (Western Literary and Critical Theory)

1121. (Secondary Sources on Maithili Literature and Mithila Culture)

1122. (Online Resources)

1123. (CRITICAL APPRECIATION OF THE WORKS OF)

1124. (I. BIOGRAPHICAL AND TEXTUAL OVERVIEW)

1125. (II. WORKS: ANNOTATED CRITICAL DESCRIPTIONS)

1126. (A. Gosaaunik Geet (गोसाउनिक गीत))

1127. (B. Nashamukti Hit Gaabi Geet (नशामुक्ति हित गाबी गीत))

1128. (C. Niniyaa (निनियाँ))

1129. (D. Yaayaavari (यायावरी) by Shefalika Verma — Hindi Translation by Kalpana Jha)

1130. (III. THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK: SITUATING KALPANA JHA, DELHI)

1131. (IV. RASA, DHVANI, VAKROKTI: INDIAN LITERARY THEORY)

1132. (V. WESTERN CRITICAL FRAMEWORKS)

1133. (VI. NAVYA-NYĀYA ANALYSIS)

1134. (VII. BIBLIOGRAPHY AND SOURCES)

1135. (I. CONTEXTUAL AND BIOGRAPHICAL OVERVIEW)

1136. (II. THE POETRY: FORMAL AND THEMATIC ANALYSIS)

1137. (A. The Diasporic Longing)

1138. (B. The Industrial City as Counter-Landscape)

1139. (C. Women’s Experience in the Diaspora)

1140. (D. Language as Cultural Anchor)

1141. (III. FORMAL ANALYSIS: PROSODY AND STYLE)

1142. (IV. THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK)

1143. (V. BIBLIOGRAPHY AND SOURCES)

1144. (COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF THE WORKS OF)

1145. (I. BIOGRAPHICAL AND CONTEXTUAL OVERVIEW)

1146. (II. DOCUMENTED VIDEHA CONTRIBUTIONS: A COMPLETE CATALOGUE)

1147. (A. Videha 358 (15 November 2022, Shardindu Chaudhary Visheshank))

1148. (B. Videha 409 (01 January 2025): Lead Essay on Upendra Nath Jha ‘Vyas’)

1149. (C. Essays in the Srikant Thakur Vidyalankar Series)

1150. (D. Contributions to Other Videha Special Issues)

1151. (III. CLOSE ANALYSIS: THE VYAS ESSAY AS LITERARY-BIOGRAPHICAL FORM)

1152. (A. The Memoir-Biography Hybrid)

1153. (B. The Personal-Critical Voice)

1154. (C. The Family as Literary Institution)

1155. (IV. CLOSE ANALYSIS: THE SHARDINDU CHAUDHARY ESSAY)

1156. (A. The Central Distinction: Bhasha-Sevak vs. Sahitya-Sevak)

1157. (B. Auchitya and the Precision of Critical Judgment)

1158. (V. THE SRIKANT THAKUR VIDYALANKAR SERIES: CRITICAL CONTEXT)

1159. (A. Who is Srikant Thakur Vidyalankar?)

1160. (B. Kalpana Jha Patna’s Critical Method Applied to Vidyalankar)

1161. (VI. THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK: EXPANDED ASSESSMENT)

1162. (VII. RASA, DHVANI, VAKROKTI: INDIAN LITERARY THEORY)

1163. (A. Auchitya (Kshemendra))

1164. (B. Rasa Analysis)

1165. (C. Dhvani (Anandavardhana))

1166. (VIII. NAVYA-NYĀYA EPISTEMOLOGICAL ANALYSIS)

1167. (IX. WESTERN CRITICAL FRAMEWORKS)

1168. (X. ASSESSMENT: STRENGTHS, LIMITATIONS, SIGNIFICANCE)

1169. (A. Strengths)

1170. (B. Limitations)

1171. (C. Significance)

1172. (XI. BIBLIOGRAPHY AND PRIMARY SOURCES)

1173. (Primary Sources: Published Videha Contributions of Kalpana Jha, Patna)

1174. (About the Essay Subjects)

1175. (Videha Parallel History Framework)

1176. (Indian Literary Theory)

1177. (Western Literary Theory)

1178. (KAMESHWAR JHA 'KAMAL')

1179. (1. Introduction: Kameshwar Jha 'Kamal' and the Maithili Geet Tradition)

1180. (2. Biographical Profile: Life, Formation, and Cultural Context)

1181. (3. Overview of Kamal-Taal: Structure, Contents, and Genre)

1182. (1. Ganesh Vandana (Invocation Songs for Ganesha))

1183. (2. Hanuman Vandana)

1184. (3. Saraswati Vandana (Three Songs))

1185. (4. Devi Vandana (Five Songs to the Goddess Durga))

1186. (5. Rama and Sita: Songs of the Mithila-Ramayana Tradition)

1187. (6. Krishna Lila Songs)

1188. (7. Shiva-Parvati Songs: Nachhari and Shiv Vivah)

1189. (8. Chhath Puja and Sun Songs)

1190. (9. Seasonal Songs: Sawan, Phagun, Faguwa)

1191. (10. Nari-Jeevan Geet: Songs of Women's Domestic Experience)

1192. (11. Patriotic Songs)

1193. (12. Contemporary and Social Songs)

1194. (4. The Geet (Song-Poem) as Literary Form: Indian Theoretical Framework)

1195. (4.1 Rasa Theory and the Lyric Emotion)

1196. (4.2 Dhvani Theory: Resonance in Song)

1197. (4.3 Raga-Bhas and the Classical Music Tradition)

1198. (4.4 Lochana's Ragatarangini and the Mithila Music Heritage)

1199. (4.5 Vidyapati's Legacy and Kamal's Inheritance)

1200. (5. Category Analysis of the Songs)

1201. (5.1 Devotional Songs: Vandana, Bhajan, Kirtana)

1202. (5.2 Shringara: Love, Union, and Viraha)

1203. (5.3 Ritukar Geet: Seasonal Songs)

1204. (5.4 Nari-Jeevan Geet: Women's Experience)

1205. (5.5 Desh-Bhakti Geet: Patriotic Songs)

1206. (5.6 Loka-Geet and Nachhari Tradition)

1207. (5.7 Contemporary Songs: COVID and Social Commentary)

1208. (6. Western Critical Theories Applied to Kamal-Taal)

1209. (6.1 Romantic Lyric Theory)

1210. (6.2 New Criticism and Close Reading)

1211. (6.3 Performance Theory)

1212. (6.4 Feminist Theory and Women's Voice in Kamal's Songs)

1213. (6.5 Postcolonial Theory: Language, Identity, and Diaspora)

1214. (7. The Videha Parallel History Framework)

1215. (8. Navya Nyaya Epistemology Applied to Song-Poetry)

1216. (8.1 Pramana in Lyric Cognition)

1217. (8.2 Shabda Pramana and the Oral-Musical Tradition)

1218. (8.3 Vyapti and the Logic of Raga)

1219. (8.4 Gaṅgeśa's Tattvacintamani and the Analysis of Poetic Meaning)

1220. (9. Detailed Textual Analysis of Selected Songs)

1221. (9.1 Ganesh Vandana (Opening Song))

1222. (9.2 The Nachhari: 'Nach Dekhu He Gaura')

1223. (9.3 The Viraha Song: 'Biti Gelai Fiyon Mahinma')

1224. (9.4 The COVID Geetika)

1225. (10. Thematic Synthesis: Kamal's Vision of Mithila and the World)

1226. (a. Mithila as Sacred Geography)

1227. (b. The Eternal Geet as Cultural Survival)

1228. (c. The Lotus: Symbol and Signature)

1229. (d. Devotion as the Song's Ground)

1230. (e. The Living Tradition of Community Performance)

1231. (11. Conclusion and Critical Assessment)

1232. (12. Bibliography and References)

1233. (Primary Source)

1234. (Indian Classical Sources)

1235. (Western Literary and Critical Theory)

1236. (Secondary Sources on Maithili Literature and Music)

1237. (Online Resources)

1238. (CRITICAL APPRECIATION OF THE WORKS OF)

1239. (Table of Contents)

1240. (I. Preface & Scope of the Study)

1241. (II. Theoretical Framework)

1242. (A. Indian Poetics: Rasa, Dhvani, and Aucitya)

1243. (B. Western Criticism: Key Frameworks)

1244. (C. Navya Nyāya Epistemology of Gaṅgeśa Upādhyāya)

1245. (D. The Videha Parallel History Framework)

1246. (III. The Videha E-Journal: Platform, Context, and Literary Movement)

1247. (IV. Dr. Kamini Kamayini: Biographical & Bibliographical Introduction)

1248. (Bibliographical Highlights)

1249. (V. Critical Appreciation of Dr. Kamini Kamayini's Works)

1250. (A. Poetry: Themes, Imagery, and Formal Characteristics)

1251. (Rasa Analysis)

1252. (Dhvani and Suggestion)

1253. (Feminist Critical Reading)

1254. (B. Short Prose and Vihaṇi Kathā)

1255. (C. Application of Critical Frameworks to Kamini Kamayini)

1256. (Navya Nyāya Reading)

1257. (Videha Parallel History Framework)

1258. (VI. Kapileshwar Raut: Biographical & Bibliographical Introduction)

1259. (Contact and Publication Information)

1260. (Works)

1261. (VII. Critical Appreciation of Kapileshwar Raut's Works)

1262. (A. Ulhan (उलहन): Overview)

1263. (B. Story-by-Story Analysis)

1264. (1. Vamś (Lineage))

1265. (2. Ulahan (Reproach) — Title Story)

1266. (3. Tharharī (The Trembling))

1267. (4. Bhog (Enjoyment/Suffering))

1268. (5. Kumāri Bhojan (The Maiden's Feast))

1269. (6. Kātan Āu Sammelan (Weaving and Conference))

1270. (7. Takrīr (The Sermon))

1271. (10. Pān (Betel))

1272. (11. Maī Divas (May Day))

1273. (15. Chhuā-Chhūt (Untouchability))

1274. (16. Kaliyugak Niṇae (The Verdict of Kali Yuga))

1275. (C. Social Realism and the Mithilā Experience)

1276. (D. Application of Critical Frameworks to Kapileshwar Raut)

1277. (New Critical Reading)

1278. (Postcolonial Reading)

1279. (Navya Nyāya Reading)

1280. (Videha Parallel History Framework)

1281. (VIII. Comparative Analysis: Kamini Kamayini and Kapileshwar Raut)

1282. (Shared Preoccupations)

1283. (Differences of Approach and Emphasis)

1284. (IX. The Navya Nyāya Lens: Epistemological Reading of Both Authors)

1285. (X. The Videha Parallel History Framework in Practice)

1286. (Kamini Kamayini through the VPHF)

1287. (Kapileshwar Raut through the VPHF)

1288. (XI. Conclusion)

1289. (XII. References and Bibliography)

1290. (Primary Sources)

1291. (Classical Indian Texts)

1292. (Secondary Sources: Indian and Maithili Literature)

1293. (Western Theory)

1294. (On Navya Nyāya)

1295. (Kedar Nath Chaudhary)

1296. (1. Biographical Profile)

1297. (2. Published Novels: An Annotated Overview)

1298. (2.1 Abara Nahitan: The Pivotal Text)

1299. (2.2 The Question of Marginalisation)

1300. (3. The Maithili Film Connection)

1301. (4.1 Rasa Theory (Bharata Muni's Natyashastra))

1302. (4.2 Dhvani and Vakrokti)

1303. (4.3 Auchitya (Propriety / Contextual Decorum))

1304. (4.4 Navarasa and Maithili Padavali Tradition)

1305. (4.5 Progressive and Marxist Criticism (Pragativad))

1306. (4.6 Dalit and Subaltern Perspectives)

1307. (4.7 Feminist and Stri-Vimarsh Criticism)

1308. (5.1 Marxist and Lukácsian Realism)

1309. (5.2 Bakhtinian Dialogism and the Novel)

1310. (5.3 Postcolonial Theory and the Subaltern)

1311. (5.4 Existentialism and Alienation)

1312. (5.5 Psychoanalytic and Lacanian Readings)

1313. (5.6 Narratology: Genette and Booth)

1314. (5.7 Postmodernism and Metafiction)

1315. (6. Synthesised Critical Assessment)

1316. (6.1 The Diaspora Novel in a Regional Language)

1317. (6.2 Female Interiority as Literary Innovation)

1318. (6.3 Mithila as Palimpsest)

1319. (6.4 The Question of the 'Kedar Nath Era')

1320. (7. Critical Voices: Scholars in Videha 352)

1321. (8. Conclusion: Towards a Fuller Critical Recognition)

1322. (A Complete Critical Research Report)

1323. (II. BIOGRAPHICAL AND SCHOLARLY CONTEXT)

1324. (2.1 The Author’s Life and Location)

1325. (2.2 The Videha Publication Ecosystem)

1326. (2.3 The Kichu Puran Gapa Kichu Nava Gapa (2005) Short-Story Collection)

1327. (2.4 Tutal Pankhi (2016): The Translation Project)

1328. (III. KHALIL GIBRAN’S BROKEN WINGS: SOURCE TEXT ANALYSIS)

1329. (3.1 Gibran and the Arabic Literary Renaissance)

1330. (3.2 Themes)

1331. (3.3 Narrative Style and Poetic Prose)

1332. (IV. TUTAL PANKHI: CLOSE READING OF THE MAITHILI TRANSLATION)

1333. (4.1 The Title and Its Maithili Resonance)

1334. (4.2 Structural Fidelity and Creative Expansion)

1335. (4.3 The Preface as Critical Act)

1336. (4.4 Language, Diction, and Register)

1337. (V. INDIAN CRITICAL FRAMEWORK: RASA, DHVANI, AND ALANKARA)

1338. (5.1 The Rasa Theory Applied to Tutal Pankhi)

1339. (5.2 Dhvani and Suggestiveness in Jha’s Translation)

1340. (5.3 Alankara: Figurative Language in Translation)

1341. (VI. NAVYA NYĀYA EPISTEMOLOGICAL FRAMEWORK: GANGESA UPADHYAYA)

1342. (6.1 Gangesa and the Mithila Intellectual Tradition)

1343. (6.2 Pratyaksa (Perception) Applied to Jha’s Literary Universe)

1344. (6.3 Anumana (Inference) and the Architecture of Plot)

1345. (6.4 Upamana (Comparison) and the Work of Translation Itself)

1346. (6.5 Shabda Pramana and the Status of Literary Translation)

1347. (VII. THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK)

1348. (7.1 What the Parallel History Framework Proposes)

1349. (7.2 Positioning Jha Within the Parallel History)

1350. (7.3 The Kichu Puran Gapa Kichu Nava Gapa in the Parallel History Context)

1351. (VIII. WESTERN LITERARY FRAMEWORKS)

1352. (8.1 Romanticism and the Gibran Tradition)

1353. (8.2 Translation Studies: Eugene Nida and Beyond)

1354. (8.3 Post-Colonial Theory and the Question of World Literature)

1355. (8.4 Structuralism and Narrative Analysis)

1356. (IX. THE MAITHILI SHORT STORY: KICHU PURAN GAPA KICHU NAVA GAPA)

1357. (9.1 The 21st-Century Maithili Short Story Context)

1358. (9.2 Thematic Analysis: Old Stories and New Stories)

1359. (9.3 Craft Elements: A Close Reading Lens)

1360. (X. SYNTHESIS: THE THREE LENSES COMPARED)

1361. (10.1 On the Translation (Tutal Pankhi))

1362. (10.2 On the Short Story Collection)

1363. (10.3 On the Author’s Position)

1364. (XI. CRITICAL EVALUATION AND ASSESSMENT)

1365. (11.1 Strengths of the Works)

1366. (11.2 Areas for Further Research)

1367. (XII. CONCLUSION)

1368. (BIBLIOGRAPHY AND REFERENCES)

1369. (Primary Sources)

1370. (Indian Classical and Philosophical Sources)

1371. (Secondary Sources: Maithili and Indian Literature)

1372. (Secondary Sources: Gibran Scholarship)

1373. (Western Literary Theory)

1374. (Navya Nyaya: Secondary Sources)

1375. (CRITICAL APPRECIATION OF THE WORKS OF)

1376. (I. BIOGRAPHICAL OVERVIEW)

1377. (II. THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK: SITUATING KARIGAR)

1378. (III. TEXTUAL ANALYSIS: KICHHU FURA GEL HAMRA (2014))

1379. (A. Structure and Thematic Architecture)

1380. (B. Poem-by-Poem Critical Analysis)

1381. (1. Aabi Gel Nav Varsh (The New Year Has Come))

1382. (2. Bantwaraa (Division / Partition))

1383. (3. Bhin Bhinauj (Separate Hearths))

1384. (4. Veer Jawan (The Brave Soldier))

1385. (5. Dahej (Dowry))

1386. (6. Desh ki Chinta (Concern for the Nation))

1387. (7. Daugal Chali Jai Gaam (Let Me Go Back to the Village))

1388. (8. Ekta Te O Chhalih (She Was the Only One))

1389. (9. Galchotaka Var (The Short-Necked Groom) [Satirical Poem])

1390. (10. Gareeb (The Poor Man))

1391. (11. Hakim Bha Galah (He Has Become an Official))

1392. (12. Hamro Jiib Diya (Give Me My Life Too) [Voice of the Unborn Girl])

1393. (13. Puraskaar Le Ke Nachoo (Dance for the Award) [Satirical Poem])

1394. (14. Panda Aa Dalaal (The Priest-Broker and the Middleman) [Satirical Poem])

1395. (15. Manukh Banab Kona? (How to Become a Human Being?))

1396. (IV. NAVYA-NYĀYA EPISTEMOLOGICAL ANALYSIS)

1397. (A. The Framework of Gaṅgeśa Upādhyāya)

1398. (B. Applying Navya-Nyaya Categories to Karigar’s Poetry)

1399. (V. RASA, DHVANI, AND VAKROKTI: INDIAN LITERARY THEORY)

1400. (A. Rasa Analysis (Bharatamuni, Abhinavagupta))

1401. (B. Dhvani Theory (Anandavardhana))

1402. (C. Vakrokti (Kuntaka))

1403. (VI. WESTERN LITERARY-CRITICAL FRAMEWORKS)

1404. (A. Marxist and Materialist Criticism)

1405. (B. Postcolonial and Subaltern Studies)

1406. (C. Bakhtin and Heteroglossia)

1407. (D. Bourdieu’s Field Theory)

1408. (E. Feminist Theory)

1409. (VII. THE MAITHILI SUBALTERN VOICE: THEMATIC SYNTHESIS)

1410. (A. Language as Political Act)

1411. (B. The Dual Register: Lyric and Satirical)

1412. (C. The Role of Humour)

1413. (VIII. KARIGAR AND THE CONTEMPORARY MAITHILI PARALLEL LITERARY MOVEMENT)

1414. (IX. ASSESSMENT: STRENGTHS, LIMITATIONS, AND SIGNIFICANCE)

1415. (A. Strengths)

1416. (B. Limitations)

1417. (C. Significance)

1418. (X. BIBLIOGRAPHY AND REFERENCES)

1419. (Primary Sources)

1420. (Indian Literary Theory)

1421. (Western Literary Theory)

1422. (Maithili Literary History and Criticism)

1423. (KUMAR PAWAN)

1424. (1. Introduction: The Writer and His Moment)

1425. (2. Summary and Textual Analysis of the Stories)

1426. (2.1 "Dāyrīk Khālī Pannā" (डायरीक खाली पन्ना) - The Empty Pages of the Diary)

1427. (2.1.1 Publication and Form)

1428. (2.1.2 Narrative Summary)

1429. (2.1.3 Thematic Architecture)

1430. (2.2 "Paiṭh" (पइठ) - The Salvation)

1431. (2.2.1 Publication and Form)

1432. (2.2.2 Narrative Summary)

1433. (2.2.3 Thematic Architecture)

1434. (3. Analysis of the Two Poems)

1435. (3.1 "Naih Bisaraicha" (निह बिसरैछ) - It Cannot Be Forgotten)

1436. (3.1.1 Text and Context)

1437. (3.1.2 Structural and Imagistic Analysis)

1438. (3.1.3 Critical Appreciation)

1439. (3.2 "Kāli tañ Ravi Chhai" (काि तँ रिव छैक) - Tomorrow is Sunday)

1440. (3.2.1 Text and Context)

1441. (3.2.2 Structural Analysis)

1442. (3.2.3 Critical Appreciation)

1443. (4. Integrated Critical Analysis: Three Frameworks)

1444. (4.1 Framework I: Western Literary Theory)

1445. (4.1.1 Mikhail Bakhtin: Polyphony, Carnival, and the Chronotope)

1446. (4.1.2 Fredric Jameson: The Political Unconscious and Symbolic Resolution)

1447. (4.1.3 Postcolonial Theory: Spivak and the Question of the Subaltern)

1448. (4.1.4 Narratology: Gérard Genette and Focalization)

1449. (4.2 Framework II: Indian Aesthetics - Rasa, Dhvani, and Vakrokti)

1450. (4.2.1 Bharatamuni's Rasa Theory)

1451. (4.2.2 Ānandavardhana's Dhvani Theory)

1452. (4.2.3 Kuntaka's Vakrokti Theory)

1453. (4.3 Framework III: Gaṅgeśa Upādhyāya's Navya-Nyāya Epistemology)

1454. (4.3.1 The Four Pramāṇas Applied to Literary Analysis)

1455. (4.3.2 Gaṅgeśa's Mithila Connection and the Intertextual Resonance)

1456. (5. Kumar Pawan in the Maithili Literary Tradition)

1457. (6. Conclusion: The Epistemology of Witness)

1458. (7. References and Sources)

1459. (7.1 Primary Texts)

1460. (7.2 Background on the Author)

1461. (7.3 Theoretical and Critical Sources)

1462. (LĀL DEV KĀMAT)

1463. (Table of Contents)

1464. (1. Biographical & Contextual Introduction)

1465. (1.1 The Author and His Milieu)

1466. (1.2 Historical-Cultural Setting: Mithilā and Its Literary Tradition)

1467. (2. Survey of the Four Works)

1468. (2.1 Vibhṛiti (विभृति, 2020))

1469. (2.2 Divya Dṛiṣṭi (दिव्य दृष्टि))

1470. (2.3 Gahiki Najari (गहिकि नजरि))

1471. (2.4 Sheṣ Jīvan (शेष जीवन))

1472. (3. Indian Critical Traditions)

1473. (3.1 Rasa Theory (Bharata's Nāṭyaśāstra))

1474. (3.2 Dhvani (Resonance) Theory: Ānandavardhana)

1475. (3.3 Alaṅkāra Tradition and Vakrokti)

1476. (3.4 Bhakti Poetics and the Maithilī Tradition of Vidyāpati)

1477. (4. Western Critical Frameworks)

1478. (4.1 New Criticism: Irony, Tension, and Organic Unity)

1479. (4.2 Structuralism and Narratology)

1480. (4.3 Postcolonial Theory: Homi Bhabha, Spivak, and Vernacular Resistance)

1481. (4.4 Phenomenology and Hermeneutics: Heidegger, Gadamer, Ricoeur)

1482. (4.5 Ecocriticism)

1483. (5. The Videha Parallel History Framework)

1484. (5.1 The Framework Defined)

1485. (5.2 Mithilā as Videha: The Geographic-Temporal Dimension)

1486. (5.3 LĀL DEV Kāmat within the Parallel History)

1487. (5.4 Videha's Archival Mission and Kamat's Texts)

1488. (6. Navya Nyāya Epistemology and Literary Analysis)

1489. (6.1 The School and Its Significance)

1490. (6.2 Core Concepts and Their Literary Applications)

1491. (6.2.1 Pramāṇa (Valid Means of Knowledge))

1492. (6.2.2 Viṣayatā (Objecthood) and the Relational Structure of Cognition)

1493. (6.2.3 Avacchedakatā (Delimitation) and Literary Specification)

1494. (6.2.4 Vyāpti (Universal Concomitance) and Thematic Analysis)

1495. (6.2.5 Anuvyavasāya (Apperceptive Meta-Cognition) and Self-Reflexive Writing)

1496. (6.3 Gaṅgeśa's Mithilā and Kamat's Mithilā: A Continuity)

1497. (7. Comparative Synthesis)

1498. (7.1 Convergences Across Frameworks)

1499. (7.2 Productive Tensions)

1500. (7.3 Kamat's Distinctive Contribution)

1501. (8. Conclusion)

1502. (Select Bibliography)

1503. (Primary Sources (Works of LĀL DEV Kāmat))

1504. (Indian Critical and Philosophical Sources)

1505. (Maithilī Literary History and Videha Framework)

1506. (Western Critical Theory)

1507. (Online and Digital Sources)

1508. (A COMPLETE CRITICAL RESEARCH &)

1509. (PART I: INTRODUCTION AND BIOGRAPHICAL OVERVIEW)

1510. (1.1 The Literary Couple of Mithila: An Overview)

1511. (1.2 Life and Career of Lallan Prasad Thakur)

1512. (1.3 Critical Reception in Brief — Lallan Prasad Thakur)

1513. (PART II: ANNOTATED BIBLIOGRAPHY OF WORKS)

1514. (2.1 Maithili Plays (Natak) — Lallan Prasad Thakur)

1515. (2.1.1 Badka Saheb (Big Sahib / The Great Sahib))

1516. (2.1.2 Mistaar Nilo Kaka (Mr. Nilo Uncle))

1517. (2.1.3 Loangia Miarchai (The Chilli of Loangia))

1518. (2.1.4 Baklel)

1519. (2.1.5 Aadi Va Ant (Beginning and End))

1520. (2.2 Maithili One-Act Plays (Ekanki))

1521. (2.3 Maithili Geet-Natika (Musical Drama / Operettas))

1522. (2.4 Songs and Lyrics (Maithili))

1523. (2.5 Hindi Plays — Lallan Prasad Thakur)

1524. (2.5.1 Sooni Sadak (The Empty Street))

1525. (2.5.2 Dam Dam Diga Diga)

1526. (2.6 Hindi One-Act Plays)

1527. (2.7 Works of Kusum Thakur)

1528. (2.7.1 Pratyavartan (Return / Restoration))

1529. (2.7.2 Chul Buli Kanya Bani Gelahuṃ (I Became a Mischievous Girl Again))

1530. (2.7.3 Abhilasha (Longing))

1531. (PART III: THEORETICAL FRAMEWORKS — THEATRE, FILM & DRAMA)

1532. (3.1 Bharata Muni's Nāṭyaśāstra: The Foundational Framework)

1533. (3.1.1 The Origin and Purpose of Drama)

1534. (3.1.2 Rasa Theory and Lallan Prasad Thakur's Plays)

1535. (3.1.3 Abhinaya: The Four Modes of Theatrical Representation)

1536. (3.2 Western Theatre Theory)

1537. (3.2.1 Bertolt Brecht: Epic Theatre and the Verfremdungseffekt)

1538. (3.2.2 Konstantin Stanislavski: The System and Psychological Realism)

1539. (3.2.3 Peter Brook: The Empty Space)

1540. (3.2.4 Augusto Boal: Theatre of the Oppressed)

1541. (3.3 Film Theory and the One-Act Maithili Film)

1542. (3.3.1 Maithili Cinema and Lallan Prasad Thakur's One-Act)

1543. (3.3.2 Siegfried Kracauer and the Reality Effect)

1544. (PART IV: INDIAN AND WESTERN CRITICAL THEORY)

1545. (4.1 Indian Critical Theory)

1546. (4.1.1 Rasa and Dhvani Applied to Lallan Prasad Thakur)

1547. (4.1.2 Abhinavagupta's Sadharanikarana and the Audience)

1548. (4.2 Western Critical Theory)

1549. (4.2.1 Mikhail Bakhtin: Carnivalesque, Heteroglossia, Dialogism)

1550. (4.2.2 Antonio Gramsci: Hegemony and the Organic Intellectual)

1551. (4.2.3 Frantz Fanon: Cultural Identity and Decolonisation)

1552. (4.2.4 Sandra Gilbert & Susan Gubar / Feminist Theory — Applied to Kusum Thakur)

1553. (PART V: THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK)

1554. (5.1 The Parallel History and Maithili Drama)

1555. (5.2 The Mailorang Cultural Institution)

1556. (5.3 Gangesh Upadhyaya and the Parallel History of Navya Nyaya)

1557. (PART VI: NAVYA NYĀYA EPISTEMOLOGY AND THE TECHNIQUE OF GAṄGEŚA UPADHYAYA)

1558. (6.1 Gangesh Upadhyaya and the Tattvachintamani)

1559. (6.2 Navya Nyaya Applied to the Critical Analysis of Drama)

1560. (6.2.1 Vyapti (Invariable Concomitance) in the Theatre of Social Reality)

1561. (6.2.2 Sabda Pramana (Verbal Testimony) and the Memoir Pratyavartan)

1562. (6.2.3 Upadhi (Limiting Condition) in the Rasa Analysis)

1563. (6.3 The Epistemological Politics of the Rachanavali)

1564. (PART VII: THEMATIC ANALYSIS)

1565. (7.1 The Village-City Divide as Central Theme)

1566. (7.2 Political Satire and the Corruption of Power)

1567. (7.3 Language as Cultural Identity)

1568. (7.4 Gender, Marriage, and Women's Subjectivity — Kusum Thakur)

1569. (PART VIII: SYNTHESIS AND CRITICAL ASSESSMENT)

1570. (8.1 Lallan Prasad Thakur's Place in Maithili Theatre History)

1571. (8.2 Kusum Thakur's Independent Contribution)

1572. (8.3 Conclusion: The Civilisational Significance)

1573. (REFERENCES AND BIBLIOGRAPHY)

1574. (Primary Texts)

1575. (Indian Critical and Philosophical Sources)

1576. (Videha Parallel History)

1577. (Western Theatre, Film, and Literary Theory)

1578. (LAXMAN JHA 'SAGAR' AND SHAIL JHA 'SAGAR')

1579. (Abstract)

1580. (1. Introduction and Background)

1581. (1.1 The Maithili Literary Landscape)

1582. (1.2 Videha e-Journal and the Parallel Tradition)

1583. (2. Biographical Profiles)

1584. (2.1 Laxman Jha 'Sagar': Life and Formation)

1585. (2.2 Shail Jha 'Sagar': Profile and Significance)

1586. (3. The Videha Literary Context and the Babu Saheb Choudhary Tradition)

1587. (4. Published Works and Genres)

1588. (4.1 Laxman Jha 'Sagar': Published Works)

1589. (4.2 Shail Jha 'Sagar': Works Presented)

1590. (5. Critical Appreciation: Indian Literary Frameworks)

1591. (5.1 Rasa Theory (Bharatamuni / Abhinavagupta))

1592. (5.2 Dhvani and Vakrokti)

1593. (5.3 Riti and the Question of Linguistic Authenticity)

1594. (6. Critical Appreciation: Western Literary Frameworks)

1595. (6.1 New Criticism and Close Reading)

1596. (6.2 Post-Colonial Theory)

1597. (6.3 Reader-Response Theory)

1598. (6.4 Feminist Theory)

1599. (7. Critical Appreciation: Navya-Nyāya Epistemology of Gangesa Upadhyaya)

1600. (7.1 Gangesa Upadhyaya and the Tattvachintamani)

1601. (7.2 Pratyakṣa (Perception) and Literary Testimony)

1602. (7.3 Anumāna (Inference) and the Social-Critical Mode)

1603. (7.4 Upamāna (Comparison/Analogy) and Intertextual Meaning)

1604. (7.5 Śabda (Testimony) and the Authority of the Interview Tradition)

1605. (7.6 The Extrinsicality Thesis and Literary Self-Correction)

1606. (8. Shail Jha 'Sagar': A Feminist Reading)

1607. (9. The Literary Partnership: Dampati Lekhak)

1608. (10. Reception and Significance)

1609. (11. Conclusion)

1610. (12. References)

1611. (Primary Sources)

1612. (Secondary Sources — Videha Special Issue)

1613. (Works on Maithili Literature and Videha)

1614. (Works on Indian Aesthetics and Philosophy)

1615. (Works on Navya-Nyāya / Gangesa Upadhyaya)

1616. (Works on Western Literary Theory)

1617. (DR. PRAFULLA KUMAR SINGH 'MAUN')

1618. (PART I: EARLY LIFE AND FORMATION)

1619. (1.1 Birth, Family, and Regional Roots)

1620. (1.2 Education and Formation of Scholarly Identity)

1621. (1.3 The Nepal Decade and Its Literary Yield (1963–1973))

1622. (1.4 Return to Mahnar and the Long Bihar Phase (1973–2014))

1623. (PART II: INTELLECTUAL PORTRAIT AND PERSONALITY)

1624. (2.1 The 'Maun' Persona: Silence as Eloquence)

1625. (2.2 Characteristic Methods of Work)

1626. (2.3 Key Relationships and Intellectual Networks)

1627. (2.4 Honours, Awards, and Recognition)

1628. (PART III: PRINCIPAL WORKS AND CREATIVE OUTPUT)

1629. (3.1 Published Books (Chronological))

1630. (3.2 Periodical Editorship)

1631. (3.3 Journalism and Essay Writing)

1632. (PART IV: PRINCIPAL AREAS OF SCHOLARLY CONTRIBUTION)

1633. (4.1 History of Maithili Literature (Nepal))

1634. (4.2 Maithili Folk Ballad (Lokgatha) Scholarship)

1635. (4.3 Tharu Cultural Documentation)

1636. (4.4 Reportage Literature (Riportaaj))

1637. (4.5 Buddhist, Jain, and Pre-Medieval Historical Studies)

1638. (PART V: PERSONAL CHARACTER AND FINAL YEARS)

1639. (5.1 Character Portrait from Witnesses)

1640. (5.2 Later Years and Death (2014))

1641. (PART I: THE REPORTAGE TRILOGY — BRAHMAGRAMA, SURJHARI, VALMIKI DESH MEIN)

1642. (1.1 Formal Characterization of the Genre)

1643. (1.1.1 Rasa Analysis)

1644. (1.1.2 Dhvani (Resonance) in Prose)

1645. (1.1.3 Vakrokti (Oblique Expression))

1646. (1.1.4 Western Generic Theory: New Journalism and the Literary Reportage Tradition)

1647. (1.2 Brahmagrama (1972): Close Critical Reading)

1648. (1.3 Valmiki Desh Mein (2005): The Nepal Journey Revisited)

1649. (PART II: MAITHILI LOKGATHA — SCHOLARSHIP AND CULTURAL POLITICS)

1650. (2.1 The Scale and Significance of the Folk Ballad Research)

1651. (2.1.1 Rasa-dhvani Analysis of Folk Ballad Heritage)

1652. (2.1.2 Structural Analysis of Ballad Form)

1653. (2.2 The Salahes Ballad: Case Study in Critical Method)

1654. (PART III: HISTORICAL SCHOLARSHIP — LITERARY HISTORY AND CULTURAL DOCUMENTATION)

1655. (3.1 Nepalak Maithili Sahityak Itihas (1972/2011))

1656. (3.2 The Cross-Border Cultural Model)

1657. (3.3 The Recovery of Buddhist and Jain Historical Layers)

1658. (PART IV: FICTION WRITING — A MINOR BUT SIGNIFICANT CORPUS)

1659. (4.1 The Short Stories: Overview)

1660. (4.1.1 Narrative Technique: The Objectivist Mode)

1661. (4.1.2 Key Story Analyses)

1662. (PART V: THE PREMCHAND TRANSLATION — CROSS-LITERARY MEDIATION)

1663. (5.1 Significance of the Translation Work)

1664. (5.2 Translation as Cultural Bridge)

1665. (PART VI: SYNTHESIS — OVERALL CRITICAL ASSESSMENT)

1666. (6.1 The Videha Parallel History Framework Assessment)

1667. (6.2 Strengths and Limitations)

1668. (6.3 The Overall Significance)

1669. (PART I: THE NAVYA-NYĀYA EPISTEMOLOGICAL FRAMEWORK)

1670. (1.1 Key Navya-Nyāya Concepts for Literary-Scholarly Analysis)

1671. (PART II: PRAMĀṆA ANALYSIS OF MAUN'S SCHOLARLY METHOD)

1672. (2.1 The Four Pramāṇas in Maun's Research Practice)

1673. (2.1.1 Pratyakṣa (Direct Perception) — The Fieldwork Pramāṇa)

1674. (2.1.2 Anumāna (Inference) — The Historical Pramāṇa)

1675. (2.1.3 Upamāna (Analogy/Comparison) — The Comparative Pramāṇa)

1676. (2.1.4 Śabda (Testimony) — The Documentary Pramāṇa)

1677. (PART III: ŚABDABODHA ANALYSIS — MAUN'S LITERARY LANGUAGE)

1678. (3.1 The Navya-Nyāya Theory of Verbal Cognition Applied to Reportage Prose)

1679. (3.1.1 Śakti (Denotative Power))

1680. (3.1.2 Ākāṅkṣā (Mutual Expectancy) and Narrative Structure)

1681. (3.1.3 Tātparya (Speaker's Intent) and Hermeneutic Depth)

1682. (PART IV: VYĀPTI ANALYSIS — THE INFERENTIAL STRUCTURE OF MAUN'S CULTURAL CLAIMS)

1683. (4.1 Key Vyāpti Structures in Maun's Scholarship)

1684. (4.2 Vyāpti-Critique: Where Maun's Inferences Are Vulnerable)

1685. (PART V: ANUVYAVASĀYA — META-COGNITIVE REFLEXIVITY IN MAUN'S SCHOLARSHIP)

1686. (5.1 The Epistemological Self-Awareness of the Mithila Historian)

1687. (5.1.1 The Insider-Outsider Position)

1688. (5.1.2 The Refusal of Nationalist Epistemology)

1689. (5.1.3 The Language of Scholarship and Its Limits)

1690. (6.1 The Epistemic Virtues in Maun's Scholarly Practice)

1691. (6.2 The Navya-Nyāya Verdict)

1692. (A Parallel History of Mithila & Maithili Literature)

1693. (Preface: Methodology)

1694. (I. Biographical Profile and Literary Formation)

1695. (II. Works: An Annotated Overview)

1696. (2.1 Breast Cancer Story (Landmark Fiction))

1697. (III. Critical Analysis through Indian Literary Theory)

1698. (3.1 Rasa Theory (Bharata / Abhinavagupta))

1699. (3.2 Dhvani Theory (Anandavardhana's Dhvanyaloka))

1700. (3.3 Vakrokti Theory (Kuntaka's Vakroktijivita, c. 10th c.))

1701. (3.4 Auchitya (Kshemendra's Auchityavicharacharchaa, c. 11th c.))

1702. (IV. Critical Analysis through Western Literary Theory)

1703. (4.1 Feminist Criticism: Gilbert, Gubar, and the Maithili Madwoman)

1704. (4.2 Helene Cixous: Ecriture Feminine)

1705. (4.3 Postcolonial Theory: Spivak and Bhabha)

1706. (4.4 Subaltern Studies: Ranajit Guha and the Counter-Archive)

1707. (4.5 Medical Humanities: Arthur Frank and the Illness Narrative)

1708. (V. Navya-Nyaya Epistemological Analysis (Gangesa Upadhyaya))

1709. (5.1 The Tattvacintamani Framework)

1710. (5.2 Pratyaksha: The Primacy of Social Observation)

1711. (5.3 Anumana and Vyapti: Inference from Social Evidence)

1712. (5.4 Shabda and the Crisis of Testimony: The Breast Cancer Story)

1713. (5.5 Upamana: Analogical Knowing in Her Critical Essays)

1714. (VI. Position within the Videha Parallel History Framework)

1715. (6.1 The Videha Parallel Tradition)

1716. (6.2 The Breast Cancer Story as Institutional Achievement)

1717. (VII. Summary Assessment)

1718. (VIII. Archival References and Sources)

1719. (MUNNAJI : A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION)

1720. (A Comprehensive Research Report Integrating Indian and Western Literary Theory, the Videha Parallel History Framework, and Navya-Nyāya Epistemology of Gaṅgeśa Upādhyāya)

1721. (PART I: BIOGRAPHICAL OVERVIEW AND LITERARY IDENTITY)

1722. (1.1 Identity: The Name and Its Significance)

1723. (1.2 The Intellectual Formation)

1724. (1.3 The Bīhani Kathā Theorist)

1725. (PART II: PRIMARY WORKS — SYSTEMATIC DESCRIPTION AND ANALYSIS)

1726. (2.1 Hum Puchhait Chhī (We Are Asking — A Series of Interviews, 2012))

1727. (2.2 Prateek (Symbol / Seed — Vihinikathā Collection, 2012))

1728. (2.3 Mājh Āṅgan Me Kaṭiāyal Chhī (Entangled in the Middle Courtyard — Ghazals and Rubā’ī, 2012))

1729. (2.4 Mokam Dis (Towards the Destination — Bīhani Kathā Collection))

1730. (2.5 Ghah: Maithili Haiku Tāṅkāk Saṅgor (Grass: A Collection of Maithili Haiku and Tanka, 2012))

1731. (2.6 Khurluchhī (Children’s Poetry Collection, 2012))

1732. (2.7 Tīntā Bāl Nāṭak (Three Children’s Plays, 2012))

1733. (PART III: CRITICAL APPRECIATION THROUGH MULTIPLE FRAMEWORKS)

1734. (3.1 Genre Theory and Munnaji’s Multi-Generic Achievement)

1735. (3.2 Indian Rasa-Dhvani Aesthetics)

1736. (3.3 The Haiku: Wabi-Sabi and Maithili Ecological Consciousness)

1737. (3.4 Western Literary Theory)

1738. (3.4.1 Russian Formalism and the Concept of Ostranenie)

1739. (3.4.2 Post-Colonial Theory: Bhabha’s Third Space)

1740. (3.4.3 Feminist Criticism: Cixous, Kristeva, and the Woman’s Voice in Munnaji’s Prose)

1741. (3.4.4 Cultural Materialism and Raymond Williams)

1742. (3.5 The Videha Parallel History Framework)

1743. (3.5.1 Munnaji’s Position in the Parallel Tradition)

1744. (3.5.2 The Bīhani Kathā as Parallel Form)

1745. (3.5.3 The Haiku and the Ancinhar Ākhar Movement)

1746. (3.6 Navya-Nyāya Epistemology: Gaṅgeśa’s Framework Applied)

1747. (3.6.1 Vihinikathā and the Logic of the Seed)

1748. (3.6.2 Pramāṇa Analysis of the Interview as Genre)

1749. (3.6.3 The Haiku and Navya-Nyāya’s Theory of Absence (Abhāva))

1750. (3.6.4 The Suppressed Gaṅgeśa and Munnaji’s Social Position)

1751. (PART IV: STRUCTURAL AND FORMAL ANALYSIS)

1752. (4.1 The Architecture of the Seed Story)

1753. (4.2 The Ghazal’s Prosodic Discipline)

1754. (4.3 The Children’s Literature: Formal Pedagogy)

1755. (PART V: ASSESSMENT AND CONCLUSION)

1756. (5.1 Munnaji’s Achievement: A Synthesis)

1757. (5.2 Convergence of Frameworks)

1758. (5.3 Significance)

1759. (REFERENCES AND BIBLIOGRAPHY)

1760. (Primary Texts)

1761. (Videha Primary Sources)

1762. (Indian Literary Theory and Aesthetics)

1763. (Western Literary Theory)

1764. (Japanese Aesthetics and Haiku Theory)

1765. (Maithili Literary History)

1766. (Online Sources)

1767. (MUNNI KAMAT)

1768. (Table of Contents)

1769. (Abstract)

1770. (I. Bio-Bibliographic Introduction: Munni Kamat in Context)

1771. (1.1 Life and Background)

1772. (1.2 Published Works: A Bibliographic Survey)

1773. (1.3 Archival and Digital Presence)

1774. (II. Textual Analysis: Major Works and Themes)

1775. (2.1 Poetry: Sukhal Man Tarsal Āṃkhi and Antatah)

1776. (2.1.1 The Title as Poetic Programme)

1777. (2.1.2 Poems of Social Protest and Gender Critique)

1778. (2.1.3 Nature Poetry and Landscape of Mithila)

1779. (2.1.4 Structure and Form in the Poetry)

1780. (2.2 Seed Stories (Bīhani Kathā / Vihaṇi Kathā))

1781. (2.2.1 The Bīhani Kathā Tradition)

1782. (2.2.2 Themes of the Seed Stories)

1783. (2.3 One-Act Plays (Ekaṅkī-Nāṭak))

1784. (2.3.1 Overview of the Plays)

1785. (2.3.2 'Pāt-pātsa banala parivār' — Family Conflict and Joint Family)

1786. (2.3.3 'Shikshit beti' — The Educated Daughter)

1787. (2.3.4 'Andhviśvās' — Superstition)

1788. (2.3.5 'Zindagi ka mol' — The Value of Life)

1789. (2.4 The Novel: Māṭik Suwas (माटिक सुवास))

1790. (III. Critical Frameworks and Theoretical Analysis)

1791. (3.1 The Nāṭyaśāstra Framework)

1792. (3.1.1 Bharata's Nāṭyaśāstra and Kamat's Dramatic Practice)

1793. (3.1.2 Dramatic Structure and Sanskrit Poetics)

1794. (3.2 Rasa-Dhvani Aesthetics)

1795. (3.2.1 Ānandavardhana's Dhvani Theory)

1796. (3.2.2 Abhinavagupta's Aesthetic Theory)

1797. (3.3 Navya-Nyāya Epistemology of Gaṅgeśa Upādhyāya)

1798. (3.3.1 Gaṅgeśa and the Tattvacintāmaṇi)

1799. (3.3.2 Applying Navya-Nyāya to Kamat's Literary Practice)

1800. (3.4 The Videha Parallel History Framework)

1801. (3.4.1 The Parallel Tradition and Institutional Critique)

1802. (3.4.2 Kamat in the Parallel Tradition)

1803. (3.4.3 The Bīhani Kathā Tradition and Videha)

1804. (3.5 Western Critical Frameworks)

1805. (3.5.1 Feminist Literary Theory)

1806. (3.5.2 Postcolonial Theory)

1807. (3.5.3 Aristotelian and Epic Theatre)

1808. (3.5.4 New Historicism and Cultural Materialism)

1809. (3.6 Theatre and Performance Theory)

1810. (3.6.1 Stanislavski and the Realist Tradition)

1811. (3.6.2 Folk and Traditional Maithili Performance Traditions)

1812. (3.6.3 Bechan Thakur and the Maithili Parallel Stage)

1813. (IV. Thematic and Ideological Analysis)

1814. (4.1 Gender, Patriarchy, and Women's Resistance)

1815. (4.2 Caste, Class, and Social Hierarchy)

1816. (4.3 The Rural-Urban Divide)

1817. (4.4 Superstition, Science, and Enlightenment)

1818. (V. Literary Significance and Critical Evaluation)

1819. (5.1 Contribution to Maithili Literature)

1820. (5.2 Relationship to Predecessors and Contemporaries)

1821. (5.3 Limitations and Areas for Further Research)

1822. (VI. Conclusion: Munni Kamat and the Democratic Future of Maithili Literature)

1823. (VII. References and Bibliography)

1824. (Primary Sources)

1825. (Secondary Sources: Indian Classical Theory)

1826. (Secondary Sources: Western Critical and Theoretical Works)

1827. (Sources on Maithili Literature and Mithila Culture)

1828. (Videha Parallel History — Key Parts Consulted)

1829. (A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)

1830. (TABLE OF CONTENTS)

1831. (I. PREFACE AND SCOPE OF THE STUDY)

1832. (II. BIOGRAPHICAL OVERVIEW)

1833. (III. THE SAMAGRA: STRUCTURE AND CONTENTS)

1834. (Prefatory Matter)

1835. (Division I: Prose — Interviews (Sakshatkaar))

1836. (Division II: Prose — Essays (Aalekh))

1837. (Division III: Prose — Stories (Katha))

1838. (Division IV: Poetry (Padya))

1839. (Appendix)

1840. (IV. ANALYSIS OF INTERVIEWS (SAKSHATKAAR))

1841. (The Kishorikant Mishra Interview)

1842. (The Ramlochan Thakur Interview)

1843. (The Virendra Mallick Interview)

1844. (V. ANALYSIS OF ESSAYS (AALEKH))

1845. (V.A Essays on Literary Personalities)

1846. (Hamra Najorimi: Shri Ramlochan Thakur)

1847. (Yugpurush: Shri Rajanandan Lal Das)

1848. (Mithila-Maithilik Prabal Pakshdhara: Prof. Prabodh Babu)

1849. (Sarvaguna Sampanna Sagarji)

1850. (Pitambar Pathak and Babu Saheb Choudhary)

1851. (V.B Essays on Institutional History)

1852. (V.C Essays on Maithili Theatre)

1853. (VI. ANALYSIS OF STORIES (KATHA))

1854. (Ehno Hoit Chhai (This Also Happens))

1855. (Ekata Pakal Aam (A Ripe Mango))

1856. (Yatraak Feri (Journey's Round Trip))

1857. (Yugadharma (The Dharma of the Age))

1858. (Ghamandak Phal (The Fruit of Arrogance))

1859. (Kaalachakra, Aadarsh Vivah, and Sundar-Sanyog)

1860. (VII. ANALYSIS OF POETRY (PADYA))

1861. (Nav Varshaak Sandarbh Me (In the Context of the New Year))

1862. (Prithviik Bhaar (The Weight of the Earth))

1863. (Navageet (New Song) and Bidambanaa (Irony/Predicament))

1864. (Anant Yatraak Yaatri (The Traveller of the Infinite Journey))

1865. (Sahaityaik Diip (A Literary Lamp), Shraddhanjali (Tribute), and Bhagwati Vandanaa (Devotional Hymn))

1866. (Phagua and Phaguak Premopahaar (Holi Poems))

1867. (VIII. NARRATIVE CRAFT AND STYLISTIC FEATURES)

1868. (1. The Witness Voice)

1869. (2. Chronological Discipline)

1870. (3. Oral Register)

1871. (4. Ethical Seriousness)

1872. (5. Institutional Consciousness)

1873. (6. Elegy as Dominant Mode)

1874. (IX. WESTERN CRITICAL PERSPECTIVES)

1875. (IX.A New Criticism and Formalism)

1876. (IX.B Structuralism and Narratology)

1877. (IX.C Postcolonial and Subaltern Theory)

1878. (IX.D Marxist and Sociological Criticism)

1879. (X. INDIAN CRITICAL PERSPECTIVES)

1880. (X.A Rasa Theory (Bharata and Abhinavagupta))

1881. (X.B Dhvani Theory (Anandavardhana))

1882. (X.C The Navya Nyaya Epistemological Framework of Gangesa Upadhyaya)

1883. (Pratyaksha (Perception) Applied to Mishra)

1884. (Anumana (Inference) Applied to Mishra)

1885. (Upamana (Comparison) Applied to Mishra)

1886. (Shabda (Testimony) Applied to Mishra)

1887. (The Visheshana-Visheshya (Qualifier-Qualificand) Structure in Mishra's Characters)

1888. (XI. NABO NARAYAN MISHRA IN THE MAITHILI LITERARY CONTEXT)

1889. (XII. CRITICAL ASSESSMENT: STRENGTHS AND LIMITATIONS)

1890. (Strengths)

1891. (Limitations)

1892. (XIII. CONCLUSION)

1893. (XIV. REFERENCES AND BIBLIOGRAPHY)

1894. (Primary Source)

1895. (Essays and Interviews in the Samagra (by Section))

1896. (Contextual and Secondary Sources)

1897. (Indian Critical Theory)

1898. (Western Critical Theory)

1899. (Reference on Maithili Literature and Culture)

1900. (A Complete Research & Critical Appreciation of the Works of)

1901. (I. INTRODUCTION)

1902. (II. BIOGRAPHICAL & SCHOLARLY CONTEXT)

1903. (2.1 Formation and Education)

1904. (2.2 Literary Output: Overview)

1905. (2.3 Awards and Honours)

1906. (III. THE DRAMATIC WORKS: SURVEY AND ANALYSIS)

1907. (3.1 The Playwright’s Arc: Twelve Plays Across Four Decades)

1908. (3.2 Nayakak Nam Jivan (1971): The Hero is Life)

1909. (3.3 Ek Chhal Raja (1974): There Was a King)

1910. (3.4 Natak Ka Lel (1974): For a Play / For the Sake of Drama)

1911. (3.5 Pratyavartan (1976): The Return)

1912. (3.6 Andolan (1977): The Movement)

1913. (3.7 Ramlila (1977): The Ramlila)

1914. (3.8 Janak a Anya Ekankee (1978): Janak and Other One-Acts)

1915. (3.9 Priyamvada (1988): The One Who Speaks Pleasingly)

1916. (3.10 No Entry: Ma Pravish (2008): The Landmark Play)

1917. (IV. THE POETIC WORKS)

1918. (4.1 Poetry Collections: Chronological Survey)

1919. (4.2 Kavayo Vadanti (1966): Seers Speak)

1920. (4.3 Madhyampurush Ekvachan (2005): Second Person Singular)

1921. (4.4 Jahalak Diary (2015): The Sahitya Akademi Award-Winning Collection)

1922. (V. ANALYTICAL FRAMEWORK I: BHARATA’S NATYASHASTRA)

1923. (5.1 Introduction: The Natyashastra and Its Relevance)

1924. (5.2 The Rasa Framework Applied to Nachiketa’s Drama)

1925. (5.3 The Four Vrittis in Nachiketa’s Drama)

1926. (5.4 Lokadharmi and Natyadharmi)

1927. (5.5 The Sutradhara Function)

1928. (VI. ANALYTICAL FRAMEWORK II: CLASSICAL INDIAN AESTHETICS)

1929. (6.1 Rasa Theory: Beyond the Natyashastra)

1930. (6.2 Dhvani and the Poetics of Suggestion)

1931. (6.3 Vakrokti and the Poetics of Obliqueness)

1932. (VII. ANALYTICAL FRAMEWORK III: NAVYA NYAYA EPISTEMOLOGY)

1933. (7.1 Gangesa Upadhyaya and the Mithila Intellectual Tradition)

1934. (7.2 Pratyaksha (Perception) and the Literary Text)

1935. (7.3 Anumana (Inference) and Dramatic Structure)

1936. (7.4 Shabda Pramana and the Authority of the Literary Text)

1937. (VIII. ANALYTICAL FRAMEWORK IV: WESTERN DRAMA & THEATRE THEORY)

1938. (8.1 Aristotle: Mimesis, Catharsis, and the Maithili Stage)

1939. (8.2 Brecht: Verfremdungseffekt and Political Theatre)

1940. (8.3 Antonin Artaud: Theatre of Cruelty and Total Theatre)

1941. (8.4 Grotowski: Poor Theatre and the Essence of Performance)

1942. (8.5 Peter Brook: The Empty Space)

1943. (IX. THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK)

1944. (9.1 Framework Overview)

1945. (9.2 Nachiketa in the Parallel History)

1946. (9.3 The Mithila Darshan Connection)

1947. (X. THEMATIC ANALYSIS)

1948. (10.1 Language as Theme and Medium)

1949. (10.2 Political Resistance and Cultural Rights)

1950. (10.3 The Myth-Reality Dialectic)

1951. (10.4 Diaspora and Belonging)

1952. (10.5 Gender and the Question of Voice)

1953. (XI. CRITICAL EVALUATION)

1954. (11.1 Achievements)

1955. (11.2 Areas for Deeper Research)

1956. (XII. CONCLUSION)

1957. (BIBLIOGRAPHY AND REFERENCES)

1958. (I. Primary Sources: Works of Nachiketa)

1959. (Drama (Maithili))

1960. (Poetry (Maithili))

1961. (Poetry (English Translation))

1962. (Poetry (Bengali))

1963. (Translations and Academic Books)

1964. (II. Journals and Periodicals)

1965. (III. Indian Classical Aesthetics and Dramaturgy)

1966. (IV. Navya Nyaya: Sources)

1967. (V. Videha Parallel History Framework)

1968. (VI. Western Theatre Theory)

1969. (VII. Secondary Sources)

1970. (A Complete Critical Research & Appreciation)

1971. (Abstract)

1972. (Table of Contents)

1973. (I. The Videha Parallel History Framework: Institutional Context)

1974. (II. Biographical Introduction: Nand Kumar Mishra 'Nand')

1975. (III. Survey of the Twelve Works: Genre, Publisher, Chronology)

1976. (IV. Theoretical Framework I — Indian Literary Criticism)

1977. (4.1 Rasa Theory: Bharatamuni to Abhinavagupta)

1978. (4.2 Dhvani Theory: Anandavardhana)

1979. (4.3 Vakrokti and Aucitya: Kuntaka and Kshemendra)

1980. (4.4 Modern Indian Criticism)

1981. (V. Theoretical Framework II — Western Literary Theory)

1982. (5.1 Aristotle: Mimesis, Catharsis, Unity of Action)

1983. (5.2 Romanticism and the Novel of Feeling)

1984. (5.3 New Criticism: Empson, Brooks, the Well-Wrought Urn)

1985. (5.4 Formalism and Narratology: Jakobson, Propp, Genette)

1986. (5.5 Post-Structuralism: Derrida, Barthes, Foucault)

1987. (5.6 Postcolonial Theory: Spivak, Bhabha, Said)

1988. (5.7 Feminist Theory: Beauvoir, Butler, Irigaray)

1989. (VI. Theoretical Framework III — Navya-Nyāya as Literary Epistemology)

1990. (6.1 Gaṅgeśa Upādhyāya and the Tattvacintāmaṇi)

1991. (6.2 The Four Pramāṇas Applied to Literary Criticism)

1992. (VII. Critical Appreciation: The Social Novels (Anthiya Kukur & Sukanya))

1993. (7.1 Anthiya Kukur (2011) — The Solitary Hound)

1994. (7.2 Sukanya (2019) — The Novel's Mythological-Social Intersection)

1995. (VIII. Critical Appreciation: The Mythological Works (Kaikeyi & Sujata))

1996. (8.1 Kaikeyi — Reimagining the Rāmāyaṇa's Villain)

1997. (8.2 Sujata — Buddhist Compassion and the Female Witness)

1998. (IX. Critical Appreciation: Parivar — The Memoiristic Novel)

1999. (X. Critical Appreciation: Short Fiction (Adambar & Gudrik Lal))

2000. (10.1 Adambar (2017) — The Short Story Collection)

2001. (10.2 Gudrik Lal — The Village Novel)

2002. (XI. Critical Appreciation: The Literary Sketch (Yachak ke Nai & Dillik Park))

2003. (11.1 Dillik Park (2018) — The Delhi Observational Sketches)

2004. (11.2 Yachak ke Nai (2022) — The Literary Sketch at Its Most Self-Aware)

2005. (XII. Critical Appreciation: The Poetry (Kavya Sarita))

2006. (XIII. Critical Appreciation: Children's Literature (Swarn Kamal))

2007. (XIV. Critical Appreciation: Village Memory (Gaamghar))

2008. (XV. Themes, Language, and Prosody Across the Corpus)

2009. (15.1 Recurring Themes)

2010. (15.2 Language)

2011. (15.3 Prosody and Form)

2012. (XVI. Comparative Placement within Maithili Literary History)

2013. (XVII. Conclusion)

2014. (XVIII. References and Bibliography)

2015. (A. Primary Texts by Nand Kumar Mishra 'Nand' (all published by Gosauni Baidyanath Smriti Manch, Uphardaha, Darbhanga, Bihar 847233))

2016. (B. Videha Parallel History Sources)

2017. (C. Indian Literary Theory)

2018. (D. Navya-Nyāya Sources)

2019. (E. Western Literary Theory)

2020. (F. Maithili Literary History and Criticism)

2021. (G. Secondary Web Sources)

2022. (A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)

2023. (Abstract)

2024. (I. Biographical and Contextual Introduction)

2025. (1.1 Life and Background)

2026. (1.2 The Videha Parallel Literature Movement: Framework for Situating Roy)

2027. (II. The Corpus: Works, Forms, and Publication History)

2028. (2.1 The Short Story Collections)

2029. (2.2 The Poetry Collections)

2030. (2.3 The Bīhani Kathā Form)

2031. (III. Thematic Analysis)

2032. (3.1 Caste, Class, and Social Discrimination)

2033. (3.2 Women, Patriarchy, and Agency)

2034. (3.3 Migration, Displacement, and the Rural-Urban Fracture)

2035. (3.4 Authenticity (Assal) as Ethical Concept)

2036. (IV. Formal and Structural Analysis)

2037. (4.1 Narrative Structure and the 'Seed Logic' of the Bīhani Kathā)

2038. (4.2 Language, Register, and Linguistic Politics)

2039. (4.3 The Titles as Para-textual Meaning Generators)

2040. (V. Application of Critical Frameworks)

2041. (5.1 Indian Classical Theories)

2042. (5.1.1 Rasa Theory (Bharata, Abhinavagupta))

2043. (5.1.2 Dhvani Theory (Ānandavardhana))

2044. (5.1.3 Vakrokti Theory (Kuntaka))

2045. (5.2 Western Critical Theories)

2046. (5.2.1 Marxist Literary Criticism (Lukács, Eagleton, Williams))

2047. (5.2.2 New Criticism: Close Reading and Organic Form)

2048. (5.2.3 Postcolonial and Subaltern Studies (Spivak, Bhabha, Guha))

2049. (5.2.4 Feminist and Gender Theory (Beauvoir, Butler, Mohanty))

2050. (5.3 The Videha Parallel History Framework)

2051. (5.4 Navya-Nyāya Epistemology: Gaṅgeśa's Analytical Technique Applied to Literary Criticism)

2052. (5.4.1 Pramāṇa and the Validity of Literary Knowledge)

2053. (5.4.2 Avacchedaka (Limitor) and Literary Specificity)

2054. (5.4.3 Vyāpti (Pervasion) and Thematic Analysis)

2055. (5.4.4 Savikalpaka / Nirvikalpaka and Degrees of Critical Interpretation)

2056. (VI. Comparative Positioning in Maithili Literary History)

2057. (6.1 Roy and Harimohan Jha)

2058. (6.2 Roy and Jagdish Prasad Mandal)

2059. (6.3 Roy and the Bīhani Kathā Tradition)

2060. (VII. Evaluation and Conclusion)

2061. (7.1 Strengths)

2062. (7.2 Critical Reservations)

2063. (7.3 Conclusion)

2064. (References and Bibliography)

2065. (Primary Sources: Works of Nand Vilas Roy)

2066. (Videha Parallel History and Digital Sources)

2067. (Indian Classical Criticism)

2068. (Navya-Nyāya Sources)

2069. (Western Literary Theory)

2070. (Contextual and Sociological Sources)

2071. (NARAYANJI CHAUDHARY)

2072. (1. Introduction and Context)

2073. (2. Biographical Profile)

2074. (2.1 Early Career and Formative Experience)

2075. (3. The Talab Bachao Abhiyan: Origins, Methods, and Scope)

2076. (3.1 Methods of Intervention)

2077. (3.2 Key Achievements)

2078. (4. The Ecological Crisis: Ponds of Mithila in Historical Perspective)

2079. (5. Critical Appreciation: Significance, Strengths, and Limitations)

2080. (5.1 The Significance of the Man and the Movement)

2081. (5.2 Strengths of the Movement)

2082. (5.3 Limitations and Challenges: A Candid Assessment)

2083. (6. The Videha Visheshank: Structure, Contributors, and Editorial Significance)

2084. (6.1 Contributors and Their Perspectives)

2085. (7. National and Comparative Significance)

2086. (8. Conclusion)

2087. (9. References)

2088. (Primary Sources)

2089. (Secondary Sources — Web and News Media)

2090. (NARENDRA JHA & PANNA JHA)

2091. (1. Biographical Context)

2092. (1.1 Narendra Jha (1934–2024))

2093. (1.2 Panna Jha (1946–2024))

2094. (2. Complete Bibliography)

2095. (2.1 Works of Narendra Jha)

2096. (2.1.1 Mithilak Arthik Vikas (2000))

2097. (2.1.2 Mithilak Janapadiya Vikas (2005))

2098. (2.1.3 Mithila me Jal-Sansadhan O Prabandhan (2006))

2099. (2.1.4 Vikas O Arthtantra (2008))

2100. (2.1.5 Paribhraman (2012))

2101. (2.1.6 Arthtantra O Bhrashtachar (2012))

2102. (2.1.7 Smriti (2013))

2103. (2.1.8 Mithila Rising (2014))

2104. (2.1.9 Chapal Charan Chit Chanchal Bhan (2021))

2105. (2.2 Works of Panna Jha)

2106. (2.2.1 Psycho Social Stress and Schizophrenia (2003))

2107. (2.2.2 Anubhuti (2009 / 2010))

2108. (2.2.3 Anusheelan (2012))

2109. (2.2.4 Abhilasha (2021))

2110. (3. Narendra Jha: Analytical Study)

2111. (3.1 The Pioneer of Economic Writing in Maithili)

2112. (3.2 Thematic Architecture Across the Economic Books)

2113. (3.2.1 Land, Geology, and Agricultural Decline)

2114. (3.2.2 Rivers: The Core Structural Problem)

2115. (3.2.3 Industries and Infrastructure)

2116. (3.2.4 Corruption as Structural Underdevelopment)

2117. (3.2.5 The Statehood Argument)

2118. (3.3 Style and Method)

2119. (4. Mithila Rising (2014) & VIDEHA ISSUE 395; A Close Reading)

2120. (4.1 Preface: The Tone of Wounded Dignity)

2121. (4.2 Introduction: History as Argument)

2122. (4.3 Agricultural and Industrial Chapters: Empirical Core)

2123. (4.4 Statehood Chapter: The Political Climax)

2124. (5. Panna Jha: Analytical Study)

2125. (5.1 The Psychologist-Author: A Distinctive Voice)

2126. (5.2 Anubhuti (2009/2010): Short Story Collection)

2127. (5.2.1 Structure and Scope)

2128. (5.2.2 Thematic Analysis)

2129. (5.2.3 Narrative Technique)

2130. (5.3 Anusheelan (2012): Essay Collection)

2131. (5.3.1 Structure and Intellectual Ambition)

2132. (5.3.2 Feminist Literary Criticism)

2133. (5.3.3 Psychological and Social Essays)

2134. (5.3.4 Literary and Cultural Essays)

2135. (5.4 Abhilasha (2021): Short Story Collection)

2136. (5.4.1 Evolution from Anubhuti)

2137. (5.4.2 The Opening Story: Gayatri, Shipra, Shruti)

2138. (6. Critical Perspectives: Indian and Western Frameworks)

2139. (6.1 Indian Critical Frameworks)

2140. (6.1.1 Sahitya Shastra and the Rasa Tradition)

2141. (6.1.2 Postcolonial Indian Criticism and the ‘Samanantar Parampara’)

2142. (6.1.3 Subaltern Studies and Internal Colonialism)

2143. (6.1.4 Indian Feminist Literary Theory)

2144. (6.2 Western Critical Frameworks)

2145. (6.2.1 Gramsci’s Organic Intellectualism)

2146. (6.2.2 Amartya Sen’s Capabilities Approach)

2147. (6.2.3 Postcolonial Theory: Beyond Eurocentrism)

2148. (6.2.4 Ecofeminism and Water Politics)

2149. (6.2.5 Psychoanalytic Literary Criticism)

2150. (6.2.6 Narrative Theory: Form and Realism)

2151. (7. The Dampati Lekhaka (Couple-Writers) Tradition)

2152. (8. Critical Reception)

2153. (8.1 Reception of Narendra Jha)

2154. (8.2 Reception of Panna Jha)

2155. (9. Synthesis: Strengths, Limitations, and Legacy)

2156. (9.1 Narendra Jha: Assessment)

2157. (Strengths)

2158. (Limitations)

2159. (9.2 Panna Jha: Assessment)

2160. (Strengths)

2161. (Limitations)

2162. (9.3 Legacy)

2163. (10. References)

2164. (Primary Sources: Narendra Jha)

2165. (Primary Sources: Panna Jha)

2166. (Primary Sources: Videha Special Number)

2167. (Secondary and Reference Sources: Indian)

2168. (Secondary and Reference Sources: Western)

2169. (A Critical Compendium of Nine Contemporary Maithili Voices)

2170. (Preface: Methodological Framework)

2171. (Lal Rang Chahait Achhi Roti (लाल रंग चाहैत अछि रोटी) — Poetry Anthology, 2023)

2172. (Bibliographic Details)

2173. (Overview and Genre)

2174. (Thematic Architecture)

2175. (The Poems on Womanhood)

2176. (Stylistics and Language)

2177. (Critical Assessment)

2178. (Pandit Bal Govind 'Arya' Varna Prakarana Bhashya-Bhumika/ Non-Fiction as a Mode of Cultural Memory)

2179. (Bibliographic Details)

2180. (Nature of the Text)

2181. (Place in Maithili Grammatical Tradition)

2182. (Analytical Framework: Navya Nyaya and the Grammar of Knowing)

2183. (Technical Assessment)

2184. (Critical Assessment)

2185. (Rameshwar Prasad Mandal — Baukee (Novel) & Bagwar (Kavyadhara))

2186. (Baukee (बौकी) — Maithili Novel, 2024)

2187. (Bibliographic Details)

2188. (Plot and Narrative Structure)

2189. (Thematic Analysis)

2190. (Navya Nyaya Analysis of the Central Trope)

2191. (Narrative Craft)

2192. (Critical Assessment)

2193. (Bagwar (बगवार) — Maithili Kavyadhara (Narrative Poetry Stream), 2023)

2194. (Bibliographic Details)

2195. (Genre: The Kavyadhara)

2196. (Thematic and Structural Analysis)

2197. (Rasa Analysis)

2198. (Critical Assessment)

2199. (Ram Chandra Roy — Sapna Sakar (सपना साकार))

2200. (Bibliographic Details)

2201. (Authorial Context)

2202. (Content and Genre)

2203. (Narratological Analysis)

2204. (Feminist Analysis)

2205. (Critical Assessment)

2206. (Bibliographic Details)

2207. (Genre: Smaranatmak Lekha)

2208. (Historical and Ideological Significance)

2209. (Postcolonial Analysis)

2210. (Literary and Stylistic Analysis)

2211. (Critical Assessment)

2212. (IX)

2213. (Jhauli Paswan — Akshay Patra (अक्षय पात्र))

2214. (Bibliographic Details)

2215. (Authorial Significance)

2216. (Title and Epigraph)

2217. (Thematic Structure)

2218. (Critical Analysis Through Multiple Frameworks)

2219. (Linguistic Analysis)

2220. (Critical Assessment)

2221. (Comparative Analysis and Synthesis)

2222. (The Pallavi Publication Series as a Literary Ecosystem)

2223. (The Question of Genre)

2224. (Rasa and Social Consciousness)

2225. (Navya Nyaya as Critical Metalanguage)

2226. (The Videha Framework and Literary Justice)

2227. (Select Bibliography and References)

2228. (Primary Texts (Pallavi Publication Series))

2229. (Indian Classical Criticism)

2230. (Western Critical Theory)

2231. (Navya Nyaya)

2232. (Videha and Maithili Parallel Tradition)

2233. (THREE VOICES OF THE MAITHILI GHAZAL)

2234. (Table of Contents)

2235. (1. Introduction: The Anchinhar Akhar Era of Maithili Ghazal)

2236. (2. Historical Context: The Maithili Ghazal Tradition)

2237. (3. The Videha-Anchinhar Platform: A Parallel Literary Revolution)

2238. (4. The Ghazal as Literary Form: Technical Framework)

2239. (4.1 Arabic-Persian Prosody and Maithili Adaptation)

2240. (4.2 Gajendra Thakur's Sarala Varnik Bahar System)

2241. (4.3 The Makta, Matla, Radif, Kafiya: Technical Vocabulary)

2242. (5. Om Prakash Jha: Kiyo Bujhi Nai Sakal Hamara)

2243. (5.1 Biographical Context)

2244. (5.2 Thematic Analysis)

2245. (5.3 Technical Achievement)

2246. (5.4 Close Reading of Selected Ghazals)

2247. (5.5 The Rubai and Kata Forms)

2248. (6. Amit Mishra: Nav Anshu)

2249. (6.1 Biographical Context)

2250. (6.2 Thematic Analysis)

2251. (6.3 Technical Achievement)

2252. (6.4 Close Reading of Selected Ghazals)

2253. (7. Chandan Kumar Jha: Monak Baat)

2254. (7.1 Biographical Context)

2255. (7.2 Thematic Analysis)

2256. (7.3 Technical Achievement: Baal Ghazal and Generic Innovation)

2257. (7.4 Close Reading of Selected Ghazals)

2258. (8. Indian Literary Theory Applied to the Ghazal)

2259. (8.1 Rasa Theory (Bharata Muni's Natyashastra))

2260. (8.2 Dhvani Theory (Anandavardhana))

2261. (8.3 Vakrokti (Kuntaka) and the Oblique Voice)

2262. (8.4 Reeti Theory and the Register of Ghazal)

2263. (9. Western Literary Theories)

2264. (9.1 Lyric Theory and the Confessional Mode)

2265. (9.2 Intertextuality (Kristeva, Bakhtin))

2266. (9.3 Postcolonial Theory: Language Politics and Ghazal)

2267. (9.4 New Criticism: Paradox, Tension, and the Sher)

2268. (9.5 Reader-Response Theory (Iser, Fish))

2269. (10. The Videha Parallel History Framework)

2270. (11. Navya Nyaya Epistemology Applied to Ghazal)

2271. (11.1 Pramana in Poetic Cognition)

2272. (11.2 Vyapti and the Logic of the Sher)

2273. (11.3 Shabda Pramana and the Radif-Kafiya System)

2274. (11.4 Gaṅgeśa's Tatparya and the Ghazal's Multiple Meanings)

2275. (12. Comparative Analysis of the Three Poets)

2276. (13. Thematic Synthesis)

2277. (a. Love as the Ground of All Other Themes)

2278. (b. Digital Modernity and Traditional Form)

2279. (c. Community and Individuality)

2280. (d. The Mithila Diaspora Experience)

2281. (14. Conclusion and Critical Assessment)

2282. (15. Bibliography and References)

2283. (Primary Sources)

2284. (Indian Classical Sources)

2285. (Ghazal Theory and History)

2286. (Western Literary Theory)

2287. (Secondary Sources on Maithili Literature)

2288. (Online Resources)

2289. (COMPLETE CRITICAL APPRECIATION)

2290. (I. BIOGRAPHICAL PROFILE)

2291. (A. Origins and Formation)

2292. (B. Family and Location)

2293. (C. Videha Archive Presence)

2294. (II. WORKS: ANNOTATED CATALOGUE)

2295. (A. Ghazal Collection)

2296. (B. Videha Contributions: Prose and Critical Essays)

2297. (C. Rubaīyāt)

2298. (III. FORMAL ANALYSIS: GHAZAL CRAFT IN MONAK DEHAIRPAR)

2299. (A. The Maithili Ghazal: Brief Genealogy)

2300. (B. Bahr (Prosodic Analysis))

2301. (C. The Radif and Rhyme System)

2302. (IV. THEMATIC ANALYSIS: THE GHAZAL UNIVERSE)

2303. (A. Social Protest and Political Satire)

2304. (B. Migration, Urban Alienation and the Delhi Experience)

2305. (C. Love, Betrayal and the Ghazal's Classical Register)

2306. (D. Cultural Erosion and the Village)

2307. (E. The Poet's Self-Reflection: Art and Commitment)

2308. (V. THEORETICAL FRAMEWORKS)

2309. (A. Rasa-Dhvani Analysis)

2310. (B. Vakrokti and Auchitya)

2311. (C. Navya-Nyāya and Śabda-Pramāṇa)

2312. (D. Videha Parallel History Framework)

2313. (E. Western Critical Frameworks)

2314. (VI. CRITICAL SYNTHESIS)

2315. (VII. SELECT BIBLIOGRAPHY)

2316. (Primary Sources)

2317. (Videha Sources)

2318. (Indian Literary Theory)

2319. (Western Theory)

2320. (I. CLOSE READING: TEN GHAZALS)

2321. (EDITORIAL INTRODUCTION)

2322. (GHAZAL 1)

2323. (GHAZAL 2)

2324. (GHAZAL 3)

2325. (GHAZAL 6)

2326. (GHAZAL 8)

2327. (GHAZAL 9)

2328. (GHAZAL 10)

2329. (II. GLOSSARY OF GHAZAL TECHNICAL TERMS)

2330. (A COMPLETE CRITICAL RESEARCH & CRITICAL APPRECIATION)

2331. (1.1 Who is Preeti Thakur?)

2332. (1.2 The Literary and Cultural Ecology)

2333. (1.3 Preeti Thakur: Key Firsts in Maithili Literature)

2334. (2.1 Gonu Jha Aan Maithili Chitrakatha (2008))

2335. (2.2 Maithili Chitrakatha (2009))

2336. (2.3 Mithilak Lokdevata)

2337. (2.4 Vidyapatik Purusha Pariksha (2012, 2022))

2338. (2.5 Mithilak Lokdevta (Folk Deities of Mithila))

2339. (2.6 Archival Contribution: 11,000 Palm-Leaf Panji Inscriptions)

2340. (PART III: CRITICAL RECEPTION AND TESTIMONIALS)

2341. (3.1 Dr. Shefalika Verma — “Preeti Thakur's Gonu Jha and Other Maithili Picture Stories”)

2342. (3.2 Prof. Veena Thakur — “Gonu Jha and Other Maithili Picture Stories”)

2343. (3.3 Dr. Raman Jha — ‘Gonu Jha Aan Maithili Chitrakatha’ and ‘Maithili Chitrakatha’)

2344. (3.4 Shiv Kumar Jha ‘Tillu’ — Multiple Reviews)

2345. (3.5 Dhirendra Kumar — “A Glance at Both of Preeti Thakur's Picture Story Books”)

2346. (3.6 Durganand Mandal — “Beautiful Picture Stories for Children”)

2347. (3.7 Munni Kamat — “A Proficient Writer of the Child's Mind”)

2348. (3.8 Ira Mallick — “Preeti Thakur's Contribution to Maithili Picture Stories”)

2349. (3.9 Ashish Anchinhar — “The Early History of Maithili Picture Stories (2002–2016)”)

2350. (PART IV: THEORETICAL FRAMEWORKS AND CRITICAL ANALYSIS)

2351. (4.1 The Videha Parallel History Framework)

2352. (4.2 Indian Literary Theory: Rasa, Dhvani, and Chitrakatha)

2353. (4.2.1 Rasa Theory (Bharata Muni, Natyashastra; Abhinavagupta, Abhinavabharati))

2354. (4.2.2 Dhvani Theory (Anandavardhana, Dhvanyaloka))

2355. (4.2.3 Vakrokti Theory (Kuntaka, Vakroktijivita))

2356. (4.3 Western Literary Theory)

2357. (4.3.1 Feminist Literary Criticism (Elaine Showalter, Sandra Gilbert & Susan Gubar))

2358. (4.3.2 Postcolonial Theory (Homi Bhabha, Gayatri Spivak))

2359. (4.3.3 Reader-Response Theory (Wolfgang Iser, Hans Robert Jauss))

2360. (4.3.4 Mikhail Bakhtin: Dialogism, Heteroglossia, and Carnivalesque)

2361. (4.4 Theories of Children's Literature)

2362. (4.4.1 The Developmental Framework (Jean Piaget, L. S. Vygotsky))

2363. (4.4.2 Roderick McGillis and the Ideology of Children's Literature)

2364. (4.4.3 Maria Nikolajeva on Visual-Verbal Dynamics)

2365. (4.4.4 The Oral Tradition and Children's Literature)

2366. (4.5 Navya Nyāya Epistemology: The Technique of Gaṅgeśa Upadhyaya)

2367. (4.5.1 Gangesh Upadhyaya and Tattvachintamani)

2368. (4.5.2 Applying Navya Nyāya Epistemological Categories to Preeti Thakur's Work)

2369. (4.5.3 The Epistemological Politics of the Panji Archive)

2370. (PART V: THEMATIC ANALYSIS OF PREETI THAKUR'S LITERARY CORPUS)

2371. (5.1 The Folk Hero as Counter-Canon)

2372. (5.2 Gender and the Maithili Children's Literary Space)

2373. (5.3 The Pedagogy of Imagination and Constructivist Learning)

2374. (5.4 The Medieval-Modern Bridge: Vidyapatik Purusha Pariksha)

2375. (PART VI: SYNTHESIS AND CRITICAL ASSESSMENT)

2376. (6.1 Preeti Thakur in the Parallel History Framework)

2377. (6.2 The Problem of Institutional Invisibility)

2378. (6.3 Formal Achievement: The Chitrakatha as Literary Form)

2379. (6.4 Conclusion: The Civilisational Significance of Preeti Thakur's Work)

2380. (Primary Texts by Preeti Thakur)

2381. (Critical Volumes on Preeti Thakur)

2382. (Videha Parallel History)

2383. (Indian Critical and Philosophical Sources)

2384. (Western Literary Theory)

2385. (Children's Literature Theory)

2386. (Maithili Literary History and Context)

2387. (1. Biographical Overview)

2388. (1.1 Personal Details)

2389. (1.2 Education)

2390. (1.3 Professional Career)

2391. (2. Theatre Career)

2392. (2.1 Early Years and Path to the Stage)

2393. (2.2 Radio Theatre)

2394. (2.3 Stage Theatre)

2395. (Plays by Sudhanshu Shekhar Chaudhary)

2396. (Plays by Prof. Harimohan Jha)

2397. (Plays by Govind Jha)

2398. (Other Playwrights)

2399. (2.4 Television Work)

2400. (2.5 Film Career)

2401. (Maithili Films)

2402. (Hindi Films)

2403. (Bhojpuri Films)

2404. (2.6 Institutions and the Architecture of Maithili Theatre)

2405. (3. Literary Works)

2406. (3.1 Published Books)

2407. (3.2 Critical Notes on Her Books)

2408. (Shekhar Prasang (शेखर प्रसंग))

2409. (O Din O Pal (ओ दिन ओ पल))

2410. (The Memoir 'O Din O Pal': A Literary Landmark)

2411. (Ego Valik Sineh (एगो वलीह् सिनेह्))

2412. (3.3 Editorial Work)

2413. (4. National Recognition: Sangeet Natak Akademi Award 2022)

2414. (5. Institutional Affiliations)

2415. (6. Awards and Honours — Complete Record)

2416. (7. Critical and Scholarly Assessment)

2417. (7.1 As Pioneer of Maithili Women's Theatre)

2418. (7.2 Gajendra Thakur's Extended Critical Essay)

2419. (7.3 The Memoir as Feminist Document)

2420. (7.4 Maithili Theatre in Cultural-Historical Context)

2421. (8. Key Films in Context)

2422. (8.1 Mithila Makhaan (2016, National Award))

2423. (8.2 Damul (1985, National Award — Best Feature Film))

2424. (9. The Videha Special Issue (No. 357, 2022))

2425. (10. Historical Significance)

2426. (11. Bibliography and Sources)

2427. (Primary Source: Videha Special Issue)

2428. (Key Contributions in Videha 357)

2429. (Works by Premlata Mishra 'Prem')

2430. (Web Sources Consulted)

2431. (RESEARCH & CRITICAL APPRECIATION)

2432. (I. Preamble: Scope and Methodology)

2433. (II. Biographical and Institutional Context)

2434. (2.1 Prof. Premshankar Singh)

2435. (2.2 Ilarani Singh)

2436. (III. The Videha Parallel History Framework)

2437. (IV. Analysis of Primary Texts)

2438. (4.1 Maithili Bhasha Sahitya: Beesam Shatabdi (2009) — Premshankar Singh)

2439. (Critical Scope and Method)

2440. (Contributions to Maithili Literary History)

2441. (4.2 Vyadhibhakti-tarangini of Vidyapati — Edited by Premshankar Singh (2008))

2442. (Textual Significance)

2443. (4.3 Maithili Rangmanch — Ilarani Singh)

2444. (4.4 Ijoriyak Angaithi-Mor — Ilarani Singh's Poetic Context)

2445. (V. Critical Frameworks in Dialogue)

2446. (5.1 Indian Classical Criticism: Rasa, Dhvani, Alamkara)

2447. (5.2 Navya Nyāya Epistemology: A Tool for Literary Criticism)

2448. (Applying Navya Nyāya to Premshankar Singh's Criticism)

2449. (Applying Navya Nyāya to Ilarani Singh's Poetry)

2450. (5.3 Western Critical Theory)

2451. (Historicism and New Historicism)

2452. (Feminist and Gender Criticism)

2453. (Postcolonial Theory)

2454. (Formalism and New Criticism)

2455. (VI. Thematic Analysis)

2456. (6.1 The Question of Authenticity and Recovery)

2457. (6.2 Women, Nature, and Domestic Space)

2458. (6.3 The Maithili Language and Its Survival)

2459. (VII. Critical Appreciation: Strengths, Limitations, and Significance)

2460. (7.1 Premshankar Singh: Scholarly Strengths)

2461. (7.2 Limitations and Areas for Development)

2462. (7.3 Ilarani Singh: Significance as Woman Writer)

2463. (7.4 The Dialogue Between the Two Writers)

2464. (VIII. Conclusion)

2465. (IX. Select Bibliography and References)

2466. (Primary Texts)

2467. (Videha Archive and Related Sources)

2468. (Indian Classical and Aesthetic Sources)

2469. (Navya Nyāya Sources)

2470. (Western Critical Theory)

2471. (Maithili and Related Studies)

2472. (A Critical Study of the Works of)

2473. (Table of Contents)

2474. (1. Introduction: Author and Context)

2475. (2. The Maithili Literary Tradition and Videha)

2476. (3.1 Novels (Maithili))

2477. (3.2 Short Story Collections)

2478. (3.3 Memoirs and Autobiographical Writing)

2479. (3.4 Essays)

2480. (4. Theoretical Frameworks: Indian and Western)

2481. (4.1 Indian Critical Frameworks)

2482. (4.1.1 Rasa Theory (Bharata’s Natyashastra))

2483. (4.1.2 Dhvani Theory (Anandavardhana))

2484. (4.1.3 Vakrokti (Kuntaka) and the Principle of Oblique Expression)

2485. (4.1.4 Auchitya (Propriety) and the Ethics of Representation)

2486. (4.2 Western Critical Frameworks)

2487. (4.2.1 Postcolonial Theory)

2488. (4.2.2 Narratology)

2489. (4.2.3 Feminist Criticism)

2490. (4.2.4 Cultural Materialism)

2491. (4.2.5 Existentialism and the Literature of Conscience)

2492. (5. Thematic Analysis)

2493. (5.1 Identity, Homeland, and Belonging)

2494. (5.2 Social Justice and the Subaltern Voice)

2495. (5.3 Law, Conscience, and Moral Inquiry)

2496. (5.4 Memory, Time, and the Autobiographical Impulse)

2497. (5.5 Gender and Patriarchy in Mithila)

2498. (6. Narrative Technique and Craft)

2499. (7. Language and the Maithili Idiom)

2500. (8. Comparative Literary Perspectives)

2501. (9. Conclusion)

2502. (10. Bibliography)

2503. (Primary Sources)

2504. (Secondary Sources: Maithili Literature and Context)

2505. (Indian Theoretical Frameworks)

2506. (Western Theoretical Frameworks)

2507. (A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)

2508. (Preface)

2509. (1.1 Biographical Profile)

2510. (1.2 The Videha Parallel Literature Movement: Context and Ideology)

2511. (1.3 Gangesa Upadhyaya and the Mithila Epistemological Tradition)

2512. (Chapter II: The Works — A Systematic Survey and Analysis)

2513. (2.1 Ambara (The Sky/Canopy) — Poetry Collection, 2010)

2514. (2.2 Hamar Tol (My Quarter of the Village) — Novel)

2515. (2.3 Jal Bhanwar (Water Vortex) — Screenplay, 2019)

2516. (2.4 Laj (Shame) — One-Act Play, 2015)

2517. (2.5 Panchaiti (Village Panchayat) — Short Screenplay, 2013)

2518. (2.6 Trivenik Rang (Colours of the Triveni) — Seed-Story Collection, 2014)

2519. (2.7 Jaal (The Net) — Screenplay)

2520. (2.8 Waapsi (Return) — Novel/Text, 2018)

2521. (Chapter III: The Short Stories — Five Key Texts)

2522. (3.1 Rusal Bauwa (An Angry Boy))

2523. (3.2 Bechuak Suiter (A Sweater for Bechua))

2524. (3.3 Electionak Bhoot (The Ghost of Election))

2525. (3.4 Rakhbar (The Village Guard))

2526. (Chapter IV: Critical Frameworks — Indian and Western Theories)

2527. (4.1 Bharata's Natyashastra and the Drama of Social Life)

2528. (4.2 Navya Nyaya and the Epistemology of Subaltern Literature)

2529. (4.3 Rasa Theory and the Aesthetics of Subaltern Experience)

2530. (4.4 Georg Lukács and Social Realism)

2531. (4.5 Bakhtin's Dialogism and the Polyphony of Subaltern Voices)

2532. (4.6 Gayatri Spivak and the Speaking Subaltern)

2533. (4.7 Intersectionality and the Complexity of Oppression)

2534. (4.8 Walter Benjamin and the Art of Storytelling)

2535. (Chapter V: Comparative Study — Rajdeo Mandal and Other Maithili Writers)

2536. (5.1 Rajdeo Mandal and Jagdish Prasad Mandal)

2537. (5.2 Rajdeo Mandal and Nagarjun-Yatri)

2538. (5.3 Rajdeo Mandal and Lalit (Lalitesh Mishra))

2539. (5.4 Rajdeo Mandal and Subhash Chandra Yadav)

2540. (6.1 The Screenplay as Genre Pioneer)

2541. (6.2 Drama and the Social Functions of Theatre)

2542. (Chapter VII: Synthesis — Rajdeo Mandal's Place in Literary History)

2543. (7.1 The Significance of the Dhanuk Voice)

2544. (7.2 The Question of Language and Register)

2545. (7.3 The Videha Movement and Digital Cultural Democracy)

2546. (7.4 Concluding Assessment)

2547. (Primary Sources — Rajdeo Mandal's Archived Works)

2548. (Secondary Sources — Critical Material)

2549. (Indian Classical Aesthetics and Philosophy)

2550. (Western Literary Theory)

2551. (Comparative Maithili Literature)

2552. (Rajnandan Lal Das)

2553. (1. Introduction: A Quiet Giant of Maithili Literature)

2554. (2. Family Background and Early Life)

2555. (2.1 Origins and Family Circumstances)

2556. (2.2 Schooling in Bihar)

2557. (3. Arrival in Kolkata and Education)

2558. (3.1 The Move to Kolkata)

2559. (3.2 Academic Achievements)

2560. (4. Corporate Career: Sales Manager and Marketing Strategist)

2561. (5. The Maithili Movement: Organizational Work)

2562. (5.1 Mithila Lok Sangh and Akhil Bharatiya Mithila Sangh (1958 onward))

2563. (5.2 Mithila Darshan Company and Akhar Journal)

2564. (5.3 Maithili Sangram Samiti)

2565. (6. Karnamrit: The Life's Work (1981–2019))

2566. (6.1 Foundation and Philosophy)

2567. (6.2 Structure and Features of Karnamrit)

2568. (6.3 156 Issues Over 38 Years: Sustaining the Unsustainable)

2569. (6.4 The Nepal Issue and Final Phase)

2570. (7. Published Works: Books and Edited Volumes)

2571. (7.1 Original Creative Works)

2572. (7.2 Edited Volumes)

2573. (8. Political Consciousness and Anti-Caste Philosophy)

2574. (8.1 Early Leftist Engagement)

2575. (8.2 Breaking Caste Barriers in Maithili Publishing)

2576. (8.3 Campaign for Maithili as Medium of Primary Education)

2577. (9. Honours, Recognition, and Awards)

2578. (10. Personal Life and Character)

2579. (10.1 Marriage and Family)

2580. (10.2 Personal Qualities as Recalled by Contemporaries)

2581. (11. The Karna Community and Mithila's Plural Heritage)

2582. (12. The Kolkata Maithili Diaspora Context)

2583. (13. Passing and Legacy)

2584. (13.1 Passing)

2585. (13.2 His Legacy)

2586. (14. The Videha Visheshank: A Primary Source)

2587. (15. Complete Biographical Summary)

2588. (Summary of Key Facts)

2589. (16. Sources)

2590. (CRITICAL APPRECIATIONS)

2591. (Archive Presence & Works)

2592. (Thematic & Critical Analysis)

2593. (Theoretical Frameworks)

2594. (Select Bibliography)

2595. (Archive Presence & Works)

2596. (Thematic & Critical Analysis)

2597. (Theoretical Frameworks)

2598. (Select Bibliography)

2599. (Archive Presence & Works)

2600. (Thematic & Critical Analysis)

2601. (Theoretical Frameworks)

2602. (Select Bibliography)

2603. (Archive Presence & Works)

2604. (Thematic & Critical Analysis)

2605. (Theoretical Frameworks)

2606. (Select Bibliography)

2607. (Archive Presence & Works)

2608. (Thematic & Critical Analysis)

2609. (Theoretical Frameworks)

2610. (Select Bibliography)

2611. (Archive Presence & Works)

2612. (Thematic & Critical Analysis)

2613. (Theoretical Frameworks)

2614. (Select Bibliography)

2615. (Archive Presence & Works)

2616. (Thematic & Critical Analysis)

2617. (Theoretical Frameworks)

2618. (Select Bibliography)

2619. (ACHARYA RAMANAND MANDAL)

2620. (1. Biographical Profile and Intellectual Formation)

2621. (2. The Three Works: Synoptic Description)

2622. (2.1 Bhāsā Ke Na Bāṃṭiyo (2022) — Poetry Collection)

2623. (2.2 Rāṇiyāṃ Bhikhārin (2023) — Short Story Collection)

2624. (2.3 Gāgar Meṃ Sāgar: Nava Vaicārikī (2025) — Essay Collection)

2625. (3. The Question of Language: Bajjika, Maithili, and the Dialectal Continuum)

2626. (4. Situating Mandal Within the Videha Parallel History Framework)

2627. (4.1 The Videha Framework: A Summary)

2628. (4.2 Mandal's Place in the Parallel Tradition)

2629. (5. Applying Navya-Nyāya Epistemology to Mandal's Works)

2630. (5.1 Gaṅgeśa Upādhyāya and the Tattvacintāmaṇi)

2631. (5.2 Navya-Nyāya Applied: Poetry (Bhāsā Ke Na Bāṃṭiyo))

2632. (5.2.1 Pramāṇa and the Validity of the Dialectal Voice)

2633. (5.2.2 Vyāpti (Invariable Concomitance) in the Title Poem)

2634. (5.2.3 Avacchedaka (Limitor) and Poetic Precision)

2635. (5.2.4 Hetvābhāsa (Fallacy Analysis) in Political Satire)

2636. (5.3 Navya-Nyāya Applied: Stories (Rāṇiyāṃ Bhikhārin))

2637. (5.3.1 Śabda-Khaṇḍa and the Story 'Maithilī')

2638. (5.3.2 Pratyakṣa and Anumāna in 'Dharam Saṃkaṭ Mukta')

2639. (5.3.3 The Title Story: Upamāna (Analogy) and Vātsalya)

2640. (6. Western Literary Critical Frameworks)

2641. (6.1 Mikhail Bakhtin: Heteroglossia and the Dialogic Novel)

2642. (6.2 Gayatri Chakravorty Spivak: Can the Subaltern Speak?)

2643. (6.3 Antonio Gramsci: Hegemony and the Organic Intellectual)

2644. (6.4 Terry Eagleton: Literature as Ideology)

2645. (6.5 Northrop Frye: Archetypal Criticism)

2646. (6.6 Sigmund Freud and Jacques Lacan: Desire, the Gaze, and the Other)

2647. (7. Indian Literary Critical Frameworks)

2648. (7.1 Rasa Theory (Bharata, Abhinavagupta))

2649. (7.2 Dhvani Theory (Ānandavardhana))

2650. (7.3 Vakrokti Theory (Kuntaka))

2651. (7.4 Dalit Aesthetics and Ambedkarian Literary Criticism)

2652. (7.5 Sāhitya-Darpaṇa (Viśvanātha Kavirāja) and Narrative Theory)

2653. (8. Cross-Thematic Critical Analysis)

2654. (8.1 Language as Political Subject)

2655. (8.2 The Sita Motif: Feminist Revisionism)

2656. (8.3 Scientific Rationalism as Literary Method)

2657. (8.4 Subaltern Heroism: Shahid Ramaphal Mandal)

2658. (9. Critical Appreciation: Strengths, Complexities, and Limitations)

2659. (9.1 Strengths)

2660. (9.2 Areas of Critical Complexity)

2661. (9.3 A Note on the Gangesha–Mandal Parallelism)

2662. (10. Select Bibliography and References)

2663. (Primary Texts)

2664. (Videha Parallel History Framework)

2665. (Indian Critical Traditions)

2666. (Western Critical Theories)

2667. (Historical and Socio-Linguistic Sources)

2668. (CRITICAL APPRECIATION OF)

2669. (Preface)

2670. (Part I: Biographical and Intellectual Profile)

2671. (1.1 Life and Institutional Trajectory)

2672. (1.2 The Scholarly Vocation: Language Advocacy and Scientific Rigour)

2673. (Part II: Major Works and Their Critical Assessment)

2674. (2.1 Maithili Phonetics and Phonology (PhD Dissertation, University of Kansas, 1979; published 1984))

2675. (2.2 A Reference Grammar of Maithili (Mouton de Gruyter, Berlin/New York, 1996))

2676. (2.2.1 The Grammatical Tradition Survey)

2677. (2.2.2 The Phonology Chapters)

2678. (2.2.3 The Noun, Case, and Honorificity System)

2679. (2.2.4 The Verb and Agreement System: The Central Contribution)

2680. (2.2.5 Compound and Conjunct Verbs)

2681. (2.2.6 Syntax: Word Order, Subordination, and Conditionals)

2682. (Part III: Theoretical Frameworks and Critical Appreciation)

2683. (3.1 Western Linguistics: Structural, Generative, and Functional Frameworks)

2684. (3.1.1 Saussurean Structuralism)

2685. (3.1.2 Generative Grammar and Control Agreement)

2686. (3.1.3 Hallidayan Systemic-Functional Grammar)

2687. (3.1.4 Fries's Structural Linguistics and Prescriptivism)

2688. (3.2 Indian Literary and Grammatical Theory)

2689. (3.2.1 Pāṇini and the Aṣṭādhyāyī Tradition)

2690. (3.2.2 Bhartrhari's Philosophy of Language)

2691. (3.2.3 The Alaṃkāra Tradition and Honorificity as Rasa)

2692. (3.3 Navya-Nyāya Epistemology of Gaṅgeśa Upādhyāya and Ramawatar Yadav's Linguistics)

2693. (3.3.1 Śabda-Pramāṇa and the Analysis of Meaning)

2694. (3.3.2 Anumāna (Inference) and Syntactic Analysis)

2695. (3.3.3 Pratyakṣa (Perception) and Experimental Phonetics)

2696. (Part IV: Yadav's Place in the History of Maithili Linguistics and Indian Language Studies)

2697. (4.1 Before and After Yadav: A Historiographic Assessment)

2698. (4.2 Sociolinguistic Contribution: Caste, Dialect, and Democratic Linguistics)

2699. (4.3 Selected Published Articles (AalekhSanchayan): Key Contributions)

2700. (Part V: Critical Evaluation — Strengths, Limitations, and Open Questions)

2701. (5.1 Achievements)

2702. (5.2 Limitations and Open Questions)

2703. (Conclusion: The Linguist as Savant and Servant of Language)

2704. (Select Bibliography)

2705. (A. Works by Ramawatar Yadav)

2706. (B. Western Linguistics and Theory)

2707. (C. Indian Grammatical Theory and Philosophy of Language)

2708. (D. Videha Sources)

2709. (A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)

2710. (RAMESH A Complete Research and Critical Appreciation of Works in Maithili Literature)

2711. (A COMPLETE CRITICAL RESEARCH)

2712. (PREFACE)

2713. (PART I: THEORETICAL FRAMEWORKS)

2714. (1.1 Indian Classical Literary Theory)

2715. (The Rasa Framework: Bharata to Abhinavagupta)

2716. (Dhvani, Vakrokti, and Aucitya)

2717. (Alaṃkāra and the Sanskrit Tradition)

2718. (1.2 Navya Nyāya Epistemology as Literary Method)

2719. (Gaṅgeśa Upādhyāya and the Tattvacintāmaṇi)

2720. (Navya Nyāya Method Applied to Literary Criticism)

2721. (1.3 Western Critical Theories)

2722. (Formalism and New Criticism)

2723. (Postcolonialism, Subaltern Studies, and the Videha Critique)

2724. (Feminist and Dalit Critical Perspectives)

2725. (Intertextuality and Translation Studies)

2726. (PART II: THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK)

2727. (2.1 Overview of the Parallel Tradition)

2728. (2.2 Situating the Four Authors within the Parallel Tradition)

2729. (PART III: CRITICAL APPRECIATION OF THE FIVE BOOKS)

2730. (3.1 Ramesh Narayan — Pāṭharak Nāo)

2731. (Bibliographic Details)

2732. (Formal Analysis)

2733. (Thematic Analysis: Social Realism and the Parallel Tradition)

2734. (Critical Assessment)

2735. (3.2 Nagendra Kumar — Sasarphānī)

2736. (Bibliographic Details)

2737. (Formal Analysis)

2738. (Nagendra Kumar's Civil Service Voice)

2739. (Critical Assessment)

2740. (3.3 Gopalji Jha 'Gopesh' — Gumm Bhelaṭhāṛh Chhī)

2741. (Bibliographic Details)

2742. (Formal Analysis: Drama, Poetry, and the Condensed Form)

2743. (Theatrical Dimension and the Parallel Stage)

2744. (Critical Assessment)

2745. (3.4 Vijaynath Jha — Ahīṅk Lel and Kāmāyanī Chandānuvāda)

2746. (3.4.1 Bibliographic Details: Ahīṅk Lel)

2747. (3.4.2 Formal Analysis: Geet and Ghazal)

2748. (3.4.3 Bibliographic Details: Kāmāyanī Mahākāvya Maithilī Chandānuvāda)

2749. (3.4.4 The Art of Chandānuvāda: Translation as Creation)

2750. (3.4.5 Critical Assessment: Vijaynath Jha)

2751. (PART IV: COMPARATIVE AND SYNTHETIC ANALYSIS)

2752. (4.1 Convergences across the Four Authors)

2753. (4.2 Divergences and Tensions)

2754. (4.3 The Navya Nyāya Synthesis)

2755. (PART V: REFERENCES AND BIBLIOGRAPHY)

2756. (Primary Sources)

2757. (Digital and Archival Sources)

2758. (Indian Classical Theory)

2759. (Navya Nyāya)

2760. (Western Literary Theory)

2761. (Maithili Literary History and Criticism)

2762. (APPENDIX: NOTE ON METHODOLOGY AND SOURCES)

2763. (Original poem in Maithili. Translated into English by Gajendra Thakur)

2764. (The Rudrapur Recensions: Pandit Ramji Chaudhary and the Parallel Histories of Maithil Devotion/)

2765. (PART I: INTRODUCTION AND CONTEXTUALISATION)

2766. (1.1 Preamble: The Videha Parallel History Framework)

2767. (1.2 Methodological Framework)

2768. (PART II: PT. RAMJI CHAUDHARY (1878-1952) - THE FORGOTTEN POET)

2769. (2.1 Biographical and Genealogical Profile)

2770. (2.2 Literary Works and Manuscript Tradition)

2771. (2.3 Ragas and Musical Architecture)

2772. (2.4 Textual Analysis: Selected Compositions)

2773. (2.4.1 The Vinay (Invocation))

2774. (2.4.2 Maheshvani: Shiva Hymns and the Panchadevopasana)

2775. (2.4.3 Tirhut Compositions: The Viraha (Separation) Mode)

2776. (2.5 Place in the Parallel History)

2777. (PART III: ACHARYA RAMLOCHAN SHARAN (1889-1971) - SCHOLAR, GRAMMARIAN AND TRANSLATOR)

2778. (3.1 Biographical Profile and Institutional Significance)

2779. (3.2 The Maithili Shri Ram Charit Manas: A Translation of Epic Proportions)

2780. (3.3 Critical Analysis of the Translation Technique)

2781. (3.3.1 Rasa-Dhvani Reading)

2782. (3.3.2 Intertextuality and the Mithila-Ram Connection)

2783. (3.3.3 Navya-Nyaya Analysis of the Translation’s Knowledge-Claims)

2784. (3.4 The Jayanti-Smarak-Granth (1966) as a Cultural Document)

2785. (3.5 Hindi Grammar and the Standardisation Project)

2786. (3.6 Vasak and the Children’s Literature Tradition)

2787. (PART IV: COMPARATIVE CRITICAL ANALYSIS)

2788. (4.1 Two Traditions, One Landscape)

2789. (4.2 The Manas-Bhajnavali Comparison: Tulsidas and the Mithila Lens)

2790. (4.3 Rasa Analysis: Shanta, Bhakti, and Karuna)

2791. (4.4 New Critical Close Reading: Language and Style)

2792. (PART V: NAVYA-NYĀYA EPISTEMOLOGICAL APPLICATION)

2793. (5.1 Gangesa’s Framework as Literary Epistemology)

2794. (5.2 Shabda-Pramana and the Validity of Bhakti Literature)

2795. (5.3 Anumana and the Translation-Validity Problem)

2796. (5.4 The Avacchedaka (Limitor) Principle in Textual Classification)

2797. (PART VI: POSITIONING WITHIN THE VIDEHA PARALLEL HISTORY)

2798. (6.1 The Parallel History’s Nine Layers and Their Placement)

2799. (6.2 The Digital Afterlife: Videha’s Archive)

2800. (PART VII: WESTERN CRITICAL THEORY SYNTHESIS)

2801. (7.1 Postcolonial and Subaltern Studies)

2802. (7.2 New Historicism and Cultural Materialism)

2803. (7.3 Reader-Response Theory)

2804. (PART VIII: CONCLUSION AND CRITICAL ASSESSMENT)

2805. (8.1 Summary of Findings)

2806. (8.2 Critical Assessment)

2807. (8.3 The Navya-Nyaya Verdict)

2808. (REFERENCES)

2809. (Primary Sources)

2810. (Videha Digital Sources)

2811. (Indian Classical Theory)

2812. (Western Theory)

2813. (Secondary Sources on Maithili Literature)

2814. (A Critical Study of the Works of)

2815. (I. BIOGRAPHICAL PROFILE)

2816. (1.1 Personal Details)

2817. (1.2 Life Journey)

2818. (II. LITERARY WORKS AND PRODUCTIONS)

2819. (2.1 Original Poetry Collections)

2820. (2.2 Satire and Prose)

2821. (2.3 Translations (Anuvad))

2822. (2.4 Folk Literature and Editorial Work)

2823. (2.5 Contributions Documented in Videha)

2824. (2.6 Awards and Recognition)

2825. (III. LITERARY ANALYSIS — INDIAN THEORETICAL FRAMEWORKS)

2826. (3.1 Rasa Theory (Bharatamuni's Natyashastra, c. 200 BCE – 200 CE))

2827. (3.2 Dhvani Theory (Anandavardhana, 9th Century CE))

2828. (3.3 Auchitya (Propriety/Decorum) — Kshemendra, 11th Century CE)

2829. (3.4 Vakrokti (Oblique Expression) — Kuntaka, 10th–11th Century CE)

2830. (3.5 Alamkara Shastra (Doctrine of Figures of Speech))

2831. (3.6 Loka Sahitya (Folk Literature) Theory)

2832. (3.7 Dalit and Bahujan Aesthetics)

2833. (3.8 Stri-Vimarsha (Feminist Criticism in Indian Contexts))

2834. (IV. LITERARY ANALYSIS — WESTERN THEORETICAL FRAMEWORKS)

2835. (4.1 Aristotelian Poetics and Mimesis)

2836. (4.2 New Criticism — Close Reading and Organic Form)

2837. (4.3 Marxist and Socio-Historical Criticism)

2838. (4.4 Psychoanalytic Criticism (Freud, Lacan, Kristeva))

2839. (4.5 Structuralism and Semiotics (Saussure, Lévi-Strauss, Barthes))

2840. (4.6 Post-Structuralism and Deconstruction (Derrida, de Man))

2841. (4.7 Postcolonial Theory (Said, Spivak, Bhabha))

2842. (4.8 Reception Theory and Reader-Response Criticism (Jauss, Iser))

2843. (4.9 Narratology (Genette, Propp))

2844. (4.10 Ecocriticism)

2845. (V. SYNTHESIS: THAKUR'S PLACE IN MAITHILI AND INDIAN LITERATURE)

2846. (VI. CONCLUSION)

2847. (VII. PRIMARY AND SECONDARY SOURCES)

2848. (Primary Sources (from www.videha.co.in))

2849. (Secondary Sources — Indian Theoretical Frameworks)

2850. (Secondary Sources — Western Theoretical Frameworks)

2851. (RAM VILAS SAHU: A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION)

2852. (A Comprehensive Research Report Integrating Indian and Western Literary Theory, the Videha Parallel History Framework, and Navya-Nyāya Epistemology of Gaṅgeśa Upādhyāya)

2853. (PART I: BIOGRAPHY, IDENTITY, AND INSTITUTIONAL CONTEXT)

2854. (1.1 Life and Formation)

2855. (1.2 The Sahu Community and Subaltern Writing)

2856. (1.3 The Videha Connection and Institutional Role)

2857. (1.4 Published Works: Complete Inventory)

2858. (PART II: PRIMARY WORKS — SYSTEMATIC ANALYSIS)

2859. (2.1 Rathak Cakkā Ulait Cale Bāṭ (The Wheel of the Chariot Turns Backward to Make its Way, 2013/2024))

2860. (2.2 Karm Binu Jag Sunnā (Without Work the World is Empty — Second Poetry Collection))

2861. (2.3 Dūdhbechnī (The Milk-seller Woman, 2018))

2862. (2.4 Skūlak Khicṛī (The School’s Khichri) — Vihinikathā Collection)

2863. (2.5 Ankur and Manak Mail)

2864. (PART III: CRITICAL APPRECIATION THROUGH MULTIPLE FRAMEWORKS)

2865. (3.1 Indian Rasa-Dhvani Aesthetics)

2866. (3.1.1 Dominant Rasas)

2867. (3.1.2 Dhvani: The Soul of Sahu’s Poetry)

2868. (3.1.3 Vakrokti and Oblique Expression)

2869. (3.2 Western Literary Frameworks)

2870. (3.2.1 Marxist and Materialist Criticism: Labour, Class, and Alienation)

2871. (3.2.2 Subaltern Studies and the Politics of Voice)

2872. (3.2.3 Feminist Criticism: Women’s Bodies, Labour, and Agency)

2873. (3.2.4 Post-Colonial Theory: Language, Identity, and Mithila)

2874. (3.2.5 Ecocriticism and the Koshi Ecology)

2875. (3.2.6 New Criticism and the Formal Architecture of Seed Stories)

2876. (3.3 The Videha Parallel History Framework)

2877. (3.3.1 Sahu in the Parallel Canon)

2878. (3.3.2 The Pallavi Prakashan Network)

2879. (3.3.3 The Farmer-Writer: Agricultural Imagery as Political Aesthetics)

2880. (3.4 Navya-Nyāya Epistemology: Gaṅgeśa’s Framework Applied)

2881. (3.4.1 The Poem Karm Binu Jag Sunnā as Vyāpti Structure)

2882. (3.4.2 Pramāṇa Analysis of the Stories)

2883. (3.4.3 Abhāva (Absence) as a Structural Principle)

2884. (3.4.4 The Suppressed Gaṅgeśa and Sahu’s Social Position)

2885. (PART IV: FORMAL ANALYSIS — POETRY, TANKA, HAIKU, AND SEED FICTION)

2886. (4.1 The Tanka and Haiku Tradition in Maithili)

2887. (4.2 The Song (Gīt) Tradition)

2888. (4.3 The Seed Story as Epistemological Form)

2889. (PART V: ASSESSMENT, SIGNIFICANCE, AND CONCLUSION)

2890. (5.1 Ram Vilas Sahu’s Literary Achievement)

2891. (5.2 Critical Convergence)

2892. (5.3 Final Assessment)

2893. (REFERENCES AND BIBLIOGRAPHY)

2894. (Primary Texts)

2895. (Videha and Parallel History Sources)

2896. (Indian Literary Theory and Aesthetics)

2897. (Western Literary Theory)

2898. (Maithili Literary Context)

2899. (Online Sources)

2900. (RESEARCH & CRITICAL APPRECIATION)

2901. (TABLE OF CONTENTS)

2902. (PREFACE AND METHODOLOGICAL NOTE)

2903. (PART I: THEORETICAL FRAMEWORKS)

2904. (1.1 The Videha Parallel History Framework)

2905. (1.2 Navya Nyaya Epistemology: Gangesa Upadhyaya and Literary Analysis)

2906. (1.3 Indian Critical Traditions: Rasa, Dhvani, Vakrokti, and Alamkara)

2907. (1.4 Western Critical Theories Applied)

2908. (PART II: RAVIBHUSHAN PATHAK — LIFE, WORKS, AND CRITICAL STUDY)

2909. (2.1 Biography and Literary Context)

2910. (2.2 The Play Riharsal (Rehearsal): Drama and Social Critique)

2911. (2.3 Prose Writings: Ghar Series, Diary, Vidyapati Essays)

2912. (2.4 Poetry: Nirala Translations and Original Verse)

2913. (2.5 Translation Theory and Practice in Pathak)

2914. (2.6 Critical Appreciation: Rasa, Dhvani, and Parallel History)

2915. (PART III: KUMAR MANOJ KASHYAP — LIFE, WORKS, AND CRITICAL STUDY)

2916. (3.1 Biography and Literary Context)

2917. (3.2 Badalait Samay: The Short Story Collection)

2918. (3.3 Ek Thop Ijot: A Drop of Light)

2919. (3.4 Stories in Videha Sadeha 31)

2920. (3.5 Poetry: Vasanti Doha, Ghazals)

2921. (3.6 Critical Appreciation: Narrative Theory, Subaltern Perspectives)

2922. (PART IV: COMPARATIVE ANALYSIS)

2923. (4.1 Thematic Convergences and Divergences)

2924. (4.2 Place within Videha Parallel History)

2925. (4.3 Navya Nyaya Reading of Their Poetics)

2926. (PART V: CONCLUSION)

2927. (BIBLIOGRAPHY)

2928. (Primary Sources)

2929. (Secondary Sources: Indian Critical Tradition)

2930. (Secondary Sources: Western Critical Theory)

2931. (Web and Archival Sources)

2932. (Ravindra Nath Thakur)

2933. (1. Introduction and Historical Significance)

2934. (2. Biographical Profile)

2935. (2.1 Early Life and Education)

2936. (2.2 Professional Career)

2937. (Administrative Role: Maithili Academy)

2938. (2.3 Final Years and Death)

2939. (3. Literary Career and Published Works)

2940. (3.1 Published Books (Chronological))

2941. (3.2 The Ghazal Collection: Lekhani Ek Rang Anek)

2942. (3.3 Radio Dramas and Serials)

2943. (3.4 Film Work)

2944. (4. Songs, Performance, and the Ravindra-Mahendra Partnership)

2945. (4.1 The Modern Maithili Stage)

2946. (4.2 The Ravindra-Mahendra Duo)

2947. (The Sung Tradition)

2948. (Regional Identity and the Purnia Connection)

2949. (Devotional Literature)

2950. (4.3 Representative Songs)

2951. (5. Gramophone Records, Cassettes, and Commercial Releases)

2952. (6. Institutional and Social Contributions)

2953. (6.1 Maithili Academy)

2954. (6.2 Educational and Social Initiatives)

2955. (7. Awards and Honours)

2956. (8. Critical Reception and Scholarly Assessment)

2957. (8.1 The Problem of Literary Canon)

2958. (8.2 Contributions from Critics)

2959. (9. The Videha Parallel Literature Framework)

2960. (10. Summary Assessment)

2961. (9. Summary of Key Facts)

2962. (Phanishwar Nath Renu)

2963. (1. Introduction: Renu, Mithila, and the Question of Literary Geography)

2964. (2. Biographical Context: The Making of a Mithila Writer)

2965. (2.1 Early Life and Cultural Formation)

2966. (2.2 Education, Politics, and the Literary Turn)

2967. (2.3 The Kosi Flood Region as Renu's Literary World)

2968. (3. Mithila as Literary Landscape)

2969. (3.1 The Ancient Kingdom of Mithila)

2970. (3.2 Mithila's Cultural Geography in Renu's Imagination)

2971. (4. The Role of Maithili Language in Hindi Prose)

2972. (4.1 Maithili: An Ancient Literary Language)

2973. (4.2 Maithili Words and Phrases as Stylistic Signatures)

2974. (4.3 The Question of Linguistic Politics)

2975. (5. Folk Culture, Ritual, and Oral Traditions)

2976. (5.1 The World of Folk Songs (Lokgeet))

2977. (5.2 Festivals and Ritual Calendar)

2978. (5.3 Madhubani Art and Visual Culture)

2979. (6. Maila Aanchal: A Deep Reading)

2980. (6.1 The Novel and Its Historical Context)

2981. (6.2 Mithila's Cultural World in the Novel)

2982. (6.3 The 'Dirty Border' as Metaphor)

2983. (7. Parti Prasang and Other Major Works)

2984. (7.1 Parti Prasang (1956))

2985. (7.2 Juloos (1965))

2986. (7.3 Kitne Chaurahe (1966))

2987. (8. Renu's Short Stories and the Maithili Sensibility)

2988. (8.1 The Short Story as Form)

2989. (8.2 Landmark Stories)

2990. (9. SocioPolitical Dimensions: Caste, Gender, and Power)

2991. (9.1 Caste in Renu's Mithila)

2992. (9.2 Women and Gender in Renu's Fiction)

2993. (9.3 Politics and Development)

2994. (10. Renu's Place in the Aanchalik Sahitya Tradition)

2995. (10.1 Defining Aanchalik Sahitya)

2996. (10.2 Renu's Predecessors and Contemporaries)

2997. (11. Critical Reception and Scholarly Debates)

2998. (11.1 Initial Reception)

2999. (11.2 Later Scholarly Work)

3000. (11.3 Renu and World Literature)

3001. (12. Legacy and Continuing Relevance)

3002. (12.1 Influence on Subsequent Writers)

3003. (12.2 The Mithila Cultural Renaissance)

3004. (12.3 Renu in the Age of Globalization)

3005. (13. Conclusion)

3006. (14. Bibliography)

3007. (Primary Sources)

3008. (Secondary Sources)

3009. (A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)

3010. (Preface)

3011. (Chapter I: The Historical Context — Maithili Literature, Dalit Silence, and the Videha Movement)

3012. (1.1 The Thousand-Year Silence)

3013. (1.2 The Videha Parallel Literature Framework)

3014. (1.3 Gangesa Upadhyaya and the Epistemology of Dalit Voice)

3015. (Chapter II: The Autobiography — Atmakatha Khand)

3016. (2.1 Structure and Form of the Autobiography)

3017. (2.2 Identity and Caste Disclosure)

3018. (2.3 The Geography of Migration)

3019. (2.4 Education as Interrupted Aspiration)

3020. (2.5 The Accident and the Body)

3021. (2.6 The Closing Credo)

3022. (Chapter III: The Poetry — Kavita Khand)

3023. (3.1 The Formal Character of Safi's Poetry)

3024. (3.2 The Title Poem: Baishakh Me Dalan Par)

3025. (3.3 Roudhi Bha Gaile (The Drought Has Come))

3026. (3.4 Bhakjogni (The Firefly))

3027. (3.5 Social and Gender Poetry)

3028. (3.6 Seasonal and Festive Poetry)

3029. (4.1 The Vihani Katha (Seed Stories))

3030. (4.2 The Laghu Katha (Short Stories): Ogarbaah and Pasi Khana)

3031. (4.3 The Vichar Bindu (Aphoristic Thoughts))

3032. (5.1 Dalit Aesthetics and the Safi Text)

3033. (5.2 Autobiography Theory: The Dalit Difference)

3034. (5.3 Testimonial Literature and the Witness Function)

3035. (5.4 Spivak's Subaltern and the Speaking Dhobi)

3036. (5.5 Navya Nyaya and the Correction of Literary Bhrama)

3037. (5.6 Bharata's Natyashastra and the Rasas of Dalit Life)

3038. (Chapter VI: Comparative Study — Safi and Dalit Autobiography across Indian Languages)

3039. (6.1 The Pan-Indian Dalit Autobiographical Tradition)

3040. (6.2 Safi and Valmiki: The Dhobi and the Chuhra)

3041. (6.3 Safi and Daya Pawar: The Baluta System and the Dhobi System)

3042. (6.4 Safi and Bama: Gender, Form, and the Dalit-Mithila Woman)

3043. (6.5 The Question of Ambedkar)

3044. (Chapter VII: Safi's Place in Literary History — Synthesis and Conclusions)

3045. (7.1 The Historic Significance of the First)

3046. (7.2 The Dhrupad of the Dhobi Community)

3047. (7.3 Future Directions for Maithili Dalit Literature)

3048. (7.4 Final Assessment)

3049. (References and Bibliography)

3050. (Primary Source)

3051. (Videha Framework and Maithili Scholarship)

3052. (Indian Classical Aesthetics and Navya Nyaya)

3053. (Dalit Aesthetics and Comparative Dalit Literature)

3054. (Critical Studies of Dalit Autobiography)

3055. (Western Literary Theory)

3056. (Contemporary Mithila Artists)

3057. (I. Introduction: The Mithila Art Tradition and Its Contemporary Negotiation)

3058. (The Mithila Art Tradition: A Brief Theoretical Background)

3059. (II. Mrs Sanju Das: The Self-Taught Modernist and the Question of Obscenity)

3060. (Biographical and Contextual Overview)

3061. (Primary Theoretical Framework: Feminist Art Theory)

3062. (Secondary Framework: The Folk/Fine Art Continuum)

3063. (Critical Assessment)

3064. (III. Mr Krishna Kumar Kashyap & Mrs Shashi Bala: The Radical Folk Universalist and the Collaborative Painter)

3065. (Biographical and Contextual Overview)

3066. (Primary Theoretical Framework: Postcolonial Pedagogy and Folk Art as Epistemology)

3067. (Shashi Bala: The Invisible Collaborator)

3068. (Secondary Framework: The Kama-Shastra Tradition and Sacred Eroticism)

3069. (Critical Assessment)

3070. (IV. Mr S.C. Suman: Tradition and Modernity in Dialogue)

3071. (Biographical and Contextual Overview)

3072. (Primary Theoretical Framework: Formalism and the Mithila Aesthetic)

3073. (Secondary Framework: Art and Market, Commodification Debate)

3074. (Critical Assessment)

3075. (V. Mrs Sweta Jha Chaudhary: The Trained Artist and the Everyday Sacred)

3076. (Biographical and Contextual Overview)

3077. (Primary Theoretical Framework: Iconography and the Sacred Everyday)

3078. (Secondary Framework: Folk Art as Cultural Memory and Social Document)

3079. (Critical Assessment)

3080. (VI. Comparative Analysis: Five Practices, Five Positions)

3081. (The Gender of Mithila Painting)

3082. (The Question of Obscenity)

3083. (Tradition, Innovation, and the Market)

3084. (Self-Taught Practice vs. Formal Training)

3085. (VII. Conclusion)

3086. (VIII. Key References and Sources)

3087. (Primary Source)

3088. (Secondary Sources)

3089. (RESEARCH & CRITICAL APPRECIATION)

3090. (I. Preamble: Scope and Methodology)

3091. (II. Biographical and Institutional Context)

3092. (2.1 Life and Background)

3093. (2.2 Institutional Position within the Videha Framework)

3094. (III. The Videha Parallel History Framework)

3095. (IV. Analysis of Primary Texts)

3096. (4.1 Kabita Santosh — Poetry Collection)

3097. (Overview and Physical Description)

3098. (Thematic Architecture)

3099. (Close Reading: 'Ena Kie?' (Why this?))

3100. (Close Reading: 'Kalpaniyak Satya' (The Truth of Fantasy))

3101. (Close Reading: 'Bhaka Bali' (The Scapegoat))

3102. (Close Reading: 'Matribhumi' and 'Mithila Ke Jou Chhi Ta')

3103. (Stylistic Analysis)

3104. (4.2 Aena (Mirror) — Anthology of Maithili Poetry)

3105. (Overview)

3106. (Editorial Philosophy: 'Aena Mein Hamar Munh')

3107. (The Vidyapati Geet as Intertextual Anchor)

3108. (Gazhals and the Persian-Maithili Interface)

3109. (Children's Poetry: 'Hum Chhi Bachha Umarke Kachha')

3110. (4.3 Posput (The Adoptive Son) — Short Story Collection)

3111. (Overview and Publication Context)

3112. (Close Reading: 'Posput' (The Adoptive Son) — Title Story)

3113. (Close Reading: 'Sipahi' (The Soldier))

3114. (Close Reading: 'Doctor')

3115. (Close Reading: 'Daag' (Stain))

3116. (4.4 Udas Mon (Sad Heart) — First Short Story Collection)

3117. (Overview)

3118. (Publisher's Preface: Diagnostic Self-Criticism)

3119. (Close Reading: 'Udas Mon' (Sad Heart) — Title Story)

3120. (Close Reading: 'Ek Katha Snehake' (One Story of Affection))

3121. (Close Reading: 'Sipahi' across Two Collections)

3122. (V. Critical Frameworks in Dialogue)

3123. (5.1 Indian Classical Criticism: Rasa, Dhvani, and Alamkara)

3124. (5.2 Navya Nyāya Epistemology as Literary-Critical Tool)

3125. (Applying Navya Nyāya to Mishra's Texts)

3126. (5.3 Western Critical Theory)

3127. (Lukácsian Social Realism and the Typical Character)

3128. (Postcolonial and Subaltern Studies)

3129. (Feminist Criticism and Gender)

3130. (Marxist Literary Criticism)

3131. (VI. Thematic Analysis)

3132. (6.1 Migration, Belonging, and the Janakpur-Kathmandu Axis)

3133. (6.2 The Political and the Personal)

3134. (6.3 Dowry, Gender Economics, and Social Satire)

3135. (6.4 Mithila as Cultural and Linguistic Identity)

3136. (VII. Critical Appreciation: Strengths, Limitations, and Significance)

3137. (7.1 Strengths)

3138. (7.2 Limitations and Areas of Development)

3139. (7.3 Significance in the Maithili Literary Ecosystem)

3140. (VIII. Conclusion)

3141. (IX. Select Bibliography and References)

3142. (Primary Texts)

3143. (Videha Archive and Related Sources)

3144. (Indian Classical and Aesthetic Sources)

3145. (Navya Nyāya Sources)

3146. (Western Critical Theory)

3147. (Maithili and Nepal Studies)

3148. (A Complete Critical Research & Appreciation)

3149. (Abstract)

3150. (Table of Contents)

3151. (I. Prefatory Note on the Videha Parallel History Framework)

3152. (II. Biographical Introduction: Siyaram Jha 'Saras' — Life and Context)

3153. (III. Survey of Works: Five Major Texts)

3154. (3.1 Aakhar Aakhar Geet Saras (Sarla Prakashan, Darbhanga, 1999))

3155. (3.2 Shonitayal Payark Nishan (A Collection of Maithili Ghazals))

3156. (3.3 Dhari Prashna Ee Uthaiye (Jharkhand Mithila Manch, Ranchi, 2015; 1st ed.; print run 1000))

3157. (3.4 Phool Titli Aa Tulbul (Children's Lyrics, 2011))

3158. (3.5 Sonhula Ijotbala Khirki (Short Stories/Prose Poems, ISBN available))

3159. (IV. Theoretical Framework I: Indian Literary Criticism)

3160. (4.1 Rasa Theory: Bharatamuni to Abhinavagupta)

3161. (4.2 Dhvani Theory: Anandavardhana)

3162. (4.3 Vakrokti and Aucitya: Kuntaka and Kshemendra)

3163. (4.4 Modern Indian Criticism: Hajari Prasad Dwivedi and Ramvilas Sharma)

3164. (V. Theoretical Framework II: Western Literary Criticism)

3165. (5.1 Aristotelian Poetics: Mimesis, Catharsis, Unity)

3166. (5.2 Romantic and Post-Romantic Aesthetics)

3167. (5.3 New Criticism and Formalism: Empson, Brooks, Jakobson)

3168. (5.4 Post-Structuralism and Derrida's Différance)

3169. (5.5 Postcolonial Criticism: Spivak, Bhabha, Said)

3170. (5.6 Feminist Theory: Beauvoir, Butler, Spivak)

3171. (VI. Theoretical Framework III: Navya-Nyāya Epistemology as Literary Method)

3172. (6.1 Gaṅgeśa Upādhyāya and the Tattvacintāmaṇi)

3173. (6.2 Navya-Nyāya Applied to Literary Criticism)

3174. (6.3 The Dooshan Panji and Epistemological Courage)

3175. (VII. Critical Appreciation: Poetry and Lyrics (Aakhar Aakhar Geet Saras, 1999))

3176. (VIII. Critical Appreciation: The Ghazal Tradition (Shonitayal Payark Nishan))

3177. (IX. Critical Appreciation: Social and Political Verse (Dhari Prashna Ee Uthaiye, 2015))

3178. (X. Critical Appreciation: Children's Literature (Phool Titli Aa Tulbul, 2011))

3179. (XI. Critical Appreciation: Prose Vision (Sonhula Ijotbala Khirki))

3180. (XII. Saras and the Maithili Ghazal Revival: The Anchinhar Aakhar Context)

3181. (XIII. Comparative Analysis: Saras among Contemporary Maithili Poets)

3182. (XIV. Language, Idiom, and Prosody)

3183. (XV. Conclusion)

3184. (XVI. References and Bibliography)

3185. (A. Primary Texts by Siyaram Jha 'Saras')

3186. (B. Works on the Videha Parallel History Framework)

3187. (C. Indian Literary Theory)

3188. (D. Navya-Nyāya Sources)

3189. (E. Western Literary Theory)

3190. (F. Maithili Literary History)

3191. (G. Periodicals and Digital Sources)

3192. (CRITICAL APPRECIATION OF THE WORKS OF)

3193. (I. BIOGRAPHICAL AND PROFESSIONAL OVERVIEW)

3194. (II. THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK: SITUATING DR. SHAMBHU KUMAR SINGH)

3195. (III. THE SCHOLARLY OEUVRE: CRITICAL ANALYSIS)

3196. (A. Maithili Sahityak Kaal-Nirdharan (Periodisation of Maithili Literature))

3197. (B. Aadhhunik Maithili Naatakme Chitrit: Nirdhanataak Samasya (The Problem of Poverty in Modern Maithili Drama))

3198. (C. Maithili Samajik Naatakak Mul Kendra Bindu: Naari Samasya (The Woman Question as the Core of Maithili Social Drama))

3199. (D. Smriti Shesh: Snehil Aasheervacan (Surviving in Memory: An Affectionate Blessing))

3200. (E. The Poetry: Ateet, Aas, Lori, Baaju Sainik, Priyvaar Sampadakji)

3201. (F. Pakhalo: The Konkani Novel in Maithili Translation)

3202. (IV. NAVYA-NYĀYA EPISTEMOLOGICAL ANALYSIS)

3203. (A. Gaṅgeśa’s Framework and Dr. Singh’s Scholarly Method)

3204. (B. The Epistemology of Literary Translation)

3205. (V. RASA, DHVANI, VAKROKTI: INDIAN LITERARY THEORY)

3206. (A. Rasa Analysis)

3207. (B. Dhvani Theory (Anandavardhana))

3208. (C. Vakrokti (Kuntaka))

3209. (VI. WESTERN LITERARY-CRITICAL FRAMEWORKS)

3210. (A. Marxist and Materialist Criticism)

3211. (B. Postcolonial and Subaltern Studies)

3212. (C. Feminist Theory and Gender Studies)

3213. (D. Reception Theory and the Sociology of Literature)

3214. (VII. THEMATIC SYNTHESIS: THE SCHOLAR AS CULTURAL WORKER)

3215. (VIII. ASSESSMENT: STRENGTHS, LIMITATIONS, AND SIGNIFICANCE)

3216. (A. Strengths)

3217. (B. Limitations)

3218. (C. Significance within the Videha Parallel History Framework)

3219. (IX. BIBLIOGRAPHY AND REFERENCES)

3220. (Primary Sources: Works of Dr. Shambhu Kumar Singh)

3221. (Videha Archive Sources)

3222. (Indian Literary Theory)

3223. (Maithili Literary History and Criticism)

3224. (Western Literary Theory and Translation Studies)

3225. (A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE)

3226. (PART ONE: SHANTI LAKSHMI CHAUDHARY)

3227. (I. BIOGRAPHICAL PROFILE)

3228. (A. Identity and Formation)

3229. (B. Videha Archive: Complete Works Catalogue)

3230. (II. THEMATIC AND GENERIC ANALYSIS)

3231. (A. The 'Lesbian Continuum' Essay: A Landmark in Maithili Feminist Criticism)

3232. (B. Nature Poetry and the Mithila Ecological Imagination)

3233. (C. Children's Poetry and the Bāla Ghazal)

3234. (D. Ghazal: Register and Style)

3235. (III. THEORETICAL FRAMEWORKS)

3236. (A. Adrienne Rich and Feminist Continuum Theory)

3237. (B. Navya-Nyāya and the Epistemology of Feminist Knowledge)

3238. (C. Indian Alaṃkāra Tradition: Feminist Vakrokti)

3239. (D. Videha Parallel History Framework)

3240. (IV. SELECT BIBLIOGRAPHY — SHANTI LAKSHMI CHAUDHARY)

3241. (PART TWO: RAJEEV RANJAN MISHRA)

3242. (V. BIOGRAPHICAL PROFILE)

3243. (A. Identity and Formation)

3244. (B. Videha Archive: Complete Works Catalogue)

3245. (VI. THEMATIC AND GENERIC ANALYSIS)

3246. (A. The Bhakti Ghazal: Devotional and Classical)

3247. (B. The Jānakī Gīta: Sita in Mithila)

3248. (C. Faguā and Jogīrā: The Folk-Festive Register)

3249. (VII. THEORETICAL FRAMEWORKS)

3250. (A. Rasa Analysis: Bhakti, Śṛṅgāra, and Hāsya)

3251. (B. Navya-Nyāya: Śabda-Pramāṇa and the Devotional Tradition)

3252. (C. Mikhail Bakhtin: Carnivalesque and Generic Mixing)

3253. (D. Videha Parallel History Framework)

3254. (VIII. SELECT BIBLIOGRAPHY — RAJEEV RANJAN MISHRA)

3255. (Shardindu Chaudhary)

3256. (1. Biographical Profile at a Glance)

3257. (2. The Videha Special Issue 358: Context and Significance)

3258. (2.1 Contributors and Their Essays: Full Index)

3259. (3. Works of Shardindu Chaudhary: A Comprehensive Catalogue)

3260. (3.1 Works Table)

3261. (3.2 The Satirical Collections: Critical Analysis)

3262. (3.2.1 Bad Ajagut Dekhal...)

3263. (3.2.2 Goharaganesh)

3264. (3.2.3 Kariya Kakkak Coramin (2016))

3265. (3.3 The Memoir Series: Baat-Baat Par Baat (I–IV))

3266. (3.4 Ja Ham Janitahun)

3267. (3.5 Editorial Work: Samay-Sal)

3268. (4. Life, Personality and Intellectual Formation)

3269. (4.1 Temperament: Equanimity and Principled Firmness)

3270. (4.2 The Linguistic Identity: Servant of the Language, Not Just the Literature)

3271. (4.3 Intellectual Influences and Peer Network)

3272. (4.4 The Interview (Videha 358, pp. 21–25))

3273. (5. Critical Reception: Detailed Analysis of Tribute Essays)

3274. (5.1 Jagdish Chandra Thakur 'Anil' — Three Contributions)

3275. (5.2 Ram Bharos Kapadi 'Bhramar' — 'The Source of My Intellectual Thirst')

3276. (5.3 Vibha Rani — 'Serious Attachment to Principles')

3277. (5.4 Dr. Narayanji — 'A Voice of Resistance Against Incongruity')

3278. (5.5 Gaurinath — 'The Meaning of Being Shardindu Chaudhary')

3279. (5.6 Ashish Anchinhar — 'His Contribution to Maithili Literature')

3280. (5.7 Shridharam — Vidyapati's Verse as Critical Lens)

3281. (5.8 Lakshmana Jha Sagar — 'Genuine Maithilist')

3282. (6. Place in the Maithili Literary Tradition)

3283. (6.1 The Satirical-Comic Tradition: Harimohan Jha and Beyond)

3284. (6.2 The Periodical Tradition)

3285. (6.3 Memoir and Essayistic Prose)

3286. (6.4 The Parallel Tradition and Videha)

3287. (6.5 Shivshankar Srinivas: The Archive Connection)

3288. (7. Thematic Analysis of His Writing)

3289. (7.1 The Absurd as Social Critique)

3290. (7.2 Language as Political and Cultural Terrain)

3291. (7.3 Self and Society: The Comic-Autobiographical Mode)

3292. (7.4 Memory, Community and Cultural Transmission)

3293. (7.5 Cultural Integrity and Principled Commitment)

3294. (8. Overall Significance)

3295. (9. Associated Figures: The Literary World of Shardindu Chaudhary)

3296. (9.1 Writers Who Contributed to Videha 358)

3297. (10. The Maithili Literary Context: A Brief Orientation)

3298. (10.1 Maithili Language and Its Status)

3299. (10.2 The Satirical Tradition: Harimohan Jha)

3300. (10.3 The 21st Century: A Golden Age of Maithili Short Fiction)

3301. (Relationship with Maithili Fiction and Short Stories)

3302. (10.4 Periodical Culture and Literary Formation)

3303. (11.1 Primary Sources: Videha Special Issue 358)

3304. (11.2 Videha Archive PDFs (videha.co.in/pothi.htm / archive.org))

3305. (11.3 Web Sources)

3306. (CRITICAL APPRECIATION)

3307. (Preface: Three Frameworks, One Lens)

3308. (I. Biographical and Contextual Location)

3309. (1.1 Identity and Institutional Position:The Voice from Mithila)

3310. (1.2 The Videha Context)

3311. (II. Primary Texts: A Documented Catalogue)

3312. (III. Analysis Through Indian Kavyashastra)

3313. (Bharatamuni and Abhinavagupta)

3314. (— Anandavardhana)

3315. (Vakrokti Siddhanta — Kuntaka)

3316. (Auchitya Siddhanta — Kshemendra)

3317. (3.5 Alankara Shastra — Vamana and Mammata)

3318. (IV. Analysis Through Western Literary Criticism)

3319. (4.1 New Criticism: Organic Unity and the Well-Wrought Urn)

3320. (Marxist Aesthetics: Lukács, Eagleton, Williams)

3321. (4.3 Structuralism and Semiotics: Saussure, Barthes, Jakobson)

3322. (4.4 Postcolonial Theory: Spivak, Bhabha, Said)

3323. (4.5 Feminist Criticism and Gender Theory)

3324. (4.6 Deconstruction: Derrida)

3325. (V. The Videha Parallel History Framework (समानान्तर इतिहास))

3326. (Lens 1: Marxist Lens)

3327. (Lens 2: Historical Materialist Lens)

3328. (Lens 3: Structuralist Lens)

3329. (Lens 4: Magic-Realist Lens)

3330. (Lens 5: Postmodern Lens)

3331. (Lens 6: Feminist Lens)

3332. (Lens 7: Deconstructive Lens)

3333. (VI. Analysis Through Navya-Nyāya Epistemology)

3334. (6.1 The Navya-Nyāya System)

3335. (6.2 Navya-Nyāya Analysis of Dr. Prasad's Central Literary Claim)

3336. (6.3 Navya-Nyāya and the Dhvani Theory — Anumāna of Poetic Meaning)

3337. (6.4 Gaṅgeśa's Tattvacintāmaṇi and the Mithila Connection)

3338. (VII. Synthesis: A Converging Appreciation)

3339. (VIII. Short Fiction (Beehan Katha / Laghu Katha))

3340. (1 Overview)

3341. (2 Critical Analysis)

3342. (IX. Literary Criticism and Translation)

3343. (1 As a Literary Critic)

3344. (2 As a Translator)

3345. (XII. Synthesis: A Literary Appreciation)

3346. (XIII. Conclusion)

3347. (References and Primary Sources)

3348. (Primary Sources — Videha Archive (www.videha.co.in))

3349. (Indian Classical Sources)

3350. (Western Critical Sources)

3351. (I. BIOGRAPHICAL & CONTEXTUAL OVERVIEW)

3352. (1.1 Life and Background)

3353. (1.2 The Videha Literary Ecosystem)

3354. (1.3 The Two Primary Texts)

3355. (II. THEMATIC AND LITERARY ANALYSIS)

3356. (2.1 The Landscape of Mithila as Poetic Substrate)

3357. (2.2 The Rāga–Virāga Dialectic: Philosophy as Form)

3358. (2.3 Manak Haat: The Market as Epistemological Space)

3359. (2.4 Social Vision and the Question of Caste)

3360. (2.5 Language, Dialect, and Linguistic Consciousness)

3361. (III. CRITICAL APPRECIATION THROUGH THEORETICAL FRAMEWORKS)

3362. (3.1 Indian Critical Theory: Rasa, Dhvani, and Alaṃkāra)

3363. (3.1.1 Rasaśāstra: The Aesthetic of Feeling)

3364. (3.1.2 Dhvani: The Resonance Theory of Ānandavardhana)

3365. (3.1.3 Vakrokti and the Bent Speech of Kuntaka)

3366. (3.2 Western Literary Theory)

3367. (3.2.1 Formalism and New Criticism: The Poem as Verbal Icon)

3368. (3.2.2 Historicism and the Social Text: Bakhtin and Cultural Materialism)

3369. (3.2.3 Postcolonial Theory: The Language of the Colonised)

3370. (3.2.4 Feminist Theory: The Dedication as Political Act)

3371. (IV. THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK)

3372. (4.1 Gajendra Thakur's Parallel History: Theoretical Foundations)

3373. (4.2 Dr. Prasad's Work Within the Parallel History)

3374. (4.3 The Maithili Language Question and Dr. Prasad's Response)

3375. (V. NAVYA NYĀYA EPISTEMOLOGY AND LITERARY CRITICISM)

3376. (5.1 Gaṅgeśa Upādhyāya and the Tattvacintāmaṇi)

3377. (5.2 Navya Nyāya Categories Applied to Dr. Prasad's Poetry)

3378. (5.2.1 Pramā and Pramāṇa: Valid Cognition and its Sources)

3379. (5.2.2 Viṣayatā and Svarūpa: The Object of Poetic Cognition)

3380. (5.2.3 Pakṣatā: The Condition of the Subject of Inference)

3381. (5.2.4 Anyathāsiddhi and Literary Fallacies)

3382. (VI. COMPARATIVE LITERARY PERSPECTIVES)

3383. (6.1 Dr. Prasad in the Context of Contemporary Maithili Poetry)

3384. (6.2 Parallels with Kabir and the Sant Tradition)

3385. (6.3 Comparison with Global Minor Literature)

3386. (VII. FORMAL AND STYLISTIC ANALYSIS)

3387. (7.1 Prosody and Metre)

3388. (7.2 Imagery and Symbolism)

3389. (7.3 Intertextuality)

3390. (VIII. CRITICAL EVALUATION AND SIGNIFICANCE)

3391. (8.1 Literary Achievements)

3392. (8.2 Areas for Further Scholarly Attention)

3393. (8.3 Limitations and Challenges)

3394. (IX. CONCLUSIONS)

3395. (X. BIBLIOGRAPHY AND REFERENCES)

3396. (Primary Texts)

3397. (Videha & Parallel History Sources)

3398. (Indian Aesthetic Theory)

3399. (Navya Nyāya)

3400. (Western Literary Theory)

3401. (Maithili Literary History and Context)

3402. (A Critical Appreciation of)

3403. (Preface: The Momentary Flash That Illuminates)

3404. (I. Biographical and Socio-Literary Context)

3405. (I.1 Life and Formation)

3406. (I.2 Literary Inheritance: Kalikant Jha 'Buch' and the Family Tradition)

3407. (I.3 The Videha Connection)

3408. (II. Kṣaṇaprabhā (2012): A Reading of the Poetry)

3409. (II.1 The Collection in Overview)

3410. (II.2 Rasa, Bhāva, and the Lyric Tradition)

3411. (II.3 Dhvani and the Unsaid)

3412. (II.4 Social Poetry: Caste, Ecology, and Cultural Loss)

3413. (II.5 Seasonal and Festive Poetry: Aucitya and Cultural Memory)

3414. (II.6 The Ghazals: Formal Hybridity and the Tradition of Mithila)

3415. (III. Aṃśu (2013): Critical Studies in Maithili Literature)

3416. (III.1 Overview and Critical Method)

3417. (III.2 Dalit Representation in Maithili Fiction: The Opening Essay)

3418. (III.3 The Critique of the Sahitya Akademi Anthology)

3419. (III.4 The Reviews of Individual Works: Critical Range and Method)

3420. (IV. Shiv Kumar Jha 'Tillu' in the Videha Parallel History Framework)

3421. (IV.1 The Parallel Tradition and Its Writers)

3422. (IV.2 The Gaṅgeśa Connection: Navya Nyāya and Critical Practice)

3423. (IV.3 The Institutional Politics of Recognition)

3424. (V. Western Critical Frameworks Applied)

3425. (V.1 New Criticism and Formal Analysis)

3426. (V.2 Reader-Response Theory)

3427. (V.3 Postcolonial and Subaltern Theory)

3428. (V.4 New Historicism and Cultural Materialism)

3429. (VI. Synthesis: Strengths, Limitations, and Significance)

3430. (VI.1 Strengths)

3431. (VI.2 Areas for Development)

3432. (VI.3 The Question of Legacy)

3433. (VII. Conclusion: The Flash and What It Illuminates)

3434. (Select Bibliography and Primary Sources)

3435. (Primary Texts)

3436. (Videha and Parallel History Sources)

3437. (Indian Aesthetic and Philosophical Sources)

3438. (Western Critical Theory)

3439. (Secondary and Contextual Sources)

3440. (CRITICAL APPRECIATIONS)

3441. (Archive Presence & Works)

3442. (Thematic & Critical Analysis)

3443. (Theoretical Frameworks)

3444. (Select Bibliography)

3445. (Archive Presence & Works)

3446. (Thematic & Critical Analysis)

3447. (Theoretical Frameworks)

3448. (Select Bibliography)

3449. (Archive Presence & Works)

3450. (Thematic & Critical Analysis)

3451. (Theoretical Frameworks)

3452. (Select Bibliography)

3453. (Archive Presence & Works)

3454. (Thematic & Critical Analysis)

3455. (Theoretical Frameworks)

3456. (Select Bibliography)

3457. (Archive Presence & Works)

3458. (Thematic & Critical Analysis)

3459. (Theoretical Frameworks)

3460. (Select Bibliography)

3461. (Archive Presence & Works)

3462. (Thematic & Critical Analysis)

3463. (Theoretical Frameworks)

3464. (Select Bibliography)

3465. (A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)

3466. (TABLE OF CONTENTS)

3467. (II. BIOGRAPHICAL OVERVIEW)

3468. (III. BIBLIOGRAPHIC SURVEY OF PUBLISHED WORKS)

3469. (A. Creative Works (Story Collections))

3470. (B. Critical and Editorial Works)

3471. (C. Translated Work)

3472. (IV.A Gamak Lok (2005) — The Village People)

3473. (IV.B Adahan (1991) — Burning / Smouldering)

3474. (IV.C Guna Katha (2014) — Story of Qualities / Merit)

3475. (IV.D Mati / Maati (2021) — Soil / Earth)

3476. (IV.E Critical Works)

3477. (V. NARRATIVE CRAFT AND STYLE)

3478. (1. Grounding in Village Life)

3479. (2. Psychological Interiority Without Dramatism)

3480. (3. Observer-Narrator Positioning)

3481. (4. Regional Linguistic Authenticity)

3482. (5. Social Change as Theme, Not Agent)

3483. (6. Use of Folk Materials)

3484. (7. Narrative Closure and Thematic Resolution)

3485. (VI. WESTERN CRITICAL PERSPECTIVES)

3486. (VI.A Formalism and New Criticism)

3487. (VI.B Structuralism and Narratology)

3488. (VI.C Postcolonial and Subaltern Perspectives)

3489. (VI.D Feminist Literary Criticism)

3490. (VII. INDIAN CRITICAL PERSPECTIVES)

3491. (VII.A Rasa Theory (Bharata and Abhinavagupta))

3492. (VII.B Dhvani (Suggestion) and Vakrokti (Oblique Expression))

3493. (VII.C The Navya Nyaya Epistemological Framework of Gangesa Upadhyaya)

3494. (Pratyaksha (Perception) in Sriniwas)

3495. (Anumana (Inference) in Sriniwas)

3496. (Upamana (Comparison/Analogy) in Sriniwas)

3497. (Shabda (Testimony/Word) in Sriniwas)

3498. (The Navya Nyaya Concept of Visheshana-Visheshya (Qualifier-Qualificand) in Character Analysis)

3499. (VIII. COMPARATIVE LITERARY STUDY)

3500. (VIII.A Shivshankar Sriniwas and Kathakar Ashok)

3501. (VIII.B Shivshankar Sriniwas and Kumar Pawan)

3502. (VIII.C Sriniwas in the Context of Maithili Short Fiction)

3503. (IX. CRITICAL RECEPTION AND HONOURS)

3504. (X. STRENGTHS, LIMITATIONS, AND ASSESSMENT)

3505. (Strengths)

3506. (Limitations)

3507. (Overall Assessment)

3508. (XI. CONCLUSION)

3509. (XII. REFERENCES AND BIBLIOGRAPHY)

3510. (Primary Sources (Works of Sriniwas))

3511. (Secondary Sources — Videha 424 (August 2025))

3512. (Journalism and Online Sources)

3513. (Scholarly Articles)

3514. (Indian Critical Theory)

3515. (Western Critical Theory)

3516. (Reference — Navya Nyaya)

3517. (Nit Naval Subhash Chandra Yadav)

3518. (A COMPLETE CRITICAL RESEARCH AND APPRECIATION OF THE WORKS OF SUJIT KUMAR JHA)

3519. (PREFACE)

3520. (PART I: BIOGRAPHICAL AND CONTEXTUAL PORTRAIT)

3521. (1.1 Life and Vocation)

3522. (1.2 The Nepal-Side Maithili Context)

3523. (PART II: THEORETICAL FRAMEWORKS)

3524. (2.1 Indian Classical Theory)

3525. (Rasa-Dhvani and the Reader-as-Sahṛdaya)

3526. (Vakrokti, Alaṃkāra, and Aucitya)

3527. (2.2 Navya Nyāya: Gaṅgeśa as Epistemological Model)

3528. (The Tattvacintāmaṇi and the Four Pramāṇas)

3529. (Applying Navya Nyāya to Jha's Fiction)

3530. (2.3 Western Critical Theories)

3531. (Russian Formalism and Defamiliarisation)

3532. (New Criticism: Organic Unity, Paradox, Ambiguity)

3533. (Postcolonialism and the Nepal-India Border Identity)

3534. (Feminist Narratology)

3535. (Children's Literature Theory: Maria Nikolajeva and Perry Nodelman)

3536. (The Reporter's Gaze: New Journalism and the Essay)

3537. (PART III: THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK)

3538. (3.1 The Parallel History and Nepal-Side Maithili)

3539. (3.2 The Journalist-Writer Tradition in the Parallel History)

3540. (PART IV: CRITICAL APPRECIATION OF THE EIGHT PRIMARY TEXTS)

3541. (4.1 Chiṛai (चिड़ै) — Short Stories)

3542. (Bibliographic Details)

3543. (Stories and Themes)

3544. (The Chandresh Essay: A Critical Document)

3545. (Critical Assessment: Chiṛai)

3546. (4.2 Jiddī (जिद्दी) — Short Stories)

3547. (Bibliographic Details)

3548. (Formal Analysis and Story Content)

3549. (4.3 Bulbul (बुलबुल) — Short Stories)

3550. (Bibliographic Details)

3551. (Critical Assessment)

3552. (4.4 Gandha (गन्ध) — Short Stories)

3553. (Bibliographic Details and Content)

3554. (4.5 Khajurībālī (खजुरीबाली) — Short Stories)

3555. (Bibliographic Details)

3556. (Formal and Thematic Analysis)

3557. (4.6 Koilī Ghūri Āu (कोइली घूरि आउ) — Children's Stories)

3558. (Bibliographic Details)

3559. (Critical Assessment: Children's Literature and Cultural Transmission)

3560. (4.7 Reporter Diary (रिपोर्टर डायरी) — Memoir-Essays)

3561. (Bibliographic Details and Content)

3562. (Critical Analysis: The Genre of Reporter Diary)

3563. (4.8 Doodhmati Weekly — Feature Journalism)

3564. (Bibliographic Details)

3565. (PART V: SYNTHETIC ANALYSIS AND CRITICAL ASSESSMENT)

3566. (5.1 The Coherence of Jha's Literary Project)

3567. (5.2 Jha and the Parallel Tradition: A Final Assessment)

3568. (5.3 The Navya Nyāya Synthesis)

3569. (PART VI: REFERENCES AND BIBLIOGRAPHY)

3570. (Primary Sources)

3571. (Critical Works Contained in Primary Sources)

3572. (Digital and Archival Sources)

3573. (Indian Classical Theory)

3574. (Navya Nyāya)

3575. (Western Literary Theory)

3576. (Maithili Literary History and Context)

3577. (APPENDIX: METHODOLOGICAL NOTE)

3578. (EVER NEW SUSHIL)

3579. (Beyond the Rhetoric: The Fractured Voice of Taranand Viyogi)

3580. (A Critical Appreciation of)

3581. (Preface: The Act of Naming the Unnamed)

3582. (I. Biographical and Socio-Cultural Context)

3583. (II. Nistuki (2009; 2nd ed. 2012): A Reading of the Poetry)

3584. (II.1 Textual Description and Formal Overview)

3585. (II.2 The Poetics of Exile: Padain, Threshold, and Ecological Loss)

3586. (II.3 Subaltern Consciousness and the Politics of the Lyric Voice)

3587. (II.4 Rasa, Dhvani, and Aucitya: Indian Aesthetic Frameworks)

3588. (II.5 New Critical Close Reading: Selected Poems)

3589. (II.6 Environmental Poetics and the Kosi-Kamla Landscape)

3590. (III. Jagdish Prasad Mandalak Kavya Sansar (2022): Critical Praxis and Research Method)

3591. (III.1 Overview of the Work)

3592. (III.2 Biographical Recovery and the Ethics of Critical Care)

3593. (III.3 The Navya Nyāya Method Applied to Critical Analysis)

3594. (III.4 Contribution to Maithili Literary Historiography)

3595. (IV. Umesh Mandal and the Videha Parallel History Framework)

3596. (IV.1 The Framework's Central Claims)

3597. (IV.2 Umesh Mandal's Position Within the Framework)

3598. (IV.3 The Gaṅgeśa Connection: Navya Nyāya, Mithila, and Literary Epistemology)

3599. (V. Intersecting Western Critical Frameworks)

3600. (V.1 Postcolonial Theory)

3601. (V.2 Subaltern Studies and Voice)

3602. (V.3 New Historicism and Cultural Materialism)

3603. (V.4 Reader-Response Theory)

3604. (VI. Synthesis and Critical Assessment)

3605. (VI.1 Strengths and Achievements)

3606. (VI.2 Areas for Further Development)

3607. (VI.3 The Question of Reception and Recognition)

3608. (VII. Conclusion: The Voice That Names the Voiceless)

3609. (Select Bibliography and Primary Sources)

3610. (Primary Texts)

3611. (Videha Sources)

3612. (Indian Critical and Philosophical Tradition)

3613. (Western Critical Theory)

3614. (Secondary and Contextual Sources)

3615. (A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)

3616. (Preface)

3617. (Chapter I: Umesh Paswan — Community, Context, and the Videha Framework)

3618. (1.1 The Paswan/Dusadh Community in Mithila)

3619. (1.2 The Videha Movement and Umesh Paswan's Place Within It)

3620. (1.3 Gangesa Upadhyaya and the Mithila Epistemological Context)

3621. (Chapter II: Virnit Ras — The Poetry Collection)

3622. (2.1 Overview and Structure)

3623. (2.2 Key Poems and Their Analysis)

3624. (2.2.1 Kagaz (Paper))

3625. (2.2.2 Samaj (Society))

3626. (2.2.3 Ravan-Kans (Ravan-Kansa))

3627. (2.2.4 Gelhe Ghar Chhi (The Home That Has Gone))

3628. (2.2.5 Dalidar (Poverty))

3629. (2.2.6 Mithilaak Naari (The Woman of Mithila))

3630. (2.2.7 Hariian (Harijan))

3631. (2.3 The Preface Poem as Critical Statement)

3632. (Chapter III: Mujrim — The Short Story Collection)

3633. (3.1 The Title and Its Significance)

3634. (3.2 Key Stories and Their Analysis)

3635. (3.2.1 Sunanda — Gender, Moral Courage, and Village Hypocrisy)

3636. (3.2.2 Solkanama Pokhar — Water, Caste, and Crisis)

3637. (3.2.3 Girhast Ghar Par Giddh — Caste Violence and Collective Resistance)

3638. (3.2.4 Tetar Das — Scholarship, Faith, and Caste Identity)

3639. (3.2.5 Kodar Chhap (The Hoe-Print/Thumbprint))

3640. (3.2.6 Dostak Biaahe (Friend's Wedding))

3641. (3.2.7 Bhagwanpur — Humanist Sainthood and Caste's Final Barrier)

3642. (3.3 Narrative Craft and Moral Structure)

3643. (Chapter IV: Critical Frameworks Applied)

3644. (4.1 Bharata's Natyashastra — Rasa, Abhinaya, and Social Drama)

3645. (4.2 Navya Nyaya Epistemology and Literary Knowledge)

3646. (4.3 Dalit Aesthetics (Sharankumar Limbale))

3647. (4.4 Protest Poetry Traditions — Langston Hughes, Namdeo Dhasal, and Paswan)

3648. (4.5 Social Realism and Georg Lukács)

3649. (4.6 Feminist Intersectionality)

3650. (Chapter V: Comparative Study — Paswan and Dalit Writers across Languages)

3651. (5.1 The Comparative Framework)

3652. (5.2 Paswan and Omprakash Valmiki)

3653. (5.3 Paswan and Namdeo Dhasal)

3654. (5.4 Paswan and Bama)

3655. (Chapter VI: Synthesis — Umesh Paswan's Place in Literary History)

3656. (6.1 The Double Achievement: Poetry and Fiction)

3657. (6.2 The 'Mujrim' as Critical Concept)

3658. (6.3 The Videha Movement's Achievement)

3659. (6.4 Concluding Assessment)

3660. (References and Bibliography)

3661. (Primary Sources)

3662. (Videha Framework and Maithili Scholarship)

3663. (Indian Classical Aesthetics and Navya Nyaya)

3664. (Dalit Aesthetics and Comparative Dalit Literature)

3665. (Western Literary Theory)

3666. (VOICES FROM MITHILA)

3667. (Table of Contents)

3668. (I. Preface and Methodological Orientation)

3669. (II. Contextual Frameworks: Theories Applied)

3670. (II.A Classical Indian Literary Criticism)

3671. (Rasa Theory)

3672. (Dhvani and Vyañjanā)

3673. (Aucitya (Decorum/Propriety))

3674. (II.B Bharata's Nāṭyaśāstra: Drama Theory)

3675. (II.C Western Critical Theories)

3676. (Aristotle's Poetics and Tragedy)

3677. (Brecht's Epic Theatre)

3678. (Feminist Theory)

3679. (Postcolonial Theory)

3680. (Diasporic Studies)

3681. (II.D The Videha Parallel History Framework)

3682. (II.E Bihani Kathā vs Laghukathā: The Genre Debate)

3683. (II.F The Bilingual Writers Debate)

3684. (II.G India–Nepal Maithili Asymmetry)

3685. (II.H Navya-Nyāya Epistemology as Critical Method)

3686. (III. Vibha Rani: Works and Critical Appreciation)

3687. (III.A Biographical and Literary Profile)

3688. (III.B Bhāg Rau (Run Away): Close Reading)

3689. (Synopsis and Structure)

3690. (Thematic Analysis)

3691. (Formal and Linguistic Analysis)

3692. (III.C Balchandā: A Feminist Dramaturgy)

3693. (Structure and Performance)

3694. (Feminist Critical Reading)

3695. (Nāṭyaśāstra Reading: Abhinaya and the Female Body)

3696. (IV. Bindeshwar Thakur: Works and Critical Appreciation)

3697. (IV.A Biographical and Literary Profile)

3698. (IV.B The Ghazal Section: Form, Prosody, and Thematic Content)

3699. (IV.C Sher-o-Shāirī Section)

3700. (IV.D Laghukathā and Bihani Kathā)

3701. (IV.E The India–Nepal Asymmetry: Thakur's Position)

3702. (V. Anmol Jha: Works and Critical Appreciation)

3703. (V.A Biographical and Literary Profile)

3704. (V.B Samay Sākṣī Ṭhik: Laghukathā as Social Witness)

3705. (V.C CCRT Research Report: Maithili Children's Literature)

3706. (V.D The Bilingual Critic: Jha's Critical Methodology)

3707. (VI. Comparative Analysis and Synthesis)

3708. (VI.A Common Themes and Concerns)

3709. (VI.B Genre and Form as Political Practice)

3710. (VI.C Navya-Nyāya as Unifying Critical Framework)

3711. (VII. Conclusion)

3712. (VIII. Bibliography and References)

3713. (Primary Texts)

3714. (Classical Indian Texts)

3715. (Secondary Sources: Indian Literary Criticism and Poetics)

3716. (Secondary Sources: Maithili Literature and Culture)

3717. (Secondary Sources: Western Critical Theory)

3718. (Online Resources)

3719. (VIDEHA ISSUES 351-438)

3720. (The Videha Parallel Audio Video Archive: Digital Remediation, Subaltern Historiography, and the Restoration of Maithili Linguistic Sovereignty)

3721. (The Singer in the Maithili Parallel Tradition)

3722. (Critical Assessment)

3723. (1.1 The Singer in the Maithili Parallel Tradition)

3724. (2.1 Indian Theory: The Singer as Rasa-Medium)

3725. (2.2 Navya-Nyaya: Shabda-Pramana through Song)

3726. (The Videha Maithili Parallel Drama Theatre: A Critical Historiography and Epistemological Analysis)

3727. (Methodological Note)

3728. (I. Archive Evidence)

3729. (II. Videha Samman 2013: Aparna Kumari)

3730. (III. Critical Analysis)

3731. (3.1 The Performing Arts within the Videha Parallel Framework)

3732. (3.2 Navya-Nyaya: Shabda-Pramana and Cultural Testimony)

3733. (The Epistemology of Parallelism: A Comprehensive Research Report on the Videha (Issue 1-350) Sadeha Series (1-37) and the Maithili Digital Renaissance)

3734. (Preamble: The Question of Evidence)

3735. (Navya Nyāya as Critical Framework)

3736. (The Founding Testimony: Text and Context)

3737. (II. The Critical Vocabulary of the Statement)

3738. (II. The Videha Parallel History Framework and Its Stakes)

3739. (III. Indian Critical Frameworks: Rasa, Dhvani, and Bhāmaha)

3740. (IV. Western Critical Frameworks: Reception, Performativity, Field Theory)

3741. (V. The Gajendra Thakur Critical Essay as Framework: A Reading)

3742. (Ānandavardhana speaks of dhvani as the light (prabha) that poetry casts on the world; Abhinavagupta describes the

aesthetic experience of rasa as a moment of luminous self-expansion (svaprakāśa).)

3743. (In the specific context of Maithili literary history, a poetry/ prose collection by a parallel tradition writer has a further resonance: it is a claim that the community's experience- so long excluded from canonical Maithili literary representation- is itself part of what constitutes the age's radiance. Not supplementary, not marginal, not an exception: constitutive. This is the counter-canonical move that the Videha Parallel History Framework had been theorising since 2008, now enacted in poetic form.)

3744. (VI. The Significance of Position: Canon-Formation in Practice)

3745. (VII. The Epistemological Limit: What the Archive Does Not Establish)

3746. (VIII. The Broader Significance: Mithilā's Epistemological Heritage)

3747. (IX. Conclusion: The Light the Age Casts)

3748. (Methodological Note)

3749. (I. Archive Evidence)

3750. (II. The Plagiarism Controversy and Bhalchandra Jha's Response)

3751. (III. Critical Analysis)

3752. (3.1 The Sea Metaphor and Literary Ethics)

3753. (3.2 Rasa and the Dhirodatta Voice)

3754. (3.3 Western Theory: Habermas and the Literary Public Sphere)

3755. (3.4 Navya-Nyaya: Apta Testimony and Epistemic Courage)

3756. (1. Introduction: Videha and the Parallel Children's Literature Project)

3757. (2. The Corpus: Videha Parallel Children's Literature)

3758. (2.1 Scope and Classification)

3759. (2.2 The Videha kids.htm Portal: A Comprehensive Digital Ecosystem)

3760. (3. Gajendra Thakur & Preeti Thakur: Editorial and Creative Contributions)

3761. (3.1 Gajendra Thakur: Architect of the Parallel Archive)

3762. (3.1.1 Theoretical Contribution: "Shishu, Bāl ā Kishor Sāhitya ā Okar Samīkṣāśāstra")

3763. (3.1.2 Creative Contribution: Tarharime Pariloke (Novel))

3764. (3.1.3 Editorial Infrastructure: The Kids Portal Architecture)

3765. (3.2 Preeti Thakur: the Picture-Narrative Tradition)

3766. (4. The Videha Parallel History Framework)

3767. (4.1 Concept and Method)

3768. (4.2 Vedic Origins and World Literature)

3769. (4.3 The Software Metaphor: Children's Literature as Indelible Code)

3770. (4.4 Navya-Nyāya and Parallel History: The Mithila Connection)

3771. (5. Selected Textual Analyses: Theory in Practice)

3772. (5.1 Jyoti Sunit Chaudhary: Grandmother's Tales as Testimonial Archive)

3773. (5.2 Shiv Kumar Jha 'Tillu': Psychological Realism in Children's Verse)

3774. (5.3 The Science Writers: Epistemological Expansion)

3775. (5.4 Children's Novel (Bāl Upanyās): Jagadananda Jha's Chonhā)

3776. (5.5. Jagdish Chandra Thakur 'Anil': A Critical Study of Children's Poetry)

3777. (5.5.1. Biographical and Literary Profile)

3778. (5.5.2. Works in the Videha Archive (videha.co.in/pothi.htm & kids.htm))

3779. (5.5.3. Children's Poetry: Bāl Kavitā — Textual Analysis)

3780. (Poem 1: Hamrahi Khāitar (हमरिह् खिातर) — "For Us")

3781. (Poem 2: Bucci Baṛhatī (बुच्ची बढ़ती) — "The Girl Grows")

3782. (Adult Poetry: The Long Poem and Ghazal Tradition)

3783. (Critical Evaluation: 'Anil' in the Parallel History Framework)

3784. (5.6. Pawan Kant Jha 'Kashyap Kamal': Bābūk Sunāel Khissā — The Father's Stories)

3785. (1 Biographical Profile and Literary Position)

3786. (2 Bābūk Sunāel Khissā: The Father's Tale Tradition)

3787. (2.1 Sahasramukha Dīp (सहस्रमुखक दीप) — The Thousand-Faced Lamp)

3788. (2.2 Jahiyāsē Kāl Dhelak (जहियासँ काल धेलक) — Since the Time Death Seized)

3789. (2.3 Nīk Karī Tō Paigh Ke? Bejāe Karī Tō Paigh Ke? (If You Do Good, Who Is Great? If You Do Wrong, Who Is Great?))

3790. (3 Narrative Style and Critical Assessment)

3791. (6. Indian Literary Theories Applied to Children's Literature)

3792. (6.1 Rasa Theory (Bharata's Nāṭyaśāstra))

3793. (6.2 Dhvani Theory (Ānandavardhana's Dhvanyāloka))

3794. (6.3 Navya-Nyāya Epistemology as Critical Framework)

3795. (7. Western Literary Theories)

3796. (7.1 Developmental Psychology and Reader-Response Theory)

3797. (7.2 Bettelheim's Uses of Enchantment)

3798. (7.3 Feminist Theory and 'Anil's Bucci Baṛhatī)

3799. (7.4 Postcolonial Theory and Language Revitalisation)

3800. (7.5 Vladimir Propp's Morphology and Folk-Tale Structure)

3801. (8. The Broader Videha Children's Literature Corpus)

3802. (8.1 Jyoti Sunit Chaudhary: Grandmother's Tales as Testimonial Archive)

3803. (8.2 Science Writing and Epistemological Expansion)

3804. (8.3 Comics and Visual Narrative: Preeti Thakur's series)

3805. (9. The Digital and Audio-Visual Ecosystem of kids.htm)

3806. (9.1 YouTube Channel and Video Resources)

3807. (9.2 Audio Resources: Maithili Pathshala)

3808. (9.3 Script and Keyboard Resources: Digital Sovereignty)

3809. (10. Critical Criteria for Maithili Children's Literature: A Revised Synthesis)

3810. (11. Conclusion: The Indelible Archive)

3811. (12. Bibliography and Archival Sources)

3812. (Primary Sources — Videha Archive (www.videha.co.in/kids.htm))

3813. (Videha Parallel History Sources)

3814. (Indian Theoretical Sources)

3815. (Western Theoretical Sources)

3816. (VINEET UTPAL: A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION)

3817. (A Comprehensive Research Report and Critical Appreciation Integrating Indian and Western Literary Theory, the Videha Parallel History Framework, Translation Theory, and Navya-Nyāya Epistemology of Gaṅgeśa Upādhyāya)

3818. (PART I: BIOGRAPHICAL OVERVIEW AND LITERARY CONTEXT)

3819. (1.1 Life and Formation)

3820. (1.2 The Videha Context)

3821. (PART II: PRIMARY WORKS — DESCRIPTION AND ANALYSIS)

3822. (2.1 Hum Puchhait Chhi (We Are Asking), 2009)

3823. (2.2 Mohandas — Maithili Translation of Uday Prakash’s Hindi Novella)

3824. (2.3 Rehan Par Raghu — Maithili Translation of Kashinath Singh’s Hindi Story)

3825. (2.4 Mantradrashta Rishyashringa (Śrutiprakashan edition) — Maithili Translation)

3826. (PART III: CRITICAL APPRECIATION THROUGH MULTIPLE FRAMEWORKS)

3827. (3.1 Indian Rasa-Dhvani Aesthetics (Bharata, Ānandavardhana, Abhinavagupta))

3828. (3.2 Western Literary Frameworks)

3829. (3.2.1 New Criticism and Close Reading)

3830. (3.2.2 Post-Colonial Theory (Spivak, Bhabha, Fanon))

3831. (3.2.3 Marxist and Materialist Criticism)

3832. (3.2.4 Feminist and Gender Criticism)

3833. (3.2.5 Reader-Response Theory and Hermeneutics)

3834. (3.3 Translation Theory Applied to Utpal’s Practice)

3835. (3.3.1 Eugene Nida’s Formal vs. Dynamic Equivalence)

3836. (3.3.2 Lawrence Venuti’s Domestication vs. Foreignization)

3837. (3.3.3 Antoine Berman’s Ethics of Translation)

3838. (3.3.4 Walter Benjamin’s “The Task of the Translator”)

3839. (3.4 The Videha Parallel History Framework)

3840. (3.5 Navya-Nyāya Epistemology and the Methodology of Gaṅgeśa Upādhyāya)

3841. (3.5.1 Introduction to Navya-Nyāya)

3842. (3.5.2 Applying Navya-Nyāya to Utpal’s Poetry)

3843. (3.5.3 The Suppressed Gaṅgeśa and Utpal’s Position)

3844. (PART IV: UTPAL AS CULTURAL ACTIVIST AND LITERARY-POLITICAL AGENT)

3845. (4.1 The RTI Intervention: Democratic Epistemology in Action)

3846. (4.2 The Poet as Sākṣī (Witness))

3847. (PART V: ASSESSMENT, SIGNIFICANCE, AND CONCLUSION)

3848. (5.1 Literary Significance)

3849. (5.2 Place in the Parallel Tradition)

3850. (5.3 Critical Evaluation)

3851. (REFERENCES AND BIBLIOGRAPHY)

3852. (Primary Texts)

3853. (Videha Primary Sources)

3854. (Indian Literary Theory and Aesthetics)

3855. (Western Literary Theory)

3856. (Translation Studies)

3857. (Maithili Literary History and Context)

3858. (Online and Digital Sources)

3859. (A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF)

3860. (Preface)

3861. (Chapter I: Mithila, Maithili, and the Literary Tradition)

3862. (1.1 The Civilizational Matrix of Mithila)

3863. (1.2 Modern Maithili Literature and the Videha Legacy)

3864. (1.3 Gangesa Upadhyaya and the Mithila Philosophical Tradition)

3865. (Chapter II: Critical Appreciation of Yoganand Jha)

3866. (2.1 Biographical and Contextual Overview)

3867. (2.2 Survey of Major Works)

3868. (2.2.1 Jatiya Vyavasaya Shabdavali (Occupational Vocabulary of Castes))

3869. (2.2.2 Lokjivan aur Loksahitya (Folk Life and Folk Literature))

3870. (2.2.3 Aalekh Sanchayan (Collected Essays))

3871. (2.2.4 Gahbar Geet (Songs of the Deep Forest))

3872. (2.2.5 Katha-Lokkatha (Stories and Folktales))

3873. (2.2.6 Shabd-Lok Sahitya Sampada (Lexical Heritage of Folk Literature))

3874. (2.2.7 Bhore Bhor (Dawn of Dawns))

3875. (2.2.8 Sitavataran (The Descent of Sita))

3876. (2.2.10 Mangal Prabhat (Auspicious Dawn))

3877. (2.2.11 Sankalp (Resolution/Vow))

3878. (2.2.12 Shakt Sahitya (Shakta Literature))

3879. (2.3 Thematic Coherence and Critical Assessment)

3880. (Chapter III: Critical Appreciation of Kamla Chaudhary)

3881. (3.1 Biographical and Contextual Overview)

3882. (3.2 Survey of Major Works)

3883. (3.2.1 Monak Pauti (The Coral Bead / Symbol of the Married Woman))

3884. (3.2.2 Samay Sanket (Signs/Signals of Time))

3885. (3.2.3 Vesh Bhusha (Dress and Adornment))

3886. (3.3 Thematic Coherence and Critical Assessment)

3887. (Chapter IV: Critical Appreciation of Lalita Jha)

3888. (4.1 Biographical and Contextual Overview)

3889. (4.2 Analysis of Maithilik Bhojan Sambandhi Sabdavali)

3890. (4.2.1 Description and Scope)

3891. (4.2.2 Lexicographic Methodology and Cultural Significance)

3892. (4.2.3 Food as Literary and Aesthetic Category)

3893. (4.2.4 Gender, Kitchen, and Epistemic Authority)

3894. (4.3 Lalita Jha as Folklorist: The Broader Contribution)

3895. (Chapter V: Critical Frameworks — A Synthesis)

3896. (5.1 Navya Nyaya and Literary Epistemology)

3897. (5.2 Indian Classical Aesthetic Theory)

3898. (5.2.1 Rasa Theory (Bharatamuni, Abhinavagupta))

3899. (5.2.2 Dhvani Theory (Anandavardhana))

3900. (5.2.3 Vakrokti Theory (Kuntaka))

3901. (5.2.4 Alankara Theory (Dandin, Vamana))

3902. (5.3 Western Literary Theories)

3903. (5.3.1 New Criticism and Close Reading)

3904. (5.3.2 Russian Formalism and Structuralism)

3905. (5.3.3 Feminist Literary Criticism)

3906. (5.3.4 Post-colonial Theory)

3907. (5.3.5 Reader-Response Theory)

3908. (Chapter VI: Synthesis and Conclusions)

3909. (6.1 Three Writers, One Tradition)

3910. (6.2 The Navya Nyaya Framework as Critical Instrument)

3911. (6.3 The Significance of the Videha Archive)

3912. (6.4 Future Directions)

3913. (References and Bibliography)

3914. (Primary Sources — Videha Digital Archive)

3915. (Secondary Sources — Maithili Literary Scholarship)

3916. (Navya Nyaya and Indian Philosophy)

3917. (Indian Classical Aesthetics)

3918. (Western Literary Theory)

3919. (Maithili Cultural Studies and Linguistics)

3920. (A COMPLETE CRITICAL APPRECIATION OF YOGENDRA PATHAK VIYOGI)

3921. (CRITICAL APPRECIATION)

3922. (I. BIOGRAPHICAL AND CONTEXTUAL OVERVIEW)

3923. (A. Origins and Formation)

3924. (B. Postdoctoral Fellowships and International Affiliations)

3925. (C. Institutional Roles)

3926. (D. Awards and Honours)

3927. (II. SCHOLARLY CORPUS: ANNOTATED CATALOGUE)

3928. (A. Doctoral Dissertation)

3929. (B. Major Books)

3930. (C. Key Journal Articles on Maithili)

3931. (D. Works on Language Policy and Documentation)

3932. (III. YOGENDRA P. YADAVA AND THE VIDEHA TRADITION)

3933. (A. Presence in the Videha Archive)

3934. (B. The Videha Parallel History Framework and Yadava's Significance)

3935. (IV. CRITICAL ANALYSIS: MAJOR SCHOLARLY CONTRIBUTIONS)

3936. (A. Formal Syntax: Government-Binding and the Maithili Parameter)

3937. (B. Verb Agreement, Social Hierarchy, and Face Theory)

3938. (C. Raising from Tensed Clauses: A Typological Argument)

3939. (D. Syntax of Possessor Prominence)

3940. (E. Lexicography and Language Documentation)

3941. (V. THEORETICAL FRAMEWORKS: A SYSTEMATIC ASSESSMENT)

3942. (A. Saussurean Structuralism)

3943. (B. Chomskyan Generative Grammar)

3944. (C. Typological Linguistics)

3945. (D. Sociolinguistics)

3946. (E. Navya-Nyāya Epistemology of Gaṅgeśa)

3947. (F. Indian Alaṃkāra Tradition and Comparative Literary Linguistics)

3948. (VI. THE VIDEHA PARALLEL HISTORY FRAMEWORK: CRITICAL ASSESSMENT)

3949. (A. Yadava as a Parallel History Figure)

3950. (B. Language Rights as Parallel Literary Politics)

3951. (C. Greyersonian Legacy and its Critique)

3952. (VII. WESTERN CRITICAL FRAMEWORKS)

3953. (A. Bourdieu: Linguistic Capital and Field Theory)

3954. (B. Joshua Fishman: Language Maintenance and Shift)

3955. (C. Skutnabb-Kangas: Linguistic Human Rights)

3956. (D. Derrida, Bhartrihari, and the Philosophy of Language)

3957. (VIII. CRITICAL SYNTHESIS: STRENGTHS, LIMITATIONS, LEGACY)

3958. (A. Strengths)

3959. (B. Limitations and Open Questions)

3960. (C. Legacy)

3961. (IX. SELECT BIBLIOGRAPHY)

3962. (Primary Sources: Works of Prof. Yogendra P. Yadava)

3963. (Videha Sources)

3964. (Secondary Sources: Linguistic Theory)

3965. (APPENDIX: METHODOLOGICAL NOTE)

बिबलियोग्राफी

(केवल पुस्तकक नाम)

• (A Survey of Maithili Literature)

• (A History of Maithili Literature)

• (Maithili Chrestomathy)

• (Linguistic Survey of India)

• (The Languages of India)

• (Tattvacintamani)

• (Epistemology, Logic and Grammar in Indian Philosophical Analysis)

• (Epistemology in Classical India: The Knowledge Sources of the Nyaya School)

• (Encyclopedia of Indian Philosophies: Indian Philosophical Analysis: Nyaya-Vaisesika from Gangesa to Raghunatha Siromani)

• (The Navya-Nyaya Doctrine of Negation)

• (The Natyasastra)

• (Dhvanyaloka)

• (Vakroktijivita)

• (Auchityavicharacharcha)

• (Kavyaprakasha)

• (Sahityadarpana)

• (Poetics)

• (The Rhetoric)

• (Metahistory)

• (The Content of the Form)

• (Theory of Literature)

• (The Dialogic Imagination)

• (The Political Unconscious)

• (Orientalism)

• (Culture and Imperialism)

• (After Amnesia: Tradition and Change in Indian Literary Criticism)

• (Siting Translation: History, Post-Structuralism, and the Colonial Context)

• (The Translator’s Invisibility: A History of Translation)

• (Marxism and Literature)

• (Toward an Aesthetic of Reception)

• (Women Writing in India)

• (The Second Sex)

• (Of Woman Born)

• (Decolonising the Mind)

• (The Location of Culture)

• (The Empire Writes Back)

• (The Folk Literature of Mithila)

• (The Cultural Heritage of Mithila)

• (History of Mithila)

• (Mithila ka Itihas)

• (Brihat Maithili Shabdakosh)

• (Varnaratnakara)

• (Purushapariksha)

• (Kirtilata)

• (Kirtipataka)

• (Maithili Ghazalak Vyakaran O Itihas)

• (Maithilik Pratinidhi Ghazal 1905–2022)

• (Genome Mapping: 450 AD to 2009 AD — Mithilak Panji Prabandh)

प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना

सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन · भाग-२

मैथिली कथा, उपन्यास, नाटक, काव्य, गजल, बाल-किशोर साहित्य, पञ्जी, दर्शन आ समानान्तर इतिहासक विशद समालोचनात्मक अनुशीलन। आलोचना-सिद्धान्तसँ लऽ कऽ अनुप्रयोग धरिक ई यात्रा गजेन्द्र ठाकुरक कृतिसभकेँ पाठाधारित दृष्टिसँ परखैत अछि।

आलोचना-सिद्धान्त · कथा · उपन्यास · नाटक · काव्य-गजल · पञ्जी · दर्शन · इतिहास

डिजिटल रूपेँ पढ़ू — QR स्कैन करू

विदेह वेबसाइट
https://www.videha.co.in/

विदेह ई-जर्नल (GitHub)
https://videha-ejournal.github.io/videha/

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X · © Gajendra Thakur & Preeti Thakur, २०२६